Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

चतुर्वेद संहिता

(चारों वेदों की मूल संहिताएँ)

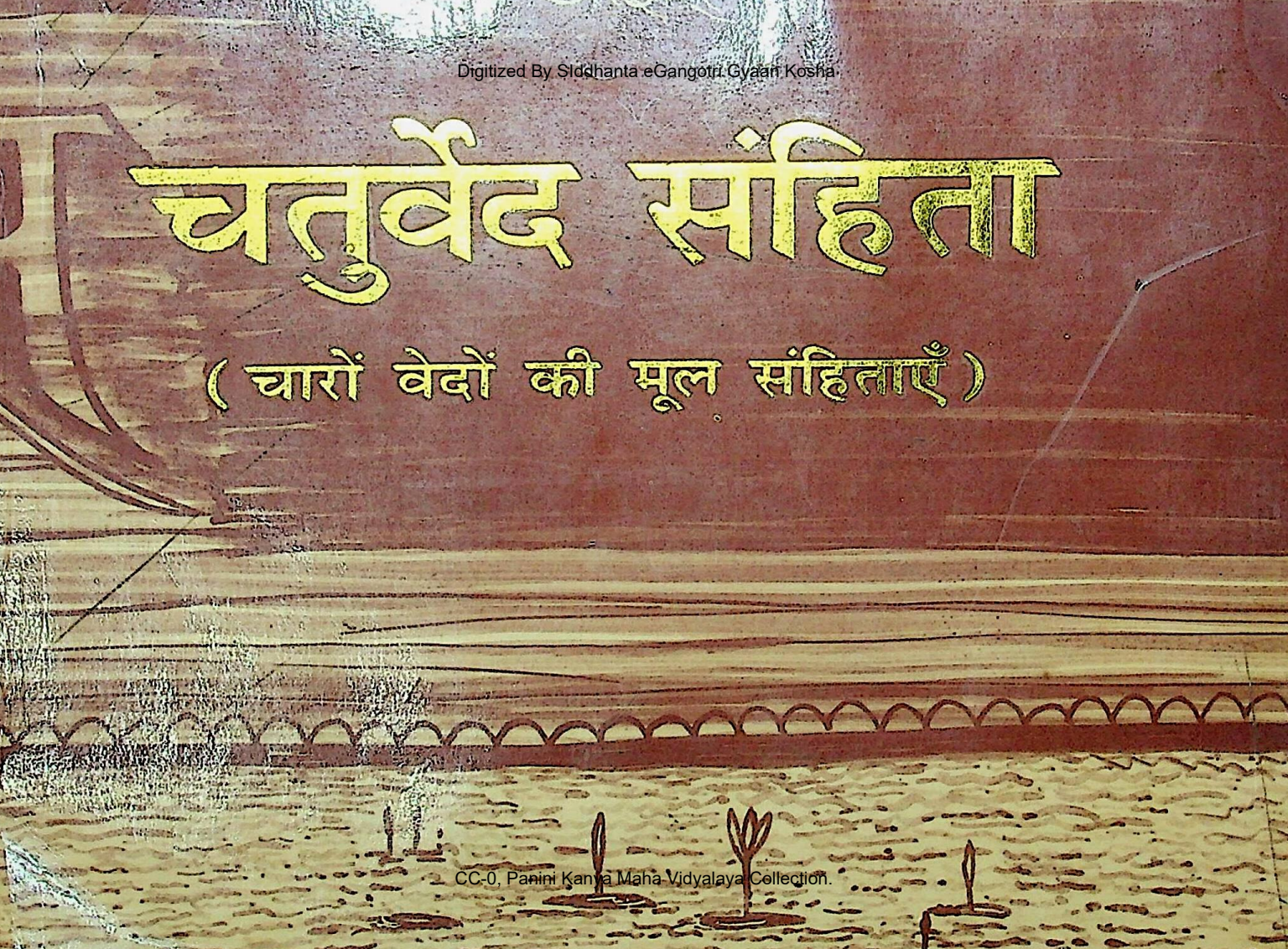

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

वेद आर्य-संस्कृति के मूलाधार हैं। वैदिक संस्कृति सारे संसार की प्राचीनतम संस्कृति है और सारे विश्व के द्वारा वरणीय है। वेद आर्ष ज्ञान-विज्ञान के अक्षय कोष हैं।

वेद चार हैं—ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद। ऋग्वेद में तृण से लेकर ब्रह्मपर्यन्त सारा ज्ञान दिया हुआ है। यजुर्वेद यज्ञवेद है। इसमें अग्निहोत्र से लेकर अश्वमेध पर्यन्त यज्ञों का वर्णन है तथा श्रेष्ठ कर्म करने का उपदेश है। सामवेद उपासना वेद है। इसमें प्रभु-उपासना की मन्दाकिनी चूड़ान्तरूप में प्रवाहित हो रही है। अथर्ववेद विज्ञान वेद है। इसमें नाना प्रकार की औषधियों और युद्ध के भयंकरतम अस्त्र-शस्त्रों का वर्णन है। इस प्रकार यह युद्ध और शान्ति का वेद है।

वेद के स्वाध्याय से मनुष्य के मन और [illegible] भली-भाँति [illegible] जाती है कि यह संसार परमात्मा द्वारा रचा गया है, जो अद्वितीय है। मनुष्य जैसा कर्म करता है वैसा ही फल उसे प्राप्त होता है। वेद हमें जीने की कला सिखाता है।

मनुष्य को सच्चा मनुष्य बनाने के लिए वेद का अध्ययन अनिवार्य है। वह और कुछ पढ़े या न पढ़े वेद तो उसे पढ़ना ही चाहिए।

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

स्व. श्री ओमप्रकाशजी बजाज की
स्मृति में समर्पित

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ओ३म्

चतुर्वेद-संहिता

सम्पादक

परमहंस स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती

विजयकुमार गोविन्दराम हासानन्द

नई सड़क, दिल्ली

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्रकाशक :

विजयकुमार गोविन्दराम हासानन्द

४४०८, नई सड़क, दिल्ली-११०००६

संस्करणम् : प्रथमम्
सं० २०५३, सन् १९९६

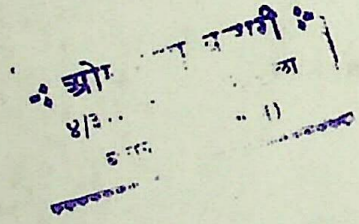

मूल्यम् : ६२५-००

लेजर टाइप सैटिंग :

भगवती प्रकाशन

एच-१/२, माडल टाउन, दिल्ली-११०००९

मुद्रक :

अजय प्रिंटर्स

दिल्ली-११० ०३२

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

-: ओम्प्रकाश बजारी :-
४/३१८, शाहपुरा मोहल्ला
ब्यावर (राजस्थान)

भूमिका

वेद वैदिक संस्कृति के मूलाधार हैं। वे ज्ञान-विज्ञान और धर्म का आदि-स्रोत हैं। वेद परमात्मा द्वारा प्रदत्त वह दिव्य ज्ञान है, जिसमें मनुष्यों के सभी कर्त्तव्य-कर्मों का उपदेश है। वैदिक संस्कृति सारे संसार के द्वारा वरणीय संस्कृति है। संसार में जितना ज्ञान-विज्ञान फैला है, वह सब वेद से ही निःसृत हुआ है। इसीलिए सभी ऋषियों-महर्षियों, आचार्यों ने वेद की महिमा के गीत गाये हैं। महर्षि मनु की घोषणा है–

वेदोऽखिलो धर्ममूलम्। –२।६

वेद सारे धर्मों का मूल है।

धर्मजिज्ञासमानानां प्रमाणं परमं श्रुतिः। –मनु० २।१३

धर्म को जानने की इच्छावालों के लिए वेद परम प्रमाण हैं।

महर्षि मनु ने तो यहाँ तक कह दिया है–

वेदानधीत्य वेदौ वा वेदं वाऽपि यथाक्रमम्।
अविप्लुतब्रह्मचर्यो गृहस्थाश्रममाविशेत्॥ –मनु० ३।२

चारों वेदों को पढ़कर, चार नहीं तो तीन, तीन नहीं तो दो अथवा कम-से-कम एक वेद को पढ़कर, अखण्डित ब्रह्मचारी को ही गृहस्थाश्रम में प्रविष्ट होने का अधिकार है।

और–

योऽनधीत्य द्विजो वेदमन्यत्र कुरुते श्रमम्।
स जीवन्नेव शूद्रत्वमाशु गच्छति सान्वयः॥ –मनु० २।१६८

जो द्विज [ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य] वेदों का अध्ययन न करके अन्यत्र परिश्रम करता है, वह जीता हुआ ही वंशसहित (पुत्र-पौत्रादिसहित) शीघ्र शूद्रत्व को प्राप्त हो जाता है।

गरुड़पुराण में वेद की प्रशंसा में कहा है–

सत्यं सत्यं पुनः सत्यमुद्धृत्य भुजमुच्यते।
नहि वेदात् परं शास्त्रम्.....॥

मैं सत्य कहता हूँ, सत्य कहता हूँ और भुजा उठाकर पुनः सत्य कहता हूँ कि 'संसार में वेद से बढ़कर और कोई शास्त्र नहीं है।'

मोक्षमूलर (मैक्समूलर) कहते हैं–

यावद् स्थास्यन्ति गिरयः सरितश्च महीतले।
तावद् ऋग्वेदमहिमा लोकेषु प्रचरिष्यति॥

जब तक संसार में पर्वत स्थिर रहेंगे, जब तक धरा पर नदियाँ बहती रहेंगी, तब तक संसार में ऋग्वेद की महिमा भी गाई जाती रहेगी।

ईसाई पादरी जे.डब्ल्यू. बर्टन ने लिखा है–

We may boast of our Shakespeare, we may boast of our Shelley and Browning, but as long as the Hindus have the Vedas, the Ramayaṇa, the Gīta and the Mahābhārata, they need not lower their heads. —The Fiji of Today

हम ईसाई लोग शैक्सपीयर पर गर्व कर सकते हैं, हम शैले और ब्राउनिंग पर गर्व कर सकते हैं, परन्तु जब तक हिन्दुओं के पास वेद हैं, रामायण, गीता और महाभारत है, वे संसार में किसी के आगे अपना सिर नहीं झुका सकते।

महर्षि पतञ्जलि ने लिखा है–

ब्राह्मणेन निष्कारणो धर्मः षडङ्गो वेदोऽध्येयो ज्ञेयश्च।

–महाभाष्य पस्पशाह्निकम्

ब्राह्मण का धर्म है कि वह बिना किसी प्रयोजन के छह अङ्गोंसहित वेदों का अध्ययन करे और उनका ज्ञान प्राप्त करे।

वेदों के महत्त्व को समझकर कलिकाल के परम वेदज्ञ महर्षि दयानन्द ने लिखा था–

वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है, वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है। –आर्यसमाज का तीसरा नियम

वेद का इतना गौरव क्यों है? इसलिए कि वेद की शिक्षाएँ, वेद के आदेश और उपदेश सार्वभौमिक और सार्वकालिक हैं। देखिए–

मनुर्भव जनया दैव्यं जनम्। –ऋ० १०।५३।६

मनुष्य [मननशील] बनो और दिव्य सन्तानों को जन्म दो।

संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्। –ऋ० १०।१९१।२

मिलकर चलो, मिलकर बोलो, तुम सबके मन भी मिले हुए हों।

अनुव्रतः पितुः पुत्रो मात्रा भवतु संमनाः।
जाया पत्ये मधुमतीं वाचं वदतु शन्तिवान्॥ –अथर्व० ३।३०।२

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पुत्र पिता का अनुवर्त्तन करनेवाला हो, माता के साथ सदा उत्तम व्यवहार करनेवाला हो। पत्नी पति के साथ माधुर्ययुक्त वाणी बोले और पति भी शान्त होकर अपनी पत्नी से सदा मधुर भाषण किया करे।

क्या इससे अधिक उदात्तभाव संसार के किसी धर्मग्रन्थ में मिलेंगे?

समानी प्रपा सह वोऽन्नभागः समाने योक्त्रे सह वो युनज्मि।
सम्यञ्चोऽग्निं सपर्यतारा नाभिमिवाभितः॥ –अथर्व० ३।३०।६

तुम्हारी प्याऊ [पानी पीने का स्थान] एक हो, तुम्हारी भोजनशाला भी एक हो। मैं [परमेश्वर] तुम्हें धर्मादि के व्यवहार में एक ही जूए में जोतता हूँ–एकसमान व्यवहार में नियुक्त करता हूँ। जैसे अरे नाभि में लगे होते हैं, उसी प्रकार अग्निहोत्र भी तुम सब मिलकर ही करो।

इससे बढ़कर साम्यवाद और कहाँ मिलेगा?

राष्ट्रवाद, भूमिमाता की उदात्त भावना, शिवसङ्कल्प का अनूठा वर्णन, **धियो यो नः प्रचोदयात्**–की दिव्य कामना, सत्य पर अटूट विश्वास, ब्रह्मचर्य की महिमा, प्राणस्वरूप परमेश्वर और प्राणायाम का गौरवगान, ईशोपनिषद्- जैसे अनूठे रत्न वेद के अतिरिक्त संसार के साहित्य में ढूँढने पर भी नहीं मिलेंगे।

वेद चार हैं–ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद। चारों वेदों में कुल २०३४९ मन्त्र हैं। यथा–

ऋग्वेद में तृण से लेकर ब्रह्मपर्यन्त सभी पदार्थों का ज्ञान दिया हुआ है। ऋग्वेद में १०२८ सूक्त और १०५२२ मन्त्र हैं। यह ज्ञानकण्ड कहलाता है। यह मस्तिष्क का वेद है।

यजुर्वेद कर्मकाण्ड का वेद है। इसमें पञ्चमहायज्ञों, ज्योतिष्टोम, अश्वमेध आदि यज्ञों और श्रेष्ठतम कर्म करने का विधान है। इसमें ४० अध्याय और १९७५ मन्त्र हैं। यह हाथों का वेद है।

सामवेद उपासनाकाण्ड का वेद है। इसमें ईश्वर की उपासना करने का सविस्तर वर्णन है। इसमें १८७५ मन्त्र हैं। यह हृदय का वेद है।

अथर्ववेद विज्ञान वेद है। इसमें युद्ध और शान्ति के उपायों का उल्लेख है। इसमें नाना प्रकार के अस्त्र-शस्त्रों, जड़ी-बूटियों और ओषधियों का वर्णन है। कुछ लोग इसे जादू-टोने का वेद मानते हैं, परन्तु इसमें जादू-टोने का नाम और चिह्न भी नहीं है। इसमें ५९७७ मन्त्र हैं। यह उदर का वेद है। इस वेद का सन्देश है–**अग्ने तौलस्य प्राशान**। –१।७।२ अर्थात् हे मनुष्य! तू तोल कर भोजन किया कर।

इस वेदों का पठन-पाठन और श्रवण-श्रावण सभी धर्माभिलाषियों को करना चाहिए। सदा स्मरण रखिए–

स्वाध्यायान्मा प्रमदः। –तै० उप० १।११।१

स्वाध्याय में कभी प्रमाद नहीं करना चाहिए।

स्वाध्याय का अर्थ है वेद का अध्ययन। वेद पढ़ो। वेद के शब्दों में आपकी भावना होनी चाहिए–

मिमीहि श्लोकमास्ये पर्जन्यइव ततनः।
गाय गायत्रमुक्थ्यम्॥ –ऋ० १।३८।१४

वेदमन्त्रों से अपना मुख भर लो और बादल के समान सर्वत्र वेदमन्त्रों का उपदेश कर दो, उनका प्रचार और प्रसार करो। ये मन्त्र इनका गान [स्वाध्याय] करनेवालों की रक्षा करनेवाले हैं और अत्यन्त प्रशंसनीय हैं। इन्हें गाओ और दूसरों को प्रेरित करो कि वे भी इनका गान करें।

'वेद का पठन-पाठन खूब बढ़े, सभी वेद पढ़ें' इसी उद्देश्य से चारों वेदों का यह शुद्ध संस्करण छापने का प्रयास है।

इस संस्करण में पाठकों को अनेक नूतनताएँ दृष्टिगोचर होंगी। वर्गों को इस संस्करण में पृथक् पङ्क्ति में दिखाया गया है। मण्डल और अष्टक दोनों विभाग दिखाये गये हैं। अनुवाकों का उल्लेख किया गया है। सूक्त संख्या हिन्दी और संस्कृत दोनों भाषाओं में पृथक् पङ्क्तिमें दिखाई गई है। अथर्ववेद में प्रपाठक भी दर्शाये गये हैं। दो रङ्गों में छापा गया है। अब तक छपे सभी संस्करणों से विशिष्ट है।

विजयकुमार गोविन्दराम हासानन्द के सञ्चालक श्री अजयकुमारजी ने इस ग्रन्थ को छापने का जो साहस किया है तदर्थ उन्हें हार्दिक साधुवाद है। जनता ने जो सहयोग दिया है तदर्थ उन्हें भी हार्दिक धन्यवाद देता हूँ। विद्वानों और सुधी पाठकों के सुझावों की प्रतीक्षा रहेगी। यदि कोई त्रुटि हुई तो आगामी संस्करणों में उनका संशोधन किया जा सकेगा।

विदुषामनुचरः
–जगदीश्वरानन्द सरस्वती

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ऋग्वेद संहिता

RGVEDA SAMHITĀ

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ओ३म्

ऋग्वेद-संहिता

अथ प्रथमं मण्डलम्

अथ प्रथमाष्टके प्रथमोऽध्यायः

प्रथमोऽनुवाकः [१] प्रथमं सूक्तम्

ऋषिः—मधुच्छन्दाः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—१, ३-५, ७ गायत्री; २ पिपीलिका-मध्यानिचृद्गायत्री; ६ निचृद्गायत्री; ८ यवमध्याविराड्गायत्री; ९ विराड्गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

अथ प्रथमो वर्गः॥ १॥

अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्। होतारं रत्नधातमम्॥ १॥
अग्निः पूर्वेभिर्ऋषिभिरीड्यो नूतनैरुत। स देवाँ एह वक्षति॥ २॥
अग्निना रयिमश्नवत् पोषमेव दिवेदिवे। यशसं वीरवत्तमम्॥ ३॥
अग्ने यं यज्ञमध्वरं विश्वतः परिभूरसि। स इद्देवेषु गच्छति॥ ४॥
अग्निर्होता कविक्रतुः सत्यश्चित्रश्रवस्तमः। देवो देवेभिरा गमत्॥ ५॥

अथ द्वितीयो वर्गः॥ २॥

यदङ्ग दाशुषे त्वमग्ने भद्रं करिष्यसि। तवेत्तत् सत्यमङ्गिरः॥ ६॥
उप त्वाग्ने दिवेदिवे दोषावस्तर्धिया वयम्। नमो भरन्त एमसि॥ ७॥
राजन्तमध्वराणां गोपामृतस्य दीदिविम्। वर्धमानं स्वे दमे॥ ८॥
स नः पितेव सूनवेऽग्ने सूपायनो भव। सचस्वा नः स्वस्तये॥ ९॥

[२] द्वितीयं सूक्तम्

ऋषिः—मधुच्छन्दाः॥ देवता—१-३ वायुः; ४-६ इन्द्रवायू; ७-९ मित्रावरुणौ॥ छन्दः—१, २ पिपीलिकामध्यानिचृद्गायत्री; ३-५, ७-९ गायत्री; ६ निचृद्गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

अथ तृतीयो वर्गः॥ ३॥

वायवा याहि दर्शतेमे सोमा अरंकृताः। तेषां पाहि श्रुधी हवम्॥ १॥
वायं उक्थेभिर्जरन्ते त्वामच्छा जरितारः। सुतसोमा अहर्विदः॥ २॥
वायो तव प्रपृञ्चती धेना जिगाति दाशुषे। उरूची सोमपीतये॥ ३॥
इन्द्रवायू इमे सुता उप प्रयोभिरा गतम्। इन्दवो वामुशन्ति हि॥ ४॥
वायविन्द्रश्च चेतथः सुतानां वाजिनीवसू। तावा यातमुप द्रवत्॥ ५॥

अथ चतुर्थो वर्गः॥ ४॥

वायविन्द्रश्च सुन्वत आ यातमुप निष्कृतम्। मक्षिवाथा धिया नरा॥ ६॥
मित्रं हुवे पूतदक्षं वरुणं च रिशादसम्। धियं घृताचीं साधन्ता॥ ७॥
ऋतेन मित्रावरुणावृतावृधावृतस्पृशा। क्रतुं बृहन्तमाशाथे॥ ८॥
कवी नो मित्रावरुणा तुविजाता उरुक्षया। दक्षं दधाते अपसम्॥ ९॥

[३] तृतीयं सूक्तम्

ऋषिः—मधुच्छन्दाः॥ देवता—१-३ अश्विनौ; ४-६ इन्द्रः; ७-९ विश्वेदेवाः; १०-१२ सरस्वती॥ छन्दः—१, ३, ५-१०, १२ गायत्री; २ निचृद्गायत्री; ४, ११ पिपीलिकामध्यानिचृद्गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

अथ पञ्चमो वर्गः॥ ५॥

अश्विना यज्वरीरिषो द्रवत्पाणी शुभस्पती। पुरुभुजा चनस्यतम्॥ १॥
अश्विना पुरुदंससा नरा शवीरया धिया। धिष्ण्या वनतं गिरः॥ २॥
दस्रा युवाकवः सुता नासत्या वृक्तबर्हिषः। आ यातं रुद्रवर्तनी॥ ३॥
इन्द्रा याहि चित्रभानो सुता इमे त्वायवः। अण्वीभिस्तना पूतासः॥ ४॥
इन्द्रा याहि धियेषितो विप्रजूतः सुतावतः। उप ब्रह्माणि वाघतः॥ ५॥
इन्द्रा याहि तूतुजान उप ब्रह्माणि हरिवः। सुते दधिष्व नश्चनः॥ ६॥

अथ षष्ठो वर्गः॥ ६॥

ओमासश्चर्षणीधृतो विश्वे देवास आ गत। दाश्वांसो दाशुषः सुतम्॥ ७॥
विश्वे देवासो अप्तुरः सुतमा गन्त तूर्णयः। उस्राइव स्वसराणि॥ ८॥
विश्वे देवासो अस्रिध एहिमायासो अद्रुहः। मेधं जुषन्त वह्नयः॥ ९॥
पावका नः सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवती। यज्ञं वष्टु धियावसुः॥ १०॥
चोदयित्री सूनृतानां चेतन्ती सुमतीनाम्। यज्ञं दधे सरस्वती॥ ११॥
महो अर्णः सरस्वती प्र चेतयति केतुना। धियो विश्वा वि राजति॥ १२॥

द्वितीयोऽनुवाकः [४] चतुर्थं सूक्तम्

ऋषिः—मधुच्छन्दाः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१, २, ४-९ गायत्री; ३ विराड्गायत्री; १० निचृद्गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

अथ सप्तमो वर्गः॥ ७॥

सुरूपकृत्नुमूतये सुदुघामिव गोदुहे। जुहूमसि द्यविद्यवि॥ १॥
उप नः सवना गहि सोमस्य सोमपाः पिब। गोदा इद्रेवतो मदः॥ २॥
अथा ते अन्तमानां विद्याम सुमतीनाम्। मा नो अति ख्य आ गहि॥ ३॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

परे॑हि॒ विग्र॒मस्तृ॑त॒मिन्द्रं॑ पृच्छा विप॒श्चित॑म्। यस्ते॒ सखि॑भ्य॒ आ वर॑म्॥४॥
उ॒त ब्रु॑वन्तु नो॒ निदो॒ निर॒न्यत॑श्चिदारत। दधा॑ना॒ इन्द्र॒ इद् दुवः॑॥५॥

अथ अष्टमो वर्गः॥ ८॥

उ॒त नः॑ सु॒भगाँ॑ अ॒रिर्वो॒चेयु॑र्दस्म कृ॒ष्टयः॑। स्यामेदिन्द्र॑स्य॒ शर्म॑णि॥६॥
एमा॒शुमा॒शवे॑ भर यज्ञ॒श्रियं॑ नृ॒माद॑नम्। प॒त॒यन्म॑न्द॒यत् स॑खम्॥७॥
अ॒स्य पी॒त्वा श॑तक्रतो घ॒नो वृ॒त्राणा॑मभवः। प्रावो॒ वाजे॑षु वा॒जिन॑म्॥८॥
तं त्वा॒ वाजे॑षु वा॒जिनं॑ वा॒जया॑मः शतक्रतो। धना॑नामिन्द्र सा॒तये॑॥९॥
यो रा॒यो॒३॒॑वनि॑र्म॒हान्त्सु॑पा॒रः सु॑न्व॒तः सखा॑। तस्मा॒ इन्द्रा॑य गायत॥१०॥

[५] पञ्चमं सूक्तम्

ऋषिः—मधुच्छन्दाः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१ विराड्गायत्री; २ आर्च्युष्णिक्; ३ पिपीलिकामध्यानिचृद्गायत्री; ४, १० गायत्री; ५-७, ९ निचृद्गायत्री; ८ पादनिचृद्गायत्री॥ स्वरः—१, ३-१० षड्जः; २ ऋषभः॥

अथ नवमो वर्गः॥ ९॥

आ त्वेता॒ नि षी॑द॒तेन्द्र॑म॒भि प्र गा॑यत। सखा॑यः॒ स्तोम॑वाहसः॥१॥
पु॒रू॒तमं॑ पुरू॒णामीशा॑नं॒ वार्या॑णाम्। इन्द्रं॒ सोमे॒ सचा॑ सु॒ते॥२॥
स घा॑ नो॒ योग॒ आ भु॑व॒त्स रा॒ये स पुर॑न्ध्याम्। गम॒द् वाजे॑भि॒रा स नः॑॥३॥
यस्य॑ सं॒स्थे न वृ॒ण्वते॒ हरी॑ स॒मत्सु॒ शत्र॑वः। तस्मा॒ इन्द्रा॑य गायत॥४॥
सु॒त॒पाव्ने॑ सु॒ता इ॒मे शुच॑यो यन्ति वी॒तये॑। सोमा॑सो॒ दध्या॑शिरः॥५॥

अथ दशमो वर्गः॥ १०॥

त्वं सु॒तस्य॑ पी॒तये॑ स॒द्यो वृ॒द्धो अ॑जायथाः। इन्द्र॒ ज्यैष्ठ्या॑य सुक्रतो॥६॥
आ त्वा॑ विशन्त्वा॒शवः॒ सोमा॑स इन्द्र गिर्वणः। शं ते॑ सन्तु॒ प्रचे॑तसे॥७॥
त्वां स्तोमा॑ अवीवृध॒न् त्वामु॒क्था श॑तक्रतो। त्वां व॑र्धन्तु नो॒ गिरः॑॥८॥
अक्षि॑तोतिः सनेदि॒मं वाज॒मिन्द्रः॑ सह॒स्रिण॑म्। यस्मि॒न् विश्वा॑नि॒ पौंस्या॑॥९॥
मा नो॒ मर्ता॑ अ॒भि द्रु॑हन् त॒नूना॑मिन्द्र गिर्वणः। ईशा॑नो यवया व॒धम्॥१०॥

[६] षष्ठं सूक्तम्

ऋषिः—मधुच्छन्दाः॥ देवता—१-३, १० इन्द्रः; ४, ६, ८, ९ मरुतः; ५, ७ मरुत इन्द्रश्च॥ छन्दः—१, ३, ५-७, ९, १० गायत्री; २ विराड्गायत्री; ४, ८ निचृद्गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

अथ एकादशो वर्गः॥ ११॥

यु॒ञ्जन्ति॑ ब्र॒ध्नम॑रु॒षं चर॑न्तं॒ परि॑ त॒स्थुषः॑। रोच॑न्ते रोच॒ना दि॒वि॥१॥
यु॒ञ्जन्त्य॑स्य॒ काम्या॒ हरी॒ विप॑क्षसा॒ रथे॑। शोणा॑ धृ॒ष्णू नृ॒वाह॑सा॥२॥
के॒तुं कृ॒ण्वन्न॑के॒तवे॒ पेशो॑ मर्या अपे॒शसे॑। समु॒षद्भि॑रजायथाः॥३॥
आदह॑ स्व॒धामनु॒ पुन॑र्गर्भ॒त्वमे॑रि॒रे। दधा॑ना॒ नाम॑ य॒ज्ञिय॑म्॥४॥
वी॒ळु चि॑दारुज॒त्नुभि॒र्गुहा॑ चिदिन्द्र॒ वह्नि॑भिः। अवि॑न्द उ॒स्त्रिया॒ अनु॑॥५॥

अथ द्वादशो वर्गः॥ १२॥

दे॒व॒यन्तो॒ यथा॑ म॒तिमच्छा॑ वि॒दद्व॑सुं॒ गिरः॑। म॒हाम॑नूषत श्रु॒तम्॥६॥
इन्द्रे॑ण॒ सं हि दृक्ष॑से सञ्जग्मा॑नो अबि॑भ्युषा। म॒न्दू स॑मा॒नव॑र्चसा॥७॥
अ॒न॒व॒द्यैर॒भिद्यु॑भिर्म॒खः सह॑स्वदर्चति। ग॒णैरिन्द्र॑स्य॒ काम्यैः॑॥८॥
अतः॑ परिज्म॒न्ना ग॑हि दि॒वो वा॑ रोच॒नादधि॑। सम॑स्मिन्नृञ्जते॒ गिरः॑॥९॥
इ॒तो वा॑ सा॒तिमीम॑हे दि॒वो वा॒ पार्थि॑वा॒दधि॑। इन्द्रं॑ म॒हो वा॒ रज॑सः॥१०॥

[७] सप्तमं सूक्तम्

ऋषिः—मधुच्छन्दाः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१, ३, ५-७ गायत्री; २, ४ निचृद् गायत्री; ८, १० पिपीलिकामध्यानिचृद्गायत्री; ९ पादनिचृद् गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

अथ त्रयोदशो वर्गः॥ १३॥

इन्द्र॒मिद् गा॒थिनो॑ बृ॒हदिन्द्र॑म॒र्केभि॑र॒र्किणः॑। इन्द्रं॒ वाणी॑रनूषत॥१॥
इन्द्र॒ इद्धर्योः॒ सचा॒ सम्मि॑श्ल॒ आ व॑चो॒युजा॑। इन्द्रो॑ व॒ज्री हि॑र॒ण्ययः॑॥२॥
इन्द्रो॑ दी॒र्घाय॒ चक्ष॑स॒ आ सूर्यं॑ रोहयद् दि॒वि। वि गोभि॒रद्रि॑मैरयत्॥३॥
इन्द्र॒ वाजे॑षु नोऽव स॒हस्र॑प्रधनेषु च। उ॒ग्र उ॒ग्राभि॑रू॒तिभिः॑॥४॥
इन्द्रं॑ व॒यं म॑हाध॒न इन्द्र॒मर्भे॑ हवामहे। युजं॑ वृ॒त्रेषु॑ व॒ज्रिण॑म्॥५॥

अथ चतुर्दशो वर्गः॥ १४॥

स नो॑ वृषन्न॒मुं च॒रुं सत्रा॑दाव॒न्नपा॑ वृधि। अ॒स्मभ्य॒मप्र॑तिष्कुतः॥६॥
तु॒ञ्जेतु॑ञ्जे॒ य उत्त॑रे॒ स्तोमा॒ इन्द्र॑स्य व॒ज्रिणः॑। न वि॑न्धे अस्य सुष्टु॒तिम्॥७॥
वृषा॑ यू॒थेव॒ वंस॑गः कृ॒ष्टीरि॑य॒र्त्योज॑सा। ईशा॑नो॒ अप्र॑तिष्कुतः॥८॥
य एक॑श्चर्षणी॒नां वसू॑नामिर॒ज्यति॑। इन्द्रः॒ पञ्च॑ क्षिती॒नाम्॥९॥
इन्द्रं॑ वो वि॒श्वत॒स्परि॒ हवा॑महे॒ जने॑भ्यः। अ॒स्माक॑मस्तु॒ केव॑लः॥१०॥

तृतीयोऽनुवाकः

[८] अष्टमं सूक्तम्

ऋषिः—मधुच्छन्दाः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१, ५, ८ निचृद्गायत्री; २ विराड् गायत्री; ३, ४, ६, ७, ९ गायत्री; १० वर्धमाना गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

अथ पञ्चदशो वर्गः॥ १५॥

एन्द्र॑ सान॒सिं र॒यिं स॒जित्वा॑नं सदा॒सह॑म्। वर्षि॑ष्ठमू॒तये॑ भर॥१॥
नि येन॑ मुष्टिह॒त्यया॒ नि वृ॒त्रा रु॒णधा॑महै। त्वोता॑सो॒ न्यर्व॑ता॥२॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

इन्द्र त्वोतास आ वयं वज्रं घना ददीमहि। जयेम सं युधि स्पृधः ॥ ३ ॥
वयं शूरेभिरस्तृभिरिन्द्र त्वया युजा वयम्। सासह्याम पृतन्यतः ॥ ४ ॥
महाँ इन्द्रः परश्च नु महित्वमस्तु वज्रिणे। द्यौर्न प्रथिना शवः ॥ ५ ॥

अथ षोडशो वर्गः ॥ १६ ॥

समोहे वा य आशत नरस्तोकस्य सनितौ। विप्रासो वा धियायवः ॥ ६ ॥
यः कुक्षिः सोमपातमः समुद्रइव पिन्वते। उर्वीरापो न काकुदः ॥ ७ ॥
एवा ह्यस्य सूनृता विरप्शी गोमती मही। पक्वा शाखा न दाशुषे ॥ ८ ॥
एवा हि ते विभूतय ऊतय इन्द्र मावते। सद्यश्चित् सन्ति दाशुषे ॥ ९ ॥
एवा ह्यस्य काम्या स्तोम उक्थं च शंस्या। इन्द्राय सोमपीतये ॥ १० ॥

[९] नवमं सूक्तम्

ऋषिः—मधुच्छन्दाः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१, ३, ७, १० निचृद्गायत्री; २, ४, ८, ९ गायत्री; ५, ६ पिपीलिकामध्यानिचृद्गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथ सप्तदशो वर्गः ॥ १७ ॥

इन्द्रेहि मत्स्यन्धसो विश्वेभिः सोमपर्वभिः। महाँ अभिष्टिरोजसा ॥ १ ॥
एमेनं सृजता सुते मन्दिमिन्द्राय मन्दिने। चक्रिं विश्वानि चक्रये ॥ २ ॥
मत्स्वा सुशिप्र मन्दिभिः स्तोमेभिर्विश्वचर्षणे। सचैषु सवनेष्वा ॥ ३ ॥
असृग्रमिन्द्र ते गिरः प्रति त्वामुदहासत। अजोषा वृषभं पतिम् ॥ ४ ॥
सं चोदय चित्रमर्वाग्राध इन्द्र वरेण्यम्। असदित्ते विभु प्रभु ॥ ५ ॥

अथ अष्टादशो वर्गः ॥ १८ ॥

अस्मान्त्सु तत्र चोदयेन्द्र राये रभस्वतः। तुविद्युम्न यशस्वतः ॥ ६ ॥
सं गोमदिन्द्र वाजवदस्मे पृथु श्रवो बृहत्। विश्वायुर्धेह्यक्षितम् ॥ ७ ॥
अस्मे धेहि श्रवो बृहद् द्युम्नं सहस्रसातमम्। इन्द्र ता रथिनीरिषः ॥ ८ ॥
वसोरिन्द्रं वसुपतिं गीर्भिर्गृणन्त ऋग्मियम्। होम गन्तारमूतये ॥ ९ ॥
सुतेसुते न्योकसे बृहद् बृहत एदरिः। इन्द्राय शूषमर्चति ॥ १० ॥

[१०] दशमं सूक्तम्

ऋषिः—मधुच्छन्दाः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१-३, ५ विराडनुष्टुप्; ४ भुरिगुष्णिक्; ६, ८ निचृदनुष्टुप्; ७, ९-१२ अनुष्टुप् ॥ स्वरः—१-३, ५-१२ गान्धारः; ४ ऋषभः ॥

अथ एकोनविंशो वर्गः ॥ १९ ॥

गायन्ति त्वा गायत्रिणोऽर्चन्त्यर्कमर्किणः ।
ब्रह्माणस्त्वा शतक्रत उद्वंशमिव येमिरे ॥ १ ॥

यत्सानोः सानुमारुहद् भूर्यस्पष्ट कर्त्वम् ।
तदिन्द्रो अर्थं चेतति यूथेन वृष्णिरेजति ॥ २ ॥
युक्ष्वा हि केशिना हरी वृषणा कक्ष्यप्रा ।
अथा न इन्द्र सोमपा गिरामुपश्रुतिं चर ॥ ३ ॥
एहि स्तोमाँ अभि स्वराभि गृणीह्या रुव ।
ब्रह्म च नो वसो सचेन्द्र यज्ञं च वर्धय ॥ ४ ॥
उक्थमिन्द्राय शंस्यं वर्धनं पुरुनिष्षिधे ।
शक्रो यथा सुतेषु णो रारणत् सख्येषु च ॥ ५ ॥
तमित् संखित्व ईमहे तं राये तं सुवीर्ये ।
स शक्र उत नः शकदिन्द्रो वसु दयमानः ॥ ६ ॥

अथ विंशो वर्गः ॥ २० ॥

सुविवृतं सुनिरजमिन्द्र त्वादातमिद् यशः ।
गवामप व्रजं वृधि कृणुष्व राधो अद्रिवः ॥ ७ ॥
नहि त्वा रोदसी उभे ऋघायमाणमिन्वतः ।
जेषः स्वर्वतीरपः सं गा अस्मभ्यं धूनुहि ॥ ८ ॥
आश्रुत्कर्ण श्रुधी हवं नू चिद्दधिष्व मे गिरः ।
इन्द्र स्तोममिमं मम कृष्वा युजश्चिदन्तरम् ॥ ९ ॥
विद्मा हि त्वा वृषन्तमं वाजेषु हवनश्रुतम् ।
वृषन्तमस्य हूमह ऊतिं सहस्रसातमाम् ॥ १० ॥
आ तू न इन्द्र कौशिक मन्दसानः सुतं पिब ।
नव्यमायुः प्र सू तिर कृधी सहस्रसामृषिम् ॥ ११ ॥
परि त्वा गिर्वणो गिर इमा भवन्तु विश्वतः ।
वृद्धायुमनु वृद्धयो जुष्टा भवन्तु जुष्टयः ॥ १२ ॥

[११] एकादशं सूक्तम्

ऋषिः—जेता माधुच्छन्दसः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१-३, ८ निचृदनुष्टुप्; ४, ६ अनुष्टुप्; ५ भुरिगुष्णिक्; ७ विराडनुष्टुप् ॥ स्वरः—१-४, ६-८ गान्धारः; ५ ऋषभः ॥

अथ एकविंशो वर्गः ॥ २१ ॥

इन्द्रं विश्वा अवीवृधन्त्समुद्रव्यचसं गिरः ।
रथीतमं रथीनां वाजानां सत्पतिं पतिम् ॥ १ ॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सख्ये त इन्द्र वाजिनो मा भेम शवसस्पते ।
त्वामभि प्र णोनुमो जेतारमपराजितम् ॥ २ ॥
पूर्वीरिन्द्रस्य रातयो न वि दस्यन्त्यूतयः ।
यदी वाजस्य गोमतः स्तोतृभ्यो मंहते मघम् ॥ ३ ॥
पुरां भिन्दुर्युवा कविरमितौजा अजायत ।
इन्द्रो विश्वस्य कर्मणो धर्ता वज्री पुरुष्टुतः ॥ ४ ॥
त्वं वलस्य गोमतोऽपावरद्रिवो बिलम् ।
त्वां देवा अबिभ्युषस्तुज्यमानास आविषुः ॥ ५ ॥
तवाहं शूर रातिभिः प्रत्यायं सिन्धुमावदन् ।
उपातिष्ठन्त गिर्वणो विदुष्टे तस्य कारवः ॥ ६ ॥
मायाभिरिन्द्र मायिनं त्वं शुष्णमवातिरः ।
विदुष्टे तस्य मेधिरास्तेषां श्रवांस्युत्तिर ॥ ७ ॥
इन्द्रमीशानमोजसाभि स्तोमा अनूषत ।
सहस्रं यस्य रातय उत वा सन्ति भूयसीः ॥ ८ ॥

चतुर्थोऽनुवाकः [१२] द्वादशं सूक्तम्

ऋषिः—मेधातिथिः काण्वः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१, २, ७-९, ११, १२ गायत्री, ३-५ निचृद्गायत्री; ४, १० पिपीलिकामध्यानिचृद्गायत्री; ६ विराड्गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथ द्वाविंशो वर्गः ॥ २२ ॥

अग्निं दूतं वृणीमहे होतारं विश्ववेदसम् । अस्य यज्ञस्य सुक्रतुम् ॥ १ ॥
अग्निमग्निं हवीमभिः सदा हवन्त विश्पतिम् । हव्यवाहं पुरुप्रियम् ॥ २ ॥
अग्ने देवाँ इहा वह जज्ञानो वृक्तबर्हिषे । असि होता न ईड्यः ॥ ३ ॥
ताँ उशतो वि बोधय यदग्ने यासि दूत्यम् । देवैरा सत्सि बर्हिषि ॥ ४ ॥
घृताहवन दीदिवः प्रति ष्म रिषतो दह । अग्ने त्वं रक्षस्विनः ॥ ५ ॥
अग्निनाग्निः समिध्यते कविर्गृहपतिर्युवा । हव्यवाड् जुह्वास्यः ॥ ६ ॥

अथ त्रयोविंशो वर्गः ॥ २३ ॥

कविमग्निमुप स्तुहि सत्यधर्माणमध्वरे । देवममीवचातनम् ॥ ७ ॥
यस्त्वामग्ने हविष्पतिर्दूतं देव सपर्यति । तस्य स्म प्राविता भव ॥ ८ ॥
यो अग्निं देववीतये हविष्माँ आविवासति । तस्मै पावक मृळय ॥ ९ ॥
स नः पावक दीदिवोऽग्ने देवाँ इहा वह । उप यज्ञं हविश्च नः ॥ १० ॥
स नः स्तवान आ भर गायत्रेण नवीयसा । रयिं वीरवतीमिषम् ॥ ११ ॥
अग्ने शुक्रेण शोचिषा विश्वाभिर्देवहूतिभिः । इमं स्तोमं जुषस्व नः ॥ १२ ॥

[१३] त्रयोदशं सूक्तम्

ऋषिः—मेधातिथिः काण्वः ॥ देवता—१ इध्मः समिन्द्धो वाऽग्निः; २ तनूनपात्; ३ नराशंसः; ४ इळः; ५ बर्हिः; ६ देवीर्द्वारः; ७ उषासानक्ता; ८ दैव्यौ होतारौ, प्रचेतसौ; ९ तिस्रो देव्यः—सरस्वतीळाभारत्यः; १० त्वष्टा; ११ वनस्पतिः; १२ स्वाहाकृतयः ॥ छन्दः—१-६, १० गायत्री; ७, ८, ११, १२ पिपीलिकामध्यानिचृद्गायत्री, ९ निचृद्गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथ चतुर्विंशो वर्गः ॥ २४ ॥

सुसमिद्धो न आ वह देवाँ अग्ने हविष्मते । होतः पावक यक्षि च ॥ १ ॥
मधुमन्तं तनूनपाद् यज्ञं देवेषु नः कवे । अद्या कृणुहि वीतये ॥ २ ॥
नराशंसमिह प्रियमस्मिन् यज्ञ उप ह्वये । मधुजिह्वं हविष्कृतम् ॥ ३ ॥
अग्ने सुखतमे रथे देवाँ ईळित आ वह । असि होता मनुर्हितः ॥ ४ ॥
स्तृणीत बर्हिरानुषग् घृतपृष्ठं मनीषिणः । यत्रामृतस्य चक्षणम् ॥ ५ ॥
वि श्रयन्तामृतावृधो द्वारो देवीरसश्चतः । अद्या नूनं च यष्टवे ॥ ६ ॥

अथ पञ्चविंशो वर्गः ॥ २५ ॥

नक्तोषासा सुपेशसास्मिन् यज्ञ उप ह्वये । इदं नो बर्हिरासदे ॥ ७ ॥
ता सुजिह्वा उप ह्वये होतारा दैव्या कवी । यज्ञं नो यक्षतामिमम् ॥ ८ ॥
इळा सरस्वती मही तिस्रो देवीर्मयोभुवः । बर्हिः सीदन्त्वस्रिधः ॥ ९ ॥
इह त्वष्टारमग्रियं विश्वरूपमुप ह्वये । अस्माकमस्तु केवलः ॥ १० ॥
अव सृजा वनस्पते देव देवेभ्यो हविः । प्र दातुरस्तु चेतनम् ॥ ११ ॥
स्वाहा यज्ञं कृणोतनेन्द्राय यज्वनो गृहे । तत्र देवाँ उप ह्वये ॥ १२ ॥

[१४] चतुर्दशं सूक्तम्

ऋषिः—मेधातिथिः काण्वः ॥ देवता—विश्वेदेवाः ॥ छन्दः—१-६, ९ गायत्री; ७, ८ पिपीलिकामध्यानिचृद्गायत्री; १०, ११ विराड्गायत्री; १२ निचृद्गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथ षड्विंशो वर्गः ॥ २६ ॥

ऐभिरग्ने दुवो गिरो विश्वेभिः सोमपीतये । देवेभिर्याहि यक्षि च ॥ १ ॥
आ त्वा कण्वा अहूषत गृणन्ति विप्र ते धियः । देवेभिरग्न आ गहि ॥ २ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

इन्द्रवायू बृहस्पतिं मित्राग्निं पूषणं भगम्। आदित्यान् मारुतं गणम्॥ ३॥
प्र वो भ्रियन्त इन्दवो मत्सरा मादयिष्णवः। द्रप्सा मध्वश्चमूषदः॥ ४॥
ईळते त्वामवस्यवः कण्वासो वृक्तबर्हिषः। हविष्मन्तो अरङ्कृतः॥ ५॥
घृतपृष्ठा मनोयुजो ये त्वा वहन्ति वह्नयः। आ देवान्त्सोमपीतये॥ ६॥

अथ सप्तविंशो वर्गः॥ २७॥

तान् यजत्राँ ऋतावृधोऽग्ने पत्नीवतस्कृधि। मध्वः सुजिह्व पायय॥ ७॥
ये यजत्रा य ईड्यास्ते पिबन्तु जिह्वया। मधोरग्ने वषट्कृति॥ ८॥
आकीं सूर्यस्य रोचनाद् विश्वान् देवाँ उषर्बुधः। विप्रो होतेह वक्षति॥ ९॥
विश्वेभिः सोम्यं मध्वग्न इन्द्रेण वायुना। पिबा मित्रस्य धामभिः॥ १०॥
त्वं होता मनुर्हितोऽग्ने यज्ञेषु सीदसि। सेमं नो अध्वरं यज॥ ११॥
युक्ष्वा ह्यरुषी रथे हरितौ देव रोहितः। ताभिर्देवाँ इहा वह॥ १२॥

[१५] पञ्चदशं सूक्तम्

ऋषिः—मेधातिथिः काण्वः॥ देवता—१, ५ इन्द्रः; २ मरुतः; ३ त्वष्टा; ४, १२ अग्निः; ६ मित्रावरुणौ; ७-१० द्रविणोदाः; ११ अश्विनौ॥ छन्दः—१, १२ निचृद्गायत्री; २, ४ भुरिग्गायत्री, ३, ५-१० गायत्री; ११ पिपीलिकामध्यानिचृद्गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

अथ अष्टाविंशो वर्गः॥ २८॥

इन्द्र सोमं पिब ऋतुना त्वा विशन्त्विन्दवः। मत्सरासस्तदोकसः॥ १॥
मरुतः पिबत ऋतुना पोत्राद् यज्ञं पुनीतन। यूयं हि ष्ठा सुदानवः॥ २॥
अभि यज्ञं गृणीहि नो ग्रावो नेष्टः पिब ऋतुना। त्वं हि रत्नधा असि॥ ३॥
अग्ने देवाँ इहा वह सादया योनिषु त्रिषु। परि भूष पिब ऋतुना॥ ४॥
ब्राह्मणादिन्द्र राधसः पिबा सोममृतूँरनु। तवेद्धि सख्यमस्तृतम्॥ ५॥
युवं दक्षं धृतव्रत मित्रावरुण दूळभम्। ऋतुना यज्ञमाशाथे॥ ६॥

अथ एकोनत्रिंशो वर्गः॥ २९॥

द्रविणोदा द्रविणसो ग्रावहस्तासो अध्वरे। यज्ञेषु देवमीळते॥ ७॥
द्रविणोदा ददातु नो वसूनि यानि शृण्विरे। देवेषु ता वनामहे॥ ८॥
द्रविणोदाः पिपीषति जुहोत प्र च तिष्ठत। नेष्टादृतुभिरिष्यत॥ ९॥
यत्त्वा तुरीयमृतुभिर्द्रविणोदो यजामहे। अध स्मा नो ददिर्भव॥ १०॥
अश्विना पिबतं मधु दीद्यग्नी शुचिव्रता। ऋतुना यज्ञवाहसा॥ ११॥
गार्हपत्येन सन्त्य ऋतुना यज्ञनीरसि। देवान् देवयते यज॥ १२॥

[१६] षोडशं सूक्तम्

ऋषिः—मेधातिथिः काण्वः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१, २, ४, ६-८ गायत्री; ३, ५ पिपीलिकामध्यानिचृद्गायत्री; ९ विराड्गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

अथ त्रिंशो वर्गः॥ ३०॥

आ त्वा वहन्तु हर्यो वृषणं सोमपीतये। इन्द्र त्वा सूरचक्षसः॥ १॥
इमा धाना घृतस्नुवो हरी इहोप वक्षतः। इन्द्रं सुखतमे रथे॥ २॥
इन्द्रं प्रातर्हवामह इन्द्रं प्रयत्यध्वरे। इन्द्रं सोमस्य पीतये॥ ३॥
उप नः सुतमा गहि हरिभिरिन्द्र केशिभिः। सुते हि त्वा हवामहे॥ ४॥
सेमं नः स्तोममा गह्युपेदं सवनं सुतम्। गौरो न तृषितः पिब॥ ५॥

अथ एकत्रिंशो वर्गः॥ ३१॥

इमे सोमास इन्दवः सुतासो अधि बर्हिषि। ताँ इन्द्र सहसे पिब॥ ६॥
अयं ते स्तोमो अग्रियो हृदिस्पृगस्तु शंतमः। अथा सोमं सुतं पिब॥ ७॥
विश्वमित्सवनं सुतमिन्द्रो मदाय गच्छति। वृत्रहा सोमपीतये॥ ८॥
सेमं नः काममा पृण गोभिरश्वैः शतक्रतो। स्तवाम त्वा स्वाध्यः॥ ९॥

[१७] सप्तदशं सूक्तम्

ऋषिः—मेधातिथिः काण्वः॥ देवता—इन्द्रावरुणौ॥ छन्दः—१, ३, ७, ९ गायत्री; २ यवमध्याविराड्गायत्री; ४ पादनिचृद्गायत्री; ५ भुरिगार्चीगायत्री; ६ निचृद् गायत्री; ८ पिपीलिकामध्यानिचृद्गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

अथ द्वात्रिंशो वर्गः॥ ३२॥

इन्द्रावरुणयोरहं सम्राजोरव आ वृणे। ता नो मृळात ईदृशे॥ १॥
गन्तारा हि स्थोऽवसे हवं विप्रस्य मावतः। धर्तारा चर्षणीनाम्॥ २॥
अनुकामं तर्पयेथामिन्द्रावरुण राय आ। ता वां नेदिष्ठमीमहे॥ ३॥
युवाकु हि शचीनां युवाकु सुमतीनाम्। भूयाम वाजदाव्नाम्॥ ४॥
इन्द्रः सहस्रदाव्नां वरुणः शंस्यानाम्। क्रतुर्भवत्युक्थ्यः॥ ५॥

अथ त्रयस्त्रिंशो वर्गः॥ ३३॥

तयोरिदवसा वयं सनेम नि च धीमहि। स्यादुत प्ररेचनम्॥ ६॥
इन्द्रावरुण वामहं हुवे चित्राय राधसे। अस्मान्त्सु जिग्युषस्कृतम्॥ ७॥
इन्द्रावरुण नू नु वां सिषासन्तीषु धीष्वा। अस्मभ्यं शर्म यच्छतम्॥ ८॥
प्र वामश्नोतु सुष्टुतिरिन्द्रावरुण यां हुवे। यामृधाथे सधस्तुतिम्॥ ९॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पञ्चमोऽनुवाकः

[१८] अष्टादशं सूक्तम्

ऋषिः—मेधातिथिः काण्वः ॥ देवता—१-३ ब्रह्मणस्पतिः; ४ ब्रह्मणस्पतिरिन्द्रश्च सोमश्च; ५ ब्रह्मणस्पतिसोमेन्द्रदक्षिणाः; ६-८ सदसस्पतिः; ९ सदसस्पति-र्नराशंसो वा ॥ छन्दः—१ विराड्गायत्री; २, ७, ९ गायत्री; ३, ६, ८ पिपीलिकामध्यानिचृद्गायत्री; ४ निचृद्गायत्री; ५ पादनिचृद्गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथ चतुस्त्रिंशो वर्गः ॥ ३४ ॥

सोमानं स्वरणं कृणुहि ब्रह्मणस्पते। कक्षीवन्तं य औशिजः ॥ १ ॥
यो रेवान् यो अमीवहा वसुवित् पुष्टिवर्धनः। स नः सिषक्तु यस्तुरः ॥ २ ॥
मा नः शंसो अररुषो धूर्तिः प्रणङ् मर्त्यस्य। रक्षा णो ब्रह्मणस्पते ॥ ३ ॥
स घा वीरो न रिष्यति यमिन्द्रो ब्रह्मणस्पतिः। सोमो हिनोति मर्त्यम् ॥ ४ ॥
त्वं तं ब्रह्मणस्पते सोम इन्द्रश्च मर्त्यम्। दक्षिणा पात्वंहसः ॥ ५ ॥

अथ पञ्चत्रिंशो वर्गः ॥ ३५ ॥

सदसस्पतिमद्भुतं प्रियमिन्द्रस्य काम्यम्। सनिं मेधामयासिषम् ॥ ६ ॥
यस्मादृते न सिध्यति यज्ञो विपश्चितश्चन। स धीनां योगमिन्वति ॥ ७ ॥
आदृध्नोति हविष्कृतिं प्राञ्चं कृणोत्यध्वरम्। होत्रा देवेषु गच्छति ॥ ८ ॥
नराशंसं सुधृष्टममपश्यं सप्रथस्तमम्। दिवो न सद्ममखसम् ॥ ९ ॥

[१९] एकोनविंशं सूक्तम्

ऋषिः—मेधातिथिः काण्वः ॥ देवता—अग्निर्मरुतश्च ॥ छन्दः—१, ३-८ गायत्री; २ निचृद्गायत्री; ९ पिपीलिकामध्यानिचृद्गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथ षट्त्रिंशो वर्गः ॥ ३६ ॥

प्रति त्यं चारुमध्वरं गोपीथाय प्र हूयसे। मरुद्भिरग्न आ गहि ॥ १ ॥
नहि देवो न मर्त्यो महस्तव क्रतुं परः। मरुद्भिरग्न आ गहि ॥ २ ॥
ये महो रजसो विदुर्विश्वे देवासो अद्रुहः। मरुद्भिरग्न आ गहि ॥ ३ ॥
य उग्रा अर्कमानृचुरनाधृष्टास ओजसा। मरुद्भिरग्न आ गहि ॥ ४ ॥
ये शुभ्रा घोरवर्पसः सुक्षत्रासो रिशादसः। मरुद्भिरग्न आ गहि ॥ ५ ॥

अथ सप्तत्रिंशो वर्गः ॥ ३७ ॥

ये नाकस्याधि रोचने दिवि देवास आसते। मरुद्भिरग्न आ गहि ॥ ६ ॥
य ईङ्खयन्ति पर्वतान् तिरः समुद्रमर्णवम्। मरुद्भिरग्न आ गहि ॥ ७ ॥
आ ये तन्वन्ति रश्मिभिस्तिरः समुद्रमोजसा। मरुद्भिरग्न आ गहि ॥ ८ ॥
अभि त्वा पूर्वपीतये सृजामि सोम्यं मधु। मरुद्भिरग्न आ गहि ॥ ९ ॥

अथ द्वितीयोऽध्यायः

[२०] विंशं सूक्तम्

ऋषिः—मेधातिथिः काण्वः ॥ देवता—ऋभवः ॥ छन्दः—१, २, ६, ७, गायत्री; ३ विराड्गायत्री; ४ निचृद्गायत्री; ५, ८ पिपीलिकामध्यानिचृद्गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथ प्रथमो वर्गः ॥ १ ॥

अयं देवाय जन्मने स्तोमो विप्रेभिरासया। अकारि रत्नधातमः ॥ १ ॥
य इन्द्राय वचोयुजा ततक्षुर्मनसा हरी। शमीभिर्यज्ञमाशत ॥ २ ॥
तक्षन्नासत्याभ्यां परिज्मानं सुखं रथम्। तक्षन्धेनुं सबर्दुघाम् ॥ ३ ॥
युवाना पितरा पुनः सत्यमन्त्रा ऋजूयवः। ऋभवो विष्ट्यक्रत ॥ ४ ॥
सं वो मदासो अग्मतेन्द्रेण च मरुत्वता। आदित्येभिश्च राजभिः ॥ ५ ॥

अथ द्वितीयो वर्गः ॥ २ ॥

उत त्यं चमसं नवं त्वष्टुर्देवस्य निष्कृतम्। अकर्त चतुरः पुनः ॥ ६ ॥
ते नो रत्नानि धत्तन त्रिरा साप्तानि सुन्वते। एकमेकं सुशस्तिभिः ॥ ७ ॥
अधारयन्त वह्नयोऽभजन्त सुकृत्यया। भागं देवेषु यज्ञियम् ॥ ८ ॥

[२१] एकविंशं सूक्तम्

ऋषिः—मेधातिथिः काण्वः ॥ देवता—इन्द्राग्नी ॥ छन्दः—१, ३, ४, ६ गायत्री; २ पिपीलिकामध्यानिचृद्गायत्री; ५ निचृद्गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथ तृतीयो वर्गः ॥ ३ ॥

इहेन्द्राग्नी उप ह्वये तयोरित्स्तोममुश्मसि। ता सोमं सोमपातमा ॥ १ ॥
ता यज्ञेषु प्र शंसतेन्द्राग्नी शुम्भता नरः। ता गायत्रेषु गायत ॥ २ ॥
ता मित्रस्य प्रशस्तय इन्द्राग्नी ता हवामहे। सोमपा सोमपीतये ॥ ३ ॥
उग्रा सन्ता हवामहु उपेदं सवनं सुतम्। इन्द्राग्नी एह गच्छताम् ॥ ४ ॥
ता महान्ता सदस्पती इन्द्राग्नी रक्ष उब्जतम्। अप्रजाः सन्त्वत्रिणः ॥ ५ ॥
तेन सत्येन जागृतमधि प्रचेतुने पदे। इन्द्राग्नी शर्म यच्छतम् ॥ ६ ॥

[२२] द्वाविंशं सूक्तम्

ऋषिः—मेधातिथिः काण्वः ॥ देवता—१-४ अश्विनौ; ५-८ सविता; ९, १० अग्निः; ११ देव्यः; १२ इन्द्राणीवरुणान्यग्राव्यः; १३, १४ द्यावापृथिव्यौ; १५ पृथिवी; १६ विष्णुर्देवो वा; १७-२१ विष्णुः ॥ छन्दः—१-३, ८, १२, १७, १८ पिपीलिकामध्यानिचृद्गायत्री; ४, ५, ७, ९-११, १३, १४, १६, २०, २१ गायत्री; ६, १९ निचृद्गायत्री; १५ विराड्गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अथ चतुर्थो वर्गः ॥ ४ ॥

प्रातर्युजा वि बोधयाश्विनावेह गच्छताम्। अस्य सोमस्य पीतये॥ १ ॥
या सुरथा रथीतमोभा देवा दिविस्पृशा। अश्विना ता हवामहे॥ २ ॥
या वां कशा मधुमत्यश्विना सूनृतावती। तया यज्ञं मिमिक्षतम्॥ ३ ॥
नहि वामस्ति दूरके यत्रा रथेन गच्छथः। अश्विना सोमिनो गृहम्॥ ४ ॥
हिरण्यपाणिमूतये सवितारमुप ह्वये। स चेत्ता देवता पदम्॥ ५ ॥

अथ पञ्चमो वर्गः ॥ ५ ॥

अपां नपातमवसे सवितारमुप स्तुहि। तस्य व्रतान्युश्मसि॥ ६ ॥
विभक्तारं हवामहे वसोश्चित्रस्य राधसः। सवितारं नृचक्षसम्॥ ७ ॥
सखाय आ नि षीदत सविता स्तोम्यो नु नः। दाता राधांसि शुम्भति॥ ८ ॥
अग्ने पत्नीरिहा वह देवानामुशतीरुप। त्वष्टारं सोमपीतये॥ ९ ॥
आ ग्ना अग्न इहावसे होत्रां यविष्ठ भारतीम्। वरूत्रीं धिषणां वह॥ १० ॥

अथ षष्ठो वर्गः ॥ ६ ॥

अभि नो देवीरवसा महः शर्मणा नृपत्नीः। अच्छिन्नपत्राः सचन्ताम्॥ ११ ॥
इहेन्द्राणीमुप ह्वये वरुणानीं स्वस्तये। अग्नायीं सोमपीतये॥ १२ ॥
मही द्यौः पृथिवी च न इमं यज्ञं मिमिक्षताम्। पिपृतां नो भरीमभिः॥ १३ ॥
तयोरिद् घृतवत्पयो विप्रा रिहन्ति धीतिभिः। गन्धर्वस्य ध्रुवे पदे॥ १४ ॥
स्योना पृथिवि भवानृक्षरा निवेशनी। यच्छा नः शर्म सप्रथः॥ १५ ॥

अथ सप्तमो वर्गः ॥ ७ ॥

अतो देवा अवन्तु नो यतो विष्णुर्विचक्रमे। पृथिव्याः सप्त धामभिः॥ १६ ॥
इदं विष्णुर्वि चक्रमे त्रेधा नि दधे पदम्। समूळ्हमस्य पांसुरे॥ १७ ॥
त्रीणि पदा वि चक्रमे विष्णुर्गोपा अदाभ्यः। अतो धर्माणि धारयन्॥ १८ ॥
विष्णोः कर्माणि पश्यत यतो व्रतानि पस्पशे। इन्द्रस्य युज्यः सखा॥ १९ ॥
तद्विष्णोः परमं पदं सदा पश्यन्ति सूरयः। दिवीव चक्षुराततम्॥ २० ॥
तद्विप्रासो विपन्यवो जागृवांसः समिन्धते। विष्णोर्यत्परमं पदम्॥ २१ ॥

[२३] त्रयोविंशं सूक्तम्

ऋषिः—मेधातिथिः काण्वः ॥ देवता—१ वायुः; २, ३ इन्द्रवायू; ४-६ मित्रावरुणौ; ७-९ इन्द्रो मरुत्वान्; १०-१२ विश्वेदेवाः; १३-१५ पूषा; १६-२२ आपः; २३, २४ अग्निः ॥ छन्दः—१-१८ गायत्री; १९ पुरउष्णिक्; २० अनुष्टुप्; २१ प्रतिष्ठागायत्री; २२-२४ अनुष्टुप् ॥ स्वरः—१-१८, २१ षड्जः; १९ ऋषभः; २०, २२-२४ गान्धारः ॥

अथ अष्टमो वर्गः ॥ ८ ॥

तीव्राः सोमास आ गह्याशीर्वन्तः सुता इमे। वायो तान्प्रस्थितान्पिब॥ १ ॥
उभा देवा दिविस्पृशेन्द्रवायू हवामहे। अस्य सोमस्य पीतये॥ २ ॥
इन्द्रवायू मनोजुवा विप्रा हवन्त ऊतये। सहस्राक्षा धियस्पती॥ ३ ॥
मित्रं वयं हवामहे वरुणं सोमपीतये। जज्ञाना पूतदक्षसा॥ ४ ॥
ऋतेन यावृतावृधावृतस्य ज्योतिषस्पती। ता मित्रावरुणा हुवे॥ ५ ॥

अथ नवमो वर्गः ॥ ९ ॥

वरुणः प्राविता भुवन्मित्रो विश्वाभिरूतिभिः। करतां नः सुराधसः॥ ६ ॥
मरुत्वन्तं हवामह इन्द्रमा सोमपीतये। सजूर्गणेन तृम्पतु॥ ७ ॥
इन्द्रज्येष्ठा मरुद्गणा देवासः पूषरातयः। विश्वे मम श्रुता हवम्॥ ८ ॥
हत वृत्रं सुदानव इन्द्रेण सहसा युजा। मा नो दुःशंस ईशत॥ ९ ॥
विश्वान्देवान्हवामहे मरुतः सोमपीतये। उग्रा हि पृश्निमातरः॥ १० ॥

अथ दशमो वर्गः ॥ १० ॥

जयतामिव तन्यतुर्मरुतामेति धृष्णुया। यच्छुभं याथना नरः॥ ११ ॥
हुस्काराद्विद्युत्स्पर्यतो जाता अवन्तु नः। मरुतो मृळयन्तु नः॥ १२ ॥
आ पूषञ्चित्रबर्हिषमाघृणे धरुणं दिवः। आजा नष्टं यथा पशुम्॥ १३ ॥
पूषा राजानमाघृणिरपगूळ्हं गुहा हितम्। अविन्दच्चित्रबर्हिषम्॥ १४ ॥
उतो स मह्यमिन्दुभिः षड्युक्ताँ अनुसेषिधत्। गोभिर्यवं न चर्कृषत्॥ १५ ॥

अथ एकादशो वर्गः ॥ ११ ॥

अम्बयो यन्त्यध्वभिर्जामयो अध्वरीयताम्। पृञ्चतीर्मधुना पयः॥ १६ ॥
अमूर्या उप सूर्ये याभिर्वा सूर्यः सह। ता नो हिन्वन्त्वध्वरम्॥ १७ ॥
अपो देवीरुप ह्वये यत्र गावः पिबन्ति नः। सिन्धुभ्यः कर्त्वं हविः॥ १८ ॥
अप्स्वन्तरमृतमप्सु भेषजमपामुत प्रशस्तये। देवा भवत वाजिनः॥ १९ ॥
अप्सु मे सोमो अब्रवीदन्तर्विश्वानि भेषजा।
अग्निं च विश्वशंभुवमापश्च विश्वभेषजीः॥ २० ॥

अथ द्वादशो वर्गः ॥ १२ ॥

आपः पृणीत भेषजं वरूथं तन्वे३ मम।
ज्योक् च सूर्यं दृशे॥ २१ ॥
इदमापः प्र वहत यत्किं च दुरितं मयि।
यद्वाहमभिदुद्रोह यद्वा शेप उतानृतम्॥ २२ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

आपो अद्यान्वचारिषं रसेन समगस्महि । पयस्वानग्न आ गहि तं मा सं सृज वर्चसा ॥ २३ ॥
सं माग्ने वर्चसा सृज सं प्रजया समायुषा । विद्युर्मे अस्य देवा इन्द्रो विद्यात्सह ऋषिभिः ॥ २४ ॥

षष्ठोऽनुवाकः [२४] चतुर्विंशं सूक्तम्

ऋषिः—शुनःशेप आजीगर्तिः कृत्रिमो वैश्वामित्रो देवरातः ॥ देवता—१ प्रजापतिः; २ अग्निः; ३-५ सविता भगो वा; ६-१५ वरुणः ॥ छन्दः—१, २, ६-१५ त्रिष्टुप्; ३-५ गायत्री ॥ स्वरः—१, २, ६-१५ धैवतः; ३-५ षड्जः ॥

अथ त्रयोदशो वर्गः ॥ १३ ॥

कस्य नूनं कतमस्यामृतानां मनामहे चारु देवस्य नाम । को नो मह्या अदितये पुनर्दात्पितरं च दृशेयं मातरं च ॥ १ ॥
अग्नेर्वयं प्रथमस्यामृतानां मनामहे चारु देवस्य नाम । स नो मह्या अदितये पुनर्दात्पितरं च दृशेयं मातरं च ॥ २ ॥
अभि त्वा देव सवितरीशानं वार्याणाम् । सदावन्भागमीमहे ॥ ३ ॥
यश्चिद्धि त इत्था भगः शशमानः पुरा निदः । अद्वेषो हस्तयोर्दधे ॥ ४ ॥
भगभक्तस्य ते वयमुदशेम तवावसा । मूर्धानं राय आरभे ॥ ५ ॥

अथ चतुर्दशो वर्गः ॥ १४ ॥

नहि ते क्षत्रं न सहो न मन्युं वयश्चनामी पतयन्त आपुः । नेमा आपो अनिमिषं चरन्तीर्न ये वातस्य प्रमिनन्त्यभ्वम् ॥ ६ ॥
अबुध्ने राजा वरुणो वनस्योर्ध्वं स्तूपं ददते पूतदक्षः । नीचीनाः स्थुरुपरि बुध्न एषामस्मे अन्तर्निहिताः केतवः स्युः ॥ ७ ॥
उरुं हि राजा वरुणश्चकार सूर्याय पन्थामन्वेतवा उ । अपदे पादा प्रतिधातवेऽकरुतापवक्ता हृदयाविधश्चित् ॥ ८ ॥
शतं ते राजन्भिषजः सहस्रमुर्वी गभीरा सुमतिष्टे अस्तु । बाधस्व दूरे निर्ऋतिं पराचैः कृतं चिदेनः प्र मुमुग्ध्यस्मत् ॥ ९ ॥
अमी य ऋक्षा निहतास उच्चा नक्तं ददृश्रे कुह चिद्दिवेयुः । अदब्धानि वरुणस्य व्रतानि विचाकशच्चन्द्रमा नक्तमेति ॥ १० ॥

अथ पञ्चदशो वर्गः ॥ १५ ॥

तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदा शास्ते यजमानो हविर्भिः । अहेळमानो वरुणेह बोध्युरुशंस मा न आयुः प्र मोषीः ॥ ११ ॥
तदिन्नक्तं तद्दिवा मह्यमाहुस्तदयं केतो हृद आ वि चष्टे । शुनःशेपो यमह्वद् गृभीतः सो अस्मान् राजा वरुणो मुमोक्तु ॥ १२ ॥
शुनःशेपो ह्यह्वद् गृभीतस्त्रिष्वादित्यं द्रुपदेषु बद्धः । अवैनं राजा वरुणः ससृज्याद्विद्वाँ अदब्धो वि मुमोक्तु पाशान् ॥ १३ ॥
अव ते हेळो वरुण नमोभिरव यज्ञेभिरीमहे हविर्भिः । क्षयन्नस्मभ्यमसुर प्रचेता राजन्नेनांसि शिश्रथः कृतानि ॥ १४ ॥
उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं वि मध्यमं श्रथाय । अथा वयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम ॥ १५ ॥

[२५] पञ्चविंशं सूक्तम्

ऋषिः—शुनःशेप आजीगर्तिः ॥ देवता—वरुणः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथ षोडशो वर्गः ॥ १६ ॥

यच्चिद्धि ते विशो यथा प्र देव वरुण व्रतम् । मिनीमसि द्यविद्यवि ॥ १ ॥
मा नो वधाय हत्नवे जिहीळानस्य रीरधः । मा हृणानस्य मन्यवे ॥ २ ॥
वि मृळीकाय ते मनो रथीरश्वं न सन्दितम् । गीर्भिर्वरुण सीमहि ॥ ३ ॥
परा हि मे विमन्यवः पतन्ति वस्यइष्टये । वयो न वसतीरुप ॥ ४ ॥
कदा क्षत्रश्रियं नरमा वरुणं करामहे । मृळीकायोरुचक्षसम् ॥ ५ ॥

अथ सप्तदशो वर्गः ॥ १७ ॥

तदित्समानमाशाते वेनन्ता न प्र युच्छतः । धृतव्रताय दाशुषे ॥ ६ ॥
वेदा यो वीनां पदमन्तरिक्षेण पतताम् । वेद नावः समुद्रियः ॥ ७ ॥
वेद मासो धृतव्रतो द्वादश प्रजावतः । वेदा य उपजायते ॥ ८ ॥
वेद वातस्य वर्तनिमुरोर्ऋष्वस्य बृहतः । वेदा ये अध्यासते ॥ ९ ॥
नि षसाद धृतव्रतो वरुणः पस्त्यास्वा । साम्राज्याय सुक्रतुः ॥ १० ॥

अथ अष्टादशो वर्गः ॥ १८ ॥

अतो विश्वान्यद्भुता चिकित्वाँ अभि पश्यति । कृतानि या च कर्त्वा ॥ ११ ॥
स नो विश्वाहा सुक्रतुरादित्यः सुपथा करत् । प्र ण आयूंषि तारिषत् ॥ १२ ॥
बिभ्रद् द्रापिं हिरण्ययं वरुणो वस्त निर्णिजम् । परि स्पशो नि षेदिरे ॥ १३ ॥
न यं दिप्सन्ति दिप्सवो न द्रुह्वाणो जनानाम् । न देवमभिमातयः ॥ १४ ॥
उत यो मानुषेष्वा यशश्चक्रे असाम्या । अस्माकमुदरेष्वा ॥ १५ ॥

अथ एकोनविंशो वर्गः ॥ १९ ॥

परा मे यन्ति धीतयो गावो न गव्यूतीरनु । इच्छन्तीरुरुचक्षसम् ॥ १६ ॥
सं नु वोचावहै पुनर्यतो मे मध्वाभृतम् । होतेव क्षदसे प्रियम् ॥ १७ ॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

दर्शं नु विश्वदर्शतं दर्शं रथमधि क्षमि। एता जुषत मे गिरः॥ १८॥
इमं मे वरुण श्रुधी हवमद्या च मृळय। त्वामवस्युरा चके॥ १९॥
त्वं विश्वस्य मेधिर दिवश्च ग्मश्च राजसि। स यामनि प्रति श्रुधि॥ २०॥
उदुत्तमं मुमुग्धि नो वि पाशं मध्यमं चृत। अवाधमानि जीवसे॥ २१॥

[२६] षड्विंशं सूक्तम्

ऋषिः—शुनःशेप आजीगर्तिः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—१, ८, ९ आर्चीउष्णिक्; २, ६ निचृद्गायत्री; ३ प्रतिष्ठागायत्री; ४, १० गायत्री; ५, ७ विराड् गायत्री॥ स्वरः—१, ८, ९ ऋषभः; २-७, १० षड्जः॥

अथ विंशो वर्गः॥ २०॥
वसिष्वा हि मियेध्य वस्त्राण्यूर्जां पते। सेमं नो अध्वरं यज॥ १॥
नि नो होता वरेण्यः सदा यविष्ठ मन्मभिः। अग्ने दिवित्मता वचः॥ २॥
आ हि ष्मा सूनवे पितापिर्यजत्यापये। सखा सख्ये वरेण्यः॥ ३॥
आ नो बर्ही रिशादसो वरुणो मित्रो अर्यमा। सीदन्तु मनुषो यथा॥ ४॥
पूर्व्यं होतरस्य नो मन्दस्व सख्यस्य च। इमा उ षु श्रुधी गिरः॥ ५॥

अथ एकविंशो वर्गः॥ २१॥
यच्चिद्धि शश्वता तना देवंदेवं यजामहे। त्वे इद्धूयते हविः॥ ६॥
प्रियो नो अस्तु विश्पतिर्होता मन्द्रो वरेण्यः। प्रियाः स्वग्नयो वयम्॥ ७॥
स्वग्नयो हि वार्यं देवासो दधिरे च नः। स्वग्नयो मनामहे॥ ८॥
अथा न उभयेषाममृत मर्त्यानाम्। मिथः सन्तु प्रशस्तयः॥ ९॥
विश्वेभिरग्ने अग्निभिरिमं यज्ञमिदं वचः। चनो धाः सहसो यहो॥ १०॥

[२७] सप्तविंशं सूक्तम्

ऋषिः—शुनःशेप आजीगर्तिः॥ देवता—१-१२ अग्निः; १३ विश्वे देवाः॥ छन्दः—१-१२ गायत्री; १३ त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१-१२ षड्जः; १३ धैवतः॥

अथ द्वाविंशो वर्गः॥ २२॥
अश्वं न त्वा वारवन्तं वन्दध्या अग्निं नमोभिः। सम्राजन्तमध्वराणाम्॥ १॥
स घा नः सूनुः शवसा पृथुप्रगामा सुशेवः। मीढ्वाँ अस्माकं बभूयात्॥ २॥
स नो दूराच्चासाच्च नि मर्त्यादघायोः। पाहि सदमिद्विश्वायुः॥ ३॥
इममू षु त्वमस्माकं सुनिं गायत्रं नव्यांसम्। अग्ने देवेषु प्र वोचः॥ ४॥
आ नो भज परमेष्वा वाजेषु मध्यमेषु। शिक्षा वस्वो अन्तमस्य॥ ५॥

अथ त्रयोविंशो वर्गः॥ २३॥
विभक्तासि चित्रभानो सिन्धोरूर्मा उपाक आ। सद्यो दाशुषे क्षरसि॥ ६॥
यमग्ने पृत्सु मर्त्यमवा वाजेषु यं जुनाः। स यन्ता शश्वतीरिषः॥ ७॥
नकिरस्य सहन्त्य पर्येता कयस्य चित्। वाजो अस्ति श्रवाय्यः॥ ८॥
स वाजं विश्वचर्षणिरवद्भिरस्तु तरुता। विप्रेभिरस्तु सनिता॥ ९॥
जराबोध तद्विविड्ढि विशेविशे यज्ञियाय। स्तोमं रुद्राय दृशीकम्॥ १०॥

अथ चतुर्विंशो वर्गः॥ २४॥
स नो महाँ अनिमानो धूमकेतुः पुरुश्चन्द्रः। धियेवाजाय हिन्वतु॥ ११॥
स रेवाँइव विश्पतिर्दैव्यः केतुः शृणोतु नः। उक्थैरग्निर्बृहद्भानुः॥ १२॥
नमो महद्भ्यो नमो अर्भकेभ्यो नमो युवभ्यो नम आशिनेभ्यः।
यजाम देवान्यदि शक्नवाम मा ज्यायसः शंसमा वृक्षि देवाः॥ १३॥

[२८] अष्टाविंशं सूक्तम्

ऋषिः—शुनःशेप आजीगर्तिः॥ देवता—इन्द्रयज्ञसोमाः॥ छन्दः—१-६ अनुष्टुप्; ७-९ गायत्री॥ स्वरः—१-६ गान्धारः; ७-९ षड्जः॥

अथ पञ्चविंशो वर्गः॥ २५॥
यत्र ग्रावा पृथुबुध्न ऊर्ध्वो भवति सोतवे।
उलूखलसुतानामवेद्विन्द्र जल्गुलः॥ १॥
यत्र द्वाविव जघनाधिषवण्या कृता।
उलूखलसुतानामवेद्विन्द्र जल्गुलः॥ २॥
यत्र नार्यपच्यवमुपच्यवं च शिक्षते।
उलूखलसुतानामवेद्विन्द्र जल्गुलः॥ ३॥
यत्र मन्थां विबध्नते रश्मीन्यमितवाइव।
उलूखलसुतानामवेद्विन्द्र जल्गुलः॥ ४॥
यच्चिद्धि त्वं गृहेगृहे उलूखलक युज्यसे।
इह द्युमत्तमं वद जयतामिव दुन्दुभिः॥ ५॥

अथ षड्विंशो वर्गः॥ २६॥
उत स्म ते वनस्पते वातो वि वात्यग्रमित्।
अथो इन्द्राय पातवे सुनु सोममुलूखल॥ ६॥
आयजी वाजसातमा ता ह्युच्चा विजर्भृतः।
हरी इवान्धांसि बप्सता॥ ७॥
ता नो अद्य वनस्पती ऋष्वावृष्वेभिः सोतृभिः।
इन्द्राय मधुमत्सुतम्॥ ८॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उच्छिष्टं चम्वोर्भर सोमं पवित्र आ सृज ।
नि धेहि गोरधि त्वचि ॥ ९ ॥

[२९] एकोनत्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—शुनःशेप आजीगर्तिः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—पङ्क्तिः ॥ स्वरः—पञ्चमः ॥

अथ सप्तविंशो वर्गः ॥ २७ ॥

यच्चिद्धि सत्य सोमपा अनाशस्ताइव स्मसि ।
आ तू न इन्द्र शंसय गोष्वश्वेषु शुभ्रिषु सहस्त्रेषु तुवीमघ ॥ १ ॥
शिप्रिन्वाजानां पते शचीवस्तव दंसना ।
आ तू न इन्द्र शंसय गोष्वश्वेषु शुभ्रिषु सहस्त्रेषु तुवीमघ ॥ २ ॥
नि ष्वापया मिथूदृशा सस्तामबुध्यमाने ।
आ तू न इन्द्र शंसय गोष्वश्वेषु शुभ्रिषु सहस्त्रेषु तुवीमघ ॥ ३ ॥
ससन्तु त्या अरातयो बोधन्तु शूर रातयः ।
आ तू न इन्द्र शंसय गोष्वश्वेषु शुभ्रिषु सहस्त्रेषु तुवीमघ ॥ ४ ॥
समिन्द्र गर्दभं मृण नुवन्तं पापयामुया ।
आ तू न इन्द्र शंसय गोष्वश्वेषु शुभ्रिषु सहस्त्रेषु तुवीमघ ॥ ५ ॥
पताति कुण्डृणाच्या दूरं वातो वनादधि ।
आ तू न इन्द्र शंसय गोष्वश्वेषु शुभ्रिषु सहस्त्रेषु तुवीमघ ॥ ६ ॥
सर्वं परिक्रोशं जहि जम्भया कृकदाश्वम् ।
आ तू न इन्द्र शंसय गोष्वश्वेषु शुभ्रिषु सहस्त्रेषु तुवीमघ ॥ ७ ॥

[३०] त्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—शुनःशेप आजीगर्तिः ॥ देवता—१-१६ इन्द्रः; १७-१९ अश्विनौ; २०, २१, २२ उषाः ॥ छन्दः—१-१०, १२-१५, १७-२२ गायत्री; ११ पादनिचृद् गायत्री; १६ त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१-१५, १७-२२ षड्जः; १६ धैवतः ॥

अथ अष्टाविंशो वर्गः ॥ २८ ॥

आ व इन्द्रं क्रिविं यथा वाजयन्तः शतक्रतुम् । मंहिष्ठं सिञ्च इन्दुभिः ॥ १ ॥
शतं वा यः शुचीनां सहस्त्रं वा समाशिराम् । एदु निम्नं न रीयते ॥ २ ॥
सं यन्मदाय शुष्मिण एना ह्यस्योदरे । समुद्रो न व्यचो दधे ॥ ३ ॥
अयमु ते समतसि कपोतइव गर्भधिम् । वचस्तच्चिन्न ओहसे ॥ ४ ॥
स्तोत्रं राधानां पते गिर्वाहो वीर यस्य ते । विभूतिरस्तु सूनृता ॥ ५ ॥

अथ एकोनत्रिंशो वर्गः ॥ २९ ॥

ऊर्ध्वस्तिष्ठा न ऊतयेऽस्मिन्वाजे शतक्रतो । समन्येषु ब्रवावहै ॥ ६ ॥
योगेयोगे तवस्तरं वाजेवाजे हवामहे । सखाय इन्द्रमूतये ॥ ७ ॥
आ घा गमद्यदि श्रवत्सहस्त्रिणीभिरूतिभिः । वाजेभिरुप नो हवम् ॥ ८ ॥
अनु प्रत्नस्यौकसो हुवे तुविप्रतिं नरम् । यं ते पूर्वं पिता हुवे ॥ ९ ॥
तं त्वा वयं विश्ववारा शास्महे पुरुहूत । सखे वसो जरितृभ्यः ॥ १० ॥

अथ त्रिंशो वर्गः ॥ ३० ॥

अस्माकं शिप्रिणीनां सोमपाः सोमपाव्नाम् । सखे वज्रिन्त्सखीनाम् ॥ ११ ॥
तथा तदस्तु सोमपाः सखे वज्रिन्तथा कृणु । यथा त उश्मसीष्टये ॥ १२ ॥
रेवतीर्नः सधमाद इन्द्रे सन्तु तुविवाजाः । क्षुमन्तो याभिर्मदेम ॥ १३ ॥
आ घ त्वावान्त्मनामः स्तोतृभ्यो धृष्णवियानः । ऋणोरक्षं न चक्र्योः ॥ १४ ॥
आ यदुवः शतक्रतवा कामं जरितृणाम् । ऋणोरक्षं न शचीभिः ॥ १५ ॥

अथ एकत्रिंशो वर्गः ॥ ३१ ॥

शश्वदिन्द्रः पोप्रथद्भिर्जिगाय नानदद्भिः शाश्वसद्भिर्धनानि ।
स नो हिरण्यरथं दंसनावान्त्स नः सनिता सनये स नोऽदात् ॥ १६ ॥
आश्विनावश्वावत्येषा यातं शवीरया । गोमद्दस्रा हिरण्यवत् ॥ १७ ॥
समानयोजनो हि वां रथो दस्रावमर्त्यः । समुद्रे अश्विनेयते ॥ १८ ॥
न्यघ्न्यस्य मूर्धनि चक्रं रथस्य येमथुः । परि द्यामन्यदीयते ॥ १९ ॥
कस्त उषः कधप्रिये भुजे मर्तो अमर्त्ये । कं नक्षसे विभावरि ॥ २० ॥
वयं हि ते अमन्मह्यान्तादा पराकात् । अश्वे न चित्रे अरुषि ॥ २१ ॥
त्वं त्येभिरा गहि वाजेभिर्दुहितर्दिवः । अस्मे रयिं नि धारय ॥ २२ ॥

सप्तमोऽनुवाकः [३१] एकत्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—हिरण्यस्तूप आङ्गिरसः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१-७, ९-१५, १७ जगती; ८, १६, १८ त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१-७, ९-१५, १७ निषादः; ८, १६, १८ धैवतः ॥

अथ द्वात्रिंशो वर्गः ॥ ३२ ॥

त्वमग्ने प्रथमो अङ्गिरा ऋषिर्देवो देवानामभवः शिवः सखा ।
तव व्रते कवयो विद्मनापसोऽजायन्त मरुतो भ्राजदृष्टयः ॥ १ ॥
त्वमग्ने प्रथमो अङ्गिरस्तमः कविर्देवानां परि भूषसि व्रतम् ।
विभुर्विश्वस्मै भुवनाय मेधिरो द्विमाता शयुः कतिधा चिदायवे ॥ २ ॥
त्वमग्ने प्रथमो मातरिश्वन आविर्भव सुक्रतूया विवस्वते ।
अरेजेतां रोदसी होतृवूर्येऽसघ्नोर्भारमयजो महो वसो ॥ ३ ॥
त्वमग्ने मनवे द्यामवाशयः पुरूरवसे सुकृते सुकृत्तरः ।
श्वात्रेण यत्पित्रोर्मुच्यसे पर्या त्वा पूर्वमनयन्नापरं पुनः ॥ ४ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

त्वमग्ने वृषभः पुष्टिवर्धन उद्यतस्रुचे भवसि श्रवाय्यः।
य आहुतिं परि वेदा वषट्कृतिमेकायुरग्रे विश आविवाससि ॥ ५ ॥

अथ त्रयस्त्रिंशो वर्गः ॥ ३३ ॥

त्वमग्ने वृजिनवर्तनिं नरं सक्मन्पिपर्षि विदथे विचर्षणे।
यः शूरसाता परितक्म्ये धने दभ्रेभिश्चित्समृता हंसि भूयसः ॥ ६ ॥
त्वं तमग्ने अमृतत्व उत्तमे मर्तं दधासि श्रवसे दिवेदिवे।
यस्तातृषाण उभयाय जन्मने मयः कृणोषि प्रय आ च सूरये ॥ ७ ॥
त्वं नो अग्ने सनये धनानां यशसं कारुं कृणुहि स्तवानः।
ऋध्याम कर्मापसा नवेन देवैर्द्यावापृथिवी प्रावतं नः ॥ ८ ॥
त्वं नो अग्ने पित्रोरुपस्थ आ देवो देवेष्वनवद्य जागृविः।
तनूकृद्बोधि प्रमतिश्च कारवे त्वं कल्याण वसु विश्वमोपिषे ॥ ९ ॥
त्वमग्ने प्रमतिस्त्वं पितासि नस्त्वं वयस्कृत्तव जामयो वयम्।
सं त्वा रायः शतिनः सं सहस्त्रिणः सुवीरं यन्ति व्रतपामदाभ्य ॥ १० ॥

अथ चतुस्त्रिंशो वर्गः ॥ ३४ ॥

त्वामग्ने प्रथममायुमायवे देवा अकृण्वन्नहुषस्य विश्पतिम् ।
इळामकृण्वन्मनुषस्य शासनीं पितुर्यत्पुत्रो ममकस्य जायते ॥ ११ ॥
त्वं नो अग्ने तव देव पायुभिर्मघोनो रक्ष तन्वश्च वन्द्य ।
त्राता तोकस्य तनये गवामस्यनिमेषं रक्षमाणस्तव व्रते ॥ १२ ॥
त्वमग्ने यज्यवे पायुरन्तरोऽनिषङ्गाय चतुरक्ष इध्यसे ।
यो रातहव्योऽवृकाय धायसे कीरेश्चिन्मन्त्रं मनसा वनोषि तम् ॥ १३ ॥
त्वमग्न उरुशंसाय वाघते स्पार्हं यद्रेक्णः परमं वनोषि तत् ।
आध्रस्य चित्प्रमतिरुच्यसे पिता प्र पाकं शास्सि प्रदिशो विदुष्टरः ॥ १४ ॥
त्वमग्ने प्रयतदक्षिणं नरं वर्मेव स्यूतं परि पासि विश्वतः ।
स्वादुक्षद्मा यो वसतौ स्योनकृज्जीवयाजं यजते सोपमा दिवः ॥ १५ ॥

अथ पञ्चत्रिंशो वर्गः ॥ ३५ ॥

इमामग्ने शरणिं मीमृषो न इममध्वानं यमगाम दूरात् ।
आपिः पिता प्रमतिः सोम्यानां भृमिरस्यृषिकृन्मर्त्यानाम् ॥ १६ ॥
मनुष्वदग्ने अङ्गिरस्वदङ्गिरो ययातिवत्सदने पूर्ववच्छुचे ।
अच्छ याह्या वहा दैव्यं जनमा सादय बर्हिषि यक्षि च प्रियम् ॥ १७ ॥
एतेनाग्ने ब्रह्मणा वावृधस्व शक्तौ वा यत्ते चकृमा विदा वा।
उत प्र णेष्यभि वस्यो अस्मान्त्सं नः सृज सुमत्या वाजवत्या ॥ १८ ॥

[३२] द्वात्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—हिरण्यस्तूप आङ्गिरसः ॥ देवता—इन्द्रः ॥
छन्दः—त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

अथ षट्त्रिंशो वर्गः ॥ ३६ ॥

इन्द्रस्य नु वीर्याणि प्र वोचं यानि चकार प्रथमानि वज्री ।
अहन्नहिमन्वपस्ततर्द प्र वक्षणा अभिनत्पर्वतानाम् ॥ १ ॥
अहन्नहिं पर्वते शिश्रियाणं त्वष्टास्मै वज्रं स्वर्यं ततक्ष ।
वाश्राइव धेनवः स्यन्दमाना अञ्जः समुद्रमव जग्मुरापः ॥ २ ॥
वृषायमाणोऽवृणीत सोमं त्रिकद्रुकेष्वपिबत्सुतस्य ।
आ सायकं मघवादत्त वज्रमहन्नेनं प्रथमजामहीनाम् ॥ ३ ॥
यदिन्द्राहन्प्रथमजामहीनामान्मायिनाममिनाः प्रोत मायाः ।
आत्सूर्यं जनयन्द्यामुषासं तादीत्ना शत्रुं न किला विवित्से ॥ ४ ॥
अहन्वृत्रं वृत्रतरं व्यंसमिन्द्रो वज्रेण महता वधेन ।
स्कन्धांसीव कुलिशेना विवृक्णाहिः शयत उपपृक्पृथिव्याः ॥ ५ ॥

अथ सप्तत्रिंशो वर्गः ॥ ३७ ॥

अयोद्धेव दुर्मद आ हि जुह्वे महावीरं तुविबाधमृजीषम्।
नातारीदस्य समृतिं वधानां सं रुजानाः पिपिष इन्द्रशत्रुः ॥ ६ ॥
अपादहस्तो अपृतन्यदिन्द्रमास्य वज्रमधि सानौ जघान।
वृष्णो वध्रिः प्रतिमानं बुभूषन्पुरुत्रा वृत्रो अशयद्व्यस्तः ॥ ७ ॥
नदं न भिन्नममुया शयानं मनो रुहाणा अति यन्त्यापः।
याश्चिद्वृत्रो महिना पर्यतिष्ठत्तासामहिः पत्सुतः शीर्बभूव ॥ ८ ॥
नीचावया अभवद् वृत्रपुत्रेन्द्रो अस्या अव वधर्जभार।
उत्तरा सूरधरः पुत्र आसीदानुः शये सहवत्सा न धेनुः ॥ ९ ॥
अतिष्ठन्तीनामनिवेशनानां काष्ठानां मध्ये निहितं शरीरम्।
वृत्रस्य निण्यं वि चरन्त्यापो दीर्घं तम आशयदिन्द्रशत्रुः ॥ १० ॥

अथ अष्टात्रिंशो वर्गः ॥ ३८ ॥

दासपत्नीरहिगोपा अतिष्ठन्निरुद्धा आपः पणिनेव गावः।
अपां बिलमपिहितं यदासीद् वृत्रं जघन्वाँ अप तद्ववार ॥ ११ ॥
अश्व्यो वारो अभवस्तदिन्द्र सृके यत्त्वा प्रत्यहन्देव एकः।
अजयो गा अजयः शूर सोममवासृजः सर्तवे सप्त सिन्धून् ॥ १२ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नास्मै विद्युन्न तन्यतुः सिषेध न यां मिहमकिरद्ध्रादुनिं च।
इन्द्रश्च यद्युयुधाते अहिश्चोतापरीभ्यो मघवा वि जिग्ये॥ १३॥
अहेर्यातारं कमपश्य इन्द्र हृदि यत्ते जघ्नुषो भीरगच्छत्।
नवं च यन्नवतिं च स्रवन्तीः श्येनो न भीतो अतरो रजांसि॥ १४॥
इन्द्रो यातोऽवसितस्य राजा शमस्य च शृङ्गिणो वज्रबाहुः।
सेदु राजा क्षयति चर्षणीनामरान्न नेमिः परि ता बभूव॥ १५॥

अथ तृतीयोऽध्यायः

[३३] त्रयस्त्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—हिरण्यस्तूप आङ्गिरसः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१, २, ४, ८, ९, १२, १३ निचृत्त्रिष्टुप्; ३, ६, १० त्रिष्टुप्; ५, ७, ११ विराट्त्रिष्टुप्; १४, १५ भुरिक्पङ्क्तिः॥ स्वरः—१-१३ धैवतः; १४, १५ पञ्चमः॥

अथ प्रथमो वर्गः॥ १॥

एतायामोप गव्यन्त इन्द्रमस्माकं सु प्रमतिं वावृधाति।
अनामृणः कुविदादस्य रायो गवां केतं परमावर्जते नः॥ १॥
उपेदहं धनदामप्रतीतं जुष्टां न श्येनो वसतिं पतामि।
इन्द्रं नमस्यन्नुपमेभिरर्कैर्यः स्तोतृभ्यो हव्यो अस्ति यामन्॥ २॥
नि सर्वसेन इषुधीँरसक्त समर्यो गा अजति यस्य वष्टि।
चोष्कूयमाण इन्द्र भूरि वामं मा पणिर्भूरस्मदधि प्रवृद्ध॥ ३॥
वधीर्हि दस्युं धनिनं घनेनँ एकश्चरन्नुपशाकेभिरिन्द्र।
धनोरधि विषुणक्ते व्यायन्नयज्वानः सनकाः प्रेतिमीयुः॥ ४॥
परा चिच्छीर्षा ववृजुस्त इन्द्रायज्वानो यज्वभिः स्पर्धमानाः।
प्र यद्दिवो हरिवः स्थातरुग्र निरव्रताँ अधमो रोदस्योः॥ ५॥

अथ द्वितीयो वर्गः॥ २॥

अयुयुत्सन्ननवद्यस्य सेनामयातयन्त क्षितयो नवग्वाः।
वृषायुधो न वध्रयो निरष्टाः प्रवद्भिरिन्द्राच्चितयन्त आयन्॥ ६॥
त्वमेतान् रुदतो जक्षतश्चायोधयो रजस इन्द्र पारे।
अवादहो दिव आ दस्युमुच्चा प्र सुन्वतः स्तुवतः शंसमावः॥ ७॥
चक्राणासः परीणहं पृथिव्या हिरण्येन मणिना शुम्भमानाः।
न हिन्वानासस्तितिरुस्त इन्द्रं परि स्पशो अदधात्सूर्येण॥ ८॥
परि यदिन्द्र रोदसी उभे अबुभोजीर्महिना विश्वतः सीम्।
अमन्यमानाँ अभि मन्यमानैर्निर्ब्रह्मभिरधमो दस्युमिन्द्र॥ ९॥
न ये दिवः पृथिव्या अन्तमापुर्न मायाभिर्धनदां पर्यभूवन्।
युजं वज्रँ वृषभश्चक्र इन्द्रो निर्ज्योतिषा तमसो गा अदुक्षत्॥ १०॥

अथ तृतीयो वर्गः॥ ३॥

अनु स्वधामक्षरन्नापो अस्यावर्धत मध्य आ नाव्यानाम्।
सध्रीचीनेन मनसा तमिन्द्र ओजिष्ठेन हन्मनाहन्नभि द्यून्॥ ११॥
न्याविध्यदिलीबिशस्य दृळ्हा वि शृङ्गिणमभिनच्छुष्णमिन्द्रः।
यावत्तरो मघवन्यावदोजो वज्रेण शत्रुमवधीः पृतन्युम्॥ १२॥
अभि सिध्मो अजिगादस्य शत्रून्वि तिग्मेन वृषभेणा पुरोऽभेत्।
सं वज्रेणासृजद् वृत्रमिन्द्रः प्र स्वां मतिमतिरच्छाशदानः॥ १३॥
आवः कुत्समिन्द्र यस्मिञ्चाकन्प्रावो युध्यन्तं वृषभं दशद्युम्।
शफच्युतो रेणुर्नक्षत द्यामुच्छ्वैत्रेयो नृषाह्याय तस्थौ॥ १४॥
आवः शमं वृषभं तुग्र्यासु क्षेत्रजेषे मघवञ्छ्वित्र्यं गाम्।
ज्योक् चिदत्र तस्थिवांसो अक्रञ्छत्रूयतामधरा वेदनाकः॥ १५॥

[३४] चतुस्त्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—हिरण्यस्तूप आङ्गिरसः॥ देवता—अश्विनौ॥ छन्दः—१, ६ विराड्जगती; २, ३, ७, ८ निचृज्जगती; ५, १०, ११ जगती; ४ भुरिक्त्रिष्टुप्; १२ निचृत्त्रिष्टुप्; ९ भुरिक्पङ्क्तिः॥ स्वरः—१-३, ५-८, १०, ११ निषादः; ४, १२ धैवतः; ९ पञ्चमः॥

अथ चतुर्थो वर्गः॥ ४॥

त्रिश्चिन्नो अद्या भवतं नवेदसा विभुर्वां याम उत रातिरश्विना।
युवोर्हि यन्त्रं हिम्येव वाससोऽभ्यायंसेन्या भवतं मनीषिभिः॥ १॥
त्रयः पवयो मधुवाहने रथे सोमस्य वेनामनु विश्व इद्विदुः।
त्रयः स्कम्भासः स्कभितास आरभे त्रिर्नक्तं याथस्त्रिर्वश्विना दिवा॥ २॥
समाने अहन्त्रिरवद्यगोहना त्रिरद्य यज्ञं मधुना मिमिक्षतम्।
त्रिर्वाजवतीरिषो अश्विना युवं दोषा अस्मभ्यमुषसश्च पिन्वतम्॥ ३॥
त्रिर्वर्तिर्यातं त्रिरनुव्रते जने त्रिः सुप्राव्ये त्रेधेव शिक्षतम्।
त्रिर्नान्द्यं वहतमश्विना युवं त्रिः पृक्षो अस्मे अक्षरेव पिन्वतम्॥ ४॥
त्रिर्नो रयिं वहतमश्विना युवं त्रिर्देवताता त्रिरुतावतं धियः।
त्रिः सौभगत्वं त्रिरुत श्रवांसि नस्त्रिष्ठं वां सूरे दुहिता रुहद्रथम्॥ ५॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

त्रिर्नो॑ अश्विना दि॒व्यानि॑ भेष॒जा त्रिः पार्थि॑वानि॒ त्रिरु॑ दत्तमद्भ्यः।
ओ॒मानं॑ शं॒योर्मम॑काय सूनवे॒ त्रिधा॑तु॒ शर्म॑ वहतं शुभस्पती॥ ६॥

अथ पञ्चमो वर्गः॥ ५॥

त्रिर्नो॑ अश्विना यज॒ता दि॒वेदि॑वे॒ परि॑ त्रिधातु॒ पृथि॒वीम॑शायतम्।
ति॒स्रो नास॑त्या॒ रथ्या॑ परा॒वत॑ आ॒त्मेव॑ वातः॒ स्वस॑राणि गच्छतम्॥ ७॥
त्रिर॑श्विना सिन्धु॒भिः स॒प्तमा॑तृभि॒स्त्रय॑ आहा॒वास्ये॑धा हु॒विष्कृ॑तम्।
ति॒स्रः पृ॑थि॒वीरु॒परि॑ प्र॒वा दि॒वो नाकं॑ रक्षेथे द्यु॒भिर॒क्तुभि॒र्हित॑म्॥ ८॥
क्व॑१॑ त्री च॒क्रा त्रि॒वृतो॒ रथ॑स्य॒ क्व॑१॑ त्रयो॑ वन्धु॒रो ये स॑नी॒ळाः।
क॒दा योगो॑ वा॒जिनो॒ रास॑भस्य॒ येन॑ य॒ज्ञं नास॑त्योप॒या॑थः॥ ९॥
आ नास॑त्या गच्छतं हू॒यते॑ ह॒विर्मध्वः॑ पिबतं मधु॒पेभि॒रास॑भिः।
यु॒वोर्हि पूर्वं॑ सवि॒तोष॒सो॒ रथ॑मृताय॒ चित्रं॑ घृतव॒न्त॑मिष्यति॥ १०॥
आ नास॑त्या त्रि॒भिरे॑काद॒शैरि॒ह दे॒वेभि॑र्यातं मधु॒पेय॑मश्विना।
प्रायु॒स्तारि॑ष्टं॒ नी रपां॑सि मृक्षतं॒ सेध॑तं॒ द्वेषो॒ भव॑तं सचा॒भुवा॑॥ ११॥
आ नो॑ अश्विना त्रि॒वृता॒ रथे॑ना॒र्वाञ्चं॑ र॒यिं व॑हतं सु॒वीर॑म्।
शृ॒ण्वन्ता॑ वा॒मव॑से जोहवीमि वृ॒धे च॑ नो भवतं वाज॒सातौ॑॥ १२॥

[३५] पञ्चत्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—हिरण्यस्तूप आङ्गिरसः॥ देवता—१ अग्निर्मित्रावरुणौ, रात्रिः, सविता; २-११ सविता॥ छन्दः—१ विराड्जगती; २, ५, १०, ११ विराट्त्रिष्टुप्; ३, ४, ६ त्रिष्टुप्; ७, ८ भुरिक्पङ्क्तिः; ९ निचृज्जगती॥ स्वरः—१, ९ निषादः; २-६, १०, ११ धैवतः; ७, ८ पञ्चमः॥

अथ षष्ठो वर्गः॥ ६॥

ह्वया॒म्यग्निं प्र॑थ॒मं स्व॒स्तये॒ ह्वया॑मि मि॒त्रावरु॑णावि॒हाव॑से।
ह्वया॑मि॒ रात्रीं॑ जग॒तो नि॒वेश॑नीं॒ ह्वया॑मि दे॒वं स॑वि॒तार॑मू॒तये॑॥ १॥
आ कृ॒ष्णेन॒ रज॑सा॒ वर्त॑मानो निवे॒शय॑न्नमृतं॒ मर्त्यं॑ च।
हिर॑ण्ययेन सवि॒ता रथे॒ना दे॒वो या॑ति॒ भुव॑नानि॒ पश्य॑न्॥ २॥
याति॑ दे॒वः प्र॒वता॒ यात्यु॒द्वता॒ याति॑ शु॒भ्राभ्यां॑ यज॒तो हरि॑भ्याम्।
आ दे॒वो या॑ति सवि॒ता प॑रा॒वतोऽप॒ विश्वा॑ दुरि॒ता बा॑धमानः॥ ३॥
अ॒भीवृ॑तं कृ॒शनै॒र्विश्व॑रूपं॒ हिर॑ण्यशम्यं॑ यज॒तो बृ॒हन्त॑म्।
आस्था॒द्रथं॑ सविता चि॒त्रभा॑नुः कृ॒ष्णा रजां॑सि तवि॒षीं द॑धा॒नः॥ ४॥
वि जना॒ञ्छ्याव॑ाः शि॒तिपा॑दो॒ अख्य॒न्रथं॑ हिर॒ण्यप्र॑उगं॒ वह॑न्तः।
शश्व॒द्विशः॑ सवि॒तुर्दैव्य॑स्योप॒स्थे विश्वा॒ भुव॑नानि॒ तस्थुः॑॥ ५॥

ति॒स्रो द्यावः॑ सवि॒तुर्द्वा उ॒पस्था॒ँ एका॑ य॒मस्य॒ भुव॑ने वि॒राषा॑ट्।
आ॒णिं न रथ्य॑ममृता॒धि तस्थु॒रिह ब्रवी॑तु॒ य उ॒ तच्चि॑केत॒त्॥ ६॥

अथ सप्तमो वर्गः॥ ७॥

वि सु॑प॒र्णो अ॒न्तरि॑क्षाण्यख्यद् गभी॒रवे॑पा॒ असु॑रः सु॒नी॑थः।
क्वे३॑दानीं॑ सू॒र्यः कश्चि॑के॒त कत॑मां॒ द्यां र॒श्मिर॒स्या त॑तान॥ ७॥
अ॒ष्टौ व्य॑ख्यत्ककु॒भः पृ॑थि॒व्यास्त्री धन्व॑ योज॒ना स॒प्त सिन्धू॑न्।
हिर॑ण्याक्षः सवि॒ता दे॒व आगा॒द॒धद्र॑त्ना॒ दा॒शुषे॒ वार्या॑णि॥ ८॥
हिर॑ण्यपाणिः सवि॒ता विच॑र्षणिरु॒भे द्यावा॑पृथि॒वी अ॒न्तरी॑यते।
अपामी॑वां॒ बाध॑ते॒ वेति॒ सूर्य॑म॒भि कृ॒ष्णेन॒ रज॑सा॒ द्यामृ॑णोति॥ ९॥
हिर॑ण्यहस्तो॒ असु॑रः सु॒नी॑थः सु॒मृ॑ळीकः स्ववाँ॑ यात्व॒र्वाङ्।
अप॑सेध॒न्रक्ष॑सो॒ यात॒ुधा॑ना॒नस्था॑द्देवः॒ प्र॑तिदो॒षं गृ॑णा॒नः॥ १०॥
ये ते॒ पन्था॑ः सवितः पू॒र्व्यासो॑ऽरे॒णव॒ः सुकृ॑ता अ॒न्तरि॑क्षे।
तेभि॑र्नो॒ अ॒द्य प॒थिभि॑ः सु॒गेभी॒ रक्षा॑ च नो॒ अधि॑ च ब्रूहि देव॥ ११॥

अष्टमोऽनुवाकः [३६] षट्त्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—घौरः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—१, १२ भुरिगनुष्टुप्; २ निचृत्सतः पङ्क्तिः; ३, ११ निचृत्पथ्याबृहती; ४ निचृत्पङ्क्तिः; ५, १६ निचृद्बृहती; ६ भुरिग्बृहती; ७ बृहती; ८ स्वराड् बृहती; ९ निचृदुपरिष्टाद् बृहती; १०, १४ निचृद्विष्टार पङ्क्तिः; १३ उपरिष्टाद्बृहती; १५ विराट्पथ्याबृहती; १७ विराडुपरिष्टाद् बृहती; १८ विष्टारपङ्क्तिः; १९ पथ्याबृहती; २० सतःपङ्क्तिः॥ स्वरः—१, १२ गान्धारः; २, ४, १०, १४, १८, २० पञ्चमः; ३, ५-९, ११, १३, १५, १६, १७, १९ मध्यमः॥

अथ अष्टमो वर्गः॥ ८॥

प्र वो॑ य॒ह्वं पु॑रू॒णां वि॒शां दे॑वय॒तीना॑म्।
अ॒ग्निं सू॒क्तेभि॑र्वचो॒भिरी॑महे॒ यं सी॒मिद॒न्य ईळ॑ते॥ १॥
जना॑सो अ॒ग्निं द॑धिरे सहो॒वृध॑ं ह॒विष्म॑न्तो विधेम ते।
स त्वं नो॑ अ॒द्य सु॒मना॑ इहा॒विता॑ भवा॒ वाजे॑षु सन्त्य॥ २॥
प्र त्वा॑ दू॒तं वृ॑णीमहे॒ होता॑रं॒ वि॒श्ववे॑दसम्।
म॒हस्ते॑ स॒तो वि च॑रन्त्य॒र्चयो॑ दि॒वि स्पृ॑शन्ति॒ भा॒नव॑ः॥ ३॥
दे॒वास॑स्त्वा॒ वरु॑णो मि॒त्रो अ॑र्य॒मा सं दू॒तं प्र॒त्नमि॑न्धते।
विश्वं॑ सो अग्ने॒ जय॑ति॒ त्वया॑ धन॒ं यस्ते॑ द॒दाश॒ मर्त्यः॑॥ ४॥
म॒न्द्रो होता॑ गृहपति॒रग्ने॑ दू॒तो वि॒शाम॑सि।
त्वे विश्वा॒ संग॑तानि व्र॒ता ध्रु॒वा यानि॑ दे॒वा अक॑ृण्वत॥ ५॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अथ नवमो वर्गः ॥ ९ ॥

त्वे इदग्ने सुभगे यविष्ठ्य विश्वमा हूयते हविः ।
स त्वं नो अद्य सुमना उतापरं यक्षि देवान्त्सुवीर्यं ॥ ६ ॥
तं घेमित्था नमस्विन उप स्वराजमासते ।
होत्राभिरग्निं मनुषः समिन्धते तितिर्वांसो अति स्त्रिधः ॥ ७ ॥
घ्नन्तो वृत्रमतरन्रोदसी अप उरु क्षयाय चक्रिरे ।
भुवत्कण्वे वृषा द्युम्न्याहुतः क्रन्ददश्वो गविष्टिषु ॥ ८ ॥
सं सीदस्व महाँ असि शोचस्व देववीतमः ।
वि धूममग्ने अरुषं मियेध्य सृज प्रशस्त दर्शतम् ॥ ९ ॥
यं त्वा देवासो मनवे दधुरिह यजिष्ठं हव्यवाहन ।
यं कण्वो मेध्यातिथिर्धनस्पृतं यं वृषा यमुपस्तुतः ॥ १० ॥

अथ दशमो वर्गः ॥ १० ॥

यमग्निं मेध्यातिथिः कण्व ईध ऋतादधि ।
तस्य प्रेषो दीदियुस्तमिमा ऋचस्तमग्निं वर्धयामसि ॥ ११ ॥
रायस्पूर्धि स्वधावोऽस्ति हि तेऽग्ने देवेष्वाप्यम् ।
त्वं वाजस्य श्रुत्यस्य राजसि स नो मृळ महाँ असि ॥ १२ ॥
ऊर्ध्व ऊ षु ण ऊतये तिष्ठा देवो न सविता ।
ऊर्ध्वो वाजस्य सनिता यदञ्जिभिर्वाघद्भिर्विह्वयामहे ॥ १३ ॥
ऊर्ध्वो नः पाह्यंहसो नि केतुना विश्वं समत्रिणं दह ।
कृधी न ऊर्ध्वाञ्चरथाय जीवसे विदा देवेषु नो दुवः ॥ १४ ॥
पाहि नो अग्ने रक्षसः पाहि धूर्तेरराव्णः ।
पाहि रीषत उत वा जिघांसतो बृहद्भानो यविष्ठ्य ॥ १५ ॥

अथ एकादशो वर्गः ॥ ११ ॥

घनेव विष्वग्वि जह्यराव्णस्तपुर्जम्भ यो अस्मध्रुक् ।
यो मर्त्यः शिशीते अत्यक्तुभिर्मा नः स रिपुरीशत ॥ १६ ॥
अग्निर्वन्ने सुवीर्यमग्निः कण्वाय सौभगम् ।
अग्निः प्रावन्मित्रोत मेध्यातिथिमग्निः साता उपस्तुतम् ॥ १७ ॥
अग्निना तुर्वशं यदुं परावत उग्रादेवं हवामहे ।
अग्निर्नयन्नववास्त्वं बृहद्रथं तुर्वीतिं दस्यवे सहः ॥ १८ ॥
नि त्वामग्ने मनुर्दधे ज्योतिर्जनाय शश्वते ।
दीदेथ कण्व ऋतजात उक्षितो यं नमस्यन्ति कृष्टयः ॥ १९ ॥
त्वेषासो अग्नेरमवन्तो अर्चयो भीमासो न प्रतीतये ।
रक्षस्विनः सदमिद्यातुमावतो विश्वं समत्रिणं दह ॥ २० ॥

[३७] सप्तत्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—कण्वो घौरः ॥ देवता—मरुतः ॥ छन्दः—१, २, ४, ६-८, १२ गायत्री; ३, ९, ११, १४ निचृद्गायत्री; ५ विराड्गायत्री; १०, १५ पिपीलिका-मध्यानिचृद्गायत्री; १३ पादनिचृद्गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथ द्वादशो वर्गः ॥ १२ ॥

क्रीळं वः शर्धो मारुतमनर्वाणं रथेशुभम् । कण्वा अभि प्र गायत ॥ १ ॥
ये पृषतीभिर्ऋष्टिभिः साकं वाशीभिरञ्जिभिः । अजायन्त स्वभानवः ॥ २ ॥
इहेव शृण्व एषां कशा हस्तेषु यद्वदान् । नि यामञ्चित्रमृञ्जते ॥ ३ ॥
प्र वः शर्धाय घृष्वये त्वेषद्युम्नाय शुष्मिणे । देवत्तं ब्रह्म गायत ॥ ४ ॥
प्र शंसा गोष्वघ्न्यं क्रीळं यच्छर्धो मारुतम् । जम्भे रसस्य वावृधे ॥ ५ ॥

अथ त्रयोदशो वर्गः ॥ १३ ॥

को वो वर्षिष्ठ आ नरो दिवश्च ग्मश्च धूतयः । यत्सीमन्तं न धूनुथ ॥ ६ ॥
नि वो यामाय मानुषो दध्र उग्राय मन्यवे । जिहीत पर्वतो गिरिः ॥ ७ ॥
येषामज्मेषु पृथिवी जुजुर्वाँइव विश्पतिः । भिया यामेषु रेजते ॥ ८ ॥
स्थिरं हि जानमेषां वयो मातुर्निरेतवे । यत्सीमनु द्विता शवः ॥ ९ ॥
उदु त्ये सूनवो गिरः काष्ठा अज्मेष्वत्नत । वाश्रा अभिज्ञु यातवे ॥ १० ॥

अथ चतुर्दशो वर्गः ॥ १४ ॥

त्यं चिद्घा दीर्घं पृथुं मिहो नपातममृध्रम् । प्र च्यावयन्ति यामभिः ॥ ११ ॥
मरुतो यद्ध वो बलं जनाँ अचुच्यवीतन । गिरीँरचुच्यवीतन ॥ १२ ॥
यद्ध यान्ति मरुतः सं ह ब्रुवतेऽध्वन्ना । शृणोति कश्चिदेषाम् ॥ १३ ॥
प्र यात शीभमाशुभिः सन्ति कण्वेषु वो दुवः । तत्रो षु मादयाध्वै ॥ १४ ॥
अस्ति हि ष्मा मदाय वः स्मसि ष्मा वयमेषाम् । विश्वं चिदायुर्जीवसे ॥ १५ ॥

[३८] अष्टात्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—कण्वो घौरः ॥ देवता—मरुतः ॥ छन्दः—१, ४, ८, ११, १३, १५ गायत्री; २, ६, ७, ९, १० निचृद्गायत्री; ३ पादनिचृद्गायत्री; ५, १२ पिपीलिका-मध्यानिचृद्गायत्री; १४ यवमध्याविराड्गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथ पञ्चदशो वर्गः ॥ १५ ॥

कद्ध नूनं कधप्रियः पिता पुत्रं न हस्तयोः । दधिध्वे वृक्तबर्हिषः ॥ १ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

क्व॑ नू॒नं कद्वो॒ अर्थं॒ गन्ता॑ दि॒वो न पृ॑थि॒व्याः। क्व॑ वो॒ गावो॒ न र॑ण्यन्ति॥ २॥
क्व॑ वः सु॒म्ना नव्यां॑सि॒ मरु॑तः॒ क्व॑ सुवि॒ता। क्वो॒३॒॑ विश्वा॑नि॒ सौभ॑गा॥ ३॥
यद्यू॒यं पृ॑श्निमातरो॒ मर्ता॑सः॒ स्यात॑न। स्तो॒ता वो॑ अ॒मृतः॑ स्यात्॥ ४॥
मा वो॑ मृ॒गो न यव॑से जरि॒ता भू॒दजो॑ष्यः। प॒था य॒मस्य॑ गा॒दुप॑॥ ५॥

अथ षोडशो वर्गः॥ १६॥

मो षु णः॒ परा॑परा॒ निर्ऋ॑तिर्दु॒र्हणा॑ वधीत्। प॒दी॒ष्ट तृष्ण॑या स॒ह॥ ६॥
स॒त्यं त्वे॒षा अम॑वन्तो॒ धन्व॑ञ्चि॒दा रु॒द्रिया॑सः। मिहं॑ कृण्वन्त्यवा॒ताम्॥ ७॥
वा॒श्रेव॑ वि॒द्युन्मि॑माति व॒त्सं न मा॒ता सि॑षक्ति। यदे॑षां वृ॒ष्टिरस॑र्जि॥ ८॥
दिवा॑ चि॒त्तमः॑ कृण्वन्ति प॒र्जन्ये॑नोदवा॒हेन॑। यत्पृ॑थि॒वीं व्यु॒न्दन्ति॑॥ ९॥
अध॑ स्व॒नान्म॒रुतां॒ विश्व॒मा सद्म॒ पार्थि॑वम्। अरे॑जन्त॒ प्र मानु॑षाः॥ १०॥

अथ सप्तदशो वर्गः॥ १७॥

मरु॑तो वीळुपा॒णिभि॑श्चि॒त्रा रोध॑स्वती॒रनु॑। या॒तेमखि॑द्रयामभिः ॥ ११॥
स्थि॒रा वः॑ सन्तु ने॒मयो॒ रथा॒ अश्वा॑स एषाम्। सुसं॑स्कृता अ॒भीश॑वः॥ १२॥
अच्छा॑ वदा॒ तना॑ गि॒रा ज॒रायै॒ ब्रह्म॑ण॒स्पति॑म्। अ॒ग्निं मि॒त्रं न द॑र्श॒तम्॥ १३॥
मि॒मी॒हि श्लोक॑मा॒स्ये॑ प॒र्जन्य॑इव ततनः। गाय॑ गाय॒त्रमु॒क्थ्य॑म्॥ १४॥
वन्द॑स्व॒ मारु॑तं ग॒णं त्वे॒षं प॑न॒स्युम॒र्किण॑म्। अ॒स्मे वृ॒द्धा अ॑सन्नि॒ह॥ १५॥

[३९] एकोनचत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—कण्वो घौरः॥ देवता—मरुतः॥ छन्दः—१, ५, ९ पथ्याबृहती; २, ८, १० विराट्सतःपङ्क्तिः; ३ अनुष्टुप्; ४, ६ निचृत्सतःपङ्क्तिः; ७ उपरिष्टाद्विराड्-बृहती॥ स्वरः—१, ५, ७, ९ मध्यमः; २, ४, ६, ८, १० पञ्चमः; ३ गान्धारः॥

अथ अष्टादशो वर्गः॥ १८॥

प्र यदि॒त्था प॑रा॒वतः॑ शो॒चिर्न मान॒मस्य॑थ।
कस्य॒ क्रत्वा॑ मरुतः॒ कस्य॒ वर्प॑सा॒ कं या॑थ॒ कं ह॑ धूतयः॥ १॥
स्थि॒रा वः॑ स॒न्त्वायु॑धा परा॒णुदे॑ वी॒ळू उ॒त प्र॑ति॒ष्कभे॑।
यु॒ष्माक॑मस्तु॒ तवि॑षी॒ पनी॑यसी॒ मा मर्त्य॑स्य मा॒यिनः॑॥ २॥
परा॑ ह॒ यत्स्थि॒रं ह॒थ नरो॑ व॒र्तय॑था ग॒रु।
वि या॑थन व॒निनः॑ पृथि॒व्या व्याशाः॒ पर्व॑तानाम्॥ ३॥
न॒हि वः॒ शत्रु॑र्विवि॒दे अधि॒ द्यवि॒ न भूम्यां॑ रिशादसः।
यु॒ष्माक॑मस्तु॒ तवि॑षी॒ तना॑ यु॒जा रुद्रा॑सो॒ नू चि॑दा॒धृषे॑॥ ४॥
प्र वे॑पयन्ति॒ पर्व॑ता॒न्वि वि॑ञ्चन्ति॒ वन॒स्पती॑न्।
प्रो आ॑रत मरुतो दु॒र्मदा॑ इव॒ देवा॑सः॒ सर्व॑या वि॒शा॥ ५॥

अथ एकोनविंशो वर्गः॥ १९॥

उपो॒ रथे॑षु॒ पृष॑तीरयुग्ध्वं॒ प्रष्टि॑र्वहति॒ रोहि॑तः।
आ वो॒ यामा॑य पृथि॒वी चि॑दश्रो॒दबी॑भयन्त॒ मानु॑षाः॥ ६॥
आ वो॑ म॒क्षू तना॑य॒ कं रुद्रा॒ अवो॑ वृणीमहे।
गन्ता॑ नू॒नं नोऽव॑सा॒ यथा॑ पु॒रेत्था कण्वा॑य बि॒भ्युषे॑॥ ७॥
यु॒ष्मेषि॑तो मरुतो॒ मर्त्ये॑षित॒ आ यो नो॒ अभ्व॒ ईष॑ते।
वि तं यु॑योत॒ शव॑सा॒ व्योज॑सा॒ वि यु॒ष्माका॑भिरू॒तिभिः॑॥ ८॥
असा॑मि॒ हि प्र॑यज्यवः॒ कण्वं॑ द॒द प्र॑चेतसः।
असा॑मिभिर्मरुत॒ आ न॑ ऊ॒तिभि॒र्गन्ता॑ वृ॒ष्टिं न वि॒द्युतः॑॥ ९॥
असा॒म्योजो॑ बिभृथा सुदान॒वोऽसा॑मि धूतयः॒ शवः॑।
ऋ॒षि॒द्विषे॑ मरुतः परिम॒न्यव॒ इषुं॒ न सृ॑जत॒ द्विष॑म्॥ १०॥

[४०] चत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः — कण्वो घौरः॥ देवता—बृहस्पतिः॥ छन्दः—१, २, ८ निचृदुपरिष्टाद् बृहती; ३, ७ आर्चीत्रिष्टुप्; ४, ६ सतः पङ्क्तिर्निचृत्पङ्क्तिः; ५ पथ्याबृहती॥ स्वरः—१, २, ५, ८, मध्यमः; ३, ७ धैवतः; ४, ६ पञ्चमः॥

अथ विंशो वर्गः॥ २०॥

उत्ति॑ष्ठ ब्रह्मणस्पते देव॒यन्त॑स्त्वेमहे ।
उप॒ प्र य॑न्तु म॒रुतः॑ सु॒दान॑व॒ इन्द्र॑ प्रा॒शूर्भ॑वा॒ सचा॑ ॥ १॥
त्वामिद्धि स॑हसस्पुत्र॒ मर्त्य॑ उपब्रू॒ते धने॑ हि॒ते ।
सु॒वीर्यं॑ मरुत॒ आ स्वश्व्यं॒ दधी॑त॒ यो व॑ आच॒के ॥ २॥
प्रैतु॒ ब्रह्म॑ण॒स्पतिः॒ प्र दे॒व्ये॑तु सू॒नृता॒ ।
अच्छा॑ वी॒रं नर्यं॑ प॒ङ्क्तिरा॑धसं दे॒वा य॒ज्ञं न॑यन्तु नः ॥ ३॥
यो वा॒घते॒ ददा॑ति सू॒नरं॒ वसु॒ स ध॑त्ते॒ अक्षि॑ति॒ श्रवः॑ ।
तस्मा॒ इळां॑ सु॒वीरा॒मा य॑जामहे सु॒प्रतू॑र्तिमने॒हस॑म् ॥ ४॥
प्र नू॒नं ब्रह्म॑ण॒स्पति॒र्मन्त्रं॑ वदत्यु॒क्थ्य॑म् ।
यस्मि॒न्निन्द्रो॒ वरु॑णो मि॒त्रो अ॑र्य॒मा दे॒वा ओका॑ंसि चक्रि॒रे ॥ ५॥

अथ एकविंशो वर्गः॥ २१॥

तमिद्वो॑चेमा वि॒दथे॑षु श॒म्भुवं॒ मन्त्रं॑ देवा अने॒हस॑म् ।
इ॒मां च॒ वाचं॑ प्रति॒हर्य॑था नरो॒ विश्वेद्वा॒मा वो॑ अश्नवत् ॥ ६॥
को दे॑व॒यन्त॑मश्नव॒ज्जनं॒ को वृ॒क्तब॑र्हिषम् ।
प्रप्र॑ दा॒श्वान्प॒स्त्या॑भिरस्थितान्त॒र्वाव॒त्क्षयं॑ दधे ॥ ७॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उप क्षत्रं पृञ्चीत हन्ति राजभिर्भये चित्सुक्षितिं दधे ।
नास्य वर्ता न तरुता महाधने नार्भे अस्ति वज्रिणः ॥ ८ ॥

[४१] एकचत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—कण्वो घौरः ॥ देवता—१-३, ७-९ वरुणमित्रार्यमणः; ४-६ आदित्याः ॥
छन्दः—१, ४, ५, ८ गायत्री; २, ३, ६ विराड्गायत्री; ७, ९ निचृद्-गायत्री ॥ स्वरः—१-९ षड्जः ॥

अथ द्वाविंशो वर्गः ॥ २२ ॥

यं रक्षन्ति प्रचेतसो वरुणो मित्रो अर्यमा । नू चित्स दभ्यते जनः ॥ १ ॥
यं बाहुतेव पिप्रति पान्ति मर्त्यं रिषः । अरिष्टः सर्व एधते ॥ २ ॥
वि दुर्गा वि द्विषः पुरो घ्नन्ति राजान एषाम् । नयन्ति दुरिता तिरः ॥ ३ ॥
सुगः पन्था अनृक्षर आदित्यास ऋतं यते । नात्रावखादो अस्ति वः ॥ ४ ॥
यं यज्ञं नयथा नर आदित्या ऋजुना पथा । प्र वः स धीतये नशत् ॥ ५ ॥

अथ त्रयोविंशो वर्गः ॥ २३ ॥

स रत्नं मर्त्यो वसु विश्वं तोकमुत त्मना । अच्छा गच्छत्यस्तृतः ॥ ६ ॥
कथा राधाम सखायः स्तोमं मित्रस्यार्यम्णः । महि प्सरो वरुणस्य ॥ ७ ॥
मा वो घ्नन्तं मा शपन्तं प्रति वोचे देवयन्तम् । सुम्नैरिद्व आ विवासे ॥ ८ ॥
चतुरश्चिद्ददमानाद्बिभीयादा निधातोः । न दुरुक्ताय स्पृहयेत् ॥ ९ ॥

[४२] द्वाचत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—कण्वो घौरः ॥ देवता—पूषा ॥ छन्दः—१, ९ निचृद्गायत्री; २, ३, ५-८, १० गायत्री; ४ विराड्गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथ चतुर्विंशो वर्गः ॥ २४ ॥

सं पूषन्नध्वनस्तिर व्यंहो विमुचो नपात् । सक्ष्वा देव प्र णस्पुरः ॥ १ ॥
यो नः पूषन्नघो वृको दुःशेव आदिदेशति । अप स्म तं पथो जहि ॥ २ ॥
अप त्यं परिपन्थिनं मुषीवाणं हुरश्चितम् । दूरमधि स्रुतेरज ॥ ३ ॥
त्वं तस्य द्वयाविनोऽघशंसस्य कस्य चित् । पदाभि तिष्ठ तपुषिम् ॥ ४ ॥
आ तत्ते दस्र मन्तुमः पूषन्नवो वृणीमहे । येन पितॄनचोदयः ॥ ५ ॥

अथ पञ्चविंशो वर्गः ॥ २५ ॥

अधा नो विश्वसौभग हिरण्यवाशीमत्तम । धनानि सुषणा कृधि ॥ ६ ॥
अति नः सश्चतो नय सुगा नः सुपथा कृणु । पूषन्निह क्रतुं विदः ॥ ७ ॥
अभि सूयवसं नय न नवज्वारो अध्वने । पूषन्निह क्रतुं विदः ॥ ८ ॥
शग्धि पूर्धि प्र यंसि च शिशीहि प्रास्युदरम् । पूषन्निह क्रतुं विदः ॥ ९ ॥

न पूषणं मेथामसि सूक्तैरभि गृणीमसि । वसूनि दस्ममीमहे ॥ १० ॥

[४३] त्रिचत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—कण्वो घौरः ॥ देवता—१, २, ४-६ रुद्रः; ३ मित्रावरुणौ; ७-९ सोमः ॥
छन्दः—१-४, ७, ८ गायत्री; ५ विराड्गायत्री; ६ पादनिचृद्गायत्री; ९ अनुष्टुप् ॥ स्वरः—१-८ षड्जः; ९ गान्धारः ॥

अथ षड्विंशो वर्गः ॥ २६ ॥

कद् रुद्राय प्रचेतसे मीळ्हुष्टमाय तव्यसे । वोचेम शन्तमं हृदे ॥ १ ॥
यथा नो अदितिः करत्पश्वे नृभ्यो यथा गवे । यथा तोकाय रुद्रियम् ॥ २ ॥
यथा नो मित्रो वरुणो यथा रुद्रश्चिकेतति । यथा विश्वे सजोषसः ॥ ३ ॥
गाथपतिं मेधपतिं रुद्रं जलाषभेषजम् । तच्छंयोः सुम्नमीमहे ॥ ४ ॥
यः शुक्र इव सूर्यो हिरण्यमिव रोचते । श्रेष्ठो देवानां वसुः ॥ ५ ॥

अथ सप्तविंशो वर्गः ॥ २७ ॥

शं नः करत्यर्वते सुगं मेषाय मेष्ये । नृभ्यो नारिभ्यो गवे ॥ ६ ॥
अस्मे सोम श्रियमधि नि धेहि शतस्य नृणाम् । महि श्रवस्तुविनृम्णम् ॥ ७ ॥
मा नः सोमपरिबाधो मारातयो जुहुरन्त । आ न इन्दो वाजे भज ॥ ८ ॥
यास्ते प्रजा अमृतस्य परस्मिन्धामन्नृतस्य । मूर्धा नाभा सोम वेन आभूषन्तीः सोम वेदः ॥ ९ ॥

नवमोऽनुवाकः [४४] चतुश्चत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—प्रस्कण्वः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१, ५ उपरिष्टाद्विराड्बृहती; ३ निचृद्-उपरिष्टाद्बृहती; ७, ११ निचृत्पथ्याबृहती; १२ भुरिग्बृहती; १३ पथ्याबृहती; २, ४, ६, ८, १४ विराट्सतःपङ्क्तिः; ९ आर्चीत्रिष्टुप्; १० विराड्विस्तारपङ्क्तिः ॥ स्वरः—१, ३, ५, ७, ११-१३ मध्यमः; २, ४, ६, ८, १०, १४ पञ्चमः; ९ धैवतः ॥

अथाष्टाविंशो वर्गः ॥ २८ ॥

अग्ने विवस्वदुषसश्चित्रं राधो अमर्त्य ।
आ दाशुषे जातवेदो वहा त्वमद्या देवाँ उषर्बुधः ॥ १ ॥
जुष्टो हि दूतो असि हव्यवाहनोऽग्ने रथीरध्वराणाम् ।
सजूरश्विभ्यामुषसा सुवीर्यमस्मे धेहि श्रवो बृहत् ॥ २ ॥
अद्या दूतं वृणीमहे वसुमग्निं पुरुप्रियम् ।
धूमकेतुं भाऋजीकं व्युष्टिषु यज्ञानामध्वरश्रियम् ॥ ३ ॥
श्रेष्ठं यविष्ठमतिथिं स्वाहुतं जुष्टं जनाय दाशुषे ।
देवाँ अच्छा यातवे जातवेदसमग्निमीळे व्युष्टिषु ॥ ४ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

स्तविष्यामि त्वामहं विश्वस्यामृत भोजन ।
अग्ने त्रातारममृतं मियेध्य यजिष्ठं हव्यवाहन ॥ ५ ॥

अथ एकोनत्रिंशो वर्गः ॥ २९ ॥

सुशंसो बोधि गृणते यविष्ठ्य मधुजिह्वः स्वाहुतः ।
प्रस्कण्वस्य प्रतिरन्नायुर्जीवसे नमस्या दैव्यं जनम् ॥ ६ ॥
होतारं विश्ववेदसं सं हि त्वा विश इन्धते ।
स आ वह पुरुहूत प्रचेतसोऽग्ने देवाँ इह द्रवत् ॥ ७ ॥
सवितारमुषसमश्विना भगमग्निं व्युष्टिषु क्षपः ।
कण्वासस्त्वा सुतसोमास इन्धते हव्यवाहं स्वध्वर ॥ ८ ॥
पतिर्ह्यध्वराणामग्ने दूतो विशामसि ।
उषर्बुध आ वह सोमपीतये देवाँ अद्य स्वर्दृशः ॥ ९ ॥
अग्ने पूर्वा अनूषसो विभावसो दीदेथ विश्वदर्शतः ।
असि ग्रामेष्वविता पुरोहितोऽसि यज्ञेषु मानुषः ॥ १० ॥

अथ त्रिंशो वर्गः ॥ ३० ॥

नि त्वा यज्ञस्य साधनमग्ने होतारमृत्विजम् ।
मनुष्वदेव धीमहि प्रचेतसं जीरं दूतममर्त्यम् ॥ ११ ॥
यद्देवानां मित्रमहः पुरोहितोऽन्तरो यासि दूत्यम् ।
सिन्धोरिव प्रस्वनितास ऊर्मयोऽग्नेर्भ्राजन्ते अर्चयः ॥ १२ ॥
श्रुधि श्रुत्कर्ण वह्निभिर्देवैरग्ने सयावभिः ।
आ सीदन्तु बर्हिषि मित्रो अर्यमा प्रातर्यावाणो अध्वरम् ॥ १३ ॥
शृण्वन्तु स्तोमं मरुतः सुदानवोऽग्निजिह्वा ऋतावृधः ।
पिबंतु सोमं वरुणो धृतव्रतोऽश्विभ्यामुषसा सजूः ॥ १४ ॥

[४५] पञ्चचत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—प्रस्कण्वः काण्वः ॥ देवता—अग्निर्देवाः ॥ छन्दः—१ भुरिगुष्णिक्; २, ३, ७, ८ अनुष्टुप्; ४ निचृदनुष्टुप्; ५ उष्णिक्; ६, ९, १० विराडनुष्टुप् ॥ स्वरः—१, ५ ऋषभः; २-४, ६-१० गान्धारः ॥

अथ एकत्रिंशो वर्गः ॥ ३१ ॥

त्वमग्ने वसूँरिह रुद्राँ आदित्याँ उत ।
यजा स्वध्वरं जनं मनुजातं घृतप्रुषम् ॥ १ ॥
श्रुष्टीवानो हि दाशुषे देवा अग्ने विचेतसः ।
तान् रोहिदश्व गिर्वणस्त्रयस्त्रिंशतमा वह ॥ २ ॥

प्रियमेधवदत्रिवज् जातवेदो विरूपवत् ।
अङ्गिरस्वन्महिव्रत प्रस्कण्वस्य श्रुधी हवम् ॥ ३ ॥
महिकेरव ऊतयें प्रियमेधा अहूषत ।
राजन्तमध्वराणामग्निं शुक्रेण शोचिषा ॥ ४ ॥
घृताहवन सन्त्येमा उ षु श्रुधी गिरः ।
याभिः कण्वस्य सूनवो हवन्तेऽवसे त्वा ॥ ५ ॥

अथ द्वात्रिंशो वर्गः ॥ ३२ ॥

त्वां चित्रश्रवस्तम हवन्ते विक्षु जन्तवः ।
शोचिष्केशं पुरुप्रियाग्ने हव्याय वोळ्हवे ॥ ६ ॥
नि त्वा होतारमृत्विजं दधिरे वसुवित्तमम् ।
श्रुत्कर्णं सप्रथस्तमं विप्रा अग्ने दिविष्टिषु ॥ ७ ॥
आ त्वा विप्रा अचुच्यवुः सुतसोमा अभिप्रयः ।
बृहद्भा बिभ्रतो हविरग्ने मर्तास दाशुषे ॥ ८ ॥
प्रातर्याव्णः सहस्कृत सोमपेयाय सन्त्य ।
इहाद्य दैव्यं जनं बर्हिरा सादया वसो ॥ ९ ॥
अर्वाञ्चं दैव्यं जनमग्ने यक्ष्व सहूतिभिः ।
अयं सोमः सुदानवस्तं पात तिरोअह्न्यम् ॥ १० ॥

[४६] षट्चत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—प्रस्कण्वः काण्वः ॥ देवता—अश्विनौ ॥ छन्दः—१, १० विराड् गायत्री; २, ४, ५, ७, ८, ९, १३, १५ निचृद्गायत्री; ३, ६, ११, १२, १४ गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथ त्रयस्त्रिंशो वर्गः ॥ ३३ ॥

एषो उषा अपूर्व्या व्युच्छति प्रिया दिवः । स्तुषे वामश्विना बृहत् ॥ १ ॥
या दस्रा सिन्धुमातरा मनोतरा रयीणाम् । धिया देवा वसुविदा ॥ २ ॥
वच्यन्ते वां ककुहासो जूर्णायामधि विष्टपि । यद्वां रथो विभिष्पतात् ॥ ३ ॥
हविषा जारो अपां पिपर्ति पपुरिर्नरा । पिता कुटस्य चर्षणिः ॥ ४ ॥
आदारो वां मतीनां नासत्या मतवचसा । पातं सोमस्य धृष्णुया ॥ ५ ॥

अथ चतुस्त्रिंशो वर्गः ॥ ३४ ॥

या नः पीपरदश्विना ज्योतिष्मती तमस्तिरः । तामस्मे रासाथामिषम् ॥ ६ ॥
आ नो नावा मतीनां यातं पाराय गन्तवे । युञ्जाथामश्विना रथम् ॥ ७ ॥
अरित्रं वां दिवस्पृथु तीर्थे सिन्धूनां रथः । धिया युयुज्र इन्दवः ॥ ८ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

दिवस्कण्वास इन्दवो वसु सिन्धूनां पदे। स्वं व्रिं कुह धित्सथः॥ ९॥
अभूदु भा उ अंशवे हिरण्यं प्रति सूर्यः। व्यख्यज्जिह्वयासितः॥ १०॥

अथ पञ्चत्रिंशो वर्गः॥ ३५॥

अभूदु पारमेतवे पन्था ऋतस्य साधुया। अदर्शि वि स्रुतिर्दिवः॥ ११॥
तत्तदिदश्विनोरवो जरिता प्रति भूषति। मदे सोमस्य पिप्रतोः॥ १२॥
वावसाना विवस्वति सोमस्य पीत्या गिरा। मनुष्वच्छंभू आ गतम्॥ १३॥
युवोरुषा अनु श्रियं परिज्मनोरुपाचरत्। ऋता वनथो अक्तुभिः॥ १४॥
उभा पिबतमश्विनोभा नः शर्म यच्छतम्। अविद्रियाभिरूतिभिः॥ १५॥

अथ चतुर्थोऽध्यायः

[४७] सप्तचत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—प्रस्कण्वः काण्वः॥ देवता—अश्विनौ॥ छन्दः—१, ५ निचृत्पथ्याबृहती; २, ६, ८ निचृत्सतःपङ्क्तिः; ४, १० सतःपङ्क्तिः; ३, ७ पथ्याबृहती; ९ विराट्पथ्याबृहती॥ स्वरः—१, ३, ५, ७, ९ मध्यमः; २, ४, ६, ८, १० पञ्चमः॥

अथ प्रथमो वर्गः॥ १॥

अयं वां मधुमत्तमः सुतः सोम ऋतावृधा। तमश्विना पिबतं तिरोअह्न्यं धत्तं रत्नानि दाशुषे॥ १॥
त्रिवन्धुरेण त्रिवृता सुपेशसा रथेना यातमश्विना। कण्वासो वां ब्रह्म कृण्वन्त्यध्वरे तेषां सु शृणुतं हवम्॥ २॥
अश्विना मधुमत्तमं पातं सोममृतावृधा। अथाद्य दस्रा वसु बिभ्रता रथे दाश्वांसमुप गच्छतम्॥ ३॥
त्रिषधस्थे बर्हिषि विश्ववेदसा मध्वा यज्ञं मिमिक्षतम्। कण्वासो वां सुतसोमा अभिद्यवो युवां हवन्ते अश्विना॥ ४॥
याभिः कण्वमभिष्टिभिः प्रावतं युवमश्विना। ताभिः ष्वस्माँ अवतं शुभस्पती पातं सोममृतावृधा॥ ५॥

अथ द्वितीयो वर्गः॥ २॥

सुदासे दस्रा वसु बिभ्रता रथे पृक्षो वहतमश्विना। रयिं समुद्रादुत वा दिवस्पर्यस्मे धत्तं पुरुस्पृहम्॥ ६॥
यत्रासत्या परावति यद्वा स्थो अधि तुर्वशे। अतो रथेन सुवृता न आ गतं साकं सूर्यस्य रश्मिभिः॥ ७॥
अर्वाञ्चा वां सप्तयोऽध्वरश्रियो वहन्तु सवनेदुप। इषं पृञ्चन्ता सुकृते सुदानवः आ बर्हिः सीदतं नरा॥ ८॥
तेन नासत्या गतं रथेन सूर्यत्वचा। येन शश्वदूहथुर्दाशुषे वसु मध्वः सोमस्य पीतये॥ ९॥
उक्थेभिर्वागवसे पुरूवसू अर्कैश्च नि ह्वयामहे। शश्वत्कण्वानां सदसि प्रिये हि कं सोमं पपथुरश्विना॥ १०॥

[४८] अष्टचत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—प्रस्कण्वः॥ देवता—उषाः॥ छन्दः—१, ३, ७, ९ विराट्पथ्याबृहती; २, १०, १६ निचृत्सतःपङ्क्तिः; ४, ६, १४ विराट्सतःपङ्क्तिः; ५, ११, १३ निचृत्पथ्याबृहती; ८ पङ्क्तिः; १२ बृहती; १५ पथ्याबृहती॥ स्वरः—१, ३, ५, ७, ९, ११, १२, १३, १५ मध्यमः; २, ४, ६, ८, १०, १४, १६ पञ्चमः॥

अथ तृतीयो वर्गः॥ ३॥

सह वामेन न उषो व्युच्छा दुहितर्दिवः। सह द्युम्नेन बृहता विभावरि राया देवि दास्वती॥ १॥
अश्वावतीर्गोमतीर्विश्वसुविदो भूरि च्यवन्त वस्तवे। उदीरय प्रति मा सूनृता उषश्चोद राधो मघोनाम्॥ २॥
उवासोषा उच्छाच्च नु देवी जीरा रथानाम्। ये अस्या आचरणेषु दध्रिरे समुद्रे न श्रवस्यवः॥ ३॥
उषो ये ते प्र यामेषु युञ्जते मनो दानाय सूरयः। अत्राह तत्कण्व एषां कण्वतमो नाम गृणाति नृणाम्॥ ४॥
आ घा योषेव सूनर्युषा याति प्रभुञ्जती। जरयन्ती वृजनं पद्वदीयत उत्पातयति पक्षिणः॥ ५॥

अथ चतुर्थो वर्गः॥ ४॥

वि या सृजति समनं व्यर्थिनः पदं न वेत्योदती। वयो नकिष्टे पप्तिवांस आसते व्युष्टौ वाजिनीवति॥ ६॥
एषायुक्त परावतः सूर्यस्योदयनादधि। शतं रथेभिः सुभगोषा इयं वि यात्यभि मानुषान्॥ ७॥
विश्वमस्या नानाम चक्षसे जगज्ज्योतिष्कृणोति सूनरी। अप द्वेषो मघोनी दुहिता दिव उषा उच्छदप स्रिधः॥ ८॥
उष आ भाहि भानुना चन्द्रेण दुहितर्दिवः। आवहन्ती भूर्यस्मभ्यं सौभगं व्युच्छन्ती दिविष्टिषु॥ ९॥
विश्वस्य हि प्राणनं जीवनं त्वे वि यदुच्छसि सूनरि। सा नो रथेन बृहता विभावरि श्रुधि चित्रामघे हवम्॥ १०॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अथ पञ्चमो वर्गः ॥ ५ ॥

उषो॒ वाजं॒ हि वंस्व॒ यश्चि॒त्रो मानु॑षे॒ जने॑।
तेना व॑ह सु॒कृतो॑ अध्व॒राँ उप॒ ये त्वा॑ गृ॒णन्ति॒ वह्न॑यः ॥ ११ ॥
विश्वा॑न्दे॒वाँ आ व॑ह॒ सोम॑पीतये॒ऽन्तरि॑क्षादुष॒स्त्वम्।
सास्मासु॑ धा॒ गोम॒दश्वा॑वदु॒क्थ्य१॒॑मुषो॒ वाजं॑ सु॒वीर्य॑म् ॥ १२ ॥
यस्या॒ रुश॑न्तो अ॒र्चयः॒ प्रति॑ भ॒द्रा अदृ॑क्षत।
सा नो॑ र॒यिं वि॒श्ववा॑रं सु॒पेश॑समु॒षा द॑दातु॒ सुग्म्य॑म् ॥ १३ ॥
ये चि॒द्धि त्वामृष॑यः॒ पूर्व॑ ऊ॒तये॑ जुहू॒रेऽव॑से महि।
सा नः॒ स्तोमाँ॑ अ॒भि गृ॑णीहि॒ राध॒सोषः॑ शु॒क्रेण॑ शो॒चिषा॑ ॥ १४ ॥
उषो॒ यद॒द्य भा॒नुना॒ वि द्वारा॑वृ॒णवो॑ दि॒वः।
प्र नो॑ यच्छतादवृ॒कं पृ॒थु च्छ॒र्दिः प्र दे॑वि॒ गोम॑ती॒रिषः॑ ॥ १५ ॥
सं नो॑ रा॒या बृ॑ह॒ता वि॒श्वपे॑शसा मिमि॒क्ष्वा समिळा॑भि॒रा।
सं द्यु॒म्नेन॑ विश्व॒तुरो॑षो महि॒ सं वाजै॑र्वाजिनीवति ॥ १६ ॥

[४९] एकोनपञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—प्रस्कण्वः काण्वः ॥ देवता—उषाः ॥ छन्दः—निचृदनुष्टुप् ॥
स्वरः—गान्धारः ॥

अथ षष्ठो वर्गः ॥ ६ ॥

उषो॑ भ॒द्रेभि॒रा ग॑हि दि॒वश्चि॑द्रोच॒नादधि॑ ।
वह॑न्त्वरु॒णप्स॑व॒ उप॑ त्वा सो॒मिनो॑ गृ॒हम् ॥ १ ॥
सु॒पेश॑सं सु॒खं रथं॒ यम॒ध्यस्था॑ उष॒स्त्वम् ।
तेना॑ सु॒श्रव॑सं॒ जनं॒ प्रावा॒द्य दु॑हितर्दिवः ॥ २ ॥
वय॑श्चित्ते पत॒त्रिणो॑ द्वि॒पच्चतु॑ष्पदर्जुनि ।
उषः॒ प्रार॑न्नृ॒तूँरनु॑ दि॒वो अन्ते॑भ्य॒स्परि॑ ॥ ३ ॥
व्यु॒च्छन्ती॒ हि र॒श्मिभि॒र्विश्व॑मा॒भासि॑ रोच॒नम्।
तां त्वामु॑षर्वसू॒यवो॑ गी॒र्भिः कण्वा॑ अहूषत ॥ ४ ॥

[५०] पञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—प्रस्कण्वः काण्वः ॥ देवता—सूर्यः ॥ छन्दः—१, ६ निचृद्गायत्री; २, ४, ८, ९ पिपीलिकामध्यानिचृद्गायत्री; ३ गायत्री; ५ यवमध्याविराड्गायत्री; ७ विराड्गायत्री १०, ११ निचृदनुष्टुप्; १२, १३ अनुष्टुप् ॥
स्वरः—१-९ षड्जः; १०-१३ गान्धारः ॥

अथ सप्तमो वर्गः ॥ ७ ॥

उदु॒ त्यं जा॒तवे॑दसं दे॒वं व॑हन्ति के॒तवः॑। दृ॒शे विश्वा॑य॒ सूर्य॑म् ॥ १ ॥
अप॒ त्ये ता॒यवो॑ यथा॒ नक्ष॑त्रा यन्त्य॒क्तुभिः॑। सूरा॑य वि॒श्वच॑क्षसे ॥ २ ॥
अदृ॑श्रमस्य के॒तवो॒ वि र॒श्मयो॒ जनाँ॒ अनु॑। भ्राज॑न्तो अ॒ग्नयो॑ यथा ॥ ३ ॥
त॒रणि॑र्वि॒श्वद॑र्शतो ज्योति॒ष्कृद॑सि सूर्य। विश्व॒मा भा॑सि रोच॒नम् ॥ ४ ॥
प्र॒त्यङ् दे॒वानां॒ विशः॑ प्र॒त्यङ्ङुदे॑षि॒ मानु॑षान्। प्र॒त्यङ्विश्वं॒ स्व॑र्दृ॒शे ॥ ५ ॥

अथाष्टमो वर्गः ॥ ८ ॥

येना॑ पावक॒ चक्ष॑सा भुर॒ण्यन्तं॒ जनाँ॒ अनु॑। त्वं व॑रुण॒ पश्य॑सि ॥ ६ ॥
वि द्यामे॑षि॒ रज॑स्पृथ्वहा॒ मिमा॑नो अ॒क्तुभिः॑। पश्य॒ञ्जन्मा॑नि सूर्य ॥ ७ ॥
स॒प्त त्वा॑ ह॒रितो॒ रथे॒ वह॑न्ति देव सूर्य। शो॒चिष्के॑शं विचक्षण ॥ ८ ॥
अयु॑क्त स॒प्त शु॒न्ध्युवः॒ सूरो॒ रथ॑स्य न॒प्त्यः॑। ताभि॑र्याति॒ स्वयु॑क्तिभिः ॥ ९ ॥
उद्व॒यं तम॑स॒स्परि॒ ज्योति॒ष्पश्य॑न्त॒ उत्त॑रम्।
दे॒वं दे॑व॒त्रा सूर्य॒मग॑न्म॒ ज्योति॑रुत्त॒मम् ॥ १० ॥
उ॒द्यन्न॒द्य मि॑त्रमह आ॒रोह॒न्नुत्त॑रां॒ दिव॑म्।
हृ॒द्रो॒गं मम॑ सूर्य हरि॒माणं॑ च नाशय ॥ ११ ॥
शुके॑षु मे हरि॒माणं॑ रोप॒णाका॑सु दध्मसि।
अथो॑ हारिद्र॒वेषु॑ मे हरि॒माणं॒ नि द॑ध्मसि ॥ १२ ॥
उद॑गाद॒यमा॑दि॒त्यो विश्वे॑न॒ सह॑सा स॒ह।
द्वि॒षन्तं॒ मह्यं॑ र॒न्धय॒न्मो अ॒हं द्वि॑ष॒ते र॑धम् ॥ १३ ॥

दशमोऽनुवाकः [५१] एकपञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—सव्य आङ्गिरसः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१, ९, १० जगती; २, ५, ८ विराड्जगती; ३, ४ भुरिक्त्रिष्टुप्; ६, ७ त्रिष्टुप्; ११-१३ निचृज्जगती; १४, १५ विराट्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१, २, ५, ८-१३ निषादः; ३, ४, ६, ७, १४, १५ धैवतः ॥

अथ नवमो वर्गः ॥ ९ ॥

अ॒भि त्यं मे॒षं पु॒रुहू॒तमृ॒ग्मिय॒मिन्द्रं॑ गी॒र्भिर्म॑दता॒ वस्वो॑ अर्ण॒वम्।
यस्य॒ द्यावो॒ न वि॒चर॑न्ति॒ मानु॑षा भु॒जे मंहि॑ष्ठम॒भि विप्र॑मर्चत ॥ १ ॥
अ॒भीम॑वन्वन्त्स्वभि॒ष्टिमू॒तयो॑ऽन्तरिक्ष॒प्रां तवि॑षीभि॒रावृ॑तम्।
इन्द्रं॒ दक्षा॑स ऋ॒भवो॑ मद॒च्युतं॑ श॒तक्र॑तुं॒ जव॑नी सू॒नृतारु॑हत् ॥ २ ॥
त्वं गो॒त्रमङ्गि॑रोभ्योऽवृणो॒रपो॒तात्र॑ये श॒तदु॑रेषु गातु॒वित्।
स॒सेन॑ चिद्विम॒दाया॑वहो॒ वस्वा॒जावद्रिं॑ वावसा॒नस्य॑ न॒र्तय॑न् ॥ ३ ॥
त्वम॒पाम॑पि॒धाना॑वृणो॒रपाधा॑रयः॒ पर्व॑ते॒ दानु॑म॒द्वसु॑।
वृ॒त्रं यदि॑न्द्र॒ शव॒साव॑धी॒रहि॒मादित्सूर्यं॑ दि॒व्यारो॑हयो दृ॒शे ॥ ४ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

त्वं मायाभिरप मायिनोऽधमः स्वधाभिर्ये अधि शुस्मावजुह्वत।
त्वं पिप्रोर्नृमणः प्रारुजः पुरः प्र ऋजिश्वानं दस्युहत्येष्वाविथ॥ ५॥

अथ दशमो वर्गः॥ १०॥

त्वं कुत्सं शुष्णहत्येष्वाविथारन्धयोऽतिथिग्वाय शम्बरम्।
महान्तं चिदर्बुदं नि क्रमीः पदा सनादेव दस्युहत्याय जज्ञिषे॥ ६॥
त्वे विश्वा तविषी सध्र्यञ्चिता तव राधः सोमपीथाय हर्षते।
तव वज्रश्चिकिते बाह्वोर्हितो वृश्चा शत्रोरव विश्वानि वृष्ण्या॥ ७॥
वि जानीह्यार्यान्ये च दस्यवो बर्हिष्मते रन्धया शासदव्रतान्।
शाकी भव यजमानस्य चोदिता विश्वेत्ता ते सधमादेषु चाकन॥ ८॥
अनुव्रताय रन्धयन्नपव्रतानाभूभिरिन्द्रः श्नथयन्ननाभुवः।
वृद्धस्य चिद्वर्धतो द्यामिनक्षतः स्तवानो वज्रो वि जघान संदिहः॥ ९॥
तक्षद्यत्त उशना सहसा सहो वि रोदसी मज्मना बाधते शवः।
आ त्वा वातस्य नृमणो मनोयुज आ पूर्यमाणमवहन्नभि श्रवः॥ १०॥

अथ एकादशो वर्गः॥ ११॥

मन्दिष्ट यदुशने काव्ये सचाँ इन्द्रो वङ्कू वङ्कुतराधि तिष्ठति।
उग्रो ययिं निरपः स्रोतसासृजद्वि शुष्णस्य दृंहिता ऐरयत्पुरः॥ ११॥
आ स्मा रथं वृषपाणेषु तिष्ठसि शार्यातस्य प्रभृता येषु मन्दसे।
इन्द्र यथा सुतसोमेषु चाकनोऽनर्वाणं श्लोकमा रोहसे दिवि॥ १२॥
अदर्दा अभ्रिं महते वचस्यवे कक्षीवते वृचयामिन्द्र सुन्वते।
मेनाभवो वृषणश्वस्य सुक्रतो विश्वेत्ता ते सवनेषु प्रवाच्या॥ १३॥
इन्द्रो अश्रायि सुध्यो निरेके पज्रेषु स्तोमो दुर्यो न यूपः।
अश्वयुर्गव्यू रथयुर्वसूयुरिन्द्र इद्रायः क्षयति प्रयन्ता॥ १४॥
इदं नमो वृषभाय स्वराजे सत्यशुष्माय तवसेऽवाचि।
अस्मिन्निन्द्र वृजने सर्ववीराः स्मत्सूरिभिस्तव शर्मन्स्याम॥ १५॥

[५२] द्विपञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—सव्य आङ्गिरसः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१, ८ भुरिक्त्रिष्टुप्; २, ३, ४ निचृज्जगती; ५, १४ जगती; ६, ११ विराड्जगती; ७ त्रिष्टुप्; ९, १० स्वराट्त्रिष्टुप्; १२, १३, १५ निचृत् त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१, ७-९, १०, १२, १३, १५ धैवतः; २-६, ११, १४ निषादः॥

अथ द्वादशो वर्गः॥ १२॥

त्यं सु मेषं महया स्वर्विदं शतं यस्य सुभ्वः साकमीरते।
अत्यं न वाजं हवनस्यदं रथमेन्द्रं ववृत्यामवसे सुवृक्तिभिः॥ १॥
स पर्वतो न धरुणेष्वच्युतः सहस्त्रमूतिस्तविषीषु वावृधे।
इन्द्रो यद्वृत्रमवधीन्नदीवृतमुब्जन्नर्णांसि जहृषाणो अन्धसा॥ २॥
स हि द्वरो द्वरिषु वव्र ऊधनि चन्द्रबुध्नो मदवृद्धो मनीषिभिः।
इन्द्रं तमह्वे स्वपस्यया धिया मंहिष्ठारातिं स हि पप्रिरन्धसः॥ ३॥
आ यं पृणन्ति दिवि सद्मबर्हिषः समुद्रं न सुभ्वः स्वा अभिष्टयः।
तं वृत्रहत्ये अनु तस्थुरूतयः शुष्मा इन्द्रमवाता अहृतप्सवः॥ ४॥
अभि स्ववृष्टिं मदे अस्य युध्यतो रघ्वीरिव प्रवणे सस्रुरूतयः।
इन्द्रो यद्वज्री धृषमाणो अन्धसा भिनद् वलस्य परिधीँरिव त्रितः॥ ५॥

अथ त्रयोदशो वर्गः॥ १३॥

परी घृणा चरति तित्विषे शवोऽपो वृत्वी रजसो बुध्नमाशयत्।
वृत्रस्य यत्प्रवणे दुर्गृभिश्वनो निजघन्थ हन्वोरिन्द्र तन्यतुम्॥ ६॥
ह्रदं न हि त्वा न्यृषन्त्यूर्मयो ब्रह्माणीन्द्र तव यानि वर्धना।
त्वष्टा चित्ते युज्यं वावृधे शवस्ततक्ष वज्रमभिभूत्योजसम्॥ ७॥
जघन्वाँ उ हरिभिः संभृतक्रतविन्द्र वृत्रं मनुषे गातुयन्नपः।
अयच्छथा बाह्वोर्वज्रमायसमधारयो दिव्या सूर्यं दृशे॥ ८॥
बृहत्स्वश्चन्द्रममवद्यदुक्थ्यमकृण्वत भियसा रोहणं दिवः।
यन्मानुषप्रधना इन्द्रमूतयः स्वर्नृषाचो मरुतोऽमदन्ननु॥ ९॥
द्यौश्चिदस्यामवाँ अहेः स्वनादयोयवीद्भियसा वज्र इन्द्र ते।
वृत्रस्य यद्वद्वधानस्य रोदसी मदे सुतस्य शवसाभिनच्छिरः॥ १०॥

अथ चतुर्दशो वर्गः॥ १४॥

यदिन्द्रिन्द्र पृथिवी दशभुजिरहानि विश्वा ततनन्त कृष्टयः।
अत्राह ते मघवन्विश्रुतं सहो द्यामनु शवसा बर्हणा भुवत्॥ ११॥
त्वमस्य पारे रजसो व्योमनः स्वभूत्योजा अवसे धृषन्मनः।
चकृषे भूमिं प्रतिमानमोजसोऽपः स्वः परिभूरेष्या दिवम्॥ १२॥
त्वं भुवः प्रतिमानं पृथिव्या ऋष्ववीरस्य बृहतः पतिर्भूः।
विश्वमाप्रा अन्तरिक्षं महित्वा सत्यमद्धा नकिरन्यस्त्वावान्॥ १३॥
न यस्य द्यावापृथिवी अनु व्यचो न सिन्धवो रजसो अन्तमानशुः।
नोत स्ववृष्टिं मदे अस्य युध्यत एको अन्यच्चकृषे विश्वमानुषक्॥ १४॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

आर्चन्नत्रं मरुतः सस्मिन्नाजौ विश्वे देवासो अमदन्ननु त्वा।
वृत्रस्य यद्धृष्टिमता वधेन नि त्वमिन्द्र प्रत्यानं जघन्थ॥ १५॥

[५३] त्रिपञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—सव्य आङ्गिरसः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१, ३ निचृज्जगती; २ भुरिग्जगती; ४ जगती; ५, ७ विराड्जगती; ६, ८, ९ त्रिष्टुप्; १० भुरिक्त्रिष्टुप्; ११ सतःपङ्क्तिः॥ स्वरः—१-५, ७ निषादः; ६, ८-१० धैवतः; ११ पञ्चमः॥

अथ पञ्चदशो वर्गः॥ १५॥

न्यू३ षु वाचं प्र महे भरामहे गिर इन्द्राय सदने विवस्वतः।
नू चिद्धि रत्नं ससतामिवाविदद्दुष्टुतिर्द्रविणोदेषु शस्यते॥ १॥
दुरो अश्वस्य दुर इन्द्र गोरसि दुरो यवस्य वसुन इनस्पतिः।
शिक्षानरः प्रदिवो अकामकर्शनः सखा सखिभ्यस्तमिदं गृणीमसि॥ २॥
शचीव इन्द्र पुरुकृद् द्युमत्तम तवेदिदमभितश्चेकिते वसु।
अतः संगृभ्याभिभूत आ भर मा त्वायतो जरितुः काममूनयीः॥ ३॥
एभिर्द्युभिः सुमना एभिरिन्दुभिर्निरुन्धानो अमतिं गोभिरश्विना।
इन्द्रेण दस्युं दरयन्त इन्दुभिर्युतद्वेषसः समिषा रभेमहि॥ ५॥
समिन्द्र राया समिषा रभेमहि सं वाजेभिः पुरुश्चन्द्रैरभिद्युभिः।
सं देव्या प्रमत्या वीरशुष्मया गोअग्रयाश्वावत्या रभेमहि॥ ५॥

अथ षोडशो वर्गः॥ १६॥

ते त्वा मदा अमदन् तानि वृष्ण्या ते सोमासो वृत्रहत्येषु सत्पते।
यत्कारवे दशं वृत्राण्यप्रति बर्हिष्मते नि सहस्राणि बर्हयः॥ ६॥
युधा युधमुप घेदेषि धृष्णुया पुरा पुरं समिदं हंस्योजसा।
नम्या यदिन्द्र सख्या परावति निबर्हयो नमुचिं नाम मायिनम्॥ ७॥
त्वं करञ्जमुत पर्णयं वधीस्तेजिष्ठयातिथिग्वस्य वर्तनी।
त्वं शता वङ्गृदस्याभिनत्पुरोऽनानुदः परिषूता ऋजिश्वना॥ ८॥
त्वमेताञ्जनराज्ञो द्विर्दशाबन्धुना सुश्रवसोपजग्मुषः।
षष्टिं सहस्रा नवतिं नव श्रुतो नि चक्रेण रथ्या दुष्पदावृणक्॥ ९॥
त्वमावित्थ सुश्रवसं तवोतिभिस्तव त्रामभिरिन्द्र तूर्वयाणम्।
त्वमस्मै कुत्समतिथिग्वमायुं महे राज्ञे यूने अरन्धनायः॥ १०॥
य उदृचीन्द्र देवगोपाः सखायस्ते शिवतमा असाम।
त्वां स्तोषाम त्वया सुवीरा द्राघीय आयुः प्रतरं दधानाः॥ ११॥

[५४] चतुःपञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—सव्य आङ्गिरसः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१, ४, १० विराड्जगती; २, ३, ५ निचृज्जगती; ६ विराट्त्रिष्टुप्; ७ जगती; ८, ९, ११ निचृत्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१-५, ७, १० निषादः; ६, ८, ९, ११ धैवतः॥

अथ सप्तदशो वर्गः॥ १७॥

मा नो अस्मिन्मघवन्पृत्स्वंहसि नहि ते अन्तः शवसः परीणशे।
अक्रन्दयो नद्योऽ३ रोरुवद्वना कथा न क्षोणीर्भियसा समारत॥ १॥
अचीं शक्राय शाकिने शचीवते शृण्वन्तमिन्द्रं महयन्नभि ष्टुहि।
यो धृष्णुना शवसा रोदसी उभे वृषा वृषत्वा वृषभो न्यृञ्जते॥ २॥
अचीं दिवे बृहते शूष्यं३ वचः स्वक्षत्रं यस्य धृषतो धृषन्मनः।
बृहच्छ्वा असुरो बर्हणा कृतः पुरो हरिभ्यां वृषभो रथो हि षः॥ ३॥
त्वं दिवो बृहतः सानु कोपयोऽव त्मना धृषता शम्बरं भिनत्।
यन्मायिनो व्रन्दिनो मन्दिना धृषच्छिता गभस्तिमशनिं पृतन्यसि॥ ४॥
नि यद्वणक्षि श्वसनस्य मूर्धनि शुष्णस्य चिद्व्रन्दिनो रोरुवद्वना।
प्राचीनेन मनसा बर्हणावता यदद्या चित्कृणवः कस्त्वा परि॥ ५॥

अथ अष्टादशो वर्गः॥ १८॥

त्वमावित्थ नर्यं तुर्वशं यदुं त्वं तुर्वीतिं वय्यं शतक्रतो।
त्वं रथमेतशं कृत्व्ये धने त्वं पुरो नवतिं दम्भयो नव॥ ६॥
स घा राजा सत्पतिः शूशुवज्जनो रातहव्यः प्रति यः शासमिन्वति।
उक्था वा यो अभिगृणाति राधसा दानुरस्मा उपरा पिन्वते दिवः॥ ७॥
असमं क्षत्रमसमा मनीषा प्र सोमपा अपसा सन्तु नेमे।
ये त इन्द्र ददुषो वर्धयन्ति महि क्षत्रं स्थविरं वृष्ण्यं च॥ ८॥
तुभ्येदेते बहुला अद्रिदुग्धाश्चमूषदश्चमसा इन्द्रपानाः।
व्यश्नुहि तर्पया काममेषामथा मनो वसुदेयाय कृष्व॥ ९॥
अपामतिष्ठद्धरुणाहरं तमोऽन्तर्वृत्रस्य जठरेषु पर्वतः।
अभीमिन्द्रो नद्यो वव्रिणा हिता विश्वा अनुष्ठाः प्रवणेषु जिघ्नते॥ १०॥
स शेवृधमधि धा द्युम्नमुस्रे महि क्षत्रं जनाषाळिन्द्र तव्यम्।
रक्षा च नो मघोनः पाहि सूरीन्राये च नः स्वपत्या इषे धाः॥ ११॥

[५५] पञ्चपञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—सव्य आङ्गिरसः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१, ४ जगती; २, ५ निचृज्जगती; ३, ८ विराड्जगती॥ स्वरः—निषादः॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अथ एकोनविंशो वर्गः ॥ १९ ॥

दिवश्चिदस्य वरिमा वि पप्रथ इन्द्रं न मह्ना पृथिवी चन प्रति।
भीमस्तुविष्माञ्चर्षणिभ्य आतपः शिशीते वज्रं तेजसे न वंसगः ॥ १ ॥
सो अर्णवो न नद्यः समुद्रियः प्रति गृभ्णाति विश्रिता वरीमभिः।
इन्द्रः सोमस्य पीतये वृषायते सनात्स युध्म ओजसा पनस्यते ॥ २ ॥
त्वं तमिन्द्र पर्वतं न भोजसे महो नृम्णस्य धर्मणामिरज्यसि।
प्र वीर्येण देवताति चेकिते विश्वस्मा उग्रः कर्मणे पुरोहितः ॥ ३ ॥
स इद्वने नमस्युभिर्वचस्यते चारु जनेषु प्रब्रुवाण इन्द्रियम्।
वृषा छन्दुर्भवति हर्यतो वृषा क्षेमेण धेनां मघवा यदिन्वति ॥ ४ ॥
स इन्महानि समिथानि मज्मना कृणोति युध्म ओजसा जनेभ्यः।
अधा चन श्रद्दधति त्विषीमत इन्द्राय वज्रं निघनिघ्नते वधम् ॥ ५ ॥

अथ विंशो वर्गः ॥ २० ॥

स हि श्रवस्युः सदनानि कृत्रिमा क्षमया वृधान ओजसा विनाशयन्।
ज्योतींषि कृण्वन्नवृकाणि यन्त्रवेऽव सुक्रतुः सर्तवा अपः सृजत् ॥ ६ ॥
दानाय मनः सोमपावन्नस्तु ते ऽर्वाञ्चा हरी वन्दनश्रुदा कृधि।
यमिष्ठासः सारथयो य इन्द्र ते न त्वा केता आ दभ्नुवन्ति भूर्णयः ॥ ७ ॥
अप्रक्षितं वसु बिभर्षि हस्तयोरषाळ्हं सहस्तन्वि श्रुतो दधे।
आवृतासोऽवतासो न कर्तृभिस्तनूषु ते क्रतव इन्द्र भूरयः ॥ ८ ॥

[५६] षट्पञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—सव्य आङ्गिरसः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१, ३, ४ निचृज्जगती; २ जगती; ५ त्रिष्टुप्; ६ भुरिक्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१-४ निषादः; ५, ६ धैवतः ॥

अथ एकविंशो वर्गः ॥ २१ ॥

एष प्र पूर्वीरव तस्य चम्रिषोऽत्यो न योषामुदयंस्त भुर्वणिः।
दक्षं महे पाययते हिरण्ययं रथमावृत्या हरियोगमृभ्वसम् ॥ १ ॥
तं गूर्तयो नेमन्निषः परीणसः समुद्रं न संचरणे सनिष्यवः।
पतिं दक्षस्य विदथस्य नू सहो गिरिं न वेना अधि रोह तेजसा ॥ २ ॥
स तुर्वणिर्महाँ अरेणु पाँस्ये गिरेर्भृष्टिर्न भ्राजते तुजा शवः।
येन शुष्णं मायिनमायसो मदे दुध्र आभूषु रामयन्नि दामनि ॥ ३ ॥
देवी यदि तविषी त्वावृधोतय इन्द्रं सिषक्त्युषसं न सूर्यः।
यो धृष्णुना शवसा बाधते तम इयर्ति रेणुं बृहदर्हरिष्वणिः ॥ ४ ॥

वि यत्तिरो धरुणमच्युतं रजोऽतिष्ठिपो दिव आतासु बर्हणा।
स्वर्मीळ्हे यन्मद इन्द्र हर्ष्याहन्वृत्रं निरपामौब्जो अर्णवम् ॥ ५ ॥
त्वं दिवो धरुणं धिष ओजसा पृथिव्या इन्द्र सदनेषु माहिनः।
त्वं सुतस्य मदे अरिणा अपो वि वृत्रस्य समया पाष्यारुजः ॥ ६ ॥

[५७] सप्तपञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—सव्य आङ्गिरसः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१, २, ४ जगती; ३ विराड्जगती; ५ भुरिक्त्रिष्टुप्; ६ निचृज्जगती ॥ स्वरः—१-४, ६ निषादः; ५ धैवतः ॥

अथ द्वाविंशो वर्गः ॥ २२ ॥

प्र मंहिष्ठाय बृहते बृहद्रये सत्यशुष्माय तवसे मतिं भरे।
अपामिव प्रवणे यस्य दुर्धरं राधो विश्वायु शवसे अपावृतम् ॥ १ ॥
अध ते विश्वमनु हासदिष्टय आपो निम्नेव सवना हविष्मतः।
यत्पर्वते न समशीत हर्यत इन्द्रस्य वज्रः शनथिता हिरण्ययः ॥ २ ॥
अस्मै भीमाय नमसा समध्वर उषो न शुभ्र आ भरा पनीयसे।
यस्य धाम श्रवसे नामेन्द्रियं ज्योतिरकारि हरितो नायसे ॥ ३ ॥
इमे त इन्द्र ते वयं पुरुष्टुत ये त्वारभ्य चरामसि प्रभूवसो।
नहि त्वदन्यो गिर्वणो गिरः सघत्क्षोणीरिव प्रति नो हर्य तद्वचः ॥ ४ ॥
भूरि त इन्द्र वीर्यं तव स्मस्यस्य स्तोतुर्मघवन्कामम आ पृण।
अनु ते द्यौर्बृहती वीर्यं मम इयं च ते पृथिवी नेम ओजसे ॥ ५ ॥
त्वं तमिन्द्र पर्वतं महामुरुं वज्रेण वज्रिन्पर्वशश्चकर्तिथ।
अवासृजो निवृताः सर्तवा अपः सत्रा विश्वं दधिषे केवलं सहः ॥ ६ ॥

एकादशोऽनुवाकः [५८] अष्टपञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—नोधा गौतमः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१, ५ जगती; २ विराड्जगती; ३ त्रिष्टुप्; ४ निचृज्जगती; ६, ७, ९ निचृत्त्रिष्टुप्; ८ विराट्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१, २, ४, ५ निषादः; ३, ६-९ धैवतः ॥

अथ त्रयोविंशो वर्गः ॥ २३ ॥

नू चित्सहोजा अमृतो नि तुन्दते होता यद्दूतो अभवद्विवस्वतः।
वि साधिष्ठेभिः पथिभी रजो मम आ देवताता हविषा विवासति ॥ १ ॥
आ स्वमद्म युवमानो अजरस्तृष्वविष्यन्नतसेषु तिष्ठति ।
अत्यो न पृष्ठं प्रुषितस्य रोचते दिवो न सानु स्तनयन्नचिक्रदत् ॥ २ ॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

क्राणा रुद्रेभिर्वसुभिः पुरोहितो होता निषत्तो रयिषाळमर्त्यः।
रथो न विक्ष्वृञ्जसान आयुषु व्यानुषग्वायीं देव ऋण्वति॥ ३॥
वि वातजूतो अतसेषु तिष्ठते वृथा जुहूभिः सृण्या तुविष्वणिः।
तृषु यदग्ने वनिनो वृषायसे कृष्णं त एम रुशदूर्मे अजर॥ ४॥
तपुर्जम्भो वन आ वातचोदितो यूथे न साह्वाँ अव वाति वंसगः।
अभिव्रजन्नक्षितं पाजसा रजः स्थातुश्चरथं भयते पतत्रिणः॥ ५॥

अथ चतुर्विंशो वर्गः॥ २४॥

दुधुष्टा भृगवो मानुषेष्वा रयिं न चारुं सुहवं जनेभ्यः।
होतारमग्ने अतिथिं वरेण्यं मित्रं न शेवं दिव्याय जन्मने॥ ६॥
होतारं सप्त जुह्वो३ यजिष्ठं यं वाघतो वृणते अध्वरेषु।
अग्निं विश्वेषामरतिं वसूनां सपर्यामि प्रयसा यामि रत्नम्॥ ७॥
अच्छिद्रा सूनो सहसो नो अद्य स्तोतृभ्यो मित्रमहः शर्म यच्छ।
अग्ने गृणन्तमंहस उरुष्योर्जो नपात्पूर्भिरायसीभिः॥ ८॥
भवा वरूथं गृणते विभावो भवा मघवन्मघवद्भ्यः शर्म।
उरुष्याग्ने अंहसो गृणन्तं प्रातर्मक्षू धियावसुर्जगम्यात्॥ ९॥

[५९] एकोनषष्टितमं सूक्तम्

ऋषिः—नोधा गौतमः॥ देवता—अग्निर्वैश्वानरः॥ छन्दः—१ निचृत्त्रिष्टुप्; २, ४ विराट्त्रिष्टुप्; ३ पङ्क्तिः; ५-७ त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१, २, ४-७ धैवतः; ३ पञ्चमः॥

अथ पञ्चविंशो वर्गः॥ २५॥

वया इदग्ने अग्नयस्ते अन्ये त्वे विश्वे अमृता मादयन्ते।
वैश्वानर नाभिरसि क्षितीनां स्थूणेव जनाँ उपमिद्ययन्थ॥ १॥
मूर्धा दिवो नाभिरग्निः पृथिव्या अथाभवदरती रोदस्योः।
तं त्वा देवासोऽजनयन्त देवं वैश्वानर ज्योतिरिदार्याय॥ २॥
आ सूर्ये न रश्मयो ध्रुवासो वैश्वानरे दधिरेऽग्ना वसूनि।
या पर्वतेष्वोषधीष्वप्सु या मानुषेष्वसि तस्य राजा॥ ३॥
बृहतीइव सूनवे रोदसी गिरो होता मनुष्यो३ न दक्षः।
स्ववते सत्यशुष्माय पूर्विर्वैश्वानराय नृतमाय यह्वीः॥ ४॥
दिवश्चित्ते बृहतो जातवेदो वैश्वानर प्र रिरिचे महित्वम्।
राजा कृष्टीनामसि मानुषीणां युधा देवेभ्यो वरिवश्चकर्थ॥ ५॥

प्र नू महित्वं वृषभस्य वोचं यं पूरवो वृत्रहणं सचन्ते।
वैश्वानरो दस्युमग्निर्जघन्वाँ अधूनोत्काष्ठा अव शम्बरं भेत्॥ ६॥
वैश्वानरो महिम्ना विश्वकृष्टिर्भरद्वाजेषु यजतो विभावा।
शातवनेये शतिनीभिरग्निः पुरुणीथे जरते सूनृतावान्॥ ७॥

[६०] षष्टितमं सूक्तम्

ऋषिः—नोधा गौतमः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—१ विराट्त्रिष्टुप्; २, ४ भुरिक्पङ्क्तिः; ३, ५ त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१, ३, ५ धैवतः; २, ४ पञ्चमः॥

अथ षड्विंशो वर्गः॥ २६॥

वह्निं यशसं विदथस्य केतुं सुप्राव्यं दूतं सद्योअर्थम्।
द्विजन्मानं रयिमिव प्रशस्तं रातिं भरद्भृगवे मातरिश्वा॥ १॥
अस्य शासुरुभयासः सचन्ते हविष्मन्त उशिजो ये च मर्तीः।
दिवश्चित्पूर्वो न्यसादि होतापृच्छ्यो विश्पतिर्विक्षु वेधाः॥ २॥
तं नव्यसी हृद आ जायमानमस्मत्सुकीर्तिर्मधुजिह्वमश्याः।
यमृत्विजो वृजने मानुषासः प्रयस्वन्त आयवो जीजनन्त॥ ३॥
उशिक्पावक्को वसुर्मानुषेषु वरेण्यो होताधायि विक्षु।
दमूना गृहपतिर्दम आँ अग्निर्भुवद्रयिपती रयीणाम्॥ ४॥
तं त्वा वयं पतिमग्ने रयीणां प्र शंसामो मतिभिर्गोतमासः।
आशुं न वाजम्भरं मर्जयन्तः प्रातर्मक्षू धियावसुर्जगम्यात्॥ ५॥

[६१] एकषष्टितमं सूक्तम्

ऋषिः—नोधा गौतमः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१, १४, १६ विराट्त्रिष्टुप्; २, ७, ९ निचृत्त्रिष्टुप्; ३, ४, ६, ८, १०, १२ पङ्क्तिः; ५, १५ विराट्पङ्क्तिः; ११ भुरिक्पङ्क्तिः; १३ निचृत्पङ्क्तिः॥ स्वरः—१, २, ७, ९, १४, १६ धैवतः; ३-६, ८, १०-१३, १५ पञ्चमः॥

अथ सप्तविंशो वर्गः॥ २७॥

अस्मा इदु प्र तवसे तुराय प्रयो न हर्मि स्तोमं माहिनाय।
ऋचीषमायाध्रिगव ओहमिन्द्राय ब्रह्माणि राततमा॥ १॥
अस्मा इदु प्रयइव प्र यंसि भरामाङ्गूषं बाधे सुवृक्ति।
इन्द्राय हृदा मनसा मनीषा प्रत्नाय पत्ये धियो मर्जयन्त॥ २॥
अस्मा इदु त्यमुपमं स्वर्षां भरामाङ्गूषमास्येन।
मंहिष्ठमच्छोक्तिभिर्मतीनां सुवृक्तिभिः सूरिं वावृधध्यै॥ ३॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अस्मा इदु स्तोमं सं हिनोमि रथं न तष्टेव तत्सिनाय।
गिरश्च गिर्वाहसे सुवृक्तीन्द्राय विश्वमिन्वं मेधिराय॥ ४॥
अस्मा इदु सप्तिमिव श्रवस्येन्द्रायार्कं जुह्वा३ समञ्जे।
वीरं दानौकसं वन्दध्यै पुरां गूर्तश्रवसं दर्माणम्॥ ५॥

अथ अष्टाविंशो वर्गः॥ २८॥

अस्मा इदु त्वष्टा तक्षद्वज्रं स्वपस्तमं स्वर्यं१ रणाय।
वृत्रस्य चिद्विदद्येन मर्म तुजन्नीशानस्तुजता किये धाः॥ ६॥
अस्येदु मातुः सवनेषु सद्यो महः पितुं पपिवाञ्चार्वन्ना।
मुषायद्विष्णुः पचतं सहीयान्विध्यद्वराहं तिरो अद्रिमस्ता॥ ७॥
अस्मा इदु ग्नाश्चिद्देवपत्नीरिन्द्रायार्कमहिहत्य ऊवुः।
परि द्यावापृथिवी जभ्र उर्वी नास्य ते महिमानं परि ष्टः॥ ८॥
अस्येदेव प्र रिरिचे महित्वं दिवस्पृथिव्याः पर्यन्तरिक्षात्।
स्वराळिन्द्रो दम आ विश्वगूर्तः स्वरिरमत्रो ववक्षे रणाय॥ ९॥
अस्येदेव शवसा शुषन्तं वि वृश्चद्वज्रेण वृत्रमिन्द्रः।
गा न व्राणा अवनीरमुञ्चदभि श्रवो दावने सचेताः॥ १०॥

अथ एकोनत्रिंशो वर्गः॥ २९॥

अस्येदु त्वेषसा रन्त सिन्धवः परि यद्वज्रेण सीमयच्छत्।
ईशानकृद्दाशुषे दशस्यन्तुर्वीतये गाधं तुर्वणिः कः॥ ११॥
अस्मा इदु प्र भरा तूतुजानो वृत्राय वज्रमीशानः किये धाः।
गोर्न पर्व वि रदा तिरश्चेष्यन्नर्णांस्यपां चरध्यै॥ १२॥
अस्येदु प्र ब्रूहि पूर्व्याणि तुरस्य कर्माणि नव्य उक्थैः।
युधे यदिष्णान आयुधान्यृघायमाणो निरिणाति शत्रून्॥ १३॥
अस्येदु भिया गिरयश्च दृळ्हा द्यावा च भूमा जनुषस्तुजेते।
उपो वेनस्य जोगुवान ओणिं सद्यो भुवद्वीर्याय नोधाः॥ १४॥
अस्मा इदु त्यदनु दाय्येषामेको यद्वव्ने भूरेरीशानः।
प्रैतशं सूर्ये पस्पृधानं सौवश्व्ये सुष्विमावदिन्द्रः॥ १५॥
एवा ते हारियोजना सुवृक्तीन्द्र ब्रह्माणि गोतमासो अक्रन्।
ऐषु विश्वपेशसं धियं धाः प्रातर्मक्षू धियावसुर्जगम्यात्॥ १६॥

इति प्रथमाष्टके चतुर्थोऽध्यायः॥

अथ पञ्चमोऽध्यायः

[६२] द्विषष्टितमं सूक्तम्

ऋषिः—नोधा गौतमः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१, ४, ६ विराडार्षीत्रिष्टुप्; २, ५, ९ निचृदार्षीत्रिष्टुप्; ३, ७, ८ भुरिगार्षीपङ्क्तिः; १०-१३ आर्षीत्रिष्टुप्॥ स्वरः—१, २, ४-६, ९-१३ धैवतः; ३, ७, ८ पञ्चमः॥

अथ प्रथमो वर्गः॥ १॥

प्र मन्महे शवसानाय शूषमाङ्गूषं गिर्वणसे अङ्गिरस्वत्।
सुवृक्तिभिः स्तुवत ऋग्मियायार्चामार्कं नरे विश्रुताय॥ १॥
प्र वो महे महि नमो भरध्वमाङ्गूष्यं शवसानाय साम।
येना नः पूर्वे पितरः पदज्ञा अर्चन्तो अङ्गिरसो गा अविन्दन्॥ २॥
इन्द्रस्याङ्गिरसां चेष्टौ विदत्सरमा तनयाय धासिम्।
बृहस्पतिर्भिनदद्रिं विदद्गाः समुस्रियाभिर्वावशन्त नरः॥ ३॥
स सुष्टुभा स स्तुभा सप्त विप्रैः स्वरेणाद्रिं स्वर्यो३नवग्वैः।
सरण्युभिः फलिगमिन्द्र शक्र वलं रवेण दरयो दशग्वैः॥ ४॥
गृणानो अङ्गिरोभिर्दस्म वि वरुषसा सूर्येण गोभिरन्धः।
वि भूम्या अप्रथय इन्द्र सानु दिवो रज उपरमस्तभायः॥ ५॥

अथ द्वितीयो वर्गः॥ २॥

तदु प्रयक्षतममस्य कर्म दस्मस्य चारुतममस्ति दंसः।
उपह्वरे यदुपरा अपिन्वन्मध्वर्णसो नद्य१श्चतस्रः॥ ६॥
द्विता वि वव्रे सनजा सनीळे अयास्यः स्तवमानेभिरर्कैः।
भगो न मेने परमे व्योमन्नधारयद्रोदसी सुदंसाः॥ ७॥
सनाद्दिवं परि भूमा विरूपे पुनर्भुवा युवती स्वेभिरेवैः।
कृष्णोभिरक्तोषा रुशद्भिर्वपुर्भिरा चरतो अन्यान्या॥ ८॥
सनेमि सख्यं स्वपस्यमानः सूनुर्दीधार शवसा सुदंसाः।
आमासु चिद्दधिषे पक्वमन्तः पयः कृष्णासु रुशद्रोहिणीषु॥ ९॥
सनात्सनीळा अवनीरवाता व्रता रक्षन्ते अमृताः सहोभिः।
पुरू सहस्रा जनयो न पत्नीर्दुवस्यन्ति स्वसारो अह्रयाणम्॥ १०॥

अथ तृतीयो वर्गः॥ ३॥

सनायुवो नमसा नव्यो अर्कैर्वसूयवो मतयो दस्म दद्रुः।
पतिं न पत्नीरुशतीरुशन्तं स्पृशन्ति त्वा शवसावन्मनीषाः॥ ११॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सनादेव तव रायो गभस्तौ न क्षीयन्ते नोप दस्यन्ति दस्म।
द्युमाँ असि क्रतुमाँ इन्द्र धीरः शिक्षा शचीवस्तव नः शचीभिः॥ १२॥
सनायते गोतम इन्द्र नव्यमतक्षद्ब्रह्म हरियोजनाय।
सुनीथाय नः शवसान नोधाः प्रातर्मक्षू धियावसुर्जगम्यात्॥ १३॥

[६३] त्रिषष्टितमं सूक्तम्

ऋषिः—नोधा गौतमः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१, ७-९ भुरिगार्षीपङ्क्तिः; २, ४ विराट्त्रिष्टुप्; ३ विराट्पङ्क्तिः; ५ भुरिगार्षीजगती; ६ स्वराडार्षीबृहती॥ स्वरः—१, ३, ७-९ पञ्चमः; २, ४ धैवतः; ५ निषादः; ६ मध्यमः॥

अथ चतुर्थो वर्गः॥ ४॥

त्वं महाँ इन्द्र यो ह शुष्मैर्द्यावा जज्ञानः पृथिवी अमे धाः।
यद्ध ते विश्वा गिर्यश्चिदभ्वा भिया दृळ्हासः किरणा नैजन्॥ १॥
आ यद्धरी इन्द्र विव्रता वेरा ते वज्रं जरिता बाह्वोधीत्।
येनाविहर्यतक्रतो अमित्रान्पुरः कृष्णासि पुरुहूत पूर्वीः॥ २॥
त्वं सत्य इन्द्र धृष्णुरेतान्त्वमृभुक्षा नर्यस्त्वं षाट्।
त्वं शुष्णं वृजनं पृक्ष आणौ यूने कुत्साय द्युमते सचाहन्॥ ३॥
त्वं ह त्यदिन्द्र चोदीः सखा वृत्रं यद्वज्रिन्वृषकर्मञ्जघन्थ।
यद्ध शूर वृषमणः पराचैर्विं दस्यूँर्योनावकृतो वृथाषाट्॥ ४॥
त्वं ह त्यदिन्द्रारिषण्यन्दृळ्हस्य चिन्मतीनामजुष्टौ।
व्यस्मदा काष्ठा अर्वते वर्घनेव वज्रिञ्छ्नथिह्यमित्रान्॥ ५॥

अथ पञ्चमो वर्गः॥ ५॥

त्वां ह त्यदिन्द्राणीसातौ स्वर्मीळ्हे नर आजा हवन्ते।
तव स्वधाव इयमा समर्य ऊतिर्वाजेष्वतसाय्या भूत्॥ ६॥
त्वं ह त्यदिन्द्र सप्त युध्यन्पुरो वज्रिन्पुरुकुत्साय दर्दः।
बर्हिर्न यत्सुदासे वृथा वर्गंहो राजन्वरिवः पूरवे कः॥ ७॥
त्वं त्यां न इन्द्र देव चित्रामिषमापो न पीपयः परिज्मन्।
यया शूर प्रत्यस्मभ्यं यंसि त्मनमूर्जं न विश्वध क्षरध्यै॥ ८॥
अकारि त इन्द्र गोतमेभिर्ब्रह्माण्योक्ता नमसा हरिभ्याम्।
सुपेशसं वाजमा भरा नः प्रातर्मक्षू धियावसुर्जगम्यात्॥ ९॥

[६४] चतुःषष्टितमं सूक्तम्

ऋषिः—नोधा गौतमः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१, ४, ६, ९ विराड्जगती; २, ३, ५, ७, १०-१३ निचृज्जगती; ८, १४ जगती; १५ निचृत्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१-१४ निषादः; १५ धैवतः॥

अथ षष्ठो वर्गः॥ ६॥

वृष्णो शर्धाय सुमखाय वेधसे नोधः सुवृक्तिं प्र भरा मरुद्भ्यः।
अपो न धीरो मनसा सुहस्त्यो गिरः समञ्जे विदथेष्वाभुवः॥ १॥
ते जज्ञिरे दिव ऋष्वास उक्षणो रुद्रस्य मर्या असुरा अरेपसः।
पावकासः शुचयः सूर्यादव सत्वानो न द्रप्सिनो घोरवर्पसः॥ २॥
युवानो रुद्रा अजरा अभोग्घनो ववक्षुरध्रिगावः पर्वताइव।
दृळ्हा चिद्विश्वा भुवनानि पार्थिवा प्र च्यावयन्ति दिव्यानि मज्मना॥ ३॥
चित्रैरञ्जिभिर्वपुषे व्यञ्जते वक्षःसु रुक्माँ अधि येतिरे शुभे।
अंसेष्वेषां नि मिमृक्षुरृष्टयः साकं जज्ञिरे स्वधया दिवो नरः॥ ४॥
ईशानकृतो धुनयो रिशादसो वातान्विद्युतस्तविषीभिरक्रत।
दुहन्त्यूधर्दिव्यानि धूतयो भूमिं पिन्वन्ति पयसा परिज्रयः॥ ५॥

अथ सप्तमो वर्गः॥ ७॥

पिन्वन्त्यपो मरुतः सुदानवः पयो घृतवद्विदथेष्वाभुवः।
अत्यं न मिहे वि नयन्ति वाजिनमुत्सं दुहन्ति स्तनयन्तमक्षितम्॥ ६॥
महिषासो मायिनश्चित्रभानवो गिरयो न स्वतवसो रघुष्यदः।
मृगाइव हस्तिनः खादथा वना यदारुणीषु तविषीरयुग्ध्वम्॥ ७॥
सिंहाइव नानदति प्रचेतसः पिशाइव सुपिशो विश्ववेदसः।
क्षपो जिन्वन्तः पृषतीभिरृष्टिभिः समित्सबाधः शवसाहिमन्यवः॥ ८॥
रोदसी आ वदता गणश्रियो नृषाचः शूराः शवसाहिमन्यवः।
आ वन्धुरेष्वमतिर्न दर्शता विद्युत्र तस्थौ मरुतो रथेषु वः॥ ९॥
विश्ववेदसो रयिभिः समोकसः संमिश्लासस्तविषीभिर्विरुक्षिणः।
अस्तार इषुं दधिरे गभस्त्योरनन्तशुष्मा वृषखादयो नरः॥ १०॥

अथ अष्टमो वर्गः॥ ८॥

हिरण्ययेभिः पविभिः पयोवृध उज्जिघ्नन्त आपथ्योः न पर्वतान्।
मखा अयासः स्वसृतो ध्रुवच्युतो दुधक्रतो मरुतो भ्राजदृष्टयः॥ ११॥
घृषुं पावकं वनिनं विचर्षणिं रुद्रस्य सूनुं हवसा गृणीमसि।
रजस्तुरं तवसं मारुतं गणमृजीषिणं वृषणं सश्चत श्रिये॥ १२॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्र नू स मर्तः शवसा जनाँ अति तस्थौ व ऊती मरुतो यमावत।
अर्वद्भिर्वाजं भरते धना नृभिरापृच्छ्यं क्रतुमा क्षेति पुष्यति॥ १३॥
चर्कृत्यं मरुतः पृत्सु दुष्टरं द्युमन्तं शुष्मं मघवत्सु धत्तन।
धनस्पृतमुक्थ्यं विश्वचर्षणिं तोकं पुष्येम तनयं शतं हिमाः॥ १४॥
नू ष्ठिरं मरुतो वीरवन्तमृतीषाहं रयिमस्मासु धत्त।
सहस्रिणं शतिनं शूशुवांसं प्रातर्मक्षू धियावसुर्जगम्यात्॥ १५॥

द्वादशोऽनुवाकः [६५] पञ्चषष्टितमं सूक्तम्

ऋषिः—पराशरः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—१-३, ५ निचृत्पङ्क्तिः; ४ विराट्पङ्क्तिः॥
स्वरः—पञ्चमः॥

अथ नवमो वर्गः॥ ९॥

पश्वा न तायुं गुहा चतन्तं नमो युजानं नमो वहन्तम्।
सजोषा धीराः पदैरनु ग्मन्नुप त्वा सीदन्विश्वे यजत्राः॥ १॥
ऋतस्य देवा अनु व्रता गुर्भुवत्परिष्टिर्द्यौर्न भूम।
वर्धन्तीमापः पन्वा सुशिश्विमृतस्य योना गर्भे सुजातम्॥ २॥
पुष्टिर्न रण्वा क्षितिर्न पृथ्वी गिरिर्न भुज्म क्षोदो न शंभु।
अत्यो नाज्मन्त्सर्गप्रतक्तः सिन्धुर्न क्षोदः क ईं वराते॥ ३॥
जामिः सिन्धूनां भ्रातेव स्वस्रामिभ्यान्न राजा वनान्यत्ति।
यद्वातजूतो वना व्यस्थादग्निर्ह दाति रोमा पृथिव्याः॥ ४॥
श्वसित्यप्सु हंसो न सीदन्क्रत्वा चेतिष्ठो विशामुषर्भुत्।
सोमो न वेधा ऋतप्रजातः पशुर्न शिश्वा विभुर्दूरेभाः॥ ५॥

[६६] षट्षष्टितमं सूक्तम्

ऋषिः—पराशरः शाक्त्यः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—१ पङ्क्तिः; २ भुरिक्पङ्क्तिः;
३ निचृत्पङ्क्तिः; ४, ५ विराट्पङ्क्तिः॥ स्वरः—पञ्चमः॥

अथ दशमो वर्गः॥ १०॥

रयिर्न चित्रा सूरो न संदृगायुर्न प्राणो नित्यो न सूनुः।
तक्वा न भूर्णिर्वना सिषक्ति पयो न धेनुः शुचिर्विभावा॥ १॥
दाधार क्षेममोको न रण्वो यवो न पक्वो जेता जनानाम्।
ऋषिर्न स्तुभ्वा विक्षु प्रशस्तो वाजी न प्रीतो वयो दधाति॥ २॥
दुरोकशोचिः क्रतुर्न नित्यो जायेव योनावरं विश्वस्मै।
चित्रो यदभ्राट्छ्वेतो न विक्षु रथो न रुक्मी त्वेषः समत्सु॥ ३॥
सेनेव सृष्टामं दधात्यस्तुर्न दिद्युत्त्वेषप्रतीका।
यमो ह जातो यमो जनित्वं जारः कनीनां पतिर्जनीनाम्॥ ४॥
तं वश्चराथा वयं वसत्यास्तं न गावो नक्षन्त इद्धम्।
सिन्धुर्न क्षोदः प्र नीचीरैनोन्नवन्त गावः स्व१र्दृशीके॥ ५॥

[६७] सप्तषष्टितमं सूक्तम्

ऋषिः—पराशरः शाक्त्यः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—१ पङ्क्तिः;
२ भुरिक्पङ्क्तिः; ३ निचृत्पङ्क्तिः; ४, ५ विराट्पङ्क्तिः॥
स्वरः—पञ्चमः॥

अथ एकादशो वर्गः॥ ११॥

वनेषु जायुर्मर्तेषु मित्रो वृणीते श्रुष्टिं राजेवाजुर्यम्।
क्षेमो न साधुः क्रतुर्न भद्रो भुवत्स्वाधीर्होता हव्यवाट्॥ १॥
हस्ते दधानो नृम्णा विश्वान्यमे देवान्धाद्गुहा निषीदन्।
विदन्तीमत्र नरो धियंधा हृदा यत्तष्टान्मन्त्राँ अशंसन्॥ २॥
अजो न क्षां दाधार पृथिवीं तस्तम्भ द्यां मन्त्रेभिः सत्यैः।
प्रिया पदानि पश्वो नि पाहि विश्वायुरग्ने गुहा गुहं गाः॥ ३॥
य ईं चिकेत गुहा भवन्तमा यः ससाद धारामृतस्य।
वि ये चृतन्त्यृता सपन्त आदिद्वसूनि प्र ववाचास्मै॥ ४॥
वि यो वीरुत्सु रोधन्महित्वोत प्रजा उत प्रसूष्वन्तः।
चित्तिरपां दमे विश्वायुः सद्मेव धीराः संमाय चक्रुः॥ ५॥

[६८] अष्टषष्टितमं सूक्तम्

ऋषिः—पराशरः शाक्त्यः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—१, ४ निचृत्पङ्क्तिः;
२, ३, ५ पङ्क्तिः॥ स्वरः—पञ्चमः॥

अथ द्वादशो वर्गः॥ १२॥

श्रीणन्नुप स्थाद्दिवं भुरण्युः स्थातुश्चरथमक्तून्व्यूर्णोत्।
परि यदेषामेको विश्वेषां भुवद्देवो देवानां महित्वा॥ १॥
आदित्ते विश्वे क्रतुं जुषन्त शुष्काद्यद्देव जीवो जनिष्ठाः।
भजन्त विश्वे देवत्वं नाम ऋतं सपन्तो अमृतमेवैः॥ २॥
ऋतस्य प्रेषा ऋतस्य धीतिर्विश्वायुर्विश्वे अपांसि चक्रुः।
यस्तुभ्यं दाशाद्यो वा ते शिक्षात्तस्मै चिकित्वान्रयिं दयस्व॥ ३॥
होता निषत्तो मनोरपत्ये स चिन्वासां पती रयीणाम्।
इच्छन्त रेतो मिथस्तनूषु सं जानत स्वैर्दक्षैरमूराः॥ ४॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पितुर्न पुत्राः क्रतुं जुषन्त श्रोषन्ये अस्य शासं तुरासः।
वि राय और्णोद्दुरः पुरुक्षुः पिपेश नाकं स्तृभिर्दमूनाः॥५॥

[६९] एकोनसप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—पराशरः शक्तिपुत्रः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—१ पङ्क्तिः; २, ३ निचृत्पङ्क्तिः; ४ भुरिक्पङ्क्तिः; ५ विराड्पङ्क्तिः॥ स्वरः—पञ्चमः॥

अथ त्रयोदशो वर्गः॥ १३॥

शुक्रः शुशुक्वाँ उषो न जारः पप्रा समीची दिवो न ज्योतिः।
परि प्रजातः क्रत्वा बभूथ भुवो देवानां पिता पुत्रः सन्॥१॥
वेधा अदृग्मो अग्निर्विजानन्नूधर्न गोनां स्वाद्मा पितूनाम्।
जने न शेव आहूर्यः सन्मध्ये निषत्तो रण्वो दुरोणे॥२॥
पुत्रो न जातो रण्वो दुरोणे वाजी न प्रीतो विशो वि तारीत्।
विशो यदह्वे नृभिः सनीळा अग्निर्देवत्वा विश्वान्यश्याः॥३॥
नकिष्ट एता व्रता मिनन्ति नृभ्यो यदेभ्यः श्रुष्टिं चकर्थ।
तत्तु ते दंसो यदहन्त्समानैर्नृभिर्यद्युक्तो विवे रपांसि॥४॥
उषो न जारो विभावोस्रः संज्ञातरूपश्चिकेतदस्मै।
त्मना वहन्तो दुरो व्यृण्वन्नवन्त विश्वे स्वर्दृशीके॥५॥

[७०] सप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—पराशरः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—१, ४ विराट्पङ्क्तिः; २ पङ्क्तिः; ३, ५ निचृत्पङ्क्तिः; ६ याजुषीपङ्क्तिः॥ स्वरः—पञ्चमः॥

अथ चतुर्दशो वर्गः॥ १४॥

वनेम पूर्वीरर्यो मनीषा अग्निः सुशोको विश्वान्यश्याः।
आ दैव्यानि व्रता चिकित्वाना मानुषस्य जनस्य जन्म॥१॥
गर्भो यो अपां गर्भो वनानां गर्भश्च स्थातां गर्भश्चरथाम्।
अद्रौ चिदस्मा अन्तर्दुरोणे विशां न विश्वो अमृतः स्वाधीः॥२॥
स हि क्षपावाँ अग्नी रयीणां दाशद्यो अस्मा अरं सूक्तैः।
एता चिकित्वो भूमा नि पाहि देवानां जन्म मर्ताँश्च विद्वान्॥३॥
वर्धान्यं पूर्वीः क्षपो विरूपाः स्थातुश्च रथमृतप्रवीतम्।
अरार्धि होता स्वर्निषत्तः कृण्वन्विश्वान्यपांसि सत्या॥४॥
गोषु प्रशस्तिं वनेषु धिषे भरन्त विश्वे बलिं स्वर्णः।
वि त्वा नरः पुरुत्रा सपर्यन्पितुर्न जिव्रेर्वि वेदो भरन्त॥५॥
साधुर्न गृध्नुरस्तेव शूरो यातेव भीमस्त्वेषः समत्सु॥६॥

[७१] एकसप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—पराशरः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—१, ६, ७ त्रिष्टुप्; २, ५ निचृत्त्रिष्टुप्; ३, ४, ८, १० विराट्त्रिष्टुप्; ९ भुरिक्पङ्क्तिः॥ स्वरः—१-८, १० धैवतः; ९ पञ्चमः॥

अथ पञ्चदशो वर्गः॥ १५॥

उप प्र जिन्वन्नुशतीरुशन्तं पतिं न नित्यं जनयः सनीळाः।
स्वसारः श्यावीमरुषीमजुष्रञ्चित्रमुच्छन्तीमुषसं न गावः॥१॥
वीळु चिद् दृळ्हा पितरो न उक्थैरद्रिं रुजन्नङ्गिरसो रवेण।
चक्रुर्दिवो बृहतो गातुमस्मे अहुः स्वर्विविदुः केतुमुस्राः॥२॥
दधन्नृतं धनयन्नस्य धीतिमादिद्यो दिधिष्वो विभृत्राः।
अतृष्यन्तीरपसो यन्त्यच्छा देवाञ्जन्म प्रयसा वर्धयन्तीः॥३॥
मथीद्यदीं विभृतो मातरिश्वा गृहेगृहे श्येतो जेन्यो भूत्।
आदीं राज्ञे न सहीयसे सचा सन्ना दूत्यं भृगवाणो विवाय॥४॥
महे यत्पित्र ईं रसं दिवे करव त्सरत्पृशन्यश्चिकित्वान्।
सृजदस्ता धृषता दिद्युमस्मै स्वायां देवो दुहितरि त्विषिं धात्॥५॥

अथ षोडशो वर्गः॥ १६॥

स्व आ यस्तुभ्यं दम आ विभाति नमो वा दाशादुशतो अनु द्यून्।
वर्धो अग्ने वयो अस्य द्विबर्हा यासद्राया सरथं यं जुनासि॥६॥
अग्निं विश्वा अभि पृक्षः सचन्ते समुद्रं न स्रवतः सप्त यह्वीः।
न जामिभिर्वि चिकिते वयो नो विदा देवेषु प्रमतिं चिकित्वान्॥७॥
आ यदिषे नृपतिं तेज आनट् छुचि रेतो निषिक्तं द्यौरभीके।
अग्निः शर्धमनवद्यं युवानं स्वाध्यं जनयत्सूदयच्च॥८॥
मनो न योऽध्वनः सद्य एत्येकः सत्रा सूरो वस्व ईशे।
राजाना मित्रावरुणा सुपाणी गोषु प्रियममृतं रक्षमाणा॥९॥
मा नो अग्ने सख्या पित्र्याणि प्र मर्षिष्ठा अभि विदुष्कविः सन्।
नभो न रूपं जरिमा मिनाति पुरा तस्या अभिशस्तेरधीहि॥१०॥

[७२] द्विसप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—पराशरः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—१, २, ५, ६, ९ विराट्त्रिष्टुप्; ४, १० त्रिष्टुप्; ७ निचृत्त्रिष्टुप्; ३, ८ भुरिक्पङ्क्तिः॥ स्वरः—१, २, ४-७, ९, १० धैवतः; ३, ८ पञ्चमः॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अथ सप्तदशो वर्गः ॥ १७ ॥

नि काव्या वेधसः शश्वतस्कर्हस्ते दधानो नर्या पुरूणि।
अग्निर्भुवद्रयिपती रयीणां सत्रा चक्राणो अमृतानि विश्वा ॥ १ ॥
अस्मे वत्सं परि षन्तं न विन्दन्निच्छन्तो विश्वे अमृता अमूराः।
श्रमयुवः पदव्यो धियंधास्तस्थुः पदे परमे चार्वग्नेः ॥ २ ॥
तिस्रो यदग्ने शरदस्त्वामिच्छुचिं घृतेन शुचयः सपर्यान्।
नामानि चिद्दधिरे यज्ञियान्यसूदयन्त तन्वः सुजाताः ॥ ३ ॥
आ रोदसी बृहती वेविदानाः प्र रुद्रिया जभ्रिरे यज्ञियासः।
विदन्मर्तो नेमधिता चिकित्वानग्निं पदे परमे तस्थिवांसम् ॥ ४ ॥
संजानाना उप सीदन्नभिज्ञु पत्नीवन्तो नमस्यं नमस्यन्।
रिरिक्वांसस्तन्वः कृण्वत स्वाः सखा सख्युर्निमिषि रक्षमाणाः ॥ ५ ॥

अथ अष्टादशो वर्गः ॥ १८ ॥

त्रिः सप्त यद्गुह्यानि त्वे इत्पदाविदन्निहिता यज्ञियासः।
तेभी रक्षन्ते अमृतं सजोषाः पशून्च स्थातॄन्चरथं च पाहि ॥ ६ ॥
विद्वाँ अग्ने वयुनानि क्षितीनां व्यानुषक्छुरुधो जीवसे धाः।
अन्तर्विद्वाँ अध्वनो देवयानानतन्द्रो दूतो अभवो हविर्वाट् ॥ ७ ॥
स्वाध्यो दिव आ सप्त यह्वी रायो दुरो व्यृतज्ञा अजानन्।
विदद्गव्यं सरमा दृळ्हमूर्वं येना नु कं मानुषी भोजते विट् ॥ ८ ॥
आ ये विश्वा स्वपत्यानि तस्थुः कृण्वानासो अमृतत्वाय गातुम्।
मह्ना महद्भिः पृथिवी वि तस्थे माता पुत्रैरदितिर्धायसे वेः ॥ ९ ॥
अधि श्रियं नि दधुश्चारुमस्मिन्दिवो यदक्षी अमृता अकृण्वन्।
अध क्षरन्ति सिन्धवो न सृष्टाः प्र नीचीरग्ने अरुषीरजानन् ॥ १० ॥

[७३] त्रिसप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—पराशरः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१, २, ४, ५, ७, ९, १० निचृत्त्रिष्टुप्; ३, ६ त्रिष्टुप्; ८ विराट्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

अथ एकोनविंशो वर्गः ॥ १९ ॥

रयिर्न यः पितृवित्तो वयोधाः सुप्रणीतिश्चिकितुषो न शासुः।
स्योनशीरतिथिर्न प्रीणानो होतेव सद्म विधतो वि तारीत् ॥ १ ॥
देवो न यः सविता सत्यमन्मा क्रत्वा निपाति वृजनानि विश्वा।
पुरुप्रशस्तो अमतिर्न सत्य आत्मेव शेवो दिधिषाय्यो भूत् ॥ २ ॥
देवो न यः पृथिवीं विश्वधाया उपक्षेति हितमित्रो न राजा।
पुरःसदः शर्मसदो न वीरा अनवद्या पतिजुष्टेव नारी ॥ ३ ॥
तं त्वा नरो दम आ नित्यमिद्धमग्ने सचन्त क्षितिषु ध्रुवासु।
अधि द्युम्नं नि दधुर्भूर्यस्मिन्भवा विश्वायुर्धरुणो रयीणाम् ॥ ४ ॥
वि पृक्षो अग्ने मघवानो अश्युर्वि सूरयो ददतो विश्वमायुः।
सनेम वाजं समिथेष्वर्यो भागं देवेषु श्रवसे दधानाः ॥ ५ ॥

अथ विंशो वर्गः ॥ २० ॥

ऋतस्य हि धेनवो वावशानाः स्मदूध्नीः पीपयन्त द्युभक्ताः।
परावतः सुमतिं भिक्षमाणा वि सिन्धवः समया सस्रुरद्रिम् ॥ ६ ॥
त्वे अग्ने सुमतिं भिक्षमाणा दिवि श्रवो दधिरे यज्ञियासः।
नक्ता च चक्रुरुषसा विरूपे कृष्णं च वर्णमरुणं च सं धुः ॥ ७ ॥
यात्राये मर्तान्त्सुषूदो अग्ने ते स्याम मघवानो वयं च।
छायेव विश्वं भुवनं सिसक्ष्यापप्रिवान्रोदसी अन्तरिक्षम् ॥ ८ ॥
अवर्धद्भिरग्ने अर्वतो नृभिर्नृन्वीरैर्वीरान्वनुयामा त्वोताः।
ईशानासः पितृवित्तस्य रायो वि सूरयः शतहिमा नो अश्युः ॥ ९ ॥
एता ते अग्न उचथानि वेधो जुष्टानि सन्तु मनसे हृदे च।
शकेम रायः सुधुरो यमं तेऽधि श्रवो देवभक्तं दधानाः ॥ १० ॥

त्रयोदशोऽनुवाकः [७४] चतुःसप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—गोतमो राहूगणः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१, २, ८, ९ निचृद्गायत्री; ३, ५, ६ गायत्री; ४, ७ विराड्गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथ एकविंशो वर्गः ॥ २१ ॥

उपप्रयन्तो अध्वरं मन्त्रं वोचेमाग्नये। आरे अस्मे च शृण्वते ॥ १ ॥
यः स्त्रीहितीषु पूर्व्यः संजग्मानासु कृष्टिषु। अरक्षद्दाशुषे गयम् ॥ २ ॥
उत ब्रुवन्तु जन्तव उदग्निर्वृत्रहाजनि। धनंजयो रणेरणे ॥ ३ ॥
यस्य दूतो असि क्षये वेषि हव्यानि वीतये। दस्मत्कृणोष्यध्वरम् ॥ ४ ॥
तमित्सुहव्यमङ्गिरः सुदेवं सहसो यहो। जना आहुः सुबर्हिषम् ॥ ५ ॥

अथ द्वाविंशो वर्गः ॥ २२ ॥

आ च वहासि ताँ इह देवाँ उप प्रशस्तये। हव्या सुश्चन्द्र वीतये ॥ ६ ॥
न योरुपब्दिरश्व्यः शृण्वे रथस्य कच्चन। यदग्ने यासि दूत्यम् ॥ ७ ॥
त्वोतो वाज्यह्नयोऽभि पूर्वस्मादपरः। प्र दाश्वाँ अग्ने अस्थात् ॥ ८ ॥
उत द्युमत्सुवीर्यं बृहदग्ने विवाससि। देवेभ्यो देव दाशुषे ॥ ९ ॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

[७५] पञ्चसप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—गोतमो राहूगणः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१ गायत्री; २, ४, ५ निचृद्गायत्री; ३ विराड्गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथ त्रयोविंशो वर्गः ॥ २३ ॥

जुषस्व॑ स॒प्रथ॑स्तमं॒ वचो॑ दे॒वप्स॑रस्तमम्। ह॒व्या जु॒ह्वा॑न आ॒सनि॑ ॥ १ ॥
अथा॑ ते अङ्गिरस्तमाग्ने॑ वेधस्तम प्रि॒यम्। वो॒चेम॒ ब्रह्म॑ सान॒सि ॥ २ ॥
कस्ते॑ जा॒मिर्जना॑नामग्ने॒ को दा॒श्वध्व॑रः। को ह॒ कस्मि॒न्नसि॒ श्रितः ॥ ३ ॥
त्वं जा॒मिर्जना॑नामग्ने॑ मि॒त्रो अ॑सि प्रि॒यः। सखा॒ सखि॑भ्य ईड्यः ॥ ४ ॥
यजा॑ नो मि॒त्रावरु॑णा॒ यजा॑ दे॒वाँ ऋ॒तं बृ॒हत्। अग्ने॒ यक्षि॒ स्वं दम॑म् ॥ ५ ॥

[७६] षट्सप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—गोतमो राहूगणः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१, ३, ४ निचृत्त्रिष्टुप्; २, ५ विराट्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

अथ चतुर्विंशो वर्गः ॥ २४ ॥

का त॒ उपे॑ति॒र्मन॑सो॒ वरा॑य॒ भुव॑दग्ने॒ शंत॑मा॒ का म॑नी॒षा।
को वा॑ यज्ञै॒: परि॒ दक्षं॑ त आप॒ केन॑ वा ते॒ मन॑सा दाशेम ॥ १ ॥
एह्य॑ग्न इ॒ह होता॒ नि षी॑दादब्ध॒: सु पु॑रए॒ता भ॑वा नः।
अव॑तां त्वा॒ रोद॑सी विश्वमि॒न्वे यजा॑ म॒हे सौम॑नसाय दे॒वान् ॥ २ ॥
प्र सु विश्वा॑न्रक्षसो धक्ष्य॑ग्ने॒ भवा॑ य॒ज्ञाना॑मभिशस्तिपावा।
अथा व॑हु सोमपतिं॒ हरि॑भ्यामाति॒थ्यम॑स्मै चकृमा सु॒दान॑वे ॥ ३ ॥
प्र॒जाव॑ता॒ वच॑सा॒ वह्नि॑रासा च॑ हुवे नि च॑ सत्सीह दे॒वैः।
वेषि॑ होत्रमुत पो॒त्रं य॑जत्र बो॒धि प्र॑यन्तर्जनि॒तर्व॑सू॒नाम् ॥ ४ ॥
यथा॒ विप्र॑स्य मनु॒षो ह॒विर्भि॑र्दे॒वाँ अय॑जः क॒विभि॑: क॒विः सन्।
ए॒वा हो॑तः सत्यतर॒ त्वम॒द्याग्ने॑ म॒न्द्रया॑ जु॒ह्वा॑ यजस्व ॥ ५ ॥

[७७] सप्तसप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—गोतमो राहूगणः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१ निचृत्पङ्क्तिः; २ निचृत्त्रिष्टुप्; ३-५ विराट्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१ पञ्चमः; २-५ धैवतः ॥

अथ पञ्चविंशो वर्गः ॥ २५ ॥

क॒था दा॑शेमाग्नये॒ कास्मै॑ दे॒वजु॑ष्टोच्यते भा॒मिने॒ गीः।
यो मर्त्ये॑ष्वमृत ऋ॒तावा॒ होता॒ यजि॑ष्ठ इत्कृ॒णोति॑ दे॒वान् ॥ १ ॥
यो अ॑ध्व॒रेषु॑ शंत॒म ऋ॒तावा॒ होता॒ तमू॒ नमो॑भिरा कृणुध्वम्।
अ॒ग्निर्यद्वे॒र्मर्ती॑य दे॒वान्त्स चा॒ बोधा॑ति॒ मन॑सा यजा॒ति ॥ २ ॥
स हि क्रतुः॒ स मर्यः॒ स सा॒धुर्मि॒त्रो न भू॒दद्भु॑तस्य र॒थीः।
तं मेधे॑षु प्रथ॒मं दे॑व॒यन्ती॒र्विश॒ उप॑ ब्रुवते द॒स्ममा॑रीः ॥ ३ ॥
स नो॑ नृ॒णां नृत॑मो रि॒शादा॑ अ॒ग्निर्गिरो॑ऽवसा वेतु धी॒तिम्।
तना॑ च॒ ये म॒घवा॑नः॒ शवि॑ष्ठा॒ वाज॑प्रसूता॒ इष॑यन्त॒ मन्म॑ ॥ ४ ॥
ए॒वाग्निर्गोत॑मेभिर्ऋ॒तावा॒ विप्रे॑भिरस्तोष्ट जा॒तवे॑दाः।
स ए॑षु द्यु॒म्नं पी॑पय॒त्स वाज॑ं स पु॒ष्टिं या॑ति॒ जोष॒मा चि॑कि॒त्वान् ॥ ५ ॥

[७८] अष्टसप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—गोतमो राहूगणः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथ षड्विंशो वर्गः ॥ २६ ॥

अ॒भि त्वा॒ गोत॑मा गि॒रा जा॑तवेदो॒ विच॑र्षणे। द्यु॒म्नैर॒भि प्र णो॑नुमः ॥ १ ॥
तमु॒ त्वा॒ गोत॑मो गि॒रा रा॒यस्का॑मो दुवस्यति। द्यु॒म्नैर॒भि प्र णो॑नुमः ॥ २ ॥
तमु॒ त्वा वा॑ज॒सात॑ममङ्गिर॒स्वद्ध॑वामहे। द्यु॒म्नैर॒भि प्र णो॑नुमः ॥ ३ ॥
तमु॒ त्वा वृ॒त्रहन्त॑मं॒ यो दस्यूँ॑रवधू॒नुषे। द्यु॒म्नैर॒भि प्र णो॑नुमः ॥ ४ ॥
अवो॑चाम॒ रह॑ूगणा अ॒ग्नये॒ मधु॑मद्वचः। द्यु॒म्नैर॒भि प्र णो॑नुमः ॥ ५ ॥

[७९] एकोनाशीतितमं सूक्तम्

ऋषिः—गोतमो राहूगणः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१ विराट्त्रिष्टुप्; २, ३ निचृत्त्रिष्टुप्; ४ आर्ष्युष्णिक्; ५, ६ निचृदार्ष्युष्णिक्; ७, ८, १०, ११ निचृद्गायत्री; ९, १२ गायत्री ॥ स्वरः—१-३ धैवतः; ४-६ ऋषभः; ७-१२ षड्जः ॥

अथ सप्तविंशो वर्गः ॥ २७ ॥

हिर॑ण्यकेशो॒ रज॑सो॒ विसा॑रेऽहि॒र्धुनि॒र्वात॑इव॒ ध्रजी॑मान्।
शुचि॑भ्राजा उ॒षसो॒ नवे॑दा॒ यश॑स्वतीरप॒स्युवो॒ न स॒त्याः ॥ १ ॥
आ तै॑ सु॒पर्णा॑ अमिनन्तँ॒ एवैः॑ कृ॒ष्णो नो॑नाव वृष॒भो यदी॒दम्।
शि॒वाभि॑र्न स्म॒यमा॑नाभि॒रागा॒त्पत॑न्ति॒ मिहः॑ स्त॒नय॑न्त्यु॒भ्रा ॥ २ ॥
यदी॑मृ॒तस्य॒ पय॑सा पि॒यानो॒ नय॑न्नृ॒तस्य॑ प॒थिभी॒ रजि॑ष्ठैः।
अ॒र्य॒मा मि॒त्रो वरु॑णः॒ परि॑ज्मा॒ त्वचं॑ पृञ्च॒न्त्युप॑रस्य॒ योनौ॑ ॥ ३ ॥
अग्ने॒ वाज॑स्य॒ गोम॑त॒ ईशा॑नः सहसो यहो। अ॒स्मे धे॑हि जातवेदो॒ महि॒ श्रवः॑ ॥ ४ ॥
स इ॑धा॒नो वसु॑ष्क॒विर॒ग्निरी॒ळेन्यो॑ गि॒रा। रे॒वद॒स्मभ्यं॑ पुर्वणीक दीदिहि ॥ ५ ॥
क्षु॒पो रा॑जन्नु॒त त्मना॒ग्ने॒ वस्तो॑रु॒तोष॑सः। स ति॑ग्मजम्भ र॒क्षसो॑ दह॒ प्रति॑ ॥ ६ ॥
अवा॑ नो अग्न ऊ॒तिभि॑र्गा॒यत्र॑स्य प्रभ॒र्मणि॑। विश्वा॑सु धी॒षु व॑न्द्य ॥ ७ ॥
आ नो॑ अग्ने र॒यिं भ॑र स॒त्रासा॑हं॒ वरे॑ण्यम्। विश्वा॑सु पृ॒त्सु दु॒ष्टर॑म् ॥ ८ ॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

आ नो अग्ने सुचेतुना रयिं विश्वायुपोषसम्। मार्डीकं धेहि जीवसे॥ ९॥
प्र पूतास्तिग्मशोचिषे वाचो गोतमाग्नये। भरस्व सुम्नयुर्गिरः॥ १०॥
यो नो अग्नेऽभिदासत्यन्ति दूरे पदीष्टसः। अस्माकमिद् वृधे भव॥ ११॥
सहस्राक्षो विचर्षणिरग्नी रक्षांसि सेधति। होता गृणीत उक्थ्यः॥ १२॥

[८०] अशीतितमं सूक्तम्

ऋषिः—गोतमो राहूगणः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१, ११ निचृदास्तारपङ्क्तिः; ५, ६, ९, १०, १३, १४ विराट्पङ्क्तिः; २-४, ७, १२, १५ भुरिग्बृहती; ८, १६ बृहती॥ स्वरः—१, ५, ६, ९-११, १३, १४ पञ्चमः; २-४, ७, ८, १२, १५, १६ मध्यमः॥

अथ एकोनत्रिंशो वर्गः॥ २९॥

इत्था हि सोम इन्मदे ब्रह्मा चकार वर्धनम्।
शविष्ठ वज्रिन्नोजसा पृथिव्या निः शशा अहिमर्चन्ननु स्वराज्यम्॥ १॥
स त्वामदद् वृषा मदः सोमः श्येनाभृतः सुतः।
येना वृत्रं निरद्भ्यो जघन्थ वज्रिन्नोजसार्चन्ननु स्वराज्यम्॥ २॥
प्रेह्यभीहि धृष्णुहि न ते वज्रो नि यंसते।
इन्द्र नृम्णं हि ते शवो हनो वृत्रं जया अपोऽर्चन्ननु स्वराज्यम्॥ ३॥
निरिन्द्र भूम्या अधि वृत्रं जघन्थ निर्दिवः।
सृजा मरुत्वतीरव जीवधन्या इमा अपोऽर्चन्ननु स्वराज्यम्॥ ४॥
इन्द्रौ वृत्रस्य दोधतः सानुं वज्रेण हीळितः।
अभिक्रम्याव जिघ्नतेऽपः समीय चोदयन्नर्चन्ननु स्वराज्यम्॥ ५॥

अथ त्रिंशो वर्गः॥ ३०॥

अधि सानौ नि जिघ्नते वज्रेण शतपर्वणा।
मन्दान इन्द्रो अन्धसः सखिभ्यो गातुमिच्छत्यर्चन्ननु स्वराज्यम्॥ ६॥
इन्द्र तुभ्यमिदद्रिवोऽनुत्तं वज्रिन्वीर्यम्।
यद्ध त्यं मायिनं मृगं तमु त्वं मायया वधीरर्चन्ननु स्वराज्यम्॥ ७॥
वि ते वज्रासो अस्थिरन्नवतिं नाव्या अनु।
महत्त इन्द्र वीर्यं बाह्वोस्ते बलं हितमर्चन्ननु स्वराज्यम्॥ ८॥
सहस्रं साकमर्चत परि ष्टोभत विंशतिः।
शतैनमन्वनोनवुरिन्द्राय ब्रह्मोद्यतमर्चन्ननु स्वराज्यम्॥ ९॥
इन्द्रौ वृत्रस्य तविषीं निरहन्त्सहसा सहः।
महत्तदस्य पौंस्यं वृत्रं जघन्वाँ असृजदर्चन्ननु स्वराज्यम्॥ १०॥

अथ एकत्रिंशो वर्गः॥ ३१॥

इमे चित्तव मन्यवे वेपेते भियसा मही।
यदिन्द्र वज्रिन्नोजसा वृत्रं मरुत्वाँ अवधीरर्चन्ननु स्वराज्यम्॥ ११॥
न वेपसा न तन्यतेन्द्रं वृत्रो वि बीभयत्।
अभ्येनं वज्र आयसः सहस्रभृष्टिरायतार्चन्ननु स्वराज्यम्॥ १२॥
यद् वृत्रं तव चाशनिं वज्रेण समयोधयः।
अहिमिन्द्र जिघांसतो दिवि ते बद्बधे शवोऽर्चन्ननु स्वराज्यम्॥ १३॥
अभिष्टने ते अद्रिवो यत्स्था जगच्च रेजते।
त्वष्टा चित्तव मन्यव इन्द्र वेविज्यते भियार्चन्ननु स्वराज्यम्॥ १४॥
नहि नु यादधीमसीन्द्रं को वीर्या परः।
तस्मिन्नृम्णमुत क्रतुं देवा ओजांसि सं दधुरर्चन्ननु स्वराज्यम्॥ १५॥
यामथर्वा मनुष्पिता दध्यङ्धियमत्नत।
तस्मिन्ब्रह्माणि पूर्वथेन्द्र उक्था समग्मतार्चन्ननु स्वराज्यम्॥ १६॥

इति प्रथमाष्टके पञ्चमोऽध्यायः॥

अथ षष्ठोऽध्यायः

[८१] एकाशीतितमं सूक्तम्

ऋषिः—गोतमो राहूगणः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१, ७, ८ विराट्पङ्क्तिः; २ भुरिग्बृहती; ३-६, ९ निचृदास्तारपङ्क्तिः॥ स्वरः—१, ३-९ पञ्चमः; २ मध्यमः॥

अथ प्रथमो वर्गः॥ १॥

इन्द्रो मदाय वावृधे शवसे वृत्रहा नृभिः।
तमिन्महत्स्वाजिषूतेमर्भे हवामहे स वाजेषु प्र नोऽविषत्॥ १॥
असि हि वीर सेन्योऽसि भूरि पराददिः।
असि दभ्रस्य चिद् वृधो यजमानाय शिक्षसि सुन्वते भूरि ते वसु॥ २॥
यदुदीरत आजयो धृष्णवे धीयते धना।
युक्ष्वा मदच्युता हरी कं हनः कं वसौ दधोऽस्माँ इन्द्र वसौ दधः॥ ३॥
क्रत्वा महाँ अनुष्वधं भीम आ ववृधे शवः।
श्रिय ऋष्व उपाकयोर्नि शिप्री हरिवान्दधे हस्तयोर्वज्रमायसम्॥ ४॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

आ पप्रौ॑ पार्थि॒वं रजो॑ बद्बधे रोच॒ना दि॒वि।
न त्वावाँ॑ इन्द्र॒ कश्च॒न न जा॒तो न ज॑नि॒ष्यते॑ऽति॒ विश्वं॑ ववक्षिथ॥५॥

अथ द्वितीयो वर्गः॥ २॥

यो अ॒र्यो मर्त॒भोज॑नं परा॒ददा॑ति दा॒शुषे॑।
इन्द्रो॑ अ॒स्मभ्यं॑ शिक्षतु॒ वि भ॑जा॒ भूरि॑ ते॒ वसु॑ भक्षी॒य तव॒ राध॑सः॥६॥
मदे॑मदे॒ हि नो॑ द॒दिर्यू॒था गवा॑मृजु॒क्रतुः॑।
सं गृ॑भाय पुरू श॒तोभ॑याहस्त्या॒ वसु॑ शिशी॒हि रा॒य आ भ॑र॥७॥
मा॒दय॑स्व सु॒ते सचा॒ शव॑से शूर॒ राध॑से।
वि॒द्मा हि त्वा॑ पुरूवसु॒मुप॑ कामान्त्ससृ॒ज्महेऽथा॑ नोऽवि॒ता भ॑व॥८॥
ए॒ते त॑ इन्द्र ज॒न्तवो॒ विश्वं॑ पुष्यन्ति॒ वार्य॑म्।
अ॒न्तर्हि ख्यो॑ जना॒नामर्यो॑ वेदो॒ अदा॑शुषां॒ तेषां॑ नो॒ वेद॒ आ भ॑र॥९॥

[८२] द्व्यशीतितमं सूक्तम्

ऋषिः—गोतमो राहूगणः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१, ४ निचृदास्तारपङ्क्तिः; २, ३, ५ विराडास्तारपङ्क्तिः; ६ विराड्जगती॥ स्वरः—१-५ पञ्चमः; ६ निषादः॥

अथ तृतीयो वर्गः॥ ३॥

उपो॒ षु शृ॑णु॒ही गिरो॒ मघ॑व॒न्मात॑थाइव।
य॒दा नः॑ सू॒नृता॑वतः॒ कर॒ आद॒र्थया॑स इद्योजा॒ न्वि॑न्द्र ते॒ हरी॑॥१॥
अक्षन्नमी॑मदन्त॒ ह्यव॑ प्रि॒या अ॑धूषत।
अस्तो॑षत॒ स्वभा॑नवो॒ विप्रा॒ नवि॑ष्ठया म॒ती योजा॒ न्वि॑न्द्र ते॒ हरी॑॥२॥
सु॒सं॒दृशं॑ त्वा॒ वय॑ मघवन्वन्दिषी॒महि॑।
प्र नू॒नं पू॒र्णव॑न्धुरः॒ स्तुतो या॑हि॒ वशाँ॑ अनु॒ योजा॒ न्वि॑न्द्र ते॒ हरी॑॥३॥
स घा॒ तं वृष॑णं॒ रथ॒मधि॑ तिष्ठाति गो॒विद॑म्।
यः पात्रं॑ हारियोज॒नं पू॒र्णमि॑न्द्र चिकेतति॒ योजा॒ न्वि॑न्द्र ते॒ हरी॑॥४॥
युक्तस्ते॑ अस्तु दक्षिण॒ उत सव्यः॑ श॒तक्रतो।
तेन॑ जा॒यामुप॑ प्रि॒यां म॑न्दा॒नो या॒ह्यन्ध॑सो॒ योजा॒ न्वि॑न्द्र ते॒ हरी॑॥५॥
युन॒ज्मि॑ ते॒ ब्रह्म॑णा॒ केशि॑ना॒ हरी॒ उप॒ प्र या॑हि दधिषे॒ गभ॑स्त्योः।
उत्त्वा॑ सु॒तासो॑ रभ॒सा अ॑मन्दिषुः॒ पूष॑ण्वान्वज्रिन्त्समु॒ पत्न्या॑मदः॥६॥

[८३] त्र्यशीतितमं सूक्तम्

ऋषिः—गोतमो राहूगणः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१, ३, ४, ५ निचृज्जगती; २ जगती; ६ त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१-५ निषादः; ६ धैवतः॥

अथ चतुर्थो वर्गः॥ ४॥

अश्वा॑वति प्रथ॒मो गोषु॑ गच्छति सुप्रावी॒रिन्द्र॒ मर्त्य॒स्तवो॒तिभिः॑।
तमित्पृ॑णक्षि॒ वस॑ुना॒ भवी॑यसा सिन्धु॒मापो॒ यथा॒भितो॒ विचे॑तसः॥१॥
आपो॒ न दे॒वीरुप॑ यन्ति॒ होत्रि॑यं॒वः प॑श्यन्ति॒ वित॑तं॒ यथा॒ रज॑।
प्रा॒चैर्दे॒वासः॒ प्र ण॑यन्ति॒ देव॑युं॒ ब्रह्म॒प्रियं॑ जोषयन्ते॒ वरा॑इव॥२॥
अधि॒ द्वयो॑रदधा॒ उक्थ्यं॒॑ वचो॑ य॒तस्रु॑चा मिथु॒ना या स॑प॒र्यतः॑।
असं॑यत्तो व्र॒ते ते॑ क्षेति॒ पुष्य॑ति॒ भद्रा॒ शक्ति॑र्यजमानाय सुन्व॒ते॥३॥
आद॑ङ्गि॒राः प्र॑थ॒मं द॑धि॒रे व॒यं ब्रह्मा॑णो॒ अङ्गि॑रस्वन्त॒ उक्थ्या॑।
सर्वं॑ प॒णेः स॑मविन्दन्त॒ भोज॑न॒मश्वा॑वन्तं गोम॒न्तमा प॒शुं नरः॑॥४॥
य॒ज्ञैरथ॑र्वा प्रथ॒मः प॒थस्ते॑ ततः॒ सूर्यो॑ व्र॒तप॑ा॒ वेन॒ आज॑नि।
आ गा आ॑जदु॒शना॑ का॒व्यः सचा॑ य॒मस्य॑ जा॒तम॒मृतं॑ यजामहे॥५॥
ब॒र्हिर्वा॑ यत्स्व॒पत्या॑य वृ॒ज्यते॒ऽर्को वा॒ श्लोक॑मा॒घोष॑ते दि॒वि।
ग्रावा॒ यत्र॒ वद॑ति का॒रुरु॒क्थ्य॒॑स्तस्येदिन्द्रो॑ अभिपि॒त्वेषु॑ रण्यति॥६॥

[८४] चतुरशीतितमं सूक्तम्

ऋषिः—गोतमो राहूगणः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१, ३-५ निचृदनुष्टुप्; २ विराडनुष्टुप्; ६ भुरिगुष्णिक्; ७-९ उष्णिक्; १०, १२ विराडास्तारपङ्क्तिः; ११ आस्तारपङ्क्तिः; १३-१५ निचृद्गायत्री; १६ निचृत्त्रिष्टुप्; १७ विराट्त्रिष्टुप्; १८ त्रिष्टुप्; १९ आर्चीत्रिष्टुप्; २० पङ्क्तिः॥ स्वरः—१-५ गान्धारः; ६-९ ऋषभः; १०-१२, २० पञ्चमः; १३-१५ षड्जः; १६-१९ धैवतः॥

अथ पञ्चमो वर्गः॥ ५॥

असा॑वि॒ सोम॑ इन्द्र ते॒ शवि॑ष्ठ धृष्ण॒वा ग॑हि।
आ त्वा॑ पृणक्त्विन्द्रि॒यं रज॒ः सूर्यो॒ न र॒श्मिभिः॑॥१॥
इन्द्र॒मिद्ध॒रीं वह॒तोऽप्र॑तिधृष्टशवसम्।
ऋषी॑णां च स्तु॒तीरुप॑ य॒ज्ञं च॒ मानु॑षाणाम्॥२॥
आ ति॑ष्ठ वृत्रहन्र॒थं यु॒क्ता ते॒ ब्रह्म॑णा॒ हरी॑।
अ॒र्वा॒ची॒नं सु ते॒ मनो॒ ग्रावा॑ कृणोतु व॒ग्नुना॑॥३॥
इ॒मम॑मिन्द्र सु॒तं पि॑ब॒ ज्येष्ठ॑ममर्त्यं॒ मद॑म्।
शु॒क्रस्य॑ त्वा॒भ्य॑क्षर॒न्धारा॑ ऋ॒तस्य॒ सादने॑॥४॥
इन्द्रा॑य नू॒नम॑र्चतो॒क्थानि॑ च ब्रवीतन।
सु॒ता अ॑मत्सु॒रिन्द॑वो॒ ज्येष्ठं॑ नमस्यता॒ सहः॑॥५॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अथ षष्ठो वर्गः ॥ ६ ॥

नकिष्टद्रथीतरो हरी यदिन्द्र यच्छसे ।
नकिष्टानु मज्मना नकिः स्वश्व आनशे ॥ ६ ॥
य एक इद्विदयते वसु मर्ताय दाशुषे ।
ईशानो अप्रतिष्कुत इन्द्रो अङ्ग ॥ ७ ॥
कदा मर्तमराधसं पदा क्षुम्पमिव स्फुरत् ।
कदा नः शुश्रवद्गिर इन्द्रो अङ्ग ॥ ८ ॥
यश्चिद्धि त्वा बहुभ्य आ सुतावाँ आविवासति ।
उग्रं तत्पत्यते शव इन्द्रो अङ्ग ॥ ९ ॥
स्वादोरित्था विषूवतो मध्वः पिबन्ति गौर्यः ।
या इन्द्रेण सयावरीर्वृष्णा मदन्ति शोभसे वस्वीरनु स्वराज्यम् ॥ १० ॥

अथ सप्तमो वर्गः ॥ ७ ॥

ता अस्य पृशनायुवः सोमं श्रीणन्ति पृश्नयः ।
प्रिया इन्द्रस्य धेनवो वज्रं हिन्वन्ति सायकं वस्वीरनु स्वराज्यम् ॥ ११ ॥
ता अस्य नमसा सहः सपर्यन्ति प्रचेतसः ।
व्रतान्यस्य सश्चिरे पुरूणि पूर्वचित्तये वस्वीरनु स्वराज्यम् ॥ १२ ॥
इन्द्रो दधीचो अस्थभिर्वृत्राण्यप्रतिष्कुतः । जघान नवतीर्नव ॥ १३ ॥
इच्छन्नश्वस्य यच्छिरः पर्वतेष्वपश्रितम् । तद्विदच्छर्यणावति ॥ १४ ॥
अत्राह गोरमन्वत नाम त्वष्टुरपीच्यम् । इत्था चन्द्रमसो गृहे ॥ १५ ॥

अथ अष्टमो वर्गः ॥ ८ ॥

को अद्य युङ्क्ते धुरि गा ऋतस्य शिमीवतो भामिनो दुर्हणायून् ।
आसन्निषून्हृत्स्वसो मयोभून्य एषां भृत्यामृणधत्स जीवात् ॥ १६ ॥
क ईषते तुज्यते को बिभाय को मंसते सन्तमिन्द्रं को अन्ति ।
कस्तोकाय क इभायोत राये ऽधि ब्रवत्तन्वे३ को जनाय ॥ १७ ॥
को अग्निमीट्टे हविषा घृतेन स्रुचा यजाता ऋतुभिर्ध्रुवेभिः ।
कस्मै देवा आ वहानाशु होम को मंसते वीतिहोत्रः सुदेवः ॥ १८ ॥
त्वमङ्ग प्र शंसिषो देवः शविष्ठ मर्त्यम् ।
न त्वदन्यो मघवन्नस्ति मर्डितेन्द्र ब्रवीमि ते वचः ॥ १९ ॥
मा ते राधांसि मा त ऊतयो वसोऽस्मान्कदा चना दभन् ।
विश्वा च न उपमिमीहि मानुष वसूनि चर्षणिभ्य आ ॥ २० ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

चतुर्दशोनुवाकः [८५] पञ्चाशीतितमं सूक्तम्

ऋषिः—गोतमो राहूगणः ॥ देवता—मरुतः ॥ छन्दः—१, २, ६, ११ जगती; ३, ७, ८ निचृज्जगती; ४, ९, १० विराड्जगती; ५ विराट्त्रिष्टुप्; १२ त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१-४, ६-११ निषादः; ५, १२ धैवतः ॥

अथ नवमो वर्गः ॥ ९ ॥

प्र ये शुम्भन्ते जनयो न सप्तयो यामन्रुद्रस्य सूनवः सुदंससः ।
रोदसी हि मरुतश्चक्रिरे वृधे मदन्ति वीरा विदथेषु घृष्वयः ॥ १ ॥
त उक्षितासो महिमानमाशत दिवि रुद्रासो अधि चक्रिरे सदः ।
अर्चन्तो अर्कं जनयन्त इन्द्रियमधि श्रियो दधिरे पृश्निमातरः ॥ २ ॥
गोमातरो यच्छुभयन्ते अञ्जिभिस्तनूषु शुभ्रा दधिरे विरुक्मतः ।
बाधन्ते विश्वमभिमातिनमप वर्त्मान्येषामनु रीयते घृतम् ॥ ३ ॥
वि ये भ्राजन्ते सुमखास ऋष्टिभिः प्रच्यावयन्तो अच्युता चिदोजसा ।
मनोजुवो यन्मरुतो रथेष्वा वृषव्रातासः पृषतीरयुग्ध्वम् ॥ ४ ॥
प्र यद्रथेषु पृषतीरयुग्ध्वं वाजे अद्रिं मरुतो रंहयन्तः ।
उतारुषस्य वि ष्यन्ति धाराश्चर्मेवोदभिर्व्युन्दन्ति भूम ॥ ५ ॥
आ वो वहन्तु सप्तयो रघुष्यदो रघुपत्वानः प्र जिगात बाहुभिः ।
सीदता बर्हिरुरु वः सदस्कृतं मादयध्वं मरुतो मध्वो अन्धसः ॥ ६ ॥

अथ दशमो वर्गः ॥ १० ॥

तैऽवर्धन्त स्वतवसो महित्वना नाकं तस्थुरुरु चक्रिरे सदः ।
विष्णुर्यद्धावद् वृषणं मदच्युतं वयो न सीदन्नधि बर्हिषि प्रिये ॥ ७ ॥
शूराइवेद्युयुधयो न जग्मयः श्रवस्यवो न पृतनासु येतिरे ।
भयन्ते विश्वा भुवना मरुद्भ्यो राजानइव त्वेषसंदृशो नरः ॥ ८ ॥
त्वष्टा यद्वज्रं सुकृतं हिरण्ययं सहस्रभृष्टिं स्वपा अवर्तयत् ।
धत्त इन्द्रो नर्यपांसि कर्तवेऽहन्वृत्रं निरपामौब्जदर्णवम् ॥ ९ ॥
ऊर्ध्वं नुनुद्रेऽवतं त ओजसा दादृहाणं चिद्बिभिदुर्वि पर्वतम् ।
धमन्तो वाणं मरुतः सुदानवो मदे सोमस्य रण्यानि चक्रिरे ॥ १० ॥
जिह्मं नुनुद्रेऽवतं तया दिशासिञ्चन्नुत्सं गोतमाय तृष्णजे ।
आ गच्छन्तीमवसा चित्रभानवः कामं विप्रस्य तर्पयन्त धामभिः ॥ ११ ॥
या वः शर्म शशमानाय सन्ति त्रिधातूनि दाशुषे यच्छताधि ।
अस्मभ्यं तानि मरुतो वि यन्त रयिं नो धत्त वृषणः सुवीरम् ॥ १२ ॥

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

[८६] षडशीतितमं सूक्तम्

ऋषिः—गोतमो राहूगणः ॥ देवता—मरुतः ॥ छन्दः—१, ४, ८, ९ गायत्री; २, ३, ७ पिपीलिकामध्यानिचृद्गायत्री; ५, ६, १० निचृद्गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथ एकादशो वर्गः ॥ ११ ॥

मरुतो यस्य हि क्षये पाथा दिवो विमहसः । स सुगोपातमो जनः ॥ १ ॥
यज्ञैर्वा यज्ञवाहसो विप्रस्य वा मतीनाम् । मरुतः शृणुता हवम् ॥ २ ॥
उत वा यस्य वाजिनोऽनु विप्रमतक्षत । स गन्ता गोमति व्रजे ॥ ३ ॥
अस्य वीरस्य बर्हिषि सुतः सोमो दिविष्टिषु । उक्थं मदश्च शस्यते ॥ ४ ॥
अस्य श्रोषन्त्वा भुवो विश्वा यश्चर्षणीरभि । सूरं चित्सस्रुषीरिषः ॥ ५ ॥

अथ द्वादशो वर्गः ॥ १२ ॥

पूर्वीभिर्हि ददाशिम शरद्भिर्मरुतो वयम् । अवोभिश्चर्षणीनाम् ॥ ६ ॥
सुभगः स प्रयज्यवो मरुतो अस्तु मर्त्यः । यस्य प्रयांसि पर्षथ ॥ ७ ॥
शशमानस्य वा नरः स्वेदस्य सत्यशवसः । विदा कामस्य वेनतः ॥ ८ ॥
यूयं तत्सत्यशवस आविष्कर्त महित्वना । विध्यता विद्युता रक्षः ॥ ९ ॥
गूहता गुह्यं तमो वि यात विश्वमत्रिणम् । ज्योतिष्कर्ता यदुश्मसि ॥ १० ॥

[८७] सप्ताशीतितमं सूक्तम्

ऋषिः—गोतमो राहूगणपुत्रः ॥ देवता—मरुतः ॥ छन्दः—१, २, ५ विराड्जगती; ३ जगती; ४ त्रिष्टुप्; ६ निचृज्जगती ॥ स्वरः—१-३, ५, ६ निषादः; ४ धैवतः ॥

अथ त्रयोदशो वर्गः ॥ १३ ॥

प्रत्वक्षसः प्रतवसो विरप्शिनोऽनानता अविथुरा ऋजीषिणः ।
जुष्टतमासो नृतमासो अञ्जिभिर्व्यानज्रे के चिदुस्राइव स्तृभिः ॥ १ ॥
उपह्वरेषु यदचिध्वं ययिं वयइव मरुतः केन चित्पथा ।
श्रोतन्ति कोशा उप वो रथेष्वा घृतमुक्षता मधुवर्णमर्चते ॥ २ ॥
प्रैषामज्मेषु विथुरेव रेजते भूमिर्यामेषु यद्भ युञ्जते शुभे ।
ते क्रीळयो धुनयो भ्राजदृष्टयः स्वयं महित्वं पनयन्त धूतयः ॥ ३ ॥
स हि स्वसृत्पृषदश्वो युवा गणोऽयाऽ इशानस्तविषीभिरावृतः ।
असि सत्य ऋणयावानेद्योऽस्या धियः प्राविताथा वृषा गणः ॥ ४ ॥
पितुः प्रत्नस्य जन्मना वदामसि सोमस्य जिह्वा प्र जिगाति चक्षसा ।
यदीमिन्द्रं शम्यृक्वाण आशतादिन्नामानि यज्ञियानि दधिरे ॥ ५ ॥

श्रियसे कं भानुभिः सं मिमिक्षिरे ते रश्मिभिस्त ऋक्वभिः सुखादयः ।
ते वाशीमन्त इष्मिणो अभीरवो विद्रे प्रियस्य मारुतस्य धाम्नः ॥ ६ ॥

[८८] अष्टाशीतितमं सूक्तम्

ऋषिः—गोतमो राहूगणपुत्रः ॥ देवता—मरुतः ॥ छन्दः—१ पङ्क्तिः; २ भुरिक्पङ्क्तिः; ३ निचृत्त्रिष्टुप्; ४ विराट्त्रिष्टुप्; ५ निचृत्पङ्क्तिः; ६ निचृद्बृहती ॥ स्वरः—१, २, ५ पञ्चमः; ३, ४ धैवतः; ६ मध्यमः ॥

अथ चतुर्दशो वर्गः ॥ १४ ॥

आ विद्युन्मद्भिर्मरुतः स्वर्कैं रथेभिर्यात ऋष्टिमद्भिरश्वपर्णैः ।
आ वर्षिष्ठया न इषा वयो न पप्तता सुमायाः ॥ १ ॥
तेऽरुणेभिर्वरमा पिशङ्गैः शुभे कं यान्ति रथतूर्भिरश्वैः ।
रुक्मो न चित्रः स्वधितीवान् पव्या रथस्य जङ्घनन्त भूम ॥ २ ॥
श्रिये कं वो अधि तनूषु वाशीर्मेधा वना न कृणवन्त ऊर्ध्वा ।
युष्मभ्यं कं मरुतः सुजातास्तुविद्युम्नासो धनयन्ते अद्रिम् ॥ ३ ॥
अहानि गृध्राः पर्या व आगुरिमां धियं वार्क्यां च देवीम् ।
ब्रह्मकृण्वन्तो गोतमासो अर्कैरूर्ध्वं नुनुद्र उत्सधिं पिबध्यै ॥ ४ ॥
एतत्त्यन्न योजनमचेति सस्वर्हं यन्मरुतो गोतमो वः ।
पश्यन् हिरण्यचक्रानयोदंष्ट्रान्विधावतो वराहून् ॥ ५ ॥
एषा स्या वो मरुतोऽनुभर्त्री प्रति ष्टोभति वाघतो न वाणी ।
अस्तोभयद् वृथासामनु स्वधां गर्भस्त्योः ॥ ६ ॥

[८९] एकोननवतितमं सूक्तम्

ऋषिः—गोतमो राहूगणपुत्रः ॥ देवता—विश्वेदेवाः ॥ छन्दः—१, ५ निचृज्जगती; २, ३, ७ जगती; ४ भुरिक्त्रिष्टुप्; ६ स्वराड्बृहती; ८ विराट्त्रिष्टुप्; ९, १० त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१-३, ५, ७ निषादः; ४, ८-१० धैवतः; ६ मध्यमः ॥

अथ पञ्चदशो वर्गः ॥ १५ ॥

आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतोऽदब्धासो अपरीतास उद्भिदः ।
देवा नो यथा सदमिद् वृधे असन्नप्रायुवो रक्षितारो दिवेदिवे ॥ १ ॥
देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयतां देवानां रातिरभि नो नि वर्तताम् ।
देवानां सख्यमुप सेदिमा वयं देवा न आयुः प्र तिरन्तु जीवसे ॥ २ ॥
तान्पूर्वया निविदा हूमहे वयं भगं मित्रमदितिं दक्षमस्रिधम् ।
अर्यमणं वरुणं सोममश्विना सरस्वती नः सुभगा मयस्करत् ॥ ३ ॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तन्नो वातो मयोभु वातु भेषजं तन्माता पृथिवी तत्पिता द्यौः।
तद्ग्रावाणः सोमसुतो मयोभुवस्तदश्विना शृणुतं धिष्ण्या युवम्॥ ४॥
तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियञ्जिन्वमवसे हूमहे वयम्।
पूषा नो यथा वेदसामसद् वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये॥ ५॥

अथ षोडशो वर्गः॥ १६॥

स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः।
स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु॥ ६॥
पृषदश्वा मरुतः पृश्निमातरः शुभंयावानो विदथेषु जग्मयः।
अग्निजिह्वा मनवः सूरचक्षसो विश्वे नो देवा अवसा गमन्निह॥ ७॥
भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवांसस्तनूभिर्व्यशेम देवहितं यदायुः॥ ८॥
शतमिन्नु शरदो अन्ति देवा यत्रा नश्चक्रा जरसं तनूनाम्।
पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मा नो मध्या रीरिषतायुर्गन्तोः॥ ९॥
अदितिर्द्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिर्माता स पिता स पुत्रः।
विश्वे देवा अदितिः पञ्च जना अदितिर्जातमदितिर्जनित्वम्॥ १०॥

[९०] नवतितमं सूक्तम्

ऋषिः—गोतमो राहूगणपुत्रः॥ देवता—विश्वे देवाः॥ छन्दः—१, ८ पिपीलिकामध्यानिचृद्गायत्री; २, ७ गायत्री; ३ पिपीलिकामध्याविराड्गायत्री; ४ विराड्गायत्री; ५, ६ निचृद्गायत्री; ९ निचृत्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१-८ षड्जः; ९ धैवतः॥

अथ सप्तदशो वर्गः॥ १७॥

ऋजुनीती नो वरुणो मित्रो नयतु विद्वान्। अर्यमा देवैः सजोषाः॥ १॥
ते हि वस्वो वसवानास्ते अप्रमूरा महोभिः। व्रता रक्षन्ते विश्वाहा॥ २॥
ते अस्मभ्यं शर्म यंसन्नमृता मर्त्येभ्यः। बाधमाना अप द्विषः॥ ३॥
वि नः पथः सुवितायं चियन्त्विन्द्रो मरुतः। पूषा भगो वन्द्यासः॥ ४॥
उत नो धियो गोअग्राः पूषन्विष्णवेवयावः। कर्ता नः स्वस्तिमतः॥ ५॥

अथ अष्टादशो वर्गः॥ १८॥

मधु वाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः। माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः॥ ६॥
मधु नक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिवं रजः। मधु द्यौरस्तु नः पिता॥ ७॥
मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमाँ अस्तु सूर्यः। माध्वीर्गावो भवन्तु नः॥ ८॥
शं नो मित्रः शं वरुणः शं नो भवत्वर्यमा।
शं न इन्द्रो बृहस्पतिः शं नो विष्णुरुरुक्रमः॥ ९॥

[९१] एकनवतितमं सूक्तम्

ऋषिः—गोतमो राहूगणपुत्रः॥ देवता—सोमः॥ छन्दः—१, ३, ४ स्वराट्पङ्क्तिः; २ पङ्क्तिः; ५ पादनिचृद्गायत्री; ६, ८, ९, ११ निचृद्गायत्री; ७ वर्धमानागायत्री; १०, १२ गायत्री; १३, १४ विराड्गायत्री; १५, १६ पिपीलिकामध्यानिचृद्गायत्री; १७ परोष्णिक्; १८, २० भुरिक्पङ्क्तिः; २२ विराट्पङ्क्तिः; १९, २१, २३ निचृत्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१-४, १८, २०, २२ पञ्चमः; ५-१६ षड्जः; १७ ऋषभः; १९, २१, २३ धैवतः॥

अथ एकोनविंशो वर्गः॥ १९॥

त्वं सोम प्र चिकितो मनीषा त्वं रजिष्ठमनु नेषि पन्थाम्।
तव प्रणीती पितरो न इन्दो देवेषु रत्नमभजन्त धीराः॥ १॥
त्वं सोम क्रतुभिः सुक्रतुर्भूस्त्वं दक्षैः सुदक्षो विश्ववेदाः।
त्वं वृषा वृषत्वेभिर्महित्वा द्युम्नेभिर्द्युम्न्यभवो नृचक्षाः॥ २॥
राज्ञो नु ते वरुणस्य व्रतानि बृहद्गभीरं तव सोम धाम।
शुचिष्ट्वमसि प्रियो न मित्रो दक्षाय्यो अर्यमेवासि सोम॥ ३॥
या ते धामानि दिवि या पृथिव्यां या पर्वतेष्वोषधीष्वप्सु।
तेभिर्नो विश्वैः सुमना अहेळन्राजन्त्सोम प्रति हव्या गृभाय॥ ४॥
त्वं सोमासि सत्पतिस्त्वं राजोत वृत्रहा। त्वं भद्रो असि क्रतुः॥ ५॥

अथ विंशो वर्गः॥ २०॥

त्वं च सोम नो वशो जीवातुं न मरामहे। प्रियस्तोत्रो वनस्पतिः॥ ६॥
त्वं सोम महे भगं त्वं यून ऋतायते। दक्षं दधासि जीवसे॥ ७॥
त्वं नः सोम विश्वतो रक्षा राजन्नघायतः। न रिष्येत्त्वावतः सखा॥ ८॥
सोम यास्ते मयोभुव ऊतयः सन्ति दाशुषे। ताभिर्नोऽविता भव॥ ९॥
इमं यज्ञमिदं वचो जुजुषाण उपागहि। सोम त्वं नो वृधे भव॥ १०॥

अथ एकविंशो वर्गः॥ २१॥

सोम गीर्भिष्टा वयं वर्धयामो वचोविदः। सुमृळीको न आ विश॥ ११॥
गयस्फानो अमीवहा वसुवित्पुष्टिवर्धनः। सुमित्रः सोम नो भव॥ १२॥
सोम रारन्धि नो हृदि गावो न यवसेष्वा। मर्यइव स्व ओक्ये॥ १३॥
यः सोम सख्ये तव रारणद्देव मर्त्यः। तं दक्षः सचते कविः॥ १४॥
उरुष्या णो अभिशस्तेः सोम नि पाह्यंहसः। सखा सुशेव एधि नः॥ १५॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अथ द्वाविंशो वर्गः ॥ २२ ॥

आ प्या॑यस्व॒ समे॑तु ते वि॒श्वतः॑ सोम॒ वृष्ण्य॑म् ।
भवा॒ वाज॑स्य संग॒थे ॥ १६ ॥
आ प्या॑यस्व मदिन्तम॒ सोम॒ विश्वे॑भिरं॒शुभिः॑ ।
भवा॑ नः सु॒श्रव॑स्तमः॒ सखा॑ वृ॒धे ॥ १७ ॥
सं ते॒ पयां॑सि॒ समु॑ यन्तु॒ वाजाः॒ सं वृष्ण्या॑न्यभिमाति॒षाहः॑ ।
आ॒प्याय॑मानो अ॒मृता॑य सोम दि॒वि श्रवां॑स्युत्त॒मानि॑ धिष्व ॥ १८ ॥
या ते॒ धामा॑नि ह॒विषा॒ यज॑न्ति॒ ता ते॒ विश्वा॑ परि॒भूर॑स्तु य॒ज्ञम् ।
ग॒य॒स्फानः॑ प्र॒तर॑णः सु॒वीरोऽवी॑रहा॒ प्र च॑रा सोम॒ दुर्या॑न् ॥ १९ ॥
सोमो॑ धे॒नुं सोमो॒ अर्व॑न्तमा॒शुं सोमो॑ वी॒रं क॑र्म॒ण्यं॑ ददाति ।
सा॒द॒न्यं॑ विद॒थ्यं॑ स॒भेयं॑ पितृ॒श्रव॑णं यो ददा॑शदस्मै ॥ २० ॥

अथ त्रयोविंशो वर्गः ॥ २३ ॥

अषा॑ळ्हं यु॒त्सु पृत॑नासु॒ पप्रिं॑ स्व॒र्षाम॒प्सां वृ॒जन॑स्य गो॒पाम् ।
भ॒रे॒षु॒जां सु॑क्षि॒तिं सु॒श्रव॑सं॒ जय॑न्तं॒ त्वामनु॑ मदेम सोम ॥ २१ ॥
त्वमि॒मा ओष॑धीः सोम॒ विश्वा॒स्त्वम॒पो अ॑जनय॒स्त्वं गाः ।
त्वमा त॑तन्थो॒र्व१॒॑न्तरि॑क्षं॒ त्वं ज्योति॑षा॒ वि तमो॑ ववर्थ ॥ २२ ॥
दे॒वेन॑ नो॒ मन॑सा देव सोम रा॒यो भा॒गं स॑हसावन्न॒भि यु॒ध्य ।
मा त्वा त॑न॒दीशि॑षे वी॒र्य॑स्यो॒भये॑भ्यः॒ प्र चि॑कित्सा॒ गवि॑ष्टौ ॥ २३ ॥

[९२] द्विनवतितमं सूक्तम्

ऋषिः—गोतमो राहूगणपुत्रः ॥ देवता—उषाः ॥ छन्दः—१, २ निचृज्जगती; ३ जगती; ४ विराड्जगती; ५, ७, १२ विराट्त्रिष्टुप्; ६, १० निचृत्त्रिष्टुप्; ८, ९ त्रिष्टुप्; ११ भुरिक्पङ्क्तिः; १३ निचृत्परोष्णिक्; १४, १५ विराट्परोष्णिक्; १६, १७, १८ उष्णिक् ॥ स्वरः—१-४ निषादः; ५-१०, १२ धैवतः; ११ पञ्चमः; १३-१८ ऋषभः ॥

अथ चतुर्विंशो वर्गः ॥ २४ ॥

ए॒ता उ॒ त्या उ॒षसः॑ के॒तुम॑क्रत॒ पूर्वे॒ अर्धे॒ रज॑सो भा॒नुम॑ञ्जते ।
नि॒ष्कृ॒ण्वा॒ना आयु॑धानीव धृ॒ष्णवः॒ प्रति॒ गावोऽरु॑षीर्यन्ति मा॒तरः॑ ॥ १ ॥
उद॑पप्तन्नरु॒णा भा॒नवो॒ वृथा॑ स्वा॒युजो॒ अरु॑षी॒र्गा अ॑युक्षत ।
अक्र॑न्नु॒षासो॑ व॒युना॑नि पू॒र्वथा॒ रुश॑न्तं भा॒नुमरु॑षीरशिश्रयुः ॥ २ ॥
अर्च॑न्ति॒ नारी॑र॒पसो॒ न वि॒ष्टिभिः॑ समा॒नेन॒ योज॑ने॒ना प॑रा॒वतः॑ ।
इषं॒ वह॑न्तीः सु॒कृते॑ सु॒दान॑वे॒ विश्वेदह॒ यज॑मानाय सुन्व॒ते ॥ ३ ॥

अधि॒ पेशां॑सि वपते नृ॒तूरि॒वापो॑र्णु॒ते॒ वक्ष॑ उ॒स्रेव॒ बर्ज॑हम् ।
ज्योति॒र्विश्व॑स्मै॒ भुव॑नाय कृण्व॒ती गावो॒ न व्र॒जं व्यु१॒॑षा आ॑व॒र्तमः॑ ॥ ४ ॥
प्रत्य॒र्ची रुश॑दस्या अदर्शि॒ वि ति॑ष्ठते॒ बाध॑ते कृ॒ष्णमभ्व॑म् ।
स्वरुं॒ न पेशो॑ वि॒दथे॑ष्व॒ञ्जञ्चि॒त्रं दि॒वो दु॑हि॒ता भा॒नुम॑श्रेत् ॥ ५ ॥

अथ पञ्चविंशो वर्गः ॥ २५ ॥

अता॑रिष्म॒ तम॑सस्पा॒रम॒स्योषा उ॒च्छन्ती॑ व॒युना॑ कृणोति ।
श्रि॒ये छन्दो॒ न स्म॑यते विभा॒ती सु॒प्रती॑का सौमन॒साया॑जीगः ॥ ६ ॥
भास्व॑ती ने॒त्री सू॒नृता॑नां दि॒वः स्त॑वे दुहि॒ता गोत॑मेभिः ।
प्र॒जाव॑तो नृ॒वतो॒ अश्व॑बुध्या॒नुषो॒ गोअ॑ग्राँ॒ उप॑ मासि॒ वाजा॑न् ॥ ७ ॥
उष॒स्तम॑श्यां य॒शसं॑ सु॒वीरं॑ दा॒सप्र॑वर्गं र॒यिमश्व॑बुध्यम् ।
सु॒दंस॑सा श्रव॑सा॒ या वि॒भासि॒ वाज॑प्रसूता सुभगे बृ॒हन्त॑म् ॥ ८ ॥
विश्वा॑नि दे॒वी भुव॑नाभि॒चक्ष्या॑ प्रती॒ची चक्षु॑रुर्वि॒या वि भा॑ति ।
विश्वं॑ जी॒वं च॒रसे॑ बो॒धय॑न्ती॒ विश्व॑स्य॒ वाच॑मविदन्मना॒योः ॥ ९ ॥
पुनः॑ पुन॒र्जाय॑माना पुरा॒णी स॑मा॒नं वर्ण॑म॒भि शुम्भ॑माना ।
श्व॒घ्नीव॑ कृ॒त्नुर्विज॑ आमिना॒ना मर्त॑स्य दे॒वी ज॒रय॒न्त्यायुः॑ ॥ १० ॥

अथ षड्विंशो वर्गः ॥ २६ ॥

व्यू॒र्ण्व॒ती दि॒वो अन्ताँ॑ अबो॒ध्यप॒ स्वसा॑रं सनु॒तर्यु॑योति ।
प्र॒मि॒न॒ती म॑नु॒ष्या॑ यु॒गानि॒ योषा॑ जा॒रस्य॒ चक्ष॑सा वि भा॑ति ॥ ११ ॥
प॒शून्न चि॒त्रा सु॒भगा॑ प्रथा॒ना सिन्धु॒र्न क्षोद॑ उर्वि॒या व्य॑श्वैत् ।
अमि॑नती॒ दैव्या॑नि व्र॒तानि॒ सूर्य॑स्य चेति र॒श्मिभि॑र्दृशा॒ना ॥ १२ ॥
उष॒स्तच्चि॒त्रमा भ॑रा॒स्मभ्यं॑ वाजिनीवति ।
येन॑ तो॒कं च॒ तन॑यं च॒ धाम॑हे ॥ १३ ॥
उषो॒ अ॒द्येह गो॑म॒त्यश्वा॑वति विभावरि ।
रे॒वद॒स्मे व्यु॒च्छ सूनृतावति ॥ १४ ॥
यु॒क्ष्वा हि वा॑जिनीव॒त्यश्वाँ॑ अ॒द्यारु॒णाँ उ॑षः ।
अथा॑ नो॒ विश्वा॒ सौभ॑गा॒न्या व॑ह ॥ १५ ॥

अथ सप्तविंशो वर्गः ॥ २७ ॥

अश्वि॑ना व॒र्तिर॒स्मदा गोम॑द्दस्रा॒ हिर॑ण्यवत् ।
अ॒र्वाग्रथं॒ सम॑नसा॒ नि य॑च्छतम् ॥ १६ ॥
यावि॒त्था श्लोक॒मा दि॒वो ज्योति॒र्जना॑य च॒क्रथुः॑ ।
आ न॒ ऊर्जं॑ वहतमश्विना यु॒वम् ॥ १७ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

एह देवा मयोभुवा दस्रा हिरण्यवर्तनी ।
उषर्बुधो वहन्तु सोमपीतये ॥ १८ ॥

[९३] त्रिनवतितमं सूक्तम्

ऋषिः—गोतमो राहूगणपुत्रः ॥ देवता—अग्नीषोमौ ॥ छन्दः—१ अनुष्टुप्; २ भुरिग् उष्णिक्; ३ विराडनुष्टुप्; ४ स्वराट्पङ्क्तिः; ५, ७ निचृत्त्रिष्टुप्; ६ विराट्त्रिष्टुप्; ८ स्वराट्त्रिष्टुप्; ९-११ गायत्री; १२ त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१, ३ गान्धारः; २ ऋषभः; ४ पञ्चमः; ५-८, १२ धैवतः; ९-११ षड्जः ॥

अथ अष्टाविंशो वर्गः ॥ २८ ॥

अग्नीषोमाविमं सु मे शृणुतं वृषणा हवम् ।
प्रति सूक्तानि हर्यतं भवतं दाशुषे मयः ॥ १ ॥
अग्नीषोमा यो अद्य वामिदं वचः सपर्यति ।
तस्मै धत्तं सुवीर्यं गवां पोषं स्वश्व्यम् ॥ २ ॥
अग्नीषोमा य आहुतिं यो वां दाशाद्धविष्कृतिम् ।
स प्रजया सुवीर्यं विश्वमायुर्व्यश्नवत् ॥ ३ ॥
अग्नीषोमा चेति तद्वीर्यं वां यदमुष्णीतमवसं पणिं गाः ।
अवातिरतं बृसयस्य शेषोऽविन्दतं ज्योतिरेकं बहुभ्यः ॥ ४ ॥
युवमेतानि दिवि रोचनान्यग्निश्च सोम सक्रतू अधत्तम् ।
युवं सिन्धूँरभिशस्तेरवद्यादग्नीषोमावमुञ्चतं गृभीतान् ॥ ५ ॥
आन्यं दिवो मातरिश्वा जभारामथ्नादन्यं परि श्येनो अद्रेः ।
अग्नीषोमा ब्रह्मणा वावृधानोरुं यज्ञाय चक्रथुरु लोकम् ॥ ६ ॥

अथ एकोनत्रिंशो वर्गः ॥ २९ ॥

अग्नीषोमा हविषः प्रस्थितस्य वीतं हर्यतं वृषणा जुषेथाम् ।
सुशर्माणा स्ववसा हि भूतमथा धत्तं यजमानाय शं योः ॥ ७ ॥
यो अग्नीषोमा हविषा सपर्याद्देवद्रीचा मनसा यो घृतेन ।
तस्य व्रतं रक्षतं पातमंहसो विशे जनाय महि शर्म यच्छतम् ॥ ८ ॥
अग्नीषोमा सवेदसा सहूती वनतं गिरः । सं देवत्रा बभूवथुः ॥ ९ ॥
अग्नीषोमावनेनं वां यो वां घृतेन दाशति । तस्मै दीदयतं बृहत् ॥ १० ॥
अग्नीषोमाविमानि नो युवं हव्या जुजोषतम् । आ यातमुप नः सचा ॥ ११ ॥
अग्नीषोमा पितृमन्तं तनूपा आ धत्तं नो अमृत्रियम् । सं प्र दातुरचाकशाम वसोर्वसुपतीवसू ॥ १२ ॥

प्रथमं मण्डलम्

पञ्चदशोऽनुवाकः [९४] चतुर्नवतितमं सूक्तम्

ऋषिः—कुत्स आङ्गिरसः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१, ४, ५, ७, ९, १० निचृज्जगती; २, ३, १६ त्रिष्टुप्; ६ स्वराट्त्रिष्टुप्; ८ निचृत्त्रिष्टुप्; ११ भुरिक्त्रिष्टुप्; १२-१४ विराड्जगती; १५ भुरिक्पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१, ४, ५, ७, ९, १०, १२-१४ निषादः; २, ३, ६, ८, ११, १६ धैवतः; १५ पञ्चमः ॥

अथ त्रिंशो वर्गः ॥ ३० ॥

इमं स्तोममर्हते जातवेदसे रथमिव सं महेमा मनीषया ।
भद्रा हि नः प्रमतिरस्य संसद्यग्ने सख्ये मा रिषामा वयं तव ॥ १ ॥
यस्मै त्वमायजसे स साधत्यनर्वा क्षेति दधते सुवीर्यम् ।
स तूताव नैनमश्नोत्यंहतिरग्ने सख्ये मा रिषामा वयं तव ॥ २ ॥
शकेम त्वा समिधं साधया धियस्त्वे देवा हविरदन्त्याहुतम् ।
त्वमादित्याँ आ वह तान् ह्युश्मस्यग्ने सख्ये मा रिषामा वयं तव ॥ ३ ॥
भरामेध्मं कृणवामा हवींषि ते चितयन्तः पर्वणापर्वणा वयम् ।
जीवातवे प्रतरं साधया धियोऽग्ने सख्ये मा रिषामा वयं तव ॥ ४ ॥
विशां गोपा अस्य चरन्ति जन्तवो द्विपच्च यदुत चतुष्पदक्तुभिः ।
चित्रः प्रकेत उषसो महाँ असयग्ने सख्ये मा रिषामा वयं तव ॥ ५ ॥

अथ एकत्रिंशो वर्गः ॥ ३१ ॥

त्वमध्वर्युरुत होतासि पूर्व्यः प्रशास्ता पोता जनुषा पुरोहितः ।
विश्वा विद्वाँ आर्त्विज्या धीर पुष्यस्यग्ने सख्ये मा रिषामा वयं तव ॥ ६ ॥
यो विश्वतः सुप्रतीकः सदृङ्ङसि दूरे चित्सन्तळिदिवाति रोचसे ।
रात्र्याश्चिदन्धो अति देव पश्यस्यग्ने सख्ये मा रिषामा वयं तव ॥ ७ ॥
पूर्वो देवा भवतु सुन्वतो रथोऽस्माकं शंसो अभ्यस्तु दूढ्यः ।
तदा जानीतोत पुष्यता वचोऽग्ने सख्ये मा रिषामा वयं तव ॥ ८ ॥
वयैर्दुःशंसाँ अप दूढ्यो जहि दूरे वा ये अन्ति वा के चिदत्रिणः ।
अथा यज्ञाय गृणते सुगं कृध्यग्ने सख्ये मा रिषामा वयं तव ॥ ९ ॥
यदयुक्था अरुषा रोहिता रथे वातजूता वृषभस्येव ते रवः ।
आदिन्वसि वनिनो धूमकेतुनाग्ने सख्ये मा रिषामा वयं तव ॥ १० ॥

अथ द्वात्रिंशो वर्गः ॥ ३२ ॥

अधा स्वनादुत बिभ्युः पतत्रिणो द्रप्सा यत्ते यवसादो व्यस्थिरन् ।
सुगं तत्ते तावकेभ्यो रथेभ्योऽग्ने सख्ये मा रिषामा वयं तव ॥ ११ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अयं मित्रस्य वरुणस्य धायसेऽवयातां मरुतां हेळो अद्भुतः।
मृळा सु नो भूत्वेषां मनः पुनरग्ने सख्ये मा रिषामा वयं तव॥ १२॥
देवो देवानामसि मित्रो अद्भुतो वसुर्वसूनामसि चारुरध्वरे।
शर्मन्त्स्याम तव सप्रथस्तमेऽग्ने सख्ये मा रिषामा वयं तव॥ १३॥
तत्ते भद्रं यत्समिद्धः स्वे दमे सोमाहुतो जरसे मृळयत्तमः।
दधासि रत्नं द्रविणं च दाशुषेऽग्ने सख्ये मा रिषामा वयं तव॥ १४॥
यस्मै त्वं सुद्रविणो ददाशोऽनागास्त्वमदिते सर्वताता।
यं भद्रेण शवसा चोदयासि प्रजावता राधसा ते स्याम॥ १५॥
स त्वमग्ने सौभगत्वस्य विद्वानस्माकमायुः प्र तिरेह देव।
तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्तामदितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः॥ १६॥

इति प्रथमाष्टके षष्ठोध्यायः॥

अथ सप्तमोऽध्यायः

[९५] पञ्चनवतितमं सूक्तम्

ऋषिः—कुत्स आङ्गिरसः॥ देवता—सत्यगुणविशिष्टोऽग्निः शुद्धोऽग्निर्वा॥ छन्दः—१, ३ विराट्त्रिष्टुप्; २, ७, ८, ११ त्रिष्टुप्; ४-६, १० निचृत्त्रिष्टुप्; ९ भुरिक्पङ्क्तिः॥ स्वरः—१-८, १०, ११ धैवतः; ९ पञ्चमः॥

अथ प्रथमो वर्गः॥ १॥

द्वे विरूपे चरतः स्वर्थे अन्यान्या वत्समुप धापयेते।
हरिरन्यस्यां भवति स्वधावाञ्छुक्रो अन्यस्यां ददृशे सुवर्चीः॥ १॥
दशेमं त्वष्टुर्जनयन्त गर्भमतन्द्रासो युवतयो विभृत्रम्।
तिग्मानीकं स्वयशसं जनेषु विरोचमानं परि षीं नयन्ति॥ २॥
त्रीणि जाना परि भूषन्त्यस्य समुद्र एकं दिव्येकमप्सु।
पूर्वामनु प्र दिशं पार्थिवानामृतून्प्रशासद्वि दधावनुष्टु॥ ३॥
क इमं वो निण्यमा चिकेत वत्सो मातृर्जनयत स्वधाभिः।
बह्वीनां गर्भो अपसामुपस्थान्महान्कविर्निश्चरति स्वधावान्॥ ४॥
आविष्यो वर्धते चारुरासु जिह्मानामूर्ध्वः स्वयशा उपस्थे।
उभे त्वष्टुर्बिभ्यतुर्जायमानात्प्रतीची सिंहं प्रति जोषयेते॥ ५॥

अथ द्वितीयो वर्गः॥ २॥

उभे भद्रे जोषयेते न मेने गावो न वाश्रा उप तस्थुरेवैः।
स दक्षाणां दक्षपतिर्बभूवाञ्जन्ति यं दक्षिणतो हविर्भिः॥ ६॥
उद्यंयमीति सवितेव बाहू उभे सिचौ यतते भीम ऋञ्जन्।
उच्छुक्रमत्कमजते सिमस्मान्नवा मातृभ्यो वसना जहाति॥ ७॥
त्वेषं रूपं कृणुत उत्तरं यत्संपृञ्चानः सदने गोभिरद्भिः।
कविर्बुध्नं परि मर्मृज्यते धीः सा देवताता समितिर्बभूव॥ ८॥
उरु ते ज्रयः पर्येति बुध्नं विरोचमानं महिषस्य धाम।
विश्वेभिरग्ने स्वयशोभिरिद्धोऽदब्धेभिः पायुभिः पाह्यस्मान्॥ ९॥
धन्वन्स्रोतः कृणुते गातुमूर्मिं शुक्रैरूर्मिभिरभि नक्षति क्षाम्।
विश्वा सनानि जठरेषु धत्तेऽन्तर्नवासु चरति प्रसूषु॥ १०॥
एवा नो अग्ने समिधा वृधानो रेवत्पावक श्रवसे वि भाहि।
तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्तामदितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः॥ ११॥

[९६] षण्णवतितमं सूक्तम्

ऋषिः—कुत्स आङ्गिरसः॥ देवता—द्रविणोदा अग्निः शुद्धोऽग्निर्वा॥ छन्दः—त्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः॥

अथ तृतीयो वर्गः॥ ३॥

स प्रत्नथा सहसा जायमानः सद्यः काव्यानि बळधत्त विश्वा।
आपश्च मित्रं धिषणा च साधन्देवा अग्निं धारयन्द्रविणोदाम्॥ १॥
स पूर्वया निविदा कव्यतायोरिमाः प्रजा अजनयन्मनूनाम्।
विवस्वता चक्षसा द्यामपश्च देवा अग्निं धारयन्द्रविणोदाम्॥ २॥
तमींळत प्रथमं यज्ञसाधं विश आरीराहुतमृञ्जसानम्।
ऊर्जः पुत्रं भरतं सृप्रदानुं देवा अग्निं धारयन्द्रविणोदाम्॥ ३॥
स मातरिश्वा पुरुवारपुष्टिर्विदद् गातुं तनयाय स्वर्वित्।
विशां गोपा जनिता रोदस्योर्देवा अग्निं धारयन्द्रविणोदाम्॥ ४॥
नक्तोषासा वर्णमामेम्याने धापयेते शिशुमेकं समीची।
द्यावाक्षामा रुक्मो अन्तर्वि भाति देवा अग्निं धारयन्द्रविणोदाम्॥ ५॥

अथ चतुर्थो वर्गः॥ ४॥

रायो बुध्नः संगमनो वसूनां यज्ञस्य केतुर्मन्मसाधनो वेः।
अमृतत्वं रक्षमाणास एनं देवा अग्निं धारयन्द्रविणोदाम्॥ ६॥
नू च पुरा च सदनं रयीणां जातस्य च जायमानस्य च क्षाम्।
सतश्च गोपां भवतश्च भूरेर्देवा अग्निं धारयन्द्रविणोदाम्॥ ७॥
द्रविणोदा द्रविणसस्तुरस्य द्रविणोदाः सनरस्य प्र यंसत्।
द्रविणोदा वीरवतीमिषं नो द्रविणोदा रासते दीर्घमायुः॥ ८॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

एवा नो अग्ने समिधा वृधानो रेवत्पावक श्रवसे वि भाहि।
तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्तामदितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः॥ ९॥

[९७] सप्तनवतितमं सूक्तम्

ऋषिः—कुत्स आङ्गिरसः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—१, ७, ८ पिपीलिकामध्या निचृद्गायत्री; २, ४, ५ गायत्री; ३, ६ निचृद्गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

अथ पञ्चमो वर्गः॥ ५॥

अप नः शोशुचदघमग्ने शुशुग्ध्या रयिम्। अप नः शोशुचदघम्॥ १॥
सुक्षेत्रिया सुगातुया वसूया च यजामहे। अप नः शोशुचदघम्॥ २॥
प्र यद्वन्दिष्ट एषां प्रास्माकासश्च सूरयः। अप नः शोशुचदघम्॥ ३॥
प्र यत्ते अग्ने सूरयो जायेमहि प्र ते वयम्। अप नः शोशुचदघम्॥ ४॥
प्र यदग्नेः सहस्वतो विश्वतो यन्ति भानवः। अप नः शोशुचदघम्॥ ५॥
त्वं हि विश्वतोमुख विश्वतः परिभूरसि। अप नः शोशुचदघम्॥ ६॥
द्विषो नो विश्वतोमुखाति नावेव पारय। अप नः शोशुचदघम्॥ ७॥
स नः सिन्धुमिव नावयाति पर्षा स्वस्तये। अप नः शोशुचदघम्॥ ८॥

[९८] अष्टनवतितमं सूक्तम्

ऋषिः—कुत्स आङ्गिरसः॥ देवता—अग्निर्वैश्वानरः॥ छन्दः—१ विराट्त्रिष्टुप्; २ त्रिष्टुप्; ३ निचृत्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः॥

अथ षष्ठो वर्गः॥ ६॥

वैश्वानरस्य सुमतौ स्याम राजा हि कं भुवनानामभिश्रीः।
इतो जातो विश्वमिदं वि चष्टे वैश्वानरो यतते सूर्येण॥ १॥
पृष्टो दिवि पृष्टो अग्निः पृथिव्यां पृष्टो विश्वा ओषधीरा विवेश।
वैश्वानरः सहसा पृष्टो अग्निः स नो दिवा स रिषः पातु नक्तम्॥ २॥
वैश्वानर तव तत्सत्यमस्त्वस्मान् रायो मघवानः सचन्ताम्।
तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्तामदितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः॥ ३॥

[९९] नवनवतितमं सूक्तम्

ऋषिः—कश्यपो मरीचिपुत्रः॥ देवता—अग्निर्जातवेदाः॥ छन्दः—निचृत्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः॥

अथ सप्तमो वर्गः॥ ७॥

जातवेदसे सुनवाम सोममरातीयतो नि दहाति वेदः।
स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वा नावेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः॥ १॥

[१००] शततमं सूक्तम्

ऋषिः—वृषागिरो महाराजस्य पुत्रभूता वार्षागिरा ऋज्राश्वाम्बरीषसहदेव भयमानसुराधसः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१, ५ पङ्क्तिः; २, १३, १७ स्वराट्पङ्क्तिः; ३, ४, ११, १८ विराट्त्रिष्टुप्; ६, १०, १६ भुरिक्पङ्क्तिः; ७, ८, ९, १२, १४, १५, १९ निचृत्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१, २, ५, ६, १०, १३, १६, १७ पञ्चमः; ३, ४, ७-९, ११, १२, १४, १५, १८, १९ धैवतः॥

अथ अष्टमो वर्गः॥ ८॥

स यो वृषा वृष्ण्येभिः समोका महो दिवः पृथिव्याश्च सम्राट्।
सतीनसत्वा हव्यो भरेषु मरुत्वान्नो भवत्विन्द्र ऊती॥ १॥
यस्यानामः सूर्यस्येव यामो भरेभरे वृत्रहा शुष्मो अस्ति।
वृषन्तमः सखिभिः स्वेभिरेवैर्मरुत्वान्नो भवत्विन्द्र ऊती॥ २॥
दिवो न यस्य रेतसो दुघानाः पन्थासो यन्ति शवसापरीताः।
तरद्द्वेषाः सासहिः पौंस्येभिर्मरुत्वान्नो भवत्विन्द्र ऊती॥ ३॥
सो अङ्गिरोभिरङ्गिरस्तमो भूद् वृषा वृषभिः सखिभिः सखा सन्।
ऋग्मिभिर्ऋग्मी गातुभिर्ज्येष्ठो मरुत्वान्नो भवत्विन्द्र ऊती॥ ४॥
स सूनुभिर्न रुद्रेभिर्ऋभ्वा नृषाह्यो सासह्वाँ अमित्रान्।
सनीळेभिः श्रवस्यानि तूर्वन्मरुत्वान्नो भवत्विन्द्र ऊती॥ ५॥

अथ नवमो वर्गः॥ ९॥

स मन्युमीः समदनस्य कर्तास्माकेभिर्नृभिः सूर्यं सनत्।
अस्मिन्नहन्त्सत्पतिः पुरुहूतो मरुत्वान्नो भवत्विन्द्र ऊती॥ ६॥
तमूतयो रणयञ्छूरसातौ तं क्षेमस्य क्षितयः कृण्वत त्राम्।
स विश्वस्य करुणस्येश एको मरुत्वान्नो भवत्विन्द्र ऊती॥ ७॥
तमप्सन्त शवस उत्सवेषु नरो नरमवसे तं धनाय।
सो अन्धे चित्तमसि ज्योतिर्विदन्मरुत्वान्नो भवत्विन्द्र ऊती॥ ८॥
स सव्येन यमति व्राधतश्चित्स दक्षिणे संगृभीता कृतानि।
स कीरिणा चित्सनिता धनानि मरुत्वान्नो भवत्विन्द्र ऊती॥ ९॥
स ग्रामेभिः सनिता स रथेभिर्विदे विश्वाभिः कृष्टिभिर्न्वद्य।
स पौंस्येभिरभिभूरशस्तीर्मरुत्वान्नो भवत्विन्द्र ऊती॥ १०॥

अथ दशमो वर्गः॥ १०॥

स जामिभिर्यत्समजाति मीळ्हेऽजामिभिर्वा पुरुहूत एवैः।
अपां तोकस्य तनयस्य जेषे मरुत्वान्नो भवत्विन्द्र ऊती॥ ११॥

CC-0. Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

स वज्रभृद्दस्युहा भीम उग्रः सहस्त्रचेताः शतनीथ ऋभ्वा।
चम्रीषो न शवसा पाञ्चजन्यो मरुत्वान्नो भवत्विन्द्र ऊती॥ १२॥
तस्य वज्रः क्रन्दति स्मत्स्वर्षा दिवो न त्वेषो रवथः शिमीवान्।
तं सचन्ते सनयस्तं धनानि मरुत्वान्नो भवत्विन्द्र ऊती॥ १३॥
यस्याजस्त्रं शवसा मानमुक्थं परिभुजद्रोदसी विश्वतः सीम्।
स पारिषत्क्रतुभिर्मन्दसानो मरुत्वान्नो भवत्विन्द्र ऊती॥ १४॥
न यस्य देवा देवता न मर्ता आपश्चन शवसो अन्तमापुः।
स प्ररिक्वा त्वक्षसा क्षमो दिवश्च मरुत्वान्नो भवत्विन्द्र ऊती॥ १५॥

अथ एकादशो वर्गः॥ ११॥

रोहिच्छ्यावा सुमदंशुर्ललामीर्धृक्षा राय ऋज्राश्वस्य।
वृषण्वन्तं बिभ्रती धूर्षु रथं मन्द्रा चिकेत नाहुषीषु विक्षु॥ १६॥
एतत्त्यत्त इन्द्र वृष्ण उक्थं वार्षागिरा अभि गृणन्ति राधः।
ऋज्राश्वः प्रष्टिभिरम्बरीषः सहदेवो भयमानः सुराधाः॥ १७॥
दस्यूञ्छिम्यूँश्च पुरुहूत एवैर्हत्वा पृथिव्यां शर्वा नि बर्हीत्।
सनत्क्षेत्रं सखिभिः श्वित्न्येभिः सनत्सूर्यं सनदपः सुवज्रः॥ १८॥
विश्वाहेन्द्रो अधिवक्ता नो अस्त्वपरिह्वृताः सनुयाम वाजम्।
तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्तामदितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः॥ १९॥

[१०१] एकोत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—कुत्स आङ्गिरसः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१, ४ निचृज्जगती; २, ५, ७ विराड्जगती; ३ भुरिक्त्रिष्टुप्; ६ स्वराट्त्रिष्टुप्; ८, १० निचृत्त्रिष्टुप्; ९, ११ त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१, २, ४, ५, ७ निषादः; ३, ६, ८-११ धैवतः॥

अथ द्वादशो वर्गः॥ १२॥

प्र मन्दिने पितुमदर्चता वचो यः कृष्णगर्भा निरहन्नृजिश्वना।
अवस्यवो वृषणं वज्रदक्षिणं मरुत्वन्तं सख्याय हवामहे॥ १॥
यो व्यंसं जाह्नाणेन मन्युना यः शम्बरं यो अहन्पिप्रुमव्रतम्।
इन्द्रो यः शुष्णमशुषं न्यावृणङ्मरुत्वन्तं सख्याय हवामहे॥ २॥
यस्य द्यावापृथिवी पौंस्यं महद्यस्य व्रते वरुणो यस्य सूर्यः।
यस्येन्द्रस्य सिन्धवः सश्चति व्रतं मरुत्वन्तं सख्याय हवामहे॥ ३॥
यो अश्वानां यो गवां गोपतिर्वशी य आरितः कर्मणिकर्मणि स्थिरः।
वीळोश्चिदिन्द्रो यो असुन्वतो वधो मरुत्वन्तं सख्याय हवामहे॥ ४॥
यो विश्वस्य जगतः प्राणतस्पतिर्यो ब्रह्मणे प्रथमो गा अविन्दत्।
इन्द्रो यो दस्यूँरधराँ अवातिरन् मरुत्वन्तं सख्याय हवामहे॥ ५॥
यः शूरेभिर्हव्यो यश्च भीरुभिर्यो धावद्भिर्हूयते यश्च जिग्युभिः।
इन्द्रं यं विश्वा भुवनाभि संदधुर्मरुत्वन्तं सख्याय हवामहे॥ ६॥

अथ त्रयोदशो वर्गः॥ १३॥

रुद्राणामेति प्रदिशा विचक्षणो रुद्रेभिर्योषा तनुते पृथु ज्रयः।
इन्द्रं मनीषा अभ्यर्चति श्रुतं मरुत्वन्तं सख्याय हवामहे॥ ७॥
यद् वा मरुत्वः परमे सधस्थे यद्वावमे वृजने मादयासे।
अत आ याह्यध्वरं नो अच्छा त्वाया हविश्चकृमा सत्यराधः॥ ८॥
त्वायेन्द्र सोमं सुषुमा सुदक्ष त्वाया हविश्चकृमा ब्रह्मवाहः।
अधा नियुत्वः सगणो मरुद्भिरस्मिन् यज्ञे बर्हिषि मादयस्व॥ ९॥
मादयस्व हरिभिर्ये त इन्द्र वि ष्यस्व शिप्रे वि सृजस्व धेने।
आ त्वा सुशिप्र हरयो वहन्तूशन् हव्यानि प्रति नो जुषस्व॥ १०॥
मरुत्स्तोत्रस्य वृजनस्य गोपा वयमिन्द्रेण सनुयाम वाजम्।
तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्तामदितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः॥ ११॥

[१०२] द्व्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—कुत्स आङ्गिरसः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१ जगती; २, ४, ९ स्वराट्त्रिष्टुप्; ३, ५-८ निचृज्जगती; १०, ११ निचृत्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१, ३, ५-८ निषादः; २, ४, ९-११ धैवतः॥

अथ चतुर्दशो वर्गः॥ १४॥

इमां ते धियं प्र भरे महो महीमस्य स्तोत्रे धिषणा यत्त आनजे।
तमुत्सवे च प्रसवे च सासहिमिन्द्रं देवासः शवसामदन्ननु॥ १॥
अस्य श्रवो नद्यः सप्त बिभ्रति द्यावाक्षामा पृथिवी दर्शतं वपुः।
अस्मे सूर्याचन्द्रमसाभिचक्षे श्रद्धे कमिन्द्र चरतो वितर्तुरम्॥ २॥
तं स्मा रथं मघवन् प्रावं सातये जैत्रं यं ते अनुमदाम संगमे।
आजा न इन्द्र मनसा पुरुष्टुत त्वायद्भ्यो मघवञ्छर्म यच्छ नः॥ ३॥
वयं जयेम त्वया युजा वृतमस्माकमंशमुदवा भरेभरे।
अस्मभ्यमिन्द्र वरिवः सुगं कृधि प्र शत्रूणां मघवन् वृष्ण्या रुज॥ ४॥
नाना हि त्वा हवमाना जना इमे धनानां धर्तरवसा विपन्यवः।
अस्माकं स्मा रथमा तिष्ठ सातये जैत्रं हीन्द्र निभृतं मनस्तव॥ ५॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अथ पञ्चदशो वर्गः ॥ १५ ॥

गोजिता बाहू अमितक्रतुः सिमः कर्मन्कर्मञ्छतमूतिः खजंकरः।
अकल्प इन्द्रः प्रतिमानमोजसाथा जना वि ह्वयन्ते सिषासवः ॥ ६ ॥
उत्ते शतान्मघवन्नुच्च भूयस उत्सहस्राद्रिरिचे कृष्टिषु श्रवः।
अमात्रं त्वा धिषणा तित्विषे महाधा वृत्राणि जिघ्नसे पुरन्दर ॥ ७ ॥
त्रिर्विष्टिधातु प्रतिमानमोजसस्तिस्रो भूमीर्नृपते त्रीणि रोचना।
अतीदं विश्वं भुवनं ववक्षिथाशत्रुरिन्द्र जनुषा सनादसि ॥ ८ ॥
त्वां देवेषु प्रथमं हवामहे त्वं बभूथ पृतनासु सासहिः।
सेमं नः कारुमुपमन्युमुद्भिदमिन्द्रः कृणोतु प्रसवे रथं पुरः ॥ ९ ॥
त्वं जिगेथ न धना रुरोधिथाभीष्वाजा मघवन्महत्सु च।
त्वामुग्रमवसे सं शिशीमस्यथा न इन्द्र हवनेषु चोदय ॥ १० ॥
विश्वाहेन्द्रो अधिवक्ता नो अस्त्वपरिह्वृताः सनुयाम वाजम्।
तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्तामदितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः ॥ ११ ॥

[१०३] त्र्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—कुत्स आङ्गिरसः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१, ३, ५, ६ निचृत्त्रिष्टुप्; २, ४ विराट्त्रिष्टुप्; ७, ८ त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

अथ षोडशो वर्गः ॥ १६ ॥

तत्त इन्द्रियं परमं पराचैरधारयन्त कवयः पुरेदम्।
क्षमेदमन्यद्दिव्यन्यदस्य समी पृच्यते समनेव केतुः ॥ १ ॥
स धारयत्पृथिवीं पप्रथच्च वज्रेण हत्वा निरपः ससर्ज।
अहन्नहिमभिनद्रौहिणं व्यहन्व्यंसं मघवा शचीभिः ॥ २ ॥
स जातूभर्मा श्रद्दधान ओजः पुरो विभिन्दन्नचरद्वि दासीः।
विद्वान्वज्रिन्दस्यवे हेतिमस्यार्यं सहो वर्धया द्युम्नमिन्द्र ॥ ३ ॥
तदूचुषे मानुषेमा युगानि कीर्तेन्यं मघवा नाम बिभ्रत्।
उपप्रयन्दस्युहत्याय वज्री यद्धं सूनुः श्रवसे नाम दधे ॥ ४ ॥
तदस्येदं पश्यता भूरि पुष्टं श्रदिन्द्रस्य धत्तन वीर्याय।
स गा अविन्दत्सो अविन्ददश्वान्त्स ओषधीः सो अपः स वनानि ॥ ५ ॥

अथ सप्तदशो वर्गः ॥ १७ ॥

भूरिकर्मणे वृषभाय वृष्णे सत्यशुष्माय सुनवाम सोमम्।
य आदृत्या परिपन्थीव शूरोऽयज्वनो विभजन्नेति वेदः ॥ ६ ॥
तदिन्द्र प्रेव वीर्यं चकर्थ यत्ससन्तं वज्रेणाबोधयोऽहिम्।
अनु त्वा पत्नीर्हषितं वयश्च विश्वे देवासो अमदन्ननु त्वा ॥ ७ ॥
शुष्णं पिप्रुं कुयवं वृत्रमिन्द्र यदावधीर्वि पुरः शम्बरस्य।
तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्तामदितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः ॥ ८ ॥

[१०४] चतुरुत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—कुत्स आङ्गिरसः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१ पङ्क्तिः; २, ४, ५ स्वराट्पङ्क्तिः; ३, ७ त्रिष्टुप्; ६ भुरिक्पङ्क्तिः; ८, ९ निचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१, २, ४-६ पञ्चमः; ३, ७-९ धैवतः ॥

अथ अष्टादशो वर्गः ॥ १८ ॥

योनिष्ट इन्द्र निषदे अकारि तमा नि षीद स्वानो नार्वा।
विमुच्या वयोऽवसायाश्वान्दोषा वस्तोर्वहीयसः प्रपित्वे ॥ १ ॥
ओ त्ये नर इन्द्रमूतये गुर्नू चित्तान्त्सद्यो अध्वनो जगम्यात्।
देवासो मन्युं दासस्य शमन्ते न आ वक्षन्त्सुविताय वर्णम् ॥ २ ॥
अव त्मना भरते केतवेदा अव त्मना भरते फेनमुद्नः।
क्षीरेण स्नातः कुयवस्य योषे हते ते स्यातां प्रवणे शिफायाः ॥ ३ ॥
युयोप नाभिरुपरस्यायोः प्र पूर्वीभिस्तिरते राष्टि शूरः।
अञ्जसी कुलिशी वीरपत्नी पयो हिन्वाना उदभिर्भरन्ते ॥ ४ ॥
प्रति यत्स्या नीथादर्शि दस्योरोको नाच्छा सदनं जानती गात्।
अधा स्मा नो मघवञ्चर्कृतादिन्मा नो मघेव निष्पपी परा दाः ॥ ५ ॥

अथ एकोनविंशो वर्गः ॥ १९ ॥

स त्वं न इन्द्र सूर्ये सो अप्स्वनागास्त्व आ भज जीवशंसे।
मान्तरां भुजमा रीरिषो नः श्रद्धितं ते महत इन्द्रियाय ॥ ६ ॥
अधा मन्ये श्रत्ते अस्मा अधायि वृषा चोदस्व महते धनाय।
मा नो अकृते पुरुहूत योनाविन्द्र क्षुध्यद्भ्यो वय आसुतिं दाः ॥ ७ ॥
मा नो वधीरिन्द्र मा परा दा मा नः प्रिया भोजनानि प्र मोषीः।
आण्डा मा नो मघवञ्छक्र निर्भेन्मा नः पात्रा भेत्सहजानुषाणि ॥ ८ ॥
अर्वाङेहि सोमकामं त्वाहुरयं सुतस्तस्य पिबा मदाय।
उरुव्यचा जठर आ वृषस्व पितेव नः शृणुहि हूयमानः ॥ ९ ॥

[१०५] पञ्चोत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—आप्त्यस्त्रित आङ्गिरसः कुत्सो वा ॥ देवता—विश्वेदेवाः ॥ छन्दः—१, २, १२, १६, १७ निचृत्पङ्क्तिः; ३, ४, ६, ९, १५, १८ विराट्पङ्क्तिः; ८, १० स्वराट्पङ्क्तिः; ११, १४ पङ्क्तिः; ५ निचृद्बृहती; ७ भुरिग्बृहती; १३ महाबृहती; १९ निचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१-४, ६, ८-१२, १४-१८ पञ्चमः; ५, ७, १३ मध्यमः; १९ धैवतः ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अथ विंशो वर्गः ॥ २० ॥

चन्द्रमा अप्स्व१न्तरा सुपर्णो धावते दिवि।
न वो हिरण्यनेमयः पदं विन्दन्ति विद्युतो वित्तं मे अस्य रोदसी ॥ १ ॥
अर्थमिद्वा उ अर्थिन आ जाया युवते पतिम्।
तुञ्जाते वृष्ण्यं पयः परिदाय रसं दुहे वित्तं मे अस्य रोदसी ॥ २ ॥
मो षु देवा अदः स्व१रव पादि दिवस्परि।
मा सोम्यस्य शंभुवः शूने भूम कदा चन वित्तं मे अस्य रोदसी ॥ ३ ॥
यज्ञं पृच्छाम्यवमं स तद् दूतो वि वोचति।
क्व ऋतं पूर्व्यं गतं कस्तद्बिभर्ति नूतनो वित्तं मे अस्य रोदसी ॥ ४ ॥
अमी ये देवाः स्थन त्रिष्वा रोचने दिवः।
कद्ध ऋतं कदनृतं क्व प्रत्ना व आहुतिर्वित्तं मे अस्य रोदसी ॥ ५ ॥

अथ एकविंशो वर्गः ॥ २१ ॥

कद्ध ऋतस्य धर्णसि कद्धरुणस्य चक्षणम्।
कदर्यम्णो महस्पथाति क्रामेम दूढ्यो वित्तं मे अस्य रोदसी ॥ ६ ॥
अहं सो अस्मि यः पुरा सुते वदामि कानि चित्।
तं मा व्यन्त्याध्योऽ३ वृको न तृष्णजं मृगं वित्तं मे अस्य रोदसी ॥ ७ ॥
सं मा तपन्त्यभितः सपत्नीरिव पर्शवः। मूषो न शिश्ना
व्यदन्ति माध्यः स्तोतारं ते शतक्रतो वित्तं मे अस्य रोदसी ॥ ८ ॥
अमी ये सप्त रश्मयस्तत्रा मे नाभिरातता।
त्रितस्तद्वेदाप्त्यः स जामित्वाय रेभति वित्तं मे अस्य रोदसी ॥ ९ ॥
अमी ये पञ्चोक्षणो मध्ये तस्थुर्महो दिवः।
देवत्रा नु प्रवाच्यं सध्रीचीना नि वावृतुर्वित्तं मे अस्य रोदसी ॥ १० ॥

अथ द्वाविंशो वर्गः ॥ २२ ॥

सुपर्णा एत आसते मध्य आरोधने दिवः।
ते सेधन्ति पथो वृकं तरन्तं यह्वतीरपो वित्तं मे अस्य रोदसी ॥ ११ ॥
नव्यं तदुक्थ्यं हितं देवासः सुप्रवाचनम्।
ऋतमर्षन्ति सिन्धवः सत्यं तातान सूर्यो वित्तं मे अस्य रोदसी ॥ १२ ॥
अग्ने तव त्यदुक्थ्यं देवेष्वस्त्याप्यम्।
स नः सत्तो मनुष्वदा देवान्यक्षि विदुष्टरो वित्तं मे अस्य रोदसी ॥ १३ ॥
सत्तो होता मनुष्वदा देवान्यक्षि विदुष्टरः।
अग्निर्हव्या सुषूदति देवो देवेषु मेधिरो वित्तं मे अस्य रोदसी ॥ १४ ॥
ब्रह्मा कृणोति वरुणो गातुविदं तमीमहे।
व्यूर्णोति हृदा मतिं नव्यो जायतामृतं वित्तं मे अस्य रोदसी ॥ १५ ॥

अथ त्रयस्त्रिंशो वर्गः ॥ २३ ॥

असौ यः पन्था आदित्यो दिवि प्रवाच्यं कृतः।
न स देवा अतिक्रमे तं मर्तासो न पश्यथ वित्तं मे अस्य रोदसी ॥ १६ ॥
त्रितः कूपेऽवहितो देवान्हवत ऊतये।
तच्छुश्राव बृहस्पतिः कृण्वन्नंहूरणादुरु वित्तं मे अस्य रोदसी ॥ १७ ॥
अरुणो मा सकृद् वृकः पथा यन्तं ददर्श हि।
उज्जिहीते निचाय्या तष्टेव पृष्ट्यामयी वित्तं मे अस्य रोदसी ॥ १८ ॥
एनाङ्गूषेण वयमिन्द्रवन्तोऽभि ष्याम वृजने सर्ववीराः।
तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्तामदितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः ॥ १९ ॥

षोडशोऽनुवाकः [१०६] षडुत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—कुत्स आङ्गिरसः ॥ देवता—विश्वे देवाः ॥ छन्दः—१-६ जगती; ७ निचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१-६ निषादः; ७ धैवतः ॥

अथ चतुर्विंशो वर्गः ॥ २४ ॥

इन्द्रं मित्रं वरुणमग्निमूतये मारुतं शर्धो अदितिं हवामहे।
रथं न दुर्गाद्वसवः सुदानवो विश्वस्मान्नो अंहसो निष्पिपर्तन ॥ १ ॥
त आदित्या आ गता सर्वतातये भूत देवा वृत्रतूर्येषु शंभुवः।
रथं न दुर्गाद्वसवः सुदानवो विश्वस्मान्नो अंहसो निष्पिपर्तन ॥ २ ॥
अवन्तु नः पितरः सुप्रवाचना उत देवी देवपुत्रे ऋतावृधा।
रथं न दुर्गाद्वसवः सुदानवो विश्वस्मान्नो अंहसो निष्पिपर्तन ॥ ३ ॥
नराशंसं वाजिनं वाजयन्निह क्षयद्वीरं पूषणं सुम्नैरीमहे।
रथं न दुर्गाद्वसवः सुदानवो विश्वस्मान्नो अंहसो निष्पिपर्तन ॥ ४ ॥
बृहस्पते सदमिन्नः सुगं कृधि शं योर्यत्ते मनुर्हितं तदीमहे।
रथं न दुर्गाद्वसवः सुदानवो विश्वस्मान्नो अंहसो निष्पिपर्तन ॥ ५ ॥
इन्द्रं कुत्सो वृत्रहणं शचीपतिं काटे निबाळ्ह ऋषिरह्वदूतये।
रथं न दुर्गाद्वसवः सुदानवो विश्वस्मान्नो अंहसो निष्पिपर्तन ॥ ६ ॥
देवैर्नो देव्यदितिर्नि पातु देवस्त्राता त्रायतामप्रयुच्छन्।
तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्तामदितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः ॥ ७ ॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

[१०७] सप्तोत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—कुत्स आङ्गिरसः ॥ देवता—विश्वे देवाः ॥ छन्दः—१ विराट्त्रिष्टुप्; २ निचृत्त्रिष्टुप्; ३ त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

अथ पञ्चविंशो वर्गः ॥ २५ ॥

यज्ञो देवानां प्रत्येति सुम्नमादित्यासो भवता मृळयन्तः।
आ वोऽर्वाची सुमतिर्ववृत्यादंहोश्चिद्या वरिवोवित्तरासत् ॥ १ ॥
उप नो देवा अवसा गमन्त्वङ्गिरसां सामभिः स्तूयमानाः।
इन्द्रं इन्द्रियैर्मरुतो मरुद्भिरादित्यैर्नो अदितिः शर्म यंसत् ॥ २ ॥
तन्न इन्द्रस्तद्वरुणस्तदग्निस्तदर्यमा तत्सविता चनो धात्।
तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्तामदितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः ॥ ३ ॥

[१०८] अष्टोत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—कुत्स आङ्गिरसः ॥ देवता—इन्द्राग्नी ॥ छन्दः—१, ८, १२ निचृत्त्रिष्टुप्; २, ३, ६, ११ विराट्त्रिष्टुप्; ४ भुरिक्पङ्क्तिः; ५ पङ्क्तिः; ७, ९, १०, १३ त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१-३, ६-१३ धैवतः; ४, ५ पञ्चमः ॥

अथ षड्विंशो वर्गः ॥ २६ ॥

य इन्द्राग्नी चित्रतमो रथो वामभि विश्वानि भुवनानि चष्टे।
तेना यातं सरथं तस्थिवांसाथा सोमस्य पिबतं सुतस्य ॥ १ ॥
यावदिदं भुवनं विश्वमस्त्युरुव्यचा वरिमता गभीरम्।
तावाँ अयं पातवे सोमो अस्त्वरमिन्द्राग्नी मनसे युवभ्याम् ॥ २ ॥
चक्राथे हि सध्र्यङ्नाम भद्रं सधीचीना वृत्रहणा उत स्थः।
ताविन्द्राग्नी सध्र्यञ्चा निषद्या वृष्णः सोमस्य वृषणा वृषेथाम् ॥ ३ ॥
समिद्धेष्वग्निष्वानजाना यतस्रुचा बर्हिरु तिस्तिराणा।
तीव्रैः सोमैः परिषिक्तेभिर्वागेन्द्राग्नी सौमनसाय यातम् ॥ ४ ॥
यानीन्द्राग्नी चक्रथुर्वीर्याणि यानि रूपाण्युत वृष्ण्यानि।
या वां प्रत्नानि सख्या शिवानि तेभिः सोमस्य पिबतं सुतस्य ॥ ५ ॥

अथ सप्तविंशो वर्गः ॥ २७ ॥

यदब्रवं प्रथमं वां वृणानोऽयं सोमो असुरैर्नो विहव्यः।
तां सत्यां श्रद्धामभ्या हि यातमथा सोमस्य पिबतं सुतस्य ॥ ६ ॥
यदिन्द्राग्नी मदथः स्वे दुरोणे यद् ब्रह्मणि राजनि वा यजत्रा।
अतः परि वृषणावा हि यातमथा सोमस्य पिबतं सुतस्य ॥ ७ ॥
यदिन्द्राग्नी यदुषु तुर्वशेषु यद् द्रुह्युष्वनुषु पूरुषु स्थः।
अतः परि वृषणावा हि यातमथा सोमस्य पिबतं सुतस्य ॥ ८ ॥
यदिन्द्राग्नी अवमस्यां पृथिव्यां मध्यमस्यां परमस्यामुत स्थः।
अतः परि वृषणावा हि यातमथा सोमस्य पिबतं सुतस्य ॥ ९ ॥
यदिन्द्राग्नी परमस्यां पृथिव्यां मध्यमस्यामवमस्यामुत स्थः।
अतः परि वृषणावा हि यातमथा सोमस्य पिबतं सुतस्य ॥ १० ॥
यदिन्द्राग्नी दिवि ष्ठो यत्पृथिव्यां यत्पर्वतेष्वोषधीष्वप्सु।
अतः परि वृषणावा हि यातमथा सोमस्य पिबतं सुतस्य ॥ ११ ॥
यदिन्द्राग्नी उदिता सूर्यस्य मध्ये दिवः स्वधया मादयेथे।
अतः परि वृषणावा हि यातमथा सोमस्य पिबतं सुतस्य ॥ १२ ॥
एवेन्द्राग्नी पपिवांसा सुतस्य विश्वास्मभ्यं सं जयतं धनानि।
तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्तामदितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः ॥ १३ ॥

[१०९] नवोत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—कुत्स आङ्गिरसः ॥ देवता—इन्द्राग्नी ॥ छन्दः—१, ३, ४, ६, ८ निचृत्त्रिष्टुप्; २, ५, त्रिष्टुप्; ७ विराट्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

अथ अष्टाविंशो वर्गः ॥ २८ ॥

वि ह्याख्यं मनसा वस्य इच्छन्निन्द्राग्नी ज्ञास उत वा सजातान्।
नान्या युवत्प्रमतिरस्ति मह्यं स वां धियं वाजयन्तीमतक्षम् ॥ १ ॥
अश्रवं हि भूरिदावत्तरा वां विजामातुरुत वा घा स्यालात्।
अथा सोमस्य प्रयती युवभ्यामिन्द्राग्नी स्तोमं जनयामि नव्यम् ॥ २ ॥
मा छेद्म रश्मीरिति नाधमानाः पितृणां शक्तीरनुयच्छमानाः।
इन्द्राग्निभ्यां कं वृषणो मदन्ति ता ह्यद्री धिषणाया उपस्थे ॥ ३ ॥
युवाभ्यां देवी धिषणा मदायेन्द्राग्नी सोममुशती सुनोति।
तावश्विना भद्रहस्ता सुपाणी आ धावतं मधुना पृङ्क्तमप्सु ॥ ४ ॥
युवामिन्द्राग्नी वसुनो विभागे तवस्तमा शुश्रव वृत्रहत्ये।
तावासद्या बर्हिषि यज्ञे अस्मिन्प्र चर्षणी मादयेथां सुतस्य ॥ ५ ॥

अथ एकोनविंशो वर्गः ॥ २९ ॥

प्र चर्षणिभ्यः पृतनाहवेषु प्र पृथिव्या रिरिचाथे दिवश्च।
प्र सिन्धुभ्यः प्र गिरिभ्यो महित्वा प्रेन्द्राग्नी विश्वा भुवनात्यन्या ॥ ६ ॥
आ भरतं शिक्षतं वज्रबाहू अस्माँ इन्द्राग्नी अवतं शचीभिः।
इमे नु ते रश्मयः सूर्यस्य येभिः सपित्वं पितरो न आसन् ॥ ७ ॥
पुरंदरा शिक्षतं वज्रहस्तास्माँ इन्द्राग्नी अवतं भरेषु।
तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्तामदितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः ॥ ८ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

[११०] दशोत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—कुत्स आङ्गिरसः ॥ देवता—ऋभवः ॥ छन्दः—१, ४ जगती; २, ३, ७ विराड्जगती; ५ निचृत्त्रिष्टुप्; ६, ८ निचृज्जगती; ९ त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१-४, ६-८ निषादः; ५, ९ धैवतः ॥

अथ त्रिंशो वर्गः ॥ ३० ॥

ततं मे अपस्तदु तायते पुनः स्वादिष्ठा धीतिरुचथाय शस्यते ।
अयं समुद्र इह विश्वदेव्यः स्वाहाकृतस्य समु तृप्णुत ऋभवः ॥ १ ॥
आभोगयं प्र यदिच्छन्त ऐतनापाकाः प्राञ्चो मम के चिदापयः ।
सौधन्वनासश्चरितस्य भूमनागच्छत सवितुर्दाशुषो गृहम् ॥ २ ॥
तत्सविता वोऽमृतत्वमासुवदगोह्यं यच्छ्रवयन्त ऐतन ।
त्यं चिच्चमसमसुरस्य भक्षणमेकं सन्तमकृणुता चतुर्वयम् ॥ ३ ॥
विष्टी शमी तरणित्वेन वाघतो मतीसः सन्तो अमृतत्वमानशुः ।
सौधन्वना ऋभवः सूरचक्षसः संवत्सरे समपृच्यन्त धीतिभिः ॥ ४ ॥
क्षेत्रमिव वि ममुस्तेजनेनँ एकं पात्रमृभवो जेहमानम् ।
उपस्तुता उपमं नाधमाना अमर्त्येषु श्रव इच्छमानाः ॥ ५ ॥

अथ एकत्रिंशो वर्गः ॥ ३१ ॥

आ मनीषामन्तरिक्षस्य नृभ्यः स्रुचेव घृतं जुहवाम विद्मना ।
तरणित्वा ये पितुरस्य सश्चिर ऋभवो वाजमरुहन्दिवो रजः ॥ ६ ॥
ऋभुर्न इन्द्रः शवसा नवीयानृभुर्वाजेभिर्वसुभिर्वसुर्ददिः ।
युष्माकं देवा अवसाहनि प्रिये३ऽभि तिष्ठेम पृत्सुतीरसुन्वताम् ॥ ७ ॥
निश्चर्मणः ऋभवो गामपिंशत सं वत्सेनासृजता मातरं पुनः ।
सौधन्वनासः स्वपस्यया नरो जिव्री युवाना पितरा कृणोतन ॥ ८ ॥
वाजेभिर्नो वाजसातावविड्ढ्यृभुमाँ इन्द्र चित्रमा दर्षि राधः ।
तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्तामदितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः ॥ ९ ॥

[१११] एकादशोत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—कुत्स आङ्गिरसः ॥ देवता—ऋभवः ॥ छन्दः—१-४ जगती; ५ त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१-४ निषादः; ५ धैवतः ॥

अथ द्वात्रिंशो वर्गः ॥ ३२ ॥

तक्षत्रथं सुवृतं विद्मनापसस्तक्षन्हरी इन्द्रवाहा वृषण्वसू ।
तक्षन्पितृभ्यामृभवो युवद्वयस्तक्षन्वत्साय मातरं सचाभुवम् ॥ १ ॥
आ नो यज्ञाय तक्षत ऋभुमद्वयः क्रत्वे दक्षाय सुप्रजावतीमिषम् ।
यथा क्षयाम सर्ववीरया विशा तन्नः शर्धाय धासथा स्वित्र्यम् ॥ २ ॥
आ तक्षत सातिमस्मभ्यमृभवः सातिं रथाय सातिमर्वते नरः ।
सातिं नो जैत्रीं सं महेत विश्वहा जामिमजामिं पृतनासु सक्षणिम् ॥ ३ ॥
ऋभुक्षणमिन्द्रमा हुव ऊतय ऋभून्वाजान्मरुतः सोमपीतये ।
उभा मित्रावरुणा नूनमश्विना ते नो हिन्वन्तु सातये धिये जिषे ॥ ४ ॥
ऋभुर्भराय सं शिशातु सातिं समर्यजिद्वाजो अस्माँ अविष्टु ।
तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्तामदितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः ॥ ५ ॥

[११२] द्वादशोत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—कुत्स आङ्गिरसः ॥ देवता—आदिमे मन्त्रे प्रथमपादस्य द्यावापृथिव्यौ, द्वितीयस्य अग्निः, शिष्टस्य सूक्तस्याश्विनौ ॥ छन्दः—१, २, ६, ७, १३, १५, १७, १८, २०-२२ निचृज्जगती; ३, ५, २४ विराट्त्रिष्टुप्; ४, ८, ९, ११, १२, १४, १६, २३ जगती; १० भुरिक्त्रिष्टुप्; १९ विराड्जगती; २५ त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१, २, ४, ६-९, ११-२३ निषादः; ३, ५, १०, २४, २५ धैवतः ॥

अथ त्रयस्त्रिंशो वर्गः ॥ ३३ ॥

ईळे द्यावापृथिवी पूर्वचित्तय इग्निं घर्मं सुरुचं यामन्निष्टये ।
याभिर्भरे कारमंशाय जिन्वथस्ताभिरूषु ऊतिभिरश्विना गतम् ॥ १ ॥
युवोर्दानाय सुभरा असश्चतो रथमा तस्थुर्वसवे न मन्तवे ।
याभिर्धियोऽवथः कर्मन्निष्टये ताभिरूषु ऊतिभिरश्विना गतम् ॥ २ ॥
युवं तासां दिव्यस्य प्रशासने विशां क्षयथो अमृतस्य मज्मना ।
याभिर्धेनुमस्वं पिन्वथो नरा ताभिरूषु ऊतिभिरश्विना गतम् ॥ ३ ॥
याभिः परिज्मा तनयस्य मज्मना द्विमाता तूर्षु तरणिर्विभूषति ।
याभिस्त्रिमन्तुरभवद्विचक्षणस्ताभिरूषु ऊतिभिरश्विना गतम् ॥ ४ ॥
याभी रेभं निवृतं सितमद्भ्य उद्वन्दनमैरयतं स्वर्दृशे ।
याभिः कण्वं प्र षिषासन्तमावतं ताभिरूषु ऊतिभिरश्विना गतम् ॥ ५ ॥

अथ चतुस्त्रिंशो वर्गः ॥ ३४ ॥

याभिरन्तकं जसमानमारणे भुज्युं याभिरव्यथिभिर्जिजिन्वथुः ।
याभिः कर्कन्धुं वय्यं च जिन्वथस्ताभिरूषु ऊतिभिरश्विना गतम् ॥ ६ ॥
याभिः शुचन्तिं धनसां सुषंसदं तमं घर्ममोम्यावन्तमत्रये ।
याभिः पृश्निगुं पुरुकुत्समावतं ताभिरूषु ऊतिभिरश्विना गतम् ॥ ७ ॥
याभिः शचीभिर्वृषणा परावृजं प्रान्धं श्रोणं चक्षसे एतवे कृथः ।
याभिर्वर्तिकां ग्रसिताममुञ्चतं ताभिरूषु ऊतिभिरश्विना गतम् ॥ ८ ॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

याभिः सिन्धुं मधुमन्तमसश्चतं वसिष्ठं याभिरजरावजिन्वतम्।
याभिः कुत्सं श्रुतर्यं नर्यमावतं ताभिरू षु ऊतिभिरश्विना गतम्॥ ९॥
याभिर्विश्पलां धनसामथव्यं सहस्रमीळ्हे आजावजिन्वतम्।
याभिर्वशमश्व्यं प्रेणिमावतं ताभिरू षु ऊतिभिरश्विना गतम्॥ १०॥

अथ पञ्चत्रिंशो वर्गः॥ ३५॥

याभिः सुदानू औशिजाय वणिजे दीर्घश्रवसे मधु कोशो अक्षरत्।
कक्षीवन्तं स्तोतारं याभिरावतं ताभिरू षु ऊतिभिरश्विना गतम्॥ ११॥
याभी रसां क्षोदसोदनः पिपिन्वथुरनश्वं याभी रथमावतं जिषे।
याभिस्त्रिशोकं उस्रिया उदाजत ताभिरू षु ऊतिभिरश्विना गतम्॥ १२॥
याभिः सूर्यं परियाथः परावतिं मन्धातारं क्षैत्रपत्येष्वावतम्।
याभिर्विप्रं प्र भरद्वाजमावतं ताभिरू षु ऊतिभिरश्विना गतम्॥ १३॥
याभिर्मृहामतिथिग्वं कशोजुवं दिवोदासं शम्बरहत्य आवतम्।
याभिः पूर्भिद्यो त्रसदस्युमावतं ताभिरू षु ऊतिभिरश्विना गतम्॥ १४॥
याभिर्वभ्रं विपिपानमुपस्तुतं कलिं याभिर्वित्तजानि दुवस्यथः।
याभिर्व्यश्वमुत पृथिमावतं ताभिरू षु ऊतिभिरश्विना गतम्॥ १५॥

अथ षट्त्रिंशो वर्गः॥ ३६॥

याभिर्नरा शयवे याभिरत्रये याभिः पुरा मनवे गातुमीषथुः।
याभिः शारीराजतं स्यूमरश्मये ताभिरू षु ऊतिभिरश्विना गतम्॥ १६॥
याभिः पठर्वा जठरस्य मज्मनाग्निर्नादीदेच्चित इद्धो अज्मन्ना।
याभिः शर्यातमवथो महाधने ताभिरू षु ऊतिभिरश्विना गतम्॥ १७॥
याभिरङ्गिरो मनसा निरण्यथोऽग्रं गच्छथो विवरे गोअर्णसः।
याभिर्मनुं शूरमिषा समावतं ताभिरू षु ऊतिभिरश्विना गतम्॥ १८॥
याभिः पत्नीर्विमदाय न्यूहथुरा घ वा याभिररुणीरशिक्षतम्।
याभिः सुदास ऊहथुः सुदेव्यं ताभिरू षु ऊतिभिरश्विना गतम्॥ १९॥
याभिः शंताती भवथो ददाशुषे भुज्युं याभिरवथो याभिरध्रिगुम्।
ओम्यावतीं सुभरामृतस्तुभं ताभिरू षु ऊतिभिरश्विना गतम्॥ २०॥

अथ सप्तत्रिंशो वर्गः॥ ३७॥

याभिः कृशानुमसने दुवस्यथो जवे याभिर्यूनो अवन्तमावतम्।
मधु प्रियं भरथो यत्सरड्भ्यस्ताभिरू षु ऊतिभिरश्विना गतम्॥ २१॥
याभिर्नरं गोषुयुधं नृषाह्ये क्षेत्रस्य साता तनयस्य जिन्वथः।
याभी रथाँ अवथो याभिरवंतस्ताभिरू षु ऊतिभिरश्विना गतम्॥ २२॥
याभिः कुत्समार्जुनेयं शतक्रतू प्र तुर्वीतिं प्र च दभीतिमावतम्।
याभिर्ध्वसन्तिं पुरुषन्तिमावतं ताभिरू षु ऊतिभिरश्विना गतम्॥ २३॥
अप्नस्वतीमश्विना वाचमस्मे कृतं नो दस्रा वृषणा मनीषाम्।
अद्यूत्येऽवसे नि ह्वये वां वृधे च नो भवतं वाजसातौ॥ २४॥
द्युभिरक्तुभिः परि पातमस्मानरिष्टेभिरश्विना सौभगेभिः।
तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्तामदितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः॥ २५॥

इति प्रथमाष्टके सप्तमोऽध्यायः॥

अथाष्टमोऽध्यायः

[११३] त्रयोदशोत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—कुत्स आङ्गिरसः॥ देवता—उषाः, द्वितीयस्यार्द्धर्चस्य रात्रिरपि॥ छन्दः—१, ३, ९, १२, १७ निचृत्त्रिष्टुप्; २, ५ स्वराट्पङ्क्तिः; ४, ८, १०, ११, १५, १६ भुरिक् पङ्क्तिः; ६ त्रिष्टुप्; ७, १८-२० विराट्त्रिष्टुप्; १३, १४ निचृत्पङ्क्तिः॥ स्वरः—१, ३, ६, ७, ९, १२, १७-२० धैवतः; २, ४, ५, ८, १०, ११, १३-१६ पञ्चमः॥

अथ प्रथमो वर्गः॥ १॥

इदं श्रेष्ठं ज्योतिषां ज्योतिरागाच्चित्रः प्रकेतो अजनिष्ट विभ्वा।
यथा प्रसूता सवितुः सवायैवा रात्र्युषसे योनिमारैक्॥ १॥
रुशद्वत्सा रुशती श्वेत्यागादारैगु कृष्णा सदनान्यस्याः।
समानबन्धू अमृते अनूची द्यावा वर्णं चरत आमिनाने॥ २॥
समानो अध्वा स्वस्रोरनन्तस्तमन्यान्या चरतो देवशिष्टे।
न मेथेते न तस्थतुः सुमेके नक्तोषासा समनसा विरूपे॥ ३॥
भास्वती नेत्री सूनृतानामचेति चित्रा वि दुरो न आवः।
प्रार्प्या जगद्व्युं नो रायो अख्यदुषा अजीगर्भुवनानि विश्वा॥ ४॥
जिह्मश्यैरचरितवे मघोन्याभोगय इष्टये राय ऊ त्वम्।
दभ्रं पश्यद्भ्य उर्विया विचक्ष उषा अजीगर्भुवनानि विश्वा॥ ५॥

अथ द्वितीयो वर्गः॥ २॥

क्षत्राय त्वं श्रवसे त्वं महीया इष्टये त्वमर्थमिव त्वमित्यै ।
विसदृशा जीवितायिप्रचक्ष उषा अजीगर्भुवनानि विश्वा ॥ ६॥
पुषा दिवो दुहिता प्रत्यदर्शि व्युच्छन्ती युवतिः शुक्रवासाः ।
विश्वस्येशाना पार्थिवस्य वस्व उषो अद्येह सुभगे व्युच्छ ॥ ७॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

परायतीनामन्वेति पाथ आयतीनां प्रथमा शश्वतीनाम् ।
व्युच्छन्ती जीवमुदीरयन्त्युषा मृतं कं चन बोधयन्ती ॥ ८ ॥
उषो यदग्निं समिधे चकर्थ वि यदावश्चक्षसा सूर्यस्य ।
यन्मानुषान्यक्ष्यमाणाँ अजीगस्तद्देवेषु चकृषे भद्रमप्नः ॥ ९ ॥
कियात्या यत्समया भवाति या व्यूषुर्याश्च नूनं व्युच्छान् ।
अनु पूर्वाः कृपते वावशाना प्रदीध्याना जोषमन्याभिरेति ॥ १० ॥

अथ तृतीयो वर्गः ॥ ३ ॥

ईयुष्टे ये पूर्वतरामपश्यन्व्युच्छन्तीमुषसं मर्त्यासः ।
अस्माभिरू नु प्रतिचक्ष्याभूदो ते यन्ति ये अपरीषु पश्यान् ॥ ११ ॥
यावयद् द्वेषा ऋतपा ऋतेजाः सुम्नावरी सूनृता ईरयन्ती ।
सुमङ्गलीर्बिभ्रती देववीतिमिहाद्योषः श्रेष्ठतमा व्युच्छ ॥ १२ ॥
शश्वत्पुरोषा व्युवास देव्यथो अद्येदं व्यावो मघोनी ।
अथो व्युच्छादुत्तराँ अनु द्यूनजरामृता चरति स्वधाभिः ॥ १३ ॥
व्य१ञ्जिभिर्दिव आतास्वद्यौदप कृष्णां निर्णिजं देव्यावः ।
प्रबोधयन्त्यरुणेभिरश्वैरोषा याति सुयुजा रथेन ॥ १४ ॥
आवहन्ती पोष्या वार्याणि चित्रं केतुं कृणुते चेकिताना ।
ईयुषीणामुपमा शश्वतीनां विभातीनां प्रथमोषा व्यश्वैत् ॥ १५ ॥

अथ चतुर्थो वर्गः ॥ ४ ॥

उदीर्ध्वं जीवो असुर्न आगादप प्रागात्तम आ ज्योतिरेति ।
आरैक्पन्थां यातवे सूर्यायागन्म यत्र प्रतिरन्त आयुः ॥ १६ ॥
स्यूमना वाच उदियर्ति वह्निः स्तवानो रेभ उषसो विभातीः ।
अद्या तदुच्छ गृणते मघोन्यस्मे आयुर्नि दिदीहि प्रजावत् ॥ १७ ॥
या गोमतीरुषसः सर्ववीरा व्युच्छन्ति दाशुषे मर्त्याय ।
वायोरिव सूनृतानामुदर्के ता अश्वदा अश्नवत्सोमसुत्वा ॥ १८ ॥
माता देवानामदितेरनीकं यज्ञस्य केतुर्बृहती वि भाहि ।
प्रशस्तिकृद् ब्रह्मणे नो व्यु१च्छा नो जने जनय विश्ववारे ॥ १९ ॥
यच्चित्रमप्न उषसो वहन्तीजानाय शशमानाय भद्रम् ।
तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्तामदितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः ॥ २० ॥

[११४] चतुर्दशोत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—कुत्स आङ्गिरसः ॥ देवता—रुद्रः ॥ छन्दः—१ जगती; २, ७ निचृज्जगती; ३, ६, ८, ९ विराड्जगती; ४, ५, ११ भुरिक्त्रिष्टुप्; १० निचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१-३, ६-९ निषादः; ४, ५, १०, ११ धैवतः ॥

अथ पञ्चमो वर्गः ॥ ५ ॥

इमा रुद्राय तवसे कपर्दिने क्षयद्वीराय प्र भरामहे मतीः ।
यथा शमसद् द्विपदे चतुष्पदे विश्वं पुष्टं ग्रामे अस्मिन्ननातुरम् ॥ १ ॥
मृळा नो रुद्रोत नो मयस्कृधि क्षयद्वीराय नमसा विधेम ते ।
यच्छं च योश्च मनुरायेजे पिता तदश्याम तव रुद्र प्रणीतिषु ॥ २ ॥
अश्याम ते सुमतिं देवयज्यया क्षयद्वीरस्य तव रुद्र मीढ्वः ।
सुम्नायन्निद्विशो अस्माकमा चरारिष्टवीरा जुहवाम ते हविः ॥ ३ ॥
त्वेषं वयं रुद्रं यज्ञसाधं वङ्कुं कविमवसे नि ह्वयामहे ।
आरे अस्मद्दैव्यं हेळो अस्यतु सुमतिमिद्वयमस्या वृणीमहे ॥ ४ ॥
दिवो वराहमरुषं कपर्दिनं त्वेषं रूपं नमसा नि ह्वयामहे ।
हस्ते बिभ्रद्भेषजा वार्याणि शर्म वर्म च्छर्दिरस्मभ्यं यंसत् ॥ ५ ॥

अथ षष्ठो वर्गः ॥ ६ ॥

इदं पित्रे मरुतामुच्यते वचः स्वादोः स्वादीयो रुद्राय वर्धनम् ।
रास्वा च नो अमृत मर्तभोजनं त्मने तोकाय तनयाय मृळ ॥ ६ ॥
मा नो महान्तमुत मा नो अर्भकं मा न उक्षन्तमुत मा न उक्षितम् ।
मा नो वधीः पितरं मोत मातरं मा नः प्रियास्तन्वो रुद्र रीरिषः ॥ ७ ॥
मा नस्तोके तनये मा न आयौ मा नो गोषु मा नो अश्वेषु रीरिषः ।
वीरान्मा नो रुद्र भामितो वधीर्हविष्मन्तः सदमित्त्वा हवामहे ॥ ८ ॥
उप ते स्तोमान्पशुपाइवाकरं रास्वा पितर्मरुतां सुम्नमस्मे ।
भद्रा हि ते सुमतिर्मृळयत्तमाथा वयमव इत्ते वृणीमहे ॥ ९ ॥
आरे ते गोघ्नमुत पूरुषघ्नं क्षयद्वीर सुम्नमस्मे ते अस्तु ।
मृळा च नो अधि च ब्रूहि देवाधा च नः शर्म यच्छ द्विबर्हीः ॥ १० ॥
अवोचाम नमो अस्मा अवस्यवः शृणोतु नो हवं रुद्रो मरुत्वान् ।
तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्तामदितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः ॥ ११ ॥

[११५] पञ्चदशोत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—कुत्स आङ्गिरसः ॥ देवता—सूर्यः ॥ छन्दः—१, २, ६ निचृत्त्रिष्टुप्; ३ विराट्त्रिष्टुप्; ४, ५ त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

अथ सप्तमो वर्गः ॥ ७ ॥

चित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः ।
आप्रा द्यावापृथिवी अन्तरिक्षं सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च ॥ १ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सूर्यो देवीमुषसं रोचमानां मर्यो न योषामभ्येति पश्चात्।
यत्रा नरो देवयन्तो युगानि वितन्वते प्रति भद्राय भद्रम्॥ २॥
भद्रा अश्वा हरितः सूर्यस्य चित्रा एतग्वा अनुमाद्यासः।
नमस्यन्तो दिव आ पृष्ठमस्थुः परि द्यावापृथिवी यन्ति सद्यः॥ ३॥
तत्सूर्यस्य देवत्वं तन्महित्वं मध्या कर्तोर्विततं सं जभार।
यदेदयुक्त हरितः सधस्थादाद्रात्री वासस्तनुते सिमस्मै॥ ४॥
तन्मित्रस्य वरुणस्याभिचक्षे सूर्यो रूपं कृणुते द्योरुपस्थे।
अनन्तमन्यद्रुशदस्य पाजः कृष्णमन्यद्धरितः सं भरन्ति॥ ५॥
अद्या देवा उदिता सूर्यस्य निरंहसः पिपृता निरवद्यात्।
तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्तामदितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः॥ ६॥

सप्तदशोऽनुवाकः [११६] षोडशोत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—कक्षीवान्॥ देवता—अश्विनौ॥ छन्दः—१, १०, २२, २३ विराट्त्रिष्टुप्; २, ८, ९, १२-१५, १८, २०, २४, २५ निचृत्त्रिष्टुप्; ३-५ ७, २१ त्रिष्टुप्; ६, १६, १९, भुरिक्पङ्क्तिः; ११ पङ्क्तिः; १७ स्वराट्पङ्क्तिः॥ स्वरः—१-५, ७-१०, १२-१५, १८, २०-२५ धैवतः; ६, ११, १६, १७, १९ पञ्चमः॥

अथ अष्टमो वर्गः॥ ८॥

नासत्याभ्यां बर्हिरिव प्र वृञ्जे स्तोमाँ इयर्म्यभ्रियेव वातः।
यावर्भगाय विमदाय जायां सेनाजुवा न्यूहतू रथेन॥ १॥
वीळुपत्मभिराशुहेमभिर्वा देवानां वा जूतिभिः शाशदाना।
तद्रासभो नासत्या सहस्रमाजा यमस्य प्रधने जिगाय॥ २॥
तुग्रो ह भुज्युमश्विनोदमेघे रयिं न कश्चिन्ममृवाँ अवाहाः।
तमूहथुर्नौभिरात्मन्वतीभिरन्तरिक्षप्रुद्भिरपोदकाभिः॥ ३॥
तिस्रः क्षपस्त्रिरहातिव्रजद्भिर्नासत्या भुज्युमूहथुः पतङ्गैः।
समुद्रस्य धन्वन्नार्द्रस्य पारे त्रिभी रथैः शतपद्भिः षळश्वैः॥ ४॥
अनारम्भणे तदवीरयेथामनास्थाने अग्रभणे समुद्रे।
यदश्विना ऊहथुर्भुज्युमस्तं शतारित्रां नावमातस्थिवांसम्॥ ५॥

अथ नवमो वर्गः॥ ९॥

यमश्विना ददथुः श्वेतमश्वमघाश्वाय शश्वदित्स्वस्ति।
तद्वां दात्रं महि कीर्तेन्यं भूत्पैद्वो वाजी सदमिद्धव्यो अर्यः॥ ६॥
युवं नरा स्तुवते पज्रियाय कक्षीवते अरदतं पुरंधिम्।
कारोतराच्छफादश्वस्य वृष्णः शतं कुम्भाँ असिञ्चतं सुरायाः॥ ७॥

हिमेनाग्निं घ्रंसमवारयेथां पितुमतीमूर्जमस्मा अधत्तम्।
ऋबीसे अत्रिमश्विनावनीतमुन्निन्यथुः सर्वगणं स्वस्ति॥ ८॥
परावतं नासत्यानुदेथामुच्चाबुध्नं चक्रथुर्जिह्मबारम्।
क्षरन्नापो न पायनाय राये सहस्राय तृष्यते गोतमस्य॥ ९॥
जुजुरुषो नासत्योत वव्रिं प्रामुञ्चतं द्रापिमिव च्यवानात्।
प्रातिरतं जहितस्यायुर्दस्रादित्पतिमकृणुतं कनीनाम्॥ १०॥

अथ दशमो वर्गः॥ १०॥

तद्वां नरा शंस्यं राध्यं चाभिष्टिमन्नासत्या वरूथम्।
यद्विद्वांसा निधिमिवापगूळ्हमुदर्शतादूपथुर्वन्दनाय॥ ११॥
तद्वां नरा सनये दंस उग्रमाविष्कृणोमि तन्यतुर्न वृष्टिम्।
दध्यङ्ह यन्मध्वाथर्वणो वामश्वस्य शीर्ष्णा प्र यदीमुवाच॥ १२॥
अजोहवीन्नासत्या करा वां महे यामन्पुरुभुजा पुरन्धिः।
श्रुतं तच्छासुरिव वधिमत्या हिरण्यहस्तमश्विनावदत्तम्॥ १३॥
आस्नो वृकस्य वर्तिकामभीके युवं नरा नासत्यामुमुक्तम्।
उतो कविं पुरुभुजा युवं ह कृपमाणमकृणुतं विचक्षे॥ १४॥
चरित्रं हि वेरिवाच्छेदि पर्णमाजा खेलस्य परितक्म्यायाम्।
सद्यो जङ्घामायसीं विश्पलायै धने हिते सर्तवे प्रत्यधत्तम्॥ १५॥

अथ एकादशो वर्गः॥ ११॥

शतं मेषान्वृक्ये चक्षदानमृज्राश्वं तं पितान्धं चकार।
तस्मा अक्षी नासत्या विचक्ष आधत्तं दस्रा भिषजावनर्वन्॥ १६॥
आ वां रथं दुहिता सूर्यस्य कार्ष्मेवातिष्ठदर्वता जयन्ती।
विश्वे देवा अन्वमन्यन्त हृद्भिः समु श्रिया नासत्या सचेथे॥ १७॥
यदयातं दिवोदासाय वर्तिर्भरद्वाजायाश्विना हयन्ता।
रेवदुवाह सचनो रथो वां वृषभश्च शिंशुमारश्च युक्ता॥ १८॥
रयिं सुक्षत्रं स्वपत्यमायुः सुवीर्यं नासत्या वहन्ता।
आ जह्नवीं समनसोप वाजैस्त्रिरह्नो भागं दधतीमयातम्॥ १९॥
परिविष्टं जाहुषं विश्वतः सीं सुगेभिर्नक्तमूहथू रजोभिः।
विभिन्दुना नासत्या रथेन वि पर्वताँ अजरयू अयातम्॥ २०॥

अथ द्वादशो वर्गः॥ १२॥

एकस्या वस्तोरावतं रणाय वशमश्विना सनये सहस्रा।
निरहतं दुच्छुना इन्द्रवन्ता पृथुश्रवसो वृषणावरातीः॥ २१॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

शरस्य चिदार्चत्कस्यावतादा नीचादुच्चा चक्रथुः पातवे वाः।
शयवे चिन्नासत्या शचीभिर्जसुरये स्तर्यं पिप्यथुर्गाम् ॥ २२ ॥
अवस्यते स्तुवते कृष्णियाय ऋजूयते नासत्या शचीभिः ।
पशुं न नष्टमिव दर्शनाय विष्णाप्वं ददथुर्विश्वकाय ॥ २३ ॥
दश रात्रीरशिवेना नव द्यूनवनद्धं श्नथितमप्स्वन्तः ।
विप्रुतं रेभमुदनि प्रवृक्तमुन्निन्यथुः सोममिव स्रुवेण ॥ २४ ॥
प्र वां दंसांस्यश्विनावोचमस्य पतिः स्यां सुगवः सुवीरः ।
उत पश्येन्नश्नुवन्दीर्घमायुरस्तमिवेज्जरिमाणं जगम्याम् ॥ २५ ॥

[११७] सप्तदशोत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—कक्षीवान्॥ देवता—अश्विनौ॥ छन्दः—१ निचृत्पङ्क्तिः; २, ४, ७, १२, १६-१९ निचृत्त्रिष्टुप्; ३, ५, २४ त्रिष्टुप्; ६, २२ विराट्पङ्क्तिः; ८-१०, १३-१५, २०, २३ विराट्त्रिष्टुप्; ११, २१, २५ भुरिक्पङ्क्तिः॥ स्वरः—१, ६, ११, २१, २२, २५ पञ्चमः; २-५, ७-१०, १२-२०, २३, २४ धैवतः॥

अथ त्रयोदशो वर्गः॥ १३ ॥
मध्वः सोमस्याश्विना मदाय प्रत्नो होता विवासते वाम् ।
बर्हिष्मती रातिर्विश्रिता गीरिषा यातं नासत्योप वाजैः ॥ १ ॥
यो वामश्विना मनसो जवीयान्रथः स्वश्वो विशं आजिगाति।
येन गच्छथः सुकृतो दुरोणं तेन नरा वर्तिरस्मभ्यं यातम् ॥ २ ॥
ऋषिं नरावंहसः पाञ्चजन्यमृबीसादत्रिं मुञ्चथो गणेन ।
मिनन्ता दस्योरशिवस्य माया अनुपूर्वं वृषणा चोदयन्ता ॥ ३ ॥
अश्वं न गूळ्हमश्विना दुरेवैर्ऋषिं नरा वृषणा रेभमप्सु ।
सं तं रिणीथो विप्रुतं दंसोभिर्न वां जूर्यन्ति पूर्व्या कृतानि ॥ ४ ॥
सुषुप्वांसं न निर्ऋतेरुपस्थे सूर्यं न दस्रा तमसि क्षियन्तम् ।
शुभे रुक्मं न दर्शतं निखातमुदूपथुरश्विना वन्दनाय ॥ ५ ॥

अथ चतुर्दशो वर्गः॥ १४ ॥
तद्वां नरा शंस्यं पज्रियेण कक्षीवता नासत्या परिज्मन्।
शफादश्वस्य वाजिनो जनाय शतं कुम्भाँ असिञ्चतं मधूनाम्॥ ६ ॥
युवं नरा स्तुवते कृष्णियाय विष्णाप्वं ददथुर्विश्वकाय।
घोषायै चित्पितृषदे दुरोणे पतिं जूर्यन्त्या अश्विनावदत्तम्॥ ७ ॥
युवं श्यावाय रुशतीमदत्तं मुहः क्षोणस्याश्विना कण्वाय।
प्रवाच्यं तद् वृषणा कृतं वां यन्नार्षदाय श्रवो अध्यधत्तम्॥ ८ ॥
पुरू वर्पांस्यश्विना दधाना नि पेदव ऊहथुराशुमश्वम् ।
सहस्त्रसां वाजिनमप्रतीतमहिहनं श्रवस्यं तरुत्रम् ॥ ९ ॥
एतानि वां श्रवस्या सुदानू ब्रह्माङ्गूषं सदनं रोदस्योः।
यद्वां पत्रासो अश्विना हवन्ते यातमिषा च विदुषे च वाजम्॥ १० ॥

अथ पञ्चदशो वर्गः॥ १५ ॥
सूनोर्मानेनाश्विना गृणाना वाजं विप्राय भुरणा रदन्ता ।
अगस्त्ये ब्रह्मणा वावृधाना सं विश्पलां नासत्यारिणीतम् ॥ ११ ॥
कुह यान्ता सुष्टुतिं काव्यस्य दिवो नपाता वृषणा शयुत्रा ।
हिरण्यस्येव कलशं निखातमुदूपथुर्दशमे अश्विनाहन् ॥ १२ ॥
युवं च्यवानमश्विना जरन्तं पुनर्युवानं चक्रथुः शचीभिः ।
युवो रथं दुहिता सूर्यस्य सह श्रिया नासत्यावृणीत ॥ १३ ॥
युवं तुग्राय पूर्व्येभिरेवैः पुनर्मन्यावभवतं युवाना ।
युवं भुज्युमर्णसो निः समुद्राद्बिभिरूहथुर्ऊर्ज्रेभिरश्वैः ॥ १४ ॥
अजोहवीदश्विना तौग्र्यो वां प्रोळ्हः समुद्रमव्यथिर्जगन्वान् ।
निष्टमूहथुः सुयुजा रथेन मनोजवसा वृषणा स्वस्ति ॥ १५ ॥

अथ षोडशो वर्गः॥ १६ ॥
अजोहवीदश्विना वर्तिका वामास्नो यत्सीममुञ्चतं वृकस्य।
वि जयुषा ययथुः सान्वद्रेर्जातं विष्वाचो अहतं विषेण॥ १६ ॥
शतं मेषान्वृक्ये मामहानं तमः प्रणीतमशिवेन पित्रा।
आक्षी ऋज्राश्वे अश्विनावधत्तं ज्योतिरन्धाय चक्रथुर्विचक्षे॥ १७ ॥
शुनमन्धाय भरमह्वयत्सा वृकीरश्विना वृषणा नरेति।
जारः कनीनइव चक्षदान ऋज्राश्वः शतमेकं च मेषान्॥ १८ ॥
मही वामूतिरश्विना मयोभूरुत स्रामं धिष्ण्या सं रिणीथः।
अथा युवामिदह्वयत्पुरंधिरागच्छतं सीं वृषणाववोभिः॥ १९ ॥
अधेनुं दस्रा स्तर्यं विषक्तामपिन्वतं शयवे अश्विना गाम्।
युवं शचीभिर्विमदाय जायां न्यूहथुः पुरुमित्रस्य योषाम्॥ २० ॥

अथ सप्तदशो वर्गः॥ १७ ॥
यवं वृकेणाश्विना वपन्तेषं दुहन्ता मनुषाय दस्रा ।
अभि दस्युं बकुरेणा धमन्तोरु ज्योतिश्चक्रथुरार्याय ॥ २१ ॥
आथर्वणायाश्विना दधीचेऽश्व्यं शिरः प्रत्यैरयतम् ।
स तां मधु प्र वोचदृतायन्त्वाष्ट्रं यदस्यावपिकक्ष्यं वाम् ॥ २२ ॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सदा कवी सुमतिमा चके वां विश्वा धियो अश्विना प्रावतं मे।
अस्मे रयिं नासत्या बृहन्तमपत्यसाचं श्रुत्यं रराथाम् ॥ २३ ॥
हिरण्यहस्तमश्विना रराणा पुत्रं नरा वध्रिमत्या अदत्तम् ।
त्रिधा ह श्यावमश्विना विकस्तमुज्जीवसे ऐरयतं सुदानू ॥ २४ ॥
एतानि वामश्विना वीर्याणि प्र पूर्व्याण्यायवोऽवोचन् ।
ब्रह्मा कृण्वन्तो वृषणा युवभ्यां सुवीरासो विदथमा वदेम ॥ २५ ॥

[११८] अष्टादशोत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—कक्षीवान्॥ देवता—अश्विनौ॥ छन्दः—१-११, भुरिक्पङ्क्तिः; २, ५, ७ त्रिष्टुप्; ३, ६, ९, १० निचृत्त्रिष्टुप्; ४, ८ विराट्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१, ११ पञ्चमः; २-१० धैवतः॥

अथ अष्टादशो वर्गः॥ १८ ॥

आ वां रथो अश्विना श्येनपत्वा सुमृळीकः स्ववां यात्वर्वाङ्।
यो मर्त्यस्य मनसो जवीयान्त्रिवन्धुरो वृषणा वातरंहाः ॥ १ ॥
त्रिवन्धुरेण त्रिवृता रथेन त्रिचक्रेण सुवृता यातमर्वाक् ।
पिन्वतं गा जिन्वतमर्वतो नो वर्धयतमश्विना वीरमस्मे ॥ २ ॥
प्रवद्यामना सुवृता रथेन दस्राविमं शृणुतं श्लोकमद्रेः ।
किमङ्ग वां प्रत्यवर्तिं गमिष्ठाहुर्विप्रासो अश्विना पुराजाः ॥ ३ ॥
आ वो श्येनासो अश्विना वहन्तु रथे युक्तास आशवः पतङ्गाः।
ये अप्तुरो दिव्यासो न गृध्रा अभि प्रयो नासत्या वहन्ति ॥ ४ ॥
आ वां रथं युवतिस्तिष्ठदत्र जुष्टी नरा दुहिता सूर्यस्य ।
परि वामश्वा वपुषः पतङ्गाः वयो वहन्त्वरुषा अभीके ॥ ५ ॥

अथ एकोनविंशो वर्गः॥ १९ ॥

उद्वन्दनमैरतं दंसनाभिरुद्रेभं दस्रा वृषणा शचीभिः ।
निष्टौग्र्यं पारयथः समुद्रात् पुनश्च्यवानं चक्रथुर्युवानम् ॥ ६ ॥
युवमत्रयेऽवनीताय तप्तमूर्जमोमानमाश्विनावधत्तम् ।
युवं कण्वायापिरिप्ताय चक्षुः प्रत्यधत्तं सुष्टुतिं जुजुषाणा ॥ ७ ॥
युवं धेनुं शयवे नाधितायापिन्वतमश्विना पूर्व्याय ।
अमुञ्चतं वर्तिकामंहसो निः प्रति जङ्घां विश्पलाया अधत्तम्॥ ८ ॥
युवं श्वेतं पेदव इन्द्रजूतमहिहनमश्विनादत्तमश्वम् ।
जोहूत्रमर्यो अभिभूतिमुग्रं सहस्रसां वृषणं वीड्वङ्गम् ॥ ९ ॥
ता वां नरा स्ववसे सुजाता हवामहे अश्विना नाधमानाः।
आ न उप वसुमता रथेन गिरो जुषाणा सुविताय यातम् ॥ १० ॥

आ श्येनस्य जवसा नूतनेनास्मे यातं नासत्या सजोषाः ।
हवे हि वामश्विना रातहव्यः शश्वत्तमाया उषसो व्युष्टौ ॥ ११ ॥

[११९] एकोनविंशत्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—कक्षीवान् दैर्घतमसः॥ देवता—अश्विनौ॥ छन्दः—१, ४, ६ निचृज्जगती; २, ५, ९ भुरिक्त्रिष्टुप्; ३, ७, १० जगती; ८ विराड्जगती॥ स्वरः—१, ३, ४, ६-८, १० निषादः; २, ५, ९ धैवतः॥

अथ विंशो वर्गः॥ २० ॥

आ वां रथं पुरुमायं मनोजुवं जीराश्वं यज्ञियं जीवसे हुवे।
सहस्रकेतुं वनिनं शतद्वसुं श्रुष्टीवानं वरिवोधामभि प्रयः॥ १ ॥
ऊर्ध्वा धीतिः प्रत्यस्य प्रयामन्यधायि शस्मन्तस्मयन्त आ दिशः।
स्वदामि घर्मं प्रति यन्त्यूतय आ वामूर्जानी रथमश्विनारुहत्॥ २ ॥
सं यन्मिथः पस्पृधानासो अग्मत शुभे मखा अमिता जायवो रणे।
युवोरह प्रवणे चेकिते रथो यदश्विना वहथः सूरिमा वरम्॥ ३ ॥
युवं भुज्युं भुरमाणं विभिर्गतं स्वयुक्तिभिर्निवहन्ता पितृभ्य आ।
यासिष्टं वर्तिर्वृषणा विजेन्यं दिवोदासाय महि चेति वामवः॥ ४ ॥
युवोरश्विना वपुषे युवायुजं रथं वाणी येमतुरस्य शर्ध्यम्।
आ वां पतित्वं सख्याय जग्मुषी योषावृणीत जेन्या युवां पती॥ ५ ॥

अथ एकविंशो वर्गः॥ २१ ॥

युवं रेभं परिषूतेरुरुष्यथो हिमेन घर्मं परितप्तमत्रये।
युवं शयोरवसं पिप्यथुर्गवि प्र दीर्घेण वन्दनस्तार्यायुषा॥ ६ ॥
युवं वन्दनं निरृतं जरण्यया रथं न दस्रा करणा समिन्वथः।
क्षेत्रादा विप्रं जनथो विपन्यया प्र वामत्र विधते दंसना भुवत्॥ ७ ॥
अगच्छतं कृपमाणं परावति पितुः स्वस्य त्यजसा निबाधितम्।
स्ववतीरित ऊतीर्युवोरह चित्रा अभीके अभवन्नभिष्टयः॥ ८ ॥
उत स्या वां मधुमन्मक्षिकारपन्मदे सोमस्यौशिजो हुवन्यति।
युवं दधीचो मन आ विवासथोऽथा शिरः प्रति वामश्व्यं वदत्॥ ९ ॥
युवं पेदवे पुरुवारमश्विना स्पृधां श्वेतं तरुतारं दुवस्यथः।
शर्यैरभिद्युं पृतनासु दुष्टरं चर्कृत्यमिन्द्रमिव चर्षणीसहम्॥ १० ॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

[१२०] विंशत्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—उशिक्पुत्रः कक्षीवान्॥ देवता—अश्विनौ॥ छन्दः—१, १२ पिपीलिकामध्या निचृद्गायत्री; २ भुरिग्गायत्री; ३ स्वराट्ककुबुष्णिक्; ४ आर्ष्यनुष्टुप्; ५ आर्ष्य-उष्णिक्; ६ विराडार्ष्युष्णिक्; ७ स्वराडार्ष्यनुष्टुप्; ८ भुरिगुष्णिक्; ९ भुरिग् अनुष्टुप्; १० गायत्री; ११ पिपीलिकामध्याविराड्गायत्री॥ स्वरः—१, २, १०-१२ षड्जः; ३, ५, ६, ८ ऋषभः; ४, ७, ९ गान्धारः॥

अथ द्वाविंशो वर्गः॥ २२॥

का राधद्धोत्राश्विना वां को वां जोषत उभयोः। कथा विधात्यप्रचेताः ॥ १॥
विद्वांसाविदुरः पृच्छेदविद्वानित्थापरो अचेताः। नू चिन्नु मर्ते अक्रौ ॥ २॥
ता विद्वांसा हवामहे वां ता नो विद्वांसा मन्म वोचेतमद्य ।
प्रार्चद्दयमानो युवाकुः ॥ ३॥
वि पृच्छामि पाक्याꣳ न देवान्वषट्कृतस्याद्भुतस्य दस्रा ।
पातं च सह्यसो युवं च रभ्यसो नः ॥ ४॥
प्र या घोषे भृगवाणे न शोभे यया वाचा यजति पित्र्यो वाम् ।
प्रैषयुर्न विद्वान् ॥ ५॥

अथ त्रयोविंशो वर्गः॥ २३॥

श्रुतं गायत्रं तकवानस्याहं चिद्धि रिरेभाश्विना वाम् ।
आक्षी शुभस्पती दन् ॥ ६॥
युवं ह्यास्तं महो रन् युवं वा यन्निरततंसतम् ।
ता नो वसू सुगोपा स्यातं पातं नो वृकादघायोः ॥ ७॥
मा कस्मै धातमभ्यमित्रिणे नो माकुत्रा नो गृहेभ्यो धेनवो गुः ।
स्तनाभुजो अशिश्वीः ॥ ८॥
दुहीयन्मित्रधितये युवाकु राये च नो मिमीतं वाजवत्यै ।
इषे च नो मिमीतं धेनुमत्यै ॥ ९॥
अश्विनोरसनं रथमनश्वं वाजिनीवतोः। तेनाहं भूरि चाकन ॥ १०॥
अयं समह मा तनूह्यते जनाँ अनु। सोमपेयं सुखो रथः ॥ ११॥
अध स्वप्नस्य निर्विदेऽभुञ्जतश्च रेवतः। उभा ता बस्रि नश्यतः ॥ १२॥

अष्टादशोऽनुवाकः [१२१] एकविंशत्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—औशिजः दैर्घतमसः कक्षीवान्॥ देवता—विश्वेदेवा इन्द्रश्च॥ छन्दः—१, ७, १३ भुरिक्पङ्क्तिः; २, ८, १० त्रिष्टुप्; ३, ४, ६, १२, १४, १५ विराट्त्रिष्टुप्; ५, ९, ११ निचृत्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१, २, ७, १३ पञ्चमः; ३-६, ८-१२, १४, १५ धैवतः॥

अथ चतुर्विंशो वर्गः॥ २४॥

कदित्था नृꣳः पात्रं देवयतां श्रवद् गिरो अङ्गिरसां तुरण्यन्।
प्र यदानड्विश आ हर्म्यस्योरु क्रꣳसते अध्वरे यजत्रः॥ १॥
स्तम्भीद्द्यां स धरुणं पृथायदुर्भुवाजाय द्रविणं नरो गोः।
अनु स्वजां महिषश्चक्षत व्रां मेनामश्वस्य परि मातरं गोः॥ २॥
नक्षद्धवमरुणीः पूर्व्यं राट् तुरो विशामङ्गिरसामनु द्यून्।
तक्षद्वज्रं नियुतं तस्तम्भद् द्यां चतुष्पदे नर्याय द्विपादे॥ ३॥
अस्य मदे स्वर्यं दा ऋतायापीवृतमुस्रियाणामनीकम्।
यद्ध प्रसर्गे त्रिककुम्निवर्तदप द्वहो मानुषस्य दुरो वः॥ ४॥
तुभ्यं पयो यत्पितरावनीतां राधः सुरेतस्तुरणे भुरण्यू।
शुचि यत्ते रेक्ण आयजन्त सबर्दुघायाः पय उस्रियायाः॥ ५॥

अथ पञ्चविंशो वर्गः॥ २५॥

अध प्र जज्ञे तरणिर्ममत्तु प्र रोच्यस्या उषसो न सूरः।
इन्दुर्येभिराष्ट स्वेदुहव्यैः स्रुवेण सिञ्चन्ज्यरणाभि धाम॥ ६॥
स्विध्मा यद् वनधितिरपस्यात्सूरो अध्वरे परि रोधना गोः।
यद्ध प्रभासि कृत्व्याँ अनु द्यूननर्विशे पश्विषे तुराय॥ ७॥
अष्टा महो दिव आदो हरी इह ह्युम्नासाहमभि योधान उत्सम्।
हरिं यत्ते मन्दिनं दुक्षन्वृधे गोरभसमद्रिभिर्वाताप्यम्॥ ८॥
त्वमायसं प्रति वर्तयो गोर्दिवो अश्मानमुपनीतमृभ्वा।
कुत्साय यत्र पुरुहूत वन्वञ्छुष्णमनन्तैः परियासि वधैः॥ ९॥
पुरा यत्सूरस्तमसो अपीतेस्तमद्रिवः फलिगं हेतिमस्य।
शुष्णस्य चित्परिहितं यदोजो दिवस्परि सुग्रथितं तदादः॥ १०॥

अथ षड्विंशो वर्गः॥ २६॥

अनु त्वा महि पाजसी अचक्रे द्यावाक्षामा मदतामिन्द्र कर्मन्।
त्वं वृत्रमाशयानं सिरासु महो वज्रेण सिष्वपो वराहुम्॥ ११॥
त्वमिन्द्र नर्यो याँ अवो नृन्तिष्ठा वातस्य सुयुजो वहिष्ठान्।
यं ते काव्य उशना मन्दिनं दाद् वृत्रहणं पार्यं ततक्ष वज्रम्॥ १२॥
त्वं सूरो हरितो रामयो नृन्भरच्चक्रमेतशो नायमिन्द्र।
प्रास्य पारं नवतिं नाव्यानामपि कर्तमवर्तयोऽयज्यून्॥ १३॥
त्वं नो अस्या इन्द्र दुर्हणायाः पाहि वज्रिवो दुरितादभीके।
प्र नो वाजान्रथ्यो अश्वबुध्यानिषे यन्धि श्रवसे सूनृताये॥ १४॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मा सा ते अस्मत्सुमतिर्वि दसद्वाजप्रमहः समिषो वरन्त।
आ नो भज मघवन्गोष्वर्यो मंहिष्ठास्ते सधमादः स्याम॥ १५॥

इति प्रथमाष्टकेऽष्टमोऽध्यायः॥

इति प्रथमोऽष्टकः॥

अथ द्वितीयोऽष्टकः

अथ द्वितीयाष्टके प्रथमोऽध्यायः

[१२२] द्वाविंशत्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—कक्षीवान्॥ देवता—विश्वे देवाः॥ छन्दः—१, ५, १४ भुरिक्पङ्क्तिः; ३, १५ स्वराट्पङ्क्तिः; २, ९, १०, १३ विराट्त्रिष्टुप्; ४ निचृत्पङ्क्तिः; ६ विराट्पङ्क्तिः; ७, ११ त्रिष्टुप्; ८, १२ निचृत्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१, ३-६, १४, १५ पञ्चमः; २, ७-१३ धैवतः॥

अथ प्रथमो वर्गः॥ १॥

प्र वः पान्तं रघुमन्यवोऽन्धो यज्ञं रुद्राय मीळ्हुषे भरध्वम्।
दिवो अस्तोष्यसुरस्य वीरैरिषुध्येव मरुतो रोदस्योः॥ १॥
पत्नीव पूर्वहूतिं वावृधध्या उषासानक्ता पुरुधा विदाने।
स्तरीर्नात्कं व्युतं वसाना सूर्यस्य श्रिया सुदृशी हिरण्यैः॥ २॥
ममत्तु नः परिज्मा वसर्हा ममत्तु वातो अपां वृषण्वान्।
शिशीतमिन्द्रापर्वता युवं नस्तन्नो विश्वे वरिवस्यन्तु देवाः॥ ३॥
उत त्या मे यशसा श्वेतनायै व्यन्ता पान्तौशिजो हुवध्यै।
प्र वो नपातमपां कृणुध्वं प्र मातरा रास्पिनस्यायोः॥ ४॥
आ वो रुवण्युमौशिजो हुवध्यै घोषेव शंसमर्जुनस्य नंशे।
प्र वः पूष्णे दावन आँ अच्छा वोचेय वसुतातिमग्नेः॥ ५॥

अथ द्वितीयो वर्गः॥ २॥

श्रुतं मे मित्रावरुणा हवेमोत श्रुतं सदने विश्वतः सीम्।
श्रोतु नः श्रोतुरातिः सुश्रोतुः सुक्षेत्रा सिन्धुरद्भिः॥ ६॥
स्तुषे सा वां वरुण मित्र रातिर्गर्वां शता पृक्षयामेषु पत्रे।
श्रुतरथे प्रियरथे दधानाः सद्यः पुष्टिं निरुन्धानासो अग्मन्॥ ७॥
अस्य स्तुषे महिमघस्य राधः सचा सनेम नहुषः सुवीराः।
जनो यः पत्रेभ्यो वाजिनीवानश्वावतो रथिनो मह्यं सूरिः॥ ८॥
जनो यो मित्रावरुणावभिध्रुगपो न वां सुनोत्यक्ष्णयाध्रुक्।
स्वयं स यक्ष्मं हृदये नि धत्त आप यदीं होत्राभिर्ऋतावा॥ ९॥
स व्राधतो नहुषो दंसुजूतः शर्धस्तरो नरां गूर्तश्रवाः।
विसृष्टरातिर्याति बाळ्हसृत्वा विश्वासु पृत्सु सदमिच्छूरः॥ १०॥

अथ तृतीयो वर्गः॥ ३॥

अध ग्मन्ता नहुषो हवं सूरेः श्रोता राजानो अमृतस्य मन्द्राः।
नभोजुवो यन्निरवस्य राधः प्रशस्तये महिना रथवते॥ ११॥
एतं शर्धं धाम यस्य सूरेरित्यवोचन् दशतयस्य नंशे।
द्युम्नानि येषु वसुता रारन्विश्वे सन्वन्तु प्रभृथेषु वाजम्॥ १२॥
मन्दामहे दशतयस्य धासेर्द्विर्यत्पञ्च बिभ्रतो यन्त्यन्ना।
किमिष्टाश्व इष्टरश्मिरेत ईशानासस्तरुष ऋञ्जते नॄन्॥ १३॥
हिरण्यकर्णं मणिग्रीवमर्णस्तन्नो विश्वे वरिवस्यन्तु देवाः।
अर्यो गिरः सद्य आ जग्मुषीरोस्राश्चाकन्तूभयेष्वस्मे॥ १४॥
चत्वारो मा मशर्शरस्य शिश्वस्त्रायो राज्ञ आर्यवसस्य जिष्णोः।
रथो वां मित्रावरुणा दीर्घाप्साः स्यूमगभस्तिः सूरो नाद्यौत्॥ १५॥

[१२३] त्रयोविंशत्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—दीर्घतमसः पुत्रः कक्षीवान्॥ देवता—उषाः॥ छन्दः—१, ३, ६, ७, ९, १०, १३ विराट्त्रिष्टुप्; २, ४, ८, १२ निचृत्त्रिष्टुप्; ५ त्रिष्टुप्; ११ भुरिक्पङ्क्तिः॥ स्वरः—१-१०, १२, १३ धैवतः; ११ पञ्चमः॥

अथ चतुर्थो वर्गः॥ ४॥

पृथू रथो दक्षिणाया अयोज्यैनं देवासो अमृतासो अस्थुः।
कृष्णादुदस्थाद्यर्या वि हायाश्चिकित्सन्ती मानुषाय क्षयाय॥ १॥
पूर्वा विश्वस्माद् भुवनादबोधि जयन्ती वाजं बृहती सनुत्री।
उच्चा व्यख्यद्युवतिः पुनर्भूरोषा अगन्प्रथमा पूर्वहूतौ॥ २॥
यदद्य भागं विभजासि नृभ्य उषो देवि मर्त्यत्रा सुजाते।
देवो नो अत्र सविता दमूना अनागसो वोचति सूर्याय॥ ३॥
गृहंगृहमहना यात्यच्छा दिवेदिवे अधि नामा दधाना।
सिषासन्ती द्योतना शश्वदागादग्रमग्रमिद्भजते वसूनाम्॥ ४॥
भगस्य स्वसा वरुणस्य जामिरुषः सूनृते प्रथमा जरस्व।
पश्चा स दक्षमा यो अघस्य धाता जयेम तं दक्षिणया रथेन॥ ५॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अथ पञ्चमो वर्गः ॥ ५ ॥

उदीरतां सूनृता उत्पुरन्धीरुदग्रयः शुशुचानासो अस्थुः ।
स्पार्हा वसूनि तमसापगूळ्हाविष्कृण्वन्त्युषसो विभातीः ॥ ६ ॥
अपान्यदेत्यभ्यन्यदेति विषुरूपे अहनी सं चरेते ।
परिक्षितोस्तमो अन्या गुहाकरद्यौदुषाः शोशुचता रथेन ॥ ७ ॥
सदृशीरद्य सदृशीरिदु श्वो दीर्घं सचन्ते वरुणस्य धाम ।
अनवद्यास्त्रिंशतं योजनान्येकैका क्रतुं परि यन्ति सद्यः ॥ ८ ॥
जानत्यह्नः प्रथमस्य नाम शुक्रा कृष्णादजनिष्ट श्वितीची ।
ऋतस्य योषा न मिनाति धामाहरहर्निष्कृतमाचरन्ती ॥ ९ ॥
कन्येव तन्वा३ शाशदानाँ एषि देवि देवमियक्षमाणम् ।
संस्मयमाना युवतिः पुरस्तादाविर्वक्षांसि कृणुषे विभाती ॥ १० ॥

अथ षष्ठो वर्गः ॥ ६ ॥

सुसङ्काशा मातृमृष्टेव योषाविस्तन्वं कृणुषे दृशे कम् ।
भद्रा त्वमुषो वितरं व्युच्छ न तत्ते अन्या उषसो नशन्त ॥ ११ ॥
अश्वावतीर्गोमतीर्विश्ववारा यतमाना रश्मिभिः सूर्यस्य ।
परा च यन्ति पुनरा च यन्ति भद्रा नाम वहमाना उषासः ॥ १२ ॥
ऋतस्य रश्मिमनुयच्छमाना भद्रंभद्रं क्रतुमस्मासु धेहि ।
उषो नो अद्य सुहवा व्युच्छास्मासु रायो मघवत्सु च स्युः ॥ १३ ॥

[१२४] चतुर्विंशत्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—कक्षीवान् दैर्घतमसः ॥ देवता—उषाः ॥ छन्दः—१, ३, ६, ९, १० निचृत्त्रिष्टुप्; २, १३ भुरिक्पङ्क्तिः; ४, ७, ११ त्रिष्टुप्; ५ पङ्क्तिः; ८ विराट्पङ्क्तिः; १२ विराट् त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१, ३, ४, ६, ७, ९-१२ धैवतः; २, ५, ८, १३ पञ्चमः ॥

अथ सप्तमो वर्गः ॥ ७ ॥

उषा उच्छन्ती समिधाने अग्ना उद्यन्त्सूर्य उर्विया ज्योतिरश्रेत् ।
देवो नो अत्र सविता न्वर्थं प्रासावीद् द्विपत्प्र चतुष्पदित्यै ॥ १ ॥
अमिनती दैव्यानि व्रतानि प्रमिनती मनुष्या युगानि ।
ईयुषीणामुपमा शश्वतीनामायतीनां प्रथमोषा व्यद्यौत् ॥ २ ॥
एषा दिवो दुहिता प्रत्यदर्शि ज्योतिर्वसाना समना पुरस्तात् ।
ऋतस्य पन्थामन्वेति साधु प्रजानतीव न दिशो मिनाति ॥ ३ ॥
उषो अदर्शि शुन्ध्युवो न वक्षो नोधाइवाविरकृत प्रियाणि ।
अह्नासत्र ससतो बोधयन्ती शश्वत्तमागात्पुनरेयुषीणाम् ॥ ४ ॥
पूर्वे अर्धे रजसो अप्त्यस्य गवां जनित्र्यकृत प्र केतुम् ।
व्यु प्रथते वितरं वरीय ओभा पृणन्ती पित्रोरुपस्था ॥ ५ ॥

अथ अष्टमो वर्गः ॥ ८ ॥

एवेदेषा पुरुतमा दृशे कं नाजामिं न परि वृणक्ति जामिम् ।
अरेपसा तन्वा३ शाशदाना नाभिर्दीधयते न महो विभाती ॥ ६ ॥
अभ्रातेव पुंस एति प्रतीची गर्तारुगिव सनये धनानाम् ।
जायेव पत्य उशती सुवासा उषा हस्रेव नि रिणीते अप्सः ॥ ७ ॥
स्वसा स्वस्रे ज्यायस्यै योनिमारैगपैत्यस्याः प्रतिचक्ष्येव ।
व्युच्छन्ती रश्मिभिः सूर्यस्याञ्ज्यङ्क्ते समनगाइव व्राः ॥ ८ ॥
आसां पूर्वीरहसु स्वसृणामपरा पूर्वीमभ्येति पश्चात् ।
ताः प्रवतवन्नव्यसीर्नूनमस्मे रेवदुच्छन्तु सुदिना उषासः ॥ ९ ॥
प्र बोधयोषः पृणतो मघोन्यबुध्यमानाः पणयः ससन्तु ।
रेवदुच्छ मघवद्भ्यो मघोनि रेवत्स्तोत्रे सूनृते जारयन्ती ॥ १० ॥

अथ नवमो वर्गः ॥ ९ ॥

अवेयमश्वैद्युवतिः पुरस्ाद्युङ्क्ते गवामरुणानामनीकम् ।
वि नूनमुच्छादसति प्र केतुर्गृहंगृहमुप तिष्ठाते अग्निः ॥ ११ ॥
उत्ते वयश्चिद्वसतेरपप्तन्नरश्च ये पितुभाजो व्युष्टौ ।
अमा सते वहसि भूरि वाममुषो देवि दाशुषे मर्त्याय ॥ १२ ॥
अस्तोढ्वं स्तोम्या ब्रह्मणा मेऽवीवृधध्वमुशतीरुषासः ।
युष्माकं देवीरवसा सनेम सहस्रिणं च शतिनं च वाजम् ॥ १३ ॥

[१२५] पञ्चविंशत्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—कक्षीवान् दैर्घतमसः ॥ देवता—दम्पती ॥ छन्दः—१, ३, ७ त्रिष्टुप्; २, ६ निचृत्त्रिष्टुप्; ४, ५ जगती ॥ स्वरः—१-३, ६, ७ धैवतः; ४, ५ निषादः ॥

अथ दशमो वर्गः ॥ १० ॥

प्राता रत्नं प्रातरित्वा दधाति तं चिकित्वान्प्रतिगृह्या नि धत्ते ।
तेन प्रजां वर्धयमान आयू रायस्पोषेण सचते सुवीरः ॥ १ ॥
सुगुरसत्सुहिरण्यः स्वश्वो बृहदस्मै वय इन्द्रो दधाति ।
यस्त्वायन्तं वसुना प्रातरित्वो मुक्षीजयेव पविमुत्सिनाति ॥ २ ॥
आर्यमद्य सुकृतं प्रातरिच्छत्रिष्टेः पुत्रं वसुमता रथेन ।
अंशोः सुतं पायय मत्सरस्य क्षयद्वीरं वर्धय सूनृताभिः ॥ ३ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उप॑ क्षरन्ति॒ सिन्ध॑वो मयो॒भुव॑ ईजा॒नं च॑ य॒क्ष्यमा॑णं च धे॒नवः॑।
पृ॒णन्तं॑ च॒ पपु॑रिं च श्रव॒स्यवो॑ घृ॒तस्य॒ धारा॒ उप॑ यन्ति वि॒श्वतः॑ ॥ ४ ॥
नाक॑स्य पृ॒ष्ठे अधि॑ तिष्ठति श्रि॒तो यः पृ॒णाति॒ स ह॑ दे॒वेषु॑ गच्छति।
तस्मा॒ आपो॑ घृ॒तम॑र्षन्ति॒ सिन्ध॑व॒स्तस्मा॑ इ॒यं दक्षि॑णा पिन्वते॒ सदा॑ ॥ ५ ॥
दक्षि॑णावता॒मिदि॒मानि॑ चि॒त्रा दक्षि॑णावतां दि॒वि सूर्या॑सः।
दक्षि॑णावन्तो अ॒मृतं॑ भजन्ते॒ दक्षि॑णावन्तः॒ प्र ति॑रन्त॒ आयुः॑ ॥ ६ ॥
मा पृ॒णन्तो॒ दुरि॑तमेन॒ आर॒न्मा जा॑रिषुः सू॒रयः॑ सुव्र॒तासः॑।
अ॒न्यस्तेषां॑ परि॒धिर॑स्तु॒ कश्चि॒दपृ॑णन्तम॒भि सं य॑न्तु॒ शोकाः॑ ॥ ७ ॥

[१२६] षड्विंशत्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—१-५ कक्षीवान्; ६ भावयव्यः; ७ रोमशा ब्रह्मवादिनी ॥ देवता—विद्वाँसः ॥
छन्दः—१, २, ४, ५ निचृत्त्रिष्टुप्; ३ त्रिष्टुप्; ६, ७ अनुष्टुप् ॥
स्वरः—१-५ धैवतः; ६, ७ गान्धारः ॥

अथ एकादशो वर्गः ॥ ११ ॥

अम॑न्दा॒न्त्स्तोमा॒न्प्र भ॑रे मनी॒षा सिन्धा॒वधि॑ क्षिय॒तो भा॒व्यस्य॑ ।
यो मे॑ स॒हस्र॒ममि॑मीत स॒वान॒तूर्तो॒ राजा॒ श्रव॑ इ॒च्छमा॑नः ॥ १ ॥
श॒तं राज्ञो॒ नाध॑मानस्य नि॒ष्काञ्छ॒तमश्वा॒न्प्रय॑तान्त्स॒द्य आद॑म् ।
श॒तं क॒क्षीवाँ॒ असु॑रस्य॒ गोनां॑ दि॒वि श्रवो॒ऽजर॒मा त॑तान ॥ २ ॥
उप॑ मा श्या॒वाः स्व॒नये॑न द॒त्ता व॒धूम॑न्तो॒ दश॒ रथा॑सो अस्थुः ।
ष॒ष्टिः स॒हस्र॒मनु॒ गव्य॒मागा॒त्सन॑त्क॒क्षीवाँ॑ अभिपि॒त्वे अह्ना॑म् ॥ ३ ॥
च॒त्वारि॒ंश॑द्दशरथस्य॒ शोणाः॑ स॒हस्र॒स्याग्रे॒ श्रेणिं॑ नयन्ति ।
म॒दच्युतः॑ कृश॒नाव॑तो॒ अत्या॑न्क॒क्षीव॑न्त॒ उद॑मृक्षन्त प॒ज्राः ॥ ४ ॥
पूर्वा॒मनु॒ प्रय॑ति॒मा द॑दे व॒स्त्रीन् यु॒क्ताँ अ॒ष्टाव॒रिधा॑यसो॒ गाः ।
सु॒बन्ध॑वो॒ ये वि॒श्या॑इव॒ व्रा अन॑स्वन्तः॒ श्रव॒ ऐष॑न्त प॒ज्राः ॥ ५ ॥
आग॑धिता॒ परि॑गधिता॒ या क॑शी॒केव॒ जङ्ग॑हे ।
ददा॑ति॒ मह्यं॒ यादु॑री॒ याशू॑नां भो॑ज्या॑ श॒ता ॥ ६ ॥
उपो॑प मे॒ परा॑ मृश॒ मा मे॑ द॒भ्राणि॑ मन्यथाः ।
सर्वा॒हम॑स्मि रोम॒शा ग॒न्धारी॑णामिवावि॒का ॥ ७ ॥

एकोनविंशोऽनुवाकः [१२७] सप्तविंशत्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—परुच्छेपः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१-३, ८, ९ अष्टिः; ४, ७, ११ भुरिगष्टिः; ५, ६ अत्यष्टिः; १० भुरिगतिशक्वरी ॥ स्वरः—१-४, ७-९, ११ मध्यमः; ५, ६ गान्धारः; १० पञ्चमः ॥

अथ द्वादशो वर्गः ॥ १२ ॥

अ॒ग्निं होता॑रं मन्ये॒ दास्व॑न्तं॒ वसुं॑ सू॒नुं सह॑सो जा॒तवे॑दसं॒ विप्रं॒ न जा॒तवे॑दसम्।
य ऊ॒र्ध्वया॑ स्वध्व॒रो दे॒वो दे॒वाच्या॑ कृ॒पा ।
घृ॒तस्य॒ विभ्रा॑ष्टि॒मनु॑ वष्टि शो॒चिषा॒ऽऽजुह्वा॑नस्य स॒र्पिषः॑ ॥ १ ॥
यजि॑ष्ठं त्वा॒ यज॑माना हुवेम॒ ज्येष्ठ॒मङ्गि॑रसां विप्र॒ मन्म॑भि॒र्विप्रे॑भिः शुक्र॒ मन्म॑भिः।
परि॑ज्मानमिव॒ द्यां होता॑रं चर्षणी॒नाम् ।
शो॒चिष्के॑शं॒ वृष॑णं॒ यमि॒मा विशः॒ प्राव॑न्तु जू॒तये॒ विशः॑ ॥ २ ॥
स हि पु॒रू चि॒दोज॑सा वि॒रुक्म॑ता॒ दीद्या॑नो॒ भव॑ति द्रुहन्त॒रः प॑र॒शुर्न द्रु॑हन्त॒रः।
वी॒ळु चि॒द्यस्य॒ समृ॑तौ॒ श्रुव॒द्वने॑व॒ यत्स्थि॒रम् ।
नि॒ष्षह॑माणो यमते॒ नाय॑ते धन्वा॒सहा॒ नाय॑ते ॥ ३ ॥
दृ॒ळ्हा चि॑दस्मा॒ अनु॑ दु॒र्यथा॑ वि॒दे तेजि॑ष्ठाभिर॒रणि॑भिर्दा॒ष्ट्यव॑से॒ऽग्नये॑ दा॒ष्ट्यव॑से।
प्र यः पु॒रूणि॒ गाह॑ते॒ तक्ष॒द्वने॑व शो॒चिषा॑ ।
स्थि॒रा चि॒दन्ना॒ नि रि॑णा॒त्योज॑सा॒ नि स्थि॒राणि॑ चि॒दोज॑सा ॥ ४ ॥
तम॑स्य पृ॒क्षमुप॑रासु धीमहि॒ नक्तं॒ यः सु॒दर्श॑तरो॒ दिवा॑तरा॒दप्रा॑युषे॒ दिवा॑तरात्।
आद॒स्यायु॒र्ग्रभ॑णवद्वी॒ळु शर्म॒ न सू॒नवे॑ ।
भ॒क्तमभ॑क्त॒मवो॒ व्यन्तो॑ अ॒जरा॑ अ॒ग्नयो॒ व्यन्तो॑ अ॒जराः॑ ॥ ५ ॥

अथ त्रयोदशो वर्गः ॥ १३ ॥

स हि शर्धो॒ न मारु॑तं तुवि॒ष्वणि॒रप्न॑स्वतीषू॒र्वरा॑स्वि॒ष्टनि॒रार्त॑नास्वि॒ष्टनिः॑ ।
आद॑द्ध॒व्यान्या॑द॒दिर्य॒ज्ञस्य॑ के॒तुर॒र्हणा॑ ।
अध॑ स्मास्य॒ हर्ष॑तो॒ हृषी॑वतो॒ विश्वे॑ जुषन्त॒ पन्थां॒ नरः॑ शु॒भे न पन्था॑म् ॥ ६ ॥
द्वि॒ता यदीं॑ की॒स्तासो॑ अ॒भिद्य॑वो नम॒स्यन्त॑ उप॒वोच॑न्त॒ भृग॑वो म॒थ्नन्तो॑ दा॒शा भृग॑वः। अ॒ग्निरी॑शे॒ वसू॑नां॒ शुचि॒र्यो ध॒र्णिरे॑षाम् ।
प्रि॒याँ अ॑पि॒धीँर्व॑निषीष्ट॒ मेधि॑र॒ आ व॑निषीष्ट॒ मेधि॑रः ॥ ७ ॥
विश्वा॑सां त्वा वि॒शां पतिं॑ हवामहे॒ सर्वा॑सां समा॒नं दम्प॑तिं भु॒जे स॒त्यगि॑र्वाहसं भु॒जे।
अति॑थिं॒ मानु॑षाणां पि॒तुर्न यस्या॑स॒या ।
अ॒मी च॒ विश्वे॑ अ॒मृता॑स॒ आ वयो॑ ह॒व्या दे॒वेष्वा वयः॑ ॥ ८ ॥
त्वम॑ग्ने॒ सह॑सा॒ सह॑न्तमः शु॒ष्मिन्त॑मो जायसे दे॒वता॑तये र॒यिर्न दे॒वता॑तये।
शु॒ष्मिन्त॑मो॒ हि ते॒ मदो॑ द्यु॒म्निन्त॑म उ॒त क्रतुः॑ ।
अध॑ स्मा ते॒ परि॑ चरन्त्यजर श्रुष्टी॒वानो॒ नाज॑र ॥ ९ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्र वो॑ म॒हे सह॑सा॒ सह॑स्वत उष॒र्बुधे॑ पशु॒षे नाग्नये॒ स्तोमो॑ बभूत्व॒ग्नये॑।
प्रति॒ यदीं॑ ह॒विष्मा॒न् विश्वा॑सु॒ क्षासु॒ जोगु॑वे ।
अग्रे॑ रे॒भो न ज॑रत ऋषू॒णां जूर्णि॒र्होत॑ ऋषू॒णाम् ॥१०॥
स नो॒ नेदि॑ष्ठं॒ ददृ॑शान॒ आ भ॒राग्ने॑ दे॒वेभिः॒ सच॑नाः सुचे॒तुना॑ म॒हो रा॒यः सु॑चे॒तुना॑।
महि॑ शविष्ठ नस्कृधि स॒ञ्चक्षे॑ भु॒जे अ॒स्यै ।
महि॑ स्तो॒तृभ्यो॑ मघवन्त्सु॒वीर्यं॒ मथी॑रु॒ग्रो न शव॑सा ॥११॥

[१२८] अष्टाविंशत्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—परुच्छेपः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१ निचृदत्यष्टिः; २ भुरिगष्टिः; ३, ४, ६, ८ विराडत्यष्टिः; ५, ७ निचृदष्टिः ॥ स्वरः—१, ३, ४, ६, ८ गान्धारः; २, ५, ७ मध्यमः ॥

अथ चतुर्दशो वर्गः ॥ १४ ॥

अ॒यं जा॑यत॒ मनु॑षो॒ धरी॑मणि॒ होता॒ यजि॑ष्ठ उ॒शिजा॒मनु॑ व्र॒तम॒ग्निः स्वमनु॑ व्र॒तम्।
वि॒श्वश्रु॑ष्टिः सखीय॒ते र॒यिरि॑व श्रवस्य॒ते ।
अद॑ब्धो॒ होता॒ नि ष॑ददि॒ळस्प॒दे परि॑वीत इ॒ळस्प॒दे ॥१॥
तं य॑ज्ञ॒साध॒मपि॑ वातयामस्यृ॒तस्य॑ प॒था नम॑सा ह॒विष्म॑ता दे॒वता॑ता ह॒विष्म॑ता।
स न॑ ऊ॒र्जामु॒पाभृ॑त्य॒या कृ॒पा न जू॑र्यति ।
यं मा॑त॒रिश्वा॒ मन॑वे परा॒वतो॑ दे॒वं भाः प॑रा॒वतः॑ ॥२॥
एवे॑न स॒द्यः पर्ये॑ति॒ पार्थि॑वं मुहु॒र्गी रेतो॑ वृष॒भः कनि॑क्रद॒द्दध॒द्रेतः॒ कनि॑क्रदत्।
श॒तं चक्षा॑णो अ॒क्षभि॑र्दे॒वो वने॑षु तु॒र्वणिः॑ ।
सदो॒ दधा॑न॒ उप॑रेषु॒ सानु॑ष्व॒ग्निः परे॑षु॒ सानु॑षु ॥३॥
स सु॒क्रतुः॑ पु॒रोहि॑तो॒ दमे॑दमे॒ऽग्निर्य॒ज्ञस्या॑ध्व॒रस्य॑ चेतति॒ क्रत्वा॑ य॒ज्ञस्य॑ चेतति।
क्रत्वा॑ वे॒धा इ॑षूय॒ते विश्वा॑ जा॒तानि॑ पस्पशे ।
यतो॑ घृत॒श्रीरति॑थि॒रजा॑यत॒ वह्नि॑र्वे॒धा अजा॑यत ॥४॥
क्रत्वा॒ यद॑स्य॒ तवि॑षीषु पृ॒ञ्चते॒ऽग्नेरवे॑ण म॒रुतां॒ न भो॒ज्ये॑षि॒राय॒ न भो॒ज्या॑।
स हि ष्मा॒ दान॒मिन्व॑ति॒ वसू॑नां च म॒ज्मना॑ ।
स न॑स्त्रासते दुरि॒ताद॑भि॒ह्रुतः॒ शंसा॑द॒घाद॑भि॒ह्रुतः॑ ॥५॥

अथ पञ्चदशो वर्गः ॥ १५ ॥

विश्वो॒ विहा॑या अर॒तिर्वसु॑र्दधे॒ हस्ते॒ दक्षि॑णे त॒रणि॒र्न शि॑श्रथच्छ्र॒वस्यया॒ न शि॑श्रथत्।
विश्व॑स्मा॒ इदि॑षुध्य॒ते दे॑व॒त्रा ह॒व्यमोहि॑षे ।
विश्व॑स्मा॒ इत्सु॒कृते॒ वार॑मृण्वत्य॒ग्निर्द्वारा॒ व्यृ॑ण्वति ॥६॥

स मानु॑षे वृ॒जने॒ शन्त॑मो हि॒तो॒३॒॑ग्निर्य॒ज्ञेषु॒ जेन्यो॒ न वि॒श्पतिः॑ प्रि॒यो य॒ज्ञेषु॑ वि॒श्पतिः॑।
स ह॒व्या मानु॑षाणामि॒ळा कृ॒तानि॑ पत्यते ।
स न॑स्त्रासते॒ वरु॑णस्य धू॒र्तेर्म॒हो दे॒वस्य॑ धू॒र्तेः ॥७॥
अ॒ग्निं होता॑रमीळते॒ वसु॑धितिं प्रि॒यं चेति॑ष्ठमर॒तिं न्ये॑रिरे हव्य॒वाहं॒ न्ये॑रिरे।
वि॒श्वायुं॑ वि॒श्ववे॑दसं॒ होता॑रं यज॒तं क॒विम् ।
दे॒वासो॑ र॒ण्वमव॑से वसूय॒वो गी॒र्भी र॒ण्वं व॑सू॒यवः॑ ॥८॥

[१२९] एकोनत्रिंशदुत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—परुच्छेपः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१, २ निचृदत्यष्टिः; ३ विराडत्यष्टिः; ४ अष्टिः; ६, ११ भुरिगष्टिः; १० निचृदष्टिः; ५ भुरिगतिशक्वरी; ७ स्वराडतिशक्वरी; ८, ९ स्वराट्शक्वरी ॥ स्वरः—१-३ गान्धारः; ४, ६, १०, ११ मध्यमः; ५, ७ पञ्चमः; ८, ९ धैवतः ॥

अथ षोडशो वर्गः ॥ १६ ॥

यं त्वं रथ॑मिन्द्र मे॒धसा॑तयेऽपा॒का सन्त॑मिषिर प्र॒णय॑सि॒ प्रान॑वद्य॒ नय॑सि।
स॒द्यश्चि॒त्तम॒भिष्ट॑ये॒ करो॒ वश॑श्च वा॒जिन॑म् ।
सास्माक॑मनवद्य तूतुजान वे॒धसा॑मि॒मां वाचं॒ न वे॒धसा॑म् ॥१॥
स श्रु॑धि॒ यः स्मा॒ पृत॑नासु॒ कासु॑ चिद्द॒क्षाय्य॑ इन्द्र॒ भर॑हूतये॒ नृभि॒रसि॒ प्रतू॑र्तये॒ नृभिः॑।
यः शूरैः॒ स्व१॒॑ः सनि॑ता॒ यो विप्रै॒र्वाजं॒ तरु॑ता ।
तमी॑शा॒नास॑ इरधन्त वा॒जिनं॑ पृ॒क्षमत्यं॒ न वा॒जिन॑म् ॥२॥
द॒स्मो हि ष्मा॒ वृष॑णं॒ पिन्व॑सि॒ त्वचं॒ कं चि॑द्यावीर॒ररुं॑ शूर॒ मर्त्यं॑ परिवृ॒णक्षि॒ मर्त्य॑म्।
इन्द्रो॒त तुभ्यं॒ तद्दि॒वे तद् रु॒द्राय॒ स्वय॑शसे ।
मि॒त्राय॑ वोचं॒ वरु॑णाय स॒प्रथः॑ सुमृळी॒काय॑ स॒प्रथः॑ ॥३॥
अ॒स्माकं॑ व॒ इन्द्र॑मुश्मसी॒ष्टये॒ सखा॑यं वि॒श्वायुं॑ प्रा॒सहं॒ युजं॒ वाजे॑षु प्रा॒सहं॒ युज॑म्।
अ॒स्माकं॒ ब्रह्मो॒तयेऽवा॑ पृ॒त्सुषु॒ कासु॑ चित् ।
न॒हि त्वा॒ शत्रुः॒ स्तर॑ते स्तृ॒णोषि॒ यं विश्वं॒ शत्रुं॑ स्तृ॒णोषि॒ यम् ॥४॥
नि षू न॒माति॑मतिं॒ कय॑स्य चि॒त्तेजि॑ष्ठाभिर॒रणि॑भिर्नोतिभि॑रुग्राभि॑रुग्रोतिभिः॑।
नेषि॑ णो॒ यथा॑ पु॒राने॒नाः शू॑र॒ मन्य॑से ।
विश्वा॑नि पू॒रोरप॑ पर्षि॒ वह्नि॑रा॒सा वह्नि॑र्नो॒ अच्छ॑ ॥५॥

अथ सप्तदशो वर्गः ॥ १७ ॥

प्र तद्वो॑चेयं॒ भव्या॒येन्द॑वे॒ हव्यो॒ न य इ॒षवा॒न्मन्म॒ रेज॑ति रक्षो॒हा मन्म॒ रेज॑ति।
स्व॒यं सो अ॒स्मदा नि॒दो व॒धैर॑जेत दुर्म॒तिम् ।
अव॑ स्रवेद॒घशं॑सोऽवत॒रमव॑ क्षु॒द्रमि॑व स्रवेत् ॥६॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

वनेम तद्धोतरया चितन्त्या वनेम रयिं रयिवः सुवीर्यं रण्वं सन्तं सुवीर्यम्।
दुर्मन्मानं सुमन्तुभिरेमिषा पृचीमहि ।
आ सत्याभिरिन्द्रं द्युम्नहूतिभिर्यजत्रं द्युम्नहूतिभिः ॥७॥
प्रप्रा वो अस्मे स्वर्यशोभिरूती परिवर्ग इन्द्रो दुर्मतीनां दरीमन्दुर्मतीनाम्।
स्वयं सा रिषयध्यै या न उपेषे अत्रैः ।
हतेमसत्र वक्षति क्षिप्रा जूर्णिर्न वक्षति ॥८॥
त्वं न इन्द्र राया परीणसा याहि पथाँ अनेहसा पुरो याह्यरक्षसा।
सचस्व नः पराक आ सचस्वास्तमीक आ ।
पाहि नो दूरादारादभिष्टिभिः सदा पाह्यभिष्टिभिः ॥९॥
त्वं न इन्द्र राया तरूषसोग्रं चित्त्वा महिमा संक्षदवसे महे मित्रं नावसे।
ओजिष्ठ त्रातरविता रथं कं चिदमर्त्य ।
अन्यमस्मद्रिरिषेः कं चिदद्रिवो रिरिक्षन्तं चिदद्रिवः ॥१०॥
पाहि न इन्द्र सुष्टुत स्त्रिधोऽवयाता सदमिद्दुर्मतीनां देवः सन् दुर्मतीनाम्।
हन्ता पापस्य रक्षसस्त्राता विप्रस्य मावतः ।
अधा हि त्वा जनिता जीजनद्वसो रक्षोहणं त्वा जीजनद्वसो ॥११॥

[१३०] त्रिंशदुत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—परुच्छेपः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१, ५ भुरिगष्टिः; २, ३, ६, ९ स्वराडष्टिः; ४, ८ अष्टिः; ७ निचृदत्यष्टिः; १० विराट् त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१-६, ८, ९ मध्यमः; ७ गान्धारः; १० धैवतः॥

अथ अष्टादशो वर्गः॥ १८॥

एन्द्र याह्युप नः परावतो नायमच्छा विदथानीव सत्पतिरस्तं राजेव सत्पतिः।
हवामहे त्वा वयं प्रयस्वन्तः सुते सचा ,
पुत्रासो न पितरं वाजसातये मंहिष्ठं वाजसातये ॥१॥
पिबा सोममिन्द्र सुवानमद्रिभिः कोशेन सिक्तमवतं न वंसगस्तातृषाणो न वंसगः।
मदाय हर्यताय ते तुविष्टमाय धायसे ।
आ त्वा यच्छन्तु हरितो न सूर्यमहा विश्वेव सूर्यम् ॥२॥
अविन्दद्विवो निहितं गुहा निधिं वेर्न गर्भं परिवीतमश्मन्यन्तन्ते अन्तरश्मनि।
व्रजं वज्री गवामिव सिषासन्वङ्गिरस्तमः ।
अपावृणोदिष इन्द्रः परीवृता द्वार इषः परीवृताः ॥३॥
दादृहाणो वज्रमिन्द्रो गभस्त्योः क्षद्मेव तिग्ममसनाय सं श्यदहिहत्याय सं श्यत्।
संविव्यान ओजसा शवोभिरिन्द्र मज्मना ।
तष्टेव वृक्षं वनिनो नि वृश्चसि परश्वेव नि वृश्चसि ॥४॥
त्वं वृथा नद्य इन्द्र सर्तवेऽच्छा समुद्रमसृजो रथाँइव वाजयतो रथाँइव।
इत ऊतीरयुञ्जत समानमर्थमक्षितम् ।
धेनूरिव मनवे विश्वदोहसो जनाय विश्वदोहसः ॥५॥

अथ एकोनविंशो वर्गः॥ १९॥

इमां ते वाचं वसूयन्त आयवो रथं न धीरः स्वपा अतक्षिषुः सुम्नाय त्वामतक्षिषुः।
शुम्भन्तो जेन्यं यथा वाजेषु विप्र वाजिनम् ।
अत्यमिव शवसे सातये धना विश्वा धनानि सातये ॥६॥
भिनत्पुरो नवतिमिन्द्र पूरवे दिवोदासाय महि दाशुषे नृतो वज्रेण दाशुषे नृतो।
अतिथिग्वाय शम्बरं गिरेरुग्रो अवाभरत् ।
महो धनानि दयमान ओजसा विश्वा धनान्योजसा ॥७॥
इन्द्रः समत्सु यजमानमार्यं प्रावद्विश्वेषु शतमूतिराजिषु स्वर्मीळ्हेष्वाजिषु।
मनवे शासदव्रतान्त्वचं कृष्णामरन्धयत् ।
दक्षन्न विश्वं ततृषाणमोषति न्यर्शसानमोषति ॥८॥
सूरश्चक्रं प्र वृहज्जात ओजसा प्रपित्वे वाचमरुणो मुषायतीशान आ मुषायति।
उशना यत्परावतोऽजगन्नूतये कवे ।
सुम्नानि विश्वा मनुषेव तुर्वणिरहा विश्वेव तुर्वणिः ॥९॥
स नो नव्येभिर्वृषकर्मन्नुक्थैः पुरां दर्तः पायुभिः पाहि शग्मैः ।
दिवोदासेभिरिन्द्र स्तवानो वावृधीथा अहोभिरिव द्यौः ॥१०॥

[१३१] एकत्रिंशदुत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—परुच्छेपः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१, २ निचृदत्यष्टिः; ३, ५, ६, ७ भुरिगष्टिः; ४ विराडत्यष्टिः॥ स्वरः—१, २, ४ गान्धारः; ३, ५-७ मध्यमः॥

अथ विंशो वर्गः॥ २०॥

इन्द्राय हि द्यौरसुरो अनम्नतेन्द्राय मही पृथिवी वरीमभिर्द्युम्नसाता वरीमभिः।
इन्द्रं विश्वे सजोषसो देवासो दधिरे पुरः ।
इन्द्राय विश्वा सवनानि मानुषा रातानि सन्तु मानुषा ॥१॥
विश्वेषु हि त्वा सवनेषु तुञ्जते समानमेकं वृषमण्यवः पृथक् स्वः सनिष्यवः पृथक्। तं त्वा नावं न पर्षणिं शूषस्य धुरि धीमहि ।
इन्द्रं न यज्ञैश्चितयन्त आयवः स्तोमेभिरिन्द्रमायवः ॥२॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

वि त्वा ततस्रे मिथुना अवस्यवो व्रजस्य साता गव्यस्य निःसृजः
सक्षन्त इन्द्र निःसृजः। यद्गव्यन्ता द्वा जना स्वर्यन्ता समूहसि ।
आविष्करिक्रद् वृषणं सचाभुवं वज्रमिन्द्र सचाभुवम् ॥ ३ ॥
विदुष्टे अस्य वीर्यस्य पूरवः पुरो यदिन्द्र शारदीरवातिरः सासह्वानो
अवातिरः। शासस्तमिन्द्र मर्त्यमयज्युं शवसस्पते ।
महीममुष्णाः पृथिवीमिमा अपो मन्दसान इमा अपः ॥ ४ ॥
आदित्ते अस्य वीर्यस्य चर्किरन्मदेषु वृषन्नुशिजो यदाविथ सखीयतो
यदाविथ। चकर्थ कारमेभ्यः पृतनासु प्रवन्तवे ।
ते अन्यामन्यां नद्यं सनिष्णत श्रवस्यन्तः सनिष्णत ॥ ५ ॥
उतो नो अस्या उषसो जुषेत ह्यर्कस्य बोधि हविषो हवीमभिः
स्वर्षाता हवीमभिः। यदिन्द्र हन्तवे मृधो वृषा वज्रिञ्चिकेतसि ।
आ मे अस्य वेधसो नवीयसो मन्म श्रुधि नवीयसः ॥ ६ ॥
त्वं तमिन्द्र वावृधानो अस्मयुरमित्रयन्तं तुविजात मर्त्यं वज्रेण शूर
मर्त्यम्। जहि यो नो अघायति शृणुष्व सुश्रवस्तमः ।
रिष्टं न यामन्नप भूतु दुर्मतिर्विश्वाप भूतु दुर्मतिः ॥ ७ ॥

[१३२] द्वात्रिंशदुत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—परुच्छेपः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१, ३, ५, ६ विराडत्यष्टिः; २ भुरिगतिशक्करी; ४ निचृदष्टिः ॥ स्वरः—१, ३, ५, ६ गान्धारः; २ पञ्चमः; ४ मध्यमः ॥

अथ एकविंशो वर्गः ॥ २१ ॥

त्वया वयं मघवन्पूर्व्ये धन इन्द्रत्वोताः सासह्याम पृतन्यतो वनुयाम
वनुष्यतः। नेदिष्ठे अस्मिन्नहन्यधि वोचा नु सुन्वते ।
अस्मिन्यज्ञे वि चयेमा भरे कृतं वाजयन्तो भरे कृतम् ॥ १ ॥
स्वर्जेषे भरं आप्रस्य वक्मन्युषर्बुधः स्वस्मिन्नञ्जसि क्राणस्य
स्वस्मिन्नञ्जसि। अहन्निन्द्रो यथा विदे शीर्ष्णाशीर्ष्णोपवाच्यः ।
अस्मत्रा ते सध्यक् सन्तु रातयो भद्रा भद्रस्य रातयः ॥ २ ॥
तत्तु प्रयः प्रत्नथा ते शुशुक्वनं यस्मिन्यज्ञे वारमकृण्वत क्षयमृतस्य
वारंसि क्षयम्। वि तद्वोचेरध द्वितान्तः पश्यन्ति रश्मिभिः ।
स घा विदे अन्विन्द्रो गवेषणो बन्धुक्षिद्भ्यो गवेषणः ॥ ३ ॥

नू इत्था ते पूर्वथा च प्रवाच्यं यदङ्गिरोभ्योऽवृणोरप व्रजमिन्द्र
शिक्षन्नप व्रजम्। ऐभ्यः समान्या दिशाऽस्मभ्यं जेषि योत्सि च ।
सुन्वद्भ्यो रन्धया कं चिदव्रतं हृणायन्तं चिदव्रतम् ॥ ४ ॥
सं यज्जनान् क्रतुभिः शूर ईक्षयद्धनै हिते तरुषन्त श्रवस्यवः प्र
यक्षन्त श्रवस्यवः। तस्मा आयुः प्रजावदिद् बाधे अर्चन्त्योजसा ।
इन्द्रं ओक्यं दिधिषन्त धीतयो देवाँ अच्छा न धीतयः ॥ ५ ॥
युवं तमिन्द्रापर्वता पुरोयुधा यो नः पृतन्यादप तन्तमिद्धतं वज्रेण
तन्तमिद्धतम्। दूरे चत्ताय छन्त्सद्गहनं यदिनक्षत् ।
अस्माकं शत्रून् परि शूर विश्वतो दर्मा दर्षीष्ट विश्वतः ॥ ६ ॥

[१३३] त्रयस्त्रिंशदुत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—परुच्छेपः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१ त्रिष्टुप्; २, ३ निचृदनुष्टुप्; ४ स्वराडनुष्टुप्; ५ आर्षीगायत्री; ६ स्वराड्ब्राह्मीजगती; ७ विराडष्टिः ॥ स्वरः—१ धैवतः; २-४ गान्धारः; ५ षड्जः; ६ निषादः; ७ मध्यमः ॥

अथ द्वाविंशो वर्गः ॥ २२ ॥

उभे पुनामि रोदसी ऋतेन द्रुहो दहामि सं महीरनिन्द्राः ।
अभिव्लग्य यत्र हता अमित्रा वैलस्थानं परि तृळ्हा अशेरन् ॥ १ ॥
अभिव्लग्या चिदद्रिवः शीर्षा यातुमतीनाम् ।
छिन्धि वटूरिणा पदा महावटूरिणा पदा ॥ २ ॥
अवासां मघवञ्जहि शर्धो यातुमतीनाम् ।
वैलस्थानके अर्मके महावैलस्थे अर्मके ॥ ३ ॥
यासां तिस्रः पञ्चाशतोऽभिव्लङ्गैरपावपः ।
तत्सु ते मनायति तकत्सु ते मनायति ॥ ४ ॥
पिशङ्गभृष्टिमम्भृणं पिशाचिमिन्द्र सं मृण ।
सर्वं रक्षो नि बर्हय ॥ ५ ॥
अवर्महेन्द्र दादृहि श्रुधी नः शुशोच हि द्यौः क्षा न भीषाँ अद्रिवो
घृणान्न भीषाँ अद्रिवः। शुष्मिन्तमो हि शुष्मिभिर्वधैरुग्रेभिरीयसे ।
अपूरुषघ्नो अप्रतीत शूर सत्वभिस्त्रिसप्तैः शूर सत्वभिः ॥ ६ ॥
वनोति हि सुन्वन्क्षयं परीणसः सुन्वानो हि ष्मा यजत्यव द्विषो
देवानामव द्विषः। सुन्वान इत्सिषासति सहस्रा वाज्यवृतः ।
सुन्वानायेदे भूयसे पुरुवीरो यजमानाय रयिं ददात्याभुवम् ॥ ७ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

विंशोऽनुवाकः [१३४] चतुस्त्रिंशदुत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—परुच्छेपः॥ देवता—वायुः॥ छन्दः—१, ३ निचृदत्यष्टिः; २, ४ विराडत्यष्टिः; ५ अष्टिः; ६ विराडष्टिः॥ स्वरः—१-४ गान्धारः; ५, ६ मध्यमः॥

अथ त्रयोविंशो वर्गः॥ २३॥

आ त्वा जुवो रारहाणा अभि प्रयो वायो वहन्त्विह पूर्वपीतये सोमस्य पूर्वपीतये। ऊर्ध्वा ते अनु सूनृता मनस्तिष्ठतु जानती नियुत्वता रथेना याहि दावने वायो मखस्य दावने ॥ १॥

मन्दन्तु त्वा मन्दिनो वायविन्दवोऽस्मत्क्राणासः सुकृता अभिद्यवो गोभिः क्राणा अभिद्यवः। यद्ध क्राणा इरध्यै दक्षं सचन्त ऊतयः सध्रीचीना नियुतो दावने धिय उप ब्रुवत ईं धियः ॥ २॥

वायुर्युङ्क्ते रोहिता वायुररुणा वायू रथे अजिरा धुरि वोळ्हवे वहिष्ठा धुरि वोळ्हवे। प्र बोधया पुरन्धिं जार आ ससतीमिव प्र चक्षय रोदसी वाससोषसः श्रवसे वाससोषसः ॥ ३॥

तुभ्यमुषासः शुचयः परावति भद्रा वस्त्रा तन्वते दंसु रश्मिषु चित्रा नव्येषु रश्मिषु। तुभ्यं धेनुः सबर्दुघा विश्वा वसूनि दोहते अजनयो मरुतो वक्षणाभ्यो दिव आ वक्षणाभ्यः ॥ ४॥

तुभ्यं शुक्रासः शुचयस्तुरण्यवो मदेषूग्रा इषणन्त भुर्वण्युपामिषन्त भुर्वणि। त्वां त्सारी दसमानो भगमीट्टे तक्ववीर्ये त्वं विश्वस्माद्भुवनात्पासि धर्मणाऽसुर्यात्पासि धर्मणा ॥ ५॥

त्वं नो वायवेषामपूर्व्यः सोमानां प्रथमः पीतिमर्हसि सुतानां पीतिमर्हसि। उतो विहुत्मतीनां विशां ववर्जुषीणाम् विश्वा इत्ते धेनवो दुह आशिरं घृतं दुहत आशिरम् ॥ ६॥

[१३५] पञ्चत्रिंशदुत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—परुच्छेपः॥ देवता—वायुः॥ छन्दः—१, ३ निचृदत्यष्टिः; २, ४ विराडत्यष्टिः; ५, ९ भुरिगष्टिः; ६, ८ निचृदष्टिः; ७ अष्टिः॥ स्वरः—१-४ गान्धारः; ५-९ मध्यमः॥

अथ चतुर्विंशो वर्गः॥ २४॥

स्तीर्णं बर्हिरुप नो याहि वीतये सहस्रेण नियुता नियुत्वते शतिनीभिर्नियुत्वते। तुभ्यं हि पूर्वपीतये देवा देवाय येमिरे प्र ते सुतासो मधुमन्तो अस्थिरन्मदाय क्रत्वे अस्थिरन् ॥ १॥

तुभ्यायं सोमः परिपूतो अद्रिभिः स्पार्हा वसानः परि कोशमर्षति शुक्रा वसानो अर्षति। तवायं भाग आयुषु सोमो देवेषु हूयते वहं वायो नियुतो याह्यस्मयुर्जुषाणो याह्यस्मयुः ॥ २॥

आ नो नियुद्भिः शतिनीभिरध्वरं सहस्त्रिणीभिरुप याहि वीतये वायो हव्यानि वीतये। तवायं भाग ऋत्वियः सरश्मिः सूर्ये सचा अध्वर्युभिर्भरमाणा अयंसत वायो शुक्रा अयंसत ॥ ३॥

आ वां रथो नियुत्वान्वक्षदवसेऽभि प्रयांसि सुधितानि वीतये वायो हव्यानि वीतये। पिबतं मध्वो अन्धसः पूर्वपेयं हि वां हितम् वायवा चन्द्रेण राधसा गतमिन्द्रश्च राधसा गतम् ॥ ४॥

आ वां धियो ववृत्युरध्वराँ उपेमिन्दुं मर्मृजन्त वाजिनमाशुमत्यं न वाजिनम्। तेषां पिबतमस्मयू आ नो गन्तमिहोत्या इन्द्रवायू सुतानामद्रिभिर्युवं मदाय वाजदा युवम् ॥ ५॥

अथ पञ्चविंशो वर्गः॥ २५॥

इमे वां सोमा अप्स्वा सुता इहाध्वर्युभिर्भरमाणा अयंसत वायो शुक्रा अयंसत। एते वामभ्यसृक्षत तिरः पवित्रमाशवः युवायवोऽति रोमाण्यव्यया सोमासो अत्यव्यया ॥ ६॥

अति वायो ससतो याहि शश्वतो यत्र ग्रावा वदति तत्र गच्छतं गृहमिन्द्रश्च गच्छतम्। वि सूनृता ददृशे रीयते घृतमा पूर्णया नियुता याथो अध्वरमिन्द्रश्च याथो अध्वरम् ॥ ७॥

अत्राह तद्वहेथे मध्व आहुतिं यमश्वत्थमुपतिष्ठन्त जायवोऽस्मे ते सन्तु जायवः। साकं गावः सुवते पच्यते यवो न तै वाय उप दस्यन्ति धेनवो नाप दस्यन्ति धेनवः ॥ ८॥

इमे ये ते सु वायो बाह्वोजसोऽन्तर्नदी ते पतयन्त्युक्षणो महि व्राधन्त उक्षणः। धन्वञ्चिद् ये अनाशवो जीराश्चिदगिरौकसः सूर्यस्येव रश्मयो दुर्नियन्तवो हस्तयोर्दुर्नियन्तवः ॥ ९॥

[१३६] षट्त्रिंशदुत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—परुच्छेपः॥ देवता—१-५ मित्रावरुणौ; ६-७ मन्त्रोक्ताः॥ छन्दः—१, ३, ५, ६ स्वराडत्यष्टिः; २ निचृदष्टिः; ४ भुरिगष्टिः; ७ त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१, ३, ५, ६ गान्धारः; २, ४ मध्यमः; ७ धैवतः॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अथ षड्विंशो वर्गः ॥ २६ ॥
प्र सु ज्येष्ठं निचिराभ्यां बृहन्नमो हव्यं मतिं भरता मृळयद्भ्यां स्वादिष्ठं
मृळयद्भ्याम्। ता सम्राजा घृतासुती यज्ञेयज्ञ उपस्तुता ।
अथैनोः क्षत्रं न कुतश्चनाधृषे देवत्वं नू चिदाधृषे ॥ १ ॥
अदर्शि गातुरुरवे वरीयसी पन्था ऋतस्य समयंस्त रश्मिभिश्चक्षुर्भगस्य
रश्मिभिः। द्युक्षं मित्रस्य सादनमर्यम्णो वरुणस्य च ।
अथा दधाते बृहदुक्थ्यं१ वय उपस्तुत्यं बृहद् वयः ॥ २ ॥
ज्योतिष्मतीमदितिं धारयत्क्षितिं स्वर्वतीमा सचेते दिवेदिवे जागृवांसा
दिवेदिवे। ज्योतिष्मत् क्षत्रमाशाते आदित्या दानुनस्पती ।
मित्रस्तयोर्वरुणो यातयज्जनोऽर्यमा यातयज्जनः ॥ ३ ॥
अयं मित्राय वरुणाय शन्तमः सोमो भूत्ववपानेष्वाभगो देवो
देवेष्वाभगः। तं देवासो जुषेरत विश्वे अद्य सजोषसः ।
तथा राजाना करथो यदीमह ऋतावाना यदीमहे ॥ ४ ॥
यो मित्राय वरुणायाविधज्जनोऽनर्वाणं तं परि पातो अंहसो दाश्वांसं
मर्तमंहसः। तमर्यमाभि रक्षत्यृजूयन्तमनु व्रतम् ।
उक्थैर्य एनोः परिभूषति व्रतं स्तोमैरा भूषति व्रतम् ॥ ५ ॥
नमो दिवे बृहते रोदसीभ्यां मित्रायं वोचं वरुणाय मीळ्हुषे सुमृळीकाय
मीळ्हुषे। इन्द्रमग्निमुप स्तुहि द्युक्षमर्यमणं भगम् ।
ज्योग्जीवन्तः प्रजया सचेमहि सोमस्योती सचेमहि ॥ ६ ॥
ऊती देवानां वयमिन्द्रवन्तो मंसीमहि स्वर्यशसो मरुद्भिः
अग्निर्मित्रो वरुणः शर्म यंसन् तदश्याम मघवानो वयं च ॥ ७ ॥
इति द्वितीयाष्टके प्रथमोऽध्यायः ॥

अथ द्वितीयाष्टके द्वितीयोऽध्यायः

[१३७] सप्तत्रिंशदुत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—परुच्छेपः ॥ देवता—मित्रावरुणौ ॥ छन्दः—१ निचृच्छक्करी; २ विराट्शक्करी; ३ भुरिगतिशक्करी ॥ स्वरः—१, २ गान्धारः; ३ पञ्चमः ॥

अथ प्रथमो वर्गः ॥ १ ॥
सुषुमा यातमद्रिभिर्गोश्रीता मत्सरा इमे सोमासो मत्सरा इमे ।
आ राजाना दिविस्पृशास्मत्रा गन्तमुप नः ॥ १ ॥
इमे वां मित्रावरुणा गवाशिरः सोमाः शुक्रा गवाशिरः ।
इमा आ यातमिन्दवः सोमासो दध्याशिरः सुतासो दध्याशिरः ।
उत वामुषसो बुधि साकं सूर्यस्य रश्मिभिः ।
सुतो मित्राय वरुणाय पीतये चारुर्ऋताय पीतये ॥ २ ॥
तां वां धेनुं न वासरीमंशुं दुहन्त्यद्रिभिः सोमं दुहन्त्यद्रिभिः ।
अस्मत्रा गन्तमुप नोऽर्वाञ्चा सोमपीतये ।
अयं वां मित्रावरुणा नृभिः सुतः सोम आ पीतये सुतः ॥ ३ ॥

[१३८] अष्टात्रिंशदुत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—परुच्छेपः ॥ देवता—पूषा ॥ छन्दः—१, ३ निचृदत्यष्टिः; २ विराडत्यष्टिः; ४ भुरिगष्टिः ॥ स्वरः—१-३ गान्धारः; ४ मध्यमः ॥

अथ द्वितीयो वर्गः ॥ २ ॥
प्रप्र पूष्णस्तुविजातस्य शस्यते महित्वमस्य तवसो न तन्दते स्तोत्रमस्य
न तन्दते। अचीमि सुम्नयन्नहमन्यूतिं मयोभुवम् ।
विश्वस्य यो मन आयुयुवे मखो देव आयुयुवे मखः ॥ १ ॥
प्र हि त्वा पूषन्नजिरं न यामनि स्तोमेभिः कृण्व ऋणवो यथा मृध
उष्ट्रो न पीपरो मृधः। हुवे यत्त्वा मयोभुवं देवं सख्याय मर्त्यः ।
अस्माकमाङ्गूषान् द्युम्निनस्कृधि वाजेषु द्युम्निनस्कृधि ॥ २ ॥
यस्य ते पूषन्त्सख्ये विपन्यवः क्रत्वा चित्सन्तोऽवसा बुभुज्रिर
इति क्रत्वा बुभुज्रिरे। तामनु त्वा नवीयसीं नियुतं राय ईमहे ।
अहेळमान उरुशंस सरी भव वाजेवाजे सरी भव ॥ ३ ॥
अस्या ऊ षु ण उप सातये भुवोऽहेळमानो ररिवाँ अजाश्व
श्रवस्यतामजाश्व। ओ षु त्वा ववृतीमहि स्तोमेभिर्दस्म साधुभिः ।
नहि त्वा पूषन्नतिमन्यं आघृणे न ते सख्यमपह्नुवे ॥ ४ ॥

[१३९] एकोनचत्वारिंशदुत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—परुच्छेपः ॥ देवता—१, ११ विश्वे देवाः; २ मित्रावरुणौ; ३-५ अश्विनौ; ६ इन्द्रः; ७ अग्निः; ८ मरुतः; ९ इन्द्राग्नी; १० बृहस्पतिः ॥ छन्दः—१, १० निचृदष्टिः; २, ३ विराडष्टिः; ४, ९ भुरिगत्यष्टिः; ५ निचृद्बृहती; ६ अष्टिः; ७ अत्यष्टिः; ८ स्वराडत्यष्टिः; ११ भुरिक्पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१-३, ६, १० गान्धारः; ४, ५, ७-९ मध्यमः; ११ पञ्चमः ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अथ तृतीयो वर्गः ॥ ३ ॥

अस्तु श्रौषट् पुरो अग्निं धिया दध आ नु तच्छर्धो दिव्यं वृणीमह
इन्द्रवायू वृणीमहे। यद्ध क्राणा विवस्वति नाभा सन्दायि नव्यसी ।
अध प्र सू न उप यन्तु धीतयो देवाँ अच्छा न धीतयः ॥ १ ॥
यद्ध त्यन्मित्रावरुणावृतादध्यादित्थे अनृतं स्वेन मन्युना दक्षस्य
स्वेन मन्युना। युवोरित्थाधि सद्मस्वपश्याम हिरण्ययम् ।
धीभिश्चन मनसा स्वेभिरक्षभिः सोमस्य स्वेभिरक्षभिः ॥ २ ॥
युवां स्तोमेभिर्देवयन्तो अश्विनाश्रावयन्तइव श्लोकमायवो युवां
हव्याभ्यां यवः। युवोर्विश्वा अधि श्रियः पृक्षश्च विश्ववेदसा ।
प्रुषायन्ते वां पवयो हिरण्यये रथे दस्रा हिरण्ययें ॥ ३ ॥
अचेति दस्रा व्युनाकमृण्वथो युञ्जते वां रथयुजो दिविष्टिष्वध्वस्मानो
दिविष्टिषु। अधि वां स्थाम वन्धुरे रथे दस्रा हिरण्ययें ।
पथेव यन्तावनुशासता रजोऽञ्जसा शासता रजः ॥ ४ ॥
शचीभिर्नः शचीवसू दिवा नक्तं दशस्यतम् ।
मा वां रातिरुप दसत्कदा चनास्मद्रातिः कदा चन ॥ ५ ॥

अथ चतुर्थो वर्गः ॥ ४ ॥

वृषन्निन्द्र वृषपाणास इन्दव इमे सुता अद्रिषुतास उद्भिदस्तुभ्यं
सुतास उद्भिदः। ते त्वा मन्दन्तु दावने महे चित्राय राधसे ।
गोभिर्गिर्वाहः स्तवमान आ गहि सुमृळीको न आ गहि ॥ ६ ॥
ओ षू णो अग्ने शृणुहि त्वमीळितो देवेभ्यो ब्रवसि यज्ञियेभ्यो
राजभ्यो यज्ञियेभ्यः। यद्ध त्यामङ्गिरोभ्यो धेनुं देवा अदत्तन ।
वि तां दुह्रे अर्यमा कर्तरी सचाँ एष तां वेद मे सचा ॥ ७ ॥
मो षु वो अस्मदभि तानि पौंस्या सना भूवन् द्युमानि मोत
जारिषुरस्मत्पुरोत जारिषुः। यद् वश्चित्रं युगेयुगे नव्यं घोषादमर्त्यम् ।
अस्मासु तन्मरुतो यच्च दुष्टरं दिधृता यच्च दुष्टरम् ॥ ८ ॥
दध्यङ् ह मे जनुषं पूर्वो अङ्गिराः प्रियमेधः कण्वो अत्रिर्मनुर्विदुस्ते
मे पूर्वे मनुविदुः। तेषां देवेष्वायतिरस्माकं तेषु नाभयः ।
तेषां पदेन महा नमे गिरेन्द्राग्नी आ नमे गिरा ॥ ९ ॥
होता यक्षद्वनिनो वन्त वार्यं बृहस्पतिर्यजति वेन उक्षभिः
पुरुवारेभिरुक्षभिः। जगृभ्मा दूरआदिशं श्लोकमद्रेरध त्मना ।
अधारयदरिन्दानि सुक्रतुः पुरू सद्मानि सुक्रतुः ॥ १० ॥

ये देवासो दिव्येकादश स्थ पृथिव्यामध्येकादश स्थ ।
अप्सुक्षितो महिनैकादश स्थ ते देवासो यज्ञमिमं जुषध्वम् ॥ ११ ॥

एकविंशोऽनुवाकः [१४०] चत्वारिंशदुत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—दीर्घतमा॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—१, ५, ८ जगती; २, ७, ११ विराड्जगती; ३, ४, ९ निचृज्जगती; ६ भुरिक्त्रिष्टुप्; १०, १२ निचृत्त्रिष्टुप्; १३ पङ्क्तिः॥ स्वरः—१-५, ७-९, ११ निषादः; ६, १०, १२ धैवतः; १३ पञ्चमः॥

अथ पञ्चमो वर्गः ॥ ५ ॥

वेदिषदे प्रियधामाय सुद्युतें धासिमिव प्र भरा योनिमग्नये।
वस्त्रेणेव वासया मन्मना शुचिं ज्योतीरथं शुक्रवर्णं तमोहनम् ॥ १ ॥
अभि द्विजन्मा त्रिवृदन्नमृज्यते संवत्सरे वावृधे जग्धमी पुनः।
अन्यस्यासा जिह्वया जेन्यो वृषा न्यन्येन वनिनो मृष्ट वारणः ॥ २ ॥
कृष्णप्रुतौ वेविजे अस्य सक्षिता उभा तरेते अभि मातरा शिशुम्।
प्राचाजिह्मं ध्वसयन्तं तृषुच्युतमा साच्यं कुपयं वर्धनं पितुः ॥ ३ ॥
मुमुक्ष्वो३ मनवे मानवस्यते रघुद्रुवः कृष्णसीतास ऊ जुवः।
असमना अजिरासो रघुष्यदो वातजूता उप युज्यन्त आशवः ॥ ४ ॥
आदस्य ते ध्वसयन्तो वृथेरते कृष्णमभ्वं महि वर्पः करिक्रतः।
यत्सीं महीमवनिं प्राभि मर्मृशदभिश्वसन्त्स्तनयन्नेति नानदत् ॥ ५ ॥

अथ षष्ठो वर्गः ॥ ६ ॥

भूषन् न योऽधि बभ्रूषु नम्नते वृषेव पत्नीरभ्येति रोरुवत्।
ओजायमानस्तन्वश्च शुम्भते भीमो न शृङ्गा दविधाव दुर्गृभिः ॥ ६ ॥
स संस्तिरो विष्टिरः सं गृभायति जानन्नेव जानतीर्नित्य आ शये।
पुनर्वर्धन्ते अपि यन्ति देव्यमन्यद् वर्पः पित्रोः कृण्वते सचा ॥ ७ ॥
तमग्रुवः केशिनीः सं हि रेभिर ऊर्ध्वास्तस्थुर्मुषीः प्रायवे पुनः।
तासां जरां प्रमुञ्चन्नेति नानददसुं परं जनयञ्जीवमस्तृतम् ॥ ८ ॥
अधीवासं परि मातू रिहन्नहं तुविग्रेभिः सत्वभिर्याति वि ज्रयः।
वयो दधत् पद्वते रेरिहत् सदानु श्येनी सचते वर्तनीरहा ॥ ९ ॥
अस्माकमग्ने मघवत्सु दीदिह्यध श्वसीवान् वृषभो दमूनाः।
अवास्या शिशुमतीरदीदेर्वमेव युत्सु परिजभ्रुराणः ॥ १० ॥

अथ सप्तमो वर्गः ॥ ७ ॥

इदमग्ने सुधितं दुधितादधि प्रियाद् चिन्मन्मनः प्रेयो अस्तु ते।
यत्ते शुक्रं तन्वो३ रोचते शुचि तेनास्मभ्यं वनसे रत्नमा त्वम् ॥ ११ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

रथाँय नावमुत नौ गृहाय नित्यारित्रां पद्वतीँ रास्यग्ने।
अस्माकं वीराँ उत नौ मघोनो जनाँश्च या पारयान्मच्छर्म या च॥ १२॥
अभी नो अग्न उक्थमिज्जुगुर्या द्यावाक्षामा सिन्धवश्च स्वगूर्ताः।
गव्यं यव्यं यन्तो दीर्घाहेषं वरमरुण्यो वरन्त ॥ १३॥

[१४१] एकचत्वारिंशदुत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—दीर्घतमा॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—१-३, ६, ११ जगती; ४, ७, ९, १० निचृज्जगती; ५ स्वराट्त्रिष्टुप्; ८ भुरिक्त्रिष्टुप्; १२ भुरिक्पङ्क्तिः; १३ स्वराट्पङ्क्तिः॥ स्वरः—१-४, ६, ७, ९-११ निषादः; ५, ८ धैवतः; १२, १३ पञ्चमः॥

अथ अष्टमो वर्गः॥ ८॥

बळित्था तद् वपुषे धायि दर्शतं देवस्य भर्गः सहसो यतो जनि।
यदीमुप ह्वरते साधते मतिर्ऋतस्य धेना अनयन्त सस्रुतः॥ १॥
पृक्षो वपुः पितुमान्नित्य आ शये द्वितीयमा सप्तशिवासु मातृषु।
तृतीयमस्य वृषभस्य दोहसे दशप्रमतिं जनयन्त योषणः॥ २॥
निर्यदीं बुध्नान्महिषस्य वर्पस ईशानासः शवसा क्रन्त सूरयः।
यदीमनु प्रदिवो मध्व आधवे गुहा सन्तं मातरिश्वा मथायति॥ ३॥
प्र यत्पितुः परमान्नीयते पर्या पृक्षुधो वीरुधो दंसु रोहति।
उभा यदस्य जनुषं यदिन्वत आदिद्यविष्ठो अभवद् घृणा शुचिः॥ ४॥
आदिन्मातॄराविशद्यास्वा शुचिरहिंस्यमान उर्विया वि वावृधे।
अनु यत्पूर्वा अरुहत्सनाजुवो नि नव्यसीष्ववरासु धावते॥ ५॥

अथ नवमो वर्गः॥ ९॥

आदिद्धोतारं वृणते दिविष्टिषु भगमिव पपृचानास ऋञ्जते।
देवान्यत्क्रत्वा मज्मना पुरुष्टुतो मर्तं शंसं विश्वधा वेति धायसे॥ ६॥
वि यदस्थाद्यजतो वातचोदितो ह्वारो न वक्वा जरणा अनाकृतः।
तस्य पत्मन्दक्षुषः कृष्णजंहसः शुचिजन्मनो रज आ व्यध्वनः॥ ७॥
रथो न यातः शिक्वभिः कृतो द्यामङ्गेभिररुषेभिरीयते।
आदस्य ते कृष्णासो दक्षि सूरयः शूरस्येव त्वेषथादीषते वयः॥ ८॥
त्वया ह्यग्ने वरुणो धृतव्रतो मित्रः शाशद्रे अर्यमा सुदानवः।
यत्सीमनु क्रतुना विश्वथा विभुररात्र नेमिः परिभूरजायथाः॥ ९॥
त्वमग्ने शशमानाय सुन्वते रत्नं यविष्ठ देवतातिमिन्वसि।
तं त्वा नु नव्यं सहसो युवन्वयं भगं न कारे महिरत्न धीमहि॥ १०॥

अस्मे रयिं न स्वर्थं दमूनसं भगं दक्षं न पपृचासि धर्णसिम्।
रश्मींरिव यो यमति जन्मनी उभे देवानां शंसमृत आ च सुक्रतुः॥ ११॥
उत नः सुद्योत्मा जीराश्वो होता मन्द्रः शृणवच्चन्द्ररथः।
स नो नेषन्नेषतमैरमूरोऽग्निर्वामं सुवितं वस्यो अच्छ ॥ १२॥
अस्ताव्यग्निः शिमीवद्भिरर्कैः साम्राज्याय प्रतरं दधानः।
अमी च ये मघवानो वयं च मिहं न सूरो अति निष्टतन्युः॥ १३॥

[१४२] द्विचत्वारिंशदुत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—दीर्घतमा॥ देवता—१-४ अग्निः; ५ बर्हिः; ६ देव्यो द्वारः; ७ उषासानक्ता; ८ दैव्यौ होतारौ; ९ सरस्वतीळाभारत्यः; १० त्वष्टा; ११ वनस्पतिः; १२ स्वाहाकृतिः; १३ इन्द्रः॥ छन्दः—१, २, ५, ६, ८, ९ निचृदनुष्टुप्; ३, ७, १०-१२ अनुष्टुप्; ४ स्वराडनुष्टुप्; १३ भुरिगुष्णिक्॥ स्वरः—१-१२ गान्धारः; १३ ऋषभः॥

अथ दशमो वर्गः॥ १०॥

समिद्धो अग्न आ वह देवाँ अद्य यतस्रुचे।
तन्तुं ततुष्व पूर्व्यं सुतसोमाय दाशुषे॥ १॥
घृतवन्तमुप मासि मधुमन्तं तनूनपात्।
यज्ञं विप्रस्य मावतः शशमानस्य दाशुषः॥ २॥
शुचिः पावको अद्भुतो मध्वा यज्ञं मिमिक्षति।
नराशंसस्त्रिरा दिवो देवो देवेषु यज्ञियः॥ ३॥
ईळितो अग्न आ वहेन्द्रं चित्रमिह प्रियम्।
इयं हि त्वा मतिर्ममाच्छा सुजिह्व वच्यते॥ ४॥
स्तृणानासो यतस्रुचो बर्हिर्यज्ञे स्वध्वरे।
वृञ्जे देवव्यचस्तममिन्द्राय शर्म सप्रथः॥ ५॥
वि श्रयन्तामृतावृधः प्रयै देवेभ्यो महीः।
पावकासः पुरुस्पृहो द्वारो देवीरसश्चतः॥ ६॥

अथ एकादशो वर्गः॥ ११॥

आ भन्दमाने उषासक्ते नक्तोषासा सुपेशसा।
यह्वी ऋतस्य मातरा सीदतां बर्हिरा सुमत्॥ ७॥
मन्द्रजिह्वा जुगुर्वणी होतारा दैव्या कवी।
यज्ञं नो यक्षतामिमं सिध्रमद्य दिविस्पृशम्॥ ८॥
शुचिर्देवेष्वर्पिता होत्रा मरुत्सु भारती।
इळा सरस्वती मही बर्हिः सीदन्तु यज्ञियाः॥ ९॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तन्न॑स्तु॒रीप॒मद्भु॑तं पु॒रु वारं॑ पु॒रु त्मना॑ ।
त्वष्टा॒ पोषा॑य॒ वि ष्य॑तु रा॒ये नाभा॑ नो अस्म॒युः ॥ १० ॥
अ॒व॒सृ॒जन्नु॒प त्मना॑ दे॒वान्य॑क्षि वनस्पते ।
अ॒ग्निर्ह॒व्या सु॑षूदति दे॒वो दे॒वेषु॒ मेधि॑रः ॥ ११ ॥
पू॒ष॒ण्वते॑ म॒रुत्व॑ते वि॒श्वदे॑वाय वा॒यवे॑ ।
स्वाहा॑ गाय॒त्रवे॑पसे ह॒व्यमिन्द्रा॑य कर्तन ॥ १२ ॥
स्वाहा॑कृता॒न्या ग॒ह्युप॑ ह॒व्यानि॑ वी॒तये॑ ।
इन्द्रा ग॑हि श्रु॒धी हवं॒ त्वां ह॑वन्ते अध्व॒रे ॥ १३ ॥

[१४३] त्रिचत्वारिंशदुत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—दीर्घतमा ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१, ७ निचृज्जगती; २, ३, ५ विराड्जगती; ४, ६ जगती; ८ निचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१-७ निषादः; ८ धैवतः ॥

अथ द्वादशो वर्गः ॥ १२ ॥

प्र तव्य॑सीं॒ नव्य॑सीं धी॒तिम॒ग्नये॑ वा॒चो म॒तिं सह॑सः सू॒नवे॑ भरे ।
अ॒पां नपा॒द् यो वसु॑भिः स॒ह प्रि॒यो होता॑ पृथि॒व्यां न्यसी॑ददृ॒त्वियः॑ ॥ १ ॥
स जाय॑मानः पर॒मे व्यो॑मन्या॒विर॒ग्निर॑भवन्मात॒रिश्व॑ने ।
अ॒स्य क्रत्वा॑ समिधा॒नस्य॑ म॒ज्मना॒ प्र द्यावा॑ शो॒चिः पृ॑थि॒वी अ॑रोचयत् ॥ २ ॥
अ॒स्य त्वे॒षा अ॒जरा॑ अ॒स्य भा॒नवः॑ सुसं॒दृशः॑ सु॒प्रती॑कस्य सु॒द्युतः॑ ।
भात्व॑क्षसो॒ अत्य॒क्तुर्न सिन्ध॑वो॒ऽग्ने रे॑जन्ते॒ अस॑सन्तो अ॒जराः॑ ॥ ३ ॥
यमे॑रि॒रे भृग॑वो वि॒श्ववे॑दसं॒ नाभा॑ पृथि॒व्या भुव॑नस्य म॒ज्मना॑ ।
अ॒ग्निं तं गी॒र्भीर्हि॑नुहि॒ स्व आ दमे॒ य एको॒ वस्वो॒ वरु॑णो॒ न राज॑ति ॥ ४ ॥
न यो वरा॑य म॒रुता॑मिव स्व॒नः सेने॑व सृ॒ष्टा दि॒व्या यथा॒शनिः॑ ।
अ॒ग्निर्जम्भै॑स्तिगि॒तैर॑त्ति॒ भर्व॑ति यो॒धो न शत्रू॒न्त्स वना॒ न्यृ॑ञ्जते ॥ ५ ॥
कु॒विन्नो॑ अ॒ग्निरु॒चथ॑स्य॒ वीरस॒द्वसु॑ष्कु॒विद्वसु॑भिः॒ काम॑मा॒वर॑त् ।
चो॒दः कु॒वित्तु॑तु॒ज्यात्सा॒तये॒ धियः॒ शुचि॑प्रतीकं॒ तम॒या धि॒या गृ॑णे ॥ ६ ॥
घृ॒तप्र॑तीकं व ऋ॒तस्य॑ धू॒र्षद॑म॒ग्निं मि॒त्रं न स॑मिधा॒न ऋ॑ञ्जते ।
इन्धा॑नो अ॒क्रो वि॒दथे॑षु दी॒द्य॑च्छु॒क्रव॑र्णा॒मुदु॑ नो यंसते॒ धिय॑म् ॥ ७ ॥
अप्र॑युच्छ॒न्नप्र॑युच्छद्भिरग्ने शि॒वेभि॑र्नः पा॒युभिः॑ पाहि श॒ग्मैः ।
अद॑ब्धेभि॒रदृ॑पितेभिरि॒ष्टेऽनि॑मिषद्भिः॒ परि॑ पाहि नो॒ जाः ॥ ८ ॥

[१४४] चतुश्चत्वारिंशदुत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—दीर्घतमा ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१, ३-५, ७ निचृज्जगती; २ जगती; ६ भुरिक्पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१-५, ७ निषादः; ६ पञ्चमः ॥

अथ त्रयोदशो वर्गः ॥ १३ ॥

एति॒ प्र होता॑ व्र॒तम॑स्य मा॒ययो॒र्ध्वां दधा॑नः॒ शुचि॑पेशसं॒ धिय॑म् ।
अ॒भि स्रुचः॑ क्रमते दक्षिणा॒वृतो॒ या अ॑स्य॒ धाम॑ प्रथ॒मं ह॒ निंस॑ते ॥ १ ॥
अ॒भीमृ॒तस्य॑ दो॒हना॑ अनूषत॒ योनौ॑ दे॒वस्य॒ सद॑ने॒ परी॑वृताः ।
अ॒पामु॒पस्थे॒ विभृ॑तो॒ यदाव॑स॒दध॑ स्व॒धा अ॑धय॒द्याभि॒रीय॑ते ॥ २ ॥
युयू॑षतः॒ सव॑यसा॒ तदिद्वपुः॑ समा॒नमर्थं॑ वि॒तरि॑त्रता मि॒थः ।
आदीं॒ भगो॒ न हव्यः॒ सम॒स्मदा वोळ्हु॒र्न र॒श्मीन्त्सम॑यंस्त॒ सार॑थिः ॥ ३ ॥
यमीं॒ द्वा सव॑यसा सप॒र्यतः॑ समा॒ने योना॑ मिथु॒ना समो॑कसा ।
दिवा॒ न नक्तं॑ पलि॒तो युवा॑जनि पु॒रू चर॑न्न॒जरो॒ मानु॑षा यु॒गा ॥ ४ ॥
तमीं॑ हिन्वन्ति धी॒तयो॒ दश॒ व्रिशो॑ दे॒वं मर्ता॑स ऊ॒तये॑ हवामहे ।
धनो॒रधि॑ प्र॒वत॒ आ स ऋ॑ण्वत्यभि॒व्रज॑द्भिर्व॒युना॒ नवा॑धित ॥ ५ ॥
त्वं ह्य॑ग्ने दि॒व्यस्य॒ राज॑सि॒ त्वं पार्थि॑वस्य पशु॒पाइ॑व॒ त्मना॑ ।
एनी॑ त ए॒ते बृ॑ह॒ती अ॑भि॒श्रिया॑ हिर॒ण्ययी॒ वक्व॑री ब॒र्हिरा॑शाते ॥ ६ ॥
अग्ने॑ जु॒षस्व॒ प्रति॑ हर्य॒ तद्वचो॒ मन्द्र॒ स्वधा॑व॒ ऋत॑जात॒ सुक्र॑तो ।
यो वि॒श्वतः॑ प्र॒त्यङ्ङसि॑ दर्श॒तो र॒ण्वः संदृ॑ष्टौ पितु॒माँइ॑व॒ क्षयः॑ ॥ ७ ॥

[१४५] पञ्चचत्वारिंशदुत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—दीर्घतमा ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१ विराड्जगती; २, ५ निचृज्जगती; ३, ४ भुरिक्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१, २, ५ निषादः; ३, ४ धैवतः ॥

अथ चतुर्दशो वर्गः ॥ १४ ॥

तं पृ॑च्छता॒ स ज॑गामा॒ स वे॑द॒ स चि॑कि॒त्वाँ ई॑यते॒ सा न्वी॑यते ।
तस्मि॑न्त्सन्ति प्र॒शिष॒स्तस्मि॑न्नि॒ष्टयः॒ स वाज॑स्य॒ शव॑सः शु॒ष्मिण॒स्पतिः॑ ॥ १ ॥
तमित्पृ॑च्छन्ति॒ न सि॒मो वि पृ॑च्छति॒ स्वेने॑व॒ धीरो॒ मन॑सा॒ यदग्र॑भीत् ।
न मृ॑ष्यते प्रथ॒मं नाप॑रं॒ वचो॒ऽस्य क्रत्वा॑ सचते॒ अप्र॑दृपितः ॥ २ ॥
तमिद्ग॑च्छन्ति जु॒ह्व१॒॑स्तमर्व॑ती॒र्विश्वा॒न्येकः॑ शृणव॒द्वचां॑सि मे ।
पु॒रु॒प्रै॒षस्ततु॑रिर्यज्ञ॒साध॒नोऽच्छिद्रोतिः॒ शिशु॒राद॑त्त॒ सं रभः॑ ॥ ३ ॥
उ॒प॒स्थायं॑ चरति॒ यत्स॒मार॑त स॒द्यो जा॒तस्त॑त्सार॒ युज्ये॑भिः ।
अ॒भि श्वा॒न्तं मृ॑शते ना॒न्द्ये॑ मु॒दे यदीं॒ गच्छ॑न्त्युश॒तीर॑पिष्ठि॒तम् ॥ ४ ॥
स ईं॑ मृ॒गो अप्यो॑ वन॒र्गुरुप॑ त्व॒च्यु॑प॒मस्यां॒ नि धा॑यि ।
व्य॑ब्रवीद्व॒युना॒ मर्त्ये॑भ्यो॒ऽग्निर्वि॒द्वाँ ऋ॑त॒चिद्धि स॒त्यः ॥ ५ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

[१४६] षट्चत्वारिंशदुत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—दीर्घतमा ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१, २ विराट्त्रिष्टुप्; ३, ५ त्रिष्टुप्; ४ निचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

अथ पञ्चदशो वर्गः ॥ १५ ॥

त्रि॒मू॒र्धानं॑ स॒प्तर॑श्मिं गृणी॒षेऽनू॑नम॒ग्निं पि॒त्रोरु॒पस्थे॑ ।
नि॒ष॒त्तम॑स्य॒ चर॑तो ध्रु॒वस्य॒ विश्वा॑ दि॒वो रो॑च॒नाप॑प्रि॒वांस॑म् ॥ १ ॥
उ॒क्षा म॒हाँ अ॒भि व॑वक्ष एने अ॒जर॑स्तस्थावि॒तऊ॑तिर्ऋ॒ष्वः ।
उ॒र्व्याः प॒दो नि द॑धाति॒ सानौ॑ रि॒हन्त्यूधो॑ अरु॒षासो॑ अस्य ॥ २ ॥
स॒मा॒नं व॒त्सम॒भि सं॒चर॑न्ती॒ विष्व॑ग्धे॒नू वि च॑रतः सु॒मेके॑ ।
अ॒न॒प॒वृ॒ज्याँ अध्व॑नो॒ मिमा॑ने॒ विश्वा॒न्केताँ॒ अधि॑ म॒हो दधा॑ने ॥ ३ ॥
धीरा॑सः प॒दं क॒वयो॑ नयन्ति॒ नाना॑ हृ॒दा रक्ष॑माणा अजु॒र्यम् ।
सिषा॑सन्तः॒ पर्य॑पश्यन्त॒ सिन्धु॑मा॒विरे॑भ्यो अभव॒त्सूर्यो॒ नॄन् ॥ ४ ॥
दि॒दृ॒क्षेण्यः॒ परि॒ काष्ठा॑सु॒ जेन्य॑ ई॒ळेन्यो॑ म॒हो अर्भा॑य जी॒वसे॑ ।
पु॒रु॒त्रा यदभ॑व॒त्सूरहै॑भ्यो॒ गर्भे॑भ्यो॒ म॒घवा॑ वि॒श्वद॑र्शतः ॥ ५ ॥

[१४७] सप्तचत्वारिंशदुत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—दीर्घतमा ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१, ३-५ निचृत्त्रिष्टुप्; २ विराट्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

अथ षोडशो वर्गः ॥ १६ ॥

क॒था ते॑ अग्ने शु॒चय॑न्त आ॒योर्द॑दा॒शुर्वाजे॑भिराशुषा॒णाः ।
उ॒भे यत्तो॒के तन॑ये॒ दधा॑ना ऋ॒तस्य॒ साम॑न्र॒णय॑न्त दे॒वाः ॥ १ ॥
बोधा॑ मे अ॒स्य वच॑सो यविष्ठ॒ मंहि॑ष्ठस्य॒ प्रभृ॑तस्य स्वधावः ।
पीय॑ति त्वो॒ अनु॑ त्वो गृणाति व॒न्दारु॑स्ते त॒न्वं॑ वन्दे अग्ने ॥ २ ॥
ये पा॒यवो॑ मामते॒यं ते॑ अग्ने॒ पश्य॑न्तो अ॒न्धं दु॑रि॒तादर॑क्षन् ।
र॒रक्ष॒ तान्त्सु॒कृतो॑ वि॒श्ववे॑दा॒ दिप्स॑न्त॒ इद्रि॒पवो॒ नाह॑ देभुः ॥ ३ ॥
यो नो॑ अग्ने॒ अर॑रिवाँ अघा॒युर॑राती॒वा म॒र्चय॑ति द्व॒येन॑ ।
मन्त्रो॑ गु॒रुः पुन॑रस्तु॒ सो अ॑स्मा॒ अनु॑ मृक्षीष्ट त॒न्वं॑ दुरु॒क्तैः ॥ ४ ॥
उ॒त वा॒ यः स॑हस्य प्रवि॒द्वान् मर्तो॒ मर्तं॑ म॒र्चय॑ति द्व॒येन॑ ।
अतः॑ पाहि स्तवमान स्तु॒वन्त॒मग्ने॒ माकि॑र्नो दुरि॒ताय॑ धायीः ॥ ५ ॥

[१४८] अष्टचत्वारिंशदुत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—दीर्घतमा ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१, २ पङ्क्तिः; ५ स्वराट्पङ्क्तिः; ३, ४ निचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१, २, ५ पञ्चमः; ३, ४ धैवतः ॥

अथ सप्तदशो वर्गः ॥ १७ ॥

मथी॒द्यदीं॑ वि॒ष्टो मा॑त॒रिश्वा॒ होता॑रं वि॒श्वाप्सुं॑ वि॒श्वदे॑व्यम् ।
नि यं द॒धुर्म॑नु॒ष्या॑सु वि॒क्षु स्व१॒॑र्ण चि॒त्रं वपु॑षे वि॒भाव॑म् ॥ १ ॥
द॒दा॒नमिन्न द॑दभन्त॒ मन्मा॒ग्निर्वरू॑थं॒ मम॒ तस्य॑ चाकन् ।
जु॒षन्त॒ विश्वा॑न्यस्य॒ कर्मोप॑स्तुतिं॒ भर॑माणस्य का॒रोः ॥ २ ॥
नित्ये॑ चि॒न्नु यं सद॑ने जगृ॒भ्रे प्रश॑स्तिभिर्दधि॒रे य॒ज्ञिया॑सः ।
प्र सू न॑यन्त गृ॒भय॑न्त इ॒ष्टावश्वा॑सो॒ न र॒थ्यो॒ रारहा॒णाः ॥ ३ ॥
पु॒रूणि॑ द॒स्मो नि रि॑णाति॒ जम्भै॒राद्रो॑चते॒ वन॒ आ वि॒भावा॑ ।
आद॑स्य॒ वातो॒ अनु॑ वाति शो॒चिरस्तु॒र्न शर्या॑मस॒नामनु॒ द्यून् ॥ ४ ॥
न यं रि॒पवो॒ न रिष॒ण्यवो॒ गर्भे॒ सन्तं॑ रेष॒णा रे॒षय॑न्ति ।
अ॒न्धा अ॑प॒श्या न द॑भन्नभि॒ख्या नित्या॑स ईं प्रे॒तारो॑ अरक्षन् ॥ ५ ॥

[१४९] एकोनपञ्चाशदुत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—दीर्घतमा ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१ भुरिगनुष्टुप्; २, ४ निचृदनुष्टुप्; ३ उष्णिक्; ५ विराडनुष्टुप् ॥ स्वरः—१, २, ४, ५ गान्धारः; ३ ऋषभः ॥

अथ अष्टादशो वर्गः ॥ १८ ॥

म॒हः स रा॒य एष॑ते॒ पति॒र्दन्नि॒न इ॒नस्य॒ वसु॑नः प॒द आ ।
उप॒ ध्रज॑न्त॒मद्र॑यो वि॒धन्नित् ॥ १ ॥
स यो वृषा॑ न॒रां न रोद॑स्योः॒ श्रवो॑भि॒रस्ति॑ जी॒वपी॑तसर्गः ।
प्र यः स॑स्रा॒णः शि॑श्री॒त योनौ॑ ॥ २ ॥
आ यः पु॒रं॒ नार्मि॑णी॒मदी॑दे॒दत्यः॑ क॒विर्न॑भ॒न्यो॒३॒॑ नावी॑ ।
सूरो॒ न रु॑रु॒क्वाञ्छ॒तात्मा॑ ॥ ३ ॥
अ॒भि द्वि॒जन्मा॑ त्री रो॑च॒नानि॒ विश्वा॒ रजां॑सि शुशुचा॒नो अ॑स्थात् ।
होता॒ यजि॑ष्ठो अ॒पां स॒धस्थे॑ ॥ ४ ॥
अ॒यं स होता॒ यो द्वि॒जन्मा॒ विश्वा॑ द॒धे वार्या॑णि श्रव॒स्या ।
मर्तो॒ यो अ॑स्मै सु॒तुको॑ द॒दाश॑ ॥ ५ ॥

[१५०] पञ्चाशदुत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—दीर्घतमा ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१, ३ भुरिग्गायत्री; २ निचृदुष्णिक् ॥ स्वरः—१, ३ षड्जः; २ ऋषभः ॥

अथ एकोनविंशो वर्गः ॥ २१ ॥

पु॒रु त्वा॑ दा॒श्वान्वो॑चे॒ऽरिर॑ग्ने॒ तव॑ स्वि॒दा । तो॒दस्ये॑व शर॒ण आ म॒हस्य॑ ॥ १ ॥
व्य॑नि॒नस्य॑ धनि॒नः प्रहो॒षे चि॒दर॑रुषः । क॒दा च॒न प्र॒जिग॑तो॒ अदे॑वयोः ॥ २ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

स चन्द्रो विप्र मर्त्यो महो व्राध्न्तमो दिवि। प्रप्रेतै अग्ने वनुषः स्याम॥ ३॥

[१५१] एकपञ्चाशदुत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—दीर्घतमा॥ देवता—मित्रावरुणौ॥ छन्दः—१ भुरिक्त्रिष्टुप्; २-५ विराड्जगती; ६, ७ जगती; ८, ९ निचृज्जगती॥ स्वरः—१ धैवतः; २-९ निषादः॥

अथ विंशो वर्गः॥ २०॥

मित्रं न यं शिम्या गोषु गव्यवः स्वाध्यो विदथे अप्सु जीजनन्।
अरेजेतां रोदसी पाजसा गिरा प्रति प्रियं यजतं जनुषामवः॥ १॥
यद्ध त्यद्वां पुरुमीळ्हस्य सोमिनः प्र मित्रासो न दधिरे स्वाभुवः।
अधा क्रतुं विदतं गातुमर्चत उत श्रुतं वृषणा पस्त्यावतः॥ २॥
आ वां भूषन्क्षितयो जन्म रोदस्योः प्रवाच्यं वृषणा दक्षसे महे।
यदीमृताय भरथो यदर्वते प्र होत्रया शिम्या वीथो अध्वरम्॥ ३॥
प्र सा क्षितिरसुर या महि प्रिय ऋतावानावृतमा घोषथो बृहत्।
युवं दिवो बृहतो दक्षमाभुवं गां न धुर्युप युञ्जाथे अपः॥ ४॥
मही अत्र महिना वारमृण्वथोऽरेणवस्तुज आ सद्मन्धेनवः।
स्वरन्ति ता उपरताति सूर्यमा निम्रुच उषसस्तक्वीरिव॥ ५॥

अथ एकविंशो वर्गः॥ २१॥

आ वामृताय केशिनीरनूषत मित्र यत्र वरुण गातुमर्चथः।
अव त्मना सृजतं पिन्वतं धियो युवं विप्रस्य मन्मनामिरज्यथः॥ ६॥
यो वां यज्ञैः शशमानो ह दाशति कविर्होता यजति मन्मसाधनः।
उपाहुत गच्छथो वीथो अध्वरमच्छा गिरः सुमतिं गन्तमस्मयू॥ ७॥
युवां यज्ञैः प्रथमा गोभिरञ्जत ऋतावाना मनसो न प्रयुक्तिषु।
भरन्ति वां मन्मना संयता गिरोऽदृप्यता मनसा रेवदाशाथे॥ ८॥
रेवद्वयो दधाथे रेवदाशाथे नरा मायाभिरितऊति माहिनम्।
न वां द्यावोऽहभिर्नोत सिन्धवो न देवत्वं पणयो नानशुर्मघम्॥ ९॥

[१५२] द्विपञ्चाशदुत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—दीर्घतमा॥ देवता—मित्रावरुणौ॥ छन्दः—१, २, ४-६ त्रिष्टुप्; ३ विराट्त्रिष्टुप्; ७ निचृत्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः॥

अथ द्वाविंशो वर्गः॥ २२॥

युवं वस्त्राणि पीवसा वसाथे युवोरच्छिद्रा मन्तवो ह सर्गाः।
अवातिरतमनृतानि विश्व ऋतेन मित्रावरुणा सचेथे॥ १॥

एतच्चन त्वो वि चिकेतदेषां सत्यो मन्त्रः कविशस्त ऋघावान्।
त्रिरश्रिं हन्ति चतुरश्रिरुग्रो देवनिदो ह प्रथमा अजूर्यन्॥ २॥
अपादेति प्रथमा पद्वतीनां कस्तद्वां मित्रावरुणा चिकेत।
गर्भो भारं भरत्या चिदस्य ऋतं पिपर्त्यनृतं नि तारीत्॥ ३॥
प्रयन्तमित्परि जारं कनीनां पश्यामसि नोपनिपद्यमानम्।
अनवपृग्णा वितता वसानं प्रियं मित्रस्य वरुणस्य धाम॥ ४॥
अनश्वो जातो अनभीशुरर्वा कनिक्रदत्पतयदूर्ध्वसानुः।
अचित्तं ब्रह्म जुजुषुर्युवानः प्र मित्रे धाम वरुणे गृणन्तः॥ ५॥
आ धेनवो मामतेयमवन्तीर्ब्रह्मप्रियं पीपयन्त्सस्मिन्नूधन्।
पित्वो भिक्षेत वयुनानि विद्वानासाविवासन्नदितिमुरुष्येत्॥ ६॥
आ वां मित्रावरुणा हव्यजुष्टिं नमसा देवावसा ववृत्याम्।
अस्माकं ब्रह्म पृतनासु सह्या अस्माकं वृष्टिर्दिव्या सुपारा॥ ७॥

[१५३] त्रिपञ्चाशदुत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—दीर्घतमा॥ देवता—मित्रावरुणौ॥ छन्दः—१, २ निचृत्त्रिष्टुप्; ३ त्रिष्टुप्; ४ भुरिक्पङ्क्तिः॥ स्वरः—१-३ धैवतः; ४ पञ्चमः॥

अथ त्रयोविंशो वर्गः॥ २३॥

यजामहे वां महः सजोषा हव्येभिर्मित्रावरुणा नमोभिः।
घृतैर्घृतस्नू अध यद्वामस्मे अध्वर्यवो न धीतिभिर्भरन्ति॥ १॥
प्रस्तुतिर्वां धाम न प्रयुक्तिरयामि मित्रावरुणा सुवृक्तिः।
अनक्ति यद्वां विदथेषु होता सुम्नं वां सूरिर्वृषणावियक्षन्॥ २॥
पीपाय धेनुरदितिर्ऋताय जनाय मित्रावरुणा हविर्दे।
हिनोति यद्वां विदथे सपर्यन्त्स रातहव्यो मानुषो न होता॥ ३॥
उत वां विक्षु मद्यास्वन्धो गाव आपश्च पीपयन्त देवीः।
उतो नो अस्य पूर्व्यः पतिर्दन्वीतं पातं पयस उस्रियायाः॥ ४॥

[१५४] चतुष्पञ्चाशदुत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—दीर्घतमा॥ देवता—विष्णुः॥ छन्दः—१, २ विराट्त्रिष्टुप्; ३, ४, ६ निचृत्त्रिष्टुप्; ५ त्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः॥

अथ चतुर्विंशो वर्गः॥ २४॥

विष्णोर्नु कं वीर्याणि प्र वोचं यः पार्थिवानि विममे रजांसि।
यो अस्कभायदुत्तरं सधस्थं विचक्रमाणस्त्रेधोरुगायः॥ १॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्र तद्विष्णुः स्तवते वीर्येण मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः।
यस्योरुषु त्रिषु विक्रमणेष्वधिक्षियन्ति भुवनानि विश्वा ॥ २ ॥
प्र विष्णवे शूषमेतु मन्म गिरिक्षित उरुगायाय वृष्णे।
य इदं दीर्घं प्रयतं सधस्थमेको विममे त्रिभिरित्पदेभिः ॥ ३ ॥
यस्य त्री पूर्णा मधुना पदान्यक्षीयमाणा स्वधया मदन्ति।
य उ त्रिधातु पृथिवीमुत द्यामेको दाधार भुवनानि विश्वा ॥ ४ ॥
तदस्य प्रियमभि पाथो अश्यां नरो यत्र देवयवो मदन्ति।
उरुक्रमस्य स हि बन्धुरित्था विष्णोः पदे परमे मध्व उत्सः ॥ ५ ॥
ता वां वास्तून्युश्मसि गमध्यै यत्र गावो भूरिशृङ्गा अयासः।
अत्राह तदुरुगायस्य वृष्णः परमं पदमव भाति भूरि ॥ ६ ॥

[१५५] पञ्चपञ्चाशदुत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—दीर्घतमा ॥ देवता—विष्णुः ॥ छन्दः—१, ३, ६ भुरिक्त्रिष्टुप्; २ निचृज्जगती; ४ स्वराट्त्रिष्टुप्; ५ निचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१, ३-६ धैवतः; २ निषादः ॥

अथ पञ्चविंशो वर्गः ॥ २५ ॥

प्र वः पान्तमन्धसो धियायते महे शूराय विष्णवे चार्चत।
या सानुनि पर्वतानामदाभ्या महस्तस्थतुरर्वतेव साधुना ॥ १ ॥
त्वेषमित्था समरणं शिमीवतोरिन्द्राविष्णू सुतपा वामुरुष्यति।
या मर्त्याय प्रतिधीयमानमित्कृशानोरस्तुरसनामुरुष्यथः ॥ २ ॥
ता ईं वर्धन्ति महास्य पौंस्यं नि मातरा नयति रेतसे भुजे।
दधाति पुत्रोऽवरं परं पितुर्नाम तृतीयमधि रोचने दिवः ॥ ३ ॥
तत्तदिदस्य पौंस्यं गृणीमसीनस्य त्रातुरवृकस्य मीळ्हुषः।
यः पार्थिवानि त्रिभिरिद्विगामभिरुरु क्रमिष्टोरुगायाय जीवसे ॥ ४ ॥
द्वे इदस्य क्रमणे स्वर्दृशोऽभिख्याय मर्त्यो भुरण्यति।
तृतीयमस्य नकिरा दधर्षति वयश्चन पतयन्तः पतत्रिणः ॥ ५ ॥
चतुर्भिः साकं नवतिं च नामभिश्चक्रं न वृत्तं व्यतीँरवीविपत्।
बृहच्छरीरो विमिमान ऋक्वभिर्युवाकुमारः प्रत्येत्याहवम् ॥ ६ ॥

[१५६] षट्पञ्चाशदुत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—दीर्घतमा ॥ देवता—विष्णुः ॥ छन्दः—१ निचृत्त्रिष्टुप्; २ विराट्त्रिष्टुप्; ३ निचृज्जगती; ४ जगती; ५ स्वराट्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१, २, ५ धैवतः; ३, ४ निषादः ॥

अथ षड्विंशो वर्गः ॥ २६ ॥

भवा मित्रो न शेव्यो घृतासुतिर्विभूतद्युम्न एवया उ सप्रथाः।
अधा ते विष्णो विदुषा चिदर्ध्यः स्तोमो यज्ञश्च राध्यो हविष्मता ॥ १ ॥
यः पूर्व्याय वेधसे नवीयसे सुमज्जानये विष्णवे ददाशति।
यो जातमस्य महतो महि ब्रवत्सेदु श्रवोभिर्युज्यं चिदभ्यसत् ॥ २ ॥
तमु स्तोतारः पूर्व्यं यथा विद ऋतस्य गर्भं जनुषा पिपर्तन।
आस्य जानन्तो नाम चिद्विवक्तन महस्ते विष्णो सुमतिं भजामहे ॥ ३ ॥
तमस्य राजा वरुणस्तमश्विना क्रतुं सचन्त मारुतस्य वेधसः।
दाधार दक्षमुत्तममहर्विदं व्रजं च विष्णुः सखिवाँ अपोर्णुते ॥ ४ ॥
आ यो विवाय सचथाय दैव्य इन्द्राय विष्णुः सुकृते सुकृत्तरः।
वेधा अजिन्वत्रिषधस्थ आर्यमृतस्य भागे यजमानमाभजत् ॥ ५ ॥

द्वाविंशोऽनुवाकः [१५७] सप्तपञ्चाशदुत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—दीर्घतमा ॥ देवता—अश्विनौ ॥ छन्दः—१ त्रिष्टुप्; २, ४ जगती; ३ निचृज्जगती; ५ निचृत्त्रिष्टुप्; ६ विराट्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१, ५, ६ धैवतः; २-४ निषादः ॥

अथ सप्तविंशो वर्गः ॥ २७ ॥

अबोध्यग्निर्जं उदेति सूर्यो व्युषाश्चन्द्रा महावो अर्चिषा।
आयुक्षातामश्विना यातवे रथं प्रासावीद्देवः सविता जगत्पृथक् ॥ १ ॥
यद्युञ्जाथे वृषणमश्विना रथं घृतेन नो मधुना क्षत्रमुक्षतम्।
अस्माकं ब्रह्म पृतनासु जिन्वतं वयं धना शूरसाता भजेमहि ॥ २ ॥
अर्वाङ् त्रिचक्रो मधुवाहनो रथो जीराश्वो अश्विनोर्यातु सुष्टुतः।
त्रिवन्धुरो मघवा विश्वसौभगः शं न आ वक्षद् द्विपदे चतुष्पदे ॥ ३ ॥
आ न ऊर्जं वहतमश्विना युवं मधुमत्या नः कशया मिमिक्षतम्।
प्रायुस्तारिष्टं नी रपांसि मृक्षतं सेधतं द्वेषो भवतं सचाभुवा ॥ ४ ॥
युवं ह गर्भं जगतीषु धत्थो युवं विश्वेषु भुवनेष्वन्तः।
युवमग्निं च वृषणावपश्च वनस्पतीँरश्विनावैरयेथाम् ॥ ५ ॥
युवं ह स्थो भिषजा भेषजेभिरथो ह स्थो रथ्या राध्येभिः।
अथो ह क्षत्रमधि धत्थ उग्रा यो वां हविष्मान्मनसा ददाश ॥ ६ ॥

इति द्वितीयाष्टके द्वितीयोऽध्यायः ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अथ तृतीयोऽध्यायः

[१५८] अष्टपञ्चाशदुत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—दीर्घतमा औचथ्यः ॥ देवता—अश्विनौ ॥ छन्दः—१, ४, ५ निचृत्त्रिष्टुप्; २ त्रिष्टुप्; ३ भुरिक्पङ्क्तिः; ६ निचृदनुष्टुप् ॥ स्वरः—१, २, ४, ५ धैवतः; ३ पञ्चमः; ६ गान्धारः ॥

अथ प्रथमो वर्गः ॥ १ ॥

वसू॑ रु॒द्रा पु॑रु॒मन्तु॑ वृ॒धन्ता॑ दश॒स्यतं॑ नो वृषणाव॒भिष्टौ॑।
दस्रा॑ ह॒ यद्रेक्ण॑ औच॒थ्यो वां॒ प्र यत्स॒स्राथे॒ अक॑वाभिरू॒ती ॥ १ ॥
को वां॑ दाशत्सुम॒तये॑ चिद॒स्यै वसू॒ यद्धेथे॒ नम॑सा प॒दे गोः।
जि॒गृ॒तम॒स्मे रे॒वतीः॒ पुर॑न्धीः काम॒प्रेणे॑व॒ मन॑सा॒ चर॑न्ता ॥ २ ॥
यु॒क्तो ह॒ यद्वां॑ तौ॒ग्र्याय॑ पे॒रुर्वि मध्ये॒ अर्ण॑सो॒ धायि॑ प॒ज्रः।
उप॑ वा॒मवः॑ शर॒णं ग॑मेयं॒ शूरो॒ नाज्म॑ प॒तय॑द्भि॒रेवैः॑ ॥ ३ ॥
उप॑स्तुतिरौच॒थ्यमु॑रुष्ये॒न्मा मामि॒मे प॑त॒त्रिणी॒ वि दु॑ग्धाम् ।
मा मामेधो॒ दश॑तयश्चि॒तो धा॒क् प्र यद्वां॑ ब॒द्धस्त्मनि॒ खाद॑ति॒ क्षाम् ॥ ४ ॥
न मा॑ गरन्न॒द्यो॑ मा॒तृत॑मा दा॒सा यदीं॒ सुस॑मुब्धम॒वाधुः॑।
शिरो॒ यद॑स्य त्रैत॒नो वि॒तक्ष॑त्स्व॒यं दा॒स उरो॒ अंसा॒वपि॑ ग्ध ॥ ५ ॥
दी॒र्घत॑मा मामते॒यो जु॑जु॒र्वान् द॑श॒मे यु॒गे ।
अ॒पामर्थं॑ य॒तीनां॑ ब्र॒ह्मा भ॑वति॒ सार॑थिः ॥ ६ ॥

[१५९] एकोनषष्ट्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—दीर्घतमा ॥ देवता—द्यावापृथिव्यौ ॥ छन्दः—१ विराड्जगती; २, ३, ५ निचृज्जगती; ४ जगती ॥ स्वरः—निषादः ॥

अथ द्वितीयो वर्गः ॥ २ ॥

प्र द्यावा॑ य॒ज्ञैः पृ॑थि॒वी ऋ॑ता॒वृधा॑ म॒ही स्तु॑षे वि॒दथे॑षु॒ प्रचे॑तसा।
दे॒वेभि॒र्ये दे॒वपु॑त्रे सु॒दंस॑से॒त्था धि॒या वार्या॑णि प्र॒भूष॑तः ॥ १ ॥
उ॒त म॑न्ये पि॒तुर॒द्रुहो॒ मनो॑ मा॒तुर्महि॒ स्वत॑व॒स्तद्धवी॑मभिः।
सु॒रेत॑सा पि॒तरा॒ भूम॑ चक्रतुरु॒रु प्र॒जाया॑ अ॒मृतं॒ वरी॑मभिः ॥ २ ॥
ते सू॒नवः॒ स्वप॑सः सु॒दंस॑सो म॒ही ज॑ज्ञुर्मा॒तरा॑ पू॒र्वचि॑त्तये।
स्था॒तुश्च॑ स॒त्यं जग॑तश्च॒ धर्म॑णि पु॒त्रस्य॑ पाथः प॒दमद्व॑याविनः ॥ ३ ॥
ते मा॒यिनो॑ ममिरे सु॒प्रचे॑तसो जा॒मी सयो॑नी मिथु॒ना समो॑कसा।
नव्यं॑नव्यं॒ तन्तु॒मा त॑न्वते दि॒वि स॑मु॒द्रे अ॒न्तः क॒वयः॑ सुदी॒तयः॑ ॥ ४ ॥

तद्राधो॑ अ॒द्य स॑वि॒तुर्वरे॑ण्यं व॒यं दे॒वस्य॑ प्रस॒वे म॑नामहे।
अ॒स्मभ्यं॑ द्यावापृथिवी सुचे॒तुना॑ र॒यिं ध॑त्तं॒ वसु॑मन्तं शत॒ग्विन॑म् ॥ ५ ॥

[१६०] षष्ट्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—दीर्घतमा ॥ देवता—द्यावापृथिव्यौ ॥ छन्दः—१ विराड्जगती; २-५ निचृज्जगती ॥ स्वरः—निषादः ॥

अथ तृतीयो वर्गः ॥ ३ ॥

ते हि द्यावा॑पृथि॒वी वि॒श्वशं॑भुव ऋ॒ताव॑री॒ रज॑सो धार॒यत्क॑वी।
सु॒जन्म॑नी धि॒षणे॑ अ॒न्तरी॑यते दे॒वो दे॒वी धर्म॑णा॒ सूर्यः॒ शुचिः॑ ॥ १ ॥
उ॒रु॒व्यच॑सा म॒हिनी॑ अस॒श्चता॑ पि॒ता मा॒ता च॒ भुव॑नानि रक्षतः।
सु॒धृष्ट॑मे वपु॒ष्ये॒३॒॑ न रोद॑सी पि॒ता यत्सी॑म॒भि रू॒पैरवा॑सयत् ॥ २ ॥
स वह्निः॑ पु॒त्रः पि॒त्रोः प॒वित्र॑वान् पु॒नाति॒ धीरो॒ भुव॑नानि मा॒यया॑।
धे॒नुं च॒ पृश्निं॑ वृष॒भं सु॒रेत॑सं वि॒श्वाहा॑ शु॒क्रं पयो॑ अस्य दुक्षत ॥ ३ ॥
अ॒यं दे॒वाना॑म॒पसा॑म॒पस्त॑मो॒ यो ज॒जान॒ रोद॑सी वि॒श्वशं॑भुवा।
वि यो म॒मे रज॑सी सुक्रतू॒यया॒जरे॑भिः॒ स्कम्भ॑नेभिः॒ समा॑नृचे ॥ ४ ॥
ते नो॑ गृणा॒ने म॑हिनी॒ महि॒ श्रवः॑ क्ष॒त्रं द्या॑वापृथिवी धासथो बृ॒हत्।
येना॒भि कृ॒ष्टिस्त॒तना॑म वि॒श्वहा॑ पनाय्य॒मोजो॑ अ॒स्मे समि॑न्वतम् ॥ ५ ॥

[१६१] एकषष्ट्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—दीर्घतमा ॥ देवता—ऋभवः ॥ छन्दः—१ विराड्जगती; २, ५, ६, ८, १२ निचृज्जगती; ३ निचृत्त्रिष्टुप्; ४, १३ भुरिक्त्रिष्टुप्; ७, १० जगती; ९ स्वराट्त्रिष्टुप्; ११ त्रिष्टुप्; १४ स्वराट्पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१, २, ५-८, १०, १२ निषादः; ३, ४, ९, ११, १३ धैवतः; १४ पञ्चमः ॥

अथ चतुर्थो वर्गः ॥ ३ ॥

किमु॒ श्रेष्ठः॒ किं यवि॑ष्ठो न॒ आज॑ग॒न्किमी॑यते दू॒त्यं१॒॑ कद्यदू॑चि॒म ।
न नि॑न्दिम चम॒सं यो म॑हाकु॒लोऽग्ने॑ भ्रात॒र्द्रुण॒ इद्भू॒तिमू॑दिम ॥ १ ॥
एकं॑ चम॒सं च॒तुरः॑ कृणोतन॒ तद्वो॑ दे॒वा अ॑ब्रुव॒न्तद्व॒ आग॑मम् ।
सौध॑न्वना॒ यद्ये॒वा क॑रि॒ष्यथ॑ सा॒कं दे॒वैर्य॒ज्ञिया॑सो भविष्यथ ॥ २ ॥
अ॒ग्निं दू॒तं प्रति॒ यदब्र॑वीत॒नाश्वः॒ कर्त्वो॒ रथ॑ उ॒तेह कर्त्वः॑ ।
धे॒नुः कर्त्वा॑ युव॒शा कर्त्वा॒ द्वा तानि॑ भ्रात॒रनु॑ वः कृ॒त्व्येम॑सि ॥ ३ ॥
च॒कृ॒वांस॑ ऋभव॒स्तद॑पृच्छत॒ क्वेद॑भू॒द्यः स्य दू॒तो न॒ आज॑गन् ।
यदा॒वाख्या॑च्चम॒साञ्च॒तुरः॑ कृ॒तानादित्त्वष्टा॒ ग्नास्व॒न्तर्न्या॑नजे ॥ ४ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

हनामैनाँ इति त्वष्टा यदब्रवीच्चमसं ये देवपानमनिन्दिषुः ।
अन्या नामानि कृण्वते सुते सचाँ अन्यैरेनान् कन्याꣳ३ नामभिः स्परत् ॥ ५ ॥

अथ पञ्चमो वर्गः ॥ ५ ॥

इन्द्रो हरी युयुजे अश्विना रथं बृहस्पतिर्विश्वरूपामुपाजत ।
ऋभुर्विभ्वा वाजो देवाँ अगच्छत स्वपसो यज्ञियं भागमैतन ॥ ६ ॥
निश्चर्मणो गामरिणीत धीतिभिर्या जरन्ता युवशा ताकृणोतन ।
सौधन्वना अश्वादश्वमतक्षत युक्त्वा रथमुप देवाँ अयातन ॥ ७ ॥
इदमुदकं पिबतेत्यब्रवीतनेदं वा घा पिबता मुञ्जनेजनम् ।
सौधन्वना यदि तन्नेव हर्यथ तृतीये वा सवने मादयाध्वै ॥ ८ ॥
आपो भूयिष्ठा इत्येको अब्रवीदग्निर्भूयिष्ठ इत्यन्यो अब्रवीत् ।
वधूर्यन्तीं बहुभ्यः प्रैको अब्रवीदृता वदन्तश्चमसाँ अपिंशत ॥ ९ ॥
श्रोणामेकः उदकं गामवाजति मांसमेकः पिंशति सूनयाभृतम् ।
आ निम्रुचः शकृदेको अपाभरत्किं स्वित्पुत्रेभ्यः पितरा उपावतुः ॥ १० ॥

अथ षष्ठो वर्गः ॥ ६ ॥

उद्वत्स्वस्मा अकृणोतना तृणं निवत्स्वपः स्वपस्यया नरः ।
अगोह्यस्य यदसस्तना गृहे तदद्येदमृभवो नानु गच्छथ ॥ ११ ॥
संमील्य यद्दुर्वना पर्यसर्पत क्व स्वित्तात्या पितरा व आसतुः ।
अशपत यः करस्नं व आददे यः प्राब्रवीत्प्रो तस्मा अब्रवीतन ॥ १२ ॥
सुषुप्वांस ऋभवस्तदपृच्छतागोह्य क इदं नो अबूबुधत् ।
श्वानं बस्तो बोधयितारमब्रवीत्संवत्सर इदमद्या व्यख्यत ॥ १३ ॥
दिवा यान्ति मरुतो भूम्याग्निरयं वातो अन्तरिक्षेण याति ।
अद्भिर्याति वरुणः समुद्रैर्युष्माँ इच्छन्तः शवसो नपातः ॥ १४ ॥

[१६२] द्विषष्ट्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—दीर्घतमा ॥ देवता—मित्रादयो लिङ्गोक्ताः ॥ छन्दः—१, २, ९, १०, १७, २० निचृत्त्रिष्टुप्; ३ निचृज्जगती; ४, ७, ८, १८ त्रिष्टुप्; ५ विराट्त्रिष्टुप्; ६, ११, २१ भुरिक्त्रिष्टुप्; १२ स्वराट्त्रिष्टुप्; १३, १४ भुरिक्पङ्क्तिः; १५, १९, २२ स्वराट्पङ्क्तिः; १६ विराट्पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१, २, ४-१२, १७, १८, २०, २१ धैवतः; ३ निषादः; १३-१६, १९, २२ पञ्चमः ॥

अथ सप्तमो वर्गः ॥ ७ ॥

मा नो मित्रो वरुणो अर्यमायुरिन्द्र ऋभुक्षा मरुतः परि ख्यन् ।
यद्वाजिनो देवजातस्य सप्तेः प्रवक्ष्यामो विदथे वीर्याणि ॥ १ ॥

यन्निर्णिजा रेक्णसा प्रावृतस्य रातिं गृभीतां मुखतो नयन्ति ।
सुप्राङजो मेम्यद्विश्वरूप इन्द्रापूष्णोः प्रियमप्येति पाथः ॥ २ ॥
एष च्छागः पुरो अश्वेन वाजिना पूष्णो भागो नीयते विश्वदेव्यः ।
अभिप्रियं यत्पुरोळाशमर्वता त्वष्टेदेनं सौश्रवसाय जिन्वति ॥ ३ ॥
यद्ध विष्यन्मृतुशो देवयानं त्रिर्मानुषाः पर्यश्वं नयन्ति ।
अत्रा पूष्णः प्रथमो भाग एति यज्ञं देवेभ्यः प्रतिवेदयन्नजः ॥ ४ ॥
होताध्वर्युरावया अग्निमिन्धो ग्रावग्राभ उत शंस्ता सुविप्रः ।
तेनं यज्ञेन स्वरंकृतेन स्विष्टेन वक्षणा आ पृणध्वम् ॥ ५ ॥

अथ अष्टमो वर्गः ॥ ८ ॥

यूपव्रस्का उत ये यूपवाहाश्चषालं ये अश्वयूपाय तक्षति ।
ये चार्वंते पचनं संभरन्त्युतो तेषामभिगूर्तिर्न इन्वतु ॥ ६ ॥
उप प्रागात्सुमन्मेऽधायि मन्म देवानामाशा उप वीतपृष्ठः ।
अन्वेनं विप्रा ऋषयो मदन्ति देवानां पुष्टे चकृमा सुबन्धुम् ॥ ७ ॥
यद्वाजिनो दाम संदानमर्वतो या शीर्षण्या रशना रज्रुरस्य ।
यद्वा घास्य प्रभृतमास्येꣳ३ तृणं सर्वा ता ते अपि देवेष्वस्तु ॥ ८ ॥
यदश्वस्य क्रविषो मक्षिकाश यद्वा स्वरौ स्वधितौ रिप्तमस्ति ।
यद्धस्तयोः शमितुर्यन्नखेषु सर्वा ता ते अपि देवेष्वस्तु ॥ ९ ॥
यदूवध्यमुदरस्यापवाति य आमस्य क्रविषो गन्धो अस्ति ।
सुकृता तच्छमितारः कृणवन्तूत मेधं शृतपाकं पचन्तु ॥ १० ॥

अथ नवमो वर्गः ॥ ९ ॥

यत्ते गात्रादग्निना पच्यमानादभि शूलं निहतस्यावधावति ।
मा तद्भूम्यामा श्रिषन्मा तृणेषु देवेभ्यस्तदुशद्भ्यो रातमस्तु ॥ ११ ॥
ये वाजिनं परिपश्यन्ति पक्वं य ईमाहुः सुरभिर्निर्हरेति ।
ये चार्वंतो मांसभिक्षामुपासत उतो तेषामभिगूर्तिर्न इन्वतु ॥ १२ ॥
यन्नीक्षणं मांस्पचन्या उखाया या पात्राणि यूष्ण आसेचनानि ।
ऊष्मण्यापिधाना चरूणामङ्काः सूनाः परि भूषन्त्यश्वम् ॥ १३ ॥
निक्रमणं निषदनं विवर्तनं यच्च पड्बीशमर्वतः ।
यच्च पपौ यच्च घासिं जघास सर्वा ता ते अपि देवेष्वस्तु ॥ १४ ॥
मा त्वाग्निर्ध्वनयीद् धूमगन्धिर्मोखा भ्राजन्त्यभि विक्त जघ्रिः ।
इष्टं वीतमभिगूर्तं वषट्कृतं तं देवासः प्रति गृभ्णन्त्यश्वम् ॥ १५ ॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अथ दशमो वर्गः ॥ १० ॥

यदश्वा॑य॒ वास॑ उपस्तृ॒णन्त्यधी॒वास॑ं॒ या हिर॑ण्यान्यस्मै।
सं॒दा॒न॒मर्वन्तं॑ पड्बी॒शं प्रि॒या दे॒वेष्वा या॑मयन्ति ॥ १६ ॥
यत्ते॑ सा॒दे म॑हसा॒ शूक॑तस्य पाष्ण्यी॒ वा॒ क॒शया॑ वा तु॒तोद॑।
स्रु॒चेव॒ ता ह॒विषो॑ अध्व॒रेषु॑ सर्वा॒ ता ते॒ ब्रह्म॑णा सूदयामि ॥ १७ ॥
चतु॒स्त्रिं॑शद्वा॒जिनो॑ दे॒वब॑न्धो॒र्वङ्क्री॒रश्व॑स्य॒ स्वधि॑तिः॒ सम॑ेति।
अच्छि॑द्रा॒ गात्रा॑ व॒युना॑ कृणोत॒ परु॑ष्परुरनु॒घुष्या॒ वि शं॑स्त ॥ १८ ॥
एक॒स्त्वष्टु॒रश्व॑स्या विश॒स्ता द्वा य॒न्तार॑ा भवत॒स्तथ॒ ऋतुः॑।
या ते॒ गात्रा॑णामृतु॒था कृणो॑मि॒ ताता॒ पिण्डा॑नां॒ प्र जु॑होम्य॒ग्नौ ॥ १९ ॥
मा त्वा॑ तपत्प्रिय आ॒त्मापि॑यन्तं॒ मा स्वधि॑तिस्त॒न्व॑ आ॒ ति॑ष्ठिपत्ते।
मा ते॑ गृ॒ध्नुर॑विश॒स्ताति॒हाय॑ छि॒द्रा गात्रा॑ण्य॒सिना॒ मिथू॑ कः ॥ २० ॥
न वा उ॑ ए॒तन्म्रि॑यसे॒ न रि॑ष्यसि दे॒वाँ इ॒देषि॑ प॒थिभिः॑ सु॒गेभिः॑।
हरी॑ ते॒ युञ्जा॒ पृष॑ती अभू॒तामु॒पास्था॒द्वाजी॑ धु॒रि रास॑भस्य ॥ २१ ॥
सु॒गव्यं॑ नो॒ वाजी॑ स्वश्व्यं॑ पुं॒सः पु॒त्राँ उ॒त वि॑श्वा॒पुषं॑ र॒यिम्।
अ॒ना॒गास्त्वं नो॒ अदि॑तिः कृणोतु क्ष॒त्रं नो॒ अश्वो॑ वनतां ह॒विष्मा॑न् ॥ २२ ॥

[१६३] त्रिषष्ट्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—दीर्घतमा ॥ देवता—अश्वोऽग्निः ॥ छन्दः—१, ६, ७, १३ त्रिष्टुप्; २ भुरिक्त्रिष्टुप्; ३, ८ विराट्त्रिष्टुप्; ४, १०, १२ भुरिक्पङ्क्तिः; ५, ९, ११ निचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१-३, ५-९, ११, १३ धैवतः; ४, १०, १२ पञ्चमः ॥

अथ एकादशो वर्गः ॥ ११ ॥

यदक्र॑न्दः प्रथ॒मं जाय॑मान उद्यन्त्स॒मुद्रा॒दुत॑ वा पु॒रीषा॑त्।
श्ये॒नस्य॑ प॒क्षा ह॑रि॒णस्य॑ बा॒हू उप॑स्तुत्यं महि॒ जा॒तं ते॑ अर्वन् ॥ १ ॥
य॒मेन॑ द॒त्तं त्रि॒त ए॑नमायु॒नगि॑न्द्र ए॒णं प्र॑थ॒मो अ॑ध्य॒तिष्ठ॑त्।
ग॒न्ध॒र्वो अ॑स्य रश॒नाम॑गृभ्णा॒त्सूर॒ादश्वं॑ वसवो॒ निर॑तष्ट ॥ २ ॥
अ॒सि॒ य॒मो अ॑स्यादि॒त्यो अ॑र्व॒न्नसि॑ त्रि॒तो गुह्ये॑न व्र॒तेन॑।
असि॒ सोमे॑न स॒मया॒ विपृ॑क्त आहु॒स्ते त्रीणि॑ दि॒वि ब॒न्धना॑नि ॥ ३ ॥
त्रीणि॑ त आहु॒र्दिवि॑ ब॒न्धना॑नि॒ त्रीण्य॒प्सु त्रीण्य॒न्तः स॑मु॒द्रे।
उ॒तेव॑ मे॒ वरु॑णश्छन्त्स्यर्वन् य॒त्रा त॑ आहुः॒ पर॑मं ज॒नित्र॑म् ॥ ४ ॥
इ॒मा ते॑ वाजिन्नव॒मार्जा॑नी॒मा शफा॑नां सनितु॒र्नि॑धा॒ना।
अत्रा॑ ते भ॒द्रा र॑श॒ना अ॑पश्यमृ॒तस्य॒ या अ॒भिर॑क्षन्ति॒ गोपा॑ ॥ ५ ॥

अथ द्वादशो वर्गः ॥ १२ ॥

आ॒त्मान॑ं ते॒ मन॑सा॒रादजा॑नाम॒वो दि॒वा प॒तय॑न्तं पत॒ङ्गम्।
शिरो॑ अपश्यं प॒थिभिः॑ सु॒गेभि॑रे॒णुभि॒र्जेह॑मानं पत॒त्रि ॥ ६ ॥
अत्रा॑ ते रू॒पमु॑त्त॒मम॑पश्यं॒ जिगी॑षमाणमि॒ष आ प॒दे गोः।
य॒दा ते॒ मर्तो॑ अनु॒ भोग॑मान॒ळादिद् ग्रसि॑ष्ठ ओष॒धीर॑जीगः ॥ ७ ॥
अनु॑ त्वा॒ रथो॒ अनु॑ मर्यो॑ अर्व॒न्ननु॒ गावो॑ऽनु॒ भगः॑ कु॒नीना॑म्।
अनु॒ व्राता॑स॒स्तव॑ स॒ख्यमी॑युरनु॑ दे॒वा म॑मिरे वी॒र्यं॑ ते ॥ ८ ॥
हिर॑ण्यशृङ्गोऽयो॑ अस्य॒ पादा॒ मनो॑जवा॒ अव॑र॒ इन्द्र॑ आसीद्।
दे॒वा इद॑स्य हवि॒रद्या॑माय॒न्यो अर्वन्तं॑ प्रथ॒मो अ॒ध्यति॑ष्ठत् ॥ ९ ॥
ई॒र्मान्ता॑सः॒ सिलि॑कमध्यमास॒ः सं शू॒राणा॑सो दि॒व्यासो॒ अत्याः॑।
हंसा॑इव श्रेणि॒शो य॑तन्ते॒ यदा॑क्षि॒षुर्दि॒व्यमज्म॒मश्वाः॑ ॥ १० ॥

अथ त्रयोदशो वर्गः ॥ १३ ॥

तव॒ शरी॑रं पतयि॒ष्ण्व॑र्वन् तव॑ चि॒त्तं वात॑इव॒ ध्रजी॑मान्।
तव॒ शृङ्गा॑णि॒ विष्ठि॑ता पुरु॒त्रार॑ण्येषु॒ जर्भु॑राणा चरन्ति ॥ ११ ॥
उप॒ प्रागा॒च्छस॑नं वा॒ज्यर्वी॑ दे॒वद्री॑चा॒ मन॑सा॒ दीध्या॑नः।
अ॒जः पु॒रो नी॑यते॒ नाभि॑र॒स्यानु॑ प॒श्चात्क॒वयो॑ यन्ति रे॒भाः ॥ १२ ॥
उप॒ प्रागा॑त्पर॒मं यत्स॒धस्थ॒मर्वाँ॑ अ॒च्छा॑ पि॒तर॑ं मा॒तर॑ं च।
अ॒द्या दे॒वाञ्जु॒ष्टत॑मो॒ हि ग॒म्या अथा॑ शास्ते दा॒शुषे॑ वा॒र्या॑णि ॥ १३ ॥

[१६४] चतुःषष्ट्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—दीर्घतमा ॥ देवता—१-४१ विश्वे देवाः; ४२ (पूर्वार्धस्य), ४५ वाक्; ४२ (उत्तरार्धस्य) आपः; ४३ (पूर्वार्धस्य) शकधूमः, (उत्तरार्धस्य) सोमः; ४४ अग्निः सूर्यो वायुश्च; ४६, ४७ सूर्यः; ४८ संवत्सरात्मा कालः; ४९ सरस्वती; ५० साध्याः; ५१ सूर्यः पर्जन्योऽग्नयो वा; ५२ सरस्वान् सूर्यो वा ॥ छन्दः—१, ९, २७, ३५, ४०, ५० विराट्त्रिष्टुप्; २, १०, १३, १६, १७, १९, २१, २४, २८, ३२, ५२ त्रिष्टुप्; ३-८, ११, १८, २६, ३१, ३३, ३४, ३७, ४३, ४६, ४७, ४९ निचृत्त्रिष्टुप्; १२, १५, २३ जगती; १४, ३९, ४१, ४४, ४५ भुरिक्त्रिष्टुप्; २० भुरिक्पङ्क्तिः; २२, २५, ४८ स्वराट्पङ्क्तिः; २९, ३६ निचृज्जगती; ३०, ३८ पङ्क्तिः; ४२ भुरिग्बृहती; ५१ विराडनुष्टुप् ॥ स्वरः—१-११, १३, १४, १६-१९, २१, २४, २६-२८, ३१-३५, ३७, ३९-४१, ४३-४७, ४९, ५१, ५२ धैवतः; १२, १५, २३, २९, ३६ निषादः; २०, २२, २५, ३० ३८, ४८ पञ्चमः; ४२ मध्यमः; ५१ गान्धारः ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अथ चतुर्दशो वर्गः ॥ १४ ॥

अ॒स्य वा॒मस्य॑ पलि॒तस्य॒ होतु॒स्तस्य॒ भ्राता॑ मध्य॒मो अ॒स्त्यश्नः॑।
तृ॒तीयो॒ भ्राता॑ घृ॒तपृ॑ष्ठो अ॒स्यात्रा॑पश्यं वि॒श्पतिं॑ स॒प्तपु॑त्रम् ॥ १ ॥
स॒प्त यु॑ञ्जन्ति॒ रथ॒मेक॑चक्र॒मेको॒ अश्वो॑ वहति स॒प्तना॑मा।
त्रि॒नाभि॑ च॒क्रम॒जर॑मन॒र्वं यत्रे॒मा विश्वा॒ भुव॒नाधि॑ त॒स्थुः ॥ २ ॥
इ॒मं रथ॒मधि॒ ये स॒प्त त॒स्थुः स॒प्तच॑क्रं स॒प्त व॑ह॒न्त्यश्वाः॑।
स॒प्त स्वसा॑रो अ॒भि सं न॑वन्ते॒ यत्र॒ गवां॒ निहि॑ता स॒प्त नाम॑ ॥ ३ ॥
को द॑दर्श प्रथ॒मं जाय॑मानमस्थ॒न्वन्तं॒ यद॑न॒स्था बिभ॑र्ति।
भूम्या॒ असु॒रसृ॑गा॒त्मा क्व॑ स्वि॒त्को वि॒द्वांस॒मुप॑ गा॒त्प्रष्टु॑मे॒तत् ॥ ४ ॥
पाकः॑ पृच्छामि॒ मन॒सावि॑जानन् दे॒वाना॑मे॒ना निहि॑ता प॒दानि॑।
व॒त्से ब॒ष्कयेऽधि॑ स॒प्त तन्तू॒न्वि त॑त्निरे क॒वय॒ ओत॒वा उ॑ ॥ ५ ॥

अथ पञ्चदशो वर्गः ॥ १५ ॥

अचि॑कित्वाञ्चिकि॒तुष॑श्चि॒दत्र॑ क॒वीन्पृ॑च्छामि वि॒द्मने॒ न वि॒द्वान्।
वि यस्त॒स्तम्भ॒ षळि॒मा रजां॑स्य॒जस्य॑ रू॒पे किमपि॑ स्वि॒देक॑म् ॥ ६ ॥
इ॒ह ब्र॑वीतु॒ य ईम॑ङ्ग वेदा॒स्य वा॒मस्य॒ निहि॑तं प॒दं वेः।
शी॒र्ष्णः क्षी॒रं दु॑ह्रते॒ गावो॑ अस्य व॒व्रिं वसा॑ना उद॒कं प॒दापुः॑ ॥ ७ ॥
मा॒ता पि॒तर॑मृ॒त आ ब॑भाज धी॒त्यग्रे॒ मन॑सा॒ सं हि ज॒ग्मे।
सा बी॑भ॒त्सुर्गर्भ॑रसा॒ निवि॑द्धा॒ नम॑स्वन्त॒ इदु॑पवा॒कमी॑युः ॥ ८ ॥
यु॒क्ता मा॒तासी॑द् धु॒रि दक्षि॑णाया॒ अति॑ष्ठ॒द् गर्भो॒ वृज॒नीष्व॒न्तः।
अमी॑मेद् व॒त्सो अनु॒ गाम॑पश्यद् विश्वरू॒प्यं॑ त्रि॒षु योज॑नेषु ॥ ९ ॥
ति॒स्रो मा॒तॄस्त्रीन्पि॒तॄन्बिभ्र॒देक॑ ऊ॒र्ध्वस्त॑स्थौ॒ नेमव॑ ग्लापयन्ति।
म॒न्त्रय॑न्ते दि॒वो अ॒मुष्य॑ पृ॒ष्ठे वि॑श्व॒विदं॒ वाच॒मवि॑श्वमिन्वाम् ॥ १० ॥

अथ षोडशो वर्गः ॥ १६ ॥

द्वाद॑शारं न॒हि तज्जरा॑य॒ वर्व॑र्ति च॒क्रं परि॒ द्यामृ॒तस्य॑।
आ पु॒त्रा अ॑ग्ने मिथु॒नासो॒ अत्र॑ स॒प्त श॒तानि॑ विंश॒तिश्च॑ तस्थुः ॥ ११ ॥
पञ्च॑पादं पि॒तरं॒ द्वाद॑शाकृतिं दि॒व आ॑हुः॒ परे॒ अर्धे॑पुरी॒षिण॑म्।
अथे॒मे अ॒न्य उप॑रे विचक्ष॒णं स॒प्तच॑क्रे॒ षळ॑र आहु॒रर्पि॑तम् ॥ १२ ॥
पञ्चा॑रे च॒क्रे प॑रि॒वर्त॑माने॒ तस्मि॒न्ना त॑स्थु॒र्भुव॑नानि॒ विश्वा॑।
तस्य॒ नाक्ष॑स्तप्यते॒ भूरि॑भारः स॒नादे॒व न शी॑र्यते॒ सना॑भिः ॥ १३ ॥
सने॑मि च॒क्रम॒जरं॒ वि वा॑वृत उत्ता॒नायां॒ दश॑ यु॒क्ता व॑हन्ति।
सूर्य॑स्य॒ चक्षू॒ रज॑सै॒त्यावृ॑तं॒ तस्मि॒न्नार्पि॑ता भुव॑नानि॒ विश्वा॑ ॥ १४ ॥

सा॒कं॒जानां॑ स॒प्तथ॑माहुरेक॒जं षळिद्य॒मा ऋष॑यो देव॒जा इति॑।
तेषा॑मि॒ष्टानि॒ विहि॑तानि धाम॒शः स्था॒त्रे रे॑जन्ते॒ विकृ॑तानि रूप॒शः ॥ १५ ॥

अथ सप्तदशो वर्गः ॥ १७ ॥

स्त्रियः॑ स॒तीस्ताँ उ॑ मे पुं॒स आ॑हुः॒ पश्य॑दक्ष॒ण्वान्न वि चे॑तद॒न्धः।
क॒विर्यः पु॒त्रः स ई॒मा चि॑केत॒ यस्ता वि॑जा॒नात्स पि॒तुष्पि॒तास॑त् ॥ १६ ॥
अ॒वः परे॑ण प॒र ए॒ना व॒रेण प॒दा व॒त्सं बिभ्र॑ती॒ गौरुद॑स्थात्।
सा क॒द्रीची॒ कं स्वि॒दर्धं॒ परा॑गा॒त् क्व॑ स्वित्सूते न॒हि यू॒थे अ॒न्तः ॥ १७ ॥
अ॒वः परे॑ण पि॒तरं॒ यो अ॑स्यानु॒वेद॑ प॒र ए॒नाव॑रेण।
क॒वी॒यमा॑नः॒ क इ॒ह प्र वो॑चद् दे॒वं मनः॑ कुतो॒ अधि॒ प्रजा॑तम् ॥ १८ ॥
ये अ॒र्वाञ्च॒स्ताँ उ॒ परा॑च आहु॒र्ये परा॑ञ्च॒स्ताँ उ॑ अ॒र्वाच॑ आहुः।
इन्द्र॑श्च॒ या च॒क्रथुः॑ सोम॒ तानि॑ धु॒रा न यु॒क्ता रज॑सो वहन्ति ॥ १९ ॥
द्वा सु॑प॒र्णा स॒युजा॒ सखा॑या समा॒नं वृ॒क्षं परि॑ षस्वजाते।
तयो॑र॒न्यः पिप्प॑लं स्वा॒द्वत्त्यन॑श्नन्न॒न्यो अ॒भि चा॑कशीति ॥ २० ॥

अथ अष्टादशो वर्गः ॥ १८ ॥

यत्रा॑ सु॒प॒र्णा अ॒मृत॑स्य भा॒गमनि॑मेषं वि॒दथा॑भि॒स्वर॑न्ति।
इ॒नो विश्व॑स्य॒ भुव॑नस्य गो॒पाः स मा॒ धीरः॒ पाक॒मत्रा वि॑वेश ॥ २१ ॥
यस्मि॑न् वृ॒क्षे म॒ध्वदः॑ सु॒प॒र्णा नि॑वि॒शन्ते॒ सुव॑ते॒ चाधि॒ विश्वे॑।
तस्येदा॑हुः॒ पिप्प॑लं स्वा॒द्वग्रे॒ तन्नोन्न॑श॒द्यः पि॒तरं॒ न वेद॑ ॥ २२ ॥
यद् गा॑य॒त्रे अधि॑ गाय॒त्रमाहि॑तं॒ त्रैष्टु॑भाद् वा॒ त्रैष्टु॑भं नि॒रत॑क्षत।
यद् वा॒ जग॒ज्जग॒त्याहि॑तं प॒दं य इत्तद् वि॒दुस्ते अ॑मृत॒त्वमा॑नशुः ॥ २३ ॥
गा॒य॒त्रेण॒ प्रति॑ मिमीते अ॒र्कम॒र्केण॒ साम॒ त्रैष्टु॑भेन वा॒कम्।
वा॒केन॑ वा॒कं द्वि॒पदा॒ चतु॑ष्पदा॒ऽक्षरे॑ण मिमते स॒प्त वाणीः॑ ॥ २४ ॥
जग॑ता॒ सिन्धुं॑ दि॒व्य॑स्तभायद्रथन्त॒रे सूर्यं॒ पर्यं॑ पश्यत्।
गा॒य॒त्रस्य॑ स॒मिध॑स्ति॒स्र आ॑हु॒स्ततो॑ म॒ह्ना प्र रि॑रिचे महि॒त्वा ॥ २५ ॥

अथ एकोनविंशो वर्गः ॥ १९ ॥

उप॑ ह्वये सु॒दुघां॑ धे॒नुमे॒तां सु॒हस्तो॑ गो॒धुगु॒त दो॑हदेनाम्।
श्रेष्ठं॑ स॒वं स॑वि॒ता सा॑विषन्नो॒ऽभी॑द्धो घ॒र्मस्तदु॒ षु प्र वो॑चम् ॥ २६ ॥
हि॒ङ्कृ॒ण्व॒ती व॑सु॒पत्नी॒ वसू॑नां व॒त्समि॒च्छन्ती॒ मन॑सा॒भ्यागा॑त्।
दु॒हाम॒श्विभ्यां॒ पयो॑ अ॒घ्न्येयं सा व॑र्धतां मह॒ते सौभ॑गाय ॥ २७ ॥
गौर॑मीमे॒दनु॑ व॒त्सं मि॒षन्तं॑ मू॒र्धानं॒ हिङ्ङ॑कृणो॒न्मात॒वा उ॑।
सृक्वा॑णं घ॒र्मम॒भि वा॑वशा॒ना मिमा॑ति मा॒युं पय॑ते॒ पयो॑भिः ॥ २८ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अयं स शिङ्क्ते येन गौरभीवृता मिमाति मायुं ध्वसनावधि श्रिता।
सा चित्तिभिर्नि हि चकार मर्त्यं विद्युद्भवन्ती प्रति वव्रिमौहत॥ २९॥
अनच्छये तुरगातु जीवमेजद् ध्रुवं मध्य आ पस्त्यानाम्।
जीवो मृतस्य चरति स्वधाभिरमर्त्यो मर्त्येना सयोनिः॥ ३०॥

अथ विंशो वर्गः॥ २०॥

अपश्यं गोपामनिपद्यमानमा च परा च पथिभिश्चरन्तम्।
स सध्रीचीः स विषूचीर्वसान आ वरीवर्ति भुवनेष्वन्तः॥ ३१॥
य ईं चकार न सो अस्य वेद य ईं ददर्श हिरुगिन्नु तस्मात्।
स मातुर्योना परिवीतो अन्तर्बहुप्रजा निर्ऋतिमा विवेश॥ ३२॥
द्यौर्मे पिता जनिता नाभिरत्र बन्धुर्मे माता पृथिवी महीयम्।
उत्तानयोश्चम्वोर्योनिरन्तरत्रा पिता दुहितुर्गर्भमाधात्॥ ३३॥
पृच्छामि त्वा परमन्तं पृथिव्या पृच्छामि यत्र भुवनस्य नाभिः।
पृच्छामि त्वा वृष्णो अश्वस्य रेतः पृच्छामि वाचः परमं व्योम॥ ३४॥
इयं वेदिः परो अन्तः पृथिव्याः अयं यज्ञो भुवनस्य नाभिः।
अयं सोमो वृष्णो अश्वस्य रेतो ब्रह्मायं वाचः परमं व्योम॥ ३५॥

अथ एकविंशो वर्गः॥ २१॥

सप्तार्धगर्भा भुवनस्य रेतो विष्णोस्तिष्ठन्ति प्रदिशा विधर्मणि।
ते धीतिभिर्मनसा ते विपश्चितः परिभुवः परि भवन्ति विश्वतः॥ ३६॥
न वि जानामि यदिवेदमस्मि निण्यः संनद्धो मनसा चरामि।
यदा मागन् प्रथमजा ऋतस्यादिद् वाचो अश्नुवे भागमस्याः॥ ३७॥
अपाङ् प्राङेति स्वधया गृभीतोऽमर्त्यो मर्त्येना सयोनिः।
ता शश्वन्ता विषूचीना वियन्ता न्यन्यं चिक्युर्न नि चिक्युरन्यम्॥ ३८॥
ऋचो अक्षरे परमे व्योमन्यस्मिन् देवा अधि विश्वे निषेदुः।
यस्तन्न वेद किमृचा करिष्यति य इत्तद्विदुस्त इमे समासते॥ ३९॥
सूयवसाद्भगवती हि भूया अथो वयं भगवन्तः स्याम।
अद्धि तृणमघ्न्ये विश्वदानीं पिब शुद्धमुदकमाचरन्ती॥ ४०॥

अथ द्वाविंशो वर्गः॥ २२॥

गौरीर्मिमाय सलिलानि तक्षत्येकपदी द्विपदी सा चतुष्पदी।
अष्टापदी नवपदी बभूवुषी सहस्राक्षरा परमे व्योमन्॥ ४१॥
तस्याः समुद्रा अधि वि क्षरन्ति तेन जीवन्ति प्रदिशश्चतस्रः।
ततः क्षरत्यक्षरं तद्विश्वमुप जीवति॥ ४२॥

शकमयं धूममारादपश्यं विषूवता पर एनावरेण।
उक्षाणं पृश्निमपचन्त वीरास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्॥ ४३॥
त्रयः केशिन ऋतुथा वि चक्षते संवत्सरे वपत एक एषाम्।
विश्वमेको अभि चष्टे शचीभिर्ध्राजिरेकस्य ददृशे न रूपम्॥ ४४॥
चत्वारि वाक्परिमिता पदानि तानि विदुर्ब्राह्मणा ये मनीषिणः।
गुहा त्रीणि निहिता नेङ्गयन्ति तुरीयं वाचो मनुष्या वदन्ति॥ ४५॥
इन्द्रं मित्रं वरुणमग्निमाहुरथो दिव्यः स सुपर्णो गरुत्मान्।
एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्त्यग्निं यमं मातरिश्वानमाहुः॥ ४६॥

अथ त्रयोविंशो वर्गः॥ २३॥

कृष्णं नियानं हरयः सुपर्णा अपो वसाना दिवमुत्पतन्ति।
त आववृत्रन्त्सदनादृतस्यादिद् घृतेन पृथिवी व्युद्यते॥ ४७॥
द्वादश प्रधयश्चक्रमेकं त्रीणि नभ्यानि क उ तच्चिकेत।
तस्मिन्त्साकं त्रिशता न शङ्कवोऽर्पिताः षष्टिर्न चलाचलासः॥ ४८॥
यस्ते स्तनः शशयो यो मयोभूर्येन विश्वा पुष्यसि वार्याणि।
यो रत्नधा वसुविदः सुदत्रः सरस्वति तमिह धातवे कः॥ ४९॥
यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।
ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः॥ ५०॥
समानमेतदुदकमुच्चैत्यव चाहभिः।
भूमिं पर्जन्या जिन्वन्ति दिवं जिन्वन्त्यग्नयः॥ ५१॥
दिव्यं सुपर्णं वायसं बृहन्तमपां गर्भं दर्शतमोषधीनाम्।
अभीपतो वृष्टिभिस्तर्पयन्तं सरस्वन्तमवसे जोहवीमि॥ ५२॥

त्रयोविंशोऽनुवाकः [१६५] पञ्चषष्ट्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—अगस्त्यः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१, ३-५, ११, १२ विराट्त्रिष्टुप्; २, ८, ९ त्रिष्टुप्; ६, ७, १०, १४ भुरिक्पङ्क्तिः; १३ निचृत्त्रिष्टुप्; १५ पङ्क्तिः॥ स्वरः—१-५, ८, ९, ११-१३ धैवतः; ६, ७, १०, १४, १५ पञ्चमः॥

अथ चतुर्विंशो वर्गः॥ २४॥

कया शुभा सवयसः सनीळाः समान्या मरुतः सं मिमिक्षुः।
कया मती कुत एतास एतेऽचुच्यवुः शुष्मं वृषणो वसूया॥ १॥
कस्य ब्रह्माणि जुजुषुर्युवानः को अध्वरे मरुत आ ववर्त।
यज्ञैर्वा नाईड्य ऋजतो अन्तरिक्षे केन महा मनसा रीरमाम॥ २॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कुतस्त्वमिन्द्र माहिनः सन्नेको यासि सत्पते किं त इत्था।
सं पृच्छसे समराणः शुभानैर्वोचेस्तन्नो हरिवो यत्ते अस्मे॥ ३॥
ब्रह्माणि मे मतयः शं सुतासः शुष्मं इयर्ति प्रभृतो मे अद्रिः।
आ शासते प्रति हर्यन्त्युक्थेमा हरी वहतस्ता नो अच्छ॥ ४॥
अतो वयमन्तमेभिर्युजानाः स्वक्षत्रेभिस्तन्वः शुम्भमानाः।
महोभिरेताँ उप युज्महे त्विन्द्र स्वधामनु हि नो बभूथ॥ ५॥

अथ पञ्चविंशो वर्गः॥ २५॥

क्व स्या वो मरुतः स्वधासीद्यन्मामेकं समधत्ताहिहत्ये।
अहं ह्यु ग्रस्तविषस्तुविष्मान्विश्वस्य शत्रोरनमं वधस्नैः॥ ६॥
भूरिं चकर्थ युज्येभिरस्मे समानेभिर्वृषभ पौंस्येभिः।
भूरीणि हि कृणवामा शविष्ठेन्द्र क्रत्वा मरुतो यद्वशाम॥ ७॥
वधीं वृत्रं मरुत इन्द्रियेण स्वेन भामेन तविषो बभूवान्।
अहमेता मनवे विश्वश्चन्द्राः सुगा अपश्चकर वज्रबाहुः॥ ८॥
अनुत्तमा ते मघवन्नकिर्नु न त्वावाँ अस्ति देवता विदानः।
न जायमानो नशते न जातो यानि करिष्या कृणुहि प्रवृद्ध॥ ९॥
एकस्य चिन्मे विभ्वस्त्वोजो यो नु दधृष्वान्कृणवै मनीषा।
अहं ह्यु ग्रो मरुतो विदानो यानि च्यवमिन्द्र ईदीश एषाम्॥ १०॥

अथ षड्विंशो वर्गः॥ २६॥

अमन्दन्मा मरुतः स्तोमो अत्र यन्मे नरः श्रुत्यं ब्रह्म चक्र।
इन्द्राय वृष्णे सुमखाय मह्यं सख्ये सखायस्तन्वे तनूभिः॥ ११॥
एवेदेते प्रति मा रोचमाना अनेद्यः श्रव एषो दधानाः।
संचक्ष्या मरुतश्चन्द्रवर्णा अच्छान्त मे छदयाथा च नूनम्॥ १२॥
को न्वत्र मरुतो मामहे वः प्र यातन सखीँरच्छा सखायः।
मन्मानि चित्रा अपिवातयन्त एषां भूत नवेदा म ऋतानाम्॥ १३॥
आ यद्वस्याहुवसे न कारुरस्माञ्चक्रे मान्यस्य मेधा।
ओ षु वर्त मरुतो विप्रमच्छेमा ब्रह्माणि जरिता वो अर्चत्॥ १४॥
एष वः स्तोमो मरुत इयं गीर्मान्दार्यस्य मान्यस्य कारोः।
एषा यासीष्ट तन्वे वयाँ विद्यामेषं वृजनं जीरदानुम्॥ १५॥

इति द्वितीयाष्टके तृतीयोऽध्यायः॥

अथ चतुर्थोऽध्यायः

[१६६] षट्षष्ट्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—मैत्रावरुणोऽगस्त्यः॥ देवता—मरुतः॥ छन्दः—१, २, ८ जगती; ३, ५, ६, १२, १३ निचृज्जगती; ४ विराड्जगती; ७, ९, १० भुरिक्त्रिष्टुप्; ११ विराट् त्रिष्टुप्; १४ त्रिष्टुप्; १५ पङ्क्तिः॥ स्वरः—१-६, ८, १२, १३ निषादः; ७, ९-११, १४ धैवतः; १५ पञ्चमः॥

अथ प्रथमो वर्गः॥ १॥

तन्नु वोचाम रभसाय जन्मने पूर्वं महित्वं वृषभस्य केतवे।
ऐधेव यामन्मरुतस्तुविष्वणो युधेव शक्रास्तविषाणि कर्तन॥ १॥
नित्यं न सूनुं मधु बिभ्रत उप क्रीळन्ति क्रीळा विदथेषु घृष्वयः।
नक्षन्ति रुद्रा अवसा नमस्विनं न मर्धन्ति स्वतवसो हविष्कृतम्॥ २॥
यस्मा ऊमासो अमृता अरासत रायस्पोषं च हविषा ददाशुषे।
उक्षन्त्यस्मै मरुतो हिताइव पुरू रजांसि पयसा मयोभुवः॥ ३॥
आ ये रजांसि तविषीभिरव्यत प्र व एवासः स्वयतासो अध्रजन्।
भयन्ते विश्वा भुवनानि हर्म्या चित्रो वो यामः प्रयतास्वृष्टिषु॥ ४॥
यत्त्वेषयामा नदयन्त पर्वतान्दिवो वा पृष्ठं नर्या अचुच्यवुः।
विश्वो वो अज्मन्भयते वनस्पतीं रथीयन्तीव प्र जिहीत ओषधिः॥ ५॥

अथ द्वितीयो वर्गः॥ २॥

यूयं न उग्रा मरुतः सुचेतुनारिष्टग्रामाः सुमतिं पिपर्तन।
यत्रा वो दिद्युद्ददति क्रिविर्दती रिणाति पश्वः सुधितेव बर्हणा॥ ६॥
प्र स्कम्भदेष्णा अनवभ्रराधसोऽलातृणासो विदथेषु सुष्टुताः।
अर्चन्त्यर्कं मदिरस्य पीतये विदुर्वीरस्य प्रथमानि पौंस्या॥ ७॥
शतभुजिभिस्तमभिहुतेरघात्पूर्भी रक्षता मरुतो यमावत।
जनं यमुग्रास्तवसो विरप्शिनः पाथना शंसात्तनयस्य पुष्टिषु॥ ८॥
विश्वानि भद्रा मरुतो रथेषु वो मिथस्पृध्येव तविषाण्याहिता।
अंसेष्वा वः प्रपथेषु खादयोऽक्षो वश्चक्रा समया वि वावृते॥ ९॥
भूरीणि भद्रा नर्येषु बाहुषु वक्षःसु रुक्मा रभसासो अञ्जयः।
अंसेष्वेताः पविषु क्षुरा अधि वयो न पक्षान्व्यनु श्रियो धिरे॥ १०॥

अथ तृतीयो वर्गः॥ ३॥

महान्तो महा विभ्वो विभूतयो दूरेदृशो ये दिव्याइव स्तृभिः।
मन्द्राः सुजिह्वाः स्वरितार आसभिः संमिश्ला इन्द्रे मरुतः परिष्टुभः॥ ११॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तद्वः सुजाता मरुतो महित्वनं दीर्घं वो दात्रमदितेरिव व्रतम्।
इन्द्रश्चन त्यजसा वि हुणाति तज्जनाय यस्मै सुकृते अराध्वम्॥ १२॥
तद्वो जामित्वं मरुतः परे युगे पुरू यच्छंसममृतासु आवत।
अया धिया मनवे श्रुष्टिमाव्यां साकं नरो दंसनैरा चिकित्रिरे॥ १३॥
येन दीर्घं मरुतः शूशवाम युष्माकेन परीणसा तुरासः।
आ यत्ततनन्वृजने जनास एभिर्यज्ञेभिस्तदभीष्टिमश्याम्॥ १४॥
एष वः स्तोमो मरुत इयं गीर्मान्दार्यस्य मान्यस्य कारोः।
एषा यासीष्ट तन्वे वयां विद्यामेषं वृजनं जीरदानुम्॥ १५॥

[१६७] सप्तषष्ट्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—अगस्त्यः॥ देवता—इन्द्रो मरुच्च॥ छन्दः—१, ४, ५ भुरिक्पङ्क्तिः; २, ३, ६, ८ निचृत्त्रिष्टुप्; ७, ९ स्वराट्पङ्क्तिः; १० निचृत्पङ्क्तिः; ११ पङ्क्तिः॥
स्वरः—१, ४, ५, ७, ९-११ पञ्चमः; २, ३, ६, ८ धैवतः॥

अथ चतुर्थो वर्गः॥ ४॥

सहस्रं त इन्द्रोतयो नः सहस्रमिषो हरिवो गूर्ततमाः।
सहस्रं रायो मादयध्यै सहस्रिणो उप नो यन्तु वाजाः॥ १॥
आ नोऽवोभिर्मरुतो यान्त्वच्छ ज्येष्ठेभिर्वा बृहद्दिवैः सुमायाः।
अध यदेषां नियुतः परमाः समुद्रस्य चिद्धनयन्त पारे॥ २॥
मिम्यक्ष येषु सुधिता घृताची हिरण्यनिर्णिगुपरा न ऋष्टिः।
गुहा चरन्ती मनुषो न योषा सभावती विदथ्येव सं वाक्॥ ३॥
परा शुभ्रा अयासो यव्या साधारण्येव मरुतो मिमिक्षुः।
न रोदसी अप नुदन्त घोरा जुषन्त वृधं सख्याय देवाः॥ ४॥
जोष्ट्यदीमसुर्यं सचध्यै विषितस्तुका रोदसी नृमणाः।
आ सूर्येव विधतो रथं गात्त्वेषप्रतीका नभसो नेत्या॥ ५॥

अथ पञ्चमो वर्गः॥ ५॥

आस्थापयन्त युवतिं युवानः शुभे निमिश्लां विदथेषु पज्राम्।
अर्को यद्वो मरुतो हविष्मान्गायद्वाथं सुतसोमो दुवस्यन्॥ ६॥
प्र तं विवक्मि वक्ष्यो य एषां मरुतां महिमा सत्यो अस्ति।
सचा यदीं वृषमणा अहुंयुः स्थिरा चिज्जनीर्वहते सुभागाः॥ ७॥
पान्ति मित्रावरुणावद्याच्यायत ईमर्यमो अप्रशस्तान्।
उत च्यवन्ते अच्युता ध्रुवाणि वावृध ईं मरुतो दातिवारः॥ ८॥
नहि नु वो मरुतो अन्त्यस्मे आरात्ताच्चिच्छवसो अन्तमापुः।
ते धृष्णुना शवसा शूशुवांसोऽर्णो न द्वेषो धृषता परि ष्टुः॥ ९॥
वयमद्येन्द्रस्य प्रेष्ठा वयं श्वो वोचेमहि समर्ये।
वयं पुरा महि च नो अनु द्यून्तन्न ऋभुक्षा नरामनु ष्यात्॥ १०॥
एष वः स्तोमो मरुत इयं गीर्मान्दार्यस्य मान्यस्य कारोः।
एषा यासीष्ट तन्वे वयां विद्यामेषं वृजनं जीरदानुम्॥ ११॥

[१६८] अष्टषष्ट्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—अगस्त्यः॥ देवता—मरुतः॥ छन्दः—१, ४ निचृज्जगती; २, ५ विराट्त्रिष्टुप्; ३ स्वराट्त्रिष्टुप्; ६, ७ भुरिक्त्रिष्टुप्; ८ त्रिष्टुप्; ९ निचृत्त्रिष्टुप्; १० पङ्क्तिः॥
स्वरः—१, ४ निषादः; २, ३, ५-९ धैवतः; १० पञ्चमः॥

अथ षष्ठो वर्गः॥ ६॥

यज्ञायज्ञा वः समना तुतुर्वणिर्धियंधियं वो देवया उ दधिध्वे।
आ वोऽर्वाचः सुविताय रोदस्योर्महे ववृत्यामवसे सुवृक्तिभिः॥ १॥
वव्रासो न ये स्वजाः स्वतवस इषं स्वरभिजायन्त धूतयः।
सहस्त्रियासो अपां नोर्मय आसा गावो वन्द्यासो नोक्षणः॥ २॥
सोमासो न ये सुतास्तृप्तांशवो हृत्सु पीतासो दुवसो नासते।
ऐषामंसेषु रम्भिणीव रारभे हस्तेषु खादिश्च कृतिश्च सं दधे॥ ३॥
अव स्वयुक्ता दिव आ वृथा ययुरमर्त्याः कशया चोदत त्मना।
अरेणवस्तुविजाता अचुच्यवुर्दृळ्हानि चिन्मरुतो भ्राजदृष्टयः॥ ४॥
को वोऽन्तमँरुत ऋष्टिविद्युतो रेजति त्मना हन्वेव जिह्वया।
धन्वच्युत इषां न यामनि पुरुप्रैषा अहन्योऽ३ नैतशः॥ ५॥

अथ सप्तमो वर्गः॥ ७॥

कं स्विदस्य रजसो महस्परं क्रावरं मरुतो यस्मिन्नायय।
यच्च्यावयथ विथुरेव संहितं व्यद्रिणा पतथ त्वेषमर्णवम्॥ ६॥
सातिर्न वोऽमवती स्वर्वती त्वेषा विपाका मरुतः पिपिष्वती।
भद्रा वो रातिः पृणतो न दक्षिणा पृथुज्रयी असुर्येव जञ्जती॥ ७॥
प्रति ष्टोभन्ति सिन्धवः पविभ्यो यदभ्रियां वाचमुदीरयन्ति।
अव स्मयन्त विद्युतः पृथिव्यां यदी घृतं मरुतः प्रुष्णुवन्ति॥ ८॥
असृत पृश्निर्महते रणाय त्वेषमयासां मरुतामनीकम्।
ते सप्सरासोऽजनयन्ताभ्वमादित्स्वधामिषिरां पर्यपश्यन्॥ ९॥
एष वः स्तोमो मरुत इयं गीर्मान्दार्यस्य मान्यस्य कारोः।
एषा यासीष्ट तन्वे वयां विद्यामेषं वृजनं जीरदानुम्॥ १०॥

CC-0. Vasishtha Tripathi Kamini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

[१६९] एकोनसप्तत्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—अगस्त्यः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१, ३ भुरिक्पङ्क्तिः; २ पङ्क्तिः; ४ ब्राह्म्युष्णिक्; ५, ६ स्वराट्पङ्क्तिः; ७, ८ निचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१-३, ५, ६ पञ्चमः; ४ ऋषभः; ७, ८ धैवतः ॥

अथ अष्टमो वर्गः ॥ ८ ॥

महश्चित्त्वमिन्द्र यत एतान्महश्चिदसि त्यजसो वरूता।
स नो वेधो मरुतां चिकित्वान्त्सुम्ना वनुष्व तव हि प्रेष्ठा ॥ १ ॥
अयुज्रन्त इन्द्र विश्वकृष्टीर्विदानासो निष्षिधो मर्त्यत्रा।
मरुतां पृत्सुतिर्हासमाना स्वर्मीळ्हस्य प्रधनस्य सातौ ॥ २ ॥
अभ्यक्सा त इन्द्र ऋष्टिरस्मे सनेम्यभ्वं मरुतो जुनन्ति।
अग्निश्चिद्धि ष्मातसे शुशुक्वानापो न द्वीपं दधति प्रयांसि ॥ ३ ॥
त्वं तू न इन्द्र तं रयिं दा ओजिष्ठया दक्षिणयेव रातिम्।
स्तुतश्च यास्ते चकनन्त वायोः स्तनं न मध्वः पीपयन्त वाजैः ॥ ४ ॥
त्वे रायं इन्द्र तोशतमाः प्रणेतारः कस्य चिदृतायोः।
ते षु णो मरुतो मृळयन्तु ये स्मा पुरा गातूयन्तीव देवाः ॥ ५ ॥

अथ नवमो वर्गः ॥ ९ ॥

प्रति प्र याहीन्द्र मीळ्हुषो नृन्महः पार्थिवे सदने यतस्व।
अध यदेषां पृथुबुध्नास एतास्तीर्थे नार्यः पौंस्यानि तस्थुः ॥ ६ ॥
प्रति घोराणामेतानामयासां मरुतां शृण्व आयतामुपब्दिः।
ये मर्त्यं पृतनायन्तमूमैर्ऋणावानं न पतयन्त सर्गैः ॥ ७ ॥
त्वं मानेभ्य इन्द्र विश्वजन्या रदा मरुद्भिः शुरुधो गोअग्राः।
स्तवानेभिः स्तवसे देव देवैर्विद्यामेषं वृजनं जीरदानुम् ॥ ८ ॥

[१७०] सप्तत्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—अगस्त्यः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१ स्वराडनुष्टुप्; २ अनुष्टुप्; ३ विराडनुष्टुप्; ४ निचृदनुष्टुप्; ५ भुरिक्पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१-४ गान्धारः; ५ पञ्चमः ॥

अथ दशमो वर्गः ॥ १० ॥

न नूनमस्ति नो श्वः कस्तद्वेद यदद्भुतम्।
अन्यस्य चित्तमभि संचरेण्यमुताधीतं वि नश्यति ॥ १ ॥
किं न इन्द्र जिघांससि भ्रातरो मरुतस्तव।
तेभिः कल्पस्व साधुया मा नः समरणे वधीः ॥ २ ॥
किं नो भ्रातरगस्त्य सखा सन्नति मन्यसे।
विद्मा हि ते यथा मनोऽस्मभ्यमिन्न दित्ससि ॥ ३ ॥
अरं कृण्वन्तु वेदिं समग्निमिन्धतां पुरः।
तत्रामृतस्य चेतनं यज्ञं ते तनवावहै ॥ ४ ॥
त्वमीशिषे वसुपते वसूनां त्वं मित्राणां मित्रपते धेष्ठः।
इन्द्र त्वं मरुद्भिः सं वदस्वाध प्राशान ऋतुथा हवींषि ॥ ५ ॥

[१७१] एकसप्तत्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—अगस्त्यः ॥ देवता—मरुतः ॥ छन्दः—१, ५ निचृत्त्रिष्टुप्; २ त्रिष्टुप्; ४, ६ विराट्त्रिष्टुप्; ३ भुरिक्पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१, २, ४-६ धैवतः; ३ पञ्चमः ॥

अथ एकादशो वर्गः ॥ ११ ॥

प्रति व एना नमसाहमेमि सूक्तेन भिक्षे सुमतिं तुराणाम्।
रराणता मरुतो वेद्याभिर्नि हेळो धत्त वि मुचध्वमश्वान् ॥ १ ॥
एष वः स्तोमो मरुतो नमस्वान्हृदा तष्टो मनसा धायि देवाः।
उपेमा यात मनसा जुषाणा यूयं हि ष्ठा नमस इद् वृधासः ॥ २ ॥
स्तुतासो नो मरुतो मृळयन्तूत स्तुतो मघवा शंभविष्ठः।
ऊर्ध्वा नः सन्तु कोम्या वनान्यहानि विश्वा मरुतो जिगीषा ॥ ३ ॥
अस्मादहं तविषादीषमाण इन्द्राद्भिया मरुतो रेजमानः।
युष्मभ्यं हव्या निशितान्यासन्तान्यारे चकृमा मृळता नः ॥ ४ ॥
येन मानासश्चितयन्त उस्रा व्युष्टिषु शवसा शश्वतीनाम्।
स नो मरुद्भिर्वृषभ श्रवो धा उग्र उग्रेभिः स्थविरः सहोदाः ॥ ५ ॥
त्वं पाहीन्द्र सहीयसो नृन्भवा मरुद्भिरवयातहेळाः।
सुप्रकेतेभिः सासहिर्दधानो विद्यामेषं वृजनं जीरदानुम् ॥ ६ ॥

[१७२] द्विसप्तत्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—अगस्त्यः ॥ देवता—मरुतः ॥ छन्दः—१ विराड्गायत्री; २, ३ गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथ द्वादशो वर्गः ॥ १२ ॥

चित्रो वोऽस्तु यामश्चित्र ऊती सुदानवः। मरुतो अहिभानवः ॥ १ ॥
आरे सा वः सुदानवो मरुत ऋञ्जती शरुः। आरे अश्मा यमस्यथ ॥ २ ॥
तृणस्कन्दस्य नु विशः परि वृङ्क्त सुदानवः। ऊर्ध्वान्नः कर्त जीवसे ॥ ३ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

[१७३] त्रिसप्तत्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—अगस्त्यः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१, ५, ११ पङ्क्तिः; २, ८ विराट्त्रिष्टुप्; ३ त्रिष्टुप्; ४ बृहती; ६, ९, १०, १२ भुरिक्पङ्क्तिः; ७, १३ निचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१, ५, ६, ९, १०-१२ पञ्चमः; २, ३, ७, ८, १३ धैवतः; ४ मध्यमः ॥

अथ त्रयोदशो वर्गः ॥ १३ ॥

गाय॒त्साम॑ नभ॒न्यं१॒॑ यथा॒ वेरर्चा॑म॒ तद्वा॑वृधा॒नं स्व॑र्वत्।
गावो॑ धे॒नवो॑ ब॒र्हिष्यद॑ब्धा॒ आ यत्स॒द्मानं॑ दि॒व्यं विवा॑सान् ॥ १ ॥
अर्च॒द् वृषा॒ वृष॑भिः॒ स्वेदु॑हव्यैर्मृ॒गो नाश्नो॒ अति॒ यज्जु॑गु॒र्यात्।
प्र म॑न्द॒युर्म॒नां गू॑र्त॒ होता॒ भर॑ते॒ मर्यो॑ मिथु॒ना यज॑त्रः ॥ २ ॥
नक्ष॒द्धोता॒ परि॒ सद्म॑ मि॒ता यन्भर॒द्गर्भ॒मा श॒रदः॑ पृथि॒व्याः।
क्रन्द॒दश्वो॒ नय॑मानो रु॒वद्गौर॒न्तर्दू॒तो न रोद॑सी चर॒द्वाक् ॥ ३ ॥
ता क॒र्माष॑तरास्मै॒ प्र च्यौ॒त्नानि॑ देव॒यन्तो॑ भरन्ते ।
जुजो॑ष॒दिन्द्रो॑ द॒स्मव॑र्चा॒ नास॑त्येव॒ सुग्म्यो॑ रथे॒ष्ठाः ॥ ४ ॥
तमु॑ ष्टु॒हीन्द्रं॒ यो ह॒ सत्वा॒ यः शूरो॑ म॒घवा॒ यो र॑थे॒ष्ठाः ।
प्र॒ती॒चश्चि॒द्योधी॑या॒न्वृष॑ण्वान्वव॒व्रुष॑श्चि॒त्तम॑सो विह॒न्ता ॥ ५ ॥

अथ चतुर्दशो वर्गः ॥ १४ ॥

प्र यदि॒त्था म॑हि॒ना नृभ्यो॒ अस्त्यरं॒ रोद॑सी क॒क्ष्ये॒३॒॑ नास्मै॑।
सं वि॑व्य॒ इन्द्रो॑ वृ॒जनं॒ न भूमा॒ भर्ति॑ स्व॒धावाँ॑ ओप॒शमि॑व॒ द्याम् ॥ ६ ॥
स॒मत्सु॑ त्वा शूर स॒तामु॑रा॒णं प्र॑प॒थिन्त॑मं परितंस॒यध्यै॑।
स॒जोष॑स॒ इन्द्रं॒ मदे॑ क्षो॒णीः सू॒रिं चि॒द्ये अ॑नु॒मद॑न्ति॒ वाजैः॑ ॥ ७ ॥
ए॒वा हि ते॒ शं सव॑ना समु॒द्र आपो॒ यत्त॑ आ॒सु मद॑न्ति दे॒वीः।
विश्वा॑ ते॒ अनु॒ जोष्या॑ भू॒द् गौः सू॒रीँश्चि॒द्यदि॑ धि॒षा वेषि॒ जना॑न् ॥ ८ ॥
असा॑म॒ यथा॑ सुष॒खाय॑ एन स्वभि॒ष्टयो॑ न॒रां न शंसैः॑।
अस॒द्यथा॑ न॒ इन्द्रो॑ वन्दने॒ष्ठास्तु॒रो न कर्म॒ नय॑मान उ॒क्था ॥ ९ ॥
विष्प॑र्धसो न॒रां न शंसै॑र॒स्माका॑स॒दिन्द्रो॒ वज्र॑हस्तः ।
मि॒त्रा॒युवो॒ न पूर्प॑तिं॒ सुशि॑ष्टौ मध्या॒युव॒ उप॑ शिक्षन्ति य॒ज्ञैः ॥ १० ॥

अथ पञ्चदशो वर्गः ॥ १५ ॥

य॒ज्ञो हि ष्मेन्द्रं॒ कश्चि॑दृ॒न्धञ्जु॑हुरा॒णश्चि॒न्मन॑सा परि॒यन्।
ती॒र्थे नाच्छा॑ तातृषा॒णमोको॑ दी॒र्घो न सि॒ध्रमा कृ॑णो॒त्यध्वा॑ ॥ ११ ॥
मो षू ण॑ इ॒न्द्रात्र॑ पृ॒त्सु दे॒वैरस्ति॒ हि ष्मा॑ ते शुष्मिन्नव॒याः।
म॒हश्चि॒द्यस्य॑ मी॒ळ्हुषो॑ य॒व्या ह॒विष्म॑तो म॒रुतो॒ वन्द॑ते॒ गीः ॥ १२ ॥

ए॒ष स्तोम॑ इन्द्र॒ तुभ्य॑म॒स्मे ए॒तेन॑ गा॒तुं ह॑रिवो विदो नः।
आ नो॑ ववृत्याः सुवि॒ताय॑ देव वि॒द्यामे॒षं वृ॒जनं॑ जी॒रदा॑नुम् ॥ १३ ॥

[१७४] चतुःसप्तत्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—अगस्त्यः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१ निचृत्पङ्क्तिः; २, ३, ६, ८, १० भुरिक्पङ्क्तिः; ४ स्वराट्पङ्क्तिः; ५, ७, ९ पङ्क्तिः ॥ स्वरः—पञ्चमः ॥

अथ षोडशो वर्गः ॥ १६ ॥

त्वं राजे॑न्द्र॒ ये च॑ दे॒वा रक्षा॒ नॄन्पा॒ह्य॑सुर॒ त्वम॒स्मान्।
त्वं सत्प॑तिर्म॒घवा॑ न॒स्तरु॑त्र॒स्त्वं स॒त्यो वस॑वानः सहो॒दाः ॥ १ ॥
दनो॒ विश॑ इन्द्र मृ॒ध्रवा॑चः स॒प्त यत्पुरः॒ शर्म॒ शार॑दी॒र्दर्त्।
ऋ॒णोर॒पो अ॑नव॒द्यार्णा॒ यूने॑ वृ॒त्रं पु॑रु॒कुत्सा॑य रन्धीः ॥ २ ॥
अजा॒ वृत॑ इन्द्र॒ शूर॑पत्नी॒र्द्यां च॒ येभिः॑ पुरुहूत नू॒नम्।
रक्षो॑ अ॒ग्निम॒शुषं॒ तूर्व॑याणं सिं॒हो न दमे॒ अपां॑सि॒ वस्तोः॑ ॥ ३ ॥
शेष॒न्नु त इ॑न्द्र॒ सस्मि॒न्योनौ॒ प्रश॑स्तये॒ पवी॑रवस्य म॒ह्ना।
सृ॒जदर्णां॒स्यव॒ यद्यु॒धा गास्तिष्ठ॒द्धरी॑ धृष॒ता मृ॑ष्ट॒ वाजा॑न् ॥ ४ ॥
वह॒ कुत्स॑मिन्द्र॒ यस्मि॑ञ्चा॒कन्त्स्यू॑म॒न्यू ऋ॒ज्रा वात॒स्याश्वा॑।
प्र सूर॑श्च॒क्रं वृ॑हताद॒भीके॒ऽभि स्पृधो॑ यासिष॒द्वज्र॑बाहुः ॥ ५ ॥

अथ सप्तदशो वर्गः ॥ १७ ॥

ज॒घ॒न्वाँ इ॑न्द्र मि॒त्रेरू॑ञ्चो॒दप्र॑वृद्धो हरिवो॒ अदा॑शून् ।
प्र ये पश्य॑न्नर्य॒मणं॒ सचा॒योस्त्वया॑ शू॒र्ता वह॑माना॒ अप॑त्यम् ॥ ६ ॥
रप॑त्क॒विरि॑न्द्रा॒र्कसा॑तौ॒ क्षां दा॒सायो॑प॒बर्ह॑णीं कः ।
कर॑त्ति॒स्रो म॒घवा॒ दानु॑चित्रा॒ नि दु॑र्यो॒णे कुय॑वाचं मृ॒धि श्रे॑त् ॥ ७ ॥
सना॒ ता त॑ इन्द्र॒ नव्या॒ आगुः॒ सहो॒ नभोऽवि॑रणाय पू॒र्वीः।
भि॒नत्पुरो॒ न भिदो॒ अदे॑वीर्न॒नमो॒ वध॒रदे॑वस्य पी॒योः ॥ ८ ॥
त्वं धुनि॑रिन्द्र॒ धुनि॑मतीर्ऋ॒णोर॒पः सी॒रा न स्रव॑न्तीः ।
प्र यत्स॑मु॒द्रमति॑ शूर॒ पर्षि॑ पा॒रया॑ तु॒र्वशं॒ यदुं॑ स्व॒स्ति ॥ ९ ॥
त्वम॒स्माक॑मिन्द्र वि॒श्वध॑ स्या अवृ॒कत॑मो न॒रां नृ॑पा॒ता।
स नो॒ विश्वा॑सां स्पृ॒धां स॑हो॒दा वि॒द्यामे॒षं वृ॒जनं॑ जी॒रदा॑नुम् ॥ १० ॥

[१७५] पञ्चसप्तत्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—अगस्त्यः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१ स्वराडनुष्टुप्; २ विराडनुष्टुप्; ३ निचृत्त्रिष्टुप्; ४ उष्णिक्; ५ अनुष्टुप्; ६ भुरिक्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१, २, ५ गान्धारः; ३, ६ धैवतः; ४ ऋषभः ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अथ अष्टादशो वर्गः ॥ १८ ॥

मत्स्यपायि॑ ते महः पात्र॑स्येव हरिवो मत्स॒रो मदः॑ ।
वृषा॑ ते वृष्ण॒ इन्दु॑र्वा॒जी सह॑स्रसातमः ॥ १ ॥
आ नः॑ ते गन्तु मत्स॒रो वृषा॒ मदो॒ वरे॑ण्यः ।
सहा॑वाँ इन्द्र सान॒सिः पृ॑तना॒षाळम॑र्त्यः ॥ २ ॥
त्वं हि शूर॒ः सनि॑ता चो॒दयो॒ मनु॑षो॒ रथ॑म् ।
सहा॑वान्दस्यु॒मव्र॑तमोषः॒ पात्रं॑ न शो॒चिषा॑ ॥ ३ ॥
मुषा॑य सू॒र्यं॑ कवे च॒क्रमी॑शा॒न ओज॑सा ।
वह॒ शुष्णा॑य॒ वध॑ꣳ कु॒त्सं वा॑त॒स्याश्वैः॑ ॥ ४ ॥
शुष्मि॑न्तमो॒ हि ते॒ मदो॒ द्यु॒म्नि॒न्तम॒ उत॑ क्र॒तुः॑ ।
वृ॒त्र॒घ्ना व॑रिवो॒विदा॑ मꣳसी॒ष्ठा अ॑श्नु॒सात॑मः ॥ ५ ॥
यथा॒ पूर्वे॑भ्यो ज॒रि॒तृभ्य॑ इन्द्र मय॒इ॒वापो॒ न तृष्य॑ते ब॒भूथ॑ ।
तामनु॑ त्वा नि॒विदं॑ जोहवीमि वि॒द्यामे॒षं वृ॑ज॒नं जी॒रदा॑नुम् ॥ ६ ॥

[१७६] षट्सप्तत्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—अगस्त्यः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१, ४ अनुष्टुप्; २ निचृदनुष्टुप्; ३ विराडनुष्टुप्; ५ भुरिगुष्णिक्; ६ भुरिक्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१-४ गान्धारः; ५ ऋषभः; ६ धैवतः ॥

अथ एकोनविंशो वर्गः ॥ १९ ॥

मत्सि॑ नो॒ वस्य॑इष्टय इन्द्र॑मिन्दो॒ वृषा॑ विश ।
ऋ॒धा॒यमा॑ण इन्वसि॒ शत्रु॑मन्ति॒ न वि॑न्दसि ॥ १ ॥
तस्मि॒न्ना वे॑शया॒ गिरो॒ य एक॑श्चर्षणी॒नाम् ।
अनु॑ स्व॒धा यमु॑प्यते यव॑ं॒ न चक्रृ॑षद् वृषा ॥ २ ॥
यस्य॒ विश्वा॑नि॒ हस्त॑यो॒ः पञ्च॑ क्षिती॒नां वसु॑ ।
स्पा॒शय॑स्व॒ यो अ॑स्मध्रु॒ग्दि॒व्येवा॒शनि॑र्जहि ॥ ३ ॥
असु॑न्वन्तं समं जहि दू॒णाशं॑ यो न॒ ते मयः॑ ।
अ॒स्मभ्य॑मस्य॒ वेद॑नं द॒द्धि सू॒रिश्चि॑दोहते ॥ ४ ॥
आवो॒ यस्य॑ द्वि॒बर्ह॑सो॒ऽर्के॑षु सानु॒षग॑सत् ।
आ॒जाविन्द्र॑स्येन्दो॒ प्रावो॒ वाजे॑षु वा॒जिन॑म् ॥ ५ ॥
यथा॒ पूर्वे॑भ्यो ज॒रि॒तृभ्य॑ इन्द्र मय॒इ॒वापो॒ न तृष्य॑ते ब॒भूथ॑ ।
तामनु॑ त्वा नि॒विदं॑ जोहवीमि वि॒द्यामे॒षं वृ॑ज॒नं जी॒रदा॑नुम् ॥ ६ ॥

[१७७] सप्तसप्तत्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—अगस्त्यः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१, २ निचृत्त्रिष्टुप्; ३ त्रिष्टुप्; ४ भुरिक्त्रिष्टुप्; ५ भुरिक्पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१-४ धैवतः; ५ पञ्चमः ॥

अथ विंशो वर्गः ॥ २० ॥

आ चर्ष॑णि॒प्रा वृ॑ष॒भो जना॑नां॒ राजा॑ कृ॒ष्टीना॑ं पुरुहूत इन्द्रः॑ ।
स्तु॒तः श्र॑वस्यन्नव॒सोप॑ म॒द्रिग्यु॒क्त्वा हरी॒ वृष॑णा याह्यर्वाङ् ॥ १ ॥
ये ते॒ वृष॑णो वृष॒भास॑ इन्द्र ब्रह्मयु॒जो॒ वृष॑रथासो॒ अत्याः॑ ।
ताँ आ ति॑ष्ठ तेभि॒रा या॑ह्यर्वाङ् हवा॑महे त्वा सु॒त इ॑न्द्र सो॒मे ॥ २ ॥
आ ति॑ष्ठ रथं॑ वृषणं॑ वृषा॑ ते सु॒तः सोम॒ः परि॑षिक्ता॒ मधू॑नि ।
युक्त्वा॑ वृषभ्यां॑ वृषभ क्षिती॒नां हरि॑भ्यां याहि प्रवतोप॑ म॒द्रिक् ॥ ३ ॥
अ॒यं य॒ज्ञो दे॑व॒या अ॒यं मि॒येध॑ इ॒मा ब्रह्मा॑ण्य॒यमि॑न्द्र सोमः॑ ।
स्तीर्णं ब॒र्हिरा तु शक्र॒ प्र या॑हि पिबा॑ नि॒षद्य॒ वि मु॑चा॒ हरी॑ इ॒ह ॥ ४ ॥
ओ सु॒ष्टुत इन्द्र याह्यर्वाङुप॒ ब्रह्मा॑णि मान्यस्य॑ कारोः॑ ।
विद्या॑म॒ वस्तो॒रवसा॑ गृणन्तो॑ वि॒द्यामे॒षं वृ॑ज॒नं जी॒रदा॑नुम् ॥ ५ ॥

[१७८] अष्टसप्तत्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—अगस्त्यः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१, २ भुरिक्पङ्क्तिः; ३, ४ निचृत्त्रिष्टुप्; ५ त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१, २ पञ्चमः; ३, ४, ५ धैवतः ॥

अथ एकविंशो वर्गः ॥ २१ ॥

यद्ध॒ स्या त॑ इन्द्र श्रु॒ष्टिर॑स्ति॒ यया॑ ब॒भूथ॑ ज॒रि॒तृभ्य॑ ऊ॒ती ।
मा नः॒ कामं॑ म॒हय॑न्तमा॒ धग्वि॒श्वा ते॑ अश्यां॒ पर्याप॑ आयोः ॥ १ ॥
न घा॒ राजे॑न्द्र आ॒ द॑भन्नो॒ या नु स्वसा॑र॒ा कृ॒ण॑वन्त॒ योनौ॑ ।
आर्प॑च्छिदस्मै॒ सुतु॑का॒ अवे॑ष॒न्गर्म॑न्न इन्द्रः॑ स॒ख्या वयं॑श्च ॥ २ ॥
जेता॒ नृभि॒रिन्द्रः॑ पृत्सु शू॒रः॑ श्रोता॒ हव॑ं॒ नाध॑मानस्य का॒रोः॑ ।
प्रभ॑र्ता॒ रथं॑ दा॒शुष॑ उपा॒क उद्यन्ता॒ गिरो॒ यदि॑ च॒ त्मना॑ भूत् ॥ ३ ॥
एवा॑ नृभि॒रिन्द्रः॑ सु॒श्रव॑स्या प्र॒खाद॑ः पृक्षो॒ अ॒भि मि॒त्रिणो॑ भूत् ।
सम॒र्य इ॒षः स्त॑वते॒ विवा॑चि सत्रा॒क॒रो यज॑मानस्य॒ शंस॑ः ॥ ४ ॥
त्वया॑ व॒यं म॑घवन्निन्द्र शत्रू॒नभि॑ ष्याम महतो मन्यमानान् ।
त्वं त्रा॒ता त्वमु॒ नो॑ वृधे॒ भूर्वि॑द्यामे॒षं वृ॑ज॒नं जी॒रदा॑नुम् ॥ ५ ॥

[१७९] एकोनाशीत्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—लोपामुद्राऽगस्त्यौ ॥ देवता—दम्पती ॥ छन्दः—१, ४ त्रिष्टुप्; २, ३ निचृत्त्रिष्टुप्; ५ निचृद्बृहती; ६ विराट्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१-४, ६ धैवतः; ५ मध्यमः ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri Gyaan Kosha Kanya Maha Vidyalaya Collection

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अथ द्वाविंशो वर्गः ॥ २२ ॥

पूर्वीरहं शरदः शश्रमाणा दोषा वस्तोरुषसो जरयन्तीः।
मिनाति श्रियं जरिमा तनूनामप्यू नु पत्नीर्वृषणो जगम्युः ॥ १ ॥
ये चिद्धि पूर्व ऋतसाप आसन्त्साकं देवेभिरवदन्नृतानि।
ते चिदवासुर्नह्यन्तमापुः समू नु पत्नीर्वृषभिर्जगम्युः ॥ २ ॥
न मृषा श्रान्तं यदवन्ति देवा विश्वा इत्स्पृधो अभ्यश्नवाव।
जयावेदत्र शतनीथमाजिं यत्सम्यञ्चा मिथुनावभ्यजावः ॥ ३ ॥
नदस्य मा रुधतः काम आगन्नित आजातो अमुतः कुतश्चित्।
लोपामुद्रा वृषणं नी रिणाति धीरमधीरा धयति श्वसन्तम् ॥ ४ ॥
इमं नु सोमन्तितो हृत्सु पीतमुप ब्रुवे ।
यत्सीमागश्चकृमा तत्सु मृळ्तु पुलुकामो हि मर्त्यः ॥ ५ ॥
अगस्त्यः खनमानः खनित्रैः प्रजामपत्यं बलमिच्छमानः।
उभौ वर्णावृषिरुग्रः पुपोष सत्या देवेष्वाशिषो जगाम ॥ ६ ॥

चतुर्विंशोऽनुवाकः [१८०] अशीत्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—अगस्त्यः ॥ देवता—अश्विनौ ॥ छन्दः—१, ४, ७ निचृत्त्रिष्टुप्; २, ९ भुरिक्पङ्क्तिः; ३, ५, ६, ८ विराट्त्रिष्टुप्; १० त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१, ३-८, १० धैवतः; २, ९ पञ्चमः॥

अथ त्रयोविंशो वर्गः ॥ २३ ॥

युवो रजांसि सुयमासो अश्वा रथो यद्वां पर्यर्णांसि दीयत्।
हिरण्ययी वां पवयः प्रुषायन्मध्वः पिबन्ता उषसः सचेथे ॥ १ ॥
युवमत्यस्यावं नक्षथो यद्विपत्मनो नर्यस्य प्रयज्योः ।
स्वसा यद्वां विश्वगूर्ती भरात्ति वाजायेट्टे मधुपाविषे च ॥ २ ॥
युवं पयं उस्रियायामधत्तं पक्वमामायामव पूर्व्यं गोः ।
अन्तर्यद्वनिनो वामृतप्सू ह्वारो न शुचिर्यजते हविष्मान् ॥ ३ ॥
युवं ह घर्मं मधुमन्तमत्रयेऽपो न क्षोदोऽवृणीतमेषे ।
तद्वां नरावश्विना पश्वइष्टी रथ्येव चक्रा प्रति यन्ति मध्वः ॥ ४ ॥
आ वां दानाय ववृतीय दस्रा गोरोहेण तौग्र्यो न जिह्रेः।
अपः क्षोणी संचते माहिना वां जूर्णो वामक्षुरंहसो यजत्रा ॥ ५ ॥

अथ चतुर्विंशो वर्गः ॥ २४ ॥

नि यद्युवेथें नियुतः सुदानू उप स्वधाभिः सृजथः पुरंधिम्।
प्रेषद्वेषद्वातो न सूरिरा महे ददे सुव्रतो न वाजम् ॥ १ ॥
वयं चिद्धि वां जरितारः सत्या विपन्यामहे वि पणिर्हितावान्।
अधा चिद्धि ष्माश्विनावनिन्द्या पाथो हि ष्मा वृषणावन्तिदेवम् ॥ ७ ॥
युवां चिद्धि ष्माश्विनावनु द्यून्विरुद्रस्य प्रस्रवणस्य सातौ।
अगस्त्यो नरां नृषु प्रशस्तः कारांधुनीव चितयत्सहस्रैः ॥ ८ ॥
प्र यद्वहेथे महिना रथस्य प्र स्पन्द्रा याथो मनुषो न होता।
धत्तं सूरिभ्य उत वा स्वश्व्यं नासत्या रयिषाचः स्याम ॥ ९ ॥
तं वां रथं वयमद्या हुवेम स्तोमैरश्विना सुविताय नव्यम्।
अरिष्टनेमिं परि द्यामियानं विद्यामेषं वृजनं जीरदानुम् ॥ १० ॥

[१८१] एकाशीत्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—अगस्त्यः ॥ देवता—अश्विनौ ॥ छन्दः—१, ३ विराट्त्रिष्टुप्; २, ४, ६-९ निचृत्त्रिष्टुप्; ५ त्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः ॥

अथ पञ्चविंशो वर्गः ॥ २५ ॥

कदु प्रेष्ठावि॒षां र॒यीणामध्वर्यन्ता यदु॒न्निनी॑थो अ॒पाम्।
अ॒यं वां य॒ज्ञो अ॑कृत प्रशस्ति॑ं वसु॒धिती॒ अवि॑तारा जनानाम् ॥ १ ॥
आ वा॒मश्वा॑सः॒ शुच॑यः पय॒स्पा वात॑रंहसो दि॒व्यासो॒ अत्याः।
मनो॒जुवो॒ वृष॑णो वी॒तपृ॑ष्ठा॒ एह स्व॒राजो॒ अ॒श्विना॑ वहन्तु ॥ २ ॥
आ वां॑ रथो॑ऽवनि॒र्न प्र॒वत्वा॑न्त्सु॒प्रव॑न्धुरः सु॒वि॒ताय॑ गम्याः।
वृष्णः॑ स्थाता॒रा मन॑सो॒ जवी॑यानहंपू॒र्वो य॑जतो धि॒ष्ण्या॒ यः ॥ ३ ॥
इ॒हेह॑ जा॒ता सम॑वावशीतामरे॒पसा॑ त॒न्वा३॒ नाम॑भिः॒ स्वैः।
जि॒ष्णुर्वा॑मन्यः सुम॑खस्य सू॒रिर्दि॒वो अ॒न्यः सु॒भग॑; पु॒त्र ऊ॑हे ॥ ४ ॥
प्र वां॑ निचे॒रुः क॑कु॒हो वशाँ॒ अनु॑ पि॒शङ्ग॑रूपः॒ सद॑नानि गम्याः।
हरी॑ अ॒न्यस्य॑ पीपयन्त॒ वाजै॑र्म॒क्षा रजां॑स्यश्विना॒ वि घो॑षैः ॥ ५ ॥

अथ षड्विंशो वर्गः ॥ २६ ॥

प्र वां॑ शर्द्धा॒न्वृष॑भो न नि॒ष्षाट् पू॒र्वीरि॑षश्चरति मध्व॒ इ॒ष्णन्।
एवै॑र॒न्यस्य॑ पीपयन्त॒ वाजै॒र्वेष॑न्तीरू॒र्ध्वा न॒द्यो॑ न॒ आगुः॑ ॥ ६ ॥
असर्जि वां॑ स्थवि॒रा वे॒धसा॒ गीर्बा॒ळ्हे अ॑श्विना त्रे॒धा क्षर॑न्ती।
उप॑स्तुतावव॒तं नाध॑मानं यामन्न॒यामञ्छृ॑णुतं॒ हवं॑ मे ॥ ७ ॥
उ॒त स्या वां॑ रुश॒तो व॒प्स॑सो॒ गीस्त्रि॒र्बर्हि॑षि॒ सद॑सि पिन्वते॒ नॄन्।
वृषा॒ वां॑ मे॒घो वृष॑णा पीपाय॒ गोर्न से॒के म॑नु॒षो द॑श॒स्यन् ॥ ८ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

युवां पूषेवाश्विना पुरंधिरग्निमुषां न जरते हुविष्मान्।
हुवे यद्वां वरिवस्या गृणानो विद्यामेषं वृजनं जीरदानुम्॥ ९॥

[१८२] द्व्यशीत्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—अगस्त्यः॥ देवता—अश्विनौ॥ छन्दः—१, ५, ७ निचृज्जगती; २ स्वराट्त्रिष्टुप्; ३ जगती; ४ विराड्जगती; ६, ८ स्वराट्पङ्क्तिः॥ स्वरः—१, ३-५, ७ निषादः; २ धैवतः; ६, ८ पञ्चमः॥

अथ सप्तविंशो वर्गः॥ २७॥

अभूदिदं वयुनमो षु भूषता रथो वृषण्वान्मदता मनीषिणः।
धियंजिन्वा धिष्ण्या विश्पलावसू दिवो नपाता सुकृते शुचिव्रता॥ १॥
इन्द्रतमा हि धिष्ण्या मरुत्तमा दस्रा दंसिष्ठा रथ्या रथीतमा।
पूर्णं रथं वहेथे मध्व आचितं तेन दाश्वांसमुप याथो अश्विना॥ २॥
किमत्र दस्रा कृणुथः किमासाथे जनो यः कश्चिदहविर्महीयते।
अतिं क्रमिष्टं जुरतं पणेरसुं ज्योतिर्विप्राय कृणुतं वचस्यवे॥ ३॥
जम्भयतमभितो रायतः शुनो हतं मृधो विदथुस्तान्यश्विना।
वाचंवाचं जरितू रत्निनीं कृतमुभा शंसं नासत्यावतं मम॥ ४॥
युवमेतं चक्रथुः सिन्धुषु प्लवमात्मन्वन्तं पक्षिणं तौग्र्याय कम्।
येन देवत्रा मनसा निरूहथुः सुपप्तनी पेतथुः क्षोदसो महः॥ ५॥

अथ अष्टाविंशो वर्गः॥ २८॥

अवविद्धं तौग्र्यमप्स्वन्तरनारम्भणे तमसि प्रविद्धम्।
चतस्रो नावो जठलस्य जुष्टा उदश्विभ्यामिषिताः पारयन्ति॥ ६॥
कः स्विद्वृक्षो निष्ठितो मध्ये अर्णसो यं तौग्र्यो नाधितः पर्यषस्वजत्।
पर्णा मृगस्य पतरोरिवारभ उदश्विना ऊहथुः श्रोमताय कम्॥ ७॥
तद्वां नरा नासत्यावनु ष्याद्यद्वां मानास उचथमवोचन्।
अस्मादद्य सदसः सोम्यादा विद्यामेषं वृजनं जीरदानुम्॥ ८॥

[१८३] त्र्यशीत्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—अगस्त्यः॥ देवता—अश्विनौ॥ छन्दः—१, ४, ६ त्रिष्टुप्; २, ३ निचृत्त्रिष्टुप्; ५ भुरिक्पङ्क्तिः॥ स्वरः—१-४, ६ धैवतः; ५ पञ्चमः॥

अथ एकोनत्रिंशो वर्गः॥ २९॥

तं युञ्जाथां मनसो यो जवीयान् त्रिवन्धुरो वृषणा यस्त्रिचक्रः।
येनोपयाथः सुकृतो दुरोणं त्रिधातुना पतथो विर्न पर्णैः॥ १॥
सुवृद्रथौ वर्तते यन्नभि क्षां यत्तिष्ठथः क्रतुमन्तानु पृक्षे।
वपुर्वपुष्या संचतामियं गीर्दिवो दुहित्रोषसा सचेथे॥ २॥
आ तिष्ठतं सुवृतं यो रथो वामनु व्रतानि वर्तते हविष्मान्।
येन नरा नासत्येषयध्यै वर्तिर्याथस्तनयाय त्मने च॥ ३॥
मा वां वृको मा वृकीरा दधर्षीन्मा परि वर्क्तमुत मातिं धक्तम्।
अयं वां भागो निहित इयं गीर्दस्राविमे वां निधयो मधूनाम्॥ ४॥
युवां गोतमः पुरुमीळ्हो अत्रिर्दस्रा हवतेऽवसे हविष्मान्।
दिशं न दिष्टामृजूयेव यन्ता मे हवं नासत्योप यातम्॥ ५॥
अतारिष्म तमसस्पारमस्य प्रतिं वां स्तोमो अश्विनावधायि।
एह यातं पथिभिर्देवयानैर्विद्यामेषं वृजनं जीरदानुम्॥ ६॥

इति द्वितीयाष्टके चतुर्थोऽध्यायः॥

अथ पञ्चमोऽध्यायः

[१८४] चतुरशीत्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—अगस्त्यः॥ देवता—अश्विनौ॥ छन्दः—१ पङ्क्तिः; २, ३ विराट्त्रिष्टुप्; ४ भुरिक्पङ्क्तिः; ५, ६ निचृत्पङ्क्तिः॥ स्वरः—१, ४-६ पञ्चमः; २, ३ धैवतः॥

अथ प्रथमो वर्गः॥ १॥

ता वामद्य तावपरं हुवेमोच्छन्त्यामुषसि वह्निरुक्थैः।
नासत्या कुह चित्सन्तावर्यो दिवो नपाता सुदास्तराय॥ १॥
अस्मे ऊ षु वृषणा मादयेथामुत्पूर्णीर्हैतमूर्म्या मदन्ता।
श्रुतं मे अच्छोक्तिभिर्मतीनामेष्टा नरा निचेतारा च कर्णैः॥ २॥
श्रिये पूषन्नृषुकृतेव देवा नासत्या वहतुं सूर्यायाः।
वच्यन्तें वां ककुहा अप्सु जाता युगा जूर्णेव वरुणस्य भूरेः॥ ३॥
अस्मे सा वां माध्वी रातिरस्तु स्तोमं हिनोतं मान्यस्य कारोः।
अनु यद्वां श्रवस्या सुदानू सुवीर्याय चर्षणयो मदन्ति॥ ४॥
एष वां स्तोमो अश्विनावकारि मानेभिर्मघवाना सुवृक्ति।
यातं वर्तिस्तनयाय त्मने चागस्त्ये नासत्या मदन्ता॥ ५॥
अतारिष्म तमसस्पारमस्य प्रतिं वां स्तोमो अश्विनावधायि।
एह यातं पथिभिर्देवयानैर्विद्यामेषं वृजनं जीरदानुम्॥ ६॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

[१८५] पञ्चाशीत्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—अगस्त्यः ॥ देवता—द्यावापृथिव्यौ ॥ छन्दः—१, ६-८, १०, ११ त्रिष्टुप्; २ विराट्त्रिष्टुप्; ३-५, ९ निचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

अथ द्वितीयो वर्गः ॥ २ ॥

कतरा पूर्वी कतरापरायोः कथा जाते कवयः को वि वेद।
विश्वं त्मना बिभृतो यद्ध नाम वि वर्तेते अहनी चक्रियेव ॥ १ ॥
भूरिं द्वे अचरन्ती चरन्तं पद्वन्तं गर्भमपदी दधाते ।
नित्यं न सूनुं पित्रोरुपस्थे द्यावा रक्षतं पृथिवी नो अभ्वात् ॥ २ ॥
अनेहो दात्रमदितेरनर्वं हुवे स्वर्वदवधं नमस्वत् ।
तद्रोदसी जनयतं जरित्रे द्यावा रक्षतं पृथिवी नो अभ्वात् ॥ ३ ॥
अतप्यमाने अवसावन्ती अनु ष्याम रोदसी देवपुत्रे ।
उभे देवानामुभयेभिरह्नां द्यावा रक्षतं पृथिवी नो अभ्वात् ॥ ४ ॥
संगच्छमाने युवती समन्ते स्वसारा जामी पित्रोरुपस्थे ।
अभिजिघ्रन्ती भुवनस्य नाभिं द्यावा रक्षतं पृथिवी नो अभ्वात् ॥ ५ ॥

अथ तृतीयो वर्गः ॥ ३ ॥

उर्वी सदनी बृहती ऋतेन हुवे देवानामवसा जनित्री।
दधाते ये अमृतं सुप्रतीके द्यावा रक्षतं पृथिवी नो अभ्वात् ॥ ६ ॥
उर्वी पृथ्वी बहुले दूरेअन्ते उप ब्रुवे नमसा यज्ञे अस्मिन्।
दधाते ये सुभगे सुप्रतूर्ती द्यावा रक्षतं पृथिवी नो अभ्वात् ॥ ७ ॥
देवान्वा यच्चकृमा कच्चिदागः सखायं वा सदमिज्जास्पतिं वा।
इयं धीर्भूया अवयानमेषां द्यावा रक्षतं पृथिवी नो अभ्वात् ॥ ८ ॥
उभा शंसा नर्या मामविष्टामुभे मामूती अवसा सचेताम् ।
भूरि चिदर्यः सुदास्तरायेषा मदन्त इषयेम देवाः ॥ ९ ॥
ऋतं दिवे तदवोचं पृथिव्या अभिश्रावाय प्रथमं सुमेधाः।
पातामवद्याद्दुरितादभीके पिता माता च रक्षतामवोभिः ॥ १० ॥
इदं द्यावापृथिवी सत्यमस्तु पितर्मातर्यदिहोपब्रुवे वाम् ।
भूतं देवानामवमे अवोभिर्विद्यामेषं वृजनं जीरदानुम् ॥ ११ ॥

[१८६] षडशीत्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—अगस्त्यः ॥ देवता—विश्वेदेवाः ॥ छन्दः—१, ८, ९ त्रिष्टुप्; २, ४ निचृत्त्रिष्टुप्; ११ भुरिक्त्रिष्टुप्; ३, ५, ७ भुरिक्पङ्क्तिः; ६ पङ्क्तिः; १० स्वराट्पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१, २, ४, ८, ९, ११ धैवतः; ३, ५-७, १० पञ्चमः ॥

अथ चतुर्थो वर्गः ॥ ४ ॥

आ न इळाभिर्विदथे सुशस्ति विश्वानरः सविता देव एतु।
अपि यथा युवानो मत्सथा नो विश्वं जगदभिपित्वे मनीषा ॥ १ ॥
आ नो विश्वे आस्क्रा गमन्तु देवा मित्रो अर्यमा वरुणः सजोषाः।
भुवन्यथा नो विश्वे वृधासः करन्त्सुषाहा विथुरं न शवः ॥ २ ॥
प्रेष्ठं वो अतिथिं गृणीषेऽग्निं शस्तिभिस्तुर्वणिः सजोषाः ।
असद्यथा नो वरुणः सुकीर्तिरिषश्च पर्षदरिगूर्तः सूरिः ॥ ३ ॥
उप व एषे नमसा जिगीषोषासानक्ता सुदुघेव धेनुः ।
समाने अहन्विमिमानो अर्कं विषुरूपे पयसि सस्मिन्नूधन् ॥ ४ ॥
उत नोऽहिर्बुध्न्योऽ३ मयस्करः शिशुं न पिप्युषीव वेति सिन्धुः।
येन नपातमपां जुनाम मनोजुवो वृषणो यं वहन्ति ॥ ५ ॥

अथ पञ्चमो वर्गः ॥ ५ ॥

उत न ईं त्वष्टा गन्त्वच्छ स्मत्सूरिभिरभिपित्वे सजोषाः ।
आ वृत्रहेन्द्रश्चर्षणिप्रास्तुविष्टमो नरां न इह गम्याः ॥ ६ ॥
उत न ईं मतयोऽश्वयोगाः शिशुं न गावस्तरुणं रिहन्ति ।
तर्मी गिरो जनयो न पत्नीः सुरभिष्टमं नरां नसन्त ॥ ७ ॥
उत न ईं मरुतो वृद्धसेनाः समद्रोदसी समनसः सदन्तु ।
पृषदश्वासोऽवनयो न रथा रिशादसो मित्रयुजो न देवाः ॥ ८ ॥
प्र नु यदेषां महिना चिकित्रे प्र युञ्जते प्रयुजस्ते सुवृक्ति।
अध यदेषां सुदिने न शरुर्विश्वमेरिणं प्रुषायन्त सेनाः ॥ ९ ॥
प्रो अश्विनाववसे कृणुध्वं प्र पूषणं स्वतवसो हि सन्ति।
अद्वेषो विष्णुर्वात ऋभुक्षा अच्छा सुम्नाय ववृतीय देवान् ॥ १० ॥
इयं सा वो अस्मे दीधितिर्यजत्रा अपिप्राणी च सदनी च भूयाः।
नि या देवेषु यतते वसूयुर्विद्यामेषं वृजनं जीरदानुम् ॥ ११ ॥

[१८७] सप्ताशीत्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—अगस्त्यः ॥ देवता—ओषधयः ॥ छन्दः—१ उष्णिक्; २, ८ निचृद्गायत्री; ३, ५ निचृदनुष्टुप्; ४ विराड्गायत्री; ६, ७ भुरिगुष्णिक्; ९, १० गायत्री; ११ स्वराडनुष्टुप् ॥ स्वरः—१, ६, ७ ऋषभः; २, ४, ८-१० षड्जः; ३, ५, ११ गान्धारः ॥

अथ षष्ठो वर्गः ॥ ६ ॥

पितुं नु स्तोषं महो धर्माणं तविषीम्।
यस्य त्रितो व्योजसा वृत्रं विपर्वमर्दयत् ॥ १ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

स्वादो पितो मधो पितो वयं त्वा ववृमहे। अस्माकमविता भव॥ २॥
उप नः पितवा चर शिवः शिवाभिरूतिभिः।
मयोभुरद्विषेण्यः सखा सुशेवो अद्वयाः॥ ३॥
तव त्ये पितो रसा रजांस्यनु विष्ठिताः। दिवि वातांइव श्रिताः॥ ४॥
तव त्ये पितो ददतस्तव स्वादिष्ठ ते पितो।
प्र स्वाद्मानो रसानां तुविग्रीवा इवेरते॥ ५॥

अथ सप्तमो वर्गः॥ ७॥

त्वे पितो महानां देवानां मनो हितम्।
अकारि चारु केतुना तवाहिमवसावधीत्॥ ६॥
यददो पितो अजगन्विवस्व पर्वतानाम्।
अत्रा चिन्नो मधो पितोऽरं भक्षाय गम्याः॥ ७॥
यदुपामोषधीनां परिशमारिशामहे। वातापे पीव इद्भव॥ ८॥
यत्ते सोम गवाशिरो यवाशिरो भजामहे। वातापे पीव इद्भव॥ ९॥
करम्भ ओषधे भव पीवो वृक्क उदारथिः। वातापे पीव इद्भव॥ १०॥
तं त्वा वयं पितो वचोभिर्गावो न हव्या सुषूदिम।
देवेभ्यस्त्वा सधमादमस्मभ्यं त्वा सधमादम्॥ ११॥

[१८८] अष्टाशीत्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—अगस्त्यः॥ देवता—आप्रियः॥ छन्दः—१, ३, ५-७, १० निचृद्गायत्री; २, ४, ८, ९, ११ गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

अथ अष्टमो वर्गः॥ ८॥

समिद्धो अद्य राजसि देवो देवैः सहस्रजित्। दूतो हव्या कविर्वह॥ १॥
तनूनपादृतं यते मध्वा यज्ञः समज्यते। दधत्सहस्रिणीरिषः॥ २॥
आजुह्वानो न ईड्यो देवाँ आ वक्षि यज्ञियान्। अग्ने सहस्रसा असि॥ ३॥
प्राचीनं बर्हिरोजसा सहस्रवीरमस्तृणन्। यत्रादित्या विराजथ॥ ४॥
विराट् सम्राड्भ्वीः प्रभ्वीर्बह्वीश्च भूयसीश्च याः। दुरो घृतान्यक्षरन्॥ ५॥

अथ नवमो वर्गः॥ ९॥

सुरुक्मे हि सुपेशसाधि श्रिया विराजतः। उषासावेह सीदताम्॥ ६॥
प्रथमा हि सुवाचसा होतारा दैव्या कवी। यज्ञं नो यक्षतामिमम्॥ ७॥
भारतीळे सरस्वति या वः सर्वा उपब्रुवे। ता नश्चोदयत श्रिये॥ ८॥
त्वष्टा रूपाणि हि प्रभुः पशून्विश्वान्त्समानजे। तेषां नः स्फातिमा यज॥ ९॥
उप त्मन्या वनस्पते पाथो देवेभ्यः सृज। अग्निर्हव्यानि सिष्वदत्॥ १०॥
पुरोगा अग्निर्देवानां गायत्रेण समज्यते। स्वाहाकृतीषु रोचते॥ ११॥

[१८९] एकोननवत्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—अगस्त्यः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—१, ४, ८ निचृत्त्रिष्टुप्; २ भुरिक्पङ्क्तिः; ३, ५, ६ स्वराट्पङ्क्तिः; ७ पङ्क्तिः॥ स्वरः—१, ४, ८ धैवतः; २, ३, ५-७ पञ्चमः॥

अथ दशमो वर्गः॥ १०॥

अग्ने नय सुपथा राये अस्मान्विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्।
युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नमउक्तिं विधेम॥ १॥
अग्ने त्वं पारया नव्यो अस्मान्त्स्वस्तिभिरति दुर्गाणि विश्वा।
पूश्च पृथ्वी बहुला न उर्वी भवा तोकाय तनयाय शं योः॥ २॥
अग्ने त्वमस्माद्युयोध्यमीवा अनग्नित्रा अभ्यमन्त कृष्टीः।
पुनरस्मभ्यं सुविताय देव क्षां विश्वेभिरमृतेभिर्यजत्र॥ ३॥
पाहि नो अग्ने पायुभिरजस्रैरुत प्रिये सदन आ शुशुक्वान्।
मा ते भयं जरितारं यविष्ठ नूनं विदन्मापरं सहस्वः॥ ४॥
मा नो अग्नेऽव सृजो अघायाविष्यवे रिपवे दुच्छुनायै।
मा दत्वते दशते मादते नो मा रीषते सहसावन्परा दाः॥ ५॥

अथ एकादशो वर्गः॥ ११॥

वि घ त्वावाँ ऋतजात यंसद्गृणानो अग्ने तन्वे३ वरूथम्।
विश्वाद्रिरिक्षोरुत वा निनित्सोरभिह्रुतामसि हि देव विष्पट्॥ ६॥
त्वं ताँ अग्न उभयान्वि विद्वान्वेषि प्रपित्वे मनुषो यजत्र।
अभिपित्वे मनवे शास्यो भूर्मर्मृजेन्य उशिग्भिर्नाक्रः॥ ७॥
अवोचाम निवचनान्यस्मिन्मानस्य सूनुः सहसाने अग्नौ।
वयं सहस्रमृषिभिः सनेम विद्यामेषं वृजनं जीरदानुम्॥ ८॥

[१९०] नवत्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—अगस्त्यः॥ देवता—बृहस्पतिः॥ छन्दः—१, २, ३ निचृत्त्रिष्टुप्; ४, ८ त्रिष्टुप्; ५-७ स्वराट्पङ्क्तिः॥ स्वरः—१-४, ८ धैवतः; ५-७ पञ्चमः॥

अथ द्वादशो वर्गः॥ १२॥

अनर्वाणं वृषभं मन्द्रजिह्वं बृहस्पतिं वर्धया नव्यमर्कैः।
गाथान्यः सुरुचो यस्य देवा आशृण्वन्ति नवमानस्य मर्तीः॥ १॥
तमृत्विया उप वाचः सचन्ते सर्गो न यो देवयतामसर्जि।
बृहस्पतिः स ह्यञ्जो वरांसि विभ्वाभवत्समृते मातरिश्वा॥ २॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उपस्तुतिं नमस उद्यतिं च श्लोकं यंसत्सवितेव प्र बाहू।
अस्य क्रत्वाहन्योर्३ यो अस्ति मृगो न भीमो अरक्षसस्तुविष्मान्॥ ३॥
अस्य श्लोको दिवीयते पृथिव्यामत्यो न यंसद्यक्षभृद्विचेताः।
मृगाणां न हेतयो यन्ति चेमा बृहस्पतेरहिमायाँ अभि द्यून्॥ ४॥
ये त्वा देवोस्त्रिकं मन्यमानाः पापा भद्रमुपजीवन्ति पज्राः।
न दूढ्ये३ अनु ददासि वामं बृहस्पते चयस इत्पियारुम्॥ ५॥

अथ त्रयोदशो वर्गः॥ १३॥

सुप्रैतुः सूयवसो न पन्था दुर्नियन्तुः परिप्रीतो न मित्रः।
अनर्वाणोर् अभि ये चक्षते नोऽपीवृता अपोर्णुवन्तो अस्थुः॥ ६॥
सं यं स्तुभोऽवनयो न यन्ति समुद्रं न स्रवतो रोधचक्राः।
स विद्वाँ उभयं चष्टे अन्तर्बृहस्पतिस्तर आपश्च गृध्रः॥ ७॥
एवा महस्तुविजातस्तुविष्मान्बृहस्पतिर्वृषभो धायि देवः।
स नः स्तुतो वीरवद्धातु गोमद्विद्यामेषं वृजनं जीरदानुम्॥ ८॥

[१९१] एकनवत्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—अगस्त्यः॥ देवता—अबोधिसूर्यः॥ छन्दः—१ उष्णिक्; २ भुरिगुष्णिक्; ३, ७ स्वराडुष्णिक्; ४, ९, १४ विराडनुष्टुप्; ५, ८, १५ निचृदनुष्टुप्; ६ अनुष्टुप्; १०, ११ निचृद्ब्राह्म्यनुष्टुप्; १२ विराड्ब्राह्म्यनुष्टुप्; १३ विराडुष्णिक्; १६ भुरिगनुष्टुप्॥ स्वरः—१-३, ७, १३ ऋषभः; ४-६, ८-१२, १४-१६ गान्धारः॥

अथ चतुर्दशो वर्गः॥ १४॥

कङ्क्तो न कङ्कतोऽथो सतीनकङ्कतः।
द्वाविति प्लुषी इति न्य१दृष्टा अलिप्सत॥ १॥
अदृष्टान्हन्त्यायत्यथो हन्ति परायती।
अथो अवघ्नती हन्त्यथो पिनष्टि पिंषती॥ २॥
शरासः कुशरासो दर्भासः सैर्या उत।
मौञ्जा अदृष्टा वैरिणाः सर्वे साकं न्यलिप्सत॥ ३॥
नि गावो गोष्ठे असदन्नि मृगासो अविक्षत।
नि केतवो जनानां न्य१दृष्टा अलिप्सत॥ ४॥
एत उ त्ये प्रत्यदृश्रन्प्रदोषं तस्करा इव।
अदृष्टा विश्वदृष्टाः प्रतिबुद्धा अभूतन॥ ५॥

अथ पञ्चदशो वर्गः॥ १५॥

द्यौर्वः पिता पृथिवी माता सोमो भ्रातादितिः स्वसा।
अदृष्टा विश्वदृष्टास्तिष्ठतेलयता सु कम्॥ ६॥
ये अंस्या ये अङ्ग्याः सूचीका ये प्रकङ्कताः।
अदृष्टाः किं चनेह वः सर्वे साकं नि जस्यत॥ ७॥
उत्पुरस्तात्सूर्य एति विश्वदृष्टो अदृष्टहा।
अदृष्टान्त्सर्वाञ्जम्भयन्त्सर्वाश्च यातुधान्यः॥ ८॥
उदपप्तदसौ सूर्यः पुरु विश्वानि जूर्वन्।
आदित्यः पर्वतेभ्यो विश्वदृष्टो अदृष्टहा॥ ९॥
सूर्ये विषमा संजामि दृतिं सुरावतो गृहे।
सो चिन्नु न मरति नो वयं मरामारे अस्य
योजनं हरिष्ठा मधु त्वा मधुला चकार॥ १०॥

अथ षोडशो वर्गः॥ १६॥

इयत्तिका शकुन्तिका सका जघास ते विषम्।
सो चिन्नु न मरति नो वयं मरामारे अस्य
योजनं हरिष्ठा मधु त्वा मधुला चकार॥ ११॥
त्रिः सप्त विष्पुलिङ्गका विषस्य पुष्पमक्षन्।
ताश्चिन्नु न मरन्ति नो वयं मरामारे अस्य
योजनं हरिष्ठा मधु त्वा मधुला चकार॥ १२॥
नवानां नवतीनां विषस्य रोपुषीणाम्।
सर्वासामग्रभं नामारे अस्य योजनं
हरिष्ठा मधु त्वा मधुला चकार॥ १३॥
त्रिः सप्त मयूर्यः सप्त स्वसारो अग्रुवः।
तास्ते विषं वि जभ्रिर उदकं कुम्भिनीरिव॥ १४॥
इयत्तकः कुषुम्भकस्तकं भिनद्म्यश्मना।
ततो विषं प्र वावृते पराचीरनु संवतः॥ १५॥
कुषुम्भकस्तदब्रवीद् गिरेः प्रवर्तमानकः।
वृश्चिकस्यारसं विषमरसं वृश्चिक ते विषम्॥ १६॥

इति प्रथमं मण्डलम्॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अथ द्वितीयं मण्डलम्

प्रथमोऽनुवाकः [१] प्रथमं सूक्तम्

ऋषिः—आङ्गिरसः शौनहोत्रो भार्गवो गृत्समदः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—१ पङ्क्तिः; २, १५ विराड्जगती; ३, ५, ८, १० निचृत्त्रिष्टुप्; ४, ६, ११, १२, १४ भुरिक् त्रिष्टुप्; ७ विराट्त्रिष्टुप्; ९ भुरिक्पङ्क्तिः; १३ स्वराट्पङ्क्तिः; १६ निचृज्जगती॥

स्वरः—१, ९, १३ पञ्चमः; २, १५, १६ निषादः; ३-८, १०-१२, १४, १६ धैवतः॥

अथ सप्तदशो वर्गः॥ १७॥

त्वमग्ने द्युभिस्त्वमाशुशुक्षणिस्त्वमद्भ्यस्त्वमश्मनस्परि ।
त्वं वनेभ्यस्त्वमोषधीभ्यस्त्वं नृणां नृपते जायसे शुचिः॥ १॥
तवाग्ने होत्रं तव पोत्रमृत्वियं तव नेष्ट्रं त्वमग्निदृतायतः।
तव प्रशास्त्रं त्वमध्वरीयसि ब्रह्मा चासि गृहपतिश्च नो दमे॥ २॥
त्वमग्न इन्द्रो वृषभः सतामसि त्वं विष्णुरुरुगायो नमस्यः।
त्वं ब्रह्मा रयिविद् ब्रह्मणस्पते त्वं विधर्तः सचसे पुरन्ध्या॥ ३॥
त्वमग्ने राजा वरुणो धृतव्रतस्त्वं मित्रो भवसि दस्म ईड्यः।
त्वमर्यमा सत्पतिर्यस्य संभुजं त्वमंशो विदथे देव भाजयुः॥ ४॥
त्वमग्ने त्वष्टा विधते सुवीर्यं तव ग्नावो मित्रमहः सजात्यम्।
त्वमाशुहेमा ररिषे स्वश्व्यं त्वं नरां शर्धो असि पुरूवसुः॥ ५॥

अथ अष्टादशो वर्गः॥ १८॥

त्वमग्ने रुद्रो असुरो महो दिवस्त्वं शर्धो मारुतं पृक्ष ईशिषे।
त्वं वातैररुणैर्यासि शंगयस्त्वं पूषा विधतः पासि नु त्मना॥ ६॥
त्वमग्ने द्रविणोदा अरंकृते त्वं देवः सविता रत्नधा असि।
त्वं भगो नृपते वस्व ईशिषे त्वं पायुर्दमे यस्तेऽविधत्॥ ७॥
त्वामग्ने दम आ विश्पतिं विशस्त्वां राजानं सुविदत्रमृञ्जते।
त्वं विश्वानि स्वनीक पत्यसे त्वं सहस्राणि शता दश प्रति॥ ८॥
त्वामग्ने पितरमिष्टिभिर्नरस्त्वां भ्रात्राय शम्या तनूरुचम्।
त्वं पुत्रो भवसि यस्तेऽविधत्त्वं सखा सुशेवः पास्याधृषः॥ ९॥
त्वमग्न ऋभुराके नमस्यैस्त्वं वाजस्य क्षुमतो राय ईशिषे।
त्वं वि भास्यनु दक्षि दावने त्वं विशिक्षुरसि यज्ञमानिनं॥ १०॥

अथ एकोनविंशो वर्गः॥ १९॥

त्वमग्ने अदितिर्देव दाशुषे त्वं होत्रा भारती वर्धसे गिरा।
त्वमिळा शतहिमासि दक्षसे त्वं वृत्रहा वसुपते सरस्वती॥ ११॥
त्वमग्ने सुभृत उत्तमं वयस्तव स्पार्हे वर्ण आ संदृशि श्रियः।
त्वं वाजः प्रतरणो बृहन्नसि त्वं रयिर्बहुलो विश्वतस्पृथुः॥ १२॥
त्वामग्न आदित्यास आस्यं त्वां जिह्वां शुचयश्चक्रिरे कवे।
त्वां रातिषाचो अध्वरेषु सश्चिरे त्वे देवा हविरदन्त्याहुतम्॥ १३॥
त्वे अग्ने विश्वे अमृतासो अद्रुहः आसा देवा हविरदन्त्याहुतम्।
त्वया मतीसः स्वदन्त आसुतिं त्वं गर्भो वीरुधां जज्ञिषे शुचिः॥ १४॥
त्वं तान्त्सं च प्रति चासि मन्मनाग्ने सुजात प्र च देव रिच्यसे।
पृक्षो यदत्र महिना वि ते भुवदनु द्यावापृथिवी रोदसी उभे॥ १५॥
ये स्तोतृभ्यो गोअग्रामश्वपेशसमग्ने रातिमुपसृजन्ति सूरयः।
अस्माञ्च तांश्च प्र हि नेषि वस्य आ बृहद्वदेम विदथे सुवीराः॥ १६॥

[२] द्वितीयं सूक्तम्

ऋषिः—गृत्समदः शौनकः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—१, २, ७, १२ विराड्जगती; ३, ८, १०, ११ भुरिक्त्रिष्टुप्; ४ जगती; ५, ६, ९, १३ निचृज्जगती॥

स्वरः—१, २, ४-७, ९ १२, १३ निषादः; ३, ८, १०, ११ धैवतः॥

अथ विंशो वर्गः॥ २०॥

यज्ञेन वर्धत जातवेदसमग्निं यजध्वं हविषा तना गिरा।
समिधानं सुप्रयसं स्वर्णरं द्युक्षं होतारं वृजनेषु धूर्षदम्॥ १॥
अभि त्वा नक्तीरुषसो ववाशिरेऽग्ने वत्सं न स्वसरेषु धेनवः।
दिवइ्वेदरतिर्मानुषा युगा क्षपो भासि पुरुवार संयतः॥ २॥
तं देवा बुध्ने रजसः सुदंससं दिवस्पृथिव्योररतिं न्येरिरे।
रथमिव वेद्यं शुक्रशोचिषमग्निं मित्रं न क्षितिषु प्रशंस्यम्॥ ३॥
तमुक्षमाणं रजसि स्व आ दमे चन्द्रमिव सुरुचं ह्वार आ दधुः।
पृश्न्याः पतरं चितयन्तमक्षभिः पाथो न पायुं जनसी उभे अनु॥ ४॥
स होता विश्वं परि भूत्वध्वरं तमु हव्यैर्मनुष ऋञ्जते गिरा।
हिरिशिप्रो वृधसानासु जर्भुरद् द्यौर्न स्तृभिश्चितयद्रोदसी अनु॥ ५॥

अथ एकविंशो वर्गः॥ २१॥

स नो रेवत्समिधानः स्वस्तये संदुस्वान्नयिमस्मासु दीदिहि।
आ नः पृणुग्धि सुविताय रोदसी अग्ने हव्या मनुषो देव वीतये॥ ६॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

दा नो अग्ने बृहतो दाः सहस्रिणो दुरो न वाजं श्रुत्या अपा वृधि।
प्राची द्यावापृथिवी ब्रह्मणा कृधि स्वर्ण शुक्रमुषसो वि दिद्युतुः ॥ ७ ॥
स इधान उषसो राम्या अनु स्वर्ण दीदेदरुषेण भानुना।
होत्राभिरग्निर्मनुषः स्वध्वरो राजा विशामतिथिश्चारुरायवे ॥ ८ ॥
एवा नो अग्ने अमृतेषु पूर्व्य धीष्पीपाय बृहद्दिवेषु मानुषा।
दुहाना धेनुर्वृजनेषु कारवे त्मना शतिनं पुरुरूपमिषणि ॥ ९ ॥
वयमग्ने अवृता वा सुवीर्यं ब्रह्मणा वा चितयेमा जनाँ अति।
अस्माकं द्युम्नमधि पञ्च कृष्टिषूच्चा स्वर्ण शुशुचीत दुष्टरम् ॥ १० ॥
स नो बोधि सहस्य प्रशंस्यो यस्मिन्त्सुजाता इषयन्त सूरयः।
यमग्ने यज्ञमुपयन्ति वाजिनो नित्ये तोके दीदिवांसं स्वे दमे ॥ ११ ॥
उभयासो जातवेदः स्याम ते स्तोतारो अग्ने सूरयश्च शर्मणि।
वस्वो रायः पुरुश्चन्द्रस्य भूयसः प्रजावतः स्वपत्यस्य शग्धि नः ॥ १२ ॥
ये स्तोतृभ्यो गोअग्रामश्वपेशसमग्ने रातिमुपसृजन्ति सूरयः।
अस्माञ्च तांश्च प्र हि नेषि वस्य आ बृहद्वदेम विदथे सुवीराः ॥ १३ ॥

[३] तृतीयं सूक्तम्

ऋषिः—गृत्समदः शौनकः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१, २ विराट्त्रिष्टुप्; ३, ५, ६ भुरिक्त्रिष्टुप्; ४, ९, ११ निचृत्त्रिष्टुप्; ७ जगती; ८, १० त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१-६, ८-११ धैवतः; ७ निषादः ॥

अथ द्वाविंशो वर्गः ॥ २२ ॥

समिद्धो अग्निर्निहितः पृथिव्यां प्रत्यङ् विश्वानि भुवनान्यस्थात्।
होता पावकः प्रदिवः सुमेधा देवो देवान्यजत्वग्रिरर्हन् ॥ १ ॥
नराशंसः प्रति धामान्यञ्जन्तिस्रो दिवः प्रति मह्ना स्वर्चिः।
घृतप्रुषा मनसा हव्यमुन्दन्पूर्धन्यज्ञस्य समनक्तु देवान् ॥ २ ॥
ईळितो अग्ने मनसा नो अर्हन्देवान्यक्षि मानुषात्पूर्वो अद्य।
स आ वह मरुतां शर्धो अच्युतमिन्द्रं नरो बर्हिषदं यजध्वम् ॥ ३ ॥
देवं बर्हिर्वर्धमानं सुवीरं स्तीर्णं राये सुभरं वेद्यस्याम्।
घृतेनाक्तं वसवः सीदतेदं विश्वे देवा आदित्या यज्ञियासः ॥ ४ ॥
वि श्रयन्तामुर्विया हूयमाना द्वारो देवीः सुप्रायणा नमोभिः।
व्यचस्वतीर्विं प्रथन्तामजुर्या वर्णं पुनाना यशसं सुवीरम् ॥ ५ ॥

अथ त्रयोविंशो वर्गः ॥ २३ ॥

साध्वपांसि सनता न उक्षिते उषासानक्ता वय्येव रण्विते।
तन्तुं ततं संवयन्ती समीची यज्ञस्य पेशः सुदुघे पयस्वती ॥ ६ ॥
दैव्या होतारा प्रथमा विदुष्टर ऋजु यक्षतः समृचा वपुष्टरा।
देवान्यजन्तावृतुथा समञ्जतो नाभा पृथिव्या अधि सानुषु त्रिषु ॥ ७ ॥
सरस्वती साधयन्ती धियं न इळा देवी भारती विश्वतूर्तिः।
तिस्रो देवीः स्वधया बर्हिरेदमच्छिद्रं पान्तु शरणं निषद्य ॥ ८ ॥
पिशङ्गरूपः सुभरो वयोधाः श्रुष्टी वीरो जायते देवकामः।
प्रजां त्वष्टा वि ष्यतु नाभिमस्मे अथा देवानामप्येतु पाथः ॥ ९ ॥
वनस्पतिरवसृजन्नुप स्थादग्निर्हविः सूदयाति प्र धीभिः।
त्रिधा समक्तं नयतु प्रजानन्देवेभ्यो दैव्यः शमितोप हव्यम् ॥ १० ॥
घृतं मिमिक्षे घृतमस्य योनिर्घृते श्रितो घृतमस्वस्य धाम।
अनुष्वधमा वह मादयस्व स्वाहाकृतं वृषभ वक्षि हव्यम् ॥ ११ ॥

[४] चतुर्थं सूक्तम्

ऋषिः—सोमाहुतिर्भार्गवः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१, ८ स्वराट्पङ्क्तिः; २, ३, ५-७ आर्षीपङ्क्तिः; ३ ब्राह्म्युष्णिक्; ९ निचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१-३, ५-८ पञ्चमः; ४ ऋषभः; ९ धैवतः ॥

अथ चतुर्विंशो वर्गः ॥ २४ ॥

हुवे वः सुद्योत्मानं सुवृक्तिं विशामग्निमतिथिं सुप्रयसम्।
मित्रइव यो दिधिषाय्यो भूद्देव आदेवे जनें जातवेदाः ॥ १ ॥
इमं विधन्तो अपां सधस्थे द्विता दधुर्भृगवो विक्ष्वायोः।
एष विश्वान्यभ्यस्तु भूमा देवानामग्निररतिर्जीराश्वः ॥ २ ॥
अग्निं देवासो मानुषीषु विक्षु प्रियं धुः क्षेष्यन्तो न मित्रम्।
स दीदयदुशतीरूर्म्या आ दक्षाय्यो यो दास्वते दम आ ॥ ३ ॥
अस्य रण्वा स्वस्येव पुष्टिः संदृष्टिरस्य हियानस्य दक्षोः।
वि यो भरिभ्रदोषधीषु जिह्मात्यो न रथ्यो दोधवीति वारान् ॥ ४ ॥
आ यन्मे अभ्वं वनदः पनन्तोशिग्भ्यो नामिमीत वर्णम्।
स चित्रेण चिकिते रंसु भासा जुजुर्वाँ यो मुहुरा युवा भूत् ॥ ५ ॥

अथ पञ्चविंशो वर्गः ॥ २५ ॥

आ यो वना तातृषाणो न भाति वार्ण पथा रथ्येव स्वानीत्।
कृष्णध्वा तपू रण्वश्चिकेत द्यौरिव स्मयमानो नभोभिः ॥ ६ ॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

स यो व्यस्थाद्भि दक्षद्दुर्वीं पशुर्नैति स्वयुरगोपाः।
अग्निः शोचिष्माँ अतसान्युष्णन्कृष्णव्यथिरस्वदयन्न भूम॥ ७॥
नू ते पूर्वस्यावसो अधीतौ तृतीये विदथे मन्म शंसि।
अस्मे अग्ने संयद्वीरं बृहन्तं क्षुमन्तं वाजं स्वपत्यं रयिं दाः॥ ८॥
त्वया यथा गृत्समदासो अग्ने गृहा वन्वन्त उपरां अभि ष्युः।
सुवीरासो अभिमातिषाहः स्मत्सूरिभ्यो गृणते तद्वयो धाः॥ ९॥

[५] पञ्चमं सूक्तम्

ऋषिः—सोमाहुतिर्भार्गवः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—१, ३, ६ निचृदनुष्टुप्; २, ४, ५ अनुष्टुप्; ८ विराडनुष्टुप्; ७ भुरिगुष्णिक्॥ स्वरः—१-६, ८ गान्धारः; ७ ऋषभः॥

अथ षड्विंशो वर्गः॥ २६॥

होताजनिष्ट चेतनः पिता पितृभ्य ऊतये।
प्रयक्षञ्जेन्यं वसु शकेम वाजिनो यमम्॥ १॥
आ यस्मिन्त्सप्त रश्मयस्तता यज्ञस्य नेतरि।
मनुष्वद्दैव्यं मष्टमं पोता विश्ववं तदिन्वति॥ २॥
दधन्वे वा यदीमनु वोचद् ब्रह्माणि वेरु तत्।
परि विश्वानि काव्या नेमिश्चक्रमिवाभवत्॥ ३॥
साकं हि शुचिना शुचिः प्रशास्ता क्रतुनाजनि।
विद्वाँ अस्य व्रता ध्रुवा वया इवानु रोहते॥ ४॥
ता अस्य वर्णमायुवो नेष्टुः सचन्त धेनवः।
कुवित्तिसृभ्य आ वरं स्वसारो या इदं ययुः॥ ५॥
यदीं मातुरुप स्वसा घृतं भरन्त्यस्थित।
तासामध्वर्युरागतौ यवो वृष्टीव मोदते॥ ६॥
स्वः स्वाय धायसे कृणुतामृत्विगृत्विजम्।
स्तोमं यज्ञं चादरं वनेमा रयिमा वयम्॥ ७॥
यथा विद्वाँ अरं करद्विश्वेभ्यो यजतेभ्यः।
अयमग्ने त्वे अपि यं यज्ञं चकृमा वयम्॥ ८॥

[६] षष्ठं सूक्तम्

ऋषिः—सोमाहुतिर्भार्गवः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—१, ३, ५, ८ गायत्री; २, ४, ६ निचृद्गायत्री; ७ विराड्गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

अथ सप्तविंशो वर्गः॥ २७॥

इमां मे अग्ने समिधमिमामुपसदं वनेः। इमा उ षु श्रुधी गिरः॥ १॥
अया ते अग्ने विधेमोर्जो नपादश्वमिष्टे। एना सूक्तेन सुजात॥ २॥
तं त्वा गीर्भिर्गिर्वणसं द्रविणस्युं द्रविणोदः। सपर्येम सपर्यवः॥ ३॥
स बोधि सूरिर्मघवा वसुपते वसुदावन्। युयोध्यस्मद् द्वेषांसि॥ ४॥
स नो वृष्टिं दिवस्परि स नो वाजमनर्वाणम्। स नः सहस्त्रिणीरिषः॥ ५॥
ईळानायावस्यवे यविष्ठ दूत नो गिरा। यजिष्ठ होतरा गहि॥ ६॥
अन्तर्ह्यग्न ईयसे विद्वाञ्जन्मोभया कवे। दूतो जन्येव मित्र्यः॥ ७॥
स विद्वाँ आ च पिप्रयो यक्षि चिकित्व आनुषक्। आ चास्मिन्त्सत्सि बर्हिषि॥ ८॥

[७] सप्तमं सूक्तम्

ऋषिः—सोमाहुतिर्भार्गवः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—१, २, ३ निचृद्गायत्री; ४ त्रिपाद्गायत्री; ५ विराट्पिपीलिकामध्यागायत्री; ६ विराड्गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

अथ अष्टाविंशो वर्गः॥ २८॥

श्रेष्ठं यविष्ठ भारताग्ने द्युमन्तमा भर। वसो पुरुस्पृहं रयिम्॥ १॥
मा नो अरातिरीशत देवस्य मर्त्यस्य च। परि तस्या उत द्विषः॥ २॥
विश्वा उत त्वया वयं धारा उदन्याइव। अति गाहेमहि द्विषः॥ ३॥
शुचिः पावक वन्द्योऽग्ने बृहद्वि रोचसे। त्वं घृतेभिराहुतः॥ ४॥
त्वं नो असि भारताग्ने वशाभिरुक्षाभिः। अष्टापदीभिराहुतः॥ ५॥
द्वन्नः सपिर्रासुतिः प्रत्नो होता वरेण्यः। सहसस्पुत्रो अद्भुतः॥ ६॥

[८] अष्टमं सूक्तम्

ऋषिः—गृत्समदः शौनकः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—१ गायत्री; २ निचृत्पिपीलिका-मध्यागायत्री; ३, ५ निचृद्गायत्री; ४ विराड्गायत्री; ६ निचृदनुष्टुप्॥ स्वरः—१-५ षड्जः; ६ गान्धारः॥

अथ एकोनत्रिंशो वर्गः॥ २९॥

वाजयन्निव नू रथान्योगाँ अग्नेरुप स्तुहि। यशस्तमस्य मीळ्हुषः॥ १॥
यः सुनीथो ददाशुषेऽजुर्यो जरयन्नरिम्। चारुप्रतीक आहुतः॥ २॥
य उ श्रिया दमेष्वा दोषोषसि प्रशस्यते। यस्य व्रतं न मीयते॥ ३॥
आ यः स्वर्ण भानुना चित्रो विभात्यर्चिषा। अञ्जानो अजरैरभि॥ ४॥
अत्रिमनु स्वराज्यमग्निमुक्थानि वावृधुः। विश्वा अधि श्रियो दधे॥ ५॥
अग्नेरिन्द्रस्य सोमस्य देवानामूतिभिर्वयम्।
अरिष्यन्तः सचेमह्यभि ष्याम पृतन्यतः॥ ६॥

इति द्वितीयाष्टके पञ्चमोऽध्यायः॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अथ षष्ठोऽध्यायः

[९] नवमं सूक्तम्

ऋषिः—गृत्समदः शौनकः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—१, ३ त्रिष्टुप्; २ पङ्क्तिः; ४ विराट्त्रिष्टुप्; ५, ६ निचृत्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१, ३-६ धैवतः; २ पञ्चमः॥

अथ प्रथमो वर्गः॥ १॥

नि होता॑ होतृषद॑ने॒ विदा॑नस्त्वे॒षो दी॑दि॒वाँ अ॑सदत्सु॒दक्षः॑।
अद॑ब्धव्रतप्रमति॒र्वसि॑ष्ठः सहस्रंभ॒रः शुचि॑जिह्वो अ॒ग्निः॥ १॥
त्वं दू॒तस्त्वमु॑ नः पर॒स्पास्त्वं वस्य॒ वृ॑षभ प्रणे॒ता।
अग्ने॑ तो॒कस्य॑ न॒स्तने॑ त॒नूना॒मप्र॑युच्छ॒न्दीद्य॑द्बोधि गो॒पाः॥ २॥
वि॒धेम॑ ते पर॒मे जन्म॑न्नग्ने वि॒धेम॒ स्तोमै॒रव॑रे स॒धस्थे॑।
यस्मा॒द्योने॑रु॒दारि॑था॒ यजे॒ तं प्र त्वे ह॒र्वीषि॑ जुहुरे॒ समि॑द्धे॥ ३॥
अग्ने॒ यज॑स्व ह॒विषा॒ यजी॑याञ्छ्रु॒ष्टी दे॒ष्णम॒भि गृ॑णीहि॒ राधः॑।
त्वं ह्यसि॑ रयि॒पती॑ रयी॒णां त्वं शु॒क्रस्य॒ वच॑सो म॒नोता॑॥ ४॥
उ॒भयं॑ ते॒ न क्षी॑यते वस॒व्यं॑ दि॒वेदि॑वे॒ जाय॑मानस्य दस्म।
कृ॒धि क्षु॒मन्तं॑ जरि॒तार॑मग्ने कृ॒धि पतिं॑ स्वप॒त्यस्य॑ रा॒यः॥ ५॥
सैनानी॑केन सुवि॒दत्रो॑ अ॒स्मे यष्टा॑ दे॒वाँ आय॑जिष्ठः स्व॒स्ति।
अद॑ब्धो गो॒पा उ॒त नः॑ पर॒स्पा अग्ने॑ द्यु॒मदु॒त रे॒वद्दि॑दीहि॥ ६॥

[१०] दशमं सूक्तम्

ऋषिः—गृत्समदः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—१, २, ६ विराट्त्रिष्टुप्; ३ त्रिष्टुप्; ४ निचृत्त्रिष्टुप्; ५ पङ्क्तिः॥ स्वरः—१-४, ६ धैवतः; ५ पञ्चमः॥

अथ द्वितीयो वर्गः॥ २॥

जो॒हूत्रो॑ अ॒ग्निः प्र॑थ॒मः पि॒तेवे॒ळस्प॒दे मनु॑षा॒ यत्समि॑द्धः।
श्रियं॒ वसा॑नो अ॒मृतो॒ विचे॑ता मर्मृ॒जेन्यः॑ श्रव॒स्य१॒॑ः स वा॒जी॥ १॥
श्रू॒या अ॒ग्निश्चि॒त्रभा॑नु॒र्हवं॑ मे॒ विश्वा॑भिर्गी॒र्भिर॒मृतो॒ विचे॑ताः।
श्या॒वा रथं॑ वहतो॒ रोहि॑ता वो॒तारु॒षाह॑ चक्रे॒ विभृ॑त्रः॥ २॥
उ॒त्ता॒नाया॑मजनय॒न्त्सुषू॑तं॒ भुव॑द॒ग्निः पु॑रु॒पेशा॑सु॒ गर्भः॑।
शिरि॑णायां चिद॒क्तुना॒ महो॑भि॒रप॑रीवृतो वसति॒ प्रचे॑ताः॥ ३॥
जिघ॑र्म्य॒ग्निं ह॒विषा॑ घृ॒तेन॑ प्रतिक्षि॒यन्तं॒ भुव॑नानि॒ विश्वा॑।
पृ॒थुं ति॑र॒श्चा वय॑सा बृ॒हन्तं॒ व्यचि॑ष्ठ॒मन्नै॑ रभ॒सं दृशा॑नम्॥ ४॥
आ वि॒श्वतः॑ प्र॒त्यञ्चं॑ जिघर्म्यर॒क्षसा॒ मन॑सा॒ तज्जु॑षेत।
मर्य॑श्रीः स्पृह॒यद्व॑र्णो अ॒ग्निर्नाभि॒मृशे॑ त॒न्वा॒३॒॑ जर्भु॑राणः॥ ५॥

ज्ञे॒या भा॒गं स॑हसा॒नो वरे॑ण॒ त्वादू॑तासो मनु॒वद्व॑देम।
अनू॑नम॒ग्निं जु॒ह्वा॑ वच॒स्या म॑धु॒पृचं॑ धन॒सा जो॑हवीमि॥ ६॥

[११] एकादशं सूक्तम्

ऋषिः—गृत्समदः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१, ८, १०, १३, १९, २० पङ्क्तिः; २, ९ भुरिक्पङ्क्तिः; ३, ४, ६, ११, १२, १४, १८ निचृत्पङ्क्तिः; ५ स्वराड् बृहती; ७ विराट्पङ्क्तिः; १५ बृहती; १६, १७ भुरिग्बृहती; २१ त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१-४, ६-१४, १८-२० पञ्चमः; ५, १५-१७ मध्यमः; २१ धैवतः॥

अथ तृतीयो वर्गः॥ ३॥

श्रु॒धी हव॑मिन्द्र॒ मा रि॑षण्यः॒ स्याम॑ ते दा॒वने॒ वसू॑नाम्।
इ॒मा हि त्वामूर्जो॑ व॒र्धय॑न्ति वसू॒यवः॒ सिन्ध॑वो॒ न क्षर॑न्तः॥ १॥
सृ॒जो म॒हीरि॑न्द्र॒ या अपि॑न्वः॒ परि॑ष्ठिता॒ अहि॑ना शूर पू॒र्वीः।
अम॑र्त्यं चिद्दा॒सं मन्य॑मान॒मवा॑भिनदु॒क्थैर्वा॑वृधा॒नः॥ २॥
उ॒क्थेष्विन्नु शू॑र॒ येषु॑ चा॒कन्त्स्तोमे॑ष्विन्द्र रु॒द्रिये॑षु च।
तुभ्येदे॒ता यासु॑ मन्दसा॒नः प्र वा॒यवे॑ सिस्रते॒ न शु॒भ्राः॥ ३॥
शु॒भ्रं नु ते॒ शुष्मं॑ व॒र्धय॑न्तः शु॒भ्रं वज्रं॑ बा॒ह्वोर्दधा॑नाः।
शु॒भ्रस्त्वमि॑न्द्र वावृधा॒नो अ॒स्मे दासी॒र्विशः॒ सूर्ये॑ण सह्याः॥ ४॥
गुहा॑ हि॒तं गुह्यं॑ गू॒ळ्हम॒प्स्वपी॑वृतं मा॒यिनं॑ क्षि॒यन्त॑म्।
उ॒तो अ॒पो द्यां त॑स्त॒भ्वांस॒मह॒न्नहिं॑ शूर वी॒र्ये॑ण॥ ५॥

अथ चतुर्थो वर्गः॥ ४॥

स्तवा॒ नु त॑ इन्द्र पू॒र्व्या म॒हान्यु॒त स्त॑वाम॒ नूत॑ना कृ॒तानि॑।
स्तवा॒ वज्रं॑ बा॒ह्वोरु॒शन्तं॒ स्तवा॒ हरी॒ सूर्य॑स्य के॒तू॥ ६॥
हरी॒ नु त॑ इन्द्र वा॒जय॑न्ता घृत॒श्चुतं॑ स्वा॒रम॑स्वार्ष्टाम्।
वि स॑म॒ना भूमि॑रप्रथि॒ष्टारं॑स्त॒ पर्व॑तश्चित्सरि॒ष्यन्॥ ७॥
नि पर्व॑तः सा॒द्यप्र॑युच्छ॒न्त्सं मा॒तृभि॑र्वावशा॒नो अ॑क्रान्।
दू॒रे पा॒रे वाणीं॑ व॒र्धय॑न्त॒ इन्द्रे॑षितां ध॒मनिं॑ पप्रथ॒न्नि॥ ८॥
इन्द्रो॑ म॒हां सिन्धु॑मा॒शया॑नं माया॒विनं॑ वृ॒त्रम॑स्फुर॒न्निः।
अरे॑जेतां॒ रोद॑सी भिया॒ने कनि॑क्रदतो॒ वृष्णो॑ अस्य॒ वज्रा॑त्॥ ९॥
अरो॑रवी॒द् वृष्णो॑ अस्य॒ वज्रोऽमा॑नु॒षं यन्मानु॑षो नि॒जूर्वा॑त्।
नि मा॒यिनो॑ दान॒वस्य॑ मा॒या अपा॑दयत्पपि॒वान्त्सु॒तस्य॑॥ १०॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अथ पञ्चमो वर्गः ॥ ५ ॥

पिबापिबेदिन्द्र शूर सोमं मन्दन्तु त्वा मन्दिनः सुतासः।
पृणन्तस्ते कुक्षी वर्धयन्त्वित्था सुतः पौर इन्द्रमाव॥ ११ ॥
त्वे इन्द्राप्यभूम विप्रा धियं वनेम ऋतया सपन्तः।
अवस्यवो धीमहि प्रशस्तिं सद्यस्ते रायो दावने स्याम॥ १२ ॥
स्याम ते त इन्द्र ये त ऊती अवस्यव ऊजं वर्धयन्तः।
शुष्मिन्तमं यं चाकनाम देवास्मे रयिं रासि वीरवन्तम्॥ १३ ॥
रासि क्षयं रासि मित्रमस्मे रासि शर्धं इन्द्र मारुतं नः।
सजोषसो ये च मन्दसानाः प्र वायवः पान्त्यग्रणीतिम्॥ १४ ॥
व्यन्त्विन्नु येषु मन्दसानस्तृपत्सोमं पाहि ब्रह्मदिन्द्र ।
अस्मान्त्सु पृत्वा तरुत्रावर्धयो द्यां बृहद्भिरर्कैः ॥ १५ ॥

अथ षष्ठो वर्गः ॥ ६ ॥

बृहन्त इन्नु ये ते तरुत्रोक्थेभिर्वा सुम्नमाविवासान्।
स्तुणानासो बर्हिः पस्त्यावत्त्वोता इदिन्द्र वाजमग्मन्॥ १६ ॥
उग्रेष्विन्नु शूर मन्दसानस्त्रिकद्रुकेषु पाहि सोममिन्द्र।
प्रदोधुवच्छ्मश्रुषु प्रीणानो याहि हरिभ्यां सुतस्य पीतिम्॥ १७ ॥
धिष्वा शवः शूर येन वृत्रमवाभिनद्यानुमौर्णवाभम्।
अपावृणोज्ज्योतिरार्याय नि सव्यतः सादि दस्युरिन्द्र॥ १८ ॥
सनेम ये त ऊतिभिस्तरन्तो विश्वाः स्पृध आर्येण दस्यून्।
अस्मभ्यं तत्त्वाष्ट्रं विश्वरूपमरन्धयः साख्यस्य त्रिताय॥ १९ ॥
अस्य सुवानस्य मन्दिनस्त्रितस्य न्यर्बुदं वावृधानो अस्तः।
अवर्तयत्सूर्यो न चक्रं भिनद्बलमिन्द्रो अङ्गिरस्वान्॥ २० ॥
नूनं सा ते प्रति वरं जरित्रे दुहीयदिन्द्र दक्षिणा मघोनी।
शिक्षा स्तोतृभ्यो मादिं भ्रग्भगो नो बृहद्वदेम विदथे सुवीराः॥ २१ ॥

द्वितीयोऽनुवाकः [१२] द्वादशं सूक्तम्

ऋषिः—गृत्समदः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१-५, १२-१५ त्रिष्टुप्; ६-८, १०, ११ निचृत्त्रिष्टुप्; ९ भुरिक्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः॥

अथ सप्तमो वर्गः ॥ ७ ॥

यो जात एव प्रथमो मनस्वान्देवो देवान्क्रतुना पर्यभूषत्।
यस्य शुष्माद्रोदसी अभ्यसेतां नृम्णस्य मह्ना स जनास इन्द्रः॥ १ ॥
यः पृथिवीं व्यथमानामदृंहद्यः पर्वतान्प्रकुपिताँ अरम्णात्।
यो अन्तरिक्षं विममे वरीयो यो द्यामस्तभ्नात्स जनास इन्द्रः॥ २ ॥
यो हत्वाहिमरिणात्सप्त सिन्धून्यो गा उदाजदपधा वलस्य।
यो अश्मनोरन्तरग्निं जजान संवृक्समत्सु स जनास इन्द्रः॥ ३ ॥
येनेमा विश्वा च्यवना कृतानि यो दासं वर्णमधरं गुहाकः।
श्वघ्नीव यो जिगीवाँ लक्षमाददर्यः पुष्टानि स जनास इन्द्रः॥ ४ ॥
यं स्मा पृच्छन्ति कुह सेति घोरमुतेमाहुर्नैषो अस्तीत्येनम्।
सो अर्यः पुष्टीर्विजइवा मिनाति श्रदस्मै धत्त स जनास इन्द्रः॥ ५ ॥

अथ अष्टमो वर्गः ॥ ८ ॥

यो रध्रस्य चोदिता यः कृशस्य यो ब्रह्मणो नाधमानस्य कीरेः।
युक्तग्राव्णो योऽविता सुशिप्रः सुतसोमस्य स जनास इन्द्रः॥ ६ ॥
यस्याश्वासः प्रदिशि यस्य गावो यस्य ग्रामा यस्य विश्वे रथासः।
यः सूर्यं य उषसं जजान यो अपां नेता स जनास इन्द्रः॥ ७ ॥
यं क्रन्दसी संयती विह्वयेते परेऽवर उभया अमित्राः।
समानं चिद्रथमातस्थिवांसा नाना हवेते स जनास इन्द्रः॥ ८ ॥
यस्मान्न ऋते विजयन्ते जनासो यं युध्यमाना अवसे हवन्ते।
यो विश्वस्य प्रतिमानं बभूव यो अच्युतच्युत्स जनास इन्द्रः॥ ९ ॥
यः शश्वतो मह्येनो दधानानमन्यमानाञ्छर्वा जघान।
यः शर्धते नानुददाति शृध्यां यो दस्योर्हन्ता स जनास इन्द्रः॥ १० ॥

अथ नवमो वर्गः ॥ ९ ॥

यः शम्बरं पर्वतेषु क्षियन्तं चत्वारिंश्यां शरद्यन्वविन्दत्।
ओजायमानं यो अहिं जघान दानुं शयानं स जनास इन्द्रः॥ ११ ॥
यः सप्तरश्मिर्वृषभस्तुविष्मानवासृजत्सर्तवे सप्त सिन्धून्।
यो रौहिणमस्फुरद्वज्रबाहुर्द्यामारोहन्तं स जनास इन्द्रः॥ १२ ॥
द्यावा चिदस्मै पृथिवी नमेते शुष्माच्चिदस्य पर्वता भयन्ते।
यः सोमपा निचितो वज्रबाहुर्यो वज्रहस्तः स जनास इन्द्रः॥ १३ ॥
यः सुन्वन्तमवति यः पचन्तं यः शंसन्तं यः शशमानमूती।
यस्य ब्रह्म वर्धनं यस्य सोमो यस्येदं राधः स जनास इन्द्रः॥ १४ ॥
यः सुन्वते पचते दुध्र आ चिद्वाजं ददर्षि स किलासि सत्यः।
वयं त इन्द्र विश्वह प्रियासः सुवीरासो विदथमा वदेम॥ १५ ॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

[१३] त्रयोदशं सूक्तम्

ऋषिः—गृत्समदः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१-३, १०-१२ भुरिक्त्रिष्टुप्; ४ निचृत् जगती; ५, ६ विराड्जगती; ७, ८ निचृत्त्रिष्टुप्; ९, १३ त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१-३, ७-१३ धैवतः; ४-६ निषादः ॥

अथ दशमो वर्गः ॥ १० ॥

ऋतुर्जनित्री तस्या अपस्परि मक्षू जात आविशद्यासु वर्धते।
तदाहना अभवत्पिप्युषी पयोंऽशोः पीयूषं प्रथमं तदुक्थ्यम्॥ १ ॥
सध्रीमा यन्ति परि बिभ्रतीः पयो विश्वप्न्याय प्र भरन्त भोजनम्।
समानो अध्वा प्रवतामनुष्यदे यस्ताकृणोः प्रथमं सास्युक्थ्यः॥ २ ॥
अन्वेको वदति यद् ददाति तद्रूपा मिनन्तदपा एक ईयते।
विश्वा एकस्य विनुदस्तितिक्षते यस्ताकृणोः प्रथमं सास्युक्थ्यः॥ ३ ॥
प्रजाभ्यः पुष्टिं विभजन्त आसते रयिमिव पृष्ठं प्रभवन्तमायते।
असिन्वन्दंष्ट्रैः पितुरत्ति भोजनं यस्ताकृणोः प्रथमं सास्युक्थ्यः॥ ४ ॥
अधाकृणोः पृथिवीं संदृशे दिवे यो धौतीनामहिहन्नारिणक्पथः।
तं त्वा स्तोमेभिरुदभिर्न वाजिनं देवं देवा अजनन्त्सास्युक्थ्यः॥ ५ ॥

अथ एकादशो वर्गः ॥ ११ ॥

यो भोजनं च दयसे च वर्धनमार्द्रादा शुष्कं मधुमद्दोहित्थ।
स शेवधिं नि दधिषे विवस्वति विश्वस्यैक ईशिषे सास्युक्थ्यः॥ ६ ॥
यः पुष्पिणीश्च प्रस्वश्च धर्मणाऽधि दाने व्यन्वनीरधारयः।
यश्चासमा अजनो द्युतो दिव उरुरूर्वीं अभितः सास्युक्थ्यः॥ ७ ॥
यो नार्मरं सहवसुं निहन्तवे पृक्षाय च दासवेशाय चावहः।
ऊर्जयन्त्या अपरिविष्टमास्यमुतैवाद्य पुरुकृत्सास्युक्थ्यः ॥ ८ ॥
शतं वा यस्य दश साकमाद्य एकस्य श्रुष्टौ यदह चोदमाविथ।
अरज्जौ दस्यून्त्समुनब्दभीतये सुप्राव्यो अभवः सास्युक्थ्यः॥ ९ ॥
विश्वेदनु रोधना अस्य पौंस्यं ददुरस्मै दधिरे कृत्नवे धनम्।
यळस्तभ्ना विष्टिरः पञ्च संदृशः परि पुरो अभवः सास्युक्थ्यः॥ १० ॥

अथ द्वादशो वर्गः ॥ १२ ॥

सुप्रवाचनं तव वीर वीर्यं यदेकेन क्रतुना विन्दसे वसु।
जातूष्ठिरस्य प्र वयः सहस्वतो या चकर्थ सेन्द्र विश्वास्युक्थ्यः॥ ११ ॥
अरमयः सरपसस्तराय कं तुर्वीतये च वय्याय च स्तुतिम्।
नीचा सन्तमुदनयः परावृजं प्रान्धं श्रोणं श्रवयन्त्सास्युक्थ्यः॥ १२ ॥

अस्मभ्यं तद्वसो दानाय राधः समर्थयस्व बहु ते वसव्यम्।
इन्द्र यच्चित्रं श्रवस्या अनु द्यून्बृहद्वदेम विदथे सुवीराः॥ १३ ॥

[१४] चतुर्दशं सूक्तम्

ऋषिः—गृत्समदः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१, ३, ४, ९, १०, १२ त्रिष्टुप्; २, ६, ८ निचृत्त्रिष्टुप्; ५ निचृत्पङ्क्तिः; ७ विराट्त्रिष्टुप्; ११ भुरिक्पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१-४, ६-१०, १२ धैवतः; ५, ११ पञ्चमः ॥

अथ त्रयोदशो वर्गः ॥ १३ ॥

अध्वर्यवो भरतेन्द्राय सोममामत्रेभिः सिञ्चता मद्यमन्धः।
कामी हि वीरः सदमस्य पीतिं जुहोत वृष्णे तदिदेष वष्टि॥ १ ॥
अध्वर्यवो यो अपो वव्रिवांसं वृत्रं जघानाशन्येव वृक्षम्।
तस्मा एतं भरत तद्वशायैष इन्द्रो अर्हति पीतिमस्य॥ २ ॥
अध्वर्यवो यो दूभीकं जघान यो गा उदाजदप हि वलं वः।
तस्मा एतमन्तरिक्षे न वातमिन्द्रं सोमैरोर्णुत जूर्न वस्त्रैः॥ ३ ॥
अध्वर्यवो य उरणं जघान नव चख्वांसं नवतिं च बाहून्।
यो अर्बुदमव नीचा बबाधे तमिन्द्रं सोमस्य भृथे हिनोत॥ ४ ॥
अध्वर्यवो यः स्वश्नं जघान यः शुष्णमशुषं यो व्यंसम्।
यः पिप्रुं नमुचिं यो रुधिक्रां तस्मा इन्द्रायान्धसो जुहोत॥ ५ ॥
अध्वर्यवो यः शतं शम्बरस्य पुरो बिभेदाश्मनेव पूर्वीः।
यो वर्चिनः शतमिन्द्रः सहस्रमपावपद्धरता सोममस्मै ॥ ६ ॥

अथ चतुर्दशो वर्गः ॥ १४ ॥

अध्वर्यवो यः शतमा सहस्रं भूम्या उपस्थेऽवपज्जघन्वान्।
कुत्सस्यायोरतिथिग्वस्य वीरान् न्यवृणग्भरता सोममस्मै॥ ७ ॥
अध्वर्यवो यन्नरः कामयाध्वे श्रुष्टी वहन्तो नशथा तदिन्द्रे।
गर्भस्तिपूतं भरत श्रुतायेन्द्राय सोमं यज्यवो जुहोत॥ ८ ॥
अध्वर्यवः कर्तना श्रुष्टिमस्मै वने निपूतं वन उन्नयध्वम्।
जुषाणो हस्त्यमभि वावशे व इन्द्राय सोमं मदिरं जुहोत॥ ९ ॥
अध्वर्यवः पयसोधर्यथा गोः सोमेभिरीं पृणता भोजमिन्द्रम्।
वेदाहमस्य निभृतं म एतदित्सन्तं भूयो यजतश्चिकेत॥ १० ॥
अध्वर्यवो यो दिव्यस्य वस्वो यः पार्थिवस्य क्षम्यस्य राजा।
तमूर्वरे मा पृणता यवेनेन्द्रं सोमेभिस्तदपो वो अस्तु॥ ११ ॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अस्मभ्यं तद्वसो दानाय राधः समर्थयस्व बहु ते वसव्यम्।
इन्द्र यच्चित्रं श्रवस्या अनु द्यून्बृहद्वदेम विदथे सुवीराः॥ १२॥

[१५] पञ्चदशं सूक्तम्

ऋषिः—गृत्समदः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१ भुरिक्पङ्क्तिः; २, ४-६, ९, १० त्रिष्टुप्; ३ निचृत्त्रिष्टुप्; ७ स्वराट्पङ्क्तिः; ८ विराट्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१, ७ पञ्चमः; २-६, ८-१० धैवतः॥

अथ पञ्चदशो वर्गः॥ १५॥

प्र घा न्वस्य महतो महानि सत्या सत्यस्य करणानि वोचम्।
त्रिकद्रुकेष्वपिबत्सुतस्यास्य मदे अहिमिन्द्रो जघान ॥ १॥
अवंशे द्यामस्तभायद् बृहन्तमा रोदसी अपृणदन्तरिक्षम्।
स धारयत्पृथिवीं पप्रथच्च सोमस्य ता मद इन्द्रश्चकार॥ २॥
सद्मेव प्राचो वि मिमाय मानैर्वज्रेण खान्यतृणन्नदीनाम्।
वृथासृत्पथिभिर्दीर्घयाथैः सोमस्य ता मद इन्द्रश्चकार॥ ३॥
स प्रवोळ्हन्परिगत्या दुभीतेर्विश्वमधागायुधमिद्धे अग्नौ ।
सं गोभिरश्वैरसृजद्रथेभिः सोमस्य ता मद इन्द्रश्चकार ॥ ४॥
स ईं महीं धुनिमेतोररम्णात्सो अस्रातृणपारयत्स्वस्ति ।
त उत्स्राय रयिमभि प्र तस्थुः सोमस्य ता मद इन्द्रश्चकार॥ ५॥

अथ षोडशो वर्गः॥ १६॥

सोदञ्चं सिन्धुमरिणान्महित्वा वज्रेणान उषसः सं पिपेष।
अजवसो जविनीभिर्विवृश्चन्त्सोमस्य ता मद इन्द्रश्चकार॥ ६॥
स विद्वाँ अपगोहं कनीनामाविर्भवन्नुदतिष्ठत्परावृक् ।
प्रति श्रोणः स्थाद् व्यनगंचष्ट सोमस्य ता मद इन्द्रश्चकार॥ ७॥
भिनद्बलमङ्गिरोभिर्गृणानो वि पर्वतस्य दृंहितान्यैरत् ।
रिणग्रोधांसि कृत्रिमाण्येषां सोमस्य ता मद इन्द्रश्चकार ॥ ८॥
स्वप्नेनाभ्युप्या चुमुरिं धुनिं च जघन्थ दस्युं प्र दभीतिमावः।
रम्भी चिदत्र विविदे हिरण्यं सोमस्य ता मद इन्द्रश्चकार॥ ९॥
नूनं सा ते प्रति वरं जरित्रे दुहीयदिन्द्र दक्षिणा मघोनी।
शिक्षा स्तोतृभ्यो माति धग्भगो नो बृहद्वदेम विदथे सुवीराः॥ १०॥

[१६] षोडशं सूक्तम्

ऋषिः—गृत्समदः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१, ७ जगती; २ भुरिक्त्रिष्टुप्; ३ विराड्जगती; ४-६, ८ निचृज्जगती; ९ त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१, ३-८ निषादः; २, ९ धैवतः॥

अथ सप्तदशो वर्गः॥ १७॥

प्र वः सतां ज्येष्ठतमाय सुष्टुतिमग्नाविव समिधाने हविर्भरे।
इन्द्रमजुर्यं जरयन्तमुक्षितं सनाद्युवानमवसे हवामहे ॥ १॥
यस्मादिन्द्राद् बृहतः किं चनेमृते विश्वान्यस्मिन्त्संभृताधि वीर्या।
जठरे सोमं तन्वी३ सहो महो हस्ते वज्रं भरति शीर्षणि क्रतुम्॥ २॥
न क्षोणीभ्यां परिभ्वे त इन्द्रियं न समुद्रैः पर्वतैरिन्द्र ते रथः।
न ते वज्रमन्वश्नोति कश्चन यदाशुभिः पतसि योजना पुरु॥ ३॥
विश्वे ह्यस्मै यजताय धृष्णवे क्रतुं भरन्ति वृषभाय सश्चते।
वृषा यजस्व हविषा विदुष्टरः पिबेन्द्र सोमं वृषभेण भानुना॥ ४॥
वृष्णः कोशः पवते मध्व ऊर्मिर्वृषभान्नाय वृषभाय पातवे।
वृषणाध्वर्यू वृषभासो अद्रयो वृषणं सोमं वृषभाय सुष्वति॥ ५॥

अथ अष्टादशो वर्गः॥ १८॥

वृषा ते वज्र उत ते वृषा रथो वृषणा हरी वृषभाण्यायुधा।
वृष्णो मदस्य वृषभ त्वमीशिष इन्द्र सोमस्य वृषभस्य तृप्णुहि॥ ६॥
प्र ते नावं न समने वचस्युवं ब्रह्मणा यामि सवनेषु दाधृषिः।
कुविन्नो अस्य वचसो निबोधिषदिन्द्रमुत्सं न वसुनः सिचामहे॥ ७॥
पुरा संबाधादभ्या ववृत्स्व नो धेनुर्न वत्सं यवसस्य पिप्युषी।
सकृत्सु ते सुमतिभिः शतक्रतो सं पत्नीभिर्न वृषणो नसीमहि॥ ८॥
नूनं सा ते प्रति वरं जरित्रे दुहीयदिन्द्र दक्षिणा मघोनी।
शिक्षा स्तोतृभ्यो माति धग्भगो नो बृहद्वदेम विदथे सुवीराः॥ ९॥

[१७] सप्तदशं सूक्तम्

ऋषिः—गृत्समदः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१, ५, ६ विराड्जगती; २, ४ निचृज्जगती; ३, ७ भुरिक्त्रिष्टुप्; ८ निचृत्पङ्क्तिः; ९ त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१, २, ४-६ निषादः; ३, ७, ९ धैवतः; ८ पञ्चमः॥

अथ एकोनविंशो वर्गः॥ १९॥

तदस्मै नव्यमङ्गिरस्वदर्चत शुष्मा यदस्य प्रत्नथोदीरते।
विश्वा यद् गोत्रा सहसा परीवृता मदे सोमस्य दृंहितान्यैरयत्॥ १॥
स भूतु यो ह प्रथमाय धायसे ओजो मिमानो महिमानमातिरत्।
शूरो यो युत्सु तन्वं परिव्यत शीर्षणि द्यां महिना प्रत्यमुञ्चत॥ २॥
अधाकृणोः प्रथमं वीर्यं महद्यदस्याग्रे ब्रह्मणा शुष्ममैरयः।
रथेष्ठेन हर्यश्वेन विच्युताः प्र जीरयः सिस्रते सध्यंक् पृथक्॥ ३॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अधा यो विश्वा भुवनाभि मज्मनैशानकृत्प्रवया अभ्यवर्धत।
आद्रोदसी ज्योतिषा वह्निरातनोत्सीव्यन्तमांसि दुधिता समव्ययत्॥ ४॥
स प्राचीनान् पर्वतान् दृंहदोजसाधराचीनमकृणोदपामपः।
अधारयत्पृथिवीं विश्वधायसमस्तभ्नान्मायया द्यामवस्रसः॥ ५॥

अथ विंशो वर्गः॥ २०॥

सास्मा अरं बाहुभ्यां यं पिताकृणोद्विश्वस्मादा जनुषो वेदसस्परि।
येना पृथिव्यां नि क्रिविं शयध्यै वज्रेण हत्व्यवृणक्तुविष्वणिः॥ ६॥
अमाजूरिव पित्रोः सचा सती समानादा सदसस्त्वामिये भगम्।
कृधि प्रकेतमुप मास्या भर दद्धि भागं तन्वो३ येन मामहः॥ ७॥
भोजं त्वामिन्द्र वयं हुवेम दुदिष्टमिन्द्रापांसि वाजान्।
अविड्डीन्द्र चित्रया न ऊती कृधि वृषन्निन्द्र वस्यसो नः॥ ८॥
नूनं सा ते प्रति वरं जरित्रे दुहीयदिन्द्र दक्षिणा मघोनी।
शिक्षा स्तोतृभ्यो माति धग्भगो नो बृहद्वदेम विदथे सुवीराः॥ ९॥

[१८] अष्टादशं सूक्तम्

ऋषिः—गृत्समदः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१ पङ्क्तिः; २, ३, ९ त्रिष्टुप्; ४, ८ भुरिक्पङ्क्तिः; ५, ६ स्वराट्पङ्क्तिः; ७ निचृत्पङ्क्तिः॥ स्वरः—१, ४-८ पञ्चमः; २, ३, ९ धैवतः॥

अथ एकविंशो वर्गः॥ २१॥

प्राता रथो नवो योजि सस्रिश्चतुर्युगस्त्रिकशः सप्तरश्मिः।
दशारित्रो मनुष्यः स्वर्षाः स इष्टिभिर्मतिभी रंह्यो भूत्॥ १॥
सास्मा अरं प्रथमं स द्वितीयमुतो तृतीयं मनुषः स होता।
अन्यस्या गर्भमन्य ऊ जनन्त सो अन्येभिः सचते जेन्यो वृषा॥ २॥
हरी नु कं रथ इन्द्रस्य योजमाशै सूक्तेन वचसा नवेन।
मो षु त्वामत्र बहवो हि विप्रा नि रीरमन्यजमानासो अन्ये॥ ३॥
आ द्वाभ्यां हरिभ्यामिन्द्र याह्या चतुर्भिरा षड्भिर्हूयमानः।
आष्टाभिर्दशभिः सोमपेयमुयं सुतः सुमख मा मृधस्कः॥ ४॥
आ विंशत्या त्रिंशता याह्यर्वाङा चत्वारिंशता हरिभिर्युजानः।
आ पञ्चाशता सुरथेभिरिन्द्रा षष्टया सप्तत्या सोमपेयम्॥ ५॥

अथ द्वाविंशो वर्गः॥ २२॥

आशीत्या नवत्या याह्यर्वाङा शतेन हरिभिरुह्यमानः।
अयं हि ते शुनहोत्रेषु सोम इन्द्र त्वाया परिषिक्तो मदाय॥ ६॥
मम ब्रह्मेन्द्र याह्यच्छा विश्वा हरी धुरि धिष्वा रथस्य।
पुरुत्रा हि वितव्यो बभूथास्मिञ्छूर सवने मादयस्व॥ ७॥
न म इन्द्रेण सख्यं वि योषदस्मभ्यमस्य दक्षिणा दुहीत।
उप ज्येष्ठे वरूथे गभस्तौ प्रायेप्राये जिगीवांसः स्याम॥ ८॥
नूनं सा ते प्रति वरं जरित्रे दुहीयदिन्द्र दक्षिणा मघोनी।
शिक्षा स्तोतृभ्यो माति धग्भगो नो बृहद्वदेम विदथे सुवीराः॥ ९॥

[१९] एकोनविंशं सूक्तम्

ऋषिः—गृत्समदः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१, २, ६, ८ विराट्त्रिष्टुप्; ३ पङ्क्तिः; ४, ७ भुरिक्पङ्क्तिः; ५ निचृत्पङ्क्तिः; ९ त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१, २, ३-५, ७ पञ्चमः; ६, ८, ९ धैवतः॥

अथ त्रयोविंशो वर्गः॥ २३॥

अपाव्यस्यान्धसो मदाय मनीषिणः सुवानस्य प्रयसः।
यस्मिन्निन्द्रः प्रदिवि वावृधान ओको दधे ब्रह्मण्यन्तश्च नरः॥ १॥
अस्य मन्दानो मध्वो वज्रहस्तोऽहिमिन्द्रो अर्णोवृतं वि वृश्चत्।
। यद्वयो न स्वसराण्यच्छा प्रयांसि च नदीनां चक्रमन्त॥ २॥
स माहिन इन्द्रो अर्णो अपां प्रैरयदहिहाच्छा समुद्रम्।
अजनयत्सूर्यं विदद्गा अक्तुनाह्ना वयुनानि साधत्॥ ३॥
सो अप्रतीनि मनवे पुरूणीन्द्रो दाशद्दाशुषे हन्ति वृत्रम्।
सद्यो यो नृभ्यो अतसाय्यो भूत्पस्पृधानेभ्यः सूर्यस्य सातौ॥ ४॥
स सुन्वत इन्द्रः सूर्यमा देवो रिणङ्मर्त्यीय स्तवान्।
आ यद्रयिं गुहदवद्यमस्मै भरदंशं नैतशो दशस्यन्॥ ५॥

अथ चतुर्विंशो वर्गः॥ २४॥

स रन्धयत्सदिवः सारथये शुष्णमशुषं कुयवं कुत्साय।
दिवोदासाय नवतिं च नवेन्द्रः पुरो व्यैरच्छम्बरस्य॥ ६॥
एवा त इन्द्रोचथमहेम श्रवस्या न त्मना वाजयन्तः।
अश्याम तत्साप्तमाशुषाणा ननमो वधरदेवस्य पीयोः॥ ७॥
एवा तं गृत्समदाः शूर मन्मावस्यवो न वयुनानि तक्षुः।
ब्रह्मण्यन्त इन्द्र ते नवीयं इषमूर्जं सुक्षितिं सुम्नमश्युः॥ ८॥
नूनं सा ते प्रति वरं जरित्रे दुहीयदिन्द्र दक्षिणा मघोनी।
शिक्षा स्तोतृभ्यो माति धग्भगो नो बृहद्वदेम विदथे सुवीराः॥ ९॥

CC-0. Rashtriya Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

[२०] विंशं सूक्तम्

ऋषिः—गृत्समदः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१, ६, ८ विराट्त्रिष्टुप्; २ बृहती; ३ पङ्क्तिः; ४, ५, ७ भुरिक्पङ्क्तिः; ९ त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१, ६, ८, ९ धैवतः; २ मध्यमः; ३-५, ७ पञ्चमः॥

अथ पञ्चविंशो वर्गः॥ २५॥

वयं ते वय इन्द्र विद्धि षु णः प्र भरामहे वाजयुर्न रथम्।
विपन्यवो दीध्यतो मनीषा सुम्नमियक्षन्तस्त्वावतो नॄन्॥ १॥
त्वं न इन्द्र त्वाभिरूति त्वायतो अभिष्टिपासि जनान्।
त्वमिनो दाशुषो वरूतेत्थाधीरभि यो नक्षति त्वा॥ २॥
स नो युवेन्द्रो जोहूत्रः सखा शिवो नरामस्तु पाता।
यः शंसन्तं यः शशमानमूती पचन्तं च स्तुवन्तं च प्रणेषत्॥ ३॥
तमु स्तुष इन्द्रं तं गृणीषे यस्मिन्पुरा वावृधुः शाशदुश्च।
स वस्वः कामं पीपरदियानो ब्रह्मण्यतो नूतनस्यायोः॥ ४॥
सो अङ्गिरसामुचथा जुजुष्वान्ब्रह्मा तूतोदिन्द्रो गातुमिष्णन्।
मुष्णन्नुषसः सूर्येण स्तवानश्नस्य चिच्छिश्नथत्पूर्व्याणि॥ ५॥

अथ षड्विंशो वर्गः॥ २६॥

स ह श्रुत इन्द्रो नाम देव ऊर्ध्वो भुवन्मनुषे दस्मतमः।
अव प्रियमर्शसानस्य साह्वाञ्छिरो भरद्वाजस्य स्वधावान्॥ ६॥
स वृत्रहेन्द्रः कृष्णयोनीः पुरन्दरो दासीरैरयद्वि ।
अजनयन्मनवे क्षाम्पश्च सत्रा शंसं यजमानस्य तूतोत्॥ ७॥
तस्मै तवस्यूमनु दायि सत्रेन्द्राय देवेभिरर्णसातौ।
प्रति यदस्य वज्रं बाह्वोर्धूर्ष्वा दस्यून्पुर आयसीर्नि तारीत्॥ ८॥
नूनं सा ते प्रति वरं जरित्रे दुहीयदिन्द्र दक्षिणा मघोनी।
शिक्षा स्तोतृभ्यो माति धग्भगो नो बृहद्वदेम विदथे सुवीराः॥ ९॥

[२१] एकविंशं सूक्तम्

ऋषिः—गृत्समदः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१, २ स्वराट्त्रिष्टुप्; ३-४ विराड्जगती; ५ निचृज्जगती; ६ त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१, २, ६ धैवतः; ३-५ निषादः॥

अथ सप्तविंशो वर्गः॥ २७॥

विश्वजितं धनजितं स्वर्जितं सत्राजितं नृजितं उर्वराजितं।
अश्वजितं गोजितं अब्जितं भरेन्द्राय सोमं यजताय हर्यतम्॥ १॥

अभिभुवेऽभिभङ्गाय वन्वतेऽषाळ्हाय सहमानाय वेधसे ।
तुविग्रये वह्नये दुष्टरीतवे सत्रासाहे नम इन्द्राय वोचत ॥ २॥
सत्रासाहो जनभक्षो जनंसहश्च्यवनो युध्मो अनु जोषमुक्षितः।
वृतंचयः सहुरिर्विक्ष्वारित इन्द्रस्य वोचं प्र कृतानि वीर्या ॥ ३॥
अनानुदो वृषभो दोधतो वधो गम्भीर ऋष्वो असमष्टकाव्यः।
रुद्रचोदः शनथनो वीळितस्पृथुरिन्द्रः सुयज्ञ उषसः स्वर्जनत्॥ ४॥
यज्ञेन गातुमसुरो विविद्रिरे धियो हिन्वाना उशिजो मनीषिणः।
अभिस्वरा निषदा गा अवस्यव इन्द्रे हिन्वाना द्रविणान्याशत॥ ५॥
इन्द्र श्रेष्ठानि द्रविणानि धेहि चित्तिं दक्षस्य सुभगत्वमस्मे।
पोषं रयीणामरिष्टिं तनूनां स्वाद्मानं वाचः सुदिनत्वमह्नाम्॥ ६॥

[२२] द्वाविंशं सूक्तम्

ऋषिः—गृत्समदः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१ अष्टिः; २ निचृदतिशक्करी; ३ स्वराट् शक्करी; ४ भुरिगतिशक्करी॥ स्वरः—१ मध्यमः; २, ४ पञ्चमः; ३ धैवतः॥

अथ अष्टाविंशो वर्गः॥ २८॥

त्रिकद्रुकेषु महिषो यवाशिरं तुविशुष्मस्तृपत्सोममपिबद्विष्णुना सुतं यथावशत्। स ईं ममाद महि कर्म कर्तवे महामुरुं
सैनं सश्चद्देवो देवं सत्यमिन्द्रं सत्य इन्दुः ॥ १॥
अध त्विषीमाँ अभ्योजसा क्रिविं युधाभवदा रोदसी
अपृणदस्य मज्मना प्र वावृधे। अधत्तान्यं जठरे प्रेमरिच्यत
सैनं सश्चद्देवो देवं सत्यमिन्द्रं सत्य इन्दुः ॥ २॥
साकं जातः क्रतुना साकमोजसा ववक्षिथ साकं वृद्धो वीर्यैः
सासहिर्मृधो विचर्षणिः। दाता राधः स्तुवते काम्यं वसु
सैनं सश्चद्देवो देवं सत्यमिन्द्रं सत्य इन्दुः ॥ ३॥
तव त्यन्नय नृतोऽप इन्द्र प्रथमं पूर्व्यं दिवि प्रवाच्यं कृतम्।
यद्देवस्य शवसा प्रारिणा असुं रिणन्नपः
भुवद्विश्वमभ्यादेवमोजसा विदादूर्जं शतक्रतुर्विदादिषम् ॥ ४॥

तृतीयोऽनुवाकः

[२३] त्रयोविंशं सूक्तम्

ऋषिः—गृत्समदः॥ देवता—१, ५, ९, ११, १७, १९ ब्रह्मणस्पतिः; २-४, ६-८, १०, १२-१६, १८ बृहस्पतिः॥ छन्दः—१, ४, ५, १०-१२ जगती; २, ७-९, १३, १४ विराड्जगती; ३, ६, १६, १८ निचृज्जगती; १५, १७ भुरिक्त्रिष्टुप्; १९ निचृत्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१-१४, १६, १८ निषादः; १५, १७, १९ धैवतः॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अथ एकोनत्रिंशो वर्गः ॥ २९ ॥

गणानां त्वा गणपतिं हवामहे कविं कवीनामुपमश्रवस्तमम्।
ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आ नः शृण्वन्नूतिभिः सीद सादनम्॥ १ ॥
देवाश्चित्ते असुर्य प्रचेतसो बृहस्पते यज्ञियं भागमानशुः।
उस्राइव सूर्यो ज्योतिषा महो विश्वेषामिज्जनिता ब्रह्मणामसि॥ २ ॥
आ विबाध्या परिरापस्तमांसि च ज्योतिष्मन्तं रथमृतस्य तिष्ठसि।
बृहस्पते भीममित्रदम्भनं रक्षोहणं गोत्रभिदं स्वर्विदम् ॥ ३ ॥
सुनीतिभिर्नयसि त्रायसे जनं यस्तुभ्यं दाशान्न तमंहो अश्नवत्।
ब्रह्मद्विषस्तपनो मन्युमीरसि बृहस्पते महि तत्ते महित्वनम्॥ ४ ॥
न तमंहो न दुरितं कुतश्चन नारातयस्तितिरुर्न द्वयाविनः।
विश्वा इदस्माद् ध्वरसो वि बाधसे यं सुगोपा रक्षसि ब्रह्मणस्पते॥ ५ ॥

अथ त्रिंशो वर्गः ॥ ३० ॥

त्वं नो गोपाः पथिकृद्विचक्षणस्तव व्रताय मतिभिर्जरामहे।
बृहस्पते यो नो अभि ह्वरो दधे स्वा तं मर्मर्तु दुच्छुना हरस्वती॥ ६ ॥
उत वा यो नो मर्चयादनागसोऽरातीवा मर्तः सानुको वृकः।
बृहस्पते अप तं वर्तया पथः सुगं नो अस्यै देववीतये कृधि॥ ७ ॥
त्रातारं त्वा तनूनां हवामहेऽवस्पतरधिवक्तारमस्मयुम्।
बृहस्पते देवनिदो नि बर्हय मा दुरेवा उत्तरं सुम्नमुन्नशन्॥ ८ ॥
त्वया वयं सुवृधा ब्रह्मणस्पते स्पार्हा वसु मनुष्या ददीमहि।
या नो दूरे तळितो या अरातयोऽभि सन्ति जम्भया ता अनुप्रसः॥ ९ ॥
त्वया वयमुत्तमं धीमहे वयो बृहस्पते पप्रिणा सस्निना युजा।
मा नो दुःशंसो अभिदिप्सुरीशत प्र सुशंसा मतिभिस्तारिषीमहि॥ १० ॥

अथ एकत्रिंशो वर्गः ॥ ३१ ॥

अनानुदो वृषभो जग्मिराहवं निष्टप्ता शत्रुं पृतनासु सासहिः।
असि सत्य ऋणया ब्रह्मणस्पत उग्रस्य चिदमिता वीळुहर्षणः॥ ११ ॥
अदेवेन मनसा यो रिषण्यति शासामुग्रो मन्यमानो जिघांसति।
बृहस्पते मा प्रणक्तस्य नो वधो नि कर्म मन्युं दुरेवस्य शर्धतः॥ १२ ॥
भरेषु हव्यो नमसोपसद्यो गन्ता वाजेषु सनिता धनंधनम्।
विश्वा इदर्यो अभिदिप्वोऽ मृधो बृहस्पतिर्वि ववर्हा रथाँइव॥ १३ ॥
तेजिष्ठया तपनी रक्षसस्तप ये त्वा निदे ददिरे दृष्टवीर्यम्।
आविस्तत्कृष्व यदसत्त उक्थ्यं बृहस्पते वि परिवो अद्रिवः॥ १४ ॥

बृहस्पते अति यदर्यो अर्हाद् द्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु।
यद् दीदयच्छवस ऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्॥ १५ ॥

अथ द्वात्रिंशो वर्गः ॥ ३२ ॥

मा नः स्तेनेभ्यो ये अभि द्रुहस्पदे निरामिणो रिपवोऽन्नेषु जागृधुः।
आ देवानामोहते वि व्रयो हृदि बृहस्पते न परः साम्नो विदुः॥ १६ ॥
विश्वेभ्यो हि त्वा भुवनेभ्यस्परि त्वष्टाजनत्साम्नः साम्नः कविः।
स ऋणचिदृणया ब्रह्मणस्पतिर्द्रुहो हन्ता मह ऋतस्य धर्तरि॥ १७ ॥
तव श्रिये व्यजिहीत पर्वतो गवां गोत्रमुदसृजो यदङ्गिरः।
इन्द्रेण युजा तमसा परीवृतं बृहस्पते निरपामौब्जो अर्णवम्॥ १८ ॥
ब्रह्मणस्पते त्वमस्य यन्ता सूक्तस्य बोधि तनयं च जिन्व।
विश्वं तद्भद्रं यदवन्ति देवा बृहद्वदेम विदथे सुवीराः॥ १९ ॥

॥ इति द्वितीयाऽष्टके षष्ठोऽध्यायः ॥

अथ सप्तमो अध्यायः

[२४] चतुर्विंशं सूक्तम्

ऋषिः—गृत्समदः॥ देवता—१-११, १३-१६ ब्रह्मणस्पतिः; १२ ब्रह्मणस्पतिरिन्द्रश्च॥ छन्दः—१,७, ९, ११ निचृज्जगती; २, ३ त्रिष्टुप्; ४, ५ स्वराट्त्रिष्टुप्; ६, ८, १४ जगती; १० स्वराड्जगती; १२, १६ निचृत्त्रिष्टुप्; १३ भुरिग्जगती; १५ भुरिक्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१, ६-११, १३, १४ निषादः; २-५, १२, १५, १६ धैवतः॥

अथ प्रथमो वर्गः ॥ १ ॥

सेमामविड्ढि प्रभृतिं य ईशिषेऽया विधेम नवया महा गिरा।
यथा नो मीढ्वान्स्तवते सखा तव बृहस्पते सीषधः सोत नो मतिम्॥ १ ॥
यो नन्त्वान्यनमन्योजसोतादर्दर्मन्युना शम्बराणि वि ।
प्राच्यावयदच्युता ब्रह्मणस्पतिरा चाविशद्वसुमन्तं वि पर्वतम् ॥ २ ॥
तद्देवानां देवतमाय कर्त्वमश्रथ्नन्दृळ्हाव्रदन्त वीळिता ।
उद्ना आजदभिनद् ब्रह्मणा वलमगूहत्तमो व्यचक्षयत्स्वः ॥ ३ ॥
अश्मास्यमवतं ब्रह्मणस्पतिर्मधुधारमभि यमोजसातृणत् ।
तमेव विश्वे पपिरे स्वर्दृशो बहु साकं सिसिचुरुत्समुद्रिणम् ॥ ४ ॥
सना ता का चिद् भुवना भवीत्वा माद्भिः शरद्भिर्दुरो वरन्त वः।
अयतन्ता चरतो अन्यदन्यदिद्या चकार वयुना ब्रह्मणस्पतिः॥ ५ ॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अथ द्वितीयो वर्गः ॥ २ ॥

अभिनक्षन्तो अभि ये तमानशुर्निधिं पणीनां परमं गुहा हितम् ।
ते विद्वांसः प्रतिचक्ष्यानृता पुनर्यत उ आयन्तदुदीयुराविशम् ॥ ६ ॥
ऋतावानः प्रतिचक्ष्यानृता पुनरात आ तस्थुः कवयो महस्पथः ।
ते बाहुभ्यां धमितमग्निमश्मनि नकिः षो अस्त्यरणो जहुर्हि तम् ॥ ७ ॥
ऋतज्येन क्षिप्रेण ब्रह्मणस्पतिर्यत्र वष्टि प्र तदश्नोति धन्वना ।
तस्य साध्वीरिषवो याभिरस्यति नृचक्षसो दृशये कर्णयोनयः ॥ ८ ॥
स संनयः स विनयः पुरोहितः स सुष्टुतः स युधि ब्रह्मणस्पतिः ।
चाक्ष्मो यद्वाजं भरते मती धनादित्सूर्यस्तपति तप्यतुर्वृथा ॥ ९ ॥
विभु प्रभु प्रथमं मेहनावतो बृहस्पतेः सुविदत्राणि राध्या ।
इमा सातानि वेन्यस्य वाजिनो येन जना उभये भुञ्जते विशः ॥ १० ॥

अथ तृतीयो वर्गः ॥ ३ ॥

योऽवरे वृजने विश्वथा विभुर्महामु रण्वः शवसा ववक्षिथ ।
स देवो देवान्प्रति पप्रथे पृथु विश्वेदु ता परिभूर्ब्रह्मणस्पतिः ॥ ११ ॥
विश्वं सत्यं मघवाना युवोरिदापश्चन प्र मिनन्ति व्रतं वाम् ।
अच्छेन्द्राब्रह्मणस्पती हविर्नोऽन्नं युजेव वाजिना जिगातम् ॥ १२ ॥
उताशिष्ठा अनु शृण्वन्ति वह्नयः सभेयो विप्रो भरते मती धना ।
वीळुद्वेषा अनु वशं ऋणमादिदिः स ह वाजी समिथे ब्रह्मणस्पतिः ॥ १३ ॥
ब्रह्मणस्पतेरभवद्यथावशं सत्यो मन्युर्महि कर्मा करिष्यतः ।
यो गा उदाजत्स दिवे वि चाभजन्महीव रीतिः शवसासरत्पृथक् ॥ १४ ॥
ब्रह्मणस्पते सुयमस्य विश्वहा रायः स्याम रथ्यो वयस्वतः ।
वीरेषु वीराँ उप पृङ्धि नस्त्वं यदीशानो ब्रह्मणा वेषि मे हवम् ॥ १५ ॥
ब्रह्मणस्पते त्वमस्य यन्ता सूक्तस्य बोधि तनयं च जिन्व ।
विश्वं तद्भद्रं यदवन्ति देवा बृहद्वदेम विदथे सुवीराः ॥ १६ ॥

[२५] पञ्चविंशं सूक्तम्

ऋषिः—गृत्समदः ॥ देवता—ब्रह्मणस्पतिः ॥ छन्दः—१, २ जगती; ३ निचृज्जगती; ४, ५ विराड्जगती ॥ स्वरः—निषादः ॥

अथ चतुर्थो वर्गः ॥ ४ ॥

इन्धानो अग्निं वनवद्वनुष्यतः कृतब्रह्मा शूशुवद्रातहव्य इत् ।
जातेन जातमति स प्र सर्सृते यं युजं कृणुते ब्रह्मणस्पतिः ॥ १७ ॥
वीरेभिर्वीरान्वनवद्वनुष्यतो गोभी रयिं पप्रथद्बोधति त्मना ।
तोकं च तस्य तनयं च वर्धते यं युजं कृणुते ब्रह्मणस्पतिः ॥ २ ॥
सिन्धुर्न क्षोदः शिमीवाँ ऋघायतो वृषेव वध्रीरभि वष्ट्योजसा ।
अग्नेरिव प्रसितिर्नाह वर्तवे यं युजं कृणुते ब्रह्मणस्पतिः ॥ ३ ॥
तस्मा अर्षन्ति दिव्या असश्चतः स सत्वभिः प्रथमो गोषु गच्छति ।
अनिभृष्टतविषिर्हन्त्योजसा यं युजं कृणुते ब्रह्मणस्पतिः ॥ ४ ॥
तस्मा इद्विश्वे धुनयन्त सिन्धवोऽच्छिद्रा शर्म दधिरे पुरूणि ।
देवानां सुम्ने सुभगः स एधते यं युजं कृणुते ब्रह्मणस्पतिः ॥ ५ ॥

[२६] षड्विंशं सूक्तम्

ऋषिः—गृत्समदः ॥ देवता—ब्रह्मणस्पतिः ॥ छन्दः—१, ३ जगती; २, ४ निचृज्जगती ॥ स्वरः—निषादः ॥

अथ पञ्चमो वर्गः ॥ ५ ॥

ऋजुरिच्छंसो वनवद्वनुष्यतो देवयन्निददेवयन्तमभ्यसत् ।
सुप्रावीरिद्वनवत्पृत्सु दुष्टरं यज्वेदर्यज्योर्विं भजाति भोजनम् ॥ १ ॥
यजस्व वीर प्र विहि मनायतो भद्रं मनः कृणुष्व वृत्रतूर्ये ।
हविष्कृणुष्व सुभगो यथाससि ब्रह्मणस्पतेरव आ वृणीमहे ॥ २ ॥
स इज्जनेन स विशा स जन्मना स पुत्रैर्वाजं भरते धना नृभिः ।
देवानां यः पितरमाविवासति श्रद्धामना हविषा ब्रह्मणस्पतिम् ॥ ३ ॥
यो अस्मै हव्यैर्घृतवद्भिरविधत्प्र तं प्राचा नयति ब्रह्मणस्पतिः ।
उरुष्यतीमंहसो रक्षती रिषोऽरेजोश्चिदस्मा उरुचक्रिरद्भुतः ॥ ४ ॥

[२७] सप्तविंशं सूक्तम्

ऋषिः—कूर्मो गार्त्समदो गृत्समदो वा ॥ देवता—आदित्याः ॥ छन्दः—१, ३, ५, १३-१५ निचृत्त्रिष्टुप्; २, ४, ५, ८, १२, १७ त्रिष्टुप्; ७ भुरिक्पङ्क्तिः; ९, १० स्वराट्पङ्क्तिः; ११, १६ विराट्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१-६, ८, ११-१७ धैवतः; ७, ९, १० पञ्चमः ॥

अथ षष्ठो वर्गः ॥ ६ ॥

इमा गिर आदित्येभ्यो घृतस्नूः सनाद्राजभ्यो जुह्वा जुहोमि ।
शृणोतु मित्रो अर्यमा भगो नस्तुविजातो वरुणो दक्षो अंशः ॥ १ ॥
इमं स्तोमं सक्रतवो मे अद्य मित्रो अर्यमा वरुणो जुषन्त ।
आदित्यासः शुचयो धारपूता अवृजिना अनवद्या अरिष्टाः ॥ २ ॥
त आदित्यासः उरवो गभीरा अदब्धासो दिप्सन्तो भूर्यक्षाः ।
अन्तः पश्यन्ति वृजिनोत साधु सर्वं राजभ्यः परमा चिदन्ति ॥ ३ ॥

CC-0. Rohini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

धारयन्त आदित्यासो जगत्स्था देवा विश्वस्य भुवनस्य गोपाः।
दीर्घाधियो रक्षमाणा असुर्यमृतावानश्चयमाना ऋणानि ॥४॥
विद्यामादित्या अवसो वो अस्य यदर्यमन्भय आ चिन्मयोभु।
युष्माकं मित्रावरुणा प्रणीतौ परि श्वभ्रेव दुरितानि वृज्याम्॥५॥

अथ सप्तमो वर्गः॥७॥

सुगो हि वो अर्यमन्मित्र पन्था अनृक्षरो वरुण साधुरस्ति।
तेनादित्या अधि वोचता नो यच्छता नो दुष्परिहन्तु शर्म॥६॥
पिपर्तु नो अदितिर्राजपुत्रात्ति द्वेषांस्यर्यमा सुगेभिः।
बृहन्मित्रस्य वरुणस्य शर्मोप स्याम पुरुवीरा अरिष्टाः॥७॥
तिस्रो भूमीर्धारयन्त्रीँरुत द्यून्त्रीणि व्रता विदथे अन्तरेषाम्।
ऋतेनादित्या महि वो महित्वं तदर्यमन्वरुण मित्र चारु॥८॥
त्री रोचना दिव्या धारयन्त हिरण्ययाः शुचयो धारपूताः।
अस्वप्नजो अनिमिषा अदब्धा उरुशंसा ऋजवे मर्त्याय॥९॥
त्वं विश्वेषां वरुणासि राजा ये च देवा असुर ये च मर्ताः।
शतं नो रास्व शरदो विचक्षेऽश्यामायेषि सुधितानि पूर्वी॥१०॥

अथ अष्टमो वर्गः॥८॥

न दक्षिणा वि चिकिते न सव्या न प्राचीनमादित्या नोत पश्चा।
पाक्या चिद्वसवो धीर्या चिद्युष्मानीतो अभयं ज्योतिरश्याम्॥११॥
यो राजभ्य ऋतनिभ्यो ददाश यं वर्धयन्ति पुष्टयश्च नित्याः।
स रेवान्याति प्रथमो रथेन वसुदावा विदथेषु प्रशस्तः॥१२॥
शुचिरपः सूयवसा अदब्धा उप क्षेति वृद्धवयाः सुवीरः।
नकिष्टं घ्नन्त्यन्तितो न दूराद्य आदित्यानां भवति प्रणीतौ॥१३॥
अदितेः मित्र वरुणोत मृळ यद्वो वयं चकृमा कच्चिदागः।
उर्वश्यामभयं ज्योतिरिन्द्र मा नो दीर्घा अभि नशन्तमिस्राः॥१४॥
उभे अस्मै पीपयतः समीची दिवो वृष्टिं सुभगो नाम पुष्यन्।
उभा क्षयावाजयन्याति पृत्सूभावर्धौ भवतः साधू अस्मै॥१५॥
या वो माया अभिद्रुहे यजत्राः पाशा आदित्या रिपवे विचृत्ताः।
अश्वीव ताँ अति येषं रथेनारिष्टा उरावा शर्मन्त्स्याम॥१६॥
माहं मघोनो वरुण प्रियस्य भूरिदाव्न आ विदं शूनमापेः।
मा रायो राजन्त्सुयमादव स्थां बृहद्वदेम विदथे सुवीराः॥१७॥

[२८] अष्टाविंशं सूक्तम्

ऋषिः—कूर्मो गार्त्समदो गृत्समदो वा॥ देवता—वरुणः॥ छन्दः—१, ३, ४, ६ निचृत्त्रिष्टुप्; २, १० भुरिक्पङ्क्तिः; ५, ७, ११ त्रिष्टुप्; ८ विराट्त्रिष्टुप्; ९ भुरिक्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१, ३-९, ११ धैवतः; २, १० पञ्चमः॥

अथ नवमो वर्गः॥९॥

इदं कवेरादित्यस्य स्वराजो विश्वानि सान्त्यभ्यस्तु मह्ना।
अति यो मन्द्रो यजथाय देवः सुकीर्तिं भिक्षे वरुणस्य भूरेः॥१॥
तव व्रते सुभगासः स्याम स्वाध्यो वरुण तुष्टुवांसः।
उपायन उषसां गोमतीनामग्रयो न जरमाणा अनु द्यून्॥२॥
तव स्याम पुरुवीरस्य शर्मन्नुरुशंसस्य वरुण प्रणेतः।
यूयं नः पुत्रा अदितेरदब्धा अभि क्षमध्वं युज्याय देवाः॥३॥
प्र सीमादित्यो असृजद्विधर्ताँ ऋतं सिन्धवो वरुणस्य यन्ति।
न श्राम्यन्ति न वि मुचन्त्येते वयो न पप्तू रघुया परिज्मन्॥४॥
वि मच्छ्रथाय रशनामिवाग ऋध्याम ते वरुण खामृतस्य।
मा तन्तुश्छेदि वयतो धियं मे मा मात्रा शार्यपसः पुर ऋतोः॥५॥

अथ दशमो वर्गः॥१०॥

अपो सु म्यक्ष वरुण भियसं मत्सम्राळृतावोऽनु मा गृभाय।
दामेव वत्साद्वि मुमुग्ध्यंहो नहि त्वदारे निमिषश्चनेशे ॥६॥
मा नो वधैर्वरुण ये त इष्टावेनः कृण्वन्तमसुर भ्रीणन्ति।
मा ज्योतिषः प्रवस्थानि गन्म वि षू मृधः शिश्रथो जीवसे नः॥७॥
नमः पुरा ते वरुणोत नूनमुतापरं तुविजात ब्रवाम।
त्वे हि कं पर्वते न श्रितान्यप्रच्युतानि दूळभ व्रतानि ॥८॥
परं ऋणा सावीरध मत्कृतानि माहं राजन्नन्यकृतेन भोजम्।
अव्युष्टा इन्नु भूयसीरुषास आ नो जीवान्वरुण तासु शाधि॥९॥
बो मे राजन्युज्यो वा सखा वा स्वप्ने भयं भीरवे मह्यमाह।
स्तेनो वा यो दिप्सति नो वृको वा त्वं तस्माद्वरुण पाह्यस्मान्॥१०॥
माहं मघोनो वरुण प्रियस्य भूरिदाव्न आ विदं शूनमापेः।
मा रायो राजन्त्सुयमादव स्थां बृहद्वदेम विदथे सुवीराः॥११॥

[२९] एकोनत्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—कूर्मो गार्त्समदो गृत्समदो वा॥ देवता—विश्वे देवाः॥ छन्दः—१, ४, ५ निचृत्त्रिष्टुप्; २, ६, ७ त्रिष्टुप्; ३ विराट्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अथ एकादशो वर्गः ॥ ११ ॥

धृतव्रता आदित्या इषिरा आरे मत्कर्त रहूसूरिवागः।
शृण्वतो वो वरुण मित्र देवा भद्रस्य विद्वाँ अवसे हुवे वः ॥ १ ॥
यूयं देवाः प्रमतिर्यूयमोजो यूयं द्वेषांसि सनुतर्युयोत।
अभिक्षत्तारो अभि च क्षमध्वमद्या च नो मृळयतापरं च ॥ २ ॥
किमू नु वः कृणवामापरेण किं सनेन वसव आप्येन।
यूयं नो मित्रावरुणादिते च स्वस्तिमिन्द्रामरुतो दधात ॥ ३ ॥
हुये देवा यूयमिदापयः स्थ ते मृळत नाधमानाय मह्यम्।
मा वो रथो मध्यमवाकृते भून्मा युष्मावत्स्वापिषु श्रमिष्म ॥ ४ ॥
प्र व एको मिमय भूर्यागो यन्मा पितेव कितवं शशास।
आरे पाशा आरे अघानि देवा मा माधि पुत्रे विमिव ग्रभीष्ट ॥ ५ ॥
अर्वाञ्चो अद्या भवता यजत्रा आ वो हार्दि भयमानो व्ययेयम्।
त्राध्वं नो देवा निजुरो वृकस्य त्राध्वं कर्तादवपदो यजत्राः ॥ ६ ॥
माहं मघोनो वरुण प्रियस्य भूरिदात्र आ विदं शूनमापेः।
मा रायो राजन्त्सुयमादव स्थां बृहद्वदेम विदथे सुवीराः ॥ ७ ॥

[३०] त्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—गृत्समदः ॥ देवता—१-५, ७, ८, १० इन्द्रः; ६ इन्द्रासोमौ; ९ बृहस्पतिः; ११ मरुतः ॥ छन्दः—१, ३ भुरिक्पङ्क्तिः; २, ८ निचृत्त्रिष्टुप्; ४-७, ९ त्रिष्टुप्; १० विराट्त्रिष्टुप्; ११ भुरिक्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१, ३ पञ्चमः; २, ४-११ धैवतः ॥

अथ द्वादशो वर्गः ॥ १२ ॥

ऋतं देवाय कृण्वते सवित्र इन्द्रायाहिघ्ने न रमन्त आपः ।
अहरहर्यात्यक्तुरपां कियात्या प्रथमः सर्ग आसाम् ॥ १ ॥
यो वृत्राय सिनमत्रा भरिष्यत्र तं जनित्री विदुष उवाच ।
पथो रदन्तीरनु जोषमस्मै दिवेदिवे धुनयो यन्त्यर्थम् ॥ २ ॥
ऊर्ध्वो ह्यस्थादध्यन्तरिक्षेऽधा वृत्राय प्र वधं जभार ।
मिहं वसान उप हीमदुद्रोत्तिग्मायुधो अजयच्छत्रुमिन्द्रः ॥ ३ ॥
बृहस्पते तपुषाशनेव विध्य वृकद्वरसो असुरस्य वीरान् ।
यथा जघन्थ धृषता पुरा चिदेवा जहि शत्रुमस्माकमिन्द्र ॥ ४ ॥
अव क्षिप दिवो अश्मान्मुच्या येन शत्रुं मन्दसानो निजूर्वीः ।
तोकस्य सातौ तनयस्य भूरेरस्माँ अर्धं कृणुतादिन्द्र गोनाम् ॥ ५ ॥

अथ त्रयोदशो वर्गः ॥ १३ ॥

प्र हि क्रतुं वृहथो यं वनुथो रथस्य स्थो यजमानस्य चोदौ।
इन्द्रासोमा युवमस्माँ अविष्टमस्मिन्भयस्थे कृणुतमु लोकम् ॥ ६ ॥
न मा तमन्न श्रमन्नोत तन्द्रन्न वोचाम मा सुनोतेति सोमम्।
यो मे पृणाद्यो ददद्यो निबोधाद्यो मा सुन्वन्तमुप गोभिरायत् ॥ ७ ॥
सरस्वति त्वमस्माँ अविड्ढि मरुत्वती धृषती जेषि शत्रून्।
त्यं चिच्छर्धन्तं तविषीयमाणमिन्द्रो हन्ति वृषभं शण्डिकानाम् ॥ ८ ॥
यो नः सनुत्य उत वा जिघत्नुरभिख्याय तं तिगितेन विध्य।
बृहस्पत आयुधैर्जेषि शत्रून्द्रुहे रीषन्तं परि धेहि राजन् ॥ ९ ॥
अस्माकेभिः सत्वभिः शूर शूरैर्वीर्यं कृधि यानि ते कर्त्वानि।
ज्योगभूवन्नतूधूपितासो हुत्वी तेषामा भरा नो वसूनि ॥ १० ॥
तं वः शर्धं मारुतं सुम्नयुर्गिरोप ब्रुवे नमसा दैव्यं जनम्।
यथा रयिं सर्ववीरं नशामहा अपत्यसाचं श्रुत्यं दिवेदिवे ॥ ११ ॥

[३१] एकत्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—गृत्समदः ॥ देवता—विश्वे देवाः ॥ छन्दः—१, २, ४ जगती; ३ विराट्जगती; ५ निचृज्जगती; ६ त्रिष्टुप्; ७ पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१-५ निषादः; ६ धैवतः; ७ पञ्चमः ॥

अथ चतुर्दशो वर्गः ॥ १४ ॥

अस्माकं मित्रावरुणावतं रथमादित्यै रुद्रैर्वसुभिः सचाभुवा ।
प्र यद्वयो न पप्तन्वस्मन्नस्परि श्रवस्यवो हर्षीवन्तो वनर्षदः ॥ १ ॥
अधा स्मा नु उदवता सजोषसो रथं देवासो अभि विक्षु वाजयुम्।
यदाशवः पद्याभिस्तितउतो रजः पृथिव्याः सानौ जङ्घनन्त पाणिभिः ॥ २ ॥
उत स्य नु इन्द्रो विश्वचर्षणिर्दिवः शर्धन्न मारुतेन सुक्रतुः।
अनु नु स्थात्यवृकाभिरूतिभी रथं महे सनये वाजसातये ॥ ३ ॥
उत स्य देवो भुवनस्य सक्षणिस्त्वष्टा ग्नाभिः सजोषा जूजुवद्रथम्।
इळा भगो बृहद्दिवोत रोदसी पूषा पुरंधिरश्विनावधा पती ॥ ४ ॥
उत त्ये देवी सुभगे मिथूदृशोषासानक्ता जगतामपीजुवा।
स्तुषे यद्वां पृथिवि नव्यसा वचः स्थातुश्च वयस्त्रिवया उपस्तिरे ॥ ५ ॥
उत वः शंसमुशिजामिव श्मस्यहिर्बुध्न्योऽज एकपादुत।
त्रित ऋभुक्षाः संविता चनो दधेऽपां नपादाशुहेमा धिया शमि ॥ ६ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

एता वो॑ व॒श्म्युद्य॑ता यजत्रा॒ अत॑क्षन्ना॒यवो॒ नव्य॑से॒ सम् ।
श्र॒व॒स्यवो॒ वाजं॑ चका॒नाः सप्ति॒र्न रथ्यो॒ अह॑ धी॒तिम॑श्याः ॥७॥

[३२] द्वात्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—गृत्समदः॥ देवता—१ द्यावापृथिव्यौ; २, ३ इन्द्रस्त्वष्टा वा; ४, ५ राका; ६, ७ सिनीवाली; ८ लिङ्गोक्ताः॥ छन्दः—१ जगती; २ त्रिष्टुप्; ३ निचृज्जगती; ४, ५ विराट्जगती; ६ अनुष्टुप्; ७ विराडनुष्टुप्; ८ निचृदनुष्टुप्॥
स्वरः—१, ३-५ निषादः; २ धैवतः; ६-८ गान्धारः॥

अथ पञ्चदशो वर्गः॥ १५॥

अ॒स्य मे॑ द्यावापृथिवी ऋताय॒तो भू॒तम॑वि॒त्री वच॑सः॒ सिषा॑सतः ।
ययो॒रायुः॑ प्रत॒रं ते इ॒दं पु॒र उप॑स्तुते वसू॒युर्वां॑ म॒हो द॑धे ॥१॥
मा नो॒ गुह्या॒ रिप॑ आ॒योरह॑न्दभ॒न्मा न॑ आ॒भ्यो री॑रधो दु॒च्छुना॑भ्यः ।
मा नो॒ वि यौः॑ स॒ख्या वि॒द्धि तस्य॑ नः सुम्नाय॒ता मन॑सा॒ तत्त्वे॑महे ॥२॥
अहे॑ळता॒ मन॑सा श्रु॒ष्टिमा व॑ह॒ दुहा॑नां धे॒नुं पि॒प्युषी॑मस॒श्चत॑म् ।
पद्या॑भिरा॒शुं वच॑सा च वा॒जिनं॒ त्वां हि॑नोमि पुरुहूत वि॒श्वहा॑ ॥३॥
रा॒काम॒हं सु॒हवां॑ सुष्टु॒ती हु॑वे शृ॒णोतु॑ नः सु॒भगा॒ बोध॑तु॒ त्मना॑ ।
सीव्य॒त्वपः॑ सू॒च्याच्छि॑द्यमानया॒ ददा॑तु वी॒रं श॒तदा॑यमु॒क्थ्य॑म् ॥४॥
यास्ते॑ राके सुम॒तयः॑ सु॒पेश॑सो॒ याभि॒र्ददा॑सि दा॒शुषे॒ वसू॑नि ।
ताभि॑र्नो अ॒द्य सु॒मना॑ उ॒पाग॑हि सहस्रपो॒षं सु॑भगे॒ ररा॑णा ॥५॥
सिनी॑वालि॒ पृथु॑ष्टुके॒ या दे॒वाना॒मसि॒ स्वसा॑ ।
जु॒षस्व॑ ह॒व्यमाहु॑तं प्र॒जां दे॑वि दिदिड्ढि नः ॥६॥
या सु॑बा॒हुः स्व॑ङ्गु॒रिः सु॒षूमा॑ बहु॒सूव॑री ।
तस्यै॑ वि॒श्पत्न्यै॑ ह॒विः सि॑नीवा॒ल्यै जु॑होतन ॥७॥
या गु॒ङ्गूर्या सि॑नीवा॒ली या रा॒का या सर॑स्वती ।
इ॒न्द्रा॒णीम॑ह्व ऊ॒तये॑ वरुणा॒नीं स्व॒स्तये॑ ॥८॥

चतुर्थोऽनुवाकः

[३३] त्रयस्त्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—गृत्समदः॥ देवता—रुद्रः॥ छन्दः—१, ५, ९, १३-१५ निचृत्त्रिष्टुप्; ३, ६, १०, ११ विराट्त्रिष्टुप्; ४, ८ त्रिष्टुप्; २, ७ पङ्क्तिः; १२ भुरिक् पङ्क्तिः॥ स्वरः—१, ३-६, ८-११, १३-१५ धैवतः; २, ७, १२ पञ्चमः॥

अथ षोडशो वर्गः॥ १६॥

आ ते॑ पितर्मरुतां सु॒म्नमे॑तु॒ मा नः॒ सूर्य॑स्य सं॒दृशो॑ युयोथाः ।
अ॒भि नो॑ वी॒रो अर्व॑ति क्षमेत॒ प्र जा॑येमहि रुद्र प्र॒जाभिः॑॥१॥
त्वाद॑त्तेभी रुद्र॒ शंत॑मेभिः श॒तं हिमा॑ अशीय भेष॒जेभिः॑ ।
व्य१॒॑स्मद् द्वेषो॑ वित॒रं व्यंहो॒ व्यमी॑वाश्चातयस्वा॒ विषू॑चीः॥२॥
श्रेष्ठो॑ जा॒तस्य॑ रुद्र श्रि॒यासि॑ त॒वस्त॑मस्त॒वसां॑ वज्रबाहो ।
पर्षि॑ णः पा॒रमंह॑सः स्व॒स्ति विश्वा॑ अ॒भी॑ती॒ रप॑सो युयोधि॥३॥
मा त्वा॑ रुद्र चुक्रुधामा॒ नमो॑भि॒र्मा दुष्टु॑ती वृषभ॒ मा सहू॑ती ।
उन्नो॑ वी॒राँ अ॑र्पय भेष॒जेभि॑र्भि॒षक्त॑मं त्वा भि॒षजां॑ शृणोमि॥४॥
हवी॑मभि॒र्हव॑ते॒ यो ह॒विर्भि॒रव॒ स्तोमे॑भी रु॒द्रं दि॑षीय ।
ऋ॒दू॒दरः॑ सु॒हवो॒ मा नो॑ अ॒स्यै ब॒भ्रुः सु॒शिप्रो॑ रीरधन्म॒नायै॑॥५॥

अथ सप्तदशो वर्गः॥ १७॥

उन्मा॑ ममन्द वृष॒भो म॒रुत्वा॒न्त्वक्षी॑यसा॒ वय॑सा॒ नाध॑मानम् ।
घृणी॑व च्छा॒याम॑र॒पा अ॑शी॒या वि॑वासेयं रु॒द्रस्य॑ सु॒म्नम्॥६॥
क्व१॒॑ स्य ते॑ रुद्र मृळ॒याकु॒र्हस्तो॒ यो अस्ति॑ भेष॒जो जला॑षः ।
अ॒प॒भ॒र्ता रप॑सो॒ दैव्य॑स्या॒भी नु मा॑ वृषभ चक्षमीथाः॥७॥
प्र ब॒भ्रवे॑ वृष॒भाय॑ श्विती॒चे म॒हो महीं॑ सु॑ष्टु॒तिमी॑रयामि ।
न॒म॒स्या क॑ल्मली॒किनं॒ नमो॑भिर्गृणी॒मसि॑ त्वे॒षं रु॒द्रस्य॒ नाम॑॥८॥
स्थि॒रेभि॒रङ्गैः॑ पुरु॒रूप॑ उ॒ग्रो ब॒भ्रुः शु॒क्रेभिः॑ पिपिशे॒ हिर॑ण्यैः ।
ईशा॑नाद॒स्य भुव॑नस्य॒ भूरे॒र्न वा उ॑ योषद्रु॒द्राद॑सु॒र्य॑म्॥९॥
अर्ह॑न्बिभर्षि॒ साय॑कानि॒ धन्वार्ह॑न्नि॒ष्कं य॑ज॒तं वि॒श्वरू॑पम् ।
अर्ह॑न्नि॒दं द॑यसे॒ विश्व॒मभ्वं॒ न वा ओजी॑यो रुद्र॒ त्वद॑स्ति॥१०॥

अथ अष्टादशो वर्गः॥ १८॥

स्तु॒हि श्रु॒तं ग॑र्त॒सदं॒ युवा॑नं मृ॒गं न भी॒ममु॑पह॒त्नुमु॒ग्रम् ।
मृ॒ळा ज॑रि॒त्रे रु॑द्र॒ स्तवा॑नो॒ऽन्यं ते॑ अ॒स्मन्नि व॑पन्तु॒ सेनाः॑॥११॥
कु॒मा॒रश्चि॑त्पि॒तरं॒ वन्द॑मानं॒ प्रति॑ नानाम रुद्रोप॒यन्त॑म् ।
भूरे॑र्दा॒तारं॒ सत्प॑तिं गृणीषे स्तु॒तस्त्वं भे॑ष॒जा रा॑स्य॒स्मे॥१२॥
या वो॑ भेष॒जा म॑रुतः॒ शुची॑नि॒ या शंत॑मा वृषणो॒ या म॑यो॒भु ।
यानि॒ मनु॒रवृ॑णीता पि॒ता न॒स्ता शं च॒ योश्च॑ रु॒द्रस्य॑ वश्मि॥१३॥
परि॑ णो हे॒ती रु॒द्रस्य॑ वृज्याः॒ परि॑ त्वे॒षस्य॑ दुर्म॒तिर्म॒ही गा॑त् ।
अव॑ स्थि॒रा म॒घव॑द्भ्यस्तनुष्व॒ मीढ्व॑स्तो॒काय॒ तन॑याय मृळ॥१४॥
एवा॒ ब॑भ्रो वृषभ चेकितान॒ यथा॑ देव॒ न हृ॑णी॒षे न हंसि॑ ।
ह॒व॒न॒श्रुन्नो॑ रुद्रे॒ह बो॑धि बृ॒हद्व॑देम वि॒दथे॑ सु॒वीराः॑॥१५॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

[३४] चतुस्त्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—गृत्समदः ॥ देवता—मरुतः ॥ छन्दः—१, ३, ८, ९ निचृज्जगती; २, १०-१३ विराड्जगती; ४-७, १४ जगती; १५ निचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१-१४ निषादः; १५ धैवतः ॥

अथ एकोनविंशो वर्गः ॥ १९ ॥

धारावरा मरुतो धृष्णवोजसो मृगा न भीमास्तविषीभिरर्चिनः।
अग्रयो न शुशुचाना ऋजीषिणो भृमिं धमन्तो अप गा अवृण्वत ॥ १ ॥
द्यावो न स्तृभिश्चितयन्त खादिनो व्यभ्रिया न द्युतयन्त वृष्टयः।
रुद्रो यद्वो मरुतो रुक्मवक्षसो वृषाजनि पृश्न्याः शुक्र ऊधनि ॥ २ ॥
उक्षन्ते अश्वाँ अत्याँइवाजिषु नदस्य कर्णैस्तुरयन्त आशुभिः।
हिरण्यशिप्रा मरुतो दविध्वतः पृक्षं याथ पृषतीभिः समन्यवः ॥ ३ ॥
पृक्षे ता विश्वा भुवना ववक्षिरे मित्रायं वा सदमा जीरदानवः।
पृषदश्वासो अनवभ्रराधस ऋजिप्यासो न वयुनेषु धूर्षदः ॥ ४ ॥
इन्धन्वभिर्धेनुभी रण्शदूधभिरध्वस्मभिः पथिभिर्भ्राजदृष्टयः।
आ हंसासो न स्वसराणि गन्तन मधोर्मदाय मरुतः समन्यवः ॥ ५ ॥

अथ विंशो वर्गः ॥ २० ॥

आ नो ब्रह्माणि मरुतः समन्यवो नरां न शंसः सवनानि गन्तन।
अश्वामिव पिप्यत धेनुमूधनि कर्ता धियं जरित्रे वाजपेशसम् ॥ ६ ॥
तं नो दात मरुतो वाजिनं रथं आपानं ब्रह्म चितयद्दिवेदिवे।
इषं स्तोतृभ्यो वृजनेषु कारवे सनिं मेधामरिष्टं दुष्टरं सहः ॥ ७ ॥
यद्युञ्जतेमरुतो रुक्मवक्षसोऽश्वान्रथेषु भग आ सुदानवः।
धेनुर्न शिश्वे स्वसरेषु पिन्वते जनाय रातहविषे महीमिषम् ॥ ८ ॥
धेनुर्न शिश्वे स्वसरेषु पिन्वते जनाय रातहविषे महीमिषम्।
यो नो मरुतो वृकतातिं मर्त्यो रिपुर्दधे वसवो रक्षता रिषः ॥ ९ ॥
वर्तयत तपुषा चक्रियाभि तमव रुद्रा अशसो हन्तना वधः ॥ ९ ॥
चित्रं तद्वो मरुतो यामं चेकिते पृश्न्या यदुधरप्यापयो दुहुः।
यद्वा निदे नवमानस्य रुद्रियास्त्रितं जराय जुरतामदाभ्याः ॥ १० ॥

अथ एकविंशो वर्गः ॥ २१ ॥

तान्वो महो मरुत एवयावो विष्णोरेषस्य प्रभृथे हवामहे।
हिरण्यवर्णान्कुहान्यतस्रुचो ब्रह्मण्यन्तः शंस्यं राध ईमहे ॥ ११ ॥
ते दर्शग्वाः प्रथमा यज्ञमूहिरे ते नो हिन्वन्तूषसो व्युष्टिषु।
उषा न रामीररुणैरपोर्णुते महो ज्योतिषा शुचता गोअर्णसा ॥ १२ ॥
ते क्षोणीभिरुणेभिर्नाञ्जिभी रुद्रा ऋतस्य सदनेषु वावृधुः।
निमेघमाना अत्येन पाजसा सुश्चन्द्रं वर्णं दधिरे सुपेशसम् ॥ १३ ॥
ताँ ईयानो महि वरूथमूतय उप घेदेना नमसा गृणीमसि।
त्रितो न यान्पञ्च होतॄन्भिष्टय आववर्तदवराञ्चक्रियावसे ॥ १४ ॥
यया रध्रं पारयथात्यंहो यया निदो मुञ्चथ वन्दितारम्।
अर्वाची सा मरुतो या व ऊतिरो षु वाश्रेव सुमतिर्जिगातु ॥ १५ ॥

[३५] पञ्चत्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—गृत्समदः ॥ देवता—अपान्नपात् ॥ छन्दः—१, ४, ६, ७, ९, १०, १२, १३, १५ निचृत्त्रिष्टुप्; २, ३, ८ भुरिक्पङ्क्तिः; ५ स्वराट्पङ्क्तिः; ११ विराट्त्रिष्टुप्; १४ त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१, ४, ६, ७, ९-१५ धैवतः; २, ३, ५, ८ पञ्चमः ॥

अथ द्वाविंशो वर्गः ॥ २२ ॥

उपेमसृक्षि वाजयुर्वचस्यां चनो दधीत नाद्यो गिरो मे।
अपां नपादाशुहेमा कुवित्स सुपेशसस्करति जोषिषद्धि ॥ १ ॥
इमं स्वस्मै हृद आ सुतष्टं मन्त्रं वोचेम कुविदस्य वेदत्।
अपां नपादसुर्यस्य मह्ना विश्वान्यर्यो भुवना जजान ॥ २ ॥
समन्या यन्त्युप यन्त्यन्याः समानमूर्वं नद्यः पृणन्ति।
तमू शुचिं शुचयो दीदिवांसमपां नपातं परि तस्थुरापः ॥ ३ ॥
तमस्मेरा युवतयो युवानं मर्मृज्यमानाः परि यन्त्यापः।
स शुक्रेभिः शिक्वभी रेवदस्मे दीदायानिध्मो घृतनिर्णिगप्सु ॥ ४ ॥
अस्मै तिस्रो अव्यथ्याय नारीर्देवाय देवीर्दिधिषन्त्यन्नम्।
कृताइवोप हि प्रसर्स्रे अप्सु स पीयूषं धयति पूर्वसूनाम् ॥ ५ ॥

अथ त्रयोविंशो वर्गः ॥ २३ ॥

अश्वस्यात्र जनिमास्य च स्वर्दुहो रिषः संपृचः पाहि सूरीन्।
आमासु पूर्षु परो अप्रमृष्यं नारातयो वि नशन्नानृतानि ॥ ६ ॥
स्व आ दमे सुदुघा यस्य धेनुः स्वधां पीपाय सुभ्वन्नमत्ति।
सो अपां नपादूर्जयन्नप्स्वन्तर्वसुदेयाय विधते वि भाति ॥ ७ ॥
यो अप्स्वा शुचिना दैव्येन ऋतावाजस्र उर्विया विभाति।
वया इदन्या भुवनान्यस्य प्र जायन्ते वीरुधश्च प्रजाभिः ॥ ८ ॥
अपां नपादा ह्यस्थादुपस्थं जिह्मानामूर्ध्वो विद्युतं वसानः।
तस्य व्रतानि महिषा वहन्तीर्हिरण्यवर्णाः परि यन्ति यह्वीः ॥ ९ ॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

हिरण्यरूपः स हिरण्यसंदृगपां नपात्सेदु हिरण्यवर्णः ।
हिरण्ययात्परि योनेर्निषद्या हिरण्यदा ददत्यन्नमस्मै ॥ १० ॥

अथ चतुर्विंश वर्गः ॥ २४ ॥

तदस्यानीकमुत चारु नामापीच्यं वर्धते नप्तुरपाम् ।
यमिन्धते युवतयः समित्था हिरण्यवर्णं घृतमन्नमस्य ॥ ११ ॥

अस्मै बहूनामवमाय सख्ये यज्ञैर्विधेम नमसा हविर्भिः ।
सं सानु मार्ज्मि दिधिषामि बिल्मैर्ददाभ्यन्नैः परि वन्द ऋग्भिः ॥ १२ ॥

स ईं वृषाजनयत्तासु गर्भं स ईं शिशुर्धयति तं रिहन्ति ।
सो अपां नपादनभिम्लातवर्णोऽन्यस्येवेह तन्वा विवेष ॥ १३ ॥

अस्मिन्पदे परमे तस्थिवांसमध्वस्मभिर्विश्वहा दीदिवांसम् ।
आपो नप्त्रे घृतमन्नं वहन्तीः स्वयमक्तैः परि दीयन्ति यह्वीः ॥ १४ ॥

अयांसमग्ने सुक्षितिं जनायायांसमु मघवद्भ्यः सुवृक्तिम् ।
विश्वं तद्भद्रं यदवन्ति देवा बृहद्वदेम विदथे सुवीराः ॥ १५ ॥

[३६] षट्त्रिंश सूक्तम्

ऋषिः—गृत्समदः ॥ देवता—१ इन्द्रो मधुश्च; २ मरुतो माधवश्च; ३ त्वष्टा शुक्रश्च; ४ अग्निः शुचिश्च; ५ इन्द्रो नभश्च; ६ मित्रावरुणौ नभस्यश्च ॥ छन्दः—१, ४ स्वराट् त्रिष्टुप्; २, ३ जगती; ५, ६ भुरिक्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१, ४-६ धैवतः; २, ३ निषादः ॥

अथ पञ्चविंशो वर्गः ॥ २५ ॥

तुभ्यं हिन्वानो वसिष्ठ गा अपोऽधुक्षन्त्सीमविभिरद्रिभिर्नरः ।
पिबेन्द्र स्वाहा प्रहुतं वषट्कृतं होत्रादा सोमं प्रथमो य ईशिषे ॥ १ ॥

यज्ञैः संमिश्लाः पृषतीभिर्ऋष्टिभिर्यामञ्छुभ्रासो अञ्जिषु प्रिया उत ।
आसद्या बर्हिर्भरतस्य सूनवः पोत्रादा सोमं पिबता दिवो नरः ॥ २ ॥

अमेव नः सुहवा आ हि गन्तन नि बर्हिषि सदतना रणिष्टन ।
अथा मन्दस्व जुजुषाणो अन्धसस्त्वष्टर्देवेभिर्जनिभिः सुमद्गणः ॥ ३ ॥

आ वक्षि देवाँ इह विप्र यक्षि चोशन्होतर्नि षदा योनिषु त्रिषु ।
प्रति वीहि प्रस्थितं सोम्यं मधु पिबाग्नीध्रात्तव भागस्य तृप्णुहि ॥ ४ ॥

एष स्य ते तन्वो नृम्णवर्धनः सह ओजः प्रदिवि बाह्वोर्हितः ।
तुभ्यं सुतो मघवन्तुभ्यमाभृतस्त्वमस्य ब्राह्मणादा तृपत्पिब ॥ ५ ॥

जुषेथां यज्ञं बोधतं हवस्य मे सत्तो होता निविदः पूर्व्या अनु ।
अच्छा राजाना नमसा एत्यावृतं प्रशास्त्रादा पिबतं सोम्यं मधु ॥ ६ ॥

॥ इति द्वितीयाष्टके सप्तमोऽध्यायः ॥

अथाष्टमोऽध्यायः

[३७] सप्तत्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—गृत्समदः ॥ देवता—१-४ द्रविणोदाः; ५ अश्विनौ; ६ अग्निः ॥ छन्दः—१, ५ निचृज्जगती; २ जगती; ३ विराड्जगती; ४, ६ भुरिक्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१-३, ५ निषादः; ४, ६ धैवतः ॥

अथ प्रथमो वर्गः ॥ १ ॥

मन्दस्व होत्रादनु जोषमन्धसोऽध्वर्यवः स पूर्णां वष्ट्यासिचम् ।
तस्मा एतं भरत तद्वशो ददिर्होत्रात्सोमं द्रविणोदः पिबर्तु भिः ॥ १ ॥

यमु पूर्वमहुवे तमिदं हुवे सेदु हव्यो ददिर्यो नाम पत्यते ।
अध्वर्युभिः प्रस्थितं सोम्यं मधु पोत्रात्सोमं द्रविणोदः पिबर्तु भिः ॥ २ ॥

मेद्यन्तु ते वह्नयो येभिरीयसेऽरिषण्यन्वीळयस्वा वनस्पते ।
आयूया धृष्णो अभिगूर्या त्वं नेष्टात्सोमं द्रविणोदः पिबर्तु भिः ॥ ३ ॥

अपाद्धोत्रादुत पोत्रादमत्तोत नेष्ट्रादजुषत प्रयो हितम् ।
तुरीयं पात्रममृक्तमर्त्यं द्रविणोदाः पिबतु द्राविणोदसः ॥ ४ ॥

अर्वाञ्चमद्य यय्यं नृवाहणं रथं युञ्जाथामिह वां विमोचनम् ।
पृङ्क्तं हवींषि मधुना हि कं गतमथा सोमं पिबतं वाजिनीवसू ॥ ५ ॥

जोष्यग्ने समिधं जोष्याहुतिं जोषि ब्रह्म जन्यं जोषि सुष्टुतिम् ।
विश्वेभिर्विश्वाँ ऋतुना वसो मह उशन्देवाँ उशतः पायया हविः ॥ ६ ॥

[३८] अष्टात्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—गृत्समदः ॥ देवता—सविता ॥ छन्दः—१, ५ निचृत्त्रिष्टुप्; २ त्रिष्टुप्; ३, ४, ६, १०, ११ विराट्त्रिष्टुप्; ७, ८ स्वराट्पङ्क्तिः; ९ भुरिक्पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१-६, १०, ११ धैवतः; ७-९ पञ्चमः ॥

अथ द्वितीयो वर्गः ॥ ३ ॥

उदु ष्य देवः सविता सवाय शश्वत्तमं तदपा वह्निरस्थात् ।
नूनं देवेभ्यो वि हि धाति रत्नमथाभजद्वीतिहोत्रं स्वस्तौ ॥ १ ॥

विश्वस्य हि श्रुष्टय देव ऊर्ध्वः प्र बाहवा पृथुपाणिः सिसर्ति ।
आप्रश्चिदस्य व्रत आ निमृग्रा अयं चिद्वातो रमते परिज्मन् ॥ २ ॥

आशुभिश्चिद्यान्वि मुचाति नूनमरीरमदतमानं चिदेतोः ।
अह्यर्षूणां चित्र्ययाँ अविष्यामनु व्रतं सवितुर्मोक्यागात् ॥ ३ ॥

पुनः समव्यदितं वयन्ती मध्या कर्तोर्न्यधाच्छक्म धीरः ।
उत्सहायास्थाद् व्यृतूँरदर्धरर्मतिः सविता देव आगात् ॥ ४ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नानौकांसि दुर्यो विश्वमायुर्वि तिष्ठते प्रभवः शोको अग्नेः ।
ज्येष्ठं माता सूनवे भागमाधादन्वस्य केतमिषितं सवित्रा ॥ ५ ॥

अथ तृतीयो वर्गः ॥ ३ ॥

समार्ववर्ति विष्ठितो जिगीषुर्विश्वेषां कामश्चरतामभूत् ।
शश्वाँ अपो विकृतं हित्व्यागादनु व्रतं सवितुर्दैव्यस्य ॥ ६ ॥
त्वया हितमप्यमप्सु भागं धन्वान्वा मृगयसो वि तस्थुः ।
वनानि विभ्यो नकिरस्य तानि व्रता देवस्य सवितुर्मिनन्ति ॥ ७ ॥
याद्राध्यं वरुणो योनिमप्यमनिशितं निमिषि जभुराणः ।
विश्वो मार्ताण्डो व्रजमा पशुर्गात्स्थशो जन्मानि सविता व्याकः ॥ ८ ॥
न यस्येन्द्रो वरुणो न मित्रो व्रतमर्यमा न मिनन्ति रुद्रः ।
नारातयस्तमिदं स्वस्ति हुवे देवं सवितारं नमोभिः ॥ ९ ॥
भगं धियं वाजयन्तः पुरन्धिं नराशंसो ग्नास्पतिर्नो अव्याः ।
आये वामस्य सङ्गथे रयीणां प्रिया देवस्य सवितुः स्याम ॥ १० ॥
अस्मभ्यं तद्दिवो अद्भ्यः पृथिव्यास्त्वया दत्तं काम्यं राध आ गात् ।
शं यत्स्तोतृभ्य आपये भवात्युरुशंसाय सवितर्जरित्रे ॥ ११ ॥

[३९] एकोनचत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—गृत्समदः ॥ देवता—अश्विनौ ॥ छन्दः—१ निचृत्त्रिष्टुप्; २ भुरिक्पङ्क्तिः; ३ विराट्त्रिष्टुप्; ४, ७, ८ त्रिष्टुप्; ५, ६ स्वराट्पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१, ३, ४, ७, ८ धैवतः; २, ५, ६ पञ्चमः ॥

अथ चतुर्थो वर्गः ॥ ४ ॥

ग्रावाणेव तदिदर्थं जरेथे गृध्रेव वृक्षं निधिमन्तमच्छ ।
ब्रह्माणेव विदथ उक्थशासा दूतेव हव्या जन्या पुरुत्रा ॥ १ ॥
प्रातर्यावाणा रथ्येव वीराजेव यमा वरमा सचेथे ।
मेनेइव तन्वा शुम्भमाने दम्पतीव क्रतुविदा जनेषु ॥ २ ॥
शृङ्गेव नः प्रथमा गन्तमर्वाक्छफाविव जभुराणा तरोभिः ।
चक्रवाकेव प्रति वस्तोरुस्रावाञ्चा यातं रथ्येव शक्रा ॥ ३ ॥
नावेव नः पारयतं युगेव नभ्येव न उपधीव प्रधीव ।
श्वानेव नो अरिषण्या तनूनां खृगलेव विस्रसः पातमस्मान् ॥ ४ ॥
वातेवाजुर्या नद्येव रीतिरक्षीइव चक्षुषा यातमर्वाक् ।
हस्ताविव तन्वे शंभविष्ठा पादेव नो नयतं वस्यो अच्छ ॥ ५ ॥

अथ पञ्चमो वर्गः ॥ ५ ॥

ओष्ठाविव मध्वास्ने वदन्ता स्तनाविव पिप्यतं जीवसे नः ।
नासेव नस्तन्वो रक्षितारा कर्णाविव सुश्रुता भूतमस्मे ॥ ६ ॥
हस्तेव शक्तिमभि संददी नः क्षामेव नः समजतं रजांसि ।
इमा गिरो अश्विना युष्मयन्तीः क्ष्णोत्रेणेव स्वधितिं सं शिशीतम् ॥ ७ ॥
एतानि वामश्विना वर्धनानि ब्रह्म स्तोमं गृत्समदासो अक्रन् ।
तानि नरा जुजुषाणोप यातं बृहद्वदेम विदथे सुवीराः ॥ ८ ॥

[४०] चत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—गृत्समदः ॥ देवता — सोमापूषणावदितिश्च ॥ छन्दः—१, ३ त्रिष्टुप्; २ विराट्त्रिष्टुप्; ४ स्वराट्पङ्क्तिः; ५, ६ निचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१-३, ५, ६ धैवतः; ४ पञ्चमः ॥

अथ षष्ठो वर्गः ॥ ६ ॥

सोमापूषणा जनना रयीणां जनना दिवो जनना पृथिव्याः ।
जातौ विश्वस्य भुवनस्य गोपौ देवा अकृण्वन्नमृतस्य नाभिम् ॥ १ ॥
इमौ देवौ जायमानौ जुषन्तेमौ तमांसि गूहतामजुष्टा ।
आभ्यामिन्द्रः पक्वमामास्वन्तः सोमापूषभ्यां जनदुस्रियासु ॥ २ ॥
सोमापूषणा रजसो विमानं सप्तचक्रं रथमविश्वमिन्वम् ।
विषूवृतं मनसा युज्यमानं तं जिन्वथो वृषणा पञ्चरश्मिम् ॥ ३ ॥
दिव्यः सदनं चक्र उच्चा पृथिव्यामन्यो अध्यन्तरिक्षे ।
तावस्मभ्यं पुरुवारं पुरुक्षुं रायस्पोषं वि ष्यतां नाभिमस्मे ॥ ४ ॥
विश्वान्यन्यो भुवना जजान विश्वमन्यो अभिचक्षाण एति ।
सोमापूषणाववतं धियं मे युवाभ्यां विश्वाः पृतना जयेम ॥ ५ ॥
धियं पूषा जिन्वतु विश्वमिन्वो रयिं सोमो रयिपतिर्दधातु ।
अवतु देव्यदितिरनर्वा बृहद्वदेम विदथे सुवीराः ॥ ६ ॥

[४१] एकचत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—गृत्समदः ॥ देवता—१, २ वायुः; ३ इन्द्रवायू; ४-६ मित्रावरुणौ; ७-९ अश्विनौ; १०-१२ इन्द्रः; १३-१५ विश्वे देवाः; १६-१८ सरस्वती; १९-२१ द्यावापृथिव्यौ हविर्धाने वा ॥ छन्दः—१, ३, ४, ६, १०, ११, १३, १५, १९-२१ गायत्री; २, ५, ९, १२, १४, निचृद्गायत्री; ७ त्रिपाद् गायत्री; ८ विराड्गायत्री; १६ अनुष्टुप्; १७ उष्णिक्; १८ बृहती ॥ स्वरः—१-१५, १९-२१ षड्जः; १६ गान्धारः; १७ ऋषभः; १८ मध्यमः ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अथ सप्तमो वर्गः ॥ ७ ॥

वायो॒ ये ते॑ सहस्त्रिणो॒ रथा॑सस्तेभि॒रा ग॑हि। नि॒युत्वा॑न्त्सोमपीतये॥ १ ॥
नि॒युत्वा॑न्वायवा॒ ग॒ह्ययं शु॒क्रो अ॑यामि ते। गन्ता॑सि सुन्व॒तो गृ॒हम्॥ २ ॥
शु॒क्रस्या॒द्य ग॑वाशिर इन्द्रवायू नि॒युत्व॑तः। आ या॑तं पिबतं नरा॥ ३ ॥
अ॒यं वां॑ मित्रावरुणा सुतः सोम॑ ऋतावृधा। ममेदि॒ह श्रु॒तं ह॒वम्॥ ४ ॥
राजा॑नावनभिद्रुहा ध्रु॒वे सद॑स्युत्त॒मे। सह॑स्त्रस्थूण आसाते ॥ ५ ॥

अथ अष्टमो वर्गः ॥ ८ ॥

ता सम्रा॑जा घृतासुती आदि॒त्या दानु॑नस्पती। सचै॑ते अनवह्व॒रम्॥ ६ ॥
गोम॑दू षु णास॒त्याश्वा॑वद्यातमश्विना। व॒र्ती रु॑द्रा नृपाय्य॑म् ॥ ७ ॥
न यत्प॒रो नान्त॑र आद॒धर्ष॑द् वृषण्वसू। दुः॒शंसो॒ मर्त्यो॑ रि॒पुः ॥ ८ ॥
ता न॒ आ वो॑ळ्हमश्विना र॒यिं पि॒शङ्गसंदृशम्। धिष्ण्या॑ वरिवो॒विद॑म्॥ ९ ॥
इन्द्रो॑ अङ्ग म॒हद्भ॒यमभी षदप॑ चुच्यवत्। स हि स्थि॒रो विच॑र्षणिः॥ १० ॥

अथ नवमो वर्गः ॥ ९ ॥

इन्द्र॑श्च मृ॒ळया॑ति नो॒ न नः॑ प॒श्चाद॒घं न॑शत्। भ॒द्रं भ॑वाति नः॒ पुरः॥ ११ ॥
इन्द्र॒ आशा॑भ्य॒स्परि॒ सर्वी॑भ्यो॒ अभ॑यं करत्। जेता॒ शत्रू॒न्विच॑र्षणिः॥ १२ ॥
विश्वे॑ देवास॒ आ ग॑त शृणु॒ता म॑ इ॒मं ह॒वम्। एदं ब॒र्हिर्नि षी॑दत॥ १३ ॥
तीव्रो वो॒ मधु॑माँ अ॒यं शु॒नहो॑त्रेषु मत्स॒रः। ए॒तं पि॑बत काम्य॒म्॥ १४ ॥
इन्द्र॑ज्येष्ठा मरुद्गणा॒ देवा॑सः पूषरातयः। विश्वे॒ मम॑ श्रुता॒ हव॑म्॥ १५ ॥

अथ दशमो वर्गः ॥ १० ॥

अम्बि॑तमे॒ नदी॑तमे॒ देवि॑तमे॒ सर॑स्वति ।
अ॒प्र॒शस्ताइ॑व स्मसि॒ प्रश॑स्तिमम्ब नस्कृधि ॥ १६ ॥
त्वे विश्वा॑ सरस्वति श्रि॒तायूँ॑षि दे॒व्याम्।
शु॒नहो॑त्रेषु॒ मत्स्व प्र॒जां दैवि॑ दिदिड्ढि नः॥ १७ ॥
इ॒मा ब्रह्म॑ सरस्वति जुषस्व वाजिनीवति।
या ते॒ मन्म॑ गृत्सम॒दा ऋ॒तावरि॒ प्रिया दे॒वेषु॑ जुह्व॑ति॥ १८ ॥
प्रेतो॑ य॒ज्ञस्य॑ शं॒भुवा॑ युवामि॒दा वृ॑णीमहे। अ॒ग्निं च॑ हव्य॒वाह॑नम्॥ १९ ॥
द्यावा॑ नः पृथि॒वी इ॒मं सि॒ध्रम॒द्य दि॑वि॒स्पृश॑म्। य॒ज्ञं दे॒वेषु॑ यच्छताम्॥ २० ॥
आ वा॑मुपस्थ॒मद्रुहा॒ देवाः॑ सीदन्तु य॒ज्ञिया॑। इ॒हाद्य सोम॑पीतये॥ २१ ॥

[४२] द्विचत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—गृत्समदः ॥ देवता—कपिञ्जलइवेन्द्रः ॥ छन्दः—त्रिष्टुप्॥
स्वरः—धैवतः ॥

अथ एकादशो वर्गः ॥ ११ ॥

कनि॑क्रदज्जनुषं॑ प्रब्रुवा॒ण इ॒यर्ति॑ वाच॒मरि॑तेव॒ नाव॑म् ।
सु॒मङ्ग॑लश्च शकुने भवा॑सि॒ मा त्वा॒ का चि॑दभि॒भा वि॑श्व्या॑ विदत्॥ १ ॥
मा त्वा॒ श्येन॒ उद्ध॑धी॒न्मा सु॑प॒र्णो मा त्वा॑ विद॒दिषु॑मान्वी॒रो अस्ता॑।
पित्र्या॒मनु॒ प्रदि॑शं कनि॒क्रद॑त्सुम॒ङ्गलो॑ भद्रवा॒दी व॑देह ॥ २ ॥
अव॑ क्रन्द दक्षिण॒तो गृहा॑णां सुम॒ङ्गलो॑ भद्रवा॒दी श॑कुन्ते।
मा नः॑ स्ते॒न ई॑शत॒ माघशं॑सो बृहद्वदेम वि॒दथे॑ सुवी॒राः॥ ३ ॥

[४३] त्रिचत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—गृत्समदः ॥ देवता—कपिञ्जलइवेन्द्रः ॥ छन्दः—१ जगती; २ भुरिगतिशक्करी; ३ निचृज्जगती ॥ स्वरः—१, ३ निषादः; २ पञ्चमः ॥

अथ द्वादशो वर्गः ॥ १२ ॥

प्र॒द॒क्षि॒णिद॒भि गृ॑णन्ति का॒रवो॒ वयो॒ वद॑न्त ऋ॒तुथा॒ श॑कुन्तयः ।
उ॒भे वाचौ॑ वदति सामगाइ॑व गायत्रं॒ च॒ त्रैष्टु॑भं॒ चानु॑ राजति ॥ १ ॥
उ॒द्गा॒तेव॑ शकुने सा॒म गा॑यसि ब्रह्मपुत्र इ॑व॒ सव॑नेषु शंससि ।
वृषे॑व वा॒जी शि॑शु॒मतीर॒पीत्या॑ स॒र्वतो॑ नः शकुने भ॒द्रमा व॑द
वि॒श्वतो॑ नः शकुने पुण्य॒मा व॑द ॥ २ ॥
आ॒व॒दँ॒स्त्वं शकुने भ॒द्रमा व॑द तू॒ष्णीमासी॑नः सु॒मति॑ं चिकिद्धि नः ।
यदु॒त्प॒तन्व॑दसि कर्क॒रिर्यथा॑ बृहद्वदेम वि॒दथे॑ सुवी॒राः॥ ३ ॥

इति द्वितीयं मण्डलम्॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अथ तृतीयं मण्डलम्

प्रथमोऽनुवाकः [१] प्रथमं सूक्तम्

ऋषिः—गाथिनो विश्वामित्रः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—१, ३-५, ९, ११, १२, १५, १७, १९, २० निचृत्त्रिष्टुप्; २, ६, ७, १३, १४ त्रिष्टुप्; ८, १६, २३ स्वराट्पङ्क्तिः; १०, २१ विराट्त्रिष्टुप्; १८ भुरिक्पङ्क्तिः; २२ ज्योतिष्मतीत्रिष्टुप्॥ स्वरः—१-७, ९-१५, १७, १९-२२ धैवतः; ८, १६, १८, २३ पञ्चमः॥

अथ त्रयोदशो वर्गः॥ १३॥

सोमस्य मा तवसं वक्ष्यग्ने वह्निं चकर्थ विदथे यजध्यै।
देवाँ अच्छ दीद्यद्युञ्जे अद्रिं शमाये अग्ने तन्वं जुषस्व॥ १॥
प्राञ्चं यज्ञं चकृम वर्धतां गीः समिद्भिरग्निं नमसा दुवस्यन्।
दिवः शशासुर्विदथा कवीनां गृत्साय चित्तवसे गातुमीषुः॥ २॥
मयो दधे मेधिरः पूतदक्षो दिवः सुबन्धुर्जनुषा पृथिव्याः।
अविन्दन्नु दर्शतमप्स्वन्तर्देवासो अग्निमपसि स्वसॄणाम्॥ ३॥
अवर्धयन्त्सुभगं सप्त यह्वीः श्वेतं जज्ञानमरुषं महित्वा।
शिशुं न जातमभ्यारुरश्वा देवासो अग्निं जनिमन्वपुष्यन्॥ ४॥
शुक्रेभिरङ्गै रजं आततन्वान्क्रतुं पुनानः कविभिः पवित्रैः।
शोचिर्वसानः पर्यायुरपां श्रियो मिमीते बृहतीरनूनाः॥ ५॥

अथ चतुर्दशो वर्गः॥ १४॥

व्रजा सीमनदतीरदब्धा दिवो यह्वीरवसाना अनग्नाः।
सना अत्र युवतयः सयोनीरेकं गर्भं दधिरे सप्त वाणीः॥ ६॥
स्तीर्णा अस्य संहतो विश्वरूपा घृतस्य योनौ स्रवथे मधूनाम्।
अस्थुरत्र धेनवः पिन्वमाना महो दस्मस्य मातरा समीची॥ ७॥
बभ्राणः सूनो सहसो व्यद्यौद्दधानः शुक्रा रभसा वपूंषि।
श्चोतन्ति धारा मधुनो घृतस्य वृषा यत्र ववृधे काव्येन॥ ८॥
पितुश्चिदूधर्जनुषा विवेद व्यस्य धारा असृजद्वि धेनाः।
गुहा चरन्तं सखिभिः शिवेभिर्दिवो यह्वीभिर्न गुहा बभूव॥ ९॥
पितुश्च गर्भं जनितुश्च बभ्रे पूर्वीरेको अधयत्पीप्यानाः।
वृष्णो सपत्नी शुचये सबन्धू उभे अस्मै मनुष्येह नि पाहि॥ १०॥

अथ पञ्चदशो वर्गः॥ १५॥

उरौ महाँ अनिबाधे ववर्धापो अग्निं यशसः सं हि पूर्वीः।
ऋतस्य योनावशयद्दमूना जामीनामग्निरपसि स्वसॄणाम्॥ ११॥
अक्रो न बभ्रिः संमिथे महीनां दिदृक्षेयः सूनवे भाऋजीकः।
उदुस्रिया जनिता यो जजानापां गर्भो नृतमो यह्वो अग्निः॥ १२॥
अपां गर्भं दर्शतमोषधीनां वना जजान सुभगा विरूपम्।
देवासश्चिन्मनसा सं हि जग्मुः पनिष्ठं जातं तवसं दुवस्यन्॥ १३॥
बृहन्त इद्भानवो भाऋजीकमग्निं सचन्त विद्युतो न शुक्राः।
गुहेव वृद्धं सदसि स्वे अन्तरपार ऊर्वे अमृतं दुहानाः॥ १४॥
ईळे च त्वा यजमानो हविर्भिरीळे सखित्वं सुमतिं निकामः।
देवैरवो मिमीहि सं जरित्रे रक्षा च नो दम्येभिरनीकैः॥ १५॥

अथ षोडशो वर्गः॥ १६॥

उपक्षेतारस्तव सुप्रणीतेऽग्ने विश्वानि धन्या दधानाः।
सुरेतसा श्रवसा तुज्जमाना अभि ष्याम पृतनायूँर्देवान्॥ १६॥
आ देवानामभवः केतुरग्ने मन्द्रो विश्वानि काव्यानि विद्वान्।
प्रति मतीं अवासयो दमूना अनु देवान्रथिरो यासि साधन्॥ १७॥
नि दुरोणे अमृतो मर्त्यानां राजा ससाद विदथानि साधन्।
घृतप्रतीक उर्विया व्यद्यौदग्निर्विश्वानि काव्यानि विद्वान्॥ १८॥
आ नो गहि सख्येभिः शिवेभिर्महान्महीभिरूतिभिः सरण्यन्।
अस्मे रयिं बहुलं संतरुत्रं सुवाचं भागं यशसं कृधी नः॥ १९॥
एता ते अग्ने जनिमा सनानि प्र पूर्व्याय नूतनानि वोचम्।
महान्ति वृष्णे सवना कृतेमा जन्मञ्जन्मन्निहितो जातवेदाः॥ २०॥
जन्मञ्जन्मन्निहितो जातवेदा विश्वामित्रेभिरिध्यते अजस्रः।
तस्य वयं सुमतौ यज्ञियस्यापि भद्रे सौमनसे स्याम॥ २१॥
इमं यज्ञं सहसावन्त्वं नो देवत्रा धेहि सुक्रतो रराणः।
प्र यंसि होतर्बृहतीरिषो नोऽग्ने महि द्रविणमा यजस्व॥ २२॥
इळामग्ने पुरुदंसं सनिं गोः शश्वत्तमं हवमानाय साध।
स्यान्नः सूनुस्तनयो विजावाग्ने सा ते सुमतिर्भूत्वस्मे॥ २३॥

[२] द्वितीयं सूक्तम्

ऋषिः—विश्वामित्रः॥ देवता—अग्निर्वैश्वानरः॥ छन्दः—१, ३, १० जगती; २, ४, ८, ११ विराड्जगती; ५, ७, १२-१५ निचृज्जगती॥ स्वरः—निषादः॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अथ सप्तदशो वर्गः ॥ १७ ॥

वैश्वानराय धिषणामृतावृधे घृतं न पूतमग्नये जनामसि ।
द्विता होतारं मनुषश्च वाघतो धिया रथं न कुलिशः समृण्वति ॥ १ ॥
स रोचयज्जनुषा रोदसी उभे स मात्रोरभवत्पुत्र ईड्यः ।
हव्यवाळग्निरजरश्चनोहितो दूळभो विशामतिथिर्विभावसुः ॥ २ ॥
क्रत्वा दक्षस्य तरुषो विधर्मणि देवासो अग्निं जनयन्त चित्तिभिः ।
रुरुचानं भानुना ज्योतिषा महामत्यं न वाजं सनिष्यन्नुप ब्रुवे ॥ ३ ॥
आ मन्द्रस्य सनिष्यन्तो वरेण्यं वृणीमहे अहूयं वाजमृग्मियम् ।
रातिं भृगूणामुशिजं कविक्रतुमग्निं राजन्तं दिव्येन शोचिषा ॥ ४ ॥
अग्निं सुम्नाय दधिरे पुरो जना वाजश्रवसमिह वृक्तबर्हिषः ।
यतस्रुचः सुरुचं विश्वदेव्यं रुद्रं यज्ञानां साधदिष्टिमुपसाम् ॥ ५ ॥

अथ अष्टादशो वर्गः ॥ १८ ॥

पावकशोचे तव हि क्षयं परि होतर्यज्ञेषु वृक्तबर्हिषो नरः ।
अग्ने दुवं इच्छमानास आप्यमुपासते द्रविणं धेहि तेभ्यः ॥ ६ ॥
आ रोदसी अपृणदा स्वर्महज्जातं यदेनमपसो अधारयन् ।
सो अध्वराय परि णीयते कविरत्यो न वाजसातये चनोहितः ॥ ७ ॥
नमस्यत हव्यदातिं स्वध्वरं दुवस्यत दम्यं जातवेदसम् ।
रथीर्ऋतस्य बृहतो विचर्षणिरग्निर्देवानामभवत् पुरोहितः ॥ ८ ॥
तिस्रो यह्वस्य समिधः परिज्मनोऽग्नेरपुनन्नुशिजो अमृत्यवः ।
तासामेकामदधुर्मर्त्ये भुजमु लोकमु द्वे उप जामिमीयतुः ॥ ९ ॥
विशां कविं विश्पतिं मानुषीरिषः सं सीमकृण्वन्त्स्वधितिं न तेजसे ।
स उद्वतो निवतो याति वेविषत्स गर्भमेषु भुवनेषु दीधरत् ॥ १० ॥

अथ एकोनविंशो वर्गः ॥ १९ ॥

स जिन्वते जठरेषु प्रजज्ञिवान्वृषा चित्रेषु नानदन्न सिंहः ।
वैश्वानरः पृथुपाजा अमर्त्यो वसु रत्ना दयमानो वि दाशुषे ॥ ११ ॥
वैश्वानरः प्रत्नथा नाकमारुहद्विवस्पृष्ठं भन्दमानः सुमन्मभिः ।
स पूर्वजनयञ्जन्तवे धनं समानमज्मं पर्येति जागृविः ॥ १२ ॥
ऋतावानं यज्ञियं विप्रमुक्थ्यं१मा यं दधे मातरिश्वा दिवि क्षयम् ।
तं चित्रयामं हरिकेशमीमहे सुदीतिमग्निं सुवितायनव्यसे ॥ १३ ॥
शुचिं न यामन्निषिरं स्वर्दृशं केतुं दिवो रोचनस्थामुषर्बुधम् ।
अग्निं मूर्धानं दिवो अप्रतिष्कुतं तमीमहे नमसा वाजिनं बृहत् ॥ १४ ॥
मन्द्रं होतारं शुचिमद्वयाविनं दमूनसमुक्थ्यं विश्वचर्षणिम् ।
रथं न चित्रं वपुषाय दर्शतं मनुर्हितं सदमिद्राय ईमहे ॥ १५ ॥

[३] तृतीयं सूक्तम्

ऋषिः—विश्वामित्रः ॥ देवता—वैश्वानरोऽग्निः ॥ छन्दः—१, ५ निचृज्जगती; २-४, ६, ८, ९ जगती; ७, १० विराड्जगती; ११ भुरिक्पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१-१० निषादः; ११ पञ्चमः ॥

अथ विंशो वर्गः ॥ २० ॥

वैश्वानराय पृथुपाजसे विपो रत्ना विधन्त धरुणेषु गातवे ।
अग्निर्हि देवाँ अमृतो दुवस्यत्यथा धर्माणि सनता न दूदुषत् ॥ १ ॥
अन्तर्दूतो रोदसी दस्म ईयते होता निषत्तो मनुषः पुरोहितः ।
क्षयं बृहन्तं परि भूषति द्युभिर्देवेभिरग्निरिषितो धियावसुः ॥ २ ॥
केतुं यज्ञानां विदथस्य साधनं विप्रासो अग्निं महयन्त चित्तिभिः ।
अपांसि यस्मिन्नधि संदधुर्गिरस्तस्मिन्त्सुम्नानि यजमान आ चके ॥ ३ ॥
पिता यज्ञानामसुरो विपश्चितां विमानमग्निर्वयुनं च वाघताम् ।
आ विवेश रोदसी भूरिवर्पसा पुरुप्रियो भन्दते धामभिः कविः ॥ ४ ॥
चन्द्रमग्निं चन्द्ररथं हरिव्रतं वैश्वानरमप्सुषदं स्वर्विदम् ।
विगाहं तूर्णिं तविषीभिरावृतं भूर्णिं देवास इह सुश्रियं दधुः ॥ ५ ॥

अथ एकविंशो वर्गः ॥ २१ ॥

अग्निर्देवेभिर्मनुषश्च जन्तुभिस्तन्वानो यज्ञं पुरुपेशसं धिया ।
रथीरन्तरीयते साधदिष्टिभिर्जीरो दमूना अभिशस्तिचातनः ॥ ६ ॥
अग्ने जरस्व स्वपत्य आयुन्यूर्जा पिन्वस्व समिषो दिदीहि नः ।
वयांसि जिन्व बृहतश्च जागृव उशिग्देवानामसि सुक्रतुर्विपाम् ॥ ७ ॥
विश्पतिं यह्वमतिथिं नरः सदा यन्तारं धीनामुशिजं च वाघताम् ।
अध्वराणां चेतनं जातवेदसं प्र शंसन्ति नमसा जूतिभिर्वृधे ॥ ८ ॥
विभावा देवः सुरणः परि क्षितीरग्निर्बभूव शवसा सुमद्रथः ।
तस्य व्रतानि भूरिपोषिणो वयमुप भूषेम दम आ सुवृक्तिभिः ॥ ९ ॥
वैश्वानर तव धामान्या चके येभिः स्वर्विदभवो विचक्षण ।
जात आपृणो भुवनानि रोदसी अग्ने ता विश्वा परिभूरसि त्मना ॥ १० ॥
वैश्वानरस्य दंसनाभ्यो बृहदरिणादेकः स्वपस्यया कविः ।
उभा पितरा महयन्नजायताग्निर्द्यावापृथिवी भूरिरेतसा ॥ ११ ॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

[४] चतुर्थं सूक्तम्

ऋषिः—विश्वामित्रः ॥ देवता—आप्रियः ॥ छन्दः—१, ४, ७ स्वराट्पङ्क्तिः; २, ३, ५ त्रिष्टुप्; ६, ८, १०, ११ निचृत्त्रिष्टुप्; ९ विराट्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१, ४, ७ पञ्चमः; २, ३, ५, ६, ८-११ धैवतः ॥

अथ द्वाविंशो वर्गः ॥ २२ ॥

समित्समित्सुमना बोध्यस्मे शुचाशुचा सुमतिं रासि वस्वः।
आ देव देवान्यजथाय वक्षि सखा सखीन्त्सुमना यक्ष्यग्ने ॥ १ ॥
यं देवासस्त्रिरहन्नायजन्ते दिवेदिवे वरुणो मित्रो अग्निः।
सेमं यज्ञं मधुमन्तं कृधी नस्तनूनपाद् घृतयोनिं विधन्तम् ॥ २ ॥
प्र दीधितिर्विश्ववारा जिगाति होतारमिळः प्रथमं यजध्यै।
अच्छा नमोभिर्वृषभं वन्दध्यै स देवान्यक्षदिषितो यजीयान् ॥ ३ ॥
ऊर्ध्वो वां गातुरध्वरे अकार्यूर्ध्वा शोचींषि प्रस्थिता रजांसि।
दिवो वा नाभा न्यसादि होता स्तृणीमहि देवव्यचा वि बर्हिः ॥ ४ ॥
सप्त होत्राणि मनसा वृणाना इन्वन्तो विश्वं प्रति यन्नृतेन।
नृषेशसो विदथेषु प्र जाता अभीमं यज्ञं वि चरन्त पूर्वीः ॥ ५ ॥

अथ त्रयस्त्रिंशो वर्गः ॥ २३ ॥

आ भन्दमाने उषसा उपाके उत स्मयेते तन्वा विरूपे।
यथा नो मित्रो वरुणो जुजोषदिन्द्रो मरुत्वाँ उत वा महोभिः ॥ ६ ॥
दैव्या होतारा प्रथमा न्यृञ्जे सप्त पृक्षासः स्वधया मदन्ति।
ऋतं शंसन्त ऋतमित्त आहुरनु व्रतं व्रतपा दीध्यानाः ॥ ७ ॥
आ भारती भारतीभिः सजोषा इळा देवैर्मनुष्येभिरग्निः।
सरस्वती सारस्वतेभिरर्वाक्तिस्रो देवीर्बर्हिरेदं सदन्तु ॥ ८ ॥
तन्नस्तुरीपमध पोषयित्नु देव त्वष्टर्वि रराणः स्यस्व ।
यतो वीरः कर्मण्यः सुदक्षो युक्तग्रावा जायते देवकामः ॥ ९ ॥
वनस्पतेऽव सृजोप देवानग्निर्हविः शमिता सूदयाति।
सेदु होता सत्यतरो यजाति यथा देवानां जनिमानि वेद ॥ १० ॥
आ याह्यग्ने समिधानो अर्वाङिन्द्रेण देवैः सरथं तुरेभिः।
बर्हिर्न आस्तामदितिः सुपुत्रा स्वाहा देवा अमृता मादयन्ताम् ॥ ११ ॥

[५] पञ्चमं सूक्तम्

ऋषिः—विश्वामित्रः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१, २, ११ भुरिक्पङ्क्तिः; ३ पङ्क्तिः; ४ त्रिष्टुप्; ५, ७, १० निचृत्त्रिष्टुप्; ६ स्वराट्पङ्क्तिः; ८, ९ विराट्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१-३, ६, ११ पञ्चमः; ४, ५, ७-१० धैवतः ॥

अथ चतुर्विंशो वर्गः ॥ २४ ॥

प्रत्यग्निरुषसश्चेकितानोऽबोधि विप्रः पदवीः कवीनाम् ।
पृथुपाजा देवयद्भिः समिद्धोऽप द्वारा तमसो वह्निरावः ॥ १ ॥
प्रेद्वग्निर्वीवृधे स्तोमेभिर्गीर्भिः स्तोतॄणां नमस्य उक्थैः ।
पूर्वीर्ऋतस्य संदृशश्चकानः सं दूतो अद्यौदुषसो विरोके ॥ २ ॥
अधाय्यग्निर्मानुषीषु विक्ष्वग्निं पां गर्भो मित्र ऋतेन साधन् ।
आ हर्यतो यजतः सान्वस्थादभूदु विप्रो हव्यो मतीनाम् ॥ ३ ॥
मित्रो अग्निर्भवति यत्समिद्धो मित्रो होता वरुणो जातवेदाः।
मित्रो अध्वर्युरिषिरो दमूना मित्रः सिन्धूनामुत पर्वतानाम् ॥ ४ ॥
पाति प्रियं रिपो अग्रं पदं वेः पाति यह्वश्चरणं सूर्यस्य ।
पाति नाभा सप्तशीर्षाणमग्निः पाति देवानामुपमादमृष्वः ॥ ५ ॥

अथ पञ्चविंशो वर्गः ॥ २५ ॥

ऋभुश्चक्र ईड्यं चारु नाम विश्वानि देवो वयुनानि विद्वान्।
सस्य चर्म घृतवत्पदं वेस्तदिदग्नी रक्षत्यप्रयुच्छन् ॥ ६ ॥
आ योनिमग्निर्घृतवन्तमस्थात् पृथुप्रगाणमुशन्तमुशानः ।
दीद्यानः शुचिर्ऋष्वः पावकः पुनःपुनर्मातरा नव्यसी कः ॥ ७ ॥
सद्यो जात ओषधीभिर्ववक्षे यदी वर्धन्ति प्रस्वो घृतेन ।
आपइव प्रवता शुम्भमाना उरुष्यदग्निः पित्रोरुपस्थे ॥ ८ ॥
उदु ष्टुतः समिधा यह्वो अद्यौद्बर्भन्दिवो अधि नाभा पृथिव्याः।
मित्रो अग्निरीड्यो मातरिश्वा दूतो वक्षद्यजथाय देवान् ॥ ९ ॥
उदस्तम्भीत्समिधा नाकमृष्वोऽग्निर्भवद्वसुत्तमो रोचनानाम् ।
यदी भृगुभ्यः परि मातरिश्वा गुहा सन्तं हव्यवाहं समीधे ॥ १० ॥
इळामग्ने पुरुदंसं सनिं गोः शश्वत्तमं हवमानाय साध ।
स्यान्नः सूनुस्तनयो विजावाग्ने सा ते सुमतिर्भूत्वस्मे ॥ ११ ॥

[६] षष्ठं सूक्तम्

ऋषिः—विश्वामित्रः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१, ५ विराट्त्रिष्टुप्; २, ७ त्रिष्टुप्; ३, ४, ८ निचृत्त्रिष्टुप्; ६, ११ भुरिक्पङ्क्तिः; ९ स्वराट्पङ्क्तिः; १० भुरिक्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१-५, ७, ८, १० धैवतः; ६, ९, ११ पञ्चमः ॥

अथ षड्विंशो वर्गः ॥ २६ ॥

प्र कारवो मनना वच्यमाना देवद्रीचीं नयत देवयन्तः।
दक्षिणावाड् वाजिनी प्राच्येति हविर्भरन्त्यग्नये घृताची ॥ १ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

आ रोदसी अपृणा जायमान उत प्र रिक्था अध नु प्रयज्यो।
दिवश्चिदग्ने महिना पृथिव्या वच्यन्ता ते वह्नयः सप्तजिह्वाः॥ २॥
द्यौश्च त्वा पृथिवी यज्ञियासो नि होतारं सादयन्ते दमाय।
यदी विशो मानुषीर्देवयन्तीः प्रयस्वतीरीळते शुक्रमर्चिः॥ ३॥
महान्सधस्थे ध्रुव आ निषत्तोऽन्तर्द्यावा माहिने हर्यमाणः।
आस्क्रे सपत्नी अजरे अमृक्ते सबर्दुघे उरुगायस्य धेनू॥ ४॥
व्रता ते अग्ने महतो महानि तव क्रत्वा रोदसी आ ततन्थ।
त्वं दूतो अभवो जायमानस्त्वं नेता वृषभ चर्षणीनाम्॥ ५॥

अथ सप्तविंशो वर्गः॥ २७॥

ऋतस्य वा केशिना योग्याभिर्घृतस्नुवा रोहिता धुरि धिष्व।
अथा वह देवान्देव विश्वान्त्स्वध्वरा कृणुहि जातवेदः॥ ६॥
दिवश्चिदा ते रुचयन्त रोका उषो विभातीरनु भासि पूर्वीः।
अपो यदग्न उशधग्वनेषु होतुर्मन्द्रस्य पनयन्त देवाः॥ ७॥
उरौ वा ये अन्तरिक्षे मदन्ति दिवो वा ये रोचने सन्ति देवाः।
ऊमा वा ये सुहवासो यजत्रा आयेमिरे रथ्यो अग्ने अश्वाः॥ ८॥
ऐभिरग्ने सरथं याह्यर्वाङ् नानारथं वा विभवो ह्यश्वाः।
पत्नीवतस्त्रिंशतं त्रींश्च देवाननुष्वधमा वह मादयस्व॥ ९॥
स होता यस्य रोदसी चिदुर्वी यज्ञंयज्ञमभि वृधे गृणीतः।
प्राचीं अध्वरेव तस्थतुः सुमेके ऋतावरी ऋतजातस्य सत्ये॥ १०॥
इळामग्ने पुरुदंसं सनिं गोः शश्वत्तमं हवमानाय साध।
स्यान्नः सूनुस्तनयो विजावाग्ने सा ते सुमतिर्भूत्वस्मे॥ ११॥

॥ इति द्वितीयाष्टकेऽष्टमोऽध्यायः॥
॥ इति द्वितीयोऽष्टकः॥

अथ तृतीयाऽष्टके प्रथमोऽध्यायः

[७] सप्तमं सूक्तम्

ऋषिः—विश्वामित्रः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—१, ६, ९, १० त्रिष्टुप्; २-५, ७ निचृत्त्रिष्टुप्; ८ स्वराट्पङ्क्तिः; ११ भुरिक्पङ्क्तिः॥ स्वरः—१-७, ९, १० धैवतः; ८, ११ पञ्चमः॥

अथ प्रथमो वर्गः॥ १॥

प्र य आरुः शितिपृष्ठस्य धासेरा मातरा विविशुः सप्त वाणीः।
परिक्षितां पितरा सं चरेते प्र सस्राते दीर्घमायुः प्रयक्षे॥ १॥
दिवक्षसो धेनवो वृष्णो अश्वा देवीरा तस्थौ मधुमद्वहन्तीः।
ऋतस्य त्वा सदसि क्षेमयन्तं पर्येका चरति वर्तनिं गौः॥ २॥
आ सीमरोहत्सुयमा भवन्तीः पतिश्चिकित्वान्रयिविद्रयीणाम्।
प्र नीलपृष्ठो अतसस्य धासेस्ता अवासयत्पुरुधप्रतीकः॥ ३॥
महिं त्वाष्ट्रमूर्जयन्तीरजुर्यं स्तभूयमानं वहतो वहन्ति।
व्यङ्गेभिर्दिद्युतानः सधस्थ एकामिव रोदसी आ विवेश॥ ४॥
जानन्ति वृष्णो अरुषस्य शेवमुत ब्रध्नस्य शासने रणन्ति।
दिवोरुचः सुरुचो रोचमाना इळा येषां गण्या माहिना गीः॥ ५॥

अथ द्वितीयो वर्गः॥ २॥

उतो पितृभ्यां प्रविदानु घोषं महो महद्भ्यामनयन्त शूषम्।
उक्षा ह यत्र परि धानमक्तोरनु स्वं धाम जरितुर्ववक्ष॥ ६॥
अध्वर्युभिः पञ्चभिः सप्त विप्राः प्रियं रक्षन्ते निहितं पदं वेः।
प्राञ्चो मदन्त्युक्षणो अजुर्या देवा देवानामनु हि व्रता गुः॥ ७॥
दैव्या होतारा प्रथमा न्यृञ्जे सप्त पृक्षासः स्वधया मदन्ति।
ऋतं शंसन्त ऋतमित्त आहुरनु व्रतं व्रतपा दीध्यानाः॥ ८॥
वृषायन्ते महे अत्याय पूर्वीर्वृष्णो चित्राय रश्मयः सुयामाः।
देवं होतर्मन्द्रतरश्चिकित्वान्महो देवान्रोदसी एह वक्षि॥ ९॥
पृक्षप्रयजो द्रविणः सुवाचः सुकेतव उषसो रेवदूषुः।
उतो चिदग्ने महिना पृथिव्याः कृतं चिदेनः सं महे दशस्य॥ १०॥
इळामग्ने पुरुदंसं सनिं गोः शश्वत्तमं हवमानाय साध।
स्यान्नः सूनुस्तनयो विजावाग्ने सा ते सुमतिर्भूत्वस्मे॥ ११॥

[८] अष्टमं सूक्तम्

ऋषिः—विश्वामित्रः॥ देवता—विश्वे देवाः॥ छन्दः—१, ८-१० निचृत्त्रिष्टुप्; २, ५, ६, ११ त्रिष्टुप्; ३, ७ स्वराडनुष्टुप्; ४ स्वराट्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१, २, ४-६, ८-११ धैवतः; ३, ७ गान्धारः॥

अथ तृतीयो वर्गः॥ ३॥

अञ्जन्ति त्वामध्वरे देवयन्तो वनस्पते मधुना दैव्येन।
यदूर्ध्वस्तिष्ठा द्रविणेह धत्ताद्यद्वा क्षयो मातुरस्या उपस्थे॥ १॥
समिद्धस्य श्रयमाणः पुरस्ताद् ब्रह्म वन्वानो अजरं सुवीरम्।
आरे अस्मदमतिं बाधमान उच्छ्रयस्व महते सौभगाय॥ २॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उच्छ्र॑यस्व वनस्पते॒ वर्ष्म॑न्पृथि॒व्या अधि॑ ।
सुमि॑ती मी॒यमा॑नो॒ वर्चो॑ धा य॒ज्ञवा॑हसे ॥ ३ ॥
युवा॑ सु॒वासाः॒ परि॑वीत॒ आगा॒त्स उ॒ श्रेया॑न्भवति॒ जाय॑मानः ।
तं धीरा॑सः क॒वय॒ उन्न॑यन्ति स्वा॒ध्यो॒३॒॑ मन॑सा देव॒यन्तः॑ ॥ ४ ॥
जा॒तो जा॑यते सुदिन॒त्वे अह्नां॑ सम॒र्य आ वि॒दथे॒ वर्ध॑मानः ।
पु॒नन्ति॒ धीरा॑ अ॒पसो॑ मनी॒षा दे॑व॒या विप्र॒ उदि॑यर्ति॒ वाच॑म् ॥ ५ ॥

अथ चतुर्थो वर्गः ॥ ४ ॥

यान्वो॒ नरो॑ देव॒यन्तो॑ निमि॒म्युर्वन॑स्पते॒ स्वधि॑तिर्वा त॒तक्ष॑ ।
ते दे॒वासः॒ स्वर॑वस्तस्थि॒वांसः॑ प्र॒जाव॑द॒स्मे दि॑धिषन्तु॒ रत्न॑म् ॥ ६ ॥
ये वृ॒क्णासो॒ अधि॒ क्षमि॒ निमि॑तासो य॒तस्रु॑चः ।
ते नो॑ व्यन्तु॒ वार्यं॑ देव॒त्रा क्षे॑त्र॒साध॑सः ॥ ७ ॥
आ॒दि॒त्या रु॒द्रा वस॑वः सुनी॒था द्यावा॒क्षामा॑ पृथि॒वी अ॒न्तरि॑क्षम् ।
स॒जोष॑सो य॒ज्ञम॑वन्तु दे॒वा ऊ॒र्ध्वं कृ॑णवन्त्वध्व॒रस्य॑ के॒तुम् ॥ ८ ॥
हं॒साइ॑व श्रेणि॒शो यता॑नाः शु॒क्रा वसा॑नाः॒ स्वर॑वो न॒ आगुः॑ ।
उ॒न्नी॒यमा॑नाः क॒विभिः॑ पु॒रस्ता॑द्दे॒वा दे॒वाना॒मपि॑ यन्ति॒ पाथः॑ ॥ ९ ॥
शृङ्गा॑णी॒वेच्छृ॒ङ्गिणां॒ सं द॑दृशे च॒षाल॑वन्तः॒ स्वर॑वः पृथि॒व्याम् ।
वा॒घद्भि॑र्वा विह॒वे श्रोष॑माणा अ॒स्माँ अ॑वन्तु पृत॒नाज्ये॑षु ॥ १० ॥
वन॑स्पते श॒तव॑ल्शो॒ वि रो॑ह स॒हस्र॑वल्शा॒ वि व॒यं रु॑हेम ।
यं त्वाम॒यं स्वधि॑ति॒स्तेज॑मानः प्रणि॒नाय॑ मह॒ते सौभ॑गाय ॥ ११ ॥

[९] नवमं सूक्तम्

ऋषिः—विश्वामित्रः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१, ४ बृहती; २, ५-७ निचृद्बृहती; ३, ८ विराड्बृहती; ९ स्वराट्पङ्क्तिः ॥
स्वरः—१-८ मध्यमः; ९ पञ्चमः ॥

अथ पञ्चमो वर्गः ॥ ५ ॥

सखा॑यस्त्वा ववृमहे दे॒वं मर्ता॑स ऊ॒तये॑ ।
अ॒पां नपा॑तं सु॒भगं॑ सु॒दीदि॑तिं सु॒प्रतू॑र्तिमने॒हस॑म् ॥ १ ॥
काय॑मानो व॒ना त्वं यन्मा॒तॄरज॑गन्न॒पः ।
न तत्ते॑ अग्ने प्र॒मृषे॑ नि॒वर्त॑नं॒ यद् दूरे सन्नि॒हाभ॑वः ॥ २ ॥
अति॑ तृ॒ष्टं व॑वक्षि॒थाथै॒व सु॒मना॑ असि ।
प्रप्रा॒न्ये यन्ति॒ पर्य॒न्य आ॑सते॒ येषा॑ स॒ख्ये असि॑ श्रि॒तः ॥ ३ ॥
ई॒यि॒वांस॒मति॒ स्रिधः॒ शश्व॑ती॒रति॑ स॒श्चतः॑ ।
अन्वी॑मविन्दन्निचि॒रासो॑ अ॒द्रुहो॒ऽप्सु सिं॒हमि॑व श्रि॒तम् ॥ ४ ॥
स॒सृ॒वांस॑मिव॒ त्मना॒ग्निमि॒त्था ति॒रोहि॑तम् ।
ऐनं॑ नयन्मात॒रिश्वा॑ परा॒वतो॑ दे॒वेभ्यो॑ मथि॒तं परि॑ ॥ ५ ॥

अथ षष्ठो वर्गः ॥ ६ ॥

तं त्वा॒ मर्ता॑ अगृभ्णत दे॒वेभ्यो॑ हव्यवाहन ।
विश्वा॒न्यद्य॒ज्ञाँ अ॑भि॒पासि॑ मानुष॒ तव॒ क्रत्वा॑ यविष्ठ्य ॥ ६ ॥
तद्भ॒द्रं तव॑ दं॒सना॒ पाका॑य चिच्छदयति ।
त्वां यद॑ग्ने प॒शवः॑ स॒मास॑ते॒ समि॑द्धमपिशर्व॒रे ॥ ७ ॥
आ॒ जु॑होता स्वध्व॒रं शी॒रं पा॑व॒कशो॑चिषम् ।
आ॒शुं दू॒तम॑जि॒रं प्र॒त्नमीड्यं॑ श्रु॒ष्टी दे॒वं स॑पर्यत ॥ ८ ॥
त्रीणि॑ श॒ता त्री स॒हस्रा॑ण्य॒ग्निं त्रिं॒शच्च॑ दे॒वा नव॑ चासपर्यन् ।
औक्ष॑न्घृ॒तैरस्तृ॑णन्ब॒र्हिर॑स्मा॒ आदिद्धोता॑रं॒ न्य॑सादयन्त ॥ ९ ॥

[१०] दशमं सूक्तम्

ऋषिः—विश्वामित्रः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१, ५, ८ विराडुष्णिक्; २ भुरिग्गायत्री; ३ उष्णिक्; ४, ६, ७, ९ निचृदुष्णिक् ॥
स्वरः—१, ३-९ ऋषभः; २ षड्जः ॥

अथ सप्तमो वर्गः ॥ ७ ॥

त्वाम॑ग्ने मनी॒षिणः॑ स॒म्राजं॑ चर्षणी॒नाम् । दे॒वं मर्ता॑स इन्धते॒ सम॑ध्व॒रे ॥ १ ॥
त्वां य॒ज्ञेष्वृ॒त्विज॒मग्ने॒ होता॑रमीळते । गो॒पा ऋ॒तस्य॑ दीदिहि॒ स्वे दमे॑ ॥ २ ॥
स घा॒ यस्ते॒ ददा॑शति स॒मिधा॑ जा॒तवे॑दसे । सो अ॑ग्ने धत्ते सु॒वीर्यं॒ स पु॑ष्यति ॥ ३ ॥
स के॒तुर॑ध्व॒राणा॑म॒ग्निर्दे॒वेभि॒रा ग॑मत् । अ॒ञ्जा॒नः स॒प्त होतृ॑भिर्ह॒विष्म॑ते ॥ ४ ॥
प्र होत्रे॑ पू॒र्व्यं वचो॒ऽग्नये॑ भरता बृ॒हत् । वि॒पां ज्योती॑षि॒ बिभ्र॑ते॒ न वे॒धसे॑ ॥ ५ ॥

अथ अष्टमो वर्गः ॥ ८ ॥

अ॒ग्निं व॑र्धन्तु नो॒ गिरो॒ यतो॒ जाय॑त उ॒क्थ्यः॑ । म॒हे वाजा॑य॒ द्रवि॑णाय दर्श॒तः ॥ ६ ॥
अग्ने॒ यजि॑ष्ठो अध्व॒रे दे॒वान्दे॑वय॒ते य॑ज । होता॑ म॒न्द्रो वि रा॑ज॒स्यति॒ स्रिधः॑ ॥ ७ ॥
स नः॑ पावक दीदिहि द्यु॒मद॒स्मे सु॒वीर्य॑म् । भवा॑ स्तो॒तृभ्यो॒ अन्त॑मः स्व॒स्तये॑ ॥ ८ ॥
तं त्वा॒ विप्रा॑ विप॒न्यवो॑ जागृ॒वांसः॒ समि॑न्धते । ह॒व्य॒वाह॒मम॑र्त्यं सहो॒वृध॑म् ॥ ९ ॥

[११] एकादशं सूक्तम्

ऋषिः—विश्वामित्रः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१, २, ५, ७, ८ निचृद्गायत्री; ३, ९ विराड्गायत्री; ४, ६ गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अथ नवमो वर्गः ॥ ९ ॥

अग्निर्होता पुरोहितोऽध्वरस्य विचर्षणिः। स वेद यज्ञमानुषक् ॥ १ ॥
स हव्यवाळमर्त्य उशिग्दूतश्चनोहितः। अग्निर्धिया समृण्वति ॥ २ ॥
अग्निर्धिया स चेतति केतुर्यज्ञस्य पूर्व्यः। अर्थं ह्यस्य तरणि ॥ ३ ॥
अग्निं सूनुं सनश्रुतं सहसो जातवेदसम्। वह्निं देवा अकृण्वत ॥ ४ ॥
अदाभ्यः पुरएता विशामग्निर्मानुषीणाम्। तूर्णी रथः सदा नवः ॥ ५ ॥

अथ दशमो वर्गः ॥ १० ॥

साह्वान्विश्वा अभियुजः क्रतुर्देवानाममृक्तः। अग्निस्तुविश्रवस्तमः ॥ ६ ॥
अभि प्रयांसि वाहसा दाश्वाँ अश्नोति मर्त्यः। क्षयं पावकशोचिषः ॥ ७ ॥
परि विश्वानि सुधिताग्नेरश्याम मन्मभिः। विप्रासो जातवेदसः ॥ ८ ॥
अग्ने विश्वानि वार्या वाजेषु सनिषामहे। त्वे देवास एरिरे ॥ ९ ॥

[१२] द्वादशं सूक्तम्

ऋषिः—विश्वामित्रः ॥ देवता—इन्द्राग्नी ॥ छन्दः—१, ३, ५, ८, ९ निचृद्गायत्री; २, ४, ६ गायत्री; ७ यवमध्याविराड्गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथ एकादशो वर्गः ॥ ११ ॥

इन्द्राग्नी आ गतं सुतं गीर्भिर्नभो वरेण्यम्। अस्य पातं धियेषिता ॥ १ ॥
इन्द्राग्नी जरितुः सचा यज्ञो जिगाति चेतनः। अया पातमिमं सुतम् ॥ २ ॥
इन्द्रमग्निं कविच्छदा यज्ञस्य जूत्या वृणे। ता सोमस्येह तृम्पताम् ॥ ३ ॥
तोशा वृत्रहणा हुवे सजित्वानापराजिता। इन्द्राग्नी वाजसातमा ॥ ४ ॥
प्र वामर्चन्त्युक्थिनो नीथाविदो जरितारः। इन्द्राग्नी इष आ वृणे ॥ ५ ॥

अथ द्वादशो वर्गः ॥ १२ ॥

इन्द्राग्नी नवतिं पुरो दासपत्नीरधूनुतम्। साकमेकेन कर्मणा ॥ ६ ॥
इन्द्राग्नी अपसस्पर्युप प्र यन्ति धीतयः। ऋतस्य पथ्या३ अनु ॥ ७ ॥
इन्द्राग्नी तविषाणि वां सधस्थानि प्रयांसि च। युवोरप्तूर्यं हितम् ॥ ८ ॥
इन्द्राग्नी रोचना दिवः परि वाजेषु भूषथः। तद्वां चेति प्र वीर्यम् ॥ ९ ॥

द्वितीयोऽनुवाकः [१३] त्रयोदशं सूक्तम्

ऋषिः—ऋषभो वैश्वामित्रः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१ भुरिगुष्णिक्; २, ३, ५-७ निचृदनुष्टुप्; ४ विराडनुष्टुप् ॥ स्वरः—१ ऋषभः; २-७ गान्धारः ॥

अथ त्रयोदशो वर्गः ॥ १३ ॥

प्र वो देवायाग्नये बर्हिष्ठमर्चास्मै
गमद्देवेभिरा स नो यजिष्ठो बर्हिरा सदत् ॥ १ ॥

ऋतावा यस्य रोदसी दक्षं सचन्त ऊतयः।
हविष्मन्तस्तमीळते तं सनिष्यन्तोऽवसे ॥ २ ॥
स यन्ता विप्र एषां स यज्ञानामथा हि षः।
अग्निं तं वो दुवस्यत दाता यो वनिता मघम् ॥ ३ ॥
स नः शर्मणि वीतयेऽग्निर्यच्छतु शंतमा।
यतो नः प्रुष्णवद्वसु दिवि क्षितिभ्यो अप्स्वा ॥ ४ ॥
दीदिवांसमपूर्व्यं वस्वीभिरस्य धीतिभिः।
ऋक्वाणो अग्निमिन्धते होतारं विश्पतिं विशाम् ॥ ५ ॥
उत नो ब्रह्मन्नविष उक्थेषु देवहूतमः।
शं नः शोचा मरुद्वृधोऽग्ने सहस्रसातमः ॥ ६ ॥
नू नो रास्व सहस्रवत्तोकवत्पुष्टिमद्वसु।
द्युमदग्ने सुवीर्यं वर्षिष्ठमनुपक्षितम् ॥ ७ ॥

[१४] चतुर्दशं सूक्तम्

ऋषिः—ऋषभो वैश्वामित्रः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१, ७ निचृत्त्रिष्टुप्; २, ५ त्रिष्टुप्; ३, ४ विराट्त्रिष्टुप्; ६ पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१-५, ७, धैवतः; ६ पञ्चमः ॥

अथ चतुर्दशो वर्गः ॥ १४ ॥

आ होता मन्द्रो विदथान्यस्थात्सत्यो यज्वा कवितमः स वेधाः।
विद्युद्रथः सहसस्पुत्रो अग्निः शोचिष्केशः पृथिव्यां पाजो अश्रेत् ॥ १ ॥
अयामि ते नमउक्तिं जुषस्व ऋतावस्तुभ्यं चेतते सहस्वः।
विद्वाँ आ वक्षि विदुषो नि षत्सि मध्य आ बर्हिरूतये यजत्र ॥ २ ॥
द्रवंता त उषसां वाजयन्ती अग्ने वातस्य पथ्याभिरच्छ।
यत्सीमञ्जन्ति पूर्व्यं हविर्भिरा वन्धुरेव तस्थतुर्दुरोणे ॥ ३ ॥
मित्रश्च तुभ्यं वरुणः सहस्वोऽग्ने विश्वे मरुतः सुम्नमर्चन्।
यच्छोचिषा सहसस्पुत्र तिष्ठा अभि क्षितीः प्रथयन्सूर्यो नॄन् ॥ ४ ॥
वयं ते अद्य रंरिमा हि कामममुत्रानहस्ता नमसोपसद्य।
यजिष्ठेन मनसा यक्षि देवानस्रेधता मन्मना विप्रो अग्ने ॥ ५ ॥
त्वद्धि पुत्र सहसो वि पूर्वीर्देवस्य यन्त्यूतयो वि वाजाः।
त्वं दैहि सहस्रिणं रयिं नोऽद्रोघेण वचसा सत्यमग्ने ॥ ६ ॥
तुभ्यं दक्ष कविक्रतो यानीमा देव मर्तासो अध्वरे अकर्म।
त्वं विश्वस्य सुरथस्य बोधि सर्वं तदग्ने अमृत स्वदेह ॥ ७ ॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

[१५] पञ्चदशं सूक्तम्

ऋषिः—उत्कीलः कात्यः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—१, ४ त्रिष्टुप्; २ पङ्क्तिः; ३, ७ भुरिक्पङ्क्तिः; ५ विराट्त्रिष्टुप्; ६ निचृत्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१, ४-६ धैवतः; २, ३, ७ पञ्चमः॥

अथ पञ्चदशो वर्गः॥ १५॥

वि पाजसा पृथुना शोशुचानो बाधस्व द्विषो रक्षसो अमीवाः।
सुशर्मणो बृहतः शर्मणि स्यामग्नेरहं सुहवस्य प्रणीतौ॥ १॥
त्वं नो अस्या उषसो व्युष्टौ त्वं सूर उदिते बोधि गोपाः।
जन्मेव नित्यं तनयं जुषस्व स्तोमं मे अग्ने तन्वा सुजात॥ २॥
त्वं नृचक्षा वृषभानु पूर्वीः कृष्णास्वग्ने अरुषो वि भाहि।
वसो नेषि च पर्षि चात्यंहः कृधी नो राय उशिजो यविष्ठ॥ ३॥
अषाळ्हो अग्ने वृषभो दिदीहि पुरो विश्वाः सौभगा संजिगीवान्।
यज्ञस्य नेता प्रथमस्य पायोर्जातवेदो बृहतः सुप्रणीते॥ ४॥
अच्छिद्रा शर्म जरितः पुरूणि देवाँ अच्छ दीद्यानः सुमेधाः।
रथो न सस्निरभि वक्षि वाजमग्ने त्वं रोदसी नः सुमेके॥ ५॥
प्र पीपय वृषभ जिन्व वाजानग्ने त्वं रोदसी नः सुदोघे।
देवेभिर्देव सुरुचा रुचानो मा नो मर्तस्य दुर्मतिः परि ष्ठात्॥ ६॥
इळामग्ने पुरुदंसं सनिं गोः शश्वत्तमं हवमानाय साध।
स्यान्नः सूनुस्तनयो विजावाग्ने सा ते सुमतिर्भूत्वस्मे॥ ७॥

[१६] षोडशं सूक्तम्

ऋषिः—उत्कीलः कात्यः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—१, ५ भुरिगनुष्टुप्; २, ६ निचृत्पङ्क्तिः; ३ निचृद्बृहती; ४ भुरिग्बृहती॥ स्वरः—१, ५ गान्धारः; २, ६ पञ्चमः; ३, ४ मध्यमः॥

अथ षोडशो वर्गः॥ १६॥

अयमग्निः सुवीर्यस्येशे महः सौभगस्य।
राय ईशे स्वपत्यस्य गोमत ईशे वृत्रहथानाम्॥ १॥
इमं नरो मरुतः सश्चता वृधं यस्मिन्नायुः शेवृधासः।
अभि ये सन्ति पृतनासु दूढ्यो विश्वाहा शत्रुमादभुः॥ २॥
अभि ये सन्ति पृतनासु दूढ्यो विश्वाहा शत्रुमादभुः॥ २॥
स त्वं नो रायः शिशीहि मीढ्वो अग्ने सुवीर्यस्य।
तुविद्युम्न वर्षिष्ठस्य प्रजावतोऽनमीवस्य शुष्मिणः॥ ३॥
चक्रिर्यो विश्वा भुवनाभि सासहिश्चक्रिर्देवेष्वा दुवः।
आ देवेषु यतत आ सुवीर्य आ शंस उत नृणाम्॥ ४॥
मा नो अग्नेऽमतये मावीरतायै रीरधः।
मागोतायै सहसस्पुत्र मा निदेऽप द्वेषांस्या कृधि॥ ५॥
शग्धि वाजस्य सुभग प्रजावतोऽग्ने बृहतो अध्वरे।
सं राया भूयसा सृज मयोभुना तुविद्युम्न यशस्वता॥ ६॥

[१७] सप्तदशं सूक्तम्

ऋषिः—उत्कीलः कात्यः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—१, २ त्रिष्टुप्; ३ निचृत्पङ्क्तिः; ४ विराट्त्रिष्टुप्; ५ निचृत्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१, २, ४, ५ धैवतः; ३ पञ्चमः॥

अथ सप्तदशो वर्गः॥ १७॥

समिध्यमानः प्रथमानु धर्मा समक्तुभिरज्यते विश्ववारः।
शोचिष्केशो घृतनिर्णिक्पावकः सुयज्ञो अग्निर्यजथाय देवान्॥ १॥
यथायजो होत्रमग्ने पृथिव्या यथा दिवो जातवेदश्चिकित्वान्।
एवानेन हविषा यक्षि देवान्मनुष्वद्यज्ञं प्र तिरेममद्य॥ २॥
त्रीण्यायूंषि तव जातवेदस्तिस्र आजानीरुषसस्ते अग्ने।
ताभिर्देवानामवो यक्षि विद्वानथा भव यजमानाय शं योः॥ ३॥
अग्निं सुदीतिं सुदृशं गृणन्तो नमस्यामस्त्वेड्यं जातवेदः।
त्वां दूतमरतिं हव्यवाहं देवा अकृण्वन्नमृतस्य नाभिम्॥ ४॥
यस्त्वद्धोता पूर्वो अग्ने यजीयान्द्विता च सत्ता स्वधया च शंभुः।
तस्यानु धर्म प्र यजा चिकित्वोऽथा नो धा अध्वरं देववीतौ॥ ५॥

[१८] अष्टादशं सूक्तम्

ऋषिः—कतो वैश्वामित्रः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—१, ३, ५ त्रिष्टुप्; २, ४ निचृत्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः॥

अथ अष्टादशो वर्गः॥ १८॥

भवा नो अग्ने सुमना उपेतौ सखेव सख्ये पितरेव साधुः।
पुरुद्रुहो हि क्षितयो जनानां प्रति प्रतीचीर्दहतादरातीः॥ १॥
तपो ष्वग्ने अन्तराँ अमित्रान्तपा शंसमरुषः परस्य।
तपो वसो चिकितानो अचित्तान्वि ते तिष्ठन्तामजरा अयासः॥ २॥
इध्मेनाग्न इच्छमानो घृतेन जुहोमि हव्यं तरसे बलाय।
यावदीशे ब्रह्मणा वन्दमान इमां धियं शतसेयाय देवीम्॥ ३॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उच्छोचिषा सहसस्पुत्र स्तुतो बृहद्वयः शशमानेषु धेहि।
रेवदग्ने विश्वमिन्वेषु शं योर्मर्मृज्मा ते तन्वं भूरि कृत्वः॥ ४॥
कृधि रत्नं सुसनितर्धनानां स घेदग्ने भवसि यत्समिद्धः।
स्तोतुर्दुरोणे सुभगस्य रेवत्सूरा करस्ना दधिषे वपूंषि॥ ५॥

[१९] एकोनविंशं सूक्तम्

ऋषिः—गाथी कौशिकः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—१ त्रिष्टुप्; २, ४, ५ विराट्-त्रिष्टुप्; ३ स्वराट्पङ्क्तिः॥ स्वरः—१, २, ४, ५ धैवतः; ३ पञ्चमः॥

अथ एकोनविंशो वर्गः॥ १९॥

अग्निं होतारं प्र वृणे मियेधे गृत्सं कविं विश्वविदममूरम्।
स नो यक्षद्देवताता यजीयान्राये वाजाय वनते मघानि॥ १॥
प्र ते अग्ने हविष्मतीमियर्म्यच्छा सुद्युम्नां रातिनीं घृताचीम्।
प्रदक्षिणिद्देवतातिमुराणः सं रातिभिर्वसुभिर्यज्ञमश्रेत् ॥ २॥
स तेजीयसा मनसा त्वोत उत शिक्ष स्वपत्यस्य शिक्षोः।
अग्ने रायो नृतमस्य प्रभूतौ भूयाम ते सुष्टुतयश्च वस्वः॥ ३॥
भूरीणि हि त्वे दधिरे अनीकाग्ने देवस्य यज्यवो जनासः।
स आ वह देवतातिं यविष्ठ शर्धो यद्द्य दिव्यं यजासि॥ ४॥
यत्त्वा होतारमनजन्मियेधे निषादयन्तो यजथाय देवाः।
स त्वं नो अग्नेऽवितेह बोध्यधि श्रवांसि धेहि नस्तनूषु॥ ५॥

[२०] विंशं सूक्तम्

ऋषिः—गाथी कौशिकः॥ देवता—विश्वे देवाः॥ छन्दः—१ विराट्त्रिष्टुप्; २ निचृत्त्रिष्टुप्; ३ भुरिक्त्रिष्टुप्; ४, ५ त्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः॥

अथ विंशो वर्गः॥ २०॥

अग्निमुषसमश्विना दधिक्रां व्युष्टिषु हवते वह्निरुक्थैः।
सुज्योतिषो नः शृण्वन्तु देवाः सजोषसो अध्वरं वावशानाः॥ १॥
अग्ने त्री ते वाजिना त्री षधस्था तिस्रस्ते जिह्वा ऋतजात पूर्वीः।
तिस्र उ ते तन्वो देववातास्ताभिर्नः पाहि गिरो अप्रयुच्छन्॥ २॥
अग्ने भूरीणि तव जातवेदो देव स्वधावोऽमृतस्य नाम।
याश्च माया मायिनां विश्वमिन्व त्वे पूर्वीः संदधुः पृष्टबन्धो॥ ३॥
अग्निर्नेता भगइव क्षितीनां दैवीनां देव ऋतुपा ऋतावा।
स वृत्रहा सनयो विश्ववेदाः पर्षद्विश्वाति दुरिता गृणन्तम्॥ ४॥

दधिक्रामग्निमुषसं च देवीं बृहस्पतिं सवितारं च देवम्।
अश्विना मित्रावरुणा भगं च वसून्रुद्राँ आदित्याँ इह हुवे॥ ५॥

[२१] एकविंशं सूक्तम्

ऋषिः—गाथी कौशिकः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—१, ४ त्रिष्टुप्; २, ३ अनुष्टुप्; ५ विराड्बृहती॥ स्वरः—१, ४ धैवतः; २, ३ गान्धारः; ५ मध्यमः॥

अथ एकविंशो वर्गः॥ २१॥

इमं नो यज्ञममृतेषु धेहीमा हव्या जातवेदो जुषस्व।
स्तोकानामग्ने मेदसो घृतस्य होतः प्राशान प्रथमो निषद्य॥ १॥
घृतवन्तः पावक ते स्तोकाः श्चोतन्ति मेदसः ।
स्वधर्मन्देववीतये श्रेष्ठं नो धेहि वार्यम् ॥ २॥
तुभ्यं स्तोका घृतश्चुतोऽग्ने विप्राय सन्त्य ।
ऋषिः श्रेष्ठः समिध्यसे यज्ञस्य प्राविता भव ॥ ३॥
तुभ्यं श्चोतन्त्यध्रिगो शचीवः स्तोकासो अग्ने मेदसो घृतस्य।
कविशस्तो बृहता भानुनागा हव्या जुषस्व मेधिर॥ ४॥
ओजिष्ठं ते मध्यतो मेद उद्भृतं प्र ते वयं ददामहे।
श्चोतन्ति ते वसो स्तोका अधि त्वचि प्रति तान्देवशो विहि॥ ५॥

[२२] द्वाविंशं सूक्तम्

ऋषिः—गाथी कौशिकः॥ देवता—पुरीष्या अग्नयः॥ छन्दः—१ त्रिष्टुप्; २, ३ भुरिक्पङ्क्तिः; ५ निचृत्पङ्क्तिः; ४ विराडनुष्टुप्॥ स्वरः—१ धैवतः; २, ३, ५ पञ्चमः; ४ ऋषभः॥

अथ द्वाविंशो वर्गः॥ २२॥

अयं सो अग्निर्यस्मिन्त्सोममिन्द्रः सुतं दधे जठरे वावशानः।
सहस्त्रिणं वाजमत्यं न सप्तिं ससवान्त्सन्त्स्तूयसे जातवेदः॥ १॥
अग्ने यत्ते दिवि वर्चः पृथिव्यां यदोषधीष्वप्स्वा यजत्र ।
येनान्तरिक्षमुर्वाततन्थ त्वेषः स भानुरर्णवो नृचक्षाः॥ २॥
अग्ने दिवो अर्णमच्छा जिगास्यच्छा देवाँ ऊचिषे धिष्ण्या ये।
या रोचने परस्तात्सूर्यस्य याश्चावस्तादुपतिष्ठन्त आपः॥ ३॥
पुरीष्यासो अग्नयः प्रावणेभिः सजोषसः ।
जुषन्तां यज्ञमद्रुहोऽनमीवा इषो महीः॥ ४॥
इळामग्ने पुरुदंसं सनिं गोः शश्वत्तमं हवमानाय साध ।
स्यान्नः सूनुस्तनयो विजावाग्ने सा ते सुमतिर्भूत्वस्मे॥ ५॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

[२३] त्रयोविंशं सूक्तम्

ऋषिः—देवश्रवा देववातश्च भारतौ ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१ विराट्त्रिष्टुप्; २-५ निचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

अथ त्रयोविंशो वर्गः ॥ २३ ॥

निर्मथितः सुधित आ सधस्थे युवा कविरध्वरस्य प्रणेता।
जूर्यत्स्वग्निरजरो वनेष्वत्रा दधे अमृतं जातवेदाः ॥ १ ॥
अमन्थिष्टां भारता रेवदग्निं देवश्रवा देववातः सुदक्षम्।
अग्ने वि पश्य बृहताभि रायेषां नो नेता भवतादनु द्यून् ॥ २ ॥
दश क्षिपः पूर्व्यं सीमजीजनन्त्सुजातं मातृषु प्रियम् ।
अग्निं स्तुहि दैववातं देवश्रवो यो जनानामसद्वशी ॥ ३ ॥
नि त्वा दधे वर आ पृथिव्या इळायास्पदे सुदिनत्वे अह्नाम्।
दृषद्वत्यां मानुष आपयायां सरस्वत्यां रेवदग्ने दिदीहि ॥ ४ ॥
इळामग्ने पुरुदंसं सनिं गोः शश्वत्तमं हवमानाय साध ।
स्यान्नः सूनुस्तनयो विजावाग्ने सा ते सुमतिर्भूत्वस्मे ॥ ५ ॥

[२४] चतुर्विंशं सूक्तम्

ऋषिः—विश्वामित्रः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१ निचृदनुष्टुप्; २ निचृद्गायत्री; ३-५ गायत्री ॥ स्वरः—१ गान्धारः; २-५ षड्जः ॥

अथ चतुर्विंशो वर्गः ॥ २४ ॥

अग्ने सहस्व पृतना अभिमातीरपास्य। दुष्टरस्तरन्नरातीर्वर्चो धा यज्ञवाहसे ॥ १ ॥
अग्न इळा समिध्यसे वीतिहोत्रो अमर्त्यः। जुषस्व सू नो अध्वरम् ॥ २ ॥
अग्ने द्युम्नेन जागृवे सहसः सूनवाहुत। एदं बर्हिः सदो मम ॥ ३ ॥
अग्ने विश्वेभिरग्निभिर्देवेभिर्महया गिरः। यज्ञेषु य उ चायवः ॥ ४ ॥
अग्ने दा दाशुषे रयिं वीरवन्तं परीणसम्। शिशीहि नः सूनुमतः ॥ ५ ॥

[२५] पञ्चविंशं सूक्तम्

ऋषिः—विश्वामित्रः ॥ देवता—१-४ अग्निः; ५ इन्द्राग्नी ॥ छन्दः—१ निचृदनुष्टुप्; २ अनुष्टुप्; ३-५ भुरिक्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१, २ ऋषभः; ३-५ धैवतः ॥

अथ पञ्चविंशो वर्गः ॥ २५ ॥

अग्ने दिवः सूनुरसि प्रचेतास्तना पृथिव्या उत विश्ववेदाः ।
ऋधग्देवाँ इह यजा चिकित्वः ॥ १ ॥
अग्निः सनोति वीर्याणि विद्वान्त्सनोति वाजममृताय भूषन् ।
स नो देवाँ एह वहा पुरुक्षो ॥ २ ॥
अग्निर्द्यावापृथिवी विश्वजन्ये आ भाति देवी अमृते अमूरः ।
क्षयन्वाजैः पुरुश्चन्द्रो नमोभिः ॥ ३ ॥
अग्न इन्द्रश्च दाशुषो दुरोणे सुतावतो यज्ञमिहोप यातम् ।
अमर्धन्ता सोमपेयाय देवा ॥ ४ ॥
अग्ने अपां समिध्यसे दुरोणे नित्यः सूनो सहसो जातवेदः ।
सधस्थानि महयमान ऊती ॥ ५ ॥

[२६] षड्विंशं सूक्तम्

ऋषिः—१-६, ८, ९ गाथिनो विश्वामित्रः; ७ आत्मा ॥ देवता—१-३ वैश्वानरः; ४-६ मरुतः; ७, ८ अग्निरात्मा वा; ९ विश्वामित्रोपाध्यायः ॥ छन्दः—१-६ जगती; ७-९ त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१-६ निषादः; ७-९ धैवतः ॥

अथ षड्विंशो वर्गः ॥ २६ ॥

वैश्वानरं मनसाग्निं निचाय्या हविष्मन्तो अनुषत्यं स्वर्विदम्।
सुदानुं देवं रथिरं वसूयवो गीर्भी रण्वं कुशिकासो हवामहे ॥ १ ॥
तं शुभ्रमग्निमवसे हवामहे वैश्वानरं मातरिश्वानमुक्थ्यम् ।
बृहस्पतिं मनुषो देवतातये विप्रं श्रोतारमतिथिं रघुष्यदम् ॥ २ ॥
अश्वो न क्रन्दञ्जनिभिः समिध्यते वैश्वानरः कुशिकेभिर्युगेयुगे।
स नो अग्निः सुवीर्यं स्वश्व्यं दधातु रत्नममृतेषु जागृविः ॥ ३ ॥
प्र यन्तु वाजास्तविषीभिरग्रियः शुभे संमिश्लाः पृषतीरयुक्षत।
बृहद्दुक्षो मरुतो विश्ववेदसः प्र वेपयन्ति पर्वतां अदाभ्याः ॥ ४ ॥
अग्निश्रियो मरुतो विश्वकृष्टय आ त्वेषमुग्रमवसे ईमहे वयम्।
ते स्वानिनो रुद्रिया वर्षनिर्णिजः सिंहा न हेषक्रतवः सुदानवः ॥ ५ ॥

अथ सप्तविंशो वर्गः ॥ २७ ॥

व्रातंव्रातं गणंगणं सुशस्तिभिरग्नेर्भामं मरुतामोज ईमहे ।
पृषदश्वासो अनवभ्रराधसो गन्तारो यज्ञं विदथेषु धीराः ॥ ६ ॥
अग्निरस्मि जन्मना जातवेदा घृतं मे चक्षुरमृतं म आसन् ।
अर्कस्त्रिधातू रजसो विमानोऽजस्रो घर्मो हविरस्मि नाम ॥ ७ ॥
त्रिभिः पवित्रैरपुपोद्ध्यर्कं हृदा मतिं ज्योतिरनु प्रजानन् ।
वर्षिष्ठं रत्नमकृत स्वधाभिरादिद् द्यावापृथिवी पर्यपश्यत् ॥ ८ ॥
शतधारमुत्समक्षीयमाणं विपश्चितं पितरं वक्त्वानाम् ।
मेळिं मदन्तं पित्रोरुपस्थे तं रोदसी पिपृतं सत्यवाचम् ॥ ९ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

[२७] सप्तविंशं सूक्तम्

ऋषिः—विश्वामित्रः ॥ देवता—१ ऋतवोऽग्निर्वा; २-१५ अग्निः ॥ छन्दः—१, ७-१०, १४, १५ निचृद्गायत्री; २, ३, ६, ११, १२ गायत्री; ४, ५, १३ विराड्गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथ अष्टाविंशो वर्गः ॥ २८ ॥

प्र वो वाजा अभिद्यवो हविष्मन्तो घृताच्या। देवाञ्जिगाति सुम्नयुः ॥ १ ॥
ईळे अग्निं विपश्चितं गिरा यज्ञस्य साधनम्। श्रुष्टीवानं धितावानम् ॥ २ ॥
अग्ने शकेम ते वयं यमं देवस्य वाजिनः। अति द्वेषांसि तरेम ॥ ३ ॥
समिध्यमानो अध्वरेऽग्निः पावक ईड्यः। शोचिष्केशस्तमीमहे ॥ ४ ॥
पृथुपाजा अमर्त्यो घृतनिर्णिक्स्वाहुतः। अग्निर्यज्ञस्य हव्यवाट् ॥ ५ ॥

अथ एकोनत्रिंशो वर्गः ॥ २९ ॥

तं सबाधो यतस्रुच इत्था धिया यज्ञवन्तः। आ चक्रुरग्निमूतये ॥ ६ ॥
होता देवो अमर्त्यः पुरस्तादेति मायया। विदथानि प्रचोदयन् ॥ ७ ॥
वाजी वाजेषु धीयतेऽध्वरेषु प्र णीयते। विप्रो यज्ञस्य साधनः ॥ ८ ॥
धिया चक्रे वरेण्यो भूतानां गर्भमा दधे। दक्षस्य पितरं तना ॥ ९ ॥
नि त्वा दधे वरेण्यं तक्षस्येळा सहस्कृत। अग्ने सुदीतिमुशिजम् ॥ १० ॥

अथ त्रिंशो वर्गः ॥ ३० ॥

अग्निं यन्तुरमसुरमृतस्य योगे वनुषः। विप्रा वाजैः समिन्धते ॥ ११ ॥
ऊर्जो नपातमध्वरे दीदिवांसमुप द्यवि। अग्निमीळे कविक्रतुम् ॥ १२ ॥
ईळेन्यो नमस्यस्तिरस्तमांसि दर्शतः। समग्निरिध्यते वृषा ॥ १३ ॥
वृषो अग्निः समिध्यतेऽश्वो न देववाहनः। तं हविष्मन्त ईळते ॥ १४ ॥
वृषणं त्वा वयं वृषन्वृषणः समिधीमहि। अग्ने दीद्यतं बृहत् ॥ १५ ॥

[२८] अष्टाविंशं सूक्तम्

ऋषिः—विश्वामित्रः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१ गायत्री; २, ६ निचृद्गायत्री; ३ स्वराडुष्णिक्; ४ त्रिष्टुप्; ५ निचृज्जगती ॥ स्वरः—१, २, ६ षड्जः; ३ ऋषभः; ४ धैवतः; ५ निषादः ॥

अथ एकत्रिंशो वर्गः ॥ ३१ ॥

अग्ने जुषस्व नो हविः पुरोळाशं जातवेदः। प्रातःसावे धियावसो ॥ १ ॥
पुरोळा अग्ने पचतस्तुभ्यं वा घा परिष्कृतः। तं जुषस्व यविष्ठ्य ॥ २ ॥
अग्ने वीहि पुरोळाशमाहुतं तिरोअह्न्यम्। सहसः सूनुरस्यध्वरे हितः ॥ ३ ॥
माध्यंदिने सवने जातवेदः पुरोळाशमिह कवे जुषस्व।
अग्ने यह्वस्य तव भागधेयं न प्र मिनन्ति विदथेषु धीराः ॥ ४ ॥
अग्ने तृतीये सवने हि कानिषः पुरोळाशं सहसः सूनवाहुतम्।
अथा देवेष्वध्वरं विपन्यया धा रत्नवन्तममृतेषु जागृविम् ॥ ५ ॥
अग्ने वृधान आहुतिं पुरोळाशं जातवेदः। जुषस्व तिरोअह्न्यम् ॥ ६ ॥

[२९] एकोनत्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—विश्वामित्रः ॥ देवता—१-४, ६-१६ अग्निः; ५ ऋत्विज अग्निर्वा ॥ छन्दः—१ निचृदनुष्टुप्; २ भुरिक्पङ्क्तिः; ३, ५, ६ त्रिष्टुप्; ४ विराडनुष्टुप्; ७-९, १६ निचृत्त्रिष्टुप्; १०, १२ भुरिगनुष्टुप्; ११, १४, १५ जगती; १३ स्वराट्पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१, ४, १०, १२ गान्धारः; २, १३ पञ्चमः; ३, ५-९, १६ धैवतः; ११, १४, १५ निषादः ॥

अथ द्वात्रिंशो वर्गः ॥ ३२ ॥

अस्तीदमधिमन्थनमस्ति प्रजननं कृतम्।
एतां विश्पत्नीमा भराग्निं मन्थाम पूर्वथा ॥ १ ॥
अरण्योर्निहितो जातवेदा गर्भइव सुधितो गर्भिणीषु।
दिवेदिव ईड्यो जागृवद्भिर्हविष्मद्भिर्मनुष्येभिरग्निः ॥ २ ॥
उत्तानायामव भरा चिकित्वान्त्सद्यः प्रवीता वृषणं जजान।
अरुषस्तूपो रुशदस्य पाज इळायास्पुत्रो वयुनेऽजनिष्ट ॥ ३ ॥
इळायास्त्वा पदे वयं नाभा पृथिव्या अधि।
जातवेदो नि धीमह्यग्ने हव्याय वोळ्हवे ॥ ४ ॥
मन्थता नरः कविमद्वयन्तं प्रचेतसममृतं सुप्रतीकम्।
यज्ञस्य केतुं प्रथमं पुरस्ताद्अग्निं नरो जनयता सुशेवम् ॥ ५ ॥

अथ त्रयस्त्रिंशो वर्गः ॥ ३३ ॥

यदी मन्थन्ति बाहुभिर्विरोचतेऽश्वो न वाज्यरुषो वनेष्वा।
चित्रो न यामन्नश्विनोरनिवृतः परि वृणक्त्यश्मनस्तृणा दहन् ॥ ६ ॥
जातो अग्नी रोचते चेकितानो वाजी विप्रः कविशस्तः सुदानुः।
यं देवास ईड्यं विश्वविदं हव्यवाहमदधुरध्वरेषु ॥ ७ ॥
सीद होतः स्व उ लोके चिकित्वान्त्सादया यज्ञं सुकृतस्य योनौ।
देवावीर्देवान्हविषा यजास्यग्ने बृहद्यजमाने वयो धाः ॥ ८ ॥
कृणोत धूमं वृषणं सखायोऽस्त्रेधन्त इतन वाजमच्छ।
अयमग्निः पृतनाषाट् सुवीरो येन देवासो असहन्त दस्यून् ॥ ९ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अयं ते योनिर्ऋत्वियो यतो जातो अरोचथाः ।
तं जानन्नग्न आ सीदाथा नो वर्धया गिरः ॥ १० ॥

अथ चतुस्त्रिंशो वर्गः ॥ ३४ ॥

तनूनपादुच्यते गर्भ आसुरो नराशंसो भवति यद्विजायते ।
मातरिश्वा यदमिमीत मातरि वातस्य सर्गो अभवत्सरीमणि ॥ ११ ॥
सुनिर्मथा निर्मथितः सुनिधा निहितः कविः ।
अग्ने स्वध्वरा कृणु देवान्देवयते यज ॥ १२ ॥
अजीजनन्नमृतं मर्त्यासोऽस्त्रेमाणं तरणिं वीळुजम्भम् ।
दश स्वसारो अग्रुवः समीचीः पुमांसं जातमभि सं रभन्ते ॥ १३ ॥
प्र सप्तहोता सनकादरोचत मातुरुपस्थे यदशोचदूर्धनि ।
न नि मिषति सुरणो दिवेदिवे यदसुरस्य जठरादजायत ॥ १४ ॥
अमित्रायुधो मरुतामिव प्रयाः प्रथमजा ब्रह्मणो विश्वमिद्विदुः ।
द्युम्नवद् ब्रह्म कुशिकास एरिरे एकएको दमे अग्निं समीधिरे ॥ १५ ॥
यदद्य त्वा प्रयति यज्ञे अस्मिन्होतश्चिकित्वोऽवृणीमहीह ।
ध्रुवमया ध्रुवमुताशमिष्ठाः प्रजानन्विद्वाँ उप याहि सोमम् ॥ १६ ॥

इति तृतीयाष्टके प्रथमोऽध्यायः ॥

अथ द्वितीयोऽध्यायः

तृतीयोऽनुवाकः [३०] त्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—विश्वामित्रः ॥ देवताः—इन्द्रः ॥ छन्दः—१, २, ९-११, १४, १७, २० निचृत्-त्रिष्टुप्; ३, ४, ७, १६, १८ भुरिक्पङ्क्तिः; ५, ६, ८, १३, १९, २१, २२ त्रिष्टुप्; १२, १५ विराट्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१, २, ५, ६, ८-१५, १७, १९-२२ धैवतः; ३, ४, ७, १६, १८ पञ्चमः ॥

अथ प्रथमो वर्गः ॥ १ ॥

इच्छन्ति त्वा सोम्यासः सखायः सुन्वन्ति सोमं दधति प्रयांसि ।
तितिक्षन्ते अभिशस्तिं जनानामिन्द्र त्वदा कश्चन हि प्रकेतः ॥ १ ॥
न ते दूरे परमा चिद्रजांस्या तु प्र याहि हरिवो हरिभ्याम् ।
स्थिराय वृष्णे सवना कृतेमा युक्ता ग्रावाणः समिधाने अग्नौ ॥ २ ॥
इन्द्रः सुशिप्रो मघवा तरुत्रो महाव्रातस्तुविकूर्मिर्ऋघावान् ।
यदुग्रो धा बाधितो मर्त्येषु क्वा त्या ते वृषभ वीर्याणि ॥ ३ ॥
त्वं हि ष्मा च्यावयन्नच्युतान्येको वृत्रा चरसि जिघ्नमानः ।
तव द्यावापृथिवी पर्वतासोऽनु व्रतायं निमितेव तस्थुः ॥ ४ ॥
उताभये पुरुहूत श्रवोभिरेको दृळ्हमवदो वृत्रहा सन् ।
इमे चिदिन्द्र रोदसी अपारे यत्संगृभ्णा मघवन्काशिरित्ते ॥ ५ ॥

अथ द्वितीयो वर्गः ॥ २ ॥

प्र सू त इन्द्र प्रवता हरिभ्यां प्र ते वज्रः प्रमृणन्नेतु शत्रून् ।
जहि प्रतीचो अनूचः पराचो विश्वं सत्यं कृणुहि विष्टमस्तु ॥ ६ ॥
यस्मै धायुरदधा मर्त्यायाभक्तं चिद्भजते गेह्यं सः ।
भद्रा त इन्द्र सुमतिर्घृताची सहस्रदाना पुरुहूत रातिः ॥ ७ ॥
सहदानुं पुरुहूत क्षियन्तमहस्तमिन्द्र सं पिणक्कुणारुम् ।
अभि वृत्रं वर्धमानं पियारुमपादमिन्द्र तवसा जघन्थ ॥ ८ ॥
नि सामनामिषिरामिन्द्र भूमिं महीमपारां सदने ससत्थ ।
अस्तभ्नाद् द्यां वृषभो अन्तरिक्षमर्षन्त्वापस्त्वयेह प्रसूताः ॥ ९ ॥
अलातृणो वल इन्द्र व्रजो गोः पुरा हन्तोर्भयमानो व्यार ।
सुगान्पथो अकृणोन्निरजे गाः प्रावन्वाणीः पुरुहूतं धमन्तीः ॥ १० ॥

अथ तृतीयो वर्गः ॥ ३ ॥

एको द्वे वसुमती समीची इन्द्र आ पप्रौ पृथिवीमुत द्याम् ।
उतान्तरिक्षादभि नः समीक इषो रथीः सयुजः शूर वाजान् ॥ ११ ॥
दिशः सूर्यो न मिनाति प्रदिष्टा दिवेदिवे हर्यश्वप्रसूताः ।
सं यदानळध्वन आदिदश्वैर्विमोचनं कृणुते तत्त्वस्य ॥ १२ ॥
दिदृक्षन्त उषसो यामन्नक्तोर्विवस्वत्या महि चित्रमनीकम् ।
विश्वे जानन्ति महिना यदागादिन्द्रस्य कर्म सुकृता पुरूणि ॥ १३ ॥
महि ज्योतिर्निहितं वक्षणास्वामा पक्वं चरति बिभ्रती गौः ।
विश्वं स्वाद्म संभृतमुस्रियायां यत्सीमिन्द्रो अदधाद्भोजनाय ॥ १४ ॥
इन्द्र दृह्य यामकोशा अभूवन्यज्ञाय शिक्ष गृणते सखिभ्यः ।
दुर्मायवो दुरेवा मर्त्यासो निषङ्गिणो रिपवो हन्त्वासः ॥ १५ ॥

अथ चतुर्थो वर्गः ॥ ४ ॥

सं घोषः शृण्वेऽवमैरमित्रैर्जही न्येष्वशनिं तपिष्ठाम् ।
वृश्चेमधस्ताद्वि रुजा सहस्व जहि रक्षो मघवन्बन्धयस्व ॥ १६ ॥
उद्वृह रक्षः सहमूलमिन्द्र वृश्चा मध्यं प्रत्यग्रं शृणीहि ।
आ कीवतः सललूकं चकर्थ ब्रह्मद्विषे तपुषिं हेतिमस्य ॥ १७ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

स्व॒स्तये॑ वा॒जिभि॑श्च प्रणेत॒ः सं यन्म॒हीरिष॑ आ॒सत्सि॑ पू॒र्वीः।
रा॒यो व॒न्तारो॑ बृह॒तः स्या॑मा॒स्मे अ॑स्तु॒ भग॑ इन्द्र प्र॒जावा॑न्॥ १८॥
आ नो॑ भर॒ भग॑मिन्द्र द्यु॒मन्तं॒ नि ते॑ दे॒ष्णस्य॑ धीमहि प्ररे॒के।
ऊ॒र्वइ॑व पप्रथे॒ कामो॑ अ॒स्मे तमा पृ॑ण वसुपते॒ वसू॑नाम्॥ १९॥
इ॒मं कामं॑ मन्दया॒ गोभि॒रश्वै॑श्च॒न्द्रव॑ता॒ राध॑सा प॒प्रथ॑श्च।
स्व॒र्यवो॑ म॒तिभि॒स्तुभ्यं॒ विप्रा॒ इन्द्रा॑य॒ वाहः॑ कुशि॒कासो॑ अक्रन्॥ २०॥
आ नो॑ गो॒त्रा द॑र्दृहि गोपते॒ गाः सम॒स्मभ्यं॑ स॒नयो॑ यन्तु॒ वाजाः॑।
दि॒वक्षा॑ असि वृषभ स॒त्यशु॑ष्मो॒ऽस्मभ्यं॒ सु म॑घवन्बोधि गो॒दाः॥ २१॥
शु॒नं हु॑वेम म॒घवा॑न॒मिन्द्र॑म॒स्मिन्भरे॒ नृत॑मं॒ वाज॑सातौ ।
शृ॒ण्वन्त॑मु॒ग्रमू॒तये॑ स॒मत्सु॒ घ्नन्तं॑ वृ॒त्राणि॑ सं॒जितं॒ धना॑नाम् ॥ २२॥

[३१] एकत्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—विश्वामित्रः कुशिको वा॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१, १४, १६ विराट्पङ्क्तिः; २, ५, ९, १५, १७-२० निचृत्त्रिष्टुप्; ३, ६ भुरिक्पङ्क्तिः; ४, ७, ८, १०, १२, २१, २२ त्रिष्टुप्; ११, १३ स्वराट्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१, ३, ६, १४, १६ पञ्चमः; २, ४, ५, ७-१३, १५, १७-२२ धैवतः॥

अथ पञ्चमो वर्गः॥ ५॥

शास॒द्वह्नि॑र्दुहि॒तुर्न॒प्त्यं॑ गाद्वि॒द्वाँ ऋ॒तस्य॒ दीधि॑तिं सप॒र्यन् ।
पि॒ता यत्र॑ दुहि॒तुः सेक॑मृ॒ञ्जन्त्सं श॒ग्म्ये॑न॒ मन॑सा दध॒न्वे ॥ १॥
न जा॒मये॒ तान्वो॑ रि॒क्थमा॑रैक्च॒कार॒ गर्भं॑ सनि॒तुर्नि॒धान॑म् ।
यदी॑ मा॒तरो॑ ज॒नय॑न्त॒ वह्नि॑म॒न्यः क॒र्ता सु॒कृतो॑र॒न्य ऋ॒न्धन् ॥ २॥
अ॒ग्निर्ज॑ज्ञे जु॒ह्वा॒३॒॑ रेज॑मानो म॒हस्पु॒त्राँ अ॑रु॒षस्य॑ प्र॒यक्षे॑ ।
म॒हान्गर्भो॒ मह्या जा॒तमे॑षां म॒ही प्र॒वृद्धर्य॑श्वस्य य॒ज्ञैः ॥ ३॥
अ॒भि जैत्री॑रसचन्त स्पृधा॒नं महि॒ ज्योति॒स्तम॑सो॒ निर॑जानन् ।
तं जा॑न॒तीः प्रत्युदा॑यन्नु॒षासः॒ पति॒र्गवा॑मभव॒देक॒ इन्द्रः॑ ॥ ४॥
वी॒ळौ स॒तीर॒भि धीरा॑ अतृन्दन्प्रा॒चाहि॑न्व॒न्मन॑सा स॒प्त विप्राः॑ ।
विश्वा॑मविन्दन्प॒थ्या॑मृ॒तस्य॑ प्रजा॒नन्नित्ता नम॒सा वि॑वेश ॥ ५॥

अथ षष्ठो वर्गः॥ ६॥

वि॒दद्यदी॑ स॒रमा॑ रु॒ग्णमद्रे॒र्महि॒ पाथः॑ पू॒र्व्यं स॒ध्र्य॑क्कः ।
अग्रं॑ नयत्सु॒पद्यक्ष॑राणा॒मच्छा॒ रवं॑ प्रथ॒मा जा॑न॒ती गा॑त् ॥ ६॥
अग॑च्छदु॒ विप्र॑तमः सखी॒यन्नसू॑दयत्सु॒कृते॒ गर्भ॒मद्रिः॑ ।
स॒सान॒ मर्यो॒ युव॑भिर्मख॒स्यन्नथा॑भव॒दङ्गि॑राः स॒द्यो अर्च॑न् ॥ ७॥

स॒तःस॑तः प्रति॒मानं॑ पुरो॒भूर्विश्वा॑ वेद॒ जनि॑मा॒ हन्ति॒ शुष्ण॑म्।
प्र णो॑ दि॒वः प॑द॒वीर्ग॒व्युरर्च॒न्त्सखा॒ सखीँ॑रमुञ्च॒न्निर॑व॒द्यात्॥ ८॥
नि ग॑व्य॒ता मन॑सा सेदुर॒र्कैः कृ॑ण्वा॒नासो॑ अमृत॒त्वाय॑ गा॒तुम् ।
इ॒दं चि॒न्नु सद॑नं॒ भूर्ये॑षां॒ येन॒ मासाँ॒ असि॑षासन्नृ॒तेन॑ ॥ ९॥
सं॒पश्य॑माना अमदन्न॒भि स्वं पयः॑ प्र॒त्नस्य॒ रेत॑सो॒ दुघा॑नाः ।
वि रोद॑सी अतप॒द्घोष॑ एषां जा॒ते नि॒ःष्ठामद॑धु॒र्गोषु॑ वी॒रान् ॥ १०॥

अथ सप्तमो वर्गः॥ ७॥

स जा॒तेभि॑र्वृत्र॒हा सेदु॑ ह॒व्यैरुदु॒स्त्रिया॑ असृज॒दिन्द्रो॑ अ॒र्कैः ।
उ॒रू॒च्य॑स्मै घृ॒तव॒द्भर॑न्ती॒ मधु॒ स्वाद्म॑ दुदुहे॒ जेन्या॒ गौः ॥ ११॥
पि॒त्रे चि॑च्चक्रुः॒ सद॑नं॒ सम॑स्मै॒ महि॒ त्विषी॑मत्सु॒कृतो॒ वि हि ख्यन्।
वि॒ष्क॒भ्नन्तः॒ स्कम्भ॑नेना॒ जनि॑त्री॒ आसी॑ना ऊ॒र्ध्वं र॑भ॒सं वि मि॑न्वन्॥ १२॥
म॒ही यदि॑ धि॒षणा॑ शि॒श्नथे॒ धात्स॑द्यो॒वृधं॑ वि॒भ्वं१॒॑ रोद॑स्योः।
गिरो॒ यस्मि॑न्ननव॒द्याः स॑मी॒चीर्विश्वा॒ इन्द्रा॑य॒ तवि॑षी॒रनु॑त्ताः॥ १३॥
मह्या ते॑ स॒ख्यं व॑श्मि श॒क्तीरा वृ॑त्र॒घ्ने नि॒युतो॑ यन्ति पू॒र्वीः।
महि॑ स्तो॒त्रमव॒ आग॑न्म सू॒रेर॒स्माकं॒ सु म॑घवन्बोधि गो॒पाः॥ १४॥
महि॒ क्षेत्रं॑ पु॒रु श्च॒न्द्रं वि॑वि॒द्वानादित्सखि॑भ्यश्च॒रथं॒ समै॑रत्।
इन्द्रो॒ नृभि॑रजन॒द्दीद्या॑नः सा॒कं सूर्य॑मु॒षसं॑ गा॒तुम॒ग्निम् ॥ १५॥

अथ अष्टमो वर्गः॥ ८॥

अ॒पश्चि॑दे॒ष वि॒भ्वो॒३॒॑ दमू॑नाः॒ प्र स॒ध्रीची॑रसृजद्वि॒श्वश्च॑न्द्राः।
मध्वः॑ पुना॒नाः क॒विभिः॑ प॒वित्रै॒र्द्युभि॑र्हिन्वन्त्य॒क्तुभि॒र्धनु॑त्रीः॥ १६॥
अनु॑ कृ॒ष्णे वसु॑धिती जिहाते उ॒भे सूर्य॑स्य मं॒हना॒ यज॑त्रे।
परि॒ यत्ते॑ महि॒मानं॑ वृ॒जध्यै॒ सखा॑य इन्द्र॒ काम्या॑ ऋजि॒प्याः॥ १७॥
पति॑र्भव वृत्रहन्त्सू॒नृता॑नां गि॒रां वि॒श्वायु॑र्वृष॒भो व॑यो॒धाः।
आ नो॑ गहि स॒ख्येभिः॑ शि॒वेभि॑र्म॒हान्म॒हीभि॑रू॒तिभिः॑ सर॒ण्यन्॥ १८॥
तम॑ङ्गिर॒स्वन्नम॑सा सप॒र्यन्नव्यं॑ कृणोमि॒ सन्य॑से पुरा॒जाम्।
द्रुहो॒ वि या॑हि बहु॒ला अदे॑वीः॒ स्व॑श्च नो मघवन्त्सा॒तये॑ धाः॥ १९॥
मिहः॑ पाव॒काः प्रत॑ता अभूवन्त्स्व॒स्ति नः॑ पिपृहि पा॒रमा॑साम्।
इन्द्र॒ त्वं र॑थि॒रः पा॑हि नो रि॒षो म॒क्षूम॑क्षू कृणुहि गो॒जितो॑ नः॥ २०॥
अदे॑दिष्ट वृत्र॒हा गोप॑ति॒र्गा अ॒न्तः कृ॒ष्णाँ अ॑रु॒षैर्धाम॑भिर्गात्।
प्र सू॒नृता॑ दि॒शमा॑न ऋ॒तेन॒ दुर॑श्च॒ विश्वा॑ अवृणो॒दप॒ स्वाः॥ २१॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

शुनं हुवेम मघवानमिन्द्रमस्मिन्भरे नृतमं वाजसातौ।
शृण्वन्तमुग्रमूतये समत्सु घ्नन्तं वृत्राणि संजितं धनानाम्॥ २२॥

[३२] द्वात्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—विश्वामित्रः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१-३, ७-९, १७ त्रिष्टुप्; ४, १० भुरिक्पङ्क्तिः; ५ निचृत्पङ्क्तिः; ६ विराट्पङ्क्तिः; ११-१५ निचृत्त्रिष्टुप्; १६ विराट्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१-३, ७-९, ११-१७ धैवतः; ४-६, १० पञ्चमः॥

अथ नवमो वर्गः॥ ९॥

इन्द्र सोमं सोमपते पिबेमं माध्यंदिनं सवनं चारु यत्ते।
प्रप्रुथ्या शिप्रे मघवन्नजीषिन्विमुच्या हरी इह मादयस्व॥ १॥
गवाशिरं मन्थिनमिन्द्र शुक्रं पिबा सोमं रिरिमा ते मदाय।
ब्रह्मकृता मारुतेना गणेन सजोषा रुद्रैस्तृपदा वृषस्व॥ २॥
ये ते शुष्मं ये तविषीमवर्धन्नचौन्त इन्द्र मरुतस्त ओजः।
माध्यंदिने सवने वज्रहस्त पिबा रुद्रेभिः सगणः सुशिप्र॥ ३॥
त इन्वस्य मधुमद्विविप्र इन्द्रस्य शर्धो मरुतो य आसन्।
येभिर्वृत्रस्यैषितो विवेदामर्मणो मन्यमानस्य मर्म ॥ ४॥
मनुष्वदिन्द्र सवनं जुषाणः पिबा सोमं शश्वते वीर्याय।
स आ ववृत्स्व हर्यश्व यज्ञैः सरण्युभिरपो अर्णा सिसर्षि॥ ५॥

अथ दशमो वर्गः॥ १०॥

त्वमपो यद्ध वृत्रं जघन्वाँ अत्याँइव प्रासृजः सर्तवाजौ ।
शयानमिन्द्र चरता वधेन वव्रिवांसं परि देवीरदेवम् ॥ ६॥
यजाम इन्नमसा वृद्धमिन्द्रं बृहन्तमृष्वमजरं युवानम् ।
यस्य प्रिये ममतुर्यज्ञियस्य न रोदसी महिमानं ममाते ॥ ७॥
इन्द्रस्य कर्म सुकृता पुरूणि व्रतानि देवा न मिनन्ति विश्वे।
दाधार यः पृथिवीं द्यामुतेमां जजान सूर्यमुषसं सुदंसाः॥ ८॥
अद्रोघ सत्यं तव तन्महित्वं सद्यो यजातो अपिबो ह सोमम्।
न द्यावं इन्द्र तवसस्त ओजो नाहा न मासाः शरदो वरन्त॥ ९॥
त्वं सद्यो अपिबो जात इन्द्र मदाय सोमं परमे व्योमन्।
यद्ध द्यावापृथिवी आविवेशीरथाभवः पूर्व्यः कारुधायाः॥ १०॥

अथ एकादशो वर्गः॥ ११॥

अहन्नहिं परिशयानमर्णो ओजायमानं तुविजात तव्यान्।
न ते महित्वमनु भूदध द्यौर्यदन्यया स्फिग्याꣳ क्षामवस्थाः॥ ११॥
यज्ञो हि त इन्द्र वर्धनो भूदुत प्रियः सुतसोमो मियेधः।
यज्ञेन यज्ञमव यज्ञियः सन्यज्ञस्ते वज्रमहिहत्य आवत्॥ १२॥
यज्ञेनेन्द्रमवसा चक्रे अर्वागैनं सुम्नाय नव्यसे ववृत्याम्।
यः स्तोमेभिर्वावृधे पूर्व्येभिर्यो मध्यमेभिरुत नूतनेभिः॥ १३॥
विवेष यन्मा धिषणा जजान स्तवै पुरा पार्यादिन्द्रमह्नः।
अंहसो यत्र पीपरद्यथा नो नावेव यान्तमुभये हवन्ते॥ १४॥
आपूर्णो अस्य कलशः स्वाहा सेक्तैव कोशं सिसिचे पिबध्यै।
समु प्रिया आववृत्रन्मदाय प्रदक्षिणिदभि सोमास इन्द्रम्॥ १५॥
न त्वा गभीरः पुरुहूत सिन्धुर्नाद्रियः परि षन्तो वरन्त।
इत्था सखिभ्य इषितो यदिन्द्रा दूळ्हं चिदरुजो गव्यमूर्वम्॥ १६॥
शुनं हुवेम मघवानमिन्द्रमस्मिन्भरे नृतमं वाजसातौ।
शृण्वन्तमुग्रमूतये समत्सु घ्नन्तं वृत्राणि संजितं धनानाम्॥ १७॥

[३३] त्रयस्त्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—विश्वामित्रः॥ देवता—नद्यः॥ छन्दः—१ भुरिक्पङ्क्तिः; २, १० विराट्त्रिष्टुप्; ३, ८, ११, १२ त्रिष्टुप्; ४, ६, ९ निचृत्त्रिष्टुप्; ५ स्वराट्पङ्क्तिः; ७ पङ्क्तिः; १३ उष्णिक्॥ स्वरः—१, ५, ७ पञ्चमः; २-४, ६, ८, ९-१२ धैवतः; १३ ऋषभः॥

अथ द्वादशो वर्गः॥ १२॥

प्र पर्वतानामुशती उपस्थादश्वेइव विषिते हासमाने।
गावेव शुभ्रे मातरा रिहाणे विपाट्छुतुद्री पयसा जवेते॥ १॥
इन्द्रेषिते प्रसवं भिक्षमाणे अच्छा समुद्रं रथ्येव याथः।
समाराणे ऊर्मिभिः पिन्वमाने अन्या वामन्यामप्येति शुभ्रे॥ २॥
अच्छा सिन्धुं मातृतमामयासं विपाशमुर्वीं सुभगामगन्म।
वत्समिव मातरा संरिहाणे समानं योनिमनु संचरन्ती॥ ३॥
एना वयं पयसा पिन्वमाना अनु योनिं देवकृतं चरन्तीः।
न वर्तवे प्रसवः सर्गतक्तः किंयुर्विप्रो नद्यो जोहवीति॥ ४॥
रमध्वं मे वचसे सोम्याय ऋतावरीरुप मुहूर्तमेवैः।
प्र सिन्धुमच्छा बृहती मनीषावस्युरह्वे कुशिकस्य सूनुः॥ ५॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अथ त्रयोदशो वर्गः ॥ १३ ॥

इन्द्रो॑ अ॒स्माँ अ॑रद॒द्वज्र॑बाहु॒रपा॑हन्वृ॒त्रं प॑रि॒धिं न॒दीना॑म्।
दे॒वो॑ऽनयत्सवि॒ता सु॑पा॒णिस्तस्य॑ व॒यं प्र॑स॒वे या॑म उ॒र्वीः ॥ ६ ॥
प्र॒वाच्यं॑ शश्व॒धा वी॒र्यं१॒॑ तदिन्द्र॑स्य॒ कर्म॒ यदहिं॑ विवृ॒श्चत्।
वि वज्रे॑ण परि॒षदो॑ जघा॒नाय॒न्नापोऽय॑नमि॒च्छमा॑नाः ॥ ७ ॥
ए॒तद्वचो॑ जरित॒र्मापि॑ मृष्ठा॒ आ यत्ते॒ घोषा॒नुत्त॑रा यु॒गानि॑।
उ॒क्थेषु॑ कारो॒ प्रति॑ नो जुषस्व॒ मा नो॒ नि कः॑ पुरुष॒त्रा नम॑स्ते ॥ ८ ॥
ओ षु स्व॑सारः का॒रवे॑ शृणोत य॒यौ वो॑ दू॒रादन॑सा॒ रथे॑न।
नि षू न॑मध्वं॒ भव॑ता सुपा॒रा अ॑धोअ॒क्षाः सि॑न्धवः स्रो॒त्याभिः॑ ॥ ९ ॥
आ ते॑ कारो शृणवामा॒ वचां॑सि य॒याथ॑ दू॒रादन॑सा॒ रथे॑न।
नि ते॑ नंसै पीप्या॒नेव॒ योषा॒ मर्या॑येव क॒न्या॑ शश्व॒चै ते॑ ॥ १० ॥

अथ चतुर्दशो वर्गः ॥ १४ ॥

यद॒ङ्ग त्वा॑ भर॒ताः सं॒तरे॑युर्ग॒व्यन्ग्राम॑ इषि॒त इन्द्र॑जूतः।
अर्षा॒दह॑ प्रस॒वः सर्ग॑तक्त॒ आ वो॑ वृणे सुम॒तिं य॒ज्ञिया॑नाम् ॥ ११ ॥
अता॑रिषुर्भर॒ता ग॒व्यवः॒ समभ॑क्त॒ विप्रः॑ सुम॒तिं न॒दीना॑म्।
प्र पि॑न्वध्वमि॒षय॑न्तीः सु॒राधा॒ आ व॒क्षणाः॑ पृ॒णध्वं॑ या॒त शीभ॑म् ॥ १२ ॥
उद्व॑ ऊ॒र्मिः शम्या॑ ह॒न्त्वापो॒ योक्त्रा॑णि मुञ्चत ।
मादु॑ष्कृतौ॒ व्ये॑नसा॒घ्न्यौ शून॒मार॑ताम् ॥ १३ ॥

[३४] चतुस्त्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—विश्वामित्रः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१, २, ११ त्रिष्टुप्; ३, ६, ८, भुरिक्पङ्क्तिः; ४, ५, ७, ९ विराट्त्रिष्टुप्; १० निचृत्त्रिष्टुप् ॥
स्वरः—१, २, ४, ५, ७, ९-११ धैवतः; ३, ६, ८ पञ्चमः ॥

अथ पञ्चदशो वर्गः ॥ १५ ॥

इन्द्रः॑ पू॒र्भिदाति॑र॒द्दास॑म॒र्कैर्वि॒दद्व॑सु॒र्दय॑मानो॒ वि शत्रू॑न् ।
ब्रह्म॑जूतस्त॒न्वा॑ वावृधा॒नो भूरि॑दात्र॒ आपृ॑ण॒द्रोद॑सी उ॒भे ॥ १ ॥
म॒खस्य॑ ते तवि॒षस्य॒ प्र जू॒तिमिय॑र्मि॒ वाच॑म॒मृता॑य भूष॑न्।
इन्द्र॑ क्षिती॒नाम॑सि॒ मानु॑षीणां वि॒शां दैवी॑नामु॒त पू॑र्व॒यावा॑ ॥ २ ॥
इन्द्रो॑ वृ॒त्रम॑वृणो॒च्छर्ध॑नीतिः॒ प्र मा॒यिना॑ममिना॒द्वर्प॑णीतिः ।
अह॒न्व्यं॑समु॒शध॒ग्वने॑ष्वा॒विर्धेना॑ अकृणोद्रा॒म्याणा॑म् ॥ ३ ॥
इन्द्रः॑ स्व॒र्षा ज॒नय॒न्नहा॑नि जि॒गायो॒शिग्भिः॒ पृत॑ना अभि॒ष्टिः।
प्रारो॑चय॒न्मन॑वे के॒तुमह्न॒मवि॑न्द॒ज्ज्योति॑र्बृह॒ते रणा॑य ॥ ४ ॥

इन्द्र॒स्तुजो॑ ब॒र्हणा॒ आ वि॑वेश नृ॒वद्दधा॑नो॒ नर्या॑ पु॒रूणि॑।
अचे॑तय॒द्धिय॑ इ॒मा ज॑रि॒त्रे प्रेमं वर्ण॑मतिरच्छु॒क्रमा॑साम् ॥ ५ ॥

अथ षोडशो वर्गः ॥ १६ ॥

म॒हो म॒हानि॑ पनयन्त्य॒स्येन्द्र॑स्य॒ कर्म॒ सुकृ॑ता पु॒रूणि॑।
वृ॒जने॑न वृजि॒नान्त्सं पि॑पेष मा॒याभि॒र्दस्यूँ॑र॒भिभू॑त्योजाः ॥ ६ ॥
यु॒धेन्द्रो॑ म॒ह्ना वरि॑वश्चकार दे॒वेभ्यः॒ सत्प॑तिश्चर्षणि॒प्राः ।
वि॒वस्व॑तः॒ सद॑ने अस्य॒ तानि॒ विप्रा॑ उ॒क्थेभिः॑ क॒वयो॑ गृणन्ति ॥ ७ ॥
स॒त्रा॒साहं॒ वरे॑ण्यं सहो॒दां स॑स॒वांसं॒ स्व॑र॒पश्च॑ दे॒वीः ।
स॒सान॒ यः पृ॑थि॒वीं द्यामु॒तेमामिन्द्रं॑ मद॒न्त्यनु॒ धीर॑णासः ॥ ८ ॥
स॒सानात्याँ॑ उ॒त सूर्यं॑ ससा॒नेन्द्रः॑ ससान पुरु॒भोज॑सं॒ गाम्।
हि॒र॒ण्यय॑मु॒त भोगं॑ ससान ह॒त्वी दस्यू॒न्प्रार्यं॒ वर्ण॑मावत् ॥ ९ ॥
इन्द्र॒ ओष॑धीरसनो॒दहा॑नि॒ वन॒स्पतीँ॑र॒सनोद॒न्तरि॑क्षम् ।
बि॒भेद॑ वलं नु॑नु॒दे विवा॒चोऽथा॑भवद्दमि॒ताभिक्र॑तूनाम् ॥ १० ॥
शु॒नं हु॑वेम म॒घवा॑न॒मिन्द्र॑म॒स्मिन्भरे॒ नृत॑मं॒ वाज॑सातौ ।
शृ॒ण्वन्त॑मु॒ग्रमू॒तये॑ स॒मत्सु॒ घ्नन्तं॑ वृ॒त्राणि॑ सं॒जितं॒ धना॑नाम् ॥ ११ ॥

[३५] पञ्चत्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—विश्वामित्रः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१, ७, १०, ११ त्रिष्टुप्; २, ३, ६, ८ निचृत्त्रिष्टुप्; ४ भुरिक्पङ्क्तिः; ५ स्वराट्पङ्क्तिः; ९ विराट्त्रिष्टुप् ॥
स्वरः—१-३, ६-११ धैवतः; ४, ५ पञ्चमः ॥

अथ सप्तदशो वर्गः ॥ १७ ॥

तिष्ठा॒ हरी॒ रथ॒ आ यु॒ज्यमा॑ना या॒हि वा॒युर्न नि॒युतो॑ नो अच्छ॑।
पिबा॒स्यन्धो॑ अ॒भिसृ॑ष्टो अ॒स्मे इन्द्र॒ स्वाहा॑ ररि॒मा ते॒ मदा॑य ॥ १ ॥
उपा॑जि॒रा पु॑रुहू॒ताय॒ सप्ती॒ हरी॒ रथ॑स्य धू॒र्ष्वा यु॑नज्मि।
द्र॒वद्यथा॒ संभृ॑तं वि॒श्वत॑श्चि॒दुपे॒मं य॒ज्ञमा व॑हात॒ इन्द्र॑म् ॥ २ ॥
उपो॑ नयस्व॒ वृष॑णा तपु॒ष्पोतेम॑व॒ त्वं वृ॑षभ स्वधावः।
ग्रसे॑ता॒मश्वा॒ वि मु॑चे॒ह शोणा॑ दि॒वेदि॑वे स॒दृशी॑रद्धि धा॒नाः ॥ ३ ॥
ब्रह्म॑णा ते ब्रह्म॒युजा॑ युनज्मि॒ हरी॒ सखा॑या सध॒माद॑ आ॒शू।
स्थि॒रं रथं॑ सु॒खमि॑न्द्राधि॒तिष्ठ॑न्प्रजा॒नन्वि॒द्वाँ उप॑ याहि॒ सोम॑म् ॥ ४ ॥
मा ते॒ हरी॒ वृष॑णा वी॒तपृ॑ष्ठा॒ नि री॑रम॒न्यज॑मानासो अ॒न्ये।
अ॒त्याया॑हि॒ शश्व॑तो व॒यं तेऽरं॑ सु॒तेभिः॑ कृणवाम॒ सोमैः॑ ॥ ५ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अथ अष्टादशो वर्गः ॥ १८ ॥

तवायं सोमस्त्वमेह्यर्वाङ् शश्वत्तमं सुमना अस्य पाहि।
अस्मिन्यज्ञे बर्हिष्या निषद्या दधिष्वेमं जठर इन्दुमिन्द्र॥ ६ ॥
स्तीर्णं ते बर्हिः सुत इन्द्र सोमः कृता धाना अत्तवे ते हरिभ्याम्।
तदोकसे पुरुशाकाय वृष्णे मरुत्वते तुभ्यं राता हवींषि॥ ७ ॥
इमं नरः पर्वतास्तुभ्यमापः समिन्द्र गोभिर्मधुमन्तमक्रन्।
तस्यागत्या सुमना ऋष्व पाहि प्रजाननिद्विद्वान्पथ्या३ अनु स्वाः॥ ८ ॥
याँ आभजो मरुत इन्द्र सोमे ये त्वामवर्धन्नभवन्गणस्ते।
तेभिरेतं सजोषा वावशानो३ऽग्नेः पिब जिह्वया सोममिन्द्र॥ ९ ॥
इन्द्र पिब स्वधया चित्सुतस्याग्नेर्वी पाहि जिह्वया यजत्र।
अध्वर्योर्वा प्रयतं शक्र हस्ताब्द्योतुर्वा यज्ञं हविषो जुषस्व॥ १० ॥
शुनं हुवेम मघवानमिन्द्रमस्मिन्भरे नृतमं वाजसातौ।
शृण्वन्तमुग्रमूतये समत्सु घ्नन्तं वृत्राणि संजितं धनानाम्॥ ११ ॥

[३६] षट्त्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—१-९, ११ विश्वामित्रः; १० घोर आङ्गिरसः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१, ७, १०, ११ त्रिष्टुप्; २, ३, ६, ८ निचृत्त्रिष्टुप्; ४ भुरिक्पङ्क्तिः; ५ स्वराट्पङ्क्तिः; ९ विराट्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१-३, ६-११ धैवतः; ४, ५ पञ्चमः ॥

अथ एकोनविंशो वर्गः ॥ १९ ॥

इमामू षु प्रभृतिं सातये धाः शश्वच्छश्वदूतिभिर्यादमानः।
सुतेसुते वावृधे वर्धनेभिर्यः कर्मभिर्महद्भिः सुश्रुतो भूत्॥ १ ॥
इन्द्राय सोमाः प्रदिवो विदाना ऋभुर्येभिर्वृषपर्वा विहायाः।
प्रयम्यमानान्प्रति षू गृभायेन्द्र पिब वृषधूतस्य वृष्णः॥ २ ॥
पिबा वर्धस्व तव घा सुतास इन्द्र सोमासः प्रथमा उतेमे।
यथापिबः पूर्व्याँ इन्द्र सोमाँ एवा पाहि पन्यो अद्या नवीयान्॥ ३ ॥
महाँ अमत्रो वृजने विरप्श्युग्रं शवः पत्यते धृष्णवोजः।
नाह विव्याच पृथिवी चनैनं यत्सोमासो हर्यश्वममन्दन्॥ ४ ॥
महाँ उग्रो वावृधे वीर्याय समाचक्रे वृषभः काव्येन।
इन्द्रो भगो वाजदा अस्य गावः प्र जायन्ते दक्षिणा अस्य पूर्वीः॥ ५ ॥

अथ विंशो वर्गः ॥ २० ॥

प्र यत्सिन्धवः प्रसवं यथायन्नापः समुद्रं रथ्येव जग्मुः।
अतश्चिदिन्द्रः सदसो वरीयान्यदीं सोमः पृणति दुग्धो अंशुः॥ १ ॥
समुद्रेण सिन्धवो यादमाना इन्द्राय सोमं सुषुतं भरन्तः।
अंशुं दुहन्ति हस्तिनो भरित्रैर्मध्वः पुनन्ति धारया पवित्रैः॥ ७ ॥
हृदाइव कुक्ष्यः सोमधानाः समी विव्याच सवना पुरूणि।
अन्ना यदिन्द्रः प्रथमा व्याश वृत्रं जघन्वाँ अवृणीत सोमम्॥ ८ ॥
आ तू भर माकिरेतत्परि ष्ठाद्विद्मा हि त्वा वसुपतिं वसूनाम्।
इन्द्र यत्ते माहिनं दत्रमस्त्यस्मभ्यं तद्धर्यश्व प्र यन्धि॥ ९ ॥
अस्मे प्र यन्धि मघवन्नृजीषिन्निन्द्र रायो विश्ववारस्य भूरेः।
अस्मे शतं शरदो जीवसे धा अस्मे वीराञ्छश्वत इन्द्र शिप्रिन्॥ १० ॥
शुनं हुवेम मघवानमिन्द्रमस्मिन्भरे नृतमं वाजसातौ।
शृण्वन्तमुग्रमूतये समत्सु घ्नन्तं वृत्राणि संजितं धनानाम्॥ ११ ॥

[३७] सप्तत्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—विश्वामित्रः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१, ३, ७ निचृद्गायत्री; २, ४-६, ८-१० गायत्री; ११ निचृदनुष्टुप्॥ स्वरः—१-१० षड्जः; ११ ऋषभः ॥

अथ एकविंशो वर्गः ॥ २१ ॥

वात्रीहत्याय शवसे पृतनाषाह्याय च। इन्द्र त्वा वर्तयामसि॥ १ ॥
अर्वाचीनं सु ते मन उत चक्षुः शतक्रतो। इन्द्र कृण्वन्तु वाघतः॥ २ ॥
नामानि ते शतक्रतो विश्वाभिर्गीर्भिरीमहे। इन्द्राभिमातिषाह्ये॥ ३ ॥
पुरुष्टुतस्य धामभिः शतेन महयामसि। इन्द्रस्य चर्षणीधृतः॥ ४ ॥
इन्द्रं वृत्राय हन्तवे पुरुहूतमुप ब्रुवे। भरेषु वाजसातये॥ ५ ॥

अथ द्वादशो वर्गः ॥ २२ ॥

वाजेषु सासहिर्भव त्वामीमहे शतक्रतो। इन्द्र वृत्राय हन्तवे॥ ६ ॥
द्युम्नेषु पृतनाज्ये पृत्सुतूर्षु श्रवःसु च। इन्द्र साक्ष्वाभिमातिषु॥ ७ ॥
शुष्मिन्तमं न ऊतये द्युम्निनं पाहि जागृविम्। इन्द्र सोमं शतक्रतो॥ ८ ॥
इन्द्रियाणि शतक्रतो या ते जनेषु पञ्चसु। इन्द्र तानि त आ वृणे॥ ९ ॥
अगन्निन्द्र श्रवो बृहद्द्युम्नं दधिष्व दुष्टरम्। उत्ते शुष्मं तिरामसि॥ १० ॥
अर्वावतो न आ गह्यथो शक्र परावतः।
उ लोको यस्ते अद्रिव इन्नेह तत आ गहि॥ ११ ॥

[३८] अष्टात्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—प्रजापतिः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१, ६, १० त्रिष्टुप्; २-५, ८, ९ निचृत्त्रिष्टुप्; ७ भुरिक्पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१-६, ८-१० धैवतः; ७ पञ्चमः ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अथ त्रयोविंशो वर्गः ॥ २३ ॥

अभि तष्टेव दीधया मनीषामत्यो न वाजी सुधुरो जिहानः।
अभि प्रियाणि मर्मृशत्पराणि कवीँरिच्छामि संदृशे सुमेधाः ॥ १ ॥
इनोत पृच्छ जनिमा कवीनां मनोधृतः सुकृतस्तक्षत द्याम्।
इमा उ ते प्रण्योइ३ वर्धमाना मनोवाता अध नु धर्मणि ग्मन् ॥ २ ॥
नि षीमिदत्र गुह्या दधाना उत क्षत्राय रोदसी समञ्जन्।
सं मात्राभिर्ममिरे येमुरुर्वी अन्तर्मही समृते धायसे धुः ॥ ३ ॥
आतिष्ठन्तं परि विश्वे अभूषञ्छ्रिय वसानश्चरति स्वरोचिः।
महत्तद् वृष्णो असुरस्य नामा विश्वरूपो अमृतानि तस्थौ ॥ ४ ॥
असूत पूर्वो वृषभो ज्यायानिमा अस्य शुरुधः सन्ति पूर्वीः।
दिवो नपाता विदथस्य धीभिः क्षत्रं राजाना प्रदिवो दधाते ॥ ५ ॥

अथ चतुर्विंशो वर्गः ॥ २४ ॥

त्रीणि राजाना विदथे पुरूणि परि विश्वानि भूषथः सदांसि।
अपश्यमत्र मनसा जगन्वान्व्रते गन्धर्वो अपि वायुकेशान् ॥ ६ ॥
तदिन्नवस्य वृषभस्य धेनोरा नामभिर्ममिरे सक्म्यं गोः।
अन्यदन्यदसुर्यं वसाना नि मायिनो ममिरे रूपमस्मिन् ॥ ७ ॥
तदिन्नवस्य सवितुर्नकिर्मे हिरण्ययीममतिं यामशिश्रेत्।
आ सुष्टुती रोदसी विश्वमिन्वे अपीव योषा जनिमानि वव्रे ॥ ८ ॥
युवं प्रत्नस्य साधथो महो यद्दैवी स्वस्तिः परि णः स्यातम्।
गोपाजिह्वस्य तस्थुषो विरूपा विश्वे पश्यन्ति मायिनः कृतानि ॥ ९ ॥
शुनं हुवेम मघवानमिन्द्रमस्मिन्भरे नृतमं वाजसातौ।
शृण्वन्तमुग्रमूतये समत्सु घ्नन्तं वृत्राणि संजितं धनानाम् ॥ १० ॥

चतुर्थोऽनुवाकः [३९] एकोनचत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—विश्वामित्रः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१, ९ विराट्त्रिष्टुप्; २, ८ भुरिक्पङ्क्तिः; ३-७ निचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१, ३-७, ९ धैवतः; २, ८ पञ्चमः ॥

अथ पञ्चविंशो वर्गः ॥ २५ ॥

इन्द्रं मतिर्हृद आ वच्यमानाच्छा पतिं स्तोमतष्टा जिगाति।
या जागृविर्विदथे शस्यमानेन्द्र यत्ते जायते विद्धि तस्य ॥ १ ॥
दिवश्चिदा पूर्व्या जायमाना वि जागृविर्विदथे शस्यमाना।
भद्रा वस्त्राण्यर्जुना वसाना सेयमस्मे सनजा पित्र्या धीः ॥ २ ॥
यमा चिदत्र यमसूरसूत जिह्वाया अग्रं पतदा ह्यस्थात्।
वपूंषि जाता मिथुना सचेते तमोहना तपुषो बुध्न एता ॥ ३ ॥
नकिरेषां निन्दिता मर्त्येषु ये अस्माकं पितरो गोषु योधाः।
इन्द्र एषां दृंहिता माहिनावानुद् गोत्राणि ससृजे दंसनावान् ॥ ४ ॥
सखा ह यत्र सखिभिर्नवग्वैरभिज्ञ्वा सत्वभिर्गा अनुग्मन्।
सत्यं तदिन्द्रो दशभिर्दशग्वैः सूर्यं विवेद तमसि क्षियन्तम् ॥ ५ ॥

अथ षड्विंशो वर्गः ॥ २६ ॥

इन्द्रो मधु संभृतमुस्रियायां पद्वद्विवेद शफवन्नमे गोः।
गुहा हितं गुह्यं गूळ्हमप्सु हस्ते दधे दक्षिणे दक्षिणावान् ॥ ६ ॥
ज्योतिर्वृणीत तमसो विजानन्नारे स्याम दुरितादभीके।
इमा गिरः सोमपाः सोमवृद्ध जुषस्वेन्द्र पुरुतमस्य कारोः ॥ ७ ॥
ज्योतिर्यज्ञाय रोदसी अनु ष्यादारे स्याम दुरितस्य भूरेः।
भूरि चिद्धि तुजतो मर्त्यस्य सुपारासो वसवो बर्हणावत् ॥ ८ ॥
शुनं हुवेम मघवानमिन्द्रमस्मिन्भरे नृतमं वाजसातौ।
शृण्वन्तमुग्रमूतये समत्सु घ्नन्तं वृत्राणि संजितं धनानाम् ॥ ९ ॥

इति तृतीयाष्टके द्वितीयोऽध्यायः ॥

अथ तृतीयोऽध्यायः

[४०] चत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—विश्वामित्रः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१-४, ६-९ गायत्री; ५ निचृद्गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथ प्रथमो वर्गः ॥ १ ॥

इन्द्रं त्वा वृषभं वयं सुते सोमे हवामहे। स पाहि मध्वो अन्धसः ॥ १ ॥
इन्द्रं क्रतुविदं सुतं सोमं हर्य पुरुष्टुत। पिबा वृषस्व तातृपिम् ॥ २ ॥
इन्द्र प्र णो धितावानं यज्ञं विश्वेभिर्देवेभिः। तिरः स्तवान विश्पते ॥ ३ ॥
इन्द्र सोमाः सुता इमे तव प्र यन्ति सत्पते। क्षयं चन्द्रास इन्दवः ॥ ४ ॥
दधिष्वा जठरे सुतं सोममिन्द्र वरेण्यम्। तव द्युक्षास इन्दवः ॥ ५ ॥

अथ द्वितीयो वर्गः ॥ २ ॥

गिर्वणः पाहि नः सुतं मधोर्धाराभिरज्यसे। इन्द्र त्वादातमिद्यशः ॥ ६ ॥
अभि द्युम्नानि वनिन इन्द्रं सचन्ते अक्षिता। पीत्वी सोमस्य वावृधे ॥ ७ ॥
अर्वावतो न आ गहि परावतश्च वृत्रहन्। इमा जुषस्व नो गिरः ॥ ८ ॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

यदन्तरा परावतमर्वावतं च हूयसे। इन्द्रेह तत आ गहि॥ ९॥

[४१] एकचत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—विश्वामित्रः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१ यवमध्यागायत्री; २, ३, ५, ९ गायत्री; ४, ७, ८ निचृद्गायत्री; ६ विराड्गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

अथ तृतीयो वर्गः॥ ३॥

आ तू न इन्द्र मद्रयग्घुवानः सोमपीतये। हरिभ्यां याह्यद्रिवः॥ १॥
सत्तो होता न ऋत्वियस्तिस्तिरे बर्हिरानुषक्। अयुज्रन्प्रातरद्रयः॥ २॥
इमा ब्रह्म ब्रह्मवाहः क्रियन्त आ बर्हिः सीद। वीहि शूर पुरोळाशम्॥ ३॥
रारन्धि सवनेषु ण एषु स्तोमेषु वृत्रहन्। उक्थेष्विन्द्र गिर्वणः॥ ४॥
मतयः सोमपामुरुं रिहन्ति शवसस्पतिम्। इन्द्रं वत्सं न मातरः॥ ५॥

अथ चतुर्थो वर्गः॥ ४॥

स मन्दस्वा ह्यन्धसो राधसे तन्वा महे। न स्तोतारं निदे करः॥ ६॥
वयमिन्द्र त्वायवो हविष्मन्तो जरामहे। उत त्वमस्मयुर्वसो॥ ७॥
मारे अस्मद्वि मुमुचो हरिप्रियार्वाङ् याहि। इन्द्र स्वधावो मत्स्वेह॥ ८॥
अर्वाञ्चं त्वा सुखे रथे वहतामिन्द्र केशिना। घृतस्नू बर्हिरासदे॥ ९॥

[४२] द्विचत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—विश्वामित्रः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१, ४-७ गायत्री; २, ३, ८, ९ निचृद्गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

अथ पञ्चमो वर्गः॥ ५॥

उप नः सुतमा गहि सोममिन्द्र गवाशिरम्। हरिभ्यां यस्ते अस्मयुः॥ १॥
तमिन्द्र मदमा गहि बर्हिःष्ठां ग्रावभिः सुतम्। कुविन्नस्य तृप्णवः॥ २॥
इन्द्रमित्था गिरो ममाच्छागुरिषिता इतः। आवृते सोमपीतये॥ ३॥
इन्द्रं सोमस्य पीतये स्तोमैरिह हवामहे। उक्थेभिः कुविदागमत्॥ ४॥
इन्द्र सोमाः सुता इमे तान्दधिष्व शतक्रतो। जठरे वाजिनीवसो॥ ५॥

अथ षष्ठो वर्गः॥ ६॥

विद्मा हि त्वा धनञ्जयं वाजेषु दधृषं कवे। अधा ते सुम्नमीमहे॥ ६॥
इममिन्द्र गवाशिरं यवाशिरं च नः पिब। आगत्या वृषभिः सुतम्॥ ७॥
तुभ्येदिन्द्र स्व ओक्ये सोमं चोदामि पीतये। एष रारन्तु ते हृदि॥ ८॥
त्वां सुतस्य पीतये प्रत्नमिन्द्र हवामहे। कुशिकासो अवस्यवः॥ ९॥

[४३] त्रिचत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—विश्वामित्रः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१, ३ विराट्पङ्क्तिः; २, ४, ६ निचृत्त्रिष्टुप्; ५ भुरिक्त्रिष्टुप्; ७, ८ त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१, ३ पञ्चमः; २, ४-८ धैवतः॥

अथ सप्तमो वर्गः॥ ७॥

आ याह्यर्वाङुप वन्धुरेष्टास्तवेदनु प्रदिवः सोमपेयम्। ।
प्रिया सखाया वि मुचोप बर्हिस्त्वामिमे हव्यवाहो हवन्ते॥ १॥
आ याहि पूर्वीरति चर्षणीराँ अर्य आशिष उप नो हरिभ्याम्।
इमा हि त्वा मतयः स्तोमतष्टा इन्द्र हवन्ते सख्यं जुषाणाः॥ २॥
आ नो यज्ञं नमोवृधं सजोषा इन्द्र देव हरिभिर्याहि तूयम्।
अहं हि त्वा मतिभिर्जोहवीमि घृतप्रयाः सधमादे मधूनाम्॥ ३॥
आ च त्वामेता वृषणा वहातो हरी सखाया सुधुरा स्वङ्गा।
धानावदिन्द्रः सवनं जुषाणः सखा सख्युः शृणवद्वन्दनानि॥ ४॥
कुविन्मा गोपां करसे जनस्य कुविद्राजानं मघवन्नृजीषिन्।
कुविन्म ऋषिं पपिवांसं सुतस्य कुविन्मे वस्वो अमृतस्य शिक्षाः॥ ५॥
आ त्वा बृहन्तो हरयो युजाना अर्वागिन्द्र सधमादो वहन्तु।
प्र ये द्विता दिव ऋञ्जन्त्याताः सुसंमृष्टासो वृषभस्य मूराः॥ ६॥
इन्द्र पिब वृषधूतस्य वृष्ण आ यं ते श्येन उशते जभार।
यस्य मदे च्यावयसि प्र कृष्टीर्यस्य मदे अप गोत्रा ववर्थ॥ ७॥
शुनं हुवेम मघवानमिन्द्रमस्मिन्भरे नृतमं वाजसातौ।
शृण्वन्तमुग्रमूतये समत्सु घ्नन्तं वृत्राणि संजितं धनानाम्॥ ८॥

[४४] चतुश्चत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—विश्वामित्रः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१, २ निचृद्बृहती; ३, ५ बृहती; ४ स्वराडनुष्टुप्॥ स्वरः—१-३, ५ मध्यमः; ४ गान्धारः॥

अथ अष्टमो वर्गः॥ ८॥

अयं ते अस्तु हर्यतः सोम आ हरिभिः सुतः। ।
जुषाण इन्द्र हरिभिर्न आ गह्या तिष्ठ हरितं रथम्॥ १॥
हर्यन्नुषसमर्चयः सूर्यं हर्यन्नरोचयः। ।
विद्वांश्चिकित्वान्हर्यश्व वर्धस इन्द्र विश्वा अभि श्रियः॥ २॥
द्यामिन्द्रो हरिधायसं पृथिवीं हरिवर्पसम्। ।
अधारयद्धरितोर्भूरि भोजनं ययोरन्तर्हरिश्चरत्॥ ३॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जज्ञानो हरितो वृषा विश्वमा भाति रोचनम् ।
हर्यश्वो हरितं धत्त आयुधमा वज्रं बाह्वोर्हरिम् ॥ ४ ॥
इन्द्रो हर्यन्तमर्जुनं वज्रं शुक्रैरभीवृतम् ।
अपावृणोद्धरिभिरद्रिभिः सुतमुद्गा हरिभिराजत ॥ ५ ॥

[४५] पञ्चचत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—विश्वामित्रः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१, २ निचृद्बृहती; ३, ५ बृहती; ४ स्वराडनुष्टुप् ॥ स्वरः—१-३, ५ मध्यमः; ४ गान्धारः ॥

अथ नवमो वर्गः ॥ ९ ॥

आ मन्द्रैरिन्द्र हरिभिर्याहि मयूररोमभिः ।
मा त्वा के चिन्नि यमन्विं न पाशिनोऽति धन्वेव ताँ इहि ॥ १ ॥
वृत्रखादो वलंरुजः पुरां दर्मो अपामजः ।
स्थाता रथस्थ हर्योरभिस्वर इन्द्रो दृळ्हा चिदारुजः ॥ २ ॥
गम्भीराँ उदधीरिव क्रतुं पुष्यसि गाइव ।
प्र सुगोपा यवसं धेनवो यथा ह्रदं कुल्याइवाशत ॥ ३ ॥
आ नस्तुजं रयिं भरांशुं न प्रतिजानते ।
वृक्षं पक्वं फलमङ्कीव धूनुहीन्द्र संपारणं वसु ॥ ४ ॥
स्वयुरिन्द्र स्वराळसि स्मद्दिष्टिः स्वयशस्तरः ।
स वावृधान ओजसा पुरुष्टुत भवा नः सुश्रवस्तमः ॥ ५ ॥

[४६] षट्चत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—विश्वामित्रः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१ विराट्त्रिष्टुप्; २, ५ निचृत्त्रिष्टुप्; ३, ४ त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

अथ दशमो वर्गः ॥ १० ॥

युष्मस्य ते वृषभस्य स्वराज उग्रस्य यूनः स्थविरस्य घृष्वेः ।
अजूर्यतो वज्रिणो वीर्येण इन्द्र श्रुतस्य महतो महानि ॥ १ ॥
महाँ असि महिष वृष्ण्येभिर्धनस्पृदुग्र सहमानो अन्यान् ।
एको विश्वस्य भुवनस्य राजा स योधया च क्षयया च जनान् ॥ २ ॥
प्र मात्राभी रिरिचे रोचमानः प्र देवेभिर्विश्वतो अप्रतीतः ।
प्र मज्मना दिव इन्द्रः पृथिव्याः प्रोरोर्महो अन्तरिक्षादृजीषी ॥ ३ ॥
उरुं गभीरं जनुषाभ्युग्रं विश्वव्यचसमवतं मतीनाम् ।
इन्द्रं सोमासः प्रदिवि सुतासः समुद्रं न स्रवत आ विशन्ति ॥ ४ ॥

यं सोममिन्द्र पृथिवीद्यावा गर्भं न माता बिभृतस्त्वाया ।
तं तै हिन्वन्ति तमु ते मृजन्त्यध्वर्यवो वृषभ पातवा उ ॥ ५ ॥

[४७] सप्तचत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—विश्वामित्रः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१-३ निचृत्त्रिष्टुप्; ४ त्रिष्टुप्; ५ विराट्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

अथ एकादशो वर्गः ॥ ११ ॥

मरुत्वाँ इन्द्र वृषभो रणाय पिबा सोममनुष्वधं मदाय ।
आ सिञ्चस्व जठरे मध्व ऊर्मिं त्वं राजासि प्रदिवः सुतानाम् ॥ १ ॥
सजोषा इन्द्र सगणो मरुद्भिः सोमं पिब वृत्रहा शूर विद्वान् ।
जहि शत्रूँरप मृधो नुदस्वाथाभयं कृणुहि विश्वतो नः ॥ २ ॥
उत ऋतुभिर्ऋतुपाः पाहि सोममिन्द्र देवेभिः सखिभिः सुतं नः ।
याँ आभजो मरुतो ये त्वान्वहन्वृत्रमदधुस्तुभ्योजः ॥ ३ ॥
ये त्वाहिहत्ये मघवन्नवर्धन्ये शाम्बरे हरिवो ये गविष्टौ ।
ये त्वा नूनमनुमदन्ति विप्राः पिबेन्द्र सोमं सगणो मरुद्भिः ॥ ४ ॥
मरुत्वन्तं वृषभं वावृधानमकवारिं दिव्यं शासमिन्द्रम् ।
विश्वासाहमवसे नूतनायोग्रं सहोदामिह तं हुवेम ॥ ५ ॥

[४८] अष्टचत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—विश्वामित्रः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१, २ निचृत्त्रिष्टुप्; ३, ४ त्रिष्टुप्; ५ भुरिक्पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१-४ धैवतः; ५ पञ्चमः ॥

अथ द्वादशो वर्गः ॥ १२ ॥

सद्यो ह जातो वृषभः कनीनः प्रभर्तुमावदन्धसः सुतस्य ।
साधोः पिब प्रतिकामं यथा ते रसाशिरः प्रथमं सोम्यस्य ॥ १ ॥
यज्जायथास्तदहरस्य कामेंऽशोः पीयूषमपिबो गिरिष्ठाम् ।
तं ते माता परि योषा जनित्री महः पितुर्दम आसिञ्चदग्रे ॥ २ ॥
उपस्थाय मातरमन्नमैट्ट तिग्ममपश्यदभि सोममूधः ।
प्रयावयन्नचरद् गृत्सो अन्यान्महानि चक्रे पुरुधप्रतीकः ॥ ३ ॥
उग्रस्तुराषाळभिभूत्योजा यथावशं तन्वं चक्र एषः ।
त्वष्टारमिन्द्रो जनुषाभिभूयामुष्या सोममपिबच्चमूषु ॥ ४ ॥
शुनं हुवेम मघवानमिन्द्रमस्मिन्भरे नृतमं वाजसातौ ।
शृण्वन्तमुग्रमूतये समत्सु घ्नन्तं वृत्राणि संजितं धनानाम् ॥ ५ ॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

[४९] एकोनपञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—विश्वामित्रः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१, ४ निचृत्त्रिष्टुप्; २, ५ त्रिष्टुप्; ३ भुरिक्पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१, २, ४, ५ धैवतः; ३ पञ्चमः ॥

अथ त्रयोदशो वर्गः ॥ १३ ॥

शंसा॑ म॒हामिन्द्रं॒ यस्मि॒न्विश्वा॒ आ कृ॒ष्टयः॑ सोम॒पाः काम॒मव्य॑न्।
यं सु॒क्रतुं॑ धि॒षणे॑ विभ्वत॒ष्टं घ॒नं वृ॒त्राणां॑ ज॒नय॑न्त दे॒वाः ॥ १ ॥
यं नु नकिः॒ पृत॑नासु स्व॒राजं॑ द्वि॒ता तर॑ति॒ नृत॑मं हरि॒ष्ठाम्।
इ॒नत॑मः॒ सत्व॑भि॒र्यो ह॑ शू॒षैः पृ॑थु॒ज्रया॑ अमिना॒दायु॒र्दस्योः॑ ॥ २ ॥
स॒हावा॑ पृ॒त्सु त॒रणि॒र्नार्वा॑ व्यान॒शी रोद॑सी मे॒हना॑वान् ।
भगो॒ न का॒रे हव्यो॑ मती॒नां पि॒तेव॒ चारुः॑ सु॒हवो॑ वयो॒धाः ॥ ३ ॥
ध॒र्ता दि॒वो रज॑सस्पृ॒ष्ट ऊ॒र्ध्वो रथो॒ न वा॒युर्वसु॑भिर्नि॒युत्वा॑न् ।
क्ष॒पां व॒स्ता ज॑नि॒ता सूर्य॑स्य॒ विभ॑क्ता भा॒गं धि॒षणे॑व॒ वाज॑म् ॥ ४ ॥
शु॒नं हु॑वेम म॒घवा॑न॒मिन्द्र॑म॒स्मिन्भरे॒ नृत॑मं॒ वाज॑सातौ ।
शृ॒ण्वन्त॑मु॒ग्रमू॒तये॑ स॒मत्सु॒ घ्नन्तं॑ वृ॒त्राणि॑ सं॒जितं॒ धना॑नाम् ॥ ५ ॥

[५०] पञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—विश्वामित्रः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१, २, ४ निचृत्त्रिष्टुप्; ३, ५ त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

अथ चतुर्दशो वर्गः ॥ १४ ॥

इन्द्रः॒ स्वाहा॑ पिबतु॒ यस्य॒ सोम॑ आ॒गत्या॒ तुम्रो॑ वृष॒भो म॒रुत्वा॑न्।
ओरु॒व्यचाः॑ पृणतामे॒भिरन्नै॒रास्य॑ ह॒विस्त॒न्व१॒॑ः काम॑मृध्याः ॥ १ ॥
आ ते॑ सप॒र्यू ज॒वसे॑ युनज्मि॒ ययो॒रनु॑ प्र॒दिवः॑ श्रु॒ष्टिमावः॑।
इ॒ह त्वा॑ धेयु॒र्हर॑यः सुशिप्र॒ पिबा॒ त्व१॒॑स्य सुषु॑तस्य॒ चारोः॑ ॥ २ ॥
गोभि॑र्मिमि॒क्षुं द॑धिरे सुपा॒रमिन्द्रं॒ ज्यैष्ठ्या॑य॒ धाय॑से गृणा॒नाः।
म॒न्दा॒नः सोमं॑ पपि॒वाँ ऋ॑जीषि॒न्त्सम॒स्मभ्यं॑ पुरु॒धा गा इ॑षण्य ॥ ३ ॥
इ॒मं कामं॑ मन्दया॒ गोभि॒रश्वै॑श्च॒न्द्रव॑ता॒ राध॑सा प॒प्रथ॑श्च।
स्व॒र्यवो॑ म॒तिभि॒स्तुभ्यं॒ विप्रा॒ इन्द्रा॑य॒ वाहः॑ कुशि॒कासो॑ अक्रन् ॥ ४ ॥
शु॒नं हु॑वेम म॒घवा॑न॒मिन्द्र॑म॒स्मिन्भरे॒ नृत॑मं॒ वाज॑सातौ ।
शृ॒ण्वन्त॑मु॒ग्रमू॒तये॑ स॒मत्सु॒ घ्नन्तं॑ वृ॒त्राणि॑ सं॒जितं॒ धना॑नाम् ॥ ५ ॥

[५१] एकपञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—विश्वामित्रः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१-३ निचृज्जगती; ४, ७-९ त्रिष्टुप्; ५, ६ निचृत्त्रिष्टुप्; १०, ११ यवमध्यागायत्री; १२ विराड्गायत्री ॥ स्वरः—१-३ निषादः; ४-९ धैवतः; १०-१२ षड्जः ॥

अथ पञ्चदशो वर्गः ॥ १५ ॥

च॒र्ष॒णी॒धृतं॑ म॒घवा॑नमु॒क्थ्य१॒॑मिन्द्रं॒ गिरो॑ बृह॒तीर॒भ्य॑नूषत ।
वा॒वृ॒धा॒नं पु॑रुहू॒तं सु॑वृ॒क्तिभि॒रम॑र्त्यं॒ जर॑माणं दि॒वेदि॑वे ॥ १ ॥
श॒तक्र॑तुमर्ण॒वं शा॒किनं॒ नरं॒ गिरो॑ म॒ इन्द्र॒मुप॑ यन्ति वि॒श्वतः॑।
वा॒ज॒सनिं॑ पू॒र्भिदं॒ तूर्णि॑म॒प्तुरं॑ धाम॒साच॑मभि॒षाचं॑ स्व॒र्विद॑म् ॥ २ ॥
आ॒क॒रे वसो॑र्जरि॒ता प॑नस्यतेऽने॒हसः॒ स्तुभ॒ इन्द्रो॑ दुवस्यति।
वि॒वस्व॑तः॒ सद॑न॒ आ हि पि॑प्रि॒ये स॑त्रा॒साह॑मभिमाति॒हनं॑ स्तुहि ॥ ३ ॥
नृ॒णामु॑ त्वा॒ नृत॑मं गी॒र्भिरु॒क्थैर॒भि प्र वी॒रम॑र्चता स॒बाधः॑।
सं सह॑से पुरुमा॒यो जि॑हीते॒ नमो॑ अस्य प्र॒दिव॒ एक॑ ईशे ॥ ४ ॥
पू॒र्वीर॑स्य नि॒ष्षिधो॒ मर्त्ये॑षु पु॒रू वसू॑नि पृथि॒वी बि॑भर्ति।
इन्द्रा॑य द्याव॒ ओष॑धीरु॒तापो॑ र॒यिं र॑क्षन्ति जी॒रयो॒ वना॑नि ॥ ५ ॥

अथ षोडशो वर्गः ॥ १६ ॥

तुभ्यं॒ ब्रह्मा॑णि॒ गिर॑ इन्द्र॒ तुभ्यं॑ स॒त्रा द॑धिरे हरिवो जु॒षस्व॑।
बो॒ध्या॒३॒॑पिरव॑सो॒ नूत॑नस्य॒ सखे॑ वसो जरि॒तृभ्यो॒ वयो॑ धाः ॥ ६ ॥
इन्द्र॑ मरुत्व इ॒ह पा॑हि॒ सोमं॒ यथा॑ शार्या॒ते अपि॑बः सु॒तस्य॑।
तव॒ प्रणी॑ती॒ तव॑ शूर॒ शर्म॒न्ना वि॑वासन्ति क॒वयः॑ सुय॒ज्ञाः ॥ ७ ॥
स वा॑वशा॒न इ॒ह पा॑हि॒ सोमं॑ म॒रुद्भि॑रिन्द्र॒ सखि॑भिः सु॒तं नः॑।
जा॒तं यत्त्वा॒ परि॑ दे॒वा अभू॑षन्म॒हे भरा॑य पुरुहू॒त॒ विश्वे॑ ॥ ८ ॥
अ॒प्तूर्ये॑ मरुत आ॒पिरे॒षोऽम॑न्द॒न्निन्द्र॒मनु॒ दाति॑वाराः ।
तेभिः॑ सा॒कं पि॑बतु वृत्रखा॒दः सु॒तं सोमं॑ दा॒शुषः॒ स्वे स॒धस्थे॑ ॥ ९ ॥
इ॒दं ह्यन्वोज॑सा सु॒तं रा॑धानां पते। पिबा॒ त्व१॒॑स्य गि॑र्वणः ॥ १० ॥
यस्ते॒ अनु॑ स्व॒धामस॑त्सु॒ते नि य॑च्छ त॒न्व॑म्। स त्वा॑ ममत्तु सो॒म्यम् ॥ ११ ॥
प्र ते॑ अश्नोतु कु॒क्ष्योः प्रेन्द्र॒ ब्रह्म॑णा॒ शिरः॑। प्र बा॒हु शू॑र॒ राध॑से ॥ १२ ॥

[५२] द्विपञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—विश्वामित्रः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१, ३, ४ गायत्री; २ निचृद्गायत्री; ६ जगती; ५, ७ निचृत्त्रिष्टुप्; ८ त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१-४ षड्जः; ५, ७, ८ धैवतः; ६ निषादः ॥

अथ सप्तदशो वर्गः ॥ १७ ॥

धा॒नाव॑न्तं कर॒म्भिण॑मपू॒पव॑न्तमु॒क्थिन॑म्। इन्द्र॑ प्रा॒तर्जु॑षस्व नः ॥ १ ॥
पु॒रो॒ळाशं॑ पच॒त्यं॑ जु॒षस्वे॒न्द्रा गु॑रस्व च। तुभ्यं॑ ह॒व्यानि॑ सिस्रते ॥ २ ॥
पु॒रो॒ळाशं॑ च नो॒ घसो॑ जो॒षया॑से गिर॑श्च नः। व॒धू॒युरि॑व॒ योष॑णाम् ॥ ३ ॥
पु॒रो॒ळाशं॑ सनश्रुत प्रातःसा॒वे जु॑षस्व नः। इन्द्र॒ क्रतु॒र्हि ते॑ बृ॒हन् ॥ ४ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

माध्यन्दिनस्य सवनस्य धानाः पुरोळाशमिन्द्र कृष्वेह चारुम्।
प्र यत्स्तोता जरिता तूर्णयर्थो वृषायमाण उप गीर्भिरीट्टे॥ ५॥

अथ अष्टादशो वर्गः॥ १८॥

तृतीये धानाः सवने पुरुष्टुत पुरोळाशमाहुतं मामहस्व नः।
ऋभुमन्तं वाजवन्तं त्वा कवे प्रयस्वन्त उप शिक्षेम धीतिभिः॥ ६॥
पूषण्वते ते चकृमा करम्भं हरिवते हर्यश्वाय धानाः।
अपूपमद्धि सगणो मरुद्भिः सोमं पिब वृत्रहा शूर विद्वान्॥ ७॥
प्रति धाना भरत तूयमस्मै पुरोळाशं वीरतमाय नृणाम्।
दिवेदिवे सदृशीरिन्द्र तुभ्यं वर्धन्तु त्वा सोमपेयाय धृष्णो॥ ८॥

[५३] त्रिपञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—विश्वामित्रः॥ देवता—१ इन्द्रापर्वतौ; २-१४, २१-२४ इन्द्रः; १५, १६ वाक्; १७-२० रथाङ्गानि॥ छन्दः—१, ५, ९, २१ निचृत्त्रिष्टुप्; २, ६, ७, १४, १७, १९, २३, २४ त्रिष्टुप्; ३, ४, ८, १५ स्वराट्त्रिष्टुप्; १०, १६ निचृज्जगती; ११ भुरिक्त्रिष्टुप्; १२, २२ अनुष्टुप्; १३ निचृद्गायत्री; १८ निचृद्-बृहती; २० भुरिगनुष्टुप्॥ स्वरः—१-९, ११, १४, १५, १७, १९, २१, २३, २४ धैवतः; १२, २०, २२ गान्धारः; १०, १६ निषादः; १३ षड्जः; १८ मध्यमः॥

अथ एकोनविंशो वर्गः॥ १९॥

इन्द्रापर्वता बृहता रथेन वामीरिष आ वहतं सुवीराः।
वीतं हव्यान्यध्वरेषु देवा वर्धेथां गीर्भिरिळया मदन्ता॥ १॥
तिष्ठा सु कं मघवन्मा परा गाः सोमस्य नु त्वा सुषुतस्य यक्षि।
पितुर्न पुत्रः सिचमा रभे त इन्द्र स्वादिष्ठया गिरा शचीवः॥ २॥
शंसावाध्वर्यो प्रति मे गृणीहीन्द्राय वाहः कृणवावा जुष्टम्।
एदं बर्हिर्यजमानस्य सीदाथा च भूदुक्थमिन्द्राय शस्तम्॥ ३॥
जायेदस्तं मघवन्त्सेदु योनिस्तदित्त्वा युक्ता हरयो वहन्तु।
यदा कदा च सुनवाम सोममग्निष्टा दूतो धन्वात्यच्छ॥ ४॥
परा याहि मघवन्ना च याहीन्द्र भ्रातरुभयत्रा ते अर्थम्।
यत्रा रथस्य बृहतो निधानं विमोचनं वाजिनो रासभस्य॥ ५॥

अथ विंशो वर्गः॥ २०॥

अपाः सोममस्तमिन्द्र प्र याहि कल्याणीर्जाया सुरणं गृहे ते।
यत्रा रथस्य बृहतो निधानं विमोचनं वाजिनो दक्षिणावत्॥ ६॥
इमे भोजा अङ्गिरसो विरूपा दिवस्पुत्रासो असुरस्य वीराः।
विश्वामित्राय ददतो मघानि सहस्रसावे प्र तिरन्त आयुः॥ ७॥
रूपंरूपं मघवा बोभवीति मायाः कृण्वानस्तन्वं परि स्वाम्।
त्रिर्यद्दिवः परि मुहूर्तमागात्स्वैर्मन्त्रैरनृतुपा ऋतावा॥ ८॥
महाँ ऋषिर्देवजा देवजूतोऽस्तभ्नात्सिन्धुमर्णवं नृचक्षाः।
विश्वामित्रो यदवहत्सुदासमप्रियायत कुशिकेभिरिन्द्रः॥ ९॥
हंसाइव कृणुथ श्लोकमद्रिभिर्मदन्तो गीर्भिरध्वरे सुते सचा।
देवेभिर्विप्रा ऋषयो नृचक्षसो वि पिबध्वं कुशिकाः सोम्यं मधु॥ १०॥

अथ एकविंशो वर्गः॥ २१॥

उप प्रेत कुशिकाश्चेतयध्वमश्वं राये प्र मुञ्चता सुदासः।
राजा वृत्रं जङ्घनत्प्रागपागुदगथा यजाते वर आ पृथिव्याः॥ ११॥
य इमे रोदसी उभे अहमिन्द्रमतुष्टवम्।
विश्वामित्रस्य रक्षति ब्रह्मेदं भारतं जनम्॥ १२॥
विश्वामित्रा अरासत ब्रह्मेन्द्राय वज्रिणे। करदिन्नः सुराधसः॥ १३॥
किं ते कृण्वन्ति कीकटेषु गावो नाशिरं दुह्रे न तपन्ति घर्मम्।
आ नो भर प्रमगन्दस्य वेदो नैचाशाखं मघवन्रन्धया नः॥ १४॥
ससर्परीरमतिं बाधमाना बृहन्निमाय जमदग्निदत्ता।
आ सूर्यस्य दुहिता ततान श्रवो देवेष्वमृतमजुर्यम्॥ १५॥

अथ द्वाविंशो वर्गः॥ २२॥

ससर्परीरभरत्तूयमेभ्योऽधि श्रवः पाञ्चजन्यासु कृष्टिषु।
सा पक्ष्या नव्यमायुर्दधाना यां मे पलस्तिजमदग्नयो ददुः॥ १६॥
स्थिरौ गावौ भवतां वीळुरक्षो मेषा वि वर्हि मा युगं वि शारि।
इन्द्रः पातल्यं ददतां शरीतोररिष्टनेमे अभि नः सचस्व॥ १७॥
बलं धेहि तनूषु नो बलमिन्द्रानळुत्सु नः।
बलं तोकाय तनयाय जीवसे त्वं हि बलदा असि॥ १८॥
अभि व्ययस्व खदिरस्य सारमोजो धेहि स्पन्दने शिंशपायाम्।
अक्षं वीळो वीळित वीळयस्व मा यामादस्मादव जीहिपो नः॥ १९॥
अयमस्मान्वनस्पतिर्मा च हा मा च रीरिषत्।
स्वस्त्या गृहेभ्य आवसा आ विमोचनात्॥ २०॥

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अथ त्रयोविंशो वर्गः ॥ २३ ॥

इन्द्रो॒तिभि॑र्बहु॒लाभि॑र्नो अ॒द्य या॑च्छ्रे॒ष्ठाभि॑र्मघवञ्छूर जिन्व ।
यो नो॒ द्वेष्ट्यध॑रः॒ सस्प॑दीष्ट॒ यमु॑ द्वि॒ष्मस्तमु॑ प्रा॒णो ज॑हातु ॥ २१ ॥
प॒र॒शुं चि॒द्वि त॑पति शिम्ब॒लं चि॒द्वि वृ॑श्चति ।
उ॒खा चि॑दिन्द्र॒ येष॑न्ती॒ प्रय॑स्ता॒ फेन॑मस्यति ॥ २२ ॥
न साय॑कस्य चिकिते जनासो लो॒धं न॑यन्ति॒ पशु॒ मन्य॑मानाः ।
नावा॑जिनं वा॒जिना॑ हासयन्ति॒ न ग॑र्द॒भं पु॒रो अश्वा॑न्नयन्ति ॥ २३ ॥
इ॒म इ॑न्द्र भर॒तस्य॑ पु॒त्रा अ॑पपि॒त्वं चि॑कितु॒र्न प्र॑पि॒त्वम् ।
हि॒न्वन्त्यश्व॒मर॑णं॒ न नित्यं॒ ज्या॑वाजं॒ परि॑ णयन्त्या॒जौ ॥ २४ ॥

पञ्चमोऽनुवाकः [५४] चतुष्पञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—प्रजापतिर्वैश्वामित्रो वाच्यो वा ॥ देवता—विश्वे देवाः ॥ छन्दः—१ निचृत्पङ्क्तिः; २, ३, ६, ८, १०, ११, १३, १४ त्रिष्टुप्; ४, ७, १५, १६, १८, २० २१ निचृत्त्रिष्टुप्; ५ स्वराट्त्रिष्टुप्; ९ भुरिक्पङ्क्तिः; १२ स्वराट्पङ्क्तिः; १७ भुरिक्त्रिष्टुप्; १९, २२ विराट्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१, ९, १२ पञ्चमः; २-८, १०, ११, १३-२२ धैवतः ॥

अथ चतुर्विंशो वर्गः ॥ २४ ॥

इ॒मं म॒हे वि॑द॒थ्या॑य शू॒षं शश्व॒त्कृत्व॒ ईड्या॑य॒ प्र ज॑भ्रुः ।
शृ॒णोतु॑ नो॒ दम्ये॑भि॒रनी॑कैः शृ॒णोत्व॒ग्निर्दि॒व्यैरज॑स्रः ॥ १ ॥
महि॑ म॒हे दि॒वे अ॑र्चा पृथि॒व्यै कामो॑ म इ॒च्छञ्च॑रति प्रजा॒नन् ।
ययो॑र्ह॒ स्तोमे॑ वि॒दथे॑षु दे॒वाः स॑प॒र्यवो॑ मा॒दय॑न्ते॒ सचा॒योः ॥ २ ॥
यु॒वोर्ऋ॒तं रो॑दसी स॒त्यम॑स्तु म॒हे षु णः॑ सुवि॒ताय॒ प्र भू॑तम् ।
इ॒दं दि॒वे नमो॑ अग्ने पृथि॒व्यै स॑प॒र्यामि॒ प्रय॑सा॒ यामि॒ रत्न॑म् ॥ ३ ॥
उ॒तो हि वां॑ पू॒र्व्या आ॑विवि॒द्र ऋता॑वरी रोदसी सत्य॒वाचः॑ ।
नर॑श्चिद्वां समि॒थे शूर॑सातौ ववन्दि॒रे पृ॑थिवि॒ वेवि॑दानाः ॥ ४ ॥
को अ॒द्धा वे॑द॒ क इ॒ह प्र वो॑चद्दे॒वाँ अच्छा॑ प॒थ्या॒३॒॑ का समे॑ति ।
ददृ॑श्र एषामव॒मा सदां॑सि॒ परे॑षु॒ या गुह्ये॑षु व्र॒तेषु॑ ॥ ५ ॥

अथ पञ्चविंशो वर्गः ॥ २५ ॥

क॒विर्नृ॒चक्षा॑ अ॒भि षी॑मचष्ट ऋ॒तस्य॒ योना॒ विघृ॑ते॒ मद॑न्ती ।
नाना॑ चक्राते॒ सद॑नं॒ यथा॒ वेः स॑मा॒नेन॒ क्रतु॑ना संविदा॒ने ॥ ६ ॥
स॒मा॒न्या वियु॑ते दू॒रेअ॑न्ते ध्रु॒वे प॒दे त॑स्थतुर्जाग॒रूके॑ ।
उ॒त स्वसा॑रा युव॒ती भव॑न्ती॒ आदु॑ ब्रुवाते मिथु॒नानि॒ नाम॑ ॥ ७ ॥
विश्वेदे॒ते जनि॑मा॒ सं वि॑विक्तो म॒हो दे॒वान्बिभ्र॑ती॒ न व्य॑थेते ।
एज॑द् ध्रु॒वं प॑त्यते॒ विश्व॒मेकं॒ चर॑त्पत॒त्रि विषु॑णं॒ वि जा॒तम् ॥ ८ ॥
सना॑ पुरा॒णमध्ये॑म्या॒रान्म॒हः पि॒तुर्ज॑नि॒तुर्जा॒मि तन्नः॑ ।
दे॒वासो॒ यत्र॑ पनि॒तार॒ एवैरु॑रौ प॒थि व्यु॑ते त॒स्थुर॒न्तः ॥ ९ ॥
इ॒मं स्तोमं॑ रोदसी॒ प्र ब्र॑वीम्यृदू॒दराः॑ शृणवन्नग्निजि॒ह्वाः ।
मि॒त्रः स॒म्राजो॒ वरु॑णो॒ युवा॑न आदि॒त्यासः॑ क॒वयः॑ पप्रथा॒नाः ॥ १० ॥

अथ षड्विंशो वर्गः ॥ २६ ॥

हिर॑ण्यपाणिः सवि॒ता सु॑जि॒ह्वस्त्रिरा दि॒वो वि॒दथे॒ पत्य॑मानः ।
दे॒वेषु॑ च सवितः॒ श्लोक॒मश्रे॒राद॒स्मभ्य॒मा सु॑व स॒र्वता॑तिम् ॥ ११ ॥
सु॒कृत्सु॑पा॒णिः स्ववाँ॑ ऋ॒तावा॑ दे॒वस्त्वष्टाव॑से॒ तानि॑ नो धात् ।
पू॒ष॒ण्वन्त॑ ऋभवो मादयध्वमू॒र्ध्वग्रा॑वाणो अध्व॒रम॑तष्ट ॥ १२ ॥
वि॒द्युद्र॑था म॒रुत॑ ऋष्टि॒मन्तो॑ दि॒वो मर्या॑ ऋ॒तजा॑ता अ॒यासः॑ ।
सर॑स्वती शृणवन्य॒ज्ञिया॑सो॒ धाता॑ र॒यिं स॒हवी॑रं तुरासः ॥ १३ ॥
विष्णुं॒ स्तोमा॑सः पुरुद॒स्मम॒र्का भग॑स्येव का॒रिणो॒ याम॑नि ग्मन् ।
उ॒रु॒क्र॒मः क॑कु॒हो यस्य॑ पू॒र्वीर्न म॑र्धन्ति युव॒तयो॒ जनि॑त्रीः ॥ १४ ॥
इन्द्रो॒ विश्वै॑र्वी॒र्यै॒३॒॑ः पत्य॑मान उ॒भे आ प॑प्रौ॒ रोद॑सी महि॒त्वा ।
पु॒रं॒द॒रो वृ॑त्र॒हा धृ॒ष्णुषे॑णः सं॒गृभ्या॑ न॒ आ भ॑रा॒ भूरि॑ प॒श्वः ॥ १५ ॥

अथ सप्तविंशो वर्गः ॥ २७ ॥

नास॑त्या मे पि॒तरा॑ बन्धु॒पृच्छा॑ सजा॒त्य॑म॒श्विनो॒श्चारु॒ नाम॑ ।
यु॒वं हि स्थो र॑यि॒दौ नो॑ रयी॒णां दा॒त्रं र॑क्षेथे॒ अक॑वै॒रद॑ब्धा ॥ १६ ॥
म॒हत्तद्वः॑ कवय॒श्चारु॒ नाम॒ यद्ध॑ देवा॒ भव॑थ॒ विश्व॒ इन्द्रे॑ ।
सख॑ ऋ॒भुभिः॑ पुरुहूत प्रि॒येभि॑रि॒मां धियं॑ सा॒तये॑ तक्षता नः ॥ १७ ॥
अ॒र्य॒मा णो॒ अदि॑तिर्य॒ज्ञिया॒सोऽद॑ब्धानि॒ वरु॑णस्य व्र॒तानि॑ ।
यु॒योत॑ नो अनप॒त्यानि॒ गन्तोः॑ प्र॒जावा॑न्नः पशु॒माँ अ॑स्तु गा॒तुः ॥ १८ ॥
दे॒वानां॑ दू॒तः पु॑रु॒ध प्रसू॒तोऽना॑गान्नो वोचतु स॒र्वता॑ता ।
शृ॒णोतु॑ नः पृथि॒वी द्यौरु॒तापः॒ सूर्यो॒ नक्ष॑त्रैरु॒र्व१॒॑न्तरि॑क्षम् ॥ १९ ॥
शृ॒ण्वन्तु॑ नो॒ वृष॑णः॒ पर्व॑तासो ध्रु॒वक्षे॑मास॒ इळ॑या॒ मद॑न्तः ।
आ॒दि॒त्यैर्नो॒ अदि॑तिः शृणोतु॒ यच्छ॑न्तु नो म॒रुतः॒ शर्म॑ भ॒द्रम् ॥ २० ॥
सदा॑ सु॒गः पि॑तु॒माँ अ॑स्तु॒ पन्था॒ मध्वा॑ देवा॒ ओष॑धीः॒ सं पि॑पृक्त ।
भगो॑ मे अग्ने स॒ख्ये न मृ॑ध्या॒ उद्रा॒यो अ॑श्यां॒ सद॑नं पुरु॒क्षोः ॥ २१ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

स्वदस्व हव्या समिषो दिदीह्यस्मद्र्यग्वसं मिमीहि श्रवांसि।
विश्वाँ अग्ने पृत्सु ताञ्जेषि शत्रूनहा विश्वा सुमना दीदिही नः॥ २२॥

[५५] पञ्चपञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—प्रजापतिर्वैश्वामित्रो वाच्यो वा॥ देवता—विश्वे देवाः—१ उषा; २-१० अग्निः; ११ अहोरात्रौ; १२-१४ रोदसी; १५ रोदसी द्युनिशौ वा; १६ दिशः; १७-२२ इन्द्रः पर्जन्यात्मा त्वष्टा वाग्निश्च॥ छन्दः—१, २, ६, ७, ९-१२, १९, २२ निचृत्त्रिष्टुप्; ३ भुरिक्पङ्क्तिः; ४, ८, १३, १६, २१ त्रिष्टुप्; ५, २० स्वराट्पङ्क्तिः; १७ भुरिक्त्रिष्टुप्; १४, १५, १८ विराट्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१, २, ४, ६-१९, २१, २२ धैवतः; ३, ५, २० पञ्चम.॥

अथ अष्टाविंशो वर्गः॥ २८॥

उषसः पूर्वा अध यद् व्यूषुर्महद्वि जज्ञे अक्षरं पदे गोः।
व्रता देवानामुप नु प्रभूषन्महद्देवानामसुरत्वमेकम्॥ १॥
मो षू णो अत्र जुहुरन्त देवा मा पूर्वे अग्ने पितरः पदज्ञाः।
पुराण्योः सद्मनोः केतुरन्तर्महद्देवानामसुरत्वमेकम्॥ २॥
वि मे पुरुत्रा पतयन्ति कामाः शम्यच्छा दीद्ये पूर्व्याणि।
समिद्धे अग्नावृतमिद्वदेम महद्देवानामसुरत्वमेकम्॥ ३॥
समानो राजा विभृतः पुरुत्रा शये शयासु प्रयुतो वनानु।
अन्या वत्सं भरति क्षेति माता महद्देवानामसुरत्वमेकम्॥ ४॥
आक्षित्पूर्वास्वपरा अनूरुत्सद्यो जातासु तरुणीष्वन्तः।
अन्तर्वतीः सुवते अप्रवीता महद्देवानामसुरत्वमेकम्॥ ५॥

अथ एकोनत्रिंशो वर्गः॥ २९॥

शयुः परस्तादध नु द्विमाताबन्धनश्चरति वत्स एकः।
मित्रस्य ता वरुणस्य व्रतानि महद्देवानामसुरत्वमेकम्॥ ६॥
द्विमाता होता विदथेषु सम्राळन्वग्रं चरति क्षेति बुध्नः।
प्र रण्यानि रण्यवाचो भरन्ते महद्देवानामसुरत्वमेकम्॥ ७॥
शूरस्येव युध्यतो अन्तमस्य प्रतीचीनं ददृशे विश्वमायत्।
अन्तर्मतिश्चरति निष्षिधं गोर्महद्देवानामसुरत्वमेकम्॥ ८॥
नि वेवेति पलितो दूत आस्वन्तर्महांश्चरति रोचनेन।
वपूंषि बिभ्रदभि नो वि चष्टे महद्देवानामसुरत्वमेकम्॥ ९॥
विष्णुर्गोपाः परमं पाति पाथः प्रिया धामान्यमृता दधानः।
अग्निष्टा विश्वा भुवनानि वेद महद्देवानामसुरत्वमेकम्॥ १०॥

अथ त्रिंशो वर्गः॥ ३०॥

नाना चक्राते यम्या वपूंषि तयोरन्यद्रोचते कृष्णमन्यत्।
श्यावी च यदरुषी च स्वसारौ महद्देवानामसुरत्वमेकम्॥ ११॥
माता च यत्र दुहिता च धेनू सबर्दुघे धापयेते समीची।
ऋतस्य ते सदसीळे अन्तर्महद्देवानामसुरत्वमेकम्॥ १२॥
अन्यस्या वत्सं रिहती मिमाय कया भुवा नि दधे धेनुरूधः।
ऋतस्य सा पयसापिन्वतेळा महद्देवानामसुरत्वमेकम्॥ १३॥
पद्या वस्ते पुरुरूपा वपूंष्यूर्ध्वा तस्थौ त्र्यविं रेरिहाणा।
ऋतस्य सद्म वि चरामि विद्वान्महद्देवानामसुरत्वमेकम्॥ १४॥
पदेइव निहिते दस्मे अन्तस्तयोरन्यद् गुह्यमाविरन्यत्।
सधीचीना पथ्या सा विषूची महद्देवानामसुरत्वमेकम्॥ १५॥

अथ एकत्रिंशो वर्गः॥ ३१॥

आ धेनवो धुनयन्तामशिश्वीः सबर्दुघाः शशया अप्रदुग्धाः।
नव्यानव्या युवतयो भवन्तीर्महद्देवानामसुरत्वमेकम्॥ १६॥
यदन्यासु वृषभो रोरवीति सो अन्यस्मिन्यूथे नि दधाति रेतः।
स हि क्षपावान्त्स भगः स राजा महद्देवानामसुरत्वमेकम्॥ १७॥
वीरस्य नु स्वश्व्यं जनासः प्र नु वोचाम विदुरस्य देवाः।
षोळ्हा युक्ताः पञ्चपञ्चा वहन्ति महद्देवानामसुरत्वमेकम्॥ १८॥
देवस्त्वष्टा सविता विश्वरूपः पुपोष प्रजाः पुरुधा जजान।
इमा च विश्वा भुवनान्यस्य महद्देवानामसुरत्वमेकम्॥ १९॥
मही समैरच्चम्वा समीची उभे ते अस्य वसुना न्यृष्टे।
शृण्वे वीरो विन्दमानो वसूनि महद्देवानामसुरत्वमेकम्॥ २०॥
इमां च नः पृथिवीं विश्वधायाप क्षेति हितमित्रो न राजा।
पुरःसदः शर्मसदो न वीरा महद्देवानामसुरत्वमेकम्॥ २१॥
निष्षिध्वरीस्त ओषधीरुतापो रयिं त इन्द्र पृथिवी बिभर्ति।
सखायस्ते वामभाजः स्याम महद्देवानामसुरत्वमेकम्॥ २२॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. इति तृतीयाऽष्टके तृतीयोऽध्यायः॥

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अथ चतुर्थोऽध्यायः

[५६] षट्पञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—प्रजापतिर्वैश्वामित्रो वाच्यो वा॥ देवता—विश्वे देवाः॥ छन्दः—१, ६, ८ निचृत्त्रिष्टुप्; २ भुरिक्पङ्क्तिः; ३, ४ विराट्त्रिष्टुप्; ५, ७ त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१, ३-८ धैवतः; २ पञ्चमः॥

अथ प्रथमो वर्गः॥ १॥

न ता मिनन्ति मायिनो न धीरा व्रता देवानां प्रथमा ध्रुवाणि।
न रोदसी अद्रुहा वेद्याभिर्न पर्वता निनमे तस्थिवांसः॥ १॥
षड् भ्राराँ एको अचरन्बिभर्तृतं वर्षिष्ठमुप गाव आगुः।
तिस्रो महीरुपरास्तस्थुरत्या गुहा द्वे निहिते दर्शयेका ॥ २॥
त्रिपाजस्यो वृषभो विश्वरूप उत त्र्युधा पुरुध प्रजावान् ।
त्र्यनीकः पत्यते माहिनावान्त्स रेतोधा वृषभः शश्वतीनाम्॥ ३॥
अभीकं आसां पदवीरबोध्यादित्यानामहे चारु नाम ।
आपश्चिदस्मा अरमन्त देवीः पृथग्व्रजन्तीः परि षीमवृञ्जन्॥ ४॥
त्री षधस्था सिन्धवस्त्रिः कवीनामुत त्रिमाता विदथेषु सम्राट्।
ऋतावरीर्योषणास्तिस्रो अप्यास्त्रिरा दिवो विदथे पत्यमानाः॥ ५॥
त्रिरा दिवः संवितर्वार्याणि दिवेदिव आ सुव त्रिर्नो अह्नः।
त्रिधातु राय आ सुवा वसूनि भगं त्रातर्धिषणे सातये धाः॥ ६॥
त्रिरा दिवः संविता सोषवीति राजाना मित्रावरुणा सुपाणी।
आपश्चिदस्य रोदसी चिदुर्वी रत्नं भिक्षन्त सवितुः सवाय॥ ७॥
त्रिरुत्तमा दूणशा रोचनानि त्रयो राजन्त्यसुरस्य वीराः।
ऋतावान इषिरा दूळभासस्त्रिरा दिवो विदथे सन्तु देवाः॥ ८॥

[५७] सप्तपञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—विश्वामित्रः॥ देवता—विश्वे देवाः॥ छन्दः—१, ३, ४ त्रिष्टुप्; २, ५, ६, निचृत्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः॥

अथ द्वितीयो वर्गः॥ २॥

प्र मे विविक्वाँ अविदन्मनीषां धेनुं चरन्तीं प्रयुतामगोपाम्।
सद्यश्चिद्या दुदुहे भूरि धासेरिन्द्रस्तदग्निः पनितारो अस्याः॥ १॥
इन्द्रः सु पूषा वृषणा सुहस्ता दिवो न प्रीताः शंशयं दुदुह्रे।
विश्वे यदस्यां रणयन्त देवाः प्र वोऽत्र वसवः सुम्नमश्याम्॥ २॥
या जामयो वृष्णं इच्छन्ति शक्तिं नमस्यन्तीर्जानते गर्भमस्मिन्।
अच्छा पुत्रं धेनवो वावशाना महश्चरन्ति बिभ्रतं वपूंषि॥ ३॥
अच्छा विवक्मि रोदसी सुमेके ग्राव्णो युजानो अध्वरे मनीषा।
इमा उ ते मनवे भूरिवारा ऊर्ध्वा भवन्ति दर्शता यजत्राः॥ ४॥
या ते जिह्वा मधुमती सुमेधा अग्ने देवेषूच्यत उरूची।
तयेह विश्वाँ अवसे यजत्राना सादय पायया चा मधूनि॥ ५॥
या ते अग्ने पर्वतस्येव धारासश्चन्ती पीपयदेव चित्रा ।
तामस्मभ्यं प्रमतिं जातवेदो वसो रास्व सुमतिं विश्वजन्याम्॥ ६॥

[५८] अष्टपञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—विश्वामित्रः॥ देवता—अश्विनौ॥ छन्दः—१, ८, ९ त्रिष्टुप्; २-५, ७ निचृत्त्रिष्टुप्; ६ भुरिक्पङ्क्तिः॥ स्वरः—१-५, ७-९ धैवतः; ६ पञ्चमः॥

अथ तृतीयो वर्गः॥ ३॥

धेनुः प्रत्नस्य काम्यं दुहानान्तः पुत्रश्चरति दक्षिणायाः।
आ द्योतनिं वहति शुभ्रयामोषसः स्तोमो अश्विनावजीगः॥ १॥
सुयुग्वहन्ति प्रति वामृतेनोर्ध्वा भवन्ति पितरेव मेधाः।
जरेथामस्मद्रि पणेर्मनीषां युवोरवश्चकृमा यातमर्वाक् ॥ २॥
सुयुग्भिरश्वैः सुवृता रथेन दस्राविमं शृणुतं श्लोकमद्रेः।
किमङ्ग वां प्रत्यवर्तिं गमिष्ठाहुर्विप्रासो अश्विना पुराजाः॥ ३॥
आ मन्येथामा गतं कच्चिदेवैर्विश्वे जनासो अश्विना हवन्ते।
इमा हि वां गोऋजीका मधूनि प्र मित्रासो न ददुरुस्रो अग्रे॥ ४॥
तिरः पुरू चिदश्विना रजांस्याङ्गूषो वां मघवाना जनेषु।
एह यातं पथिभिर्देवयानैर्दस्रावि मे वां निधयो मधूनाम्॥ ५॥

अथ चतुर्थो वर्गः॥ ४॥

पुराणमोकः सख्यं शिवं वां युवोर्नरा द्रविणं जह्नव्यम्।
पुनः कृण्वाना सख्या शिवानि मध्वा मदेम सह नू समानाः॥ ६॥
अश्विना वायुना युवं सुदक्षा नियुद्भिश्च सजोषसा युवाना।
नासत्या तिरोअह्न्यं जुषाणा सोमं पिबतमस्रिधा सुदानू॥ ७॥
अश्विना परि वामिषः पुरूचीरीयुर्गीर्भिर्यतमाना अमृध्राः।
रथो ह वामृतज्ञा अद्रिजूतः परि द्यावापृथिवी याति सद्यः॥ ८॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अश्विना मधुषत्तमो युवाकुः सोमस्तं पातमा गतं दुरोणे।
रथो ह वां भूरि वर्पः करिक्रत्सुतावतो निष्कृतमागमिष्ठः ॥ ९ ॥

[५९] एकोनषष्टितमं सूक्तम्

ऋषिः—विश्वामित्रः ॥ देवता—मित्रः ॥ छन्दः—१, २, ५, त्रिष्टुप्; ३ निचृत्त्रिष्टुप्; ४ भुरिक्पङ्क्तिः; ६, ९ निचृद्गायत्री; ७, ८ गायत्री ॥ स्वरः—१-३, ५ धैवतः; ४ पञ्चमः; ६-९ षड्जः ॥

अथ पञ्चमो वर्गः ॥ ५ ॥

मित्रो जनान्यातयति ब्रुवाणो मित्रो दाधार पृथिवीमुत द्याम्।
मित्रः कृष्टीरनिमिषाभि चष्टे मित्राय हव्यं घृतवज्जुहोत ॥ १ ॥
प्र स मित्र मर्तो अस्तु प्रयस्वान्यस्त आदित्य शिक्षति व्रतेन।
न हन्यते न जीयते त्वोतो नैनमंहो अश्नोत्यन्तितो न दूरात् ॥ २ ॥
अनमीवास इळया मदन्तो मितज्ञवो वरिमन्ना पृथिव्याः।
आदित्यस्य व्रतमुपक्षियन्तो वयं मित्रस्य सुमतौ स्याम ॥ ३ ॥
अयं मित्रो नमस्यः सुशेवो राजा सुक्षत्रो अजनिष्ट वेधाः।
तस्य वयं सुमतौ यज्ञियस्यापि भद्रे सौमनसे स्याम ॥ ४ ॥
महाँ आदित्यो नमसोपसद्यो यातयज्जनो गृणते सुशेवः।
तस्मा एतत्पन्यतमाय जुष्टमग्नौ मित्राय हविरा जुहोत ॥ ५ ॥

अथ षष्ठो वर्गः ॥ ६ ॥

मित्रस्य चर्षणीधृतोऽवो देवस्य सानसि। द्युम्नं चित्रश्रवस्तमम् ॥ ६ ॥
अभि यो महिना दिवं मित्रो बभूव सप्रथाः। अभि श्रवोभिः पृथिवीम् ॥ ७ ॥
मित्राय पञ्च येमिरे जना अभिष्टिशवसे। स देवान्विश्वान्बिभर्ति ॥ ८ ॥
मित्रो देवेष्वायुषु जनाय वृक्तबर्हिषे। इषं दृष्टव्रता अकः ॥ ९ ॥

[६०] षष्टितमं सूक्तम्

ऋषिः—विश्वामित्रः ॥ देवता—ऋभवः ॥ छन्दः—१-३ जगती; ४, ५ निचृज्जगती; ६ विराड्जगती; ७ भुरिग्जगती ॥ स्वरः—निषादः ॥

अथ सप्तमो वर्गः ॥ ७ ॥

हुवेहं वो मनसा बन्धुता नर उशिजो जग्मुरभि तानि वेदसा।
याभिर्मायाभिः प्रतिजूतिवर्पसः सौधन्वना यज्ञियं भागमानश ॥ १ ॥
याभिः शचीभिश्चमसाँ अपिंशत यया धिया गामरिणीत चर्मणः।
येन हरी मनसा निरतक्षत तेन देवत्वमृभवः समानश ॥ २ ॥

इन्द्रस्य सख्यमृभवः समानशुर्मनोर्नपातो अपसो दधन्विरे ।
सौधन्वनासो अमृतत्वमेरिरे विष्वी शमीभिः सुकृतः सुकृत्यया ॥ ३ ॥
इन्द्रेण याथ सरथं सुते सचाँ अथो वशानां भवथा सह श्रिया।
न वः प्रतिमै सुकृतानि वाघतः सौधन्वना ऋभवो वीर्याणि च ॥ ४ ॥
इन्द्र ऋभुभिर्वाजवद्भिः समुक्षितं सुतं सोममा वृषस्वा गभस्त्योः।
धियेषितो मघवन्दाशुषो गृहे सौधन्वनेभिः सह मत्स्वा नृभिः ॥ ५ ॥
इन्द्र ऋभुमान्वाजवान्मत्स्वेह नोऽस्मिन्त्सवने शच्या पुरुष्टुत ।
इमानि तुभ्यं स्वसराणि येमिरे व्रता देवानां मनुषश्च धर्मभिः ॥ ६ ॥
इन्द्र ऋभुभिर्वाजिभिर्वाजयन्निह स्तोमं जरितुरुप याहि यज्ञियम्।
शतं केतेभिरिषिरेभिरायवे सहस्रणीथो अध्वरस्य होमनि ॥ ७ ॥

[६१] एकषष्टितमं सूक्तम्

ऋषिः—विश्वामित्रः ॥ देवता—उषाः ॥ छन्दः—१, ५, ७ त्रिष्टुप्; २ विराट्त्रिष्टुप्; ३, ४ भुरिक्पङ्क्तिः; ६ निचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१, २, ५-७ धैवतः; ३, ४ पञ्चमः ॥

अथ : रष्टमो वर्गः ॥ ८ ॥

उषो वाजेन वाजिनि प्रचेताः स्तोमं जुषस्व गृणतो मघोनि।
पुराणी देवि युवतिः पुरंधिरनु व्रतं चरसि विश्ववारे ॥ १ ॥
उषो देव्यमर्त्या वि भाहि चन्द्ररथा सूनृता ईरयन्ती।
आ त्वा वहन्तु सुयमासो अश्वा हिरण्यवर्णा पृथुपाजसो ये ॥ २ ॥
उषः प्रतीची भुवनानि विश्वोर्ध्वा तिष्ठस्यमृतस्य केतुः।
समानमर्थं चरणीयमाना चक्रमिव नव्यस्या ववृत्स्व ॥ ३ ॥
अव स्यूमेव चिन्वती मघोन्युषा याति स्वसरस्य पत्नी।
स्वर्जनन्ती सुभगा सुदंसा आन्ताद्दिवः पप्रथ आ पृथिव्याः ॥ ४ ॥
अच्छा वो देवीमुषसं विभातीं प्र वो भरध्वं नमसा सुवृक्तिम्।
ऊर्ध्वं मधुधा दिवि पाजो अश्रेत्र रोचना रुरुचे रण्वसंदृक् ॥ ५ ॥
ऋतावरी दिवो अर्कैरबोध्या रेवती रोदसी चित्रमस्थात्।
आयतीमग्न उषसं विभातीं वाममेषि द्रविणं भिक्षमाणः ॥ ६ ॥
ऋतस्य बुध्न उषसामिषण्यन्वृषा मही रोदसी आ विवेश।
मही मित्रस्य वरुणस्य माया चन्द्रेव भानुं वि दधे पुरुत्रा ॥ ७ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

[६२] द्विषष्टितमं सूक्तम्

ऋषिः—१-१५ विश्वामित्रः; १६-१८ विश्वामित्रो जमदग्निर्वा॥ देवता—१-३ इन्द्रावरुणौ; ४-६ बृहस्पतिः; ७-९ पूषा; १०-१२ सविता; १३-१५ सोमः; १६-१८ मित्रावरुणौ॥ छन्दः—१ विराट्त्रिष्टुप्; २ त्रिष्टुप्; ३ निचृत् त्रिष्टुप्; ४, ५, १०, ११, १६ निचृद्गायत्री; ६ त्रिपाद्गायत्री; ७-९, १२-१५, १७, १८ गायत्री॥ स्वरः—१-३ धैवतः; ४-१८ षड्जः॥

अथ नवमो वर्गः॥ ९॥

इ॒मा उ॑ वां भृ॒मयो॒ मन्य॑माना यु॒वाव॑ते॒ न तुज्या॑ अभूवन्।
क्व१॒॑ त्यदि॑न्द्रावरुणा॒ यशो॑ वां॒ येन॑ स्मा॒ सिनं॒ भर॑थः॒ सखि॑भ्यः॥ १॥
अ॒यमु॑ वां पुरु॒तमो॑ रयी॒यञ्छ॑श्वत्त॒ममव॑से जोहवीति ।
स॒जोषा॑विन्द्रावरुणा म॒रुद्भि॑र्दि॒वा पृ॑थि॒व्या शृ॑णुतं॒ हवं॑ मे॥ २॥
अ॒स्मे तदि॑न्द्रावरुणा॒ वसु॑ ष्याद॒स्मे र॒यिर्म॑रुतः॒ सर्व॑वीरः।
अ॒स्मान्वरू॑त्रीः शर॒णैर॑वन्त्व॒स्मान्होत्रा॒ भार॑ती॒ दक्षि॑णाभिः॥ ३॥
बृह॑स्पते जु॒षस्व॑ नो ह॒व्यानि॑ विश्वदेव्य। रास्व॒ रत्ना॑नि दा॒शुषे॑॥ ४॥
शुचि॑म॒र्कैर्बृह॒स्पति॑मध्व॒रेषु॑ नमस्यत। अना॒म्योज॒ आ च॑के॥ ५॥

अथ दशमो वर्गः॥ १०॥

वृ॒ष॒भं च॑र्षणी॒नां वि॒श्वरू॑प॒मदा॑भ्यम्। बृह॒स्पतिं॒ वरे॑ण्यम् ॥ ६॥
इ॒यं ते॑ पूषन्नाघृणे सुष्टु॒तिर्दे॑व॒ नव्य॑सी। अ॒स्माभि॒स्तुभ्यं॑ शस्यते॥ ७॥
तां जु॑षस्व॒ गिरं॒ मम॑ वाज॒यन्ती॑मवा॒ धिय॑म्। व॒धूयुरि॑व॒ योष॑णाम्॥ ८॥
यो विश्वा॒भि वि॒पश्य॑ति॒ भुव॑ना॒ सं च॒ पश्य॑ति। स नः॑ पू॒षावि॒ता भु॑वत्॥ ९॥
तत्स॑वि॒तुर्वरे॑ण्यं॒ भर्गो॑ दे॒वस्य॑ धीमहि। धियो॒ यो नः॑ प्रचो॒दया॑त्॥ १०॥

अथ एकादशो वर्गः॥ ११॥

दे॒वस्य॑ सवि॒तुर्व॒यं वा॑ज॒यन्तः॒ पुरं॑ध्या। भग॑स्य रा॒तिमी॑महे॥ ११॥
दे॒वं नरः॑ सवि॒तारं॒ विप्रा॑ य॒ज्ञैः सु॑वृ॒क्तिभिः॑। न॒म॒स्यन्ति॑ धि॒येषि॒ताः॥ १२॥
सोमो॑ जिगाति गातु॒विद्दे॒वाना॑मेति निष्कृ॒तम्। ऋ॒तस्य॒ योनि॑मा॒सद॑म्॥ १३॥
सोमो॑ अ॒स्मभ्यं॑ द्वि॒पदे॒ चतु॑ष्पदे च प॒शवे॑। अ॒न॒मी॒वा इष॑स्करत्॥ १४॥
अ॒स्माक॒मायु॑र्व॒र्धय॑न्न॒भिमा॑तीः॒ सह॑मानः। सोमः॑ स॒धस्थ॒मास॑दत्॥ १५॥
आ नो॑ मित्रावरुणा घृ॒तैर्गव्यू॑तिमुक्षतम्। मध्वा॒ रजां॑सि सुक्रतू॥ १६॥
उ॒रु॒शंसा॑ नमो॒वृधा॑ म॒ह्म दक्ष॑स्य राजथः। द्राघि॑ष्ठाभिः शुचिव्रता॥ १७॥
गृ॒णा॒ना ज॒मद॑ग्निना॒ योना॑वृ॒तस्य॑ सीदतम्। पा॒तं सोम॑मृतावृधा॥ १८॥

इति तृतीयं मण्डलम्॥

अथ चतुर्थं मण्डलम्

प्रथमोऽनुवाकः

[१] प्रथमं सूक्तम्

ऋषिः—वामदेवः॥ देवता—१, ५-२० अग्निः; २-४ अग्निर्वा वरुणश्च॥ छन्दः—१ स्वराडतिशक्वरी; २ अतिजगती; ३ अष्टिः; ४, ६ भुरिक्पङ्क्तिः; ५, १८, २० स्वराट्पङ्क्तिः; ७, ९, १५, १७, १९ विराट्त्रिष्टुप्; ८, १०-१२, १६ निचृत्त्रिष्टुप्; १३, १४ त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१, ४-६, १८, २० पञ्चमः; २ निषादः; ३ मध्यमः; ७-१७, १९ धैवतः॥

अथ द्वादशो वर्गः॥ १२॥

त्वां ह्य॑ग्ने॒ सद॒मित्स॑म॒न्यवो॑ दे॒वासो॑ दे॒वम॑र॒तिं न्ये॑रि॒र इति॒ क्रत्वा॑ न्येरि॒रे ।
अम॑र्त्यं यजत॒ मर्त्ये॒ष्वा दे॒वमादे॑वं जनत॒ प्रचे॑तसं
विश्व॒मादे॑वं जनत॒ प्रचे॑तसम् ॥ १॥
स भ्रात॑रं॒ वरु॑णमग्न॒ आ व॑वृत्स्व दे॒वाँ अच्छा॑ सुम॒ती य॒ज्ञव॑नसं॒
ज्येष्ठं॑ य॒ज्ञव॑नसम्। ऋ॒तावा॑नमादि॒त्यं च॑र्षणी॒धृतं॒ राजा॑नं चर्षणी॒धृत॑म् ॥ २॥
सखे॒ सखा॑यम॒भ्या व॑वृत्स्वा॒शुं न च॒क्रं रथ्ये॑व॒ रंह्या॒स्मभ्यं॑ दस्म॒ रंह्या॑ ।
अग्ने॑ मृळी॒कं वरु॑णे॒ सचा॑ विदो म॒रुत्सु॑ वि॒श्वभा॑नुषु ।
तो॒काय॑ तु॒जे शु॑शुचान॒ शं कृ॑ध्य॒स्मभ्यं॑ दस्म॒ शं कृ॑धि ॥ ३॥
त्वं नो॑ अग्ने॒ वरु॑णस्य वि॒द्वान्दे॒वस्य॒ हेळोऽव॑ यासिसीष्ठाः ।
यजि॑ष्ठो॒ वह्नि॑तमः॒ शोशु॑चानो॒ विश्वा॒ द्वेषां॑सि॒ प्र मु॑मुग्ध्य॒स्मत् ॥ ४॥
स त्वं नो॑ अग्नेऽव॒मो भ॑वो॒ती नेदि॑ष्ठो अ॒स्या उ॒षसो॒ व्यु॑ष्टौ ।
अव॑ यक्ष्व नो॒ वरु॑णं॒ ररा॑णो वी॒हि मृ॑ळी॒कं सु॒हवो॑ न एधि ॥ ५॥

अथ त्रयोदशो वर्गः॥ १३॥

अ॒स्य श्रेष्ठा॑ सु॒भग॑स्य सं॒दृग्दे॒वस्य॑ चि॒त्रत॑मा॒ मर्त्ये॑षु।
शुचि॑ घृ॒तं न त॒प्तमघ्न्या॑याः स्पा॒र्हा दे॒वस्य॑ मं॒हने॑व धे॒नोः॥ ६॥
त्रिर॑स्य॒ ता प॑र॒मा स॑न्ति स॒त्या स्पा॒र्हा दे॒वस्य॒ जनि॑मान्य॒ग्नेः।
अ॒न॒न्ते अ॒न्तः परि॑वीत॒ आगा॒च्छुचिः॑ शु॒क्रो अ॒र्यो रोरु॑चानः॥ ७॥
स दू॒तो विश्वेद॒भि व॑ष्टि॒ सद्मा॒ होता॒ हिर॑ण्यरथो॒ रंसु॑जिह्वः।
रो॒हिद॑श्वो वपु॒ष्यो॑ वि॒भावा॒ सदा॑ र॒ण्वः पि॑तु॒मती॑व सं॒सत्॥ ८॥
स चे॑तय॒न्मनु॑षो य॒ज्ञब॑न्धुः॒ प्र तं म॒ह्या र॑श॒नया॑ नयन्ति।
स क्षे॑त्यस्य॒ दुर्या॑सु॒ साध॑न्दे॒वो मर्त॑स्य सधनि॒त्वमा॑प॥ ९॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

स तू नो अग्निर्नयतु प्रजानन्नच्छा रत्नं देवभक्तं यदस्य।
धिया यद्विश्वे अमृता अकृण्वन्द्यौष्पिता जनिता सत्यमुक्षन्॥ १०॥

अथ चतुर्दशो वर्गः॥ १४॥

स जायत प्रथमः पस्त्यासु महो बुध्ने रजसो अस्य योनौ।
अपादशीर्षा गुहमानो अन्तायोर्युवानो वृषभस्य नीळे॥ ११॥
प्र शर्ध आर्त प्रथमं विपन्याँ ऋतस्य योना वृषभस्य नीळे।
स्पार्हो युवा वपुष्यो विभावा सप्त प्रियासोऽजनयन्त वृष्णे॥ १२॥
अस्माकमत्र पितरो मनुष्या अभि प्र सेदुर्ऋतमाशुषाणाः।
अश्मव्रजाः सुदुघा वव्रे अन्तरुदुस्रा आजन्नुषसो हुवानाः॥ १३॥
ते मर्मृजत ददृवांसो अद्रिं तदेषामन्ये अभितो वि वोचन्।
पश्वयन्त्रासो अभि कारमर्चन्विदन्त ज्योतिश्चकृपन्त धीभिः॥ १४॥
ते गव्यता मनसा दृध्रमुब्धं गा येमानं परि षन्तमद्रिम्।
दृळ्हं नरो वचसा दैव्येन व्रजं गोमन्तमुशिजो वि वव्रुः॥ १५॥

अथ पञ्चदशो वर्गः॥ १५॥

ते मन्वत प्रथमं नाम धेनोस्त्रिः सप्त मातुः परमाणि विन्दन्।
तज्जानतीरभ्यनूषत व्रा आविर्भुवदरुणीर्यशसा गोः॥ १६॥
नेशत्तमो दुधितं रोचत द्यौरुद्देव्या उषसो भानुरर्त।
आ सूर्यो बृहतस्तिष्ठदज्राँ ऋजु मर्तेषु वृजिना च पश्यन्॥ १७॥
आदित्पश्चा बुबुधाना व्यख्यन्नादिद्रत्नं धारयन्त द्युभक्तम्।
विश्वे विश्वासु दुर्यासु देवा मित्र धिये वरुण सत्यमस्तु॥ १८॥
अच्छा वोचेय शुशुचानमग्निं होतारं विश्वभरसं यजिष्ठम्।
शुच्यूधो अतृणन्न गवामन्धो न पूतं परिषिक्तमंशोः॥ १९॥
विश्वेषामदितिर्यज्ञियानां विश्वेषामतिथिर्मानुषाणाम्।
अग्निर्देवानामव आवृणानः सुमृळीको भवतु जातवेदाः॥ २०॥

[२] द्वितीयं सूक्तम्

ऋषिः—वामदेवः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—१, १९ पङ्क्तिः; २, ४-७, ९, १३, १५, १७, १८, २० निचृत्त्रिष्टुप्; ३, १६ त्रिष्टुप्; ८, १०, ११ विराट्त्रिष्टुप्; १२ निचृत्पङ्क्तिः; १४ स्वराट्पङ्क्तिः॥ स्वरः—१, १२, १४, १९ पञ्चमः; २-११, १३, १५-१८, २० धैवतः॥

अथ षोडशो वर्गः॥ १६॥

यो मर्त्येष्वमृत ऋतावा देवो देवेष्वरतिर्निधायि।
होता यजिष्ठो मह्ना शुचध्यै हव्यैरग्निर्मनुष ईरयध्यै॥ १॥

इह त्वं सूनो सहसो नो अद्य जातो जाताँ उभयाँ अन्तरग्ने।
दूत ईयसे युयुजान ऋष्व ऋजुमुष्क उन्वृषणः शुक्रांश्च॥ २॥
अत्या वृधस्नू रोहिता घृतस्नू ऋतस्य मन्ये मनसा जविष्ठा।
अन्तरीयसे अरुषा युजानो युष्मांश्च देवान्विश आ च मर्तान्॥ ३॥
अर्यमणं वरुणं मित्रमेषामिन्द्राविष्णू मरुतो अश्विनोत।
स्वश्वो अग्ने सुरथः सुराधा एदु वह सुहविषे जनाय॥ ४॥
गोमाँ अग्नेऽविमाँ अश्वी यज्ञो नृवत्सखा सदमिदप्रमृष्यः।
इळावाँ एषो असुर प्रजावान्दीर्घो रयिः पृथुबुध्नः सभावान्॥ ५॥

अथ सप्तदशो वर्गः॥ १७॥

यस्ते द्रुग्धं जभरत्सिष्विदानो मूर्धानं वा ततपते त्वाया।
भुवस्तस्य स्वतवाँः पायुरग्ने विश्वस्मात्सीमघायत उरुष्य॥ ६॥
यस्ते भरादन्नियते चिदन्नं निशिषन्मन्द्रमतिथिमुदीरत्।
आ देवयुरिनधते दुरोणे तस्मिन्नयिर्ध्रुवो अस्तु दास्वान्॥ ७॥
यस्त्वा दोषा य उषसि प्रशंसात्प्रियं वा त्वा कृणवते हविष्मान्।
अश्वो न स्वे दम आ हेम्यावान्तमंहसः पीपरो दाश्वांसम्॥ ८॥
यस्तुभ्यमग्ने अमृताय दाशद्दुवस्त्वे कृणवते यतस्रुक्।
न स राया शशमानो वि योषन्नैनमंहुः परि वरदघायोः॥ ९॥
यस्य त्वमग्ने अध्वरं जुजोषो देवो मर्तस्य सुधितं ररांणः।
प्रीतेदसद्धोत्रा सा यविष्ठासाम यस्य विधतो वृधासः॥ १०॥

अथ अष्टादशो वर्गः॥ १८॥

चित्तिमचित्तिं चिनवद्वि विद्वान्पृष्ठेव वीता वृजिना च मर्तान्।
राये च नः स्वपत्याय देव दितिं च रास्वादितिमुरुष्य॥ ११॥
कविं शशासुः कवयोऽदब्धा निधारयन्तो दुर्यास्वायोः।
अतस्त्वं दृश्याँ अग्न एतान्पड्भिः पश्येरद्धुताँ अर्य एवैः॥ १२॥
त्वमग्ने वाघते सुप्रणीतिः सुतसोमाय विधते यविष्ठ।
रत्नं भर शशमानाय घृष्वे पृथु श्चन्द्रमवसे चर्षणिप्राः॥ १३॥
अधा ह यद्वयमग्ने त्वाया पड्भिर्हस्तेभिश्चकृमा तनूभिः।
रथं न क्रन्तो अपसा भुरिजोर्ऋतं येमुः सुध्य आशुषाणाः॥ १४॥
अधा मातुरुषसः सप्त विप्रा जायेमहि प्रथमा वेधसो नॄन्।
दिवस्पुत्रा अङ्गिरसो भवेमाद्रिं रुजेम धनिनं शुचन्तः॥ १५॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अथ एकोनविंशो वर्गः ॥ १९ ॥

अधा यथा नः पितरः परासः प्रत्नासो अग्न ऋतमाशुषाणाः।
शुचीदयन्दीधितिमुक्थशासः क्षामा भिन्दन्तो अरुणीरप व्रन् ॥ १६ ॥
सुकर्मीणः सुरुचो देवयन्तोऽयो न देवा जनिमा धमन्तः।
शुचन्तो अग्निं ववृधन्त इन्द्रमूर्वं गव्यं परिषदन्तो अग्मन् ॥ १७ ॥
आ यूथेव क्षुमति पश्वो अख्यद्देवानां यज्जनिमान्त्युग्र।
मर्तानां चिदुर्वशीरकृप्रन्वृधे चिदर्य उपरस्यायोः ॥ १८ ॥
अकर्म ते स्वपसो अभूम ऋतमवस्रन्नुषसो विभातीः ।
अनूनमग्निं पुरुधा सुश्चन्द्रं देवस्य मर्मृजतश्चारु चक्षुः ॥ १९ ॥
एता ते अग्न उचथानि वेधोऽवोचाम कवये ता जुषस्व।
उच्छोचस्व कृणुहि वस्यसो नो महो रायः पुरुवार प्र यन्धि ॥ २० ॥

[३] तृतीयं सूक्तम्

ऋषिः—वामदेवः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१, ५, ८, १०, १२, १५ निचृत्त्रिष्टुप्; २, १३, १४ विराट्त्रिष्टुप्; ३, ७, ९ त्रिष्टुप्; ४ स्वराड्बृहती; ६, ११, १६ पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१-३, ५, ७-१०,१२-१५ धैवतः; ४ मध्यमः; ६, ११, १६ पञ्चमः ॥

अथ विंशो वर्गः ॥ २० ॥

आ वो राजानमध्वरस्य रुद्रं होतारं सत्ययजं रोदस्योः।
अग्निं पुरा तनयित्नोरचित्ताद्धिरण्यरूपमवसे कृणुध्वम् ॥ १ ॥
अयं योनिश्चकृमा यं वयं ते जायेव पत्य उशती सुवासाः।
अर्वाचीनः परिवीतो नि षीदेमा उ ते स्वपाक प्रतीचीः ॥ २ ॥
आशृण्वते अदृपिताय मन्म नृचक्षसे सुमृळीकाय वेधः।
देवाय शस्तिममृताय शंस ग्रावेव सोता मधुषुद्यमीळे ॥ ३ ॥
त्वं चिन्नः शम्या अग्ने अस्या ऋतस्य बोध्यृतचित्स्वाधीः।
कदा त उक्था सधमाद्यानि कदा भवन्ति सख्या गृहे ते ॥ ४ ॥
कदा त उक्था संधमाद्यानि कदा भवन्ति सख्या गृहे ते ॥ ४ ॥
कथा ह तद्वरुणाय त्वमग्ने कथा दिवे गर्हसे कन्न आगः।
कथा मित्राय मीळ्हुषे पृथिव्यै ब्रवः कदर्यम्णे कद्भगाय ॥ ५ ॥

अथ एकविंशो वर्गः ॥ २१ ॥

कद्विष्ण्यासु वृधसानो अग्ने कद्वाताय प्रतवसे शुभंये।
परिज्मने नासत्याय क्षे ब्रवः कदग्ने रुद्राय नृघ्ने ॥ ६ ॥
कथा महे पुष्टिंभराय पूष्णे कद्रुद्राय सुमखाय हविर्दे।
कद्विष्णव उरुगायाय रेतो ब्रवः कदग्ने शर्वे बृहत्यै ॥ ७ ॥
कथा शर्धाय मरुतामृताय कथा सूरे बृहते पृच्छ्यमानः।
प्रति ब्रवोऽदितये तुराय साधा दिवो जातवेदश्चिकित्वान् ॥ ८ ॥
ऋतेन ऋतं नियतमीळ आ गोरामा सचा मधुमत्पक्वमग्ने।
कृष्णा सती रुशता धासिनैषा जामर्येण पयसा पीपाय ॥ ९ ॥
ऋतेन हि ष्मा वृषभश्चिदक्तः पुमाँ अग्निः पयसा पृष्ठ्येन।
अस्पन्दमानो अचरद्वयोधा वृषा शुक्रं दुदुहे पृश्निरूधः ॥ १० ॥

अथ द्वाविंशो वर्गः ॥ २२ ॥

ऋतेनाद्रिं व्यसन्भिदन्तः समङ्गिरसो नवन्त गोभिः ।
शुनं नरः परि षदन्नुषासमाविः स्वरभवज्जाते अग्नौ ॥ ११ ॥
ऋतेन देवीरमृता अमृक्ता अर्णोभिरापो मधुमद्भिरग्ने ।
वाजी न सर्गेषु प्रस्तुभानः प्र सदमित्स्रवितवे दधन्युः ॥ १२ ॥
मा कस्य यक्षं सदमिद्धुरो गा मा वेशस्य प्रमिनतो मापेः।
मा भ्रातुरग्रे अनृजोर्ऋणं वेर्मा सख्युर्दक्षं रिपोर्भुजेम ॥ १३ ॥
रक्षा णो अग्ने तव रक्षणेभी रारक्षाणः सुमख प्रीणानः।
प्रति ष्फुर वि रुज वीड्वंहो जहि रक्षो महि चिद्वावृधानम् ॥ १४ ॥
एभिर्भव सुमना अग्ने अर्कैरिमान्त्स्पृश मन्मभिः शूर वाजान्।
उत ब्रह्माण्यङ्गिरो जुषस्व सं ते शस्तिर्देववाता जरेत ॥ १५ ॥
एता विश्वा विदुषे तुभ्यं वेधो नीथान्यग्ने निण्या वचांसि।
निवचना कवये काव्यान्यशंसिषं मतिभिर्विप्र उक्थैः ॥ १६ ॥

[४] चतुर्थं सूक्तम्

ऋषिः—वामदेवः ॥ देवता—रक्षोहाऽग्निः ॥ छन्दः—१, २, ४, ५, ८ भुरिक्पङ्क्तिः; ३, १०, ११, १५, निचृत्त्रिष्टुप्; ६ विराट्त्रिष्टुप्; ७, १३ त्रिष्टुप्; ९ स्वराट्पङ्क्तिः; १२ निचृत्पङ्क्तिः; १४ स्वराड्बृहती ॥ स्वरः—१, २, ४, ५, ८, ९, १२ पञ्चमः; ३,६,७,१०,११,१३, १५ धैवतः; १४ मध्यमः ॥

अथ त्रयोविंशो वर्गः ॥ २३ ॥

कृणुष्व पाजः प्रसितिं न पृथ्वीं याहि राजेवामवाँ इभेन ।
तृष्वीमनु प्रसितिं द्रूणानोऽस्तासि विध्य रक्षसस्तपिष्ठैः ॥ १ ॥
तव भ्रमास आशुया पतन्त्यनु स्पृश धृषता शोशुचानः ।
तपूंष्यग्ने जुह्वा पतङ्गानसंदितो वि सृज विष्वगुल्काः ॥ २ ॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्रति स्पशो वि सृज तूर्णितमो भवा पायुर्विशो अस्या अदब्धः।
यो नो दूरे अघशंसो यो अन्त्यग्ने माकिष्टे व्यथिरा दधर्षीत्॥ ३॥
उदग्ने तिष्ठ प्रत्या तनुष्व न्यमित्राँ ओषतात्तिग्महेते ।
यो नो अरातिं समिधान चक्रे नीचा तं धक्ष्यतसं न शुष्कम्॥ ४॥
ऊर्ध्वो भव प्रति विध्याध्यस्मदाविष्कृणुष्व दैव्यान्यग्ने ।
अव स्थिरा तनुहि यातुजूनां जामिमजामिं प्र मृणीहि शत्रून्॥ ५॥

अथ चतुर्विंशो वर्गः॥ २४॥

स तें जानाति सुमतिं यविष्ठ य ईवते ब्रह्मणे गातुमैरत्।
विश्वान्यस्मै सुदिनानि रायो द्युम्नान्यर्यो वि दुरो अभि द्यौत्॥ ६॥
सेदग्ने अस्तु सुभगः सुदानुर्यस्त्वा नित्येन हविषा य उक्थैः।
पिप्रीषति स्व आयुषि दुरोणे विश्वेदस्मै सुदिना सासदिष्टिः॥ ७॥
अचीमि ते सुमतिं घोष्यर्वाक्सं तें वावार्ता जरतामियं गीः।
स्वश्वास्त्वा सुरथा मर्जयेमास्मे क्षत्राणि धारयेरनु द्यून्॥ ८॥
इह त्वा भूर्या चरेदुप त्मन्दोषावस्तर्दीदिवांसमनु द्यून् ।
क्रीळन्तस्त्वा सुमनसः सपेमाभि द्युम्ना तस्थिवांसो जनानाम्॥ ९॥
यस्त्वा स्वश्वः सुहिरण्यो अग्न उपयाति वसुमता रथेन।
तस्य त्राता भवसि तस्य सखा यस्तं आतिथ्यमानुषग्जुजोषत्॥ १०॥

अथ पञ्चविंशो वर्गः॥ २५॥

महो रुजामि बन्धुता वचोभिस्तन्मा पितुर्गोतमादन्वियाय।
त्वं नो अस्य वचसश्चिकिद्धि होतर्यविष्ठ सुक्रतो दमूनाः॥ ११॥
अस्वप्नजस्तरणयः सुशेवा अतन्द्रासोऽवृका अश्रमिष्ठाः ।
ते पायवः सध्र्यञ्चो निषद्याग्ने तव नः पान्त्वमूर॥ १२॥
ये पायवो मामतेयं ते अग्ने पश्यन्तो अन्धं दुरितादरक्षन्।
ररक्ष तान्सुकृतो विश्ववेदा दिप्सन्त इद्रिपवो नाह देभुः॥ १३॥
त्वया वयं सधन्यस्त्वोतास्तव प्रणीत्यश्याम वाजान् ।
उभा शंसा सूदय सत्यतातेऽनुष्ठुया कृणुह्यह्रयाण ॥ १४॥
अया ते अग्ने समिधा विधेम प्रति स्तोमं शस्यमानं गृभाय।
दहाशसो रक्षसः पाह्यस्मान्द्रुहो निदो मित्रमहो अवद्यात्॥ १५॥

इति तृतीयाष्टके चतुर्थोऽध्यायः

अथ पञ्चमोऽध्यायः

[५] पञ्चमं सूक्तम्

ऋषिः—वामदेवः॥ देवता—वैश्वानरः॥ छन्दः—१ विराट्त्रिष्टुप्; २, ५-८, ११ निचृत्त्रिष्टुप्; ३, ४, ९, १२, १३, १५ त्रिष्टुप्; १०, १४ भुरिक्-पङ्क्तिः॥ स्वरः—१-९, ११-१३, १५ धैवतः; १०, १४ पञ्चमः॥

अथ प्रथमो वर्गः॥ १॥

वैश्वानराय मीळ्हुषे सजोषाः कथा दाशेमाग्नये बृहद्भाः ।
अनूनेन बृहता वक्षथेनोप स्तभायदुपमिन्न रोधः॥ १॥
मा निन्दत य इमां मह्यं रातिं देवो ददौ मर्त्यीय स्वधावान्।
पाकाय गृत्सो अमृतो विचेता वैश्वानरो नृतमो यह्वो अग्निः॥ २॥
सामं द्विबर्हा महि तिग्मभृष्टिः सहस्त्रेरेता वृषभस्तुविष्मान्।
पदं न गोरपगूळ्हं विविद्वानग्निर्मह्यं प्रेदु वोचन्मनीषाम्॥ ३॥
प्र ताँ अग्निर्बभसत्तिग्मजम्भस्तपिष्ठेन शोचिषा यः सुराधाः।
प्र ये मिनन्ति वरुणस्य धाम प्रिया मित्रस्य चेततो ध्रुवाणि॥ ४॥
अभ्रातरो न योषणो व्यन्तः पतिरिपो न जनयो दुरेवाः।
पापासः सन्तो अनृता असत्या इदं पदमजनता गभीरम्॥ ५॥

अथ द्वितीयो वर्गः॥ २॥

इदं मे अग्ने कियते पावकामिनते गुरुं भारं न मन्म ।
बृहद्दधाथ धृषता गभीरं यह्वं पृष्ठं प्रयसा सप्तधातु॥ ६॥
तमिन्वेरुव समना समानमभि क्रत्वा पुनती धीतिरश्याः ।
ससस्य चर्मन्नधि चारु पृश्नेरग्रे रुप आरुपितं जबारु॥ ७॥
प्रवाच्यं वचसः किं मे अस्य गुहा हितमुप निणिग्वदन्ति ।
यदुस्त्रियाणामप वारिव व्रन्पाति प्रियं रुपो अग्रं पदं वेः॥ ८॥
इदमु त्यन्महि महामनीकं यदुस्त्रिया सचत पूर्व्यं गौः ।
ऋतस्य पदे अधि दीद्यानं गुहा रघुष्यद्रघुयद्विवेद॥ ९॥
अधा द्युतानः पित्रोः सचासामनुत गुह्यं चारु पृश्नेः ।
मातुष्पदे परमे अन्ति षद्गोर्वृष्णः शोचिषः प्रयतस्य जिह्वा॥ १०॥

अथ तृतीयो वर्गः॥ ३॥

ऋतं वोचे नमसा पृच्छ्यमानस्तवाशसा जातवेदो यदीदम्।
त्वमस्य क्षयसि यद्ध विश्वं दिवि यदु द्रविणं यत्पृथिव्याम्॥ ११॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

किं नो अस्य द्रविणं कद्ध रत्नं वि नो वोचो जातवेदश्चिकित्वान्।
गुहाध्वनः परमं यन्नो अस्य रेकु पदं न निदाना अगन्म॥ १२॥
का मर्यादा वयुना कद्ध वाममच्छा गमेम रघवो न वाजम्।
कदा नो देवीरमृतस्य पत्नीः सूरो वर्णेन ततनन्नुषासः॥ १३॥
अनिरेण वचसा फल्गवेन प्रतीत्येन कृधुनातृपासः।
अधा ते अग्ने किमिहा वदन्त्यनायुधास आसता सचन्ताम्॥ १४॥
अस्य श्रिये समिधानस्य वृष्णो वसोरनीकं दम आ रुरोच।
रुशद्वसानः सुदृशीकरूपः क्षितिर्न राया पुरुवारो अद्यौत्॥ १५॥

[६] षष्ठं सूक्तम्

ऋषिः—वामदेवः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—१, ३, ५, ८, ११ विराट्त्रिष्टुप्; २, ४, ९ भुरिक्पङ्क्तिः; ६ स्वराट्पङ्क्तिः; ७ निचृत्त्रिष्टुप्; १० त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१, ३, ५, ७, ८, १०, ११ धैवतः; २, ४, ६, ९ पञ्चमः॥

अथ चतुर्थो वर्गः॥ ४॥

ऊर्ध्व ऊ षु णो अध्वरस्य होतरग्ने तिष्ठ देवताता यजीयान्।
त्वं हि विश्वमभ्यसि मन्म प्र वेधसश्चित्तिरसि मनीषाम्॥ १॥
अमूरो होता न्यसादि विक्ष्वग्निर्मन्द्रो विदथेषु प्रचेताः।
ऊर्ध्वं भानुं सवितेवाश्रेन्मेतेव धूमं स्तभायदुप द्याम्॥ २॥
यता सुजूर्णी रातिनी घृताची प्रदक्षिणिद्देवतातिमुराणः।
उदु स्वरुर्नवजा नाक्रः पश्वो अनक्ति सुधितः सुमेकः॥ ३॥
स्तीर्णे बर्हिषि समिधाने अग्ना ऊर्ध्वो अध्वर्युर्जुषाणो अस्थात्।
पर्यग्निः पशुपा न होता त्रिविष्ट्येति प्रदिव उराणः॥ ४॥
परि त्मना मितद्रुरेति होताग्निर्मन्द्रो मधुवचा ऋतावा।
द्रवन्त्यस्य वाजिनो न शोका भयन्ते विश्वा भुवना यदभ्राट्॥ ५॥

अथ पञ्चमो वर्गः॥ ५॥

भद्रा ते अग्ने स्वनीक संदृग्घोरस्य सतो विषुणस्य चारुः।
न यत्ते शोचिस्तमसा वरन्त न ध्वस्मानस्तन्वी३ रेप आ धुः॥ ६॥
न यस्य सातुर्जनितोरवारि न मातरापितरा नू चिदिष्टौ।
अधा मित्रो न सुधितः पावको३ऽग्निर्दीदाय मानुषीषु विक्षु॥ ७॥
द्वियं पञ्च जीजनन्त्संवसानाः स्वसारो अग्निं मानुषीषु विक्षु।
उषर्बुधमथर्यो३ न दन्तं शुक्रं स्वासं परशुं न तिग्मम्॥ ८॥
तव त्ये अग्ने हरितो घृतस्ना रोहितास ऋञ्चञ्चः स्वञ्चः।
अरुषासो वृषण ऋजुमुष्का आ देवतातिमह्वन्त द्रस्माः॥ ९॥
ये ह त्ये ते सहमाना अयासस्त्वेषासो अग्ने अर्चयश्चरन्ति।
श्येनासो न दुवसनासो अर्थं तुविष्वणसो मारुतं न शर्धः॥ १०॥
अकारि ब्रह्म समिधान तुभ्यं शंसात्युक्थं यजते व्यु धाः।
होतारमग्निं मनुषो नि षेदुर्नमस्यन्त उशिजः शंसमायोः॥ ११॥

[७] सप्तमं सूक्तम्

ऋषिः—वामदेवः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—१ भुरिक्त्रिष्टुप्; २ स्वराडुष्णिक्; ३ निचृदनुष्टुप्; ४, ६ अनुष्टुप्; ५ विराडनुष्टुप्; ७, १०, ११, त्रिष्टुप्; ८, ९ निचृत्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१, ७-११ धैवतः; २ ऋषभः; ३-६ गान्धारः॥

अथ षष्ठो वर्गः॥ ६॥

अयमिह प्रथमो धायि धातृभिर्होता यजिष्ठो अध्वरेष्वीड्यः।
यमप्नवानो भृगवो विरुरुचुर्वनेषु चित्रं विभ्वं विशेविशे॥ १॥
अग्ने कदा त आनुषग्भुवद्देवस्य चेतनम्।
अधा हि त्वा जगृभ्रिरे मर्तासो विक्ष्वीड्यम्॥ २॥
ऋतावानं विचेतसं पश्यन्तो द्यामिव स्तृभिः।
विश्वेषामध्वराणां हस्कर्तारं दमेदमे॥ ३॥
आशुं दूतं विवस्वतो विश्वा यश्चर्षणीरभि।
आ जभ्रुः केतुमायवो भृगवाणं विशेविशे॥ ४॥
तमीं होतारमानुषक्चिकित्वांसं नि षेदिरे।
रण्वं पावकशोचिषं यजिष्ठं सप्त धामभिः॥ ५॥

अथ सप्तमो वर्गः॥ ७॥

तं शश्वतीषु मातृषु वन आ वीतमश्रितम्।
चित्रं सन्तं गुहा हितं सुवेदं कूचिदर्थिनम्॥ ६॥
ससस्य यद्विर्युता सस्मिन्नूधन्नृतस्य धामन्नृणयन्त देवाः।
महाँ अग्निर्नमसा रातहव्यो वेरध्वराय सदमिदृतावा॥ ७॥
वेरध्वरस्य दूत्यानि विद्वानुभे अन्ता रोदसी संचिकित्वान्।
दूत ईयसे प्रदिव उराणो विदुष्टरो दिव आरोधनानि॥ ८॥
कृष्णं त एम रुशतः पुरो भाश्चरिष्ण्वर्चिर्वपुषामिदेकम्।
यदप्रवीता दधसे ह गर्भं सद्यश्चिज्जातो भवसीदु दूतः॥ ९॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सद्यो जातस्य ददृशानमोजो यदस्य वातो अनुवाति शोचिः।
वृणक्ति तिग्मामतसेषु जिह्वां स्थिरा चिदन्ना दयते वि जम्भैः॥ १०॥
तूषु यदन्ना तृषुणा ववक्ष तृषुं दूतं कृणुते यह्वो अग्निः।
वातस्य मेळिं सचते निजूर्वन्नाशुं न वाजयते हिन्वे अर्वा॥ ११॥

[८] अष्टमं सूक्तम्

ऋषिः—वामदेवः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—१, ४-६ निचृद्गायत्री; २, ३, ७, गायत्री; ८ भुरिग्गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

अथ अष्टमो वर्गः॥ ८॥

दूतं वो विश्ववेदसं हव्यवाहममर्त्यम्। यजिष्ठमृञ्जसे गिरा॥ १॥
स हि वेदा वसुधितिं महाँ आरोधनं दिवः। स देवाँ एह वक्षति॥ २॥
स वेद देव आनमं देवाँ ऋतायते दमे। दातिं प्रियाणि चिद्वसु॥ ३॥
स होता सेदु दूत्यं चिकित्वाँ अन्तरीयते। विद्वाँ आरोधनं दिवः॥ ४॥
ते स्याम ये अग्नये ददाशुर्हव्यदातिभिः। य ईं पुष्यन्त इन्धते॥ ५॥
ते राया ते सुवीर्यैः ससवांसो वि शृण्विरे। ये अग्ना दधिरे दुवः॥ ६॥
अस्मे रायो दिवेदिवे सं चरन्तु पुरुस्पृहः। अस्मे वाजास ईरताम्॥ ७॥
स विप्रश्चर्षणीनां शवसा मानुषाणाम्। अतिं क्षिप्रेव विध्यति॥ ८॥

[९] नवमं सूक्तम्

ऋषिः—वामदेवः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—१, ३, ४ गायत्री; २, ६ विराड्गायत्री; ५ पादनिचृद्गायत्री; ७, ८ निचृद्गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

अथ नवमो वर्गः॥ ९॥

अग्ने मृळ महाँ असि य ईमा देवयुं जनम्। इयेथ बर्हिरासदम्॥ १॥
स मानुषीषु दूळभो विक्षु प्रावीरमर्त्यः। दूतो विश्वेषां भुवत्॥ २॥
स सद्म परि णीयते होता मन्द्रो दिविष्टिषु। उत पोता नि षीदति॥ ३॥
उत ग्ना अग्निरध्वर उतो गृहपतिर्दमे। उत ब्रह्मा नि षीदति॥ ४॥
वेषि ह्यध्वरीयतामुपवक्ता जनानाम्। हव्या च मानुषाणाम्॥ ५॥
वेषीद्वस्य दूत्यं यस्य जुजोषो अध्वरम्। हव्यं मर्तस्य वोळ्हवे॥ ६॥
अस्माकं जोष्यध्वरमस्माकं यज्ञमङ्गिरः। अस्माकं शृणुधी हवम्॥ ७॥
परि ते दूळभो रथोऽस्माँ अश्नोतु विश्वतः। येन रक्षसि दाशुषः॥ ८॥

[१०] दशमं सूक्तम्

ऋषिः—वामदेवः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—१ गायत्री; २-४, ७ भुरिग्गायत्री; ५, ८ स्वराडुष्णिक्; ६ विराडुष्णिक्॥ स्वरः—१-४, ७ षड्जः; ५, ६, ८ ऋषभः॥

अथ दशमो वर्गः॥ १०॥

अग्ने तमद्याश्वं न स्तोमैः क्रतुं न भद्रं हृदिस्पृशम्।
ऋध्यामा त ओहैः॥ १॥
अधा ह्यग्ने क्रतोर्भद्रस्य दक्षस्य साधोः।
रथीर्ऋतस्य बृहतो बभूथ॥ २॥
एभिर्नो अर्कैर्भवा नो अर्वाङ् स्वर्ण ज्योतिः।
अग्ने विश्वेभिः सुमना अनीकैः॥ ३॥
आभिष्टे अद्य गीर्भिर्गृणन्तोऽग्ने दाशेम।
प्र ते दिवो न स्तनयन्ति शुष्माः॥ ४॥
तव स्वादिष्ठाग्ने संदृष्टिरिदा चिदह्न इदा चिदक्तोः।
श्रिये रुक्मो न रोचत उपाके॥ ५॥
घृतं न पूतं तनूररेपाः शुचि हिरण्यम्।
तत्ते रुक्मो न रोचत स्वधावः॥ ६॥
कृतं चिद्धि ष्मा सनेमि द्वेषोऽग्ने दुनोषि मतीत्।
इत्था यजमानादृतावः॥ ७॥
शिवाः नः सख्या सन्तु भ्रात्राग्ने देवेषु युष्मे।
सा नो नाभिः सदने सस्मिन्नूधन्॥ ८॥

द्वितीयोऽनुवाकः [११] एकादशं सूक्तम्

ऋषिः—वामदेवः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—१, २, ५, ६ निचृत्त्रिष्टुप्; ३ स्वराड्बृहती; ४ भुरिक्पङ्क्तिः॥ स्वरः—१, २, ५, ६ धैवतः; ३ मध्यमः; ४ पञ्चमः॥

अथ एकादशो वर्गः॥ ११॥

भद्रं ते अग्ने सहसिन्ननीकमुपाक आ रोचते सूर्यस्य।
रुशद् दृशे ददृशे नक्तया चिदरूक्षितं दृश आ रूपे अन्नम्॥ १॥
वि षाह्यग्ने गृणते मनीषां खं वेषसा तुविजात स्तवानः।
विश्वेभिर्यद्वावनः शुक्र देवैस्तन्वो रास्व सुमहो भूरि मन्म॥ २॥
त्वदग्ने काव्या त्वन्मनीषास्त्वदुक्था जायन्ते राध्यानि।
त्वदेति द्रविणं वीरपेशा इत्थाधिये दाशुषे मर्त्याय॥ ३॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

त्वद्वा॒जी वा॑जंभ॒रो विहा॑या अभिष्टि॒कृज्जा॑यते स॒त्यशु॑ष्मः।
त्वद्र॒यिर्देवजू॑तो मयो॒भुस्त्वदा॒शुर्जू॑जु॒वाँ अ॑ग्ने॒ अर्वा॑ ॥४॥
त्वाम॑ग्ने प्रथ॒मं दे॑व॒यन्तो॑ दे॒वं मर्ता॑ अमृत म॒न्द्रजि॑ह्वम्।
द्वे॒षो॒युत॒मा वि॑वासन्ति धी॒भिर्दमू॑नसं गृ॒हप॑ति॒ममू॑रम् ॥५॥
आ॒रे अ॒स्मदम॑तिमा॒रे अंह॑ आरे विश्वां॑ दु॒र्मतिं॑ यन्नि॒पासि॑।
दो॒षा शि॒वः स॑हसः सूनो अग्ने॒ यं दे॒व आ चि॒त्सच॑से स्व॒स्ति ॥६॥

[१२] द्वादशं सूक्तम्

ऋषिः—वामदेवः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—१, ५ निचृत्त्रिष्टुप्; २ त्रिष्टुप्; ३, ४ भुरिक्पङ्क्तिः; ६ पङ्क्तिः॥ स्वरः—१, २, ५ धैवतः; ३, ४, ६ पञ्चमः॥

अथ द्वादशो वर्गः॥ १२॥

यस्त्वाम॑ग्न इ॒नध॑ते य॒तस्रु॒क्त्रिस्ते॒ अन्नं॑ कृ॒णव॒त्सस्मि॒न्नह॑न्।
स सु द्यु॒म्नैर॒भ्य॑स्तु प्र॒सक्ष॒त्तव॒ क्रत्वा॑ जातवेदश्चिकि॒त्वान्॥ १॥
इ॒ध्मं यस्ते॑ ज॒भर॑च्छश्रमा॒णो म॒हो अ॑ग्ने॒ अनी॑कमा स॑प॒र्यन्।
स इ॑धा॒नः प्रति॑ दो॒षामु॒षासं॒ पुष्य॑न्र॒यिं स॑चते घ्नन्न॒मित्रा॑न्॥ २॥
अ॒ग्निरी॑शे बृह॒तः क्ष॒त्रिय॑स्या॒ग्निर्वाज॑स्य पर॒मस्य॑ रा॒यः।
दधा॑ति॒ रत्नं॑ विध॒ते यवि॑ष्ठो॒ व्या॑नु॒षङ्मर्त्या॑य स्व॒धावा॑न् ॥ ३॥
यच्चि॒द्धि ते॑ पुरुष॒त्रा य॑वि॒ष्ठाचि॑त्तिभिश्चकृ॒मा कच्चि॒दागः॑।
कृ॒धी ष्व१॒॑स्माँ अदि॑ते॒रना॑गा॒न्व्येनां॑सि शिश्रथो॒ विष्व॑गग्ने॥ ४॥
म॒हश्चि॑दग्न॒ एन॑सो अ॒भीक॑ ऊ॒र्वाद्दे॒वाना॑मु॒त मर्त्या॑नाम्।
मा ते॒ सखा॑यः॒ सद॒मिद्रि॑षाम॒ यच्छा॑ तो॒काय॒ तन॑याय॒ शं योः॥ ५॥
यथा॑ ह॒ त्यद्व॑सवो गौ॒र्यं॑ चित्प॒दि षि॒ताममु॑ञ्चता यजत्राः।
ए॒वो ष्व१॒॑स्मन्मु॑ञ्चता॒ व्यंहः॒ प्र ता॑र्यग्ने प्रत॒रं न॒ आयुः॑॥ ६॥

[१३] त्रयोदशं सूक्तम्

ऋषिः—वामदेवः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—१, २, ४, ५ विराट्त्रिष्टुप्; ३ निचृत्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः॥

अथ त्रयोदशो वर्गः॥ १३॥

प्रत्य॒ग्निरु॒षसा॒मग्र॑मख्यद्विभाती॒नां सुमना॑ रत्न॒धेय॑म् ।
या॒तम॑श्विना सु॒कृतो॑ दुरो॒णमुत्सूर्यो॒ ज्योति॑षा दे॒व ए॑ति ॥ १॥
ऊ॒र्ध्वं भा॒नुं स॑वि॒ता दे॒वो अ॑श्रेद् द्र॒प्सं दवि॑ध्वद्गवि॒षो न सत्वा॑।
अनु॑ व्र॒तं वरु॑णो यन्ति मि॒त्रो यत्सूर्यं॑ दि॒व्यारो॒हय॑न्ति ॥ २॥

यं सी॒मकृ॑ण्व॒न्तम॑से वि॒पृचे॑ ध्रु॒वक्षे॑मा॒ अन॑वस्यन्तो॒ अर्थ॑म्।
तं सूर्यं॑ ह॒रितः॑ स॒प्त य॒ह्वीः स्पशं॒ विश्वं॑स्य॒ जग॑तो वहन्ति॥ ३॥
वहि॑ष्ठेभिर्वि॒हर॑न्यासि॒ तन्तु॑मव॒व्यय॒न्नसि॑तं देव॒ वस्म॑ ।
दवि॑ध्वतो र॒श्मयः॒ सूर्य॑स्य॒ चर्मे॒वावा॑धु॒स्तमो॑ अ॒प्स्व१॒॑न्तः ॥ ४॥
अना॑यतो॒ अनि॑बद्धः क॒थायं न्य॑ङ्ङुत्ता॒नोऽव॑ पद्यते॒ न।
कया॑ याति स्व॒धया॒ को द॑दर्श दि॒वः स्क॒म्भः समृ॑तः पाति॒ नाक॑म्॥ ५॥

[१४] चतुर्दशं सूक्तम्

ऋषिः—वामदेवः॥ देवता—अग्निर्लिङ्गोक्ता वा॥ छन्दः—१ भुरिक्पङ्क्तिः; २, ४ निचृत्त्रिष्टुप्; ३ स्वराट्पङ्क्तिः; ५ विराट्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१, ३ पञ्चमः; २, ४, ५ धैवतः॥

अथ चतुर्दशो वर्गः॥ १४॥

प्रत्य॒ग्निरु॒षसो॑ जा॒तवे॑दा॒ अख्य॑द्दे॒वो रोच॑माना॒ महो॑भिः ।
आ ना॑सत्योरुगा॒या रथे॑ने॒मं य॒ज्ञमुप॑ नो यात॒मच्छ॑ ॥ १॥
ऊ॒र्ध्वं के॒तुं स॑वि॒ता दे॒वो अ॑श्रे॒ज्ज्योति॒र्विश्व॑स्मै॒ भुव॑नाय कृ॒ण्वन्।
आप्रा॒ द्यावा॑पृथि॒वी अ॒न्तरि॑क्षं॒ वि सूर्यो॑ र॒श्मिभि॒श्चेकि॑तानः॥ २॥
आ॒वह॑न्त्यरु॒णीर्ज्योति॒षागा॑न्म॒ही चि॒त्रा र॒श्मिभि॒श्चेकि॑ताना ।
प्र॒बो॒धय॑न्ती सुवि॒ताय॑ दे॒व्यु१॒॑षा ई॑यते सु॒युजा॒ रथे॑न ॥ ३॥
आ वां॒ वहि॑ष्ठा इ॒ह ते व॑हन्तु॒ रथा॒ अश्वा॑स उ॒षसो॒ व्यु॑ष्टौ।
इ॒मे हि वां॒ मधु॒पेया॑य॒ सोमा॑ अ॒स्मिन्य॒ज्ञे वृ॑षणा मादयेथाम्॥ ४॥
अना॑यतो॒ अनि॑बद्धः क॒थायं न्य॑ङ्ङुत्ता॒नोऽव॑ पद्यते॒ न ।
कया॑ याति स्व॒धया॒ को द॑दर्श दि॒वः स्क॒म्भः समृ॑तः पाति॒ नाक॑म्॥ ५॥

[१५] पञ्चदशं सूक्तम्

ऋषिः—वामदेवः॥ देवता—१-६ अग्निः; ७, ८ सोमकः साहदेव्यः; ९, १० अश्विनौ॥ छन्दः—१, ४ गायत्री; २, ५, ६ विराड्गायत्री; ३, ७-१० निचृद्गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

अथ पञ्चदशो वर्गः॥ १५॥

अ॒ग्निर्होता॑ नो अध्व॒रे वा॒जी सन्परि॑ णीयते। दे॒वो दे॒वेषु॑ य॒ज्ञियः॑॥ १॥
परि॑ त्रिवि॒ष्ट्य॑ध्व॒रं यात्य॒ग्नी र॒थीरि॑व। आ दे॒वेषु॒ प्रयो॒ दध॑त्॥ २॥
परि॒ वाज॑पतिः क॒विर॒ग्निर्ह॒व्यान्य॑क्रमीत्। दध॒द्रत्ना॑नि दा॒शुषे॑॥ ३॥
अ॒यं यः सृञ्ज॑ये पु॒रो दैव॑वा॒ते स॑मि॒ध्यते॑। द्यु॒माँ अ॑मित्र॒दम्भ॑नः॥ ४॥
अस्य॑ घा वी॒र ईव॑तो॒ऽग्नेरी॑शीत॒ मर्त्यः॑। ति॒ग्मज॑म्भस्य मी॒ळ्हुषः॑॥ ५॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अथ षोडशो वर्गः ॥ १६ ॥

तमर्वन्तं॒ न सा॑न॒सिम॑रु॒षं न दि॒वः शिशु॑म्। म॒र्मृ॒ज्यन्ते॑ दि॒वेदि॑वे ॥ ६ ॥
बोध॒द्यन्मा॒ हरि॑भ्यां कुमा॒रः सा॑हदे॒व्यः। अच्छा॒ न हू॒त उद॑रम् ॥ ७ ॥
उ॒त त्या य॑ज॒ता हरी॑ कुमा॒रात्सा॑हदे॒व्यात्। प्रय॑ता स॒द्य आ द॑दे ॥ ८ ॥
ए॒ष वां॑ देवावश्विना कुमा॒रः सा॑हदे॒व्यः। दी॒र्घायु॑रस्तु॒ सोम॑कः ॥ ९ ॥
तं यु॒वं दे॑वावश्विना कुमा॒रं सा॑हदे॒व्यम्। दी॒र्घायु॑षं कृणोतन ॥ १० ॥

[१६] षोडशं सूक्तम्

ऋषिः—वामदेवः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१, ४, ६, ८, ९, १२, १९ निचृत्त्रिष्टुप्; २, २१, निचृत्पङ्क्तिः; ३ त्रिष्टुप्; ५, १३-१५ स्वराट्पङ्क्तिः; ७, १६, १७ विराट्त्रिष्टुप्; १०, ११, १८, २० भुरिक्पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१, ३, ४, ६-९, १२, १६, १७, १९ धैवतः; २, ५, १०, ११, १३-१५, १८, २०, २१ पञ्चमः ॥

अथ सप्तदशो वर्गः ॥ १७ ॥

आ स॒त्यो या॑तु म॒घवाँ॑ ऋजी॒षी द्रव॑न्त्वस्य॒ हर॑य॒ उप॑ नः।
तस्मा॒ इदन्धः॑ सुषुमा सु॒दक्ष॑मि॒हाभि॑पि॒त्वं क॑रते गृणा॒नः ॥ १ ॥
अव॑ स्य॒ शू॒राध्व॑नो॒ नान्ते॒ऽस्मिन्नो॑ अ॒द्य सव॑ने म॒न्दध्यै॑।
शंसा॑त्यु॒क्थमु॒शने॑व वे॒धाश्चि॑कि॒तुषे॑ असु॒र्या॑य॒ मन्म॑ ॥ २ ॥
क॒विर्न नि॒ण्यं वि॒दथा॑नि॒ साध॒न्वृषा॒ यत्सेकं॑ विपिपा॒नो अर्चा॑त्।
दि॒व इ॒त्था जी॑जनत्स॒प्त का॒रूनह्ना॑ चिच्चक्रुर्व॒युना॑ गृ॒णन्तः॑ ॥ ३ ॥
स्व१॒॑र्यद्वेदि॑ सु॒दृशी॑कम॒र्कैर्महि॒ ज्योती॑ रुरुचु॒र्यद्ध॒ वस्तोः॑ ।
अ॒न्धा तमां॑सि॒ दुधि॑ता वि॒चक्षे॒ नृभ्य॑श्चकार॒ नृत॑मो अ॒भिष्टौ॑ ॥ ४ ॥
व॒व॒क्ष इन्द्रो॒ अमि॑तमृजी॒ष्यु१॒॑भे आ प॑प्रौ॒ रोद॑सी महि॒त्वा।
अत॑श्चिदस्य महि॒मा वि रे॑च्य॒भि यो विश्वा॒ भुव॑ना ब॒भूव॑ ॥ ५ ॥

अथ अष्टादशो वर्गः ॥ १८ ॥

विश्वा॑नि श॒क्रो नर्या॑णि वि॒द्वान॒पो रि॑रेच॒ सखि॑भि॒र्निका॑मैः।
अश्मा॑नं चि॒द्ये बि॑भि॒दुर्वचो॑भिर्व्र॒जं गोम॑न्तमु॒शिजो॒ वि व॑व्रुः ॥ ६ ॥
अ॒पो वृ॒त्रं व॑व्रि॒वांसं॒ परा॑ह॒न्प्राव॑त्ते॒ वज्रं॑ पृथि॒वी सचे॑ताः।
प्रार्णां॑सि समु॒द्रिया॑ण्यैनोः॒ पति॒र्भव॒ञ्छव॑सा शूर धृष्णो ॥ ७ ॥
अ॒पो यदद्रिं॑ पुरुहूत॒ दर्द॑रा॒विर्भु॑वत्स॒रमा॑ पू॒र्व्यं ते॑ ।
स नो॑ ने॒ता वाज॒मा द॑र्षि॒ भूरिं॑ गो॒त्रा रु॒जन्नङ्गि॑रोभिर्गृणा॒नः ॥ ८ ॥
अच्छा॑ क॒विं नृ॑मणो गा अ॒भिष्टौ॒ स्व॑र्षाता मघव॒न्नाध॑मानम्।
ऊ॒तिभि॒स्तमि॑षणो द्यु॒म्नहू॑तौ॒ नि मा॒यावा॒नब्र॑ह्मा॒ दस्यु॑रर्त ॥ ९ ॥

आ द॑स्यु॒घ्ना मन॑सा या॒ह्यस्तं॒ भुव॑त्ते॒ कुत्सः॑ स॒ख्ये निका॑मः।
स्वे योनौ॒ नि ष॑दतं॒ सरू॑पा॒ वि वां॑ चिकित्सदृत॒चिद्ध॒ नारी॑ ॥ १० ॥

अथ एकोनविंशो वर्गः ॥ १९ ॥

यासि॒ कुत्से॑न स॒रथ॑मव॒स्युस्तो॒दो वात॑स्य॒ हर्यो॒रीशा॑नः ।
ऋ॒ज्रा वाजं॒ न गध्यं॒ युयू॑षन्क॒विर्यदह॒न्पार्या॑य॒ भूषा॑त् ॥ ११ ॥
कुत्सा॑य॒ शुष्ण॑म॒शुषं॒ नि ब॑र्हीः प्रपि॒त्वे अह्नः॒ कुय॑वं स॒हस्रा॑।
स॒द्यो दस्यू॒न्प्र मृ॑ण कु॒त्स्येन॒ प्र सूर॑श्च॒क्रं वृ॑हताद॒भीके॑ ॥ १२ ॥
त्वं पिप्रुं॒ मृग॑यं शूशु॒वांस॑मृ॒जिश्व॑ने वैदथि॒नाय॑ रन्धीः ।
प॒ञ्चा॒शत्कृ॒ष्णा नि व॑पः स॒हस्रात्कं॒ न पुरो॑ जरि॒मा वि द॑र्दः ॥ १३ ॥
सूर॑ उपा॒के त॒न्वं१॒॑ दधा॑नो॒ वि यत्ते॒ चेत्य॒मृत॑स्य वर्पः॑।
मृ॒गो न ह॒स्ती तवि॑षीमुषा॒णः सिं॒हो न भी॒म आयु॑धानि॒ बिभ्र॑त् ॥ १४ ॥
इन्द्रं॒ कामा॑ वसू॒यन्तो॑ अग्म॒न्त्स्व॑र्मीळ्हे॒ न सव॑ने चका॒नाः।
श्र॒व॒स्यवः॑ शशमा॒नास॑ उ॒क्थैरोको॒ न र॒ण्वा सु॒दृशी॑व पु॒ष्टिः ॥ १५ ॥

अथ विंशो वर्गः ॥ २० ॥

तमिद्व॒ इन्द्रं॑ सु॒हवं॑ हुवेम॒ यस्ता च॒कार॒ नर्या॑ पु॒रूणि॑।
यो माव॑ते जरि॒त्रे गध्यं॑ चिन्म॒क्षू वाजं॒ भर॑ति स्पा॒र्हरा॑धाः ॥ १६ ॥
ति॒ग्मा यद॒न्तर॒शनिः॒ पता॑ति॒ कस्मि॑ञ्चिच्छूर मुहु॒के जना॑नाम्।
घो॒रा यद॑र्य॒ समृ॑ति॒र्भवा॒त्यध॑ स्मा नस्त॒न्वो॑ बोधि गो॒पाः ॥ १७ ॥
भुवो॑ऽवि॒ता वा॒मदे॑वस्य धी॒नां भुवः॒ सखा॑वृ॒को वाज॑सातौ।
त्वामनु॒ प्रम॑ति॒मा ज॑गन्मोरु॒शंसो॑ जरि॒त्रे वि॒श्वध॑ स्याः ॥ १८ ॥
ए॒भिर्नृभि॑रिन्द्र त्वा॒युभि॑ष्ट्वा म॒घव॑द्भिर्मघव॒न्विश्व॑ आ॒जौ ।
द्यावो॒ न द्यु॒म्नैर॒भि सन्तो॑ अ॒र्यः क्ष॒पो म॑देम श॒रद॑श्च पू॒र्वीः ॥ १९ ॥
ए॒वेदिन्द्रा॑य वृष॒भाय॒ वृष्णे॒ ब्रह्मा॑कर्म॒ भृग॑वो॒ न रथ॑म्।
नू चि॒द्यथा॑ नः स॒ख्या वि॒योष॒दस॑न्न उ॒ग्रो॑ऽवि॒ता त॑नू॒पाः ॥ २० ॥
नू ष्टु॒त इ॑न्द्र॒ नू गृ॑णान इषं॑ जरि॒त्रे न॒द्यो॒३॒॑ न पी॑पेः।
अका॑रि ते हरिवो॒ ब्रह्म॒ नव्यं॑ धि॒या स्या॑म र॒थ्यः॑ सदा॒साः ॥ २१ ॥

[१७] सप्तदशं सूक्तम्

ऋषिः—वामदेवः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१ पङ्क्तिः; २, १२, १३, १७-१९ निचृत्त्रिष्टुप्; ३, ५, ६, ८, १०, ११ त्रिष्टुप्; ४, २० विराट्त्रिष्टुप्; ७, ९ भुरिक्पङ्क्तिः; १४, १६ स्वराट्पङ्क्तिः; १५ याजुषीपङ्क्तिः; २१ निचृत्पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१, ७, ९, १४-१६, २१ पञ्चमः; २-६, ८, १०-१३, १७-२० धैवतः ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अथ एकविंशो वर्गः ॥ २१ ॥

त्वं महाँ इन्द्र तुभ्यं ह क्षा अनु क्षत्रं मंहना मन्यत द्यौः।
त्वं वृत्रं शवसा जघन्वान्त्सृजः सिन्धूँरहिना जग्रसानान्॥ १ ॥
तव त्विषो जनिमन्रेजत द्यौ रेजद्भूमिर्भियसा स्वस्य मन्योः।
ऋघायन्त सुभ्वः पर्वतास आर्दन्धन्वानि सरयन्त आपः॥ २ ॥
भिनद्विरिं शवसा वज्रमिष्णन्नाविष्कृण्वानः सहसान ओजः।
वधीद् वृत्रं वज्रेण मन्दसानः सरन्नापो जवसा हतवृष्णीः॥ ३ ॥
सुवीरस्ते जनिता मन्यत द्यौरिन्द्रस्य कर्ता स्वपस्तमो भूत्।
य ईं जजान स्वर्यं सुवज्रमनपच्युतं सदसो न भूमं॥ ४ ॥
य एक इच्च्यावयति प्र भूमा राजा कृष्टीनां पुरुहूत इन्द्रः।
सत्यमेनमनु विश्वे मदन्ति रातिं देवस्य गृणतो मघोनः॥ ५ ॥

अथ द्वाविंशो वर्गः ॥ २२ ॥

सत्रा सोमा अभवन्नस्य विश्वे सत्रा मदासो बृहतो मदिष्ठाः।
सत्राभवो वसुपतिर्वसूनां दत्रे विश्वा अधिथा इन्द्र कृष्टीः॥ ६ ॥
त्वमध प्रथमं जायमानोऽमे विश्वा अधिथा इन्द्र कृष्टीः।
त्वं प्रति प्रवत आशयानमहिं वज्रेण मघवन्वि वृश्चः॥ ७ ॥
सत्राहणं दाधृषिं तुम्रमिन्द्रं महामपारं वृषभं सुवज्रम्।
हन्ता यो वृत्रं सनितोत वाजं दाता मघानि मघवा सुराधाः॥ ८ ॥
अयं वृतश्चातयते समीचीर्य आजिषु मघवा शृण्व एकः।
अयं वाजं भरति यं सनोत्यस्य प्रियासः सख्ये स्याम॥ ९ ॥
अयं शृण्वे अध जयन्नुत घ्नन्नयमुत प्र कृणुते युधा गाः।
यदा सत्यं कृणुते मन्युमिन्द्रो विश्वं दृळ्हं भयत एजदस्मात्॥ १० ॥

अथ त्रयोविंशो वर्गः ॥ २३ ॥

समिन्द्रो गा अजयत्सं हिरण्या समश्विया मघवा यो ह पूर्वीः।
एभिर्नृभिर्नृतमो अस्य शाकै रायो विभक्ता संभरश्च वस्वः॥ ११ ॥
कियत्स्विदिन्द्रो अध्येति मातुः कियत्पितुर्जन्युर्यो जजान।
यो अस्य शुष्मं मुहुकैरियर्ति वातो न जूतः स्तनयद्भिरभ्रैः॥ १२ ॥
क्षियन्तं त्वमक्षियन्तं कृणोतीयर्ति रेणुं मघवा समोहम्।
विभञ्जनुरशनिमाँइव द्यौरुत स्तोतारं मघवा वसौ धात्॥ १३ ॥
अयं चक्रमिषणत्सूर्यस्य न्येतशं रीरमत्ससृमाणम्।
आ कृष्ण ईं जुहुराणो जिघर्ति त्वचो बुध्ने रजसो अस्य योनौ॥ १४ ॥
असिक्न्यां यजमानो न होता ॥ १५ ॥

अथ चतुर्विंशो वर्गः ॥ २४ ॥

गव्यन्त इन्द्रं सख्याय विप्रा अश्वायन्तो वृषणं वाजयन्तः।
जनीयन्तो जनिदामक्षितोतिमा च्यावयामोऽवते न कोशम्॥ १६ ॥
त्राता नो बोधि ददृशान आपिरभिख्याता मर्डिता सोम्यानाम्।
सखा पिता पितृतमः पितॄणां कर्तेमु लोकमुशते वयोधाः॥ १७ ॥
सखीयतामविता बोधि सखा गृणान इन्द्र स्तुवते वयो धाः।
वयं ह्या ते चकृमा सबाध आभिः शमीभिर्महयन्त इन्द्र॥ १८ ॥
स्तुत इन्द्रो मघवा यद्ध वृत्रा भूरीण्येको अप्रतीनि हन्ति।
अस्य प्रियो जरिता यस्य शर्मन्नकिर्देवा वारयन्ते न मर्तीः॥ १९ ॥
एवा न इन्द्रो मघवा विरप्शी करत्सत्या चर्षणीधृदनर्वा।
त्वं राजा जनुषां धेह्यस्मे अधि श्रवो माहिनं यज्जरित्रे॥ २० ॥
नू ष्टुत इन्द्र नू गृणान इषं जरित्रे नद्योः न पीपेः।
अकारि ते हरिवो ब्रह्म नव्यं धिया स्याम रथ्यः सदासाः॥ २१ ॥

[१८] अष्टादशं सूक्तम्

ऋषिः—वामदेवः॥ देवता—इन्द्रादिती॥ छन्दः—१, ८, १२ त्रिष्टुप्; २ पङ्क्तिः; ३, ४ भुरिक्पङ्क्तिः; ५, ६, ७, ९-११ निचृत्त्रिष्टुप्; १३ स्वराट्पङ्क्तिः॥ स्वरः—१, ५-१२ धैवतः; २-४, १३ पञ्चमः॥

अथ पञ्चविंशो वर्गः ॥ २५ ॥

अयं पन्था अनुवित्तः पुराणो यतो देवा उदजायन्त विश्वे।
अतश्चिदा जनिषीष्ट प्रवृद्धो मा मातरममुया पत्तवे कः॥ १ ॥
नाहमतो निरया दुर्गहैतत्तिरश्चता पार्श्वान्निर्गमाणि ।
बहूनि मे अकृता कर्त्वानि युध्यै त्वेन सं त्वेन पृच्छै ॥ २ ॥
परायतीं मातरमन्वचष्ट न नानु गान्यनु नू गमानि ।
त्वष्टुर्गृहे अपिबत्सोममिन्द्रः शतधन्यं चम्वोः सुतस्य ॥ ३ ॥
किं स ऋधक्कृणवद्यं सहस्रं मासो जभार शरदश्च पूर्वीः ।
नही न्वस्य प्रतिमानमस्त्यन्तर्जातेषूत ये जनित्वाः ॥ ४ ॥
अवद्यमिव मन्यमाना गुहाकरिन्द्रं माता वीर्येण न्यृष्टम्।
अथोदस्थात्स्वयमत्कं वसान आ रोदसी अपृणाज्जायमानः॥ ५ ॥

अथ षड्विंशो वर्गः ॥ २६ ॥

एता अर्षन्त्यलला भवन्तीर्ऋतावरीरिव संक्रोशमानाः ।
एता वि पृच्छ किमिदं भनन्ति कमापो अद्रिं परिधिं रुजन्ति॥ ६ ॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

किमु ष्विदस्मै निविदो भनन्तेन्द्रस्यावद्यं दिधिषन्त आपः।
ममैतान्पुत्रो महता वधेन वृत्रं जघन्वाँ असृजद्वि सिन्धून्॥ ७॥
मर्मज्मन त्वा युवतिः परास मर्मज्मन त्वा कुषवा जगार।
मर्मज्मिदापः शिशवे ममृड्युर्मर्मज्मिदिन्द्रः सहसोदतिष्ठत्॥ ८॥
मर्मज्मन ते मघवन्व्यंसो निविविध्वाँ अप हनू जघान।
अधा निविद्ध उत्तरो बभूवाञ्छिरो दासस्य सं पिणग्वधेन॥ ९॥
गृष्टिः ससूव स्थविरं तवागामनाधृष्यं वृषभं तुम्रमिन्द्रम्।
अरीळ्हं वत्सं चरथाय माता स्वयं गातुं तन्वं इच्छमानम्॥ १०॥
उत माता महिषमन्ववेनदमी त्वा जहति पुत्र देवाः।
अथाब्रवीद् वृत्रमिन्द्रो हनिष्यन्त्सखे विष्णो वितरं वि क्रमस्व॥ ११॥
कस्ते मातरं विधवामचक्रच्छयुं कस्त्वामजिघांसच्चरन्तम्।
कस्ते देवो अधि मार्ङीक आसीद्यत्प्राक्षिणाः पितरं पादगृह्य॥ १२॥
अवर्त्या शुनं आन्त्राणि पेचे न देवेषु विविदे मर्डितारम्।
अपश्यं जायाममहीयमानामधा मे श्येनो मध्वा जभार॥ १३॥

इति तृतीयाष्टके पञ्चमोऽध्यायः॥

अथ षष्ठोऽध्यायः

[१९] एकोनविंशं सूक्तम्

ऋषिः—वामदेवः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१ विराट्त्रिष्टुप्; २, ९ निचृत्त्रिष्टुप्; ३, ५, ८ त्रिष्टुप्; ४, ६ भुरिक्पङ्क्तिः; ७, १० पङ्क्तिः; ११ निचृत्पङ्क्तिः॥
स्वरः—१-३, ५, ८, ९ धैवतः; ४, ६, ७, १०, ११ पञ्चमः॥

अथ प्रथमो वर्गः॥ १॥

एवा त्वामिन्द्र वज्रिन्नत्र विश्वे देवासः सुहवास ऊमाः।
महामुभे रोदसी वृद्धमृष्वं निरेकमिद् वृणते वृत्रहत्ये॥ १॥
अवासृजन्त जिव्रयो न देवा भुवः सम्राळिन्द्र सत्ययोनिः।
अहन्नहिं परिशयानमर्णः प्र वर्तनीररदो विश्वधेनाः॥ २॥
अतृण्णुवन्तं वियतमबुध्यमबुध्यमानं सुषुपाणमिन्द्र।
सप्त प्रति प्रवत आशयानमहिं वज्रेण वि रिणा अपर्वन्॥ ३॥
अक्षोदयच्छवसा क्षाम बुध्नं वार्णं वातस्तविषीभिरिन्द्रः।
दृळ्हान्यौभ्नादुशमान ओजोऽवाभिनत्कुकुभः पर्वतानाम्॥ ४॥

अभि प्र दद्रुर्जनयो न गर्भं रथाइव प्र ययुः साकमद्रयः।
अतर्पयो विसृत उब्ज ऊर्मीन्त्वं वृताँ अरिणा इन्द्र सिन्धून्॥ ५॥

अथ द्वितीयो वर्गः॥ २॥

त्वं महीमवनिं विश्वधेनां तुर्वीतये वय्यायं क्षरन्तीम्।
अरमयो नमसैजदगीः सुतरणाँ अकृणोरिन्द्र सिन्धून्॥ ६॥
प्राग्रुवो नभन्वोऽ३ न वक्वा ध्वस्रा अपिन्वद्युवतीर्ऋतज्ञाः।
धन्वान्यज्राँ अपृणत्कृषाणाँ अधोगिन्द्रः स्तर्योऽ३ दंसुपत्नीः॥ ७॥
पूर्वीरुषसः शरदश्च गूर्ता वृत्रं जघन्वाँ असृजद्वि सिन्धून्।
परिष्ठिता अतृणद्बद्बधानाः सीरा इन्द्रः स्रवितवे पृथिव्या॥ ८॥
वज्रीभिः पुत्रमग्रुवो अदानं निवेशनाद्धरिव आ जभर्थ।
व्यन्धो अख्यदहिमाददानो निर्भूदुखच्छित्समरन्त पर्व॥ ९॥
प्र ते पूर्वाणि करणानि विप्राविद्वाँ आह विदुषे करांसि।
यथायथा वृष्ण्यानि स्वगूर्तापांसि राजन्नर्यावविषीः॥ १०॥
नू ष्टुत इन्द्र नू गृणान इषं जरित्रे नद्योऽ३ न पीपेः।
अकारि ते हरिवो ब्रह्म नव्यं धिया स्याम रथ्यः सदासाः॥ ११॥

[२०] विंशं सूक्तम्

ऋषिः—वामदेवः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१, ३, ६ निचृत्त्रिष्टुप्; २ पङ्क्तिः; ४, ५ विराट्त्रिष्टुप्; ७, ९ स्वराट्पङ्क्तिः; ८, १० त्रिष्टुप्; ११ निचृत्पङ्क्तिः॥
स्वरः—१, ३-६, ८, १० धैवतः; २, ७, ९, ११ पञ्चमः॥

अथ तृतीयो वर्गः॥ ३॥

आ न इन्द्रो दूरादा न आसादभिष्टिकृदवसे यासदुग्रः।
ओजिष्ठेभिर्नृपतिर्वज्रबाहुः सङ्गे समत्सु तुर्वणिः पृतन्यून्॥ १॥
आ न इन्द्रो हरिभिर्यात्वच्छार्वाचीनोऽवसे राधसे च।
तिष्ठाति वज्री मघवा विरप्शीमं यज्ञमनु नो वाजसातौ॥ २॥
इमं यज्ञं त्वमस्माकमिन्द्र पुरो दधत्सनिष्यसि क्रतुं नः।
श्वघ्नीव वज्रिन्त्सनये धनानां त्वया वयमर्य आजिं जयेम॥ ३॥
उशन्नु षु णः सुमना उपाके सोमस्य नु सुषुतस्य स्वधावः।
पा इन्द्र प्रतिभृतस्य मध्वः समन्धसा ममदः पृष्ठ्येन॥ ४॥
वि यो रराप्श ऋषिभिर्नवेभिर्वृक्षो न पक्वः सृण्यो न जेता।
मर्यो न योषामभि मन्यमानोऽच्छा विवक्मि पुरुहूतमिन्द्रम्॥ ५॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अथ चतुर्थो वर्गः ॥ ४ ॥

गिरिर्न यः स्वतवाँ ऋष्व इन्द्रः सनादेव सहसे जात उग्रः।
आदर्ता वज्रं स्थविरं न भीम उद्नेव कोशं वसुना न्यृष्टम् ॥ ६ ॥
न यस्य वर्ता जनुषा न्वस्ति न राधस आमरीता मघस्य ।
उद्वावृषाणस्तविषीव उग्रास्मभ्यं दद्धि पुरुहूत रायः ॥ ७ ॥
ईक्षे रायः क्षयस्य चर्षणीनामुत व्रजमपवर्तासि गोनाम् ।
शिक्षा नरः समिथेषु प्रहावान्वस्वो राशिमभिनेतासि भूरिम् ॥ ८ ॥
कया तच्छृण्वे शच्या शचिष्ठो यया कृणोति मुहु का चिदृष्वः।
पुरु दाशुषे विचयिष्ठो अंहोऽथा दधाति द्रविणं जरित्रे ॥ ९ ॥
मा नो मर्धीरा भरा दद्धि तन्नः प्र दाशुषे दातवे भूरि यत्ते।
नव्ये देष्णे शस्ते अस्मिन्त उक्थे प्र ब्रवाम वयमिन्द्र स्तुवन्तः ॥ १० ॥
नू ष्टुत इन्द्र नू गृणान इषं जरित्रे नद्योः३ न पीपेः।
अकारि ते हरिवो ब्रह्म नव्यं धिया स्याम रथ्यः सदासाः ॥ ११ ॥

[२१] एकविंशं सूक्तम्

ऋषिः—वामदेवः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१, २, ७, १० भुरिक्पङ्क्तिः; ३ स्वराट्पङ्क्तिः; ४, ५ निचृत्त्रिष्टुप्; ६, ८ विराट्त्रिष्टुप्; ९ त्रिष्टुप्; ११ निचृत्पङ्क्तिः ॥
स्वरः—१-३,७, १०, ११ पञ्चमः; ४-६, ८, ९ धैवतः ॥

अथ पञ्चमो वर्गः ॥ ५ ॥

आ यात्विन्द्रोऽवस उप न इह स्तुतः सधमादस्तु शूरः।
वावृधानस्तविषीर्यस्य पूर्वीर्द्यौर्न क्षत्रमभिभूति पुष्यात् ॥ १ ॥
तस्येदिह स्तवथ वृष्ण्यानि तुविद्युम्नस्य तुविराधसो नॄन्।
यस्य क्रतुर्विदथ्यो३ न सम्राट् साह्वान्तरुत्रो अभ्यस्ति कृष्टीः ॥ २ ॥
आ यात्विन्द्रो दिव आ पृथिव्या मक्षू समुद्रादुत वा पुरीषात्।
स्वर्णरादवसे नो मरुत्वान्परावतो वा सदनादृतस्य ॥ ३ ॥
स्थूरस्य रायो बृहतो य ईशे तमु ष्टवाम विदथेषविन्द्रम्।
यो वायुना जयति गोमतीषु प्र धृष्णुया नयति वस्यो अच्छ ॥ ४ ॥
उप यो नमो नमसि स्तभायन्नियर्ति वाचं जनयन्यजध्यै।
ऋञ्जसानः पुरुवार उक्थैरिन्द्रं कृण्वीत सदनेषु होता ॥ ५ ॥

अथ षष्ठो वर्गः ॥ ६ ॥

धिषा यदि धिषण्यन्तः सरण्यान्त्सदन्तो अद्रिमौशिजस्य गोहे।
आ दुरोषाः पास्त्यस्य होता यो नो महान्त्संवरणेषु जभ्रिः ॥ ६ ॥
सत्रा यदीं भार्वरस्य वृष्णः सिषक्ति शुष्मः स्तुवते भराय।
गृहा यदीमौशिजस्य गोहे प्र यद्धिये प्रायसे मदाय ॥ ७ ॥
वि यद्वरांसि पर्वतस्य वृण्वे पयोभिर्जिन्वे अपां जवांसि।
विदद्गौरस्य गवयस्य गोहे यदी वाजाय सुध्यो३ वहन्ति ॥ ८ ॥
भद्रा ते हस्ता सुकृतोत पाणी प्रयन्तारा स्तुवते राध इन्द्र।
का ते निषत्तिः किमु नो ममत्सि किं नोदुदु हर्षसे दातवा उ ॥ ९ ॥
एवा वस्व इन्द्रः सत्यः सम्राड्ढन्ता वृत्रं वरिवः पूरवे कः।
पुरुष्टुत क्रत्वा नः शग्धि रायो भक्षीय तेऽवसो दैव्यस्य ॥ १० ॥
नू ष्टुत इन्द्र नू गृणान इषं जरित्रे नद्यो३ न पीपेः।
अकारि ते हरिवो ब्रह्म नव्यं धिया स्याम रथ्यः सदासाः ॥ ११ ॥

तृतीयोऽनुवाकः [२२] द्वाविंशं सूक्तम्

ऋषिः—वामदेवः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१, २, ५, १० निचृत्त्रिष्टुप्; ३, ४ विराट्त्रिष्टुप्; ६, ७, त्रिष्टुप्; ८ भुरिक्पङ्क्तिः; ९ स्वराट्पङ्क्तिः; ११ निचृत्पङ्क्तिः ॥
स्वरः—१-७, १० धैवतः; ८, ९, ११ पञ्चमः ॥

अथ सप्तमो वर्गः ॥ ७ ॥

यत्र इन्द्रो जुजुषे यच्च वष्टि तन्नो महान्करति शुष्म्या चित्।
ब्रह्म स्तोमं मघवा सोममुक्था यो अश्मानं शवसा बिभ्रदेति ॥ १ ॥
वृषा वृषन्धिं चतुरश्रिमस्यन्नुग्रो बाहुभ्यां नृतमः शचीवान्।
श्रिये परुष्णीमुषमाण ऊर्णां यस्याः पवीणि सख्याय विव्ये ॥ २ ॥
यो देवो देवतमो जायमानो महो वाजेभिर्महद्भिश्च शुष्मैः।
दधानो वज्रं बाह्वोरुशन्तं द्यामर्मेन रेजयत्र भूम ॥ ३ ॥
विश्वा रोधांसि प्रवतश्च पूर्वीर्द्यौर्न कृष्वाजनिमन्रेजत क्षाः।
आ मातरा भरति शुष्म्या गोर्नृवत्परिज्मन्नोनुवन्त वार्ताः ॥ ४ ॥
ता तू त इन्द्र महतो महानि विश्वेष्वित्सवनेषु प्रवाच्या।
यच्छूर धृष्णो धृषता दधृष्वानहिं वज्रेण शवसाविवेषीः ॥ ५ ॥

अथ अष्टमो वर्गः ॥ ८ ॥

ता तू ते सत्या तुविनृम्ण विश्वा प्र धेनवः सिस्रते वृष्ण ऊर्ध्वाः।
अधा ह त्वद् वृषमणो भियानाः प्र सिन्धवो जवसा चक्रमन्त ॥ ६ ॥
अत्राह ते हरिवस्ता उ देवीरवोभिरिन्द्र स्तवन्त स्वसारः।
यत्सीमनु प्र मुचो बद्बधाना दीर्घामनु प्रसितिं स्यन्दयध्यै ॥ ७ ॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पिपीळे अंशुर्मद्यो न सिन्धुरा त्वा शमी शशमानस्य शक्तिः।
अस्मद्र्यक्शुशुचानस्य यम्या आशुर्न रश्मिं तुव्योजसं गोः॥ ८॥
अस्मे वर्षिष्ठा कृणुहि ज्येष्ठा नृम्णानि सत्रा सहुरे सहांसि।
अस्मभ्यं वृत्रा सुहनानि रन्धि जहि वधर्वनुषो मर्त्यस्य॥ ९॥
अस्माकमित्सु शृणुहि त्वमिन्द्रास्मभ्यं चित्राँ उप माहि वाजान्।
अस्मभ्यं विश्वा इषणः पुरंधीरस्माकं सु मघवन्बोधि गोदाः॥ १०॥
नू ष्टुत इन्द्र नू गृणान इषं जरित्रे नद्योर न पीपेः।
अकारि ते हरिवो ब्रह्म नव्यं धिया स्याम रथ्यः सदासाः॥ ११॥

[२३] त्रयोविंशं सूक्तम्

ऋषिः—वामदेवः॥ देवता—१-७, ११ इन्द्रः; ८-१० इन्द्र ऋतदेवो वा॥
छन्दः—१-३, ७-९ त्रिष्टुप्; ४, १० निचृत्त्रिष्टुप्; ५, ६ भूरिक्पङ्क्तिः; ११ निचृत्पङ्क्तिः॥ स्वरः—१-४, ७-१० धैवतः; ५, ६, ११ पञ्चमः॥

अथ नवमो वर्गः॥ ९॥

कथा महामवृधत्कस्य होतुर्यज्ञं जुषाणो अभि सोममूधः।
पिबन्नुशानो जुषमाणो अन्धो ववक्ष ऋष्वः शुचते धनाय॥ १॥
को अस्य वीरः सधमादमाप समानंश सुमतिभिः को अस्य।
कदस्य चित्रं चिकिते कदूती वृधे भुवच्छशमानस्य यज्योः॥ २॥
कथा शृणोति हूयमानमिन्द्रः कथा शृण्वन्नवसामस्य वेद।
का अस्य पूर्वीरुपमातयो ह कथैनमाहुः पपुरिं जरित्रे॥ ३॥
कथा सबाधः शशमानो अस्य नशदभि द्रविणं दीध्यानः।
देवो भुवन्नवेदा म ऋतानां नमो जगृभ्वाँ अभि यज्जुजोषत्॥ ४॥
कथा कदस्या उषसो व्युष्टौ देवो मर्तस्य सख्यं जुजोष।
कथा कदस्य सख्यं सखिभ्यो ये अस्मिन्कामं सुयुजं ततस्रे॥ ५॥

अथ दशमो वर्गः॥ १०॥

किमादमत्रं सख्यं सखिभ्यः कदा नु ते भ्रात्रं प्र ब्रवाम।
श्रिये सुदृशो वपुरस्य सर्गाः स्वर्ण चित्रतममिष आ गोः॥ ६॥
द्रुहं जिघांसन्ध्वरसमनिन्द्रां तेतिक्ते तिग्मा तुजसे अनीका।
ऋणा चिद्यत्र ऋणया न उग्रो दूरे अज्ञाता उषसो बबाधे॥ ७॥
ऋतस्य हि शुरुधः सन्ति पूर्वीर्ऋतस्य धीतिर्वृजिनानि हन्ति।
ऋतस्य श्लोको बधिरा ततर्द कर्णा बुधानः शुचमान आयोः॥ ८॥

ऋतस्य दृळ्हा धरुणानि सन्ति पुरूणि चन्द्रा वपुषे वपूंषि।
ऋतेन दीर्घमिषणन्त पृक्ष ऋतेन गावं ऋतमा विवेशुः॥ ९॥
ऋतं येमान ऋतमिद्वनोत्यृतस्य शुष्मस्तुरया उ गव्युः।
ऋतायं पृथ्वी बहुले गभीरे ऋतायं धेनू परमे दुहाते॥ १०॥
नू ष्टुत इन्द्र नू गृणान इषं जरित्रे नद्योर न पीपेः।
अकारि ते हरिवो ब्रह्म नव्यं धिया स्याम रथ्यः सदासाः॥ ११॥

[२४] चतुर्विंशं सूक्तम्

ऋषिः—वामदेवः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१, ५, ७ त्रिष्टुप्; २, ८ भुरिक्पङ्क्तिः; ३, ९ निचृत्त्रिष्टुप्; ४ विराट्त्रिष्टुप्; ६ स्वराट्पङ्क्तिः; १० निचृदनुष्टुप्; ११ निचृत्पङ्क्तिः॥ स्वरः—१, ३-५, ७, ९ धैवतः; २, ६, ८, ११ पञ्चमः; १० गान्धारः॥

अथ एकादशो वर्गः॥ ११॥

का सुष्टुतिः शवसः सूनुमिन्द्रमर्वाचीनं राधस आ ववर्तत्।
ददिर्हि वीरो गृणते वसूनि स गोपतिर्निष्षिधो नो जनासः॥ १॥
स वृत्रहत्ये हव्यः स ईड्यः स सुष्टुत इन्द्रः सत्यराधाः।
स यामन्ना मघवा मर्त्याय ब्रह्मण्यते सुष्वये वरिवो धात्॥ २॥
तमिन्नरो वि ह्वयन्ते समीके रिरिक्वांसस्तन्वः कृण्वत त्राम्।
मिथो यत्त्यागमुभयासो अग्मन्नरस्तोकस्य तनयस्य सातौ॥ ३॥
क्रतूयन्ति क्षितयो योग उग्राशुषाणासो मिथो अर्णसातौ।
सं यद्विशोऽववृत्रन्त युध्मा आदिन्नेम इन्द्रयन्ते अभीके॥ ४॥
आदिद्ध नेम इन्द्रियं यजन्त आदित्पक्तिः पुरोळाशं रिरिच्यात्।
आदित्सोमो वि पपृच्यादसुष्वीनादिज्जुजोष वृषभं यजध्यै॥ ५॥

अथ द्वादशो वर्गः॥ १२॥

कृणोत्यस्मै वरिवो य इत्थेन्द्राय सोममुशते सुनोति।
सध्रीचीनेन मनसाविवेनं तमित्सखायं कृणुते समत्सु॥ ६॥
य इन्द्राय सुनवत्सोममद्य पचात्पक्तीरुत भृज्जाति धानाः।
प्रति मनायोरुचथानि हर्यन्तस्मिन्दधद् वृषणं शुष्ममिन्द्रः॥ ७॥
यदा समर्यं व्यचेदृघावा दीर्घं यदाजिमभ्यख्यदर्यः।
अचिक्रदद् वृषणं पत्यचछा दुरोण आ निशितं सोमसुद्भिः॥ ८॥
भूयसा वस्नमचरत्कनीयोऽविक्रीतो अकानिषं पुनर्यन्।
स भूयसा कनीयो नारिरेचीद्दीना दक्षा वि दुहन्ति प्र वाणम्॥ ९॥
क इमं दशभिर्ममेन्द्रं क्रीणाति धेनुभिः।
यदा वृत्राणि जङ्घनदथैनं मे पुनर्ददत्॥ १०॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नू ष्टुत इन्द्र नू गृणान इषं जरित्रे नद्योऽ३ न पीपेः ।
अकारि ते हरिवो ब्रह्म नव्यं धिया स्याम रथ्यः सदासाः ॥ ११ ॥

[२५] पञ्चविंशं सूक्तम्

ऋषिः—वामदेवः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१ निचृत्पङ्क्तिः २, ८ स्वराट्पङ्क्तिः; ३, ५, ७ निचृत्त्रिष्टुप्; ४, ६ भुरिक्पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१, २, ४, ६, ८ पञ्चमः; ३, ५, ७ धैवतः ॥

अथ त्रयोदशो वर्गः ॥ १३ ॥

को अद्य नर्यो देवकाम उशन्निन्द्रस्य सख्यं जुजोष ।
को वा महेऽवसे पार्याय समिद्धे अग्नौ सुतसोम ईट्टे ॥ १ ॥
को नानाम वचसा सोम्याय मनायुर्वी भवति वस्त उस्राः ।
क इन्द्रस्य युज्यं कः सखित्वं को भ्रात्रं वष्टि कवये क ऊती ॥ २ ॥
को देवानामवो अद्या वृणीते क आदित्याँ अदितिं ज्योतिरीट्टे ।
कस्याश्विनाविन्द्रो अग्निः सुतस्यांशोः पिबन्ति मनसाविवेनम् ॥ ३ ॥
तस्मा अग्निर्भारतः शर्म यंसज्ज्योक्पश्यात्सूर्यमुच्चरन्तम् ।
य इन्द्राय सुनवामेत्याह नरे नर्याय नृतमाय नृणाम् ॥ ४ ॥
न तं जिनन्ति बहवो न दभ्रा उर्वस्मा अदितिः शर्म यंसत् ।
प्रियः सुकृत्प्रिय इन्द्रे मनायुः प्रियः सुप्रावीः प्रियो अस्य सोमी ॥ ५ ॥

अथ चतुर्दशो वर्गः ॥ १४ ॥

सुप्राव्यः प्राशुषाळेष वीरः सुष्वेः पंक्तिं कृणुते केवलेन्द्रः ।
नासुष्वेरापिर्न सखा न जामिर्दुष्प्रावोऽवहन्तेदवाचः ॥ ६ ॥
न रेवता पणिना सख्यमिन्द्रोऽसुन्वता सुतपाः सं गृणीते ।
आस्य वेदः खिदति हन्ति नग्नं वि सुष्वये पक्तये केवलो भूत् ॥ ७ ॥
इन्द्रं परेऽवरे मध्यमास इन्द्रं यान्तोऽवसितास इन्द्रम् ।
इन्द्रं क्षियन्त उत युध्यमाना इन्द्रं नरो वाजयन्तो हवन्ते ॥ ८ ॥

[२६] षड्विंशं सूक्तम्

ऋषिः—वामदेवः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१ पङ्क्तिः; २ भुरिक्पङ्क्तिः; ३, ७ स्वराट्पङ्क्तिः; ४ निचृत्त्रिष्टुप्; ५ विराट्त्रिष्टुप्; ६ त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१-३, ७ पञ्चमः; ४-६ धैवतः ॥

अथ पञ्चदशो वर्गः ॥ १५ ॥

अहं मनुरभवं सूर्यश्चाहं कक्षीवाँ ऋषिरस्मि विप्रः ।
अहं कुत्समार्जुनेयं न्यृञ्जेऽहं कविरुशना पश्यता मा ॥ १ ॥
अहं भूमिमददामार्यायाहं वृष्टिं दाशुषे मर्त्याय ।
अहमपो अनयं वावशाना मम देवासो अनुकेतमायन् ॥ २ ॥
अहं पुरो मन्दसानो व्यैरं नव साकं नवतीः शम्बरस्य ।
शततमं वेश्यं सर्वताता दिवोदासमतिथिग्वं यदावम् ॥ ३ ॥
प्र सु ष विभ्यो मरुतो विरस्तु प्र श्येनः श्येनेभ्य आशुपत्वा ।
अचक्रया यत्स्वधया सुपर्णो हव्यं भरन्मनवे देवजुष्टम् ॥ ४ ॥
भरद्यदि विरतो वेविजानः पथोरुणा मनोजवा असर्जि ।
तूयं ययौ मधुना सोम्येनोत श्रवो विविदे श्येनो अत्र ॥ ५ ॥
ऋजीपी श्येनो ददमानो अंशुं परावतः शकुनो मन्द्रं मदम् ।
सोमं भरदादृहाणो देवावन्दिवो अमुष्मादुत्तरादादाय ॥ ६ ॥
आदाय श्येनो अभरत्सोमं सहस्रं सवाँ अयुतं च साकम् ।
अत्रा पुरंधिरजहादरातीर्मदे सोमस्य मूरा अमूरः ॥ ७ ॥

[२७] सप्तविंशं सूक्तम्

ऋषिः—वामदेवः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१, ४ निचृत्त्रिष्टुप्; २ विराट्त्रिष्टुप्; ३ त्रिष्टुप्; ५ निचृच्छक्करी ॥ स्वरः—१-४ धैवतः; ५ पञ्चमः ॥

अथ षोडशो वर्गः ॥ १६ ॥

गर्भे नु सन्नन्वेषामवेदमहं देवानां जनिमानि विश्वा ।
शतं मा पुर आयसीररक्षन्नधः श्येनो जवसा निरदीयम् ॥ १ ॥
न घा स मामप जोषं जभाराभीमास त्वक्षसा वीर्येण ।
ईर्मा पुरंधिरजहादरातीरुत वातो अतरच्छूशुवानः ॥ २ ॥
अव यच्छ्येनो अस्वनीदध द्योर्वि यद्यदि वातं ऊहुः पुरंधिम् ।
सृजद्यदस्मा अव ह क्षिपज्यां कृशानुरस्ता मनसा भुरण्यन् ॥ ३ ॥
ऋजिप्य ईमिन्द्रावतो न भुज्युं श्येनो जभार बृहतो अधि ष्णोः ।
अन्तः पतत्पतत्र्यस्य पर्णमध यामनि प्रसितस्य तद्वेः ॥ ४ ॥
अध श्वेतं कलशं गोभिरक्तमापिप्यानं मघवा शुक्रमन्धः ।
अध्वर्युभिः प्रयतं मध्वो अग्रमिन्द्रो मदाय प्रति धत्पिबध्यै
शूरो मदाय प्रति धत्पिबध्यै ॥ ५ ॥

[२८] अष्टाविंशं सूक्तम्

ऋषिः—वामदेवः ॥ देवता—इन्द्रासोमौ ॥ छन्दः—१ निचृत्त्रिष्टुप्; २ भुरिक्पङ्क्तिः; ३ विराट्त्रिष्टुप्; ४ त्रिष्टुप्; ५ पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१, ३, ४ धैवतः; २, ५ पञ्चमः ॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अथ सप्तदशो वर्गः ॥ १७ ॥

त्वा युजा तव तत्सोम सख्य इन्द्रो अपो मनवे सस्रुतस्कः।
अहन्नहिमरिणात्सप्त सिन्धूनपावृणोदपिहितेव खानि ॥ १ ॥
त्वा युजा नि खिदत्सूर्यस्येन्द्रश्चक्रं सहसा सद्य इन्दो।
अधि ष्णुना बृहता वर्तमानं महो द्रुहो अप विश्वायु धायि ॥ २ ॥
अहन्निन्द्रो अदहदग्निरिन्दो पुरा दस्यून्मध्यन्दिनादभीके।
दुर्गे दुरोणे क्रत्वा न यातां पुरू सहस्रा शर्वा नि बर्हीत् ॥ ३ ॥
विश्वस्मात्सीमधमाँ इन्द्र दस्यून्विशो दासीरकृणोरप्रशस्ताः।
अबाधेथामभृणतं नि शत्रूनविन्देथामपचितिं वधत्रैः ॥ ४ ॥
एवा सत्यं मघवाना युवं तदिन्द्रश्च सोमोर्वमश्व्यं गोः।
आददृतमपिहितान्यश्ना रिरिचथुः क्षाश्चित्ततृदाना ॥ ५ ॥

[२९] एकोनत्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—वामदेवः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१ विराट्त्रिष्टुप्; २, ४ त्रिष्टुप्; ३ निचृत्त्रिष्टुप्; ५ स्वराट्पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१-४ धैवतः; ५ पञ्चमः ॥

अथ अष्टादशो वर्गः ॥ १८ ॥

आ नः स्तुत उप वाजेभिरूती इन्द्र याहि हरिभिर्मन्दसानः।
तिरश्चिद्यः सवना पुरूण्याङ्गूषेभिर्गृणानः सत्यराधाः ॥ १ ॥
आ हि ष्मा याति नर्यश्चिकित्वान्हूयमानः सोतृभिरुप यज्ञम्।
स्वश्वो यो अभीरुर्मन्यमानः सुष्वाणेभिर्मदति सं ह वीरैः ॥ २ ॥
श्रावयेदस्य कर्णा वाजयध्यै जुष्टामनु प्र दिशं मन्दयध्यै।
उद्वावृषाणो राधसे तुविष्मान्करत्र इन्द्रः सुतीर्थाभयं च ॥ ३ ॥
अच्छा यो गन्ता नाधमानमूती इत्था विप्रं हवमानं गृणन्तम्।
उप त्मनि दधानो धुर्याश्वशून्त्सहस्राणि शतानि वज्रबाहुः ॥ ४ ॥
त्वोतासो मघवन्निन्द्र विप्रा वयं ते स्याम सूरयो गृणन्तः।
भेजानासो बृहद्दिवस्य राय आकाय्यस्य दावने पुरुक्षोः ॥ ५ ॥

[३०] त्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—वामदेवः ॥ देवता—१-८, १२-२४ इन्द्रः; ९-११ इन्द्र उषाश्च ॥ छन्दः—१, ३, ५, ९, ११, १२, १६, १८, १९, २३ निचृद्गायत्री; २, ७, १०, १३-१५, १७, २१, २२ गायत्री; ४, ६ विराड्गायत्री; ८, २४ विराडनुष्टुप्; २० पिपीलिकामध्यागायत्री ॥ स्वरः—१-७, ९-२३ षड्जः; ८, २४ ऋषभः ॥

अथ एकोनविंशो वर्गः ॥ १९ ॥

नकिरिन्द्र त्वदुत्तरो न ज्यायाँ अस्ति वृत्रहन्। नकिरेवा यथा त्वम् ॥ १ ॥
सत्रा ते अनु कृष्टयो विश्वा चक्रेव वावृतुः। सत्रा महाँ असि श्रुतः ॥ २ ॥
विश्वे चनेदना त्वा देवास इन्द्र युयुधुः। यदह नक्तमातिरः ॥ ३ ॥
यत्रोत बाधितेभ्यश्चक्रं कुत्साय युध्यते। मुषाय इन्द्र सूर्यम् ॥ ४ ॥
यत्र देवाँ ऋघायतो विश्वाँ अयुध्य एक इत्। त्वमिन्द्र वनूँरहन् ॥ ५ ॥

अथ विंशो वर्गः ॥ २० ॥

यत्रोत मर्त्यो यत कमरिणा इन्द्र सूर्यम्। प्रावः शचीभिरेतशम् ॥ ६ ॥
किमादुतासि वृत्रहन्मघवन्मन्युमत्तमः। अत्राह दानुमातिरः ॥ ७ ॥
एतद्धेदुत वीर्यमिन्द्र चकर्थ पौंस्यम्।
स्त्रियं यद्दुर्हणायुवं वधीर्दुहितरं दिवः ॥ ८ ॥
दिवश्चिद्धा दुहितरं महान्महीयमानाम्। उषासमिन्द्र सं पिणक् ॥ ९ ॥
अपोषा अनसः सरत्संपिष्टादह बिभ्युषी। नि यत्सीं शिश्नथद्वृषा ॥ १० ॥

अथ एकविंशो वर्गः ॥ २१ ॥

एतदस्या अनः शये सुसंपिष्टं विपाश्या। ससार सीं परावतः ॥ ११ ॥
उत स्रिन्धुं विबाल्यं वितस्थानामधि क्षमि। परि ष्ठा इन्द्र मायया ॥ १२ ॥
उत शुष्णस्य धृष्णुया प्र मृक्षो अभि वेदनम्। पुरो यदस्य संपिणक् ॥ १३ ॥
उत दासं कौलितरं बृहतः पर्वतादधि। अवाहन्निन्द्र शम्बरम् ॥ १४ ॥
उत दासस्य वर्चिनः सहस्राणि शतावधीः। अधि पञ्च प्रधीँरिव ॥ १५ ॥

अथ द्वाविंशो वर्गः ॥ २२ ॥

उत त्यं पुत्रमग्रुवः परावृक्तं शतक्रतुः। उक्थेष्विन्द्र आभजत् ॥ १६ ॥
उत त्या तुर्वशायदू अस्नाता शचीपतिः। इन्द्रो विद्वाँ अपारयत् ॥ १७ ॥
उत त्या सद्य आयसी सरयोरिन्द्र पारतः। अर्णाचित्ररथावधीः ॥ १८ ॥
अनु द्वा जहिता नयोऽन्धं श्रोणं च वृत्रहन्। न तत्ते सुम्नमष्टवे ॥ १९ ॥
शतमश्मन्मयीनां पुरामिन्द्रो व्यास्यत्। दिवोदासाय दाशुषे ॥ २० ॥

अथ त्रयोविंशो वर्गः ॥ २३ ॥

अस्वापयद्दभीतये सहस्रा त्रिंशतं हथैः। दासानामिन्द्रो मायया ॥ २१ ॥
स धेदुतासि वृत्रहन्त्समान इन्द्र गोपतिः। यस्ता विश्वानि चिच्युषे ॥ २२ ॥
उत नूनं यदिन्द्रियं करिष्या इन्द्र पौंस्यम्। अद्या नकिष्टदा मिनत् ॥ २३ ॥
वामंवामं त आदुरे देवो ददात्वर्यमा।
वामं पूषा वामं भगो वामं देवः करूळती ॥ २४ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

[३१] एकत्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—वामदेवः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१, ७-१०, १४ गायत्री; २, ६, १२, १३, १५ निचृद्गायत्री; ३ पादनिचृद्गायत्री; ४, ५ विराड्गायत्री; ११ पिपीलिकामध्यागायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथ चतुर्विंशो वर्गः ॥ २४ ॥

कया नश्चित्र आ भुवदूती सदावृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता ॥ १ ॥
कस्त्वा सत्यो मदानां मंहिष्ठो मत्सदन्धसः। दृळ्हा चिदारुजे वसु ॥ २ ॥
अभी षु णः सखीनामविता जरितॄणाम्। शतं भवास्यूतिभिः ॥ ३ ॥
अभी न आ ववृत्स्व चक्रं न वृत्तमर्वतः। नियुद्भिश्चर्षणीनाम् ॥ ४ ॥
प्रवता हि क्रतूनामा हा पदेव गच्छसि। अभक्षि सूर्ये सचा ॥ ५ ॥

अथ पञ्चविंशो वर्गः ॥ २५ ॥

सं यत्त इन्द्र मन्यवः सं चक्राणि दधन्विरे। अध त्वे अध सूर्ये ॥ ६ ॥
उत स्मा हि त्वामाहुरिन्मघवानं शचीपते। दातारमविदीधयुम् ॥ ७ ॥
उत स्मा सद्य इत्परि शशमानाय सुन्वते। पुरू चिन्मंहसे वसु ॥ ८ ॥
नहि ष्मा ते शतं चन राधो वरन्त आमुरः। न च्यौत्नानि करिष्यतः ॥ ९ ॥
अस्माँ अवन्तु ते शतमस्मान्त्सहस्रमूतयः। अस्मान्विश्वा अभिष्टयः ॥ १० ॥

अथ षड्विंशो वर्गः ॥ २६ ॥

अस्माँ ऊहा वृणीष्व सख्याय स्वस्तये। महो राये दिवित्मते ॥ १ ॥
अस्मां अविड्ढि विश्वहेन्द्र राया परीणसा। अस्मान्विश्वाभिरूतिभिः ॥ २ ॥
अस्मभ्यं ताँ अपा वृधि व्रजाँ अस्तेव गोमतः। नवाभिरिन्दोतिभिः ॥ ३ ॥
अस्माकं धृष्णुया रथो द्युमाँ इन्द्रानपच्युतः। गव्युरश्वयुरीयते ॥ ४ ॥
अस्माकमुत्तमं कृधि श्रवो देवेषु सूर्य। वर्धिष्ठं द्यामिवोपरि ॥ ५ ॥

[३२] द्वात्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—वामदेवः ॥ देवता—१-२२ इन्द्रः; २३, २४ इन्द्राश्वौ ॥ छन्दः—१, ८-१०, १४, १६, १८, २२, २३ गायत्री; २, ४, ७ विराड्गायत्री; ३, ५, ६, १२, १३, १५, १९-२१ निचृद्गायत्री; ११ पिपीलिका-मध्यागायत्री; १७ पादनिचृद्गायत्री; २४ स्वराडार्ची-गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथ सप्तविंशो वर्गः ॥ २७ ॥

आ तू न इन्द्र वृत्रहन्नस्माकमर्धमा गहि। महान्महीभिरूतिभिः ॥ १ ॥
भूमिश्चिद्धासि तूतुजिरा चित्र चित्रिणीष्वा। चित्रं कृणोष्यूतये ॥ २ ॥
दभ्रेभिश्चिच्छशीयांसं हंसि व्राधन्तमोजसा। सखिभिर्ये त्वे सचा ॥ ३ ॥
वयमिन्द्र त्वे सचा वयं त्वाभि नोनुमः। अस्माँअस्माँ इदुदव ॥ ४ ॥
स नश्चित्राभिरद्रिवोऽनवद्याभिरूतिभिः। अनाधृष्टाभिरा गहि ॥ ५ ॥

अथ अष्टाविंशो वर्गः ॥ २८ ॥

भूयामो षु त्वावतः सखाय इन्द्र गोमतः। युजो वाजाय घृष्वये ॥ ६ ॥
त्वं ह्येक ईशिष इन्द्र वाजस्य गोमतः। स नो यन्धि महीमिषम् ॥ ७ ॥
न त्वा वरन्ते अन्यथा यद्दित्ससि स्तुतो मघम्। स्तोतृभ्य इन्द्र गिर्वणः ॥ ८ ॥
अभि त्वा गोतमा गिरानूषत प्र दावने। इन्द्र वाजाय घृष्वये ॥ ९ ॥
प्र ते वोचाम वीर्या या मन्दसान आरुजः। पुरो दासीरभीत्य ॥ १० ॥

अथ एकोनत्रिंशो वर्गः ॥ २९ ॥

ता ते गृणन्ति वेधसो यानि चकर्थ पौंस्या। सुतेष्विन्द्र गिर्वणः ॥ ११ ॥
अवीवृधन्त गोतमा इन्द्र त्वे स्तोमवाहसः। ऐषु धा वीरवद्यशः ॥ १२ ॥
यच्चिद्धि शश्वतामसीन्द्र साधारणस्त्वम्। तं त्वा वयं हवामहे ॥ १३ ॥
अर्वाचीनो वसो भवास्मे सु मत्स्वान्धसः। सोमानामिन्द्र सोमपाः ॥ १४ ॥
अस्माकं त्वा मतीनामा स्तोम इन्द्र यच्छतु। अवांगा वर्तया हरी ॥ १५ ॥
पुरोळाशं च नो घसो जोषयासे गिरश्च नः। वधूयुरिव योषणाम् ॥ १६ ॥

अथ त्रिंशो वर्गः ॥ ३० ॥

सहस्रं व्यतीनां युक्तानामिन्द्रमीमहे। शतं सोमस्य खार्यः ॥ १७ ॥
सहस्रा ते शता वयं गवामा च्यावयामसि। अस्मत्रा राध एतु ते ॥ १८ ॥
दश ते कलशानां हिरण्यानामधीमहि। भूरिदा असि वृत्रहन् ॥ १९ ॥
भूरिदा भूरि देहि नो मा दभ्रं भूर्या भर। भूरि घेदिन्द्र दित्ससि ॥ २० ॥
भूरिदा ह्यसि श्रुतः पुरुत्रा शूर वृत्रहन्। आ नो भजस्व राधसि ॥ २१ ॥
प्र ते बभ्रू विचक्षण शंसामि गोषणो नपात्। माभ्यां गा अनु शिश्रथः ॥ २२ ॥
कनीनकेव विद्रधे नवे दुपदे अर्भके। बभ्रू यामेषु शोभेते ॥ २३ ॥
अरं म उस्रयाम्णेऽरमनुस्रयाम्णे। बभ्रू यामेष्वस्रिधा ॥ २४ ॥

इति तृतीयाऽष्टके षष्ठोऽध्यायः ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri Gyaan Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अथ सप्तमोऽध्यायः

चतुर्थोऽनुवाकः [३३] त्रयस्त्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—वामदेवः॥ देवता—ऋभवः॥ छन्दः—१ भुरिक्त्रिष्टुप्; २, ४, ५, ११ त्रिष्टुप्; ३, ६, १० निचृत्त्रिष्टुप्; ७, ८ भुरिक्पङ्क्तिः; ९ स्वराट्पङ्क्तिः॥ स्वरः—१-६, १०, ११ धैवतः; ७-९ पञ्चमः॥

अथ प्रथमो वर्गः॥ १॥

प्र ऋभुभ्यो दूतमिव वाचमिष्य उपस्तिरे श्वैतरीं धेनुमीळे।
ये वातजूतास्तरणिभिरेवैः परि द्यां सद्यो अपसो बभूवुः॥ १॥
यदादर्मक्रंन्नृभवः पितृभ्यां परिविष्टी वेषणा दंसनाभिः।
आदिद्देवानामुप सख्यमायन्धीरासः पुष्टिमवहन्मनायै॥ २॥
पुनर्ये चक्रुः पितरा युवाना सना यूपेव जरणा शयाना।
ते वाजो विभ्वाँ ऋभुरिन्द्रवन्तो मधुप्सरसो नोऽवन्तु यज्ञम्॥ ३॥
यत्संवत्समृभवो गामरक्षन्यत्संवत्समृभवो मा अपिंशन्।
यत्संवत्समभरन्भासो अस्यास्ताभिः शमीभिरमृतत्वमाशुः॥ ४॥
ज्येष्ठ आह चमसा द्वा करेति कनीयान्त्रीन्कृणवामेत्याह।
कनिष्ठ आह चतुरस्करेति त्वष्ट ऋभवस्तत्पनयद्वचो वः॥ ५॥

अथ द्वितीयो वर्गः॥ २॥

सत्यमूचुर्नर एवा हि चक्रुरनु स्वधामृभवो जग्मुरेताम्।
विभ्राजमानांश्चमसाँ अहेवावेनत्त्वष्टा चतुरो ददृश्वान्॥ ६॥
द्वादश द्यून्यदगोहास्यातिथ्ये रणन्नृभवः ससन्तः।
सुक्षेत्रांकृण्वन्नयन्त सिन्धून्धन्वातिष्ठन्नोषधीर्निम्नमापः॥ ७॥
रथं ये चक्रुः सुवृतं नरेष्ठां ये धेनुं विश्वजुवं विश्वरूपाम्।
त आ तक्षन्त्वृभवो रयिं नः स्ववसः स्वपसः सुहस्ताः॥ ८॥
अपो होषामजुषन्त देवा अभि क्रत्वा मनसा दीध्यानाः।
वाजो देवानामभवत्सुकर्मेन्द्रस्य ऋभुक्षा वरुणस्य विभ्वा॥ ९॥
ये हरी मेधयोक्था मदन्त इन्द्राय चक्रुः सयुजा ये अश्वा।
ते रायस्पोषं द्रविणान्यस्मे धत्त ऋभवः क्षेमयन्तो न मित्रम्॥ १०॥
इदाह्नः पीतिमुत वो मदं धुर्न ऋते श्रान्तस्य सख्याय देवाः।
ते नूनमस्मे ऋभवो वसूनि तृतीये अस्मिन्त्सवने दधात॥ ११॥

[३४] चतुस्त्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—वामदेवः॥ देवता—ऋभवः॥ छन्दः—१ विराट्त्रिष्टुप्; २ भुरिक्त्रिष्टुप्; ३, ११ स्वराट्पङ्क्तिः; ४, ६-९ निचृत्त्रिष्टुप्; ५ भुरिक्पङ्क्तिः; १० त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१, २, ४, ६-१० धैवतः; ३, ५, ११ पञ्चमः॥

अथ तृतीयो वर्गः॥ ३॥

ऋभुर्विभ्वा वाज इन्द्रो नो अच्छेमं यज्ञं रत्नधेयोप यात।
इदा हि वो धिषणा देव्यह्नामधात्पीतिं सं मदा अग्मता वः॥ १॥
विदानासो जन्मनो वाजरत्ना उत ऋतुभिर्ऋभवो मादयध्वम्।
सं वो मदा अग्मत सं पुरंधिः सुवीरामस्मे रयिमेरयध्वम्॥ २॥
अयं वो यज्ञ ऋभवोऽकारि यमा मनुष्वत्प्रदिवो दधिध्वे।
प्र वोऽच्छा जुजुषाणासो अस्थुरभूत विश्वे अग्रियोत वाजाः॥ ३॥
अभूदु वो विधते रत्नधेयमिदा नरो दाशुषे मर्त्याय।
पिबत वाजा ऋभवो ददे वो महि तृतीयं सवनं मदाय॥ ४॥
आ वाजा यातोप न ऋभुक्षा महो नरो द्रविणसो गृणानाः।
आ वः पीतयोऽभिपित्वे अह्नामिमा अस्तं नवस्वइव ग्मन्॥ ५॥

अथ चतुर्थो वर्गः॥ ४॥

आ नपातः शवसो यातनोपेमं यज्ञं नमसा हूयमानाः।
सजोषसः सूरयो यस्य च स्थ मध्वः पात रत्नधा इन्द्रवन्तः॥ ६॥
सजोषा इन्द्र वरुणेन सोमं सजोषाः पाहि गिर्वणो मरुद्भिः।
अग्रेपाभिर्ऋतुपाभिः सजोषा ग्नास्पत्नीभी रत्नधाभिः सजोषाः॥ ७॥
सजोषस आदित्यैर्मादयध्वं सजोषस ऋभवः पर्वतेभिः।
सजोषसो दैव्येना सवित्रा सजोषसः सिन्धुभी रत्नधेभिः॥ ८॥
ये अश्विना ये पितरा य ऊती धेनुं ततक्षुर्ऋभवो ये अश्वा।
ये अंसत्रा य ऋधग्रोदसी ये विभ्वो नरः स्वपत्यानि चक्रुः॥ ९॥
ये गोमन्तं वाजवन्तं सुवीरं रयिं धत्थ वसुमन्तं पुरुक्षुम्।
ते अग्रेपा ऋभवो मन्दसाना अस्मे धत्त ये च रातिं गृणन्ति॥ १०॥
नापाभूत न वोऽतीतृषामानिःशस्ता ऋभवो यज्ञे अस्मिन्।
समिन्द्रेण मदथ सं मरुद्भिः सं राजभी रत्नधेयाय देवाः॥ ११॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

[३५] पञ्चत्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—वामदेवः ॥ देवता—ऋभवः ॥ छन्दः—१, २, ४, ६, ७, ९ निचृत्त्रिष्टुप्; ३ भुरिक्पङ्क्तिः; ५ स्वराट्पङ्क्तिः; ८ त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१, २, ४, ६-९ धैवतः; ३, ५ पञ्चमः ॥

अथ पञ्चमो वर्गः ॥ ५ ॥

इ॒होप॑ यात शवसो नपातः॒ सौध॑न्वना ऋभवो॒ माप॑ भूत।
अ॒स्मिन्हि वः॒ सव॑ने रत्न॒धेयं॒ गम॒न्त्विन्द्र॒मनु॑ वो॒ मदा॑सः ॥ १ ॥
आग॑न्नृभू॒णामि॒ह र॑त्न॒धेय॒मभू॒त्सोम॑स्य॒ सुषु॑तस्य पी॒तिः ।
सु॒कृ॒त्यया॒ यत्स्व॑प॒स्यया॑ चँ॒ एकं॑ विच॒क्र च॑म॒सं च॑तु॒र्धा ॥ २ ॥
व्य॑कृणोत चम॒सं च॑तु॒र्धा सखे॒ वि शि॒क्षेत्य॑ब्रवीत।
अथै॑त वाजा अ॒मृत॑स्य॒ पन्थां॑ ग॒णं दे॒वाना॑मृभवः सुहस्ताः ॥ ३ ॥
किं॒मयः॑ स्विच्चम॒स ए॒ष आ॑स॒ यं काव्ये॑न च॒तुरो॑ विच॒क्र।
अथा॑ सुनुध्वं॒ सव॑नं॒ मदा॑य पा॒त ऋ॑भवो॒ मधु॑नः सो॒म्यस्य॑ ॥ ४ ॥
शच्या॑कर्त पि॒तरा॒ युवा॑ना॒ शच्या॑कर्त चम॒सं दे॑व॒पान॑म्।
शच्या॒ हरी॒ धनु॑तरावतष्टेन्द्र॒वाहा॑वृभवो वाजरत्नाः ॥ ५ ॥

अथ षष्ठो वर्गः ॥ ६ ॥

यो वः॑ सु॒नोत्य॑भिपि॒त्वे अह्नां॑ ती॒व्रं वा॑जासः॒ सव॑नं॒ मदा॑य।
तस्मै॑ र॒यिमृ॑भवः॒ सर्व॑वीर॒मा त॑क्षत वृषणो मन्दसा॒नाः ॥ ६ ॥
प्रा॒तः सु॒तम॑पिबो हर्यश्व॒ माध्य॑न्दिनं॒ सव॑नं॒ केव॑लं ते।
समृ॒भुभिः॑ पिबस्व रत्न॒धेभिः॒ सखीँ॒र्यो इ॑न्द्र चकृ॒षे सु॑कृ॒त्या ॥ ७ ॥
ये दे॒वासो॒ अभ॑वता सुकृ॒त्या श्ये॒नाइ॒वेदधि॑ दि॒वि नि॑षे॒द।
ते रत्नं॑ धात शवसो नपातः॒ सौध॑न्वना॒ अभ॑वता॒मृता॑सः ॥ ८ ॥
यत्तृ॒तीयं॒ सव॑नं रत्न॒धेय॒मकृ॑णुध्वं स्वप॒स्या सु॑हस्ताः ।
तदृ॑भवः॒ परि॑षिक्तं व ए॒तत्सं मदे॑भिरिन्द्रि॒येभिः॑ पिबध्वम् ॥ ९ ॥

[३६] षट्त्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—वामदेवः ॥ देवता—ऋभवः ॥ छन्दः—१, ६, ८ स्वराट्त्रिष्टुप्; २-५ विराड्जगती; ७ जगती; ९ त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१, ६, ८, ९ धैवतः; २-५, ७ निषादः ॥

अथ सप्तमो वर्गः ॥ ७ ॥

अ॒न॒श्वो जा॒तो अ॑नभी॒शुरु॒क्थ्यो॒३॒॑ रथ॑स्त्रिच॒क्रः परि॑ वर्तते॒ रजः॑।
म॒हत्तद्वो॑ दे॒व्य॑स्य प्र॒वाच॑नं॒ द्यामृ॑भवः पृथि॒वीं यच्च॒ पुष्य॑थ ॥ १ ॥
रथं॒ ये च॒क्रुः सु॒वृतं॑ सु॒चेत॒सोऽवि॑ह्वरन्तं॒ मन॑स॒स्परि॒ ध्यया॑।
ताँ ऊ॒ न्व१॒॑स्य सव॑नस्य पी॒तय॒ आ वो॑ वाजा ऋभवो वेदयामसि ॥ २ ॥
तद्वो॑ वाजा ऋभवः सुप्रवाच॒नं दे॒वेषु॑ विभ्वो अभवन्महित्व॒नम्।
जिव्री॒ यत्सन्ता॑ पि॒तरा॑ सना॒जुरा॒ पुन॒र्युवा॑ना च॒रथा॑य॒ तक्ष॑थ ॥ ३ ॥
एकं॒ वि च॑क्र चम॒सं चतु॑र्वयं॒ निश्चर्म॑णो॒ गाम॑रिणीत धी॒तिभिः॑।
अथा॑ दे॒वेष्व॑मृत॒त्वमा॑नश श्रु॒ष्टी वा॑जा ऋभव॒स्तद्व॑ उ॒क्थ्य॑म् ॥ ४ ॥
ऋ॒भु॒तो र॒यिः प्र॑थ॒मश्र॑वस्तमो॒ वाज॑श्रुतासो॒ यमजी॑जन॒न्नरः॑।
वि॒भ्व॒त॒ष्टो वि॒दथे॑षु प्र॒वाच्यो॒ यं दे॑वा॒सोऽव॑था॒ स विच॑र्षणिः ॥ ५ ॥

अथ अष्टमो वर्गः ॥ ८ ॥

स वा॒ज्यर्वा॒ स ऋषि॑र्वच॒स्यया॒ स शूरो॒ अस्ता॒ पृत॑नासु दु॒ष्टरः॑।
स रा॒यस्पोषं॒ स सु॒वीर्यं॑ दधे॒ यं वाजो॒ विभ्वाँ॑ ऋ॒भवो॒ यमावि॑षुः ॥ ६ ॥
श्रेष्ठं॑ वः॒ पेशो॒ अधि॑ धायि दर्श॒तं स्तोमो॑ वाजा ऋभव॒स्तं जु॑जुष्टन।
धीरा॑सो॒ हि ष्ठा क॒वयो॑ विप॒श्चित॒स्तान्व॑ ए॒ना ब्रह्म॒णा वे॑दयामसि ॥ ७ ॥
यू॒यम॒स्मभ्यं॑ धि॒षणा॑भ्य॒स्परि॑ वि॒द्वांसो॒ विश्वा॒ नर्या॑णि॒ भोज॑ना।
द्यु॒मन्तं॒ वाजं॒ वृष॑शुष्ममुत्त॒ममा नो॑ र॒यिमृ॑भवस्तक्ष॒ता वयः॑ ॥ ८ ॥
इ॒ह प्र॒जामि॒ह र॒यिं ररा॑णा इ॒ह श्रवो॑ वी॒रव॑त्तक्षता नः।
येन॑ व॒यं चि॒तये॒मात्य॒न्यान्तं वाजं॑ चि॒त्रमृ॑भवो ददा नः ॥ ९ ॥

[३७] सप्तत्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—वामदेवः ॥ देवता—ऋभवः ॥ छन्दः—१ विराट्त्रिष्टुप्; २ त्रिष्टुप्; ३, ८ निचृत्त्रिष्टुप्; ४ पङ्क्तिः; ५, ७ अनुष्टुप्; ६ निचृदनुष्टुप् ॥ स्वरः—१-३, ८ धैवतः; ४ पञ्चमः; ५-७ गान्धारः ॥

अथ नवमो वर्गः ॥ ९ ॥

उप॑ नो वाजा अध्व॒रमृ॑भुक्षा॒ देवा॑ या॒त प॒थिभि॑र्देव॒यानैः॑ ।
यथा॑ य॒ज्ञं मनु॑षो वि॒क्ष्वा॒३॒॑सु द॑धि॒ध्वे र॑ण्वाः सु॒दिने॒ष्वह्न॑म् ॥ १ ॥
ते वो॑ हृ॒दे मन॑से सन्तु य॒ज्ञा जुष्टा॑सो अ॒द्य घृ॒तनि॑र्णिजो गुः ।
प्र वः॑ सु॒तासो॑ हरयन्त पू॒र्णाः क्रत्वे॒ दक्षा॑य हर्षयन्त पी॒ताः ॥ २ ॥
त्र्यु॒दा॒यं दे॒वहि॑तं॒ यथा॑ वः॒ स्तोमो॑ वाजा ऋभुक्षणो द॒दे वः॑।
जु॒ह्वे म॑नु॒ष्वदुप॑रासु वि॒क्षु यु॒ष्मे सचा॑ बृ॒हद्दि॑वेषु॒ सोम॑म् ॥ ३ ॥
पीवो॑अश्वाः शु॒चद्र॑था॒ हि भू॒तायः॑शिप्रा वाजिनः सुनि॒ष्काः।
इन्द्र॑स्य सूनो शवसो नपा॒तोऽनु॑ वश्चेत्यग्रि॒यं मदा॑य ॥ ४ ॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ऋभुर्भुक्षणो रयिं वाजे वाजिन्तमं युजम् ।
इन्द्रस्वन्तं हवामहे सदासातममश्विनम् ॥ ५ ॥

अथ दशमो वर्गः ॥ १० ॥

सेदृभवो यमवथ यूयमिन्द्रश्च मर्त्यम् ।
स धीभिरस्तु सनिता मेधसाता सो अर्वता ॥ ६ ॥
वि नो वाजा ऋभुक्षणः पथश्चितन यष्टवे ।
अस्मभ्यं सूरयः स्तुता विश्वा आशास्तरीषणि ॥ ७ ॥
तं नो वाजा ऋभुक्षण इन्द्र नासत्या रयिम् ।
समश्वं चर्षणिभ्य आ पुरु शस्त मघत्तये ॥ ८ ॥

[३८] अष्टात्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—वामदेवः ॥ देवता—१ द्यावापृथिव्यौ; २-१० दधिक्राः ॥ छन्दः—१, ४ विराट्पङ्क्तिः; २, ३ त्रिष्टुप्; ५, ८-१० निचृत्त्रिष्टुप्; ६ भुरिक्पङ्क्तिः; ७ विराट्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१, ४, ६, पञ्चमः; २, ३, ५, ७-१० धैवतः ॥

अथ एकादशो वर्गः ॥ ११ ॥

उतो हि वां दात्रा सन्ति पूर्वा या पूरुभ्यस्त्रसदस्युर्नितोशे ।
क्षेत्रासां ददथुरुर्वरासां घनं दस्युभ्यो अभिभूतिमुग्रम् ॥ १ ॥
उत वाजिनं पुरुनिष्षिध्वानं दधिक्रामु ददथुर्विश्वकृष्टिम् ।
ऋजिप्यं श्येनं प्रुषितप्सुमाशुं चर्कृत्यमर्यो नृपतिं न शूरम् ॥ २ ॥
यं सीमनु प्रवतेव द्रवन्तं विश्वः पूरुर्मदति हर्षमाणः ।
पड्भिर्गृध्यन्तं मेथयुं न शूरं रथतुरं वातमिव ध्रजन्तम् ॥ ३ ॥
यः स्मारुन्धानो गध्या समत्सु सनुतरश्चरति गोषु गच्छन् ।
आविर्ऋजीको विदथा निचिक्यत्तिरो अरतिं पर्यापा आयोः ॥ ४ ॥
उत स्मैनं वस्त्रमथिं न तायुमनु क्रोशन्ति क्षितयो भरेषु ।
नीचायमानं जसुरिं न श्येनं श्रवश्चाच्छा पशुमच्च यूथम् ॥ ५ ॥

अथ द्वादशो वर्गः ॥ १२ ॥

उत स्मासु प्रथमः संरिष्यन्नि वेवेति श्रेणिभी रथानाम् ।
स्त्रजं कृण्वानो जन्यो न शुभ्वा रेणुं रेरिहत्किरणं ददृश्वान् ॥ ६ ॥
उत स्य वाजी सहुरिर्ऋतावा शुश्रूषमाणस्तन्वा समर्ये ।
तुरं यतीषु तुरयन्नृजिप्योऽधि भ्रुवोः किरते रेणुमञ्जन् ॥ ७ ॥
उत स्मास्य तन्यतोरिव द्योर्ऋघायतो अभियुजो भयन्ते ।
यदा सहस्त्रमभि षीमयोधीदुर्वर्तुः स्मा भवति भीम ऋञ्जन् ॥ ८ ॥
उत स्मास्य पनयन्ति जना जूतिं कृष्टिप्रो अभिभूतिमाशोः ।
उतैनमाहुः समिथे वियन्तः परा दधिक्रा असरत्सहस्रैः ॥ ९ ॥
आ दधिक्राः शवसा पञ्च कृष्टीः सूर्यइव ज्योतिषापस्ततान ।
सहस्रसाः शतसा वाज्यर्वा पृणक्तु मध्वा समिमा वचांसि ॥ १० ॥

[३९] एकोनचत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—वामदेवः ॥ देवता—दधिक्राः ॥ छन्दः—१, ३, ५ निचृत्त्रिष्टुप्; २, ४ स्वराट्पङ्क्तिः; ६ अनुष्टुप् ॥ स्वरः—१, ३, ५ धैवतः; २, ४ पञ्चमः; ६ ॥

अथ त्रयोदशो वर्गः ॥ १३ ॥

आशुं दधिक्रां तमु नु ष्टवाम दिवस्पृथिव्या उत चर्किराम ।
उच्छन्तीर्मामुषसः सूदयन्त्वति विश्वानि दुरितानि पर्षन् ॥ १ ॥
महश्चर्कर्म्यर्वतः क्रतुप्रा दधिक्राव्णः पुरुवारस्य वृष्णः ।
यं पूरुभ्यो दीदिवांसं नाग्निं ददथुर्मित्रावरुणा ततुरिम् ॥ २ ॥
यो अश्वस्य दधिक्राव्णो अकारीत्समिद्धे अग्ना उषसो व्युष्टौ ।
अनागसं तमदितिः कृणोतु स मित्रेण वरुणेना सजोषाः ॥ ३ ॥
दधिक्राव्णो इष ऊर्जो महो यदमन्महि मरुतां नाम भद्रम् ।
स्वस्तये वरुणं मित्रमग्निं हवामहे इन्द्रं वज्रबाहुम् ॥ ४ ॥
इन्द्रमिवेदुभये वि ह्वयन्त उदीराणा यज्ञमुपप्रयन्तः ।
दधिक्रामु सूदनं मर्त्याय ददथुर्मित्रावरुणा नो अश्वम् ॥ ५ ॥
दधिक्राव्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः ।
सुरभि नो मुखा करत्प्र ण आयूंषि तारिषत् ॥ ६ ॥

[४०] चत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—वामदेवः ॥ देवता—१-४ दधिक्रावा; ५ सूर्यः ॥ छन्दः—१ निचृत्त्रिष्टुप्; २ त्रिष्टुप्; ३ स्वराट्त्रिष्टुप्; ४ भुरिक्त्रिष्टुप्; ५ निचृज्जगती ॥ स्वरः—१-४ धैवतः; ५ निषादः ॥

अथ चतुर्दशो वर्गः ॥ १४ ॥

दधिक्राव्ण इदु नु चर्किराम विश्वा इन्नामुषसः सूदयन्तु ।
अपामग्नेरुषसः सूर्यस्य बृहस्पतेरङ्गिरसस्य जिष्णोः ॥ १ ॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सत्वा भरिषो गविषो दुवन्यसच्छ्रवस्यादिष उषसस्तुरण्यसत्।
सत्यो द्रवो द्रवरः पतङ्गरो दधिक्रावेषमूर्जं स्वर्जनत्॥ २॥
उत स्मास्य द्रवतस्तुरण्यतः पर्णं न वेरनु वाजि प्रगर्धिनः।
श्येनस्येव ध्रजतो अङ्कसं परि दधिक्राव्णः सहोर्जा तरित्रतः॥ ३॥
उत स्य वाजी क्षिपणिं तुरण्यति ग्रीवायां बद्धो अपिकक्ष आसनि।
क्रतुं दधिक्रा अनु संतवीत्वत्पथामङ्कांस्यन्वापनीफणत्॥ ४॥
हंसः शुचिषद्वसुरन्तरिक्षसद्धोता वेदिषदतिथिर्दुरोणसत्।
नृषद्वरसदृतसद्व्योमसदब्जा गोजा ऋतजा अद्रिजा ऋतम्॥ ५॥

[४१] एकचत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—वामदेवः॥ देवता—इन्द्रावरुणौ॥ छन्दः—१, ५, ९, ११ त्रिष्टुप्; २, ४ निचृत्त्रिष्टुप्; ३, ६ विराट्त्रिष्टुप्; ७ पङ्क्तिः; ८,१० स्वराट्पङ्क्तिः॥ स्वरः—१-६, ९, ११ धैवतः; ७, ८ १० पञ्चमः॥

अथ पञ्चदशो वर्गः॥ १५॥

इन्द्रा को वां वरुणा सुम्नमाप स्तोमो हविष्माँ अमृतो न होता।
यो वां हृदि क्रतुमाँ अस्मदुक्तः पस्पर्शदिन्द्रावरुणा नमस्वान्॥ १॥
इन्द्रा ह यो वरुणा चक्र आपी देवौ मर्तः सख्याय प्रयस्वान्।
स हन्ति वृत्रा समिथेषु शत्रूनवोभिर्वा महद्भिः स प्र शृण्वे॥ २॥
इन्द्रा ह रत्नं वरुणा धेष्ठेत्था नृभ्यः शशमानेभ्यस्ता।
यदी सखाया सख्याय सोमैः सुतेभिः सुप्रयसा मादयैते॥ ३॥
इन्द्रा युवं वरुणा दिद्युमस्मिन्नोजिष्ठमुग्रा नि वधिष्टं वज्रम्।
यो नो दुरेवो वृकतिर्दभीतिस्तस्मिन्निमाथामभिभूत्योजः॥ ४॥
इन्द्रा युवं वरुणा भूतमस्या धियः प्रेतारा वृषभेव धेनोः।
सा नो दुहीयद्यवसेव गत्वी सहस्रधारा पयसा मही गौः॥ ५॥

अथ षोडशो वर्गः॥ १६॥

तोके हिते तनय उर्वरासु सूरो दृशीके वृषणश्च पौंस्ये।
इन्द्रा नो अत्र वरुणा स्यातामवोभिर्दस्मा परितक्म्यायाम्॥ ६॥
युवामिद्धवसे पूर्व्याय परि प्रभूती गविषः स्वापी।
वृणीमहे सख्याय प्रियाय शूरा मंहिष्ठा पितरेव शंभू॥ ७॥
ता वां धियोऽवसे वाजयन्तीराजिं न जग्मुर्युवयूः सुदानू।
श्रिये न गाव उप सोममस्थुरिन्द्रं गिरो वरुणं मे मनीषाः॥ ८॥
इमा इन्द्रं वरुणं मे मनीषा अग्मन्नुप द्रविणमिच्छमानाः।
उपेमस्थुर्जोष्टारइव वस्वो रघ्वीरिव श्रवसो भिक्षमाणाः॥ ९॥
अश्व्यस्य त्मना रथ्यस्य पुष्टेर्नित्यस्य रायः पतयः स्याम।
ता चक्राणा ऊतिभिर्नव्यसीभिरस्मत्रा रायो नियुतः सचन्ताम्॥ १०॥
आ नो बृहन्ता बृहतीभिरूती इन्द्रं यातं वरुण वाजसातौ।
यद्दिद्यवः पृतनासु प्रक्रीळान्तस्यं वां स्याम सनितारं आजेः॥ ११॥

[४२] द्विचत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—त्रसदस्युः पौरुकुत्स्यः॥ देवता—१-६ आत्मा; ७-१० इन्द्रावरुणौ॥ छन्दः—१-४, ६, ९ निचृत्त्रिष्टुप्; ५ निचृत्पङ्क्तिः; ७ विराट्त्रिष्टुप्; ८ भुरिक्त्रिष्टुप्; १० त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१-४, ६-१० धैवतः; ५ पञ्चमः॥

अथ सप्तदशो वर्गः॥

मम द्विता राष्ट्रं क्षत्रियस्य विश्वायोर्विश्वे अमृता यथा नः।
क्रतुं सचन्ते वरुणस्य देवा राजामि कृष्टेरुपमस्य वव्रेः॥ १॥
अहं राजा वरुणो मह्यं तान्यसुर्याणि प्रथमा धारयन्त।
क्रतुं सचन्ते वरुणस्य देवा राजामि कृष्टेरुपमस्य वव्रेः॥ २॥
अहमिन्द्रो वरुणस्ते महित्वोर्वी गभीरे रजसी सुमेके।
त्वष्टेव विश्वा भुवनानि विद्वान्त्समैरयं रोदसी धारयं च॥ ३॥
अहमपो अपिन्वमुक्षमाणा धारयं दिवं सदन ऋतस्य।
ऋतेन पुत्रो अदितेर्ऋतावोत त्रिधातु प्रथयद्वि भूमं॥ ४॥
मां नरः स्वश्वा वाजयन्तो मां वृताः समरणे हवन्ते।
कृणोम्याजिं मघवाहमिन्द्र इयर्मि रेणुमभिभूत्योजाः॥ ५॥

अथ अष्टादशो वर्गः॥ १८॥

अहं ता विश्वा चकरं नकिर्मा दैव्यं सहो वरते अप्रतीतम्।
यन्मा सोमासो ममदन्यदुक्थोभे भयेते रजसी अपारे॥ ६॥
विदुष्टे विश्वा भुवनानि तस्य ता प्र ब्रवीषि वरुणाय वेधः।
त्वं वृत्राणि शृण्विषे जघन्वान्त्वं वृताँ अरिणा इन्द्र सिन्धून्॥ ७॥
अस्माकमत्र पितरस्त आसन्त्सप्त ऋषयो दौर्गहे बध्यमाने।
त आर्यजन्त त्रसदस्युमस्या इन्द्रं न वृत्रतुरमर्धदेवम्॥ ८॥
पुरुकुत्सानी हि वामदाशद्भव्येभिरिन्द्रावरुणा नमोभिः।
अथा सजानं त्रसदस्युमस्या वृत्रहणं ददथुरर्धदेवम्॥ ९॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

राया वयं ससवांसो मदेम हव्येन देवा यवसेन गावः।
तां धेनुमिन्द्रावरुणा युवं नो विश्वाहा धत्तमनपस्फुरन्तीम्॥ १०॥

[४३] त्रिचत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—पुरुमीळ्हाजमीळ्हौ सौहोत्रौ॥ देवता—अश्विनौ॥ छन्दः—१ त्रिष्टुप्; २, ३, ५-७ निचृत्त्रिष्टुप्; ४ स्वराट्पङ्क्तिः॥ स्वरः—१-३, ५-७ धैवतः; ४ पञ्चमः॥

अथ एकोनविंशो वर्गः॥ १९॥

क उ श्रवत्कतमो यज्ञियानां वन्दारु देवः कतमो जुषाते।
कस्येमां देवीममृतेषु प्रेष्ठां हृदि श्रेषाम् सुष्टुतिं सुहव्याम्॥ १॥
को मृळाति कतम आगमिष्ठो देवानामु कतमः शंभविष्ठः।
रथं कमाहुर्द्रवदश्वमाशुं यं सूर्यस्य दुहितावृणीत ॥ २॥
मक्षू हि ष्मा गच्छथ ईवतो द्यूनिन्द्रो न शक्तिं परितक्म्यायाम्।
दिव आजाता दिव्या सुपर्णा कया शचीनां भवथः शचिष्ठा॥ ३॥
का वां भूदुपमातिः कया न आश्विना गमथो हूयमाना।
को वां महश्चित्त्यजसो अभीक उरुष्यतं माध्वी दस्रा न ऊती॥ ४॥
उरु वां रथः परि नक्षति द्यामा यत्समुद्रादभि वर्तते वाम्।
मध्वा माध्वी मधु वां प्रुषायन्यत्सीं वां पृक्षो भुरजन्त पक्वाः॥ ५॥
सिन्धुर्ह वां रसया सिञ्चदश्वान्घृणा वयोऽरुषासः परि ग्मन्।
तदू षु वामजिरं चेति यानं येन पती भवथः सूर्यायाः॥ ६॥
इहेह यद्वां समना पपृक्षे सेयमस्मे सुमतिर्वाजरत्ना।
उरुष्यतं जरितारं युवं ह श्रितः कामो नासत्या युवद्रिक्॥ ७॥

[४४] चतुश्चत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—पुरुमीळ्हाजमीळ्हौ सौहोत्रौ॥ देवता—अश्विनौ॥ छन्दः—१, ३, ६, ७ निचृत्त्रिष्टुप्; २ त्रिष्टुप्; ५ विराट्त्रिष्टुप्; ४ भुरिक्पङ्क्तिः॥ स्वरः—१-३, ५-७ धैवतः; ४ पञ्चमः॥

अथ विंशो वर्गः॥ २०॥

तं वां रथं वयमद्या हुवेम पृथुज्रयमश्विना संगतिं गोः।
यः सूर्यां वहति वन्धुरायुर्गिर्वाहसं पुरुतमं वसूयुम्॥ १॥
युवं श्रियमश्विना देवता तां दिवो नपाता वनथः शचीभिः।
युवोर्वपुरभि पृक्षः सचन्ते वहन्ति यत्ककुहासो रथे वाम्॥ २॥
को वामद्या करते रातहव्य ऊतये वा सुतपेयाय वार्कैः।
ऋतस्य वा वनुषे पूर्व्याय नमो येमानो अश्विना ववर्तत्॥ ३॥
हिरण्ययेन पुरुभू रथेनेमं यज्ञं नासत्योप यातम्।
पिबाथ इन्मधुनः सोम्यस्य दधथो रत्नं विधते जनाय॥ ४॥
आ नो यातं दिवो अच्छा पृथिव्या हिरण्ययेन सुवृता रथेन।
मा वामन्ये नि यमन्देवयन्तः सं यद्ददे नाभिः पूर्व्या वाम्॥ ५॥
नू नो रयिं पुरुवीरं बृहन्तं दस्रा मिमाथामुभयेष्वस्मे।
नरो यद्वामश्विना स्तोममावन्त्सधस्तुतिमाजमीळ्हासो अग्मन्॥ ६॥
इहेह यद्वां समना पपृक्षे सेयमस्मे सुमतिर्वाजरत्ना।
उरुष्यतं जरितारं युवं ह श्रितः कामो नासत्या युवद्रिक्॥ ७॥

[४५] पञ्चचत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—वामदेवः॥ देवता—अश्विनौ॥ छन्दः—१, ३, ४ जगती; २ भुरिक्त्रिष्टुप्; ५ निचृज्जगती; ६ विराड्जगती; ७ निचृत्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१, ३-६ निषादः; २, ७ धैवतः॥

अथ एकविंशो वर्गः॥ २१॥

एष स्य भानुरुदियर्ति युज्यते रथः परिज्मा दिवो अस्य सानवि।
पृक्षासो अस्मिन्मिथुना अधि त्रयो दृतिस्तुरीयो मधुनो वि रप्शते॥ १॥
उद्वां पृक्षासो मधुमन्त ईरते रथा अश्वास उषसो व्युष्टिषु।
अपोर्णुवन्तस्तम आ परीवृतं स्वर्ण शुक्रं तन्वन्त आ रजः॥ २॥
मध्वः पिबतं मधुपेभिरासभिरुत प्रियं मधुने युञ्जाथां रथम्।
आ वर्तनिं मधुना जिन्वथस्पथो दृतिं वहेथे मधुमन्तमश्विना॥ ३॥
हंसासो ये वां मधुमन्तो अस्रिधो हिरण्यपर्णा उहुव उषर्बुधः।
उदप्रुतो मन्दिनो मन्दिनिस्पृशो मध्वो न मक्षः सवनानि गच्छथः॥ ४॥
स्वध्वरासो मधुमन्तो अग्नय उस्रा जरन्ते प्रति वस्तोरश्विना।
यन्निक्तहस्तस्तरणिर्विचक्षणः सोमं सुषाव मधुमन्तमद्रिभिः॥ ५॥
आकेनिपासो अहभिर्दविध्वतः स्वर्ण शुक्रं तन्वन्त आ रजः।
सूरश्चिदश्वान्युयुजान ईयते विश्वाँ अनु स्वधया चेतथस्पथः॥ ६॥
प्र वामवोचमश्विना धियंधा रथः स्वश्वो अजरो यो अस्ति।
येन सद्यः परि रजांसि याथो हविष्मन्तं तरणिं भोजमच्छ॥ ७॥

पञ्चमोऽनुवाकः [४६] षट्चत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—वामदेवः॥ देवता—इन्द्रवायू॥ छन्दः—१ विराड्गायत्री; २, ३, ५-७ गायत्री; ४ निचृद्गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अथ द्वाविंशो वर्गः ॥ २२ ॥

अग्रं॑ पिबा॒ मधू॑नां सु॒तं वा॑यो॒ दिवि॑ष्टिषु। त्वं हि पू॑र्वपा असि॑ ॥ १ ॥
श॒तेना नो॒ अभि॑ष्टिभि॒र्नि युत्वाँ॑ इन्द्रसारथिः। वायो॑ सु॒तस्य॑ तृम्पतम् ॥ २ ॥
आ वां॑ स॒हस्रं॑ हरय॒ इन्द्र॑वायू अ॒भि प्रयः॑। वह॑न्तु सोम॑पीतये ॥ ३ ॥
रथं॑ हिर॑ण्यवन्धुरमिन्द्रवायू स्वध्व॒रम्। आ हि स्थाथो॑ दिवि॒स्पृश॑म् ॥ ४ ॥
रथे॑न पृथुपाजसा दा॒श्वांस॒मुप॑ गच्छतम्। इन्द्र॑वायू इ॒ह ग॑तम् ॥ ५ ॥
इन्द्र॑वायू अ॒यं सु॒तस्तं दे॒वेभिः॑ स॒जोष॑सा। पिब॑तं दा॒शुषो॑ गृ॒हे ॥ ६ ॥
इ॒ह प्र॒याण॑मस्तु वा॒मिन्द्र॑वायू वि॒मोच॑नम्। इ॒ह वां॑ सोम॑पीतये ॥ ७ ॥

[४७] सप्तचत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—वामदेवः ॥ देवता—१ वायुः; २-४ इन्द्रवायू ॥ छन्दः—१, ३ अनुष्टुप्; २ भुरिगुष्णिक्; ४ निचृदनुष्टुप् ॥ स्वरः—१, ३, ४ गान्धारः; २ ऋषभः ॥

अथ त्रयोविंशो वर्गः ॥ २३ ॥

वायो॑ शु॒क्रो अ॑यामि ते॒ मध्वो॒ अग्रं॑ दिविष्टिषु।
आ या॑हि सोम॑पीतये स्पा॒र्हो दे॑व नि॒युत्व॑ता ॥ १ ॥
इन्द्र॑श्च वायवेषां॒ सोमा॑नां पी॒तिम॑र्हथः।
यु॒वां हि य॒न्तीन्द॑वो नि॒म्नमापो॒ न सध्र्य॑क् ॥ २ ॥
वा॒यु॒विन्द्र॑श्च शुष्मिणा॒ स॒रथं॑ शवसस्पती।
नि॒युत्व॑न्ता न ऊ॒तय॒ आ या॑तं॒ सोम॑पीतये ॥ ३ ॥
या वां॑ सन्ति॑ पुरु॒स्पृहो॑ नि॒युतो॑ दा॒शुषे॑ नरा।
अ॒स्मे ता य॑ज्ञवाहसेन्द्रवायू॒ नि य॑च्छतम् ॥ ४ ॥

[४८] अष्टचत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—वामदेवः ॥ देवता—वायुः ॥ छन्दः—१ निचृदनुष्टुप्; २ अनुष्टुप्; ३-५ भुरिगनुष्टुप् ॥ स्वरः—गान्धारः ॥

अथ चतुर्विंशो वर्गः ॥ २४ ॥

वि॒हि होत्रा॒ अवी॑ता॒ विपो॒ न रायो॑ अ॒र्यः।
वा॒यु॒वा च॒न्द्रेण॒ रथे॑न या॒हि सु॒तस्य॑ पी॒तये॑ ॥ १ ॥
नि॒र्यु॒वा॒णो अ॒शस्ती॒र्नि युत्वाँ॑ इन्द्रसारथिः।
वा॒यु॒वा च॒न्द्रेण॒ रथे॑न या॒हि सु॒तस्य॑ पी॒तये॑ ॥ २ ॥
अनु॑ कृ॒ष्णे व॑सुधिती॒ येमा॑ते वि॒श्वप॑ेशसा।
वा॒यु॒वा च॒न्द्रेण॒ रथे॑न या॒हि सु॒तस्य॑ पी॒तये॑ ॥ ३ ॥

वह॑न्तु त्वा मनो॒युजो॑ यु॒क्तासो॑ नव॒तिर्नव॑।
वा॒यु॒वा च॒न्द्रेण॒ रथे॑न या॒हि सु॒तस्य॑ पी॒तये॑ ॥ ४ ॥
वा॒यो॒ शत॑ं हरी॑णां यु॒वस्व॒ पोष्या॑णाम्।
उ॒त वा॑ ते सहस्रि॒णो॒ रथ॒ आ या॑तु॒ पाज॑सा ॥ ५ ॥

[४९] एकोनपञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—वामदेवः ॥ देवता—इन्द्राबृहस्पती ॥ छन्दः—१ निचृद्गायत्री; २-६ गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथ पञ्चविंशो वर्गः ॥ २५ ॥

इ॒दं वा॑मा॒स्ये॑ ह॒विः प्रि॒यमि॑न्द्राबृहस्पती। उ॒क्थं मद॑श्च शस्यते ॥ १ ॥
अ॒यं वां॑ परि॑ षिच्यते सोम॑ इन्द्राबृहस्पती। चारु॒र्मदा॑य पी॒तये॑ ॥ २ ॥
आ नं॑ इन्द्राबृहस्पती गृ॒हमि॑न्द्रश्च गच्छतम्। सो॒म॒पा सोम॑पीतये ॥ ३ ॥
अ॒स्मे इ॑न्द्राबृहस्पती र॒यिं धत्तं॑ शत॒ग्विन॑म्। अश्वा॑वन्तं सहस्रि॒णम् ॥ ४ ॥
इन्द्राबृहस्पती॑ व॒यं सु॒ते गी॒र्भिर्हवामहे। अ॒स्य सोम॑स्य पी॒तये॑ ॥ ५ ॥
सोम॑मिन्द्राबृहस्पती॒ पिब॑तं दा॒शुषो॑ गृ॒हे। मा॒दये॑थां॒ तदो॑कसा ॥ ६ ॥

[५०] पञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—वामदेवः ॥ देवता—१-९ बृहस्पतिः; १०, ११, इन्द्राबृहस्पती ॥ छन्दः—१-३, ६, ७, ९ निचृत्त्रिष्टुप्; ४, ५, ११, विराट्त्रिष्टुप्; ८, १० त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

अथ षड्विंशो वर्गः ॥ २६ ॥

यस्त॒स्तम्भ॒ सह॑सा॒ वि ज्मो अन्ता॒न्बृह॒स्पति॑स्त्रि॒षध॒स्थो रवे॑ण।
तं प्र॒त्नास॒ ऋष॑यो॒ दीध्या॑नाः॒ पुरो॒ विप्रा॑ दधिरे म॒न्द्रजि॑ह्वम् ॥ १ ॥
ध्रु॒नेत॑यः सु॒प्रके॑तं मद॒न्तो॒ बृह॑स्पते अ॒भि ये नर॑स्तत॒स्रे।
पृष॑न्तं सृ॒प्रमद॑ब्धमू॒र्वं बृह॑स्पते॒ रक्ष॑तादस्य॒ योनि॑म् ॥ २ ॥
बृह॑स्पते॒ या प॑र॒मा प॑रा॒वद॒त आ त॑ ऋ॒तस्पृ॑शो॒ नि षे॑दुः।
तु॒भ्यं॑ खा॒ता अ॑व॒ता अद्रि॑दुग्धा॒ मध्व॑श्चोतन्त्य॒भितो॑ वि॒रप्श॑म् ॥ ३ ॥
बृह॒स्पति॑: प्रथ॒मं जाय॑मानो म॒हो ज्योति॑षः पर॒मे व्यो॑मन्।
स॒प्तास्य॑स्तुविजा॒तो रवे॑ण॒ वि स॒प्तर॑श्मिरधम॒त्तमां॑सि ॥ ४ ॥
स सु॒ष्टुभा॒ स ऋक्व॑ता ग॒णेन॑ व॒लं रु॑रोज फलि॒गं रवे॑ण।
बृह॒स्पति॑रु॒स्रिया॑ ह॒व्यसू॑दः क॒निक्र॑दद्वा॒वशती॒रुदा॑जत् ॥ ५ ॥

अथ सप्तविंशो वर्गः ॥ २७ ॥

एवा॑ पि॒त्रे वि॒श्वदे॑वाय॒ वृष्णे॑ य॒ज्ञैर्वि॑धेम॒ नम॑सा ह॒विर्भिः॑।
बृह॒स्पते॒ सु॒प्रजा॑ वी॒रव॑न्तो व॒यं स्या॑म॒ पत॑यो र॒यी॒णाम् ॥ ६ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

स इद्राजा॒ प्रति॑जन्या॒नि॒ विश्वा॒ शुष्मे॑ण तस्थाव॒भि वी॒र्येण॑।
बृह॒स्पति॑ यः सु॒भृतं॑ बि॒भर्ति॑ वल्गू॒यति॒ वन्द॑ते पू॒र्वभाज॑म्॥ ७॥
स इत्क्षे॑ति सु॒धित॒ ओक॑सि॒ स्वे तस्मा॒ इळा॑ पिन्वते॒ विश्व॒दानी॑म्।
तस्मै॒ विशः॒ स्व॒यमे॒वा न॑मन्ते॒ यस्मि॑न्ब्र॒ह्मा राज॑नि॒ पू॒र्व॒ एति॑॥ ८॥
अप्र॑तीतो॒ जय॑ति॒ सं धना॑नि॒ प्रति॑जन्या॒न्युत॒ या सज॑न्या।
अव॒स्यवे॒ यो वरि॑वः कृ॒णोति॑ ब्र॒ह्मणे॒ राजा॒ तम॑वन्ति दे॒वाः॥ ९॥
इन्द्र॑श्च॒ सोमं॑ पिबतं बृहस्पतेऽस्मिन्य॒ज्ञे म॑न्दसा॒ना वृ॑षण्वसू।
आ वां॑ विशन्त्विन्दवः स्वा॒भुवो॒ऽस्मे र॒यिं सर्व॑वीरं॒ नि य॑च्छतम्॥ १०॥
बृह॑स्पत इन्द्र॒ वर्धं॑तं नः॒ सचा॒ सा वां॑ सु॒मति॑र्भूत्व॒स्मे ।
अवि॑ष्टं धि॒यो जि॑गृतं पुरं॒धीर्ज॒स्तम॒र्यो व॒नुषा॒मरा॑तीः॥ ११॥

इति तृतीयाऽष्टके सप्तमोऽध्यायः॥

अथाष्टमोऽध्यायः

[५१] एकपञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—वामदेवः॥ देवता—उषाः॥ छन्दः—१, ५, ८ त्रिष्टुप्; २ पङ्क्तिः; ३ विराट्त्रिष्टुप्; ४, ६, ७, ९, ११ निचृत्त्रिष्टुप्; १० भुरिक्पङ्क्तिः॥ स्वरः—१, ३-९, ११ धैवतः; २, १० पञ्चमः॥

अथ प्रथमो वर्गः॥ १॥

इ॒दमु॒ त्यत्पु॑रुत॒मं पु॒रस्ता॒ज्ज्योति॒स्तमं॑सो व॒युना॑वदस्थात्।
नूनं दि॒वो दु॑हि॒तरो॑ विभा॒तीर्गा॒तुं कृ॑णवन्नु॒षसो॒ जना॑य॥ १॥
अस्थु॑रु चि॒त्रा उ॒षसः॑ पु॒रस्ता॒न्मिता॑इव॒ स्वर॑वोऽध्व॒रेषु॑।
व्यू॒ व्र॒जस्य॒ तम॑सो॒ द्वारो॑च्छन्ती॒रव्र॑ञ्छुचयः पाव॒काः॥ २॥
उ॒च्छन्ती॑रद्य चि॒तय॑न्त भो॒जाऋ॑ध्रो॒देया॑योषसो॒ म॒घोनी॑ः।
अ॒चि॒त्रे अ॒न्तः पु॒णय॑ः स॒सन्त्व॑बुध्यमा॒नास्त॑मसो॒ विम॑ध्ये॥ ३॥
कु॒वित्स दे॑वीः॒ स॒नयो॒ नवो॑ वा॒ यामो॑ बभूयादुषसो वो अ॒द्य।
येना॒ नव॑ग्वे॒ अङ्गि॑रे॒ दश॑ग्वे स॒प्तास्ये॑ रेवती रे॒वदू॑ष॥ ४॥
यू॒यं हि दे॑वीर्ऋ॒तयु॒ग्भि॒रश्वै॑ः परि॒प्रया॑थ भुव॒नानि॑ स॒द्यः।
प्र॒बो॒धय॑न्तीरुषसः स॒सन्तं॒ द्विपा॑च्चतुष्पा॒च्चरा॑थाय जी॒वम्॥ ५॥

अथ द्वितीयो वर्गः॥ २॥

क॑ स्विदासां कत॒मा पु॑रा॒णी यया॑ वि॒धाना॑ वि॒दधु॒र्ऋभू॑णाम्।
शु॒भं यच्छु॒भ्रा उ॒षस॒श्चर॑न्ति॒ न वि ज्ञा॑यन्ते सदृशीरजु॒र्याः॥ ६॥
ता घा॒ ता भ॒द्रा उ॒षसः॑ पु॒रास॑ु॒रभि॑ष्टि॒द्यु॒म्ना ऋ॒तजा॑तसत्याः।
यास्वी॑जा॒नः शं॑शमा॒न उ॒क्थैः॒ स्तुव॒ञ्छंस॒न्द्रवि॑णं स॒द्य आप॑॥ ७॥
ता आ च॑रन्ति सम॒ना पु॒रस्ता॑त्समा॒नतः॑ सम॒ना प॑प्रथा॒नाः।
ऋ॒तस्य॑ दे॒वीः॒ सद॑सो बु॒धा॒ना गवां॒ न सर्गा॑ उ॒षसो॑ जरन्ते॥ ८॥
ता इ॒न्वे॒३॒॑व सं॑म॒ना सं॑मा॒नीरमी॑तवर्णा उ॒षस॑श्चरन्ति।
गू॒ह॒न्ती॑रभ्व॒मसि॑तं रुशद्भि॒ः शु॒क्रास्त॒नूभि॑ः शु॒चय॑ो रु॒चा॒नाः॥ ९॥
र॒यिं दि॑वो दुहितरो॒ विभा॑ती॒ः प्र॒जाव॑न्तं यच्छ॒ा॒स्मासु॑ देवीः।
स्यो॒नादा व॑ः प्रति॒बु॒ध्य॒मा॒नाः॒ सु॒वी॒र्यस्य॒ पत॑यः स्याम॥ १०॥
तद्वो॑ दिवो दुहितरो॒ विभा॒तीरुप॑ ब्रुव उषसो यज्ञकेतुः।
व॒यं स्या॑म य॒शसो॒ जने॑षु॒ तद् द्यौश्च॑ ध॒त्तां पृ॑थि॒वी च॑ दे॒वी॥ ११॥

[५२] द्विपञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—वामदेवः॥ देवता—उषाः॥ छन्दः—१-४, ६, निचृद्गायत्री; ५, ७, गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

अथ तृतीयो वर्गः॥ ३॥

प्रति॒ ष्या सू॒नरी॒ जनी॑ व्यू॒च्छन्ती॒ परि॒ स्वसुः॑। दि॒वो अ॑दर्शि दुहि॒ता॥ १॥
अश्वे॑व चि॒त्रारु॑षी मा॒ता गवा॑मृताव॒री। सखा॑भूद॒श्विनो॑रु॒षाः॥ २॥
उ॒त सखा॑स्य॒श्विनो॑रु॒त मा॒ता गवा॑मसि। उ॒तो॒षो॒ वस्व॑ ईशिषे॥ ३॥
या॒व॒यद् द्वेष॑सं त्वा चिकि॒त्वित्सू॒नृता॑वरि। प्रति॒ स्तोमै॑रभुत्स्महि॥ ४॥
प्रति॑ भ॒द्रा अ॑दृक्षत॒ गवां॑ सर्गा॒ न र॒श्मय॑ः। ओषा अ॑प्रा उरु॒ व्र॒यः॥ ५॥
आ॒प॒प्रु॒षी॑ वि॒भाव॑रि॒ व्या॑व॒र्ज्योति॑षा॒ तमः॑। उषो॒ अनु॑ स्व॒धाम॑व॥ ६॥
आ द्यां त॑नोषि र॒श्मिभि॒रान्तरि॑क्षमुरु॒ प्रिय॑म्। उष॑ः शु॒क्रेण॑ शो॒चिषा॑॥ ७॥

[५३] त्रिपञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—वामदेवः॥ देवता—सविता॥ छन्दः—१, ३, ६, ७ निचृज्जगती; २ विराड्जगती; ४ स्वराड्जगती; ५ जगती॥ स्वरः—निषादः॥

अथ चतुर्थो वर्गः॥ ४॥

तद्दे॒वस्य॑ सवि॒तुर्वा॒र्यं॑ म॒हद् वृ॑णी॒महे॒ असु॑रस्य प्रचे॒तसः॑।
छ॒र्दिर्येन॑ दा॒शुषे॒ यच्छ॑ति॒ त्मना॒ तन्नो॑ म॒हाँ उद॑यान्दे॒वो अ॒क्तुभि॑ः॥ १॥
दि॒वो ध॒र्ता भुव॑नस्य प्र॒जाप॑तिः॒ पि॒शङ्गा॒ द्रापिं॑ प्रति॑ मुञ्चते कवि॑ः।
वि॒चक्ष॑णः॒ प्रथ॑यन्नापृणन्नु॒र्वजी॑जनत्सवि॒ता सु॒म्नमु॑क्थ्य॑म्॥ २॥
आप्रा॑ रजां॒सि दि॒व्यानि॑ पार्थि॒वा श्लोकं॑ दे॒वः कृ॑णुते॒ स्वाय॒ धर्म॑णे।
प्रति॒ष्ठां॑ विश्वा॒वसु॑ः सवि॒ता स॑वी॒मनि॒ निवे॑शयन्प्र॒सुव॒न्नक्तु॑भि॒र्जग॑त्॥ ३॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अदा॑भ्यो॒ भुव॑नानि प्र॒चाक॑शद् व्र॒तानि॑ दे॒वः स॑वि॒ताभि र॑क्षते।
प्रास्रा॑ग्बा॒हू भुव॑नस्य प्र॒जाभ्यो॑ धृ॒तव्र॑तो म॒हो अज्म॑स्य राजति॥ ४॥
त्रिर॒न्तरि॑क्षं सवि॒ता म॑हित्व॒ना त्री रजां॑सि परि॒भूस्त्रीणि॑ रोच॒ना।
ति॒स्रो दिवः॑ पृथि॒वीस्ति॒स्र इ॑न्वति त्रि॒भिर्व्र॒तैर॒भि नो॑ रक्षति॒ त्मना॑॥ ५॥
बृ॒हत्सु॒म्नः प्रसवी॒ता नि॒वेश॑नो॒ जग॑तः स्था॒तुरु॒भय॑स्य॒ यो व॒शी।
स नो॑ दे॒वः स॑वि॒ता शर्म॑ यच्छत्व॒स्मे क्षया॑य त्रि॒वरू॑थ॒मंह॑सः॥ ६॥
आग॑न्दे॒व ऋ॒तुभि॒र्वर्ध॑तु॒ क्षयं॒ दधा॑तु नः सवि॒ता सु॑प्र॒जामिष॑म्।
स नः॑ क्ष॒पाभि॒रह॑भिश्च जिन्वतु प्र॒जाव॑न्तं र॒यिम॒स्मे समि॑न्वतु॥ ७॥

[५४] चतुष्पञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—वामदेवः॥ देवता—सविता॥ छन्दः—१ भुरिक्त्रिष्टुप्; २ निचृत्त्रिष्टुप्; ३-५ स्वराट्त्रिष्टुप्; ६ त्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः॥

अथ पञ्चमो वर्गः॥ ५॥

अभू॑द्दे॒वः स॑वि॒ता वन्द्यो॒ नु न॑ इ॒दानी॒मह्न॑ उप॒वाच्यो॒ नृभिः॑।
वि यो रत्ना॒ भज॑ति मान॒वेभ्यः॒ श्रेष्ठं॑ नो॒ अत्र॒ द्रवि॑णं॒ यथा॒ दध॑त्॥ १॥
दे॒वेभ्यो॒ हि प्र॑थ॒मं य॒ज्ञिये॑भ्योऽमृत॒त्वं सु॒वसि॑ भा॒गमु॑त्त॒मम्।
आदिद्दा॒मानं॑ सवित॒र्व्यू॑र्णुषेऽनूची॒ना जी॑वि॒ता मानु॑षेभ्यः ॥ २॥
अचि॑त्ती॒ यच्च॑कृ॒मा दैव्ये॒ जने॑ दी॒नैर्दक्षैः॒ प्रभू॑ती पूरुष॒त्वता॑।
दे॒वेषु॑ च सवित॒र्मानु॑षेषु च॒ त्वं नो॒ अत्र॑ सुवता॒दना॑गसः॥ ३॥
न प्र॒मिये॑ सवि॒तुर्दैव्य॑स्य॒ तद्यथा॒ विश्वं॒ भुव॑नं धारयि॒ष्यति॑।
यत्पृ॑थि॒व्या वरि॑म॒न्ना स्व॑ङ्गु॒रिर्वर्ष्म॑न्दि॒वः सु॒वति॑ स॒त्यम॑स्य॒ तत्॥ ४॥
इन्द्र॑ज्येष्ठान्बृ॒हद्भ्यः॒ पर्व॑तेभ्यः॒ क्षयाँ॑ एभ्यः सुवसि प॒स्त्या॑वतः।
यथा॑यथा प॒तय॑न्तो वियेमि॒र ए॒वैव त॑स्थुः सवितः स॒वाय॑ ते॥ ५॥
ये ते॒ त्रिरह॑न्त्सवितः स॒वासो॑ दि॒वेदि॑वे॒ सौभ॑गमासु॒वन्ति॑।
इन्द्रो॒ द्यावा॑पृथि॒वी सिन्धु॑र॒द्भिरा॑दि॒त्यैर्नो॒ अदि॑तिः॒ शर्म॑ यंसत्॥ ६॥

[५५] पञ्चपञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—वामदेवः॥ देवता—विश्वे देवाः॥ छन्दः—१ त्रिष्टुप्; २, ४ निचृत् त्रिष्टुप् ३, ५ भुरिक्पङ्क्तिः; ६, ७ स्वराट्पङ्क्तिः; ८, ९ विराड्-गायत्री; १० गायत्री॥ स्वरः—१, २, ४ धैवतः; ३, ५-७ पञ्चमः; ८-१० षड्जः॥

अथ षष्ठो वर्गः॥ ६॥

को व॑स्त्रा॒ता व॑सवः॒ को व॑रू॒ता द्यावा॑भूमी अदिते॒ त्रासी॑थां नः।
सही॑यसो वरुण मित्र॒ मर्ता॒त्को वो॑ऽध्व॒रे वरि॑वो धाति॒ देवाः॥ १॥
प्र ये धामा॑नि पू॒र्व्याण्यर्चा॒न्वि यदु॒च्छान्वि॑यो॒तारो॒ अमू॑राः।
वि॒धा॒तारो॒ वि ते द॑धु॒रज॑स्रा ऋ॒तधी॑तयो रुरुचन्त द॒स्माः॥ २॥
प्र प॒स्त्या॒३॒॑मदि॑तिं॒ सिन्धु॑म॒र्कैः स्व॒स्तिमी॑ळे स॒ख्याय॑ दे॒वीम्।
उ॒भे यथा॑ नो॒ अह॑नी नि॒पात॑ उ॒षासा॒नक्ता॑ करता॒मद॑ब्धे॥ ३॥
व्य॑र्य॒मा वरु॑णश्चेति॒ पन्था॑मि॒षस्पतिः॑ सुवि॒तं गा॒तुम॒ग्निः ।
इन्द्रा॑विष्णू नृ॒वदु॒ षु स्तवा॑ना॒ शर्म॑ नो यन्त॒मम॑व॒द्वरू॑थम्॥ ४॥
आ पर्व॑तस्य म॒रुता॒मवां॑सि दे॒वस्य॑ त्रा॒तुर॑व्रि॒ भग॑स्य ।
पात्पति॒र्जन्या॒दंह॑सो नो मि॒त्रो मि॒त्रिया॑दु॒त न॑ उरुष्येत् ॥ ५॥

अथ सप्तमो वर्गः॥ ७॥

नू रो॑दसी॒ अहि॑ना बु॒ध्न्ये॑न स्तुवी॒त दे॑वी॒ अप्ये॑भिरि॒ष्टैः।
स॒मु॒द्रं न सं॒चर॑णे सनि॒ष्यवो॑ घ॒र्मस्व॑रसो न॒द्यो॒३॒॑ अप॑ व्रन्॥ ६॥
दे॒वैर्नो॑ दे॒व्यदि॑ति॒र्नि पा॑तु दे॒वस्त्रा॒ता त्रा॑यता॒मप्र॑युच्छन् ।
न॒हि मि॒त्रस्य॒ वरु॑णस्य धा॒सिमर्हा॑मसि प्र॒मियं॒ सान्व॒ग्नेः ॥ ७॥
अ॒ग्निरी॑शे वस॒व्य॑स्या॒ग्निर्म॒हः सौभ॑गस्य। तान्य॒स्मभ्यं॑ रासते॥ ८॥
उषो॑ मघो॒न्या व॑ह॒ सूनृ॑ते॒ वार्या॑ पु॒रु। अ॒स्मभ्यं॑ वाजिनीवति॥ ९॥
तत्सु नः॑ सवि॒ता भगो॒ वरु॑णो मि॒त्रो अ॑र्य॒मा। इन्द्रो॑ नो॒ राध॒सा ग॑मत्॥ १०॥

[५६] षट्पञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—वामदेवः॥ देवता—द्यावापृथिव्यौ॥ छन्दः—१, २ त्रिष्टुप्; ३ भुरिक्पङ्क्तिः; ४ विराट्त्रिष्टुप्; ५ निचृद्गायत्री; ६ विराड्गायत्री; ७ गायत्री॥ स्वरः—१, २, ४ धैवतः; ३ पञ्चमः; ५-७ षड्जः॥

अथ अष्टमो वर्गः॥

म॒ही द्यावा॑पृथि॒वी इ॒ह ज्येष्ठे॑ रु॒चा भ॑वतां शु॒चय॑द्भिर॒र्कैः ।
यत्सीं॒ वरि॑ष्ठे बृह॒ती वि॑मि॒न्वन्रु॒वद्धो॒क्षा प॑प्रथा॒नेभि॒रेवैः॑ ॥ १॥
दे॒वी दे॒वेभि॑र्यज॒ते यज॑त्रै॒रमि॑नती तस्थतुरु॒क्षमा॑णे ।
ऋ॒ताव॑री अ॒द्रुहा॑ दे॒वपु॑त्रे य॒ज्ञस्य॑ ने॒त्री शु॒चय॑द्भिर॒र्कैः ॥ २॥
स इत्स्वपा॒ भुव॑नेष्वास॒ य इ॒मे द्यावा॑पृथि॒वी ज॒जान॑ ।
उ॒र्वी ग॑भी॒रे रज॑सी सु॒मेके॑ अवं॒शे धीरः॒ शच्या॒ समै॑रत् ॥ ३॥
नू रो॑दसी बृ॒हद्भि॑र्नो॒ वरू॑थैः॒ पत्नी॑वद्भिरि॒षय॑न्ती स॒जोषाः॑।
उ॒रू॒ची विश्वे॑ यज॒ते नि पा॑तं धि॒या स्या॑म र॒थ्यः॑ सदा॒साः॥ ४॥
प्र वां॒ महि॒ द्यवी॑ अ॒भ्युप॑स्तुतिं भरामहे। शुची॒ उप॒ प्रश॑स्तये॥ ५॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पुनाने तन्वा मिथः स्वेन दक्षेण राजथः। ऊह्याथे सनादृतम्॥ ६॥
मही मित्रस्य साधथस्तरन्ती पिप्रती ऋतम्। परि यज्ञं नि षेदथुः॥ ७॥

[५७] सप्तपञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—वामदेवः॥ देवता—१-३ क्षेत्रपतिः; ४ शुनः; ५, ८ शुनासीरौ; ६, ७ सीता॥ छन्दः—१, ४, ६, ७ अनुष्टुप्; २, ३, ८ त्रिष्टुप्; ५ पुरउष्णिक्॥ स्वरः—१, ४, ६, ७ गान्धारः; २, ३, ८ धैवतः; ५ ऋषभः॥

अथ नवमो वर्गः॥ ९॥

क्षेत्रस्य पतिना वयं हितेनेव जयामसि ।
गामश्वं पोषयित्न्वा स नो मृळातीदृशे ॥ १॥
क्षेत्रस्य पते मधुमन्तमूर्मिं धेनुरिव पयो अस्मासु धुक्ष्व ।
मधुश्चुतं घृतमिव सुपूतमृतस्य नः पतयो मृळयन्तु ॥ २॥
मधुमतीरोषधीर्द्याव आपो मधुमन्नो भवत्वन्तरिक्षम् ।
क्षेत्रस्य पतिर्मधुमान्नो अस्त्वरिष्यन्तो अन्वेनं चरेम ॥ ३॥
शुनं वाहाः शुनं नरः शुनं कृषतु लाङ्गलम् ।
शुनं वरत्रा बध्यन्तां शुनमष्ट्रामुदिङ्गय ॥ ४॥
शुनासीराविमां वाचं जुषेथां यद्दिवि चक्रथुः पयः ।
तेनेमामुप सिञ्चतम् ॥ ५॥
अर्वाचीं सुभगे भव सीते वन्दामहे त्वा ।
यथा नः सुभगाससि यथा नः सुफलाससि ॥ ६॥
इन्द्रः सीतां नि गृह्णातु तां पूषानु यच्छतु ।
सा नः पयस्वती दुहामुत्तरामुत्तरां समाम् ॥ ७॥
शुनं नः फाला वि कृषन्तु भूमिं शुनं कीनाशा अभि यन्तु वाहैः ।
शुनं पर्जन्यो मधुना पयोभिः शुनासीरा शुनमस्मासु धत्तम्॥ ८॥

[५८] अष्टपञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—वामदेवः॥ देवता—अग्निः सूर्यो वाऽपो वा गावो वा घृतं वा॥ छन्दः—१, ६, ७ निचृत्त्रिष्टुप्; २, ४, ८-१० त्रिष्टुप्; ३ भुरिक्पङ्क्तिः; ५ निचृदुष्णिक्; ११ स्वराट्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१, २, ४, ६-१० धैवतः; ३ पञ्चमः; ५ ऋषभः॥

अथ दशमो वर्गः॥ १०॥

समुद्रादूर्मिर्मधुमाँ उदारदुपांशुना समममृतत्वमानट् ।
घृतस्य नाम गुह्यं यदस्ति जिह्वा देवानाममृतस्य नाभिः॥ १॥
वयं नाम प्र ब्रवामा घृतस्यास्मिन्यज्ञे धारयामा नमोभिः।
उप ब्रह्मा शृणवच्छस्यमानं चतुःशृङ्गोऽवमीद्गौर एतत् ॥ २॥
चत्वारि शृङ्गा त्रयो अस्य पादा द्वे शीर्षे सप्त हस्तासो अस्य।
त्रिधा बद्धो वृषभो रोरवीति महो देवो मर्त्याँ आ विवेश॥ ३॥
त्रिधा हितं पणिभिर्गुह्यमानं गविं देवासो घृतमन्वविन्दन्।
इन्द्र एकं सूर्य एकं जजान वेनादेकं स्वधया निष्टतक्षुः॥ ४॥
एता अर्षन्ति हृद्यात्समुद्राच्छतव्रजा रिपुणा नावचक्षे ।
घृतस्य धारा अभि चाकशीमि हिरण्ययो वेतसो मध्य आसाम्॥ ५॥

अथ एकादशो वर्गः॥ ११॥

सम्यक्स्रवन्ति सरितो न धेना अन्तर्हृदा मनसा पूयमानाः।
एते अर्षन्त्यूर्मयो घृतस्य मृगाइव क्षिपणोरीषमाणाः ॥ ६॥
सिन्धोरिव प्राध्वने शूघनासो वातप्रमियः पतयन्ति यह्वाः।
घृतस्य धारा अरुषो न वाजी काष्ठा भिन्दन्नूर्मिभिः पिन्वमानः॥ ७॥
अभि प्रवन्त समनेव योषाः कल्याण्यः स्मयमानासो अग्निम्।
घृतस्य धाराः समिधो नसन्त ता जुषाणो हर्यति जातवेदाः॥ ८॥
कन्याइव वहतुमेतवा उ अञ्ज्यञ्जाना अभि चाकशीमि ।
यत्र सोमः सूयते यत्र यज्ञो घृतस्य धारा अभि तत्पवन्ते॥ ९॥
अभ्यर्षत सुष्टुतिं गव्यमाजिमस्मासु भद्रा द्रविणानि धत्त।
इमं यज्ञं नयत देवता नो घृतस्य धारा मधुमत्पवन्ते॥ १०॥
धामन्ते विश्वं भुवनमधि श्रितमन्तः समुद्रे हृद्यन्तरायुषि।
अपामनीके समिथे य आभृतस्तमश्याम मधुमन्तं त ऊर्मिम्॥ ११॥

इति चतुर्थं मण्डलम्॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अथ पञ्चमं मण्डलम्

प्रथमोऽनुवाकः [१] प्रथमं सूक्तम्

ऋषिः—बुधगविष्ठिरावात्रेयौ ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१, ३, ४, ६, ११, १२ निचृत्त्रिष्टुप्; २, ७, १० त्रिष्टुप्; ५, ८ स्वराट्पङ्क्तिः; ९ पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१-४, ६, ७, १०-१२ धैवतः; ५, ८, ९ पञ्चमः ॥

अथ द्वादशो वर्गः ॥ १२ ॥

अबोध्यग्निः समिधा जनानां प्रति धेनुमिवायतीमुषासम्।
यह्वाइव प्र वयामुज्जिहानाः प्र भानवः सिस्रते नाकमच्छ॥ १ ॥
अबोधि होता यजथाय देवानूर्ध्वो अग्निः सुमनाः प्रातरस्थात्।
समिद्धस्य रुशददर्शि पाजो महान्देवस्तमसो निरमोचि॥ २ ॥
यदीं गणस्य रशनामजीगः शुचिरङ्क्ते शुचिभिर्गोभिरग्निः।
आद्दक्षिणा युज्यते वाजयन्त्युत्तानामूर्ध्वो अधयज्जुहूभिः॥ ३ ॥
अग्निमच्छा देवयतां मनांसि चक्षूंषीव सूर्ये सं चरन्ति।
यदीं सुवाते उषसा विरूपे श्वेतो वाजी जायते अग्रे अह्नाम्॥ ४ ॥
जनिष्ट हि जेन्यो अग्रे अह्नां हितो हितेष्वरुषो वनेषु।
दमेदमे सप्त रत्ना दधानोऽग्निर्होता नि षसादा यजीयान्॥ ५ ॥
अग्निर्होता न्यसीदद्यजीयानुपस्थे मातुः सुरभा उ लोके।
युवा कविः पुरुनिःष्ठ ऋतावा धर्ता कृष्टीनामुत मध्य इद्धः॥ ६ ॥

अथ त्रयोदशो वर्गः ॥ १३ ॥

प्र णु त्यं विप्रमध्वरेषु साधुमग्निं होतारमीळते नमोभिः।
आ यस्ततान रोदसी ऋतेन नित्यं मृजन्ति वाजिनं घृतेन॥ ७ ॥
मार्जाल्यो मृज्यते स्वे दमूनाः कविप्रशस्तो अतिथिः शिवो नः।
सहस्रशृङ्गो वृषभस्तदोजा विश्वाँ अग्ने सहसा प्रास्यन्यान्॥ ८ ॥
प्र सद्यो अग्ने अत्येष्यन्यानाविर्यस्मै चारुतमो बभूथ।
ईळेन्यो वपुष्यो विभावा प्रियो विशामतिथिर्मानुषीणाम् ॥ ९ ॥
तुभ्यं भरन्ति क्षितयो यविष्ठ बलिमग्ने अन्तित ओत दूरात्।
आ भन्दिष्ठस्य सुमतिं चिकिद्धि बृहत्ते अग्ने महि शर्म भद्रम्॥ १० ॥
आद्य रथं भानुमो भानुमन्तमग्ने तिष्ठ यजतेभिः समन्तम्।
विद्वान्पथीनामुर्वन्तरिक्षमेह देवान्हविरद्याय वक्षि ॥ ११ ॥

अवोचाम कवये मेध्याय वचो वन्दारु वृषभाय वृष्णे।
गविष्ठिरो नमसा स्तोममग्नौ दिवीव रुक्ममुरुव्यञ्चमश्रेत्॥ १२ ॥

[२] द्वितीयं सूक्तम्

ऋषिः—१, ३-८, १०-१२ कुमार आत्रेयो, वृशो वा जार उभौ वा; २, ९ वृशो जारः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१, ३, ७, ८ त्रिष्टुप्; २ स्वराट्पङ्क्तिः; ४, ५, ९, १० निचृत्-त्रिष्टुप्; ६ भुरिक्पङ्क्तिः; ११ विराट्त्रिष्टुप्; १२ निचृदतिजगती ॥ स्वरः—१, ३-५, ७-११ धैवतः; २, ६ पञ्चमः; १२ निषादः ॥

अथ चतुर्दशो वर्गः ॥ १४ ॥

कुमारं माता युवतिः समुब्धं गुहा बिभर्ति न ददाति पित्रे।
अनीकमस्य न मिनज्जनासः पुरः पश्यन्ति निहितमरतौ॥ १ ॥
कमेतं त्वं युवते कुमारं पेषी बिभर्षि महिषी जजान।
पूर्वीर्हि गर्भः शरदो ववर्धापश्यं जातं यदसूत माता॥ २ ॥
हिरण्यदन्तं शुचिवर्णमारात्क्षेत्रादपश्यमायुधा मिमानम्।
ददानो अस्मा अमृतं विपृक्त्किं मामनिन्द्राः कृणवन्ननुक्थाः॥ ३ ॥
क्षेत्रादपश्यं सनुतश्चरन्तं सुमद्यूथं न पुरु शोभमानम्।
न ता अगृभ्रन्नजनिष्ट हि षः पलिक्नीरिद्युवतयो भवन्ति॥ ४ ॥
के मे मर्यकं वि यवन्त गोभिर्न येषां गोपा अरणश्चिदासः।
य ईं जगृभ्रुरव ते सृजन्त्वाजाति पश्व उप नश्चिकित्वान्॥ ५ ॥
वसां राजानं वसतिं जनानामरातयो नि दधुर्मर्त्येषु।
ब्रह्माण्यत्रेरव तं सृजन्तु निन्दितारो निन्द्यासो भवन्तु॥ ६ ॥

अथ पञ्चदशो वर्गः ॥ १५ ॥

शुनश्चिच्छेपं निदितं सहस्राद्यूपादमुञ्चो अशमिष्ट हि षः।
एवास्मदग्ने वि मुमुग्धि पाशान्होतश्चिकित्व इह तू निषद्य॥ ७ ॥
हूणीयमानो अप हि मदैयेः प्र मे देवानां व्रतपा उवाच।
इन्द्रो विद्वाँ अनु हि त्वा चचक्ष तेनाहमग्ने अनुशिष्ट आगाम्॥ ८ ॥
वि ज्योतिषा बृहता भात्यग्निराविर्विश्वानि कृणुते महित्वा।
प्रादेवीर्मायाः सहते दुरेवाः शिशीते शृङ्गे रक्षसे विनिक्षे॥ ९ ॥
उत स्वानासो दिवि षन्त्वग्नेस्तिग्मायुधा रक्षसे हन्त्वा उ।
मदे चिदस्य प्र रुजन्ति भामा न वरन्ते परिबाधो अदेवीः॥ १० ॥
एतं ते स्तोमं तुविजात विप्रो रथं न धीरः स्वपा अतक्षम्।
यदीदग्ने प्रति त्वं देव हर्याः स्वर्वतीरप एना जयेम॥ ११ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तुविग्रीवो वृषभो वावृधानोऽशत्र्व१र्यः समजाति वेदः।
इतीममग्निममृता अवोचन्बर्हिष्मते मनवे शर्म यंसद्धविष्मते
मनवे शर्म यंसत् ॥१२॥

[३] तृतीयं सूक्तम्

ऋषिः—वसुश्रुत आत्रेयः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—१ निचृत्पङ्क्तिः; २, ३, ५, ९, १२ निचृत्त्रिष्टुप्; ४, १० त्रिष्टुप्; ६ स्वराट्त्रिष्टुप्; ७, ८ विराट्त्रिष्टुप्; ११ भुरिक्पङ्क्तिः॥ स्वरः—१, ११ पञ्चमः; २-१०, १२ धैवतः॥

अथ षोडशो वर्गः॥ १६॥

त्वमग्ने वरुणो जायसे यत्त्वं मित्रो भवसि यत्समिद्धः।
त्वे विश्वे सहसस्पुत्र देवास्त्वमिन्द्रो दाशुषे मर्त्याय॥ १॥
त्वमर्यमा भवसि यत्कनीनां नाम स्वधावन्गुह्यं बिभर्षि।
अञ्जन्ति मित्रं सुधितं न गोभिर्यद्दम्पती समनसा कृणोषि॥ २॥
तव श्रिये मरुतो मर्जयन्त रुद्र यत्ते जनिम चारु चित्रम्।
पदं यद्विष्णोरुपमं निधायि तेन पासि गुह्यं नाम गोनाम्॥ ३॥
तव श्रिया सुदृशो देव देवाः पुरू दधाना अमृतं सपन्त।
होतारमग्निं मनुषो नि षेदुर्दशस्यन्त उशिजः शंसमायोः॥ ४॥
न त्वद्धोता पूर्वो अग्ने यजीयान्न काव्यैः परो अस्ति स्वधावः।
विशश्च यस्या अतिथिर्भवासि स यज्ञेन वनवद्देव मर्तान्॥ ५॥
वयमग्ने वनुयाम त्वोता वसूयवो हविषा बुध्यमानाः।
वयं समर्ये विदथेष्वह्नां वयं राया सहसस्पुत्र मर्तान्॥ ६॥

अथ सप्तदशो वर्गः॥ १७॥

यो न आगो अभ्येनो भरात्यधीदघमघशंसे दधात।
जही चिकित्वो अभिशस्तिमेतामग्ने यो नो मर्चयति द्वयेन॥ ७॥
त्वामस्या व्युषि देव पूर्वे दूतं कृण्वाना अयजन्त हव्यैः।
संस्थे यदग्न ईयसे रयीणां देवो मर्तैर्वसुभिरिध्यमानः॥ ८॥
अव स्पृधि पितरं योधि विद्वान्पुत्रो यस्ते सहसः सून ऊहे।
कदा चिकित्वो अभि चक्षसे नोऽग्ने कदाँ ऋतचिद्यातयासे॥ ९॥
भूरि नाम वन्दमानो दधाति पिता वसो यदि तज्जोषयासे।
कुविद्देवस्य सहसा चकानः सुम्नमग्निर्वनते वावृधानः॥ १०॥
त्वमङ्ग जरितारं यविष्ठ विश्वान्यग्ने दुरिताति पर्षि।
स्तेना अदृश्रन्रिपवो जनासोऽज्ञातकेता वृजिना अभूवन्॥ ११॥

इमे यामासस्त्वद्रिगभूवन्वसवे वा तदिदागो अवाचि।
नाहायमग्निरभिशस्तये नो न रीषते वावृधानः परा दात्॥ १२॥

[४] चतुर्थं सूक्तम्

ऋषिः—वसुश्रुत आत्रेयः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—१, १०, ११ भुरिक्पङ्क्तिः; २, ९ विराट्त्रिष्टुप्; ३, ६, ८ निचृत्त्रिष्टुप्; ४, ७ स्वराट्पङ्क्तिः; ५ त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१, ४, ७, १०, ११ पञ्चमः; २, ३, ५, ६, ८, ९ धैवतः॥

अथ अष्टादशो वर्गः॥ १८॥

त्वामग्ने वसुपतिं वसूनामभि प्र मन्दे अध्वरेषु राजन्।
त्वया वाजं वाजयन्तो जयेमाभि ष्याम पृत्सुतीर्मर्त्यानाम्॥ १॥
हव्यवाळग्निरजरः पिता नो विभुर्विभावा सुदृशीको अस्मे।
सुगार्हपत्याः समिषो दिदीह्यस्मद्र्य१क्सं मिमीहि श्रवांसि॥ २॥
विशां कविं विश्पतिं मानुषीणां शुचिं पावकं घृतपृष्ठमग्निम्।
नि होतारं विश्वविदं दधिध्वे स देवेषु वनते वार्याणि॥ ३॥
जुषस्वाग्न इळया सजोषा यतमानो रश्मिभिः सूर्यस्य।
जुषस्व नः समिधं जातवेद आ च देवान्हविरद्याय वक्षि॥ ४॥
जुष्टो दमूना अतिथिर्दुरोण इमं नो यज्ञमुप याहि विद्वान्।
विश्वा अग्ने अभियुजो विहत्या शत्रूयतामा भरा भोजनानि॥ ५॥

अथ एकोनविंशो वर्गः॥ १९॥

वधेन दस्युं प्र हि चातयस्व वयः कृण्वानस्तन्वे३ स्वायै।
पिपर्षि यत्सहसस्पुत्र देवान्त्सो अग्ने पाहि नृतम वाजे अस्मान्॥ ६॥
वयं ते अग्न उक्थैर्विधेम वयं हव्यैः पावक भद्रशोचे।
अस्मे रयिं विश्ववारं समिन्वास्मे विश्वानि द्रविणानि धेहि॥ ७॥
अस्माकमग्ने अध्वरं जुषस्व सहसः सूनो त्रिषधस्थ हव्यम्।
वयं देवेषु सुकृतः स्याम शर्मणा नस्त्रिवरूथेन पाहि॥ ८॥
विश्वानि नो दुर्गहा जातवेदः सिन्धुं न नावा दुरिताति पर्षि।
अग्ने अत्रिवन्नमसा गृणानो३ऽस्माकं बोध्यविता तनूनाम्॥ ९॥
यस्त्वा हृदा कीरिणा मन्यमानोऽमर्त्यं मर्त्यो जोहवीमि।
जातवेदो यशो अस्मासु धेहि प्रजाभिरग्ने अमृतत्वमश्याम्॥ १०॥
यस्मै त्वं सुकृते जातवेद उ लोकमग्ने कृणवः स्योनम्।
अश्विनं स पुत्रिणं वीरवन्तं गोमन्तं रयिं नशते स्वस्ति॥ ११॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

[५] पञ्चमं सूक्तम्

ऋषिः—वसुश्रुत आत्रेयः ॥ देवता—आप्रीम् ॥ छन्दः—१, ५-७, ९, १० गायत्री; २ आर्च्युष्णिक्; ३, ८ निचृद्गायत्री; ४ पिपीलिकामध्यागायत्री; ११ विराड्गायत्री ॥ स्वरः—१, ३-११ षड्जः; २ ऋषभः ॥

अथ विंशो वर्गः ॥ २० ॥

सुस॑मिद्धाय शो॒चिषे॑ घृ॒तं ती॒व्रं जु॑होतन। अ॒ग्नये॑ जा॒तवे॑दसे ॥ १ ॥
नरा॒शंसः॑ सुषूदती॒मं य॒ज्ञमदा॑भ्यः। क॒विर्हि मधु॑हस्त्यः ॥ २ ॥
ई॒ळि॒तो अ॑ग्न॒ आ व॒हेन्द्रं॑ चि॒त्रमि॒ह प्रि॒यम्। सु॒खै रथे॑भिरू॒तये॑ ॥ ३ ॥
ऊर्ण॑म्रदा॒ वि प्र॑थस्वा॒भ्य१॒॑र्का अ॑नूषत। भवा॑ नः शुभ्र सा॒तये॑ ॥ ४ ॥
देवी॑र्द्वारो॒ वि श्र॑यध्वं सुप्राय॒णा न॑ ऊ॒तये॑। प्रप्र॑ य॒ज्ञं पृ॑णीतन ॥ ५ ॥

अथ एकविंशो वर्गः ॥ २१ ॥

सु॒प्रती॑के वयो॒वृधा॑ य॒ह्वी ऋ॒तस्य॑ मा॒तरा॑। दो॒षामु॒षास॑मीमहे ॥ ६ ॥
वात॑स्य॒ पत्म॑न्नीळि॒ता दैव्या॒ होता॑रा॒ मनु॑षः। इ॒मं नो॑ य॒ज्ञमा ग॑तम् ॥ ७ ॥
इळा॒ सर॑स्वती म॒ही ति॒स्रो दे॒वीर्म॑यो॒भुवः॑। ब॒र्हिः सी॑दन्त्व॒स्रिधः॑ ॥ ८ ॥
शि॒वस्त्व॑ष्टरि॒हा ग॑हि वि॒भुः पोष॑ उ॒त त्मना॑। य॒ज्ञेय॑ज्ञे न॒ उद॑व ॥ ९ ॥
यत्र॒ वेत्थ॑ वनस्पते दे॒वानां॒ गुह्या॒ नामा॑नि। तत्र॑ ह॒व्यानि॑ गामय ॥ १० ॥
स्वाहा॒ग्नये॒ वरु॑णाय॒ स्वाहेन्द्रा॑य म॒रुद्भ्यः॑। स्वाहा॑ दे॒वेभ्यो॑ ह॒विः ॥ ११ ॥

[६] षष्ठं सूक्तम्

ऋषिः—वसुश्रुत आत्रेयः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१, ८, ९ निचृत्पङ्क्तिः; २, ५ पङ्क्तिः; ३, ४ स्वराड्बृहती; ६, १० भुरिग्बृहती; ७ विराट्पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१, २, ५, ७-९ पञ्चमः; ३, ४, ६, १० मध्यमः ॥

अथ द्वाविंशो वर्गः ॥ २२ ॥

अ॒ग्निं तं म॑न्ये॒ यो वसु॒रस्तं॒ यं यन्ति॑ धे॒नवः॑ ।
अस्त॒मर्व॑न्त आ॒शवोऽस्तं॒ नित्या॑सो वा॒जिन॒ इषं॑ स्तो॒तृभ्य॒ आ भ॑र ॥ १ ॥
सो अ॒ग्निर्यो वसु॑र्गृ॒णे सं यमा॒यन्ति॑ धे॒नवः॑ ।
समर्व॑न्तो रघु॒द्रुवः॒ सं सु॑जा॒तासः॑ सू॒रय॒ इषं॑ स्तो॒तृभ्य॒ आ भ॑र ॥ २ ॥
अ॒ग्निर्हि वा॒जिनं॑ वि॒शे ददा॑ति वि॒श्वच॑र्षणिः ।
अ॒ग्नी रा॒ये स्वा॒भुवं॒ स प्री॒तो या॑ति॒ वार्य॒मिषं॑ स्तो॒तृभ्य॒ आ भ॒र ॥ ३ ॥
आ ते॑ अग्न इधीमहि द्यु॒मन्तं॑ देवा॒जर॑म् ।
यद्ध॒ स्या ते॒ पनी॑यसी स॒मिद्दी॒दय॑ति॒ द्यवीषं॑ स्तो॒तृभ्य॒ आ भ॒र ॥ ४ ॥
आ ते॑ अग्न ऋ॒चा ह॒विः शुक्र॑स्य शोचिषस्पते ।
सुश्च॑न्द्र॒ दस्म॒ विश्प॑ते॒ हव्य॑वा॒ट् तुभ्यं॑ हूयत॒ इषं॑ स्तो॒तृभ्य॒ आ भ॑र ॥ ५ ॥

अथ त्रयोविंशो वर्गः ॥ २३ ॥

प्रो त्ये अ॒ग्नयो॒ऽग्निषु॒ विश्वं॑ पुष्यन्ति॒ वार्य॑म् ।
ते हि॑न्विरे॒ त इ॑न्विरे॒ त इ॑षण्यन्त्यानु॒षगिषं॑ स्तो॒तृभ्य॒ आ भ॑र ॥ ६ ॥
तव॒ त्ये अ॑ग्ने अ॒र्चयो॒ महि॑ व्राधन्त वा॒जिनः॑ ।
ये पत्व॑भिः श॒फानां॑ व्र॒जा भु॒रन्त॒ गोना॒मिषं॑ स्तो॒तृभ्य॒ आ भ॑र ॥ ७ ॥
नवा॑ नो अग्न॒ आ भ॑र स्तो॒तृभ्यः॑ सुक्षि॒तीरिषः॑ ।
ते स्या॑म॒ य आ॑नृ॒चुस्त्वादू॑तासो॒ दमे॑दम॒ इषं॑ स्तो॒तृभ्य॒ आ भ॑र ॥ ८ ॥
उ॒भे सु॑श्चन्द्र स॒र्पिषो॒ दर्वी॑ श्रीणीष आ॒सनि॑ ।
उ॒तो न॒ उत्पु॑पूर्या उ॒क्थेषु॑ शवसस्पत॒ इषं॑ स्तो॒तृभ्य॒ आ भ॑र ॥ ९ ॥
ए॒वाँ अ॒ग्निम॑जुर्यमुर्गी॒र्भिर्य॒ज्ञेभि॑रानु॒षक् ।
दध॑द॒स्मे सु॒वीर्य॑मु॒त त्यदा॒श्वश्व्य॒मिषं॑ स्तो॒तृभ्य॒ आ भ॑र ॥ १० ॥

[७] सप्तमं सूक्तम्

ऋषिः—इष आत्रेयः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१ विराडनुष्टुप्; २ अनुष्टुप्; ३ भुरिगनुष्टुप्; ४, ५, ८, ९ निचृदनुष्टुप्; ६, ७ स्वराडुष्णिक्; १० निचृद्बृहती ॥ स्वरः—१-५, ८, ९ गान्धारः; ६, ७ ऋषभः; १० मध्यमः ॥

अथ चतुर्विंशो वर्गः ॥ २४ ॥

सखा॑यः॒ सं वः॑ स॒म्यञ्च॒मिषं॒ स्तोमं॑ चा॒ग्नये॑ ।
वर्षि॑ष्ठाय क्षिती॒नामू॒र्जो नप्त्रे॒ सह॑स्वते ॥ १ ॥
कुत्रा॑ चि॒द्यस्य॒ समृ॑तौ र॒ण्वा नरो॑ नृ॒षद॑ने ।
अर्ह॑न्तश्चि॒द्यमि॑न्ध॒ते सं॑ज॒नय॑न्ति ज॒न्तवः॑ ॥ २ ॥
सं यदि॒षो वना॑महे॒ सं ह॒व्या मानु॑षाणाम् ।
उ॒त द्यु॒म्नस्य॒ शव॑स ऋ॒तस्य॑ र॒श्मिमा द॑दे ॥ ३ ॥
स स्मा॑ कृणोति के॒तुमा नक्तं॑ चिद् दू॒र आ स॒ते ।
पा॒व॒को यद्वन॒स्पती॒न्प्र स्मा॑ मि॒नात्य॒जरः॑ ॥ ४ ॥
अव॑ स्म॒ यस्य॒ वेष॑णे॒ स्वेदं॑ प॒थिषु॒ जुह्व॑ति ।
अ॒भीमह॒ स्वजे॑न्यं॒ भूमा॑ पृ॒ष्ठेव॑ रुरुहुः ॥ ५ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अथ पञ्चविंशो वर्गः ॥ २५ ॥

यं मर्त्यः पुरुस्पृहं विदद्विश्वस्य धायसे ।
प्र स्वादनं पितूनामस्ततातिं चिदायवे ॥ ६ ॥
स हि ष्मा धन्वाक्षितं दाता न दात्या पशुः ।
हिरिश्मश्रुः शुचिदन्नृभुरनिभृष्टतविषिः ॥ ७ ॥
शुचिः ष्म यस्मा अत्रिवत्प्र स्वधितीव रीयते ।
सुषूरसूत माता क्राणा यदानशे भगम् ॥ ८ ॥
आ यस्ते सर्पिरासुतेऽग्ने शमस्ति धायसे ।
ऐषु द्युम्नमुत श्रव आ चित्तं मर्त्येषु धाः ॥ ९ ॥
इति चिन्मन्युमध्रिजस्त्वादातमा पशुं ददे ।
आदग्ने अपृणतोऽत्रिः सासह्यादस्यूनिषः सासह्यान्नॄन् ॥ १० ॥

[८] अष्टमं सूक्तम्

ऋषिः—इष आत्रेयः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१, ५ विराट्त्रिष्टुप्; २ भुरिक्त्रिष्टुप्; ३, ४, निचृज्जगती; ६, ७ विराड्जगती ॥
स्वरः—१, २, ५ धैवतः; ३, ४, ६, ७ निषादः ॥

अथ षड्विंशो वर्गः ॥ २६ ॥

त्वामग्न ऋतायवः समीधिरे प्रत्नं प्रत्नास ऊतये सहस्कृत ।
पुरुश्चन्द्रं यजतं विश्वधायसं दमूनसं गृहपतिं वरेण्यम् ॥ १ ॥
त्वामग्ने अतिथिं पूर्व्यं विशः शोचिष्केशं गृहपतिं नि षेदिरे ।
बृहत्केतुं पुरुरूपं धनस्पृतं सुशर्माणं स्ववसं जरद्विषम् ॥ २ ॥
त्वामग्ने मानुषीरीळते विशो होत्राविदं विविचिं रत्नधातमम् ।
गुहा सन्तं सुभग विश्वदर्शतं तुविष्वणसं सुयजं घृतश्रियम् ॥ ३ ॥
त्वामग्ने धर्णसिं विश्वधा वयं गीर्भिर्गृणन्तो नमसोप सेदिम ।
स नो जुषस्व समिधानो अङ्गिरो देवो मर्तस्य यशसा सुदीतिभिः ॥ ४ ॥
त्वमग्ने पुरुरूपो विशेविशे वयो दधासि प्रत्नथा पुरुष्टुत ।
पुरूण्यन्ना सहसा वि राजसि त्विषिः सा ते तित्विषाणस्य नाधृषे ॥ ५ ॥
त्वामग्ने समिधानं यविष्ठ्य देवा दूतं चक्रिरे हव्यवाहनम् ।
उरुज्रयसं घृतयोनिमाहुतं त्वेषं चक्षुर्दधिरे चोदयन्मति ॥ ६ ॥
त्वामग्ने प्रदिव आहुतं घृतैः सुम्नायवः सुषमिधा समीधिरे ।
स वावृधान ओषधीभिरुक्षितोऽभि ज्रयांसि पार्थिवा वि तिष्ठसे ॥ ७ ॥

इति तृतीयाष्टकेऽष्टमोऽध्यायः ॥
इति तृतीयोऽष्टकः ॥

अथ चतुर्थाऽष्टके प्रथमोऽध्यायः

[९] नवमं सूक्तम्

ऋषिः—गय आत्रेयः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१ स्वराडुष्णिक्; २ निचृदनुष्टुप्; ३, ४ भुरिगुष्णिक्; ५ स्वराड्बृहती; ६ विराड्-अनुष्टुप्; ७ पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१, ३, ४ ऋषभः; २, ६ गान्धारः; ५ मध्यमः; ७ पञ्चमः ॥

अथ प्रथमो वर्गः ॥ १ ॥

त्वामग्ने हविष्मन्तो देवं मर्तास ईळते ।
मन्ये त्वा जातवेदसं स हव्या वक्ष्यानुषक् ॥ १ ॥
अग्निर्होता दास्वतः क्षयस्य वृक्तबर्हिषः ।
सं यज्ञासश्चरन्ति यं सं वाजासः श्रवस्यवः ॥ २ ॥
उत स्म यं शिशुं यथा नवं जनिष्टारणी ।
धर्तारं मानुषीणां विशामग्निं स्वध्वरम् ॥ ३ ॥
उत स्म दुर्गृभीयसे पुत्रो न ह्वार्याणाम् ।
पुरू यो दग्धासि वनाग्ने पशुर्न यवसे ॥ ४ ॥
अध स्म यस्यार्चयः सम्यक्संयन्ति धूमिनः ।
यदीमह त्रितो दिव्युप ध्मातेव धमति शिशीते ध्मातरी यथा ॥ ५ ॥
तवाहमग्न ऊतिभिर्मित्रस्य च प्रशस्तिभिः ।
द्वेषोयुतो न दुरिता तुर्याम मर्त्यानाम् ॥ ६ ॥
तं नो अग्ने अभी नरो रयिं सहस्व आ भर ।
स क्षेपयत्स पोषयद्भुवद्वाजस्य सातय उतैधि पृत्सु नो वृधे ॥ ७ ॥

[१०] दशमं सूक्तम्

ऋषिः—गय आत्रेयः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१, ६ निचृदनुष्टुप्; २, ३ भुरिगुष्णिक्; ४ स्वराड्बृहती; ५ अनुष्टुप्; ७ निचृत्पङ्क्तिः ॥
स्वरः—१, ५, ६ गान्धारः; २, ३ ऋषभः; ४ मध्यमः; ७ पञ्चमः ॥

अथ द्वितीयो वर्गः ॥ २ ॥

अग्न ओजिष्ठमा भर द्युम्नमस्मभ्यमध्रिगो ।
प्र नो राया परीणसा रत्सि वाजाय पन्थाम् ॥ १ ॥
त्वं नो अग्ने अद्भुत क्रत्वा दक्षस्य मंहना ।
त्वे असुर्यं मारुहत्क्राणा मित्रो न यज्ञियः ॥ २ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

त्वं नो अग्न एषां गयं पुष्टिं च वर्धय ।
ये स्तोमेभिः प्र सूरयो नरो मघान्यानशुः ॥ ३ ॥
ये अग्ने चन्द्र ते गिरः शुम्भन्त्यश्वराधसः ।
शुष्मेभिः शुष्मिणो नरो दिवश्चिद्येषां बृहत्सुकीर्तिर्बोधति त्मना ॥ ४ ॥
तव त्ये अग्ने अर्चयो भ्राजन्तो यन्ति धृष्णुया ।
परिज्मानो न विद्युतः स्वानो रथो न वाजयुः ॥ ५ ॥
नू नो अग्न ऊतये सबाधसश्च रातये ।
अस्माकासश्च सूरयो विश्वा आशास्तरीषणि ॥ ६ ॥
त्वं नो अग्ने अङ्गिरः स्तुतः स्तवान आ भर ।
होतर्विभ्वासहं रयिं स्तोतृभ्यः स्तवसे च न उतैधि पृत्सु नो वृधे ॥ ७ ॥

[११] एकादशं सूक्तम्

ऋषिः—सुतम्भर आत्रेयः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१, ३, ५, निचृज्जगती; २ जगती; ४, ६ विराड्जगती ॥ स्वरः—निषादः ॥

अथ तृतीयो वर्गः ॥ ३ ॥

जनस्य गोपा अजनिष्ट जागृविरग्निः सुदक्षः सुविताय नव्यसे ।
घृतप्रतीको बृहता दिविस्पृशा द्युमद्वि भाति भरतेभ्यः शुचिः ॥ १ ॥
यज्ञस्य केतुं प्रथमं पुरोहितमग्निं नरस्त्रिषधस्थे समीधिरे ।
इन्द्रेण देवैः सरथं स बर्हिषि सीदन्नि होता यजथाय सुक्रतुः ॥ २ ॥
असंमृष्टो जायसे मातरिश्वनः शुचिर्मन्द्रः कविरुदतिष्ठो विवस्वतः ।
घृतेन त्वावर्धयन्नग्न आहुत धूमस्ते केतुरभवद्दिवि श्रितः ॥ ३ ॥
अग्निर्नो यज्ञमुप वेतु साधुयाग्निं नरो वि भरन्ते गृहेगृहे ।
अग्निर्दूतो अभवद्धव्यवाहनोऽग्निं वृणाना वृणते कविक्रतुम् ॥ ४ ॥
तुभ्येदमग्ने मधुमत्तमं वचस्तुभ्यं मनीषा इयमस्तु शं हृदे ।
त्वां गिरः सिन्धुमिवावनीर्महीरा पृणन्ति शवसा वर्धयन्ति च ॥ ५ ॥
त्वामग्ने अङ्गिरसो गुहा हितमन्वविन्दञ्छिश्रियाणं वनेवने ।
स जायसे मथ्यमानः सहो महत्त्वामाहुः सहसस्पुत्रमङ्गिरः ॥ ६ ॥

[१२] द्वादशं सूक्तम्

ऋषिः—सुतम्भर आत्रेयः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१, २, स्वराट्पङ्क्तिः; ३-५ त्रिष्टुप्; ६ निचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१, २ पञ्चमः; ३-६ धैवतः ॥

अथ चतुर्थो वर्गः ॥ ४ ॥

प्राग्नयें बृहते यज्ञियाय ऋतस्य वृष्णे असुराय मन्म ।
घृतं न यज्ञ आस्ये सुपूतं गिरं भरे वृषभाय प्रतीचीम् ॥ १ ॥
ऋतं चिकित्व ऋतमिच्चिकिद्धृतस्य धारा अनु तृन्धि पूर्वीः ।
नाहं यातुं सहसा न द्वयेन ऋतं सपाम्यरुषस्य वृष्णः ॥ २ ॥
कया नो अग्न ऋतयन्नृतेन भुवो नवेदा उचथस्य नव्यः ।
वेदा मे देव ऋतुपा ऋतूनां नाहं पतिं सनितुरस्य रायः ॥ ३ ॥
के ते अग्ने रिपवे बन्धनासः के पायवः सनिषन्त द्युमन्तः ।
के धासिमग्ने अनृतस्य पान्ति क आसतो वचसः सन्ति गोपाः ॥ ४ ॥
सखायस्ते विषुणा अग्न एते शिवासः सन्तो अशिवा अभूवन् ।
अधूर्षत स्वयमेते वचोभिर्ऋजूयते वृजिनानि ब्रुवन्तः ॥ ५ ॥
यस्ते अग्ने नमसा यज्ञमीट्ट ऋतं स पात्यरुषस्य वृष्णः ।
तस्य क्षयः पृथुरा साधुरेतु प्रसस्त्रीणस्य नहुषस्य शेषः ॥ ६ ॥

[१३] त्रयोदशं सूक्तम्

ऋषिः—सुतम्भर आत्रेयः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१, ४, ५ निचृद्गायत्री; २, ६ गायत्री; ३ विराड्गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथ पञ्चमो वर्गः ॥ ५ ॥

अर्चन्तस्त्वा हवामहेऽर्चन्तः समिधीमहि । अग्ने अर्चन्त ऊतये ॥ १ ॥
अग्नेः स्तोमं मनामहे सिध्रमद्य दिविस्पृशः । देवस्य द्रविणस्यवः ॥ २ ॥
अग्निर्जुषत नो गिरो होता यो मानुषेष्वा । स यक्षद्दैव्यं जनम् ॥ ३ ॥
त्वमग्ने सप्रथा असि जुष्टो होता वरेण्यः । त्वया यज्ञं वि तन्वते ॥ ४ ॥
त्वामग्ने वाजसातमं विप्रा वर्धन्ति सुष्टुतम् । स नो रास्व सुवीर्यम् ॥ ५ ॥
अग्ने नेमिरराँइव देवाँस्त्वं परिभूरसि । आ राधश्चित्रमृञ्जसे ॥ ६ ॥

[१४] चतुर्दशं सूक्तम्

ऋषिः—सुतम्भर आत्रेयः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१, ४-६ निचृद्गायत्री; २ विराड्गायत्री; ३ गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथ षष्ठो वर्गः ॥ ६ ॥

अग्निं स्तोमेन बोधय समिधानो अमर्त्यम् । हव्या देवेषु नो दधत् ॥ १ ॥
तमध्वरेष्वीळते देवं मर्ता अमर्त्यम् । यजिष्ठं मानुषे जने ॥ २ ॥
तं हि शश्वन्त ईळते स्रुचा देवं घृतश्चुतम् । अग्निं हव्याय वोळ्हवे ॥ ३ ॥
अग्निर्जातो अरोचत घ्नन्दस्यूञ्ज्योतिषा तमः । अविन्दद् गा अपः स्वः ॥ ४ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अ॒ग्निमी॒ळेन्यं॑ क॒विं घृ॒तपृ॑ष्ठं सपर्यत। वेतु॑ मे शृ॒णव॒द्धव॑म्॥५॥
अ॒ग्निं घृ॒तेन॑ वावृधुः॒ स्तोमे॑भिर्वि॒श्वच॑र्षणिम्। स्वा॒धीभि॑र्वच॒स्युभिः॑॥६॥

द्वितीयोऽनुवाकः

[१५] पञ्चदशं सूक्तम्

ऋषिः—धरुण आङ्गिरसः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—१, ५ स्वराट्पङ्क्तिः; २, ४ त्रिष्टुप्; ३ विराट्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१, ५ पञ्चमः; २-४ धैवतः॥

अथ सप्तमो वर्गः॥७॥

प्र वे॒धसे॑ क॒वये॒ वेद्या॑य॒ गिरं॑ भरे य॒शसे॑ पू॒र्व्याय॑।
घृ॒तप्र॑सत्तो॒ असु॑रः सु॒शेवो॑ रा॒यो ध॒र्ता ध॒रुणो॒ वस्वो॑ अ॒ग्निः॥१॥
ऋ॒तेन॑ ऋ॒तं ध॒रुणं॑ धारयन्त य॒ज्ञस्य॑ शा॒के प॑र॒मे व्यो॑मन्।
दि॒वो धर्म॑न्ध॒रुणे॑ से॒दुषो॒ नॄञ्जा॒तैरजा॑ताँ अ॒भि ये न॑न॒क्षुः॥२॥
अं॒हो॒युव॑स्त॒न्व॑स्तन्वते॒ वि वयो॑ म॒हद्दु॒ष्टरं॑ पू॒र्व्याय॑।
स सं॒वतो॒ नव॑जातस्तुतुर्यात्सिं॒हं न क्रु॒द्धम॒भितः॒ परि॑ ष्ठुः॥३॥
मा॒तेव॒ यद्भर॑से पप्रथा॒नो जनं॑जनं॒ धाय॑से॒ चक्ष॑से च।
वयो॑वयो जरसे॒ यद्दधा॑नः॒ परि॒ त्मना॒ विषु॑रूपो जिगासि॥४॥
वाजो॒ नु ते॒ शव॑सस्पा॒त्वन्त॑मु॒रुं दोघं॑ ध॒रुणं॑ देव रा॒यः।
प॒दं न ता॒युर्गुह्य॒ दधा॑नो म॒हो रा॒ये चि॒तय॒न्नत्रि॑मस्पः॥५॥

[१६] षोडशं सूक्तम्

ऋषिः—पूरुरात्रेयः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—१-३ विराडनुष्टुप्; ४ भुरिगुष्णिक्; ५ बृहती॥ स्वरः—१-३ गान्धारः;४ ऋषभः; ५ मध्यमः॥

अथ अष्टमो वर्गः॥८॥

बृ॒हद्वयो॒ हि भा॒नवेऽर्चा॑ दे॒वाया॒ग्नये॑ ।
यं मि॒त्रं न प्रश॑स्तिभि॒र्मर्ता॑सो दधि॒रे पु॒रः ॥१॥
स हि द्यु॒भि॒र्जना॑नां॒ होता॒ दक्ष॑स्य बा॒ह्वोः ।
वि ह॒व्यम॒ग्निरा॑नु॒षग्भगो॒ न वार॑मृण्वति ॥२॥
अ॒स्य स्तोमे॑ म॒घोनः॑ स॒ख्ये वृ॒द्धशो॑चिषः ।
विश्वा॒ यस्मि॑न्तुवि॒ष्वणि॒ सम॒र्ये शुष्म॑माद॒धुः ॥३॥
अधा॒ ह्य॑ग्न एषां सु॒वीर्य॑स्य मं॒हना॑ ।
तमिद्य॒ह्वं न रोद॑सी॒ परि॒ श्रवो॑ बभूवतुः ॥४॥
नू न॒ एहि॒ वार्य॒मग्ने॑ गृणा॒न आ भ॑र ।
ये व॒यं ये च॑ सू॒रयः॑ स्व॒स्ति धाम॑हे॒ सचो॒तैधि॑ पृ॒त्सु नो॑ वृ॒धे ॥५॥

[१७] सप्तदशं सूक्तम्

ऋषिः—पूरुरात्रेयः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—१ भुरिगुष्णिक्; २ अनुष्टुप्; ३ निचृदनुष्टुप्; ४ विराडनुष्टुप्; ५ भुरिग्बृहती॥ स्वरः—१ ऋषभः; २-४ गान्धारः; ५ मध्यमः॥

अथ नवमो वर्गः॥९॥

आ य॒ज्ञैर्दे॑व॒ मर्त्य॑ इ॒त्था तव्यां॑समू॒तये॑ ।
अ॒ग्निं कृ॒ते स्व॑ध्व॒रे पू॒रुरी॑ळीताव॑से ॥१॥
अस्य॒ हि स्वय॑शस्तर आ॒सा वि॑धर्म॒न्मन्य॑से ।
तं नाकं॑ चि॒त्रशो॑चिषं म॒न्द्रं प॒रो म॑नी॒षया॑ ॥२॥
अ॒स्य वासा उ॑ अ॒र्चिषा॒ य आयु॑क्त तु॒जा गि॒रा।
दि॒वो न यस्य॒ रेत॑सा बृ॒हच्छोच॑न्त्य॒र्चयः॑ ॥३॥
अ॒स्य क्रत्वा॒ विचे॑तसो द॒स्मस्य॒ वसु॒ रथ॒ आ ।
अधा॒ विश्वा॑सु॒ हव्यो॒ऽग्निर्वि॒क्षु प्र श॑स्यते ॥४॥
नू न॒ इद्धि वार्य॑मा॒सा स॑चन्त सू॒रयः॑ ।
ऊर्जो॑ नपाद॒भिष्ट॑ये पा॒हि श॒ग्धि स्व॒स्तय॑ उ॒तैधि॑ पृ॒त्सु नो॑ वृ॒धे ॥५॥

[१८] अष्टादशं सूक्तम्

ऋषिः—द्वितो मृक्तवाह्य आत्रेयः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—१, ४ विराडनुष्टुप्; २ निचृदनुष्टुप्; ३ भुरिगुष्णिक्; ५ भुरिग्बृहती॥ स्वरः—१, २, ४ गान्धारः; ३ ऋषभः; ५ मध्यमः॥

अथ दशमो वर्गः॥१०॥

प्रा॒तर॒ग्निः पु॑रुप्रि॒यो वि॒शः स्त॑वे॒ताति॑थिः ।
विश्वा॑नि॒ यो अम॑र्त्यो ह॒व्या मर्ते॑षु॒ रण्य॑ति ॥१॥
द्वि॒ताय॑ मृ॒क्तवा॑हसे॒ स्वस्य॒ दक्ष॑स्य मं॒हना॑ ।
इन्दुं॒ स ध॑त्त आनु॒षक्स्तो॒ता चि॑त्ते अमर्त्य ॥२॥
तं वो॑ दी॒र्घायु॑शोचिषं गि॒रा हु॑वे म॒घोना॑म् ।
अरि॑ष्टो॒ येषां॒ रथो॒ व्य॑श्वदाव॒न्नीय॑ते ॥३॥
चि॒त्रा वा॒ येषु॒ दीधि॑तिरा॒सन्नु॒क्था पान्ति॒ ये ।
स्ती॒र्णं ब॒र्हिः स्व॑र्णरे॒ श्रवां॑सि दधिरे॒ परि॑ ॥४॥
ये मे॑ पञ्चा॒शतं॑ द॒दुरश्वा॑नां स॒धस्तु॑ति ।
द्यु॒मद॑ग्ने॒ महि॒ श्रवो॑ बृ॒हत्कृ॑धि म॒घोनां॑ नृ॒वद॑मृत नृ॒णाम् ॥५॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

[१९] एकोनविंशं सूक्तम्

ऋषिः—वव्रिरात्रेयः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१ गायत्री; २ निचृद्गायत्री; ३ अनुष्टुप्; ४ भुरिगुष्णिक्; ५ निचृत्पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१, २ षड्जः; ३ गान्धारः; ४ ऋषभः; ५ पञ्चमः ॥

अथ एकादशो वर्गः ॥ ११ ॥

अभ्यवस्थाः प्र जायन्ते प्र वव्रेर्वव्रिश्चिकेत। उपस्थे मातुर्वि चष्टे ॥ १ ॥
जुहुरे वि चितयन्तोऽनिमिषं नृम्णं पान्ति।आ द्रुह्वां पुरं विविशुः ॥ २ ॥
आ श्वैत्र्येयस्य जन्तवो द्युमद्वर्धन्त कृष्टयः ।
निष्कग्रीवो बृहदुक्थ एना मध्वा न वाजयुः ॥ ३ ॥
प्रियं दुग्धं न काम्यमजामि जाम्योः सचा ।
घर्मो न वाजजठरोऽदब्धः शश्वतो दभः ॥ ४ ॥
क्रीळन्नो रश्म आ भुवः सं भस्मना वायुना वेविदानः ।
ता अस्य सन्धृषजो न तिग्माः सुसंशिता वक्ष्यो वक्षणेस्थाः ॥ ५ ॥

[२०] विंशं सूक्तम्

ऋषिः—प्रयस्वन्त आत्रेयाः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१, ३ विराडनुष्टुप्; २ निचृदनुष्टुप्; ४ पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१-३ गान्धारः; ४ पञ्चमः ॥

अथ द्वादशो वर्गः ॥ १२ ॥

यमग्ने वाजसातम त्वं चिन्मन्यसे रयिम् ।
तं नो गीर्भिः श्रवाय्यं देवत्रा पनया युजम् ॥ १ ॥
ये अग्ने नेरयन्ति ते वृद्धा उग्रस्य शवसः ।
अप द्वेषो अप ह्वरोऽन्यव्रतस्य सश्चिरे ॥ २ ॥
होतारं त्वा वृणीमहेऽग्ने दक्षस्य साधनम् ।
यज्ञेषु पूर्व्यं गिरा प्रयस्वन्तो हवामहे ॥ ३ ॥
इत्था यथा त ऊतये सहसावन्दिवेदिवे ।
राध ऋतायं सुक्रतो गोभिः ष्याम सधमादो वीरैः स्याम सधमादः ॥ ४ ॥

[२१] एकविंशं सूक्तम्

ऋषिः—सस आत्रेयः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१ अनुष्टुप्; २ भुरिगुष्णिक्; ३ स्वराडुष्णिक्; ४ निचृद्बृहती ॥ स्वरः—१ गान्धारः; २, ३ ऋषभः; ४ मध्यमः ॥

अथ त्रयोदशो वर्गः ॥ १३ ॥

मनुष्वत्त्वा नि धीमहि मनुष्वत्समिधीमहि ।
अग्ने मनुष्वदङ्गिरो देवान्देवयते यज ॥ १ ॥
त्वं हि मानुषे जनेऽग्ने सुप्रीत इध्यसे ।
स्तुचस्त्वा यन्त्यानुषक्सुजात सर्पिरासुते ॥ २ ॥
त्वां विश्वे सजोषसो देवासो दूतमक्रत ।
सपर्यन्तस्त्वा कवे यज्ञेषु देवमीळते ॥ ३ ॥
देवं वो देवयज्यायाग्निमीळीत मर्त्यः ।
समिद्धः शुक्र दीदिह्यृतस्य योनिमासदः ससस्य योनिमासदः ॥ ४ ॥

[२२] द्वाविंशं सूक्तम्

ऋषिः—विश्वसामा आत्रेयः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१ विराडनुष्टुप्; २, ३ स्वराडुष्णिक्; ४ बृहती ॥ स्वरः—१ गान्धारः; २, ३ ऋषभः; ४ मध्यमः ॥

अथ चतुर्दशो वर्गः ॥ १४ ॥

प्र विश्वसामन्नत्रिवदर्चा पावकशोचिषे ।
यो अध्वरेष्वीड्यो होता मन्द्रतमो विशि ॥ १ ॥
न्यग्निं जातवेदसं दधाता देवमृत्विजम् ।
प्र यज्ञ एत्वानुषगद्या देवव्यचस्तमः ॥ २ ॥
चिकित्विन्मनसं त्वा देवं मर्तास ऊतये ।
वरेण्यस्य तेऽवस इयानासो अमन्महि ॥ ३ ॥
अग्ने चिकिद्ध्यस्य नः इदं वचः सहस्य ।
तं त्वा सुशिप्र दम्पते स्तोमैर्वर्धन्त्यत्रयो गीर्भिः शुम्भन्त्यत्रयः ॥ ४ ॥

[२३] त्रयोविंशं सूक्तम्

ऋषिः—द्युम्नो विश्वचर्षणिकः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१, २ निचृदनुष्टुप्; ३ विराडनुष्टुप्; ४ निचृत्पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१-३ गान्धारः; ४ पञ्चमः ॥

अथ पञ्चदशो वर्गः ॥ १५ ॥

अग्ने सहन्तमा भर द्युम्नस्य प्रासहा रयिम् ।
विश्वा यश्चर्षणीरभ्यासा वाजेषु सासहत् ॥ १ ॥
तमग्ने पृतनाषहं रयिं सहस्व आ भर ।
त्वं हि सत्यो अद्भुतो दाता वाजस्य गोमतः ॥ २ ॥
विश्वे हि त्वा सजोषसो जनासो वृक्तबर्हिषः ।
होतारं सद्मसु प्रियं व्यन्ति वार्यं पुरु ॥ ३ ॥
स हि ष्मा विश्वचर्षणिरभिमाति सहो दधे ।
अग्ने एषु क्षयेष्वा रेवन्नः शुक्र दीदिहि द्युमत्पावक दीदिहि ॥ ४ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

[२४] चतुर्विंशं सूक्तम्

ऋषिः—बन्धुः सुबन्धुः श्रुतबन्धुर्विप्रबन्धुश्च गौपायना लौपायना वा॥
देवता—अग्निः॥ छन्दः—१, २ पूर्वार्द्धस्य साम्नी बृहत्युत्तरार्द्धस्य भुरिग्बृहती; ३, ४ पूर्वार्द्धस्योत्तरार्द्धस्य च भुरिग्बृहती॥
स्वरः—मध्यमः॥

अथ षोडशो वर्गः॥ १६॥

अग्ने त्वं नो अन्तम उत त्राता शिवो भवा वरूथ्यः॥ १॥
वसुरग्निर्वसुश्रवा अच्छा नक्षि द्युमत्तमं रयिं दाः॥ २॥
स नो बोधि श्रुधी हवमुरुष्या णो अघायतः समस्मात्॥ ३॥
तं त्वा शोचिष्ठ दीदिवः सुम्नाय नूनमीमहे सखिभ्यः॥ ४॥

[२५] पञ्चविंशं सूक्तम्

ऋषिः—वसूयव आत्रेयः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—१, ८ निचृदनुष्टुप्; २, ५, ६, ९ अनुष्टुप्; ३, ७ विराडनुष्टुप्; ४ भुरिगुष्णिक्॥
स्वरः—१-३, ५-९ गान्धारः; ४ ऋषभः॥

अथ सप्तदशो वर्गः॥ १७॥

अच्छा वो अग्निमवसे देवं गासि स नो वसुः।
रासत्पुत्र ऋभूणामृतावा पर्षति द्विषः॥ १॥
स हि सत्यो यं पूर्वे चिद्देवासश्चिद्यमीधिरे।
होतारं मन्द्रजिह्वमित्सुदीतिभिर्विभावसुम्॥ २॥
स नो धीती वरिष्ठया श्रेष्ठया च सुमत्या।
अग्ने रायो दिदीहि नः सुवृक्तिभिर्वरेण्य॥ ३॥
अग्निर्देवेषु राजत्यग्निर्मर्तेष्वाविशन्।
अग्निर्नो हव्यवाहनोऽग्निं धीभिः सपर्यत॥ ४॥
अग्निस्तुविश्रवस्तमं तुविब्रह्माणमुत्तमम्।
अतूर्तं श्रावयत्पतिं पुत्रं ददाति दाशुषे॥ ५॥

अथ अष्टादशो वर्गः॥

अग्निर्ददाति सत्पतिं सासाहं यो युधा नृभिः।
अग्निरत्यं रघुष्यदं जेतारमपराजितम्॥ ६॥
यद्वाहिष्ठं तदग्नये बृहदर्च विभावसो।
महिषीव त्वद्रयिस्त्वद्वाजा उदीरते॥ ७॥
तव द्युमन्तो अर्चयो ग्रावेवोच्यते बृहत्।
उतो तै तन्यतुर्यथा स्वानो अर्त त्मना दिवः॥ ८॥

एवाँ अग्निं वसूयवः सहसानं ववन्दिम।
स नो विश्वा अति द्विषः पर्षन्नावेव सुक्रतुः॥ ९॥

[२६] षड्विंशं सूक्तम्

ऋषिः—वसूयव आत्रेयः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—१, ९ गायत्री; २-६, ८ निचृद्गायत्री; ७ विराड्गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

अथ एकोनविंशो वर्गः॥ १९॥

अग्ने पावक रोचिषा मन्द्रया देव जिह्वया। आ देवान्वक्षि यक्षि च॥ १॥
तं त्वा घृतस्नवीमहे चित्रभानो स्वर्दृशम्। देवाँ आ वीतये वह॥ २॥
वीतिहोत्रं त्वा कवे द्युमन्तं समिधीमहि। अग्ने बृहन्तमध्वरे॥ ३॥
अग्ने विश्वेभिरा गहि देवेभिर्हव्यदातये। होतारं त्वा वृणीमहे॥ ४॥
यजमानाय सुन्वत आग्ने सुवीर्यं वह। देवैरा सत्सि बर्हिषि॥ ५॥

अथ विंशो वर्गः॥ २०॥

समिधानः सहस्रजिदग्ने धर्माणि पुष्यसि। देवानां दूत उक्थ्यः॥ ६॥
न्यग्निं जातवेदसं होत्रवाहं यविष्ठ्यम्। दधाता देवमृत्विजम्॥ ७॥
प्र यज्ञ एत्वानुषगद्या देवव्यचस्तमः। स्तृणीत बर्हिरासदे॥ ८॥
एदं बर्हिरुतो अश्विना मित्रः सीदन्तु वरुणः। देवासः सर्वया विशा॥ ९॥

[२७] सप्तविंशं सूक्तम्

ऋषिः—त्र्युरुणस्त्रैवृष्णस्त्रसदस्युश्च पौरुकुत्स्य अश्वमेधश्च भारतोऽत्रिर्वा॥
देवता—१-५ अग्निः; ६ इन्द्राग्नी॥ छन्दः—१, ३ निचृत्त्रिष्टुप्; २ विराट्त्रिष्टुप्; ४ निचृदनुष्टुप्; ५, ६ भुरिगुष्णिक्॥
स्वरः—१-३ धैवतः; ४ गान्धारः; ५, ६ ऋषभः॥

अथ एकविंशो वर्गः॥ २१॥

अनस्वन्ता सत्पतिर्माहे मे गावा चेतिष्ठो असुरो मघोनः।
त्रैवृष्णो अग्ने दशभिः सहस्रैर्वैश्वानर त्र्यरुणश्चिकेत॥ १॥
यो मे शता च विंशतिं च गोनां हरी च युक्ता सुधुरा ददाति।
वैश्वानर सुष्टुतो वावृधानोऽग्ने यच्छ त्र्यरुणाय शर्म॥ २॥
एवा ते अग्ने सुमतिं चकानो नविष्ठाय नवमं त्रसदस्युः।
यो मे गिरस्तुविजातस्य पूर्वीर्युक्तेनाभि त्र्यरुणो गृणाति॥ ३॥
यो म इति प्रवोचत्यश्वमेधाय सूरये।
ददद्दृचा सनिं यते ददन्मेधामृतायते॥ ४॥
यस्य मा परुषाः शतमुद्भर्षयन्त्युक्षणः।
अश्वमेधस्य दानाः सोमाइव त्र्याशिरः॥ ५॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

इन्द्राग्नी शतदाव्न्यश्वमेधे सुवीर्यम् ।
क्षत्रं धारयतं बृहद्दिवि सूर्यमिवाजरम् ॥ ६ ॥

[२८] अष्टाविंशं सूक्तम्

ऋषिः—विश्ववारात्रेयी ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१ त्रिष्टुप्; २ विराट्त्रिष्टुप्; ३ निचृत्त्रिष्टुप्; ४ निचृदनुष्टुप्; ५, ६ विराड्गायत्री ॥ स्वरः—१-३ धैवतः; ४ गान्धारः; ५, ६ षड्जः ॥

अथ द्वाविंशो वर्गः ॥ २२ ॥

समिद्धो अग्निर्दिवि शोचिरश्रेत्प्रत्यङ्डुषसमुर्विया वि भाति ।
एति प्राचीं विश्ववारा नमोभिर्देवाँ ईळाना हविषा घृताचीं ॥ १ ॥
समिध्यमानो अमृतस्य राजसि हविष्कृण्वन्तं सचसे स्वस्तये ।
विश्वं स धत्ते द्रविणं यमिन्वस्यातिथ्यमग्ने नि च धत्त इत्पुरः ॥ २ ॥
अग्ने शर्धं महते सौभगाय तव द्युम्नान्युत्तमानि सन्तु ।
सं जास्पत्यं सुयममा कृणुष्व शत्रूयतामभि तिष्ठा महांसि ॥ ३ ॥
समिद्धस्य प्रमहसोऽग्ने वन्दे तव श्रियम् ।
वृषभो द्युम्नवाँ असि समध्वरेष्विध्यसे ॥ ४ ॥
समिद्धो अग्न आहुत देवान्यक्षि स्वध्वर । त्वं हि हव्यवाळसि ॥ ५ ॥
आ जुहोता दुवस्यताग्निं प्रयत्यध्वरे । वृणीध्वं हव्यवाहनम् ॥ ६ ॥

[२९] एकोनत्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—गौरिवीतिः शाक्त्यः ॥ देवता—१-८, ९१-१५ इन्द्रः; ९२ इन्द्रः उशना वा ॥ छन्दः—१ भुरिक्पङ्क्तिः; २, ४, ७ त्रिष्टुप्; ३, ५, ६, ९-११ निचृत्त्रिष्टुप्; ८ स्वराट्पङ्क्तिः; १२-१५ विराट्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१, ८ पञ्चमः; २-७, ९-१५ धैवतः ॥

अथ त्रयोविंशो वर्गः ॥ २३ ॥

त्र्यर्यमा मनुषो देवताता त्री रोचना दिव्या धारयन्त ।
अर्चन्ति त्वा मरुतः पूतदक्षास्त्वमेषामृषिरिन्द्रासि धीरः ॥ १ ॥
अनु यदीं मरुतो मन्दसानमार्चन्निन्द्रं पपिवांसं सुतस्य ।
आदत्त वज्रमभि यदहिं हन्नपो यह्वीरसृजत्सर्तवा उ ॥ २ ॥
उत ब्रह्मणो मरुतो मे अस्येन्द्रः सोमस्य सुषुतस्य पेयाः ।
तद्धि हव्यं मनुषे गा अविन्ददहन्नहिं पपिवाँ इन्द्रो अस्य ॥ ३ ॥
आद्रोदसी वितरं वि ष्कभायत्संविव्यानश्चिद्बिभयसे मृगं कः ।
जिगर्तिमिन्द्रो अपजगुराणः प्रति श्वसन्तमव दानवं हन् ॥ ४ ॥
अध क्रत्वा मघवन्तुभ्यं देवा अनु विश्वे अददुः सोमपेयम् ।
यत्सूर्यस्य हरितः पतन्तीः पुरः सतीरुपरा एतशे कः ॥ ५ ॥

अथ चतुर्विंशो वर्गः ॥ २४ ॥

नव यदस्य नवतिं च भोगान्साकं वज्रेण मघवा विवृश्चत् ।
अर्चन्तीन्द्रं मरुतः सधस्थे त्रैष्टुभेन वचसा बाधत द्याम् ॥ ६ ॥
सखा सख्ये अपचत्तूयमग्निरस्य क्रत्वा महिषा त्री शतानि ।
त्री साकमिन्द्रो मनुषः सरांसि सुतं पिबद् वृत्रहत्याय सोमम् ॥ ७ ॥
त्री यच्छता महिषाणामघो मास्त्री सरांसि मघवा सोम्यापाः ।
कारं न विश्वे अह्वन्त देवा भरमिन्द्राय यदहिं जघान ॥ ८ ॥
उशना यत्सहस्यैरयातं गृहमिन्द्र जूजुवानेभिरश्वैः ।
वन्वानो अत्र सरथं ययाथ कुत्सेन देवैरवनोर्हु शुष्णम् ॥ ९ ॥
प्रान्यच्चक्रमवृहः सूर्यस्य कुत्सायान्यद्वरिवो यातवेऽकः ।
अनासो दस्यूँरमृणो वधेन नि दुर्योण आवृणङ्मृध्रवाचः ॥ १० ॥

अथ पञ्चविंशो वर्गः ॥ २५ ॥

स्तोमासस्त्वा गौरिवीतेरवर्धन्रन्धयो वैदथिनाय पिप्रुम् ।
आ त्वामृजिश्वा सख्याय चक्रे पचन्पक्तीरपिबः सोममस्य ॥ ११ ॥
नवग्वासः सुतसोमास इन्द्रं दशग्वासो अभ्यर्चन्त्यर्कैः ।
गव्यं चिदूर्वमपिधानवन्तं तं चिन्नरः शशमाना अप व्रन् ॥ १२ ॥
कथो नु ते परि चराणि विद्वान्वीर्यं मघवन्या चकर्थ ।
या चो नु नव्या कृणवः शविष्ठ प्रेदु ता ते विदथेषु ब्रवाम ॥ १३ ॥
एता विश्वा चकृवाँ इन्द्र भूर्यपरीतो जनुषा वीर्येण ।
या चिन्नु वज्रिन्कृणवो दधृष्वान्न ते वर्ता तविष्या अस्ति तस्याः ॥ १४ ॥
इन्द्र ब्रह्मा क्रियमाणा जुषस्व या ते शविष्ठ नव्या अकर्म ।
वस्त्रेव भद्रा सुकृता वसूयू रथं न धीरः स्वपा अतक्षम् ॥ १५ ॥

[३०] त्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—बभ्रुरात्रेयः ॥ देवता—इन्द्र ऋणञ्चयश्च ॥ छन्दः—१-५, ८, ९ निचृत्त्रिष्टुप्; ६, १३ पङ्क्तिः; ७, ११, १२ त्रिष्टुप्; १० विराट्त्रिष्टुप्; १४, १५ स्वराट्पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१-५, ७-१२ धैवतः; ६, १३-१५ पञ्चमः ॥

अथ षड्विंशो वर्गः ॥ २६ ॥

क्व१स्य वीरः को अपश्यदिन्द्रं सुखरथमीयमानं हरिभ्याम् ।
यो राया वज्री सुतसोममिच्छन्तदोको गन्ता पुरुहूत ऊती ॥ १ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अवा॑चचक्षं प॒दम॑स्य स॒स्वरु॒ग्रं नि॑धा॒तुरन्वा॑यमि॒च्छन् ।
अपृ॑च्छम॒न्याँ उ॒त ते म॑ आहु॒रिन्द्रं॒ नरो॑ बुबुधा॒ना अ॑शेम ॥ २ ॥
प्र नु व॒यं सु॒ते या ते॑ कृ॒तानीन्द्र॒ ब्र॑वाम॒ यानि॑ नो॒ जुजो॑षः ।
वेद॒दवि॑द्वाञ्छृ॒णव॑च्च वि॒द्वान्वह॑ते॒ऽयं म॒घवा॒ सर्व॑सेनः ॥ ३ ॥
स्थि॒रं मन॑श्चकृषे जा॒त इ॑न्द्र॒ वेषीदेको॑ यु॒धये॒ भूय॑सश्चित् ।
अश्मा॑नं चि॒च्छव॑सा दिद्युतो॒ वि वि॒दो गवा॑मू॒र्वमु॒स्त्रिया॑णाम् ॥ ४ ॥
प॒रो यत्त्वं प॑र॒म आ॒जनि॑ष्ठाः परा॒वति॒ श्रुत्यं॒ नाम॒ बिभ्र॑त् ।
अत॑श्चि॒दिन्द्रा॑दभयन्त दे॒वा विश्वा॑ अ॒पो अ॑जयद्दा॒सप॑त्नीः ॥ ५ ॥

अथ सप्तविंशो वर्गः ॥ २७ ॥

तुभ्येदे॒ते म॒रुतः॑ सु॒शेवा॒ अर्च॑न्त्य॒र्कं सु॒न्वन्त्यन्धः॑ ।
अहि॑मोहा॒नम॒प आ॒शया॑नं॒ प्र मा॒याभि॑र्मा॒यिनं॑ सक्ष॒दिन्द्रः॑ ॥ ६ ॥
वि षू मृधो॑ ज॒नुषा॒ दान॒मिन्व॒न्नह॒न्गवा॑ मघवन्त्संचका॒नः ।
अत्रा॑ दा॒सस्य॒ नमु॑चेः॒ शिरो॒ यदव॑र्तयो॒ मन॑वे गा॒तुमि॒च्छन् ॥ ७ ॥
युजं॒ हि मामकृ॑था॒ आदिदि॑न्द्र॒ शिरो॑ दा॒सस्य॒ नमु॑चेर्मथा॒यन् ।
अश्मा॑नं चित्स्व॒र्यं१॒॑ वर्त॑मानं॒ प्र च॒क्रिये॑व॒ रोद॑सी म॒रुद्भ्यः॑ ॥ ८ ॥
स्त्रियो॒ हि दा॒स आयु॑धानि च॒क्रे किं मा॑ करन्नब॒ला अ॑स्य॒ सेनाः॑ ।
अ॒न्तर्ह्यख्य॑दु॒भे अ॑स्य॒ धेने॒ अथोप॒ प्रैद्यु॒धये॒ दस्यु॒मिन्द्रः॑ ॥ ९ ॥
समत्र॒ गावो॒ऽभितो॑ऽनवन्ते॒हेह॑ व॒त्सैर्वियु॑ता॒ यदास॑न् ।
सं ता इन्द्रो॑ असृजदस्य शा॒कैर्यदीं॒ सोमा॑सः॒ सुषु॑ता॒ अम॑न्दन् ॥ १० ॥

अथ अष्टाविंशो वर्गः ॥ २८ ॥

यदीं॒ सोमा॑ ब॒भ्रुधू॑ता॒ अम॑न्द॒न्नरो॑रवीद् वृष॒भः साद॑नेषु ।
पु॒रं॒द॒रः प॑पि॒वाँ इन्द्रो॑ अस्य॒ पुन॒र्गवा॑मददादु॒स्त्रिया॑णाम् ॥ ११ ॥
भ॒द्रमि॒दं रु॒शमा॑ अग्ने अक्र॒न्गवां॑ च॒त्वारि॒ दद॑तः स॒हस्रा॑ ।
ऋ॒णं॒च॒यस्य॒ प्रय॑ता म॒घानि॒ प्रत्य॑ग्रभीष्म॒ नृत॑मस्य नृ॒णाम् ॥ १२ ॥
सु॒पेश॑सं॒ माव॑ सृज॒न्त्यस्तं॒ गवां॑ स॒हस्रै॑ रु॒शमा॑सो अग्ने ।
ती॒व्रा इन्द्र॑मममन्दुः सु॒तासो॒ऽक्तोर्व्यु॑ष्टौ॒ परि॑तक्म्यायाः ॥ १३ ॥
औच्छ॒त्सा रात्री॒ परि॑तक्म्या॒ याँ ऋ॑णंच॒ये राज॑नि रु॒शमा॑नाम् ।
अत्यो॒ न वा॒जी र॒घुर॒ज्यमा॑नो ब॒भ्रुश्च॒त्वार्य॑सनत्स॒हस्रा॑ ॥ १४ ॥
चतुः॑सहस्रं॒ गव्य॑स्य प॒श्वः प्रत्य॑ग्रभीष्म रु॒शमे॑ष्वग्ने ।
घ॒र्मश्चि॑त्त॒प्तः प्र॒वृजे॒ य आसी॑दय॒स्मय॒स्तम्वादा॑म॒ विप्राः॑ ॥ १५ ॥

[३१] एकत्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—अवस्युरात्रेयः ॥ देवता—१-८[२], १०-१३ इन्द्रः; ८[३] इन्द्रःकुत्सो वा; ८[४] इन्द्र उशना वा; ९ इन्द्रः कुत्सश्च ॥ छन्दः—१, २, ५, ७, ९, ११ निचृत्त्रिष्टुप्; ३, ४, ६, १० त्रिष्टुप्; ८, १२ स्वराट्पङ्क्तिः; १३ विराट्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१-७, ९-११, १३ धैवतः; ८, १२ पञ्चमः ॥

अथ एकोनत्रिंशो वर्गः ॥ २९ ॥

इन्द्रो॒ रथा॑य प्र॒वतं॑ कृणोति॒ यम॒ध्यस्था॑न्म॒घवा॑ वाज॒यन्त॑म् ।
यू॒थेव॑ प॒श्वो व्यु॑नोति गो॒पा अरि॑ष्टो याति प्रथ॒मः सिषा॑सन् ॥ १ ॥
आ प्र द्र॑व हरिवो॒ मा वि वे॑नः॒ पिश॑ङ्गराते अ॒भि नः॑ सचस्व ।
न॒हि त्वदि॑न्द्र॒ वस्यो॑ अ॒न्यदस्त्य॑मे॒नाँश्चि॒ज्जनि॑वतश्चकर्थ ॥ २ ॥
उद्यत्सहः॒ सह॑स॒ आज॑निष्ट॒ देदि॑ष्ट॒ इन्द्र॑ इन्द्रि॒याणि॒ विश्वा॑ ।
प्राचो॑दयत्सु॒दुघा॑ वव्रे अ॒न्तर्वि ज्योति॑षा संववृ॒त्वत्तमो॑ऽवः ॥ ३ ॥
अन॑वस्ते॒ रथ॒मश्वा॑य तक्ष॒न्त्वष्टा॒ वज्रं॑ पुरुहूत द्यु॒मन्त॑म् ।
ब्र॒ह्माण॒ इन्द्रं॑ म॒हय॑न्तो अ॒र्कैरव॑र्धय॒न्नह॑ये॒ हन्त॒वा उ॑ ॥ ४ ॥
वृष्णे॒ यत्ते॒ वृष॑णो अ॒र्कमर्चा॒निन्द्र॒ ग्रावा॑णो॒ अदि॑तिः स॒जोषाः॑ ।
अ॒न॒श्वासो॒ ये प॒वयो॑ऽर॒था इन्द्रे॑षिता अ॒भ्यव॑र्तन्त॒ दस्यू॑न् ॥ ५ ॥

अथ त्रिंशो वर्गः ॥ ३० ॥

प्र ते॒ पूर्वा॑णि॒ कर॑णानि वोचं॒ प्र नूत॑ना मघव॒न्या च॒कर्थ॑ ।
शक्ती॑वो॒ यद्वि॒भरा॒ रोद॑सी उ॒भे जय॑न्न॒पो मन॑वे॒ दानु॑चित्राः ॥ ६ ॥
तदिन्नु ते॒ कर॑णं दस्म वि॒प्राहिं॒ यद् घ्नन्नोजो॒ अत्रामि॑मीथाः ।
शुष्ण॑स्य चि॒त्परि॑ मा॒या अ॑गृभ्णाः प्रपि॒त्वं यन्नप॒ दस्यूँ॑रसेधः ॥ ७ ॥
त्वम॒पो यद॑वे तु॒र्वशा॒यार॑मयः सु॒दुघाः॑ पा॒र इ॑न्द्र ।
उ॒ग्रम॑यात॒मव॑हो ह॒ कुत्सं॒ सं ह॒ यद्वा॑मु॒शनार॑न्त दे॒वाः ॥ ८ ॥
इन्द्रा॑कुत्सा॒ वह॑माना॒ रथे॒ना वा॒मत्या॒ अपि॒ कर्णे॑ वहन्तु ।
निः षी॑म॒द्भ्यो धम॑थो॒ निः ष॒धस्था॑न्म॒घोनो॑ हृ॒दो व॑रथ॒स्तमां॑सि ॥ ९ ॥
वात॑स्य यु॒क्तान्त्सु॒युज॑श्चि॒दश्वा॑न्क॒विश्चि॑दे॒षो अ॑जगन्नव॒स्युः ।
विश्वे॑ ते॒ अत्र॑ म॒रुतः॒ सखा॑य॒ इन्द्र॒ ब्रह्मा॑णि॒ तवि॑षीमवर्धन् ॥ १० ॥

अथ एकत्रिंशो वर्गः ॥ ३१ ॥

सूर॑श्चि॒द्रथं॒ परि॑तक्म्यायां॒ पूर्वं॑ कर॒दुप॑रं जूजु॒वांस॑म् ।
भर॑च्च॒क्रमेत॑शः॒ सं रि॑णाति पु॒रो दध॑त्सनिष्यति॒ क्रतुं॑ नः ॥ ११ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

आयं जना अभिचक्षे जगामेन्द्रः सखायं सुतसोममिच्छन्।
वदन्नावाव वेदिं भ्रियाते यस्य जीरमध्वर्यवश्चरन्ति॥ १२॥
ये चाकनन्त चाकनन्त नू ते मतीं अमृत मो ते अंहु आरन्।
वावन्धि यज्यूँरुत तेषु धेह्योजो जनेषु येषु ते स्याम॥ १३॥

[३२] द्वात्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—गातुरात्रेयः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१, ७, ९, ११ त्रिष्टुप्; २-४, १०, १२ निचृत्त्रिष्टुप्; ५, ८ स्वराट्पङ्क्तिः; ६ भुरिक्पङ्क्तिः॥ स्वरः—१-४, ७, ९-१२ धैवतः; ५, ६, ८ पञ्चमः॥

अथ द्वात्रिंशो वर्गः॥ ३२॥

अदर्दरुत्समसृजो वि खानि त्वमर्णवान्बद्बधानाँ अरम्णाः ।
महान्तमिन्द्र पर्वतं वि यद्वः सृजो वि धारा अवं दानवं हन् ॥ १॥
त्वमुत्साँ ऋतुभिर्बद्बधानाँ अरंहु ऊधः पर्वतस्य वज्रिन् ।
अहिं चिदुग्र प्रयुतं शयानं जघन्वाँ इन्द्र तविषीमधत्थाः ॥ २॥
त्यस्य चिन्महतो निर्मृगस्य वधर्जघान तविषीभिरिन्द्रः ।
य एक इद्प्रतिमन्यमान आदस्मादन्यो अजनिष्ट तव्यान् ॥ ३॥
त्यं चिदेषां स्वधया मदन्तं मिहो नपातं सुवृधं तमोगाम् ।
वृषप्रभर्मा दानवस्य भामं वज्रेण वज्री नि जघान शुष्णम् ॥ ४॥
त्यं चिदस्य क्रतुभिर्निषत्तममर्मणो विददिदस्य मर्म ।
यदीं सुक्षत्र प्रभृता मदस्य युयुत्सन्तं तमसि ह्वर्ये धाः ॥ ५॥
त्यं चिदित्था कत्पयं शयानमसूर्ये तमसि वावृधानम् ।
तं चिन्मन्दानो वृषभः सुतस्योच्चैरिन्द्रो अपगूर्यो जघान ॥ ६॥

अथ त्रयस्त्रिंशो वर्गः॥ ३३॥

उद्यदिन्द्रो महते दानवाय वधर्यमिष्ट सहो अप्रतीतम्।
यदीं वज्रस्य प्रभृतौ ददाभ विश्वस्य जन्तोरधमं चकार॥ ७॥
त्यं चिदर्णो मधुपं शयानमसिन्वं वज्रं मह्यादद्ग्रः।
अपादमत्रं महता वधेन नि दुर्योण आवृणङ्मृध्रवाचम्॥ ८॥
को अस्य शुष्मं तविषीं वरात एको धना भरते अप्रतीतः।
इमे चिदस्य त्रयसो नु देवी इन्द्रस्यौजसो भियसा जिहाते॥ ९॥
न्यस्मै देवी स्वधितिर्जिहीत इन्द्राय गातुरुशतीव येमे।
सं यदोजो युवते विश्वमाभिरनु स्वधावे क्षितयो नमन्त॥ १०॥

एकं नु त्वा सत्पतिं पाञ्चजन्यं जातं शृणोमि यशसं जनेषु।
तं मे जगृभ्र आशसो नविष्ठं दोषा वस्तोर्हवमानास इन्द्रम्॥ ११॥
एवा हि त्वामृतुथा यातयन्तं मघा विप्रेभ्यो ददतं शृणोमि।
किं ते ब्रह्माणो गृहते सखायो ये त्वाया निदधुः काममिन्द्र॥ १२॥

इति चतुर्थाष्टके प्रथमोऽध्यायः॥

अथ द्वितीयोऽध्यायः

तृतीयोऽनुवाकः [३३] त्रयस्त्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—संवरणः प्राजापत्यः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१, २, ७ पङ्क्तिः; ३ निचृत्पङ्क्तिः; ४, १० भुरिक्पङ्क्तिः; ५, ६ स्वराट्पङ्क्तिः; ८ त्रिष्टुप्; ९ निचृत्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१-७, १० पञ्चमः; ८, ९ धैवतः॥

अथ प्रथमो वर्गः॥ १॥

महिं महे तवसे दीध्ये नॄनिन्द्रायेत्था तवसे अतव्यान्।
यो अस्मै सुमतिं वाजसातौ स्तुतो जनें समर्यश्चिकेत॥ १॥
स त्वं न इन्द्र धियसानो अर्कैर्हरीणां वृषन्योक्त्रमश्रेः।
या इत्था मघवन्ननु जोषं वक्षो अभि प्रार्यः संक्षि जनान्॥ २॥
न ते तं इन्द्राभ्यस्मदृष्वायुक्तासो अब्रह्मता यदसन्।
तिष्ठा रथमधि तं वज्रहस्ता रश्मिं देव यमसे स्वश्वः॥ ३॥
पुरू यत्त इन्द्र सन्त्युक्था गवे चकर्थोर्वरासु युध्यन्।
ततक्षे सूर्याय चिदोकसि स्वे वृषा समत्सु दासस्य नाम चित्॥ ४॥
वयं ते त इन्द्र ये च नरः शर्धो जज्ञाना यातांश्च रथाः।
आस्माञ्जगम्यादहिशुष्म सत्वा भगो न हव्यः प्रभृथेषु चारुः॥ ५॥

अथ द्वितीयो वर्गः॥ २॥

पपृक्षेण्यमिन्द्र त्वे ह्योजो नृम्णानि च नृतमानो अमर्तः।
स न एनीं वसवानो रयिं दाः प्रार्यः स्तुषे तुविमघस्य दानम्॥ ६॥
एवा न इन्द्रोतिभिरव पाहि गृणतः शूर कारून्।
उत त्वचं ददतो वाजसातौ पिप्रीहि मध्वः सुषुतस्य चारोः॥ ७॥
उत त्ये मा पौरुकुत्स्यस्य सूरेस्त्रसदस्योर्हिरण्निनो ररांणाः।
वहन्तु मा दश श्येतासो अस्य गैरिक्षितस्य क्रतुभिर्नु संशे॥ ८॥
उत त्ये मा मारुताश्वस्य शोणाः क्रत्वामघासो विदथस्य रातौ।
सहस्रा मे च्यवतानो ददान आनूकमर्यो वपुषे नाचैत्॥ ९॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उत त्ये मा ध्वन्यस्य जुष्टा लक्ष्मण्यस्य सुरुचो यतानाः।
मह्ना रायः संवरणस्य ऋषेर्व्रजं न गावः प्रयता अपि ग्मन्॥ १०॥

[३४] चतुस्त्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—संवरणः प्राजापत्यः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१ भुरिक्त्रिष्टुप्; २, ४, ५ निचृज्जगती; ३, ७ जगती; ६, ९ त्रिष्टुप्; ८ विराड्जगती॥ स्वरः—१, ६, ९ धैवतः; २-५, ७, ८ निषादः॥

अथ तृतीयो वर्गः॥ ३॥

अजातशत्रुमजरा स्ववर्त्यनुं स्वधामिता दस्ममीयते।
सुनोतन पचत ब्रह्मवाहसे पुरुष्टुतायं प्रतरं दधातन॥ १॥
आ यः सोमेन जठरमपिप्रतामन्दत मघवा मध्वो अन्धसः।
यदीं मृगाय हन्तवे महावधः सहस्रभृष्टिमुशनां वधं यमत्॥ २॥
यो अस्मै भ्रंस उत वा य ऊधनि सोमं सुनोति भवति द्युमाँ अहं।
अपापं शक्रस्तनुष्टिमूहति तनूशुभ्रं मघवा यः कवासखः॥ ३॥
यस्यावधीत्पितरं यस्य मातरं यस्य शक्रो भ्रातरं नात ईषते।
वेतीद्वस्य प्रयता यतंकरो न किल्बिषादीषते वस्व आकरः॥ ४॥
न पञ्चभिर्दशभिर्वष्ट्यारभं नासुन्वता सचते पुष्यता चन।
जिनाति वेदमुया हन्ति वा धुनिरा देवयुं भजति गोमति व्रजे॥ ५॥

अथ चतुर्थो वर्गः॥ ४॥

वित्वक्षणः समृतौ चक्रमासजोऽसुन्वतो विषुणः सुन्वतो वृधः।
इन्द्रो विश्वस्य दमिता विभीषणो यथावशं नयति दासमार्यं॥ ६॥
समी पुणेरंजति भोजनं मुषे वि दाशुषे भजति सूनरं वसु।
दुर्गे चन ध्रियते विश्व आ पुरु जनो यो अस्य तविषीमचुक्रुधत्॥ ७॥
सं यज्जनौ सुधनौ विश्वशर्धसावेदिन्द्रो मघवा गोषु शुभ्रिषु।
युजं ह्यन्यमकृत प्रवेपन्युदीं गव्यं सृजते सत्वभिर्धुनिः॥ ८॥
सहस्रसामाग्निवेशिं गृणीषे शत्रिमग्न उपमां केतुमर्यः।
तस्मा आपः संयतः पीपयन्त तस्मिन्क्षत्रममवत्त्वेषमस्तु॥ ९॥

[३५] पञ्चत्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—प्रभूवसुराङ्गिरसः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१ निचृदनुष्टुप्; ३ भुरिगनुष्टुप्; ७ अनुष्टुप्; २ भुरिगुष्णिक्; ४-६ स्वराडुष्णिक्; ८ भुरिग्बृहती॥ स्वरः—१, ३, ७ गान्धारः; २, ४-६ ऋषभः; ८ मध्यमः॥

अथ पञ्चमो वर्गः॥ ५॥

यस्ते साधिष्ठोऽवस इन्द्र क्रतुष्टमा भर।
अस्मभ्यं चर्षणीसहं सत्रिं वाजेषु दुष्टरम्॥ १॥
यदिन्द्र ते चतस्रो यच्छूर सन्ति तिस्रः।
यद्वा पञ्च क्षितीनामवस्तत्सु न आ भर॥ २॥
आ तेऽवो वरेण्यं वृषन्तमस्य हूमहे।
वृषजूतिर्हि जज्ञिष आभूभिरिन्द्र तुर्वणिः॥ ३॥
वृषा ह्यसि राधसे जज्ञिषे वृष्णि ते शवः।
स्वक्षत्रं ते धृषन्मनः सत्राहमिन्द्र पौंस्यम्॥ ४॥
त्वं तमिन्द्र मर्त्यमभित्रयन्तमद्रिवः।
सवरथा शतक्रतो नि याहि शवसस्पते॥ ५॥

अथ षष्ठो वर्गः॥ ६॥

त्वामिद् वृत्रहन्तम जनासो वृक्तबर्हिषः।
उग्रं पूर्वीषु पूर्व्यं हवन्ते वाजसातये॥ ६॥
अस्माकमिन्द्र दुष्टरं पुरोयावानमाजिषु।
सयावानं धनेधने वाजयन्तमवा रथम्॥ ७॥
अस्माकमिन्द्रेहि नो रथमवा पुरंध्या।
वयं शविष्ठ वार्यं दिवि श्रवो दधीमहि दिवि स्तोमं मनामहे॥ ८॥

[३६] षट्त्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—प्रभूवसुराङ्गिरसः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१, ४, ५ निचृत्त्रिष्टुप्; २, ६ त्रिष्टुप्; ३ जगती॥ स्वरः—१, २, ४-६ धैवतः; ३ निषादः॥

अथ सप्तमो वर्गः॥ ७॥

स आ गमदिन्द्रो यो वसूनां चिकेतदृतुं दामनो रयीणाम्।
धन्वन्वचरो न वंसगस्तृषाणश्चकमानः पिबतु दुग्धमंशुम्॥ १॥
आ ते हनू हरिवः शूर शिप्रे रुहत्सोमो न पर्वतस्य पृष्ठे।
अनु त्वा राजन्वर्धतो न हिन्वन्नीर्भिर्मदेम पुरुहूत विश्वे॥ २॥
चक्रं न वृत्तं पुरुहूत वेपते मनो भिया मे अमतेरिदद्रिवः।
रथादधि त्वा जरिता सदावृध कुविन्नु स्तोषन्मघवन्पुरूवसुः॥ ३॥
एष ग्रावेव जरिता तं इन्द्रेयर्ति वाचं बृहदाशुषाणः।
प्र सव्येन मघवन्यंसि रायः प्र दक्षिणिद्दरिवो मा वि वेनः॥ ४॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

वृषा त्वा वृषणं वर्धतु द्यौर्वृषा वृषभ्यां वहसे हरिभ्याम्।
स नो वृषा वृषरथः सुशिप्र वृषक्रतो वृषा वज्रिन्भरे धाः॥ ५॥
यो रोहितौ वाजिनौ वाजिनीवान्त्रिभिः शतैः सचमानावदिष्ट।
यूने समस्मै क्षितयो नमन्तां श्रुतरथाय मरुतो दुवोया॥ ६॥

[३७] सप्तत्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—अत्रिः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१ निचृत्पङ्क्तिः; २ विराट्त्रिष्टुप्; ३-५ निचृत्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१ पञ्चमः; २-५ धैवतः॥

अथ अष्टमो वर्गः॥ ८॥

सं भानुना यतते सूर्यस्याजुह्वानो घृतपृष्ठः स्वञ्चाः।
तस्मा अमृध्रा उषसो व्युच्छान्य इन्द्राय सुनवामेत्याह॥ १॥
समिद्धाग्निर्वनवत्स्तीर्णबर्हिर्युक्तग्रावा सुतसोमो जराते।
ग्रावाणो यस्येषिरं वदन्त्यध्वर्यवो हविषा सिन्धुम्॥ २॥
वधूरियं पतिमिच्छन्त्येति य ईं वहाते महिषीमिषिराम्।
आस्य श्रवस्याद्रथ आ च घोषात्पुरू सहस्रा परि वर्तयाते॥ ३॥
न स राजा व्यथते यस्मिन्निन्द्रस्तीव्रं सोमं पिबति गोसखायम्।
आ सत्वनैरजति हन्ति वृत्रं क्षेति क्षितीः सुभगो नाम पुष्यन्॥ ४॥
पुष्यात्क्षेमे अभि योगे भवात्युभे वृतौ संयती सं जयाति।
प्रियः सूर्ये प्रियो अग्ना भवाति य इन्द्राय सुतसोमो ददाशत्॥ ५॥

[३८] अष्टात्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—अत्रिः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१ अनुष्टुप्; २-४ निचृदनुष्टुप्; ५ विराडनुष्टुप्॥ स्वरः—गान्धारः॥

अथ नवमो वर्गः॥ ९॥

उरोष्ट इन्द्र राधसो विभ्वी रातिः शतक्रतो।
अधा नो विश्वचर्षणे द्युम्ना सुक्षत्र मंहय॥ १॥
यदीमिन्द्र श्रवाय्यमिषं शविष्ठ दधिषे।
पप्रथे दीर्घश्रुत्तमं हिरण्यवर्ण दुष्टरम्॥ २॥
शुष्मासो ये ते अद्रिवो मेहना केतसापः।
उभा देवावभिष्टये दिवश्च ग्मश्च राजथः॥ ३॥
उतो नो अस्य कस्य चिद्दक्षस्य तव वृत्रहन्।
अस्मभ्यं नृम्णमा भरास्मभ्यं नृमणस्यसे॥ ४॥

नू त आभिरभिष्टिभिस्तव शर्मञ्छतक्रतो।
इन्द्र स्याम सुगोपाः शूर स्याम सुगोपाः॥ ५॥

[३९] एकोनचत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—अत्रिः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१ विराडनुष्टुप्; २, ३ निचृदनुष्टुप्; ४ स्वराडुष्णिक्; ५ बृहती॥ स्वरः—१-३ गान्धारः; ४ ऋषभः; ५ मध्यमः॥

अथ दशमो वर्गः॥ १०॥

यदिन्द्र चित्र मेहनास्ति त्वादातमद्रिवः।
राधस्तन्नो विदद्वस उभयाहस्त्या भर॥ १॥
यन्मन्यसे वरेण्यमिन्द्र द्युक्षं तदा भर।
विद्याम तस्य ते वयमकूपारस्य दावने॥ २॥
यत्ते दित्सु प्रराध्यं मनो अस्ति श्रुतं बृहत्।
तेन दृळ्हा चिदद्रिव आ वाजं दर्षि सातये॥ ३॥
मंहिष्ठं वो मघोनां राजानं चर्षणीनाम्।
इन्द्रमुप प्रशस्तये पूर्वीभिर्जुजुषे गिरः॥ ४॥
अस्मा इत्काव्यं वचः उक्थमिन्द्राय शंस्यम्।
तस्मा उ ब्रह्मवाहसे गिरो वर्धन्त्रयो गिरः शुम्भन्त्यत्रयः॥ ५॥

[४०] चत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—अत्रिः॥ देवता—१-४ इन्द्रः; ५ सूर्यः; ६-९ अत्रिः॥ छन्दः—१ निचृदुष्णिक्; २, ३ उष्णिक्; ४ त्रिष्टुप्; ५, ६, ८ निचृत्त्रिष्टुप्; ७ भुरिक्पङ्क्तिः; ९ स्वराडुष्णिक्॥ स्वरः—१-३, ९ ऋषभः; ४-६, ८ धैवतः; ७ पञ्चमः॥

अथ एकादशो वर्गः॥ ११॥

आ याह्यद्रिभिः सुतं सोमं सोमपते पिब। वृषन्निन्द्र वृषभिर्वृत्रहन्तम॥ १॥
वृषा ग्रावा वृषा मदो वृषा सोमो अयं सुतः। वृषन्निन्द्र वृषभिर्वृत्रहन्तम॥ २॥
वृषा त्वा वृषणं हुवे वज्रिञ्चित्राभिरूतिभिः। वृषन्निन्द्र वृषभिर्वृत्रहन्तम॥ ३॥
ऋजीषी वज्री वृषभस्तुराषाट्छुष्मी राजा वृत्रहा सोमपावा।
युक्त्वा हरिभ्यामुप यासदर्वाङ्माध्यन्दिने सवने मत्सदिन्द्रः॥ ४॥
यत्त्वा सूर्य स्वर्भानुस्तमसाविध्यदासुरः।
अक्षेत्रविद्यथा मुग्धो भुवनान्यदीधयुः॥ ५॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अथ द्वादशो वर्गः ॥ १२ ॥

स्वर्भानोरध यदिन्द्र माया अवो दिवो वर्तमाना अवाहन् ।
गूळ्हं सूर्यं तमसापव्रतेन तुरीयेण ब्रह्मणाविन्ददत्रिः ॥ ६ ॥
मा मामिमं तव सन्तमत्र इरस्या द्रुधो भियसा नि गारीत् ।
त्वं मित्रो असि सत्यराधास्तौ मेहावतं वरुणश्च राजा ॥ ७ ॥
ग्राव्णो ब्रह्मा युयुजानः सपर्यन्कीरिणा देवान्नमसोपशिक्षन्।
अत्रिः सूर्यस्य दिवि चक्षुराधात्स्वर्भानोरप माया अधुक्षत् ॥ ८ ॥
यं वै सूर्यं स्वर्भानुस्तमसाविध्यदासुरः ।
अत्रयस्तमन्वविन्दन्नह्यन्ये अशक्नुवन् ॥ ९ ॥

[४१] एकचत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—अत्रिः ॥ देवता—विश्वे देवाः ॥ छन्दः—१, २, ६, १५, १८ त्रिष्टुप्; ३, ७, ८, १४, १९ पङ्क्तिः; ४, १३ विराट्त्रिष्टुप्; ५, ९-१२ भुरिक्पङ्क्तिः; १६ जगती; १७ निचृज्जगती; २० याजुषीपङ्क्तिः ॥ स्वरः—१, २, ४, ६, १३, १५, १८ धैवतः; ३, ५, ७-१२, १४, १९, २० पञ्चमः; १६, १७ निषादः ॥

अथ त्रयोदशो वर्गः ॥ १३ ॥

को नु वां मित्रावरुणावृतायन्दिवो वा महः पार्थिवस्य वा दे।
ऋतस्य वा सदसि त्रासीथां नो यज्ञायते वां पशुषो न वाजान् ॥ १ ॥
ते नो मित्रो वरुणो अर्यमायुरिन्द्र ऋभुक्षा मरुतो जुषन्त।
नमोभिर्वा ये दधते सुवृक्तिं स्तोमं रुद्राय मीळ्हुषे सजोषाः ॥ २ ॥
आ वां येष्ठाश्विना हुवध्यै वातस्य पत्मन्रथ्यस्य पुष्टौ।
उत वां दिवो असुराय मन्म प्रान्धांसीव यज्यवे भरध्वम् ॥ ३ ॥
प्र सक्षणो दिव्यः कण्वहोता त्रितो दिवः सजोषा वातो अग्निः।
पूषा भगः प्रभृथे विश्वभोजा आजिं न जग्मुराश्वश्वतमाः ॥ ४ ॥
प्र वो रयिं युक्ताश्वं भरध्वं राय एषेऽवसे दधीत धीः।
सुशेव एवैरौशिजस्य होता ये व एवा मरुतस्तुराणाम् ॥ ५ ॥

अथ चतुर्दशो वर्गः ॥ १४ ॥

प्र वो वायुं रथयुजं कृणुध्वं प्र देवं विप्रं पनितारमर्कैः।
इषुध्यवं ऋतसापः पुरंधीर्वस्वीर्नो अत्र पत्नीरा धिये धुः ॥ ६ ॥
उप व एषे वन्द्योभिः शूषैः प्र यह्वी दिवश्चितयद्भिरर्कैः।
उषासानक्ता विदुषीव विश्वमा ह वहतो मर्त्याय यज्ञम् ॥ ७ ॥
अभि वो अर्चे पोष्यावतो नॄन्वास्तोष्पतिं त्वष्टारं सोमाः।
धन्या सजोषा धिषणा नमोभिर्वनस्पतीँरोषधी राय एषे ॥ ८ ॥
तुजे नस्तने पर्वताः सन्तु स्वैतवो ये वसवो न वीराः।
पनित आप्त्यो यजतः सदा नो वर्धन्नः शंसं नर्यो अभिष्टौ ॥ ९ ॥
वृष्णो अस्तोषि भूम्यस्य गर्भौ त्रितो नपातमपां सुवृक्ति।
गृणीते अग्निरेतरी न शूषैः शोचिष्केशो नि रिणाति वना ॥ १० ॥

अथ पञ्चदशो वर्गः ॥ १५ ॥

कथा महे रुद्रियाय ब्रवाम कद्राये चिकितुषे भगाय।
आप ओषधीरुत नोऽवन्तु द्यौर्वना गिरयो वृक्षकेशाः ॥ ११ ॥
शृणोतु न ऊर्जां पतिर्गिरः स नभस्तरीयाँ इषिरः परिज्मा।
शृण्वन्त्वापः पुरो न शुभ्राः परि स्रुचो बबृहाणस्यार्द्रेः ॥ १२ ॥
विदा चिन्नु महान्तो ये व एवा ब्रवाम दस्मा वार्यं दधानाः।
वयश्चन सुभ्वो आ वयन्ति क्षुभा मर्तमनुयतं वधस्त्रैः ॥ १३ ॥
आ दैव्यानि पार्थिवानि जन्मापश्चाच्छा सुमखाय वोचम्।
वर्धन्तां द्यावो गिरश्चन्द्राग्रा उदा वर्धन्तामभिषाता अर्णाः ॥ १४ ॥
पदेपदे मे जरिमा नि धायि वरूत्री वा शक्रा या पायुभिश्च।
सिषक्तु माता महो रसा नः स्मत्सूरिभिर्ऋजुहस्तैर्ऋजुवनिः ॥ १५ ॥

अथ षोडशो वर्गः ॥ १६ ॥

कथा दाशेम नमसा सुदानूनेवया मरुतो अच्छोक्तौ प्रश्रवसो मरुतो
अच्छोक्तौ। मा नोऽहिर्बुध्न्यो रिषे धादस्माकं भूदुपमातिवनिः ॥ १६ ॥
इति चिन्नु प्रजायै पशुमत्यै देवासो वनते मर्त्यो व आ देवासो
वनते मर्त्यो वः। अत्रा शिवां तन्वो धासिमस्या
जरां चिन्मे निर्ऋतिर्जग्रसीत ॥ १७ ॥
तां वो देवाः सुमतिमूर्जयन्तीमिषमश्याम वसवः शसा गोः ।
सा नः सुदानुर्मृळयन्ती देवी प्रति द्रवन्ती सुविताय गम्याः ॥ १८ ॥
अभि न इळा यूथस्य माता स्मन्नदीभिरुर्वशी वा गृणातु ।
उर्वशी वा बृहद्दिवा गृणानाभ्यूर्णवाना प्रभृथस्यायोः ॥ १९ ॥
सिषक्तु न ऊर्ज्व्यस्य पुष्टेः ॥ २० ॥

[४२] द्विचत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—अत्रिः ॥ देवता—विश्वे देवाः ॥ छन्दः—१, ४, ६, ११, १२, १५, १६, १८ निचृत्त्रिष्टुप्; २ विराट्त्रिष्टुप्; ३, ५, ७-९, १३, १४ त्रिष्टुप्; १० भुरिक्पङ्क्तिः; १७ याजुषीपङ्क्तिः ॥ स्वरः—१-९, ११-१६, १८ धैवतः; १०, १७ पञ्चमः ॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अथ सप्तदशो वर्गः ॥ १७ ॥

प्र शंत॑मा॒ वरु॑णं॒ दीधि॑ती॒ गीर्मि॒त्रं भग॒मदि॑तिं नू॒नम॑श्याः।
पृष॑द्योनिः॒ पञ्च॑होता शृणो॒त्वतू॑र्तपन्था॒ असु॑रो मयो॒भुः ॥ १ ॥
प्रति॑ मे॒ स्तोम॒मदि॑तिर्जगृभ्यात्सू॒नुं न मा॒ता हृद्यं॑ सु॒शेव॑म्।
ब्रह्म॑ प्रि॒यं दे॒वहि॑तं॒ यदस्त्य॒हं मि॒त्रे वरु॑णे॒ यन्म॑यो॒भु ॥ २ ॥
उदी॑रय क॒वित॑मं कवी॒नामु॒नत्तै॑नम॒भि मध्वा॑ घृ॒तेन॑।
स नो॒ वसू॑नि॒ प्रय॑ता हि॒तानि॑ च॒न्द्राणि॑ दे॒वः स॑वि॒ता सु॑वाति ॥ ३ ॥
समि॑न्द्र णो॒ मन॑सा नेषि॒ गोभिः॒ सं सू॒रिभि॑र्हरिवः॒ सं स्व॒स्ति।
सं ब्रह्म॑णा दे॒वहि॑तं॒ यदस्ति॒ सं दे॒वानां॑ सुम॒त्या य॒ज्ञिया॑नाम् ॥ ४ ॥
दे॒वो भगः॑ सवि॒ता रा॒यो अंश॒ इन्द्रो॑ वृ॒त्रस्य॑ सं॒जितो॒ धना॑नाम्।
ऋ॒भु॒क्षा वाज॑ उ॒त वा॒ पुरं॑धि॒रव॑न्तु नो अ॒मृता॑सस्तु॒रासः॑ ॥ ५ ॥

अथ अष्टादशो वर्गः ॥ १८ ॥

म॒रुत्व॑तो॒ अप्र॑तीतस्य जि॒ष्णोरजू॑र्यतः॒ प्र ब्र॑वामा कृ॒तानि॑।
न ते॒ पूर्वे॑ मघव॒न्नाप॑रासो॒ न वी॒र्यं१॒॑ नूत॑नः॒ कश्च॒नाप॑ ॥ ६ ॥
उप॑ स्तुहि प्रथ॒मं र॑त्न॒धेयं॒ बृह॒स्पतिं॑ सनि॒तारं॒ धना॑नाम्।
यः शंस॑ते स्तुव॒ते शंभ॑विष्ठः पुरू॒वसु॑रा॒गम॒ज्जोहु॑वानम् ॥ ७ ॥
तवो॒तिभिः॒ सच॑माना॒ अरि॑ष्टा॒ बृह॑स्पते म॒घवा॑नः सु॒वीराः॑।
ये अ॑श्व॒दा उ॒त वा॒ सन्ति॑ गो॒दा ये व॑स्त्र॒दाः सु॒भगा॒स्तेषु॒ रायः॑ ॥ ८ ॥
वि॒स॒र्माणं॑ कृणुहि वि॒त्तमे॑षां॒ ये भु॒ञ्जते॒ अपृ॑णन्तो न उ॒क्थैः।
अप॑व्रतान्प्रस॒वे वा॑वृधा॒नान् ब्र॑ह्म॒द्विषः॒ सूर्या॑द्यावयस्व ॥ ९ ॥
य ओह॑ते र॒क्षसो॑ दे॒ववी॑तावच॒क्रेभि॒स्तं म॑रुतो॒ नि या॑त।
यो वः॒ शमीं॑ शशमा॒नस्य॒ निन्दा॑त्तु॒च्छ्यान्कामा॑न्करते सिष्विदा॒नः ॥ १० ॥

अथ एकोनविंशो वर्गः ॥ १९ ॥

तमु॑ ष्टुहि॒ यः स्वि॒षुः सु॒धन्वा॒ यो विश्व॑स्य॒ क्षय॑ति भेष॒जस्य॑।
यक्ष्वा॑ म॒हे सौ॑मन॒साय॑ रु॒द्रं नमो॑भिर्दे॒वमसु॑रं दुवस्य ॥ ११ ॥
दमू॑नसो अ॒पसो॒ ये सु॒हस्ता॒ वृष्णः॒ पत्नी॑र्न॒द्यो॑ विभ्वत॒ष्टाः।
सर॑स्वती बृहद्दि॒वोत रा॒का द॑श॒स्यन्ती॑र्वरिवस्यन्तु शु॒भ्राः ॥ १२ ॥
प्र सू म॒हे सु॑शर॒णाय॑ मे॒धां गिरं॑ भरे॒ नव्य॑सीं॒ जाय॑मानाम्।
य आ॑ह॒ना दु॑हि॒तुर्व॒क्षणा॑सु रू॒पा मि॑ना॒नो अकृ॑णोदि॒दं नः॑ ॥ १३ ॥
प्र सु॑ष्टु॒तिः स्त॒नय॑न्तं रु॒वन्त॑मि॒ळस्पतिं॑ जरितर्नू॒नम॑श्याः।
यो अ॑ब्दि॒माँ उ॑दनि॒माँ इय॑र्ति॒ प्र वि॒द्युता॒ रोद॑सी उ॒क्षमा॑णः ॥ १४ ॥

ए॒ष स्तोमो॒ मारु॑तं॒ शर्धो॒ अच्छा॑ रु॒द्रस्य॑ सू॒नूँर्य॑व॒न्यूँरुद॑श्याः।
कामो॑ रा॒ये ह॑वते मा स्व॒स्त्युप॑ स्तुहि॒ पृष॑दश्वाँ अ॒यासः॑ ॥ १५ ॥
प्रैष स्तोमः॑ पृथि॒वीम॒न्तरि॑क्षं॒ वन॒स्पतीँ॒रोष॑धी रा॒ये अ॑श्याः।
दे॒वोदे॑वः सु॒हवो॑ भूतु॒ मह्यं॒ मा नो॑ मा॒ता पृ॑थि॒वी दु॑र्म॒तौ धा॑त् ॥ १६ ॥
उ॒रौ दे॑वा अनिबा॒धे स्या॑म ॥ १७ ॥
सम॒श्विनो॒रव॑सा॒ नूत॑नेन मयो॒भुवा॑ सु॒प्रणी॑ती गमेम ।
आ नो॑ र॒यिं व॑हत॒मोत वी॒राना विश्वा॑न्यमृता॒ सौभ॑गानि ॥ १८ ॥

[४३] त्रिचत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—अत्रिः ॥ देवता—विश्वे देवाः ॥ छन्दः—१, ३, ६, ८, ९, १७ निचृत्त्रिष्टुप्; २, ४, ५, १०-१२, १५ त्रिष्टुप्; ७, १३ विराट्त्रिष्टुप्; १४ भुरिक्पङ्क्तिः; १६ याजुषीपङ्क्तिः ॥ स्वरः—१-१३, १५, १७ धैवतः; १४, १६ पञ्चमः ॥

अथ विंशो वर्गः ॥ २० ॥

आ धे॒नवः॒ पय॑सा॒ तूर्ण्य॑र्था॒ अम॑र्धन्ती॒रुप॑ नो यन्तु॒ मध्वा॑।
म॒हो रा॒ये बृ॑ह॒तीः स॒प्त विप्रो॑ मयो॒भुवो॑ जरि॒ता जो॑हवीति ॥ १ ॥
आ सु॑ष्टु॒ती नम॑सा वर्त॒यध्यै॒ द्यावा॒ वाजा॑य पृथि॒वी अमृ॑ध्रे।
पि॒ता मा॒ता मधु॑वचाः सु॒हस्ता॒ भरे॑भरे नो य॒शसा॑वविष्टाम् ॥ २ ॥
अध्व॑र्यवश्चकृ॒वांसो॒ मधू॑नि॒ प्र वा॒यवे॑ भरत॒ चारु॑ शु॒क्रम्।
होते॑व नः प्रथ॒मः पा॑ह्य॒स्य देव॒ मध्वो॑ ररि॒मा ते॒ मदा॑य ॥ ३ ॥
दश॒ क्षिपो॑ युञ्जते बा॒हू अद्रिं॒ सोम॑स्य॒ या श॑मि॒तारा॑ सु॒हस्ता॑।
मध्वो॒ रसं॑ सु॒गभ॑स्तिर्गिरि॒ष्ठां चनि॑श्चदद्दुदुहे शु॒क्रमं॒शुः ॥ ४ ॥
असा॑वि ते जुजुषा॒णाय॒ सोमः॒ क्रत्वे॒ दक्षा॑य बृह॒ते मदा॑य।
हरी॒ रथे॑ सु॒धुरा॒ योगे॑ अ॒र्वागिन्द्र॑ प्रि॒या कृ॑णुहि हू॒यमा॑नः ॥ ५ ॥

अथ एकविंशो वर्गः ॥ २१ ॥

आ नो॑ म॒हीम॒रम॑तिं स॒जोषा॒ ग्नां दे॒वीं नम॑सा रा॒तह॑व्याम्।
मधो॒र्मदा॑य बृह॒तीमृ॑त॒ज्ञामाग्ने॑ वह प॒थिभि॑र्देव॒यानैः॑ ॥ ६ ॥
अ॒ञ्जन्ति॒ यं प्र॒थय॑न्तो॒ न विप्रा॑ व॒पाव॑न्तं॒ नाग्निना॒ तप॑न्तः।
पि॒तुर्न पु॒त्र उ॒पसि॒ प्रेष्ठ॒ आ घ॒र्मो अ॒ग्निमृ॒तय॑न्नसादि ॥ ७ ॥
अच्छा॑ म॒ही बृ॑ह॒ती शंत॑मा॒ गीर्दू॒तो न ग॑न्त्व॒श्विना॑ हु॒वध्यै॑।
म॒यो॒भुवा॑ स॒रथा या॑तम॒र्वाग्ग॒न्तं नि॒धिं धुर॑मा॒णिर्न नाभि॑म् ॥ ८ ॥
प्र तव्य॑सो॒ नम॑उक्तिं तु॒रस्या॒हं पू॒ष्ण उ॒त वा॒योर॑दिक्षि।
या राध॑सा चोदि॒तारा॑ मती॒नां या वाज॑स्य द्रविणो॒दा उ॒त त्मन् ॥ ९ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

आ नाम॑भिर्म॒रुतो॑ वक्षि॒ विश्वा॒ना रू॒पेभि॑र्जातवेदो हुवा॒नः।
य॒ज्ञं गिरो॑ जरि॒तुः सु॑ष्टु॒तिं च॒ विश्वे॑ गन्त मरुतो॒ विश्व॑ ऊ॒ती॥ १०॥

अथ द्वाविंशो वर्गः॥ २२॥

आ नो॑ दि॒वो बृ॑ह॒तः पर्व॑ता॒दा सर॑स्वती यज॒ता ग॑न्तु य॒ज्ञम्।
हवं॑ दे॒वी जु॑जुषा॒णा घृ॒ताची॑ श॒ग्मां नो॒ वाच॑मुश॒ती शृ॑णोतु॥ ११॥
आ वे॒धसं॒ नील॑पृष्ठं बृ॒हन्तं॒ बृह॒स्पतिं॒ सद॑ने सादयध्वम्।
सा॒दद्यो॑निं॒ दम॒ आ दी॑दि॒वांसं॒ हिर॑ण्यवर्णमरु॒षं स॑पेम॥ १२॥
आ ध॑र्ण॒सिर्बृ॒हद्दि॑वो॒ ररा॑णो॒ विश्वे॑भिर्ग॒न्त्वोम॑भिर्हुवा॒नः ।
ग्ना वसा॑न॒ ओष॑धी॒रमृ॑ध्रस्त्रि॒धातु॑शृङ्गो वृष॒भो व॑यो॒धाः ॥ १३॥
मा॒तुष्प॒दे प॑र॒मे शु॒क्र आ॒योर्वि॑प॒न्यवो॑ रास्पि॒रासो॑ अग्मन् ।
सु॒शेव्यं॒ नम॑सा रा॒तह॑व्याः॒ शिशुं॑ मृजन्त्या॒यवो॒ न वा॒से ॥ १४॥
बृ॒हद्वयो॑ बृह॒ते तुभ्य॑मग्ने धिया॒जुरो॑ मिथु॒नासः॑ सचन्त।
दे॒वोदे॑वः सु॒हवो॑ भूतु॒ मह्यं॒ मा नो॑ मा॒ता पृ॑थि॒वी दु॑र्म॒तौ धा॑त्॥ १५॥
उ॒रौ दे॑वा अनिबा॒धे स्या॑म ॥ १६॥
सम॒श्विनो॒रव॑सा॒ नूत॑नेन मयो॒भुवा॑ सु॒प्रणी॑ती गमेम ।
आ नो॑ र॒यिं व॑हत॒मोत वी॒राना विश्वा॑न्यामृता॒ सौभ॑गानि ॥ १७॥

[४४] चतुश्चत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—अवत्सारः काश्यप अन्ये च दृष्टलिङ्गाः॥ देवता—विश्वे देवाः॥
छन्दः—१, १३ विराट्जगती; २-६ निचृज्जगती; ८, ९, १२ जगती;
७ भुरिक्त्रिष्टुप्; १०, ११ स्वराट्त्रिष्टुप्; १४ विराट्त्रिष्टुप्;
१५ त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१-६, ८, ९, १२, १३, निषादः;
७, १०, ११, १४, १५ धैवतः॥

अथ त्रयोविंशो वर्गः॥ २३॥

तं प्र॒त्नथा॑ पू॒र्वथा॑ वि॒श्वथे॒मथा॑ ज्ये॒ष्ठता॑तिं बर्हि॒षदं॑ स्व॒र्विद॑म्।
प्र॒ती॒ची॒नं वृ॒जनं॑ दोहसे गि॒राशुं॒ जय॑न्त॒मनु॒ यासु॒ वर्ध॑से॥ १॥
श्रि॒ये सु॒दृशी॒रुप॑रस्य॒ याः स्व॑र्वि॒रोच॑मानः क॒कुभा॑मचो॒दते॑।
सु॒गो॒पा अ॑सि॒ न दभा॑य सुक्रतो प॒रो मा॒याभि॑र्ऋ॒त आ॑स नाम॑ ते॥ २॥
अत्यं॑ ह॒विः स॑चते॒ सच्च॒ धातु॒ चारि॑ष्टगातुः॒ स होता॑ सहो॒भरिः॑।
प्र॒सर्स्रा॑णो॒ अनु॑ ब॒र्हिर्वृषा॒ शिशु॒र्मध्ये॒ युवा॒जरो॑ वि॒स्रुहा॑ हि॒तः॥ ३॥
प्र व॑ ए॒ते सु॒युजो॒ याम॑न्नि॒ष्टये॒ नीची॑र॒मुष्मै॑ य॒म्य॑ ऋता॒वृधः॑।
सु॒यन्तु॑भिः सर्वशा॒सैर॒भीशु॑भिः॒ क्रिवि॒र्नामा॑नि प्रव॒णे मु॑षायति॥ ४॥

सं॒जर्भु॑राण॒स्तरु॑भिः सुते॒गृभं॑ वया॒किनं॑ चि॒त्तग॑र्भासु सु॒स्वरुः॑।
धा॒र॒वा॒केष्वृ॑जुगाथ शोभसे॒ वर्ध॑स्व॒ पत्नी॑र॒भि जी॒वो अ॑ध्व॒रे॥ ५॥

अथ चतुर्विंशो वर्गः॥ २४॥

या॒दृगे॒व ददृ॑शे ता॒दृगु॑च्यते॒ सं छा॒यया॑ दधिरे सि॒ध्रया॒प्स्वा ।
म॒हीम॒स्मभ्य॑मुरु॒षामु॒रु ज्रयो॑ बृ॒हत्सु॒वीर॒मन॑पच्युतं॒ सहः॑ ॥ ६॥
वेत्यग्रु॒र्जनि॑वा॒न्वा अति॒ स्पृधः॑ समर्य॒ता मन॑सा॒ सूर्यः॑ क॒विः।
घ्रं॒सं रक्ष॑न्तं॒ परि॑ वि॒श्वतो॒ गय॑म॒स्माकं॒ शर्म॑ वनव॒त्स्वाव॑सुः॥ ७॥
ज्यायां॑सम॒स्य य॒तुन॑स्य के॒तुन॑ ऋषिस्व॒रं च॑रति॒ यासु॒ नाम॑ ते।
या॒दृश्मि॒न्धायि॒ तम॑प॒स्यया॑ विद॒द्य उ॑ स्व॒यं वह॑ते॒ सो अरं॑ करत्॥ ८॥
स॒मु॒द्रमा॑सा॒मव॑ तस्थे अग्रि॒मा न रि॑ष्यति॒ सव॑नं॒ यस्मि॒न्नाय॑ता।
अत्रा॒ न हार्दि॑ क्रव॒णस्य॑ रेजते॒ यत्रा॑ म॒तिर्वि॒द्यते॑ पूत॒बन्ध॑नी॥ ९॥
स हि क्ष॒त्रस्य॑ मन॒सस्य॒ चित्ति॑भिरेवाव॒दस्य॑ यज॒तस्य॒ सध्रेः॑।
अ॒व॒त्सा॒रस्य॑ स्पृणवाम॒ रण्व॑भिः॒ शवि॑ष्ठं॒ वाजं॑ वि॒दुषा॑ चि॒दर्ध्य॑म्॥ १०॥

अथ पञ्चविंशो वर्गः॥ २५॥

श्ये॒न आ॑सा॒मदि॑तिः क॒क्ष्यो॒३॒॑ मदो॑ वि॒श्ववा॑रस्य यज॒तस्य॑ मा॒यिनः॑।
सम॒न्यम॑न्यमर्थय॒न्त्येत॑वे वि॒दुर्वि॒षाणं॑ परि॒पान॒मन्ति॒ ते ॥ ११॥
स॒दा॒पृ॒णो य॑ज॒तो वि द्विषो॑ वधीद्बाहुवृ॒क्तः श्रु॑त॒वित्तर्यो॑ वः॒ सचा॑।
उ॒भा स वरा॒ प्रत्ये॑ति॒ भाति॑ च॒ यदीं॑ ग॒णं भज॑ते सुप्र॒याव॑भिः॥ १२॥
सु॒तं॒भ॒रो यज॑मानस्य॒ सत्प॑ति॒र्विश्वा॑सा॒मूधः॒ स धि॒यामु॒दञ्च॑नः।
भर॑द्धे॒नू रस॑वच्छिश्रिये॒ पयो॑ऽनुब्रुवा॒णो अध्ये॑ति॒ न स्व॒पन्॥ १३॥
यो जा॒गार॒ तमृचः॑ कामयन्ते॒ यो जा॒गार॒ तमु॒ सामा॑नि यन्ति।
यो जा॒गार॒ तम॒यं सोम॑ आह॒ तवा॒हम॑स्मि स॒ख्ये न्यो॑काः॥ १४॥
अ॒ग्निर्जी॑गार॒ तमृचः॑ कामयन्ते॒ऽग्निर्जी॑गार॒ तमु॒ सामा॑नि यन्ति।
अ॒ग्निर्जी॑गार॒ तम॒यं सोम॑ आह॒ तवा॒हम॑स्मि स॒ख्ये न्यो॑काः॥ १५॥

चतुर्थोऽनुवाकः [४५] पञ्चचत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—सदापृण आत्रेयः॥ देवता—विश्वे देवाः॥ छन्दः—१, २ पङ्क्तिः;
३ विराट्त्रिष्टुप्; ४, ६, ७ निचृत्त्रिष्टुप्; ५, ९, ११ भुरिक्पङ्क्तिः;
८, १० स्वराट्पङ्क्तिः॥ स्वरः—१, २, ५, ८-११ पञ्चमः;
३, ४, ६ धैवतः॥

अथ षड्विंशो वर्गः॥ २६॥

वि॒दा दि॒वो वि॒ष्यन्नद्रि॑मु॒क्थैरा॑य॒त्या उ॒षसो॑ अ॒र्चिनो॑ गुः।
अपा॑वृत व्र॒जिनी॒रुत्स्व॑र्गा॒द्वि दुरो॒ मानु॑षीर्दे॒व आ॑वः॥ १॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

वि सूर्यो अमतिं न श्रियं सादोर्वाद् गवां माता जानती गात्।
धन्वर्णसो नद्यः खादोअर्णाः स्थूणेव सुमिता दृंहत द्यौः॥ २॥
अस्मा उक्थाय पर्वतस्य गर्भो महीनां जनुषे पूर्व्याय।
वि पर्वतो जिहीत साधत द्यौराविवासन्तो दसयन्त भूमं॥ ३॥
सूक्तेभिर्वो वचोभिर्देवजुष्टैरिन्द्रा न्वग्नी अवसे हुवध्यै।
उक्थेभिर्हि ष्मा कवयः सुयज्ञा आविवासन्तो मरुतो यजन्ति॥ ४॥
एतो न्वद्य सुध्यो३ भवाम प्र दुच्छुना मिनवामा वरीयः।
आरे द्वेषांसि सनुतर्दधामायाम प्राञ्चो यजमानमच्छ॥ ५॥

अथ सप्तविंशो वर्गः॥ २७॥

एता धियं कृणवामा सखायोऽप या माताँ ऋणुत व्रजं गोः।
यया मनुर्विशिशिप्रं जिगाय यया वणिग्वङ्कुरापा पुरीषम्॥ ६॥
अनूनोदत्र हस्तयतो अद्रिरार्चन्येन दर्श मासो नवग्वाः।
ऋतं यती सरमा गा अविन्दद्विश्वानि सत्याङ्गिराश्चकार॥ ७॥
विश्वे अस्या व्युषि माहिनायाः सं यद् गोभिरङ्गिरसो नवन्त।
उत्स आसां परमे सधस्थ ऋतस्य पथा सरमा विदद् गाः॥ ८॥
आ सूर्यो यातु सप्ताश्वः क्षेत्रं यदस्योर्विया दीर्घयाथे।
रघुः श्येनः पतयदन्धो अच्छा युवा कविर्दीदयद् गोषु गच्छन्॥ ९॥
आ सूर्यो अरुहच्छुक्रमर्णोऽयुक्त यद्धरितो वीतपृष्ठाः।
उद्ना न नावमनयन्त धीरा आशृण्वतीरापो अर्वागतिष्ठन्॥ १०॥
धियं वो अप्सु दधिषे स्वर्षां ययातरन्दश मासो नवग्वाः।
अया धिया स्याम देवगोपा अया धिया तुतुर्यामात्यंहः॥ ११॥

[४६] षट्चत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—प्रतिक्षत्र आत्रेयः॥ देवता—१-६ विश्वे देवाः; ७, ८ देवपत्न्यः॥
छन्दः—१ भुरिग्जगती; २, ८ निचृत्पङ्क्तिः; ३, ५, ६ निचृज्जगती;
४, ७ जगती॥ स्वरः—१, ३-७ निषादः; २, ८ पञ्चमः॥

अथ अष्टाविंशो वर्गः॥ २८॥

हयो न विद्वाँ अयुजि स्वयं धुरि तां वहामि प्रतरणीमवस्युवम्।
नास्या वशिम विमुचं नावृतं पुनर्विद्वान्पथः पुरएत ऋजु नेषति॥ १॥
अग्न इन्द्र वरुण मित्र देवाः शर्धः प्र यन्त मारुतोत विष्णो।
उभा नासत्या रुद्रो अध ग्नाः पूषा भगः सरस्वती जुषन्त॥ २॥

इन्द्राग्नी मित्रावरुणादितिं स्वः पृथिवीं द्यां मरुतः पर्वताँ अपः।
हुवे विष्णुं पूषणं ब्रह्मणस्पतिं भगं नु शंसं सवितारमूतये॥ ३॥
उत नो विष्णुरुत वातो अस्त्रिधो द्रविणोदा उत सोमो मयस्करत्।
उत ऋभव उत राये नो अश्विनोत त्वष्टोत विभ्वानु मंसते॥ ४॥
उत त्यन्नो मारुतं शर्ध आ गमद्विविक्षुयं यजतं बर्हिरासदे।
बृहस्पतिः शर्म पूषोत नो यमद्वरूथ्यग्नो वरुणो मित्रो अर्यमा॥ ५॥
उत त्ये नः पर्वतासः सुशस्तयः सुदीतयो नद्यस्त्रामणे भुवन्।
भगो विभक्ता शवसावसा गमदुरुव्यचा अदितिः श्रोतु मे हवम्॥ ६॥
देवानां पत्नीरुशतीरवन्तु नः प्रावन्तु नस्तुजये वाजसातये।
याः पार्थिवासो या अपामपि व्रते ता नो देवीः सुहवाः शर्म यच्छत॥ ७॥
उत ग्ना व्यन्तु देवपत्नीरिन्द्राण्यग्नायश्विनी राट्।
आ रोदसी वरुणानी शृणोतु व्यन्तु देवीर्य ऋतुर्जनीनाम्॥ ८॥

इति चतुर्थाष्टके द्वितीयोऽध्यायः॥

अथ तृतीयोऽध्यायः

[४७] सप्तचत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—प्रतिरथ आत्रेयः॥ देवता—विश्वे देवाः॥ छन्दः—१-३, ७ त्रिष्टुप्;
४ भुरिक्त्रिष्टुप्; ५ भुरिक्पङ्क्तिः; ६ विराट्त्रिष्टुप्॥
स्वरः—१-४, ६, ७ धैवतः; ५ पञ्चमः॥

अथ प्रथमो वर्गः॥ १॥

प्रयुञ्जती दिव एति ब्रुवाणा मही माता दुहितुर्बोधयन्ती।
आविवासन्ती युवतिर्मनीषा पितृभ्य आ सदने जोहुवाना॥ १॥
अजिरासस्तदप ईयमाना आतस्थिवांसो अमृतस्य नाभिम्।
अनन्तासः उरवो विश्वतः सीं परि द्यावापृथिवी यन्ति पन्थाः॥ २॥
उक्षा समुद्रो अरुषः सुपर्णः पूर्वस्य योनिं पितुरा विवेश।
मध्ये दिवो निहितः पृश्निरश्मा वि चक्रमे रजसस्पात्यन्तौ॥ ३॥
चत्वार ईं बिभ्रति क्षेमयन्तो दश गर्भं चरसे धापयन्ते।
त्रिधातवः परमा अस्य गावो दिवश्चरन्ति परि सद्म अन्तान्॥ ४॥
इदं वपुर्निवचनं जनासश्चरन्ति यन्नद्यस्तस्थुरापः।
दे यती बिभृतो मातुरन्ये इहेह जाते यमयाते सबन्धू॥ ५॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

वि त॑न्वते॒ धियो॑ अस्मा॒ अपां॑सि॒ वस्त्रा॑ पु॒त्राय॑ मा॒तरो॑ वयन्ति।
उ॒प॒प्र॒क्षे वृष॑णो॒ मोद॑माना दि॒वस्प॒था व॒ध्वो॑ य॒न्त्यच्छ॑॥ ६॥
तद॑स्तु मित्रावरुणा॒ तद॑ग्ने॒ शं योर॒स्मभ्य॑मि॒दम॑स्तु श॒स्तम्।
अ॒शी॒महि॑ गा॒धमु॒त प्र॑ति॒ष्ठां नमो॑ दि॒वे बृ॑ह॒ते साद॑नाय॥ ७॥

[४८] अष्टचत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—प्रतिभानुरात्रेयः॥ देवता—विश्वे देवाः॥ छन्दः—१, ३ स्वराट्त्रिष्टुप्; २, ४, ५ निचृज्जगती॥ स्वरः—१, ३ धैवतः; २, ४, ५ निषादः॥

अथ द्वितीयो वर्गः॥ २॥

कदु॑ प्रि॒याय॒ धाम्ने॑ मनामहे॒ स्वक्ष॑त्राय॒ स्वय॑शसे म॒हे व॒यम्।
आ॒मे॒न्यस्य॒ रज॑सो॒ यद॒भ्र आँ अ॒पो वृ॑णा॒ना वि॑त॒नोति॑ मा॒यिनी॑॥ १॥
ता अ॑त्नत व॒युनं॑ वी॒रव॑क्षणं समा॒न्या वृ॒तया॒ विश्व॒मा रजः॑।
अपो॒ अपा॑ची॒रप॑रा॒ अपे॑जते॒ प्र पूर्वा॑भिस्तिरते देव॒युर्जनः॑ ॥ २॥
आ ग्राव॑भिरह॒न्ये॑भि॒र॒क्तुभिर्वरि॑ष्ठं॒ वज्र॒मा जि॑घर्ति मा॒यिनि॑ ।
श॒तं वा॒ यस्य॑ प्र॒चर॒न्त्स्वे दमे॑ संव॒र्तय॑न्तो॒ वि च॑ वर्तय॒न्नहा॑ ॥ ३॥
ताम॑स्य री॒तिं प॑र॒शोरि॑व॒ प्रत्यनी॑कमख्यं भु॒जे अ॑स्य॒ वर्प॑सः।
सचा॒ यदि॑ पितु॒मन्त॑मिव॒ क्षयं॒ रत्नं॒ दधा॑ति॒ भर॑हूतये वि॒शे॥ ४॥
स जि॒ह्वया॒ चतु॑रनीक ऋञ्जते॒ चारु॒ वसा॑नो॒ वरु॑णो॒ यत॑न्न॒रिम्।
न तस्य॑ विद्म पुरुष॒त्वता॑ व॒यं यतो॒ भगः॑ सवि॒ता दाति॒ वार्य॑म्॥ ५॥

[४९] एकोनपञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—प्रतिप्रभ आत्रेयः॥ देवता—विश्वे देवाः॥ छन्दः—१, २, ४ भुरिक्त्रिष्टुप्; ३ निचृत्त्रिष्टुप्; ५ स्वराट्पङ्क्तिः॥
स्वरः—१-४ धैवतः; ५ पञ्चमः॥

अथ तृतीयो वर्गः॥ ३॥

दे॒वं वो॑ अ॒द्य स॑वि॒तार॒मेषे॒ भगं॑ च॒ रत्नं॑ वि॒भज॑न्तमा॒योः।
आ वां॑ नरा पुरुभुजा ववृत्यां दि॒वेदि॑वे चिदश्विना सखी॒यन्॥ १॥
प्रति॑ प्र॒याण॒मसु॑रस्य वि॒द्वान्त्सू॒क्तैर्दे॒वं स॑वि॒तारं॑ दुवस्य ।
उप॑ ब्रुवीत॒ नम॑सा विजा॒नञ्ज्येष्ठं॑ च॒ रत्नं॑ वि॒भज॑न्तमा॒योः ॥ २॥
अ॒द॒त्र॒या द॑यते॒ वार्या॑णि पू॒षा भगो॒ अदि॑ति॒र्वस्त॑ उ॒स्रः ।
इन्द्रो॒ विष्णु॒र्वरु॑णो मि॒त्रो अ॒ग्निरहा॑नि भ॒द्रा ज॑नयन्त द॒स्माः ॥ ३॥
तन्नो॑ अन॒र्वा स॑वि॒ता वरू॑थं॒ तत्सिन्ध॑व इ॒षय॑न्तो॒ अनु॑ ग्मन्।
उप॒ यद्वोचे॑ अध्व॒रस्य॒ होता॑ रा॒यः स्या॑म॒ पत॑यो॒ वाज॑रत्नाः॥ ४॥

प्र ये वसु॑भ्य॒ ईव॒दा नमो॒ दुर्ये मि॒त्रे वरु॑णे सू॒क्तवा॑चः।
अवै॒त्वभ्वं॑ कृणु॒ता वरी॑यो दि॒वस्पृ॑थि॒व्योरव॑सा मदेम ॥ ५॥

[५०] पञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—स्वस्त्यात्रेयः॥ देवता—विश्वे देवाः॥ छन्दः—१ स्वराडुष्णिक्; २ निचृदुष्णिक्; ३ भुरिगुष्णिक्; ४, ५ निचृदनुष्टुप्॥
स्वरः—१-३ ऋषभः; ४, ५ गान्धारः॥

अथ चतुर्थो वर्गः॥ ४॥

विश्वो॑ दे॒वस्य॑ ने॒तुर्मर्तो॑ वुरीत स॒ख्यम् ।
विश्वो॑ रा॒य इ॑षुध्यति द्यु॒म्नं वृ॑णीत पु॒ष्यसे॑ ॥ १॥
ते ते॑ देव नेत॒र्ये चे॒माँ अ॑नु॒शसे॑ ।
ते रा॒या ते ह्या॒३॒॑पृचे॒ सचे॑महि सच॒थ्यैः॑ ॥ २॥
अतो॑ न॒ आ नॄनति॑थी॒नतः॒ पत्नी॑र्दशस्यत ।
आ॒रे विश्वं॑ पथे॒ष्ठां द्वि॒षो यु॑योतु॒ यूयु॑विः ॥ ३॥
यत्र॒ वह्नि॑र॒भिहि॑तो दु॒द्रव॒द् द्रोण्यः॑ प॒शुः ।
नृ॒मणा॑ वी॒रप॒स्त्योऽर्णा॒ धीरे॑व॒ सनि॑ता ॥ ४॥
ए॒ष ते॑ देव नेता॒ रथ॒स्पतिः॒ शं र॒यिः ।
शं रा॒ये शं स्व॒स्तय॑ इषः॒स्तुतो॑ मनामहे देव॒स्तुतो॑ मनामहे ॥ ५॥

[५१] एकपञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—स्वस्त्यात्रेयः॥ देवता—विश्वे देवाः॥ छन्दः—१ गायत्री; २-४ निचृद्गायत्री; ५, ८-१० निचृदुष्णिक्; ६ उष्णिक्; ७ विराडुष्णिक्; ११ निचृत्त्रिष्टुप्; १२ त्रिष्टुप्; १३ पङ्क्तिः; १४, १५ अनुष्टुप्॥ स्वरः—१-४ षड्जः; ५-१० ऋषभः; ११, १२ धैवतः; १३ पञ्चमः; १४, १५ गान्धारः॥

अथ पञ्चमो वर्गः॥ ५॥

अग्ने॑ सु॒तस्य॑ पी॒तये॒ विश्वै॒रूमे॑भि॒रा ग॑हि। दे॒वेभि॑र्ह॒व्यदा॑तये ॥ १॥
ऋत॑धीतय॒ आ ग॑त॒ सत्य॑धर्माणो अध्व॒रम्। अ॒ग्नेः पि॑बत जि॒ह्वया॑ ॥ २॥
विप्रे॑भिर्विप्र सन्त्य प्रात॒र्याव॑भि॒रा ग॑हि। दे॒वेभिः॒ सोम॑पीतये ॥ ३॥
अ॒यं सोम॑श्च॒मू सु॒तोऽम॑त्रे॒ परि॑ षिच्यते। प्रि॒य इन्द्रा॑य वा॒यवे॑ ॥ ४॥
वाय॒वा या॑हि वी॒तये॑ जुषा॒णो ह॒व्यदा॑तये। पिबा॑ सु॒तस्यान्ध॑सो अ॒भि प्रयः॑॥ ५॥

अथ षष्ठो वर्गः॥ ६॥

इन्द्र॑श्च वायवेषां सु॒तानां॑ पी॒तिम॑र्हथः। ताञ्जु॑षेथामरे॒पसा॑व॒भि प्रयः॑॥ ६॥
सु॒ता इन्द्रा॑य वा॒यवे॒ सोमा॑सो॒ दध्या॑शिरः। नि॒म्नं न य॑न्ति॒ सिन्ध॑वो॒ऽभि प्रयः॑॥ ७॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सजूर्विश्वेभिर्देवेभिरश्विभ्यामुषसा सजूः। आ याह्यग्ने अत्रिवत्सुते रण॥ ८॥
सजूर्मित्रावरुणाभ्यां सजूः सोमेन विष्णुना। आ याह्यग्ने अत्रिवत्सुते रण॥ ९॥
सजूरादित्यैर्वसुभिः सजूरिन्द्रेण वायुना। आ याह्यग्ने अत्रिवत्सुते रण॥ १०॥

अथ सप्तमो वर्गः॥ ७॥

स्वस्ति नो मिमीतामश्विना भगः स्वस्ति देव्यदितिरनर्वणः।
स्वस्ति पूषा असुरो दधातु नः स्वस्ति द्यावापृथिवी सुचेतुना॥ ११॥
स्वस्तये वायुमुप ब्रवामहै सोमं स्वस्ति भुवनस्य यस्पतिः।
बृहस्पतिं सर्वगणं स्वस्तये स्वस्तय आदित्यासो भवन्तु नः॥ १२॥
विश्वे देवा नो अद्या स्वस्तये वैश्वानरो वसुरग्निः स्वस्तये।
देवा अवन्त्वृभवः स्वस्तये स्वस्ति नो रुद्रः पात्वंहसः॥ १३॥
स्वस्ति मित्रावरुणा स्वस्ति पथ्ये रेवति ।
स्वस्ति न इन्द्रश्चाग्निश्च स्वस्ति नो अदिते कृधि ॥ १४॥
स्वस्ति पन्थामनु चरेम सूर्याचन्द्रमसाविव ।
पुनर्ददताघ्नता जानता सं गमेमहि ॥ १५॥

[५२] द्विपञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—श्यावाश्व आत्रेयः॥ देवता—मरुतः॥ छन्दः—१, ४, ५, १५ विराडनुष्टुप्; २, ७, १० निचृदनुष्टुप्; ३, ९, ११ विराडुष्णिक्; ६ पङ्क्तिः; ८, १२, १३ अनुष्टुप्; १४, १७ बृहती; १६ निचृद्बृहती॥ स्वरः—१, २, ४, ५, ७, ८, १०, १२, १३, १५ गान्धारः; ३, ९, ११ ऋषभः; ६ पञ्चमः; १४, १६, १७ मध्यमः॥

अथ अष्टमो वर्गः॥ ८॥

प्र श्यावाश्व धृष्णुयार्चा मरुद्भिर्ऋक्वभिः ।
ये अद्रोघमनुष्वधं श्रवो मदन्ति यज्ञियाः ॥ १॥
ते हि स्थिरस्य शवसः सखायः सन्ति धृष्णुया ।
ते यामन्ना धृषद्विनस्मना पान्ति शश्वतः ॥ २॥
ते स्पन्द्रासो नोक्षणोऽति ष्कन्दन्ति शर्वरीः ।
मरुतामधा महो दिवि क्षमा च मन्महे ॥ ३॥
मरुत्सु वो दधीमहि स्तोमं यज्ञं च धृष्णुया ।
विश्वे ये मानुषा युगा पान्ति मर्त्यं रिषः ॥ ४॥
अर्हन्तो ये सुदानवो नरो असामिशवसः ।
प्र यज्ञं यज्ञियेभ्यो दिवो अर्चा मरुद्भ्यः ॥ ५॥

अथ नवमो वर्गः॥ ९॥

आ रुक्मैरा युधा नर ऋष्वा ऋष्टीरसृक्षत ।
अन्वेनाँ अह विद्युतो मरुतो जज्झतीरिव भानुर्रर्त त्मना दिवः॥ ६॥
ये वावृधन्त पार्थिवा य उरावन्तरिक्ष आ ।
वृजने वा नदीनां सधस्थे वा महो दिवः ॥ ७॥
शर्धो मारुतमुच्छंस सत्यशवसमृभ्वसम् ।
उत स्म ते शुभे नरः प्र स्पन्द्रा युजत त्मना ॥ ८॥
उत स्म ते परुष्ण्यामूर्णा वसत शुन्ध्यवः ।
उत पव्या रथानामद्रिं भिन्दन्त्योजसा ॥ ९॥
आपथयो विपथयोऽन्तस्पथा अनुपथाः ।
एतेभिर्मह्यं नामभिर्यज्ञं विष्टार ओहते ॥ १०॥

अथ दशमो वर्गः॥ १०॥

अधा नरो न्योहतेऽधा नियुत ओहते ।
अधा पारावता इति चित्रा रूपाणि दर्शयी ॥ ११॥
छन्दःस्तुभः कुभन्यव उत्समा कीरिणो नृतुः ।
ते मे के चित्र तायव ऊमा आसन्दृशि त्विषे ॥ १२॥
य ऋष्वा ऋष्टिविद्युतः कवयः सन्ति वेधसः ।
तमृषे मारुतं गणं नमस्या रमया गिरा ॥ १३॥
अच्छ ऋषे मारुतं गणं दाना मित्रं न योषणा ।
दिवो वा धृष्णव ओजसा स्तुता धीभिरिषण्यत ॥ १४॥
नू मन्वान एषां देवाँ अच्छा न वक्षणा ।
दाना संचेत सूरिभिर्यामश्रुतेभिरञ्जिभिः ॥ १५॥
प्र ये मे बन्धवेषे गां वोचन्त सूरयः पृश्निं वोचन्त मातरम्।
अधा पितरमिष्मिणं रुद्रं वोचन्त शिक्वसः ॥ १६॥
सप्त मे सप्त शाकिन एकमेका शता ददुः ।
यमुनायामधि श्रुतमुद्राधो गव्यं मृजे नि राधो अश्व्यं मृजे॥ १७॥

[५३] त्रिपञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—श्यावाश्व आत्रेयः॥ देवता—मरुतः॥ छन्दः—१ भुरिग्गायत्री; २ निचृद्बृहती; ३ अनुष्टुप्; ४, ५ उष्णिक्; ६, १६ पङ्क्तिः; ७, १३ निचृत्पङ्क्तिः; ८, १२ गायत्री; ९ स्वराड्बृहती; १०, १५ विराडुष्णिक्; ११ निचृदुष्णिक्; १४ बृहती॥ स्वरः—१, ८, १२ षड्जः; २, ९, १४ मध्यमः; ३ गान्धारः; ४, ६, १०, ११, १५ ऋषभः; ६, ७, १३, १६ पञ्चमः॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अथ एकादशो वर्गः ॥ ११ ॥

को वेद जानमेषां को वा पुरा सुम्नेष्वास मरुताम् ।
यद्युयुत्रे किलास्यः ॥ १ ॥
ऐताम्रथेषु तस्थुषः कः शुश्राव कथा ययुः ।
कस्मै सस्रुः सुदासे अन्वापय इळाभिर्विष्टयः सह ॥ २ ॥
ते मं आहुर्यो अयुयुरुप द्युभिर्विभिर्मदे ।
नरो मर्यो अरेपसं दमान्पश्यन्निति ष्टुहि ॥ ३ ॥
ये अज्जिषु ये वाशीषु स्वभानवः स्रक्षु रुक्मेषु खादिषु ।
श्राया रथेषु धन्वसु ॥ ४ ॥
युष्माकं स्मा रथाँ अनु मुदे दधे मरुतो जीरदानवः ।
वृष्टी द्यावो यतीरिव ॥ ५ ॥

अथ द्वादशो वर्गः ॥ १२ ॥

आ यं नरः सुदानवो ददाशुषे दिवः कोशमचुच्यवुः ।
वि पर्जन्यं सृजन्ति रोदसी अनु धन्वना यन्ति वृष्टयः ॥ ६ ॥
ततृदानाः सिन्धवः क्षोदसा रजः प्र सस्रुर्धेनवो यथा ।
स्यन्ना अश्वाइवाध्वनो विमोचने वि यद्वर्तन्त एन्यः ॥ ७ ॥
आ यात मरुतो दिव आन्तरिक्षादमादुत । माव स्थात परावतः ॥ ८ ॥
मा वो रसानितभा कुभा क्रुमुर्मा वः सिन्धुर्नि रीरमत् ।
मा वः परि ष्ठात्सरयुः पुरीषिण्यस्मे इत्सुम्नमस्तु वः ॥ ९ ॥
तं वः शर्धं रथानां त्वेषं गणं मारुतं नव्यसीनाम् ।
अनु प्र यन्ति वृष्टयः ॥ १० ॥

अथ त्रयोदशो वर्गः ॥ १३ ॥

शर्धंशर्धं व एषां व्रातंव्रातं गणंगणं सुशस्तिभिः ।
अनु क्रामेम धीतिभिः ॥ ११ ॥
कस्मा अद्य सुजाताय रातहव्याय प्र ययुः ।
एना यामेन मरुतः ॥ १२ ॥
येन तोकाय तनयाय धान्यं बीजं वहध्वे अक्षितम् ।
अस्मभ्यं तद्धत्तन यद्व ईमहे राधो विश्वायु सौभगम् ॥ १३ ॥
अतीयाम निदस्तिरः स्वस्तिभिर्हित्वावद्यमरातीः ।
वृष्टी शं योरप उस्रिभेषजं स्याम मरुतः सह ॥ १४ ॥

सुदेवः समहासति सुवीरो नरो मरुतः स मर्त्यः ।
यं त्रायध्वे स्याम ते ॥ १५ ॥
स्तुहि भोजान्स्तुवतो अस्य यामनि रणन्गावो न यवसे ।
यतः पूर्वाँइव सखीरनु ह्वय गिरा गृणीहि कामिनः ॥ १६ ॥

[५४] चतुष्पञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—श्यावाश्व आत्रेयः ॥ देवता—मरुतः ॥ छन्दः—१, ३, ७, १२ जगती; २ विराड्जगती; ४, ८, १० भुरिक्त्रिष्टुप्; ५, ९, १३, १४ त्रिष्टुप्; ६ भुरिग्जगती; ११, १५ निचृज्जगती ॥ स्वरः—१-३, ६, ७, ११, १२, १५ निषादः; ४, ५, ८-१०, १३, १४ धैवतः ॥

अथ चतुर्दशो वर्गः ॥ १४ ॥

प्र शर्धाय मारुताय स्वभानव इमां वाचमनजा पर्वतच्युतें ।
घर्मस्तुभे दिव आ पृष्ठयञ्चने द्युम्नश्रवसे महि नृम्णमर्चत ॥ १ ॥
प्र वो मरुतस्तविषा उदन्यवो वयोवृधो अश्वयुजः परिज्रयः ।
सं विद्युता दधति वाशति त्रितः स्वरन्त्यापोऽवना परिज्रयः ॥ २ ॥
विद्युन्महसो नरो अश्मदिद्यवो वातत्विषो मरुतः पर्वतच्युतः ।
अब्दया चिन्मुहुरा हादुनीवृतः स्तनयदमा रभसा उदौजसः ॥ ३ ॥
व्यक्तून्द्रा व्यहानि शिक्वसो व्यन्तरिक्षं वि रजांसि धूतयः ।
वि यदज्राँ अजथ नावं ईं यथा वि दुर्गाणि मरुतो नाह रिष्यथ ॥ ४ ॥
तद्वीर्यं वो मरुतो महित्वनं दीर्घं ततान सूर्यो न योजनम् ।
एता न यामे अगृभीतशोचिषोऽनश्वदा यन्त्ययातना गिरिम् ॥ ५ ॥

अथ पञ्चदशो वर्गः ॥ १५ ॥

अभ्राजि शर्धो मरुतो यदर्णसं मोषथा वृक्षं कपनेव वेधसः ।
अधं स्मा नो अरमतिं सजोषसश्चक्षुरिव यन्तमनु नेषथा सुगम् ॥ ६ ॥
न स जीयते मरुतो न हन्यते न स्त्रेधति न व्यथते न रिष्यति ।
नास्य राय उप दस्यन्ति नोतय ऋषिं वा यं राजानं वा सुषूदथ ॥ ७ ॥
नियुत्वन्तो ग्रामजितो यथा नरोऽर्यमणो न मरुतः कवन्धिनः ।
पिन्वन्त्युत्सं यदिनासो अस्वरन्व्युन्दन्ति पृथिवीं मध्वो अन्धसा ॥ ८ ॥
प्रवत्वतीयं पृथिवी मरुद्भ्यः प्रवत्वती द्यौर्भवति प्रयद्भ्यः ।
प्रवत्वतीः पथ्या अन्तरिक्ष्याः प्रवत्वन्तः पर्वता जीरदानवः ॥ ९ ॥
यन्मरुतः सभरसः स्वर्णरः सूर्य उदिते मदथा दिवो नरः ।
न वोऽश्वाः श्रथयन्ताह सिस्रतः सद्यो अस्याध्वनः पारमशनुथ ॥ १० ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अथ षोडशो वर्गः ॥ १६ ॥

अंसे॑षु व ऋ॒ष्टयः॑ प॒त्सु खा॒दयो॒ वक्षः॑सु रु॒क्मा म॑रुतो॒ रथे॒ शुभः॑।
अ॒ग्निभ्रा॑जसो वि॒द्युतो॒ गभ॑स्त्योः॒ शिप्राः॑ शी॒र्षसु॒ वित॑ता हिर॒ण्ययीः॑ ॥ ११ ॥
तं नाक॑म॒र्यो अगृ॑भीतशोचिषं॒ रुश॒त्पिप्प॑लं मरुतो॒ वि धू॑नुथ ।
सम॑च्यन्त वृ॒जनाति॑त्विषन्त॒ यत्स्वर॑न्ति॒ घोषं॒ वित॑तमृता॒यवः॑ ॥ १२ ॥
यु॒ष्माद॑त्तस्य मरुतो विचेतसो रा॒यः स्या॑म र॒थ्यो॒३॒॑ वय॑स्वतः।
न यो युच्छ॑ति ति॒ष्यो॒३॒॑ यथा॑ दि॒वो॒३॒॑ऽस्मे रा॑रन्त मरुतः सह॒स्रिण॑म् ॥ १३ ॥
यू॒यं र॒यिं म॑रुतः स्पा॒र्हवी॑रं यू॒यमृषि॑मवथ॒ साम॑विप्रम् ।
यू॒यमर्व॑न्तं भर॒ताय॒ वाजं॑ यू॒यं ध॑त्थ॒ राजा॑नं श्रुष्टि॒मन्त॑म् ॥ १४ ॥
तद्वो॑ यामि॒ द्रवि॑णं सद्यऊतयो॒ येना॒ स्व१॒॑र्ण त॒तना॑म॒ नॄँर॒भि।
इ॒दं सु मे॑ मरुतो हर्यता॒ वचो॒ यस्य॒ तरे॑म॒ तर॑सा श॒तं हिमाः॑ ॥ १५ ॥

[५५] पञ्चपञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—श्यावाश्व आत्रेयः ॥ देवता—मरुतः ॥ छन्दः—१, ५ जगती; २, ४, ७, ८ निचृज्जगती; ३ स्वराट्त्रिष्टुप्; ६, १० निचृत्त्रिष्टुप्; ९ विराड्जगती ॥
स्वरः—१, २, ४, ५, ७-९ निषादः; ३, ६, १० धैवतः ॥

अथ सप्तदशो वर्गः ॥

प्रय॑ज्यवो म॒रुतो॒ भ्राज॑दृष्टयो बृ॒हद्वयो॑ दधिरे रु॒क्मव॑क्षसः।
ईय॑न्ते॒ अश्वैः॑ सु॒यमे॑भिरा॒शुभिः॒ शुभं॑ या॒तामनु॒ रथा॑ अवृत्सत ॥ १ ॥
स्व॒यं द॑धिध्वे॒ तवि॑षीं॒ यथा॑ वि॒द बृ॒हन्म॑हान्त उर्वि॒या वि रा॑जथ।
उ॒तान्तरि॑क्षं ममिरे॒ व्योज॑सा॒ शुभं॑ या॒तामनु॒ रथा॑ अवृत्सत ॥ २ ॥
सा॒कं जा॒ताः सु॒भ्वः॑ सा॒कमु॑क्षि॒ताः श्रि॒ये चि॒दा प्र॑त॒रं वा॑वृधु॒र्नरः॑।
वि॒रो॒किणः॒ सूर्य॑स्येव र॒श्मयः॒ शुभं॑ या॒तामनु॒ रथा॑ अवृत्सत ॥ ३ ॥
आ॒भू॒षेण्यं॑ वो मरुतो महित्व॒नं दि॑दृक्षेण्यं॒ सूर्य॑स्येव॒ चक्ष॑णम्।
उ॒तो अ॒स्माँ अ॑मृत॒त्वे द॑धातन॒ शुभं॑ या॒तामनु॒ रथा॑ अवृत्सत ॥ ४ ॥
उदी॑रयथा मरुतः समुद्र॒तो यू॒यं वृ॒ष्टिं व॑र्षयथा पुरीषिणः।
न वो॑ दस्रा॒ उप॑ दस्यन्ति धे॒नवः॒ शुभं॑ या॒तामनु॒ रथा॑ अवृत्सत ॥ ५ ॥

अथ अष्टादशो वर्गः ॥ १८ ॥

यदश्वा॑न्धू॒र्षु पृष॑ती॒रयु॑ग्ध्वं हिर॒ण्यया॒न्प्रत्यत्काँ॒ अमु॑ग्ध्वम् ।
विश्वा॒ इत्स्पृधो॑ मरुतो॒ व्य॑स्यथ॒ शुभं॑ या॒तामनु॒ रथा॑ अवृत्सत ॥ ६ ॥
न पर्व॑ता॒ न न॒द्यो॑ वरन्त वो॒ यत्राचि॑ध्वं मरुतो॒ गच्छ॒थेदु॒ तत्।
उ॒त द्यावा॑पृथि॒वी या॑थना॒ परि॒ शुभं॑ या॒तामनु॒ रथा॑ अवृत्सत ॥ ७ ॥
यत्पू॒र्व्यं म॑रुतो॒ यच्च॒ नूत॑नं॒ यदु॒द्यते॑ वसवो॒ यच्च॑ श॒स्यते॑।
विश्व॑स्य॒ तस्य॑ भवथा॒ नवे॑दसः॒ शुभं॑ या॒तामनु॒ रथा॑ अवृत्सत ॥ ८ ॥
मृ॒ळत॑ नो मरुतो॒ मा व॑धिष्टना॒स्मभ्यं॒ शर्म॑ बहु॒लं वि य॑न्तन।
अधि॑ स्तो॒त्रस्य॑ स॒ख्यस्य॑ गातन॒ शुभं॑ या॒तामनु॒ रथा॑ अवृत्सत ॥ ९ ॥
यू॒यम॒स्मान्न॑यत॒ वस्यो॒ अच्छा॒ निरं॑ह॒तिभ्यो॑ मरुतो गृणा॒नाः।
जु॒षध्वं॑ नो ह॒व्यदा॑तिं यजत्रा व॒यं स्या॑म॒ पत॑यो रयी॒णाम् ॥ १० ॥

[५६] षट्पञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—श्यावाश्व आत्रेयः ॥ देवता—मरुतः ॥ छन्दः—१, २, ५ निचृद्बृहती; ३ विराट्पङ्क्तिः; ४ विराड्बृहती; ६, ७ निचृत्पङ्क्तिः; ८, ९ बृहती ॥
स्वरः—१, २, ४, ५, ८, ९ मध्यमः; ३, ६, ७ पञ्चमः ॥

अथ एकोनविंशो वर्गः ॥ १९ ॥

अग्ने॒ शर्ध॑न्त॒मा ग॒णं पि॒ष्टं रु॒क्मेभि॑र॒ञ्जिभिः॑ ।
विशो॑ अ॒द्य म॒रुता॒मव॑ ह्वये दि॒वश्चि॑द्रोच॒नादधि॑ ॥ १ ॥
यथा॑ चि॒न्मन्य॑से हृ॒दा तदिन्मे॑ जग्मुरा॒शसः॑ ।
ये ते॒ नेदि॑ष्ठं॒ हव॑नान्या॒गम॒न्तान्व॑र्ध भी॒मसं॑दृशः ॥ २ ॥
मी॒ळ्हुष्म॑तीव पृथि॒वी परा॑हता॒ मद॑न्त्येत्य॒स्मदा ।
ऋक्षो॒ न वो॑ मरुतः॒ शिमी॑वाँ॒ अमो॑ दु॒ध्रो गौरि॑व भीम॒युः ॥ ३ ॥
नि ये रि॒णन्त्योज॑सा॒ वृथा॒ गावो॒ न दु॒र्धुरः॑ ।
अश्मा॑नं चित्स्व॒र्यं१॒॑ पर्व॑तं गि॒रिं प्र च्या॑वयन्ति॒ याम॑भिः ॥ ४ ॥
उत्ति॑ष्ठ नू॒नमे॑षां॒ स्तोमैः॒ समु॑क्षितानाम् ।
म॒रुतां॑ पुरु॒तम॒मपू॑र्व्यं॒ गवां॒ सर्ग॑मिव ह्वये ॥ ५ ॥

अथ विंशो वर्गः ॥ २० ॥

यु॒ङ्ग्ध्वं ह्यरु॑षी॒ रथे॑ यु॒ङ्ग्ध्वं रथे॑षु रो॒हितः॑ ।
यु॒ङ्ग्ध्वं हरी॑ अजि॒रा धु॒रि वोळ्ह॑वे॒ वहि॑ष्ठा धु॒रि वोळ्ह॑वे ॥ ६ ॥
उ॒त स्य वा॒ज्य॑रु॒षस्तु॑वि॒ष्वणि॑रि॒ह स्म॑ धायि दर्श॒तः ।
मा वो॒ यामे॑षु मरुतश्चि॒रं क॑र॒त्प्र तं रथे॑षु चोदत ॥ ७ ॥
रथं॒ नु मारु॑तं व॒यं श्र॑व॒स्युमा हु॑वामहे ।
आ यस्मि॑न्त॒स्थौ सु॒रणा॑नि॒ बिभ्र॑ती॒ सचा॑ म॒रुत्सु॑ रोद॒सी ॥ ८ ॥
तं वः॒ शर्धं॑ रथे॒शुभं॑ त्वे॒षं प॑न॒स्युमा हु॑वे ।
यस्मि॒न्त्सुजा॑ता सु॒भगा॑ मही॒यते॒ सचा॑ म॒रुत्सु॑ मीळ्हु॒षी ॥ ९ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पञ्चमोऽनुवाकः [५७] सप्तपञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—श्यावाश्व आत्रेयः ॥ देवता—मरुतः ॥ छन्दः—१, ४, ५ जगती; २, ६ विराड्जगती; ३ निचृज्जगती; ७ विराट्त्रिष्टुप्; ८ निचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१-६ निषादः; ७, ८ धैवतः ॥

अथ एकविंशो वर्गः ॥ २१ ॥

आ रुद्रास इन्द्रवन्तः सजोषसो हिरण्यरथाः सुवितायं गन्तन।
इयं वो अस्मत्प्रति हर्यते मतिस्तृष्णजे न दिव उत्सा उद्न्यवे ॥ १ ॥
वाशीमन्त ऋष्टिमन्तो मनीषिणः सुधन्वान इषुमन्तो निषङ्गिणः।
स्वश्वाः स्थ सुरथाः पृश्निमातरः स्वायुधा मरुतो याथना शुभम् ॥ २ ॥
धुनुथ द्यां पर्वतान्दाशुषे वसु नि वो वना जिहते यामनो भिया।
कोपयथ पृथिवीं पृश्निमातरः शुभे यदुग्राः पृषतीरयुग्ध्वम् ॥ ३ ॥
वातत्विषो मरुतो वर्षनिर्णिजो यमाइव सुसदृशः सुपेशसः।
पिशङ्गाश्वा अरुणाश्वा अरेपसः प्रत्वक्षसो महिना द्यौरिवोरवः ॥ ४ ॥
पुरुद्रप्सा अञ्जिमन्तः सुदानवस्त्वेषसंदृशो अनवभ्रराधसः।
सुजातासो जनुषा रुक्मवक्षसो दिवो अर्का अमृतं नाम भेजिरे ॥ ५ ॥

अथ द्वाविंशो वर्गः ॥ २२ ॥

ऋष्टयो वो मरुतो अंसयोरधि सह ओजो बाह्वोर्वो बलं हितम्।
नृम्णा शीर्षस्वायुधा रथेषु वो विश्वा वः श्रीरधि तनूषु पिपिशे ॥ ६ ॥
गोमदश्वावद्रथवत्सुवीरं चन्द्रवद्राधो मरुतो ददा नः।
प्रशंसितं नः कृणुत रुद्रियासो भक्षीय वोऽवसो दैव्यस्य ॥ ७ ॥
हुवे नरो मरुतो मृळता नस्तुवीमघासो अमृता ऋतज्ञाः।
सत्यश्रुतः कवयो युवानो बृहद्गिरयो बृहदुक्षमाणाः ॥ ८ ॥

[५८] अष्टपञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—श्यावाश्व आत्रेयः ॥ देवता—मरुतः ॥ छन्दः—१, ३, ४, ६, ८ निचृत्त्रिष्टुप्; २, ५ त्रिष्टुप्; ७ भुरिक्पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१-६, ८ धैवतः; ७ पञ्चमः ॥

अथ त्रयोविंशो वर्गः ॥ २३ ॥

तमु नूनं तविषीमन्तमेषां स्तुषे गणं मारुतं नव्यसीनाम्।
य आश्वश्वा अमवद्वहन्त उतेशिरे अमृतस्य स्वराजः ॥ १ ॥
त्वेषं गणं तवसं खादिहस्तं धुनिव्रतं मायिनं दातिवारम्।
मयोभुवो ये अमिता महित्वा वन्दस्व विप्र तुविराधसो नॄन् ॥ २ ॥
आ वो यन्तूदवाहासो अद्य वृष्टिं ये विश्वे मरुतो जुनन्ति।
अयं यो अग्निर्मरुतः समिद्ध एतं जुषध्वं कवयो युवानः ॥ ३ ॥
यूयं राजानमिर्यं जनाय विभ्वतष्टं जनयथा यजत्राः।
युष्मदेति मुष्टिहा बाहुजूतो युष्मत्सदश्वो मरुतः सुवीरः ॥ ४ ॥
अराडृवेदचरमा अहेव प्रप्र जायन्ते अकवा महोभिः।
पृश्नेः पुत्रा उपमासो रभिष्ठाः स्वया मत्या मरुतः सं मिमिक्षुः ॥ ५ ॥
यत्प्रायासिष्ट पृषतीभिरश्वैर्वीळुपविभिर्मरुतो रथेभिः।
क्षोदन्त आपो रिणते वनान्यत्रोस्त्रियो वृषभः क्रन्दतु द्यौः ॥ ६ ॥
प्रथिष्ट यामन्पृथिवी चिदेषां भर्तेव गर्भं स्वमिच्छवो धुः।
वातान्ह्यश्वान्धुयीयुयुज्रे वर्षं स्वेदं चक्रिरे रुद्रियासः ॥ ७ ॥
हुवे नरो मरुतो मृळता नस्तुवीमघासो अमृता ऋतज्ञाः।
सत्यश्रुतः कवयो युवानो बृहद्गिरयो बृहदुक्षमाणाः ॥ ८ ॥

[५९] एकोनषष्टीतमं सूक्तम्

ऋषिः—श्यावाश्व आत्रेयः ॥ देवता—मरुतः ॥ छन्दः—१, ४ विराड्जगती; २, ३, ६ निचृज्जगती; ५ जगती; ७ स्वराट्त्रिष्टुप्; ८ निचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१-६ निषादः; ७, ८ धैवतः ॥

अथ चतुर्विंशो वर्गः ॥ २४ ॥

प्र वः स्पळक्रन्त्सुवितायं दावनेऽर्चा दिवे प्र पृथिव्या ऋतं भरे।
उक्षन्ते अश्वान्तरुषन्त आ रजोऽनु स्वं भानुं श्रथयन्ते अर्णवैः ॥ १ ॥
अमादेषां भियसा भूमिरेजति नौर्न पूर्णा क्षरति व्यथिर्यती।
दूरेदृशो ये चितयन्त एमभिरन्तर्महे विदथे येतिरे नरः ॥ २ ॥
गवामिव श्रियसे शृङ्गमुत्तमं सूर्यो न चक्षू रजसो विसर्जने।
अत्यांइव सुभ्वांश्चारवः स्थन मर्यांइव श्रियसे चेतथा नरः ॥ ३ ॥
को वो महान्ति महतामुदश्नवत्स्काव्या मरुतः को ह पौंस्या।
यूयं ह भूमिं किरणं न रेजथ प्र यद्रध्वे सुवितायं दावने ॥ ४ ॥
अश्वांइवेदरुषासः सबन्धवः शूराइव प्रयुधः प्रोत युयुधुः।
मयींइव सुवृधो वावृधुर्नरः सूर्यस्य चक्षुः प्र मिनन्ति वृष्टिभिः ॥ ५ ॥
ते अञ्येष्ठा अकनिष्ठास उद्भिदोऽमध्यमासो महसा वि वावृधुः।
सुजातासो जनुषा पृश्निमातरो दिवो मर्या आ नो अच्छा जिगातन ॥ ६ ॥
वयो न ये श्रेणीः पप्तुरोजसान्तान्दिवो बृहतः सानुनस्परि।
अश्वासः एषामुभये यथा विदुः प्र पर्वतस्य नभनूँरचुच्यवुः ॥ ७ ॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मिमातु द्यौरदितिर्वीतये नः सं दानुचित्रा उषसो यतन्ताम्।
आचुच्यवुर्दिव्यं कोशमेत ऋषे रुद्रस्य मरुतो गृणानाः॥८॥

[६०] षष्टीतमं सूक्तम्

ऋषिः—श्यावाश्व आत्रेयः॥ देवता—मरुतो वाग्निश्च॥ छन्दः—१, ३-५ निचृत् त्रिष्टुप्; २ भुरिक्त्रिष्टुप्; ६ विराट्त्रिष्टुप्; ७, ८ जगती॥ स्वरः—१-६ धैवतः; ७, ८ निषादः॥

अथ पञ्चविंशो वर्गः॥ २५॥

ईळे अग्निं स्ववसं नमोभिरिह प्रसत्तो वि चयत्कृतं नः ।
रथैरिव प्र भरे वाजयद्भिः प्रदक्षिणिन्मरुतां स्तोममृध्याम् ॥१॥
आ ये तस्थुः पृषतीषु श्रुतासु सुखेषु रुद्रा मरुतो रथेषु।
वना चिदुग्रा जिहते नि वो भिया पृथिवी चिद्रेजते पर्वतश्चित्॥२॥
पर्वतश्चिन्महि वृद्धो बिभाय दिवश्चित्सानु रेजत स्वने वः ।
यत्क्रीळथ मरुत ऋष्टिमन्त आपइव स्वध्यञ्चो धवध्वे ॥३॥
वराडुवेद्रैवतासो हिरण्यैरभि स्वधाभिस्तन्वः पिपिश्रे ।
श्रिये श्रेयांसस्तवसो रथेषु सत्रा महांसि चक्रिरे तनूषु ॥४॥
अन्येष्टासो अकनिष्टास एते सं भ्रातरो वावृधुः सौभगाय।
युवा पिता स्वपा रुद्र एषां सुदुघा पृश्निः सुदिना मरुद्भ्यः॥५॥
यदुत्तमे मरुतो मध्यमे वा यद्वावमे सुभगासो दिवि ष्ठ ।
अतो नो रुद्रा उत वा न्वस्याग्ने वित्ताद्धविषो यद्यजाम ॥६॥
अग्निश्च यन्मरुतो विश्ववेदसो दिवो वहध्वे उत्तरादधि ष्णुभिः।
ते मन्दसाना धुनयो रिशादसो वामं धत्त यजमानाय सुन्वते॥७॥
अग्ने मरुद्भिः शुभयद्भिर्ऋक्वभिः सोमं पिब मन्दसानो गणश्रिभिः।
पावकेभिर्विश्वमिन्वेभिरायुभिर्वैश्वानर प्रदिवा केतुना सजूः॥८॥

[६१] एकषष्टीतमं सूक्तम्

ऋषिः—श्यावाश्व आत्रेयः॥ देवता—१-४, ११-१६ मरुतः; ५-८ शशीयसी तरन्तमहिषी; ९ पुरुमीळ्हो वैददश्विः; १० तरन्तो वैददश्विः; १७, १८, १९ रथवीतिर्दाल्भ्यः॥ छन्दः—१-४, ६-८, १०-१९ गायत्री; ५ अनुष्टुप्; ९ सतोबृहती॥ स्वरः—१-४, ६-८, १०-१९ षड्जः; ५ गान्धारः; ९ मध्यमः॥

अथ षड्विंशो वर्गः॥ २६॥

के षा नरः श्रेष्ठतमा य एकएक आयय। परमस्याः परावतः॥१॥
क्व१ वोऽश्वाः क्वा३भीशवः कथं शेक कथा यय। पृष्ठे सदो नसोयमः॥२॥
जघ्ने चोदः एषां वि सक्थानि नरो यमुः। पुत्रकृथे न जनयः॥३॥
परा वीरास एतन मर्यासो भद्रजानयः। अग्नितपो यथासथ॥४॥
सनत्साश्व्यं पशुमुत गव्यं शतावयम् ।
श्यावाश्वस्तुताय या दोर्वीरायोपबर्हत् ॥५॥

अथ सप्तविंशो वर्गः॥ २७॥

उत त्वा स्त्री शशीयसी पुंसो भवति वस्यसी। अदेवत्रादराधसः॥६॥
वि या जानाति जसुरिं वि तृष्यन्तं वि कामिनम्। देवत्रा कृणुते मनः॥७॥
उत घा नेमो अस्तुतः पुमाँ इति ब्रुवे पणिः। स वैरदेय इत्समः॥८॥
उत मेऽरपद्युवतिर्ममन्दुषी प्रति श्यावाय वर्तनिम्।
वि रोहिता पुरुमीळ्हाय येमतुर्विप्राय दीर्घयशसे॥९॥
यो मे धेनूनां शतं वैददश्विर्यथा ददत्। तरन्तइव मंहना॥१०॥

अथ अष्टाविंशो वर्गः॥ २८॥

य ईं वहन्त आशुभिः पिबन्तो मदिरं मधु। अत्र श्रवांसि दधिरे॥११॥
येषां श्रियाधि रोदसी विभ्राजन्ते रथेष्वा। दिवि रुक्मइवोपरि॥१२॥
युवा स मारुतो गणस्त्वेषरथो अनेद्यः। शुभंयावाप्रतिष्कुतः॥१३॥
को वेद नूनमेषां यत्रा मदन्ति धूतयः। ऋतजाता अरेपसः॥१४॥
यूयं मतीर्विपन्यवः प्रणेतारः स्तथा धिया। श्रोतारो यामहूतिषु॥१५॥

अथ एकोनत्रिंशो वर्गः॥ २९॥

ते नो वसूनि काम्या पुरुश्चन्द्रा रिशादसः। आ यज्ञियासो ववृत्तन॥१६॥
एतं मे स्तोममूर्म्ये दाभ्याय परा वह। गिरो देवि रथीरिव॥१७॥
उत मे वोचतादिति सुतसोमे रथवीतौ। न कामो अप वेति मे॥१८॥
एष क्षेति रथवीतिर्मघवा गोमतीरनु। पर्वतेष्वपश्रितः॥१९॥

[६२] द्विषष्टीतमं सूक्तम्

ऋषिः—श्रुतिविदात्रेयः॥ देवता—मित्रावरुणौ॥ छन्दः—१, २ त्रिष्टुप्; ३-६ निचृत्त्रिष्टुप्; ७-९ विराट्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः॥

अथ त्रिंशो वर्गः॥ ३०॥

ऋतेन ऋतमपिहितं ध्रुवं वां सूर्यस्य यत्र विमुचन्त्यश्वान्।
दश शता सह तस्थुस्तदेकं देवानां श्रेष्ठं वपुषामपश्यम्॥१॥
तत्सु वां मित्रावरुणा महित्वमीर्मा तस्थुषीरहभिर्दुदुह्रे।
विश्वाः पिन्वथः स्वसरस्य धेना अनु वामेकः पविरा ववर्त॥२॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अधारयतं पृथिवीमुत द्यां मित्रराजाना वरुणा महोभिः।
वर्धयतमोषधीः पिन्वतं गा अव वृष्टिं सृजतं जीरदानू॥ ३॥
आ वामश्वासः सुयुजो वहन्तु यतरश्मय उप यन्त्ववाक्।
घृतस्य निर्णिगनु वर्तते वामुप सिन्धवः प्रदिवि क्षरन्ति॥ ४॥
अनु श्रुतामतिं वर्धदुर्वीं बर्हिरिव यजुषा रक्षमाणा।
नमस्वन्ता धृतदक्षाधि गर्ते मित्रासाथे वरुणेळास्वन्तः॥ ५॥

अथ एकत्रिंशो वर्गः॥ ३१॥

अक्रेविहस्ता सुकृते परस्या यं त्रासाथे वरुणेळास्वन्तः।
राजाना क्षत्रमहृणीयमाना सहस्त्रस्थूणं बिभृथः सह द्वौ॥ ६॥
हिरण्यनिर्णिगयो अस्य स्थूणा वि भ्राजते दिव्याश्वाजनीव।
भद्रे क्षेत्रे निमिता तिल्विले वा सनेम मध्वो अधिगर्त्यस्य॥ ७॥
हिरण्यरूपमुषसो व्युष्टावयःस्थूणमुदिता सूर्यस्य।
आ रोहथो वरुण मित्र गर्तमतश्चक्षाथे अदितिं दितिं च॥ ८॥
यद्वंहिष्ठं नातिविधे सुदानू अच्छिद्रं शर्म भुवनस्य गोपा।
तेन नो मित्रावरुणावविष्टं सिषासन्तो जिगीवांसः स्याम॥ ९॥

इति चतुर्थाष्टके तृतीयोऽध्यायः॥

अथ चतुर्थोऽध्यायः

[६३] त्रिषष्टीतमं सूक्तम्

ऋषिः—अर्चनाना आत्रेयः॥ देवता—मित्रावरुणौ॥ छन्दः—१, २, ४, ७ निचृज्जगती; ३, ५, ६ जगती॥ स्वरः—निषादः॥

अथ प्रथमो वर्गः॥ १॥

ऋतस्य गोपावधि तिष्ठथो रथं सत्यधर्माणा परमे व्योमनि।
यमत्र मित्रावरुणावथो युवं तस्मै वृष्टिर्मधुमत्पिन्वते दिवः॥ १॥
सम्राजावस्य भुवनस्य राजथो मित्रावरुणा विदथे स्वर्दृशा।
वृष्टिं वां राधो अमृतत्वमीमहे द्यावापृथिवी वि चरन्ति तन्यवः॥ २॥
सम्राजा उग्रा वृषभा दिवस्पती पृथिव्या मित्रावरुणा विचर्षणी।
चित्रेभिरभ्रैरुप तिष्ठथो रवं द्यां वर्षयथो असुरस्य मायया॥ ३॥
माया वां मित्रावरुणा दिवि श्रिता सूर्यो ज्योतिश्चरति चित्रमायुधम्।
तमभ्रेण वृष्ट्या गूहथो दिवि पर्जन्य द्रप्सा मधुमन्त ईरते॥ ४॥
रथं युञ्जते मरुतः शुभे सुखं शूरो न मित्रावरुणा गविष्टिषु।
रजांसि चित्रा वि चरन्ति तन्यवो दिवः सम्राजा पयसा न उक्षतम्॥ ५॥
वाचं सु मित्रावरुणाविरावतीं पर्जन्यश्चित्रां ववदति त्विषीमतीम्।
अभ्रा वसत मरुतः सु मायया द्यां वर्षयतमरुणामरेपसम्॥ ६॥
धर्मणा मित्रावरुणा विपश्चिता व्रता रक्षेथे असुरस्य मायया।
ऋतेन विश्वं भुवनं वि राजथः सूर्यमा धत्थो दिवि चित्र्यं रथम्॥ ७॥

[६४] चतुःषष्टीतमं सूक्तम्

ऋषिः—अर्चनाना आत्रेयः॥ देवता—मित्रावरुणौ॥ छन्दः—१, २ विराडनुष्टुप्; ३, ५ भुरिगुष्णिक्; ४ उष्णिक्; ६ निचृदनुष्टुप्; ७ निचृत्पङ्क्तिः॥ स्वरः—१, २, ६ गान्धारः; ३-५ ऋषभः; ७ पञ्चमः॥

अथ द्वितीयो वर्गः॥ २॥

वरुणं वो रिशादसमृचा मित्रं हवामहे।
परि व्रजेव बाह्वोर्जगन्वांसा स्वर्णरम्॥ १॥
ता बाहवा सुचेतुना प्र यन्तमस्मा अर्चते।
शेवं हि जारयो वां विश्वासु क्षासु जोगुवे॥ २॥
यन्नूनमश्यां गतिं मित्रस्य यायां पथा।
अस्य प्रियस्य शर्मण्यहिंसानस्य सश्चिरे॥ ३॥
युवाभ्यां मित्रावरुणोपमं धेयामृचा।
यद्ध क्षयै मघोनां स्तोतृणां च स्पूर्धसे॥ ४॥
आ नो मित्र सुदीतिभिर्वरुणश्च सधस्थ आ।
स्वे क्षयै मघोनां सखीनां च वृधसे॥ ५॥
युवं नो येषु वरुण क्षत्रं बृहच्च बिभृथः।
उरु णो वाजसातये कृतं राये स्वस्तये॥ ६॥
उच्छन्त्यां मे यजता देवक्षत्रे रुशद्गवि।
सुतं सोमं न हस्तिभिरा पड्भिर्धावतं नरा बिभ्रतावर्चनानसम्॥ ७॥

[६५] पञ्चषष्टीतमं सूक्तम्

ऋषिः—रातहव्य आत्रेयः॥ देवता—मित्रावरुणौ॥ छन्दः—१, ४ अनुष्टुप्; २ निचृदनुष्टुप्; ३ स्वराडुष्णिक्; ५ भुरिगुष्णिक्; ६ विराट्पङ्क्तिः॥ स्वरः—१, २, ४ गान्धारः; ३, ५ ऋषभः; ६ पञ्चमः॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अथ तृतीयो वर्गः ॥ ३ ॥

यश्चिकेत स सुक्रतुर्देवत्रा स ब्रवीतु नः ।
वरुणो यस्य दर्शतो मित्रो वा वनते गिरः ॥ १ ॥
ता हि श्रेष्ठवर्चसा राजाना दीर्घश्रुत्तमा ।
ता सत्पती ऋतावृधर्ऋतावानाा जनेजने ॥ २ ॥
ता वामियानोऽवसे पूर्वा उप ब्रुवे सचा ।
स्वश्वासः सु चेतुना वाजाँ अभि प्रदावने ॥ ३ ॥
मित्रो अंहोश्चिदादुरु क्षयाय गातुं वनते ।
मित्रस्य हि प्रतूर्वतः सुमतिरस्ति विधतः ॥ ४ ॥
वयं मित्रस्यावसि स्याम सप्रथस्तमे ।
अनेहसस्त्वोतयः सत्रा वरुणशेषसः ॥ ५ ॥
युवं मित्रेमं जनं यतथः सं च नयथः ।
मा मघोनः परि ख्यतं मो अस्माकमृषीणां गोपीथे न उरुष्यतम् ॥ ६ ॥

[६६] षट्षष्टीतमं सूक्तम्

ऋषिः—रातहव्य आत्रेयः ॥ देवता—मित्रावरुणौ ॥ छन्दः—१, ५, ६ विराडनुष्टुप्; २ निचृदनुष्टुप्; ३, ४ स्वराडनुष्टुप् ॥ स्वरः—गान्धारः ॥

अथ चतुर्थो वर्गः ॥ ४ ॥

आ चिकितान सुक्रतू देवौ मर्त रिशादसा ।
वरुणाय ऋतपेशसे दधीत प्रयसे महे ॥ १ ॥
ता हि क्षत्रमविह्रुतं सम्यग्सुर्यंमाशाते ।
अधं व्रतेव मानुषं स्वर्णं धायि दर्शतम् ॥ २ ॥
ता वामेषे रथानामुर्वीं गव्यूतिमेषाम् ।
रातहव्यस्य सुष्टुतिं दधृक्स्तोमैर्मनामहे ॥ ३ ॥
अधा हि काव्या युवं दक्षस्य पूर्भिरद्भुता ।
नि केतुना जनानां चिकेथे पूतदक्षसा ॥ ४ ॥
तदूतं पृथिवि बृहच्छ्रव एष ऋषीणाम् ।
त्रयसानावरं पृथ्वतिं क्षरन्ति यामभिः ॥ ५ ॥
आ यद्वामीयचक्षसा मित्र वयं च सूरयः ।
व्यचिष्ठे बहुपाय्ये यतेमहि स्वराज्ये ॥ ६ ॥

[६७] सप्तषष्टीतमं सूक्तम्

ऋषिः—यजत आत्रेयः ॥ देवता—मित्रावरुणौ ॥ छन्दः—१, २, ४ निचृदनुष्टुप्; ३, ५ विराडनुष्टुप् ॥ स्वरः—गान्धारः ॥

अथ पञ्चमो वर्गः ॥ ५ ॥

बळित्था देव निष्कृतमादित्या यजतं बृहत् ।
वरुण मित्रार्यमन्वर्षिष्ठं क्षत्रमाशाथे ॥ १ ॥
आ यद्योनिं हिरण्ययं वरुण मित्र सदथः ।
धर्तारा चर्षणीनां यन्तं सुम्नं रिशादसा ॥ २ ॥
विश्वे हि विश्ववेदसो वरुणो मित्रो अर्यमा ।
व्रता पदेव सश्चिरे पान्ति मर्त्यं रिषः ॥ ३ ॥
ते हि सत्या ऋतस्पृश ऋतावानो जनेजने ।
सुनीथासः सुदानवोंऽहोश्चिदुरुचक्रयः ॥ ४ ॥
को नु वां मित्रास्तुतो वरुणो वा तनूनाम् ।
तत्सु वामेषते मतिरत्रिभ्य एषते मतिः ॥ ५ ॥

[६८] अष्टषष्टीतमं सूक्तम्

ऋषिः—यजत आत्रेयः ॥ देवता—मित्रावरुणौ ॥ छन्दः—१, २ गायत्री; ३, ४ निचृद्गायत्री; ५ विराड्गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथ षष्ठो वर्गः ॥ ६ ॥

प्र वो मित्रायं गायत वरुणाय विपा गिरा । महिक्षत्रावृतं बृहत् ॥ १ ॥
सम्राजा या घृतयोनी मित्रश्चोभा वरुणश्च । देवा देवेषु प्रशस्ता ॥ २ ॥
ता नः शक्तं पार्थिवस्य महो रायो दिव्यस्य । महि वां क्षत्रं देवेषु ॥ ३ ॥
ऋतमृतेन सपन्तेषिरं दक्षमाशाते । अद्रुहा देवौ वर्धेते ॥ ४ ॥
वृष्टिद्यावा रीत्यापेषस्पती दानुमत्याः । बृहन्तं गर्तमाशाते ॥ ५ ॥

[६९] एकोनसप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—उरुचक्रिरात्रेयः ॥ देवता—मित्रावरुणौ ॥ छन्दः—१, २ निचृत्त्रिष्टुप्; ३, ४ विराट्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

अथ सप्तमो वर्गः ॥ ७ ॥

त्री रोचना वरुण त्रींरुत द्यून्त्रीणि मित्र धारयथो रजांसि ।
वावृधानावमतिं क्षत्रियस्यानु व्रतं रक्षमाणावजुर्यम् ॥ १ ॥
इरावतीर्वरुण धेनवो वां मधुमद्वां सिन्धवो मित्र दुहे ।
त्रयस्तस्थुर्वृषभासस्तिसृणां धिषणानां रेतोधा वि द्युमन्तः ॥ २ ॥
प्रातर्दुवीमदितिं जोहवीमि मध्यन्दिनं उदिता सूर्यस्य ।
राये मित्रावरुणा सर्वतातेळे तोकाय तनयाय शं योः ॥ ३ ॥
या धर्तारा रजसो रोचनस्योतादित्या दिव्या पार्थिवस्य ।
न वां देवा अमृता आ मिनन्ति व्रतानि मित्रावरुणा ध्रुवाणि ॥ ४ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

[७०] सप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—उरुचक्रिरात्रेयः ॥ देवता—मित्रावरुणौ ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथ अष्टमो वर्गः ॥ ८ ॥

पुरूरुणा चिद्ध्यस्त्यवो नूनं वां वरुण। मित्र वंसि वां सुमतिम् ॥ १ ॥
ता वां सम्यगद्रुह्वाणेषमश्याम धायसे। वयं ते रुद्रा स्याम ॥ २ ॥
पातं नो रुद्रा पायुभिरुत त्रायेथां सुत्रात्रा। तुर्याम दस्यून्तनूभिः ॥ ३ ॥
मा कस्याद्भुतक्रतू यक्षं भुजेमा तनूभिः। मा शेषसा मा तनसा ॥ ४ ॥

[७१] एकसप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—बाहुवृक्त आत्रेयः ॥ देवता—मित्रावरुणौ ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथ नवमो वर्गः ॥ ९ ॥

आ नो गन्तं रिशादसा वरुण मित्र बर्हणा। उपेमं चारुमध्वरम् ॥ १ ॥
विश्वस्य हि प्रचेतसा वरुण मित्र राजथः। ईशाना पिप्यतं धियः ॥ २ ॥
उप नः सुतमा गतं वरुण मित्र दाशुषः। अस्य सोमस्य पीतये ॥ ३ ॥

[७२] द्विसप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—बाहुवृक्त आत्रेयः ॥ देवता—मित्रावरुणौ ॥ छन्दः—उष्णिक् ॥ स्वरः—ऋषभः ॥

अथ दशमो वर्गः ॥ १० ॥

आ मित्रे वरुणे वयं गीर्भिर्जुहुमो अत्रिवत्। नि बर्हिषि सदतं सोमपीतये ॥ १ ॥
व्रतेन स्थो ध्रुवक्षेमा धर्मणा यातयज्जना। नि बर्हिषि सदतं सोमपीतये ॥ २ ॥
मित्रश्च नो वरुणश्च जुषेतां यज्ञमिष्टये। नि बर्हिषि सदतां सोमपीतये ॥ ३ ॥

षष्ठोऽनुवाकः [७३] त्रिसप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—पौर आत्रेयः ॥ देवता—अश्विनौ ॥ छन्दः—१, २, ४, ५, ७ निचृदनुष्टुप्; ३, ६, ८, ९ अनुष्टुप्; १० विराडनुष्टुप् ॥ स्वरः—गान्धारः ॥

अथ एकादशो वर्गः ॥ ११ ॥

यदद्य स्थः परावति यदर्वावत्यश्विना । यद्वा पुरू पुरुभुजा यदन्तरिक्ष आ गतम् ॥ १ ॥
इह त्या पुरुभूतमा पुरू दंसांसि बिभ्रता । वरस्या याम्यध्रिगू हुवे तुविष्टमा भुजे ॥ २ ॥
ईर्मान्यद्वपुषे वपुश्चक्रं रथस्य येमथुः । पर्यन्या नाहुषा युगा मह्ना रजांसि दीयथः ॥ ३ ॥
तदू षु वामेना कृतं विश्वा यद्वामनु ष्टवे । नाना जातावरेपसा समस्मे बन्धुमेयथुः ॥ ४ ॥

आ यद्वां सूर्या रथं तिष्ठद्रघुष्यदं सदा । परि वामरुषा वयो घृणा वरन्त आतपः ॥ ५ ॥

अथ द्वादशो वर्गः ॥ १२ ॥

युवोरत्रिश्चिकेतति नरा सुम्नेन चेतसा । घर्मं यद्वामरेपसं नासत्यास्ना भुरण्यति ॥ ६ ॥
उग्रो वां ककुहो ययिः शृण्वे यामेषु संतनिः । यद्वां दंसोभिरश्विनात्रिर्नराववर्तति ॥ ७ ॥
मध्व ऊ षु मधूयुवा रुद्रा सिषक्ति पिप्युषी । यत्समुद्राति पर्षथः पुक्षाः पृक्षो भरन्त वाम् ॥ ८ ॥
सत्यमिद्वा उ अश्विना युवामाहुर्मयोभुवा । ता यामन्यामहूतमा यामन्ना मृळयत्तमा ॥ ९ ॥
इमा ब्रह्माणि वर्धनाश्विभ्यां सन्तु शंतमा । या तक्षाम रथाँइवावोचाम बृहन्नमः ॥ १० ॥

[७४] चतुःसप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—पौर आत्रेयः ॥ देवता—अश्विनौ ॥ छन्दः—१, २, १० विराडनुष्टुप्; ३ अनुष्टुप्; ४-६, ९, निचृदनुष्टुप्; ७ विराडुष्णिक्; ८ निचृदुष्णिक् ॥ स्वरः—१-६, ९, १० गान्धारः; ७, ८ ऋषभः ॥

अथ त्रयोदशो वर्गः ॥ १३ ॥

कूष्ठो देवावश्विनाद्या दिवो मनावसू । तच्छ्रेष्ठवथो वृषण्वसू अत्रिर्वामा विवासति ॥ १ ॥
कुह त्या कुह नु श्रुता दिवि देवा नासत्या । कस्मिन्ना यतथो जने को वां नदीनां सचा ॥ २ ॥
कं यातः कं ह गच्छथः कमच्छा युञ्जाथे रथम् । कस्य ब्रह्माणि रण्यथो वयं वामुश्मसीष्टये ॥ ३ ॥
पौरं चिद्ध्युदप्रुतं पौरं पौराय जिन्वथः । यदीं गृभीततातये सिंहमिव द्रुहस्पदे ॥ ४ ॥
प्र च्यवानाज्जुजुरुषो वव्रिमत्कं न मुञ्चथः । युवा यदीं कृथः पुनरा कामंमृण्वे वध्वः ॥ ५ ॥

अथ चतुर्दशो वर्गः ॥ १४ ॥

आस्ते हि वामिह स्तोता स्मसि वां संदृशि श्रिये । नू श्रुतं म आ गतमवोभिर्वाजिनीवसू ॥ ६ ॥

CC-0,Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

को वामद्य पुरूणामा वव्ने मर्त्यानाम् ।
को विप्रो विप्रवाहसा को यज्ञैर्वाजिनीवसू ॥ ७ ॥
आ वां रथो रथानां येष्ठो यात्वश्विना ।
पुरू चिदस्मयुस्तिर आङ्गूषो मर्त्येष्वा ॥ ८ ॥
शमू षु वां मधूयुवास्माकमस्तु चकृतिः ।
अर्वाचीना विचेतसा विभिः श्येनेव दीयतम् ॥ ९ ॥
अश्विना यद्ध कर्हि चिच्छ्रुष्टिं यातमिमं हवम् ।
वस्वीरू षु वां भुजः पृञ्चन्ति सु वां पृचः ॥ १० ॥

[७५] पञ्चसप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—अवस्युरात्रेयः ॥ देवता—अश्विनौ ॥ छन्दः—१,३ पङ्क्तिः; २, ४, ६-८ निचृत्पङ्क्तिः; ५ स्वराट्पङ्क्तिः; ९ विराट्पङ्क्तिः ॥ स्वरः—पञ्चमः ॥

अथ पञ्चदशो वर्गः ॥ १५ ॥

प्रति प्रियतमं रथं वृषणं वसुवाहनम् ।
स्तोता वामश्विनावृषिः स्तोमेन प्रति भूषति माध्वी मम श्रुतं हवम् ॥ १ ॥
अत्यायातमश्विना तिरो विश्वा अहं सना ।
दस्रा हिरण्यवर्तनी सुषुम्ना सिन्धुवाहसा माध्वी मम श्रुतं हवम् ॥ २ ॥
आ नो रत्नानि बिभ्रतावश्विना गच्छतं युवम् ।
रुद्रा हिरण्यवर्तनी जुषाणा वाजिनीवसू माध्वी मम श्रुतं हवम् ॥ ३ ॥
सुष्टुभौ वां वृषण्वसू रथे वाणीच्याहिता ।
उत वां ककुहो मृगः पृक्षः कृणोति वापुषो माध्वी मम श्रुतं हवम् ॥ ४ ॥
बोधिन्मनसा रथ्येषिरा हवनश्रुता ।
विभिश्च्यवानमश्विना नि याथो अद्वयाविनं माध्वी मम श्रुतं हवम् ॥ ५ ॥

अथ षोडशो वर्गः ॥ १६ ॥

आ वां नरा मनोयुजोऽश्वासः प्रुषितप्सवः ।
वयो वहन्तु पीतये सह सुम्नेभिरश्विना माध्वी मम श्रुतं हवम् ॥ ६ ॥
अश्विनावेह गच्छतं नासत्या मा वि वेनतम् ।
तिरश्चिदर्यया परि वर्तिर्यातमदाभ्या माध्वी मम श्रुतं हवम् ॥ ७ ॥
अस्मिन्यज्ञे अदाभ्या जरितारं शुभस्पती ।
अवस्युमश्विना युवं गृणन्तमुप भूषथो माध्वी मम श्रुतं हवम् ॥ ८ ॥
अभूदुषा रुशत्पशुराग्निरधाय्यृत्वियः ।
अयोजि वां वृषण्वसू रथो दस्रावमर्त्यो माध्वी मम श्रुतं हवम् ॥ ९ ॥

पञ्चमं मण्डलम्

[७६] षट्सप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—अत्रिः ॥ देवता—अश्विनौ ॥ छन्दः—१,२ स्वराट्पङ्क्तिः; ३-५ निचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१, २ पञ्चमः; ३-५ धैवतः ॥

अथ सप्तदशो वर्गः ॥ १७ ॥

आ भात्यग्निरुषसामनीकमुद्विप्राणां देवया वाचो अस्थुः ।
अर्वाञ्चा नूनं रथ्येह यातं पीपिवांसमश्विना घर्ममच्छ ॥ १ ॥
न संस्कृतं प्र मिमीतो गमिष्ठान्ति नूनमश्विनोपस्तुतेह ।
दिवाभिपित्वेऽवसागमिष्ठा प्रत्यवर्तिं दाशुषे शंभविष्ठा ॥ २ ॥
उता यातं संगवे प्रातरह्नो मध्यन्दिन उदिता सूर्यस्य ।
दिवा नक्तमवसा शंतमेन नेदानीं पीतिरश्विना ततान ॥ ३ ॥
इदं हि वां प्रदिवि स्थानमोक इमे गृहा अश्विनेदं दुरोणम् ।
आ नो दिवो बृहतः पर्वतादाद्भ्यो यातमिषमूर्जं वहन्ता ॥ ४ ॥
समश्विनोरवसा नूतनेन मयोभुवा सुप्रणीती गमेम ।
आ नो रयिं वहतमोत वीराना विश्वान्यमृता सौभगानि ॥ ५ ॥

[७७] सप्तसप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—अत्रिः ॥ देवता—अश्विनौ ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

अथ अष्टादशो वर्गः ॥ १८ ॥

प्रातर्यावाणा प्रथमा यजध्वं पुरा गृध्रादररुषः पिबातः ।
प्रातर्हि यज्ञमश्विना दधाते प्र शंसन्ति कवयः पूर्वभाजः ॥ १ ॥
प्रातर्यजध्वमश्विना हिनोत न सायमस्ति देवया अजुष्टम् ।
उतान्यो अस्मद्यजते वि चावः पूर्वःपूर्वो यजमानो वनीयान् ॥ २ ॥
हिरण्यत्वङ्मधुवर्णो घृतस्नुः पृक्षो वहन्ना रथो वर्तते वाम् ।
मनोजवा अश्विना वातरंहा येनातियाथो दुरितानि विश्वा ॥ ३ ॥
यो भूयिष्ठं नासत्याभ्यां विवेष चनिष्ठं पित्वो ररते विभागे ।
स तोकमस्य पीपरच्छमीभिरनूर्ध्वभासः सदमित्तुतुर्यात् ॥ ४ ॥
समश्विनोरवसा नूतनेन मयोभुवा सुप्रणीती गमेम ।
आ नो रयिं वहतमोत वीराना विश्वान्यमृता सौभगानि ॥ ५ ॥

[७८] अष्टसप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—सप्तवधिरात्रेयः ॥ देवता—अश्विनौ ॥ छन्दः—१-३ उष्णिक्; ४ निचृत्त्रिष्टुप्; ५, ६ अनुष्टुप्; ७-९ निचृदनुष्टुप् ॥ स्वरः—१-३ ऋषभः; ४ धैवतः; ५-९ गान्धारः ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अथ एकोनविंशो वर्गः ॥ १९ ॥

अश्विना॒वेह ग॑च्छतं॒ नास॑त्या॒ मा वि वे॑नतम्। हं॒सावि॑व पतत॒मा सु॒ताँ उप॑ ॥ १ ॥
अश्वि॑ना ह॒रि॒णावि॑व गौ॒रावि॒वानु॒ यव॑सम्। हं॒सावि॑व पतत॒मा सु॒ताँ उप॑ ॥ २ ॥
अश्वि॑ना वाजिनीवसू जु॒षेथां॑ य॒ज्ञमि॒ष्टये॑। हं॒सावि॑व पतत॒मा सु॒ताँ उप॑ ॥ ३ ॥
अत्रि॒र्यद्वा॑मव॒रोह॑न्नृ॒बीस॒मजो॑हवी॒न्नाध॑मानेव॒ योषा॑ ।
श्ये॒नस्य॑ चि॒ज्जव॑सा॒ नूत॑ने॒नाग॑च्छतमश्विना॒ शंत॑मेन ॥ ४ ॥

अथ विंशो वर्गः ॥ २० ॥

वि जि॑हीष्व वनस्पते॒ योनिः॒ सूष्य॑न्त्याइव ।
श्रु॒तं मे॑ अश्विना॒ हवं॑ स॒प्तव॑ध्रिं च मुञ्चतम् ॥ ५ ॥
भी॒ताय॒ नाध॑मानाय॒ ऋष॑ये स॒प्तव॑ध्रये ।
मा॒याभि॑रश्विना यु॒वं वृ॒क्षं सं च॒ वि चा॑चथः ॥ ६ ॥
यथा॒ वातः॑ पुष्क॒रिणीं॑ समि॒ङ्गय॑ति स॒र्वतः॑ ।
ए॒वा ते॒ गर्भ॑ एजतु नि॒रैतु॒ दश॑मास्यः ॥ ७ ॥
यथा॒ वातो॒ यथा॒ वनं॒ यथा॑ समु॒द्र एज॑ति ।
ए॒वा त्वं द॑शमास्य स॒हावे॑हि ज॒रायु॑णा ॥ ८ ॥
दश॒ मासा॑ञ्छशया॒नः कु॑मा॒रो अधि॑ मा॒तरि॑ ।
नि॒रैतु॑ जीवो अक्ष॑तो जी॒वो जीव॑न्त्या॒ अधि॑ ॥ ९ ॥

[७९] एकोनाशीतितमं सूक्तम्

ऋषिः—सत्यश्रवा आत्रेयः ॥ देवता—उषाः ॥ छन्दः—१ स्वराड्ब्राह्मीगायत्री; २, ३, ७ भुरिग्बृहती; ४, ५, ८ पङ्क्तिः; ६, ९ निचृत्पङ्क्तिः; १० स्वराड्बृहती ॥ स्वरः—१ षड्जः; २, ३, ७, १० मध्यमः; ४-६, ८, ९ पञ्चमः ॥

अथ एकविंशो वर्गः ॥ २१ ॥

म॒हे नो॑ अ॒द्य बो॑ध॒योषो॑ रा॒ये दि॒वित्म॑ती ।
यथा॑ चिन्नो॒ अबो॑धयः स॒त्यश्र॑वसि वा॒य्ये सुजा॑ते॒ अश्व॑सूनृते ॥ १ ॥
या सु॑नी॒थे शौ॑चद्र॒थे व्यौच्छो॑ दुहितर्दिवः ।
सा व्यु॑च्छ॒ सही॑यसि स॒त्यश्र॑वसि वा॒य्ये सुजा॑ते॒ अश्व॑सूनृते ॥ २ ॥
सा नो॑ अ॒द्याभ॒रद्व॑सु॒र्व्यु॑च्छा दुहितर्दिवः ।
यो व्यौच्छः॒ सही॑यसि स॒त्यश्र॑वसि वा॒य्ये सुजा॑ते॒ अश्व॑सूनृते ॥ ३ ॥
अ॒भि ये त्वा॑ विभावरि॒ स्तोमै॑र्गृ॒णन्ति॒ वह्न॑यः ।
म॒घैर्म॑घोनि सु॒श्रियो॒ दाम॑न्वन्तः सुरा॒तयः॒ सुजा॑ते॒ अश्व॑सूनृते ॥ ४ ॥
यच्चि॒द्धि ते॑ ग॒णा इ॒मे छ॒दय॑न्ति म॒घत्त॑ये ।
परि॑ चि॒द्वष्ट॑यो दधु॒र्दद॑तो॒ राधो॒ अह्र॑यं॒ सुजा॑ते॒ अश्व॑सूनृते ॥ ५ ॥

अथ द्वाविंशो वर्गः ॥ २२ ॥

ऐषु॑ धा वी॒रव॒द्यश॒ उषो॑ मघोनि सू॒रिषु॑ ।
ये नो॒ राधां॒स्यह्र॑या म॒घवा॑नो॒ अरा॑सत॒ सुजा॑ते॒ अश्व॑सूनृते ॥ ६ ॥
तेभ्यो॑ द्यु॒म्नं बृ॒हद्यश॒ उषो॑ मघो॒न्या व॑ह ।
ये नो॒ राधां॒स्यश्व्या॑ ग॒व्या भज॑न्त सू॒रयः॒ सुजा॑ते॒ अश्व॑सूनृते ॥ ७ ॥
उ॒त नो॒ गोम॑ती॒रिष॒ आ व॑हा दुहितर्दिवः ।
सा॒कं सूर्य॑स्य र॒श्मिभिः॑ शु॒क्रैः शोच॑द्भिर॒र्चिभिः॒ सुजा॑ते॒ अश्व॑सूनृते ॥ ८ ॥
व्यु॑च्छा दुहितर्दिवो॒ मा चि॒रं त॑नुथा॒ अपः॑ ।
नेत्त्वा॑ स्ते॒नं यथा॑ रि॒पुं तपा॑ति॒ सूरो॑ अ॒र्चिषा॒ सुजा॑ते॒ अश्व॑सूनृते ॥ ९ ॥
ए॒ताव॒द्वेदु॑ष॒स्त्वं भूयो॑ वा॒ दातु॑मर्हसि ।
या स्तो॒तृभ्यो॑ विभावर्यु॒च्छन्ती॒ न प्र॒मीय॑से॒ सुजा॑ते॒ अश्व॑सूनृते ॥ १० ॥

[८०] अशीतितमं सूक्तम्

ऋषिः—सत्यश्रवा आत्रेयः ॥ देवता—उषाः ॥ छन्दः—१, ६ निचृत्त्रिष्टुप्; २ विराट्त्रिष्टुप्; ३-५ भुरिक्पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१, २, ६, धैवतः; ३-५ पञ्चमः ॥

अथ त्रयोविंशो वर्गः ॥ २३ ॥

द्यु॒तद्या॑मानं बृह॒तीमृ॒तेन॑ ऋ॒ताव॑रीमरु॒णप्सुं॑ विभा॒तीम्।
दे॒वीमु॒षसं॒ स्व॑रा॒वह॑न्तीं॒ प्रति॒ विप्रा॑सो म॒तिभि॑र्जरन्ते ॥ १ ॥
ए॒षा जनं॑ दर्श॒ता बो॒धय॑न्ती सु॒गान्प॒थः कृ॑ण्व॒ती या॒त्यग्रे॑।
बृ॒ह॒द्र॒था बृ॑ह॒ती वि॑श्वमि॒न्वोषा ज्योति॑र्यच्छ॒त्यग्रे॒ अह्ना॑म् ॥ २ ॥
ए॒षा गोभि॑ररु॒णेभि॑र्युजा॒नास्त्रे॑धन्ती र॒यिमप्रा॑यु चक्रे।
प॒थो रद॑न्ती सुवि॒ताय॑ दे॒वी पु॑रुष्टु॒ता वि॒श्ववा॑रा॒ वि भा॑ति ॥ ३ ॥
ए॒षा व्ये॑नी भवति द्वि॒बर्ही॑ आविष्कृण्वा॒ना त॒न्वं॑ पु॒रस्ता॑त्।
ऋ॒तस्य॒ पन्था॒मन्वे॑ति सा॒धु प्र॑जान॒तीव॒ न दिशो॑ मिनाति ॥ ४ ॥
ए॒षा शु॒भ्रा न त॒न्वो॑ विदा॒नोर्ध्वेव॑ स्ना॒ती दृ॒शये॑ नो अस्थात्।
अप॒ द्वेषो॒ बाध॑माना॒ तमां॑स्यु॒षा दि॒वो दु॑हि॒ता ज्योति॒षागा॑त् ॥ ५ ॥
ए॒षा प्र॑ती॒ची दु॑हि॒ता दि॒वो नॄन्योषे॑व भ॒द्रा नि रि॑णीते॒ अप्सः॑।
व्यू॒र्ण्व॒ती दा॒शुषे॒ वार्या॑णि॒ पुन॒र्ज्योति॑र्यु॒वतिः॒ पू॒र्वथा॑कः ॥ ६ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

[८१] एकाशीतितमं सूक्तम्

ऋषिः—श्यावाश्व आत्रेयः ॥ देवता—सविता ॥ छन्दः—१, ५ जगती; २ विराड्जगती; ३ स्वराट्त्रिष्टुप्; ४ निचृज्जगती ॥ स्वरः—१, २, ४, ५ निषादः; ३ धैवतः ॥

अथ चतुर्विंशो वर्गः ॥ २४ ॥

युञ्जते मन॑ उत॒ युञ्ज॑ते धियो॒ विप्रा॒ विप्र॑स्य बृह॒तो वि॑पश्चितः।
वि होत्रा॑ दधे वयुना॒विदेक॒ इन्म॒ही दे॒वस्य॑ सवि॒तुः परि॑ष्टुतिः ॥ १ ॥
विश्वा॑ रू॒पाणि॒ प्रति॑ मुञ्चते क॒विः प्रासा॑वीद्भ॒द्रं द्वि॒पदे॒ चतु॑ष्पदे।
वि नाक॑मख्यत्सवि॒ता वरे॑ण्योऽनु॑ प्र॒याण॑मुषसो॒ वि रा॑जति ॥ २ ॥
यस्य॑ प्र॒याण॒मन्वन्य इद्ययु॒र्देवा॑ दे॒वस्य॑ महि॒मान॒मोज॑सा ।
यः पार्थि॑वानि विम॒मे स एत॑शो॒ रजां॑सि दे॒वः स॑वि॒ता म॑हित्व॒ना ॥ ३ ॥
उ॒त या॑सि सवित॒स्त्रीणि॑ रोच॒नोत सूर्य॑स्य र॒श्मिभिः॑ समु॒च्यसि।
उ॒त रात्री॑मुभ॒यतः॒ परी॑यस उ॒त मि॒त्रो भ॑वसि देव॒ धर्म॑भिः ॥ ४ ॥
उ॒तेशि॑षे प्रस॒वस्य॒ त्वमेक॒ इदु॒त पू॒षा भ॑वसि देव॒ याम॑भिः।
उ॒तेदं विश्व॒ं भुव॑नं॒ वि रा॑जसि श्या॒वाश्वस्ते सवि॒तः स्तोम॑मानशे ॥ ५ ॥

[८२] द्व्यशीतितमं सूक्तम्

ऋषिः—श्यावाश्व आत्रेयः ॥ देवता—सविता ॥ छन्दः—१ निचृदनुष्टुप्; २, ४, ९ निचृद्गायत्री; ३, ५-७ गायत्री; ८ विराड्गायत्री ॥ स्वरः—१ गान्धारः; २-९ षड्जः ॥

अथ पञ्चविंशो वर्गः ॥ २५ ॥

तत्स॑वि॒तुर्वृ॑णीमहे व॒यं दे॒वस्य॒ भोज॑नम्। श्रेष्ठं॑ सर्व॒धात॑मं॒ तुरं॑ भ॒गस्य॑ धीमहि ॥ १ ॥
अस्य॒ हि स्वय॑शस्तरं सवि॒तुः क॒च्च॒न प्रि॒यम्। न मि॑नन्ति स्व॒राज्य॑म् ॥ २ ॥
स हि रत्ना॑नि दा॒शुषे॑ सु॒वाति॑ सवि॒ता भ॒गः। तं भा॒गं चि॒त्रमी॑महे ॥ ३ ॥
अ॒द्या नो॑ देव सवितः प्र॒जाव॑त्सावीः॒ सौभ॑गम्। परा॑ दुः॒ष्वप्न्यं॑ सुव ॥ ४ ॥
विश्वा॑नि देव सवितर्दुरि॒तानि॒ परा॑ सुव। यद्भ॒द्रं तन्न॒ आ सु॑व ॥ ५ ॥

अथ षड्विंशो वर्गः ॥ २६ ॥

अना॑गसो॒ अदि॑तये दे॒वस्य॑ सवि॒तुः सु॒वे। विश्वा॑ वा॒मानि॑ धीमहि ॥ ६ ॥
आ वि॒श्वदे॑वं सत्प॒तिं सू॒क्तैर॒द्या वृ॑णीमहे। स॒त्यस॑वं सवि॒तार॑म् ॥ ७ ॥
य इ॒मे उ॒भे अहा॑नी पु॒र एत्यप्र॑युच्छन्। स्वा॒धीर्दे॒वः स॑वि॒ता ॥ ८ ॥
य इ॒मा विश्वा॑ जा॒तान्या॑श्रावयति श्लो॒केन॑। प्र च॑ सुवाति सवि॒ता ॥ ९ ॥

[८३] त्र्यशीतितमं सूक्तम्

ऋषिः—अत्रिः ॥ देवता—पृथिवी ॥ छन्दः—१ निचृत्त्रिष्टुप्; २ स्वराट्त्रिष्टुप्; ३ भुरिक्त्रिष्टुप्; ४ निचृज्जगती; ५, ६ त्रिष्टुप्; ७ विराट्त्रिष्टुप्; ८, १० भुरिक्पङ्क्तिः; ९ निचृदनुष्टुप् ॥ स्वरः—१-३, ५-७ धैवतः; ४ निषादः; ८, १० पञ्चमः; ९ गान्धारः ॥

अथ सप्तविंशो वर्गः ॥ २७ ॥

अच्छा॑ वद त॒वसं॑ गी॒र्भिरा॒भिः स्तु॒हि पर्ज॑न्यं नम॒सा वि॑वास।
कनि॑क्रदद् वृष॒भो जी॒रदा॑नू रे॒तो द॑धा॒त्योष॑धीषु॒ गर्भ॑म् ॥ १ ॥
वि वृ॒क्षान् ह॑न्त्युत॒ हन्ति॑ र॒क्षसो॒ विश्व॑ं बिभाय॒ भुव॑नं म॒हाव॑धात्।
उ॒ताना॑गा ईषते वृ॒ष्ण्या॑वतो॒ यत्पर्ज॑न्यः॒ स्तन॑यन् ह॒न्ति दु॒ष्कृतः॑ ॥ २ ॥
र॒थीव॒ कशा॑याश्वाँ॒ अभि॑क्षिपन्ना॒विर्दू॒तान्कृ॑णुते व॒र्ष्या॑ँ॒३॒ अह॑।
दू॒रात्सिं॑हस्य॒ स्तन॑था॒ उदी॑रते॒ यत्पर्ज॑न्यः॒ कृणु॑ते व॒र्ष्यं॑ नभः॑ ॥ ३ ॥
प्र वा॒ता वा॑न्ति॒ पत॑यन्ति॒ विद्यु॑त॒ उदो॑षधी॒र्जिह॑ते॒ पिन्व॑ते॒ स्वः॑।
इरा॒ विश्व॑स्मै॒ भुव॑नाय जायते॒ यत्पर्ज॑न्यः॒ पृथि॒वीं रे॒त॒सावति॑ ॥ ४ ॥
यस्य॑ व्र॒ते पृ॑थि॒वी नं॑नमी॒ति॒ यस्य॑ व्र॒ते श॒फव॑ज्जर्भु॒रीति॑।
यस्य॑ व्र॒त ओष॑धीर्वि॒श्वरू॑पाः॒ स नः॑ पर्जन्य॒ मह्यि॒ शर्म॑ यच्छ ॥ ५ ॥

अथ अष्टाविंशो वर्गः ॥ २८ ॥

दि॒वो नो॑ वृ॒ष्टिं म॑रुतो ररीध्वं प्र पिं॑न्वत वृ॒ष्णो अश्व॑स्य धा॒राः।
अ॒र्वाङे॒तेन॑ स्तनयि॒त्नुने॒ह्यपो नि॑षि॒ञ्चन्न॑सुरः पि॒ता नः॑ ॥ ६ ॥
अ॒भि क्र॑न्द स्तनय॒ गर्भ॒मा धा॑ उद॒न्वता॒ परि॑ दीया॒ रथे॑न।
दृति॑ सु॒ कर्ष॑ वि॒षित॑ं॒ न्य॑ञ्चं॒ स॒मा भ॑वन्तूद्व॒तो नि॑पा॒दाः ॥ ७ ॥
म॒हान्तं॑ कोश॒मुदचा॒ नि षि॑ञ्च॒ स्यन्द॑न्तां कु॒ल्या वि॒षिताः॒ पुर॑स्तात्।
घृते॑न द्यावापृथिवी॒ व्यु॑न्धि सु॒प्रपा॑णं भवत्व॒द्भ्याभ्यः॑ ॥ ८ ॥
यत्पर्ज॑न्य॒ कनि॑क्रदत्स्त॒नय॑न् ह॒ंसि॒ दु॒ष्कृतः॑ ।
प्रती॒दं विश्व॑ं मोदते॒ यत्किं च॑ पृथि॒व्यामधि॑ ॥ ९ ॥
अव॑र्षीर्व॒र्षमुदु॒ षू गृ॑भा॒याक॒र्धन्वा॑न्यत्ये॒त॒वा उ॑ ।
अजी॑जन॒ ओष॑धी॒र्भोज॑नाय॒ कमु॒त प्र॒जाभ्योऽवि॑दो मनी॒षाम् ॥ १० ॥

[८४] चतुरशीतितमं सूक्तम्

ऋषिः—अत्रिः ॥ देवता—पृथिवी ॥ छन्दः—१, २ निचृदनुष्टुप्; ३ विराडनुष्टुप् ॥ स्वरः—गान्धारः ॥

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अथ एकोनत्रिंशो वर्गः ॥ २९ ॥

बळित्था पर्वतानां खिद्रं बिभर्षि पृथिवि।
प्र या भूमिं प्रवत्वति मह्ना जिनोषि महिनि ॥ १ ॥
स्तोमासस्त्वा विचारिणि प्रति ष्टोभन्त्यक्तुभिः।
प्र या वाजं न हेषन्तं पेरुमस्यस्यर्जुनि ॥ २ ॥
दृळ्हा चिद्या वनस्पतीन्क्ष्मया दर्धर्ष्योजसा।
यत्ते अभ्रस्य विद्युतो दिवो वर्षन्ति वृष्टयः ॥ ३ ॥

[८५] पञ्चाशीतितमं सूक्तम्

ऋषिः—अत्रिः ॥ देवता—वरुणः ॥ छन्दः—१, २ विराट्त्रिष्टुप्; ३, ४, ६, ८ निचृत् त्रिष्टुप्; ५ स्वराट्पङ्क्तिः; ७ ब्राह्म्युष्णिक् ॥ स्वरः—१-४, ६, ८ धैवतः; ५ पञ्चमः; ७ ऋषभः ॥

अथ त्रिंशो वर्गः ॥ ३० ॥

प्र सम्राजे बृहदर्चा गभीरं ब्रह्म प्रियं वरुणाय श्रुताय।
वि यो जघान शमितेव चर्मोपस्तिरे पृथिवीं सूर्याय ॥ १ ॥
वनेषु व्यन्तरिक्षं ततान वाजमर्वत्सु पय उस्रियासु।
हृत्सु क्रतुं वरुणो अप्स्वग्निं दिवि सूर्यमदधात्सोममद्रौ ॥ २ ॥
नीचीनबारं वरुणः कबन्धं प्र ससर्ज रोदसी अन्तरिक्षम्।
तेन विश्वस्य भुवनस्य राजा यवं न वृष्टिर्व्युनत्ति भूमं ॥ ३ ॥
उनत्ति भूमिं पृथिवीमुत द्यां यदा दुग्धं वरुणो वष्ट्यादित्।
समभ्रेण वसत पर्वतासस्तविषीयन्तः श्रथयन्त वीराः ॥ ४ ॥
इमामू ष्वासुरस्य श्रुतस्य महीं मायां वरुणस्य प्र वोचम्।
मानेनेव तस्थिवाँ अन्तरिक्षे वि यो ममे पृथिवीं सूर्येण ॥ ५ ॥

अथ एकत्रिंशो वर्गः ॥ ३१ ॥

इमामू नू कवितमस्य मायां महीं देवस्य नकिरा दधर्ष।
एकं यदुद्ना न पृणन्त्येनीरासिञ्चन्तीरवनयः समुद्रम् ॥ ६ ॥
अर्यम्यं वरुण मित्र्यं वा सखायं वा सदमिद् भ्रातरं वा।
वेशं वा नित्यं वरुणारणं वा यत्सीमागश्चकृमा शिश्रथस्तत् ॥ ७ ॥
कितवासो यद्रिरिपुर्न दीवि यद्वा घा सत्यमुत यन्न विद्म।
सर्वा ता वि ष्य शिथिरेव देवाधा ते स्याम वरुण प्रियासः ॥ ८ ॥

[८६] षडशीतितमं सूक्तम्

ऋषिः—अत्रिः ॥ देवता—इन्द्राग्नी ॥ छन्दः—१, ४, ५ स्वराडुष्णिक्; २, ३ विराडनुष्टुप्; ६ विराट्पूर्वानुष्टुप् ॥ स्वरः—१, ४, ५ ऋषभः; २, ३, ६ गान्धारः ॥

अथ द्वात्रिंशो वर्गः ॥ ३२ ॥

इन्द्राग्नी यमवथ उभा वाजेषु मर्त्यम्।
दृळ्हा चित्स प्र भेदति द्युम्ना वाणीरिव त्रितः ॥ १ ॥
या पृतनासु दुष्टरा या वाजेषु श्रवाय्या।
या पञ्च चर्षणीरिन्द्राग्नी ता हवामहे ॥ २ ॥
तयोरिदमवच्छवस्तिग्मा दिद्युन्मघोनोः।
प्रति द्रुणा गभस्त्योर्गवां वृत्रघ्न एषते ॥ ३ ॥
ता वामेषे रथानामिन्द्राग्नी हवामहे।
पतीं तुरस्य राधसो विद्वांसा गिर्वणस्तमा ॥ ४ ॥
ता वृधन्तावनु द्यून्मर्तीय देवावदभा।
अर्हन्ता चित्पुरो दधेऽशेव देवावर्वते ॥ ५ ॥
एवेन्द्राग्निभ्यामहावि हव्यं शूष्यं घृतं न पूतमद्रिभिः।
ता सूरिषु श्रवो बृहद्रयिं गृणत्सु दिधृतमिषं गृणत्सु दिधृतम् ॥ ६ ॥

[८७] सप्ताशीतितमं सूक्तम्

ऋषिः—एवयामरुदात्रेयः ॥ देवता—मरुतः ॥ छन्दः—१ अतिजगती; २, ८ स्वराड्जगती; ३, ६, ७ भुरिग्जगती; ४ निचृज्जगती; ५, ९ विराड्जगती ॥ स्वरः—निषादः ॥

अथ त्रयस्त्रिंशो वर्गः ॥ ३३ ॥

प्र वो महे मतयो यन्तु विष्णवे मरुत्वते गिरिजा एवयामरुत्।
प्र शर्धाय प्रयज्यवे सुखादये तवसे भन्ददिष्टये धुनिव्रताय शवसे ॥ १ ॥
प्र ये जाता महिना ये च नु स्वयं प्र विद्मना बुबुवत एवयामरुत्।
क्रत्वा तद्वो मरुतो नाधृषे शवो दाना मह्ना तदेषामधृष्टासो नाद्रयः ॥ २ ॥
प्र ये दिवो बृहतः शृण्विरे गिरा सुशुक्वानः सुभ्वः एवयामरुत्।
न येषामिरी सधस्थ ईष्टे आँ अग्रयो न स्वविद्युतः प्र स्पन्द्रासो धुनीनाम् ॥ ३ ॥
स चक्रमे महतो निरुरुक्रमः समानस्मात्सदस एवयामरुत्।
यदायुक्त त्मना स्वादधि ष्णुभिर्विष्पर्धसो विमहसो जिगाति शेवृधो नृभिः ॥ ४ ॥
स्वनो न वोऽमवान्रेजयद् वृषा त्वेषो ययिस्तविष एवयामरुत्।
येना सहन्त ऋञ्जत स्वरौचिषः स्थारश्मानो हिरण्ययाः स्वायुधास इष्मिणः ॥ ५ ॥

अथ चतुस्त्रिंशो वर्गः ॥ ३४ ॥

अपारो वो महिमा वृद्धशवसस्त्वेषं शवोऽवत्वेवयामरुत्।
स्थातारो हि प्रसितौ संदृशि स्थन ते नः उरुष्यता निदः शुशुक्वांसो नाग्नयः ॥ ६ ॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ते रुद्रासः सुमखा अग्नयो यथा तुविद्युम्ना अवन्त्वेवयामरुत् ।
दीर्घं पृथु पप्रथे सद्म पार्थिवं येषामज्मेष्वा महः शर्धांस्यद्भुतैनसाम्॥ ७॥
अद्वेषो नो मरुतो गातुमेतन श्रोता हवं जरितुरेवयामरुत् ।
विष्णोर्महः समन्यवो युयोतन स्मद्रथ्योऽ न दंसनाप द्वेषांसि सनुतः॥ ८॥
गन्ता नो यज्ञं यज्ञियाः सुशमि श्रोता हवमरक्ष एवयामरुत्।
ज्येष्ठासो न पर्वतासो व्योमनि यूयं तस्य प्रचेतसः स्यात दुर्धर्तवो निदः॥ ९॥

इति पञ्चमं मण्डलम्॥

स्व. श्री ओमप्रकाशजी बजारी की स्मृती में सादर भेंट।

ओमप्रकाश बजारी
४/३१८, जादूगर मोहल्ला
ब्यावर (राजस्थान)

अथ षष्ठं मण्डलम्

प्रथमोऽनुवाकः [१] प्रथमं सूक्तम्

ऋषिः—भरद्वाजो बार्हस्पत्यः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—१, ७, १३ भुरिक्पङ्क्तिः; २ स्वराट्पङ्क्तिः; ३, ४, ६, ११, १२ निचृत्त्रिष्टुप्; ५ पङ्क्तिः; ८, १० त्रिष्टुप्; ९ विराट्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१, २, ५, ७, १३ पञ्चमः; ३, ४, ६, ८-१२ धैवतः॥

अथ पञ्चत्रिंशो वर्गः॥ ३५॥

त्वं ह्यग्ने प्रथमो मनोतास्या धियो अभवो दस्म होता।
त्वं सीं वृषन्नकृणोर्दुष्टरीतु सहो विश्वस्मै सहसे सहध्यै॥ १॥
अधा होता न्यसीदो यजीयानिळस्पद इषयन्नीड्यः सन्।
तं त्वा नरः प्रथमं देवयन्तो महो राये चितयन्तो अनु ग्मन्॥ २॥
वृतेव यन्तं बहुभिर्वसव्यैऽस्वे रयिं जागृवांसो अनु ग्मन्।
रुशन्तमग्निं दर्शतं बृहन्तं वपावन्तं विश्वहा दीदिवांसम्॥ ३॥
पदं देवस्य नमसा व्यन्तः श्रवस्यवः श्रव आपन्नमृक्तम्।
नामानि चिद्दधिरे यज्ञियानि भद्रायां ते रणयन्त संदृष्टौ॥ ४॥
त्वां वर्धन्ति क्षितयः पृथिव्यां त्वां राय उभयासो जनानाम्।
त्वं त्राता तरणे चेत्यो भूः पिता माता सदमिन्मानुषाणाम्॥ ५॥

अथ षट्त्रिंशो वर्गः॥ ३६॥

सपर्येण्यः स प्रियो विक्ष्वग्निर्होता मन्द्रो नि षसादा यजीयान्।
तं त्वा वयं दम आ दीदिवांसमुप द्युबाधो नमसा सदेम॥ ६॥
तं त्वा वयं सुध्योऽ नव्यमग्ने सुम्नायव ईमहे देवयन्तः।
त्वं विशो अनयो दीद्यानो दिवो अग्ने बृहता रोचनेन॥ ७॥
विशां कविं विश्पतिं शश्वतीनां नितोशनं वृषभं चर्षणीनाम्।
प्रेतीषणिमिषयन्तं पावकं राजन्तमग्निं यजतं रयीणाम्॥ ८॥
सो अग्न ईजे शशमे च मर्तो यस्त आनट् समिधा हव्यदातिम्।
य आहुतिं परि वेदा नमोभिर्विश्वेत्स वामा दधते त्वोतः॥ ९॥
अस्मा उ ते महि महे विधेम नमोभिरग्ने समिधोत हव्यैः।
येषां सूनो सहसो गीर्भिरुक्थैरा तें भद्रायां सुमतौ यतेम॥ १०॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

आ यस्ततन्थ रोदसी वि भासा श्रवोभिश्च श्रवस्यस्तरुत्रः।
बृहद्भिर्वाजैः स्थविरेभिरस्मे रेवद्भिरग्ने वितरं वि भाहि॥ ११॥
नृवद्वसो सदमिद्बोध्यस्मे भूरि तोकाय तनयाय पश्वः।
पूर्वीरिषो बृहतीरारेअघा अस्मे भद्रा सौश्रवसानि सन्तु॥ १२॥
पुरूण्यग्ने पुरुधा त्वाया वसूनि राजन्वसुता ते अश्याम्।
पुरूणि हि त्वे पुरुवार सन्त्यग्ने वसु विधते राजनि त्वे॥ १३॥

इति चतुर्थाष्टके चतुर्थोऽध्यायः॥

अथ पञ्चमोऽध्यायः

[२] द्वितीयं सूक्तम्

ऋषिः—भरद्वाजो बार्हस्पत्यः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—१, ९ भुरिगुष्णिक्; २ स्वराडुष्णिक्; ३, ४ अनुष्टुप्; ५, ६, १० निचृदनुष्टुप्; ७ निचृदुष्णिक्; ८ उष्णिक्; ११ भुरिगतिजगती॥ स्वरः—१, २, ७-९ ऋषभः; ३-६, १० गान्धारः; ११ निषादः॥

अथ प्रथमो वर्गः॥ १॥

त्वं हि क्षैतवद्यशोऽग्ने मित्रो न पत्यसे।
त्वं विचर्षणे श्रवो वसो पुष्टिं न पुष्यसि॥ १॥
त्वां हि ष्मा चर्षणयो यज्ञेभिर्गीर्भिरीळते।
त्वां वाजी यात्यवृको रजस्तूर्विश्वचर्षणिः॥ २॥
सजोषस्त्वा दिवो नरो यज्ञस्य केतुमिन्धते।
यद्ध स्य मानुषो जनः सुम्नायुर्जुह्वे अध्वरे॥ ३॥
ऋधद्यस्ते सुदानवे धिया मतिः शशमते।
ऊती ष बृहतो दिवो द्विषो अंहो न तरति॥ ४॥
समिधा यस्त आहुतिं निशितिं मर्त्यो नशत्।
वयावन्तं स पुष्यति क्षयमग्ने शतायुषम्॥ ५॥

अथ द्वितीयो वर्गः॥ २॥

त्वेषस्ते धूम ऋण्वति दिवि षञ्छुक्र आततः।
सूरो न हि द्युता त्वं कृपा पावक रोचसे॥ ६॥
अधा हि विक्ष्वीड्योऽसि प्रियो नो अतिथिः।
रण्वः पुरीव जूर्यः सूनुर्न त्रययाय्यः॥ ७॥
क्रत्वा हि द्रोणे अञ्यसेऽग्ने वाजी न कृत्व्यः।
परिज्मेव स्वधा गयोऽत्यो न ह्वार्यः शिशुः॥ ८॥
त्वं त्या चिदच्युताग्ने पशुर्न यवसे।
धामा ह यत्ते अजर वना वृश्चन्ति शिक्वसः॥ ९॥
वेषि ह्यध्वरीयतामग्ने होता दमे विशाम्।
समृधो विश्पते कृणु जुषस्व हव्यमङ्गिरः॥ १०॥
अच्छा नो मित्रमहो देव देवानग्ने वोचः सुमतिं रोदस्योः।
वीहि स्वस्तिं सुक्षितिं दिवो नृन्द्विषो अंहांसि
दुरिता तरेम ता तरेम तवावसा तरेम॥ ११॥

[३] तृतीयं सूक्तम्

ऋषिः—भरद्वाजो बार्हस्पत्यः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—१, ३, ४ त्रिष्टुप्; २, ५-७ निचृत्त्रिष्टुप्; ८ भुरिक्पङ्क्तिः॥ स्वरः—१-७ धैवतः; ८ पञ्चमः॥

अथ तृतीयो वर्गः॥ ३॥

अग्ने स क्षेषदृतपा ऋतेजा उरु ज्योतिर्नशते देवयुष्टे।
यं त्वं मित्रेण वरुणः सजोषा देव पासि त्यजसा मर्तमंहः॥ १॥
ईजे यज्ञेभिः शशमे शमीभिर्ऋधद्वाराया ग्नये ददाश।
एवा चन तं यशसामजुष्टिर्नाहो मतिं नशते न प्रदृप्तिः॥ २॥
सूरो न यस्य दृशतिररेपा भीमा यदेति शुचतस्त आ धीः।
हेषस्वतः शुरुधो नायमक्तोः कुत्रा चिद्रण्वो वसतिर्वनेजाः॥ ३॥
तिग्मं चिदेम महि वर्पो अस्य भसदश्वो न यमसान आसा।
विजेहमानः परशुर्न जिह्वां द्रविर्न द्रावयति दारु धक्षत्॥ ४॥
स इदस्तेव प्रति धादसिष्यञ्छिशीत तेजोऽयसो न धाराम्।
चित्रध्रजतिररतिर्यो अक्तोर्वेर्न दुष्वद्वा रघुपत्मजंहाः॥ ५॥

अथ चतुर्थो वर्गः॥ ४॥

स ईं रेभो न प्रति वस्त उस्राः शोचिषा रारपीति मित्रमहाः।
नक्तं य ईमरुषो यो दिवा नृनमर्त्यो अरुषो यो दिवा नॄन्॥ ६॥
दिवो न यस्य विधतो नवीनोद् वृषा रुक्ष ओषधीषु नूनोत्।
घृणा न यो ध्रजसा पत्मना यन्ना रोदसी वसुना दं सुपत्नी॥ ७॥
धायोभिर्वा यो युज्येभिरर्कैर्विद्युन्न द्वेद्योत्स्वेभिः शुभ्रैः।
शर्धो वा यो मरुतां ततक्ष ऋभुर्न त्वेषो रंभसानो अद्यौत्॥ ८॥

[४] चतुर्थं सूक्तम्

ऋषिः—भरद्वाजो बार्हस्पत्यः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—१ त्रिष्टुप्; २, ५-७ भुरिक् पङ्क्तिः; ३, ४ निचृत्पङ्क्तिः; ८ पङ्क्तिः॥ स्वरः—१ धैवतः २-८ पञ्चमः॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अथ पञ्चमो वर्गः ॥ ५ ॥

यथा होतर्मनुषो देवताता यज्ञेभिः सूनो सहसो यजासि।
एवा नो अद्य समना समानानुशन्नग्न उशतो यक्षि देवान्॥ १ ॥
स नो विभावा चक्षणिर्न वस्तोरग्निर्वन्दारु वेद्यश्चनो धात्।
विश्वायुर्यो अमृतो मर्त्येषूषर्भुद्भूदतिथिर्जातवेदाः ॥ २ ॥
द्यावो न यस्य पनयन्त्यभ्वं भासांसि वस्ते सूर्यो न शुक्रः।
वि य इनोत्यजरः पावकोऽश्नस्य चिच्छिश्नथत्पूर्व्याणि॥ ३ ॥
वद्या हि सूनो अस्यद्रुसद्वा चक्रे अग्निर्जनुषाञ्मान्नम्।
स त्वं न ऊर्जसन ऊर्जं धा राजेव जेरवृके क्षेष्यन्तः॥ ४ ॥
निर्तिक्ति यो वारणमन्नमत्ति वायुर्न राष्ट्र्यत्येत्यक्तून्।
तुर्याम यस्त आदिशामरातीरत्यो न हुतः पतंतः परिह्रुत्॥ ५ ॥

अथ षष्ठो वर्गः ॥ ६ ॥

आ सूर्यो न भानुमद्भिरर्कैरग्ने ततन्थ रोदसी वि भासा।
चित्रो नयत्परि तमांस्यक्तः शोचिषा पत्मन्नौशिजो न दीयन्॥ ६ ॥
त्वां हि मन्द्रतममर्कशोकैर्ववृमहे महि नः श्रोष्यग्ने।
इन्द्रं न त्वा शवसा देवता वायुं पृणन्ति राधसा नृतमाः॥ ७ ॥
नू नो अग्नेऽवृकेभिः स्वस्ति वेषि रायः पथिभिः पर्ष्यंहः।
ता सूरिभ्यो गृणते रासि सुम्नं मदेम शतहिमाः सुवीराः॥ ८ ॥

[५] पञ्चमं सूक्तम्

ऋषिः—भरद्वाजो बार्हस्पत्यः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—१, ४ त्रिष्टुप्; २, ५-७ निचृत्त्रिष्टुप्; ३ भुरिक्पङ्क्तिः॥ स्वरः—१, २, ४-७ धैवतः; ३ पञ्चमः॥

अथ सप्तमो वर्गः ॥ ७ ॥

हुवे वः सूनुं सहसो युवानमद्रोघवाचं मतिभिर्यविष्ठम्।
य इन्वति द्रविणानि प्रचेता विश्ववाराणि पुरुवारो अध्रुक्॥ १ ॥
त्वे वसूनि पुर्वणीक होतर्दोषा वस्तोरेरिरे यज्ञियासः।
क्षामेव विश्वा भुवनानि यस्मिन्त्सं सौभगानि दधिरे पावके॥ २ ॥
त्वं विक्षु प्रदिवः सीद आसु क्रत्वा रथीरभवो वार्याणाम्।
अतं इनोषि विधते चिकित्वो व्यानुषग्जातवेदो वसूनि॥ ३ ॥
यो नः सनुत्यो अभिदासदग्ने यो अन्तरो मित्रमहो वनुष्यात्।
तमजरेभिर्वृषभिस्तव स्वैस्तपा तपिष्ठ तपसा तपस्वहन्॥ ४ ॥
यस्ते यज्ञेन समिधा य उक्थैरर्कैभिः सूनो सहसो ददाशत्।
स मर्त्येष्वमृत प्रचेता राया द्युम्नेन श्रवसा वि भाति॥ ५ ॥
स तत्कृधीषितस्तूयमग्ने स्पृधो बाधस्व सहसा सहस्वान्।
यच्छस्यसे द्युभिरक्तो वचोभिस्तज्जुषस्व जरितुर्घोषि मन्म॥ ६ ॥
अश्याम तं काममग्ने तवोती अश्याम रयिं रयिवः सुवीरम्।
अश्याम वाजमभि वाजयन्तोऽश्याम द्युम्नमजराजरं ते॥ ७ ॥

[६] षष्ठं सूक्तम्

ऋषिः—भरद्वाजो बार्हस्पत्यः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—१-५ निचृत्त्रिष्टुप्; ६-७ त्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः॥

अथ अष्टमो वर्गः ॥ ८ ॥

प्र नव्यसा सहसः सूनुमच्छा यज्ञेन गातुमवं इच्छमानः।
वृश्चद्वनं कृष्णयामं रुशन्तं वीती होतारं दिव्यं जिगाति॥ १ ॥
स श्वितानस्तन्यतू रोचनस्था अजरेभिर्नानदद्भिर्यविष्ठः।
यः पावकः पुरुतमः पुरूणि पृथून्यग्निरनुयाति भर्वन्॥ २ ॥
वि ते विष्वग्वातजूतासो अग्ने भामासः शुचे शुचयश्चरन्ति।
तुविम्रक्षासो दिव्या नवग्वा वना वनन्ति धृषता रुजन्तः॥ ३ ॥
ये ते शुक्रासः शुचयः शुचिष्मः क्षां वपन्ति विषितासो अश्वाः।
अध भ्रमस्त उर्विया वि भाति यातयमानो अधि सानु पृश्नेः॥ ४ ॥
अध जिह्वा पापतीति प्र वृष्णो गोषुयुधो नाशनिः सृजाना।
शूरस्येव प्रसितिः क्षातिरग्नेर्दुर्वर्तुर्भीमो दयते वनानि ॥ ५ ॥
आ भानुना पार्थिवानि व्रयांसि महस्तोदस्य धृषता ततन्थ।
स बाधस्वाप भया सहोभिः स्पृधो वनुष्यन्वनुषो नि जूर्व॥ ६ ॥
स चित्र चित्रं चितयन्तमस्मे चित्रक्षत्र चित्रतमं वयोधाम्।
चन्द्रं रयिं पुरुवीरं बृहन्तं चन्द्र चन्द्राभिर्गृणते युवस्व॥ ७ ॥

[७] सप्तमं सूक्तम्

ऋषिः—भरद्वाजो बार्हस्पत्यः॥ देवता—वैश्वानरः॥ छन्दः—१ त्रिष्टुप्; २ निचृत्त्रिष्टुप्; ३ निचृत्पङ्क्तिः; ४ स्वराट्पङ्क्तिः; ५ पङ्क्तिः; ६ जगती; ७ स्वराट्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१, २, ७ धैवतः; ३-५ पञ्चमः; ६ निषादः॥

अथ नवमो वर्गः ॥

मूर्धानं दिवो अरतिं पृथिव्या वैश्वानरमृत आ जातमग्निम्।
कविं सम्राजमतिथिं जनानामासन्नात्रं जनयन्त देवाः॥ १ ॥

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Kanya Maha Vidyalaya Collection, Chennai.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नाभिं यज्ञानां सदनं रयीणां महामाहावमभि सं नवन्त ।
वैश्वानरं रथ्यमध्वराणां यज्ञस्य केतुं जनयन्त देवाः ॥ २ ॥
त्वद्विप्रो जायते वाज्यग्ने त्वद्वीरासो अभिमातिषाहः ।
वैश्वानर त्वमस्मासु धेहि वसूनि राजन्त्स्पृहयाय्याणि ॥ ३ ॥
त्वां विश्वे अमृत जायमानं शिशुं न देवा अभि सं नवन्ते ।
तव क्रतुभिरमृतत्वमायन्वैश्वानर यत्पित्रोरदीदेः ॥ ४ ॥
वैश्वानर तव तानि व्रतानि महान्यग्ने नकिरा दधर्ष ।
यजायमानः पित्रोरुपस्थेऽविन्दः केतुं वयुनेष्वह्नाम् ॥ ५ ॥
वैश्वानरस्य विमितानि चक्षसा सानूनि दिवो अमृतस्य केतुना ।
तस्येदु विश्वा भुवनाधि मूर्धनि व्रयाइव रुरुहुः सप्त विस्रुहः ॥ ६ ॥
वि यो रजांस्यमिमीत सुक्रतुर्वैश्वानरो वि दिवो रोचना कविः ।
परि यो विश्वा भुवनानि पप्रथेऽदब्धो गोपा अमृतस्य रक्षिता ॥ ७ ॥

[८] अष्टमं सूक्तम्

ऋषिः—भरद्वाजो बार्हस्पत्यः ॥ देवता—वैश्वानरः ॥ छन्दः—१, ४ जगती; २, ३, ५ भुरिक्त्रिष्टुप्; ६ विराड्जगती; ७ त्रिष्टुप् ॥
स्वरः—१, ४, ६ निषादः; २, ३, ५, ७ धैवतः ॥

अथ दशमो वर्गः ॥ १० ॥

पृक्षस्य वृष्णो अरुषस्य नू सहः प्र नु वोचं विदथा जातवेदसः ।
वैश्वानराय मतिर्नव्यसी शुचिः सोमइव पवते चारुरग्नये ॥ १ ॥
स जायमानः परमे व्योमनि व्रतान्यग्निर्व्रतपा अरक्षत ।
व्यन्तरिक्षममिमीत सुक्रतुर्वैश्वानरो महिना नाकमस्पृशत् ॥ २ ॥
व्यस्तभ्नाद्रोदसी मित्रो अद्भुतोऽन्तर्वावदत्पुरुतूज्योतिषा तमः ।
वि चर्मणीव धिषणे अवर्तयद्वैश्वानरो विश्वमधत्त वृष्ण्यम् ॥ ३ ॥
अपामुपस्थे महिषा अगृभ्णत विशो राजानमुप तस्थुरृग्मियम् ।
आ दूतो अग्निमभरद्विवस्वतो वैश्वानरं मातरिश्वा परावतः ॥ ४ ॥
युगेयुगे विदथ्यं गृणद्भ्योऽग्ने रयिं यशसं धेहि नव्यसीम् ।
पव्येव राजन्नघशंसमजर नीचा नि वृश्च वनिनं न तेजसा ॥ ५ ॥
अस्माकमग्ने मघवत्सु धारयानामि क्षत्रमजरं सुवीर्यम् ।
वयं जयेम शतिनं सहस्त्रिणं वैश्वानर वाजमग्ने तवोतिभिः ॥ ६ ॥
अदब्धेभिस्तव गोपाभिरिष्टेऽस्माकं पाहि त्रिषधस्थ सूरीन् ।
रक्षा च नो दुदुषां शर्धो अग्ने वैश्वानर प्र च तारीः स्तवानः ॥ ७ ॥

[९] नवमं सूक्तम्

ऋषिः—भरद्वाजो बार्हस्पत्यः ॥ देवता—वैश्वानरः ॥ छन्दः—१ विराट्त्रिष्टुप्; २ भुरिक्पङ्क्तिः; ३, ४ पङ्क्तिः; ५ निचृत्त्रिष्टुप्; ६ त्रिष्टुप्; ७ भुरिग्जगती ॥
स्वरः—१, ५, ६ धैवतः; २-४ पञ्चमः; ७ निषादः ॥

अथ एकादशो वर्गः ॥ १ ॥

अहश्च कृष्णमहरर्जुनं च वि वर्तेते रजसी वेद्याभिः ।
वैश्वानरो जायमानो न राजावातिरज्ज्योतिषाग्निस्तमांसि ॥ १ ॥
नाहं तन्तुं न वि जानाम्योतुं न यं ववन्ति समरेऽतमानाः ।
कस्य स्वित्पुत्र इह वक्त्वानि परो वदात्यवरेण पित्रा ॥ २ ॥
स इत्तन्तुं स वि जानात्योतुं स वक्त्वान्यृतुथा वदाति ।
य ईं चिकेतदमृतस्य गोपा अवश्चरन्परो अन्येन पश्यन् ॥ ३ ॥
अयं होता प्रथमः पश्यतेममिदं ज्योतिरमृतं मर्त्येषु ।
अयं स जज्ञे ध्रुव आ निषत्तोऽमर्त्यस्तन्वा३ वर्धमानः ॥ ४ ॥
ध्रुवं ज्योतिर्निहितं दृशये कं मनो जविष्ठं पतयत्स्वन्तः ।
विश्वे देवाः समनसः सकेता एकं क्रतुमभि वि यन्ति साधु ॥ ५ ॥
वि मे कर्णा पतयतो वि चक्षुर्वी३ दं ज्योतिर्हृदय आहितं यत् ।
वि मे मनश्चरति दूरआधीः किं स्विद्वक्ष्यामि किमु नू मनिष्ये ॥ ६ ॥
विश्वे देवा अनमस्यन्भियानास्त्वामग्ने तमसि तस्थिवांसम् ।
वैश्वानरोऽवतूतये नोऽमर्त्योऽवतूतये नः ॥ ७ ॥

[१०] दशमं सूक्तम्

ऋषिः—भरद्वाजो बार्हस्पत्यः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१ त्रिष्टुप्; २, ३, ६ निचृत्त्रिष्टुप्; ४ आर्षीपङ्क्तिः; ५ विराट्त्रिष्टुप्; ७ प्राजापत्यबृहती ॥
स्वरः—१-३, ५, ६ धैवतः; ४ पञ्चमः; ७ मध्यमः ॥

अथ द्वादशो वर्गः ॥ १२ ॥

पुरो वो मन्द्रं दिव्यं सुवृक्तिं प्रयति यज्ञे अग्निमध्वरे दधिध्वम् ।
पुर उक्थेभिः स हि नो विभावा स्वध्वरा करति जातवेदाः ॥ १ ॥
तमु द्युमः पुर्वणीक होतरग्ने अग्निभिर्मनुष इधानः ।
स्तोमं यमस्मै ममतेव शूषं घृतं न शुचि मतयः पवन्ते ॥ २ ॥
पीपाय स श्रवसा मर्त्येषु यो अग्नये ददाश विप्र उक्थैः ।
चित्राभिस्तमूतिभिश्चित्रशोचिर्व्रजस्य साता गोमतो दधाति ॥ ३ ॥
आ यः पप्रौ जायमान उर्वी दूरेदृशा भासा कृष्णाध्वा ।
अध बहु चित्तम ऊर्म्यायास्तिरः शोचिषा ददृशे पावकः ॥ ४ ॥

CC-0, Jangli Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नू न॑श्चि॒त्रं पु॑रु॒वाजा॑भिरू॒ती अग्ने॑ र॒यिं म॒घव॑द्भ्यश्च धेहि।
ये राध॑सा॒ श्रव॑सा॒ चात्य॒न्यान्त्सु॒वीर्ये॑भिश्चा॒भि सन्ति॒ जना॑न्॥५॥
इ॒मं य॒ज्ञं चनो॑ धा अग्न उ॒शन्यं त॑ आसा॒नो जु॑हु॒ते ह॒विष्मा॑न्।
भ॒रद्वा॑जेषु दधिषे सुवृ॒क्तिमवी॒र्वाज॑स्य॒ गध्य॑स्य सा॒तौ॥६॥
वि द्वेषां॑सीनु॒हि व॒र्धयेळां॒ मदे॑म श॒तहि॑माः सु॒वीराः॑॥७॥

[११] एकादशं सूक्तम्

ऋषिः—भरद्वाजो बार्हस्पत्यः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—१, ३, ५ निचृत्त्रिष्टुप्; २ निचृत्पङ्क्तिः; ४, ६ विराट्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१, ३-६ धैवतः; २ पञ्चमः॥

अथ त्रयोदशो वर्गः॥ १३॥

यज॑स्व होतरिषि॒तो यजी॑या॒नग्ने॒ बाधो॑ म॒रुतां॒ न प्रयु॑क्ति।
आ नो॑ मि॒त्रावरु॑णा॒ नास॑त्या॒ द्यावा॑ हो॒त्राय॑ पृथि॒वी व॑वृत्याः॥१॥
त्वं होता॑ म॒न्द्रत॑मो नो अ॒ध्रुग॒न्तर्दे॒वो वि॒दथा॒ मर्त्ये॑षु।
पा॒व॒कया॑ जु॒ह्वा॒३॒॑ वह्नि॑रा॒साग्ने॒ यज॑स्व त॒न्वं१॒॑ तव॒ स्वाम्॥२॥
धन्या॑ चि॒द्धि त्वे धि॒षणा॒ वष्टि॒ प्र दे॒वाञ्जन्म॑ गृण॒ते यज॑ध्यै।
वेपि॑ष्ठो॒ अङ्गि॑रसां॒ यद्ध॒ विप्रो॒ मधु॑ च्छ॒न्दो भन॑ति रे॒भ इ॒ष्टौ॥३॥
अदि॑द्युत॒त्स्वपा॑को वि॒भावाग्ने॒ यज॑स्व॒ रोद॑सी उरू॒ची।
आ॒युं न यं नम॑सा रा॒तह॑व्या अ॒ञ्जन्ति॑ सुप्र॒यसं॒ पञ्च॒ जनाः॑॥४॥
वृ॒ञ्जे ह॒ यन्नम॑सा ब॒र्हिर॒ग्नावया॑मि॒ स्रुग्घृ॒तव॑ती सुवृ॒क्तिः।
अम्य॑क्षि॒ सद्म॒ सद॑ने पृथि॒व्या अश्रा॑यि य॒ज्ञः सूर्ये॒ न चक्षुः॑॥५॥
द॒श॒स्या नः॑ पुर्वणीक होतर्दे॒वेभि॑रग्ने अ॒ग्निभि॑रिधा॒नः।
रा॒यः सू॑नो सहसो वावसा॒ना अति॑ स्रसेम वृ॒जनं॒ नांहः॑॥६॥

[१२] द्वादशं सूक्तम्

ऋषिः—भरद्वाजो बार्हस्पत्यः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—१ त्रिष्टुप्; २ निचृत्त्रिष्टुप्; ३ भुरिक्पङ्क्तिः; ४, ६ निचृत्पङ्क्तिः; ५ स्वराट्पङ्क्तिः॥ स्वरः—१, २ धैवतः; ३-६ पञ्चमः॥

अथ चतुर्दशो वर्गः॥ १४॥

मध्ये॒ होता॑ दुरो॒णे ब॒र्हिषो॒ राळ॒ग्निस्तो॒दस्य॒ रोद॑सी॒ यज॑ध्यै।
अ॒यं स सू॒नुः सह॑स ऋ॒तावा॑ दू॒रात्सूर्यो॒ न शो॒चिषा॑ ततान॥१॥
आ यस्मि॒न्त्वे स्वपा॑के यजत्र॒ यक्ष॑द्राजन्त्स॒र्वता॑तेव॒ नु द्यौः।
त्रि॒ष॒धस्थ॑स्तत॒रुषो॒ न जंहो॑ ह॒व्या म॒घानि॒ मानु॑षा॒ यज॑ध्यै॥२॥

तेजि॑ष्ठा॒ यस्या॑र॒तिर्व॑ने॒राट् तो॒दो अध्व॒न्न वृ॑धसा॒नो अ॑द्यौत्।
अ॒द्रो॒घो न द्र॑वि॒ता चे॑तति॒ त्मन्नम॑र्त्योऽव॒र्त्र ओष॑धीषु॥३॥
सास्माके॑भिरे॒तरी॒ न शू॒षैर॒ग्निः ष्ट॑वे॒ दम॒ आ जा॒तवे॑दाः।
द्र्व॑न्नो व॒न्वन् क्रत्वा॒ नार्वो॒स्रः पि॒तेव॑ जार॒यायि॑ य॒ज्ञैः॥४॥
अध॑ स्मास्य पनयन्ति॒ भासो॒ वृथा॒ यत्तक्ष॑दनु॒याति॑ पृ॒थ्वीम्।
स॒द्यो यः स्प॒न्द्रो विषि॑तो॒ धवी॑यानृ॒णो न ता॒युरति॒ धन्वा॑ राट्॥५॥
स त्वं नो॑ अर्व॒न्निदा॑या॒ विश्वे॑भिरग्ने अ॒ग्निभि॑रिधा॒नः।
वेषि॑ रा॒यो वि या॑सि दु॒च्छुना॒ मदे॑म श॒तहि॑माः सु॒वीराः॑॥६॥

[१३] त्रयोदशं सूक्तम्

ऋषिः—भरद्वाजो बार्हस्पत्यः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—१ पङ्क्तिः; २ स्वराट्पङ्क्तिः; ३, ४ विराट्त्रिष्टुप्; ५, ६ निचृत्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१, २ पञ्चमः; ३-६ धैवतः॥

अथ पञ्चदशो वर्गः॥ १५॥

त्वद्विश्वा॑ सुभग॒ सौभ॑गा॒न्यग्ने॒ वि य॑न्ति व॒निनो॒ न व॒याः।
श्रु॒ष्टी र॒यिर्वाजो॑ वृत्र॒तूर्ये॑ दि॒वो वृ॒ष्टिरीड्यो॑ री॒तिर॒पाम्॥१॥
त्वं भगो॑ न॒ आ हि रत्न॑मि॒षे परि॑ज्मेव क्षयसि द॒स्मव॑र्चाः।
अग्ने॑ मि॒त्रो न बृ॑ह॒त ऋ॒तस्यासि॑ क्ष॒त्ता वा॒मस्य॑ देव॒ भूरेः॑॥२॥
स सत्प॑तिः॒ शव॑सा हन्ति वृ॒त्रमग्ने॒ विप्रो॒ वि प॒णेर्भ॑र्ति॒ वाज॑म्।
यं त्वं प्र॑चेत ऋतजात रा॒या स॒जोषा॒ नप्त्रा॒पां हि॒नोषि॑॥३॥
यस्ते॑ सूनो सहसो गी॒र्भिरु॒क्थैर्य॒ज्ञैर्मर्तो॒ निशि॑तं वे॒द्यान॑ट्।
विश्वं॒ स दे॑व॒ प्रति॒ वार॑मग्ने ध॒त्ते धा॒न्यं१॒॑ पत्य॑ते वस॒व्यैः॥४॥
ता नृभ्य॒ आ सौ॑श्रव॒सा सु॒वीराग्ने॑ सूनो सहसः पु॒ष्यसे॑ धाः।
कृ॒णोषि॒ यच्छव॑सा॒ भूरि॑ प॒श्वो वयो॒ वृका॑या॒रये॒ जसु॑रये॥५॥
व॒द्मा सू॑नो सहसो नो॒ विहा॑या॒ अग्ने॑ तो॒कं तन॑यं वा॒जि नो॑ दाः।
विश्वा॑भिर्गी॒र्भिर॒भि पू॒र्तिम॑श्यां॒ मदे॑म श॒तहि॑माः सु॒वीराः॑॥६॥

[१४] चतुर्दशं सूक्तम्

ऋषिः—भरद्वाजो बार्हस्पत्यः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—१, ३ भुरिगुष्णिक्; २ निचृदनुष्टुप्; ४ अनुष्टुप्; ५ विराडनुष्टुप्; ६ भुरिगतिजगती॥ स्वरः—१, ३ ऋषभः; २, ४, ५ गान्धारः; ६ निषादः॥

अथ षोडशो वर्गः॥ १६॥

अ॒ग्ना यो मर्त्यो॒ दुवो॒ धियं॑ जु॒जोष॑ धी॒तिभिः॑।
अस॒न्नु ष प्र पू॒र्व्य इषं॑ वुरी॒ताव॑से॥१॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अग्निरिद्धि प्रचेता अग्निर्वेधस्तम ऋषिः ।
अग्निं होतारमीळते यज्ञेषु मनुषो विशः ॥ २ ॥
नाना ह्यग्नेऽवसे स्पर्धन्ते रायो अर्यः ।
तूर्वन्तो दस्युमायवो व्रतैः सीक्षन्तो अव्रतम् ॥ ३ ॥
अग्निरप्सामृतीषहं वीरं ददाति सत्पतिम् ।
यस्य त्रसन्ति शवसः सं चक्षि शत्रवो भिया ॥ ४ ॥
अग्निर्हि विश्वना निदो देवो मर्तमुरुष्यति ।
सहावा यस्यावृतो रयिर्वाजेष्ववृतः ॥ ५ ॥
अच्छा नो मित्रमहो देव देवानग्ने वोचः सुमतिं रोदस्योः ।
वीहि स्वस्तिं सुक्षितिं दिवो नृन्द्विषो अंहांसि ।
दुरिता तरेम ता तरेम तवावसा तरेम ॥ ६ ॥

[१५] पञ्चदशं सूक्तम्

ऋषिः—भरद्वाजो बार्हस्पत्यो वीतहव्यो वा ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१, २, ५ निचृत् जगती; ३ निचृदतिजगती; ४, १४ भुरिक्त्रिष्टुप्; ६ निचृदतिशक्वरी; ७ जगती; ८ विराड्जगती; ९-११, १६, १९ त्रिष्टुप्; १२ पङ्क्तिः; १३ विराट्त्रिष्टुप्; १५ ब्राह्मीबृहती; १७ विराडनुष्टुप्; १८ स्वराडनुष्टुप् ॥ स्वरः—१-३, ५, ७, ८ निषादः; ४, ६, ९-११, १३, १४, १६, १९ धैवतः; १२ पञ्चमः; १५ मध्यमः; १७, १८ गान्धारः ॥

अथ षोडशो वर्गः ॥ १७ ॥

इममू षू वो अतिथिमुषर्बुधं विश्वासां विशां पतिमृञ्जसे गिरा ।
वेतीद्दिवो जनुषा कच्चिदा शुचिर्ज्योक्चिदत्ति गर्भो यदच्युतम् ॥ १ ॥
मित्रं न यं सुधितं भृगवो दधुर्वनस्पतावीड्यमूर्ध्वशोचिषम् ।
स त्वं सुप्रीतो वीतहव्ये अद्भुत प्रशस्तिभिर्महयसे दिवेदिवे ॥ २ ॥
स त्वं दक्षस्यावृको वृधो भूरयः परस्यान्तरस्य तरुषः ।
रायः सूनो सहसो मर्त्येष्वा छर्दिर्यच्छ वीतहव्याय सप्रथो
भरद्वाजाय सप्रथः ॥ ३ ॥
द्रुतानं वो अतिथिं स्वर्णरमग्निं होतारं मनुषः स्वध्वरम् ।
विप्रं न द्युक्षवचसं सुवृक्तिभिर्हव्यवाहमरतिं देवमृञ्जसे ॥ ४ ॥
पावकया यश्चितयन्त्या कृपा क्षामन्वरुचद्यसो न भानुना ।
तूर्वन्न यामन्नेतशस्य नू रण आ यो घृणे न ततृषाणो अजरः ॥ ५ ॥

अथ अष्टादशो वर्गः ॥ १८ ॥

अग्निमग्निं वः समिधा दुवस्यत प्रियंप्रियं वो अतिथिं गृणीषणिं ।
उप वो गीर्भिरमृतं विवासत देवो देवेषु वनते हि
वार्यं देवो देवेषु वनते हि नो दुवः ॥ ६ ॥
समिद्धमग्निं समिधा गिरा गृणे शुचिं पावकं पुरो अध्वरे ध्रुवम् ।
विप्रं होतारं पुरुवारमद्रुहं कविं सुम्नैरीमहे जातवेदसम् ॥ ७ ॥
त्वां दूतमग्ने अमृतं युगेयुगे हव्यवाहं दधिरे पायुमीड्यम् ।
देवासश्च मर्तासश्च जागृविं विभुं विश्पतिं नर्मसा नि षेदिरे ॥ ८ ॥
विभूषन्नग्न उभयाँ अनु व्रता दूतो देवानां रजसी समीयसे ।
यत्ते धीतिं सुमतिमावृणीमह्यध स्मा नस्त्रिवरूथः शिवो भव ॥ ९ ॥
तं सुप्रतीकं सुदृशं स्वञ्चमविद्वांसो विदुष्टरं सपेम ।
स यक्षद्विश्वा वयुनानि विद्वान्प्र हव्यमग्निरमृतेषु वोचत् ॥ १० ॥

अथ एकोनविंशो वर्गः ॥ १९ ॥

तमग्ने पास्युत तं पिपर्षि यस्त आनट् कवये शूर धीतिम् ।
यज्ञस्य वा निशितिं वोदितिं वा तमित्पृणक्षि शवसोत राया ॥ ११ ॥
त्वमग्ने वनुष्यतो नि पाहि त्वमु नः सहसावन्नवद्यात् ।
सं त्वा ध्वस्मन्वदभ्येतु पाथः सं रयिः स्पृहयाय्यः सहस्री ॥ १२ ॥
अग्निर्होता गृहपतिः स राजा विश्वा वेद जनिमा जातवेदाः ।
देवानामुत यो मर्त्यानां यजिष्ठः स प्र यजतामृतावा ॥ १३ ॥
अग्ने यदद्य विशो अध्वरस्य होतः पावकशोचे वेष्टं हि यज्वा ।
ऋता यजासि महिना वि यद्भूर्हव्या वह यविष्ठ या ते अद्य ॥ १४ ॥
अभि प्रयांसि सुधितानि हि ख्यो नि त्वा दधीत रोदसी यजध्यै ।
अवा नो मघवन्वाजसातावग्ने विश्वानि दुरिता तरेम ता
तरेम तवावसा तरेम ॥ १५ ॥

अथ विंशो वर्गः ॥ २० ॥

अग्ने विश्वेभिः स्वनीक देवैरूर्णावन्तं प्रथमः सीद योनिम् ।
कुलायिनं घृतवन्तं सवित्रे यज्ञं नय यजमानाय साधु ॥ १६ ॥
द्रुममु त्यमथर्ववदग्निं मन्थन्ति वेधसः
यमङ्कूयन्तमानयन्नमूरं श्याव्याभ्यः ॥ १७ ॥
जनिष्ठा देवतातये सर्वताता स्वस्तये ।
आ देवान्वक्ष्यमृताँ ऋतावृधो यज्ञं देवेषु पिस्पृशः ॥ १८ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

वयमु त्वा गृहपते जनानामग्रे अकर्म समिधा बृहन्तम् ।
अस्थूरि नो गार्हपत्यानि सन्तु तिग्मेन नस्तेजसा सं शिशाधि ॥ १९ ॥

द्वितीयोऽनुवाकः [१६] षोडशं सूक्तम्

ऋषिः—भरद्वाजो बार्हस्पत्यः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१, ६, ७ आर्च्युष्णिक्; २-५, ८, ९, ११, १३-१५, १७, १८, २१, २४, २५, २८, ३२, ४० निचृद् गायत्री; १०, १९, २०, २२, २३, २९, ३१, ३४-३९, ४१ गायत्री; २६, ३० विराड्गायत्री; १२, १६, ३३, ४२, ४४ साम्नीत्रिष्टुप्; ४३, ४५ निचृत्त्रिष्टुप्; २७ आर्चीपङ्क्तिः; ४६ भुरिक्पङ्क्तिः; ४७, ४८ निचृदनुष्टुप् ॥ स्वरः—१, ६, ७ ऋषभः; २-५, ८-११, १३-१५, १७-२६, २८-३२, ३४-४१, षड्जः; १२, १६, ३३, ४२-४५ धैवतः; २७, ४६ पञ्चमः; ४७, ४८ गान्धारः ॥

अथ एकविंशो वर्गः ॥ २१ ॥

त्वमग्ने यज्ञानां होता विश्वेषां हितः। देवेभिर्मानुषे जने ॥ १ ॥
स नो मन्द्राभिरध्वरे जिह्वाभिर्यजा महः। आ देवान्वक्षि यक्षि च ॥ २ ॥
वेत्था हि वेधो अध्वनः पथश्च देवाञ्जसा। अग्ने यज्ञेषु सुक्रतो ॥ ३ ॥
त्वामीळे अध द्विता भरतो वाजिभिः शुनम्। ईजे यज्ञेषु यज्ञियम् ॥ ४ ॥
त्वमिमा वार्या पुरु दिवोदासाय सुन्वते। भरद्वाजाय दाशुषे ॥ ५ ॥

अथ द्वाविंशो वर्गः ॥ २२ ॥

त्वं दूतो अमर्त्य आ वहा दैव्यं जनम्। शृण्वन्विप्रस्य सुष्टुतिम् ॥ ६ ॥
त्वामग्ने स्वाध्यो३ मर्तासो देववीतये। यज्ञेषु देवमीळते ॥ ७ ॥
तव प्र यक्षि संदृशमुत क्रतुं सुदानवः। विश्वे जुषन्त कामिनः ॥ ८ ॥
त्वं होता मनुर्हितो वह्निरासा विदुष्टरः। अग्ने यक्षि दिवो विशः ॥ ९ ॥
अग्न आ याहि वीतये गृणानो हव्यदातये। नि होता सत्सि बर्हिषि ॥ १० ॥

अथ त्रयोविंशो वर्गः ॥ २३ ॥

तं त्वा समिद्भिरङ्गिरो घृतेन वर्धयामसि। बृहच्छोचा यविष्ठ्य ॥ ११ ॥
स नः पृथु श्रवाय्यमच्छा देव विवाससि। बृहदग्ने सुवीर्यम् ॥ १२ ॥
त्वामग्ने पुष्करादध्यथर्वा निरमन्थत। मूर्ध्नो विश्वस्य वाघतः ॥ १३ ॥
तमु त्वा दध्यङ्ङृषिः पुत्र ईधे अथर्वणः। वृत्रहणं पुरन्दरम् ॥ १४ ॥
तमु त्वा पाथ्यो वृषा समीधे दस्युहन्तमम्। धनञ्जयं रणेरणे ॥ १५ ॥

अथ चतुर्विंशो वर्गः ॥ २४ ॥

एह्यू षु ब्रवाणि तेऽग्न इत्थेतरा गिरः। एभिर्वर्धास इन्दुभिः ॥ १६ ॥
यत्र क्व च ते मनो दक्षं दधस उत्तरम्। तत्रा सदः कृणवसे ॥ १७ ॥
नहि ते पूर्तमक्षिपद्भुवन्नेमानां वसो। अथा दुवो वनवसे ॥ १८ ॥
आग्निरगामि भारतो वृत्रहा पुरुचेतनः। दिवोदासस्य सत्पतिः ॥ १९ ॥
स हि विश्वाति पार्थिवा रयिं दाशन्महित्वना। वन्वन्नवातो अस्तृतः ॥ २० ॥

अथ पञ्चविंशो वर्गः ॥ २५ ॥

स प्रत्नवन्नवीयसाग्ने द्युम्नेन संयता। बृहत्ततन्थ भानुना ॥ २१ ॥
प्र वः सखायो अग्नये स्तोमं यज्ञं च धृष्णुया। अर्च गायं च वेधसे ॥ २२ ॥
स हि यो मानुषा युगा सीदद्धोता कविक्रतुः। दूतश्च हव्यवाहनः ॥ २३ ॥
ता राजाना शुचिव्रतादित्यान्मारुतं गणम्। वसो यक्षीह रोदसी ॥ २४ ॥
वस्वी ते अग्ने संदृष्टिरिषयते मर्त्यीय। ऊर्जो नपादमृतस्य ॥ २५ ॥

अथ षड्विंशो वर्गः ॥ २६ ॥

क्रत्वा दा अस्तु श्रेष्ठोऽद्य त्वा वन्वन्त्सुरेक्णाः ।
मर्तं आनाश सुवृक्तिम् ॥ २६ ॥
ते तं अग्ने त्वोता इषयन्तो विश्वमायुः ।
तरन्तो अर्यो अरातीर्वन्वन्तो अर्यो अरातीः ॥ २७ ॥

अग्निस्तिग्मेन शोचिषा यासद्विश्वं न्यत्रिणम्। अग्निर्नो वनते रयिम् ॥ २८ ॥
सुवीरं रयिमा भर जातवेदो विचर्षणे। जहि रक्षांसि सुक्रतो ॥ २९ ॥
त्वं नः पाह्यंहसो जातवेदो अघायतः। रक्षा णो ब्रह्मणस्कवे ॥ ३० ॥

अथ सप्तविंशो वर्गः ॥ २७ ॥

यो नो अग्ने दुरेव आ मर्तो वधाय दाशति। तस्मान्नः पाह्यंहसः ॥ ३१ ॥
त्वं तं दैव जिह्वया परि बाधस्व दुष्कृतम्। मर्तो यो नो जिघांसति ॥ ३२ ॥
भरद्वाजाय सप्रथः शर्म यच्छ सहन्त्य। अग्ने वरेण्यं वसु ॥ ३३ ॥
अग्निर्वृत्राणि जङ्घनद् द्रविणस्युर्विपन्यया। समिद्धः शुक्र आहुतः ॥ ३४ ॥
गर्भे मातुः पितुष्पिता विदिद्युतानो अक्षरे। सीदन्नृतस्य योनिमा ॥ ३५ ॥

अथ अष्टाविंशो वर्गः ॥ २८ ॥

ब्रह्मा प्रजावदा भर जातवेदो विचर्षणे। अग्ने यद्दीदयद्दिवि ॥ ३६ ॥
उप त्वा रण्वसंदृशं प्रयस्वन्तः सहस्कृत। अग्ने ससृज्महे गिरः ॥ ३७ ॥
उप च्छायामिव घृणेरगन्म शर्म ते वयम्। अग्ने हिरण्यसंदृशः ॥ ३८ ॥
य उग्रइव शर्यहा तिग्मशृङ्गो न वंसगः। अग्ने पुरो रुरोजिथ ॥ ३९ ॥
आ यं हस्ते न खादिनं शिशुं जातं न बिभ्रति। विशामग्निं स्वध्वरम् ॥ ४० ॥

अथ एकोनत्रिंशो वर्गः ॥ २९ ॥

[illegible] देवं देववीतये भर्ता वसुवित्तमम्। आ स्वे योनौ नि षीदतु ॥ ४१ ॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

आ जातं जातवेदसि प्रियं शिशीतातिथिम्। स्योन आ गृहपतिम्॥ ४२॥
अग्ने युक्ष्वा हि ये तवाश्वासो देव साधवः। अरं वहन्ति मन्यवे॥ ४३॥
अच्छा नो याह्या वहाभि प्रयांसि वीतये। आ देवान्त्सोमपीतये॥ ४४॥
उदग्ने भारत द्युमदजस्रेण दविद्युतत्। शोचा वि भाह्यजर ॥ ४५॥

अथ त्रिंशो वर्गः॥ ३०॥

वीती यो देवं मर्तो दुवस्येदग्निमीळीताध्वरे हविष्मान् ।
होतारं सत्ययजं रोदस्योरुत्तानहस्तो नमसा विवासेत् ॥ ४६॥
आ तें अग्न ऋचा हविर्हृदा तष्टं भरामसि ।
ते ते भवन्तूक्षणो ऋषभासो वशा उत ॥ ४७॥
अग्निं देवासो अग्नियमिन्धते वृत्रहन्तमम् ।
येना वसून्याभृता तृळ्हा रक्षांसि वाजिना ॥ ४८॥

इति चतुर्थाष्टके पञ्चमोऽध्यायः॥

अथ षष्ठेऽध्यायः

[१७] सप्तदशं सूक्तम्

ऋषिः—भरद्वाजो बार्हस्पत्यः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१-४, ११ त्रिष्टुप्; ५, ६, ८ विराट्त्रिष्टुप्; ७, ९, १०, १२, १४ निचृत्त्रिष्टुप्; १३ स्वराट् पङ्क्तिः; १५ आर्च्युष्णिक्॥ स्वरः—१-१२, १४ धैवतः; १३ पञ्चमः; १५ ऋषभः॥

अथ प्रथमो वर्गः॥ १॥

पिबा सोममभि यमुग्र तर्द ऊर्वं गव्यं महि गृणान इन्द्र।
वि यो धृष्णो वधिषो वज्रहस्त विश्वा वृत्रमभित्रिया शवोभिः॥ १॥
स ईं पाहि य ऋजीषी तरुत्रो यः शिप्रवान्वृषभो यो मतीनाम्।
यो गोत्रभिद्वज्रभृद्यो हरिष्ठः स इन्द्र चित्राँ अभि तृन्धि वाजान्॥ २॥
एवा पाहि प्रत्नथा मन्दतु त्वा शुधि ब्रह्म वावृधस्वोत गीर्भिः।
आविः सूर्यं कृणुहि पीपिहीषो जहि शत्रूँरभि गा इन्द्र तृन्धि॥ ३॥
ते त्वा मदा बृहदिन्द्र स्वधाव इमे पीता उक्षयन्त द्युमन्तम्।
महामनूनं तवसं विभूतिं मत्सरासो जर्हषन्त प्रसाहम्॥ ४॥
येभिः सूर्यमुषसं मन्दसानोऽवासयोऽप दृळ्हानि दर्दन्।
महामद्रिं परि गा इन्द्र सन्तं नुत्था अचुतं सदसस्परि स्वात्॥ ५॥

अथ द्वितीयो वर्गः॥ २॥

तव क्रत्वा तव तदंसनाभिरामासु पक्वं शच्या नि दीधः।
और्णोर्दुरः उस्त्रियाभ्यो वि दृळ्हो दूर्वाद्रा असृजो अङ्गिरस्वान्॥ ६॥
पप्राथ क्षां महि दंसो व्युर्वीमुप द्यामृष्वो बृहदिन्द्र स्तभायः।
अधारयो रोदसी देवपुत्रे प्रत्ने मातरा यह्वी ऋतस्य॥ ७॥
अध त्वा विश्वे पुर इन्द्र देवा एकं तवसं दधिरे भराय।
अदेवो यदभ्यौहिष्ट देवान्त्स्वर्षाता वृणत इन्द्रमत्र॥ ८॥
अध द्यौश्चित्ते अप सा नु वज्राद् द्वितानमद्रियसा स्वस्य मन्योः।
अहिं यदिन्द्रो अभ्योहसानं नि चिद्विश्वायुः शयथे जघान॥ ९॥
अध त्वष्टा ते मह उग्र वज्रं सहस्त्रभृष्टिं ववृतच्छताश्रिम्।
निकाममरमणसं येन नवन्तमहिं सं पिणगृजीषिन् ॥ १०॥

अथ तृतीयो वर्गः॥ ३॥

वर्धान्यं विश्वे मरुतः सजोषाः पचच्छतं महिषाँ इन्द्र तुभ्यम्।
पूषा विष्णुस्त्रीणि सरांसि धावन्वृत्रहणं मदिरमंशुमस्मै॥ ११॥
भा क्षोदो महि वृतं नदीनां परिष्ठितमसृज ऊर्मिमपाम्।
तासामनु प्रवत इन्द्र पन्थां प्रार्दयो नीचीरपसः समुद्रम्॥ १२॥
एवा ता विश्वा चकृवांसमिन्द्रं महामुग्रमजुर्यं संहोदाम्।
सुवीरं त्वा स्वायुधं सुवज्रमा ब्रह्म नव्यमवसे ववृत्यात्॥ १३॥
स नो वाजाय श्रवस इषे च राये धेहि द्युमत इन्द्र विप्रान्।
भरद्वाजे नृवत इन्द्र सूरीन्दिवि च स्मैधि पार्ये न इन्द्र॥ १४॥
अया वाजं देवहितं सनेम मदेम शतहिमाः सुवीराः॥ १५॥

[१८] अष्टादशं सूक्तम्

ऋषिः—भरद्वाजो बार्हस्पत्यः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१, ४, ९, १४ निचृत्त्रिष्टुप्; २, ८, ११, १३ त्रिष्टुप्; ३, १५ भुरिक्पङ्क्तिः; ५ स्वराट्पङ्क्तिः; ६ ब्राह्म्युष्णिक्; ७, १० विराट्त्रिष्टुप्; १२ भुरिक्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१, २, ४, ७-१४ धैवतः; ३, ५, १५ पञ्चमः; ६ ऋषभः॥

अथ चतुर्थो वर्गः॥ ४॥

तमु ष्टुहि यो अभिभूत्योजा वन्वन्नवातः पुरुहूत इन्द्रः।
अषाळ्हमुग्रं सहमानमाभिर्गीर्भिर्वर्धं वृषभं चर्षणीनाम् ॥ १॥
स वृत्रहा सत्वा खजकृत्समद्वा तुविम्रक्षो नंदनुमाँ ऋजीषी।
बृहद्रेणुश्च्यवनो मानुषीणामेकः कृष्टीनामभवत्सहावा ॥ २॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

त्वं ह नु त्यदृदमायो दस्यूँरेकः कृष्टीरवनोरायीय ।
अस्ति स्विन्नु वीर्यं१ तत्त इन्द्र न स्विदस्ति तदृतुथा वि वोचः ॥ ३ ॥
सदिद्धि ते तुविजातस्य मन्ये सहः सहिष्ठ तुरतस्तुरस्य ।
उग्रमुग्रस्य तवसस्तवीयोऽरंधस्य रध्रतुरो बभूव ॥ ४ ॥
तन्नः प्रत्नं सख्यमस्तु युष्मे इत्था वदद्भिर्वलमङ्गिरोभिः ।
हन्नच्युतच्युदस्मेषयन्तमृणोः पुरो वि दुरो अस्य विश्वाः ॥ ५ ॥

अथ पञ्चमो वर्गः ॥ ५ ॥

स हि धीभिर्हव्यो अस्त्युग्र ईशानकृन्महुति वृत्रतूर्ये ।
स तोकसाता तनये स वज्री वितन्तसाय्यो अभवत्समत्सु ॥ ६ ॥
स मज्मना जनिम मानुषाणाममर्त्येन नाम्नाति प्र सर्त्रे ।
स द्युम्नेन स शवसोत राया स वीर्येण नृतमः समोकाः ॥ ७ ॥
स यो न मुहे न मिथू जनो भूत्सुमन्तुनामा चुमुरि धुनिं च ।
वृणक्पिप्रुं शम्बरं शुष्णमिन्द्रः पुरां च्यौत्नाय शयथाय नू चित् ॥ ८ ॥
उदावता त्वक्षसा पन्यसा च वृत्रहत्याय रथमिन्द्र तिष्ठ ।
धिष्व वज्रं हस्त आ दक्षिणत्राभि प्र मन्द पुरुदत्र मायाः ॥ ९ ॥
अग्निर्न शुष्कं वनमिन्द्र हेती रक्षो नि धक्ष्यशनिर्न भीमा ।
गम्भीरय ऋष्वया यो रुरोजाध्वानयद्दुरिता दम्भयच्च ॥ १० ॥

अथ षष्ठो वर्गः ॥ ६ ॥

आ सहस्रं पथिभिरिन्द्र राया तुविद्युम्न तुविवाजेभिरर्वाक् ।
याहि सूनो सहसो यस्य नू चिददेव ईशे पुरुहूत योतोः ॥ ११ ॥
प्र तुविद्युम्नस्य स्थविरस्य घृष्वेर्दिवो रंरण्से महिमा पृथिव्याः ।
नास्य शत्रुर्न प्रतिमानमस्ति न प्रतिष्ठिः पुरुमायस्य सह्योः ॥ १२ ॥
प्र तत्ते अद्या करणं कृतं भूत्कुत्सं यदायुमतिथिग्वमस्मै ।
पुरू सहस्रा नि शिशा अभि क्षामुत्तूर्वयाणं धृषता निनेथ ॥ १३ ॥
अनु त्वाहिंध्रे अधं देव देवा मदन्विश्वे कवितमं कवीनाम् ।
करो यत्र वरिवो बाधितायं दिवे जनाय तन्वे गृणानः ॥ १४ ॥
अनु द्यावापृथिवी तत्त ओजोऽमर्त्या जिहत इन्द्र देवाः ।
कृष्वा कृत्नो अकृतं यत्ते अस्त्युक्थं नवीयो जनयस्व यज्ञैः ॥ १५ ॥

[१९] एकोनविंशं सूक्तम्

ऋषिः—भरद्वाजो बार्हस्पत्यः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१, ३, १३ भुरिक्पङ्क्तिः; २, ४, ६, ७ निचृत्त्रिष्टुप्; ५, १०-१२ विराट्त्रिष्टुप्; ८ त्रिष्टुप्; ९ पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१, ३, ९, १३ पञ्चमः; २, ४-८, १०-१२ धैवतः ॥

अथ सप्तमो वर्गः ॥ ७ ॥

मह्माँ इन्द्रो नृवदा चर्षणिप्रा उत द्विबर्हा अमिनः सहोभिः ।
अस्मद्र्यग्वावृधे वीर्यायोरुः पृथुः सुकृतः कर्तृभिर्भूत् ॥ १ ॥
इन्द्रमेव धिषणा सातये धाद् बृहन्तमृष्वमजरं युवानम् ।
अषाळ्हेन शवसा शूशुवांसं सद्यश्चिद्यो वावृधे असामि ॥ २ ॥
पृथू करस्ना बहुला गभस्ती अस्मद्र्यक्सं मिमीहि श्रवांसि ।
यूथेव पश्वः पशुपा दमूना अस्माँ इन्द्राभ्या ववृत्स्वाजौ ॥ ३ ॥
तं व इन्द्रं चतिनमस्य शाकैरिह नूनं वाजयन्तो हुवेम ।
यथा चित्पूर्वे जरितार आसुरनेद्या अनवद्या अरिष्टाः ॥ ४ ॥
धृतव्रतो धनदाः सोमवृद्धः स हि वामस्य वसुनः पुरुक्षुः ।
सं जग्मिरे पथ्या३ रायो अस्मिन्त्समुद्रे न सिन्धवो यादमानाः ॥ ५ ॥

अथ अष्टमो वर्गः ॥ ८ ॥

शविष्ठं नु आ भर शूर शव ओजिष्ठमोजो अभिभूत उग्रम् ।
विश्वा द्युम्ना वृण्या मानुषाणामस्मभ्यं दा हरिवो माद्यध्यै ॥ ६ ॥
यस्ते मदः पृतनाषाळमृध्र इन्द्र तं न आ भर शूशुवांसम् ।
येन तोकस्य तनयस्य सातौ मंसीमहि जिगीवांसस्त्वोताः ॥ ७ ॥
आ नो भर वृषणं शुष्मिमिन्द्र धनस्पृतं शूशुवांसं सुदक्षम् ।
येन वंसाम पृतनासु शत्रून्तवोतिभिरुत जामींरजामीन् ॥ ८ ॥
आ ते शुष्मो वृषभ एतु पश्चादोत्तरादधरादा पुरस्तात् ।
आ विश्वतो अभि समेत्ववाङिन्द्र द्युम्नं स्ववद्धेह्यस्मे ॥ ९ ॥
नृवत्त इन्द्र नृतमाभिरूती वंसीमहि वामं श्रोमतेभिः ।
ईक्षे हि वस्व उभयस्य राजन्धा रत्नं महि स्थूरं बृहन्तम् ॥ १० ॥
मरुत्वन्तं वृषभं वावृधानमकवारिं दिव्यं शासमिन्द्रम् ।
विश्वासाहमवसे नूतनायोग्रं सहोदामिह तं हुवेम ॥ ११ ॥
जनं बिभ्रन्महि चिन्मन्यमानमेभ्यो नृभ्यो रन्धया येष्वस्मि ।
अधा हि त्वा पृथिव्यां शूरसातौ हवामहे तनये गोष्वप्सु ॥ १२ ॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

वयं त एभिः पुरुहूत सख्यैः शत्रोःशत्रोरुत्तर इत्स्याम।
घ्नन्तो वृत्राण्युभयानि शूर राया मंदेम बृहता त्वोतांः॥ १३॥

[२०] विंशं सूक्तम्

ऋषिः—भरद्वाजो बार्हस्पत्यः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१ आर्ष्यनुष्टुप्; २, ३, ७, १२ पङ्क्तिः; ४, ६ भुरिक्पङ्क्तिः; ५, ८, ९, ११ निचृत्त्रिष्टुप्; १० निचृत् पङ्क्तिः; १३ स्वराट्पङ्क्तिः॥ स्वरः—१ गान्धारः; २-४, ६, ७, १०, १२, १३ पञ्चमः; ५, ८, ९, ११ धैवतः॥

अथ नवमो वर्गः॥ ९॥

द्यौर्न य इन्द्राभि भूमार्यस्तस्थौ रयिः शवसा पृत्सु जनान्।
तं नः सहस्त्रभरमुर्वरासां दद्धि सूनो सहसो वृत्रतुरम्॥ १॥
दिवो न तुभ्यमिन्द्र सत्रासुर्यं देवेभिर्धायि विश्वम्।
अहिं यद् वृत्रमपो वव्रिवांसं हनृजीषिन्विष्णुना सचानः॥ २॥
तूर्वन्नोजीयान्तवसस्तवीयान्कृतब्रह्मेन्द्रो वृद्धमहाः।
राजाभवन्मधुनः सोम्यस्य विश्वासां यत्पुरां दर्लुमावत्॥ ३॥
शतैरपद्रन्पणयं इन्द्रात्र दशोणये कवयेऽर्कसातौ।
वधैः शुष्णस्याशुषस्य मायाः पित्वो नारिरेचीत्किं चन प्र॥ ४॥
महो द्रुहो अप विश्वायु धायि वज्रस्य यत्पतने पादि शुष्णः।
उरु ष सरथं सारथये करिन्द्रः कुत्साय सूर्यस्य सातौ॥ ५॥

अथ दशमो वर्गः॥ १०॥

प्र श्येनो न मंदिरमंशुमस्मै शिरो दासस्य नमुचेर्मथायन्।
प्रावन्नमीं साप्यं ससन्तं पृणग्राया समिषा सं स्वस्ति॥ ६॥
वि पिप्रोरहिमायस्य दृळ्हाः पुरो वज्रिञ्छवसा न दर्दः।
सुदामन्तद्रेक्णो अप्रमृष्यमृजिश्वने दात्रं दाशुषे दाः॥ ७॥
स वेतसुं दशमायं दशोणिं तूतुजिमिन्द्रः स्वभिष्टिसुम्नः।
आ तुग्रं शश्वदिभं द्योतनाय मातुर्न सीमुप सृजा दुयध्यै॥ ८॥
स ईं स्पृधो वनते अप्रतीतो बिभ्रद्वज्रं वृत्रहणं गभस्तौ।
तिष्ठद्धरी अध्यस्तेव गर्ते वचोयुजा वहत इन्द्रमृष्वम्॥ ९॥
सनेम तेऽवसा नव्य इन्द्र प्र पूरवः स्तवन्त एना यजैः।
सप्त यत्पुरः शर्म शारदीर्दर्द्धन्दासीः पुरुकुत्साय शिक्षन्॥ १०॥
त्वं वृध इन्द्र पूर्व्यो भूर्वीरिवस्यन्नुशने काव्याय।
परा नववास्त्वमनुदेयं महे पित्रे ददाथ स्वं नपातम्॥ ११॥

त्वं धुनिरिन्द्र धुनिमतीर्ऋणोरपः सीरा न स्रवन्तीः।
प्र यत्समुद्रमति शूर पर्षि पारया तुर्वशं यदुं स्वस्ति॥ १२॥
तव ह त्यदिन्द्र विश्वमाजौ सस्तो धुनीचुमुरी या ह सिष्वप्।
दीदयदित्तुभ्यं सोमेभिः सुन्वन्दभीतिरिध्मभृतिः पक्थ्यैः॥ १३॥

[२१] एकविंशं सूक्तम्

ऋषिः—भरद्वाजो बार्हस्पत्यः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१, २, ९, १०, १२ विराट्त्रिष्टुप्; ३, ७ निचृत्त्रिष्टुप्; ४-६, ११ त्रिष्टुप्; ८ स्वराड् बृहती॥ स्वरः—१-७, ९-१२ धैवतः; ८ मध्यमः॥

अथ एकादशो वर्गः॥ ११॥

इमा उ त्वा पुरुतमस्य कारोर्हव्यं वीर हव्या हवन्ते।
धियो रथेष्ठामजरं नवीयो रयिर्विभूतिरीयते वचस्या॥ १॥
तमु स्तुष इन्द्रं यो विदानो गिर्वीहसं गीर्भिर्यज्ञवृद्धम्।
यस्य दिवमति महा पृथिव्याः पुरुमायस्य रिरिचे महित्वम्॥ २॥
स इत्तमोऽवयुनं ततन्वत्सूर्येण वयुनवच्चकार।
दृदा ते मती अमृतस्य धामेयक्षन्तो न मिनन्ति स्वधावः॥ ३॥
यस्ता चकार स कुह स्विदिन्द्रः कमा जनं चरति कासु विक्षु।
कस्ते यज्ञो मनसे शं वरायं को अर्क इन्द्र कतमः स होता॥ ४॥
इदा हि ते वेविषतः पुराजाः प्रत्नास आसुः पुरुकृत्सखायः।
ये मध्यमास उत नूतनास उतावमस्य पुरुहूत बोधि॥ ५॥

अथ द्वादशो वर्गः॥ १२॥

तं पृच्छन्तोऽवरासः परांणि प्रत्ना त इन्द्र श्रुत्यानु येमुः।
अचीमसि वीर ब्रह्मवाहो यादेव विद्म तात्त्वा महान्तम्॥ ६॥
अभि त्वा पाजो रक्षसो वि तस्थे महि जज्ञानमभि तत्सु तिष्ठ।
तव प्रत्नेन युज्येन सख्या वज्रेण धृष्णो अप ता नुदस्व॥ ७॥
स तु श्रुधीन्द्र नूतनस्य ब्रह्मण्यतो वीर कारुधायः।
त्वं ह्यापिः प्रदिवि पितृणां शश्वद्बभूथ सुहव एष्टौ॥ ८॥
प्रोतये वरुणं मित्रमिन्द्रं मरुतः कृष्वावसे नो अद्य।
प्र पूषणं विष्णुमग्निं पुरन्धिं सवितारमोषधीः पर्वतांश्च॥ ९॥
इमं उ त्वा पुरुशाक प्रयज्यो जरितारो अभ्यर्चन्त्यर्कैः।
श्रुधी हवमा हुवतो हुवानो न त्वावाँ अन्यो अमृत त्वदस्ति॥ १०॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नू म आ वाचमुप याहि विद्वान्विश्वेभिः सूनो सहसो यजत्रैः।
ये अग्निजिह्वा ऋतसाप आसुर्ये मनुं चक्रुरुपरं दसाय॥ ११॥
स नो बोधि पुरएता सुगेषूत दुर्गेषु पथिकृद्विदानः।
ये अश्रमास उरवो वहिष्ठास्तेभिर्न इन्द्राभि वक्षि वाजम्॥ १२॥

[२२] द्वाविंशं सूक्तम्

ऋषिः—भरद्वाजो बार्हस्पत्यः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१, ७ भुरिक्पङ्क्तिः; २, ४, ५ त्रिष्टुप्; ३ स्वराट्पङ्क्तिः; ६, ८ विराट्त्रिष्टुप्; ९, ११ निचृत्त्रिष्टुप्; १० पङ्क्तिः॥ स्वरः—१, ३, ७, १० पञ्चमः; २, ४-६, ८, ९, ११ धैवतः॥

अथ त्रयोदशो वर्गः॥ १३॥

य एक इद्व्यश्चर्षणीनामिन्द्रं तं गीर्भिरभ्यर्च आभिः।
यः पत्यते वृषभो वृष्ण्यावान्त्सत्यः सत्वा पुरुमायः सहस्वान्॥ १॥
तमु नः पूर्वे पितरो नवग्वाः सप्तः विप्रासो अभि वाजयन्तः।
नक्षद्दाभं ततुरिं पर्वतेष्ठामद्रोघवाचं मतिभिः शविष्ठम्॥ २॥
तमीमहे इन्द्रमस्य रायः पुरुवीरस्य नृवतः पुरुक्षोः।
यो अस्कृधोयुरजरः स्ववान्तमा भर हरिवो मादयध्यै॥ ३॥
तन्नो वि वोचो यदि ते पुरा चिज्जरितार आनशुः सुम्नमिन्द्र।
कस्ते भागः किं वयो दुध्र खिद्वः पुरुहूत पुरूवसोऽसुरघ्नः॥ ४॥
तं पृच्छन्ती वज्रहस्तं रथेष्ठामिन्द्रं वेपी वक्वरी यस्य नू गीः।
तुविग्राभं तुविकूर्मिं रभोदां गातुमिषे नक्षते तुम्रमच्छ॥ ५॥

अथ चतुर्दशो वर्गः॥ १४॥

अया हु त्यं मायया वावृधानं मनोजुवा स्वतवः पर्वतेन।
अच्युता चिद्वीळिता स्वोजो रुजो वि दृळ्हा धृषता विरप्शिन्॥ ६॥
तं वो धिया नव्यस्या शविष्ठं प्रत्नं प्रत्नवत्परितंसयध्यै।
स नो वक्षदनिमानः सुवह्येन्द्रो विश्वान्यति दुर्गहाणि॥ ७॥
आ जनाय द्रुह्वणे पार्थिवानि दिव्यानि दीपयोऽन्तरिक्षा।
तपा वृषन्विश्वतः शोचिषा तान्ब्रह्मद्विषे शोचय क्षामुपश्चः॥ ८॥
भुवो जनस्य दिव्यस्य राजा पार्थिवस्य जगतस्त्वेषसंदृक्।
धिष्व वज्रं दक्षिण इन्द्र हस्ते विश्वा अजुर्य दयसे वि मायाः॥ ९॥
आ संयतमिन्द्र णः स्वस्तिं शत्रुतूर्याय बृहतीममृध्राम्।
यया दासान्यार्याणि वृत्रा करो वज्रिन्त्सुतुका नहुषाणि॥ १०॥

स नो नियुद्भिः पुरुहूत वेधो विश्ववाराभिरा गहि प्रयज्यो।
न या अदेवो वरते न देव आभिर्याहि तूयमा मन्द्रयद्रिक्॥ ११॥

[२३] त्रयोविंशं सूक्तम्

ऋषिः—भरद्वाजो बार्हस्पत्यः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१, ३, ८, ९ निचृत्त्रिष्टुप्; २, ४ स्वराट्पङ्क्तिः; ५, ६, १० त्रिष्टुप्; ७ विराट्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१, ३, ५-१० धैवतः; २, ४ पञ्चमः॥

अथ पञ्चदशो वर्गः॥ १५॥

सुत इत्त्वं निमिश्ल इन्द्र सोमे स्तोमे ब्रह्मणि शस्यमान उक्थे।
यद्वा युक्ताभ्यां मघवन्हरिभ्यां बिभ्रद्वज्रं बाह्वोरिन्द्र यासि॥ १॥
यद्वा दिवि पार्ये सुष्विमिन्द्र वृत्रहत्येऽवसि शूरसातौ।
यद्वा दक्षस्य बिभ्युषो अबिभ्युदरन्धयः शर्धत इन्द्र दस्यून्॥ २॥
पाता सुतमिन्द्रो अस्तु सोमं प्रणेनीरुग्रो जरितारमूती।
कर्ता वीराय सुष्वय उ लोकं दाता वसु स्तुवते कीरये चित्॥ ३॥
गन्तेयान्ति सवना हरिभ्यां बभ्रिर्वज्रं पपिः सोमं ददिर्गाः।
कर्ता वीरं नर्यं सर्ववीरं श्रोता हवं गृणतः स्तोमवाहाः॥ ४॥
अस्मै वयं यद्वावान तद्विविष्म इन्द्राय यो नः प्रदिवो अपस्कः।
सुते सोमे स्तुमसि शंसदुक्थेन्द्राय ब्रह्म वर्धनं यथासत्॥ ५॥

अथ षोडशो वर्गः॥ १६॥

ब्रह्माणि हि चकृषे वर्धनानि तावत्त इन्द्र मतिभिर्विविष्मः।
सुते सोमे सुतपाः शंतमानि रान्द्र्या क्रियास्म वक्षणानि यज्ञैः॥ ६॥
स नो बोधि पुरोळाशं ररायः पिबा तु सोमं गोऋजीकमिन्द्र।
एदं बर्हिर्यजमानस्य सीदोरुं कृधि त्वायत उ लोकम्॥ ७॥
स मन्दस्वा ह्यनु जोषमुग्र प्र त्वा यज्ञास इमे अश्नुवन्तु।
प्रेमे हवासः पुरुहूतमस्मे आ त्वेयं धीरवस इन्द्र यम्याः॥ ८॥
तं वः सखायः सं यथा सुतेषु सोमेभिरीं पृणता भोजमिन्द्रम्।
कुवित्तस्मा असति नो भरायं न सुष्विमिन्द्रोऽवसे मृधाति॥ ९॥
एवेदिन्द्रः सुते अस्ताव सोमे भरद्वाजेषु क्षयदिन्मघोनः।
असद्यथा जरित्र उत सूरिरिन्द्रो रायो विश्ववारस्य दाता॥ १०॥

तृतीयोऽनुवाकः [२४] चतुर्विंशं सूक्तम्

ऋषिः—भरद्वाजो बार्हस्पत्यः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१, २ भुरिक्पङ्क्तिः; ३, ५, ९ पङ्क्तिः; ४, ७ निचृत्त्रिष्टुप्; ६ ब्राह्मीबृहती; ८ त्रिष्टुप्; १० विराट्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१, ३, ५, ९ पञ्चमः; ४, ७, ८, १० धैवतः; ६ मध्यमः॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अथ सप्तदशो वर्गः ॥ १७ ॥

वृषा मद इन्द्रे श्लोक उक्था सचा सोमेषु सुतपा ऋजीषी।
अर्चन्त्यो मघवा नृभ्य उक्थैर्द्युक्षो राजा गिरामक्षितोतिः ॥ १ ॥
ततुरिर्वीरो नर्यो विचेताः श्रोता हवं गृणत उर्व्यूतिः।
वसुः शंसो नरां कारुधाया वाजी स्तुतो विदथे दाति वाजम् ॥ २ ॥
अक्षो न चक्र्योः शूर बृहन्प्र ते मह्ना रिरिचे रोदस्योः।
वृक्षस्य नु ते पुरुहूत वया व्यूतयो रुरुहुरिन्द्र पूर्वीः ॥ ३ ॥
शचीवतस्ते पुरुशाक शाका गवामिव स्रुतयः संचरण्णीः।
वत्सानां न तन्तयस्त इन्द्र दामन्वन्तो अदामानः सुदामन् ॥ ४ ॥
अन्यदद्य कर्वरमन्यदु श्वोऽसच्च सन्मुहुराचक्रिरिन्द्रः ।
मित्रो नो अत्र वरुणश्च पूषार्यो वर्शस्य पर्येतास्ति ॥ ५ ॥

अथ अष्टादशो वर्गः ॥ १८ ॥

वि त्वदापो न पर्वतस्य पृष्ठादुक्थेभिरिन्द्रानयन्त यज्ञैः।
तं त्वाभिः सुष्टुतिभिर्वाजयन्त आजिं न जग्मुर्गिर्वाहो अश्वाः ॥ ६ ॥
न यं जरन्ति शरदो न मासा न द्याव इन्द्रमवकर्शयन्ति।
वृद्धस्य चिद्वर्धतामस्य तनूः स्तोमेभिरुक्थैश्च शस्यमाना ॥ ७ ॥
न वीळवे नमते न स्थिराय न शर्धते दस्युजूताय स्तवान्।
अज्रा इन्द्रस्य गिरयश्चिदुह्वा गम्भीरे चिद्भवति गाधमस्मै ॥ ८ ॥
गम्भीरेण न उरुणा मत्रिन्प्रेषो यन्धि सुतपावन्वाजान्।
स्था ऊ षु ऊर्ध्व ऊती अरिषण्यन्नक्तोर्व्युष्टौ परितक्म्यायाम् ॥ ९ ॥
सचस्व नायमवसे अभीक इतो वा तमिन्द्र पाहि रिषः।
अमा चैनमरण्ये पाहि रिषो मदेम शतहिमाः सुवीराः ॥ १० ॥

[२५] पञ्चविंशं सूक्तम्

ऋषिः—भरद्वाजो बार्हस्पत्यः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१, ५ पङ्क्तिः; २, ७-९ निचृत्त्रिष्टुप्; ३ भुरिक्पङ्क्तिः; ४, ६ त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१, ३, ५ पञ्चमः; २, ४, ६-९ धैवतः ॥

अथ एकोनविंशो वर्गः ॥ १९ ॥

या त कुतिर्वमा या परमा या मध्यमेन्द्र शम्मित्रस्ति।
ताभिरू षु वृत्रहत्येऽवीर्न एभिश्च वाजैर्महान्न उग्र ॥ १ ॥
आभिः स्पृधो मिथतीररिषण्यन्नभित्रस्य व्यथया मन्युमिन्द्र।
आभिर्विश्वा अभियुजो विषूचीरार्यायं विशोऽव तारिदासीः ॥ २ ॥
इन्द्र जामय उत येऽजामयोऽर्वाचीनासो वनुषो युयुज्रे।
त्वमेषां विथुरा शवांसि जहि वृष्ण्यानि कृणुही पराचः ॥ ३ ॥
शूरो वा शूरं वनते शरीरैस्तनूरुचा तरुषि यत्कृण्वैते।
तोके वा गोषु तनये यदप्सु वि क्रन्दसी उर्वरासु ब्रवैते ॥ ४ ॥
नहि त्वा शूरो न तुरो न धृष्णुर्न त्वा योधो मन्यमानो युयोध।
इन्द्र नकिष्ट्वा प्रत्यस्त्येषां विश्वा जातान्यभ्यसि तानि ॥ ५ ॥

अथ विंशो वर्गः ॥ २० ॥

स पत्यत उभयोर्नृम्णमयोर्यदीं वेधसः समिथे हवन्ते।
वृत्रे वा महो नृवति क्षयें वा व्यचस्वन्ता यदिं वितन्तसैते ॥ ६ ॥
अधा स्मा ते चर्षणयो यदेजानिन्द्र त्रातोत भवा वरूता।
अस्माकासो ये नृतमासो अर्य इन्द्र सूरयो दधिरे पुरो नः ॥ ७ ॥
अनु ते दायि महे इन्द्रियाय सत्रा ते विश्वमनु वृत्रहत्ये।
अनु क्षत्रमनु सहो यजत्रेन्द्र देवेभिरनु ते नृषह्ये ॥ ८ ॥
एवा नः स्पृधः समजा समत्स्विन्द्र रारन्धि मिथतीरदेवीः।
विद्याम वस्तोरवसा गृणन्तो भरद्वाजा उत त इन्द्र नूनम् ॥ ९ ॥

[२६] षड्विंशं सूक्तम्

ऋषिः—भरद्वाजो बार्हस्पत्यः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१ पङ्क्तिः; २, ४ भुरिक्पङ्क्तिः; ३ निचृत्पङ्क्तिः; ५ स्वराट्पङ्क्तिः; ६ विराट्त्रिष्टुप्; ७ त्रिष्टुप्; ८ निचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१-५ पञ्चमः ६-८ धैवतः ॥

अथ एकविंशो वर्गः ॥ २१ ॥

श्रुधी न इन्द्र ह्वयामसि त्वा महो वाजस्य सातौ वावृषाणाः।
सं यद्विशोऽयन्त शूरसाता उग्रं नोऽवः पार्ये अहन्दाः ॥ १ ॥
त्वां वाजी हवते वाजिनेयो महो वाजस्य गध्यस्य सातौ।
त्वां वृत्रेष्विन्द्र सत्पतिं तरुत्रं त्वां क्षेष्टे मुष्टिहा गोषु युध्यन् ॥ २ ॥
त्वं कविं चोदयोऽर्कसातौ त्वं कुत्साय शुष्णं दाशुषे वर्क्।
त्वं शिरो अमुर्मणः परा हन्नतिथिग्वाय शंस्यं करिष्यन् ॥ ३ ॥
त्वं रथं प्र भरो योधमृष्वमावो युध्यन्तं वृषभं दशद्युम्।
त्वं तुग्रं वेतसवे सचाहन्त्वं तुजिं गृणन्तमिन्द्र तूतोः ॥ ४ ॥
त्वं तदुक्थमिन्द्र बर्हणा कः प्र यच्छता सहस्रा शूर दर्षि।
अवं गिरेर्दासं शम्बरं हन्प्रावो दिवोदासं चित्राभिरूती ॥ ५ ॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अथ द्वाविंशो वर्गः ॥ २२ ॥

त्वं श्रद्धाभिर्मन्दसानः सोमैर्दभीतये चुमुरिमिन्द्र सिष्वप्।
त्वं रजिं पिठीनसे दशस्यन्षष्टिं सहस्रा शच्या सचाहन्॥ ६ ॥
अहं चन तत्सूरिभिरानशयां तव ज्याय इन्द्र सुम्नमोजः।
त्वया यत्स्तवन्ते सधवीर वीरास्त्रिवरूथेन नहुषा शविष्ठ॥ ७ ॥
वयं ते अस्यामिन्द्र द्युम्नहूतौ सखायः स्याम महिन प्रेष्ठाः।
प्रातर्दनिः क्षत्रश्रीरस्तु श्रेष्ठो घने वृत्राणां सनये धनानाम्॥ ८ ॥

[२७] सप्तविंशं सूक्तम्

ऋषिः—भरद्वाजो बार्हस्पत्यः॥ देवता—१-७ इन्द्रः; ८ अभ्यावर्तिनश्चायमानस्य दानस्तुतिः॥ छन्दः—१, २ स्वराट्पङ्क्तिः; ३, ४ निचृत्त्रिष्टुप्; ५, ७, ८ त्रिष्टुप्; ६ ब्राह्म्युष्णिक्॥ स्वरः—१-२ पञ्चमः; ३-५, ७, ८ धैवतः; ६ ऋषभः॥

अथ त्रयोविंशो वर्गः ॥ २३ ॥

किमस्य मदे किमु स्वस्य पीताविन्द्रः किमस्य सख्ये चकार।
रणा वा ये निषदि किं ते अस्य पुरा विविद्रे किमु नूतनासः॥ १ ॥
सदस्य मदे सद्वस्य पीताविन्द्रः सदस्य सख्ये चकार।
रणा वा ये निषदि सत्ते अस्य पुरा विविद्रे सदु नूतनासः॥ २ ॥
नहि नु ते महिमनः समस्य न मघवन्मघवत्त्वस्य विद्म ।
न राधसोराधसो नूतनस्येन्द्र नकिर्ददृश इन्द्रियं ते ॥ ३ ॥
एतत्त्यत्त इन्द्रियमचेति येनावधीर्वरशिखस्य शेषः ।
वज्रस्य यत्ते निहतस्य शुष्मात्स्वनाच्चिदिन्द्र परमो ददार ॥ ४ ॥
वधीदिन्द्रो वरशिखस्य शेषोऽभ्यावर्तिनं चायमानाय शिक्षन्।
वृचीवतो यद्धरियूपीयायां हन्पूर्वे अर्धे भियसापरो दर्त्॥ ५ ॥

अथ चतुर्विंशो वर्गः ॥ २४ ॥

त्रिंशच्छतं वर्मिणं इन्द्र साकं युव्यावर्त्यां पुरुहूत श्रवस्या।
वृचीवन्तः शरवे पत्यमानाः पात्रा भिन्दाना न्यर्थान्यायन्॥ ६ ॥
यस्य गावावरुषा सूयवसेषू अन्तरू षु चरतो रेरिहाणा।
स सृञ्जयाय तुर्वशं परादाद् वृचीवतो दैववाताय शिक्षन्॥ ७ ॥
द्वयाँ अग्ने रथिनो विंशतिं गा वधूमतो मघवा मह्यं सम्राट्।
अभ्यावर्ती चायमानो ददाति दूणाशेयं दक्षिणा पार्थवानाम्॥ ८ ॥

[२८] अष्टाविंशं सूक्तम्

ऋषिः—भरद्वाजो बार्हस्पत्यः॥ देवता—१, ३-८ गावः; २, ८ गाव इन्द्रो वा॥ छन्दः—१, ७ निचृत्त्रिष्टुप्; २ स्वराट्त्रिष्टुप्; ३, ४ जगती; ५, ६ त्रिष्टुप्; ८ निचृदनुष्टुप्॥ स्वरः—१, २, ५-७ धैवतः; ३, ४ निषादः; ८ गान्धारः॥

अथ पञ्चविंशो वर्गः ॥ २५ ॥

आ गावो अग्मन्नुत भद्रमक्रन्त्सीदन्तु गोष्ठे रणयन्त्वस्मे।
प्रजावतीः पुरुरूपा इह स्युरिन्द्राय पूर्वीरुषसो दुहानाः॥ १ ॥
इन्द्रो यज्वने पृणते च शिक्षत्युपेद्ददाति न स्वं मुषायति।
भूयोभूयो रयिमिदस्य वर्धयन्नभिन्ने खिल्ये नि दधाति देवयुम्॥ २ ॥
न ता नशन्ति न दभाति तस्करो नासामामित्रो व्यथिरा दधर्षति।
देवाँश्च याभिर्यजते ददाति च ज्योगित्ताभिः सचते गोपतिः सह॥ ३ ॥
न ता अर्वा रेणुककाटो अश्नुते न संस्कृतत्रमुप यन्ति ता अभि।
उरुगायमभयं तस्य ता अनु गावो मर्तस्य वि चरन्ति यज्वनः॥ ४ ॥
गावो भगो गाव इन्द्रो मे अच्छान् गावः सोमस्य प्रथमस्य भक्षः।
इमा या गावः स जनास इन्द्र इच्छामीद्धृदा मनसा चिदिन्द्रम्॥ ५ ॥
यूयं गावो मेदयथा कृशं चिदश्रीरं चित्कृणुथा सुप्रतीकम्।
भद्रं गृहं कृणुथ भद्रवाचो बृहद्वो वय उच्यते सभासु॥ ६ ॥
प्रजावतीः सूयवसं रिशन्तीः शुद्धा अपः सुप्रपाणे पिबन्तीः।
मा वः स्तेन ईशत माघशंसः परि वो हेती रुद्रस्य वृज्याः॥ ७ ॥
उपेदमुपपर्चनमासु गोषूप पृच्यताम्।
उप ऋषभस्य रेतस्युपेन्द्र तव वीर्ये॥ ८ ॥

इति चतुर्थाष्टके षष्ठेऽध्यायः॥

अथ सप्तमोऽध्यायः

[२९] एकोनत्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—भरद्वाजो बार्हस्पत्यः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१, ३, ५ निचृत्त्रिष्टुप्; २ भुरिक्पङ्क्तिः; ४ त्रिष्टुप्; ६ ब्राह्म्युष्णिक्॥ स्वरः—१, ३-५ धैवतः; २ पञ्चमः; ६ ऋषभः॥

अथ प्रथमो वर्गः ॥ १ ॥

इन्द्रं वो नरः सख्याय सेपुर्महो यन्तः सुमतये चकानाः।
महो हि दाता वज्रहस्तो अस्ति महामु रण्वमवसे यजध्वम्॥ १ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

आ यस्मिन्हस्ते नर्या मिमिक्षुरा रथे हिरण्यये रथेष्ठाः।
आ रश्मयो गभस्त्योः स्थूरयोराध्वन्नश्वासो वृषणो युजानाः॥ २॥
श्रिये ते पादा दुव आ मिमिक्षुर्धृष्णुर्वज्री शवसा दक्षिणावान्।
वसानो अत्कं सुरभिं दृशे कं स्व१र्ण नृतविषिरो बभूथ॥ ३॥
स सोम आमिश्लतमः सुतो भूद्यस्मिन्पक्तिः पच्यते सन्ति धानाः।
इन्द्रं नरः स्तुवन्तो ब्रह्मकारा उक्था शंसन्तो देववाततमाः॥ ४॥
न ते अन्तः शवसो धाय्यस्य वि तु बाबधे रोदसी महित्वा।
आ ता सूरिः पृणति तूतुजानो यूथेवाप्सु समीजमान ऊती॥ ५॥
एवेदिन्द्रः सुहव ऋष्वो अस्तूती अनूती हिरिशिप्रः सत्वा।
एवा हि जातो असमात्योजाः पुरू च वृत्रा हनति नि दस्यून्॥ ६॥

[३०] त्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—भरद्वाजो बार्हस्पत्यः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१-३ निचृत्त्रिष्टुप्; ४ पङ्क्तिः; ५ ब्राह्म्युष्णिक्॥ स्वरः—१-३ धैवतः; ४ पञ्चमः; ५ ऋषभः॥

अथ द्वितीयो वर्गः॥ २॥

भूय इद्वावृधे वीर्यायँ एको अजुर्यो दयते वसूनि।
प्र रिरिचे दिव इन्द्रः पृथिव्या अर्धमिदस्य प्रति रोदसी उभे॥ १॥
अधा मन्ये बृहदसुर्यमस्य यानि दाधार नकिरा मिनाति।
दिवेदिवे सूर्यो दर्शतो भूद्वि सद्मान्युर्विया सुक्रतुर्धात्॥ २॥
अद्या चिन्नू चित्तदपो नदीनां यदाभ्यो अरदो गातुमिन्द्र।
नि पर्वता अद्मसदो न सेदुस्त्वया दृळ्हानि सुक्रतो रजांसि॥ ३॥
सत्यमित्तन्न त्वावाँ अन्यो अस्तीन्द्र देवो न मर्त्यो ज्यायान्।
अहन्नहिं परिशयानमर्णोऽवासृजो अपो अच्छा समुद्रम्॥ ४॥
त्वमपो वि दुरो विषूचीरिन्द्र दृळ्हमरुजः पर्वतस्य।
राजाभवो जगतश्चर्षणीनां साकं सूर्यं जनयन्द्यामुषासम्॥ ५॥

[३१] एकत्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—सुहोत्रः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१ निचृत्त्रिष्टुप्; २ स्वराट्पङ्क्तिः; ३ पङ्क्तिः; ४ निचृदतिशक्वरी; ५ त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१, ४, ५ धैवतः; २, ३ पञ्चमः॥

अथ तृतीयो वर्गः॥ ३॥

अभूरेको रयिपते रयीणामा हस्तयोरधिथा इन्द्र कृष्टीः।
वि तोके अप्सु तनये च सूरेऽवोचन्त चर्षणयो विवाचः॥ १॥
त्वद्भियेन्द्र पार्थिवानि विश्वाच्युता चिच्च्यावयन्ते रजांसि।
द्यावाक्षामा पर्वतासो वनानि विश्वं दृळ्हं भयते अज्मन्ना ते॥ २॥
त्वं कुत्सेनाभि शुष्णमिन्द्राशुषं युध्य कुयवं गविष्टौ।
दश प्रपित्वे अध सूर्यस्य मुषायश्चक्रमविवे रपांसि॥ ३॥
त्वं शतान्यव शम्बरस्य पुरो जघन्थाप्रतीनि दस्योः।
अशिक्षो यत्र शच्या शचीवो दिवोदासाय सुन्वते
सुतक्रे भरद्वाजाय गृणते वसूनि॥ ४॥
स सत्यसत्वन्महते रणाय रथमा तिष्ठ तुविनृम्ण भीमम्।
याहि प्रपथिन्नवसोप मद्रिक्प्र च श्रुत श्रावय चर्षणिभ्यः॥ ५॥

[३२] द्वात्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—सुहोत्रः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१ भुरिक्पङ्क्तिः; २ स्वराट्पङ्क्तिः; ३, ५ त्रिष्टुप्; ४ निचृत्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१, २ पञ्चमः; ३-५ धैवतः॥

अथ चतुर्थो वर्गः॥ ४॥

अपूर्व्या पुरुतमान्यस्मै महे वीराय तवसे तुराय।
विरप्शिने वज्रिणे शंतमानि वचांस्यासा स्थविराय तक्षम्॥ १॥
स मातरा सूर्येणा कवीनामवासयद्रुजदद्रिं गृणानः।
स्वाधीभिर्ऋक्वभिर्वावशान उदुस्त्रियाणामसृजन्निदानम्॥ २॥
स वह्निभिर्ऋक्वभिर्गोषु शश्वन्मितज्ञुभिः पुरुकृत्वा जिगाय।
पुरः पुरोहा सखिभिः सखीयन्दृळ्हा रुरोज कविभिः कविः सन्॥ ३॥
स नीव्याभिर्जरितारमच्छा महो वाजेभिर्महद्भिश्च शुष्मैः।
पुरुवीराभिर्वृषभ क्षितीनामा गिर्वणः सुविताय प्र याहि॥ ४॥
स सर्गेण शवसा तक्तो अत्यैरप इन्द्रो दक्षिणतस्तुराषाट्।
इत्था सृजाना अनपावृदर्थं दिवेदिवे विविषुरप्रमृष्यम्॥ ५॥

[३३] त्रयस्त्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—शुनहोत्रः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१-३ निचृत्पङ्क्तिः; ४ भुरिक्पङ्क्तिः; ५ स्वराट्पङ्क्तिः॥ स्वरः—पञ्चमः॥

अथ पञ्चमो वर्गः॥ ५॥

य ओजिष्ठ इन्द्र तं सु नो दा मदो वृषन्त्स्वभिष्टिर्दास्वान्।
सौवश्व्यं यो वनवत्स्वश्वो वृत्रा समत्सु सासहदमित्रान्॥ १॥
त्वां ही३न्द्रावसे विवाचो हवन्ते चर्षणयः शूरसातौ।
त्वं विप्रेभिर्वि पणीँरशायस्त्वोत इत्सनिता वाजमर्वा॥ २॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

त्वं ताँ इन्द्रोभयाँ अमित्रान्दासा वृत्राण्यार्या च शूर।
वधीर्वनेव सुधितेभिरत्कैरा पृत्सु दर्षि नृणां नृतम॥ ३॥
स त्वं न इन्द्राकवाभिरूती सखा विश्वायुरविता वृधे भूः।
स्वर्षाता यद्ध्वयामसि त्वा युध्यन्तो नेमधिता पृत्सु शूर॥ ४॥
नूनं न इन्द्रापराय च स्या भवा मृळीक उत नो अभिष्टौ।
इत्था गृणन्तो महिनस्य शर्मन्दिवि ष्याम पार्ये गोषतमाः॥ ५॥

[३४] चतुस्त्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—शुनहोत्रः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—त्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः॥

अथ षष्ठो वर्गः॥ ६॥

सं च त्वे जग्मुर्गिर इन्द्र पूर्वीर्वि च त्वद्यन्ति विभ्वो मनीषाः।
पुरा नूनं च स्तुतय ऋषीणां पस्पृध्र इन्द्रे अध्युक्थार्का॥ १॥
पुरुहूतो यः पुरुगूर्त ऋभ्वाँ एकः पुरुप्रशस्तो अस्ति यज्ञैः।
रथो न महे शवसे युजानो३ऽस्माभिरिन्द्रो अनुमाद्यो भूत्॥ २॥
न यं हिंसन्ति धीतयो न वाणीरिन्द्रं नक्षन्तीदभि वर्धयन्तीः।
यदि स्तोतारः शतं यत्सहस्रं गृणन्ति गिर्वणसं शं तदस्मै॥ ३॥
अस्मा एतद्दिव्य१र्चेव मासा मिमिक्ष इन्द्रे न्ययामि सोमः।
जनं न धन्वन्नभि सं यदापः सत्रा वावृधुर्हवनानि यज्ञैः॥ ४॥
अस्मा एतन्मह्याङ्गूषमस्मा इन्द्राय स्तोत्रं मतिभिरवाचि।
असद्यथा महति वृत्रतूर्य इन्द्रो विश्वायुरविता वृधश्च॥ ५॥

[३५] पञ्चत्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—नरः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१ विराट्त्रिष्टुप्; २ पङ्क्तिः; ३ निचृत्त्रिष्टुप्; ४, ५ त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१, ३-५ धैवतः; २ पञ्चमः॥

अथ सप्तमो वर्गः॥ ७॥

कदा भुवन्रथक्षयाणि ब्रह्म कदा स्तोत्रे सहस्रपोष्यं दाः।
कदा स्तोमं वासयोऽस्य राया कदा धियः करसि वाजरत्नाः॥ १॥
कर्हि स्वित्तदिन्द्र यन्नृभिर्नॄन्वीरैर्वीरान्नीळयासे जयाजीन्।
त्रिधातु गा अधि जयासि गोष्विन्द्र द्युम्नं स्वर्वद्धेह्यस्मे॥ २॥
कर्हि स्वित्तदिन्द्र यज्जरित्रे विश्वप्सु ब्रह्म कृणवः शविष्ठ।
कदा धियो न नियुतो युवासे कदा गोमघा हवनानि गच्छाः॥ ३॥
स गोमघा जरित्रे अश्वश्चन्द्रा वाजश्रवसो अधि धेहि पृक्षः।
पीपिहीषः सुदुघामिन्द्र धेनुं भरद्वाजेषु सुरुचो रुरुच्याः॥ ४॥

तमा नूनं वृजनमन्यथा चिच्छूरो यच्छक्र वि दुरो गृणीषे।
मा निररं शुक्रदुघस्य धेनोराङ्गिरसान्ब्रह्मणा विप्र जिन्व॥ ५॥

[३६] षट्त्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—नरः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१ निचृत्त्रिष्टुप्; २ विराट्त्रिष्टुप्; ३ स्वराट् पङ्क्तिः; ४, ५ भुरिक्पङ्क्तिः॥ स्वरः—१, २ धैवतः; ३-५ पञ्चमः॥

अथ अष्टमो वर्गः॥ ८॥

सत्रा मदासस्तव विश्वजन्याः सत्रा रायोऽध ये पार्थिवासः।
सत्रा वाजानामभवो विभक्ता यद्देवेषु धारयथा असुर्यम्॥ १॥
अनु प्र येजे जन ओजो अस्य सत्रा दधिरे अनु वीर्याय।
स्यूमगृभे दुधयेऽर्वते च क्रतुं वृञ्जन्त्यपि वृत्रहत्ये॥ २॥
तं सध्रीचीरूतयो वृष्ण्यानि पौंस्यानि नियुतः सश्चुरिन्द्रम्।
समुद्रं न सिन्धव उक्थशुष्मा उरुव्यचसं गिर आ विशन्ति॥ ३॥
स रायस्खामुप सृजा गृणानः पुरुश्चन्द्रस्य तवमिन्द्र वस्वः।
पतिर्बभूथासमो जनानामेको विश्वस्य भुवनस्य राजा॥ ४॥
स तु श्रुधि श्रुत्या यो दुवोयुर्द्यौर्न भूमाभि रायो अर्यः।
असो यथा नः शवसा चकानो युगेयुगे वयसा चेकितानः॥ ५॥

[३७] सप्तत्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—भरद्वाजो बार्हस्पत्यः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१, ४, ५ विराट्त्रिष्टुप्; २, ३ निचृत्पङ्क्तिः॥ स्वरः—१, ४, ५ धैवतः; २, ३ पञ्चमः॥

अथ नवमो वर्गः॥ ९॥

अर्वाग्रथं विश्ववारं त उग्रेन्द्र युक्तासो हरयो वहन्तु।
कीरिश्चिद्धि त्वा हवते स्वर्वानृधीमहि सधमादस्ते अद्य॥ १॥
प्रो द्रोणे हरयः कर्माग्मन्पुनानास ऋज्यन्तो अभूवन्।
इन्द्रो नो अस्य पूर्व्यः पपीयाद् द्युक्षो मदस्य सोम्यस्य राजा॥ २॥
आसस्राणासः शवसानमच्छेन्द्रं सुचक्रे रथ्यासो अश्वाः।
अभि श्रव ऋज्यन्तो वहेयुर्नू चिन्नु वायोरमृतं वि दस्येत्॥ ३॥
वरिष्ठो अस्य दक्षिणामियर्तीन्द्रो मघोनां तुविकूर्मितमः।
यया वज्रिवः परियास्यंहो मघा च धृष्णो दयसे वि सूरीन्॥ ४॥
इन्द्रो वाजस्य स्थविरस्य दातेन्द्रो गीर्भिर्वर्धतां वृद्धमहाः।
इन्द्रो वृत्रं हनिष्ठो अस्तु सत्वा ता सूरिः पृणति तूतुजानः॥ ५॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

[३८] अष्टात्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—भरद्वाजो बार्हस्पत्यः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१-३, ५ निचृत्त्रिष्टुप्; ४ त्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः॥

अथ दशमो वर्गः॥ १०॥

अपादितं उदु नश्चित्रतमो महीं भर्षद् द्युमतीमिन्द्रहूतिम्।
पन्यसीं धीतिं दैव्यस्य यामञ्जनस्य रातिं वनते सुदानुः॥ १॥
दूराच्चिदा वसतो अस्य कर्णा घोषादिन्द्रस्य तन्यति ब्रुवाणः।
एयमेनं देवहूतिर्वव्रत्यान्मद्र्यङ्गिन्द्रमियमृच्यमाना ॥ २॥
तं वो धिया परमया पुराजामजरमिन्द्रमभ्यनूष्यर्कैः।
ब्रह्मा च गिरो दधिरे समस्मिन्महाँश्च स्तोमो अधि वर्धदिन्द्रे॥ ३॥
वर्धाद्यं यज्ञ उत सोम इन्द्रं वर्धाद् ब्रह्म गिरं उक्था च मन्म।
वर्धाहैनमुषसो यामन्नक्तोर्वर्धान्मासाः शरदो द्यावं इन्द्रम् ॥ ४॥
एवा जज्ञानं सहसे असामि वावृधानं राधसे च श्रुतायं ।
महामुग्रमवसे विप्र नूनमा विवासेम वृत्रतूर्येषु ॥ ५॥

[३९] एकोनचत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—भरद्वाजो बार्हस्पत्यः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१, ३, विराट्त्रिष्टुप्; २ त्रिष्टुप्; ४, ५ भुरिक्पङ्क्तिः॥ स्वरः—१-३ धैवतः; ४, ५ पञ्चमः॥

अथ एकादशो वर्गः॥ ११॥

मन्द्रस्यं कवेर्दिव्यस्य वह्नेर्विप्रमन्मनो वचनस्य मध्वः।
अपा नस्तस्य सचनस्य देवेषो युवस्व गृणते गोअग्राः॥ १॥
अयमुशानः पर्यद्रिमुस्रा ऋतधीतिभिर्ऋतयुग्युजानः ।
रुजदरुग्णं वि वलस्य सानुं पर्णीर्वचोभिरभि योधदिन्द्रः॥ २॥
अयं द्यौतयदद्युतो व्यक्तून्दोषा वस्तोः शरद इन्दुरिन्द्र।
इमं केतुमदधुर्नू चिदह्नां शुचिजन्मन उषसश्चकार ॥ ३॥
अयं रोचयदरुचो रुचानोऽयं वासयद् व्यक्तेन पूर्वीः।
अयमीयत ऋतयुग्भिरश्वैः स्वर्विदा नाभिना चर्षणिप्राः॥ ४॥
नू गृणानो गृणते प्रत्न राजन्रिषः पिन्व वसुदेयाय पूर्वीः।
अप ओषधीरविषा वनानि गा अर्वतो नृनृचसे रिरीहि॥ ५॥

[४०] चत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—भरद्वाजो बार्हस्पत्यः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१, ३ विराट्त्रिष्टुप्; २ त्रिष्टुप्; ४ भुरिक्पङ्क्तिः; ५ स्वराट्पङ्क्तिः॥ स्वरः—१-३ धैवतः; ४, ५ पञ्चमः॥

अथ द्वादशो वर्गः॥ १२॥

इन्द्र पिब तुभ्यं सुतो मदायावं स्यु हरी वि मुचा सखायां।
उत प्र गाय गृण आ निषद्याथा युज्ञायं गृणते वयो धाः॥ १॥
अस्यं पिब यस्यं जज्ञान इन्द्र मदायं क्रत्वे अपिबो विरप्शिन्।
तमु ते गावो नर आपो अद्रिरिन्दुं समह्यन्पीतयें समस्मै॥ २॥
समिद्धे अग्नौ सुत इन्द्र सोमं आ त्वा वहन्तु हरयो वहिष्ठाः।
त्वायता मनसा जोहवीमीन्द्रा याहि सुवितायं महे नः॥ ३॥
आ याहि शश्वदुशता यंयाथेन्द्रं महा मनसा सोमपेयम्।
उप ब्रह्माणि शृणव इमा नोऽथा ते युज्ञस्तन्वेऽ३ वयो धात्॥ ४॥
यदिन्द्र दिवि पार्ये यदृधग्यद्वा स्वे सदंने यत्र वासिं।
अतो नो युज्ञमवसे नियुत्वान्त्सजोषाः पाहि गिर्वणो मरुद्भिः॥ ५॥

[४१] एकचत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—भरद्वाजो बार्हस्पत्यः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१ विराट्त्रिष्टुप्; २-४ त्रिष्टुप्; ५ भुरिक्पङ्क्तिः॥ स्वरः—१-४ धैवतः; ५ पञ्चमः॥

अथ त्रयोदशो वर्गः॥ १३॥

अहेळमान उप याहि युज्ञं तुभ्यं पवन्त इन्दवः सुतासः।
गावो न वज्रिन्त्स्वमोको अच्छेन्द्रा गहि प्रथमो युज्ञियानाम्॥ १॥
या ते काकुत्सुकृता या वरिष्ठा यया शश्वत्पिबसि मध्व ऊर्मिम्।
तया पाहि प्र ते अध्वर्युरस्थात्सं ते वज्रो वर्ततामिन्द्र गव्युः॥ २॥
एष द्रप्सो वृषभो विश्वरूप इन्द्रायं वृष्णे समकारि सोमः।
एतं पिब हरिवः स्थातरुग्र यस्येशिषे प्रदिवि यस्ते अन्नम्॥ ३॥
सुतः सोमो असुतादिन्द्र वस्यानयं श्रेयाञ्चिकितुषे रणाय।
एतं तितिर्व उप याहि युज्ञं तेन विश्वास्तविषीरा पृणस्व॥ ४॥
ह्वयामसि त्वेन्द्र याह्यर्वाङरं ते सोमस्तन्वे भवाति ।
शतक्रतो मादयस्वा सुतेषु प्रास्माँ अव पृतनासु प्र विक्षु ॥ ५॥

[४२] द्विचत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—भरद्वाजो बार्हस्पत्यः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१ स्वराडुष्णिक्; २ निचृदनुष्टुप्; ३ अनुष्टुप्; ४ भुरिगनुष्टुप्॥ स्वरः—१ ऋषभः; २-४ गान्धारः॥

अथ चतुर्दशो वर्गः॥ १४॥

प्रत्यस्मै पिपीषते विश्वानि विदुषे भर ।
अरंगमाय जग्मयेऽपश्चाद्दध्वने नरे ॥ १॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

एमे॑नं प्र॒त्येत॑न॒ सोमे॑भिः सोम॒पात॑मम् ।
अम॑त्रेभिर्ऋजी॒षिण॒मिन्द्रं॑ सु॒तेभि॒रिन्दु॑भिः ॥ २ ॥
यदी॑ सु॒तेभि॒रिन्दु॑भिः॒ सोमे॑भिः प्रति॒भूष॑थ ।
वेदा॒ विश्व॑स्य॒ मेधि॑रो धृ॒षत्तं॑त॒मिदेष॑ते ॥ ३ ॥
अ॒स्माअ॑स्मा॒ इदन्ध॒सोऽध्व॑र्यो॒ प्र भ॑रा सु॒तम् ।
कुवित्स॑मस्य॒ जेन्य॑स्य॒ शर्ध॑तो॒ऽभिश॑स्तेरव॒स्पर॑त् ॥ ४ ॥

[४३] त्रिचत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—भरद्वाजो बार्हस्पत्यः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—उष्णिक् ॥ स्वरः—ऋषभः ॥

अथ पञ्चदशो वर्गः ॥

यस्य॒ त्यच्छम्ब॑रं॒ मदे॒ दिवो॑दासाय र॒न्धयः॑ । अ॒यं स सोम॑ इन्द्र ते सु॒तः पिब॑ ॥ १ ॥
यस्य॑ तीव्र॒सुतं॒ मदं॒ मध्य॒मन्तं॑ च॒ रक्ष॑से । अ॒यं स सोम॑ इन्द्र ते सु॒तः पिब॑ ॥ २ ॥
यस्य॒ गा अ॒न्तरश्म॑नो॒ मदे॑ दृ॒ळ्हा अ॒वासृ॑जः । अ॒यं स सोम॑ इन्द्र ते सु॒तः पिब॑ ॥ ३ ॥
यस्य॑ मन्दा॒नो अन्ध॑सो॒ माघो॑नं दधि॒षे शवः॑ । अ॒यं स सोम॑ इन्द्र ते सु॒तः पिब॑ ॥ ४ ॥

चतुर्थोऽनुवाकः [४४] चतुश्चत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—शंयुर्बार्हस्पत्यः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१, ३, ४ निचृदनुष्टुप्; २, ५ स्वराडुष्णिक्; ६ आसुरीपङ्क्तिः; ७ भुरिक्पङ्क्तिः; ८ निचृत्पङ्क्तिः; ९, १२, १६ पङ्क्तिः; १०, ११, १३, २२ विराट्त्रिष्टुप्; १४, १५, १७, १८, २०, २४ निचृत्त्रिष्टुप्; १९, २१, २३ त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१, ३, ४ गान्धारः; २, ५, ऋषभः; ६-९, १२, १६ पञ्चमः; १०, ११, १३-१५, १७-२४ धैवतः ॥

अथ षोडशो वर्गः ॥ १६ ॥

यो र॑यिवो र॒यिन्त॑मो॒ यो द्यु॒म्नैर्द्यु॒म्नव॑त्तमः ।
सोमः॑ सुतः स इ॑न्द्र॒ तेऽस्ति॑ स्वधापते॒ मदः॑ ॥ १ ॥
यः श॒ग्मस्तु॑विशग्म ते रा॒यो दा॒मा म॑ती॒नाम् ।
सोमः॑ सुतः स इ॑न्द्र॒ तेऽस्ति॑ स्वधापते॒ मदः॑ ॥ २ ॥
येन॑ वृद्धो न शव॑सा तु॒रो न स्वाभि॑रू॒तिभिः॑ ।
सोमः॑ सु॒तः स इ॑न्द्र तेऽस्ति॑ स्वधापते॒ मदः॑ ॥ ३ ॥
त्यमु॑ वो॒ अप्र॑हणं गृणी॒षे शव॑स॒स्पति॑म् ।
इन्द्रं॑ विश्वा॒साहं॒ नरं॒ मंहि॑ष्ठं वि॒श्वच॑र्षणिम् ॥ ४ ॥
यं व॒र्धय॒न्तीद्गिरः॒ पतिं॑ तु॒रस्य॒ राध॑सः ।
तमिन्न्व॑स्य॒ रोद॑सी दे॒वी शुष्मं॑ सपर्यतः ॥ ५ ॥

अथ सप्तदशो वर्गः ॥ १७ ॥

तद्व॑ उ॒क्थस्य॑ ब॒र्हणेन्द्रा॑योपस्तृणी॒षणि॑ ।
विपो॒ न यस्यो॒तयो॒ वि यद्रोह॑न्ति स॒क्षितः॑ ॥ ६ ॥
अवि॑द॒द्दक्षं॑ मि॒त्रो नवी॑यान्पपा॒नो दे॒वेभ्यो॒ वस्यो॑ अचैत् ।
स॒स॒वान्त्स्तौ॒लाभि॑र्धौ॒तरी॑भिरुरु॒ष्या पा॒युर॑भव॒त्सखि॑भ्यः ॥ ७ ॥
ऋ॒तस्य॑ प॒थि वे॒धा अ॑पायि श्रि॒ये मनां॑सि दे॒वासो॑ अक्रन् ।
दधा॑नो॒ नाम॑ म॒हो वचो॑भि॒र्वपु॑र्दृ॒शये॑ वे॒न्यो व्या॑वः ॥ ८ ॥
द्यु॒मत्त॑मं॒ दक्षं॑ धेह्य॒स्मे सेधा॒ जना॑नां पू॒र्वीररा॑तीः ।
वर्षी॑यो॒ वयः॑ कृणुहि॒ शची॑भि॒र्धन॑स्य सा॒ताव॒स्माँ अ॑विड्ढि ॥ ९ ॥
इन्द्र॒ तुभ्य॒मिन्म॑घवन्नभूम व॒यं दा॒त्रे ह॑रिवो॒ मा वि वे॑नः ।
नकि॑रा॒पिर्द॑दृशे मर्त्य॒त्रा किम॒ङ्ग र॑ध्र॒चोद॑नं त्वाहुः ॥ १० ॥

अथ अष्टादशो वर्गः ॥ १८ ॥

मा जस्व॑ने वृषभ नो ररीथा॒ मा ते॑ रे॒वतः॑ स॒ख्ये रि॑षाम ।
पू॒र्वीष्ट॑ इन्द्र नि॒ष्षिधो॒ जने॑षु ज॒ह्यसु॑ष्वी॒न्प्र वृ॒हापृ॑णतः ॥ ११ ॥
उद॒भ्राणी॑व स्त॒नय॑न्नियर्ती॒न्द्रो॒ राधां॒स्यश्व्या॑नि॒ गव्या॑ ।
त्वम॑सि प्र॒दिवः॑ का॒रुधा॑या॒ मा त्वा॑दा॒मान॒ आ द॑भन्म॒घोनः॑ ॥ १२ ॥
अध्व॑र्यो वीर॒ प्र म॒हे सु॒ताना॒मिन्द्रा॑य भर॒ स ह्य॑स्य॒ राजा॑ ।
यः पू॒र्व्याभि॑रु॒त नूत॑नाभिर्गी॒र्भिर्वा॑वृ॒धे गृ॑ण॒तामृषी॑णाम् ॥ १३ ॥
अ॒स्य मदे॑ पु॒रु वर्पां॑सि वि॒द्वानिन्द्रो॑ वृ॒त्राण्य॑प्र॒ती ज॑घान ।
तमु॒ प्र हो॑षि॒ मधु॑मन्तमस्मै॒ सोमं॑ वी॒राय॑ शि॒प्रिणे॒ पिब॑ध्यै ॥ १४ ॥
पाता॑ सु॒तमिन्द्रो॑ अस्तु॒ सोमं॒ हन्ता॑ वृ॒त्रं वज्रे॑ण मन्दसा॒नः ।
गन्ता॑ य॒ज्ञं प॑रा॒वत॑श्चि॒दच्छा॒ वसु॑र्धी॒नाम॑वि॒ता का॒रुधा॑याः ॥ १५ ॥

अथ एकोनविंशो वर्गः ॥ १९ ॥

इ॒दं त्यपात्र॑मिन्द्र॒पान॒मिन्द्र॑स्य प्रि॒यम॒मृत॑मपायि ।
मत्स॒द्यथा॑ सौमन॒साय॑ दे॒वं व्य१॒॑स्मद् द्वेषो॑ यु॒यव॒द् व्यंहः॑ ॥ १६ ॥
ए॒ना म॑न्दा॒नो ज॒हि शू॑र॒ शत्रू॑ञ्जा॒मिमजा॑मिं मघवन्न॒मित्रा॑न् ।
अ॒भि॒षे॒णाँ अ॒भ्या॒३॒॑देदि॑शाना॒न्परा॑च इन्द्र॒ प्र मृ॑णा ज॒ही च॑ ॥ १७ ॥
आ॒सु ष्मा॑ णो मघवन्निन्द्र पृ॒त्स्व१॒॑स्मभ्यं॒ महि॒ वरि॑वः सु॒गं कः॑ ।
अ॒पां तो॒कस्य॒ तन॑यस्य जे॒ष इन्द्र॑ सू॒रीन्कृ॑णु॒हि स्मा॑ नो अ॒र्धम् ॥ १८ ॥
आ त्वा॒ हर॑यो॒ वृष॑णो युजा॒ना वृष॑रथासो॒ वृष॑रश्म॒योऽत्याः॑ ।
अ॒स्म॒त्रा॒ञ्चो॒ वृष॑णो वज्र॒वाहो॒ वृष्णे॒ मदा॑य सु॒युजो॑ वहन्तु ॥ १९ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

आ तें वृषन्वृषण्वो द्रोणमस्थुर्घृतप्रुषो नोर्मयो मदन्तः।
इन्द्र प्र तुभ्यं वृषभिः सुतानां वृष्णे भरन्ति वृषभाय सोमम्॥ २०॥

अथ विंशो वर्गः॥ २०॥

वृषासि दिवो वृषभः पृथिव्या वृषा सिन्धूनां वृषभः स्तियानाम्।
वृष्णे त इन्दुर्वृषभ पीपाय स्वादू रसो मधुपेयो वरायः॥ २१॥
अयं देवः सहसा जायमान इन्द्रेण युजा पणिमस्तभायत्।
अयं स्वस्य पितुरायुधानीन्दुरमुष्णादशिवस्य मायाः॥ २२॥
अयमकृणोदुषसः सुपत्नीरयं सूर्ये अदधाज्ज्योतिरन्तः।
अयं त्रिधातु दिवि रोचनेषु त्रितेषु विन्ददमृतं निगूळ्हम्॥ २३॥
अयं द्यावापृथिवी वि ष्कभायदयं रथमयुनक्सप्तरश्मिम्।
अयं गोषु शच्या पक्वमन्तः सोमो दाधार दशयन्त्रमुत्सम्॥ २४॥

[४५] पञ्चचत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—शंयुर्बार्हस्पत्यः॥ देवता—१-३० इन्द्रः; ३१-३३ बृबुस्तक्षा॥ छन्दः—१-३, ८, १४, २०-२४, २८, ३०, ३२ गायत्री; ४, ७, ९-१३, १५-१९, २५, २६, २९ निचृद्गायत्री; ५, ६, २७ विराड्गायत्री; ३१ आर्च्युष्णिक्; ३३ अनुष्टुप्॥
स्वरः—१-३०, ३२ षड्जः; ३१ ऋषभः; ३३ गान्धारः॥

अथ एकविंशो वर्गः॥ २१॥

य आनयत्परावतः सुनीती तुर्वशं यदुम्। इन्द्रः स नो युवा सखा॥ १॥
अविप्रे चिद्वयो दधदनाशुना चिदर्वता। इन्द्रो जेता हितं धनम्॥ २॥
महीरस्य प्रणीतयः पूर्वीरुत प्रशस्तयः। नास्य क्षीयन्त ऊतयः॥ ३॥
सखायो ब्रह्मवाहसेऽर्चत प्र च गायत। स हि नः प्रमतिर्महीं॥ ४॥
त्वमेकस्य वृत्रहन्नविता द्वयोरसि। उतेदृशे यथा वयम्॥ ५॥

अथ द्वाविंशो वर्गः॥ २२॥

नयसीद्वति द्विषः कृणोष्युक्थशंसिनः। नृभिः सुवीर उच्यसे॥ ६॥
ब्रह्माणं ब्रह्मवाहसं गीर्भिः सखायमृग्मियम्। गां न दोहसे हुवे॥ ७॥
यस्य विश्वानि हस्तयोरूचुर्वसूनि नि द्विता। वीरस्य पृतनाषहः॥ ८॥
वि दृळ्हानि चिदद्रिवो जनानां शचीपते। वृह माया अनानतः॥ ९॥
तमु त्वा सत्य सोमपा इन्द्र वाजानां पते। अहूमहि श्रवस्यवः॥ १०॥

अथ त्रयोविंशो वर्गः॥ २३॥

तमु त्वा यः पुरासिथ यो वा नूनं हिते धने। हव्यः स शश्वती हवम्॥ ११॥
धीभिरर्वद्भिरर्वतो वाजाँ इन्द्र श्रवाय्यान्। त्वया जेष्म हितं धनम्॥ १२॥
अभूरु वीर गिर्वणो महाँ इन्द्र धने हिते। भरे वितन्तसाय्यः॥ १३॥
या ते ऊतिरमित्रहन्मक्षूजवस्तमासति। तया नो हिनुही रथम्॥ १४॥
स रथेन रथीतमोऽस्माकेनाभियुग्वना। जेषि जिष्णो हितं धनम्॥ १५॥

अथ चतुर्विंशो वर्गः॥ २४॥

य एक इत्तमु ष्टुहि कृष्टीनां विचर्षणिः। पतिर्जज्ञे वृषक्रतुः॥ १६॥
यो गृणतामिदासिथापिरूती शिवः सखा। स त्वं न इन्द्र मृळय॥ १७॥
धिष्व वज्रं गभस्त्यो रक्षोहत्याय वज्रिवः। सासह्याम अभि स्पृधः॥ १८॥
प्रत्नं रयीणां युजं सखायं कीरिचोदनम्। ब्रह्मवाहस्तमं हुवे॥ १९॥
स हि विश्वानि पार्थिवाँ एको वसूनि पत्यते। गिर्वणस्तमो अधिगुः॥ २०॥

अथ पञ्चविंशो वर्गः॥ २५॥

स नो नियुद्भिरा पृण कामं वाजेभिरश्विभिः। गोमद्भिर्गोपते धृषत्॥ २१॥
तद्वो गाय सुते सचा पुरुहूताय सत्वने। शं यदवे न शाकिने॥ २२॥
न घा वसुर्नि यमते दानं वाजस्य गोमतः। यत्सीमुप श्रवद्गिरः॥ २३॥
कुवित्सस्य प्र हि व्रजं गोमन्तं दस्युहा गमत्। शचीभिरप नो वरत्॥ २४॥
इमा उ त्वा शतक्रतोऽभि प्र णोनुवुर्गिरः। इन्द्र वत्सं न मातरः॥ २५॥

अथ षड्विंशो वर्गः॥ २६॥

दूणाशं सख्यं तव गौरसि वीर गव्यते। अश्वो अश्वायते भव॥ २६॥
स मन्दस्वा ह्यन्धसो राधसे तन्वा महे। न स्तोतारं निदे करः॥ २७॥
इमा उ त्वा सुतेसुते नक्षन्ते गिर्वणो गिरः। वत्सं गावो न धेनवः॥ २८॥
पुरूतमं पुरूणां स्तोतृणां विवाचि। वाजेभिर्वाजयताम्॥ २९॥
अस्माकमिन्द्र भूतु ते स्तोमो वाहिष्ठ अन्तमः। अस्माव्राये महे हिनु॥ ३०॥
अधि बृबुः पणीनां वर्षिष्ठे मूर्धन्नस्थात्। उरुः कक्षो न गाङ्गयः॥ ३१॥
यस्य वायोरिव द्रवद्भद्रा रातिः सहस्रिणी। सद्यो दानाय मंहते॥ ३२॥
तत्सु नो विश्वे अर्य आ सदा गृणन्ति कारवः।
बृबुं सहस्रदातमं सूरिं सहस्रसातमम्॥ ३३॥

[४६] षट्चत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—शंयुर्बार्हस्पत्यः॥ देवता—इन्द्रः प्रगाथं वा॥ छन्दः—१ निचृदनुष्टुप्; २ स्वराड्बृहती; ३, ४ भुरिग्बृहती; ५, ७ स्वराडनुष्टुप्; ६ ब्राह्मीगायत्री; ८, ९ विराड्बृहती; १० पङ्क्तिः; ११ निचृद्बृहती; १२, १४ विराट् पङ्क्तिः; १३ बृहती॥ स्वरः—१, ५, ७ गान्धारः; २-४, ८, ९, ११, १३ मध्यमः; ६ षड्जः; १०, १२, १४ पञ्चमः॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अथ सप्तविंशो वर्गः ॥ २७ ॥

त्वामिद्धि हवा॑महे सा॒ता वाज॑स्य का॒रवः॑ ।
त्वां वृ॒त्रेष्वि॑न्द्र॒ सत्प॑तिं॒ नर॒स्त्वां काष्ठा॒स्वर्व॑तः ॥ १ ॥
स त्वं न॑श्चित्र वज्रहस्त धृष्णुया म॒हः स्त॑वा॒नो अ॑द्रिवः ।
गामश्वं॑ र॒थ्य॑मिन्द्र॒ सं कि॑र स॒त्रा वाजं॒ न जि॒ग्युषे॑ ॥ २ ॥
यः स॑त्रा॒हा विच॑र्षणि॒रिन्द्रं॒ तं हू॑महे व॒यम् ।
सह॑स्रमुष्क॒ तुवि॑नृम्ण॒ सत्प॑ते॒ भवा॑ स॒मत्सु॑ नो वृ॒धे ॥ ३ ॥
बाध॑से॒ जना॑न्वृष॒भेव॑ म॒न्युना॒ घृषौ॑ मी॒ळ्ह ऋ॑चीषम ।
अ॒स्माकं॑ बोध्यवि॒ता म॑हाध॒ने त॒नूष्व॒प्सु सूर्ये॑ ॥ ४ ॥
इन्द्र॒ ज्येष्ठं॑ न॒ आ भ॑रँ॒ ओजि॑ष्ठं॒ पपु॑रि॒ श्रवः॑ ।
येने॒मे चि॑त्र वज्रहस्त॒ रोद॑सी॒ ओभे सु॑शिप्र॒ प्राः ॥ ५ ॥

अथ अष्टाविंशो वर्गः ॥ २८ ॥

त्वामु॒ग्रमव॑से चर्षणी॒सहं॒ राज॑न्दे॒वेषु॑ हूमहे ।
विश्वा॒ सु नो॑ विथु॒रा पि॑ब्द॒ना व॑सो॒ऽमित्रा॑न्त्सु॒षहा॑न्कृधि ॥ ६ ॥
यदि॑न्द्र॒ नाहु॑षी॒ष्वाँ ओजो॑ नृ॒म्णं च॑ कृ॒ष्टिषु॑ ।
यद्वा॒ पञ्च॑ क्षिती॒नां द्यु॒म्नमा भ॑र स॒त्रा विश्वा॑नि॒ पौंस्या॑ ॥ ७ ॥
यद्वा॑ तृ॒क्षौ म॑घवन्द्रु॒ह्यावा जने॒ यत्पू॒रौ कच्च॒ वृष्ण्य॑म् ।
अ॒स्मभ्यं॒ तद्रि॑रीहि॒ सं नृ॒षाह्ये॒ऽमित्रा॑न्पृ॒त्सु तु॒र्वणे॑ ॥ ८ ॥
इन्द्र॑ त्रि॒धातु॑ शर॒णं त्रि॒वरू॑थं स्वस्ति॒मत् ।
छ॒र्दिर्य॑च्छ म॒घव॑द्भ्यश्च॒ मह्यं॑ च या॒वया॑ दि॒द्युमे॑भ्यः ॥ ९ ॥
ये ग॑व्य॒ता मन॑सा॒ शत्रु॑माद॒भुर॑भिप्र॒घ्नन्ति॑ धृष्णु॒या ।
अध॑ स्मा नो मघवन्निन्द्र गिर्वणस्तनू॒पा अन्त॑मो भव ॥ १० ॥

अथ एकोनत्रिंशो वर्गः ॥ २९ ॥

अध॑ स्मा नो वृ॒धे भ॒वेन्द्र॑ ना॒यम॑वा यु॒धि ।
यद॒न्तरि॑क्षे प॒तय॑न्ति प॒र्णिनो॑ दि॒द्यव॑स्ति॒ग्ममू॑र्धानः ॥ ११ ॥
यत्र॒ शूरा॑सस्त॒न्वो॑ वितन्व॒ते प्रि॒या शर्म॑ पितॄ॒णाम् ।
अध॑ स्मा यच्छ त॒न्वे॒३॒॑ तने॑ च छ॒र्दिर॒चित्तं॑ या॒वय॒ द्वेषः॑ ॥ १२ ॥
यदि॑न्द्र॒ सर्गे॒ अर्व॑तश्चो॒दया॑से महाध॒ने ।
अ॒स॒म॒ने अध्व॑नि वृजि॒ने प॒थि श्ये॒नाँइ॑व श्रवस्य॒तः ॥ १३ ॥
सिन्धूँ॑रिव प्रव॒ण आ॑शु॒या य॒तो यदि॒ क्लोश॒मनु॒ ष्वणि॑ ।
आ ये वयो॒ न वर्वृ॑त॒त्यामि॑षि गृभी॒ता बा॒ह्वोर्गवि॑ ॥ १४ ॥

[४७] सप्तचत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—गर्गः ॥ देवता—१-५ सोमः; ६-१९, २०[२], २१-३१ इन्द्रः; २०[१] लिङ्गोक्ताः; २२-२५ प्रस्तोकस्य सार्ञ्जयस्य दानस्तुतिः; २६-२८ रथः; २९-३१[१] दुन्दुभिः; ३१[२] दुन्दुभि इन्द्रश्च ॥ छन्दः—१, ३, ५, २१, २२, २८ निचृत्त्रिष्टुप्; ४, ८, ११ विराट्त्रिष्टुप्; ६, ७, १०, १५, १६, १८, २०, २९, ३० त्रिष्टुप्; २७ स्वराट्त्रिष्टुप्; २, ९, १२, १३, २६, ३१ भुरिक्पङ्क्तिः; १४, १७ स्वराट्पङ्क्तिः; १९ बृहती; २३ आसुरीपङ्क्तिः; २४, २५ विराड्गायत्री ॥
स्वरः—१, ३-८, १०, ११, १५, १६, १८, २०-२२, २७-३० धैवतः; २, ९, १२-१४, १७, २३, २६, ३१ पञ्चमः; १९ मध्यमः; २४, २५ षड्जः ॥

अथ त्रिंशो वर्गः ॥ ३० ॥

स्वा॒दुष्किला॒यं मधु॑माँ उ॒तायं ती॒व्रः किला॒यं रस॑वाँ उ॒तायम् ।
उ॒तो न्व१॒॑स्य प॑पि॒वांस॒मिन्द्रं॒ न कश्च॒न स॑हत आह॒वेषु॑ ॥ १ ॥
अ॒यं स्वा॒दुरि॒ह मदि॑ष्ठ आस॒ यस्येन्द्रो॑ वृत्र॒हत्ये॑ म॒माद॑ ।
पु॒रूणि॒ यश्च्यौ॒त्ना शम्ब॑रस्य॒ वि न॑व॒तिं नव॑ च दे॒ह्यो॒३॒॑ हन् ॥ २ ॥
अ॒यं मे॑ पी॒त उदि॑यर्ति॒ वाच॑म॒यं म॑नी॒षामु॑श॒तीम॑जीगः ।
अ॒यं षळु॒र्वीर॑मिमीत॒ धीरो॒ न याभ्यो॒ भुव॑नं॒ कच्च॒नारे ॥ ३ ॥
अ॒यं स यो व॑रि॒माणं॑ पृथि॒व्या व॒र्ष्माणं॑ दि॒वो अकृ॑णोद॒यं सः ।
अ॒यं पी॒यूषं॑ ति॒सृषु॑ प्र॒वत्सु॒ सोमो॑ दाधारो॒र्व१॒॑न्तरि॑क्षम् ॥ ४ ॥
अ॒यं वि॑दच्चित्र॒दृशी॑क॒मर्णः॑ शु॒क्रस॑द्मनामु॒षसा॒मनी॑के ।
अ॒यं म॒हान्म॑ह॒ता स्कम्भ॑ने॒नोद् द्याम॑स्तभ्नाद् वृष॒भो म॒रुत्वा॑न् ॥ ५ ॥

अथ एकत्रिंशो वर्गः ॥ ३१ ॥

धृ॒षत्पि॑ब क॒लशे॒ सोम॑मिन्द्र वृत्र॒हा शू॑र सम॒रे वसू॑नाम् ।
माध्य॑न्दिने॒ सव॑न॒ आ वृ॑षस्व रयि॒स्थानो॑ र॒यिम॒स्मासु॑ धेहि ॥ ६ ॥
इन्द्र॒ प्र णः॑ पुरए॒तेव॑ पश्य॒ प्र नो॑ नय प्रत॒रं वस्यो॒ अच्छ॑ ।
भवा॑ सुपा॒रो अ॑तिपार॒यो नो॒ भवा॒ सुनी॑तिरु॒त वा॒मनी॑तिः ॥ ७ ॥
उ॒रुं नो॑ लो॒कमनु॑ नेषि वि॒द्वान्त्स्व॑र्व॒ज्ज्योति॒रभ॑यं स्व॒स्ति ।
ऋ॒ष्वा त॑ इन्द्र॒ स्थवि॑रस्य बा॒हू उप॑ स्थेयाम शर॒णा बृ॒हन्ता॑ ॥ ८ ॥
वरि॑ष्ठे न इन्द्र व॒न्धुरे॑ धा॒ वहि॑ष्ठयोः शताव॒न्नश्व॑यो॒रा ।
इष॒मा व॑क्षी॒षां वर्षि॑ष्ठां॒ मा न॑स्तारीन्मघव॒वन्रायो॑ अ॒र्यः ॥ ९ ॥
इन्द्र॑ मृ॒ळ मह्यं॑ जी॒वातु॑मिच्छ चो॒दय॒ धिय॒मय॑सो॒ न धारा॑म् ।
यत्किं चा॒हं त्वा॒युरि॒दं वदा॑मि॒ तज्जु॑षस्व कृ॒धि मा॑ दे॒वव॑न्तम् ॥ १० ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अथ द्वात्रिंशो वर्गः ॥ ३२ ॥

त्रा॒तार॒मिन्द्र॑मवि॒तार॒मिन्द्रं॒ हवे॑हवे सु॒हवं॒ शूर॒मिन्द्र॑म् ।
ह्वया॑मि श॒क्रं पु॑रुहू॒तमिन्द्रं॑ स्व॒स्ति नो॑ म॒घवा॑ धा॒त्विन्द्रः॑ ॥ ११ ॥
इन्द्रः॑ सु॒त्रामा॒ स्ववाँ॒ अवो॑भिः सुमृळी॒को भ॑वतु वि॒श्ववे॑दाः ।
बाध॑तां॒ द्वेषो॒ अभ॑यं कृणोतु सु॒वीर्य॑स्य॒ पत॑यः स्याम ॥ १२ ॥
तस्य॑ व॒यं सु॑म॒तौ य॒ज्ञिय॒स्यापि॑ भ॒द्रे सौ॑मन॒से स्या॑म ।
स सु॒त्रामा॒ स्ववाँ॒ इन्द्रो॑ अ॒स्मे आ॒राच्चि॒द् द्वेषः॑ सनु॒तर्यु॑योतु ॥ १३ ॥
अव॒ त्वे इ॑न्द्र प्र॒वतो॒ नोर्मिर्गिरो॒ ब्रह्मा॑णि नि॒युतो॑ धवन्ते ।
उ॒रू न राधः॒ सव॑ना पु॒रूण्य॒पो गा व॑ज्रिन्युवसे॒ समिन्दू॑न् ॥ १४ ॥
क ईं॑ स्तव॒त्कः पृ॑णा॒त्को य॑जाते॒ यदु॒ग्रमिन्म॒घवा॑ वि॒श्वहावे॑त् ।
पादा॑विव प्र॒हर॑न्न॒न्यम॑न्यं कृ॒णोति॒ पूर्व॒मप॑रं॒ शची॑भिः ॥ १५ ॥

अथ त्रयस्त्रिंशो वर्गः ॥ ३३ ॥

शृ॒ण्वे वी॒र उ॒ग्रमु॑ग्रं दमा॒यन्न॒न्यम॑न्यमतिनेनी॒यमा॑नः ।
ए॒ध॒मा॒न॒द्विळु॒भय॑स्य॒ राजा॑ चोष्कू॒यते॒ विश॒ इन्द्रो॑ मनु॒ष्या॑न् ॥ १६ ॥
परा॒ पूर्वे॑षां स॒ख्या वृ॑णक्ति वि॒तर्तु॑राणो॒ अप॑रेभिरेति ।
अना॑नुभूतीरवधून्वा॒नः पू॒र्वीरिन्द्रः॑ श॒रद॑स्तर्तरीति ॥ १७ ॥
रू॒पंरू॑पं॒ प्रति॑रूपो बभूव॒ तद॑स्य रू॒पं प्र॑ति॒चक्ष॑णाय ।
इन्द्रो॑ मा॒याभिः॑ पुरु॒रूप॑ ईयते यु॒क्ता ह्य॑स्य॒ हर॑यः श॒ता दश॑ ॥ १८ ॥
यु॒जा॒नो ह॒रिता॒ रथे॒ भूरि॒ त्वष्टे॒ह रा॑जति ।
को वि॒श्वाहा॑ द्विष॒तः पक्ष॑ आसत उ॒तासी॑नेषु सू॒रिषु॑ ॥ १९ ॥
अ॒ग॒व्यूति क्षेत्र॒माग॑न्म देवा उ॒र्वी स॒ती भूमि॑रंहूर॒णाभू॑त् ।
बृह॑स्पते॒ प्र चि॑कित्सा॒ गवि॑ष्टावि॒त्था स॒ते ज॑रि॒त्र इ॑न्द्र॒ पन्था॑म् ॥ २० ॥

अथ चतुस्त्रिंशो वर्गः ॥ ३४ ॥

दि॒वेदि॑वे स॒दृशी॑र॒न्यमर्धं॑ कृ॒ष्णा अ॑सेध॒दप॒ सद्म॑नो॒ जाः ।
अह॑न्दा॒सा वृ॑ष॒भो व॑स्र॒यन्तो॒दव्र॑जे व॒र्चिनं॒ शम्ब॑रं च ॥ २१ ॥
प्र॒स्तो॒क इन्नु राध॑सस्त इन्द्र॒ दश॒ कोश॑यी॒र्दश॑ वा॒जिनो॑ऽदात् ।
दिवो॑दासादतिथि॒ग्वस्य॒ राधः॑ शाम्ब॒रं वसु॒ प्रत्य॑ग्रभीष्म ॥ २२ ॥
दशाश्वा॒न्दश॒ कोशा॒न्दश॒ वस्त्राधि॑भोजना ।
दशो॑ हिरण्यपि॒ण्डान्दिवो॑दासादसानिषम् ॥ २३ ॥
दश॒ रथा॒न्प्रष्टि॑मतः श॒तं गा अथ॑र्वभ्यः । अ॒श्व॒थः पा॒यवे॑ऽदात् ॥ २४ ॥
महि॒ राधो॑ वि॒श्वज॑न्यं॒ दधा॑नान्भ॒रद्वा॑जान्त्साञ्ज॒यो अ॒भ्य॑यष्ट ॥ २५ ॥

अथ पञ्चत्रिंशो वर्गः ॥ ३५ ॥

वन॑स्पते वी॒ड्वङ्गो॒ हि भू॒या अ॒स्मत्स॑खा प्र॒तर॑णः सु॒वीरः॑ ।
गोभिः॒ सन्न॑द्धो असि वी॒ळय॑स्वास्था॒ता ते॑ जयतु॒ जेत्वा॑नि ॥ २६ ॥
दि॒वस्पृ॑थि॒व्याः पर्योज॒ उद्भृ॑तं॒ वन॒स्पति॑भ्यः॒ पर्याभृ॑तं॒ सहः॑ ।
अ॒पामो॒ज्मानं॒ परि॒ गोभि॒रावृ॑त॒मिन्द्र॑स्य वज्रं॑ ह॒विषा॒ रथं॑ यज ॥ २७ ॥
इन्द्र॑स्य॒ वज्रो॑ म॒रुता॒मनी॑कं मि॒त्रस्य॒ गर्भो॒ वरु॑णस्य॒ नाभिः॑ ।
सेमां नो॑ ह॒व्यदा॑तिं जुषा॒णो देव॑ रथ॒ प्रति॑ ह॒व्या गृ॑भाय ॥ २८ ॥
उप॑ श्वासय पृथि॒वीमु॒त द्यां पु॑रु॒त्रा ते॑ मनुतां॒ विष्ठि॑तं॒ जग॑त् ।
स दु॑न्दुभे स॒जूरिन्द्रे॑ण दे॒वैर्दू॒राद्दवी॑यो॒ अप॑ सेध॒ शत्रू॑न् ॥ २९ ॥
आ क्र॑न्दय॒ बल॒मोजो॑ न॒ आ धा॒ निः ष्ट॑निहि दुरि॒ता बाध॑मानः ।
अप॑ प्रोथ दुन्दुभे दु॒च्छुना॑ इ॒त इन्द्र॑स्य मु॒ष्टिर॑सि वी॒ळय॑स्य ॥ ३० ॥
आमूर॑ज प्र॒त्याव॑र्तये॒माः के॑तु॒मद्दु॑न्दु॒भिर्वा॑वदीति ।
समश्व॑पर्णा॒श्चर॑न्ति नो॒ नरो॒ऽस्माक॑मिन्द्र र॒थिनो॑ जयन्तु ॥ ३१ ॥

इति चतुर्थाष्टके सप्तमोऽध्यायः ॥

अथाष्टमोऽध्यायः

[४८] अष्टचत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—शंयुर्बार्हस्पत्यः (तृणपाणिकं पृश्निसूक्तम्)॥ देवता—१-१० अग्निः; ११, १२, २०, २१ मरुतः; १३-१५ मरुतो लिङ्गोक्ता वा; १६-१९ पूषा; २२ पृश्निर्द्यावाभूमी वा॥ छन्दः—१, ४, ५, १४ बृहती; २ आर्चीजगती; ३, १९ विराड्बृहती; ६, ७, २१ महाबृहती; ८ महासतोबृहती; ९ भुरिगनुष्टुप्; १०, १२, १७ भुरिग्बृहती; ११, १६, उष्णिक्; १३, १८ निचृदुष्णिक्; १५ निचृदतिजगती; २० स्वराडनुष्टुप्; २२ अनुष्टुप्॥
स्वरः—१, ३-५, १०, १२, १४, १७, १९ मध्यमः; २, १५ निषादः; ६-८, २१ धैवतः; ९, २०, २२ गान्धारः; ११, १३, १६, १८ ऋषभः॥

अथ प्रथमो वर्गः ॥ १ ॥

य॒ज्ञाय॑ज्ञा वो अ॒ग्नये॑ गि॒रागि॑रा च॒ दक्ष॑से ।
प्रप्र॑ व॒यम॒मृतं॑ जा॒तवे॑दसं प्रि॒यं मि॒त्रं न शं॑सिषम् ॥ १ ॥
ऊ॒र्जो नपा॑तं॒ स हि॒नायम॑स्म॒युर्दाशे॑म ह॒व्यदा॑तये ।
भुव॒द्वाजे॑ष्ववि॒ता भुव॑द् वृ॒ध उ॒त त्रा॒ता त॒नूना॑म् ॥ २ ॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

वृषा ह्यग्ने अजरो महान्विभास्यर्चिषा ।
अजस्रेण शोचिषा शोशुचच्छुचे सुदीतिभिः सु दीदिहि ॥ ३ ॥
महो देवान्यजसि यक्ष्यानुषक्तव क्रत्वोत दंसना ।
अर्वाचः सीं कृणुह्यग्रेऽर्वसे रास्व वाजोत वंस्व ॥ ४ ॥
यमापो अद्रयो वना गर्भमृतस्य पिप्रति ।
सहसा यो मथितो जायते नृभिः पृथिव्या अधि सानवि ॥ ५ ॥

अथ द्वितीयो वर्गः ॥ २ ॥

आ यः पप्रौ भानुना रोदसी उभे धूमेन धावते दिवि ।
तिरस्तमो ददृश ऊर्म्यास्वा श्यावास्वरुषो वृषा श्यावा अरुषो वृषा ॥ ६ ॥
बृहद्भिरग्ने अर्चिभिः शुक्रेण देव शोचिषा ।
भरद्वाजे समिधानो यविष्ठ्य रेवन्नः शुक्र दीदिहि द्युमत्पावक दीदिहि ॥ ७ ॥
विश्वासां गृहपतिर्विशामसि त्वमग्ने मानुषीणाम् ।
शतं पूर्भिर्यविष्ठ पाह्यंहसः समेद्धारं शतं हिमाः स्तोतृभ्यो ये च ददति ॥ ८ ॥
त्वं नश्चित्र ऊत्या वसो राधांसि चोदय ।
अस्य रायस्त्वमग्ने रथीरसि विदा गाधं तुचे तु नः ॥ ९ ॥
पर्षि तोकं तनयं पर्तृभिष्ट्वमदब्धैरप्रयुत्वभिः ।
अग्ने हेळांसि दैव्या युयोधि नोऽदेवानि हरांसि च ॥ १० ॥

अथ तृतीयो वर्गः ॥ ३ ॥

आ संखायः सबर्दुघां धेनुमजध्वमुप नव्यसा वचः ।
सृजध्वमनपस्फुराम् ॥ ११ ॥
या शर्धाय मारुताय स्वर्भानवे श्रवोऽमृत्यु धुक्षत ।
या मृळीके मरुतां तुराणां या सुम्नैरेवयावरी ॥ १२ ॥
भरद्वाजायाव धुक्षत द्विता ।
धेनुं च विश्वदोहसमिषं च विश्वभोजसम् ॥ १३ ॥
तं व इन्द्रं न सुक्रतुं वरुणमिव मायिनम् ।
अर्यमणं न मन्द्रं सुप्रभोजसं विष्णुं न स्तुष आदिशे ॥ १४ ॥
त्वेषं शर्धो न मारुतं तुविष्वण्यनर्वाणं पूषणं सं यथा शता ।
सं सहस्रा कारिषच्चर्षणिभ्य आँ आविर्मूळ्हा
वसू करत्सुवेदा नो वसू करत् ॥ १५ ॥
आ मा पूषन्नुप द्रव शंसिषं नु ते अपिकर्ण आघृणे ।
अधा अर्यो अरातयः ॥ १६ ॥

अथ चतुर्थो वर्गः ॥ ४ ॥

मा काकम्बीरमुद् वृहो वनस्पतिमशस्तीर्वि हि नीनशः ।
मोत सूरो अह एवा चन ग्रीवा आदधते वेः ॥ १७ ॥
दूतेरिव तेऽवृकमस्तु सख्यम्। अच्छिद्रस्य दधन्वतः सुपूर्णस्य दधन्वतः ॥ १८ ॥
पुरो हि मर्त्यैरसि समो देवैरुत श्रिया ।
अभि ख्यः पूषन्पृतनासु नस्त्वमर्वा नूनं यथा पुरा ॥ १९ ॥
वामी वामस्य धूतयः प्रणीतिरस्तु सूनृता ।
देवस्य वा मरुतो मर्त्यस्य वेजानस्य प्रयज्यवः ॥ २० ॥
सद्यश्चिद्यस्य चर्कृतिः परि द्यां देवो नैति सूर्यः ।
त्वेषं शवो दधिरे नाम यज्ञियं मरुतो वृत्रहं शवो ज्येष्ठं वृत्रहं शवः ॥ २१ ॥
सकृद्ध द्यौरजायत सकृद्भूमिरजायत ।
पृश्न्या दुग्धं सकृत्पयस्तदन्यो नानु जायते ॥ २२ ॥

[४९] एकोनपञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—ऋजिश्वाः ॥ देवता—विश्वे देवाः ॥ छन्दः—१, ३, ४, १०, ११ त्रिष्टुप्; २, १४ स्वराट्पङ्क्तिः; ५, ६, ९, १३ निचृत्त्रिष्टुप्; ७ ब्राह्म्युष्णिक्; ८, १२ विराट्त्रिष्टुप्; १५ अतिजगती ॥ स्वरः—१, ३-६, ८-१३ धैवतः; २, १४ पञ्चमः; ७ ऋषभः; १५ निषादः ॥

अथ पञ्चमो वर्गः ॥ ५ ॥

स्तुषे जनं सुव्रतं नव्यसीभिर्गीर्भिर्मित्रावरुणा सुम्नयन्ता ।
त आ गमन्तु त इह श्रुवन्तु सुक्षत्रासो वरुणो मित्रो अग्निः ॥ १ ॥
विशोविश ईड्यमध्वरेष्वदूसक्रतुमरतिं युवत्योः ।
दिवः शिशुं सहसः सूनुमग्निं यज्ञस्य केतुमरुषं यजध्यै ॥ २ ॥
अरुषस्य दुहितरा विरूपे स्तृभिरन्या पिपिशे सूरो अन्या ।
मिथस्तुरा विचरन्ती पावके मन्म श्रुतं नक्षत ऋच्यमाने ॥ ३ ॥
प्र वायुमच्छा बृहती मनीषा बृहद्रयिं विश्ववारं रथप्राम् ।
द्युतद्यामा नियुतः पत्यमानः कविः कविमियक्षसि प्रयज्यो ॥ ४ ॥
स मे वपुश्छदयद्श्विनोर्यो रथो विरुक्मान्मनसा युजानः ।
येन नरा नासत्येषयध्यै वर्तिर्याथस्तनयाय त्मने च ॥ ५ ॥

अथ षष्ठो वर्गः ॥ ६ ॥

पर्जन्यवाता वृषभा पृथिव्याः पुरीषाणि जिन्वतमप्यानि ।
सत्यश्रुतः कवयो यस्य गीर्भिर्जगतः स्थातर्जगदा कृणुध्वम् ॥ ६ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पावीरवी कन्या चित्रायुः सरस्वती वीरपत्नी धियं धात्।
ग्राभिरच्छिद्रं शरणं सजोषा दुराधर्षं गृणते शर्म यंसत्॥ ७॥
पृथस्पथः परिपतिं वचस्या कामेन कृतो अभ्यानळर्कम्।
स नो रासच्छुरुधश्चन्द्राग्रा धियंधियं सीषधाति प्र पूषा॥ ८॥
प्रथमभाजं यशसं वयोधां सुपाणिं देवं सुगभस्तिमृभ्वम्।
होतारं यक्षद्यजतं पस्त्यानामग्रिस्त्वष्टारं सुहवं विभावा॥ ९॥
भुवनस्य पितरं गीर्भिराभी रुद्रं दिवा वर्धया रुद्रमक्तौ।
बृहन्तमृष्वमजरं सुषुम्नमृधग्घुवेम कविनेषितासः ॥ १०॥

अथ सप्तमो वर्गः॥ ७॥

आ युवानः कवयो यज्ञियासो मरुतो गन्त गृणतो वरस्याम्।
अचित्रं चिद्धि जिन्वथा वृधन्त इत्था नक्षन्तो नरो अङ्गिरस्वत्॥ ११॥
प्र वीराय प्र तवसे तुरायाजा यूथेव पशुरक्षिरस्तम्।
स पिस्पृशति तन्वि श्रुतस्य स्तृभिर्न नाकं वचनस्य विप्रः॥ १२॥
यो रजांसि विममे पार्थिवानि त्रिश्चिद्विष्णुर्मनवे बाधितायः ।
तस्य ते शर्मन्नुपदद्यमाने राया मदेम तन्वा तनाभिः च ॥ १३॥
तन्नोऽहिर्बुध्न्यो अद्भिरर्कैस्तत्पर्वतस्तत्सविता चनो धात् ।
तदोषधीभिरभि रातिषाचो भगः पुरन्धिर्जिन्वतु प्र राये ॥ १४॥
नू नो रयिं रथ्यं चर्षणिप्रां पुरुवीरं मह ऋतस्य गोपाम्।
क्षयं दाताजरं येन जनान्त्स्पृधो अदेवीरभि च क्रमाम विश
आदेवीरभ्यश्नवाम ॥ १५॥

पञ्चमोऽनुवाकः [५०] पञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—ऋजिश्वाः॥ देवता—विश्वे देवाः॥ छन्दः—१, ७ त्रिष्टुप्; २ स्वराट् पङ्क्तिः; ३, ५, ६, १०-१२ निचृत्त्रिष्टुप्; ४, ८, १३ विराट्त्रिष्टुप्; ९ पङ्क्तिः; १४ भुरिक्पङ्क्तिः; १५ निचृत्पङ्क्तिः॥ स्वरः—१, ३-८, १०-१३ धैवतः; २, ९, १४, १५ पञ्चमः॥

अथ अष्टमो वर्गः॥ ८॥

हुवे वो देवीमदितिं नमोभिर्मृळीकाय वरुणं मित्रमग्निम्।
अभिक्षदामर्यमणं सुशेवं त्रातॄन्देवान्त्सवितारं भगं च॥ १॥
सुज्योतिषः सूर्यं दक्षपितृननागास्त्वे सुमहो वीहि देवान्।
द्विजन्मानो य ऋतसापः सत्याः स्वर्वन्तो यजता अग्निजिह्वाः॥ २॥
उत द्यावापृथिवी क्षत्रमुरु बृहद्दिवो वरिवो यथा नोऽस्मे क्षयाय धिषणे अनेहः॥ ३॥
आ नो रुद्रस्य सूनवो नमन्तामद्या हूतासो वसवोऽधृष्टाः।
यदीमर्भे महति वा हितासो बाधे मरुतो अह्वाम देवान्॥ ४॥
मिम्यक्ष येषु रोदसी नु देवी सिषक्ति पूषा अभ्यर्धयज्वा।
श्रुत्वा हवं मरुतो यद्ध याथ भूमा रेजन्ते अध्वनि प्रविक्ते॥ ५॥

अथ नवमो वर्गः॥ ९॥

अभि त्यं वीरं गिर्वणसमर्चेन्द्रं ब्रह्मणा जरितर्नवेन।
श्रवद्दिद्धवमुप च स्तवानो रासद्वाजाँ उप मादो गृणानः॥ ६॥
ओमानमापो मानुषीरमृक्तं धात तोकाय तनयाय शं योः।
यूयं हि ष्ठा भिषजो मातृतमा विश्वस्य स्थातुर्जगतो जनित्रीः॥ ७॥
आ नो देवः सविता त्रायमाणो हिरण्यपाणिर्यजतो जगम्यात्।
यो दत्रवाँ उषसो न प्रतीकं व्यूर्णुते दाशुषे वार्याणि॥ ८॥
उत त्वं सूनो सहसो नो अद्या देवाँ अस्मिन्नध्वरे ववृत्याः।
स्यामहं ते सदमिद्रातौ तव स्यामग्नेऽवसा सुवीरः॥ ९॥
उत त्या मे हवमा जग्म्यातं नासत्या धीभिर्युवमङ्ग विप्रा।
अत्रिं न महस्तमसोऽमुमुक्तं तूर्वतं नरा दुरितादभीके ॥ १०॥

अथ दशमो वर्गः॥ १०॥

ते नो रायो द्युमतो वाजवतो दातारो भूत नृवतः पुरुक्षोः।
दृशस्यन्तो दिव्याः पार्थिवासो गोजाता अप्या मृळता च देवाः॥ ११॥
ते नो रुद्रः सरस्वती सजोषा मीळ्हुष्मन्तो विष्णुर्मृळन्तु वायुः।
ऋभुक्षा वाजो दैव्यो विधाता पर्जन्यावाता पिप्यतामिषं नः॥ १२॥
उत स्य देवः सविता भगो नोऽपां नपादवतु दानु पप्रिः।
त्वष्टा देवेभिर्जनिभिः सजोषा द्यौर्देवेभिः पृथिवी समुद्रैः॥ १३॥
उत नोऽहिर्बुध्न्यः शृणोत्वज एकपात्पृथिवी समुद्रः।
विश्वे देवा ऋतावृधो हुवानाः स्तुता मन्त्राः कविशस्ता अवन्तु॥ १४॥
एवा नपातो मम तस्य धीभिर्भरद्वाजा अभ्यर्चन्त्यर्कैः।
ग्रा हुतासो वसवोऽधृष्टा विश्वे स्तुतासो भूता यजत्राः॥ १५॥

[५१] एकपञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—ऋजिश्वाः॥ देवता—विश्वे देवाः॥ छन्दः—१-३, ५, ७, १०, ११, १२ निचृत्त्रिष्टुप्; ४, ६, ९ स्वराट्पङ्क्तिः; ८ त्रिष्टुप्; १३-१५ निचृदुष्णिक्; १६ निचृदनुष्टुप्॥ स्वरः—१-३, ५, ७, ८, १०-१२ धैवतः; ४, ६, ९ पञ्चमः; १३-१५ ऋषभः; १६ गान्धारः॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अथ एकादशो वर्गः ॥ ११ ॥

उदु त्यच्चक्षुर्महि मित्रयोराँ एति प्रियं वरुणयोरदब्धम्।
ऋतस्य शुचि दर्शतमनीकं रुक्मो न दिव उदिता व्यद्यौत् ॥ १ ॥
वेद यस्त्रीणि विदथान्येषां देवानां जन्म सनुतरा च विप्रः।
ऋजु मर्तेषु वृजिना च पश्यन्नभि चष्टे सूरो अर्य एवान् ॥ २ ॥
स्तुष उ वो मह ऋतस्य गोपानदितिं मित्रं वरुणं सुजातान्।
अर्यमणं भगमदब्धधीतीनच्छा वोचे सधन्यः पावकान् ॥ ३ ॥
रिशादसः सत्पतीँरदब्धान्महो राज्ञः सुवसनस्य दातॄन्।
यूनः सुक्षत्रान्क्षयतो दिवो नॄनादित्यान्याम्यदितिं दुवोयु ॥ ४ ॥
द्यौ३ष्पितः पृथिवि मातरध्रुगग्ने भ्रातर्वसवो मृळता नः।
विश्व आदित्या अदिते सजोषा अस्मभ्यं शर्म बहुलं वि यन्त ॥ ५ ॥

अथ द्वादशो वर्गः ॥ १२ ॥

मा नो वृकाय वृक्ये समस्मा अघायते रीरधता यजत्राः।
यूयं हि ष्ठा रथ्यो नस्तनूनां यूयं दक्षस्य वचसो बभूव ॥ ६ ॥
मा व एनो अन्यकृतं भुजेम मा तत्कर्म वसवो यच्चयध्वे।
विश्वस्य हि क्षयथ विश्वदेवाः स्वयं रिपुस्तन्वं रीरिषीष्ट ॥ ७ ॥
नम इदुग्रं नम आ विवासे नमो दाधार पृथिवीमुत द्याम्।
नमो देवेभ्यो नम ईश एषां कृतं चिदेनो नमसा विवासे ॥ ८ ॥
ऋतस्य वो रथ्यः पूतदक्षानृतस्य पस्त्यसदो अदब्धान्।
ताँ आ नमोभिरुरुचक्षसो नॄन्विश्वान्व आ नमे महो यजत्राः ॥ ९ ॥
ते हि श्रेष्ठवर्चसस्त उ नस्तिरो विश्वानि दुरिता नयन्ति।
सुक्षत्रासो वरुणो मित्रो अग्निर्ऋतधीतयो वक्मराजसत्याः ॥ १० ॥

अथ त्रयोदशो वर्गः ॥ १३ ॥

ते न इन्द्रः पृथिवी क्षाम वर्धन्पूषा भगो अदितिः पञ्च जनाः।
सुशर्माणः स्ववसः सुनीथा भवन्तु नः सुत्रात्रासः सुगोपाः ॥ ११ ॥
नू सद्मानं दिव्यं नंशि देवा भारद्वाजः सुमतिं याति होता।
आसानेभिर्यजमानो मियेधैर्देवानां जन्म वसूयुर्ववन्द ॥ १२ ॥
अप त्यं वृजिनं रिपुं स्तेनमग्ने दुराध्यम् ।
दविष्ठमस्य सत्पते कृधी सुगम् ॥ १३ ॥
ग्रावाणः सोम नो हि कं सखित्वनाय वावशुः ।
जही न्य१त्रिणं पणिं वृको हि षः ॥ १४ ॥
यूयं हि ष्ठा सुदानव इन्द्रज्येष्ठा अभिद्यवः ।
कर्ता नो अध्वन्ना सुगं गोपा अमा ॥ १५ ॥
अपि पन्थामगन्महि स्वस्तिगामनेहसम् ।
येन विश्वाः परि द्विषो वृणक्ति विन्दते वसु ॥ १६ ॥

[५२] द्विपञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—ऋजिश्वाः ॥ देवता—विश्वे देवाः ॥ छन्दः—१, ४, १५, १६ निचृत्त्रिष्टुप्; २, ३, ६, १३, १७ त्रिष्टुप्; ५ भुरिक्पङ्क्तिः; ७, ८, ११ गायत्री; ९, १०, १२ निचृद्गायत्री; १४ विराड्जगती ॥ स्वरः—१-४, ६, १३, १५, १६, १७ धैवतः; ५ पञ्चमः; ७-१२ षड्जः; १४ निषादः ॥

अथ चतुर्दशो वर्गः ॥ १४ ॥

न तद्दिवा न पृथिव्यानु मन्ये न यज्ञेन नोत शमीभिराभिः।
उब्जन्तु तं सुभ्व१ः पर्वतासो नि हीयतामतियाजस्य यष्टा ॥ १ ॥
अति वा यो मरुतो मन्यते नो ब्रह्म वा यः क्रियमाणं निनित्सात्।
तपूंषि तस्मै वृजिनानि सन्तु ब्रह्मद्विषमभि तं शोचतु द्यौः ॥ २ ॥
किमङ्ग त्वा ब्रह्मणः सोम गोपां किमङ्ग त्वाहुरभिशस्तिपां नः।
किमङ्ग नः पश्यसि निद्यमानान्ब्रह्मद्विषे तपुषिं हेतिमस्य ॥ ३ ॥
अवन्तु मामुषसो जायमाना अवन्तु मा सिन्धवः पिन्वमानाः।
अवन्तु मा पर्वतासो ध्रुवासोऽवन्तु मा पितरो देवहूतौ ॥ ४ ॥
विश्वदानीं सुमनसः स्याम पश्येम नु सूर्यमुच्चरन्तम् ।
तथा करद्वसुपतिर्वसूनां देवाँ ओहानोऽवसागमिष्ठः ॥ ५ ॥

अथ पञ्चदशो वर्गः ॥ १५ ॥

इन्द्रो नेदिष्ठमवसागमिष्ठः सरस्वती सिन्धुभिः पिन्वमाना ।
पर्जन्यो न ओषधीभिर्मयोभुरग्निः सुशंसः सुहवः पितेव ॥ ६ ॥
विश्वे देवास आ गत शृणुता म इमं हवम्। एदं बर्हिर्नि षीदत ॥ ७ ॥
यो वो देवा घृतस्नुना हव्येन प्रतिभूषति। तं विश्व उप गच्छथ ॥ ८ ॥
उप नः सूनवो गिरः शृण्वन्त्वमृतस्य ये। सुमृळीका भवन्तु नः ॥ ९ ॥
विश्वे देवा ऋतावृध ऋतुभिर्हवनश्रुतः। जुषन्तां युज्यं पयः ॥ १० ॥

अथ षोडशो वर्गः ॥ १६ ॥

स्तोत्रमिन्द्रो मरुद्गणस्त्वष्टृमान्मित्रो अर्यमा। इमा हव्या जुषन्त नः ॥ ११ ॥
इमं नो अग्ने अध्वरं होतर्वयुनशो यज। चिकित्वान्दैव्यं जनम् ॥ १२ ॥
विश्वे देवाः शृणुतेमं हवं मे ये अन्तरिक्षे य उप द्यवि ष्ठ।
ये अग्निजिह्वा उत वा यजत्रा आसद्यास्मिन्बर्हिषि मादयध्वम् ॥ १३ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

विश्वे देवा मम शृण्वन्तु यज्ञिया उभे रोदसी अपां नपाच्च मन्म।
मा वो वचांसि परिचक्ष्याणि वोचं सुम्नेष्विद्वो अन्तमा मदेम ॥ १४ ॥
ये के च ज्मा महिनो अहिमाया दिवो जज्ञिरे अपां सधस्थे ।
ते अस्मभ्यमिषये विश्वमायुः क्षपं उस्रा वरिवस्यन्तु देवाः ॥ १५ ॥
अग्नीपर्जन्याववतं धियं मेऽस्मिन्हवे सुहवा सुष्टुतिं नः ।
इळामन्यो जनयद्गर्भमन्यः प्रजावतीरिष आ धत्तमस्मे ॥ १६ ॥
स्तीर्णे बर्हिषि समिधाने अग्नौ सूक्तेन महा नमसा विवासे ।
अस्मिन्नो अद्य विदथे यजत्रा विश्वे देवा हविषि मादयध्वम् ॥ १७ ॥

[५३] त्रिपञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—भरद्वाजो बार्हस्पत्यः ॥ देवता—पूषा ॥ छन्दः—१, ३, ४, ६, ७, १० गायत्री; २, ५, ९ निचृद्गायत्री; ८ निचृदनुष्टुप् ॥ स्वरः—१-७, ९, १० षड्जः; ८ गान्धारः ॥

अथ सप्तदशो वर्गः ॥ १७ ॥

वयमु त्वा पथस्पते रथं न वाजसातये। धिये पूषन्नयुज्महि ॥ १ ॥
अभि नो नर्यं वसु वीरं प्रयतदक्षिणम्। वामं गृहपतिं नय ॥ २ ॥
अदित्सन्तं चिदाघृणे पूषन्दानाय चोदय। पणेश्चिद्वि मदा मनः ॥ ३ ॥
वि पथो वाजसातये चिनुहि वि मृधो जहि। साधन्तामुग्र नो धियः ॥ ४ ॥
परि तृन्धि पणीनामारया हृदया कवे। अथेमस्मभ्यं रन्धय ॥ ५ ॥

अथ अष्टादशो वर्गः ॥ १८ ॥

वि पूषन्नारया तुद पणेरिच्छ हृदि प्रियम्। अथेमस्मभ्यं रन्धय ॥ ६ ॥
आ रिख किकिरा कृणु पणीनां हृदया कवे। अथेमस्मभ्यं रन्धय ॥ ७ ॥
यां पूषन्ब्रह्मचोदनीमारां बिभर्ष्याघृणे ।
तया समस्य हृदयमा रिख किकिरा कृणु ॥ ८ ॥
या ते अष्ट्रा गोओपशाघृणे पशुसाधनी। तस्यास्ते सुम्नमीमहे ॥ ९ ॥
उत नो गोषणिं धियमश्वसां वाजसामुत। नृवत्कृणुहि वीतये ॥ १० ॥

[५४] चतुष्पञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—भरद्वाजो बार्हस्पत्यः ॥ देवता—पूषा ॥ छन्दः—१, २, ४, ६-९ गायत्री; ३, १० निचृद्गायत्री; ५ विराड्गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथ एकोनविंशो वर्गः ॥ १९ ॥

सं पूषन्विदुषा नय यो अञ्जसानुशासति। य एवेदमिति ब्रवत् ॥ १ ॥
सं पूष्णा गमेमहि यो गृहाँ अभिशासति। इम एवेति च ब्रवत् ॥ २ ॥
पूष्णश्चक्रं न रिष्यति न कोशोऽव पद्यते। नो अस्य व्यथते पविः ॥ ३ ॥
यो अस्मै हविषाविधन्न तं पूषापि मृष्यते। प्रथमो विन्दते वसु ॥ ४ ॥
पूषा गा अन्वेतु नः पूषा रक्षत्ववर्वतः। पूषा वाजं सनोतु नः ॥ ५ ॥

अथ विंशो वर्गः ॥ २० ॥

पूषन्ननु प्र गा इहि यजमानस्य सुन्वतः। अस्माकं स्तुवतामुत ॥ ६ ॥
माकिर्नेशन्माकीं रिषन्माकीं सं शारि केवटे। अथारिष्टाभिरा गहि ॥ ७ ॥
शृण्वन्तं पूषणं वयमिर्यमनष्टवेदसम्। ईशानं राय ईमहे ॥ ८ ॥
पूषन्तव व्रते वयं न रिष्येम कदा चन। स्तोतारस्त इह स्मसि ॥ ९ ॥
परि पूषा परस्ताद्धस्तं दधातु दक्षिणम्। पुनर्नो नष्टमाजतु ॥ १० ॥

[५५] पञ्चपञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—भरद्वाजो बार्हस्पत्यः ॥ देवता—पूषा ॥ छन्दः—१, २, ५, ६ गायत्री; ३, ४ विराड्गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथ एकविंशो वर्गः ॥ २१ ॥

एहि वां विमुचो नपादाघृणे सं सचावहै। रथीर्ऋतस्य नो भव ॥ १ ॥
र थीतमं कपर्दिनमीशानं राधसो महः। रायः सखायमीमहे ॥ २ ॥
रायो धारास्यागृणे वसो राशिरजाश्व। धीवतोधीवतः सखा ॥ ३ ॥
पूषणं न्व१जाश्वमुप स्तोषाम वाजिनम्। स्वसुर्यो जार उच्यते ॥ ४ ॥
मातुर्दिधिषुमब्रवं स्वसुर्जारः शृणोतु नः। भ्रातेन्द्रस्य सखा मम ॥ ५ ॥
आजासः पूषणं रथे निशृम्भास्ते जनश्रियम्। देवं वहन्तु बिभ्रतः ॥ ६ ॥

[५६] षट्पञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—भरद्वाजो बार्हस्पत्यः ॥ देवता—पूषा ॥ छन्दः—१, ४, ५ गायत्री; २, ३ निचृद्गायत्री; ६ स्वराडुष्णिक् ॥ स्वरः—१-५ षड्जः; ६ ऋषभः ॥

अथ द्वाविंशो वर्गः ॥ २२ ॥

य एनमादिदेशति करम्भादिति पूषणम्। न तेन देव आदिशे ॥ १ ॥
उत घा स रथीतमः सख्या सत्पतिर्युजा। इन्द्रो वृत्राणि जिघ्नते ॥ २ ॥
उतादः पंरुषे गवि सूरश्चक्रं हिरण्ययम्। न्यैरयद्रथीतमः ॥ ३ ॥
यदद्य त्वा पुरुष्टुत ब्रवाम दस्र मन्तुमः। तत्सु नो मन्म साधय ॥ ४ ॥
इमं च नो गवेषणं सातये सीषधो गणम्। आरात्पूषन्नसि श्रुतः ॥ ५ ॥
आ ते स्वस्तिमीमह आरेअघामुपावसुम् ।
अद्या च सर्वतातये श्वश्च सर्वतातये ॥ ६ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

[५७] सप्तपञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—भरद्वाजो बार्हस्पत्यः॥ देवता—इन्द्रापूषणौ॥ छन्दः—१, ६ विराड्गायत्री; २, ३ निचृद्गायत्री; ४, ५ गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

अथ त्रयोविंशो वर्गः॥ २३॥

इन्द्रा नु पूषणा वयं सख्याय स्वस्तये। हुवेम वाजसातये॥ १॥
सोममन्य उपासदत्पातवे चम्वोः सुतम्। करम्भमन्य इच्छति॥ २॥
अजा अन्यस्य वह्नयो हरी अन्यस्य संभृता। ताभ्यां वृत्राणि जिघ्नते॥ ३॥
यदिन्द्रो अनयद्रितो महीरपो वृषन्तमः। तत्र पूषाभवत्सचा॥ ४॥
तां पूष्णः सुमतिं वयं वृक्षस्य प्र वयामिव। इन्द्रस्य चा रभामहे॥ ५॥
उत्पूषणं युवामहेऽभीशूँरिव सारथिः। मह्या इन्द्रं स्वस्तये॥ ६॥

[५८] अष्टपञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—भरद्वाजो बार्हस्पत्यः॥ देवता—पूषा॥ छन्दः—१ त्रिष्टुप्; २ विराड्जगती; ३, ४ विराट्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१, ३, ४ धैवतः; २ निषादः॥

अथ चतुर्विंशो वर्गः॥ २४॥

शुक्रं ते अन्यद्यजतं ते अन्यद्विषुरूपे अहनी द्यौरिवासि।
विश्वा हि माया अवसि स्वधावो भद्रा ते पूषन्निह रातिरस्तु॥ १॥
अजाश्वः पशुपा वाजपस्त्यो धियंजिन्वो भुवने विश्वे अर्पितः।
अष्ट्रां पूषा शिथिरामुद्वरीवृजत्संचक्षाणो भुवना देव ईयते॥ २॥
यास्ते पूषन्नावो अन्तः समुद्रे हिरण्ययीरन्तरिक्षे चरन्ति।
ताभिर्यासि दूत्यां सूर्यस्य कामेन कृत श्रव इच्छमानः॥ ३॥
पूषा सुबन्धुर्दिव आ पृथिव्या इळस्पतिर्मघवा दस्मवर्चाः।
यं देवासो अददुः सूर्यायै कामेन कृतं तवसं स्वञ्चम्॥ ४॥

[५९] एकोनषष्टीतमं सूक्तम्

ऋषिः—भरद्वाजो बार्हस्पत्यः॥ देवता—इन्द्राग्नी॥ छन्दः—१, ३-५ निचृद्बृहती; २ विराड्बृहती; ६, ७, ९ भुरिगनुष्टुप्; ८ उष्णिक्; १० अनुष्टुप्॥ स्वरः—१-५ मध्यमः; ६, ७, ९, १० गान्धारः; ८ ऋषभः॥

अथ पञ्चविंशो वर्गः॥ २५॥

प्र नु वोचा सुतेषु वां वीर्या३ यानि चक्रथुः।
हतासो वां पितरो देवशत्रव इन्द्राग्नी जीवथो युवम्॥ १॥
बळित्था महिमा वामिन्द्राग्नी पनिष्ट आ।
समानो वां जनिता भ्रातरा युवं यमावि हेहमातरा॥ २॥

ओकिवांसा सुते सचा अश्वा सनीळवादने।
इन्द्रा न्वग्नी अवसेह वज्रिणा वयं देवा हवामहे॥ ३॥
य इन्द्राग्नी सुतेषु वां स्तवत्तेष्वृतावृधा।
जोषवाकं वदतः पज्रहोषिणा न देवा भसथश्चन॥ ४॥
इन्द्राग्नी को अस्य वां देवौ मर्तश्चिकेतति।
विषूचो अश्वान्युयुजान ईयत एकः समान आ रथे॥ ५॥

अथ षड्विंशो वर्गः॥ २६॥

इन्द्राग्नी अपादियं पूर्वागात्पद्वतीभ्यः।
हित्वी शिरो जिह्वया वावदच्चरत्त्रिंशत्पदा न्यक्रमीत्॥ ६॥
इन्द्राग्नी आ हि तन्वते नरो धन्वानि बाह्वोः।
मा नो अस्मिन्महाधने परा वर्क्तं गविष्टिषु॥ ७॥
इन्द्राग्नी तपन्ति माघा अर्यो अरातयः।
अप द्वेषांस्या कृतं युयुतं सूर्यादधि॥ ८॥
इन्द्राग्नी युवोरपि वसु दिव्यानि पार्थिवा।
आ न इह प्र यच्छतं रयिं विश्वायुपोषसम्॥ ९॥
इन्द्राग्नी उक्थवाहसा स्तोमेभिर्हवनश्रुता।
विश्वाभिर्गीर्भिरा गतमस्य सोमस्य पीतये॥ १०॥

[६०] षष्टीतमं सूक्तम्

ऋषिः—भरद्वाजो बार्हस्पत्यः॥ देवता—इन्द्राग्नी॥ छन्दः—१, ३ निचृत्त्रिष्टुप्; २ विराट्त्रिष्टुप्; ४, ६, ७ विराड्गायत्री; ५, ९, ११ निचृद्गायत्री; ८, १०, १२ गायत्री; १३ स्वराट्पङ्क्तिः; १४ निचृदनुष्टुप्; १५ विराडनुष्टुप्॥ स्वरः—१-३ धैवतः; ४-१२ षड्जः; १३ पञ्चमः; १४, १५ गान्धारः॥

अथ सप्तविंशो वर्गः॥ २७॥

श्नथद्वृत्रमुत संनोति वाजमिन्द्रा यो अग्नी संहुरी सपर्यात्।
दूरेदृश्न्ता वसव्यस्य भूरेः सहस्तमा सहसा वाजयन्ता॥ १॥
ता योधिष्टमभि गा इन्द्र नूनमपः स्वरुषसो अग्न ऊळ्हाः।
दिशः स्वरुषस इन्द्र चित्रा अपो गा अग्ने युवसे नियुत्वान्॥ २॥
आ वृत्रहणा वृत्रहभिः शुष्मैरिन्द्र यातं नमोभिरग्ने अर्वाक्।
युवं राधोभिरकवेभिरिन्द्राग्ने अस्मे भवतमुत्तमेभिः॥ ३॥
ता हुवे ययोरिदं पप्ने विश्वं पुरा कृतम्। इन्द्राग्नी न मर्धतः॥ ४॥
उग्रा विघनिना मृध इन्द्राग्नी हवामहे। ता नो मृळात ईदृशे॥ ५॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अथ अष्टाविंशो वर्गः ॥ २८ ॥

हतो वृत्राण्यार्या हतो दासानि सत्पतिः। हतो विश्वा अप द्विषः ॥ ६ ॥
इन्द्राग्नी युवामिमे३ऽभि स्तोमा अनूषत। पिबतं शंभुवा सुतम् ॥ ७ ॥
या वां सन्ति पुरुस्पृहो नियुतो दाशुषे नरा। इन्द्राग्नी ताभिरा गतम् ॥ ८ ॥
ताभिरा गच्छतं नरोपेदं सवनं सुतम्। इन्द्राग्नी सोमपीतये ॥ ९ ॥
तमीळिष्व यो अर्चिषा वना विश्वा परिष्वजत् ।
कृष्णा कृणोति जिह्वया ॥ १० ॥

अथ एकोनत्रिंशो वर्गः ॥ २९ ॥

य इद्ध आविवासति सुम्नमिन्द्रस्य मर्त्यः। द्युम्नाय सुतरा अपः ॥ ११ ॥
ता नो वाजवतीरिषं आशून्पिपृतमर्वतः। इन्द्रमग्निं च वोळ्हवे ॥ १२ ॥
उभा वामिन्द्राग्नी आहुवध्या उभा राधसः सह मादयध्यै ।
उभा दातारा विषां रयीणामुभा वाजस्य सातये हुवे वाम् ॥ १३ ॥
आ नो गव्येभिरश्व्यैर्वसव्यै३रुपं गच्छतम् ।
सखायौ देवौ सख्याय शंभुवेन्द्राग्नी ता हवामहे ॥ १४ ॥
इन्द्राग्नी शृणुतं हवं यजमानस्य सुन्वतः ।
वीतं हव्यान्या गतं पिबतं सोम्यं मधु ॥ १५ ॥

[६१] एकषष्टीतमं सूक्तम्

ऋषिः—भरद्वाजो बार्हस्पत्यः ॥ देवता—सरस्वती ॥ छन्दः—१, १३ निचृज्जगती; २ जगती; ३ विराड्जगती; ४, ९, ११, १२ निचृद्गायत्री; ५, ६, १० विराड् गायत्री; ७, ८ गायत्री; १४ पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१-३, १३ निषादः; ४-१२ षड्जः; १४ पञ्चमः ॥

अथ त्रिंशो वर्गः ॥ ३० ॥

इयमददाद्रभसमृणच्युतं दिवोदासं वध्र्यश्वाय दाशुषे ।
या शश्वन्तमाचखादावसं पणिं ता ते दात्राणि तविषा सरस्वति ॥ १ ॥
इयं शुष्मेभिर्बिसखा इवारुजत्सानु गिरीणां तविषेभिरूर्मिभिः।
पारावतघ्नीमवसे सुवृक्तिभिः सरस्वतीमा विवासेम धीतिभिः ॥ २ ॥
सरस्वति देवनिदो नि बर्हय प्रजां विश्वस्य बृसयस्य मायिनः।
उत क्षितिभ्योऽवनीरविन्दो विषमेभ्यो अस्रवो वाजिनीवति ॥ ३ ॥
प्र णो देवी सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवती। धीनामवित्र्यवतु ॥ ४ ॥
यस्त्वा देवि सरस्वत्युपब्रूते धने हिते। इन्द्रं न वृत्रतूर्ये ॥ ५ ॥

अथ एकत्रिंशो वर्गः ॥ ३१ ॥

त्वं देवि सरस्वत्यवा वाजेषु वाजिनि। रदा पूषेव नः सनिम् ॥ ६ ॥
उत स्या नः सरस्वती घोरा हिरण्यवर्तनिः। वृत्रघ्नी वष्टि सुष्टुतिम् ॥ ७ ॥
यस्या अनन्तो अहुतस्वेषश्चरिष्णुरर्णवः। अमश्चरति रोरुवत् ॥ ८ ॥
सा नो विश्वा अति द्विषः स्वसॄरन्या ऋतावरी। अतन्नहेव सूर्यः ॥ ९ ॥
उत नः प्रिया प्रियासु सप्तस्वसा सुजुष्टा। सरस्वती स्तोम्या भूत् ॥ १० ॥

अथ द्वात्रिंशो वर्गः ॥ ३२ ॥

आपप्रुषी पार्थिवान्युरु रजो अन्तरिक्षम्। सरस्वती निदस्पातु ॥ ११ ॥
त्रिषधस्था सप्तधातुः पञ्च जाता वर्धयन्ती। वाजेवाजे हव्या भूत् ॥ १२ ॥
प्र या महिम्ना महिनासु चेकिते द्युम्नेभिरन्या अपसामपस्तमा ।
रथ इव बृहती विभ्वने कृतोपस्तुत्या चिकितुषा सरस्वती ॥ १३ ॥
सरस्वत्यभि नो नेषि वस्यो माप स्फरीः पयसा मा न आ धक्।
जुषस्व नः सख्या वेश्या च मा त्वत्क्षेत्राण्यरणानि गन्म ॥ १४ ॥

इति चतुर्थाष्टकेऽष्टमोऽध्यायः ॥
इति चतुर्थोऽष्टकः ॥

अथ पञ्चमोऽष्टके प्रथमोऽध्यायः

प्रथमोऽनुवाकः [६२] द्विषष्टीतमं सूक्तम्

ऋषिः—भरद्वाजो बार्हस्पत्यः ॥ देवता—अश्विनौ ॥ छन्दः—१, २ भुरिक्पङ्क्तिः ३ विराट्त्रिष्टुप्; ४, ६-८, १० निचृत्त्रिष्टुप्; ५, ९, ११ त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१, २ पञ्चमः; ३-११ धैवतः ॥

अथ प्रथमो वर्गः ॥ १ ॥

स्तुषे नरा दिवो अस्य प्रसन्ताश्विना हुवे जरमाणो अर्कैः।
या सद्य उस्रा व्युषि ज्मो अन्तान्युर्यूषतः पर्युरू वरांसि ॥ १ ॥
ता यज्ञमा शुचिभिश्चक्रमाणा रथस्य भानुं रुरुचू रजोभिः।
पुरू वरांस्यमिता मिमानापो धन्वान्यति याथो अज्रान् ॥ २ ॥
ता हु त्यद्वर्तिर्यदरध्रमुग्रेत्था धियं ऊहथुः शश्वदश्वैः ।
मनोजवेभिरिषिरैः शूयध्यै परि व्यथिर्दाशुषो मर्त्यस्य ॥ ३ ॥
ता नव्यसो जरमाणस्य मन्मोप भूषतो युयुजानसप्ती।
शुभं पृक्षमिषमूर्जं वहन्ता होता यक्षत्प्रत्नो अध्रुग्युवाना ॥ ४ ॥
ता वल्गू दस्रा पुरुशाकतमा प्रत्ना नव्यसा वचसा विवासे।
या संयते स्तुवते शंभविष्ठा बभूवतुर्गृणते चित्ररातीं ॥ ५ ॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अथ द्वितीयो वर्गः ॥ २ ॥

ता भुज्युं विभिरूद्धयः समुद्रात्तुग्रस्य सूनुमूहथू रजोभिः।
अरेणुभिर्योजनेभिर्भुजन्ता पतत्रिभिरर्णसो निरुपस्थात्॥ ६ ॥
वि जुयुर्ष रथ्या यातमद्रिं श्रुतं हवं वृषणा वध्रिमत्याः।
दशस्यन्ता शयवे पिप्यथुर्गामिति च्यवाना सुमतिं भुरण्यू॥ ७ ॥
यद्रोदसी प्रदिवो अस्ति भूमा हेळो देवानामुत मर्त्यत्रा।
तदादित्या वसवो रुद्रियासो रक्षोयुजे तपुरघं दधात॥ ८ ॥
य ईं राजानावृतुथा विदधद्रजसो मित्रो वरुणश्चिकेतत्।
गम्भीराय रक्षसे हेतिमस्य द्रोघाय चिद्वचस आनवाय॥ ९ ॥
अन्तरैश्चक्रैस्तनयाय वर्तिर्द्युमता यातं नृवता रथेन।
सनुत्येन त्यजसा मर्त्यस्य वनुष्यतामपि शीर्षा ववृक्तम्॥ १० ॥
आ परमाभिरुत मध्यमाभिर्नियुद्भिर्यातमवमाभिरर्वाक्।
दूळ्हस्य चिद्रोमतो वि व्रजस्य दुरो वर्तं गृणते चित्ररातो॥ ११ ॥

[६३] त्रिषष्टीतमं सूक्तम्

ऋषिः—भरद्वाजो बार्हस्पत्यः॥ देवता—अश्विनौ॥ छन्दः—१ स्वराड्बृहती; २, ४, ६, ७ पङ्क्तिः; ३, १० भुरिक्पङ्क्तिः; ५, ९ निचृत्त्रिष्टुप्; ८ स्वराट्पङ्क्तिः; ११ आसुरीपङ्क्तिः॥ स्वरः—१ मध्यमः; २-४, ६-८, १०, ११ पञ्चमः; ५, ९ धैवतः॥

अथ तृतीयो वर्गः ॥ ३ ॥

क्वा त्या वल्गू पुरुहूताद्य दूतो न स्तोमोऽविदन्नमस्वान्।
आ यो अर्वाङ्नासत्या ववर्त प्रेष्ठा ह्यसथो अस्य मन्मन्॥ १ ॥
अरं मे गन्तं हवनायास्मै गृणाना यथा पिबाथो अन्धः।
परिं ह त्यद्वर्तियाथो रिषो न यत्परो नान्तरस्तुतुर्यात्॥ २ ॥
अकारि वामन्धसो वरीमन्नस्तारि बर्हिः सुप्रायणतमम्।
उत्तानहस्तो युवयुर्वन्दा वां नक्षन्तो अद्रय आज्जन्॥ ३ ॥
ऊर्ध्वो वामग्निरध्वरेष्वस्थात्प्र रातिरेति जूर्णिनी घृताची।
प्र होता गूर्तमना उराणोऽयुक्त यो नासत्या हवीमन्॥ ४ ॥
अधि श्रिये दुहिता सूर्यस्य रथं तस्थौ पुरुभुजा शतोतिम्।
प्र मायाभिर्मायिना भूतमत्र नरा नृतू जनिमन्यज्ञियानाम्॥ ५ ॥

अथ चतुर्थो वर्गः ॥ ४ ॥

युवं श्रीभिर्दर्शताभिरग्निभिः शुभे पुष्टिमूहथुः सूर्यायाः।
प्र वां वयो वपुषेऽनु पप्तन्नक्षद्वाणी सुष्टुता धिष्ण्या वाम्॥ ६ ॥
आ वां वयोऽश्वासो वहिष्ठा अभि प्रयो नासत्या वहन्तु।
प्र वां रथो मनोजवा असर्जीषः पृक्ष इषिधो अनु पूर्वीः॥ ७ ॥
पुरु हि वां पुरुभुजा देष्णं धेनुं न इषं पिन्वतमसक्राम्।
स्तुतश्च वां माध्वी सुष्टुतिश्च रसाश्च ये वामनु रातिमग्मन्॥ ८ ॥
उत मं ऋज्रे पुरयस्य रघ्वी सुमीळ्हे शतं पेरुके च पक्वा।
शाण्डो दाद्धिरणिनः स्मद्दिष्टीन्दशं वशासो अभिषाचं ऋघ्वान्॥ ९ ॥
सं वां शता नासत्या सहस्राश्वानां पुरुपन्था गिरे दात्।
भरद्वाजाय वीरं नू गिरे दाद्धता रक्षांसि पुरुदंससा स्युः॥ १० ॥
आ वां सुम्ने वरिमन्त्सूरिभिः ष्याम् ॥ ११ ॥

[६४] चतुःषष्टीतमं सूक्तम्

ऋषिः—भरद्वाजो बार्हस्पत्यः॥ देवता—उषाः॥ छन्दः—१, २, ६ विराट्त्रिष्टुप्; ३ त्रिष्टुप्; ४ निचृत्त्रिष्टुप्; ५ पङ्क्तिः॥ स्वरः—१-४, ६ धैवतः; ५ पञ्चमः॥

अथ पञ्चमो वर्गः ॥ ५ ॥

उदु श्रिय उषसो रोचमाना अस्थुरपां नोर्मयो रुशन्तः।
कृणोति विश्वा सुपथा सुगान्यभूदु वस्वी दक्षिणा मघोनी॥ १ ॥
भद्रा दृक्षे उर्विया वि भास्युत्ते शोचिर्भानवो द्यामपप्तन्।
आविर्वक्षः कृणुषे शुम्भमानोषो देवि रोचमाना महोभिः॥ २ ॥
वहन्ति सीमरुणासो रुशन्तो गावः सुभगामुर्विया प्रथानाम्।
अपेजते शूरो अस्तेव शत्रून्बाधते तमो अजिरो न वोळ्हा॥ ३ ॥
सुगोत तें सुपथा पर्वतेष्ववाते अपस्तरसि स्वभानो।
सा न आ वह पृथुयामन्नृघ्वे रयिं दिवो दुहितरिषयध्यै॥ ४ ॥
सा वहु योक्षभिरवातोषो वरं वहसि जोषमनु।
त्वं दिवो दुहितर्या ह देवी पूर्वहूतौ मंहना दर्शता भूः॥ ५ ॥
उत्ते वयश्चिद्वसतेरपप्तन्नरश्च ये पितुभाजो व्युष्टौ ।
अमा सते वहसि भूरि वाममुषो देवि दाशुषे मर्त्याय ॥ ६ ॥

[६५] पञ्चषष्टीतमं सूक्तम्

ऋषिः—भरद्वाजो बार्हस्पत्यः॥ देवता—उषाः॥ छन्दः—१ भुरिक्पङ्क्तिः; २, ३ विराट्त्रिष्टुप्; ४, ६ निचृत्त्रिष्टुप्; ५ विराट्पङ्क्तिः॥ स्वरः—१, ५ पञ्चमः; २-४, ६ धैवतः॥

अथ षष्ठो वर्गः ॥ ६ ॥

एषा स्या नो दुहिता दिवोजाः क्षितीरुच्छन्ती मानुषीरजीगः।
या भानुना रुशता राम्यास्वञ्जायि तिरस्तमांसश्चिदक्तून्॥ १ ॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

वि तद्ययुररुणयुग्भिरश्वैश्चित्रं भान्त्युषसश्चन्द्ररथाः ।
अग्रं यज्ञस्य बृहतो नयन्तीर्वि ता बाधन्ते तम ऊर्म्यीयाः ॥ २ ॥
श्रवो वाजमिषमूर्जं वहन्तीर्नि दाशुषे उषसो मर्त्याय ।
मघोनीर्वीरवत्पत्यमाना अवो धात विधते रत्नमद्य ॥ ३ ॥
इदा हि वो विधते रत्नमस्तीदा वीराय दाशुषे उषासः ।
इदा विप्राय जरते यदुक्था नि ष्म मार्वते वहथा पुरा चित् ॥ ४ ॥
इदा हि त उषो अद्रिसानो गोत्रा गवामङ्गिरसो गृणन्ति ।
व्यूर्णोर्णा बिभिदुर्ब्रह्मणा च सत्या नृणामभवद्देवहूतिः ॥ ५ ॥
उच्छा दिवो दुहितः प्रत्नवन्नो भरद्वाजवद्विधते मघोनि ।
सुवीरं रयिं गृणते रिरीह्युरुगायमधि धेहि श्रवो नः ॥ ६ ॥

[६६] षट्षष्टीतमं सूक्तम्

ऋषिः—भरद्वाजो बार्हस्पत्यः ॥ देवता—मरुतः ॥ छन्दः—१, ९, ११ निचृत्त्रिष्टुप्; २, ५ विराट्त्रिष्टुप्; ३, ४ निचृत्पङ्क्तिः; ६, ७, १० भुरिक्पङ्क्तिः; ८ स्वराट्पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१, २, ५, ९, ११ धैवतः; ३, ४, ६-८, १० पञ्चमः ॥

अथ सप्तमो वर्गः ॥ ७ ॥

वपुर्नु तच्चिकितुषे चिदस्तु समानं नाम धेनु पत्यमानम् ।
मर्तेष्वन्यद्दोहसे पीपाय सकृच्छुक्रं दुदुहे पृश्निरूधः ॥ १ ॥
ये अग्रयो न शोशुचन्निधाना द्विर्यत्त्रिर्मरुतो वावृधन्त ।
अरेणवो हिरण्ययास एषां साकं नृम्णैः पौंस्येभिश्च भूवन् ॥ २ ॥
रुद्रस्य ये मीळ्हुषः सन्ति पुत्रा यांश्चो नु दाधृविर्भरध्यै ।
विदे हि माता महो महो षा सेतृश्निः सुभ्वेऽ३ गर्भमाधात् ॥ ३ ॥
न य ईषन्ते जनुषोऽया न्वोंन्तः सन्तोऽवद्यानि पुनानाः ।
निर्यद्धुहे शुचयोऽनु जोषमनु श्रिया तन्वमुक्षमाणाः ॥ ४ ॥
मक्षू न येषु दोहसे चिदया आ नाम धृष्णु मारुतं दधानाः ।
न ये स्तौना अयासो मह्न नू चित्सुदानुरव यासदुग्रान् ॥ ५ ॥

अथ अष्टमो वर्गः ॥ ८ ॥

त इदुग्राः शवसा धृष्णुषेणा उभे युजन्त रोदसी सुमेके ।
अध स्मैषु रोदसी स्वशोचिरामवत्सु तस्थौ न रोकः ॥ ६ ॥
अनेनो वो मरुतो यामो अस्त्वनश्वश्चिद्यमजत्यरथीः ।
अनवसो अनभीशू रजस्तूर्वि रोदसी पथ्या याति साधन् ॥ ७ ॥

नास्य व्रता न तरुता न्वस्ति मरुतो यमवथ वाजसातौ ।
तोके वा गोषु तनये यमप्सु स व्रजं दर्ता पार्ये अध द्योः ॥ ८ ॥
प्र चित्रमर्कं गृणते तुराय मारुताय स्वतवसे भरध्वम् ।
ये सहांसि सहसा सहन्ते रेजते अग्रे पृथिवी मखेभ्यः ॥ ९ ॥
त्विषीमन्तो अध्वरस्येव दिद्युत्तृषुच्यवसो जुह्वो३ नाग्नेः ।
अर्चन्त्रयो धुनयो न वीरा भ्राजज्जन्मानो मरुतो अधृष्टाः ॥ १० ॥
तं वृधन्तं मारुतं भ्राजदृष्टिं रुद्रस्य सूनुं हुवसा विवासे ।
दिवः शर्धाय शुचयो मनीषा गिरयो नाप उग्रा अस्पृधन् ॥ ११ ॥

[६७] सप्तषष्टीतमं सूक्तम्

ऋषिः—भरद्वाजो बार्हस्पत्यः ॥ देवता—मित्रावरुणौ ॥ छन्दः—१, ९ स्वराट्पङ्क्तिः; २, १० भुरिक्पङ्क्तिः; ३, ७, ८, ११ निचृत्त्रिष्टुप्; ४, ५ त्रिष्टुप्; ६ विराट् त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१, २, ९, १० पञ्चमः; ३-८, ११ धैवतः ॥

अथ नवमो वर्गः ॥ ९ ॥

विश्वेषां वः सतां ज्येष्ठतमा गीर्भिर्मित्रावरुणा वावृधध्यै ।
सं या रश्मेव यमतुर्यतमिष्टा द्वा जनाँ असमा बाहुभिः स्वैः ॥ १ ॥
इयं मद्वां प्र स्तृणीते मनीषोप प्रिया नमसा बर्हिरच्छ ।
यन्तं नो मित्रावरुणावधृष्टं छर्दिर्यद्वां वरूथ्यं सुदानू ॥ २ ॥
आ यातं मित्रावरुणा सुशस्त्युप प्रिया नमसा हूयमाना ।
सं यावप्रः स्थो अपसेव जनाञ्छुधीयतश्चिद्यततो महित्वा ॥ ३ ॥
अश्वा न या वाजिना पूतबन्धू ऋता यद्गर्भमदितिर्भरध्यै ।
प्र या महि महान्ता जायमाना घोरा मतीय रिपवे नि दीधः ॥ ४ ॥
विश्वे यद्वां मंहना मन्दमानाः क्षत्रं देवासो अदधुः सजोषाः ।
परि यद्द्यूथो रोदसी चिदुर्वी सन्ति स्पशो अदब्धासो अमूराः ॥ ५ ॥

अथ दशमो वर्गः ॥ १० ॥

ता हि क्षत्रं धारयेथे अनु द्यून्दूळहेथे सानुमुपमादिव द्योः ।
दृळ्हो नक्षत्र उत विश्वदेवो भूमिमाताद्यां धासिनायोः ॥ ६ ॥
ता विग्रं धैथे जठरं पृणध्या आ यत्सद्म सभृतयः पृणन्ति ।
न मृष्यन्ते युवतयोऽवाता वि यत्पयो विश्वजिन्वा भरन्ते ॥ ७ ॥
ता जिह्मया सदमेदं सुमेधा आ यद्वां सत्यो अरतिर्ऋते भूत् ।
तद्वां महित्व घृतान्नावस्तु युवं दाशुषे वि चयिष्टमंहः ॥ ८ ॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्र यद्वां मित्रावरुणा स्पूर्धन्प्रिया धाम युवधिता मिनन्ति।
न ये देवास ओहसा न मर्ता अयज्ञसाचो अप्यो न पुत्राः॥ ९॥
वि यद्वाचं कीस्तासो भरन्ते शंसन्ति के चिन्निविदो मनानाः।
आद्वां ब्रवाम सत्यान्युक्था नकिर्देवेभिर्यतथो महित्वा॥ १०॥
अवोरित्था वां छर्दिषो अभिष्टौ युवोर्मित्रावरुणावस्कृधोयु।
अनु यद्वावः स्फुरानृजिप्यं धृष्णुं यद्रणे वृषणं युनजन्॥ ११॥

[६८] अष्टषष्टीतमं सूक्तम्

ऋषिः—भरद्वाजो बार्हस्पत्यः॥ देवता—इन्द्रावरुणौ॥ छन्दः—१, ४, ११ त्रिष्टुप्; २ भुरिक्पङ्क्तिः; ३, ७, ८ स्वराट्पङ्क्तिः; ५ पङ्क्तिः; ६ निचृत्त्रिष्टुप्; ९, १० निचृज्जगती॥ स्वरः—१, ४, ६, ११ धैवतः; २, ३, ५, ७, ८ पञ्चमः; ९, १० निषादः॥

अथ एकादशो वर्गः॥ ११॥

श्रुष्टी वां यज्ञ उद्यतः सजोषा मनुष्वद् वृक्तबर्हिषो यजध्यै।
आ य इन्द्रावरुणाविषे अद्य महे सुम्नाय मह आववर्तत्॥ १॥
ता हि श्रेष्ठा देवताता तुजा शूराणां शविष्ठा ता हि भूतम्।
मघोनां मंहिष्ठा तुविशुष्म ऋतेन वृत्रतुरा सर्वसेना॥ २॥
ता गृणीहि नमस्येभिः शूषैः सुम्नेभिरिन्द्रावरुणा चकाना।
वज्रेणान्यः शवसा हन्ति वृत्रं सिषक्त्यन्यो वृजनेषु विप्रः॥ ३॥
ग्नाश्च यन्नरश्च वावृधन्त विश्वे देवासो नरां स्वर्णाः।
प्रैभ्य इन्द्रावरुणा महित्वा द्यौश्च पृथिवि भूतमुर्वी॥ ४॥
स इत्सुदानुः स्ववाँ ऋतावेन्द्रा यो वां वरुण दाशति त्मन्।
इषा स द्विषस्तरेद्दास्वान्वंसद्रयिं रयिवतश्च जनान्॥ ५॥

अथ द्वादशो वर्गः॥ १२॥

यं युवं दाश्वध्वराय देवा रयिं धत्थो वसुमन्तं पुरुक्षुम्।
अस्मे स इन्द्रावरुणाविषं ष्यात्र यो भनक्ति वनुषामशस्तीः॥ ६॥
उत नः सुत्रात्रो देवगोपाः सूरिभ्य इन्द्रावरुणा रयिः ष्यात्।
येषां शुष्मः पृतनासु साह्वान्प्र सद्यो द्युम्ना तिरते ततुरिः॥ ७॥
नू न इन्द्रावरुणा गृणाना पृङ्क्तं रयिं सौश्रवसाय देवा।
इत्था गृणन्तो महिनस्य शर्धोऽपो न नावा दुरिता तरेम॥ ८॥
प्र सम्राजे बृहते मन्म नु प्रियमर्चा देवायु वरुणाय सप्रथः।
अयं य उर्वी महिना महिव्रतः क्रत्वा विभात्यजरो न शोचिषा॥ ९॥

इन्द्रावरुणा सुतपाविमं सुतं सोमं पिबतं मद्यं धृतव्रता।
युवो रथो अध्वरं देववीतये प्रति स्वसरमुप याति पीतये॥ १०॥
इन्द्रावरुणा मधुमत्तमस्य वृष्णः सोमस्य वृषणा वृषेथाम्।
इदं वामन्धः परिषिक्तमस्मे आसद्यास्मिन्बर्हिषि मादयेथाम्॥ ११॥

[६९] एकोनसप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—भरद्वाजो बार्हस्पत्यः॥ देवता—इन्द्राविष्णू॥ छन्दः—१, ३, ६, ७ निचृत्त्रिष्टुप्; २, ४, ८ त्रिष्टुप्; ५ ब्राह्म्युष्णिक्॥ स्वरः—१-४, ६-८ धैवतः; ५ ऋषभः॥

अथ त्रयोदशो वर्गः॥ १३॥

सं वां कर्मणा समिषा हिनोमीन्द्राविष्णू अपसस्पारे अस्य।
जुषेथां यज्ञं द्रविणं च धत्तमरिष्टैर्नः पथिभिः पारयन्ता॥ १॥
या विश्वासां जनितारा मतीनामिन्द्राविष्णू कलशा सोमधाना।
प्र वां गिरः शस्यमाना अवन्तु प्र स्तोमासो गीयमानासो अर्कैः॥ २॥
इन्द्राविष्णू मदपती मदानामा सोमं यातं द्रविणो दधाना।
सं वामञ्जन्त्वक्तुभिर्मतीनां सं स्तोमासः शस्यमानास उक्थैः॥ ३॥
आ वामश्वासो अभिमातिषाह इन्द्राविष्णू सधमादो वहन्तु।
जुषेथां विश्वा हवना मतीनामुप ब्रह्माणि शृणुतं गिरो मे॥ ४॥
इन्द्राविष्णू तत्पनयाय्यं वां सोमस्य मद उरु चक्रमाथे।
अकृणुतमन्तरिक्षं वरीयोऽप्रथतं जीवसे नो रजांसि॥ ५॥
इन्द्राविष्णू हविषा वावृधानाग्राद्वाना नमसा रातहव्या।
घृतासुती द्रविणं धत्तमस्मे समुद्रः स्थः कलशः सोमधानः॥ ६॥
इन्द्राविष्णू पिबतं मध्वो अस्य सोमस्य दस्रा जठरं पृणेथाम्।
आ वामन्धांसि मदिराण्यग्मन्नुप ब्रह्माणि शृणुतं हवं मे॥ ७॥
उभा जिग्यथुर्न परा जयेथे न परा जिग्ये कतरश्चनैनोः।
इन्द्रश्च विष्णो यदपस्पृधेथां त्रेधा सहस्रं वि तदैरयेथाम्॥ ८॥

[७०] सप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—भरद्वाजो बार्हस्पत्यः॥ देवता—द्यावापृथिव्यौ॥ छन्दः—१, ५ निचृज्जगती; २-४, ६ जगती॥ स्वरः—निषादः॥

अथ चतुर्दशो वर्गः॥ १४॥

घृतवती भुवनानामभिश्रियोर्वी पृथ्वी मधुदुघे सुपेशसा।
द्यावापृथिवी वरुणस्य धर्मणा विष्कभिते अजरे भूरिरेतसा॥ १॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

असश्चन्ती भूरिधारे पयस्वती घृतं दुहाते सुकृते शुचिव्रते ।
राजन्ती अस्य भुवनस्य रोदसी अस्मे रेतः सिञ्चतं यन्मनुर्हितम् ॥ २ ॥
यो वामृजवे क्रमणाय रोदसी मर्तो ददाश धिषणे स साधति ।
प्र प्रजाभिर्जायते धर्मणस्परि युवोः सिक्ता विषुरूपाणि सव्रता ॥ ३ ॥
घृतेन द्यावापृथिवी अभीवृते घृतश्रिया घृतपृचा घृतावृधा ।
ऊर्वी पृथ्वी होतृवूर्ये पुरोहिते ते इद्विप्रा ईळते सुम्नमिष्टये ॥ ४ ॥
मधु नो द्यावापृथिवी मिमिक्षतां मधुश्चुता मधुदुघे मधुव्रते ।
दधाने यज्ञं द्रविणं च देवता महि श्रवो वाजमस्मे सुवीर्यम् ॥ ५ ॥
ऊर्जं नो द्यौश्च पृथिवी च पिन्वतां पिता माता विश्वविदा सुदंससा ।
संरराणे रोदसी विश्वशंभुवा सनिं वाजं रयिमस्मे समिन्वताम् ॥ ६ ॥

[७१] एकसप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—भरद्वाजो बार्हस्पत्यः ॥ देवता—सविता ॥ छन्दः—१ जगती; २, ३ निचृज्जगती; ४ त्रिष्टुप्; ५, ६ निचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१-३ निषादः; ४-६ धैवतः ॥

अथ पञ्चदशो वर्गः ॥ १५ ॥

उदु ष्य देवः सविता हिरण्यया बाहू अयंस्त सवनाय सुक्रतुः ।
घृतेन पाणी अभि प्रुष्णुते मुखो युवा सुदक्षो रजसो विधर्मणि ॥ १ ॥
देवस्य वयं सवितुः सवीमनि श्रेष्ठे स्याम वसुनश्च दावने ।
यो विश्वस्य द्विपदो यश्चतुष्पदो निवेशने प्रसवे चासि भूमनः ॥ २ ॥
अदब्धेभिः सवितः पायुभिष्ट्वं शिवेभिरद्य परि पाहि नो गयम् ।
हिरण्यजिह्वः सुविताय नव्यसे रक्षा माकिर्नो अघशंस ईशत ॥ ३ ॥
उदु ष्य देवः सविता दमूना हिरण्यपाणिः प्रतिदोषमस्थात् ।
अयोहनुर्यजतो मन्द्रजिह्व आ दाशुषे सुवति भूरि वामम् ॥ ४ ॥
उदू अयाँ उपवक्तेव बाहू हिरण्यया सविता सुप्रतीका ।
दिवो रोहांस्यरुहत्पृथिव्या अरींरमत्पतयत्कञ्चिदभ्वम् ॥ ५ ॥
वाममद्य सवितर्वाममु श्वो दिवेदिवे वाममस्मभ्यं सावीः ।
वामस्य हि क्षयस्य देव भूरेरया धिया वामभाजः स्याम ॥ ६ ॥

[७२] द्विसप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—भरद्वाजो बार्हस्पत्यः ॥ देवता—इन्द्रासोमौ ॥ छन्दः—१, ३ निचृत्त्रिष्टुप्; २, ४, ५ विराट्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

अथ षोडशो वर्गः ॥ १६ ॥

इन्द्रासोमा महि तद्वां महित्वं युवं महानि प्रथमानि चक्रथुः ।
युवं सूर्यं विविदथुर्युवं स्व१र्विश्वा तमांस्यहतं निदश्च ॥ १ ॥
इन्द्रासोमा वासयथ उषासमुत्सूर्यं नयथो ज्योतिषा सह ।
उप द्यां स्कम्भथुः स्कम्भनेनाप्रथतं पृथिवीं मातरं वि ॥ २ ॥
इन्द्रासोमावहिमपः परिष्ठां हथो वृत्रमनु वां द्यौरमन्यत ।
प्राणीस्यैरयतं नदीनामा समुद्राणि पप्रथुः पुरूणि ॥ ३ ॥
इन्द्रासोमा पक्वमामास्वन्तर्नि गवामिद्धथुर्वक्षणासु ।
जगृभथुरनपिनद्धमासु रुशच्चित्रासु जगतीष्वन्तः ॥ ४ ॥
इन्द्रासोमा युवमङ्ग तरुत्रमपत्यसाचं श्रुत्यं रराथे ।
युवं शुष्मं नर्यं चर्षणिभ्यः सं विव्यथुः पृतनाषाहमुग्रा ॥ ५ ॥

[७३] त्रिसप्ततीतमं सूक्तम्

ऋषिः—भरद्वाजो बार्हस्पत्यः ॥ देवता—बृहस्पतिः ॥ छन्दः—१, २ त्रिष्टुप्; ३ विराट्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

अथ सप्तदशो वर्गः ॥ १७ ॥

यो अद्रिभित्प्रथमजा ऋतावा बृहस्पतिराङ्गिरसो हविष्मान् ।
द्विबर्हज्मा प्राधर्मत्सत्सिता न आ रोदसी वृषभो रोरवीति ॥ १ ॥
जनाय चिद्य ईवत उ लोकं बृहस्पतिर्देवहूतौ चकार ।
घ्नन्वृत्राणि वि पुरो ददरीति जयञ्छत्रूँरमित्रान्पृत्सु साहन् ॥ २ ॥
बृहस्पतिः समजयद्वसूनि महो व्रजान् गोमतो देव एषः ।
अपः सिषासन्त्स्व१रप्रतीतो बृहस्पतिर्हन्त्यमित्रमर्कैः ॥ ३ ॥

[७४] चतुःसप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—भरद्वाजो बार्हस्पत्यः ॥ देवता—सोमारुद्रौ ॥ छन्दः—१, २, ४ त्रिष्टुप्; ३ निचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

अथ अष्टादशो वर्गः ॥ १८ ॥

सोमारुद्रा धारयेथामसुर्यं१ प्र वामिष्टयोऽरमश्नुवन्तु ।
दमेदमे सप्त रत्ना दधाना शं नो भूतं द्विपदे शं चतुष्पदे ॥ १ ॥
सोमारुद्रा वि वृहतं विषूचीममीवा या नो गयमाविवेश ।
आरे बाधेथां निर्ऋतिं पराचैरस्मे भद्रा सौश्रवसानि सन्तु ॥ २ ॥
सोमारुद्रा युवमेतान्यस्मे विश्वा तनूषु भेषजानि धत्तम् ।
अव स्यतं मुञ्चतं यन्नो अस्ति तनूषु बद्धं कृतमेनो अस्मत् ॥ ३ ॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तिग्मायुधौ तिग्महेती सुशेवौ सोमारुद्राविह सु मृळतं नः।
प्र नो मुञ्चतं वरुणस्य पाशाद्द्रोपायतं नः सुमनस्यमाना॥ ४॥

[७५] पञ्चसप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—पायुर्भारद्वाजः॥ देवता—१ वर्म; २ धनुः; ३ ज्या; ४ आर्ष्टी; ५ इषुधिः; ६[१] सारथिः; ६[२] रश्मयः; ७ अश्वाः; ८ रथः; ९ रथगोपाः; १० लिङ्गोक्ताः; ११, १२, १५, १६, इषवः; १३ प्रतोदः; १४ हस्तघ्नः; १७-१९ लिङ्गोक्ता सङ्ग्रामाशिषः (१७ युद्धभूमिर्ब्रह्मणस्पतिरदितिश्च; १८ कवचसोमवरुणाः; १९ देवा ब्रह्म च)॥
छन्दः—१, ३ निचृत्त्रिष्टुप्; २, ४, ५, ७-९, ११, १४, १८ त्रिष्टुप्; ६ जगती; १० विराड्जगती; १२, १९ विराडनुष्टुप्; १३ स्वराडुष्णिक्; १५ निचृद् अनुष्टुप्; १६ अनुष्टुप्; १७ पङ्क्तिः॥ स्वरः—१-५, ७-९, ११, १४, १८ धैवतः; ६, १० निषादः; १२, १५, १६, १९ गान्धारः; १३ ऋषभः; १७ पञ्चमः॥

अथ एकोनविंशो वर्गः॥ १९॥

जीमूतस्येव भवति प्रतीकं यद्वर्मी याति समदामुपस्थे।
अनाविद्धया तन्वा जय त्वं स त्वा वर्मणो महिमा पिपर्तु॥ १॥
धन्वना गा धन्वनाजिं जयेम धन्वना तीव्राः समदो जयेम।
धनुः शत्रोरपकामं कृणोति धन्वना सर्वाः प्रदिशो जयेम॥ २॥
वक्ष्यन्तीवेदा गनीगन्ति कर्णं प्रियं सखायं परिषस्वजाना।
योषेव शिङ्क्ते वितताधि धन्वञ्ज्या इयं समने पारयन्ती॥ ३॥
ते आचरन्ती समनेव योषा मातेव पुत्रं बिभृतामुपस्थे।
अप शत्रूनिध्यतां संविदाने आर्ष्टी इमे विष्फुरन्ती अमित्रान्॥ ४॥
ब्रह्मीनां पिता बहुरस्य पुत्रश्चिश्चा कृणोति समनावगत्य।
इषुधिः सङ्काः पृतनाश्च सर्वाः पृष्ठे निनद्धो जयति प्रसूतः॥ ५॥

अथ विंशो वर्गः॥ २०॥

रथे तिष्ठन्नयति वाजिनः पुरो यत्रयत्र कामयते सुषारथिः।
अभीशूनां महिमानं पनायत मनः पश्चादनु यच्छन्ति रश्मयः॥ ६॥
तीव्रान्घोषान्कृण्वते वृषपाणयोऽश्वा रथेभिः सह वाजयन्तः।
अवक्रामन्तः प्रपदैरमित्रान् क्षिणन्ति शत्रूँरनपव्ययन्तः॥ ७॥
रथवाहनं हविरस्य नाम यत्रायुधं निहितमस्य वर्म।
तत्रा रथमुप शग्मं सदेम विश्वाहा वयं सुमनस्यमानाः॥ ८॥
स्वादुष्संसदः पितरो वयोधाः कृच्छ्रेश्रितः शक्तीवन्तो गभीराः।
चित्रसेना इषुबला अमृध्राः सतोवीरा उरवो व्रातसाहाः॥ ९॥

ब्राह्मणासः पितरः सोम्यासः शिवे नो द्यावापृथिवी अनेहसा।
पूषा नः पातु दुरितादृतावृधो रक्षा माकिर्नो अघशंस ईशत॥ १०॥

अथ एकविंशो वर्गः॥ २१॥

सुपर्णं वस्ते मृगो अस्या दन्तो गोभिः संनद्धा पतति प्रसूता।
यत्रा नरः सं च वि च द्रवन्ति तत्रास्मभ्यमिषवः शर्म यंसन्॥ ११॥
ऋजीते परि वृङ्ग्धि नोऽश्मा भवतु नस्तनूः।
सोमो अधि ब्रवीतु नोऽदितिः शर्म यच्छतु॥ १२॥
आ जङ्घन्ति सान्वेषां जघनाँ उप जिघ्नते।
अश्वाजनि प्रचेतसोऽश्वान्त्समत्सु चोदय॥ १३॥
अहिरिव भोगैः पर्येति बाहुं ज्याया हेतिं परिबाधमानः।
हस्तघ्नो विश्वा वयुनानि विद्वान्पुमान्पुमांसं परि पातु विश्वतः॥ १४॥
आलाक्ता या रुरुशीष्यर्थो यस्या अयो मुखम्।
इदं पर्जन्यरेतस इष्वै देव्यै बृहन्नमः॥ १५॥

अथ द्वाविंशो वर्गः॥ २२॥

अवसृष्टा परा पत शरव्ये ब्रह्मसंशिते।
गच्छामित्रान्प्र पद्यस्व मामीषां कं चनोच्छिषः॥ १६॥
यत्र बाणाः संपतन्ति कुमारा विशिखाइव।
तत्रा नो ब्रह्मणस्पतिरदितिः शर्म यच्छतु विश्वाहा शर्म यच्छतु॥ १७॥
मर्मणि ते वर्मणा छादयामि सोमस्त्वा राजामृतेनानु वस्ताम्।
उरोर्वरीयो वरुणस्ते कृणोतु जयन्तं त्वानु देवा मदन्तु॥ १८॥
यो नः स्वो अरणो यश्च निष्ट्यो जिघांसति।
देवास्तं सर्वे धूर्वन्तु ब्रह्म वर्म ममान्तरम्॥ १९॥

इति षष्ठं मण्डलम्॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

 Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अथ सप्तमं मण्डलम्

प्रथमोऽनुवाकः [१] प्रथमं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१-१८ एकादशाक्षरपादैस्त्रिपदा विराड् गायत्री, १९-२५ त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१-१८ षड्जः; १९-२५ धैवतः ॥

अथ त्रयोविंशो वर्गः ॥ २३ ॥

अग्निं नरो दीधितिभिररण्योर्हस्तच्युती जनयन्त प्रशस्तम् ।
दूरेदृशं गृहपतिमथर्युम् ॥ १ ॥
तमग्निमस्ते वसवो न्यृण्वन्त्सुप्रतिचक्षमवसे कुतश्चित् ।
दक्षाय्यो यो दम आस नित्यः ॥ २ ॥
प्रेद्धो अग्ने दीदिहि पुरो नोऽजस्रया सूम्यो यविष्ठ ।
त्वां शश्वन्त उप यन्ति वाजाः ॥ ३ ॥
प्र ते अग्नयोऽग्निभ्यो वरं निः सुवीरासः शोशुचन्त द्युमन्तः ।
यत्रा नरः समासते सुजाताः ॥ ४ ॥
दा नो अग्ने धिया रयिं सुवीरं स्वपत्यं सहस्य प्रशस्तम् ।
न यं यावा तरति यातुमावान् ॥ ५ ॥

अथ चतुर्विंशो वर्गः ॥ २४ ॥

उप यमेति युवतिः सुदक्षं दोषा वस्तोर्हविष्मती घृताची ।
उप स्वैनमरमतिर्वसूयुः ॥ ६ ॥
विश्वा अग्नेऽप दुहार्तीर्येभिस्तपोभिरदहो जरूथम् ।
प्र निस्वरं चातयस्वामीवाम् ॥ ७ ॥
आ यस्ते अग्न इधते अनीकं वसिष्ठ शुक्र दीदिवः पावक ।
उतो न एभिः स्तवथैरिह स्याः ॥ ८ ॥
वि ये ते अग्ने भेजिरे अनीकं मर्ता नरः पित्र्यासः पुरुत्रा ।
उतो न एभिः सुमना इह स्याः ॥ ९ ॥
इमे नरो वृत्रहत्येषु शूरा विश्वा अदेवीरभि सन्तु माया: ।
ये मे धियं पुनर्यन्त प्रशस्ताम् ॥ १० ॥

अथ पञ्चविंशो वर्गः ॥ २५ ॥

मा शूने अग्ने नि षदाम नृणां माशेषसोऽवीरता परि त्वा ।
प्रजावतीषु दुर्यासु दुर्य
यमश्वी नित्यमुपयाति यज्ञं प्रजावन्तं स्वपत्यं क्षयं नः ।
स्वजन्मना शेषसा वावृधानम् ॥ १२ ॥
पाहि नो अग्ने रक्षसो अजुष्टात्पाहि धूर्तेररुषो अघायोः ।
त्वा युजा पृतनायूँरभि ष्याम् ॥ १३ ॥
सेदग्निरग्नीँरत्यस्त्वन्यान्यत्र वाजी तनयो वीळुपाणिः ।
सहस्त्रपाथा अक्षरा समेति ॥ १४ ॥
सेदग्निर्यो वनुष्यतो निपाति समेद्धारमंहस उरुष्यात् ।
सुजातासः परि चरन्ति वीराः ॥ १५ ॥

अथ षड्विंशो वर्गः ॥ २६ ॥

अयं सो अग्निराहुतः पुरुत्रा यमीशानः समिद्धे हविष्मान् ।
परि यमेत्यध्वरेषु होता ॥ १६ ॥
त्वे अग्न आहवनानि भूरीशानास आ जुहुयाम नित्या ।
उभा कृण्वन्तौ वहतू मियेधे ॥ १७ ॥
इमो अग्ने वीततमानि हव्याजस्रो वक्षि देवतातिमच्छ ।
प्रति न ईं सुरभीणि व्यन्तु ॥ १८ ॥
मा नो अग्नेऽवीरते परा दा दुर्वाससेऽमतये मा नो अस्यै ।
मा नः क्षुधे मा रक्षस ऋतावो मा नो दमे मा वन आ जुहूर्थाः ॥ १९ ॥
नू मे ब्रह्मण्यग्न उच्छशाधि त्वं देव मघवद्भ्यः सुभूदः ।
रातौ स्यामोभयासस आ ते यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ २० ॥

अथ सप्तविंशो वर्गः ॥ २७ ॥

त्वमग्ने सुहवो रण्वसंदृक्सुदीती सूनो सहसो दिदीहि ।
मा त्वे सचा तनये नित्य आ धङ्मा वीरो अस्मन्नर्यो वि दासीत् ॥ २१ ॥
मा नो अग्ने दुर्भृतये सचैषु देवेष्वग्निषु प्र वोचः ।
मा ते अस्मान्दुर्मतयो भूमाग्ने विद्वेवस्य सूनो सहसो नशन्त ॥ २२ ॥
स मर्तो अग्ने स्वनीक रेवानमर्त्ये य आजुहोति हव्यम् ।
स देवता वसुवनिं दधाति यं सूरिरर्थी पृच्छमान् एति ॥ २३ ॥
महो नो अग्ने सुवितस्य विद्वान्रयिं सूरिभ्य आ वहा बृहन्तम् ।
येन वयं सहसावन्मदेमाविक्षितास आयुषा सुवीराः ॥ २४ ॥
नू मे ब्रह्मण्यग्न उच्छशाधि त्वं देव मघवद्भ्यः सुभूदः ।
रातौ स्यामोभयासस आ ते यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ २५ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. इति पञ्चमाष्टके प्रथमोऽध्यायः ॥

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अथ द्वितीयोऽध्यायः

[२] द्वितीयं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—आप्रम् ॥ छन्दः—१, ९ विराट्त्रिष्टुप्; २, ४ त्रिष्टुप्; ३, ६-८, १०, ११ निचृत्त्रिष्टुप्; ५ पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१-४, ६-११ धैवतः; ५ पञ्चमः ॥

अथ प्रथमो वर्गः ॥ १ ॥

जुषस्व नः समिधमग्ने अद्य शोचा बृहद्यजतं धूममृण्वन्।
उप स्पृश दिव्यं सानु स्तूपैः सं रश्मिभिस्ततनः सूर्यस्य ॥ १ ॥
नराशंसस्य महिमानमेषामुप स्तोषाम यजतस्य यज्ञैः।
ये सुक्रतवः शुचयो धियंधाः स्वदन्ति देवा उभयानि हव्या ॥ २ ॥
ईळेन्यं वो असुरं सुदक्षमन्तर्दूतं रोदसी सत्यवाचम्।
मनुष्वदग्निं मनुना समिद्धं समध्वराय सदमिन्महेम ॥ ३ ॥
सपर्यवो भरमाणा अभिज्ञु प्र वृञ्जते नमसा बर्हिरग्नौ।
आजुह्वाना घृतपृष्ठं पृषद्वदध्वर्यवो हविषा मर्जयध्वम् ॥ ४ ॥
स्वाध्यो३ वि दुरो देवयन्तोऽशिश्रयू रथयुर्देवताता।
पूर्वी शिशुं न मातरा रिहाणे सम्यग्वो न समनेष्वञ्जन् ॥ ५ ॥

अथ द्वितीयो वर्गः ॥ २ ॥

उत योषणे दिव्ये मही न उषासानक्ता सुदुघेव धेनुः।
बर्हिषदा पुरुहूते मघोनी आ यज्ञियें सुवितायं श्रयेताम् ॥ ६ ॥
विप्रा यज्ञेषु मानुषेषु कारू मन्ये वां जातवेदसा यजध्यै।
ऊर्ध्वं नो अध्वरं कृतं हवेषु ता देवेषु वनथो वार्याणि ॥ ७ ॥
आ भारती भारतीभिः सजोषा इळा देवैर्मनुष्येभिरग्निः।
सरस्वती सारस्वतेभिरर्वाक्तिस्रो देवीर्बर्हिरेदं सदन्तु ॥ ८ ॥
तन्नस्तुरीपमध पोषयित्नु देव त्वष्टर्वि रराणः स्यस्व।
यतो वीरः कर्मण्यः सुदक्षो युक्ताग्रावा जायते देवकामः ॥ ९ ॥
वनस्पतेऽव सृजोप देवानग्निर्हविः शमिता सूदयाति।
सेदु होता सत्यतरो यजाति यथा देवानां जनिमानि वेद ॥ १० ॥
आ याह्यग्ने समिधानो अर्वाङिन्द्रेण देवैः सरथं तुरेभिः।
बर्हिर्न आस्तामदितिः सुपुत्रा स्वाहा देवा अमृता मादयन्ताम् ॥ ११ ॥

[३] तृतीयं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१, ९, १० विराट्त्रिष्टुप्; २ स्वराट्पङ्क्तिः; ३ भुरिक्पङ्क्तिः; ४, ६-८ निचृत्त्रिष्टुप्; ५ त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१, ४-१० धैवतः; २, ३ पञ्चमः ॥

अथ तृतीयो वर्गः ॥ ३ ॥

अग्निं वो देवमग्निभिः सजोषा यजिष्ठं दूतमध्वरे कृणुध्वम्।
यो मर्त्येषु निध्रुविर्ऋतावा तपुर्मूर्धा घृतान्नः पावकः ॥ १ ॥
प्रोथदश्वो न यवसेऽविष्यन्यदा महः संवरणाद् व्यस्थात्।
आदस्य वातो अनु वाति शोचिरध स्म ते व्रजनं कृष्णमस्ति ॥ २ ॥
उद्यस्य ते नवजातस्य वृष्णोऽग्ने चरन्त्यजरा इधानाः।
अच्छ द्यामरुषो धूम एति सं दूतो अग्न ईयसे हि देवान् ॥ ३ ॥
वि यस्य ते पृथिव्यां पाजो अश्रेत्तृषु यदन्ना समवृक्त जम्भैः।
सेनेव सृष्टा प्रसितिष्ट एति यवं न दंस्म जुह्वा विवेक्षि ॥ ४ ॥
तमिद्घोषा तमुषसि यविष्ठमग्निमत्यं न मर्जयन्त नरः।
निशिशानो अतिथिमस्य योनौ दीदायं शोचिराहुतस्य वृष्णः ॥ ५ ॥

अथ चतुर्थो वर्गः ॥ ४ ॥

सुसंदृक्ते स्वनीक प्रतीकं वि यद्रुक्मो न रोचस उपाके।
दिवो न ते तन्यतुरेति शुष्मश्चित्रो न सूरः प्रति चक्षि भानुम् ॥ ६ ॥
यथा वः स्वाह्याग्नये दाशेम परीळाभिर्घृतवद्भिश्च हव्यैः।
तेभिर्नो अग्ने अमितैर्महोभिः शतं पूर्भिरायसीभिर्नि पाहि ॥ ७ ॥
या वां ते सन्ति दाशुषे अधृष्टा गिरो वा याभिर्नृवतीरुरुष्याः।
ताभिर्नः सूनो सहसो नि पाहि स्मत्सूरीञ्जरितॄञ्जातवेदः ॥ ८ ॥
निर्यत्पूतेव स्वधितिः शुचिर्गात्स्वया कृपा तन्वाऽ३ रोचमानः।
आ यो मात्रोरुशन्यो जनिष्ट देवयज्याय सुक्रतुः पावकः ॥ ९ ॥
एता नो अग्ने सौभगा दिदीह्यपि क्रतुं सुचेतसं वतेम।
विश्वा स्तोतृभ्यो गृणते च सन्तु यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ १० ॥

[४] चतुर्थं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१, ३, ४, ७ भुरिक्पङ्क्तिः; २, ५ निचृत्त्रिष्टुप्; ६ स्वराट्पङ्क्तिः; ८, ९ पङ्क्तिः; १० विराट्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१, ३, ४, ६-९ पञ्चमः; २, ५, १० धैवतः ॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अथ पञ्चमो वर्गः ॥ ५ ॥

प्र वः शुक्राय भानवे भरध्वं हव्यं मतिं चाग्नये सुपूतम्।
यो दैव्यानि मानुषा जनूंष्यन्तर्विश्वानि विद्मना जिगाति ॥ १ ॥
स गृत्सो अग्निस्तरुणश्चिदस्तु यतो यविष्ठो अजनिष्ट मातुः।
सं यो वना युवते शुचिदन्भूरि चिदन्ना समिदत्ति सद्यः ॥ २ ॥
अस्य देवस्य संसद्यनीके यं मर्तासः श्येतं जगृभ्रे।
नि यो गृभं पौरुषेयीमुवोचं दुरोकमग्निरायवे शशोच ॥ ३ ॥
अयं कविरकविषु प्रचेता मर्तेष्वग्निरमृतो नि धायि।
स मा नो अत्र जुहुरः सहस्वः सदा त्वे सुमनसः स्याम ॥ ४ ॥
आ यो योनिं देवकृतं ससाद क्रत्वा हार्ग्निरमृताँ अतारीत्।
तमोषधीश्च वनिनश्च गर्भं भूमिश्च विश्वधायसं बिभर्ति ॥ ५ ॥

अथ षष्ठो वर्गः ॥ ६ ॥

ईशे हार्ग्निरमृतस्य भूरेरीशे रायः सुवीर्यस्य दातोः।
मा त्वा वयं सहसावन्नवीरा माप्सवः परि षदाम मादुवः ॥ ६ ॥
परिषद्यं हार्णस्य रेक्णो नित्यस्य रायः पतयः स्याम।
न शेषो अग्ने अन्यजातमस्त्यचेतानस्य मा पथो वि दुक्षः ॥ ७ ॥
नहि ग्रभायारणः सुशेवोऽन्योदर्यो मनसा मन्तवा उ।
अधा चिदोकः पुनरित्स पुत्या नो वाज्यभीषाळेतु नव्यः ॥ ८ ॥
त्वमग्ने वनुष्यतो नि पाहि त्वमु नः सहसावन्नवद्यात्।
सं त्वा ध्वस्मन्वदुध्यैतु पाथः सं रयिः स्पृहयाय्यः सहस्री ॥ ९ ॥
एता नो अग्ने सौभगा दिदीह्यपि क्रतुं सुचेतसं वतेम।
विश्वा स्तोतृभ्यो गृणते च सन्तु यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ १० ॥

[५] पञ्चमं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—वैश्वानरः ॥ छन्दः—१, ४ विराट्त्रिष्टुप्; २, ३, ८, ९ निचृत्त्रिष्टुप्; ५, ७ स्वराट्पङ्क्तिः; ६ पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१-४, ८, ९ धैवतः; ५-७ पञ्चमः ॥

अथ सप्तमो वर्गः ॥ ७ ॥

प्राग्नये बृहते यज्ञियाय ऋतस्य वृष्णे असुराय मन्म।
घृतं न यज्ञ आसनि पवित्रे स्तोमं मित्रे न दधिरे सुवृक्ति ॥ १ ॥
अग्निं होतारं मन्ये दास्वन्तं वसुं सूनुं सहसो जातवेदसम्।
विप्रं न जातवेदसं यज्ञानां केतुं मित्रं मानुषम् ॥ २ ॥
अग्निं देवासो मानुषीषु विक्षु प्रावन्वाजेषु येषु जुह्वत हविष्मन्तः।
अग्निं वाजस्य शवसो ददाना अग्निं नरो वृत्रहणं हवन्ते ॥ ३ ॥
अग्निं नरो दीधितिभिर्हवन्ते यत्र विश्पतिर्विशामरोचि।
नि यो यज्ञस्य हृद्यो दधर्ति यो मानुषीणामुशिजामकेतः ॥ ४ ॥
अग्निं नरो वि भरते मदन्तो वाजे चित्रं हविषो यज्ञे अह्नाम्।
अग्निं रथीतमं वाजयन्तो वाजिनं वाजेषु वाजिनम् ॥ ५ ॥
अग्निं नरो दीधितिभिर्हवन्ते यत्र विश्पतिर्विशामरोचि।
नि यो यज्ञस्य हृद्यो दधर्ति यो मानुषीणामुशिजामकेतः ॥ ६ ॥
अग्निं नरो वि भरते मदन्तो वाजे चित्रं हविषो यज्ञे अह्नाम्।
अग्निं रथीतमं वाजयन्तो वाजिनं वाजेषु वाजिनम् ॥ ७ ॥
अग्निं नरो दीधितिभिर्हवन्ते यत्र विश्पतिर्विशामरोचि।
नि यो यज्ञस्य हृद्यो दधर्ति यो मानुषीणामुशिजामकेतः ॥ ८ ॥
अग्निं नरो वि भरते मदन्तो वाजे चित्रं हविषो यज्ञे अह्नाम्।
अग्निं रथीतमं वाजयन्तो वाजिनं वाजेषु वाजिनम् ॥ ९ ॥
अग्निं नरो दीधितिभिर्हवन्ते यत्र विश्पतिर्विशामरोचि।
नि यो यज्ञस्य हृद्यो दधर्ति यो मानुषीणामुशिजामकेतः ॥ १० ॥

[६] षष्ठं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—वैश्वानरः ॥ छन्दः—१, ४, ५ निचृत्त्रिष्टुप्; २ निचृत्पङ्क्तिः; ३, ७ भुरिक्पङ्क्तिः; ६ विराट्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१, ४-६ धैवतः; २, ३, ७ पञ्चमः ॥

अथ नवमो वर्गः ॥ ९ ॥

प्र सम्राजो असुरस्य प्रशस्तिं पुंसः कृष्टीनामनुमाद्यस्य।
इन्द्रस्येव प्र तवसस्कृतानि वन्दे दारुं वन्दमानो विवक्मि ॥ १ ॥
कविं केतुं धासिं भानुमद्रेर्हिन्वन्ति शं राज्यं रोदस्योः।
पुरन्दरस्य गीर्भिरा विवासेऽग्नेर्व्रतानि पूर्व्या महानि ॥ २ ॥
न्यक्रतून्प्रथिनो मृध्रवाचः पणींरश्रद्धाँ अवृधाँ अयज्ञान्।
प्रप्र तान्दस्यूँरग्निर्विवाय पूर्वश्चकारापराँ अयज्यून् ॥ ३ ॥
यो अपाचीने तमसि मदन्तीः प्राचीश्चकार नृतमः शचीभिः।
तमीशानं वस्वो अग्निं गृणीषेऽनानतं दमयन्तं पृतन्यून् ॥ ४ ॥
यो देह्योऽ अनमयद्धस्त्रैर्यो अयपत्नीरुषसश्चकार।
स निरुध्या नहुषो यह्वो अग्निर्विशश्चक्रे बलिहृतः सहोभिः ॥ ५ ॥
यस्य शर्मन्नुप विश्वे जनास एवैस्तस्थुः सुमतिं भिक्षमाणाः।
वैश्वानरो बरमा रोदस्योरग्निः ससाद पित्रोरुपस्थम् ॥ ६ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

आ देवो ददे बुध्न्याꣳ३ वसूनि वैश्वानर उदिता सूर्यस्य।
आ समुद्रादवरादा परस्मादाग्निर्ददे दिव आ पृथिव्याः॥ ७॥

[७] सप्तमं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—१, ३ त्रिष्टुप्;
२ भुरिक्पङ्क्तिः; ४-६ निचृत्त्रिष्टुप्; ७ स्वराट्पङ्क्तिः॥
स्वरः—१, ३-६ धैवतः; २, ७ पञ्चमः॥

अथ दशमो वर्गः॥ १०॥

प्र वो देवं चित्सहसानमग्निमश्वं न वाजिनं हिषे नमोभिः।
भवा नो दूतो अध्वरस्य विद्वान्त्मना देवेषु विविदे मितद्रुः॥ १॥
आ याह्यग्ने पथ्याꣳ३ अनु स्वा मन्द्रो देवानां सख्यं जुषाणः।
आ सानु शुष्मैर्नुदयन्पृथिव्या जम्भैरभिर्विश्वमुशधग्वनानि॥ २॥
प्राचीनो यज्ञः सुधितं हि बर्हिः प्रीणीते अग्निरीळितो न होता।
आ मातरा विश्ववारे हुवानो यतो यविष्ठ जज्ञिषे सुशेवः॥ ३॥
सद्यो अध्वरे रथिरं जनन्त मानुषासो विचेतसो य एषाम्।
विशामधायि विश्पतिर्दुरोणेऽग्निर्मन्द्रो मधुवचा ऋतावा॥ ४॥
असादि वृतो वह्निराजगन्वानग्निर्ब्रह्मा नृषदने विधर्ता।
द्यौश्च यं पृथिवी वावृधाते आ यं होता यजति विश्ववारम्॥ ५॥
एते द्युम्नेभिर्विश्वमातिरन्त मन्त्रं ये वारं नर्या अतक्षन्।
प्र ये विशस्तिरन्त श्रोषमाणा आ ये मे अस्य दीधयन्नृतस्य॥ ६॥
नू त्वामग्न ईमहे वसिष्ठा ईशानं सूनो सहसो वसूनाम्।
इषं स्तोतृभ्यो मघवन्द्रय आनड्यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥ ७॥

[८] अष्टमं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—१, ७ स्वराट्पङ्क्तिः; २-४, ६ त्रिष्टुप्;
५ निचृत्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१, ७ पञ्चमः; २-६ धैवतः॥

अथ एकादशो वर्गः॥ ११॥

इन्धे राजा समर्यो नमोभिर्यस्य प्रतीकमाहुतं घृतेन।
नरो ह्व्येभिरीळते सबाध आग्निरग्रं उषसामशोचि॥ १॥
अयमु ष्य सुमहाँ अवेदि होता मन्द्रो मनुषो यह्वो अग्निः।
वि भा अकः ससृजानः पृथिव्यां कृष्णप्रविरोषधीभिर्ववक्षे॥ २॥
कया नो अग्ने वि वसः सुवृक्तिं कामु स्वधामृणवः शस्यमानः।
कदा भवेम पतयः सुदत्र रायो वन्तारो दुष्टरस्य साधोः॥ ३॥

प्रप्रायमग्निर्भरतस्य शृण्वे वि यत्सूर्यो न रोचते बृहद्भाः।
अभि यः पूरुं पृतनासु तस्थौ द्युतानो दैव्यो अतिथिः शुशोच॥ ४॥
असन्निक्त्वे आहवनानि भूरि भुवो विश्वेभिः सुमना अनीकैः।
स्तुतश्चिदग्ने शृण्विषे गृणानः स्वयं वर्धस्व तन्वं सुजात॥ ५॥
इदं वचः शतसाः संसहस्रमुदग्रयें जनिषीष्ट द्विबर्हाः।
शं यत्स्तोतृभ्य आपये भवाति द्युमदमीवचातनं रक्षोहा॥ ६॥
नू त्वामग्न ईमहे वसिष्ठा ईशानं सूनो सहसो वसूनाम्।
इषं स्तोतृभ्यो मघवन्द्रय आनड्यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥ ७॥

[९] नवमं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—१ त्रिष्टुप्; २, ३ भुरिक्पङ्क्तिः;
४, ५ निचृत्त्रिष्टुप्; ६ स्वराट्पङ्क्तिः॥ स्वरः—१, ४, ५ धैवतः;
२, ३, ६ पञ्चमः॥

अथ द्वादशो वर्गः॥ १२॥

अबोधि जार उषसामुपस्थाद्धोता मन्द्रः कवितमः पावकः।
दधाति केतुमुभयस्य जन्तोर्हव्या देवेषु द्रविणं सुकृत्सु॥ १॥
स सुक्रतुर्यो वि दुरः पणीनां पुनानो अर्कं पुरुभोजसं नः।
होता मन्द्रो विशां दमूनास्तिरस्तमो ददृशे राम्याणाम्॥ २॥
अमूरः कविरदितिर्विवस्वान्त्सुसंसन्मित्रो अतिथिः शिवो नः।
चित्रभानुरुषसां भात्यग्रेऽपां गर्भः प्रस्वा आ विवेश॥ ३॥
ईळेन्यो वो मनुषो युगेषु समनगा अंशुचज्जातवेदाः।
सुसंदृशा भानुना यो विभाति प्रति गावः समिधानं बुधन्त॥ ४॥
अग्ने याहि दूत्यं मा रिषण्यो देवाँ अच्छा ब्रह्मकृता गणेन।
सरस्वतीं मरुतो अश्विनापो यक्षि देवान्रत्नधेयाय विश्वान्॥ ५॥
त्वामग्ने समिधानो वसिष्ठो जरूथं हिन्वक्षि राये पुरन्धिम्।
पुरुणीथा जातवेदो जरस्व यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥ ६॥

[१०] दशमं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—१-३ निचृत्त्रिष्टुप्;
४, ५ त्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः॥

अथ त्रयोदशो वर्गः॥ १३॥

वृषो न जारः पृथु पाजो अश्रेद्दविद्युतद्दीद्यच्छोशुचानः।
वृषा हरिः शुचिरा भाति भासा धियो हिन्वान उशतीरजीगः॥ १॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

स्वर्णो वस्तोरुषसामरोचि यज्ञं तन्वाना उशिजो न मन्म।
अग्निर्जन्मानि देव आ वि विद्वान्द्रवद् दूतो देवयावा वनिष्ठः॥ २॥
अच्छा गिरो मतयो देवयन्तीरग्निं यन्ति द्रविणं भिक्षमाणाः।
सुसंदृशं सुप्रतीकं स्वञ्चं हव्यवाहमरतिं मानुषाणाम्॥ ३॥
इन्द्रं नो अग्ने वसुभिः सजोषा रुद्रं रुद्रेभिरा वहा बृहन्तम्।
आदित्येभिरदितिं विश्वजन्यां बृहस्पतिमृक्वभिर्विश्ववारम्॥ ४॥
मन्द्रं होतारमुशिजो यविष्ठमग्निं विशं ईळते अध्वरेषु।
स हि क्षपावाँ अभवद्रयीणामतन्द्रो दूतो यजथाय देवान्॥ ५॥

[११] एकादशं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—१ स्वराट्पङ्क्तिः; २, ४ भुरिक्पङ्क्तिः; ३ विराट्त्रिष्टुप्; ५ निचृत्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१, २, ४ पञ्चमः; ३, ५ धैवतः॥

अथ चतुर्दशो वर्गः॥ १४॥

महाँ असि ऽध्वरस्य प्रकेतो न ऋते त्वदमृता मादयन्ते।
आ विश्वेभिः सरथं याहि देवैर्न ऽग्ने होता प्रथमः संदेह॥ १॥
त्वामीळते अजिरं दूत्याय हविष्मन्तः सदमिन्मानुषासः।
यस्य देवैरासदो बर्हिरग्नेऽहान्यस्मै सुदिना भवन्ति॥ २॥
त्रिश्चिदक्तोः प्र चिकितुर्वसूनि त्वे अन्तर्दाशुषे मर्त्याय।
मनुष्वदग्न इह यक्षि देवान्भवा नो दूतो अभिशस्तिपावा॥ ३॥
अग्निरीशे बृहतो अध्वरस्याग्निर्विश्वस्य हविषः कृतस्य।
क्रतुं ह्यस्य वसवो जुषन्ताथा देवा दधिरे हव्यवाहम्॥ ४॥
आग्ने वह हविरद्याय देवानिन्द्रज्येष्ठास इह मादयन्ताम्।
इमं यज्ञं दिवि देवेषु धेहि यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥ ५॥

[१२] द्वादशं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—१ विराट्त्रिष्टुप्; २ त्रिष्टुप्; ३ पङ्क्तिः॥ स्वरः—१, २ धैवतः; ३ पञ्चमः॥

अथ पञ्चदशो वर्गः॥ १५॥

अगन्म महा नमसा यविष्ठं यो दीदाय समिद्धः स्वे दुरोणे।
चित्रभानुं रोदसी अन्तरुर्वी स्वाहुतं विश्वतः प्रत्यञ्चम्॥ १॥
स मह्ना विश्वा दुरितानि साह्वानग्निः ष्टवे दम आ जातवेदाः।
स नो रक्षिषद् दुरितादवद्यादस्मान्गृणत उत नो मघोनः॥ २॥
त्वं वरुण उत मित्रो अग्ने त्वां वर्धन्ति मतिभिर्विसिष्ठाः।
त्वे वसु सुषणनानि सन्तु यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥ ३॥

[१३] त्रयोदशं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः॥ देवता—वैश्वानरः॥ छन्दः—१, २ स्वराट्पङ्क्तिः; ३ भुरिक्पङ्क्तिः॥ स्वरः—पञ्चमः॥

अथ षोडशो वर्गः॥ १६॥

प्राग्नये विश्वशुचे धियन्धेऽसुरघ्ने मन्म धीतिं भरध्वम्।
भरे हविर्न बर्हिषि प्रीणानो वैश्वानराय यतये मतीनाम्॥ १॥
त्वमग्ने शोचिषा शोशुचान आ रोदसी अपृणा जायमानः।
त्वं देवाँ अभिशस्तेरमुञ्चो वैश्वानर जातवेदो महित्वा॥ २॥
जातो यदग्ने भुवना व्यख्यः पशून्न गोपा इर्यः परिज्मा।
वैश्वानर ब्रह्मणे विन्द गातुं यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥ ३॥

[१४] चतुर्दशं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—१ निचृद्बृहती; २ निचृत्त्रिष्टुप्; ३ विराट्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१ मध्यमः; २, ३ धैवतः॥

अथ सप्तदशो वर्गः॥ १७॥

समिधा जातवेदसे देवाय देवहूतिभिः।
हविर्भिः शुक्रशोचिषे नमस्विनो वयं दाशेमाग्नये॥ १॥
वयं ते अग्ने समिधा विधेम वयं दाशेम सुष्टुती यजत्र।
वयं घृतेनाध्वरस्य होतर्वयं देव हविषा भद्रशोचे॥ २॥
आ नो देवेभिरुप देवहूतिमग्ने याहि वषट्कृतिं जुषाणः।
तुभ्यं देवाय दाशतः स्याम यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥ ३॥

[१५] पञ्चदशं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—१, ३, ७, १०, १२, १४ विराड्गायत्री; २, ४-६, ९, १३ गायत्री; ८ निचृद्गायत्री; ११, १५ आर्च्युष्णिक्॥ स्वरः—१-१०, १२-१४ षड्जः; ११, १५ ऋषभः॥

अथ अष्टादशो वर्गः॥ १८॥

उपसद्याय मीळ्हुष आस्ये जुहुता हविः। यो नो नेदिष्ठमाप्यम्॥ १॥
यः पञ्च चर्षणीरभि निषसाद दमेदमे। कविर्गृहपतिर्युवा॥ २॥
स नो वेदो अमात्यमग्नी रक्षतु विश्वतः। उतास्मान्पात्वंहसः॥ ३॥
नवं नु स्तोममग्नये दिवः श्येनाय जीजनम्। वस्वः कुविद्वनाति नः॥ ४॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

स्पार्हा यस्य श्रियो दृशे रयिर्वीरवतो यथा। अग्ने यज्ञस्य शोचतः ॥ ५ ॥

अथ एकोनविंशो वर्गः ॥ १९ ॥

सेमां वेतु वषट्कृतिमग्निर्जुषत नो गिरः। यजिष्ठो हव्यवाहनः ॥ ६ ॥
नि त्वा नक्ष्य विश्पते द्युमन्तं देव धीमहि। सुवीरमग्न आहुत ॥ ७ ॥
क्षपो उस्रश्च दीदिहि स्वग्नयस्त्वया वयम्। सुवीरस्त्वमस्मयुः ॥ ८ ॥
उप त्वा सातये नरो विप्रासो यन्ति धीतिभिः। उपाक्षरा सहस्रिणी ॥ ९ ॥
अग्नी रक्षांसि सेधति शुक्रशोचिरमर्त्यः। शुचिः पावक ईड्यः ॥ १० ॥

अथ विंशो वर्गः ॥ २० ॥

स नो राधांस्या भरेशानः सहसो यहो। भगश्च दातु वार्यम् ॥ ११ ॥
त्वमग्ने वीरवद्यशो देवश्च सविता भगः दितिश्च दाति वार्यम् ॥ १२ ॥
अग्ने रक्षा णो अंहसः प्रति ष्म देव रीषतः। तपिष्ठैरजरो दह ॥ १३ ॥
अधा महीं न आयस्यनाधृष्टो नृपीतये। पूर्भवा शतभुजिः ॥ १४ ॥
त्वं नः पाह्यंहसो दोषावस्तरघायतः। दिवा नक्तमदाभ्य ॥ १५ ॥

[१६] षोडशं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१ स्वराडनुष्टुप्; २ भुरिग्बृहती; ३ निचृद्बृहती; ४, ९, १० बृहती; ५ निचृदनुष्टुप्; ६, ८, १२ निचृत्पङ्क्तिः; ७ अनुष्टुप्; ११ भुरिगनुष्टुप् ॥ स्वरः—१, ५, ७, ११ गान्धारः; २-४, ९, १० मध्यमः; ६, ८, १२ पञ्चमः ॥

अथ एकविंशो वर्गः ॥ २१ ॥

एना वो अग्निं नमसोर्जो नपातमा हुवे ।
प्रियं चेतिष्ठमरतिं स्वध्वरं विश्वस्य दूतममृतम् ॥ १ ॥
स योजते अरुषा विश्वभोजसा स दुद्रवत्स्वाहुतः ।
सुब्रह्मा यज्ञः सुशमी वसूनां देवं राधो जनानाम् ॥ २ ॥
उदस्य शोचिरस्थादाजुह्वानस्य मीळ्हुषः ।
उद् धूमासो अरुषासो दिविस्पृशः समग्निमिन्धते नरः ॥ ३ ॥
तं त्वा दूतं कृण्महे यशस्तमं देवाँ आ वीतये वह ।
विश्वा सूनो सहसो मर्तभोजना रास्व तद्यत्त्वेमहे ॥ ४ ॥
त्वमग्ने गृहपतिस्त्वं होता नो अध्वरे ।
त्वं पोता विश्ववार प्रचेता यक्षि वेषि च वार्यम् ॥ ५ ॥
कृधि रत्नं यजमानाय सुक्रतो त्वं हि रत्नधा असि ।
आ नं ऋते शिशीहि विश्वमृत्विजं सुशंसो यश्च दक्षते ॥ ६ ॥

अथ द्वाविंशो वर्गः ॥ २२ ॥

त्वे अग्ने स्वाहुत प्रियासः सन्तु सूरयः ।
यन्तारो ये मघवानो जनानामूर्वान्दयन्त गोनाम् ॥ ७ ॥
येषामिळा घृतहस्ता दुरोण आँ अपि प्राता निषीदति ।
ताँस्त्रायस्व सहस्य द्रुहो निदो यच्छा नः शर्म दीर्घश्रुत् ॥ ८ ॥
स मन्द्रया च जिह्वया वह्निरासा विदुष्टरः ।
अग्ने रयिं मघवद्भ्यो न आ वह हव्यदातिं च सूदय ॥ ९ ॥
ये राधांसि ददत्यश्व्या मघा कामेन श्रवसो महः ।
ताँ अंहसः पिपृहि पर्तृभिष्ट्वं शतं पूर्भिर्यविष्ठ्य ॥ १० ॥
देवो वो द्रविणोदाः पूर्णां विवष्ट्यासिचम् ।
उद्वा सिञ्चध्वमुप वा पृणध्वमादिद्वो देव ओहते ॥ ११ ॥
तं होतारमध्वरस्य प्रचेतसं वह्निं देवा अकृण्वत ।
दधाति रत्नं विधते सुवीर्यमग्निर्जनाय दाशुषे ॥ १२ ॥

[१७] सप्तदशं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१, ३, ४, ६, ७ आर्च्युष्णिक्; २ साम्नीत्रिष्टुप्; ५ साम्नीपङ्क्तिः ॥ स्वरः—१, ३, ४, ६, ७ ऋषभः; २ धैवतः; ५ पञ्चमः ॥

अथ त्रयोविंशो वर्गः ॥ २३ ॥

अग्ने भव सुषमिधा समिद्ध उत बर्हिरुर्विया वि स्तृणीताम् ॥ १ ॥
उत द्वारः उशतीर्वि श्रयन्तामुत देवाँ उशत आ वहेह ॥ २ ॥
अग्ने वीहि हविषा यक्षि देवान्त्स्वध्वरा कृणुहि जातवेदः ॥ ३ ॥
स्वध्वरा करति जातवेदा यक्षद्देवाँ अमृतान्पिप्रयच्च ॥ ४ ॥
वंस्व विश्वा वार्याणि प्रचेतः सत्या भवन्त्वाशिषो नो अद्य ॥ ५ ॥
त्वामु ते दधिरे हव्यवाहं देवासो अग्न ऊर्ज आ नपातम् ॥ ६ ॥
ते तें देवाय दाशतः स्याम महो नो रत्ना वि दध इयानः ॥ ७ ॥

द्वितीयोऽनुवाकः

[१८] अष्टादशं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—१-२१ इन्द्रः; २२-२५ सुदासः पैजवनस्य दानस्तुतिः ॥ छन्दः—१, १७, २१ पङ्क्तिः; २, ४, १२, २२ भुरिक्पङ्क्तिः; ३, ७ विराट् त्रिष्टुप्; ५, ९, ११, १६, १९, २० निचृत्त्रिष्टुप्; ६, १०, १५, १८, २३-२५ त्रिष्टुप्; ८, १३, १४ स्वराट्पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१, २, ४, ८, १२-१४, १७, २१, २२ पञ्चमः; ३, ५-७, ९-११, १५, १६, १८-२०, २३-२५ धैवतः ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अथ चतुर्विंशो वर्गः ॥ २४ ॥

त्वे हु यत्पितरश्चिन्न इन्द्र विश्वा वामा जरितारो असन्वन्।
त्वे गावः सुदुघास्त्वे ह्यश्वास्त्वं वसु देवयते वनिष्ठः ॥ १ ॥
राजेव हि जनिभिः क्षेष्येवाव द्युभिरभि विदुष्कविः सन्।
पिशा गिरो मघवन्गोभिरश्वैस्त्वायतः शिशीहि राये अस्मान् ॥ २ ॥
इमा उ त्वा पस्पृधानासो अत्र मन्द्रा गिरो देवयन्तीरुप स्थुः।
अर्वाचीं ते पथ्या राय एतु स्याम ते सुमताविन्द्र शर्मन् ॥ ३ ॥
धेनुं न त्वा सूयवसे दुदुक्षन्नुप ब्रह्माणि ससृजे वसिष्ठः।
त्वामिन्मे गोपतिं विश्व आहा न इन्द्रः सुमतिं गन्त्वच्छ ॥ ४ ॥
अर्णांसि चित्प्रथाना सुदास इन्द्रो गाधान्यकृणोत्सुपारा।
शर्धन्तं शिम्युमुचथस्य नव्यः शापं सिन्धूनामकृणोदशस्तीः ॥ ५ ॥

अथ पञ्चविंशो वर्गः ॥ २५ ॥

पुरोळा इत्तुर्वशो यक्षुरासीद्राये मत्स्यासो निशिता अपीव।
श्रुष्टिं चक्रुर्भृगवो द्रुह्यवश्च सखा सखायमतरद्विषूचोः ॥ ६ ॥
आ पक्थासो भलानसो भनन्तालिनासो विषाणिनः शिवासः।
आ योऽनयत्सधमा आर्यस्य गव्या तृत्सुभ्यो अजगन्युधा नॄन् ॥ ७ ॥
दुराध्योऽवे अदितिं स्तेवयन्तोऽचेतसो वि जगृभ्रे परुष्णीम्।
मह्नाविव्यक्पृथिवीं पत्यमानः पशुष्कविरशयच्चार्यमानः ॥ ८ ॥
ईयुरर्थं न न्यर्थं परुष्णीमाशुश्चनेदभिपित्वं जगाम।
सुदास इन्द्रः सुतुकौ अमित्रानरन्धयन्मानुषे वध्रिवाचः ॥ ९ ॥
ईयुर्गावो न यवसादगोपा यथाकृतमभि मित्रं चितासः।
पृश्निगावः पृश्निनिप्रेषितासः श्रुष्टिं चक्रुर्नियुतो रन्तयश्च ॥ १० ॥

अथ षड्विंशो वर्गः ॥ २६ ॥

एकं च यो विंशतिं च श्रवस्या वैकर्णयोर्जनाञ्राजा न्यस्तः।
दस्मो न सद्मन्नि शिशाति बर्हिः शूरः सर्गमकृणोदिन्द्र एषाम् ॥ ११ ॥
अर्धं श्रुतं कवषं वृद्धमप्स्वनुं द्रुह्युं नि वृणग्वज्रबाहुः।
वृणाना अत्र सख्याय सख्यं त्वायन्तो ये अमदन्ननु त्वा ॥ १२ ॥
वि सद्यो विश्वा दृंहितान्येषामिन्द्रः पुरः सहसा सप्त दर्दः।
व्यानवस्य तृत्सवे गयं भाग्जेष्मं पूरुं विदथे मृध्रवाचम् ॥ १३ ॥
नि गव्यवोऽनवो द्रुह्यवश्च षष्टिः शता सुषुपुः षट् सहस्रा।
षष्टिर्वीरासो अधि षड् दुवोयु विश्वेदिन्द्रस्य वीर्या कृतानि ॥ १४ ॥
इन्द्रेणैते तृत्सवो वेविषाणा आपो न सृष्टा अधवन्त नीचीः।
दुर्मित्रासः प्रकलविन्मिमाना जहुर्विश्वानि भोजना सुदासे ॥ १५ ॥

अथ सप्तविंशो वर्गः ॥ २७ ॥

अर्धं वीरस्य शृतपामनिन्द्रं परा शर्धन्तं नुनुदे अभि क्षाम्।
इन्द्रो मन्युं मन्युम्यो मिमाय भेजे पथो वर्तनिं पत्यमानः ॥ १६ ॥
आध्रेण चित्तद्वेकं चकार सिंह्यं चित्पेत्वेना जघान।
अवं स्रक्तीर्वेश्यावृश्चदिन्द्रः प्रायच्छद्विश्वा भोजना सुदासे ॥ १७ ॥
शश्वन्तो हि शत्रवो रारधुष्टे भेदस्य चिच्छर्धतो विन्द रन्धिम्।
मतीं एनः स्तुवतो यः कृणोति तिग्मं तस्मिन्नि जहि वज्रमिन्द्र ॥ १८ ॥
आवदिन्द्रं यमुना तृत्सवश्च प्रात्र भेदं सर्वताता मुषायत्।
अजासश्च शिग्रवो यक्षवश्च बलिं शीर्षाणि जभ्रुरश्व्यानि ॥ १९ ॥
न त इन्द्र सुमतयो न रायः संचक्षे पूर्वी उषसो न नूत्नाः।
देवंकं चिन्मान्यमानं जघन्थाव त्मना बृहतः शम्बरं भेत् ॥ २० ॥

अथ अष्टाविंशो वर्गः ॥ २८ ॥

प्र ये गृहादममदुस्वायाः पराशरः शतयातुर्वसिष्ठः।
न तै भोजस्य सख्यं मृषन्ताधा सूरिभ्यः सुदिना व्युच्छान् ॥ २१ ॥
द्वे नप्तुर्देववतः शते गोर्द्वा रथा वधूमन्ता सुदासः।
अहैन्नग्ने पैजवनस्य दानं होतेव सद्म पर्येमि रेभन् ॥ २२ ॥
चत्वारो मा पैजवनस्य दानाः स्मद्दिष्टयः कृशनिनो निरेके।
ऋज्रासो मा पृथिविष्ठाः सुदासस्तोकं तोकाय श्रवसे वहन्ति ॥ २३ ॥
यस्य श्रवो रोदसी अन्तरुर्वी शीर्ष्णेशीर्ष्णे विबभाजा विभक्ता।
सप्तेदिन्द्रं न स्रवतो गृणन्ति नि युध्यामधिमशिशादभीके ॥ २४ ॥
इमं नरो मरुतः सश्चतानु दिवोदासं न पितरं सुदासः।
अविष्टना पैजवनस्य केतं दूणाशं क्षत्रमजरं दुवोयु ॥ २५ ॥

[१९] एकोनविंशं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१, ५ त्रिष्टुप्; २ निचृत्पङ्क्तिः; ३, ६ निचृत्त्रिष्टुप्; ४ पङ्क्तिः; ७, ९, १० विराट्त्रिष्टुप्; ८, ११ भुरिक्पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१, ३, ५-७, ९, १० धैवतः; २, ४, ८, ११ पञ्चमः ॥

अथ एकोनत्रिंशो वर्गः ॥ २९ ॥

यस्तिग्मशृङ्गो वृषभो न भीम एकः कृष्टीश्च्यावयति प्र विश्वाः।
यः शश्वतो अदाशुषो गयस्य प्रयन्तासि सुष्विंतराय वेदः ॥ १ ॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

त्वं ह त्यदिन्द्र कुत्समावः शुश्रूषमाणस्तन्वा समर्ये।
दासं यच्छुष्णं कुयवं न्यस्मा अरन्धय आर्जुनेयाय शिक्षन्॥ २॥
त्वं धृष्णो धृषता वीतहव्यं प्रावो विश्वाभिरूतिभिः सुदासम्।
प्र पौरुकुत्सिं त्रसदस्युमावः क्षेत्रसाता वृत्रहत्येषु पूरुम्॥ ३॥
त्वं नृभिर्नृमणो देववीतौ भूरीणि वृत्रा हर्यश्व हंसि।
त्वं नि दस्युं चुमुरिं धुनिं चास्वापयो दुभीतये सुहन्तु॥ ४॥
तव च्यौत्नानि वज्रहस्त तानि नव यत्पुरो नवतिं च सद्यः।
निवेशने शततमाविवेषीरहञ्च वृत्रं नमुचिमुताहन् ॥ ५॥

अथ त्रिंशो वर्गः॥ ३०॥

सना ता त इन्द्र भोजनानि रातहव्याय दाशुषे सुदासे।
वृष्णे ते हरी वृषणा युनज्मि व्यन्तु ब्रह्माणि पुरुशाक वाजम्॥ ६॥
मा ते अस्यां सहसावन्परिष्टावघाय भूम हरिवः परादै।
त्रायस्व नोऽवृकेभिर्वरूथैस्तव प्रियासः सूरिषु स्याम॥ ७॥
प्रियास इत्ते मघवन्नभिष्टौ नरो मदेम शरणे सखायः।
नि तुर्वशं नि याद्वं शिशीह्यतिथिग्वाय शंस्यं करिष्यन्॥ ८॥
सद्यश्चिन्नु ते मघवन्नभिष्टौ नरः शंसन्त्युक्थशास उक्था।
ये ते हवेभिर्वि पणीँरदाशन्नस्मान्वृणीष्व युज्याय तस्मै॥ ९॥
एते स्तोमा नरां नृतम तुभ्यमस्मद्र्यञ्चो ददतो मघानि।
तेषामिन्द्र वृत्रहत्ये शिवो भूः सखा च शूरोऽविता च नृणाम्॥ १०॥
नू इन्द्र शूर स्तवमान ऊती ब्रह्मजूतस्तन्वा वावृधस्व।
उप नो वाजान्मिमीह्युप स्तीन्यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥ ११॥

इति पञ्चमाष्टके द्वितीयोऽध्यायः॥

अथ तृतीयोऽध्यायः

[२०] विंशं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१ स्वराट्पङ्क्तिः; २, ४, १० निचृत्त्रिष्टुप्; ३, ५ विराट्त्रिष्टुप्; ६, ८, ९ त्रिष्टुप्; ७ भुरिक्पङ्क्तिः॥ स्वरः—१, ७ पञ्चमः; २-६, ८-१० धैवतः॥

अथ प्रथमो वर्गः॥ १॥

उग्रो जज्ञे वीर्याय स्वधावाञ्चक्रिरपो नर्यो यत्कर्ण्यिन्।
जग्मिर्युवा नृषदनमवोभिस्त्राता न इन्द्र एनसो महश्चित्॥ १॥
हन्ता वृत्रमिन्द्रः शूशुवानः प्रावीन्नु वीरो जरितारमूती।
कर्ता सुदासे अह वा उ लोकं दाता वसु मुहुरा दाशुषे भूत्॥ २॥
युष्मो अनर्वा खजकृत्समद्वा शूरः सत्राषाड् जनुषेमषाळ्हः।
व्यास इन्द्रः पृतनाः स्वोजा अधा विश्वं शत्रूयन्तं जघान॥ ३॥
उभे चिदिन्द्र रोदसी महित्वा पप्राथ तविषीभिस्तुविष्मः।
नि वज्रमिन्द्रो हरिवान्मिमिक्षन्त्समन्धसा मदेषु वा उवोच॥ ४॥
वृषा जजान वृषणं रणाय तमु चिन्नारी नर्यं ससूव।
प्र यः सेनानीरध नृभ्यो अस्तीनः सत्वा गवेषणः स धृष्णुः॥ ५॥

अथ द्वितीयो वर्गः॥ २॥

नू चित्स भ्रेषते जनो न रेषन्मनो यो अस्य घोरमाविवासात्।
यज्ञैर्य इन्द्रे दधते दुवांसि क्षयत्स राय ऋतपा ऋतेजाः॥ ६॥
यदिन्द्र पूर्वो अपराय शिक्षन्नयज्यायान्कनीयसो देष्णम्।
अमृत इत्पर्यासीत दूरमा चिन्न चित्र्यं भरा रयिं नः॥ ७॥
यस्त इन्द्र प्रियो जनो ददाशदसन्निरेके अद्रिवः सखा ते।
वयं ते अस्यां सुमतौ चनिष्ठाः स्याम वरूथे अघ्नतो नृपीतौ॥ ८॥
एष स्तोमो अचिक्रदद् वृषा त उत स्तामुर्मघवन्नक्रपिष्ट।
रायस्कामो जरितारं त आगन्त्वमङ्ग शक्र वस्व आ शको नः॥ ९॥
स न इन्द्र त्वयताया इषे धास्मना च ये मघवानो जुनन्ति।
वस्वी षु ते जरित्रे अस्तु शक्तिर्यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥ १०॥

[२१] एकविंशं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१, ६, ८, ९ विराट्त्रिष्टुप्; २, १० निचृत्त्रिष्टुप्; ३, ७ भुरिक्पङ्क्तिः; ४, ५ स्वराट्पङ्क्तिः॥ स्वरः—१, २, ६, ८-१० धैवतः; ३-५, ७ पञ्चमः॥

अथ तृतीयो वर्गः॥ ३॥

असावि देवं गोऋजीकमन्धो न्यस्मिन्निन्द्रो जनुषेमुवोच।
बोधामसि त्वा हर्यश्व यज्ञैर्बोधा नः स्तोममन्धसो मदेषु॥ १॥
प्र यन्ति यज्ञं विपयन्ति बर्हिः सोममादो विदथे दुध्रवाचः।
न्यु भ्रियन्ते यशसो गृभादा दूरेउपब्दो वृषणो नृषाचः॥ २॥
त्वमिन्द्र स्ववितवा अपस्कः परिष्ठिता अहिना शूर पूर्वीः।
त्वद्वावक्रे रथ्योर्न धेना रेजन्ते विश्वा कृत्रिमाणि भीषा॥ ३॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

भीमो विवेषायुधेभिरेषामपांसि विश्वा नर्याणि विद्वान्।
इन्द्रः पुरो जर्हृषाणो वि दूधोद्वज्रहस्तो महिना जघान॥४॥
न यातव इन्द्र जूजुवुर्नो न वन्दना शविष्ठ वेद्याभिः।
स शर्धदुर्यो विषुणस्य जन्तोर्मा शिश्नदेवा अपि गुर्ऋतं नः॥५॥

अथ चतुर्थो वर्गः॥४॥

अभि क्रत्वेन्द्र भूरध ज्मन्न तैं विव्यङ्महिमानं रजांसि।
स्वेना हि वृत्रं शवसा जघन्थ न शत्रुरन्तं विविदद्युधा तैं॥६॥
देवाश्चित्ते असुर्याय पूर्वेऽनु क्षत्राय ममिरे सहांसि।
इन्द्रो मघानि दयते विषह्येन्द्रं वाजस्य जोहुवन्त सातौ॥७॥
कीरिश्चिद्धि त्वामवसे जुहावेशानमिन्द्र सौभगस्य भूरेः।
अवो बभूथ शतमूते अस्मे अभिक्षत्तुस्त्वावतो वरूता॥८॥
सखायस्त इन्द्र विश्वहा स्याम नमोवृधासो महिना तरुत्र।
वन्वन्तु स्मा तेऽवसा समीके३ऽभीतिमर्यो वनुषां शवांसि॥९॥
स नं इन्द्र त्वर्यताया इषे धास्मना च ये मघवानो जुनन्ति।
वस्वी षु ते जरित्रे अस्तु शक्तिर्यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥१०॥

[२२] द्वाविंशं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१ भुरिगुष्णिक्; २, ७ निचृदनुष्टुप्; ३ भुरिगनुष्टुप्; ४ आर्चीपङ्क्तिः; ५ अनुष्टुप्; ६, ८ विराडनुष्टुप्; ९ विराट्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१ ऋषभः; २, ३, ५-८ गान्धारः; ४ पञ्चमः; ९ धैवतः॥

अथ पञ्चमो वर्गः॥५॥

पिबा सोममिन्द्र मन्दतु त्वा यं ते सुषाव हर्यश्वाद्रिः।
सोतुर्बाहुभ्यां सुयतो नार्वा॥१॥
यस्ते मदो युन्युश्चारुरस्ति येन वृत्राणि हर्यश्व हंसि।
स त्वामिन्द्र प्रभूवसो ममत्तु॥२॥
बोधा सु मे मघवन्वाचमेमां यां ते वसिष्ठो अर्चति प्रशस्तिम्।
इमा ब्रह्म सधमादे जुषस्व॥३॥
श्रुधी हवं विपिपानस्यार्देर्बोधा विप्रस्यार्चतो मनीषाम्।
कृष्वा दुवांस्यन्तमा सचेमा॥४॥
न ते गिरो अपि मृष्ये तुरस्य न सुष्टुतिमसुर्यस्य विद्वान्।
सदा ते नाम स्वयशो विवक्मि॥५॥

अथ षष्ठो वर्गः॥६॥

भूरि हि ते सवना मानुषेषु भूरि मनीषी हवते त्वामित्।
मारे अस्मन्मघवञ्ज्योक्कः॥६॥
तुभ्येदिमा सवना शूर विश्वा तुभ्यं ब्रह्माणि वर्धना कृणोमि।
त्वं नृभिर्हव्यो विश्वधासि॥७॥
नू चित्नु ते मन्यमानस्य दस्मोदंशनुवन्ति महिमानमुग्र।
न वीर्यमिन्द्र ते न राधः॥८॥
ये च पूर्व ऋषयो ये च नूला इन्द्र ब्रह्माणि जनयन्त विप्राः।
अस्मे तैं सन्तु सख्या शिवानि यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥९॥

[२३] त्रयोविंशं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१, ६ भुरिक्पङ्क्तिः; २, ३ विराट्त्रिष्टुप्; ४ स्वराट्पङ्क्तिः; ५ निचृत्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१, ४, ६ पञ्चमः; २, ३, ५ धैवतः॥

अथ सप्तमो वर्गः॥७॥

उदु ब्रह्माण्यैरत श्रवस्येन्द्रं समर्ये महया वसिष्ठ।
आ यो विश्वानि शवसा ततानोपश्रोता म ईवतो वचांसि॥१॥
अयामि घोष इन्द्र देवजामिरिज्यन्त यच्छुरुध्रो विवाचि।
नहि स्वमायुश्चिकिते जनेषु तानीदंहांस्यति पर्ष्यस्मान्॥२॥
युजे रथं गवेषणं हरिभ्यामुप ब्रह्माणि जुजुषाणमस्थुः।
वि बाधिष्ट स्य रोदसी महित्वेन्द्रो वृत्राण्यप्रती जघन्वान्॥३॥
आपश्चित्पिप्युः स्तर्यो३ न गावो नक्षन्नृतं जरितारस्त इन्द्र।
याहि वायुर्न नियुतो नो अच्छा त्वं हि धीभिर्दयसे वि वाजान्॥४॥
ते त्वा मदा इन्द्र मादयन्तु शुष्मिणं तुविराधसं जरित्रे।
एको देवत्रा दयसे हि मर्तानस्मिञ्छूर सवने मादयस्व॥५॥
एवेदिन्द्रं वृषणं वज्रबाहुं वसिष्ठासो अभ्यर्चन्त्यर्कैः।
स नः स्तुतो वीरवद्धातु गोमद्यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥६॥

[२४] चतुर्विंशं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१, ३ निचृत्त्रिष्टुप्; २, ५ त्रिष्टुप्; ४ विराट्त्रिष्टुप्; ६ विराट्पङ्क्तिः॥ स्वरः—१-५ धैवतः; ६ पञ्चमः॥

अथ अष्टमो वर्गः॥८॥

योनिष्ट इन्द्र सदने अकारि तमा नृभिः पुरुहूत प्र याहि।
असो यथा नोऽविता वृधे च ददो वसूनि ममदश्च सोमैः॥१॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

गृभीतं ते मन इन्द्र द्विबर्हाः सुतः सोमः परिषिक्ता मधूनि।
विसृष्टधेना भरते सुवृक्तिरियमिन्द्रं जोहुवती मनीषा ॥ २ ॥
आ नो दिव आ पृथिव्या ऋजीषिन्निदं बर्हिः सोमपेयाय याहि।
वहन्तु त्वा हरयो मद्र्यञ्चमाङ्गूषमिच्छा तवसं मदाय ॥ ३ ॥
आ नो विश्वाभिरूतिभिः सजोषा ब्रह्म जुषाणो हर्यश्व याहि।
वरीवृजत्स्थविरेभिः सुशिप्रास्मे दधद् वृषणं शुष्मिन्द्र ॥ ४ ॥
एष स्तोमो मह उग्राय वाहे धुरीवात्यो न वाजयन्नधायि।
इन्द्रं त्वायमर्क ईट्टे वसूनां दिवीव द्यामधि नः श्रोमतं धाः ॥ ५ ॥
एवा न इन्द्र वार्यस्य पूर्धि प्र ते महीं सुमतिं वेविदाम।
इषं पिन्व मघवद्भ्यः सुवीरां यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ६ ॥

[२५] पञ्चविंशं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१ निचृत्पङ्क्तिः; २ विराट्पङ्क्तिः; ३ विराट्त्रिष्टुप्; ४ पङ्क्तिः; ५ निचृत्त्रिष्टुप्; ६ स्वराट्पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१, २, ४, ६ पञ्चमः; ३, ५ धैवतः ॥

अथ नवमो वर्गः ॥ ९ ॥

आ ते मह इन्द्रोत्युग्र समन्यवो यत्समरन्त सेनाः।
पतति द्युन्नर्यस्य बाह्वोर्मा ते मनो विष्वद्र्यग्वि चारीत् ॥ १ ॥
नि दुर्ग इन्द्र श्नथिह्यमित्रानभि ये नो मतीसो अमन्ति।
आरे तं शंसं कृणुहि निनित्सोरा नो भर संभरणं वसूनाम् ॥ २ ॥
शतं ते शिप्रिन्नूतयः सुदासे सहस्रं शंसा उत रातिरस्तु।
जहि वधर्वनुषो मर्त्यस्यास्मे द्युम्नमधि रत्नं च धेहि ॥ ३ ॥
त्वावतो हीन्द्र क्रत्वे अस्मि त्वावतोऽवितुः शूर रातौ।
विश्वेदहानि तविषीव उग्र ओकः कृणुष्व हरिवो न मर्धीः ॥ ४ ॥
कुत्सा एते हर्यश्वाय शूषमिन्द्रे सहो देवजूतमियानाः।
सत्रा कृधि सुहना शूर वृत्रा वयं तरुत्राः सनुयाम वाजम् ॥ ५ ॥
एवा न इन्द्र वार्यस्य पूर्धि प्र ते महीं सुमतिं वेविदाम।
इषं पिन्व मघवद्भ्यः सुवीरां यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ६ ॥

[२६] षड्विंशं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१-४ त्रिष्टुप्; ५ निचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

अथ दशमो वर्गः ॥ १० ॥

न सोम इन्द्रमसुतो ममाद नाब्रह्माणो मघवानं सुतासः।
तस्मा उक्थं जनये यजुर्जोषन्नृववन्नवीयः शृणवद्यथा नः ॥ १ ॥
उक्थमुक्थे सोम इन्द्रं ममाद नीथेनीथे मघवानं सुतासः।
यदीं सबाधः पितरं न पुत्राः समानदक्षा अवसे हवन्ते ॥ २ ॥
चकार ता कृणवन्नूनमन्या यानि बुवन्ति वेधसः सुतेषु।
जनीरिव पतिरेकः समानो नि मामृजे पुर इन्द्रः सु सर्वीः ॥ ३ ॥
एवा तमाहुरुत शृण्व इन्द्र एको विभक्ता तरणिर्मघानाम्।
मिथस्तुरं ऊतयो यस्य पूर्वीरस्मे भद्राणि सश्चत प्रियाणि ॥ ४ ॥
एवा वसिष्ठ इन्द्रमूतये नॄन्कृष्टीनां वृषभं सुते गृणाति।
सहस्त्रिण उप नो माहि वाजान्यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ५ ॥

[२७] सप्तविंशं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१, ५ विराट्त्रिष्टुप्; २ निचृत्त्रिष्टुप्; ३, ४ त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

अथ एकादशो वर्गः ॥ ११ ॥

इन्द्रं नरो नेमधिता हवन्ते यत्पार्या युनजते धियस्ताः।
शूरो नृषाता शवसश्चकान आ गोमति व्रजे भजा त्वं नः ॥ १ ॥
य इन्द्र शुष्मो मघवन्ते अस्ति शिक्षा सखिभ्यः पुरुहूत नृभ्यः।
त्वं हि दृळ्हा मघवन्विचेता अपा वृधि परिवृतं न राधः ॥ २ ॥
इन्द्रो राजा जगतश्चर्षणीनामधि क्षमि विषुरूपं यदस्ति।
ततो ददाति दाशुषे वसूनि चोदद्राध उपस्तुतश्चिदर्वाक् ॥ ३ ॥
नू चिन्न इन्द्रो मघवा सहूती दानो वाजं नि यमते न ऊती।
अनूना यस्य दक्षिणा पीपाय वामं नृभ्यो अभिवीता सखिभ्यः ॥ ४ ॥
नू इन्द्र राये वरिवस्कृधी न आ ते मनो ववृत्याम मघाय।
गोमदश्वावद्रथवद् व्यन्तो यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ५ ॥

[२८] अष्टाविंशं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१, २, ५ निचृत्त्रिष्टुप्; ३ भुरिक्पङ्क्तिः; ४ स्वराट्पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१, २, ५ धैवतः; ३, ४ पञ्चमः ॥

अथ द्वादशो वर्गः ॥ १२ ॥

ब्रह्मा ण इन्द्रोप याहि विद्वानर्वाञ्चस्ते हरयः सन्तु युक्ताः।
विश्वे हि त्वा सधमादो वहन्तु मतीर अस्माकमिच्छृणुहि विश्वमिन्व ॥ १ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

हवं॑ त इन्द्र महि॒मा व्या॑न॒ड् ब्रह्म॒ यत्पासि॑ शवसि॒न्नृषी॑णाम्।
आ यद्वज्रं॑ दधि॒षे हस्त॑ उग्र घो॒रः सन्क्रत्वा॑ जनिष्ठा॒ अषा॑ळ्हः ॥ २ ॥
तव॒ प्रणी॑तीन्द्र॒ जोहु॑वाना॒न्त्सं यन्नृ॒न्न रोद॑सी नि॒नेथ॑।
म॒हे क्ष॒त्राय॒ शव॑से॒ हि ज॒ज्ञेऽतू॑तुजिं चि॒त्तूतु॑जिरशिश्नत् ॥ ३ ॥
ए॒भिर्न॑ इ॒न्द्राह॑भिर्दशस्य दुर्मि॒त्रासो॒ हि क्षि॒तयः॒ पव॑न्ते।
प्रति॒ यच्चष्टे॒ अनृ॑तमने॒ना अव॑ द्वि॒ता वरु॑णो मा॒यी नः॑ सात् ॥ ४ ॥
वो॒चेमेदिन्द्रं॑ म॒घवा॑नमेनं म॒हो रा॒यो राध॑सो॒ यद्दद॑न्नः।
यो अर्च॑तो॒ ब्रह्म॑कृति॒मवि॑ष्ठो यू॒यं पा॑त स्व॒स्तिभिः॒ सदा॑ नः ॥ ५ ॥

[२९] एकोनत्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१ स्वराट्पङ्क्तिः; २ विराट् त्रिष्टुप्; ३ पङ्क्तिः; ४, ५ निचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१, ३ पञ्चमः; २, ४, ५ धैवतः ॥

अथ त्रयोदशो वर्गः ॥ १३ ॥

अ॒यं सोम॑ इन्द्र॒ तुभ्यं॑ सुन्व॒ आ तु प्र या॑हि हरिव॒स्तदो॑काः।
पिबा॒ त्व१॒॑स्य सुषु॑तस्य॒ चारो॒र्ददो॑ म॒घानि॑ मघवन्निया॒नः ॥ १ ॥
ब्रह्म॑न्वीर॒ ब्रह्म॑कृतिं जुषा॒णो॑ऽर्वाची॒नो हरि॑भिर्याहि॒ तूय॑म्।
अ॒स्मिन्नू॒ षु सव॑ने मादय॒स्वोप॒ ब्रह्मा॑णि शृणव इ॒मा नः॑ ॥ २ ॥
का ते॑ अ॒स्त्यरं॑कृतिः सू॒क्तैः क॒दा नू॒नं ते॑ मघवन्दाशेम।
विश्वा॑ म॒तीरा त॑तने त्वा॒याधा॑ म इन्द्र शृणवो॒ हवे॒मा ॥ ३ ॥
उ॒तो घा॒ ते पु॑रु॒ष्या॒३॒॑ इदा॑स॒न्येषां॒ पूर्वे॑षा॒मशृ॑णो॒र्ऋषी॑णाम्।
अधा॒हं त्वा॑ मघवञ्जोहवीमि॒ त्वं न॑ इन्द्रासि॒ प्रम॑तिः पि॒तेव॑ ॥ ४ ॥
वो॒चेमेदिन्द्रं॑ म॒घवा॑नमेनं म॒हो रा॒यो राध॑सो॒ यद्दद॑न्नः।
यो अर्च॑तो॒ ब्रह्म॑कृति॒मवि॑ष्ठो यू॒यं पा॑त स्व॒स्तिभिः॒ सदा॑ नः ॥ ५ ॥

[३०] त्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१, विराट्त्रिष्टुप्; २ निचृत्त्रिष्टुप्; ३ निचृत्पङ्क्तिः; ४, ५ स्वराट्पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१, २ धैवतः; ३-५ पञ्चमः ॥

अथ चतुर्दशो वर्गः ॥ १४ ॥

आ नो॑ देव॒ शव॑सा याहि शुष्मि॒न्भवा॑ वृ॒ध इ॑न्द्र रा॒यो अ॒स्य।
म॒हे नृ॒म्णाय॑ नृपते सुवज्र॒ महि॑ क्ष॒त्राय॒ पौंस्या॑य शूर ॥ १ ॥

हव॑न्त उ त्वा॒ हव्यं॑ विवा॑चि त॒नूषु॒ शूराः॒ सूर्य॑स्य सा॒तौ।
त्वं विश्वे॑षु॒ सेन्यो॒ जने॑षु॒ त्वं वृ॒त्राणि॑ रन्धया सु॒हन्तु॑ ॥ २ ॥
अहा॒ यदि॑न्द्र सु॒दिना॑ व्यु॒च्छान्दधो॒ यत्के॒तुमु॑प॒मं स॒मत्सु॑।
न्य१॒॑ग्निः सी॑द॒दसु॑रो॒ न होता॑ हुवा॒नो अत्र॑ सु॒भगा॑य दे॒वान् ॥ ३ ॥
व॒यं ते त॑ इन्द्र॒ ये च॑ देव॒ स्तव॑न्त शूर॒ दद॑तो म॒घानि॑।
यच्छा॑ सू॒रिभ्य॑ उप॒मं वरू॑थं स्वा॒भुवो॑ जर॒णाम॑श्नवन्त ॥ ४ ॥
वो॒चेमेदिन्द्रं॑ म॒घवा॑नमेनं म॒हो रा॒यो राध॑सो॒ यद्दद॑न्नः।
यो अर्च॑तो॒ ब्रह्म॑कृति॒मवि॑ष्ठो यू॒यं पा॑त स्व॒स्तिभिः॒ सदा॑ नः ॥ ५ ॥

[३१] एकत्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१ विराड्गायत्री; २, ८ गायत्री; ३-५ आर्च्युष्णिक्; ६, ७, ९ निचृद्गायत्री; १०, ११ भुरिगनुष्टुप्; १२ अनुष्टुप् ॥ स्वरः—१, २, ६-९ षड्जः; ३-५ ऋषभः; १०-१२ गान्धारः ॥

अथ पञ्चदशो वर्गः ॥ १५ ॥

प्र व॒ इन्द्रा॑य॒ माद॑नं॒ हर्य॑श्वाय गायत। सखा॑यः सोम॒पाव्ने॑ ॥ १ ॥
शंसेदु॒क्थं सु॒दान॑व उ॒त द्यु॒क्षं यथा॒ नरः॑। च॒कृ॒मा स॒त्यरा॑धसे ॥ २ ॥
त्वं न॑ इन्द्र वाज॒युस्त्वं ग॒व्युः श॑तक्रतो। त्वं हि॑रण्य॒युर्व॑सो ॥ ३ ॥
व॒यमि॑न्द्र त्वा॒यवो॒ऽभि प्र णो॑नुमो वृषन्। वि॒द्धी त्व१॒॑स्य नो॑ वसो ॥ ४ ॥
मा नो॑ नि॒दे च॒ वक्त॑वे॒ऽर्यो र॑न्धी॒रराव्णे। त्वे अपि॒ क्रतु॒र्मम॑ ॥ ५ ॥
त्वं वर्मा॑सि स॒प्रथः॑ पुरोयो॒धश्च॑ वृत्रहन्। त्वया॒ प्रति॑ ब्रुवे यु॒जा ॥ ६ ॥

अथ षोडशो वर्गः ॥ १६ ॥

म॒हाँ उ॒तासि॒ यस्य॒ तेऽनु॑ स्व॒धाव॑री॒ सहः॑। म॒म्नाते॑ इन्द्र॒ रोद॑सी ॥ ७ ॥
तं त्वा॑ म॒रुत्व॑ती॒ परि॒ भुव॒द्वाणी॑ स॒याव॑री। नक्ष॑माणा स॒ह द्युभिः॑ ॥ ८ ॥
ऊ॒र्ध्वास॒स्त्वान्विन्द॑वो॒ भुव॑न्द॒स्ममुप॒ द्यवि॑। सं ते॑ नमन्त कृ॒ष्टयः॑ ॥ ९ ॥
प्र वो॑ म॒हे म॑हि॒वृधे॑ भरध्वं॒ प्रचे॑तसे॒ प्र सु॑म॒तिं कृ॑णुध्वम् ।
विशः॑ पू॒र्वीः प्र च॑रा चर्षणि॒प्राः ॥ १० ॥
उ॒रु॒व्यच॑से म॒हिने॑ सुवृ॒क्तिमिन्द्रा॑य॒ ब्रह्म॑ जनयन्त॒ विप्राः॑ ।
तस्य॑ व्र॒तानि॒ न मि॑नन्ति॒ धीराः॑ ॥ ११ ॥
इन्द्रं॒ वाणी॒रनु॑त्तमन्युमे॒व स॒त्रा राजा॑नं दधिरे॒ सह॑ध्यै ।
हर्य॑श्वाय बर्हया॒ समा॒पीन् ॥ १२ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

[३२] द्वात्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—१-२५, २६[१], २७ वसिष्ठः; २६[१] वसिष्ठः शक्तिर्वा ॥ देवता—इन्द्रः ॥
छन्दः—१, ४, २४ विराड्बृहती; २, ९ पङ्क्तिः ३ साम्नीपङ्क्तिः; ५, १३, १५, १९, २३ निचृत्पङ्क्तिः; ६, ८, १२, १६, १८, २६ निचृद्बृहती; ७ विराट् पङ्क्तिः; १०, १४ भुरिगनुष्टुप्; ११, २७ बृहती; १७, २५ भुरिग्बृहती; २०, २२ स्वराडनुष्टुप्; २१ स्वराड्बृहती ॥ स्वरः—१, ४, ६, ८, ११, १२, १६-१८, २१, २४-२७ मध्यमः; २, ३, ५, ७, ९, १३, १५, १९, २३ पञ्चमः; १०, १४, २०, २२ गान्धारः ॥

अथ सप्तदशो वर्गः ॥ १७ ॥

मो षु त्वा वाघतश्चनारे अस्मन्नि रीरमन् ।
आरात्ताच्चित्सधमादं न आ गहीह वा सन्नुप श्रुधि ॥ १ ॥
इमे हि ते ब्रह्मकृतः सुते सचा मधौ न मक्ष आसते ।
इन्द्रे कामं जरितारो वसूयवो रथे न पादमा दधुः ॥ २ ॥
रायस्कामो वज्रहस्तं सुदक्षिणं पुत्रो न पितरं हुवे ॥ ३ ॥
इम इन्द्राय सुन्विरे सोमासो दध्याशिरः ।
ताँ आ मदाय वज्रहस्त पीतये हरिभ्यां याह्योक आ ॥ ४ ॥
श्रवच्छ्रुत्कर्ण ईयते वसूनां नू चिन्नो मर्धिषद्गिरः ।
सद्यश्चिद्यः सहस्राणि शता ददन्नकिर्दित्सन्तमा मिनत् ॥ ५ ॥

अथ अष्टादशो वर्गः ॥ १८ ॥

स वीरो अप्रतिष्कुत इन्द्रेण शूशुवे नृभिः ।
यस्ते गभीरा सवनानि वृत्रहन्त्सुनोत्या च धावति ॥ ६ ॥
भवा वरूथं मघवन्मघोनां यत्समजासि शर्धतः ।
वि त्वाहतस्य वेदनं भजेमह्या दूणाशो भरा गयम् ॥ ७ ॥
सुनोता सोमपात्रे सोममिन्द्राय वज्रिणे ।
पचता पक्तीरवसे कृणुध्वमित्पृणन्नित्पृणते मयः ॥ ८ ॥
मा स्तेधत सोमिनो दक्षता महे कृणुध्वं राय आतुजे ।
तरणिरिज्जयति क्षेति पुष्यति न देवासः कवलयें ॥ ९ ॥
नकिः सुदासो रथं पर्यासं न रीरमत् ।
इन्द्रो यस्याविता यस्य मरुतो गमत्स गोमति व्रजे ॥ १० ॥

अथ एकोनविंशो वर्गः ॥ १९ ॥

गमद्वाजं वाजयन्निन्द्र मर्त्यो यस्य त्वमविता भुवः ।
अस्माकं बोध्यविता रथानामस्माकं शूर नृणाम् ॥ ११ ॥
उदिन्वस्य रिच्यतेऽशो धनं न जिग्युषः ।
य इन्द्रो हरिवान्न दभन्ति तं रिपो दक्षं दधाति सोमिनि ॥ १२ ॥
मन्त्रमखर्वं सुधितं सुपेशसं दधात यज्ञियेष्वा ।
पूर्वीश्चन प्रसितयस्तरन्ति तं य इन्द्रे कर्मणा भुवत् ॥ १३ ॥
कस्तमिन्द्र त्वावसुमा मर्त्यो दधर्षति ।
श्रद्धा इत्ते मघवन्पार्ये दिवि वाजी वाजं सिषासति ॥ १४ ॥
मघोनः स्म वृत्रहत्येषु चोदय ये ददति प्रिया वसु ।
तव प्रणीती हर्यश्व सूरिभिर्विश्वा तरेम दुरिता ॥ १५ ॥

अथ विंशो वर्गः ॥ २० ॥

तवेदिन्द्रावमं वसु त्वं पुष्यसि मध्यमम् ।
सत्रा विश्वस्य परमस्य राजसि नकिष्ट्वा गोषु वृण्वते ॥ १६ ॥
त्वं विश्वस्य धनदा असि श्रुतो य ईं भवन्त्याजयः ।
तवायं विश्वः पुरुहूत पार्थिवोऽवस्युर्नाम भिक्षते ॥ १७ ॥
यदिन्द्र यावतस्त्वमेतावदहमीशीय ।
स्तोतारमिद्दिधिषेय रदावसो न पापत्वाय रासीय ॥ १८ ॥
शिक्षेयमिन्महयते दिवेदिवे राय आ कुहचिद्विदे ।
नहि त्वदन्यन्मघवन्न आप्यं वस्यो अस्ति पिता चन ॥ १९ ॥
तरणिरित्सिषासति वाजं पुरन्ध्या युजा ।
आ व इन्द्रं पुरुहूतं नमे गिरा नेमिं तष्टेव सुद्रवम् ॥ २० ॥

अथ एकविंशो वर्गः ॥ २१ ॥

न दुष्टुती मर्त्यो विन्दते वसु न स्रेधन्तं रयिर्नशत् ।
सुशक्तिरिन्मघवन्तुभ्यं मावते देष्णं यत्पार्ये दिवि ॥ २१ ॥
अभि त्वा शूर नोनुमोऽदुग्धाइव धेनवः ।
ईशानमस्य जगतः स्वर्दृशमीशानमिन्द्र तस्थुषः ॥ २२ ॥
न त्वावाँ अन्यो दिव्यो न पार्थिवो न जातो न जनिष्यते ।
अश्वायन्तो मघवन्निन्द्र वाजिनो गव्यन्तस्त्वा हवामहे ॥ २३ ॥
अभी षतस्तदा भरेन्द्र ज्यायः कनीयसः ।
पुरूवसुर्हि मघवन्त्सनादसि भरेभरे च हव्यः ॥ २४ ॥
परा णुदस्व मघवन्नमित्रान्त्सुवेदा नो वसू कृधि ।
अस्माकं बोधि विता महाधने भवा वृधः सखीनाम् ॥ २५ ॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

इन्द्र क्रतुं न आ भर पिता पुत्रेभ्यो यथा ।
शिक्षा णो अस्मिन्पुरुहूत यामनि जीवा ज्योतिरशीमहि ॥ २६ ॥
मा नो अज्ञाता वृजना दुराध्यो३ माशिवासो अव क्रमुः ।
त्वया वयं प्रवतः शश्वतीरपोऽति शूर तरामसि ॥ २७ ॥

[३३] त्रयस्त्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—संस्तवो वसिष्ठस्य सपुत्रस्येन्द्रेण वा संवादः; १-९ वसिष्ठपुत्रा; १०-१४ वसिष्ठः ॥ देवता—त एव ॥ छन्दः—१, २, ६, १२, १३ त्रिष्टुप्; ३-५, ७, ९, १४ निचृत्त्रिष्टुप्; ८, ११ विराट्त्रिष्टुप्; १० भुरिक्पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१-९, ११-१४ धैवतः; १० पञ्चमः ॥

अथ द्वाविंशो वर्गः ॥ २२ ॥

श्वित्यञ्चो मा दक्षिणतस्कपर्दा धियंजिन्वासो अभि हि प्रमन्दुः ।
उत्तिष्ठन्वोचे परि बर्हिषो नॄन्न मे दूरादवितवे वसिष्ठाः ॥ १ ॥
दूरादिन्द्रमनयन्ना सुतेन तिरो वैशन्तमति पान्तमुग्रम् ।
पाशद्युम्नस्य वायतस्य सोमात्सुतादिन्द्रोऽवृणीता वसिष्ठान् ॥ २ ॥
एवेन्नु कं सिन्धुमेभिस्ततारेवेन्नु कं भेदमेभिर्जघान ।
एवेन्नु कं दाशराज्ञे सुदासं प्रावदिन्द्रो ब्रह्मणा वो वसिष्ठाः ॥ ३ ॥
जुष्टी नरो ब्रह्मणा वः पितॄणामक्षमव्ययं न किला रिषाथ ।
यच्छक्वरीषु बृहता रवेणेन्द्रे शुष्ममदधाता वसिष्ठाः ॥ ४ ॥
उद्द्यामिवेत्तृष्णजो नाथितासोऽदीधयुर्दाशराज्ञे वृतासः ।
वसिष्ठस्य स्तुवत इन्द्रो अश्रोदुरुं तृत्सुभ्यो अकृणोदु लोकम् ॥ ५ ॥

अथ त्रयोविंशो वर्गः ॥ २३ ॥

दण्डाइवेद्गोअजनास आसन्परिच्छिन्ना भरता अर्भकासः ।
अभवच्च पुरएता वसिष्ठ आदित्तृत्सूनां विशो अप्रथन्त ॥ ६ ॥
त्रयः कृण्वन्ति भुवनेषु रेतस्तिस्रः प्रजा आर्या ज्योतिरग्राः ।
त्रयो घर्मास उषसं सचन्ते सर्वाँ इत्ताँ अनु विदुर्वसिष्ठाः ॥ ७ ॥
सूर्यस्येव वक्षथो ज्योतिरेषां समुद्रस्येव महिमा गभीरः ।
वातस्येव प्रजवो नान्येन स्तोमो वसिष्ठा अन्वेतवे वः ॥ ८ ॥
त इन्निण्यं हृदयस्य प्रकेतैः सहस्रवल्शमभि सं चरन्ति ।
यमेन ततं परिधिं वयन्तोऽप्सरस उप सेदुर्वसिष्ठाः ॥ ९ ॥
विद्युतो ज्योतिः परि संजिहानं मित्रावरुणा यदपश्यतां त्वा ।
तत्ते जन्मोतैकं वसिष्ठागस्त्यो यत्त्वा विश आजभार ॥ १० ॥

अथ चतुर्विंशो वर्गः ॥ २४ ॥

उतासि मैत्रावरुणो वसिष्ठोर्वश्या ब्रह्मन्मनसोऽधि जातः ।
द्रप्सं स्कन्नं ब्रह्मणा दैव्येन विश्वे देवाः पुष्करे त्वाददन्त ॥ ११ ॥
स प्रकेत उभयस्य प्रविद्वान्त्सहस्रदान उत वा सदानः ।
यमेन ततं परिधिं वयिष्यन्नप्सरसः परि जज्ञे वसिष्ठः ॥ १२ ॥
सत्रे ह जाताविषिता नमोभिः कुम्भे रेतः सिषिचतुः समानम् ।
ततो ह मान उदियाय मध्यात्ततो जातमृषिमाहुर्वसिष्ठम् ॥ १३ ॥
उक्थभृतं सामभृतं बिभर्ति ग्रावाणं बिभ्रत्प्र वदात्यग्रे ।
उपैनमाध्वं सुमनस्यमाना आ वो गच्छाति प्रतृदो वसिष्ठः ॥ १४ ॥

तृतीयोऽनुवाकः

[३४] चतुस्त्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—१-१५, १८-२५ विश्वे देवाः; १६ अहिः; १७ अहिर्बुध्न्यः ॥ छन्दः—१, २, ५, १२-१४, १६, १९, २० भुरिगार्चीगायत्री; ३, ४, १७ आर्चीगायत्री; ६-११, १५, १८, २१ पादनिचृद्गायत्री ; २२, २४ निचृदार्षीत्रिष्टुप्; २३ आर्षी त्रिष्टुप्; २५ विराडार्षीत्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१-२१ षड्जः; २२-२५ धैवतः ॥

अथ पञ्चविंशो वर्गः ॥ २५ ॥

प्र शुक्रैतु देवी मनीषा अस्मत्सुतष्टो रथो न वाजी ॥ १ ॥
विदुः पृथिव्या दिवो जनित्रं शृण्वन्त्यापो अध क्षरन्तीः ॥ २ ॥
आपश्चिदस्मै पिन्वन्त पृथ्वीर्वृत्रेषु शूरा मंसन्त उग्राः ॥ ३ ॥
आ धूर्ष्वस्मै दधाताश्वानिन्द्रो न वज्री हिरण्यबाहुः ॥ ४ ॥
अभि प्र स्थाताहेव यज्ञं यातेव पत्मन्त्मना हिनोत ॥ ५ ॥
त्मना समत्सु हिनोत यज्ञं दधात केतुं जनाय वीरम् ॥ ६ ॥
उदस्य शुष्माद्भानुर्नार्त बिभर्ति भारं पृथिवी न भूम ॥ ७ ॥
ह्वयामि देवाँ अयातुरग्ने साधन्नृतेन धियं दधामि ॥ ८ ॥
अभि वो देवीं धियं दधिध्वं प्र वो देवत्रा वाचं कृणुध्वम् ॥ ९ ॥
आ चष्ट आसां पाथो नदीनां वरुण उग्रः सहस्रचक्षाः ॥ १० ॥

अथ षड्विंशो वर्गः ॥ २६ ॥

राजा राष्ट्रानां पेशो नदीनामनुत्तमस्मै क्षत्रं विश्वायु ॥ ११ ॥
अविष्टो अस्मान्विश्वासु विक्ष्वद्युं कृणोत शंसं निनित्सोः ॥ १२ ॥
व्येतु दिद्युद् द्विषामशेवा युयोत विष्वग्रपस्तनूनाम् ॥ १३ ॥
अवीन्नो अग्निर्हव्यान्नमोभिः प्रेष्ठो अस्मा अधायि स्तोमः ॥ १४ ॥
सजूर्देवेभिरपां नपातं सखायं कृध्वं शिवो नो अस्तु ॥ १५ ॥
अब्जामुक्थैरहिं गृणीषे बुध्ने नदीनां रजःसु षीदन् ॥ १६ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मा नोऽहिर्बुध्न्यो रिषे धान्मा यज्ञो अस्य स्त्रिधदृतायोः ॥ १७ ॥
उत नं एषु नृषु श्रवो धुः प्र राये यन्तु शर्धन्तो अर्यः ॥ १८ ॥
तपन्ति शत्रुं स्वर्णं भूमा महासेनासो अमेभिरेषाम् ॥ १९ ॥
आ यन्नः पत्नीर्गमन्त्यच्छा त्वष्टा सुपाणिर्दधातु वीरान् ॥ २० ॥

अथ सप्तविंशो वर्गः ॥ २७ ॥

प्रति नः स्तोमं त्वष्टा जुषेत स्यादस्मे अरमतिर्वसूयुः ॥ २१ ॥
ता नो रासन्नातिषाचो वसून्या रोदसी वरुणानी शृणोतु।
वरूत्रीभिः सुशरणो नो अस्तु त्वष्टा सुदत्रो वि दधातु रायः ॥ २२ ॥
तन्नो रायः पर्वतास्तन्न आपस्तद्रातिषाच ओषधीरुत द्यौः।
वनस्पतिभिः पृथिवी सजोषा उभे रोदसी परि पासतो नः ॥ २३ ॥
अनु तदुर्वी रोदसी जिहाताममं द्युक्षो वरुण इन्द्रसखा।
अनु विश्वे मरुतो ये सहासो रायः स्याम धरुणं धियध्यै ॥ २४ ॥
तन्न इन्द्रो वरुणो मित्रो अग्निरापः ओषधीर्वनिनो जुषन्त।
शर्मन्त्स्याम मरुतामुपस्थे यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ २५ ॥

[३५] पञ्चत्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—विश्वे देवाः ॥ छन्दः—१-५, ११, १२ त्रिष्टुप्; ६, ८, १०, १५ निचृत्त्रिष्टुप्; ७, ९ विराट्त्रिष्टुप्; १३, १४ भुरिक्पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१-१२, १५ धैवतः; १३, १४ पञ्चमः ॥

अथ अष्टाविंशो वर्गः ॥ २८ ॥

शं नं इन्द्राग्नी भवतामवोभिः शं न इन्द्रावरुणा रातहव्या।
शमिन्द्रासोमा सुविताय शं योः शं न इन्द्रापूषणा वाजसातौ ॥ १ ॥
शं नो भगः शमु नः शंसो अस्तु शं नः पुरंधिः शमु सन्तु रायः।
शं नः सत्यस्य सुयमस्य शंसः शं नो अर्यमा पुरुजातो अस्तु ॥ २ ॥
शं नो धाता शमु धर्ता नो अस्तु शं न उरूची भवतु स्वधाभिः।
शं रोदसी बृहती शं नो अद्रिः शं नो देवानां सुहवानि सन्तु ॥ ३ ॥
शं नो अग्निर्ज्योतिरनीको अस्तु शं नो मित्रावरुणावश्विना शम्।
शं नः सुकृतां सुकृतानि सन्तु शं न इषिरो अभि वातु वातः ॥ ४ ॥
शं नो द्यावापृथिवी पूर्वहूतौ शमन्तरिक्षं दृशये नो अस्तु।
शं न ओषधीर्वनिनो भवन्तु शं नो रजसस्पतिरस्तु जिष्णुः ॥ ५ ॥

अथ एकोनत्रिंशो वर्गः ॥ २९ ॥

शं न इन्द्रो वसुभिर्देवो अस्तु शमादित्येभिर्वरुणः सुशंसः।
शं नो रुद्रो रुद्रेभिर्जलाषः शं नस्त्वष्टा ग्नाभिरिह शृणोतु ॥ ६ ॥
शं नः सोमो भवतु ब्रह्म शं नः शं नो ग्रावाणः शमु सन्तु यज्ञाः।
शं नः स्वरूणां मितयो भवन्तु शं नः प्रस्वः शम्वस्तु वेदिः ॥ ७ ॥
शं नः सूर्य उरुचक्षा उदेतु शं नश्चतस्रः प्रदिशो भवन्तु।
शं नः पर्वता ध्रुवयो भवन्तु शं नः सिन्धवः शमु सन्त्वापः ॥ ८ ॥
शं नो अदितिर्भवतु व्रतेभिः शं नो भवन्तु मरुतः स्वर्काः।
शं नो विष्णुः शमु पूषा नो अस्तु शं नो भवित्रं शम्वस्तु वायुः ॥ ९ ॥
शं नो देवः सविता त्रायमाणः शं नो भवन्तूषसो विभातीः।
शं नः पर्जन्यो भवतु प्रजाभ्यः शं नः क्षेत्रस्य पतिरस्तु शंभुः ॥ १० ॥

अथ त्रिंशो वर्गः ॥ ३० ॥

शं नो देवा विश्वदेवा भवन्तु शं सरस्वती सह धीभिरस्तु।
शमभिषाचः शमु रातिषाचः शं नो दिव्याः पार्थिवाः शं नो अप्याः ॥ ११ ॥
शं नः सत्यस्य पतयो भवन्तु शं नो अर्वन्तः शमु सन्तु गावः।
शं न ऋभवः सुकृतः सुहस्ताः शं नो भवन्तु पितरो हवेषु ॥ १२ ॥
शं नो अज एकपाद्देवो अस्तु शं नोऽहिर्बुध्न्यः शं समुद्रः।
शं नो अपां नपात्पेरुरस्तु शं नः पृश्निर्भवतु देवगोपा ॥ १३ ॥
आदित्या रुद्रा वसवो जुषन्तेदं ब्रह्म क्रियमाणं नवीयः।
शृण्वन्तु नो दिव्याः पार्थिवासो गोजाता उत ये यज्ञियासः ॥ १४ ॥
ये देवानां यज्ञिया यज्ञियानां मनोर्यजत्रा अमृता ऋतज्ञाः।
ते नो रासन्तामुरुगायमद्य यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ १५ ॥

इति पञ्चमाष्टके तृतीयोऽध्यायः ॥

अथ चतुर्थोऽध्यायः

[३६] षट्त्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—विश्वे देवाः ॥ छन्दः—१, ७ भुरिक्पङ्क्तिः; २ त्रिष्टुप्; ३, ४, ६ निचृत्त्रिष्टुप्; ५ पङ्क्तिः; ८, ९ विराट्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१, ७ पञ्चमः; २-४, ६, ८, ९ धैवतः ॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अथ प्रथमो वर्गः ॥ १ ॥

प्र ब्रह्मैतु सदनादृतस्य वि रश्मिभिः ससृजे सूर्यो गाः।
वि सानुना पृथिवी संस्त उर्वी पृथु प्रतीकमध्येधे अग्निः॥ १ ॥
इमां वां मित्रावरुणा सुवृक्तिमिषं न कृण्वे असुरा नवीयः।
इनो वामन्यः पदवीरदब्धो जनं च मित्रो यतति ब्रुवाणः॥ २ ॥
आ वातस्य ध्रजतो रन्त इत्या अपीपयन्त धेनवो न सूदाः।
महो दिवः सदने जायमानोऽचिक्रदद् वृषभः सस्मिन्नूधन्॥ ३ ॥
गिरा च एता युनजद्धरी त इन्द्र प्रिया सुरथा शूर धायू।
प्र यो मन्युं रिरिक्षतो मिनात्या सुक्रतुर्मर्यमणं ववृत्याम्॥ ४ ॥
यजन्ते अस्य सख्यं वयश्च नमस्विनः स्व ऋतस्य धामन्।
वि पृक्षो बाबधे नृभिः स्तवान इदं नमो रुद्राय प्रेष्ठम्॥ ५ ॥

अथ द्वितीयो वर्गः ॥ २ ॥

आ यत्साकं यशसो वावशानाः सरस्वती सप्तथी सिन्धुमाता।
याः सुष्वयन्त सुदुघाः सुधारा अभि स्वेन पयसा पीप्यानाः॥ ६ ॥
उत त्ये नो मरुतो मन्दसाना धियं तोकं च वाजिनोऽवन्तु।
मा नः परि ख्यदक्षरा चरन्त्यवींवृधन्युज्यं ते रयिं नः॥ ७ ॥
प्र वो महीमरमतिं कृणुध्वं प्र पूषणं विदथ्यं न वीरम्।
भगं धियोऽवितारं नो अस्याः सातौ वाजं रातिषाचं पुरन्धिम्॥ ८ ॥
अच्छायं वो मरुतः श्लोक एत्वच्छा विष्णुं निषिक्तपामवोभिः।
उत प्रजायै गृणते वयो धुर्यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥ ९ ॥

[३७] सप्तत्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः॥ देवता—विश्वे देवाः॥ छन्दः—१, ३ त्रिष्टुप्; २, ७ निचृत् त्रिष्टुप्; ४ निचृत्पङ्क्तिः; ५, ८ विराट्त्रिष्टुप्; ६ स्वराट्पङ्क्तिः॥ स्वरः—१-३, ५, ७, ८ धैवतः; ४, ६ पञ्चमः॥

अथ तृतीयो वर्गः ॥ ३ ॥

आ वो वाहिष्ठो वहतु स्तवध्यै रथो वाजा ऋभुक्षणो अमृक्तः।
अभि त्रिपृष्ठैः सवनेषु सोमैर्मदे सुशिप्रा महभिः पृणध्वम्॥ १ ॥
यूयं ह रत्नं मघवत्सु धत्थ स्वर्दृशं ऋभुक्षणो अमृक्तम्।
सं यज्ञेषु स्वधावन्तः पिबध्वं वि नो राधांसि मतिभिर्ददध्वम्॥ २ ॥
उवोचिथ हि मघवन्देष्णं महो अर्भस्य वसुनो विभागे।
उभा ते पूर्णा वसुना गभस्ती न सूनृता नि यमते वसव्या॥ ३ ॥
त्वमिन्द्र स्वयशा ऋभुक्षा वाजो न साधुरस्तमेष्यृक्वा।
वयं नु ते दाश्वांसः स्याम ब्रह्म कृण्वन्तो हरिवो वसिष्ठाः॥ ४ ॥
सनितासि प्रवतो दाशुषे चिद्याभिर्विवेषो हर्यश्व धीभिः।
ववन्मा नु ते युज्याभिरूती कदा न इन्द्र राय आ दशस्येः॥ ५ ॥

अथ चतुर्थो वर्गः ॥ ४ ॥

वासयसीव वेधसस्त्वं नः कदा न इन्द्र वचसो बुबोधः।
अस्तं ताति धिया रयिं सुवीरं पृक्षो नो अर्वा न्युहीत वाजी॥ ६ ॥
अभि यं देवी निर्ऋतिश्चिदीशे नक्षन्त इन्द्रं शरदः सुपृक्षः।
उप त्रिबन्धुर्जरदष्टिमेत्यस्ववेशं यं कृणवन्त मतीः ॥ ७ ॥
आ नो राधांसि सवितः स्तवध्या आ रायो यन्तु पर्वतस्य रातौ।
सदा नो दिव्यः पायुः सिषक्तु यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥ ८ ॥

[३८] अष्टात्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः॥ देवता—१-६[१] सविता; ६[२] सविता भगो वा; ७, ८ वाजिनः॥ छन्दः—१, ३, ८ निचृत्त्रिष्टुप्; २, ४, ६ स्वराट् पङ्क्तिः; ५ विराट्त्रिष्टुप्; ७ भुरिक्पङ्क्तिः॥ स्वरः—१, ३, ५, ८ धैवतः; २, ४, ६, ७ पञ्चमः॥

अथ पञ्चमो वर्गः ॥ ५ ॥

उदु ष्य देवः सविता ययाम हिरण्ययीममतिं यामशिश्रेत्।
नूनं भगो हव्यो मानुषेभिर्वि यो रत्ना पुरूवसुर्दधाति॥ १ ॥
उदु तिष्ठ सवितः श्रुध्यस्य हिरण्यपाणे प्रभृतावृतस्य।
व्युर्वीं पृथ्वीममतिं सृजान आ नृभ्यो मर्तभोजनं सुवानः॥ २ ॥
अपि ष्टुतः सविता देवो अस्तु यमा चिद्विश्वे वसवो गृणन्ति।
स नः स्तोमान्नमस्यश्चनो धाद्विश्वेभिः पातु पायुभिर्नि सूरीन्॥ ३ ॥
अभि यं देव्यदितिर्गृणाति सवं देवस्य सवितुर्जुषाणा।
अभि सम्राजो वरुणो गृणन्त्यभि मित्रासो अर्यमा सजोषाः॥ ४ ॥
अभि ये मिथो वनुषः सपन्ते रातिं दिवो रातिषाचः पृथिव्याः।
अहिर्बुध्न्य उत नः शृणोतु वरूत्र्येकधेनुभिर्नि पातु ॥ ५ ॥
अनु तन्नो जास्पतिर्मंसीष्ट रत्नं देवस्य सवितुरियानः ।
भगमुग्रोऽवसे जोहवीति भगमनुग्रो अध याति रत्नम् ॥ ६ ॥
शं नो भवन्तु वाजिनो हवेषु देवताता मितद्रवः स्वर्काः।
जम्भयन्तोऽहिं वृकं रक्षांसि सनेम्यस्मद्युयवन्नमीवाः ॥ ७ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

वाजेवाजेऽवत वाजिनो नो धनेषु विप्रा अमृता ऋतज्ञाः।
अस्य मध्वः पिबत मादयध्वं तृप्ता यात पथिभिर्देवयानैः॥ ८॥

[३९] एकोनचत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः॥ देवता—विश्वे देवाः॥ छन्दः—१, २, ५, ७ निचृत्त्रिष्टुप्; ३ स्वराट्त्रिष्टुप्; ४, ६ विराट्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः॥

अथ षष्ठो वर्गः॥ ६॥

ऊर्ध्वो अग्निः सुमतिं वस्वो अश्रेत्प्रतीची जूर्णिर्देवतातिमेति।
भेजाते अद्री रथ्येव पन्थामृतं होता न इषितो यजाति॥ १॥
प्र वावृजे सुप्रया बर्हिरेषामा विश्पतीव बीरिट इयाते।
विशामक्तोरुषसः पूर्वहूतौ वायुः पूषा स्वस्तये नियुत्वान्॥ २॥
ज्मया अत्र वसवो रन्त देवा उरावन्तरिक्षे मर्जयन्त शुभ्राः।
अर्वाक्पथ उरुज्रयः कृणुध्वं श्रोता दूतस्य जग्मुषो नो अस्य॥ ३॥
ते हि यज्ञेषु यज्ञियास ऊमाः सधस्थं विश्वे अभि सन्ति देवाः।
ताँ अध्वर उशतो यक्ष्यग्ने श्रुष्टी भगं नासत्या पुरन्धिम्॥ ४॥
आग्ने गिरो दिव आ पृथिव्या मित्रं वह वरुणमिन्द्रमग्निम्।
आर्यमणमदितिं विष्णुमेषां सरस्वती मरुतो मादयन्ताम्॥ ५॥
रेरे हव्यं मतिभिर्यज्ञियानां नक्षत्कामं मर्त्यानामसिन्वन्।
धाता रयिमविदस्यं सदासां संक्षीमहि युज्येभिर्नु देवैः॥ ६॥
नू रोदसी अभिष्टुते वसिष्ठैर्ऋतावानो वरुणो मित्रो अग्निः।
यच्छन्तु चन्द्रा उपमं नो अर्कं यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥ ७॥

[४०] चत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः॥ देवता—विश्वे देवाः॥ छन्दः—१ पङ्क्तिः; २, ४ विराट् त्रिष्टुप्; ३ भुरिक्पङ्क्तिः; ५, ७ निचृत्त्रिष्टुप्; ६ विराट्पङ्क्तिः॥ स्वरः—१, ३, ६ पञ्चमः; २, ४, ५, ७ धैवतः॥

अथ सप्तमो वर्गः॥ ७॥

ओ श्रुष्टिर्विद्थ्या३ समेतु प्रति स्तोमं दधीमहि तुराणाम्।
यद्द्य देवः सविता सुवाति स्यामास्य रत्निनो विभागे॥ १॥
मित्रस्तन्नो वरुणो रोदसी च द्युभक्तमिन्द्रो अर्यमा ददातु।
दिदेष्टु देव्यदितिर्नो रेक्णो वायुश्च यन्नियुवैते भगश्च॥ २॥
सेदुग्रो अस्तु मरुतः स शुष्मी यं मर्त्यं पृषदश्वा अवाथ।
उतेमग्निः सरस्वती जुनन्ति न तस्य रायः पर्येता अस्ति॥ ३॥

अयं हि नेता वरुण ऋतस्य मित्रो राजानो अर्यमापो धुः।
सुहवा देव्यदितिरनर्वा ते नो अंहो अति पर्षन्नरिष्टान्॥ ४॥
अस्य देवस्य मीळ्हुषो वया विष्णोरेषस्य प्रभृथे हविर्भिः।
विदे हि रुद्रो रुद्रियं महित्वं यासिष्टं वर्तिरश्विनाविरावत्॥ ५॥
मात्र पूषन्नाघृण इरस्यो वरूत्री यद्रातिषाचश्च रासन्।
मयोभुवो नो अर्वन्तो नि पान्तु वृष्टिं परिज्मा वातो ददातु॥ ६॥
नू रोदसी अभिष्टुते वसिष्ठैर्ऋतावानो वरुणो मित्रो अग्निः।
यच्छन्तु चन्द्रा उपमं नो अर्कं यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥ ७॥

[४१] एकचत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः॥ देवता—१ लिङ्गोक्ताः; २-६ भगः; ७ उषाः॥ छन्दः—१ निचृज्जगती; २, ३, ५, ७ निचृत्त्रिष्टुप्; ४ पङ्क्तिः; ६ त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१ निषादः; २, ३, ५-७ धैवतः; ४ पञ्चमः॥

अथ अष्टमो वर्गः॥ ८॥

प्रातरग्निं प्रातरिन्द्रं हवामहे प्रातर्मित्रावरुणा प्रातरश्विना।
प्रातर्भगं पूषणं ब्रह्मणस्पतिं प्रातः सोममुत रुद्रं हुवेम॥ १॥
प्रातर्जितं भगमुग्रं हुवेम वयं पुत्रमदितेर्यो विधर्ता।
आध्रश्चिद्यं मन्यमानस्तुरश्चिद्राजा चिद्यं भगं भक्षीत्याह॥ २॥
भग प्रणेतर्भग सत्यराधो भगेमां धियमुदवा ददन्नः।
भग प्र णो जनय गोभिरश्वैर्भग प्र नृभिर्नृवन्तः स्याम॥ ३॥
उतेदानीं भगवन्तः स्यामोत प्रपित्व उत मध्ये अह्नाम्।
उतोदिता मघवन्त्सूर्यस्य वयं देवानां सुमतौ स्याम॥ ४॥
भग एव भगवाँ अस्तु देवास्तेन वयं भगवन्तः स्याम।
तं त्वा भग सर्व इज्जोहवीति स नो भग पुरएता भवेह॥ ५॥
समध्वरायोषसो नमन्त दधिक्रावेव शुचये पदाय।
अर्वाचीनं वसुविदं भगं नो रथमिवाश्वा वाजिन आ वहन्तु॥ ६॥
अश्वावतीर्गोमतीर्न उषासो वीरवतीः सदमुच्छन्तु भद्राः।
घृतं दुहाना विश्वतः प्रपीता यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥ ७॥

[४२] द्विचत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः॥ देवता—विश्वे देवाः॥ छन्दः—१, ३ निचृत्त्रिष्टुप्; २ त्रिष्टुप्; ४, ५ विराट्त्रिष्टुप्; ६ निचृत्पङ्क्तिः॥ स्वरः—१-५ धैवतः; ६ पञ्चमः॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अथ नवमो वर्गः ॥ ९ ॥

प्र ब्रह्माणो अङ्गिरसो नक्षन्त प्र क्रन्दनुर्नभन्यस्य वेतु।
प्र धेनव उदप्रुतो नवन्त युज्याताम द्रीं अध्वरस्य पेशः ॥ १ ॥
सुगास्ते अग्ने सनवित्तो अर्वा युक्ष्वा सुते हरितो रोहितश्च।
ये वा सद्मन्नरुषा वीरवाहो हुवे देवानां जनिमानि सत्तः ॥ २ ॥
समु वो यज्ञं महयन्नमोभिः प्र होता मन्द्रो रिरिचे उपाके।
यजस्व सु पुरुवणीक देवाना यज्ञियाममतिं ववृत्याः ॥ ३ ॥
यदा वीरस्य रेवतो दुरोणे स्योनशीरतिथिराचिकेतत्।
सुप्रीतो अग्निः सुधितो दम आ स विशे दाति वार्यमियत्यै ॥ ४ ॥
इमं नो अग्ने अध्वरं जुषस्व मरुत्स्विन्द्रे यशसं कृधी नः।
आ नक्ता बर्हिः सदतामुषासोशन्ता मित्रावरुणा यजेह ॥ ५ ॥
एवाग्निं सहस्यं वसिष्ठो रायस्कामो विश्वपन्यस्य स्तौत्।
इषं रयिं पप्रथद्वाजमस्मे यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ६ ॥

[४३] त्रिचत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—विश्वे देवाः ॥ छन्दः—१ निचृत्त्रिष्टुप्; २, ५ भुरिक्पङ्क्तिः; ३ विराट्त्रिष्टुप्; ४ त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१, ३, ४ धैवतः; २, ५ पञ्चमः ॥

अथ दशमो वर्गः ॥ १० ॥

प्र वो यज्ञेषु देवयन्तो अर्चन्द्यावा नमोभिः पृथिवी इषध्यै।
येषां ब्रह्माण्यसमानि विप्रा विष्वग्वियन्ति वनिनो न शाखाः ॥ १ ॥
प्र यज्ञ एतु होत्वो न सप्तिरुद्यच्छध्वं समनसो घृताचीः।
स्तृणीत बर्हिरध्वराय साधूर्ध्वा शोचींषि देवयून्यस्थुः ॥ २ ॥
आ पुत्रासो न मातरं विभृत्राः सानौ देवासो बर्हिषः सदन्तु।
आ विश्वाचीं विदथ्यामनक्त्वग्रे मा नो देवताता मृधस्कः ॥ ३ ॥
ते सीषपन्त जोषमा यजत्रा ऋतस्य धाराः सुदुघा दुहानाः।
ज्येष्ठं वो अद्य महु आ वसूनामा गन्तन समनसो यति ष्ठ ॥ ४ ॥
एवा नो अग्ने विक्ष्वा दशस्य त्वया वयं सहसावन्नास्क्राः।
राया युजा संधमादो अरिष्टा यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ५ ॥

[४४] चतुश्चत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—लिङ्गोक्ताः ॥ छन्दः—१ निचृज्जगती; २, ३ निचृत्त्रिष्टुप्; ४, ५ पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१ निषादः; २, ३ धैवतः; ४, ५ पञ्चमः ॥

अथ एकादशो वर्गः ॥ ११ ॥

दधिक्रां वः प्रथममश्विनोषसमग्निं समिद्धं भगमूतये हुवे ।
इन्द्रं विष्णुं पूषणं ब्रह्मणस्पतिमादित्यान्द्यावापृथिवी अपः स्वः ॥ १ ॥
दधिक्रामु नमसा बोधयन्त उदीराणा यज्ञमुपप्रयन्तः ।
इळां देवीं बर्हिषि सादयन्तोऽश्विना विप्रा सुहवा हुवेम ॥ २ ॥
दधिक्रावाणं बुबुधानो अग्निमुप ब्रुव उषसं सूर्यं गाम् ।
ब्रध्नं मँश्चतोर्वरुणस्य बभ्रुं ते विश्वास्मद्दुरिता यावयन्तु ॥ ३ ॥
दधिक्रावा प्रथमो वाज्यर्वाग्रे रथानां भवति प्रजानन् ।
संविदान उषसा सूर्येणादित्येभिर्वसुभिरङ्गिरोभिः ॥ ४ ॥
आ नो दधिक्राः पथ्यामनक्त्वृतस्य पन्थामन्वेतवा उ ।
शृणोतु नो दैव्यं शर्धो अग्निः शृण्वन्तु विश्वे महिषा अमूराः ॥ ५ ॥

[४५] पञ्चचत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—सविता ॥ छन्दः—१ विराट्त्रिष्टुप्; २ त्रिष्टुप्; ३, ४ निचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

अथ द्वादशो वर्गः ॥ १२ ॥

आ देवो यातु सविता सुरत्नोऽन्तरिक्षप्रा वहमानो अश्वैः।
हस्ते दधानो नर्या पुरूणि निवेशयञ्च प्रसुवञ्च भूम ॥ १ ॥
उदस्य बाहू शिथिरा बृहन्ता हिरण्यया दिवो अन्ताँ अनष्टाम्।
नूनं सो अस्य महिमा पनिष्ट सूरश्चिदस्मा अनु दादपस्याम् ॥ २ ॥
स घा नो देवः सविता सहावा सावीद्वसुपतिर्वसूनि।
विश्रयमाणो अमतिमुरूचीं मर्तभोजनमध रासते नः ॥ ३ ॥
इमा गिरः सवितारं सुजिह्वं पूर्णगभस्तिमीळते सुपाणिम्।
चित्रं वयो बृहदस्मे दधातु यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ४ ॥

[४६] षट्चत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—रुद्रः ॥ छन्दः—१ विराड्जगती; २ निचृत्त्रिष्टुप्; ३ निचृत् जगती; ४ स्वराट्पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१, ३ निषादः; २ धैवतः; ४ पञ्चमः ॥

अथ त्रयोदशो वर्गः ॥ १३ ॥

इमा रुद्राय स्थिरधन्वने गिरः क्षिप्रेषवे देवाय स्वधावे।
अषाळहाय सहमानाय वेधसे तिग्मायुधाय भरता शृणोतु नः ॥ १ ॥
स हि क्षयेण क्षम्यस्य जन्मनः साम्राज्येन दिव्यस्य चेतति।
अवन्नवन्तीरुप नो दुरश्चरानमीवो रुद्र जासु नो भव ॥ २ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

या तै द्युद्यवसृष्टा दिवस्परि क्ष्मया चरति परि सा वृणक्तु नः।
सहस्रं ते स्वपिवात भेषजा मा नस्तोकेषु तनयेषु रीरिषः॥ ३॥
मा नो वधी रुद्र मा परा दा मा ते भूम प्रसितौ हीळितस्य।
आ नो भज बर्हिषि जीवशंसे यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥ ४॥

[४७] सप्तचत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः॥ देवता—आपः॥ छन्दः—१, ३ त्रिष्टुप्; २ विराट्त्रिष्टुप्; ४ स्वराट्पङ्क्तिः॥ स्वरः—१-३ धैवतः; ४ पञ्चमः॥

अथ चतुर्दशो वर्गः॥ १४॥

आपो यं वः प्रथमं देवयन्त इन्द्रपानमूर्मिमकृण्वतेळः। ।
तं वो वयं शुचिमरिप्रमद्य घृतप्रुषं मधुमन्तं वनेम॥ १॥
तमूर्मिमापो मधुमत्तमं वोऽपां नपादवत्वाशुहेमा। ।
यस्मिन्निन्द्रो वसुभिर्मादयाते तमश्याम देवयन्तो वो अद्य॥ २॥
शतपवित्राः स्वधया मदन्तीर्देवीर्देवानामपि यन्ति पाथः। ।
ता इन्द्रस्य न मिनन्ति व्रतानि सिन्धुभ्यो हव्यं घृतवज्जुहोत॥ ३॥
याः सूर्यो रश्मिभिरातताने याभ्य इन्द्रो अरदद्गातुमूर्मिम्।
ते सिन्धवो वरिवो धातना नो यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥ ४॥

[४८] अष्टचत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः॥ देवता—१-३ ऋभवः; ४ ऋभवो विश्वे देवा वा॥ छन्दः—१ भुरिक्पङ्क्तिः; २ निचृत्त्रिष्टुप्; ३ त्रिष्टुप्; ४ विराट् त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१ पञ्चमः; २-४ धैवतः॥

अथ पञ्चदशो वर्गः॥ १५॥

ऋभुक्षणो वाजा मादयध्वमस्मे नरो मघवानः सुतस्य।
आ वोऽवाचः 'क्रतवो न यातां विभ्वो रथं नर्यं वर्तयन्तु॥ १॥
ऋभुर्ऋभुभिरृभि वः स्याम विभ्वो विभुभिः शवसा शवांसि।
वाजो अस्माँ अवतु वाजसाताविन्द्रेण युजा तरुषेम वृत्रम्॥ २॥
ते चिद्धि पूर्वीरभि सन्ति शासा विश्वाँ अर्य उपरतांति वन्वन्।
इन्द्रो विभ्वाँ ऋभुक्षा वाजो अर्यः शत्रोर्मिथत्या कृणवन्वि नृम्णम्॥ ३॥
नू देवासो वरिवः कर्तना नो भूत नो विश्वेऽवसे सजोषाः।
समस्मे इषं वसवो ददीरन्यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥ ४॥

[४९] एकोनपञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः॥ देवता—आपः॥ छन्दः—१ निचृत्त्रिष्टुप्; २, ३ त्रिष्टुप्; ४ विराट्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः॥

अथ षोडशो वर्गः॥ १६॥

समुद्रज्येष्ठाः सलिलस्य मध्यात्पुनाना यन्त्यनिविशमानाः। ।
इन्द्रो या वज्री वृषभो रराद ता आपो देवीरिह मामवन्तु॥ १॥
या आपो दिव्या उत वा स्रवन्ति खनित्रिमा उत वा याः स्वयंजाः।
समुद्रार्था याः शुचयः पावकास्ता आपो देवीरिह मामवन्तु॥ २॥
यासां राजा वरुणो याति मध्ये सत्यानृते अवपश्यञ्जनानाम्।
मधुश्चुतः शुचयो याः पावकास्ता आपो देवीरिह मामवन्तु॥ ३॥
यासु राजा वरुणो यासु सोमो विश्वे देवा यासूर्जं मदन्ति।
वैश्वानरो यास्वग्निः प्रविष्टस्ता आपो देवीरिह मामवन्तु॥ ४॥

[५०] पञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः॥ देवता—१ मित्रावरुणौ; २ अग्निः; ३ विश्वे देवाः; ४ नद्यः॥ छन्दः—१, ३ स्वराट्त्रिष्टुप्; २ निचृज्जगती; ४ भुरिगतिजगती॥ स्वरः—१, ३ धैवतः; २, ४ निषादः॥

अथ सप्तदशो वर्गः॥ १७॥

आ मा मित्रावरुणेह रक्षतं कुलायय॑द्विश्वयुन्मा न आ गन्।
अजकावं दुर्दृशीकं तिरो दधे मा मां पद्येन रपसा विदत्सरुः॥ १॥
यद्विजामुन्परुषि वन्दनं भुवदष्टीवन्तौ परि कुल्फौ च देहत्।
अग्निष्टच्छेचत्रप बाधतामितो मा मां पद्येन रपसा विदत्सरुः॥ २॥
यच्छल्मलौ भवति यन्नदीषु यदोषधीभ्यः परि जायते विषम्।
विश्वे देवा निरितस्तत्सुवन्तु मा मां पद्येन रपसा विदत्सरुः॥ ३॥
याः प्रवतो निवत उद्वत उदन्वतीरनुदकाश्च याः। ।
ता अस्मभ्यं पयसा पिन्वमानाः शिवा देवीरशिपदा भवन्तु
सर्वा नद्यो अशिमिदा भवन्तु॥ ४॥

[५१] एकपञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः॥ देवता—आदित्याः॥ छन्दः—१, २ त्रिष्टुप्; ३ निचृत्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः॥

अथ अष्टादशो वर्गः॥ १८॥

आदित्यानामवसा नूतनेन सक्षीमहि शर्मणा शंतमेन।
अनागास्त्वे अदितित्वे तुरास इमं यज्ञं दधतु श्रोषमाणाः॥ १॥
आदित्यासो अदितिर्मादयन्तां मित्रो अर्यमा वरुणो रजिष्ठाः।
अस्माकं सन्तु मरुतस्य गोपाः पिबन्तु सोममवसे नो अद्य॥ २॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

आदित्या विश्वे मरुतश्च विश्वे देवाश्च विश्व ऋभवश्च विश्वे ।
इन्द्रो अग्निरश्विना तुष्टुवाना यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ३ ॥

[५२] द्विपञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—आदित्याः ॥ छन्दः—१, ३ स्वराट्पङ्क्तिः; २ निचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१, ३ पञ्चमः; २ धैवतः ॥

अथ एकोनविंशो वर्गः ॥ १९ ॥

आदित्यासो अदितयः स्याम पूर्देवत्रा वसवो मर्त्यत्रा ।
सनेम मित्रावरुणा सनन्तो भवेम द्यावापृथिवी भवन्तः ॥ १ ॥
मित्रस्तन्नो वरुणो मामहन्त शर्म तोकाय तनयाय गोपाः ।
मा वो भुजेमान्यजातमेनो मा तत्कर्म वसवो यच्चयध्वे ॥ २ ॥
तुरण्यवोऽङ्गिरसो नक्षन्त रत्नं देवस्य सवितुरियानाः ।
पिता च तन्नो मह्यन्यजत्रो विश्वे देवाः समनसो जुषन्त ॥ ३ ॥

[५३] त्रिपञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—द्यावापृथिव्यौ ॥ छन्दः—१ त्रिष्टुप्; २, ३ निचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

अथ विंशो वर्गः ॥ २० ॥

प्र द्यावा यज्ञैः पृथिवी नमोभिः सबाध ईळे बृहती यजत्रे ।
ते चिद्धि पूर्वे कवयो गृणन्तः पुरो महीं दधिरे देवपुत्रे ॥ १ ॥
प्र पूर्वजे पितरा नव्यसीभिर्गीर्भिः कृणुध्वं सदने ऋतस्य ।
आ नो द्यावापृथिवी दैव्येन जनेन यातं महि वां वरूथम् ॥ २ ॥
उतो हि वां रत्नधेयानि सन्ति पुरूणि द्यावापृथिवी सुदासे ।
अस्मे धत्तं यदसदस्कृधोयु यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ३ ॥

[५४] चतुष्पञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—वास्तोष्पतिः ॥ छन्दः—१, ३ निचृत्त्रिष्टुप्; २ विराट्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

अथ एकविंशो वर्गः ॥ २१ ॥

वास्तोष्पते प्रति जानीह्यस्मान्त्स्वावेशो अनमीवो भवा नः ।
यत्त्वेमहे प्रति तन्नो जुषस्व शं नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे ॥ १ ॥
वास्तोष्पते प्रतरणो न एधि गयस्फानो गोभिरश्वेभिरिन्दो ।
अजरासस्ते सख्ये स्याम पितेव पुत्रान्प्रति नो जुषस्व ॥ २ ॥
वास्तोष्पते शग्मया संसदा ते सक्षीमहि रण्वया गातुमत्या ।
पाहि क्षेम उत योगे वरं नो यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ३ ॥

[५५] पञ्चपञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—१ वास्तोष्पतिः; २-८ इन्द्रः ॥ छन्दः—१ निचृद्गायत्री; २-४ बृहती; ५, ७ अनुष्टुप्; ६, ८ निचृदनुष्टुप् ॥ स्वरः—१ षड्जः; २-४ मध्यमः; ५-८ गान्धारः ॥

अथ द्वाविंशो वर्गः ॥ २२ ॥

अमीवहा वास्तोष्पते विश्वा रूपाण्याविशन् ।
सखा सुशेव एधि नः ॥ १ ॥
यदर्जुन सारमेय दतः पिशङ्ग यच्छसे ।
वीव भ्राजन्त ऋष्टय उप स्रक्वेषु बप्सतो नि षु स्वप ॥ २ ॥
स्तेनं राय सारमेय तस्करं वा पुनःसर ।
स्तोतृनिन्द्रस्य रायसि किमस्मान्दुच्छुनायसे नि षु स्वप ॥ ३ ॥
त्वं सूकरस्य दर्दृहि तव दर्दर्तु सूकरः ।
स्तोतृनिन्द्रस्य रायसि किमस्मान्दुच्छुनायसे नि षु स्वप ॥ ४ ॥
सस्तु माता सस्तु पिता सस्तु श्वा सस्तु विश्पतिः ।
ससन्तु सर्वे ज्ञातयः सस्त्वयमभितो जनः ॥ ५ ॥
य आस्ते यश्च चरति यश्च पश्यति नो जनः ।
तेषां सं हन्मो अक्षाणि यथेदं हर्म्यं तथा ॥ ६ ॥
सहस्रशृङ्गो वृषभो यः समुद्रादुदाचरत् ।
तेना सहस्येना वयं नि जनान्त्स्वापयामसि ॥ ७ ॥
प्रोष्ठेशया वह्येशया नारीर्यास्तल्पशीवरीः ।
स्त्रियो याः पुण्यगन्धास्ताः सर्वाः स्वापयामसि ॥ ८ ॥

चतुर्थोऽनुवाकः

[५६] षट्पञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—मरुतः ॥ छन्दः—१ आर्चीगायत्री; २, ६, ७, ९ भुरिक् आर्चीगायत्री; ३-५ प्राजापत्याबृहती; ८, १० आर्च्युष्णिक्; ११ निचृदार्च्युष्णिक्; १२, १३, १५, १८, १९, २१ निचृत्त्रिष्टुप्; १४, १६ स्वराट्पङ्क्तिः; १७, २० त्रिष्टुप्; २२, २३, २५ विराट्त्रिष्टुप्; २४ पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१, २, ६, ७, ९ षड्जः; ३-५ मध्यमः; ८, १०, ११ ऋषभः; १२, १३, १५, १७-२३, २५ धैवतः; १४, १६, २४ पञ्चमः ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अथ त्रयोविंशो वर्गः ॥ २३ ॥

क ईं व्यक्ता नरः सनीळा रुद्रस्य मर्या अधा स्वश्वाः ॥ १ ॥
नकिर्ह्येषां जनूंषि वेद ते अङ्ग विद्रे मिथो जनित्रम् ॥ २ ॥
अभि स्वपूभिर्मिथो वपन्त वातस्वनसः श्येना अस्पृध्रन् ॥ ३ ॥
एतानि धीरो निण्या चिकेत पृश्निर्यदूधो मही जभार ॥ ४ ॥
सा विट् सुवीरा मरुद्भिरस्तु सनात्सहन्ती पुष्यन्ती नृम्णम् ॥ ५ ॥
यामं येष्ठाः शुभा शोभिष्ठाः श्रिया संमिश्ला ओजोभिरुग्राः ॥ ६ ॥
उग्रं व ओजः स्थिरा शवांस्यधा मरुद्भिर्गणस्तुविष्मान् ॥ ७ ॥
शुभ्रो वः शुष्मः क्रुध्मी मनांसि धुनिर्मुनिरिव शर्धस्य धृष्णोः ॥ ८ ॥
सनेम्यस्मद्युयोत द्विषं मा वो दुर्मतिरिह प्रणङ्नः ॥ ९ ॥
प्रिया वो नाम हुवे तुराणामा यत्तृपन्मरुतो वावशानाः ॥ १० ॥

अथ चतुर्विंशो वर्गः ॥ २४ ॥

स्वायुधास इष्मिणः सुनिष्का उत स्वयं तन्वः शुम्भमानाः ॥ ११ ॥
शुची वो हव्या मरुतः शुचीनां शुचिं हिनोम्यध्वरं शुचिभ्यः ।
ऋतेन सत्यमृतसाप आयञ्छुचिजन्मानः शुचयः पावकाः ॥ १२ ॥
अंसेष्वा मरुतः खादयो वो वक्षःसु रुक्मा उपशिश्रियाणाः ।
वि विद्युतो न वृष्टिभी रुचाना अनु स्वधामायुधैर्यच्छमानाः ॥ १३ ॥
प्र बुध्न्या व ईरते महांसि प्र नामानि प्रयज्यवस्तिरध्वम् ।
सहस्रियं दम्यं भागमेतं गृहमेधीयं मरुतो जुषध्वम् ॥ १४ ॥
यदि स्तुतस्य मरुतो अधीथेत्था विप्रस्य वाजिनो हवीमन् ।
मक्षू रायः सुवीर्यस्य दात नू चिद्यमन्य आदभद्रावा ॥ १५ ॥

अथ पञ्चविंशो वर्गः ॥ २५ ॥

अत्यासो न ये मरुतः स्वञ्चो यक्षदृशो न शुभयन्त मयीः ।
ते ह्मर्येष्ठाः शिशवो न शुभ्रा वत्सासो न प्रक्रीळिनः पयोधाः ॥ १६ ॥
दशस्यन्तो नो मरुतो मृळन्तु वरिवस्यन्तो रोदसी सुमेके ।
आरे गोहा नृहा वधो वो अस्तु सुम्नेभिरस्मे वसवो नमध्वम् ॥ १७ ॥
आ वो होता जोहवीति सत्तः सत्राचीं रातिं मरुतो गृणानः ।
य ईवतो वृषणो अस्ति गोपाः सो अद्वयावी हवते व उक्थैः ॥ १८ ॥
इमे तुरं मरुतो रामयन्तीमे सहः सहस आ नमन्ति ।
इमे शंसं वनुष्यतो नि पान्ति गुरु द्वेषो अरुरुषे दधन्ति ॥ १९ ॥
इमे रध्रं चिन्मरुतो जुनन्ति भृमिं चिद्यथा वसवो जुषन्त ।
अप बाधध्वं वृषणस्तमांसि धत्त विश्वं तनयं तोकमस्मे ॥ २० ॥

अथ षडविंशो वर्गः ॥ २६ ॥

मा वो दात्रान्मरुतो निरराम मा पश्चाद्ध्म रथ्यो विभागे ।
आ नः स्पार्हे भजतना वसव्ये यदी सुजातं वृषणो वो अस्ति ॥ २१ ॥
सं यद्दधन्त मन्युभिर्जनासः शूरा यह्वीष्वोषधीषु विक्षु ।
अध स्मा नो मरुतो रुद्रियासस्त्रातारो भूत पृतनास्वर्यः ॥ २२ ॥
भूरिं चक्र मरुतः पित्र्याण्युक्थानि या वः शस्यन्ते पुरा चित् ।
मरुद्भिरुग्रः पृतनासु साळ्हा मरुद्भिरित्सनिता वाजमर्वा ॥ २३ ॥
अस्मे वीरो मरुतः शुष्म्यस्तु जनानां यो असुरो विधर्ता ।
अपो येन सुक्षितये तरेमाध स्वमोकोऽभि वः स्याम ॥ २४ ॥
तन्न इन्द्रो वरुणो मित्रो अग्निराप ओषधीर्वनिनो जुषन्त ।
शर्मन्त्स्याम मरुतामुपस्थे यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ २५ ॥

[५७] सप्तपञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—मरुतः ॥ छन्दः—१ विराट्त्रिष्टुप्; २, ४ त्रिष्टुप्; ३, ५-७ निचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

अथ सप्तविंशो वर्गः ॥ २७ ॥

मध्वो वो नाम मारुतं यजत्राः प्र यज्ञेषु शर्वसा मदन्ति ।
ये रेजयन्ति रोदसी चिदुर्वी पिन्वन्त्युत्सं यदयासुरुग्राः ॥ १ ॥
निचेतारो हि मरुतो गृणन्तं प्रणेतारो यजमानस्य मन्म ।
अस्माकमद्य विदथेषु बर्हिरा वीतये सदत पिप्रियाणाः ॥ २ ॥
नैतावदन्ये मरुतो यथेमे भ्राजन्ते रुक्मैरायुधैस्तनूभिः ।
आ रोदसी विश्वपिशः पिशानाः समानमञ्ज्यञ्जते शुभे कम् ॥ ३ ॥
ऋधक्सा वो मरुतो दिद्युदस्तु यद्व आगः पुरुषता करांम ।
मा वस्तस्यामपि भूमा यजत्रा अस्मे वो अस्तु सुमतिश्चनिष्ठा ॥ ४ ॥
कृते चिदत्र मरुतो रणन्तानवद्यासः शुचयः पावकाः ।
प्र णोऽवत सुमतिभिर्यजत्राः प्र वाजेभिस्तिरत पुष्यसे नः ॥ ५ ॥
उत स्तुतासो मरुतो व्यन्तु विश्वेभिर्नामभिर्नरो हवींषि ।
ददात नो अमृतस्य प्रजायै जिगृत रायः सूनृता मघानि ॥ ६ ॥
आ स्तुतासो मरुतो विश्व ऊती अच्छा सूरीन्त्सर्वताता जिगात ।
ये नस्मना शतिनो वर्धयन्ति यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ७ ॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

[५८] अष्टपञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—मरुतः ॥ छन्दः—१ विराट्त्रिष्टुप्; २, ६ भुरिक्पङ्क्तिः; ३, ४ निचृत्त्रिष्टुप्; ५ त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१, ३-५ धैवतः; २, ६ पञ्चमः ॥

अथ अष्टाविंशो वर्गः ॥ २८ ॥

प्र साकमुक्षे अर्चता गणाय यो दैव्यस्य धाम्नस्तुविष्मान् ।
उत क्षोदन्ति रोदसी महित्वा नक्षन्ते नाकं निर्ऋतेरवंशात् ॥ १ ॥
जनूश्चिद्वो मरुतस्त्वेष्येण भीमासस्तुविमन्यवोऽयासः ।
प्र ये महोभिरोजसोत सन्ति विश्वो वो यामन्भयते स्वर्दृक् ॥ २ ॥
बृहद्वयो मघवद्भ्यो दधात जुजोषन्निन्मरुतः सुष्टुतिं नः ।
गतो नाध्वा वि तिराति जन्तुं प्र णः स्पार्हाभिरूतिभिस्तिरेत ॥ ३ ॥
युष्मोतो विप्रो मरुतः शतस्वी युष्मोतो अर्वा सहुरिः सहस्त्री ।
युष्मोतः सम्राळुत हन्ति वृत्रं प्र तद्वो अस्तु धूतयो देष्णम् ॥ ४ ॥
ताँ आ रुद्रस्य मीळ्हुषो विवासे कुविन्नंसन्ते मरुतः पुनर्नः ।
यत्सस्वतीं जिहीळिरे यदाविरव तदेनं ईमहे तुराणाम् ॥ ५ ॥
प्र सा वाचि सुष्टुतिर्मघोनामिदं सूक्तं मरुतो जुषन्त ।
आराच्चिद् द्वेषो वृषणो युयोत यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ६ ॥

[५९] एकोनषष्टितमं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—१-११ मरुतः; १२ रुद्रः ॥ छन्दः—१ निचृद्बृहती; २ पङ्क्तिः; ३ बृहती; ४ निचृत्पङ्क्तिः; ५, १२ अनुष्टुप्; ६ स्वराड्बृहती; ७ निचृत्त्रिष्टुप्; ८ त्रिष्टुप्; ९, १० गायत्री; ११ निचृद्गायत्री ॥ स्वरः—१, ३, ६ मध्यमः; २, ४ पञ्चमः; ५, १२ गान्धारः; ७, ८ धैवतः; ९-११ षड्जः ॥

अथ एकोनत्रिंशो वर्गः ॥ २९ ॥

यं त्रायध्व इदमिदं देवासो यं च नयथ ।
तस्मा अग्ने वरुण मित्रार्यमन्मरुतः शर्म यच्छत ॥ १ ॥
युष्माकं देवा अवसाहनि प्रिय ईजानस्तरति द्विषः ।
प्र स क्षयं तिरते वि महीरिषो यो वो वराय दाशति ॥ २ ॥
नहि वश्चरमं चन वसिष्ठः परिमंसते ।
अस्माकमद्य मरुतः सुते सचा विश्वे पिबत कामिनः ॥ ३ ॥
नहि व ऊतिः पृतनासु मर्धति यस्मा अरांध्वं नरः ।
अभि व आवर्त्सुमतिर्नवीयसी तूयं यात पिपीषवः ॥ ४ ॥
ओ षु घृष्विराधसो यातनान्धांसि पीतये ।
इमा वो हव्या मरुतो रारे हि कं मो ष्व१न्यत्र गन्तन ॥ ५ ॥
आ च नो बर्हिः सदतावितां च नः स्पार्हाणि दातवे वसु ।
अस्रेधन्तो मरुतः सोम्ये मधौ स्वाहेह मादयाध्वै ॥ ६ ॥

अथ त्रिंशो वर्गः ॥ ३० ॥

सस्वश्चिद्धि तन्व१ः शुम्भमाना आ हंसासो नीलपृष्ठा अपप्तन् ।
विश्वं शर्धो अभितो मा नि षेद नरो न रण्वाः सवने मदन्तः ॥ ७ ॥
यो नो मरुतो अभि दुर्हृणायुस्तिरश्चित्तानि वसवो जिघांसति ।
द्रुहः पाशान्प्रति स मुचीष्ट तपिष्ठेन हन्मना हन्तना तम् ॥ ८ ॥
सांतपना इदं हविर्मरुतस्तज्जुजुष्टन । युष्माकोती रिशादसः ॥ ९ ॥
गृहमेधास आ गत मरुतो मापभूतन । युष्माकोती सुदानवः ॥ १० ॥
इहेह वः स्वतवसः कवयः सूर्यत्वचः । यज्ञं मरुत आ वृणे ॥ ११ ॥
त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥ १२ ॥

इति पञ्चमाष्टके चतुर्थोऽध्यायः ॥

अथ पञ्चमोऽध्यायः

[६०] षष्टितमं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—१ सूर्यः; २-१२ मित्रावरुणौ ॥ छन्दः—१ पङ्क्तिः; २-४, ६, ७, १२ निचृत्त्रिष्टुप्; ५, ८, ११ त्रिष्टुप्; ९ विराट्पङ्क्तिः; १० स्वराट्पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१, ९, १० पञ्चमः; २-८, ११, १२ धैवतः ॥

अथ प्रथमो वर्गः ॥ १ ॥

यदद्य सूर्य ब्रवोऽनागा उद्यन्मित्राय वरुणाय सत्यम् ।
वयं देवत्रादिते स्याम तव प्रियासो अर्यमन्गृणन्तः ॥ १ ॥
एष स्य मित्रावरुणा नृचक्षा उभे उदेति सूर्यो अभि ज्मन् ।
विश्वस्य स्थातुर्जगतश्च गोपा ऋजु मर्तेषु वृजिना च पश्यन् ॥ २ ॥
अयुक्त सप्त हरितः सधस्थाद्या इं वहन्ति सूर्यं घृताचीः ।
धामानि मित्रावरुणा युवाकुः सं यो यूथेव जनिमानि चष्टे ॥ ३ ॥
उद्वां पृक्षासो मधुमन्तो अस्थुरा सूर्यो अरुहच्छुक्रमर्णः ।
यस्मा आदित्या अध्वनो रदन्ति मित्रो अर्यमा वरुणः सजोषाः ॥ ४ ॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

इमे चेतारो अनृतस्य भूरेर्मित्रो अर्यमा वरुणो हि सन्ति।
इम ऋतस्य वावृधुर्दुरोणे शग्मासः पुत्रा अदितेरदब्धाः॥५॥
इमे मित्रो वरुणो दूळभासोऽचेतसं चिच्चितयन्ति दक्षैः।
अपि क्रतुं सुचेतसं वतन्तस्तिरश्चिदंहः सुपथा नयन्ति॥६॥

अथ द्वितीयो वर्गः॥२॥

इमे दिवो अनिमिषा पृथिव्याश्चिक्वित्वांसो अचेतसं नयन्ति।
प्रव्राजे चिन्नद्यो गाधमस्ति पारं नो अस्य विष्पितस्य पर्षन्॥७॥
यद्वोपावददितिः शर्म भद्रं मित्रो यच्छन्ति वरुणः सुदासे।
तस्मिन्ना तोकं तनयं दधाना मा कर्म देवहेळनं तुरासः॥८॥
अव वेदिं होत्राभिर्यजेत रिपः काश्चिद्वरुणध्रुतः सः।
परि द्वेषोभिरर्यमा वृणक्तूरुं सुदासे वृषणा उ लोकम्॥९॥
सस्वश्चिद्धि समृतिस्त्वेष्यैषामपीच्येन सहसा सहन्ते।
युष्मद्रिया वृषणो रेजमाना दक्षस्य चिन्महिना मृळता नः॥१०॥
यो ब्रह्मणे सुमतिमायजाते वाजस्य सातौ परमस्य रायः।
सीक्षन्त मन्युं मघवानो अर्य उरु क्षयाय चक्रिरे सुधातु॥११॥
इयं देव पुरोहितिर्युवभ्यां यज्ञेषु मित्रावरुणावकारि।
विश्वानि दुर्गा पिपृतं तिरो नो यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥१२॥

[६१] एकषष्टितमं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः॥ देवता—मित्रावरुणौ॥ छन्दः—१ भुरिक्पङ्क्तिः; २, ४ त्रिष्टुप्; ३, ५-७ निचृत्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१ पञ्चमः; २-७ धैवतः॥

अथ तृतीयो वर्गः॥३॥

उद्वां चक्षुर्वरुण सुप्रतीकं देवयोरेति सूर्यस्ततन्वान्।
अभि यो विश्वा भुवनानि चष्टे स मन्युं मर्त्येष्वा चिकेत॥१॥
प्र वां स मित्रावरुणावृतावा विप्रो मन्मानि दीर्घश्रुदियर्ति।
यस्य ब्रह्माणि सुक्रतू अवाथ आ यत्क्रत्वा न शरदः पृणैथे॥२॥
प्रोरोर्मित्रावरुणा पृथिव्याः प्र दिव ऋष्वाद् बृहतः सुदानू।
स्पशो दधाथे ओषधीषु विक्ष्वृधग्यतो अनिमिषं रक्षमाणा॥३॥
शंसा मित्रस्य वरुणस्य धाम शुष्मो रोदसी बद्बधे महित्वा।
अयन्मासा अयज्वनामवीराः प्र यज्ञमन्मा वृजनं तिराते॥४॥
अमूरा विश्वा वृषणाविमा वां न यासु चित्रं ददृशे न यक्षम्।
द्रुहः सचन्ते अनृता जनानां न वां निण्यान्यचिते अभूवन्॥५॥

समु वां यज्ञं महयं नमोभिर्हुवे वां मित्रावरुणा सुबार्धः।
प्र वां मन्मान्यृचसे नवानि कृतानि ब्रह्म जुजुषन्त्रिमानि॥६॥
इयं देव पुरोहितिर्युवभ्यां यज्ञेषु मित्रावरुणावकारि।
विश्वानि दुर्गा पिपृतं तिरो नो यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥७॥

[६२] द्विषष्टितमं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः॥ देवता—१-३ सूर्यः; ४-६ मित्रावरुणौ॥ छन्दः—१, २, ६ विराट्त्रिष्टुप्; ३-५ निचृत्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः॥

अथ चतुर्थो वर्गः॥४॥

उत्सूर्यो बृहदर्चीष्यश्रेत्पुरु विश्वा जनिम मानुषाणाम्।
समो दिवा ददृशे रोचमानः क्रत्वा कृतः सुकृतः कर्तृभिर्भूत्॥१॥
स सूर्य प्रति पुरो न उद्या एभिः स्तोमेभिरेतशेभिरेवैः।
प्र नो मित्राय वरुणाय वोचोऽनागसो अर्यम्णे अग्नये च॥२॥
वि नः सहस्रं शुरुधो रदन्त्वृतावानो वरुणो मित्रो अग्निः।
यच्छन्तु चन्द्रा उपमं नो अर्कमा नः कामं पूपुरन्तु स्तवानाः॥३॥
द्यावाभूमी अदिते त्रासीथां नो ये वां जज्ञुः सुजनिमान ऋष्वे।
मा हेळे भूम वरुणस्य वायोर्मा मित्रस्य प्रियतमस्य नृणाम्॥४॥
प्र बाहवा सिसृतं जीवसे न आ नो गव्यूतिमुक्षतं घृतेन।
आ नो जने श्रवयतं युवाना श्रुतं मे मित्रावरुणा हवेमा॥५॥
नू मित्रो वरुणो अर्यमा नस्तन्मने तोकाय वरिवो दधन्तु।
सुगा नो विश्वा सुपथानि सन्तु यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥६॥

[६३] त्रिषष्टितमं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः॥ देवता—१-५[१] सूर्यः; ५[२], ६ मित्रावरुणौ॥ छन्दः—१, ६ विराट्त्रिष्टुप्; २-५ निचृत्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः॥

अथ पञ्चमो वर्गः॥५॥

उद्वेति सुभगो विश्वचक्षाः साधारणः सूर्यो मानुषाणाम्।
चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्य देवश्चर्मेव यः समविव्यक्तमांसि॥१॥
उद्वेति प्रसवीता जनानां महान्केतुरर्णवः सूर्यस्य।
समानं चक्रं पर्याविवृत्सन्यदेतशो वहति धूर्षु युक्तः॥२॥
विभ्राजमान उषसामुपस्थाद्रेभैरुदेत्यनुमद्यमानः।
एषो अपो देवसविता चचछन्द यः समानं न प्रमिनाति धाम॥३॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

दिवो रुक्म उरुचक्षा उदेति दूरेअर्थस्तरणिर्भ्राजमानः।
नूनं जनाः सूर्येण प्रसूता अयन्नर्थानि कृणवन्नपांसि॥ ४॥
यत्रा चक्रुरमृता गातुमस्मै श्येनो न दीयन्नन्वेति पाथः।
प्रति वां सूर उदिते विधेम नमोभिर्मित्रावरुणोत हव्यैः॥ ५॥
नू मित्रो वरुणो अर्यमा नस्तमनै तोकाय वरिवो दधन्तु।
सुगा नो विश्वा सुपथानि सन्तु यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥ ६॥

[६४] चतुःषष्टितमं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः॥ देवता—मित्रावरुणौ॥ छन्दः—१-४ त्रिष्टुप्; ५ विराट्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः॥

अथ षष्ठो वर्गः॥ ६॥

दिवि क्षयन्ता रजसः पृथिव्यां प्र वां घृतस्य निर्णिजो ददीरन्।
हव्यं नो मित्रो अर्यमा सुजातो राजा सुक्षत्रो वरुणो जुषन्त॥ १॥
आ राजाना महऋतस्य गोपा सिन्धुपती क्षत्रिया यातमर्वाक्।
इळां नो मित्रावरुणोत वृष्टिमवं दिव इन्वतं जीरदानू॥ २॥
मित्रस्तनो वरुणो देवो अर्यः प्र साधिष्ठेभिः पथिभिर्नयन्तु।
ब्रवद्यथा न आदरिः सुदासे इषा मदेम सह देवगोपाः॥ ३॥
यो वां गर्तं मनसा तक्षदेतमूर्ध्वां धीतिं कृणवद्धारयच्च।
उक्षेथां मित्रावरुणा घृतेन ता राजाना सुक्षितीस्तर्पयेथाम्॥ ४॥
एष स्तोमो वरुण मित्र तुभ्यं सोमः शुक्रो न वायवेऽयामि।
अविष्टं धियो जिगृतं पुरन्धीर्यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥ ५॥

[६५] पञ्चषष्टितमं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः॥ देवता—मित्रावरुणौ॥ छन्दः—१, ५ विराट्त्रिष्टुप्; २ त्रिष्टुप्; ३, ४ निचृत्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः॥

अथ सप्तमो वर्गः॥ ७॥

प्रति वां सूर उदिते सूक्तैर्मित्रं हुवे वरुणं पूतदक्षम्।
ययोरसुर्यमक्षितं ज्येष्ठं विश्वस्य यामन्नाचितं जिगत्नु॥ १॥
ता हि देवानामसुरा तावर्या ता नः क्षितीः करतमूर्जयन्तीः।
अश्याम मित्रावरुणा वयं वां द्यावा च यत्र पीपयन्नहा च॥ २॥
ता भूरिपाशावनृतस्य सेतू दुरत्येतू रिपवे मर्त्याय।
ऋतस्य मित्रावरुणा पथा वामपो न नावा दुरिता तरेम॥ ३॥
आ नो मित्रावरुणा हव्यजुष्टिं घृतैर्गव्यूतिमुक्षतमिळाभिः।
प्रति वामत्र वरमा जनाय पृणीतमुद्नो दिव्यस्य चारोः॥ ४॥
एष स्तोमो वरुण मित्र तुभ्यं सोमः शुक्रो न वायवेऽयामि।
अविष्टं धियो जिगृतं पुरन्धीर्यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥ ५॥

[६६] षट्षष्टितमं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः॥ देवता—१-३, १७-१९ मित्रावरुणौ; ४-१३ आदित्याः; १४-१६ सूर्यः॥ छन्दः—१, २, ४, ९ निचृद्गायत्री; ३ विराड्गायत्री; ५-७, १८, १९ आर्षीगायत्री; ८ स्वराड्गायत्री; १० निचृद्बृहती; ११ स्वराड्बृहती; १२ आर्चीस्वराड्बृहती; १३, १५ आर्षीभुरिग् बृहती; १४ आर्षीविराड्बृहती; १६ पुरउष्णिक्; १७ पाद-निचृद्गायत्री॥ स्वरः—१-९, १७-१९ षड्जः; १०-१५ मध्यमः; १६ ऋषभः॥

अथ अष्टमो वर्गः॥ ८॥

प्र मित्रयोर्वरुणयोः स्तोमो न एतु शूष्यः। नमस्वान्तुविजातयोः॥ १॥
या धारयन्त देवाः सुदक्षा दक्षपितरा। असुर्याय प्रमहसा॥ २॥
ता नः स्तिपा तनूपा वरुण जरितृणाम्। मित्र साधयतं धियः॥ ३॥
यदद्य सूर उदितेऽनागा मित्रो अर्यमा। सुवाति सविता भगः॥ ४॥
सुप्रावीरस्तु स क्षयः प्र नु यामन्त्सुदानवः। ये नो अंहोऽतिपिप्रति॥ ५॥

अथ नवमो वर्गः॥ ९॥

उत स्वराजो अदितिरदब्धस्य व्रतस्य ये। महो राजान ईशते॥ ६॥
प्रति वां सूर उदिते मित्रं गृणीषे वरुणम्। अर्यमणं रिशादसम्॥ ७॥
राया हिरण्ययया मतिरियमवृकाय शवसे। इयं विप्रा मेधसातये॥ ८॥
ते स्याम देव वरुण ते मित्र सूरिभिः सह। इषं स्वश्च धीमहि॥ ९॥
बहवः सूरचक्षसोऽग्निजिह्वा ऋतावृधः।
त्रीणि ये येमुर्विदथानि धीतिभिर्विश्वानि परिभूतिभिः॥ १०॥

अथ दशमो वर्गः॥ १०॥

वि ये दधुः शरदं मासमादहर्यज्ञमक्तुं चादृचम्।
अनाप्यं वरुणो मित्रो अर्यमा क्षत्रं राजान आशत॥ ११॥
तद्वो अद्य मनामहे सूक्तैः सूर उदिते।
यदोहते वरुणो मित्रो अर्यमा यूयमृतस्य रथ्यः॥ १२॥
ऋतावान ऋतजाता ऋतावृधो घोरासो अनृतद्विषः।
तेषां वः सुम्ने सुच्छर्दिष्टमे नरः स्याम ये च सूरयः॥ १३॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उदु त्यद्दृशे वपुर्दिव एति प्रतिह्वरे । यदीमाशुर्वहति देव एतशो विश्वस्मै चक्षसे अरम् ॥ १४ ॥
शीर्ष्णः शीर्ष्णो जगतस्तस्थुषस्पतिं समया विश्वमा रजः । सप्त स्वसारः सुविताय सूर्यं वहन्ति हरितो रथे ॥ १५ ॥

अथ एकादशो वर्गः ॥ ११ ॥

तच्चक्षुर्देवहितं शुक्रमुच्चरत् । पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतम् ॥ १६ ॥
काव्येभिरदाभ्या यातं वरुण द्युमत् । मित्रश्च सोमपीतये ॥ १७ ॥
दिवो धामभिर्वरुण मित्रश्चा यातमद्रुहा । पिबतं सोममातुजी ॥ १८ ॥
आ यातं मित्रावरुणा जुषाणावार्हुतिं नरा । पातं सोममृतावृधा ॥ १९ ॥

[६७] सप्तषष्टितमं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—अश्विनौ ॥ छन्दः—१, २, ६-८, १० निचृत्त्रिष्टुप्; ३, ५, ९ विराट्त्रिष्टुप्; ४ आर्षीत्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

अथ द्वादशो वर्गः ॥ १२ ॥

प्रति वां रथं नृपती जरध्यै हविष्मता मनसा यज्ञियेन । यो वां दूतो न धिष्ण्यावजीगरच्छा सूनुर्न पितरा विवक्मि ॥ १ ॥
अशोच्यग्निः समिधानो अस्मे उषो अदृश्रन्तमसश्चिदन्ताः । अचैति केतुरुषसः पुरस्ाच्छ्रिये दिवो दुहितुर्जायमानः ॥ २ ॥
अभि वां नूनमश्विना सुहोता स्तोमैः सिषक्ति नासत्या विवक्वान् । पूर्वीभिर्यातं पथ्याभिरर्वाक्स्वर्विदा वसुमता रथेन ॥ ३ ॥
अवोर्वां नूनमश्विना युवाकुर्हुवे यद्वां सुते माध्वी वसूयुः । आ वां वहन्तु स्थविरासो अश्वाः पिबाथो अस्मे सुषुता मधूनि ॥ ४ ॥
प्राचीमु देवाश्विना धियं मेऽमृध्रां सातये कृतं वसूयुम् । विश्वा अविष्टं वाज आ पुरन्धीस्ता नः शक्तं शचीपती शचीभिः ॥ ५ ॥

अथ त्रयोदशो वर्गः ॥ १३ ॥

अविष्टं धीष्वश्विना न आसु प्रजावदेतो अह्रयं नो अस्तु । आ वां तोके तनये तूतुजानाः सुरत्नासो देववीतिं गमेम ॥ ६ ॥
एष स्य वां पूर्वगत्वेव सख्ये निधिर्हितो माध्वी रातो अस्मे । अहेळता मनसा यातमर्वागश्नन्ता हव्यं मानुषीषु विक्षु ॥ ७ ॥
एकस्मिन्योगे भुरणा समाने परि वां सप्त स्रवतो रथो गात् । न वायन्ति सुभ्वो देवयुक्ता ये वां धूर्षु तरणयो वहन्ति ॥ ८ ॥

असश्चता मघवद्भ्यो हि भूतं ये राया मघदेयं जुनन्ति । प्र ये बन्धुं सूनृताभिस्तिरन्ते गव्या पृञ्चन्तो अश्व्या मघानि ॥ ९ ॥
नू मे हवमा शृणुतं युवाना यासिष्टं वर्तिरश्विनाविरावत् । धत्तं रत्नानि जरितं च सूरीन्यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ १० ॥

[६८] अष्टषष्टितमं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—अश्विनौ ॥ छन्दः—१, ६, ८ साम्नीत्रिष्टुप्; २, ३, ५ साम्नीनिचृत्त्रिष्टुप्; ४, ७ साम्नीभुरिगासुरी विराट्त्रिष्टुप्; ९ निचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

अथ चतुर्दशो वर्गः ॥ १४ ॥

आ शुभ्रा यातमश्विना स्वश्वा गिरो दस्रा जुजुषाणा युवाकोः । हव्यानि च प्रतिभृता वीतं नः ॥ १ ॥
प्र वामन्धांसि मद्यान्यस्थुरर्वां गन्तं हविषो वीतये मे । तिरो अर्यो हवनानि श्रुतं नः ॥ २ ॥
प्र वां रथो मनोजवा इयर्ति तिरो रजांस्यश्विना शतोतिः । अस्मभ्यं सूर्यावसू इयानः ॥ ३ ॥
अयं ह यद्वां देवया उ अद्रिरूर्ध्वो विवक्ति सोमसुद्युवभ्याम् । आ वल्गू विप्रो ववृतीत हव्यैः ॥ ४ ॥
चित्रं ह यद्वां भोजनं न्वस्ति न्यत्रये महिष्वन्तं युयोतम् । यो वामोमानं दधते प्रियः सन् ॥ ५ ॥

अथ पञ्चदशो वर्गः ॥ १५ ॥

उत त्यद्वां जुरते अश्विना भूच्यर्वानाय प्रतित्यं हविर्दे । अधि यद्वर्प इतऊति धत्थः ॥ ६ ॥
उत त्यं भुज्युमश्विना सखायो मध्ये जहुर्दुरेवासः समुद्रे । निरीं पर्षदर्वा यो युवाकुः ॥ ७ ॥
वृकाय चिज्जसमानाय शक्तमुत श्रुतं शयवे हूयमाना । यावध्यामपिन्वतमपो न स्तर्यं चिच्छक्त्यश्विना शचीभिः ॥ ८ ॥
एष स्य कारुर्जरते सूक्तैरग्रे बुधान उषसां सुमन्मा । इषा तं वर्धदघ्न्या पयोभिर्यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ९ ॥

[६९] एकोनसप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—अश्विनौ ॥ छन्दः—१, ४, ६, ८ निचृत्त्रिष्टुप्; २, ७ त्रिष्टुप्; ३ आर्षीविराट्त्रिष्टुप्; ५ विराट्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अथ षोडशो वर्गः ॥ १६ ॥

आ वां॒ रथो॒ रोद॑सी बद्बधा॒नो हि॑र॒ण्ययो॒ वृष॑भिर्या॒त्वश्वैः॑।
घृ॒तव॑र्तनिः प॒विभी॑ रुचा॒न इ॒षां वो॒ळ्हा नृ॒पति॑र्वा॒जिनी॑वान् ॥ १ ॥
स प॑प्रथा॒नो अ॒भि पञ्च॒ भूमा॑ त्रिबन्धु॒रो मन॒सा या॑तु यु॒क्तः।
विशो॒ येन॒ गच्छ॑थो देव॒यन्तीः॒ कुत्रा॑ चि॒द्याम॑मश्विना॒ दधा॑ना ॥ २ ॥
स्वश्वा॑ य॒शसा या॑तम॒र्वाग्दस्रा॑ नि॒धिं मधु॑मन्तं पिबाथः।
वि वां॒ रथो॑ व॒ध्वा॒३॒॑ याद॑मा॒नोऽन्ता॑न्दि॒वो बा॑धते वर्त॒निभ्या॑म् ॥ ३ ॥
यु॒वोः श्रियं॒ परि॒ योषा॑वृणीत॒ सूरो॑ दुहि॒ता परि॑तक्म्यायाम्।
यद्दे॑व॒यन्त॒मव॑थः॒ शची॑भिः॒ परि॑ घ्रं॒समो॒मना॑ वां॒ वयो॑ गात् ॥ ४ ॥
यो ह॒ स्य वां॑ रथिरा॒ वस्त॑ उ॒स्रा रथो॑ युजा॒नः प॑रि॒याति॑ व॒र्तिः।
तेन॑ नः॒ शं योरु॒षसो॒ व्यु॑ष्टौ॒ न्य॑श्विना वहतं य॒ज्ञे अ॒स्मिन् ॥ ५ ॥
नरा॑ गौ॒रेव॑ वि॒द्युतं॑ तृषा॒णास्माक॑म॒द्य सव॒नोप॑ यातम्।
पु॒रु॒त्रा हि वां॑ म॒तिभि॒र्हव॑न्ते॒ मा वा॑म॒न्ये नि य॑मन्देव॒यन्तः॑ ॥ ६ ॥
यु॒वं भु॒ज्युमव॑विद्धं समु॒द्र उदू॑हथु॒रर्ण॑सो॒ अस्त्रि॑धानैः ।
प॒त॒त्रिभि॑रश्र॒मैर॑व्य॒थिभि॑र्दं॒सना॑भिरश्विना पा॒रय॑न्ता ॥ ७ ॥
नू मे॒ हव॒मा शृ॑णुतं युवाना यासि॒ष्टं व॒र्तिर॑श्विना॒विरा॑वत्।
ध॒त्तं रत्ना॑नि॒ जर॑तं च सू॒रीन्यू॒यं पा॑त स्व॒स्तिभिः॒ सदा॑ नः ॥ ८ ॥

[७०] सप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—अश्विनौ ॥ छन्दः—१, ३, ४, ६ निचृत्त्रिष्टुप्; २, ५, ७ विराट्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

अथ सप्तदशो वर्गः ॥ १७ ॥

आ वि॑श्ववाराश्विना गतं नः॒ प्र तत्स्थान॑मवाचि वां पृथि॒व्याम्।
अश्वो॒ न वा॒जी शु॒नपृ॑ष्ठो अस्था॒दा यत्से॒दथु॑र्ध्रु॒वसे॒ न योनि॑म् ॥ १ ॥
सिष॑क्ति॒ सा वां॑ सुम॒तिश्चनि॒ष्ठाता॑पि घ॒र्मो मनु॑षो दुरो॒णे।
यो वां॑ समु॒द्रान्त्स॒रितः॒ पिप॒र्त्येत॑ग्वा चि॒न्न सु॒युजा॑ युजा॒नः ॥ २ ॥
यानि॒ स्थाना॑न्यश्विना द॒धाथे॑ दि॒वो य॒ह्वीष्वोष॑धीषु वि॒क्षु।
नि पर्व॑तस्य मू॒र्धनि॒ सद॒न्तेषं॒ जना॑य दा॒शुषे॒ वह॑न्ता ॥ ३ ॥
च॒नि॒ष्टं दे॑वा॒ ओष॑धीष्व॒प्सु यद्यो॒ग्या अ॒श्नवै॑थे॒ ऋषी॑णाम्।
पु॒रूणि॒ रत्ना॒ दध॑तौ॒ न्य१॒॑स्मे अनु॒ पूर्वा॑णि चख्यथुर्यु॒गानि॑ ॥ ४ ॥
शु॒श्रु॒वांसा॑ चिदश्विना पु॒रूण्य॒भि ब्रह्मा॑णि चक्षाथे॒ ऋषी॑णाम्।
प्रति॒ प्र या॑तं॒ वर॒मा जना॑या॒स्मे वा॑मस्तु सुम॒तिश्चनि॑ष्ठा ॥ ५ ॥
यो वां॑ य॒ज्ञो ना॑सत्या ह॒विष्मा॑न्कृ॒तब्र॑ह्मा सम॒र्यो॒३॒॑ भवा॑ति।
उप॒ प्र या॑तं॒ वर॒मा वसि॑ष्ठमि॒मा ब्रह्मा॑ण्यृच्यन्ते यु॒वभ्या॑म् ॥ ६ ॥
इ॒यं म॑नी॒षा इ॒यम॑श्विना॒ गीरि॒मां सु॑वृ॒क्तिं वृ॑षणा जुषेथाम्।
इ॒मा ब्रह्मा॑णि युव॒यून्य॑ग्मन्यू॒यं पा॑त स्व॒स्तिभिः॒ सदा॑ नः ॥ ७ ॥

पञ्चमोऽनुवाकः [७१] एकसप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—अश्विनौ ॥ छन्दः—१, ५ त्रिष्टुप्; २-४, ६ विराट्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

अथ अष्टादशो वर्गः ॥ १८ ॥

अप॒ स्वसु॑रु॒षसो॒ नग्जि॑हीते रि॒णक्ति॑ कृ॒ष्णीर॑रु॒षाय॒ पन्था॑म्।
अश्वा॑मघा॒ गोम॑घा वां हुवेम॒ दिवा॒ नक्तं॒ शरु॑म॒स्मद्यु॑योतम् ॥ १ ॥
उ॒पाया॑तं दा॒शुषे॒ मर्त्या॑य॒ रथे॑न वा॒मम॑श्विना॒ वह॑न्ता।
यु॒यु॒तम॒स्मदनि॑रा॒ममी॑वां॒ दिवा॒ नक्तं॑ माध्वी॒ त्रासी॑थां नः ॥ २ ॥
आ वां॒ रथ॑मव॒मस्यां॒ व्यु॑ष्टौ सुम्ना॒यवो॒ वृष॑णो वर्तयन्तु।
स्यूम॑गभस्तिमृत॒युग्भि॒रश्वैराश्वि॑ना॒ वसु॑मन्तं वहेथाम् ॥ ३ ॥
यो वां॒ रथो॑ नृपती॒ अस्ति॑ वो॒ळ्हा त्रि॑वन्धु॒रो वसु॑माँ उ॒स्रया॑मा।
आ न॑ ए॒ना ना॑स॒त्योप॑ यातम॒भि यद्वां॑ वि॒श्वप्स्न्यो॒ जिगा॑ति ॥ ४ ॥
यु॒वं च्यवा॑नं ज॒रसो॑ऽमुमुक्तं॒ नि पे॒दव॑ ऊहथुरा॒शुमश्व॑म्।
निरंह॑स॒स्तम॑सः स्पर्त॒मत्रिं॒ नि जा॑हु॒षं शि॑थि॒रे धा॑तम॒न्तः ॥ ५ ॥
इ॒यं म॑नी॒षा इ॒यम॑श्विना॒ गीरि॒मां सु॑वृ॒क्तिं वृ॑षणा जुषेथाम्।
इ॒मा ब्रह्मा॑णि युव॒यून्य॑ग्मन्यू॒यं पा॑त स्व॒स्तिभिः॒ सदा॑ नः ॥ ६ ॥

[७२] द्विसप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—अश्विनौ ॥ छन्दः—१-४ निचृत्त्रिष्टुप्; ५ विराट्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

अथ एकोनविंशो वर्गः ॥ १९ ॥

आ गोम॑ता नासत्या॒ रथे॒नाश्वा॑वता पुरुश्च॒न्द्रेण॑ यातम्।
अ॒भि वां॒ विश्वा॑ नि॒युतः॑ सचन्ते स्पा॒र्हया॑ श्रि॒या त॒न्वा॑ शुभा॒ना ॥ १ ॥
आ नो॑ दे॒वेभि॒रुप॑ यातम॒र्वाक्स॒जोष॑सा नासत्या॒ रथे॑न।
यु॒वोर्हि नः॑ स॒ख्या पित्र्या॑णि समा॒नो बन्धु॑रु॒त तस्य॑ वित्तम् ॥ २ ॥
उदु॒ स्तोमा॑सो अ॒श्विनो॑रबुध्रञ्जा॒मि ब्रह्मा॑ण्यु॒षस॑श्च दे॒वीः।
आ॒विवा॑सन्रोद॑सी॒ धिष्ण्ये॒मे अच्छा॒ विप्रो॒ नास॑त्या विवक्ति ॥ ३ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

वि चेदुच्छन्त्यश्विना उषासः प्र वां ब्रह्माणि कारवो भरन्ते।
ऊर्ध्वं भानुं सविता देवो अश्रेद् बृहद्रयः समिधा जरन्ते॥ ४॥
आ पश्चातान्नासत्या पुरस्तादाश्विना यातमधरादुदक्तात्।
आ विश्वतः पाञ्चजन्येन राया यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥ ५॥

[७३] त्रिसप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः॥ देवता—अश्विनौ॥ छन्दः—१, ५ विराट्त्रिष्टुप्; २-४ निचृत्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः॥

अथ विंशो वर्गः॥ २०॥

अतारिष्म तमसस्पारमस्य प्रति स्तोमं देवयन्तो दधानाः।
पुरुदंसा पुरुतमा पुराजामर्त्या हवते अश्विना गीः॥ १॥
न्युं प्रियो मनुषः सादि होता नासत्या यो यजते वन्दते च।
अश्नीतं मध्वो अश्विना उपाक आ वां वोचे विदथेषु प्रयस्वान्॥ २॥
अहेम यज्ञं पथामुराणा इमां सुवृक्तिं वृषणा जुषेथाम्।
श्रुष्टीवेव प्रेषितो वामबोधि प्रति स्तोमैर्जरमाणो वसिष्ठः॥ ३॥
उप त्या वह्नी गमतो विशं नो रक्षोहणा संभृता वीळुपाणी।
समन्धांस्यग्मत मत्सराणि मा नो मर्धिष्टमा गतं शिवेन॥ ४॥
आ पश्चातान्नासत्या पुरस्तादाश्विना यातमधरादुदक्तात्।
आ विश्वतः पाञ्चजन्येन राया यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥ ५॥

[७४] चतुःसप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः॥ देवता—अश्विनौ॥ छन्दः—१, ३ निचृदबृहती; २, ४, ६ आर्षीभुरिग्बृहती; ५ आर्षीबृहती॥ स्वरः—मध्यमः॥

अथ एकविंशो वर्गः॥ २१॥

इमा उ वां दिविष्टय उस्रा हवन्ते अश्विना।
अयं वामह्वेऽवसे शचीवसू विशंविशं हि गच्छथः॥ १॥
युवं चित्रं ददथुर्भोजनं नरा चोदेथां सूनृतावते।
अर्वाग्रथं समनसा नि यच्छतं पिबतं सोम्यं मधु॥ २॥
आ यातमुप भूषतं मध्वः पिबतमश्विना।
दुग्धं पयो वृषणा जेन्यावसू मा नो मर्धिष्टमा गतम्॥ ३॥
अश्वासो ये वामुप दाशुषो गृहं युवां दीयन्ति बिभ्रतः।
मक्षूयुभिर्नरा हवेभिरश्विना देवा यातमस्मयू॥ ४॥

अधा ह यन्तो अश्विना पृक्षः सचन्त सूरयः।
ता यंसतो मघवद्भ्यो ध्रुवं यशश्छर्दिरस्मभ्यं नासत्या॥ ५॥
प्र ये ययुरवृकासो रथाइव नृपातारो जनानाम्।
उत स्वेन शवसा शूशुवुर्नर उत क्षियन्ति सुक्षितिम्॥ ६॥

[७५] पञ्चसप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः॥ देवता—उषाः॥ छन्दः—१, ८ निचृत्त्रिष्टुप्; २, ४, ५ विराट्त्रिष्टुप्; ३ आर्चीस्वराट्त्रिष्टुप्; ६, ७ आर्षीत्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः॥

अथ द्वाविंशो वर्गः॥ २२॥

व्युषा आवो दिविजा ऋतेनाविष्कृण्वाना महिमानमागात्।
अप द्वेषस्तम आवरजुष्टमङ्गिरस्तमा पथ्या अजीगः॥ १॥
महे नो अद्य सुविताय बोध्युषो महे सौभगाय प्र यन्धि।
चित्रं रयिं यशसं धेह्यस्मे देवि मर्तेषु मानुषि श्रवस्युम्॥ २॥
एते त्ये भानवो दर्शतायाश्चित्रा उषसो अमृतास आगुः।
जनयन्तो दैव्यानि व्रतान्यापृणन्तो अन्तरिक्षा व्यस्थुः॥ ३॥
एषा स्या युजाना परात्कात्पञ्च क्षितीः परि सद्यो जिगाति।
अभिपश्यन्ती वयुना जनानां दिवो दुहिता भुवनस्य पत्नी॥ ४॥
वाजिनीवती सूर्यस्य योषा चित्रामघा राय ईशे वसूनाम्।
ऋषिष्टुता जरयन्ती मघोन्युषा उच्छति वह्निभिर्गृणाना॥ ५॥
प्रति द्युतानामरुषासो अश्वाश्चित्रा अदृश्रन्नुषसं वहन्तः।
याति शुभ्रा विश्वपिशा रथेन दधाति रत्नं विधते जनाय॥ ६॥
सत्या सत्येभिर्मरुती महद्भिर्दैवी देवेभिर्यजता यजत्रैः।
रुजद् दृळ्हानि दददुस्रियाणां प्रति गाव उषसो वावशन्त॥ ७॥
नू नो गोमद्वीरवद्धेहि रत्नमुषो अश्वावत्पुरुभोजो अस्मे।
मा नो बर्हिः पुरुषता निदे कर्यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥ ८॥

[७६] षट्सप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः॥ देवता—उषाः॥ छन्दः—१ त्रिष्टुप्; २ विराट्त्रिष्टुप्; ३-७ निचृत्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः॥

अथ त्रयोविंशो वर्गः॥ २३॥

उद्व ज्योतिरमृतं विश्वजन्यं विश्वानरः सविता देवो अश्रेत्।
कृत्वा देवानामजनिष्ट चक्षुराविरकृणोद्भुवनं विश्वमुषाः॥ १॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्र मे पन्था देवयाना अदृश्रन्नमर्धन्तो वसुभिरिष्कृतासः ।
अभूदु केतुरुषसः पुरस्तात्प्रतीच्यागादधि हर्म्येभ्यः ॥ २ ॥
तानीदहानि बहुलान्यासन्या प्राचीनमुदिता सूर्यस्य ।
यतः परि जारइवाचरन्त्युषो ददृक्षे न पुनर्यतीव ॥ ३ ॥
त इद्देवानां सधमादं आसन्नृतावानः कवयः पूर्व्यासः ।
गूळ्हं ज्योतिः पितरो अन्वविन्दन्त्सत्यमन्त्रा अजनयन्नुषासम् ॥ ४ ॥
समान ऊर्वे अधि संगतासः सं जानते न यतन्ते मिथस्ते ।
ते देवानां न मिनन्ति व्रतान्यमर्धन्तो वसुभिर्यादमानाः ॥ ५ ॥
प्रति त्वा स्तोमैरीळते वसिष्ठा उषर्बुधः सुभगे तुष्टुवांसः ।
गवां नेत्री वाजपत्नी न उच्छोषः सुजाते प्रथमा जरस्व ॥ ६ ॥
एषा नेत्री राधसः सूनृतानामुषा उच्छन्ती रिभ्यते वसिष्ठैः ।
दीर्घश्रुतं रयिमस्मे दधाना यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ७ ॥

[७७] सप्तसप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—उषाः ॥ छन्दः—१ त्रिष्टुप्; २-५ निचृत्त्रिष्टुप्; ६ विराट्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः धैवतः ॥

अथ चतुर्विंशो वर्गः ॥ २४ ॥

उषो रुरुचे युवतिर्न योषा विश्वं जीवं प्रसुवन्ती चरायै ।
अभूदग्निः समिधे मानुषाणामकर्ज्योतिर्बाधमाना तमांसि ॥ १ ॥
विश्वं प्रतीची सुप्रथा उदस्थाद्युशद्वासो बिभ्रती शुक्रमश्वैत् ।
हिरण्यवर्णा सुदृशीकसंदृग्गवां माता नेत्र्यह्नामरोचि ॥ २ ॥
देवानां चक्षुः सुभगा वहन्ती श्वेतं नयन्ती सुदृशीकमश्वम् ।
उषा अदर्शि रश्मिभिर्व्यक्ता चित्रामघा विश्वमनु प्रभूता ॥ ३ ॥
अन्तिवामा दूरे अमित्रमुच्छेर्वी गव्यूतिमभयं कृधी नः ।
यावय द्वेष आ भरा वसूनि चोदय राधो गृणते मघोनि ॥ ४ ॥
अस्मे श्रेष्ठेभिर्भानुभिर्वि भाह्युषो देवि प्रतिरन्ती न आयुः ।
इषं च नो दधती विश्ववारे गोमदश्वावद्रथवच्च राधः ॥ ५ ॥
यां त्वा दिवो दुहितर्वर्धयन्त्युषः सुजाते मतिभिर्वसिष्ठाः ।
सास्मासु धा रयिमृष्वं बृहन्तं यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ६ ॥

[७८] अष्टसप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—उषाः ॥ छन्दः—१, २ त्रिष्टुप्; ३, ४ निचृत्त्रिष्टुप्; ५ विराट्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

अथ पञ्चविंशो वर्गः ॥ २५ ॥

प्रति केतवः प्रथमा अदृश्रन्नूर्ध्वा अस्या अञ्जयो वि श्रयन्ते ।
उषो अर्वाचा बृहता रथेन ज्योतिष्मता वाममस्मभ्यं वक्षि ॥ १ ॥
प्रति षीमग्निर्जरते समिद्धः प्रति विप्रासो मतिभिर्गृणन्तः ।
उषा याति ज्योतिषा बाधमाना विश्वा तमांसि दुरितापा देवी ॥ २ ॥
एता उ त्याः प्रत्यदृश्रन्पुरस्ताज्ज्योतिर्यच्छन्तीरुषसो विभातीः ।
अजीजनन्त्सूर्यं यज्ञमग्निमपाचीनं तमो अगादजुष्टम् ॥ ३ ॥
अचेति दिवो दुहिता मघोनी विश्वे पश्यन्त्युषसं विभातीम् ।
आस्थाद्रथं स्वधया युज्यमानमा यमश्वासः सुयुजो वहन्ति ॥ ४ ॥
प्रति त्वाद्य सुमनसो बुधन्तास्माकासो मघवानो वयं च ।
तिल्विलायध्वमुषसो विभातीर्यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ५ ॥

[७९] एकोनाशीतितमं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—उषाः ॥ छन्दः—१, ४ निचृत्त्रिष्टुप्; २, ३ विराट्त्रिष्टुप्; ५ आर्चीस्वराट्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

अथ षड्विंशो वर्गः ॥ २६ ॥

व्युषा आवः पथ्या३ जनानां पञ्च क्षितीर्मानुषीर्बोधयन्ती ।
सुसंदृग्भिरुक्षभिर्भानुमश्रेद्वि सूर्यो रोदसी चक्षसावः ॥ १ ॥
व्यञ्जते दिवो अन्तेष्वक्तून्विशो न युक्ता उषसो यतन्ते ।
सं ते गावस्तम आ वर्तयन्ति ज्योतिर्यच्छन्ति सवितेव बाहू ॥ २ ॥
अभूदुषा इन्द्रतमा मघोन्यजीजनत्सुवितायश्रवांसि ।
वि दिवो देवी दुहिता दधात्यङ्गिरस्तमा सुकृते वसूनि ॥ ३ ॥
तावद्युषो राधो अस्मभ्यं रास्व यावत्स्तोतृभ्यो अरदो गृणाना ।
यां त्वा जज्ञुर्वृषभस्या रवेण वि दृळ्हस्य दुरो अद्रेरौर्णोः ॥ ४ ॥
देवंदेवं राधसे चोदयन्त्यस्मद्र्यक्सूनृता ईरयन्ती ।
व्युच्छन्ती नः सनये धियो धा यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ५ ॥

[८०] अशीतितमं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—उषाः ॥ छन्दः—१ त्रिष्टुप्; २ विराट्त्रिष्टुप्; ३ निचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

अथ सप्तविंशो वर्गः ॥ २७ ॥

प्रति स्तोमेभिरुषसं वसिष्ठा गीर्भिर्विप्रासः प्रथमा अबुध्रन् ।
विवर्तयन्ती रजसी समन्ते आविष्कृण्वती भुवनानि विश्वा ॥ १ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

एषा स्या नव्यमायुर्दधाना गूढ्वी तमो ज्योतिषोषा अबोधि।
अग्रं एति युवतिरह्नयाणा प्राचिकितत्सूर्यं यज्ञमग्निम्॥ २॥
अश्वावतीर्गोमतीर्न उषासो वीरवतीः सदमुच्छन्तु भद्राः।
घृतं दुहाना विश्वतः प्रपीता यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥ ३॥

इति पञ्चमाष्टके पञ्चमोऽध्यायः॥

अथ षष्ठोऽध्यायः

[८१] एकाशीतितमं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः॥ देवता—उषाः॥ छन्दः—१ विराड्बृहती; २ भुरिग्बृहती; ३ आर्षी-बृहती; ४, ६ आर्षीभुरिग्बृहती; ५ निचृद्बृहती॥ स्वरः—मध्यमः॥

अथ प्रथमो वर्गः॥ १॥

प्रत्यु अदर्श्यायत्युच्छन्तीं दुहिता दिवः।
अपो महि व्ययति चक्षसे तमो ज्योतिष्कृणोति सूनरी॥ १॥
उदुस्रियाः सृजते सूर्यः सचाँ उद्यन्नक्षत्रमर्चिवत्।
तवेदुषो व्युषि सूर्यस्य च सं भक्तेन गमेमहि॥ २॥
प्रति त्वा दुहितर्दिव उषो जीरा अभुत्स्महि।
या वहसि पुरु स्पार्हं वनन्वति रत्नं न दाशुषे मयः॥ ३॥
उच्छन्ती या कृणोषि मंहना महि प्रख्यै देवि स्वर्दृशे।
तस्यास्ते रत्नभाज ईमहे वयं स्याम मातुर्न सूनवः॥ ४॥
तच्चित्रं राध आ भरोषो यद्दीर्घश्रुत्तमम्।
यत्ते दिवो दुहितर्मर्तभोजनं तद्रास्व भुनजामहे॥ ५॥
श्रवः सूरिभ्यो अमृतं वसुत्वनं वाजाँ अस्मभ्यं गोमतः।
चोदयित्री मघोनः सूनृतावत्युषा उच्छदप स्रिधः॥ ६॥

[८२] द्व्यशीतितमं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः॥ देवता—इन्द्रावरुणौ॥ छन्दः—१, २, ६, ७, ९ निचृज्जगती; ३ आर्चीभुरिग्जगती; ४, ५, १० आर्षीविराड्जगती; ८ विराड्जगती॥ स्वरः—निषादः॥

अथ द्वितीयो वर्गः॥ २॥

इन्द्रावरुणा युवमध्वराय नो विशे जनाय महि शर्म यच्छतम्।
दीर्घप्रयज्युमति यो वनुष्यति वयं जयेम पृतनासु दूढ्यः॥ १॥

सम्राळन्यः स्वराळन्य उच्यते वां महान्ताविन्द्रावरुणा महावसू।
विश्वे देवासः परमे व्योमनि सं वामोजो वृषणा सं बलं दधुः॥ २॥
अन्वपां खान्यतृन्तमोजसा सूर्यमैरयतं दिवि प्रभुम्।
इन्द्रावरुणा मदे अस्य मायिनोऽपिन्वतमपितः पिन्वतं धियः॥ ३॥
युवामिद्युत्सु पृतनासु वह्नयो युवां क्षेमस्य प्रसवे मितज्ञवः।
ईशाना वस्व उभयस्य कारव इन्द्रावरुणा सुहवा हवामहे॥ ४॥
इन्द्रावरुणा यदिमानि चक्रथुर्विश्वा जातानि भुवनस्य मज्मना।
क्षेमेण मित्रो वरुणं दुवस्यति मरुद्भिरुग्रः शुभमन्य ईयते॥ ५॥

अथ तृतीयो वर्गः॥ ३॥

महे शुल्काय वरुणस्य नु त्विष ओजो मिमाते धुवमस्य यत्स्वम्।
अजामिमन्यः श्नथयन्तमातिरद्बभ्रेभिरन्यः प्र वृणोति भूयसः॥ ६॥
न तमंहो न दुरितानि मर्त्यमिन्द्रावरुणा न तपुः कुतश्चन।
यस्य देवा गच्छथो वीथो अध्वरं न तं मर्तस्य नशते परिह्वृतिः॥ ७॥
अर्वाङ् नरा दैव्येनावसा गतं शृणुतं हवं यदि मे जुजोषथः।
युवोर्हि सख्यमुत वा यदाप्यं मार्डीकमिन्द्रावरुणा नि यच्छतम्॥ ८॥
अस्माकमिन्द्रावरुणा भरेभरे पुरोयोधा भवतं कृष्टयोजसा।
यद्वां हवन्त उभये अधि स्पृधि नरस्तोकस्य तनयस्य सातिषु॥ ९॥
अस्मे इन्द्रो वरुणो मित्रो अर्यमा द्युम्नं यच्छन्तु महि शर्म सप्रथः।
अवध्रं ज्योतिरदितेर्ऋतावृधो देवस्य श्लोकं सवितुर्मनामहे॥ १०॥

[८३] त्र्यशीतितमं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः॥ देवता—इन्द्रावरुणौ॥ छन्दः—१, ३, ९ विराड्जगती; २, ४, ६ निचृज्जगती; ५ आर्चीजगती; ७, ८, १० आर्षीजगती॥ स्वरः—निषादः॥

अथ चतुर्थो वर्गः॥ ४॥

युवां नरा पश्यमानास आप्यं प्राचा गव्यन्तः पृथुशर्वो ययुः।
दासा च वृत्रा हतमार्याणि च सुदासमिन्द्रावरुणावसावतम्॥ १॥
यत्रा नरः समर्यन्ते कृतध्वजो यस्मिन्नाजा भवति किं चन प्रियम्।
यत्रा भयन्ते भुवना स्वर्दृशस्तत्रा न इन्द्रावरुणाधि वोचतम्॥ २॥
सं भूम्या अन्तां ध्वसिरा अदृक्षतेन्द्रावरुणा दिवि घोष आरुहत्।
अस्थुर्जनानामुप मामरातयोऽवार्गवसा हवनश्रुता गतम्॥ ३॥
इन्द्रावरुणा वधनाभिरप्रति भेदं वन्वन्ता प्र सुदासमावतम्।
ब्रह्माण्येषां शृणुतं हवीमनि सत्या तृत्सूनामभवत्पुरोहितिः॥ ४॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

इन्द्रा॑वरुणाव॒भ्या त॑पन्ति मा॒घान्य॒र्यो व॒नुषा॒मरा॑तयः ।
यु॒वं हि वस्व॑ उ॒भय॑स्य॒ राज॒थोऽध॑ स्मा नोऽवतं॒ पार्ये॑ दि॒वि ॥ ५ ॥

अथ पञ्चमो वर्गः ॥ ५ ॥

यु॒वां ह॑वन्त उ॒भया॑स आ॒जिष्विन्द्रं॑ च॒ वस्वो॒ वरु॑णं च सा॒तये॑ ।
यत्र॒ राज॑भिर्द॒शभि॒र्निबा॑धितं॒ प्र सु॒दास॒माव॑तं॒ तृत्सु॑भिः स॒ह ॥ ६ ॥
दश॒ राजा॑नः॒ समि॑ता॒ अय॑ज्यवः सु॒दास॑मिन्द्रावरुणा॒ न यु॑युधुः ।
स॒त्या नृ॒णामद्म॒सदा॒मुप॑स्तुतिर्दे॒वा ए॑षामभवन्दे॒वहू॑तिषु ॥ ७ ॥
दा॒श॒रा॒ज्ञे परि॑यत्ताय वि॒श्वतः॑ सु॒दास॑ इन्द्रावरुणावशिक्षतम् ।
श्वि॒त्यञ्चो॒ यत्र॒ नम॑सा कप॒र्दिनो॑ धि॒या धीव॑न्तो॒ अस॑पन्त॒ तृत्स॑वः ॥ ८ ॥
वृ॒त्राण्य॒न्यः स॑मि॒थेषु॒ जिघ्न॑ते व्र॒तान्य॒न्यो अ॒भि र॑क्षते॒ सदा॑ ।
हवा॑महे वां वृषणा सुवृ॒क्तिभि॑र॒स्मे इ॑न्द्रावरुणा॒ शर्म॑ यच्छतम् ॥ ९ ॥
अ॒स्मे इन्द्रो॒ वरु॑णो मि॒त्रो अ॑र्य॒मा द्यु॒म्नं य॑च्छन्तु॒ महि॒ शर्म॑ स॒प्रथः॑ ।
अ॒व॒ध्रं ज्योति॒रदि॑तेर्ऋता॒वृधो॑ दे॒वस्य॒ श्लोकं॑ सवि॒तुर्म॑नामहे ॥ १० ॥

[८४] चतुरशीतितमं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—इन्द्रावरुणौ ॥ छन्दः—१, २, ४, ५ निचृत्त्रिष्टुप्; ३ त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

अथ षष्ठो वर्गः ॥ ६ ॥

आ वां॑ राजानावध्व॒रे व॑वृत्यां ह॒व्येभि॑रिन्द्रावरुणा॒ नमो॑भिः ।
प्र वां॑ घृ॒ताची॑ बा॒ह्वोर्दधा॑ना॒ परि॒ त्मना॒ विषु॑रूपा जिगाति ॥ १ ॥
यु॒वो रा॒ष्ट्रं बृ॒हदि॑न्वति॒ द्यौर्यौ से॒तृभि॑रर॒ज्जुभिः॑ सिनी॒थः ।
परि॑ नो॒ हेळो॒ वरु॑णस्य वृज्या उ॒रुं न॒ इन्द्रः॑ कृणवदु लो॒कम् ॥ २ ॥
कृ॒तं नो॑ य॒ज्ञं वि॒दथे॑षु॒ चारुं॑ कृ॒तं ब्रह्मा॑णि सू॒रिषु॑ प्रश॒स्ता ।
उपो॑ र॒यिर्दे॒वजू॑तो न एतु॒ प्र णः॑ स्पा॒र्हाभि॑रू॒तिभि॑स्तिरेतम् ॥ ३ ॥
अ॒स्मे इ॑न्द्रावरुणा वि॒श्ववा॑रं र॒यिं ध॑त्तं॒ वसु॑मन्तं पुरु॒क्षुम् ।
प्र य आ॑दि॒त्यो अनृ॑ता मि॒नात्यमि॑ता॒ शूरो॑ दयते॒ वसू॑नि ॥ ४ ॥
इ॒यमिन्द्रं॒ वरु॑णमष्ट मे॒ गीः प्राव॑त्तो॒के तन॑ये॒ तूतु॑जाना ।
सु॒रत्ना॑सो दे॒ववी॑तिं गमेम यू॒यं पा॑त स्व॒स्तिभिः॒ सदा॑ नः ॥ ५ ॥

[८५] पञ्चाशीतितमं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—इन्द्रावरुणौ ॥ छन्दः—१, ४ आर्षीत्रिष्टुप्; २, ३, ५ निचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

अथ सप्तमो वर्गः ॥ ७ ॥

पु॒नी॒षे वा॑मर॒क्षसं॑ मनी॒षां सोम॒मिन्द्रा॑य॒ वरु॑णाय॒ जुह्व॑त् ।
घृ॒तप्र॑तीकामु॒षसं॒ न दे॒वीं ता नो॒ याम॑न्नुरुष्यताम॒भीके॑ ॥ १ ॥
स्पर्ध॑न्ते॒ वा उ॑ देव॒हूये॒ अत्र॒ येषु॑ ध्व॒जेषु॑ दि॒द्यवः॒ पत॑न्ति ।
यु॒वं ताँ इ॑न्द्रावरुणाव॒मित्रा॑न्ह॒तं परा॑चः॒ शर्वा॒ विषू॑चः ॥ २ ॥
आप॑श्चि॒द्धि स्वय॑शसः॒ सदः॑सु दे॒वीरिन्द्रं॒ वरु॑णं दे॒वता॒ धुः ।
कृ॒ष्टीर॒न्यो धा॒रय॑ति॒ प्रवि॑क्ता वृ॒त्राण्य॒न्यो अ॑प्र॒तीनि॑ हन्ति ॥ ३ ॥
स सु॒क्रतु॑र्ऋत॒चिद॑स्तु॒ होता॒ य आ॑दित्य॒ शव॑सा वां॒ नम॑स्वान् ।
आ॒व॒वर्त॒दव॑से वां ह॒विष्मा॒नस॒दित्स सु॑वि॒ताय॒ प्रय॑स्वान् ॥ ४ ॥
इ॒यमिन्द्रं॒ वरु॑णमष्ट मे॒ गीः प्राव॑त्तो॒के तन॑ये॒ तूतु॑जाना ।
सु॒रत्ना॑सो दे॒ववी॑तिं गमेम यू॒यं पा॑त स्व॒स्तिभिः॒ सदा॑ नः ॥ ५ ॥

[८६] षडशीतितमं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—वरुणः ॥ छन्दः—१, ३-५, ८ निचृत्त्रिष्टुप्; २, ७ विराट्त्रिष्टुप्; ६ आर्षीत्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

अथ अष्टमो वर्गः ॥ ८ ॥

धीरा॒ त्व॑स्य महि॒ना ज॒नूंषि॒ वि यस्त॒स्तम्भ॒ रोद॑सी चिदु॒र्वी ।
प्र नाक॑मृ॒ष्वं नु॑नुदे बृ॒हन्तं॑ द्वि॒ता नक्ष॑त्रं प॒प्रथ॑च्च भूम॑ ॥ १ ॥
उ॒त स्वया॑ त॒न्वा॒३॒॑ सं व॑दे॒ तत्क॒दा न्व१॒॑न्तर्वरु॑णे भुवानि ।
किं मे॑ ह॒व्यमहृ॑णानो जुषेत क॒दा मृ॑ळी॒कं सु॒मना॑ अ॒भि ख्य॑म् ॥ २ ॥
पृ॒च्छे तदेनो॑ वरुण दि॒दृक्षूपो॑ एमि चिकि॒तुषो॑ वि॒पृच्छ॑म् ।
स॒मा॒नमिन्मे॑ क॒वय॑श्चिदाहुर॒यं ह॒ तुभ्यं॒ वरु॑णो हृणीते ॥ ३ ॥
किमाग॑ आस वरुण॒ ज्येष्ठं॒ यत्स्तो॒तारं॒ जिघां॑ससि॒ सखा॑यम् ।
प्र तन्मे॑ वोचो दूळभ स्वधा॒वोऽव॑ त्वाने॒ना नम॑सा तु॒र इ॑याम् ॥ ४ ॥
अव॑ द्रु॒ग्धानि॒ पित्र्या॑ सृजा॒ नोऽव॒ या व॒यं च॑कृ॒मा त॒नूभिः॑ ।
अव॑ राजन्पशु॒तृपं॒ न ता॒युं सृ॒जा व॒त्सं न दाम्नो॒ वसि॑ष्ठम् ॥ ५ ॥
न स स्वो दक्षो॑ वरुण॒ ध्रुतिः॒ सा सुरा॑ म॒न्युर्वि॒भीद॑को॒ अचि॑त्तिः ।
अस्ति॒ ज्याया॒न्कनी॑यस उपा॒रे स्वप्न॑श्च॒नेदनृ॑तस्य प्रयो॒ता ॥ ६ ॥
अरं॑ दा॒सो न मी॒ळ्हुषे॑ कराण्य॒हं दे॒वाय॒ भूर्ण॒येऽना॑गाः ।
अचे॑तयद॒चितो॑ दे॒वो अ॒र्यो गृत्सं॑ रा॒ये क॒वित॑रो जुनाति ॥ ७ ॥
अ॒यं सु तुभ्यं॑ वरुण स्वधावो हृ॒दि स्तोम॒ उप॑श्रितश्चिदस्तु ।
शं नः॒ क्षेमे॒ शमु॒ योगे॑ नो अस्तु यू॒यं पा॑त स्व॒स्तिभिः॒ सदा॑ नः ॥ ८ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

[८७] सप्ताशीतितमं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—वरुणः ॥ छन्दः—१ विराट्त्रिष्टुप्; २, ३, ५ आर्षी-त्रिष्टुप्; ४, ६, ७ त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

अथ नवमो वर्गः ॥ ९ ॥

रदत्पथो वरुणः सूर्याय प्राणाँसि समुद्रिया नदीनाम् ।
सर्गो न सृष्टो अवँतीरृताय ञ्चकार महीरवनीरहभ्यः ॥ १ ॥
आत्मा ते वातो रज आ नवीनोत्पशुर्न भूर्णिर्यवसे ससवान् ।
अन्तर्महि बृहती रोदसीमे विश्वा ते धाम वरुण प्रियाणि ॥ २ ॥
परि स्पशो वरुणस्य स्मदिष्टा उभे पश्यन्ति रोदसी सुमेके ।
ऋतावानः कवयो यज्ञधीराः प्रचेतसो य इषयन्त मन्म ॥ ३ ॥
उवाच मे वरुणो मेधिराय त्रिः सप्त नामाघ्न्या बिभर्ति ।
विद्वान्पदस्य गुह्या न वोचद्युगाय विप्र उपराय शिक्षन् ॥ ४ ॥
तिस्रो द्यावो निहिता अन्तरस्मिन्तिस्रो भूमीरुपराः षड्विधानाः ।
गृत्सो राजा वरुणश्चक्र एतं दिवि प्रेङ्खं हिरण्ययं शुभे कम् ॥ ५ ॥
अव सिन्धुं वरुणो द्यौरिव स्याद् द्रप्सो न श्वेतो मृगस्तुविष्मान् ।
गम्भीरशंसो रजसो विमानः सुपारक्षत्रः सतो अस्य राजा ॥ ६ ॥
यो मृळयाति चक्रुषे चिदागो वयं स्याम वरुणे अनागाः ।
अनु व्रतान्यदितेर्ऋधन्तो यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ७ ॥

[८८] अष्टाशीतितमं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—वरुणः ॥ छन्दः—१-३, ६ निचृत्त्रिष्टुप्; ४, ५, ७ विराट्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

अथ दशमो वर्गः ॥ १० ॥

प्र शुन्ध्युवं वरुणाय प्रेष्ठां मतिं वसिष्ठ मीळ्हुषे भरस्व ।
य ईमर्वाञ्चं करते यजत्रं सहस्रामघं वृषणं बृहन्तम् ॥ १ ॥
अधा न्वस्य संदृशं जगन्वानग्नेरनीकं वरुणस्य मंसि ।
स्वर्यदश्मन्नधिपा उ अन्धोऽभि मा वपुर्दृशये निनीयात् ॥ २ ॥
आ यद्दुहाव वरुणश्च नावं प्र यत्समुद्रमीरयाव मध्यम् ।
अधि यदपां स्नुभिश्चराव प्र प्रेङ्ख ईङ्खयावहै शुभे कम् ॥ ३ ॥
वसिष्ठं ह वरुणो नाव्याधाद्ऋषिं चकार स्वपा महोभिः ।
स्तोतारं विप्रः सुदिनत्वे अह्नां यानु द्यावस्ततनन्नादुषासः ॥ ४ ॥

सप्तमं मण्डलम्

क्वा त्यानि नौ सख्या बभूवुः सचावहे यदवृकं पुरा चित् ।
बृहन्तं मानं वरुण स्वधावः सहस्रद्वारं जगमा गृहं ते ॥ ५ ॥
य आपिर्नित्यो वरुण प्रियः सन्त्वामागांसि कृणवत्सखा ते ।
मा त एनस्वन्तो यक्षिन्भुजेम यन्धि ष्मा विप्रः स्तुवते वरूथम् ॥ ६ ॥
ध्रुवासु त्वासु क्षितिषु क्षियन्तो व्यं स्मत्पाशं वरुणो मुमोचत् ।
अवो वन्वाना अदितेरुपस्थाद्यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ७ ॥

[८९] एकोननवतितमं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—वरुणः ॥ छन्दः—१-४ आर्षीगायत्री; ५ पादनिचृज्जगती ॥ स्वरः—१-४ षड्जः; ५ निषादः ॥

अथ एकादशो वर्गः ॥ ११ ॥

मो षु वरुण मृन्मयं गृहं राजन्नहं गमम् । मृळा सुक्षत्र मृळय ॥ १ ॥
यदेमि प्रस्फुरन्निव दृतिर्न ध्मातो अद्रिवः । मृळा सुक्षत्र मृळय ॥ २ ॥
क्रत्वः समह दीनता प्रतीपं जगमा शुचे । मृळा सुक्षत्र मृळय ॥ ३ ॥
अपां मध्ये तस्थिवांसं तृष्णाविदज्जरितारम् । मृळा सुक्षत्र मृळय ॥ ४ ॥
यत्किं चेदं वरुण दैव्ये जनेऽभिद्रोहं मनुष्याश्चरामसि ।
अचित्ती यत्तव धर्मा युयोपिम मा नस्तस्मादेनसो देव रीरिषः ॥ ५ ॥

षष्ठोऽनुवाकः [९०] नवतितमं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—१-४ वायुः; ५-७ इन्द्रवायू ॥ छन्दः—१, २, ७ विराट्त्रिष्टुप्; ३ त्रिष्टुप्; ४-६ निचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

अथ द्वादशो वर्गः ॥ १२ ॥

प्र वीरया शुचयो दद्रिरे वामध्वर्युभिर्मधुमन्तः सुतासः ।
वह वायो नियुतो याह्यच्छा पिबा सुतस्यान्धसो मदाय ॥ १ ॥
ईशानाय प्रहुतिं यस्त आनट् शुचिं सोमं शुचिपास्तुभ्यं वायो ।
कृणोषि तं मर्त्येषु प्रशस्तं जातोजातो जायते वाज्यस्य ॥ २ ॥
रायें नु यं जज्ञतू रोदसीमे राये देवी धिषणा धाति देवम् ।
अधं वायुं नियुतः सश्चत स्वा उत श्वेतं वसुधितिं निरेके ॥ ३ ॥
उच्छन्नुषसः सुदिना अरिप्रा उरु ज्योतिर्विविदुर्दीध्यानाः ।
गव्यं चिदूर्वमुशिजो वि वव्रुस्तेषामनु प्रदिवः सस्रुरापः ॥ ४ ॥
ते सत्येन मनसा दीध्यानाः स्वेन युक्तासः क्रतुना वहन्ति ।
इन्द्रवायू वीरवाहं रथं वामीशानयोरभि पृक्षः सचन्ते ॥ ५ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ईशानासो ये दधते स्वर्णो गोभिरश्वेभिर्वसुभिर्हिरण्यैः।
इन्द्रवायू सूरयो विश्वमायुरवर्द्धिवीरैः पृतनासु सह्युः॥ ६॥
अवर्न्तो न श्रवसो भिक्षमाणा इन्द्रवायू सुष्टुतिभिर्वसिष्ठाः।
वाजयन्तः स्ववसे हुवेम यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥ ७॥

[९१] एकनवतितमं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः॥ देवता—१, ३ वायुः; २, ४-७ इन्द्रवायू॥ छन्दः—१, ४, ७ विराट् त्रिष्टुप्; २, ५, ६ आर्षीत्रिष्टुप्; ३ निचृत्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः॥

अथ त्रयोदशो वर्गः॥ १३॥

कुविदङ्ग नमसा ये वृधासः पुरा देवा अनवद्यास आसन्।
ते वायवे मनवे बाधितायावासयन्नुषसं सूर्येण॥ १॥
उशन्ता दूता न दभाय गोपा मासश्च पाथः शरदश्च पूर्वीः।
इन्द्रवायू सुष्टुतिवीमियाना मार्डीकमीट्टे सुवितं च नव्यम्॥ २॥
पीवोअन्नाँ रयिवृधः सुमेधाः श्वेतः सिषक्ति नियुतामभिश्रीः।
ते वायवे समनसो वि तस्थुर्विश्वेन्नरः स्वपत्यानि चक्रुः॥ ३॥
यावत्तरस्तन्वो३ यावदोजो यावन्नरश्चक्षसा दीध्यानाः।
शुचिं सोमं शुचिपा पातमस्मे इन्द्रवायू सदतं बर्हिरेदम्॥ ४॥
नियुवाना नियुतः स्पार्हवीरा इन्द्रवायू सरथं यातमर्वाक्।
इदं हि वां प्रभृतं मध्वो अग्रमधा प्रीणाना वि मुमुक्तमस्मे॥ ५॥
या वां शतं नियुतो याः सहस्रमिन्द्रवायू विश्ववाराः सचन्ते।
आभिर्यातं सुविदत्राभिरर्वाक्पातं नरा प्रतिभृतस्य मध्वः॥ ६॥
अवर्न्तो न श्रवसो भिक्षमाणा इन्द्रवायू सुष्टुतिभिर्वसिष्ठाः।
वाजयन्तः स्ववसे हुवेम यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥ ७॥

[९२] द्विनवतितमं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः॥ देवता—१, ३-५ वायुः; २ इन्द्रवायू॥ छन्दः—१ निचृत्त्रिष्टुप्; २-४ विराट्त्रिष्टुप्; ५ आर्षीत्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः॥

अथ चतुर्दशो वर्गः॥ १४॥

आ वायो भूष शुचिपा उप नः सहस्रं ते नियुतो विश्ववार।
उपो ते अन्धो मद्यमयामि यस्य देव दधिषे पूर्वपेयम्॥ १॥
प्र सोता जीरो अध्वरेष्वस्थात्सोममिन्द्राय वायवे पिबध्यै।
प्र यद्वां मध्वो अग्रियं भरन्त्यध्वर्यवो देवयन्तः शचीभिः॥ २॥
प्र याभिर्यासि दाश्वांसमच्छा नियुद्भिर्वायविष्टये दुरोणे।
नि नो रयिं सुभोजसं युवस्व नि वीरं गव्यमश्व्यं च राधः॥ ३॥
ये वायव इन्द्रमादनास आदेवासो नितोशनासो अर्यः।
घ्नन्तो वृत्राणि सूरिभिः ष्याम सासह्वांसो युधा नृभिरमित्रान्॥ ४॥
आ नो नियुद्भिः शतिनीभिरध्वरं सहस्त्रिणीभिरुप याहि यज्ञम्।
वायो अस्मिन्त्सवने मादयस्व यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥ ५॥

[९३] त्रिनवतितमं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः॥ देवता—इन्द्राग्नी॥ छन्दः—१, ८ निचृत्त्रिष्टुप्; २, ५ आर्षीत्रिष्टुप्; ३, ४, ६, ७ विराट्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः॥

अथ पञ्चदशो वर्गः॥ १५॥

शुचिं नु स्तोमं नवजातमद्येन्द्राग्नी वृत्रहणा जुषेथाम्।
उभा हि वां सुहवा जोहवीमि ता वाजं सद्य उशते धेष्ठा॥ १॥
ता सानसी शवसाना हि भूतं सांकंवृधा शवसा शूशुवांसा।
क्षयन्तौ रायो यवसस्य भूरेः पृङ्क्तं वाजस्य स्थविरस्य घृष्वेः॥ २॥
उपो हु यद्विदथं वाजिनो गुर्धीभिर्विप्राः प्रमतिमिच्छमानाः।
अर्वन्तो न काष्ठां नक्षमाणा इन्द्राग्नी जोहुवतो नरस्ते॥ ३॥
गीर्भिर्विप्रः प्रमतिमिच्छमान ईट्टे रयिं यशसं पूर्वभाजम्।
इन्द्राग्नी वृत्रहणा सुवज्रा प्र नो नव्येभिस्तिरतं देष्णैः॥ ४॥
सं यन्महीमिथती स्पर्धमाने तनूरुचा शूरसाता यतैते।
अदेवयुं विदथे देवयुभिः सत्रा हतं सोमसुता जनेन॥ ५॥

अथ षोडशो वर्गः॥ १६॥

इमामु षु सोमसुतिमुप न एन्द्राग्नी सौमनसाय यातम्।
नू चिद्धि परिमन्थेअस्माना वां शश्वद्भिर्वृतीय वाजैः॥ ६॥
सो अंग्र एना नमसा समिद्धोऽच्छा मित्रं वरुणमिन्द्रं वोचेः।
यत्सीमागश्चकृमा तत्सु मृळ तदर्यमादितिः शिश्रथन्तु॥ ७॥
एता अंग्र आशुषाणास इष्टीर्युवोः सचाभ्यश्याम वाजान्।
मेन्द्रो नो विष्णुर्मरुतः परि ख्यन्यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥ ८॥

[९४] चतुर्नवतितमं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः॥ देवता—इन्द्राग्नी॥ छन्दः—१, ३, ८, १० आर्षीनिचृद्गायत्री; २, ४-७, ९, ११ आर्षीगायत्री; १२ आर्षीनिचृदनुष्टुप्॥ स्वरः—१-११ षड्जः; १२ गान्धारः॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अथ सप्तदशो वर्गः ॥ १७ ॥

इ॒यं वां॒ मस्य मन्म॑न् इन्द्राग्नी पू॒र्व्यस्तु॑तिः । अ॒भ्राद् वृष्टि॑रिवाजनि ॥ १ ॥
शृ॒णु॒तं ज॑रि॒तुर्हव॒मिन्द्रा॑ग्नी वन॑तं गिरः । ई॒शा॒ना पि॑प्यतं धि॒यः ॥ २ ॥
मा पा॑पत्वाय नो नरेन्द्राग्नी माभिशस्तये । मा नो॑ रीरधतं नि॒दे ॥ ३ ॥
इन्द्रे॑ अ॒ग्ना नमो॑ बृ॒हत्सु॑वृ॒क्तिमे॑रयामहे । धि॒या धे॒ना अ॑वस्यवः ॥ ४ ॥
ता हि शश्व॑न्त ईळ॑त इ॒त्था विप्रा॑स ऊ॒तये । स॒बाधो॒ वाज॑सातये ॥ ५ ॥
ता वां॑ गी॒र्भिर्वि॑पन्यवः॒ प्रय॑स्वन्तो हवामहे । मे॒धसा॑ता सनि॒ष्यवः ॥ ६ ॥

अथ अष्टादशो वर्गः ॥ १८ ॥

इन्द्राग्नी अव॒सा ग॑तम॒स्मभ्यं॑ चर्षणीसहा । मा नो॑ दुःशंस ईशत ॥ ७ ॥
मा कस्य॑ नो॒ अरु॑षो धू॒र्तिः प्रण॑ङ्मर्त्यस्य । इन्द्राग्नी॒ शर्म॑ यच्छतम् ॥ ८ ॥
गोम॒द्धिर॑ण्यवद्वसु॒ यद्वा॒मश्वा॑वदीमहे । इन्द्राग्नी॒ तद्वनेमहि ॥ ९ ॥
यत्सोम॒ आ सु॒ते नर॑ इन्द्राग्नी अजोहवुः । सस॑वन्ता सप॒र्यवः ॥ १० ॥
उ॒क्थेभि॑र्वृत्रहन्तमा॒ या म॑न्दा॒ना चि॒दा गि॒रा । आङ्गू॒षैरा॑विवासतः ॥ ११ ॥
ताविद्दुः॑शंस॒ मर्त्यं॑ दुवि॒द्वांसं॑ रक्षस्विनम् ।
आ॒भोगं॑ हन्म॒ना हत॑मु॒दधिं॑ हन्म॒ना हत॑म् ॥ १२ ॥

[९५] पञ्चनवतितमं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—१, २, ४-६ सरस्वती; ३ सरस्वान् ॥ छन्दः—१ पादनिचृत् त्रिष्टुप्; २, ५, ६ आर्षीत्रिष्टुप्; ३, ४ विराट्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

अथ एकोनविंशो वर्गः ॥ १९ ॥

प्र क्षो॑दसा धायसा सस्र॒ एषा सर॑स्वती धरु॒णमा॑यसी॒ पूः ।
प्र॒बा॒बधा॑ना र॒थ्ये॑व याति॒ विश्वा॑ अ॒पो म॑हि॒ना सिन्धु॑र॒न्याः ॥ १ ॥
एका॑चेत॒त्सर॑स्वती न॒दीनां॑ शुचि॒र्यती॑ गिरि॒भ्य आ स॑मु॒द्रात् ।
रा॒यश्चे॑तन्ती॒ भुव॑नस्य॒ भूरे॑र्घृ॒तं पयो॑ दुदुह्रे॒ नाह्न्या॑य ॥ २ ॥
स वा॑वृधे॒ नर्यो॒ योष॑णासु॒ वृषा॒ शिशु॑र्वृष॒भो य॒ज्ञिया॑सु ।
स वा॒जिनं॑ मघवद्भ्यो दधाति॒ वि सा॒तये॑ त॒न्वं॑ मामृजीत ॥ ३ ॥
उ॒त स्या नः॑ सर॑स्वती जु॒षा॒णोप॑ श्रवत्सु॒भगा॑ य॒ज्ञे अ॒स्मिन् ।
मि॒तज्ञु॑भिर्नम॒स्यै॑रिया॒ना रा॒या यु॒जा चि॑दुत्त॒रा सखि॑भ्यः ॥ ४ ॥
इ॒मा जु॒ह्वा॑ना युष्मदा नमो॑भिः प्रति॒ स्तोमं॑ सरस्वति जुषस्व ।
तव॒ शर्म॑न्प्रि॒यत॑मे दधा॒ना उप॑ स्थेयाम शर॒णं न वृ॒क्षम् ॥ ५ ॥
अ॒यमु॑ ते सरस्वति॒ वसि॑ष्ठो॒ द्वारा॑वृतस्य सु॒भगे॒ व्या॑वः ।
वर्धा॑ शुभ्रे स्तु॒वते रा॑सि॒ वाजा॑न्यू॒यं पा॑त स्व॒स्तिभिः॑ सदा॑ नः ॥ ६ ॥

[९६] षण्णवतितमं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—१-३ सरस्वती; ४-६ सरस्वान् ॥ छन्दः—१ आर्चीभुरिग्बृहती; २ आर्षीभुरिग्बृहती; ३ निचृत्पङ्क्तिः; ४, ५ निचृद्गायत्री; ६ आर्षीगायत्री ॥ स्वरः—१, २ मध्यमः; ३ पञ्चमः; ४-६ षड्जः ॥

अथ विंशो वर्गः ॥ २० ॥

बृह॒दु गा॑यिषे॒ वचो॑ऽसु॒र्यां॑ न॒दीना॑म् ।
सर॑स्वतीमिन्महया सुवृ॒क्तिभि॒ः स्तोमै॑र्वसिष्ठ रोद॒सी ॥ १ ॥
उ॒भे यत्ते॑ महि॒ना शु॑भ्रे अ॒न्धसी॑ अधिक्षि॒यन्ति॒ पूर॑वः ।
सा नो॑ बोध्यवित्री म॒रुत्स॑खा॒ चोद॒ राधो॑ म॒घोना॑म् ॥ २ ॥
भ॒द्रमि॒द्भद्रा कृ॑णव॒त्सर॑स्वत्यकवा॒री चेत॑ति वा॒जिनी॑वती ।
गृ॒णा॒ना ज॑मदग्नि॒वत्स्तु॑वा॒ना च॑ वसिष्ठ॒वत् ॥ ३ ॥
ज॒नी॒यन्तो॒ न्वग्र॑वः पु॒त्रीय॑न्तः सु॒दान॑वः । सर॑स्वन्तं हवामहे ॥ ४ ॥
ये ते॑ सरस्व ऊ॒र्मयो॒ मधु॑मन्तो घृत॒श्चुतः॑ । तेभि॑र्नोऽवि॒ता भ॑व ॥ ५ ॥
पी॒पि॒वांस॑ सर॑स्वतः॒ स्तनं॑ यो वि॒श्वद॑र्शतः । भक्षी॑महि प्र॒जामिष॑म् ॥ ६ ॥

[९७] सप्तनवतितमं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—१ इन्द्रः; २, ४-८ बृहस्पतिः; ३, ९ इन्द्राब्रह्मणस्पती; १० इन्द्राबृहस्पती ॥ छन्दः—१ आर्षीत्रिष्टुप्; २, ४, ७ विराट्त्रिष्टुप्; ३, ५, ६, ८-१० निचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

अथ एकविंशो वर्गः ॥ २१ ॥

य॒ज्ञे दि॒वो नृष॑दने पृथि॒व्या नरो॒ यत्र॑ देव॒यवो॒ मद॑न्ति ।
इन्द्रा॑य॒ यत्र॒ सव॑नानि सु॒न्वे गम॒न्मदा॑य प्रथ॒मं व॑यश्च ॥ १ ॥
आ दैव्या॑ वृणीमहेऽवां॑सि बृ॒हस्पति॑र्नो म॒ह आ स॑खा॒यः ।
यथा॒ भवे॑म मी॒ळ्हुषे॒ अना॑गा॒ यो नो॑ दा॒ता प॑रा॒वतः॑ पि॒तेव॑ ॥ २ ॥
तमु॒ ज्येष्ठं॑ नम॑सा हु॒विर्भिः॑ सु॒शेव॑ं ब्रह्मा॑ण॒स्पति॑ गृणीषे ।
इन्द्रं॑ श्लो॒को॒ महि॒ दैव्यः॑ सिषक्तु॒ यो ब्रह्मा॑णो दे॒वकृ॑तस्य॒ राजा॑ ॥ ३ ॥
स आ नो॒ योनिं॑ सदतु॒ प्रेष्ठो॑ बृ॒हस्पति॑र्वि॒श्ववा॑रो॒ यो अ॒स्ति॑ ।
कामो॑ रा॒यः सु॒वीर्य॑स्य॒ तं दा॒त्पर्षन्नो॒ अति॑ स॒श्चतो॒ अरि॑ष्टान् ॥ ४ ॥
तमा नो॑ अ॒र्कम॒मृता॑य जु॒ष्टमि॒मे धा॑सु॒रमृ॑ताः॒ पुरा॒जाः ।
शुचि॑क्रन्दं य॒जतं॒ पस्त्या॑नां बृ॒हस्पति॑मन॒र्वाणं॑ हुवेम ॥ ५ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अथ द्वाविंशो वर्गः ॥ २२ ॥

तं शग्मासो॑ अरु॒षासो॒ अश्वा॒ बृह॒स्पतिं॑ सह॒वाहो॑ वहन्ति।
सह॑श्चि॒द्यस्य॒ नील॑वत्स॒धस्थं॒ नभो॒ न रू॒पम॑रु॒षं वसा॑नाः ॥ ६ ॥
स हि शुचिः॑ श॒तप॑त्रः॒ स शु॒न्ध्युर्हिर॑ण्यवाशीरिषि॒रः स्व॒र्षाः।
बृह॒स्पतिः॒ स स्वा॑वे॒श ऋ॒ष्वः पु॒रू सखि॑भ्य आसु॒तिं करि॑ष्ठः ॥ ७ ॥
दे॒वी दे॒वस्य॒ रोद॑सी॒ जनि॑त्री॒ बृह॒स्पतिं॑ वावृधतुर्महि॒त्वा।
द॒क्षाय्या॑य दक्षता सखायः॒ कर॒द् ब्रह्म॑णे सु॒तरा॑ सुगा॒धा ॥ ८ ॥
इ॒यं वां॑ ब्रह्मणस्पते सुवृ॒क्तिर्ब्रह्मेन्द्रा॑य व॒ज्रिणे॑ अकारि ।
अ॒वि॒ष्टं धियो॑ जिगृ॒तं पुरं॑धीर्जज॒स्तम॒र्यो व॒नुषा॒मरा॑तीः ॥ ९ ॥
बृह॑स्पते यु॒वमिन्द्र॑श्च॒ वस्वो॑ दि॒व्यस्ये॑शाथे उ॒त पार्थि॑वस्य।
ध॒त्तं र॒यिं स्तु॑व॒ते की॒रये॑ चिद्यू॒यं पा॑त स्व॒स्तिभिः॒ सदा॑ नः ॥ १० ॥

[९८] अष्टनवतितमं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—१-६ इन्द्रः; ७ इन्द्राबृहस्पती ॥ छन्दः—१, २, ६, ७ निचृत्त्रिष्टुप्; ३ विराट्त्रिष्टुप्; ४, ५ त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

अथ त्रयविंशो वर्गः ॥ २३ ॥

अध्व॑र्यवोऽरु॒णं दु॒ग्धमं॒शुं जु॒होत॑न वृष॒भाय॑ क्षिती॒नाम् ।
गौ॒राद्वेदी॑याँ अव॒पान॒मिन्द्रो॑ वि॒श्वाहेद्या॑ति सु॒तसो॑ममि॒च्छन् ॥ १ ॥
यद्द॑धि॒षे प्र॒दिवि॒ चार्वन्नं॑ दि॒वेदि॑वे पी॒तिमिद॑स्य वक्षि ।
उ॒त ह॒दोत मन॑सा जुषा॒ण उ॒शन्नि॑न्द्र॒ प्रस्थि॑तान्पाहि॒ सोमा॑न् ॥ २ ॥
ज॒ज्ञा॒नः सोमं॒ सह॑से पपाथ॒ प्र ते॑ मा॒ता म॑हि॒मान॑मुवाच ।
एन्द्र॑ पप्राथो॒र्व१॒॑न्तरि॑क्षं यु॒धा दे॒वेभ्यो॒ वरि॑वश्चकर्थ ॥ ३ ॥
यद्यो॒धया॑ मह॒तो मन्य॑माना॒न्त्साक्षा॑म॒ तान्बा॒हुभिः॒ शाश॑दानान्।
यद्वा॒ नृभि॒र्वृत॑ इन्द्राभि॒युध्या॒स्तं त्वया॒जिं सौ॑श्रव॒सं ज॑येम ॥ ४ ॥
प्रेन्द्र॑स्य वोचं प्रथ॒मा कृ॒तानि॒ प्र नूत॑ना म॒घवा॒ या च॒कार॑ ।
य॒देददे॑वी॒रस॑हिष्ट मा॒या अथा॑भव॒त्केव॑लः॒ सोमो॑ अस्य ॥ ५ ॥
तवे॒दं विश्व॑म॒भितः॑ पश॒व्यं१॒॑ यत्पश्य॑सि॒ चक्ष॑सा॒ सूर्य॑स्य ।
गवा॑मसि॒ गोप॑ति॒रेक॑ इन्द्र भक्षी॒महि॑ ते॒ प्रय॑तस्य॒ वस्वः॑ ॥ ६ ॥
बृह॑स्पते यु॒वमिन्द्र॑श्च॒ वस्वो॑ दि॒व्यस्ये॑शाथे उ॒त पार्थि॑वस्य ।
ध॒त्तं र॒यिं स्तु॑व॒ते की॒रये॑ चिद्यू॒यं पा॑त स्व॒स्तिभिः॒ सदा॑ नः ॥ ७ ॥

[९९] नवनवतितमं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—१-३, ७ विष्णुः; ४-६ इन्द्राविष्णू ॥ छन्दः—१, ६ विराट् त्रिष्टुप्; २, ३ त्रिष्टुप्; ४, ५, ७ निचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

अथ चतुर्विंशो वर्गः ॥ २४ ॥

प॒रो मात्र॑या त॒न्वा॑ वृधान॒ न ते॑ महि॒त्वमन्व॑श्नुवन्ति।
उ॒भे ते॑ विद्म॒ रज॑सी पृथि॒व्या विष्णो॑ देव॒ त्वं प॑र॒मस्य॑ वित्से ॥ १ ॥
न ते॑ विष्णो॒ जाय॑मानो॒ न जा॒तो देव॑ महि॒म्नः पर॒मन्त॑माप।
उद॑स्तभ्ना॒ नाक॑मृ॒ष्वं बृ॒हन्तं॑ दा॒धर्थ॒ प्राचीं॑ क॒कुभं॑ पृथि॒व्याः ॥ २ ॥
इरा॑वती धेनु॒मती॒ हि भू॒तं सू॑यव॒सिनी॒ मनु॑षे दश॒स्या।
व्य॑स्तभ्ना॒ रोद॑सी विष्णवे॒ते दा॒धर्थ॑ पृथि॒वीम॒भितो॑ म॒यूखैः॑ ॥ ३ ॥
उ॒रुं य॒ज्ञाय॑ चक्रथुरु लो॒कं ज॒नय॑न्ता॒ सूर्य॑मु॒षास॑म॒ग्निम्।
दास॑स्य चिद् वृषशि॒प्रस्य॑ मा॒या ज॒घ्नथु॑र्नरा पृत॒नाज्ये॑षु ॥ ४ ॥
इन्द्रा॑विष्णू दृंहि॒ताः शम्ब॑रस्य॒ नव॒ पुरो॑ नव॒तिं च॑ श्नथिष्टम्।
श॒तं व॒र्चिनः॑ स॒हस्रं॑ च सा॒कं ह॒थो अ॑प्र॒त्यसु॑रस्य वी॒रान् ॥ ५ ॥
इ॒यं म॑नी॒षा बृ॑ह॒ती बृ॒हन्तो॑रुक्र॒मा त॒वसा॑ व॒र्धय॑न्ती।
र॒रे वां॒ स्तोमं॑ वि॒दथे॑षु विष्णो॒ पिन्व॑त॒मिषो॑ वृ॒जने॑ष्विन्द्र ॥ ६ ॥
वष॑ट् ते विष्णवा॒स आ कृ॑णोमि॒ तन्मे॑ जुषस्व शिपिविष्ट ह॒व्यम्।
वर्ध॑न्तु त्वा सुष्टु॒तयो॒ गिरो॑ मे यू॒यं पा॑त स्व॒स्तिभिः॒ सदा॑ नः ॥ ७ ॥

[१००] शततमं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—विष्णुः ॥ छन्दः—१, २, ५-७ निचृत्त्रिष्टुप्; ३ विराट्त्रिष्टुप्; ४ आर्षीत्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

अथ पञ्चविंशो वर्गः ॥ २५ ॥

नू मर्तो॑ दयते सनि॒ष्यन्यो विष्ण॑व उरुगा॒याय॒ दाश॑त्।
प्र यः स॒त्राचा॒ मन॑सा॒ यजा॑त ए॒ताव॑न्तं॒ नर्य॑मा॒विवा॑सात् ॥ १ ॥
त्वं वि॑ष्णो सुम॒तिं वि॒श्वज॑न्या॒मप्र॑युतामेवयावो म॒तिं दाः॑।
पर्चो॒ यथा॑ नः सुवि॒तस्य॒ भूरे॒रश्वा॑वतः पुरुश्च॒न्द्रस्य॑ रा॒यः ॥ २ ॥
त्रिर्दे॒वः पृ॑थि॒वीमे॒ष ए॒तां वि च॑क्रमे श॒तर्च॑सं महि॒त्वा।
प्र विष्णु॑रस्तु त॒वस॒स्तवी॑यान्त्वे॒षं ह्य॑स्य॒ स्थवि॑रस्य॒ नाम॑ ॥ ३ ॥
वि च॑क्रमे पृथि॒वीमे॒ष ए॒तां क्षेत्रा॑य॒ विष्णु॒र्मनु॑षे दश॒स्यन्।
ध्रु॒वासो॑ अस्य की॒रयो॒ जना॑स उरुक्षि॒तिं सु॒जनि॑मा चकार ॥ ४ ॥
प्र तत्ते॑ अ॒द्य शि॑पिविष्ट॒ नामा॒र्यः शं॑सामि व॒युना॑नि विद्वान्।
तं त्वा॑ गृणामि त॒वस॒मत॑व्या॒न्क्षय॑न्तम॒स्य रज॑सः परा॒के ॥ ५ ॥
किमित्ते॑ विष्णो परि॒चक्ष्यं॑ भू॒त्प्र यद्ब॑व॒क्षे शि॑पिवि॒ष्टो अ॑स्मि।
मा वर्पो॑ अ॒स्मदप॑ गूह ए॒तद्यद॒न्यरू॑पः समि॒थे ब॒भूथ॑ ॥ ६ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

वषट् ते विष्णवास आ कृणोमि तन्मे जुषस्व शिपिविष्ट हव्यम्।
वर्धन्तु त्वा सुष्टुतयो गिरो मे यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ७ ॥
इति पञ्चमाष्टके षष्ठोऽध्यायः ॥

अथ सप्तमोऽध्यायः

[१०१] एकोत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः कुमारो वाग्नेयः ॥ देवता—पर्जन्यः ॥ छन्दः—१, ६ त्रिष्टुप्; २, ४, ५ विराट्त्रिष्टुप्; ३ निचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

अथ प्रथमो वर्गः ॥ १ ॥

तिस्रो वाचः प्र वदु ज्योतिरग्रा या एतदुह्रे मधुदोघमूधः।
स वत्सं कृण्वन्गर्भमोषधीनां सद्यो जातो वृषभो रोरवीति ॥ १ ॥
यो वर्धान ओषधीनां यो अपां यो विश्वस्य जगतो देव ईशे।
स त्रिधातु शरणं शर्म यंसत्त्रिवरुथं ज्योतिः स्वभिष्ट्यस्मे ॥ २ ॥
स्तरीरु त्वद्वदति सूत उ त्वद्यथावशं तन्वं चक्र एषः।
पितुः पयः प्रति गृभ्णाति माता तेन पिता वर्धते तेन पुत्रः ॥ ३ ॥
यस्मिन्विश्वानि भुवनानि तस्थुस्तिस्रो द्यावस्त्रेधा सस्रुरापः।
त्रयः कोशास उपसेचनासो मध्वः श्चोतन्त्यभितो विरप्शम् ॥ ४ ॥
इदं वचः पर्जन्याय स्वराजे हृदो अस्त्वन्तरं तज्जुजोषत्।
मयोभुवो वृष्टयः सन्त्वस्मे सुपिप्पला ओषधीर्देवगोपाः ॥ ५ ॥
स रेतोधा वृषभः शश्वतीनां तस्मिन्नात्मा जगतस्तस्थुषश्च।
तन्म ऋतं पातु शतशारदाय यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ६ ॥

[१०२] द्व्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः कुमारो वाग्नेयः ॥ देवता—पर्जन्यः ॥ छन्दः—१ गायत्री; २ पादनिचृद्गायत्री; ३ निचृद्गायत्री ॥ स्वरः—धैवतः ॥

अथ द्वितीयो वर्गः ॥ २ ॥

पर्जन्याय प्र गायत दिवस्पुत्राय मीळ्हुषे। स नो यवसमिच्छतु ॥ १ ॥
यो गर्भमोषधीनां गवां कृणोत्यर्वताम्। पर्जन्यः पुरुषीणाम् ॥ २ ॥
तस्मा इदास्ये हविर्जुहोता मधुमत्तमम्। इळां नः संयतं करत् ॥ ३ ॥

[१०३] त्र्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—मण्डूकाः ॥ छन्दः—१ आर्ष्यनुष्टुप्; २, ६-८, १० आर्षी-त्रिष्टुप्; ३, ४ निचृत्त्रिष्टुप्; ५, ९ विराट्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१ गान्धारः; ३-१० धैवतः ॥

अथ तृतीयो वर्गः ॥ ३ ॥

संवत्सरं शशयाना ब्राह्मणा व्रतचारिणः।
वाचं पर्जन्यजिन्वितां प्र मण्डूका अवादिषुः ॥ १ ॥
दिव्या आपो अभि यदेनमायन्दृतिं न शुष्कं सरसी शयानम्।
गवामह न मायुर्वत्सिनीनां मण्डूकानां वग्नुरत्रा समेति ॥ २ ॥
यदीमेनाँ उशतो अभ्यवर्षीत्तृष्यावतः प्रावृष्यागतायाम्।
अख्खलीकृत्या पितरं न पुत्रो अन्यो अन्यमुप वदन्तमेति ॥ ३ ॥
अन्यो अन्यमनु गृभ्णात्येनोरपां प्रसर्गे यदमन्दिषाताम्।
मण्डूको यदभिवृष्टः कनिष्क्रन्पृश्निः संपृक्ते हरितेन वाचम् ॥ ४ ॥
यदेषामन्यो अन्यस्य वाचं शाक्तस्येव वदति शिक्षमाणः।
सर्वं तदेषां समृधेव पर्व यत्सुवाचो वदथनाध्यप्सु ॥ ५ ॥

अथ चतुर्थो वर्गः ॥ ४ ॥

गोमायुरेको अजमायुरेकः पृश्निरेको हरित एक एषाम्।
समानं नाम बिभ्रतो विरूपाः पुरुत्रा वाचं पिपिशुर्वदन्तः ॥ ६ ॥
ब्राह्मणासो अतिरात्रे न सोमे सरो न पूर्णमभितो वदन्तः।
संवत्सरस्य तदहः परि ष्ठ यन्मण्डूकाः प्रावृषीणं बभूव ॥ ७ ॥
ब्राह्मणासः सोमिनो वाचमक्रत ब्रह्म कृण्वन्तः परिवत्सरीणम्।
अध्वर्यवो घर्मिणः सिष्विदाना आविर्भवन्ति गुह्या न के चित् ॥ ८ ॥
देवहितिं जुगुपुर्द्वादशस्य ऋतुं नरो न प्र मिनन्त्येते।
संवत्सरे प्रावृष्यागतायां तप्ता घर्मा अश्नुवते विसर्गम् ॥ ९ ॥
गोमायुरदादजमायुरदात्पृश्निरदाद्धरितो नो वसूनि।
गवां मण्डूका ददतः शतानि सहस्रसावे प्र तिरन्त आयुः ॥ १० ॥

[१०४] चतुरुत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—१-७, १५, २५ इन्द्रासोमौ रक्षोहणौ; ८, १६, १९-२२, २४ इन्द्रः; ९, १२, १३ सोमः; १०, १४ अग्निः; ११ देवाः; १७ ग्रावाणः; १८ मरुतः; २३[१] वसिष्ठः; २३[२] पृथिव्यन्तरिक्षे ॥ छन्दः—१, ४, ६, ७ विराड्जगती; २ आर्षी-जगती; ३, ५, १८, २१ निचृज्जगती; २३ आर्चीभुरिग्जगती; ८, १०, ११, १३-१५, १७ निचृत्त्रिष्टुप्; ९ आर्षीत्रिष्टुप्; १२, १६ विराट्त्रिष्टुप्; १९, २०, २२ त्रिष्टुप्; २४ याजुषीविराट्त्रिष्टुप्; २५ पादनिचृदनुष्टुप् ॥ स्वरः—१-७, १८, २१, २३ निषादः; ८-१७, १९, २०, २२, २४ धैवतः; २५ गान्धारः ॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अथ पञ्चमो वर्गः ॥ ५ ॥

इन्द्रासोमा तपतं रक्ष उब्जतं न्यर्पयतं वृषणा तमोवृधः।
परा शृणीतमचितो न्योषतं हतं नुदेथां नि शिशीतमत्रिणः ॥ १ ॥
इन्द्रासोमा समघशंसमभ्यघं तपुर्यंयस्तु चरुरग्निवाँइव ।
ब्रह्मद्विषे क्रव्यादे घोरचक्षसे द्वेषो धत्तमनवायं किमीदिने ॥ २ ॥
इन्द्रासोमा दुष्कृतो वज्रे अन्तर्नारम्भणे तमसि प्र विध्यतम्।
यथा नातः पुनरेकश्चनोदयत्तद्वामस्तु सहसे मन्युमच्छवः ॥ ३ ॥
इन्द्रासोमा वर्तयतं दिवो वधं सं पृथिव्या अघशंसाय तर्हणम्।
उत्तक्षतं स्वर्यं पर्वतेभ्यो येन रक्षो वावृधानं निजूर्वथः ॥ ४ ॥
इन्द्रासोमा वर्तयतं दिवस्पर्यग्नितप्तेभिर्युवमश्महन्मभिः ।
तपुर्वधेभिरजरेभिरत्रिणो नि पर्शाने विध्यतं यन्तु निस्वरम् ॥ ५ ॥

अथ षष्ठो वर्गः ॥ ६ ॥

इन्द्रासोमा परि वां भूतु विश्वत इयं मतिः कक्ष्याश्वेव वाजिना।
यां वां होत्रां परिहिनोमि मेधयेमा ब्रह्माणि नृपतीव जिन्वतम् ॥ ६ ॥
प्रति स्मरेथां तुजयद्भिरेवैर्हतं द्रुहो रक्षसो भङ्गुरावतः ।
इन्द्रासोमा दुष्कृते मा सुगं भूद्यो नः कदा चिदभिदासति द्रुहा ॥ ७ ॥
यो मा पाकेन मनसा चरन्तमभिचष्टे अनृतेभिर्वचोभिः ।
आपइव काशिना संगृभीता असन्नस्त्वासत इन्द्र वक्ता ॥ ८ ॥
ये पाकशंसं विहरन्त एवैर्ये वा भद्रं दूषयन्ति स्वधाभिः।
अहये वा तान्प्रददातु सोम आ वा दधातु निर्ऋतेरुपस्थे ॥ ९ ॥
यो नो रसं दिप्सति पित्वो अग्ने यो अश्वानां यो गवां यस्तनूनाम्।
रिपुः स्तेनः स्तेयकृद्भ्रमेतु नि ष हीयतां तन्वा३ तना च ॥ १० ॥

अथ सप्तमो वर्गः ॥ ७ ॥

परः सो अस्तु तन्वा३ तना च तिस्रः पृथिवीरधो अस्तु विश्वाः।
प्रति शुष्यतु यशो अस्य देवा यो नो दिवा दिप्सति यश्च नक्तम् ॥ ११ ॥
सुविज्ञानं चिकितुषे जनाय सच्यासच्च वचसी पस्पृधाते।
तयोर्यत्सत्यं यतरदृजीयस्तदित्सोमोऽवति हन्त्यासत् ॥ १२ ॥
न वा उ सोमो वृजिनं हिनोति न क्षत्रियं मिथुया धारयन्तम्।
हन्ति रक्षो हन्त्यासद्वदन्तमुभाविन्द्रस्य प्रसितौ शयाते ॥ १३ ॥
यदि वाहमनृतदेव आस मोघं वा देवाँ अप्यूहे अग्ने।
किमस्मभ्यं जातवेदो हृणीषे द्रोघवाचस्ते निर्ऋथं सचन्ताम् ॥ १४ ॥
अद्या मुरीय यदि यातुधानो अस्मि यदि वायुस्ततप पूरुषस्य।
अधा स वीरैर्दशभिर्वि यूया यो मा मोघं यातुधानेत्याह ॥ १५ ॥

अथ अष्टमो वर्गः ॥ ८ ॥

यो मायातुं यातुधानेत्याह यो वा रक्षाः शुचिरस्मीत्याह।
इन्द्रस्तं हन्तु महता वधेन विश्वस्य जन्तोरधमस्पदीष्ट ॥ १६ ॥
प्र या जिगाति खर्गलेव नक्तमप द्रुहा तन्वं गूहमाना।
वव्राँ अनन्ताँ अव सा पदीष्ट ग्रावाणो घ्नन्तु रक्षस उपब्दैः ॥ १७ ॥
वि तिष्ठध्वं मरुतो विक्षिवा इच्छत गृभायत रक्षसः सं पिनष्टन।
वयो ये भूत्वी पतयन्ति नक्तभिर्ये वा रिपो दधिरे देवे अध्वरे ॥ १८ ॥
प्र वर्तय दिवो अश्मानमिन्द्र सोमशितं मघवन्त्सं शिशाधि।
प्राक्तादपाक्तादधरादुदक्तादभि जहि रक्षसः पर्वतेन ॥ १९ ॥
एत उ त्ये पतयन्ति श्वयातव इन्द्रं दिप्सन्ति दिप्सवोऽदाभ्यम्।
शिशीते शक्रः पिशुनेभ्यो वधं नूनं सृजदशनिं यातुमद्भ्यः ॥ २० ॥

अथ नवमो वर्गः ॥ ९ ॥

इन्द्रो यातूनामभवत्पराशरो हविर्मथीनामभ्याइविवासताम् ।
अभीदु शक्रः पर्शुर्यथा वनं पात्रेव भिन्दन्त्सत एति रक्षसः ॥ २१ ॥
उलूकयातुं शुशुलूकयातुं जहि श्वयातुमुत कोकयातुम् ।
सुपर्णयातुमुत गृध्रयातुं दृषदेव प्र मृण रक्ष इन्द्र ॥ २२ ॥
मा नो रक्षो अभि नड्यातुमावतामपोच्छतु मिथुना या किमीदिना।
पृथिवी नः पार्थिवात्पात्वंहसोऽन्तरिक्षं दिव्यात्पात्वस्मान् ॥ २३ ॥
इन्द्र जहि पुमांसं यातुधानमुत स्त्रियं मायया शाशदानाम् ।
विग्रीवासो मूरदेवा ऋदन्तु मा ते दृशन्त्सूर्यमुच्चरन्तम् ॥ २४ ॥
प्रति चक्ष्व वि चक्ष्वेन्द्रश्च सोम जागृतम् ।
रक्षोभ्यो वधमस्यतमशनिं यातुमद्भ्यः ॥ २५ ॥

इति सप्तमं मण्डलम् ॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अथाष्टमं मण्डलम्

प्रथमोऽनुवाकः [१] प्रथमं सूक्तम्

ऋषिः—१-२ प्रगाथो घौरः काण्वो वा; ३-२९ मेधातिथिमेध्यातिथी काण्वौ; ३०-३२, ३३ आसङ्गः प्लायोगिः; ३४ शश्वत्याङ्गिरस्यासङ्गस्य पत्नी॥ देवता—१-२९ इन्द्रः; ३०-३३ आसङ्गस्य दानस्तुतिः; ३४ आसङ्गः॥ छन्दः—१ उपरिष्टाद्बृहती; २ आर्षीभुरिग्बृहती; ३, ७, १०, १४, १८, २१ विराड्बृहती; ४ आर्षी-स्वराड्बृहती; ५, ८, १५, १७, १९, २२, २५, ३१ निचृद्बृहती; ६, ९, ११, १२, २०, २४, २६, २७ आर्षीबृहती; १३ शङ्कुमतीबृहती; १६, २३, ३०, ३२ आर्चीभुरिग्बृहती; २८ आसुरी-स्वराड्निचृद्बृहती; २९ बृहती; ३३ त्रिष्टुप्; ३४ विराट्-त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१-३२ मध्यमः; ३३, ३४ धैवतः॥

अथ दशमो वर्गः॥ १०॥

मा चि॑द॒न्यद्वि शं॑सत॒ सखा॑यो॒ मा रि॑षण्यत ।
इन्द्र॒मित्स्तो॑ता॒ वृष॑णं॒ सचा॑ सु॒ते मुहु॑रु॒क्था च॑ शंसत ॥ १ ॥
अ॒व॒क्र॒क्षिणं॑ वृष॒भं य॑था॒जुरं॒ गां न च॑र्षणी॒सह॑म् ।
वि॒द्वेष॑णं सं॒वन॑नोभयंक॒रं मंहि॑ष्ठमुभया॒विन॑म् ॥ २ ॥
यच्चि॒द्धि त्वा॒ जना॑ इ॒मे नाना॒ हव॑न्त ऊ॒तये॑ ।
अ॒स्माकं॒ ब्रह्मे॒दमि॑न्द्र भूतु॒ तेऽहा॒ विश्वा॑ च॒ वर्ध॑नम् ॥ ३ ॥
वि त॑र्तूर्यन्ते मघवन्विप॒श्चितो॒ऽर्यो विपो॒ जना॑नाम् ।
उप॑ क्रमस्व पुरु॒रूप॒मा भ॑र॒ वाजं॒ नेदि॑ष्ठमू॒तये॑ ॥ ४ ॥
म॒हे च॒न त्वाम॑द्रिवः॒ परा॑ शु॒ल्काय॑ देयाम् ।
न स॒हस्रा॑य॒ नायुता॑य वज्रिवो॒ न श॒ताय॑ शतामघ ॥ ५ ॥

अथ एकादशो वर्गः॥ ११॥

वस्याँ॑ इन्द्रासि मे पि॒तुरु॒त भ्रातु॒रभु॑ञ्जतः ।
मा॒ता च॑ मे छदयथः स॒मा व॑सो वसुत्व॒नाय॒ राध॑से ॥ ६ ॥
क्वे॑यथ॒ क्वेद॑सि पुरु॒त्रा चि॒द्धि ते॒ मनः॑ ।
अल॑र्षि युध्म खजकृत्पुरन्दर॒ प्र गा॑य॒त्रा अ॑गासिषुः ॥ ७ ॥
प्रास्मै॑ गाय॒त्रम॑र्चत वा॒वातु॒र्यः पु॑रन्द॒रः ।
याभिः॑ का॒ण्वस्योप॑ ब॒र्हिरा॒सदं॒ यास॑द्व॒ज्री भि॒नत्पुरः॑ ॥ ८ ॥
ये ते॒ सन्ति॑ दश॒ग्विनः॑ श॒तिनो॒ ये स॑ह॒स्त्रिणः॑ ।
अश्वा॑सो॒ ये ते॒ वृष॑णो रघु॒द्रुव॒स्तेभि॑र्न॒स्तूय॒मा ग॑हि ॥ ९ ॥

आ त्व१॒॑द्य स॑ब॒र्दुघां॑ हु॒वे गा॑य॒त्रवे॑पसम् ।
इन्द्रं॑ धे॒नुं सु॒दुघा॒मन्या॒मिष॑मु॒रुधा॑रामरं॒कृत॑म् ॥ १० ॥

अथ द्वादशो वर्गः॥ १२॥

यत्तु॒दत्सूर॒ एत॑शं व॒ङ्कू वात॑स्य प॒र्णिना॑ ।
वह॒त्कुत्स॑मार्जुने॒यं श॒तक्र॑तुः॒ त्सर॑द्गन्ध॒र्वमस्तृ॑तम् ॥ ११ ॥
य ऋ॒ते चि॑दभि॒श्रिषः॑ पु॒रा ज॒त्रुभ्य॑ आ॒तृदः॑ ।
संधा॑ता स॒न्धिं म॒घवा॑ पुरू॒वसु॒रिष्क॑र्ता॒ विह्रु॑तं॒ पुनः॑ ॥ १२ ॥
मा भू॑म॒ निष्ट्या॑इ॒वेन्द्र॒ त्वदर॑णाइव ।
वना॑नि॒ न प्र॑जहि॒तान्य॑द्रिवो दु॒रोषा॑सो अमन्महि ॥ १३ ॥
अम॑न्म॒हीद॑ना॒शवो॑ऽनुग्रास॑श्च वृत्रहन् ।
स॒कृत्सु ते॑ मह॒ता शू॑र॒ राध॒सानु॒ स्तोमं॑ मुदीमहि ॥ १४ ॥
यदि॒ स्तोमं॒ मम॒ श्रव॑द॒स्माक॒मिन्द्र॒मिन्द॑वः ।
ति॒रः प॒वित्रं॑ ससृ॒वांस॑ आ॒शवो॒ मन्द॑न्तु तुग्र्या॒वृधः॑ ॥ १५ ॥

अथ त्रयोदशो वर्गः॥ १३॥

आ त्व१॒॑द्य स॒धस्तु॑तिं वा॒वातुः॒ सख्यु॒रा ग॑हि ।
उप॑स्तुतिर्म॒घोनां॒ प्र त्वा॑व॒त्वधा॑ ते वश्मि सुष्टु॒तिम् ॥ १६ ॥
सोता॒ हि सोमम॒द्रि॑भि॒रेमे॑नम॒प्सु धा॑वत ।
ग॒व्या वस्त्रे॑व वा॒सय॑न्त॒ इन्नरो॒ निर्धु॑क्षन्व॒क्षणा॑भ्यः ॥ १७ ॥
अध॒ ज्मो अध॑ वा दि॒वो बृ॑ह॒तो रो॑च॒नादधि॑ ।
अ॒या व॑र्धस्व त॒न्वा॑ गि॒रा ममा जा॒ता सु॑क्रतो पृण ॥ १८ ॥
इन्द्रा॑य॒ सु म॒दिन्त॑मं॒ सोमं॑ सोता॒ वरे॑ण्यम् ।
श॒क्र ए॑णं पीपय॒द्विश्व॑या धि॒या हि॑न्वा॒नं न वा॑ज॒युम् ॥ १९ ॥
मा त्वा॒ सोम॑स्य॒ गल्द॑या॒ सदा॒ याच॑न्न॒हं गि॒रा ।
भूर्णिं॑ मृ॒गं न सव॑नेषु चुक्रुधं॒ क ईशा॑नं॒ न या॑चिषत् ॥ २० ॥

अथ चतुर्दशो वर्गः॥ १४॥

मदे॑नेषि॒तं मद॑मु॒ग्रमु॒ग्रेण॒ शव॑सा ।
विश्वे॑षां तरु॒तारं॑ मद॒च्युतं॒ मदे॒ हि ष्मा॒ ददा॑ति नः ॥ २१ ॥
शेवा॑रे वार्या॑ पु॒रु दे॒वो मर्ता॑य दा॒शुषे॑ ।
स सु॑न्व॒ते च॑ स्तुव॒ते च॑ रासते वि॒श्वगू॑र्तो अरिष्टु॒तः ॥ २२ ॥
एन्द्र॑ याहि॒ मत्स्व॑ चि॒त्रेण॑ देव॒ राध॑सा ।
सरो॒ न प्रा॑स्युदरं॒ सपी॑तिभि॒रा सोमे॑भिरु॒रु स्फि॒रम् ॥ २३ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

आ त्वा सहस्रमा शतं युक्ता रथे हिरण्यये ।
ब्रह्मयुजो हरय इन्द्र केशिनो वहन्तु सोमपीतये ॥ २४ ॥
आ त्वा रथे हिरण्यये हरी मयूरशेप्या ।
शितिपृष्ठा वहतां मध्वो अन्धसो विवक्षणस्य पीतये ॥ २५ ॥

अथ पञ्चदशो वर्गः ॥ १५ ॥

पिबा त्वस्य गिर्वणः सुतस्य पूर्वपाइव ।
परिष्कृतस्य रसिन इयर्मासुतिश्चारुर्मदाय पत्यते ॥ २६ ॥
य एको अस्ति दंसना महाँ उग्रो अभि व्रतैः ।
गमत्स शिप्री न स योषदा गमद्धवं न परि वर्जति ॥ २७ ॥
त्वं पुरं चरिष्णवं वधैः शुष्णस्य सं पिणक् ।
त्वं भा अनु चरो अध द्विता यदिन्द्र हव्यो भुवः ॥ २८ ॥
मम त्वा सूर उदिते मम मध्यन्दिने दिवः ।
मम प्रपित्वे अपिशर्वरे वसवा स्तोमासो अवृत्सत ॥ २९ ॥
स्तुहि स्तुहीदेते घा ते मंहिष्ठासो मघोनाम् ।
निन्दितारश्चः प्रपथी परमज्या मघस्य मेध्यातिथे ॥ ३० ॥

अथ षोडशो वर्गः ॥ १६ ॥

आ यदश्वान्वनन्वतः श्रद्धयाहं रथे रुहम् ।
उत वामस्य वसुनश्चिकेतति यो अस्ति याद्वः पशुः ॥ ३१ ॥
य ऋज्रा मह्यं मामहे सह त्वचा हिरण्यया ।
एष विश्वान्यभ्यस्तु सौभगासङ्गस्य स्वनद्रथः ॥ ३२ ॥
अध प्लायोगिरतिं दासदन्यानासङ्गे अग्ने दशभिः सहस्रैः ।
अधोक्षणो दश मह्यं रुशन्तो नळाइव सरसो निरतिष्ठन् ॥ ३३ ॥
अन्वस्य स्थूरं ददृशे पुरस्तादनस्थ ऊरुरवरम्बमाणः ।
शश्वती नार्यभिचक्ष्याह सुभद्रमर्य भोजनं बिभर्षि ॥ ३४ ॥

[२] द्वितीयं सूक्तम्

ऋषिः—१-४० मेधातिथिः काण्वः प्रियमेधश्चाङ्गिरसः; ४१, ४२ मेधातिथिः ॥ देवता—१-४० इन्द्रः; ४१, ४२ विभिन्दोर्दानस्तुतिः ॥ छन्दः—१-३, ५, ६, ९, ११, १२, १४, १६-१८, २२, २७, २९, ३१, ३३, ३५, ३७-३९ आर्षी-गायत्री; ४, १३, १५, १९-२१, २३-२६, ३०, ३२, ३६, ४२ आर्षी-निचृद्गायत्री; ७, ८, १०, ३४, ४० आर्षीविराड्गायत्री; ४१ पाद-निचृद्गायत्री; २८ आर्चीस्वराडनुष्टुप् ॥ स्वरः षड्जः; १-२७, २९-४२ षड्जः; २८ गान्धारः ॥

अथ सप्तदशो वर्गः ॥ १७ ॥

इदं वसो सुतमन्धः पिबा सुपूर्णमुदरम् । अनाभयिरिमा ते ॥ १ ॥
नृभिर्धूतः सुतो अश्नैरव्यो वारैः परिपूतः । अश्वो न निक्तो नदीषु ॥ २ ॥
तं ते यवं यथा गोभिः स्वादुमकर्म श्रीणन्तः । इन्द्र त्वास्मिन्त्सधमादे ॥ ३ ॥
इन्द्र इत्सोमपा एक इन्द्रः सुतपा विश्वायुः । अन्तर्देवान्मर्त्याँश्च ॥ ४ ॥
न यं शुक्रो न दुराशीर्न तृप्रा उरुव्यचसम् । अप्रस्फुरन्तं सुहार्दम् ॥ ५ ॥

अथ अष्टादशो वर्गः ॥ १८ ॥

गोभिर्यदीमन्ये अस्मन्मृगं न व्रा मृगयन्ते । अभित्सरन्ति धेनुभिः ॥ ६ ॥
त्रय इन्द्रस्य सोमाः सुतासः सन्तु देवस्य । स्वे क्षये सुतपात्नः ॥ ७ ॥
त्रयः कोशासः श्चोतन्ति तिस्रश्चम्वः सुपूर्णाः । समाने अधि भार्मन् ॥ ८ ॥
शुचिरसि पुरुनिःष्ठाः क्षीरैर्मंध्यत आशीर्तः । दध्ना मन्दिष्ठः शूरस्य ॥ ९ ॥
इमे त इन्द्र सोमास्तीव्रा अस्मे सुतासः । शुक्रा आशिरं याचन्ते ॥ १० ॥

अथ एकोनविंशो वर्गः ॥ १९ ॥

ताँ आशिरं पुरोळाशमिन्द्रेमं सोमं श्रीणीहि । रेवन्तं हि त्वा शृणोमि ॥ ११ ॥
हृत्सु पीतासो युध्यन्ते दुर्मदासो न सुरायाम् । ऊधर्न नग्ना जरन्ते ॥ १२ ॥
रेवाँ इद्रेवतः स्तोता स्यात्त्वावतो मघोनः । प्रेदु हरिवः श्रुतस्य ॥ १३ ॥
उक्थं चन शस्यमानमगोरररिरा चिकेत । न गायत्रं गीयमानम् ॥ १४ ॥
मा नं इन्द्र पीयत्नवे मा शर्धते परा दाः । शिक्षा शचीवः शचीभिः ॥ १५ ॥

अथ विंशो वर्गः ॥ २० ॥

वयमु त्वा तदिदर्था इन्द्र त्वायन्तः सखायः । कण्वा उक्थेभिर्जरन्ते ॥ १६ ॥
न धेमन्यदा पपन वज्रिन्नपसो नविष्टौ । तवेदु स्तोमं चिकेत ॥ १७ ॥
इच्छन्ति देवाः सुन्वन्तं न स्वप्नाय स्पृहयन्ति । यन्ति प्रमादमतन्द्राः ॥ १८ ॥
ओ षु प्र याहि वाजेभिर्मा हृणीथा अभ्यस्मान् । महाँइव युवजानिः ॥ १९ ॥
मो ष्वद्य दुर्हणावान्त्सायं करदारे अस्मत् । अश्रीरइव जामाता ॥ २० ॥

अथ एकविंशो वर्गः ॥ २१ ॥

विद्मा ह्यस्य वीरस्य भूरिदावरीं सुमतिम् । त्रिषु जातस्य मनांसि ॥ २१ ॥
आ तू षिञ्च कण्वमन्तं न घा विद्म शवसानात् । यशस्तरं शतमूतेः ॥ २२ ॥
ज्येष्ठेन सोतरिन्द्राय सोमं वीराय शक्राय । भरा पिबन्नरीय ॥ २३ ॥
यो वेदिष्ठे अन्यथिष्वश्वावन्तं जरितृभ्यः । वाजं स्तोतृभ्यो गोमन्तम् ॥ २४ ॥
पन्यंपन्यमित्सोतार आ धावत मद्याय । सोमं वीराय शूराय ॥ २५ ॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अथ द्वाविंशो वर्गः ॥ २२ ॥

पाता॑ वृत्र॒हा सु॒तमा घा॑ गम॒न्नारे अ॒स्मत्। नि य॑मते श॒तमू॑तिः ॥ २६ ॥
एह हरी॑ ब्रह्म॒युजा॑ श॒ग्मा व॑क्षतः॒ सखा॑यम्। गी॒र्भिः श्रु॒तं गिर्व॑णसम् ॥ २७ ॥
स्वा॒दवः॒ सोमा॒ आ या॑हि श्री॒ताः सोमा॒ आ या॑हि ।
शिप्रि॒न्नृषी॑वः॒ शची॑वो॒ नायमच्छा॑ सध॒माद॑म् ॥ २८ ॥
स्तुत॑श्च॒ यास्त्वा॒ वर्ध॑न्ति म॒हे राध॑से नृ॒म्णाय॑। इन्द्र॑ का॒रिणं॑ वृ॒धन्तः॑ ॥ २९ ॥
गिर॑श्च॒ यास्ते॑ गिर्वाह उ॒क्था च॒ तुभ्यं॒ तानि॑। स॒त्रा द॑धि॒रे शवां॑सि ॥ ३० ॥

अथ त्रयोविंशो वर्गः ॥ २३ ॥

ए॒वेदे॒ष तु॑विकू॒र्मिर्वाजाँ॒ एको॒ वज्र॑हस्तः। स॒नादमृ॑क्तो दयते ॥ ३१ ॥
हन्ता॑ वृ॒त्रं दक्षि॑णे॒नेन्द्रः॑ पु॒रू पु॑रुहू॒तः। म॒हान्म॒हीभिः॒ शची॑भिः ॥ ३२ ॥
यस्मि॒न्विश्वा॑श्चर्ष॒णय॑ उ॒त च्यौ॒त्ना ज्रयां॑सि च। अनु॒ घेन्म॒न्दी म॒घोनः॑ ॥ ३३ ॥
ए॒ष ए॒तानि॑ चका॒रेन्द्रो॒ विश्वा॒ योऽति॑ शृ॒ण्वे। वा॒ज॒दावा॑ म॒घोना॑म् ॥ ३४ ॥
प्रभ॑र्ता॒ रथं॑ ग॒व्यन्त॑मपा॒काच्चि॒द्यमव॑ति। इ॒नो वसु॒ स हि वोळ्हा॑ ॥ ३५ ॥

अथ चतुर्विंशो वर्गः ॥ २४ ॥

सनि॑ता॒ विप्रो॒ अर्व॑द्भि॒र्हन्ता॑ वृ॒त्रं नृभिः॒ शूरः॑। स॒त्यो॑ऽवि॒ता वि॒धन्त॑म् ॥ ३६ ॥
यज॑ध्वैनं प्रियमेधा॒ इन्द्रं॑ स॒त्राचा॒ मन॑सा। यो भूत्सोमैः॑ स॒त्यम॑द्वा ॥ ३७ ॥
गा॒थश्र॑वसं॒ सत्प॑तिं॒ श्रव॑स्कामं पुरु॒त्मान॑म्। कण्वा॑सो गा॒त वा॒जिन॑म् ॥ ३८ ॥
य ऋ॒ते चि॒द्गास्प॒देभ्यो॒ दात्सखा॒ नृभ्यः॒ शची॑वान्। ये अ॑स्मि॒न्काम॒मश्रि॑यन् ॥ ३९ ॥
इ॒त्था धीव॑न्तमद्रिवः का॒ण्वं मेध्या॑तिथिम्। मे॒षो भू॒तो॒३॒॑ऽभि यन्नयः॑ ॥ ४० ॥
शिक्षा॑ विभिन्दो अस्मै च॒त्वार्य॒युता॒ दद॑त्। अ॒ष्टा प॒रः स॒हस्रा॑ ॥ ४१ ॥
उ॒त सु त्ये प॑यो॒वृधा॑ मा॒की रण॑स्य न॒प्त्या॑। ज॒नि॒त्व॒नाय॑ मामहे ॥ ४२ ॥

[३] तृतीयं सूक्तम्

ऋषिः—मेध्यातिथिः काण्वः ॥ देवता—१-२० इन्द्रः; २१-२४ पाकस्थाम्नः कौरयाणस्य दानस्तुतिः ॥ छन्दः—१ ककुम्मतीबृहती; २, १०, १४ सतःपङ्क्तिः; ३, ५, ७, ९, १९ निचृद्बृहती; ४, १२, १६, १८ निचृत्पङ्क्तिः; ६ भुरिक्पङ्क्तिः; ८ स्वराड् बृहती; ११, २१, भुरिगनुष्टुप्; १३ अनुष्टुप्; १५, २४ बृहती; १७ पथ्या बृहती; २० विराट्पङ्क्तिः; २२ विराड्गायत्री; २३ निचृद्गायत्री ॥
स्वरः—१, ३, ५, ७-९, १५, १७ १९, २४ मध्यमः; २, ४, ६, १०, १२, १४, १६, १८, २० पञ्चमः; ११, १३, २१, गान्धारः; २२, २३ षड्जः ॥

अथ पञ्चविंशो वर्गः ॥ २५ ॥

पिबा॑ सु॒तस्य॑ र॒सिनो॒ मत्स्वा॑ न इन्द्र॒ गोम॑तः ।
आ॒पिर्नो॑ बोधि सध॒माद्यो॑ वृ॒धे॒३॒॑ऽस्माँ अ॑वन्तु ते॒ धियः॑ ॥ १ ॥
भू॒याम॑ ते सुम॒तौ वा॒जिनो॑ व॒यं मा नः॑ स्तर॒भिमा॑तये ।
अ॒स्माञ्चि॒त्राभि॑रवताद॒भिष्टि॑भि॒रा नः॑ सु॒म्नेषु॑ यामय ॥ २ ॥
इ॒मा उ॑ त्वा पुरूवसो॒ गिरो॑ वर्धन्तु॒ या मम॑ ।
पा॒व॒कव॑र्णाः॒ शुच॑यो विप॒श्चितो॒ऽभि स्तोमै॑रनूषत ॥ ३ ॥
अ॒यं स॒हस्र॒मृषि॑भिः॒ सह॑स्कृतः समु॒द्रइ॑व पप्रथे ।
स॒त्यः सो अ॑स्य महि॒मा गृ॑णे॒ शवो॑ य॒ज्ञेषु॑ विप्र॒राज्ये॑ ॥ ४ ॥
इन्द्र॒मिद्दे॒वता॑तय॒ इन्द्रं॑ प्रय॒त्य॑ध्व॒रे ।
इन्द्रं॑ समी॒के व॒निनो॑ हवामह॒ इन्द्रं॒ धन॑स्य सा॒तये॑ ॥ ५ ॥

अथ षड्विंशो वर्गः ॥ २६ ॥

इन्द्रो॑ म॒ह्ना रोद॑सी पप्रथ॒च्छव॒ इन्द्रः॒ सूर्य॑मरोचयत् ।
इन्द्रे॑ ह॒ विश्वा॒ भुव॑नानि येमिर॒ इन्द्रे॑ सुवा॒नास॒ इन्द॑वः ॥ ६ ॥
अ॒भि त्वा॑ पू॒र्वपी॑तय॒ इन्द्र॒ स्तोमे॑भिरा॒यवः॑ ।
स॒मी॒ची॒नास॑ ऋ॒भवः॒ सम॑स्वरन्रु॒द्रा गृ॑णन्त॒ पूर्व्य॑म् ॥ ७ ॥
अ॒स्येदिन्द्रो॑ वावृधे॒ वृष्ण्यं॒ शवो॒ मदे॑ सु॒तस्य॒ विष्ण॑वि ।
अ॒द्या तम॑स्य महि॒मान॑मा॒यवोऽनु॑ ष्टुवन्ति पू॒र्वथा॑ ॥ ८ ॥
तत्त्वा॑ यामि सु॒वीर्यं॒ तद् ब्रह्म॑ पू॒र्वचि॑त्तये ।
येना॒ यति॑भ्यो॒ भृग॑वे॒ धने॑ हि॒ते येन॒ प्रस्क॑ण्व॒माविथ ॥ ९ ॥
येना॑ समु॒द्रमसृ॑जो म॒हीर॒पस्तदि॑न्द्र॒ वृष्णि॑ ते॒ शवः॑ ।
स॒द्यः सो अ॑स्य महि॒मा न सं॒नशे॒ यं क्षो॒णीर॑नुचक्र॒दे ॥ १० ॥

अथ सप्तविंशो वर्गः ॥ २७ ॥

श॒ग्धी न॑ इन्द्र॒ यत्त्वा॑ र॒यिं यामि॑ सु॒वीर्य॑म् ।
श॒ग्धि वाजा॑य प्रथ॒मं सिषा॑सते श॒ग्धि स्तोमा॑य पूर्व्य ॥ ११ ॥
श॒ग्धी नो॑ अ॒स्य यद्ध॑ पौ॒रमावि॑थ॒ धिय॑ इन्द्र॒ सिषा॑सतः ।
श॒ग्धि यथा॒ रुश॑मं॒ श्याव॑कं॒ कृप॒मिन्द्र॒ प्राव॒ः स्व॑र्णरम् ॥ १२ ॥
कन्नव्यो॑ अत॒सीनां॑ तु॒रो गृ॑णीत॒ मर्त्यः॑ ।
न॒ही न्व॑स्य महि॒मान॑मिन्द्रि॒यं स्व॑र्गृ॒णन्त॑ आन॒शुः ॥ १३ ॥
कदु॑ स्तु॒वन्त॑ ऋतयन्त दे॒वत॒ ऋषिः॒ को विप्र॑ ओहते ।
कदा हवं॑ मघवन्निन्द्र सुन्व॒तः कदु॑ स्तु॒वत आ ग॑मः ॥ १४ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उदु त्ये मधुमत्तमा गिरः स्तोमास ईरते ।
सत्राजितो धनसा अक्षितोतयो वाजयन्तो रथाइव ॥ १५ ॥

अथ अष्टाविंशो वर्गः ॥ २८ ॥

कण्वाइव भृगवः सूर्याइव विश्वमिद्धीतमानशुः ।
इन्द्रं स्तोमेभिर्महयन्त आयवः प्रियमेधासो अस्वरन् ॥ १६ ॥
युक्ष्वा हि वृत्रहन्तम हरी इन्द्र परावतः ।
अर्वाचीनो मघवन्त्सोमपीतय उग्र ऋष्वेभिरा गहि ॥ १७ ॥
इमे हि ते कारवो वावशुर्धिया विप्रासो मेधसातये ।
स त्वं नो मघवन्निन्द्र गिर्वणो वेनो न शृणुधी हवम् ॥ १८ ॥
निरिन्द्र बृहतीभ्यो वृत्रं धनुभ्यो अस्फुरः ।
निरर्बुदस्य मृगयस्य मायिनो निः पर्वतस्य गा आजः ॥ १९ ॥
निरग्नयो रुरुचुर्निरु सूर्यो निः सोम इन्द्रियो रसः ।
निरन्तरिक्षादधमो महामहिं कृषे तदिन्द्र पौंस्यम् ॥ २० ॥

अथ एकोनत्रिंशो वर्गः ॥ २९ ॥

यं मे दुरिन्द्रो मरुतः पाकस्थामा कौरयाणः ।
विश्वेषां त्मना शोभिष्ठमुपेव दिवि धावमानम् ॥ २१ ॥
रोहितं मे पाकस्थामा सुधुरं कक्ष्यप्राम् ।
अदाद्रायो विबोधनम् ॥ २२ ॥
यस्मा अन्ये दश प्रति धुरं वहन्ति वह्नयः ।
अस्तं वयो न तुग्र्यम् ॥ २३ ॥
आत्मा पितुस्तनूर्वासः ओजोदा अभ्यञ्जनम् ।
तुरीयमिद्रोहितस्य पाकस्थामानं भोजं दातारमब्रवम् ॥ २४ ॥

[४] चतुर्थं सूक्तम्

ऋषिः—देवातिथिः काण्वः ॥ देवता—१-१४ इन्द्रः; १५-१८ इन्द्रः पूषा वा; १९-२१ कुरुङ्गस्य दानस्तुतिः ॥ छन्दः—१, १३ भुरिगनुष्टुप्; २, ४, ६, ८, १२, १४, १८ निचृत्पङ्क्तिः; ३, ११, १५ निचृद्बृहती; ५, ९ पथ्याबृहती; ७ अनुष्टुप्; १० सतःपङ्क्तिः; १६, २० विराट्पङ्क्तिः; १७, १९ विराड् बृहती; २१ विराडुष्णिक् ॥ स्वरः—१, ७, १३ गान्धारः; २, ४, ६, ८, १०, १२, १४, १६, १८, २० पञ्चमः; ३, ५, ९, ११, १५, १७, १९ मध्यमः; २१ ऋषभः ॥

अथ त्रिंशो वर्गः ॥ ३० ॥

यदिन्द्र प्रागपागुदङ्न्यग्वा हूयसे नृभिः ।
सिमा पुरू नृषूतो अस्यानवेऽसि प्रशर्ध तुर्वशे ॥ १ ॥
यद्वा रुमे रुशमे श्यावके कृप इन्द्र मादयसे सचा ।
कण्वासस्त्वा ब्रह्मभिः स्तोमवाहस इन्द्रा यच्छन्त्या गहि ॥ २ ॥
यथा गौरो अपा कृतं तृष्यन्नेत्यवेरिणम् ।
आपित्वे नः प्रपित्वे तूयमा गहि कण्वेषु सु सचा पिब ॥ ३ ॥
मन्दन्तु त्वा मघवन्निन्द्रेन्दवो राधोदेयाय सुन्वते ।
आमुष्या सोममपिबश्चमू सुतं ज्येष्ठं तद् दधिषे सहः ॥ ४ ॥
प्र चक्रे सहसा सहो बभञ्ज मन्युमोजसा ।
विश्वे त इन्द्र पृतनायवो यहो नि वृक्षाइव येमिरे ॥ ५ ॥

अथ एकत्रिंशो वर्गः ॥ ३१ ॥

सहस्त्रेणेव सचते यवीयुधा यस्त आनळुपस्तुतिम् ।
पुत्रं प्रावर्गं कृणुते सुवीर्यं दाश्नोति नमउक्तिभिः ॥ ६ ॥
मा भेम मा श्रमिष्मोग्रस्य सख्ये तव ।
महत्ते वृष्णो अभिचक्ष्यं कृतं पश्येम तुर्वशं यदुम् ॥ ७ ॥
सव्यामनु स्फिग्यं वावसे वृषा न दानो अस्य रोषति ।
मध्वा संपृक्ताः सारघेण धेनवस्तूयमेहि द्रवा पिब ॥ ८ ॥
अश्वी रथी सुरूप इद्गोमाँ इदिन्द्र ते सखा ।
श्वात्रभाजा वयसा सचते सदा चन्द्रो याति सभामुप ॥ ९ ॥
ऋश्यो न तृष्यन्नवपानमा गहि पिबा सोमं वशाँ अनु ।
निमेघमानो मघवन्दिवेदिव ओजिष्ठं दधिषे सहः ॥ १० ॥

अथ द्वात्रिंशो वर्गः ॥ ३२ ॥

अध्वर्यो द्रावया त्वं सोममिन्द्रः पिपासति ।
उप नूनं युयुजे वृषणा हरी आ च जगाम वृत्रहा ॥ ११ ॥
स्वयं चित्स मन्यते दाशुरिर्जनो यत्रा सोमस्य तृम्पसि ।
इदं ते अन्नं युज्यं समुक्षितं तस्येहि प्र द्रवा पिब ॥ १२ ॥
रथेष्ठायाध्वर्यवः सोममिन्द्राय सोतन ।
अधि ब्रध्नस्याद्दयो वि चक्षते सुन्वन्तो दाश्वध्वरम् ॥ १३ ॥
उप ब्रह्मा वावाता वृषणा हरी इन्द्रमुपसु वक्षतः ।
अर्वाञ्चं त्वा सप्तयोऽध्वरश्रियो वहन्तु सवनेदुप ॥ १४ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्र पूषणं वृणीमहे युज्याय पुरूवसुम् ।
स शक्र शिक्ष पुरुहूत नो धिया तुजे राये विमोचन ॥ १५ ॥

अथ त्रयस्त्रिंशो वर्गः ॥ ३३ ॥

सं नः शिशीहि भुरिजोरिव क्षुरं रास्व रायो विमोचन ।
त्वे तन्नः सुवेदमुस्रियं वसु यं त्वं हिनोषि मर्त्यम् ॥ १६ ॥
वेमि त्वा पूषन्नृञ्जसे वेमि स्तोतव आघृणे ।
न तस्य वेम्यरणं हि तद्वसो स्तुषे पज्राय साम्ने ॥ १७ ॥
परा गावो यवसं कच्चिदाघृणे नित्यं रेक्णो अमर्त्य ।
अस्माकं पूषन्नविता शिवो भव मंहिष्ठो वाजसातये ॥ १८ ॥
स्थूरं राधः शताश्वं कुरुङ्गस्य दिविष्टिषु ।
राज्ञस्त्वेषस्य सुभगस्य रातिषु तुर्वशेष्वमन्महि ॥ १९ ॥
धीभिः सातानि काण्वस्य वाजिनः प्रियमेधैरभिद्युभिः ।
षष्टिं सहस्रानु निर्मजामजे निर्यूथानि गवामृषिः ॥ २० ॥
वृक्षाश्चिन्मे अभिपित्वे अरारणुः ।
गां भजन्त मेहनाश्वं भजन्त मेहना ॥ २१ ॥

इति पञ्चमाष्टके सप्तमोऽध्यायः ॥

अथाष्टमोऽध्यायः

[५] पञ्चमं सूक्तम्

ऋषिः—ब्रह्मातिथिः काण्वः ॥ देवता—१-३७ अश्विनौ; ३७-३९ चैद्यस्य कशोदानस्तुतिः ॥ छन्दः—१, ५, ११, १२, १४, १८, २१, २२, २९, ३२, ३३ निचृद्गायत्री; २-४, ६-१०, १५-१७, १९, २०, २४, २५, २७, २८, ३०, ३४, ३६ गायत्री; १३, २३, ३१, ३५ विराड्गायत्री; २६ आर्ची-स्वराड्गायत्री; ३७, ३८ निचृद्बृहती; ३९ आर्षीनिचृदनुष्टुप् ॥ स्वरः—१-३६ षड्जः; ३७, ३८ मध्यमः; ३९ गान्धारः ॥

अथ प्रथमो वर्गः ॥ १ ॥

दूरादिहेव यत्सत्यरुणप्सुरशिश्वितत् । वि भानुं विश्वधातनत् ॥ १ ॥
नृवद्दस्रा मनोयुजा रथेन पृथुपाजसा । सचेथे अश्विनोषसम् ॥ २ ॥
युवाभ्यां वाजिनीवसू प्रति स्तोमा अदृक्षत । वाचं दूतो यथोहिषे ॥ ३ ॥
पुरुप्रिया ण ऊतये पुरुमन्द्रा पुरूवसू । स्तुषे कण्वासो अश्विना ॥ ४ ॥
मंहिष्ठा वाजसातमेषयन्ता शुभस्पती । गन्तारा दाशुषो गृहम् ॥ ५ ॥

अथ द्वितीयो वर्गः ॥ २ ॥

ता सुदेवाय दाशुषे सुमेधामविंतारिणीम् । घृतैर्गव्यूतिमुक्षतम् ॥ ६ ॥
आ नः स्तोममुप द्रवत्तूयं श्येनेभिराशुभिः । यातमश्वेभिरश्विना ॥ ७ ॥
येभिस्तिस्रः परावतो दिवो विश्वानि रोचना । त्रीँरुक्तून्परिदीयथः ॥ ८ ॥
उत नो गोमतीरिष उत सातीरहर्विदा । वि पथः सातये सितम् ॥ ९ ॥
आ नो गोमन्तमश्विना सुवीरं सुरथं रयिम् । वोळ्हमश्वावतीरिषः ॥ १० ॥

अथ तृतीयो वर्गः ॥ ३ ॥

वावृधाना शुभस्पती दस्रा हिरण्यवर्तनी । पिबतं सोम्यं मधु ॥ ११ ॥
अस्मभ्यं वाजिनीवसू मघवद्भ्यश्च सप्रथः । छर्दिर्यन्तमदाभ्यम् ॥ १२ ॥
नि षु ब्रह्म जनानां याविष्टं तूयमा गतम् । मो ष्वन्याँ उपारतम् ॥ १३ ॥
अस्य पिबतमश्विना युवं मदस्य चारुणः । मध्वो रातस्य धिष्ण्या ॥ १४ ॥
अस्मे आ वहतं रयिं शतवन्तं सहस्रिणम् । पुरुक्षुं विश्वधायसम् ॥ १५ ॥

अथ चतुर्थो वर्गः ॥ ४ ॥

पुरुत्रा चिद्धि वां नरा विह्वयन्ते मनीषिणः । वाघद्भिरश्विना गतम् ॥ १६ ॥
जनासो वृक्तबर्हिषो हविष्मन्तो अरंकृतः । युवां हवन्ते अश्विना ॥ १७ ॥
अस्माकमद्य वामयं स्तोमो वाहिष्ठो अन्तमः । युवाभ्यां भूत्वश्विना ॥ १८ ॥
यो ह वां मधुनो दृतिराहितो रथचर्षणे । ततः पिबतमश्विना ॥ १९ ॥
तेन नो वाजिनीवसू पश्वे तोकाय शं गवे । वहतं पीवरीरिषः ॥ २० ॥

अथ पञ्चमो वर्गः ॥ ५ ॥

उत नो दिव्या इष उत सिन्धूँरहर्विदा । अप द्वारेव वर्षथः ॥ २१ ॥
कदा वां तौग्र्यो विधत्समुद्रे जहितो नरा । यद्वां रथो विभिष्पतात् ॥ २२ ॥
युवं कण्वाय नासत्यापिरिषाय हुवे । शश्वदूतीर्दशस्यथः ॥ २३ ॥
ताभिरा यातमूतिभिर्नव्यसीभिः सुशस्तिभिः । यद्वां वृषण्वसू हुवे ॥ २४ ॥
यथा चित्कण्वमावंतं प्रियमेधमुपस्तुतम् । अत्रिं शिञ्जारमश्विना ॥ २५ ॥

अथ षष्ठो वर्गः ॥ ६ ॥

यथोत कृत्व्ये धनेंऽशुं गोष्वगस्त्यम् । यथा वाजेषु सोभरिम् ॥ २६ ॥
एतावद्वां वृषण्वसू अतो वा भूयो अश्विना । गृणन्तः सुम्नमीमहे ॥ २७ ॥
रथं हिरण्यवन्धुरं हिरण्याभीशुमश्विना । आ हि स्थाथो दिविस्पृशम् ॥ २८ ॥
हिरण्ययी वां रभिरीषा अक्षो हिरण्ययः । उभा चक्रा हिरण्यया ॥ २९ ॥
तेन नो वाजिनीवसू परावतश्चिदा गतम् । उपेमां सुष्टुतिं मम ॥ ३० ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अथ सप्तमो वर्गः ॥ ७ ॥

आ व॑हेथे परा॒कात्पूर्वी॑र॒श्नन्ता॑वश्विना। इषो॒ दासी॑रमर्त्या ॥ ३१ ॥
आ नो॑ द्यु॒म्नैरा श्रवो॑भि॒रा रा॒या या॑तमश्विना। पुरु॑श्चन्द्रा॒ नास॑त्या ॥ ३२ ॥
एह वां॑ प्रुषि॒तप्स॑वो॒ वयो॑ वहन्तु प॒र्णिनः॑। अच्छा॑ स्वध्व॒रं जन॑म् ॥ ३३ ॥
रथं॑ वा॒मनु॑गायसं॒ य इ॒षा वर्त॑ते स॒ह। न च॒क्रम॒भि बा॑धते ॥ ३४ ॥
हि॒र॒ण्ययेन॒ रथे॑न द्र॒वत्पा॑णिभि॒रश्वैः॑। धीज॑वना॒ नास॑त्या ॥ ३५ ॥

अथ अष्टमो वर्गः ॥ ८ ॥

यु॒वं मृ॒गं जा॑गृ॒वांसं॒ स्वद॑थो वा वृषण्वसू। ता नः॑ पृङ्क्तमि॒षा र॒यिम् ॥ ३६ ॥
ता मे॑ अश्विना सनी॒नां वि॒द्यातं॒ नवा॑नाम् ।
यथा॑ चिच्चै॒द्यः क॒शुः श॒तमुष्ट्रा॑नां॒ दद॑त्स॒हस्रा॒ दश॒ गोना॑म् ॥ ३७ ॥
यो मे॒ हिर॑ण्यसंदृशो॒ दश॒ राज्ञो॒ अमं॑हत ।
अ॒ध॒स्प॒दा इच्चै॒द्यस्य॑ कृ॒ष्टय॑श्चर्म॒म्ना अ॒भितो॒ जनाः॑ ॥ ३८ ॥
माकि॑रे॒ना प॒था गा॒द्येने॒मे यन्ति॑ चे॒दयः॑ ।
अ॒न्यो नेत्सू॒रिरोह॑ते भूरि॒दाव॑त्तरो॒ जनः॑ ॥ ३९ ॥

द्वितीयोऽनुवाकः [६] षष्ठं सूक्तम्

ऋषिः—वत्सः काण्वः ॥ देवता—१-४५ इन्द्रः; ४६-४८ तिरिन्दिरस्य पारशव्यस्य दानस्तुतिः ॥ छन्दः—१-१३, १५-१७, १९, २५-२७, २९, ३०, ३२, ३५, ३८, ४२ गायत्री; १४, १८, २३, ३३, ३४, ३६, ३७, ३९-४१, ४३, ४५, ४८ निचृद्गायत्री; २० आर्चीस्वराड्गायत्री; २४, ४७ पादनिचृद्गायत्री; २१, २२, २८, ३१, ४४, ४६ आर्षीविराड्गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथ नवमो वर्गः ॥ ९ ॥

म॒हाँ इन्द्रो॒ य ओज॑सा प॒र्जन्यो॑ वृष्टि॒माँइ॑व। स्तोमै॑र्व॒त्सस्य॑ वावृधे ॥ १ ॥
प्र॒जामृ॒तस्य॒ पिप्र॑तः॒ प्र यद्भर॑न्त॒ वह्न॑यः। विप्रा॑ ऋ॒तस्य॒ वाह॑सा ॥ २ ॥
कण्वा॒ इन्द्रं॒ यदक्र॑त॒ स्तोमै॑र्य॒ज्ञस्य॒ साध॑नम् जा॒मि ब्रु॑वत॒ आयु॑धम् ॥ ३ ॥
सम॑स्य म॒न्यवे॒ विशो॒ विश्वा॑ नमन्त कृ॒ष्टयः॑। स॒मु॒द्राये॑व॒ सिन्ध॑वः ॥ ४ ॥
ओज॒स्तद॑स्य तित्विष उ॒भे यस्त॒मव॑र्तयत्॥ इन्द्र॒श्चर्मे॑व॒ रोद॑सी ॥ ५ ॥

अथ दशमो वर्गः ॥ १० ॥

वि चि॑द् वृ॒त्रस्य॒ दोध॑तो॒ वज्रे॑ण श॒तप॑र्वणा। शिरो॑ बिभेद वृ॒ष्णिना॑ ॥ ६ ॥
इ॒मा अ॒भि प्र णो॑नुमो वि॒पामग्रे॑षु धी॒तयः॑। अ॒ग्ने शो॒चिर्न दि॒द्युतः॑ ॥ ७ ॥
गुहा॑ स॒तीरुप॒ त्मना॒ प्र यच्छोच॑न्त धी॒तयः॑। कण्वा॑ ऋ॒तस्य॒ धार॑या ॥ ८ ॥
प्र तमि॑न्द्र॒ नशीमहि र॒यिं गोम॑न्तम॒श्विन॑म्। प्र ब्रह्म॑ पू॒र्वचि॑त्तये ॥ ९ ॥
अ॒हमिद्धि पि॒तुष्परि॑ मे॒धामृ॒तस्य॑ ज॒ग्रभ॑। अ॒हं सूर्य॑इवाजनि ॥ १० ॥

अथ एकादशो वर्गः ॥ ११ ॥

अ॒हं प्र॒त्नेन॒ मन्म॑ना॒ गिरः॑ शुम्भामि कण्व॒वत्। येनेन्द्रः॒ शुष्म॒मिद्द॒धे ॥ ११ ॥
ये त्वामि॑न्द्र॒ न तु॑ष्टु॒वुर्ऋष॑यो॒ ये च॑ तुष्टु॒वुः। ममेद्व॑र्धस्व॒ सुष्टु॑तः ॥ १२ ॥
यद॑स्य म॒न्युरध्व॑नी॒द्वि वृ॒त्रं प॑र्व॒शो रु॒जन्। अ॒पः स॑मु॒द्रमैर॑यत् ॥ १३ ॥
नि शुष्ण॑ इन्द्र धर्ण॒सिं वज्रं॑ जघन्थ॒ दस्य॑वि। वृषा॒ ह्यु॑ग्र शृण्वि॒षे ॥ १४ ॥
न द्याव॒ इन्द्र॒मोज॑सा॒ नान्तरि॑क्षाणि व॒ज्रिण॑म्। न वि॑व्यचन्त॒ भूम॑यः ॥ १५ ॥

अथ द्वादशो वर्गः ॥ १२ ॥

यस्त॑ इन्द्र म॒हीर॒पः स्त॑भू॒यमा॑न॒ आश॑यत्। नि तं पद्या॑सु शिश्नथः ॥ १६ ॥
य इ॒मे रोद॑सी म॒ही स॑मी॒ची स॒मज॑ग्रभीत्। तमो॑भिरिन्द्र॒ तं गु॑हः ॥ १७ ॥
य इ॑न्द्र॒ यत॑यस्त्वा॒ भृग॑वो॒ ये च॑ तुष्टु॒वुः। ममेदु॑ग्र श्रुधी॒ हव॑म् ॥ १८ ॥
इ॒मास्त॑ इन्द्र॒ पृश्न॑यो घृ॒तं दु॑हत आ॒शिर॑म्। ए॒नामृ॒तस्य॑ पि॒प्युषीः॑ ॥ १९ ॥
या इ॑न्द्र प्र॒स्व॑स्त्वा॒सा गर्भ॒मच॑क्रिरन्। परि॒ धर्मे॑व॒ सूर्य॑म् ॥ २० ॥

अथ त्रयोदशो वर्गः ॥ १३ ॥

त्वामि च्छ॑वसस्पते॒ कण्वा॑ उ॒क्थेन॑ वावृधुः। त्वां सु॒तास॒ इन्द॑वः ॥ २१ ॥
तवेदि॑न्द्र॒ प्रणी॑तिषू॒त प्रश॑स्तिरद्रिवः। य॒ज्ञो वि॑तन्त॒साय्यः॑ ॥ २२ ॥
आ न॑ इन्द्र म॒हीमिषं॒ पुरं॒ न द॑र्षि॒ गोम॑तीम्। उ॒त प्र॒जां सु॒वीर्य॑म् ॥ २३ ॥
उ॒त त्यदा॒श्वश्व्यं॒ यदि॑न्द्र॒ नाहु॑षी॒ष्वा। अग्रे॑ वि॒क्षु प्र॒दीद॑यत् ॥ २४ ॥
अ॒भि व्र॒जं न त॑त्निषे॒ सूर॑ उपा॒कच॑क्षसम्। यदि॑न्द्र मृ॒ळया॑सि नः ॥ २५ ॥

अथ चतुर्दशो वर्गः ॥ १४ ॥

यद॒ङ्ग त॑विषी॒यस॒ इन्द्र॑ प्र॒राज॑सि क्षि॒तीः। म॒हाँ अ॑पा॒र ओज॑सा ॥ २६ ॥
तं त्वा॑ ह॒विष्म॑ती॒र्विश॒ उप॑ ब्रुवत ऊ॒तये॑। उ॒रु॒ज्रय॑स॒मिन्दु॑भिः ॥ २७ ॥
उ॒प॒ह्वरे॒ गि॑री॒णां सं॑ग॒थे च॑ न॒दीना॑म्। धि॒या विप्रो॑ अजायत ॥ २८ ॥
अतः॑ समु॒द्रमु॒द्वत॑श्चिकि॒त्वाँ अव॑ पश्यति। यतो॑ विपा॒न एज॑ति ॥ २९ ॥
आदित्प्र॒त्नस्य॒ रेत॑सो॒ ज्योति॑ष्पश्यन्ति वास॒रम्। प॒रो यदि॒ध्यते॑ दि॒वा ॥ ३० ॥

अथ पञ्चदशो वर्गः ॥ १५ ॥

कण्वा॑स इन्द्र ते म॒तिं विश्वे॑ वर्धन्ति॒ पौंस्य॑म्। उ॒तो श॑विष्ठ॒ वृष्ण्य॑म् ॥ ३१ ॥
इ॒मां म॑ इन्द्र सुष्टु॒तिं जु॒षस्व॒ प्र सु माम॑व। उ॒त प्र व॑र्धया म॒तिम् ॥ ३२ ॥
उ॒त ब्र॑ह्म॒ण्या व॒यं तुभ्यं॑ प्रवृद्ध वज्रिवः। विप्रा॑ अतक्ष्म जी॒वसे॑ ॥ ३३ ॥
अ॒भि कण्वा॑ अनूष॒तापो॒ न प्र॒वता॑ य॒तीः। इन्द्रं॒ वन॑न्वती म॒तिः ॥ ३४ ॥
इन्द्र॑मु॒क्थानि॑ वावृधुः समु॒द्रमि॑व॒ सिन्ध॑वः। अनु॑त्तमन्युम॒जर॑म् ॥ ३५ ॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अथ षोडशो वर्गः ॥ १६ ॥

आ नो याहि परावतो हरिभ्यां हर्यताभ्याम्। इममिन्द्र सुतं पिब ॥ ३६ ॥
त्वामिद् वृत्रहन्तम जनासो वृक्तबर्हिषः। हवन्ते वाजसातये ॥ ३७ ॥
अनु त्वा रोदसी उभे चक्रं न वर्त्येतशम्। अनु सुवानास इन्दवः ॥ ३८ ॥
मन्दस्वा सु स्वर्णर उतेन्द्र शर्यणावति। मत्सा विवस्वतो मती ॥ ३९ ॥
वावृधान उप द्यवि वृषा वज्र्यरोरवीत्। वृत्रहा सोमपातमः ॥ ४० ॥

अथ सप्तदशो वर्गः ॥ १७ ॥

ऋषिर्हि पूर्वजा अस्येक ईशान ओजसा। इन्द्र चोष्कूयसे वसु ॥ ४१ ॥
अस्माकं त्वा सुताँ उप वीतपृष्ठा अभि प्रयः। शतं वहन्तु हरयः ॥ ४२ ॥
इमां सु पूर्व्यां धियं मधोर्घृतस्य पिप्युषीम्। कण्वा उक्थेन वावृधुः ॥ ४३ ॥
इन्द्रमिद्गिर्महीनां मेधे वृणीत मर्त्यः। इन्द्रं सनिष्यूरूतये ॥ ४४ ॥
अर्वाञ्चं त्वा पुरुष्टुत प्रियमेधस्तुता हरी। सोमपेयाय वक्षतः ॥ ४५ ॥
शतमहं तिरिन्दिरे सहस्रं पर्शावा ददे। राधांसि याद्वानाम् ॥ ४६ ॥
त्रीणि शतान्यर्वतां सहस्रा दश गोनाम्। ददुष्प्रायु साम्ने ॥ ४७ ॥
उदानट् ककुहो दिवमुष्ट्राञ्चतुर्युजो ददत्। श्रवसा याद्वं जनम् ॥ ४८ ॥

[७] सप्तमं सूक्तम्

ऋषिः—पुनर्वत्सः काण्वः ॥ देवता—मरुतः ॥ छन्दः—१, ३-५, ७-१३, १७-१९, २१, २८, ३०-३२, ३४ गायत्री; २, ६, १४, १६, २०, २२-२७, ३५, ३६ निचृद्-गायत्री; १५ पादनिचृद्गायत्री; २९, ३३ आर्षीविराडंगायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथ अष्टादशो वर्गः ॥ १८ ॥

प्र यद्वस्त्रिष्टुभमिषं मरुतो विप्रो अक्षरत्। वि पर्वतेषु राजथ ॥ १ ॥
यदङ्ग तविषीयवो यामं शुभ्रा अचिध्वम्। नि पर्वता अहासत ॥ २ ॥
उदीरयन्त वायुभिर्वाश्रासः पृश्निमातरः। धुक्षन्त पिप्युषीमिषम् ॥ ३ ॥
वपन्ति मरुतो मिहं प्र वेपयन्ति पर्वतान्। यद्यामं यान्ति वायुभिः ॥ ४ ॥
नि यद्यामाय वो गिरिर्नि सिन्धवो विधर्मणे। महे शुष्माय येमिरे ॥ ५ ॥

अथ एकोनविंशो वर्गः ॥ १९ ॥

युष्माँ उ नक्तमूतये युष्मान्दिवा हवामहे। युष्मान्प्रयत्यध्वरे ॥ ६ ॥
उदु त्ये अरुणप्सवश्चित्रा यामेभिरीरते। वाश्रा अधि ष्णुना दिवः ॥ ७ ॥
सृजन्ति रश्मिमोजसा पन्थां सूर्यायु यातवे। ते भानुभिर्वि तस्थिरे ॥ ८ ॥
इमां मे मरुतो गिरमिमं स्तोममृभुक्षणः। इमं मे वनता हवम् ॥ ९ ॥
त्रीणि सरांसि पृश्नयो दुदुह्रे वज्रिणे मधु। उत्सं कवन्धमुद्रिणम् ॥ १० ॥

अथ विंशो वर्गः ॥ २० ॥

मरुतो यद्ध वो दिवः सुम्नायन्तो हवामहे। आ तू न उप गन्तन ॥ ११ ॥
यूयं हि ष्ठा सुदानवो रुद्रा ऋभुक्षणो दमे। उत प्रचेतसो मदे ॥ १२ ॥
आ नो रयिं मदच्युतं पुरुक्षुं विश्वधायसम्। इयर्ता मरुतो दिवः ॥ १३ ॥
अधीव यद्गिरीणां यामं शुभ्रा अचिध्वम्। सुवानैर्मन्दध्व इन्दुभिः ॥ १४ ॥
एतावतश्चिदेषां सुम्नं भिक्षेत मर्त्यः। अदाभ्यस्य मन्मभिः ॥ १५ ॥

अथ एकविंशो वर्गः ॥ २१ ॥

ये द्रप्साइव रोदसी धमन्त्यनु वृष्टिभिः। उत्सं दुहन्तो अक्षितम् ॥ १६ ॥
उदु स्वानेभिरीरत उद्रथैरुदु वायुभिः। उत्तोयैः पृश्निमातरः ॥ १७ ॥
येनाव तुर्वशं यदुं येन कण्वं धनस्पृतम्। राये सु तस्य धीमहि ॥ १८ ॥
इमा उ वः सुदानवो घृतं न पिप्युषीरिषः। वर्धान्काण्वस्य मन्मभिः ॥ १९ ॥
कं नूनं सुदानवो मदथा वृक्तबर्हिषः। ब्रह्मा को वः सपर्यति ॥ २० ॥

अथ द्वाविंशो वर्गः ॥ २२ ॥

नहि ष्म यद्ध वः पुरा स्तोमेभिर्वृक्तबर्हिषः। शर्धाँ ऋतस्य जिन्वथ ॥ २१ ॥
समु त्ये महतीरपः सं क्षोणी समु सूर्यम्। सं वज्रं पर्वशो दधुः ॥ २२ ॥
वि वृत्रं पर्वशो यथुर्वि पर्वताँ अराजिनः। चक्राणावृष्णि पौंस्यम् ॥ २३ ॥
अनु त्रितस्य युध्यतः शुष्ममावन्नुत क्रतुम्। अन्विन्द्रं वृत्रतूर्ये ॥ २४ ॥
विद्युद्धस्ता अभिद्यवः शिप्राः शीर्षन्हिरण्ययीः। शुभ्रा व्यञ्जत श्रिये ॥ २५ ॥

अथ त्रयोविंशो वर्गः ॥ २३ ॥

उशना यत्परावत उक्षणो रन्ध्रमर्यातन। द्यौर्न चक्रदद्भिया ॥ २६ ॥
आ नो मखस्य दावनेऽश्वैर्हिरण्यपाणिभिः। देवासु उप गन्तन ॥ २७ ॥
यदेषां पृषती रथे प्रष्टिर्वहति रोहितः। यान्ति शुभ्रा रिणन्नपः ॥ २८ ॥
सुषोमे शर्यणावत्यार्जीके पस्त्यावति। ययुर्निचक्रया नरः ॥ २९ ॥
कदा गच्छथ मरुत इत्था विप्रं हवमानम्। मार्डीकेभिर्नाधमानम् ॥ ३० ॥

अथ चतुर्विंशो वर्गः ॥ २४ ॥

कद्ध नूनं कधप्रियो यदिन्द्रमजहातन। को वः सखित्व ओहते ॥ ३१ ॥
सहो षु णो वज्रहस्तैः कण्वासो अग्निं मरुद्भिः। स्तुषे हिरण्यवाशीभिः ॥ ३२ ॥
ओ षु वृष्णः प्रयज्यूना नव्यसे सुवितायं। ववृत्यां चित्रवाजान् ॥ ३३ ॥
गिरयश्चिन्नि जिहते पशीनासो मन्यमानाः। पर्वताश्चित्नि येमिरे ॥ ३४ ॥
आक्षणयावानो वहन्त्यन्तरिक्षेण पततः। धातारः स्तुवते वयः ॥ ३५ ॥
अग्निर्हि जानिं पूर्व्यश्छन्दो न सूरो अर्चिषा। ते भानुभिर्वि तस्थिरे ॥ ३६ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

[८] अष्टमं सूक्तम्

ऋषिः—सध्वंशः काण्वः॥ देवता—अश्विनौ॥ छन्दः—१-३, ५, ९, १२, १४, १५, १८-२०, २२ निचृदनुष्टुप्; ४, ७, ८, १०, ११, १३, १७, २१, २३ आर्षीविराडनुष्टुप्; ६, १६ अनुष्टुप्॥ स्वरः—गान्धारः॥

अथ पञ्चविंशो वर्गः॥ २५॥

आ नो॒ विश्वा॑भिरू॒तिभि॒रश्वि॑ना॒ गच्छ॑तं यु॒वम् ।
दस्रा॒ हिर॑ण्यवर्तनी॒ पिब॑तं सो॒म्यं मधु॑ ॥ १ ॥
आ नू॒नं या॑तमश्विना॒ रथे॑न॒ सूर्य॑त्वचा ।
भुजी॒ हिर॑ण्यपेशसा॒ कवी॒ गम्भी॑रचेतसा ॥ २ ॥
आ या॑तं॒ नहु॑ष॒स्पर्यान्तरि॑क्षात्सुवृ॒क्तिभिः॑ ।
पिबा॑थो अश्विना॒ मधु॒ कण्वा॑नां॒ सव॑ने सु॒तम् ॥ ३ ॥
आ नो॑ यातं दि॒वस्पर्यान्तरि॑क्षादधप्रिया ।
पु॒त्रः कण्व॑स्य वामि॒ह सु॒षाव॑ सो॒म्यं मधु॑ ॥ ४ ॥
आ नो॑ यात॒मुप॑श्रु॒त्यश्वि॑ना॒ सोम॑पीतये ।
स्वाहा॒ स्तोम॑स्य वर्धना॒ प्र क॑वी धी॒तिभि॑र्नरा ॥ ५ ॥

अथ षड्विंशो वर्गः॥ २६॥

यच्चि॒द्धि वां॑ पु॒र ऋष॑यो जुहू॒रेऽव॑से नरा ।
आ या॑तमश्वि॒ना ग॑त॒मुपे॒मां सु॑ष्टु॒तिं मम॑ ॥ ६ ॥
दि॒वश्चि॑द्रोच॒नादध्या नो॑ गन्तं स्वर्विदा॑ ।
धी॒भिर्व॑त्सप्रचेतसा॒ स्तोमे॑भिर्हवनश्रुता ॥ ७ ॥
किम॒न्ये पर्या॑सते॒ऽस्मत्स्तोमे॑भिर॒श्विना॑ ।
पु॒त्रः कण्व॑स्य वा॒मृषि॑र्गी॒र्भिर्व॒त्सो अ॑वीवृधत् ॥ ८ ॥
आ वां॒ विप्र॑ इ॒हाव॒सेऽह्व॒त्स्तोमे॑भिरश्विना ।
अरि॑प्रा॒ वृत्र॑हन्तमा॒ ता नो॑ भूतं मयो॒भुवा॑ ॥ ९ ॥
आ यद्वां॒ योष॑णा॒ रथ॒मति॑ष्ठद्वाजिनीवसू ।
विश्वा॑न्यश्विना यु॒वं प्र धी॒तान्य॑गच्छतम् ॥ १० ॥

अथ सप्तविंशो वर्गः॥ २७॥

अतः॑ स॒हस्र॑निर्णिजा॒ रथे॒ना या॑तमश्विना ।
व॒त्सो वां॒ मधु॑म॒द्वचोऽशं॑सीत्का॒व्यः क॒विः ॥ ११ ॥
पु॒रु॒म॒न्द्रा पु॑रू॒वसू॑ मनो॒तरा॑ रयी॒णाम् ।
स्तोमं॑ मे अ॒श्विना॑वि॒मम॒भि वह्नी॑ अनूषाताम् ॥ १२ ॥
आ नो॒ विश्वा॑न्यश्विना ध॒त्तं राधां॒स्यह्र॑या ।
कृ॒तं न॑ ऋ॒त्विया॑वतो॒ मा नो॑ रीरधतं नि॒दे ॥ १३ ॥
यन्ना॑सत्या परा॒वति॒ यद्वा॒ स्थो अध्यम्ब॑रे ।
अतः॑ स॒हस्र॑निर्णिजा॒ रथे॒ना या॑तमश्विना ॥ १४ ॥
यो वां॑ नासत्या॒वृषि॑र्गी॒र्भिर्व॒त्सो अवी॑वृधत् ।
तस्मै॑ स॒हस्र॑निर्णिज॒मिषं॑ धत्तं घृत॒श्चुत॑म् ॥ १५ ॥

अथ अष्टाविंशो वर्गः॥ २८॥

प्रास्मा॒ ऊर्जं॑ घृत॒श्चुत॒मश्वि॑ना॒ यच्छ॑तं यु॒वम् ।
यो वां॑ सु॒म्नाय॑ तु॒ष्टव॑द्वसू॒याद्दा॑नुनस्पती ॥ १६ ॥
आ नो॑ गन्तं रिशादसे॒मं स्तोमं॑ पुरुभुजा ।
कृ॒तं नः॑ सु॒श्रियो॑ नरे॒मा दा॑तम॒भिष्ट॑ये ॥ १७ ॥
आ वां॒ विश्वा॑भिरू॒तिभिः॑ प्रि॒यमे॑धा अहूषत ।
राज॑न्तावध्व॒राणा॒मश्वि॑ना॒ याम॑हूतिषु ॥ १८ ॥
आ नो॑ गन्तं मयो॒भुवाश्वि॑ना शं॒भुवा॑ यु॒वम् ।
यो वां॑ विपन्यू धी॒तिभि॑र्गी॒र्भिर्व॒त्सो अवी॑वृधत् ॥ १९ ॥
याभिः॒ कण्वं॒ मेधा॑तिथिं॒ याभि॒र्वशं॒ दश॑व्रजम् ।
याभि॒र्गोश॑र्य॒मावतं॒ ताभि॑र्नोऽवतं नरा ॥ २० ॥

अथ एकोनत्रिंशो वर्गः॥ २९॥

याभि॑र्नरा त्र॒सद॑स्यु॒मावतं॒ कृत्व्ये॒ धने॑ ।
ताभिः॒ ष्व१॒॑स्माँ अ॑श्विना॒ प्राव॑तं॒ वाज॑सातये ॥ २१ ॥
प्र वां॒ स्तोमाः॑ सुवृ॒क्तयो॒ गिरो॑ वर्धन्त्वश्विना ।
पुरु॑त्रा॒ वृत्र॑हन्तमा॒ ता नो॑ भूतं पुरु॒स्पृहा॑ ॥ २२ ॥
त्रीणि॑ प॒दान्य॒श्विनो॑रा॒विः सान्ति॒ गुहा॑ प॒रः ।
क॒वी ऋ॒तस्य॒ पत्म॑भिर॒र्वाग्जी॒वेभ्य॒स्परि॑ ॥ २३ ॥

[९] नवमं सूक्तम्

ऋषिः—शशकर्णः काण्वः॥ देवता—अश्विनौ॥ छन्दः—१, ४, ६ बृहती; २, २० गायत्री; ३, २१ निचृद्गायत्री; ५ ककुबुष्णिक्; ७, ८, १७, १९ अनुष्टुप्; ९ पादनिचृदनुष्टुप्; १० आर्षी निचृत्पङ्क्तिः; ११ त्रिपादविराड्गायत्री; १२ जगती; १३ निचृदनुष्टुप्; १४, १५ निचृद्बृहती; १६ आर्च्यनुष्टुप्; १८ विराडनुष्टुप्॥ स्वरः—१, ४, ६, १४, १५ मध्यमः; २, ३, ११, २०, २१ षड्जः; ५ ऋषभः; ७-९, १३, १६-१९ गान्धारः; १० पञ्चमः; १२ निषादः॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अथ त्रिंशो वर्गः ॥ ३० ॥

आ नूनमश्विना युवं वत्सस्य गन्तमवसे । प्रास्मै यच्छतमवृकं पृथु च्छर्दिर्युयुतं या अरातयः ॥ १ ॥
यदन्तरिक्षे यद्दिवि यत्पञ्च मानुषाँ अनु । नृम्णं तद्धत्तमश्विना ॥ २ ॥
ये वां दंसांस्यश्विना विप्रासः परिमामृशुः । एवेत्काण्वस्य बोधतम् ॥ ३ ॥
अयं वां घर्मो अश्विना स्तोमेन परि षिच्यते । अयं सोमो मधुमान्वाजिनीवसू येन वृत्रं चिकेतथः ॥ ४ ॥
यदप्सु यद्वनस्पतौ यदोषधीषु पुरुदंससा कृतम् । तेन माविष्टमश्विना ॥ ५ ॥

अथ एकत्रिंशो वर्गः ॥ ३१ ॥

यन्नासत्या भुरण्यथो यद्वा देव भिषज्यथः । अयं वां वत्सो मतिभिर्न विन्धते हविष्मन्तं हि गच्छथः ॥ ६ ॥
आ नूनमश्विनोर्ऋषिः स्तोमं चिकेत वामया । आ सोमं मधुमत्तमं घर्मं सिञ्चादथर्वणि ॥ ७ ॥
आ नूनं रघुवर्तनिं रथं तिष्ठाथो अश्विना । आ वां स्तोमा इमे मम नभो न चुच्यवीरत ॥ ८ ॥
यदद्य वां नासत्योक्थैरा चुच्युवीमहि । यद्वा वाणीभिरश्विनेवेत्काण्वस्य बोधतम् ॥ ९ ॥
यद्वां कक्षीवाँ उत यद्वयश्व ऋषिर्यद्वां दीर्घतमा जुहाव । पृथी यद्वां वैन्यः सादनेष्वेवेदतो अश्विना चेतयेथाम् ॥ १० ॥

अथ द्वात्रिंशो वर्गः ॥ ३२ ॥

यातं छर्दिष्पा उत नः परस्पा भूतं जगत्पा उत नस्तनूपा । वर्तिस्तोकाय तनयाय यातम् ॥ ११ ॥
यदिन्द्रेण सरथं याथो अश्विना यद्वा वायुना भवथः समोकसा । यदादित्येभिर्ऋभुभिः सजोषसा यद्वा विष्णोर्विक्रमणेषु तिष्ठथः ॥ १२ ॥
यदद्याश्विनावहं हुवेय वाजसातये । यत्पृत्सु तुर्वणे सहस्तच्छ्रेष्ठमश्विनोरवः ॥ १३ ॥
आ नूनं यातमश्विनेमा हव्यानि वां हिता । इमे सोमासो अधि तुर्वशे यदाविमे कण्वेषु वामथ ॥ १४ ॥
यन्नासत्या पराके अर्वाके अस्ति भेषजम् । तेन नूनं विमदाय प्रचेतसा छर्दिर्वत्साय यच्छतम् ॥ १५ ॥

अथ त्रयस्त्रिंशो वर्गः ॥ ३३ ॥

अभुत्स्यु प्र देव्या साकं वाचाहमश्विनोः । व्यावर्देव्या मतिं वि रातिं मर्त्येभ्यः ॥ १६ ॥
प्र बोधयोषो अश्विना प्र देवि सूनृते महि । प्र यज्ञहोतरानुषक्प्र मदाय श्रवो बृहत् ॥ १७ ॥
यदुषो यासि भानुना सं सूर्येण रोचसे । आ हायमश्विनो रथो वर्तिर्याति नृपाय्यम् ॥ १८ ॥
यदापीतासो अंशवो गावो न दुह्र ऊधभिः । यद्वा वाणीरनूषत प्र देवयन्तो अश्विना ॥ १९ ॥
प्र द्युम्नाय प्र शवसे प्र नृषाह्याय शर्मणे । प्र दक्षाय प्रचेतसा ॥ २० ॥
यन्नूनं धीभिरश्विना पितुर्योना निषीदथः । यद्वा सुम्नेभिरुक्थ्या ॥ २१ ॥

[१०] दशमं सूक्तम्

ऋषिः—प्रगाथः काण्वः ॥ देवता—अश्विनौ ॥ छन्दः—१, ५ आर्चीस्वराड्बृहती; २ त्रिष्टुप्; ३ आर्चीभुरिगनुष्टुप्; ४ आर्चीभुरिक्पङ्क्तिः; ६ आर्षीस्वराड्बृहती ॥ स्वरः—१, ५, ६ मध्यमः; २ धैवतः; ३ गान्धारः; ४ पञ्चमः ॥

अथ चतुस्त्रिंशो वर्गः ॥ ३४ ॥

यत्स्थो दीर्घप्रसद्मनि यद्वादो रोचने दिवः । यद्वा समुद्रे अध्याकृते गृहेऽत आ यातमश्विना ॥ १ ॥
यद्वा यज्ञं मनवे संमिमिक्षथुरेवेत्काण्वस्य बोधतम् । बृहस्पतिं विश्वान्देवाँ अहं हुव इन्द्राविष्णू अश्विनावाशुहेषसा ॥ २ ॥
त्वा न्वश्विना हुवे सुदंससा गृभे कृता । ययोरस्ति प्र पर्णः सख्यं देवेष्वध्यार्प्यम् ॥ ३ ॥
ययोरधि प्र यज्ञा असूरे सन्ति सूर्यः । ता यज्ञस्याध्वरस्य प्रचेतसा स्वधाभिर्या पिबतः सोम्यं मधु ॥ ४ ॥
यद्द्याश्विनावपाग्घत्प्राक्स्थो वाजिनीवसू । यद् द्रुह्व्यनवि तुर्वशे यदौ हुवे वामथ मा गतम् ॥ ५ ॥
यदन्तरिक्षे पतथः पुरुभुजा यद्वेमे रोदसी अनु । यद्वा स्वधाभिरधितिष्ठथो रथमत आ यातमश्विना ॥ ६ ॥

[११] एकादशं सूक्तम्

ऋषिः—वत्सः काण्वः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१ आर्चीभुरिग्गायत्री; २ वर्धमानागायत्री; ३, ५-७, ९ निचृद्गायत्री; ४ विराड्गायत्री; ८ गायत्री; १० आर्चीभुरिक्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१-९ षड्जः; १० धैवतः ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अथ पञ्चत्रिंशो वर्गः ॥ ३५ ॥

त्वमग्ने व्रतपा असि देव आ मर्त्येष्वा। त्वं यज्ञेष्वीड्यः ॥ १ ॥
त्वमसि प्रशस्यो विदथेषु सहन्त्य। अग्ने रथीरध्वराणाम् ॥ २ ॥
स त्वमस्मदप द्विषो युयोधि जातवेदः। अदेवीरग्ने अरातीः ॥ ३ ॥
अन्ति चित्सन्तमह यज्ञं मर्तस्य रिपोः। नोप वेषि जातवेदः ॥ ४ ॥
मर्ता अमर्त्यस्य ते भूरि नाम मनामहे। विप्रासो जातवेदसः ॥ ५ ॥

अथ षट्त्रिंशो वर्गः ॥ ३६ ॥

विप्रं विप्रासोऽवसे देवं मतीस ऊतये। अग्निं गीर्भिर्हवामहे ॥ ६ ॥
आ तें वत्सो मनो यमत्परमाच्चित्सधस्थात्। अग्ने त्वांकामया गिरा ॥ ७ ॥
पुरुत्रा हि सदृङ्ङसि विशो विश्वा अनु प्रभुः। समत्सु त्वा हवामहे ॥ ८ ॥
समत्स्वग्निमवसे वाजयन्तो हवामहे। वाजेषु चित्रराधसम् ॥ ९ ॥
प्रत्नो हि कमीड्यो अध्वरेषु सनाच्च होता नव्यश्च सत्सि ।
स्वां चाग्ने तन्वं पिप्रयस्वास्मभ्यं च सौभगमा यजस्व ॥ १० ॥

इति पञ्चमाष्टकेऽष्टमोऽध्यायः ॥
इति पञ्चमोऽष्टकः ॥

अथ षष्ठाऽष्टके प्रथमोऽध्यायः

[१२] द्वादशं सूक्तम्

ऋषिः—पर्वतः काण्वः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१, २, ८, ९, १५, १६, २०, २१, २५, ३१, ३२ निचृदुष्णिक्; ३-६, १०-१२, १४, १७, १८, २२-२४, २६-३० उष्णिक्; ७, १३, १९ आर्षीविराडुष्णिक्; ३३ आर्चीस्वराडुष्णिक् ॥ स्वरः—ऋषभः ॥

अथ प्रथमो वर्गः ॥ १ ॥

य इन्द्र सोमपातमो मदः शविष्ठ चेततिं ।
येना हंसि न्यत्रिणं तमीमहे ॥ १ ॥
येना दशग्वमध्रिगुं वेपयन्तं स्वर्णरम् ।
येना समुद्रमाविथा तमीमहे ॥ २ ॥
येन सिन्धुं महीरपो रथाँइव प्रचोदयः ।
पन्थामृतस्य यातवे तमीमहे ॥ ३ ॥
इमं स्तोममभिष्टये घृतं न पूतमद्रिवः ।
येना नु सद्य ओजसा ववक्षिथ ॥ ४ ॥
इमं जुषस्व गिर्वणः समुद्रइव पिन्वते ।
इन्द्र विश्वाभिरूतिभिर्ववक्षिथ ॥ ५ ॥

अथ द्वितीयो वर्गः ॥ २ ॥

यो नो देवः परावतः सखित्वनाय मामहे ।
दिवो न वृष्टिं प्रथयन्ववक्षिथ ॥ ६ ॥
ववक्षुरस्य केतवो उत वज्रो गभस्त्योः ।
यत्सूर्यो न रोदसी अवर्धयत् ॥ ७ ॥
यदिं प्रवृद्ध सत्पते सहस्रं महिषाँ अघः ।
आदित्ते इन्द्रियं महि प्र वावृधे ॥ ८ ॥
इन्द्रः सूर्यस्य रश्मिभिर्न्यृंशसानमोषति ।
अग्निर्वनेव सासहिः प्र वावृधे ॥ ९ ॥
इयं त ऋत्वियावती धीतिरेति नवीयसी ।
सपर्यन्ती पुरुप्रिया मिमीत इत् ॥ १० ॥

अथ तृतीयो वर्गः ॥ ३ ॥

गर्भो यज्ञस्य देवयुः क्रतुं पुनीत आनुषक् ।
स्तोमैरिन्द्रस्य वावृधे मिमीत इत् ॥ ११ ॥
सनिर्मित्रस्य पप्रथ इन्द्रः सोमस्य पीतये ।
प्राची वाशीव सुन्वते मिमीत इत् ॥ १२ ॥
यं विप्रा उक्थवाहसोऽभिप्रमन्दुरायवः ।
घृतं न पिप्य आसन्यृतस्य यत् ॥ १३ ॥
उत स्वराजे अदितिः स्तोममिन्द्राय जीजनत् ।
पुरुप्रशस्तमूतय ऋतस्य यत् ॥ १४ ॥
अभि वह्नय ऊतयेऽनूषत प्रशस्तये ।
न देव विव्रता हरी ऋतस्य यत् ॥ १५ ॥

अथ चतुर्थो वर्गः ॥ ४ ॥

यत्सोममिन्द्र विष्णवि यद्वा घ त्रित आप्त्ये ।
यद्वा मरुत्सु मन्दसे समिन्दुभिः ॥ १६ ॥
यद्वा शक्र परावति समुद्रे अधि मन्दसे ।
अस्माकमित्सुते रणा समिन्दुभिः ॥ १७ ॥
यद्वासि सुन्वतो वृधो यजमानस्य सत्पते ।
उक्थे वा यस्य रण्यसि समिन्दुभिः ॥ १८ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

देवंदेवं वोऽवस इन्द्रमिन्द्रं गृणीषणि । सुवीर्यं स्वश्व्यं सुगव्यमिन्द्र दद्धि नः ।
अधा यज्ञाय तुर्वणे व्यानशुः ॥ १९ ॥ होतेव पूर्वचित्तये प्राध्वरे ॥ ३३ ॥
यज्ञेभिर्यज्ञवाहसं सोमेभिः सोमपातमम् । तृतीयोऽनुवाकः [१३] त्रयोदशं सूक्तम्
होत्राभिरिन्द्रं वावृधुर्व्यानशुः ॥ २० ॥ ऋषिः—नारदः काण्वः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१, ५, ८, ११, १४, १९, २१, २२, २६, २७, ३१ निचृदुष्णिक्; २-४, ६, ७, ९, १०, १२, १३, १५-१८, २०, २३-२५, २८, २९, ३२, ३३ उष्णिक्; ३० आर्षीविराडुष्णिक् ॥ स्वरः—ऋषभः ॥

अथ पञ्चमो वर्गः ॥ ५ ॥ अथ सप्तमो वर्गः ॥ ७ ॥
महीरस्य प्रणीतयः पूर्वीरुत प्रशस्तयः । इन्द्रः सुतेषु सोमेषु क्रतुं पुनीत उक्थ्यम् ।
विश्वा वसूनि दाशुषे व्यानशुः ॥ २१ ॥ विदे वृधस्य दक्षसो महान्हि षः ॥ १ ॥
इन्द्रं वृत्राय हन्तवे देवासो दधिरे पुरः । स प्रथमे व्योमनि देवानां सदने वृधः ।
इन्द्रं वाणीरनूषता समोजसे ॥ २२ ॥ सुपारः सुश्रवस्तमः सम्पस्पृजित् ॥ २ ॥
महान्तं महिना वयं स्तोमेभिर्हवनश्रुतम् । तमह्वे वाजसातय इन्द्रं भराय शुष्मिणम् ।
अकैरभि प्र णोनुमः समोजसे ॥ २३ ॥ भवा नः सुम्ने अन्तमः सखा वृधे ॥ ३ ॥
न यं विविक्तो रोदसी नान्तरिक्षाणि वज्रिणम् । इयं त इन्द्र गिर्वणो रातिः क्षरति सुन्वतः ।
अमादिदस्य तित्विषे समोजसः ॥ २४ ॥ मन्दानो अस्य बर्हिषो वि राजसि ॥ ४ ॥
यदिन्द्र पृतनाज्ये देवास्त्वा दधिरे पुरः । नूनं तदिन्द्र दद्धि नो यत्त्वा सुन्वन्त ईमहे ।
आदित्ते हर्यता हरी ववक्षतुः ॥ २५ ॥ रयिं नश्चित्रमा भर स्वर्विदम् ॥ ५ ॥

अथ षष्ठो वर्गः ॥ ६ ॥ अथ अष्टमो वर्गः ॥ ८ ॥
यदा वृत्रं नदीवृतं शवसा वज्रिन्नवधीः । स्तोता यत्ते विचर्षणिरतिप्रशर्धयद्गिरः ।
आदित्ते हर्यता हरी ववक्षतुः ॥ २६ ॥ वया इवानु रोहते जुषन्त यत् ॥ ६ ॥
यदा ते विष्णुरोजसा त्रीणि पदा विचक्रमे । प्रत्नवज्जनया गिरः शृणुधी जरितुर्हवम् ।
आदित्ते हर्यता हरी ववक्षतुः ॥ २७ ॥ मदेमदे ववक्षिथा सुकृत्वने ॥ ७ ॥
यदा ते हर्यता हरी वावृधाते दिवेदिवे । क्रीळन्त्यस्य सूनृता आपो न प्रवता यतीः ।
आदित्ते विश्वा भुवनानि येमिरे ॥ २८ ॥ अया धिया य उच्यते पतिर्दिवः ॥ ८ ॥
यदा ते मारुतीर्विशस्तुभ्यमिन्द्र नियेमिरे । उतो पतिर्य उच्यते कृष्टीनामेक इद्वशी ।
आदित्ते विश्वा भुवनानि येमिरे ॥ २९ ॥ नमोवृधैरवस्युभिः सुते रण ॥ ९ ॥
यदा सूर्यमुमुं दिवि शुक्रं ज्योतिरधारयः । स्तुहि श्रुतं विपश्चितं हरी यस्य प्रसक्षिणा ।
आदित्ते विश्वा भुवनानि येमिरे ॥ ३० ॥ गन्तारा दाशुषो गृहं नमस्विनः ॥ १० ॥
इमां त इन्द्र सुष्टुतिं विप्र इयर्ति धीतिभिः ।
जामिं पदेव पिप्रतीं प्राध्वरे ॥ ३१ ॥
यदस्य धामनि प्रिये समीचीनासो अस्वरन् ।
नाभा यज्ञस्य दोहना प्राध्वरे ॥ ३२ ॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अथ नवमो वर्गः ॥ ९ ॥

तूतुजानो मंहेमतेऽश्वेभिः प्रुषितप्सुभिः ।
आ याहि यज्ञमाशुभिः शमिद्धि तें ॥ ११ ॥
इन्द्रं शविष्ठ सत्पते रयिं गृणत्सु धारय ।
श्रवः सूरिभ्यो अमृतं वसुत्वनम् ॥ १२ ॥
हवें त्वा सूर उदिते हवें मध्यंदिने दिवः ।
जुषाण इन्द्र सप्तिभिर्न आ गहि ॥ १३ ॥
आ तू गहि प्र तु द्रव मत्स्वा सुतस्य गोमतः ।
तन्तुं ततनुष्व पूर्व्यं यथा विदे ॥ १४ ॥
यच्छुक्रासि परावति यदर्वावति वृत्रहन् ।
यद्वा समुद्रे अन्धसोऽवितेदसि ॥ १५ ॥

अथ दशमो वर्गः ॥ १० ॥

इन्द्रं वर्धन्तु नो गिर इन्द्रं सुतास इन्दवः ।
इन्द्रे हविष्मतीर्विशो अराणिषुः ॥ १६ ॥
तमिद्विप्रा अवस्यवः प्रवत्वतीभिरूतिभिः ।
इन्द्रं क्षोणीरवर्धयन्वयाइव ॥ १७ ॥
त्रिकद्रुकेषु चेतनं देवासो यज्ञमत्नत ।
तमिद्वर्धन्तु नो गिरः सदावृधम् ॥ १८ ॥
स्तोता यत्ते अनुव्रत उक्थान्यृतुथा दधे ।
शुचिः पावक उच्यते सो अद्भुतः ॥ १९ ॥
तदिद्रुद्रस्य चेतति यह्वं प्रत्नेषु धामसु ।
मनो यत्रा वि तद्दधुर्विचेतसः ॥ २० ॥

अथ एकादशो वर्गः ॥ ११ ॥

यदिं मे सख्यमावरं द्रुमस्य पाह्यन्धसः ।
येन विश्वा अति द्विषो अतारिम ॥ २१ ॥
कदा त इन्द्र गिर्वणः स्तोता भवाति शंतमः ।
कदा नो गव्ये अश्व्ये वसौ दधः ॥ २२ ॥
उत ते सुष्टुता हरी वृषणा वहतो रथम् ।
अजुर्यस्य मदिन्तमं यमीमहे ॥ २३ ॥
तमीमहे पुरुष्टुतं यह्वं प्रत्नाभिरूतिभिः ।
नि बर्हिषि प्रिये सददधं द्विता ॥ २४ ॥
वर्धस्वा सु पुरुष्टुत ऋषिष्टुताभिरूतिभिः ।
धुक्षस्व पिप्युषीमिषमवा च नः ॥ २५ ॥

अथ द्वादशो वर्गः ॥ १२ ॥

इन्द्र त्वमवितेदसीत्था स्तुवतो अद्रिवः ।
ऋतादियर्मि ते धियं मनोयुजम् ॥ २६ ॥
इह त्या सधमाद्या युजानः सोमपीतये ।
हरी इन्द्र प्रतद्वसू अभि स्वर ॥ २७ ॥
अभि स्वरन्तु ये तव रुद्रासः सक्षत श्रियम् ।
उतो मरुत्वतीर्विशो अभि प्रयः ॥ २८ ॥
इमा अस्य प्रतूर्तयः पदं जुषन्त यद्दिवि ।
नाभा यज्ञस्य सं दधुर्यथा विदे ॥ २९ ॥
अयं दीर्घाय चक्षसे प्राचिं प्रयत्यध्वरे ।
मिमीते यज्ञमानुषग्विचक्ष्यं ॥ ३० ॥

अथ त्रयोदशो वर्गः ॥ १३ ॥

वृषायमिन्द्र ते रथ उतो ते वृषणा हरी ।
वृषा त्वं शतक्रतो वृषा हवः ॥ ३१ ॥
वृषा ग्रावा वृषा मदो वृषा सोमो अयं सुतः ।
वृषा यज्ञो यमिन्वसि वृषा हवः ॥ ३२ ॥
वृषा त्वा वृषणं हुवे वज्रिञ्चित्राभिरूतिभिः ।
वावन्थ हि प्रतिष्टुतिं वृषा हवः ॥ ३३ ॥

[१४] चतुर्दशं सूक्तम्

ऋषिः—गोषूक्त्यश्वसूक्तिनौ काण्वायनौ ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१, ११ विराड्गायत्री; २, ४, ५, ७, १५ निचृद्गायत्री; ३, ६, ८-१०, १२-१४ गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथ चतुर्दशो वर्गः ॥ १४ ॥

यदिन्द्राहं यथा त्वमीशीय वस्व एक इत् । स्तोता मे गोषखा स्यात् ॥ १ ॥
शिक्षेयमस्मै दितसेयं शचीपते मनीषिणे । यदहं गोपतिः स्याम् ॥ २ ॥
धेनुष्टे इन्द्र सूनृता यजमानाय सुन्वते । गामश्वं पिप्युषीं दुहे ॥ ३ ॥
न तें वर्तास्ति राधस इन्द्र देवो न मर्त्यः । यद्दित्ससि स्तुतो मघम् ॥ ४ ॥
युज इन्द्रमवधयद्वज्रिणं व्यवर्तयत् । चक्राण ओपशं दिवि ॥ ५ ॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अथ पञ्चदशो वर्गः ॥ १५ ॥

वावृधानस्य ते वयं विश्वा धनानि जिग्युषः । ऊतिमिन्द्रा वृणीमहे ॥ ६ ॥
व्य१न्तरिक्षमतिरन्मदे सोमस्य रोचना । इन्द्रो यदभिनद्बलम् ॥ ७ ॥
उद्ना आजदङ्गिरोभ्य आविष्कृण्वन्गुहा सतीः । अर्वाञ्चं नुनुदे वलम् ॥ ८ ॥
इन्द्रेण रोचना दिवो दृळ्हानि दृंहितानि च । स्थिराणि न पराणुदे ॥ ९ ॥
अपामूर्मिर्मदन्निव स्तोमं इन्द्राजिरायते । वि ते मदा अराजिषुः ॥ १० ॥

अथ षोडशो वर्गः ॥ १६ ॥

त्वं हि स्तोमवर्धन इन्द्रास्युक्थवर्धनः । स्तोतृणामुत भद्रकृत् ॥ ११ ॥
इन्द्रमित्केशिना हरी सोमपेयाय वक्षतः । उप यज्ञं सुराधसम् ॥ १२ ॥
अपां फेनेन नमुचेः शिरं इन्द्रोदवर्तयः । विश्वा यदजयः स्पृधः ॥ १३ ॥
मायाभिरुत्सिसृप्सत इन्द्र द्यामारुरुक्षतः । अव दस्यूँरधूनुथाः ॥ १४ ॥
असुन्वामिन्द्र संसदं विषूचीं व्यनाशयः । सोमपा उत्तरो भवन् ॥ १५ ॥

[१५] पञ्चदशं सूक्तम्

ऋषिः—गोषूक्त्यश्वसूक्तिनौ काण्वायनौ ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१-३, ५-७, ११, १३ निचृदुष्णिक्; ४ उष्णिक्; ८, १२ विराडुष्णिक्; ९, १० पादनिचृदुष्णिक् ॥ स्वरः—ऋषभः ॥

अथ सप्तदशो वर्गः ॥ १७ ॥

तम्वभि प्र गायत पुरुहूतं पुरुष्टुतं । इन्द्रं गीर्भिस्तविषमा विवासत ॥ १ ॥
यस्य द्विबर्हसो बृहत्सहो दाधार रोदसी । गिरीँरज्राँ अपः स्वर्वृषत्वना ॥ २ ॥
स राजसि पुरुष्टुतँ एको वृत्राणि जिघ्नसे । इन्द्र जैत्रा श्रवस्या च यन्तवे ॥ ३ ॥
तं ते मदं गृणीमसि वृषणं पृत्सु सासहिम् । उ लोककृतुमद्रिवो हरिश्रियम् ॥ ४ ॥
येन ज्योतींष्यायवे मनवे च विवेदिथ । मन्दानो अस्य बर्हिषो वि राजसि ॥ ५ ॥

अथ अष्टादशो वर्गः ॥ १८ ॥

तदद्या चित्त उक्थिनोऽनु ष्टुवन्ति पूर्वथा । वृषपत्नीरपो जया दिवेदिवे ॥ ६ ॥
तव त्यदिन्द्रियं बृहत्तव शुष्ममुत क्रतुम् । वज्रँ शिशाति धिषणा वरेण्यम् ॥ ७ ॥
तव द्यौरिन्द्र पौंस्यं पृथिवी वर्धति श्रवः । त्वामापः पर्वतासश्च हिन्विरे ॥ ८ ॥
त्वां विष्णुर्बृहन्क्षयो मित्रो गृणाति वरुणः । त्वां शर्धो मदत्यनु मारुतम् ॥ ९ ॥
त्वं वृषा जनानां मंहिष्ठ इन्द्र जज्ञिषे । सत्रा विश्वा स्वपत्यानि दधिषे ॥ १० ॥

अथ एकोनविंशो वर्गः ॥ १९ ॥

सत्रा त्वं पुरुष्टुतँ एको वृत्राणि तोशसे । नान्य इन्द्रात्करणं भूय इन्वति ॥ ११ ॥
यदिन्द्र मन्मशस्त्वा नाना हवन्त ऊतयें । अस्माकेभिर्नृभिरत्रा स्वर्जय ॥ १२ ॥
अरं क्षयाय नो महे विश्वा रूपाण्याविशन् । इन्द्रं जैत्राय हर्षया शचीपतिम् ॥ १३ ॥

[१६] षोडशं सूक्तम्

ऋषिः—इरिम्बिठिः काण्वः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१, ९-१२ गायत्री; २-७ निचृद्गायत्री; ८ विराड्गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथ विंशो वर्गः ॥ २० ॥

प्र सम्राजं चर्षणीनामिन्द्रं स्तोता नव्यं गीर्भिः । नरं नृषाहं मंहिष्ठम् ॥ १ ॥
यस्मिन्नुक्थानि रण्यन्ति विश्वानि च श्रवस्या । अपामवो न समुद्रे ॥ २ ॥
तं सुष्टुत्या विवासे ज्येष्ठराजं भरे कृतुम् । महो वाजिनं सनिभ्यः ॥ ३ ॥
यस्यानूना गभीरा मदा उरवस्तरुत्राः । हर्षुमन्तः शूरसातौ ॥ ४ ॥
तमिद्धनेषु हितेष्वधिवाकाय हवन्ते । येषामिन्द्रस्ते जयन्ति ॥ ५ ॥
तमिच्च्यौत्नैरार्यन्ति तं कृतेभिश्चर्षणयः । एष इन्द्रो वरिवस्कृत् ॥ ६ ॥

अथ एकविंशो वर्गः ॥ २१ ॥

इन्द्रो ब्रह्मेन्द्र ऋषिरिन्द्रः पुरू पुरुहूतः । महान्महीभिः शचीभिः ॥ ७ ॥
स स्तोम्यः स हव्यः सत्यः सत्वा तुविकूर्मिः । एकश्चित्सन्नभिभूतिः ॥ ८ ॥
तमर्केभिस्तं सामभिस्तं गायत्रैश्चर्षणयः । इन्द्रं वर्धन्ति क्षितयः ॥ ९ ॥
प्रणेतारं वस्यो अच्छा कर्तारं ज्योतिः समत्सु । सासह्वांसं युधामित्रान् ॥ १० ॥
स नः पप्रिः पारयाति स्वस्ति नावा पुरुहूतः । इन्द्रो विश्वा अति द्विषः ॥ ११ ॥
स त्वं न इन्द्र वाजेभिर्दशस्या च गातुया च । अच्छा च नः सुम्नं नेषि ॥ १२ ॥

[१७] सप्तदशं सूक्तम्

ऋषिः—इरिम्बिठिः काण्वः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१-३, ७, ८ गायत्री; ४-६, ९-१२ निचृद्गायत्री; १३ विराड्गायत्री; १४ आसुरीबृहती; १५ आर्षी-भुरिग्बृहती ॥ स्वरः—१-१३, षड्जः; १४, १५ मध्यमः ॥

अथ द्वाविंशो वर्गः ॥ २२ ॥

आ याहि सुषुमा हि त इन्द्र सोमं पिबा इमम् । एदं बर्हिः सदो मम ॥ १ ॥
आ त्वा ब्रह्मयुजा हरी वहतामिन्द्र केशिना । उप ब्रह्माणि नः शृणु ॥ २ ॥
ब्रह्माणस्त्वा वयं युजा सोमपामिन्द्र सोमिनः । सुतावन्तो हवामहे ॥ ३ ॥
आ नो याहि सुतावतोऽस्माकं सुष्टुतीरुप । पिबा सु शिप्रिन्नन्धसः ॥ ४ ॥
आ ते सिञ्चामि कुक्ष्योरनु गात्रा वि धावतु । गृभाय जिह्वया मधु ॥ ५ ॥

अथ त्रयोविंशो वर्गः ॥ २३ ॥

स्वादुष्टे अस्तु संसुदे मधुमान्तन्वेऽ३ तव । सोमः शमस्तु ते हृदे ॥ ६ ॥
अयमु त्वा विचर्षणे जनीरिवाभि संवृतः । प्र सोम इन्द्र सर्पतु ॥ ७ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तुविग्रीवो वपोदरः सुबाहुरन्धसो मदे। इन्द्रो वृत्राणि जिघ्नते ॥ ८ ॥
इन्द्र प्रेहि पुरस्त्वं विश्वस्येशान ओजसा। वृत्राणि वृत्रहञ्जहि ॥ ९ ॥
दीर्घस्ते अस्त्वङ्कुशो येना वसु प्रयच्छसि। यजमानाय सुन्वते ॥ १० ॥

अथ चतुर्विंशो वर्गः ॥ २४ ॥

अयं त इन्द्र सोमो निपूतो अधि बर्हिषि। एहीमस्य द्रवा पिब ॥ ११ ॥
शाचिगो शाचिपूजनायं रणाय ते सुतः। आखण्डल प्र हूयसे ॥ १२ ॥
यस्ते शृङ्गवृषो नपात्प्रणपात्कुण्डपाय्यः। न्यस्मिन्दध्र आ मनः ॥ १३ ॥
वास्तोष्पते ध्रुवा स्थूणांसत्रं सोम्यानाम् ।
द्रप्सो भेत्ता पुरां शश्वतीनामिन्द्रो मुनीनां सखा ॥ १४ ॥
पृदाकुसानुर्यजतो गवेषण एकः सन्नभि भूयसः ।
भूर्णिमश्वं नयत्तुजा पुरो गृभेन्द्रं सोमस्य पीतये ॥ १५ ॥

[१८] अष्टादशं सूक्तम्

ऋषिः—इरिम्बिठिः काण्वः ॥ देवता—१-७, १०-२२ आदित्याः; ८ अश्विनौ; ९ अग्निसूर्यानिलाः ॥ छन्दः—१, १३, १५, १६ पादनिचृद्बृहती; २ आर्ची-स्वराडुष्णिक्; ३, ८, १०, ११, १७, १८, २२ उष्णिक्; ४, ९, २१ विराडुष्णिक्; ५-७, १२, १४, १९, २० निचृदुष्णिक् ॥ स्वरः—ऋषभः ॥

अथ पञ्चविंशो वर्गः ॥ २५ ॥

इदं ह नूनमेषां सुम्नं भिक्षेत मर्त्यः। आदित्यानामपूर्व्यं सवीमनि ॥ १ ॥
अनर्वाणो ह्येषां पन्था आदित्यानाम्। अदब्धाः सन्ति पायवः सुगेवृधः ॥ २ ॥
तत्सु नः सविता भगो वरुणो मित्रो अर्यमा ।
शर्म यच्छन्तु सप्रथो यदीमहे ॥ ३ ॥
देवेभिर्देव्यदितेऽरिष्टभर्मन्ना गहि। स्मत्सूरिभिः पुरुप्रिये सुशर्मभिः ॥ ४ ॥
ते हि पुत्रासो अदितेर्विदुर्द्वेषांसि योतवे। अंहोश्चिदुरुचक्रयोऽनेहसः ॥ ५ ॥

अथ षड्विंशो वर्गः ॥ २६ ॥

अदितिर्नो दिवा पशुमदितिर्नक्तमद्वया। अदितिः पात्वंहसः सदावृधा ॥ ६ ॥
उत स्या नो दिवा मतिरदितिरूत्या गमत्। सा शंताति मयस्करदप स्रिधः ॥ ७ ॥
उत त्या दैव्या भिषजा शं नः करतो अश्विना ।
युयुयातामितो रपो अप स्रिधः ॥ ८ ॥
शमग्निरग्निभिः करच्छं नस्तपतु सूर्यः। शं वातो वात्वरपा अप स्रिधः ॥ ९ ॥
अपामीवामप स्रिधमप सेधत दुर्मतिम्। आदित्यासो युयोतना नो अंहसः ॥ १० ॥

अथ सप्तविंशो वर्गः ॥ २७ ॥

युयोता शरुमस्मदाँ आदित्यास उतामतिम् ।
ऋधग्द्वेषः कृणुत विश्ववेदसः ॥ ११ ॥
तत्सु नः शर्म यच्छतादित्या यन्मुमोचति ।
एनस्वन्तं चिदेनसः सुदानवः ॥ १२ ॥
यो नः कश्चिद्रिरिक्षति रक्षस्त्वेन मर्त्यः। स्वैः ष एवैः रिरिषीष्ट युर्जनः ॥ १३ ॥
समित्तमघमंशनवद्दुःशंसं मर्त्यं रिपुम्। यो अस्मत्रा दुर्हणावाँ उप द्वयुः ॥ १४ ॥
पाकत्रा स्थन देवा हूत्सु जानीथ मर्त्यम्। उप द्वयुं चाद्वयुं च वसवः ॥ १५ ॥

अथ अष्टाविंशो वर्गः ॥ २८ ॥

आ शर्म पर्वतानामोतापां वृणीमहे। द्यावाक्षामारे अस्मद्रपस्कृतम् ॥ १६ ॥
ते नो भद्रेण शर्मणा युष्माकं नावा वसवः। अति विश्वानि दुरिता पिपर्तन ॥ १७ ॥
तुचे तनाय तत्सु नो द्राघीय आयुर्जीवसे ।
आदित्यासः सुमहसः कृणोतन ॥ १८ ॥
यज्ञो हीळो वो अन्तर आदित्या अस्ति मृळत ।
युष्मे इद्वो अपि ष्मसि सजात्ये ॥ १९ ॥
बृहद्वरूथं मरुतां देवं त्रातारमश्विना। मित्रमीमहे वरुणं स्वस्तये ॥ २० ॥
अनेहो मित्रार्यमन्नृवद्वरुण शंस्यम्। त्रिवरूथं मरुतो यन्त नश्छर्दिः ॥ २१ ॥
ये चिद्धि मृत्युबन्धव आदित्या मनवः स्मसि। प्र सू न आयुर्जीवसे तिरेतन ॥ २२ ॥

[१९] एकोनविंशं सूक्तम्

ऋषिः—सोभरिः काण्वः ॥ देवता—१-३३ अग्निः; ३४, ३५ आदित्याः; ३६, ३७ त्रसदस्योर्दानस्तुतिः ॥ छन्दः—१, ३, १५, २१, २३, २८, ३२ निचृदुष्णिक्; २, २२, २९, ३७ विराट्पङ्क्तिः; ४, ६, १२, १६, २०, ३१ निचृत्पङ्क्तिः; ५, १९, ३० ककुबुष्णिक्; ७, ९, ३४ पादनिचृदुष्णिक्; ८ आर्चीभुरिक्पङ्क्तिः; १० सतःपङ्क्तिः; ११, १७, ३६ विराडुष्णिक्; १३ पुरउष्णिक्; १४ पङ्क्तिः; १८, ३३ पादनिचृत्पङ्क्तिः २४, २६ आर्चीस्वराट्पङ्क्तिः; २५ आर्चीस्वराड् उष्णिक्; २७ भुरिगार्चीविराडुष्णिक्; ३५ स्वराड्बृहती ॥ स्वरः—१, ३, ५, ७, ९, ११, १३, १५, १७, १९, २१, २३, २५, २७, २८, ३०, ३२, ३४, ३६, ऋषभः; २, ४, ६, ८, १०, १२, १४, १६, १८, २०, २२, २४, २६, २९, ३१, ३३, ३७ पञ्चमः; ३५ मध्यमः ॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अथ एकोनत्रिंशो वर्गः ॥ २९ ॥

तं गू॑र्धया॒ स्व॑र्णरं दे॒वासो॑ दे॒वम॑र॒तिं द॑धन्विरे। दे॒व॒त्रा ह॒व्यमोहि॑रे ॥ १ ॥

विभू॑तरातिं विप्र चि॒त्रशो॑चिषम॒ग्निमी॑ळिष्व य॒न्तुर॑म् ।

अ॒स्य मेध॑स्य सो॒म्यस्य॑ सोभरे॒ प्रेम॑ध्व॒राय॒ पूर्व्य॑म् ॥ २ ॥

यजि॑ष्ठं त्वा ववृमहे दे॒वं दे॑व॒त्रा होता॑र॒मम॑र्त्यम्। अ॒स्य य॒ज्ञस्य॑ सु॒क्रतु॑म् ॥ ३ ॥

ऊ॒र्जो नपा॑तं सु॒भगं॑ सु॒दीदि॑तिम॒ग्निं श्रेष्ठ॑शोचिषम् ।

स नो॑ मि॒त्रस्य॒ वरु॑णस्य॒ सो अ॒पामा सु॒म्नं य॑क्षते दि॒वि ॥ ४ ॥

यः स॒मिधा॒ य आहु॑ती॒ यो वेदे॑न द॒दाश॒ मर्तो॑ अ॒ग्नये॑। यो नम॑सा स्वध्व॒रः ॥ ५ ॥

अथ त्रिंशो वर्गः ॥ ३० ॥

तस्येदर्व॑न्तो रंहयन्त आ॒शव॒स्तस्य॑ द्यु॒म्नित॑मं॒ यशः॑ ।

न तमंहो॑ दे॒वकृ॑तं॒ कुत॑श्च॒न न मर्त्य॑कृतं नशत् ॥ ६ ॥

स्व॒ग्नयो॑ वो अ॒ग्निभिः॒ स्याम॑ सूनो सहस ऊर्जां पते। सु॒वीर॒स्त्वम॑स्म॒युः ॥ ७ ॥

प्र॒शंस॑मानो॒ अति॑थि॒र्न मि॒त्रियो॒ऽग्नी रथो॒ न वेद्यः॑ ।

त्वे क्षेमा॑सो॒ अपि॑ सन्ति सा॒धव॒स्त्वं राजा॑ रयी॒णाम् ॥ ८ ॥

सो अ॒द्धा दा॒श्वध्व॒रोऽग्ने॒ मर्तः॑ सुभग॒ स प्र॒शंस्यः॑। स धी॒भिर॑स्तु॒ सनि॑ता ॥ ९ ॥

यस्य॒ त्वमू॒र्ध्वो अ॑ध्व॒राय॒ तिष्ठ॑सि क्ष॒यद्वी॑रः॒ स सा॑धते ।

सो अर्व॑द्भिः॒ सनि॑ता॒ स वि॑प॒न्युभिः॒ स शूरैः॒ सनि॑ता कृ॒तम् ॥ १० ॥

अथ एकत्रिंशो वर्गः ॥ ३१ ॥

यस्या॒ग्निर्वपु॑र्गृ॒हे स्तोमं॒ चनो॒ दधी॑त वि॒श्ववा॑र्यः। ह॒व्या वा॒ वेवि॑ष॒द्विषः॑ ॥ ११ ॥

विप्र॑स्य वा स्तुव॒तः स॑हसो यहो म॒क्षूत॑मस्य रा॒तिषु॑ ।

अ॒वोदे॑वमु॒परि॑मर्त्यं कृधि॒ वसो॑ विवि॒दुषो॒ वचः॑ ॥ १२ ॥

यो अ॒ग्निं ह॒व्यदा॑तिभि॒र्नमो॑भिर्वा सु॒दक्ष॑मा॒विवा॑सति ।

गि॒रा वा॑जि॒रशो॑चिषम् ॥ १३ ॥

स॒मिधा॒ यो निशि॑ती॒ दाश॒ददि॑तिं॒ धाम॑भिरस्य॒ मर्त्यः॑ ।

विश्वेत्स धी॒भिः सु॒भगो॒ जनाँ॒ अति॑ द्यु॒म्नैरु॒द्रइ॑व तारिषत् ॥ १४ ॥

तद॑ग्ने द्यु॒म्नमा भ॑र॒ यत्सा॒सह॒त्सद॑ने॒ कं चि॑द॒त्रिण॑म्। म॒न्युं जन॑स्य दू॒ढ्यः॑ ॥ १५ ॥

अथ द्वात्रिंशो वर्गः ॥ ३२ ॥

येन॒ चष्टे॒ वरु॑णो मि॒त्रो अ॑र्य॒मा येन॒ नास॑त्या॒ भगः॑ ।

व॒यं तत्ते॒ शव॑सा गातु॒वित्त॑मा॒ इन्द्र॑त्वोता विधेमहि ॥ १६ ॥

ते घेद॑ग्ने स्वा॒ध्यो॒३॒॑ ये त्वा॑ विप्र निदधि॒रे नृ॒चक्ष॑सम् ।

विप्रा॑सो देव सु॒क्रतु॑म् ॥ १७ ॥

त इद्वेदिं॑ सुभग॒ त आहु॑तिं॒ ते सोतुं॑ चिक्रिरे दि॒वि ।

त इद्वाजे॑भिर्जिग्युर्म॒हद्धनं॒ ये त्वे कामं॑ न्येरि॒रे ॥ १८ ॥

भ॒द्रो नो॑ अ॒ग्निराहु॑तो भ॒द्रा रा॒तिः सु॑भग भ॒द्रो अ॑ध्व॒रः। भ॒द्रा उ॒त प्रश॑स्तयः ॥ १९ ॥

भ॒द्रं मनः॑ कृणुष्व वृत्र॒तूर्ये॒ येना॑ स॒मत्सु॑ सा॒सहः॑ ।

अव॑ स्थि॒रा त॑नुहि॒ भूरि॒ शर्ध॑तां व॒नेमा॑ ते अ॒भिष्टि॑भिः ॥ २० ॥

अथ त्रयस्त्रिंशो वर्गः ॥ ३३ ॥

ईळे॑ गि॒रा मनु॑र्हितं॒ यं दे॒वा दू॒तम॑र॒तिं न्ये॑रि॒रे। यजि॑ष्ठं हव्य॒वाह॑नम् ॥ २१ ॥

ति॒ग्मज॑म्भाय॒ तरु॑णाय॒ राज॑ते॒ प्रयो॑ गायस्य॒ग्नये॑ ।

यः पिं॒शते॑ सू॒नृता॑भिः सु॒वीर्य॑म॒ग्निर्घृ॒तेभि॒राहु॑तः ॥ २२ ॥

यदी॑ घृ॒तेभि॒राहु॑तो॒ वाशी॑म॒ग्निर्भर॑त॒ उच्चाव॑ च। असु॑रइव नि॒र्णिज॑म् ॥ २३ ॥

यो ह॒व्यान्यैर॑यता॒ मनु॑र्हितो दे॒व आ॒सा सु॑ग॒न्धिना॑ ।

विवा॑सते॒ वार्या॑णि स्वध्व॒रो होता॑ दे॒वो अम॑र्त्यः ॥ २४ ॥

यद॑ग्ने॒ मर्त्य॒स्त्वं स्याम॒हं मि॑त्रमहो॒ अम॑र्त्यः। सह॑सः सूनवाहुत ॥ २५ ॥

अथ चतुस्त्रिंशो वर्गः ॥ ३४ ॥

न त्वा॑ रासीया॒भिश॑स्तये वसो॒ न पा॑प॒त्वाय॑ सन्त्य ।

न मे॑ स्तो॒ताम॑ती॒वा न दुर्हि॑तः॒ स्याद॑ग्ने॒ न पा॒पया॑ ॥ २६ ॥

पि॒तुर्न पु॒त्रः सुभृ॑तो दुरो॒ण आ दे॒वाँ ए॑तु॒ प्र णो॑ ह॒विः ॥ २७ ॥

तवा॒हम॑ग्न ऊ॒तिभि॒र्नेदि॑ष्ठाभिः सचेय॒ जोष॒मा व॑सो। सदा॑ दे॒वस्य॒ मर्त्यः॑ ॥ २८ ॥

तव॒ क्रत्वा॑ सनेयं॒ तव॑ रा॒तिभि॒रग्ने॒ तव॒ प्रश॑स्तिभिः ।

त्वामिदा॑हुः॒ प्रम॑तिं वसो॒ ममाग्ने॒ हर्ष॑स्व॒ दात॑वे ॥ २९ ॥

प्र सो अ॑ग्ने॒ तवो॒तिभिः॑ सु॒वीरा॑भिस्तिरते॒ वाज॑भर्मभिः। यस्य॒ त्वं स॒ख्यमा॒वरः॑ ॥ ३० ॥

अथ पञ्चत्रिंशो वर्गः ॥ ३५ ॥

तव॑ द्र॒प्सो नील॑वान्वा॒श ऋ॒त्विय॒ इन्धा॑नः सिष्ण॒वा द॑दे ।

त्वं म॑ही॒नामु॒षसा॑मसि प्रि॒यः क्ष॒पो वस्तु॑षु राजसि ॥ ३१ ॥

तमाग॑न्म॒ सोभ॑रयः स॒हस्र॑मुष्कं स्वभि॒ष्टिमव॑से। स॒म्राजं॒ त्रास॑दस्यवम् ॥ ३२ ॥

यस्य॑ ते अग्ने अ॒न्ये अ॒ग्नय॑ उप॒क्षितो॑ व॒याइ॑व ।

विपो॒ न द्यु॒म्ना नि यु॑वे॒ जना॑नां॒ तव॑ क्ष॒त्राणि॑ व॒र्धय॑न् ॥ ३३ ॥

यमा॑दित्यासो अद्रुहः पा॒रं नय॑थ॒ मर्त्य॑म्। म॒घोनां॒ विश्वे॑षां सुदानवः ॥ ३४ ॥

यू॒यं रा॑जानः॒ कं चि॑च्चर्षणीसहः॒ क्षय॑न्तं॒ मानु॑षाँ॒ अनु॑ ।

व॒यं ते वो॒ वरु॑ण॒ मित्रार्य॑म॒न्त्स्यामेदृ॒तस्य॑ र॒थ्यः॑ ॥ ३५ ॥

अदा॑न्मे पौरुकु॒त्स्यः॑ पञ्चा॒शतं॑ त्र॒सद॑स्युर्व॒धूना॑म्। मंहि॑ष्ठो अ॒र्यः सत्प॑तिः ॥ ३६ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उत मे प्रयियोर्वयियोः सुवास्त्वा अधि तुर्वनि ।
तिसृणां सप्ततीनां श्यावः प्रणेता भुवद्वसुर्दियानां पतिः ॥ ३७ ॥

[२०] विंशं सूक्तम्

ऋषिः—सोभरिः काण्वः ॥ देवता—मरुतः ॥ छन्दः—१, ५, ७, १९, २३ ककुबुष्णिक्; २, १०, १६, २२ सतःपङ्क्तिः; ३, १५, १७ विराडुष्णिक्; ४, १८ विराट्पङ्क्तिः; ६, १२ पादनिचृत्पङ्क्तिः; ८, २०, २४, २६ निचृत्पङ्क्तिः; ९, १३, २१, २५ निचृदुष्णिक्; ११ पादनिचृदुष्णिक्; १४ आर्चीभुरिक्पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१, ३, ५, ७, ९, ११, १३, १५, १७, १९, २१, २३, २५ ऋषभः; २, ४, ६, ८, १०, १२, १४, १६, १८, २०, २२, २४, २६ पञ्चमः ॥

अथ षट्त्रिंशो वर्गः ॥ ३६ ॥

आ गन्ता मा रिषण्यत प्रस्थावानो मापस्थाता समन्यवः ।
स्थिरा चिन्नमयिष्णवः ॥ १ ॥
वीळुपविभिर्मरुत ऋभुक्षण आ रुद्रासः सुदीतिभिः ।
इषा नो अद्या गता पुरुस्पृहो यज्ञमा सोभरीयवः ॥ २ ॥
विद्मा हि रुद्रियाणां शुष्ममुग्रं मरुतां शिमीवताम् ।
विष्णोरेषस्य मीळ्हुषाम् ॥ ३ ॥
वि द्वीपानि पार्पतन्तिष्ठदुच्छुनोभे युंजन्त रोदसी ।
प्र धन्वान्यैरत शुभ्रखादयो यदेजथ स्वभानवः ॥ ४ ॥
अच्युता चिद्वो अम्मन्ना नानदति पर्वतासो वनस्पतिः ।
भूमिर्यामेषु रेजते ॥ ५ ॥

अथ सप्तत्रिंशो वर्गः ॥ ३७ ॥

अमाय वो मरुतो यातवे द्यौर्जिहीत उत्तरा बृहत् ।
यत्रा नरो देविशते तनूष्वा त्वक्षांसि बाह्वोजसः ॥ ६ ॥
स्वधामनु श्रियं नरो महि त्वेषा अमवन्तो वृषप्सवः ।
वहन्ते अहुतप्सवः ॥ ७ ॥
गोभिर्वाणो अंज्यते सोभरीणां रथे कोशे हिरण्ययें ।
गोबन्धवः सुजातासं इषे भुजे महान्तो नः स्परसे नु ॥ ८ ॥
प्रति वो वृषदञ्जयो वृष्णे शर्धाय मारुताय भरध्वम् ।
हव्या वृषप्रयाव्णे ॥ ९ ॥
वृषणश्वेन मरुतो वृषप्सुना रथेन वृषनाभिना ।
आ श्येनासो न पक्षिणो वृथा नरो हव्या नो वीतयें गत ॥ १० ॥

अथ अष्टत्रिंशो वर्गः ॥ ३८ ॥

समानमञ्ज्येषां वि भ्राजन्ते रुक्मासो अधि बाहुषु ।
दविद्युतत्यृष्टयः ॥ ११ ॥
त उग्रासो वृषण उग्रबाहवो नकिष्टनूषु येतिरे ।
स्थिरा धन्वान्यायुधा रथेषु वोऽनीकेष्वधि श्रियः ॥ १२ ॥
येषामर्णो न सप्रथो नाम त्वेषं शश्वतामेकमिद्भुजे ।
वयो न पित्र्यं सहः ॥ १३ ॥
तान्वन्दस्व मरुतस्ताँ उप स्तुहि तेषां हि धुनीनाम् ।
अराणां न चरमस्तदेषां दाना मह्ना तदेषाम् ॥ १४ ॥
सुभगः स वं ऊतिष्वास पूर्वीसु मरुतो व्युष्टिषु ।
यो वो नूनमुतासति ॥ १५ ॥

अथ एकोनचत्वारिंशो वर्गः ॥ ३९ ॥

यस्य वा यूयं प्रति वाजिनो नर आ हव्या वीतयें गथ ।
अभि ष द्युम्नैरुत वाजसातिभिः सुम्ना वो धूतयो नशत् ॥ १६ ॥
यथा रुद्रस्य सूनवो दिवो वशन्त्यसुरस्य वेधसः ।
युवानस्तथेदसत् ॥ १७ ॥
ये चार्हन्ति मरुतः सुदानवः स्मन्मीळ्हुषश्चरन्ति ये ।
अतश्चिदा न उप वस्यसा हृदा युवान आ ववृध्वम् ॥ १८ ॥
यूनं ऊ षु नविष्ठया वृष्णः पावकाँ अभि सोभरे गिरा ।
गाय गाइव चर्कृषत् ॥ १९ ॥
साहा ये सन्ति मुष्टिहेव हव्यो विश्वासु पृत्सु होतृषु ।
वृष्णश्चन्द्रात्र सुश्रवस्तमान्निरा वन्दस्व मरुतो अर्ह ॥ २० ॥

अथ चत्वारिंशो वर्गः ॥ ४० ॥

गावश्चिद्धा समन्यवः सजात्येन मरुतः सबन्धवः ।
रिहते ककुभो मिथः ॥ २१ ॥
मर्तांश्चिद्धो नृतवो रुक्मवक्षस उप भ्रातृत्वमायति ।
अधि नो गात मरुतः सदा हि वं आपित्वमस्ति निध्रुवि ॥ २२ ॥
मरुतो मारुतस्य न आ भेषजस्य वहता सुदानवः ।
यूयं सखायः सप्तयः ॥ २३ ॥
याभिः सिन्धुमवथ याभिस्तूर्वथ याभिर्दशस्यथा क्रिविम् ।
मयो नो भूतोतिभिर्मयोभुवः शिवाभिरसचद्विषः ॥ २४ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

यत्सिन्धौ यदसिक्न्यां यत्समुद्रेषु मरुतः सुबर्हिषः ।
यत्पर्वतेषु भेषजम् ॥ २५ ॥
विश्वं पश्यन्तो बिभृथा तनूष्वा तेना नो अधि वोचत ।
क्षमा रपो मरुत आतुरस्य न इष्कर्ता विहुतं पुनः ॥ २६ ॥

इति षष्ठाष्टके प्रथमोऽध्यायः ॥

अथ द्वितीयोऽध्यायः

चतुर्थोऽनुवाकः [२१] एकविंशं सूक्तम्

ऋषिः—सोभरिः काण्वः ॥ देवता—१-१६ इन्द्रः; १७, १८ चित्रस्य दानस्तुतिः ॥ छन्दः—१, ३, १५ विराडुष्णिक्; २, १२, १४ पादनिचृत्पङ्क्तिः; ४ भुरिक्पङ्क्तिः; ५, ७, ९, ११ ककुबुष्णिक्; ६, ८, १६, १८ निचृत्पङ्क्तिः; १० विराट्पङ्क्तिः; १३, १७ निचृदुष्णिक् ॥ स्वरः—१, ३, ५, ७, ९, ११, १३, १५, १७ ऋषभः; २, ४, ६, ८, १०, १२, १४, १६, १८ पञ्चमः ॥

अथ प्रथमो वर्गः ॥ १ ॥

वयमु त्वामपूर्व्य स्थूरं न कच्चिद्भरन्तोऽवस्यवः ।
वाजे चित्रं हवामहे ॥ १ ॥
उप त्वा कर्मन्नूतये स नो युवोग्रश्चक्राम यो धृषत् ।
त्वामिद्धवितारं ववृमहे सखाय इन्द्र सानसिम् ॥ २ ॥
आ याहीम इन्दवोऽश्वपते गोपत उर्वरापते ।
सोमं सोमपते पिब ॥ ३ ॥
वयं हि त्वा बन्धुमन्तमबन्धवो विप्रास इन्द्र येमिम ।
या ते धामानि वृषभ तेभिरा गहि विश्वेभिः सोमपीतये ॥ ४ ॥
सीदन्तस्ते वयो यथा गोश्रीते मधौ मदिरे विवक्षणे ।
अभि त्वामिन्द्र नोनुमः ॥ ५ ॥

अथ द्वितीयो वर्गः ॥ २ ॥

अच्छा च त्वेना नमसा वदामसि कं मुहुश्चिद्वि दीधयः ।
सन्ति कामासो हरिवो ददिष्टन स्मो वयं सन्ति नो धियः ॥ ६ ॥
नूला इदिन्द्र ते वयमूती अभूम नहि नू ते अद्रिवः ।
विद्मा पुरा परीणसः ॥ ७ ॥
विद्मा सखित्वमुत शूर भोज्या मा ते ता वज्रिन्नीमहे ।
उतो समस्मिन्ना शिशीहि नो वसो वाजे सुशिप्र गोमति ॥ ८ ॥

यो न इदमिदं पुरा प्र वस्य आनिनाय तमु वः स्तुषे ।
खाय इन्द्रमूतये ॥ ९ ॥
हर्यश्वं सत्पतिं चर्षणीसहं स हि ष्मा यो अमन्दत ।
आ तु नः स वयति गव्यमश्व्यं स्तोतृभ्यो मघवा शतम् ॥ १० ॥

अथ तृतीयो वर्गः ॥ ३ ॥

त्वया ह स्विद्युजा वयं प्रति श्वसन्तं वृषभ ब्रुवीमहि ।
संस्थे जनस्य गोमतः ॥ ११ ॥
जयेम कारे पुरुहूत कारिणोऽभि तिष्ठेम दूढ्यः ।
नृभिर्वृत्रं हन्याम शूशुयाम चावेरिन्द्र प्र णो धियः ॥ १२ ॥
अभ्रातृव्यो अना त्वमनापिरिन्द्र जनुषा सनादसि ।
युधेदापित्वमिच्छसे ॥ १३ ॥
नकीं रेवन्तं सख्याय विन्दसे पीयन्ति ते सुराश्वः ।
यदा कृणोषि नदनुं समूहस्यादित्पितेव हूयसे ॥ १४ ॥
मा ते अमा जुरो यथा मूरास इन्द्र सख्ये त्वावतः ।
नि षदाम सचा सुते ॥ १५ ॥

अथ चतुर्थो वर्गः ॥ ४ ॥

मा ते गोदत्र निररामं राधस इन्द्र मा ते गृहामहि ।
दृळ्हा चिद्दर्यः प्र मृशाभ्या भर न ते दामान आदभे ॥ १६ ॥
इन्द्रो वा घेदियन्मघं सरस्वती वा सुभगा ददिर्वसु ।
त्वं वा चित्र दाशुषे ॥ १७ ॥
चित्र इद्राजा राजका इदन्यके यके सरस्वतीमनु ।
पर्जन्यइव ततनद्धि वृष्ट्या सहस्रमयुता ददत् ॥ १८ ॥

[२२] द्वाविंशं सूक्तम्

ऋषिः—सोभरिः काण्वः ॥ देवता—अश्विनौ ॥ छन्दः—१ विराड्बृहती; २ विराट्पङ्क्तिः; ३, ५ निचृद्बृहती; ४, १० सतःपङ्क्तिः; ६, १६, १८ निचृत्पङ्क्तिः; ७ पथ्याबृहती; ८ अनुष्टुप्; ९, ११, १७ उष्णिक्; १२ निचृत्त्रिष्टुप्; १३ निचृदुष्णिक्; १४ भुरिक्पङ्क्तिः; १५ पादनिचृदुष्णिक् ॥ स्वरः—१, ३, ५, ७ मध्यमः; २, ४, ६, १०, १४, १६, १८ पञ्चमः; ८ गान्धारः; ९, ११, १३, १५, १७ ऋषभः; १२ धैवतः ॥

अथ पञ्चमो वर्गः ॥ ५ ॥

ओ त्यमह्व आ रथमद्या दंसिष्ठमूतये ।
यमाश्विना सुहवा रुद्रवर्तनी आ सूर्यायै तस्थथुः ॥ १ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पूर्वा॒पुषं॑ सु॒हवं॑ पुरु॒स्पृहं॑ भु॒ज्युं वाजे॑षु॒ पूर्व्य॑म् ।
स॒च॒नाव॑न्तं सुम॒तिभिः॑ सोभरे॒ विद्वे॑षसमने॒हस॑म् ॥ २ ॥
इ॒ह त्या पु॑रु॒भूत॑मा दे॒वा नमो॑भिर॒श्विना॑ ।
अ॒र्वा॒ची॒ना स्वव॑से करामहे॒ गन्ता॑रा दा॒शुषो॑ गृ॒हम् ॥ ३ ॥
यु॒वो रथ॑स्य॒ परि॑ च॒क्रमी॑यत ई॒र्मान्यद्वा॑मिषण्यति ।
अ॒स्माँ अच्छा॑ सुम॒तिर्वां॑ शुभस्पती॒ आ धे॒नुरि॑व धावतु ॥ ४ ॥
रथो॒ यो वां॑ त्रिवन्धु॒रो हिर॑ण्याभीशुरश्विना ।
परि॒ द्यावा॑पृथि॒वी भूष॑ति श्रु॒तस्तेन॑ नास॒त्या ग॑तम् ॥ ५ ॥

अथ षष्ठो वर्गः ॥ ६ ॥

द॒श॒स्यन्ता॒ मन॑वे पू॒र्व्यं दि॒वि यवं॒ वृके॑ण कर्षथः ।
ता वा॑म॒द्य सु॑म॒तिभिः॑ शुभस्पती॒ अश्वि॑ना॒ प्र स्तु॑वीमहि ॥ ६ ॥
उप॑ नो वाजिनीवसू या॒तमृ॒तस्य॑ प॒थिभिः॑ ।
येभि॑स्तृ॒क्षिं वृ॑षणा त्रासदस्य॒वं म॒हे क्ष॒त्राय॒ जिन्व॑थः ॥ ७ ॥
अ॒यं वा॒मद्रि॑भिः सु॒तः सोमो॑ नरा वृषण्वसू ।
आ या॑तं॒ सोम॑पीतये॒ पिब॑तं दा॒शुषो॑ गृ॒हे ॥ ८ ॥
आ हि रु॒हत॑मश्विना॒ रथे॒ कोशे॑ हिर॒ण्यये॑ वृषण्वसू ।
यु॒ञ्जाथां॒ पीव॑री॒रिषः॑ ॥ ९ ॥
याभिः॑ प॒क्थमव॑थो॒ याभि॒रध्रि॑गुं॒ याभि॑र्ब॒भ्रुं विजो॑षसम् ।
ताभि॑र्नो म॒क्षू तूय॑मश्वि॒ना ग॑तं भिष॒ज्यतं॒ यदातु॑रम् ॥ १० ॥

अथ सप्तमो वर्गः ॥ ७ ॥

यदध्रि॑गावो॒ अध्रि॑गू इ॒दा चि॒दह्नो॑ अ॒श्विना॒ हवा॑महे ।
व॒यं गी॒भिर्वि॑प॒न्यवः॑ ॥ ११ ॥
ताभि॒रा या॑तं वृष॒णोप॑ मे॒ हवं॑ वि॒श्वप्सुं॑ वि॒श्ववा॑र्यम् ।
इ॒षा मंहि॑ष्ठा पुरु॒भूत॑मा नरा॒ याभिः॒ क्रिविं॑ वावृ॒धुस्ताभि॒रा ग॑तम् ॥ १२ ॥
तावि॒दा चि॒दहा॑नां॒ ताव॒श्विना॒ वन्द॑मान॒ उप॑ ब्रुवे ।
ता ऊ॒ नमो॑भिरीमहे ॥ १३ ॥
ताविद्दो॒षा ता उ॒षसि॑ शु॒भस्पती॒ ता याम॑न्रु॒द्रव॑र्तनी ।
मा नो॒ मर्ता॑य रि॒पवे॑ वाजिनीवसू प॒रो रु॑द्रा॒वति॑ ख्यतम् ॥ १४ ॥
आ सुग्म्या॑य॒ सुग्म्यं॑ प्रा॒ता रथे॑ना॒श्विना॑ वा स॒क्षणी॑ ।
हु॒वे पि॒तेव॒ सोभ॑री ॥ १५ ॥

अथ अष्टमो वर्गः ॥ ८ ॥

मनो॑जवसा वृषणा मदच्युता मक्षुं॑ग॒माभि॑रू॒तिभिः॑ ।
आ॒रात्ता॑च्चिद्भूतम॒स्मे अव॑से पू॒र्वीभिः॑ पुरुभोजसा ॥ १६ ॥
आ नो॒ अश्वा॑वदश्विना व॒र्तिर्या॑सिष्टं मधुपातमा नरा ।
गोम॑द्दस्रा॒ हिर॑ण्यवत् ॥ १७ ॥
सु॒प्रा॒व॒र्गं सु॒वीर्यं॑ सु॒ष्ठु वार्य॒मना॑धृष्टं रक्ष॒स्विना॑ ।
अ॒स्मिन्ना वा॑मा॒याने॑ वाजिनीवसू॒ विश्वा॑ वा॒मानि॑ धीमहि ॥ १८ ॥

[२३] त्रयोविंशं सूक्तम्

ऋषिः—विश्वमना वैयश्वः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१, ३, १०, १४-१६, १९-२२, २६, २७ निचृदुष्णिक्; २, ४, ५, ७, ११, १७, २५, २९, ३० विराडुष्णिक्; ६, ८, ९, १३, १८, उष्णिक्; १२, २३, २८, पादनिचृदुष्णिक्; २४ आर्चीस्वराडुष्णिक् ॥

स्वरः—ऋषभः ॥

अथ नवमो वर्गः ॥ ९ ॥

ईळि॑ष्वा॒ हि प्र॑ती॒व्यं१॒॑ यज॑स्व जा॒तवे॑दसम् ।
च॒रि॒ष्णुधू॑म॒मगृ॑भीतशोचिषम् ॥ १ ॥
दा॒मानं॑ विश्वचर्षणे॒ऽग्निं वि॑श्वमनो गि॒रा ।
उ॒त स्तु॑षे॒ विष्प॑र्धसो॒ रथा॑नाम् ॥ २ ॥
येषा॑माबा॒ध ऋ॒ग्मिय॑ इ॒षः पृ॒क्षश्च॑ नि॒ग्रभे॑ ।
उ॒प॒विदा॒ वह्नि॑र्विन्दते॒ वसु॑ ॥ ३ ॥
उद॑स्य शो॒चिर॑स्थाद्दीदि॒युषो॒ व्य१॒॑जर॑म् ।
तपु॑र्जम्भस्य सु॒द्युतो॑ गण॒श्रियः॑ ॥ ४ ॥
उदु॑ तिष्ठ स्वध्वर॒ स्तवा॑नो दे॒व्या कृ॒पा ।
अ॒भि॒ख्या भा॒सा बृ॑ह॒ता शु॑शु॒क्वनिः॑ ॥ ५ ॥

अथ दशमो वर्गः ॥ १० ॥

अग्ने॑ या॒हि सु॑श॒स्तिभि॑र्ह॒व्या जुह्वा॑न आनु॒षक् ।
यथा॑ दू॒तो ब॒भूथ॑ हव्य॒वाह॑नः ॥ ६ ॥
अ॒ग्निं वः॑ पू॒र्व्यं हु॑वे॒ होता॑रं चर्षणी॒नाम् ।
तम॒या वा॒चा गृ॑णे॒ तमु॑ वः स्तुषे ॥ ७ ॥
य॒त्रेभि॒रुद्भु॑तक्रतुं॒ यं कृ॒पा सू॒दय॑न्त॒ इत् ।
मि॒त्रं न जने॒ सुधि॑तमृ॒ताव॑नि ॥ ८ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ऋतावानमृतायवो यज्ञस्य साधनं गिरा ।
उपो एनं जुजुषुर्नमस्यदे ॥ ९ ॥
अच्छा नो अङ्गिरस्तमं यज्ञासो यन्तु संयतः ।
होता यो अस्ति विक्ष्वा यशस्तमः ॥ १० ॥

अथ एकादशो वर्गः ॥ ११ ॥

अग्ने तव त्ये अजरेन्धानासो बृहद्भाः ।
अश्वाइव वृषणस्तविषीयवः ॥ ११ ॥
स त्वं न ऊर्जां पते रयिं रास्व सुवीर्यम् ।
प्राव नस्तोके तनये समत्स्वा ॥ १२ ॥
यद्वा उ विश्पतिः शितः सुप्रीतो मनुषो विशि ।
विश्वेदग्निः प्रति रक्षांसि सेधति ॥ १३ ॥
श्रुष्ट्यग्ने नवस्य मे स्तोमस्य वीर विश्पते ।
नि मायिनस्तपुषा रक्षसो दह ॥ १४ ॥
न तस्य मायया चन रिपुरीशीत मर्त्यः ।
यो अग्नये ददाश हव्यदातिभिः ॥ १५ ॥

अथ द्वादशो वर्गः ॥ १२ ॥

व्यश्वस्त्वा वसुविदमुक्षण्युरप्रीणादृषिः ।
महो राये तमु त्वा समिधीमहि ॥ १६ ॥
उशना काव्यस्त्वा नि होतारमसादयत् ।
आयजिं त्वा मनवे जातवेदसम् ॥ १७ ॥
विश्वे हि त्वा सजोषसो देवासो दूतमक्रत ।
श्रुष्टी देव प्रथमो यज्ञियो भुवः ॥ १८ ॥
इमं धा वीरो अमृतं दूतं कृण्वीत मर्त्यः ।
पावकं कृष्णवर्तनिं विहायसम् ॥ १९ ॥
तं हुवेम यतस्रुचः सुभासं शुक्रशोचिषम् ।
विशामग्निमजरं प्रत्नमीड्यम् ॥ २० ॥

अथ त्रयोदशो वर्गः ॥ १३ ॥

यो अस्मै हव्यदातिभिराहुतिं मर्तोऽविधत् ।
भूरि षोषं स धत्ते वीरवद्यशः ॥ २१ ॥
प्रथमं जातवेदसमग्निं यज्ञेषु पूर्व्यम् ।
प्रति स्तुगेति नमसा हविष्मती ॥ २२ ॥

आभिर्विधेमाग्नये ज्येष्ठाभिर्व्यश्ववत् ।
मंहिष्ठाभिर्मतिभिः शुक्रशोचिषे ॥ २३ ॥
नूनमर्च विहायसे स्तोमेभिः स्थूरयूपवत् ।
ऋषे वैयश्व दम्यायाग्नये ॥ २४ ॥
अतिथिं मानुषाणां सूनुं वनस्पतीनाम् ।
विप्रा अग्निमवसे प्रत्नमीळते ॥ २५ ॥

अथ चतुर्दशो वर्गः ॥ १४ ॥

महो विश्वाँ अभि षतोऽभि हव्यानि मानुषा ।
अग्ने नि षत्सि नमसाधि बर्हिषि ॥ २६ ॥
वंस्वा नो वार्या पुरु वंस्व राय पुरुस्पृहः ।
सुवीर्यस्य प्रजावतो यशस्वतः ॥ २७ ॥
त्वं वरो सुषाम्णेऽग्ने जनाय चोदय ।
सदा वसो रातिं यविष्ठ शश्वते ॥ २८ ॥
त्वं हि सुप्रतूरसि त्वं नो गोमतीरिषः ।
महो रायः सातिमग्ने अपा वृधि ॥ २९ ॥
अग्ने त्वं यशा अस्या मित्रावरुणा वह ।
ऋतावाना सम्राजा पूतदक्षसा ॥ ३० ॥

[२४] चतुर्विंशं सूक्तम्

ऋषिः—विश्वमना वैयश्वः ॥ देवता—१-२७ इन्द्रः; २८-३० वरोः सौषाम्णस्य दानस्तुतिः ॥ छन्दः—१, ६, ११, १३, २०, २३, २४ निचृदुष्णिक्; २-५, ७, ८, १०, १६, २५-२७ उष्णिक्; ९, १२, १८, २२, २८, २९ विराडुष्णिक्; १४, १५, १७, २१ पादनिचृदुष्णिक्; १९ आर्चीस्वराडुष्णिक्; ३० निचृदनुष्टुप् ॥ स्वरः—१-२९ ऋषभः; ३० गान्धारः ॥

अथ पञ्चदशो वर्गः ॥ १५ ॥

सखाय आ शिषामहि ब्रह्मेन्द्राय वज्रिणे ।
स्तुष ऊ षु वो नृतमाय धृष्णवे ॥ १ ॥
शवसा ह्यसि श्रुतो वृत्रहत्येन वृत्रहा ।
मघैर्मघोनो अति शूर दाशसि ॥ २ ॥
स नः स्तवान आ भर रयिं चित्रश्रवस्तमम् ।
निरेके चिद्यो हरिवो वसुर्ददिः ॥ ३ ॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

आ निरेकमुत प्रियमिन्द्र दर्षि जनानाम् ।
धृषता धृष्णो स्तवमान आ भर ॥ ४ ॥
न ते सव्यं न दक्षिणं हस्तं वरन्त आमुरः ।
न परिबाधौ हरिवो गविष्टिषु ॥ ५ ॥

अथ षोडशो वर्गः ॥ १६ ॥

आ त्वा गोभिरिव व्रजं गीर्भिर्ऋणोम्यद्रिवः ।
आ स्मा कामं जरितुरा मनः पृण ॥ ६ ॥
विश्वानि विश्वमनसो धिया नो वृत्रहन्तम ।
उग्र प्रणेतरधि षू वसो गहि ॥ ७ ॥
वयं ते अस्य वृत्रहन्विद्याम शूर नव्यसः ।
वसोः स्पार्हस्य पुरुहूत राधसः ॥ ८ ॥
इन्द्र यथा ह्यस्ति तेऽपरीतं नृतो शवः ।
अमृक्ता रातिः पुरुहूत दाशुषे ॥ ९ ॥
आ वृषस्व महामह महे नृतम राधसे ।
दृळ्हश्चिद् दृह्य मघवन्मघत्तये ॥ १० ॥

अथ सप्तदशो वर्गः ॥ १७ ॥

नू अन्यत्रा चिदद्रिवस्त्वन्नो जग्मुराशसः ।
मघवञ्छग्धि तव तन्न ऊतिभिः ॥ ११ ॥
नह्यङ्ग नृतो त्वदन्यं विन्दामि राधसे ।
राये द्युम्नाय शवसे च गिर्वणः ॥ १२ ॥
एन्दुमिन्द्राय सिञ्चत पिबाति सोम्यं मधु ।
प्र राधसा चोदयाते महित्वना ॥ १३ ॥
उपो हरीणां पतिं दक्षं पृञ्चन्तमब्रवम् ।
नूनं श्रुधि स्तुवतो अश्व्यस्य ॥ १४ ॥
नह्यङ्ग पुरा चन जज्ञे वीरतरस्त्वत् ।
नकीं राया नैवथा न भन्दना ॥ १५ ॥

अथ अष्टादशो वर्गः ॥ १८ ॥

एदु मध्वो मदिन्तरं सिञ्च वाध्वर्यो अन्धसः ।
एवा हि वीरः स्तवते सदावृधः ॥ १६ ॥
इन्द्रं स्थातर्हरीणां नकिष्टे पूर्व्यस्तुतिम् ।
उदानंश शवसा न भन्दना ॥ १७ ॥

तं वो वाजानां पतिमहूमहि श्रवस्यवः ।
अप्रायुभिर्यज्ञेभिर्वावृधेन्यम् ॥ १८ ॥
एतो न्विन्द्रं स्तवाम सखायः स्तोम्यं नरम् ।
कृष्टीर्यो विश्वा अभ्यस्त्येक इत् ॥ १९ ॥
अगोरुधाय गविषे द्युक्षाय दस्म्यं वचः ।
घृतात्स्वादीयो मधुनश्च वोचत ॥ २० ॥

अथ एकोनविंशो वर्गः ॥ १९ ॥

यस्यामितानि वीर्या३ न राधः पर्येतवे ।
ज्योतिर्न विश्वमभ्यस्ति दक्षिणा ॥ २१ ॥
स्तुहीन्द्रं व्यश्ववदनूर्मिं वाजिनं यमम् ।
अर्यो गयं मंहमानं वि दाशुषे ॥ २२ ॥
एवा नूनमुप स्तुहि वैयश्व दशमं नवम् ।
सुविद्वांसं चकृत्यं चरणीनाम् ॥ २३ ॥
वेत्था हि निर्ऋतीनां वज्रहस्त परिवृजम् ।
अहरहः शुन्ध्युः परिपदामिव ॥ २४ ॥
तदिन्द्राव आ भर येना दंसिष्ठ कृत्वने ।
द्विता कुत्साय शिश्नथो नि चोदय ॥ २५ ॥

अथ विंशो वर्गः ॥ २० ॥

तमु त्वा नूनमीमहे नव्यं दंसिष्ठ सन्यसे ।
स त्वं नो विश्वा अभिमातीः सक्षणिः ॥ २६ ॥
य ऋक्षादंहसो मुचद्यो वार्यात्सप्त सिन्धुषु ।
वधर्दासस्य तुविनृम्ण नीनमः ॥ २७ ॥
यथा वरो सुषाम्णे सनिभ्य आवहो रयिम् ।
व्यश्वेभ्यः सुभगे वाजिनीवति ॥ २८ ॥
आ नार्यस्य दक्षिणा व्यश्वाँ एतु सोमिनः ।
स्थूरं च राधः शतवत्सहस्रवत् ॥ २९ ॥
वस्वी पृच्छदीजानः कुहया कुहयाकृते ।
एषो अपश्रितो वलो गोमतीमव तिष्ठति ॥ ३० ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

[२५] पञ्चविंशं सूक्तम्

ऋषिः—विश्वमना वैयश्वः ॥ देवता—१-९, १३-२४ मित्रावरुणौ; १०-१२ विश्वे देवाः ॥ छन्दः—१, २, ५-९, १९ निचृदुष्णिक्; ३, १०, १३-१६, २०, २१, २२ विराडुष्णिक्; ४, ११, १२, २४ उष्णिक्; १७, १८ पादनिचृद् उष्णिक्; २३ आर्चीउष्णिक् ॥ स्वरः—ऋषभः ॥

अथ एकविंशो वर्गः ॥ २१ ॥

ता वां विश्वस्य गोपा देवा देवेषु यज्ञिया ।
ऋतावाना यजसे पूतदक्षसा ॥ १ ॥
मित्रा तना न रथ्या वरुणो यश्च सुक्रतुः ।
सनात्सुजाता तनया धृतव्रता ॥ २ ॥
ता माता विश्ववेदसासुर्याय प्रमंहसा ।
मही जजानादितिर्ऋतावरी ॥ ३ ॥
महान्ता मित्रावरुणा सम्राजा देवावसुरा ।
ऋतावानावृतमा घोषतो बृहत् ॥ ४ ॥
नपाता शवसो महः सूनू दक्षस्य सुक्रतू ।
सुप्रदानू इषो वास्त्वधि क्षितः ॥ ५ ॥

अथ द्वाविंशो वर्गः ॥ २२ ॥

सं या दानूनि येमथुर्दिव्याः पार्थिवीरिषः ।
नभस्वतीरा वां चरन्तु वृष्टयः ॥ ६ ॥
अधि या बृहतो दिवो अभि यूथेव पश्यतः ।
ऋतावाना सम्राजा नमसे हिता ॥ ७ ॥
ऋतावाना नि षेदतुः साम्राज्याय सुक्रतू ।
धृतव्रता क्षत्रिया क्षत्रमाशतुः ॥ ८ ॥
अक्ष्णश्चिद्रातुवित्तरानुल्बणेन चक्षसा ।
नि चिन्मिषन्ता निचिरा नि चिक्यतुः ॥ ९ ॥
उत नो देव्यदितिरुरुष्यतां नासत्या ।
उरुष्यन्तु मरुतो बृद्धशवसः ॥ १० ॥

अथ त्रयोविंशो वर्गः ॥ २३ ॥

ते नो नावमुरुष्यत दिवा नक्तं सुदानवः ।
अरिष्यन्तो नि पायुभिः सचेमहि ॥ ११ ॥
अग्ने ते विष्णवे वयमरिष्यन्तः सुदानवे ।
श्रुधि स्वयावन्त्सिन्धो पूर्वचित्तये ॥ १२ ॥
तद्वायं वृणीमहे वरिष्ठं गोपयत्यम् ।
मित्रो यत्पान्ति वरुणो यदर्यमा ॥ १३ ॥
उत नः सिन्धुरपां तन्मरुतस्तदश्विना ।
इन्द्रो विष्णुर्मीढ्वांसः सजोषसः ॥ १४ ॥
ते हि ष्मा वनुषो नरोऽभिमातिं कयस्य चित् ।
तिग्मं न क्षोदः प्रतिघ्नन्ति भूर्णयः ॥ १५ ॥

अथ चतुर्विंशो वर्गः ॥ २४ ॥

अयमेकं इत्था पुरूरु चष्टे वि विशपतिः ।
तस्य व्रतान्यनु वश्चरामसि ॥ १६ ॥
अनु पूर्वीण्योक्या साम्राज्यस्य सश्चिम ।
मित्रस्य व्रता वरुणस्य दीर्घश्रुत् ॥ १७ ॥
परि यो रश्मिना दिवोऽन्तान्ममे पृथिव्याः ।
उभे आ पप्रौ रोदसी महित्वा ॥ १८ ॥
उदु ष्य शरणे दिवो ज्योतिरयंस्त सूर्यः ।
अग्निर्न शुक्रः समिधान आहुतः ॥ १९ ॥
वचो दीर्घप्रसद्मनीशे वाजस्य गोमतः ।
ईशे हि पित्वोऽविषस्य दावने ॥ २० ॥

अथ पञ्चविंशो वर्गः ॥ २५ ॥

तत्सूर्यं रोदसी उभे दोषा वस्तोरुप ब्रुवे ।
भोजेष्वस्माँ अभ्युच्चरा सदा ॥ २१ ॥
ऋज्रमुक्षण्यायने रजतं हरयाणे ।
रथं युक्तमसनाम सुषामणि ॥ २२ ॥
ता मे अश्व्यानां हरीणां नितोशना ।
उतो नु कृत्व्यानां नृवाहसा ॥ २३ ॥
स्मदभीशू कशावन्ता विप्रा नविष्ठया मती ।
महो वाजिनावर्वन्ता सचासनम् ॥ २४ ॥

[२६] षड्विंशं सूक्तम्

ऋषिः—विश्वमना वैयश्वो व्यश्वो वाङ्गिरसः ॥ देवता—१-१९ अश्विनौ; २०, २१, २२-२५ वायुः ॥ छन्दः—१, ३, ४, ६, ७ उष्णिक्; २, ८, २३ विराडुष्णिक्; ५, ९-१५, २२ निचृदुष्णिक्; १६, १९ विराड्गायत्री; १७, १८, २१ निचृद्गायत्री; २० विराडनुष्टुप्; २४ पादनिचृदुष्णिक्; २५ गायत्री ॥ स्वरः—१-१५, २२-२४ ऋषभः; १६-१९, २१, २५ षड्जः; २० गान्धारः ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अथ षड्विंशो वर्गः ॥ २६ ॥

युवोरु षू रथँ हुवे सधस्तुत्याय सूरिषु ।
अतूर्तदक्षा वृषणा वृषण्वसू ॥ १ ॥
युवं वरो सुषाम्णे महे तने नासत्या ।
अवोभिर्याथो वृषणा वृषण्वसू ॥ २ ॥
ता वामद्य हवामहे हव्येभिर्वाजिनीवसू ।
पूर्वीरिष इषयन्तावति क्षपः ॥ ३ ॥
आ वां वाहिष्ठो अश्विना रथो यातु श्रुतो नरा ।
उप स्तोमान्तुरस्य दर्शथः श्रिये ॥ ४ ॥
जुहुराणा चिदश्विना मन्येथां वृषण्वसू ।
युवं हि रुद्रा पर्षथो अति द्विषः ॥ ५ ॥

अथ सप्तविंशो वर्गः ॥ २७ ॥

दस्रा हि विश्वमानुषङ्मक्षूभिः परिदीयथः ।
धियंजिन्वा मधुवर्णा शुभस्पती ॥ ६ ॥
उप नो यातमश्विना राया विश्वपुषा सह ।
मघवाना सुवीरावनपच्युता ॥ ७ ॥
आ मे अस्य प्रतीव्यमिन्द्रनासत्या गतम् ।
देवा देवेभिरद्य सचनस्तमा ॥ ८ ॥
वयं हि वां हवामह उक्षण्यन्तो व्यश्ववत् ।
सुमतिभिरुप विप्राविहा गतम् ॥ ९ ॥
अश्विना स्वृषे स्तुहि कुवित्ते श्रवतो हवम् ।
नेदीयसः कूळयातः पुणीँरुत ॥ १० ॥

अथ अष्टाविंशो वर्गः ॥ २८ ॥

वैयश्वस्य श्रुतं नरोतो मे अस्य वेदथः ।
सजोषसा वरुणो मित्रो अर्यमा ॥ ११ ॥
युवादत्तस्य धिष्ण्या युवानीतस्य सूरिभिः ।
अहंहर्वृषणा महाँ शिक्षतम् ॥ १२ ॥
यो वां यज्ञेभिरावृतोऽधिवस्त्रा वधूरिव ।
सपर्यन्ता शुभे चक्राते अश्विना ॥ १३ ॥
यो वामुरुव्यचस्तमं चिकेतति नृपाय्यम् ।
वर्तिरश्विना परि यातमस्मयू ॥ १४ ॥
अस्मभ्यं सु वृषण्वसू यातं वर्तिर्नृपाय्यम् ।
विषुद्रुहेव यज्ञमूहथुर्गिरा ॥ १५ ॥

अथ एकोनत्रिंशो वर्गः ॥ २९ ॥

वाहिष्ठो वां हवानां स्तोमो दूतो हुवन्नरा ।
युवाभ्यां भूत्वश्विना ॥ १६ ॥
यददो दिवो अर्णव इषो वा मदथो गृहे ।
श्रुतमिन्मे अमर्त्या ॥ १७ ॥
उत स्या श्वेतयावरी वाहिष्ठा वां नदीनाम् ।
सिन्धुर्हिरण्यवर्तनिः ॥ १८ ॥
स्मदेतया सुकीर्त्याश्विना श्वेतया धिया ।
वहेथे शुभ्रयावाना ॥ १९ ॥
युक्ष्वा हि त्वं रथासहा युवस्व पोष्या वसो ।
आन्नौ वायो मधु पिबास्माकं सवना गहि ॥ २० ॥

अथ त्रिंशो वर्गः ॥ ३० ॥

तवं वायवृतस्पते त्वष्टुर्जामातरद्भुत ।
अवांस्या वृणीमहे ॥ २१ ॥
त्वष्टुर्जामातरं वयमीशानं राय ईमहे ।
सुतावन्तो वायुं द्युम्ना जनासः ॥ २२ ॥
वायो याहि शिवा दिवो वहस्वा सु स्वश्व्यम् ।
वहस्व महः पृथुपक्षसा रथे ॥ २३ ॥
त्वां हि सुष्परंस्तमं नृषदनेषु हूमहे ।
ग्रावाणं नाश्वपृष्ठं मंहना ॥ २४ ॥
स त्वं नो देव मनसा वायो मन्दानो अग्रियः ।
कृधि वाजाँ अपो धियः ॥ २५ ॥

[२७] सप्तविंशं सूक्तम्

ऋषिः—मनुर्वैवस्वतः ॥ देवता—विश्वे देवाः ॥ छन्दः—१, ७, ९ निचृद्बृहती; २, ८, १४, २० पङ्क्तिः; ३ शङ्कुमतीबृहती; ४, ६, १६, २२ निचृत्पङ्क्तिः; ५, ११, १३ विराड्बृहती; १० पादनिचृत्पङ्क्तिः; १२ आर्चीस्वराट्पङ्क्तिः; १५ आर्चीबृहती; १७ विराट्पङ्क्तिः; १८, १९, २१ बृहती॥ स्वरः—१, ३, ५, ७, ९, ११, १३, १५, १८, १९, २१ मध्यमः; २, ४, ६, ८, १०, १२, १४, १६, १७, २०, २२ पञ्चमः॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अथ एकत्रिंशो वर्गः ॥ ३१ ॥

अग्निरुक्थे पुरोहितो ग्रावाणो बर्हिरध्वरे ।
ऋचा यामि मरुतो ब्रह्मणस्पतिं देवाँ अवो वरेण्यम् ॥ १ ॥
आ पशुं गासि पृथिवीं वनस्पतीनुषासा नक्तमोषधीः ।
विश्वे च नो वसवो विश्ववेदसो धीनां भूत प्रावितारः ॥ २ ॥
प्र सू न एत्वध्वरोऽग्ना देवेषु पूर्व्यः ।
आदित्येषु प्र वरुणे धृतव्रते मरुत्सु विश्वभानुषु ॥ ३ ॥
विश्वे हि ष्मा मनवे विश्ववेदसो भुवन्वृधे रिशादसः ।
अरिष्टेभिः पायुभिर्विश्ववेदसो यन्ता नोऽवृकं छर्दिः ॥ ४ ॥
आ नो अद्य समनसो गन्ता विश्वे सजोषसः ।
ऋचा गिरा मरुतो देव्यदिते सदने पस्त्ये महि ॥ ५ ॥

अथ द्वात्रिंशो वर्गः ॥ ३२ ॥

अभि प्रिया मरुतो या वो अश्व्या हव्या मित्र प्रयाथन ।
आ बर्हिरिन्द्रो वरुणस्तुरा नर आदित्यासः सदन्तु नः ॥ ६ ॥
वयं वो वृक्तबर्हिषो हितप्रयस आनुषक् ।
सुतसोमासो वरुण हवामहे मनुष्वदिद्धाग्नयः ॥ ७ ॥
आ प्र यात मरुतो विष्णो अश्विना पूषन्माकीनया धिया ।
इन्द्र आ यातु प्रथमः सनिष्युभिर्वृषा यो वृत्रहा गृणे ॥ ८ ॥
वि नो देवासो अद्रुहोऽच्छिद्रं शर्म यच्छत ।
न यद्राद्वसवो नू चिदन्तितो वरूथमादधर्षति ॥ ९ ॥
अस्ति हि वः सजात्यं रिशादसो देवासो अस्त्याप्यम् ।
प्र णः पूर्वस्मै सुवितायं वोचत मक्षू सुम्नाय नव्यसे ॥ १० ॥

अथ त्रयस्त्रिंशो वर्गः ॥ ३३ ॥

इदा हि व उपस्तुतिमिदा वामस्य भक्तये ।
उप वो विश्ववेदसो नमस्युराँ असृक्ष्यन्यामिव ॥ ११ ॥
उदु ष्य वः सविता सुप्रणीतयोऽस्थादूर्ध्वो वरेण्यः ।
नि द्विपादश्चतुष्पादो अर्थिनोऽविश्रन्पतयिष्णवः ॥ १२ ॥
देवंदेवं वोऽवसे देवंदेवमभिष्टये ।
देवंदेवं हुवेम वाजसातये गृणन्तो देव्या धिया ॥ १३ ॥
देवासो हि ष्मा मनवे समन्यवो विश्वे साकं सरातयः ।
ते नो अद्य ते अपरं तुचे तु नो भवन्तु वरिवोविदः ॥ १४ ॥

प्र वः शंसाम्यद्रुहः सुंस्थ उपस्तुतीनाम् ।
न तं धूर्तिर्वरुण मित्र मर्त्यं यो वो धामभ्योऽविधत् ॥ १५ ॥
प्र स क्षयं तिरते वि महीरिषो यो वो वराय दाशति ।
प्र प्रजाभिर्जायते धर्मणस्परीरिष्टः सर्वं एधते ॥ १६ ॥

अथ चतुस्त्रिंशो वर्गः ॥ ३४ ॥

ऋते स विन्दते युधः सुगेभिर्यात्यध्वनः ।
अर्यमा मित्रो वरुणः सरातयो यं त्रायन्ते सजोषसः ॥ १७ ॥
अन्ने चिदस्मै कृणुथा न्यञ्चनं दुर्गे चिदा सुसरणम् ।
एषा चिदस्मादशनिः परो नु सास्रेधन्ती वि नश्यतु ॥ १८ ॥
यदद्य सूर्य उद्यति प्रियक्षत्रा ऋतं दध ।
यत्रिमुचि प्रबुधि विश्ववेदसो यद्वा मध्यन्दिने दिवः ॥ १९ ॥
यद्वाभिपित्वे असुरा ऋतं यते छर्दिर्येम वि दाशुषे ।
वयं तद्वो वसवो विश्ववेदस उप स्थेयाम मध्य आ ॥ २० ॥
यदद्य सूर उदिते यन्मध्यन्दिन आतुचि ।
वामं धत्थ मनवे विश्ववेदसो जुह्वानाय प्रचेतसे ॥ २१ ॥
वयं तद्वः सम्राज आ वृणीमहे पुत्रो न बंहुपाय्यम् ।
अश्याम तदादित्या जुह्वतो हविर्येन वस्योऽनशामहै ॥ २२ ॥

[२८] अष्टाविंशं सूक्तम्

ऋषिः—मनुर्वैवस्वतः ॥ देवता—विश्वे देवाः ॥ छन्दः—१, २ गायत्री; ३, ५ विराड्गायत्री; ४ विराडुष्णिक् ॥ स्वरः—१-३, ५ षड्जः; ४ ऋषभः ॥

अथ पञ्चत्रिंशो वर्गः ॥ ३५ ॥

ये त्रिंशति त्रयस्परो देवासो बर्हिरासदन् । विदन्नह द्वितासनन् ॥ १ ॥
वरुणो मित्रो अर्यमा स्मद्रातिषाचो अग्रयः । पत्नीवन्तो वषट्कृताः ॥ २ ॥
ते नो गोपा अपाच्यास्त उदक्त इत्था न्यक् । पुरस्तात्सर्वया विशा ॥ ३ ॥
यथा वशन्ति देवास्तथेदसत्तदेषां नकिरा मिनत् । अरावा चन मर्त्यः ॥ ४ ॥
समानां सप्त ऋष्टयः सप्त द्युम्नान्येषाम् । सप्तो अधि श्रियो धिरे ॥ ५ ॥

[२९] एकोनत्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—मनुर्वैवस्वतः कश्यपो वा मारीचः ॥ देवता—विश्वे देवाः ॥ छन्दः—१, २ आर्चीगायत्री; ३, ४, १० आर्चीस्वराड्गायत्री; ५ विराड्गायत्री; ६-९ आर्चीभुरिग्गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अथ षट्त्रिंशो वर्गः ॥ ३६ ॥

बभ्रुरेको विषुणः सूनरो युवाऽन्यस्ये हिरण्ययम् ॥ १ ॥
योनिमेक आ ससाद द्योतनोऽन्तर्देवेषु मेधिरः ॥ २ ॥
वाशीमेको बिभर्ति हस्त आयसीमन्तर्देवेषु निध्रुविः ॥ ३ ॥
वज्रमेको बिभर्ति हस्त आहितं तेन वृत्राणि जिघ्नते ॥ ४ ॥
तिग्ममेको बिभर्ति हस्त आयुधं शुचिरुग्रो जलाषभेषजः ॥ ५ ॥
पथ एकः पीपाय तस्करो यथाँ एष वेद निधीनाम् ॥ ६ ॥
त्रीण्येक उरुगायो वि चक्रमे यत्र देवासो मदन्ति ॥ ७ ॥
विभिर्द्वा चरत एकया सह प्र प्रवासेव वसतः ॥ ८ ॥
सदो द्वा चक्राते उपमा दिवि सम्राजा सर्पिरासुती ॥ ९ ॥
अचैन्त एके महि साम मन्वत तेन सूर्यमरोचयन् ॥ १० ॥

[३०] त्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—मनुर्वैवस्वतः ॥ देवता—विश्वे देवाः ॥ छन्दः—१ निचृद्गायत्री; २ पुरउष्णिक्; ३ विराड्बृहती; ४ निचृदनुष्टुप् ॥ स्वरः—१ षड्जः; २ ऋषभः; ३ मध्यमः; ४ गान्धारः ॥

अथ सप्तत्रिंशो वर्गः ॥ ३७ ॥

नहि वो अस्त्यर्भको देवासो न कुमारकः ।
विश्वे सतोमहान्त इत् ॥ १ ॥
इति स्तुतासो असथा रिशादसो ये स्थ त्रयश्च त्रिंशच्च ।
मनोर्देवा यज्ञियासः ॥ २ ॥
ते नंस्राध्वं तेऽवत त उ नो अधि वोचत ।
मा नः पथः पित्र्यान्मानवादधि दूरं नैष्ट परावतः ॥ ३ ॥
ये देवास इह स्थन विश्वे वैश्वानरा उत ।
अस्मभ्यं शर्म सप्रथो गवेऽश्वाय यच्छत ॥ ४ ॥

पञ्चमोऽनुवाकः [३१] एकत्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—मनुर्वैवस्वतः ॥ देवता—१-४ ईज्यास्तवो यजमानप्रशंसा च; ५-९ दम्पती; १०-१८ दम्पत्योराशिषः ॥ छन्दः—१, ३, ५, ७, १२ गायत्री; २, ४, ६, ८ निचृद्गायत्री; ९ अनुष्टुप्; १० पादनिचृद्गायत्री; ११, १३ विराड् गायत्री; १४ विराडनुष्टुप्; १५-१७ विराट्पङ्क्तिः; १८ आर्ची-भुरिक्पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१-८, १०-१३ षड्जः; ९, १४ गान्धारः; १५-१८ पञ्चमः ॥

अथ अष्टत्रिंशो वर्गः ॥ ३८ ॥

यो यजाति यजात इत्सुनवच्च पचाति च ।
ब्रह्मेदिन्द्रस्य चाकनत् ॥ १ ॥
पुरोळाशं यो अस्मै सोमं ररत आशिरम् ।
पादित्तं शक्रो अंहसः ॥ २ ॥
तस्य द्युमाँ असदथो देवजूतः स शंशुवत् ।
विश्वा वन्वन्नमित्रिया ॥ ३ ॥
अस्य प्रजावती गृहेऽसश्चन्ती दिवेदिवे ।
इळा धेनुमती दुहे ॥ ४ ॥
या दंपती समनसा सुनुत आ च धावतः ।
देवासो नित्ययाशिरा ॥ ५ ॥

अथ एकोनचत्वारिंशो वर्गः ॥ ३९ ॥

प्रति प्राशव्याँ इतः सम्यञ्चा बर्हिराशाते ।
न ता वाजेषु वायतः ॥ ६ ॥
न देवानामपि हुतः सुमतिं न जुगुक्षतः ।
श्रवो बृहद्विवासतः ॥ ७ ॥
पुत्रिणा ता कुमारिणा विश्वमायुर्व्यश्नुतः ।
उभा हिरण्यपेशसा ॥ ८ ॥
वीतिहोत्रा कृतद्वसू दशस्यन्तामृताय कम् ।
समूधो रोमशं हतो देवेषु कृणुतो दुवः ॥ ९ ॥
आ शर्म पर्वतानां वृणीमहे नदीनाम् ।
आ विष्णोः सचाभुवः ॥ १० ॥

अथ चत्वारिंशो वर्गः ॥ ४० ॥

ऐतु पूषा रयिर्भगः स्वस्ति सर्वधातमः ।
उरुरध्वा स्वस्तये ॥ ११ ॥
अरमतिरनर्वणो विश्वो देवस्य मनसा ।
आदित्यानामनेहसः ॥ १२ ॥
यथा नो मित्रो अर्यमा वरुणः सन्ति गोपाः ।
सुगा ऋतस्य पन्थाः ॥ १३ ॥
अग्निं वः पूर्व्यं गिरा देवमीळे वसूनाम् ।
सपर्यन्तः पुरुप्रियं मित्रं न क्षेत्रसाधसम् ॥ १४ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मक्षू देववतो रथः शूरो वा पृत्सु कासु चित् ।
देवानां य इन्मनो यजमान इयक्षत्यभीदयज्वनो भुवत् ॥ १५ ॥
न यजमान रिष्यसि न सुन्वान न देवयो ।
देवानां य इन्मनो यजमान इयक्षत्यभीदयज्वनो भुवत् ॥ १६ ॥
नकिष्टं कर्मणा नशन्न प्र योषन्न योषति ।
देवानां य इन्मनो यजमान इयक्षत्यभीदयज्वनो भुवत् ॥ १७ ॥
असदत्र सुवीर्यमुत त्यदाश्वश्व्यम् ।
देवानां य इन्मनो यजमान इयक्षत्यभीदयज्वनो भुवत् ॥ १८ ॥

इति षष्ठाष्टके द्वितीयोऽध्यायः ॥

अथ तृतीयोऽध्यायः

[३२] द्वात्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—मेधातिथिः काण्वः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१, ७, १३, १५, २७, २८, निचृद्गायत्री; २, ४, ६, ८-१२, १४, १६, १७, २१, २२, २४-२६ गायत्री; ३, ५, १९, २०, २३, २९ विराड्गायत्री; १८, ३० भुरिग्गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथ प्रथमो वर्गः ॥ १ ॥
प्र कृतान्यृजीषिणः कण्वा इन्द्रस्य गाथया । मदे सोमस्य वोचत ॥ १ ॥
यः सुविन्दुमनर्शनिं पिप्रुं दासमहीशुवम् । वधीदुग्रो रिणन्नपः ॥ २ ॥
न्यर्बुदस्य विष्टपं वृष्माणं बृहतस्तिर कृषे । तदिन्द्र पौंस्यम् ॥ ३ ॥
प्रति श्रुतायं वो धृषत्तूर्णाशं न गिरेरधि । हुवे सुशिप्रमूतये ॥ ४ ॥
स गोरश्वस्य वि व्रजं मन्दानः सोम्येभ्यः । पुरं न शूर दर्षसि ॥ ५ ॥

अथ द्वितीयो वर्गः ॥ २ ॥
यदिं मे रारणः सुत उक्थे वा दधसे चनः । आरादुप स्वधा गहि ॥ ६ ॥
वयं घा ते अपि ष्मसि स्तोतार इन्द्र गिर्वणः । त्वं नो जिन्व सोमपाः ॥ ७ ॥
उत नः पितुमा भर संरराणो अविक्षितम् । मघवन्भूरि ते वसु ॥ ८ ॥
उत नो गोमतस्कृधि हिरण्यवतो अश्विनः । इळाभिः सं रभेमहि ॥ ९ ॥
बृबदुक्थं हवामहे सृप्रकरस्नमूतये । साधु कृण्वन्तमवसे ॥ १० ॥

अथ तृतीयो वर्गः ॥ ३ ॥
यः संस्थे चिच्छतक्रतुरादीं कृणोति वृत्रहा । जरितृभ्यः पुरूवसुः ॥ ११ ॥
स नः शक्रश्चिदा शकदानवाँ अन्तराभरः । इन्द्रो विश्वाभिरूतिभिः ॥ १२ ॥
यो रायोऽवनिर्महान्त्सुपारः सुन्वतः सखा । तमिन्द्रमभि गायत ॥ १३ ॥

आयन्तारं महि स्थिरं पृतनासु श्रवोजितम् । भूरेरीशानमोजसा ॥ १४ ॥
नकिरस्य शचीनां नियन्ता सूनृतानाम् । नकिर्वक्ता न दादिति ॥ १५ ॥

अथ चतुर्थो वर्गः ॥ ४ ॥
न नूनं ब्रह्मणामृणं प्राशूनामस्ति सुन्वताम् । न सोमो अप्रता पपे ॥ १६ ॥
पन्य इदुप गायत पन्य उक्थानि शंसत । ब्रह्मा कृणोत पन्य इत् ॥ १७ ॥
पन्य आ ददिरच्छता सहस्रा वाज्यावृतः । इन्द्रो यो यज्वनो वृधः ॥ १८ ॥
वि षू चर स्वधा अनु कृष्टीनामन्वाहुवः । इन्द्र पिब सुतानाम् ॥ १९ ॥
पिब स्वधैनवानामुत यस्तुभ्ये सचा । उतायमिन्द्र यस्तव ॥ २० ॥

अथ पञ्चमो वर्गः ॥ ५ ॥
अतीहि मन्युषाविणं सुषुवांसमुपारणे । इमं रातं सुतं पिब ॥ २१ ॥
इहि तिस्रः परावत इहि पञ्च जनाँ अति । धेना इन्द्रावचाकशत् ॥ २२ ॥
सूर्यो रश्मिं यथा सृजा त्वा यच्छन्तु मे गिरः । निम्नमापो न सध्र्यक् ॥ २३ ॥
अध्वर्यवा तु हि षिञ्च सोमं वीराय शिप्रिणे । भरा सुतस्य पीतये ॥ २४ ॥
य उदनः फलिगं भिनन्न्यक्सिन्धूँरवासृजत् । यो गोषु पक्वं धारयत् ॥ २५ ॥

अथ षष्ठो वर्गः ॥ ६ ॥
अहन्वृत्रमृचीषम और्णवाभमहीशुवम् । हिमेनाविध्यदर्बुदम् ॥ २६ ॥
प्र वं उग्राय निष्टुरेऽषाळ्हाय प्रसक्षिणे । देवत्तं ब्रह्म गाय त ॥ २७ ॥
यो विश्वान्यभि व्रता सोमस्य मदे अन्धसः । इन्द्रो देवेषु चेतति ॥ २८ ॥
इह त्या सधमाद्या हरी हिरण्यकेश्या । वोळ्हामभि प्रयो हितम् ॥ २९ ॥
अर्वाञ्चं त्वा पुरुष्टुत प्रियमेधस्तुता हरी । सोमपेयाय वक्षतः ॥ ३० ॥

[३३] त्रयस्त्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—मेधातिथिः काण्वः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१-३, ५ बृहती; ४, ७, ८, १०, १२ विराड्बृहती; ६, ९, ११, १४, १५ निचृद्बृहती; १३ आर्ची-भुरिग्बृहती; १६, १८ गायत्री; १७ निचृद्गायत्री; १९ अनुष्टुप् ॥ स्वरः—१-१५ मध्यमः; १६-१८ षड्जः; १९ गान्धारः ॥

अथ सप्तमो वर्गः ॥ ७ ॥
वयं घ त्वा सुतावन्त आपो न वृक्तबर्हिषः ।
पवित्रस्य प्रस्रवणेषु वृत्रहन्परि स्तोतार आसते ॥ १ ॥
स्वरन्ति त्वा सुते नरो वसो निरेक उक्थिनः ।
कदा सुतं तृषाण ओक आ गम इन्द्र स्वब्दीव वंसगः ॥ २ ॥
कण्वेभिर्धृष्णवा धृषद्वाजं दर्षि सहस्त्रिणम् ।
पिशङ्गरूप मघवन्विचर्षणे मक्षू गोमन्तमीमहे ॥ ३ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पाहि गायान्धसो मद इन्द्राय मेध्यातिथे ।
यः संमिश्लो हरोर्यः सुते सचा वज्री रथो हिरण्ययः ॥ ४ ॥
यः सुष्वयः सुदक्षिण इनो यः सुक्रतुर्गृणे ।
य आकरः सहस्रा यः शतामघ इन्द्रो यः पूर्भिदारितः ॥ ५ ॥

अथ अष्टमो वर्गः ॥ ८ ॥

यो धृषितो योऽवृतो यो अस्ति श्मश्रुषु श्रितः ।
विभूतद्युम्नश्च्यवनः पुरुष्टुतः क्रत्वा गौरिव शाकिनः ॥ ६ ॥
क ईं वेद सुते सचा पिबन्तं कद्वयो दधे ।
अयं यः पुरो विभिनत्त्योजसा मन्दानः शिप्रयन्धसः ॥ ७ ॥
दाना मृगो न वारणः पुरुत्रा चरथं दधे ।
नकिष्ट्वा नि यमदा सुते गमो महाँश्चरस्योजसा ॥ ८ ॥
य उग्रः सन्ननिष्टृतः स्थिरो रणाय संस्कृतः ।
यदिं स्तोतुर्मघवा शृणवद्ववं नेन्द्रो योषत्या गमत् ॥ ९ ॥
सत्यमित्था वृषेदसि वृषजूतिर्नोऽवृतः ।
वृषा ह्युग्र शृण्विषे परावति वृषो अर्वावतिं श्रुतः ॥ १० ॥

अथ नवमो वर्गः ॥ ९ ॥

वृषणस्ते अभीशवो वृषा कशा हिरण्ययी ।
वृषा रथो मघवन्वृषणा हरी वृषा त्वं शतक्रतो ॥ ११ ॥
वृषा सोता सुनोतु ते वृषन्वृजीपिन्ना भर ।
वृषा दधन्वे वृषणं नदीष्वा तुभ्यं स्थातर्हरीणाम् ॥ १२ ॥
एन्द्र याहि पीतये मधु शविष्ठ सोम्यम् ।
नायमच्छा मघवा शृणवद्गिरो ब्रह्मोक्था च सुक्रतुः ॥ १३ ॥
वहन्तु त्वा रथेष्ठामा हरयो रथयुजः ।
तिरश्चिद्दुर्यं सवनानि वृत्रहन्त्रन्येषां या शतक्रतो ॥ १४ ॥
अस्माकमद्यान्तमं स्तोमं धिष्व महामह ।
अस्माकं ते सवना सन्तु शंतमा मदाय द्युक्ष सोमपाः ॥ १५ ॥

अथ दशमो वर्गः ॥ १० ॥

नहि षस्तव नो मम शास्त्रे अन्यस्य रण्यति ।
यो अस्मान्वीर आनयत् ॥ १६ ॥
इन्द्रश्चिद्धा तदब्रवीत्स्त्रिया अशास्यं मनः ।
उतो अह क्रतुं रघुम् ॥ १७ ॥
सप्तीं चिद्धा मदच्युता मिथुना वहतो रथम् ।
एवेद्भूर्वृष्ण उत्तरा ॥ १८ ॥
अधः पश्यस्व मोपरि सन्तरां पादकौ हर ।
मा ते कशप्लकौ दृशन्स्त्री हि ब्रह्मा बभूविथ ॥ १९ ॥

[३४] चतुस्त्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—१-१५ नीपातिथिः काण्वः; १६-१८ सहस्रं वसुरोचिषोऽङ्गिरसः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१, ३, ८, १०, १२, १३, १५ निचृदनुष्टुप्; २, ४, ६, ७, ९ अनुष्टुप्; ५, ११, १४ विराडनुष्टुप्; १६, १८ निचृद् गायत्री; १७ विराड्गायत्री ॥ स्वरः—१-१५ गान्धारः; १६-१८ षड्जः ॥

अथ एकादशो वर्गः ॥ ११ ॥

एन्द्र याहि हरिभिरुप कण्वस्य सुष्टुतिम् ।
दिवो अमुष्य शासतो दिवं यय दिवावसो ॥ १ ॥
आ त्वा ग्रावा वदन्निह सोमी घोषेण यच्छतु ।
दिवो अमुष्य शासतो दिवं यय दिवावसो ॥ २ ॥
अत्रा वि नेमिरेषामुरां न धूनुते वृकः ।
दिवो अमुष्य शासतो दिवं यय दिवावसो ॥ ३ ॥
आ त्वा कण्वा इहावसे हवन्ते वाजसातये ।
दिवो अमुष्य शासतो दिवं यय दिवावसो ॥ ४ ॥
दधामि ते सुतानां वृष्णे न पूर्वपाय्यम् ।
दिवो अमुष्य शासतो दिवं यय दिवावसो ॥ ५ ॥

अथ द्वादशो वर्गः ॥ १२ ॥

स्मत्पुरन्धिर्न आ गहि विश्ववारधीर्न ऊतये ।
दिवो अमुष्य शासतो दिवं यय दिवावसो ॥ ६ ॥
आ नो याहि महेमते सहस्रोते शतामघ ।
दिवो अमुष्य शासतो दिवं यय दिवावसो ॥ ७ ॥
आ त्वा होता मनुर्हितो देवत्रा वक्षदीड्यः ।
दिवो अमुष्य शासतो दिवं यय दिवावसो ॥ ८ ॥
आ त्वा मदच्युता हरी श्येनं पक्षेव वक्षतः ।
दिवो अमुष्य शासतो दिवं यय दिवावसो ॥ ९ ॥
आ त्वाहार्य आ परि स्वाहा सोमस्य पीतये ।
दिवो अमुष्य शासतो दिवं यय दिवावसो ॥ १० ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अत त्रयोदशो वर्गः ॥ १३ ॥

आ नो याह्युपश्रुत्युक्थेषु रणया इह।
दिवो अमुष्य शासतो दिवं यय दिवावसो ॥ ११ ॥
सरूपैरा सु नो गहि संभूतैः संभृताश्वः।
दिवो अमुष्य शासतो दिवं यय दिवावसो ॥ १२ ॥
आ याहि पर्वतेभ्यः समुद्रस्याधि विष्टपः।
दिवो अमुष्य शासतो दिवं यय दिवावसो ॥ १३ ॥
आ नो गव्यान्यश्व्या सहस्रा शूर दर्दृहि।
दिवो अमुष्य शासतो दिवं यय दिवावसो ॥ १४ ॥
आ नः सहस्रशो भरायुतानि शतानि च।
दिवो अमुष्य शासतो दिवं यय दिवावसो ॥ १५ ॥
आ यदिन्द्रश्च दद्वहे सहस्रं वसुरोचिषः ।
ओजिष्ठमश्व्यं पशुम् ॥ १६ ॥
य ऋज्रा वातरंहसोऽरुषासो रघुष्यदः ।
भ्राजन्ते सूर्यांइव ॥ १७ ॥
पारावतस्य रातिषु द्रवच्यक्रेष्वाशुषु ।
तिष्ठं वनस्य मध्य आ ॥ १८ ॥

[३५] पञ्चत्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—श्यावाश्वः ॥ देवता—अश्विनौ ॥ छन्दः—१-५, १६, १८, विराट्त्रिष्टुप्; ६, १०-१२, १४, १५, १७ भुरिक्पङ्क्तिः; ७-९, १३ निचृत्त्रिष्टुप्; १९, २२ निचृत्पङ्क्तिः; २०, २१, २४ पङ्क्तिः; २३ पुरस्ताज्ज्योतिर्नामजगती ॥ स्वरः—१-५, ७-९, १३, १६, १८ धैवतः; ६, १०-१२, १४, १५, १७, १९-२२, २४ पञ्चमः; २३ निषादः ॥

अथ चतुर्दशो वर्गः ॥ १४ ॥

अग्निनेन्द्रेण वरुणेन विष्णुनादित्यै रुद्रैर्वसुभिः सचाभुवा ।
सजोषसा उषसा सूर्येण च सोमं पिबतमश्विना ॥ १ ॥
विश्वाभिर्धीभिर्भुवनेन वाजिना दिवा पृथिव्याद्रिभिः सचाभुवा ।
सजोषसा उषसा सूर्येण च सोमं पिबतमश्विना ॥ २ ॥
विश्वैर्देवैस्त्रिभिरेकादशैरिहाद्भिर्मरुद्भिर्भृगुभिः सचाभुवा ।
सजोषसा उषसा सूर्येण च सोमं पिबतमश्विना ॥ ३ ॥
जुषेथां यज्ञं बोधतं हवस्य मे विश्वेह देवौ सवनावं गच्छतम्।
सजोषसा उषसा सूर्येण चेषं नो वोळ्हमश्विना ॥ ४ ॥
स्तोमं जुषेथां युवशेव कन्यनां विश्वेह देवौ सवनावं गच्छतम्।
सजोषसा उषसा सूर्येण चेषं नो वोळ्हमश्विना ॥ ५ ॥
गिरो जुषेथामध्वरं जुषेथां विश्वेह देवौ सवनावं गच्छतम् ।
सजोषसा उषसा सूर्येण चेषं नो वोळ्हमश्विना ॥ ६ ॥

अथ पञ्चदशो वर्गः ॥ १५ ॥

हारिद्रवेव पतथो वनेदुप सोमं सुतं महिषेवावं गच्छथः ।
सजोषसा उषसा सूर्येण च त्रिर्वर्तिर्यातमश्विना ॥ ७ ॥
हंसाविव पतथो अध्वगाविव सोमं सुतं महिषेवावं गच्छथः।
सजोषसा उषसा सूर्येण च त्रिर्वर्तिर्यातमश्विना ॥ ८ ॥
श्येनाविव पतथो हव्यदातये सोमं सुतं महिषेवावं गच्छथः।
सजोषसा उषसा सूर्येण च त्रिर्वर्तिर्यातमश्विना ॥ ९ ॥
पिबतं च तृप्णुतं चा चं गच्छतं प्रजां चं धत्तं द्रविणं च धत्तम्।
सजोषसा उषसा सूर्येण चोजं नो धत्तमश्विना ॥ १० ॥
जयतं च प्र स्तुतं च प्र चावतं प्रजां चं धत्तं द्रविणं च धत्तम्।
सजोषसा उषसा सूर्येण चोजं नो धत्तमश्विना ॥ ११ ॥
हतं च शत्रून्यततं च मित्रिणः प्रजां चं धत्तं द्रविणं च धत्तम्।
सजोषसा उषसा सूर्येण चोजं नो धत्तमश्विना ॥ १२ ॥

अथ षोडशो वर्गः ॥ १६ ॥

मित्रावरुणवन्ता उत धर्मवन्ता मरुत्वन्ता जरितुर्गच्छथो हवम्।
सजोषसा उषसा सूर्येण चादित्यैर्यातमश्विना ॥ १३ ॥
अङ्गिरस्वन्ता उत विष्णुवन्ता मरुत्वन्ता जरितुर्गच्छथो हवम्।
सजोषसा उषसा सूर्येण चादित्यैर्यातमश्विना ॥ १४ ॥
ऋभुमन्ता वृषणा वाजवन्ता मरुत्वन्ता जरितुर्गच्छथो हवम्।
सजोषसा उषसा सूर्येण चादित्यैर्यातमश्विना ॥ १५ ॥
ब्रह्म जिन्वतमुत जिन्वतं धियो हतं रक्षांसि सेधतममीवाः।
सजोषसा उषसा सूर्येण च सोमं सुन्वतो अश्विना ॥ १६ ॥
क्षत्रं जिन्वतमुत जिन्वतं नृन्हतं रक्षांसि सेधतममीवाः।
सजोषसा उषसा सूर्येण च सोमं सुन्वतो अश्विना ॥ १७ ॥
धेनूर्जिन्वतमुत जिन्वतं विशो हतं रक्षांसि सेधतममीवाः।
सजोषसा उषसा सूर्येण च सोमं सुन्वतो अश्विना ॥ १८ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अथ सप्तदशो वर्गः ॥ १७ ॥

अत्रेरिव शृणुतं पूर्व्यस्तुतिं श्यावाश्वस्य सुन्वतो मदच्युता।
सजोषसा उषसा सूर्येण चाश्विना तिरोअह्न्यम् ॥ १९ ॥
सर्गाँइव सृजतं सुष्टुतीरुप श्यावाश्वस्य सुन्वतो मदच्युता।
सजोषसा उषसा सूर्येण चाश्विना तिरोअह्न्यम् ॥ २० ॥
रश्मींरिव यच्छतमध्वराँ उप श्यावाश्वस्य सुन्वतो मदच्युता।
सजोषसा उषसा सूर्येण चाश्विना तिरोअह्न्यम् ॥ २१ ॥
अर्वाग्रथं नि यच्छतं पिबतं सोम्यं मधु ।
आ यातमश्विना गतमवस्युर्वीमहं हुवे धत्तं रत्नानि दाशुषे ॥ २२ ॥
नमोवाके प्रस्थिते अध्वरे नरा विवक्षणस्य पीतये ।
आ यातमश्विना गतमवस्युर्वीमहं हुवे धत्तं रत्नानि दाशुषे ॥ २३ ॥
स्वाहाकृतस्य तृम्पतं सुतस्य देवावन्धसः ।
आ यातमश्विना गतमवस्युर्वीमहं हुवे धत्तं रत्नानि दाशुषे ॥ २४ ॥

[३६] षट्त्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—श्यावाश्वः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१, ५, ६ शक्करी; २, ४ निचृच्छक्वरी; ३ विराट्शक्वरी; ७ विराड्जगती ॥ स्वरः—१-६ धैवतः; ७ निषादः ॥

अथ अष्टादशो वर्गः ॥ १८ ॥

अविंतासि सुन्वतो वृक्तबर्हिषः पिबा सोमं मदाय कं शतक्रतो ।
यं तें भागमधारयन्विश्वाः सेहानः पृतना उरु ज्रयः
समप्सुजिन्मरुत्वाँ इन्द्र सत्पते ॥ १ ॥
प्रावं स्तोतारं मघवन्त्व त्वां पिबा सोमं मदाय कं शतक्रतो ।
यं तें भागमधारयन्विश्वाः सेहानः पृतना उरु ज्रयः
समप्सुजिन्मरुत्वाँ इन्द्र सत्पते ॥ २ ॥
कुर्जा देवाँ अवस्योजसा त्वां पिबा सोमं मदाय कं शतक्रतो ।
यं तें भागमधारयन्विश्वाः सेहानः पृतना उरु ज्रयः
समप्सुजिन्मरुत्वाँ इन्द्र सत्पते ॥ ३ ॥
जनिता दिवो जनिता पृथिव्याः पिबा सोमं मदाय कं शतक्रतो ।
यं तें भागमधारयन्विश्वाः सेहानः पृतना उरु ज्रयः
समप्सुजिन्मरुत्वाँ इन्द्र सत्पते ॥ ४ ॥
जनिताश्वानां जनिता गवामसि पिबा सोमं मदाय कं शतक्रतो ।
यं तें भागमधारयन्विश्वाः सेहानः पृतना उरु ज्रयः
समप्सुजिन्मरुत्वाँ इन्द्र सत्पते ॥ ५ ॥
अत्रीणां स्तोममद्रिवो महस्कृधि पिबा सोमं मदाय कं शतक्रतो ।
यं तें भागमधारयन्विश्वाः सेहानः पृतना उरु ज्रयः
समप्सुजिन्मरुत्वाँ इन्द्र सत्पते ॥ ६ ॥
श्यावाश्वस्य सुन्वतस्तथा शृणु यथाशृणोरत्रेः कर्माणि कृण्वतः ।
प्र त्रसदस्युमाविथ त्वमेक इन्नृषाह्य इन्द्र ब्रह्माणि वर्धयन् ॥ ७ ॥

[३७] सप्तत्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—श्यावाश्वः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१ विराडतिजगती; २-६ निचृज्जगती; ७ विराड्जगती ॥ स्वरः—निषादः ॥

अथ एकोनविंशो वर्गः ॥ १९ ॥

प्रेदं ब्रह्म वृत्रतूर्येष्वाविथ प्र सुन्वतः शचीपत इन्द्र विश्वाभिरूतिभिः ।
माध्यन्दिनस्य सवनस्य वृत्रहन्नेद्य पिबा सोमस्य वज्रिवः ॥ १ ॥
सेहान उग्र पृतना अभि द्रुहः शचीपत इन्द्र विश्वाभिरूतिभिः ।
माध्यन्दिनस्य सवनस्य वृत्रहन्नेद्य पिबा सोमस्य वज्रिवः ॥ २ ॥
एकराळस्य भुवनस्य राजसि शचीपत इन्द्र विश्वाभिरूतिभिः ।
माध्यन्दिनस्य सवनस्य वृत्रहन्नेद्य पिबा सोमस्य वज्रिवः ॥ ३ ॥
सस्थावाना यवयसि त्वमेक इच्छचीपत इन्द्र विश्वाभिरूतिभिः ।
माध्यन्दिनस्य सवनस्य वृत्रहन्नेद्य पिबा सोमस्य वज्रिवः ॥ ४ ॥
क्षेमस्य च प्रयुजश्च त्वमीशिषे शचीपत इन्द्र विश्वाभिरूतिभिः ।
माध्यन्दिनस्य सवनस्य वृत्रहन्नेद्य पिबा सोमस्य वज्रिवः ॥ ५ ॥
क्षत्राय त्वमवसि न त्वमाविथ शचीपत इन्द्र विश्वाभिरूतिभिः ।
माध्यन्दिनस्य सवनस्य वृत्रहन्नेद्य पिबा सोमस्य वज्रिवः ॥ ६ ॥
श्यावाश्वस्य रेभतस्तथा शृणु यथाशृणोरत्रेः कर्माणि कृण्वतः ।
प्र त्रसदस्युमाविथ त्वमेक इन्नृषाह्य इन्द्र क्षत्राणि वर्धयन् ॥ ७ ॥

[३८] अष्टात्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—श्यावाश्वः ॥ देवता—इन्द्राग्नी ॥ छन्दः—१, २, ४, ६, ९ गायत्री; ३, ५, ७, १० निचृद्गायत्री; ८ विराड्गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथ विंशो वर्गः ॥ २० ॥

यज्ञस्य हि स्थ ऋत्विजा सस्नी वाजेषु कर्मसु। इन्द्राग्नी तस्य बोधतम् ॥ १ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तोशासा रथयावाना वृत्रहणापराजिता। इन्द्राग्नी तस्य बोधतम् ॥ २ ॥
इदं वां मदिरं मध्वधुक्षन्द्रिभिर्नरः। इन्द्राग्नी तस्य बोधतम् ॥ ३ ॥
जुषेथां यज्ञमिष्टये सुतं सोमं सधस्तुती। इन्द्राग्नी आ गतं नरा ॥ ४ ॥
इमा जुषेथां सवना येभिर्हव्यान्यूहथुः। इन्द्राग्नी आ गतं नरा ॥ ५ ॥
इमां गायत्रवर्तनिं जुषेथां सुष्टुतिं मम। इन्द्राग्नी आ गतं नरा ॥ ६ ॥

अथ एकविंशो वर्गः ॥ २१ ॥

प्रातर्यावभिरा गतं देवेभिर्जेन्यावसू। इन्द्राग्नी सोमपीतये ॥ ७ ॥
श्यावाश्वस्य सुन्वतोऽरींणां शृणुतं हवम्। इन्द्राग्नी सोमपीतये ॥ ८ ॥
एवा वामह्व ऊतये यथाहुवन्त मेधिराः। इन्द्राग्नी सोमपीतये ॥ ९ ॥
आहं सरस्वतीवतोरिन्द्राग्न्योरवो वृणे। याभ्यां गायत्रमुच्यते ॥ १० ॥

[३९] एकोनचत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—नाभाकः काण्वः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१, ३, ५ भुरिक्त्रिष्टुप्; २ विराट्त्रिष्टुप्; ४, ६-८ स्वराट्त्रिष्टुप्; ९ निचृज्जगती; १० त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१-८, १० धैवतः; ९ निषादः ॥

अथ द्वाविंशो वर्गः ॥ २२ ॥

अग्निमस्तोष्यूग्मियमग्निमीळा यजध्यै ।
अग्निर्देवाँ अनक्तु न उभे हि विदथे कविरन्तश्चरति
दूत्यं नभन्तामन्यके समे ॥ १ ॥
न्यग्ने नव्यसा वचस्तनूषु शंसमेषाम् ।
न्यरातीरराव्णां विश्वा अर्यो अरातीरितो
युच्छन्त्वामुरो नभन्तामन्यके समे ॥ २ ॥
अग्ने मन्मानि तुभ्यं कं घृतं न जुह्व आसनि ।
स देवेषु प्र चिकिद्धि त्वं ह्यसि पूर्व्यः शिवो दूतो
विवस्वतो नभन्तामन्यके समे ॥ ३ ॥
तत्तदग्निर्वयो दधे यथायथा कृपण्यति ।
ऊर्जाहुतिर्वसूनां शं च योश्च मयो दधे विश्वस्यै
देवहूत्यै नभन्तामन्यके समे ॥ ४ ॥
स चिकेत सहीयसाग्निश्चित्रेण कर्मणा ।
स होता शश्वतीनां दक्षिणाभिर्भीवृतं इनोति च
प्रतीव्यं नभन्तामन्यके समे ॥ ५ ॥

अथ त्रयोविंशो वर्गः ॥ २३ ॥

अग्निर्जाता देवानामग्निर्वेद मतीनामपीच्यम् ।
अग्निः स द्रविणोदा अग्निर्द्वारा व्यूर्णुते स्वाहुतो
नवीयसा नभन्तामन्यके समे ॥ ६ ॥
अग्निर्देवेषु संवसुः स विक्षु यज्ञियास्वा ।
स मुदा काव्या पुरु विश्वं भूमेव पुष्यति देवो
देवेषु यज्ञियो नभन्तामन्यके समे ॥ ७ ॥
यो अग्निः सप्तमानुषः श्रितो विश्वेषु सिन्धुषु ।
तमागन्म त्रिपस्त्यं मन्थातुर्दैव्युहन्तममग्निं यज्ञेषु
पूर्व्यं नभन्तामन्यके समे ॥ ८ ॥
अग्निस्त्रीणि त्रिधातून्या क्षेति विदथा कविः ।
स त्रींरेकादशाँ इह यक्षच्च पिप्रयच्च नो विप्रो
दूतः परिष्कृतो नभन्तामन्यके समे ॥ ९ ॥
त्वं नो अग्न आयुषु त्वं देवेषु पूर्व्य वस्व एकं इरज्यसि ।
त्वामापः परिस्रुतः परि यन्ति स्वसेतवो नभन्तामन्यके समे ॥ १० ॥

[४०] चत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—नाभाकः काण्वः ॥ देवता—इन्द्राग्नी ॥ छन्दः—१, ११ भुरिक्त्रिष्टुप्; २ स्वराट्शक्वरी; ३, ४ स्वराट्त्रिष्टुप्; ५, ७, ९ जगती; ६ भुरिग्जगती; ८, १० निचृज्जगती; १२ निचृत्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१-४, ११, १२ धैवतः; ५-१० निषादः ॥

अथ चतुर्विंशो वर्गः ॥ २४ ॥

इन्द्राग्नी युवं सु नः सहन्ता दासथो रयिम् ।
येन दूळ्हा सुमत्सखा वीळु चित्साहिषीमहाग्निर्वनेव
वातो इन्नभन्तामन्यके समे ॥ १ ॥
नहि वां वव्रयामहेऽथेन्द्रमिद्यजामहे शविष्ठं नृणां नरम् ।
स नः कदा चिदर्वता गमदा वाजसातये गमदा
मेधसातये नभन्तामन्यके समे ॥ २ ॥
ता हि मध्यं भराणामिन्द्राग्नी अधिक्षितः ।
ता उ कवित्वना कवी पृच्छ्यमाना सखीयते सं
शीतमं शनुतं नरा नभन्तामन्यके समे ॥ ३ ॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अभ्यर्चं नभाकवदिन्द्राग्नी युजसा गिरा ।
ययोर्विश्वमिदं जगदियं द्यौः पृथिवी मह्युपस्थे
बिभृतो वसु नभन्तामन्यके समे ॥ ४ ॥
प्र ब्रह्माणि नभाकवदिन्द्राग्निभ्यामिरज्यत ।
या सप्तबुध्नमर्णवं जिह्मबारमपोर्णुत इन्द्र ईशान
ओजसा नभन्तामन्यके समे ॥ ५ ॥
अपिं वृश्च पुराणवद् व्रततैरिव गुष्पितमोजो दासस्य दम्भय ।
वयं तदस्य संभृतं वस्विन्द्रेण वि भजेमहि नभन्तामन्यके समे ॥ ६ ॥

अथ पञ्चविंशो वर्गः ॥ २५ ॥

यदिन्द्राग्नी जना इमे विह्वयन्ते तना गिरा ।
अस्माकेभिर्नृभिर्वयं सासह्याम पृतन्यतो वनुयाम
वनुष्यतो नभन्तामन्यके समे ॥ ७ ॥
या नु श्वेतावो दिव उच्चरात उप द्युभिः ।
इन्द्राग्न्योरनु व्रतमुहाना यन्ति सिन्धवो यान्त्सीं
बन्धादमुञ्चतां नभन्तामन्यके समे ॥ ८ ॥
पूर्वीष्ट इन्द्रोपमातयः पूर्वीरुत प्रशस्तयः सूनो हिन्वस्य हरिवः ।
वस्वो वीरस्यापृचो या नु साधन्त नो धियो नभन्तामन्यके समे ॥ ९ ॥
तं शिशीता सुवृक्तिभिस्त्वेषं सत्वानमृग्मियम् ।
उतो नु चिद्य ओजसा शुष्णस्याण्डानि भेदति
जेषत्स्वर्वतीरपो नभन्तामन्यके समे ॥ १० ॥
तं शिशीता स्वध्वरं सत्यं सत्वानमृत्वियम् ।
उतो नु चिद्य ओहत आण्डा शुष्णस्य भेदत्यजैः
स्वर्वतीरपो नभन्तामन्यके समे ॥ ११ ॥
एवेन्द्राग्निभ्यां पितृवन्नवीयो मन्धातृवदङ्गिरस्वदवाचि ।
त्रिधातुना शर्मणा पातमस्मान्वयं स्याम पतयो रयीणाम् ॥ १२ ॥

[४१] एकचत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—नाभाकः काण्वः ॥ देवता—वरुणः ॥ छन्दः—१, ५ त्रिष्टुप्; २, ३, ६, १० निचृज्जगती; ४, ७ भुरिक्त्रिष्टुप्; ८ स्वराट्त्रिष्टुप्; ९ जगती ॥ स्वरः—१, ४, ५, ७, ८ धैवतः; २, ३, ६, ९, १० निषादः ॥

अथ षड्विंशो वर्गः ॥ २६ ॥

अस्मा ऊ षु प्रभूतये वरुणाय मरुद्भ्योऽर्चा विदुष्टरेभ्यः
यो धीता मानुषाणां पशवो गाइव रक्षति नभन्तामन्यके समे ॥ १ ॥
तमू षु संमना गिरा पितृणां च मन्मभिः ।
नाभाकस्य प्रशस्तिभिर्यः सिन्धूनामुपोदये सप्तस्वसा
स मध्यमो नभन्तामन्यके समे ॥ २ ॥
स क्षपः परि षस्वजे न्युस्रो मायया दधे स विश्वं परि दर्शतः ।
तस्य वेनीरनु व्रतमुषस्तिस्रो अवर्धयन्नभन्तामन्यके समे ॥ ३ ॥
यः ककुभौ निधारयः पृथिव्यामधि दर्शतः ।
स माता पूर्व्यं पदं तद्वरुणस्य सप्त्यं स हि गोपा इवेर्यो
नभन्तामन्यके समे ॥ ४ ॥
यो धर्ता भुवनानां य उस्राणामपीच्या वेद नामानि गुह्या ।
स कविः काव्या पुरु रूपं द्यौरिव पुष्यति नभन्तामन्यके समे ॥ ५ ॥

अथ सप्तविंशो वर्गः ॥ २७ ॥

यस्मिन्विश्वानि काव्या चक्रे नाभिरिव श्रिता ।
त्रितं जूती सपर्यत व्रजे गावो न संयुजे युजे अश्वाँ
अयुक्षत नभन्तामन्यके समे ॥ ६ ॥
य आस्वर्क आशये विश्वा जातान्येषाम् ।
परि धामानि मर्मृशद्वरुणस्य पुरो गये विश्वे देवा
अनु व्रतं नभन्तामन्यके समे ॥ ७ ॥
स समुद्रो अपीच्यस्तुरो द्यामिव रोहति नि यदासु यजुर्दधे ।
स माया अर्चिना पदास्तृणान्नाकमारुहन्नभन्तामन्यके समे ॥ ८ ॥
यस्य श्वेता विचक्षणा तिस्रो भूमीरधिक्षितः ।
त्रिरुत्तराणि पप्रतुर्वरुणस्य ध्रुवं सदः स
संसानामिरज्यति नभन्तामन्यके समे ॥ ९ ॥
यः श्वेताँ अधिनिर्णिजश्चक्रे कृष्णाँ अनु व्रता ।
स धामं पूर्व्यं ममे यः स्कम्भेन वि रोदसी
अजो न द्यामधारयन्नभन्तामन्यके समे ॥ १० ॥

[४२] द्विचत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—१-६ नाभाकः काण्व अर्चनाना वा; अथवा १-३ नाभाकः काण्वः; ४-६ नाभाकः काण्व अर्चनाना वा ॥ देवता—१-३ वरुणः; ४-६ अश्विनौ ॥ छन्दः—१-३ त्रिष्टुप्; ४-६ अनुष्टुप् ॥ स्वरः—१-३ धैवतः; ४-६ गान्धारः ॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अथ अष्टाविंशो वर्गः ॥ २८ ॥

अस्तभ्नाद्द्यामसुरो विश्ववेदा अमिमीत वरिमाणं पृथिव्याः।
आसीदद्विश्वा भुवनानि सम्राड् विश्वेत्तानि वरुणस्य व्रतानि ॥ १ ॥
एवा वन्दस्व वरुणं बृहन्तं नमस्या धीरममृतस्य गोपाम्।
स नः शर्म त्रिवरूथं वि यंसत्पातं नो द्यावापृथिवी उपस्थे ॥ २ ॥
इमां धियं शिक्षमाणस्य देव क्रतुं दक्षं वरुण सं शिशाधि।
ययाति विश्वा दुरिता तरेम सुतमींणमधि नावं रुहेम ॥ ३ ॥
आ वां ग्रावाणो अश्विना धीभिर्विप्रा अचुच्यवुः ।
नासत्या सोमपीतये नभन्तामन्यके समे ॥ ४ ॥
यथा वामत्रिरश्विना गीर्भिर्विप्रो अजोहवीत् ।
नासत्या सोमपीतये नभन्तामन्यके समे ॥ ५ ॥
एवा वामह्व ऊतये यथाहुवन्त मेधिराः ।
नासत्या सोमपीतये नभन्तामन्यके समे ॥ ६ ॥

षष्ठोऽनुवाकः [४३] त्रिचत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—विरूप आङ्गिरसः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१, ९-१२, २२, २६, २८, २९, ३३ निचृद्गायत्री; २-८, १३, १५-२१, २३-२५, २७, ३१, ३२ गायत्री; १४ ककुम्मतीगायत्री; ३० पादनिचृद्गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथ एकोनत्रिंशो वर्गः ॥ २९ ॥

इमे विप्रस्य वेधसोऽग्नेरस्तृतयज्वनः। गिरः स्तोमास ईरते ॥ १ ॥
अस्मै ते प्रतिहर्यते जातवेदो विचर्षणे। अग्ने जनामि सुष्टुतिम् ॥ २ ॥
आरोकाइव घेदहं तिग्मा अंग्ने तव त्विषः। दद्धिर्वनानि बप्सति ॥ ३ ॥
हरयो धूमकेतवो वातजूता उप द्यवि। यतन्ते वृथगग्रयः ॥ ४ ॥
एते त्ये वृथगग्रयं इद्धासः समदृक्षत। उषसामिव केतवः ॥ ५ ॥

अथ त्रिंशो वर्गः ॥ ३० ॥

कृष्णा रजांसि पत्सुतः प्रयाणे जातवेदसः। अग्निर्यद्रोधति क्षमि ॥ ६ ॥
धासिं कृण्वान ओषधीर्बप्सदग्निर्न वायति। पुनर्यन्तरुणीरपि ॥ ७ ॥
जिह्वाभिरह नन्नमदर्चिषा जञ्जणाभवन्। अग्निर्वनेषु रोचते ॥ ८ ॥
अप्स्वग्ने सधिष्टव सौषधीरनु रुध्यसे। गर्भे सञ्जायसे पुनः ॥ ९ ॥
उदग्ने तव तद् घृतादर्ची रोचत आहुतम्। निंसानं जुह्वो३ मुखे ॥ १० ॥

अथ एकत्रिंशो वर्गः ॥ ३१ ॥

उक्षान्नाय वशान्नाय सोमपृष्ठाय वेधसे। स्तोमैर्विधेमाग्नये ॥ ११ ॥
उत त्वा नमसा वयं होतर्वरेण्यक्रतो। अग्ने समिद्धिरीमहे ॥ १२ ॥
उत त्वा भृगुवच्छुचे मनुष्वदग्न आहुत। अङ्गिरस्वद्भरामहे ॥ १३ ॥
त्वं ह्यग्ने अग्निना विप्रो विप्रेण सन्सता। सखा सख्या समिध्यसे ॥ १४ ॥
स त्वं विप्राय दाशुषे रयिं देहि सहस्त्रिणम्। अग्ने वीरवतीमिषम् ॥ १५ ॥

अथ द्वात्रिंशो वर्गः ॥ ३२ ॥

अग्ने भ्रातः सहस्कृत रोहिदश्व शुचिव्रत। इमं स्तोमं जुषस्व मे ॥ १६ ॥
उत त्वाग्ने मम स्तुतो वाश्राय प्रतिहर्यते। गोष्ठं गावइवाशत ॥ १७ ॥
तुभ्यं ता अङ्गिरस्तम विश्वाः सुक्षितयः पृथक्। अग्ने कामाय येमिरे ॥ १८ ॥
अग्निं धीभिर्मनीषिणो मेधिरासो विपश्चितः। अद्यसद्याय हिन्विरे ॥ १९ ॥
तं त्वामग्नेषु वाजिनं तन्वाना अग्ने अध्वरम्। वह्निं होतारमीळते ॥ २० ॥

अथ त्रयस्त्रिंशो वर्गः ॥ ३३ ॥

पुरुत्रा हि सदृङ्ङसि विशो विश्वा अनु प्रभुः। समत्सु त्वा हवामहे ॥ २१ ॥
तमींळिष्व य आहुतोऽग्निर्विभ्राजते घृतैः। इमं नः शृणवद्धवम् ॥ २२ ॥
तं त्वा वयं हवामहे शृण्वन्तं जातवेदसम्। अग्ने घ्नन्तमप द्विषः ॥ २३ ॥
विशां राजानमद्भुतमध्यक्षं धर्मणामिमम्। अग्निमीळे स उ श्रवत् ॥ २४ ॥
अग्निं विश्वायुवेपसं मर्यं न वाजिनं हितम्। ससिं न वाजयामसि ॥ २५ ॥

अथ चतुस्त्रिंशो वर्गः ॥ ३४ ॥

घ्नन्मृध्राण्यप द्विषो दहन्रक्षांसि विश्वहा। अग्ने तिग्मेन दीदिहि ॥ २६ ॥
यं त्वा जनास इन्धते मनुष्वदङ्गिरस्तम। अग्ने स बोधि मे वचः ॥ २७ ॥
यदग्ने दिविजा असि पशुजा वा सहस्कृत। तं त्वा गीर्भिर्हवामहे ॥ २८ ॥
तुभ्यं धेत्ते जना इमे विश्वाः सुक्षितयः पृथक्। धासिं हिन्वन्त्यत्तवे ॥ २९ ॥
ते घेदग्ने स्वाध्योऽहा विश्वा नृचक्षसः। तरन्तः स्याम दुर्गहा ॥ ३० ॥

अथ पञ्चत्रिंशो वर्गः ॥ ३५ ॥

अग्निं मन्द्रं पुरुप्रियं शीरं पावकशोचिषम्। हृद्भिर्मन्द्रेभिरीमहे ॥ ३१ ॥
स त्वमग्ने विभावसुः सृजन्त्सूर्यो न रश्मिभिः। शर्धन्तमांसि जिघ्नसे ॥ ३२ ॥
तत्ते सहस्व ईमहे दात्रं यत्रोपदस्यति। त्वदग्ने वार्यं वसु ॥ ३३ ॥

[४४] चतुश्चत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—विरूप आङ्गिरसः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१, ३, ४, ६, १०, २०-२२, २५, २६ गायत्री; २, ५, ७, ८, ११, १४-१७, २४ निचृद्गायत्री; ९, १२, १३, १८, २८, ३० विराड्गायत्री; २७ यवमध्यागायत्री; २९ ककुम्मतीगायत्री; १९, २३ पादनिचृद्गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथ षट्त्रिंशो वर्गः ॥ ३६ ॥

समिधाग्निं दुवस्यत घृतैर्बोधयतातिथिम्। आस्मिन्हव्या जुहोतन ॥ १ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अग्ने॒ स्तोमं॑ जुषस्व मे॒ वर्ध॑स्वा॒नेन॒ मन्म॑ना। प्रति॑ सू॒क्तानि॑ हर्य नः॥ २॥
अ॒ग्निं दू॒तं पु॒रो द॑धे हव्य॒वाह॒मुप॑ ब्रुवे। दे॒वाँ आ सा॑दयादि॒ह॥ ३॥
उत्ते॑ बृ॒हन्तो॑ अ॒र्चयः॑ समिधा॒नस्य॑ दीदिवः। अग्ने॑ शु॒क्रास॑ ईरते॥ ४॥
उप॑ त्वा जु॒ह्वो॒३॒॑ मम॑ घृ॒ताची॑र्यन्तु हर्यत। अग्ने॑ ह॒व्या जु॑षस्व नः॥ ५॥

अथ सप्तत्रिंशो वर्गः॥ ३७॥

म॒न्द्रं होता॑रमृ॒त्विजं॑ चि॒त्रभा॑नुं वि॒भाव॑सुम्। अ॒ग्निमी॑ळे॒ स उ॑ श्रवत् ॥ ६॥
प्र॒त्नं होता॑र॒मीड्यं॒ जुष्ट॑म॒ग्निं क॒विक्र॑तुम्। अ॒ध्व॒राणा॑मभि॒श्रिय॑म् ॥ ७॥
जु॒षा॒णो अ॑ङ्गिरस्तमे॒मा ह॒व्यान्या॑नु॒षक्। अग्ने॑ य॒ज्ञं न॑य ऋतु॒था ॥ ८॥
स॒मि॒धा॒न उ॑ सन्त्य॒ शुक्र॑शोच इ॒हा व॑ह। चि॒कि॒त्वान्दैव्यं॒ जन॑म् ॥ ९॥
विप्रं॒ होता॑रम॒द्रुहं॑ धू॒मके॑तुं वि॒भाव॑सुम्। य॒ज्ञानां॑ के॒तुमी॑महे ॥ १०॥

अथ अष्टत्रिंशो वर्गः॥ ३८॥

अग्ने॒ नि पा॑हि न॒स्त्वं प्रति॑ ष्म देव॒ रीष॑तः। भि॒न्धि द्वेषः॑ सहस्कृतः॥ ११॥
अ॒ग्निः प्र॒त्नेन॒ मन्म॑ना॒ शुम्भा॑नस्त॒न्वं१॒॑ स्वाम्। क॒विर्विप्रे॑ण वावृधे ॥ १२॥
ऊ॒र्जो नपा॑त॒मा हु॑वे॒ऽग्निं पा॑व॒कशो॑चिषम्। अ॒स्मिन्य॒ज्ञे स्व॑ध्व॒रे ॥ १३॥
स नो॑ मित्रमह॒स्त्वमग्ने॑ शु॒क्रेण॑ शो॒चिषा॑। दे॒वैरा स॑त्सि ब॒र्हिषि॑ ॥ १४॥
यो अ॒ग्निं त॒न्वो॒३॒॑ दमे॑ दे॒वं मर्तः॑ सप॒र्यति॑। तस्मा॒ इद्दी॑दय॒द्वसु॑ ॥ १५॥

अथ एकोनचत्वारिंशो वर्गः॥ ३९॥

अ॒ग्निर्मू॒र्धा दि॒वः क॒कुत्पतिः॑ पृथि॒व्या अ॒यम्। अ॒पां रेतां॑सि जिन्वति॥ १६॥
उद॑ग्ने॒ शुच॑य॒स्तव॑ शु॒क्रा भ्राज॑न्त ईरते। तव॒ ज्योतीं॑ष्य॒र्चयः॑ ॥ १७॥
ईशि॑षे॒ वार्य॑स्य॒ हि दा॒त्रस्या॑ग्ने॒ स्व॑र्पतिः। स्तो॒ता स्यां॒ तव॒ शर्म॑णि ॥ १८॥
त्वाम॑ग्ने मनी॒षिण॒स्त्वां हि॑न्वन्ति॒ चित्ति॑भिः। त्वां व॑र्धन्तु नो॒ गिरः॑ ॥ १९॥
अद॑ब्धस्य स्व॒धाव॑तो दू॒तस्य॒ रेभ॑तः॒ सदा॑। अ॒ग्नेः स॒ख्यं वृ॑णीमहे ॥ २०॥

अथ चत्वारिंशो वर्गः॥ ४०॥

अ॒ग्निः शुचि॑व्रततमः॒ शुचि॒र्विप्रः॒ शुचिः॑ क॒विः। शुची॑ रोचत॒ आहु॑तः॥ २१॥
उ॒त त्वा॑ धी॒तयो॒ मम॒ गिरो॑ वर्धन्तु वि॒श्वहा॑। अग्ने॑ स॒ख्यस्य॑ बोधि नः॥ २२॥
यद॑ग्ने॒ स्याम॒हं त्वं त्वं वा॑ घा॒ स्या अ॒हम्। स्युष्टे॑ स॒त्या इ॒हाशिषः॑॥ २३॥
वसु॒र्वसु॑पति॒र्हि क॒मस्य॑ग्ने वि॒भाव॑सुः। स्याम॑ ते सुम॒तावपि॑ ॥ २४॥
अग्ने॑ धृ॒तव्र॑ताय ते समु॒द्राये॑व॒ सिन्ध॑वः। गिरो॑ वा॒श्रास॑ ईरते ॥ २५॥

अथ एकचत्वारिंशो वर्गः॥ ४१॥

युवा॑नं वि॒श्पतिं॑ क॒विं वि॒श्वादं॑ पुरु॒वेप॑सम्। अ॒ग्निं शु॑म्भामि॒ मन्म॑भिः॥ २६॥
य॒ज्ञानां॑ र॒थ्यं॑ व॒यं ति॒ग्मज॑म्भाय वी॒ळवे॑। स्तोमै॑रिषेमा॒ग्नये॑ ॥ २७॥
अ॒यम॑ग्ने॒ त्वे अपि॑ जरि॒ता भू॑तु सन्त्य। तस्मै॑ पावक मृळय॥ २८॥
धीरो॒ ह्यस्य॑द्म॒सद्विप्रो॒ न जागृ॑विः॒ सदा॑। अग्ने॑ दी॒दय॑सि॒ द्यवि॑॥ २९॥
पु॒राग्ने॑ दुरि॒तेभ्यः॑ पु॒रा मृ॒ध्रेभ्यः॑ कवे। प्र ण॒ आयु॑र्वसो तिर ॥ ३०॥

[४५] पञ्चचत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—त्रिशोकः काण्वः॥ देवता—१ इन्द्राग्नी; २-४२ इन्द्रः॥ छन्दः—१, ३-६, ८, ९, १२, १३, १५-२१, २३-२५, ३१, ३६, ३७, ३९-४२ गायत्री; २, १०, ११, १४, २२, २८-३०, ३३-३५ निचृद्गायत्री; २६, २७, ३२, ३८ विराड्गायत्री; ७ पादनिचृद्गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

अथ द्विचत्वारिंशो वर्गः॥ ४२॥

आ घा॒ ये अ॒ग्निमि॑न्ध॒ते स्तृ॒णन्ति॑ ब॒र्हिरा॑नु॒षक्। येषा॒मिन्द्रो॒ युवा॒ सखा॑॥ १॥
बृ॒हन्निदि॒ध्म ए॑षां॒ भूरि॑ श॒स्तं पृ॒थुः स्वरुः॑। येषा॒मिन्द्रो॒ युवा॒ सखा॑॥ २॥
अयु॑द्ध॒ इद्यु॒धा वृ॒तं शूर॒ आज॑ति॒ सत्व॑भिः। येषा॒मिन्द्रो॒ युवा॒ सखा॑॥ ३॥
आ बु॒न्दं वृ॑त्र॒हा द॑दे जा॒तः पृ॑च्छ॒द्वि मा॒तर॑म्। क उ॒ग्राः के ह॑ शृण्विरे॥ ४॥
प्रति॑ त्वा शव॒सी व॑दद्गि॒रावप्सो॒ न यो॑धिषत्। यस्ते॑ शत्रु॒त्वमा॑च॒के ॥ ५॥

अथ त्रयचत्वारिंशो वर्गः॥ ४३॥

उ॒त त्वं म॑घवञ्छृणु॒ यस्ते॒ वष्टि॑ व॒वक्षि॒ तत्। यद्वी॒ळया॑सि वी॒ळु तत्॥ ६॥
यदा॒जिं यात्या॑जि॒कृदिन्द्रः॑ स्वश्व॒युरुप॑। र॒थीत॑मो र॒थीना॑म् ॥ ७॥
वि षु विश्वा॑ अभि॒युजो॒ वज्रि॒न्विष्व॒ग्यथा॑ वृह। भवा॑ नः सु॒श्रव॑स्तमः॥ ८॥
अ॒स्माकं॒ सु रथं॑ पु॒र इन्द्रः॑ कृणोतु सा॒तये॑। न यं धूर्व॑न्ति धू॒र्तयः॑॥ ९॥
वृ॒ज्याम॑ ते॒ परि॒ द्विषोऽरं॑ ते शक्र दा॒वने॑। ग॒मेमेदि॑न्द्र॒ गोम॑तः ॥ १०॥

अथ चतुश्चत्वारिंशो वर्गः॥ ४४॥

शनै॑श्चि॒द्यन्तो॑ अद्रि॒वोऽश्वा॑वन्तः शत॒ग्विनः॑। वि॒वक्ष॑णा अने॒हसः॑ ॥ ११॥
ऊ॒र्ध्वा हि ते॑ दि॒वेदि॑वे स॒हस्रा॑ सू॒नृता॑ श॒ता। ज॒रि॒तृभ्यो॑ वि॒मंह॑ते॥ १२॥
वि॒द्मा हि त्वा॑ धनंज॒यमिन्द्र॑ दृ॒ळ्हा चि॑दारु॒जम्। आ॒दा॒रिणं॒ यथा॒ गय॑म्॥ १३॥
क॒कु॒हं चि॑त्त्वा कवे॒ मन्द॑न्तु धृष्ण॒विन्द॑वः। आ त्वा॑ प॒णिं यदीम॑हे॥ १४॥
यस्ते॑ रे॒वाँ अदा॑शुरिः प्रम॒मर्ष॑ म॒घत्त॑ये। तस्य॑ नो॒ वेद॒ आ भ॑र॥ १५॥

अथ पञ्चचत्वारिंशो वर्गः॥ ४५॥

इ॒म उ॑ त्वा॒ वि च॑क्षते॒ सखा॑य इन्द्र सो॒मिनः॑। पु॒ष्टाव॑न्तो॒ यथा॑ प॒शुम्॥ १६॥
उ॒त त्वाब॑धिरं व॒यं श्रुत्क॑र्णं॒ सन्त॑मू॒तये॑ । दू॒रादि॒ह ह॑वामहे ॥ १७॥
यच्छु॑श्रू॒या इ॒मं हवं॑ दु॒र्मर्षं॑ चक्रिया उ॒त। भवे॑रा॒पिर्नो॒ अन्त॑मः ॥ १८॥
यच्चि॒द्धि ते॒ अपि॒ व्यथि॑र्जग॒न्वांसो॒ अम॑न्महि। गो॒दा इदि॑न्द्र बोधि नः॥ १९॥
आ त्वा॑ र॒म्भं न जिव्र॑यो रर॒भ्मा श॑वस्पते। उ॒श्मसि॑ त्वा स॒धस्थ॒ आ॥ २०॥

अथ षट्चत्वारिंशो वर्गः॥ ४६॥

स्तो॒त्रमिन्द्रा॑य गायत पुरुनृ॒म्णाय॒ सत्व॑ने। नकि॒र्यं वृ॑ण्व॒ते यु॒धि ॥ २१॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अभि त्वा वृषभा सुते सुतं सृजामि पीतये। तृम्पा व्यश्नुही मदम्॥ २२॥
मा त्वा मूरा अविष्यवो मोपहस्वान आ दभन्। माकीं ब्रह्मद्विषो वनः॥ २३॥
इह त्वा गोपरीणसा महे मन्दन्तु राधसे। सरो गौरो यथा पिब॥ २४॥
या वृत्रहा परावति सना नवा च चुच्युवे। ता संसत्सु प्र वोचत॥ २५॥

अथ सप्तचत्वारिंशो वर्गः॥ ४७॥

अपिबत्कद्रुवः सुतमिन्द्रः सहस्रबाह्वे। अत्रादेदिष्ट पौंस्यम्॥ २६॥
सत्यं तत्तुर्वशे यदौ विदानो अह्नवाय्यम्। व्यानट् तुर्वणे शमि॥ २७॥
तरणिं वो जनानां त्रदं वाजस्य गोमतः। समानमु प्र शंसिषम्॥ २८॥
ऋभुक्षणं न वर्तवं उक्थेषु तुग्र्यावृधम्। इन्द्रं सोमे सचा सुते॥ २९॥
यः कृन्तदिद्वि योन्यं त्रिशोकाय गिरिं पृथुम्। गोभ्यो गातुं निरेतवे॥ ३०॥

अथ अष्टचत्वारिंशो वर्गः॥ ४८॥

यद्ध्विषे मनस्यसि मन्दानः प्रेदियक्षसि। मा तत्करिन्द्र मृळय॥ ३१॥
द्रुभं चिद्धि त्वावतः कृतं शृण्वे अधि क्षमि। जिगात्विन्द्र ते मनः॥ ३२॥
तवेदु ताः सुकीर्तयोऽसन्नुत प्रशस्तयः। यदिन्द्र मृळयासि नः॥ ३३॥
मा न एकस्मिन्नागसि मा द्वयोरुत त्रिषु। वधीर्मा शूर भूरिषु॥ ३४॥
बिभया हि त्वावत उग्रादभिप्रभङ्गिणः। दस्माद्दहमृतीषहः॥ ३५॥

अथ एकोनपञ्चाशो वर्गः॥ ४९॥

मा सख्युः शूनमा विदे मा पुत्रस्य प्रभूवसो। आवृत्वद्भूतु ते मनः॥ ३६॥
को नु मर्या अमिथितः सखा सखायमब्रवीत्। जहा को अस्मदीषते॥ ३७॥
एवारे वृषभा सुतेऽसिन्वन्भूर्यावयः। श्वघ्नीव निवता चरन्॥ ३८॥
आ तं एता वचोयुजा हरी गृभ्णे सुमद्रथा। यदीं ब्रह्मभ्य इद्ददः॥ ३९॥
भिन्धि विश्वा अप द्विषः परि बाधो जहि मृधः। वसु स्पार्हं तदा भर॥ ४०॥
यद्वीळाविन्द्र यत्स्थिरे यत्पर्शाने पराभृतम्। वसु स्पार्हं तदा भर॥ ४१॥
यस्य ते विश्वमानुषो भूरेर्दत्तस्य वेदति। वसु स्पार्हं तदा भर॥ ४२॥

इति षष्ठाष्टके तृतीयोऽध्यायः॥

अथ चतुर्थोऽध्यायः

[४६] षट्चत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—वशोऽश्व्यः॥ देवता—१-२०, २९-३१, ३३ इन्द्रः; २१-२४ पृथुश्रवसः कानीतस्य दानस्तुतिः; २५-२८, ३२ वायुः॥ छन्दः—१ पादनिचृद्गायत्री; २, १०, १५, २९ विराड्गायत्री; ३, २३ गायत्री; ४ प्रतिष्ठागायत्री; ५ निचृद् उष्णिक्; ६, १३, ३३ निचृद्गायत्री; ७, २०, २७, २८ निचृदनुष्टुप्; ८ विराडनुष्टुप्; ९, २६ स्वराड्बृहती; ११, १४ विराड्बृहती; १२, २२, २४ निचृत्पङ्क्तिः; १६ भुरिगुष्णिक्; १७ जगती; १८ अनुष्टुप्; १९ भुरिगनुष्टुप्; २१, २५, ३२ बृहती; ३० आर्चीस्वराट्गायत्री; ३१ स्वराड्गायत्री॥ स्वरः—१-४, ६, १०, १३, १५, २३, २९-३१, ३३ षड्जः; ५, १६ ऋषभः; ७, ९, ११, १४, २०, २१, २५-२८, ३२ मध्यमः; ८, १८, १९ गान्धारः; १२, २२, २४ पञ्चमः; १७ निषादः॥

अथ प्रथमो वर्गः॥ १॥

त्वावतः पुरूवसो वयमिन्द्र प्रणेतः। स्मसि स्थातर्हरीणाम्॥ १॥
त्वां हि सत्यमद्रिवो विद्म दातारमिषाम्। विद्म दातारं रयीणाम्॥ २॥
आ यस्य ते महिमानं शतमूते शतक्रतो। गीर्भिर्गृणन्ति कारवः॥ ३॥
सुनीथो घा स मर्त्यो यं मरुतो यमर्यमा। मित्रः पान्त्यद्रुहः॥ ४॥
दधानो गोमदश्ववत्सुवीर्यमादित्यजूत एधते। सदा राया पुरुस्पृहा॥ ५॥

अथ द्वितीयो वर्गः॥ २॥

तमिन्द्रं दानमीमहे शवसानमभीर्वम्। ईशानं राय ईमहे॥ ६॥
तस्मिन्हि सन्त्यूतयो विश्वा अभीरवः सचा।
तमा वहन्तु सप्तयः पुरूवसुं मदाय हरयः सुतम्॥ ७॥
यस्ते मदो वरेण्यो य इन्द्र वृत्रहन्तमः।
य आदृदिः स्वर्नृभिर्यः पृतनासु दुष्टरः॥ ८॥
यो दुष्टरो विश्ववार श्रवाय्यो वाजेष्वस्ति तरुता।
स नः शविष्ठ सवना वसो गहि गमेम गोमति व्रजे॥ ९॥
गव्यो षु णो यथा पुराश्वयोत रथ्या। वरिवस्य महामह॥ १०॥

अथ तृतीयो वर्गः॥ ३॥

नहि ते शूर राधसोऽन्तं विन्दामि सत्रा।
दशस्या नो मघवन्नू चिदद्रिवो धियो वाजेभिराविथ॥ ११॥
य ऋष्वः श्रावयत्सखा विश्वेत्स वेद जनिमा पुरुष्टुतः।
तं विश्वे मानुषा युगेन्द्रं हवन्ते तविषं यतस्रुचः॥ १२॥
स नो वाजेष्वविता पुरूवसुः पुरःस्थाता मघवा वृत्रहा भुवत्॥ १३॥
अभि वो वीरमन्धसो मदेषु गाय गिरा महा विचेतसम्।
इन्द्रं नाम श्रुत्यं शाकिनं वचो यथा॥ १४॥
एवा वस्तोर्वयस्वतो दुदिर्वसु दुदिर्वाजेषु पुरुहूत वाजिनम्। नूनमथ॥ १५॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अथ चतुर्थो वर्गः ॥ ४ ॥

विश्वेषामिर॒ज्यन्तं॑ वसू॒नां सास॒ह्वांसं॑ चिद॒स्य वर्प॑सः ।
कृप॒यतो॒ नूनमत्यर्थ ॥ १६ ॥
म॒हः सु वो॑ अरमिषे॒ स्तवा॑महे मी॒ळ्हुषे॑ अरंग॒माय॒ जग्म॑ये ।
य॒ज्ञेभि॑र्गी॒र्भिर्वि॑श्वम॒नुषां॑ म॒रुतां॑मियक्षसि गा॒यें त्वा॒ नम॑सा गि॒रा ॥ १७ ॥
ये पा॒तय॑न्ते अ॒ज्मभि॑र्गि॒रीणां॑ स्नु॒भिरि॑षाम् ।
य॒ज्ञं म॑हि॒ष्वणी॑नां सु॒म्नं तु॒वि॒ष्वणी॑नां प्राध्व॒रे ॥ १८ ॥
प्रभ॑ङ्गं दुर्म॒तीना॒मिन्द्रे॑ शवि॒ष्ठा भ॑र ।
र॒यिम॒स्मभ्यं॒ युज्यं॑ चोदयन्मते॒ ज्येष्ठं॑ चोदयन्मते ॥ १९ ॥
सनि॑तः सु॒सनि॑तरुग्र चित्र॒ चेति॑ष्ठ सू॒नृत॑ ।
प्रास॑हा॒ सम्रा॒ट् सहु॑रिं॒ सह॑न्तं भु॒ञ्युं वाजे॑षु पू॒र्व्यम् ॥ २० ॥

अथ पञ्चमो वर्गः ॥ ५ ॥

आ स ए॑तु य ईव॒दाँ अदे॑वः पू॒र्तमा॑द॒दे ।
यथा॑ चिद्वशो॑ अ॒श्व्यः पृथु॒श्रव॑सि कानी॒ते३॑ऽस्या व्यु॒ष्या॑द॒दे ॥ २१ ॥
ष॒ष्टिं स॒हस्रा॑श्व्यस्या॒युता॑सन॒मुष्ट्रा॑नां विंश॒तिं श॒ता ।
दश॒ श्यावी॑नां श॒ता दश॒ त्र्यरु॑षीणां॒ दश॒ गवां॑ स॒हस्रा॑ ॥ २२ ॥
दश॒ श्यावा॒ ऋध्द्र॑यो वी॒तवा॑रास आ॒शव॑: ।
म॒था ने॒मिं नि वा॑वृतुः ॥ २३ ॥
दा॒नास॑: पृथु॒श्रव॑सः कानी॒तस्य॑ सु॒राध॑सः ।
रथं॑ हिर॒ण्ययं॑ दद॒न्मंहि॑ष्ठः सू॒रिर॑भू॒द्वर्षि॑ष्ठमकृत॒ श्रव॑: ॥ २४ ॥
आ नो॑ वायो म॒हे तने॑ या॒हि म॒खाय॒ पाज॑से ।
व॒यं हि ते॑ चकृ॒मा भू॒रि दा॒वने॑ स॒द्यश्चि॒न्महि॑ दा॒वने॑ ॥ २५ ॥

अथ षष्ठो वर्गः ॥ ६ ॥

यो अश्वे॑भि॒र्वह॑ते॒ वस्त॑ उ॒स्रास्त्रिः स॒प्त स॑प्त॒तीना॑म् ।
ए॒भिः सोमे॑भिः सो॒मसु॑द्भिः॒ सोमपा दा॒नाय॑ शुक्रपूतपाः ॥ २६ ॥
यो म॑ इ॒मं चि॑दु॒ त्मना॑मन्दच्चि॒त्रं दा॒वने॑ ।
अ॒र॒ट्वे अक्षे॒ नहु॑षे सु॒कृत्व॑नि सु॒कृत्त॑राय सु॒क्रतुः॑ ॥ २७ ॥
उ॒च॒थ्ये३॑ वपु॑जि॒ यः स्व॒राळु॒त वा॑यो घृतस्नाः ।
अश्वे॑षितं॒ रजे॑षितं॒ शुने॑षितं॒ प्राज्म॒ तदि॒दं नु तत् ॥ २८ ॥
अध॑ प्रि॒यमि॑षिरा॒य ष॒ष्टिं स॒हस्रा॑सनम्। अश्वा॑ना॒मिन्न वृ॒ष्णाम् ॥ २९ ॥
गावो॒ न यू॒थमुप॑ यन्ति॒ वध्र॑य॒ उप॒ मा य॑न्ति॒ वध्र॑यः ॥ ३० ॥
अध॒ यच्चा॑रथे गृ॒णे श॒तमु॒ष्ट्राँ अचि॑क्रदत् ।
अध॒ श्वित्ने॑षु विंश॒तिं श॒ता ॥ ३१ ॥
श॒तं दा॒से ब॑ल्बू॒थे वि॒प्रस्त॑रुक्ष॒ आ द॑दे ।
ते तें॑ वायवि॒मे जना॒ मद॒न्तीन्द्र॑गोपा॒ मद॑न्ति दे॒वगो॑पाः ॥ ३२ ॥
अध॒ स्या योष॑णा म॒ही प्र॑ती॒ची वर्श॑म॒श्व्यम् ।
अधि॑रुक्मा॒ वि नी॑यते ॥ ३३ ॥

[४७] सप्तचत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—त्रित आप्त्यः ॥ देवता—१-१३ आदित्याः; १४-१८ आदित्या उषाश्च ॥ छन्दः—१ जगती; २, ३, ५, ९, १३, १५, १६, १८ भुरिक्त्रिष्टुप्; ४, ६-८, १२ निचृज्जगती; १०, ११, १७ स्वराट्त्रिष्टुप्; १४ त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१, ४, ६-८, १२ निषादः; २, ३, ५, ९-११, १३-१८ धैवतः ॥

अथ सप्तमो वर्गः ॥ ७ ॥

महिं॑ वो महतामवो॒ वरु॑ण॒ मित्र॑ दा॒शुषे॑ ।
यमा॑दित्या॒ अभि द्रुहो॒ रक्ष॑था॒ नेम॒घं न॑शदने॒हसो॑
व ऊ॒तयः॑ सुऊ॒तयो॑ व ऊ॒तयः॑ ॥ १ ॥
वि॒दा दे॑वा॒ अघा॑ना॒मादि॑त्यासो॒ अपा॑कृतिम् ।
पक्षा॑ वयो॒ यथो॒परि॒ व्य॑१॒॑स्मे शर्म॑ यच्छताने॒हसो॑
व ऊ॒तयः॑ सुऊ॒तयो॑ व ऊ॒तयः॑ ॥ २ ॥
व्य॑१॒॑स्मे अधि॒ शर्म॒ तत्पक्षा॑ वयो॒ न य॑न्तन ।
विश्वा॑नि विश्ववेदसो वरू॒थ्या॑ मनामहेऽने॒हसो॑
व ऊ॒तयः॑ सुऊ॒तयो॑ व ऊ॒तयः॑ ॥ ३ ॥
यस्मा॒ अरा॑सत क्ष॒यं जी॒वातुं॑ च॒ प्रचे॑तसः ।
मनो॒र्विश्व॑स्य॒ धेदि॒म आ॑दित्या॒ राय ईशतेऽने॒हसो॑
व ऊ॒तयः॑ सुऊ॒तयो॑ व ऊ॒तयः॑ ॥ ४ ॥
परि॑ णो वृणजन्न॒घा दुर्गा॑णि॒ रथ्यो॑ यथा ।
स्यामे॑दिन्द्र॑स्य॒ शर्म॑ण्यादि॒त्यता॑ना॒मुता॑वस्यने॒हसो॑
व ऊ॒तयः॑ सुऊ॒तयो॑ व ऊ॒तयः॑ ॥ ५ ॥

अथ अष्टमो वर्गः ॥ ८ ॥

परि॑हूतेदु॒ना जनो॑ यु॒ष्मादत्त॑स्य वायति ।
देवा॑ अदब्धमाश वो॒ यमा॑दित्या॒ अहे॑तना॒ने॒हसो॑
व ऊ॒तयः॑ सुऊ॒तयो॑ व ऊ॒तयः॑ ॥ ६ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

न तं ति॒ग्मं च॒न त्यजो॒ न द्रा॑सद॒भि तं गु॒रु ।
यस्मा॑ उ॒ शर्म॑ स॒प्रथ॒ आदि॑त्यासो॒ अरा॑ध्वमने॒हसो॑
व ऊ॒तयः॑ सुऊ॒तयो॑ व ऊ॒तयः॑ ॥७॥
यु॒ष्मे दे॑वा॒ अपि॑ ष्मसि॒ युध्य॑न्तइव॒ वर्म॑सु ।
यू॒यं म॒हो न॒ एन॑सो यू॒यमर्भा॑दुरुष्यताने॒हसो॑
व ऊ॒तयः॑ सुऊ॒तयो॑ व ऊ॒तयः॑ ॥८॥
अदि॑तिर्न उरुष्य॒त्वदि॑तिः॒ शर्म॑ यच्छतु ।
मा॒ता मि॒त्रस्य॑ रे॒वतो॑ऽर्य॒म्णो वरु॑णस्य चाने॒हसो॑
व ऊ॒तयः॑ सुऊ॒तयो॑ व ऊ॒तयः॑ ॥९॥
यद्दे॑वाः॒ शर्म॑ शर॒णं यद्भ॒द्रं यद॑नातु॒रम् ।
त्रि॒धातु॒ यद्व॑रू॒थ्यं१॒॑ तद॒स्मासु॒ वि य॑न्तनाने॒हसो॑
व ऊ॒तयः॑ सुऊ॒तयो॑ व ऊ॒तयः॑ ॥१०॥

अथ नवमो वर्गः ॥ ९ ॥

आदि॑त्या॒ अव॒ हि ख्यताधि॒ कूला॑दिव॒ स्पशः॑ ।
सु॒ती॒र्थमर्व॑तो य॒थानु॑ नो नेषथा सु॒गम॑ने॒हसो॑
व ऊ॒तयः॑ सुऊ॒तयो॑ व ऊ॒तयः॑ ॥११॥
नेह भ॒द्रं र॑क्ष॒स्विने॒ नाव॒यै नोप॒या उ॒त ।
गवे॑ च भ॒द्रं धे॒नवे॑ वी॒राय॑ च श्रवस्य॒तेऽने॒हसो॑
व ऊ॒तयः॑ सुऊ॒तयो॑ व ऊ॒तयः॑ ॥१२॥
यदा॒विर्यद॑पी॒च्यं१॒॑ देवा॑सो॒ अस्ति॑ दुष्कृ॒तम् ।
त्रि॒ते तद्विश्व॑मा॒प्त्य आ॒रे अ॒स्मद्द॑धातनाने॒हसो॑
व ऊ॒तयः॑ सुऊ॒तयो॑ व ऊ॒तयः॑ ॥१३॥
यच्च॒ गोषु॑ दु॒ष्ष्वप्न्यं॒ यच्चा॒स्मे दु॑हितर्दिवः ।
त्रि॒ताय॒ तद्वि॑भावर्या॒प्त्याय॒ परा॑ वहाने॒हसो॑
व ऊ॒तयः॑ सुऊ॒तयो॑ व ऊ॒तयः॑ ॥१४॥
नि॒ष्कं वा॑ घा कृ॒णव॑ते॒ स्रजं॑ वा दुहितर्दिवः ।
त्रि॒ते दु॒ष्ष्वप्न्यं॒ सर्व॑मा॒प्त्ये परि॑ दद्मस्यने॒हसो॑
व ऊ॒तयः॑ सुऊ॒तयो॑ व ऊ॒तयः॑ ॥१५॥

अथ दशमो वर्गः ॥ १० ॥

तद॑न्नाय॒ तद॑पसे॒ तं भा॒गमु॑पसे॒दुषे॑ ।
त्रि॒ताय॑ च द्वि॒ताय॒ चोषो॑ दु॒ष्ष्वप्न्यं॑ वहाने॒हसो॑
व ऊ॒तयः॑ सुऊ॒तयो॑ व ऊ॒तयः॑ ॥१६॥
यथा॑ क॒लां यथा॑ श॒फं यथ॑ ऋ॒णं सं॒नया॑मसि ।
ए॒वा दु॒ष्ष्वप्न्यं॒ सर्व॑मा॒प्त्ये सं न॑यामस्यने॒हसो॑
व ऊ॒तयः॑ सुऊ॒तयो॑ व ऊ॒तयः॑ ॥१७॥
अजै॑ष्मा॒द्यास॑नाम॒ चाभू॒माना॑गसो व॒यम् ।
उषो॒ यस्मा॑द्दुष्ष्वप्न्या॒दभै॒ष्माप॒ तदु॑च्छत्वने॒हसो॑
व ऊ॒तयः॑ सुऊ॒तयो॑ व ऊ॒तयः॑ ॥१८॥

[४८] अष्टचत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—प्रगाथः काण्वः ॥ देवता—सोमः ॥ छन्दः—१, २, १३ पादनिचृत्त्रिष्टुप्; ३, ७-९ विराट्त्रिष्टुप्; ४, ६, १०, ११, १४ त्रिष्टुप्; ५ विराड्जगती; १२, १५ आर्चीस्वराट्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१-४, ६-१५ धैवतः; ५ निषादः ॥

अथ एकादशो वर्गः ॥ ११ ॥

स्वा॒दोर॑भक्षि॒ वय॑सः सुमे॒धाः स्वा॒ध्यो॑ वरिवो॒वित्त॑रस्य ।
विश्वे॒ यं दे॒वा उ॒त मर्त्या॑सो॒ मधु॑ ब्रु॒वन्तो॑ अ॒भि सं॒चर॑न्ति ॥१॥
अ॒न्तश्च॒ प्रागा॒ अदि॑तिर्भवास्यवया॒ता हर॑सो॒ दैव्य॑स्य ।
इन्द॒विन्द्र॑स्य स॒ख्यं जु॑षा॒णः श्रौष्टी॑व॒ धुर॒मनु॑ रा॒य ऋ॑ध्याः ॥२॥
अपा॑म॒ सोम॑म॒मृता॑ अभू॒माग॑न्म॒ ज्योति॒रवि॑दाम दे॒वान् ।
किं नू॒नम॒स्मान्कृ॑णव॒दरा॑तिः॒ किमु॑ धू॒र्तिर॑मृत॒ मर्त्य॑स्य ॥३॥
शं नो॑ भव हृ॒द आ पी॒त इ॑न्दो पि॒तेव॑ सोम सू॒नवे॑ सु॒शेवः॑ ।
सखे॑व॒ सख्य॑ उरुशंस॒ धीरः॒ प्र ण॒ आयु॑र्जी॒वसे॑ सोम तारीः ॥४॥
इ॒मे मा॑ पी॒ता य॒शस॑ उरु॒ष्यवो॒ रथं॒ न गावः॒ सम॑नाह॒ पर्व॑सु ।
ते मा॑ रक्षन्तु वि॒स्रस॑श्च॒रित्रा॑दु॒त मा॒ स्रामा॑द्यवय॒न्त्विन्द॑वः ॥५॥

अथ द्वादशो वर्गः ॥ १२ ॥

अ॒ग्निं न मा॑ मथि॒तं सं दि॑दीपः॒ प्र च॑क्षय कृणु॒हि वस्य॑सो नः ।
अथा॒ हि ते॒ मद॒ आ सो॑म॒ मन्ये॑ रे॒वाँइ॑व॒ प्र च॑रा पु॒ष्टिमच्छ॑ ॥६॥
इ॒षि॒रेण॑ ते॒ मन॑सा सु॒तस्य॑ भक्षी॒महि॒ पित्र्य॑स्येव रा॒यः ।
सोम॑ राज॒न्प्र ण॒ आयूं॑षि तारी॒रहा॑नीव॒ सूर्यो॑दा वास॒राणि॑ ॥७॥
सोम॑ राजन्मृ॒ळया॑ नः स्व॒स्ति तव॑ स्मसि व्र॒त्या॒३॒॑स्तस्य॑ विद्धि ।
अल॑र्ति॒ दक्ष॑ उ॒त म॒न्युरि॑न्दो॒ मा नो॑ अ॒र्यो अ॑नुका॒मं परा॑ दाः ॥८॥
त्वं हि न॑स्त॒न्वः॑ सोम गो॒पा गात्रे॑गात्रे निष॒सत्था॑ नृ॒चक्षाः॑ ।
यत्ते॑ व॒यं प्र॑मि॒नाम॑ व्र॒तानि॒ स नो॑ मृळ सुष॒खा दे॑व॒ वस्यः॑ ॥९॥
ऋ॒दू॒दरे॑ण॒ सख्या॑ सचेय॒ यो मा॒ न रिष्ये॑द्धर्यश्व पी॒तः ।
अ॒यं यः सोमो॒ न्यधा॑य्य॒स्मे तस्मा॒ इन्द्रं॑ प्र॒तिर॑मे॒म्यायुः॑ ॥१०॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अथ त्रयोदशो वर्गः ॥ १३ ॥

अप॒ त्या अ॑स्थु॒रनि॑रा॒ अमी॑वा॒ निर॑त्रस॒न्तमि॑षीची॒रभै॑षुः ।
आ सोमो॑ अ॒स्माँ अ॑रुह॒द्विहा॑या॒ अग॑न्म॒ यत्र॑ प्रति॒रन्त॒ आयुः॑ ॥ ११ ॥
यो न॒ इन्दुः॑ पितरो हृ॒त्सु पी॒तोऽम॑र्त्यो॒ मर्त्याँ॑ आवि॒वेश॑ ।
तस्मै॒ सोमा॑य ह॒विषा॑ विधेम मृळी॒के अ॑स्य सुम॒तौ स्या॑म ॥ १२ ॥
त्वं सो॑म पि॒तृभिः॑ संविदा॒नोऽनु॒ द्यावा॑पृथि॒वी आ त॑तन्थ ।
तस्मै॑ त इन्दो ह॒विषा॑ विधेम व॒यं स्या॑म॒ पत॑यो रयी॒णाम् ॥ १३ ॥
त्राता॑रो देवा॒ अधि॑ वोचता नो॒ मा नो॑ नि॒द्रा ई॑शत॒ मोत जल्पिः॑ ।
व॒यं सोम॑स्य वि॒श्वह॑ प्रि॒यासः॑ सु॒वीरा॑सो वि॒दथ॒मा व॑देम ॥ १४ ॥
त्वं नः॑ सोम वि॒श्वतो॑ वयो॒धास्त्वं स्व॒र्विदा वि॑शा नृ॒चक्षाः॑ ।
त्वं न॑ इन्द ऊ॒तिभिः॑ स॒जोषाः॑ पा॒हि प॒श्चाता॑दु॒त वा॑ पु॒रस्ता॑त् ॥ १५ ॥

अथ बालखिल्यम्

[४९] एकोनपञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—प्रस्कण्वः काण्वः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१ बृहती; २ पङ्क्तिः; ३ विराड् बृहती; ४, ६, ८, १० निचृत्पङ्क्तिः; ५ भुरिग्बृहती; ७, ९ निचृद्बृहती ॥ स्वरः—१, ३, ५, ७, ९ मध्यमः; २, ४, ६, ८, १० पञ्चमः ॥

अथ चतुर्दशो वर्गः ॥ १४ ॥

अ॒भि प्र वः॑ सु॒राध॑स॒मिन्द्र॑मर्च॒ यथा॑ वि॒दे ।
यो ज॑रि॒तृभ्यो॑ म॒घवा॑ पुरू॒वसुः॑ स॒हस्रे॑णेव॒ शिक्ष॑ति ॥ १ ॥
श॒तानी॑केव॒ प्र जि॑गाति धृष्णु॒या हन्ति॑ वृ॒त्राणि॑ दा॒शुषे॑ ।
गि॒रेरि॑व॒ प्र रसा॑ अस्य पिन्विरे॒ दत्रा॑णि पुरु॒भोज॑सः ॥ २ ॥
आ त्वा॑ सु॒तास॒ इन्द॑वो॒ मदा॒ य इ॑न्द्र गिर्वणः ।
आपो॒ न व॑ज्रि॒न्नन्वो॒क्यं१॒॑ सरः॑ पृ॒णन्ति॑ शूर॒ राध॑से ॥ ३ ॥
अ॒ने॒हसं॑ प्र॒तर॑णं वि॒वक्ष॑णं॒ मध्वः॒ स्वादि॑ष्ठमीं पिब ।
आ यथा॑ मन्दसा॒नः कि॒रासि॑ नः॒ प्र क्षु॒द्रेव॒ त्मना॑ धृ॒षत् ॥ ४ ॥
आ नः॒ स्तोम॒मुप॑ द्र॒वद्धि॑या॒नो अश्वो॒ न सोतृ॑भिः ।
यं ते॑ स्वधावन्त्स्व॒दय॑न्ति धे॒नव॒ इन्द्र॒ कण्वे॑षु रा॒तयः॑ ॥ ५ ॥

अथ पञ्चदशो वर्गः ॥ १५ ॥

उ॒ग्रं न वी॒रं नम॒सोप॑ सेदिम॒ विभू॑ति॒मक्षि॑तावसुम् ।
उ॒द्रीव॑ वज्रिन्नव॒तो न सि॑ञ्च॒ते क्षर॑न्तीन्द्र धी॒तयः॑ ॥ ६ ॥
यद्ध॑ नू॒नं यद्वा॑ य॒ज्ञे यद्वा॑ पृथि॒व्यामधि॑ ।
अतो॑ नो य॒ज्ञमा॒शुभि॑र्महेमत उ॒ग्र उ॒ग्रेभि॒रा ग॑हि ॥ ७ ॥
अ॒जि॒रासो॒ हर॑यो॒ ये त॑ आ॒शवो॒ वाता॑इव प्रस॒क्षिणः॑ ।
येभि॒रप॑त्यं॒ मनु॑षः प॒रीय॑से॒ येभि॒र्विश्वं॒ स्व॑र्दृ॒शे ॥ ८ ॥
ए॒ताव॑तस्त ईमह॒ इन्द्र॑ सु॒म्नस्य॒ गोम॑तः ।
यथा॒ प्रावो॑ मघव॒न्मेध्या॑तिथिं॒ यथा॒ नीपा॑तिथिं॒ धने॑ ॥ ९ ॥
यथा॒ कण्वे॑ मघवन्त्र॒सद॑स्यवि॒ यथा॒ प॒क्थे दश॑व्रजे ।
यथा॒ गोश॑र्ये॒ अस॑नोर्ऋ॒जिश्व॒नीन्द्र॒ गोम॒द्धिर॑ण्यवत् ॥ १० ॥

[५०] पञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—पुष्टिगुः काण्वः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१, ३, ५, ७ निचृद्बृहती; २, ४, ६, १० पङ्क्तिः; ८ निचृत्पङ्क्तिः; ९ विराड्बृहती ॥ स्वरः—१, ३, ५, ७, ९ मध्यमः; २, ४, ६, ८, १० पञ्चमः ॥

अथ षोडशो वर्गः ॥ १६ ॥

प्र सु श्रु॒तं सु॒राध॑स॒मर्चा॑ श॒क्रम॒भिष्ट॑ये ।
यः सु॑न्व॒ते स्तु॑व॒ते काम्यं॒ वसु॑ स॒हस्रे॑णेव॒ मंह॑ते ॥ १ ॥
श॒तानी॑का हे॒तयो॑ अस्य दु॒ष्टरा॒ इन्द्र॑स्य स॒मिषो॑ म॒हीः ।
गि॒रिर्न भु॒ज्मा म॒घव॑त्सु पिन्वते॒ यदीं॑ सु॒ता अम॑न्दिषुः ॥ २ ॥
यदीं॑ सु॒तास॒ इन्द॑वो॒ऽभि प्रि॒यमम॑न्दिषुः ।
आपो॒ न धा॑यि॒ सव॑नं म॒ आ व॑सो॒ दुघा॑इ॒वोप॑ दा॒शुषे॑ ॥ ३ ॥
अ॒ने॒हसं॑ वो॒ हव॑मानमू॒तये॒ मध्वः॑ क्षरन्ति धी॒तयः॑ ।
आ त्वा॑ वसो॒ हव॑मानास॒ इन्द॑व॒ उप॑ स्तो॒त्रेषु॑ दधिरे ॥ ४ ॥
आ नः॒ सोमे॑ स्वध्व॒र इ॑या॒नो अत्यो॒ न तो॑शते ।
यं ते॑ स्वदाव॒न्त्स्वद॑न्ति गू॒र्तयः॑ पौ॒रे छ॑न्दयसे॒ हव॑म् ॥ ५ ॥

अथ सप्तदशो वर्गः ॥ १७ ॥

प्र वी॒रमु॒ग्रं विवि॑चिं धन॒स्पृतं॒ विभू॑तिं॒ राध॑सो म॒हः ।
उ॒द्रीव॑ वज्रिन्नव॒तो व॑सुत्व॒ना सदा॑ पीपेथ दा॒शुषे॑ ॥ ६ ॥
यद्ध॑ नू॒नं प॑रा॒वति॒ यद्वा॑ पृथि॒व्यां दि॒वि ।
यु॒जा॒न इ॑न्द्र॒ हरि॑भिर्महेमत ऋ॒ष्व ऋ॒ष्वेभि॒रा ग॑हि ॥ ७ ॥
र॒थि॒रासो॒ हर॑यो॒ ये ते॑ अ॒स्रिध॒ ओजो॒ वात॑स्य॒ पिप्र॑ति ।
येभि॒र्नि दस्युं॒ मनु॑षो नि॒घोष॑यो॒ येभिः॒ स्वः॑ प॒रीय॑से ॥ ८ ॥
ए॒ताव॑तस्ते वसो वि॒द्याम॑ शूर॒ नव्य॑सः ।
यथा॒ प्राव॒ एत॑शं॒ कृत्व्ये॒ धने॒ यथा॒ वशं॒ दश॑व्रजे ॥ ९ ॥
यथा॒ कण्वे॑ मघव॒न्मेधे॑ अध्व॒रे दी॒र्घनी॑थे॒ दमू॑नसि ।
यथा॒ गोश॑र्ये॒ असि॑षासो अद्रिवो॒ मयि॑ गो॒त्रं ह॑रि॒श्रिय॑म् ॥ १० ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

[५१] एकपञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—श्रुष्टिगुः काण्वः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१, ३, ९ निचृद्बृहती; २ विराट्पङ्क्तिः; ४, ६, ८, १० निचृत्पङ्क्तिः; ५ विराड्बृहती; ७ बृहती ॥ स्वरः—१, ३, ५, ७, ९ मध्यमः; २, ४, ६, ८, १० पञ्चमः ॥

अथ अष्टादशो वर्गः ॥ १८ ॥

यथा मनौ सांवरणौ सोममिन्द्रापिबः सुतम् ।
नीपातिथौ मघवन्मेध्यातिथौ पुष्टिगौ श्रुष्टिगौ सचा ॥ १ ॥
पार्षद्वाणः प्रस्कण्वं समसादयच्छयानं जिह्मबुद्धितम् ।
सहस्राण्यसिषासद्ववामृषिस्त्वोतो दस्यवे वृकः ॥ २ ॥
य उक्थेभिर्न विन्धते चिकित्य ऋषिचोदनः ।
इन्द्रं तमच्छा वद नव्यस्या मत्यरिष्यन्तं न भोजसे ॥ ३ ॥
यस्मा अर्कं सप्तशीर्षाणमानृचुस्त्रिधातुमुत्तमे पदे ।
स त्वि१मा विश्वा भुवनानि चिक्रदुदादिर्जनिष्ट पौंस्यम् ॥ ४ ॥
यो नो दाता वसूनामिन्द्रं तं हूमहे वयम् ।
विद्मा ह्यस्य सुमतिं नवीयसीं गमेम गोमति व्रजे ॥ ५ ॥

अथ एकोनविंशो वर्गः ॥ १९ ॥

यस्मै त्वं वसो दानाय शिक्षसि स रायस्पोषमश्नुते ।
तं त्वा वयं मघवन्निन्द्र गिर्वणः सुतावन्तो हवामहे ॥ ६ ॥
कदा चन स्तरीरसि नेन्द्र सश्चसि दाशुषे ।
उपोपेन्नु मघवन्भूय इन्नु ते दानं देवस्य पृच्यते ॥ ७ ॥
प्र यो ननक्षे अभ्योजसा क्रिविं वधैः शुष्णं निषोषयन् ।
यदेदस्तभ्नीत्प्रथयन्नमूं दिवमादिर्जनिष्ट पार्थिवः ॥ ८ ॥
यस्यायं विश्व आर्यो दासः शेवधिपा अरिः ।
तिरश्चिद्वर्ये रुशमे पवीरवि तुभ्येत्सो अज्यते रयिः ॥ ९ ॥
तुरण्यवो मधुमन्तं घृतश्चुतं विप्रासो अर्कमानृचुः ।
अस्मे रयिः पप्रथे वृष्ण्यं शवोऽस्मे सुवानास इन्दवः ॥ १० ॥

[५२] द्विपञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—आयुः काण्वः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१, ७ निचृद्बृहती; २ पादनिचृत्पङ्क्तिः; ३, ५ बृहती; ४, ६, ८, १० निचृत्पङ्क्तिः; ९ विराड्बृहती ॥ स्वरः—१, ३, ५, ७, ९ मध्यमः; २, ४, ६, ८, १० पञ्चमः ॥

अथ विंशो वर्गः ॥ २० ॥

यथा मनौ विवस्वति सोमं शक्रापिबः सुतम् ।
यथा त्रिते छन्द इन्द्र जुजोषस्यायौ मादयसे सचा ॥ १ ॥
पृषध्रे मेध्ये मातरिश्वनीन्द्र सुवाने अमन्दथाः ।
यथा सोमं दशशिप्रे दशोण्ये स्यूमरश्मावृजूनसि ॥ २ ॥
य उक्था केवला दधे यः सोमं धृषितापिबत् ।
यस्मै विष्णुस्त्रीणि पदा विचक्रम उप मित्रस्य धर्मभिः ॥ ३ ॥
यस्य त्वमिन्द्र स्तोमेषु चाकनो वाजे वाजिञ्छतक्रतो ।
तं त्वा वयं सुदुघामिव गोदुहो जुहूमसि श्रवस्यवः ॥ ४ ॥
यो नो दाता स नः पिता महाँ उग्र ईशानकृत् ।
अर्यामन्नुग्रो मघवा पुरूवसुर्गोरश्वस्य प्र दातु नः ॥ ५ ॥

अथ एकविंशो वर्गः ॥ २१ ॥

यस्मै त्वं वसो दानाय मंहसे स रायस्पोषमिन्वति ।
वसूयवो वसुपतिं शतक्रतुं स्तोमैरिन्द्रं हवामहे ॥ ६ ॥
कदा चन प्र युच्छस्युभे नि पासि जन्मनी ।
तुरीयादित्य हवनं त इन्द्रियमा तस्थावमृतं दिवि ॥ ७ ॥
यस्मै त्वं मघवन्निन्द्र गिर्वणः शिक्षो शिक्षसि दाशुषे ।
अस्माकं गिरं उत सुष्टुतिं वसो कण्ववच्छृणुधी हवम् ॥ ८ ॥
अस्तावि मन्म पूर्व्यं ब्रह्मेन्द्राय वोचत ।
पूर्वीर्ऋतस्य बृहतीरनूषत स्तोतुर्मेधा असृक्षत ॥ ९ ॥
समिन्द्रो रायो बृहतीरधूनुत सं क्षोणी समु सूर्यम् ।
सं शुक्रासः शुचयः सं गवाशिरः सोमा इन्द्रममन्दिषुः ॥ १० ॥

[५३] त्रिपञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—मेध्यः काण्वः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१, ५, ७ विराड्बृहती; २, ४, ६ निचृत्पङ्क्तिः; ३ आर्चीस्वराड्बृहती; ८ विराट्पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१, ३, ५, ७ मध्यमः; २, ४, ६, ८ पञ्चमः ॥

अथ द्वाविंशो वर्गः ॥ २२ ॥

उपमं त्वा मघोनां ज्येष्ठं च वृषभाणाम् ।
पूर्भित्तमं मघवन्निन्द्र गोविदमीशानं राय ईमहे ॥ १ ॥
य आयुं कुत्समतिथिग्वमर्दयो वावृधानो दिवेदिवे ।
तं त्वा वयं हर्यश्वं शतक्रतुं वाजयन्तो हवामहे ॥ २ ॥
आ नो विश्वेषां रसं मध्वः सिञ्चन्त्वद्रयः ।
ये परावति सुन्विरे जनेष्वा ये अर्वावतीन्दवः ॥ ३ ॥
विश्वा द्वेषांसि जहि चाव चा कृधि विश्वे सन्वन्त्वा वसु ।
शोष्टेषु चित्ते मदिरासो अंशवो यत्रा सोमस्य तृम्पसि ॥ ४ ॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अथ त्रयोविंशो वर्गः ॥ २३ ॥

इन्द्र॒ नेदी॑य॒ एदि॑हि मि॒तमे॑धाभिरू॒तिभिः॑ ।
आ शं॑तम॒ शंत॑माभिर॒भिष्टि॑भि॒रा स्वा॑पे स्वा॒पिभिः॑ ॥ ५ ॥
आ॒जि॒तुरं॒ सत्प॑तिं वि॒श्वच॑र्षणिं कृधि प्र॒जास्वाभ॑गम् ।
प्र सू ति॑रा॒ शची॑भि॒र्ये त॑ उ॒क्थिनः॒ क्रतुं॑ पुन॒त आ॑नु॒षक् ॥ ६ ॥
यस्ते॒ साधि॒ष्ठोऽव॑से॒ ते स्या॑म॒ भरे॑षु ते ।
व॒यं होत्रा॑भिरु॒त दे॒वहू॑तिभिः सस॒वांसो॑ मनामहे ॥ ७ ॥
अ॒हं हि ते॑ हरिवो॒ ब्रह्म॑ वाज॒युरा॒जिं यामि॒ सदो॒तिभिः॑ ।
त्वामिदे॒व तममे॒ सम॑श्व॒युर्ग॒व्युरग्रे॑ मथी॒नाम् ॥ ८ ॥

[५४] चतुष्पञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—मातरिश्वा काण्वः ॥ देवता—१, २, ५-८ इन्द्रः; ३, ४ विश्वे देवाः ॥
छन्दः—१, ५ निचृद्बृहती; २, ४, ६, ८ निचृत्पङ्क्तिः; ३ बृहती; ७ विराड् बृहती ॥ स्वरः—१, ३, ५, ७ मध्यमः; २, ४, ६, ८ पञ्चमः ॥

अथ चतुर्विंशो वर्गः ॥ २४ ॥

ए॒तत्त॑ इन्द्र वी॒र्यं॑ गी॒र्भिर्गृ॑णन्ति॑ का॒रवः॑ ।
ते स्तोभ॑न्त॒ ऊर्ज॑मावन्घृत॒श्चुतं॑ पौ॒रासो॑ नक्षन्धी॒तिभिः॑ ॥ १ ॥
नक्ष॑न्त॒ इन्द्र॒मव॑से सुकृ॒त्यया॒ येषां॑ सु॒तेषु॒ मन्द॑से ।
यथा॑ संव॒र्ते अम॑दो॒ यथा॑ कृ॒श ए॒वास्मे इ॑न्द्र मत्स्व ॥ २ ॥
आ नो॒ विश्वे॑ स॒जोष॑सो॒ देवा॑सो॒ गन्त॒नोप॑ नः ।
वस॑वो रु॒द्रा अव॑से न॒ आ ग॑मञ्छृ॒ण्वन्तु॑ म॒रुतो॒ हव॑म् ॥ ३ ॥
पू॒षा विष्णु॒र्हव॑नं मे॒ सर॑स्व॒त्यव॑न्तु स॒प्त सिन्ध॑वः ।
आपो॒ वातः॒ पर्व॑तासो॒ वन॒स्पतिः॑ शृ॒णोतु॑ पृथि॒वी हव॑म् ॥ ४ ॥

अथ पञ्चविंशो वर्गः ॥ २५ ॥

यदि॑न्द्र॒ राधो॒ अस्ति॑ ते॒ माघो॑नं मघवत्तम ।
तेन॑ नो बोधि सध॒माद्यो॑ वृ॒धे भगो॑ दा॒नाय॑ वृत्रहन् ॥ ५ ॥
आजि॑पते नृपते॒ त्वमिद्धि नो॒ वाज॒ आ व॑क्षि सुक्रतो ।
वी॒ती होत्रा॑भिरु॒त दे॒ववी॑तिभिः सस॒वांसो॒ वि शृ॑ण्विरे ॥ ६ ॥
सन्ति॒ ह्य१॒॑र्य आ॒शिष॒ इन्द्र॒ आयु॒र्जना॑नाम् ।
अ॒स्मान्न॑क्षस्व मघव॒न्नुपाव॑से धु॒क्षस्व॑ पि॒प्युषी॒मिष॑म् ॥ ७ ॥
व॒यं त॑ इन्द्र॒ स्तोमे॑भिर्विधेम॒ त्वम॒स्माकं॑ शतक्रतो ।
महि॑ स्थू॒रं श॑श॒यं राधो॒ अह्र॑यं॒ प्रस्क॑ण्वाय॒ नि तो॑शय ॥ ८ ॥

[५५] पञ्चपञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—कृशः काण्वः ॥ देवता—प्रस्कण्वस्य दानस्तुतिः ॥
छन्दः—१ पादनिचृद्गायत्री; २, ४ गायत्री; ३, ५ अनुष्टुप् ॥
स्वरः—१, २, ४ षड्जः; ३, ५ गान्धारः ॥

अथ षड्विंशो वर्गः ॥ २६ ॥

भूरीदिन्द्र॑स्य वी॒र्यं१॒॑ व्यख्य॑म॒भ्याय॑ति । राध॑स्ते दस्यवे वृक ॥ १ ॥
श॒तं श्वे॒तास॑ उ॒क्षणो॑ दि॒वि तारो॒ न रो॑चन्ते । म॒ह्ना दिवं॒ न त॑स्तभुः ॥ २ ॥
श॒तं वे॒णूञ्छ॒तं शुनः॑ श॒तं चर्मा॑णि म्ला॒तानि॑ ।
श॒तं मे॑ बल्बजस्तु॒का अरु॑षीणां॒ चतुः॑शतम् ॥ ३ ॥
सु॒दे॒वाः स्थ॑ काण्वायना॒ वयो॑वयो विच॒रन्तः॑ । अश्वा॑सो॒ न च॑ङ्क्रमत ॥ ४ ॥
आदित्सा॒प्तस्य॑ चर्किर॒न्नानू॑नस्य॒ महि॒ श्रवः॑ ।
श्यावी॑रतिध्व॒सन्प॒थश्चक्षु॑षा च॒न सं॒नशे॑ ॥ ५ ॥

[५६] षट्पञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—पृषध्रः काण्वः ॥ देवता—१-४ प्रस्कण्वस्य दानस्तुतिः; ५ अग्निसूर्यौ ॥
छन्दः—१, ३, ४ विराड्गायत्री; २ गायत्री; ५ निचृत्पङ्क्तिः ॥
स्वरः—१-४ षड्जः; ५ पञ्चमः ॥

अत सप्तविंशो वर्गः ॥ २७ ॥

प्रति॑ ते दस्यवे वृक॒ राधो॑ अद॒शर्यह्र॑यम् । द्यौर्न प्र॑थि॒ना शवः॑ ॥ १ ॥
दश॒ मह्यं॑ पौतक्र॒तः स॒हस्रा॒ दस्य॑वे॒ वृकः॑ । नित्या॑द्रा॒यो अ॑मंहत ॥ २ ॥
श॒तं मे॑ गर्द॒भानां॑ श॒तमूर्णा॑वतीनाम् । श॒तं दा॒साँ अति॒ स्रजः॑ ॥ ३ ॥
तत्रो॒ अपि॒ प्राणी॑यत पू॒तक्र॑तायै॒ व्य॑क्ता । अश्वा॑ना॒मिन्न यू॒थ्या॑म् ॥ ४ ॥
अचे॑त्य॒ग्निश्चि॑कि॒तुर्ह॑व्य॒वाट् स सु॒मद्र॑थः ।
अ॒ग्निः शु॒क्रेण॑ शो॒चिषा॑ बृ॒हत्सूरो॑ अरोचत दि॒वि सूर्यो॑ अरोचत ॥ ५ ॥

[५७] सप्तपञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—मेध्यः काण्वः ॥ देवता—अश्विनौ ॥ छन्दः—१ विराट्त्रिष्टुप्; २, ३ निचृत्त्रिष्टुप्; ४ पादनिचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

अथ अष्टाविंशो वर्गः ॥ २८ ॥

यु॒वं दे॑वा॒ क्रतु॑ना पू॒र्व्येण॑ यु॒क्ता रथे॑न तवि॒षं य॑जत्रा ।
आग॑च्छतं नासत्या॒ शची॑भिरि॒दं तृ॒तीयं॒ सव॑नं पिबाथः ॥ १ ॥
यु॒वां दे॒वास्त्रय॑ एकाद॒शासः॑ स॒त्याः स॒त्यस्य॑ ददृशे पु॒रस्ता॑त् ।
अ॒स्माकं॑ य॒ज्ञं सव॑नं जुषा॒णा पा॒तं सोम॑मश्विना॒ दीद्य॑ग्नी ॥ २ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पुनाय्यं तदश्विना कृतं वां वृषभो दिवो रजसः पृथिव्याः।
सहस्रं शंसा उत ये गविष्टौ सर्वाँ इत्ताँ उप याता पिबध्यै॥ ३॥
अयं वां भागो निहितो यजत्रेमा गिरो नासत्योप यातम्।
पिबतं सोमं मधुमन्तमस्मे प्र दाश्वांसमवतं शचीभिः॥ ४॥

[५८] अष्टपञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—मेध्यः काण्वः॥ देवता—१ विश्वे देवा ऋत्विजो वा; २, ३ विश्वे देवाः॥ छन्दः—१ भुरिक्त्रिष्टुप्; २ निचृत्त्रिष्टुप्; ३ त्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः॥

अथ एकोनत्रिंशो वर्गः॥ २९॥

यमृत्विजो बहुधा कल्पयन्तः सचेतसो यज्ञमिमं वहन्ति।
यो अनूचानो ब्राह्मणो युक्त आसीत्का स्वित्तत्र यजमानस्य संवित्॥ १॥
एक एवाग्निर्बहुधा समिद्ध एकः सूर्यो विश्वमनु प्रभूतः।
एकैवोषाः सर्वमिदं वि भात्येकं वा इदं वि बभूव सर्वम्॥ २॥
ज्योतिष्मन्तं केतुमन्तं त्रिचक्रं सुखं रथं सुषवं भूरिवारम्।
चित्रामघा यस्य योगेऽधिजज्ञे तं वां हुवे अति रिक्तं पिबध्यै॥ ३॥

[५९] एकोनषष्टितमं सूक्तम्

ऋषिः—सुपर्णः काण्वः॥ देवता—इन्द्रावरुणौ॥ छन्दः—१ जगती; २, ३ निचृज्जगती; ४, ५, ७ विराड्जगती; ६ त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१-५, ७ निषादः; ६ धैवतः॥

अथ त्रिंशो वर्गः॥ ३०॥

इमानि वां भागधेयानि सिस्रत इन्द्रावरुणा प्र महे सुतेषु वाम्।
यज्ञेयज्ञे ह सवना भुरण्यथो यत्सुन्वते यजमानाय शिक्षथः॥ १॥
निष्षिध्वरीरोषधीराप आस्तामिन्द्रावरुणा महिमानमाशत।
या सिस्रतू रजसः पारे अध्वनो ययोः शत्रुर्नकिरादेव ओहते॥ २॥
सत्यं तदिन्द्रावरुणा कृशस्य वां मध्व ऊर्मिं दुहते सप्त वाणीः।
ताभिर्दाश्वांसमवतं शुभस्पती यो वामदब्धो अभि पाति चित्तिभिः॥ ३॥
घृतप्रुषः सौम्या जीरदानवः सप्त स्वसारः सदन ऋतस्य।
या ह वामिन्द्रावरुणा घृतश्चुतस्ताभिर्धत्तं यजमानाय शिक्षतम्॥ ४॥

अथ एकत्रिंशो वर्गः॥ ३१॥

अवोचाम महते सौभगाय सत्यं त्वेषाभ्यां महिमानमिन्द्रियम्।
अस्मान्त्स्विन्द्रावरुणा घृतश्चुतस्त्रिभिः साप्तेभिरवतं शुभस्पती॥ ५॥
इन्द्रावरुणा यदृषिभ्यो मनीषां वाचो मतिं श्रुतमदत्तमग्रे।
यानि स्थानान्यसृजन्त धीरा यज्ञं तन्वानास्तपसाभ्यपश्यम्॥ ६॥
इन्द्रावरुणा सौमनसमदृंसं रायस्पोषं यजमानेषु धत्तम्।
प्रजां पुष्टिं भूतिमस्मासु धत्तं दीर्घायुत्वाय प्र तिरतं न आयुः॥ ७॥

इति बालखिल्यं समाप्तम्॥

सप्तमोऽनुवाकः [६०] षष्टितमं सूक्तम्

ऋषिः—भर्गः प्रागाथः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—१, ९, १३, १७ विराड्बृहती; २ आर्चीस्वराट्पङ्क्तिः; ३, ५ पादनिचृद्बृहती; ४, ६, ८, १४, १८, २० निचृत्पङ्क्तिः; ७, १९ बृहती; १०, १६ पादनिचृत्पङ्क्तिः; ११, १५ निचृद्बृहती; १२ पङ्क्तिः॥ स्वरः—१, ३, ५, ७, ९, ११, १३, १५, १७, १९ मध्यमः; २, ४, ६, ८, १०, १२, १४, १६, १८, २० पञ्चमः॥

अथ द्वात्रिंशो वर्गः॥ ३२॥

अग्र आ याह्यग्निभिर्होतारं त्वा वृणीमहे।
आ त्वामनक्तु प्रयता हविष्मती यजिष्ठं बर्हिरासदे॥ १॥
अच्छा हि त्वा सहसः सूनो अङ्गिरः स्रुचश्चरन्त्यध्वरे।
ऊर्जो नपातं घृतकेशमीमहेऽग्निं यज्ञेषु पूर्व्यम्॥ २॥
अग्ने कविर्वेधा असि होता पावक यक्ष्यः।
मन्द्रो यजिष्ठो अध्वरेष्वीड्यो विप्रेभिः शुक्र मन्मभिः॥ ३॥
अद्रोघमा वहोशतो यविष्ठ्य देवाँ अजस्र वीतये।
अभि प्रयांसि सुधिता वसो गहि मन्दस्व धीतिभिर्हितः॥ ४॥
त्वमित्सप्रथा असि अग्ने त्रातर्ऋतस्कविः।
त्वां विप्रासः समिधान दीदिव आ विवासन्ति वेधसः॥ ५॥

अथ त्रयस्त्रिंशो वर्गः॥ ३३॥

शोचा शोचिष्ठ दीदिहि विशे मयो रास्व स्तोत्रे महाँ असि।
देवानां शर्मन्मम सन्तु सूरयः शत्रूषाहः स्वग्नयः॥ ६॥
यथा चिद् वृद्धमतसमग्ने संजूर्वसि क्षमि।
एवा दह मित्रमहो यो अस्मध्रुग्दुर्मन्मा कश्च वेनति॥ ७॥
मा नो मर्तीय रिपवे रक्षस्विने माघशंसाय रीरधः।
अस्त्रेधद्भिस्तरणिभिर्यविष्ठ्य शिवेभिः पाहि पायुभिः॥ ८॥
पाहि नो अग्र एकया पाह्युत द्वितीयया।
पाहि गीर्भिस्तिसृभिरूर्जां पते पाहि चतसृभिर्वसो॥ ९॥
पाहि विश्वस्माद्रक्षसो अरांव्णः प्र स्म वाजेषु नोऽव।
त्वामिद्धि निदिष्टय आपिं नक्षामहे वृधे॥ १०॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अथ चतुस्त्रिंशो वर्गः ॥ ३४ ॥

आ नो अग्ने वयोवृधं रयिं पावक शंस्यम् ।
रास्वा च न उपमाते पुरुस्पृहं सुनीती स्वर्यशस्तरम् ॥ ११ ॥
येन वंसाम पृतनासु शर्धतस्तरन्तो अर्य आदिशः ।
स त्वं नो वर्ध प्रयसा शचीवसो जिन्वा धियो वसुविदः ॥ १२ ॥
शिशानो वृषभो यथाग्निः शृङ्गे दविध्वत् ।
तिग्मा अस्य हनवो न प्रतिधृषे सुजम्भः सहसो यहुः ॥ १३ ॥
नहि तें अग्ने वृषभ प्रतिधृषे जम्भासो यद्वितिष्ठसे ।
स त्वं नो होतः सुहुतं हविष्कृधि वंस्वा नो वायौ पुरु ॥ १४ ॥
शेषे वनेषु मात्रोः सं त्वा मतीस इन्धते ।
अतन्द्रो हव्या वहसि हविष्कृत आदिद्देवेषु राजसि ॥ १५ ॥

अथ पञ्चत्रिंशो वर्गः ॥ ३५ ॥

सप्त होतार स्तमिदीळते त्वाग्ने सुत्यजमद्भयम् ।
भिनत्स्यद्रिं तपसा वि शोचिषा प्राग्ने तिष्ठ जनाँ अति ॥ १६ ॥
अग्निमग्निं वो अधिगुं हुवेम वृक्तबर्हिषः ।
अग्निं हितप्रयसः शश्वतीष्वा होतारं चर्षणीनाम् ॥ १७ ॥
केतेन शर्मन्तसचते सुषामण्यग्ने तुभ्यं चिकित्वना ।
इषण्यया नः पुरुरूपमा भर वाजं नेदिष्ठमूतये ॥ १८ ॥
अग्ने जरितर्विश्पतिस्तेपानो देव रक्षसः ।
अप्रोषिवान्गृहपतिर्महाँ असि दिवस्पायुर्दुरोणयुः ॥ १९ ॥
मा नो रक्ष आ वेशीदाघृणीवसो मा यातुर्यातुमावताम् ।
परो गव्यूत्यर्तिमप क्षुधमग्ने सेधं रक्षस्विनः ॥ २० ॥

[६१] एकषष्टितमं सूक्तम्

ऋषिः—भर्गः प्रगाथः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१, ५, ११, १५ निचृद् बृहती; २, ४, १० पङ्क्तिः; ३, ९ विराड्बृहती; ६, १४, १६ विराट्पङ्क्तिः; ७, १७ पादनिचृद्बृहती; ८, १२, १८ निचृत्पङ्क्तिः; १३ बृहती ॥ स्वरः—१, ३, ५, ७, ९, ११, १३, १५, १७ मध्यमः; २, ४, ६, ८, १०, १२, १४, १६, १८ पञ्चमः ॥

अथ षट्त्रिंशो वर्गः ॥ ३६ ॥

उभयं शृणवच्च न इन्द्रो अर्वागिदं वचः ।
सत्राच्या मघवा सोमपीतये धिया शविष्ठ आ गमत् ॥ १ ॥
तं हि स्वराजं वृषभं तमोजसे धिषणे निष्टतक्षतुः ।
उतोपमानां प्रथमो नि षीदसि सोमकामं हि ते मनः ॥ २ ॥
आ वृषस्व पुरूवसो सुतस्येन्द्रान्धसः ।
विद्मा हि त्वा हरिवः पृत्सु सासहिमधृष्टं चिद्दधृष्वणिम् ॥ ३ ॥
अप्रामिसत्य मघवन्तथेदसदिन्द्र क्रत्वा यथा वशः ।
सनेम वाजं तव शिप्रिन्नवसा मक्षू चिद्यन्तो अद्रिवः ॥ ४ ॥
शृण्ध्यूषु शचीपत इन्द्र विश्वाभिरूतिभिः ।
भगं न हि त्वा यशसं वसुविदमनु शूर चरामसि ॥ ५ ॥

अथ सप्तत्रिंशो वर्गः ॥ ३७ ॥

पौरो अश्वस्य पुरुकृद्गवामस्युत्सो देव हिरण्ययः ।
नकिर्हि दानं परिमर्धिषत्त्वे यद्यद्यामि तदा भर ॥ ६ ॥
त्वं ह्येहि चेरवे विदा भगं वसुत्तये ।
उद्वावृषस्व मघवन्गविष्टय उदिन्द्राश्वमिष्टये ॥ ७ ॥
त्वं पुरू सहस्राणि शतानि च यूथा दानाय मंहसे ।
आ पुरन्दरं चकृम विप्रवचस इन्द्रं गायन्तोऽवसे ॥ ८ ॥
अविप्रो वा यदविधद्विप्रो वेन्द्र ते वचः ।
स प्र मंमन्दत्त्वाया शतक्रतो प्राचामन्यो अहंसन ॥ ९ ॥
उग्रबाहुर्मक्षुकृत्वा पुरन्दरो यदि मे शृणवद्धवम् ।
वसूयवो वसुपतिं शतक्रतुं स्तोमैरिन्द्रं हवामहे ॥ १० ॥

अथ अष्टत्रिंशो वर्गः ॥ ३८ ॥

न पापासो मनामहे नारायासो न जल्हवः ।
यदिन्त्विन्द्रं वृषणं सचा सुते सखायं कृणवामहै ॥ ११ ॥
उग्रं युयुज्म पृतनासु सासहिमृणकातिमदाभ्यम् ।
वेदा भूमं चित्सनिता रथीतमो वाजिनं यमिदू नशत् ॥ १२ ॥
यत इन्द्र भयामहे ततो नो अभयं कृधि ।
मघवञ्छग्धि तव तन्न ऊतिभिर्वि द्विषो वि मृधो जहि ॥ १३ ॥
त्वं हि राधस्पते राधसो महः क्षयस्यासि विधतः ।
तं त्वा वयं मघवन्निन्द्र गिर्वणः सुतावन्तो हवामहे ॥ १४ ॥
इन्द्र प्रणेतर्वृत्रहा परस्पा नो वरेण्यः ।
स नो रक्षिषच्चरमं स मध्यमं स पश्चात्पातु नः पुरः ॥ १५ ॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अथ एकोनचत्वारिंशो वर्गः ॥ ३९ ॥

त्वं नः पश्चादधरादुत्तरात्पुर इन्द्र नि पाहि विश्वतः ।
आरे अस्मत्कृणुहि दैव्यं भयमारे हेतीरदेवीः ॥ १६ ॥
अद्याद्या श्वःश्व इन्द्र त्रास्व परे च नः ।
विश्वा च नो जरितॄन्त्सत्पते अहा दिवा नक्तं च रक्षिषः ॥ १७ ॥
प्रभङ्गी शूरो मघवा तुवीमघः संमिश्लो वीर्याय कम् ।
उभा ते बाहू वृषणा शतक्रतो नि या वज्रं मिमिक्षतुः ॥ १८ ॥

[६२] द्विषष्टितमं सूक्तम्

ऋषिः—प्रगाथः काण्वः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१, ३, ६, १०, ११ निचृत्पङ्क्तिः; २, ५ विराट्पङ्क्तिः; ४, १२ पङ्क्तिः; ७ निचृद्बृहती; ८, ९ बृहती ॥ स्वरः—१-६, १०-१२ पञ्चमः; ७-९ मध्यमः ॥

अथ चत्वारिंशो वर्गः ॥ ४० ॥

प्रो अस्मा उपस्तुतिं भरता यज्युजोषति ।
उक्थैरिन्द्रस्य माहिनं वयो वर्धन्ति सोमिनो भद्रा इन्द्रस्य रातयः ॥ १ ॥
अयुजो असमो नृभिरेकः कृष्टीरयास्यः ।
पूर्वीरति प्र वावृधे विश्वा जातान्योजसा भद्रा इन्द्रस्य रातयः ॥ २ ॥
अहितेन चिदर्वता जीरदानुः सिषासति ।
प्रवाच्यमिन्द्र तत्तव वीर्यं करिष्यतो भद्रा इन्द्रस्य रातयः ॥ ३ ॥
आ याहि कृणवाम त इन्द्र ब्रह्माणि वर्धना ।
येभिः शविष्ठ चाकनो भद्रमिह श्रवस्यते भद्रा इन्द्रस्य रातयः ॥ ४ ॥
धृषतश्चिद् धृषन्मनः कृणोषीन्द्र यत्त्वम् ।
तीव्रैः सोमैः सपर्यतो नमोभिः प्रतिभूषतो भद्रा इन्द्रस्य रातयः ॥ ५ ॥
अव चष्ट ऋचीषमोऽवताँइव मानुषः ।
जुष्टी दक्षस्य सोमिनः सखायं कृणुते युजं भद्रा इन्द्रस्य रातयः ॥ ६ ॥

अथ एकचत्वारिंशो वर्गः ॥ ४१ ॥

विश्वे त इन्द्र वीर्यं देवा अनु क्रतुं ददुः ।
भुवो विश्वस्य गोपतिः पुरुहुत भद्रा इन्द्रस्य रातयः ॥ ७ ॥
गृणे तदिन्द्र ते शव उपमं देवतातये ।
यद्धंसि वृत्रमोजसा शचीपते भद्रा इन्द्रस्य रातयः ॥ ८ ॥
समनेव वपुष्यतः कृणवन्मानुषा युगा ।
विदे तदिन्द्रश्चेतनमथ श्रुतो भद्रा इन्द्रस्य रातयः ॥ ९ ॥

उज्जातमिन्द्र ते शव उत्त्वामुत्तव क्रतुम् ।
भूरिगो भूरि वावृधुर्मघवन्तव शर्मणि भद्रा इन्द्रस्य रातयः ॥ १० ॥
अहं च त्वं च वृत्रहन्त्संयुज्याव सनिभ्य आ ।
अरातीवा चिदद्रिवोऽनु नौ शूर मंसते भद्रा इन्द्रस्य रातयः ॥ ११ ॥
सत्यमिद्वा उ तं वयमिन्द्रं स्तवाम नानृतम् ।
महाँ असुन्वतो वधो भूरि ज्योतींषि सुन्वतो भद्रा इन्द्रस्य रातयः ॥ १२ ॥

[६३] त्रिषष्टितमं सूक्तम्

ऋषिः—प्रगाथः काण्वः ॥ देवता—१-११ इन्द्रः; १२ देवाः ॥ छन्दः—१, ४, ७ विराडनुष्टुप्; २, ३, ६ विराड्गायत्री; ५ निचृदनुष्टुप्; ८, ९, ११ निचृद् गायत्री; १० गायत्री; १२ त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१, ४, ५, ७ गान्धारः; २, ३, ६, ८, ९-११ षड्जः; १२ धैवतः ॥

अथ द्विचत्वारिंशो वर्गः ॥ ४२ ॥

स पूर्व्यो महानां वेनः क्रतुभिरानजे ।
यस्य द्वारा मनुष्पिता देवेषु धिय आनजे ॥ १ ॥
दिवो मानं नोत्सदन्त्सोमपृष्ठासो अद्रयः ।
उक्था ब्रह्म च शंस्या ॥ २ ॥
स विद्वाँ अङ्गिरोभ्य इन्द्रो गा अवृणोदपः ।
स्तुषे तदस्य पौंस्यम् ॥ ३ ॥
स प्रत्नथा कविवृध इन्द्रो वाकस्य वक्षणिः ।
शिवो अर्कस्य होमन्यस्मत्रा गन्त्ववसे ॥ ४ ॥
आदु नु ते अनु क्रतुं स्वाहा वरस्य यज्यवः ।
श्वात्रमर्का अनूषतेन्द्र गोत्रस्य दावने ॥ ५ ॥
इन्द्रे विश्वानि वीर्या कृतानि कर्त्वानि च ।
यमर्का अध्वरं विदुः ॥ ६ ॥

अथ त्रयश्चत्वारिंशो वर्गः ॥ ४३ ॥

यत्पाञ्चजन्यया विशेन्द्रे घोषा असृक्षत ।
अस्तृणाद्बर्हणा विपोऽर्यो मानस्य स क्षयः ॥ ७ ॥
इयमु ते अनुष्टुतिश्चकृषे तानि पौंस्या ।
प्रावश्चक्रस्य वर्तनिम् ॥ ८ ॥
अस्य वृष्णो व्योदन उरु क्रमिष्ट जीवसे ।
यवं न पश्व आ ददे ॥ ९ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तद्धाना अवस्यवो युष्माभिर्दक्षपितरः ।
स्याम मरुत्वतो वृधे ॥ १० ॥
बलृत्वियाय धान्न ऋक्वभिः शूर नोनुमः ।
जेषामेन्द्र त्वया युजा ॥ ११ ॥
अस्मे रुद्रा मेहना पर्वतासो वृत्रहत्ये भरहूतौ सजोषाः ।
यः शंसते स्तुवते धायि पज्र इन्द्रज्येष्ठा अस्माँ अवन्तु देवाः ॥ १२ ॥

[६४] चतुःषष्टितमं सूक्तम्

ऋषिः—प्रगाथः काण्वः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१, ५, ७, ९ निचृद् गायत्री; २, ६, ८, १०-१२ गायत्री; ३ आर्चीस्वराड्गायत्री; ४ विराड्गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथ चतुश्चत्वारिंशो वर्गः ॥ ४४ ॥

उत्त्वा मन्दन्तु स्तोमाः कृणुष्व राधो अद्रिवः । अव ब्रह्मद्विषो जहि ॥ १ ॥
पदा पणीँरराधसो नि बाधस्व महाँ असि । नहि त्वा कश्चन प्रति ॥ २ ॥
त्वमीशिषे सुतानामिन्द्र त्वमसुतानाम् । त्वं राजा जनानाम् ॥ ३ ॥
एहि प्रेहि क्षयो दिव्यान्यो घोषञ्चर्षणीनाम् । ओभे पृणासि रोदसी ॥ ४ ॥
त्यं चित्पर्वतं गिरिं शतवन्तं सहस्त्रिणम् । वि स्तोतृभ्यो रुरोजिथ ॥ ५ ॥
वयमु त्वा दिवा सुते वयं नक्तं हवामहे । अस्माकं काममा पृण ॥ ६ ॥

अथ पञ्चचत्वारिंशो वर्गः ॥ ४५ ॥

क्रीळ स्य वृषभो युवा तुविग्रीवो अनानतः । ब्रह्मा कस्तं सपर्यति ॥ ७ ॥
कस्य स्वित्सवनं वृषा जुजुष्वाँ अव गच्छति । इन्द्रं क उ स्विदा चके ॥ ८ ॥
कं तें दाना असक्षत वृत्रहन्कं सुवीर्या । उक्थे क उ स्विदन्तमः ॥ ९ ॥
अयं ते मानुषे जने सोमः पूरुषु सूयते । तस्येहि प्र द्रवा पिब ॥ १० ॥
अयं तें शर्यणावति सुषोमायामधि प्रियः । आर्जीकीये मदिन्तमः ॥ ११ ॥
तमद्य राधसे महे चारुं मदाय घृष्वये । एहीमिन्द्र द्रवा पिब ॥ १२ ॥

[६५] पञ्चषष्टितमं सूक्तम्

ऋषिः—प्रगाथः काण्वः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१, २, ५, ६, ९, ११, १२ निचृद्गायत्री; ३, ४ गायत्री; ७, ८, १० विराड्गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथ षट्चत्वारिंशो वर्गः ॥ ४६ ॥

यदिन्द्र प्रागपागुदङ्न्यग्वा हूयसे नृभिः । आ याहि तूयमाशुभिः ॥ १ ॥
यद्वा प्रस्रवणे दिवो मादयासे स्वर्णरे । यद्वा समुद्रे अन्धसः ॥ २ ॥
आ त्वा गीर्भिर्महामुरुं हुवे गामिव भोजसे । इन्द्र सोमपेय आ गहि ॥ ३ ॥
आ तं इन्द्र महिमानं हरयो देव ते महः । रथे वहन्तु बिभ्रतः ॥ ४ ॥
इन्द्रं गृणीष उ स्तुषे महाँ उग्र ईशानकृत् । एहि नः सुतं पिब ॥ ५ ॥
सुतावन्तस्त्वा वयं प्रयस्वन्तो हवामहे । इदं नो बर्हिरासदे ॥ ६ ॥

अथ सप्तचत्वारिंशो वर्गः ॥ ४७ ॥

यच्चिद्धि शश्वतामसीन्द्र साधारणस्त्वम् । तं त्वा वयं हवामहे ॥ ७ ॥
इदं ते सोम्यं मध्वधुक्षन्नद्रिभिर्नरः । जुषाण इन्द्र तत्पिब ॥ ८ ॥
विश्वाँ अर्यो विपश्चितोऽति ख्यस्तूयमा गहि । अस्मे धेहि श्रवो बृहत् ॥ ९ ॥
दाता मे पृषतीनां राजा हिरण्यवीनाम् । मा देवा मघवा रिषत् ॥ १० ॥
सहस्त्रे पृषतीनामधि श्चन्द्रं बृहत्पृथु । शुक्रं हिरण्यमा ददे ॥ ११ ॥
नपातो दुर्गहस्य मे सहस्त्रेण सुराधसः । श्रवो देवेष्वक्रत ॥ १२ ॥

[६६] षट्षष्टितमं सूक्तम्

ऋषिः—कलिः प्रागाथः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१ बृहती; २, ८, १२ निचृत्पङ्क्तिः; ३, ५, ११, १३ विराड्बृहती; ४, ६ विराट्पङ्क्तिः; ७ पादनिचृद्बृहती; १० पङ्क्तिः; १४ पादनिचृत्पङ्क्तिः; ९, १५ अनुष्टुप् ॥ स्वरः—१, ३, ५, ७, ११, १३ मध्यमः; २, ४, ६, ८, १०, १२, १४ पञ्चमः; ९, १५ गान्धारः ॥

अथ अष्टचत्वारिंशो वर्गः ॥ ४८ ॥

तरोभिर्वो विदद्वसुमिन्द्रं सबाध ऊतये । बृहद्गायन्तः सुतसोमे अध्वरे हुवे भरं न कारिणम् ॥ १ ॥
न यं दुध्रा वरन्ते न स्थिरा मुरो मदे सुशिप्रमन्धसः । य आदृत्या शशमानाय सुन्वते दाता जरित्र उक्थ्यम् ॥ २ ॥
यः शक्रो मृक्षो अश्व्यो यो वा कीजो हिरण्ययः । स ऊर्वस्य रेजयत्यपावृतिमिन्द्रो गव्यस्य वृत्रहा ॥ ३ ॥
निखातं चिद्यः पुरुसंभृतं वसूदिद्वपति दाशुषे । वज्री सुशिप्रो हर्यश्व इत्करदिन्द्रः क्रत्वा यथा वशत् ॥ ४ ॥
यद्वावन्थ पुरुष्टुत पुरा चिच्छूर नृणाम् । वयं तत्त इन्द्र सं भरामसि यज्ञमुक्थं तुरं वचः ॥ ५ ॥

अथ एकोनपञ्चाशो वर्गः ॥ ४९ ॥

सचा सोमेषु पुरुहूत वज्रिवो मदाय द्युक्ष सोमपाः । त्वमिद्धि ब्रह्मकृते काम्यं वसु देष्ठः सुन्वते भुवः ॥ ६ ॥
वयमेनमिदा ह्योऽपीपेमेह वज्रिणम् । तस्मा उ अद्य समना सुतं भरा नूनं भूषत श्रुते ॥ ७ ॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

वृकश्चिदस्य वारण उरामथिरा वयुनेषु भूषति।
सेमं नः स्तोमं जुजुषाण आ गहीन्द्र प्र चित्रया धिया ॥ ८ ॥
कदू न्वस्याकृतमिन्द्रस्यास्ति पौंस्यम् ।
केनो नु कं श्रोमतेन न शुश्रुवे जनुषः परि वृत्रहा ॥ ९ ॥
कदू महीरधृष्टा अस्य तविषीः कदु वृत्रघ्नो अस्तृतम्।
इन्द्रो विश्वान्बेकनाटाँ अहर्दृशं उत क्रत्वा पणींरभि ॥ १० ॥

अथ पञ्चाशो वर्गः ॥ ५० ॥

वयं घा ते अपूर्व्येन्द्र ब्रह्माणि वृत्रहन् ।
पुरूतमासः पुरुहूत वज्रिवो भृतिं न प्र भरामसि ॥ ११ ॥
पूर्वीश्चिद्धि त्वे तुविकूर्मिन्नाशसो हवन्त इन्द्रोतयः।
तिरश्चिद्दुर्यः सवना वसो गहि शविष्ठ श्रुधि मे हवम् ॥ १२ ॥
वयं घा ते त्वे इद्विन्द्र विप्रा अपि ष्मसि।
नहि त्वदन्यः पुरुहूत कश्चन मघवन्नस्ति मर्डिता ॥ १३ ॥
त्वं नो अस्या अमतेरुत क्षुधोऽभिशस्तेरव स्पृधि।
त्वं न ऊती तव चित्रया धिया शिक्षा शचिष्ठ गातुवित् ॥ १४ ॥
सोम इद्वः सुतो अस्तु कलयो मा बिभीतन ।
अपेदेष ध्वस्मायति स्वयं घैषो अपायति ॥ १५ ॥

[६७] सप्तषष्टितमं सूक्तम्

ऋषिः—मत्स्यः साम्मदो मान्यो वा मैत्रावरुणिर्बर्हवो वा मत्स्या जालनद्धाः ॥
देवता—आदित्याः ॥ छन्दः—१-३, ५, ७, ९, १३-१५, २१ निचृद् गायत्री; ४, १० विराड्गायत्री; ६, ८, ११, १२, १६-२० गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथ एकपञ्चाशो वर्गः ॥ ५१ ॥

त्यान्नु क्षत्रियाँ अव आदित्यान्याचिषामहे। सुमृळीकाँ अभिष्टये ॥ १ ॥
मित्रो नो अत्यंहृतिं वरुणः पर्षदर्यमा। आदित्यासो यथा विदुः ॥ २ ॥
तेषां हि चित्रमुक्थ्यं वरूथमस्ति दाशुषे। आदित्यानामरंकृते ॥ ३ ॥
महि वो महतामवो वरुण मित्रार्यमन्। अवांस्या वृणीमहे ॥ ४ ॥
जीवान्नो अभि धेतनादित्यासः पुरा हथात्। कद्ध स्थ हवनश्रुतः ॥ ५ ॥

अथ द्विपञ्चाशो वर्गः ॥ ५२ ॥

यद्वः श्रान्ताय सुन्वते वरूथमस्ति यच्छर्दिः। तेना नो अधि वोचत ॥ ६ ॥
अस्ति देवा अंहोरुर्वस्ति रत्नमनागसः। आदित्या अद्भुतैनसः ॥ ७ ॥
मा नः सेतुः सिषेदयं महे वृणक्तु नस्परि। इन्द्र इद्धि श्रुतो वशी ॥ ८ ॥
मा नो मृचा रिपूणां वृजिनानामविष्यवः। देवा अभि प्र मृक्षत ॥ ९ ॥
उत त्वामदिते मह्यहं देव्युप ब्रुवे। सुमृळीकामभिष्टये ॥ १० ॥

अथ त्रिपञ्चाशो वर्गः ॥ ५३ ॥

पर्षि दीने गभीर आँ उग्रपुत्रे जिघांसतः। माकिस्तोकस्य नो रिषत् ॥ ११ ॥
अनेहो न उरुव्रज उरूचि वि प्रसर्तवे। कृधि तोकाय जीवसे ॥ १२ ॥
ये मूर्धानः क्षितीनामदब्धासः स्वयशसः। व्रता रक्षन्ते अद्रुहः ॥ १३ ॥
ते न आस्रो वृकाणामादित्यासो मुमोचत। स्तेनं बद्धमिवादिते ॥ १४ ॥
अपो षु ण इयं शरुरादित्या अप दुर्मतिः। अस्मदेत्वजघ्नुषी ॥ १५ ॥

अथ चतुष्पञ्चाशो वर्गः ॥ ५४ ॥

शश्वद्धि वः सुदानव आदित्या ऊतिभिर्वयम्। पुरा नूनं बुभुज्महे ॥ १६ ॥
शश्वन्तं हि प्रचेतसः प्रतियन्तं चिदेनसः। देवाः कृणुथ जीवसे ॥ १७ ॥
तत्सु नो नव्यं सन्यसं आदित्या यन्मुमोचति। बन्धाद्बद्धमिवादिते ॥ १८ ॥
नास्माकमस्ति तत्तर आदित्यासो अतिष्कदे। यूयमस्मभ्यं मृळत ॥ १९ ॥
मा नो हेतिर्विवस्वत आदित्याः कृत्रिमा शरुः। पुरा नु जरसो वधीत् ॥ २० ॥
वि षु द्वेषो व्यंहतिमादित्यासो वि संहितम्। विष्वग्वि वृहता रपः ॥ २१ ॥

इति षष्ठाष्टके चतुर्थोऽध्यायः ॥

अथ पञ्चमोऽध्यायः

[६८] अष्टषष्टितमं सूक्तम्

ऋषिः—प्रियमेधः ॥ देवता—१-१३ इन्द्रः; १४-१९ ऋक्षाश्वमेधयोर्दानस्तुतिः ॥
छन्दः—१ अनुष्टुप्; २, ३, १५ गायत्री; ४, ७ विराडनुष्टुप्; ५, ६, ८, १२, १३, १७, १९ निचृद्गायत्री; ९, १४, १८ पादनिचृद्गायत्री; १० निचृदनुष्टुप्; ११ विराड्गायत्री; १६ आर्चीस्वराड्गायत्री ॥
स्वरः—१, ४, ७, १० गान्धारः; २, ३, ५, ६, ८, ९, ११-१९ षड्जः ॥

अथ प्रथमो वर्गः ॥ १ ॥

आ त्वा रथं यथोतये सुम्नाय वर्तयामसि ।
तुविकूर्मिमृतीषहमिन्द्र शविष्ठ सत्पते ॥ १ ॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तुविशुष्म तुविक्रतो शचीवो विश्वया मते ।
आ पप्राथ महित्वना ॥ २ ॥
यस्य ते महिना महः परि ज्मायन्तमीयतुः ।
हस्ता वज्रं हिरण्ययम् ॥ ३ ॥
विश्वानरस्य वस्पतिमनानतस्य शवसः ।
एवैश्च चर्षणीनामूती हुवे रथानाम् ॥ ४ ॥
अभिष्टये सदावृधं स्वर्मीळ्हेषु यं नरः ।
नाना हवन्त ऊतये ॥ ५ ॥

अथ द्वितीयो वर्गः ॥ २ ॥

परोमात्रमृचीषममिन्द्रमुग्रं सुराधसम् ।
ईशानं चिद्रसूनाम् ॥ ६ ॥
तंतमिद्राधसे मह इन्द्रं चोदामि पीतये ।
यः पूर्व्यामनुष्टुतिमीशे कृष्टीनां नृतुः ॥ ७ ॥
न यस्य ते शवसान सख्यमानंश मर्त्यः ।
नकिः शवांसि ते नशत् ॥ ८ ॥
त्वोतासस्त्वा युजाप्सु सूर्ये महद्धनम् ।
जयेम पृत्सु वज्रिवः ॥ ९ ॥
तं त्वा युज्ञेभिरीमहे तं गीर्भिर्गीर्वणस्तम ।
इन्द्र यथा चिदाविथ वाजेषु पुरुमाय्यम् ॥ १० ॥

अथ तृतीयो वर्गः ॥ ३ ॥

यस्य ते स्वादु सख्यं स्वाद्वी प्रणीतिरद्रिवः । युज्ञो वितन्तसाय्यः ॥ ११ ॥
उरु णस्तन्वेवे तन उरु क्षयाय नस्कृधि । उरु णो यन्धि जीवसे ॥ १२ ॥
उरुं नृभ्य उरुं गव उरुं रथाय पन्थाम् । देववीतिं मनामहे ॥ १३ ॥
उप मा षड् द्वाद्वा नरः सोमस्य हर्ष्यो । तिष्ठन्ति स्वादुरातयः ॥ १४ ॥
ऋज्राविन्द्रोत आ ददे हरी ऋक्षस्य सूनवि । आश्वमेधस्य रोहिता ॥ १५ ॥

अथ चतुर्थो वर्गः ॥ ४ ॥

सुरथाँ आतिथिग्वे स्वभीशूँरार्क्षे । आश्वमेधे सुपेशसः ॥ १६ ॥
षळश्वाँ आतिथिग्व इन्द्रोते वधूमतः । सचा पूतक्रतौ सनम् ॥ १७ ॥
ऐषु चेतद् वृषण्वत्यन्तर्ऋज्रेष्वरुषी । स्वभीशुः कशावती ॥ १८ ॥
न युष्मे वाजबन्धवो निनित्सुश्चन मर्त्यः । अवद्यमधि दीधरत् ॥ १९ ॥

[६९] एकोनसप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—प्रियमेधः ॥ देवता—१-१०, १३-१८ इन्द्रः; ११[1] विश्वे देवाः; ११[2], १२ वरुणः ॥ छन्दः—१, ३, १० विराडनुष्टुप्; २ निचृदुष्णिक्; ४, ५ निचृद् गायत्री; ६ गायत्री; ७, ९, १२, १३, १५ निचृदनुष्टुप्; ८ पादनिचृदनुष्टुप्; ११ पङ्क्तिः; १४ अनुष्टुप्; १६ निचृत्पङ्क्तिः; १७ बृहती; १८ विराड् बृहती ॥ स्वरः—१, ३, ७-१०, १२-१५ गान्धारः; २ ऋषभः; ४-६ षड्जः; ११, १६ पञ्चमः; १७, १८ मध्यमः ॥

अथ पञ्चमो वर्गः ॥ ५ ॥

प्रप्र वस्त्रिष्टुभमिषं मन्दद्वीराये न्दवे ।
धिया वो मेधसातये पुरन्ध्या विवासति ॥ १ ॥
नदं व ओदतीनां नदं योयुवतीनाम् ।
पतिं वो अघ्न्यानां धेनूनामिषुध्यसि ॥ २ ॥
ता अस्य सूददोहसः सोमं श्रीणन्ति पृश्नयः ।
जन्मन्देवानां विशस्त्रिष्वा रोचने दिवः ॥ ३ ॥
अभि प्र गोपतिं गिरेन्द्रमर्च यथा विदे ।
सूनुं सत्यस्य सत्पतिम् ॥ ४ ॥
आ हरयः ससृज्रिरेऽरुषीरधि बर्हिषि ।
यत्राभि संनवामहे ॥ ५ ॥

अथ षष्ठो वर्गः ॥ ६ ॥

इन्द्राय गावो आशिरं दुदुह्रे वज्रिणे मधु ।
यत्सीमुपह्वरे विदत् ॥ ६ ॥
उद्यद्ब्रध्नस्य विष्टपं गृहमिन्द्रश्च गन्वहि ।
मध्वः पीत्वा सचेवहि त्रिः सप्त सख्युः पदे ॥ ७ ॥
अर्चत प्रार्चत प्रियमेधासो अर्चत ।
अर्चन्तु पुत्रका उत पुरं न धृष्ण्वर्चत ॥ ८ ॥
अव स्वराति गर्गरो गोधा परि सनिष्वणत् ।
पिङ्गा परि चनिष्कददिन्द्राय ब्रह्मोद्यतम् ॥ ९ ॥
आ यत्पतन्त्येन्यः सुदुघा अनपस्फुरः ।
अपस्फुरं गृभायत सोममिन्द्राय पातवे ॥ १० ॥

अथ सप्तमो वर्गः ॥ ७ ॥

अपादिन्द्रो अपादग्निर्विश्वे देवा अमत्सत ।
वरुण इद्रिहं क्षयत्तमापो अभ्यनूषत वत्सं संशिश्वरीरिव ॥ ११ ॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सुदेवो अंसि वरुण यस्य ते सप्त सिन्धवः ।
अनुक्षरन्ति काकुदं सूर्यं सुषिरामिव ॥ १२ ॥
यो व्यतीँरफाणयत्सुयुक्ताँ उप दाशुषे ।
तक्वो नेता तदिद्वपुरुपमा यो अमुच्यत ॥ १३ ॥
अतीदु शक्र ओहत इन्द्रो विश्वा अति द्विषः ।
भिनत्कनीन ओदनं पच्यमानं परो गिरा ॥ १४ ॥
अभ्रकिो न कुमारकोऽधि तिष्ठन्नवं रथम् ।
स पक्षन्महिषं मृगं पित्रे मात्रे विभुक्रतुम् ॥ १५ ॥
आ तू सुशिप्र दम्पते रथं तिष्ठा हिरण्ययम् ।
अधा द्युक्षं सचेवहि सहस्रपादमरुषं स्वस्तिगामनेहसम् ॥ १६ ॥
तं घेमित्था नमस्विन उप स्वराजमासते ।
अधा चिदस्य सुधितं यदेतव आवर्तयन्ति दावने ॥ १७ ॥
अनु प्रत्नस्यौकसः प्रियमेधास एषाम् ।
पूर्वामनु प्रयतिं वृक्तबर्हिषो हितप्रयस आशत ॥ १८ ॥

अष्टमोऽनुवाकः [७०] सप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—पुरुहन्मा ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१ पादनिचृद्बृहती; २, ६ निचृत्पङ्क्तिः; ३ निचृद्बृहती; ४ पङ्क्तिः; ५, ७ विराड्बृहती; ८, १० आर्चीस्वराड्बृहती; ९, ११ बृहती; १२ आर्चीबृहती; १३ उष्णिक्; १४ भुरिगनुष्टुप्; १५ निचृदुष्णिक् ॥ स्वरः—१, ३, ५, ७-१२ मध्यमः; २, ४, ६, पञ्चमः; १३, १५ ऋषभः; १४ गान्धारः ॥

अथ अष्टमो वर्गः ॥ ८ ॥

यो राजा चर्षणीनां याता रथेभिरध्रिगुः ।
विश्वासां तरुता पृतनानां ज्येष्ठो यो वृत्रहा गृणे ॥ १ ॥
इन्द्रं तं शुम्भ पुरुहन्मन्नवसे यस्य द्विता विधर्तरि ।
हस्ताय वज्रः प्रति धायि दर्शतो महो दिवे न सूर्यः ॥ २ ॥
नकिष्टं कर्मणा नशद्यश्चकार सदावृधम् ।
इन्द्रं न यज्ञैर्विश्वगूर्तमृभ्वसमधृष्टं धृष्ण्वोजसम् ॥ ३ ॥
अषाळ्हमुग्रं पृतनासु सासहिं यस्मिन्महीरुरुव्रयः ।
सं धेनवो जायमाने अनोनवुर्द्यावः क्षामो अनोनवुः ॥ ४ ॥
यद्द्यावः इन्द्र ते शतं शतं भूमीरुत स्युः ।
न त्वा वज्रिन्त्सहस्रं सूर्या अनु न जातमष्ट रोदसी ॥ ५ ॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

अथ नवमो वर्गः ॥ ९ ॥

आ पप्राथ महिना वृष्ण्या वृषन्विश्वा शविष्ठ शवसा ।
अस्माँ अव मघवन्गोमति व्रजे वज्रिञ्चित्राभिरूतिभिः ॥ ६ ॥
न सीमदेव आप दिषं दीर्घायो मर्त्यः ।
एतग्वा चिद्य एतशा युयोजते हरी इन्द्रो युयोजते ॥ ७ ॥
तं वो महो महाय्यमिन्द्रं दानाय सक्षणिम् ।
यो गाधेषु य आरणेषु हव्यो वाजेष्वस्ति हव्यः ॥ ८ ॥
उदू षु णो वसो महे मृशस्व शूर राधसे ।
उदू षु महो मघवन्मघत्तय उदिन्द्र श्रवसे महे ॥ ९ ॥
त्वं न इन्द्र ऋतयुस्त्वानिदो नि तृम्पसि ।
मध्ये वसिष्व तुविनृम्णोर्वीर्नि दासं शिश्नथो हथैः ॥ १० ॥

अथ दशमो वर्गः ॥ १० ॥

अन्यव्रतममानुषमयज्वानमदेवयुम् ।
अव स्वः सखा दुधुवीत पर्वतः सुघ्नाय दस्युं पर्वतः ॥ ११ ॥
त्वं न इन्द्रासां हस्तै शविष्ठ दावने ।
धानानां न सं गृभायास्मयुर्द्विः सं गृभायास्मयुः ॥ १२ ॥
सखायः क्रतुमिच्छत कथा राधाम शरस्य ।
उपस्तुतिं भोजः सूरिर्यो अह्रयः ॥ १३ ॥
भूरिभिः समहु ऋषिभिर्बर्हिष्मद्भिः स्तविष्यसे ।
यदित्थमेकमेकमिच्छरं वत्सान्पराददः ॥ १४ ॥
कर्णगृह्या मघवा शौरदेव्यो वत्सं नस्त्रिभ्य आनयत् ।
अजां सूरिर्न धातवे ॥ १५ ॥

[७१] एकसप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—सुदीतिपुरुमीळ्ही तयोर्वान्यतरः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१, ४, ७ विराड्गायत्री; २, ६, ८, ९ निचृद्गायत्री; ३, ५ गायत्री; १०, १३ निचृद्बृहती; ११, १५ बृहती; १२ पादनिचृद्बृहती; १४ विराड्बृहती ॥ स्वरः—१-९ षड्जः; १०-१५ मध्यमः ॥

अथ एकादशो वर्गः ॥ ११ ॥

त्वं नो अग्ने महोभिः पाहि विश्वस्या अरातेः । उत द्विषो मर्त्यस्य ॥ १ ॥
नहि मन्युः पौरुषेय ईशे हि वः प्रियजात । त्वमिद्सि क्षपावान् ॥ २ ॥
स नो विश्वाभिर्देवहूतिभिरजो नपाद्भद्रशोचे । रयिं देहि विश्ववारम् ॥ ३ ॥

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

न तम॑ग्ने॒ अरा॑तयो॒ मर्तं॑ युवन्त रा॒यः। यं त्राय॑से दा॒श्वांस॑म् ॥४॥
यं त्वं वि॑प्र मे॒धसा॑ता॒वग्ने॑ हि॒नोषि॒ धना॑य। स तवो॒ती गोषु॒ गन्ता॑ ॥५॥

अथ द्वादशो वर्गः ॥ १२ ॥

त्वं र॒यिं पु॑रु॒वीर॒मग्ने॑ दा॒शुषे॒ मर्ता॑य। प्र णो॑ नय॒ वस्यो॒ अच्छ॑ ॥६॥
उ॒रु॒ष्या णो॒ मा परा॑ दा अघाय॒ते जा॑तवेदः। दु॒रा॒ध्ये॒३॒॑ मर्ता॑य ॥७॥
अग्ने॒ माकि॑ष्टे दे॒वस्य॑ रा॒तिमदे॑वो युयोत। त्वमी॑शिषे॒ वसू॑नाम् ॥८॥
स नो॒ वस्व॒ उप॑ मा॒स्यूर्जो॑ नपा॒न्माहि॑नस्य। सखे॑ वसो जरि॒तृभ्यः॑ ॥९॥

अच्छा॑ नः शी॒रशो॑चिषं॒ गिरो॑ यन्तु दर्श॒तम् ।
अच्छा॑ य॒ज्ञासो॒ नम॑सा पुरू॒वसुं॑ पुरुप्रश॒स्तमू॒तये॑ ॥१०॥

अथ त्रयोदशो वर्गः ॥ १३ ॥

अ॒ग्निं सू॒नुं सह॑सो जा॒तवे॑दसं दा॒नाय॒ वार्या॑णाम्।
द्वि॒ता यो भूद॒मृतो॒ मर्त्ये॒ष्वा होता॑ म॒न्द्रत॑मो वि॒शि ॥११॥
अ॒ग्निं वो॑ देवय॒ज्यया॒ग्निं प्र॑य॒त्य॑ध्व॒रे ।
अ॒ग्निं धी॒षु प्र॑थ॒मम॒ग्निमर्व॑त्य॒ग्निं क्षैत्रा॑य॒ साध॑से ॥१२॥
अ॒ग्निरि॒षां स॒ख्ये द॑दातु न॒ ईशे॒ यो वार्या॑णाम्।
अ॒ग्निं तो॒के तन॑ये॒ शश्व॑दीमहे॒ वसुं॒ सन्तं॑ तनू॒पाम् ॥१३॥
अ॒ग्निमी॑ळि॒ष्वाव॑से॒ गाथा॑भिः शी॒रशो॑चिषम् ।
अ॒ग्निं रा॒ये पु॑रुमीळ्ह श्रु॒तं नरो॒ऽग्निं सु॑दी॒तये॑ छ॒र्दिः ॥१४॥
अ॒ग्निं द्वेषो॒ योत॒वै नो॑ गृणीमस्य॒ग्निं शं योश्च॒ दात॑वे।
विश्वा॑सु वि॒क्ष्व॑वि॒तेव॒ हव्यो॒ भुव॒द्वस्तु॑र्ऋषू॒णाम् ॥१५॥

[७२] द्विसप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—हर्यतः प्रागाथः ॥ देवता—अग्निर्हवींषि वा ॥ छन्दः—१, ३, ८-१०, १२, १६ गायत्री; २ पादनिचृद्गायत्री; ४-६, ११, १३-१५, १७ निचृद्गायत्री; ७, १८ विराड्गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथ चतुर्दशो वर्गः ॥ १४ ॥

ह॒विष्कृ॑णुध्व॒मा ग॑मदध्व॒र्युर्व॑नते॒ पुनः॑। वि॒द्वाँ अ॑स्य प्र॒शास॑नम् ॥१॥
नि ति॒ग्मम॒भ्यं१॒॑शुं सीद॒द्धोता॑ म॒नावधि॑। जु॒षा॒णो अ॑स्य स॒ख्यम् ॥२॥
अ॒न्तरि॑च्छन्ति॒ तं जने॑ रु॒द्रं प॒रो म॑नी॒षया॑। गृ॒भ्णन्ति॑ जि॒ह्वया॑ स॒सम् ॥३॥
जा॒म्य॑तीतपे॒ धनु॑र्वयो॒धा अ॑रुह॒द्वन॑म्। दृ॒षदं॑ जि॒ह्वयाव॑धीत् ॥४॥
चर॑न्व॒त्सो रुश॑न्नि॒ह नि॑दा॒तारं॒ न वि॑न्दते। वेति॒ स्तोत॑व अ॒ग्व्यम् ॥५॥

अथ पञ्चदशो वर्गः ॥ १५ ॥

उ॒तो न्व॑स्य॒ यन्म॒हदश्वा॑व॒द्योज॑नं बृ॒हत्। दा॒मा रथ॑स्य॒ ददृ॑शे ॥६॥
दु॒हन्ति॑ स॒प्तैका॒मुप॒ द्वा पञ्च॑ सृजतः। ती॒र्थे सिन्धो॒रधि॑ स्व॒रे ॥७॥
आ द॒शभि॑र्वि॒वस्व॑त॒ इन्द्रः॒ कोश॑मचुच्यवीत्। खेद॑या त्रि॒वृता॑ दि॒वः ॥८॥
परि॑ त्रि॒धातु॑रध्व॒रं जू॒र्णिरे॑ति॒ नवी॑यसी। मध्वा॒ होता॑रो अञ्जते ॥९॥
सि॒ञ्चन्ति॒ नम॑साव॒तमु॒च्चाच॑क्रं॒ परि॑ज्मानम्। नी॒चीन॑बार॒मक्षि॑तम् ॥१०॥

अथ षोडशो वर्गः ॥ १६ ॥

अ॒भ्यार॒मिदद्र॑यो॒ निषि॑क्तं॒ पुष्क॑रे॒ मधु॑। अ॒व॒तस्य॑ वि॒सर्ज॑ने ॥११॥
गाव॒ उपा॑वताव॒तं म॒ही य॒ज्ञस्य॑ र॒प्सुदा॑। उ॒भा कर्णा॑ हिर॒ण्यया॑ ॥१२॥
आ सु॒ते सि॑ञ्चत॒ श्रियं॒ रोद॑स्योरभि॒श्रिय॑म्। र॒सा द॑धीत वृष॒भम् ॥१३॥
ते जा॑नत॒ स्वमो॒क्यं१॒॑ सं व॒त्सासो॒ न मा॒तृभिः॑। मि॒थो न॑सन्त जा॒मिभिः॑ ॥१४॥
उप॒ स्रक्वे॑षु॒ बप्स॑तः कृण्व॒ते ध॒रुणं॑ दि॒वि। इन्द्रे॑ अ॒ग्ना नमः॒ स्वः॑ ॥१५॥

अथ सप्तदशो वर्गः ॥ १७ ॥

अधु॑क्षत्पि॒प्युषी॒मिष॒मूर्जं॑ स॒प्तप॑दीम॒रिः। सूर्य॑स्य स॒प्त र॒श्मिभिः॑ ॥१६॥
सोम॑स्य मित्रावरु॒णोदि॑ता॒ सूर॒ आ द॑दे। तदातु॑रस्य भेष॒जम् ॥१७॥
उ॒तो न्व॑स्य॒ यत्प॒दं ह॑र्य॒तस्य॑ निधा॒न्य॑म्। परि॒ द्यां जि॒ह्वया॑तनत् ॥१८॥

[७३] त्रिसप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—गोपवन आत्रेयः सप्तवध्रिर्वा ॥ देवता—अश्विनौ ॥ छन्दः—१, २, ४, ५, ७, ९-११, १६-१८ गायत्री; ३, ८, १२-१५ निचृद्गायत्री; ६ विराड्गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथ अष्टादशो वर्गः ॥ १८ ॥

उदी॑राथामृताय॒ते यु॒ञ्जाथा॑मश्विना॒ रथ॑म् । अन्ति॒ षद्भू॑तु वा॒मवः॑ ॥१॥
नि॒मिष॑श्चि॒ज्जवी॑यसा॒ रथे॒ना या॑तमश्विना । अन्ति॒ षद्भू॑तु वा॒मवः॑ ॥२॥
उप॑ स्तृणीत॒मत्र॑ये हि॒मेन॑ घ॒र्मम॑श्विना । अन्ति॒ षद्भू॑तु वा॒मवः॑ ॥३॥
कुह॑ स्थः॒ कुह॑ जग्मथुः॒ कुह॑ श्ये॒नेव॑ पेतथुः । अन्ति॒ षद्भू॑तु वा॒मवः॑ ॥४॥
यद॒द्य कर्हि॒ कर्हि॑ चिच्छुश्रू॒यात॑मि॒मं हव॑म् । अन्ति॒ षद्भू॑तु वा॒मवः॑ ॥५॥

अथ एकोनविंशो वर्गः ॥ १९ ॥

अ॒श्विना॑ याम॒हूत॑मा॒ नेदि॑ष्ठं या॒म्याप्य॑म् । अन्ति॒ षद्भू॑तु वा॒मवः॑ ॥६॥
अव॑न्त॒मत्र॑ये गृ॒हं कृ॑णु॒तं यु॒वम॑श्विना । अन्ति॒ षद्भू॑तु वा॒मवः॑ ॥७॥
वरे॑थे अ॒ग्निमा॒तपो॒ वद॑ते व॒ल्ग्वत्र॑ये । अन्ति॒ षद्भू॑तु वा॒मवः॑ ॥८॥
प्र स॒प्तव॑ध्रिरा॒शसा॒ धारा॑म॒ग्नेर॑शायत । अन्ति॒ षद्भू॑तु वा॒मवः॑ ॥९॥
इ॒हा गतं॑ वृषण्वसू शृणु॒तं म॑ इ॒मं हव॑म् । अन्ति॒ षद्भू॑तु वा॒मवः॑ ॥१०॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अथ विंशो वर्गः ॥ २० ॥

किमि॒दं वां॑ पुराण॒वज्जर॑तोरिव शस्यते । अन्ति॒ षद्भू॑तु वा॒मवः॑ ॥ ११ ॥
स॒मा॒नं वां॑ सजा॒त्यं॑ समा॒नो बन्धु॑रश्विना । अन्ति॒ षद्भू॑तु वा॒मवः॑ ॥ १२ ॥
यो वां॒ रजां॑स्यश्विना॒ रथो॑ वि॒याति॒ रोद॑सी । अन्ति॒ षद्भू॑तु वा॒मवः॑ ॥ १३ ॥
आ नो॒ गव्ये॑भि॒रश्व्यैः॑ स॒हस्रै॒रुप॑ गच्छतम् । अन्ति॒ षद्भू॑तु वा॒मवः॑ ॥ १४ ॥
मा नो॒ गव्ये॑भि॒रश्व्यैः॑ स॒हस्रे॑भि॒रति॑ ख्यतम् । अन्ति॒ षद्भू॑तु वा॒मवः॑ ॥ १५ ॥
अ॒रु॒णप्सु॑रु॒षा अ॑भू॒दक॒र्ज्योति॑र्ऋ॒तावरी । अन्ति॒ षद्भू॑तु वा॒मवः॑ ॥ १६ ॥
अ॒श्विना॒ सु वि॒चाक॑शद् वृ॒क्षं प॑रशु॒माँइ॑व । अन्ति॒ षद्भू॑तु वा॒मवः॑ ॥ १७ ॥
पुरं॒ न धृ॑ष्ण॒वा रु॑ज कृ॒ष्णया॑ बाधि॒तो वि॒शा । अन्ति॒ षद्भू॑तु वा॒मवः॑ ॥ १८ ॥

[७४] चतुःसप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—गोपवन आत्रेयः ॥ देवता—१-१२ अग्निः; १३-१५ श्रुतर्वण आर्क्षस्य दानस्तुतिः ॥ छन्दः—१, १० निचृदनुष्टुप्; २, ११ गायत्री; ३ विराड् गायत्री; ४, १३-१५ विराडनुष्टुप्; ५, ६, ८, ९, १२ निचृद्गायत्री; ७ पादनिचृदनुष्टुप् ॥ स्वरः—१, ४, ७, १०, १३-१५ गान्धारः; २, ३, ५, ६, ८, ९, ११, १२ षड्जः ॥

अथ एकविंशो वर्गः ॥ २१ ॥

वि॒शोवि॑शो वो॒ अति॑थिं वाज॒यन्तः॑ पुरुप्रि॒यम् ।
अ॒ग्निं वो॒ दुर्यं॒ वचः॑ स्तु॒षे शू॒षस्य॒ मन्म॑भिः ॥ १ ॥
यं जना॑सो ह॒विष्म॑न्तो मि॒त्रं न स॒र्पिरा॑सुतिम् ।
प्र॒शंस॑न्ति प्र॒श॑स्तिभिः ॥ २ ॥
पन्यां॑सं जा॒तवे॑दसं॒ यो दे॒वता॒त्युद्य॑ता । ह॒व्यान्यैर॑यद्दि॒वि ॥ ३ ॥
आग॑न्म वृत्र॒हन्त॑मं॒ ज्येष्ठ॑म॒ग्निमान॑वम् ।
यस्य॑ श्रु॒तर्वा॑ बृ॒हन्ना॒र्क्षो अनी॑क॒ एध॑ते ॥ ४ ॥
अ॒मृतं॑ जा॒तवे॑दसं ति॒रस्तमां॑सि दर्श॒तम् । घृ॒ताह॑वन॒मीड्य॑म् ॥ ५ ॥

अथ द्वाविंशो वर्गः ॥ २२ ॥

स॒बाधो॒ यं जना॑ इ॒मे३॒॑ऽग्निं ह॒व्येभि॒रीळ॑ते । जुह्वा॑नासो य॒तस्रु॑चः ॥ ६ ॥
इ॒यं ते॒ नव्य॑सी म॒तिरग्ने॒ अधा॑य्य॒स्मदा ।
मन्द्र॒ सुजा॑त॒ सुक्र॒तोऽमू॑र॒ दस्माति॑थे ॥ ७ ॥
सा ते॑ अग्ने॒ शंत॑मा॒ चनि॑ष्ठा भवतु प्रि॒या । तया॑ वर्धस्व॒ सुष्टु॑तः ॥ ८ ॥
सा द्यु॒म्नैर्द्यु॒म्निनी॑ बृ॒हदुपो॑प॒ श्रव॑सि॒ श्रवः॑ । दधी॑त वृत्र॒तूर्ये॑ ॥ ९ ॥
अश्व॒मिद्गां र॑थ॒प्रां त्वे॒षमिन्द्रं॒ न सत्प॑तिम् ।
यस्य॒ श्रवां॑सि॒ तूर्व॑थ॒ पन्यं॑पन्यं च कृ॒ष्टयः॑ ॥ १० ॥

अथ त्रयोविंशो वर्गः ॥ २३ ॥

यं त्वा॑ गो॒पव॑नो गि॒रा चनि॑ष्ठदग्ने अङ्गिरः । स पा॑वक श्रुधी॒ हव॑म् ॥ ११ ॥
यं त्वा॒ जना॑स॒ ईळ॑ते स॒बाधो॒ वाज॑सातये । स बो॑धि वृत्र॒तूर्ये॑ ॥ १२ ॥
अ॒हं हु॑वा॒न आ॒र्क्षे श्रु॒तर्व॑णि मद॒च्युति॑ ।
शर्धां॑सीव स्तुका॒विनां॑ मृ॒क्षा शी॒र्षा च॑तु॒र्णाम् ॥ १३ ॥
मां च॒त्वार॑ आ॒शवः॒ शवि॑ष्ठस्य द्रवि॒त्नवः॑ ।
सु॒रथा॑सो अ॒भि प्रयो॒ वक्ष॒न्वयो॒ न तुग्र्य॑म् ॥ १४ ॥
स॒त्यमित्त्वा॑ महेनदि॒ परु॒ष्ण्यव॑ देदिशम् ।
नेमा॑पो अश्व॒दात॑रः॒ शवि॑ष्ठादस्ति॒ मर्त्यः॑ ॥ १५ ॥

[७५] पञ्चसप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—विरूपः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१, ४, ५, ७, ९, ११ निचृद्गायत्री; २, ३, १५ विराड्गायत्री; ६, १०, १२-१४, १६ गायत्री; ८ आर्चीस्वराड्गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथ चतुर्विंशो वर्गः ॥ २४ ॥

यु॒क्ष्वा हि दे॑व॒हूत॑माँ॒ अश्वाँ॑ अग्ने र॒थीरि॑व । नि होता॑ पू॒र्व्यः स॑दः ॥ १ ॥
उ॒त नो॑ देव दे॒वाँ अच्छा॑ वोचो वि॒दुष्ट॑रः । श्रद्विश्वा॒ वार्या॑ कृधि ॥ २ ॥
त्वं ह॒ यद्य॑विष्ठ्य॒ सह॑सः सूनवाहुत । ऋ॒तावा॑ य॒ज्ञियो॒ भुवः॑ ॥ ३ ॥
अ॒यम॒ग्निः स॑ह॒स्रिणो॒ वाज॑स्य श॒तिन॒स्पतिः॑ । मू॒र्धा क॒वी र॑यी॒णाम् ॥ ४ ॥
तं ने॒मिमृ॒भवो॑ य॒था न॑मस्व॒ सहू॑तिभिः । नेदी॑यो य॒ज्ञम॑ङ्गिरः ॥ ५ ॥

अथ पञ्चविंशो वर्गः ॥ २५ ॥

तस्मै॑ नू॒नम॒भिद्य॑वे वा॒चा वि॑रूप॒ नित्य॑या । वृष्णे॑ चोदस्व सुष्टु॒तिम् ॥ ६ ॥
कमु॑ ष्विदस्य॒ सेन॑या॒ग्नेरपा॑कचक्षसः । प॒णिं गोषु॑ स्तरामहे ॥ ७ ॥
मा नो॑ दे॒वानां॒ विशः॑ प्रस्ना॒तीरि॑वो॒स्राः । कृ॒शं न हा॑सु॒रघ्न्याः॑ ॥ ८ ॥
मा नः॑ समस्य दू॒ढ्य१॒॑ः परि॑द्वेषसो अंह॒तिः । ऊ॒र्मिर्न नाव॒मा व॑धीत् ॥ ९ ॥
नम॑स्ते अग्न॒ ओज॑से गृ॒णान्ति॑ देव कृ॒ष्टयः॑ । अमै॑र॒मित्र॑मर्दय ॥ १० ॥

अथ षडविंशो वर्गः ॥ २६ ॥

कु॒वित्सु नो॒ गवि॑ष्ट॒येऽग्ने॑ सं॒वेषि॑षो र॒यिम् । उरु॑कृदु॒रु ण॑स्कृधि ॥ ११ ॥
मा नो॑ अ॒स्मिन्म॑हाध॒ने परा॑ वर्ग्भार॒भृद्य॑था । सं॒वर्गं॒ सं र॒यिं ज॑य ॥ १२ ॥
अ॒न्यम॒स्मद्भि॒या इ॒यमग्ने॒ सिष॑क्तु दु॒च्छुना॑ । वर्धा॑ नो॒ अम॑व॒च्छवः॑ ॥ १३ ॥
यस्याजु॑षन्नम॒स्विनः॒ शमी॒मदु॑र्मखस्य वा । तं घेद॒ग्निर्वृ॒धाव॑ति ॥ १४ ॥
पर॑स्या॒ अधि॑ सं॒वतोऽव॑राँ अ॒भ्या त॑र । यत्रा॒हमस्मि॒ ताँ अ॑व ॥ १५ ॥
वि॒द्मा हि ते॑ पु॒रा व॒यमग्ने॑ पि॒तुर्यथाव॑सः । अधा॑ ते सु॒म्नमी॑महे ॥ १६ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

[७६] षट्सप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—कुरुसुतिः काण्वः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१, २, ५, ६, ८-१२ गायत्री; ३, ४, ७ निचृद्गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथ सप्तविंशो वर्गः ॥ २७ ॥

इमं नु मायिनं हुव इन्द्रमीशानमोजसा। मरुत्वन्तं न वृञ्जसे ॥ १ ॥
अयमिन्द्रो मरुत्सखा वि वृत्रस्याभिनच्छिरः। वज्रेण शतपर्वणा ॥ २ ॥
वावृधानो मरुत्सखेन्द्रो वि वृत्रमैरयत्। सृजन्त्समुद्रियाँ अपः ॥ ३ ॥
अयं ह येन वा इदं स्वर्मरुत्वता जितम्। इन्द्रेण सोमपीतये ॥ ४ ॥
मरुत्वन्तमृजीषिणमोजस्वन्तं विरप्शिनम्। इन्द्रं गीर्भिर्हवामहे ॥ ५ ॥
इन्द्रं प्रत्नेन मन्मना मरुत्वन्तं हवामहे। अस्य सोमस्य पीतये ॥ ६ ॥

अथ अष्टाविंशो वर्गः ॥ २८ ॥

मरुत्वाँ इन्द्र मीढ्वः पिबा सोमं शतक्रतो। अस्मिन्यज्ञे पुरुष्टुत ॥ ७ ॥
तुभ्येदिन्द्र मरुत्सखे सुताः सोमासो अद्रिवः। हृदा हूयन्त उक्थिनः ॥ ८ ॥
पिबेदिन्द्र मरुत्सखा सुतं सोमं दिविष्टिषु। वज्रं शिशान ओजसा ॥ ९ ॥
उत्तिष्ठन्नोजसा सह पीत्वी शिप्रे अवेपयः। सोममिन्द्र चमू सुतम् ॥ १० ॥
अनु त्वा रोदसी उभे क्रक्षमाणमकृपेताम्। इन्द्र यद्यस्युहाभवः ॥ ११ ॥
वाचमष्टापदीमहं नवस्रक्तिमृतस्पृशम्। इन्द्रात्परि तन्वं ममे ॥ १२ ॥

[७७] सप्तसप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—कुरुसुतिः काण्वः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१, ३, ४, ७, ८ गायत्री; २, ५, ६, ९ निचृद्गायत्री; १० निचृद्बृहती; ११ निचृत्पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१-९ षड्जः; १० मध्यमः; ११ पञ्चमः ॥

अथ एकोनत्रिंशो वर्गः ॥ २९ ॥

जज्ञानो नु शतक्रतुर्वि पृच्छदिति मातरम्। क उग्राः के ह शृण्विरे ॥ १ ॥
आदीं श्वस्यब्रवीदौर्णवाभमहीशुवम्। ते पुत्र सन्तु निष्टुरः ॥ २ ॥
समित्तान्वृत्रहाखिदत्खे अराँइव खेदया। प्रवृद्धो दस्युहाभवत् ॥ ३ ॥
एकया प्रतिधापिबत्साकं सरांसि त्रिंशतम्। इन्द्रः सोमस्य काणुका ॥ ४ ॥
अभि गन्धर्वमतृणदबुध्नेषु रजःस्वा। इन्द्रो ब्रह्मभ्य इद् वृधे ॥ ५ ॥

अथ त्रिंशो वर्गः ॥ ३० ॥

निरविद्यद्गिरिभ्य आ धारयत्पक्वमोदनम्। इन्द्रो बुन्दं स्वाततम् ॥ ६ ॥
शतब्रध्न इषुस्तव सहस्रपर्ण एक इत्। यमिन्द्र चकृषे युजम् ॥ ७ ॥
तेन स्तोतृभ्य आ भर नृभ्यो नारिभ्यो अन्तवे। सद्यो जात ऋभुक्षिर ॥ ८ ॥
एता च्यौत्नानि ते कृता वर्षिष्ठानि परीणसा। हृदा वीड्वधाय ॥ ९ ॥

विश्वेत्ता विष्णुराभरदुरुक्रमस्त्वेषितः। शतं महिषान्क्षीरपाकमोदनं वराहमिन्द्र एमुषम् ॥ १० ॥
तुविक्षं ते सुकृतं सूमयं धनुः साधुर्बुन्दो हिरण्ययः। उभा ते बाहू रण्या सुसंस्कृत ऋदूपे चिदूदुवृधा ॥ ११ ॥

[७८] अष्टसप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—कुरुसुतिः काण्वः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१, ३ निचृद्गायत्री; २, ६-९ विराड्गायत्री; ४, ५ गायत्री; १० बृहती ॥ स्वरः—१-९ षड्जः; १० मध्यमः ॥

अथ एकत्रिंशो वर्गः ॥ ३१ ॥

पुरोळाशं नो अन्धस इन्द्र सहस्रमा भर। शता च शूर गोनाम् ॥ १ ॥
आ नो भर व्यञ्जनं गामश्वमभ्यञ्जनम्। सचा मना हिरण्यया ॥ २ ॥
उत नः कर्णशोभना पुरूणि धृष्णवा भर। त्वं हि शृण्विषे वसो ॥ ३ ॥
नकीं वृधीक इन्द्र ते न सुषा न सुदा उत। नान्यस्त्वच्छूर वाघतः ॥ ४ ॥
नकीमिन्द्रो निकर्तवे न शक्रः परिशक्तवे। विश्वं शृणोति पश्यति ॥ ५ ॥

अथ द्वात्रिंशो वर्गः ॥ ३२ ॥

स मन्युं मर्त्यानामदब्धो नि चिकीषते। पुरा निदश्चिकीषते ॥ ६ ॥
क्रत्व इत्पूर्णमुदरं तुरस्यास्ति विधतः। वृत्रघ्नः सोमपात्नः ॥ ७ ॥
त्वे वसूनि संगता विश्वा च सोम सौभगा। सुदात्वपरिह्वृता ॥ ८ ॥
त्वामिद्यवयुर्मम कामो गव्युर्हिरण्ययुः। त्वामश्वयुरेषते ॥ ९ ॥
तवेदिन्द्राहमाशसा हस्ते दात्रं चना ददे। दिनस्य वा मघवन्त्संभृतस्य वा पूर्धि यवस्य काशिना ॥ १० ॥

[७९] एकोनाशीतितमं सूक्तम्

ऋषिः—कृत्नुर्भार्गवः ॥ देवता—सोमः ॥ छन्दः—१, २, ६ निचृद्गायत्री; ३ विराड्गायत्री; ४, ५, ७, ८ गायत्री; ९ निचृदनुष्टुप् ॥ स्वरः—१-८ षड्जः; ९ गान्धारः ॥

अथ त्रयस्त्रिंशो वर्गः ॥ ३३ ॥

अयं कृत्नुरगृभीतो विश्वजिदुद्भिदित्सोमः। ऋषिर्विप्रः काव्येन ॥ १ ॥
अभ्यूर्णोति यन्नग्नं भिषक्ति विश्वं यत्तुरम्। प्रेमन्धः ख्यन्निः श्रोणो भूत् ॥ २ ॥
त्वं सोम तनूकृद्भ्यो द्वेषोभ्योऽन्यकृतेभ्यः। उरु यन्तासि वरूथम् ॥ ३ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

त्वं चि॒त्ती तव॒ दक्षै॑र्दि॒व आ पृ॑थि॒व्या ऋ॑जीषिन् ।
यावी॑र॒घस्य॑ चि॒द् द्वेषः॑ ॥४॥
अ॒र्थिनो॒ यन्ति॒ चेदर्थं॒ गच्छा॒निद्द॒दुषो॑ रा॒तिम् ।
व॒वृ॒ज्युस्तृष्य॑तः॒ काम॑म् ॥५॥

अथ चतुस्त्रिंशो वर्गः ॥ ३४ ॥

वि॒दद्यत्पू॒र्व्यं न॒ष्टमुदी॑मृता॒युमी॑रयत् ।
प्रेमायु॑स्तारी॒दती॑र्णम् ॥६॥
सु॒शेवो॑ नो मृळ॒याकु॒रदृ॑प्तक्रतुरवा॒तः ।
भवा॑ नः सोम॒ शं हृ॒दे ॥७॥
मा नः॑ सोम॒ सं वी॑विजो॒ मा वि बी॑भिषथा राजन् ।
मा नो॒ हार्दि॑ त्वि॒षा व॑धीः ॥८॥
अव॒ यत्स्वे स॒धस्थे॑ दे॒वानां॑ दुर्म॒तीरीक्षे॑ ।
राज॒न्नप॒ द्विषः॑ सेध॒ मीढ्वो॒ अप॒ स्त्रिधः॑ सेध ॥९॥

[८०] अशीतितमं सूक्तम्

ऋषिः—एकद्यूर्नैधसः ॥ देवता—१-९ इन्द्रः; १० देवाः ॥
छन्दः—१ विराड्गायत्री; २, ३, ५, ८ निचृद्गायत्री;
४, ६, ७, ९, १० गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथ पञ्चत्रिंशो वर्गः ॥ ३५ ॥

न॒ह्य१॒॑न्यं ब॒ळाक॑रं मर्डि॒तारं॑ शतक्रतो । त्वं न॑ इन्द्र मृळय ॥१॥
यो नः॒ शश्व॑त्पुरावि॒थामृ॑ध्रो॒ वाज॑सातये । स त्वं न॑ इन्द्र मृळय ॥२॥
किम॒ङ्ग र॑ध्र॒चोद॑नः सुन्वा॒नस्या॑वि॒तेद॑सि । कु॒वित्स्वि॑न्द्र णः॒ शकः॑ ॥३॥
इन्द्र॒ प्र णो॒ रथ॑मव प॒श्चाच्चि॒त्सन्त॑मद्रिवः । पु॒रस्ता॑देनं मे कृधि ॥४॥
हन्तो॒ नु किमा॑ससे प्रथ॒मं नो॒ रथं॑ कृधि । उ॒प॒मं वा॑ज॒यु श्रवः॑ ॥५॥

अथ षट्त्रिंशो वर्गः ॥ ३६ ॥

अवा॑ नो वाज॒युं रथं॑ सु॒करं॑ ते॒ किमित्परि॑ । अ॒स्मान्त्सु जि॒ग्युष॑स्कृधि ॥६॥
इन्द्र॒ दृह्य॑स्व॒ पूर॑सि भ॒द्रा त॑ एति निष्कृ॒तम् । इ॒यं धीर्ऋ॒त्विया॑वती ॥७॥
मा सी॑मव॒द्य आ भा॑गु॒र्वी काष्ठा॑ हि॒तं धन॑म् । अ॒पावृ॑क्ता अर॒त्नयः॑ ॥८॥
तु॒रीयं॒ नाम॑ य॒ज्ञियं॑ य॒दा कर॒स्तदु॑श्मसि । आदित्पति॑र्न ओहसे ॥९॥
अवी॑वृधद्वो अमृता॒ अम॑न्दीदेक॒द्यूर्दे॑वा उ॒त याश्च॑ देवीः ।
तस्मा॑ उ॒ राधः॑ कृणुत प्रश॒स्तं प्रा॒तर्म॒क्षू धि॒याव॑सुर्जगम्यात् ॥१०॥

नवमोऽनुवाकः

[८१] एकाशीतितमं सूक्तम्

ऋषिः—कुसीदी काण्वः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१, ५, ८ गायत्री; २, ३, ६, ७ निचृद्गायत्री; ४, ९ विराड्गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथ सप्तत्रिंशो वर्गः ॥ ३७ ॥

आ तू न॑ इन्द्र क्षु॒मन्तं॑ चि॒त्रं ग्रा॒भं सं गृ॑भाय । म॒हा॒ह॒स्ती दक्षि॑णेन ॥१॥
वि॒द्मा हि त्वा॑ तुविकू॒र्मिं तु॒विदे॑ष्णं तु॒वीम॑घम् । तु॒वि॒मा॒त्रमवो॑भिः ॥२॥
न॒हि त्वा॑ शूर दे॒वा न मर्ता॑सो॒ दित्स॑न्तम् । भी॒मं न गां वा॒रय॑न्ते ॥३॥
एतो॒ न्विन्द्रं॒ स्तवा॒मेशा॑नं॒ वस्वः॑ स्व॒राज॑म् । न राध॑सा मर्धिषन्नः ॥४॥
प्र स्तो॑ष॒दुप॑ गासिष॒च्छ्रव॒त्साम॑ गी॒यमा॑नम् । अ॒भि राध॑सा जुगुरत् ॥५॥

अथ अष्टात्रिंशो वर्गः ॥ ३८ ॥

आ नो॑ भर॒ दक्षि॑णेना॒भि स॒व्येन॒ प्र मृ॑श । इन्द्र॒ मा नो॒ वसो॒र्निर्भा॑क् ॥६॥
उप॑ क्रम॒स्वा भ॑र धृष॒ता धृ॑ष्णो॒ जना॑नाम् । अदा॑शूष्टरस्य॒ वेदः॑ ॥७॥
इन्द्र॒ य उ॒ नु ते॒ अस्ति॒ वाजो॒ विप्रे॑भिः॒ सनि॑त्वः । अ॒स्माभिः॒ सु तं स॑नुहि ॥८॥
स॒द्यो॒जुव॑स्ते॒ वाजा॑ अ॒स्मभ्यं॑ वि॒श्वश्च॑न्द्राः । वशं॑श्च म॒क्षू ज॑रन्ते ॥९॥

इति षष्ठाष्टके पञ्चमोऽध्यायः ॥

अथ षष्ठोऽध्यायः

[८२] द्व्यशीतितमं सूक्तम्

ऋषिः—कुसीदी काण्वः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१, ७, ९ निचृद्गायत्री; २, ५, ६, ८ गायत्री; ३, ४ विराड्गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथ प्रथमो वर्गः ॥ १ ॥

आ प्र द्र॑व परा॒वतो॑ऽर्वा॒वत॑श्च वृत्रहन् । मध्वः॒ प्रति॒ प्रभ॑र्मणि ॥१॥
ती॒व्राः सोमा॑स॒ आ ग॑हि सु॒तासो॑ मादयि॒ष्णवः॑ । पिबा॑ द॒धृग्यथो॑चि॒षे ॥२॥
इ॒षा म॑न्द॒स्वादु॒ तेऽरं॒ वरा॑य म॒न्यवे॑ । भुव॑त्त इन्द्र॒ शं हृ॒दे ॥३॥
आ त्व॑शत्र॒वा ग॑हि॒ न्यु१॒॑क्थानि॑ च हूयसे । उ॒प॒मे रो॑च॒ने दि॒वः ॥४॥
तुभ्या॒यमद्रि॑भिः सु॒तो गोभिः॑ श्री॒तो मदा॑य॒ कम् । प्र सोम॑ इन्द्र हूयते ॥५॥

अथ द्वितीयो वर्गः ॥ २ ॥

इन्द्र॑ श्रु॒धि सु मे॒ हव॑म॒स्मे सु॒तस्य॒ गोम॑तः । वि पी॒तिं तृ॒प्तिम॑श्नुहि ॥६॥
य इ॑न्द्र चम॒सेष्वा सोम॑श्च॒मूषु॑ ते सु॒तः । पिबेद॑स्य॒ त्वमी॑शिषे ॥७॥
यो आ॒सु च॒न्द्रमा॑इव॒ सोम॑श्च॒मूषु॑ ददृ॑शे । पिबेद॑स्य॒ त्वमी॑शिषे ॥८॥
यं ते॑ श्ये॒नः प॒दाभ॑रत्ति॒रो रजां॒स्यस्पृ॑तम् । पिबेद॑स्य॒ त्वमी॑शिषे ॥९॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

[८३] त्र्यशीतितमं सूक्तम्

ऋषिः—कुसीदी काण्वः ॥ देवता—विश्वे देवाः ॥ छन्दः—१, २, ५, ६, ९ गायत्री; ३ निचृद्गायत्री; ४ पादनिचृद्गायत्री; ७ आर्चीस्वराड्गायत्री; ८ विराड्गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथ तृतीयो वर्गः ॥ ३ ॥

देवानामिदवो महत्तदा वृणीमहे वयम्। वृष्णामस्मभ्यमूतये ॥ १ ॥
ते नः सन्तु युजः सदा वरुणो मित्रो अर्यमा। वृधासश्च प्रचेतसः ॥ २ ॥
अति नो विष्पिता पुरु नौभिरपो न पर्षथ। यूयमृतस्य रथ्यः ॥ ३ ॥
वामं नो अस्त्वर्यमन्वामं वरुण शंस्यम्। वामं ह्यावृणीमहे ॥ ४ ॥
वामस्य हि प्रचेतस ईशानासो रिशादसः। नेमादित्या अघस्य यत् ॥ ५ ॥

अथ चतुर्थो वर्गः ॥ ४ ॥

वयमिद्धः सुदानवः क्षियन्तो यान्तो अध्वन्ना। देवा वृधाय हूमहे ॥ ६ ॥
अधि न इन्द्रैषां विष्णो सजात्यानाम्। हुता मरुतो अश्विना ॥ ७ ॥
प्र भ्रातृत्वं सुदानवोऽध द्विता समान्या। मातुर्गर्भे भरामहे ॥ ८ ॥
यूयं हि ष्ठा सुदानव इन्द्रज्येष्ठा अभिद्यवः। अधा चिद्व उत ब्रुवे ॥ ९ ॥

[८४] चतुरशीतितमं सूक्तम्

ऋषिः—उशना काव्यः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१ पादनिचृद्गायत्री; २ विराड्गायत्री; ३, ६ निचृद्गायत्री; ४, ५, ७-९ गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथ पञ्चमो वर्गः ॥ ५ ॥

प्रेष्ठं वो अतिथिं स्तुषे मित्रमिव प्रियम्। अग्निं रथं न वेद्यम् ॥ १ ॥
कविमिव प्रचेतसं यं देवासो अधा द्विता। नि मर्त्येष्वादधुः ॥ २ ॥
त्वं यविष्ठ दाशुषो नॄंः पाहि शृणुधी गिरः। रक्षा तोकमुत त्मना ॥ ३ ॥
कया ते अग्ने अङ्गिर ऊर्जो नपादुपस्तुतिम्। वराय देव मन्यवे ॥ ४ ॥
दाशेम कस्य मनसा यज्ञस्य सहसो यहो। कदु वोच इदं नमः ॥ ५ ॥

अथ षष्ठो वर्गः ॥ ६ ॥

अधा त्वं हि नस्करो विश्वा अस्मभ्यं सुक्षितीः। वाजद्रविणसो गिरः ॥ ६ ॥
कस्य नूनं परीणसो धियो जिन्वसि दंपते। गोषाता यस्य ते गिरः ॥ ७ ॥
तं मर्जयन्त सुक्रतुं पुरोयावानमाजिषु। स्वेषु क्षयेषु वाजिनम् ॥ ८ ॥
क्षेति क्षेमेभिः साधुभिर्नकिर्यं घ्नन्ति हन्ति यः। अग्ने सुवीर एधते ॥ ९ ॥

[८५] पञ्चाशीतितमं सूक्तम्

ऋषिः—कृष्णः ॥ देवता—अश्विनौ ॥ छन्दः—१, ९ विराड्गायत्री; २, ५, ७ निचृद्गायत्री; ३, ४, ६, ८ गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथ सप्तमो वर्गः ॥ ७ ॥

आ मे हवं नासत्याश्विना गच्छतं युवम् । मध्वः सोमस्य पीतये ॥ १ ॥
इमं मे स्तोममश्विनेमं मे शृणुतं हवम् । मध्वः सोमस्य पीतये ॥ २ ॥
अयं वां कृष्णो अश्विना हवते वाजिनीवसू । मध्वः सोमस्य पीतये ॥ ३ ॥
शृणुतं जरितुर्हवं कृष्णस्य स्तुवतो नरा । मध्वः सोमस्य पीतये ॥ ४ ॥
छर्दिर्यन्तमदाभ्यं विप्राय स्तुवते नरा । मध्वः सोमस्य पीतये ॥ ५ ॥

अथ अष्टमो वर्गः ॥ ८ ॥

गच्छतं दाशुषो गृहमित्था स्तुवतो अश्विना । मध्वः सोमस्य पीतये ॥ ६ ॥
युञ्जाथां रासभं रथे वीळङ्गे वृषण्वसू । मध्वः सोमस्य पीतये ॥ ७ ॥
त्रिवन्धुरेण त्रिवृता रथेना यातमश्विना । मध्वः सोमस्य पीतये ॥ ८ ॥
नू मे गिरो नासत्याश्विना प्रावतं युवम् । मध्वः सोमस्य पीतये ॥ ९ ॥

[८६] षडशीतितमं सूक्तम्

ऋषिः—कृष्णो विश्वको वा कार्ष्णिः ॥ देवता—अश्विनौ ॥ छन्दः—१, ३ विराड्जगती; २, ४, ५ निचृज्जगती ॥ स्वरः—निषादः ॥

अथ नवमो वर्गः ॥ ९ ॥

उभा हि दस्रा भिषजा मयोभुवोभा दक्षस्य वचसो बभूवथुः ।
ता वां विश्वको हवते तनूकृथे मा नो वि यौष्टं सख्या मुमोचतम् ॥ १ ॥
कथा नूनं वां विमना उप स्तवद्युवं धियं ददथुर्वस्यइष्टये ।
ता वां विश्वको हवते तनूकृथे मा नो वि यौष्टं सख्या मुमोचतम् ॥ २ ॥
युवं हि ष्मा पुरुभुजेममेधतुं विष्णाप्वे ददथुर्वस्यइष्टये ।
ता वां विश्वको हवते तनूकृथे मा नो वि यौष्टं सख्या मुमोचतम् ॥ ३ ॥
उत त्यं वीरं धनसामृजीषिणं दूरे चित्सन्तमवसे हवामहे ।
यस्य स्वादिष्ठा सुमतिः पितुर्यथा मा नो वि यौष्टं सख्या मुमोचतम् ॥ ४ ॥
ऋतेन देवः सविता शमायत ऋतस्य शृङ्गमुर्विया वि पप्रथे ।
ऋतं सासाह महि चित्पृतन्यतो मा नो वि यौष्टं सख्या मुमोचतम् ॥ ५ ॥

[८७] सप्ताशीतितमं सूक्तम्

ऋषिः—कृष्णो द्युम्नीको वा वासिष्ठः प्रियमेधो वा ॥ देवता—अश्विनौ ॥ छन्दः—१, ३ बृहती; २, ४, ६ निचृत्पङ्क्तिः; ५ निचृद्बृहती ॥ स्वरः—१, ३, ५ मध्यमः; २, ४, ६ पञ्चमः ॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अथ दशमो वर्गः ॥ १० ॥

द्युम्नी वां॒ स्तोमो॑ अश्विना॒ क्रिवि॒र्न सेक॒ आ ग॑तम्।
मध्वः॑ सु॒तस्य॒ स दि॒वि प्रि॒यो न॑रा पा॒तं गौ॒रावि॒वेरि॑णे ॥ १ ॥
पिब॑तं घ॒र्मं मधु॑मन्तमश्वि॒ना ब॒र्हिः सी॑दतं नरा।
ता म॑न्दसा॒ना मनु॑षो दुरो॒ण आ नि पा॑तं॒ वेद॑सा॒ वयः॑ ॥ २ ॥
आ वां॒ विश्वा॑भिरू॒तिभिः॑ प्रि॒यमे॑धा अहूषत ।
ता व॒र्तिर्या॑त॒मुप॑ वृ॒क्तब॑र्हिषो॒ जुष्टं॑ य॒ज्ञं दिवि॑ष्टिषु ॥ ३ ॥
पिब॑तं॒ सोमं॒ मधु॑मन्तमश्वि॒ना ब॒र्हिः सी॑दतं सु॒मत्।
ता वा॑वृधा॒ना उप॑ सुष्टु॒तिं दि॒वो ग॒न्तं गौ॒रावि॒वेरि॑णम् ॥ ४ ॥
आ नू॒नं या॑तमश्वि॒नाश्वे॑भिः प्रुषि॒तप्सु॑भिः ।
दस्रा॒ हिर॑ण्यवर्तनी शुभस्पती पा॒तं सोम॑मृतावृधा ॥ ५ ॥
व॒यं हि वां॒ हवा॑महे विप॒न्यवो॒ विप्रा॑सो॒ वाज॑सातये।
ता व॒ल्गू द॒स्रा पु॑रु॒दंस॑सा धि॒याश्वि॑ना श्रु॒ष्ट्या ग॑तम् ॥ ६ ॥

[८८] अष्टाशीतितमं सूक्तम्

ऋषिः—नोधा ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१, ३ बृहती; २, ४ पङ्क्तिः; ५ निचृद्बृहती; ६ विराट्पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१, ३, ५ मध्यमः; २, ४, ६ पञ्चमः ॥

अथ एकादशो वर्गः ॥ ११ ॥

तं वो॑ द॒स्ममृ॑ती॒षहं॒ वसो॑र्मन्दा॒नमन्ध॑सः ।
अ॒भि व॒त्सं न स्वस॑रेषु धे॒नव॒ इन्द्रं॑ गी॒र्भिर्न॑वामहे ॥ १ ॥
द्यु॒क्षं सु॒दानुं॒ तवि॑षीभि॒रावृ॑तं गि॒रिं न पु॑रु॒भोज॑सम् ।
क्षु॒मन्तं॒ वाजं॑ श॒तिनं॑ सह॒स्रिणं॑ म॒क्षू गोम॑न्तमीमहे ॥ २ ॥
न त्वा॑ बृ॒हन्तो॒ अद्र॑यो॒ वर॑न्त इन्द्र वी॒ळवः॑ ।
यद्दित्स॑सि स्तु॒वते॒ माव॑ते॒ वसु॒ नकि॒ष्टदा मि॑नाति ते ॥ ३ ॥
योद्धा॑सि॒ क्रत्वा॒ शव॑सो॒त दं॒सना॒ विश्वा॑ जा॒ताभि म॒ज्मना॑।
आ त्वा॒यम॒र्क ऊ॒तये॑ ववर्तति॒ यं गोत॑मा॒ अजी॑जनन् ॥ ४ ॥
प्र हि रि॑रि॒क्ष ओज॑सा दि॒वो अन्ते॑भ्य॒स्परि॑ ।
न त्वा॑ विव्याच॒ रज॑ इन्द्र॒ पार्थि॑व॒मनु॑ स्व॒धां व॑वक्षिथ ॥ ५ ॥
नकि॒ः परि॑ष्टिर्मघवन्म॒घस्य॑ ते॒ यद्दा॒शुषे॑ दश॒स्यसि॑ ।
अ॒स्माकं॑ बोध्यु॒चथ॑स्य चोदि॒ता मंहि॑ष्ठो॒ वाज॑सातये ॥ ६ ॥

[८९] एकोननवतितमं सूक्तम्

ऋषिः—नृमेधपुरुमेधौ ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१, ७ बृहती; २ पादनिचृत्पङ्क्तिः; ३ निचृद्बृहती; ४ विराट्पङ्क्तिः; ५ विराडनुष्टुप्; ६ निचृदनुष्टुप् ॥ स्वरः—१, ३, ७ मध्यमः; २, ४ पञ्चमः; ५, ६ गान्धारः ॥

अथ द्वादशो वर्गः ॥ १२ ॥

बृ॒हदिन्द्रा॑य गायत॒ मरु॑तो वृत्र॒हन्त॑मम् ।
येन॒ ज्योति॒रज॑नयन्नृता॒वृधो॑ दे॒वं दे॒वाय॒ जागृ॑वि ॥ १ ॥
अपा॑धमद॒भिश॑स्तीरशस्ति॒हाथेन्द्रो॑ द्यु॒म्न्याभ॑वत् ।
दे॒वास्त॑ इन्द्र स॒ख्याय॑ येमिरे॒ बृह॑द्भानो॒ मरु॑द्गण ॥ २ ॥
प्र व॒ इन्द्रा॑य बृह॒ते मरु॑तो॒ ब्रह्मा॑र्चत ।
वृ॒त्रं ह॑नति वृत्र॒हा श॒तक्र॑तु॒र्वज्रे॑ण श॒तप॑र्वणा ॥ ३ ॥
अ॒भि प्र भ॑र धृष॒ता धृ॑षन्मनः॒ श्रव॑श्चित्ते असद् बृ॒हत्।
अर्ष॒न्त्वापो॒ जव॑सा॒ वि मा॒तरो॒ हनो॑ वृ॒त्रं जया॒ स्वः॑ ॥ ४ ॥
यज्जाय॑था अपूर्व्य॒ मघ॑वन्वृत्र॒हत्या॑य ।
तत्पृ॑थि॒वीम॑प्रथय॒स्तद॑स्तभ्ना उ॒त द्याम् ॥ ५ ॥
तत्ते॑ य॒ज्ञो अ॑जायत॒ तद॒र्क उ॒त हस्कृ॑तिः ।
तद्विश्व॑मभि॒भूर॑सि॒ यज्जा॒तं यच्च॒ जन्त्व॑म् ॥ ६ ॥
आ॒मासु॑ प॒क्वमैर॑य॒ आ सूर्यं॑ रोहयो दि॒वि ।
घ॒र्मं न साम॑न्तपता सुवृ॒क्तिभि॒र्जुष्टं॒ गिर्व॑णसे बृ॒हत् ॥ ७ ॥

[९०] नवतितमं सूक्तम्

ऋषिः—नृमेधपुरुमेधौ ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१ निचृद्बृहती; २, ४ पादनिचृत्पङ्क्तिः; ३ विराड्बृहती; ५ पादनिचृद्बृहती; ६ निचृत्पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१, ३, ५ मध्यमः; २, ४, ६ गान्धारः ॥

अथ त्रयोदशो वर्गः ॥ १३ ॥

आ नो॒ विश्वा॑सु॒ हव्य॒ इन्द्रः॑ स॒मत्सु॑ भूषतु।
उप॒ ब्रह्मा॑णि॒ सव॑नानि वृत्र॒हा प॑रम॒ज्या ऋची॑षमः ॥ १ ॥
त्वं दा॒ता प्र॑थ॒मो राध॑साम॒स्यसि॑ स॒त्य ई॑शान॒कृत्।
तु॒वि॒द्यु॒म्नस्य॒ युज्या वृ॑णीमहे पु॒त्रस्य॒ शव॑सो म॒हः ॥ २ ॥
ब्रह्मा॑ त इन्द्र गिर्वणः क्रि॒यन्ते॒ अन॑तिद्भुता।
इ॒मा जु॑षस्व हर्यश्व॒ योज॒नेन्द्र॒ या ते॒ अम॑न्महि ॥ ३ ॥
त्वं हि स॒त्यो म॑घव॒न्नना॑नतो वृ॒त्रा भूरि॑ न्यृ॒ञ्जसे॑।
स त्वं श॑विष्ठ वज्रहस्त दा॒शुषे॒ऽर्वाञ्चं॑ र॒यिमा कृ॑धि ॥ ४ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

त्वमिन्द्र यशा अस्यृजीषी शवसस्पते ।
त्वं वृत्राणि हंस्यप्रतीन्येक इदनुत्ता चर्षणीधृता ॥ ५ ॥
तमु त्वा नूनमसुर प्रचेतसं राधो भागमिवेमहे।
महीवः कृत्तिः शरणा त इन्द्र प्र ते सुम्ना नो अश्नवन् ॥ ६ ॥

[९१] एकनवतितमं सूक्तम्

ऋषिः—अपालात्रेयी ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१ आर्चीस्वराट्पङ्क्तिः; २ पङ्क्तिः; ३ निचृदनुष्टुप्; ४ अनुष्टुप्; ५, ६ विराडनुष्टुप्; ७ पादनिचृदनुष्टुप् ॥ स्वरः—१, २ पञ्चमः; ३-७ गान्धारः ॥

अथ चतुर्दशो वर्गः ॥ १४ ॥

कन्याइव वारवायती सोममपि स्रुताविदत् ।
अस्तं भरन्त्यब्रवीदिन्द्राय सुनवै त्वा शक्राय सुनवै त्वा ॥ १ ॥
असौ य एषि वीरको गृहंगृहं विचाकशत् ।
इमं जम्भसुतं पिब धानावन्तं करम्भिणमपूपवन्तमुक्थिनम् ॥ २ ॥
आ चन त्वा चिकित्सामोऽधि चन त्वा नेमसि ।
शनैरिव शनकैरिवेन्द्रायेन्दो परि स्रव ॥ ३ ॥
कुविच्छकत्कुवित्करत्कुवित्नो वस्यसस्करत् ।
कुवित्पतिद्विषो यतीरिन्द्रेण संगमामहै ॥ ४ ॥
इमानि त्रीणि विष्टपा तानीन्द्र वि रोहय ।
शिरस्ततस्योर्वरामादिदं म उपोदरे ॥ ५ ॥
असौ च या न उर्वरादिमां तन्वं मम ।
अथो ततस्य यच्छिरः सर्वा ता रोमशा कृधि ॥ ६ ॥
खे रथस्य खेऽनसः खे युगस्य शतक्रतो ।
अपालामिन्द्र त्रिष्पूत्व्यकृणोः सूर्यत्वचम् ॥ ७ ॥

[९२] द्विनवतितमं सूक्तम्

ऋषिः—श्रुतकक्षः सुकक्षो वा ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१ विराडनुष्टुप्; २, ४, ८-१२, २२, २५-२७, ३० निचृद्गायत्री; ३, ७, ३१, ३३ पादनिचृद्गायत्री; ५ आर्चीस्वराड्गायत्री; ६, १३-१५, २८ विराड्गायत्री; १६-२१, २३, २४, २९, ३२ गायत्री ॥ स्वरः—१ गान्धारः; २-३३ षड्जः ॥

अथ पञ्चदशो वर्गः ॥ १५ ॥

पान्तमा वो अन्धस इन्द्रमभि प्र गायत ।
विश्वासाहं शतक्रतुं मंहिष्ठं चर्षणीनाम् ॥ १ ॥
पुरूहूतं पुरुष्टुतं गाथान्यं सनश्रुतम्। इन्द्र इति ब्रवीतन ॥ २ ॥

इन्द्र इन्नो महानां दाता वाजानां नृतुः। महाँ अभिज्ञा यमत् ॥ ३ ॥
अपादु शिप्रिन्धसः सुदक्षस्य प्रहोषिणः। इन्दोरिन्द्रो यवाशिरः ॥ ४ ॥
तम्वभि प्राचूतेन्द्रं सोमस्य पीतये। तदिद्धर्यस्य वर्धनम् ॥ ५ ॥

अथ षोडशो वर्गः ॥ १६ ॥

अस्य पीत्वा मदानां देवो देवस्यौजसा। विश्वाभि भुवना भुवत् ॥ ६ ॥
त्यमु वः सत्रासाहं विश्वासु गीर्ष्वायतम्। आ च्यावयस्यूतये ॥ ७ ॥
युध्मं सन्तमनर्वाणं सोमपामनपच्युतम्। नरमवार्यक्रतुम् ॥ ८ ॥
शिक्षा ण इन्द्र राय आ पुरु विद्वाँ ऋचीषम। अवा नः पार्ये धने ॥ ९ ॥
अतश्चिदिन्द्र ण उपा याहि शतवाजया। इषा सहस्रवाजया ॥ १० ॥

अथ सप्तदशो वर्गः ॥ १७ ॥

अर्याम धीवतो धियोऽवैद्धिः शक्र गोदरे। जयेम पृत्सु वज्रिवः ॥ ११ ॥
वयमु त्वा शतक्रतो गावो न यवसेष्वा। उक्थेषु रणयामसि ॥ १२ ॥
विश्वा हि मर्त्यत्वनानुकामा शतक्रतो। अगन्म वज्रिन्नाशसः ॥ १३ ॥
त्वे सु पुत्र शवसोऽवृत्रन्कामकातयः। न त्वामिन्द्राति रिच्यते ॥ १४ ॥
स नो वृषन्त्सनिष्टया सं घोरया द्रविल्वा। धियाविड्ढि पुरन्ध्या ॥ १५ ॥

अथ अष्टादशो वर्गः ॥ १८ ॥

यस्ते नूनं शतक्रतविन्द्र द्युम्नितमो मदः। तेन नूनं मदे मदेः ॥ १६ ॥
यस्ते चित्रश्रवस्तमो य इन्द्र वृत्रहन्तमः। य ओजोदातमो मदः ॥ १७ ॥
विद्मा हि यस्ते अद्रिवस्त्वादत्तः सत्य सोमपाः। विश्वासु दस्म कृष्टिषु ॥ १८ ॥
इन्द्राय मद्वने सुतं परि ष्टोभन्तु नो गिरः। अर्कमर्चन्तु कारवः ॥ १९ ॥
यस्मिन्विश्वा अधि श्रियो रणन्ति सप्त संसदः। इन्द्रं सुते हवामहे ॥ २० ॥

अथ एकोनविंशो वर्गः ॥ १९ ॥

त्रिकद्रुकेषु चेतनं देवासो यज्ञमत्नत। तमिद्वर्धन्तु नो गिरः ॥ २१ ॥
आ त्वा विशन्त्विन्दवः समुद्रमिव सिन्धवः। न त्वामिन्द्राति रिच्यते ॥ २२ ॥
विव्यक्थ महिना वृषन्भक्षं सोमस्य जागृवे। य इन्द्र जठरेषु ते ॥ २३ ॥
अरं त इन्द्र कुक्षये सोमो भवतु वृत्रहन्। अरं धामभ्य इन्दवः ॥ २४ ॥
अरमश्वाय गायति श्रुतकक्षो अरं गवे। अरमिन्द्रस्य धाम्ने ॥ २५ ॥
अरं हि ष्मा सुतेषु णः सोमेष्विन्द्र भूषसि। अरं ते शक्र दावने ॥ २६ ॥

अथ विंशो वर्गः ॥ २० ॥

पुराकात्त्वाच्यिदद्रिवस्त्वां नक्षन्त नो गिरः। अरं गमाम ते वयम् ॥ २७ ॥
एवा ह्यसि वीरयुरेवा शूर उत स्थिरः। एवा ते राध्यं मनः ॥ २८ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

एवा रातिस्तुवीमघ विश्वेभिर्धायि धातृभिः। अधा चिदिन्द्र मे सचा ॥ २९ ॥
मो षु ब्रह्मेव तन्द्रयुर्भुवो वाजानां पते। मत्स्वा सुतस्य गोमतः ॥ ३० ॥
मा न इन्द्राभ्या३ दिशः सूरो अक्तुष्वा यमन्। त्वा युजा वनेम तत् ॥ ३१ ॥
त्वयेदिन्द्र युजा वयं प्रति ब्रुवीमहि स्पृधः। त्वमस्माकं तव स्मसि ॥ ३२ ॥
त्वामिद्धि त्वायवोऽनुनोनुवतश्चरान्। सखाय इन्द्र कारवः ॥ ३३ ॥

[९३] त्रिनवतितमं सूक्तम्

ऋषिः—सुकक्षः ॥ देवता—१-३३ इन्द्रः; ३४ इन्द्र ऋभवश्च ॥ छन्दः—१, २४, ३३ विराड्गायत्री; २-४, १०, ११, १३, १५, १६, १८, २१, २३, २७-३१ निचृद्गायत्री; ५-९, १२, १४, १७, २०, २२, २५, २६, ३२, ३४ गायत्री; १९ पादनिचृद्गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथ एकविंशो वर्गः ॥ २१ ॥

उद्वेदभि श्रुतामघं वृषभं नर्यापसम्। अस्तारमेषि सूर्य ॥ १ ॥
नव यो नवतिं पुरो बिभेद बाह्वोजसा। अहिं च वृत्रहावधीत् ॥ २ ॥
स न इन्द्रः शिवः सखाश्वावद्गोमद्यवमत्। उरुधारेव दोहते ॥ ३ ॥
यदद्य कच्च वृत्रहन्नुदगा अभि सूर्य। सर्वं तदिन्द्र ते वशे ॥ ४ ॥
यद्वा प्रवृद्ध सत्पते न मरा इति मन्यसे। उतो तत्सत्यमित्तव ॥ ५ ॥

अथ द्वाविंशो वर्गः ॥ २२ ॥

ये सोमासः परावति ये अर्वावति सुन्विरे। सर्वाँस्ताँ इन्द्र गच्छसि ॥ ६ ॥
तमिन्द्रं वाजयामसि महे वृत्राय हन्तवे। स वृषा वृषभो भुवत् ॥ ७ ॥
इन्द्रः स दामने कृत ओजिष्ठः स मदे हितः। द्युम्नी श्लोकी स सोम्यः ॥ ८ ॥
गिरा वज्रो न संभृतः सबलो अनपच्युतः। ववक्ष ऋष्वो अस्तृतः ॥ ९ ॥
दुर्गे चिन्नः सुगं कृधि गृणान इन्द्र गिर्वणः। त्वं च मघवन्वशः ॥ १० ॥

अथ त्रयोविंशो वर्गः ॥ २३ ॥

यस्य ते नू चिदादिशं न मिनन्ति स्वराज्यम्। न देवो नाभिगुर्जनः ॥ ११ ॥
अधा ते अप्रतिष्कुतं देवी शुष्मं सपर्यतः। उभे सुशिप्र रोदसी ॥ १२ ॥
त्वमेतदधारयः कृष्णासु रोहिणीषु च। परुष्णीषु रुशत्पयः ॥ १३ ॥
वि यदहेरधत्विषो विश्वे देवासो अक्रमुः। विदन्मृगस्य ताँ अमः ॥ १४ ॥
आदु मे निवरो भुवद् वृत्रहादिष्ट पौंस्यम्। अजातशत्रुरस्तृतः ॥ १५ ॥

अथ चतुर्विंशो वर्गः ॥ २४ ॥

श्रुतं वो वृत्रहन्तमं प्र शर्धं चर्षणीनाम्। आ शुषे राधसे महे ॥ १६ ॥
अया धिया च गव्यया पुरुणामन्पुरुष्टुत। यत्सोमेसोम आभुवः ॥ १७ ॥
बोधिन्मना इदस्तु नो वृत्रहा भूर्यासुतिः। शृणोतु शक्र आशिषम् ॥ १८ ॥
कया त्वं न ऊत्याभि प्र मन्दसे वृषन्। कया स्तोतृभ्य आ भर ॥ १९ ॥
कस्य वृषा सुते सचा नियुत्वान्वृषभो रणत्। वृत्रहा सोमपीतये ॥ २० ॥

अथ पञ्चविंशो वर्गः ॥ २५ ॥

अभी षु णस्त्वं रयिं मन्दसानः सहस्रिणम्। प्रयन्ता बोधि दाशुषे ॥ २१ ॥
पत्नीवन्तः सुता इम उशन्तो यन्ति वीतये। अपां जग्मिर्निचुम्पुणः ॥ २२ ॥
इष्टा होत्रा असृक्षतेन्द्रं वृधासो अध्वरे। अच्छावभृथमोजसा ॥ २३ ॥
इह त्या सधमाद्या हरी हिरण्यकेश्या। वोळ्हामभि प्रयो हितम् ॥ २४ ॥
तुभ्यं सोमाः सुता इमे स्तीर्णं बर्हिर्विभावसो। स्तोतृभ्य इन्द्रमा वह ॥ २५ ॥

अथ षड्विंशो वर्गः ॥ २६ ॥

आ ते दक्षं वि रोचना दधद्रत्ना वि दाशुषे। स्तोतृभ्य इन्द्रमर्चत ॥ २६ ॥
आ ते दधामीन्द्रियमुक्था विश्वा शतक्रतो। स्तोतृभ्य इन्द्र मृळय ॥ २७ ॥
भद्रंभद्रं न आ भरेषमूर्जं शतक्रतो। यदिन्द्र मृळयासि नः ॥ २८ ॥
स नो विश्वान्या भर सुवितानि शतक्रतो। यदिन्द्र मृळयासि नः ॥ २९ ॥
त्वामिद् वृत्रहन्तम सुतावन्तो हवामहे। यदिन्द्र मृळयासि नः ॥ ३० ॥

अथ सप्तविंशो वर्गः ॥ २७ ॥

उप नो हरिभिः सुतं याहि मदानां पते। उप नो हरिभिः सुतम् ॥ ३१ ॥
द्विता यो वृत्रहन्तमो विद इन्द्रः शतक्रतुः। उप नो हरिभिः सुतम् ॥ ३२ ॥
त्वं हि वृत्रहन्नेषां पाता सोमानामसि। उप नो हरिभिः सुतम् ॥ ३३ ॥
इन्द्र इषे ददातु न ऋभुक्षणमृभुं रयिम्। वाजी ददातु वाजिनम् ॥ ३४ ॥

दशमोऽनुवाकः [९४] चतुर्नवतितमं सूक्तम्

ऋषिः—बिन्दुः पूतदक्षो वा ॥ देवता—मरुतः ॥ छन्दः—१, २, ८ विराड्गायत्री; ३, ५, ७, ९ गायत्री; ४, ६, १०-१२ निचृद्गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथ अष्टाविंशो वर्गः ॥ २८ ॥

गौर्धयति मरुतां श्रवस्युर्माता मघोनाम्। युक्ता वह्नी रथानाम् ॥ १ ॥
यस्या देवा उपस्थे व्रता विश्वे धारयन्ते। सूर्यामासा दृशे कम् ॥ २ ॥
तत्सु नो विश्वे अर्य आ सदा गृणन्ति कारवः। मरुतः सोमपीतये ॥ ३ ॥
अस्ति सोमो अयं सुतः पिबन्त्यस्य मरुतः। उत स्वराजो अश्विना ॥ ४ ॥
पिबन्ति मित्रो अर्यमा तना पूतस्य वरुणः। त्रिषधस्थस्य जावतः ॥ ५ ॥
उतो न्वस्य जोषमाँ इन्द्रः सुतस्य गोमतः प्रातर्होतेव मत्सति ॥ ६ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अथ एकोनत्रिंशो वर्गः ॥ २९ ॥

कदत्विषन्त सूर्यस्तिर आपइव स्त्रिधः । अर्षन्ति पूतदक्षसः ॥ ७ ॥
कद्वो अद्य महानां देवानामवो वृणे । त्मना च दस्मवर्चसाम् ॥ ८ ॥
आ ये विश्वा पार्थिवानि पप्रथन्रोचना दिवः । मरुतः सोमपीतये ॥ ९ ॥
त्यान्नु पूतदक्षसो दिवो वो मरुतो हुवे । अस्य सोमस्य पीतये ॥ १० ॥
त्यान्नु ये वि रोदसी तस्तभुर्मरुतो हुवे । अस्य सोमस्य पीतये ॥ ११ ॥
त्यं नु मारुतं गणं गिरिष्ठां वृषणं हुवे । अस्य सोमस्य पीतये ॥ १२ ॥

[९५] पञ्चनवतितमं सूक्तम्

ऋषिः—तिरश्चीः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१-४, ६, ७ विराडनुष्टुप्; ५, ९ अनुष्टुप्; ८ निचृदनुष्टुप् ॥ स्वरः—गान्धारः ॥

अथ त्रिंशो वर्गः ॥ ३० ॥

आ त्वा गिरो रथीरिवास्थुः सुतेषु गिर्वणः ।
अभि त्वा समनूषतेन्द्र वत्सं न मातरः ॥ १ ॥
आ त्वा शुक्रा अचुच्यवुः सुतास इन्द्र गिर्वणः ।
पिबा त्वास्यान्धसः इन्द्र विश्वासु ते हितम् ॥ २ ॥
पिबा सोमं मदाय कमिन्द्र श्येनाभृतं सुतम् ।
त्वं हि शश्वतीनां पती राजा विशामसि ॥ ३ ॥
श्रुधी हवं तिरश्च्या इन्द्र यस्त्वा सपर्यति ।
सुवीर्यस्य गोमतो रायस्पूर्धि महाँ असि ॥ ४ ॥
इन्द्र यस्ते नवीयसीं गिरं मन्द्रामजीजनत् ।
चिकित्विन्मनसं धियं प्रत्नामृतस्य पिप्युषीम् ॥ ५ ॥

अथ एकत्रिंशो वर्गः ॥ ३१ ॥

तमु ष्टवाम यं गिर इन्द्रमुक्थानि वावृधुः ।
पुरूण्यस्य पौंस्या सिषासन्तो वनामहे ॥ ६ ॥
एतो न्विन्द्रं स्तवाम शुद्धं शुद्धेन साम्ना ।
शुद्धैरुक्थैर्वावृध्वांसं शुद्ध आशीर्वान्ममत्तु ॥ ७ ॥
इन्द्र शुद्धो न आ गहि शुद्धः शुद्धाभिरूतिभिः ।
शुद्धो रयिं नि धारय शुद्धो ममद्धि सोम्यः ॥ ८ ॥
इन्द्र शुद्धो हि नो रयिं शुद्धो रत्नानि दाशुषे ।
शुद्धो वृत्राणि जिघ्नसे शुद्धो वाजं सिषाससि ॥ ९ ॥

[९६] षण्णवतितमं सूक्तम्

ऋषिः—तिरश्चीर्द्युतानो वा मरुतः ॥ देवता—१-१४[३], १६-२१ इन्द्रः; १४[४] मरुतः; १५ इन्द्राबृहस्पती ॥ छन्दः—१, २, ५, १३, १४ निचृत्त्रिष्टुप्; ३, ६, ७, १०, ११, १६ विराट्त्रिष्टुप्; ४, १७ पङ्क्तिः; ८, ९, १२ त्रिष्टुप्; १५, १८, १९ पादनिचृत्त्रिष्टुप्; २० निचृत्पङ्क्तिः; २१ विराट् पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१-३, ५-१६, १८, १९ धैवतः; ४, १७, २०, २१ पञ्चमः ॥

अथ द्वात्रिंशो वर्गः ॥ ३२ ॥

अस्मा उषास आतिरन्त यामन्निन्द्राय नक्तमूर्म्याः सुवाचः ।
अस्मा आपो मातरः सप्त तस्थुर्नृभ्यस्तराय सिन्धवः सुपाराः ॥ १ ॥
अतिविद्धा विथुरेणा चिदस्त्रा त्रिः सप्त सानु संहिता गिरीणाम् ।
न तद्देवो न मर्त्यस्तुतुर्याद्यानि प्रवृद्धो वृषभश्चकार ॥ २ ॥
इन्द्रस्य वज्र आयसो निमिश्ल इन्द्रस्य बाह्वोर्भूयिष्ठमोजः ।
शीर्षन्निन्द्रस्य क्रतवो निरेक आसन्नेषन्त श्रुत्या उपाके ॥ ३ ॥
मन्ये त्वा यज्ञियं यज्ञियानां मन्ये त्वा च्यवनमच्युतानाम् ।
मन्ये त्वा सत्वनामिन्द्र केतुं मन्ये त्वा वृषभं चर्षणीनाम् ॥ ४ ॥
आ यद्वज्रं बाह्वोरिन्द्र धत्से मदच्युतमहये हन्तवा उ ।
प्र पर्वता अनवन्त प्र गावः प्र ब्रह्माणो अभिनक्षन्त इन्द्रम् ॥ ५ ॥

अथ त्रयस्त्रिंशो वर्गः ॥ ३३ ॥

तमु ष्टवाम य इमा जजान विश्वा जातान्यवराण्यस्मात् ।
इन्द्रेण मित्रं दिधिषेम गीर्भिरुपो नमोभिर्वृषभं विशेम ॥ ६ ॥
वृत्रस्य त्वा श्वसथादीषमाणा विश्वे देवा अजहुर्ये सखायः ।
मरुद्भिरिन्द्र सख्यं ते अस्त्वथेमा विश्वाः पृतना जयासि ॥ ७ ॥
त्रिः षष्टिस्त्वा मरुतो वावृधाना उस्राइव राशयो यज्ञियासः ।
उप त्वेमः कृधि नो भागधेयं शुष्मं त एना हविषा विधेम ॥ ८ ॥
तिग्ममायुधं मरुतामनीकं कस्त इन्द्र प्रति वज्रं दधर्ष ।
अनायुधासो असुरा अदेवाश्चक्रेण ताँ अप वप ऋजीषिन् ॥ ९ ॥
मह उग्राय तवसे सुवृक्तिं प्रेरय शिवतमाय पश्वः ।
गिर्वीहसे गिर इन्द्राय पूर्वीर्धेहि तन्वे कुविदङ्ग वेदत् ॥ १० ॥

अथ चतुस्त्रिंशो वर्गः ॥ ३४ ॥

उक्थवाहसे विभ्वे मनीषां द्रुणा न पारमीरया नदीनाम् ।
नि स्पृश धिया तन्वि श्रुतस्य जुष्टतरस्य कुविदङ्ग वेदत् ॥ ११ ॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तद्विविद्धि यत्त इन्द्रो जुजोषत्स्तुहि सुष्टुतिं नमसा विवास।
उप भूष जरितर्मा रुवण्यः श्रावया वाचं कुविदङ्ग वेदत्॥ १२॥
अव द्रप्सो अंशुमतीमतिष्ठदियानः कृष्णो दशभिः सहस्रैः।
आवत्तमिन्द्रः शच्या धमन्तमप स्नेहितीर्नृमणा अधत्त ॥ १३॥
द्रप्समपश्यं विषुणे चरन्तमुपह्वरे नद्यो अंशुमत्याः।
नभो न कृष्णमवतस्थिवांसमिष्यामि वो वृषणो युध्यताजौ॥ १४॥
अधं द्रप्सो अंशुमत्या उपस्थेऽधारयत्तन्वं तित्विषाणः।
विशो अदेवीरभ्या३ चरन्तीर्बृहस्पतिना युजेन्द्रः ससाहे ॥ १५॥

अथ पञ्चत्रिंशो वर्गः॥ ३५॥

त्वं ह त्यत्सप्तभ्यो जायमानोऽशत्रुभ्यो अभवः शत्रुरिन्द्र।
गूळ्हे द्यावापृथिवी अन्वविन्दो विभुमद्भ्यो भुवनेभ्यो रणं धाः॥ १६॥
त्वं ह त्यदप्रतिमानमोजो वज्रेण वज्रिन्धृषितो जघन्थ।
त्वं शुष्णस्यावातिरो वधत्रैस्त्वं गा इन्द्र शच्येदविन्दः ॥ १७॥
त्वं ह त्यद् वृषभ चर्षणीनां घनो वृत्राणां तविषो बभूथ।
त्वं सिन्धूँरसृजस्तस्तभानान्त्वमपो अजयो दासपत्नीः ॥ १८॥
स सुक्रतू रणिता यः सुतेष्वनुत्तमन्युर्यो अहेव रेवान्।
य एक इन्नर्यपांसि कर्ता स वृत्रहा प्रतीदन्यमाहुः ॥ १९॥
स वृत्रहेन्द्रश्चर्षणीधृत्तं सुष्टुत्या हव्यं हुवेम।
स प्राविता मघवा नोऽधिवक्ता स वाजस्य श्रवस्यस्य दाता॥ २०॥
स वृत्रहेन्द्र ऋभुक्षाः सद्यो जज्ञानो हव्यो बभूव।
कृण्वन्नपांसि नर्या पुरूणि सोमो न पीतो हव्यः सखिभ्यः॥ २१॥

[९७] सप्तनवतितमं सूक्तम्

ऋषिः—रेभः काश्यपः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१, ११ विराड्बृहती; २, ६, ९, १२ निचृद्बृहती; ३ भुरिगनुष्टुप्; ४, ५, ८ बृहती; ७ अनुष्टुप्; १० भुरिग्जगती; १३ अतिजगती; १४ विराट्त्रिष्टुप्; १५ ककुम्मतीजगती॥ स्वरः—१, २, ४-६, ८, ९, ११, १२ मध्यमः; ३, ७ गान्धारः; १०, १३, १५ निषादः; १४ धैवतः॥

अथ षट्त्रिंशो वर्गः॥ २६॥

या इन्द्र भुज आभरः स्वर्वाँ असुरेभ्यः।
स्तोतारमिन्मघवन्नस्य वर्धय ये च त्वे वृक्तबर्हिषः॥ १॥
यमिन्द्र दधिषे त्वमश्वं गां भागमव्ययम्।
यजमाने सुन्वति दक्षिणावति तस्मिन्तं धेहि मा पणौ ॥ २॥
य इन्द्र सस्त्यव्रतोऽनुष्वापमदेवयुः।
स्वैः ष एवैर्मुमुरत्पोष्यं रयिं सनुतर्धेहि तं ततः॥ ३॥
यच्छक्रासि परावति यदर्वावति वृत्रहन्।
अतस्त्वा गीर्भिर्द्युगदिन्द्र केशिभिः सुतावाँ आ विवासति॥ ४॥
यद्वासि रोचने दिवः समुद्रस्याधि विष्टपि।
यत्पार्थिवे सदने वृत्रहन्तम यदन्तरिक्ष आ गहि ॥ ५॥

अथ सप्तत्रिंशो वर्गः॥ ३७॥

स नः सोमेषु सोमपाः सुतेषु शवसस्पते।
मादयस्व राधसा सूनृतावतेन्द्र राय परीणसा ॥ ६॥
मा नं इन्द्र परा वृणग्भवा नः सधमाद्यः।
त्वं नं ऊती त्वमिन्न आप्यं मा नं इन्द्र परा वृणक् ॥ ७॥
अस्मे इन्द्र सचा सुते नि षदा पीतये मधु।
कृधी जरित्रे मघवन्नवो महदस्मे इन्द्र सचा सुते ॥ ८॥
न त्वा देवासं आशत न मर्त्यासो अद्रिवः।
विश्वा जातानि शवसाभिभूरसि न त्वा देवासं आशत ॥ ९॥
विश्वाः पृतना अभिभूतरं नरं सजूस्ततक्षुरिन्द्रं जजनुश्च राजसे।
क्रत्वा वरिष्ठं वर आमुरिमुतोग्रमोजिष्ठं तवसं तरस्विनम् ॥ १०॥

अथ अष्टत्रिंशो वर्गः॥ ३८॥

समी रेभासो अस्वरन्निन्द्रं सोमस्य पीतये।
स्वर्पतिं यदीं वृधे धृतव्रतो ह्योजसा समूतिभिः ॥ ११॥
नेमिं नमन्ति चक्षसा मेषं विप्रा अभिस्वरा।
सुदीतयो वो अद्रुहोऽपि कर्णे तरस्विनः समृक्वभिः ॥ १२॥
तमिन्द्रं जोहवीमि मघवानमुग्रं सत्रा दधानमप्रतिष्कुतं शवांसि।
मंहिष्ठो गीर्भिरा च यज्ञियो ववर्तद्राये नो विश्वा सुपथा कृणोतु वज्री॥ १३॥
त्वं पुरं इन्द्र चिकिदेना व्योजसा शविष्ठ शक्र नाशयध्यै।
त्वद्विश्वानि भुवनानि वज्रिन्द्यावा रेजेते पृथिवी च भीषा ॥ १४॥
तन्न ऋतमिन्द्र शूर चित्र पात्वपो न वज्रिन्दुरितादि पर्षि भूरि।
कदा न इन्द्र राय आ दशस्येर्विश्वप्न्यस्य स्पृहयाय्यस्य राजन्॥ १५॥

इति षष्ठाष्टके षष्ठोऽध्यायः॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अथ सप्तमोऽध्यायः

[९८] अष्टनवतितमं सूक्तम्

ऋषिः—नृमेधः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१, ५ उष्णिक्; २, ६ ककुम्मती-उष्णिक्; ३, ७, ८, १०-१२ विराडुष्णिक्; ४ पादनिचृदुष्णिक्; ९ निचृदुष्णिक् ॥ स्वरः—ऋषभः ॥

अथ प्रथमो वर्गः ॥ १ ॥

इन्द्रा॑य॒ साम॑ गायत॒ विप्रा॑य बृह॒ते बृहत्। ध॒र्म॒कृते॑ विप॒श्चिते॑ पन॒स्यवे॑ ॥ १ ॥
त्वमि॑न्द्राभि॒भूर॑सि॒ त्वं सूर्य॑मरोचयः। वि॒श्वक॑र्मा वि॒श्वदे॑वो म॒हाँ अ॑सि ॥ २ ॥
वि॒भ्राज॒ञ्ज्योति॑षा॒ स्व१॒॑रग॑च्छो रोच॒नं दि॒वः। दे॒वास्त॑ इन्द्र स॒ख्याय॑ येमिरे ॥ ३ ॥
एन्द्र॑ नो गधि प्रि॒यः स॑त्रा॒जिदगो॑ह्यः। गि॒रिर्न वि॒श्वत॑स्पृ॒थुः पति॑र्दि॒वः ॥ ४ ॥
अ॒भि हि स॑त्य सोमपा उ॒भे ब॒भूथ॒ रोद॑सी। इन्द्रासि॑ सुन्व॒तो वृ॒धः पति॑र्दि॒वः ॥ ५ ॥
त्वं हि शश्व॑तीना॒मिन्द्र॑ द॒र्ता पु॒रामसि॑। ह॒न्ता दस्यो॒र्मनो॑र्वृ॒धः पति॑र्दि॒वः ॥ ६ ॥

अथ द्वितीयो वर्गः ॥ २ ॥

अधा॒ ही॑न्द्र गिर्वण॒ उप॑ त्वा॒ कामा॑न्म॒हः स॑सृ॒ज्महे॑। उ॒देव॒ यन्त॑ उ॒दभिः॑ ॥ ७ ॥
वार्ण त्वा॑ य॒व्याभि॒र्वर्ध॑न्ति शूर॒ ब्रह्मा॑णि। वा॒वृ॒ध्वांसं॑ चिदद्रिवो दि॒वेदि॑वे ॥ ८ ॥
यु॒ञ्जन्ति॒ हरी॑ इषि॒रस्य॒ गाथ॑यो॒रौ रथ॑ उ॒रुयु॑गे। इ॒न्द्र॒वाहा॑ वचो॒युजा॑ ॥ ९ ॥
त्वं न॑ इ॒न्द्रा भ॑रँ॒ ओजो॑ नृ॒म्णं श॑तक्रतो विचर्षणे। आ वी॒रं पृ॑तना॒षह॑म् ॥ १० ॥
त्वं हि नः॑ पि॒ता व॑सो॒ त्वं मा॒ता श॑तक्रतो ब॒भूवि॑थ। अधा॑ ते सु॒म्नमी॑महे ॥ ११ ॥
त्वां शु॑ष्मिन्पुरुहूत वाज॒यन्त॒मुप॑ ब्रुवे शतक्रतो। स नो॑ रास्व सु॒वीर्य॑म् ॥ १२ ॥

[९९] नवनवतितमं सूक्तम्

ऋषिः—नृमेधः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१ आर्चीस्वराड्बृहती; २ बृहती; ३, ७ निचृद्बृहती; ४, ६, ८ पङ्क्तिः; ५ पादनिचृद्बृहती ॥ स्वरः—१-३, ५, ७ गान्धारः; ४, ६, ८ पञ्चमः ॥

अथ तृतीयो वर्गः ॥ ३ ॥

त्वामि॒दा ह्यो नरोऽपी॑प्यन्वज्रि॒न्भूर्ण॑यः ।
स इ॑न्द्र॒ स्तोम॑वाहसामि॒ह श्रु॒ध्युप॒ स्वस॑र॒मा ग॑हि ॥ १ ॥
मत्स्वा॑ सुशिप्र हरिव॒स्तदी॑महे॒ त्वे आ भू॑षन्ति वे॒धसः॑।
तव॒ श्रवां॑स्युप॒मान्यु॒क्थ्या॑ सु॒तेष्वि॑न्द्र गिर्वणः ॥ २ ॥
श्राय॑न्तइव॒ सूर्यं॒ विश्वेदिन्द्र॑स्य भक्षत ।
वसू॑नि जा॒ते जन॑मान॒ ओज॑सा॒ प्रति॑ भा॒गं न दी॑धिम ॥ ३ ॥
अन॑र्शरातिं वसु॒दामुप॑ स्तुहि भ॒द्रा इन्द्र॑स्य रा॒तयः॑।
सो अ॑स्य॒ कामं॑ विध॒तो न रो॑षति॒ मनो॑ दा॒नाय॑ चो॒दय॑न् ॥ ४ ॥
त्वमि॑न्द्र॒ प्रतू॑र्तिष्व॒भि विश्वा॑ असि॒ स्पृधः॑ ।
अ॒श॒स्ति॒हा ज॑नि॒ता वि॑श्व॒तूर॑सि॒ त्वं तू॑र्य तरुष्य॒तः ॥ ५ ॥
अनु॑ ते॒ शुष्मं॑ तु॒रय॑न्तमीयतुः क्षो॒णी शिशुं॒ न मा॒तरा॑।
विश्वा॑स्ते॒ स्पृधः॑ स्नथयन्त म॒न्यवे॑ वृ॒त्रं यदि॑न्द्र॒ तूर्व॑सि ॥ ६ ॥
इ॒त ऊ॒ती वो॑ अ॒जरं॑ प्रहे॒तार॒मप्र॑हितम् ।
आ॒शुं जेता॑रं॒ हेता॑रं र॒थीत॑म॒मतू॑र्तं तुग्र्या॒वृध॑म् ॥ ७ ॥
इ॒ष्क॒र्तार॒मनि॑ष्कृतं॒ सह॑स्कृतं श॒तमू॑तिं श॒तक्र॑तुम्।
स॒मा॒नमिन्द्र॒मव॑से हवामहे॒ वस॑वानं वसू॒जुव॑म् ॥ ८ ॥

[१००] शततमं सूक्तम्

ऋषिः—१-३, ६-१२ नेमो भार्गवः; ४, ५ इन्द्रः ॥ देवता—१-९, १२ इन्द्रः; १०, ११ वाक् ॥ छन्दः—१, ४ पादनिचृत्त्रिष्टुप्; २, ११ निचृत्त्रिष्टुप्; ३, ५, १२ त्रिष्टुप्; ६ निचृज्जगती; ७, ८ अनुष्टुप्; ९ निचृदनुष्टुप्; १० विराट्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१-५, १०-१२ धैवतः; ६ निषादः; ७-९ गान्धारः ॥

अथ चतुर्थो वर्गः ॥ ४ ॥

अ॒यं त॑ एमि त॒न्वा॑ पु॒रस्ता॒द्विश्वे॑ दे॒वा अ॒भि मा॑ यन्ति प॒श्चात्।
य॒दा मह्यं॒ दीध॑रो भा॒गमि॒न्द्रादिन्मया॑ कृणवो वी॒र्या॑णि ॥ १ ॥
दधा॑मि ते॒ मधु॑नो भ॒क्षमग्रे॑ हि॒तस्ते॑ भा॒गः सु॒तो अ॑स्तु॒ सोमः॑।
अस॑श्च॒ त्वं द॑क्षिण॒तः सखा॒ मेऽधा॑ वृ॒त्राणि॑ जङ्घनाव भूरि॑ ॥ २ ॥
प्र सु स्तोमं॑ भरत वाज॒यन्त॒ इन्द्रा॑य स॒त्यं यदि॑ स॒त्यमस्ति॑।
नेन्द्रो॑ अ॒स्तीति॒ नेम॑ उ त्व आह॒ क ईं॑ ददर्श॒ कम॒भि ष्ट॑वाम ॥ ३ ॥
अ॒यम॑स्मि जरितः॒ पश्य॑ मे॒ह विश्वा॑ जा॒तान्य॒भ्य॑स्मि म॒ह्ना।
ऋ॒तस्य॑ मा प्र॒दिशो॑ वर्धयन्त्यादर्दि॒रो भुव॑ना दर्दरीमि ॥ ४ ॥
आ यन्मा॑ वे॒ना अरु॑हन्नृ॒तस्यँ॒ एक॒मासी॑नं हर्य॒तस्य॑ पृ॒ष्ठे।
मन॑श्चिन्मे हृ॒द आ प्रत्य॑वोच॒दचि॑क्रद॒ञ्छिशु॑मन्तः॒ सखा॑यः ॥ ५ ॥
विश्वेत्ता ते॒ सव॑नेषु प्र॒वाच्या॒ या च॒कर्थ॑ मघवन्निन्द्र सुन्व॒ते।
पारा॑वतं॒ यत्पु॑रुसंभृ॒तं वस्व॒पावृ॑णोः शर॒भाय॒ ऋषि॑बन्धवे ॥ ६ ॥

अथ पञ्चमो वर्गः ॥ ५ ॥

प्र नू॒नं धा॑वता॒ पृथ॒ङ्नेह यो वो॒ अवा॑वरीत् ।
नि षीं॑ वृ॒त्रस्य॒ मर्म॑णि॒ वज्र॒मिन्द्रो॑ अपीपतत् ॥ ७ ॥
मनो॑जवा॒ अय॑मान आय॒सीम॑तर॒त्पुर॑म् ।
दिवं॑ सु॒प॒र्णो ग॒त्वाय॒ सोमं॑ व॒ज्रिण॒ आभ॑रत् ॥ ८ ॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

समुद्रे अन्तः शयत उद्ना वज्रौ अभीवृतः ।
भरन्त्यस्मै संयतः पुरःप्रस्रवणा बलिम् ॥ ९ ॥
यद्वाग्वदन्त्यविचेतनानि राष्ट्री देवानां निषसाद मन्द्रा ।
चतस्र ऊर्जं दुदुहे पयांसि क्व स्विदस्याः परमं जगाम ॥ १० ॥
देवीं वाचमजनयन्त देवास्तां विश्वरूपाः पशवो वदन्ति ।
सा नो मन्द्रेषमूर्जं दुहाना धेनुर्वाग्स्मानुप सुष्टुतैतु ॥ ११ ॥
सखे विष्णो वितरं वि क्रमस्व द्यौर्देहि लोकं वज्राय विष्कभे ।
हनाव वृत्रं रिणचाव सिन्धूनिन्द्रस्य यन्तु प्रसवे विसृष्टाः ॥ १२ ॥

[१०१] एकोत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—जमदग्निर्भार्गवः ॥ देवता—१-५ मित्रावरुणौ; ५, ६ आदित्याः; ७, ८ अश्विनौ; ९, १० वायुः; ११, १२ सूर्यः; १३ उषाः सूर्यप्रभा वा; १४ पवमानः; १५, १६ गौः ॥ छन्दः—१ निचृद्बृहती; २, ४, ८ पङ्क्तिः; ३ गायत्री; ५ आर्चीस्वराड्बृहती; ६, ७, ९, ११ विराड्बृहती; १० स्वराड्बृहती; १२ भुरिग्बृहती; १३ आर्चीबृहती; १४ पादनिचृत्त्रिष्टुप्; १५ त्रिष्टुप्; १६ विराट्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१, ५-७, ९-१३ मध्यमः; २, ४, ८ पञ्चमः; ३ षड्जः; १४-१६ धैवतः ॥

अथ षष्ठो वर्गः ॥ ६ ॥

ऋधगित्था स मर्त्यः शशमे देवतातये ।
यो नूनं मित्रावरुणावभिष्टय आचक्रे हव्यदातये ॥ १ ॥
वसिष्ठक्षत्रा उरुचक्षसा नरा राजाना दीर्घश्रुत्तमा ।
ता बाहुता न दंसना रथर्यतः साकं सूर्यस्य रश्मिभिः ॥ २ ॥
प्र यो वां मित्रावरुणाजिरो दूतो अद्रवत् । अर्यःशीर्षा मदेरघुः ॥ ३ ॥
न यः संपृच्छे न पुनर्हवीतवे न संवादाय रमते ।
तस्मान्नो अद्य समृतेरुरुष्यतं बाहुभ्यां न उरुष्यतम् ॥ ४ ॥
प्र मित्राय प्रार्यम्णे संचथ्यमृतावसो ।
वरूथ्यं वरुणे छन्द्यं वचः स्तोत्रं राजसु गायत ॥ ५ ॥

अथ सप्तमो वर्गः ॥ ७ ॥

ते हिन्विरे अरुणं जेन्यं वस्वेकं पुत्रं तिसृणाम् ।
ते धामान्यमृता मर्त्यानामदब्धा अभि चक्षते ॥ ६ ॥
आ मे वचांस्युद्यता द्युमत्तमानि कर्त्वा ।
उभा यातं नासत्या सजोषसा प्रति हव्यानि वीतये ॥ ७ ॥

रातिं यद्वामरक्षसं हवामहे युवाभ्यां वाजिनीवसू ।
प्राची होत्रां प्रतिरन्तावितं नरा गृणाना जमदग्निना ॥ ८ ॥
आ नो यज्ञं दिविस्पृशं वायो याहि सुमन्मभिः ।
अन्तः पवित्र उपरि श्रीणानो३ऽयं शुक्रो अयामि ते ॥ ९ ॥
वेत्यध्वर्युः पथिभी रजिष्ठैः प्रति हव्यानि वीतये ।
अधा नियुत्व उभयस्य नः पिब शुचिं सोमं गवाशिरम् ॥ १० ॥

अथ अष्टमो वर्गः ॥ ८ ॥

बण्महाँ असि सूर्य बळादित्य महाँ असि ।
महस्ते सतो महिमा पनस्यतेऽद्धा देव महाँ असि ॥ ११ ॥
बट् सूर्य श्रवसा महाँ असि सत्रा देव महाँ असि ।
मह्ना देवानामसुर्यः पुरोहितो विभु ज्योतिरदाभ्यम् ॥ १२ ॥
इयं या नीच्यर्किणी रूपा रोहिण्या कृता ।
चित्रेव प्रत्यदर्शायत्यन्तर्दशसु बाहुषु ॥ १३ ॥
प्रजा ह तिस्रो अत्यायमीयुर्न्या अर्कमभितो विविश्रे ।
बृहद्ध तस्थौ भुवनेष्वन्तः पवमानो हरित आ विवेश ॥ १४ ॥
माता रुद्राणां दुहिता वसूनां स्वसादित्यानाममृतस्य नाभिः ।
प्र नु वोचं चिकितुषे जनाय मा गामनागामदितिं वधिष्ट ॥ १५ ॥
वचोविदं वाचमुदीरयन्तीं विश्वाभिर्धीभिरुपतिष्ठमानाम् ।
देवीं देवेभ्यः पर्येयुषीं गामा मावृक्त मर्त्यो दभ्रचेताः ॥ १६ ॥

[१०२] द्व्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—प्रयोगो भार्गव अग्निर्वा पावको बार्हस्पत्यः; अथवाग्नी गृहपतियविष्ठौ सहसः सुतौ तयोर्वान्यतरः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१, ३-५, ८, ९, १४, १५, २०-२२ निचृद्गायत्री; २, ६, १२, १३, १६ गायत्री; ७, ११, १७, १९ विराड्गायत्री; १०, १८ पादनिचृद्गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथ नवमो वर्गः ॥ ९ ॥

त्वमग्ने बृहद्वयो दधासि देव दाशुषे । कविर्गृहपतिर्युवा ॥ १ ॥
स न ईळानया सह देवाँ अग्ने दुवस्युवा । चिकिद्विभानवा वह ॥ २ ॥
त्वया ह स्विद्युजा वयं चोदिष्ठेन यविष्ठ्य । अभि ष्मो वाजसातये ॥ ३ ॥
और्वभृगुवच्छुचिमप्रवानवदा हुवे । अग्निं समुद्रवाससम् ॥ ४ ॥
हवे वातप्रमियं कविं पर्जन्यक्रन्दं सहः । अग्निं समुद्रवाससम् ॥ ५ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अथ दशमो वर्गः ॥ १० ॥
आ सवं सवितुर्यथा भगस्येव भुजिं हुवे। अग्निं समुद्रवाससम् ॥ ६ ॥
अग्निं वो वृधन्तमध्वराणां पुरूतमम्। अच्छा नप्त्रे सहस्वते ॥ ७ ॥
अयं यथा न आभुवत्त्वष्टा रूपेव तक्ष्या। अस्य क्रत्वा यशस्वतः ॥ ८ ॥
अयं विश्वा अभि श्रियोऽग्निर्देवेषु पत्यते। आ वाजैरुप नो गमत् ॥ ९ ॥
विश्वेषामिह स्तुहि होतृणां यशस्तमम्। अग्निं यज्ञेषु पूर्व्यम् ॥ १० ॥

अथ एकादशो वर्गः ॥ ११ ॥
शीरं पावकशोचिषं ज्येष्ठो यो दमेष्वा। दीदायं दीर्घश्रुत्तमः ॥ ११ ॥
तमर्वन्तं न सानसिं गृणीहि विप्र शुष्मिणम्। मित्रं न यातयज्जनम् ॥ १२ ॥
उप त्वा जामयो गिरो देदिशतीर्हविष्कृतः। वायोरनीके अस्थिरन् ॥ १३ ॥
यस्य त्रिधात्ववृतं बर्हिस्तस्थावसंदिनम्। आपश्चिन्नि दधा पदम् ॥ १४ ॥
पदं देवस्य मीळ्हुषोऽनाधृष्टाभिरूतिभिः। भद्रा सूर्यइवोपदृक् ॥ १५ ॥

अथ द्वादशो वर्गः ॥ १२ ॥
अग्ने घृतस्य धीतिभिस्तेपानो देव शोचिषा। आ देवान्वक्षि यक्षि च ॥ १६ ॥
तं त्वाजनन्त मातरः कविं देवासो अङ्गिरः। हव्यवाहममर्त्यम् ॥ १७ ॥
प्रचेतसं त्वा कवेऽग्ने दूतं वरेण्यम्। हव्यवाहं नि षेदिरे ॥ १८ ॥
नहि मे अस्त्यघ्न्या न स्वधितिर्वनन्वति। अथैतादृग्भरामि ते ॥ १९ ॥
यदग्ने कानि कानि चिदा ते दारूणि दध्मसि। ता जुषस्व यविष्ठ्य ॥ २० ॥
यदत्त्युपजिह्विका यद्वम्रो अतिसर्पति। सर्वं तदस्तु ते घृतम् ॥ २१ ॥
अग्निमिन्धानो मनसा धियं सचेत मर्त्यः। अग्निमीधे विवस्वभिः ॥ २२ ॥

[१०३] त्र्युत्तरशततमं सूक्तम्
ऋषिः—सोभरिः काण्वः॥ देवता—१-१३ अग्निः; १४ अग्निर्मरुतश्च॥ छन्दः—१, ३, १३ विराड्बृहती; २ निचृद्बृहती; ४ बृहती; ५ पङ्क्तिः; ६ आर्चीस्वराड्बृहती; ७, ९ स्वराड्बृहती; ८ निचृदुष्णिक्; १० आर्चीभुरिग्गायत्री; ११ निचृत्पङ्क्तिः; १२ विराडुष्णिक्; १४ अनुष्टुप्॥ स्वरः—१-४, ६, ७, ९, १३ मध्यमः; ५, ११ पञ्चमः; ८, १२ ऋषभः; १० षड्जः; १४ गान्धारः॥

अथ त्रयोदशो वर्गः ॥ १३ ॥
अदर्शि गातुवित्तमो यस्मिन्व्रतान्यादधुः।
उपो षु जातमार्यस्य वर्धनमग्निं नक्षन्त नो गिरः ॥ १ ॥
प्र दैवोदासो अग्निर्देवाँ अच्छा न मज्मना।
अनु मातरं पृथिवीं वि वावृते तस्थौ नाकस्य सानवि ॥ २ ॥
यस्माद्रेजन्त कृष्टयश्चर्कृत्यानि कृण्वतः।
सहस्रसां मेधसाताविव त्मनाग्निं धीभिः सपर्यत ॥ ३ ॥
प्र यं राये निनीषसि मर्तो यस्ते वसो दाशत्।
स वीरं धत्ते अग्न उक्थशंसिनं त्मना सहस्रपोषिणम् ॥ ४ ॥
स दूळ्हे चिद्दभि तृणत्ति वाजमर्वेता स धत्ते अक्षितिं श्रवः।
त्वे देवत्रा सदा पुरूवसो विश्वा वामानि धीमहि ॥ ५ ॥

अथ चतुर्दशो वर्गः ॥ १४ ॥
यो विश्वा दयते वसु होता मन्द्रो जनानाम्।
मधोर्न पात्रा प्रथमान्यस्मै प्र स्तोमा यन्त्यग्नये ॥ ६ ॥
अश्वं न गीर्भी रथ्यं सुदानवो मर्मृज्यन्ते देवयवः।
उभे तोके तनये दस्म विश्पते पर्षि राधो मघोनाम् ॥ ७ ॥
प्र मंहिष्ठाय गायत ऋताव्ने बृहते शुक्रशोचिषे।
उपस्तुतासो अग्नये ॥ ८ ॥
आ वंसते मघवा वीरवद्यशः समिद्धो द्युम्न्याहुतः।
कुवित्नो अस्य सुमतिर्नवीयस्यच्छा वाजेभिरागमत् ॥ ९ ॥
प्रेष्ठमु प्रियाणां स्तुह्यासावातिथिम्। अग्निं रथानां यमम् ॥ १० ॥

अथ पञ्चदशो वर्गः ॥ १५ ॥
उदिता यो निदिता वेदिता वस्वा यज्ञियो ववर्तति।
दुष्टरा यस्य प्रवणे नोमर्यो धिया वाजं सिषासतः ॥ ११ ॥
मा नो हृणीतामतिथिर्वसुरग्निः पुरुप्रशस्त एषः।
यः सुहोता स्वध्वरः ॥ १२ ॥
मो ते रिषन्ये अच्छोक्तिभिर्वसोऽग्ने केभिश्चिदेवैः।
कीरिश्चिद्धि त्वामीट्टे दूत्याय रातहव्यः स्वध्वरः ॥ १३ ॥
आग्ने याहि मरुत्सखा रुद्रेभिः सोमपीतये।
सोभर्या उप सुष्टुतिं मादयस्व स्वर्णरे ॥ १४ ॥

इत्यष्टमं मण्डलम्॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अथ नवमं मण्डलम्

प्रथमोऽनुवाकः

[१] प्रथमं सूक्तम्

ऋषिः—मधुच्छन्दाः॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—१, २, ६ गायत्री; ३, ७-१० निचृद्गायत्री; ४, ५ विराड्गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

अथ षोडशो वर्गः॥ १६॥

स्वादिष्ठया मदिष्ठया पवस्व सोम धारया। इन्द्राय पातवे सुतः॥ १॥
रक्षोहा विश्वचर्षणिरभि योनिमयोहतम्। द्रुणा सधस्थमासदत्॥ २॥
वरिवोधातमो भव मंहिष्ठो वृत्रहन्तमः। पर्षि राधो मघोनाम्॥ ३॥
अभ्यर्ष महानां देवानां वीतमन्धसा। अभि वाजमुत श्रवः॥ ४॥
त्वामच्छा चरामसि तदिदर्थं दिवेदिवे। इन्दो त्वे न आशसः॥ ५॥

अथ सप्तदशो वर्गः॥ १७॥

पुनाति ते परिस्रुतं सोमं सूर्यस्य दुहिता। वारेण शश्वता तना॥ ६॥
तमीमण्वीः समर्य आ गृभ्णन्ति योषणो दश। स्वसारः पार्ये दिवि॥ ७॥
तमीं हिन्वन्त्यग्रुवो धमन्ति बाकुरं दृतिम्। त्रिधातु वारणं मधु॥ ८॥
अभीमु ममघ्न्या उत श्रीणन्ति धेनवः शिशुम्। सोममिन्द्राय पातवे॥ ९॥
अस्येदिन्द्रो मदेष्वा विश्वा वृत्राणि जिघ्नते। शूरो मघा च मंहते॥ १०॥

[२] द्वितीयं सूक्तम्

ऋषिः—मेधातिथिः॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—१, ४, ६ निचृद्गायत्री; २, ३, ५, ७-९ गायत्री; १० विराड्गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

अथ अष्टादशो वर्गः॥ १८॥

पवस्व देववीरति पवित्रं सोम रंह्या। इन्द्रमिन्दो वृषा विश॥ १॥
आ वच्यस्व महि प्सरो वृषेन्दो द्युम्नवत्तमः। आ योनिं धर्णसिः सदः॥ २॥
अधुक्षत प्रियं मधु धारा सुतस्य वेधसः। अपो वसिष्ट सुक्रतुः॥ ३॥
महान्तं त्वा महीरन्वापो अर्षन्ति सिन्धवः। यद्गोभिर्वासयिष्यसे॥ ४॥
समुद्रो अप्सु मामृजे विष्टम्भो धरुणो दिवः। सोमः पवित्रे अस्मयुः॥ ५॥

अथ एकोनविंशो वर्गः॥ १९॥

अचिक्रदद् वृषा हरिर्महान्मित्रो न दर्शतः। सं सूर्येण रोचते॥ ६॥
गिरस्त इन्दु ओजसा मर्मृज्यन्ते अपस्युवः। याभिर्मदाय शुम्भसे॥ ७॥
तं त्वा मदाय घृष्वय उ लोककृत्नुमीमहे। तव प्रशस्तयो महीः॥ ८॥
अस्मभ्यमिन्दविन्द्रयुर्मध्वः पवस्व धारया। पर्जन्यो वृष्टिमाँइव॥ ९॥

गोषा इन्दो नृषा असि अश्वसा वाजसा उत। आत्मा यज्ञस्य पूर्व्यः॥ १०॥

[३] तृतीयं सूक्तम्

ऋषिः—शुनः शेपः॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—१, २ विराड्गायत्री; ३, ५, ७, १० गायत्री; ४, ६, ८, ९ निचृद्गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

अथ विंशो वर्गः॥ २०॥

एष देवो अमर्त्यः पर्णवीरिव दीयति। अभि द्रोणान्यासदम्॥ १॥
एष देवो विपा कृतोऽति ह्वरांसि धावति। पवमानो अदाभ्यः॥ २॥
एष देवो विपन्युभिः पवमान ऋतायुभिः। हरिर्वाजाय मृज्यते॥ ३॥
एष विश्वानि वार्या शूरो यन्निव सत्वभिः। पवमानः सिषासति॥ ४॥
एष देवो रथर्यति पवमानो दशस्यति। आविष्कृणोति वग्वनुम्॥ ५॥

अथ एकविंशो वर्गः॥ २१॥

एष विप्रैरभिष्टुतोऽपो देवो वि गाहते। दधद्रत्नानि दाशुषे॥ ६॥
एष दिवं वि धावति तिरो रजांसि धारया। पवमानः कनिक्रदत्॥ ७॥
एष दिवं व्यासरत्तिरो रजांस्यस्पृतः। पवमानः स्वध्वरः॥ ८॥
एष प्रत्नेन जन्मना देवो देवेभ्यः सुतः। हरिः पवित्रे अर्षति॥ ९॥
एष उ स्य पुरुव्रतो जज्ञानो जनयन्निषः। धारया पवते सुतः॥ १०॥

[४] चतुर्थं सूक्तम्

ऋषिः—हिरण्यस्तूपः॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—१, ३, ४, १० गायत्री; २, ५, ८, ९ निचृद्गायत्री; ६, ७ विराड्गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

अथ द्वाविंशो वर्गः॥ २२॥

सना च सोम जेषि च पवमान महि श्रवः। अथा नो वस्यसस्कृधि॥ १॥
सना ज्योतिः सना स्वर्विश्वा च सोम सौभगा। अथा नो वस्यसस्कृधि॥ २॥
सना दक्षमुत क्रतुमपं सोम मृधो जहि। अथा नो वस्यसस्कृधि॥ ३॥
पवीतारः पुनीतन सोममिन्द्राय पातवे। अथा नो वस्यसस्कृधि॥ ४॥
त्वं सूर्ये न आ भज तव क्रत्वा तवोतिभिः। अथा नो वस्यसस्कृधि॥ ५॥

अथ त्रयोविंशो वर्गः॥ २३॥

तव क्रत्वा तवोतिभिर्ज्योक्पश्येम सूर्यम्। अथा नो वस्यसस्कृधि॥ ६॥
अभ्यर्ष स्वायुध सोम द्विबर्हसं रयिम्। अथा नो वस्यसस्कृधि॥ ७॥
अभ्यर्षा पवस्व च रयिं समत्सु सासहिः। अथा नो वस्यसस्कृधि॥ ८॥
त्वां यज्ञैरवीवृधन्पवमान विधर्मणि। अथा नो वस्यसस्कृधि॥ ९॥
रयिं नश्चित्रमश्विनमिन्दो विश्वायुमा भर। अथा नो वस्यसस्कृधि॥ १०॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

[५] पञ्चमं सूक्तम्

ऋषिः—असितः काश्यपो देवलो वा ॥ देवता—आप्रियः ॥ छन्दः—१, २, ४-६ गायत्री; ३, ७ निचृद्गायत्री; ८ निचृदनुष्टुप्; ९, १० अनुष्टुप्; ११ विराडनुष्टुप् ॥ स्वरः—१-७ षड्जः; ८-११ गान्धारः ॥

अथ चतुर्विंशो वर्गः ॥ २४ ॥

समिद्धो विश्वतस्पतिः पवमानो वि राजति । प्रीणन्वृषा कनिक्रदत् ॥ १ ॥
तनूनपात्पवमानः शृङ्गे शिशानो अर्षति । अन्तरिक्षेण रारजत् ॥ २ ॥
ईळेन्यः पवमानो रयिर्वि राजति द्युमान् । मधोर्धारा अभिरोजसा ॥ ३ ॥
बर्हिः प्राचीनमोजसा पवमानः स्तृणन्हरिः देवेषु देव ईयते ॥ ४ ॥
उदातैर्जिहते बृहद् द्वारो देवीर्हिरण्ययीः । पवमानेन सुष्टुताः ॥ ५ ॥

अथ पञ्चविंशो वर्गः ॥ २५ ॥

सुशिल्पे बृहती मही पवमानो वृषण्यति ।
नक्तोषासा न दर्शते ॥ ६ ॥
उभा देवा नृचक्षसा होतारा दैव्या हुवे ।
पवमान इन्दो वृषा ॥ ७ ॥
भारती पवमानस्य सरस्वतीळा मही ।
इमं नो यज्ञमा गमन्तिस्रो देवीः सुपेशसः ॥ ८ ॥
त्वष्टारमग्रजां गोपां पुरोयावानमा हुवे ।
इन्दुरिन्द्रो वृषा हरिः पवमानः प्रजापतिः ॥ ९ ॥
वनस्पतिं पवमान मध्वा समङ्ग्धि धारया ।
सहस्रवल्शं हरितं भ्राजमानं हिरण्ययम् ॥ १० ॥
विश्वे देवाः स्वाहाकृतिं पवमानस्या गत ।
वायुर्बृहस्पतिः सूर्योऽग्निरिन्द्रः सजोषसः ॥ ११ ॥

[६] षष्ठं सूक्तम्

ऋषिः—असितः काश्यपो देवलो वा ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—१, २, ७ निचृद्गायत्री; ३-६, ९ गायत्री; ८ विराड्गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथ षड्विंशो वर्गः ॥ २६ ॥

मन्द्रया सोम धारया वृषा पवस्व देवयुः । अव्यो वारेष्वस्मयुः ॥ १ ॥
अभि त्यं मद्यं मदमिन्दविन्द्र इति क्षर । अभि वाजिनो अर्वतः ॥ २ ॥
अभि त्यं पूर्व्यं मदं सुवानो अर्ष पवित्र आ । अभि वाजमुत श्रवः ॥ ३ ॥
अनु द्रप्सास इन्दव आपो न प्रवतासरन् । पुनाना इन्द्रमाशत ॥ ४ ॥
यमत्यमिव वाजिनं मृजन्ति योषणो दश । वने क्रीळन्तमत्यविम् ॥ ५ ॥

अथ सप्तविंशो वर्गः ॥ २७ ॥

तं गोभिर्वृषणं रसं मदाय देववीतये । सुतं भराय सं सृज ॥ ६ ॥
देवो देवाय धारयेन्द्राय पवते सुतः । पयो यदस्य पीपयत् ॥ ७ ॥
आत्मा यज्ञस्य रंह्या सुष्वाणः पवते सुतः । प्रत्नं नि पाति काव्यम् ॥ ८ ॥
एवा पुनान इन्द्रयुर्मदं मदिष्ठ वीतये । गुहा चिद्दधिषे गिरः ॥ ९ ॥

[७] सप्तमं सूक्तम्

ऋषिः—असितः काश्यपो देवलो वा ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—१, ३, ५-९ गायत्री; २ निचृद्गायत्री; ४ विराड्गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथ अष्टाविंशो वर्गः ॥ २८ ॥

असृग्रमिन्दवः पथा धर्मन्नृतस्य सुश्रियः । विदाना अस्य योजनम् ॥ १ ॥
प्र धारा मध्वो अग्रियो महीरपो वि गाहते । हविर्हविष्षु वन्द्यः ॥ २ ॥
प्र युजो वाचो अग्रियो वृषाव चक्रदद्वने । सद्माभि सत्यो अध्वरः ॥ ३ ॥
परि यत्काव्या कविर्नृम्णा वसानो अर्षति । स्वर्वाजी सिषासति ॥ ४ ॥
पवमानो अभि स्पृधो विशो राजेव सीदति । यदीमृण्वन्ति वेधसः ॥ ५ ॥

अथ एकोनत्रिंशो वर्गः ॥ २९ ॥

अव्यो वारे परि प्रियो हरिर्वनेषु सीदति । रेभो वनुष्यते मती ॥ ६ ॥
स वायुमिन्द्रमश्विना साकं मदेन गच्छति । रणा यो अस्य धर्मभिः ॥ ७ ॥
आ मित्रावरुणा भगं मध्वः पवन्त ऊर्मयः । विदाना अस्य शक्मभिः ॥ ८ ॥
अस्मभ्यं रोदसी रयिं मध्वो वाजस्य सातये । श्रवो वसूनि सं जितम् ॥ ९ ॥

[८] अष्टमं सूक्तम्

ऋषिः—असितः काश्यपो देवलो वा ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—१, २, ५, ८ निचृद्गायत्री; ३, ४, ७ गायत्री; ६ पादनिचृद्गायत्री; ९ विराड्गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथ त्रिंशो वर्गः ॥ ३० ॥

एते सोमा अभि प्रियमिन्द्रस्य कामम क्षरन् । वर्धन्तो अस्य वीर्यम् ॥ १ ॥
पुनानास्चमूषदो गच्छन्तो वायुमश्विना । ते नो धान्तु सुवीर्यम् ॥ २ ॥
इन्द्रस्य सोम राधसे पुनानो हार्दि चोदय । ऋतस्य योनिमासदम् ॥ ३ ॥
मृजन्ति त्वा दश क्षिपो हिन्वन्ति सप्त धीतयः । अनु विप्रा अमादिषुः ॥ ४ ॥
देवेभ्यस्त्वा मदाय कं सृजानमति मेष्यः । सं गोभिर्वासयामसि ॥ ५ ॥

अथ एकत्रिंशो वर्गः ॥ ३१ ॥

पुनानः कलशेष्वा वस्त्राण्यरुषो हरिः । परि गव्यान्यव्यत ॥ ६ ॥
मघोन आ पवस्व नो जहि विश्वा अप द्विषः । इन्दो सखायमा विश ॥ ७ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

वृ॒ष्टिं दि॒वः परि॑ स्रव द्यु॒म्नं पृ॑थि॒व्या अधि॑। सहो॑ नः सोम पृ॒त्सु धाः॑ ॥ ८ ॥
नृ॒चक्ष॑सं त्वा व॒यमिन्द्र॑पीतं स्व॒र्विद॑म्। भ॒क्षी॒महि॑ प्र॒जामिष॑म् ॥ ९ ॥

[९] नवमं सूक्तम्

ऋषिः—असितः काश्यपो देवलो वा ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—१, ३-५, ८ गायत्री; २, ६, ७, ९ निचृद्गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथ द्वात्रिंशो वर्गः ॥ ३२ ॥

परि॑ प्रि॒या दि॒वः क॒विर्वयां॑सि न॒प्त्योर्हि॒तः। सु॒वा॒नो या॑ति क॒विक्र॑तुः ॥ १ ॥
प्रप्र॒ क्षया॑य॒ पन्य॑से॒ जना॑य॒ जुष्टो॑ अ॒द्रुहे॑। वी॒त्यर्ष॒ चनि॑ष्ठया ॥ २ ॥
स सू॒नुर्मा॒तरा॒ शुचि॑र्जा॒तो जा॒ते अ॑रोचयत्। म॒हान्म॒ही ऋ॑ता॒वृधा॑ ॥ ३ ॥
स स॒प्त धी॒तिभि॑र्हि॒तो नद्यो॑ अजिन्वद॒द्रुहः॑। या एक॒मक्षि॑ वावृ॒धुः ॥ ४ ॥
ता अ॒भि सन्त॒मस्तृ॑तं म॒हे युवा॑न॒मा द॑धुः। इन्दु॑मिन्द्र॒ तव॑ व्र॒ते ॥ ५ ॥

अथ त्रयस्त्रिंशो वर्गः ॥ ३३ ॥

अ॒भि वह्नि॒रम॑र्त्यः स॒प्त प॑श्यति॒ वाव॑हिः। क्रिवि॑र्दे॒वीर॑तर्पयत् ॥ ६ ॥
अवा॒ कल्पे॑षु नः पुम॒स्तमां॑सि सोम॒ योध्या॑। तानि॑ पुनान जङ्घनः ॥ ७ ॥
नू नव्य॑से॒ नवी॑यसे सू॒क्ताय॑ साधया प॒थः। प्र॒त्न॒वद्रो॑चया॒ रुचः॑ ॥ ८ ॥
पव॑मान॒ महि॒ श्रवो॒ गामश्वं॑ रासि वी॒रव॑त्। सना॑ मे॒धां सना॒ स्वः॑ ॥ ९ ॥

[१०] दशमं सूक्तम्

ऋषिः—असितः काश्यपो देवलो वा ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—१, २, ६, ८ निचृद्गायत्री; ३, ५, ७, ९ गायत्री; ४ भुरिग्गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथ चतुस्त्रिंशो वर्गः ॥ ३४ ॥

प्र स्वा॒नासो॒ रथा॑इ॒वार्व॑न्तो॒ न श्र॑व॒स्यवः॑। सोमा॑सो रा॒ये अ॑क्रमुः ॥ १ ॥
हि॒न्वा॒नासो॒ रथा॑इव दधन्वि॒रे गभ॑स्त्योः। भरा॑सः का॒रिणा॑मिव ॥ २ ॥
राजा॑नो॒ न प्रश॑स्तिभिः॒ सोमा॑सो॒ गोभि॑रञ्जते। य॒ज्ञो न स॒प्त धा॒तृभिः॑ ॥ ३ ॥
परि॑ सुवा॒नास॒ इन्द॑वो॒ मदा॑य ब॒र्हणा॑ गि॒रा। सु॒ता अ॑र्षन्ति॒ धार॑या ॥ ४ ॥
आ॒पा॒नासो॑ वि॒वस्व॑तो॒ जन॑न्त उ॒षसो॒ भग॑म्। सूरा॒ अण्वं॒ वि त॑न्वते ॥ ५ ॥

अथ पञ्चस्त्रिंशो वर्गः ॥ ३५ ॥

अप॒ द्वारा॑ मती॒नां प्र॒त्ना ऋ॑ण्वन्ति का॒रवः॑। वृष्णो॒ हर॑स आ॒यवः॑ ॥ ६ ॥
स॒मी॒ची॒नास॑ आसते॒ होता॑रः स॒प्तजा॑मयः। प॒दमेक॑स्य॒ पिप्र॑तः ॥ ७ ॥
नाभा॒ नाभिं॑ न॒ आ द॑दे॒ चक्षु॑श्चि॒त्सूर्ये॒ सचा॑। क॒वेरप॑त्य॒मा दु॑हे ॥ ८ ॥
अ॒भि प्रि॒या दि॒वस्प॒दम॑ध्व॒र्युभि॒र्गुहा॑ हि॒तम्। सूरः॑ पश्यति॒ चक्ष॑सा ॥ ९ ॥

[११] एकादशं सूक्तम्

ऋषिः—असितः काश्यपः देवलो वा ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—१-४, ९ निचृद्गायत्री; ५-८ गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथ षट्त्रिंशो वर्गः ॥ ३६ ॥

उपा॑स्मै गायता नरः॒ पव॑माना॒येन्द॑वे। अ॒भि दे॒वाँ इय॑क्षते ॥ १ ॥
अ॒भि ते॒ मधु॑ना॒ पयोऽथ॑र्वाणो अशिश्रयुः। दे॒वं दे॒वाय॑ देव॒यु ॥ २ ॥
स नः॑ पवस्व॒ शं गवे॒ शं जना॑य॒ शमर्व॑ते। शं रा॑ज॒न्नोष॑धीभ्यः ॥ ३ ॥
ब॒भ्रवे॒ नु स्वत॑वसेऽरु॒णाय॑ दिवि॒स्पृशे॑। सोमा॑य गा॒थम॑र्चत ॥ ४ ॥
हस्त॑च्युतेभि॒रद्रि॑भिः सु॒तं सोमं॑ पुनीतन। मधा॒वा धा॑वता॒ मधु॑ ॥ ५ ॥

अथ सप्तस्त्रिंशो वर्गः ॥ ३७ ॥

नम॒सेदुप॑ सीदत द॒ध्नेद॒भि श्री॑णीतन। इन्दु॒मिन्द्रे॑ दधातन ॥ ६ ॥
अ॒मि॒त्र॒हा विच॑र्षणिः॒ पव॑स्व सोम॒ शं गवे॑। दे॒वेभ्यो॑ अनुकाम॒कृत् ॥ ७ ॥
इन्द्रा॑य सोम॒ पात॑वे॒ मदा॑य॒ परि॑ षिच्यसे। म॒न॒श्चिन्मन॑स॒स्पतिः॑ ॥ ८ ॥
पव॑मान सु॒वीर्यं॑ र॒यिं सो॑म रिरीहि नः। इन्द॒विन्द्रे॑ण नो यु॒जा ॥ ९ ॥

[१२] द्वादशं सूक्तम्

ऋषिः—असितः काश्यपो देवलो वा ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—१, २, ६-८ गायत्री; ३-५ निचृद्गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथ अष्टात्रिंशो वर्गः ॥ ३८ ॥

सोमा॑ असृग्र॒मिन्द॑वः सु॒ता ऋ॒तस्य॒ साद॑ने। इन्द्रा॑य॒ मधु॑मत्तमाः ॥ १ ॥
अ॒भि विप्रा॑ अनूषत॒ गावो॑ व॒त्सं न मा॒तरः॑। इन्द्रं॒ सोम॑स्य पी॒तये॑ ॥ २ ॥
म॒द॒च्युत्क्षे॑ति॒ साद॑ने॒ सिन्धो॑रू॒र्मा वि॑प॒श्चित्। सोमो॑ गौ॒री अधि॑ श्रि॒तः ॥ ३ ॥
दि॒वो नाभा॑ विचक्ष॒णोऽव्यो॒ वारे॑ महीयते। सोमो॒ यः सु॒क्रतुः॑ क॒विः ॥ ४ ॥
यः सोमः॑ क॒लशे॒ष्वाँ अ॒न्तः प॒वित्र॒ आहि॑तः। तमिन्दुः॒ परि॑ षस्वजे ॥ ५ ॥

अथ एकोनचत्वारिंशो वर्गः ॥ ३९ ॥

प्र वाच॒मिन्दु॑रिष्यति समु॒द्रस्याधि॑ वि॒ष्टपि॑। जिन्व॒न्कोशं॑ मधु॒श्चुत॑म् ॥ ६ ॥
नित्य॑स्तोत्रो॒ वनस्पति॑र्धी॒नाम॒नन्तः स॑ब॒र्दुघः॑। हि॒न्वा॒नो मानु॑षा यु॒गा ॥ ७ ॥
अ॒भि प्रि॒या दि॒वस्प॒दा सोमो॑ हिन्वा॒नो अ॑र्षति। विप्र॑स्य॒ धार॑या क॒विः ॥ ८ ॥
आ प॑वमान धारय र॒यिं स॒हस्र॑वर्चसम्। अ॒स्मे इ॑न्दो स्वा॒भुव॑म् ॥ ९ ॥

इति षष्ठाष्टके सप्तमोऽध्यायः ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अथाष्टमोऽध्यायः

[१३] त्रयोदशं सूक्तम्

ऋषिः—असितः काश्यपो देवलो वा ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥
छन्दः—१-३, ५, ८ गायत्री; ४ निचृद्गायत्री; ६ भुरिग्गायत्री;
७ पादनिचृद्गायत्री; ९ यवमध्यागायत्री ॥
स्वरः—षड्जः ॥

अथ प्रथमो वर्गः ॥ १ ॥

सोमः पुनानो अर्षति सहस्रधारो अत्यविः । वायोरिन्द्रस्य निष्कृतम् ॥ १ ॥
पवमानमवस्यवो विप्रमभि प्र गायत । सुष्वाणं देववीतये ॥ २ ॥
पवन्ते वाजसातये सोमाः सहस्रपाजसः । गृणाना देववीतये ॥ ३ ॥
उत नो वाजसातये पवस्व बृहतीरिषः । द्युमदिन्दो सुवीर्यम् ॥ ४ ॥
ते नः सहस्रिणं रयिं पवन्तामा सुवीर्यम् । सुवाना देवास इन्दवः ॥ ५ ॥

अथ द्वितीयो वर्गः ॥ २ ॥

अत्या हियाना न हेतृभिरसृग्रं वाजसातये । वि वारमव्यमाशवः ॥ ६ ॥
वाश्रा अर्षन्तीन्दवोऽभि वत्सं न धेनवः । दधन्विरे गर्भस्त्योः ॥ ७ ॥
जुष्ट इन्द्राय मत्सरः पवमान कनिक्रदत् । विश्वा अप द्विषो जहि ॥ ८ ॥
अपघ्नन्तो अराव्णः पवमानाः स्वर्दृशः । योनावृतस्य सीदत ॥ ९ ॥

[१४] चतुर्दशं सूक्तम्

ऋषिः—असितः काश्यपो देवलो वा ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥
छन्दः—१-३, ५, ७ गायत्री; ४, ८ निचृद्गायत्री;
६ ककुम्मतीगायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथ तृतीयो वर्गः ॥ ३ ॥

परि प्रासिष्यदत्कविः सिन्धोरूर्मावधि श्रितः । कारं बिभ्रत्पुरुस्पृहम् ॥ १ ॥
गिरा यदी सबन्धवः पञ्च व्राता अपस्यवः । परिष्कृण्वन्ति धर्णसिम् ॥ २ ॥
आदस्य शुष्मिणो रसे विश्वे देवा अमत्सत । यदी गोभिर्वसायते ॥ ३ ॥
निरिणानो वि धावति जहच्छर्याणि तान्वा । अत्रा सं जिग्रते युजा ॥ ४ ॥
नृभिर्यो विवस्वतः शुभ्रो न मामृजे युवा । गाः कृण्वानो न निर्णिजम् ॥ ५ ॥

अथ चतुर्थो वर्गः ॥ ४ ॥

अति श्रिती तिरश्चता गव्या जिगात्यण्व्या । वृगुमियर्ति यं विदे ॥ ६ ॥
अभि क्षिपः समग्मत मर्जयन्तीरिषस्पतिम् । पृष्ठा गृभ्णत वाजिनः ॥ ७ ॥
परि दिव्यानि मर्मृशद्विश्वानि सोम पार्थिवा । वसूनि याह्यस्मयुः ॥ ८ ॥

[१५] पञ्चदशं सूक्तम्

ऋषिः—असितः काश्यपो देवलो वा ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—१, ३-५, ८ निचृद्गायत्री; २, ६ गायत्री; ७ विराड्गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथ पञ्चमो वर्गः ॥ ५ ॥

एष धिया यात्यण्व्या शूरो रथेभिराशुभिः । गच्छन्निन्द्रस्य निष्कृतम् ॥ १ ॥
एष पुरू धियायते बृहते देवतातये । यत्रामृतास आसते ॥ २ ॥
एष हितो वि नीयतेऽन्तः शुभ्रावता पथा । यदी तुञ्जन्ति भूर्णयः ॥ ३ ॥
एष शृङ्गाणि दोधुवच्छिशीते यूथ्यो३ वृषा । नृम्णा दधान ओजसा ॥ ४ ॥
एष रुक्मिभिरीयते वाजी शुभ्रेभिरंशुभिः । पतिः सिन्धूनां भवन् ॥ ५ ॥
एष वसूनि पिब्दना परुषा यविवाँ अति । अव शादेषु गच्छति ॥ ६ ॥
एतं मृजन्ति मर्ज्यमुप द्रोणेष्वायवः । प्रचक्राणं महीरिषः ॥ ७ ॥
एतमु त्यं दश क्षिपो मृजन्ति सप्त धीतयः । स्वायुधं मदिन्तमम् ॥ ८ ॥

[१६] षोडशं सूक्तम्

ऋषिः—असितः काश्यपो देवलो वा ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥
छन्दः—१ विराड्गायत्री; २, ८ निचृद्गायत्री; ३-७ गायत्री ॥
स्वरः—षड्जः ॥

अथ षष्ठो वर्गः ॥ ६ ॥

प्र तै सोतार ओण्यो३ रसं मदाय घृष्वये । सर्गो न तक्त्येतशः ॥ १ ॥
क्रत्वा दक्षस्य रथ्यमपो वसानमन्धसा । गोषामण्वेषु सश्चिम ॥ २ ॥
अनप्सपप्सु दुष्टरं सोमं पवित्र आ सृज । पुनीहीन्द्राय पातवे ॥ ३ ॥
प्र पुनानस्य चेतसा सोमः पवित्रे अर्षति । क्रत्वा सधस्थमासदत् ॥ ४ ॥
प्र त्वा नमोभिरिन्दव इन्द्र सोमा असृक्षत । महे भराय कारिणः ॥ ५ ॥
पुनानो रूपे अव्यये विश्वा अर्षन्नभि श्रियः । शूरो न गोषु तिष्ठति ॥ ६ ॥
दिवो न सानु पिप्युषी धारा सुतस्य वेधसः । वृथा पवित्रे अर्षति ॥ ७ ॥
त्वं सोम विपश्चितं तना पुनान आयुषु । अव्यो वारं वि धावसि ॥ ८ ॥

[१७] सप्तदशं सूक्तम्

ऋषिः—असितः काश्यपो देवलो वा ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥
छन्दः—१, ३-८ गायत्री; २ भुरिग्गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथ सप्तमो वर्गः ॥ ७ ॥

प्र निम्नेनेव सिन्धवो घ्नन्तो वृत्राणि भूर्णयः । सोमा असृग्रमाशवः ॥ १ ॥
अभि सुवानास इन्दवो वृष्टयः पृथिवीमिव । इन्द्रं सोमासो अक्षरन् ॥ २ ॥
अत्यूर्मिर्मत्सरो मदः सोमः पवित्रे अर्षति । विघ्नन्रक्षांसि देवयुः ॥ ३ ॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

आ क॒लशे॑षु धावति प॒वित्रे॒ परि॑ षिच्यते। उ॒क्थैर्य॒ज्ञेषु॑ वर्धते॥ ४॥
अति॒ त्री सो॑म रोच॒ना रोह॒न्न भ्रा॑जसे॒ दिव॑म्। इ॒ष्णन्त्सूर्यं॒ न चो॑दयः॥ ५॥
अ॒भि विप्रा॑ अनूषत मू॒र्धन्य॒ज्ञस्य॑ का॒रवः॑। दधा॑ना॒श्चक्ष॑सि प्रि॒यम्॥ ६॥
तमु॑ त्वा वा॒जिनं॒ नरो॑ धी॒भिर्विप्रा॑ अव॒स्यवः॑। मृ॒जन्ति॑ दे॒वता॑तये॥ ७॥
मधो॒र्धारा॒मनु॑ क्षर ती॒व्रः स॒धस्थ॒मास॑दः। चारु॑र्ऋ॒ताय॑ पी॒तये॑॥ ८॥

[१८] अष्टादशं सूक्तम्

ऋषिः—असितः काश्यपो देवलो वा॥ देवता—पवमानः सोमः॥
छन्दः—१, ४ निचृद्गायत्री; २ ककुम्मतीगायत्री; ३, ५, ६ गायत्री; ७ विराड्गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

अथ अष्टमो वर्गः॥ ८॥

परि॑ सुवा॒नो गि॑रि॒ष्ठाः प॒वित्रे॒ सोमो॑ अक्षाः। मदे॑षु सर्व॒धा अ॑सि॥ १॥
त्वं विप्र॒स्त्वं क॒विर्मधु॒ प्र जा॒तमन्ध॑सः। मदे॑षु सर्व॒धा अ॑सि॥ २॥
तव॒ विश्वे॑ स॒जोष॑सो दे॒वासः॑ पी॒तिमा॑शत। मदे॑षु सर्व॒धा अ॑सि॥ ३॥
आ यो विश्वा॑नि॒ वार्या॒ वसू॑नि॒ हस्त॑योर्द॒धे। मदे॑षु सर्व॒धा अ॑सि॥ ४॥
य इ॒मे रोद॑सी म॒ही सं मा॒तरे॑व॒ दोह॑ते। मदे॑षु सर्व॒धा अ॑सि॥ ५॥
परि॒ यो रोद॑सी उ॒भे स॒द्यो वाजे॑भि॒रर्ष॑ति। मदे॑षु सर्व॒धा अ॑सि॥ ६॥
स शु॒ष्मी क॒लशे॒ष्वा पु॑ना॒नो अ॑चिक्रदत्। मदे॑षु सर्व॒धा अ॑सि॥ ७॥

[१९] एकोनविंशं सूक्तम्

ऋषिः—असितः काश्यपो देवलो वा॥ देवता—पवमान सोमः॥
छन्दः—१ विराड्गायत्री; २, ५, ७ निचृद्गायत्री; ३, ४ गायत्री; ६ भुरिग्गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

अथ नवमो वर्गः॥ ९॥

यत्सो॑म चि॒त्रमु॒क्थ्यं॑ दि॒व्यं पार्थि॑वं॒ वसु॑। तन्नः॑ पुना॒न आ भ॑र॥ १॥
यु॒वं हि स्थः स्व॑र्पती॒ इन्द्र॑श्च सोम॒ गोप॑ती। ई॒शा॒ना पि॑प्यतं॒ धियः॑॥ २॥
वृषा॑ पुना॒न आ॒युषु॑ स्त॒नय॒न्नधि॑ ब॒र्हिषि॑। हरिः॒ सन्योनि॒मास॑दत्॥ ३॥
अवा॑वशन्त धी॒तयो॑ वृष॒भस्याधि॒ रेत॑सि। सू॒नोर्व॒त्सस्य॑ मा॒तरः॑॥ ४॥
कु॒विद् वृ॑ष॒ण्यन्ती॑भ्यः पुना॒नो गर्भ॑मा॒दध॑त्। याः शु॒क्रं दु॑ह॒ते पयः॑॥ ५॥
उप॑ शिक्षापत॒स्थुषो॑ भि॒यस॒मा धे॑हि॒ शत्रु॑षु। पव॑मान वि॒दा र॒यिम्॥ ६॥
नि शत्रोः॑ सोम॒ वृष्ण्यं॒ नि शुष्मं॒ नि वय॑स्तिर। दू॒रे वा॑ स॒तो अन्ति॑ वा॥ ७॥

[२०] विंशं सूक्तम्

ऋषिः—असितः काश्यपो देवलो वा॥ देवता—पवमानः सोमः॥
छन्दः—१, ४-७ निचृद्गायत्री; २, ३ गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

अथ दशमो वर्गः॥ १०॥

प्र क॒विर्दे॒ववी॑त॒येऽव्यो॒ वारे॑भिरर्षति। सा॒ह्वान्विश्वा॑ अ॒भि स्पृधः॑॥ १॥
स हि ष्मा॑ जरि॒तृभ्य॒ आ वाजं॒ गोम॑न्त॒मिन्व॑ति। पव॑मानः सह॒स्रिण॑म्॥ २॥
परि॒ विश्वा॑नि॒ चेत॑सा मृ॒शसे॒ पव॑से म॒ती। स नः॑ सोम॒ श्रवो॑ विदः॥ ३॥
अ॒भ्य॑र्ष बृ॒हद्यशो॑ म॒घव॑द्भ्यो ध्रु॒वं र॒यिम्। इषं॑ स्तो॒तृभ्य॒ आ भ॑र॥ ४॥
त्वं राजे॑व सुव्र॒तो गिरः॑ सो॒मा वि॑वेशिथ। पु॒ना॒नो व॑ह्ने अद्भुत॥ ५॥
स वह्नि॑र॒प्सु दु॒ष्टरो॑ मृ॒ज्यमा॑नो॒ गभ॑स्त्योः। सोम॑श्च॒मूषु॑ सीदति॥ ६॥
क्री॒ळुर्म॒खो न मं॑ह॒युः प॒वित्रं॑ सोम गच्छसि। दध॑त्स्तो॒त्रे सु॒वीर्य॑म्॥ ७॥

[२१] एकविंशं सूक्तम्

ऋषिः—असितः काश्यपो देवलो वा॥ देवता—पवमानः सोमः॥
छन्दः—१, ३ विराड्गायत्री; २, ७ गायत्री; ४-६ निचृद्गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

अथ एकादशो वर्गः॥ ११॥

ए॒ते धा॑व॒न्तीन्द॑वः॒ सोमा॒ इन्द्रा॑य॒ घृष्व॑यः। म॒त्स॒रासः॑ स्व॒र्विदः॑॥ १॥
प्र॒वृ॒ण्वन्तो॑ अभि॒युजः॒ सुष्व॑ये वरिवो॒विदः॑। स्व॒यं स्तो॒त्रे व॑य॒स्कृतः॑॥ २॥
वृथा॒ क्रीळ॑न्त॒ इन्द॑वः स॒धस्थ॑म॒भ्येक॒मित्। सिन्धो॑रू॒र्मा व्य॑क्षरन्॥ ३॥
ए॒ते विश्वा॑नि॒ वार्या॒ पव॑मानास आशत। हि॒ता न सप्त॑यो॒ रथे॑॥ ४॥
आस्मि॑न्पि॒शङ्ग॑मिन्दवो॒ दधा॑ता वे॒नमा॒दिशे॑। यो अ॒स्मभ्य॒मरा॑वा॥ ५॥
ऋ॒भुर्न रथ्यं॒ नवं॒ दधा॑ता॒ केत॑मा॒दिशे॑। शु॒क्राः प॑वध्व॒मर्ण॑सा॥ ६॥
ए॒त उ॒ त्ये अ॑वीवश॒न्काष्ठां॑ वा॒जिनो॑ अक्रत। स॒तः प्रासा॑विषुर्म॒तिम्॥ ७॥

[२२] द्वाविंशं सूक्तम्

ऋषिः—असितः काश्यपो देवलो वा॥ देवता—पवमानः सोमः॥
छन्दः—१, २ गायत्री; ३ विराड्गायत्री; ४, ५, ६, ७ निचृद्गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

अथ द्वादशो वर्गः॥ १२॥

ए॒ते सोमा॑स आ॒शवो॒ रथा॑इव॒ प्र वा॒जिनः॑। सर्गाः॑ सृ॒ष्टा अ॑हेषत॥ १॥
ए॒ते वाता॑इवो॒रवः॑ प॒र्जन्य॑स्येव वृ॒ष्टयः॑। अ॒ग्नेरि॑व भ्र॒मा वृथा॑॥ २॥
ए॒ते पू॒ता वि॑प॒श्चितः॒ सोमा॑सो॒ दध्या॑शिरः। वि॒पा व्या॑नशु॒र्धियः॑॥ ३॥
ए॒ते मृ॒ष्टा अम॑र्त्याः ससृ॒वांसो॒ न श॑श्रमुः। इय॑क्षन्तः प॒थो रजः॑॥ ४॥
ए॒ते पृ॒ष्ठानि॒ रोद॑सोर्विप्रयन्तो॒ व्यानशुः। उ॒तेदमु॑त्त॒मं रजः॑॥ ५॥
तन्तुं॑ तन्वा॒नमु॑त्त॒ममनु॑ प्र॒वत॑ आशत। उ॒तेदमु॑त्त॒माय्य॑म्॥ ६॥
त्वं सोम॑ प॒णिभ्य॒ आ वसु॒ गव्यानि॑ धारयः। त॒तं तन्तु॑मचिक्रदः॥ ७॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

[२३] त्रयोविंशं सूक्तम्

ऋषिः—असितः काश्यपो देवलो वा ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—१, ४, ६ निचृद्गायत्री; ५ गायत्री; ७ विराड्गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथ त्रयोदशो वर्गः ॥ १३ ॥

सोमा असृग्रमाशवो मधोर्मदस्य धारया। अभि विश्वानि काव्या ॥ १ ॥
अनु प्रत्नास आयवः पदं नवीयो अक्रमुः। रुचे जनन्त सूर्यम् ॥ २ ॥
आ पवमान नो भरार्यो अदाशुषो गयम्। कृधि प्रजावतीरिषः ॥ ३ ॥
अभि सोमास आयवः पवन्ते मद्यं मदम्। अभि कोशं मधुश्चुतम् ॥ ४ ॥
सोमो अर्षति धर्णसिर्दधान इन्द्रियं रसम्। सुवीरो अभिशस्तिपाः ॥ ५ ॥
इन्द्राय सोम पवसे देवेभ्यः सधमाद्यः। इन्दो वाजं सिषाससि ॥ ६ ॥
अस्य पीत्वा मदानामिन्द्रो वृत्राण्यप्रति। जघान जघनच्च नु ॥ ७ ॥

[२४] चतुर्विंशं सूक्तम्

ऋषिः—असितः काश्यपो देवलो वा ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—१, २ गायत्री; ३, ५, ७ निचृद्गायत्री; ४, ६ विराड्गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथ चतुर्दशो वर्गः ॥ १४ ॥

प्र सोमासो अधन्विषुः पवमानास इन्दवः। श्रीणाना अप्सु मृञ्जत ॥ १ ॥
अभि गावो अधन्विषुरापो न प्रवता यतीः। पुनाना इन्द्रमाशत ॥ २ ॥
प्र पवमान धन्वसि सोमेन्द्राय पातवे। नृभिर्यतो वि नीयसे ॥ ३ ॥
त्वं सोम नृमादनः पवस्व चर्षणीसहे। सस्निर्यो अनुमाद्यः ॥ ४ ॥
इन्दो यदद्रिभिः सुतः पवित्रं परिधावसि। अरमिन्द्रस्य धाम्ने ॥ ५ ॥
पवस्व वृत्रहन्तमोक्थेभिरनुमाद्यः। शुचिः पावको अद्भुतः ॥ ६ ॥
शुचिः पावक उच्यते सोमः सुतस्य मध्वः। देवावीरघशंसहा ॥ ७ ॥

द्वितीयोऽनुवाकः

[२५] पञ्चविंशं सूक्तम्

ऋषिः—दृळ्हच्युत आगस्त्यः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—१, ३, ५, ६ गायत्री; २, ४ निचृद्गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथ पञ्चदशो वर्गः ॥ १५ ॥

पवस्व दक्षसाधनो देवेभ्यः पीतये हरे। मरुद्भ्यो वायवे मदः ॥ १ ॥
पवमान धिया हितोऽभि योनिं कनिक्रदत्। धर्णा वायुमा विश ॥ २ ॥
सं देवैः शोभते वृषा कविर्योनावधि प्रियः। वृत्रहा देववीतमः ॥ ३ ॥
विश्वा रूपाण्याविशन्पुनानो याति हर्यतः। यत्रामृतास आसते ॥ ४ ॥
अरुषो जनयन्गिरः सोमः पवत आयुषक्। इन्द्रं गच्छन्कविक्रतुः ॥ ५ ॥
आ पवस्व मदिन्तम पवित्रं धारया कवे। अर्कस्य योनिमासदम् ॥ ६ ॥

[२६] षड्विंशं सूक्तम्

ऋषिः—इध्मवाहो दाळ्भ्यच्युतः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—१, ३, ४, ५ निचृद्गायत्री; २, ६ गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथ षोडशो वर्गः ॥ १६ ॥

तमर्मृक्षन्त वाजिनमुपस्थे अदितेरधि। विप्रासो अण्व्या धिया ॥ १ ॥
तं गावो अभ्यनूषत सहस्रधारमक्षितम्। इन्दुं धर्तारमा दिवः ॥ २ ॥
तं वेधां मेधयाह्यन्पवमानमधि द्यवि। धर्णसिं भूरिधायसम् ॥ ३ ॥
तमह्यन्भुरिजोर्धिया संवसानं विवस्वतः। पतिं वाचो अदाभ्यम् ॥ ४ ॥
तं सानावधि जामयो हरिं हिन्वन्त्यद्रिभिः। हर्यतं भूरिचक्षसम् ॥ ५ ॥
तं त्वा हिन्वन्ति वेधसः पवमान गिरावृधम्। इन्दविन्द्राय मत्सरम् ॥ ६ ॥

[२७] सप्तविंशं सूक्तम्

ऋषिः—नृमेधः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—१, २, ६ निचृद्गायत्री; ३-५ गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथ सप्तदशो वर्गः ॥ १७ ॥

एष कविरभिष्टुतः पवित्रे अधि तोशते। पुनानो घ्नन्प स्त्रिधः ॥ १ ॥
एष इन्द्राय वायवे स्वर्जित्परि षिच्यते। पवित्रे दक्षसाधनः ॥ २ ॥
एष नृभिर्वि नीयते दिवो मूर्धा वृषा सुतः। सोमो वनेषु विश्ववित् ॥ ३ ॥
एष गव्युरचिक्रदत्पवमानो हिरण्ययुः। इन्दुः सत्राजिदस्तृतः ॥ ४ ॥
एष सूर्येण हासते पवमानो अधि द्यवि। पवित्रे मत्सरो मदः ॥ ५ ॥
एष शुष्म्यसिष्यदद्दन्तरिक्षे वृषा हरिः। पुनान इन्दुरिन्द्रमा ॥ ६ ॥

[२८] अष्टाविंशं सूक्तम्

ऋषिः—प्रियमेधः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—१, ४, ५ गायत्री; २, ३, ६ विराड्गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथ अष्टादशो वर्गः ॥ १८ ॥

एष वाजी हितो नृभिर्विश्वविन्मनसस्पतिः। अव्यो वारं वि धावति ॥ १ ॥
एष पवित्रे अक्षरत्सोमो देवेभ्यः सुतः। विश्वा धामान्याविशन् ॥ २ ॥
एष देवः शुभायतेऽधि योनावमर्त्यः। वृत्रहा देववीतमः ॥ ३ ॥
एष वृषा कनिक्रदद्दशभिर्जामिभिर्यतः। अभि द्रोणानि धावति ॥ ४ ॥
एष सूर्येमरोचयत्पवमानो विचर्षणिः। विश्वा धामानि विश्ववित् ॥ ५ ॥
एष शुष्म्यदोह्यः सोमः पुनानो अर्षति। देवावीरघशंसहा ॥ ६ ॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

[२९] एकोनत्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—नृमेधः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—१ विराड्गायत्री; २-४, ६ निचृद्गायत्री; ५ गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथ एकोनविंशो वर्गः ॥ १९ ॥

प्रास्य धारा अक्षरन्वृष्णः सुतस्यौजसा। देवाँ अनु प्रभूषतः ॥ १ ॥
सप्तिं मृजन्ति वेधसो गृणन्तः कारवो गिरा। ज्योतिर्जज्ञानमुक्थ्यम् ॥ २ ॥
सुषहा सोम तानि ते पुनानाय प्रभूवसो। वधौ समुद्रमुक्थ्यम् ॥ ३ ॥
विश्वा वसूनि संजयन्पवस्व सोम धारया। इनु द्वेषांसि सध्र्यक् ॥ ४ ॥
रक्षा सु नो अरुरुषः स्वनात्समस्य कस्य चित्। निदो यत्र मुमुच्महे ॥ ५ ॥
एन्दो पार्थिवं रयिं दिव्यं पवस्व धारया। द्युमन्तं शुष्ममा भर ॥ ६ ॥

[३०] त्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—बिन्दुः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—१, २, ६ गायत्री; ३-५ निचृद्गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथ विंशो वर्गः ॥ २० ॥

प्र धारा अस्य शुष्मिणो वृथा पवित्रे अक्षरन्। पुनानो वाचमिष्यति ॥ १ ॥
इन्दुर्हियानः सोतृभिर्मृज्यमानः कनिक्रदत्। इयर्ति वग्नुमिन्द्रियम् ॥ २ ॥
आ नः शुष्मं नृषाह्यं वीरवन्तं पुरुस्पृहम्। पवस्व सोम धारया ॥ ३ ॥
प्र सोमो अति धारया पवमानो असिष्यदत्। अभि द्रोणान्यासदम् ॥ ४ ॥
अप्सु त्वा मधुमत्तमं हरिं हिन्वन्त्यद्रिभिः। इन्दविन्द्राय पीतये ॥ ५ ॥
सुनोता मधुमत्तमं सोममिन्द्राय वज्रिणे। चारुं शर्धाय मत्सरम् ॥ ६ ॥

[३१] एकत्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—गोतमः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—१ ककुम्मतीगायत्री; २ यवमध्यागायत्री; ३, ५ गायत्री; ४, ६ निचृद्गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथ एकविंशो वर्गः ॥ २१ ॥

प्र सोमासः स्वाध्यः पवमानासो अक्रमुः। रयिं कृण्वन्ति चेतनम् ॥ १ ॥
दिवस्पृथिव्या अधि भवेन्दो द्युम्नवर्धनः। भवा वाजानां पतिः ॥ २ ॥
तुभ्यं वाता अभिप्रियस्तुभ्यमर्षन्ति सिन्धवः। सोम वर्धन्ति ते महः ॥ ३ ॥
आ प्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोम वृष्ण्यम्। भवा वाजस्य संगथे ॥ ४ ॥
तुभ्यं गावो घृतं पयो बभ्रो दुदुह्रे अक्षितम्। वर्षिष्ठे अधि सानवि ॥ ५ ॥
स्वायुधस्य ते सतो भुवनस्य पते वयम्। इन्दो सखित्वमुश्मसि ॥ ६ ॥

[३२] द्वात्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—श्यावाश्वः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—१, २ निचृद्गायत्री; ३-६ गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथ द्वाविंशो वर्गः ॥ २२ ॥

प्र सोमासो मदच्युतः श्रवसे नो मघोनः। सुता विदथे अक्रमुः ॥ १ ॥
आदीं त्रितस्य योषणो हरिं हिन्वन्त्यद्रिभिः। इन्दुमिन्द्राय पीतये ॥ २ ॥
आदीं हंसो यथा गणं विश्वस्यावीवशन्मतिम्। अत्यो न गोभिरज्यते ॥ ३ ॥
उभे सोमावचाकशन्मृगो न तक्तो अर्षसि। सीदन्नृतस्य योनिमा ॥ ४ ॥
अभि गावो अनूषत योषा जारमिव प्रियम्। अर्गन्नाजिं यथा हितम् ॥ ५ ॥
अस्मे धेहि द्युमद्यशो मघवद्भ्यश्च मह्यं च। सनिं मेधामुत श्रवः ॥ ६ ॥

[३३] त्रयस्त्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—त्रितः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—१ ककुम्मतीगायत्री; २, ४, ५ गायत्री; ३, ६ निचृद्गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथ त्रयोविंशो वर्गः ॥ २३ ॥

प्र सोमासो विपश्चितोऽपां न यन्त्यूर्मयः। वनानि महिषाइव ॥ १ ॥
अभि द्रोणानि बभ्रवः शुक्रा ऋतस्य धारया। वाजं गोमन्तमक्षरन् ॥ २ ॥
सुता इन्द्राय वायवे वरुणाय मरुद्भ्यः। सोमा अर्षन्ति विष्णवे ॥ ३ ॥
तिस्रो वाच उदीरते गावो मिमन्ति धेनवः। हरिरेति कनिक्रदत् ॥ ४ ॥
अभि ब्रह्मीरनूषत यह्वीर्ऋतस्य मातरः। मर्मृज्यन्ते दिवः शिशुम् ॥ ५ ॥
रायः समुद्रांश्चतुरोऽस्मभ्यं सोम विश्वतः। आ पवस्व सहस्रिणः ॥ ६ ॥

[३४] चतुस्त्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—त्रितः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—१, २, ४ निचृद्गायत्री; ३, ५, ६ गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथ चतुर्विंशो वर्गः ॥ २४ ॥

प्र सुवानो धारया तनेन्दुर्हिन्वानो अर्षति। रुजद् दृळहा व्योजसा ॥ १ ॥
सुत इन्द्राय वायवे वरुणाय मरुद्भ्यः। सोमो अर्षति विष्णवे ॥ २ ॥
वृषाणं वृषभिर्यतं सुन्वन्ति सोममद्रिभिः। दुहन्ति शक्मना पयः ॥ ३ ॥
भुवत्त्रितस्य मर्ज्यो भुवदिन्द्राय मत्सरः। सं रूपैरज्यते हरिः ॥ ४ ॥
अभीमृतस्य विष्टपं दुहते पृश्निमातरः। चारुं प्रियतमं हविः ॥ ५ ॥
सोमं गावो धेनवो गिरो अर्षन्ति सस्रुतः। धेनूर्वाश्रो अवीवशत् ॥ ६ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

[३५] पञ्चत्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—प्रभूवसुः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—१, २, ४-६ गायत्री; ३ विराड्गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथ पञ्चविंशो वर्गः ॥ २५ ॥

आ नः पवस्व धारया पवमान रयिं पृथुम्। यया ज्योतिर्विदासि नः ॥ १ ॥
इन्दो समुद्रमीङ्खय पवस्व विश्वमेजय। रायो धर्ता न ओजसा ॥ २ ॥
त्वया वीरेण वीरवोऽभि ष्याम पृतन्यतः। क्षरा णो अभि वार्यम् ॥ ३ ॥
प्र वाजमिन्दुरिष्यति सिषासन्वाजसा ऋषिः। व्रता विदान आयुधा ॥ ४ ॥
तं गीर्भिर्वीचमीङ्खयं पुनानं वासयामसि। सोमं जनस्य गोपतिम् ॥ ५ ॥
विश्वो यस्य व्रते जनो दाधार धर्मणस्पतेः। पुनानस्य प्रभूवसोः ॥ ६ ॥

[३६] षट्त्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—प्रभूवसुः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—१ पादनिचृद्गायत्री; २, ६ गायत्री; ३-५ निचृद्गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथ षड्विंशो वर्गः ॥ २६ ॥

असर्जि रथ्यो यथा पवित्रे चम्वोः सुतः। कार्ष्मन्वाजी न्यक्रमीत् ॥ १ ॥
स वह्निः सोम जागृविः पवस्व देववीरति। अभि कोशं मधुश्चुतम् ॥ २ ॥
स नो ज्योतींषि पूर्व्य पवमान वि रोचय। क्रत्वे दक्षाय नो हिनु ॥ ३ ॥
शुम्भमान ऋतायुभिर्मृज्यमानो गभस्त्योः। पवते वारे अव्यये ॥ ४ ॥
स विश्वा दाशुषे वसु सोमो दिव्यानि पार्थिवा। पवतामान्तरिक्ष्या ॥ ५ ॥
आ दिवस्पृष्ठमश्वयुर्गव्ययुः सोम रोहसि। वीरयुः शवसस्पते ॥ ६ ॥

[३७] सप्तत्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—रहूगणः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—१-३ गायत्री; ४-६ निचृद्गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथ सप्तविंशो वर्गः ॥ २७ ॥

स सुतः पीतये वृषा सोमः पवित्रे अर्षति। विघ्नन्रक्षांसि देवयुः ॥ १ ॥
स पवित्रे विचक्षणो हरिरर्षति धर्णसिः। अभि योनिं कनिक्रदत् ॥ २ ॥
स वाजी रोचना दिवः पवमानो वि धावति। रक्षोहा वारमव्ययम् ॥ ३ ॥
स त्रितस्याधि सानवि पवमानो अरोचयत्। जामिभिः सूर्यं सह ॥ ४ ॥
स वृत्रहा वृषा सुतो वरिवोविददाभ्यः। सोमो वाजमिवासरत् ॥ ५ ॥
स देवः कविनेषितोऽभि द्रोणानि धावति। इन्दुरिन्द्राय मंहना ॥ ६ ॥

[३८] अष्टात्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—रहूगणः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—१, २, ४, ६ निचृद्गायत्री; ३ गायत्री; ५ ककुम्मतीगायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथ अष्टाविंशो वर्गः ॥ २८ ॥

एष उ स्य वृषा रथोऽव्यो वारेभिरर्षति। गच्छन्वाजं सहस्रिणम् ॥ १ ॥
एतं त्रितस्य योषणो हरिं हिन्वन्त्यद्रिभिः। इन्दुमिन्द्राय पीतये ॥ २ ॥
एतं त्यं हरितो दश मर्मृज्यन्ते अपस्युवः। याभिर्मदाय शुम्भते ॥ ३ ॥
एष स्य मानुषीष्वा श्येनो न विक्षु सीदति। गच्छञ्जारो न योषितम् ॥ ४ ॥
एष स्य मद्यो रसोऽवं चष्टे दिवः शिशुः। य इन्दुर्वारमाविशत् ॥ ५ ॥
एष स्य पीतये सुतो हरिरर्षति धर्णसिः। क्रन्दन्योनिमभि प्रियम् ॥ ६ ॥

[३९] एकोनचत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—बृहन्मतिः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—१, ४, ६ निचृद्गायत्री; २, ३, ५ गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथ एकोनत्रिंशो वर्गः ॥ २९ ॥

आशुरर्ष बृहन्मते परि प्रियेण धाम्ना। यत्र देवा इति ब्रुवन् ॥ १ ॥
परिष्कृण्वन्ननिष्कृतं जनाय यातयन्निषः। वृष्टिं दिवः परि स्रव ॥ २ ॥
सुत एति पवित्र आ त्विषिं दधान ओजसा। विचक्षाणो विरोचयन् ॥ ३ ॥
अयं स यो दिवस्परि रघुयामा पवित्र आ। सिन्धोरूर्मा व्यक्षरत् ॥ ४ ॥
आविवासन्परावतो अथो अर्वावतः सुतः। इन्द्राय सिच्यते मधु ॥ ५ ॥
समीचीना अनूषत हरिं हिन्वन्त्यद्रिभिः। योनावृतस्य सीदत ॥ ६ ॥

[४०] चत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—बृहन्मतिः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—१, २ गायत्री; ३-६ निचृद्गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथ त्रिंशो वर्गः ॥ ३० ॥

पुनानो अक्रमीदभि विश्वा मृधो विचर्षणिः। शुम्भन्ति विप्रं धीतिभिः ॥ १ ॥
आ योनिमरुणो रुहद्गमदिन्द्रं वृषा सुतः। ध्रुवे सदसि सीदति ॥ २ ॥
नू नो रयिं महामिन्दोऽस्मभ्यं सोम विश्वतः। आ पवस्व सहस्रिणम् ॥ ३ ॥
विश्वा सोम पवमान द्युम्नानीन्दवा भर। विदाः सहस्रिणीरिषः ॥ ४ ॥
स नः पुनान आ भर रयिं स्तोत्रे सुवीर्यम्। जरितुर्वर्धया गिरः ॥ ५ ॥
पुनान इन्दवा भर सोम द्विबर्हसं रयिम्। वृषन्निन्दो न ऊतये ॥ ६ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

[४१] एकचत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—मेध्यातिथिः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—१, ३-५ गायत्री; २ ककुम्मतीगायत्री; ६ निचृद्गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथ एकत्रिंशो वर्गः ॥ ३१ ॥

प्र ये गावो न भूर्णयस्त्वेषा अयासो अक्रमुः। घ्नन्तः कृष्णामप त्वचम् ॥ १ ॥
सुवितस्य मनामहेऽति सेतुं दुरावयम्। साह्वांसो दस्युमव्रतम् ॥ २ ॥
शृण्वे वृष्टेरिव स्वनः पवमानस्य शुष्मिणः। चरन्ति विद्युतो दिवि ॥ ३ ॥
आ पवस्व महीमिषं गोमदिन्दो हिरण्यवत्। अश्वावद्वाजवत्सुतः ॥ ४ ॥
स पवस्व विचर्षण आ मही रोदसी पृण। उषाः सूर्यो न रश्मिभिः ॥ ५ ॥
परि णः शर्मयन्त्या धारया सोम विश्वतः। सरा रसेव विष्टपम् ॥ ६ ॥

[४२] द्विचत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—मेध्यातिथिः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—१, २ निचृद्गायत्री; ३, ४, ६ गायत्री; ५ ककुम्मतीगायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथ द्वात्रिंशो वर्गः ॥ ३२ ॥

जनयन्नोचना दिवो जनयन्नप्सु सूर्यम्। वसानो गा अपो हरिः ॥ १ ॥
एष प्रत्नेन मन्मना देवो देवेभ्यस्परि। धारया पवते सुतः ॥ २ ॥
वावृधानाय तूर्वये पवन्ते वाजसातये। सोमाः सहस्रपाजसः ॥ ३ ॥
दुहानः प्रत्नमित्पयः पवित्रे परि षिच्यते। क्रन्दन्देवाँ अजीजनत् ॥ ४ ॥
अभि विश्वानि वार्याभि देवाँ ऋतावृधः। सोमः पुनानो अर्षति ॥ ५ ॥
गोमन्नः सोम वीरवदश्वावद्वाजवत्सुतः। पवस्व बृहतीरिषः ॥ ६ ॥

[४३] त्रिचत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—मेध्यातिथिः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—१, २, ४, ५ गायत्री; ३, ६ निचृद्गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथ त्रयस्त्रिंशो वर्गः ॥ ३३ ॥

यो अत्यइव मृज्यते गोभिर्मदाय हर्यतः। तं गीर्भिर्वासयामसि ॥ १ ॥
तं नो विश्वा अवस्युवो गिरः शुम्भन्ति पूर्वथा। इन्दुमिन्द्राय पीतये ॥ २ ॥
पुनानो याति हर्यतः सोमो गीर्भिः परिष्कृतः। विप्रस्य मेध्यातिथेः ॥ ३ ॥
पवमान विदा रयिमस्मभ्यं सोम सुश्रियम्। इन्दो सहस्रवर्चसम् ॥ ४ ॥
इन्दुरत्यो न वाजसृत्कनिक्रन्ति पवित्र आ। यदक्षारति देवयुः ॥ ५ ॥
पवस्व वाजसातये विप्रस्य गृणतो वृधे। सोम रास्वे सुवीर्यम् ॥ ६ ॥

इति षष्ठाष्टकेऽष्टमोऽध्यायः ॥
इति षष्ठोऽष्टकः ॥

अथ सप्तमाष्टके प्रथमोऽध्यायः

[४४] चतुश्चत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—अयास्यः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—१ निचृद्गायत्री; २-६ गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथ प्रथमो वर्गः ॥ १ ॥

प्र ण इन्दो महे तन ऊर्मिं न बिभ्रदर्षसि। अभि देवाँ अयास्यः ॥ १ ॥
मती जुष्टो धिया हितः सोमो हिन्वे परावति। विप्रस्य धारया कविः ॥ २ ॥
अयं देवेषु जागृविः सुत एति पवित्र आ। सोमो याति विचर्षणिः ॥ ३ ॥
स नः पवस्व वाजयुश्चक्राणश्चारुमध्वरम्। बर्हिष्माँ आ विवासति ॥ ४ ॥
स नो भगाय वायवे विप्रवीरः सदावृधः। सोमो देवेष्वा यमत् ॥ ५ ॥
स नो अद्य वसुत्तये क्रतुविद्रातुवित्तमः। वाजं जेषि श्रवो बृहत् ॥ ६ ॥

[४५] पञ्चचत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—अयास्यः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—१, ३-५ गायत्री; २, विराड्गायत्री; ६ निचृद्गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथ द्वितीयो वर्गः ॥ २ ॥

स पवस्व मदाय कं नृचक्षा देववीतये। इन्दविन्द्राय पीतये ॥ १ ॥
स नो अर्षाभि दूत्यं त्वमिन्द्राय तोशसे। देवान्त्सखिभ्य आ वरम् ॥ २ ॥
उत त्वामरुणं वयं गोभिरञ्मो मदाय कम्। वि नो राये दुरो वृधि ॥ ३ ॥
अत्यू पवित्रमक्रमीद्वाजी धुरं न यामनि। इन्दुर्देवेषु पत्यते ॥ ४ ॥
समी सखायो अस्वरन्वने क्रीळन्तमत्यविम्। इन्दुं नावा अनूषत ॥ ५ ॥
तया पवस्व धारया यया पीतो विचक्षसे। इन्दो स्तोत्रे सुवीर्यम् ॥ ६ ॥

[४६] षट्चत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—अयास्यः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—१ ककुम्मतीगायत्री; २, ४, ६ निचृद्गायत्री; ३, ५ गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथ तृतीयो वर्गः ॥ ३ ॥

असृग्रन्देववीतयेऽत्यासः कृत्व्या इव। क्षरन्तः पर्वतावृधः ॥ १ ॥
परिष्कृतास इन्दवो योषेव पित्र्यावती। वायुं सोमा असृक्षत ॥ २ ॥
एते सोमास इन्दवः प्रयस्वन्तश्चमू सुताः। इन्द्रं वर्धन्ति कर्मभिः ॥ ३ ॥
आ पवस्व सहस्रिणं रयिं गृभ्णीत मन्थिनम्। गोभिः श्रीणीत मत्सरम् ॥ ४ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

स पवस्व धनंजय प्रयन्ता राधसो महः। अस्मभ्यं सोम गातुवित्॥ ५॥
एतं मृजन्ति मर्ज्यं पवमानं दश क्षिपः। इन्द्राय मत्सरं मदम्॥ ६॥

[४७] सप्तचत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—कविर्भार्गवः॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—१, ३, ४ गायत्री; २ निचृद्गायत्री; ५ विराड्गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

अथ चतुर्थो वर्गः॥ ४॥

अया सोमः सुकृत्यया महश्चिदभ्यवर्धत। मन्दान उद् वृषायते॥ १॥
कृतानीदस्य कर्त्वा चेतन्ते दस्युतर्हणा। ऋणा च धृष्णुश्चयते॥ २॥
आत्सोमं इन्द्रियो रसो वज्रः सहस्रसा भुवत्। उक्थं यदस्य जायते॥ ३॥
स्वयं कविर्विधर्तरि विप्राय रत्नमिच्छति। यदी मर्मृज्यते धियः॥ ४॥
सिषासन्तू रयीणां वाजेष्ववर्वतामिव। भरेषु जिग्युषामसि॥ ५॥

[४८] अष्टचत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—कविर्भार्गवः॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—१, ५ गायत्री; २-४ निचृद्गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

अथ पञ्चमो वर्गः॥ ५॥

तं त्वा नृम्णानि बिभ्रतं सधस्थेषु महो दिवः। चारुं सुकृत्ययेमहे॥ १॥
संवृक्तधृष्णुमुक्थ्यं महामहिव्रतं मदम्। शतं पुरो रुरुक्षणिम्॥ २॥
अतस्त्वा रयिमभि राजानं सुक्रतो दिवः। सुपर्णो अव्यथिर्भरत्॥ ३॥
विश्वस्मा इत्स्वर्दृशे साधारणं रजस्तुरम्। गोपामृतस्य विर्भरत्॥ ४॥
अधा हिन्वान इन्द्रियं ज्यायो महित्वमानशे। अभिष्टिकृद्विचर्षणिः॥ ५॥

[४९] एकोनपञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—कविर्भार्गवः॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—१, ४, ५ निचृद्गायत्री; २, ३ गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

अथ षष्ठो वर्गः॥ ६॥

पवस्व वृष्टिमा सु नोऽपामूर्मिं दिवस्परि। अयक्ष्मा बृहतीरिषः॥ १॥
तया पवस्व धारया यया गावं इहागमन्। जन्यासु उप नो गृहम्॥ २॥
घृतं पवस्व धारया यज्ञेषु देववीतमः। अस्मभ्यं वृष्टिमा पव॥ ३॥
स नं ऊर्जे व्यव्ययं पवित्रं धाव धारया। देवासः शृणवन्हि कम्॥ ४॥
पवमानो असिष्यदद्रक्षांस्यपजङ्घनत्। प्रत्नवद्रोचयन्नुचः॥ ५॥

[५०] पञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—उचथ्यः॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—१, २, ४, ५ गायत्री; ३ निचृद्गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

अथ सप्तमो वर्गः॥ ७॥

उत्ते शुष्मास ईरते सिन्धोरूर्मेरिव स्वनः। वाणस्य चोदया पविम्॥ १॥
प्रसवे त उदीरते तिस्रो वाचो मखस्युवः। यदव्य एषि सानवि॥ २॥
अव्यो वारे परि प्रियं हरिं हिन्वन्त्यद्रिभिः। पवमानं मधुश्चुतम्॥ ३॥
आ पवस्व मदिन्तम पवित्रं धारया कवे। अर्कस्य योनिमासदम्॥ ४॥
स पवस्व मदिन्तम गोभिरञ्जानो अक्तुभिः। इन्दविन्द्राय पीतये॥ ५॥

[५१] एकपञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—उचथ्यः॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—१, २ गायत्री; ३-५ निचृद्गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

अथ अष्टमो वर्गः॥ ८॥

अध्वर्यो अद्रिभिः सुतं सोमं पवित्र आ सृज। पुनीहीन्द्राय पातवे॥ १॥
दिवः पीयूषमुत्तमं सोममिन्द्राय वज्रिणे। सुनोता मधुमत्तमम्॥ २॥
तव त्य इन्दो अन्धसो देवा मधोर्व्यश्नते। पवमानस्य मरुतः॥ ३॥
त्वं हि सोम वर्धयन्त्सुतो मदाय भूर्णये। वृषन्तस्तोतार मूतये॥ ४॥
अभ्यर्ष विचक्षण पवित्रं धारया सुतः। अभि वाजमुत श्रवः॥ ५॥

[५२] द्विपञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—उचथ्यः॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—१ भुरिग्गायत्री; २ गायत्री; ३, ५ निचृद्गायत्री; ४ विराड्गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

अथ नवमो वर्गः॥ ९॥

परि द्युक्षः सनद्रयिर्भरद्वाजं नो अन्धसा। सुवानो अर्ष पवित्र आ॥ १॥
तवं प्रत्नेभिरध्वभिरव्यो वारे परि प्रियः। सहस्रधारो यात्तना॥ २॥
चरुर्न यस्तमीङ्खयेन्दो न दानमीङ्खय। वधैर्वधस्नवीङ्खय॥ ३॥
नि शुष्ममिन्दवेषां पुरुहूत जनानाम्। यो अस्माँ आदिदेशति॥ ४॥
शतं नं इन्द ऊतिभिः सहस्रं वा शुचीनाम्। पवस्व मंहयद्रयिः॥ ५॥

[५३] त्रिपञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—अवत्सारः॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—१, ३ निचृद्गायत्री; २, ४ गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

अथ दशमो वर्गः॥ १०॥

उत्ते शुष्मासो अस्थू रक्षो भिन्दन्तो अद्रिवः। नुदस्व याः परिस्पृधः॥ १॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अया निजघ्निरोजसा रथसङ्गे धनेहिते। स्तवा अबिभ्युषा हृदा॥ २॥
अस्य व्रतानि नाधृषे पवमानस्य दूढ्या। रुज यस्त्वा पृतन्यति॥ ३॥
तं हिन्वन्ति मदच्युतं हरिं नदीषु वाजिनम्। इन्दुमिन्द्राय मत्सरम्॥ ४॥

[५४] चतुष्पञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—अवत्सारः॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—१, २, ४ गायत्री; ३ निचृद्गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

अथ एकादशो वर्गः॥ ११॥

अस्य प्रत्नामनु द्युतं शुक्रं दुदुह्रे अह्रयः। पयः सहस्रसामृषिम्॥ १॥
अयं सूर्य इवोपदृगयं सरांसि धावति। सप्त प्रवत आ दिवम्॥ २॥
अयं विश्वानि तिष्ठति पुनानो भुवनोपरि। सोमो देवो न सूर्यः॥ ३॥
परि णो देववीतये वाजाँ अर्षसि गोमतः। पुनान इन्दविन्द्रयुः॥ ४॥

[५५] पञ्चपञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—अवत्सारः॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—१, २ गायत्री; ३, ४ निचृद्गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

अथ द्वादशो वर्गः॥ १२॥

यवं यवं नो अन्धसा पुष्टंपुष्टं परि स्रव। सोम विश्वा च सौभगा॥ १॥
इन्दो यथा तव स्तवो यथा ते जातमन्धसः। नि बर्हिषि प्रिये सदः॥ २॥
उत नो गोविदश्ववित्पवस्व सोमान्धसा। मक्षूतमेभिरहभिः॥ ३॥
यो जिनाति न जीयते हन्ति शत्रुमभीत्य। स पवस्व सहस्रजित्॥ ४॥

[५६] षट्पञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—अवत्सारः॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—१-३ गायत्री; ४ यवमध्यागायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

अथ त्रयोदशो वर्गः॥ १३॥

परि सोम ऋतं बृहदाशुः पवित्रे अर्षति। विघ्नन्रक्षांसि देवयुः॥ १॥
यत्सोमो वाजमर्षति शतं धारा अपस्युवः। इन्द्रस्य सख्यमाविशन्॥ २॥
अभि त्वा योषणो दश जारं न कन्यानूषत। मृज्यसे सोम सातये॥ ३॥
त्वमिन्द्राय विष्णवे स्वादुरिन्दो परि स्रव। नृन्स्तोतॄन्पाह्यंहसः॥ ४॥

[५७] सप्तपञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—अवत्सारः॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—१, ३ गायत्री; २ निचृद्गायत्री; ४ ककुम्मतीगायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

अथ चतुर्दशो वर्गः॥ १४॥

प्र ते धारा असश्चतो दिवो न यन्ति वृष्टयः। अच्छा वाजं सहस्रिणम्॥ १॥

अभि प्रियाणि काव्या विश्वा चक्षाणो अर्षति। हरिस्तुञ्जान आयुधा॥ २॥
स मर्मृजान आयुभिरभ्रो राजेव सुव्रतः। श्येनो न वंसु षीदति॥ ३॥
स नो विश्वा दिवो वसूतो पृथिव्या अधि। पुनान इन्दवा भर॥ ४॥

[५८] अष्टपञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—अवत्सारः॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—१, ३ निचृद्गायत्री; २ विराड्गायत्री; ४ गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

अथ पञ्चदशो वर्गः॥ १५॥

तरत्स मन्दी धावति धारा सुतस्यान्धसः। तरत्स मन्दी धावति॥ १॥
उस्रा वेद वसूनां मर्तस्य देव्यवसः। तरत्स मन्दी धावति॥ २॥
ध्वस्रयोः पुरुषन्त्योरा सहस्राणि दद्महे। तरत्स मन्दी धावति॥ ३॥
आ ययोस्त्रिंशतं तना सहस्राणि च दद्महे। तरत्स मन्दी धावति॥ ४॥

[५९] एकोनषष्टितमं सूक्तम्

ऋषिः—अवत्सारः॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—१ गायत्री; २ आर्ची-स्वराड्गायत्री; ३, ४ निचृद्गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

अथ षोडशो वर्गः॥ १६॥

पवस्व गोजिदश्वजिद्धिरण्यजित्सोम रण्यजित्। प्रजावदग्नमा भर॥ १॥
पवस्वाद्र्यो अदाभ्यः पवस्वौषधीभ्यः। पवस्व धिषणाभ्यः॥ २॥
त्वं सोम पवमानो विश्वानि दुरिता तर। कविः सीद नि बर्हिषि॥ ३॥
पवमान स्वर्विदो जायमानोऽभवो महान्। इन्दो विश्वाँ अभीदसि॥ ४॥

[६०] षष्टितमं सूक्तम्

ऋषिः—अवत्सारः॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—१, २, ४ गायत्री; ३ निचृदुष्णिक्॥ स्वरः—१, २, ४ षड्जः; ३ ऋषभः॥

अथ सप्तदशो वर्गः॥ १७॥

प्र गायत्रेण गायत पवमानं विचर्षणिम्। इन्दुं सहस्रचक्षसम्॥ १॥
तं त्वा सहस्रचक्षसमथो सहस्रभर्णसम्। अति वारमपाविषुः॥ २॥
अति वारान्पवमानो असिष्यदत्कलशाँ अभि धावति। इन्द्रस्य ह्रदींविशन्॥ ३॥
इन्द्रस्य सोम राधसे शं पवस्व विचर्षणे। प्रजावद्रेत आ भर॥ ४॥

तृतीयोऽनुवाकः

[६१] एकषष्टितमं सूक्तम्

ऋषिः—अमहीयुः॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—१, ४, ५, ८, १०, १२, १५, १८, २२-२४, २९, ३० निचृद्गायत्री; २, ३, ६, ७, ९, १३, १४, १६, १७, २०, २१, २६-२८ गायत्री; ११, १९ विराड्गायत्री; २५ ककुम्मतीगायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अथ अष्टादशो वर्गः ॥ १८ ॥

अया वीती परि स्रव यस्त इन्दो मदेष्वा। अवाहन्नवतीर्नव ॥ १ ॥
पुरः सद्य इत्थाधिये दिवोदासाय शम्बरम्। अध त्यं तुर्वशं यदुम् ॥ २ ॥
परि णो अश्वमश्ववित्पवस्व गोमदिन्दो हिरण्यवत्। क्षरा सहस्रिणीरिषः ॥ ३ ॥
पवमानस्य ते वयं पवित्रमभ्युन्दतः। सखित्वमा वृणीमहे ॥ ४ ॥
ये ते पवित्रमूर्मयोऽभिक्षरन्ति धारया। तेभिर्नः सोम मृळय ॥ ५ ॥

अथ एकोनविंशो वर्गः ॥ १९ ॥

स नः पुनान आ भर रयिं वीरवतीमिषम्। ईशानः सोम विश्वतः ॥ ६ ॥
एतमु त्यं दश क्षिपो मृजन्ति सिन्धुमातरम्। समादित्येभिरख्यत ॥ ७ ॥
समिन्द्रेणोत वायुना सुत एति पवित्र आ। सं सूर्यस्य रश्मिभिः ॥ ८ ॥
स नो भगाय वायवे पूष्णे पवस्व मधुमान्। चारुर्मित्रे वरुणे च ॥ ९ ॥
उच्चा ते जातमन्धसो दिवि षद्भूम्या ददे। उग्रं शर्म महि श्रवः ॥ १० ॥

अथ विंशो वर्गः ॥ २० ॥

एना विश्वान्यर्य आ द्युम्नानि मानुषाणाम्। सिषासन्तो वनामहे ॥ ११ ॥
स न इन्द्राय यज्यवे वरुणाय मरुद्भ्यः। वरिवोवित्परि स्रव ॥ १२ ॥
उपो षु जातमप्तुरं गोभिर्भङ्गं परिष्कृतम्। इन्दुं देवा अयासिषुः ॥ १३ ॥
तमिद्वर्धन्तु नो गिरो वत्सं संशिश्वरीरिव। य इन्द्रस्य हृदंसनिः ॥ १४ ॥
अषी णः सोम शं गवे धुक्षस्व सिप्युषीमिषम्। वधी समुद्रमुक्थ्यम् ॥ १५ ॥

अथ एकविंशो वर्गः ॥ २१ ॥

पवमानो अजिजनद्दिवश्चित्रं न तन्यतुम्। ज्योतिर्वैश्वानरं बृहत् ॥ १६ ॥
पवमानस्य ते रसो मदो राजन्नदुच्छुनः। वि वारमव्यमर्षति ॥ १७ ॥
पवमान रसस्तव दक्षो वि राजति द्युमान्। ज्योतिर्विश्वं स्वर्दृशे ॥ १८ ॥
यस्ते मदो वरेण्यस्तेना पवस्वान्धसा। देवावीरघशंसहा ॥ १९ ॥
जघ्निर्वृत्रममित्रियं सस्निर्वाजं दिवेदिवे। गोषा उ अश्वसा असि ॥ २० ॥

अथ द्वाविंशो वर्गः ॥ २२ ॥

संपिंशल्ले अरुषो भव सूपस्थाभिर्न धेनुभिः। सीदञ्छ्येनो न योनिमा ॥ २१ ॥
स पवस्व य आविथेन्द्रं वृत्राय हन्तवे। वव्रिवांसं महीरपः ॥ २२ ॥
सुवीरासो वयं धना जयेम सोम मीढ्वः। पुनानो वर्ध नो गिरः ॥ २३ ॥
त्वोतासस्तवावसा स्याम वन्वन्तो आमुरः। सोम व्रतेषु जागृहि ॥ २४ ॥
अपघ्नन्पवते मृधोऽप सोमो अरावणः। गच्छन्निन्द्रस्य निष्कृतम् ॥ २५ ॥

अथ त्रयोविंशो वर्गः ॥ २३ ॥

महो नो राय आ भर पवमान जही मृधः। रास्वेन्दो वीरवद्यशः ॥ २६ ॥
न त्वा शतं चन ह्रुतो राधो दित्सन्तमा मिनन्। यत्पुनानो मखस्यसे ॥ २७ ॥
पवस्वेन्दो वृषा सुतः कृधी नो यशसो जने। विश्वा अप द्विषो जहि ॥ २८ ॥
अस्य ते सख्ये वयं तवेन्दो द्युम्न उत्तमे। सासह्याम पृतन्यतः ॥ २९ ॥
या ते भीमान्यायुधा तिग्मानि सन्ति धूर्वणे। रक्षा समस्य नो निदः ॥ ३० ॥

[६२] द्विषष्टितमं सूक्तम्

ऋषिः—जमदग्निः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—१, ६, ७, ९, १०, २३, २५, २८, २९ निचृद्गायत्री; २, ५, ११-१९, २१-२४, २७, ३० गायत्री; ३ ककुम्मतीगायत्री; ४ पिपीलिकामध्यागायत्री; ८, २०, २६ विराड्गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथ चतुर्विंशो वर्गः ॥ २४ ॥

एते असृग्रमिन्दवस्तिरः पवित्रमाशवः। विश्वान्यभि सौभगा ॥ १ ॥
विघ्नन्तो दुरिता पुरु सुगा तोकाय वाजिनः। तना कृण्वन्तो अर्वते ॥ २ ॥
कृण्वन्तो वरिवो गवेऽभ्यर्षन्ति सुष्टुतिम्। इळामस्मभ्यं संयतम् ॥ ३ ॥
अ ना व्यंशुर्मदाय्याप्सु दक्षो गिरिष्ठाः। श्येनो न योनिमासदत् ॥ ४ ॥
शुभ्रमन्धो देववातमप्सु धूतो नृभिः सुतः। स्वदन्ति गावः पयोभिः ॥ ५ ॥

अथ पञ्चविंशो वर्गः ॥ २५ ॥

आदीमश्वं न हेतारोऽशूशुभन्नमृताय। मध्वो रसं सधमादे ॥ ६ ॥
यास्ते धारा मधुश्चुतोऽसृग्रमिन्द ऊतये। ताभिः पवित्रमासदः ॥ ७ ॥
सो अर्षेन्द्राय पीतये तिरो रोमाण्यव्यया। सीदन्योना वनेष्वा ॥ ८ ॥
त्वमिन्दो परि स्रव स्वादिष्ठो अङ्गिरोभ्यः। वरिवोविद् घृतं पयः ॥ ९ ॥
अयं विचर्षणिर्हितः पवमानः स चेतति। हिन्वान आप्यं बृहत् ॥ १० ॥

अथ षड्विंशो वर्गः ॥ २६ ॥

एष वृषा वृषव्रतः पवमानो अशस्तिहा। करद्वसूनि दाशुषे ॥ ११ ॥
आ पवस्व सहस्रिणं रयिं गोमन्तमश्विनम्। पुरुश्चन्द्रं पुरुस्पृहम् ॥ १२ ॥
एष स्य परि षिच्यते मर्मृज्यमान आयुभिः। उरुगायः कविक्रतुः ॥ १३ ॥
सहस्रधारः शतधा पवो विमानो रजसः कविः। इन्द्राय पवते मदः ॥ १४ ॥
गिरा जात इह स्तुत इन्दुरिन्द्राय धीयते। विर्योना वसताविव ॥ १५ ॥

अथ सप्तविंशो वर्गः ॥ २७ ॥

पवमानः सुतो नृभिः सोमो वाजमिवासरत्। चमूषु शक्मनासदम् ॥ १६ ॥
तं त्रिपृष्ठे त्रिवन्धुरे रथे युञ्जन्ति यातवे। ऋषीणां सप्त धीतिभिः ॥ १७ ॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तं सोतारो धनस्पृतमाशुं वाजाय यातवे। हरिं हिनोत वाजिनम्॥ १८॥
आविशन्कलशं सुतो विश्वा अर्षन्नभि श्रियः। शूरो न गोषु तिष्ठति॥ १९॥
आ त इन्दो मदाय कं पयो दुहन्त्यायवः। देवा देवेभ्यो मधु॥ २०॥

अथ अष्टाविंशो वर्गः॥ २८॥

आ नः सोमं पवित्र आ सृजता मधुमत्तमम्। देवेभ्यो देवश्रुत्तमम्॥ २१॥
एते सोमा असृक्षत गृणानाः श्रवसे महे। मदिन्तमस्य धारया॥ २२॥
अभि गव्यानि वीतये नृम्णा पुनानो अर्षसि। सनद्वाजः परि स्रव॥ २३॥
उत नो गोमतीरिषो विश्वा अर्ष परिष्टुभः। गृणानो जमदग्निना॥ २४॥
पवस्व वाचो अग्रियः सोम चित्राभिरूतिभिः। अभि विश्वानि काव्या॥ २५॥

अथ एकोनत्रिंशो वर्गः॥ २९॥

त्वं समुद्रियां अपोऽग्रियो वाचं ईरयन्। पवस्व विश्वमेजय॥ २६॥
तुभ्येमा भुवना कवे महिम्ने सोम तस्थिरे। तुभ्यमर्षन्ति सिन्धवः॥ २७॥
प्र ते दिवो न वृष्टयो धारा यन्त्यसश्चतः। अभि शुक्रामुषस्तिरम्॥ २८॥
इन्द्रायेन्दुं पुनीतनोग्रं दक्षाय साधनम्। ईशानं वीतिराधसम्॥ २९॥
पवमान ऋतः कविः सोमः पवित्रमासदत्। दधत्स्तोत्रे सुवीर्यम्॥ ३०॥

[६३] त्रिषष्टितमं सूक्तम्

ऋषिः—निध्रुविः काश्यपः॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—१, २, ४, १२, १७, २०, २२ २३, २५, २७, २८, ३० निचृद्गायत्री; ३, ७-११, १६, १८, १९, २१, २४, २६ गायत्री; ५, १३, १५ विराड्गायत्री; ६, १४, २९ ककुम्मतीगायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

अथ त्रिंशो वर्गः॥ ३०॥

आ पवस्व सहस्रिणं रयिं सोम सुवीर्यम्। अस्मे श्रवांसि धारय॥ १॥
इषमूर्जं च पिन्वस इन्द्राय मत्सरिन्तमः। चमूष्वा नि षीदसि॥ २॥
सुत इन्द्राय विष्णवे सोमः कलशे अक्षरत्। मधुमाँ अस्तु वायवे॥ ३॥
एते असृग्रमाशवोऽति ह्वरांसि बभ्रवः। सोमा ऋतस्य धारया॥ ४॥
इन्द्रं वर्धन्तो अप्तुरः कृण्वन्तो विश्वमार्यम्। अपघ्नन्तो अराव्णः॥ ५॥

अथ एकत्रिंशो वर्गः॥ ३१॥

सुता अनु स्वमा रजोऽभ्यर्षन्ति बभ्रवः। इन्द्रं गच्छन्त इन्दवः॥ ६॥
अया पवस्व धारया यया सूर्यमरोचयः। हिन्वानो मानुषीरपः॥ ७॥
अयुक्त सूर एतशं पवमानो मनावधि। अन्तरिक्षेण यातवे॥ ८॥
उत त्या हरितो दश सूरो अयुक्त यातवे। इन्दुरिन्द्र इति ब्रुवन्॥ ९॥
परीतो वायवे सुतं गिर इन्द्राय मत्सरम्। अव्यो वारेषु सिञ्चत॥ १०॥

अथ द्वात्रिंशो वर्गः॥ ३२॥

पवमान विदा रयिमस्मभ्यं सोम दुष्टरम्। यो दूणाशो वनुष्यता॥ ११॥
अभ्यर्ष सहस्रिणं रयिं गोमन्तमश्विनम्। अभि वाजमुत श्रवः॥ १२॥
सोमो देवो न सूर्योऽद्रिभिः पवते सुतः। दधानः कलशे रसम्॥ १३॥
एते धामान्यार्या शुक्रा ऋतस्य धारया। वाजं गोमन्तमक्षरन्॥ १४॥
सुता इन्द्राय वज्रिणे सोमासो दध्याशिरः। पवित्रमत्यक्षरन्॥ १५॥

अथ त्रयस्त्रिंशो वर्गः॥ ३३॥

प्र सोम मधुमत्तमो राये अर्ष पवित्र आ। मदो यो देववीतमः॥ १६॥
तमीं मृजन्त्यायवो हरिं नदीषु वाजिनम्। इन्दुमिन्द्राय मत्सरम्॥ १७॥
आ पवस्व हिरण्यवदश्वावत्सोम वीरवत्। वाजं गोमन्तमा भर॥ १८॥
परि वाजे न वाजयुमव्यो वारेषु सिञ्चत। इन्द्राय मधुमत्तमम्॥ १९॥
कविं मृजन्ति मन्यं धीभिर्विप्रा अवस्यवः। वृषा कनिक्रदर्षति॥ २०॥

अथ चतुस्त्रिंशो वर्गः॥ ३४॥

वृषणं धीभिरप्तुरं सोममृतस्य धारया। मती विप्राः समस्वरन्॥ २१॥
पवस्व देवायुषगिन्द्रं गच्छतु ते मदः। वायुमा रोह धर्मणा॥ २२॥
पवमान नि तोशसे रयिं सोम श्रवाय्यम्। प्रियः समुद्रमा विश॥ २३॥
अपघ्नन्पवसे मृधः क्रतुवित्सोम मत्सरः। नुदस्वादेवयुं जनम्॥ २४॥
पवमाना असृक्षत सोमाः शुक्रास इन्दवः। अभि विश्वानि काव्या॥ २५॥

अथ पञ्चत्रिंशो वर्गः॥ ३५॥

पवमानास आशवः शुभ्रा असृग्रमिन्दवः। घ्नन्तो विश्वा अप द्विषः॥ २६॥
पवमाना दिवस्पर्यन्तरिक्षादसृक्षत। पृथिव्या अधि सानवि॥ २७॥
पुनानः सोम धारयेन्दो विश्वा अप स्रिधः। जहि रक्षांसि सुक्रतो॥ २८॥
अपघ्नन्सोम रक्षसोऽभ्यर्ष कनिक्रदत्। द्युमन्तं शुष्ममुत्तमम्॥ २९॥
अस्मे वसूनि धारय सोम दिव्यानि पार्थिवा। इन्दो विश्वानि वार्या॥ ३०॥

[६४] चतुःषष्टितमं सूक्तम्

ऋषिः—काश्यपः॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—१, ३, ४, ७, १२, १३, १५, १७, १९, २२, २४, २६ गायत्री; २, ५, ६, ८-११, १४, १६, २०, २३, २५, २९ निचृद्गायत्री; १८, २१, २७, २८ विराड्गायत्री; ३० यवमध्यागायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

अथ षट्त्रिंशो वर्गः॥ ३६॥

वृषा सोम द्युमाँ असि वृषा देव वृषव्रतः। वृषा धर्माणि दधिषे॥ १॥
वृष्णस्ते वृष्णयं शवो वृषा वनं वृषा मदः। सत्यं वृषन्वृषेदसि॥ २॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अश्वो न चक्रदो वृषा सं गा इन्दो समर्वतः। वि नो राये दुरो वृधि॥ ३॥
असृक्षत प्र वाजिनो गव्या सोमासो अश्वया। शुक्रासो वीरयाशवः॥ ४॥
शुम्भमाना ऋतायुभिर्मृज्यमाना गभस्त्योः। पवन्ते वारे अव्यये॥ ५॥

अथ सप्तत्रिंशो वर्गः॥ ३७॥

ते विश्वा दाशुषे वसु सोमा दिव्यानि पार्थिवा। पवन्तामान्तरिक्ष्या॥ ६॥
पवमानस्य विश्ववित्र ते सर्गा असृक्षत। सूर्यस्येव न रश्मयः॥ ७॥
केतुं कृण्वन्दिवस्परि विश्वा रूपाभ्यर्षसि। समुद्रः सोम पिन्वसे॥ ८॥
हिन्वानो वाचमिष्यसि पवमान विधर्मणि। अक्रान्देवो न सूर्यः॥ ९॥
इन्दुः पविष्ट चेतनः प्रियः कवीनां मती। सृजदश्वं रथीरिव॥ १०॥

अथ अष्टात्रिंशो वर्गः॥ ३८॥

ऊर्मिर्यस्ते पवित्र आ देवावीः पर्यक्षरत्। सीदन्नृतस्य योनिमा॥ ११॥
स नो अर्ष पवित्र आ मदो यो देववीतमः। इन्दविन्द्राय पीतये॥ १२॥
इषे पवस्व धारया मृज्यमानो मनीषिभिः। इन्दो रुचाभि गा इहि॥ १३॥
पुनानो वरिवस्कृध्यूर्जं जनाय गिर्वणः। हरे सृजान आशिरम्॥ १४॥
पुनानो देववीतय इन्द्रस्य याहि निष्कृतम्। द्युतानो वाजिभिर्यतः॥ १५॥

अथ एकोनचत्वारिंशो वर्गः॥ ३९॥

प्र हिन्वानास इन्दवोऽच्छा समुद्रमाशवः। धिया जूता असृक्षत॥ १६॥
मर्मृजानास आयवो वृथा समुद्रमिन्दवः। अग्मन्नृतस्य योनिमा॥ १७॥
परि णो याह्यस्मयुर्विश्वा वसून्योजसा। पाहि नः शर्म वीरवत्॥ १८॥
मिमाति वह्निरेतशः पदं युजान ऋक्वभिः। प्र यत्समुद्र आहितः॥ १९॥
आ यद्योनिं हरिण्यय्यमाशुर्ऋतस्य सीदति। जहात्यप्रचेतसः॥ २०॥

अथ चत्वारिंशो वर्गः॥ ४०॥

अभि वेना अनूषतेयक्षन्ति प्रचेतसः। मज्जन्त्यविचेतसः॥ २१॥
इन्द्रायेन्दो मरुत्वते पवस्व मधुमत्तमः। ऋतस्य योनिमासदम्॥ २२॥
तं त्वा विप्रा वचोविदः परिष्कृण्वन्ति वेधसः। सं त्वा मृजन्त्यायवः॥ २३॥
रसं ते मित्रो अर्यमा पिबन्ति वरुणः कवे। पवमानस्य मरुतः॥ २४॥
त्वं सोम विपश्चितं पुनानो वाचमिष्यसि। इन्दो सहस्रभर्णसम्॥ २५॥

अथ एकचत्वारिंशो वर्गः॥ ४१॥

उतो सहस्रभर्णसं वाचं सोम मखस्युवम्। पुनान इन्दवा भर॥ २६॥
पुनान इन्दवेषां पुरुहूत जनानाम्। प्रियः समुद्रमा विश॥ २७॥
दविद्युतत्या रुचा परिष्टोभन्त्या कृपा। सोमाः शुक्रा गवाशिरः॥ २८॥
हिन्वानो हेतृभिर्यत आ वाजं वाज्यक्रमीत्। सीदन्तो वनुषो यथा॥ २९॥
ऋधक्सोम स्वस्तये संजग्मानो दिवः कविः। पवस्व सूर्यो दृशे॥ ३०॥

इति सप्तमाष्टके प्रथमोऽध्यायः॥

अथ द्वितीयोऽध्यायः

[६५] पञ्चषष्टितमं सूक्तम्

ऋषिः—भृगुर्वारुणिर्जमदग्निर्वा॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—१, ९, १०, १२, १३, १६, १८, २१, २२, २४-२६ गायत्री; २, ११, १४, १५, २९, ३० विराड्गायत्री; ३, ६-८, १९, २०, २७, २८ निचृद्गायत्री; ४, ५, पादनिचृद्गायत्री; १७, २३ ककुम्मतीगायत्री॥
स्वरः—षड्जः॥

अथ प्रथमो वर्गः॥ १॥

हिन्वन्ति सूरमुस्रयः स्वसारो जामयस्पतिम्। महामिन्दुं महीयुवः॥ १॥
पवमान रुचारुचा देवो देवेभ्यस्परि। विश्वा वसून्या विश॥ २॥
आ पवमान सुष्टुतिं वृष्टिं देवेभ्यो दुवः। इषे पवस्व संयतम्॥ ३॥
वृषा ह्यसि भानुना द्युमन्तं त्वा हवामहे। पवमान स्वाध्यः॥ ४॥
आ पवस्व सुवीर्यं मन्दमानः स्वायुध। इहो ष्विन्दवा गहि॥ ५॥

अथ द्वितीयो वर्गः॥ २॥

यदद्भिः परिषिच्यसे मृज्यमानो गभस्त्योः। द्रुणा सधस्थमश्नुषे॥ ६॥
प्र सोमाय व्यश्ववत्पवमानाय गायत। महे सहस्रचक्षसे॥ ७॥
यस्य वर्णं मधुश्चुतं हरिं हिन्वन्त्यद्रिभिः। इन्दुमिन्द्राय पीतये॥ ८॥
तस्य ते वाजिनो वयं विश्वा धनानि जिग्युषः। सखित्वमा वृणीमहे॥ ९॥
वृषा पवस्व धारया मरुत्वते च मत्सरः। विश्वा दधान ओजसा॥ १०॥

अथ तृतीयो वर्गः॥ ३॥

तं त्वा धर्तारमोण्योः पवमान स्वर्दृशम्। हिन्वे वाजेषु वाजिनम्॥ ११॥
अया चित्तो विपानया हरिः पवस्व धारया। युजं वाजेषु चोदय॥ १२॥
आ न इन्दो महीमिषं पवस्व विश्वदर्शतः। अस्मभ्यं सोम गातुवित्॥ १३॥
आ कलशा अनूषतेन्दो धाराभिरोजसा। एन्द्रस्य पीतये विश॥ १४॥
यस्य ते मद्यं रसं तीव्रं दुहन्त्यद्रिभिः। स पवस्वाभिमातिहा॥ १५॥

अथ चतुर्थो वर्गः॥ ४॥

राजा मेधाभिरीयते पवमानो मनावधि। अन्तरिक्षेण यातवे॥ १६॥
आ न इन्दो शतग्विनं गवां पोषं स्वश्व्यम्। वहा भगत्तिमूतये॥ १७॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri Gyaan Kosha Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

आ नः सोम सहो जुवो रूपं न वर्चसे भर। सुष्वाणो देववीतये॥ १८॥
अर्षा सोम द्युमत्तमोऽभि द्रोणानि रोरुवत्। सीदन्योनो न योनिमा॥ १९॥
अप्सा इन्द्राय वायवे वरुणाय मरुद्भ्यः। सोमो अर्षति विष्णवे॥ २०॥

अथ पञ्चमो वर्गः॥ ५॥

इषं तोकाय नो दधदस्मभ्यं सोम विश्वतः। आ पवस्व सहस्रिणम्॥ २१॥
ये सोमासः परावति ये अर्वावति सुन्विरे। ये वादः शर्यणावति॥ २२॥
य ऊर्जीकेषु कृत्वसु ये मध्ये पस्त्यानाम्। ये वा जनेषु पञ्चसु॥ २३॥
ते नो वृष्टिं दिवस्परि पवन्तामा सुवीर्यम्। सुवाना देवास इन्दवः॥ २४॥
पवते हर्यतो हरिर्गृणानो जमदग्निना। हिन्वानो गोरधि त्वचि॥ २५॥

अथ षष्ठो वर्गः॥ ६॥

प्र शुक्रासो वयोजुवो हिन्वानासो न सप्तयः। श्रीणाना अप्सु मृञ्जत॥ २६॥
तं त्वा सुतेष्वाभुवो हिन्विरे देवतातये। स पवस्वानया रुचा॥ २७॥
आ ते दक्षं मयोभुवं वह्निमद्या वृणीमहे। पान्तमा पुरुस्पृहम्॥ २८॥
आ मन्द्रमा वरेण्यमा विप्रमा मनीषिणम्। पान्तमा पुरुस्पृहम्॥ २९॥
आ रयिमा सुचेतुनमा सुक्रतो तनूष्वा। पान्तमा पुरुस्पृहम्॥ ३०॥

[६६] षट्षष्टितमं सूक्तम्

ऋषिः—शतं वैखानसाः॥ देवता—१-१८, २२-३० पवमानः सोमः॥ १९-२१ अग्निः॥ छन्दः—१ पादनिचृद्गायत्री; २, ३, ५-८, १०, ११, १३, १५-१७, १९, २०, २३-२६, ३० गायत्री; ४, १४, २२, २७ विराड्गायत्री; ९, १२, २१, २८, २९ निचृद्गायत्री; १८ पादनिचृदनुष्टुप्॥ स्वरः—१-१७, १९-३० षड्जः; १८ गान्धारः॥

अथ सप्तमो वर्गः॥ ७॥

पवस्व विश्वचर्षणेऽभि विश्वानि काव्या। सखा सखिभ्य ईड्यः॥ १॥
ताभ्यां विश्वस्य राजसि ये पवमान धामनी। प्रतीची सोम तस्थतुः॥ २॥
परि धामानि यानि ते त्वं सोमासि विश्वतः। पवमान ऋतुभिः कवे॥ ३॥
पवस्व जनयन्निषोऽभि विश्वानि वार्या। सखा सखिभ्य ऊतये॥ ४॥
तवं शुक्रासो अर्चयो दिवस्पृष्ठे वि तन्वते। पवित्रं सोम धामभिः॥ ५॥

अथ अष्टमो वर्गः॥ ८॥

तवेमे सप्त सिन्धवः प्रशिषं सोम सिस्रते। तुभ्यं धावन्ति धेनवः॥ ६॥
प्र सोम याहि धारया सुत इन्द्राय मत्सरः। दधानो अक्षिति श्रवः॥ ७॥
समु त्वा धीभिरस्वरन्निन्वतीः सप्त जामयः। विप्रमाजा विवस्वतः॥ ८॥
मृजन्ति त्वा सप्तयुवोऽव्ये जीरावधि ष्वणि। रेभो यदज्यसे वने॥ ९॥

पवमानस्य ते कवे वाजिन्त्सर्गा असृक्षत। अर्वन्तो न श्रवस्यवः॥ १०॥

अथ नवमो वर्गः॥ ९॥

अच्छा कोशं मधुश्चुतमसृग्रं वारे अव्यये। अवावशन्त धीतयः॥ ११॥
अच्छा समुद्रमिन्दवोऽस्तं गावो न धेनवः। अग्मन्नृतस्य योनिमा॥ १२॥
प्र णो इन्दो महे रण आपो अर्षन्ति सिन्धवः। यद्गोभिर्वासयिष्यसे॥ १३॥
अस्य ते सख्ये वयमिन्द्रियन्तस्त्वोतयः। इन्दो सखित्वमुश्मसि॥ १४॥
आ पवस्व गविष्टये महे सोम नृचक्षसे। इन्द्रस्य जठरे विश॥ १५॥

अथ दशमो वर्गः॥ १०॥

महाँ असि सोम ज्येष्ठ उग्राणामिन्द ओजिष्ठः। युध्वा सञ्छश्वज्जिगेथ॥ १६॥
य उग्रेभ्यश्चिदोजीयाञ्छूरेभ्यश्चिच्छूरतरः। भूरिदाभ्यश्चिन्मंहीयान्॥ १७॥
त्वं सोम सूर एषस्तोकस्य साता तनूनाम्। वृणीमहे सख्याय वृणीमहे युज्याय॥ १८॥
अग्न आयूंषि पवस आ सुवोर्जमिषं च नः। आरे बाधस्व दुच्छुनाम्॥ १९॥
अग्निर्ऋषिः पवमानः पाञ्चजन्यः पुरोहितः। तमीमहे महागयम्॥ २०॥

अथ एकादशो वर्गः॥ ११॥

अग्ने पवस्व स्वपा अस्मे वर्चः सुवीर्यम्। दधद्रयिं मयि पोषम्॥ २१॥
पवमानो अति स्त्रिधोऽभ्यर्षति सुष्टुतिम्। सूरो न विश्वदर्शतः॥ २२॥
स मर्मृजान आयुभिः प्रयस्वान्प्रयसे हितः। इन्दुरत्यो विचक्षणः॥ २३॥
पवमान ऋतं बृहच्छुक्रं ज्योतिरजीजनत्। कृष्णा तमांसि जङ्घनत्॥ २४॥
पवमानस्य जङ्घ्नतो हरेश्चन्द्रा असृक्षत। जीरा अजिरशोचिषः॥ २५॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अथ द्वादशो वर्गः ॥ १२ ॥

पवमानो रथीतमः शुभ्रेभिः शुभ्रशस्तमः ।
हरिश्चन्द्रो मरुद्गणः ॥ २६ ॥
पवमानो व्यश्नवद्वृश्मिभिर्वाजसातमः ।
दधत्स्तोत्रे सुवीर्यम् ॥ २७ ॥
प्र सुवान इन्दुरक्षाः पवित्रमत्यव्ययम् ।
पुनान इन्दुरिन्द्रमा ॥ २८ ॥
एष सोमो अधि त्वचि गवां क्रीळत्यद्रिभिः ।
इन्द्रं मदाय जोहुवत् ॥ २९ ॥
यस्य ते द्युम्नवत्पयः पवमानाभृतं दिवः ।
तेन नो मृळ जीवसे ॥ ३० ॥

[६७] सप्तषष्टितमं सूक्तम्

ऋषिः—१-३ भरद्वाजः; ४-६ कश्यपः; ७-९ गोतमः; १०-१२ अत्रिः; १३, १४, १५ विश्वामित्रः; १६-१८ जमदग्निः; १९-२१ वसिष्ठः; २२-३२ पवित्रो वसिष्ठो-वोभौ वा ॥ देवता—१-९, १३-२२, २८-३० पवमानः सोमः; १०, ११, १२ पवमानः सोमः पूषा वा; २३, २४ अग्निः; २५ अग्निः सविता वा; २६ अग्निरग्निर्वा सविता च; २७ अग्निर्विश्वेदेवा वा; ३१, ३२ पवमान्यध्येतृस्तुतिः ॥ छन्दः—१, २, ४, ५, ११-१३, १५, १९, २३, २५ निचृद्गायत्री; ३, ८ विराड्गायत्री; १० यवमध्या गायत्री; १६-१८ भुरिगार्चीविराड्गायत्री; ६, ७, ९, १४, २०-२२, २४, २६, २८, २९ गायत्री; २७ अनुष्टुप्; ३१, ३२ निचृदनुष्टुप्; ३० पुरउष्णिक् ॥ स्वरः—१-२६, २८, २९ षड्जः; २७, ३१, ३२ गान्धारः; ३० ऋषभः ॥

अथ त्रयोदशो वर्गः ॥ १३ ॥

त्वं सोमासि धारयुर्मन्द्र ओजिष्ठो अध्वरे । पवस्व मंहयद्रयिः ॥ १ ॥
त्वं सुतो नृमादनो दध्न्वान्मत्सरिन्तमः । इन्द्राय सूरिरन्धसा ॥ २ ॥
त्वं सुष्वाणो अद्रिभिरभ्यर्ष कनिक्रदत् । द्युमन्तं शुष्ममुत्तमम् ॥ ३ ॥
इन्दुर्हिन्वानो अर्षति तिरो वाराण्यव्यया । हरिर्वाजमचिक्रदत् ॥ ४ ॥
इन्दो व्यव्यमर्षसि वि श्रवांसि वि सौभगा ।
वि वाजान्त्सोम गोमतः ॥ ५ ॥

अथ चतुर्दशो वर्गः ॥ १४ ॥

आ नः इन्दो शतग्विनं रयिं गोमन्तमश्विनम् । भरा सोम सहस्रिणम् ॥ ६ ॥
पवमानास इन्दवस्तिरः पवित्रमाशवः । इन्द्रं यामेभिराशत ॥ ७ ॥
ककुहः सोम्यो रस इन्दुरिन्द्राय पूर्व्यः । आयुः पवत आयवे ॥ ८ ॥
हिन्वन्ति सूरमुस्रयः पवमानं मधुश्चुतम् । अभि गिरा समस्वरन् ॥ ९ ॥
अविता नो अजाश्वः पूषा यामनियामनि । आ भक्षत्कन्यासु नः ॥ १० ॥

अथ पञ्चदशो वर्गः ॥ १५ ॥

अयं सोमः कपर्दिनै घृतं न पवते मधु । आ भक्षत्कन्यासु नः ॥ ११ ॥
अयं त आघृणे सुतो घृतं न पवते शुचिः । आ भक्षत्कन्यासु नः ॥ १२ ॥
वाचो जन्तुः कवीनां पवस्व सोम धारया । देवेषु रत्नधा असि ॥ १३ ॥
आ कलशेषु धावति श्येनो वर्म वि गाहते । अभि द्रोणा कनिक्रदत् ॥ १४ ॥
परि प्र सोम ते रसोऽसर्जि कलशे सुतः । श्येनो न तक्तो अर्षति ॥ १५ ॥

अथ षोडशो वर्गः ॥ १६ ॥

पवस्व सोम मन्दयन्निन्द्राय मधुमत्तमः ॥ १६ ॥
असृग्रन्देववीतये वाजयन्तो रथाइव ॥ १७ ॥
ते सुतासो मदिन्तमाः शुक्रा वायुमसृक्षत ॥ १८ ॥
ग्राव्णा तुन्नो अभिष्टुतः पवित्रं सोम गच्छसि ।
दधत्स्तोत्रे सुवीर्यम् ॥ १९ ॥
एष तुन्नो अभिष्टुतः पवित्रमति गाहते ।
रक्षोहा वारमव्ययम् ॥ २० ॥

अथ सप्तदशो वर्गः ॥ १७ ॥

यदन्ति यच्च दूरके भयं विन्दति मामिह । पवमान वि तज्जहि ॥ २१ ॥
पवमानः सो अद्य नः पवित्रेण विचर्षणिः । यः पोता स पुनातु नः ॥ २२ ॥
यत्ते पवित्रमर्चिष्यग्ने वितततमन्तरा । ब्रह्म तेन पुनीहि नः ॥ २३ ॥
यत्ते पवित्रमर्चिषि वदग्ने तेन पुनीहि नः । ब्रह्मसवैः पुनीहि नः ॥ २४ ॥
उभाभ्यां देव सवितः पवित्रेण सवेन च । मां पुनीहि विश्वतः ॥ २५ ॥

अथ अष्टादशो वर्गः ॥ १८ ॥

त्रिभिष्ट्वं देव सवितर्वसुभिः सोम धामभिः ।
अग्रे दक्षैः पुनीहि नः ॥ २६ ॥
पुनन्तु मां देवजनाः पुनन्तु वसवो धिया ।
विश्वे देवाः पुनीत मा जातवेदः पुनीहि मा ॥ २७ ॥
प्र प्यायस्व प्र स्यन्दस्व सोम विश्वेभिरंशुभिः ।
देवेभ्य उत्तमं हविः ॥ २८ ॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उपं प्रियं पनिप्नतं युवानमाहुतीवृधम् ।
अगन्म बिभ्रतो नमः ॥ २९ ॥
अलाय्यस्य परशुर्ननाश तमा पवस्व देव सोम ।
आखुं चिदेव देव सोम ॥ ३० ॥
यः पावमानीरध्येत्यृषिभिः संभृतं रसम् ।
सर्वं स पूतमश्नाति स्वदितं मातरिश्वना ॥ ३१ ॥
पावमानीर्यो अध्येत्यृषिभिः संभृतं रसम् ।
तस्मै सरस्वती दुहे क्षीरं सर्पिर्मधूदकम् ॥ ३२ ॥

चतुर्थोऽनुवाकः [६८] अष्टषष्टितमं सूक्तम्

ऋषिः—वत्सप्रिर्भालन्दनः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—१, ३, ६, ७ निचृज्जगती; २, ४, ५, ९ जगती; ८ विराड्जगती; १० त्रिष्टुप् ॥
स्वरः—१-९ निषादः; १० धैवतः ॥

अथ एकोनविंशो वर्गः ॥ १९ ॥

प्र देवमच्छा मधुमन्त इन्दवोऽसिष्यदन्त गाव आ न धेनवः ।
बर्हिषदो वचनावन्त ऊधभिः परिस्रुतमुस्रिया निर्णिजं धिरे ॥ १ ॥
स रोरुवदभि पूर्वीरचिक्रददुपारुहः श्रथयन्त्स्वादते हरिः ।
तिरः पवित्रं परियन्नुरु ज्रयो नि शर्यणि दधते देव आ वरम् ॥ २ ॥
वि यो ममे यम्या संयती मदः साकंवृधा पयसा पिन्वदक्षिता ।
महीं अपारे रजसी विवेविदददभिव्रजन्नक्षितं पाज आ ददे ॥ ३ ॥
स मातरा विचरन्वाजयन्नपः प्र मेधिरः स्वधया पिन्वते पदम् ।
अंशुर्यवेन पिपिशे यतो नृभिः सं जामिभिर्नसते रक्षते शिरः ॥ ४ ॥
सं दक्षेणं मनसा जायते कविर्ऋतस्य गर्भो निहितो यमा परः ।
यूना ह सन्ता प्रथमं वि जज्ञतुर्गुहा हितं जनिम नेममुद्यतम् ॥ ५ ॥

अथ विंशो वर्गः ॥ २० ॥

मन्द्रस्य रूपं विविदुर्मनीषिणः श्येनो यदन्धो अभरत्परावतः ।
तं गर्जयन्त सुवृधं नदीष्वाँ उशन्तमंशुं परियन्तमृग्मियम् ॥ ६ ॥
त्वां मृजन्ति दश योषणः सुतं सोम ऋषिभिर्मतिभिर्धीतिभिर्हितम् ।
अव्यो वारेभिरुत देवहूतिभिर्नृभिर्यतो वाजमा दर्षि सातये ॥ ७ ॥
परि प्रयन्तं वय्यं सुषंसदं सोमं मनीषा अभ्यनूषत स्तुभः ।
यो धारया मधुमाँ ऊर्मिणा दिव इयर्ति वाचं रयिषाळमर्त्यः ॥ ८ ॥
अयं दिव इयर्ति विश्वमा रजः सोमः पुनानः कलशेषु सीदति ।
अद्भिर्गोभिर्मृज्यते अद्रिभिः सुतः पुनान इन्दुर्वरिवो विदत्पथः ॥ ९ ॥
एवा नः सोम परिषिच्यमानो वयो दधच्चित्रतमं पवस्व ।
अद्वेषे द्यावापृथिवी हुवेम देवा धत्त रयिमस्मे सुवीरम् ॥ १० ॥

[६९] एकोनसप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—हिरण्यस्तूपः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—१, ५ पादनिचृज्जगती; २-४, ६ जगती; ७, ८ निचृज्जगती; ९ निचृत्त्रिष्टुप्; १० त्रिष्टुप् ॥
स्वरः—१-८ निषादः; ९, १० धैवतः ॥

अथ एकविंशो वर्गः ॥ २१ ॥

इषुर्न धन्वन्प्रति धीयते मतिर्वत्सो न मातुरुप सर्ज्यूधनि ।
उरुधारेव दुहे अग्र आयत्यस्य व्रतेष्वपि सोम इष्यते ॥ १ ॥
उपो मतिः पृच्यते सिच्यते मधु मन्द्राजनी चोदते अन्तरासनि ।
पवमानः संतनिः प्रघ्नतामिव मधुमान्द्रप्सः परि वारमर्षति ॥ २ ॥
अव्ये वधूयुः पवते परि त्वचि श्रथ्नीते नप्तीरदितेर्ऋतं यते ।
हरिरक्रान्यजतः संयतो मदो नृम्णा शिशानो महिषो न शोभते ॥ ३ ॥
उक्षा मिमाति प्रति यन्ति धेनवो देवस्य देवीरुप यन्ति निष्कृतम् ।
अत्यक्रमीदर्जुनं वारमव्ययमत्कं न निक्तं परि सोमो अव्यत ॥ ४ ॥
अमृक्तेन रुशता वासयसा हरिरमर्त्यो निर्णिजानः परि व्यत ।
दिवस्पृष्ठं बर्हणा निर्णिजे कृतोपस्तरणं चम्वोर्नभस्मयम् ॥ ५ ॥

अथ द्वाविंशो वर्गः ॥ २२ ॥

सूर्यस्येव रश्मयो द्रावयित्नवो मत्सरासः प्रसुपः साकमीरते ।
तन्तुं ततं परि सर्गास आशवो नेन्द्रादृते पवते धाम किं चन ॥ ६ ॥
सिन्धोरिव प्रवणे निम्न आशवो वृषच्युता मदासो गातुमाशत ।
शं नो निवेशे द्विपदे चतुष्पदेऽस्मे वाजाः सोम तिष्ठन्तु कृष्टयः ॥ ७ ॥
आ नः पवस्व वसुमद्धिरण्यवद्दशस्वद्गोमद्यवमत्सुवीर्यम् ।
यूयं हि सोम पितरो मम स्थन दिवो मूर्धानः प्रस्थिता वयस्कृतः ॥ ८ ॥
एते सोमाः पवमानास इन्द्रं रथाइव प्र ययुः सातिमच्छ ।
सुताः पवित्रमति यन्त्यव्यं हित्वी वव्रिं हरितो वृष्टिमच्छ ॥ ९ ॥
इन्दविन्द्राय बृहते पवस्व सुमृळीको अनवद्यो रिशादाः ।
भरा चन्द्राणि गृणते वसूनि देवैद्यावापृथिवी प्रावतं नः ॥ १० ॥

[७०] सप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—रेणुर्वैश्वामित्रः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—१, ३ त्रिष्टुप्; २, ६, ९, १० निचृज्जगती; ४, ५, ७ जगती; ८ विराड्जगती ॥
स्वरः—१, ३ धैवतः; २, ४-१० निषादः ॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अथ त्रयोविंशो वर्गः ॥ २३ ॥

त्रिरस्मै सप्त धेनवो दुदुह्रे सत्यामाशिरं पूर्व्ये व्योमनि।
चत्वार्यन्या भुवनानि निर्णिजे चारूणि चक्रे यदृतैरवर्धत ॥ १ ॥
स भिक्षमाणो अमृतस्य चारुण उभे द्यावा काव्येना वि शश्रथे।
तेजिष्ठा अपो मंहना परि व्यत यदी देवस्य श्रवसा सदो विदुः ॥ २ ॥
ते अस्य सन्तु केतवोऽमृत्यवोऽदाभ्यासो जनुषी उभे अनु।
येभिर्नृम्णा च देव्या च पुनत आदिद्राजानं मनना अगृभ्णत ॥ ३ ॥
स मृज्यमानो दशभिः सुकर्मभिः प्र मध्यमासु मातृषु प्रमे सचा।
व्रतानि पानो अमृतस्य चारुण उभे नृचक्षा अनु पश्यते विशौ ॥ ४ ॥
स मर्मृजान इन्द्रियाय धायसे ओभे अन्ता रोदसी हर्षते हितः।
वृषा शुष्मेण बाधते वि दुर्मतीरादेदिशानः शर्यहेव शुरुधः ॥ ५ ॥

अथ चतुर्विंशो वर्गः ॥ २४ ॥

स मातरा न ददृशान उस्त्रियो नानददेति मरुतामिव स्वनः।
जानन्वृतं प्रथमं यत्स्वर्णरं प्रशस्तये कमवृणीत सुक्रतुः ॥ ६ ॥
रुवति भीमो वृषभस्तविष्यया शृङ्गे शिशानो हरिणी विचक्षणः।
आ योनिं सोमः सुकृतं नि षीदति गव्ययी त्वग्भवति निर्णिगव्ययी ॥ ७ ॥
शुचिः पुनानस्तन्वमरेपसमव्ये हरिन्यधाविष्ट सानवि ।
जुष्टो मित्राय वरुणाय वायवे त्रिधातु मधु क्रियते सुकर्मभिः ॥ ८ ॥
पवस्व सोम देववीतये वृषेन्द्रस्य हार्दि सोमधानमा विश।
पुरा नो बाधादुरितादि पारय क्षेत्रविद्धि दिश आहा पिपृच्छते ॥ ९ ॥
हितो न सप्तिरभि वाजमर्षेन्द्रस्येन्दो जठरमा पवस्व।
नावा न सिन्धुमति पर्षि विद्वाञ्छूरो न युध्यन्नव नो निदः स्पः ॥ १० ॥

[७१] एकसप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—ऋषभो वैश्वामित्रः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—१, ४, ७ विराड्जगती; २, जगती; ३, ५, ८ निचृज्जगती; ६ पादनिचृज्जगती; ९ विराट्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१-८ निषादः; ९ धैवतः ॥

अथ पञ्चविंशो वर्गः ॥ २५ ॥

आ दक्षिणा सृज्यते शुष्म्याऽ३ सदं वेति द्रुहो रक्षसः पाति जागृविः।
हरिरोपशं कृणुते नभस्पय उपस्तिरे चम्वोऽ३र्ब्रह्म निर्णिजे ॥ १ ॥
प्र कृष्टिहेव शूष एति रोरुवदसुर्यं वर्ण नि रिणीते अस्य तम्।
जहाति वव्रिं पितुरेति निष्कृतमुपप्रुतं कृणुते निर्णिजं तना ॥ २ ॥
अद्रिभिः सुतः पवते गभस्त्योर्वृषायते नभसा वेपते मती।
स मोदते नसते साधते गिरा नेनिक्ते अप्सु यजते परीमणि ॥ ३ ॥
परि द्युक्षं सहसः पर्वतावृधं मध्वः सिञ्चन्ति हर्म्यस्य सक्षणिम्।
आ यस्मिन्गावः सुहुतादु ऊधनि मूर्धञ्छ्रीणन्त्यग्रियं वरीमभिः ॥ ४ ॥
समी रथं न भुरिजोरहेषत दश स्वसारो अदितेरुपस्थ आ।
जिगादुप ज्रयति गोरपीच्यं पदं यदस्य मतुथा अजीजनन् ॥ ५ ॥

अथ षड्विंशो वर्गः ॥ २६ ॥

श्येनो न योनिं सदनं धिया कृतं हिरण्ययमासदं देव एषति।
ए रिणन्ति बर्हिषि प्रियं गिराश्वो न देवाँ अप्येति यज्ञियः ॥ ६ ॥
परा व्यक्तो अरुषो दिवः कविर्वृषा त्रिपृष्ठो अनविष्ट गा अभि।
सहस्रणीतिर्यतिः परायती रेभो न पूर्वीरुषसो वि राजति ॥ ७ ॥
त्वेषं रूपं कृणुते वर्णो अस्य स यत्रार्शयत्समृता सेधति स्त्रिधः।
अप्सा याति स्वधया दैव्यं जनं सं सुष्टुती नसते सं गोअग्रया ॥ ८ ॥
उक्षेव यूथा परियन्नरावीदधि त्विषीरधित सूर्यस्य ।
दिव्यः सुपर्णोऽव चक्षत क्षां सोमः परि क्रतुना पश्यते जाः ॥ ९ ॥

[७२] द्विसप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—हरिमन्तः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—१-३, ६, ७ निचृज्जगती; ४, ८ जगती; ५ विराड्जगती; ९ पादनिचृज्जगती ॥ स्वरः—निषादः ॥

अथ सप्तविंशो वर्गः ॥ २७ ॥

हरिं मृजन्त्यरुषो न युञ्यते सं धेनुभिः कलशे सोमो अज्यते।
उद्वाचमीरयति हिन्वते मती पुरुष्टुतस्य कति चित्परिप्रियः ॥ १ ॥
साकं वदन्ति बहवो मनीषिण इन्द्रस्य सोमं जठरे यदादुहुः।
यदीं मृजन्ति सुगभस्तयो नरः सनीळाभिर्दशभिः काम्यं मधु ॥ २ ॥
अरममाणो अत्येति गा अभि सूर्यस्य प्रियं दुहितुस्तिरो रवम्।
अन्वस्मै जोषमभरद्विनंगृसः सं द्वयीभिः स्वसृभिः क्षेति जामिभिः ॥ ३ ॥
नृधूतो अद्रिषुतो बर्हिषि प्रियः पतिर्गवां प्रदिव इन्दुरृत्वियः।
पुरन्धिवान्मनुषो यज्ञसाधनः शुचिर्धिया पवते सोम इन्द्र ते ॥ ४ ॥
नृबाहुभ्यां चोदितो धारया सुतोऽनुष्वधं पवते सोम इन्द्र ते ।
आप्राः क्रतून्त्समरैजरध्वरे मतीर्वेनं द्रुषच्चम्वोऽ३ रासदद्धरिः ॥ ५ ॥

अथ अष्टाविंशो वर्गः ॥ २८ ॥

अंशुं दुहन्ति स्तनयन्तमक्षितं कविं कवयोऽपसो मनीषिणः।
समी गावो मतयो यन्ति संयतं ऋतस्य योना सदने पुनर्भुवः ॥ ६ ॥

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नाभा॑ पृथि॒व्या ध॒रुणो॑ म॒हो दि॒वो॒३॒॑ऽपामू॒र्मौ सिन्धु॑ष्व॒न्तरु॑क्षि॒तः।
इन्द्र॑स्य॒ वज्रो॑ वृष॒भो वि॒भूव॑सुः॒ सोमो॑ हृ॒दे प॑वते॒ चारु॑ मत्स॒रः॥७॥
स तू प॑वस्व॒ परि॒ पार्थि॑वं॒ रजः॑ स्तो॒त्रे शिक्ष॑न्नाधून्व॒ते च॑ सुक्रतो।
मा नो॒ निर्भा॒ग्वसु॑नः सादन॒स्पृशो॑ र॒यिं पि॒शङ्गं॑ बहु॒लं व॑सीमहि॥८॥
आ तू न॑ इन्दो श॒तदा॒त्वश्व्यं॑ स॒हस्र॑दातु पशु॒मद्धिर॑ण्यवत्।
उप॑ मास्व बृह॒ती रे॒वती॒रिषोऽधि॑ स्तो॒त्रस्य॑ पवमान नो गहि॥९॥

[७३] त्रिसप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—पवित्रः॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—१ जगती; २-७ निचृज्जगती; ८, ९ विराड्जगती॥ स्वरः—निषादः॥

अथ एकोनत्रिंशो वर्गः॥ २९॥

स्रक्वे॑ द्र॒प्सस्य॒ धम॑तः॒ सम॑स्वरन्नृ॒तस्य॒ योना॒ सम॑रन्त॒ नाभ॑यः।
त्रीन्त्स मू॒र्ध्नो असु॑रश्चक्र आ॒रभे॑ स॒त्यस्य॒ नावः॑ सु॒कृत॑मपीपरन्॥१॥
स॒म्यक्स॒म्यञ्चो॑ महि॒षा अ॑हेषत॒ सिन्धो॑रू॒र्मावधि॑ वे॒ना अ॑वीविपन्।
मधो॒र्धारा॑भिर्ज॒नय॑न्तो अ॒र्कमित्प्रि॒यामिन्द्रस्य॑ त॒न्व॑मवीवृधन्॥२॥
प॒वित्र॑वन्तः॒ परि॒ वाच॑मासते पि॒तैषां॑ प्र॒त्नो अ॒भि र॑क्षति व्र॒तम्।
म॒हः स॑मु॒द्रं वरु॑णास्ति॒रो द॑धे॒ धीरा॒ इच्छे॑कुर्ध॒रुणे॑ष्वा॒रभ॑म्॥३॥
स॒हस्र॑धा॒रेऽव॒ ते सम॑स्वरन्दि॒वो नाके॒ मधु॑जिह्वा अस॒श्चतः॑।
अस्य॒ स्पशो॒ न नि मि॑षन्ति॒ भूर्ण॑यः प॒देप॑दे पा॒शिनः॑ सन्ति॒ सेत॑वः॥४॥
पि॒तुर्मा॒तुरध्या ये स॒मस्व॑रन्नृ॒चा शोच॑न्तः सं॒दह॑न्तो अव्र॒तान्।
इन्द्र॑द्विष्टा॒मप॑ धमन्ति मा॒यया॒ त्वच॒मसि॑क्नीं॒ भूम॑नो दि॒वस्परिः॑॥५॥

अथ त्रिंशो वर्गः॥ ३०॥

प्र॒त्नान्माना॒दध्या ये स॒मस्व॑र॒ञ्छ्लोक॑यन्त्रासो रभ॒सस्य॒ मन्त॑वः।
अपा॑न॒क्षासो॑ बधि॒रा अ॑हासत ऋ॒तस्य॒ पन्थां॒ न त॑रन्ति दु॒ष्कृतः॑॥६॥
स॒हस्र॑धारे॒ वित॑ते प॒वित्र॒ आ वाचं॑ पुनन्ति क॒वयो॑ मनी॒षिणः॑।
रु॒द्रास॑ एषामिषि॒रासो॑ अ॒द्रुहः॒ स्पशः॒ स्वञ्चः॑ सु॒दृशो॑ नृ॒चक्ष॑सः॥७॥
ऋ॒तस्य॑ गो॒पा न दभा॑य सु॒क्रतु॒स्त्री ष प॒वित्रा॑ हृ॒द्य१॒॑न्तरा द॑धे।
वि॒द्वान्त्स विश्वा॒ भुव॑ना॒भि प॑श्य॒त्यवाजु॑ष्टान्विध्यति क॒र्ते अ॑व्र॒तान्॥८॥
ऋ॒तस्य॒ तन्तु॒र्वित॑तः प॒वित्र॒ आ जि॒ह्वाया॒ अग्रे॒ वरु॑णस्य मा॒यया॑।
धीरा॑श्चि॒त्तत्स॒मिन॑क्षन्त आश॒तात्रा॑ क॒र्तमव॑ पदा॒त्यप्र॑भुः॥९॥

[७४] चतुःसप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—कक्षीवान्॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—१, ३ पादनिचृज्जगती; २, ६ विराड्जगती; ४, ७ जगती; ५, ९ निचृज्जगती; ८ निचृत्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१-७, ९ निषादः; ८ धैवतः॥

अथ एकत्रिंशो वर्गः॥ ३१॥

शिशु॒र्न जा॒तोऽव॑ चक्रद॒द्वने॒ स्व१॒॑र्यद्वा॒ज्य॑रु॒षः सिषा॑सति।
दि॒वो रेत॑सा सचते पयो॒वृधा॒ तमी॑महे सुम॒ती शर्म॑ स॒प्रथः॑॥१॥
दि॒वो यः स्क॒म्भो ध॒रुणः॒ स्वा॑तत॒ आपू॑र्णो अं॒शुः प॒र्येति॑ वि॒श्वतः॑।
सेमे म॒ही रोद॑सी यक्षदा॒वृता॑ समीची॒ने दा॑धार॒ समिषः॑ क॒विः॥२॥
महि॒ प्सरः॒ सुकृ॑तं सो॒म्यं मधू॒र्वी गव्यू॑ति॒रदि॑तेर्ऋ॒तं य॒ते।
ईशे॒ यो वृ॒ष्टेरि॒त उ॒स्त्रियो॒ वृषा॒पां ने॒ता य इ॒तऊ॑तिर्ऋ॒ग्मियः॑॥३॥
आ॒त्म॒न्वन्नभो॑ दुह्यते घृ॒तं पय॑ ऋ॒तस्य॒ नाभि॑र॒मृतं॒ वि जा॑यते।
स॒मी॒ची॒नाः सु॒दान॑वः प्रीणन्ति॒ तं नरो॑ हि॒तमव॑ मेहन्ति॒ पेर॑वः॥४॥
अरा॑वीदं॒शुः सच॑मान ऊ॒र्मिणा॑ देवा॒व्यं१॒॑ मनु॑षे पिन्वति॒ त्वच॑म्।
दधा॑ति॒ गर्भ॒मदि॑तेरु॒पस्थ॒ आ येन॑ तो॒कं च॒ तन॑यं च॒ धाम॑हे॥५॥

अथ द्वात्रिंशो वर्गः॥ ३२॥

स॒हस्र॑धा॒रेऽव॒ ता अ॑स॒श्चत॑स्तृ॒तीये॑ सन्तु॒ रज॑सि प्र॒जाव॑तीः।
चत॑स्रो॒ नाभो॒ निहि॑ता अ॒वो दि॒वो ह॒विर्भ॑रन्त्य॒मृतं॑ घृत॒श्चुतः॑॥६॥
श्वे॒तं रू॒पं कृ॑णुते॒ यत्सिषा॑सति॒ सोमो॑ मी॒ढ्वाँ असु॑रो वेद॒ भूम॑नः।
धि॒या शमी॑ सचते॒ सेम॒भि प्र॒वद्दि॒वस्कव॑न्ध॒मव॑ दर्षदु॒द्रिण्म॑॥७॥
अध॑ श्वे॒तं क॒लशं॒ गोभि॑र॒क्तं कार्ष्म॒न्ना वा॒ज्य॑क्रमीत्सस॒वान्।
आ हि॑न्विरे॒ मन॑सा देव॒यन्तः॑ क॒क्षीव॑ते श॒तहि॑माय॒ गोना॑म्॥८॥
अ॒द्भिः सो॑म पपृचा॒नस्य॑ ते॒ रसोऽव्यो॒ वारं॒ वि प॑वमान धावति।
स मृ॒ज्यमा॑नः क॒विभि॑र्मदिन्तम॒ स्वद॒स्वेन्द्रा॑य पवमान पी॒तये॑॥९॥

[७५] पञ्चसप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—कविः॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—१, ३, ४ निचृज्जगती; २ पादनिचृज्जगती; ५ विराड्जगती॥ स्वरः—निषादः॥

अथ त्रयस्त्रिंशो वर्गः॥ ३३॥

अ॒भि प्रि॒याणि॑ पवते॒ चनो॑हितो॒ नामा॑नि य॒ह्वो अधि॒ येषु॒ वर्ध॑ते।
आ सूर्य॑स्य बृह॒तो बृ॒हन्नधि॒ रथं॒ विष्व॑ञ्चमरुहद्विचक्ष॒णः॥१॥
ऋ॒तस्य॑ जि॒ह्वा प॑वते॒ मधु॑ प्रि॒यं व॒क्ता पति॑र्धि॒यो अ॒स्या अदा॑भ्यः।
दधा॑ति पु॒त्रः पि॒त्रोरपी॒च्यं१॒॑ नाम॑ तृ॒तीय॒मधि॑ रोच॒ने दि॒वः॥२॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अव द्युतानः कलशाँ अचिक्रदद्वृभिर्यमानः कोश आ हिरण्ययें।
अभीमृतस्य दोहना अनूषताधि त्रिपृष्ठ उषसो वि राजति॥ ३॥
अद्रिभिः सुतो मतिभिश्चनोहितः प्ररोचयन्रोदसी मातरा शुचिः।
रोमाण्यव्या समया वि धावति मथ्नोर्धारा पिन्वमाना दिवेदिवे॥ ४॥
परि सोम प्र धन्वा स्वस्तये नृभिः पुनानो अभि वासयाशिरम्।
ये ते मदा आहनसो विहायसस्तेभिरिन्द्रं चोदय दातवे मघम्॥ ५॥

इति सप्तमाष्टके द्वितीयोऽध्यायः॥

अथ तृतीयोऽध्यायः

[७६] षट्सप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—कविः॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—१ त्रिष्टुप्; २ विराड्जगती; ३, ५ निचृज्जगती; ४ पादनिचृज्जगती॥ स्वरः—१ धैवतः; २-५ निषादः॥

अथ प्रथमो वर्गः॥ १॥

धर्ता दिवः पवते कृत्व्यो रसो दक्षो देवानामनुमाद्यो नृभिः।
हरिः सृजानो अत्यो न सत्वभिर्वृथा पाजांसि कृणुते नदीष्वा॥ १॥
शूरो न धत्त आयुधा गभस्त्योः स्वर्षाः सनिष्यन्थिरो गविष्टिषु।
इन्द्रस्य शुष्ममीरयन्नपस्युभिरिन्दुर्हिन्वानो अज्यते मनीषिभिः॥ २॥
इन्द्रस्य सोम पवमान ऊर्मिणा तविष्यमाणो जठरेष्वा विश।
प्र णः पिन्व विद्युदभ्रेव रोदसी धिया न वाजाँ उप मासि शश्वतः॥ ३॥
विश्वस्य राजा पवते स्वर्दृशे ऋतस्य धीतिमृषिषाळवीवशत्।
यः सूर्यस्यासिरेण मृज्यते पिता मतीनामसमष्टकाव्यः॥ ४॥
वृषेव यूथा परि कोशमर्षस्यपामुपस्थे वृषभः कनिक्रदत्।
स इन्द्राय पवसे मत्सरिन्तमो यथा जेषाम समिथे त्वोतयः॥ ५॥

[७७] सप्तसप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—कविः॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—१ जगती; २, ४, ५ निचृज्जगती; ३ पादनिचृज्जगती॥ स्वरः—निषादः॥

अथ द्वितीयो वर्गः॥ २॥

एष प्र कोशे मधुमाँ अचिक्रददिन्द्रस्य वज्रो वपुषो वपुष्टरः।
अभीमृतस्य सुदुघा घृतश्चुतो वाश्रा अर्षन्ति पयसेव धेनवः॥ १॥
स पूर्व्यः पवते यं दिवस्परि श्येनो मथायदिषितस्तिरो रजः।
स मध्व आ युवते वेविजान इत्कृशानोरस्तुर्मनसा न विभ्यत्॥ २॥
ते नः पूर्वीस उपरास इन्दवो महे वाजाय धन्वन्तु गोमते।
ईक्षेण्यासो अह्योर्३ न चारवो ब्रह्मब्रह्म ये जुजुषुर्हविर्हविः॥ ३॥
अयं नो विद्वान्वनवद्वनुष्यत इन्दुः सत्राचा मनसा पुरुष्टुतः।
इनस्य यः सदने गर्भमादधे गवामुरुब्जमभ्यर्षति व्रजम्॥ ४॥
चक्रिर्दिवः पवते कृत्व्यो रसो महाँ अदब्धो वरुणो हुरुग्यते।
असावि मित्रो वृजनेषु यज्ञियोऽत्यो न यूथे वृषयुः कनिक्रदत्॥ ५॥

[७८] अष्टसप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—कविः॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—१, ५ निचृज्जगती; २-४ जगती॥ स्वरः—निषादः॥

अथ तृतीयो वर्गः॥ ३॥

प्र राजा वाचं जनयन्नसिष्यदद्रपो वसानो अभि गा इयक्षति।
गृभ्णाति रिप्रमविरस्य तान्वा शुद्धो देवानामुप याति निष्कृतम्॥ १॥
इन्द्राय सोम परि षिच्यसे नृभिर्नृचक्षा ऊर्मिः कविरंन्यसे वने।
पूर्वीर्हि ते स्रुतयः सन्ति यातवे सहस्रमश्वा हरयश्चमूषदः॥ २॥
समुद्रियो अप्सरसो मनीषिणमासीना अन्तरभि सोममक्षरन्।
ता ईं हिन्वन्ति हर्म्यस्य सक्षणिं याचन्ते सुम्नं पवमानमक्षितम्॥ ३॥
गोजिन्नः सोमो रथजिद्धिरण्यजित्स्वर्जिदब्जित्पवते सहस्रजित्।
यं देवासश्चक्रिरे पीतये मदं स्वादिष्ठं द्रप्समरुणं मयोभुवम्॥ ४॥
एतानि सोम पवमानो अस्मयुः सत्यानि कृण्वन्द्रविणान्यर्षसि।
जहि शत्रुमन्तिके दूरके च य उर्वीं गव्यूतिमभयं च नस्कृधि॥ ५॥

[७९] एकोनाशीतितमं सूक्तम्

ऋषिः—कविः॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—१, ३ पादनिचृज्जगती; २, ४, ५ निचृज्जगती॥ स्वरः—निषादः॥

अथ चतुर्दशो वर्गः॥ ४॥

अचोदसो नो धन्वन्त्विन्दवः प्र सुवानासो बृहद्दिवेषु हरयः।
वि च नशन्न इषो अरातयोऽर्यो नशन्त सनिषन्त नो धियः॥ १॥
प्र णो धन्वन्त्विन्दवो मदच्युतो धना वा येभिरर्वतो जुनीमसि।
तिरो मर्तस्य कस्य चित्परीह्वृतिं वयं धनानि विश्वधा भरेमहि॥ २॥
उत स्वस्या अरात्या अरिर्हि ष उतान्यस्या अरात्या वृको हि षः।
धन्वन्नृणा समरीत ताँ अभि सोम जहि पवमान दुराध्यः॥ ३॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

दिवि ते नाभा परमो य आददे पृथिव्यास्ते रुरुहुः सानविं क्षिपः।
अद्रयस्त्वा बप्सति गोरधि त्वच्यापो वा हस्तैर्दुदुहुर्मनीषिणः॥ ४॥
एवा त इन्दो सुभ्वं सुपेशसं रसं तुञ्जन्ति प्रथमा अभिश्रियः।
निदंनिदं पवमान नि तारिष आविस्ते शुष्मो भवतु प्रियो मदः॥ ५॥

[८०] अशीतितमं सूक्तम्

ऋषिः—वसुर्भारद्वाजः॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—१, ४ जगती; २, ५ विराड्जगती; ३ निचृज्जगती॥ स्वरः—निषादः॥

अथ पञ्चदशो वर्गः॥ ५॥

सोमस्य धारा पवते नृचक्षस ऋतेन देवान्हवते दिवस्परि।
बृहस्पतेर्वरथेना वि दिद्युते समुद्रासो न सवनानि विव्यचुः॥ १॥
यं त्वा वाजिन्नघ्न्या अभ्यनूषतायोहतं योनिमा रोहसि द्युमान्।
मघोनामायुः प्रतिरन्महि श्रव इन्द्राय सोम पवसे वृषा मदः॥ २॥
एन्द्रस्य कुक्षा पवते मदिन्तम ऊर्जं वसानः श्रवसे सुमङ्गलः।
प्रत्यङ्स विश्वा भुवनाभि पप्रथे क्रीळन्हरिरत्यः स्यन्दते वृषा॥ ३॥
तं त्वा देवेभ्यो मधुमत्तमं नरः सहस्रधारं दुहते दश क्षिपः।
नृभिः सोम प्रच्युतो ग्रावभिः सुतो विश्वान्देवाँ आ पवस्वा सहस्रजित्॥ ४॥
तं त्वा हस्तिनो मधुमन्तमद्रिभिर्दुहन्त्यप्सु वृषभं दश क्षिपः।
इन्द्रं सोम मादयन्दैव्यं जनं सिन्धोरिवोर्मिः पवमानो अर्षसि॥ ५॥

[८१] एकाशीतितमं सूक्तम्

ऋषिः—वसुर्भारद्वाजः॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—१-३ निचृज्जगती; ४ जगती; ५ निचृत्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१-४ निषादः; ५ धैवतः॥

अथ षष्ठो वर्गः॥ ६॥

प्र सोमस्य पवमानस्योर्मय इन्द्रस्य यन्ति जठरं सुपेशसः।
दध्ना यदीमुन्नीता यशसा गवां दानाय शूरमुदमन्दिषुः सुताः॥ १॥
अच्छा हि सोमः कलशाँ असिष्यदत्यो न वोळ्हा रघुर्वर्तनिर्वृषा।
अथा देवानामुभयस्य जन्मनो विद्वाँ अश्नोत्युभतः इतश्च यत्॥ २॥
आ नः सोम पवमानः किरा वस्विन्दो भव मघवा राधसो महः।
शिक्षा वयोधो वसवे सु चेतुना मा नो गयमारे अस्मत्परा सिचः॥ ३॥
आ नः पूषा पवमानः सुरातयो मित्रो गच्छन्तु वरुणः सजोषसः।
वृहस्पतिर्मरुतो वायुरश्विना त्वष्टा सविता सुयमा सरस्वती॥ ४॥
उभे द्यावापृथिवी विश्वमिन्वे अर्यमा देवो अदितिर्विधाता।
भगो नृशंस उर्वन्तरिक्षं विश्वे देवाः पवमानं जुषन्त॥ ५॥

[८२] द्व्यशीतितमं सूक्तम्

ऋषिः—वसुर्भारद्वाजः॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—१, ४ विराड्जगती; २ निचृज्जगती; ३ जगती; ५ त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१-४ निषादः; ५ धैवतः॥

अथ सप्तमो वर्गः॥ ७॥

असावि सोमो अरुषो वृषा हरी राजेव दस्मो अभि गा अचिक्रदत्।
पुनानो वारं पर्येत्यव्ययं श्येनो न योनिं घृतवन्तमासदम्॥ १॥
कविर्वेधस्या पर्येषि माहिनमत्यो न मृष्टो अभि वाजमर्षसि।
अपसेधन्दुरिता सोम मृळय घृतं वसानः परि यासि निर्णिजम्॥ २॥
पर्जन्यः पिता महिषस्य पर्णिनो नाभा पृथिव्या गिरिषु क्षयं दधे।
स्वसारं आपो अभि गा उतासरन्त्सं ग्रावभिर्नसते वीते अध्वरे॥ ३॥
जायेव पत्यावधि शेव मंहसे पन्नाया गर्भ शृणुहि ब्रवीमि ते।
अन्तर्वाणीषु प्र चरा सु जीवसेऽनिन्द्यो वृजने सोम जागृहि॥ ४॥
यथा पूर्वेभ्यः शतसा अमृध्रः सहस्रसाः पर्यया वाजमिन्दो।
एवा पवस्व सुवितायनव्यसे तव व्रतमन्वापः सचन्ते॥ ५॥

[८३] त्र्यशीतितमं सूक्तम्

ऋषिः—पवित्रः॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—१, ४ निचृज्जगती; २, ५ विराड्जगती; ३ जगती॥ स्वरः—निषादः॥

अथ अष्टमो वर्गः॥ ८॥

पवित्रं ते विततं ब्रह्मणस्पते प्रभुर्गात्राणि पर्येषि विश्वतः।
अतप्ततनूर्न तदामो अश्नुते शृतास इद्वहन्तस्तत्समाशत॥ १॥
तपोष्पवित्रं विततं दिवस्पदे शोचन्तो अस्य तन्तवो व्यस्थिरन्।
अवन्त्यस्य पवीतारमाशवो दिवस्पृष्ठमधि तिष्ठन्ति चेतसा॥ २॥
अरूरुचदुषसः पृश्निरग्रिय उक्षा बिभर्ति भुवनानि वाजयुः।
मायाविनो ममिरे अस्य मायया नृचक्षसः पितरो गर्भमा दधुः॥ ३॥
गन्धर्व इत्था पदमस्य रक्षति पाति देवानां जनिमान्यद्भुतः।
गृभ्णाति रिपुं निधया निधापतिः सुकृत्तमा मधुनो भक्षमाशत॥ ४॥
हविर्हविष्मो महि सद्म दैव्यं नभो वसानः परि यास्यध्वरम्।
राजा पवित्ररथो वाजमारुहः सहस्रभृष्टिर्जयसि श्रवो बृहत्॥ ५॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

[८४] चतुरशीतितमं सूक्तम्

ऋषिः—प्रजापतिर्वाच्यः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—१, ३ विराड्जगती; २ निचृत्त्रिष्टुप्; ४ जगती; ५ त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१, ३, ४ निषादः; २, ५ धैवतः ॥

अथ नवमो वर्गः ॥ ९ ॥

पवस्व देवमादनो विचर्षणिरप्सा इन्द्राय वरुणाय वायवे।
कृधी नो अद्य वरिवः स्वस्तिमदुरुक्षितौ गृणीहि दैव्यं जनम् ॥ १ ॥
आ यस्तस्थौ भुवनान्यमर्त्यो विश्वानि सोमः परि तान्यर्षति।
कृण्वन्त्संचृतं विचृतमभिष्टय इन्दुः सिषक्त्युषसं न सूर्यः ॥ २ ॥
आ यो गोभिः सृज्यत ओषधीष्वा देवानां सुम्न इषयन्नुपावसुः।
आ विद्युता पवते धारया सुत इन्द्रं सोमो मादयन्दैव्यं जनम् ॥ ३ ॥
एष स्य सोमः पवते सहस्रजिद्धिन्वानो वाचमिषिरामुषर्बुधम्।
इन्दुः समुद्रमुदियर्ति वायुभिरेन्द्रस्य हार्दि कलशेषु सीदति ॥ ४ ॥
अभि त्यं गावः पयसा पयोव्रधं सोमं श्रीणन्ति मतिभिः स्वर्विदम्।
धनंजयः पवते कृत्व्यो रसो विप्रः कविः काव्येना स्वर्चनाः ॥ ५ ॥

[८५] पञ्चाशीतितमं सूक्तम्

ऋषिः—वेनो भार्गवः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—१, ५, ९, १० विराड्जगती; २, ७ निचृज्जगती; ३ जगती; ४, ६ पादनिचृज्जगती; ८ आर्चीस्वराड्जगती; ११ भुरिक्त्रिष्टुप्; १२ त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१-१० निषादः; ११, १२ धैवतः ॥

अथ दशमो वर्गः ॥ १० ॥

इन्द्राय सोम सुषुतः परि स्रवापामीवा भवतु रक्षसा सह।
मा ते रसस्य मत्सत द्व्याविनो द्रविणस्वन्त इह सन्त्विन्दवः ॥ १ ॥
अस्मान्त्समर्ये पवमान चोदय दक्षो देवानामसि हि प्रियो मदः।
जहि शत्रूँरभ्या भन्दनायतः पिबेन्द्र सोममव नो मृधो जहि ॥ २ ॥
अदब्ध इन्दो पवसे मदिन्तम आत्मेन्द्रस्य भवसि धासिरुत्तमः।
अभि स्वरन्ति बहवो मनीषिणो राजानमस्य भुवनस्य निंसते ॥ ३ ॥
सहस्रणीथः शतधारो अद्भुत इन्द्रायेन्दुः पवते काम्यं मधु।
जयन्क्षेत्रमभ्यर्षा जयन्नप उरुं नो गातुं कृणु सोम मीढ्वः ॥ ४ ॥
कनिक्रदत्कलशे गोभिरज्यसे व्यव्ययं समया वारमर्षसि।
मृजन्यमानो अत्यो न सानसिरिन्द्रस्य सोम जठरे समक्षरः ॥ ५ ॥
स्वादुः पवस्व दिव्याय जन्मने स्वादुरिन्द्राय सुहवीतुनाम्ने।
स्वादुर्मित्राय वरुणाय वायवे बृहस्पतये मधुमाँ अदाभ्यः ॥ ६ ॥

अथ एकादशो वर्गः ॥ ११ ॥

अत्यं मृजन्ति कलशे दश क्षिपः प्र विप्राणां मतयो वाचं ईरते।
पवमाना अभ्यर्षन्ति सुष्टुतिमेन्द्रं विशन्ति मदिरास इन्दवः ॥ ७ ॥
पवमानो अभ्यर्षा सुवीर्यं मुर्वीं गव्यूतिं महि शर्म सप्रथः।
माकिर्नो अस्य परिषूतिरीशतेन्दो जयेम त्वया धनंधनम् ॥ ८ ॥
अधि द्यामस्थाद् वृषभो विचक्षणोऽरूरुचद्वि दिवो रोचना कविः।
राजा पवित्रमत्येति रोरुवद्दिवः पीयूषं दुहते नृचक्षसः ॥ ९ ॥
दिवो नाके मधुजिह्वा असश्चतो वेना दुहन्त्युक्षणं गिरिष्ठाम्।
अप्सु द्रप्सं वावृधानं समुद्र आ सिन्धोरूर्मा मधुमन्तं पवित्र आ ॥ १० ॥
नाके सुपर्णमुपपप्तिवांसं गिरो वेनानामकृपन्त पूर्वीः।
शिशुं रिहन्ति मतयः पनिप्रतं हिरण्ययं शकुनं क्षामणि स्थाम् ॥ ११ ॥
ऊर्ध्वो गन्धर्वो अधि नाके अस्थाद्विश्वा रूपा प्रतिचक्षाणो अस्य।
भानुः शुक्रेण शोचिषा व्यद्यौत्प्रारूरुचद्रोदसी मातरा शुचिः ॥ १२ ॥

पञ्चमोऽनुवाकः

[८६] षडशीतितमं सूक्तम्

ऋषिः—१-१० अकृष्टा माषाः; ११-२० सिकता निवावरी; २१-३० पृश्नयोऽजाः; ३१-४० त्रय ऋषिगणाः; ४१-४५ अत्रिः; ४६-४८ गृत्समदः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—१, ६, २१, २६, ३३, ४० जगती; २, ७, ८, ११, १२, १७, २०, २३, ३०, ३१, ३४-३६, ३८, ३९, ४२, ४४, ४७ विराड् जगती; ३-५, ९, १०, १३, १६, १८, १९, २२, २५, २७, ३२, ३७, ४१, ४६ निचृज्जगती; १४, १५, २८, २९, ४३, ४८ पादनिचृज्जगती; २४ आर्चीजगती; ४५ आर्चीस्वराड्जगती ॥ स्वरः—निषादः ॥

अथ द्वादशो वर्गः ॥ १२ ॥

प्र त आशवः पवमान धीजवो मदा अर्षन्ति रघुजाइव त्मना।
दिव्याः सुपर्णा मधुमन्त इन्दवो मदिन्तमासः परि कोशमासते ॥ १ ॥
प्र ते मदासो मदिरास आशवोऽसृक्षत रथ्यासो यथा पृथक्।
धेनुर्न वत्सं पयसाभि वज्रिणमिन्द्रमिन्दवो मधुमन्त ऊर्मयः ॥ २ ॥
अत्यो न हियानो अभि वाजमर्ष स्वर्वित्कोशं दिवो अद्रिमातरम्।
वृषा पवित्रे अधि सानो अव्यये सोमः पुनान इन्द्रियाय धायसे ॥ ३ ॥
प्र त आश्विनीः पवमान धीजुवो दिव्या असृग्रन्पयसा धरीमणि।
प्रान्तर्ऋषयः स्थाविरीरसृक्षत ये त्वा मृजन्त्यृषिषाण वेधसः ॥ ४ ॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

विश्वा धामानि विश्वचक्ष ऋभ्वसः प्रभोस्ते सुतः परि यन्ति केतवः।
व्यानशिः पवसे सोम धर्मभिः पतिर्विश्वस्य भुवनस्य राजसि॥ ५॥

अथ त्रयोदशो वर्गः॥ १३॥

उभयतः पवमानस्य रश्मयो ध्रुवस्य सतः परि यन्ति केतवः।
यदीं पवित्रे अधि मृज्यते हरिः सत्ता नि योना कलशेषु सीदति॥ ६॥
यज्ञस्य केतुः पवते स्वध्वरः सोमो देवानामुप याति निष्कृतम्।
सहस्रधारः परि कोशमर्षति वृषा पवित्रमत्येति रोरुवत्॥ ७॥
राजा समुद्रं नद्योऽ३ वि गाहतेऽपामूर्मिं संचते सिन्धुषु श्रितः।
अध्यस्थात्सानु पवमानो अव्ययं नाभा पृथिव्या धरुणो महो दिवः॥ ८॥
दिवो न सानु स्तनयन्नचिक्रदद्द्यौश्च यस्य पृथिवी च धर्मभिः।
इन्द्रस्य सख्यं पवते विवेविदत्सोमः पुनानः कलशेषु सीदति॥ ९॥
ज्योतिर्यज्ञस्य पवते मधु प्रियं पिता देवानां जनिता विभूवसुः।
दधाति रत्नं स्वधयोरपीच्यं मदिन्तमो मत्सर इन्द्रियो रसः॥ १०॥

अथ चतुर्दशो वर्गः॥ १४॥

अभिक्रन्दन्कलशं वाज्यर्षति पतिर्दिवः शतधारो विचक्षणः।
हरिर्मित्रस्य सदनेषु सीदति मर्मृजानोऽविभिः सिन्धुभिर्वृषा॥ ११॥
अग्रे सिन्धूनां पवमानो अर्षत्यग्रे वाचो अग्रियो गोषु गच्छति।
अग्रे वाजस्य भजते महाधनं स्वायुधः सोतृभिः पूयते वृषा॥ १२॥
अयं मतवाञ्छकुनो यथा हितोऽव्ये ससार पवमान ऊर्मिणा।
तव क्रत्वा रोदसी अन्तरा कवे शुचिर्धिया पवते सोम इन्द्र ते॥ १३॥
द्रापिं वसानो यजतो दिविस्पृशमन्तरिक्षप्रा भुवनेष्वर्पितः ।
स्वर्जज्ञानो नभसाभ्यक्रमीत्प्रत्नमस्य पितरमा विवासति ॥ १४॥
सो अस्य विशे महि शर्म यच्छति यो अस्य धाम प्रथमं व्यानशे।
पदं यदस्य परमे व्योमन्यतो विश्वा अभि सं याति संयतः॥ १५॥

अथ पञ्चदशो वर्गः॥ १५॥

प्रो अयासीदिन्दुरिन्द्रस्य निष्कृतं सखा सख्युर्न प्र मिनाति संगिरम्।
मर्यइव युवतिभिः समर्षति सोमः कलशे शतयाम्ना पथा॥ १६॥
प्र वो धियो मन्द्रयुवो विपन्युवः पनस्युवः संवसनेष्वक्रमुः।
सोमं मनीषा अभ्यनूषत स्तुभोऽभि धेनवः पयसेमशिश्रयुः॥ १७॥
आ नः सोम संयतं पिप्युषीमिषमिन्दो पवस्व पवमानो अस्रिधम्।
या नो दोहते त्रिरहन्नसश्चुषी क्षुमद्वाजवन्मधुमत्सुवीर्यम्॥ १८॥
वृषा मतीनां पवते विचक्षणः सोमो अहः प्रतरीतोषसो दिवः।
क्राणा सिन्धूनां कलशाँ अवीवशदिन्द्रस्य हार्द्याविशन्मनीषिभिः॥ १९॥
मनीषिभिः पवते पूर्व्यः कविर्नृभिर्यतः परि कोशाँ अचिक्रदत्।
त्रितस्य नाम जनयन्मधु क्षरदिन्द्रस्य वायोः सख्याय कर्तवे॥ २०॥

अथ षोडशो वर्गः॥ १६॥

अयं पुनान उषसो वि रोचयदयं सिन्धुभ्यो अभवदु लोककृत्।
अयं त्रिः सप्त दुदुहान आशिरं सोमो ह्रदे पवते चारु मत्सरः॥ २१॥
पवस्व सोम दिव्येषु धामसु सृजान इन्दो कलशे पवित्र आ।
सीदन्निन्द्रस्य जठरे कनिक्रदन्नृभिर्यतः सूर्यमारोहयो दिवि॥ २२॥
अद्रिभिः सुतः पवसे पवित्र आँ इन्दविन्द्रस्य जठरेष्वाविशन्।
त्वं नृचक्षा अभवो विचक्षण सोम गोत्रमङ्गिरोभ्योऽवृणोरप॥ २३॥
त्वां सोम पवमानं स्वाध्योऽनु विप्रासो अमदन्नवस्यवः।
त्वां सुपर्ण आभरद्दिवस्परीन्दो विश्वाभिर्मतिभिः परिष्कृतम्॥ २४॥
अव्ये पुनानं परि वारं ऊर्मिणा हरिं नवन्ते अभि सप्त धेनवः।
अपामुपस्थे अध्यायवः कविमृतस्य योना महिषा अहेषत॥ २५॥

अथ सप्तदशो वर्गः॥ १७॥

इन्दुः पुनानो अति गाहते मृधो विश्वानि कृण्वन्त्सुपथानि यज्यवे।
गाः कृण्वानो निर्णिजं हर्यतः कविरत्यो न क्रीळन्परि वारमर्षति॥ २६॥
असश्चतः शतधारा अभिश्रियो हरिं नवन्तेऽव ता उदन्युवः।
क्षिपो मृजन्ति परि गोभिरावृतं तृतीये पृष्ठे अधि रोचने दिवः॥ २७॥
तवेमाः प्रजा दिव्यस्य रेतसस्त्वं विश्वस्य भुवनस्य राजसि।
अथेदं विश्वं पवमान ते वशे त्वमिन्दो प्रथमो धामधा असि॥ २८॥
त्वं समुद्रो असि विश्ववित्कवे तवेमाः पञ्च प्रदिशो विधर्मणि।
त्वं द्यां च पृथिवीं चाति जभ्रिषे तव ज्योतींषि पवमान सूर्यैः॥ २९॥
त्वं पवित्रे रजसो विधर्मणि देवेभ्यः सोम पवमान पूयसे।
त्वामुशिजः प्रथमा अगृभ्णत तुभ्येमा विश्वा भुवनानि येमिरे॥ ३०॥

अथ अष्टादशो वर्गः॥ १८॥

प्र रेभ एत्यति वारमव्ययं वृषा वनेष्ववं चक्रदद्धरिः।
सं धीतयो वावशाना अनूषत शिशुं रिहन्ति मतयः पनिप्रतम्॥ ३१॥
स सूर्यस्य रश्मिभिः परि व्यत तन्तुं तन्वानस्त्रिवृतं यथा विदे।
नयन्नृतस्य प्रशिषो नवीयसीः पतिर्जनीनामुप याति निष्कृतम्॥ ३२॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

राजा॒ सिन्धू॑नां पवते॒ पति॑र्दि॒व ऋ॒तस्य॑ याति प॒थिभि॒ः कनि॑क्रदत्।
स॒हस्र॑धार॒ः परि॑ षिच्यते॒ हरि॑ः पुना॒नो वाचं॑ ज॒नय॒न्नुपा॑वसुः॥ ३३॥
पव॑मान॒ मह्यर्णो॒ वि धा॑वसि॒ सूरो॒ न चि॒त्रो अव्य॑यानि॒ पव्य॑या।
गभ॑स्तिपूतो॒ नृभि॒रद्रि॑भिः सु॒तो म॒हे वाजा॑य॒ धन्या॑य धन्वसि॥ ३४॥
इष॒मूर्जं॑ पवमाना॒भ्य॑र्षसि श्ये॒नो न वंसु॑ क॒लशे॑षु सीदसि।
इन्द्रा॑य॒ मद्वा॒ मद्यो॒ मदः॑ सु॒तो दि॒वो वि॑ष्ट॒म्भ उ॑प॒मो वि॑चक्ष॒णः॥ ३५॥

अथ एकोनविंशो वर्गः॥ १९॥

स॒प्त स्वसा॑रो अ॒भि मा॒तर॒ः शिशुं॒ नवं॑ जज्ञा॒नं जेन्यं॑ विप॒श्चित॑म्।
अ॒पां ग॑न्ध॒र्वं दि॒व्यं नृ॒चक्ष॑सं॒ सोमं॒ विश्व॑स्य॒ भुव॑नस्य रा॒जसे॑॥ ३६॥
ई॒शा॒न इ॒मा भुव॑नानि॒ वीय॑से युजा॒न इ॑न्दो ह॒रित॑ः सुप॒र्ण्यः॑।
तास्ते॑ क्षरन्तु॒ मधु॑मद्घृ॒तं पय॒स्तव॑ व्र॒ते सो॑म तिष्ठन्तु कृ॒ष्टयः॑॥ ३७॥
त्वं नृ॒चक्षा॑ असि सोम वि॒श्वत॒ः पव॑मान वृषभ॒ ता वि धा॑वसि।
स नः॑ पवस्व॒ वसु॑म॒द्धिर॑ण्यवद्व॒यं स्या॑म॒ भुव॑नेषु जी॒वसे॑॥ ३८॥
गो॒वित्प॑वस्व वसु॒विद्धि॑रण्य॒विद्रे॑तो॒धा इ॑न्दो॒ भुव॑ने॒ष्वर्पि॑तः।
त्वं सु॒वीरो॑ असि सोम विश्व॒वित्तं त्वा॒ विप्रा॒ उप॑ गि॒रेम आ॑सते॥ ३९॥
उन्मध्व॑ ऊ॒र्मिर्व॒नना॑ अतिष्ठिपद॒पो वसा॑नो महि॒षो वि गा॑हते।
राजा॑ प॒वित्र॑रथो॒ वाज॒मारु॑हत्स॒हस्र॑भृष्टिर्जयति॒ श्रवो॑ बृ॒हत्॥ ४०॥

अथ विंशो वर्गः॥ २०॥

स भ॒न्दना॒ उदि॑यर्ति प्र॒जाव॑तीर्वि॒श्वायु॒र्विश्वा॑ः सु॒भरा॒ अह॑र्दिवि।
ब्रह्म॑ प्र॒जाव॑द्र॒यिमश्व॑पस्त्यं पी॒त इ॑न्द॒विन्द्र॑म॒स्मभ्यं॑ याचतात्॥ ४१॥
सो अग्रे॒ अह्नं॒ हरि॑र्हर्य॒तो मद॒ः प्र चेत॑सा चेतयते॒ अनु॒ द्युभि॑ः।
द्वा जना॑ या॒तय॑न्न॒न्तरी॑यते॒ नरा॑ च॒ शंसं॒ दैव्यं॑ च ध॒र्तरि॑॥ ४२॥
अ॒ञ्जते॒ व्य॑ञ्जते॒ सम॑ञ्जते॒ क्रतुं॑ रिहन्ति॒ मधु॑ना॒भ्य॑ञ्जते।
सिन्धो॑रुच्छ्वा॒से प॒तय॑न्तमु॒क्षणं॑ हिरण्यपा॒वाः प॒शुमा॑सु गृभ्णते॥ ४३॥
वि॒प॒श्चिते॒ पव॑मानाय गायत म॒ही न धारात्यन्धो॑ अर्षति।
अहि॒र्न जू॒र्णामति॑ सर्पति॒ त्वच॒मत्यो॒ न क्रीळ॑न्नसर॒द्वृषा॒ हरि॑ः॥ ४४॥
अ॒ग्रे॒गो राजाप्य॑स्तविष्यते वि॒मानो॒ अह्नं॒ भुव॑ने॒ष्वर्पि॑तः।
हरि॑र्घृ॒तस्रु॑ः सु॒दृशी॑को अर्ण॒वो ज्यो॒तीर॑थः पवते रा॒य ओ॒क्यः॑॥ ४५॥

अथ एकविंशो वर्गः॥ २१॥

अस॑र्जि स्क॒म्भो दि॒व उद्य॑तो॒ मद॒ः परि॑ त्रि॒धातु॒र्भुव॑नान्यर्षति।
अं॒शुं रि॑हन्ति म॒तय॒ः पनि॑प्नतं गि॒रा यदि॑ नि॒र्णिज॑मृ॒ग्मिणो॑ य॒युः॥ ४६॥

प्र ते॒ धारा॒ अत्यण्वा॑नि मे॒ष्यः॑ पुना॒नस्य॑ सं॒यतो॑ यन्ति॒ रंह॑यः।
यद्गोभि॑रिन्दो च॒म्वो॑ः सम॒ज्यस॒ आ सु॑वा॒नः सो॑म क॒लशे॑षु सीदसि॥ ४७॥
पव॑स्व सोम क्रतु॒विन्न॑ उ॒क्थ्योऽव्यो॒ वारे॒ परि॑ धाव॒ मधु॑ प्रि॒यम्।
ज॒हि विश्वा॑न्र॒क्षस॑ इन्दो अ॒त्रिणो॑ बृ॒हद्व॑देम वि॒दथे॑ सु॒वीरा॑ः॥ ४८॥

[८७] सप्ताशीतितमं सूक्तम्

ऋषिः—उशना॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—१, २ निचृत्त्रिष्टुप्; ३ पादनिचृत् त्रिष्टुप्; ४, ८ विराट्त्रिष्टुप्; ५-७, ९ त्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः॥

अथ द्वाविंशो वर्गः॥ २२॥

प्र तु द्र॑व॒ परि॒ कोशं॒ नि षी॑द॒ नृभि॑ः पुना॒नो अ॒भि वाज॑मर्ष।
अश्वं॒ न त्वा॑ वा॒जिनं॑ म॒र्जय॒न्तोऽच्छा॑ ब॒र्ही र॑श॒नाभि॑र्नयन्ति॥ १॥
स्वा॒यु॒धः प॑वते दे॒व इन्दु॑रशस्ति॒हा वृ॒जनं॒ रक्ष॑माणः।
पि॒ता दे॒वानां॑ जनि॒ता सु॒दक्षो॑ विष्ट॒म्भो दि॒वो ध॒रुण॑ः पृथि॒व्याः॥ २॥
ऋषि॒र्विप्र॑ः पुरए॒ता जना॑नामृ॒भुर्धीर॑ उ॒शना॒ काव्ये॑न।
स चि॑द्विवेद॒ निहि॑तं॒ यदा॑सामपी॒च्यं१॒॑ गुह्यं॒ नाम॒ गोना॑म्॥ ३॥
ए॒ष स्य ते॒ मधु॑माँ इन्द्र॒ सोमो॒ वृषा॒ वृष्णे॒ परि॑ प॒वित्रे॑ अक्षाः।
स॒ह॒स्र॒साः श॑त॒सा भू॑रि॒दावा॑ शश्वत्त॒मं ब॒र्हिरा वा॒ज्य॑स्थात्॥ ४॥
ए॒ते सोमा॑ अ॒भि ग॒व्या स॒हस्रा॑ म॒हे वाजा॑या॒मृता॑य॒ श्रवां॑सि।
प॒वित्रे॑भि॒ः पव॑माना असृग्रञ्छ्र॒व॒स्यवो॒ न पृ॑त॒नाजो॒ अत्या॑ः॥ ५॥

अथ त्रयोविंशो वर्गः॥ २३॥

परि॒ हि ष्मा॑ पुरुहू॒तो जना॑नां॒ विश्वास॑र॒द्भोज॑ना पू॒यमा॑नः।
अथा भ॑र श्येनभृत॒ प्रयां॑सि र॒यिं तुञ्जा॑नो अ॒भि वाज॑मर्ष॥ ६॥
ए॒ष सु॑वा॒नः परि॒ सोम॑ः प॒वित्रे॒ सर्गो॒ न सृ॒ष्टो अ॑दधाव॒दर्वा॑।
ति॒ग्मे शिशा॑नो महि॒षो न शृङ्गे॒ गा ग॒व्यन्न॒भि शूरो॒ न सत्वा॑॥ ७॥
ए॒षा य॑यौ पर॒माद॒न्तरद्रे॒ः कूचि॑त्स॒तीरू॒र्वे गा वि॑वेद।
दि॒वो न वि॒द्युत्स्त॒नय॑न्त्य॒भ्रैः सोम॑स्य ते पवत इन्द्र॒ धारा॑॥ ८॥
उ॒त स्म॑ रा॒शिं परि॑ यासि॒ गोना॒मिन्द्रे॑ण सोम स॒रथं॑ पुना॒नः।
पू॒र्वीरिषो॑ बृह॒तीर्जी॑रदानो॒ शिक्षा॑ शचीव॒स्तव॒ ता उ॑प॒ष्टुत्॥ ९॥

[८८] अष्टाशीतितमं सूक्तम्

ऋषिः—उशना॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—१ सतःपङ्क्तिः; २, ४, ८ विराट्त्रिष्टुप्; ३, ६, ७ निचृत्त्रिष्टुप्; ५ त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१ पञ्चमः; २-८ धैवतः॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अथ चतुर्विंशो वर्गः ॥ २४ ॥

अ॒यं सोम॑ इन्द्र॒ तुभ्यं॑ सुन्वे॒ तुभ्यं॑ पवते॒ त्वम॑स्य पाहि।
त्वं ह॒ यं च॑कृ॒षे त्वं व॑वृ॒ष इन्दुं॒ मदा॑य॒ युज्या॑य॒ सोम॑म्॥ १॥
स ईं॒ रथो॒ न भु॑रि॒षाळ॑योजि म॒हः पु॒रूणि॑ सा॒तये॒ वसू॑नि।
आदीं॒ विश्वा॑ नहु॒ष्या॑णि जा॒ता स्व॑र्षाता॒ वन॑ ऊ॒र्ध्वा न॑वन्त॥ २॥
वा॒युर्न यो नि॒युत्वाँ॑ इ॒ष्टया॑मा॒ नास॑त्येव॒ हव॒ आ शंभ॑विष्ठः।
वि॒श्ववा॑रो द्रविणो॒दाइ॑व॒ त्मन्पू॒षेव॑ धी॒जव॑नोऽसि सोम ॥ ३॥
इन्द्रो॒ न यो म॒हा कर्मा॑णि॒ चक्रि॑र्ह॒न्ता वृ॒त्राणा॑मसि सोम पू॒र्भित्।
पै॒द्वो न हि त्वमहि॑नाम्नां ह॒न्ता विश्व॑स्यासि सोम॒ दस्योः॑॥ ४॥
अ॒ग्निर्न यो वन॒ आ सृ॒ज्यमा॑नो॒ वृथा॒ पाजां॑सि कृणुते न॒दीषु॑।
जनो॒ न युध्वा॑ मह॒त उ॑प॒ब्दिरिय॑र्ति॒ सोमः॒ पव॑मान ऊ॒र्मिम्॥ ५॥
ए॒ते सोमा॒ अति॒ वारा॒ण्यव्या॑ दि॒व्या न कोशा॑सो अ॒भ्रव॑र्षाः।
वृथा॑ समु॒द्रं सिन्ध॑वो॒ न नीचीः॑ सु॒तासो॑ अ॒भि क॒लशाँ॑ असृग्रन्॥ ६॥
शु॒ष्मी शर्धो॒ न मारु॑तं पव॒स्वान॑भिशस्ता दि॒व्या यथा॒ विट्।
आपो॒ न म॒क्षू सु॑म॒तिर्भ॑वा नः स॒हस्रा॑प्साः पृतना॒षाण्न य॒ज्ञः॥ ७॥
राज्ञो॒ नु ते॒ वरु॑णस्य व्र॒तानि॑ बृ॒हद्ग॑भी॒रं तव॑ सोम॒ धाम॑।
शुचि॒ष्ट्वम॑सि प्रि॒यो न मि॒त्रो द॒क्षाय्यो॑ अर्य॒मेवा॑सि सोम॥ ८॥

[८९] एकोननवतितमं सूक्तम्

ऋषिः—उशना॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—१ पादनिचृत्त्रिष्टुप्; २, ५, ६ त्रिष्टुप्; ३, ७ विराट्त्रिष्टुप्; ४ निचृत्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः॥

अथ पञ्चविंशो वर्गः ॥ २५ ॥

प्रो स्य वह्निः॑ प॒थ्या॑भिरस्यान्दि॒वो न वृ॒ष्टिः पव॑मानो अक्षाः।
स॒हस्र॑धारो असद॒न्न्य१॒॑स्मे मा॒तुरु॒पस्थे॒ वन॒ आ च॒ सोमः॑॥ १॥
राजा॒ सिन्धू॑नामवसिष्ट॒ वास॑ ऋ॒तस्य॒ नाव॒मारु॑ह॒द्रजि॑ष्ठाम्।
अ॒प्सु द्र॒प्सो वा॑वृधे श्ये॒नजू॑तो दु॒ह ईं॑ पि॒ता दु॒ह ईं॑ पि॒तुर्जाम्॥ २॥
सि॒हं न॑सन्त॒ मध्वो॑ अ॒यासं॒ हरि॑मरु॒षं दि॒वो अ॒स्य पति॑म्।
शूरो॑ यु॒त्सु प्र॑थ॒मः पृ॑च्छते॒ गा अस्य॒ चक्ष॑सा॒ परि॑ पात्यु॒क्षा॥ ३॥
मधु॑पृष्ठं घो॒रम॒यास॒मश्वं॒ रथे॑ युञ्जन्त्युरुच॒क्र ऋ॒ष्वम्।
स्वसा॑र ईं जा॒मयो॑ मर्जयन्ति॒ सना॑भयो वा॒जिन॑मूर्जयन्ति॥ ४॥
चत॑स्र ईं घृत॒दुहः॑ सचन्ते समा॒ने अ॒न्तर्ध॒रुणे॒ निष॑त्ताः।
ता ईम॑र्षन्ति॒ नम॑सा पुना॒नास्ता ईं॑ वि॒श्वतः॒ परि॑ षन्ति पू॒र्वीः॥ ५॥
वि॒ष्ट॒म्भो दि॒वो ध॒रुणः॑ पृथि॒व्या विश्वा॑ उ॒त क्षि॒तयो॒ हस्ते॑ अस्य।
अस॑त्त॒ उत्सो॑ गृण॒ते नि॒युत्वा॒न्मध्वो॑ अं॒शुः प॑वत इन्द्रि॒याय॑॥ ६॥
व॒न्वन्नवा॑तो अ॒भि दे॒ववी॑ति॒मिन्द्रा॑य सोम वृत्र॒हा प॑वस्व।
श॒ग्धि म॒हः पु॑रुश्च॒न्द्रस्य॑ रा॒यः सु॒वीर्य॑स्य॒ पत॑यः स्याम॥ ७॥

[९०] नवतितमं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—१, ३, ४ त्रिष्टुप्; २, ६ निचृत्त्रिष्टुप्; ५ भुरिक्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः॥

अथ षड्विंशो वर्गः ॥ २६ ॥

प्र हि॑न्वा॒नो ज॑नि॒ता रोद॑स्यो॒ रथो॒ न वाजं॑ सनि॒ष्यन्न॑यासीत्।
इन्द्रं॒ गच्छ॒न्नायु॑धा सं॒शिशा॑नो॒ विश्वा॒ वसु॒ हस्त॑योरा॒दधा॑नः॥ १॥
अ॒भि त्रि॑षृ॒ष्ठं वृष॑णं वयो॒धामा॑ङ्गू॒षाणा॑मवावशन्त॒ वाणीः॑।
वना॒ वसा॑नो॒ वरु॑णो॒ न सिन्धू॒न्वि र॑त्न॒धा द॑यते॒ वार्या॑णि॥ २॥
शूर॑ग्रामः॒ सर्व॑वीरः॒ सहा॑वा॒ञ्जेता॑ पवस्व॒ सनि॑ता॒ धना॑नि।
ति॒ग्मायु॑धः क्षि॒प्रध॑न्वा स॒मत्स्वषा॑ळ्हः सा॒ह्वान्पृत॑नासु॒ शत्रू॑न्॥ ३॥
उ॒रुग॑व्यूति॒रभ॑यानि कृ॒ण्वन्त्स॑मीची॒ने आ प॑वस्वा॒ पुर॑न्धी।
अ॒पः सिषा॑सन्नु॒षसः॒ स्व१॒॑र्गाः सं चि॑क्रदो म॒हो अ॒स्मभ्यं॒ वाजा॑न्॥ ४॥
मत्सि॑ सोम॒ वरु॑णं॒ मत्सि॑ मि॒त्रं मत्सीन्द्र॑मिन्दो पवमान॒ विष्णु॑म्।
मत्सि॒ शर्धो॒ मारु॑तं॒ मत्सि॑ दे॒वान्मत्सि॑ म॒हामिन्द्र॑मिन्दो॒ मदा॑य॥ ५॥
ए॒वा राजे॑व॒ क्रतु॑माँ॒ अमे॑न॒ विश्वा॒ घनि॑घ्नद्दुरि॒ता प॑वस्व।
इन्दो॑ सू॒क्ताय॒ वच॑से॒ वयो॑ धा यू॒यं पा॑त स्व॒स्तिभिः॒ सदा॑ नः॥ ६॥

इति सप्तमाष्टके तृतीयोऽध्यायः॥

अथ चतुर्थोऽध्यायः

[९१] एकनवतितमं सूक्तम्

ऋषिः—कश्यपः॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—१, २, ६ पादनिचृत्त्रिष्टुप्; ३ त्रिष्टुप्; ४, ५ निचृत्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः॥

अथ प्रथमो वर्गः ॥ १ ॥

अस॑र्जि वक्वा॒ रथ्ये॒ यथा॒जौ धि॒या म॒नोता॑ प्रथ॒मो म॑नी॒षी।
दश॒ स्वसा॑रो॒ अधि॒ सानो॒ अव्येऽज॑न्ति॒ वह्निं॒ सद॑ना॒न्यच्छ॑॥ १॥
वी॒तो जन॑स्य दि॒व्यस्य॑ क॒व्यैरधि॑ सुवा॒नो न॑हु॒ष्ये॑भि॒रिन्दुः॑।
प्र यो नृभि॑र॒मृतो॒ मर्त्ये॑भिर्मर्मृजा॒नोऽवि॑भि॒र्गोभि॑र॒द्भिः ॥ २॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

वृषा वृष्णे रोरुवद्वृशस्मै पवमानो रुशदीर्ते पयो गोः।
सहस्रमृक्वा पथिभिर्वचोविदध्वस्मभिः सूरो अण्वं वि याति॥ ३॥
रुजा दृळ्हा चिद्रक्षसः सदांसि पुनान इन्द ऊर्णुहि वि वाजान्।
वृश्चोपरिष्टात्तुजता वधेन ये अन्ति दूरादुपनायमेषाम्॥ ४॥
स प्रत्नवन्नव्यसे विश्ववार सूक्तायं पथः कृणुहि प्राचः।
ये दुष्षहासो वनुषा बृहन्तस्ताँस्ते अश्याम पुरुकृत्पुरुक्षो॥ ५॥
एवा पुनानो अपः स्वर्गा अस्मभ्यं तोका तनयानि भूरि।
शं नः क्षेत्रमुरु ज्योतींषि सोम ज्योङ्नः सूर्यं दृशयें रिरीहि॥ ६॥

[९२] द्विनवतितमं सूक्तम्

ऋषिः—कश्यपः॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—१ भुरिक्त्रिष्टुप्; २, ४, ५ निचृत्त्रिष्टुप्; ३ विराट्त्रिष्टुप्; ६ त्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः॥

अथ द्वितीयो वर्गः॥ २॥

परि सुवानो हरिरंशुः पवित्रे रथो न सज्रि सनयें हियानः।
आपच्छ्लोकमिन्द्रियं पूयमानः प्रति देवाँ अंजुषत प्रयोभिः॥ १॥
अच्छा नृचक्षा असरत्पवित्रे नाम दधानः कविरस्य योनौ।
सीदन्होतेव सदने चमूषूपेमग्मन्नृषयः सप्त विप्राः॥ २॥
प्र सुमेधा गातुविद्विश्वदेवः सोमः पुनानः सदं एति नित्यम्।
भुवद्विश्वेषु काव्येषु रन्तानु जनान्यतते पञ्च धीरः॥ ३॥
तव त्ये सोम पवमान निण्ये विश्वे देवास्त्रय एकादशासः।
दश स्वधाभिरधि सानो अव्ये मृजन्ति त्वा नद्यः सप्त यह्वीः॥ ४॥
तन्नु सत्यं पवमानस्यास्तु यत्र विश्वे कारवः संनसन्त।
ज्योतिर्यदहे अकृणोदु लोकं प्रावन्मनुं दस्यवे करभीकम्॥ ५॥
परि सर्वेव पशुमान्ति होता राजा न सत्यः समितीरियानः।
सोमः पुनानः कलशाँ अयासीत्सीदन्मृगो न महिषो वनेषु॥ ६॥

[९३] त्रिनवतितमं सूक्तम्

ऋषिः—नोधाः॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—१, ३, ४ विराट्त्रिष्टुप्; २ त्रिष्टुप्; ५ पादनिचृत्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः॥

अथ तृतीयो वर्गः॥ ३॥

साकमुक्षो मर्जयन्त स्वसारो दश धीरस्य धीतयो धनुत्रीः।
हरिः पर्यद्रवज्जाः सूर्यस्य द्रोणं ननक्षे अत्यो न वाजी॥ १॥
सं मातृभिर्न शिशुर्वावशानो वृषा दधन्वे पुरुवारो अद्भिः।
मर्यो न योषामभि निष्कृतं यन्त्सं गच्छते कलशे शतधारः॥ २॥
उत प्र पिप्य ऊधरघ्न्याया इन्दुर्धाराभिः सचते सुमेधाः।
मूर्धानं गावः पयसा चमूष्वभि श्रीणन्ति वसुभिर्न निक्तैः॥ ३॥
स नो देवेभिः पवमान रदेन्दो रयिमश्विनं वावशानः।
रथिरायतामुशती पुरन्धिरस्मद्र्यग्गा दावने वसूनाम्॥ ४॥
नू नो रयिमुप मास्व नृवन्तं पुनानो वाताप्यं विश्वश्चन्द्रम्।
प्र वन्दितुरिन्दो तार्यायुः प्रातर्मक्षू धियावसुर्जगम्यात्॥ ५॥

[९४] चतुर्नवतितमं सूक्तम्

ऋषिः—कण्वः॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—१ निचृत्त्रिष्टुप्; २, ३, ५ विराट्त्रिष्टुप्; ४ त्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः॥

अथ चतुर्थो वर्गः॥ ४॥

अधि यदस्मिन्वाजिनीव शुभ्रः स्पर्धन्ते धियः सूर्ये न विशः।
अपो वृणानः पवते कवीयन्व्रजं न पशुवर्धनाय मन्म॥ १॥
द्विता व्यूर्ण्वन्नमृतस्य धामं स्वर्विदे भुवनानि प्रथन्त।
धियः पिन्वानाः स्वसरे न गावः ऋतायन्तीरभि वावश्र इन्दुम्॥ २॥
परि यत्कविः काव्या भरते शूरो न रथो भुवनानि विश्वा।
देवेषु यशो मतीय भूषन्दक्षाय रायः पुरुभूषु नव्यः॥ ३॥
श्रिये जातः श्रिय आ निरियाय श्रियं वयो जरितृभ्यो दधाति।
श्रियं वसाना अमृतत्वमायन्भवन्ति सत्या समिथा मितद्रौ॥ ४॥
इषमूर्जमभ्यर्षाश्वं गामुरु ज्योतिः कृणुहि मत्सि देवान्।
विश्वानि हि सुषहा तानि तुभ्यं पवमान बाधसे सोम शत्रून्॥ ५॥

[९५] पञ्चनवतितमं सूक्तम्

ऋषिः—प्रस्कण्वः॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—१ त्रिष्टुप्; २ संस्तारपङ्क्तिः; ३ विराट्त्रिष्टुप्; ४ निचृत्त्रिष्टुप्; ५ पादनिचृत्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१, ३-५ धैवतः; २ पञ्चमः॥

अथ पञ्चमो वर्गः॥ ५॥

कनिक्रन्ति हरिरा सृज्यमानः सीदन्वनस्य जठरे पुनानः।
नृभिर्यतः कृणुते निर्णिजं गा अतो मतीर्जनयत स्वधाभिः॥ १॥
हरिः सृजानः पथ्यामृतस्येयर्ति वाचमरितेव नावम्।
देवो देवानां गुह्यानि नामाविष्कृणोति बर्हिषि प्रवाचे॥ २॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अपामिवेदूर्मयस्तर्तुराणाः प्र मनीषा ईरते सोममच्छ।
नमस्यन्तीरुप च यन्ति सं चा च विशन्त्युशतीरुशन्तम्॥ ३॥
तं मर्मृजानं महिषं न सानावंशुं दुहन्त्युक्षणं गिरिष्ठाम्।
तं वावशानं मतयः सचन्ते त्रितो बिभर्ति वरुणं समुद्रे॥ ४॥
इष्यन्वाचमुपवक्तेव होतुः पुनान इन्दो वि ष्या मनीषाम्।
इन्द्रश्च यत्क्षयथः सौभगाय सुवीर्यस्य पतयः स्याम॥ ५॥

[९६] षण्णवतितमं सूक्तम्

ऋषिः—प्रतर्दनो दैवोदासिः॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—१, ३, ११, १२, १४, १९, २३, त्रिष्टुप्; २, १७ विराट्त्रिष्टुप्; ४-१०, १३, १५, १८, २१, २४ निचृत्त्रिष्टुप्; १६ आर्चीभुरिक्त्रिष्टुप्; २०, २२ पादनिचृत्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः॥

अथ षष्ठो वर्गः॥ ६॥

प्र सेनानीः शूरो अग्रे रथानां गव्यन्नेति हर्षते अस्य सेना।
भद्रान्कृण्वन्निन्द्रहवान्त्सखिभ्य आ सोमो वस्त्रा रभसानि दत्ते॥ १॥
समस्य हरिं हर्यो मृजन्त्यश्वहयैरनिशितं नमोभिः।
आ तिष्ठति रथमिन्द्रस्य सखा विद्वाँ एना सुमतिं यात्यच्छ॥ २॥
स नो देव देवतांते पवस्व महे सोम प्सरस इन्द्रपानः।
कृण्वन्नपो वर्षयन्द्यामुतेमामुरोरा नो वरिवस्या पुनानः॥ ३॥
अजीतयेऽहतये पवस्व स्वस्तयें सर्वतातये बृहते।
तदुशन्ति विश्व इमे सखायस्तदहं वंशिम पवमान सोम॥ ४॥
सोमः पवते जनिता मतीनां जनिता दिवो जनिता पृथिव्याः।
जनिताग्नेर्जनिता सूर्यस्य जनितेन्द्रस्य जनितोत विष्णोः॥ ५॥

अथ सप्तमो वर्गः॥ ७॥

ब्रह्मा देवानां पदवीः कवीनामृषिर्विप्राणां महिषो मृगाणाम्।
श्येनो गृध्राणां स्वधितिर्वनानां सोमः पवित्रमत्येति रेभन्॥ ६॥
प्रावीविपद्वाच ऊर्मिं न सिन्धुर्गिरः सोमः पवमानो मनीषाः।
अन्तः पश्यन्वृजनेमावराण्या तिष्ठति वृषभो गोषु जानन्॥ ७॥
स मत्सरः पृत्सु वन्वन्नवातः सहस्ररेता अभि वाजमर्षं।
इन्द्रायेन्दो पवमानो मनीष्यंशोरूर्मिमीरय गा इषण्यन्॥ ८॥
परि प्रियः कलशे देववांत इन्द्रायं सोमो रण्यो मदाय।
सहस्रधारः शतवाज इन्दुर्वाजी न सप्तिः समना जिगाति॥ ९॥
स पूर्व्यो वसुविज्जायमानो मृजानो अप्सु दुदुह्वानो अद्रौ।
अभिशस्तिपा भुवनस्य राजा विददावांतु ब्रह्मणे पूयमानः॥ १०॥

अथ अष्टमो वर्गः॥ ८॥

त्वया हि नः पितरः सोम पूर्वे कर्माणि चक्रुः पवमान धीराः।
वन्वन्नवातः परिधीँरपोर्णु वीरेभिरश्वैर्मघवा भवा नः॥ ११॥
यथापवथा मनवे वयोधा अमित्रहा वरिवोविद्बृविष्मान्।
एवा पवस्व द्रविणं दधान इन्द्रे सं तिष्ठ जनयायुधानि॥ १२॥
पवस्व सोम मधुमाँ ऋतावापो वसानो अधि सानो अव्ये।
अव द्रोणानि घृतवन्ति सीद मदिन्तमो मत्सर इन्द्रपानः॥ १३॥
वृष्टिं दिवः शतधारः पवस्व सहस्रसा वाजयुर्देववीतौ।
सं सिन्धुभिः कलशे वावशानः समुस्रियाभिः प्रतिरन्न आयुः॥ १४॥
एष स्य सोमो मतिभिः पुनानोऽत्यो न वाजी तरतीदरातीः।
पयो न दुग्धमदितेरिषिरमुर्विव गातुः सुयमो न वोळ्हा॥ १५॥

अथ नवमो वर्गः॥ ९॥

स्वायुधः सोतृभिः पूयमानोऽभ्यर्ष गुह्यं चारु नाम।
अभि वाजं सप्तिरिव श्रवस्याभि वायुमभि गा देव सोम॥ १६॥
शिशुं जज्ञानं हर्यतं मृजन्ति शुम्भन्ति वह्निं मरुतो गणेन।
कविर्गीर्भिः काव्येना कविः सन्त्सोमः पवित्रमत्येति रेभन्॥ १७॥
ऋषिमना य ऋषिकृत्स्वर्षाः सहस्रणीथः पदवीः कवीनाम्।
तृतीयं धाम महिषः सिषासन्त्सोमो विराजमनु राजति ष्टुप्॥ १८॥
चमूषच्छ्येनः शकुनो विभृत्वा गोविन्दुर्द्रप्स आयुधानि बिभ्रत्।
अपामूर्मिं सचमानः समुद्रं तुरीयं धाम महिषो विवक्ति॥ १९॥
मर्यो न शुभ्रस्तन्वं मृजानोऽत्यो न सृत्वा सनये धनानाम्।
वृषेव यूथा परि कोशमर्षन्कनिक्रदच्चम्वोर्विरा विवेश॥ २०॥

अथ दशमो वर्गः॥ १०॥

पवस्वेन्दो पवमानो महोभिः कनिक्रदत्परि वाराण्यर्ष।
क्रीळञ्चम्वोर्विरा विश पूयमान इन्द्रं ते रसो मदिरो ममत्तु॥ २१॥
प्रास्य धारा बृहतीरसृग्रन्वृत्तो गोभिः कलशाँ आ विवेश।
साम कृण्वन्त्सामन्यो विपश्चित्क्रन्दन्नेत्यभि सख्युर्न जामिम्॥ २२॥
अपघ्नन्नेषि पवमान शत्रून्त्रियां न जारो अभिगीत इन्दुः।
सीदन्वनेषु शकुनो न पत्वा सोमः पुनानः कलशेषु सत्ता॥ २३॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

आ ते रुचः पवमानस्य सोम योषेव यन्ति सुदुघाः सुधाराः।
हरिरानीतः पुरुवारो अप्स्वचिक्रदत्कलशे देवयूनाम् ॥ २४ ॥

षष्ठोऽनुवाकः [९७] सप्तनवतितमं सूक्तम्

ऋषिः—१-३ वसिष्ठः; ४-६ इन्द्रप्रमतिर्वासिष्ठः; ७-९ वृषगणो वासिष्ठः; १०, ११, १२ मन्युर्वासिष्ठः; १३-१५ उपमन्युर्वासिष्ठः; १६-१८ व्याघ्रपाद्वासिष्ठः; १९, २०, २१ शक्तिर्वासिष्ठः; २२-२४ कर्णश्रुद्वासिष्ठः; २५-२७ मृळीको वासिष्ठः; २८, २९, ३० वसुक्रो वासिष्ठः; ३१-४४ पराशरः शाक्तः; ४५-५८ कुत्सः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—१, ६, १०, १२, १४, १५, १९, २१, २५, २६, ३२, ३६, ३८, ३९, ४५, ४६, ५२, ५४, ५६ निचृत्त्रिष्टुप्; २-४, ७, ८, ११, १६, १७, २०, २३, २४, ३३, ४८, ५३ विराट्त्रिष्टुप्; ५, ९, १३, २२, २७-३०, ३४, ३५, ३७, ४२-४४, ४७, ५७, ५८ त्रिष्टुप्; १८, ४१, ५०, ५१, ५५ आर्चीस्वराट्त्रिष्टुप्; ३१, ४९ पादनिचृत् त्रिष्टुप्; ४० भुरिक्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

अथ एकादशो वर्गः ॥ ११ ॥

अस्य प्रेषा हेमना पूयमानो देवो देवेभिः समपृक्त रसम्।
सुतः पवित्रं पर्येति रेभन्मितेव सद्म पशुमान्ति होता ॥ १ ॥
भद्रा वस्त्रा समन्यावसानो महान्कविर्नि्वचनानि शंसन्।
आ वच्यस्व चम्वोः पूयमानो विचक्षणो जागृविर्देववीतौ ॥ २ ॥
समु प्रियो मृज्यते सानो अव्ये यशस्तरो यशसां क्षैतो अस्मे।
अभि स्वर धन्वा पूयमानो यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ३ ॥
प्र गायताभ्यर्चाम देवान्सोमं हिनोत महते धनाय।
स्वादुः पवाते अति वारमव्यमा सीदाति कलशं देवयुनः ॥ ४ ॥
इन्दुर्देवानामुप सख्यमायन्त्सहस्रधारः पवते मदाय।
नृभिः स्तवानो अनु धाम पूर्वमगन्निन्द्रं महते सौभगाय ॥ ५ ॥

अथ द्वादशो वर्गः ॥ १२ ॥

स्तोत्रे राये हरिरर्षा पुनान इन्द्रं मदो गच्छतु ते भराय।
देववीहि सरथं राधो अच्छा यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ६ ॥
प्र काव्यमुशनेव ब्रुवाणो देवो देवानां जनिमा विवक्ति।
महिव्रतः शुचिबन्धुः पावकः पदा वराहो अभ्येति रेभन् ॥ ७ ॥
प्र हंसासस्तृपलं मन्युमच्छामादस्तं वृषगणा अयासुः।
आङ्गूष्यं पवमानं सखायो दुर्मर्षं साकं प्र वदन्ति वाणम् ॥ ८ ॥
स रंहत उरुगायस्य जूतिं वृथा क्रीळन्तं मिमते न गावः।
परीणसं कृणुते तिग्मशृङ्गो दिवा हरिर्ददृशे नक्तमृज्रः ॥ ९ ॥
इन्दुर्वाजी पवते गोन्योघा इन्द्रे सोमः सह इन्वन्मदाय।
हन्ति रक्षो बाधते पर्यरातीर्वरिवः कृण्वन्वृजनस्य राजा ॥ १० ॥

अथ त्रयोदशो वर्गः ॥ १३ ॥

अध धारया मध्वा पृचानस्तिरो रोमं पवते अद्रिदुग्धः।
इन्दुरिन्द्रस्य सख्यं जुषाणो देवो देवस्य मत्सरो मदाय ॥ ११ ॥
अभि प्रियाणि पवते पुनानो देवो देवान्त्स्वेन रसेन पृञ्चन्।
इन्दुर्धर्मीण्यृतुथा वसानो दश क्षिपो अव्यत सानो अव्ये ॥ १२ ॥
वृषा शोणो अभिकनिक्रदद्गा नदयन्नेति पृथिवीमुत द्याम्।
इन्द्रस्येव वग्गुरा शृण्व आजौ प्रचेतयन्नर्षति वाचमेमाम् ॥ १३ ॥
रसाय्यः पयसा पिन्वमान ईरयन्नेषि मधुमन्तमंशुम्।
पवमानः संतनिमेषि कृण्वन्निन्द्राय सोम परिषिच्यमानः ॥ १४ ॥
एवा पवस्व मदिरो मदायोदग्राभस्य नमयन्वधस्नैः।
परि वर्णं भरमाणो रुशन्तं गव्युर्नो अर्ष परि सोम सिक्तः ॥ १५ ॥

अथ चतुर्दशो वर्गः ॥ १४ ॥

जुष्टी नं इन्दो सुपथा सुगान्युरौ पवस्व वरिवांसि कृण्वन्।
घनेव विष्वग्दुरितानि विघ्नन्नधि ष्णुना धन्व सानो अव्ये ॥ १६ ॥
वृष्टिं नो अर्ष दिव्यां जिगत्नुमिळावतीं शंगयीं जीरदानुम्।
स्तुकेव वीता धन्वा विचिन्वन्बन्धूँरिमाँ अवराँ इन्दो वायून् ॥ १७ ॥
ग्रन्थिं न वि ष्य ग्रथितं पुनान ऋजुं च गातुं वृजिनं च सोम।
अत्यो न क्रदो हरिरा सृजानो मर्यो देव धन्व पस्त्यावान् ॥ १८ ॥
जुष्टो मदाय देवतात इन्दो परि ष्णुना धन्व सानो अव्ये।
सहस्रधारः सुरभिरदब्धः परि स्रव वाजसातौ नृषह्ये ॥ १९ ॥
अरश्मानो येऽरथा अयुक्ता अत्यासो न ससृजानासो आजौ।
एते शुक्रासो धन्वन्ति सोमा देवासस्ताँ उप याता पिबध्यै ॥ २० ॥

अथ पञ्चदशो वर्गः ॥ १५ ॥

एवा नं इन्दो अभि देववीतिं परि स्रव नभो अर्णश्चमूषु।
सोमो अस्मभ्यं काम्यं बृहन्तं रयिं ददातु वीरवन्तमुग्रम् ॥ २१ ॥
तक्षद्यदी मनसो वेनतो वाग्ज्येष्ठस्य वा धर्मणि क्षोरनीके।
अत्रीसमुद्रा [illegible] ॥ २२ ॥

CC-0. JM Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्र दानुदो दिव्यो दानुपिन्व ऋतमृताय पवते सुमेधाः।
धर्मा भुवद्वृजन्यस्य राजा प्र रश्मिभिर्दशभिर्भाति भूम॥ २३॥
पवित्रेभिः पवमानो नृचक्षा राजा देवानामुत मर्त्यानाम्।
द्विता भुवद्रयिपती रयीणामृतं भरत्सुभृतं चार्विन्दुः॥ २४॥
अवाँ इव श्रवसे सातिमच्छेन्द्रस्य वायोरभि वीतिमर्ष।
स नः सहस्रा बृहतीरिषो दा भवा सोम द्रविणोवित्पुनानः॥ २५॥

अथ षोडशो वर्गः॥ १६॥

देवाव्यो नः परिषिच्यमानाः क्षयं सुवीरं धन्वन्तु सोमाः।
आयज्यवः सुमतिं विश्ववारा होतारो न दिवियजो मन्द्रतमाः॥ २६॥
एवा देव देवतांते पवस्व महे सोम प्सरसे देवपानः।
महश्चिद्धि ष्मसि हिताः समर्ये कृधि सुष्ठाने रोदसी पुनानः॥ २७॥
अश्वो न क्रदो वृषभिर्युजानः सिंहो न भीमो मनसो जवीयान्।
अर्वाचीनैः पथिभिर्ये रजिष्ठा आ पवस्व सौमनसं न इन्दो॥ २८॥
शतं धारा देवजाता असृग्रन्त्सहस्रमेनाः कवयो मृजन्ति।
इन्दौ सनित्रं दिव आ पवस्व पुरएतासि महतो धनस्य॥ २९॥
दिवो न सर्गा असस्रग्रमह्नां राजा न मित्रं प्र मिनाति धीरः।
पितुर्न पुत्रः क्रतुभिर्यतान आ पवस्व विशे अस्या अजीतिम्॥ ३०॥

अथ सप्तदशो वर्गः॥ १७॥

प्र ते धारा मधुमतीरसृग्रन्वाराण्यत्यूतो अत्येष्यव्यान्।
पवमान पवसे धाम गोनां जज्ञानः सूर्यमपिन्वो अर्कैः॥ ३१॥
कनिक्रददनु पन्थामृतस्य शुक्रो वि भास्यमृतस्य धाम।
स इन्द्राय पवसे मत्सरवान्हिन्वानो वाचं मतिभिः कवीनाम्॥ ३२॥
दिव्यः सुपर्णोऽव चक्षि सोम पिन्वन्धाराः कर्मणा देववीतौ।
एन्दो विश कलशं सोमधानं क्रन्दन्निहि सूर्यस्योप रश्मिम्॥ ३३॥
तिस्रो वाच ईरयति प्र वह्निर्ऋतस्य धीतिं ब्रह्मणो मनीषाम्।
गावो यन्ति गोपतिं पृच्छमानाः सोमं यन्ति मतयो वावशानाः॥ ३४॥
सोमं गावो धेनवो वावशानाः सोमं विप्रा मतिभिः पृच्छमानाः।
सोमः सुतः पूयते अज्यमानः सोमे अर्कास्त्रिष्टुभः सं नवन्ते॥ ३५॥

अथ अष्टादशो वर्गः॥ १८॥

एवा नः सोम परिषिच्यमान आ पवस्व पूयमानः स्वस्ति।
इन्द्रमा विश बृहता रवेण वर्धया वाचं जनया पुरन्धिम्॥ ३६॥

आ जागृविर्विप्र ऋता मतीनां सोमः पुनानो असदच्चमूषु।
सपन्ति यं मिथुनासो निकामा अध्वर्यवो रथिरासः सुहस्ताः॥ ३७॥
स पुनान उप सूरे न धातोभे अप्रा रोदसी वि ष आवः।
प्रिया चिद्यस्य प्रियसास ऊती स तू धनं कारिणे न प्र यंसत्॥ ३८॥
स वर्धिता वर्धनः पूयमानः सोमो मीढ्वाँ अभि नो ज्योतिषावीत्।
येना नः पूर्वे पितरः पदज्ञाः स्वर्विदो अभि गा अद्रिमुष्णन्॥ ३९॥
अक्रान्त्समुद्रः प्रथमे विधर्मञ्जनयन्प्रजा भुवनस्य राजा।
वृषा पवित्रे अधि सानो अव्ये बृहत्सोमो वावृधे सुवान इन्दुः॥ ४०॥

अथ एकोनविंशो वर्गः॥ १९॥

महत्तत्सोमो महिषश्चकारापां यद्गर्भोऽवृणीत देवान्।
अदधादिन्द्रे पवमान ओजोऽजनयत्सूर्ये ज्योतिरिन्दुः॥ ४१॥
मत्सि वायुमिष्टये राधसे च मत्सि मित्रावरुणा पूयमानः।
मत्सि शर्धो मारुतं देवान्मत्सि द्यावापृथिवी देव सोम॥ ४२॥
ऋजुः पवस्व वृजिनस्य हन्तापामीवां बाधमानो मृधश्च।
अभिश्रीणन्पयः पयसाभि गोनामिन्द्रस्य त्वं तव वयं सखायः॥ ४३॥
मध्वः सूदं पवस्व वस्व उत्सं वीरं च न आ पवस्वा भगं च।
स्वदस्वेन्द्राय पवमान इन्दो रयिं च न आ पवस्वा समुद्रात्॥ ४४॥
सोमः सुतो धार्यात्यो न हित्वा सिन्धुर्न निम्नमभि वाज्यक्षाः।
आ योनिं वन्यमसदत्पुनानः समिन्दुर्गोभिरसरत्समद्भिः॥ ४५॥

अथ विंशो वर्गः॥ २०॥

एष स्य ते पवत इन्द्र सोमश्चमूषु धीरः उशते तवस्वान्।
स्वर्चक्षा रथिरः सत्यशुष्मः कामो न यो देवयतामसर्जि॥ ४६॥
एष प्रत्नेन वयसा पुनानस्तिरो वर्पांसि दुहितुर्दधानः।
वसानः शर्म त्रिवरूथमप्सु होतेव याति समनेषु रेभन्॥ ४७॥
नू नस्त्वं रथिरो देव सोम परि स्रव चम्वोः पूयमानः।
अप्सु स्वादिष्ठो मधुमाँ ऋतावा देवो न यः सविता सत्यमन्मा॥ ४८॥
अभि वायुं वीत्यर्षा गृणानोऽभि मित्रावरुणा पूयमानः।
अभी नरं धीजवनं रथेष्ठामभीन्द्रं वृषणं वज्रबाहुम्॥ ४९॥
अभि वस्त्रा सुवसनान्यर्षाभि धेनूः सुदुघाः पूयमानः।
अभि चन्द्रा भर्तवे नो हिरण्याभ्यश्वान्रथिनो देव सोम॥ ५०॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अथ एकविंशो वर्गः ॥ २१ ॥

अभी नो अर्ष दिव्या वसून्यभि विश्वा पार्थिवा पूयमानः।
अभि येन द्रविणमश्नवामाभ्यर्षेयं जमदग्निवन्नः ॥ ५१ ॥
अया पवा पवस्वैना वसूनि माँश्चत्व इन्दो सरसि प्र धन्व।
ब्रध्नश्चिदत्र वातो न जूतः पुरुमेधश्चित्तकवे नरं दात् ॥ ५२ ॥
उत नं एना पवया पवस्वाधि श्रुते श्रवाय्यस्य तीर्थे।
षष्टिं सहस्रा नैगुतो वसूनि वृक्षं न पक्वं धूनवद्रणाय ॥ ५३ ॥
महीमे अस्य वृषनाम शूषे माँश्चत्वे वा पृशने वा वधत्रे।
अस्वापयन्निगुतः स्नेहयच्चापामित्राँ अपाचितो अचेतः ॥ ५४ ॥
सं त्री पवित्रा विततान्येष्यन्वेकं धावसि पूयमानः ।
असि भगो असि दात्रस्य दातासि मघवा मघवद्भ्य इन्दो ॥ ५५ ॥

अथ द्वाविंशो वर्गः ॥ २२ ॥

एष विश्ववित्पवते मनीषी सोमो विश्वस्य भुवनस्य राजा।
द्रप्साँ ईरयन्विदथेष्विन्दुर्विं वारमव्यं समयाति याति ॥ ५६ ॥
इन्दुं रिहन्ति महिषा अदब्धाः पदे रेभन्ति कवयो न गृध्राः।
हिन्वन्ति धीरा दशभिः क्षिपाभिः समञ्जते रूपमपां रसेन ॥ ५७ ॥
त्वया वयं पवमानेन सोम भरे कृतं वि चिनुयाम शश्वत्।
तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्तामदितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः ॥ ५८ ॥

[९८] अष्टनवतितमं सूक्तम्

ऋषिः—अम्बरीष ऋजिश्वा च ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—१, २, ४, ७, १० अनुष्टुप्; ३, ५, ९ निचृदनुष्टुप्; ६, १२ विराडनुष्टुप्; ८ आर्चीस्वराड् अनुष्टुप्; ११ निचृद्बृहती ॥ स्वरः—१-१०, १२ गान्धारः; ११ मध्यमः ॥

अथ त्रयोविंशो वर्गः ॥ २३ ॥

अभि नो वाजसातमं रयिमर्ष पुरुस्पृहम्।
इन्दो सहस्रभर्णसं तुविद्युम्नं विभ्वासहम् ॥ १ ॥
परि ष्य सुवानो अव्ययं रथे न वर्मीव्यत।
इन्दुरभि द्रुणा हितो हियानो धाराभिरक्षाः ॥ २ ॥
परि ष्य सुवानो अक्षा इन्दुरव्ये मदच्युतः।
धारा य ऊर्ध्वो अध्वरे भ्राजा नैति गव्ययुः ॥ ३ ॥
स हि त्वं देव शश्वते वसु मर्ताय दाशुषे।
इन्दो सहस्रिणं रयिं शतात्मानं विवाससि ॥ ४ ॥
वयं ते अस्य वृत्रहन्वसो वस्वः पुरुस्पृहः।
नि नेदिष्ठतमा इषः स्याम सुम्नस्याध्रिगो ॥ ५ ॥
द्विर्यं पञ्च स्वयशसं स्वसारो अद्रिसंहतम्।
प्रियमिन्द्रस्य काम्यं प्रस्नापयन्त्यूर्मिणम् ॥ ६ ॥

अथ चतुर्विंशो वर्गः ॥ २४ ॥

परि त्यं हर्यतं हरिं बभ्रुं पुनन्ति वारेण।
यो देवान्विश्वाँ इत्परि मदेन सह गच्छति ॥ ७ ॥
अस्य वो ह्यवसा पान्तो दक्षसाधनम्।
यः सूरिषु श्रवो बृहद्दधे स्वर्ण हर्यतः ॥ ८ ॥
स वां यज्ञेषु मानवी इन्दुर्जनिष्ट रोदसी।
देवो देवी गिरिष्ठा अस्त्रेधन्तं तुविष्वणिं ॥ ९ ॥
इन्द्राय सोम पातवे वृत्रघ्ने परि षिच्यसे।
नरे च दक्षिणावते देवाय सदनासदे ॥ १० ॥
ते प्रत्नासो व्युष्टिषु सोमाः पवित्रे अक्षरन्।
अपप्रोथन्तः सनुतर्दुरश्चितः प्रातस्ताँ अप्रचेतसः ॥ ११ ॥
तं संखायः पुरोरुचं यूयं वयं च सूरयः।
अश्याम वाजगन्ध्यं सनेम वाजपस्त्यम् ॥ १२ ॥

[९९] नवनवतितमं सूक्तम्

ऋषिः—रेभसूनू काश्यपौ ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—१ विराड्बृहती; २, ३, ५, ६ अनुष्टुप्; ४, ७, ८ निचृदनुष्टुप् ॥ स्वरः—१ मध्यमः; २-८ गान्धारः ॥

अथ पञ्चविंशो वर्गः ॥ २५ ॥

आ हर्यताय धृष्णवे धनुस्तन्वन्ति पौंस्यम्।
शुक्रां वयन्त्यसुराय निर्णिजं विपामग्रे महीयुवः ॥ १ ॥
अधं क्षपा परिष्कृतो वाजाँ अभि प्र गाहते।
यदीं विवस्वतो धियो हरिं हिन्वन्ति यातवे ॥ २ ॥
तमस्य मर्जयामसि मदो य इन्द्रपातमः।
यं गाव आसभिर्दुधुः पुरा नूनं च सूरयः ॥ ३ ॥
तं गाथया पुराण्या पुनानमभ्यनूषत।
उतो कृपन्त धीतयो देवानां नाम बिभ्रतीः ॥ ४ ॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

तमुक्षमाणमव्यये वारे पुनन्ति धर्णसिम्।
दूतं न पूर्वचित्तय आ शासते मनीषिणः॥ ५॥

अथ षड्विंशो वर्गः॥ २६॥

स पुनानो मदिन्तमः सोमश्चमूषु सीदति।
पशौ न रेत आदधत्पतिर्वचस्यते धियः॥ ६॥
स मृज्यते सुकर्मभिर्देवो देवेभ्यः सुतः।
विदे यदासु संदृदिर्महीरपो वि गाहते॥ ७॥
सुत इन्दो पवित्र आ नृभिर्यतो वि नीयसे।
इन्द्राय मत्सरिन्तमश्चमूष्वा नि षीदसि॥ ८॥

[१००] शततमं सूक्तम्

ऋषिः—रेभसूनू काश्यपौ॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—१, २, ४, ७, ९ निचृदनुष्टुप्; ३ विराडनुष्टुप्; ५, ६, ८ अनुष्टुप्॥ स्वरः—गान्धारः॥

अथ सप्तविंशो वर्गः॥ २७॥

अभी नवन्ते अद्रुहः प्रियमिन्द्रस्य काम्यम्।
वत्सं न पूर्व आयुनि जातं रिहन्ति मातरः॥ १॥
पुनान इन्दवा भर सोम द्विबर्हसं रयिम्।
त्वं वसूनि पुष्यसि विश्वानि दाशुषो गृहे॥ २॥
त्वं धियं मनोयुजं सृजा वृष्टिं न तन्यतुः।
त्वं वसूनि पार्थिवा दिव्या च सोम पुष्यसि॥ ३॥
परि ते जिग्युषो यथा धारा सुतस्य धावति।
रंहमाणा व्यव्ययं वारं वाजीव सानसिः॥ ४॥
क्रत्वे दक्षाय नः कवे पवस्व सोम धारया।
इन्द्राय पातवे सुतो मित्राय वरुणाय च॥ ५॥

अथ अष्टाविंशो वर्गः॥ २८॥

पवस्व वाजसातमः पवित्रे धारया सुतः।
इन्द्राय सोम विष्णवे देवेभ्यो मधुमत्तमः॥ ६॥
त्वां रिहन्ति मातरो हरिं पवित्रे अद्रुहः।
वत्सं जातं न धेनवः पवमान विधर्मणि॥ ७॥
पवमान महि श्रवश्चित्रेभिर्यासि रश्मिभिः।
शर्धन्तमांसि जिघ्नसे विश्वानि दाशुषो गृहे॥ ८॥
त्वं द्यां च महिव्रत पृथिवीं चाति जभ्रिषे।
प्रति द्रापिमुञ्चथाः पवमान महित्वना॥ ९॥

इति सप्तमाष्टके चतुर्थोऽध्यायः॥

अथ पञ्चमोऽध्यायः

[१०१] एकोत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—१-३ अन्धीगुः श्यावाश्विः; ४-६ ययातिर्नाहुषः; ७-९ नहुषो मानवः; १०-१२ मनुः सांवरणः; १३-१६ प्रजापतिः॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—१, ६, ७, ९, ११-१४ निचृदनुष्टुप्; २ निचृद्गायत्री; ३ विराड्गायत्री; ४, ५, ८, १५, १६ अनुष्टुप्; १० पादनिचृदनुष्टुप्॥ स्वरः—१, ४-१६ गान्धारः; २, ३ षड्जः॥

अथ प्रथमो वर्गः॥ १॥

पुरोजिती वो अन्धसः सुतायं मादयित्नवे।
अप श्वानं श्नथिष्टन सखायो दीर्घजिह्वयम्॥ १॥
यो धारया पावकया परिप्रस्यन्दते सुतः।
इन्दुरश्वो न कृत्व्यः॥ २॥
तं दुरोषमभी नरः सोमं विश्वाच्या धिया।
यज्ञं हिन्वन्त्यद्रिभिः॥ ३॥
सुतासो मधुमत्तमाः सोमा इन्द्राय मन्दिनः।
पवित्रवन्तो अक्षरन्देवान्गच्छन्तु वो मदाः॥ ४॥
इन्दुरिन्द्राय पवत इति देवासो अब्रुवन्।
वाचस्पतिर्मखस्यते विश्वस्येशान ओजसा॥ ५॥

अथ द्वितीयो वर्गः॥ २॥

सहस्रधारः पवते समुद्रो वाचमीङ्खयः।
सोमः पती रयीणां सखेन्द्रस्य दिवेदिवे॥ ६॥
अयं पूषा रयिर्भगः सोमः पुनानो अर्षति।
पतिर्विश्वस्य भूमनो व्यख्यद्रोदसी उभे॥ ७॥
समु प्रिया अनूषत गावो मदाय घृष्वयः।
सोमासः कृण्वते पथः पवमानास इन्दवः॥ ८॥
य ओजिष्ठस्तमा भर पवमान श्रवाय्यम्।
यः पञ्च चर्षणीरभि रयिं येन वनामहै॥ ९॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सोमाः पवन्त इन्दवोऽस्मभ्यं गातुवित्तमाः ।
मित्राः सुवाना अरेपसः स्वाध्यः स्वर्विदः ॥ १० ॥

अथ तृतीयो वर्गः ॥ ३ ॥

सुष्वाणासो व्यद्रिभिश्चितानो गोरधि त्वचि ।
इषमस्मभ्यमभितः समस्वरन्वसुविदः ॥ ११ ॥
एते पूता विपश्चितः सोमासो दध्याशिरः ।
सूर्यासो न दर्शतासो जिगत्नवो ध्रुवा घृते ॥ १२ ॥
प्र सुन्वानस्यान्धसो मर्तो न वृत तद्वचः ।
अप श्वानमराधसं हता मखं न भृगवः ॥ १३ ॥
आ जामिरत्के अव्यत भुजे न पुत्र ओण्योः ।
सरज्जारो न योषणां वरो न योनिमासदम् ॥ १४ ॥
स वीरो दक्षसाधनो वि यस्तस्तम्भ रोदसी ।
हरिः पवित्रे अव्यत वेधा न योनिमासदम् ॥ १५ ॥
अव्यो वारेभिः पवते सोमो गव्ये अधि त्वचि ।
कनिक्रदद्वृषा हरिरिन्द्रस्याभ्येति निष्कृतम् ॥ १६ ॥

[१०२] द्व्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—त्रितः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—१-४, ८ निचृदुष्णिक्; ५-७ उष्णिक् ॥ स्वरः—ऋषभः ॥

अथ चतुर्थो वर्गः ॥ ४ ॥

क्राणा शिशुर्महीनां हिन्वन्नृतस्य दीधितिम् ।
विश्वा परि प्रिया भुवदध द्विता ॥ १ ॥
उप त्रितस्य पाष्यो३रभक्त यद्गुहा पदम् ।
यज्ञस्य सप्त धामभिरध प्रियम् ॥ २ ॥
त्रीणि त्रितस्य धारया पृष्ठेष्वेरया रयिम् ।
मिमीते अस्य योजना वि सुक्रतुः ॥ ३ ॥
जज्ञानं सप्त मातरो वेधामशासत श्रिये ।
अयं ध्रुवो रयीणां चिकेत यत् ॥ ४ ॥
अस्य व्रते सजोषसो विश्वे देवासो अद्रुहः ।
स्पार्हा भवन्ति रन्तयो जुषन्त यत् ॥ ५ ॥

अथ पञ्चमो वर्गः ॥ ५ ॥

यमी गर्भमृतावृधो दृशे चारुमजीजनन् ।
कविं मंहिष्ठमध्वरे पुरुस्पृहम् ॥ ६ ॥
समीचीने अभि त्मना यह्वी ऋतस्य मातरा ।
तन्वाना यज्ञमानुषग्यदञ्जते ॥ ७ ॥
क्रत्वा शुक्रेभिरक्षभिर्ऋणोरप व्रजं दिवः ।
हिन्वन्नृतस्य दीधितिं प्राध्वरे ॥ ८ ॥

[१०३] त्र्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—द्वित आप्त्यः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—१, ३ उष्णिक्; २, ५ निचृदुष्णिक्; ४ पादनिचृदुष्णिक्; ६ विराडुष्णिक् ॥ स्वरः—ऋषभः ॥

अथ षष्ठो वर्गः ॥ ६ ॥

प्र पुनानाय वेधसे सोमाय वच उद्यतम् ।
भृतिं न भरा मतिभिर्जुजोषते ॥ १ ॥
परि वाराण्यव्यया गोभिरञ्जानो अर्षति ।
त्री षधस्था पुनानः कृणुते हरिः ॥ २ ॥
परि कोशं मधुश्चुतमव्यये वारे अर्षति ।
अभि वाणीरृषीणां सप्त नूषत ॥ ३ ॥
परि णेता मतीनां विश्वदेवो अदाभ्यः ।
सोमः पुनानश्चम्वोर्विशद्धरिः ॥ ४ ॥
परि दैवीरनु स्वधा इन्द्रेण याहि सरथम् ।
पुनानो वाघद्वाघद्भिरमर्त्यः ॥ ५ ॥
परि सप्तिर्न वाजयुर्देवो देवेभ्यः सुतः ।
व्यानशिः पवमानो वि धावति ॥ ६ ॥

सप्तमोऽनुवाकः [१०४] चतुरुत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—पर्वतनारदौ द्वे शिखण्डिन्यौ वा काश्यप्यावप्सरसौ ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—१, ३, ४ उष्णिक्; २, ५, ६ निचृदुष्णिक् ॥ स्वरः—ऋषभः ॥

अथ सप्तमो वर्गः ॥ ७ ॥

सखायः आ नि षीदत पुनानाय प्र गायत ।
शिशुं न यज्ञैः परि भूषत श्रिये ॥ १ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

समीं वत्सं न मातृभिः सृजता गयसाधनम्।
देवाव्यं मदमभि द्विशवसम् ॥ २ ॥
पुनाता दक्षसाधनं यथा शर्धाय वीतये ।
यथा मित्राय वरुणाय शंतमः ॥ ३ ॥
अस्मभ्यं त्वा वसुविदमभि वाणीरनूषत ।
गोभिष्टे वर्णमभि वासयामसि ॥ ४ ॥
स नो मदानां पत इन्दो देवप्सरा असि ।
सखेव सख्ये गातुवित्तमो भव ॥ ५ ॥
सनेमि कृध्यस्मदा रक्षसं कं चिदत्रिणम् ।
अपादेवं द्वयुमंहो युयोधि नः ॥ ६ ॥

[१०५] पञ्चोत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—पर्वतनारदौ ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—१, २ उष्णिक्; ३, ४, ६ निचृदुष्णिक्; ५ विराडुष्णिक् ॥ स्वरः—ऋषभः ॥

अथ अष्टमो वर्गः ॥ ८ ॥

तं वः सखायो मदाय पुनानमभि गायत ।
शिशुं न यज्ञैः स्वदयन्त गूर्तिभिः ॥ १ ॥
सं वत्सइव मातृभिरिन्दुर्हिन्वानो अज्यते ।
देवावीर्मदो मतिभिः परिष्कृतः ॥ २ ॥
अयं दक्षाय साधनोऽयं शर्धाय वीतये ।
अयं देवेभ्यो मधुमत्तमः सुतः ॥ ३ ॥
गोमन्न इन्दो अश्ववत्सुतः सुदक्ष धन्व ।
शुचिं ते वर्णमधि गोषु दीधरम् ॥ ४ ॥
स नो हरीणां पत इन्दो देवप्सरस्तमः ।
सखेव सख्ये नर्यो रुचे भव ॥ ५ ॥
सनेमि त्वमस्मदाँ अदेवं कं चिदत्रिणम् ।
साह्वाँ इन्दो परि बाधो अप द्वयुम् ॥ ६ ॥

[१०६] षडुत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—१-३ अग्निश्चाक्षुषः; ४-६ चक्षुर्मानवः; ७-९ मनुराप्सवः; १०-१४ अग्निः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—१, ३, ४, ८, १०, १४ निचृदुष्णिक्; २, ५-७, ११, १२ उष्णिक्; ९, १३ विराडुष्णिक् ॥ स्वरः—ऋषभः ॥

अथ नवमो वर्गः ॥ ९ ॥

इन्द्रमच्छ सुता इमे वृषणं यन्तु हर्यतः ।
श्रुष्टी जातास इन्दवः स्वर्विदः ॥ १ ॥
अयं भराय सानसिरिन्द्राय पवते सुतः ।
सोमो जैत्रस्य चेतति यथा विदे ॥ २ ॥
अस्येदिन्द्रो मदेष्वा ग्राभं गृभ्णीत सानसिम्।
वज्रं च वृषणं भरत्समप्सुजित् ॥ ३ ॥
प्र धन्वा सोम जागृविरिन्द्रायेन्दो परि स्रव ।
द्युमन्तं शुष्ममा भर स्वर्विदम् ॥ ४ ॥
इन्द्राय वृषणं मदं पवस्व विश्वदर्शतः ।
सहस्रयामा पथिकृद्विचक्षणः ॥ ५ ॥

अथ दशमो वर्गः ॥ १० ॥

अस्मभ्यं गातुवित्तमो देवेभ्यो मधुमत्तमः ।
सहस्रं याहि पथिभिः कनिक्रदत् ॥ ६ ॥
पवस्व देववीतय इन्दो धाराभिरोजसा ।
आ कलशं मधुमान्त्सोम नः सदः ॥ ७ ॥
तवं द्रप्सा उदप्रुत इन्द्रं मदाय वावृधुः ।
त्वां देवासो अमृताय कं पपुः ॥ ८ ॥
आ नः सुतास इन्दवः पुनाना धावता रयिम्।
वृष्टिद्यावो रीत्यापः स्वर्विदः ॥ ९ ॥
सोमः पुनान ऊर्मिणाव्यो वारं वि धावति ।
अग्रे वाचः पवमानः कनिक्रदत् ॥ १० ॥

अथ एकादशो वर्गः ॥ ११ ॥

धीभिर्हिन्वन्ति वाजिनं वने क्रीळन्तमत्यविम्।
अभि त्रिपृष्ठं मतयः समस्वरन् ॥ ११ ॥
असर्जि कलशाँ अभि मीळ्हे सप्तिर्न वाजयुः ।
पुनानो वाचं जनयन्नसिष्यदत् ॥ १२ ॥
पवते हर्यतो हरिरति ह्वरांसि रंह्या ।
अभ्यर्षन्त्स्तोतृभ्यो वीरवद्यशः ॥ १३ ॥
अया पवस्व देवयुर्मधोर्धारा असृक्षत ।
इन्दविन्द्राय पर्येषि विश्वतः ॥ १४ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

[१०७] सप्तोत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—सप्तर्षयः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—१, ४, ६, ९, १४, १७, २१ विराड्बृहती; २, ५ भुरिग्बृहती; ३, १६ पिपीलिकामध्यागायत्री; ७, ११, १८, २०, २४, २६ निचृत्पङ्क्तिः; ८, १०, १२, १३, १९, २५ बृहती; १५, २२ पङ्क्तिः; २३ पादनिचृद्बृहती ॥ स्वरः—१, २, ४, ५, ६, ८-१०, १२-१४, १७, १९, २१, २३, २५ मध्यमः; ३, १६ षड्जः; ७, ११, १५, १८, २०, २२, २४, २६ पञ्चमः ॥

अथ द्वादशो वर्गः ॥ १२ ॥

परीतो षिञ्चता सुतं सोमो य उत्तमं हविः।
दधन्वाँ यो नर्यो अप्स्वन्तरा सुषाव सोममद्रिभिः ॥ १ ॥
नूनं पुनानोऽविभिः परि स्रवादब्धः सुरभिंतरः।
सुते चित्त्वाप्सु मदामो अन्धसा श्रीणन्तो गोभिरुत्तरम् ॥ २ ॥
परि सुवानश्चक्षसे देवमादनः क्रतुरिन्दुर्विचक्षणः ॥ ३ ॥
पुनानः सोम धारयापो वसानो अर्षसि ।
आ रत्नधा योनिमृतस्य सीदस्युत्सो देव हिरण्ययः ॥ ४ ॥
दुहान ऊधर्दिव्यं मधु प्रियं प्रत्नं सधस्थमासदत्।
आपृच्छ्यं धरुणं वाज्यर्षति नृभिर्धूतो विचक्षणः ॥ ५ ॥

अथ त्रयोदशो वर्गः ॥ १३ ॥

पुनानः सोम जागृविरव्यो वारे परि प्रियः।
त्वं विप्रो अभवोऽङ्गिरस्तमो मध्वा यज्ञं मिमिक्ष नः ॥ ६ ॥
सोमो मीढ्वान्पवते गातुवित्तम ऋषिर्विप्रो विचक्षणः।
त्वं कविरभवो देववीतम आ सूर्यं रोहयो दिवि ॥ ७ ॥
सोम उ षुवाणः सोतृभिरधि ष्णुभिरवीनाम् ।
अश्वंयेव हरिता याति धारया मन्द्रया याति धारया ॥ ८ ॥
अनूपे गोमान्गोभिरक्षाः सोमो दुग्धाभिरक्षाः ।
समुद्रं न संवरणान्यग्मन्मन्दी मदाय तोशते ॥ ९ ॥
आ सोम सुवानो अद्रिभिस्तिरो वाराण्यव्यया ।
जनो न पुरि चम्वोर्विशद्धरिः सदो वनेषु दधिषे ॥ १० ॥

अथ चतुर्दशो वर्गः ॥ १४ ॥

स मामृजे तिरो अण्वानि मेष्यो मीळ्हे सप्तिर्न वाजयुः।
अनुमाद्यः पवमानो मनीषिभिः सोमो विप्रेभिरृक्वभिः ॥ ११ ॥
प्र सोम देववीतये सिन्धुर्न पिप्ये अर्णसा।
अंशोः पयसा मदिरो न जागृविरच्छा कोशं मधुश्चुतम् ॥ १२ ॥
आ हर्यतो अर्जुनेऽत्के अव्यत प्रियः सूनुर्न मर्ज्यः।
तमीं हिन्वन्त्यपसो यथा रथं नदीष्वा गभस्त्योः ॥ १३ ॥
अभि सोमास आयवः पवन्ते मद्यं मदम्।
समुद्रस्याधि विष्टपि मनीषिणो मत्सरासः स्वर्विदः ॥ १४ ॥
तरत्समुद्रं पवमान ऊर्मिणा राजा देव ऋतं बृहत्।
अर्षन्मित्रस्य वरुणस्य धर्मणा प्र हिन्वान ऋतं बृहत् ॥ १५ ॥

अथ पञ्चदशो वर्गः ॥ १५ ॥

नृभिर्येमानो हर्यतो विचक्षणो राजा देवः समुद्रियः ॥ १६ ॥
इन्द्राय पवते मदः सोमो मरुत्वते सुतः ।
सहस्रधारो अत्यव्यमर्षति तमीं मृजन्त्यायवः ॥ १७ ॥
पुनानश्चमू जनयन्मतिं कविः सोमो देवेषु रण्यति।
अपो वसानः परि गोभिरुत्तरः सीदन्वनेष्वव्यत ॥ १८ ॥
तवाहं सोम रारण सख्य इन्दो दिवेदिवे ।
पुरूणि बभ्रो नि चरन्ति मामव परिधींरति ताँ इहि ॥ १९ ॥
उताहं नक्तमुत सोम ते दिवा सख्याय बभ्र ऊधनि।
घृणा तपन्तमति सूर्यं परः शकुनाइव पप्तिम ॥ २० ॥

अथ षोडशो वर्गः ॥ १६ ॥

मृज्यमानः सुहस्त्य समुद्रे वाचमिन्वसि ।
रयिं पिशङ्गं बहुलं पुरुस्पृहं पवमानाभ्यर्षसि ॥ २१ ॥
मृजानो वारे पवमानो अव्यये वृषावं चक्रदो वने।
देवानां सोम पवमान निष्कृतं गोभिरञ्जानो अर्षसि ॥ २२ ॥
पवस्व वाजसातयेऽभि विश्वानि काव्या ।
त्वं समुद्रं प्रथमो वि धारयो देवेभ्यः सोम मत्सरः ॥ २३ ॥
स तू पवस्व परि पार्थिवं रजो दिव्या च सोम धर्मभिः।
त्वां विप्रासो मतिभिर्विचक्षण शुभ्रं हिन्वन्ति धीतिभिः ॥ २४ ॥
पवमाना असृक्षत पवित्रमति धारया ।
मरुत्वन्तो मत्सरा इन्द्रिया हर्या मेधामभि प्रयांसि च ॥ २५ ॥
अपो वसानः परि कोशमर्षतीन्दुर्हियानः सोतृभिः।
अनयञ्ज्योतिर्मन्दना अवीवशद्राः कृण्वानो न निर्णिजम् ॥ २६ ॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

[१०८] अष्टोत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—१, २ गौरिवीतिः; ३, १४-१६ शक्तिः; ४, ५ उरुः; ६, ७ ऋजिष्वा; ८, ९ उर्ध्वसद्मा; १०, ११ कृतयशाः; १२, १३ ऋणञ्चयः॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—१, ९, ११ ककुबुष्णिक्; २ निचृद्बृहती; ३ पादनिचृद् उष्णिक्; ४, ६, १०, १२ स्वराड्बृहती; ५, ७, १५ निचृदुष्णिक्; ८, १६ पङ्क्तिः; १३ गायत्री; १४ निचृत्पङ्क्तिः॥ स्वरः—१, ३, ५, ७, ९, ११, १५ ऋषभः; २, ४, ६, १०,१२ मध्यमः; ८, १४, १६ पञ्चमः; १३ षड्जः॥

अथ सप्तदशो वर्गः॥ १७॥

पवस्व मधुमत्तम इन्द्राय सोम क्रतुवित्तमो मदः।
महि द्युक्षतमो मदः ॥ १ ॥
यस्य ते पीत्वा वृषभो वृषायतेऽस्य पीता स्वर्विदः।
स सुप्रकेतो अभ्यक्रमीदिषोऽच्छा वाजं नैतशः॥ २ ॥
त्वं ह्यङ्ग दैव्या पवमान जनिमानि द्युमत्तमः।
अमृतत्वाय घोषयः ॥ ३ ॥
येना नवग्वो दध्यङ्ङपोर्णुते येन विप्रास आपिरे।
देवानां सुम्ने अमृतस्य चारुणो येन श्रवांस्यानशुः॥ ४॥
एष स्य धारया सुतोऽव्यो वारेभिः पवते मदिन्तमः।
क्रीळन्नूर्मिरपामिव ॥ ५ ॥

अथ अष्टादशो वर्गः॥ १८॥

य उस्रिया अप्या अन्तरश्मनो निर्गा अकृन्तदोजसा।
अभि व्रजं तत्निषे गव्यमश्व्यं वर्मीव धृष्णवा रुज॥ ६॥
आ सोता परि षिञ्चताश्वं न स्तोममुप्तुरं रजस्तुरम्।
वनक्रक्षमुदप्रुतम् ॥ ७॥
सहस्रधारं वृषभं पयोवृधं प्रियं देवाय जन्मने।
ऋतेन य ऋतजातो विवावृधे राजा देव ऋतं बृहत्॥ ८॥
अभि द्युम्नं बृहद्यश इषस्पते दिदीहि देव देवयुः।
वि कोशं मध्यमं युव ॥ ९ ॥
आ वच्यस्व सुदक्ष चम्वोः सुतो विशां बर्हिर्न विश्पतिः।
वृष्टिं दिवः पवस्व रीतिमपां जिन्वा गविष्टये धियः॥ १०॥

अथ एकोनविंशो वर्गः॥ १९॥

एतमु त्यं मदच्युतं सहस्रधारं वृषभं दिवो दुहुः।
विश्वा वसूनि बिभ्रतम् ॥ ११ ॥
वृषा वि जज्ञे जनयन्नमर्त्यः प्रतपञ्ज्योतिषा तमः।
स सुष्टुतः कविभिर्निर्णिजं दधे त्रिधात्वस्य दंससा॥ १२॥
स सुन्वे यो वसूनां यो रायामानेता य इळानाम्।
सोमो यः सुक्षितीनाम् ॥ १३ ॥
यस्य न इन्द्रः पिबाद्यस्य मरुतो यस्य वार्यमणा भगः।
आ येन मित्रावरुणा करामहे एन्द्रमवसे महे॥ १४॥
इन्द्राय सोम पातवे नृभिर्यतः स्वायुधो मदिन्तमः।
पवस्व मधुमत्तमः ॥ १५ ॥
इन्द्रस्य हार्दि सोमधानमा विश समुद्रमिव सिन्धवः।
जुष्टो मित्राय वरुणाय वायवे दिवो विष्टम्भ उत्तमः॥ १६॥

[१०९] नवोत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—अग्नयो धिष्ण्या ऐश्वराः॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—१, ७, ८, १०, १३-१५, १७, १८ आर्चीभुरिग्गायत्री; २-६, ९, ११, १२, १९, २२ आर्चीस्वराड् गायत्री; १६ पादनिचृद्गायत्री; २०, २१ आर्चीगायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

अथ विंशो वर्गः॥ २०॥

परि प्र धन्वेन्द्राय सोम स्वादुर्मित्राय पूष्णे भगाय॥ १॥
इन्द्रस्ते सोम सुतस्य पेयाः क्रत्वे दक्षाय विश्वे च देवाः॥ २॥
एवामृताय महे क्षयाय स शुक्रो अर्ष दिव्यः पीयूषः॥ ३॥
पवस्व सोम महान्त्समुद्रः पिता देवानां विश्वाभि धाम॥ ४॥
शुक्रः पवस्व देवेभ्यः सोम दिवे पृथिव्यै शं च प्रजायै॥ ५॥
दिवो धर्तासि शुक्रः पीयूषः सत्ये विधर्मन्वाजी पवस्व॥ ६॥
पवस्व सोम द्युम्नी सुधारो महामवीनामनु पूर्व्यः॥ ७॥
नृभिर्येमानो जज्ञानः पूतः क्षरद्विश्वानि मन्द्रः स्वर्वित्॥ ८॥
इन्दुः पुनानः प्रजामुराणः करद्विश्वानि द्रविणानि नः॥ ९॥
पवस्व सोम क्रत्वे दक्षायाश्वो न निक्तो वाजी धनाय॥ १०॥

अथ एकविंशो वर्गः॥ २१॥

तं तै सोतारो रसं मदाय पुनन्ति सोमं महे द्युम्नाय॥ ११॥
शिशुं जज्ञानं हरिं मृजन्ति प्रवित्रे सोमं देवेभ्य इन्दुम्॥ १२॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

इन्दुः पविष्ट चारुर्मदायापामुपस्थे कविर्भगाय॥ १३॥
बिभर्ति चार्विन्द्रस्य नाम येन विश्वानि वृत्रा जघान॥ १४॥
पिबन्त्यस्य विश्वेदेवासो गोभिः श्रीतस्य नृभिः सुतस्य॥ १५॥
प्र सुवानो अक्षाः सहस्रधारस्तिरः पवित्रं वि वारमव्यम्॥ १६॥
स वाज्यक्षाः सहस्ररेता अद्भिर्मृजानो गोभिः श्रीणानः॥ १७॥
प्र सोम याहीन्द्रस्य कुक्षा नृभिर्येमानो अद्रिभिः सुतः॥ १८॥
असर्जि वाजी तिरः पवित्रमिन्द्राय सोमः सहस्रधारः॥ १९॥
अञ्जन्त्येनं मध्वो रसेनेन्द्राय वृष्ण इन्दुं मदाय॥ २०॥
देवेभ्यस्त्वा वृथा पाजसेऽपो वसानं हरिं मृजन्ति॥ २१॥
इन्दुरिन्द्राय तोशते नि तोशते श्रीणन्नुग्रो रिणन्नपः॥ २२॥

[११०] दशोत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—त्र्यरुणत्रसदस्यू॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—१, २, १२ निचृदनुष्टुप्; ३ विराडनुष्टुप्; ४, ७, ८ विराड्बृहती; ५, ६ पादनिचृद्बृहती; ९ बृहती; १०, ११ अनुष्टुप्॥ स्वरः—१-३, १०-१२ गान्धारः; ४-९ मध्यमः॥

अथ द्वाविंशो वर्गः॥ २२॥

पर्यू षु प्र धन्व वाजसातये परि वृत्राणि सक्षणिः।
द्विषस्तरध्या ऋणया न ईयसे॥ १॥
अनु हि त्वा सुतं सोम मदामसि महे समर्यराज्ये।
वाजाँ अभि पवमान प्र गाहसे॥ २॥
अजीजनो हि पवमान सूर्यं विधारे शक्मना पयः।
गोजीरया रंहमाणः पुरंध्या॥ ३॥
अजीजनो अमृत मर्त्येष्वाँ ऋतस्य धर्मन्नमृतस्य चारुणः।
सदासरो वाजमच्छा सनिष्यदत्॥ ४॥
अभ्यभि हि श्रवसा ततर्दिथोत्सं न कं चिज्जनपानमक्षितम्।
शयीभिर्न भरमाणो गभस्त्योः॥ ५॥
आदीं के चित्पश्यमानास आप्यं वसुरुचो दिव्या अभ्यनूषत।
वारं न देवः सविता व्यूर्णुते॥ ६॥

अथ त्रयोविंशो वर्गः॥ २३॥

त्वे सोम प्रथमा वृक्तबर्हिषो महे वाजाय श्रवसे धियं दधुः।
स त्वं नो वीर वीर्याय चोदय॥ ७॥

दिवः पीयूषं पूर्व्यं यदुक्थ्यं महो गाहाद्दिव आ निरधुक्षत।
इन्द्रमभि जायमानं समस्वरन्॥ ८॥
अध यदिमे पवमान रोदसी इमा च विश्वा भुवनाभि मज्मना।
यूथे न निःष्ठा वृषभो वि तिष्ठसे॥ ९॥
सोमः पुनानो अव्यये वारे शिशुर्न क्रीळन्पवमानो अक्षाः।
सहस्रधारः शतवाज इन्दुः॥ १०॥
एष पुनानो मधुमाँ ऋतावेन्द्रायेन्दुः पवते स्वादुरूर्मिः।
वाजसनिर्वरिवोविद्वयोधाः॥ ११॥
स पवस्व सहमानः पृतन्यून्त्सेधन्रक्षांस्यप दुर्गहाणि।
स्वायुधः सासह्वान्त्सोम शत्रून्॥ १२॥

[१११] एकादशोत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—अनानतः पारुच्छेपिः॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—१ निचृदष्टिः; २ भुरिगष्टिः; ३ अष्टिः॥ स्वरः—मध्यमः॥

अथ चतुर्विंशो वर्गः॥ २४॥

अया रुचा हरिण्या पुनानो विश्वा द्वेषांसि तरति स्वयुर्वभिः।
सूरो न स्वयुर्वभिः। धारा सुतस्य रोचते पुनानो अरुषो हरिः।
विश्वा यद्रूपा परियात्यृक्वभिः सप्तास्येभिर्ऋक्वभिः॥ १॥
त्वं त्यत्पणीनां विदो वसु सं मातृभिर्मर्जयसि स्व आ दमे।
ऋतस्य धीतिभिर्दमे। परावतो न साम तद्यत्रा रणन्ति धीतयः।
त्रिधातुभिररुषीभिर्वयो दधे रोचमानो वयो दधे॥ २॥
पूर्वामनु प्रदिशं याति चेकितत्सं रश्मिभिर्यतते दर्शतो रथो
दैव्यो दर्शतो रथः। अग्मन्नुक्थानि पौंस्येन्द्रं जैत्राय हर्षयन्।
वज्रश्च यद्भवथो अनपच्युता समत्स्वनपच्युता॥ ३॥

[११२] द्वादशोत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—शिशुः॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—१-३ विराट्पङ्क्तिः; ४ निचृत्पङ्क्तिः॥ स्वरः—पञ्चमः॥

अथ पञ्चविंशो वर्गः॥ २५॥

नानानं वा उ नो धियो वि व्रतानि जनानाम्।
तक्षा रिष्टं रुतं भिषग्ब्रह्मा सुन्वन्तमिच्छतीन्द्रायेन्दो परि स्रव॥ १॥
जरतीभिरोषधीभिः पर्णेभिः शकुनानाम्।
कामीरी अश्मभिर्धुभिर्हिरण्यवन्तमिच्छतीन्द्रायेन्दो परि स्रव॥ २॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कारुरहं ततो भिषगुपलप्रक्षिणी नना ।
नानाधियो वसूयवोऽनु गा इव तस्थिमेन्द्रायेन्दो परि स्रव ॥ ३ ॥
अश्वो वोळ्हा सुखं रथं हसनामुपमन्त्रिणः ।
शेपो रोमण्वन्तौ भेदौ वारिन्मण्डूक इच्छतीन्द्रायेन्दो परि स्रव ॥ ४ ॥

[११३] त्रयोदशोत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—कश्यपः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—१, २, ७ विराट्पङ्क्तिः; ३ भुरिक्पङ्क्तिः; ४ पङ्क्तिः; ५, ६, ८-११ निचृत्पङ्क्तिः ॥ स्वरः—पञ्चमः ॥

अथ षड्विंशो वर्गः ॥ २६ ॥

शर्यणावति सोममिन्द्रः पिबतु वृत्रहा ।
बलं दधान आत्मनि करिष्यन्वीर्यं महदिन्द्रायेन्दो परि स्रव ॥ १ ॥
आ पवस्व दिशां पत आर्जीकात्सोम मीढ्वः ।
ऋतवाकेन सत्येन श्रद्धया तपसा सुत इन्द्रायेन्दो परि स्रव ॥ २ ॥
पर्जन्यवृद्धं महिषं तं सूर्यस्य दुहिताभरत् ।
तं गन्धर्वाः प्रत्यगृभ्णन्तं सोमे रसमादधुरिन्द्रायेन्दो परि स्रव ॥ ३ ॥
ऋतं वदन्नृतद्युम्न सत्यं वदन्त्सत्यकर्मन् ।
श्रद्धां वदन्त्सोम राजन्धात्रा सोम परिष्कृत इन्द्रायेन्दो परि स्रव ॥ ४ ॥
सत्यमुग्रस्य बृहतः सं स्रवन्ति संस्रवाः ।
सं यन्ति रसिनो रसाः पुनानो ब्रह्मणा हर इन्द्रायेन्दो परि स्रव ॥ ५ ॥

अथ सप्तविंशो वर्गः ॥ २७ ॥

यत्र ब्रह्मा पवमान छन्दस्यां३ वाचं वदन् ।
ग्राव्णा सोमे महीयते सोमेनानन्दं जनयन्निन्द्रायेन्दो परि स्रव ॥ ६ ॥
यत्र ज्योतिरजस्रं यस्मिँल्लोके स्वर्हितम् ।
तस्मिन्मां धेहि पवमानामृते लोके अक्षित इन्द्रायेन्दो परि स्रव ॥ ७ ॥
यत्र राजा वैवस्वतो यत्रावरोधनं दिवः ।
यत्रामूर्यह्वतीरापस्तत्र माममृतं कृधीन्द्रायेन्दो परि स्रव ॥ ८ ॥
यत्रानुकामं चरणं त्रिनाके त्रिदिवे दिवः ।
लोका यत्र ज्योतिष्मन्तस्तत्र माममृतं कृधीन्द्रायेन्दो परि स्रव ॥ ९ ॥
यत्र कामा निकामाश्च यत्र ब्रध्नस्य विष्टपम् ।
स्वधा च यत्र तृप्तिश्च तत्र माममृतं कृधीन्द्रायेन्दो परि स्रव ॥ १० ॥
यत्रानन्दाश्च मोदाश्च मुदः प्रमुद आसते ।
कामस्य यत्रासाः कामास्तत्र माममृतं कृधीन्द्रायेन्दो परि स्रव ॥ ११ ॥

[११४] चतुर्दशोत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—कश्यपः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—१, २ विराट्पङ्क्तिः; ३, ४ पङ्क्तिः ॥ स्वरः—पञ्चमः ॥

अथ अष्टाविंशो वर्गः ॥ २८ ॥

य इन्दोः पवमानस्यानु धामान्यक्रमीत् ।
तमाहुः सुप्रजा इति यस्तं सोमाविधन्मन इन्द्रायेन्दो परि स्रव ॥ १ ॥
ऋषे मन्त्रकृतां स्तोमैः कश्यपोद्वर्धयन्गिरः ।
सोमं नमस्य राजानं यो जज्ञे वीरुधां पतिरिन्द्रायेन्दो परि स्रव ॥ २ ॥
सप्त दिशो नानासूर्याः सप्त होतार ऋत्विजः ।
देवा आदित्या ये सप्त तेभिः सोमाभि रक्ष न इन्द्रायेन्दो परि स्रव ॥ ३ ॥
यत्ते राजञ्छृतं हविस्तेन सोमाभि रक्ष नः ।
अरातीवा मा नस्तारीन्मो च नः किं चनाममदिन्द्रायेन्दो परि स्रव ॥ ४ ॥

इति नवमं मण्डलम् ॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अथ दशमं मण्डलम्

प्रथमोऽनुवाकः [१] प्रथमं सूक्तम्

ऋषिः—त्रितः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—१, ६ पादनिचृत्त्रिष्टुप्; २, ३ विराट्त्रिष्टुप्; ४, ५ निचृत्त्रिष्टुप्; ७ आर्ची-स्वराट्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः॥

अथ एकोनत्रिंशो वर्गः॥ २९॥

अग्ने बृहन्नुषसामूर्ध्वो अस्थान्निर्जगन्वान्तमसो ज्योतिषागात्।
अग्निर्भानुना रुशता स्वङ्ग आ जातो विश्वा सद्मान्यप्राः॥ १॥
स जातो गर्भो असि रोदस्योरग्ने चारुर्विभृत ओषधीषु।
चित्रः शिशुः परि तमांस्यक्तून्प्र मातृभ्यो अधि कनिक्रदद्गाः॥ २॥
विष्णुरित्था परममस्य विद्वाञ्जातो बृहन्नभि पाति तृतीयम्।
आसा यदस्य पयो अक्रत स्वं सचेतसो अभ्यर्चन्त्यत्र॥ ३॥
अतं उ त्वा पितुभृतो जनित्रीरन्नावृधं प्रति चरन्त्यन्नैः।
ता ईं प्रत्येषि पुनरन्यरूपा असि त्वं विक्षु मानुषीषु होता॥ ४॥
होतारं चित्ररथमध्वरस्य यज्ञस्ययज्ञस्य केतुं रुशन्तम्।
प्रत्यर्धिं देवस्यदेवस्य मह्ना श्रिया त्वाग्निमतिथिं जनानाम्॥ ५॥
स तु वस्त्राण्यध पेशनानि वसानो अग्निर्नाभा पृथिव्याः।
अरुषो जातः पद इळायाः पुरोहितो राजन्यक्षीह देवान्॥ ६॥
आ हि द्यावापृथिवी अग्न उभे सदा पुत्रो न मातरा ततन्थ।
प्र याह्यच्छौशतो यविष्ठाथा वह सहस्येह देवान्॥ ७॥

[२] द्वितीयं सूक्तम्

ऋषिः—त्रितः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—१ पादनिचृत्त्रिष्टुप्; २, ५ निचृत्त्रिष्टुप्; ३, ४, ६, ७ त्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः॥

अथ त्रिंशो वर्गः॥ ३०॥

पिप्रीहि देवाँ उशतो यविष्ठ विद्वाँ ऋतूँरृतुपते यजेह।
ये दैव्या ऋत्विजस्तेभिरग्ने त्वं होतॄणामस्यायजिष्ठः॥ १॥
वेषि होत्रमुत पोत्रं जनानां मन्धातासि द्रविणोदा ऋतावा।
स्वाहा वयं कृणवामा हवींषि देवो देवान्यजत्वग्रिरर्हन्॥ २॥
आ देवानामपि पन्थामगन्म यच्छक्नवाम तदनु प्रवोळ्हुम्।
अग्निर्विद्वान्त्स यजात्सेदु होता सो अध्वरान्त्स ऋतून्कल्पयाति॥ ३॥
यद्वो वयं प्रमिनाम व्रतानि विदुषां देवा अविदुष्टरासः।
अग्निष्टद्विश्वमा पृणाति विद्वान्येभिर्देवाँ ऋतुभिः कल्पयाति॥ ४॥
यत्पाकत्रा मनसा दीनदक्षा न यज्ञस्य मन्वते मर्त्यासः।
अग्निष्टद्धोता क्रतुविद्विजानन्यजिष्ठो देवाँ ऋतुशो यजाति॥ ५॥
विश्वेषां ह्यध्वराणामनीकं चित्रं केतुं जनिता त्वा जजान।
स आ यजस्व नृवतीरनु क्षाः स्पार्हा इषः क्षुमतीर्विश्वजन्याः॥ ६॥
यं त्वा द्यावापृथिवी यं त्वापस्त्वष्टा यं त्वा सुजनिमा जजान।
पन्थामनु प्रविद्वान्पितृयाणं द्युमदग्ने समिधानो वि भाहि॥ ७॥

[३] तृतीयं सूक्तम्

ऋषिः—त्रितः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—१ पादनिचृत्त्रिष्टुप्; २, ३ निचृत्त्रिष्टुप्; ४ विराट्त्रिष्टुप्; ५-७ त्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः॥

अथ एकत्रिंशो वर्गः॥ ३१॥

इनो राजन्नरतिः समिद्धो रौद्रो दक्षाय सुषुमाँ अदर्शि।
चिकित्वि भाति भासा बृहतासिक्नीमेति रुशतीमपाजन्॥ १॥
कृष्णां यदेनीमभि वर्पसा भूज्जनयन्योषां बृहतः पितुर्जाम्।
ऊर्ध्वं भानुं सूर्यस्य स्तभायन्दिवो वसुभिररतिर्वि भाति॥ २॥
भद्रो भद्रया सचमान आगात्स्वसारं जारो अभ्येति पश्चात्।
सुप्रकेतैर्द्युभिररग्निर्वितिष्ठन्नृशद्भिर्वर्णैरभि राममस्थात्॥ ३॥
अस्य यामासो बृहतो न वग्नूनिन्धाना अग्नेः सख्युः शिवस्य।
ईड्यस्य वृष्णो बृहतः स्वासो भामासो यामन्नक्तवश्चिकित्रे॥ ४॥
स्वना न यस्य भामासः पवन्ते रोचमानस्य बृहतः सुदिवः।
ज्येष्ठेभिर्यस्तेजिष्ठैः क्रीळुमद्भिर्वर्षिष्ठेभिर्भानुभिर्नक्षति द्याम्॥ ५॥
अस्य शुष्मासो ददृशानपवेर्जेहमानस्य स्वनयन्नियुद्भिः।
प्रत्नेभिर्यो रुशद्भिर्देवतमो वि रेभद्भिररतिर्भाति विभ्वा॥ ६॥
स आ वक्षि महि न आ च सत्सि दिवस्पृथिव्योररतिर्युवत्योः।
अग्निः सुतुकः सुतुकेभिरश्वै रभस्वद्भी रभस्वाँ एह गम्याः॥ ७॥

[४] चतुर्थं सूक्तम्

ऋषिः—त्रितः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—१-४ निचृत्त्रिष्टुप्; ५, ६ त्रिष्टुप्; ७ विराट्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अथ द्वात्रिंशो वर्गः ॥ ३२ ॥

प्र ते॑ यक्षि॒ प्र त॑ इयर्मि॒ मन्म॒ भुवो॒ यथा॒ वन्द्यो॑ नो॒ हवे॑षु।
धन्व॑न्निव प्र॒पा अ॑सि॒ त्वम॑ग्न इय॒क्षवे॑ पू॒रवे॑ प्रत्न राजन् ॥ १ ॥
यं त्वा॒ जना॑सो अ॒भि सं॒चर॑न्ति॒ गाव॑ उ॒ष्णमि॑व व्र॒जं य॑विष्ठ।
दू॒तो दे॒वाना॑मसि॒ मर्त्या॑नाम॒न्तर्म॒हाँश्च॑रसि रोच॒नेन॑ ॥ २ ॥
शिशुं॒ न त्वा॒ जेन्यं॑ व॒र्धय॑न्ती मा॒ता बि॑भर्ति सचन॒स्यमा॑ना।
धनो॒रधि॑ प्र॒वता॑ यासि॒ हर्य॒ञ्जिगी॑षसे प॒शुरि॒वाव॑सृष्टः ॥ ३ ॥
मू॒रा अ॑मूर॒ न व॒यं चि॑कित्वो महि॒त्वम॑ग्ने॒ त्वम॒ङ्ग वि॑त्से।
शये॑ व॒व्रिश्चर॑ति जि॒ह्वया॒दत्रे॑रि॒ह्यते॑ युव॒तिं वि॒श्पतिः॒ सन् ॥ ४ ॥
कूचि॑ज्जायते॒ सन॑यासु॒ नव्यो॒ वने॑ तस्थौ पलि॒तो धू॒मके॑तुः।
अ॒स्ना॒तापो॑ वृष॒भो न प्र वे॑ति॒ सचे॑तसो॒ यं प्र॒णय॑न्त॒ मर्ताः॑ ॥ ५ ॥
त॒नू॒त्यजे॑व॒ तस्क॑रा वन॒र्गू र॑श॒नाभि॑र्द॒शभि॑र॒भ्य॑धीताम् ।
इ॒यं ते॑ अग्ने॒ नव्य॑सी मनी॒षा यु॒क्ष्वा रथं॒ न शु॒चय॑द्भि॒रङ्गैः॑ ॥ ६ ॥
ब्रह्म॑ च ते जातवेदो॒ नम॑श्चे॒यं च॒ गीः सद॒मिद्वर्ध॑नी भूत्।
रक्षा॑ णो अग्ने॒ तन॑यानि तो॒का रक्षो॒त न॑स्त॒न्वो॒३॒॑ अप्र॑युच्छन् ॥ ७ ॥

[५] पञ्चमं सूक्तम्

ऋषिः—त्रितः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१ विराट्त्रिष्टुप्; २-५ त्रिष्टुप्; ६, ७ निचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

अथ त्रयस्त्रिंशो वर्गः ॥ ३२ ॥

एकः॑ समु॒द्रो ध॒रुणो॑ रयी॒णाम॒स्मद्धृ॒दो भूरि॑जन्मा॒ वि च॑ष्टे।
सिष॒क्त्यूध॑र्नि॒ण्योरु॒पस्थ॒ उत्स॑स्य॒ मध्ये॒ निहि॑तं प॒दं वेः ॥ १ ॥
स॒मा॒नं नी॒ळं वृष॑णो॒ वसा॑नाः॒ सं ज॑ग्मिरे महि॒षा अर्व॑तीभिः।
ऋ॒तस्य॑ प॒दं क॒वयो॒ नि पा॑न्ति॒ गुहा॒ नामा॑नि दधिरे॒ परा॑णि ॥ २ ॥
ऋ॒ता॒यिनी॑ मा॒यिनी॒ सं द॑धाते मि॒त्वा शिशुं॑ जज्ञतुर्व॒र्धय॑न्ती।
विश्व॑स्य॒ नाभिं॒ चर॑तो ध्रु॒वस्य॑ क॒वेश्चि॒त्तन्तुं॒ मन॑सा वि॒यन्तः॑ ॥ ३ ॥
ऋ॒तस्य॒ हि व॑र्त॒नयः॒ सुजा॑त॒मिषो॒ वाजा॑य प्र॒दिवः॒ सच॑न्ते।
अ॒धी॒वा॒सं रोद॑सी वावसा॒ने घृ॒तैरन्नै॑र्वावृधाते॒ मधू॑नाम् ॥ ४ ॥
स॒प्त स्वसॄ॒ररु॑षीर्वावशा॒नो वि॒द्वान्मध्व॒ उज्ज॑भारा दृ॒शे कम्।
अ॒न्तर्ये॑मे अ॒न्तरि॑क्षे पुरा॒जा इ॒च्छन्व॒व्रिम॑विदत्पूष॒णस्य॑ ॥ ५ ॥
स॒प्त म॒र्यादाः॑ क॒वय॑स्ततक्षु॒स्तासा॒मेका॒मिद॒भ्यं॑हु॒रो गा॑त् ।
आ॒योर्ह॑ स्क॒म्भ उ॑प॒मस्य॑ नी॒ळे प॒थां वि॑स॒र्गे ध॒रुणे॑षु॒ तस्थौ॑ ॥ ६ ॥
अस॑च्च॒ सच्च॑ पर॒मे व्यो॑म॒न्दक्ष॑स्य॒ जन्म॒न्नदि॑तेरु॒पस्थे॑ ।
अ॒ग्निर्ह॑ नः प्रथम॒जा ऋ॒तस्य॒ पूर्व॒ आयु॑नि वृष॒भश्च॑ धे॒नुः ॥ ७ ॥

इति सप्तमाष्टके पञ्चमोऽध्यायः ॥

अथ षष्ठोऽध्यायः

[६] षष्ठं सूक्तम्

ऋषिः—त्रितः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१ आर्चीस्वराट्त्रिष्टुप्; २ विराट्पङ्क्तिः; ३ निचृत्पङ्क्तिः; ४, ५ विराट्त्रिष्टुप्; ६ पङ्क्तिः; ७ पादनिचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१, ४, ५, ७ धैवतः; २, ३, ६ पञ्चमः ॥

अथ प्रथमो वर्गः ॥ १ ॥

अ॒यं स यस्य॒ शर्म॒न्नवो॑भिर॒ग्नेरेध॑ते जरि॒ताभिष्टौ॑ ।
ज्येष्ठे॑भि॒र्यो भा॒नुभि॑र्ऋषू॒णां प॒र्येति॒ परि॑वीतो वि॒भावा॑ ॥ १ ॥
यो भा॒नुभि॑र्वि॒भावा॑ वि॒भात्य॒ग्निर्दे॒वेभि॑र्ऋ॒तावाज॑स्रः ।
आ यो वि॒वाय॑ स॒ख्या सखि॒भ्योऽप॑रिह्वृ॒तो अत्यो॒ न सप्तिः॑ ॥ २ ॥
ईशे॒ यो विश्व॑स्या दे॒ववी॑ते॒रीशे॑ वि॒श्वायु॑रु॒षसो॒ व्यु॑ष्टौ।
आ यस्मि॑न्म॒ना ह॒वींष्य॒ग्नावरि॑ष्टरथः स्क॒भ्नाति॑ शू॒षैः ॥ ३ ॥
शू॒षेभि॑र्वृ॒धो जु॑षा॒णो अ॒र्कैर्दे॒वाँ अच्छा॑ रघु॒पत्वा॑ जिगाति।
म॒न्द्रो होता॒ स जु॒ह्वा॒३॒॑ यजि॑ष्ठः॒ संमि॑श्लो अ॒ग्निरा जि॑घर्ति दे॒वान् ॥ ४ ॥
तमु॒स्रामिन्द्रं॒ न रेज॑मानम॒ग्निं गी॒र्भिर्नमो॑भि॒रा कृ॑णुध्वम्।
आ यं विप्रा॑सो म॒तिभि॑र्गृ॒णन्ति॑ जा॒तवे॑दसं जु॒ह्वं॑ स॒हाना॑म् ॥ ५ ॥
सं यस्मि॒न्विश्वा॒ वसू॑नि ज॒ग्मुर्वाजे॒ नाश्वाः॒ सप्ती॑वन्त॒ एवैः॑।
अ॒स्मे ऊ॒तीरिन्द्र॑वाततमा अर्वाची॒ना अ॑ग्न॒ आ कृ॑णुष्व ॥ ६ ॥
अधा॒ ह्य॑ग्ने म॒ह्ना नि॒षद्या॑ स॒द्यो ज॑ज्ञा॒नो हव्यो॑ ब॒भूथ॑।
तं ते॑ दे॒वासो॒ अनु॒ केत॑माय॒न्नधा॑वर्धन्त प्रथ॒मास॒ ऊमाः॑ ॥ ७ ॥

[७] सप्तमं सूक्तम्

ऋषिः—त्रितः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१, ३, ५, ६ निचृत्त्रिष्टुप्; २, ४ त्रिष्टुप्; ७ विराट्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

अथ द्वितीयो वर्गः ॥ २ ॥

स्व॒स्ति नो॑ दि॒वो अ॑ग्ने पृथि॒व्या वि॒श्वायु॑र्धेहि य॒जथा॑य देव।
सचे॑महि॒ तव॑ दस्म प्रके॒तैरु॑रु॒ष्या ण॑ उ॒रुभि॑र्देव॒ शंसैः॑ ॥ १ ॥
इ॒मा अ॑ग्ने म॒तय॒स्तुभ्यं॑ जा॒ता गोभि॒रश्वै॑र॒भि गृ॑णन्ति॒ राधः॑।
य॒दा ते॒ मर्तो॒ अनु॒ भोग॒मान॒ड्वसो॒ दधा॑नो म॒तिभिः॑ सुजात ॥ २ ॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अग्निं मन्ये पितरमग्निमापिमग्निं भ्रातरं सदमित्सखायम्।
अग्नेरनीकं बृहतः सपर्यं दिवि शुक्रं यजतं सूर्यस्य॥ ३॥
सिध्रा अग्ने धियो अस्मे सनुत्रीर्यं त्रायसे दम आ नित्यहोता।
ऋतावा स रोहिदश्वः पुरुक्षुर्द्युभिरस्मा अहभिर्वाममस्तु॥ ४॥
द्युभिर्हितं मित्रमिव प्रयोगं प्रत्नमृत्विजमध्वरस्य जारम्।
बाहुभ्यामग्निमायवोऽजनन्त विक्षु होतारं न्यसादयन्त ॥ ५॥
स्वयं यजस्व दिवि देव देवान् किं ते पाकः कृणवदप्रचेताः।
यथायज ऋतुभिर्देव देवानेवा यजस्व तन्वं सुजात ॥ ६॥
भवा नो अग्नेऽवितोत गोपा भवा वयस्कृदुत नो वयोधाः।
रास्वा च नः सुमहो हव्यदातिं त्रास्वोत नस्तन्वो३ अप्रयुच्छन्॥ ७॥

[८] अष्टमं सूक्तम्

ऋषिः—त्रिशिरास्त्वाष्ट्रः॥ देवता—१-६ अग्निः; ७-९ इन्द्रः॥ छन्दः—१, ५-७, ९ निचृत्त्रिष्टुप्; २ विराट्त्रिष्टुप्; ३, ४, ८ पादनिचृत्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः॥

अथ तृतीयो वर्गः॥ ३॥

प्र केतुना बृहता यात्यग्निरा रोदसी वृषभो रोरवीति।
दिवश्चिदन्ताँ उपमाँ उदानळपामुपस्थे महिषो ववर्ध॥ १॥
मुमोद गर्भो वृषभः ककुद्मानस्रेमा वत्सः शिमीवाँ अरावीत्।
स देवतात्युद्यतानि कृण्वन्त्स्वेषु क्षयेषु प्रथमो जिगाति॥ २॥
आ यो मूर्धानं पित्रोररब्ध न्यध्वरे दधिरे सूरो अर्णः।
अस्य पत्मन्नरुषीरश्वबुध्ना ऋतस्य योनौ तन्वो जुषन्त॥ ३॥
उषऽउषो हि वसो अग्रमेषि त्वं यमयोरभवो विभावा।
ऋतायं सप्त दधिषे पदानि जनयन्मित्रं तन्वे३ स्वायै॥ ४॥
भुवश्चक्षुर्महः ऋतस्य गोपा भुवो वरुणो यदृतायं वेषि।
भुवो अपां नपाज्जातवेदो भुवो दूतो यस्य हव्यं जुजोषः॥ ५॥

अथ चतुर्थो वर्गः॥ ४॥

भुवो यज्ञस्य रजसश्च नेता यत्रा नियुद्भिः सचसे शिवाभिः।
दिवि मूर्धानं दधिषे स्वर्षां जिह्वामग्ने चकृषे हव्यवाहम्॥ ६॥
अस्य त्रितः क्रतुना वव्रे अन्तरिच्छन्धीतिं पितुरेवैः परस्य।
सचस्यमानः पित्रोरुपस्थे जामि ब्रुवाण आयुधानि वेति॥ ७॥
स पित्र्याण्यायुधानि विद्वानिन्द्रेषित आप्त्यो अभ्ययुध्यत्।
त्रिशीर्षाणं सप्तरश्मिं जघन्वान्त्वाष्ट्रस्य चित्रिः ससृजे त्रितो गाः॥ ८॥
भूरीदिन्द्र उदिनक्षन्तमोजोऽवाभिनत्सत्पतिर्मन्यमानम्।
त्वाष्ट्रस्य चिद्विश्वरूपस्य गोनामाचक्राणस्त्रीणि शीर्षा परा वर्क्॥ ९॥

[९] नवमं सूक्तम्

ऋषिः—त्रिशिरास्त्वाष्ट्रः सिन्धुद्वीपो वाम्बरीषः॥ देवता—आपः॥ छन्दः—१-४, ६ गायत्री; ५ वर्धमाना गायत्री; ७ प्रतिष्ठा गायत्री; ८, ९ अनुष्टुप्॥ स्वरः—१-७ षड्जः; ८, ९ गान्धारः॥

अथ पञ्चमो वर्गः॥ ५॥

आपो हि ष्ठा मयोभुवस्ता न ऊर्जे दधातन।
महे रणाय चक्षसे ॥ १॥
यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः।
उशतीरिव मातरः ॥ २॥
तस्मा. अरं गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ।
आपो जनयथा च नः ॥ ३॥
शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये।
शं योरभि स्त्रवन्तु नः ॥ ४॥
ईशाना वार्याणां क्षयन्तीश्चर्षणीनाम्।
अपो याचामि भेषजम् ॥ ५॥
अप्सु मे सोमो अब्रवीदन्तर्विश्वानि भेषजा।
अग्निं च विश्वशंभुवम् ॥ ६॥
आपः पृणीत भेषजं वरूथं तन्वे३ मम।
ज्योक्च सूर्यं दृशे ॥ ७॥
इदमापः प्र वहत यत्किं च दुरितं मयि।
यद्वाहमभिदुद्रोह यद्वा शेप उतानृतम् ॥ ८॥
आपो अद्यान्वचारिषं रसेन समगस्महि।
पयस्वानग्न आ गहि तं मा सं सृज वर्चसा ॥ ९॥

[१०] दशमं सूक्तम्

ऋषिः—१, ३, ५-७, ११, १३ यमी वैवस्वती; २, ४, ८-१०, १२, १४, यमो वैवस्वतः॥ देवता—१, ३, ५-७, ११, १३ यमो वैवस्वतः; २, ४, ८-१०, १२, १४ यमी वैवस्वती॥ छन्दः—१, २, ४, ६, ८ विराट्त्रिष्टुप्; ३, ११ पादनिचृत्त्रिष्टुप्; ५, ९, १०, १२ त्रिष्टुप्; ७, १३ आर्ची-स्वराट्त्रिष्टुप्; १४ निचृत्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

अथ षष्ठो वर्गः ॥ ६ ॥

ओ चित्सखायं सख्या ववृत्यां तिरः पुरू चिदर्णवं जगन्वान्।
पितुर्नपातमा दधीत वेधा अधि क्षमि प्रतरं दीध्यानः ॥ १ ॥
न ते सखा सख्यं वष्ट्येतत्सलक्ष्मा यद्विषुरूपा भवाति।
महस्पुत्रासो असुरस्य वीरा दिवो धर्तार उर्विया परि ख्यन् ॥ २ ॥
उशन्ति घा ते अमृतास एतदेकस्य चित्त्यजसं मर्त्यस्य।
नि ते मनो मनसि धाय्यस्मे जन्युः पतिस्तन्वमा विविश्याः ॥ ३ ॥
न यत्पुरा चकृमा कद्ध नूनमृता वदन्तो अनृतं रपेम।
गन्धर्वो अप्स्वप्या च योषा सा नो नाभिः परमं जामि तन्नौ ॥ ४ ॥
गर्भे नु नौ जनिता दंपती कर्देवस्त्वष्टा सविता विश्वरूपः।
नकिरस्य प्र मिनन्ति व्रतानि वेद नावस्य पृथिवी उत द्यौः ॥ ५ ॥

अथ सप्तमो वर्गः ॥ ७ ॥

को अस्य वेद प्रथमस्याह्नः क ईं ददर्श क इह प्र वोचत्।
बृहन्मित्रस्य वरुणस्य धाम कदु ब्रव आहनो वीच्या नॄन् ॥ ६ ॥
यमस्य मा यम्यं काम आगन्त्समाने योनौ सहशेय्याय।
जायेव पत्ये तन्वं रिरिच्यां वि चिद् वृहेव रथ्येव चक्रा ॥ ७ ॥
न तिष्ठन्ति न नि मिषन्त्येते देवानां स्पश इह ये चरन्ति।
अन्येन मदाहनो याहि तूयं तेन वि वृह रथ्येव चक्रा ॥ ८ ॥
रात्रीभिरस्मा अहभिर्दशस्येत्सूर्यस्य चक्षुर्मुहुरुन्मिमीयात् ।
दिवा पृथिव्या मिथुना सबन्धू यमीर्यमस्य विमृयादजामि ॥ ९ ॥
आ घा ता गच्छानुत्तरा युगानि यत्र जामयः कृणवन्नजामि।
उप बर्बृहि वृषभाय बाहुमन्यमिच्छस्व सुभगे पतिं मत् ॥ १० ॥

अथ अष्टमो वर्गः ॥ ८ ॥

किं भ्रातासद्यदनाथं भवाति किमु स्वसा यन्निर्ऋतिर्निगच्छात्।
काममूता बह्वेतद्रपामि तन्वा मे तन्वं सं पिपृग्धि ॥ ११ ॥
न वा उ ते तन्वा तन्वं सं पपृच्यां पापमाहुर्यः स्वसारं निगच्छात्।
अन्येन मत्प्रमुदः कल्पयस्व न ते भ्राता सुभगे वष्ट्येतत् ॥ १२ ॥
बतो बतासि यम नैव ते मनो हृदयं चाविदाम।
अन्या किल त्वां कक्ष्येव युक्तं परि ष्वजाते लिबुजेव वृक्षम् ॥ १३ ॥
अन्यमू षु त्वं यम्यन्य उ त्वां परि ष्वजाते लिबुजेव वृक्षम्।
तस्य वा त्वं मन इच्छा स वा तवाऽधा कृणुष्व संविदं सुभद्राम् ॥ १४ ॥

[११] एकादशं सूक्तम्

ऋषिः—हविर्धान आङ्गिः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१, २, ६ निचृज्जगती; ३-५ विराड्जगती; ७-९ त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१-६ निषादः; ७-९ धैवतः ॥

अथ नवमो वर्गः ॥ ९ ॥

वृषा वृष्णो दुदुहे दोहसा दिवः पयांसि यह्वो अदितेरदाभ्यः।
विश्वं स वेद वरुणो यथा धिया स यज्नियो यजतु यज्नियाँ ऋतून् ॥ १ ॥
रपद्गन्धर्वीरप्या च योषणा नदस्य नादे परि पातु मे मनः।
इष्टस्य मध्ये अदितिर्नि धातु नो भ्राता नो ज्येष्ठः प्रथमो वि वोचति ॥ २ ॥
सो चिन्नु भद्रा क्षुमती यशस्वत्युषा उवास मनवे स्वर्वती।
यदीमुशन्तमुशतामनु क्रतुमग्निं होतारं विदथाय जीजनन् ॥ ३ ॥
अध त्यं द्रप्सं विभ्वं विचक्षणं विराभरदिषितः श्येनो अध्वरे।
यदी विशो वृणते दस्ममार्यी अग्निं होतारमध धीरजायत ॥ ४ ॥
सदांसि रण्वो यवसेव पुष्यते होत्राभिरग्ने मनुषः स्वध्वरः।
विप्रस्य वा यच्छशमान उक्थ्यं वाजं ससवाँ उपयासि भूरिभिः ॥ ५ ॥

अथ दशमो वर्गः ॥ १० ॥

उदीरय पितरा जार आ भगमियक्षति हर्यतो हुत इष्यति।
विवक्ति वह्निः स्वपस्यते मखस्तविष्यते असुरो वेपते मती ॥ ६ ॥
यस्ते अग्ने सुमतिं मर्तो अक्षत्सहसः सूनो अति स प्र शृण्वे।
इषं दधानो वहमानो अश्वैरा स द्युमाँ अमवान्भूषति द्यून् ॥ ७ ॥
यदग्र एषा समितिर्भवाति देवी देवेषु यजता यजत्र।
रत्ना च यद्विभजासि स्वधावो भागं नो अत्र वसुमन्तं वीतात् ॥ ८ ॥
श्रुधी नो अग्ने सदने सधस्थे युक्ष्वा रथममृतस्य द्रविलुम्।
आ नो वह रोदसी देवपुत्रे माकिर्देवानामप भूरिह स्याः ॥ ९ ॥

[१२] द्वादशं सूक्तम्

ऋषिः—हविर्धान आङ्गिः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१, ३ विराट्त्रिष्टुप्; २, ४, ५, ७ निचृत्त्रिष्टुप; ६ आर्चीस्वराट्त्रिष्टुप; ८ पादनिचृत्त्रिष्टुप; ९ त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

अथ एकादशो वर्गः ॥ ११ ॥

द्यावा हु क्षामा प्रथमे ऋतेनाऽभिश्रावे भवतः सत्यवाचा।
देवो यन्मर्ताँ यजथाय कृण्वन्त्सीदद्धोता प्रत्यङ् स्वमसुं यन् ॥ १ ॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

देवो देवान्परिभूरृतेन वहा नो हव्यं प्रथमश्चिकित्वान्।
धूमकेतुः समिधा भारुजीको मन्द्रो होता नित्यो वाचा यजीयान्॥ २॥
स्वावृग्देवस्यामृतं यदी गोरतो जातासो धारयन्त उर्वी।
विश्वे देवा अनु तत्ते यजुर्गुर्दुहे यदेनीं दिव्यं घृतं वाः॥ ३॥
अचीमि वां वर्धायापो घृतस्नू द्यावाभूमी शृणुतं रोदसी मे।
अह्ना यद् द्यावोऽसुनीतिमयन्मध्वा नो अत्र पितरा शिशीताम्॥ ४॥
किं स्विन्नो राजा जगृहे कदस्याऽतिं व्रतं चकृमा को वि वेद।
मित्रश्चिद्धि ष्मा जुहुराणो देवाञ्छ्लोको न यातामपि वाजो अस्ति॥ ५॥

अथ द्वादशो वर्गः॥ १२॥

दुर्मन्त्वत्रामृतस्य नाम सलक्ष्मा यद्विषुरूपा भवाति।
यमस्य यो मनवते सुमन्त्वग्ने तमृष्व पाह्यप्रयुच्छन्॥ ६॥
यस्मिन्देवा विदथे मादयन्ते विवस्वतः सदने धारयन्ते।
सूर्ये ज्योतिरदधुर्मास्यक्तून्परि द्योतनिं चरता अजस्रा॥ ७॥
यस्मिन्देवा मन्मनि संचरन्त्यपीच्ये न वयमस्य विद्म।
मित्रो नो अत्रादितिर्नागान्त्सविता देवो वरुणाय वोचत्॥ ८॥
श्रुधी नो अग्ने सदने सधस्थे युक्ष्वा रथमृतस्य द्रविलम्।
आ नो वह रोदसी देवपुत्रे मार्किर्देवानामप भूरिह स्याः॥ ९॥

[१३] त्रयोदशं सूक्तम्

ऋषिः—विवस्वानादित्यः॥ देवता—हविर्धाने॥ छन्दः—१ पादनिचृत्त्रिष्टुप्; २, ४ निचृत्त्रिष्टुप्; ३ विराट्त्रिष्टुप्; ५ निचृज्जगती॥ स्वरः—१-४ धैवतः; ५ निषादः॥

अथ त्रयोदशो वर्गः॥ १३॥

युजे वां ब्रह्म पूर्व्यं नमोभिर्वि श्लोक एतु पथ्येव सूरेः।
शृण्वन्तु विश्वे अमृतस्य पुत्रा आ ये धामानि दिव्यानि तस्थुः॥ १॥
यमेइव यतमाने यदैतं प्र वां भरन्मानुषा देवयन्तः।
आ सीदतं स्वमु लोकं विदाने स्वासस्थे भवतमिन्दवे नः॥ २॥
पञ्च पदानि रुपो अन्वरोहं चतुष्पदीमन्वैमि व्रतेन।
अक्षरेण प्रति मिम एतामृतस्य नाभावधि सं पुनामि॥ ३॥
देवेभ्यः कमवृणीत मृत्युं प्रजायै कममृतं नावृणीत।
बृहस्पतिं यज्ञमकृण्वत ऋषिं प्रियां यमस्तन्वं प्रारिरेचीत्॥ ४॥
सप्त क्षरन्ति शिशवे मरुत्वते पित्रे पुत्रासो अप्यवीवतव्रतम्।
उभे इदस्योभयस्य राजत उभे यतेते उभयस्य पुष्यतः॥ ५॥

[१४] चतुर्दशं सूक्तम्

ऋषिः—यमः॥ देवता—१-५, १३-१६ यमः; ६ लिङ्गोक्ताः; ७-९ लिङ्गोक्ताः पितरो वा; १०-१२ श्वानौ॥ छन्दः—१, १२ भुरिक्त्रिष्टुप्; २, ३, ७, ११ निचृत्त्रिष्टुप्; ४, ६ विराट्त्रिष्टुप्; ५, ९ पादनिचृत्त्रिष्टुप्; ८ आर्चीस्वराट्त्रिष्टुप्; १० त्रिष्टुप्; १३, १४ निचृदनुष्टुप्; १५ विराड्बृहती; १६ अनुष्टुप्॥ स्वरः—१-१२ धैवतः; १३, १४, १६ गान्धारः; १५ मध्यमः॥

अथ चतुर्दशो वर्गः॥ १४॥

परेयिवांसं प्रवतो महीरनु बहुभ्यः पन्थामनुपस्पशानम्।
वैवस्वतं संगमनं जनानां यमं राजानं हविषा दुवस्य॥ १॥
यमो नो गातुं प्रथमो विवेद नैषा गव्यूतिरपभर्तवा उ।
यत्रा नः पूर्वे पितरः परेयुरेना जज्ञानाः पथ्या अनु स्वाः॥ २॥
मातली कव्यैर्यमो अङ्गिरोभिर्बृहस्पतिर्ऋक्वभिर्वावृधानः।
याँश्च देवा वावृधुर्ये च देवान्त्स्वाहान्ये स्वधयान्ये मदन्ति॥ ३॥
इमं यम प्रस्तरमा हि सीदाऽङ्गिरोभिः पितृभिः संविदानः।
आ त्वा मन्त्राः कविशस्ता वहन्त्वेना राजन्हविषा मादयस्व॥ ४॥
अङ्गिरोभिरा गहि यज्ञियेभिर्यमं वैरूपैरिह मादयस्व।
विवस्वन्तं हुवे यः पिता तेऽस्मिन्यज्ञे बर्हिष्या निषद्य॥ ५॥

अथ पञ्चदशो वर्गः॥ १५॥

अङ्गिरसो नः पितरो नवग्वा अथर्वाणो भृगवः सोम्यासः।
तेषां वयं सुमतौ यज्ञियानामपि भद्रे सौमनसे स्याम॥ ६॥
प्रेहि प्रेहि पथिभिः पूर्व्येभिर्यत्रा नः पूर्वे पितरः परेयुः।
उभा राजाना स्वधया मदन्ता यमं पश्यासि वरुणं च देवम्॥ ७॥
सं गच्छस्व पितृभिः सं यमेनेष्टापूर्तेन परमे व्योमन्।
हित्वायावद्यं पुनरस्तमेहि सं गच्छस्व तन्वा सुवर्चीः॥ ८॥
अपेत वीत वि च सर्पतातोऽस्मा एतं पितरो लोकमक्रन्।
अहोभिरद्भिरक्तुभिर्व्यक्तं यमो ददात्यवसानमस्मै॥ ९॥
अतिं द्रव सारमेयौ श्वानौ चतुरक्षौ शबलौ साधुना पथा।
अथा पितॄन्त्सुविदत्राँ उपेहि यमेन ये सधमादं मदन्ति॥ १०॥

अथ षोडशो वर्गः॥ १६॥

यौ ते श्वानौ यम रक्षितारौ चतुरक्षौ पथिरक्षी नृचक्षसौ।
ताभ्यामेनं परि देहि राजन्त्स्वस्ति चास्मा अनमीवं च धेहि॥ ११॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उरूणसावसुतृपा उदुम्बलौ यमस्य दूतौ चरतो जनाँ अनु।
तावस्मभ्यं दृशये सूर्यायं पुनर्दातामसुमद्येह भद्रम्॥ १२॥
यमाय सोमं सुनुत यमायं जुहुता हविः ।
यमं ह यज्ञो गच्छत्यग्निदूतो अरंकृतः ॥ १३॥
यमायं घृतवद्धविर्जुहोत प्र च तिष्ठत ।
स नो देवेष्वा यमद्दीर्घमायुः प्र जीवसे ॥ १४॥
यमाय मधुमत्तमं राज्ञे हव्यं जुहोतन ।
इदं नम ऋषिभ्यः पूर्वजेभ्यः पूर्वेभ्यः पथिकृद्भ्यः ॥ १५॥
त्रिकद्रुकेभिः पतति षळुर्वीरेकमिद् बृहत् ।
त्रिष्टुब्गायत्री छन्दांसि सर्वा ता यम आहिता ॥ १६॥

[१५] पञ्चदशं सूक्तम्

ऋषिः—शङ्खो यामायनः॥ देवता—पितरः॥ छन्दः—१, २, ७, १२, १३, १४ विराट्त्रिष्टुप्; ३, ९, १० त्रिष्टुप्; ४, ८ पादनिचृत्त्रिष्टुप्; ५ आर्चीभुरिक्त्रिष्टुप्; ६ निचृत्त्रिष्टुप्; ११ निचृज्जगती॥ स्वरः—१-१०, १२-१४ धैवतः; ११ निषादः॥

अथ सप्तदशो वर्गः॥ १७॥

उदीरतामवरं उत्परास उन्मध्यमाः पितरः सोम्यासः ।
असुं य ईयुरवृका ऋतज्ञास्ते नोऽवन्तु पितरो हवेषु ॥ १॥
इदं पितृभ्यो नमो अस्त्वद्य ये पूर्वासो य उपरास ईयुः।
ये पार्थिवे रजस्या निषत्ता ये वा नूनं सुवृजनासु विक्षु॥ २॥
आहं पितॄन्त्सुविदत्राँ अवित्सि नपातं च विक्रमणं च विष्णोः।
बर्हिषदो ये स्वधया सुतस्य भजन्त पित्वस्त इहागमिष्ठाः॥ ३॥
बर्हिषदः पितर ऊत्यर्वागिमा वो हव्या चकृमा जुषध्वम्।
त आ गतावसा शंतमेनाऽथा नः शं योररपो दधात॥ ४॥
उपहूताः पितरः सोम्यासो बर्हिष्येषु निधिषु प्रियेषु।
त आ गमन्तु त इह श्रुवन्त्वधि ब्रुवन्तु तेऽवन्त्वस्मान्॥ ५॥

अथ अष्टादशो वर्गः॥ १८॥

आच्या जानु दक्षिणतो निषद्येमं यज्ञमभि गृणीत विश्वे।
मा हिंसिष्ट पितरः केन चिन्नो यद्व आगः पुरुषता करामं॥ ६॥
आसीनासो अरुणीनामुपस्थे रयिं धत्त दाशुषे मर्त्याय।
पुत्रेभ्यः पितरस्तस्य वस्वः प्र यच्छत त इहोर्जं दधात॥ ७॥
ये नः पूर्वे पितरः सोम्यासोऽनूहिरे सोमपीथं वसिष्ठाः।
तेभिर्यमः संरराणो हवींष्युशन्नुशद्भिः प्रतिकाममत्तु ॥ ८॥
ये तातृषुर्देवत्रा जेहमाना होत्राविदः स्तोमतष्टासो अर्कैः।
आग्ने याहि सुविदत्रेभिरर्वाङ् सत्यैः कव्यैः पितृभिर्घर्मसद्भिः॥ ९॥
ये सत्यासो हविरदो हविष्पा इन्द्रेण देवैः सरथं दधानाः।
आग्ने याहि सहस्रं देववन्दैः परैः पूर्वैः पितृभिर्घर्मसद्भिः॥ १०॥

अथ एकोनविंशो वर्गः॥ १९॥

अग्निष्वात्ताः पितर एह गच्छत सदःसदः सदत सुप्रणीतयः।
अत्ता हवींषि प्रयतानि बर्हिष्यथा रयिं सर्ववीरं दधातन॥ ११॥
त्वमग्न ईळितो जातवेदोऽवाड्ढव्यानि सुरभीणि कृत्वी।
प्रादाः पितृभ्यः स्वधया ते अक्षन्नद्धि त्वं देव प्रयता हवींषि॥ १२॥
ये चेह पितरो ये च नेह याँश्च विद्म याँ उ च न प्रविद्म।
त्वं वेत्थ यति ते जातवेदः स्वधाभिर्यज्ञं सुकृतं जुषस्व॥ १३॥
ये अग्निदग्धा ये अनग्निदग्धा मध्ये दिवः स्वधया मादयन्ते।
तेभिः स्वराळसुनीतिमेतां यथावशं तन्वं कल्पयस्व॥ १४॥

[१६] षोडशं सूक्तम्

ऋषिः—दमनो यामायनः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—१, ४, ७, ८ निचृत्त्रिष्टुप्; २, ५ विराट्त्रिष्टुप्; ३ भुरिक्त्रिष्टुप्; ६, ९ त्रिष्टुप्; १० स्वराट्त्रिष्टुप्; ११ अनुष्टुप्; १२ निचृदनुष्टुप्; १३, १४ विराडनुष्टुप्॥ स्वरः—१-१० धैवतः; ११-१४ गान्धारः॥

अथ विंशो वर्गः॥ २०॥

मैनमग्ने वि दहो माभि शोचो मास्य त्वचं चिक्षिपो मा शरीरम्।
यदा शृतं कृणवो जातवेदोऽथेमेनं प्र हिणुतात्पितृभ्यः॥ १॥
शृतं यदा करसि जातवेदोऽथेमेनं परि दत्तात्पितृभ्यः।
यदा गच्छात्यसुनीतिमेतामथा देवानां वशनीर्भवाति ॥ २॥
सूर्यं चक्षुर्गच्छतु वातमात्मा द्यां च गच्छ पृथिवीं च धर्मणा।
अपो वा गच्छ यदि तत्र ते हितमोषधीषु प्रति तिष्ठा शरीरैः॥ ३॥
अजो भागस्तपसा तं तपस्व तं ते शोचिस्तपतु तं ते अर्चिः।
यास्ते शिवास्तन्वो जातवेदस्ताभिर्वहैनं सुकृतामु लोकम्॥ ४॥
अवं सृज पुनरग्ने पितृभ्यो यस्त आहुतश्चरति स्वधाभिः।
आयुर्वसान उषसो वेतु शेषः सं गच्छतां तन्वा जातवेदः॥ ५॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अथ एकविंशो वर्गः ॥ २१ ॥

यत्ते कृष्णः शकुन आतुतोद पिपीलः सर्प उत वा श्वापदः।
अग्निष्टद्विश्वादगदं कृणोतु सोमश्च यो ब्राह्मणाँ आविवेश ॥ ६ ॥
अग्नेर्वर्म परि गोभिर्व्ययस्व सं प्रोर्णुष्व पीवसा मेदसा च।
नेत्त्वा धृष्णुर्हरसा जर्हृषाणो दधृग्विधक्ष्यन्पर्यङ्ङयाते ॥ ७ ॥
इमर्मग्ने चमसं मा वि जिह्वरः प्रियो देवानामुत सोम्यानाम् ।
एष यश्चमसो देवपानस्तस्मिन्देवा अमृता मादयन्ते ॥ ८ ॥
क्रव्यादमग्निं प्र हिणोमि दूरं यमराज्ञो गच्छतु रिप्रवाहः ।
इहैवायमितरो जातवेदा देवेभ्यो हव्यं वहतु प्रजानन् ॥ ९ ॥
यो अग्निः क्रव्यात्प्रविवेश वो गृहमिमं पश्यन्नितरं जातवेदसम्।
तं हरामि पितृयज्ञाय देवं स घर्ममिन्वात्परमे सधस्थे ॥ १० ॥

अथ द्वाविंशो वर्गः ॥ २२ ॥

यो अग्निः क्रव्यवाहनः पितृन्यक्षदृतावृधः।
प्रेदु हव्यानि वोचति देवेभ्यश्च पितृभ्य आ ॥ ११ ॥
उशन्तस्त्वा नि धीमह्युशन्तः समिधीमहि।
उशन्नुशत आ वह पितॄन्हविषे अत्तवे ॥ १२ ॥
यं त्वमग्ने समदहस्तमु निर्वपया पुनः।
कियाम्बत्र रोहतु पाकदूर्वा व्यल्कशा ॥ १३ ॥
शीतिके शीतिकावति ह्लादिके ह्लादिकावति।
मण्डूक्या३ सु सं गम इमं स्व१ग्निं हर्षय ॥ १४ ॥

द्वितीयोऽनुवाकः [१७] सप्तदशं सूक्तम्

ऋषिः—देवश्रवा यामायनः ॥ देवता—१, २ सरण्यूः; ३-६ पूषा; ७-९ सरस्वती; १०, १४ आपः; ११-१३ आपः सोमो वा ॥ छन्दः—१, ५, ८ विराट्त्रिष्टुप्; २, ६, १२ त्रिष्टुप्; ३, ४, ७, ९-११ निचृत्त्रिष्टुप्; १३ ककुम्मती-बृहती; १४ अनुष्टुप् ॥ स्वरः—१-१२ धैवतः; १३ मध्यमः; १४ गान्धारः ॥

अथ त्रयोविंशो वर्गः ॥ २३ ॥

त्वष्टा दुहित्रे वहतुं कृणोतीतीदं विश्वं भुवनं समेति।
यमस्य माता पर्युह्यमाना महो जाया विवस्वतो ननाश ॥ १ ॥
अपागूहन्नमृतां मर्त्येभ्यः कृत्वी सवर्णामददुर्विवस्वते।
उताश्विनावभरद्यत्तदासीदजहादु द्वा मिथुना सरण्यूः ॥ २ ॥

पूषा त्वेतश्च्यावयतु प्र विद्वाननष्टपशुर्भुवनस्य गोपाः।
स त्वैतेभ्यः परि ददत्पितृभ्योऽग्निर्देवेभ्यः सुविदत्रियेभ्यः ॥ ३ ॥
आयुर्विश्वायुः परि पासति त्वा पूषा त्वा पातु प्रपथे पुरस्तात्।
यत्रासते सुकृतो यत्र ते ययुस्तत्र त्वा देवः सविता दधातु ॥ ४ ॥
पूषेमा आशा अनु वेद सर्वाः सो अस्माँ अभयतमेन नेषत्।
स्वस्तिदा आघृणिः सर्ववीरोऽप्रयुच्छन्पुर एतु प्रजानन् ॥ ५ ॥

अथ चतुर्विंशो वर्गः ॥ २४ ॥

प्रपथे पथामजनिष्ट पूषा प्रपथे दिवः प्रपथे पृथिव्याः।
उभे अभि प्रियतमे सधस्थे आ च परा च चरति प्रजानन् ॥ ६ ॥
सरस्वतीं देवयन्तो हवन्ते सरस्वतीमध्वरे तायमाने।
सरस्वतीं सुकृतो अह्वयन्त सरस्वती दाशुषे वार्यं दात् ॥ ७ ॥
सरस्वति या सरथं ययाथ स्वधाभिर्देवि पितृभिर्मदन्ती।
आसद्यास्मिन्बर्हिषि मादयस्वाऽनमीवा इष आ धेह्यस्मे ॥ ८ ॥
सरस्वतीं यां पितरो हवन्ते दक्षिणा यज्ञमभिनक्षमाणाः।
सहस्रार्घमिळो अत्र भागं रायस्पोषं यजमानेषु धेहि ॥ ९ ॥
आपो अस्मान्मातरः शुन्धयन्तु घृतेन नो घृतप्वः पुनन्तु।
विश्वं हि रिप्रं प्रवहन्ति देवीरुदिदाभ्यः शुचिरा पूत एमि ॥ १० ॥

अथ पञ्चविंशो वर्गः ॥ २५ ॥

द्रप्सश्चस्कन्द प्रथमाँ अनु द्यूनिमं च योनिमनु यश्च पूर्वः।
समानं योनिमनु संचरन्तं द्रप्सं जुहोम्यनु सप्त होत्राः ॥ ११ ॥
यस्ते द्रप्सः स्कन्दति यस्ते अंशुर्बाहुच्युतो धिषणाया उपस्थात्।
अध्वर्योर्वा परि वा यः पवित्रात्तं ते जुहोमि मनसा वषट्कृतम् ॥ १२ ॥
यस्ते द्रप्सः स्कन्नो यस्ते अंशुरवश्च यः परः स्रुचा ।
अयं देवो बृहस्पतिः सं तं सिञ्चतु राधसे ॥ १३ ॥
पयस्वतीरोषधयः पयस्वन्मामकं वचः ।
अपां पयस्वदित्पयस्तेन मा सह शुन्धत ॥ १४ ॥

[१८] अष्टादशं सूक्तम्

ऋषिः—सङ्कुसुको यामायनः ॥ देवता—१-४ मृत्युः; ५ धाता; ६ त्वष्टा; ७-१०, ११-१३ पितृमेधः; १४ पितृमेधः प्रजापतिर्वा ॥ छन्दः—१, ५, ७-९ निचृत्त्रिष्टुप्; २-४, ६, १२, १३ त्रिष्टुप्; १० भुरिक्त्रिष्टुप्; ११ निचृत्पङ्क्तिः; १४ निचृदनुष्टुप् ॥ स्वरः—१-१०, १२, १३ धैवतः; ११ पञ्चमः; १४ गान्धारः ॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अथ षड्विंशो वर्गः ॥ २६ ॥

परं॑ मृत्यो॒ अनु॒ परे॑हि॒ पन्थां॒ यस्ते॒ स्व इतरो॑ देव॒यानात्।
चक्षु॑ष्मते शृण्व॒ते ते॑ ब्रवीमि॒ मा नः॑ प्र॒जां री॑रिषो॒ मोत वी॒रान्॥ १ ॥
मृ॒त्योः प॒दं यो॒पय॑न्तो॒ यदैत॒ द्राघी॑य॒ आयुः॑ प्रत॒रं दधा॑नाः।
आ॒प्याय॑मानाः प्र॒जया॒ धने॑न शु॒द्धाः पू॒ता भ॑वत यज्ञियासः॥ २ ॥
इ॒मे जी॒वा वि मृ॒तैराव॑वृत्र॒न्नभू॑द्भ॒द्रा दे॒वहू॑तिर्नो अ॒द्य।
प्राञ्चो॑ अगाम नृ॒तये॒ हसा॑य॒ द्राघी॑य॒ आयुः॑ प्रत॒रं दधा॑नाः॥ ३ ॥
इ॒मं जी॒वेभ्यः॑ परि॒धिं द॑धामि॒ मैषां॒ नु गा॒दप॑रो॒ अर्थ॑मे॒तम्।
श॒तं जी॑वन्तु श॒रदः॑ पुरू॒चीर॒न्तर्मृ॒त्युं द॑धतां॒ पर्व॑तेन॥ ४ ॥
यथाहा॑न्यनुपू॒र्वं भव॑न्ति॒ यथ॑ ऋ॒तव॑ ऋ॒तुभि॒र्यन्ति॑ सा॒धु।
यथा॒ न पूर्व॒मप॑रो॒ जहा॑त्ये॒वा धा॑त॒रायूं॑षि कल्पयै॒षाम्॥ ५ ॥

अथ सप्तविंशो वर्गः ॥ २७ ॥

आ रो॑ह॒तायु॑र्ज॒रसं॑ वृणा॒ना अ॑नुपू॒र्वं यत॑माना॒ यति॒ ष्ठ।
इ॒ह त्वष्टा॑ सु॒जनि॑मा स॒जोषा॑ दी॒र्घमायुः॑ करति जी॒वसे॑ वः॥ ६ ॥
इ॒मा नारी॑रविध॒वाः सु॒पत्नी॒राञ्ज॑नेन स॒र्पिषा॒ सं वि॑शन्तु।
अ॒न॒श्रवो॑ऽनमी॒वाः सु॒रत्ना॒ आ रो॑हन्तु॒ जन॑यो॒ योनि॒मग्रे॑॥ ७ ॥
उदी॑र्ष्व नार्य॒भि जी॑वलो॒कं ग॒तासु॑मे॒तमुप॑ शेष॒ एहि॑।
ह॒स्त॒ग्रा॒भस्य॑ दिधि॒षोस्तवे॒दं पत्यु॑र्जनि॒त्वम॒भि सं ब॑भूथ॥ ८ ॥
धनु॒र्हस्ता॑दा॒ददा॑नो मृ॒तस्या॒ऽस्मे क्ष॒त्राय॒ वर्च॑से॒ बला॑य।
अत्रै॒व त्वमि॒ह व॒यं सु॒वीरा॒ विश्वाः॒ स्पृधो॑ अ॒भिमा॑तीर्जयेम॥ ९ ॥
उप॑ सर्प मा॒तरं॒ भूमि॑मे॒तामु॑रु॒व्यच॑सं पृथि॒वीं सु॒शेवा॑म्।
ऊर्ण॑म्रदा युव॒तिर्दक्षि॑णावत ए॒षा त्वा॑ पातु॒ निर्ऋ॑तेरु॒पस्था॑त्॥ १० ॥

अथ अष्टाविंशो वर्गः ॥ २८ ॥

उच्छ्व॑ञ्चस्व पृथिवि॒ मा नि बा॑धथाः सूपाय॒नास्मै॑ भव सूपवञ्च॒ना।
मा॒ता पु॒त्रं यथा॑ सि॒चाभ्ये॑नं भूम ऊर्णुहि ॥ ११ ॥
उ॒च्छ्वञ्च॑माना पृथि॒वी सु ति॑ष्ठतु स॒हस्रं॒ मित॒ उप॒ हि श्रय॑न्ताम्।
ते गृ॒हासो॑ घृत॒श्चुतो॑ भवन्तु वि॒श्वाहा॑स्मै शर॒णाः स॒न्त्वत्र॑ ॥ १२ ॥
उत्ते॑ स्तभ्नामि पृथि॒वीं त्वत्परी॒मं लो॒गं नि॒दध॒न्मो अ॒हं रि॑षम्।
ए॒तां स्थूणां॑ पि॒तरो॑ धारयन्तु॒ तेऽत्रा॑ य॒मः साद॑ना ते मिनोतु ॥ १३ ॥
प्र॒ती॒ची॒ने॒ मामह॒नीष्वाः॑ प॒र्णमि॒वा द॑धुः।
प्र॒तीचीं॑ जग्रभा॒ वाच॒मश्वं॑ रश॒नया॑ यथा॥ १४ ॥

इति सप्तमाष्टके षष्ठोऽध्यायः ॥

अथ सप्तमो अध्यायः

[१९] एकोनविंशं सूक्तम्

ऋषिः—मथितो यामायनो भृगुर्वा वारुणिश्च्यवनो वा भार्गवः ॥ देवता—१[१], २-८ आपो गावो वा; १[२] अग्नीषोमौ ॥ छन्दः—१, ३-५ निचृदनुष्टुप्; २ विराडनुष्टुप्; ६ गायत्री; ७, ८ अनुष्टुप् ॥ स्वरः—१-५, ७, ८ गान्धारः; ६ षड्जः ॥

अथ प्रथमो वर्गः ॥ १ ॥

नि व॑र्तध्वं॒ मानु॑ गाता॒ऽस्मान्त्सि॑षक्त रेवतीः ।
अग्नी॑षोमा पुनर्वसू अ॒स्मे धा॑रयतं र॒यिम् ॥ १ ॥
पुन॑रेना॒ नि व॑र्तय॒ पुन॑रेना॒ न्या कु॑रु ।
इन्द्र॑ एणा॒ नि य॑च्छत्व॒ग्निरे॑ना उ॒पाज॑तु ॥ २ ॥
पुन॑रे॒ता नि व॑र्तन्ताम॒स्मिन्पु॑ष्यन्तु॒ गोप॑तौ ।
इ॒हैवाग्ने॒ नि धा॑रये॒ह ति॑ष्ठतु॒ या र॒यिः ॥ ३ ॥
यन्नि॒यानं॒ न्यय॑नं सं॒ज्ञानं॒ यत्प॒राय॑णम् ।
आ॒वर्त॑नं नि॒वर्त॑नं॒ यो गो॒पा अपि॒ तं हु॑वे ॥ ४ ॥
य उ॒दान॒ड् व्यय॑नं॒ य उ॒दान॑ट् प॒राय॑णम् ।
आ॒वर्त॑नं नि॒वर्त॑न॒मपि॑ गो॒पा नि व॑र्तताम् ॥ ५ ॥
आ नि॑वर्त॒ नि व॑र्तय॒ पुन॑र्न इन्द्र॒ गा दे॑हि ।
जी॒वाभि॑र्भुनजामहै ॥ ६ ॥
परि॑ वो वि॒श्वतो॑ दध ऊ॒र्जा घृ॒तेन॒ पय॑सा ।
ये दे॒वाः के च॑ य॒ज्ञिया॒स्ते र॒य्या सं सृ॑जन्तु नः ॥ ७ ॥
आ नि॑वर्तन वर्तय॒ नि नि॑वर्तन वर्तय ।
भूम्या॒श्चत॑स्रः प्र॒दिश॒स्ताभ्य॑ एना॒ नि व॑र्तय ॥ ८ ॥

[२०] विंशं सूक्तम्

ऋषिः—विमद ऐन्द्रः प्राजापत्यो वा वसुकृद्वा वासुक्रः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१ आसुरीत्रिष्टुप्; २, ९ अनुष्टुप्; ३ पादनिचृद्गायत्री; ४, ५, ७ निचृद्गायत्री; ६ गायत्री; ८ विराड्गायत्री; १० त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१, १० धैवतः; २, ९ गान्धारः; ३-८ षड्जः ॥

अथ द्वितीयो वर्गः ॥ २ ॥

भ॒द्रं नो॒ अपि॑ वातय॒ मनः॑ ॥ १ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अ॒ग्निमी॑ळे भु॒जां यवि॑ष्ठं शा॒सा मि॒त्रं दुर्धरी॑तुम्।
यस्य॒ धर्म॒न्त्स्व१॒॑रेनीः॑ सप॒र्यन्ति॑ मा॒तुरूधः॑ ॥ २ ॥
यमा॒सा कृ॒पनी॑ळं भा॒साके॑तुं व॒र्धय॑न्ति। भ्राज॑ते॒ श्रेणि॑दन् ॥ ३ ॥
अ॒र्यो वि॒शां गा॒तुरे॑ति॒ यदान॑ड् दि॒वो अन्ता॑न्। क॒विर॒भ्रं दीद्या॑नः ॥ ४ ॥
जु॒षद्ध॒व्या मानु॑षस्यो॒र्ध्वस्त॑स्था॒वृभ्वा॑ य॒ज्ञे। मि॒न्वन्त्सद्म॑ पु॒र ए॑ति ॥ ५ ॥
स हि क्षेमो॑ ह॒विर्य॒ज्ञः श्रु॒ष्टीद॑स्य गा॒तुरे॑ति। अ॒ग्निं दे॒वा वाशी॑मन्तम् ॥ ६ ॥

अथ तृतीयो वर्गः ॥ ३ ॥

य॒ज्ञा॒साहं॒ दुव॑ इषे॒ऽग्निं पूर्व॑स्य॒ शेव॑स्य। अद्रेः॑ सू॒नुमा॒युमा॑हुः ॥ ७ ॥
नरो॒ ये के चा॒स्मदा विश्वेत्ते वा॒म आ स्युः॑। अ॒ग्निं ह॒विषा॒ वर्ध॑न्तः ॥ ८ ॥
कृ॒ष्णः श्वे॒तो॑ऽरु॒षो यामो॑ अस्य ब्र॒ध्न ऋ॒ज्र उ॒त शोणो॒ यश॑स्वान्।
हिर॑ण्यरूपं॒ जनि॑ता जजान ॥ ९ ॥
ए॒वा ते॑ अग्ने विम॒दो म॑नी॒षामूर्जो॑ नपाद॒मृते॑भिः स॒जोषाः॑ ।
गिर॒ आ व॑क्षत्सुम॒तीरि॑या॒न इष॒मूर्जं॑ सुक्षि॒तिं विश्व॒माभाः॑ ॥ १० ॥

[२१] एकविंशं सूक्तम्

ऋषिः—विमद ऐन्द्रः प्राजापत्यो वा वसुकृद्वा वासुक्रः ॥ देवता—अग्निः ॥
छन्दः—१, ४, ८ निचृत्पङ्क्तिः; २ पादनिचृत्पङ्क्तिः; ३, ५, ७ विराट् पङ्क्तिः; ६ आर्चीपङ्क्तिः ॥ स्वरः—पञ्चमः ॥

अथ चतुर्थो वर्गः ॥ ४ ॥

आग्निं न स्ववृ॑क्तिभि॒र्होता॑रं त्वा वृणीमहे ।
य॒ज्ञाय॑ स्ती॒र्णब॑र्हिषे॒ वि वो॒ मदे॑ शी॒रं पा॑व॒कशो॑चिषं॒ विव॑क्षसे ॥ १ ॥
त्वामु॒ ते स्वा॒भुवः॑ शु॒म्भन्त्यश्व॑राधसः ।
वेति॒ त्वामु॑प॒सेच॑नी॒ वि वो॒ मद॒ ऋजी॑तिरग्न॒ आहु॑ति॒र्विव॑क्षसे ॥ २ ॥
त्वे ध॒र्माण॑ आसते जु॒हूभिः॑ सिञ्च॒तीरि॑व ।
कृ॒ष्णा रू॒पाण्यर्जु॑ना॒ वि वो॒ मदे॒ विश्वा॒ अधि॒ श्रियो॑ धिषे॒ विव॑क्षसे ॥ ३ ॥
यम॑ग्ने॒ मन्य॑से र॒यिं सह॑सावन्नमर्त्य ।
तमा नो॒ वाज॑सातये॒ वि वो॒ मदे॑ य॒ज्ञेषु॑ चि॒त्रमा भ॑रा॒ विव॑क्षसे ॥ ४ ॥
अ॒ग्निर्जा॒तो अथ॑र्वणा वि॒दद्विश्वा॑नि॒ काव्या॑ ।
भुव॑द्दू॒तो वि॒वस्व॑तो॒ वि वो॒ मदे॑ प्रि॒यो य॒मस्य॒ काम्यो॒ विव॑क्षसे ॥ ५ ॥

अथ पञ्चमो वर्गः ॥ ५ ॥

त्वां य॒ज्ञेष्वी॑ळ॒तेऽग्ने॑ प्रय॒त्य॑ध्व॒रे ।
त्वं वसू॑नि॒ काम्या॒ वि वो॒ मदे॒ विश्वा॑ दधासि दा॒शुषे॒ विव॑क्षसे ॥ ६ ॥
त्वां य॒ज्ञेष्वृ॒त्विजं॒ चारु॑मग्ने॒ नि षे॑दिरे ।
घृ॒तप्र॑तीकं॒ मनु॑षो॒ वि वो॒ मदे॑ शु॒क्रं चेति॑ष्ठम॒क्षभि॒र्विव॑क्षसे ॥ ७ ॥
अग्ने॑ शु॒क्रेण॑ शो॒चिषो॒रु प्र॑थयसे बृ॒हत् ।
अ॒भि॒क्रन्द॑न्वृषायसे॒ वि वो॒ मदे गर्भं॑ दधासि जा॒मिषु॒ विव॑क्षसे ॥ ८ ॥

[२२] द्वाविंशं सूक्तम्

ऋषिः—विमद ऐन्द्रः प्राजापत्यो वा वसुकृद्वा वासुक्रः ॥ देवता—इन्द्रः ॥
छन्दः—१, ४, ८, १०, १४ पादनिचृद्बृहती; ३, ११ विराड्बृहती; २, ६, १२, १३ निचृदनुष्टुप्; ५ पादनिचृदनुष्टुप्; ७ आर्च्यनुष्टुप्; ९ अनुष्टुप्; १५ निचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१, ३, ४, ८, १०, ११, १४ मध्यमः; २, ५-७, ९, १२, १३ गान्धारः; १५ धैवतः ॥

अथ षष्ठो वर्गः ॥ ६ ॥

कुह॑ श्रु॒त इन्द्रः॒ कस्मि॑न्न॒द्य जने॑ मि॒त्रो न श्रू॑यते ।
ऋषी॑णां वा॒ यः क्षये॒ गुहा॑ वा॒ चर्कृ॑षे गि॒रा ॥ १ ॥
इ॒ह श्रु॒त इन्द्रो॑ अ॒स्मे अ॒द्य स्तवे॑ व॒ज्र्यृची॑षमः ।
मि॒त्रो न यो जने॒ष्वा यश॑श्च॒क्रे असा॒म्या ॥ २ ॥
म॒हो यस्पतिः॒ शव॑सो॒ असा॒म्या म॒हो नृ॒म्णस्य॑ तूतु॒जिः ।
भ॒र्ता वज्र॑स्य धृ॒ष्णोः पि॒ता पु॒त्रमि॑व प्रि॒यम् ॥ ३ ॥
यु॒जा॒नो अश्वा॒ वात॑स्य॒ धुनी॑ दे॒वो दे॒वस्य॑ वज्रिवः ।
स्यन्ता॑ प॒था वि॒रुक्म॑ता सृजा॒नः स्तो॒ष्यध्व॑नः ॥ ४ ॥
त्वं त्या चि॒द्वात॒स्याश्वागा॑ ऋ॒ज्रा त्मना॒ वह॑ध्यै ।
ययो॑र्दे॒वो न मर्त्यो॑ य॒न्ता नकि॑र्वि॒दाय्यः॑ ॥ ५ ॥

अथ सप्तमो वर्गः ॥ ७ ॥

अध॒ ग्मन्तो॒शना॑ पृच्छते वां॒ कद॑र्था न॒ आ गृ॒हम् ।
आ ज॑ग्मथुः परा॒काद्दि॒वश्च॒ ग्मश्च॒ मर्त्य॑म् ॥ ६ ॥
आ न॑ इन्द्र पृक्षसे॒ऽस्माकं॒ ब्रह्मोद्य॑तम् ।
तत्त्वा॑ याचाम॒हेऽवः॒ शुष्णं॒ यद्धन्नमा॑नुषम् ॥ ७ ॥
अ॒क॒र्मा दस्यु॑र॒भि नो॑ अम॒न्तुर॒न्यव्र॑तो॒ अमा॑नुषः ।
त्वं तस्या॑मित्रह॒न्वध॑र्दा॒सस्य॑ दम्भय ॥ ८ ॥
त्वं न॑ इन्द्र शूर॒ शूरै॑रु॒त त्वोता॑सो ब॒र्हणा॑ ।
पु॒रु॒त्रा ते॒ वि पू॒र्तयो॒ नव॑न्त क्षो॒णयो॑ यथा ॥ ९ ॥
त्वं तान्वृ॑त्रहत्ये॑ चोदयो॒ नॄन्कार्पा॒णे शू॑र वज्रिवः ।
गुहा॒ यदी॑ कवी॒नां वि॒शां नक्ष॑त्रशवसाम् ॥ १० ॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अथ अष्टमो वर्गः ॥ ८ ॥

म॒क्षू ता त॑ इन्द्र दा॒नाप्न॑स आक्षा॒णे शू॑र वज्रिवः ।
यद्ध॒ शुष्ण॑स्य द॒म्भयो॑ जा॒तं विश्वं॑ स॒याव॑भिः ॥ ११ ॥
माकु॒ध्र्य॑गिन्द्र शूर॒ वस्वी॑र॒स्मे भू॑वन्न॒भिष्ट॑यः ।
व॒यंव॑यं तं आसां सु॒म्ने स्या॑म वज्रिवः ॥ १२ ॥
अ॒स्मे ता त॑ इन्द्र सन्तु स॒त्याऽहिं॑सन्तीरुप॒स्पृशः॑ ।
वि॒द्याम॒ यासां॒ भुजो॑ धेनू॒नां न व॑ज्रिवः ॥ १३ ॥
अ॒ह॒स्ता यद॒पदी॒ वर्ध॑त॒ क्षाः शची॑भिर्वे॒द्याना॑म् ।
शुष्णं॒ परि॑ प्रदक्षि॒णिद्वि॒श्वाय॑वे॒ नि शि॑श्नथः ॥ १४ ॥
पिबा॑पि॒बेदि॑न्द्र शूर॒ सोमं॒ मा रि॑षण्यो वसवान॒ वसुः॒ सन् ।
उ॒त त्रा॑यस्व गृण॒तो म॒घोनो॑ म॒हश्च॑ रा॒यो रे॒वत॑स्कृधी नः ॥ १५ ॥

[२३] त्रयोविंशं सूक्तम्

ऋषिः—विमद ऐन्द्रः प्राजापत्यो वा वसुकृद्वा वासुक्रः ॥ देवता—इन्द्रः ॥
छन्दः—१ विराट्त्रिष्टुप्; २, ४ आर्चीभुरिग्जगती; ३ निचृज्जगती;
५, ७ निचृत्त्रिष्टुप्; ६ आर्चीस्वराड्जगती ॥ स्वरः—१, ५,
७ धैवतः; २-४, ६ निषादः ॥

अथ नवमो वर्गः ॥ ९ ॥

यजा॑मह॒ इन्द्रं॒ वज्र॑दक्षिणं॒ हरी॑णां र॒थ्यं१॒॑ विव्र॑तानाम् ।
प्र श्मश्रु॒ दोधु॑वदू॒र्ध्वथा॑ भू॒द्वि सेना॑भि॒र्दय॑मानो॒ वि राध॑सा ॥ १ ॥
हरी॒ न्व॑स्य॒ या वने॑ वि॒दे वस्विन्द्रो॑ म॒घैर्म॒घवा॑ वृत्र॒हा भु॑वत् ।
ऋ॒भुर्वाज॑ ऋभु॒क्षाः प॑त्यते॒ शवोऽव॑ क्ष्णौमि॒ दास॑स्य॒ नाम॑ चित् ॥ २ ॥
य॒दा वज्रं॒ हिर॑ण्य॒मिदथा॒ रथं॒ हरी॒ यम॑स्य॒ वह॑तो॒ वि सू॒रिभिः॑ ।
आ ति॑ष्ठति म॒घवा॒ सन॑श्रुत॒ इन्द्रो॒ वाज॑स्य दी॒र्घश्र॑वस॒स्पतिः॑ ॥ ३ ॥
सो चि॒न्नु वृ॒ष्टिर्यू॒थ्या॒३॒॑ स्वा सचाँ॒ इन्द्रः॒ श्मश्रू॑णि॒ हरि॑ता॒भि प्रु॑ष्णुते ।
अव॑ वेति सु॒क्षयं॑ सु॒ते मधूदिद्धू॑नोति॒ वातो॒ यथा॒ वन॑म् ॥ ४ ॥
यो वा॒चा विवा॑चो मृ॒ध्रवा॑चः पु॒रू स॒हस्राशि॑वा ज॒घान॑ ।
तत्त॒दिद॑स्य॒ पौंस्यं॑ गृणीमसि पि॒तेव॒ यस्तवि॑षीं वावृ॒धे शवः॑ ॥ ५ ॥
स्तोमं॑ त इन्द्र विम॒दा अ॑जीजन॒न्नपू॑र्व्यं पुरु॒तमं॑ सु॒दान॑वे ।
वि॒द्मा ह्य॑स्य॒ भोज॑नमि॒नस्य॒ यदा प॒शुं न गो॒पाः क॑रामहे ॥ ६ ॥
माकि॑र्न ए॒ना स॒ख्या वि यौ॑षु॒स्तव॑ चेन्द्र विम॒दस्य॑ च॒ ऋषेः॑ ।
वि॒द्मा हि ते॒ प्रम॑तिं देव जामि॒वद॒स्मे ते॑ सन्तु स॒ख्या शि॒वानि॑ ॥ ७ ॥

[२४] चतुर्विंशं सूक्तम्

ऋषिः—विमद ऐन्द्रः प्राजापत्यो वा वसुकृद्वा वासुक्रः ॥ देवता—१-३ इन्द्रः;
४-६ अश्विनौ ॥ छन्दः—१ आस्तारपङ्क्तिः; २ आर्चीस्वराट्पङ्क्तिः;
३ शङ्कुमती पङ्क्तिः; ४, ६ अनुष्टुप्; ५ निचृदनुष्टुप् ॥
स्वरः—१-३ पञ्चमः; ४-६ गान्धारः ॥

अथ दशमो वर्गः ॥ १० ॥

इन्द्र॒ सोम॑मि॒मं पि॑ब॒ मधु॑मन्तं च॒मू सु॒तम् ।
अ॒स्मे र॒यिं नि धा॑रय॒ वि वो॒ मदे॑ सह॒स्रिणं॑ पुरूवसो॒ विव॑क्षसे ॥ १ ॥
त्वां य॒ज्ञेभि॑रु॒क्थैरुप॑ ह॒व्येभि॑रीमहे ।
शची॑पते शचीनां॒ वि वो॒ मदे॒ श्रेष्ठं॑ नो धेहि॒ वार्यं॒ विव॑क्षसे ॥ २ ॥
यस्पति॒र्वार्या॑णा॒मसि॑ र॒ध्रस्य॑ चोदि॒ता ।
इन्द्र॑ स्तोतॄ॒णाम॑वि॒ता वि वो॒ मदे॑ द्वि॒षो नः॑ पा॒ह्यंह॑सो॒ विव॑क्षसे ॥ ३ ॥
यु॒वं श॑क्रा माया॒विना॑ समी॒ची निर॑मन्थतम् ।
वि॒म॒देन॒ यदी॑ळि॒ता नास॑त्या नि॒रम॑न्थतम् ॥ ४ ॥
विश्वे॑ दे॒वा अ॑कृपन्त समी॒च्योर्नि॒ष्पत॑न्त्योः ।
नास॑त्यावब्रुवन्दे॒वाः पुन॒रा व॑हता॒दिति॑ ॥ ५ ॥
मधु॑मन्मे प॒राय॑णं॒ मधु॑म॒त्पुन॒राय॑नम् ।
ता नो॑ देवा दे॒वत॑या यु॒वं मधु॑मतस्कृतम् ॥ ६ ॥

[२५] पञ्चविंशं सूक्तम्

ऋषिः—विमद ऐन्द्रः प्राजापत्यो वा वसुकृद्वा वासुक्रः ॥ देवता—सोमः ॥
छन्दः—१, २, ६, १०, ११ आस्तारपङ्क्तिः; ३-५ आर्षीनिचृत्पङ्क्तिः;
७-९ आर्षीविराट्पङ्क्तिः ॥ स्वरः—पञ्चमः ॥

अथ एकादशो वर्गः ॥ ११ ॥

भ॒द्रं नो॒ अपि॑ वातय॒ मनो॒ दक्ष॑मु॒त क्रतु॑म् ।
अधा॑ ते स॒ख्ये अन्ध॑सो॒ वि वो॒ मदे॒ रण॒न्गावो॒ न यव॑से॒ विव॑क्षसे ॥ १ ॥
हृ॒दि॒स्पृश॑स्त आसते॒ विश्वे॑षु सोम॒ धाम॑सु ।
अधा॒ कामा॑ इ॒मे मम॒ वि वो॒ मदे॒ वि ति॑ष्ठन्ते वसू॒यवो॒ विव॑क्षसे ॥ २ ॥
उ॒त व्र॒तानि॑ सोम ते॒ प्राहं मि॑नामि पा॒क्या॑ ।
अधा॑ पि॒तेव॑ सू॒नवे॒ वि वो॒ मदे॑ मृ॒ळा नो॑ अ॒भि चि॑द्व॒धाद्विव॑क्षसे ॥ ३ ॥
समु॒ प्र य॑न्ति धी॒तयः॒ सर्गा॑सोऽव॒ताँइ॑व ।
क्रतुं॑ नः सोम जी॒वसे॒ वि वो॒ मदे॑ धा॒रया॑ चम॒साँइ॑व॒ विव॑क्षसे ॥ ४ ॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तव॒ त्ये सो॑म॒ शक्ति॑भि॒र्निका॑मासो॒ व्यृ॑ण्विरे ।
गृत्स॑स्य॒ धीरा॑स्त॒वसो॒ वि वो॒ मदे॑ व्र॒जं गोम॑न्तम॒श्विनं॒ विव॑क्षसे ॥ ५ ॥

अथ द्वादशो वर्गः ॥ १२ ॥

प॒शुं नः॑ सोम रक्षसि पुरु॒त्रा विष्ठि॑तं॒ जग॑त् ।
स॒माकृ॑णोषि जी॒वसे॒ वि वो॒ मदे॒ विश्वा॑ सं॒पश्य॒न्भुव॑ना॒ विव॑क्षसे ॥ ६ ॥
त्वं नः॑ सोम वि॒श्वतो॑ गो॒पा अदा॑भ्यो भव ।
सेध॑ राज॒न्नप॒ स्रिधो॒ वि वो॒ मदे॒ मा नो॑ दु॒ःशंस॑ ईशता॒ विव॑क्षसे ॥ ७ ॥
त्वं नः॑ सोम सु॒क्रतु॑र्वयो॒धेया॑य जागृहि ।
क्षे॒त्र॒वित्त॑रो॒ मनु॑षो॒ वि वो॒ मदे॑ द्रु॒हो नः॑ पा॒ह्यंह॑सो॒ विव॑क्षसे ॥ ८ ॥
त्वं नो॑ वृत्रहन्त॒मेन्द्र॑स्येन्दो शि॒वः सखा॑ ।
यत्सीं॒ हव॑न्ते समि॒थे वि वो॒ मदे॒ युध्य॑मानास्तो॒कसा॑तौ॒ विव॑क्षसे ॥ ९ ॥
अ॒यं घ॒ स तु॒रो मद॒ इन्द्र॑स्य वर्धत प्रि॒यः ।
अ॒यं क॒क्षीव॑तो म॒हो वि वो॒ मदे॑ म॒तिं विप्र॑स्य वर्धय॒द्विव॑क्षसे ॥ १० ॥
अ॒यं विप्रा॑य दा॒शुषे॒ वाजाँ॑ इयर्ति॒ गोम॑तः ।
अ॒यं स॒प्तभ्य॒ आ वरं॒ वि वो॒ मदे॒ प्रान्धं श्रो॒णं च॑ तारिष॒द्विव॑क्षसे ॥ ११ ॥

[२६] षड्विंशं सूक्तम्

ऋषिः—विमदः ऐन्द्रः प्राजापत्यो वा वसुकृद्वा वासुक्रः ॥ देवता—पूषा ॥
छन्दः—१ उष्णिक्; २ आर्चीस्वराडनुष्टुप्; ३ ककुम्मत्यनुष्टुप्; ४ आर्ची-निचृदुष्णिक्; ५-८ पादनिचृदनुष्टुप्; ९ आर्चीविराडनुष्टुप् ॥
स्वरः—१, ४ ऋषभः; २, ३, ५-९ गान्धारः ॥

अथ त्रयोदशो वर्गः ॥ १३ ॥

प्र ह्यच्छा॑ मनी॒षाः स्पा॒र्हा यन्ति॑ नि॒युतः॑ ।
प्र द॒स्रा नि॒युद्र॑थः पू॒षा अ॑विष्टु॒ माहि॑नः ॥ १ ॥
यस्य॒ त्यन्म॑हि॒त्वं वा॒ताप्य॑म॒यं जनः॑ ।
विप्र॒ आ वं॑सद्धी॒तिभि॒श्चिके॑त सुष्टुती॒नाम् ॥ २ ॥
स वे॑द सुष्टुती॒नामिन्दु॒र्न पू॒षा वृषा॑ ।
अ॒भि प्सुरः॑ प्रुषायति व्र॒जं न॒ आ प्रु॑षायति ॥ ३ ॥
मं॒सी॒महि॑ त्वा व॒यम॒स्माकं॑ देव पूषन् ।
म॒ती॒नां च॒ साध॑नं॒ विप्रा॑णां चाध॒वम् ॥ ४ ॥
प्रत्य॑र्धिर्य॒ज्ञाना॑मश्वह॒यो रथा॑नाम् ।
ऋषि॒ः स यो मनु॑र्हितो॒ विप्र॑स्य यावयत्स॒खः ॥ ५ ॥

अथ चतुर्दशो वर्गः ॥ १४ ॥

आ॒धीष॑माणाया॒ः पतिः॑ शु॒चाया॑श्च शु॒चस्य॑ च ।
वा॒सो॒वा॒योऽवी॑ना॒मा वासां॑सि॒ मर्मृ॑जत् ॥ ६ ॥
इ॒नो वाजा॑नां॒ पति॑रि॒नः पु॑ष्टी॒नां सखा॑ ।
प्र श्मश्रु॑ हर्य॒तो दू॑धो॒द्वि वृथा॒ यो अदा॑भ्यः ॥ ७ ॥
आ ते॒ रथ॑स्य पूषन्न॒जा धुरं॑ ववृत्युः ।
विश्व॑स्या॒र्थिनः॒ सखा॑ सनो॒जा अन॑पच्युतः ॥ ८ ॥
अ॒स्माक॑मू॒र्जा रथं॑ पू॒षा अ॑विष्टु॒ माहि॑नः ।
भुव॒द्वाजा॑नां वृ॒ध इ॒मं नः॑ शृणव॒द्धव॑म् ॥ ९ ॥

[२७] सप्तविंशं सूक्तम्

ऋषिः—वसुक्र ऐन्द्रः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१, ५, ८, १०, १४, २२ त्रिष्टुप्; २, ९, १६, १८ विराट्त्रिष्टुप्; ३, ४, ११, १२, १५, १९-२१, २३ निचृत्त्रिष्टुप्; ६, ७, १३, १७ पादनिचृत्त्रिष्टुप्; २४ भुरिक्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

अथ पञ्चदशो वर्गः ॥ १५ ॥

अस॒त्सु मे॑ जरितः॒ साभि॑वे॒गो यत्सु॑न्व॒ते यज॑मानाय॒ शिक्ष॑म् ।
अना॑शीर्दाम॒हम॑स्मि प्रह॒न्ता स॑त्य॒ध्वृतं॑ वृजिना॒यन्त॑मा॒भुम् ॥ १ ॥
यदीद॒हं यु॒धये॑ सं॒नया॒न्यदे॑वयून्त॒न्वा॒३॒॑ शूशु॑जानान् ।
अ॒मा ते॒ तुम्रं॑ वृष॒भं प॑चानि ती॒व्रं सु॒तं प॑ञ्चद॒शं नि षि॑ञ्चम् ॥ २ ॥
नाहं तं वे॑द॒ य इति॒ ब्रवी॒त्यदे॑वयून्त्स॒मर॑णे जघ॒न्वान् ।
य॒दावाख्य॑त्स॒मर॑ण॒मृघा॑व॒दादिद्ध॑ मे वृष॒भा प्र ब्रु॑वन्ति ॥ ३ ॥
यदज्ञा॑तेषु वृ॒जने॒ष्वासं॒ विश्वे॑ स॒तो म॒घवा॑नो म आसन् ।
जि॒नामि॒ वेत्क्षेम॒ आ सन्त॑मा॒भुं प्र तं क्षि॑णां॒ पर्व॑ते पाद॒गृह्य॑ ॥ ४ ॥
न वा उ॒ मां वृ॒जने॑ वारयन्ते॒ न पर्व॑तासो॒ यद॒हं म॑न॒स्ये ।
मम॑ स्व॒नात्कृ॑धु॒कर्णो॑ भयात ए॒वेदनु॒ द्यून्कि॒रणः॒ समे॑जात् ॥ ५ ॥

अथ षोडशो वर्गः ॥ १६ ॥

दर्श॒न्न्वत्र॑ शृत॒पाँ अ॑नि॒न्द्रान्बा॑हु॒क्षदः॒ शर॑वे॒ पत्य॑मानान् ।
घृषुं॑ वा॒ ये नि॑नि॒दुः सखा॑य॒मध्यू॒ न्वे॑षु प॒वयो॑ ववृत्युः ॥ ६ ॥
अभू॒र्वौक्षी॒र्व्यु१॒॑ आयु॑रान॒ड्दर्ष॒न्नु पूर्वो॒ अप॑रो॒ नु द॑र्षत् ।
द्वे प॒वस्ते॒ परि॒ तं न भू॑तो॒ यो अ॒स्य पा॒रे रज॑सो वि॒वेष॑ ॥ ७ ॥
गावो॒ यवं॒ प्रयु॑ता अ॒र्यो अ॑क्ष॒न्ता अ॑पश्यं स॒हगो॑पा॒श्चर॑न्तीः ।
हवा॒ इद॒र्यो अ॒भितः॒ समा॑य॒न्किय॑दासु॒ स्वप॑तिश्छन्दयाते ॥ ८ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

सं यद्वयं यवसादो जनानामहं यवाद उर्वन्ने अन्तः।
अत्रा युक्तोऽवसातारमिच्छादथो अर्युक्तं युनजद्ववन्वान्॥ ९॥
अत्रेदु मे मंससे सत्यमुक्तं द्विपाच्च यच्चतुष्पात्संसृजानि।
स्त्रीभिर्यो अत्र वृषणं पृतन्यादर्युब्दो अस्य वि भजानि वेदः॥ १०॥

अथ सप्तदशो वर्गः॥ १७॥

यस्यानक्षा दुहिता जात्वास कस्तां विद्वाँ अभि मन्याते अन्धाम्।
कतरो मेनिं प्रति तं मुचाते य ईं वहाते य ईं वा वरेयात्॥ ११॥
कियती योषा मर्यतो वधूयोः परिप्रीता पन्यसा वार्येण।
भद्रा वधूर्भवति यत्सुपेशाः स्वयं सा मित्रं वनुते जने चित्॥ १२॥
पत्तो जगार प्रत्यञ्चमत्ति शीर्ष्णा शिरः प्रति दधौ वरूथम्।
आसीन ऊर्ध्वामुपसि क्षिणाति न्यङ्ङुत्तानामन्वेति भूमिम्॥ १३॥
बृहन्नच्छायो अपलाशो अवीं तस्थौ माता विषितो अत्ति गर्भैः।
अन्यस्या वत्सं रिहती मिमाय कया भुवा नि दधे धेनुरूधः॥ १४॥
सप्त वीरासो अधरादुदायन्नष्टोत्तरात्तात्समजग्मिरन्ते।
नवं पश्चात्तित्थविमन्त आयुन्दश प्राक्सानु वि तिरन्त्यश्नैः॥ १५॥

अथ अष्टादशो वर्गः॥ १८॥

दशानामेकं कपिलं समानं तं हिन्वन्ति क्रतवे पायीय।
गर्भं माता सुधितं वक्षणास्ववेनन्तं तुषयन्ती बिभर्ति॥ १६॥
पीवानं मेषमपचन्त वीरा न्युप्ता अक्षा अनु दीव आसन्।
द्वा धनुं बृहतीमप्व्यन्तः पवित्रवन्ता चरतः पुनन्ता॥ १७॥
वि क्रोशनासो विष्वञ्च आयन्पचाति नेमो नहि पक्षदर्धः।
अयं मे देवः सविता तदाह द्रवन्न इद्धनवत्सपिरेन्नः॥ १८॥
अपश्यं ग्रामं वहमानमारादचक्रया स्वधया वर्तमानम्।
सिषक्त्यूर्ध्वः प्र युगा जनानां सद्यः शिश्ना प्रमिनानो नवीयान्॥ १९॥
एतौ मे गावौ प्रमरस्य युक्तौ मो षु प्र सेधीर्मुहुरिन्ममन्धि।
आपश्चिदस्य वि नशन्त्यर्थं सूरश्च मर्क उपरो बभूवान्॥ २०॥

अथ एकोनविंशो वर्गः॥ १९॥

अयं यो वज्रः पुरुधा विवृत्तोऽवः सूर्यस्य बृहतः पुरीषात्।
श्रव इदेना परो अन्यदस्ति तदव्यथी जरिमाणस्तरन्ति॥ २१॥
वृक्षेवृक्षे नियता मीमयद्गौस्ततो वयः प्र पतान्पूरुषादः।
अथेदं विश्वं भुवनं भयात इन्द्राय सुन्वदृषये च शिक्षत्॥ २२॥
देवानां माने प्रथमा अतिष्ठन्कृन्तत्रादेषामुपरा उदायन्।
त्रयस्तपन्ति पृथिवीमनूपा द्वा बृबूकं वहतः पुरीषम्॥ २३॥
सा ते जीवातुरुत तस्य विद्धि मा स्मैतादृगपगूहः समर्ये।
आविः स्वः कृणुते गूहते बुसं स पादुरस्य निर्णिजो न मुच्यते॥ २४॥

[२८] अष्टाविंशं सूक्तम्

ऋषिः—इन्द्रवसुक्रयोः संवाद ऐन्द्रः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१, २, ७, ८, १२ निचृत्त्रिष्टुप्; ३, ६ त्रिष्टुप्; ४, ५, १० विराट्त्रिष्टुप्; ९, ११ पादनिचृत्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः॥

अथ विंशो वर्गः॥ २०॥

विश्वो ह्यन्यो अरिराजगाम ममेदह श्वशुरो ना जगाम।
जक्षीयाद्धाना उत सोमं पपीयात्स्वाशितः पुनरस्तं जगायात्॥ १॥
स रोरुवद् वृषभस्तिग्मशृङ्गो वर्ष्मन्तस्थौ वरिमन्ना पृथिव्याः।
विश्वेष्वेनं वृजनेषु पामि यो मे कुक्षी सुतसोमः पृणाति॥ २॥
अद्रिणा ते मन्दिन इन्द्र तूयान्त्सुन्वन्ति सोमान्पिबसि त्वमेषाम्।
पचन्ति ते वृषभाँ अत्सि तेषां पृक्षेण यन्मघवन्हूयमानः॥ ३॥
इदं सु मे जरितरा चिकिद्धि प्रतीपं शापं नद्यो वहन्ति।
लोपाशः सिंहं प्रत्यञ्चमत्साः क्रोष्टा वराहं निरतक्त कक्षात्॥ ४॥
कथा त एतदहमा चिकेतं गृत्सस्य पाकस्तवसो मनीषाम्।
त्वं नो विद्वाँ ऋतुथा वि वोचो यमधं ते मघवन्क्षेम्या धूः॥ ५॥
एवा हि मां तवसं वर्धयन्ति दिवश्चिन्मे बृहत उत्तरा धूः।
पुरू सहस्रा नि शिशामि साकमशत्रुं हि मा जनिता जजान॥ ६॥

अथ एकविंशो वर्गः॥ २१॥

एवा हि मां तवसं जज्ञुरुग्रं कर्मन्कर्मन्वृषणमिन्द्र देवाः।
वधीं वृत्रं वज्रेण मन्दसानोऽप व्रजं महिना दाशुषे वम्॥ ७॥
देवासः आयन्परशूँरबिभ्रन्वना वृश्चन्तो अभि विड्भिरायन्।
नि सुद्रवं दधतो वक्षणासु यत्रा कृपीटमनु तद्दहन्ति॥ ८॥
शशः क्षुरं प्रत्यञ्चं जगाराद्रिं लोगेन व्यभेदमारात्।
बृहन्तं चिद्बृहते रन्धयानि वयद्वत्सो वृषभं शूशुवानः॥ ९॥
सुपर्ण इत्था नखमा सिषायावरुद्धः परिपदं न सिंहः।
निरुद्धश्चिन्महिषस्तर्ष्यावान्गोधा तस्मा अयथं कर्षदेतत्॥ १०॥
तेभ्यो गोधा अयथं कर्षदेतद्ये ब्रह्मणः प्रतिपीयन्त्यन्नैः।
सिमं उष्णीऽवसृष्टं अदन्ति स्वयं बलानि तन्वः शृणानाः॥ ११॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

एते शर्मीभिः सुशर्मा अभूवन्ये हिंन्विरे तन्वः सोमं उक्थैः ।
नृवद्वदन्नुप नो माहि वाजान्दिवि श्रवो दधिषे नाम वीरः ॥ १२ ॥

[२९] एकोनत्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—वसुक्रः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१, ५, ७ विराट्त्रिष्टुप्; २, ४, ६ निचृत्त्रिष्टुप्; ३, ८ पादनिचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

अथ द्वाविंशो वर्गः ॥ २२ ॥

वने न वा यो न्यधायि चाकञ्छुचिर्वां स्तोमो भुरणावजीगः ।
यस्येदिन्द्रः पुरुदिनेषु होता नृणां नर्यो नृतमः क्षपावान् ॥ १ ॥
प्र तै अस्या उषसः प्रापरस्या नृतौ स्याम नृतमस्य नृणाम् ।
अनु त्रिशोकः शतमावहन्रन्क्तुर्सेन रथो यो असत्सस्वान् ॥ २ ॥
कस्ते मद इन्द्र रन्त्यो भूद्वरो गिरो अभ्युग्रो वि धाव ।
कद्वाहो अर्वागुप मा मनीषा आ त्वा शक्यामुपमं राधो अन्नैः ॥ ३ ॥
कदु द्युम्नमिन्द्र त्वावतो नृन्कया धिया करसे कन्न आगन् ।
मित्रो न सत्य उरुगाय भूत्या अन्ने समस्य यदसन्मनीषाः ॥ ४ ॥
प्रेरय सूरो अर्थं न पारं ये अस्य कामं जनिधाइव ग्मन् ।
गिरश्च ये ते तुविजात पूर्वीर्नरं इन्द्र प्रतिशिक्षन्त्यन्नैः ॥ ५ ॥

अथ त्रयोविंशो वर्गः ॥ २३ ॥

मात्रे नु ते सुमिते इन्द्र पूर्वी द्यौर्मन्मना पृथिवी काव्येन ।
वराय ते घृतवन्तः सुतासः स्वाद्वन्भवन्तु पीतये मधूनि ॥ ६ ॥
आ मध्वो अस्मा असिचन्नमत्रमिन्द्राय पूर्णं स सत्यराधाः ।
स वावृधे वरिमन्ना पृथिव्या अभि क्रत्वा नर्यः पौंस्यैश्च ॥ ७ ॥
व्यानळिन्द्रः पृतनाः स्वोजा आस्मै यतन्ते सख्याय पूर्वीः ।
आ स्मा रथं न पृतनासु तिष्ठ यं भद्रया सुमत्या चोदयासे ॥ ८ ॥

तृतीयोऽनुवाकः [३०] त्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—कवष ऐलूषः ॥ देवता—आप अपान्नपाद्वा ॥ छन्दः—१, ३, ९, ११, १२, १५ निचृत्त्रिष्टुप्; २, ४, ६, ८, १४ विराट्त्रिष्टुप्; ५, ७, १०, १३ त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

अथ चतुर्विंशो वर्गः ॥ २४ ॥

प्र देवत्रा ब्रह्मणे गातुरेत्वपो अच्छा मनसो न प्रयुक्ति ।
महीं मित्रस्य वरुणस्य धासिं पृथुज्रयसे रीरधा सुवृक्तिम् ॥ १ ॥
अध्वर्यवो हविष्मन्तो हि भूताऽच्छापं इतोशतीरुशन्तः ।
अव याश्चष्टे अरुणः सुपर्णस्तमास्यध्वमूर्मिमद्या सुहस्ताः ॥ २ ॥
अध्वर्यवोऽप इता समुद्रमपां नपातं हविषा यजध्वम् ।
स वो दददूर्मिमद्या सुपूतं तस्मै सोमं मधुमन्तं सुनोत ॥ ३ ॥
यो अग्निध्मो दीदयदप्स्वन्तर्यं विप्रास ईळते अध्वरेषु ।
अपां नपान्मधुमतीरपो दा याभिरिन्द्रो वावृधे वीर्याय ॥ ४ ॥
याभिः सोमो मोदते हर्षते च कल्याणीभिर्युवतिभिर्न मर्यः ।
ता अध्वर्यो अपो अच्छा परेहि यदासिञ्चा ओषधीभिः पुनीतात् ॥ ५ ॥

अथ पञ्चविंशो वर्गः ॥ २५ ॥

एवेद्यूने युवतयो नमन्त यदीमुशन्नुशतीरेत्यच्छ ।
सं जानते मनसा सं चिकित्रेऽध्वर्यवो धिषणापश्च देवीः ॥ ६ ॥
यो वो वृताभ्यो अकृणोदु लोकं यो वो मह्या अभिशस्तेरमुञ्चत् ।
तस्मा इन्द्राय मधुमन्तमूर्मिं देवमादनं प्र हिणोतनापः ॥ ७ ॥
प्रास्मै हिनोत मधुमन्तमूर्मिं गर्भो यो वः सिन्धवो मध्व उत्सः ।
घृतपृष्ठमीड्यमध्वरेष्वापो रेवतीः शृणुता हवं मे ॥ ८ ॥
तं सिन्धवो मत्सरमिन्द्रपानमूर्मिं प्र हैत य उभे इयर्ति ।
मदच्युतमौशानं नभोजां परि व्रितन्तुं विचरन्तमुत्सम् ॥ ९ ॥
आववृत्तद्धरध नु द्विधारा गोषुयुधो न नियवं चरन्तीः ।
ऋषे जनित्रीर्भुवनस्य पत्नीरपो वन्दस्व सवृधः सयोनीः ॥ १० ॥

अथ षड्विंशो वर्गः ॥ २६ ॥

हिनोता नो अध्वरं देवयज्या हिनोत ब्रह्म सनये धनानाम् ।
ऋतस्य योगे वि ष्यध्वमूधः श्रुष्टीवरीर्भूतनास्मभ्यमापः ॥ ११ ॥
आपो रेवतीः क्षयथा हि वस्वः क्रतुं च भद्रं बिभृथामृतं च ।
रायश्च स्थ स्वपत्यस्य पत्नीः सरस्वती तद् गृणते वयो धात् ॥ १२ ॥
प्रति यदापो अदृश्रमायतीर्घृतं पयांसि बिभ्रतीर्मधूनि ।
अध्वर्युभिर्मनसा संविदाना इन्द्राय सोमं सुषुतं भरन्तीः ॥ १३ ॥
एमा अग्मन्रेवतीर्जीवधन्या अध्वर्यवः सादयता सखायः ।
नि बर्हिषि धत्तन सोम्यासोऽपां नप्त्रा संविदानास एनाः ॥ १४ ॥
आग्मन्नापः उशतीर्बर्हिरेदं न्यध्वरे असदन्देवयन्तीः ।
अधत्तेन्द्रो अमृतं वसूनां सुतेन्द्राय सोममपृदु वः सुशकाः देवयज्या ॥ १५ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

[३१] एकत्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—कवष ऐलूषः ॥ देवता—विश्वे देवाः ॥ छन्दः—१, ८ निचृत्त्रिष्टुप्; २, ४, ५, ७, ११ त्रिष्टुप्; ३, १० विराट्त्रिष्टुप्; ६ पादनिचृत्त्रिष्टुप्; ९ आर्चीस्वराट्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

अथ सप्तविंशो वर्गः ॥ २७ ॥

आ नो॑ दे॒वाना॒मुप॑ वेतु॒ शंसो॒ विश्वे॑भिस्तु॒रैरव॑से॒ यज॑त्रः।
तेभि॑र्व॒यं सु॑ष॒खायो॑ भवेम॒ तर॑न्तो॒ विश्वा॑ दुरि॒ता स्या॑म ॥ १ ॥
परि॑ चि॒न्मर्तो॒ द्रवि॑णं ममन्यादृ॒तस्य॑ प॒था नम॒सा वि॑वासेत्।
उ॒त स्वेन॒ क्रतु॑ना॒ सं व॑देत॒ श्रेयां॑सं॒ दक्षं॒ मन॑सा जगृभ्यात् ॥ २ ॥
अधा॑यि धी॒तिरस॑सृग्र॒मंशा॑स्ती॒र्थे न द॒स्ममुप॑ य॒न्त्यूमाः॑ ।
अ॒भ्या॑नश्म सुवि॒तस्य॑ शू॒षं नवे॑दसो अ॒मृता॑नामभूम ॥ ३ ॥
नित्य॑श्चाकन्या॒त्स्वप॑ति॒र्दमू॑ना॒ यस्मा॑ उ दे॒वः स॑वि॒ता ज॒जान॑।
भगो॑ वा॒ गोभि॑रर्य॒मेम॑नज्या॒त्सो अ॑स्मै॒ चारु॑श्छदयदु॒त स्या॑त् ॥ ४ ॥
इ॒यं सा भू॑या उ॒षसा॑मिव॒ क्षा यद्ध॑ क्षु॒मन्तः॒ शव॑सा स॒माय॑न्।
अ॒स्य स्तु॒तिं ज॑रि॒तुर्भिक्ष॑माणा॒ आ नः॑ श॒ग्मास॒ उप॑ यन्तु॒ वाजाः॑ ॥ ५ ॥

अथ अष्टाविंशो वर्गः ॥ २८ ॥

अ॒स्येदे॒षा सु॑म॒तिः प॑प्रथा॒नाऽभ॑वत्पू॒र्व्या भूम॑ना॒ गौः।
अ॒स्य सनी॑ळा॒ असु॑रस्य॒ योनौ॑ समा॒न आ भर॑णे॒ बिभ्र॑माणाः ॥ ६ ॥
किं स्वि॒द्वनं॒ क उ॒ स वृ॒क्ष आ॑स॒ यतो॒ द्यावा॑पृथि॒वी नि॑ष्टत॒क्षुः।
सं॒त॒स्था॒ने अ॒जरे॑ इ॒तऊ॑ती॒ अहा॑नि पू॒र्वीरु॒षसो॑ जरन्त ॥ ७ ॥
नैताव॑दे॒ना प॒रो अ॒न्यद॑स्त्यु॒क्षा स द्यावा॑पृथि॒वी बि॑भर्ति।
त्वचं॑ प॒वित्रं॑ कृणुत स्व॒धावा॒न्यदीं॒ सूर्यं॒ न ह॒रितो॒ वह॑न्ति ॥ ८ ॥
स्ते॒गो न क्षामत्ये॑ति पृ॒थ्वीं मिहं॒ न वातो॒ वि ह॑ वाति॒ भूम॑।
मि॒त्रो यत्र॒ वरु॑णो अ॒ज्यमा॑नो॒ऽग्निर्वने॒ न व्यसृ॑ष्ट॒ शोक॑म् ॥ ९ ॥
स्त॒रीर्यत्सूत॑ स॒द्यो अ॒ज्यमा॑ना॒ व्यथि॑रव्य॒थीः कृ॑णुत॒ स्वगो॑पा।
पु॒त्रो यत्पूर्वः॑ पि॒त्रोर्जनि॑ष्ट श॒म्यां गौर्ज॑गार॒ यद्ध॑ पृ॒च्छान् ॥ १० ॥
उ॒त कण्वं॑ नृ॒षदः॑ पु॒त्रमा॑हुरु॒त श्या॒वो धन॒माद॑त्त वा॒जी।
प्र कृ॒ष्णाय॒ रुश॑दपिन्व॒तोध॑र्ऋ॒तमत्र॒ नकि॑रस्मा अपीपेत् ॥ ११ ॥

[३२] द्वात्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—कवष ऐलूषः ॥ देवता—विश्वे देवाः ॥ छन्दः—१, २ विराड्जगती; ३ निचृत् जगती; ४ पादनिचृज्जगती; ५ आर्चीभुरिग्जगती; ६ त्रिष्टुप्; ७ आर्चीस्वराट्त्रिष्टुप्; ८, ९ निचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१-५ निषादः; ६-९ धैवतः ॥

अथ एकोनत्रिंशो वर्गः ॥ २९ ॥

प्र सु ग्मन्ता॑ धियसा॒नस्य॑ स॒क्षणि॑ व॒रेभि॑र्व॒राँ अ॒भि षु प्र॒सीद॑तः।
अ॒स्माक॒मिन्द्र॑ उ॒भयं॑ जुजोषति॒ यत्सो॒म्यस्यान्ध॑सो॒ बुबो॑धति ॥ १ ॥
वी॑न्द्र यासि दि॒व्यानि॑ रोच॒ना वि पार्थि॑वानि॒ रज॑सा पुरुष्टुत।
ये त्वा॒ वह॑न्ति॒ मुहु॑रध्व॒राँ उप॒ ते सु व॑न्वन्तु वग्व॒नाँ अ॑रा॒धसः॑ ॥ २ ॥
तदिन्मे॑ छन्त्स॒द्वपु॑षो॒ वपु॑ष्टरं पु॒त्रो यज्जानं॑ पि॒त्रोर॒धीय॑ति।
जा॒या पतिं॑ वहति व॒ग्नुना॑ सु॒मत्पुं॒स इद्भ॒द्रो व॑ह॒तुः परि॑ष्कृतः ॥ ३ ॥
तदित्स॒धस्थ॑म॒भि चारु॑ दीधय॒ गावो॒ यच्छास॑न्वह॒तुं न धे॒नवः॑।
मा॒ता यन्मन्तु॑र्यू॒थस्य॑ पू॒र्व्याभि वा॒णस्य॑ स॒प्तधा॑तु॒रिज्जनः॑ ॥ ४ ॥
प्र वोऽच्छा॑ रिरिचे देव॒युष्प॒दमेको॑ रु॒द्रेभि॑र्याति तु॒र्वणिः॑।
ज॒रा वा॒ येष्व॒मृते॑षु दा॒वने॒ परि॑ व॒ ऊमे॑भ्यः सिञ्चता॒ मधु॑ ॥ ५ ॥

अथ त्रिंशो वर्ग ॥ ३० ॥

नि॒धी॒यमा॑न॒मप॑गूळ्हम॒प्सु प्र मे॑ दे॒वानां॑ व्रत॒पा उ॑वाच ।
इन्द्रो॑ वि॒द्वाँ अनु॒ हि त्वा॑ च॒चक्ष॒ तेना॒हम॑ग्ने॒ अनु॑शिष्ट॒ आगा॑म् ॥ ६ ॥
अक्षे॑त्रवित्क्षेत्र॒विदं॒ ह्यप्रा॒ट् स प्रैति॑ क्षेत्र॒विदानु॑शिष्टः ।
ए॒तद्वै भ॒द्रम॑नु॒शास॑नस्यो॒त स्तु॒तिं वि॑न्दत्यञ्ज॒सीना॑म् ॥ ७ ॥
अ॒द्येदु॒ प्राणी॒दम॑मन्नि॒माहापी॑वृतो अधयन्मा॒तुरूधः॑ ।
एमे॑नमाप जरि॒मा युवा॑न॒महे॑ळ॒न्वसुः॑ सु॒मना॑ बभूव ॥ ८ ॥
ए॒तानि॑ भ॒द्रा क॑लश क्रियाम॒ कुरु॑श्रवण॒ दद॑तो म॒घानि॑।
दा॒न इद्वो॑ मघवानः॒ सो अ॑स्त्व॒यं च॒ सोमो॑ हृ॒दि यं बिभ॑र्मि ॥ ९ ॥

इति सप्तमाष्टके सप्तमोऽध्यायः ॥

अथाष्टमोऽध्यायः

[३३] त्रयस्त्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—कवष ऐलूषः ॥ देवता—१ विश्वे देवाः; २, ३ इन्द्रः; ४, ५ कुरुश्रवणस्य त्रासदस्यवस्य दानस्तुतिः; ६-९ उपमश्रवा मित्रातिथिपुत्राः ॥ छन्दः—१ त्रिष्टुप्; २ निचृद्बृहती; ३ भुरिग्बृहती; ४-७, ९ गायत्री; ८ पादनिचृद्गायत्री ॥ स्वरः—१ धैवतः; २, ३ मध्यमः; ४-९ षड्जः ॥

अथ प्रथमो वर्गः ॥ १ ॥

प्र मा॑ युयुज्रे प्र॒युजो॒ जना॑नां॒ वहा॑मि स्म पू॒षण॒मन्त॑रेण।
विश्वे॑ दे॒वासो॒ अध॒ माम॑रक्षन्दुः॒शासु॒रागा॒दिति॒ घोष॑ आसीत् ॥ १ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सं मा तपन्त्यभितः सपत्नीरिव पर्शवः ।
नि बाधते अमतिर्न्ग्नता जसुर्वेर्न वेवीयते मतिः ॥ २ ॥
मूषो न शिश्ना व्यदन्ति माध्यः स्तोतारं ते शतक्रतो ।
सकृत्सु नो मघवन्निन्द्र मृळयाधा पितेव नो भव ॥ ३ ॥
कुरुश्रवणमावृणि राजानं त्रासदस्यवम् ।
मंहिष्ठं वाघतामृषिः ॥ ४ ॥
यस्य मा हरितो रथे तिस्रो वहन्ति साधुया ।
स्तवै सहस्रदक्षिणे ॥ ५ ॥

अथ द्वितीयो वर्गः ॥ २ ॥

यस्य प्रस्वादसो गिरं उपमश्रवसः पितुः । क्षेत्रं न रण्वमूचुषे ॥ ६ ॥
अधि पुत्रोपमश्रवो नपान्मित्रातिथेरिहि । पितुष्टे अस्मि वन्दिता ॥ ७ ॥
यदीशीयामृतानामुत वा मर्त्यानाम् । जीवेदिन्मघवा मम ॥ ८ ॥
न देवानामति व्रतं शतात्मा चन जीवति । तथा युजा वि वावृते ॥ ९ ॥

[३४] चतुस्त्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—कवष ऐलूष अक्षो वा मौजवान् ॥ देवता—१, ७, ९, १२, १३ अक्षकृषिप्रशंसा; २-६, ८, १०, ११, १४ अक्षकितवनिन्दा ॥ छन्दः—१, २, ८, १२, १३ त्रिष्टुप्; ३, ६, ११, १४ निचृत्त्रिष्टुप्; ४, ५, ९, १० विराट्त्रिष्टुप्; ७ जगती ॥ स्वरः—१-६, ८-१४ धैवतः; ७ निषादः ॥

अथ तृतीयो वर्गः ॥ ३ ॥

प्रावेपा मा बृहतो मादयन्ति प्रवातेजा इरिणे ववृतानाः ।
सोमस्येव मौजवतस्य भक्षो विभीदको जागृविर्मह्यमच्छान् ॥ १ ॥
न मा मिमेथ न जिहीळ एषा शिवा सखिभ्य उत मह्यमासीत् ।
अक्षस्याहमेकपरस्य हेतोरनुव्रतामप जायामरोधम् ॥ २ ॥
द्वेष्टि श्वश्रूरप जाया रुणद्धि न नाथितो विन्दते मर्डितारम् ।
अश्वस्येव जरतो वस्न्यस्य नाहं विन्दामि कितवस्य भोगम् ॥ ३ ॥
अन्ये जायां परि मृशन्त्यस्य यस्यागृधद्वेदने वाज्यक्षः ।
पिता माता भ्रातर एनमाहुर्न जानीमो नयता बद्धमेतम् ॥ ४ ॥
यदादीध्ये न दविषाण्येभिः परायद्भ्योऽव हीये सखिभ्यः ।
न्युप्ताश्च बभ्रवो वाचमक्रतेमीदेषां निष्कृतं जारिणीव ॥ ५ ॥

अथ चतुर्थो वर्गः ॥ ४ ॥

सभामेति कितवः पृच्छमानो जेष्यामीति तन्वा शूशुजानः ।
अक्षासो अस्य वि तिरन्ति कामं प्रतिदीव्ने दधत आ कृतानि ॥ ६ ॥
अक्षास इदङ्कुशिनो नितोदिनो निकृत्वानस्तपनास्तापयिष्णवः ।
कुमारदेष्णा जयतः पुनर्हणो मध्वा संपृक्ताः कितवस्य बर्हणा ॥ ७ ॥
त्रिपञ्चाशः क्रीळति व्रात एषां देवइव सविता सत्यधर्मा ।
उग्रस्य चिन्मन्यवे ना नमन्ते राजा चिदेभ्यो नम इत्कृणोति ॥ ८ ॥
नीचा वर्तन्त उपरि स्फुरन्त्यहस्तासो हस्तवन्तं सहन्ते ।
दिव्या अङ्गारा इरिणे न्युप्ताः शीताः सन्तो हृदयं निर्दहन्ति ॥ ९ ॥
जाया तप्यते कितवस्य हीना माता पुत्रस्य चरतः क्व स्वित् ।
ऋणावा बिभ्यद्धनमिच्छमानोऽन्येषामस्तमुप नक्तमेति ॥ १० ॥

अथ पञ्चमो वर्गः ॥ ५ ॥

स्त्रियं दृष्ट्वाय कितवं ततापान्येषां जायां सुकृतं च योनिम् ।
पूर्वाह्णे अश्वान्युयुजे हि बभ्रून्त्सो अग्नेरन्ते वृषलः पपाद ॥ ११ ॥
यो वः सेनानीर्महतो गणस्य राजा व्रातस्य प्रथमो बभूव ।
तस्मै कृणोमि न धना रुणध्मि दशाहं प्राचीस्तदृतं वदामि ॥ १२ ॥
अक्षैर्मा दीव्यः कृषिमित्कृषस्व वित्ते रमस्व बहु मन्यमानः ।
तत्र गावः कितव तत्र जाया तन्मे वि चष्टे सवितायमर्यः ॥ १३ ॥
मित्रं कृणुध्वं खलु मृळता नो मा नो घोरेण चरताभि धृष्णु ।
नि वो नु मन्युर्विशतामरातिरन्यो बभ्रूणां प्रसितौ न्वस्तु ॥ १४ ॥

[३५] पञ्चत्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—लुशो धानाकः ॥ देवता—विश्वे देवाः ॥ छन्दः—१, ६, ९, ११ विराड्जगती; २ भुरिग्जगती; ३, ७, १०, १२ पादनिचृज्जगती; ४, ८ आर्चीस्वराड्जगती; ५ आर्चीभुरिग्जगती; १३ निचृत्त्रिष्टुप्; १४ विराट्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१-१२ निषादः; १३, १४ धैवतः ॥

अथ षष्ठो वर्गः ॥ ६ ॥

अबुध्रमु त्य इन्द्रवन्तो अग्नयो ज्योतिर्भरन्त उषसो व्युष्टिषु ।
मही द्यावापृथिवी चेततामपोऽद्या देवानामव आ वृणीमहे ॥ १ ॥
दिवस्पृथिव्योरव आ वृणीमहे मातृन्त्सिन्धून्पर्वताञ्छर्यणावतः ।
अनागास्त्वं सूर्यमुषासमीमहे भद्रं सोमः सुवानो अद्या कृणोतु नः ॥ २ ॥
द्यावा नो अद्य पृथिवी अनागसो मही त्रायेतां सुविताय मातरा ।
उषा उच्छन्त्यप बाधतामघं स्वस्त्यग्निं समिधानमीमहे ॥ ३ ॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

इयं न उस्रा प्रथमा सुदेव्यं रेवत्सनिभ्यो रेवती व्युच्छतु ।
आरे मन्युं दुर्विदत्रस्य धीमहि स्वस्त्यग्निं समिधानमीमहे ॥ ४ ॥
प्र याः सिस्रते सूर्यस्य रश्मिभिर्ज्योतिर्भरन्तीरुषसो व्युष्टिषु ।
भद्रा नो अद्य श्रवसे व्युच्छत स्वस्त्यग्निं समिधानमीमहे ॥ ५ ॥

अथ सप्तमो वर्गः ॥ ७ ॥

अनमीवा उषस आ चरन्तु न उद्यद्गयो जिहतां ज्योतिषा बृहत् ।
आयुक्षातामश्विना तूतुजिं रथं स्वस्त्यग्निं समिधानमीमहे ॥ ६ ॥
श्रेष्ठं नो अद्य सवितर्वरेण्यं भागमा सुव स हि रत्नधा असि ।
रायो जनित्रीं धिषणामुप ब्रुवे स्वस्त्यग्निं समिधानमीमहे ॥ ७ ॥
पिपर्तु मा तदृतस्य प्रवाचनं देवानां यन्मनुष्याꣳ अमन्महि ।
विश्वा इदुस्राः स्पळुदेति सूर्यः स्वस्त्यग्निं समिधानमीमहे ॥ ८ ॥
अद्वेषो अद्य बर्हिषः स्तरीमणि ग्राव्णां योगे मन्मनः साधु ईमहे ।
आदित्यानां शर्मणि स्था भुरण्यसि स्वस्त्यग्निं समिधानमीमहे ॥ ९ ॥
आ नो बर्हिः सधमादे बृहद्दिवि देवाँ ईळे सादया सप्त होतॄन् ।
इन्द्रं मित्रं वरुणं सातये भगं स्वस्त्यग्निं समिधानमीमहे ॥ १० ॥

अथ अष्टमो वर्गः ॥ ८ ॥

त आदित्या आ गता सर्वतातये वृधे नो यज्ञमवता सजोषसः ।
बृहस्पतिं पूषणमश्विना भगं स्वस्त्यग्निं समिधानमीमहे ॥ ११ ॥
तन्नो देवा यच्छत सुप्रवाचनं छर्दिरादित्याः सुभरं नृपाय्यम् ।
पश्वे तोकाय तनयाय जीवसे स्वस्त्यग्निं समिधानमीमहे ॥ १२ ॥
विश्वे अद्य मरुतो विश्व ऊती विश्वे भवन्त्वग्नयः समिद्धाः ।
विश्वे नो देवा अवसा गमन्तु विश्वमस्तु द्रविणं वाजो अस्मे ॥ १३ ॥
यं देवासोऽवथ वाजसातौ यं त्रायध्वे यं पिपृथात्यंहः ।
यो वो गोपीथे न भयस्य वेद ते स्याम देववीतये तुरासः ॥ १४ ॥

[३६] षट्त्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—लुशो धानाकः ॥ देवता—विश्वे देवाः ॥ छन्दः—१, २, ४, ६-८, ११ निचृज्जगती; ३ विराड्जगती; ५, ९, १० जगती; १२ पाद-निचृज्जगती; १३ त्रिष्टुप्; १४ स्वराट्त्रिष्टुप् ॥
स्वरः—१-१२ निषादः; १३, १४ धैवतः ॥

अथ नवमो वर्गः ॥ ९ ॥

उषासानक्ता बृहती सुपेशसा द्यावाक्षामा वरुणो मित्रो अर्यमा ।
इन्द्रं हुवे मरुतः पर्वतान् अप आदित्यान्द्यावापृथिवी अपः स्वः ॥ १ ॥
द्यौश्च नः पृथिवी च प्रचेतस ऋतावरी रक्षतामंहसो रिषः ।
मा दुर्विदत्रा निर्ऋतिर्नः ईशत तद्देवानामवो अद्या वृणीमहे ॥ २ ॥
विश्वस्मान्नो अदितिः पात्वंहसो माता मित्रस्य वरुणस्य रेवतः ।
स्वर्वज्ज्योतिरवृकं नशीमहि तद्देवानामवो अद्या वृणीमहे ॥ ३ ॥
ग्रावा वदन्नप रक्षांसि सेधतु दुष्ष्वप्न्यं निर्ऋतिं विश्वमत्रिणम् ।
आदित्यं शर्म मरुतामशीमहि तद्देवानामवो अद्या वृणीमहे ॥ ४ ॥
एन्द्रो बर्हिः सीदतु पिन्वतामिळा बृहस्पतिः सामभिर्ऋक्वो अर्चतु ।
सुप्रकेतं जीवसे मन्म धीमहि तद्देवानामवो अद्या वृणीमहे ॥ ५ ॥

अथ दशमो वर्गः ॥ १० ॥

दिविस्पृशं यज्ञमस्माकमश्विना जीराध्वरं कृणुतं सुम्नमिष्टये ।
प्राचीनरश्मिमाहुतं घृतेन तद्देवानामवो अद्या वृणीमहे ॥ ६ ॥
उप ह्वये सुहवं मारुतं गणं पावकमृष्वं सख्याय शंभुवम् ।
रायस्पोषं सौश्रवसाय धीमहि तद्देवानामवो अद्या वृणीमहे ॥ ७ ॥
अपां पेरुं जीवधन्यं भरामहे देवाव्यं सुहवमध्वरश्रियम् ।
सुरश्मिं सोममिन्द्रियं यमीमहि तद्देवानामवो अद्या वृणीमहे ॥ ८ ॥
सनेम तत्सुसनितां सनित्वभिर्वयं जीवा जीवपुत्रा अनागसः ।
ब्रह्मद्विषो विष्वगेनो भरेरत तद्देवानामवो अद्या वृणीमहे ॥ ९ ॥
ये स्था मनोर्यज्ञियास्ते शृणोतन यद्वो देवा ईमहे तद्दातन ।
जैत्रं क्रतुं रयिमद्वीरवद्यशस्तद्देवानामवो अद्या वृणीमहे ॥ १० ॥

अथ एकादशो वर्गः ॥ ११ ॥

महद्वद्य महतामा वृणीमहेऽवो देवानां बृहतामनर्वणाम् ।
यथा वसु वीरजातं नशामहै तद्देवानामवो अद्या वृणीमहे ॥ ११ ॥
महो अग्नेः समिधानस्य शर्मण्यनागा मित्रे वरुणे स्वस्तये ।
श्रेष्ठे स्याम सवितुः सवीमनि तद्देवानामवो अद्या वृणीमहे ॥ १२ ॥
ये सवितुः सत्यसवस्य विश्वे मित्रस्य व्रते वरुणस्य देवाः ।
ते सौभगं वीरवद्गोमदप्नो दधातन द्रविणं चित्रमस्मे ॥ १३ ॥
सविता पश्चातात्सविता पुरस्तात्सवितोत्तरात्तात्सविताधरात्तात् ।
सविता नः सुवतु सर्वतातिं सविता नो रासतां दीर्घमायुः ॥ १४ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

[३७] सप्तत्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—अभितपाः सौर्यः ॥ देवता—सूर्यः ॥ छन्दः—१-५ निचृज्जगती; ६-९ विराड्जगती; ११, १२ जगती; १० निचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१-९, ११, १२ निषादः; १० धैवतः ॥

अथ द्वादशो वर्गः ॥ १२ ॥

नमो मित्रस्य वरुणस्य चक्षसे महो देवाय तदृतं सपर्यत।
दूरेदृशे देवजाताय केतवे दिवस्पुत्राय सूर्याय शंसत ॥ १ ॥
सा मा सत्योक्तिः परि पातु विश्वतो द्यावा च यत्र ततनन्नहानि च।
विश्वमन्यन्नि विशते यदेजति विश्वाहापो विश्वाहोदेति सूर्यः ॥ २ ॥
न ते अदेवः प्रदिवो नि वासते यदेतशेभिः पतरै रथर्यसि।
प्राचीनमन्यदनु वर्तते रज उदन्येन ज्योतिषा यासि सूर्य ॥ ३ ॥
येन सूर्य ज्योतिषा बाधसे तमो जगच्च विश्वमुदियर्षि भानुना।
तेनास्मद्विश्वामनिराममनाहुतिमपामीवामप दुष्वप्न्यं सुव ॥ ४ ॥
विश्वस्य हि प्रेषितो रक्षसि व्रतमहेळयन्नुच्चरसि स्वधा अनु।
यदद्य त्वा सूर्योपब्रवामहै तं नो देवा अनु मंसीरत क्रतुम् ॥ ५ ॥
तं नो द्यावापृथिवी तन्न आप इन्द्रः शृण्वन्तु मरुतो हवं वचः।
मा शूने भूम सूर्यस्य संदृशि भद्रं जीवन्तो जरणामशीमहि ॥ ६ ॥

अथ त्रयोदशो वर्गः ॥ १३ ॥

विश्वाहा त्वा सुमनसः सुचक्षसः प्रजावन्तो अनमीवा अनागसः।
उद्यन्तं त्वा मित्रमहो दिवेदिवे ज्योग्जीवाः प्रति पश्येम सूर्य ॥ ७ ॥
महि ज्योतिर्बिभ्रतं त्वा विचक्षण भास्वन्तं चक्षुषेचक्षुषे मयः।
आरोहन्तं बृहतः पाजसस्परि वयं जीवाः प्रति पश्येम सूर्य ॥ ८ ॥
यस्य ते विश्वा भुवनानि केतुना प्र चेरते नि च विशन्ते अक्तुभिः।
अनागास्त्वेन हरिकेश सूर्याह्नाह्न नो वस्यसावस्यसोदिहि ॥ ९ ॥
शं नो भव चक्षसा शं नो अह्ना शं भानुना शं हिमा शं घृणेन।
यथा शमध्वञ्छमसद्दुरोणे तत्सूर्य द्रविणं धेहि चित्रम् ॥ १० ॥
अस्माकं देवा उभयाय जन्मने शर्म यच्छत द्विपदे चतुष्पदे।
अदत्पिबदूर्जयमानमाशितं तदस्मे शं योररपो दधातन ॥ ११ ॥
यद्वो देवाश्चकृम जिह्वया गुरु मनसो वा प्रयुती देवहेळनम्।
अरावा यो नो अभि दुच्छुनायते तस्मिन्तदेनो वसवो नि धेतन ॥ १२ ॥

[३८] अष्टात्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—इन्द्रो मुष्कवान् ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१, ५ निचृज्जगती; २ पादनिचृज्जगती; ३, ४ विराड्जगती ॥ स्वरः—निषादः ॥

अथ चतुर्दशो वर्गः ॥ १४ ॥

अस्मिन्न इन्द्र पृत्सुतौ यशस्वति शिमीवति क्रन्दसि प्रावं सातये।
यत्र गोषाता धृषितेषु खादिषु विष्वक्पतन्ति दिद्यवो नृषाह्यो ॥ १ ॥
स नः क्षुमन्तं सदने व्यूर्णुहि गोअर्णसं रयिमिन्द्र श्रवाय्यम्।
स्यामं ते जयतः शक्र मेदिनो यथा वयमुश्मसि तद्वसो कृधि ॥ २ ॥
यो नो दास आर्यो वा पुरुष्टुतादेव इन्द्र युद्धये चिकेतति ।
अस्माभिष्टे सुषहाः सन्तु शत्रवस्त्वया वयं तान्वनुयाम संगमे ॥ ३ ॥
यो दभ्रेभिर्हव्यो यश्च भूरिभिर्यो अभीके वरिवोवित्तरावृषाह्यो ।
तं विखादे सस्त्रिमद्य श्रुतं नरमर्वाञ्चमिन्द्रमवसे करामहे ॥ ४ ॥
स्ववृजं हि त्वामहमिन्द्र शुश्रवानानुदं वृषभ रध्रचोदनम् ।
प्र मुञ्चस्व परि कुत्सादिहा गहि किमु त्वावान्मुष्कयोर्बद्ध आसते ॥ ५ ॥

[३९] एकोनचत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—घोषा काक्षीवती ॥ देवता—अश्विनौ ॥ छन्दः—१, ६, ७, ११, १३ निचृत् जगती; २, ८, ९, १२ जगती; ३ विराड्जगती; ४, ५ पादनिचृत् जगती; १० आर्चीस्वराड्जगती; १४ निचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१-१३ निषादः; १४ धैवतः ॥

अथ पञ्चदशो वर्गः ॥ १५ ॥

यो वां परिज्मा सुवृदश्विना रथो दोषामुषासो हव्यो हविष्मता।
शश्वत्तमासस्तमु वामिदं वयं पितुर्न नाम सुहवं हवामहे ॥ १ ॥
चोदयतं सूनृताः पिन्वतं धिय उत्पुरंधीरीरयतं तदुश्मसि।
यशसं भागं कृणुतं नो अश्विना सोमं न चारुं मघवत्सु नस्कृतम् ॥ २ ॥
अमाजुरश्चिद्भवथो युवं भगोऽनाशोश्चिदवितारापमस्य चित्।
अन्धस्य चिन्नासत्या कृशस्य चिद्युवामिदाहुर्भिषजा रुतस्य चित् ॥ ३ ॥
युवं च्यवानं सनयं यथा रथं पुनर्युवानं चरथाय तक्षथुः।
निष्टौग्र्यमूहथुरद्भ्यस्परि विश्वेत्ता वां सवनेषु प्रवाच्या ॥ ४ ॥
पुराणा वां वीर्या३ प्र ब्रवा जनेऽथो हासथुर्भिषजा मयोभुवा।
ता वां नु नव्यावसे करामहेऽयं नासत्या श्रदरिर्यथा दधत् ॥ ५ ॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अथ षोडशो वर्गः ॥ १६ ॥

इ॒यं वा॑मह्वे शृणु॒तं मे॑ अश्विना पु॒त्राये॑व पि॒तरा॒ मह्यं॑ शिक्षतम्।
अना॑पि॒रज्ञा॑ असजा॒त्याम॑तिः पु॒रा तस्या॑ अ॒भिश॑स्ते॒रव॑ स्पृतम् ॥ ६ ॥
यु॒वं रथे॑न विम॒दाय॑ शु॒न्ध्युवं॒ न्यू॑हथुः पुरुमि॒त्रस्य॒ योष॑णाम्।
यु॒वं हवं॑ वध्रिम॒त्या अ॑गच्छतं यु॒वं सुषु॑तिं चक्रथुः॒ पुरं॑धये ॥ ७ ॥
यु॒वं विप्र॑स्य जर॒णामु॑पे॒युषः॒ पुनः॑ क॒लेरकृणुतं॒ युव॒द्वयः॑ ।
यु॒वं वन्द॑नमृश्य॒दादुदू॑पथुर्यु॒वं स॒द्यो वि॒श्पला॒मेत॑वे कृथः ॥ ८ ॥
यु॒वं ह॑ रे॒भं वृ॑षणा॒ गुहा॑ हि॒तमुदै॑रयतं ममृ॒वांस॑मश्विना ।
यु॒वमृ॒बीस॑मु॒त त॒प्तमत्र॑य॒ ओम॑न्वन्तं चक्रथुः स॒प्तव॑ध्रये ॥ ९ ॥
यु॒वं श्वे॒तं पे॒दवे॑ऽश्वि॒नाश्वं॑ न॒वभि॒र्वाजै॑र्नव॒ती च॑ वा॒जिन॑म् ।
च॒र्कृत्यं॑ ददथुर्द्राव॒यत्स॑खं॒ भगं॒ न नृभ्यो॒ हव्यं॑ मयो॒भुव॑म् ॥ १० ॥

अथ सप्तदशो वर्गः ॥ १७ ॥

न तं रा॑जानावदिते॒ कुत॑श्च॒न नांहो॑ अश्नोति दुरि॒तं नकि॑र्भ॒यम्।
यम॑श्विना सुहवा रुद्रवर्तनी पुरोर॒थं कृ॑णु॒थः पत्न्या॑ स॒ह ॥ ११ ॥
आ तेन॑ यातं॒ मन॑सो॒ जवी॑यसा॒ रथं॒ यं वा॑मृ॒भव॑श्च॒क्रुर॑श्विना।
यस्य॒ योगे॑ दुहि॒ता जाय॑ते दि॒व उ॒भे अह॑नी सु॒दिने॑ वि॒वस्व॑तः ॥ १२ ॥
ता व॒र्तिर्या॑तं ज॒युषा॒ वि पर्व॑त॒मपि॑न्वतं श॒यवे॑ धे॒नुम॑श्विना।
वृक॑स्य चि॒द्वर्ति॑काम॒न्तरा॒स्या॑द्यु॒वं शची॑भिर्ग्रसि॒ताम॑मुञ्चतम् ॥ १३ ॥
ए॒तं वां॒ स्तोम॑मश्विनावक॒र्मात॑क्षाम॒ भृग॑वो॒ न रथ॑म् ।
न्य॑मृक्षाम॒ योष॑णां॒ न मर्ये॒ नित्यं॒ न सू॒नुं तन॑यं॒ दधा॑नाः ॥ १४ ॥

[४०] चत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—घोषा काक्षीवती ॥ देवता—अश्विनौ ॥ छन्दः—१, ५, १२, १४ विराड् जगती; २, ३, ७, १०, १३ जगती; ४, ९, ११ निचृज्जगती; ६, ८ पादनिचृज्जगती ॥ स्वरः—निषादः ॥

अथ अष्टादशो वर्गः ॥ १८ ॥

रथं॒ यान्तं॒ कुह॒ को ह॑ वां नरा॒ प्रति॑ द्यु॒मन्तं॑ सुवि॒ताय॑ भूषति।
प्रा॒त॒र्यावा॑णं वि॒भ्वं॑ वि॒शेवि॑शे॒ वस्तो॑र्वस्तो॒र्वह॑मानं धि॒या शमि॑ ॥ १ ॥
कुह॑ स्विद्दो॒षा कुह॒ वस्तो॑र॒श्विना॒ कुहा॑भिपि॒त्वं क॑रतः॒ कुहो॑षतुः।
को वां॑ शयु॒त्रा वि॒धवे॑व दे॒वरं॒ मर्यं॒ न योषा॑ कृणुते स॒धस्थ॒ आ ॥ २ ॥
प्रा॒तर्ज॑रेथे जर॒णेव॒ काप॑या॒ वस्तो॑र्वस्तोर्यज॒ता ग॑च्छथो गृ॒हम्।
कस्य॑ ध्व॒स्त्रा भ॑वथः॒ कस्य॑ वा नरा राजपु॒त्रेव॒ सव॒नाव॑ गच्छथः ॥ ३ ॥
यु॒वां मृ॒गेव॑ वार॒णा मृ॑ग॒ण्यवो॑ दो॒षा वस्तो॑र्ह॒विषा॒ नि ह्व॑यामहे।
यु॒वं होत्रा॑मृतु॒था जुह्व॑ते न॒रेषं॒ जना॑य वहथः शुभस्पती ॥ ४ ॥
यु॒वां ह॒ घोषा॒ पर्य॑श्विना य॒ती राज्ञ॑ ऊचे दुहि॒ता पृ॒च्छे वां॑ नरा।
भू॒तं मे॒ अह्न॑ उ॒त भू॑तम॒क्तवेऽश्वा॑वते र॒थिने॑ शक्त॒मर्व॑ते ॥ ५ ॥

अथ एकोनविंशो वर्गः ॥ १९ ॥

यु॒वं क॒वी ष्ठः॒ पर्य॑श्विना॒ रथं॒ विशो॒ न कुत्सो॑ जरि॒तुर्न॑शायथः।
यु॒वोर्ह॒ मक्षा॒ पर्य॑श्विना॒ मध्वा॒सा भ॑रत निष्कृ॒तं न योष॑णा ॥ ६ ॥
यु॒वं ह॑ भु॒ज्युं यु॒वम॑श्विना॒ वशं॑ यु॒वं शि॒ञ्जार॑मु॒शना॒मुपा॑रथुः।
यु॒वो ररा॑वा॒ परि॑ स॒ख्यमा॑सते यु॒वोर॒हमव॑सा सु॒म्नमा च॑के ॥ ७ ॥
यु॒वं ह॑ कृ॒शं यु॒वम॑श्विना श॒युं यु॒वं वि॒धन्तं॑ वि॒धवा॑मुरुष्यथः।
यु॒वं स॒निभ्यः॑ स्त॒नय॑न्तमश्वि॒नाप॑ व्र॒जमू॑र्णुथः स॒प्तास्य॑म् ॥ ८ ॥
जनि॑ष्ट॒ योषा॑ प॒तय॑त्कनीन॒को वि चारु॑हन्वी॒रुधो॑ दं॒सना॒ अनु॑।
आस्मै॑ रीयन्ते निव॒नेव॒ सिन्ध॑वो॒ऽस्मा अह्ने॑ भवति॒ तत्प॑तित्व॒नम् ॥ ९ ॥
जी॒वं रु॑दन्ति॒ वि म॑यन्ते अध्व॒रे दी॒र्घामनु॒ प्रसि॑तिं दीधियु॒र्नरः॑।
वा॒मं पि॒तृभ्यो॒ य इ॒दं स॑मेरि॒रे मयः॒ पति॑भ्यो॒ जन॑यः परि॒ष्वजे॑ ॥ १० ॥

अथ विंशो वर्गः ॥ २० ॥

न तस्य॑ विद्म॒ तदु॒ षु प्र वो॑चत॒ युवा॑ ह॒ यद्यु॑व॒त्याः क्षेति॒ योनि॑षु।
प्रि॒योस्त्रि॑यस्य वृष॒भस्य॑ रे॒तिनो॑ गृ॒हं ग॑मेमाश्विना॒ तदु॑श्मसि ॥ ११ ॥
आ वा॑मगन्त्सुम॒तिर्वा॑जिनीवसू॒ न्य॑श्विना हृ॒त्सु कामा॑ अयंसत।
अभू॑तं गो॒पा मि॑थु॒ना शु॑भस्पती प्रि॒या अ॑र्य॒म्णो दुर्यौ॑ अशीमहि ॥ १२ ॥
ता म॑न्दसा॒ना मनु॑षो दुरो॒ण आ ध॒त्तं र॒यिं स॒हवी॑रं वच॒स्यवे॑।
कृ॒तं ती॒र्थं सु॑प्रपा॒णं शु॑भस्पती स्था॒णुं प॑थे॒ष्ठामप॑ दुर्म॒तिं ह॑तम् ॥ १३ ॥
क्व॑ स्विद॒द्य क॑त॒मास्व॒श्विना॑ वि॒क्षु द॒स्रा मा॑दयेते शु॒भस्पती॑।
क ईं॒ नि ये॑मे कत॒मस्य॑ जग्मतु॒र्विप्र॑स्य वा॒ यज॑मानस्य वा गृ॒हम् ॥ १४ ॥

[४१] एकचत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—सुहस्त्यो घौषेयः ॥ देवता—अश्विनौ ॥ छन्दः—१ पादनिचृज्जगती; २ निचृज्जगती; ३ विराड्जगती ॥ स्वरः—निषादः ॥

अथ एकविंशो वर्गः ॥ २१ ॥

स॒मा॒नमु॒ त्यं पु॑रुहू॒तमु॒क्थ्यं१॒॑ रथं॑ त्रिच॒क्रं सव॑ना॒ गनि॑ग्मतम् ।
परि॑ ग्मानं विद॒थ्यं॑ सुवृ॒क्तिभि॑र्व॒यं व्यु॑ष्टा उ॒षसो॑ हवामहे ॥ १ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्रातर्युजं नासत्याधि तिष्ठथः प्रातर्यावाणं मधुवाहनं रथम्।
विशो येन गच्छथो यज्वरीर्नरा कीरेश्चिद्यज्ञं होतृमन्तमश्विना ॥ २ ॥
अध्वर्युं वा मधुपाणिं सुहस्त्यमग्निधं वा धृतदक्षं दमूनसम्।
विप्रस्य वा यत्सवनानि गच्छथोऽत आ यातं मधुपेयमश्विना ॥ ३ ॥

[४२] द्विचत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—कृष्णः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१, ३, ७-९, ११ त्रिष्टुप्; २, ५ निचृत् त्रिष्टुप्; ४ पादनिचृत्त्रिष्टुप्; ६, १० विराट्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः ॥

अथ द्वाविंशो वर्गः ॥ २२ ॥

अस्तेव सु प्रतरं लायमस्यन्भूर्षन्त्रिव प्र भरा स्तोममस्मै।
वाचा विप्रास्तरत वाचमर्यो नि रामय जरितः सोम इन्द्रम् ॥ १ ॥
दोहेन गामुप शिक्षा सखायं प्र बोधय जरितर्जारमिन्द्रम्।
कोशं न पूर्णं वसुना न्यृष्टमा च्यावय मघदेयाय शूरम् ॥ २ ॥
किमङ्ग त्वा मघवन्भोजमाहुः शिशीहि मा शिश्वयं त्वा शृणोमि।
अप्रस्वती मम धीरस्तु शक्र वसुविदं भगमिन्द्रा भरा नः ॥ ३ ॥
त्वां जना ममसत्येष्विन्द्र संतस्थाना वि ह्वयन्ते समीके।
अत्रा युजं कृणुते यो हविष्मान्त्रासुन्वता सख्यं वष्टि शूरः ॥ ४ ॥
धनं न स्मद्रं बहुलं यो अस्मै तीव्रान्त्सोमाँ आसुनोति प्रयस्वान्।
तस्मै शत्रून्त्सुतुकान्प्रातरह्नो नि स्वष्ट्रान्युवति हन्ति वृत्रम् ॥ ५ ॥

अथ त्रयोविंशो वर्गः ॥ २३ ॥

यस्मिन्वयं दधिमा शंसमिन्द्रे यः शिश्राय मघवा काममस्मे।
आराच्चित्सन्भयतामस्य शत्रुर्न्यस्मै द्युम्ना जन्या नमन्ताम् ॥ ६ ॥
आराच्छत्रुमप बाधस्व दूरमुग्रो यः शम्बः पुरुहूत तेन।
अस्मे धेहि यवमद्गोमदिन्द्र कृधी धियं जरित्रे वाजरत्नाम् ॥ ७ ॥
प्र यमन्तर्वृषसवासो अग्मन्तीव्राः सोमा बहुलान्तास इन्द्रम्।
नाहं दामानं मघवा नि यंसत्रि सुन्वते वहति भूरि वाममम् ॥ ८ ॥
उत प्रहामतिदीव्या जयाति कृतं यच्छ्वघ्नी विचिनोति काले।
यो देवकामो न धना रुणद्धि समित्तं राया सृजति स्वधावान् ॥ ९ ॥
गोभिष्टरेमामतिं दुरेवां यवेन क्षुधं पुरुहूत विश्वाम्।
वयं राजभिः प्रथमा धनान्यस्माकेन वृजनेना जयेम ॥ १० ॥
बृहस्पतिर्नः परि पातु पश्चादुतोत्तरस्मादधरादघायोः।
इन्द्रः पुरस्तादुत मध्यतो नः सखा सखिभ्यो वरिवः कृणोतु ॥ ११ ॥

चतुर्थोऽनुवाकः [४३] त्रिचत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—कृष्णः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१, ९ निचृज्जगती; २ आर्चीस्वराड्जगती; ३, ६ जगती; ४, ५, ७, ८ विराड्जगती; १० विराट्त्रिष्टुप्; ११ त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१-९ निषादः; १०, ११ धैवतः ॥

अथ चतुर्विंशो वर्गः ॥ २४ ॥

अच्छा म इन्द्रं मतयः स्वर्विदः सध्रीचीर्विश्वा उशतीरनूषत।
परि ष्वजन्ते जनयो यथा पतिं मर्यं न शुन्ध्युं मघवानमूतये ॥ १ ॥
न घा त्वद्रिगप वेति मे मनस्त्वे इत्कामं पुरुहूत शिश्रय।
राजेव दस्म नि षदोऽधि बर्हिष्यस्मिन्त्सु सोमेऽवपानमस्तु ते ॥ २ ॥
विषूवृदिन्द्रो अमतेरुत क्षुधः स इद्रायो मघवा वस्व ईशते।
तस्येदिमे प्रवणे सप्त सिन्धवो वयो वर्धन्ति वृषभस्य शुष्मिणः ॥ ३ ॥
वयो न वृक्षं सुपलाशमासदन्त्सोमास इन्द्रं मन्दिनश्चमूषदः।
प्रैषामनीकं शवसा दविद्युतद्विदत्स्वर्मनवे ज्योतिरार्यम् ॥ ४ ॥
कृतं न श्वघ्नी वि चिनोति देवने संवर्गं यन्मघवा सूर्यं जयत्।
न तत्ते अन्यो अनु वीर्यं शकन्न पुराणो मघवन्नोत नूतनः ॥ ५ ॥

अथ पञ्चविंशो वर्गः ॥ २५ ॥

विशंविशं मघवा पर्यशायत जनानां धेना अवचाकशद्वृषा।
यस्याह शक्रः सवनेषु रण्यति स तीव्रैः सोमैः सहते पृतन्यतः ॥ ६ ॥
आपो न सिन्धुमभि यत्समक्षरन्त्सोमास इन्द्रं कुल्याइव ह्रदम्।
वर्धन्ति विप्रा महो अस्य सादने यवं न वृष्टिर्दिव्येन दानुना ॥ ७ ॥
वृषा न क्रुद्धः पतयद्रजःस्वा यो अर्यपत्नीरकृणोदिमा अपः।
स सुन्वते मघवा जीरदानवेऽविन्दज्ज्योतिर्मनवे हविष्मते ॥ ८ ॥
उज्जायतां परशुर्ज्योतिषा सह भूया ऋतस्य सुदुघा पुराणवत्।
वि रोचतामरुषो भानुना शुचिः स्वर्ण शुक्रं शुशुचीत सत्पतिः ॥ ९ ॥
गोभिष्टरेमामतिं दुरेवां यवेन क्षुधं पुरुहूत विश्वाम्।
वयं राजभिः प्रथमा धनान्यस्माकेन वृजनेना जयेम ॥ १० ॥
बृहस्पतिर्नः परि पातु पश्चादुतोत्तरस्मादधरादघायोः।
इन्द्रः पुरस्तादुत मध्यतो नः सखा सखिभ्यो वरिवः कृणोतु ॥ ११ ॥

[४४] चतुश्चत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—कृष्णः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१ पादनिचृत्त्रिष्टुप्; २, १० विराट्त्रिष्टुप्; ३, ११ त्रिष्टुप्; ४ विराड्जगती; ५-७, ९ पादनिचृज्जगती; ८ निचृज्जगती ॥ स्वरः—१-३, १०, ११ धैवतः; ४-९ निषादः ॥

Dr. O. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अथ षड्विंशो वर्गः ॥ २६ ॥

आ यात्विन्द्रः स्वपतिर्मदाय यो धर्मणा तूतुजानस्तुविष्मान्।
प्रत्वक्षाणो अति विश्वा सहांस्यपारेण महता वृष्ण्येन ॥ १ ॥
सुष्ठामा रथः सुयमा हरी ते मिम्यक्ष वज्रो नृपते गभस्तौ।
शीभं राजन्त्सुपथा याह्यर्वाङ्वर्धीम ते पपुषो वृष्ण्यानि ॥ २ ॥
एन्द्रवाहौ नृपतिं वज्रबाहुमुग्रमुग्रासस्तविषास एनम्।
प्रत्वक्षसं वृषभं सत्यशुष्ममेमस्मत्रा सधमादो वहन्तु ॥ ३ ॥
एवा पतिं द्रोणसाचं सचेतसमूर्जः स्कम्भं धरुण आ वृषायसे।
ओजः कृष्व सं गृभाय त्वे अप्यसो यथा केनिपानामिनो वृधे ॥ ४ ॥
गमन्नस्मे वसून्या हि शंसिषं स्वाशिषं भरमा याहि सोमिनः।
त्वमीशिषे सास्मिन्ना सत्सि बर्हिष्यनाधृष्या तव पात्राणि धर्मणा ॥ ५ ॥

अथ सप्तविंशो वर्गः ॥ २७ ॥

पृथक्प्रायन्प्रथमा देवहूतयोऽकृण्वत श्रवस्यानि दुष्टरा।
न ये शेकुर्यज्ञियां नावमारुहमीर्मैव ते न्यविशन्त केपयः ॥ ६ ॥
एवैवापागपरे सन्तु दूढ्योऽश्वा येषां दुर्युज आयुयुज्रे।
इत्था ये प्रागुपरे सन्ति दावने पुरूणि यत्र वयुनानि भोजना ॥ ७ ॥
गिरीँरज्राञ्छेजमानाँ अधारयद् द्यौः क्रन्ददन्तरिक्षाणि कोपयत्।
समीचीने धिषणे वि ष्कभायति वृष्णः पीत्वा मद उक्थानि शंसति ॥ ८ ॥
इमं बिभर्मि सुकृतं ते अङ्कुशं येनारुजासि मघवञ्छफारुजः।
अस्मिन्त्सु ते सवने अस्त्वोक्यं सुत इष्टौ मघवन्बोध्याभगः ॥ ९ ॥
गोभिष्टरेमामतिं दुरेवां यवेन क्षुधं पुरुहूत विश्वाम्।
वयं राजभिः प्रथमा धनान्यस्माकेन वृजनेना जयेम ॥ १० ॥
बृहस्पतिर्नः परि पातु पश्चादुतोत्तरस्मादधरादघायोः।
इन्द्रः पुरस्तादुत मध्यतो नः सखा सखिभ्यो वरिवः कृणोतु ॥ ११ ॥

[४५] पञ्चचत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—वत्सप्रिः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१-५, ७ निचृत्त्रिष्टुप्; ६ त्रिष्टुप्; ८ पादनिचृत्त्रिष्टुप्; ९-१२ विराट्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

अथ अष्टाविंशो वर्गः ॥ २८ ॥

दिवस्परि प्रथमं जज्ञे अग्निरस्मद् द्वितीयं परि जातवेदाः।
तृतीयमप्सु नृमणा अजस्रमिन्धान एनं जरते स्वाधीः ॥ १ ॥
विद्मा ते अग्ने त्रेधा त्रयाणि विद्मा ते धाम विभृता पुरुत्रा।
विद्मा ते नाम परमं गुहा यद्विद्मा तमुत्सं यत आजगन्थ ॥ २ ॥
समुद्रे त्वा नृमणा अप्स्वन्तर्नृचक्षा ईधे दिवो अग्न ऊधन्।
तृतीये त्वा रजसि तस्थिवांसमपामुपस्थे महिषा अवर्धन् ॥ ३ ॥
अक्रन्ददग्निः स्तनयन्निव द्यौः क्षामा रेरिहद्वीरुधः समञ्जन्।
सद्यो जज्ञानो वि हीमिद्धो अख्यदा रोदसी भानुना भात्यन्तः ॥ ४ ॥
श्रीणामुदारो धरुणो रयीणां मनीषाणां प्रार्पणः सोमगोपाः।
वसुः सूनुः सहसो अप्सु राजा वि भात्यग्र उषसामिधानः ॥ ५ ॥
विश्वस्य केतुर्भुवनस्य गर्भ आ रोदसी अपृणाज्जायमानः।
वीळुं चिदद्रिमभिनत्परायञ्जना यदग्निमयजन्त पञ्च ॥ ६ ॥

अथ एकोनत्रिंशो वर्गः ॥ २९ ॥

उशिक्पावको अरतिः सुमेधा मर्तेष्वग्निरमृतो नि धायि।
इयर्ति धूममरुषं भरिभ्रदुच्छुक्रेण शोचिषा द्यामिनक्षन् ॥ ७ ॥
दृशानो रुक्म उर्विया व्यद्यौदुर्मर्षमायुः श्रिये रुचानः।
अग्निरमृतो अभवद्वयोभिर्यदेनं द्यौर्जनयत्सुरेताः ॥ ८ ॥
यस्ते अद्य कृणवद्भद्रशोचेऽपूपं देव घृतवन्तमग्ने।
प्र तं नय प्रतरं वस्यो अच्छाभि सुम्नं देवभक्तं यविष्ठ ॥ ९ ॥
आ तं भज सौश्रवसेष्वग्न उक्थऽउक्थ आ भज शस्यमाने।
प्रियः सूर्ये प्रियो अग्ना भवात्युज्जातेन भिनदुज्जनित्वैः ॥ १० ॥
त्वामग्ने यजमाना अनु द्यून्विश्वा वसु दधिरे वार्याणि।
त्वया सह द्रविणमिच्छमाना व्रजं गोमन्तमुशिजो वि वव्रुः ॥ ११ ॥
अस्ताव्यग्निर्नरां सुशेवो वैश्वानर ऋषिभिः सोमगोपाः।
अद्वेषे द्यावापृथिवी हुवेम देवा धत्त रयिमस्मे सुवीरम् ॥ १२ ॥

इति सप्तमाष्टकेऽष्टमोऽध्यायः ॥

अथाष्टमाऽष्टके प्रथमोऽध्यायः

[४६] षट्चत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—वत्सप्रिः ॥ देवता—अग्निः—१, २ पादनिचृत्त्रिष्टुप्; ३, ५ आर्ची-स्वराट्त्रिष्टुप्; ४, ८, १० त्रिष्टुप्; ६ आर्चीभुरिक्त्रिष्टुप्; ७ विराट्त्रिष्टुप्; ९ निचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अथ प्रथमो वर्गः ॥ १ ॥

प्र होता जातो महान्भोवित्रृषद्वा सीददपामुपस्थे।
दधियो धायि स ते वयांसि यन्ता वसूनि विधते तनूपाः ॥ १ ॥
इमं विधन्तो अपां सधस्थे पशुं न नष्टं पदैरनु ग्मन्।
गुहा चतन्तमुशिजो नमोभिरिच्छन्तो धीरा भृगवोऽविन्दन् ॥ २ ॥
इमं त्रितो भूर्यविन्ददिच्छन्वैभूवसो मूर्धन्यघ्न्यायाः ।
स शेवृधो जात आ हर्म्येषु नाभिर्युवा भवति रोचनस्य ॥ ३ ॥
मन्द्रं होतारमुशिजो नमोभिः प्राञ्चं यज्ञं नेतारमध्वराणाम्।
विशामकृण्वन्नरतिं पावकं हव्यवाहं दधतो मानुषेषु ॥ ४ ॥
प्र भूर्जयन्त महां विपोधां मूरा अमूरं पुरां दर्माणम्।
नयन्तो गर्भं वनां धियं धुर्हिरिश्मश्रुं नावीणं धनर्चम् ॥ ५ ॥

अथ द्वितीयो वर्गः ॥ २ ॥

नि पस्त्यासु त्रितः स्तभूयन्परिवीतो योनौ सीददन्तः।
अतः संगृभ्या विशां दमूना विधर्मणायन्त्रैरीयते नॄन् ॥ ६ ॥
अस्याजरासो दमामरित्रा अर्चद्धूमासो अग्रयः पावकाः।
श्वितीचयः श्वात्रासो भुरण्यवो वनर्षदो वायवो न सोमाः ॥ ७ ॥
प्र जिह्वया भरते वेपो अग्निः प्र वयुनानि चेतसा पृथिव्याः।
तमायवः शुचयन्त पावकं मन्द्रं होतारं दधिरे यजिष्ठम् ॥ ८ ॥
द्यावा यमग्निं पृथिवी जनिष्टामापस्त्वष्टा भृगवो यं सहोभिः।
ईळेन्यं प्रथमं मातरिश्वा देवास्तंक्षुर्मनवे यजत्रम् ॥ ९ ॥
यं त्वा देवा दधिरे हव्यवाहं पुरुस्पृहो मानुषासो यजत्रम्।
स यामन्नग्ने स्तुवते वयो धाः प्र देवयन्यशसः सं हि पूर्वीः ॥ १० ॥

[४७] सप्तचत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—सप्तगुः ॥ देवता—इन्द्रो वैकुण्ठः ॥ छन्दः—१, ४, ७ त्रिष्टुप्; २ आर्चीस्वराट्-त्रिष्टुप्; ३ भुरिक्त्रिष्टुप्; ५, ६, ८ निचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

अथ तृतीयो वर्गः ॥ ३ ॥

जगृभ्मा ते दक्षिणमिन्द्र हस्तं वसूयवो वसुपते वसूनाम्।
विद्मा हि त्वा गोपतिं शूर गोनामस्मभ्यं चित्रं वृषणं रयिं दाः ॥ १ ॥
स्वायुधं स्ववसं सुनीथं चतुःसमुद्रं धरुणं रयीणाम्।
चर्कृत्यं शंस्यं भूरिवारमस्मभ्यं चित्रं वृषणं रयिं दाः ॥ २ ॥
सुब्रह्माणं देववन्तं बृहन्तमुरुं गभीरं पृथुबुध्नमिन्द्र।
श्रुतऋषिमुग्रमभिमातिषाहमस्मभ्यं चित्रं वृषणं रयिं दाः ॥ ३ ॥
सनद्वाजं विप्रवीरं तरुत्रं धनस्पृतं शूशुवांसं सुदक्षम्।
दस्युहनं पूर्भिदमिन्द्र सत्यमस्मभ्यं चित्रं वृषणं रयिं दाः ॥ ४ ॥
अश्वावन्तं रथिनं वीरवन्तं सहस्रिणं शतिनं वाजमिन्द्र।
भद्रव्रातं विप्रवीरं स्वर्षामस्मभ्यं चित्रं वृषणं रयिं दाः ॥ ५ ॥

अथ चतुर्थो वर्गः ॥ ४ ॥

प्र सप्तगुमृतधीतिं सुमेधां बृहस्पतिं मतिरच्छा जिगाति।
य आङ्गिरसो नमसोपसद्योऽस्मभ्यं चित्रं वृषणं रयिं दाः ॥ ६ ॥
वनीवानो मम दूतास इन्द्रं स्तोमाश्चरन्ति सुमतीरियानाः।
हृदिस्पृशो मनसा वच्यमाना अस्मभ्यं चित्रं वृषणं रयिं दाः ॥ ७ ॥
यत्त्वा यामि दद्धि तन्न इन्द्र बृहन्तं क्षयमसमं जनानाम्।
अभि तद् द्यावापृथिवी गृणीतामस्मभ्यं चित्रं वृषणं रयिं दाः ॥ ८ ॥

[४८] अष्टचत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—इन्द्रो वैकुण्ठः ॥ देवता—इन्द्रो वैकुण्ठः ॥ छन्दः—१, ३ पादनिचृज्जगती; २, ८ जगती; ४ निचृज्जगती; ५ विराड्जगती; ६, ९ आर्चीस्वराड्जगती; ७ विराट्त्रिष्टुप्; १०, ११ त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१-६, ८, ९ निषादः; ७, १०, ११ धैवतः ॥

अथ पञ्चमो वर्गः ॥ ५ ॥

अहं भुवं वसुनः पूर्व्यस्पतिरहं धनानि सं जयामि शश्वतः।
मां हवन्ते पितरं न जन्तवोऽहं दाशुषे वि भजामि भोजनम् ॥ १ ॥
अहमिन्द्रो रोधो वक्षो अथर्वणस्त्रिताय गा अजनयमहेरधि।
अहं दस्युभ्यः परि नृम्णमा ददे गोत्रा शिक्षन्दधीचे मातरिश्वने ॥ २ ॥
मह्यं त्वष्टा वज्रमतक्षदायसं मयि देवासोऽवृजन्नपि क्रतुम्।
ममानीकं सूर्यस्येव दुष्टरं मामार्यन्ति कृतेन कर्त्वेन च ॥ ३ ॥
अहमेतं गव्ययमश्व्यं पशुं पुरीषिणं सायकेना हिरण्ययम्।
पुरू सहस्रा नि शिशामि दाशुषे यन्मा सोमास उक्थिनो अमन्दिषुः ॥ ४ ॥
अहमिन्द्रो न परा जिग्य इद्धनं न मृत्यवेऽव तस्थे कदा चन।
सोममिन्मा सुन्वन्तो याचता वसु न मे पूरवः सख्ये रिषाथन ॥ ५ ॥

अथ षष्ठो वर्गः ॥ ६ ॥

अहमेताञ्छश्वतो द्वाद्वेन्द्रं ये वज्रं युधयेऽकृण्वत।
आह्वयमानाँ अव हन्मनाहनं दृळ्हा वदन्ननमस्युर्नमस्विनः ॥ ६ ॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

अभीदमेकमेकोऽस्मि निष्षाळभी द्वा किमु त्रयः करन्ति।
खले न पर्षान्प्रति हन्मि भूरि किं मा निन्दन्ति शत्रवोऽनिन्द्राः॥ ७॥
अहं गुह्येभ्यो अतिथिग्वमिष्कर्मिषं न वृत्रतुरं विक्षु धारयम्।
यत्पर्णयघ्न उत वा करञ्जहे प्राहं महे वृत्रहत्ये अशुश्रवि॥ ८॥
प्र मे नमी साप्य इषे भुजे भूद्ववामेषे सख्या कृणुत द्विता।
दिद्युं यदस्य समिथेषु मंहयमादिदेनं शंस्यमुक्थ्यं करम्॥ ९॥
प्र नेमस्मिन्ददृशे सोमो अन्तर्गोपा नेममाविरस्था कृणोति।
स तिग्मशृङ्गं वृषभं युयुत्सन्द्रुहस्तस्थौ बहुले बब्धो अन्तः॥ १०॥
आदित्यानां वसूनां रुद्रियाणां देवो देवानां न मिनामि धाम।
ते मा भद्राय शवसे ततक्षुरपराजितमस्तृतमषाळ्हम्॥ ११॥

[४९] एकोनपञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—इन्द्रो वैकुण्ठः॥ देवता—इन्द्रो वैकुण्ठः॥ छन्दः—१ आर्चीभुरिग्जगती; २ विराट्त्रिष्टुप्; ३, ९ विराड्जगती; ४ जगती; ५, ६, ८ निचृज्जगती; ७ आर्चीस्वराड्जगती; १० पादनिचृज्जगती; ११ आर्चीस्वराट्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१, ३-१० निषादः; २, ११ धैवतः॥

अथ सप्तमो वर्गः॥ ७॥

अहं दां गृणते पूर्व्यं वस्वहं ब्रह्म कृणवं महे वधनम्।
अहं भुवं यजमानस्य चोदितायन्वनः साक्षि विश्वस्मिन्भरे॥ १॥
मां धुरिन्द्रं नाम देवता दिवश्च ग्मश्चापां च जन्तवः।
अहं हरी वृषणा वित्रता रघू अहं वज्रं शवसे धृष्णवा ददे॥ २॥
अहमत्कं कवयेऽशिश्नथं हथैरहं कुत्समावमाभिरूतिभिः।
अहं शुष्णस्य श्नथिता वधर्यमं न यो रर आर्यं नाम दस्यवे॥ ३॥
अहं पितेव वेतसूँरभिष्टये तुग्रं कुत्साय स्मदिभं च रन्धयम्।
अहं भुवं यजमानस्य राजनि प्र यद्भरे तुजये न प्रियाधृषे॥ ४॥
अहं रन्धयं मृगयं श्रुतर्वणे यन्माजिहीत वयुना चनानुषक्।
अहं वेशं नम्रमायवेऽकरमहं सव्याय पड्गृभिमरन्धयम्॥ ५॥

अथ अष्टमो वर्गः॥ ८॥

अहं स यो नववास्त्वं बृहद्रथं सं वृत्रेव दासं वृत्रहारुजम्।
यद्वर्धयन्तं प्रथयन्तमानुषग्दूरे पारे रजसो रोचनाकरम्॥ ६॥
अहं सूर्यस्य परि याम्याशुभिः प्रैतशेभिर्वहमान ओजसा।
यन्मा सावो मनुष आह निर्णिज ऋधक्कृषे दासं कृत्व्यं हथैः॥

अहं सप्तहा नहुषो नहुष्टरः प्राश्रावयं शवसा तुर्वशं यदुम्।
अहं न्यं१न्यं सहसा सहस्करं नव व्राधतो नवतिं च वक्षयम्॥ ८॥
अहं सप्त स्रवतो धारयं वृषा द्रविल्वः पृथिव्यां सीरा अधि।
अहमर्णांसि वि तिरामि सुक्रतुर्युधा विदं मनवे गातुमिष्टये॥ ९॥
अहं तदासु धारयं यदासु न देवश्चन त्वष्टाधारयद्वृशत्।
स्पार्हं गवामूर्धःसु वक्षणास्वा मधोर्मधु श्वात्र्यं सोममाशिरम्॥ १०॥
एवा देवाँ इन्द्रो विव्ये नॄन्प्र च्यौत्नेन मघवा सत्यराधाः।
विश्वेत्ता ते हरिवः शचीवोऽभि तुरासः स्वयशो गृणन्ति॥ ११॥

[५०] पञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—इन्द्रो वैकुण्ठः॥ देवता—इन्द्रो वैकुण्ठः॥ छन्दः—१ निचृज्जगती; २ आर्चीस्वराड्जगती; ३ पादनिचृत्त्रिष्टुप्; ४ विराट्त्रिष्टुप्; ५ त्रिष्टुप्; ६, ७ पादनिचृज्जगती॥ स्वरः—१, २, ६, ७ निषादः; ३, ४, ५ धैवतः॥

अथ नवमो वर्गः॥ ९॥

प्र वो महे मन्दमानायान्धसोऽर्चा विश्वानराय विश्वाभुवे।
इन्द्रस्य यस्य सुमखं सहो महि श्रवो नृम्णं च रोदसी सपर्यतः॥ १॥
सो चिन्नु सख्या नर्यो इनः स्तुतश्चकृत्य इन्द्रो मावते नरे।
विश्वासु धूर्षु वाजकृत्येषु सत्पते वृत्रे वाप्स्वा१भि शूर मन्दसे॥ २॥
के ते नर इन्द्र ये त इषे ये ते सुम्नं संधन्या१मियक्षान्।
के ते वाजायासुर्याय हिन्विरे के अप्सु स्वासूर्वरासु पौंस्ये॥ ३॥
भुवस्त्वमिन्द्र ब्रह्मणा महान्भुवो विश्वेषु सवनेषु यज्ञियः।
भुवो नॄँश्च्यौत्नो विश्वस्मिन्भरे ज्येष्ठश्च मन्त्रो विश्वचर्षणे॥ ४॥
अवा नु कं ज्यायान्यज्ञवनसो महीं त ओमात्रां कृष्टयो विदुः।
असो नु कमजरो वधीश्च विश्वेदेता सवना तूतुमा कृषे॥ ५॥
एता विश्वा सवना तूतुमा कृषे स्वयं सूनो सहसो यानि दधिषे।
वराय ते पात्रं धर्मणे तना यज्ञो मन्त्रो ब्रह्मोद्यतं वचः॥ ६॥
ये ते विप्र ब्रह्मकृतः सुते सचा वसूनां च वसुनश्च दावने।
प्र ते सुम्नस्य मनसा पथा भुवन्मदे सुतस्य सोम्यस्यान्धसः॥ ७॥

[५१] एकपञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—१, ३, ५, ७, ९ देवाः; २, ४, ६, ८ अग्निः सौचीकः॥ देवता—१, ३, ५, ७, ९ अग्निः सौचीकः; २, ४, ६, ८ देवाः॥ छन्दः—१, ३ निचृत्त्रिष्टुप्; २, ५, ६, १० विराट्त्रिष्टुप्; ४, ७, त्रिष्टुप्; ८, ९ भुरिक्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः॥

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection. Kanya Maha Vidyalaya, Jalandhar

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अथ दशमो वर्गः ॥ १० ॥

महत्तदुल्बं स्थविरं तदासीद्येनाविष्टितः प्रविवेशिथापः ।
विश्वा अपश्यद्बहुधा ते अग्ने जातवेदस्तन्वो देव एकः ॥ १ ॥
को मा ददर्श कतमः स देवो यो मे तन्वो बहुधा पर्यपश्यत् ।
क्वाहं मित्रावरुणा क्षियन्त्यग्नेर्विश्वाः समिधो देवयानीः ॥ २ ॥
ऐच्छाम त्वा बहुधा जातवेदः प्रविष्टमग्ने अप्स्वोषधीषु ।
तं त्वा यमो अचिकेच्चित्रभानो दशान्तरुष्यादतिरोचमानम् ॥ ३ ॥
होत्रादहं वरुण बिभ्यदायं नेदेव मा युनजन्त्र देवाः ।
तस्य मे तन्वो बहुधा निविष्टा एतमर्थं न चिकेताहमग्निः ॥ ४ ॥
एहि मनुर्देववयुर्यज्ञकामोऽरं कृत्या तर्पसि क्षेष्यग्ने ।
सुगान्पथः कृणुहि देवयानान्वहं हव्यानि सुमनस्यमानः ॥ ५ ॥

अथ एकादशो वर्गः ॥ ११ ॥

अग्नेः पूर्वे भ्रातरो अर्थमेतं रथीवाध्वानमन्वावरीवुः ।
तस्माद्धिया वरुण दूरमायं गौरो न क्षेपोरविजे ज्यायाः ॥ ६ ॥
कुर्मस्त आयुरजरं यदग्ने यथा युक्तो जातवेदो न रिष्याः ।
अथा वहासि सुमनस्यमानो भागं देवेभ्यो हविषः सुजात ॥ ७ ॥
प्रयाजान्मे अनुयाजाँश्च केवलानूर्जस्वन्तं हविषो दत्त भागम् ।
घृतं चापां पुरुषं चौषधीनामग्नेश्च दीर्घमायुरस्तु देवाः ॥ ८ ॥
तवं प्रयाजा अनुयाजाश्च केवल ऊर्जस्वन्तो हविषः सन्तु भागाः ।
तवाग्ने यज्ञोऽयमस्तु सर्वस्तुभ्यं नमन्तां प्रदिशश्चतस्रः ॥ ९ ॥

[५२] द्विपञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—अग्निः सौचीकः ॥ देवता—देवाः ॥ छन्दः—१ त्रिष्टुप्; २-४ निचृत्त्रिष्टुप्; ५, ६ विराट्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

अथ द्वादशो वर्गः ॥ १२ ॥

विश्वे देवाः शास्तन मा यथेह होता वृतो मनवै यन्निषद्य ।
प्र मे ब्रूत भागधेयं यथा वो येन पथा हव्यमा वो वहानि ॥ १ ॥
अहं होता न्यसीदं यजीयान्विश्वे देवा मरुतो मा जुनन्ति ।
अहरहश्विनाध्वर्यवं वां ब्रह्मा समिद्धवति साहुतिर्वाम् ॥ २ ॥
अयं यो होता ऽकरु स यमस्य कमप्यूहे यत्समञ्जन्ति देवाः ।
अहरहर्जायते मासिमास्यथा देवा दधिरे हव्यवाहम् ॥ ३ ॥
मां देवा दधिरे हव्यवाहमपम्लुक्तं बहु कृच्छ्रा चरन्तम् ।
अग्निर्विद्वान्यज्ञं नः कल्पयाति पञ्चयामं त्रिवृतं सप्ततन्तुम् ॥ ४ ॥
आ वो यक्ष्यमृतत्वं सुवीरं यथा वो देवा वरिवः करणि ।
आ बाह्वोर्वज्रमिन्द्रस्य धेयामथेमा विश्वाः पृतना जयाति ॥ ५ ॥
त्रीणि शता त्री सहस्राण्यग्निं त्रिंशच्च देवा नव चासपर्यन् ।
औक्षन्घृतैरस्तृणन्बर्हिरस्मा आदिद्धोतारं न्यसादयन्त ॥ ६ ॥

[५३] त्रिपञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—१-३, ६-११ देवाः; ४, ५ अग्निः सौचीकः ॥ देवता—१-३, ६-११ अग्निः सौचीकः; ४, ५ देवाः ॥ छन्दः—१, ३, ८ त्रिष्टुप्; २, ४ विराट्त्रिष्टुप्; ५ आर्चीस्वराट्त्रिष्टुप्; ६, ७, ९ निचृज्जगती; १० विराड्जगती; ११ पादनिचृज्जगती ॥ स्वरः—१-५, ८ धैवतः; ६, ७, ९-११ निषादः ॥

अथ त्रयोदशो वर्गः ॥ १३ ॥

ऽमैच्छाम मनसा सोऽयमागाद्यज्ञस्य विद्वान्परुषश्चिकित्वान् ।
स नो यक्षद्देवताता यजीयान्नि हि षत्सदन्तरः पूर्वो अस्मत् ॥ १ ॥
अरधि होता निषदा यजीयानभि प्रयांसि सुधितानि हि ख्यत् ।
यजामहै यज्ञियान्हन्त देवाँ ईळामहा ईड्याँ आज्येन ॥ २ ॥
साध्वीमकर्देववीतिं नो अद्य यज्ञस्य जिह्वामविदाम गुह्याम् ।
स आयुरागात्सुरभिर्वसानो भद्रामकर्देवहूतिं नो अद्य ॥ ३ ॥
तदद्य वाचः प्रथमं मसीय येनासुरां अभि देवा असाम ।
ऊर्जाद उत यज्ञियासः पञ्च जना मम होत्रं जुषध्वम् ॥ ४ ॥
पञ्च जना मम होत्रं जुषन्तां गोजाता उत ये यज्ञियासः ।
पृथिवी नः पार्थिवात्पात्वंहसोऽन्तरिक्षं दिव्यात्पात्वस्मान् ॥ ५ ॥

अथ चतुर्दशो वर्गः ॥ १४ ॥

तन्तुं तन्वन्रजसो भानुमन्विहि ज्योतिष्मतः पथो रक्ष धिया कृतान् ।
अनुल्बणं वयत जोगुवामपो मनुर्भव जनया दैव्यं जनम् ॥ ६ ॥
अक्षानहो नह्यतनोत सोम्या इष्कृणुध्वं रशना ओत पिंशत ।
अष्टावन्धुरं वहताभितो रथं येन देवासो अनयन्नभि प्रियम् ॥ ७ ॥
अश्मन्वती रीयते सं रभध्वमुत्तिष्ठत प्र तरता सखायः ।
अत्रा जहाम ये असन्नशेवाः शिवान्वयमुत्तरेमाभि वाजान् ॥ ८ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

त्वष्टा॑ मा॒या वे॑द॒पसा॑म॒पस्त॑मो॒ बिभ्र॒त्पात्रा॑ देव॒पाना॑नि॒ शंत॑मा।
शिशी॑ते नू॒नं प॑र॒शुं स्वा॑य॒सं येन॑ वृ॒श्चादेत॑शो॒ ब्रह्म॑ण॒स्पतिः॑॥ ९॥
स॒तो नू॒नं क॑वयः॒ सं शि॑शीत॒ वाशी॑भि॒र्याभि॑र॒मृता॑य॒ तक्ष॑थ।
वि॒द्वांसः॑ प॒दा गुह्या॑नि कर्तन॒ येन॑ दे॒वासो॑ अमृत॒त्वमा॑न॒शुः॥ १०॥
गर्भे॒ योषा॒मद॑धुर्व॒त्समा॒सन्य॑पी॒च्ये॑न॒ मन॑सो॒त जि॒ह्वया॑ ।
स वि॒श्वाहा॑ सु॒मना॑ यो॒ग्या अ॒भि सि॑षा॒सनि॑र्वनते का॒र इज्जिति॑म्॥ ११॥

[५४] चतुष्पञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—बृहदुक्थो वामदेव्यः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१, ६ त्रिष्टुप्; २ विराट् त्रिष्टुप्; ३, ४ आर्चीस्वराट्त्रिष्टुप्; ५ पादनिचृत्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः॥

अथ पञ्चदशो वर्गः॥ १५॥

तां सु ते॑ की॒र्तिं म॑घवन्महि॒त्वा यत्त्वा॑ भी॒ते रोद॑सी॒ अह्व॑येताम्।
प्रावो॑ दे॒वाँ आति॑रो॒ दास॒मोजः॑ प्र॒जायै॑ त्वस्यै॒ यदशि॑क्ष इन्द्र॥ १॥
यदच॑रस्त॒न्वा॑ वावृधा॒नो बला॑नीन्द्र प्रब्रुवा॒णो जने॑षु।
मा॒येत्सा ते॒ यानि॑ यु॒द्धान्या॒हुर्नाद्य शत्रुं॑ न॒नु पु॒रा वि॑वित्से॥ २॥
क उ॒ नु ते॑ महि॒मानः॑ समस्या॒स्मत्पूर्व॒ ऋष॒योऽन्त॑मापुः।
यन्मा॒तरं॑ च पि॒तरं॑ च सा॒कमज॑नयथास्त॒न्व१॒॑ः स्वायाः॑॥ ३॥
च॒त्वारि॑ ते असु॒र्या॑णि॒ नामादा॑भ्यानि महि॒षस्य॑ सन्ति।
त्वम॒ङ्ग तानि॒ विश्वा॑नि वित्से॒ येभिः॒ कर्मा॑णि मघवञ्च॒कर्थ॑॥ ४॥
त्वं विश्वा॑ दधिषे॒ केव॑लानि॒ यान्या॒विर्या च॒ गुहा॒ वसू॑नि।
काम॒मिन्मे॑ मघव॒न्मा वि ता॑री॒स्त्वमा॑ज्ञा॒ता त्वमि॑न्द्रासि दा॒ता॥ ५॥
यो अद॑धा॒ज्ज्योति॑षि॒ ज्योति॑र॒न्तर्यो असृ॑ज॒न्मधु॑ना॒ सं मधू॑नि।
अध॑ प्रि॒यं शू॒षमिन्द्रा॑य॒ मन्म॑ ब्रह्म॒कृतो॑ बृ॒हदु॑क्थादवाचि॥ ६॥

[५५] पञ्चपञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—बृहदुक्थो वामदेव्यः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१, ८ निचृत्त्रिष्टुप्; २, ५ पादनिचृत्त्रिष्टुप्; ३, ४, ६ त्रिष्टुप्; ७ विराट्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः॥

अथ षोडशो वर्गः॥ १६॥

दू॒रे तन्नाम॒ गुह्यं॑ परा॒चैर्यत्त्वा॑ भी॒ते अह्व॑येतां वयो॒धै।
उद॑स्तभ्नाः पृथि॒वीं द्याम॒भीके॒ भ्रातुः॑ पु॒त्रान्म॑घवन्तित्विषा॒णः॥ १॥
म॒हत्तन्नाम॒ गुह्यं॑ पुरु॒स्पृग्येन॑ भू॒तं ज॒नयो॒ येन॒ भव्य॑म्।
प्र॒त्नं जा॒तं ज्योति॒र्य॑स्य प्रि॒यं प्रि॒याः सम॑विशन्त॒ पञ्च॑॥ २॥
आ रोद॑सी अपृणा॒दोत मध्यं॒ पञ्च॑ दे॒वाँ ऋ॑तु॒शः स॒प्तस॑प्त।
चतु॑स्त्रिंशता पुरु॒धा वि च॑ष्टे॒ सरू॑पेण॒ ज्योति॑षा॒ विव्र॑तेन॥ ३॥
यदु॑ष॒ औच्छः॑ प्रथ॒मा वि॒भाना॒मज॑नयो॒ येन॑ पु॒ष्टस्य॑ पु॒ष्टम्।
यत्ते॑ जामि॒त्वमव॑रं॒ पर॑स्या म॒हन्म॑ह॒त्या अ॑सुर॒त्वमेक॑म्॥ ४॥
वि॒धुं द॑द्रा॒णं सम॑ने बहू॒नां युवा॑नं॒ सन्तं॑ पलि॒तो ज॑गार।
दे॒वस्य॑ पश्य॒ काव्यं॑ महि॒त्वाद्या म॒मार॒ स ह्यः समा॑न॥ ५॥

अथ सप्तदशो वर्गः॥ १७॥

शाक्म॑ना शा॒को अ॑रु॒णः सु॑प॒र्ण आ यो म॒हः शूरः॑ स॒नादनी॑ळः।
यच्चि॒केत॑ स॒त्यमित्तन्न मोघं॒ वसु॑ स्पा॒र्हमु॒त जेतो॒त दाता॑॥ ६॥
ऐभि॑र्ददे॒ वृष्णया॒ पौंस्या॑नि॒ येभि॒रौक्ष॑द्वृत्र॒हत्या॑य व॒ज्री।
ये कर्म॑णः क्रि॒यमा॑णस्य म॒ह्न ऋ॑तेक॒र्ममु॒दजा॑यन्त दे॒वाः॥ ७॥
यु॒जा कर्मा॑णि ज॒नय॑न्वि॒श्वौजा॑ अशस्ति॒हा वि॒श्वम॑नास्तुरा॒षाट्।
पी॒त्वी सोम॑स्य दि॒व आ वृ॑धा॒नः शूरो॒ निर्यु॒धाध॑म॒द्दस्यू॑न्॥ ८॥

[५६] षट्पञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—बृहदुक्थो वामदेव्यः॥ देवता—विश्वे देवाः॥ छन्दः—१, ३ निचृत्त्रिष्टुप्; २ विराट्त्रिष्टुप्; ४ पादनिचृज्जगती; ५ विराड्जगती; ६ आर्चीभुरिग्जगती; ७ आर्चीस्वराट्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१-३, ७ धैवतः; ४-६ निषादः॥

अथ अष्टादशो वर्गः॥ १८॥

इ॒दं त॒ एकं॑ प॒र ऊ॑ त॒ एकं॑ तृ॒तीये॑न॒ ज्योति॑षा॒ सं वि॑शस्व।
सं॒वेश॑ने त॒न्व१॒॑श्चारु॑रेधि प्रि॒यो दे॒वानां॑ पर॒मे ज॒नित्रे॑॥ १॥
त॒नूष्टे॑ वाजिन्त॒न्वं१॒॑ नय॑न्ती वा॒मम॒स्मभ्यं॒ धातु॒ शर्म॒ तुभ्य॑म्।
अह्रु॑तो म॒हो ध॒रुणा॑य दे॒वान्दि॒वी॑व॒ ज्योतिः॒ स्वमा मि॑मीयाः॥ २॥
वा॒ज्य॑सि॒ वाजि॑नेना सुवे॒नीः सु॑वि॒तः स्तोमं॑ सुवि॒तो दिवं॑ गाः।
सु॒वि॒तो धर्मं॑ प्रथ॒मानु॑ स॒त्या सु॑वि॒तो दे॒वान्त्सु॑वि॒तोऽनु॒ पत्म॑॥ ३॥
म॒हि॒म्न ए॑षां पि॒तर॑श्च॒नेशि॑रे दे॒वा दे॒वेष्व॑दधु॒रपि॒ क्रतु॑म्।
सम॑विव्यचुरु॒त यान्यत्वि॑षु॒रैषां॑ त॒नूषु॒ नि वि॑विशुः॒ पुनः॑॥ ४॥
सहो॑भि॒र्विश्वं॒ परि॑ चक्रमू॒ रजः॒ पूर्वा॒ धामा॒न्यमि॑ता॒ मिमा॑नाः।
त॒नूषु॒ विश्वा॒ भुव॑ना॒ नि ये॑मिरे॒ प्रासा॑रयन्त पुरु॒ध प्र॒जा अनु॑॥ ५॥
द्विधा॑ सू॒नवोऽसु॑रं स्व॒र्विद॒मास्था॑पयन्त तृ॒तीये॑न॒ कर्म॑णा।
स्वां प्र॒जां पि॒तरः॒ पित्र्यं॒ सह॒ आव॑रेष्वदधु॒स्तन्तु॒मात॑तम्॥ ६॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नावा न क्षोदः प्रदिशः पृथिव्याः स्वस्तिभिरति दुर्गाणि विश्वा।
स्वां प्रजां बृहदुक्थो महित्वावरेष्वदधादा परेषु ॥ ७ ॥

[५७] सप्तपञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—बन्धुः सुबन्धुः श्रुतबन्धुर्विप्रबन्धुश्च गौपायनाः॥ देवता—विश्वे देवाः॥
छन्दः—१ गायत्री; २-६ निचृद्गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

अथ एकोनविंशो वर्गः॥ १९ ॥

मा प्र गाम पथो वयं मा यज्ञादिन्द्र सोमिनः। मान्तः स्थुर्नो अरातयः॥ १ ॥
यो यज्ञस्य प्रसाधनस्तन्तुर्देवेष्वाततः। तमाहुतं नशीमहि॥ २ ॥
मनो न्वा हुवामहे नाराशंसेन सोमेन। पितॄणां च मन्मभिः॥ ३ ॥
आ त एतु मनः पुनः क्रत्वे दक्षाय जीवसे। ज्योक्च सूर्यं दृशे॥ ४ ॥
पुनर्नः पितरो मनो ददातु दैव्यो जनः। जीवं व्रातं सचेमहि॥ ५ ॥
वयं सोम व्रते तव मनस्तनूषु बिभ्रतः। प्रजावन्तः सचेमहि॥ ६ ॥

[५८] अष्टपञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—बन्ध्वादयो गौपायनाः॥ देवता—मन आवर्त्तनम्॥ छन्दः—निचृदनुष्टुप्॥
स्वरः—गान्धारः॥

अथ विंशो वर्गः॥ २० ॥

यत्ते यमं वैवस्वतं मनो जगाम दूरकम्।
तत्त आ वर्तयामसीह क्षयाय जीवसे ॥ १ ॥
यत्ते दिवं यत्पृथिवीं मनो जगाम दूरकम्।
तत्त आ वर्तयामसीह क्षयाय जीवसे ॥ २ ॥
यत्ते भूमिं चतुर्भृष्टिं मनो जगाम दूरकम्।
तत्त आ वर्तयामसीह क्षयाय जीवसे ॥ ३ ॥
यत्ते चतस्रः प्रदिशो मनो जगाम दूरकम्।
तत्त आ वर्तयामसीह क्षयाय जीवसे ॥ ४ ॥
यत्ते समुद्रमर्णवं मनो जगाम दूरकम्।
तत्त आ वर्तयामसीह क्षयाय जीवसे ॥ ५ ॥
यत्ते मरीचीः प्रवतो मनो जगाम दूरकम्।
तत्त आ वर्तयामसीह क्षयाय जीवसे ॥ ६ ॥

अथ एकविंशो वर्गः॥ २१ ॥

यत्ते अपो यदोषधीर्मनो जगाम दूरकम्।
तत्त आ वर्तयामसीह क्षयाय जीवसे

यत्ते सूर्यं यदुषसं मनो जगाम दूरकम्।
तत्त आ वर्तयामसीह क्षयाय जीवसे ॥ ८ ॥
यत्ते पर्वतान्बृहतो मनो जगाम दूरकम्।
तत्त आ वर्तयामसीह क्षयाय जीवसे ॥ ९ ॥
यत्ते विश्वमिदं जगन्मनो जगाम दूरकम्।
तत्त आ वर्तयामसीह क्षयाय जीवसे ॥ १० ॥
यत्ते पराः परावतो मनो जगाम दूरकम्।
तत्त आ वर्तयामसीह क्षयाय जीवसे ॥ ११ ॥
यत्ते भूतं च भव्यं च मनो जगाम दूरकम्।
तत्त आ वर्तयामसीह क्षयाय जीवसे ॥ १२ ॥

[५९] एकोनषष्टितमं सूक्तम्

ऋषिः—बन्ध्वादयो गौपायनाः॥ देवता—१-३ निर्ऋतिः; ४ निर्ऋतिः सोमश्च; ५, ६ असुनीतिः; ७ लिङ्गोक्ताः; ८, ९, १०[१] द्यावापृथिव्यौ; १०[२] द्यावापृथिव्याविन्द्रश्च॥ छन्दः—१ विराट्त्रिष्टुप्; २, ४-६ निचृत्त्रिष्टुप्; ३, ७ आर्चीस्वराट्त्रिष्टुप्; ८ भुरिक् पङ्क्तिः; ९ जगती; १० विराड्जगती॥
स्वरः—१-७ धैवतः; ८ पञ्चमः; ९, १० निषादः॥

अथ द्वाविंशो वर्गः॥ २२ ॥

प्र तार्यायुः प्रतरं नवीयुः स्थातारेव क्रतुमता रथस्य।
अध च्यवान उत्तवीत्यर्थं परातरं सु निर्ऋतिर्जिहीताम्॥ १ ॥
सामन्नु राये निधिमन्वव्रं करामहे सु पुरुध श्रवांसि।
ता नो विश्वानि जरिता ममत्तु परातरं सु निर्ऋतिर्जिहीताम्॥ २ ॥
अभी ष्वर्यः पौंस्यैर्भवेम द्यौर्न भूमिं गिरयो नाज्रान्।
ता नो विश्वानि जरिता चिकेत परातरं सु निर्ऋतिर्जिहीताम्॥ ३ ॥
मो षु णः सोम मृत्यवे परा दाः पश्येम नु सूर्यमुच्चरन्तम्।
द्युभिर्हितो जरिमा सू नो अस्तु परातरं सु निर्ऋतिर्जिहीताम्॥ ४ ॥
असुनीते मनो अस्मासु धारय जीवातवे सु प्र तिरा न आयुः।
रारन्धि नः सूर्यस्य संदृशि घृतेन त्वं तन्वं वर्धयस्व॥ ५ ॥

अथ त्रयोविंशो वर्गः॥ २३ ॥

असुनीते पुनरस्मासु चक्षुः पुनः प्राणमिह नो धेहि भोगम्।
ज्योक्पश्येम सूर्यमुच्चरन्तमनुमते मृळया नः स्वस्ति ॥ ६ ॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पुनर्नो अस्वं पृथिवी ददातु पुनर्द्यौर्देवी पुनरन्तरिक्षम् ।
पुनर्नः सोमस्तन्वं ददातु पुनः पूषा पथ्यां३ या स्वस्तिः ॥ ७ ॥
शं रोदसी सुबन्धवे यह्वी ऋतस्य मातरा ।
भरतामप यद्रपो द्यौः पृथिवि क्षमा रपो मो षु ते किं चनाममत् ॥ ८ ॥
अवं द्रुके अवं त्रिका दिवश्चरन्ति भेषजा ।
क्षमा चरिष्णवेकुकं भरतामप यद्रपो द्यौः
पृथिवि क्षमा रपो मो षु ते किं चनाममत् ॥ ९ ॥
समिन्द्रेरय गामनड्वाहं य आवहदुशीनरांण्या अनः ।
भरतामप यद्रपो द्यौः पृथिवि क्षमा रपो मो षु ते किं चनाममत् ॥ १० ॥

[६०] षष्टितमं सूक्तम्

ऋषिः—१-५, ७-१२ बन्ध्वादयो गौपायनाः; ६ अगस्त्यस्य स्वसैषां माता ॥ देवता—१-४, ६ असमाती राजा; ५ इन्द्रः; ७-११ सुबन्धोर्जीविताह्वानम्; १२ हस्तः ॥ छन्दः—१-३ गायत्री; ४, ५ निचृद्गायत्री; ६ पादनिचृद् अनुष्टुप्; ७, १०, १२ निचृदनुष्टुप्; ८, ९ निचृत्पङ्क्तिः; ११ आर्च्यनुष्टुप् ॥ स्वरः—१-५ षड्जः; ६, ७, १०-१२ गान्धारः; ८, ९ पञ्चमः ॥

अथ चतुर्विंशो वर्गः ॥ २४ ॥

आ जनं त्वेषसंदृशं माहीनानामुपस्तुतम् । अगन्म बिभ्रतो नमः ॥ १ ॥
असमातिं नितोशनं त्वेषं निययिनं रथम् । भुजेरथस्य सत्पतिम् ॥ २ ॥
यो जनान्महिषाँ इवातितस्थौ पवीरवान् । उतापवीरवान्युधा ॥ ३ ॥
यस्यैक्ष्वाकुरुप व्रते रेवान्मराय्येधते । दिवीव वञ्च कृष्टयः ॥ ४ ॥
इन्द्र क्षत्रासमातिषु रथप्रोष्ठेषु धारय । दिवीव सूर्यं दृशे ॥ ५ ॥
अगस्त्यस्य नद्भ्यः सप्तीं युनक्षि रोहिता ।
पणीन्त्र्यक्रमीरभि विश्वान्राजन्नराधसः ॥ ६ ॥

अथ पञ्चविंशो वर्गः ॥ २५ ॥

अयं मातायं पितायं जीवातुरागमत् ।
इदं तवं प्रसर्पणं सुबन्धवेहि निरिहि ॥ ७ ॥
यथा युगं वरत्रया नह्यन्ति धरुणाय कम् ।
एवा दाधार ते मनो जीवातवे न मृत्यवेऽथो अरिष्टतातये ॥ ८ ॥
यथेयं पृथिवी मही दाधारेमान्वनस्पतीन् ।
एवा दाधार ते मनो जीवातवे न मृत्यवेऽथो अरिष्टतातये ॥ ९ ॥
यमादहं वैवस्वतात्सुबन्धोर्मन आभरम् ।
जीवातवे न मृत्यवेऽथो अरिष्टतातये ॥ १० ॥
न्यङ्ङ्गवातोऽवं वाति न्यक्तपति सूर्यः ।
नीचीनमघ्न्या दुहे न्यग्भवतु ते रपः ॥ ११ ॥
अयं मे हस्तो भगवानयं मे भगवत्तरः ।
अयं मे विश्वभेषजोऽयं शिवाभिमर्शनः ॥ १२ ॥

पञ्चमोऽनुवाकः [६१] एकषष्टितमं सूक्तम्

ऋषिः—नाभानेदिष्ठो मानवः ॥ देवता—विश्वे देवाः ॥ छन्दः—१, ८-१०, १५, १६, १८, १९, २१ निचृत्त्रिष्टुप्; २, ७, ११, १२, २० विराट्त्रिष्टुप्; ३, २६ आर्ची-स्वराट्त्रिष्टुप्; ४, १४, १७, २२, २३, २५ पादनिचृत्त्रिष्टुप्; ५, ६, १३ त्रिष्टुप्; २४, २७ आर्चीभुरिक्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

अथ षड्विंशो वर्गः ॥ २६ ॥

इदमित्था रौद्रं गूर्तवचा ब्रह्म क्रत्वा शच्यामन्तराजौ ।
क्राणा यदस्य पितरा मंहनेष्ठाः पर्षत्पक्थे अहन्ना सप्त होतॄन् ॥ १ ॥
स इद्दानाय दभ्याय वन्वञ्च्यवानः सूदैरमिमीत वेदिम् ।
तूर्वयाणो गूर्तवचस्तमः क्षोदो न रेत इतऊति सिञ्चत् ॥ २ ॥
मनो न येषु हवनेषु तिग्मं विपः शच्या वनुथो द्रवन्ता ।
आ यः शर्यीभिस्तुविनृम्णो अस्याश्रीणीतादिशं गभस्तौ ॥ ३ ॥
कृष्णा यद्रोष्वरुणीषु सीदद्दिवो नपाताश्विना हुवे वाम् ।
वीतं मे यज्ञमा गतं मे अन्नं ववन्वांसा नेषमस्मृतधू ॥ ४ ॥
प्रथिष्ट यस्य वीरकर्ममिष्णदनुष्ठितं नु नर्यो अपौहत् ।
पुनस्तदा वृहति यत्कनायां दुहितुरा अनुभूतमनर्वा ॥ ५ ॥

अथ सप्तविंशो वर्गः ॥ २७ ॥

मध्या यत्कर्त्वमभवद्भीके कामं कृण्वाने पितरि युवत्याम् ।
मनानग्रेतो जहतुर्वियन्ता सानौ निषिक्तं सुकृतस्य योनौ ॥ ६ ॥
पिता यत्स्वां दुहितरमधिष्कन्क्ष्मया रेतः संजग्मानो नि षिञ्चत् ।
स्वाध्योऽजनयन्ब्रह्म देवा वास्तोष्पतिं व्रतपां निरतक्षन् ॥ ७ ॥
स ईं वृषा न फेनमस्यदाजौ स्मदा पदे दभ्रचेताः ।
सरत्पदा न दक्षिणा परावृङ् न ता नु मे पृशन्यो जगृभ्रे ॥ ८ ॥
मक्षू न वह्निः प्रजाया उपब्दिरग्निं न नग्न उप सीददूधः ।
सनितेध्मं सनितोत वाजं स धर्ता जज्ञे सहसा यवीयुत ॥ ९ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मक्षू कनायाः सख्यं नवग्वा ऋतं वदन्त ऋतयुक्तिमग्मन्।
द्विबर्हसो य उप गोपमागुरदक्षिणासो अच्युता दुदुक्षन्॥ १०॥

अथ अष्टविंशो वर्गः॥ २८॥

मक्षू कनायाः सख्यं नवीयो राधो न रेत ऋतमित्तुरण्यन्।
शुचि यत्ते रेक्ण आयजन्त सबर्दुघायाः पय उस्त्रियायाः॥ ११॥
पश्चा यत्पश्चा वियुता बुधन्तेति ब्रवीति वक्तरी ररणः।
वसोर्वसुत्वा कारवोऽनेहा विश्वं विवेष्टि द्रविणमुप क्षु॥ १२॥
तदिन्वस्य परिषद्वानो अग्मन्पुरू सदन्तो नार्षदं बिभित्सन्।
वि शुष्णस्य संगृभितमनर्वा विदत्पुरुप्रजातस्य गुहा यत्॥ १३॥
भगो ह नामोत यस्य देवाः स्वर्णं ये त्रिषधस्थे निषेदुः।
अग्निर्ह नामोत जातवेदाः श्रुधी नो होतर्ऋतस्य होताध्रुक्॥ १४॥
उत त्या मे रौद्रावर्चिमन्ता नासत्याविन्द्र गूर्तये यजध्यै।
मनुष्वद् वृक्तबर्हिषे ररिणा मन्दू हितप्रयसा विक्षु यज्यू॥ १५॥

अथ एकोनत्रिंशो वर्गः॥ २९॥

अयं स्तुतो राजा वन्दि वेधा अपश्च विप्रस्तरति स्वसेतुः।
स कक्षीवन्तं रेजयत्सो अग्निं नेमिं न चक्रमर्वतो रघुद्रु॥ १६॥
स द्विबन्धुर्वैतरणो यष्टा सबर्धुं धेनुमस्वं दुहध्यै।
सं यन्मित्रावरुणो वृञ्ज उक्थैर्न्येष्टेभिरर्यमणं वरूथैः॥ १७॥
तद्बन्धुः सूरिर्दिवि ते धियंधा नाभानेदिष्ठो रपति प्र वेनन्।
सा नो नाभिः परमास्य वा घाहं तत्पश्चा कतिथश्चिदास॥ १८॥
इयं मे नाभिरिह मे सधस्थमिमे मे देवा अयमस्मि सर्वः।
द्विजा अहं प्रथमजा ऋतस्येदं धेनुरदुहज्जायमाना॥ १९॥
अधासु मन्द्रो अरतिर्विभावावर्यस्यति द्विवर्तनिर्वनेषाट्।
ऊर्ध्वा यच्छेणिर्न शिशुर्दन्मक्षू स्थिरं शेवृधं सूत माता॥ २०॥

अथ त्रिंशो वर्गः॥ ३०॥

अधा गाव उपमातिं कनाया अनु श्यान्तस्य कस्य चित्परेयुः।
श्रुधि त्वं सुद्रविणो नस्त्वं याळाश्वघ्नस्य वावृधे सूनृताभिः॥ २१॥
अध त्वमिन्द्र विद्धयस्मान्महो राये नृपते वज्रबाहुः।
रक्षा च नो मघोनः पाहि सूरीन्नेहसस्ते हरिवो अभिष्टौ॥ २२॥
अध यद्राजानौ गविष्टौ सरण्युः कारवे जरण्युः।
विप्रः प्रेष्ठः स ह्येषां बभूव पर्षा च वक्षदुत पर्यदेनान्॥ २३॥
अधा न्वस्य जेन्यस्य पुष्टौ वृथा रेभन्त ईमहे तदु नु।
सरण्युरस्य सूनुरश्वो विप्रश्चासि श्रवसश्च सातौ॥ २४॥
युवोर्यदिं सख्यायास्मे शर्धाय स्तोमं जुजुषे नमस्वान्।
विश्वत्र यस्मिन्ना गिरः समीचीः पूर्वीर्व गातुर्दाशत्सूनृतायै॥ २५॥
स गृणानो अद्भिर्देववानिति सुबन्धुर्नर्मसा सूक्तैः।
वर्धद्दुक्थैर्वचोभिरा हि नूनं व्यध्वैति पर्यस उस्त्रियायाः॥ २६॥
त ऊ षु णो महो यजत्रा भूत देवास ऊतये सजोषाः।
ये वाजाँ अनयता वियन्तो ये स्था निचेतारो अमूराः॥ २७॥

इत्यष्टमाष्टके प्रथमोऽध्यायः॥

अथ द्वितीयोऽध्यायः

[६२] द्विषष्टितमं सूक्तम्

ऋषिः—नाभानेदिष्ठो मानवः॥ देवता—१-६ विश्वे देवा आङ्गिरसो वा; ७ विश्वे देवाः; ८-११ सावर्णेर्दानस्तुतिः॥ छन्दः—१, २ विराड्जगती; ३ पाद-निचृज्जगती; ४ निचृज्जगती; ५ अनुष्टुप्; ६ बृहती; ७ विराट्पङ्क्तिः; ८, ९ निचृदनुष्टुप्; १० गायत्री; ११ भुरिक्त्रिष्टुप्॥
स्वरः—१-४ निषादः; ५, ८, ९ गान्धारः; ६ मध्यमः; ७ पञ्चमः; १० षड्जः; ११ धैवतः॥

अथ प्रथमो वर्गः॥ १॥

ये यज्ञेन दक्षिणया समक्ता इन्द्रस्य सख्यममृतत्वमानश।
तेभ्यो भद्रमङ्गिरसो वो अस्तु प्रति गृभ्णीत मानवं सुमेधसः॥ १॥
य उदाजन्पितरो गोमयं वस्वृतेनाभिन्दन्परिवत्सरे वलम्।
दीर्घायुत्वमङ्गिरसो वो अस्तु प्रति गृभ्णीत मानवं सुमेधसः॥ २॥
य ऋतेन सूर्यमारोहयन्दिव्यप्रथयन्पृथिवीं मातरं वि।
सुप्रजास्त्वमङ्गिरसो वो अस्तु प्रति गृभ्णीत मानवं सुमेधसः॥ ३॥
अयं नाभा वदति वल्गु वो गृहे देवपुत्रा ऋषयस्तच्छृणोतन।
सुब्रह्मण्यमङ्गिरसो वो अस्तु प्रति गृभ्णीत मानवं सुमेधसः॥ ४॥
विरूपास इदृषयस्त इद्भीरवेपसः।
ते अङ्गिरसः सूनवस्ते अग्नेः परि जज्ञिरे॥ ५॥

अथ द्वितीयो वर्गः॥ २॥

ये अग्नेः परि जज्ञिरे विरूपासो दिवस्परि।
नवग्वो नु दशग्वो अङ्गिरस्तमः सचा देवेषु मंहते॥ ६॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

इन्द्रेण युजा निः सृजन्त वाघतो व्रजं गोमन्तमश्विनम् ।
सहस्रं मे ददतो अष्टकर्ण्यः श्रवो देवेष्वक्रत ॥ ७ ॥
प्र नूनं जायतामयं मनुस्तोकमेव रोहतु ।
यः सहस्रं शताश्वं सद्यो दानाय मंहते ॥ ८ ॥
न तमश्नोति कश्चन दिवईव सान्वारभम् ।
सावर्ण्यस्य दक्षिणा वि सिन्धुरिव पप्रथे ॥ ९ ॥
उत दासा परिविषे स्मद्दिष्टी गोपरीणसा । यदुस्तुर्वश्च मामहे ॥ १० ॥
सहस्रदा ग्रामणीर्मा रिषन्मनुः सूर्येणास्य यतमानैतु दक्षिणा ।
सावर्णेर्देवाः प्र तिरन्त्वायुर्यस्मिन्नश्रान्ता असनाम वाजम् ॥ ११ ॥

[६३] त्रिषष्टितमं सूक्तम्

ऋषिः—गयः प्लातः ॥ देवता—१-१४, १७ विश्वे देवाः; १५, १६ पथ्यास्वस्तिः ॥
छन्दः—१, ६, ८, ११-१३ विराड्जगती; २, ३, १०, १४ पादनिचृज्जगती; ४, ५, ७ निचृज्जगती; ९ आर्चीस्वराड्जगती; १५ जगती त्रिष्टुप् वा; १६ आर्चीस्वरादत्रिष्टुप्; १७ पादनिचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१-१४ निषादः; १५ निषादो धैवतो वा; १६, १७ धैवतः ॥

अथ तृतीयो वर्गः ॥ ३ ॥
परावतो ये दिधिषन्त आप्यं मनुप्रीतासो जनिमा विवस्वतः ।
ययातेर्ये नहुष्यस्य बर्हिषि देवा आसते ते अधि ब्रुवन्तु नः ॥ १ ॥
विश्वा हि वो नमस्यानि वन्द्या नामानि देवा उत यज्ञियानि वः ।
ये स्थ जाता अदितेरबुध्नियस्परि ये पृथिव्यास्ते म इह श्रुता हवम् ॥ २ ॥
येभ्यो माता मधुमत्पिन्वते पयः पीयूषं द्यौरदितिरद्रिबर्हाः ।
उक्थशुष्मान्वृषभरान्त्स्वप्नसस्ताँ आदित्याँ अनु मदा स्वस्तये ॥ ३ ॥
नृचक्षसो अनिमिषन्तो अर्हणा बृहद्देवासो अमृतत्वमानशुः ।
ज्योतीरथा अहिमाया अनागसो दिवो वर्ष्माणं वसते स्वस्तये ॥ ४ ॥
सम्राजो ये सुवृधो यज्ञमाययुरपरिह्वृता दधिरे दिवि क्षयम् ।
ताँ आ विवास नमसा सुवृक्तिभिर्महो आदित्याँ अदितिं स्वस्तये ॥ ५ ॥

अथ चतुर्थो वर्गः ॥ ४ ॥
को वः स्तोमं राधति यं जुजोषथ विश्वे देवासो मनुषो यति स्त्न ।
को वोऽध्वरं तुविजाता अरं करद्यो नः पर्षदत्यंहः स्वस्तये ॥ ६ ॥
येभ्यो होत्रां प्रथमामायेजे मनुः समिद्धाग्निर्मनसा सप्त होतृभिः ।
त आदित्या अभयं शर्म यच्छत सुगा नः कर्त सुपथा स्वस्तये ॥ ७ ॥
य ईशिरे भुवनस्य प्रचेतसो विश्वस्य स्थातुर्जगतश्च मन्तवः ।
ते नः कृतादकृतादेनसस्पर्यद्या देवासः पिपृता स्वस्तये ॥ ८ ॥
भरेष्विन्द्रं सुहवं हवामहेंऽहोमुचं सुकृतं दैव्यं जनम् ।
अग्निं मित्रं वरुणं सातये भगं द्यावापृथिवी मरुतः स्वस्तये ॥ ९ ॥
सुत्रामाणं पृथिवीं द्यामनेहसं सुशर्माणमदितिं सुप्रणीतिम् ।
दैवीं नावं स्वरित्रामनागसमस्रवन्तीमा रुहेमा स्वस्तये ॥ १० ॥

अथ पञ्चमो वर्गः ॥ ५ ॥
विश्वे यजत्रा अधि वोचतोतये त्रायध्वं नो दुरेवाया अभिह्रुतः ।
सत्यया वो देवहूत्या हुवेम शृण्वतो देवा अवसे स्वस्तये ॥ ११ ॥
अपामीवामप विश्वामनाहुतिमपारातिं दुर्विदत्रामघायतः ।
आरे देवा द्वेषो अस्मद्युयोतनोरु णः शर्म यच्छता स्वस्तये ॥ १२ ॥
अरिष्टः स मर्तो विश्वं एधते प्र प्रजाभिर्जायते धर्मणस्परि ।
यमादित्यासो नयथा सुनीतिभिरति विश्वानि दुरिता स्वस्तये ॥ १३ ॥
यं देवासोऽवथ वाजसातौ यं शूरसाता मरुतो हिते धने ।
प्रातर्यावाणं रथमिन्द्र सानसिमरिष्यन्तमा रुहेमा स्वस्तये ॥ १४ ॥
स्वस्ति नः पथ्यासु धन्वसु स्वस्त्यप्सु वृजने स्वर्वति ।
स्वस्ति नः पुत्रकृथेषु योनिषु स्वस्ति राये मरुतो दधातन ॥ १५ ॥
स्वस्तिरिद्धि प्रपथे श्रेष्ठा रेक्णस्वत्यभि या वाममेति ।
सा नो अमा सो अरणे नि पातु स्वावेशा भवतु देवगोपा ॥ १६ ॥
एवा प्लतेः सूनुरवीवृधद्वो विश्व आदित्या अदिते मनीषी ।
ईशानासो नरो अमर्त्येनास्तावि जनो दिव्यो गयेन ॥ १७ ॥

[६४] चतुःषष्टितमं सूक्तम्

ऋषिः—गयः प्लातः ॥ देवता—विश्वे देवाः ॥ छन्दः—१, ४, ५, ९, १०, १३, १५ निचृज्जगती; २, ३, ७, ८, ११ विराड्जगती; ६, १४ जगती; १२ त्रिष्टुप्; १६ निचृत्त्रिष्टुप्; १७ पादनिचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१-११, १३-१५ निषादः; १२, १६, १७ धैवतः ॥

अथ षष्ठो वर्गः ॥ ६ ॥
कथा देवानां कतमस्य यामनि सुमन्तु नाम शृण्वतां मनामहे ।
को मृळाति कतमो नो मयस्करत्कतम ऊती अभ्या ववर्तति ॥ १ ॥
क्रतूयन्ति क्रतवो हृत्सु धीतयो वेनन्ति वेनाः पतयन्त्या दिशः ।
न प्रमिनन्ति विदते अन्य एभ्यो देवेषु मे अधि कामा अयंसत ॥ २ ॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नरो वा शंसं पूषणमगोह्यमग्निं देवेद्धमभ्यर्चसे गिरा।
सूर्यामासा चन्द्रमसा यमं दिवि त्रितं वातमुषसमुक्तुमश्विना॥ ३॥
कथा कविस्तुवीरवान्कया गिरा बृहस्पतिर्वावृधते सुवृक्तिभिः।
अज एकपात्सुहवेभिर्ऋक्वभिरहिः शृणोतु बुध्न्यो३ हवीमनि॥ ४॥
दक्षस्य वादिते जन्मनि व्रते राजाना मित्रावरुणा विवाससि।
अतूर्तपन्थाः पुरुरथो अर्यमा सप्तहोता विषुरूपेषु जन्मसु॥ ५॥

अथ सप्तमो वर्गः॥ ७॥

ते नो अवन्तो वनश्रुतो हवं विश्वे शृण्वन्तु वाजिनो मितद्रवः।
सहस्रसा मेधसाताविव त्मना महो ये धनं समिथेषु जभ्रिरे॥ ६॥
प्र वो वायुं रथयुजं पुरंधिं स्तोमैः कृणुध्वं सख्याय पूषणम्।
ते हि देवस्य सवितुः सवीमनि क्रतुं सचन्ते सचितः सचेतसः॥ ७॥
त्रिः सप्त सस्रा नद्यो महीरपो वनस्पतीन्पर्वताँ अग्निमूतये।
कृशानुमस्तृन्तिष्यं सधस्थ आ रुद्रं रुद्रेषु रुद्रियं हवामहे॥ ८॥
सरस्वती सरयुः सिन्धुरूर्मिभिर्महो महीरवसा यन्तु वक्षणीः।
देवीरापो मातरः सूदयित्नवो घृतवत्पयो मधुमन्नो अर्चत॥ ९॥
उत माता बृहद्दिवा शृणोतु नस्त्वष्टा देवेभिर्जनिभिः पिता वचः।
ऋभुक्षा वाजो रथस्पतिर्भगो रण्वः शंसः शशमानस्य पातु नः॥ १०॥

अथ अष्टमो वर्गः॥ ८॥

रण्वः संदृष्टौ पितुमाँइव क्षयो भद्रा रुद्राणां मरुतामुपस्तुतिः।
गोभिः ष्याम यशसो जनेष्वा सदा देवास इळया सचेमहि॥ ११॥
यां मे धियं मरुत इन्द्र देवा अददात वरुण मित्र यूयम्।
तां पीपयत पयसेव धेनुं कुविद्रियो अधि रथे वहाथ॥ १२॥
कुविदङ्ग प्रति यथा चिदस्य नः सजात्यस्य मरुतो बुबोधथ।
नाभा यत्र प्रथमं संनसामहे तत्र जामित्वमदितिर्दधातु नः॥ १३॥
ते हि द्यावापृथिवी मातरा मही देवी देवाञ्जन्मना यज्ञियेतः।
उभे बिभृत उभयं भरीमभिः पुरू रेतांसि पितृभिश्च सिञ्चतः॥ १४॥
वि षा होत्रा विश्वमश्नोति वार्यं बृहस्पतिररमतिः पनीयसी।
ग्रावा यत्र मधुषुदुच्यते बृहदवीवशन्त मतिभिर्मनीषिणः॥ १५॥
एवा कविस्तुवीरवाँ ऋतज्ञा द्रविणस्युर्द्रविणसश्चकानः।
उक्थेभिरत्र मतिभिश्च विप्रोऽपीपयद्रयो दिव्यानि जन्म॥ १६॥

एवा प्लतेः सूनुरवीवृधद्वो विश्व आदित्या अदिते मनीषी।
ईशानासो नरो अमर्त्येनास्तावि जनो दिव्यो गयेन॥ १७॥

[६५] पञ्चषष्टितमं सूक्तम्

ऋषिः—वसुकर्णो वासुक्रः॥ देवता—विश्वे देवाः॥ छन्दः—१, ४, ६, १०, १२, १३ निचृज्जगती; २ पादनिचृज्जगती ३, ७, ९ विराड्जगती; ५, ८, ११ जगती; १४ त्रिष्टुप्; १५ विराट्त्रिष्टुप्॥
स्वरः—१-१३ निषादः; १४, १५ धैवतः॥

अथ नवमो वर्गः॥ ९॥

अग्निरिन्द्रो वरुणो मित्रो अर्यमा वायुः पूषा सरस्वती सजोषसः।
आदित्या विष्णुर्मरुतः स्वर्बृहत्सोमो रुद्रो अदितिर्ब्रह्मणस्पतिः॥ १॥
इन्द्राग्नी वृत्रहत्येषु सत्पती मिथो हिन्वाना तन्वा३ समोकसा।
अन्तरिक्षं महा पप्रुरोजसा सोमो घृतश्रीर्महिमानमीरयन्॥ २॥
तेषां हि महा महतामनर्वणां स्तोमाँ इयर्म्यृतज्ञा ऋतावृधाम्।
ये अप्सुवर्मर्णवं चित्ररांधसस्ते नो रासन्तां महये सुमित्र्याः॥ ३॥
स्वर्णरमन्तरिक्षाणि रोचना द्यावाभूमी पृथिवी स्कम्भुरोजसा।
पृक्षाइव महयन्तः सुरातयो देवाः स्तवन्ते मनुषाय सूरयः॥ ४॥
मित्राय शिक्ष वरुणाय दाशुषे या सम्राजा मनसा न प्रयुच्छतः।
ययोर्धाम धर्मणा रोचते बृहद्ययोरुभे रोदसी नाधसी वृतौ॥ ५॥

अथ दशमो वर्गः॥ १०॥

या गौर्वर्तनिं पर्येति निष्कृतं पयो दुहाना व्रतनीरवारतः।
सा प्रब्रुवाणा वरुणाय दाशुषे देवेभ्यो दाशद्धविषा विवस्वते॥ ६॥
दिवक्षसो अग्निजिह्वा ऋतावृधं ऋतस्य योनिं विमृशन्त आसते।
द्यां स्कभित्व्यप आ चक्रुरोजसा यज्ञं जनित्वी तन्वी३नि मामृजुः॥ ७॥
परिक्षिता पितरा पूर्वजावरी ऋतस्य योना क्षयतः समोकसा।
द्यावापृथिवी वरुणाय सव्रते घृतवत्पयो महिषाय पिन्वतः॥ ८॥
पर्जन्यावाता वृषभा पुरीषिणेन्द्रवायू वरुणो मित्रो अर्यमा।
देवाँ आदित्याँ अदितिं हवामहे ये पार्थिवासो दिव्यासो अप्सु ये॥ ९॥
त्वष्टारं वायुमृभवो य ओहते दैव्या होतारा उषसं स्वस्तये।
बृहस्पतिं वृत्रखादं सुमेधसमिन्द्रियं सोमं धनसा उ ईमहे॥ १०॥

अथ एकादशो वर्गः॥ ११॥

ब्रह्म गामश्वं जनयन्त ओषधीर्वनस्पतीन्पृथिवीं पर्वताँ अपः।
सूर्यं दिवि रोहयन्तः सुदानव आर्यी व्रता विसृजन्तो अधि क्षमि॥ ११॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

भु॒ज्युमंह॑सः पिपृथो॒ निर॑श्विना॒ श्यावं॑ पु॒त्रं व॑ध्रिम॒त्या अ॑जिन्वतम्।
क॒म॒द्युवं॑ विम॒दायो॑हथुर्यु॒वं वि॑ष्णा॒प्वं१॒॑ विश्व॑का॒याव॑ सृजथः॥ १२॥
पावी॑रवी तन्य॒तुरेक॑पाद॒जो दि॒वो ध॒र्ता सिन्धु॒रापः॑ समु॒द्रियः॑।
विश्वे॑ दे॒वासः॑ शृणव॒न्वचां॑सि मे॒ सर॑स्वती स॒ह धी॒भिः पुरं॑ध्या॥ १३॥
विश्वे॑ दे॒वाः स॒ह धी॒भिः पुरं॑ध्या॒ मनो॒र्यज॑त्रा अ॒मृता॑ ऋत॒ज्ञाः।
रा॒ति॒षाचो॑ अभि॒षाचः॑ स्व॒र्विदः॒ स्व१॒॑र्गिरो॒ ब्रह्म॑ सू॒क्तं जु॑षेरत॥ १४॥
दे॒वान्वसि॑ष्ठो अ॒मृता॑न्ववन्दे॒ ये विश्वा॒ भुव॑ना॒भि प्र॑त॒स्थुः।
ते नो॑ रासन्तामुरुगा॒यम॒द्य यू॒यं पा॑त स्व॒स्तिभिः॒ सदा॑ नः॥ १५॥

[६६] षट्षष्टितमं सूक्तम्

ऋषिः—वसुकर्णो वासुक्रः॥ देवता—विश्वे देवाः॥ छन्दः—१, ३, ५-७ जगती; २, १०, १२, १३ निचृज्जगती; ४, ८, ११ विराड्जगती; ९ पादनिचृज्जगती; १४ आर्चीस्वराड्जगती; १५ विराट्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१-१४ निषादः; १५ धैवतः॥

अथ द्वादशो वर्गः॥ १२॥

दे॒वान्हु॑वे बृ॒हच्छ्र॑वसः स्व॒स्तये॑ ज्योति॒ष्कृतो॑ अध्व॒रस्य॒ प्रचे॑तसः।
ये वा॑वृ॒धुः प्र॑त॒रं वि॒श्ववे॑दस॒ इन्द्र॑ज्येष्ठासो अ॒मृता॑ ऋता॒वृधः॑॥ १॥
इन्द्र॑प्रसूता॒ वरु॑णप्रशिष्टा॒ ये सूर्य॑स्य॒ ज्योति॑षो भा॒गमा॑न॒शुः।
म॒रुद्ग॑णे वृ॒जने॒ मन्म॑ धीमहि॒ माघो॑ने य॒ज्ञं ज॑नयन्त सू॒रयः॑॥ २॥
इन्द्रो॒ वसु॑भिः॒ परि॑ पातु नो॒ गय॑मादि॒त्यैर्नो॒ अदि॑तिः॒ शर्म॑ यच्छतु।
रु॒द्रो रु॒द्रेभि॑र्दे॒वो मृ॑ळयाति न॒स्त्वष्टा॑ नो॒ ग्नाभिः॑ सुवि॒ताय॑ जिन्वतु॥ ३॥
अदि॑ति॒र्द्यावा॑पृथि॒वी ऋ॒तं म॒हदिन्द्रा॒विष्णू॑ म॒रुतः॒ स्व॑र्बृ॒हत्।
दे॒वाँ आ॑दि॒त्याँ अव॑से हवामहे॒ वसू॑न्रु॒द्रान्त्स॑वि॒तारं॑ सु॒दंस॑सम्॥ ४॥
सर॑स्वान्धी॒भिर्वरु॑णो धृ॒तव्र॑तः पू॒षा विष्णु॑र्महि॒मा वा॒युर॒श्विना॑।
ब्र॒ह्म॒कृतो॑ अ॒मृता॑ वि॒श्ववे॑दसः॒ शर्म॑ नो यंसन्त्रि॒वरू॑थ॒मंह॑सः॥ ५॥

अथ त्रयोदशो वर्गः॥ १३॥

वृषा॑ य॒ज्ञो वृष॑णः सन्तु य॒ज्ञिया॒ वृष॑णो दे॒वा वृष॑णो हवि॒ष्कृतः॑।
वृष॑णा॒ द्यावा॑पृथि॒वी ऋ॒ताव॑री॒ वृषा॑ प॒र्जन्यो॒ वृष॑णो वृष॒स्तुभः॑॥ ६॥
अ॒ग्नीषोमा॒ वृष॑णा॒ वाज॑सातये पुरुप्रश॒स्ता वृष॑णा॒ उप॑ ब्रुवे।
यावी॑जि॒रे वृष॑णो देवय॒ज्यया॒ ता नः॒ शर्म॑ त्रि॒वरू॑थं॒ वि यं॑सतः॥ ७॥
धृ॒तव्र॑ताः क्ष॒त्रिया॑ यज्ञनि॒ष्कृतो॑ बृहद्दि॒वा अ॑ध्व॒राणा॑मभि॒श्रियः॑।
अ॒ग्निहो॑तार ऋत॒सापो॑ अ॒द्रुहो॒ऽपो अ॑सृज॒न्ननु॑ वृत्र॒तूर्ये॑॥ ८॥

द्यावा॑पृथि॒वी ज॑नयन्न॒भि व्र॒ताप॒ ओष॑धीर्व॒निना॑नि य॒ज्ञिया॑।
अ॒न्तरि॑क्षं॒ स्व१॒॑रा प॑प्रुरू॒तये॒ वशं॑ दे॒वास॑स्त॒न्वी॒३॒॑ नि मा॑मृजुः॥ ९॥
ध॒र्तारो॑ दि॒व ऋ॒भवः॑ सु॒हस्ता॑ वातापर्ज॒न्या म॑हि॒षस्य॑ तन्य॒तोः।
आप॒ ओष॑धीः॒ प्रति॑रन्तु नो॒ गिरो॒ भगो॑ रा॒तिर्वा॒जिनो॑ यन्तु मे॒ हव॑म्॥ १०॥

अथ चतुर्दशो वर्गः॥ १४॥

स॒मु॒द्रः सिन्धू॒ रजो॑ अ॒न्तरि॑क्षम॒ज एक॑पात्तनयि॒त्नुर॑र्ण॒वः।
अहि॑र्बु॒ध्न्यः॑ शृणव॒द्वचां॑सि मे॒ विश्वे॑ दे॒वास॑ उ॒त सू॒रयो॒ मम॑॥ ११॥
स्याम॑ वो॒ मन॑वो दे॒ववी॑तये॒ प्राञ्चं॑ नो य॒ज्ञं प्र ण॑यत साधु॒या।
आदि॑त्या॒ रुद्रा॒ वस॑वः॒ सुदा॑नव इ॒मा ब्रह्म॑ श॒स्यमा॑नानि जिन्वत॥ १२॥
दैव्या॒ होता॑रा प्रथ॒मा पु॒रोहि॑त ऋ॒तस्य॒ पन्था॒मन्वे॑मि साधु॒या।
क्षेत्र॑स्य॒ पतिं॒ प्रति॑वेशमीमहे॒ विश्वा॑न्दे॒वाँ अ॒मृताँ॒ अप्र॑युच्छतः॥ १३॥
वसि॑ष्ठासः पितृ॒वद्वाच॑मक्रत दे॒वाँ ईळा॑ना ऋषि॒वत्स्व॒स्तये॑।
प्री॒ताइ॑व ज्ञा॒तयः॒ काम॒मेत्या॒स्मे दे॑वा॒सोऽव॑ धूनुता॒ वसु॑॥ १४॥
दे॒वान्वसि॑ष्ठो अ॒मृता॑न्ववन्दे॒ ये विश्वा॒ भुव॑ना॒भि प्र॑त॒स्थुः।
ते नो॑ रासन्तामुरुगा॒यम॒द्य यू॒यं पा॑त स्व॒स्तिभिः॒ सदा॑ नः॥ १५॥

[६७] सप्तषष्टितमं सूक्तम्

ऋषिः—अयास्यः॥ देवता—बृहस्पतिः॥ छन्दः—१ विराट्त्रिष्टुप्; २-७, ११ निचृत्त्रिष्टुप्; ८-१०, १२ त्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः॥

अथ पञ्चदशो वर्गः॥ १५॥

इ॒मां धियं॑ स॒प्तशी॑र्ष्णीं पि॒ता न॑ ऋ॒तप्र॑जातां बृह॒तीम॑विन्दत्।
तु॒रीयं॑ स्विज्जनयद्वि॒श्वजन्यो॒ऽयास्य॑ उ॒क्थमिन्द्रा॑य॒ शंस॑न्॥ १॥
ऋ॒तं शंस॑न्त ऋ॒जु दीध्या॑ना दि॒वस्पु॒त्रासो॒ असु॑रस्य वी॒राः।
विप्रं॑ प॒दमङ्गि॑रसो॒ दधा॑ना य॒ज्ञस्य॒ धाम॑ प्रथ॒मं म॑नन्त॥ २॥
हं॒सैरि॑व॒ सखि॑भि॒र्वाव॑दद्भिरश्म॒न्मया॑नि॒ नह॑ना॒ व्यस्य॑न्।
बृह॒स्पति॑रभि॒कनि॑क्रद॒द्गा उ॒त प्रास्तौ॒दुच्च॑ वि॒द्वाँ अ॑गायत्॥ ३॥
अ॒वो द्वाभ्यां॑ प॒र एक॑या॒ गा गुहा॒ तिष्ठ॑न्ती॒रनृ॑तस्य॒ सेतौ॑।
बृह॒स्पति॒स्तम॑सि॒ ज्योति॑रि॒च्छन्नुदु॒स्रा आक॒र्वि हि ति॒स्र आवः॑॥ ४॥
वि॒भिद्या॒ पुरं॑ श॒यथे॒मपा॑चीं॒ निस्त्रीणि॑ सा॒कमु॑द॒धेर॑कृन्तत्।
बृह॒स्पति॑रु॒षसं॒ सूर्यं॒ गाम॒र्कं वि॑वेद स्त॒नय॑न्निव॒ द्यौः॥ ५॥
इन्द्रो॑ व॒लं र॑क्षि॒तारं॒ दुघा॑नां क॒रेणे॑व॒ वि च॑कर्ता॒ रवे॑ण।
स्वेदा॑ञ्जिभिरा॒शिर॑मि॒च्छमा॒नोऽरो॑दयत्प॒णिमा गा अ॑मुष्णात्॥ ६॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अथ षोडशो वर्गः ॥ १६ ॥

स ईं॑ स॒त्येभि॒ः सखि॑भिः शु॒चद्भि॒र्गोधा॑यसं॒ वि ध॑न॒सैर॑दर्दः।
ब्रह्म॑ण॒स्पति॒र्वृष॑भिर्व॒राहै॑र्घ॒र्मस्वे॑देभि॒र्द्रवि॑णं॒ व्या॑नट् ॥ ७ ॥
ते स॒त्येन॒ मन॑सा॒ गोप॑तिं॒ गा इ॑या॒नास॑ इषणयन्त धी॒भिः।
बृह॒स्पति॑र्मि॒थोअ॑वद्यपेभि॒रुदु॒स्त्रिया॑ असृजत स्व॒युग्भिः॑ ॥ ८ ॥
तं व॒र्धय॑न्तो म॒तिभिः॑ शि॒वाभिः॑ सिं॒हमि॑व॒ नान॑दतं स॒धस्थे॑।
बृह॒स्पतिं॒ वृष॑णं॒ शूर॑सातौ॒ भरे॑भरे॒ अनु॑ मदेम जि॒ष्णुम् ॥ ९ ॥
य॒दा वाज॒मस॑नद्वि॒श्वरू॑प॒मा द्यामरु॑क्ष॒दुत्त॑राणि॒ सद्म॑ ।
बृह॒स्पतिं॒ वृष॑णं व॒र्धय॑न्तो॒ नाना॒ सन्तो॒ बिभ्र॑तो॒ ज्योति॑रा॒सा ॥ १० ॥
स॒त्यामा॒शिषं॑ कृणुता वयो॒धै की॒रिं चि॒द्ध्यव॑थ॒ स्वेभि॒रेवैः॑।
प॒श्चा मृधो॒ अप॑ भवन्तु॒ विश्वा॒स्तद्रो॑दसी शृणुतं विश्वमि॒न्वे ॥ ११ ॥
इन्द्रो॑ म॒ह्ना म॑ह॒तो अ॑र्ण॒वस्य॒ वि मू॒र्धान॑मभिनदर्बु॒दस्य॑ ।
अह॒न्नहि॒मरि॑णात्स॒प्त सिन्धू॑न्दे॒वैर्द्यावा॑पृथिवी॒ प्राव॑तं नः ॥ १२ ॥

[६८] अष्टषष्टितमं सूक्तम्

ऋषिः—अयास्यः ॥ देवता—बृहस्पतिः ॥ छन्दः—१, १२ विराट्त्रिष्टुप्; २, ८-११ त्रिष्टुप्; ३-७ निचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

अथ सप्तदशो वर्गः ॥ १७ ॥

उ॒द॒प्रुतो॒ न वयो॒ रक्ष॑माणा॒ वाव॑दतो अ॒भ्रिय॑स्येव॒ घोषाः॑ ।
गि॒रि॒भ्रजो॒ नोर्मयो॒ मद॑न्तो॒ बृह॒स्पति॑मभ्य१॒॑र्का अ॑नावन् ॥ १ ॥
सं गोभि॑राङ्गिर॒सो नक्ष॑माणो॒ भग॑ इ॒वेद॑र्य॒मणं॑ निनाय ।
जने॑ मि॒त्रो न दंप॑ती अनक्ति॒ बृह॑स्पते वा॒जया॒शूँरि॑वा॒जौ ॥ २ ॥
सा॒ध्व॒र्या अ॑ति॒थिनी॑रिषि॒राः स्पा॒र्हाः सु॒वर्णा॑ अनव॒द्यरू॑पाः ।
बृह॒स्पतिः॒ पर्व॑तेभ्यो वि॒तूर्या॒ निर्गा ऊ॑पे॒ यव॑मिव स्थि॒विभ्यः॑ ॥ ३ ॥
आ॒प्रु॒षा॒यन्मधु॑न ऋ॒तस्य॒ योनि॑मवक्षि॒पन्न॒र्क उ॒ल्कामि॑व॒ द्योः।
बृह॒स्पति॑रु॒द्धर॒न्नश्म॑नो॒ गा भूम्या॑ उ॒द्नेव॒ वि त्वचं॑ बिभेद ॥ ४ ॥
अप॒ ज्योति॑षा॒ तमो॑ अ॒न्तरि॑क्षादु॒द्नः शीपा॑लमिव॒ वात॑ आजत्।
बृह॒स्पति॑रनु॒मृश्या॑ व॒लस्या॒भ्रमि॑व॒ वात॒ आ च॑क्र॒ आ गाः ॥ ५ ॥
य॒दा व॒लस्य॒ पीय॑तो॒ जसुं॒ भेद्बृह॒स्पति॑रग्नि॒तपो॑भिर॒र्कैः ।
द॒द्भिर्न जि॒ह्वा परि॑विष्ट॒माद॑दा॒विर्नि॒धीँर॑कृणोदु॒स्त्रिया॑णाम् ॥ ६ ॥

अथ अष्टादशो वर्गः ॥ १८ ॥

बृह॒स्पति॒रम॑त॒ हि त्यदा॑सां॒ नाम॑ स्व॒रीणां॒ सद॑ने॒ गुहा॒ यत्।
आ॒ण्डेव॑ भि॒त्त्वा श॑कु॒नस्य॒ गर्भ॒मुदु॒स्त्रिया॒ः पर्व॑तस्य॒ त्मना॑जत् ॥ ७ ॥
अश्नापि॑नद्धं॒ मधु॒ पर्य॑पश्य॒न्मत्स्यं॒ न दी॒न उ॒दनि॑ क्षि॒यन्त॑म्।
निष्टज्ज॑भार चम॒सं न वृ॒क्षाद् बृह॒स्पति॑र्विर॒वेणा॑ वि॒कृत्य॑ ॥ ८ ॥
सोषाम॑विन्द॒त्स स्व१॒॑ः सो अ॒ग्निं सो अ॒र्केण॒ वि ब॑बाधे॒ तमां॑सि।
बृह॒स्पति॒र्गोव॑पुषो व॒लस्य॒ निर्म॒ज्जानं॒ न पर्व॑णो जभार ॥ ९ ॥
हि॒मेव॑ प॒र्णा मु॑षि॒ता वना॑नि॒ बृह॒स्पति॑नाकृपयद्व॒लो गाः।
अ॒ना॒नु॒कृत्यम॑पु॒नश्च॑कार॒ यात्सूर्या॒मासा॑ मि॒थ उ॒च्चरा॑तः ॥ १० ॥
अ॒भि श्या॒वं न कृश॑नेभि॒रश्वं॒ नक्ष॑त्रेभिः पि॒तरो॒ द्याम॑पिंशन्।
रात्र्यां॒ तमो॒ अद॑धु॒र्ज्योति॒रह॒न्बृह॒स्पति॑र्भि॒नदद्रिं॑ वि॒दद्गाः ॥ ११ ॥
इ॒दम॑कर्म॒ नमो॑ अभ्रि॒याय॒ यः पू॒र्वीरन्वा॒नोन॑वीति ।
बृह॒स्पतिः॒ स हि गोभिः॒ सो अश्वैः॒ स वी॒रेभिः॒ स नृभि॑र्नो॒ वयो॑ धात् ॥ १२ ॥

षष्ठोऽनुवाकः

[६९] एकोनसप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—सुमित्रो वाध्र्यश्वः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१ निचृज्जगती; २ विराड्जगती; ३, ७ त्रिष्टुप्; ४, ५, १२ निचृत्त्रिष्टुप्; ६ आर्ची-स्वराट्त्रिष्टुप्; ८, १० पादनिचृत्त्रिष्टुप्; ९; ११ विराट्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१, २ निषादः; ३-१२ धैवतः ॥

एकोनविंशो वर्गः ॥ १९ ॥

भ॒द्रा अ॒ग्नेर्व॑ध्र्य॒श्वस्य॑ सं॒दृशो॑ वा॒मी प्रणी॑तिः सु॒रणा॒ उपे॑तयः।
यदीं॑ सुमि॒त्रा विशो॒ अग्र॑ इ॒न्धते॑ घृ॒तेनाहु॑तो जरते॒ दवि॑द्युतत् ॥ १ ॥
घृ॒तम॒ग्नेर्व॑ध्र्य॒श्वस्य॒ वर्ध॑नं घृ॒तमन्नं॑ घृ॒तम्व॑स्य॒ मेद॑नम्।
घृ॒तेनाहु॑त उर्वि॒या वि प॑प्रथे॒ सूर्य॑इव रोचते स॒र्पिरा॑सुतिः ॥ २ ॥
यत्ते॒ मनु॒र्यदनी॑कं सुमि॒त्रः स॑मी॒धे अ॑ग्ने॒ तदि॒दं नवी॑यः।
स रे॒वच्छो॑च॒ स गिरो॑ जुषस्व॒ स वाजं॑ दर्षि॒ स इ॒ह श्रवो॑ धाः ॥ ३ ॥
यं त्वा॒ पूर्व॑मीळि॒तो व॑ध्र्य॒श्वः स॑मी॒धे अ॑ग्ने॒ स इ॒दं जु॑षस्व।
स नः॑ स्ति॒पा उ॒त भ॑वा तनू॒पा दा॒त्रं र॑क्षस्व॒ यदि॒दं ते॑ अ॒स्मे ॥ ४ ॥
भवा॑ द्यु॒म्नी वा॑ध्र्यश्वो॒त गो॒पा मा त्वा॑ तारीद॒भिमा॑ति॒र्जना॑नाम्।
शूर॑इव धृ॒ष्णुश्च्यव॑नः सुमि॒त्रः प्र नु वो॑चं॒ वाध्र्य॑श्वस्य॒ नाम॑ ॥ ५ ॥
सम॒ज्र्या॑ पर्व॒त्या॒३॒॑ वसू॑नि॒ दासा॑ वृ॒त्राण्यार्या॑ जिगेथ।
शूर॑इव धृ॒ष्णुश्च्यव॑नो॒ जना॑नां॒ त्वम॑ग्ने पृतना॒यूँर॒भि ष्याः॑ ॥ ६ ॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अथ विंशो वर्गः ॥ २० ॥

दीर्घतन्तुर्बृहदुक्षायमग्निः सहस्रंस्तरीः शतनीथ ऋभ्वा ।
द्युमान्द्युमत्सु नृभिर्मृज्यमानः सुमित्रेषु दीदयो देवयत्सु ॥ ७ ॥
त्वे धेनुः सुदुघा जातवेदोऽसश्चतेव समना संबर्धुक् ।
त्वं नृभिर्दक्षिणावद्भिरग्ने सुमित्रेभिरिध्यसे देवयद्भिः ॥ ८ ॥
देवाश्चित्ते अमृता जातवेदो महिमानं वाध्यश्व प्र वोचन् ।
यत्संपृच्छं मानुषीर्विश आयन्त्वं नृभिरजयस्त्ववृधेभिः ॥ ९ ॥
पितेव पुत्रमबिभरुपस्थे त्वामग्ने वध्र्यश्वः संपर्यन् ।
जुषाणो अस्य समिधं यविष्ठोत पूर्वो अवनोर्वार्धतश्चित् ॥ १० ॥
शश्वद्दग्निर्वीध्र्यश्वस्य शत्रूनृभिर्जिगाय सुतसोमवद्भिः ।
समनं चिददहश्चित्रभानोऽव व्रार्धन्तमभिनद् वृधश्चित् ॥ ११ ॥
अयमग्निर्वीध्र्यश्वस्य वृत्रहा सनकात्प्रेद्धो नमसोपवाक्यः ।
स नो अजामीँरुत वा विजामीनभि तिष्ठ शर्धतो वाध्यश्व ॥ १२ ॥

[७०] सप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—सुमित्रो वाध्यश्वः ॥ देवता—आप्रम् ॥ छन्दः—१, २, ४, १० निचृत्त्रिष्टुप्; ३ पादनिचृत्त्रिष्टुप्; ५-७, ९, ११ त्रिष्टुप्; ८ विराट्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

अथ एकविंशो वर्गः ॥ २१ ॥

इमां मे अग्ने समिधं जुषस्वेळस्पदे प्रति हर्या घृताचीम् ।
वर्ष्मन्पृथिव्याः सुदिनत्वे अह्नामूर्ध्वो भव सुक्रतो देवयज्या ॥ १ ॥
आ देवानामग्रयावेह यातु नराशंसो विश्वरूपेभिरश्वैः ।
ऋतस्य पथा नमसा मियेधो देवेभ्यो देवतमः सुषूदत् ॥ २ ॥
शश्वत्तममीळते दूत्याय हविष्मन्तो मनुष्यासो अग्निम् ।
वहिष्ठैरश्वैः सुवृता रथेना देवान्वक्षि नि षदेह होता ॥ ३ ॥
वि प्रथतां देवजुष्टं तिरश्चा दीर्घं द्राघ्मा सुरभि भूत्वस्मे ।
अहेळता मनसा देव बर्हिरिन्द्रज्येष्ठाँ उशतो यक्षि देवान् ॥ ४ ॥
दिवो वा सानु स्पृशता वरीयः पृथिव्या वा मात्रया वि श्रयध्वम् ।
उशतीर्द्वीरो महिना महद्भिर्देवं रथं रथयुधीरयध्वम् ॥ ५ ॥

अथ द्वाविंशो वर्गः ॥ २२ ॥

देवी दिवो दुहितरा सुशिल्पे उषासानक्ता सदतां नि योनौ ।
आ वां देवास उशती उशन्त उरौ सीदन्तु सुभगे उ लोके ॥ १ ॥
ऊर्ध्वो ग्रावा बृहदग्निः समिद्धः प्रिया धामान्यदितेरुपस्थे ।
पुरोहितावृत्विजा यज्ञे अस्मिन्विदुष्टरा द्रविणमा यजेथाम् ॥ ७ ॥
तिस्रो देवीर्बर्हिरिदं वरीय आ सीदत चकृमा वः स्योनम् ।
मनुष्वद्यज्ञं सुधिता हुवीषीळा देवी घृतपदी जुषन्त ॥ ८ ॥
देवं त्वष्टर्यद्धं चारुत्वमानड्यदङ्गिरसामभवः सचाभूः ।
स देवानां पाथ उप प्र विद्वानुशन्यक्षि द्रविणोदः सुरत्नः ॥ ९ ॥
वनस्पते रशनया नियूया देवानां पाथ उप वक्षि विद्वान् ।
स्वदाति देवः कृणवद्धवींष्यवतां द्यावापृथिवी हवं मे ॥ १० ॥
आग्ने वहु वरुणमिष्टये न इन्द्रं दिवो मरुतो अन्तरिक्षात् ।
सीदन्तु बर्हिर्विश्व आ यजत्राः स्वाहा देवा अमृता मादयन्ताम् ॥ ११ ॥

[७१] एकसप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—बृहस्पतिः ॥ देवता—ज्ञानम् ॥ छन्दः—१ त्रिष्टुप्; २ भुरिक्त्रिष्टुप्; ३, ७ निचृत्त्रिष्टुप्; ४ पादनिचृत्त्रिष्टुप्; ५, ६, ८, १०, ११ विराट्त्रिष्टुप्; ९ विराड्जगती ॥ स्वरः—१-८, १०, ११ धैवतः; ९ निषादः ॥

अथ त्रयोविंशो वर्गः ॥ २३ ॥

बृहस्पते प्रथमं वाचो अग्रं यत्प्रैरत नामधेयं दधानाः ।
यदेषां श्रेष्ठं यदरिप्रमासीत्प्रेणा तदेषां निहितं गुहाविः ॥ १ ॥
सक्तुमिव तितउना पुनन्तो यत्र धीरा मनसा वाचमक्रत ।
अत्रा सखायः सख्यानि जानते भद्रैषां लक्ष्मीर्निहिताधि वाचि ॥ २ ॥
यज्ञेन वाचः पदवीयमायन्तामन्वविन्दन्नृषिषु प्रविष्टाम् ।
तामाभृत्या व्यदधुः पुरुत्रा तां सप्त रेभा अभि सं नवन्ते ॥ ३ ॥
उत त्वः पश्यन्न ददर्श वाचमुत त्वः शृण्वन्न शृणोत्येनाम् ।
उतो त्वस्मै तन्वं१ वि सस्रे जायेव पत्य उशती सुवासाः ॥ ४ ॥
उत त्वं सख्ये स्थिरपीतमाहुर्नैनं हिन्वन्त्यपि वाजिनेषु ।
अधेन्वा चरति मायया एष वाचं शुश्रुवाँ अफलामपुष्पाम् ॥ ५ ॥

अथ चतुर्विंशो वर्गः ॥ २४ ॥

यस्तित्याज सचिविदं सखायं न तस्य वाच्यपि भागो अस्ति ।
यदीं शृणोत्यलकं शृणोति नहि प्रवेद सुकृतस्य पन्थाम् ॥ ६ ॥
अक्षण्वन्तः कर्णवन्तः सखायो मनोजुवेष्वसमा बभूवुः ।
आदघ्नास उपकक्षास उ त्वे ह्रदाइव स्नात्वा उ त्वे ददृश्रे ॥ ७ ॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

हृदा तष्टेषु मनसो जवेषु यद् ब्राह्मणाः संयजन्ते सखायः।
अत्राह त्वं वि जहुर्वेद्याभिरोहब्रह्माणो वि चरन्त्यु त्वे॥८॥
इमे ये नार्वाङ्न परश्चरन्ति न ब्राह्मणासो न सुतेकरासः।
त एते वाचमभिपद्य पापया सिरीस्तन्त्रं तन्वते अप्रजज्ञयः॥९॥
सर्वे नन्दन्ति यशसागतेन सभासाहेन सख्या सखायः।
किल्बिषस्पृत्पितुषणिर्ह्वेषामरं हितो भवति वाजिनाय॥१०॥
ऋचां त्वः पोषमास्ते पुपुष्वान्गायत्रं त्वो गायति शक्वरीषु।
ब्रह्मा त्वा वदति जातविद्यां यज्ञस्य मात्रां वि मिमीत उ त्वः॥११॥

इत्यष्टमाष्टके द्वितीयोऽध्यायः॥

अथ तृतीयोऽध्यायः

[७२] द्विसप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—बृहस्पतिर्बृहस्पतिर्वा लौक्य अदितिर्वा दाक्षायणी॥
देवता—देवाः॥ छन्दः—१, ४, ६ अनुष्टुप्; २ पादनिचृद् अनुष्टुप्; ३, ५, ७ निचृदनुष्टुप्; ८, ९ विराडनुष्टुप्॥
स्वरः—गान्धारः॥

अथ प्रथमो वर्गः॥ १॥

देवानां नु वयं जाना प्र वोचाम विपन्यया।
उक्थेषु शस्यमानेषु यः पश्यादुत्तरे युगे॥१॥
ब्रह्मणस्पतिरेता सं कर्मार इवाधमत्।
देवानां पूर्व्ये युगेऽसतः सदजायत॥२॥
देवानां युगे प्रथमेऽसतः सदजायत।
तदाशा अन्वजायन्त तदुत्तानपदस्परि॥३॥
भूर्जज्ञ उत्तानपदो भुव आशा अजायन्त।
अदितेर्दक्षो अजायत दक्षादु अदितिः परि॥४॥
अदितिर्ह्यजनिष्ट दक्ष या दुहिता तव।
तां देवा अन्वजायन्त भद्रा अमृतबन्धवः॥५॥

अथ द्वितीयो वर्गः॥ २॥

यदेवा अदः संलिले सुसंरब्धा अतिष्ठत।
अत्रा वो नृत्यतामिव तीव्रो रेणुरपायत॥६॥
यदेवा यतयो यथा भुवनान्यपिन्वत।
अत्रा समुद्र आ गूळ्हमा सूर्यमजभर्तन॥७॥
अष्टौ पुत्रासो अदितेर्ये जातास्तन्वस्परि।
देवाँ उप प्रैत्सप्तभिः परा मार्ताण्डमास्यत्॥८॥
सप्तभिः पुत्रैरदितिरुप प्रैत्पूर्व्यं युगम्।
प्रजायै मृत्यवे त्वत्पुनर्मार्ताण्डमाभरत्॥९॥

[७३] त्रिसप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—गौरिवीतिः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१, २, ५ त्रिष्टुप्; ३, ४, ८, १० पादनिचृत्त्रिष्टुप्; ६ विराट्त्रिष्टुप्; ७ आर्चीस्वराट्त्रिष्टुप्; ९ आर्चीभुरिक्त्रिष्टुप्; ११ निचृत्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः॥

अथ तृतीयो वर्गः॥ ३॥

जनिष्ठा उग्रः सहसे तुराय मन्द्र ओजिष्ठो बहुलाभिमानः।
अवर्धन्निन्द्रं मरुतश्चिदत्र माता यद्वीरं दधनद्धनिष्ठा॥१॥
द्रुहो निषत्ता पृशनी चिदेवैः पुरू शंसेन वावृधुष इन्द्रम्।
अभीवृतेव ता महापदेन ध्वान्तात्प्रपित्वादुदरन्त गर्भीः॥२॥
ऋष्वा ते पादा प्र यजिगास्यवर्धन्वाजा उत ये चिदत्र।
त्वमिन्द्र सालावृकान्त्सहस्त्रमासन्दधिषे अश्विना ववृत्याः॥३॥
सुमना तूर्णिरुप यासि यज्ञमा नासत्या सख्याय वक्षि।
वसाव्यामिन्द्र धारयः सहस्त्राश्विना शूर ददतुर्मघानि॥४॥
मन्दमान ऋतादधि प्रजायै सखिभिरिन्द्र इषिरेभिरर्थम्।
आभिर्हि माया उप दस्युमागान्मिहः प्र तप्रा अवपत्तमांसि॥५॥

अथ चतुर्थो वर्गः॥ ४॥

सनामाना चिद् ध्वसयो न्यस्मा अवाहन्निन्द्र उषसो यथानः।
ऋष्वैरगच्छः सखिभिर्निकामैः साकं प्रतिष्ठा हृद्या जघन्थ॥६॥
त्वं जघन्थ नमुचिं मखस्युं दासं कृण्वान ऋषये विमायम्।
त्वं चकर्थ मनवे स्योनान्पथो देवत्राञ्जसेव यानान्॥७॥
त्वमेतानि पप्रिषे वि नामेशान इन्द्र दधिषे गभस्तौ।
अनु त्वा देवाः शवसा मदन्त्युपरिबुध्नान्ववनिनश्चकर्थ॥८॥
चक्रं यदस्याप्स्वा निषत्तमुतो तदस्मै मध्विच्चच्छद्यात्।
पृथिव्यामतिषितं यदूधः पयो गोष्वदधा ओषधीषु॥९॥
अश्वादियायेति यद्वदन्त्योजसो जातमुत मन्य एनम्।
मन्यारियाय हर्म्येषु तस्थौ यतः प्रजज्ञ इन्द्रो अस्य वेद॥१०॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

वयः सुपर्णा उप सेदुरिन्द्रं प्रियमेधा ऋषयो नाधमानाः।
अप ध्वान्तमूर्णुहि पूर्धि चक्षुर्मुमुग्ध्यस्मान्निधयेव बद्धान्॥ ११॥

[७४] चतुःसप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—गौरिवीतिः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१, ४ पादनिचृत्त्रिष्टुप्; २, ५ निचृत्त्रिष्टुप्; ३ आर्चीभुरिक्त्रिष्टुप्; ६ विराट्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः॥

अथ पञ्चमो वर्गः॥ ५॥

वसूनां वा चर्कृषे इयक्षन्थिया वा यज्ञैर्वा रोदस्योः।
अर्वन्तो वा ये रयिमन्तः सातौ वनुं वा ये सुश्रुणं सुश्रुतो धुः॥ १॥
हवं एषामसुरो नक्षत द्यां श्रवस्यता मनसा निंसत क्षाम्।
चक्षाणा यत्र सुविताय देवा द्यौर्न वारेभिः कृणवन्त स्वैः॥ २॥
इयमेषाममृतानां गीः सर्वताता ये कृपणन्त रत्नम्।
धियं च यज्ञं च साधन्तस्ते नो धान्तु वसव्यमसामि॥ ३॥
आ तत्त इन्द्रायवः पनन्ताभि य ऊर्वं गोमन्तं तितृत्सान्।
सकृत्स्वं ये पुरुपुत्रां महीं सहस्त्रधारां बृहतीं दुदुक्षन्॥ ४॥
शचीव इन्द्रमवसे कृणुध्वमनानतं दमयन्तं पृतन्यून्।
ऋभुक्षणं मघवानं सुवृक्तिं भर्ता यो वज्रं नर्यं पुरुक्षुः॥ ५॥
यद्वावान पुरुतमं पुराषाळा वृत्रहेन्द्रो नामान्यप्राः।
अचेति प्रासहस्पतिस्तुविष्मान्यदीमुश्मसि कर्तवे करत्तत्॥ ६॥

[७५] पञ्चसप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—सिन्धुक्षित्प्रैयमेधः॥ देवता—नद्यः॥ छन्दः—१ निचृज्जगती; २, ३ विराड्जगती; ४ जगती; ५, ७ आर्चीस्वराड्जगती; ६ आर्चीभुरिग्जगती; ८, ९ पादनिचृज्जगती॥ स्वरः—निषादः॥

अथ षष्ठो वर्गः॥ ६॥

प्र सु वं आपो महिमानमुत्तमं कारुर्वोचाति सदने विवस्वतः।
प्र सप्तसप्त त्रेधा हि चक्रमुः प्र सृत्वरीणामति सिन्धुरोजसा॥ १॥
प्र तेऽरदद्वरुणो यातवे पथः सिन्धो यद्वाजाँ अभ्यद्रवस्त्वम्।
भूम्या अधि प्रवता यासि सानुना यदेषामग्रं जगतामिरज्यसि॥ २॥
दिवि स्वनो यतते भूम्योपर्यनन्तं शुष्ममुदियर्ति भानुना।
अभ्रादिव प्र स्तनयन्ति वृष्टयः सिन्धुर्यदेति वृषभो न रोरुवत्॥ ३॥
अभि त्वा सिन्धो शिशुमिन्न मातरो वाश्रा अर्षन्ति पयसेव धेनवः।
राजेव युध्वा नयसि त्वमित्सिचौ यदासामग्रं प्रवतामिनक्षसि॥ ४॥
इमं मे गङ्गे यमुने सरस्वति शुतुद्रि स्तोमं सचता परुष्ण्या।
असिक्न्या मरुद्वृधे वितस्तयार्जीकीये शृणुह्या सुषोमया॥ ५॥

अथ सप्तमो वर्गः॥ ७॥

तृष्टामया प्रथमं यातवे सजूः सुसर्त्वी रसया श्वेत्या त्या।
त्वं सिन्धो कुभया गोमतीं क्रुमुं मेहत्नूं सरथं याभिरीयसे॥ ६॥
ऋजीत्येनी रुशती महित्वा परि व्रयांसि भरते रजांसि।
अदब्धा सिन्धुरपसामपस्तमाश्वा न चित्रा वपुषीव दर्शता॥ ७॥
स्वश्वा सिन्धुः सुरथा सुवासा हिरण्ययी सुकृता वाजिनीवती।
ऊर्णावती युवतिः सीलमावत्युताधि वस्ते सुभगा मधुवृधम्॥ ८॥
सुखं रथं ययुजे सिन्धुरश्विनं तेन वाजं सनिषदस्मिन्नाजौ।
महान्ह्यस्य महिमा पनस्यतेऽदब्धस्य स्वयशसो विरप्शिनः॥ ९॥

[७६] षट्सप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—जरत्कर्ण ऐरावतः सर्पः॥ देवता—ग्रावाणः॥ छन्दः—१, ६, ८ पादनिचृज्जगती; २, ३ आर्चीस्वराड्जगती; ४, ७ निचृज्जगती; ५ आसुरीस्वराडार्ची निचृज्जगती॥ स्वरः—निषादः॥

अथ अष्टमो वर्गः॥ ८॥

आ वं ऋञ्जस ऊर्जां व्युष्टिष्विन्द्रं मरुतो रोदसी अनक्तन।
उभे यथा नो अहनी सचाभुवा सदःसदो वरिवस्यात उद्भिदा॥ १॥
तदु श्रेष्ठं सवनं सुनोतनात्यो न हस्तयतो अद्रिः सोतरि।
विदद्वयोर्यो अभिभूति पौंस्यं महो राये चित्तरुते यदर्वतः॥ २॥
तदिद्धयस्य सवनं विवेरपो यथा पुरा मनवे गातुमश्रेत्।
गोअर्णसि त्वाष्ट्रे अश्वनिर्णिजि प्रेमध्वरेष्वध्वरां अंशिश्रयुः॥ ३॥
अप हत रक्षसो भङ्गुरावतः स्कभायत निर्ऋतिं सेधतामतिम्।
आ नो रयिं सर्ववीरं सुनोतन देवाव्यं भरत श्लोकमद्रयः॥ ४॥
दिवश्चिदा वोऽमवत्तरेभ्यो विभ्वना चिदाश्वपस्तरेभ्यः।
वायोश्चिदा सोमरभस्तरेभ्योऽग्रेश्चिदर्च पितुकृत्तरेभ्यः॥ ५॥

अथ नवमो वर्गः॥ ९॥

भुरन्तु नो यशसः सोत्वन्धसो ग्रावाणो वाचा दिविता दिवित्मता।
नमो यत्र दुहते काम्यं मधवाधोषयन्तो अभितो मिथस्तुरः॥ ६॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सु॒न्वन्ति॒ सोमं॑ रथि॒रासो॒ अद्र॑यो॒ निर॑स्य॒ रसं॑ ग॒विषो॑ दुहन्ति॒ ते।
दु॒हन्त्यूध॑रुप॒सेच॑नाय॒ कं नरो॑ ह॒व्या न म॑र्जयन्त आ॒सभिः॑॥ ७॥
ए॒ते न॑रः॒ स्वप॑सो अभूतन॒ य इन्द्रा॑य सुनु॒थ सोम॑मद्रयः।
वा॒मंवा॑मं नो दि॒व्याय॒ धाम्ने॒ वसु॑वसु वः॒ पार्थि॑वाय सुन्व॒ते॥ ८॥

[७७] सप्तसप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—स्यूमरश्मिर्भार्गवः॥ देवता—मरुतः॥ छन्दः—१, ३ निचृत्त्रिष्टुप्; २, ४ त्रिष्टुप्; ६-८ विराट्त्रिष्टुप्; ५ पादनिचृज्जगती॥ स्वरः—१-४, ६-८ धैवतः; ५ निषादः॥

अथ दशमो वर्गः॥ १०॥

अ॒भ्र॒प्रुषो॒ न वा॒चा प्रु॑षा॒ वसु॑ ह॒विष्म॑न्तो॒ न य॒ज्ञा वि॑जा॒नुषः॑।
सु॒मारु॑तं॒ न ब्र॒ह्माण॑म॒र्हसे॑ ग॒णम॑स्तोष्येषां॒ न शो॒भसे॑ ॥ १॥
श्रि॒ये मर्या॑सो अ॒ञ्जीँर॑कृण्वत सु॒मारु॑तं॒ न पू॒र्वीरति॒ क्षपः॑।
दि॒वस्पु॒त्रास॒ एता॒ न ये॑तिर आदि॒त्यास॒स्ते अ॒क्रा न वा॑वृधुः॥ २॥
प्र ये दि॒वः पृ॑थि॒व्या न ब॒र्हणा॒ त्मना॑ रिरि॒च्रे अ॒भ्रान्न सूर्यः॑।
पाज॑स्वन्तो॒ न वी॒राः प॑न॒स्यवो॑ रि॒शाद॑सो॒ न मर्या॑ अ॒भिद्य॑वः॥ ३॥
यु॒ष्माकं॑ बु॒ध्ने अ॒पां न याम॑नि विथु॒र्यति॒ न म॒ही श्र॑थ॒र्यति॑।
वि॒श्वप्सु॑र्य॒ज्ञो अ॒र्वाग॒यं सु वः॒ प्रय॑स्वन्तो॒ न स॒त्राच॒ आ ग॑त॥ ४॥
यू॒यं धू॒र्षु प्र॒युजो॒ न र॒श्मिभि॒र्ज्योति॑ष्मन्तो॒ न भा॒सा व्यु॑ष्टिषु।
श्ये॒नासो॒ न स्वय॑शसो रि॒शाद॑सः प्र॒वासो॒ न प्रसि॑तासः परि॒प्रुषः॑॥ ५॥

अथ एकादशो वर्गः॥ ११॥

प्र यद्वह॑ध्वे मरुतः परा॒काद्यू॒यं म॒हः सं॒वर॑णस्य॒ वस्वः॑ ।
वि॒दा॒नासो॑ वसवो॒ राध्य॑स्या॒राच्चि॒द् द्वेषः॑ सनु॒तर्यु॑योत ॥ ६॥
य उ॒दृचि॑ य॒ज्ञे अ॑ध्वरे॒ष्ठा म॒रुद्भ्यो॒ न मानु॑षो॒ ददा॑शत् ।
रे॒वत्स वयो॑ दधते सु॒वीरं॒ स दे॒वाना॒मपि॑ गोपी॒थे अ॑स्तु ॥ ७॥
ते हि य॒ज्ञेषु॑ य॒ज्ञिया॑स॒ ऊमा॑ आदि॒त्येन॒ नाम्ना॒ शंभ॑विष्ठाः ।
ते नो॑ऽवन्तु रथ॒तूर्म॑नी॒षां म॒हश्च॒ याम॑न्नध्व॒रे च॑का॒नाः ॥ ८॥

[७८] अष्टसप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—स्यूमरश्मिर्भार्गवः॥ देवता—मरुतः॥ छन्दः—१ आर्चीत्रिष्टुप्; २, ५, ६ विराड्जगती; ३, ४ विराट्त्रिष्टुप्; ७ पादनिचृज्जगती; ८ त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१, ३, ४, ८ धैवतः; २, ५-७ निषादः॥

अथ द्वादशो वर्गः॥ १२॥

विप्रा॑सो॒ न मन्म॑भिः स्वा॒ध्यो॑ देवा॒व्यो॒३॒॑ न य॒ज्ञैः स्वप्न॑सः।
राजा॑नो॒ न चि॒त्राः सु॑सं॒दृशः॑ क्षिती॒नां न मर्या॑ अरे॒पसः॑॥ १॥
अ॒ग्निर्न ये भ्राज॑सा रु॒क्मव॑क्षसो॒ वाता॑सो॒ न स्व॒युजः॑ स॒द्यऊ॑तयः।
प्र॒ज्ञा॒तारो॒ न ज्येष्ठाः॑ सुनी॒तयः॑ सु॒शर्मा॑णो॒ न सोमा॑ ऋ॒तं य॒ते॥ २॥
वाता॑सो॒ न ये धुन॑यो जिग॒त्नवो॑ऽग्नी॒नां न जि॒ह्वा वि॑रो॒किणः॑।
वर्म॑ण्वन्तो॒ न यो॒धाः शिमी॑वन्तः पितॄ॒णां न शंसाः॑ सुरा॒तयः॑॥ ३॥
रथा॑नां॒ न ये१॒॑ऽराः सना॑भयो जिगी॒वांसो॒ न शूरा॑ अ॒भिद्य॑वः।
व॒रे॒यवो॒ न मर्या॑ घृत॒प्रुषो॑ऽभिस्व॒र्तारो॑ अ॒र्कं न सु॒ष्टुभः॑॥ ४॥
अश्वा॑सो॒ न ये ज्येष्ठा॑स आ॒शवो॑ दिधि॒षवो॒ न र॒थ्यः॑ सु॒दान॑वः।
आपो॒ न नि॒म्नैरु॒दभि॑र्जिग॒त्नवो॑ वि॒श्वरू॑पा॒ अङ्गि॑रसो॒ न साम॑भिः॥ ५॥

अथ त्रयोदशो वर्गः॥ १३॥

ग्रावा॑णो॒ न सू॒रयः॒ सिन्धु॑मातर आदर्दि॒रासो॒ अद्र॑यो॒ न वि॒श्वहा॑।
शि॒शूला॒ न क्री॒ळयः॑ सुमा॒तरो॑ महाग्रा॒मो न याम॑न्नु॒त त्वि॒षा॥ ६॥
उ॒षसां॒ न के॒तवो॑ऽध्वर॒श्रियः॑ शुभं॒यवो॒ नाञ्जिभि॒र्व्य॑श्वितन्।
सिन्ध॑वो॒ न य॒यियो॒ भ्राज॑दृष्टयः परा॒वतो॒ न योज॑नानि ममिरे॥ ७॥
सु॒भा॒गान्नो॑ देवाः कृणुता सु॒रत्ना॑न॒स्मान्त्स्तो॒तॄन्म॑रुतो वावृधा॒नाः।
अधि॑ स्तो॒त्रस्य॑ स॒ख्यस्य॑ गात स॒नाद्धि वो॑ रत्न॒धेया॑नि॒ सन्ति॑॥ ८॥

[७९] एकोनाशीतितमं सूक्तम्

ऋषिः—अग्निः सौचीको वैश्वानरो वा, सप्तिर्वा वाजम्भरः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—१ पादनिचृत्त्रिष्टुप्; २, ४, ६ विराट्त्रिष्टुप्; ३ निचृत्त्रिष्टुप्; ५ आर्चीस्वराट्त्रिष्टुप्; ७ त्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः॥

अथ चतुर्दशो वर्गः॥ १४॥

अप॑श्यमस्य मह॒तो म॑हि॒त्वमम॑र्त्यस्य॒ मर्त्या॑सु वि॒क्षु।
नाना॒ हनू॒ विभृ॑ते॒ सं भ॑रेते॒ असि॑न्वती॒ बप्स॑ती॒ भूर्य॑त्तः॥ १॥
गुहा॒ शिरो॒ निहि॑त॒मृध॑ग॒क्षी असि॑न्वन्नत्ति जि॒ह्वया॒ वना॑नि।
अत्रा॑ण्यस्मै प॒ड्भिः सं भ॑रन्त्युत्ता॒नह॑स्ता॒ नम॒साधि॑ वि॒क्षु॥ २॥
प्र मा॒तुः प्र॑त॒रं गुह्य॑मि॒च्छन्कु॑मा॒रो न वी॒रुधः॑ सर्पदु॒र्वीः।
स॒सं न प॒क्वम॑विदच्छु॒चन्तं॑ रिरि॒ह्वांसं॑ रि॒प उ॒पस्थे॑ अ॒न्तः॥ ३॥
तद्वा॑मृ॒तं रो॑दसी॒ प्र ब्र॑वीमि॒ जाय॑मानो मा॒तरा॒ गर्भो॑ अत्ति।
नाहं दे॒वस्य॒ मर्त्य॑श्चिकेता॒ग्निर॒ङ्ग विचे॑ताः॒ स प्रचे॑ताः॥ ४॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

यो अ॑स्मा॒ अन्नं॑ तृ॒ष्वा॒३॒॑ दधा॒त्याज्यै॑र्घृ॒तैर्जु॒होति॒ पुष्य॑ति।
तस्मै॑ स॒हस्र॑म॒क्षभि॒र्वि च॒क्षेऽग्ने॑ वि॒श्वतः॑ प्र॒त्यङ्ङ॑सि॒ त्वम्॥ ५॥
किं दे॒वेषु॒ त्यज॒ एन॑श्चक॒र्थाग्ने॑ पृ॒च्छामि॒ नु त्वामवि॑द्वान्।
अक्री॑ळ॒न्क्रीळ॒न्हरि॒रत्त॑वे॒ऽदन्वि प॑र्व॒शश्च॑कर्त॒ गामि॑वा॒सिः॥ ६॥
विषू॑चो॒ अश्वा॑न्युयुजे वने॒जा ऋजी॑तिभी रश॒नाभि॑र्गृभी॒तान्।
च॒क्ष॒दे मि॒त्रो वसु॑भिः॒ सुजा॑तः॒ समा॑नृधे॒ पर्व॑भिर्वावृधा॒नः॥ ७॥

[८०] अशीतितमं सूक्तम्

ऋषिः—अग्निः सौचीको वैश्वानरो वा॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—१, ५, ६ विराट्त्रिष्टुप्; २, ४ पादनिचृत्त्रिष्टुप्; ३, ७ निचृत्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः॥

अथ पञ्चदशो वर्गः॥ १५॥

अ॒ग्निः सप्तिं॑ वाजंभ॒रं द॑दात्य॒ग्निर्वी॒रं श्रुत्यं॑ कर्मनि॒ःष्ठाम्।
अ॒ग्नी रोद॑सी॒ वि च॑रत्सम॒ञ्जन्न॒ग्निर्नारीं॑ वी॒रकु॑क्षिं॒ पुरं॑धिम्॥ १॥
अ॒ग्नेरप्न॑सः स॒मिद॑स्तु भ॒द्राग्निर्म॒ही रोद॑सी॒ आ वि॑वेश।
अ॒ग्निरेकं॑ चोदयत्स॒मत्स्व॒ग्निर्वृ॒त्राणि॑ दयते पु॒रूणि॑॥ २॥
अ॒ग्निर्ह॒ त्यं जर॑तः॒ कर्ण॑मावा॒ग्निर॒द्भ्यो निर॑दह॒ज्जरू॑थम्।
अ॒ग्निरत्रिं॑ घ॒र्म उ॑रुष्यद॒न्तर॒ग्निर्नृ॒मेधं॑ प्र॒जया॑सृज॒त्सम्॥ ३॥
अ॒ग्निर्दा॒द् द्रवि॑णं वी॒रपे॑शा अ॒ग्निर्ऋषिं॒ यः स॒हस्रा॑ स॒नोति॑।
अ॒ग्निर्दि॒वि ह॒व्यमा त॑ताना॒ग्नेर्धामा॑नि॒ विभृ॑ता पुरु॒त्रा॥ ४॥
अ॒ग्निमु॒क्थैर्ऋष॑यो॒ वि ह्व॑यन्ते॒ऽग्निं नरो॒ याम॑नि बाधि॒तासः॑।
अ॒ग्निं वयो॑ अ॒न्तरि॑क्षे॒ पत॑न्तो॒ऽग्निः स॒हस्रा॒ परि॑ याति॒ गोना॑म्॥ ५॥
अ॒ग्निं विश॑ ईळते॒ मानु॑षी॒र्या अ॒ग्निं मनु॑षो॒ नहु॑षो॒ वि जा॒ताः।
अ॒ग्निर्गान्ध॑र्वीं प॒थ्या॑मृ॒तस्या॒ग्नेर्गव्यू॑तिर्घृ॒त आ निष॑त्ता॥ ६॥
अ॒ग्नये॒ ब्रह्म॑ ऋ॒भव॑स्ततक्षुर॒ग्निं म॒हाम॑वोचामा सुवृ॒क्तिम्।
अग्ने॒ प्राव॑ जरि॒तारं॑ यवि॒ष्ठाग्ने॒ महि॒ द्रवि॑ण॒मा य॑जस्व॥ ७॥

[८१] एकाशीतितमं सूक्तम्

ऋषिः—विश्वकर्मा भौवनः॥ देवता—विश्वकर्मा॥ छन्दः—१, ५, ६ विराट्त्रिष्टुप्; २, ४ पादनिचृत्त्रिष्टुप्; ३, ७ निचृत्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः॥

अथ षोडशो वर्गः॥ १६॥

य इ॒मा विश्वा॒ भुव॑नानि॒ जुह्व॒दृषि॒र्होता॒ न्यसी॑दत्पि॒ता नः॑।
स आ॒शिषा॒ द्रवि॑णमि॒च्छमा॑नः प्रथम॒च्छदव॑राँ॒ आ वि॑वेश॥ १॥
किं स्वि॑दासीदधि॒ष्ठान॑मा॒रम्भ॑णं कत॒मत्स्वि॑त्क॒थासी॑त्।
यतो॒ भूमिं॑ ज॒नय॑न्वि॒श्वक॑र्मा॒ वि द्यामौर्णो॑न्महि॒ना वि॒श्वच॑क्षाः॥ २॥
वि॒श्वत॑श्चक्षुरु॒त वि॒श्वतो॑मुखो वि॒श्वतो॑बाहुरु॒त वि॒श्वत॑स्पात्।
सं बा॒हुभ्यां॒ धम॑ति॒ सं पत॑त्रै॒र्द्यावा॒भूमी॑ ज॒नय॑न्दे॒व एकः॑॥ ३॥
किं स्वि॒द्वनं॒ क उ॒ स वृ॒क्ष आ॑स॒ यतो॒ द्यावा॑पृथि॒वी नि॑ष्टत॒क्षुः।
मनी॑षिणो॒ मन॑सा पृ॒च्छतेदु॒ तद्यद॒ध्यति॑ष्ठ॒द्भुव॑नानि धा॒रय॑न्॥ ४॥
या ते॒ धामा॑नि पर॒माणि॒ याव॒मा या म॑ध्य॒मा वि॑श्वकर्मन्नु॒तेमा।
शिक्षा॒ सखि॑भ्यो ह॒विषि॑ स्वधावः स्व॒यं य॑जस्व त॒न्वं॑ वृधा॒नः॥ ५॥
विश्व॑कर्मन्ह॒विषा॑ वावृधा॒नः स्व॒यं य॑जस्व पृथि॒वीमु॒त द्याम्।
मुह्य॑न्त्व॒न्ये अ॒भितो॒ जना॑स इ॒हास्माकं॑ म॒घवा॑ सू॒रिर॑स्तु॥ ६॥
वा॒चस्पतिं॑ वि॒श्वक॑र्माणमू॒तये॑ मनो॒जुवं॒ वाजे॑ अ॒द्या हु॑वेम।
स नो॒ विश्वा॑नि॒ हव॑नानि जोषद्वि॒श्वश॑म्भू॒रव॑से सा॒धुक॑र्मा॥ ७॥

[८२] द्व्यशीतितमं सूक्तम्

ऋषिः—विश्वकर्मा भौवनः॥ देवता—विश्वकर्मा॥ छन्दः—१, ५, ६ त्रिष्टुप्; २, ४ भुरिक्त्रिष्टुप्; ३ निचृत्त्रिष्टुप्; ७ पादनिचृत् त्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः॥

अथ सप्तदशो वर्गः॥ १७॥

चक्षु॑षः पि॒ता मन॑सा॒ हि धीरो॑ घृ॒तमे॑ने अजन॒न्नम्न॑माने।
य॒देदन्ता॒ अद॑दृहन्त॒ पूर्व॒ आदिद् द्यावा॑पृथि॒वी अ॑प्रथेताम्॥ १॥
वि॒श्वक॑र्मा॒ विम॑ना॒ आद्विहा॑या धा॒ता वि॑धा॒ता प॑र॒मोत सं॒दृक्।
तेषा॑मि॒ष्टानि॒ समि॒षा म॑दन्ति॒ यत्रा॑ सप्तऋ॒षीन्प॒र एक॑मा॒हुः॥ २॥
यो नः॑ पि॒ता ज॑नि॒ता यो वि॑धा॒ता धामा॑नि॒ वेद॒ भुव॑नानि॒ विश्वा॑।
यो दे॒वानां॑ नाम॒धा एक॑ ए॒व तं सं॑प्र॒श्नं भुव॑ना यन्त्य॒न्या॥ ३॥
त आय॑जन्त॒ द्रवि॑णं॒ सम॑स्मा॒ ऋष॑यः॒ पूर्वे॑ जरि॒तारो॒ न भू॒ना।
अ॒सूर्ते॒ सूर्ते॒ रज॑सि निष॒त्ते ये भू॒तानि॑ स॒मकृ॑ण्वन्नि॒मानि॑॥ ४॥
प॒रो दि॒वा प॒र ए॒ना पृ॑थि॒व्या प॒रो दे॒वेभि॒रसु॑रै॒र्यदस्ति॑।
कं स्वि॒द्गर्भं॑ प्रथ॒मं द॑ध्र॒ आपो॒ यत्र॑ दे॒वाः स॒मप॑श्यन्त॒ विश्वे॑॥ ५॥
तमिद्गर्भं॑ प्रथ॒मं द॑ध्र॒ आपो॒ यत्र॑ दे॒वाः स॒मग॑च्छन्त॒ विश्वे॑।
अ॒जस्य॒ नाभा॒वध्येक॒मर्पि॑तं॒ यस्मि॒न्विश्वा॑नि॒ भुव॑नानि त॒स्थुः॥ ६॥
न तं वि॑दाथ॒ य इ॒मा ज॒जाना॒न्यद्यु॒ष्माक॒मन्त॑रं बभूव।
नी॒हारे॑ण॒ प्रावृ॑ता॒ जल्प्या॑ चासु॒तृप॑ उक्थ॒शास॑श्चरन्ति॥ ७॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

[८३] त्र्यशीतितमं सूक्तम्

ऋषिः—मन्युस्तापसः॥ देवता—मन्युः॥ छन्दः—१ विराड्जगती; २ त्रिष्टुप्; ३, ६ विराट्त्रिष्टुप्; ४ पादनिचृत्त्रिष्टुप्; ५, ७ निचृत्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१ निषादः; २-७ धैवतः॥

अथ अष्टादशो वर्गः॥ १८॥

यस्ते॑ मन्यो॒ऽविधद्व॑ज्र सायक॒ सह॒ ओज॑: पुष्यति॒ विश्व॑मानु॒षक्।
सा॒ह्याम॒ दास॒मार्यं॒ त्वया॑ यु॒जा सह॑स्कृतेन॒ सह॑सा॒ सह॑स्वता॥ १॥
म॒न्युरिन्द्रो॑ म॒न्युरे॒वास॑ दे॒वो म॒न्युर्होता॒ वरु॑णो जा॒तवे॑दाः।
म॒न्युं विश॑ ईळते मानु॒षीर्या॑: पा॒हि नो॑ मन्यो॒ तप॑सा स॒जोषा॑:॥ २॥
अ॒भी॑हि मन्यो॒ तव॑स॒स्तवी॑या॒न्तप॑सा यु॒जा वि ज॑हि॒ शत्रू॑न्।
अ॒मि॒त्र॒हा वृ॑त्र॒हा द॑स्यु॒हा च॒ विश्वा॒ वसू॒न्या भ॑रा॒ त्वं न॑:॥ ३॥
त्वं हि म॑न्यो अ॒भिभू॑त्योजाः॒ स्वय॑ंभूर्भामो॑ अभिमातिषा॒हः।
विश्व॑चर्षणि॒: सहु॑रि॒: सहा॑वा॒नस्मास्वोज॒: पृत॑नासु धेहि॥ ४॥
अ॒भा॒गः सन्न॒प॒ परे॑तो अस्मि॒ तव॒ क्रत्वा॑ त॒विष॑स्य॒ प्रचे॑तः।
तं त्वा॑ मन्यो अक्र॒तुर्जी॑हीळा॒हं स्वा त॒नूर्बल॒देया॑य मेहि॑॥ ५॥
अ॒यं ते॑ अ॒स्म्यु॒प मे॑हृ॒वाङ् प्र॑तीची॒नः स॑हुरे विश्वधायः।
मन्यो॑ वज्रिन्नभि मामा ववृत्स्व॒ हना॑व॒ दस्यू॑रु॒त बो॑ध्या॒पेः॥ ६॥
अ॒भि प्रेहि॑ दक्षिण॒तो भ॑वा॒ मेऽधा॑ वृ॒त्राणि॑ जङ्घना॒व भूरि॑।
जु॒होमि॑ ते ध॒रुणं॑ मध्वो॒ अग्र॑मु॒भा उ॑पां॒शु प्र॑थ॒मा पि॑बाव॥ ७॥

[८४] चतुरशीतितमं सूक्तम्

ऋषिः—मन्युस्तापसः॥ देवता—मन्युः॥ छन्दः—१, ३ त्रिष्टुप्; २ भुरिक्त्रिष्टुप्; ४, ५ पादनिचृज्जगती; ६ आर्चीस्वराड्जगती; ७ विराड्जगती॥ स्वरः—१-३ धैवतः; ४-७ निषादः॥

अथ एकोनविंशो वर्गः॥ १९॥

त्वया॑ मन्यो स॒रथ॑मारु॒जन्तो॒ हर्ष॑माणासो धृषि॒ता म॑रुत्वः।
ति॒ग्मेष॑व॒ आयु॑धा सं॒शिशा॑ना अ॒भि प्र य॑न्तु॒ नरो॑ अ॒ग्निरू॑पाः॥ १॥
अ॒ग्निरि॑व मन्यो त्विषि॒तः स॑हस्व सेना॒नीर्न॑: सहुरे॒ हूत ए॑धि।
ह॒त्वाय॒ शत्रू॒न्वि भ॑जस्व॒ वेद॒ ओजो॒ मिमा॑नो॒ वि मृधो॑ नुदस्व॥ २॥
सह॑स्व मन्यो अ॒भिमा॑ति॒मस्मे रु॒जन्मृ॑ण॒न्प्रम॑ृण॒न्प्रेहि॒ शत्रू॑न्।
उ॒ग्रं ते॒ पाजो॑ न॒न्वा रु॑रुध्रे॒ वशी॑ वशं॑ नयस॒ एक॑ज॒ त्वम्॥ ३॥
एको॑ बहू॒नामसि॑ मन्यवी॒ळितो॒ विशं॑विशं युधये॒ सं शि॑शाधि।
अ॒कृ॒त्त॒रु॒क्त्वया॑ यु॒जा व॒यं द्यु॒मन्तं॑ घो॒षं वि॑ज॒याय॑ कृण्महे॥ ४॥
वि॒जे॒ष॒कृदि॑न्द्र इवानवब्र॒वो॒३॒॑ऽस्माकं॑ मन्यो अधि॒पा भ॑वे॒ह।
प्रि॒यं ते॒ नाम॑ सहुरे गृणीमसि॒ वि॒द्मा तमुत्सं॒ यत॑ आब॒भूथ॑॥ ५॥
आभू॑त्या सहु॒जा व॑ज्र सायक॒ सहो॑ बिभर्ष्यभिभूत उत्त॒रम्।
क्रत्वा॑ नो मन्यो स॒ह मे॒द्ये॑धि महाध॒नस्य॑ पुरुहूत सं॒सृजि॑॥ ६॥
संसृ॑ष्टं ध॒नमु॒भय॑ं स॒माकृ॑तम॒स्मभ्य॑ं दत्तां॒ वरु॑णश्च म॒न्युः।
भि॒यं द॑धा॒ना हृ॒दये॑षु॒ शत्र॑व॒: परा॑जितासो॒ अप॒ नि ल॑यन्ताम्॥ ७॥

समोऽनुवाकः

[८५] पञ्चाशीतितमं सूक्तम्

ऋषिः—सूर्या सावित्री॥ देवता—१-५ सोमः; ६-१६ सूर्याविवाहः; १७ देवाः; १८ सोमार्कौ; १९ चन्द्रमाः; २०-२८ नृणां विवाहमन्त्रा आशीःप्रायाः; २९, ३० वधूवासः संस्पर्शनिन्दा; ३१ यक्ष्मनाशिनी दम्पत्योः; ३२-४७ सूर्या॥ छन्दः—१, ३, ८, ११, २५, २८, ३२, ३३, ३८, ४१, ४५ निचृदनुष्टुप्; २, ४, ५, ९, ३०, ३१, ३५, ३९, ४६, ४७ अनुष्टुप्; ६, १०, १३, १६, १७, २९, ४२ विराडनुष्टुप्; ७, १२, १५, २२ पादनिचृद् अनुष्टुप्; १४, २०, २४, २६, ३७ निचृत्त्रिष्टुप्; १८ पादनिचृत् जगती; १९ पादनिचृत्त्रिष्टुप्; २१, ४४ विराट्त्रिष्टुप्; २३, २७, ३६ त्रिष्टुप्; ३४ उरोबृहती; ४० भुरिगनुष्टुप्; ४३ निचृज्जगती॥ स्वरः—१-१३, १५-१७, २२, २५, २८-३३, ३५, ३८-४२, ४५-४७ गान्धारः; १४, १९-२१, २३, २४, २६, ३६, ३७, ४४ धैवतः; १८, २७, ४३ निषादः; ३४ मध्यमः॥

अथ विंशो वर्गः॥ २०॥

स॒त्येनोत्त॑भिता॒ भूमि॒: सूर्ये॑णोत्त॑भिता॒ द्यौः ।
ऋ॒तेना॑दि॒त्यास्ति॑ष्ठन्ति दि॒वि सोमो॒ अधि॑ श्रि॒तः॥ १॥
सोमे॑नादि॒त्या ब॒लिन॒: सोमे॑न पृथि॒वी म॒ही ।
अथो॒ नक्ष॑त्राणामे॒षामु॒पस्थे॒ सोम॒ आहि॑तः॥ २॥
सोमं॑ मन्यते पपि॒वान्यत्सं॑पिं॒षन्त्योष॑धिम् ।
सोम॑ं यं ब्र॒ह्माणो॑ वि॒दुर्न तस्याश्ना॑ति॒ कश्च॒न॥ ३॥
आच्छ॑द्विधा॒नैर्गु॒पितो॒ बार्ह॑तैः॒ सोम॑ रक्षि॒तः ।
ग्रा॒व्णा॒मिच्छृ॑ण्वन्ति॒ष्ठसि॒ न तै॑ अश्नाति॒ पार्थि॑वः॥ ४॥
यन्त्यप॑ पथो॒ जना॒ न त॒त आ प्या॑यसे॒ पुनः ।
वा॒युः सोम॑स्य रक्षि॒ता समा॑नां मास॒ आकृ॑तिः॥ ५॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अथ एकविंशो वर्गः ॥ २१ ॥

रैभ्यासीदनुदेयी नाराशंसी न्योचनी ।
सूर्यायाः भद्रमिद्वासो गाथयैति परिष्कृतम् ॥ ६ ॥
चित्तिरा उपबर्हणं चक्षुरा अभ्यञ्जनम् ।
द्यौर्भूमिः कोश आसीद्यदयात्सूर्या पतिम् ॥ ७ ॥
स्तोमा आसन्प्रतिधयः कुरीरं छन्द ओपशः ।
सूर्यायाः अश्विना वराग्निरासीत्पुरोगवः ॥ ८ ॥
सोमो वधूयुरभवदश्विनास्तामुभा वरा ।
सूर्यां यत्पत्ये शंसन्तीं मनसा सवितादधात् ॥ ९ ॥
मनो अस्या अनः आसीद् द्यौरासीदुत च्छदिः ।
शुक्रावनड्वाहावास्तां यदयात्सूर्या गृहम् ॥ १० ॥

अथ द्वाविंशो वर्गः ॥ २२ ॥

ऋक्सामाभ्यामभिहितौ गावौ ते सामनावितः ।
श्रोत्रं ते चक्रे आस्तां दिवि पन्थाश्चराचरः ॥ ११ ॥
शुचीं ते चक्रे यात्या व्यानो अक्ष आहतः ।
अनो मनस्मयं सूर्यारोहत्प्रयती पतिम् ॥ १२ ॥
सूर्यायाः वहतुः प्रागात्सविता यमवासृजत् ।
अघासु हन्यन्ते गावोऽर्जुन्योः पर्युह्यते ॥ १३ ॥
यदश्विना पृच्छमानावयातं त्रिचक्रेण वहतुं सूर्यायाः ।
विश्वे देवा अनु तद्वामजानन्पुत्रः पितरावावृणीत पूषा ॥ १४ ॥
यदयातं शुभस्पती वरेयं सूर्यामुप ।
क्वैकं चक्रं वामासीत्क्व देष्ट्राय तस्थथुः ॥ १५ ॥

अथ त्रयोविंशो वर्गः ॥ २३ ॥

द्वे ते चक्रे सूर्ये ब्रह्माण ऋतुथा विदुः ।
अथैकं चक्रं यद् गुहा तदद्धातय इद्विदुः ॥ १६ ॥
सूर्यायै देवेभ्यो मित्राय वरुणाय च ।
ये भूतस्य प्रचेतस इदं तेभ्योऽकरं नमः ॥ १७ ॥
पूर्वापरं चरतो माययैतौ शिशू क्रीळन्तौ परि यातो अध्वरम् ।
विश्वान्यन्यो भुवनाभिचष्ट ऋतूँरन्यो विदधज्जायते पुनः ॥ १८ ॥
नवोनवो भवति जायमानोऽह्नां केतुरुषसामेत्यग्रम् ।
भागं देवेभ्यो वि दधात्यायन्प्र चन्द्रमास्तिरते दीर्घमायुः ॥ १९ ॥
सुकिंशुकं शल्मलिं विश्वरूपं हिरण्यवर्णं सुवृतं सुचक्रम् ।
आ रोह सूर्ये अमृतस्य लोकं स्योनं पत्ये वहतुं कृणुष्व ॥ २० ॥

अथ चतुर्विंशो वर्गः ॥ २४ ॥

उदीर्ष्वातः पतिवती ह्येषा विश्वावसुं नमसा गीर्भिरीळे ।
अन्यामिच्छ पितृषदं व्यक्तां स ते भागो जनुषा तस्य विद्धि ॥ २१ ॥
उदीर्ष्वातौ विश्वावसो नमसेळामहे त्वा ।
अन्यामिच्छ प्रफर्व्यं सं जायां पत्या सृज ॥ २२ ॥
अनृक्षरा ऋजवः सन्तु पन्था येभिः सखायो यन्ति नो वरेयम् ।
समर्यमा सं भगो नो निनीयात्सं जास्पत्यं सुयममस्तु देवाः ॥ २३ ॥
प्र त्वा मुञ्चामि वरुणस्य पाशाद्येन त्वाबध्नात्सविता सुशेवः ।
ऋतस्य योनौ सुकृतस्य लोकेऽरिष्टां त्वा सह पत्या दधामि ॥ २४ ॥
प्रेतो मुञ्चामि नामुतः सुबद्धाममुतस्करम् ।
यथेयमिन्द्र मीढ्वः सुपुत्रा सुभगासति ॥ २५ ॥

अथ पञ्चविंशो वर्गः ॥ २५ ॥

पूषा त्वेतो नयतु हस्तगृह्याश्विना त्वा प्र वहतां रथेन ।
गृहान्गच्छ गृहपत्नी यथासो वशिनी त्वं विदथमा वदासि ॥ २६ ॥
इह प्रियं प्रजया ते समृध्यतामस्मिन्गृहे गार्हपत्याय जागृहि ।
एना पत्या तन्वं सं सृजस्वाधा जिव्री विदथमा वदाथः ॥ २७ ॥
नीललोहितं भवति कृत्यासक्तिर्व्यज्यते ।
एधन्ते अस्या ज्ञातयः पतिर्बन्धेषु बध्यते ॥ २८ ॥
परा देहि शामुल्यं ब्रह्मभ्यो वि भजा वसु ।
कृत्यैषा पद्वती भूत्व्या जाया विशते पतिम् ॥ २९ ॥
अश्रीरा तनूर्भवति रुशती पापयामुया ।
पतिर्यद्वध्वोर्वाससा स्वमङ्गमभिधित्सते ॥ ३० ॥

अथ षड्विंशो वर्गः ॥ २६ ॥

ये वध्वश्चन्द्रं वहतुं यक्ष्मा यन्ति जनादनु ।
पुनस्तान्यज्ञिया देवा नयन्तु यत आगताः ॥ ३१ ॥
मा विदन्परिपन्थिनो य आसीदन्ति दम्पती ।
सुगेभिर्दुर्गमतीतामप द्रान्त्वरातयः ॥ ३२ ॥
सुमङ्गलीरियं वधूरिमां समेत पश्यत ।
सौभाग्यमस्यै दत्वायाथास्तं वि परेतन ॥ ३३ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तृष्टमेतत् कटुकमेतदप्याष्ठवद्विषवन्नैतदत्तवे ।
सूर्यां यो ब्रह्मा विद्यात्स इद्वाधूयमर्हति ॥ ३४ ॥
आशसनं विशसनमथो अधिविकर्तनम् ।
सूर्यायाः पश्य रूपाणि तानि ब्रह्मा तु शुन्धति ॥ ३५ ॥

अथ सप्तविंशो वर्गः ॥ २७ ॥

गृभ्णामि ते सौभगत्वाय हस्तं मया पत्या जरदष्टिर्यथासः ।
भगो अर्यमा सविता पुरंधिर्मह्यं त्वादुर्गार्हपत्याय देवाः ॥ ३६ ॥
तां पूषञ्छिवतमामेरयस्व यस्यां बीजं मनुष्या३ वपन्ति ।
या नः ऊरू उशती विश्रयाते यस्यामुशन्तः प्रहराम शेपम् ॥ ३७ ॥
तुभ्यमग्रे पर्यवहन्सूर्यां वहतुना सह ।
पुनः पतिभ्यो जायां दा अग्ने प्रजया सह ॥ ३८ ॥
पुनः पत्नीमग्निरदादायुषा सह वर्चसा ।
दीर्घायुरस्या यः पतिर्जीवाति शरदः शतम् ॥ ३९ ॥
सोमः प्रथमो विविदे गन्धर्वो विविद उत्तरः ।
तृतीयो अग्निष्टे पतिस्तुरीयस्ते मनुष्यजाः ॥ ४० ॥

अथ अष्टाविंशो वर्गः ॥ २८ ॥

सोमो ददद्गन्धर्वाय गन्धर्वो दददग्नये ।
रयिं च पुत्राँश्चादादग्निर्मह्यमथो इमाम् ॥ ४१ ॥
इहैव स्तं मा वि यौष्टं विश्वमायुर्व्यश्नुतम् ।
क्रीळन्तौ पुत्रैर्नप्तृभिर्मोदमानौ स्वे गृहे ॥ ४२ ॥
आ नः प्रजां जनयतु प्रजापतिराजरसाय समनक्त्वर्यमा ।
अदुर्मङ्गलीः पतिलोकमा विश शं नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे ॥ ४३ ॥
अघोरचक्षुरपतिघ्न्येधि शिवा पशुभ्यः सुमनाः सुवर्चाः ।
वीरसूर्देवकामा स्योना शं नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे ॥ ४४ ॥
इमां त्वमिन्द्र मीढ्वः सुपुत्रां सुभगां कृणु ।
दशास्यां पुत्राना धेहि पतिमेकादशं कृधि ॥ ४५ ॥
सम्राज्ञी श्वशुरे भव सम्राज्ञी श्वश्वां भव ।
ननान्दरि सम्राज्ञी भव सम्राज्ञी अधि देवृषु ॥ ४६ ॥
समञ्जन्तु विश्वे देवाः समापो हृदयानि नौ ।
सं मातरिश्वा सं धाता समु देष्ट्री दधातु नौ ॥ ४७ ॥

इत्यष्टमाष्टके तृतीयोऽध्यायः ॥

अथ चतुर्थोऽध्यायः

[८६] षडशीतितमं सूक्तम्

ऋषिः—वृषाकपिरैन्द्र इन्द्राणीन्द्रश्च ॥ देवता—वरुणः ॥ छन्दः—१, ७, ११, १३, १४, १८, २३ पङ्क्तिः; २, ५ पादनिचृत्पङ्क्तिः; ३, ६, ९, १०, १२, १५, २०-२२ निचृत्पङ्क्तिः; ४, ८, १६, १७, १९ विराट्पङ्क्तिः ॥
स्वरः—पञ्चमः ॥

अथ प्रथमो वर्गः ॥ १ ॥

वि हि सोतोरसृक्षत नेन्द्रं देवमंसत ।
यत्रामदद् वृषाकपिरर्यः पुष्टेषु मत्सखा विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः ॥ १ ॥
परा हीन्द्र धावसि वृषाकपेरति व्यथिः ।
नो अह्रु प्र विन्दस्यन्यत्र सोमपीतये विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः ॥ २ ॥
किमयं त्वां वृषाकपिश्चकार हरितो मृगः ।
यस्मा इरस्यसीदु न्वर्यो वा पुष्टिमद्वसु विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः ॥ ३ ॥
यमिमं त्वं वृषाकपिं प्रियमिन्द्राभिरक्षसि ।
ऊषु ण्वस्य जम्भिषदपि कर्णे वराहयुर्विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः ॥ ४ ॥
प्रिया तष्टानि मे कपिर्व्यक्ता व्यदूदुषत् ।
शिरो न्वस्य राविषं न सुगं दुष्कृतो भुवं विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः ॥ ५ ॥

अथ द्वितीयो वर्गः ॥ २ ॥

न मत्स्त्री सुभसत्तरा न सुयाशुतरा भुवत् ।
न मत्प्रतिच्यवीयसी न सक्थ्युद्यमीयसी विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः ॥ ६ ॥
उवे अम्ब सुलाभिके यथेवाङ्ग भविष्यति ।
भसन्मे अम्ब सक्थि मे शिरो मे वीव ह्रष्यति विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः ॥ ७ ॥
किं सुबाहो स्वङ्गुरे पृथुष्टो पृथुजाघने ।
किं शूरपत्नि नस्त्वमभ्यमीषि वृषाकपिं विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः ॥ ८ ॥
अवीरामिव मामयं शरारुरभि मन्यते ।
उताहमस्मि वीरिणीन्द्रपत्नी मरुत्सखा विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः ॥ ९ ॥
संहोत्रं स्म पुरा नारी समनं वावं गच्छति ।
वेधा ऋतस्य वीरिणीन्द्रपत्नी महीयते विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः ॥ १० ॥

अथ तृतीयो वर्गः ॥ ३ ॥

इन्द्राणीमासु नारिषु सुभगामहमश्रवम् ।
नह्यस्या अपरं चन जरसा मरते पतिर्विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः ॥ ११ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नाहमिन्द्राणि रारण सख्युर्वृषाकपेर्ऋते ।
यस्येदमप्यं हविः प्रियं देवेषु गच्छति विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः ॥ १२ ॥
वृषाकपायि रेवति सुपुत्र आदु सुस्नुषे ।
घसत्त इन्द्र उक्षणाः प्रियं काचित्करं हविर्विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः ॥ १३ ॥
उक्षणो हि मे पञ्चदश साकं पचन्ति विंशतिम् ।
उताहमद्मि पीव इदुभा कुक्षी पृणन्ति मे विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः ॥ १४ ॥
वृषभो न तिग्मशृङ्गोऽन्तर्यूथेषु रोरुवत् ।
मन्थस्तं इन्द्र शं हृदे यं ते सुनोति भावयुर्विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः ॥ १५ ॥

अथ चतुर्थो वर्गः ॥ ४ ॥

न सेशे यस्य रम्बतेऽन्तरा सक्थ्या कपर्दम् ।
सेदीशे यस्य रोमशं निषेदुषो विजृम्भते विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः ॥ १६ ॥
न सेशे यस्य रोमशं निषेदुषो विजृम्भते ।
सेदीशे यस्य रम्बतेऽन्तरा सक्थ्या कपर्दद्विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः ॥ १७ ॥
अयमिन्द्र वृषाकपिः परस्वन्तं हतं विदत् ।
असिं सूनां नवं चरुमादेधस्यान आचितं विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः ॥ १८ ॥
अयमेमि विचाकशद्विचिन्वन्दासमार्यम् ।
पिबामि पाकसुत्वनोऽभि धीरमचाकशं विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः ॥ १९ ॥
धन्वं च यत्कृन्तत्रं च कतिं स्वित्ता वि योजना ।
नेदीयसो वृषाकपेऽस्तमेहि गृहाँ उप विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः ॥ २० ॥
पुनरेहि वृषाकपे सुविता कल्पयावहै ।
य एष स्वप्नंशनोऽस्तमेषि पथा पुनर्विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः ॥ २१ ॥
यदुदञ्चो वृषाकपे गृहमिन्द्राजगन्तन ।
क्वा स्य पुल्वघो मृगः कमगञ्जनयोपनो विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः ॥ २२ ॥
पशीर्ह नाम मानवी साकं ससूव विंशतिम् ।
भद्रं भलं त्यस्या अभूद्यस्या उदरमामयद्विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः ॥ २३ ॥

[८७] सप्ताशीतितमं सूक्तम्

ऋषिः—पायुः ॥ देवता—अग्नी रक्षोहा ॥ छन्दः—१, ८, १२, १७ त्रिष्टुप्; २, ३, २० विराट्त्रिष्टुप्; ४-७, ९-११, १८, १९ निचृत्त्रिष्टुप्; १३-१६ भुरिक् त्रिष्टुप्; २१ पादनिचृत्त्रिष्टुप्; २२, २३ अनुष्टुप्; २४, २५ निचृद् अनुष्टुप् ॥ स्वरः—१-२१ धैवतः; २२-२५ गान्धारः ॥

अथ पञ्चमो वर्गः ॥ ५ ॥

रक्षोहणं वाजिनमा जिघर्मि मित्रं प्रथिष्टमुप यामि शर्म ।
शिशानो अग्निः क्रतुभिः समिद्धः स नो दिवा स रिषः पातु नक्तम् ॥ १ ॥
अयोद्रंष्ट्रो अर्चिषा यातुधानानुप स्पृश जातवेदः समिद्धः ।
आ जिह्वया मूरदेवान्रभस्व क्रव्यादो वृक्त्व्यपि धत्स्वासन् ॥ २ ॥
उभोभयाविन्नुप धेहि दंष्ट्रा हिंस्रः शिशानोऽवरं परं च ।
उतान्तरिक्षे परि याहि राजञ्जम्भैः सं धेह्यभि यातुधानान् ॥ ३ ॥
यज्ञैरिषूः संनममानो अग्ने वाचा शल्याँ अशनिभिर्दिहानः ।
ताभिर्विध्य हृदये यातुधानान्प्रतीचो बाहून्प्रति भङ्ध्येषाम् ॥ ४ ॥
अग्ने त्वचं यातुधानस्य भिन्धि हिंस्राशनिर्हरसा हन्त्वेनम् ।
प्र पर्वाणि जातवेदः शृणीहि क्रव्यात्क्रविष्णुर्वि चिनोतु वृक्णम् ॥ ५ ॥

अथ षष्ठो वर्गः ॥ ६ ॥

यत्रेदानीं पश्यसि जातवेदस्तिष्ठन्तमग्र उत वा चरन्तम् ।
यद्वान्तरिक्षे पथिभिः पतन्तं तमस्ता विध्य शर्वा शिशानः ॥ ६ ॥
उतालब्धं स्पृणुहि जातवेद आलेभानादृष्टिभिर्यातुधानात् ।
अग्ने पूर्वो नि जहि शोशुचान आमादः क्ष्विङ्कास्तमदन्त्वेनीः ॥ ७ ॥
इह प्र ब्रूहि यतमः सो अग्ने यो यातुधानो य इदं कृणोति ।
तमा रभस्व समिधा यविष्ठ नृचक्षसश्चक्षुषे रन्धयैनम् ॥ ८ ॥
तीक्ष्णेनाग्ने चक्षुषा रक्ष यज्ञं प्राञ्चं वसुभ्यः प्र णय प्रचेतः ।
हिंस्रं रक्षांस्यभि शोशुचानं मा त्वा दभन्यातुधानो नृचक्षः ॥ ९ ॥
नृचक्षा रक्षः परि पश्य विक्षु तस्य त्रीणि प्रति शृणीह्यग्रा ।
तस्याग्ने पृष्टीर्हरसा शृणीहि त्रेधा मूलं यातुधानस्य वृश्च ॥ १० ॥

अथ सप्तमो वर्गः ॥ ७ ॥

त्रियीतुधानः प्रसितिं त एत्वृतं यो अग्ने अनृतेन हन्ति ।
तमर्चिषा स्फूर्जयञ्जातवेदः समक्षमेनं गृणते नि वृङ्धि ॥ ११ ॥
तदग्ने चक्षुः प्रति धेहि रेभे शफारुजं येन पश्यसि यातुधानम् ।
अथर्ववज्ज्योतिषा दैव्येन सत्यं धूर्वन्तमचितं न्योष ॥ १२ ॥
यदग्ने अद्य मिथुना शपातो यद्वाचस्तृष्टं जनयन्त रेभाः ।
मन्योर्मनसः शरव्या जायते या तया विध्य हृदये यातुधानान् ॥ १३ ॥
परा शृणीहि तपसा यातुधानान्पराग्ने रक्षो हरसा शृणीहि ।
परार्चिषा मूरदेवाञ्छृणीहि परासुतृपो अभि शोशुचानः ॥ १४ ॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पराद्य देवा वृजिनं शृणन्तु प्रत्यगेनं शपथा यन्तु तृष्टाः।
वाचास्तेनं शरव ऋच्छन्तु मर्मन्विश्वस्यैतु प्रसितिं यातुधानः॥ १५॥

अथ अष्टमो वर्गः॥ ८॥

यः पौरुषेयेण क्रविषा समङ्क्ते यो अश्व्येन पशुना यातुधानः।
यो अघ्न्याया भरति क्षीरमग्रे तेषां शीर्षाणि हरसापि वृश्च॥ १६॥
संवत्सरीणं पय उस्त्रियायास्तस्य माशीद्यातुधानो नृचक्षः।
पीयूषमग्ने यतमस्तितृप्सात्तं प्रत्यञ्चमर्चिषा विध्य मर्मन्॥ १७॥
विषं गवां यातुधानाः पिबन्त्वा वृश्च्यन्तामादितये दुरेवाः।
परैनान्देवः सविता ददातु परा भागमोषधीनां जयन्ताम्॥ १८॥
सनादग्ने मृणसि यातुधानान्न त्वा रक्षांसि पृतनासु जिग्युः।
अनु दह सहमूरान्क्रव्यादो मा ते हेत्या मुक्षत दैव्यायाः॥ १९॥
त्वं नो अग्ने अधरादुदक्तात्त्वं पश्चादुत रक्षा पुरस्तात्।
प्रति ते ते अजरासस्तपिष्ठा अघशंसं शोशुचतो दहन्तु॥ २०॥

अथ नवमो वर्गः॥ ९॥

पश्चात्पुरस्तादधरादुदक्तात्कविः काव्येन परि पाहि राजन्।
सखे सखायमजरो जरिम्णेऽग्ने मर्तो अमर्त्यस्त्वं नः॥ २१॥
परि त्वाग्ने पुरं वयं विप्रं सहस्य धीमहि।
धृषद्वर्णं दिवेदिवे हन्तारं भङ्गुरावताम्॥ २२॥
विषेण भङ्गुरावतः प्रति ष्म रक्षसो दह।
अग्ने तिग्मेन शोचिषा तपुरग्राभिर्ऋष्टिभिः॥ २३॥
प्रत्यग्ने मिथुना दह यातुधानाँ किमीदिना।
सं त्वा शिशामि जागृह्यदब्धं विप्र मन्मभिः॥ २४॥
प्रत्यग्ने हरसा हरः शृणीहि विश्वतः प्रति।
यातुधानस्य रक्षसो बलं वि रुज वीर्यम्॥ २५॥

[८८] अष्टाशीतितमं सूक्तम्

ऋषिः—मूर्धन्वानाङ्गिरसो वामदेव्यो वा॥ देवता—सूर्यवैश्वानरौ॥ छन्दः—१-४, ७, १५, १९ विराट्त्रिष्टुप्; ५, ८ त्रिष्टुप्; ६, ९-१४, १६, १७ निचृत्त्रिष्टुप्; १८ आर्चीस्वराट्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः॥

अथ दशमो वर्गः॥ १०॥

हविष्मान्तमजरं स्वर्विदं दिविस्पृशमाहुतं जुष्टमग्नौ।
तस्य भर्मणे भुवनाय देवा धर्मणे कं स्वधया पप्रथन्त॥ १॥
गीर्णं भुवनं तमसापगूळ्हमाविः स्वरभवज्जाते अग्नौ।
तस्य देवाः पृथिवी द्यौरुतापोऽरणयन्नोषधीः सख्ये अस्य॥ २॥
देवेभिर्न्विषितो यज्ञियेभिरग्निं स्तोषाण्यजरं बृहन्तम्।
यो भानुना पृथिवीं द्यामुतेमामाततान रोदसी अन्तरिक्षम्॥ ३॥
यो होतासीत्प्रथमो देवजुष्टो यं समाञ्जन्नाज्येना वृणानाः।
स पत्त्रीत्वरं स्था जगद्यच्छात्रमग्निरकृणोज्जातवेदाः॥ ४॥
यज्जातवेदो भुवनस्य मूर्धन्नतिष्ठो अग्ने सह रोचनेन।
तं त्वाहेम मतिभिर्गीर्भिरुक्थैः स यज्ञियो अभवो रोदसिप्राः॥ ५॥

अथ एकादशो वर्गः॥ ११॥

मूर्धा भुवो भवति नक्तमग्निस्ततः सूर्यो जायते प्रातरुद्यन्।
मायामू तु यज्ञियानामेतामपो यत्तूर्णिश्चरति प्रजानन्॥ ६॥
दृशेन्यो यो महिना समिद्धोऽरोचत दिवियोनिर्विभावा।
तस्मिन्नग्नौ सूक्तवाकेन देवा हविर्विश्व आजुहवुस्तनूपाः॥ ७॥
सूक्तवाकं प्रथममादिदग्निमादिद्धविरजनयन्त देवाः।
स एषां यज्ञो अभवत्तनूपास्तं द्यौर्वेद तं पृथिवी तमापः॥ ८॥
यं देवासोऽजनयन्ताग्निं यस्मिन्नाजुहवुर्भुवनानि विश्वा।
सो अर्चिषा पृथिवीं द्यामुतेमामृजूयमानो अतपन्महित्वा॥ ९॥
स्तोमेन हि दिवि देवासो अग्निमजीजनञ्छक्तिभी रोदसिप्राम्।
तमू अकृण्वन्त्रेधा भुवे कं स ओषधीः पचति विश्वरूपाः॥ १०॥

अथ द्वादशो वर्गः॥ १२॥

यददेनमदधुर्यज्ञियासो दिवि देवाः सूर्यमादितेयम्।
यदा चरिष्णू मिथुनावभूतामादित्प्रापश्यन्भुवनानि विश्वा॥ ११॥
विश्वस्मा अग्निं भुवनाय देवा वैश्वानरं केतुमह्नामकृण्वन्।
आ यस्तताने।षसो विभातीरपो ऊर्णोति तमो अर्चिषा यन्॥ १२॥
वैश्वानरं कवयो यज्ञियासोऽग्निं देवा अजनयन्नजुर्यम्।
नक्षत्रं प्रत्नममिनच्चरिष्णु युक्षस्याध्यक्षं तविषं बृहन्तम्॥ १३॥
वैश्वानरं विश्वहा दीदिवांसं मन्त्रैरग्निं कविमच्छा वदामः।
यो महिम्ना परिबभूवोर्वी उतावस्तादुत देवः परस्तात्॥ १४॥
द्वे स्रुती अशृणवं पितृणामहं देवानामुत मर्त्यानाम्।
ताभ्यामिदं विश्वमेजत्समेति यदन्तरा पितरं मातरं च॥ १५॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

अथ त्रयोदशो वर्गः ॥ १३ ॥

द्वे सꣳमीची बिभृतश्चरन्तं शीर्षतो जातं मनसा विमृष्टम्।
स प्रत्यङ्विश्वा भुवनानि तस्थावप्रयुच्छन्तरणिर्भ्राजमानः ॥ १६ ॥
यत्रा वदेते अवरः परश्च यज्ञन्योः कतरो नौ वि वेद।
आ शेकुरित्सधमादं सखायो नक्षन्त यज्ञं क इदं वि वोचत्॥ १७ ॥
कत्यग्नयः कति सूर्यासः कत्युषासः कत्वु स्विदापः।
नोपस्पिजं वः पितरो वदामि पृच्छामि वः कवयो विद्मने कम्॥ १८ ॥
यावन्मात्रमुषसो न प्रतीकं सुपर्ण्योर्३ वसते मातरिश्वः ।
तावद्दधात्युप यज्ञमायन्ब्राह्मणो होतुरवरो निषीदन् ॥ १९ ॥

[८९] एकोननवतितमं सूक्तम्

ऋषिः—रेणुः॥ देवता—१-४, ६-१८ इन्द्रः; ५ इन्द्रासोमौ॥ छन्दः—१, ४, ६, ७, ११, १२, १५, १८ त्रिष्टुप्; २ आर्चीत्रिष्टुप्; ३, ५, ९, १०, १४, १६, १७ निचृत्त्रिष्टुप्; ८ पादनिचृत्त्रिष्टुप्; १३ आर्चीस्वराट्-त्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः॥

अथ चतुर्दशो वर्गः ॥ १४ ॥

इन्द्रं स्तवा नृतमं यस्य मह्ना विबबाधे रोचना वि ज्मो अन्तान्।
आ यः पप्रौ चर्षणीधृद्वरोभिः प्र सिन्धुभ्यो रिरिचानो महित्वा॥ १ ॥
स सूर्यः पर्युरू वरांस्येन्द्रो ववृत्याद्रथ्येव चक्रा।
अतिष्ठन्तमपस्यं न सर्गं कृष्णा तमांसि त्विष्या जघान॥ २ ॥
समानमस्मा अनपावृदर्च क्षमया दिवो अस्मं ब्रह्म नव्यम्।
वि यः पृष्ठेव जनिमान्यर्य इन्द्रश्चिकाय न सखायमीषे॥ ३ ॥
इन्द्राय गिरो अनिशितसर्गा अपः प्रेरयं सगरस्य बुध्नात्।
यो अक्षेणेव चक्रिया शचीभिर्विष्वक्तस्तम्भ पृथिवीमुत द्याम्॥ ४ ॥
आपान्तमन्युस्तृपलप्रभर्मा धुनिः शिमीवाञ्छरुमाँ ऋजीषी।
सोमो विश्वान्यतसा वनानि नार्वागिन्द्रं प्रतिमानानि देभुः॥ ५ ॥

अथ पञ्चदशो वर्गः ॥ १५ ॥

न यस्य द्यावापृथिवी न धन्व नान्तरिक्षं नाद्रयः सोमो अक्षाः।
यद्स्य मन्युरधिनीयमानः शृणाति वीळु रुजति स्थिराणि॥ ६ ॥
जघान वृत्रं स्वधितिर्वनेव रुरोज पुरो अरदन्न सिन्धून्।
बिभेद गिरिं नवमिन्न कुम्भमा गा इन्द्रो अकृणुत स्वयुग्भिः॥ ७ ॥
त्वं ह त्यदृणया इन्द्र धीरोऽसिर्न पर्व वृजिना शृणासि।
प्र ये मित्रस्य वरुणस्य धाम युजं न जना मिनन्ति मित्रम्॥ ८ ॥
प्र ये मित्रं प्रार्यमणं दुरेवाः प्र संगिरः प्र वरुणं मिनन्ति।
न्यमित्रेषु वधमिन्द्र तुम्रं वृषन्वृषाणमरुषं शिशीहि॥ ९ ॥
इन्द्रो दिव इन्द्र ईशे पृथिव्या इन्द्रो अपामिन्द्र इत्पर्वतानाम्।
इन्द्रो वृधामिन्द्र इन्मेधिराणामिन्द्रः क्षेमे योगे हव्य इन्द्रः॥ १० ॥

अथ षोडशो वर्गः ॥ १६ ॥

प्राक्तुभ्य इन्द्रः प्र वृधो अहभ्यः प्रान्तरिक्षात्प्र समुद्रस्य धासेः।
प्र वातस्य प्रथसः प्र ज्मो अन्तात्प्र सिन्धुभ्यो रिरिचे प्र क्षितिभ्यः॥ ११ ॥
प्र शोशुचत्या उषसो न केतुरसिन्वा तें वर्ततामिन्द्र हेतिः।
अश्मेव विध्य दिव आ सृजानस्तपिष्ठेन हेषसा द्रोघमित्रान्॥ १२ ॥
अन्वह मासा अन्विद्वनान्यन्वोषधीरनु पर्वतासः ।
अन्विन्द्रं रोदसी वावशाने अन्वापो अजिहत जायमानम्॥ १३ ॥
कहिं स्वित्सा त इन्द्र चेत्यासद्यस्य यद्विनदो रक्ष एषत्।
मित्रक्रुवो यच्छसने न गावः पृथिव्या आपृगमुया शयन्ते॥ १४ ॥
शत्रूयन्तो अभि ये नस्ततस्रे महि व्राधन्त ओगणासः इन्द्र।
अन्धेनामित्रास्तमसा सचन्तां सुज्योतिषो अक्तवस्तां अभि ष्युः॥ १५ ॥
पुरूणि हि त्वा सवना जनानां ब्रह्माणि मन्दन्नृणतामृषीणाम्।
इमामाघोषन्नवसा सहूतिं तिरो विश्वाँ अर्चतो याह्यर्वाङ्॥ १६ ॥
एवा ते वयमिन्द्र भुञ्जतीनां विद्याम सुमतीनां नवानाम्।
विद्याम वस्तोरवसा गृणन्तो विश्वामित्रा उत त इन्द्र नूनम्॥ १७ ॥
शुनं हुवेम मघवानमिन्द्रमस्मिन्भरे नृतमं वाजसातौ ।
शृण्वन्तमुग्रमूतये समत्सु घ्नन्तं वृत्राणि संजितं धनानाम् ॥ १८ ॥

[९०] नवतितमं सूक्तम्

ऋषिः—नारायणः॥ देवता—पुरुषः॥ छन्दः—१-३, ७, १०, १२, १३ निचृदनुष्टुप्; ४-६, ९, १४, १५ अनुष्टुप्; ८, ११ विराड् अनुष्टुप्; १६ विराट्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१-१५ गान्धारः; १६ धैवतः॥

अथ सप्तदशो वर्गः ॥ १७ ॥

सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात् ।
स भूमिं विश्वतो वृत्वात्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम् ॥ १ ॥
पुरुष एवेदं सर्वं यद्भूतं यच्च भव्यम् ।
उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति ॥ २ ॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

एतावानस्य महिमातो ज्यायाँश्च पूरुषः ।
पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि ॥ ३ ।
त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुषः पादोऽस्येहाभवत्पुनः ।
ततो विष्वङ् व्यक्रामत्साशनानशने अभि ॥ ४ ॥
तस्माद्विराळजायत विराजो अधि पूरुषः ।
स जातो अत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथो पुरः ॥ ५ ॥

अथ अष्टादशो वर्गः ॥ १८ ॥

यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत ।
वसन्तो अस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः ॥ ६ ॥
तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन्पुरुषं जातमग्रतः ।
तेन देवा अयजन्त साध्या ऋषयश्च ये ॥ ७ ॥
तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः संभृतं पृषदाज्यम् ।
पशूँस्ताँश्चक्रे वायव्यानारण्यान्ग्राम्याश्च ये ॥ ८ ॥
तस्माद्यज्ञात्सर्वहुत ऋचः सामानि जज्ञिरे ।
छन्दांसि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत ॥ ९ ॥
तस्मादश्वा अजायन्त ये के चोभयादतः ।
गावो ह जज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाता अजावयः ॥ १० ॥

अथ एकोनविंशो वर्गः ॥ १९ ॥

यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन् ।
मुखं किमस्य कौ बाहू का ऊरू पादा उच्येते ॥ ११ ॥
ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद्बाहू राजन्यः कृतः ।
ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्यां शूद्रो अजायत ॥ १२ ॥
चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत ।
मुखादिन्द्रश्चाग्निश्च प्राणाद्वायुरजायत ॥ १३ ॥
नाभ्या आसीदन्तरिक्षं शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत ।
पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ अकल्पयन् ॥ १४ ॥
सप्तास्यासन्परिधयस्त्रिः सप्त समिधः कृताः ।
देवा यद्यज्ञं तन्वाना अबध्नन्पुरुषं पशुम् ॥ १५ ॥
यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन् ।
ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः ॥ १६ ॥

अष्टमोऽनुवाकः [९१] एकनवतितमं सूक्तम्

ऋषिः—अरुणो वैतहव्यः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१, ३, ६ निचृज्जगती; २, ४, ५, ७, ९, १०, १३ विराड्जगती; ८, ११ पादनिचृज्जगती; १२, १४ जगती; १५ पादनिचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१-१४ निषादः; १५ धैवतः ॥

अथ विंशो वर्गः ॥ २० ॥

सं जागृवद्भिर्जरमाण इध्यते दमे दमूना इषयन्निळस्पदे ।
विश्वस्य होता हविषो वरेण्यो विभुर्विभावा सुषखा सखीयते ॥ १ ॥
स दर्शतश्रीरतिथिर्गृहेगृहे वनेवने शिश्रिये तक्ववीरिव ।
जनंजनं जन्यो नाति मन्यते विश आ क्षेति विश्योऽ३ विशंविशम् ॥ २ ॥
सुदक्षो दक्षैः क्रतुनासि सुक्रतुरग्ने कविः काव्येनासि विश्ववित् ।
वसुर्वसूनां क्षयसि त्वमेक इद् द्यावा च यानि पृथिवी च पुष्यतः ॥ ३ ॥
प्रजानन्नग्ने तव योनिमृत्वियमिळायास्पदे घृतवन्तमासदः ।
आ तें चिकित्र उषसामिवेतयोऽरेपसः सूर्यस्येव रश्मयः ॥ ४ ॥
तव श्रियो वर्ष्यस्येव विद्युतश्चित्राश्चिकित्र उषसां न केतवः ।
यदोषधीरभिसृष्टो वनानि च परि स्वयं चिनुषे अन्नमास्ये ॥ ५ ॥

अथ एकविंशो वर्गः ॥ २१ ॥

तमोषधीर्दधिरे गर्भमृत्वियं तमापो अग्निं जनयन्त मातरः ।
तमित्समानं वनिनश्च वीरुधोऽन्तर्वतीश्च सुवते च विश्वहा ॥ ६ ॥
वातोपधूत इषितो वशाँ अनु तृषु यदन्ना वेविषद्वितिष्ठसे ।
आ तें यतन्ते रथ्योऽ३ यथा पृथक्शर्धांस्यग्ने अजराणि धक्षतः ॥ ७ ॥
मेधाकारं विदथस्य प्रसाधनमग्निं होतारं परिभूतमं मतिम् ।
तमिदर्भे हविष्या समानमित्तमिन्महे वृणते नान्यं त्वत् ॥ ८ ॥
त्वामिदत्रे वृणते त्वायवो होतारमग्ने विदथेषु वेधसः ।
यद्देवयन्तो दधति प्रयांसि ते हविष्मन्तो मनवो वृक्तबर्हिषः ॥ ९ ॥
तवाग्ने होत्रं तव पोत्रमृत्वियं तव नेष्ट्रं त्वमग्निर्दृतायतः ।
तव प्रशास्त्रं त्वमध्वरीयसि ब्रह्मा चासि गृहपतिश्च नो दमे ॥ १० ॥

अथ द्वाविंशो वर्गः ॥ २२ ॥

यस्तुभ्यमग्ने अमृताय मर्त्यः समिधा दाशदुत वा हविष्कृति ।
तस्य होता भवसि यासि दूत्यमुप ब्रूषे यजसि यधरीयसि ॥ ११ ॥
इमा अस्मै मतयो वाचो अस्मदाँ ऋचो गिरः सुष्टुतयः समग्मत ।
वसूयवो वसवे जातवेदसे वृद्धासु चिद्वर्धनो यासु चाकनत् ॥ १२ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri Kanya Maha Vidyalaya Collection.

इमां प्रत्नाय सुष्टुतिं नवीयसीं वोचेयमस्मा उशते शृणोतु नः।
भूया अन्तरा हृद्यस्य निस्पृशे जायेव पत्य उशती सुवासाः॥ १३॥
यस्मिन्नश्वास ऋषभास उक्षणो वशा मेषा अवसृष्टास आहुताः।
कीलालपे सोमपृष्ठाय वेधसे हृदा मतिं जनये चारुमग्नये॥ १४॥
अहाव्यग्ने हविरास्ये ते स्रुचीव घृतं चम्वीव सोमः।
वाजसनिं रयिमस्मे सुवीरं प्रशस्तं धेहि यशसं बृहन्तम्॥ १५॥

[९२] द्विनवतितमं सूक्तम्

ऋषिः—शार्यातो मानवः॥ देवता—विश्वे देवाः॥ छन्दः—१, ६, १२, १४ निचृत् जगती; २, ५, ८, १०, ११, १५ जगती; ३, ४, ९, १३ विराड्जगती; ७ पादनिचृज्जगती॥ स्वरः—निषादः॥

अथ त्रयोविंशो वर्गः॥ २३॥

यज्ञस्य वो रथ्यं विश्पतिं विशां होतारमक्तोरतिथिं विभावसुम्।
शोचञ्छुष्कासु हरिणीषु जर्भुरद् वृषा केतुर्यजतो द्यामशायत॥ १॥
इमममञ्जस्पामुभये अकृण्वत ध्रुवाणमग्निं विदथस्य साधनम्।
अक्तुं न यह्वमुषसः पुरोहितं तनूनपातमरुषस्य निंसते॥ २॥
बळस्य नीथा वि पणेश्च मन्महे वया अस्य प्रहुता आसुरुत्तवे।
यदा घोरासो अमृतत्वमाशतादिज्जनस्य दैव्यस्य चर्किरन्॥ ३॥
ऋतस्य हि प्रसितिर्द्यौरुरु व्यचो नमो मह्यरमतिः पनीयसी।
इन्द्रो मित्रो वरुणः सं चिकित्रिरेऽथो भगः सविता पूतदक्षसः॥ ४॥
प्र रुद्रेण ययिना यन्ति सिन्धवस्तिरो महीमरमतिं दधन्विरे।
येभिः परिज्मा परियन्नुरु व्रयो वि रोरुवज्जठरे विश्वमुक्षते॥ ५॥

अथ चतुर्विंशो वर्गः॥ २४॥

क्राणा रुद्रा मरुतो विश्वकृष्टयो दिवः श्येनासो असुरस्य नीळयः।
तेभिश्चष्टे वरुणो मित्रो अर्यमेन्द्रो देवेभिरर्वशेभिरर्वशः॥ ६॥
इन्द्रे भुजं शशमानास आशत सूरो दृशीके वृषणश्च पौंस्ये।
प्र ये न्वस्यार्हणा ततक्षिरे युजं वज्रं नृषदनेषु कारवः॥ ७॥
सूरश्चिदा हरितो अस्य रीरमदिन्द्रादा कश्चिद्भयते तवीयसः।
भीमस्य वृष्णो जठरादभिश्वसो दिवेदिवे सहुरिः स्तन्नबाधितः॥ ८॥
स्तोमं वो अद्य रुद्राय शिक्वसे क्षयद्वीराय नमसा दिदिष्टन।
येभिः शिवः स्ववाँ एवयावभिर्दिवः सिषक्ति स्वयशा निकामभिः॥

ते हि प्रजाया अभरन्त वि श्रवो बृहस्पतिर्वृषभः सोमजामयः।
यज्ञैरथर्वा प्रथमो वि धारयद्देवा दक्षैर्भृगवः सं चिकित्रिरे॥ १०॥

अथ पञ्चविंशो वर्गः॥ २५॥

ते हि द्यावापृथिवी भूरिरेतसा नराशंसश्चतुरङ्गो यमोऽदितिः।
देवस्त्वष्टा द्रविणोदा ऋभुक्षणः प्र रोदसी मरुतो विष्णुरर्हिरे॥ ११॥
उत स्य नः उशिजामुर्विया कविरहिः शृणोतु बुध्न्यो३ हवीमनि।
सूर्यामासा विचरन्ता दिविक्षिता धिया शमीनहुषी अस्य बोधतम्॥ १२॥
प्र नः पूषा चरथं विश्वदेव्योऽपां नपादवतु वायुरिष्टये।
आत्मानं वस्यो अभि वातमर्चत तदश्विना सुहवा यामनि श्रुतम्॥ १३॥
विशामासामभयानामधिक्षितं गीर्भिरु स्वयशसं गृणीमसि।
ग्राभिर्विश्वाभिरदितिमनर्वणमक्तोर्युवानं नृमणा अधा पतिम्॥ १४॥
रेभदत्र जनुषा पूर्वो अङ्गिरा ग्रावाण ऊर्ध्वा अभि चक्षुरध्वरम्।
येभिर्विहाया अभवद्विचक्षणः पाथः सुमेकं स्वधितिर्वनन्वति॥ १५॥

[९३] त्रिनवतितमं सूक्तम्

ऋषिः—तान्वः पार्ष्यः॥ देवता—विश्वे देवाः॥ छन्दः—१ विराट्पङ्क्तिः; २, १३ आर्ची-भुरिगनुष्टुप्; ३ पादनिचृदनुष्टुप्; ४ पादनिचृत्पङ्क्तिः; ५ आर्चीभुरिक्पङ्क्तिः; ६, ७, १०, १४ निचृत्पङ्क्तिः; ८ आस्तारपङ्क्तिः; ९ अक्षरपङ्क्तिः; ११ न्यङ्कुसारिणी-बृहती; १२ आर्चीपङ्क्तिः; १५ पादनिचृद्बृहती॥ स्वरः—१, ४-१०, १२, १४ पञ्चमः; २, ३, १३ गान्धारः; ११, १५ मध्यमः॥

अथ षड्विंशो वर्गः॥ २६॥

महिं द्यावापृथिवी भूतमुर्वी नारीं यह्वी न रोदसी सदं नः।
तेभिर्नः पातं सहसः एभिर्नः पातं शूषणि ॥ १॥
यज्ञेयज्ञे स मर्त्यो देवान्त्संपर्यति ।
यः सुम्नैर्दीर्घश्रुत्तम आविवासात्येनान् ॥ २॥
विश्वैषामिज्यवो देवानां वार्महः ।
विश्वे हि विश्वमहसो विश्वे यज्ञेषु यज्ञियाः ॥ ३॥
ते घा राजानो अमृतस्य मन्द्रा अर्यमा मित्रो वरुणः परिज्मा।
कद्रुद्रो नृणां स्तुतो मरुतः पूषणो भगः ॥ ४॥
उत नो नक्तमपां वृषण्वसू सूर्यामासा सदनाय सध्र्या।
[illegible] ॥ ५॥

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection. Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अथ सप्तविंशो वर्गः ॥ २७ ॥

उत नो देवावश्विना शुभस्पती धामभिर्मित्रावरुणा उरुष्यताम्।
महः स राय एषतेऽति धन्वेव दुरिता ॥ ६ ॥
उत नो रुद्रा चिन्मृळतामश्विना विश्वे देवासो रथस्पतिर्भगः।
ऋभुर्वाज ऋभुक्षणः परिन्मा विश्ववेदसः ॥ ७ ॥
ऋभुक्षभुक्षा ऋभुर्विधतो मद आ ते हरी जूजुवानस्य वाजिना।
दुष्टरं यस्य साम चिदृधग्यज्ञो न मानुषः ॥ ८ ॥
कृधी नो अह्रयो देव सवितः स चं स्तुषे मघोनाम्।
सहो न इन्द्रो वह्निभिर्न्यैषां चर्षणीनां चक्रं रश्मिं न योयुवे ॥ ९ ॥
ऐषु द्यावापृथिवी धातं महदस्मे वीरेषु विश्वचर्षणि श्रवः।
पृक्षं वाजस्य सातये पृक्षं रायोत तुर्वणे ॥ १० ॥

अथ अष्टाविंशो वर्गः ॥ २८ ॥

एतं शंसमिन्द्रास्मयुष्टूं कूचित्सन्तं सहसावन्नभिष्टये सदा
पाह्यभिष्टये। मेदतां वेदता वसो ॥ ११ ॥
एतं मे स्तोमं तना न सूर्ये द्युतद्यामानं वावृधन्त नृणाम् ।
संवर्ननं नाश्व्यं तष्टेवानपच्युतम् ॥ १२ ॥
वावर्त येषां राया युक्तैषां हिरण्ययी ।
नेमधिता न पौंस्या वृथेव विष्टान्ता ॥ १३ ॥
प्र तद्दुःशीमे पृथवाने वेने प्र रामे वोचमसुरे मघवत्सु ।
ये युक्त्वाय पञ्च शतास्मयु पथा विश्राव्येषाम् ॥ १४ ॥
अधीन्त्रं सप्तिं च सप्त च ।
सद्यो दिदिष्ट तान्वः सद्यो दिदिष्ट पार्थ्यः सद्यो दिदिष्ट मायवः ॥ १५ ॥

[९४] चतुर्नवतितमं सूक्तम्

ऋषिः—अर्बुदः काद्रवेयः सर्पः ॥ देवता—ग्रावाणः ॥ छन्दः—१, ३, ४, १०, ११, १३ विराड्जगती; २, ६, १२ जगती; ८, ९ आर्चीस्वराड्जगती; ५, ७ निचृत् त्रिष्टुप्; १४ त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१-४, ६, ८-१३ निषादः; ५, ७, १४ धैवतः ॥

अथ एकोनत्रिंशो वर्गः ॥ २९ ॥

प्रैते वदन्तु प्र वयं वदाम ग्रावभ्यो वाचं वदता वदद्भ्यः।
यदद्रयः पर्वताः साकमाशवः श्लोकं घोषं भरथेन्द्राय सोमिनः ॥ १ ॥
एते वदन्ति शतवत्सहस्रवदभि क्रन्दन्ति हरितेभिरासभिः।
विष्टी ग्रावाणः सुकृतः सुकृत्यया होतृश्चित्पूर्व हविरद्यमाशत ॥ २ ॥
एते वदन्त्यविदन्नना मधु न्यूङ्खयन्ते अधि पक्व आमिषि।
वृक्षस्य शाखामरुणस्य बप्सतस्ते सूभर्वा वृषभाः प्रेमराविषुः ॥ ३ ॥
बृहद्वदन्ति मदिरेण मन्दिनेन्द्रं क्रोशन्तोऽविदन्नना मधु ।
संरभ्या धीराः स्वसृभिरनर्तिषुराघोषयन्तः पृथिवीमुपब्दिभिः ॥ ४ ॥
सुपर्णा वाचमक्रतोप द्यव्याखरे कृष्णा इषिरा अनर्तिषुः ।
न्यङ्ङनि यन्त्युपरस्य निष्कृतं पुरू रेतो दधिरे सूर्यश्वितः ॥ ५ ॥

अथ त्रिंशो वर्गः ॥ ३० ॥

उग्राइव प्रवहन्तः समायमुः साकं युक्ता वृषणो बिभ्रतो धुरः।
यच्छ्वसन्तो जग्रसाना अराविषुः शृण्व एषां प्रोथथो अवेतामिव ॥ ६ ॥
दशावनिभ्यो दशकक्ष्येभ्यो दशयोक्त्रेभ्यो दशयोजनेभ्यः ।
दशाभीशुभ्यो अर्चताजरेभ्यो दश धुरो दश युक्ता वहन्द्वयः ॥ ७ ॥
ते अद्रयो दशयन्त्रास आशवस्तेषामाधानं पर्येति हर्यतम्।
त ऊं सुतस्य सोम्यस्यान्धसोंऽशोःपीयूषं प्रथमस्य भेजिरे ॥ ८ ॥
ते सोमादो हरी इन्द्रस्य निंसतेंऽशुं दुहन्तो अध्यासते गवि।
तेभिर्दुग्धं पपिवान्त्सोम्यं मध्विन्द्रो वर्धते प्रथते वृषायते ॥ ९ ॥
वृषा वो अंशुर्न किलो रिषाथनेळावन्तः सदमित्स्थनाशिताः।
रैवत्येव महसा चारवः स्थन यस्य ग्रावाणो अजुषध्वमध्वरम् ॥ १० ॥

अथ एकत्रिंशो वर्गः ॥ ३१ ॥

तृदिला अतृदिलासो अद्रयोऽश्रमणा अशृथिता अमृत्यवः।
अनातुरा अजराः स्थामविष्णवः सुपीवसो अतृषिता अतृष्णजः ॥ ११ ॥
ध्रुवा एव वः पितरो युगेयुगे क्षेमकामासः सदसो न युञ्जते।
अजुर्यासो हरिषाचो हरिद्रव आ द्यां रवेण पृथिवीमशुश्रवुः ॥ १२ ॥
तदिद्वदन्त्यद्रयो विमोचने यामन्नञ्जस्पाइव घेदुपब्दिभिः।
वपन्तो बीजमिव धान्याकृतः पृञ्चन्ति सोमं न मिनन्ति बप्सतः ॥ १३ ॥
सुते अध्वरे अधि वाचमक्रता क्रीळयो न मातरं तुदन्तः।
वि षू मुञ्चा सुषुवुषो मनीषां वि वर्तन्तामद्रयश्चायमानाः ॥ १४ ॥

इत्यष्टमाष्टके चतुर्थोऽध्यायः ॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अथ पञ्चमोऽध्यायः

[९५] पञ्चनवतितमं सूक्तम्

ऋषिः—१, ३, ६, ८-१०, १२, १४, १७, पुरूरवा ऐळः; २, ४, ५, ७, ११, १३, १५, १६, १८ उर्वशी॥ देवता—१, ३, ६, ८-१०, १२, १४, १७ उर्वशी; २, ४, ५, ७, ११, १३, १५, १६, १८ पुरूरवा ऐळः॥ छन्दः—१, २, १२ त्रिष्टुप्; ३, ४, १३, १६ पादनिचृत्त्रिष्टुप् ५, १० आर्चीभुरिक्त्रिष्टुप्; ६-८, १५ विराट्त्रिष्टुप्; ९, ११, १४, १७, १८ निचृत्त्रिष्टुप्॥
स्वरः—धैवतः॥

अथ प्रथमो वर्गः॥ १॥

हुये जाये मनसा तिष्ठ घोरे वचांसि मिश्रा कृणवावहै नु ।
न नौ मन्त्रा अनुदितास एते मयस्करन्परतरे चनाहन् ॥ १ ॥
किमेता वाचा कृणवा तवाहं प्राक्रमिषमुषसामग्रियेव ।
पुरूरवः पुनरस्तं परेहि दुरापना वात इवाहमस्मि ॥ २ ॥
इषुर्न श्रिय इषुधेरसना गोषाः शतसा न रंहिः ।
अवीरे क्रतौ वि दविद्युतन्नोरा न मायुं चितयन्त धुनयः ॥ ३ ॥
सा वसु दधती श्वशुराय वय उषो यदि वष्ट्यन्तिगृहात् ।
अस्तं ननक्षे यस्मिञ्चाकन्दिवा नक्तं शयिता वैतसेन ॥ ४ ॥
त्रिः स्म माह्नः शयथो वैतसेनोत स्म मेऽव्यत्यै पृणासि ।
पुरूरवोऽनु ते केतमायं राजा मे वीर तन्वस्तदासीः ॥ ५ ॥

अथ द्वितीयो वर्गः॥ २॥

या सुजूर्णिः श्रेणिः सुम्नआपिर्हृदेचक्षुर्न ग्रन्थिनी चरण्युः ।
ता अञ्जयोऽरुणयो न संस्रुः श्रिये गावो न धेनवोऽनवन्त ॥ ६ ॥
समस्मिञ्जायमान आसत ग्रा उतेमवर्धन्नद्यः स्वर्गूर्ताः ।
महे यत्त्वा पुरूरवो रणायावर्धयन्दस्युहत्याय देवाः ॥ ७ ॥
सचा यदासु जहतीष्वत्कममानुषीषु मानुषो निषेवे ।
अप स्म मत्तरसन्ती न भुज्युस्ता अत्रसन्रथस्पृशो नाश्वाः ॥ ८ ॥
यदासु मर्तो अमृतासु निस्पृक्सं क्षोणीभिः क्रतुभिर्न पृङ्क्ते ।
ता आतयो न तन्वः शुम्भत स्वा अश्वासो न क्रीळयो दन्दशानाः ॥ ९ ॥
विद्युत्र या पतन्ती दविद्योद्धरन्ती मे अप्या काम्यानि ।
जनिष्टो अपो नर्यः सुजातः प्रोर्वशीं तिरत दीर्घमायुः ॥ १० ॥

अथ तृतीयो वर्गः॥ ३॥

जज्ञिष इत्था गोपीथ्याय हि दधाथ तत्पुरूरवो म ओजः ।
अशासं त्वा विदुषी सस्मिन्नह्न्न म आशृणोः किमभुग्वदासि ॥ ११ ॥
कदा सूनुः पितरं जात इच्छाच्चक्रान्नाश्रु वर्तयद्विजानन् ।
को दंपती समनसा वि यूयोदध यदग्निः श्वशुरेषु दीदयत् ॥ १२ ॥
प्रति ब्रवाणि वर्तयते अश्रु चक्रन्न क्रन्ददाध्ये शिवायै ।
प्र तत्ते हिनवा यत्ते अस्मे परेह्यस्तं नहि मूर मापः ॥ १३ ॥
सुदेवो अद्य प्रपतेदनावृत्परावतं परमां गन्तवा उ ।
अधा शयीत निर्ऋतेरुपस्थेऽधैनं वृका रभसासो अद्युः ॥ १४ ॥
पुरूरवो मा मृथा मा प्र पप्तो मा त्वा वृकासो अशिवास उ क्षन् ।
न वै स्त्रैणानि सख्यानि सन्ति सालावृकाणां हृदयान्येता ॥ १५ ॥

अथ चतुर्थो वर्गः॥ ४॥

यद्विरूपाचरं मर्त्येष्ववसं रात्रीः शरदश्चतस्रः ।
घृतस्य स्तोकं सकृदह्न आश्नां तादेवेदं तातृपाणा चरामि ॥ १६ ॥
अन्तरिक्षप्रां रजसो विमानीमुप शिक्षाम्युर्वशीं वसिष्ठः ।
उप त्वा रातिः सुकृतस्य तिष्ठान्नि वर्तस्व हृदयं तप्यते मे ॥ १७ ॥
इति त्वा देवा इम आहुरैळ यथेमेतद्भवसि मृत्युबन्धुः ।
प्रजा ते देवान्हविषा यजाति स्वर्ग उ त्वमपि मादयासे ॥ १८ ॥

[९६] षण्णवतितमं सूक्तम्

ऋषिः—बरुः सर्वहरिर्वैन्द्रः॥ देवता—हरिस्तुतिः॥ छन्दः—१, ७, ८ जगती; २-४, ९, १० निचृज्जगती; ५ आर्चीस्वराड्जगती; ६ विराड् जगती; ११ आर्चीभुरिग्जगती; १२, १३ त्रिष्टुप्॥
स्वरः—१-११ निषादः; १२, १३ धैवतः॥

अथ पञ्चमो वर्गः॥ ५॥

प्र ते महे विदथे शंसिषं हरी प्र ते वन्वे वनुषो हर्यतं मदम् ।
घृतं न यो हरिभिश्चारु सेचत आ त्वा विशन्तु हरिवर्पसं गिरः ॥ १ ॥
हरिं हि योनिमभि ये समस्वरन्हिन्वन्तो हरी दिव्यं यथा सदः ।
आ यं पृणन्ति हरिभिर्न धेनव इन्द्राय शूषं हरिवन्तमर्चत ॥ २ ॥
सो अस्य वज्रो हरितो य आयसो हरिर्निकामो हरिरा गभस्त्योः ।
द्युम्नी सुशिप्रो हरिमन्युसायक इन्द्रे नि रूपा हरिता मिमिक्षिरे ॥ ३ ॥
दिवि न केतुरधि धायि हर्यतो विव्यचद्वज्रो हरितो न रंह्या ।
तुददहिं हरिशिप्रो य आयसः सहस्रशोका अभवद्धरिभ्यः ॥ ४ ॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

त्वंत्वमहर्यथा उपस्तुतः पूर्वेभिरिन्द्र हरिकेश यज्वभिः ।
त्वं हर्यसि तव विश्वमुक्थ्यं१मसामि राधो हरिजात हर्यतम् ॥ ५ ॥

अथ षष्ठो वर्गः ॥ ६ ॥

ता वज्रिणं मन्दिनं स्तोम्यं मद इन्द्रं रथे वहतो हर्यता हरी ।
पुरूण्यस्मै सवनानि हर्यत इन्द्राय सोमा हरयो दधन्विरे ॥ ६ ॥
अरं कामाय हरयो दधन्विरे स्थिराय हिन्वन्हरयो हरी तुरा ।
अर्वद्भिर्यो हरिभिर्जोषमीयते सो अस्य कामं हरिवन्तमानशे ॥ ७ ॥
हरिश्मशारुर्हरिकेश आयससस्तुरस्पेये यो हरिपा अवर्धत ।
अर्वद्भिर्यो हरिभिर्वाजिनीवसुरति विश्वा दुरिता पारिषद्धरी ॥ ८ ॥
स्तुवेव यस्य हरिणी विपेततुः शिप्रे वाजाय हरिणी दविध्वतः ।
प्र यत्कृते चमसे मर्मृजद्धरी पीत्वा मदस्य हर्यतस्यान्धसः ॥ ९ ॥
उत स्म सद्म हर्यतस्य पस्त्योरत्यो न वाजं हरिवाँ अचिक्रदत् ।
महो चिद्धि धिषणाहर्यदोजसा बृहद्भयो दधिषे हर्यतश्चिदा ॥ १० ॥

अथ सप्तमो वर्गः ॥ ७ ॥

आ रोदसी हर्यमाणो महित्वा नव्यंनव्यं हर्यसि मन्म नु प्रियम् ।
प्र पस्त्यमसुर हर्यतं गोराविष्कृधि हरये सूर्याय ॥ ११ ॥
आ त्वा हर्यन्तं प्रयुजो जनानां रथे वहन्तु हरिशिप्रमिन्द्र ।
पिबा यथा प्रतिभृतस्य मध्वो हर्यन्यज्ञं समधमादे दशोणिम् ॥ १२ ॥
अपाः पूर्वेषां हरिवः सुतानामथो इदं सवनं केवलं ते ।
ममद्धि सोमं मधुमन्तमिन्द्र सत्रा वृषञ्जठर आ वृषस्व ॥ १३ ॥

[९७] सप्तवतितमं सूक्तम्

ऋषिः—भिषगाथर्वणः ॥ देवता—ओषधीस्तुतिः ॥ छन्दः—१, २, ४-७, ११, १७ अनुष्टुप्; ३, ९, १२, २२, २३ निचृदनुष्टुप्; ८, १०, १३-१६, १८-२१ विराडनुष्टुप् ॥ स्वरः—गान्धारः ॥

अथ अष्टमो वर्गः ॥ ८ ॥

या ओषधीः पूर्वा जाता देवेभ्यस्त्रियुगं पुरा ।
मनै नु बभ्रूणामहं शतं धामानि सप्त च ॥ १ ॥
शतं वो अम्ब धामानि सहस्रमुत वो रुहः ।
अधा शतक्रत्वो यूयमिमं मे अगदं कृत ॥ २ ॥
ओषधीः प्रति मोदध्वं पुष्पवतीः प्रसूवरीः ।
अश्वाइव सजित्वरीर्वीरुधः पारयिष्णवः ॥ ३ ॥
ओषधीरिति मातरस्तद्वो देवीरुप ब्रुवे ।
सनेयमश्वं गां वासं आत्मनं तव पूरुष ॥ ४ ॥
अश्वत्थे वो निषदनं पर्णे वो वसतिष्कृता ।
गोभाज इत्किलासथ यत्सनवथ पूरुषम् ॥ ५ ॥

अथ नवमो वर्गः ॥ ९ ॥

यत्रौषधीः समग्मत राजानः समितावि ।
विप्रः स उच्यते भिषग्रक्षोहामीवचातनः ॥ ६ ॥
अश्वावतीं सोमावतीमूर्जयन्तीमुदोजसम् ।
आविक्षि सर्वा ओषधीरस्मा अरिष्टतातये ॥ ७ ॥
उच्छुष्मा ओषधीनां गावो गोष्ठादिवेरते ।
धनं सनिष्यन्तीनामात्मानं तव पूरुष ॥ ८ ॥
इष्कृतिर्नाम वो माताथो यूयं स्थ निष्कृतीः ।
सीराः पतत्रिणीः स्थन यदामयति निष्कृथ ॥ ९ ॥
अति विश्वाः परिष्ठाः स्तेनइव व्रजमक्रमुः ।
ओषधीः प्राचुच्यवुर्यत्किं च तन्वो रपः ॥ १० ॥

अथ दशमो वर्गः ॥ १० ॥

यदिमा वाजयन्नहमोषधीर्हस्त आदधे ।
आत्मा यक्ष्मस्य नश्यति पुरा जीवगृभो यथा ॥ ११ ॥
यस्यौषधीः प्रसर्पथाङ्गमङ्गं परुष्परुः ।
ततो यक्ष्मं वि बाधध्व उग्रो मध्यमशीरिव ॥ १२ ॥
साकं यक्ष्म प्र पत चाषेण किकिदीविना ।
साकं वातस्य ध्राज्या साकं नश्य निहाकया ॥ १३ ॥
अन्या वो अन्यामवत्वन्यान्यस्या उपावत ।
ताः सर्वीः संविदाना इदं मे प्रावता वचः ॥ १४ ॥
याः फलिनीर्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः ।
बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्वंहसः ॥ १५ ॥

अथ एकादशो वर्गः ॥ ११ ॥

मुञ्चन्तु मा शपथ्या३दथो वरुण्यादुत ।
अथो यमस्य पड्वीशात्सर्वस्माद्देवकिल्बिषात् ॥ १६ ॥
अवपतन्तीरवदन्दिव ओषधयस्परि ।
यं जीवमश्नवामहै न स रिष्याति पूरुषः ॥ १७ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

या ओषधीः सोमराज्ञीर्बह्वीः शतविचक्षणाः ।
तासां त्वमस्युत्तमारं कामाय शं हृदे ॥ १८ ॥
या ओषधीः सोमराज्ञीर्विष्ठिताः पृथिवीमनु ।
बृहस्पतिप्रसूता अस्यै सं दत्त वीर्यम् ॥ १९ ॥
मा वो रिषत्खनिता यस्मै चाहं खनामि वः ।
द्विपच्चतुष्पदस्माकं सर्वमस्त्वनातुरम् ॥ २० ॥
याश्चेदमुपशृण्वन्ति याश्च दूरं परागताः ।
सर्वीः संगत्य वीरुधोऽस्यै सं दत्त वीर्यम् ॥ २१ ॥
ओषधयः सं वदन्ते सोमेन सह राज्ञा ।
यस्मै कृणोति ब्राह्मणस्तं राजन्पारयामसि ॥ २२ ॥
त्वमुत्तमास्योषधे तव वृक्षा उपस्तयः ।
उपस्तिरस्तु सोऽस्माकं यो अस्माँ अभिदासति ॥ २३ ॥

[९८] अष्टनवतितमं सूक्तम्

ऋषिः—देवापिरार्ष्टिषेणः ॥ देवता—देवाः ॥ छन्दः—१, ७ भुरिक्त्रिष्टुप्; २, ६, ८, ११, १२ निचृत्त्रिष्टुप्; ३, ५ त्रिष्टुप्; ४, १० विराट्त्रिष्टुप्; ९ पादनिचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

अथ द्वादशो वर्गः ॥ १२ ॥

बृहस्पते प्रति मे देवतामिहि मित्रो वा यद्वरुणो वासि पूषा ।
आदित्यैर्वा यद्वसुभिर्मरुत्वान्त्स पर्जन्यं शंतनवे वृषाय ॥ १ ॥
आ देवो दूतो अजिरश्चिकित्वान्त्वद्दैवापे अभि मामगच्छत् ।
प्रतीचीनः प्रतिः मामा ववृत्स्व दधामि ते द्युमतीं वाचमासन् ॥ २ ॥
अस्मे धेहि द्युमतीं वाचमासन्बृहस्पते अनमीवामिषिराम् ।
यया वृष्टिं शंतनवे वनाव दिवो द्रप्सो मधुमाँ आ विवेश ॥ ३ ॥
आ नो द्रप्सा मधुमन्तो विशन्त्विन्द्र देह्यधिरथं सहस्रम् ।
नि षीद होत्रमृतुथा यजस्व देवान्देवापे हविषा सपर्य ॥ ४ ॥
आर्ष्टिषेणो होत्रमृषिर्निषीदन्देवापिर्देवसुमतिं चिकित्वान् ।
स उत्तरस्मादधरं समुद्रमपो दिव्या असृजद्वर्ष्या अभि ॥ ५ ॥
अस्मिन्त्समुद्रे अध्युत्तरस्मिन्नापो देवेभिर्निवृता अतिष्ठन् ।
ता अद्रवन्नार्ष्टिषेणेन सृष्टा देवापिना प्रेषिता मृक्षिणीषु ॥ ६ ॥

अथ त्रयोदशो वर्गः ॥ १३ ॥

यद्देवापिः शंतनवे पुरोहितो होत्राय वृतः कृपयन्नदीधेत् ।
देवश्रुतं वृष्टिवनिं रराणो बृहस्पतिर्वाचमस्मा अयच्छत् ॥ ७ ॥

यं त्वा देवापिः शुशुचानो अग्न आर्ष्टिषेणो मनुष्यः समीधे ।
विश्वेभिर्देवैरनुमद्यमानः प्र पर्जन्यमीरया वृष्टिमन्तम् ॥ ८ ॥
त्वां पूर्व ऋषयो गीर्भिरायन्त्वामध्वरेषु पुरुहूत विश्वे ।
सहस्राण्यधिरथान्यस्मे आ नो यज्ञं रोहिदश्वोप याहि ॥ ९ ॥
एतान्यग्ने नवतिर्नव त्वे आहुतान्यधिरथा सहस्रा ।
तेभिर्वर्धस्व तन्वः शूर पूर्वीर्दिवो नो वृष्टिमिषितो रिरीहि ॥ १० ॥
एतान्यग्ने नवतिं सहस्रा सं प्र यच्छ वृष्ण इन्द्राय भागम् ।
विद्वान्पथ ऋतुशो देवयानान्प्यौलानं दिवि देवेषु धेहि ॥ ११ ॥
अग्ने बाधस्व वि मृधो वि दुर्गहापामीवामप रक्षांसि सेध ।
अस्मात्समुद्राद् बृहतो दिवो नोऽपां भूमानमुप नः सृजेह ॥ १२ ॥

[९९] नवनवतितमं सूक्तम्

ऋषिः—वग्नो वैखानसः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१, ७, ११ निचृत्त्रिष्टुप्; २, ५, ९, १२ त्रिष्टुप्; ३, ६ विराट्त्रिष्टुप्; ४ आसुरीस्वराडार्ची-निचृत्त्रिष्टुप्; ८ आर्चीस्वराट्त्रिष्टुप्; १० पादनिचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

अथ चतुर्दशो वर्गः ॥ १४ ॥

कं नश्चित्रमिषण्यसि चिकित्वान्पृथुग्मानं वाश्रं वावृधध्यै ।
कत्तस्य दातु शवसो व्युष्टौ तक्षद्वज्रं वृत्रतुरमपिन्वत् ॥ १ ॥
स हि द्युता विद्युता वेति साम पृथुं योनिमसुरत्वा ससाद ।
स सनीळेभिः प्रसहानो अस्य भ्रातुर्न ऋते सप्तथस्य मायाः ॥ २ ॥
स वाजं यातापदुष्पदा यन्त्स्वर्षाता परि षदत्सनिष्यन् ।
अनर्वा यच्छफदुरस्य वेदो घ्नञ्छिश्नदेवाँ अभि वर्पसा भूत् ॥ ३ ॥
स यह्वयोऽवनीर्गोष्ववा जुहोति प्रधन्यासु सत्निः ।
अपादो यत्र युज्यासोऽरथा द्रोण्यश्वास ईरते घृतं वाः ॥ ४ ॥
स रुद्रेभिरशस्तवार ऋभ्वा हित्वी गयमारेअवद्य आगात् ।
वप्रस्य मन्ये मिथुना विवव्री अन्नमभीत्यारोदयन्मुषायन् ॥ ५ ॥
स इद्दासं तुवीरवं पतिर्दन्षळक्षं त्रिशीर्षाणं दमन्यत् ।
अस्य त्रितो न्वोजसा वृधानो विपा वराहमयोअग्रया हन् ॥ ६ ॥

अत पञ्चदशो वर्गः ॥ १५ ॥

स द्रुह्वणे मनुष ऊर्ध्वसान आ सविषदर्शसानाय शरुम् ।
प्रयावृतमो जहुषो जातमत्सुजातः पुरोऽभिनदर्हन्दस्युहत्यै ॥ ७ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सो अ॒भ्रियो॒ न यव॑स उद॒न्यन्क्षया॑य गा॒तुं वि॒दन्नो॑ अ॒स्मे ।
उप॒ यत्सीद॒दिन्दुं॒ शरी॑रैः श्ये॒नोऽयो॑पाष्टिर्हन्ति॒ दस्यू॑न् ॥ ८ ॥
स व्राध॑तः शवसा॒नेभि॑रस्य॒ कुत्सा॑य॒ शुष्णं॑ कृ॒पणे॒ परा॑दात् ।
अ॒यं क॒विम॑नयच्छ॒स्यमा॑न॒मत्कं॒ यो अ॑स्य॒ सनि॑तो॒त नृ॒णाम् ॥ ९ ॥
अ॒यं द॑श॒स्यन्नर्ये॑भिरस्य द॒स्मो दे॒वेभि॒र्वरु॑णो॒ न मा॒यी ।
अ॒यं क॒नीन॑ ऋतु॒पा अ॑वे॒द्यमि॑मीता॒ररुं॒ यश्चतु॑ष्पात् ॥ १० ॥
अ॒स्य स्तोमे॑भिरौशि॒ज ऋ॒जिश्वा॑ व्र॒जं द॑रयद् बृष॒भेण॒ पिप्रोः॑ ।
सुत्वा॒ यद्य॑ज॒तो दी॒दय॒द्गीः पुर॑ इया॒नो अ॒भि वर्प॑सा॒ भूत् ॥ ११ ॥
ए॒वा म॒हो अ॑सुर व॒क्षथा॑य वम्र॒कः प॒ड्भिरुप॑ सर्प॒दिन्द्र॑म् ।
स इ॑या॒नः क॑रति स्व॒स्तिम॑स्मा॒ इष॒मूर्जं॑ सुक्षि॒तिं विश्व॒माभाः॑ ॥ १२ ॥

नवमोऽनुवाकः

[१००] शततमं सूक्तम्

ऋषिः—दुवस्युर्वान्दनः ॥ देवता—विश्वे देवाः ॥ छन्दः—१-३ जगती; ४, ५, ७, ११ निचृज्जगती; ६, ८, १० विराड्जगती; ९ पादनिचृज्जगती; १२ विराट्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१-११ निषादः; १२ धैवतः ॥

अथ षोडशो वर्गः ॥ १८ ॥

इन्द्र॒ दृह्य॑ मघव॒न्त्वाव॒दिद्भु॒ज इ॒ह स्तु॒तः सु॑त॒पा बो॑धि नो वृ॒धे ।
दे॒वेभि॑र्नः सवि॒ता प्राव॑तु श्रु॒तमा स॒र्वता॑ति॒मदि॑तिं वृणीमहे ॥ १ ॥
भरा॑य॒ सु भ॑रत भा॒गमृ॒त्वियं॒ प्र वा॒यवे॑ शुचि॒पे क्र॒न्ददि॑ष्टये ।
गौ॒रस्य॒ यः पय॑सः पी॒तिमा॑न॒श आ स॒र्वता॑ति॒मदि॑तिं वृणीमहे ॥ २ ॥
आ नो॑ दे॒वः स॑वि॒ता सा॑विष॒द्वय॑ ऋजू॒यते यज॑मानाय सुन्व॒ते ।
यथा॑ दे॒वान्प्र॑ति॒भूषे॑म पाक॒वदा स॒र्वता॑ति॒मदि॑तिं वृणीमहे ॥ ३ ॥
इन्द्रो॑ अ॒स्मे सु॒मना॑ अस्तु वि॒श्वहा॒ राजा॒ सोमः॑ सुवि॒तस्याध्ये॑तुनः ।
यथा॑यथा मि॒त्रधि॑तानि सं॒दधु॑रा स॒र्वता॑ति॒मदि॑तिं वृणीमहे ॥ ४ ॥
इन्द्र॑ उ॒क्थेन॒ शव॑सा॒ परु॑र्दधे॒ बृह॑स्पते प्रतरी॒तास्यायु॑षः ।
य॒ज्ञो मनुः॒ प्रम॑तिर्नः पि॒ता हि क॒मा स॒र्वता॑ति॒मदि॑तिं वृणीमहे ॥ ५ ॥
इन्द्र॑स्य॒ नु सुकृ॑तं॒ दैव्यं॒ सहो॒ऽग्निर्गृ॒हे ज॑रि॒ता मेधि॑रः क॒विः ।
य॒ज्ञश्च॑ भूद्वि॒दथे॒ चारु॒रन्त॑म॒ आ स॒र्वता॑ति॒मदि॑तिं वृणीमहे ॥ ६ ॥

अथ सप्तदशो वर्गः ॥ १७ ॥

न वो॒ गुहा॑ चकृम॒ भूरि॑ दुष्कृ॒तं नाविष्ट्यं॑ वसवो देव॒हेळ॑नम् ।
माकि॑र्नो देवा॒ अनृ॑तस्य॒ वर्प॑स॒ आ स॒र्वता॑ति॒मदि॑तिं वृणीमहे ॥ ७ ॥

अपामी॑वां सवि॒ता सा॑विष॒न्न्य१॒॑ग्वरी॑य॒ इदप॑ सेध॒न्त्वद्र॑यः ।
ग्रावा॒ यत्र॑ मधु॒षुदु॒च्यते॑ बृ॒हदा स॒र्वता॑ति॒मदि॑तिं वृणीमहे ॥ ८ ॥
ऊ॒र्ध्वो ग्रावा॑ वसवोऽस्तु सो॒तरि॒ विश्वा॒ द्वेषां॑सि सनु॒तर्यु॑योत ।
स नो॑ दे॒वः स॑वि॒ता पा॒युरीड्य॒ आ स॒र्वता॑ति॒मदि॑तिं वृणीमहे ॥ ९ ॥
ऊर्जं॑ गावो॒ यव॑से॒ पीवो॑ अत्तन ऋ॒तस्य॒ याः सद॑ने॒ कोशे॑ अ॒ङ्ध्वे ।
त॒नूरे॒व त॒न्वो॑ अस्तु भेष॒जमा स॒र्वता॑ति॒मदि॑तिं वृणीमहे ॥ १० ॥
क्र॒तु॒प्रावा॑ जरि॒ता शश्व॑ता॒मव॒ इन्द्र॒ इद्भ॒द्रा प्रम॑तिः सु॒ताव॑ताम् ।
पू॒र्णमूध॑र्दि॒व्यं यस्य॑ सि॒क्तय॒ आ स॒र्वता॑ति॒मदि॑तिं वृणीमहे ॥ ११ ॥
चि॒त्रस्ते॑ भा॒नुः क्र॑तु॒प्रा अ॑भि॒ष्टिः सन्ति॒ स्पृधो॑ जरणि॒प्रा अधृ॑ष्टाः ।
रजि॑ष्ठया॒ रज्या॑ प॒श्व आ गोस्तूतू॑र्षति॒ पर्यग्रं॑ दुव॒स्युः ॥ १२ ॥

[१०१] एकोत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—बुधः सौम्यः ॥ देवता—विश्वे देवा ऋत्विजो वा ॥ छन्दः—१, ११ निचृत्त्रिष्टुप्; २, ८ त्रिष्टुप्; ३, १० विराट्त्रिष्टुप्; ४, ६ गायत्री; ५ बृहती; ७ पादनिचृत्त्रिष्टुप्; ९ विराड्जगती; १२ निचृज्जगती ॥ स्वरः—१-३, ७, ८, १०, ११ धैवतः; ४, ६ षड्जः; ५ मध्यमः; ९, १२ निषादः ॥

अथ अष्टादशो वर्गः ॥ १८ ॥

उद् बु॑ध्यध्वं॒ सम॑नसः सखायः॒ सम॒ग्निमि॑न्ध्वं ब॒हवः॒ सनी॑ळाः ।
द॒धि॒क्राम॒ग्निमु॒षसं॑ च दे॒वीमिन्द्रा॑व॒तोऽव॑से॒ नि ह्व॑ये वः ॥ १ ॥
म॒न्द्रा कृ॑णुध्वं॒ धिय॒ आ त॑नुध्वं॒ नाव॑मरित्र॒पर॑णीं कृणुध्वम् ।
इष्कृ॑णुध्व॒मायु॒धारं॑ कृणुध्वं॒ प्राञ्चं॑ य॒ज्ञं प्र ण॑यता सखायः ॥ २ ॥
यु॒नक्त॒ सीरा॒ वि यु॒गा त॑नुध्वं कृ॒ते योनौ॑ वपते॒ह बीज॑म् ।
गि॒रा च॑ श्रु॒ष्टिः सभ॑रा॒ अस॑न्नो॒ नेदी॑य॒ इत्सृ॒ण्यः॑ प॒क्वमेया॑त् ॥ ३ ॥
सीरा॑ युञ्जन्ति क॒वयो॑ यु॒गा वि त॑न्वते॒ पृथ॑क् । धीरा॑ दे॒वेषु॑ सुम्न॒या ॥ ४ ॥
निरा॑हा॒वान्कृ॑णोतन॒ सं व॑र॒त्रा द॑धातन ।
सि॒ञ्चाम॑हा अव॒तमु॒द्रिणं॑ व॒यं सु॒षेक॒मनु॑पक्षितम् ॥ ५ ॥
इष्कृ॑ताहावमव॒तं सु॑वर॒त्रं सु॑षेच॒नम् । उ॒द्रिणं॑ सिञ्चे॒ अक्षि॑तम् ॥ ६ ॥

अथ एकोनविंशो वर्गः ॥ १९ ॥

प्री॒णी॒ताश्वा॑न्हि॒तं ज॑याथ स्वस्ति॒वाहं॒ रथ॒मित्कृ॑णुध्वम् ।
द्रोणा॑हावमव॒तमश्म॑चक्र॒मंस॑त्रकोशं सिञ्चता नृ॒पाण॑म् ॥ ७ ॥
व्र॒जं कृ॑णुध्वं॒ स हि वो॑ नृ॒पाणो॒ वर्म॑ सीव्यध्वं बहु॒ला पृ॒थूनि॑ ।
पुरः॑ कृणुध्व॒माय॑सी॒रधृ॑ष्टा॒ मा वः॑ सुस्रोच्चम॒सो दृंह॑ता॒ तम् ॥ ८ ॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

आ वो धियं यज्ञियां वर्त ऊतये देवा देवीं यजतां यज्ञियामिह।
सा नो दुहीयद्यवसेव गत्वी सहस्रधारा पयसा मही गौः ॥ ९ ॥
आ तू षिञ्च हरिमीं द्रोरुपस्थे वाशीभिस्तक्षताश्मन्मयीभिः।
परि ष्वजध्वं दश कक्ष्याभिरुभे धुरौ प्रति वह्निं युनक्त ॥ १० ॥
उभे धुरौ वह्निरापिप्दमानोऽन्तर्योनेव चरति द्विजानिः।
वनस्पतिं वन आस्थापयध्वं नि षू दधिध्वमखनन्त उत्सम् ॥ ११ ॥
कपृन्नरः कपृथमुद्दधातन चोदयत खुदत वाजसातये।
निष्टिग्र्यः पुत्रमा च्यावयोतय इन्द्रं सबाधं इह सोमपीतये ॥ १२ ॥

[१०२] द्व्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—मुद्गलो भार्म्यश्वः ॥ देवता—द्रुघण इन्द्रो वा ॥ छन्दः—१ पादनिचृद्बृहती; २, ४, ५, ९ निचृत्त्रिष्टुप्; ३, १२ निचृद्बृहती; ६ भुरिक्त्रिष्टुप्; ७, ८, १० विराट्त्रिष्टुप्; ११ पादनिचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१, ३, १२ मध्यमः; २, ४-११ धैवतः ॥

अथ विंशो वर्गः ॥ २० ॥

प्र ते रथं मिथूकृतमिन्द्रोऽवतु धृष्णुया ।
अस्मिन्नाजौ पुरुहूत श्रवाय्ये धनभक्षेषु नोऽव ॥ १ ॥
उत्स्म वातो वहति वासो अस्या अधिरथं यदजयत्सहस्कम्।
रथीरभून्मुद्गलानी गविष्टौ भरे कृतं व्यचेदिन्द्रसेना ॥ २ ॥
अन्तर्यच्छ जिघांसतो वज्रमिन्द्राभिदासतः ।
दासस्य वा मघवन्नार्यस्य वा सनुतर्यवया वधम् ॥ ३ ॥
उद्नो ह्रदमपिबज्जह्रषाणः कूटं स्म तृंहदभिमातिमेति ।
प्र मुष्कभारः श्रव इच्छमानोऽजिरं बाहू अभरत्सिषासन् ॥ ४ ॥
न्यक्रन्दयन्नुपयन्त एनममेहयन्वृषभं मध्य आजेः ।
तेन सूभर्वं शतवत्सहस्रं गवां मुद्गलः प्रधने जिगाय ॥ ५ ॥
कुकर्दवे वृषभो युक्त आसीदवावचीत्सारथिरस्य केशी ।
दुधेर्युक्तस्य द्रवतः सहानस ऋच्छन्ति ष्मा निष्पदो मुद्गलानीम् ॥ ६ ॥

अथ एकविंशो वर्गः ॥ २१ ॥

उत प्रधिमुदहन्नस्य विद्वानुपायुनग्वंसगमत्र शिक्षन् ।
इन्द्र उदावत्पतिमघ्न्यानामरंहत पद्याभिः कुकुद्मान् ॥ ७ ॥
शुनमष्ट्रव्यचरत्कपर्दी वरत्रायां दार्वानह्यमानः ।
नृष्णानि कृण्वन्बहवे जनाय गाः पस्पशानस्तविषीरधत्त ॥ ८ ॥

इमं तं पश्य वृषभस्य युञ्जं काष्ठाया मध्ये द्रुघणं शयानम्।
येन जिगाय शतवत्सहस्रं गवां मुद्गलः पृतनाज्येषु ॥ ९ ॥
आरे अघा को न्वित्था ददर्श यं युञ्जन्ति तम्वा स्थापयन्ति।
नास्मै तृणं नोदकमा भरन्त्युत्तरो धुरो वहति प्रदेदिशत् ॥ १० ॥
परिवृक्तेव पतिविद्यमानट् पीप्याना कूचक्रेणेव सिञ्चन् ।
एषैष्या चिद्रथ्या जयेम सुमङ्गलं सिनवदस्तु सातम् ॥ ११ ॥
त्वं विश्वस्य जगतश्चक्षुरिन्द्रासि चक्षुषः ।
वृषा यदाजिं वृषणा सिषाससि चोदयन्वध्रिणा युजा ॥ १२ ॥

[१०३] त्र्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—अप्रतिरथ ऐन्द्रः ॥ देवता—१-३, ५-११ इन्द्रः; ४ बृहस्पतिः; १२ अप्वा; १३ इन्द्रो मरुतो वा ॥ छन्दः—१, ३-५, ९, त्रिष्टुप्; २ स्वराट्त्रिष्टुप्; ६ भुरिक्त्रिष्टुप्; ७, ११ निचृत्त्रिष्टुप्; ८, १०, १२ विराट्त्रिष्टुप्; १३ विराडनुष्टुप् ॥ स्वरः—१-१२ धैवतः; १३ गान्धारः ॥

अथ द्वाविंशो वर्गः ॥ २२ ॥

आशुः शिशानो वृषभो न भीमो घनाघनः क्षोभणश्चर्षणीनाम्।
संक्रन्दनोऽनिमिष एकवीरः शतं सेना अजयत्साकमिन्द्रः ॥ १ ॥
संक्रन्दनेनानिमिषेण जिष्णुना युत्कारेण दुश्च्यवनेन धृष्णुना।
तदिन्द्रेण जयत तत्सहध्वं युधो नर इषुहस्तेन वृष्णा ॥ २ ॥
स इषुहस्तैः स निषङ्गिभिर्वशी संस्रष्टा स युध इन्द्रो गणेन।
संसृष्टजित्सोमपा बाहुशर्ध्युग्रधन्वा प्रतिहिताभिरस्ता ॥ ३ ॥
बृहस्पते परि दीया रथेन रक्षोहामित्रॉं अपबाधमानः ।
प्रभञ्जन्सेनाः प्रमृणो युधा जयन्नस्माकमेध्यविता रथानाम् ॥ ४ ॥
बलविज्ञायः स्थविरः प्रवीरः सहस्वान्वाजी सहमान उग्रः।
अभिवीरो अभिसत्वा सहोजा जैत्रमिन्द्र रथमा तिष्ठ गोवित् ॥ ५ ॥
गोत्रभिदं गोविदं वज्रबाहुं जयन्तमज्म प्रमृणन्तमोजसा ।
इमं संजाता अनु वीरयध्वमिन्द्रं सखायो अनु सं रभध्वम् ॥ ६ ॥

अथ त्रयोविंशो वर्गः ॥ २३ ॥

अभि गोत्राणि सहसा गाहमानोऽदयो वीरः शतमन्युरिन्द्रः ।
दुश्च्यवनः पृतनाषाळयुध्योऽस्माकं सेना अवतु प्र युत्सु ॥ ७ ॥
इन्द्र आसां नेता बृहस्पतिर्दक्षिणा यज्ञः पुर एतु सोमः।
देवसेनानामभिभञ्जतीनां जयन्तीनां मरुतो यन्त्वग्रम् ॥ ८ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

इन्द्रस्य वृष्णो वरुणस्य राज्ञ आदित्यानां मरुतां शर्धं उग्रम्।
महामनसां भुवनच्यवानां घोषो देवानां जयतामुदस्थात् ॥ ९ ॥
उद्धर्षय मघवन्नायुधान्युत्सत्वनां मामकानां मनांसि ।
उद् वृत्रहन्वाजिनां वाजिनान्युद्रथानां जयतां यन्तु घोषाः ॥ १० ॥
अस्माकमिन्द्रः समृतेषु ध्वजेष्वस्माकं या इषवस्ता जयन्तु।
अस्माकं वीरा उत्तरे भवन्त्वस्माँ उ देवा अवता हवेषु ॥ ११ ॥
अमीषां चित्तं प्रतिलोभयन्ती गृहाणाङ्गान्यप्वे परेहि।
अभि प्रेहि निर्दह हृत्सु शोकैरन्धेनामित्रास्तमसा सचन्ताम् ॥ १२ ॥
प्रेता जयता नर इन्द्रो वः शर्म यच्छतु ।
उग्रा वः सन्तु बाहवोऽनाधृष्या यथासथ ॥ १३ ॥

[१०४] चतुरुत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—अष्टको वैश्वामित्रः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१, २, ७, ८, ११ त्रिष्टुप्; ३, ४ विराट्त्रिष्टुप्; ५, ६, १० निचृत्त्रिष्टुप्; ९ पादनिचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

अथ चतुर्विंशो वर्गः ॥ २४ ॥

असावि सोमः पुरुहूत तुभ्यं हरिभ्यां युज्ञमुप याहि तूयम्।
तुभ्यं गिरो विप्रवीरा इयाना दधन्विर इन्द्र पिबा सुतस्य ॥ १ ॥
अप्सु धूतस्य हरिवः पिबेह नृभिः सुतस्य जठरं पृणस्व।
मिमिक्षुर्यमदय इन्द्र तुभ्यं तेभिर्वर्धस्व मदमुक्थवाहः ॥ २ ॥
प्रोग्रां पीतिं वृष्ण इयर्मि सत्यां प्रयै सुतस्य हर्यश्व तुभ्यम्।
इन्द्र धेनाभिरिह मादयस्व धीभिर्विश्वाभिः शच्या गृणानः ॥ ३ ॥
ऊती शचीवस्तव वीर्येण वयो दधाना उशिज ऋतज्ञाः।
प्रजावदिन्द्र मनुषो दुरोणे तस्थुर्गृणन्तः सधमाद्यासः ॥ ४ ॥
प्रणीतिभिष्टे हर्यश्व सुष्टोः सुषुम्नस्य पुरुरुचो जनासः।
मंहिष्ठामूतिं वितिरे दधानाः स्तोतार इन्द्र तव सूनृताभिः ॥ ५ ॥

अथ पञ्चविंशो वर्गः ॥ २५ ॥

उप ब्रह्माणि हरिवो हरिभ्यां सोमस्य याहि पीतये सुतस्य।
इन्द्रं त्वा युज्ञः क्षममाणमानड् दाश्वाँ अस्यध्वरस्य प्रकेतः ॥ ६ ॥
सहस्रवाजमभिमातिषाहं सुतेरणं मघवानं सुवृक्तिम् ।
उप भूषन्ति गिरो अप्रतीतमिन्द्रं नमस्या जरितुः पनन्त ॥ ७ ॥
सप्तापो देवीः सुरणा अमृक्ता याभिः सिन्धुमतर इन्द्र पूर्भित्।
नवतिं स्रोत्या नव च स्रवन्तीर्देवेभ्यो गातुं मनुषे च विन्दः ॥ ८ ॥
अपो महीरभिशस्तेरमुञ्चोऽजागरास्वधि देव एकः ।
इन्द्र यास्त्वं वृत्रतूर्ये चकर्थ ताभिर्विश्वार्युस्तन्वं पुपुष्याः ॥ ९ ॥
वीरेण्यः क्रतुरिन्द्रः सुशस्तिरुतापि धेना पुरुहूतमीट्टे ।
आर्देयद्वृत्रमकृणोदु लोकं ससाहे शक्रः पृतना अभिष्टिः ॥ १० ॥
शुनं हुवेम मघवानमिन्द्रमस्मिन्भरे नृतमं वाजसातौ ।
शृण्वन्तमुग्रमूतये समत्सु घ्नन्तं वृत्राणि संजितं धनानाम् ॥ ११ ॥

[१०५] पञ्चोत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—कौत्सः सुमित्रो दुर्मित्रो वा ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१ पिपीलिकामध्योष्णिक्; २ आर्चीस्वराडनुष्टुप्; ३ भुरिगुष्णिक्; ४, १० निचृदुष्णिक्; ५, ६, ८, ९ विराडुष्णिक्; ७ विराडनुष्टुप्; ११ त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१, ३-६, ८-१० ऋषभः; २, ७ गान्धारः; ११ धैवतः ॥

अथ षड्विंशो वर्गः ॥ २६ ॥

कदा वसो स्तोत्रं हर्यत आवं शमशा रुधद्वाः ।
दीर्घं सुतं वाताप्याय ॥ १ ॥
हरी यस्य सुयुजा विव्रता वेरवर्न्तानु शेपा ।
उभा रजी न केशिना पतिर्दन् ॥ २ ॥
अप योरिन्द्रः पापजस आ मर्तो न शश्रमाणो बिभीवान् ।
शुभे यद्युयुजे तविषीवान् ॥ ३ ॥
सचायोरिन्द्रश्चर्कृषः आँ उपानसः सपर्यन् ।
नदयोर्विव्रतयोः शूर इन्द्रः ॥ ४ ॥
अधि यस्तस्थौ केशवन्ता व्यचस्वन्ता न पुष्टयै ।
वनोति शिप्राभ्यां शिप्रिणीवान् ॥ ५ ॥

अथ सप्तविंशो वर्गः ॥ २७ ॥

प्रास्तौदृष्वौजा ऋष्वेभिस्ततक्ष शूरः शवसा ।
ऋभुर्न क्रतुभिर्मातरिश्वा ॥ ६ ॥
वज्रं यश्चक्रे सुहनाय दस्यवे हिरीमशो हिरीमान् ।
अरुतहनुरुद्धृतं न रजः ॥ ७ ॥
अवं नो वजिना शिशीह्युचा वनेमानृचः ।
नाब्रह्मा युज्ञ ऋधग्जोषति त्वे ॥ ८ ॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ऊर्ध्वा यत्ते॑ त्रे॒तिनी॒ भूद्य॒ज्ञस्य॑ धू॒र्षु सद्म॑न् ।
स॒जूर्नावं॒ स्वय॑शसं॒ सचा॒योः ॥ ९ ॥
श्रि॒ये ते॒ पृश्नि॑रुप॒सेच॑नी भूच्छ्रि॒ये दर्वि॑रे॒पाः ।
यया॒ स्वे पात्रे॑ सि॒ञ्चस॒ उत् ॥ १० ॥
श॒तं वा॒ यद॑सु॒र्यं प्रति॑ त्वा सुमि॒त्र इ॒त्थास्तौ॑द्दुर्मि॒त्र इ॒त्थास्तौ॑त् ।
आवो॒ यद्द॑स्यु॒हत्ये॑ कुत्सपु॒त्रं प्रावो॒ यद्द॑स्यु॒हत्ये॑ कुत्सव॒त्सम् ॥ ११ ॥

इत्यष्टमाष्टके पञ्चमोऽध्यायः ॥

अथ षष्ठोऽध्यायः

[१०६] षडुत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—भूतांशः काश्यपः ॥ देवता—अश्विनौ ॥ छन्दः—१, ३, ७ त्रिष्टुप्; २, ४, ८-११ निचृत्त्रिष्टुप्; ५, ६ विराट्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

अथ प्रथमो वर्गः ॥ १ ॥

उ॒भा उ॑ नू॒नं तदिद॑र्थयेथे॒ वि त॑न्वाथे॒ धियो॒ वस्त्रा॒पसे॑व ।
स॒ध्री॒ची॒ना यात॑वे॒ प्रेम॑जीगः सु॒दिने॑व॒ पृक्ष॒ आ तं॑सयेथे ॥ १ ॥
उ॒ष्टारे॑व॒ फर्व॑रेषु श्रयेथे प्रायो॒गेव॒ श्वात्र्या॒ शासु॒रेथः॑ ।
दू॒तेव॒ हि ष्ठो य॒शसा॒ जने॑षु॒ माप॑ स्थातं महि॒षेवा॑व॒पाना॑त् ॥ २ ॥
सा॒कं॒युजा॑ शकु॒नस्ये॑व प॒क्षा प॒श्वेव॑ चि॒त्रा यजु॒रा ग॑मिष्टम् ।
अ॒ग्निरि॑व देव॒योर्दी॑दि॒वांसा॒ परि॑ज्मानेव यजथः पुरु॒त्रा ॥ ३ ॥
आ॒पी वो॑ अ॒स्मे पि॒तरे॑व पु॒त्रोग्रेव॑ रु॒चा नृ॒पती॑व तु॒र्यै ।
इर्ये॑व पु॒ष्ट्यै कि॒रणे॑व भु॒ज्यै श्रु॑ष्टी॒वाने॑व॒ हव॒मा ग॑मिष्टम् ॥ ४ ॥
वंस॑गेव पूष॒र्या॑ शि॒म्बाता॑ मि॒त्रेव॑ ऋ॒ता श॒तरा॒ शात॑पन्ता ।
वाजे॑वो॒च्चा वय॑सा घर्म्ये॒ष्ठा मेषे॑वे॒षा स॑प॒र्या॒३॒॑ पुरी॑षा ॥ ५ ॥

अथ द्वितीयो वर्गः ॥ २ ॥

सृ॒ण्ये॑व ज॒र्भरी॑ तु॒र्फरी॑तू नैतो॒शेव॑ तु॒र्फरी॑ पर्फ॒रीका॑ ।
उ॒द॒न्य॒जेव॒ जेम॑ना मदे॒रू ता मे॑ जराय्व॒जरं॑ म॒रायु॑ ॥ ६ ॥
प॒ज्रेव॒ चर्च॑रं॒ जारं॑ म॒रायु॒ क्षद्मे॒वार्थे॑षु तर्तरीथ उग्रा ।
ऋ॒भू नाप॑त्खरम॒ज्रा ख॒रज्रु॑र्वा॒युर्न प॑र्फरत्क्षयद्रयी॒णाम् ॥ ७ ॥
घ॒र्मेव॒ मधु॑ ज॒ठरे॑ स॒नेरू॒ भगे॑विता तु॒र्फरी॒ फारि॒वार॑म् ।
प॒त॒रेव॑ चच॒रा च॒न्द्रनि॑र्णि॒ङ्मन॑ऋङ्गा मन॒न्या॒३॒॑ न जग्मी॑ ॥ ८ ॥
बृ॒हन्ते॑व ग॒म्भरे॑षु प्रति॒ष्ठां पादे॑व गा॒धं तर॑ते विदाथः ।
कर्णे॑व॒ शासु॒रनु॒ हि स्मरा॒थोंऽशे॑व नो भजतं चि॒त्रमन्नः॑ ॥ ९ ॥

आ॒रङ्ग॒रेव॒ मध्वेर॑येथे सार॒घेव॒ गवि॑ नी॒चीन॑बारे ।
की॒नारे॑व॒ स्वेद॑मासिष्वदा॒ना क्षामे॑वो॒र्जा सू॑यव॒सात्स॑चेथे ॥ १० ॥
ऋ॒ध्याम॒ स्तोमं॑ सनु॒याम॒ वाज॒मा नो॒ मन्त्रं॑ स॒रथे॒होप॑ यातम् ।
यशो॒ न प॒क्वं मधु॒ गोष्व॒न्तरा भू॒तांशो॑ अ॒श्विनोः॒ काम॑मप्राः ॥ ११ ॥

[१०७] सप्तोत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—दिव्यो दक्षिणा वा प्राजापत्या ॥ देवता—दक्षिणा तद्दातारो वा ॥ छन्दः—१, ५, ७ त्रिष्टुप्; २, ३, ६, ९, ११ निचृत्त्रिष्टुप्; ४ निचृज्जगती; ८, १० पादनिचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१-३, ५-११ धैवतः; ४ निषादः ॥

अथ तृतीयो वर्गः ॥ ३ ॥

आ॒विर॑भून्महि॒ माघो॑नमेषां॒ विश्वं॑ जी॒वं तम॑सो॒ निर॑मोचि ।
महि॒ ज्योतिः॑ पि॒तृभि॑र्द॒त्तमागा॑दु॒रुः पन्था॒ दक्षि॑णाया अदर्शि ॥ १ ॥
उ॒च्चा दि॒वि दक्षि॑णावन्तो अस्थु॒र्ये अ॑श्व॒दाः स॒ह ते सूर्ये॑ण ।
हि॒र॒ण्य॒दा अ॑मृत॒त्वं भ॑जन्ते वासो॒दाः सो॑म॒ प्र ति॑रन्त॒ आयुः॑ ॥ २ ॥
दैवी॑ पू॒र्तिर्दक्षि॑णा देवय॒ज्या न क॑वा॒रिभ्यो॑ न॒हि ते पृ॒णन्ति ।
अथा॒ नरः॒ प्रय॑तदक्षिणासोऽवद्यभि॒या ब॒हवः॑ पृणन्ति ॥ ३ ॥
श॒तधा॑रं वा॒युम॒र्कं स्व॒र्विदं॑ नृ॒चक्ष॑स॒स्ते अ॒भि च॑क्षते ह॒विः ।
ये पृ॒णन्ति॒ प्र च॒ यच्छ॑न्ति संग॒मे ते दक्षि॑णां दुहेत स॒प्तमा॑तरम् ॥ ४ ॥
दक्षि॑णावान्प्रथ॒मो हू॒त ए॑ति॒ दक्षि॑णावान्ग्राम॒णीरग्र॑मेति ।
तमे॒व म॑न्ये नृ॒पतिं॒ जना॑नां॒ यः प्र॑थ॒मो दक्षि॑णामावि॒वाय॑ ॥ ५ ॥

अथ चतुर्थो वर्गः ॥ ४ ॥

तमे॒व ऋषिं॒ तमु॑ ब्र॒ह्माण॑माहुर्यज्ञ॒न्यं॑ साम॒गामु॑क्थ॒शास॑म् ।
स शुक्रस्य॑ त॒न्वो॑ वेद ति॒स्रो यः प्र॑थ॒मो दक्षि॑णया र॒राध॑ ॥ ६ ॥
दक्षि॒णाश्वं॒ दक्षि॑णा॒ गां द॑दाति॒ दक्षि॑णा च॒न्द्रमु॒त यद्धिर॑ण्यम् ।
दक्षि॒णान्नं॑ वनुते॒ यो न॑ आ॒त्मा दक्षि॑णां॒ वर्म॑ कृणुते विजा॒नन् ॥ ७ ॥
न भो॒जा म॑म्रु॒र्न न्य॒र्थमी॑यु॒र्न रि॑ष्यन्ति॒ न व्य॑थन्ते ह भो॒जाः ।
इ॒दं यद्विश्वं॒ भुव॑नं॒ स्व॑श्चै॒तत्सर्वं॒ दक्षि॑णैभ्यो ददाति ॥ ८ ॥
भो॒जा जि॑ग्युः सुर॒भिं योनि॒मग्रे॑ भो॒जा जि॑ग्युर्व॒ध्वं१॒॑ या सु॒वासाः॑ ।
भो॒जा जि॑ग्युरन्तः॒पेयं॒ सुरा॑या भो॒जा जि॑ग्यु॒र्ये अहू॑ताः प्र॒यन्ति॑ ॥ ९ ॥
भो॒जायाश्वं॒ सं मृ॑जन्त्या॒शुं भो॒जाया॑स्ते क॒न्या॒३॒॑ शुम्भ॑माना ।
भो॒जस्ये॒दं पु॑ष्क॒रिणी॑व॒ वेश्म॒ परि॑ष्कृतं देवमा॒नेव॑ चि॒त्रम् ॥ १० ॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

भोजमश्वाः सुष्ठुवाहो वहन्ति सुवृद्रथो वर्तते दक्षिणायाः।
भोजं देवासोऽवता भरेषु भोजः शत्रूंस्तमनीकेषु जेता॥ ११॥

[१०८] अष्टोत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—१, ३, ५, ७, ९ पणयोऽसुराः; २, ४, ६, ८, १०, ११ सरमा देवशुनी॥
देवता—१, ३, ५, ७, ९ सरमा; २, ४, ६, ८, १०, ११ पणयः॥
छन्दः—१ विराट्त्रिष्टुप्; २, १० त्रिष्टुप्; ३, ४, ५, ७, ८, ९, ११ निचृत्त्रिष्टुप्; ६ पादनिचृत्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः॥

अथ पञ्चमो वर्गः॥ ५॥

किमिच्छन्ती सरमा प्रेदमानड् दूरे ह्यध्वा जगुरिः परा चैः।
कास्मेहितिः का परितक्म्यासीत्कथं रसाया अतरः पयांसि॥ १॥
इन्द्रस्य दूतीरिषिता चरामि मह इच्छन्ती पणयो निधीन्वः।
अतिष्कदो भियसा तन्न आवत्तथा रसाया अतरं पयांसि॥ २॥
कीदृङिन्द्रः सरमे का दृशीका यस्येदं दूतीरसरः पराकात्।
आ च गच्छान्मित्रमेना दधामाथा गवां गोपतिर्नो भवाति॥ ३॥
नाहं तं वेद दभ्यं दभत्स यस्येदं दूतीरसरं पराकात्।
न तं गूहन्ति स्रवतो गभीरा हता इन्द्रेण पणयः शयध्वे॥ ४॥
इमा गावः सरमे या ऐच्छः परि दिवो अन्तान्त्सुभगे पतन्ती।
कस्त एना अव सृजादयुध्युतास्माकमायुधा सन्ति तिग्मा॥ ५॥

अथ षष्ठो वर्गः॥ ६॥

असेन्या वः पणयो वचांस्यनिषव्यास्तन्वः सन्तु पापीः।
अधृष्टो व एतवा अस्तु पन्था बृहस्पतिर्व उभया न मृळात्॥ ६॥
अयं निधिः सरमे अद्रिबुध्नो गोभिरश्वेभिर्वसुभिर्न्यृष्टः।
रक्षन्ति तं पणयो ये सुगोपा रेकु पदमलकमा जगन्थ॥ ७॥
एह गमन्नृषयः सोमशिता अयास्यो अङ्गिरसो नवग्वाः।
त एतमूर्वं वि भजन्त गोनामथैतद्वचः पणयो वमन्नित्॥ ८॥
एवा च त्वं सरम आजगन्थ प्रबाधिता सहसा दैव्येन।
स्वसारं त्वा कृणवै मा पुनर्गा अप ते गवां सुभगे भजाम॥ ९॥
नाहं वेद भ्रातृत्वं नो स्वसृत्वमिन्द्रो विदुरङ्गिरसश्च घोराः।
गोकामा मे अच्छदयन्यदायमपात इत पणयो वरीयः॥ १०॥
दूरमित पणयो वरीय उद्गावो यन्तु मिनतीर्ऋतेन।
बृहस्पतिर्या अविन्दन्निगूळ्हाः सोमो ग्रावाण ऋषयश्च विप्राः॥ ११॥

[१०९] नवोत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—जुहूर्ब्रह्मजाया, ऊर्ध्वनाभा वा ब्राह्मः॥ देवता—विश्वे देवाः॥
छन्दः—१ निचृत्त्रिष्टुप्; २, ४, ५ त्रिष्टुप्; ३ विराट्त्रिष्टुप्; ६, ७ अनुष्टुप्॥ स्वरः—१-५ धैवतः; ६, ७ गान्धारः॥

अथ सप्तमो वर्गः॥ ७॥

तेऽवदन्प्रथमा ब्रह्मकिल्बिषेऽकूपारः सलिलो मातरिश्वा।
वीळुहरास्तप उग्रो मयोभूरापो देवीः प्रथमजा ऋतेन॥ १॥
सोमो राजा प्रथमो ब्रह्मजायां पुनः प्रायच्छदहृणीयमानः।
अन्वर्तिता वरुणो मित्र आसीदग्निर्होता हस्तगृह्या निनाय॥ २॥
हस्तेनैव ग्राह्या आधिरस्या ब्रह्मजायेयमिति चेदवोचन्।
न दूताय प्रह्ये तस्थ एषा तथा राष्ट्रं गुपितं क्षत्रियस्य॥ ३॥
देवा एतस्यामवदन्त पूर्वे सप्तऋषयस्तपसे ये निषेदुः।
भीमा जाया ब्राह्मणस्योपनीता दुर्धां दधाति परमे व्योमन्॥ ४॥
ब्रह्मचारी चरति वेविषद्विषः स देवानां भवत्येकमङ्गम्।
तेन जायामन्वविन्दद् बृहस्पतिः सोमेन नीतां जुह्वं न देवाः॥ ५॥
पुनर्वै देवा अददुः पुनर्मनुष्या उत।
राजानः सत्यं कृण्वाना ब्रह्मजायां पुनर्ददुः॥ ६॥
पुनर्दाय ब्रह्मजायां कृत्वी देवैर्निकिल्बिषम्।
ऊर्जं पृथिव्या भक्त्वायोरुगायमुपासते॥ ७॥

[११०] दशोत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—जमदग्निः रामो वा॥ देवता—आप्रियः॥ छन्दः—१, २, ५, १०, ११ निचृत्त्रिष्टुप्; ३ आर्चीत्रिष्टुप्; ४, ८ पादनिचृत्त्रिष्टुप्; ६, ७, ९ त्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः॥

अथ अष्टमो वर्गः॥ ८॥

समिद्धो अद्य मनुषो दुरोणे देवो देवान्यजसि जातवेदः।
आ च वह मित्रमहश्चिकित्वान्त्वं दूतः कविरसि प्रचेताः॥ १॥
तन्नूनपात्पथ ऋतस्य यानान्मध्वा समञ्जन्त्स्वदया सुजिह्व।
मन्मानि धीभिरुत यज्ञमृन्धन्देवत्रा च कृणुह्यध्वरं नः॥ २॥
आजुह्वान ईड्यो वन्द्यश्चा याह्यग्ने वसुभिः सजोषाः।
त्वं देवानामसि यह्व होता स एनान्यक्षीषितो यजीयान्॥ ३॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्राचीनं बर्हिः प्रदिशा पृथिव्या वस्तोरस्या वृज्यते अग्रे अह्नाम्।
व्यु प्रथते वितरं वरीयो देवेभ्यो अदितये स्योनम्॥४॥
व्यचस्वतीरुर्विया वि श्रयन्तां पतिभ्यो न जनयः शुम्भमानाः।
देवीर्द्वारो बृहतीर्विश्वमिन्वा देवेभ्यो भवत सुप्रायणाः ॥५॥

अथ नवमो वर्गः॥९॥

आ सुष्वयन्ती यजते उपाके उषासानक्ता सदतां नि योनौ।
दिव्ये योषणे बृहती सुरुक्मे अधि श्रियं शुक्रपिशं दधाने॥६॥
दैव्या होतारा प्रथमा सुवाचा मिमाना यज्ञं मनुषो यजध्यै।
प्रचोदयन्ता विदथेषु कारू प्राचीनं ज्योतिः प्रदिशा दिशन्ता॥७॥
आ नो यज्ञं भारती तूयमेत्विळा मनुष्वदिह चेतयन्ती।
तिस्रो देवीर्बर्हिरेदं स्योनं सरस्वती स्वपसः सदन्तु॥८॥
य इमे द्यावापृथिवी जनित्री रूपैरपिंशद्भुवनानि विश्वा।
तमद्य होतरिषितो यजीयान्देवं त्वष्टारमिह यक्षि विद्वान्॥९॥
उपावसृज त्मन्या समञ्जन्देवानां पाथ ऋतुथा हवींषि।
वनस्पतिः शमिता देवो अग्निः स्वदन्तु हव्यं मधुना घृतेन॥१०॥
सद्यो जातो व्यमिमीत यज्ञमग्निर्देवानामभवत्पुरोगाः ।
अस्य होतुः प्रदिश्यृतस्य वाचि स्वाहाकृतं हविरदन्तु देवाः॥११॥

[१११] एकादशोत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—अष्टादंष्ट्रो वैरूपः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१, २, ४ त्रिष्टुप्; ३, ६, १० विराट्त्रिष्टुप्; ५, ७, ९ निचृत्त्रिष्टुप्; ८ पादनिचृत्त्रिष्टुप्॥
स्वरः—धैवतः॥

अथ दशमो वर्गः॥१०॥

मनीषिणः प्र भरध्वं मनीषां यथायथा मतयः सन्ति नृणाम्।
इन्द्रं सत्यैरेरयामा कृतेभिः स हि वीरो गिर्वणस्युर्विदानः॥१॥
ऋतस्य हि सदसो धीतिरद्यौत्सं गार्ष्टेयो वृषभो गोभिरानट्।
उदतिष्ठत्तविषेणा रवेण महान्ति चित्सं विव्याचा रजांसि॥२॥
इन्द्रः किल श्रुत्या अस्य वेद स हि जिष्णुः पथिकृत्सूर्याय।
आन्मेनां कृण्वन्नच्युतो भुवद्गोः पतिर्दिवः सनजा अप्रतीतः॥३॥
इन्द्रो मह्ना महतो अर्णवस्य व्रतामिनादङ्गिरोभिर्गृणानः।
पुरूणि चिन्नि तताना रजांसि दाधार यो धरुणं सत्यताता॥४॥
इन्द्रो दिवः प्रतिमानं पृथिव्या विश्वा वेद सवना हन्ति शुष्णम्।
महीं चिद्द्यामातनोत्सूर्येण चास्कम्भ चित्कम्भनेन स्कभीयान्॥५॥

अथ एकादशो वर्गः॥११॥

वज्रेण हि वृत्रहा वृत्रमस्तरदेवस्य शूशुवानस्य मायाः।
वि धृष्णो अत्र धृषता जघन्थाथाभवो मघवन्बाह्वोजाः॥६॥
सचन्त यदुषसः सूर्येण चित्रामस्य केतवो रामविन्दन्।
आ यन्नक्षत्रं ददृशे दिवो न पुनर्यतो नकिरद्धा नु वेद॥७॥
दूरं किल प्रथमा जग्मुरासामिन्द्रस्य याः प्रसवे सस्रुरापः।
क्व स्विदग्रं क्व बुध्न आसामापो मध्यं क्व वो नूनमन्तः॥८॥
सृजः सिन्धूँरहिना जग्रसानाँ आदिदेताः प्र विविज्रे जवेन।
मुमुक्षमाणा उत या मुमुच्रेऽधेदेता न रमन्ते नितिक्ताः॥९॥
सध्रीचीः सिन्धुमुशतीरिवायन्त्सनाज्जार आरितः पूर्भिदासाम्।
अस्तमा ते पार्थिवा वसून्यस्मे जग्मुः सूनृता इन्द्र पूर्वीः॥१०॥

[११२] द्वादशोत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—नभःप्रभेदनो वैरूपः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१, ३, ७, ८ विराट्त्रिष्टुप्; २, ४-६, ९, १० निचृत्त्रिष्टुप्॥
स्वरः—धैवतः॥

अथ द्वादशो वर्गः॥१२॥

इन्द्र पिब प्रतिकामं सुतस्य प्रातःसावस्तव हि पूर्वपीतिः।
हर्षस्व हन्तवे शूर शत्रूनुक्थेभिष्टे वीर्या३ प्र ब्रवाम॥१॥
यस्ते रथो मनसो जवीयानेन्द्र तेन सोमपेयाय याहि।
तूयमा ते हरयः प्र द्रवन्तु येभिर्यासि वृषभिर्मन्दमानः॥२॥
हरित्वता वर्चसा सूर्यस्य श्रेष्ठै रूपैस्तन्वं स्पर्शयस्व।
अस्माभिरिन्द्र सखिभिर्हुवानः सध्रीचीनो मादयस्वा निषद्य॥३॥
यस्य त्यत्ते महिमानं मदेष्विमे मही रोदसी नाविविक्ताम्।
तदोक आ हरिभिरिन्द्र युक्तैः प्रियेभिर्याहि प्रियमन्नमच्छ॥४॥
यस्य शश्वत्पपिवाँ इन्द्र शत्रूननानुकृत्या रण्या चकर्थ।
स ते पुरंधिं तविषीमियर्ति स ते मदाय सुत इन्द्र सोमः॥५॥

अथ त्रयोदशो वर्गः॥१३॥

इदं ते पात्रं सनवित्तमिन्द्र पिबा सोममेना शतक्रतो।
पूर्ण आहावो मदिरस्य मध्वो यं विश्व इदभिहर्यन्ति देवाः॥६॥
वि हि त्वामिन्द्र पुरुधा जनासो हितप्रयसो वृषभ ह्वयन्ते।
अस्माकं ते मधुमत्तमानीमा भुवन्त्सवना तेषु हर्य॥७॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्र तं इन्द्र पूर्व्याणि प्र नूनं वीर्या वोचं प्रथमा कृतानि।
सतीनमन्युरश्रथायो अद्रिं सुवेदनामकृणोर्ब्रह्मणे गाम् ॥ ८ ॥
नि षु सीद गणपते गणेषु त्वामाहुर्विप्रतमं कवीनाम्।
न ऋते त्वत्क्रियते किं चनारे महामर्कं मघवञ्चित्रमर्च ॥ ९ ॥
अभिख्या नो मघवन्नाधमानान्त्सखे बोधि वसुपते सखीनाम्।
रणं कृधि रणकृत्सत्यशुष्माभक्ते चिदा भजा राये अस्मान् ॥ १० ॥

दशमोऽनुवाकः [११३] त्रयोदशोत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—शतप्रभेदनो वैरूपः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१, ५ जगती; ३ निचृज्जगती; ४ पादनिचृज्जगती; ६, ९ विराड्जगती; ७, ८ आर्चीस्वराड्जगती; १० पादनिचृत्त्रिष्टुप् ॥
स्वरः—१-९ निषादः; १० धैवतः ॥

अथ चतुर्दशो वर्गः ॥ १४ ॥

तमस्य द्यावापृथिवी सचेतसा विश्वेभिर्देवैरनु शुष्ममावताम्।
यदैत्कृण्वानो महिमानमिन्द्रियं पीत्वी सोमस्य क्रतुमाँ अवर्धत ॥ १ ॥
तमस्य विष्णुर्महिमानमोजसांशुं दधन्वान्मधुनो वि रप्शते।
देवेभिरिन्द्रो मघवा सयावभिर्वृत्रं जघन्वाँ अभवद्वरेण्यः ॥ २ ॥
वृत्रेण यदहिना बिभ्रदायुधा समस्थिथा युधये शंसमाविदे।
विश्वे ते अत्र मरुतः सह त्मनावर्धन्नुग्र महिमानमिन्द्रियम् ॥ ३ ॥
जज्ञान एव व्यबाधत स्पृधः प्रापश्यद्वीरो अभि पौंस्यं रणम्।
अवृश्चदद्रिमव सस्यदः सृजदस्तभ्नान्नाकं स्वपस्यया पृथुम् ॥ ४ ॥
आदिन्द्रः सत्रा तविषीरपत्यत वरीयो द्यावापृथिवी अबाधत।
अवाभरद्वृषितो वज्रमायसं शेवं मित्राय वरुणाय दाशुषे ॥ ५ ॥

अथ पञ्चदशो वर्गः ॥ १५ ॥

इन्द्रस्यात्र तविषीभ्यो विरप्शिनं ऋघायतो अरंहयन्त मन्यवे।
वृत्रं यदुग्रो व्यवृश्चदोजसापो बिभ्रतं तमसा परीवृतम् ॥ ६ ॥
या वीर्याणि प्रथमानि कर्त्वी महित्वेभिर्यतमानौ समीयतुः।
ध्वान्तं तमोऽधं दध्वसे हत इन्द्रो मह्ना पूर्वहूतावपत्यत ॥ ७ ॥
विश्वे देवासो अध वृष्ण्यानि तेऽवर्धयन्त्सोमवत्या वचस्यया।
रुद्धं वृत्रमहिमिन्द्रस्य हन्मनाग्निर्न जम्भैस्तृष्वत्रमाववृत ॥ ८ ॥
भूरि दक्षैर्भिर्वचनेभिर्ऋक्वभिः सख्येभिः सख्यानि प्र वोचत।
इन्द्रो धुनिं च चुमुरिं च दम्भयञ्छ्रद्दामनस्या शृणुते दभीतये ॥ ९ ॥

त्वं पुरुण्या भरा स्वश्व्या येभिर्मंसै निवचनानि शंसन्।
सुगेभिर्विश्वा दुरिता तरेम विदो षु णो उर्विया गाधमद्य ॥ १० ॥

[११४] चतुर्दशोत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—सप्तिर्वैरूपो घर्मो वा तापसः ॥ देवता—विश्वे देवाः ॥ छन्दः—१, ५, ७ त्रिष्टुप्; २, ३, ६ भुरिक्त्रिष्टुप्; ४ जगती; ८, ९ निचृत्त्रिष्टुप्; १० पादनिचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१-३, ५-१० धैवतः; ४ निषादः ॥

अथ षोडशो वर्गः ॥ १६ ॥

घर्मा समन्ता त्रिवृतं व्यापतुस्तयोर्जुष्टिं मातरिश्वा जगाम।
दिवस्पयो दिधिषाणा अवेषन्विदुर्देवाः सहसामानमर्कम् ॥ १ ॥
तिस्रो देष्ट्राय निर्ऋतीरुपासते दीर्घश्रुतो वि हि जानन्ति वह्नयः।
तासां नि चिक्युः कवयो निदानं परेषु या गुह्येषु व्रतेषु ॥ २ ॥
चतुष्कपर्दा युवतिः सुपेशा घृतप्रतीका वयुनानि वस्ते।
तस्यां सुपर्णा वृषणा नि षेदतुर्यत्र देवा दधिरे भागधेयम् ॥ ३ ॥
एकः सुपर्णः स समुद्रमा विवेश स इदं विश्वं भुवनं वि चष्टे।
तं पाकेन मनसापश्यमन्तितस्तं माता रेळिह स उ रेळिह मातरम् ॥ ४ ॥
सुपर्णं विप्राः कवयो वचोभिरेकं सन्तं बहुधा कल्पयन्ति।
छन्दांसि च दधतो अध्वरेषु ग्रहान्त्सोमस्य मिमते द्वादश ॥ ५ ॥

अथ सप्तदशो वर्गः ॥ १७ ॥

षट्त्रिंशाँश्च चतुरः कल्पयन्तश्छन्दांसि च दधत आद्वादशम्।
यज्ञं विमाय कवयो मनीष ऋक्वसामाभ्यां प्र रथं वर्तयन्ति ॥ ६ ॥
चतुर्दशान्ये महिमानो अस्य तं धीरा वाचा प्र णयन्ति सप्त।
आप्रानं तीर्थं क इह प्र वोचद्येन पथा प्रपिबन्ते सुतस्य ॥ ७ ॥
सहस्रधा पञ्चदशान्युक्था यावद् द्यावापृथिवी तावदित्तत्।
सहस्रधा महिमानः सहस्रं यावद् ब्रह्म विष्ठितं तावती वाक् ॥ ८ ॥
कश्छन्दसां योगमा वेद धीरः को धिष्ण्यां प्रति वाचं पपाद।
कमृत्विजामष्टमं शूरमाहुर्हरी इन्द्रस्य नि चिकाय कः स्वित् ॥ ९ ॥
भूम्या अन्तं पर्येकं चरन्ति रथस्य धूर्षु युक्तासो अस्थुः।
श्रमस्य दायं वि भजन्त्येभ्यो यदा यमो भवति हर्म्ये हितः ॥ १० ॥

[११५] पञ्चदशोत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—उपस्तुतो वार्ष्टिहव्यः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१, २, ४, ७ विराड्जगती; ३ जगती; ५ आर्चीभुरिग्जगती; ६ निचृज्जगती; ८ पादनिचृत्त्रिष्टुप्; ९ पादनिचृच्छक्वरी ॥ स्वरः—१-७ निषादः; ८, ९ धैवतः ॥

CC-0. Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अथ अष्टादशो वर्गः ॥ १८ ॥

चित्र इच्छिशोस्तरुणस्य वक्षथो न यो मातरावप्येति धातवे।
अनूधा यदि जीजनदधा च नु ववक्ष सद्यो महि दूत्यं१ चरन्॥ १॥
अग्निर्ह नामं धायि दन्नपस्तमः सं यो वना युवते भस्मना दता।
अभिप्रमुरा जुह्वा स्वध्वर इनो न प्रोथमानो यवसे वृषा॥ २॥
तं वो विं न द्रुषदं देवमन्धस इन्दुं प्रोथन्तं प्रवपन्तमर्णवम्।
आसा वह्निं न शोचिषा विरप्शिनं महिव्रतं न सरजन्तमध्वनः॥ ३॥
वि यस्य ते व्रयसानस्याजर धक्षोर्न वाताः परि सन्त्यच्युताः।
आ रण्वासो युयुधयो न सत्वनं त्रितं नशन्त प्र शिषन्त इष्टये॥ ४॥
स इद्ग्निः कण्वतमः कण्वसखार्यः परस्यान्तरस्य तरुषः।
अग्निः पातु गृणतो अग्निः सूरीनग्निर्ददातु तेषामवो नः॥ ५॥

अथ एकोनविंशो वर्गः ॥ १९ ॥

वाजिन्तमाय सह्यसे सुपित्र्य तृषु च्यवानो अनु जातवेदसे।
अनुद्रे चिद्यो धृषता वरं सते महिन्तमाय धन्वनेदविष्यते॥ ६॥
एवाग्निर्मर्तैः सह सूरिभिर्वसु ष्टवे सहसः सूनरो नृभिः।
मित्रासो न ये सुधिता ऋतायवो द्यावो न द्युभिरभि सन्ति मानुषान्॥ ७॥
ऊर्जो नपात्सहसावन्निति त्वोपस्तुतस्य वन्दते वृषा वाक्।
त्वां स्तोषाम त्वया सुवीरा द्राघीय आयुः प्रतरं दधानाः॥ ८॥
इति त्वाग्ने वृष्टिहव्यस्य पुत्रा उपस्तुतास ऋषयोऽवोचन्।
ताँश्च पाहि गृणतश्च सूरीन्वष्ड्वषळित्यूर्ध्वासो अनक्षन्नमो
नम इत्यूर्ध्वासो अनक्षन्॥ ९॥

[११६] षोडशोत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—अग्नियुतः स्थौरोग्नियूपो वा स्थौरः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१, ८, ९ त्रिष्टुप्; २ पादनिचृत्त्रिष्टुप्; ३, ४ निचृत्त्रिष्टुप्; ५, ७ विराट्त्रिष्टुप्; ६ आर्चीस्वराट्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः॥

अथ विंशो वर्गः ॥ २० ॥

पिबा सोमं महत इन्द्रियाय पिबा वृत्राय हन्तवे शविष्ठ।
पिब राये शवसे हूयमानः पिब मध्वस्तृपदिन्द्रा वृषस्व॥ १॥
अस्य पिब क्षुमतः प्रस्थितस्येन्द्र सोमस्य वरमा सुतस्य।
स्वस्तिदा मनसा मादयस्वावाचीनो रेवते सौभगाय॥ २॥
मुमत्तु त्वा दिव्यः सोम इन्द्र मुमत्तु यः सूयते पार्थिवेषु।
मुमत्तु येन वरिवश्चकर्थ मुमत्तु येन निरिणासि शत्रून्॥ ३॥
आ द्विबर्हा अमिनो यात्विन्द्रो वृषा हरिभ्यां परिषिक्तमन्धः।
गव्या सुतस्य प्रभृतस्य मध्वः सत्रा खेदामरुशहा वृषस्व॥ ४॥
नि तिग्मानि भ्राशयन्भ्राश्यान्यव स्थिरा तनुहि यातुजूनाम्।
उग्राय ते सहो बलं ददामि प्रतीत्या शत्रून्विगदेषु वृश्च॥ ५॥

अथ एकविंशो वर्गः ॥ २१ ॥

व्यार्य इन्द्र तनुहि श्रवांस्योजः स्थिरेव धन्वनोऽभिमातीः।
अस्मद्र्यग्वावृधानः सहोभिरनिभृष्टस्तन्वं वावृधस्व ॥ ६॥
इदं हविर्मघवन्तुभ्यं रातं प्रति सम्राळहृणानो गृभाय।
तुभ्यं सुतो मघवन्तुभ्यं पक्वोऽब्दीन्द्र पिब च प्रस्थितस्य॥ ७॥
अब्दीन्द्र प्रस्थितेमा हवींषि चनो दधिष्व पचतोत सोमम्।
प्रयस्वन्तः प्रति हर्यामसि त्वा सत्याः सन्तु यजमानस्य कामाः॥ ८॥
प्रेन्द्राग्निभ्यां सुवचस्यामियर्मि सिन्धाविव प्रेरयं नावमर्कैः।
अर्याइव परि चरन्ति देवा ये अस्मभ्यं धनदा उद्भिदश्च॥ ९॥

[११७] सप्तदशोत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—भिक्षुः॥ देवता—धनान्नदानप्रशंसा॥ छन्दः—१ निचृज्जगती; २ पादनिचृज्जगती; ३, ७, ९ निचृत्त्रिष्टुप्; ४, ६ त्रिष्टुप्; ५ विराट्त्रिष्टुप्; ८ भुरिक्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१-२ निषादः; ३-९ धैवतः॥

अथ द्वाविंशो वर्गः ॥ २२ ॥

न वा उ देवाः क्षुधमिद्वधं ददुरुताशितमुप गच्छन्ति मृत्यवः।
उतो रयिः पृणतो नोप दस्यत्युतापृणन्मर्डितारं न विन्दते॥ १॥
य आध्राय चकमानाय पित्वोऽन्नवान्त्सन्नफितायोपजग्मुषे।
स्थिरं मनः कृणुते सेवते पुरोतो चित्स मर्डितारं न विन्दते॥ २॥
स इद्भोजो यो गृहवे ददात्यन्नकामाय चरते कृशाय।
अरमस्मै भवति यामहूता उतापरीषु कृणुते सखायम्॥ ३॥
न स सखा यो न ददाति सख्ये सचाभुवे सचमानाय पित्वः।
अपास्मात्प्रेयान्न तदोको अस्ति पृणन्तमन्यमरणं चिदिच्छेत्॥ ४॥
पृणीयादिन्नाधमानाय तव्यान्द्राघीयांसमनु पश्येत पन्थाम्।
ओ हि वर्तन्ते रथ्येव चक्रान्यमन्यमुप तिष्ठन्त रायः॥ ५॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अथ त्रयोविंशो वर्गः ॥ २३ ॥

मोघमन्नं विन्दते अप्रचेताः सत्यं ब्रवीमि वध इत्स तस्य।
नार्यमणं पुष्यति नो सखायं केवलाघो भवति केवलादी ॥ ६ ॥
कृषन्नित्फाल आशितं कृणोति यन्नध्वानमप वृङ्क्ते चरित्रैः ।
वदन्ब्रह्मावदतो वनीयान्पृणन्नापिरपृणन्तमभि ष्यात् ॥ ७ ॥
एकपाद्भूयो द्विपदो वि चक्रमे द्विपात्त्रिपादमभ्येति पश्चात्।
चतुष्पादेति द्विपदामभिस्वरे संपश्यन्पङ्क्तीरुपतिष्ठमानः ॥ ८ ॥
समौ चिद्धस्तौ न समं विविष्टः संमातरा चिन्न समं दुहाते।
यमयोश्चित्र समा वीर्याणि ज्ञाती चित्सन्तौ न समं पृणीतः ॥ ९ ॥

[११८] अष्टादशोत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—उरुक्षय आमहीयवः ॥ देवता—अग्नी रक्षोहा ॥ छन्दः—१ पिपीलिकामध्यागायत्री; २, ५ निचृद्गायत्री; ३, ८ विराड्गायत्री; ४, ९ गायत्री; ६, ७ पादनिचृद्गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथ चतुर्विंशो वर्गः ॥ २४ ॥

अग्ने हंसि न्य१त्रिणं दीद्यन्मर्त्येष्वा। स्वे क्षये शुचिव्रत ॥ १ ॥
उत्तिष्ठसि स्वाहुतो घृतानि प्रति मोदसे। यत्त्वा स्रुचः समस्थिरन् ॥ २ ॥
स आहुतो वि रोचतेऽग्निरीळेन्यो गिरा। स्रुचा प्रतीकमज्यते ॥ ३ ॥
घृतेनाग्निः समज्यते मधुप्रतीक आहुतः। रोचमानो विभावसुः ॥ ४ ॥
जरमाणः समिध्यसे देवेभ्यो हव्यवाहन। तं त्वा हवन्त मर्त्याः ॥ ५ ॥

अथ पञ्चविंशो वर्गः ॥ २५ ॥

तं मर्ता अमर्त्यं घृतेनाग्निं सपर्यत। अदाभ्यं गृहपतिम् ॥ ६ ॥
अदाभ्येन शोचिषाग्ने रक्षस्त्वं दह। गोपा ऋतस्य दीदिहि ॥ ७ ॥
स त्वमग्ने प्रतीकेन प्रत्योष यातुधान्यः। उरुक्षयेषु दीद्यत् ॥ ८ ॥
तं त्वा गीर्भिरुरुक्षया हव्यवाहं समीधिरे। यजिष्ठं मानुषे जने ॥ ९ ॥

[११९] एकोनविंशत्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—लव ऐन्द्रः ॥ देवता—आत्मस्तुतिः ॥ छन्दः—१-५, ७-१० गायत्री; ६, १२, १३ निचृद्गायत्री; ११ विराड्गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथ षड्विंशो वर्गः ॥ २६ ॥

इति वा इति मे मनो गामश्वं सनुयामिति। कुवित्सोमस्यापामिति ॥ १ ॥
प्र वाताइव दोधत उन्मा पीता अयंसत। कुवित्सोमस्यापामिति ॥ २ ॥
उन्मा पीता अयंसत रथमश्वाइवाशवः। कुवित्सोमस्यापामिति ॥ ३ ॥
उप मा मतिरस्थित वाश्रा पुत्रमिव प्रियम्। कुवित्सोमस्यापामिति ॥ ४ ॥
अहं तष्टेव वन्धुरं पर्यचामि हृदा मतिम्। कुवित्सोमस्यापामिति ॥ ५ ॥
नहि मे अक्षिपच्चनाच्छान्त्सुः पञ्च कृष्टयः। कुवित्सोमस्यापामिति ॥ ६ ॥

अथ सप्तविंशो वर्गः ॥ २७ ॥

नहि मे रोदसी उभे अन्यं पक्षं चन प्रति। कुवित्सोमस्यापामिति ॥ ७ ॥
अभि द्यां महिना भुवमभी३मां पृथिवीं महीम्। कुवित्सोमस्यापामिति ॥ ८ ॥
हन्ताहं पृथिवीमिमां नि दधानीह वेह वा। कुवित्सोमस्यापामिति ॥ ९ ॥
ओषमित्पृथिवीमहं जङ्घनानीह वेह वा। कुवित्सोमस्यापामिति ॥ १० ॥
दिवि मे अन्यः पक्षो३ऽधो अन्यमचीकृषम्। कुवित्सोमस्यापामिति ॥ ११ ॥
अहमस्मि महामहोऽभिनभ्यमुदीषितः। कुवित्सोमस्यापामिति ॥ १२ ॥
गृहो याम्यरंकृतो देवेभ्यो हव्यवाहनः। कुवित्सोमस्यापामिति ॥ १३ ॥

इत्यष्टमाष्टके षष्ठोऽध्यायः ॥

अथ सप्तमोऽध्यायः

[१२०] विंशत्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—बृहद्दिव आथर्वणः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१ आर्चीस्वराट्त्रिष्टुप्; २, ३, ६ पादनिचृत्त्रिष्टुप्; ४, ५, ९ निचृत्त्रिष्टुप्; ७, ८ विराट्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

अथ प्रथमो वर्गः ॥ १ ॥

तदिदास भुवनेषु ज्येष्ठं यतो जज्ञ उग्रस्त्वेषनृम्णः ।
सद्यो जज्ञानो नि रिणाति शत्रूननु यं विश्वे मदन्त्यूमाः ॥ १ ॥
वावृधानः शवसा भूर्योजाः शत्रुर्दासाय भियसं दधाति ।
अव्यनच्च व्यनच्च सस्नि सं ते नवन्त प्रभृता मदेषु ॥ २ ॥
त्वे क्रतुमपि वृञ्जन्ति विश्वे द्विर्यदेते त्रिर्भवन्त्यूमाः ।
स्वादोः स्वादीयः स्वादुना सृजा समदः सु मधु मधुनाभि योधीः ॥ ३ ॥
इति चिद्धि त्वा धना जयन्तं मदेमदे अनुमदन्ति विप्राः।
ओजीयो धृष्णो स्थिरमा तनुष्व मा त्वा दभन्यातुधाना दुरेवाः ॥ ४ ॥
त्वया वयं शाशद्महे रणेषु प्रपश्यन्तो युधेन्यानि भूरि।
चोदयामि त आयुधा वचोभिः सं ते शिशामि ब्रह्मणा वयांसि ॥ ५ ॥

अथ द्वितीयो वर्गः ॥ २ ॥

स्तुषेय्यं पुरुवर्पसमृभ्वमिनतममाप्त्यमाप्त्यानाम् ।
आ दर्षते शवसा सप्त दानून्प्र साक्षते प्रतिमानानि भूरि ॥ ६ ॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नि तद्दधिषेऽवरं परं च यस्मिन्नाविथावसा दुरोणे ।
आ मातरा स्थापयसे जिगत्नू अत इनोषि कवेरा पुरूणि ॥ ७ ॥
इमा ब्रह्म बृहद्दिवो विवक्तीन्द्राय शूषमग्रियः स्वर्षाः ।
महो गोत्रस्य क्षयति स्वराजो दुरश्च विश्वा अवृणोदप स्वाः ॥ ८ ॥
एवा महान्बृहद्दिवो अथर्वावोचत्स्वां तन्वमिन्द्रमेव ।
स्वसारो मातरिश्वरीरप्रा हिन्वन्ति च शवसा वर्धयन्ति च ॥ ९ ॥

[१२१] एकविंशत्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—हिरण्यगर्भः प्राजापत्यः ॥ देवता—कः ॥ छन्दः—१, ३, ६, ८, ९ त्रिष्टुप्; २, ५ निचृत्त्रिष्टुप्; ४, १० विराट्त्रिष्टुप्; ७ स्वराट्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

अथ तृतीयो वर्गः ॥ ३ ॥

हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत् ।
स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥ १ ॥
य आत्मदा बलदा यस्य विश्व उपासते प्रशिषं यस्य देवाः ।
यस्य छायामृतं यस्य मृत्युः कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥ २ ॥
यः प्राणतो निमिषतो महित्वैक इद्राजा जगतो बभूव ।
य ईशे अस्य द्विपदश्चतुष्पदः कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥ ३ ॥
यस्येमे हिमवन्तो महित्वा यस्य समुद्रं रसया सहाहुः ।
यस्येमाः प्रदिशो यस्य बाहू कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥ ४ ॥
येन द्यौरुग्रा पृथिवी च दृळ्हा येन स्वः स्तभितं येन नाकः ।
यो अन्तरिक्षे रजसो विमानः कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥ ५ ॥

अथ चतुर्थो वर्गः ॥ ४ ॥

यं क्रन्दसी अवसा तस्तभाने अभ्यैक्षेतां मनसा रेजमाने ।
यत्राधि सूर उदितो विभाति कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥ ६ ॥
आपो ह यद् बृहतीर्विश्वमायन्गर्भं दधाना जनयन्तीरग्निम् ।
ततो देवानां समवर्ततासुरेकः कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥ ७ ॥
यश्चिदापो महिना पर्यपश्यद्दक्षं दधाना जनयन्तीर्यज्ञम् ।
यो देवेष्वधि देव एक आसीत्कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥ ८ ॥
मा नो हिंसीज्जनिता यः पृथिव्या यो वा दिवं सत्यधर्मा जजान ।
यश्चापश्चन्द्रा बृहतीर्जजान कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥ ९ ॥
प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परि ता बभूव ।
यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्याम पतयो रयीणाम् ॥ १० ॥

[१२२] द्वाविंशत्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—चित्रमहा वसिष्ठः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१ त्रिष्टुप्; २ जगती; ३, ८ पादनिचृज्जगती; ४, ६ निचृज्जगती; ५ निचृत्त्रिष्टुप्; ७ आर्ची-स्वराड्जगती ॥ स्वरः—१, ५ धैवतः; २-४, ६-८ निषादः ॥

अथ पञ्चमो वर्गः ॥ ५ ॥

वसुं न चित्रमहसं गृणीषे वामं शेवमतिथिमद्विषेण्यम् ।
स रासते शुरुधो विश्वधायसोऽग्निर्होता गृहपतिः सुवीर्यम् ॥ १ ॥
जुषाणो अग्ने प्रति हर्य मे वचो विश्वानि विद्वान्वयुनानि सुक्रतो ।
घृतनिर्णिग्ब्रह्मणे गातुमेरय तवं देवा अजनयन्नु व्रतम् ॥ २ ॥
सप्त धामानि परियन्नमर्त्यो दाशद्दाशुषे सुकृते मामहस्व ।
सुवीरेण रयिणाग्ने स्वाभुवा यस्त आनट् समिधा तं जुषस्व ॥ ३ ॥
यज्ञस्य केतुं प्रथमं पुरोहितं हुविष्मन्त ईळते सप्त वाजिनम् ।
शृण्वन्तमग्निं घृतपृष्ठमुक्षणं पृणन्तं देवं पृणते सुवीर्यम् ॥ ४ ॥
त्वं दूतः प्रथमो वरेण्यः स हूयमानो अमृताय मत्स्व ।
त्वां मर्जयन्मरुतो दाशुषो गृहे त्वां स्तोमेभिर्भृगवो वि रुरुचुः ॥ ५ ॥

अथ षष्ठो वर्गः ॥ ६ ॥

इषं दुहन्त्सुदुघां विश्वधायसं यज्ञप्रिये यजमानाय सुक्रतो ।
अग्ने घृतस्नुस्त्रिरुतानि दीद्यद्वर्तिर्यज्ञं परियन्त्सुक्रतूयसे ॥ ६ ॥
त्वामिदस्या उषसो व्युष्टिषु दूतं कृण्वाना अयजन्त मानुषाः ।
त्वां देवा महयाय्याय वावृधुरान्यमग्ने निमृजन्तो अध्वरे ॥ ७ ॥
नि त्वा वसिष्ठा अह्वन्त वाजिनं गृणन्तो अग्ने विदथेषु वेधसः ।
रायस्पोषं यजमानेषु धारय यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ८ ॥

[१२३] त्रयोविंशत्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—वेनः ॥ देवता—वेनः ॥ छन्दः—१, ५, ७ निचृत्त्रिष्टुप्; २-४, ६, ८ त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

अथ सप्तमो वर्गः ॥ ७ ॥

अयं वेनश्चोदयत्पृश्निगर्भा ज्योतिर्जरायू रजसो विमाने ।
इममपां संगमे सूर्यस्य शिशुं न विप्रा मतिभी रिहन्ति ॥ १ ॥
समुद्रादूर्मिमुदियर्ति वेनो नभोजाः पृष्ठं हर्यतस्य दर्शि ।
ऋतस्य सानावधि विष्टपि भ्राट् संमानं योनिमभ्यनूषत व्राः ॥ २ ॥
समानं पूर्वीरभि वावशानास्तिष्ठन्वत्सस्य मातरः सनीळाः ।
ऋतस्य सामन्वधि चक्रमाणा रिहन्ति मध्वो अमृतस्य वाणीः ॥ ३ ॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जानन्तो रूपमकृपन्त विप्रा मृगस्य घोषं महिषस्य हि ग्मन्।
ऋतेन यन्तो अधि सिन्धुमस्थुर्विदद्गन्धर्वो अमृतानि नाम॥ ४॥
अप्सरा जारमुपसिष्मियाणा योषा बिभर्ति परमे व्योमन्।
चरत्रियस्य योनिषु प्रियः सन्त्सीदत्पक्षे हिरण्यये स वेनः॥ ५॥

अथ अष्टमो वर्गः॥ ८॥

नाके सुपर्णमुप यत्पतन्तं हृदा वेनन्तो अभ्यचक्षत त्वा।
हिरण्यपक्षं वरुणस्य दूतं यमस्य योनौ शकुनं भुरण्युम्॥ ६॥
ऊर्ध्वो गन्धर्वो अधि नाके अस्थात्प्रत्यङ्चित्रा बिभ्रदस्यायुधानि।
वसानो अत्कं सुरभिं दृशे कं स्वर्णं नाम जनत प्रियाणि॥ ७॥
द्रप्सः समुद्रमभि यज्जिगाति पश्यन्गृध्रस्य चक्षसा विधर्मन्।
भानुः शुक्रेण शोचिषा चकानस्तृतीये चक्रे रजसि प्रियाणि॥ ८॥

[१२४] चतुर्विंशत्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—१, ५-९ अग्निवरुणसोमानां निहवः; २-४ अग्निः॥ देवता—१-४ अग्निः; ५, ६, ७, ८ यथानिपातम्; ९ इन्द्रः॥ छन्दः—१, ३, ८ त्रिष्टुप्; २, ४, ९ निचृत्त्रिष्टुप्; ५ विराट्त्रिष्टुप्; ६ पादनिचृत्त्रिष्टुप्; ७ जगती॥ स्वरः—१-६, ८, ९ धैवतः; ७ निषादः॥

अथ नवमो वर्गः॥ ९॥

इमं नो अग्न उप यज्ञमेहि पञ्चयामं त्रिवृतं सप्ततन्तुम्।
असो हव्यवाळुत नः पुरोगा ज्योगेव दीर्घं तम आशयिष्ठाः॥ १॥
अदेवाद्देवः प्रचता गुहा यन्प्रपश्यमानो अमृतत्वमेमि ।
शिवं यत्सन्तमशिवो जहामि स्वात्सख्यादरणीं नाभिमेमि ॥ २॥
पश्यन्नन्यस्या अतिथिं वयाया ऋतस्य धाम वि मिमे पुरूणि।
शंसामि पित्रे असुराय शेवमयज्ञियाद्यज्ञियं भागमेमि ॥ ३॥
बह्वीः समा अकरमन्तरस्मिन्निन्द्रं वृणानः पितरं जहामि ।
अग्निः सोमो वरुणस्ते च्यवन्ते पर्यावर्द्राष्ट्रं तदवाम्यायन् ॥ ४॥
निमीया उ त्ये असुरा अभूवन्त्वं च मा वरुण कामयासे ॥
ऋतेन राजन्नृतं विविञ्चन्मम राष्ट्रस्याधिपत्यमेहि ॥ ५॥

अथ दशमो वर्गः॥ १०॥

इदं स्वरिदमिदास वाममयं प्रकाश उर्वन्तरिक्षम् ।
हनाव वृत्रं निरेहि सोम हविष्टा सन्तं हविषा यजाम ॥ ६॥
कविः कवित्वा दिवि रूपमासजदप्रभूती वरुणो निरप: सृजत्।
क्षेमं कृण्वाना जनयो न सिन्धवस्ता अस्य वर्ण शुचयो भरिभ्रति॥ ७॥
ता अस्य ज्येष्ठमिन्द्रियं संचन्ते ता ईमा क्षेति स्वधया मदन्तीः।
ता ईं विशो न राजानं वृणाना बीभत्सुवो अप वृत्रादतिष्ठन्॥ ८॥
बीभत्सूनां सयुजं हंसमाहुरपां दिव्यानां सख्ये चरन्तम्।
अनुष्टुभमनु चर्चूर्यमाणमिन्द्रं नि चिक्युः कवयो मनीषा॥ ९॥

[१२५] पञ्चविंशत्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—वागाम्भृणी॥ देवता—वागाम्भृणी॥ छन्दः—१, ३, ७, ८ विराट् त्रिष्टुप्; २ पादनिचृज्जगती; ४, ५ त्रिष्टुप्; ६ निचृत्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१, ३-८ धैवतः; २ निषादः॥

अथ एकादशो वर्गः॥ ११॥

अहं रुद्रेभिर्वसुभिश्चराम्यहमादित्यैरुत विश्वदेवैः ।
अहं मित्रावरुणोभा बिभर्म्यहमिन्द्राग्नी अहमश्विनोभा ॥ १॥
अहं सोममाहनसं बिभर्म्यहं त्वष्टारमुत पूषणं भगम् ।
अहं दधामि द्रविणं हविष्मते सुप्राव्ये३ यजमानाय सुन्वते॥ २॥
अहं राष्ट्री संगमनी वसूनां चिकितुषी प्रथमा यज्ञियानाम्।
तां मा देवा व्यदधुः पुरुत्रा भूरिस्थात्रां भूर्यावेशयन्तीम्॥ ३॥
मया सो अन्नमत्ति यो विपश्यति यः प्राणिति य ईं शृणोत्युक्तम्।
अमन्तवो मां त उप क्षियन्ति श्रुधि श्रुत श्रद्धिवं ते वदामि॥ ४॥
अहमेव स्वयमिदं वदामि जुष्टं देवेभिरुत मानुषेभिः।
यं कामये तंतमुग्रं कृणोमि तं ब्रह्माणं तमृषिं तं सुमेधाम्॥ ५॥

अथ द्वादशो वर्गः॥ १२॥

अहं रुद्राय धनुरा तनोमि ब्रह्मद्विषे शरवे हन्तवा उ ।
अहं जनाय समदं कृणोम्यहं द्यावापृथिवी आ विवेश ॥ ६॥
अहं सुवे पितरमस्य मूर्धन्मम योनिरप्स्वन्तः समुद्रे ।
ततो वि तिष्ठे भुवनानु विश्वोतामूं द्यां वर्ष्मणोप स्पृशामि ॥ ७॥
अहमेव वात इव प्र वाम्यारभमाणा भुवनानि विश्वा ।
परो दिवा पर एना पृथिव्यैतावती महिना सं बभूव ॥ ८॥

[१२६] षड्विंशत्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—कुल्मलबर्हिषः शैलूषिरंहोमुग्वा वामदेव्यः॥ देवता—विश्वे देवाः॥ छन्दः—१, ५, ६ निचृद्बृहती; २-४ विराड्बृहती; ७ बृहती; ८ आर्ची-स्वराट्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१-७ मध्यमः; ८ धैवतः॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अथ त्रयोदशो वर्गः ॥ १३ ॥

न तमंहो॒ न दु॑रि॒तं देवा॑सो अष्ट॒ मर्त्य॑म् ।
स॒जोष॑सो॒ यम॑र्य॒मा मि॒त्रो नय॑न्ति॒ वरु॑णो॒ अति॒ द्विषः॑ ॥ १ ॥
तद्धि व॒यं वृ॑णी॒महे॒ वरु॑ण॒ मित्रार्य॑मन् ।
येना॒ निरंह॑सो यू॒यं पा॒थ ने॒था च॒ मर्त्य॒मति॒ द्विषः॑ ॥ २ ॥
ते नू॒नं नो॒ऽयमू॒तये॒ वरु॑णो मि॒त्रो अ॑र्य॒मा ।
नयि॑ष्ठा उ नो ने॒षणि॒ पर्षि॑ष्ठा उ नः प॒र्षण्यति॒ द्विषः॑ ॥ ३ ॥
यू॒यं विश्वं॒ परि॑ पाथ॒ वरु॑णो मि॒त्रो अ॑र्य॒मा ।
यु॒ष्माकं॒ शर्म॑णि प्रि॒ये स्याम॑ सुप्रणीत॒योऽति॒ द्विषः॑ ॥ ४ ॥
आ॒दि॒त्यासो॒ अति॒ स्रिधो॒ वरु॑णो मि॒त्रो अ॑र्य॒मा ।
उ॒ग्रं म॒रुद्भी॑ रु॒द्रं हु॑वे॒मेन्द्र॑म॒ग्निं स्व॒स्तयेऽति॒ द्विषः॑ ॥ ५ ॥
नेता॑र ऊ॒ षु ण॑स्ति॒रो वरु॑णो मि॒त्रो अ॑र्य॒मा ।
अति॒ विश्वा॑नि दुरि॒ता राजा॑नश्चर्षणी॒नामति॒ द्विषः॑ ॥ ६ ॥
शु॒नम॒स्मभ्य॑मू॒तये॒ वरु॑णो मि॒त्रो अ॑र्य॒मा ।
शर्म॑ यच्छन्तु स॒प्रथ॑ आदि॒त्यासो॒ यदीम॑हे॒ अति॒ द्विषः॑ ॥ ७ ॥
यथा॑ ह॒ त्यद्व॑सवो गौ॒र्यं॑ चित्प॒दि षि॒ताममु॑ञ्चता यजत्राः ।
ए॒वो ष्व१॒॑स्मन्मु॑ञ्चता॒ व्यंहः॒ प्र ता॑र्यग्ने प्रत॒रं न॒ आयुः॑ ॥ ८ ॥

[१२७] सप्तविंशत्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—कुशिकः सौभरो रात्रिर्वा भारद्वाजी ॥ देवता—रात्रिस्तवः ॥
छन्दः—१, ३, ६ विराड्गायत्री; २ पादनिचृद्गायत्री; ४, ५, ८ गायत्री; ७ निचृद्गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथ चतुर्दशो वर्गः ॥ १४ ॥

रात्री॒ व्य॑ख्यदाय॒ती पु॑रु॒त्रा दे॒व्य१॒॑क्षभिः॑ । विश्वा॒ अधि॒ श्रियो॑ऽधित ॥ १ ॥
ओर्व॑प्रा॒ अम॑र्त्या नि॒वतो॑ दे॒व्यु१॒॑द्वतः॑ । ज्योति॑षा बाधते॒ तमः॑ ॥ २ ॥
निरु॒ स्वसा॑रमस्कृतो॒षसं॑ दे॒व्या॑य॒ती । अपेदु॑ हासते॒ तमः॑ ॥ ३ ॥
सा नो॑ अ॒द्य यस्या॑ व॒यं नि ते॒ याम॒न्नवि॑क्ष्महि । वृ॒क्षे न व॑स॒तिं वयः॑ ॥ ४ ॥
नि ग्रामा॑सो अविक्षत॒ नि प॒द्वन्तो॒ नि प॒क्षिणः॑ । नि श्ये॒नास॑श्चिद॒र्थिनः॑ ॥ ५ ॥
या॒वया॑ वृ॒क्यं१॒॑ वृकं॑ य॒वय॑ स्ते॒नमू॑र्म्ये । अथा॑ नः सु॒तरा॑ भव ॥ ६ ॥
उप॑ मा॒ पेपि॑श॒त्तमः॑ कृ॒ष्णं व्य॑क्तमस्थित । उष॑ ऋ॒णेव॑ यातय ॥ ७ ॥
उप॑ ते॒ गाइ॒वाक॑रं वृणी॒ष्व दु॑हितर्दिवः । रात्रि॒ स्तोमं॒ न जि॒ग्युषे॑ ॥ ८ ॥

[१२८] अष्टाविंशत्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—विहव्यः ॥ देवता—विश्वे देवाः ॥ छन्दः—१, ३ विराट्त्रिष्टुप्; २, ५, ८ त्रिष्टुप्; ३, ६ निचृत्त्रिष्टुप्; ७ भुरिक्त्रिष्टुप्; ९ पादनिचृज्जगती ॥
स्वरः—१-८ धैवतः; ९ निषादः ॥

अथ पञ्चदशो वर्गः ॥ १५ ॥

ममा॑ग्ने॒ वर्चो॑ विह॒वेष्व॑स्तु व॒यं त्वेन्धा॑नास्त॒न्वं॑ पुषेम ।
मह्यं॑ नमन्तां प्र॒दिश॒श्चत॑स्र॒स्त्वयाध्य॑क्षेण॒ पृत॑ना जयेम ॥ १ ॥
मम॑ दे॒वा वि॑ह॒वे स॑न्तु॒ सर्व॒ इन्द्र॑वन्तो म॒रुतो॒ विष्णु॑र॒ग्निः ।
ममा॒न्तरि॑क्षमु॒रुलो॑कमस्तु॒ मह्यं॒ वातः॑ पवतां॒ कामे॑ अ॒स्मिन् ॥ २ ॥
मयि॑ दे॒वा द्रवि॑ण॒मा य॑जन्तां॒ मय्या॒शीर॑स्तु॒ मयि॑ दे॒वहू॑तिः ।
दैव्या॒ होता॑रो वनुषन्त॒ पूर्वेऽरि॑ष्टाः स्याम त॒न्वा॑ सु॒वीराः॑ ॥ ३ ॥
मह्यं॑ यजन्तु॒ मम॒ यानि॑ ह॒व्याकू॑तिः स॒त्या मन॑सो मे अस्तु ।
एनो॒ मा नि गां॑ कत॒मच्च॒नाहं विश्वे॑ देवासो॒ अधि॑ वोचता नः ॥ ४ ॥
देवीः॑ षळुर्वीरु॒रु नः॑ कृणोत॒ विश्वे॑ देवास इ॒ह वी॑रयध्वम् ।
मा हा॑स्महि प्र॒जया॒ मा त॒नूभि॒र्मा र॑धाम द्विष॒ते सो॑म राजन् ॥ ५ ॥

अथ षोडशो वर्गः ॥ १६ ॥

अग्ने॑ म॒न्युं प्र॑तिनु॒दन्परे॑षामद॑ब्धो गो॒पाः परि॑ पाहि न॒स्त्वम् ।
प्र॒त्यञ्चो॑ यन्तु नि॒गुतः॒ पुन॒स्ते॒३॒॑मैषां॑ चि॒त्तं प्र॒बुधां॒ वि ने॑शत् ॥ ६ ॥
धा॒ता धा॑तॄ॒णां भुव॑नस्य॒ यस्पति॑र्दे॒वं त्रा॒तार॑मभिमातिषा॒हम् ।
इ॒मं य॒ज्ञम॒श्विनो॒भा बृह॒स्पति॑र्दे॒वाः पा॑न्तु॒ यज॑मानं न्य॒र्थात् ॥ ७ ॥
उ॒रु॒व्यचा॑ नो महि॒षः शर्म॑ यंसद॒स्मिन्हवे॑ पुरुहू॒तः पु॑रु॒क्षुः ।
स नः॑ प्र॒जायै॑ हर्यश्व मृळ॒येन्द्र॒ मा नो॑ रीरिषो॒ मा परा॑ दाः ॥ ८ ॥
ये नः॑ स॒पत्ना॒ अप॒ ते भ॑वन्त्विन्द्रा॒ग्निभ्या॒मव॑ बाधामहे॒ तान् ।
वस॑वो रु॒द्रा आ॑दि॒त्या उ॑परि॒स्पृशं॑ मो॒ग्रं चेत्ता॑रमधिरा॒जम॑क्रन् ॥ ९ ॥

[१२९] एकोनत्रिंशदुत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—प्रजापतिः परमेष्ठी ॥ देवता—भाववृत्तम् ॥ छन्दः—१-३ निचृत्त्रिष्टुप्; ४-६ त्रिष्टुप्; ७ पादनिचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

अथ सप्तदशो वर्गः ॥ १७ ॥

नास॑दासी॒न्नो सदा॑सीत्त॒दानीं॒ नासी॒द्रजो॒ नो व्यो॑मा प॒रो यत् ।
किमाव॑रीवः॒ कुह॒ कस्य॒ शर्म॒न्नम्भः॒ किमा॑सी॒द्गह॑नं गभी॒रम् ॥ १ ॥
न मृ॒त्युरा॑सीद॒मृतं॒ न तर्हि॒ न रात्र्या॒ अह्न॑ आसीत्प्रके॒तः ।
आनी॑दवा॒तं स्व॒धया॒ तदेकं॒ तस्मा॑द्धा॒न्यन्न प॒रः किं च॒नास॑ ॥ २ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तमं आसीत्तमसा गूळ्हमग्रेऽप्रकेतं सलिलं सर्वमा इदम् ।
तुच्छ्येनाभ्वपिहितं यदासीत्तपस्तन्महिना जायतैकम् ॥ ३ ॥
कामस्तदग्रे समवर्तताधि मनसो रेतः प्रथमं यदासीत् ।
सतो बन्धुमसति निरविन्दन्हृदि प्रतीष्या कवयो मनीषा ॥ ४ ॥
तिरश्चीनो विततो रश्मिरेषामधः स्विदासी३दुपरि स्विदासी३त् ।
रेतोधा आसन्महिमान आसन्त्स्वधा अवस्तात्प्रयतिः परस्तात् ॥ ५ ॥
को अद्धा वेद क इह प्र वोचत्कुत आजाता कुत इयं विसृष्टिः ।
अर्वागदेवा अस्य विसर्जनेनाथा को वेद यत आबभूव ॥ ६ ॥
इयं विसृष्टिर्यत आबभूव यदि वा दधे यदि वा न ।
यो अस्याध्यक्षः परमे व्योमन्त्सो अङ्ग वेद यदि वा न वेद ॥ ७ ॥

[१३०] त्रिंशदुत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—यज्ञः प्राजापत्यः ॥ देवता—भाववृत्तम् ॥ छन्दः—१ विराड्जगती; २ भुरिक्त्रिष्टुप्; ३, ६, ७ त्रिष्टुप्; ४ विराट्त्रिष्टुप्; ५ निचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१ निषादः; २-७ धैवतः ॥

अथ अष्टादशो वर्गः ॥ १८ ॥

यो यज्ञो विश्वतस्तन्तुभिस्तत एकशतं देवकर्मेभिरायतः ।
इमे वयन्ति पितरो य आययुः प्र वयाप वयेत्यासते ततः ॥ १ ॥
पुमाँ एनं तनुत उत्कृणत्ति पुमान्वि तत्ने अधि नाके अस्मिन् ।
इमे मयूखा उप सेदुरू सदः सामानि चक्रुस्तसराण्योतवे ॥ २ ॥
कासीत्प्रमा प्रतिमा किं निदानमाज्यं किमासीत्परिधिः क आसीत् ।
छन्दः किमासीत्प्रउगं किमुक्थं यद्देवा देवमयजन्त विश्वे ॥ ३ ॥
अग्रेगोयत्र्यभवत्सयुग्वोष्णिहया सविता सं बभूव ।
अनुष्टुभा सोम उक्थैर्महस्वान्बृहस्पतेर्बृहती वाचमावत् ॥ ४ ॥
विराण्मित्रावरुणयोरभिश्रीरिन्द्रस्य त्रिष्टुबिह भागो अह्नः ।
विश्वान्देवाञ्जगत्या विवेश तेन चाकॢप्र ऋषयो मनुष्याः ॥ ५ ॥
चाकॢप्रे तेन ऋषयो मनुष्या यज्ञे जाते पितरो नः पुराणे ।
पश्यन्मन्ये मनसा चक्षसा तान्य इमं यज्ञमयजन्त पूर्वे ॥ ६ ॥
सहस्तोमाः सहछन्दस आवृतः सहप्रमा ऋषयः सप्त दैव्याः ।
पूर्वेषां पन्थामनुदृश्य धीरा अन्वालेभिरे रथ्योऽ-न रश्मीन् ॥ ७ ॥

[१३१] एकत्रिंशदुत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—सुकीर्तिः काक्षीवतः ॥ देवता—१-३, ६, ७ इन्द्रः; ४, ५ अश्विनौ ॥ छन्दः—१ त्रिष्टुप्; २ निचृत्त्रिष्टुप्; ३ विराट्त्रिष्टुप्; ४ निचृदनुष्टुप्; ५, ६, ७ पादनिचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१-३, ५-७ धैवतः; ४ गान्धारः ॥

अथ एकोनविंशो वर्गः ॥ १९ ॥

अप प्राचः इन्द्र विश्वाँ अमित्रानपापाचो अभिभूते नुदस्व ।
अपोदीचो अप शूराधराचः उरौ यथा तव शर्मन्मदेम ॥ १ ॥
कुविद्ङ्ग यवमन्तो यवं चिद्यथा दान्त्यनुपूर्वं वियूय ।
इहेहैषां कृणुहि भोजनानि ये बर्हिषो नमोवृक्तिं न जग्मुः ॥ २ ॥
नहि स्थूर्यृतुथा यातमस्ति नोत श्रवो विविदे संगमेषु ।
गव्यन्त इन्द्रं सख्याय विप्रा अश्वायन्तो वृषणं वाजयन्तः ॥ ३ ॥
युवं सुरामंमश्विना नमुचावासुरे सचा ।
विपिपाना शुभस्पती इन्द्रं कर्मस्वावतम् ॥ ४ ॥
पुत्रमिव पितरावश्विनोभेन्द्रावथुः काव्यैर्दंसनाभिः ।
यत्सुरामं व्यपिबः शचीभिः सरस्वती त्वा मघवन्नभिष्णक् ॥ ५ ॥
इन्द्रः सुत्रामा स्ववाँ अवोभिः सुमृळीको भवतु विश्ववेदाः ।
बाधतां द्वेषो अभयं कृणोतु सुवीर्यस्य पतयः स्याम ॥ ६ ॥
तस्य वयं सुमतौ यज्ञियस्यापि भद्रे सौमनसे स्याम ।
स सुत्रामा स्ववाँ इन्द्रो अस्मे आराच्चिद् द्वेषः सनुतर्युयोतु ॥ ७ ॥

[१३२] द्वात्रिंशदुत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—शकपूतो नार्मेधः ॥ देवता—१ लिङ्गोक्ताः; २-७ मित्रावरुणौ ॥ छन्दः—१ बृहती; २, ४ पादनिचृत्पङ्क्तिः; ३ पङ्क्तिः; ५, ६ विराट् पङ्क्तिः; ७ महासतोबृहती । स्वरः—१, ७ मध्यमः; २-६ पञ्चमः ॥

अथ विंशो वर्गः ॥ २० ॥

ईजानमिद् द्यौर्गूर्तावसुरीजानं भूमिरभि प्रभूषणि ।
ईजानं देवावश्विनावभि सुम्नैरवर्धताम् ॥ १ ॥
ता वां मित्रावरुणा धारयत्क्षिती सुषुम्नेषितत्वता यजामसि ।
युवोः क्राणाय सख्यैरभि ष्याम रक्षसः ॥ २ ॥
अधा चिन्नु यद्दिधिषामहे वामभि प्रियं रेक्णः पत्यमानाः ।
दृळ्हा चिद्भूतमवितेव रेक्णः सम्वाररत्रकिरस्य मघानि ॥ ३ ॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

असावन्यो असुर सूयत द्यौस्त्वं विश्वैषां वरुणासि राजा।
मूर्धा रथस्य चाकन्नैतावतैनसान्तकध्रुक् ॥ ४ ॥
अस्मिन्त्स्वे३ तच्छकपूत एनो ह्वित्ते मित्रे निर्गतान्हन्ति वीरान्।
अवोर्वा यद्बात्तनूष्ववः प्रियासु यज्ञियास्ववी ॥ ५ ॥
युवोर्हि मातादितिर्विचेतसा द्यौर्न भूमिः पयसा पुपूतनि ।
अवं प्रिया दिदिष्टन सूरो निनिक्त रश्मिभिः ॥ ६ ॥
युवं ह्यप्रराजावसीदतं तिष्ठद्रथं न धूर्षदं वनर्षदम् ।
ता नः कणूकयन्तीर्नृमेधस्तत्रे अंहसः सुमेधस्तत्रे अंहसः ॥ ७ ॥

[१३३] त्रयस्त्रिंशदुत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—सुदाः पैजवनः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१-३ शक्वरी; ४-६ महापङ्क्तिः; ७ विराट्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१-३, ७ धैवतः; ४-६ पञ्चमः ॥

अथ एकविंशो वर्गः ॥ २१ ॥

प्रो ष्वस्मै पुरोरथमिन्द्राय शूषमर्चत ।
अभीके चिदु लोककृत्संगे समत्सु वृत्रहास्माकं बोधि चोदिता।
नभन्तामन्यकेषां ज्याका अधि धन्वसु ॥ १ ॥
त्वं सिन्धूँरवासृजोऽधराचो अहन्नहिम् ।
अशत्रुरिन्द्र जज्ञिषे विश्वं पुष्यसि वार्यं तं त्वा परि ष्वजामहे।
नभन्तामन्यकेषां ज्याका अधि धन्वसु ॥ २ ॥
वि षु विश्वा अरातयोऽर्यो नशन्त नो धियः ।
अस्तासि शत्रवे वधं यो नं इन्द्र जिघांसति या ते रातिर्ददिर्वसु।
नभन्तामन्यकेषां ज्याका अधि धन्वसु ॥ ३ ॥
यो नं इन्द्राभितो जनो वृकायुरादिदेशति ।
अधस्पदं तमीं कृधि विबाधो असि सासहिर्नभन्तामन्यकेषां
ज्याका अधि धन्वसु ॥ ४ ॥
यो नं इन्द्राभिदासति सनाभिर्यश्च निष्ट्यः ।
अव तस्य बलं तिर महीव द्यौरध त्मना नभन्तामन्यकेषां
ज्याका अधि धन्वसु ॥ ५ ॥
वयमिन्द्र त्वायवः सखित्वमा रभामहे ।
ऋतस्य नः पथा नयाति विश्वानि दुरिता नभन्तामन्यकेषां
ज्याका अधि धन्वसु ॥ ६ ॥

अस्मभ्यं सु त्वमिन्द्र तां शिक्ष या दोहते प्रति वरं जरित्रे ।
अच्छिद्रोध्नी पीपयद्यथा नः सहस्रधारा पयसा मही गौः ॥ ७ ॥

[१३४] चतुस्त्रिंशदुत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—१-६ मान्धाता यौवनाश्वः; ६, ७ गोथा ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१-६ महापङ्क्तिः; ७ पङ्क्तिः ॥ स्वरः—पञ्चमः ॥

अथ द्वाविंशो वर्गः ॥ २२ ॥

उभे यदिन्द्र रोदसी आपप्राथोषाइव ।
महान्तं त्वा महीनां सम्राजं चर्षणीनां देवी
जनित्र्यजीजनद्भद्रा जनित्र्यजीजनत् ॥ १ ॥
अवं स्म दुर्हणायतो मर्तस्य तनुहि स्थिरम् ।
अधस्पदं तमीं कृधि यो अस्माँ आदिदेशति देवी
जनित्र्यजीजनद्भद्रा जनित्र्यजीजनत् ॥ २ ॥
अवं त्या बृहतीरिषो विश्वश्चन्द्रा अमित्रहन् ।
शचीभिः शक्र धूनुहीन्द्र विश्वाभिरूतिभिर्दैवी
जनित्र्यजीजनद्भद्रा जनित्र्यजीजनत् ॥ ३ ॥
अव यत्त्वं शतक्रतविन्द्र विश्वानि धूनुषे ।
रथिं न सुन्वते सचा सहस्त्रिणीभिरूतिभिर्दैवी
जनित्र्यजीजनद्भद्रा जनित्र्यजीजनत् ॥ ४ ॥
अव स्वेदा इवाभितो विष्वक्पतन्तु दिद्यवः ।
दूवीयाइव तन्तवो व्यस्मदेतु दुर्मतिर्दैवी
जनित्र्यजीजनद्भद्रा जनित्र्यजीजनत् ॥ ५ ॥
दीर्घं ह्यङ्कुशं यथा शक्तिं बिभर्षि मन्तुमः ।
पूर्वेण मघवन्पदाजो वयां यथा यमो देवी
जनित्र्यजीजनद्भद्रा जनित्र्यजीजनत् ॥ ६ ॥
नकिर्देवा मिनीमसि नकिरा योपयामसि मन्त्रश्रुत्यं चरामसि।
पक्षेभिरपिकक्षेभिरत्राभि सं रभामहे ॥ ७ ॥

[१३५] पञ्चत्रिंशदुत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—कुमारो यामायनः ॥ देवता—यमः ॥ छन्दः—१-३, ५, ६ अनुष्टुप्; ४ विराडनुष्टुप्; ७ भुरिगनुष्टुप् ॥ स्वरः—गान्धारः ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अथ त्रयोविंशो वर्गः ॥ २३ ॥

यस्मिन्वृक्षे सुपलाशे देवैः संपिबते यमः ।
अत्रा नो विश्पतिः पिता पुराणाँ अनु वेनति ॥ १ ॥
पुराणाँ अनुवेनन्तं चरन्तं पापयामुया ।
असूयन्नभ्यचाकशं तस्मा अस्पृहयं पुनः ॥ २ ॥
यं कुमार नवं रथमचक्रं मनसाकृणोः ।
एकेषं विश्वतः प्राञ्चमपश्यन्नधि तिष्ठसि ॥ ३ ॥
यं कुमार प्रावर्तयो रथं विप्रेभ्यस्परि ।
तं सामानु प्रावर्तत समितो नाव्याहितम् ॥ ४ ॥
कः कुमारमजनयद्रथं को निरवर्तयत् ।
कः स्वित्तदद्य नो ब्रूयादनुदेयी यथाभवत् ॥ ५ ॥
यथाभवदनुदेयी ततो अग्रमजायत ।
पुरस्ताद् बुध्न आततः पश्चान्निरयणं कृतम् ॥ ६ ॥
इदं यमस्य सादनं देवमानं यदुच्यते ।
इयमस्य धम्यते नाळीरयं गीर्भिः परिष्कृतः ॥ ७ ॥

[१३६] षट्त्रिंशदुत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—मुनयो वातरशनाः । १ जूतिः; २ वातजूतिः; ३, विप्रजूतिः; ४ वृषाणकः; ५ करिक्रतः; ६ एतशः; ७ ऋष्यशृङ्गः ॥ देवता—केशिनः ॥ छन्दः—१ विराडनुष्टुप्; २-४, ७ अनुष्टुप्; ५, ६ निचृदनुष्टुप् ॥ स्वरः—गान्धारः ॥

अथ चतुर्विंशो वर्गः ॥ २४ ॥

केश्यग्निं केशी विषं केशी बिभर्ति रोदसी ।
केशी विश्वं स्वर्दृशे केशीदं ज्योतिरुच्यते ॥ १ ॥
मुनयो वातरशनाः पिशङ्गा वसते मला ।
वातस्यानु ध्राजिं यन्ति यद्देवासो अविक्षत ॥ २ ॥
उन्मदिता मौनेयेन वातां आ तस्थिमा वयम् ।
शरीरेदस्माकं यूयं मर्तासो अभि पश्यथ ॥ ३ ॥
अन्तरिक्षेण पतति विश्वा रूपावचाकशत् ।
मुनिर्देवस्यदेवस्य सौकृत्याय सखा हितः ॥ ४ ॥
वातस्याश्वो वायोः सखाथो देवेषितो मुनिः ।
उभौ समुद्रावा क्षेति यश्च पूर्व उतापरः ॥ ५ ॥
अप्सरसां गन्धर्वाणां मृगाणां चरणे चरन् ।
केशी केतस्य विद्वान्त्सखा स्वादुर्मदिन्तमः ॥ ६ ॥
वायुरस्मा उपामन्थत्पिनष्टि स्मा कुनन्नमा ।
केशी विषस्य पात्रेण यद्रुद्रेणापिबत्सह ॥ ७ ॥

[१३७] सप्तत्रिंशदुत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—सप्त ऋषय एकर्चाः ॥ देवता—विश्वे देवाः ॥ छन्दः—१, ४, ६ अनुष्टुप्; २, ३, ५, ७ निचृदनुष्टुप् ॥ स्वरः—गान्धारः ॥

अथ पञ्चविंशो वर्गः ॥ २५ ॥

उत देवा अवहितं देवा उन्नयथा पुनः ।
उतागश्चक्रुषं देवा देवा जीवयथा पुनः ॥ १ ॥
द्वाविमौ वातौ वात आ सिन्धोरा परावतः ।
दक्षं ते अन्य आ वातु परान्यो वातु यद्रपः ॥ २ ॥
आ वात वाहि भेषजं वि वात वाहि यद्रपः ।
त्वं हि विश्वभेषजो देवानां दूत ईयसे ॥ ३ ॥
आ त्वागमं शन्तातिभिरथो अरिष्टतातिभिः ।
दक्षं ते भद्रमाभार्षं परा यक्ष्मं सुवामि ते ॥ ४ ॥
त्रायन्तामिह देवास्त्रायतां मरुतां गणः ।
त्रायन्तां विश्वा भूतानि यथायमरपा असत् ॥ ५ ॥
आप इद्वा उ भेषजीरापो अमीवचातनीः ।
आपः सर्वस्य भेषजीस्तास्ते कृण्वन्तु भेषजम् ॥ ६ ॥
हस्ताभ्यां दशशाखाभ्यां जिह्वा वाचः पुरोगवी ।
अनामयित्नुभ्यां त्वा ताभ्यां त्वोप स्पृशामसि ॥ ७ ॥

[१३८] अष्टात्रिंशदुत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—अङ्ग औरवः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१, ४, ६ पादनिचृज्जगती; २ निचृज्जगती; ३, ५ विराड्जगती ॥ स्वरः—निषादः ॥

अथ षड्विंशो वर्गः ॥ २६ ॥

तव त्य इन्द्र सख्येषु वह्नय ऋतं मन्वाना व्यदर्दिरुर्वलम् ।
यत्रा दशस्यन्नुषसो रिणन्नपः कुत्साय मन्मन्नह्यश्च दंसयः ॥ १ ॥
अवासृजः प्रस्वः श्वञ्चयो गिरीनुदाज उस्रा अपिबो मधु प्रियम् ।
अवर्धयो वनिनो अस्य दंससा शुशोच सूर्यं ऋतजातया गिरा ॥ २ ॥
वि सूर्यो मध्ये अमुचद्रथं दिवो विदद्दासाय प्रतिमानमार्यः ।
दृळ्हानि पिप्रोरसुरस्य मायिन इन्द्रो व्यस्यच्चक्रवाँ ऋजिश्वना ॥ ३ ॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अनाधृष्टानि धृषितो व्यास्यन्त्रिधींरदेवाँ अमृणद्रयार्यः ।
मासेव सूर्यो वसु पुर्यमा ददे गृणानः शत्रूँरभृणाद्विरुक्मता ॥ ४ ॥
अयुद्धसेनो विभ्वा विभिन्दता दाशद् वृत्रहा तुज्यानि तेजते ।
इन्द्रस्य वज्रादबिभेदभिश्नथः प्राक्रामच्छुन्ध्यूरजहादुषा अनः ॥ ५ ॥
एता त्या ते श्रुत्यानि केवला यदेक एकमकृणोरयज्ञम् ।
मासां विधानमदधा अधि द्यवि त्वया विभिन्नं भरति प्रधिं पिता ॥ ६ ॥

[१३९] एकोनचत्वारिंशदुत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—विश्वावसुर्देवगन्धर्वः ॥ देवता—१-३ सविता; ४-६ विश्वावसुः ॥
छन्दः—१, २, ४-६ त्रिष्टुप्; ३ विराट्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

अथ सप्तविंशो वर्गः ॥

सूर्यरश्मिर्हरिकेशः पुरस्तात्सविता ज्योतिरुदयाँ अजस्रम् ।
तस्य पूषा प्रसवे याति विद्वान्त्संपश्यन्विश्वा भुवनानि गोपाः ॥ १ ॥
नृचक्षा एष दिवो मध्य आस्त आपप्रिवान्रोदसी अन्तरिक्षम् ।
स विश्वाचीरभि चष्टे घृताचीरन्तरा पूर्वमपरं च केतुम् ॥ २ ॥
रायो बुध्नः संगमनो वसूनां विश्वा रूपाभि चष्टे शचीभिः ।
देवइव सविता सत्यधर्मेन्द्रो न तस्थौ समरे धनानाम् ॥ ३ ॥
विश्वावसुं सोम गन्धर्वमापौ ददूशुषीस्ततृतेना व्यायन् ।
तदन्ववैदिन्द्रो रारहाण आसां परि सूर्यस्य परिधीँरपश्यत् ॥ ४ ॥
विश्वावसुरभि तन्नो गृणातु दिव्यो गन्धर्वो रजसो विमानः ।
यद्वा घा सत्यमुत यन्न विद्म धियो हिन्वानो धिय इन्नो अव्याः ॥ ५ ॥
सन्निमविन्दच्चरणे नदीनामपावृणोद्धरो अश्मव्रजानाम् ।
प्रासां गन्धर्वो अमृतानि वोचदिन्द्रो दक्षं परि जानादहीनाम् ॥ ६ ॥

[१४०] चत्वारिंशदुत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—अग्निः पावकः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१, ३, ४, निचृत्पङ्क्तिः;
२ भुरिक्पङ्क्तिः; ५ संस्तारपङ्क्तिः; ६ विराट्त्रिष्टुप् ॥
स्वरः—१-५ पञ्चमः; ६ धैवतः ॥

अथ अष्टाविंशो वर्गः ॥ २८ ॥

अग्ने तव श्रवो वयो महि भ्राजन्ते अर्चयो विभावसो ।
बृहद्भानो शवसा वाजमुक्थ्यं दधासि दाशुषे कवे ॥ १ ॥
पावकवर्चाः शुक्रवर्चा अनूनवर्चा उदियर्षि भानुना ।
पुत्रो मातरा विचरन्नुपावसि पृणक्षि रोदसी उभे ॥ २ ॥
ऊर्जो नपाज्जातवेदः सुशस्तिभिर्मन्दस्व धीतिभिर्हितः ।
त्वे इषः सं दधुर्भूरिवर्पसश्चित्रोतयो वामजाताः ॥ ३ ॥
इरज्यन्नग्ने प्रथयस्व जन्तुभिरस्मे रायो अमर्त्य ।
स दर्शतस्य वपुषो वि राजसि पृणक्षि सानसिं क्रतुम् ॥ ४ ॥
इष्कर्तारमध्वरस्य प्रचेतसं क्षयन्तं राधसो महः ।
रातिं वामस्य सुभगां महीमिषं दधासि सानसिं रयिम् ॥ ५ ॥
ऋतावानं महिषं विश्वदर्शतमग्निं सुम्नाय दधिरे पुरो जनाः ।
श्रुत्कर्णं सप्रथस्तमं त्वा गिरा दैव्यं मानुषा युगा ॥ ६ ॥

[१४१] एकचत्वारिंशदुत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—अग्निस्तापसः ॥ देवता—विश्वे देवाः ॥ छन्दः—१, २ निचृदनुष्टुप्;
३, ६ विराडनुष्टुप्; ४, ५ अनुष्टुप् ॥ स्वरः—गान्धारः ॥

अथ एकोनत्रिंशो वर्गः ॥ २९ ॥

अग्ने अच्छा वदेह नः प्रत्यङ् नः सुमना भव ।
प्र नो यच्छ विशस्पते धनदा असि नस्त्वम् ॥ १ ॥
प्र नो यच्छत्वर्यमा प्र भगः प्र बृहस्पतिः ।
प्र देवाः प्रोत सूनृता रायो देवी ददातु नः ॥ २ ॥
सोमं राजानमवसेऽग्निं गीर्भिर्हवामहे ।
आदित्यान्विष्णुं सूर्यं ब्रह्माणं च बृहस्पतिम् ॥ ३ ॥
इन्द्रवायू बृहस्पतिं सुहवेह हवामहे ।
यथा नः सर्व इज्जनः संगत्यां सुमना असत् ॥ ४ ॥
अर्यमणं बृहस्पतिमिन्द्रं दानाय चोदय ।
वातं विष्णुं सरस्वतीं सवितारं च वाजिनम् ॥ ५ ॥
त्वं नो अग्ने अग्निभिर्ब्रह्म यज्ञं च वर्धय ।
त्वं नो देवतातये रायो दानाय चोदय ॥ ६ ॥

[१४२] द्विचत्वारिंशदुत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—शार्ङ्गाः=१, २ जरिता; ३, ४ द्रोणः; ५, ६ सारिसृक्वः; ७, ८ स्तम्बमित्रः ॥
देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१-२ निचृज्जगती; ३, ४, ६ त्रिष्टुप्; ५ आर्चीस्वराट्
त्रिष्टुप्; ७ निचृदनुष्टुप्; ८ अनुष्टुप् ॥ स्वरः—१, २ निषादः;
३-६ धैवतः; ७, ८ गान्धारः ॥

अथ त्रिंशो वर्गः ॥ ३० ॥

अयमग्ने जरिता त्वे अभूदपि सहसः सूनो नह्यन्यदस्त्याप्यम् ।
प्रत्रा हि शर्मन्त्रिवरूथमस्ति त आरे हिंसानामप दिद्युमा कृधि ॥ १ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya, Ujjain.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्रवत्ते अग्ने जनिमा पितूयतः साचीव विश्वा भुवना न्यृञ्जसे।
प्र सप्तयः प्र सनिषन्त नो धियः पुरश्चरन्ति पशुपाइव त्मना॥ २॥
उत वा उ परि वृणक्षि बप्सदुहोरग्र उलपस्य स्वधावः।
उत खिल्या उर्वराणां भवन्ति मा ते हेतिं तविषीं चुक्रुधाम॥ ३॥
यदुद्वतो निवतो यासि बप्सत्पृथगेषि प्रगर्धिनीव सेना।
यदा ते वातो अनुवाति शोचिर्वप्तेव श्मश्रु वपसि प्र भूम॥ ४॥
प्रत्यस्य श्रेणयो ददृश्र एकं नियानं बहवो रथासः।
बाहू यदग्ने अनुममृंजानो न्यङ्ङुत्तानामन्वेषि भूमिम्॥ ५॥
उत्ते शुष्मा जिहतामुत्ते अर्चिरुत्ते अग्ने शशमानस्य वाजाः।
उच्छ्वञ्चस्व नि नम वर्धमान आ त्वाद्य विश्वे वसवः सदन्तु॥ ६॥
अपामिदं न्ययनं समुद्रस्य निवेशनम्।
अन्यं कृणुष्वेतः पन्थां तेन याहि वशाँ अनु॥ ७॥
आयने ते परायणे दूर्वा रोहन्तु पुष्पिणीः।
हृदाश्च पुण्डरीकाणि समुद्रस्य गृहा इमे॥ ८॥

इत्यष्टमाष्टके सप्तमोऽध्यायः॥

अथाष्टमोऽध्यायः

[१४३] त्रिचत्वारिंशदुत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—अत्रिः साङ्ख्यः॥ देवता—अश्विनौ॥ छन्दः—१-५ अनुष्टुप्; ६ निचृदनुष्टुप्॥ स्वरः—गान्धारः॥

अथ प्रथमो वर्गः॥ १॥

त्यं चिदत्रिमृतजुरमर्थमश्वं न यातवे।
कक्षीवन्तं यदी पुना रथं न कृणुथो नवम्॥ १॥
त्यं चिदश्वं न वाजिनमरेणवो यमन्नत।
दृळ्हं ग्रन्थिं न वि ष्यतमत्रिं यविष्ठमा रजः॥ २॥
नरा दंसिष्ठावत्रये शुभ्रा सिषासतं धियः।
अथा हि वां दिवो नरा पुनः स्तोमो न विशसे॥ ३॥
चिते तद्वां सुराधसा रातिः सुमतिरश्विना।
आ यन्नः सदने पृथौ समने पर्षथो नरा॥ ४॥
युवं भुज्युं समुद्र आ रजसः पार ईङ्खितम्।
यातमच्छा पतत्रिभिर्नासत्या सातये कृतम्॥ ५॥

आ वां सुम्नैः शंयूइव मंहिष्ठा विश्ववेदसा।
समस्मे भूषतं नरोत्सं न पिप्युषीरिषः॥ ६॥

[१४४] चतुश्चत्वारिंशदुत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—सुपर्णस्ताक्ष्यपुत्र ऊर्ध्वकृशनो वा यामायनः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१, ३ निचृद्गायत्री; २ आर्चीस्वराड्बृहती; ४ भुरिग्गायत्री; ५ सतोबृहती; ६ निचृत्पङ्क्तिः॥ स्वरः—१, ३, ४ षड्जः; २, ५ मध्यमः; ६ पञ्चमः॥

अथ द्वितीयो वर्गः॥ २॥

अयं हि ते अमर्त्य इन्दुरत्यो न पत्यते।
दक्षो विश्वायुर्वेधसे॥ १॥
अयमस्मासु काव्य ऋभुर्वज्रो दास्वते।
अयं विभर्त्यूर्ध्वकृशनं मदमृभुर्न कृत्व्यं मदम्॥ २॥
घृषुः श्येनाय कृत्वन आसु स्वासु वंसगः।
अवं दीधेदहीशुवः॥ ३॥
यं सुपर्णः परावतः श्येनस्य पुत्र आभरत्।
शतचक्रं योऽह्रो वर्तनिः॥ ४॥
यं ते श्येनश्चारुमवृकं पदाभरदरुणं मानमन्धसः।
एना वयो वि तार्यायुर्जीवसे एना जागार बन्धुता॥ ५॥
एवा तदिन्द्र इन्दुना देवेषु चिद्धारयाते महित्वजः।
क्रत्वा वयो वि तार्यायुः सुक्रतो क्रत्वायमस्मदा सुतः॥ ६॥

[१४५] पञ्चचत्वारिंशदुत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—इन्द्राणी॥ देवता—उपनिषत्सपत्नीबाधनम्॥ छन्दः—१, ५ निचृदनुष्टुप्; २, ४ अनुष्टुप्; ३ आर्चीस्वराडनुष्टुप्; ६ निचृत्पङ्क्तिः॥ स्वरः—१-५ गान्धारः; ६ पञ्चमः॥

अथ तृतीयो वर्गः॥ ३॥

इमां खनाम्योषधिं वीरुधं बलवत्तमाम्।
यया सपत्नीं बाधते यया संविन्दते पतिम्॥ १॥
उत्तानपर्णे सुभगे देवजूते सहस्वति।
सपत्नीं मे परा धम पतिं मे केवलं कुरु॥ २॥
उत्तराहमुत्तर उत्तरेदुत्तराभ्यः।
अधः सपत्नी या ममाधरा साधराभ्यः॥ ३॥

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection. Kanya Maha Vidyalaya, Jalandhar

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नह्यस्या नाम गृभ्णामि नो अस्मिन्रमते जने ।
परामेव परावतं सपत्नीं गमयामसि ॥ ४ ॥
अहमस्मि सहमानाथ त्वमसि सासहिः ।
उभे सहस्वती भूत्वी सपत्नीं मे सहावहै ॥ ५ ॥
उप तेऽधां सहमानामभि त्वाधां सहीयसा ।
मामनु प्र ते मनो वत्सं गौरिव धावतु पथा वारिव धावतु ॥ ६ ॥

[१४६] षट्चत्वारिंशदुत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—देवमुनिरैरम्मदः ॥ देवता—अरण्यानी ॥ छन्दः—१ विराडनुष्टुप्; २ भुरिग् अनुष्टुप्; ३, ५ निचृदनुष्टुप्; ४, ६ अनुष्टुप् ॥ स्वरः—गान्धारः ॥

अथ चतुर्थो वर्गः ॥ ४ ॥

अरण्यान्यरण्यान्यसौ य प्रेव नश्यसि ।
कथा ग्रामं न पृच्छसि न त्वा भीरिव विन्दतीङ् ॥ १ ॥
वृषारवाय वदते यदुपावति चिच्चिकः ।
आघाटिभिरिव धावयन्नरण्यानिर्महीयते ॥ २ ॥
उत गाव इवादन्त्युत वेश्मेव दृश्यते ।
उतो अरण्यानिः सायं शकटीरिव सर्जति ॥ ३ ॥
गामङ्गैष आ ह्वयति दार्वङ्गैषो अपावधीत् ।
वसन्नरण्यान्यां सायमक्रुक्षदिति मन्यते ॥ ४ ॥
न वा अरण्यानिर्हन्त्यन्यश्चेन्नाभिगच्छति ।
स्वादोः फलस्य जग्ध्वाय यथाकामं नि पद्यते ॥ ५ ॥
आञ्जनगन्धिं सुरभिं बह्वन्नामकृषीवलाम् ।
प्राहं मृगाणां मातरमरण्यानिमशंसिषम् ॥ ६ ॥

[१४७] सप्तचत्वारिंशदुत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—सुवेदाः शैरीषिः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१ विराड्जगती; २ आर्चीभुरिग्जगती; ३ जगती; ४ पादनिचृज्जगती; ५ विराट् त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१-४ निषादः; ५ धैवतः ॥

अथ पञ्चमो वर्गः ॥ ५ ॥

श्रत्ते दधामि प्रथमाय मन्यवेऽहन्यद् वृत्रं नर्यं विवेरपः ।
उभे यत्त्वा भवतो रोदसी अनु रेजते शुष्मात्पृथिवी चिदद्रिवः ॥ १ ॥
त्वं मायाभिरनवद्य मायिनं श्रवस्यता मनसा वृत्रमर्दयः ।
त्वामिन्नरो वृणते गविष्टिषु त्वां विश्वासु हव्यासविष्टिषु ॥ २ ॥
ऐषु चाकन्धि पुरुहूत सूरिषु वृधासो ये मघवन्नानशुर्मघम् ।
अर्चन्ति तोके तनये परिष्टिषु मेधसाता वाजिनमह्यये धने ॥ ३ ॥
स इन्नु रायः सुभृतस्य चाकनन्मदं यो अस्य रंह्यं चिकेतति ।
त्वावृधो मघवन्दाश्वध्वरो मक्षू स वाजं भरते धना नृभिः ॥ ४ ॥
त्वं शर्धाय महिना गृणान उरु कृधि मघवञ्छग्धि रायः ।
त्वं नो मित्रो वरुणो न मायी पित्वो न दस्म दयसे विभक्ता ॥ ५ ॥

[१४८] अष्टचत्वारिंशदुत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—पृथुर्वैन्यः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१ विराट्त्रिष्टुप्; २ आर्ची-भुरिक्त्रिष्टुप्; ३, ५ पादनिचृत्त्रिष्टुप्; ४ आर्चीस्वराट्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

अथ षष्ठो वर्गः ॥ ६ ॥

सुष्वाणासः इन्द्र स्तुमसि त्वा ससवांसश्च तुविनृम्ण वाजम् ।
आ नो भर सुवितं यस्य चाकन्मना तना सनुयाम त्वोताः ॥ १ ॥
ऋष्वस्त्वमिन्द्र शूर जातो दासीर्विशः सूर्येण सह्याः ।
गुहा हितं गुह्यं गूळ्हमप्सु बिभृमसि प्रस्रवणे न सोमम् ॥ २ ॥
अर्यो वा गिरो अभ्यर्च विद्वानृषीणां विप्रः सुमतिं चकानः ।
ते स्याम ये रणयन्त सोमैरेनोत तुभ्यं रथोळ्ह भक्षैः ॥ ३ ॥
इमा ब्रह्मेन्द्र तुभ्यं शंसि दा नृभ्यो नृणां शूर शवः ।
तेभिर्भव सक्रतुर्येषु चाकन्नुत त्रायस्व गृणत उत स्तीन् ॥ ४ ॥
श्रुधी हवमिन्द्र शूर पृथ्या उत स्तवसे वेन्यस्यार्कैः ।
आ यस्ते योनिं घृतवन्तमस्वारूर्मिं न मन्मैर्वयन्त वक्वाः ॥ ५ ॥

[१४९] एकोनपञ्चाशदुत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—अर्चन्हैरण्यस्तूपः ॥ देवता—सविता ॥ छन्दः—१, ४ भुरिक्त्रिष्टुप्; २, ५ विराट्त्रिष्टुप्; ३ निचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

अथ सप्तमो वर्गः ॥ ७ ॥

सविता यन्त्रैः पृथिवीमरम्णादस्कम्भने सविता द्यामदृंहत् ।
अश्वमिवाधुक्षद्धुनिमन्तरिक्षमतूर्ते बद्धं सविता समुद्रम् ॥ १ ॥
यत्रा समुद्रः स्कभितो व्यौनदपां नपात्सविता तस्य वेद ।
अतो भूरत आ उत्थितं रजोऽतो द्यावापृथिवी अप्रथेताम् ॥ २ ॥
पुश्चेदमन्यदभवद्यजत्रमर्मर्त्यस्य भुवनस्य भूना ।
सुप्रायणा अत्र पन्थामदर्शि यतो देवा उदजायन्त विप्राः ॥ ३ ॥
सुजातो ज्योतिषा सह शर्मवरूथमासदत् स्वः ।
वासयन्वर्धयन्पयस्वतीं प्रजामस्मभ्यं यजमानं च सुक्रतुर्गरुत्मान्पूर्वो जातः स उ अस्यानु धर्मा ॥ ४ ॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

गाव॑इव॒ ग्रामं॒ यूयु॑धिरि॒वाश्वा॑न्वा॒श्रेव॑ व॒त्सं सु॒मना॒ दुहा॑ना।
पति॑रिव जा॒याम॒भि नो॒ न्ये॑तु ध॒र्ता दि॒वः स॑वि॒ता वि॒श्ववा॑रः॥४॥
हिर॑ण्यस्तूपः सवित॒र्यथा॑ त्वाङ्गिर॒सो जु॒ह्वे वाजे॑ अ॒स्मिन्।
ए॒वा त्वार्च॒न्नव॑से॒ वन्द॑मानः॒ सोम॑स्येवां॒शुं प्रति॑ जागरा॒हम्॥५॥

[१५०] पञ्चाशदुत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—मृळीको वासिष्ठः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—१, २ बृहती; ३ निचृद्बृहती; ४ उपरिष्टाज्ज्योतिर्नाम जगती वा; ५ उपरिष्टाज्ज्योतिः॥ स्वरः—१-३ मध्यमः; ४, ५ निषादः॥

अथ अष्टमो वर्गः॥८॥

समि॑द्धश्चि॒त्समि॑ध्यसे दे॒वेभ्यो॑ हव्यवाहन ।
आ॒दि॒त्यै रु॒द्रैर्वसु॑भिर्न॒ आ ग॑हि मृळी॒काय॑ न॒ आ ग॑हि ॥१॥
इ॒मं य॒ज्ञमि॒दं वचो॑ जुजुषा॒ण उ॒पाग॑हि ।
मर्ती॑सस्त्वा समिधान हवामहे मृळी॒काय॑ हवामहे ॥२॥
त्वामु॑ जा॒तवे॑दसं वि॒श्ववा॑रं गृणे धि॒या ।
अग्ने॑ दे॒वाँ आ व॑ह नः प्रि॒यव्र॑तान्मृळी॒काय॑ प्रि॒यव्र॑तान् ॥३॥
अ॒ग्निर्दे॒वो दे॒वाना॑मभवत्पु॒रोहि॑तो॒ऽग्निं म॑नु॒ष्या॒३॒॑ ऋष॑यः॒ समी॑धिरे।
अ॒ग्निं म॒हो धन॑साताव॒हं हु॑वे मृळी॒कं धन॑सातये ॥४॥
अ॒ग्निरत्रिं॑ भ॒रद्वा॑जं॒ गवि॑ष्ठिरं॒ प्राव॑न्नः॒ कण्वं॑ त्र॒सद॑स्युमाह॒वे।
अ॒ग्निं वसि॑ष्ठो हवते पु॒रोहि॑तो मृळी॒काय॑ पु॒रोहि॑तः॥५॥

[१५१] एकपञ्चाशदुत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—श्रद्धा कामायनी॥ देवता—श्रद्धा॥ छन्दः—१, ४, ५ अनुष्टुप्; २ विराडनुष्टुप्; ३ निचृदनुष्टुप्॥ स्वरः—गान्धारः॥

अथ नवमो वर्गः॥९॥

श्र॒द्धया॒ग्निः समि॑ध्यते श्र॒द्धया॑ हूयते ह॒विः।
श्र॒द्धां भग॑स्य मू॒र्धनि॒ वच॒सा वे॑दयामसि॥१॥
प्रि॒यं श्र॑द्धे॒ दद॑तः प्रि॒यं श्र॑द्धे॒ दिदा॑सतः।
प्रि॒यं भो॒जेषु॒ यज्व॑स्वि॒दं म॑ उदि॒तं कृ॑धि॥२॥
यथा॑ दे॒वा असु॑रेषु श्र॒द्धामु॒ग्रेषु॑ चक्रि॒रे।
ए॒वं भो॒जेषु॒ यज्व॑स्व॒स्माक॑मुदि॒तं कृ॑धि॥३॥
श्र॒द्धां दे॒वा यज॑माना वा॒युगो॑पा॒ उपा॑सते।
श्र॒द्धां हृ॑द॒य्य१॒॑याकू॑त्या श्र॒द्धया॑ विन्दते॒ वसु॑॥४॥
श्र॒द्धां प्रा॒तर्ह॑वामहे श्र॒द्धां म॒ध्यंदि॑नं॒ परि॑।
श्र॒द्धां सूर्य॑स्य नि॒म्रुचि॒ श्रद्धे॒ श्रद्धा॑पयेह नः॥५॥

द्वादशोऽनुवाकः [१५२] द्विपञ्चाशदुत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—शासो भारद्वाजः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१, २, ४ निचृदनुष्टुप्; ३ अनुष्टुप्; ५ विराडनुष्टुप्॥ स्वरः—गान्धारः॥

अथ दशमो वर्गः॥१०॥

शा॒स इ॒त्था म॒हाँ अ॑स्यमित्रखा॒दो अद्भु॑तः।
न यस्य॑ ह॒न्यते॒ सखा॒ न जीय॑ते॒ कदा॑ च॒न॥१॥
स्व॒स्ति॒दा वि॒शस्पति॑र्वृत्र॒हा वि॑मृ॒धो व॒शी।
वृषेन्द्रः॑ पु॒र ए॑तु नः सोम॒पा अ॑भयंक॒रः॥२॥
वि रक्षो॒ वि मृधो॑ जहि॒ वि वृ॒त्रस्य॒ हनू॑ रुज।
वि म॒न्युमि॑न्द्र वृत्रहन्न॒मित्र॑स्याभि॒दास॑तः॥३॥
वि न॑ इन्द्र॒ मृधो॑ जहि नी॒चा य॑च्छ पृतन्य॒तः।
यो अ॒स्माँ अ॑भि॒दास॒त्यध॑रं गमया॒ तमः॑॥४॥
अपे॑न्द्र द्विष॒तो मनोऽप॒ जिज्या॑सतो व॒धम्।
वि म॒न्योः शर्म॑ यच्छ॒ वरी॑यो यवया व॒धम्॥५॥

[१५३] त्रिपञ्चाशदुत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—इन्द्रमातरो देवजामयः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१ निचृद्गायत्री; २-५ विराड्गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

अथ एकादशो वर्गः॥११॥

ई॒ङ्खय॑न्तीरप॒स्युव॒ इन्द्रं॑ जा॒तमुपा॑सते। भे॒जा॒नासः॑ सु॒वीर्य॑म्॥१॥
त्वमि॑न्द्र॒ बला॒दधि॒ सह॑सो जा॒त ओज॑सः। त्वं वृ॑ष॒न्वृषेद॑सि॥२॥
त्वमि॑न्द्रासि वृत्र॒हा व्य१॒॑न्तरि॑क्षमतिरः। उद् द्याम॑स्तभ्ना॒ ओज॑सा॥३॥
त्वमि॑न्द्र स॒जोष॑सम॒र्कं बि॑भर्षि बा॒ह्वोः। वज्रं॒ शिशा॑न॒ ओज॑सा॥४॥
त्वमि॑न्द्राभि॒भूर॑सि॒ विश्वा॑ जा॒तान्योज॑सा। स विश्वा॒ भुव॒ आभ॑वः॥५॥

[१५४] चतुष्पञ्चाशदुत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—यमी॥ देवता—भाववृत्तम्॥ छन्दः—१, ३, ४ अनुष्टुप्; २, ५ निचृदनुष्टुप्॥ स्वरः—गान्धारः॥

अथ द्वादशो वर्गः॥१२॥

सोम॒ एके॑भ्यः पवते घृ॒तमेक॒ उपा॑सते।
येभ्यो॒ मधु॑ प्र॒धाव॑ति॒ ताँश्चि॑दे॒वापि॑ गच्छतात्॥१॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तपसा ये अनाधृष्यास्तपसा ये स्वर्ययुः।
तपो ये चक्रिरे महस्ताँश्चिदेवापि गच्छतात्॥ २॥
ये युध्यन्ते प्रधनेषु शूरासो ये तनूत्यजः।
ये वा सहस्रदक्षिणास्ताँश्चिदेवापि गच्छतात्॥ ३॥
ये चित्पूर्व ऋतसाप ऋतावान ऋतावृधः।
पितॄन्तपस्वतो यम ताँश्चिदेवापि गच्छतात्॥ ४॥
सहस्रणीथाः कवयो ये गोपायन्ति सूर्यम्।
ऋषीन्तपस्वतो यम तपोजाँ अपि गच्छतात्॥ ५॥

[१५५] पञ्चपञ्चाशदुत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—शिरिम्बिठो भारद्वाजः॥ देवता—१, ४ अलक्ष्मीघ्नम्; २, ३ ब्रह्मणस्पतिः; ५ विश्वे देवाः॥ छन्दः—१, २, ४ निचृदनुष्टुप्; ३ अनुष्टुप्; ५ विराडनुष्टुप्॥ स्वरः—गान्धारः॥

अथ त्रयोदशो वर्गः॥ १३॥

अरायि काणे विकटे गिरिं गच्छ सदान्वे।
शिरिम्बिठस्य सत्वभिस्तेभिष्ट्वा चातयामसि॥ १॥
चत्तो इतश्चत्तामुतः सर्वा भ्रूणान्यारुषी।
अराय्यं ब्रह्मणस्पते तीक्ष्णशृङ्गोदृषन्निहि॥ २॥
अदो यद्दारु प्लवते सिन्धोः पारे अपूरुषम्।
तदा रभस्व दुर्हणो तेन गच्छ परस्तरम्॥ ३॥
यद्ध प्राचीरजगन्तोरो मण्डूरधाणिकीः।
हता इन्द्रस्य शत्रवः सर्वे बुद्बुदयाशवः॥ ४॥
परीमे गामनेषत पर्यग्निमहृषत।
देवेष्वक्रत श्रवः क इमाँ आ दधर्षति॥ ५॥

[१५६] षट्पञ्चाशदुत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—केतुराग्नेयः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—१, ३, ५ गायत्री; २, ४ निचृद्गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

अथ चतुर्दशो वर्गः॥ १४॥

अग्निं हिन्वन्तु नो धियः सप्तिमाशुमिवाजिषु। तेन जेष्म धनंधनम्॥ १॥
यया गा आकरामहे सेनयाग्ने तवोत्या। तां नो हिन्व मघत्तये॥ २॥
आग्ने स्थूरं रयिं भर पृथुं गोमन्तमश्विनम्। अश्नुधि खं वर्तया पणिम्॥ ३॥
अग्ने नक्षत्रमजरमा सूर्यं रोहयो दिवि। दधज्ज्योतिर्जनेभ्यः॥ ४॥
अग्ने केतुर्विशामसि प्रेष्ठः श्रेष्ठ उपस्थसत्। बोधा स्तोत्रे वयो दधत्॥ ५॥

[१५७] सप्तपञ्चाशदुत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—भुवन आप्त्यः साधनो वा भौवनः॥ देवता—विश्वे देवाः॥ छन्दः—द्विपदात्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः॥

अथ पञ्चदशो वर्गः॥ १५॥

इमा नु कं भुवना सीषधामेन्द्रश्च विश्वे च देवाः॥ १॥
यज्ञं च नस्तन्वं च प्रजां चादित्यैरिन्द्रः सह चीकॢपाति॥ २॥
आदित्यैरिन्द्रः सगणो मरुद्भिरस्माकं भूत्वविता तनूनाम्॥ ३॥
हत्वाय देवा असुरान्यदायन्देवा देवत्वमभिरक्षमाणाः॥ ४॥
प्रत्यञ्चमर्कमनयञ्छचीभिरादित्स्वधामिषिरां पर्यपश्यन्॥ ५॥

[१५८] अष्टपञ्चाशदुत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—चक्षुः सौर्यः॥ देवता—सूर्यः॥ छन्दः—१ आर्चीस्वराड्गायत्री; २ स्वराड्गायत्री; ३ गायत्री; ४ निचृद्गायत्री; ५ विराड्गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

अथ षोडशो वर्गः॥ १६॥

सूर्यो नो दिवस्पातु वातो अन्तरिक्षात्। अग्निर्नः पार्थिवेभ्यः॥ १॥
जोषा सवितर्यस्य ते हरः शतं सवाँ अर्हति। पाहि नो दिद्युतः पतन्त्याः॥ २॥
चक्षुर्नो देवः सविता चक्षुर्न उत पर्वतः। चक्षुर्धाता दधातु नः॥ ३॥
चक्षुर्नो धेहि चक्षुषे चक्षुर्विख्यै तनूभ्यः। सं चेदं वि च पश्येम॥ ४॥
सुसंदृशं त्वा वयं प्रति पश्येम सूर्य। वि पश्येम नृचक्षसः॥ ५॥

[१५९] एकोनषष्ट्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—शची पौलोमी॥ देवता—शची पौलोमी॥ छन्दः—१-३, ५ निचृदनुष्टुप्; ४ पादनिचृदनुष्टुप्; ६ अनुष्टुप्॥ स्वरः—गान्धारः॥

अथ सप्तदशो वर्गः॥ १७॥

उदसौ सूर्यो अगादुदयं मामको भगः।
अहं तद्विद्वला पतिमभ्यसाक्षि विषासहिः॥ १॥
अहं केतुरहं मूर्धाहमुग्रा विवाचनी।
ममेदनु क्रतुं पतिः सेहानाया उपाचरेत्॥ २॥
मम पुत्राः शत्रुहणोऽथो मे दुहिता विराट्।
उताहमस्मि संजया पत्यौ मे श्लोक उत्तमः॥ ३॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

येनेन्द्रो हविषा कृत्व्यभवद् द्युम्न्युत्तमः ।
इदं तदक्रि देवा असपत्ना किलाभुवम् ॥ ४ ॥
असपत्ना सपत्नघ्नी जयन्त्यभिभूवरी ।
आवृक्षमन्यासां वर्चो राधो अस्थेयसामिव ॥ ५ ॥
समजैषमिमा अहं सपत्नीरभिभूवरी ।
यथाहमस्य वीरस्य विराजानि जनस्य च ॥ ६ ॥

[१६०] षष्ट्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—पूरणो वैश्वामित्रः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१, ३ त्रिष्टुप्; २ पादनिचृत्त्रिष्टुप्; ४, ५ विराट्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

अथ अष्टादशो वर्गः ॥ १८ ॥

तीव्रस्याभिवयसो अस्य पाहि सर्वरथा वि हरी इह मुञ्च।
इन्द्र मा त्वा यजमानासो अन्ये नि रीरमन्तुभ्यमिमे सुतासः ॥ १ ॥
तुभ्यं सुतास्तुभ्यमु सोत्वासस्त्वां गिरः श्वात्र्या आ ह्वयन्ति।
इन्द्रेदमद्य सवनं जुषाणो विश्वस्य विद्वाँ इह पाहि सोमम् ॥ २ ॥
य उशता मनसा सोममस्मै सर्वहृदा देवकामः सुनोति।
न गा इन्द्रस्तस्य परा ददाति प्रशस्तमिच्चारुमस्मै कृणोति ॥ ३ ॥
अनुस्पष्टो भवत्येषो अस्य यो अस्मै रेवान्न सुनोति सोमम्।
निररन्धौ मघवा तं दधाति ब्रह्मद्विषो हन्त्यनानुदिष्टः ॥ ४ ॥
आश्वायन्तो गव्यन्तो वाजयन्तो हवामहे त्वोपगन्तवा उ।
आभूषन्तस्ते सुमतौ नवायां वयमिन्द्र त्वा शुनं हुवेम ॥ ५ ॥

[१६१] एकषष्ट्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—यक्ष्मनाशनः प्राजापत्यः ॥ देवता—राजयक्ष्मघ्नम् ॥ छन्दः—१, ४ भुरिक्त्रिष्टुप्; २ त्रिष्टुप्; ३ निचृत्त्रिष्टुप्; ५ निचृदनुष्टुप् ॥ स्वरः—१-४ धैवतः; ५ गान्धारः ॥

अथ एकोनविंशो वर्गः ॥ १९ ॥

मुञ्चामि त्वा हविषा जीवनाय कमज्ञातयक्ष्मादुत राजयक्ष्मात्।
ग्राहिर्जग्राह यदि वैतदेनं तस्या इन्द्राग्नी प्र मुमुक्तमेनम् ॥ १ ॥
यदि क्षितायुर्यदि वा परेतो यदि मृत्योरन्तिकं नीत एव।
तमा हरामि निर्ऋतेरुपस्थादस्पार्षमेनं शतशारदाय ॥ २ ॥
सहस्राक्षेण शतशारदेन शतायुषा हविषाहार्षमेनम् ।
शतं यथेमं शरदो नयातीन्द्रो विश्वस्य दुरितस्य पारम् ॥ ३ ॥
शतं जीव शरदो वर्धमानः शतं हेमन्ताञ्छतमु वसन्तान्।
शतमिन्द्राग्नी सविता बृहस्पतिः शतायुषा हविषेमं पुनर्दुः ॥ ४ ॥
आहार्षं त्वाविदं त्वा पुनरागाः पुनर्नव ।
सर्वाङ्ग सर्वं ते चक्षुः सर्वमायुश्च तेऽविदम् ॥ ५ ॥

[१६२] द्विषष्ट्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—रक्षोहा ब्राह्मः ॥ देवता—गर्भसंस्रावे प्रायश्चित्तम् ॥ छन्दः—१, २, ४ निचृदनुष्टुप्; ३, ५, ६ अनुष्टुप् ॥ स्वरः—गान्धारः ॥

अथ विंशो वर्गः ॥ २० ॥

ब्रह्मणाग्निः संविदानो रक्षोहा बाधतामितः।
अमीवा यस्ते गर्भं दुर्णामा योनिमाशये ॥ १ ॥
यस्ते गर्भममीवा दुर्णामा योनिमाशये।
अग्निष्टं ब्रह्मणा सह निष्क्रव्यादमनीनशत् ॥ २ ॥
यस्ते हन्ति पतयन्तं निषत्स्नुं यः सरीसृपम्।
जातं यस्ते जिघांसति तमितो नाशयामसि ॥ ३ ॥
यस्ते ऊरू विहरत्यन्तरा दंपती शये।
योनिं यो अन्तरारेळिह तमितो नाशयामसि ॥ ४ ॥
यस्त्वा भ्राता पतिर्भूत्वा जारो भूत्वा निपद्यते।
प्रजां यस्ते जिघांसति तमितो नाशयामसि ॥ ५ ॥
यस्त्वा स्वप्नेन तमसा मोहयित्वा निपद्यते।
प्रजां यस्ते जिघांसति तमितो नाशयामसि ॥ ६ ॥

[१६३] त्रिषष्ट्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—विवृहा काश्यपः ॥ देवता—यक्ष्मघ्नम् ॥ छन्दः—१, ६ अनुष्टुप्; २-५ निचृदनुष्टुप् ॥ स्वरः—गान्धारः ॥

अथ एकविंशो वर्गः ॥ २१ ॥

अक्षीभ्यां ते नासिकाभ्यां कर्णाभ्यां छुबुकादधि।
यक्ष्मं शीर्षण्यं मस्तिष्काज्जिह्वाया वि वृहामि ते ॥ १ ॥
ग्रीवाभ्यस्त उष्णिहाभ्यः कीकसाभ्यो अनूक्यात्।
यक्ष्मं दोषण्यं मंसाभ्यां बाहुभ्यां वि वृहामि ते ॥ २ ॥
आन्त्रेभ्यस्ते गुदाभ्यो वनिष्ठोर्हृदयादधि ।
यक्ष्मं मतस्नाभ्यां यकनः प्लाशिभ्यो वि वृहामि ते ॥ ३ ॥
ऊरुभ्यां ते अष्ठीवद्भ्यां पाष्णिभ्यां प्रपदाभ्याम्।

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

यक्ष्मं श्रोणिभ्यां भासदार्द्भंससो वि वृहामि ते॥४॥
मेहनाद्वनंकरणाल्लोमभ्यस्ते नखेभ्यः ।
यक्ष्मं सर्वस्मादात्मनस्तमिदं वि वृहामि ते ॥५॥
अङ्गादङ्गाल्लोम्नोलोम्नो जातं पर्वणिपर्वणि ।
यक्ष्मं सर्वस्मादात्मनस्तमिदं वि वृहामि ते ॥६॥

[१६४] चतुःषष्ट्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—प्रचेताः॥ देवता—दुःस्वप्नघ्नम्॥ छन्दः—१ निचृदनुष्टुप्; २ अनुष्टुप्; ३ आर्चीभुरिक्त्रिष्टुप्; ४ विराडनुष्टुप्; ५ पङ्क्तिः॥ स्वरः—१, २, ४ गान्धारः; ३ धैवतः; ५ पञ्चमः॥

अथ द्वाविंशो वर्गः॥ २२॥

अपेहि मनसस्पतेऽप क्राम परश्चर ।
परो निर्ऋत्या आ चक्ष्व बहुधा जीवतो मनः॥१॥
भद्रं वै वरं वृणते भद्रं युञ्जन्ति दक्षिणम्।
भद्रं वैवस्वते चक्षुर्बृहत्रा जीवतो मनः ॥२॥
यदाशसा निःशसाभिशसोपारिम जाग्रतो यत्स्वपन्तः।
अग्निर्विश्वान्यप दुष्कृतान्यजुष्टान्यारे अस्मद्दधातु॥३॥
यदिन्द्र ब्रह्मणस्पतेऽभिद्रोहं चरामसि ।
प्रचेता न आङ्गिरसो द्विषतां पात्वंहसः ॥४॥
अजैष्माद्यासनाम चाभूमानागसो वयम् ।
जाग्रत्स्वप्नः संङ्कल्पः पापो यं द्विष्मस्तं स ऋच्छतु यो नो द्वेष्टि तमृच्छतु॥५॥

[१६५] पञ्चषष्ट्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—कपोतो नैर्ऋतः॥ देवता—कपोतापहतौ प्रायश्चित्तं वैश्वदेवम्॥ छन्दः—१ स्वराट्त्रिष्टुप्; २, ३ निचृत्त्रिष्टुप्; ४ भुरिक्त्रिष्टुप्; ५ त्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः॥

अथ त्रयोविंशो वर्गः॥ २३॥

देवाः कपोत इषितो यदिच्छन्दूतो निर्ऋत्या इदमाजगाम।
तस्मा अर्चाम कृणवाम निष्कृतिं शं नो अस्तु द्विपदे शं चतुष्पदे॥१॥
शिवः कपोत इषितो नो अस्त्वनागा देवाः शकुनो गृहेषु।
अग्निर्हि विप्रो जुषतां हविर्नः परि हेतिः पक्षिणी वृणक्तु॥२॥
हेतिः पक्षिणी न दभात्यस्मान्यां द्वेष्मि यमु द्विष्मस्तमभीके।
शं नो गोभ्यश्च पुरुषेभ्यश्चास्तु मा नो हिंसीद्विह देवाः कपोतः॥३॥

यदुलूको वदति मोघमेतद्यत्कपोतः पदमग्नौ कृणोति।
यस्य दूतः प्रहित एष एतत्तस्मै यमाय नमो अस्तु मृत्यवे॥४॥
ऋचा कपोतं नुदत प्रणोदमिषं मदन्तः परि गां नयध्वम्।
संयोपयन्तो दुरितानि विश्वा हित्वा न ऊर्जं प्र पतात्पतिष्टः॥५॥

[१६६] षट्षष्ट्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—ऋषभो वैराजः शाक्वरो वा॥ देवता—सपत्नघ्नम्॥ छन्दः—१, २ अनुष्टुप्; ३, ४ निचृदनुष्टुप्; ५ महापङ्क्तिः॥ स्वरः—१-४ गान्धारः; ५ पञ्चमः॥

अथ चतुर्विंशो वर्गः॥ २४॥

ऋषभं मा समानानां सपत्नानां विषासहिम् ।
हन्तारं शत्रूणां कृधि विराजं गोपतिं गवाम् ॥१॥
अहमस्मि सपत्नहेन्द्रइवारिष्टो अक्षतः ।
अधः सपत्ना मे पदोरिमे सर्वे अभिष्ठिताः ॥२॥
अत्रैव वोऽपि नह्याम्युभे आर्त्नीइव ज्यया ।
वाचस्पते नि षेधेमान्यथा मदधरं वदान् ॥३॥
अभिभूरहमागमं विश्वकर्मेण धाम्ना ।
आ वश्चित्तमा वो व्रतमा वोऽहं समितिं ददे ॥४॥
योगक्षेमं व आदायाहं भूयासमुत्तम आ वो मूर्धानमक्रमीम्।
अधस्पदान्म उद्वदत मण्डूकाइवोदकान्मण्डूका उदकादिव॥५॥

[१६७] सप्तषष्ट्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—विश्वामित्रजमदग्नी॥ देवता—१, २, ४ इन्द्रः; ३ लिङ्गोक्ताः॥ छन्दः—१ आर्चीस्वराड्जगती; २, ४ विराड्जगती; ३ जगती॥ स्वरः—निषादः॥

अथ पञ्चविंशो वर्गः॥ २५॥

तुभ्येदमिन्द्र परि षिच्यते मधु त्वं सुतस्य कलशस्य राजसि।
त्वं रयिं पुरुवीरामु नस्कृधि त्वं तपः परितप्याजयः स्वः॥१॥
स्वर्जितं महि मन्दानमन्धसो हवामहे परि शक्रं सुताँ उप।
इमं नो यज्ञमिह बोध्या गहि स्पृधो जयन्तं मघवानमीमहे॥२॥
सोमस्य राज्ञो वरुणस्य धर्मणि बृहस्पतेरनुमत्या उ शर्मणि।
तवाहमद्य मघवन्नुपस्तुतौ धातर्विधातः कलशाँ अभक्षयम्॥३॥
प्रसूतो भक्षमकरं चरावपि स्तोमं चेमं प्रथमः सूरिरुन्मृजे।
सुते सातेन यद्यागमं वां प्रति विश्वामित्रजमदग्नी दमे॥४॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

[१६८] अष्टषष्ट्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—अनिलो वातायनः ॥ देवता—वायुः ॥ छन्दः—१, ३ निचृत्त्रिष्टुप्; २, ४ त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

अथ षड्विंशो वर्गः ॥ २६ ॥

वातस्य नु महिमानं रथस्य रुजन्नेति स्तनयन्नस्य घोषः।
दिविस्पृग्यात्यरुणानि कृण्वन्नुतो एति पृथिव्या रेणुमस्यन् ॥ १ ॥
सं प्रेरते अनु वातस्य विष्ठा ऐनं गच्छन्ति समनं न योषाः।
ताभिः सयुक्सरथं देव ईयतेऽस्य विश्वस्य भुवनस्य राजा ॥ २ ॥
अन्तरिक्षे पथिभिरीयमानो न नि विशते कतमच्चनाहः।
अपां सखा प्रथमजा ऋतावा क्व स्विज्जातः कुत आ बभूव ॥ ३ ॥
आत्मा देवानां भुवनस्य गर्भो यथावशं चरति देव एषः।
घोषा इदस्य शृण्विरे न रूपं तस्मै वाताय हविषा विधेम ॥ ४ ॥

[१६९] एकोनसप्तत्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—शबरः काक्षीवतः ॥ देवता—गावः ॥ छन्दः—१ विराट्त्रिष्टुप्; २, ४ त्रिष्टुप्; ३ निचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

अथ सप्तविंशो वर्गः ॥ २७ ॥

मयोभूर्वातो अभि वातूस्रा ऊर्जस्वतीरोषधीरा रिशन्ताम् ।
पीवस्वतीर्जीवधन्याः पिबन्त्ववसाय पद्वते रुद्र मृळ ॥ १ ॥
याः सरूपा विरूपा एकरूपा यासामग्निरिष्ट्या नामानि वेद।
या अङ्गिरसस्तपसेह चक्रुस्ताभ्यः पर्जन्य महि शर्म यच्छ ॥ २ ॥
या देवेषु तन्वमैरयन्त यासां सोमो विश्वा रूपाणि वेद।
ता अस्मभ्यं पयसा पिन्वमानाः प्रजावतीरिन्द्र गोष्ठे रिरीहि ॥ ३ ॥
प्रजापतिर्महामेता रराणो विश्वैर्देवैः पितृभिः संविदानः ।
शिवाः सतीरुप नो गोष्ठमाकस्तासां वयं प्रजया सं सदेम ॥ ४ ॥

[१७०] सप्तत्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—विभ्राट् सूर्यः ॥ देवता—सूर्यः ॥ छन्दः—१, ३ विराड्जगती; २ जगती; ४ आस्तारपङ्क्तिः ॥ स्वरः—१-३ निषादः; ४ पञ्चमः ॥

अथ अष्टाविंशो वर्गः ॥ २८ ॥

विभ्राड् बृहत्पिबतु सोम्यं मध्वायुर्दधद्यज्ञपतावविंहुतम् ।
वातजूतो यो अभिरक्षति त्मना प्रजाः पुपोष पुरुधा वि राजति ॥ १ ॥
विभ्राड् बृहत्सुभृतं वाजसातमं धर्मन्दिवो धरुणे सत्यमर्पितम्।
अमित्रहा वृत्रहा दस्युहन्तमं ज्योतिर्जज्ञे असुरहा सपत्नहा ॥ २ ॥
इदं श्रेष्ठं ज्योतिषां ज्योतिरुत्तमं विश्वजिद्धनजिदुच्यते बृहत्।
विश्वभ्राड् भ्राजो महि सूर्यो दृश उरु पप्रथे सह ओजो अच्युतम् ॥ ३ ॥
विभ्राजञ्ज्योतिषा स्वरगच्छो रोचनं दिवः ।
येनेमा विश्वा भुवनान्याभृता विश्वकर्मणा विश्वदेव्यावता ॥ ४ ॥

[१७१] एकसप्तत्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—इटो भार्गवः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१ निचृद्गायत्री; २, ४ विराड्गायत्री; ३ पादनिचृद्गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथ एकोनत्रिंशो वर्गः ॥ २९ ॥

त्वं त्यमिटतो रथमिन्द्र प्रावः सुतावतः। अशृणोः सोमिनो हवम् ॥ १ ॥
त्वं मखस्य दोधतः शिरोऽव त्वचो भरः। अगच्छः सोमिनो गृहम् ॥ २ ॥
त्वं त्यमिन्द्र मर्त्यमास्त्रबुध्नाय वेन्यम्। मुहुः श्रथ्ना मनस्यवे ॥ ३ ॥
त्वं त्यमिन्द्र सूर्यं पश्चा सन्तं पुरस्कृधि। देवानां चित्तिरो वशम् ॥ ४ ॥

[१७२] द्विसप्तत्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—संवर्तः ॥ देवता—उषा ॥ छन्दः—पिपीलिकामध्यागायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथ त्रिंशो वर्गः ॥ ३० ॥

आ याहि वनसा सह गावः सचन्त वर्तनिं यदूधभिः ॥ १ ॥
आ याहि वस्व्या धिया महिष्ठो जार्यन्मखः सुदानुभिः ॥ २ ॥
पितुभृतो न तन्तुमित्सुदानवः प्रति दध्मो यजामसि ॥ ३ ॥
उषा अप स्वसुस्तमः सं वर्तयति वर्तनिं सुजातता ॥ ४ ॥

[१७३] त्रिसप्तत्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—ध्रुवः ॥ देवता—राज्ञःस्तुतिः ॥ छन्दः—१, ३-५ अनुष्टुप्; २ भुरिगनुष्टुप्; ६ निचृदनुष्टुप् ॥ स्वरः—गान्धारः ॥

अथ एकत्रिंशो वर्गः ॥ ३१ ॥

आ त्वाहार्षमन्तरेधि ध्रुवस्तिष्ठाविचाचलिः।
विशस्त्वा सर्वा वाञ्छन्तु मा त्वद्राष्ट्रमधि भ्रशत् ॥ १ ॥
इहैवैधि माप च्योष्ठाः पर्वत इवाविचाचलिः।
इन्द्र इवेह ध्रुवस्तिष्ठेह राष्ट्रमु धारय ॥ २ ॥
इममिन्द्रो अदीधरद् ध्रुवं ध्रुवेण हविषा।
तस्मै सोमो अधि ब्रवत्तस्मा उ ब्रह्मणस्पतिः ॥ ३ ॥
ध्रुवा द्यौर्ध्रुवा पृथिवी ध्रुवासः पर्वता इमे।
ध्रुवं विश्वमिदं जगद् ध्रुवो राजा विशामयम् ॥ ४ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ध्रुवं ते राजा वरुणो ध्रुवं देवो बृहस्पतिः।
ध्रुवं त इन्द्रश्चाग्निश्च राष्ट्रं धारयतां ध्रुवम्॥ ५॥
ध्रुवं ध्रुवेण हविषाभि सोमं मृशामसि।
अथो त इन्द्रः केवलीर्विशो बलिहृतस्करत्॥ ६॥

[१७४] चतुःसप्तत्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः--अभीवर्तः॥ देवता—राज्ञःस्तुतिः॥ छन्दः—१, ५ निचृदनुष्टुप् २, ३ विराडनुष्टुप्; ४ पादनिचृदनुष्टुप्॥ स्वरः—गान्धारः॥

अथ द्वात्रिंशो वर्गः॥ ३२॥

अभीवर्तेन हविषा येनेन्द्रो अभिवावृते।
तेनास्मान्ब्रह्मणस्पतेऽभि राष्ट्राय वर्तय॥ १॥
अभिवृत्य सपत्नानभि या नो अरातयः।
अभि पृतन्यन्तं तिष्ठाभि यो नं इरस्यति॥ २॥
अभि त्वा देवः सविताभि सोमो अवीवृतत्।
अभि त्वा विश्वा भूतान्यभीवर्तो यथाससि॥ ३॥
येनेन्द्रो हविषा कृत्व्यभवद् द्युम्न्युत्तमः।
इदं तदक्रि देवा असपत्नः किलाभुवम्॥ ४॥
असपत्नः सपत्नहाभिराष्ट्रो विषासहिः।
यथाहमेषां भूतानां विराजानि जनस्य च॥ ५॥

[१७५] पञ्चसप्तत्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—ऊर्ध्वग्रावार्बुदः॥ देवता—ग्रावाणः॥ छन्दः—१, २, ४ गायत्री; ३ विराड्गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

अथ त्रयस्त्रिंशो वर्गः॥ ३३॥

प्र वो ग्रावाणः सविता देवः सुवतु धर्मणा। धृषु युज्यध्वं सुनुत॥ १॥
ग्रावाणो अप दुच्छुनामप सेधत दुर्मतिम्। उस्राः कर्तन भेषजम्॥ २॥
ग्रावाण उपरेष्वा महीयन्ते सजोषसः। वृष्णो दधतो वृष्ण्यम्॥ ३॥
ग्रावाणः सविता नु वो देवः सुवतु धर्मणा। यजमानाय सुन्वते॥ ४॥

[१७६] षट्सप्तत्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—सूनुराभवः॥ देवता—१ ऋभवः; २-४ अग्निः॥ छन्दः—१, ४ विराडनुष्टुप्; २ निचृद्गायत्री; ३ अनुष्टुप्॥ स्वरः—१, ३, ४ गान्धारः; २ षड्जः॥

अथ चतुस्त्रिंशो वर्गः॥ ३४॥

प्र सूनवे ऋभूणां बृहन्नवन्त वृजनम्।
क्षामा ये विश्वधायसोऽश्नन्धेनुं न मातरम्॥ १॥
प्र देवं देव्या धिया भरता जातवेदसम्।
हव्या नो वक्षदानुषक्॥ २॥
अयमु ष्य प्र देवयुर्होता यज्ञाय नीयते।
रथो न योर्भीवृतो घृणीवाञ्चेतति त्मना॥ ३॥
अयमग्निरुरुष्यत्यमृतादिव जन्मनः।
सहसश्चित्सहीयान्देवो जीवातवे कृतः॥ ४॥

[१७७] सप्तसप्तत्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—पतङ्गः प्राजापत्यः॥ देवता—मायाभेदः॥ छन्दः—१ जगती; २ विराट्त्रिष्टुप्; ३ निचृत्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१ निषादः; २, ३ धैवतः॥

अथ पञ्चत्रिंशो वर्गः॥ ३५॥

पतङ्गमक्तमसुरस्य मायया हृदा पश्यन्ति मनसा विपश्चितः।
समुद्रे अन्तः कवयो वि चक्षते मरीचीनां पदमिच्छन्ति वेधसः॥ १॥
पतङ्गो वाचं मनसा बिभर्ति तां गन्धर्वोऽवदद्गर्भे अन्तः।
तां द्योतमानां स्वर्यं मनीषामृतस्य पदे कवयो नि पान्ति॥ २॥
अपश्यं गोपामनिपद्यमानमा च परा च पथिभिश्चरन्तम्।
स सध्रीचीः स विषूचीर्वसान आ वरीवर्ति भुवनेष्वन्तः॥ ३॥

[१७८] अष्टसप्तत्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—अरिष्टनेमिस्तार्क्ष्यः॥ देवता—तार्क्ष्यः॥ छन्दः—१ विराट्त्रिष्टुप्; २ निचृत्त्रिष्टुप्; ३ त्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः॥

अथ षट्त्रिंशो वर्गः॥ ३६॥

त्यमू षु वाजिनं देवजूतं सहावानं तरुतारं रथानाम्।
अरिष्टनेमिं पृतनाजमाशुं स्वस्तये तार्क्ष्यमिहा हुवेम॥ १॥
इन्द्रस्येव रातिमाजोहुवानाः स्वस्तये नावमिवा रुहेम।
उर्वी न पृथ्वी बहुले गभीरे मा वामेतौ मा परेतौ रिषाम॥ २॥
सद्यश्चिद्यः शवसा पञ्च कृष्टीः सूर्यइव ज्योतिषापस्ततान।
सहस्रसाः शतसा अस्य रंहिर्न स्मा वरन्ते युवतिं न शर्याम्॥ ३॥

[१७९] एकोनाशीत्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—१ शिबिरौशीनरः; २ प्रतर्दनः काशिराजः; ३ वसुमना रौहिदश्वः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१ निचृदनुष्टुप्; २ निचृत्त्रिष्टुप्; ३ त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१ गान्धारः; २, ३ धैवतः॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अथ सप्तत्रिंशो वर्गः ॥ ३७ ॥

उत्ति॑ष्ठ॒ताव॑ पश्य॒तेन्द्र॑स्य भा॒गमृ॒त्विय॑म् ।
यदि॑ श्रा॒तो जु॒होत॑न॒ यद्यश्रा॑तो मम॒त्तन॑ ॥ १ ॥
श्रा॒तं ह॒विरो ष्वि॑न्द्र॒ प्र या॑हि ज॒गाम॒ सूरो॒ अध्व॑नो॒ विम॑ध्यम्।
परि॑ त्वासते नि॒धिभि॒ः सखा॑यः कुल॒पा न व्रा॒जप॑तिं॒ चर॑न्तम् ॥ २ ॥
श्रा॒तं म॑न्य॒ ऊध॑नि श्रा॒तम॒ग्नौ सुश्रा॑तं मन्ये॒ तदृ॒तं नवी॑यः।
माध्य॑न्दिनस्य॒ सव॑नस्य द॒ध्नः पिबे॑न्द्र वज्रिन्पुरुकृज्जुषा॒णः ॥ ३ ॥

[१८०] अशीत्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—जयः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१, २ त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

अथ अष्टात्रिंशो वर्गः ॥ ३८ ॥

प्र स॑साहिषे पुरुहूत॒ शत्रू॒ञ्ज्येष्ठ॑स्ते॒ शुष्म॑ इ॒ह रा॒तिर॑स्तु।
इन्द्रा भ॑र॒ दक्षि॑णेना॒ वसू॑नि॒ पति॒ः सिन्धू॑नामसि रे॒वती॑नाम् ॥ १ ॥
मृ॒गो न भी॒मः कु॑च॒रो गि॑रि॒ष्ठाः प॑रा॒वत॒ आ ज॑गन्था॒ पर॑स्याः।
सृ॒कं सं॒शाय॑ प॒विमि॑न्द्र ति॒ग्मं वि शत्रू॑न्ताळ्हि॒ वि मृधो॑ नुदस्व ॥ २ ॥
इन्द्र॑ क्ष॒त्रम॒भि वा॒ममोजोऽजा॑यथा वृषभ चर्षणी॒नाम् ।
अपा॑नुदो॒ जन॑ममित्र॒यन्त॑मु॒रुं दे॒वेभ्यो॑ अकृणोरु लो॒कम् ॥ ३ ॥

[१८१] एकाशीत्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—१ प्रथो वासिष्ठः; २ सप्रथो भारद्वाजः; ३ घर्मः सौर्यः ॥ देवता—विश्वे देवाः ॥
छन्दः—१ निचृत्त्रिष्टुप्; २ त्रिष्टुप्; ३ पादनिचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

अथ एकोनचत्वारिंशो वर्गः ॥ ३९ ॥

प्रथ॑श्च॒ यस्य॑ स॒प्तथ॑श्च॒ नामानु॑ष्टुभस्य ह॒विषो॑ ह॒विर्यत् ।
धा॒तुर्द्युता॑नात्सवि॒तुश्च॒ विष्णो॑ रथन्त॒रमा ज॑भारा॒ वसि॑ष्ठः ॥ १ ॥
अवि॑न्द॒न्ते अति॑हितं॒ यदासी॑द्य॒ज्ञस्य॒ धाम॑ पर॒मं गुहा॒ यत् ।
धा॒तुर्द्युता॑नात्सवि॒तुश्च॒ विष्णो॑र्भ॒रद्वा॑जो बृ॒हदा च॑क्रे अ॒ग्नेः ॥ २ ॥
ते॑ऽविन्द॒न्मन॑सा॒ दीध्या॑ना॒ यजु॑ः ष्क॒न्नं प्र॑थ॒मं दे॑व॒यान॑म् ।
धा॒तुर्द्युता॑नात्सवि॒तुश्च॒ विष्णो॒रा सूर्या॑दभरन्घ॒र्ममे॒ते ॥ ३ ॥

[१८२] द्व्यशीत्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—तपुर्मूर्धा बार्हस्पत्यः ॥ देवता—बृहस्पतिः ॥ छन्दः—१ भुरिक्त्रिष्टुप्; २ विराट्त्रिष्टुप्; ३ त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

अथ चत्वारिंशो वर्गः ॥ ४० ॥

बृह॒स्पति॑र्नयतु दु॒र्गहा॑ ति॒रः पुन॑र्नेषद॒घशं॑साय॒ मन्म॑ ।
क्षि॒पदश॑स्ति॒मप॑ दुर्म॒तिं ह॒न्नथा॑ कर॒द्यज॑मानाय॒ शं योः ॥ १ ॥
नरा॒शंसो॑ नोऽवतु प्रया॒जे शं नो॑ अस्त्वनुया॒जो हवे॑षु ।
क्षि॒पदश॑स्ति॒मप॑ दुर्म॒तिं ह॒न्नथा॑ कर॒द्यज॑मानाय॒ शं योः ॥ २ ॥
तपु॑र्मूर्धा तपतु र॒क्षसो॒ ये ब्र॑ह्म॒द्विषः॒ शर॑वे॒ हन्त॒वा उ॑ ।
क्षि॒पदश॑स्ति॒मप॑ दुर्म॒तिं हन्नथा॑ कर॒द्यज॑मानाय॒ शं योः ॥ ३ ॥

[१८३] त्र्यशीत्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—प्रजावान्प्राजापत्यः ॥ देवता—अन्वृचं यजमानयजमानपत्नीहोत्राशिषः ॥
छन्दः—१ त्रिष्टुप्; २, ३ विराट्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

अथ एकचत्वारिंशो वर्गः ॥ ४१ ॥

अप॑श्यं त्वा॒ मन॑सा॒ चेकि॑तानं॒ तप॑सो जा॒तं तप॑सो॒ विभू॑तम्।
इ॒ह प्र॒जामि॒ह र॒यिं रराणः॒ प्र जा॑यस्व प्र॒जया॑ पुत्रकाम ॥ १ ॥
अप॑श्यं त्वा॒ मन॑सा॒ दीध्या॑नां॒ स्वायां॑ त॒नू ऋत्व्ये॒ नाध॑मानाम्।
उप॒ मामु॒च्चा यु॑व॒तिर्ब॑भूयाः॒ प्र जा॑यस्व प्र॒जया॑ पुत्रकामे ॥ २ ॥
अ॒हं गर्भ॑मदधा॒मोष॑धीष्व॒हं विश्वे॑षु॒ भुव॑नेष्व॒न्तः ।
अ॒हं प्र॒जा अ॑जनयं पृथि॒व्याम॒हं जनि॑भ्यो अप॒रीषु॑ पु॒त्रान् ॥ ३ ॥

[१८४] चतुरशीत्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—त्वष्टा गर्भकर्ता विष्णुर्वा प्राजापत्यः ॥ देवताः—लिङ्गोक्ताः (गर्भार्थाशीः) ॥
छन्दः—१, २ अनुष्टुप्; ३ निचृदनुष्टुप् ॥ स्वरः—गान्धारः ॥

अथ द्वाचत्वारिंशो वर्गः ॥ ४२ ॥

विष्णु॒र्योनिं॑ कल्पयतु॒ त्वष्टा॑ रू॒पाणि॑ पिंशतु।
आ सि॑ञ्चतु प्र॒जाप॑तिर्धा॒ता गर्भं॑ दधातु ते ॥ १ ॥
गर्भं॑ धेहि सिनीवालि॒ गर्भं॑ धेहि सरस्वति।
गर्भं॑ ते अ॒श्विनौ॑ दे॒वावा ध॑त्तां॒ पुष्क॑रस्रजा ॥ २ ॥
हि॒र॒ण्ययी॑ अ॒रणी॒ यं नि॒र्मन्थ॑तो अ॒श्विना॑।
तं ते॒ गर्भं॑ हवामहे दश॒मे मा॒सि सूत॑वे ॥ ३ ॥

[१८५] पञ्चाशीत्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—सत्यधृतिर्वारुणिः ॥ देवता—अदितिः (स्वस्त्ययनम्) ॥ छन्दः—१, ३ विराड्गायत्री; २ निचृद्गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथ त्रिचत्वारिंशो वर्गः ॥ ४३ ॥

महि॑ त्री॒णामवो॑ऽस्तु द्यु॒क्षं मि॒त्रस्या॑र्य॒म्णः। दु॒रा॒धर्षं॒ वरु॑णस्य ॥ १ ॥
न॒हि तेषा॑म॒मा च॒न नाध्व॑सु वार॒णेषु॑। ईशे॑ रि॒पुर॒घशं॑सः ॥ २ ॥
यस्यै॑ पु॒त्रासो॒ अदि॑तेः॒ प्र जी॒वसे॒ मर्त्या॑य। ज्योति॒र्यच्छ॒न्त्यज॑स्रम् ॥ ३ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

[१८६] षडशीत्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—उलो वातायनः ॥ देवता—वायुः ॥ छन्दः—१, २ गायत्री; ३ निचृद्गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथ चतुश्चत्वारिंशो वर्गः ॥ ४४ ॥

वात आ वातु भेषजं शंभु मयोभु नो हृदे। प्र ण आयूंषि तारिषत् ॥ १ ॥
उत वात पितासि न उत भ्रातोत नः सखा। स नो जीवातवे कृधि ॥ २ ॥
यददो वात ते गृहेऽमृतस्य निधिर्हितः। ततो नो देहि जीवसे ॥ ३ ॥

[१८७] सप्ताशीत्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—वत्स आग्नेयः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१ निचृद्गायत्री; २-५ गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथ पञ्चचत्वारिंशो वर्गः ॥ ४५ ॥

प्राग्नये वाचमीरय वृषभाय क्षितीनाम्। स नः पर्षदति द्विषः ॥ १ ॥
यः परस्याः परावतस्तिरो धन्वातिरोचते। स नः पर्षदति द्विषः ॥ २ ॥
यो रक्षांसि निजूर्वति वृषा शुक्रेण शोचिषा। स नः पर्षदति द्विषः ॥ ३ ॥
यो विश्वाभि विपश्यति भुवना सं च पश्यति। स नः पर्षदति द्विषः ॥ ४ ॥
यो अस्य पारे रजसः शुक्रो अग्निरजायत। स नः पर्षदति द्विषः ॥ ५ ॥

[१८८] अष्टाशीत्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—श्येन आग्नेयः ॥ देवता—अग्निर्जातवेदाः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथ षट्चत्वारिंशो वर्गः ॥ ४६ ॥

प्र नूनं जातवेदसमश्वं हिनोत वाजिनम्। इदं नो बर्हिरासदे ॥ १ ॥
अस्य प्र जातवेदसो विप्रवीरस्य मीळ्हुषः। महीमियर्मि सुष्टुतिम् ॥ २ ॥
या रुचो जातवेदसो देवत्रा हव्यवाहनीः। ताभिर्नो यज्ञमिन्वतु ॥ ३ ॥

[१८९] एकोननवत्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—सार्पराज्ञी ॥ देवता—सार्पराज्ञी सूर्यो वा ॥ छन्दः—१ निचृद्गायत्री; २ विराड्गायत्री; ३ गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथ सप्तचत्वारिंशो वर्गः ॥ ४७ ॥

आयं गौः पृश्निरक्रमीदसदन्मातरं पुरः। पितरं च प्रयन्त्स्वः ॥ १ ॥
अन्तश्चरति रोचनास्य प्राणादपानती। व्यख्यन्महिषो दिवम् ॥ २ ॥
त्रिंशद्धाम वि राजति वाक्पतङ्गाय धीयते। प्रति वस्तोरह द्युभिः ॥ ३ ॥

[१९०] नवत्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—अघमर्षणो माधुच्छन्दसः ॥ देवता—भाववृत्तम् ॥ छन्दः—१ विराडनुष्टुप्; २ अनुष्टुप्; ३ पादनिचृदनुष्टुप् ॥ स्वरः—गान्धारः ॥

अथ अष्टचत्वारिंशो वर्गः ॥ ४८ ॥

ऋतं च सत्यं चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत ।
ततो रात्र्यजायत ततः समुद्रो अर्णवः ॥ १ ॥
समुद्रादर्णवादधि संवत्सरो अजायत ।
अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्य मिषतो वशी ॥ २ ॥
सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत् ।
दिवं च पृथिवीं चान्तरिक्षमथो स्वः ॥ ३ ॥

[१९१] एकनवत्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—संवननः ॥ देवता—१ अग्निः; २-४ संज्ञानम् ॥ छन्दः—१ विराडनुष्टुप्; २ अनुष्टुप्; ३ त्रिष्टुप्; ४ निचृदनुष्टुप् ॥ स्वरः—१, २, ४ गान्धारः; ३ धैवतः ॥

अथ एकोनपञ्चाशो वर्गः ॥ ४९ ॥

संसमिद्युवसे वृषन्नग्ने विश्वान्यर्य आ ।
इळस्पदे समिध्यसे स नो वसून्या भर ॥ १ ॥
सं गच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनांसि जानताम् ।
देवा भागं यथा पूर्वे संजानाना उपासते ॥ २ ॥
समानो मन्त्रः समितिः समानी समानं मनः सह चित्तमेषाम् ।
समानं मन्त्रमभि मन्त्रये वः समानेन वो हविषा जुहोमि ॥ ३ ॥
समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः ।
समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति ॥ ४ ॥

इत्यष्टमाष्टकेऽष्टमोऽध्यायः ॥

इति दशमं मण्डलम् ॥

इति ऋग्वेदसंहिता ॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अथ ऋग्वेदमन्त्राणां वर्णानुक्रमणी

	म.	सू.	ऋ.
अंशुं दुहन्ति स्तनयन्त	९.	७२.	६
अंसेषु व ऋष्टयः पत्सु	५.	५४.	११
अंसेष्वा मरुतः खादयो	७.	५६.	१३
अंहोयुवस्तन्वस्तन्वते	५.	१५.	३
अकर्म ते स्वपसो अभूम	४.	२.	१९
अकर्मा दस्युरभि नो	१०.	२२.	८
अकारि त इन्द्र गोतमेभि	१.	६३.	९
अकारि ब्रह्म समिवान	४.	६.	११
अकारि वामन्धसो वरीम	६.	६३.	३
अक्रन्ददग्निः स्तनयन्निव	१०.	४५.	४
अक्रविहस्ता सुकृते परस्या	५.	६२.	६
अक्रान्समुद्रः प्रथमे	९.	९७.	४०
अक्रो न बभ्रिः समिथे	३.	१.	१२
अक्षण्वन्तः कर्णवन्तः सखायो	१०.	७१.	७
अक्षन्नमीमदन्त ह्यव	१.	८२.	२
अक्षानहो नह्यतनोत	१०.	५३.	७
अक्षास इदङ्कशिनो नितोदिनो	१०.	३४.	७
अक्षितोतिः सनेदिमं	१.	५.	९
अक्षीभ्यां ते नासिकाभ्यां	१०.	१६३.	१
अक्षेत्रवित्क्षेत्रविदं ह्यप्राट्	१०.	३२.	७
अक्षैर्मा दीव्यः कृषिमित्	१०.	३४.	१३
अक्षोदयच्छवसा क्षाम	४.	१९.	४
अक्षो न चक्रयोः शूर	६.	२४.	३
अक्ष्णश्चिद्भ्रातुवित्तरा	८.	२५.	९
अगच्छतं कृपमाणं परावति	१.	११९.	८
अगच्छदु विप्रतमः सखी	३.	३१.	७
अगन्निन्द्र श्रवो बृहद्	३.	३७.	१०
अगन्म महा नमसा	७.	१२.	१
अगन्व्यूति क्षेत्रमागन्म	६.	४७.	२०
अगस्त्यः खनमानः खनित्रैः	१.	१७९.	६
अग्निं विश्वायुवेपसं	८.	४३.	२५
अग्निं वो देवमग्निभिः	७.	३.	१
अग्निं वो देवयज्यया	८.	७१.	१२
अग्निं वो वृधन्तमध्वराणां	८.	१०२.	७
अग्निं सुदीतिं सुदृशं	३.	१७.	४

	म.	सू.	ऋ.
अगस्त्यस्य नद्भ्यः सप्ती	१०.	६०.	६
अगोरुधाय गविषे शुक्षाय	८.	२४.	२०
अग्न आ याहि वीतये	६.	१६.	१०
अग्न आ याह्यग्निभिर्होतारं	८.	६०.	१
अग्न आवृंपि पवस	९.	६६.	१९
अग्न इळा समिध्यसे	३.	२४.	२
अग्न इन्द्र वरुण मित्र	५.	४१.	२
अग्न इन्द्रश्च दाशुषो	३.	२५.	४
अग्न ओजिष्ठमा भर	५.	१०.	१
अग्नये ब्रह्म ऋभवस्ततक्षु	१०.	८०.	७
अग्ना यो मर्त्यो दुवो	६.	१४.	१
अग्निं घृतेन वावृधुः	५.	१४.	६
अग्निं तं मन्ये यो	५.	६.	१
अग्निं दूतं पुरो दधे	८.	४४.	३
अग्निं दूतं प्रति यदव्रवीतनाश्वः	१.	१६१.	३
अग्निं दूतं वृणीमहे	१.	१२.	१
अग्निं देवासो अग्रिय	६.	१६.	४८
अग्निं देवासो मानुषीषु	२.	४.	३
अग्निं द्वेषो योतवै नो	८.	७१.	१५
अग्निं धीभिर्मनीषिणो	८.	४३.	१९
अग्निं न मा मथितं	८.	४८.	६
अग्निं नरो दीधितिभि	७.	१.	१
अग्निं मन्द्रं पुरुप्रियं	८.	४३.	३१
अग्निं मन्ये पितरमग्निं	१०.	७.	३
अग्निं यन्तुरमप्तुरं	३.	२७.	११
अग्निं वः पूर्व्यं गिरा	८.	३१.	१४
अग्निं वः पूर्व्यं हुवे	८.	२३.	७
अग्निं वर्धन्तु नो गिरो	३.	१०.	६
अग्निं विश ईळते	१०.	८०.	३
अग्निं विश्वा अभि पृक्षः	१.	७१.	७
अग्निरिषां सख्ये ददातु	८.	७१.	१३
अग्निरीशे बृहतः क्षत्रियस्या	४.	१२.	३
अग्निरीशे बृहतो अध्वरस्या	७.	११.	४
अग्निरीशे वसव्यस्या	४.	५५.	८
अग्निरुक्थे पुरोहितो	१०.	१.	१

	म.	सू.	ऋ.
अग्निं सुम्नाय दधिरे	३.	२.	५
अग्निं सूनुं सनश्रुतं	३.	११.	४
अग्निं सूनुं सहसो	८.	७१.	११
अग्निं स्तोमेन बोधय	५.	१४.	१
अग्निं हिन्वन्तु नो धियः	१०.	१५६.	१
अग्निं होतारं प्र वृणे	३.	१९.	१
अग्निं होतारं मन्ये	१.	१२७.	१
अग्निं होतारमीळते	१.	१२८.	८
अग्निः पूर्वेभिर्ऋषिभिरीड्यो	१.	१.	२
अग्निः प्रत्नेन मन्मना	८.	४४.	१२
अग्निः शुचिव्रततमः	८.	४४.	२१
अग्निः सनोति वीर्याणि	३.	२५.	२
अग्निः सप्तिं वाजंभरं	१०.	८०.	१
अग्निनाग्निः समिध्यते	१.	१२.	६
अग्निना तुर्वशं यदुं	१.	३६.	१८
अग्निना रयिमश्नवत्	१.	१.	३
अग्निनेन्द्रेण वरुणेन	८.	३५.	१
अग्निमग्निं वः समिधा	६.	१५.	६
अग्निमग्निं यो अग्रिगुं	८.	६०.	१७
अग्निमग्निं हवीमभिः	१.	१२.	२
अग्निमच्छा देवयतां	५.	१.	४
अग्निमस्तोष्यृग्मिय	८.	३९.	१
अग्निमिन्धानो मनसा	८.	१०२.	२२
अग्निमीळिष्वावसे	८.	७१.	१४
अग्निमीळेन्यं कविं	५.	१४.	५
अग्निमीळे पुरोहितं	१.	१.	१
अग्निमीळे भुजां यविष्ठं	१०.	२०.	२
अग्निमुक्थैरुपयो वि	१०.	८०.	५
अग्निमुषसमश्विना	३.	२०.	१
अग्निरत्रि भरद्वाजं	१०.	१५०.	५
अग्निरप्सातृतीयहं वीरं	६.	१४.	४
अग्निरस्मि जन्मना जातवेदा	३.	२६.	७
अग्निरिद्धि प्रचेता अग्ने	६.	१४.	२
अग्निरिन्द्रो वरुणो मित्रो	१०.	६५.	१
अग्निरिषे पृथुमतीं धियं	१०.	८४.	२

	म.	सू.	ऋ.
अग्निर्ऋषिः पवमानः	९.	६६.	२०
अग्निर्जन्ने सुहार्द रेजमानो	३.	३१.	३
अग्निर्जागार तमृचः	५.	४४.	१५
अग्निर्जाता देवानामग्निर्वेद	८.	३९.	६
अग्निर्जातो अथर्वणा	१०.	२१.	५
अग्निर्जातो अरोचत	५.	१४.	४
अग्निर्जुषत नो गिरो	५.	१३.	३
अग्निर्ददाति सत्पतिं	५.	२५.	६
अग्निर्दाद्रविणं वीरपेशा	१०.	८०.	४
अग्निर्देवेभिर्मनुषश्च	३.	३.	६
अग्निर्देवेषु राजत्यग्नि	५.	२५.	४
अग्निर्देवेषु संवसुः स विक्षु	८.	३९.	७
अग्निर्देवो देवानामभवत्	१०.	१५०.	४
अग्निर्धिया सपर्यतीळो विश्व	३.	२५.	३
अग्निर्धिया स चेतति	३.	११.	३
अग्निर्न ये भाजना	१०.	७८.	२
अग्निर्न यो वन आ	९.	८८.	५
अग्निर्न शुष्कं वनमिन्द्र	६.	१८.	१०
अग्निर्नेता भग इव	३.	२०.	४
अग्निर्नो यज्ञमुप वेतु	५.	११.	४
अग्निर्मूर्धा दिवः ककुत्	८.	४४.	१६
अग्निर्वेद्ये सुवीर्यमग्निः	१.	३६.	१७
अग्निर्हव्यानि जह्नवद्	६.	१६.	३४
अग्निर्ह त्यं जरतः कर्ण	१०.	८०.	३
अग्निर्ह नाम धायि दक्षपस्तमः	१०.	११५.	२
अग्निर्हि जानि पूर्व्यश्छन्दो	८.	७.	३६
अग्निर्हि वाजिनं विशे	५.	६.	२
अग्निर्हि विप्रना निदो	६.	१४.	५
अग्निर्होता कविक्रतुः	१.	१.	५
अग्निर्होता गृहपतिः स राजा	६.	१५.	१३
अग्निर्होता दास्वतः क्षयस्य	५.	९.	२
अग्निर्होता नो अध्वरे	४.	१५.	१
अग्निर्होता न्यसीदद्यु	५.	१.	६
अग्निर्होता पुरोहितो	३.	११.	१
अग्निश्च यन्मरुतो विश्ववेदसो	५.	६०.	७

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अग्निश्रियो मरुतो विश्व	३. २६. ५
अग्निष्वात्ताः पितर एह	१०. १५. ११
अग्निस्तिग्मेन शोचिषा	६. १६. २८
अग्निस्तुविश्रवस्तमं	५. २५. ५
अग्निस्त्रीणि त्रिधातून्या	८. ३९. ९
अग्नीषर्जन्याववतं धियं	६. ५२. १६
अग्नी रक्षांसि सेधति	७. १५. १०
अग्नीषोमा चेति तद्वीर्यं	१. ९३. ४
अग्नीषोमा पिपृतमर्वतो	१. ९३. १२
अग्नीषोमा य आहुतिं	१. ९३. ३
अग्नीषोमा यो अद्य	१. ९३. २
अग्नीषोमावनेन वां	१. ९३. १०
अग्नीषोमाविमं सु मे	१. ९३. १
अग्नीषोमाविमानि नो	१. ९३. ११
अग्नीषोमा वृषणा	१०. ६६. ७
अग्नीषोमा सवेदसा	१. ९३. ९
अग्नीषोमा हविषः	१. ९३. ७
अग्नेः पूर्वे भ्रातरो	१०. ५१. ६
अग्नेः स्तोमं मनामहे	५. १३. २
अग्ने अच्छा वदेह नः	१०. १४१. १
अग्ने अपां समिध्यसे	३. २५. ५
अग्ने कदा त आनुषग्	४. ७. २
अग्ने कविर्वेधा असि	८. ६०. ३
अग्ने केतुर्विशामसि	१०. १५६. ५
अग्ने घृतस्य धीतिभि	८. १०२. १६
अग्ने चिकिद्ध्यस्य न	५. २२. ४
अग्ने जरस्व स्वपत्य	३. ३. ७
अग्ने जरितर्विश्पति	८. ६०. १९
अग्ने जुषस्व नो हविः	३. २८. १
अग्ने जुषस्व प्रति हर्य	१. १४४. ७
अग्ने तमद्याश्वं न स्तोमैः	४. १०. १
अग्ने तव त्यदुक्थ्यं	१. १०५. १३
अग्ने तव त्ये अजरे	८. २३. ११
अग्ने तव श्रवो वयो	१०. १४०. १
अग्ने तृतीये सवने हि	३. २८. ५
अग्ने त्री ते वाजिना	३. २०. २
अग्ने त्वं नो अन्तम	५. २४. १
अग्ने त्वं पारया नव्यो	१. १८९. २
अग्ने त्वं यशा अस्या	८. २३. ३०
अग्ने त्वचं यातुधानस्य	१०. ८७. ५
अग्ने त्वमस्मद्युयोध्यमीवा	१. १८९. ३
अग्ने दा दाशुषे रयिं	३. २४. ५
अग्ने दिवः सूनुरसि	३. २५. १
अग्ने दिवो अर्णमच्छा	३. २२. ३
अग्ने देवाँ इहा वह जज्ञानो	१. १२. ३
अग्ने देवाँ इहा वह सादया	१. १५. ४
अग्ने द्युम्नेन जागृवे	३. २४. ३
अग्ने धृतव्रताय ते	८. ४४. २५
अग्ने नक्षत्रमजरमा	१०. १५६. ४
अग्ने नय सुपथा राये	१. १८९. १
अग्ने नि पाहि नस्त्वं	८. ४४. ११
अग्ने नेमिररीं इव	५. १३. ६
अग्ने पत्नीरिहा वह	१. २२. ९
अग्ने पवस्व स्वपा	९. ६६. २१
अग्ने पावक रोचिषा	५. २६. १
अग्ने पूर्वा अनूषसो	१. ४४. १०
अग्ने बाधस्व वि मृधो	१०. ९८. १२
अग्ने भव सुषमिधा समिद्ध	७. १७. १
अग्ने भूरीणि तव जातवेदो	३. २०. ३
अग्ने भ्रातः सहस्कृत	८. ४३. १६
अग्ने मन्मानि तुभ्यं	८. ३९. ३
अग्ने मन्युं प्रतिनुदन्	१०. १२८. ६
अग्ने मरुद्भिः शुभयद्भि	५. ६०. ८
अग्ने माकिष्टे देवस्य	८. ७१. ८
अग्ने मृळ महाँ असि	४. ९. १
अग्ने यं यज्ञमध्वरं	१. १. ४
अग्ने यजस्व हविषा	२. ९. ४
अग्ने यजिष्ठो अध्वरे	३. १०. ७
अग्ने यत्ते दिवि वर्चः	३. २२. २
अग्ने यदद्य विशो	६. १५. १४
अग्ने याहि दूत्यं मा	७. ९. ५
अग्ने याहि सुशस्तिभि	८. २३. ६
अग्ने युक्ष्वा हि ये	६. १६. ४३
अग्ने रक्षा णो अंहसः	७. १५. १३
अग्नेरप्नसः समिदस्तु	१०. ८०. २
अग्नेरिन्द्रस्य सोमस्य	२. ८. ६
अग्नेर्गायत्र्यभवत्	१०. १३०. ४
अग्नेर्वयं प्रथमस्यामृतानां	१. २४. २
अग्नेर्वमे परि गोभिर्व्ययस्व	१०. १६. ७
अग्ने वाजस्य गोमत	[illegible]
अग्ने विवस्वदुषसश्चित्रं	१. ४४. १
अग्ने विश्वानि वार्या	३. ११. ९
अग्ने विश्वेभिः स्वनीक	६. १५. १६
अग्ने विश्वेभिरग्निभि	३. २४. ४
अग्ने विश्वेभिरा गहि	५. २६. ४
अग्ने वीहि पुरोळाश	३. २८. ३
अग्ने वीहि हविषा यक्षि	७. १७. २
अग्ने वृधान आहुतिं	३. २८. ६
अग्ने शकेम ते वयं	३. २७. ३
अग्ने शर्धन्तमा गणं	५. ५६. १
अग्ने शर्ध महते	५. २८. ३
अग्ने शुक्रेण शोचिषा	१. १२. १२
अग्ने शुक्रेण शोचिषोरु	१०. २१. ८
अग्ने स क्षेषदृतपा	६. ३. १
अग्ने सहन्तमा भर	५. २३. १
अग्ने सहस्व पृतना	३. २४. १
अग्ने सुखतमे रथे	१. १३. ४
अग्ने सुतस्य पीतये	५. ५१. १
अग्ने स्तोमं जुषस्व मे	८. ४४. २
अग्ने हंसि न्यत्रिणं	१०. ११८. १
अग्रं पिबा मधूनां सुतं	४. ४६. १
अग्रेगो राजाप्यस्तविष्यते	९. ८६. ४५
अग्रे बृहन्नुषसामूर्ध्वो	१०. १. १
अग्रे सिन्धूनां पवमानो	९. ८६. १२
अघोरचक्षुरपतिघ्न्येधि	१०. ८५. ४४
अघ्नते विष्णवे वय	८. २५. १२
अङ्गादङ्गाल्लोम्नोलोम्नो	१०. १६३. ६
अङ्गिरसो नः पितरो	१०. १४. ६
अङ्गिरस्वन्ता उत विष्णुवन्ता	८. ३५. १४
अङ्गिरोभिरा गहि यज्ञियेभि	१०. १४. ५
अचिकित्वाञ्चिकितुषश्चिदत्र	१. १६४. ६
अचिक्रदद्वृषा हरिर्महान्	९. २. ६
अचित्ती यच्चकृमा दैव्ये	४. ५४. ३
अचेति दस्रा व्युनाक	१. १३९. ४
अचेति दिवो दुहिता	७. ७८. ४
अचेत्यग्निश्चिकितुर्हव्यवाट्	८. ५६. ५
अचोदसो नो धन्वन्त्विन्दवः	९. ७९. १
अच्छ ऋषे मारुतं गणं	५. ५२. १४
अच्छा कविं नृमणो गा	४. १६. ९
अच्छा कोशं मधुश्चुत	९. ६६. ११
अच्छा गिरो मतयो	७. १०. ३
अच्छा च त्वैना नमसा	८. २१. ६
अच्छा नः शीरशोचिषं	८. ७१. १०
अच्छा नृचक्षा असरत्	९. ९२. २
अच्छा नो अङ्गिरस्तमं	८. २३. १०
अच्छा नो मित्रमहो	६. २. ११
	६. १४. ६
अच्छा नो याह्या वहाभि	६. १६. ४४
अच्छा म इन्द्रं मतयः	१०. ४३. १
अच्छा मही बृहती शंतमा	५. ४३. ८
अच्छायं वो मरुतः श्लोक	७. ३६. ९
अच्छा यो गन्ता नाधमान	४. २९. ४
अच्छा वद तवसं गीर्भिं	५. ८३. १
अच्छा वदा तना गिरा	१. ३८. १३
अच्छा विवक्मि रोदसी	३. ५७. ४
अच्छा वो अग्निमवसे	५. २५. १
अच्छा वोचेय शुशुचान	४. १. १९
अच्छा वो देवीमुषसं	३. ६१. ५
अच्छा समुद्रमिन्दवो	९. ६६. १२
अच्छा सिन्धुं मातृतमा	३. ३३. ३
अच्छा हि त्वा सहसः	८. ६०. २
अच्छा हि सोमः कलशाँ	९. ८१. २
अच्छिद्रा शर्म जरितः	३. १५. ५
अच्छिद्रा सूनो सहसो	१. ५८. ८
अच्युता चिद्वो अज्मन्ना	८. २०. ५
अजा अन्यस्य वह्नयो	६. ५७. ३
अजातशत्रुमजरा स्वर्वत्यनु	५. ३४. १
अजा वृत इन्द्र शूरपत्नी	१. १७४. ३
अजाश्वः पशुपा वाजपस्त्यो	६. ५८. २
अजिरासस्तदप ईयमाना	५. ४७. २
अजिरासो हरयो ये त	८. ४९. ८
अजीजनन्नमृतं मर्त्या	३. २९. १३
अजीजनो अमृत मर्त्येष्वाँ	९. ११०. ४
अजीजनो हि पवमान	९. ११०. ३
अजीतयेऽहतये पवस्व	९. ९६. ४
अजैष्माद्यासनाम० उषो	८. ४७. १८
अजैष्माद्यासनाम० जाग्रत्	१०. १६४. ५
अजो न क्षां दाधार	१. ६७. ३
अजो भागस्तपसा	१०. १६. ४
अजोहवीदश्विना तौग्र्यो	१. ११७. १५

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अजोहवीदश्विना वर्तिका १. ११७. १६
अजोहवीन्नासत्या करा १. ११६. १३
अज्येष्ठासो अकनिष्ठास ५. ६०. ५
अज्रे चिदस्मै कृणुथा ८. २७. १८
अञ्जते व्यञ्जते समञ्जते ९. ८६. ४३
अञ्जन्ति त्वामध्वरे ३. ८. १
अञ्जन्ति यं प्रथयन्तो ५. ४३. ७
अतः परिज्मन्ना गहि १. ६. ९
अतः समुद्रमुद्वत ८. ६. २९
अतः सहस्रनिर्णिजा ८. ८. ११
अत उ त्वा पितुभृतो १०. १. ४
अतप्यमाने अवसावन्ती १. १८५. ४
अतश्चिदिन्द्र ण उपा ८. ९२. १०
अतस्त्वा रयिमभि राजानं ९. ४८. ३
अतारिषुर्भरता गव्यवः ३. ३३. १२
अतारिष्म० पारमस्य प्रति वां १. १८३. ६
१. १८४. ६
अतारिष्म० पारमस्य प्रति स्तोमं ७. ७३. १
अतारिष्म० पारमस्योषा १. ९२. ६
अति तृष्टं ववक्षिथाथैव ३. ९. ३
अति त्री सोम रोचना ९. १७. ५
अतिथिं मानुषाणां सूनुं ८. २३. २५
अति द्रव सारमेयौ १०. १४. १०
अति नः सश्चतो नय १. ४२. ७
अति नो विष्पिता पुरु ८. ८३. ३
अति वा यो मरुतो ६. ५२. २
अति वायो ससतो याहि १. १३५. ७
अति वारान्पवमानो ९. ६०. ३
अतिविद्धा विथुरेणा ८. ९६. २
अति विश्वाः परिष्ठाः १०. ९७. १०
अति श्रिती तिरश्चता ९. १४. ६
अतिष्ठन्तीनामनिवेशनानां १. ३२. १०
अतीदु शक्र ओहत ८. ६९. १४
अतीयाम निदस्तिरः ५. ५३. १४
अतीहि मन्युषाविणं ८. ३२. २१
अतृष्णुवन्तं वियतमबुध्य ४. १९. ३
अतो देवा अवन्तु नो १. २२. १६
अतो न आ नृनतिथीनतः ५. ५०. ३
अतो वयमन्तमेभि १. १६५. ५
अतो विश्वान्यद्भुता १. २५. ११
अत्यं मृजन्ति कलशे ९. ८५. ७
अत्यं हविः सचते ५. ४४. ३
अत्यायातमश्विना ५. ७५. २
अत्या वृधस्नू रोहिता ४. २. ३
अत्यासो न ये मरुतः ७. ५६. १६
अत्या हियाना न हेतृभि ९. १३. ६
अत्यू पवित्रमक्रमीद् ९. ४५. ४
अत्यूर्मिर्मत्सरो मदः ९. १७. ३
अत्यो न हियानो अभि ९. ८६. ३
अत्रा ते रूपमुत्तममपश्यं १. १६३. ७
अत्रा वि नेमिरेषामुरां ८. ३४. ३
अत्राह गोरमन्वत १. ८४. १५
अत्राह तद्वहेथे मध्व १. १३५. ८
अत्राह ते हरिवस्ता ४. २२. ७
अत्रिमनु स्वराज्यमग्नि २. ८. ५
अत्रिर्यद्वामवरोहन्नृबीस ५. ७८. ४
अत्रीणां स्तोममद्रिवो ८. ३६. ६
अत्रेदु मे मंससे सत्यमुक्तं १०. २७. १०
अत्रेरिव शृणुतं पूर्व्यस्तुतिं ८. ३५. १९
अत्रैव वोऽपि नह्याम्युभे १०. १६६. ३
अथा ते अङ्गिरस्तमाग्ने १. ७५. २
अथा ते अन्तमानां १. ४. ३
अथा न उभयेषाममृत १. २६. ९
अदत्रया दयते वार्याणि ५. ४९. ३
अददा अर्भा महते १. ५१. १३
अदब्ध इन्दो पवसे ९. ८५. ३
अदब्धस्य स्वधावतो ८. ४४. २०
अदब्धेभिः सवितः पायु ६. ७१. ३
अदब्धेभिस्तव गोपाभि ६. ८. ७
अदर्दरुत्समसृजो वि ५. ३२. १
अदर्शि गातुरुरवे वरीयसी १. १३६. २
अदर्शि गातुवित्तमो ८. १०३. १
अदान्मे पौरुकुत्स्यः ८. १९. ३६
अदाभ्यः पुरएता विशा ३. ११. ५
अदाभ्येन शोचिषाग्ने १०. ११८. ७
अदाभ्यो भुवनानि प्रचाकशद् ४. ५३. ४
अदितिर्द्यावापृथिवी ऋतं १०. ६६. ४
अदितिर्द्यौरदितिरन्तरिक्ष १. ८९. १०
अदितिर्न उरुष्यत्वदितिः ८. ४७. ९
अदितिर्नो दिवा पशु ८. १८. ६
अदितिर्ह्यजनिष्ट दक्ष १०. ७२. ५
अदिते मित्र वरुणोत २. २७. १४
अदित्सन्तं चिदाघृणे ६. ५३. ३
अदिद्युतत्स्वपाको विभावाग्ने ६. ११. ४
अदृश्रमस्य केतवो वि १. ५०. ३
अदृष्टान्हन्त्यायत्यथो १. १९१. २
अदेदिष्ट वृत्रहा गोपति ३. ३१. २१
अदेवाद्देवः प्रचता गुहा १०. १२४. २
अदेवेन मनसा यो २. २३. १२
अद्यो यद्दारु प्लवते १०. १५५. ३
अद्धीदिन्द्र प्रस्थितेमा १०. ११६. ८
अद्भिः सोम पपृचानस्य ९. ७४. ९
अद्या चिन्नू चित्तदपो ६. ३०. ३
अद्या दूतं वृणीमहे १. ४४. ३
अद्या देवा उदिता १. ११५. ६
अद्याद्या श्वःश्व इन्द्र ८. ६१. १७
अद्या नो देव सवितः ५. ८२. ४
अद्या मुरीय यदि यातुधानो ७. १०४. १५
अद्येदु प्राणीदममन्निमाहा १०. ३२. ८
अद्रिणा ते मन्दिन इन्द्र १०. २८. ३
अद्रिभिः सुतः पवते ९. ७१. ३
अद्रिभिः सुतः पवसे ९. ८६. २३
अद्रिभिः सुतो मतिभिश्च ९. ७५. ४
अद्रोघमा वहोशतो यविष्ठ्य ८. ६०. ४
अद्रोघ सत्यं तव तन्महित्वं ३. ३२. ९
अद्वेषो अद्य बर्हिषः १०. ३५. ९
अद्वेषो नो मरुतो गातु ५. ८७. ८
अधः पश्यस्व मोपरि संतरां ८. ३३. १९
अध क्रत्वा मघवन्तुभ्यं ५. २९. ५
अध क्षपा परिष्कृतो ९. ९९. २
अध ग्मन्ता नहुषो हवं १. १२२. ११
अध ग्मन्तोशना पृच्छते १०. २२. ६
अध जिह्वा पापतीति ६. ६. ५
अध ज्मो अध वा दिवो ८. १. १८
अध ते विश्वमनु १. ५७. २
अध त्यं द्रप्सं विभ्वं १०. ११. ४
अध त्वमिन्द्र विद्ध्यस्मान् १०. ६१. २२
अध त्वष्टा ते मह उग्र ६. १७. १०
अध त्वा विश्वे पुर इन्द्र ६. १७. ८
अध त्विषीमाँ अभ्योजसा २. २२. २
अध द्युतानः पित्रोः ४. ५. १०
अध द्यौश्चित्ते अप सा नु ६. १७. ९
अध द्रप्सो अंशुमत्या ८. ९६. १५
अध धारया मध्वा ९. ९७. ११
अध प्र जज्ञे तरणि १. १२१. ६
अध प्रियमिषिराय षष्टिं ८. ४६. २९
अध प्लायोगिरति दास ८. १. ३३
अध यच्चारये गणे ८. ४६. ३१
अध यदिमे पवमान ९. ११०. ९
अध यद्राजाना गविष्टौ १०. ६१. २३
अध श्रुतं कवषं वृद्ध ७. १८. १२
अध श्वेतं कलशं गोभिरक्तं ९. ७४. ८
अध श्वेतं कलशं गोभिरक्त ४. २७. ५
अध स्म यस्यार्चयः ५. ९. ५
अध स्मा ते चर्षणयो ६. २५. ७
अध स्मा न उदवता २. ३१. २
अध स्मा नो वृधे ६. ४६. ११
अध स्मास्य पनयन्ति ६. १२. ५
अध स्या योषणा मही ८. ४६. ३३
अध स्वनादुत बिभ्युः १. ९४. ११
अध स्वनान्मरुतां १. ३८. १०
अध स्वप्नस्य निर्विदे १. १२०. १२
अधाकृणोः पृथिवीं संदृशे २. १३. ५
अधाकृणोः प्रथमं वीर्यं २. १७. ३
अधा गाव उपमातिं १०. ६१. २१
अधा चिन्नु यद्दिधिषामहे १०. १३२. ३
अधा ते अप्रतिष्कुतं ८. ९३. १२
अधा त्वं हि नस्करो ८. ८४. ६
अधा नरो न्योहतेऽधा ५. ५२. ११
अधा नो विश्वसौभग १. ४२. ६
अधा न्वस्य जेन्यस्य १०. ६१. २४
अधा न्वस्य संदृशं ७. ८८. २
अधा मन्ये बृहदसुर्यमस्य ६. ३०. २
अधा मन्ये श्रत्ते अस्मा १. १०४. ७
अधा मही न आयस्यनाधृष्टो ७. १५. १४
अधा मातुरुषसः सप्त ४. २. १५
अधा यथा नः पितरः ४. २. १६
अधायि धीतिरससृग्र १०. ३१. ३
अधा यो विश्वा भुवनाभि २. १७. ४
अधाय्यग्निर्मानुषीषु ३. ५. ३

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अनु त्रितस्य युध्यतः	८. ७. २४
अनु त्वा मही पाजसी	१. १२१. ११
अनु त्वा रथो अनु मर्यो	१. १६३. ८
अनु त्वा रोदसी उभे ऋक्ष	८. ७६. ११
अनु त्वा रोदसी उभे चक्रं	८. ६. ३८
अनु त्वाहिघ्ने अव देव	६. १८. १४
अनु द्यावापृथिवी तत्त	६. १८. १५
अनु द्रप्सास इन्दव आपो	९. ६. ४
अनु द्वा जहिता नयोऽन्धं	४. ३०. १९
अनु पूर्वाण्योक्या	८. २५. १७
अनु प्रत्नस्यौकसः	८. ६९. १८
अनु प्रत्नस्यौकसो	१. ३०. ९
अनु प्रत्नास आयवः	९. २३. २
अनु प्र येजे जन ओजो	६. ३६. २
अनु यदीं मरुतो मन्दसान	५. २९. २
अनुव्रताय रन्धयन्नपव्रता	१. ५१. ९
अनु श्रुताममतिं वर्धदुर्वीं	५. ६२. ५
अनुस्पष्टो भवत्येषो	१०. १६०. ४
अनु स्वधामक्षरन्नापो	१. ३३. ११
अनु हि त्वा सुतं सोम	९. ११०. २
अनूनोदत्र हस्तयतो अद्रि	५. ४५. ७
अनूपे गोमान्गोभिरक्षाः	९. १०७. ९
अनृक्षरा ऋजवः सन्तु	१०. ८५. २३
अनेनो वो मरुतो यामो	६. ६६. ७
अनेहसं प्रतरणं विवक्षणं	८. ४९. ४
अनेहसं वो हवमानमूतये	८. ५०. ४
अनेहो दात्रमदितेरनर्वं	१. १८५. ३
अनेहो न उरुव्रज	८. ६७. १२
अनेहो मित्रार्यमन्नृवद्वरुण	८. १८. २१
अन्तरिक्षप्रां रजसो विमानी	१०. ९५. १७
अन्तरिक्षेण पतति	१०. १३६. ४
अन्तरिक्षे पथिभिरीयमानो	१०. १६८. ३
अन्तरिच्छन्ति तं जने	८. ७२. ३
अन्तरैश्चक्रैस्तनयाय	६. ६२. १०
अन्तर्भूतो रोदसी दस्म	३. ३. २
अन्तर्यच्छ जिघांसतो	१०. १०२. ३
अन्तर्ह्यग्न ईयसे	२. ६. ७
अन्तश्च प्रागा अदिति	८. ४८. २
अन्तश्चरति रोचनास्य	१०. १८९. २
अन्ति चित्सन्तमह यज्ञं	८. ११. ४
अन्तिवामा दूरे अमित्र	७. ७७. ४
अन्यदद्य कर्वरमन्यदु	६. २४. ५
अन्यमस्मद्भिया इयमग्ने	८. ७५. १३
अन्यमू षु त्वं यम्यन्य	१०. १०. १४
अन्यव्रतममानुष	८. ७०. ११
अन्यस्या वत्सं रिहती	३. ५५. १३
अन्या वो अन्यामव	१०. ९७. १४
अन्ये जायां परि मृशन्त्यस्य	१०. ३४. ४
अन्यो अन्यमनु गृभ्णात्येनो	७. १०३. ४
अन्वपां खान्यतृन्तमोजसा	७. ८२. ३
अन्वस्य स्थूरं ददृशे	८. १. ३४
अन्वह मासा अन्विद्वना	१०. ८९. १३
अन्वेको वदति यद्ददाति	२. १३. ३
अपघ्नन्तो अराव्णः पवमानाः	९. १३. ९
अपघ्नन्त्सोम रक्षसोऽभ्यर्ष	९. ६३. २९
अपघ्नन्नेषि पवमान	९. ९६. २३
अपघ्नन्पवते मृधोऽप	९. ६१. २५
अपघ्नन्पवसे मृधः क्रतु	९. ६३. २४
अप ज्योतिषा तमो	१०. ६८. ५
अप त्यं परिपन्थिनं	१. ४२. ३
अप त्यं वृजिनं रिपुं	६. ५१. १३
अप त्या अस्थुरनिरा	८. ४८. ११
अप त्ये तायवो यथा	१. ५०. २
अप द्वारा मतीनां प्रत्ना	९. १०. ६
अप नः शोशुचदघमग्ने	१. ९७. १
अप प्राच इन्द्र विश्वाँ	१०. १३१. १
अप योरिन्द्रः पापज	१०. १०५. ३
अपश्चिदेष विभ्वो दमूनाः	३. ३१. १६
अपश्यं गोपामनिपद्यमान	१. १६४. ३१
	१०. १७७. ३
अपश्यं ग्रामं वहमान	१०. २७. १९
अपश्यं त्वा मनसा चेकितानं	१०. १८३. १
अपश्यं त्वा मनसा दीध्यानां	१०. १८३. २
अपश्यमस्य महतो	१०. ७५. १
अप स्वसुरुषसो नग्जिहीते	७. ७१. १
अप हत रक्षसो भङ्गुरावतः	१०. ७६. ४
अपां गर्भं दर्शतमोषधीनां	३. १. १३
अपां नपातमवसे	१. २२. ६
अपां नपादा ह्यस्यादुपस्थं	२. ३५. ९
अपां पेरुं जीवधन्यं भरामहे	१०. ३६. ८
अधारयतं पृथिवीमुत	५. ६२. ३
अधारयन्त वह्नयो	१. २०. ८
अधासु मन्द्रो अरति	१०. ६१. २०
अधा ह यद्वयमग्ने	४. २. १४
अधा ह यन्तो अश्विना	७. ७४. ५
अधा हि काव्या युवं	५. ६६. ४
अधा हिन्वान इन्द्रियं	९. ४८. ५
अधा हि विक्ष्वीड्योऽसि	६. २. ७
अधा हीन्द्र गिर्वण	८. ९८. ७
अधा होता न्यसीदो	६. १. २
अधा ह्यग्न एषां	५. १६. ४
अधा ह्यग्ने क्रतोर्भद्रस्य	४. १०. २
अधा ह्यग्ने मह्ना निषद्या	१०. ६. ७
अधि द्यामस्थाद्वृषभो	९. ८५. ९
अधि द्वयोरदधा उक्थ्यं	१. ८३. ३
अधि न इन्द्रैषां	८. ८३. ७
अधि पुत्रोपमश्रवो	१०. ३३. ७
अधि पेशांसि वपते	१. ९२. ४
अधि वृवुः पणीनां	६. ४५. ३१
अधि यदस्मिन्वाजिनीव	९. ९४. १
अधि यस्तस्थौ केशवन्ता	१०. १०५. ५
अधि या बृहतो दिवोऽभि	८. २५. ७
अधि श्रियं नि दधुश्चारु	१. ७२. १०
अधि श्रिये दुहिता सूर्यस्य	६. ६३. ५
अधि सानौ नि जिघ्नते	१. ८०. ६
अधीरुवत्र सप्ततिं च	१०. ९३. १५
अधीव यद्गिरीणां यामं	८. ७. १४
अधीवासं परि मातू	१. १४०. ९
अधुक्षत प्रियं मधु धारा	९. २. ३
अधुक्षत्पिप्युषीमिषमूर्जं	८. ७२. १६
अधेनुं दस्रा स्तर्यं	१. ११७. २०
अध्वर्यवः कर्तना श्रुष्टिमस्मै	२. १४. ९
अध्वर्यवः पयसोधर्यथा	२. १४. १०
अध्वर्यवश्चकृवांसो मधूनि	५. ४३. ३
अध्वर्यवा तु हि षिञ्च सोमं	८. ३२. २४
अध्वर्यवोऽप इता समुद्र	१०. ३०. ३
अध्वर्यवो भरतेन्द्राय	२. १४. १
अध्वर्यवो यः शतं	२. १४. ६
अध्वर्यवो यः शतमा	२. १४. ७
अध्वर्यवो यः स्वस्रं	२. १४. ५
अध्वर्यवो य उरणं	२. १४. ४
अध्वर्यवो यन्नरः कामयाध्वे	२. १४. ८
अध्वर्यवो यो अपो	२. १४. २
अध्वर्यवो यो दिव्यस्य	२. १४. ११
अध्वर्यवो यो दृभीकं	२. १४. ३
अध्वर्यवोऽरुणं दुग्धमंशुं	७. ९८. १
अध्वर्यवो हविष्मन्तो	१०. ३०. २
अध्वर्युं वा मधुपाणिं	१०. ४१. ३
अध्वर्युभिः पञ्चभिः सप्त	३. ७. ७
अध्वर्यो अद्रिभिः सुतं	९. ५१. १
अध्वर्यो द्रावया त्वं	८. ४. ११
अध्वर्यो वीर प्र महे	६. ४४. १३
अनच्छये तुरगातु जीव	१. १६४. ३०
अनप्तमप्सु दुष्टरं सोमं	९. १६. ३
अनमीवा उषस आ चरन्तु	१०. ३५. ६
अनमीवास इळया मदन्तो	३. ५९. ३
अनर्वाणं वृषभं मन्द्रजिह्वं	१. १९०. १
अनर्वाणो ह्येषां पन्था	८. १८. २
अनर्शरातिं वसुदामुप	८. ९९. ४
अनवद्यैरभिद्युभिर्मखः	१. ६. ८
अनवस्ते रथमश्वाय	५. ३१. ४
अनश्वो जातो अनभीशुरर्वा	१. १५२. ५
अनश्वो जातो अनभीशुरुक्थ्यो	४. ३६. १
अनस्वन्ता सत्पतिर्मामहे	५. २७. १
अनागसो अदितये देवस्य	५. ८२. ६
अनाधृष्टानि धृषितो	१०. १३८. ४
अनानुदो वृषभो जग्मि	२. २३. ११
अनानुदो वृषभो दोधतो	२. २१. ४
अनायतो अनिबद्धः कथायं	४. १३. ५
	४. १४. ५
अनारम्भणे तदवीरयेथा	१. ११६. ५
अनिरेण वचसा फल्गुनेन	४. ५. १४
अनुकामं तर्पयेथामिन्द्रावरुण	१. १७. ३
अनु कृष्णे वसुधिती जिहाते	३. ३१. १७
अनु कृष्णे वसुधिती येमाते	४. ४८. ३
अनु तदुर्वी रोदसी जिहाता	७. ३४. २४
अनु तन्नो जास्पतिर्मंसीष्ट	७. ३८. ६
अनु ते दायि मह	६. २५. ८
अनु ते शुष्मं तुरयन्त	८. ९९. ६
अनुत्तमा ते मघवन्	१. १६५. ९

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अपां फेनेन नमुचेः	८. १४. १३
अपां मध्ये तस्थिवांसं	७. ८९. ४
अपाः पूर्वेषां हरिवः	१०. ९६. १३
अपाः सोममस्तमिन्द्र	३. ५३. ६
अपागूहन्नमृतां मर्त्येभ्यः	१०. १७. २
अपाङ् प्राङेति स्वधया	१. १६४. ३८
अपादहस्तो अपृतन्यदिन्द्र	१. ३२. ७
अपादित उदु नश्चित्रतमो	६. ३८. १
अपादिन्द्रो अपादग्निर्विश्वे	८. ६९. ११
अपादु शिप्र्यन्धसः	८. ९२. ४
अपादेति प्रथमा पद्वतीनां	१. १५२. ३
अपाद्धोत्रादुत पोत्रादमत्तोत	२. ३७. ४
अपाधमदभिशस्तीरशस्ति	८. ८९. २
अपान्यदेत्यभ्यन्यदेति	१. १२३. ७
अपामतिष्ठद्धरुणह्वरं	१. ५४. १०
अपाम सोममृता	८. ४८. ३
अपामिदं न्ययनं समुद्रस्य	१०. १४२. ७
अपामिवेदूर्मयस्तर्तुराणाः	९. ९५. ३
अपामीवां सविता साविषन्	१०. १००. ८
अपामीवामप विश्वामनाहुति	१०. ६३. १२
अपामीवामप स्त्रिधमप	८. १८. १०
अपामुपस्थे महिषा अगृभ्णत	६. ८. ४
अपामूर्मिर्मदन्निव	८. १४. १०
अपाय्यस्यान्धसो मदाय	२. १९. १
अपारो वो महिमा वृद्ध	५. ८७. ६
अपि पन्थामगन्महि	६. ५१. १६
अपिबत्कद्रुवः सुतमिन्द्रः	८. ४५. २६
अपि वृश्च पुराणवद्वृतते	८. ४०. ६
अपि ष्टुतः सविता देवो	७. ३८. ३
अपूर्व्या पुरुतमान्यस्मै	६. ३२. १
अपेत वीत वि च सर्पतातो	१०. १४. ९
अपेन्द्र द्विषतो मनोऽप	१०. १५२. ५
अपेहि मनसस्पतेऽप	१०. १६४. १
अपो देवीरुप ह्वये	१. २३. १८
अपो महीरभिशस्तेरमुञ्चो	१०. १०४. ९
अपो यदद्रिं पुरुहूत	४. १६. ८
अपो वसानः परि कोश	९. १०७. २६
अपो वृत्रं वव्रिवांसं	४. १६. ७
अपोषा अनसः सरत्	४. ३०. १०
अपो षु ण इयं शरु	८. ६७. १५
अपो सु म्यक्ष वरुण	२. २८. ६
अपो ह्येषामजुषन्त	४. ३३. ९
अप्तूर्ये मरुत आपिरेषो	३. ५१. ९
अप्नस्वतीमश्विना वाचमस्मे	१. ११२. २४
अप्रक्षितं वसु बिभर्षि	१. ५५. ८
अप्रतीतो जयति सं	४. ५०. ९
अप्रयुच्छन्नप्रयुच्छद्भिरग्ने	१. १४३. ८
अप्रामिसत्य मघवन्तथेदस	८. ६१. ४
अप्सरसां गन्धर्वाणां	१०. १३६. ६
अप्सरा जारमुपसिष्मियाणा	१०. १२३. ५
अप्सा इन्द्राय वायवे	९. ६५. २०
अप्सु त्वा मधुमत्तमं	९. ३०. ५
अप्सु धूतस्य हरिवः पिबेह	१०. १०४. २
अप्सु मे० विश्वशंभुवमापश्च	१. २३. २०
अप्सु मे० विश्वशंभुवम्	१०. ९. ६
अप्स्वग्ने सधिष्टव सौषधी	८. ४३. ९
अप्स्वन्तरमृतमप्सु	१. २३. १९
अबुध्ने राजा वरुणो	१. २४. ७
अबुध्रमु त्य इन्द्रवन्तो	१०. ३५. १
अबोधि जार उषसा	७. ९. १
अबोधि होता यजथाय	५. १. २
अबोध्यग्निः समिधा जनानां	५. १. १
अबोध्यग्निर्ज्म उदेति सूर्यो	१. १५७. १
अभागः सन्नप परेतो	१०. ८३. ५
अभि कण्वा अनूषतापो	८. ६. ३४
अभि क्रत्वेन्द्र भूरध ज्मन्न	७. २१. ६
अभिक्रन्दन्कलशं	९. ८६. ११
अभि क्रन्द स्तनय गर्भमा	५. ८३. ७
अभि क्षिपः समग्मत	९. १४. ७
अभिख्या नो मघवन्	१०. ११२. १०
अभि गन्धर्वमतृणदबुध्नेषु	८. ७७. ५
अभि गव्यानि वीतये	९. ६२. २३
अभि गावो अधन्विषुरापो	९. २४. २
अभि गावो अनूषत	९. ३२. ५
अभि गोत्राणि सहसा	१०. १०३. ७
अभि जैत्रीरसचन्त	३. ३१. ४
अभि तष्टेव दीधया	३. ३८. १
अभि ते मधुना पयो	९. ११. २
अभि त्यं गावः पयसा	[illegible]
अभि त्यं पूर्व्यं मदं	९. ६. ३
अभि त्यं मद्यं मद	९. ६. २
अभि त्यं मेषं पुरुहूत	१. ५१. १
अभि त्यं वीरं गिर्वणस	६. ५०. ६
अभि त्रिपृष्ठं वृषणं	९. ९०. २
अभि त्वा गोतमा गिरा जातवेदो	१. ७८. १
अभि त्वा गोतमा गिरानूषत	४. ३२. ९
अभि त्वा देवः सविताभि	१०. १७४. ३
अभि त्वा देव सवितरीशानं	१. २४. ३
अभि त्वा नक्तीरुषसो	२. २. २
अभि त्वा पाजो रक्षसो	६. २१. ७
अभि त्वा पूर्वपीतय	८. ३. ७
अभि त्वा पूर्वपीतये	१. १९. ९
अभि त्वा योषणो दश	९. ५६. ३
अभि त्वा वृषभा सुते	८. ४५. २२
अभि त्वा शूर नोनुमो	७. ३२. २२
अभि त्वा सिन्धो शिशुमिन्न	१०. ७५. ४
अभि द्यां महिना भुवमभीमां	१०. ११९. ८
अभि द्युम्नं बृहद्यश	९. १०८. ९
अभि द्युम्नानि वनिन	३. ४०. ७
अभि द्रोणानि बभ्रवः	९. ३३. २
अभि द्विजन्मा त्रिवृदन्न	१. १४०. २
अभि द्विजन्मा त्री रोचनानि	१. १४९. ४
अभि न इळा यूथस्य	५. ४१. १९
अभिनक्षन्तो अभि ये	२. २४. ६
अभि नो देवीरवसा	१. २२. ११
अभि नो नर्यं वसु वीरं	६. ५३. २
अभि नो वाजसातमं	९. ९८. १
अभि प्र गोपतिं गिरेन्द्रमर्च	८. ६९. ४
अभि प्र ददुर्जनयो न	४. १९. ५
अभि प्र भर धृषता	८. ८९. ४
अभि प्रयांसि वाहसा	३. ११. ७
अभि प्रयांसि सुधितानि	६. १५. १५
अभि प्र वः सुराधस	८. ४९. १
अभि प्रवन्त समनेव	४. ५८. ८
अभि प्र स्थाताहेव यज्ञं	७. ३४. ३
अभि प्रियाणि काव्या	९. ५७. २
अभि प्रियाणि पवते चनोहितो	९. ७५. १
अभि प्रियाणि पवते पुनानो	९. ९७. १२
अभि प्रिया दिवस्पदा	९. १०. ९
अभि प्रिया दिवस्पदा	९. १२. ८
अभि प्रिया मरुतो या	८. २७. ६
अभि प्रेहि दक्षिणतो	१०. ८३. ७
अभि ब्रह्मीरनूषत यह्वी	९. ३३. ५
अभिभुवेऽभिभङ्गाय	२. २१. २
अभिभूरहमागमं विश्व	१०. १६६. ४
अभि यं देवी निर्ऋति	७. ३७. ७
अभि यं देव्यदितिर्गृणाति	७. ३८. ४
अभि यज्ञं गृणीहि नो	१. १५. ३
अभि ये त्वा विभावरि	५. ७९. ४
अभि ये मिथो वनुषः	७. ३८. ५
अभि यो महिना दिवं	३. ५९. ७
अभि वस्त्रा सुवसनान्यर्षाभि	९. ९७. ५०
अभि वह्नय ऊतयेऽनूषत	८. १२. १५
अभि वह्निरमर्त्यः सप्त	९. ९. ६
अभि वां नूनमश्विना	७. ६७. ३
अभि वायुं वीत्यर्षा	९. ९७. ४९
अभि विप्रा अनूषत गावो	९. १२. २
अभि विप्रा अनूषत मूर्धन्	९. १७. ६
अभि विश्वानि वार्याभि	९. ४२. ५
अभिवृत्य सपत्नानभि	१०. १७४. २
अभि वेना अनूषतेयक्षन्ति	९. ६४. २१
अभि वो अर्चे पोष्यावतो	५. ४१. ८
अभि वो देवीं धियं	७. ३४. ५
अभि वो वीरमन्धसो	८. ४६. १४
अभि व्ययस्व खदिरस्य	३. ५३. १९
अभि व्रजं न तत्निषे	८. ६. २५
अभिव्लग्या चिदद्रिवः	१. १३३. २
अभि श्यावं न कृशनेभि	१०. ६८. ११
अभिष्टने ते अद्रिवो	१. ८०. १४
अभिष्टये सदावृधं स्वर्मीळ्हेषु	८. ६८. ५
अभि सिध्मो अजिगादस्य	१. ३३. १३
अभि सुवानास इन्दवो	९. १७. २
अभि सूयवसं नय	१. ४२. ८
अभि सोमास० पवन्ते	९. २३. ४
अभि सोमास० समुद्रस्याधि	९. १०७. १४
अभि स्वपूभिर्मिथो वपन्त	७. ५६. २
अभि स्वरन्तु ये तव	८. १३. २८
अभि स्ववृष्टिं मदे अस्य	१. ५२. ५
अभि हि सत्य सोमपा	८. ९८. ५
अभीक आसां पदवी	३. ५६. ४

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अभीदमेकमेको अस्मि	१०. ४८. ७
अभी न आ ववृत्स्व	४. ३१. ४
अभी नवन्ते अद्रुहः	९. १००. १
अभी नो अग्न उक्थ	१. १४०. १३
अभी नो अर्ष दिव्या	९. ९७. ५१
अभीममघ्न्या उत	९. १. ९
अभीमवन्वन्त्स्वभिष्टि	१. ५१. २
अभीमृतस्य दोहना अनूषत	१. १४४. २
अभीमृतस्य विष्टपं दुहते	९. ३४. ५
अभीवर्तेन हविषा येनेन्द्रो	१०. १७४. १
अभीवृतं कृशानैर्विश्वरूपं	१. ३५. ४
अभी षतस्तदा भरेन्द्र	७. ३२. २४
अभी षु णः सखीना	४. ३१. ३
अभी षु णस्त्वं रयिं	८. ९३. २१
अभी ष्वर्यः पौंस्यैर्भवेम	१०. ५९. ३
अभीहि मन्यो तवस	१०. ८३. ३
अभुत्स्यु प्र देव्या	८. ९. १६
अभूदिदं वयुनमो षु	१. १८२. १
अभूदु पारमेतवे पन्था	१. ४६. ११
अभूदु भा उ अंशवे	१. ४६. १०
अभूदु वो विधते रत्नधेय	४. ३४. ४
अभूदुषा इन्द्रतमा	७. ७९. ३
अभूदुषा रुशत्पशुराग्नि	५. ७५. ९
अभूद्देवः सविता वन्द्यो	४. ५४. १
अभूरु वीर गिर्वणो महाँ	६. ४५. १३
अभूरेको रयिपते रयी	६. ३१. १
अभूर्वौक्षीर्व्यु आयुरानट्	१०. २७. ७
अभ्यभि हि श्रवसा	९. ११०. ५
अभ्यर्च नभाकवदिन्द्राग्नी	८. ४०. ४
अभ्यर्षत सुहुतिं गव्य	४. ५८. १०
अभ्यर्ष बृहद्यशो मघवद्भ्यो	९. २०. ४
अभ्यर्ष महानां देवानां	९. १. ४
अभ्यर्ष विचक्षण पवित्रं	९. ५१. ५
अभ्यर्ष सहस्रिणं रयिं	९. ६३. १२
अभ्यर्ष स्वायुध सोम	९. ४. ७
अभ्यर्षानपच्युतो रयिं	९. ४. ८
अभ्यवस्थाः प्र जायन्ते	५. १९. १
अभ्यारमिदद्रयो निषिक्तं	८. ७२. ११
अभ्यूर्णोति यन्नग्नं भिषक्ति	८. ७९. २
अभ्रप्रुषो न वाचा प्रुषा	१०. ७७. १
अभ्राजि शर्धो मरुतो	५. ५४. ६
अभ्रातरो न योषणो	४. ५. ५
अभ्रातृव्यो अना त्वमनापि	८. २१. १३
अभ्रातेव पुंस एति	१. १२४. ७
अमन्थिष्टां भारता रेवदग्निं	३. २३. २
अमन्दन्मा मरुतः स्तोमो	१. १६५. ११
अमन्दान्त्स्तोमान्त्र भरे	१. १२६. १
अमन्महीदनाशवो	८. १. १४
अमाजुरश्चिद्भवथो युवं	१०. ३९. ३
अमाजूरिव पित्रोः सचा	२. १७. ७
अमादेषां भियसा भूमि	५. ५९. २
अमाय वो मरुतो यातवे	८. २०. ६
अमित्रहा विचर्षणिः पवस्व	९. ११. ७
अमित्रायुधो मरुतामिव	३. २९. १५
अमिनती दैव्यानि व्रतानि	१. १२४. २
अमी य ऋक्षा निहितास	१. २४. १०
अमी ये देवाः स्थन	१. १०५. ५
अमी ये पञ्चोक्षणो	१. १०५. १०
अमी ये सप्त रश्मय	१. १०५. ९
अमीवहा वास्तोष्पते विश्वा	७. ५५. १
अमीषां चित्तं प्रतिलोभयन्ती	१०. १०३. १२
अमूरः कविरदितिर्विवस्वान्	७. ९. ३
अमूरा विश्वा वृषणाविमा	७. ६१. ५
अमूरो होता न्यसादि	४. ६. २
अमूर्या उप सूर्ये	१. २३. १७
अमृक्तेन रुशता वाससा	९. ६९. ५
अमृतं जातवेदसं तिर	८. ७४. ५
अमेव नः सुहवा आ हि	२. ३६. ३
अम्बयो यन्त्यध्वभि	१. २३. १६
अम्बितमे नदीतमे देवितमे	२. ४१. १६
अम्यक्सा त इन्द्र ऋष्टि	१. १६९. ३
अयं कविरकविषु प्रचेता	७. ४. ४
अयं कृणुष्व गृभीतो	८. ७९. १
अयं घ स तुरो मद	१०. २५. १०
अयं चक्रमिषणत्सूर्यस्य	४. १७. १४
अयं जायत मनुषो	१. १२८. १
अयं त आघृणे सुतो	९. ६७. १२
अयं त इन्द्र सोमो	८. १७. ११
अयं त एमि तन्वा	८. १००. १
अयं ते अस्तु हर्यतः	३. ४४. १
अयं ते अस्म्युप	१०. ८३. ६
अयं ते मानुषे जने	८. ६४. १०
अयं ते योनिर्ऋत्वियो	३. २९. १०
अयं ते शर्यणावति	८. ६४. ११
अयं ते स्तोमो अग्रियो	१. १६. ७
अयं दक्षाय साधनो	९. १०५. ३
अयं दशस्यन्नर्येभिरस्य	१०. ९९. १०
अयं दिव इयर्ति विश्वमा	९. ६८. ९
अयं दीर्घाय चक्षसे	८. १३. ३०
अयं देवः सहसा जायमान	६. ४४. २२
अयं देवानामपसामपस्तमो	१. १६०. ४
अयं देवाय जन्मने	१. २०. १
अयं देवेषु जागृविः	९. ४४. ३
अयं द्यावापृथिवी वि	६. ४४. २४
अयं द्योतयदद्युतो	६. ३९. ३
अयं नाभा वदति वल्गु	१०. ६२. ४
अयं निधिः सरमे अद्रिबुध्नो	१०. १०८. ७
अयं नो विद्वान्वनवद्	९. ७७. ४
अयं पन्था अनुवित्तः	४. १८. १
अयं पुनान उषसो वि	९. ८६. २१
अयं पूषा रयिर्भगः	९. १०१. ७
अयं भराय सानसि	९. १०६. २
अयं मतवाञ्छकुनो	९. ८६. १३
अयं मातायं पितायं	१०. ६०. ७
अयं मित्रस्य वरुणस्य	१. ९४. १२
अयं मित्राय वरुणाय	१. १३६. ४
अयं मित्रो नमस्यः	३. ५९. ४
अयं मे पीत उदियर्ति	६. ४७. ३
अयं मे हस्तो भगवानयं	१०. ६०. १२
अयं यः सृञ्जये पुरो	४. १५. ४
अयं यज्ञो देवया अयं	१. १७७. ४
अयं यथा न आभुवत्	८. १०२. ८
अयं योनिश्चकृमा यं	४. ३. २
अयं यो वज्रः पुरुधा	१०. २७. २१
अयं यो होता किरु	१०. ५२. ३
अयं रोचयदरुचो रुचानो	६. ३९. ४
अयं वां कृष्णो अश्विना	८. ८५. ३
अयं वां घर्मो अश्विना	८. ९. ४
अयं वां परि षिच्यते	४. ४९. २
अयं वां भागो निहितो	८. ५७. ४
अयं वां मधुमत्तमः	१. ४७. १
अयं वां मित्रावरुणा	२. ४१. ४
अयं वामद्रिभिः सुतः	८. २२. ८
अयं विचर्षणिर्हितः	९. ६२. १०
अयं विदच्चित्रदृशीकमर्णः	६. ४७. ५
अयं विप्राय दाशुषे	१०. २५. ११
अयं विश्वा अभि श्रियो	८. १०२. ९
अयं विश्वानि तिष्ठति	९. ५४. ३
अयं वृतश्चातयते समीचीर्य	४. १७. ९
अयं वेनश्चोदयत्पृश्निगर्भा	१०. १२३. १
अयं वो यज्ञ ऋभवो	४. ३४. ३
अयं शृण्वे अध जयन्नुत	४. १७. १०
अयं समह मा तनूह्याते	१. १२०. ११
अयं स यस्य शर्मन्न	१०. ६. १
अयं स यो दिवस्परि	९. ३९. ४
अयं स यो वरिमाणं	६. ४७. ४
अयं स शिङ्क्ते येन	१. १६४. २९
अयं सहस्रमृषिभिः	८. ३. ४
अयं स होता यो द्विजन्मा	१. १४९. ५
अयं सु तुभ्यं वरुण	७. ८६. ८
अयं सूर्य इवोपदृगयं	९. ५४. २
अयं सो अग्निराहुतः	७. १. १६
अयं सो अग्निर्यस्मिन्	३. २२. १
अयं सोमः कपर्दिने	९. ६७. ११
अयं सोम इन्द्र तुभ्यं सुन्व	७. २९. १
अयं सोम इन्द्र तुभ्यं सुन्वे	९. ८८. १
अयं सोमश्चमू सुतोऽमत्रे	५. ५१. ४
अयं स्तुतो राजा वन्दि	१०. ६१. १६
अयं स्वादुरिह मदिष्ठ	६. ४७. २
अयं ह यद्वां देवया उ	७. ६८. ४
अयं ह येन वा इदं	८. ७६. ४
अयं हि ते अमर्त्य	१०. १४४. १
अयं हि नेता वरुण	७. ४०. ४
अयं होता प्रथमः	६. ९. ४
अयमकृणोदुषसः सुपत्नी	६. ४४. २३
अयमग्निः सहस्रिणो	८. ७५. ४
अयमग्निः सुवीर्यस्येशे	३. १६. १
अयमग्निरुरुष्यत्यमृताद्	१०. १७६. ४
अयमग्निर्वध्र्यश्वस्य	१०. ६९. १२
अयमग्ने जरिता त्वे	१०. १४२. १

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अयमग्ने त्वे अपि ८. ४४. २८
अयमस्मान्वनस्पतिर्मा ३. ५३. २०
अयमस्मासु काव्य १०. १४४. २
अयमस्मि जरितः पश्य ८. १००. ४
अयमिन्द्र वृषाकपिः १०. ८६. १८
अयमिन्द्रो मरुत्सखा ८. ७६. २
अयमिह प्रथमो धायि ४. ७. १
अयमु ते समतसि १. ३०. ४
अयमु ते सरस्वति ७. ९५. ६
अयमु त्वा विचर्षणे ८. १७. ७
अयमु वां पुरुतमो ३. ६२. २
अयमुशानः पर्यद्रिमुस्रा ६. ३९. २
अयमु ष्य प्र देवयु १०. १७६. ३
अयमु ष्य सुमहाँ ७. ८. २
अयमेक इत्या पुरूरु ८. २५. १६
अयमेमि विचाकशत् १०. ८६. १९
अयांसमग्ने सुशितिं जनाया २. ३५. १५
अया चित्तो विपानया ९. ६५. १२
अया ते अग्ने विधेमोर्जो २. ६. २
अया ते अग्ने समिधा ४. ४. १५
अया धिया च गव्यया ८. ९३. १७
अया निजग्निरोजसा ९. ५३. २
अया पवस्व देवयु ९. १०६. १४
अया पवस्व धारया ९. ६३. ७
अया पवा पवस्वैना ९. ९७. ५२
अयाम धीवतो धियो ८. ९२. ११
अयामि घोष इन्द्र देव ७. २३. २
अयामि ते नमउक्तिं ३. १४. २
अया रुचा हरिण्या ९. १११. १
अया वाजं देवहितं ६. १७. १५
अया वीती परि स्रव ९. ६१. १
अया सोमः सुकृत्यया ९. ४७. १
अया ह त्यं मायया ६. २२. ६
अयुक्त सप्त शुन्ध्युवः १. ५०. ९
अयुक्त सप्त हरितः ७. ६०. ३
अयुक्त सूर एतशं ९. ६३. ८
अयुजो असमो नृभिरेकः ८. ६२. २
अयुज्रन्त इन्द्र विश्वकृष्टी १. १६९. २
अयुद्ध इद्युधा वृतं शूर ८. ४५. ३
अयुद्धसेनो विभ्वा विभिन्दता १०. १३८. ५
अयुयुत्सन्ननवद्यस्य १. ३३. ६
अयोदंष्ट्रो अर्चिषा यातु १०. ८७. २
अयोद्धेव दुर्मद आ १. ३२. ६
अरं कामाय हरयो १०. ९६. ७
अरं कृण्वन्तु वेदिं १. १७०. ४
अरं क्षयाय नो महे ८. १५. १३
अरं त इन्द्र कुक्षये ८. ९२. २४
अरं दासो न मीळ्हुषे ७. ८६. ७
अरं म उस्रयाम्णे ४. ३२. २४
अरं मे गन्तं हवनायास्मै ६. ६३. २
अरं हि ष्मा सुतेषु णः ८. ९२. २६
अरण्यान्यरण्यान्यसौ १०. १४६. १
अरण्योर्निहितो जातवेदा ३. २९. २
अरमतिरनर्वणो विश्वो ८. ३१. १२
अरममाणो अत्येति गा ९. ७२. ३
अरमयः सरपसस्तराय २. १३. १२
अरमश्वाय गायति ८. ९२. २५
अरश्मानो येऽरथा अयुक्ता ९. ९७. २०
अरा इवेदचरमा अहेव ५. ५८. ५
अराधि होता निषदा १०. ५३. २
अरायि काणे विकटे १०. १५५. १
अरावीदंशुः सचमान ९. ७४. ५
अरित्रं वां दिवस्पृथु १. ४६. ८
अरिष्टः स मर्तो विश्व १०. ६३. १३
अरुणप्सुरुषा अभू ८. ७३. १६
अरुणो मा सकृद्वृकः १. १०५. १८
अरुषस्य दुहितरा विरूपे ६. ४९. ३
अरुषो जनयन्गिरः सोमः ९. २५. ५
अरूरुचदुषसः पृश्निरग्रिय ९. ८३. ३
अरोरवीद्वृष्णो अस्य २. ११. १०
अर्चत प्रार्चत प्रियमेधासो ८. ६९. ८
अर्चद्वृषा वृषभिः स्वेदुहव्यै १. १७३. २
अर्चन्तस्त्वा हवामहे ५. १३. १
अर्चन्ति नारीरपसो १. ९२. ३
अर्चा दिवे बृहते शूष्यं १. ५४. ३
अर्चामि ते सुमतिं ४. ४. ८
अर्चामि वां वर्धायापो १०. १२. ४
अर्चा शक्राय शाकिने १. ५४. २
अर्णांसि चित्पप्रथाना ७. १८. ५
अर्थमिद्वा उ अर्थिन [illegible]
अर्थिनो यन्ति चेदर्थं ८. ७९. ५
अर्घं वीरस्य शृतपामनिन्द्रं ७. १८. १६
अर्भको न कुमारकोऽधि ८. ६९. १५
अर्यमणं बृहस्पतिमिन्द्रं १०. १४१. ५
अर्यमणं वरुणं मित्रमेषा ४. २. ४
अर्यमा णो अदितिर्यज्ञियासो ३. ५४. १८
अर्यम्यं वरुण मित्र्यं वा ५. ८५. ७
अर्यो वा गिरो अभ्यर्च १०. १४८. ३
अर्यो विशां गातुरेति १०. २०. ४
अर्वद्भिरग्ने अर्वतो १. ७३. ९
अर्वन्तो न श्रवसो ७. ९०. ७
७. ९१. ७
अर्वाँ इव श्रवसे साति ९. ९७. २५
अर्वाग्रथं नि यच्छतं ८. ३५. २२
अर्वाग्रथं विश्ववारं त ६. ३७. १
अर्वाङेहि सोमकामं १. १०४. ९
अर्वाङ् त्रिचक्रो मधुवाहनो १. १५७. ३
अर्वाङ्नरा दैव्येनावसा ७. ८२. ८
अर्वाचीनं सु ते मन ३. ३७. २
अर्वाचीनो वसो भवास्मे ४. ३२. १४
अर्वाची सुभगे भव ४. ५७. ६
अर्वाञ्चं त्वा पुरुष्टुत ८. ६. ४५
८. ३२. ३०
अर्वाञ्चं त्वा सुखे रथे ३. ४१. ९
अर्वाञ्चं दैव्यं जनमग्ने १. ४५. १०
अर्वाञ्चमद्य यय्यं नृवाहणं २. ३७. ५
अर्वाञ्चा वां सप्तयो १. ४७. ८
अर्वाञ्चो अद्या भवता २. २९. ६
अर्वावतो न आ गहि ३. ४०. ८
अर्वावतो न आ गह्यथो ३. ३७. ११
अर्षा णः सोम शं गवे ९. ६१. १५
अर्षा सोम द्युमत्तमोऽभि ९. ६५. १९
अर्हन्तो ये सुदानवो ५. ५२. ५
अर्हन्बिभर्षि सायकानि २. ३३. १०
अलातृणो वल इन्द्र व्रजो ३. ३०. १०
अलाय्यस्य परशुर्ननाश ९. ६७. ३०
अवंशे द्यामस्तभायद् २. १५. २
अवः परेण पर एनावरेण १. १६४. १७
अवः परेण पितरं यो १. १६४. १८
अव[illegible] ८. १. २
अव क्रन्द दक्षिणतो २. ४२. ३
अव क्षिप दिवो अश्मान २. ३०. ५
अव चष्ट ऋचीषमो ८. ६२. ६
अव ते हेळो वरुण १. २४. १४
अव त्मना भरते १. १०४. ३
अव त्या बृहतीरिषो १०. १३४. ३
अव त्वे इन्द्र प्रवतो ६. ४७. १४
अवद्यमिव मन्यमाना ४. १८. ५
अव द्युतानः कलशाँ ९. ७५. ३
अव द्रप्सो अंशुमती ८. ९६. १३
अव द्रुग्धानि पित्र्या ७. ८६. ५
अव द्वके अव त्रिका १०. ५९. ९
अव नो वृजिना शिशीह्यृचा १०. १०५. ८
अवन्तमत्रये गृहं ८. ७३. ७
अवन्तु नः पितरः १. १०६. ३
अवन्तु मामुषसो जायमाना ६. ५२. ४
अवपतन्तीरवदन्दिव १०. ९७. १७
अव यच्छ्येनो अस्वनीदध ४. २७. ३
अव यत्त्वं शतक्रतविन्द्र १०. १३४. ४
अव यत्स्वे सधस्थे ८. ७९. ९
अवर्त्या शुन आत्राणि ४. १८. १३
अवर्धयन्त्सुभगं सप्त ३. १. ४
अवर्मह इन्द्र दादृहि १. १३३. ६
अवर्षीर्वर्षमुदु षू गृभाया ५. ८३. १०
अवविद्धं नौग्र्यमप्स्वन्त १. १८२. ६
अव वेदिं होत्राभिर्यजेत ७. ६०. ९
अव सिन्धुं वरुणो ७. ८७. ६
अवसृजन्नुप त्मना १. १४२. ११
अव सृज पुनरग्ने १०. १६. ५
अव सृजा वनस्पते १. १३. ११
अवसृष्टा परा पत ६. ७५. १६
अव स्पृधि पितरं योधि ५. ३. ९
अव स्म दुर्हणायतो १०. १३४. २
अव स्म यस्य वेषणे ५. ७. ५
अवस्यते स्तुवते १. ११६. २३
अव स्य शूराध्वनो ४. १६. २
अव स्यूमेव चिन्वती ३. ६१. ४
अव स्वयुक्ता दिव आ १. १६८. ४
अव स्वराति गर्गरो ८. ६९. ९
अव स्वेदा इवाभितो १०. १३४. ५

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अधा कन्येषु नः पुमस्तमांसि ९. ९. ७
अधाचक्षे पदमस्य ५. ३०. २
अधा नु कं ज्यायान् १०. ५०. ५
अधा नो अग्न ऊतिभि १. ७९. ७
अधा नो राजर्षुं रथं ८. ८०. ६
अधावधन्त धीतयो वृषभस्याधि ९. १९. ४
अधासां मघवञ्जहि १. १३३. ३
अधासृजः प्रस्वः सप्तयो १०. १३८. २
अधासृजन्त विश्वयो न ४. १९. २
अधिता नो अधाचः ९. ६७. १०
अधितासि सुन्वतो वृक ८. ३६. १
अधिदृशं मित्रो नयीयान् ६. ४४. ७
अधिन्दिवो निहितं गुहा १. १३०. ३
अधिन्दवे अतिहितं यदासीद् १०. १८१. २
अधिप्रा चिद्वयो दधदाशुना ६. ४५. २
अधिप्रो वा यदधिषद् ८. ६१. ९
अधिष्टं धीष्वश्विना न ७. ६७. ६
अधीरासिव मामयं १०. ८६. ९
अधीवासो अमृता अमन्दी ८. ८०. १०
अधीवन्त गोतमा इन्द्र ४. ३२. १२
अधेपमन्धेयुतिः पुरस्ताद् १. १२४. ११
अधोचाम कवये मेध्याय ५. १. १२
अधोचाम नमो अस्मा १. ११४. ११
अधोचाम निचनान्यस्मिन् १. १८९. ८
अधोचाम महते सौभगाय ८. ५९. ५
अधोचाम रटुग्णा अग्नये १. ७८. ५
अधो द्राप्सा पर स्फया १०. ६७. ४
अधोरित्या वां छर्दिषो ६. ६७. ११
अधोर्वां नूनमश्विना ७. ६७. ४
अन्ये पुराणे परि वार ९. ८६. २५
अन्ये वयुः पक्षते परि ९. ६९. ३
अन्यो वारे परि त्रिधे ९. ५०. ३
अन्यो वारे परि प्रियो ९. ७. ६
अन्यो वारेभिः पक्षते ९. १०१. १६
अपोच्यासिः सनिषाणो ७. ६७. २
अप्रक्षितं वसु बिभर्ति हस्तयो १०. ६८. ८
अप्रक्षुदी पीपते सं १०. ५३. ८
अप्रायुस्त्वमतं मक्षण २. २४. ४
अप्रयाम तं सुमतिं ६. ५. ७
अप्रयाम ते सुमतिं १. ११४. ३
अप्रथं हि भूरिदावत्तर १. १०९. २
अप्रीरा तनूर्भवति १०. ८५. ३०
अप्रुं न गीर्भी रथ्यं ८. १०३. ७
अप्रुं न गूळ्हमश्विना १. ११७. ४
अप्रुं न त्वा वारवन्तं १. २७. १
अप्सत्ये यो निपदनं १०. ९७. ५
अप्सभिर्वां रथमां त्वेष ८. ७४. १०
अप्सरास्यत्र जनिमास्य च २. ३५. ६
अप्सा इवेदरुपासः सवन्धवः ५. ५९. ५
अप्सादियायेति यद् १०. ७३. १०
अप्सा न या वाजिना ६. ६७. ४
अप्सायन्तो गव्यन्तो वाजयन्तो १०. १६०. ५
अप्सावति प्रथमो गोषु १. ८३. १
अप्सावतीं सोमावतीमूर्जयन्ती १०. ९७. ७
अप्सावतीर्गोमतीर्न ७. ४१. ७
७. ८०. ३
अप्सावतीर्गोमतीर्विश्ववारा १. १२३. १२
अप्सावतीर्गोमतीर्विश्वसुविदो १. ४८. २
अप्सावन्तं रयिनं वीरवन्तं १०. ४७. ५
अप्सासो न ये ज्येष्ठास १०. ७८. ५
अप्सासो ये वामुप ७. ७४. ४
अश्विना परि वामिषः ३. ५८. ८
अश्विना पिबतं मधु १. १५. ११
अश्विना पुरुदंससा नरा १. ३. २
अश्विना मधुमत्तमं पातं १. ४७. ३
अश्विना मधुपुत्तमो युवाकुः ३. ५८. ९
अश्विना यज्वरीरिषो द्रवत् १. ३. १
अश्विना यद्ध कर्हि चिच्छ्रूयात ५. ७४. १०
अश्विना यामहूतमा नेदिष्ठं ८. ७३. ६
अश्विना वर्तिरस्मदा १. ९२. १६
अश्विना वाजिनीवसू जुषेथां ५. ७८. ३
अश्विना वायुना युवं ३. ५८. ७
अश्विनावेह० तिरश्चिद् ५. ७५. ७
अश्विनावेह० हंसाविव ५. ७८. १
अश्विना सु विचाकशद् ८. ७३. १७
अश्विना स्तूपे स्तुहि ८. २६. १०
अश्विना हरिणाविव ५. ७८. २
अश्विनोरसनं रथमनश्वं १. १२०. १०
अश्वी रथी सुरूप इद् ८. ४. ९
अश्वेव चित्रारुषी माता ३. ५५. १०
अश्वो न क्रदो वृषभिर्युजानः ९. ९७. २८
अश्वो न क्रन्दन्नभिः ३. २६. ३
अश्वो न चक्रदो वृषा ९. ६४. ३
अश्वो वोळ्हा सुखं रथं ९. ११२. ४
अश्व्यस्य त्मना रथ्यस्य ४. ४१. १०
अश्व्यो वारो अभवस्तदिन्द्र १. ३२. १२
अषाळ्हं युत्सु पृतनासु १. ९१. २१
अषाळ्हमुग्रं पृतनासु ८. ७०. ४
अषाळ्हो अग्ने वृषभो ३. १५. ४
अष्टा महो दिव आदो १. १२१. ८
अष्टौ पुत्रासो अदितेर्ये १०. ७२. ८
अष्टौ व्यख्यत्ककुभः १. ३५. ८
असंसृष्टो जायसे मात्रोः ५. ११. ३
असच्च सच्च परमे व्योमन् १०. ५. ७
असत्सु मे जरितः साभिवेगो १०. २७. १
असद्यत्र सुवीर्यमुत ८. ३१. १८
असन्नित्वे आहवनानि ७. ८. ५
असपत्नः सपत्नहाभि १०. १७४. ५
असपत्ना सपत्नघ्नी जयन्त्यभि १०. १५९. ५
असमं क्षत्रमसमा मनीषा १. ५४. ८
असमाति नितोशनं त्वेषं १०. ६०. २
असर्जि कलशाँ अभि ९. १०६. १२
असर्जि रथ्यो यथा पवित्रे ९. ३६. १
असर्जि वक्वा रथ्ये ययाजौ ९. ९१. १
असर्जि वां स्थविरा वेधसा १. १८१. ७
असर्जि वाजी तिरः पवित्र ९. १०९. १०
असर्जि स्कम्भो दिव उग्रतो ९. ८६. ४६
असश्चतः शतधारा अभि ९. ८६. २७
असश्चता मघवद्भ्यो हि ७. ६७. ९
असश्चन्ती भूरिधारे पयस्वती ६. ७०. २
असादि हृतो वह्निराजगन् ७. ७. ५
असाम यथा सुपत्साय १. १७३. ९
असामि हि प्रयज्यवः १. ३९. ९
असाम्योजो विशृथा १. ३९. १०
असावन्यो असुर सूयत १०. १३२. ४
असावि ते जुजुषाणाय ५. ४३. ५
असावि देवं गोऋजीकमन्धो ७. २१. १
असावि सोमः पुरुहूत १०. १०४. १
असावि सोम इन्द्र ते १. ८४. १
असावि सोमो अरुषो ९. ८२. १
असाव्यंशुर्मदायाप्सु ९. ६२. ४
असिक्न्यां यजमानो न ४. १७. १५
असि यमो अस्यादित्यो १. १६३. ३
असि हि वीर सेन्योऽसि १. ८१. २
असुनीते पुनरस्मासु १०. ५९. ६
असुनीते मनो अस्मासु १०. ५९. ५
असुन्वन्तं समं जहि १. १७६. ४
असुन्वामिन्द्र संसदं ८. १४. १५
असूत पूर्वो वृषभो ३. ३८. ५
असूत पृश्निर्महते रणाय १. १६८. ९
असृक्षत प्र वाजिनो ९. ६४. ४
असृग्रन्देववीतयेऽत्यासः ९. ४६. १
असृग्रन्देववीतये वाजयन्तो ९. ६७. १७
असृग्रमिन्दवः पथा ९. ७. १
असृग्रमिन्द्र ते गिरः १. ९. ४
असेन्या वः पणयो १०. १०८. ६
असौ च या न उर्वरा ८. ९१. ६
असौ यः पन्था आदित्यो १. १०५. १६
असौ य एषि वीरको ८. ९१. २
अस्तभ्नाद्द्यामसुरो विश्ववेदा ८. ४२. १
अस्ताव्यग्ने मन्म पूर्व्य ८. ५२. ९
अस्ताव्यग्निः शिमीवद्भिर्र्कैः १. १४१. १३
अस्ताव्यग्निर्नरां सुशेवो १०. ४५. १२
अस्ति देवा अंहोर्वस्ति ८. ६७. ७
अस्ति सोमो अयं सुतः ८. ९४. ४
अस्ति हि वः सजात्यं ८. २७. १०
अस्ति हि वामिह स्तोता ५. ७४. ६
अस्ति हि ष्मा मदाय १. ३७. १५
अस्तीदमधिमन्थनमस्ति ३. २९. १
अस्तु श्रौषट् पुरो अग्निं १. १३९. १
अस्तेव सु प्रतरं लायमस्य १०. ४२. १
अस्तोढुं स्तोम्या ब्रह्मणा १. १२४. १३
अस्थुरु चित्रा उपसः ४. ५१. २
अस्मभ्यं गातुवित्तमो ९. १०६. ६
अस्मभ्यं तद्दिवो अद्भ्यः २. ३८. ११
अस्मभ्यं तद्वसो दानाय २. १३. १३
२. १४. १२
अस्मभ्यं तां अपा वृधि ४. ३१. १३
अस्मभ्यं त्वा वसुविदमभि ९. १०४. ४
अस्मभ्यं रोदसी रयिं ९. ७. ९

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अस्मभ्यं वाजिनीवसू ८. ५. १२
अस्मभ्यं सु त्वमिन्द्र १०. १३३. ७
अस्मभ्यं सु वृषण्वसू ८. २६. १५
अस्मभ्यमिन्दविन्द्रयुर्मध्वः ९. २. ९
अस्माँ अवन्तु ते शत ४. ३१. १०
अस्माँ अविड्ढि विश्वहेन्द्र ४. ३१. १२
अस्माँ इहा वृणीष्व ४. ३१. ११
अस्माअस्मा इदन्धसो ६. ४२. ४
अस्मा इत्काव्यं वच ५. ३९. ५
अस्मा इदु ग्नाश्चिद्देवपत्नीः १. ६१. ८
अस्मा इदु त्यदनु १. ६१. १५
अस्मा इदु त्यमुपमं १. ६१. ३
अस्मा इदु त्वष्टा १. ६१. ६
अस्मा इदु प्र तवसे १. ६१. १
अस्मा इदु प्र भरा १. ६१. १२
अस्मा इदु प्रय इव १. ६१. २
अस्मा इदु सप्तिमिव १. ६१. ५
अस्मा इदु स्तोमं सं १. ६१. ४
अस्मा उक्थाय पर्वतस्य ५. ४५. ३
अस्मा उ ते महि महे ६. १. १०
अस्मा उषास आतिरन्त ८. ९६. १
अस्मा ऊ षु प्रभूतये ८. ४१. १
अस्मा एतद्दिव्यर्चेव ६. ३४. ४
अस्मा एतन्मह्याङ्गूषमस्मा ६. ३४. ५
अस्माकं जोष्यध्वरमस्माकं ४. ९. ७
अस्माकं त्वा मतीनामा ४. ३२. १५
अस्माकं त्वा सुताँ उप ८. ६. ४२
अस्माकं देवा उभयाय १०. ३७. ११
अस्माकं धृष्णुया रथो ४. ३१. १४
अस्माकं मित्रावरुणावतं २. ३१. १
अस्माकं व इन्द्रमुश्मसीष्टये १. १२९. ४
अस्माकं शिप्रिणीनां सोमपाः १. ३०. ११
अस्माकं सु रथं पुर ८. ४५. ९
अस्माकमग्ने अध्वरं ५. ४. ८
अस्माकमग्ने मघवत्सु दीदिह्यध १. १४०. १०
अस्माकमग्ने मघवत्सु धारया ६. ८. ६
अस्माकमत्र पितरस्त ४. ४२. ८
अस्माकमत्र पितरो मनुष्या ४. १. १३
अस्माकमद्य वामयं ८. ५. १८
अस्माकमद्यान्तमं स्तोमं ८. ३३. १५
अस्माकमायुर्वर्धयन् ३. ६२. १५
अस्माकमित्सु शृणुहि ४. २२. १०
अस्माकमिन्द्रः समृतेषु १०. १०३. ११
अस्माकमिन्द्र दुष्टरं ५. ३५. ७
अस्माकमिन्द्र भूतु ते ६. ४५. ३०
अस्माकमिन्द्रावरुणा ७. ८२. ९
अस्माकमिन्द्रेहि नो ५. ३५. ८
अस्माकमुत्तमं कृधि ४. ३१. १५
अस्माकमूर्जा रथं १०. २६. ९
अस्माकेभिः सत्वभिः शूर २. ३०. १०
अस्मादहं तविषादीषमाण १. १७१. ४
अस्मान्त्समर्ये पवमान ९. ८५. २
अस्मान्त्सु तत्र चोदयेन्द्र १. ९. ६
अस्मिन्त्समुदे अध्युत्तर १०. ९८. ६
अस्मिन्त्स्वेतच्छकपूत एनो १०. १३२. ५
अस्मिन्न इन्द्र पृत्सुतौ १०. ३८. १
अस्मिन्पदे परमे तस्थिवांस २. ३५. १४
अस्मिन्यज्ञे अदाभ्या ५. ७५. ८
अस्मे आ वहतं रयिं ८. ५. १५
अस्मे इन्द्र सचा सुते ८. ९७. ८
अस्मे इन्द्राबृहस्पती ४. ४९. ४
अस्मे इन्द्रावरुणा विश्ववारं ७. ८४. ४
अस्मे इन्द्रो वरुणो मित्रो ७. ८२. १०
७. ८३. १०
अस्मे ऊ षु वृषणा १. १८४. २
अस्मे तदिन्द्रावरुणा ३. ६२. ३
अस्मे ता त इन्द्र सन्तु १०. २२. १३
अस्मे धेहि द्युमतीं १०. ९८. ३
अस्मे धेहि द्युमद्यशो ९. ३२. ६
अस्मे धेहि श्रवो बृहद् १. ९. ८
अस्मे प्र यन्धि मघवन् ३. ३६. १०
अस्मे रयिं न स्वर्थं १. १४१. ११
अस्मे रायो दिवेदिवे ४. ८. ७
अस्मे रुद्रा मेहना ८. ६३. १२
अस्मे वत्सं परि षन्तं १. ७२. २
अस्मे वर्षिष्ठा कृणुहि ४. २२. ९
अस्मे वसूनि धारय ९. ६३. ३०
अस्मे वीरो मरुतः ७. ५६. २४
अस्मे श्रेष्ठेभिर्भानुभिर्वि ७. ७७. ५
अस्मे सा वां मांध्वी १. १८४. ४
अस्मे सोम श्रियमधि १. ४३. ७
अस्मै तिस्रो अव्यथ्याय २. ३५. ५
अस्मै ते प्रतिहर्यते ८. ४३. २
अस्मै बहूनामवमाय २. ३५. १२
अस्मै भीमाय नमसा १. ५७. ३
अस्मै वयं यद्वावान ६. २३. ५
अस्य क्रत्वा विचेतसो ५. १७. ४
अस्य घा वीर ईवतो ४. १५. ५
अस्य ते सख्ये वयं ९. ६१. २९
अस्य ते सख्ये वयमियक्षन्तः ९. ६६. १४
अस्य त्रितः क्रतुना १०. ८. ७
अस्य त्वेषा अजरा १. १४३. ३
अस्य देवस्य मीळ्हुषो ७. ४०. ५
अस्य देवस्य संसद्यनीके ७. ४. ३
अस्य पिब क्षुमतः १०. ११६. २
अस्य पिबतमश्विना ८. ५. १४
अस्य पिब यस्य ६. ४०. २
अस्य पीत्वा मदानां ८. ९२. ६
अस्य पीत्वा मदानामिन्द्रो ९. २३. ७
अस्य पीत्वा शतक्रतो १. ४. ८
अस्य प्र जातवेदसो १०. १८८. २
अस्य प्रजावती गृहे ८. ३१. ४
अस्य प्रत्नामनु द्युतं ९. ५४. १
अस्य प्रेषा हेमना ९. ९७. १
अस्य मदे पुरु वर्पांसि ६. ४४. १४
अस्य मदे स्वर्यं दा १. १२१. ४
अस्य मन्दानो मध्वो २. १९. २
अस्य मे द्यावापृथिवी २. ३२. १
अस्य यामासो बृहतो १०. ३. ४
अस्य रण्वा स्वस्येव २. ४. ४
अस्य वामस्य पलितस्य १. १६४. १
अस्य वासा उ अर्चिषा ५. १७. ३
अस्य वीरस्य बर्हिषि १. ८६. ४
अस्य वृष्णो व्योदन ८. ६३. ९
अस्य वो ह्यवसा पान्तो ९. ९८. ८
अस्य व्रतानि नाधृषे ९. ५३. ३
अस्य व्रते सजोषसो ९. १०२. ५
अस्य शासुरुभयासः १. ६०. २
अस्य शुष्मासो ददृशानपवे १०. ३. ६
अस्य श्रवो नद्यः सप्त १. १०२. २
अस्य श्रिये समिधानस्य ४. ५. १५
अस्य श्रेष्ठा सुभगस्य ४. १. ६
अस्य श्रोषन्त्वा भुवो १. ८६. ५
अस्य श्लोको दिवीयते १. १९०. ४
अस्य सुवानस्य मन्दिन २. ११. २०
अस्य स्तुषे महिमघस्य १. १२२. ८
अस्य स्तोमेभिरौशिज १०. ९९. ११
अस्य स्तोमे मघोनः ५. १६. ३
अस्य हि स्वयशस्तरं ५. ८२. २
अस्य हि स्वयशस्तर ५. १७. २
अस्या ऊ षु ण उप १. १३८. ४
अस्याजरासो दमामरित्रा १०. ४६. ७
अस्येदिन्द्रो मदेष्वा ग्राभं ९. १०६. ३
अस्येदिन्द्रो मदेष्वा विश्वा ९. १. १०
अस्येदिन्द्रो वावृधे वृष्ण्यं ८. ३. ८
अस्येदु त्वेषसा रन्त १. ६१. ११
अस्येदु प्र ब्रूहि पूर्व्याणि १. ६१. १३
अस्येदु भिया गिरयश्च १. ६१. १४
अस्येदु मातुः सवनेषु १. ६१. ७
अस्येदेव प्र रिरिचे १. ६१. ९
अस्येदेव शवसा शुषन्तं १. ६१. १०
अस्येदेषा सुमतिः पप्रथाना १०. ३१. ६
अस्वप्नजस्तरणयः सुशेवा ४. ४. १२
अस्वापयदभीतये सहस्रा ४. ३०. २१
अहं केतुरहं मूर्धा १०. १५९. २
अहं गर्भमदधामोषधीष्वहं १०. १८३. ३
अहं गुङ्गुभ्यो अतिथिग्व १०. ४८. ८
अहं च त्वं च वृत्रहन् ८. ६२. ११
अहं चन तत्सूरिभि ६. २६. ७
अहं तदासु धारयं १०. ४९. १०
अहं तष्टेव वन्धुरं १०. ११९. ५
अहं ता विश्वा चकरं ४. ४२. ६
अहं दां गृणते पूर्व्यं १०. ४९. १
अहं पितेव वेतसूँरभिष्टये १०. ४९. ४
अहं पुरो मन्दसानो ४. २६. ३
अहं प्रत्नेन मन्मना ८. ६. ११
अहं भुवं वसुनः १०. ४८. १
अहं भूमिमददामार्यायाहं ४. २६. २
अहं मनुरभवं सूर्यश्चाहं ४. २६. १
अहं रन्धयं मृगयं श्रुतर्वणे १०. ४९. ५

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अहं राजा वरुणो मह्यं ४. ४२. २
अहं राष्ट्री संगमनी १०. १२५. ३
अहं रुद्राय धनुरा १०. १२५. ६
अहं सोमेभिरुत भि १०. १२५. १
अहं सप्त स्रवतो धारयं १०. ४९. ९
अहं समहा नहुषो नहुष्टरः १०. ४९. ८
अहं स यो नववास्त्वं १०. ४९. ६
अहं सुवे पितरमस्य १०. १२५. ७
अहं सूर्यस्य परि याम्याशुभिः १०. ४९. ७
अहं सो अस्मि यः १. १०५. ७
अहं सोममाहनसं १०. १२५. २
अहं हि ते हरिवो ब्रह्म ८. ५३. ८
अहं हुवान आर्ज्रे शुतर्वणि ८. ७४. १३
अहं होता न्यसीदं १०. ५२. २
अहमहिं परिशयानमर्णव ३. ३२. ११
अहमहिं पर्वते शिश्रियाणं १. ३२. २
अहमिन्द्रो अदहदग्निरिन्दो ४. २८. ३
अहन्नृतं पुनतरं व्यंसमिन्द्रं १. ३२. ५
अहन्नृत्रमृबीषम ८. ३२. २६
अहमर्कं कवये शिश्नथं १०. ४९. ३
अहमपो अपिन्वमुक्षमाणा ४. ४२. ४
अहमस्मि महामहोऽभि १०. ११९ १२
अहमस्मि सपत्नहेन्द्र १०. १६६. २
अहमस्मि सहमानाथ १०. १४५. ५
अहमिद्धि पितुष्परि ८. ६. १०
अहमिन्द्रो न परा जिग्य १०. ४८. ५
अहमिन्द्रो रोधो वक्षो १०. ४८. २
अहमिन्द्रो वरुणस्ते ४. ४२. ३
अहमेतं गव्यमजस्यं १०. ४८. ४
अहमेताञ्छाश्वसतो १०. ४८. ६
अहमेव वात इव प्र १०. १२५. ८
अहमेव स्वयमिदं वदामि १०. १२५. ५
अहश्च कृष्णमहरर्जुनं च ६. ९. १
अहल्या यदपदी वर्धत १०. २२. १४
अहानि गृध्राः पर्या व १. ८८. ४
अहा यदिन्द्र सुदिना ७. ३०. ३
अह्नाम्ने हविरास्ये ते १०. ९१. १५
अहिर्न जिर्यन्नव्येभिरश्वैः ८. ६२. ३
अहिरिव भोगैः पर्येति ६. ७५. १४
अहेळता मनसा शुहिमा २. ३२. ३
अहेळमान उप याहि ६. ४१. १
अहेम यज्ञं पथामुपाणा ७. ७३. ३
अहेर्यातारं कमपश्य १. ३२. १४
आकरे वसोर्जरिता ३. ५१. ३
आ कलशा अनूषतेन्दो ९. ६५. १४
आ कलशेषु धावति पवित्रे ९. १७. ४
आ कलशेषु धावति स्येनो ९. ६७. १४
आकी सूर्यस्य रोचनाद् १. १४. ९
आ कृष्णेन रजसा वर्तमानो १. ३५. २
आकेनिपासो अहभि ४. ४५. ६
आ क्रन्दय बलमोजो ६. ४७. ३०
आक्षित्पूर्वास्वपरा अनूरु ३. ५५. ५
आ क्षोदो महि वृतं ६. १७. १२
आक्ष्णयावानो वहन्त्यन्तरिक्षेण ८. ७. ३५
आगधिता परिगधिता १. १२६. ६
आ गन्ता मा रिषण्यत ८. २०. १
आगन्देव ऋतुभिर्वर्धतु ४. ५३. ७
आगन्भृष्णामिह रत्नधेय ४. ३५. २
आगन्म बृत्रहन्तमं ८. ७४. ४
आ गावो अग्मन्नुत ६. २८. १
आ गोमता नासत्या ७. ७२. १
आ ग्रा अग्र ह्वावसे १. २२. १०
आग्निं न स्वहृक्तिभिर्होतारं १०. २१. १
आग्निरगामि भारतो ६. १६. १९
आग्ने गिरो दिव आ ७. ३९. ५
आग्ने याहि मरुत्सखा ८. १०३. १४
आग्ने वह वरुणमिहये १०. ७०. ११
आग्ने वह हविरद्याय ७. ११. ५
आग्ने स्थूरं रयिं भर १०. १५६. ३
आग्मन्नाप उशतीर्बर्हिरेदं १०. ३०. १५
आ ग्रावभिरहन्येभि ५. ४८. ३
आ घ त्वावान्मन्मानः १. ३०. १४
आ घा गमद्यदि श्रवत् १. ३०. ८
आ घा ता गच्छानुत्तरा १०. १०. १०
आ घा ये अग्निमिन्धते ८. ४५. १
आ घा योषेव सूनर्युषा १. ४८. ५
आ च त्वामेता वृषण्व ३. ४३. ४
आ चन त्वा चिकित्सामो ८. ९१. ३
आ च नो बर्हिः सदतावितां ७. ५९. ६
आ चर्षणिप्रा वृषभो १. १७७. १
आ च वहासि तॉं इह १. ७४. ६
आ चिकितान सुकतू ५. ६६. १
आच्छद्विधानैर्गुपितो १०. ८५. ४
आज्या जानु दक्षिणतो १०. १५. ६
आ जह्नन्ति सान्वेषां ६. ७५. १३
आ जर्न त्वेषसंदृशं १०. ६०. १
आ जनाय दुछुने ६. २२. ८
आ जानुदिर्विभ्र ऋता ९. ९७. ३७
आ जातं जातवेदसि ६. १६. ४२
आ जामित्के अव्यत ९. १०१. १४
आजासः पूषणं रथे ६. ५५. ६
आजितुरं सत्पतिं ८. ५३. ६
आजिषते नृपते त्वमिद्धि ८. ५४. ६
आ जुहोता दुवस्यता ५. २८. ६
आ जुहोता स्वध्वरं ३. ५. ८
आजुह्वान ईड्यो १०. ११०. ३
आजुह्वानो न ईड्यो १. १८८. ३
आजनगन्धिं सुरभिं १०. १४६. ६
आ तं भज सौश्रवसेष्वग्न १०. ४५. १०
आ त इन्दो मदाय कं ९. ६२. २०
आ त इन्द्र महिमानं ८. ६५.. ४
आ त एता वचोयुजा ८. ४५. ३९
आ त एतु मनः पुनः १०. ५७. ४
आ तक्षत सातिमस्मभ्यं १. १११. ३
आ तत्न इन्नायवः १०. ७४. ४
आ तत्ते दस्र मन्तुमः १. ४२. ५
आ तिष्ठतं सुवृतं यो १. १८३. ३
आतिष्ठन्तं परि विश्वे ३. ३८. ४
आ तिष्ठ रथं बृषणं १. १७७. ३
आ तिष्ठ बृत्रहन्रथं १. ८४. ३
आ तू गहि प्र तु द्रव ८. १३. १४
आ तू न इन्दो शतदात्वश्यं ९. ७२. ९
आ तू न इन्द्र कौशिक १. १०. ११
आ तू न इन्द्र क्षुमन्तं ८. ८१. १
आ तू न इन्द्र मद्रयग् ३. ४१. १
आ तू न इन्द्र बृत्रहन् ४. ३२. १
आ तू भर माकिरेतत् ३. ३६. ९
आ तू भिन्द्र कण्वमन्तं ८. २. २२
आ तू भिन्द्र हरिभिं १०. १०१. १०
आ तू शक्र शतक्रतो ८. ९९. १६
आ ते अग्न इधीमहि ५. ६. ४
आ ते अग्न ऋचा हविः ५. ६. ५
आ ते अग्न ऋचा हविर्हृदा ६. १६. ४७
आ ते कारो शृणवामा ३. ३३. १०
आ ते दक्षं मयोभुवं ९. ६५. २८
आ ते दक्षं वि रोचना ८. ९३. २६
आ ते दधामीन्द्रियमुक्था ८. ९३. २७
आ तेन यातं मनसो १०. ३९. १२
आ ते पितर्मरुतां सुम्नमेतु २. ३३. १
आ ते मह इन्द्रोत्युग्र ७. २५. १
आ ते रथस्य पूषन् १०. २६. ८
आ ते रुचः पवमानस्य ९. ९६. २४
आ ते वत्सो मनो ८. ११. ७
आ ते बृषन्बृषणो ६. ४४. २०
आ तेऽवो वरेण्यं ५. ३५. ३
आ ते शुष्मो बृषभ ६. १९. ९
आ ते सपर्यू जवसे ३. ५०. २
आ ते सिञ्चामि कुक्ष्योरनु ८. १७. ५
आ ते सुपर्णा अमिनन्त ९. ७९. २
आ ते स्वस्तिमीमहे ६. ५६. ६
आ ते हनू हरिवः ५. ३६. २
आत्मन्वन्नभो दुह्यते ९. ७४. ४
आत्मा ते वातो रज ७. ८७. २
आत्मा देवानां भुवनस्य १०. १६८. ४
आत्मानं ते मनसा १. १६३. ६
आत्मा पितुस्तनूर्वास ८. ३. २४
आत्मा यज्ञस्य रंह्या ९. ६. ८
आ त्वष्ट सधस्तुतिं ८. १. १६
आ त्वष्ट सवर्दुघां हुवे ८. १. १०
आ त्वशत्रवा गहि ८. ८२. ४
आ त्वा कण्वा अहूषत १. १४. २
आ त्वा कण्वा ह्वावसे ८. ३४. ४
आ त्वागमं शन्तातिभिरथो १०. १३७. ४
आ त्वा गिरो रथीरिवास्थुः ८. ९५. १
आ त्वा गीर्भिर्महामुरुं ८. ६५. ३
आ त्वा गोभिरिव व्रजं ८. २४. ६
आ त्वा ग्रावा वदन्निह ८. ३४. २
आ त्वा जुवो रराहाणा १. १३४. १
आ त्वा जुवो हरयो ३. ४३. ६
आ त्वा ब्रह्मयुजा हरी ८. १७. २

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

आ त्वा मदच्युता हरी ८. ३४. ९
आ त्वा रथं यथोतये ८. ६८. १
आ त्वा रथे हिरण्यये ८. १. २५
आ त्वा रम्भं न जिन्वयो ८. ४५. २०
आ त्वा वहन्तु हरयो १. १६. १
आ त्वा विप्रा अचुच्यवुः १. ४५. ८
आ त्वा विशन्त्वाशवः १. ५. ७
आ त्वा विशन्त्विन्दवः ८. ९२. २२
आ त्वा शुक्रा अचुच्यवुः ८. ९५. २
आ त्वा सहस्रमा शतं ८. १. २४
आ त्वा सुतास इन्दवो ८. ४९. ३
आ त्वा हरयो वृषणो ६. ४४. १९
आ त्वा हर्यन्तं प्रयुजो १०. ९६. १२
आ त्वाहार्षमन्तरेधि १०. १७३. १
आ त्वा होता मनुर्हितो ८. ३४. ८
आ त्वेता नि षीदतेन्द्रमभि १. ५. १
आत्सोम इन्द्रियो रसो ९. ४७. ३
आथर्वणायाश्विना दधीचे १. ११७. २२
आ दक्षिणा सृज्यते ९. ७१. १
आदङ्गिराः प्रथमं दधिरे १. ८३. ४
आ दधिक्राः शवसा ४. ३८. १०
आ दशाभिर्विवस्वत ८. ७२. ८
आदस्य ते ध्वसयन्तो १. १४०. ५
आदस्य शुष्मिणो रसे ९. १४. ३
आ दस्युघ्रा मनसा ४. १६. १०
आदह स्वधामनु १. ६. ४
आदाय श्येनो अभरत् ४. २६. ७
आदारो वां मतीनां १. ४६. ५
आदित्ते अस्य वीर्यस्य १. १३१. ५
आदित्ते विश्वे क्रतुं १. ६८. २
आदित्यश्चा बुबुधाना ४. १. १८
आदित्यस्य रेतसो ८. ६. ३०
आदित्या अव हि ख्यताधि ८. ४७. ११
आदित्यानां वसूनां रुद्रियाणां १०. ४८. ११
आदित्यानामवसा नूतनेन ७. ५१. १
आदित्या रुद्रा वसवः ३. ८. ८
आदित्या रुद्रा वसवो ७. ३५. १४
आदित्या विश्वे मरुतश्च ७. ५१. ३
आदित्यासो अति स्रिधो १०. १२६. ५
आदित्यासो अदितयः ७. ५२. १
आदित्यासो अदितिर्मादयन्तां ७. ५१. २
आदित्यैरिन्द्रः सगणो १०. १५७. २
आदित्सास्य चर्किरन् ८. ५५. ५
आदिद्ध नेम इन्द्रियं ४. २४. ५
आदिद्धोतारं वृणते १. १४१. ६
आदिन्द्रः शत्रा तविषी १०. ११३. ५
आदिन्मातृरविंशात् १. १४१. ५
आ दिवस्पृष्ठमश्युर्गन्त्युः ९. ३६. ६
आदीं के चित्पश्यमानास ९. ११०. १
आदीं जितस्य योधणो ९. ३२. २
आदीं शवस्यधरीर्णवाम ८. ७७. २
आदीं हंसो यथा गणं ९. ३२. ३
आदीमन्धं न हेतारो ९. ६२. ६
आदु मे निवरो भुवत् ८. ९३. १५
आदु नु ते अनु क्रतुं ८. ६३. ५
आदृणोति हविष्कृतिं १. १८. ८
आ देवानामपावेद १०. ७०. २
आ देवानामपि पन्थामगन्म १०. २. ३
आ देवानामभवः केतुरग्ने ३. १. १७
आ देवो ववृत्या ७. १. ७
आ देवो वूतो अक्षिर १०. ९८. २
आ देवो यातु सविता ७. ४५. १
आ दैव्यानि पार्थिवानि ५. ४१. १४
आ दैव्या वृणीमहे ७. ९७. २
आध रथं भानुमो ५. १. ११
आ धां तनोपि रश्मिभि ४. ५२. ७
आध्रोदसी वितरं वि ५. २९. ४
आ ध्रुभ्यां हरिभ्यामिन्द्र २. १८. ४
आ द्विबर्हा अमिनो १०. ११९. ४
आ धर्णसिर्हरिवो ५. ४३. १३
आ धावता सुहस्त्यः ९. ४६. ४
आधीषमाणायाः पतिः १०. २६. ६
आ धेनवः पवस्ता तूर्ण्यर्था ५. ४३. १
आ धेनवो धुनयन्तामशिश्वीः ३. ५५. १६
आ धेनवो मामतेयमवन्ती १. १५२. ६
आध्रेण चित्तेदेकं चकार ७. १८. १७
आ नः पवस्व धारया ९. ३५. १
आ नः पवस्व वसुमन्द् ९. १९. ८
आ नः पूषा पवमानः ९. ८१. ४
आ नः प्रजां जनयतु १०. १८५. ३
आ नः शुभ्रं नृपाह्यं ९. ३०. ३
आ नः सहस्रसो भरा ८. ३४. १५
आ नः सुतास इन्दवः ९. १०६. ९
आ नः सोमं पवित्र आ ९. ६२. २१
आ नः सोम पवमानः ९. ८१. ३
आ नः सोम संयतं ९. ८६. १८
आ नः सोम सहो जुवो ९. ६५. १८
आ नः सोमे स्वध्वरे ८. ५०. ५
आ नः स्तुत उप वाजेभिरूती ४. २९. १
आ नः स्तोममुप द्रवत् ८. ५. ७
आ नः स्तोममुप द्रवद् ८. ४९. ५
आ न ह्वाभिर्विदुषे १. १८६. १
आ न इन्दो महीमिषं ९. ६५. १३
आ न इन्दो शतग्विनं गवां ९. ६५. १७
आ न इन्दो शतग्विनं रयिं ९. ६७. ६
आ न इन्द्र वृक्तबे १०. २२. ७
आ न इन्द्र महीमिषं ८. ६. २३
आ न इन्द्राबृहस्पती ४. ४९. ३
आ न इन्दो दूरादा ४. २०. १
आ न इन्दो हरिभि ४. २०. २
आ न ऊर्जं वहतमश्विना १. १५७. ४
आ नपातः शवसो यात ४. ३४. ६
आ नस्तुजं रयिं भरांशं ३. ४५. ४
आ नस्ते गन्तु मत्सरो १. १७५. २
आ नामभिर्मरुतो वक्षि ५. ४३. १०
आ नार्यस्य दक्षिणा ८. २४. २९
आ नास्त्या गच्छतं १. ३४. १०
आ नास्त्या त्रिभिरेका १. ३४. ११
आ निरेकमुत प्रियमिन्द्र ८. २४. ४
आ निवर्तन वर्तय १०. १९. ८
आ निवर्त नि वर्तय १०. १९. ६
आ नूनं यातमश्विना रथेन ८. ८. २
आ नूनं यातमश्विनाश्वेभिः ८. ८७. ५
आ नूनं यातमश्विनेमा ८. ९. १४
आ नूनं रघुवर्तनिं ८. ९. ८
आ नूनमश्विना युवं ८. ९. १
आ नूनमश्विनोर्ऋषिः ८. ९. ७
आ नो अग्ने रयिं भर १. ७९. ८
आ नो अग्ने वयोबृधं ८. ६०. ११
आ नो अग्ने सुचेतुना १. ७९. ९
आ नो अथ सप्तसो ८. २७. ५
आ नो अश्ववदश्विना ८. २२. १७
आ नो अश्विना त्रिवृता १. ३४. १२
आ नो गन्तं मयोभुवा ८. ८. १९
आ नो गन्तं रिशादसा ५. ७१. १
आ नो गन्तं रिशादसेमं ८. ८. १७
आ नो गव्यान्यश्व्या ८. ३४. १४
आ नो गव्येभिरश्व्यैः ८. ७३. १४
आ नो गन्येभिरश्व्यै ६. ६०. १४
आ नो गहि सख्येभिः ३. १. १९
आ नो गोत्रा दर्दहि ३. ३०. २१
आ नो गोमन्तमश्विना ८. ५. १०
आ नो दधिक्राः पथ्या ७. ४४. ५
आ नो दिव आ पृथिव्या ७. २४. ३
आ नो दिवो बृहतः ५. ४३. ११
आ नो देवः० आयमाणो ६. ५०. ८
आ नो देवः० सावितेदृश १०. १००. ३
आ नो देव शवसा ७. ३०. १
आ नो देवानामुप १०. ३१. १
आ नो देवेभिरुप देवहूति ७. १४. ३
आ नो देवेभिरुप यातमर्वाङ् ७. ७२. २
आ नो धुम्नैरा श्रवोभिरा ८. ५. ३२
आ नो द्रप्सा मधुमन्तो १०. ९८. ४
आ नो नावा मतीनां १. ४६. ७
आ नो नियुद्भिः० यज्ञम् ७. ९२. ५
आ नो नियुद्भिः० वीतये १. १३५. ३
आ नो बर्हिः सधमादे १०. ३५. १०
आ नो यहीं रिशादसो १. २६. ४
आ नो बृहन्ता बृहतीभिरूती ४. ४१. ११
आ नो ब्रह्माणि मरुतः २. ३४. १
आ नो भज परमेष्वा १. २७. ५
आ नो भद्राः क्रतवो १. ८९. १
आ नो भर दक्षिणेनाभि ८. ८१. ६
आ नो भर भगमिन्द्र ३. ३०. १९
आ नो भर वृषणं ६. १९. ८
आ नो भर व्यञ्जनं ८. ७८. २
आ नो मक्षूय दावने ८. ७. २७
आ नो महीमरातिं ५. ४३. ६
आ नो मित्रावरुणा घृते ३. ६२. ११

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

आ नो मित्रावरुणा हव्यजुष्टिं ७. ६५. ४
आ नो यज्ञं दिविस्पृशं ८. १०१. ९
आ नो यज्ञं नमोवृधं ३. ४३. ३
आ नो यज्ञं भारती १०. ११०. ८
आ नो यज्ञाय तक्षत १. १११. २
आ नो यातं दिवस्पर्या ८. ८. ४
आ नो यातं दिवो अच्छा ४. ४४. ५
आ नो यातमुपश्रुत्यश्विना ८. ८. ५
आ नो याहि परावतो ८. ६. ३६
आ नो याहि महेमते ८. ३४. ७
आ नो याहि सुतावतो ८. १७. ४
आ नो याह्युपश्रुत्युक्थेषु ८. ३४. ११
आ नो रत्नानि बिभ्रता ५. ७५. ३
आ नो रयिं मदच्युतं ८. ७. १३
आ नो राधांसि सवितः ७. ३७. ८
आ नो रुद्रस्य सूनवो ६. ५०. ४
आ नो वायो महे तने ८. ४६. २५
आ नो विश्व आस्क्रा १. १८६. २
आ नो विश्वान्यश्विना ८. ८. १३
आ नो विश्वाभिरूतिभिः ७. २४. ४
आ नो विश्वाभिरूतिभि ८. ८. १
आ नो विश्वासु हव्य ८. ९०. १
आ नो विश्वेषां रसं ८. ५३. ३
आ नो विश्वे सजोषसो ८. ५४. ३
आ नोऽवोभिर्मरुतो १. १६७. २
आन्त्रेभ्यस्ते गुदाभ्यो १०. १६३. ३
आन्यं दिवो मातरिश्वा १. ९३. ६
आपः पृणीत भेषजं १. २३. २१
१०. ९. ७
आप इद्वा उ भेषजीरापो १०. १३७. ६
आ पक्थासो भलानसो ७. १८. ७
आपथयो विपथयोऽन्त ५. ५२. १०
आ पप्राथ महिना ८. ७०. ६
आपप्रुषी पार्थिवान्युरु ६. ६१. ११
आपप्रुषी विभावरि ४. ५२. ६
आ पप्रौ पार्थिवं रजो १. ८१. ५
आ परमाभिरुत मध्यमाभि ६. ६२. ११
आ पर्वतस्य मरुतामवांसि ४. ५५. ५
आ पवमान धारय ९. १२. ९
आ पवमान नो भरार्यो ९. २३. ३
आ पवमान सुष्टुतिं ९. ६५. ३
आ पवस्व गविष्टये ९. ६६. १५
आ पवस्व दिशां पत ९. ११३. २
आ पवस्व मदिन्तम ९. २५. ६
९. ५०. ४
आ पवस्व महीमिषं ९. ४१. ४
आ पवस्व० रयिं गोमन्त ९. ६२. १२
आ पवस्व० रयिं सोम ९. ६३. १
आ पवस्व सुवीर्यं ९. ६५. ५
आ पवस्व हिरण्यवद् ९. ६३. १८
आ पशुं गासि पृथिवीं ८. २७. २
आ पश्चातान्नासत्या ७. ७२. ५
७. ७३. ५
आपश्चित्पिप्युः स्तर्यो ७. २३. ४
आपश्चिदस्मै पिन्वन्त ७. ३४. ३
आपश्चिद्धि स्वयशसः ७. ८५. ३
आपानासो विवस्वतो ९. १०. ५
आपान्तमन्युस्तृपल १०. ८९. ५
आपी वो अस्मे पितरेव १०. १०६. ४
आ पुत्रासो न मातरं ७. ४३. ३
आपूर्णो अस्य कलशः ३. ३२. १५
आ पूषञ्चित्रबर्हिषमाघृणे १. २३. १३
आपो अद्यान्वचारिषं १. २३. २३
१०. ९. ९
आपो अस्मान्मातरः १०. १७. १०
आपो न देवीरुप यन्ति १. ८३. २
आपो न सिन्धुमभि १०. ४३. ७
आपो भूयिष्ठा इत्येको १. १६१. ९
आपो यं वः प्रथमं ७. ४७. १
आपो रेवतीः क्षयथा १०. ३०. १२
आपो ह यद्बृहतीर्विश्वमायन् १०. १२१. ७
आपो हि ष्ठा मयोभुवस्ता १०. ९. १
आ प्यायस्व मदिन्तम १. ९१. १७
आ प्यायस्व समेतु ते १. ९१. १६
९. ३१. ४
आ प्र द्रव परावतो ८. ८२. १
आ प्र द्रव हरिवो ५. ३१. २
आ प्र यात मरुतो ८. २७. ८
आप्रा रजांसि दिव्यानि [illegible]
आप्रुषायन्मधुन ऋतस्य १०. ६८. ४
आ बुन्दं वृत्रहा ददे ८. ४५. ४
आ भन्दमाने उपाके १. १४२. ७
आ भन्दमाने उषसा ३. ४. ६
आ भरतं शिक्षतं १. १०९. ७
आ भात्यग्निरुषसामनीकमुद् ५. ७६. १
आ भानुना पार्थिवानि ६. ६. ६
आ भारती भारतीभिः ३. ४. ८
७. २. ८
आभिः स्पृधो मिथती ६. २५. २
आभिर्विधेमाग्नये ८. २३. २३
आभिष्टे अद्य गीर्भिर्गृणन्तो ४. १०. ४
आभूत्या सहजा वज्र १०. ८४. ६
आभूषेण्यं वो मरुतो ५. ५५. ४
आभोगयं प्र यदिच्छन्त १. ११०. २
आ मध्वो अस्मा असिचन् १०. २९. ७
आ मनीषामन्तरिक्षस्य १. ११०. ६
आ मन्द्रमा वरेण्यमा ९. ६५. २९
आ मन्द्रस्य सनिष्यन्तो ३. २. ४
आ मन्द्रैरिन्द्र हरिभिर्याहि ३. ४५. १
आ मन्येथामा गतं ३. ५८. ४
आ मां मित्रावरुणेह ७. ५०. १
आ मा पूषन्नुप द्रव ६. ४८. १६
आमासु पक्वमैरय ८. ८९. ७
आ मित्रावरुणा भगं ९. ७. ८
आ मित्रे वरुणे वयं ५. ७२. १
आमूरज प्रत्यावर्तयेमाः ६. ४७. ३१
आ मे अस्य प्रतीव्य ८. २६. ८
आ मे वचांस्युद्यता ८. १०१. ७
आ मे हवं नासत्याश्विना ८. ८५. १
आयं गौः पृश्निरक्रमी १०. १८९. १
आयं जना अभिचक्षे ५. ३१. १२
आ यं नरः सुदानवो ५. ५३. ६
आ यं पृणन्ति दिवि १. ५२. ४
आ यं हस्ते न खादिनं ६. १६. ४०
आ यः पप्रौ जायमान ६. १०. ४
आ यः पप्रौ भानुना ६. ४८. ६
आ यः पुरं नार्मिणी १. १४९. ३
आ यः सोमेन जठर ५. ३४. २
आ यः स्वर्णं भानुना २. ८. ४
आयजी वाजसातमा १. २८. ७
आ यज्ञैर्देव मर्त्य ५. १७. १
आ यत्पतन्त्येन्यः सुदुघा ८. ६९. १०
आ यत्साकं यशसो ७. ३६. ६
आ यदश्वान्वनन्वतः ८. १. ३१
आ यदिन्द्रश्च दद्वहे ८. ३४. १६
आ यदिषे नृपतिं तेज १. ७१. ८
आ यद्दुवः शतक्रतवा १. ३०. १५
आ यद्दुवस्याद्दुवसे १. १६५. १४
आ यद्धरी इन्द्र विव्रता १. ६३. २
आ यद्योनिं हिरण्ययं ५. ६७. २
आ यद्योनिं हिरण्यय ९. ६४. २०
आ यद्रुहाव वरुणश्च ७. ८८. ३
आ यद्वज्रं बाह्वोरिन्द्र ८. ९६. ५
आ यद्वां योषणा ८. ८. १०
आ यद्वां सूर्या रथं ५. ७३. ५
आ यद्वामीयचक्षसा ५. ६६. ६
आयने ते परायणे १०. १४२. ८
आयन्तारं महि स्थिरं ८. ३२. १४
आ यन्मा वेना अरुहन् ८. १००. ५
आ यन्मे अभ्वं वनदः २. ४. ५
आयमद्य सुकृतं १. १२५. ३
आ ययोस्त्रिंशतं तना ९. ५८. ४
आ यस्ततन्थ रोदसी ६. १. ११
आ यस्तस्थौ भुवनान्यमर्त्यो ९. ८४. २
आ यस्ते अग्न इधते ७. १. ८
आ यस्ते सर्पिरासुते ५. ७. ९
आ यस्मिन्त्वे स्वपाके ६. १२. २
आ यस्मिन्त्सप्त २. ५. २
आ यस्मिन्हस्ते नर्या ६. २९. २
आ यस्य ते महिमानं ८. ४६. ३
आ यातं नहुषस्पर्यान्तरिक्षात् ८. ८. ३
आ यातं मित्रावरुणा जुषाणा ७. ६६. १९
आ यातं मित्रावरुणा सुशस्त्युप ६. ६७. ३
आ यात मरुतो दिव ५. ५३. ८
आ यातमुप भूषतं ७. ७४. ३
आ यात्विन्द्रः स्वपतिर्मदाय १०. ४४. १
आ यात्विन्द्रो दिव ४. २१. ३
आ यात्विन्द्रोऽवस ४. २१. १
आ याहि कृणवाम ८. ६२. ४
आ याहि पर्वतेभ्यः ८. ३४. १३

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

आ याहि पूर्वीरनि ३. ४३. २
आ याहि वनसा सह १०. १७२. १
आ याहि शश्वदुशता ६. ४०. ४
आ याहि सुषुमा हि त ८. १७. १
आ याहीम इन्दवो ८. २१. ३
आ याह्यग्ने पथ्या अनु ७. ७. २
आ याह्यग्ने समिधानो ३. ४. ११
७. २. ११
आ यास्यद्भिभिः सुतं ५. ४०. १
आ यास्यर्य आ परि ८. ३४. १०
आ यास्यर्वाङुप ३. ४३. १
आयुर्विश्वायुः परि १०. १७. ४
आ युवानः कवयो ६. ४९. ११
आ यूथेव क्षुमति पश्वो ४. २. १८
आ ये तन्वन्ति रश्मिभिस्तिरः १. १९. ८
आ ये तस्थुः पृषतीषु ५. ६०. २
आ ये रजांसि तविषीभि १. १६६. ४
आ ये विश्वा पार्थिवानि ८. ९४. ९
आ ये विश्वा स्वपत्यानि १. ७२. ९
आ यो गोभिः सृज्यत ९. ८४. ३
आ योनिमग्निर्घृतवन्त ३. ५. ७
आ योनिमरुणो रुहद् ९. ४०. २
आ यो मूर्धानं पित्रोररुध १०. ८. ३
आ यो योनिं देवकृतं ७. ४. ५
आ यो वना तातृषाणो २. ४. ६
आ यो विवाय सचथाय १. १५६. ५
आ यो विश्वानि वार्या ९. १८. ४
आरज्रुरेव मध्वेरयेये १०. १०६. १०
आ रयिमा सुचेतुनमा ९. ६५. ३०
आराच्छत्रुमप बाधस्व १०. ४२. ७
आ राजाना महृतस्य ७. ६४. २
आ रिख किकिरा कृणु ६. ५३. ७
आ रुक्मैरा युधा नर ५. ५२. ६
आ रुद्रास इन्द्रवन्तः ५. ५७. १
आरे अघा को त्वित्या १०. १०२. १०
आरे अस्मदमतिमारे ४. ११. ६
आरे ते गोघ्नमुत १. ११४. १०
आरे सा वः सुदानवो १. १७२. २
आरोका इव वेदहं ८. ४३. ३
आ रोदसी अपृणदा ३. २. ७
आ रोदसी अपृणा जायमान ३. ६. २
आ रोदसी अपृणादोत १०. ५५. ३
आ रोदसी बृहती १. ७२. ४
आ रोदसी हर्यमाणो १०. ९६. ११
आ रोहतायुर्जरसं १०. १८. ६
आर्चन्नत्र मरुतः सस्मिन् १. ५२. १५
आर्ष्टिषेणो होत्रमृषि १०. ९८. ५
आलात्ता या रुरुशीर्ण्यथो ६. ७५. १५
आ वंसते मघवा वीरवद् ८. १०३. ९
आवः कुत्समिन्द्र १. ३३. १४
आवः शमं वृषभं १. ३३. १५
आ व इन्द्रं क्रिविं यथा १. ३०. १
आ व ऋञ्जस ऊर्जां १०. ७६. १
आ वक्षि देवाँ इह २. ३६. ४
आ वच्यस्व महि प्सरो ९. २. २
आ वच्यस्व सुदक्ष चम्वोः ९. १०८. १०
आवदंस्त्वं शकुने भद्रमा २. ४३. ३
आवदिन्द्रं यमुना तृत्सवश्च ७. १८. १९
आवर्तततीरघ नु १०. ३०. १०
आवहन्ती पोष्या वार्याणि १. ११३. १५
आवहन्त्यरुणीर्ज्योतिषा ४. १४. ३
आ वहेथे पराकात् ८. ५. ३१
आ वां ग्रावाणो अश्विना ८. ४२. ४
आ वां दानाय वहृतीय १. १८०. ५
आ वां धियो वहृत्सु १. १३५. ५
आ वां नरा मनोयुजो ५. ७५. ६
आ वां भूष्णिरातयो १. १५१. ३
आ वां मित्रावरुणा १. १५२. ७
आ वां येष्ठाश्विना ५. ४१. ३
आ वां रथं दुहिता १. ११६. १७
आ वां रथं पुरुभावं १. ११९. १
आ वां रथं युवति १. ११८. ५
आ वां रथमवमस्यां ७. ७१. ३
आ वां रथो अश्विना १. ११८. १
आ वां रथो नियुत्वान् १. १३५. ४
आ वां रथो रथानां ५. ७४. ८
आ वां रथो रोदसी ७. ६९. १
आ वां रथोऽवनिर्न १. १८१. ३
आ वां राजानावध्वरे ७. ८४. १
आ वां रथोऽश्वासो १. ११. ७
आ वां वहिष्ठा इह ते ४. १४. ४
आ वां वाहिष्ठो अश्विना ८. २६. ४
आ वां विप्र इहावसे ८. ८. ९
आ वां विश्वाभि० ता वर्ति ८. ८७. ३
आ वां विश्वाभि० राजन्ता ८. ८. १८
आ वां श्येनासो अश्विना १. ११८. ४
आ वां सहस्रं हरय ४. ४६. ३
आ वां सुम्ने वरिमन् ६. ६३. ११
आ वां सुम्नैः शंयू १०. १४३. ६
आ वाजा यातोप न ४. ३४. ५
आ वात वाहि भेषजं १०. १३७. ३
आ वातस्य ध्रजतो ७. ३६. ३
आ वामगन्त्सुमतिर्वाजिनीवसू १०. ४०. १२
आ वामश्वासः शुचयः १. १८१. २
आ वामश्वासः सुयुजो ५. ६२. ४
आ वामश्वासो अभिमातिषाह ६. ६९. ४
आ वामुपस्थमद्रुहा २. ४१. २१
आ वायृताय केशिनीरनूषत १. १५१. ६
आ वायो भूष शुचिपा ७. ९२. १
आ विंशत्या त्रिंशता २. १८. ५
आ विद्युन्मद्भिर्मरुतः १. ८८. १
आ विवाध्या परिराप २. २३. ३
आविर्भून्महि माघोनमेषां १०. १०७. १
आविवासन्परावतो ९. ३९. ५
आविशन्कलशं सुतो ९. ६२. १९
आ विश्वतः प्रत्यञ्चं २. १०. ५
आ विश्वदेवं सत्पतिं ५. ८२. ७
आ विश्ववाराश्विना ७. ७०. १
आविष्टयो वर्धते चारुरासु १. ९५. ५
आ वृत्रहणा वृत्रहभिः ६. ६०. ३
आ वृषस्व पुरूवसो ८. ६१. ३
आ वृषस्व महामह ८. २४. १०
आ वेधसं नीलपृष्ठं ५. ४३. १२
आ वो विशं यशिसां १०. १०१. ९
आ वो मक्षू तनाय १. ३९. ७
आ वो यक्ष्यमृतत्वं १०. ५२. ५
आ वो यन्तूदवाहासो ५. ५८. ३
आवो यस्य द्विबर्हसो १. १७६. ५
आ वो राजानमध्वरस्य ४. ३. १
आ वो रुक्मैर्युनीशावो १. १२२. ५
आ वो वहन्तु सप्तयो १. ८५. ६
आ वो वाहिष्ठो वहतु ७. ३७. १
आ वो होता जोहवीति ७. ५६. १८
आ शर्म पर्वतानां वृणीमहे ८. ३१. १०
आ शर्म पर्वतानामोतापां ८. १८. १६
आशसनं विशसनमथो १०. ८५. ३५
आशीत्या नवत्या याह्यर्वाङ् २. १८. ६
आशुं दधिक्रां तमु नु ४. ३९. १
आशुं दूतं विवस्वतो ४. ७. ४
आशुः शिशानो वृषभो १०. १०३. १
आशुभिश्चिद्यान्ति सुचाति २. ३८. ३
आ शुभ्रा यातमश्विना ७. ६८. १
आशुर्वं बृहन्मते परि ९. ३९. १
आशृण्वते अदितिपाय ४. ३. ३
आ श्येनस्य जवसा १. ११८. ११
आशुत्कर्ण शुधी हवं १. १०. ९
आश्विनावश्वावत्येना १. ३०. १७
आ श्वैत्रेयस्य जन्तवो ५. १९. ३
आ संयतमिन्द्र णः ६. २२. १०
आ स पतु य ईवदाँ ८. ४६. २१
आ सत्यायः सवर्दृशां ६. ४८. ११
आ सत्यो यातु मघवाँ ४. १६. १
आ सर्वं सवितुर्यथा ८. १०२. ६
आसस्थाणासः शवसान ६. ३७. ३
आ सहस्रं पथिभिरिन्द्र ६. १८. ११
आसां पूर्वासामहसु १. १२४. ९
आसीनासो अरुणीनामुपस्थे १०. १५. ७
आ सीमरोहत्सुयमा ३. ७. ३
आ सुग्म्याय सुग्म्यं ८. २२. १५
आ सुते सिञ्चत श्रियं ८. ७२. १३
आ सुद्युती नमसा ५. ४३. २
आसु ष्मा णो मघवन् ६. ४४. १८
आ सुष्वयन्ती यजते १०. ११०. ६
आ सूर्ये न रश्मयो १. ५९. ३
आ सूर्यो अरुहच्छुक्रमर्णो ५. ४५. १०
आ सूर्यो न भानुभद्धि ६. ४. ६
आ सूर्यो यातु सप्ताश्वः ५. ४५. ९
आ सोता परि षिञ्चताश्वं ९. १०८. ७
आ सोम सुवानो अद्रिभि ९. १०७. १०
आ स्तुतासो नमस्तो विश्व ७. ५७. ७

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

आस्थापयन्त युवतिं	१. १६७. ६
आस्नो वृकस्य वर्तिका	१. ११६. १४
आ स्मा रथं वृषपाणेषु	१. ५१. १२
आस्मिन्पिशङ्गमिन्दवो	९. २१. ५
आ स्वमद्म युवमानो	१ ५८. २
आहं पितॄन्त्सुविदत्राँ	१०. १५. ३
आहं सरस्वतीवतो	८. ३८. १०
आ हरयः ससृज्रिरे	८. ६९. ५
आ हर्यतांय धृष्णवे	९. ९९. १
आ हर्यतो अर्जुने	९. १०७. १३
आहार्षं त्वाविदं त्वा	१०. १६१. ५
आ हि द्यावापृथिवी	१०. १. ७
आ हि रुहतमश्विना	८. २२. ९
आ हि ष्मा याति नर्यं	४. २९. २
आ हि ष्मा सूनवे पिता	१. २६. ३
आ होता मन्द्रो विदथा	३. १४. १
इच्छन्ति त्वा सोम्यासः	३. ३०. १
इच्छन्ति देवाः सुन्वन्तं	८. २. १८
इच्छन्नश्वस्य यच्छिरः	१. ८४. १४
इळामग्ने पुरुदंसं सनिं	३. १. २३
	३. ५. ११
	३. ६. ११
	३. ७. ११
	३. १५. ७
	३. २२. ५
	३. २३. ५
इळायास्त्वा पदे वयं	३. २९. ४
इळा सरस्वती मही	१. १३. ९
	५. ५. ८
इत ऊती वो अजरं	८. ९९. ७
इति चिद्धि त्वा धना	१०. १२०. ४
इति चिन्नु प्रजायै	५. ४१. १७
इति चिन्मन्युमध्रिज	५. ७. १०
इति त्वाग्ने वृष्टिहव्यस्य	१०. ११५. ९
इति त्वा देवा इम	१०. ९५. १८
इति वा इति मे मनो	१०. ११९. १
इति स्तुतासो असथा	८. ३०. २
इतो वा सातिमीमहे	१. ६. १०
इत्था धीवन्तमद्रिवः	८. २. ४०
इत्था यथा त ऊतये	५. २०. ४
इत्था हि सोम इन्मदे	१. ८०. १
इदं कवेरादित्यस्य	२. २८. १
इदं त एकं पर ऊ त	१०. ५६. १
इदं ते पात्रं सनवित्तमिन्द्र	१०. ११२. ६
इदं ते सोम्यं मध्वधुक्षन्	८. ६५. ८
इदं त्यत्पात्रमिन्द्रपान	६. ४४. १६
इदं द्यावापृथिवी सत्यमस्तु	१. १८५. ११
इदं नमो वृषभाय स्वराजे	१. ५१. १५
इदं पितृभ्यो नमो अस्त्वद्य	१०. १५. २
इदं पित्रे मरुतामुच्यते	१. ११४. ६
इदं मे अग्ने कियते	४. ५. ६
इदं यमस्य सादनं	१०. १३५. ७
इदं वचः पर्जन्याय	७. १०१. ५
इदं वचः शतसाः	७. ८. ६
इदं वपुर्निवचनं	५. ४७. ५
इदं वसो सुतमन्धः	८. २. १
इदं वां मदिरं मध्वधुक्षन्	८. ३८. ३
इदं वामास्ये हविः	४. ४९. १
इदं विष्णुर्वि चक्रमे	१. २२. १७
इदं श्रेष्ठं० ज्योतिरागाच्चित्रः	१. ११३. १
इदं श्रेष्ठं० ज्योतिरुत्तमं	१०. १७०. ३
इदं सु मे जरितरा	१०. २८. ४
इदं स्वरिदमिदास	१०. १२४. ६
इदं ह नूनमेषां सुम्नं	८. १८. १
इदं हविर्मघवन्तुभ्यं	१०. ११६. ७
इदं हि वां प्रदिवि	५. ७६. ४
इदं ह्यन्वोजसा सुतं	३. ५१. १०
इदमकर्म नमो अभ्रियाय	१०. ६८. १२
इदमग्ने सुधितं दुर्धितं	१. १४०. ११
इदमापः प्र वहत	१. २३. २२
	१०. ९. ८
इदमित्था रौद्रं गूर्तवचा	१०. ६१. १
इदमु त्यत्पुरुतमं	४. ५१. १
इदमु त्यन्महि महामनीकं	४. ५. ९
इदमुदकं पिबतेत्यब्रवीतनेदं	१. १६१. ८
इदा हि त उषो अद्रिसानो	६. ६५. ५
इदा हि ते वेविषतः	६. २१. ५
इदा हि व उपस्तुतिमिदा	८. २७. ११
इदा हि वो विधते	६. ६५. ४
इदाह्नः पीतिमुत वो	४. ३३. ११
इध्मं यस्ते जभरच्छश्रमाणो	४. १२. २
इध्मेनाग्न इच्छमानो	३. १८. ३
इनोत पृच्छ जनिमा	३. ३८. २
इनो राजन्नरतिः समिद्धो	१०. ३. १
इनो वाजानां पतिरिनः	१०. २६. ७
इन्दविन्द्राय बृहते	९. ६९. १०
इन्दुं रिहन्ति महिषा	९. ९७. ५७
इन्दुः पविष्ट चारुर्मदाया	९. १०९. ७
इन्दुः पविष्ट चेतनः	९. ६४. १०
इन्दुः पुनानः प्रजामुराणः	९. १०९. ५
इन्दुः पुनानो अति	९. ८६. २६
इन्दुरत्यो न वाजसृत्	९. ४३. ५
इन्दुरिन्द्राय पवत	९. १०१. ५
इन्दुर्देवानामुप सख्यमायन्	९. ९७. ५
इन्दुर्वाजी पवते गोन्योघा	९. ९७. १०
इन्दुर्हिन्वानो अर्षति	९. ६७. ४
इन्दुर्हियानः सोतृभि	९. ३०. २
इन्दो यथा तव स्तवो	९. ५५. २
इन्दो यदद्रिभिः सुतः	९. २४. ५
इन्दो व्यव्यमर्षसि	९. ६७. ५
इन्दो समुद्रमीङ्खय	९. ३५. २
इन्द्रं कामा वसूयन्तो	४. १६. १५
इन्द्रं कुत्सो वृत्रहणं	१. १०६. ६
इन्द्रं तं शुम्भ पुरुहन्	८. ७०. २
इन्द्रं नरो नेमधिता	७. २७. १
इन्द्रं नो अग्ने वसुभिः	७. १०. ४
इन्द्रं परेऽवरे मध्यमास	४. २५. ८
इन्द्रं प्रत्नेन मन्मना	८. ७६. ६
इन्द्रं मातर्हवामह	१. १६. ३
इन्द्रं मतिर्हृद आ	३. ३९. १
इन्द्रं मित्रं वरुणमग्निमाहुरथो	१. १६४. ४६
इन्द्रं मित्रं वरुणमग्निमूतये	१. १०६. १
इन्द्रं वयं महाधन	१. ७. ५
इन्द्रं वर्धन्तु नो गिर	८. १३. १६
इन्द्रं वर्धन्तो अप्तुरः	९. ६३. ५
इन्द्रं वाणीरनुत्तमन्युमेव	७. ३१. १२
इन्द्रं विश्वा अवीवृधन्	१. ११. १
इन्द्रं वृत्राय हन्तवे देवासो	८. १२. २२
इन्द्रं वृत्राय हन्तवे पुरुहूतमुप	३. ३७. ५
इन्द्रं वो नरः सख्याय	६. २९. १
इन्द्रं वो विश्वतस्परि	१. ७. १०
इन्द्रं सोमस्य पीतये	३. ४२. ४
इन्द्रं स्तवा नृतमं यस्य	१०. ८९. १
इन्द्रः किल श्रुत्या अस्य	१०. १११. ३
इन्द्रः पूर्भिदातिरद्	३. ३४. १
इन्द्रः स दामने कृत	८. ९३. ८
इन्द्रः समत्सु यजमानमार्यं	१. १३०. ८
इन्द्रः सहस्रदाव्नां	१. १७. ५
इन्द्रः सीतां नि गृह्णातु	४. ५७. ७
इन्द्रः सुतेषु सोमेषु	८. १३. १
इन्द्रः सुत्रामा स्ववाँ	६. ४७. १२
	१०. १३१. ६
इन्द्रः सु पूषा वृषणा	३. ५७. २
इन्द्रः सुशिप्रो मघवा	३. ३०. ३
इन्द्रः सूर्यस्य रश्मिभि	८. १२. ९
इन्द्रः स्पळुत वृत्रहा	८. ६१. १५
इन्द्रः स्वर्षा जनयन्	३. ३४. ४
इन्द्रः स्वाहा पिबतु	३. ५०. १
इन्द्र आशाभ्यस्परि	२. ४१. १२
इन्द्र आसां नेता	१०. १०३. ८
इन्द्र इत्सोमपा एक	८. २. ४
इन्द्र इद्धर्योः सचा	१. ७. २
इन्द्र इन्नो महानां	८. ९२. ३
इन्द्र इषे ददातु न	८. ९३. ३४
इन्द्र उक्थेन शवसा	१०. १००. ५
इन्द्र ऋभुभिर्वाजवद्भिः	३. ६०. ५
इन्द्र ऋभुभिर्वाजिभि	३. ६०. ७
इन्द्र ऋभुमान्वाजवान्	३. ६०. ६
इन्द्र ओषधीरसनोदहानि	३. ३४. १०
इन्द्र क्रतुं न आ भर	७. ३२. २६
इन्द्र क्रतुविदं सुतं	३. ४०. २
इन्द्र क्षत्रमभि वाममोजो	१०. १८०. ३
इन्द्र क्षत्रासमातिषु	१०. ६०. ५
इन्द्र गृणीष उ स्तुषे	८. ६५. ५
इन्द्र जहि पुमांसं	७. १०४. २४
इन्द्र जामय उत ये	६. २५. ३
इन्द्र ज्येष्ठं न आ भरँ	६. ४६. ५
इन्द्रज्येष्ठान्बृहद्भ्यः	४. ५४. ५
इन्द्रज्येष्ठा मरुद्गणा	१. २३. ८
	२. ४१. १५

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

इन्द्रतमा हि धिष्ण्या १. १८२. २
इन्द्र तुभ्यमिद्रिवो १. ८०. ७
इन्द्र तुभ्यमिन्मघवन् ६. ४४. १०
इन्द्र त्रिधातु शरणं ६. ४६. ९
इन्द्र त्वमवितेदसीत्या ८. १३. २६
इन्द्र त्वा वृषभं वयं ३. ४०. १
इन्द्र त्वोतास आ वयं १. ८. ३
इन्द्र दध्र मघवन्त्वा १०. १००. १
इन्द्र दध्र यामकोशा ३. ३०. १५
इन्द्र दध्रस्य पूरसि ८. ८०. ७
इन्द्र नेदीय एदिहि ८. ५३. ५
इन्द्र पिब तुभ्यं सुतो ६. ४०. १
इन्द्र पिब प्रतिकामं १०. ११२. १
इन्द्र पिब वृषधूतस्य ३. ४३. ७
इन्द्र पिब स्वधया ३. ३५. १०
इन्द्र प्र णः पुरएतेव ६. ४७. ७
इन्द्र प्र णो धितावानं ३. ४०. ३
इन्द्र प्र णो रथमव ८. ८०. ४
इन्द्रप्रसूता वरुणप्रशिष्टा १०. ६६. २
इन्द्र प्रेहि पुरस्त्वं ८. १७. ९
इन्द्र ब्रह्म क्रियमाणा ५. २९. १५
इन्द्रमग्निं कविच्छदा ३. १२. ३
इन्द्रमच्छ सुता इमे ९. १०६. १
इन्द्र मरुत्व इह पाहि ३. ५१. ७
इन्द्रमिक्वेशिना हरी ८. १४. १२
इन्द्रमित्था गिरो ३. ४२. ३
इन्द्रमिद्गाथिनो बृहदिन्द्र १. ७. १
इन्द्रमिद्देवतातय ८. ३. ५
इन्द्रमिद्धरी वहतो १. ८४. २
इन्द्रमिद्रिमहीनां मेघे ८. ६. ४४
इन्द्रमिद्वेदुभये वि ४. ३९. ५
इन्द्रमीशानमोजसाभि १. ११. ८
इन्द्रयुक्ष्वानि वाहुधुः ८. ६. ३५
इन्द्र सृळ मक्षं जीवातुमिच्छ ६. ४७. १०
इन्द्रमेव धिषणा सातये ६. १९. २
इन्द्र य उ नु ते अस्ति ८. ८१. ८
इन्द्र यथा ह्यस्ति ते ८. २४. ९
इन्द्र यस्ते नदीयसीं ८. ९५. ५
इन्द्र राजेषु नोऽव १. ७. ४
इन्द्रवायू अयं सुतस्तं ४. ४६. ६
इन्द्रवायू इमे सुता १. २. ४
इन्द्रवायू बृहस्पतिं मित्राग्निं १. १४. १
इन्द्रवायू बृहस्पतिं सुहवेह १०. १४१. ४
इन्द्रवायू मनोजुवा १. २३. ३
इन्द्र शविष्ठ सत्पते ८. १३. १२
इन्द्र शुष्मो न आ गहि ८. ९५. ८
इन्द्र शुष्मो हि नो रयिं ८. ९५. ९
इन्द्रश्च सृळयाति नो २. ४१. ११
इन्द्रश्च वायवेषां सुतानां ५. ५१. १
इन्द्रश्च वायवेषां सोमानां ४. ४७. २
इन्द्रश्च सोमं पिबतं ४. ५०. १०
इन्द्रश्चिद्धा तदब्रवीत् ८. ३३. १७
इन्द्र श्रुधि सु मे हवमस्मे ८. ८२. १
इन्द्र श्रेष्ठानि द्रविणानि २. २१. १
इन्द्र सोमं पिब ऋतुना १. १५. १
इन्द्र सोमं सोमपते ३. ३२. १
इन्द्र सोममिमं पिब १०. २४. १
इन्द्र सोमाः सुता इमे तव ३. ४०. ४
इन्द्र सोमाः सुता इमे तान् ३. ४२. ५
इन्द्रस्तुजो बर्हणा आ ३. ३४. ५
इन्द्र स्थातर्हरीणां ८. २४. १७
इन्द्रस्य कर्म सुहृता ३. ३२. ८
इन्द्रस्य वृतीरिषिता १०. १०८. २
इन्द्रस्य नु वीर्याणि १. ३२. १
इन्द्रस्य नु सुकृतं दैव्यं १०. १००. १
इन्द्रस्य वज्र आयसो ८. ९६. ३
इन्द्रस्य वज्रो मरुतामनीकं ६. ४७. २८
इन्द्रस्य वृष्णो वरुणस्य १०. १०३. ९
इन्द्रस्य सख्यमृभवः ३. ६०. ३
इन्द्रस्य सोम पवमान ९. ७६. ३
इन्द्रस्य सोम राधसे पुनानो ९. ८. ३
इन्द्रस्य सोम राधसे शं ९. १०. ४
इन्द्रस्य हार्दि सोमधानमा ९. १०८. १६
इन्द्रस्याग्निरसां चेष्टौ १. ३२. ३
इन्द्रस्याज्ञा तविषीभ्यो १०. ११३. ६
इन्द्रस्येव रातिमाजोहुवानाः १०. १७८. २
इन्द्राकुत्सा वहमाना ५. ३१. ९
इन्द्रा को वां वरुणा ४. ४१. १
इन्द्राग्नी अपसस्पर्युप ३. १२. ७
इन्द्राग्नी अपादियं पूर्वागात् १. १०९. १
इन्द्राग्नी अवसा गत ७. ९४. ७
इन्द्राग्नी आ गतं सुतं ३. १२. १
इन्द्राग्नी आ हि तन्वते ६. ५९. ७
इन्द्राग्नी उक्थवाहसा ६. ५९. १०
इन्द्राग्नी को अस्य वां ६. ५९. ५
इन्द्राग्नी जरितुः सचा ३. १२. २
इन्द्राग्नी तपन्ति माधा ६. ५९. ८
इन्द्राग्नी तविषाणि वां ३. १२. ८
इन्द्राग्नी नवतिं पुरो ३. १२. ६
इन्द्राग्नी मित्रावरुणादितिं ५. ४६. ३
इन्द्राग्नी यमवथ उभा ५. ८६. १
इन्द्राग्नी युवं सु नः ८. ४०. १
इन्द्राग्नी युवामिमेऽभि ६. ६०. ७
इन्द्राग्नी युवोरपि वसु ६. ५९. ९
इन्द्राग्नी रोचना दिवः ३. १२. ९
इन्द्राग्नी वृत्रहत्येषु १०. ६५. २
इन्द्राग्नी शतदाव्न्यश्च ५. २७. ६
इन्द्राग्नी शृणुतं हवं ६. ६०. १५
इन्द्राणीमासु नारिषु १०. ८६. ११
इन्द्रा नु पूषणा वयं ६. ५७. १
इन्द्रापर्वता बृहता रथेन ३. ५३. १
इन्द्राबृहस्पती वयं ४. ४९. ५
इन्द्राय गाव आशिरं ८. ६९. ६
इन्द्राय गिरो अनिशित १०. ८९. ४
इन्द्राय नूनमर्चतोक्थानि १. ८४. ५
इन्द्राय पवते मदः ९. १०७. १७
इन्द्राय मद्वने सुतं ८. ९२. १९
इन्द्राय वृषणं मदं ९. १०६. ५
इन्द्राय साम गायत ८. ९८. १
इन्द्राय सु मदिन्तमं ८. १. १९
इन्द्राय सोम परि पित्र्यसे ९. ७८. २
इन्द्राय सोम पवसे ९. २३. ६
इन्द्राय सोम पातवे नृभिर्यतः ९. १०८. १५
इन्द्राय सोम पातवे मदाय ९. ११. ८
इन्द्राय सोम पातवे वृत्रघ्ने ९. ९८. १०
इन्द्राय सोम सुषुतः ९. ८५. १
इन्द्राय सोमाः प्रदिवो ३. ३६. २
इन्द्राय हि द्यौरसुरो १. १३१. १
इन्द्रा याहि चित्रभानो १. ३. ४
इन्द्रा याहि तूतुजान उप ब्रह्माणि १. ३. ६
इन्द्रा याहि धियेषितो १. ३. ५
इन्द्रा युवं वरुणा दिद्युमस्मिन् ४. ४१. ४
इन्द्रा युवं वरुणा भूतमस्या ४. ४१. ५
इन्द्रायेन्दुं पुनीतनोग्रं ९. ६२. २९
इन्द्रायेन्दो मरुत्वते ९. ६४. २२
इन्द्रावरुण नू नु वां १. १७. ८
इन्द्रावरुणयोरहं १. १७. १
इन्द्रावरुणा वामहं १. १७. ७
इन्द्रावरुणा मधुमत्तमस्य ६. ६८. ११
इन्द्रावरुणा यदिमानि ७. ८२. ५
इन्द्रावरुणा यदिभ्यो ८. ५९. ६
इन्द्रावरुणा युवमध्वराय ७. ८२. १
इन्द्रावरुणा वनतामिरप्रति ७. ८३. ४
इन्द्रावरुणावभ्या तपन्ति ७. ८३. ५
इन्द्रावरुणा सुतपाविमं ६. ६८. १०
इन्द्रावरुणा सौमनसमद्यां ८. ५९. ७
इन्द्राविष्णू तत्पनयाय्यं ६. ६९. ५
इन्द्राविष्णू दंसिताः ७. ९९. ५
इन्द्राविष्णू पिबतं मध्वो ६. ६९. ७
इन्द्राविष्णू मदपती ६. ६९. ३
इन्द्राविष्णू हवित्रा ६. ६९. ६
इन्द्रासोमा तपतं रक्ष ७. १०४. १
इन्द्रासोमा दुष्कृतो वव्रे ७. १०४. ३
इन्द्रासोमा पक्वमामास्वन्तर्नि ६. ७२. ४
इन्द्रासोमा परि वां भूत ७. १०४. ६
इन्द्रासोमा महि तद्वां ६. ७२. १
इन्द्रासोमा युवमङ्ग ६. ७२. ५
इन्द्रासोमा वर्तयतं दिवस्पर्यग्नि ७. १०४. ५
इन्द्रासोमा वर्तयतं दिवो ७. १०४. ४
इन्द्रासोमावहिमपः ६. ७२. ३
इन्द्रासोमा वासयथ ६. ७२. २
इन्द्रासोमा समवर्धंस ७. १०४. २
इन्द्रा ह यो वरुणा ४. ४१. २
इन्द्रा ह रत्नं वरुणा ४. ४१. ३
इन्द्रियाणि शतक्रतो ३. ३७. २
इन्द्रे आशा नमो बृहत् ७. ९४. ४
इन्द्रेण याथ सरथं सुते ३. ६०. ४
इन्द्रेण युजा निः सुजन्त १०. ६२. ७
इन्द्रेण रोचना दिवो ८. १४. ९
इन्द्रेण सं हि दृक्षसे १. ९. ७

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

इन्द्रेणैते तृत्सवो वेविषाणा	७. १८. १५
इन्द्रे भुजं शशमानास	१०. ९२. ७
इन्द्रे विश्वानि वीर्या	८. ६३. ६
इन्द्रेषिते प्रसवं भिक्षमाणे	३. ३३. २
इन्द्रेहि मत्स्यन्धसो	१. ९. १
इन्द्रो अङ्ग महद्भय	२. ४१. १०
इन्द्रो अश्रायि सुध्यो	१. ५१. १४
इन्द्रो अस्माँ अरदद्	३. ३३. ६
इन्द्रो अस्मे सुमना अस्तु	१०. १००. ४
इन्द्रोतिभिर्बहुलाभिर्नो	३. ५३. २१
इन्द्रो दधीचो अस्थभि	१. ८४. १३
इन्द्रो दिवः प्रतिमानं	१०. १११. ५
इन्द्रो दिव इन्द्र ईशे	१०. ८९. १०
इन्द्रो दीर्घाय चक्षस	१. ७. ३
इन्द्रो न यो महा कर्माणि	९. ८८. ४
इन्द्रो नेदिष्ठमवसागमिष्ठः	६. ५२. ६
इन्द्रो ब्रह्मेन्द्र ऋषिरिन्द्रः	८. १६. ७
इन्द्रो मदाय वावृधे	१. ८१. १
इन्द्रो मधु संभृतमुस्रियायां	३. ३९. ६
इन्द्रो महां सिन्धुमाशयानं	२. ११. ९
इन्द्रो मह्ना महतो अर्णवस्य वि	१०. ६७. १२
इन्द्रो मह्ना महतो अर्णवस्य व्रता	१०. १११. ४
इन्द्रो मह्ना रोदसी	८. ३. ६
इन्द्रो यज्वने पृणते च	६. २८. २
इन्द्रो यातूनामभवत्	७. १०४. २१
इन्द्रो यातोऽवसितस्य	१. ३२. १५
इन्द्रो रथाय प्रवतं	५. ३१. १
इन्द्रो राजा जगत	७. २७. ३
इन्द्रो वलं रक्षितारं	१०. ६७. ६
इन्द्रो वसुभिः परि पातु	१०. ६६. ३
इन्द्रो वा घेदियन्मघं	८. २१. १७
इन्द्रो वाजस्य स्थविरस्य	६. ३७. ५
इन्द्रो विश्वैर्वीर्यैः पत्यमान	३. ५४. १५
इन्द्रो वृत्रमवृणोच्छर्धनीतिः	३. ३४. ३
इन्द्रो वृत्रस्य तविषीं	१. ८०. १०
इन्द्रो वृत्रस्य दोधतः	१. ८०. ५
इन्द्रो हरी युयुजे अश्विना	१. १६१. ६
इन्द्रो हर्यन्तमर्जुनं	३. ४४. ५
इन्धन्वभिर्धेनुभी	२. ३४. ५
इन्धानो अग्निं वनवद्	२. २५. १
इन्धे राजा समर्यो	७. ८. १
इमं कामं मन्दया	३. ३०. २०
	३. ५०. ४
इमं घा वीरो अमृतं	८. २३. १९
इमं च नो गवेषणं	६. ५६. ५
इमं जीवेभ्यः परिधिं	१०. १८. ४
इमं जुषस्व गिर्वणः	८. १२. ५
इमं तं पश्य वृषभस्य	१०. १०२. ९
इमं त्रितो भूर्यविन्ददिच्छन्	१०. ४६. ३
इमं नरः पर्वतास्तुभ्यमापः	३. ३५. ८
इमं नरो मरुतः सश्चतानु	७. १८. २५
इमं नरो मरुतः सश्चता वृधं	३. १६. २
इमं नु मायिनं हुव	८. ७६. १
इमं नु सोममन्तितो	१. १७९. ५
इमं नो अग्न उप यज्ञमेहि	१०. १२४. १
इमं नो अग्ने अध्वरं जुषस्व	७. ४२. ५
इमं नो अग्ने अध्वरं होत	६. ५२. १२
इमं नो यज्ञममृतेषु	३. २१. १
इमं विमर्मि सुकृतं ते	१०. ४४. ९
इमं मे विद्थ्याय	३. ५४. १
इमं मे गङ्गे यमुने	१०. ७५. ५
इमं मे वरुण श्रुधी	१. २५. १९
इमं मे स्तोममश्विनेमं	८. ८५. २
इमं यज्ञं चनो धा अग्न	६. १०. ६
इमं यज्ञं त्वमस्माकमिन्द्र	४. २०. ३
इमं यज्ञं सहसावन्त्वं	३. १. २२
इमं यज्ञमिदं० मर्तास	१०. १५०. २
इमं यज्ञमिदं० सोम	१. ९१. १०
इमं यम प्रस्तरमा हि	१०. १४. ४
इमं रथमधि ये सप्त	१. १६४. ३
इमं विधन्तो० द्विता	२. ४. २
इमं विधन्तो० पशुं	१०. ४६. २
इमं स्तोमं रोदसी प्र	३. ५४. १०
इमं स्तोमं सक्रतवो	२. २७. २
इमं स्तोममभिष्टये	८. १२. ४
इमं स्तोममर्हते	१. ९४. १
इमं स्वस्मै हृद आ	२. ३५. २
इम आ यातमिन्दवः	१. १३७. २
इम इन्द्र भरतस्य	३. ५३. २४
इम इन्द्राय सुन्विरे	७. ३२. ४
इम उ त्वा पुरुशाक	६. २१. १०
इम उ त्वा वि चक्षते	८. ४५. १६
इममग्ने चमसं मा वि	१०. १६. ८
इममञ्जस्पामुभये	१०. ९२. २
इममिन्द्र गवाशिरं	३. ४२. ७
इममिन्द्र सुतं पिब	१. ८४. ४
इममिन्द्रो अदीधरद्	१०. १७३. ३
इममु त्यमथर्ववदग्निं	६. १५. १७
इममू षु त्वमस्माकं	१. २७. ४
इममू षु वो अतिथिं	६. १५. १
इमां खनाम्योषधिं	१०. १४५. १
इमां गायत्रवर्तनिं	८. ३८. ६
इमां च नः पृथिवीं	३. ५५. २१
इमां त इन्द्र सुष्टुतिं	८. १२. ३१
इमां ते धियं प्र भरे	१. १०२. १
इमां ते वाचं वसूयन्त	१. १३०. ६
इमां त्वमिन्द्र मीढ्वः	१०. ८५. ४५
इमां धियं शिक्षमाणस्य	८. ४२. ३
इमां धियं सप्तशीर्ष्णीं	१०. ६७. १
इमां प्रत्नाय सुष्टुतिं	१०. ९१. १३
इमां म इन्द्र सुष्टुतिं	८. ६. ३२
इमां मे अग्ने समिधं	१०. ७०. १
इमां मे अग्ने समिध	२. ६. १
इमां मे मरुतो गिरमिमं	८. ७. ९
इमां वां मित्रावरुणा	७. ३६. २
इमां सु पूर्व्यां धियं	८. ६. ४३
इमा अग्ने मतयस्तुभ्यं	१०. ७. २
इमा अभि प्र णोनुमो	८. ६. ७
इमा अस्मै मतयो वाचो	१०. ९१. १२
इमा अस्य प्रतूर्तयः	८. १३. २९
इमा इन्द्रं वरुणं मे	४. ४१. ९
इमा उ त्वा पस्पृधानासो	७. १८. ३
इमा उ त्वा पुरुतमस्य	६. २१. १
इमा उ त्वा पुरूवसो	८. ३. ३
इमा उ त्वा शतक्रतो	६. ४५. २५
इमा उ त्वा सुतेसुते	६. ४५. २८
इमा उ वः सुदानवो	८. ७. १९
इमा उ वां दिविष्टय	७. ७४. १
इमा उ वां भृमयो	३. ६२. १
इमा गावः सरमे या	१०. १०८. ५
इमा गिरः सवितारं	७. ४५. ४
इमा गिर आदित्येभ्यो	२. २७. १
इमा जुषेयां सवना	८. ३८. ५
इमा जुह्वाना युष्मदा	७. ९५. ५
इमा ते वाजिन्नवमार्जनानीमा	१. १६३. ५
इमा धाना घृतस्नुवो	१. १६. २
इमा नारीरविधवाः	१०. १८. ७
इमानि त्रीणि विष्टपा	८. ९१. ५
इमानि वां भागधेयानि	८. ५९. १
इमा नु कं भुवना	१०. १५७. १
इमा ब्रह्म बृहद्दिवो	१०. १२०. ८
इमा ब्रह्म ब्रह्मवाहः	३. ४१. ३
इमा ब्रह्म सरस्वति	२. ४१. १८
इमा ब्रह्माणि वर्धना	५. ७३. १०
इमा ब्रह्मेन्द्र तुभ्यं शंसि	१०. १४८. ४
इमामग्ने शरणिं मीमृषो	१. ३१. १६
इमामु षु सोमसुतिमुप	७. ९३. ६
इमामू नु कवितमस्य	५. ८५. ६
इमामू षु प्रभृतिं	३. ३६. १
इमामू ष्वासुरस्य	५. ८५. ५
इमा रुद्राय तवसे	१. ११४. १
इमा रुद्राय स्थिरधन्वने	७. ४६. १
इमास्त इन्द्र पृश्नयो	८. ६. १९
इमे चित्तव मन्यवे	१. ८०. ११
इमे चेतारो अनृतस्य	७. ६०. ५
इमे जीवा वि मृतैराववृत्रन्	१०. १८. ३
इमे त इन्द्र ते वयं	१. ५७. ४
इमे त इन्द्र सोमास्तीव्रा	८. २. १०
इमे तुरं मरुतो रामयन्तीमे	७. ५६. १९
इमे दिवो अनिमिषा	७. ६०. ७
इमे नरो वृत्रहत्येषु	७. १. १०
इमे भोजा अङ्गिरसो	३. ५३. ७
इमे मा पीता यशस	८. ४८. ५
इमे मित्रो वरुणो वूळभासो	७. ६०. ६
इमे यामासस्त्वद्रिगभूवन्	५. ३. १२
इमे ये ते सु वायो	१. १३५. ९
इमे ये नार्वाङ् परश्चरन्ति	१०. ७१. ९
इमे रध्रं चिन्मरुतो	७. ५६. २०
इमे वां सोमा अप्स्वा	१. १३५. ६
इमे विप्रस्य वेधसो	८. ४३. १

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

इमे सोमास इन्दवः	१. १६. ६
इमे हि ते कारवो	८. ३. १८
इमे हि ते ब्रह्मकृतः	७. ३२. २
इमो अग्ने वीततमानि	७. १. १८
इमौ देवौ जायमानौ	२. ४०. २
इयं त इन्द्र गिर्वणो	८. १३. ४
इयं त ऋत्वियावती	८. १२. १०
इयं ते नव्यसी मतिरग्ने	८. ७४. ७
इयं ते पूषन्नाघृणे	३. ६२. ७
इयं देव पुरोहितिर्युवभ्यां	७. ६०. १२
	७. ६१. ७
इयं न उस्रा प्रथमा	१०. ३५. ४
इयं मद्वां प्र स्तृणीते	६. ६७. २
इयं मनीषा इयमश्विना	७. ७०. ७
	७. ७१. ६
इयं मनीषा बृहती	७. ९९. ६
इयं मे नाभिरिह मे	१०. ६१. १९
इयं या नीच्यर्किणी	८. १०१. १३
इयं वां ब्रह्मणस्पते	७. ९७. ९
इयं वामस्य मन्मन	७. ९४. १
इयं वामह्वे शृणुतं मे	१०. ३९. ६
इयं विसृष्टिर्यत आबभूव	१०. १२९. ७
इयं वेदिः परो अन्तः	१. १६४. ३५
इयं शुष्मेभिर्बिसखा	६. ६१. २
इयं सा भूया उषसामिव	१०. ३१. ५
इयं सा वो अस्मे	१. १८६. ११
इयत्तकः कुषुम्भकस्तकं	१. १९१. १५
इयत्तिका शकुन्तिका	१. १९१. ११
इयमददाद्रभसमृणच्युतं	६. ६१. १
इयमिन्द्रं वरुणमष्ट	७. ८४. ५
	७. ८५. ५
इयमु ते अनुष्टुतिश्चकृषे	८. ६३. ८
इयमेषामसृतानां गीः	१०. ७४. ३
इरज्यन्नग्ने प्रथयस्व	१०. १४०. ४
इरावती धेनुमती हि	७. ९९. ३
इरावतीर्वरुण धेनवो	५. ६९. २
इषं तोकाय नो दधदस्मभ्यं	९. ६५. २१
इषं दुहन्त्सुदुघां विश्वधायसं	१०. १२२. ६
इषमूर्जं च पिन्वस	९. ६३. २
इषमूर्जं पवमानाभ्यर्षसि	९. ८६. ३५
इषमूर्जमभ्यर्षाश्वं	९. ९४. ५
इषा मन्दस्वादु तेऽरं	८. ८२. ३
इषिरेण ते मनसा	८. ४८. ७
इषुर्न धन्वन्प्रति धीयते	९. ६९. १
इषुर्न श्रिय इषुधेरसना	१०. ९५. ३
इषे पवस्व धारया	९. ६४. १३
इष्कर्तारमध्वरस्य	१०. १४०. ५
इष्कर्तारमनिष्कृतं	८. ९९. ८
इष्कृताहावमवतं	१०. १०१. ६
इष्कृतिर्नाम वो मातायो	१०. ९७. ९
इष्टा होत्रा असृक्षतेन्द्रं	८. ९३. २३
इष्यन्वाचमुपवक्तेव	९. ९५. ५
इह त्या पुरुभूतमा देवा	८. २२. ३
इह त्या पुरुभूतमा पुरू	५. ७३. २
इह त्या सधमाद्या युजानः	८. १३. २७
इह त्या सधमाद्या हरी	८. ३२. २९
	८. ९३. २४
इह त्वं सूनो सहसो	४. २. २
इह त्वष्टारमग्रियं	१. १३. १०
इह त्वा गोपरीणसा	८. ४५. २४
इह त्वा भूयो चरेदुप	४. ४. ९
इह प्रजामिह रयिं	४. ३६. ९
इह प्र ब्रूहि यतमः	१०. ८७. ८
इह प्रयाणमस्तु	४. ४६. ७
इह प्रियं प्रजया ते	१०. ८५. २७
इह ब्रवीतु य ईमङ्ग	१. १६४. ७
इह श्रुत इन्द्रो अस्मे	१०. २२. २
इहा गतं वृषण्वसू	८. ७३. १०
इहि तिस्रः परावत	८. ३२. २२
इहेन्द्राग्नी उप ह्वये	१. २१. १
इहेन्द्राणीमुप ह्वये	१. २२. १२
इहेव शृण्व एषां	१. ३७. ३
इहेह जाता समवावशीता	१. १८१. ४
इहेह यद्वां समना	४. ४३. ७
	४. ४४. ७
इहेह वः स्वतवसः	७. ५९. ११
इहेह वो मनसा	३. ६०. १
इहैव स्तं मा वि यौष्टं	१०. ८५. ४२
इहैवैधि माप च्योष्ठाः	१०. १७३. २
इहोप यात शवसो	४. ३५. १
ईक्षे रायः क्षयस्य	४. २०. ८
ईङ्खयन्तीरपस्युव	१०. १५३. १
ईजानामिद्यौर्गूर्ता	१०. १३२. १
ईजे यज्ञेभिः शशमे	६. ३. २
ईळते त्वामवस्यवः	१. १४. ५
ईळानायावस्यवे यविष्ठ	२. ६. ६
ईळितो अग्न आ० इयं हि	१. १४२. ४
ईळितो अग्न आ० सुखै	५. ५. ३
ईळितो अग्ने मनसा	२. ३. ३
ईळिष्वा हि प्रतीव्यं	८. २३. १
ईळे अग्निं विपश्चितं	३. २७. २
ईळे अग्निं स्वसंवं	५. ६०. १
ईळे गिरा मनुर्हितं	८. १९. २१
ईळे च त्वा यजमानो	३. १. १५
ईळे द्यावापृथिवी	१. ११२. १
ईळेन्यं वो असुरं	७. २. ३
ईळेन्यः पवमानो	९. ५. ३
ईळेन्यो नमस्यस्तिर	३. २७. १३
ईळेन्यो वो मनुषो	७. ९. ४
ईयिवांसमति स्रिधः	३. ९. ४
ईयुरर्थं न व्यर्थं पदज्ञी	७. १८. ९
ईयुर्गावो न यवसादगोपा	७. १८. १०
ईयुष्टे ये पूर्वतरामपश्यन्	१. ११३. ११
ईर्मान्तासः सिलिकमध्यमासः	१. १६३. १०
ईर्मान्यद्वपुषे वपुश्चक्रं	५. ७३. ३
ईशान इमा भुवनानि	९. ८६. ३७
ईशानकृतो धुनयो	१. ६४. ५
ईशानाय प्रहुतिं यस्त	७. ९०. २
ईशाना वार्याणां क्षयन्ती	१०. ९. ५
ईशानासो ये दधते	७. ९०. ६
ईशिषे वार्यस्य हि	८. ४४. १८
ईशे यो विश्वस्या	१०. ६. ३
ईशे ह्यग्निरमृतस्य	७. ४. ६
उक्थं चन शस्यमान	८. २. १४
उक्थउक्थे सोम इन्द्रं	७. २६. २
उक्थभृतं सामभृतं	७. ३३. १४
उक्थमिन्द्राय शंस्यं	१. १०. ५
उक्थवाहसे विभ्वे	८. ९६. ११
उक्थेभिरर्वागवसे	१. ४७. १०
उक्थेभिर्हवामहे	७. ९४. ११
उक्थेष्विन्नु शूर येषु	२. ११. ३
उक्षन्ते अश्वाँ अत्याँ	२. ३४. ३
उक्षान्नाय वशान्नाय	८. ४३. ११
उक्षा महाँ अभि ववक्ष	१. १४६. २
उक्षा मिमाति प्रति यन्ति	९. ६९. ४
उक्षा समुद्रो अरुषः	५. ४७. ३
उक्षेव यूथा परियन्	९. ७१. ९
उक्ष्णो हि मे पञ्चदश	१०. ८६. १४
उग्रं न वीरं नमसोप	८. ४९. ६
उग्रं युयुज्म पृतनासु	८. ६१. १२
उग्रं व ओजः स्थिरा	७. ५६. ४
उग्रबाहुर्म्रक्षकृत्वा पुरन्दरो	८. ६१. १०
उग्रस्तुराषाळभिभूत्योजा	३. ४८. ४
उग्रा इव प्रवहन्तः	१०. ९४. ६
उग्रा विघनिना मृध	६. ६०. ५
उग्रा सन्ता हवामह	१. २१. ४
उग्रेष्विन्नु शूर मन्दसान	२. ११. १७
उग्रो जज्ञे वीर्याय स्वधाः	७. २०. १
उग्रो वां ककुहो ययिः	५. ७३. ७
उचथ्ये वपुषि यः	८. ४६. २८
उच्चा ते जातमन्धसो	९. ६१. १०
उच्चा दिवि दक्षिणावन्तो	१०. १०७. २
उच्छन्ती या कृणोषि	७. ८१. ४
उच्छन्तीरद्य चितयन्त	४. ५१. ३
उच्छन्त्यां मे यजता	५. ६४. ७
उच्छन्नुषसः सुदिना	७. ९०. ४
उच्छा दिवो दुहितः	६. ६५. ६
उच्छिष्टं चम्वोर्भर	१. २८. ९
उच्छुष्मा ओषधीनां	१०. ९७. ८
उच्छोचिषा सहसस्पुत्र	३. १८. ४
उच्छ्रयस्व वनस्पते	३. ८. ३
उच्छ्वञ्चमाना पृथिवी	१०. १८. १२
उच्छ्वञ्चस्व पृथिवि	१०. १८. ११
उज्जातमिन्द्र ते शव	८. ६२. १०
उज्जायतां परशुर्ज्योतिषा	१०. ४३. ९
उत ऋतुभिर्ऋतुपाः पाहि	३. ४७. ३
उत कण्वं नृषदः पुत्र	१०. ३१. ११
उत गाव इवादन्त्युत	१०. १४६. ३
उत ग्ना अग्निरध्वर	४. ९. ४
उत ग्ना व्यन्तु देवपत्नी	५. ४६. ८

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उत वा नेमो अस्तुतः ५. ६१. ८
उत वा स रथीतमः ६. ५६. २
उत ने सुम्नमा हरी ८. १३. २३
उत त्यं चमसं नवं १. २०. ६
उत त्यं पुत्रमद्रुवः ४. ३०. १६
उत त्यं भुज्युमश्विना ७. ६८. ७
उत त्यं वीरं धनसा ८. ८६. ४
उत त्यदाश्वश्वं यदिन्द्र ८. ६. २४
उत त्यद्वां वृषणे अश्विना ७. ६८. ६
उत त्यजो मारुतं शर्ध ५. ४६. ५
उत त्या तुर्वशायदू ४. ३०. १७
उत त्या दैव्या भिषजा ८. १८. ८
उत त्या मे यशसा १. १२२. ४
उत त्या मे रौद्रावर्चिमन्ता १०. ६१. १५
उत त्या मे हवमा ६. ५०. १०
उत त्या यज्ञता हरी ४. १५. ८
उत त्या सद्य आर्या ४. ३०. १८
उत त्या हरितो दश ९. ६३. ९
उत त्ये देवी सुभगे २. ३१. ५
उत त्ये नः पर्वतासः ५. ४६. ६
उत त्ये नो मरुतो ७. ३६. ७
उत त्ये मा धन्यस्य ५. ३३. १०
उत त्ये मा पौरुकुत्स्यस्य ५. ३३. ८
उत त्ये मा मारुताश्वस्य ५. ३३. ९
उत त्वं मघवञ्छृणु ८. ४५. ६
उत त्वं सद्मे स्थिर १०. ७१. ५
उत त्वं सूनो सहसो ६. ५०. ९
उत त्वः पश्यन्न ददर्श १०. ७१. ४
उत त्वाग्ने मम स्तुतो ८. ४३. १७
उत त्वा पीतयो मम ८. ४४. ३२
उत त्वा मम्नवे वयं ८. ४३. १२
उत त्वावन्तं वयं ८. ४५. १७
उत त्वा शृणुष्वरे ८. ४३. ११
उत त्वास्तिते मह्यं ८. ६७. १०
उत त्वास्मत्सु वयं ९. ४५. ३
उत त्वा स्त्री शशीवसी ५. ६१. ६
उत दासं कौलितरं ४. ३०. १४
उत दासस्य वर्चिनः ४. ३०. १५
उत दासा परिविषे १०. ६२. १०
उत देवा अवहितं १०. १३७. १

उत द्यावापृथिवी ६. ५०. ३
उत द्युमत्सुवीर्यं १. ७४. ९
उत नः कर्णशोभना ८. ७८. ३
उत नः पितुमा भर ८. ३२. ८
उत नः प्रिया प्रियासु ६. ६१. १०
उत नः सिन्धुरपां ८. २५. १४
उत नः सुत्रात्रो देवगोपाः ६. ६८. ७
उत नः सुयोत्मा १. १४१. १२
उत नः सुभगाँ अरि १. ४. ६
उत न ईं त्वष्टा १. १८६. ६
उत न ईं मतयो १. १८६. ७
उत न ईं मरुतो १. १८६. ८
उत न एना पवया ९. ९७. ५३
उत नूनं यदिन्द्रियं ४. ३०. २३
उत नो गोमतस्कृधि ८. ३२. ९
उत नो गोमतीरिष आ ५. ७९. ८
उत नो गोमतीरिष उत ८. ५. ९
उत नो गोमतीरिषो ९. ६२. २४
उत नो गोविदश्वविद् ९. ५५. ३
उत नो गोपतिं धिय ६. ५३. १०
उत नो दिव्या इव ८. ५. २१
उत नो देव देवाँ ८. ७५. २
उत नो देवावश्विना १०. ९३. ६
उत नो देव्यदितिरुरुष्यतां ८. २५. १०
उत नो धियो गोअग्राः १. ९०. ५
उत नो नक्तमपां १०. ९३. ५
उत नो ब्रह्मन्नविष ३. १३. ६
उत नो रुद्रा दिवस्कृता १०. ९३. ७
उत नो वाजसातये ९. १३. ४
उत नो विष्णुरुत वातो ५. ४६. ४
उत नोऽहिर्बुध्न्यः ६. ५०. १४
उत नोऽहिर्बुध्न्यो १. १८६. ५
उत प्रधिमदहस्रस्य १०. १०२. ७
उत प्र पिप्य ऊधरुषायाः ९. ९३. ३
उत ब्रह्मतिदीव्या १०. ४२. ९
उत ब्रह्मण्या वयं ८. ६. ३३
उत ब्रह्माणो मरुतो ५. २९. ३
उत ब्रुवन्तु जन्तव १. ७४. २
उत ब्रुवन्तु नो निदो १. ४. ५
उत म क्रत्रे पुरुहूत ८. ६६. ११

उत मन्ये पितुरहो १. १५९. २
उत माता महिष ४. १८. ११
उत मे प्रियोर्वीयियोः ८. १९. ३७
उत मेऽप्सुतिर्ममन्दुषी ५. ६१. ९
उत मे वोचतादिति ५. ६१. १८
उत यासि शतितस्त्रीणि ५. ८१. ४
उत यो मानुषेभ्या १. २५. १५
उत योषणे दिव्ये ७. २. ६
उत वः शंसमुशिजामिव २. ३१. ६
उत वां विष्णु मथास्वन्भो १. १५३. ४
उत वा उ परि हृणसि १०. १४२. ३
उत वाजिनं पुरुनिष्षिध्वानं ४. ३८. २
उत वात पितासि न १०. १८६. २
उत वा यः सहस्य १. १४७. ५
उत वा यस्य वाजिनो १. ८६. ३
उत वा ग्नो नो मर्धया २. २३. ७
उत व्रतानि सोम ते १०. २५. ३
उत शुष्मस्य पृञ्चुधा ४. ३०. १३
उत सखास्यश्विनोरुत ४. ५२. ३
उत सिन्धुं विवास्यं ४. ३०. १२
उत सु त्ये पयोवृधा ८. २. ४२
उत स्तुतासो मरुतो ७. ५७. १
उत स्म ते पलव्यायूर्णा ५. ५२. ९
उत स्म ते वनस्पते १. २८. १
उत स्म दुर्गृभीषसे ५. ९. ४
उत स्म यं शिशुं यथा ५. ९. ३
उत स्म रथिं परि ९. ८७. ९
उत स्म सद्य हर्यतस्य १०. ९६. १०
उत स्मा सद्य इत्परि ४. ३१. ८
उत स्मासु प्रयमः ४. ३८. १
उत स्मास्य तन्यतोरिव ४. ३८. ८
उत स्मास्य द्रवतस्तुरण्यतः ४. ४०. ३
उत स्मास्य पनयन्ति ४. ३८. ९
उत स्मा हि त्वामाहुरिन् ४. ३१. ७
उत स्मैनं वस्त्रमथिं ४. ३८. ५
उत स्व देवः सविता ६. ५०. १३
उत स्व देवो अध्वनस्य २. ३१. ४
उत स्व न इन्द्रो २. ३१. ३
उत स्व न ऊतिभिरुतयो १०. ९२. १२

उत स्य वाजी क्षिपणिं ४. ४०. ४
उत स्य वाजी सहुरिर्मतावा ४. ३८. ७
उत स्य वाज्यरुषस्तुविष्व ५. ५६. ७
उत स्या नः सरस्वती घोरा ६. ६१. ७
उत स्या नः सरस्वती जुषाणो ७. ९५. ४
उत स्या नो दिवा ८. १८. ७
उत स्या वां मधुमन् १. ११९. ९
उत स्या वां रुशतो १. १८१. ८
उत स्या श्वेतयावरी ८. २६. १८
उत स्वया तन्वा सं वदे ७. ८६. २
उत स्वराजे अदितिः ८. १२. १४
उत स्वराजो अदिति ७. ६६. ६
उत स्वस्या अरात्या ९. ७९. ३
उत स्वानासो दिवि ५. २. १०
उतादः परुषे गवि ६. ५६. ३
उताभये पुरुहूत श्रवोभि ३. ३०. ५
उता यातं संगवे प्रात ५. ७६. ३
उतालब्धं स्नृषुहि जातवेद १०. ८७. ७
उताशिष्ठा अनु शृण्वन्ति २. २४. १३
उतासि मैत्रावरुणो ७. ३३. ११
उताहं नक्तमुत सोम ९. १०७. २०
उतेदानीं भगवन्तः ७. ४१. ४
उतेशिषे प्रसवस्य ५. ८१. ५
उतो वा ते पुरुष्या ७. २९. ४
उतो नो अस्य कस्य चिद् ५. ३८. ४
उतो नो अस्या उषसो १. १३१. ६
उतो न्वस्य जोषमाँ ८. ९४. ६
उतो न्वस्य यत्पदं ८. ७२. १८
उतो न्वस्य यन्महद्दध्वा ८. ७२. ६
उतो पतिर्यं उच्यते ८. १३. ९
उतो पितृभ्यां प्रविदानु ३. ७. ६
उतो स मह्नमिन्दुभिः १. २३. १५
उतो सहस्रमर्णसं ९. ६४. २६
उतो हि वां दात्रा ४. ३८. १
उतो हि वां पूर्व्या ३. ५४. ४
उतो हि वां रत्नधेयानि ७. ५३. ३
उत्तराहमुत्तर उत्तरे १०. १४५. ३
उत्तानपर्णे सुभगे १०. १४५. २
उत्तानायामजनयन् २. १०. ३
उत्तानायामव भरा ३. २९. ३

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उत्तिष्ठताव पश्यतेन्द्रस्य १०. १७९. १
उत्तिष्ठ नूनमेषां स्तोमैः ५. ५६. ५
उत्तिष्ठन्नोजसा सह ८. ७६. १०
उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते १. ४०. १
उत्तिष्ठसि स्वाहुतो १०. ११८. २
उत्ते बृहन्तो अर्चयः ८. ४४. ४
उत्ते वयश्चिद्वसतेरपप्तन् १. १२४. १२
६. ६४. ६
उत्ते शतान्मघवन्नुच्च १. १०२. ७
उत्ते शुष्मा जिहतामुत्ते १०. १४२. ६
उत्ते शुष्मास ईरते ९. ५०. १
उत्ते शुष्मासो अस्थू ९. ५३. १
उत्ते स्तभ्नामि पृथिवीं १०. १८. १३
उत्त्वा मन्दन्तु स्तोमाः ८. ६४. १
उत्पुरस्तात्सूर्य पति १. १९१. ८
उत्पूषणं युवामहे ६. ५७. ६
उत्सूर्यो बृहदर्चीष्यश्रेत् ७. ६२. १
उत्स्म वातो वहति १०. १०२. २
उदगादयमादित्यो १. ५०. १३
उदग्ने तव तद्घृतादर्ची ८. ४३. १०
उदग्ने तिष्ठ प्रत्या तनुष्व ४. ४. ४
उदग्ने भारत द्युमदजस्रेण ६. १६. ४५
उदग्ने शुचयस्तव शुक्रा ८. ४४. १७
उदपप्तदसौ सूर्यः १. १९१. ९
उदपप्तज्जरणा भानवो १. ९२. २
उदभुतो न वयो रक्षमाणा १०. ६८. १
उदभ्राणीव स्तनयन् ६. ४४. १२
उदसौ सूर्यो अगादु १०. १५९. १
उदस्तम्भीत्समिधा ३. ५. १०
उदस्य बाहू शिथिरा ७. ४५. २
उदस्य शुष्मान्नानुर्नात ७. ३४. ४
उदस्य शोचिरस्थादा ७. १६. ३
उदस्य शोचिरस्थाद् ८. २३. ४
उदातैजिहते बृहद्भारो ९. ५. ५
उदानट्कुक्षो दिवमुद्गा ८. ६. ४८
उदावता त्वक्षसा पन्यसा ६. १८. ९
उदिता यो निदिता वेदिता ८. १०३. ११
उदिश्वस्य रिच्यतेंशो ७. ३२. १२
उदीरतां सूनृता उत्पुरन्धी १. १३३. ६
उदीरतामवर उत्परास १०. १५. १
उदीरय कवितमं ५. ४२. ३
उदीरयथा मरुतः ५. ५५. ५
उदीरयन्त वायुभिर्वाश्रासः ८. ७. ३
उदीरय पितरा वार आ १०. ११. ६
उदीराथामृतायते ८. ७३. १
उदीर्ष्व जीवो असुर्न १. ११३. १६
उदीर्ष्व नार्यभि जीवलोकं १०. १८. ८
उदीर्षातः पतिवती १०. ८५. २१
उदीर्षातो विश्वावसो १०. ८५. २२
उदु ज्योतिरमृतं विश्वजन्यं ७. ७६. १
उदु तिष्ठ सवितः श्रुध्यस्य ७. ३८. २
उदु तिष्ठ स्वध्वर स्तवानो ८. २३. ५
उदुत्तमं वरुण पाशमस्म १. २४. १५
उदु त्यं जातवेदसं १. ५०. १
उदु त्यच्चक्षुर्महि ६. ५१. १
उदु त्यदृशतं वपुर्दिव ७. ६६. १४
उदु त्ये अरुणप्सवश्चिरा ८. ७. ७
उदु त्ये मधुमत्तमा ८. ३. १५
उदु त्ये सूनवो गिरः १. ३७. १०
उदु ब्रह्माण्यैरत श्रवस्येन्द्रं ७. २३. १
उदु श्रिय उषसो रोचमाना ६. ६४. १
उदु हुतः समिधा यज्ञो ३. ५. ९
उदु ष्य देवः सविता दमूना ६. ७१. ४
उदु ष्य देवः सविता यथाम ७. ३८. १
उदु ष्य देवः सविता सवाय २. ३८. १
उदु ष्य देवः सविता हिरण्यया ६. ७१. १
उदु ष्य देवः सविता ८. २७. १२
उदु ष्य शप्दे दिवो ८. २५. १९
उदु स्तोमासो अग्निनो ७. ७२. ३
उदुस्रियाः सृजते सूर्यः ७. ८१. २
उदु स्वानेभिरीरत ८. ७. १७
उदू अर्या उपबर्हाम ६. ७१. ५
उदू षु णो वसो महे ८. ७०. ९
उद्गा आजदभिनक्षन्त्यो ८. १४. ८
उद्गातेव शकुने साम २. ४३. २
उद्वेदनि सुनामधं ८. ९३. १
उद्यामिवेद्नृणत्यजो ७. ३३. ५
उद्वर्पय मघवन्नाशुषा १०. १०३. १०
उद्वो हदमपिबद्वृत्रहणः १०. १७२. ४
उद्व्रध्न्यं समनसः १०. १०१. १ ३६१
उर्ध्वमीति सवितेव १. ९५. ७ ३४
उर्ध्वत्सहः सहस आजनिष्ट ५. ३१. ३ १४७
उर्ध्वदिन्द्रो महते दानवाय ५. ३२. ७ १४८
उर्ध्वद्रप्नस्य विष्टपं ८. ६९. ७ २६७
उर्ध्वनय मिनमह १. ५०. ११ १८
उर्ध्वस्य ते नवजातस्य ७. ३. ३ १९७
उर्व ऊर्मिः शाम्या ३. ३३. १३ १०५
उर्वत्स्वस्मा अकृणोतना १. १६१. ११ ६१
उर्वन्नमैरतं दंसनाभि १. ११८. ६ ४५
उर्वर्यं तमसस्परि १. ५०. १० १८
उर्वां चक्षुर्वरुण सुप्रतीकं ७. ६१. १ २१६
उर्वां पृक्षासो मधुमन्त ४. ४५. २ १३४
उर्वां पृक्षासो मधुमन्तो ७. ६०. ४ २१५
उर्वृह रक्षः सहमूलमिन्द्र ३. ३०. १७ १०३
उर्वेति प्रसवीता जनानां ७. ६३. २ २१६
उर्वेति सुभगो विश्वचक्षाः ७. ६३. १ २१६
उलप्ति भूमिं पृथिवीमुत ५. ८५. ४ १६५
उन्नदिता मौनेयेन १०. १३६. ३ ३७५
उन्मध्व ऊर्मिर्वनना ९. ८६. ४० ३०२
उन्मा पीता अर्यस्त १०. ११९. ३ ३६९
उन्मा ममन्द वृषभो २. ३३. ६ ८७
उप क्रमस्वा भर ८. ८१. ७ २७२
उप क्षत्रं पृञीत १. ४०. ८ १४
उप क्षरन्ति सिन्धवो १. १२५. ४ ४८
उपक्षेतारस्तव सुमणीते ३. १. १६ ९२
उप च्छायामिव वृणेरगन्म ६. १६. ३८ १७२
उप ते गा इवाकरं १०. १२७. ८ ३७२
उप ते३धां सहमाना १०. १४५. ६ ३७७
उप ते स्तोमान्पशुपा १. ११४. ९ ४२
उप त्मन्या वनस्पते १. १८८. १० ७३
उप त्या वह्नी गमतो ७. ७३. ४ २१९
उप त्रितस्य पाप्योरभक्त ९. १०२. २ ३१०
उप त्वा कर्मजूतये ८. २१. २ २४४
उप त्वाग्ने दिवेदिवे १. १. ७ १
उप त्वा जामयो गिरो ८. १०२. १३ २७९
उप त्वा जुह्वो मम ८. ४४. ५ २५६
उप त्वा रण्वसंदृशं ६. १६. ३७ १७२
उप त्वा सातये नरो ७. १५. ९ २००
उप नः पितवा चर १. १८७. ३ ७३
उप नः सवना गहि १. ४. २
उप नः सुतमा गतं ५. ७१. ३
उप नः सुतमा गहि सोम ३. ४२. १
उप नः सुतमा गहि हरिभि १. १६. ४
उप नः सूनवो गिरः ६. ५२. ९
उप नो देवा अवसा १. १०७. २
उप नो यातमश्विना ८. २६. ७
उप नो वाजा अध्वर ४. ३७. १
उप नो वाजिनीवसू ८. २२. ७
उप नो हरिभिः सुतं ८. ९३. ३१
उप प्र जिन्वतुशती १. ७१. १
उपप्रयन्तो अध्वरं १. ७४. १
उप प्रागाच्छसनं १. १६३. १२
उप प्रागात्परमं १. १६३. १३
उप प्रागात्सुमन्मे १. १६२. ७
उप प्रियं पनिप्रतं ९. ६७. २९
उप प्रेत कुशिकाश्चेतयध्व ३. ५३. ११
उप ब्रह्मा वाघतो वृषणा ८. ५. १४
उप ब्रह्माणि हरिवो १०. १०४. ६
उपमं त्वा मघोनां ८. ५३. १
उप मा पेपिशत्तमः १०. १२७. ७
उप मा मतिरस्थित १०. ११९. ४
उप मा श्यावाः स्वनयेन १. १२६. ३
उप मा षड्डाद्वा ८. ६८. १४
उप यमेति युवतिः ७. १. ६
उप यो नमो नमसि ४. २१. ५
उप व एषे नमसा १. १८६. ४
उप व एषे वन्देभिः ५. ४१. ७
उप शिक्षापतस्थुषो ९. १९. ६
उप श्वासय पृथिवीमुत ६. ४७. २९
उपसद्याय मीळ्हुष ७. १५. १
उप सर्प मातरं भूमि १०. १८. १०
उपस्तुतिं नमस उद्यतिं १. १९०. ३
उपस्तुतिरौच्यमुरुष्येन् १. १५८. ४
उप स्तृहि प्रथमं रन्तेयं ५. ४२. ७
उप स्तृणीतमन्तये ८. ७३. ३
उपस्थाय चरति यत् १. १४५. ४
उपस्थाय मातरमन्नमैट्ट ३. ४८. ३
उप स्वसॄषु वन्वतः ८. ७२. १५
उपहूताः पितरः सोम्यासो १०. १५. ५

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उप ह्वये सुदुघां धेनुमेतां	१. १६४. २६
उप ह्वये सुहवं मारुतं	१०. ३६. ७
उपह्वरे गिरीणां संगथे	८. ६. २८
उपह्वरेषु यदचिध्वं	१. ८७. २
उपाजिरा पुरुहूताय	३. ३५. २
उपायातं दाशुषे मर्त्याय	७. ७१. २
उपावसृज त्मन्या समञ्जन्	१०. ११०. १०
उपास्मै गायता नरः	९. ११. १
उपेदमुपपर्चनमासु	६. २८. ८
उपेदहं धनदामप्रतीतं	१. ३३. २
उपेमसृक्षि वाजयुर्वचस्यां	२. ३५. १
उपो अदर्शि शुन्ध्युवो	१. १२४. ४
उपो नयस्व वृषणा	३. ३५. ३
उपोप मे परा मृश	१. १२६. ७
उपो मतिः पृच्यते	९. ६९. २
उपो रथेषु पृषती	१. ३९. ६
उपो रुरुचे युवतिर्न	७. ७७. १
उपो षु जातमप्तुरं	९. ६१. १३
उपो षु शृणुही गिरो	१. ८२. १
उपो ह यद्विदथं वाजिनो	७. ९३. ३
उपो हरीणां पतिं दक्षं	८. २४. १४
उभयं ते न क्षीयते	२. ९. ५
उभयं शृणवच्च न	८. ६१. १
उभयतः पवमानस्य	९. ८६. ६
उभयासो जातवेदः	२. २. १२
उभा उ नूनं तदिदर्थं	१०. १०६. १
उभा जिग्यथुर्न परा	६. ६९. ८
उभा देवा दिविस्पृशे	१. २३. २
उभा देवा नृचक्षसा	९. ५. ७
उभा पिबतमश्विनोभा	१. ४६. १५
उभाभ्यां देव सवितः	९. ६७. २५
उभा वामिन्द्राग्नी आहुवध्या	६. ६०. १३
उभा शंसा नर्या मामविष्टा	१. १८५. ९
उभा हि दस्रा भिषजा	८. ८६. १
उभे अस्मै पीपयतः	२. २७. १५
उभे चिदिन्द्र रोदसी	७. २०. ४
उभे द्यावापृथिवी विश्वमिन्वे	९. ८१. ५
उभे धुरौ वह्निरापिब्दमानो	१०. १०१. ११
उभे पुनामि रोदसी	१. १३३. १
उभे भद्रे जोषयेते	१. ९५. ६
उभे यत्ते महिना शुभ्रे	७. ९६. २
उभे यदिन्द्र रोदसी	१०. १३४. १
उभे सुश्चन्द्र सर्पिषो	५. ६. ९
उभे सोमावचाकशन्	९. ३२. ४
उभोभयाविन्नुप धेहि	१०. ८७. ३
उरुं गभीरं जनुषाभ्युग्रं	३. ४६. ४
उरुं नृभ्य उरुं गव	८. ६८. १३
उरुं नो लोकमनु नेषि	६. ४७. ८
उरुं यज्ञाय चक्रथुरु	७. ९९. ४
उरुं हि राजा वरुण	१. २४. ८
उरुगव्यूतिरभयानि	९. ९०. ४
उरु णस्तन्वे तन उरु	८. ६८. १२
उरु ते ज्रयः पर्येति	१. ९५. ९
उरु वां रथः परि नक्षति	४. ४३. ५
उरुव्यचसा महिनी	१. १६०. २
उरुव्यचसे महिने	७. ३१. ११
उरुव्यचा नो महिषः	१०. १२८. ८
उरुशंसा नमोवृधा	३. ६२. १७
उरुष्या णो अभिशस्तेः	१. ९१. १५
उरुष्या णो मा परा	८. ७१. ७
उरूणसावसुतृपा	१०. १४. १२
उरोष्ट इन्द्र राधसो	५. ३८. १
उरौ देवा अनिबाधे	५. ४२. १७
	५. ४३. १६
उरौ महाँ अनिबाधे	३. १. ११
उरौ वा ये अन्तरिक्षे	३. ६. ८
उर्वी पृथ्वी बहुले दूरे	१. १८५. ७
उर्वी सद्मनी बृहती	१. १८५. ६
उलूकयातुं शुशुलूकयातुं	७. १०४. २२
उवाच मे वरुणो मेधिराय	७. ८७. ४
उवासोषा उच्छाच्च	१. ४८. ३
उवे अम्ब सुलाभिके	१०. ८६. ७
उवोचिथ हि मघवन्	७. ३७. ३
उशना काव्यस्त्वा	८. २३. १७
उशना यत्परावत	८. ७. २६
उशना यत्सहस्यैरयातं	५. २९. ९
उशन्तस्त्वा नि धीमह्युशन्तः	१०. १६. १२
उशन्ता दूता न दभाय	७. ९१. २
उशन्ति घा ते अमृतास	१०. १०. ३
उशन्नु षु णः सुमना	४. २०. ४
उशिक्पावको अरतिः	१०. ४५. ७
उशिक्पावको वसुर्मानुषेषु	१. ६०. ४
उषः प्रतीची भुवनानि	३. ६१. ३
उष आ भाहि भानुना	१. ४८. ९
उषउषो हि वसो	१०. ८. ४
उषसः पूर्वा अध	३. ५५. १
उषसां न केतवो	१०. ७८. ७
उषस्तच्चित्रमा भरा	१. ९२. १३
उषस्तमश्यां यशसं	१. ९२. ८
उषा उच्छन्ती समिधाने	१. १२४. १
उषासानक्ता बृहती	१०. ३६. १
उषो अद्येह गोमत्यश्वा	१. ९२. १४
उषो देव्यमर्त्या वि भाहि	३. ६१. २
उषो न जारः पृथु पाजो	७. १०. १
उषो न जारो विभावोस्रः	१. ६९. ५
उषो भद्रेभिरा गहि	१. ४९. १
उषो मघोन्या वह	४. ५५. ९
उषो यदग्निं समिधे	१. ११३. ९
उषो यदद्य भानुना	१. ४८. १५
उषो ये ते प्र यामेषु	१. ४८. ४
उषो वाजं हि वंस्व	१. ४८. ११
उषो वाजेन वाजिनि	३. ६१. १
उष्टारेव फर्वरेषु श्रयेथे	१०. १०६. २
उस्रा वेद वसूनां	९. ५८. २
ऊती देवानां वयमिन्द्रवन्तो	१. १३६. ७
ऊती शचीवस्तव वीर्येण	१०. १०४. ४
ऊरुभ्यां ते अष्ठीवद्भ्यां	१०. १६३. ४
ऊर्जं गावो यवसे पीवो	१०. १००. १०
ऊर्जं नो द्यौश्च पृथिवी	६. ७०. ६
ऊर्जा देवाँ अवस्योजसा	८. ३६. ३
ऊर्जो नपाज्जातवेदः	१०. १४०. ३
ऊर्जो नपातं स हिनाय	६. ४८. २
ऊर्जो नपातं सुभगं	८. १९. ४
ऊर्जो नपातमध्वरे	३. २७. १२
ऊर्जो नपातमा हुवे	८. ४४. १३
ऊर्जो नपात्सहसावन्	१०. ११५. ८
ऊर्णम्रदा वि प्रथस्वाभ्यर्का	५. ५. ४
ऊर्ध्वं केतुं सविता देवो	४. १४. २
ऊर्ध्वं नुनुद्रेऽवतं	१. ८५. १०
ऊर्ध्वं भानुं सविता	४. १३. २
ऊर्ध्व ऊ षु ण ऊतये	१. ३६. १३
ऊर्ध्व ऊ षु णो अध्वरस्य	४. ६. १
ऊर्ध्वस्तिष्ठा न ऊतये	१. ३०. ६
ऊर्ध्वा धीतिः प्रत्यस्य	१. ११९. २
ऊर्ध्वा यत्ते त्रेतिनी	१०. १०५. ९
ऊर्ध्वासस्त्वान्विन्दवो	७. ३१. ९
ऊर्ध्वा हि ते दिवेदिवे	८. ४५. १२
ऊर्ध्वो अग्निः सुमतिं	७. ३९. १
ऊर्ध्वो गन्धर्वो० अस्थात्	१०. १२३. ७
ऊर्ध्वो गन्धर्वो० अस्थाद्	९. ८५. १२
ऊर्ध्वो ग्रावा बृहदग्निः	१०. ७०. ७
ऊर्ध्वो ग्रावा वसवो	१०. १००. ९
ऊर्ध्वो नः पाह्यंहसो	१. ३६. १४
ऊर्ध्वो भव प्रति विध्या	४. ४. ५
ऊर्ध्वो वां गातुरध्वरे	३. ४. ४
ऊर्ध्वो वामग्निरध्वरे	६. ६३. ४
ऊर्ध्वो ह्यस्थादध्यन्तरिक्षे	२. ३०. ३
ऊर्मिर्यस्ते पवित्र आ	९. ६४. ११
ऋक्सामाभ्यामभिहितौ	१०. ८५. ११
ऋचां त्वः पोषमास्ते	१०. ७१. ११
ऋचा कपोतं नुदत	१०. १६५. ५
ऋचो अक्षरे परमे	१. १६४. ३९
ऋजिप्य ईमिन्द्रावतो	४. २७. ४
ऋजीते परि वृङ्ग्धि नो	६. ७५. १२
ऋजीत्येनी रुशती महित्वा	०. ७५. ७
ऋजीपी श्येनो ददमानो	४. २६. ६
ऋजीषी वज्री वृषभ	५. ४०. ४
ऋजुः पवस्व वृजिनस्य	९. ९७. ४३
ऋजुनीती नो वरुणो	१. ९०. १
ऋजुरिच्छंसो वनवद्	२. २६. १
ऋज्रमुक्षण्यायने रजतं	८. २५. २२
ऋज्राविन्द्रोत आ ददे	८. ६८. १५
ऋतं च सत्यं चाभीद्धात्	१०. १९०. १
ऋतं चिकित्व ऋत	५. १२. २
ऋतं दिवे तदवोचं	१. १८५. १०
ऋतं देवाय कृण्वते	२. ३०. १
ऋतं येमान ऋतमिद्	४. २३. १०
ऋतं वदन्नृतद्युम्न	९. ११३. ४
ऋतं वोचे नमसा	४. ५. ११
ऋतं शंसन्त ऋजु	१०. ६७. २

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ऋतज्येन क्षिप्रेण ब्रह्मण २. २४. ८
ऋतधीतय आ गत ५. ५१. २
ऋतमृतेन सपन्तेषिरं ५. ६८. ४
ऋतस्य गोपा न दभाय ९. ७३. ८
ऋतस्य गोपावधि तिष्ठथो ५. ६३. १
ऋतस्य जिह्वा पवते ९. ७५. २
ऋतस्य तन्तुर्विततः ९. ७३. ९
ऋतस्य दृळ्हा धरुणानि ४. २३. ९
ऋतस्य देवा अनु व्रता १. ६५. २
ऋतस्य पथि वेधा ६. ४४. ८
ऋतस्य प्रेषा ऋतस्य १. ६८. ३
ऋतस्य बुध्न उपसामिषण्यन ३. ६१. ७
ऋतस्य रश्मिमनुयच्छमाना १. १२३. १३
ऋतस्य वा केशिना ३. ६. ६
ऋतस्य वो रथ्यः पूतदक्षा ६. ५१. ९
ऋतस्य हि धेनवो १. ७३. ६
ऋतस्य हि प्रसितिर्द्यौरुरु १०. ९२. ४
ऋतस्य हि वर्तनयः १०. ५. ४
ऋतस्य हि शुरुधः ४. २३. ८
ऋतस्य हि सदसो १०. १११. २
ऋतायिनी मायिनी १०. ५. ३
ऋतावरी दिवो अर्कैरबोध्या ३. ६१. ६
ऋतावानं महिषं विश्व १०. १४०. ६
ऋतावानं यज्ञियं विप्र ३. २. १३
ऋतावानं विचेतसं ४. ७. ३
ऋतावानः प्रतिचक्ष्यानृता २. २४. ७
ऋतावान ऋतजाता ७. ६६. १३
ऋतावानमृतायवो ८. २३. ९
ऋतावाना नि षेदतुः ८. २५. ८
ऋतावा यस्य रोदसी ३. १३. २
ऋतुर्जनित्री तस्या २. १३. १
ऋतेन ऋतं धरुणं ५. १५. २
ऋतेन ऋतं नियतमीळ ४. ३. ९
ऋतेन ऋतमपिहितं ५. ६२. १
ऋतेन देवः सविता ८. ८६. ५
ऋतेन देवीरमृता ४. ३. १२
ऋतेन मित्रावरुणावृता १. २. ८
ऋतेन यावृतावृधा १. २३. ५
ऋतेन हि ष्मा वृषभश्चिदक्तः ४. ३. १०
ऋतेनाद्रिं व्यसन्भिदन्तः ४. ३. ११
ऋते स विन्दते युधः ८. २७. १७
ऋदूदरेण सख्या सचेय ८. ४८. १०
ऋधक्सा वो मरुतो ७. ५७. ४
ऋधक्सोम स्वस्तये ९. ६४. ३०
ऋधगित्था स मर्त्यः ८. १०१. १
ऋधद्यस्ते सुदानवे धिया ६. २. ४
ऋध्याम स्तोमं सनुयाम १०. १०६. ११
ऋभुक्षणं न वर्तव ८. ४५. २९
ऋभुक्षणमिन्द्रमा हुव १. १११. ४
ऋभुक्षणो वाजा मादयध्व ७. ४८. १
ऋभुतो रयिः प्रथमश्रव ४. ३६. ५
ऋभुमन्ता वृषणा ८. ३५. १५
ऋभुमृभुक्षणो रयिं ४. ३७. ५
ऋभुर्ऋभुक्षा ऋभुर्विधतो १०. ९३. ८
ऋभुर्ऋभुभिरभि वः ७. ४८. २
ऋभुर्न इन्द्रः शवसा १. ११०. ७
ऋभुर्न रथ्यं नवं दधाता ९. २१. ६
ऋभुर्भराय सं शिशातु १. १११. ५
ऋभुर्विभ्वा वाज इन्द्रो ४. ३४. १
ऋभुश्चक्र ईड्यं चारु ३. ५. ६
ऋश्यो न तृष्यन्नवपानमा ८. ४. १०
ऋषभं मा समानानां १०. १६६. १
ऋषिं नरावंहसः १. ११७. ३
ऋषिमना य ऋषिकृत् ९. ९६. १८
ऋषिर्विप्रः पुरएता ९. ८७. ३
ऋषिर्हि पूर्वजा अस्येक ८. ६. ४१
ऋषे मन्त्रकृतां स्तोमैः ९. ११४. २
ऋष्टयो वो मरुतो ५. ५७. ६
ऋष्वस्त्वमिन्द्र शूर १०. १४८. २
ऋष्वा ते पादा प्र १०. ७३. ३
एकं चमसं चतुरः १. १६१. २
एकं च यो विंशतिं ७. १८. ११
एकं नु त्वा सत्पतिं ५. ३२. ११
एकं वि चक्र चमसं ४. ३६. ४
एकः समुद्रो धरुणो १०. ५. १
एकः सुपर्णः स समुद्रमा १०. ११४. ४
एक एवाग्निर्बहुधा समिद्ध ८. ५८. २
एकपाद्भूयो द्विपदो १०. ११७. ८
एकया प्रतिधापिबत् ८. ७७. ४
एकराळस्य भुवनस्य [illegible]
एकस्त्वष्टुरश्वस्या १. १६२. १९
एकस्मिन्योगे भुरणा ७. ६७. ८
एकस्य चिन्मे विभ्वस्त्वोजो १. १६५. १०
एकस्या वस्तोरावतं १. ११६. २१
एकाचेतत्सरस्वती ७. ९५. २
एको द्वे वसुमती ३. ३०. ११
एको बहूनामसि १०. ८४. ४
एतं ते स्तोमं तुविजात ५. २. ११
एतं त्यं हरितो दश ९. ३८. ३
एतं त्रितस्य योषणो ९. ३८. २
एतं मृजन्ति मर्ज्यं ९. ४६. ६
एतं मृजन्ति मर्ज्यमुप ९. १५. ७
एतं मे स्तोमं तना १०. ९३. १२
एतं मे स्तोममूर्म्ये ५. ६१. १७
एतं वां स्तोममश्विना १०. ३९. १४
एतं शंसमिन्द्रास्मयुष्टं १०. ९३. ११
एतं शर्धं धाम यस्य १. १२२. १२
एत उ त्ये अवीवशन् ९. २१. ७
एत उ त्ये पतयन्ति ७. १०४. २०
एत उ त्ये प्रत्यदृश्रन् १. १९१. ५
एतच्चन त्वो वि चिकेतदेषां १. १५२. २
एतत्त इन्द्र वीर्यं ८. ५४. १
एतत्त्यत्त इन्द्र वृष्ण १. १००. १७
एतत्त्यत्त इन्द्रियमचेति ६. २७. ४
एतत्त्यन्न योजनमचेति १. ८८. ५
एतदस्या अनः शये ४. ३०. ११
एतद्धेदुत वीर्यमिन्द्र ४. ३०. ८
एतद्वचो जरितर्मापि ३. ३३. ८
एतमु त्यं दश० सप्त ९. १५. ८
एतमु त्यं दश० सिन्धु ९. ६१. ७
एतमु त्यं मदच्युतं ९. १०८. ११
एता अग्न आशुपाणास ७. ९३. ८
एता अर्षन्ति हृद्यात् ४. ५८. ५
एता अर्षन्त्यलळाभवन्ती ४. १८. ६
एता उ त्याः प्रत्यदृश्रन् ७. ७८. ३
एता उ त्या उषसः १. ९२. १
एता च्यौत्नानि ते कृता ८. ७७. ९
एता ते अग्न० वेधो जुष्टानि १. ७३. १०
एता ते अग्न० वेधोऽवोचाम ४. २. २०
एता ते [illegible] ३. १. २०
एता त्या ते श्रुत्यानि १०. १३८. ६
एता धियं कृणवामा ५. ४५. ६
एतानि भद्रा कलश १०. ३२. ९
एतानि वां श्रवस्या १. ११७. १०
एतानि वामश्विना वर्धनानि २. ३९. ८
एतानि वामश्विना वीर्याणि १. ११७. २५
एतानि सोम पवमानो ९. ७८. ५
एता नो अग्ने सौभगा ७. ३. १०
७. ४. १०
एतान्यग्ने नवतिं सहस्रा १०. ९८. ११
एतान्यग्ने नवतिर्नव १०. ९८. १०
एतायामोप गव्यन्त १. ३३. १
एतावतश्चिदेषां सुम्नं ८. ७. १५
एतावतस्त ईमह इन्द्र ८. ४९. ९
एतावतस्ते वसो विद्याम ८. ५०. ९
एतावद्वां वृषण्वसू अतो ८. ५. २७
एतावद्वेदुषस्त्वं भूयो ५. ७९. १०
एतावानस्य महिमातो १०. ९०. ३
एता विश्वा चकृवाँ इन्द्र ५. २९. १४
एता विश्वा विदुषे तुभ्यं ४. ३. १६
एता विश्वा सवना १०. ५०. ६
एता वो वश्म्युद्यता २. ३१. ७
एति प्र होता व्रतमस्य १. १४४. १
एते असृग्रमाशवोऽति ९. ६३. ४
एते असृग्रमिन्दवस्तिरः ९. ६२. १
एते त इन्द्र जन्तवो १. ८१. ९
एते त्ये भानवो दर्शताया ७. ७५. ३
एते त्ये वृथगग्नय ८. ४३. ५
एते द्युम्नेभिर्विश्वमातिरन्त ७. ७. ६
एते धामान्यार्या शुक्रा ९. ६३. १४
एते धावन्तीन्दवः सोमा ९. २१. १
एते नरः स्वपसो अभूतन १०. ७६. ८
एतेनाग्ने ब्रह्मणा वावृधस्व १. ३१. १८
एते पूता० विपा ९. २२. ३
एते पूता० सूर्यासो ९. १०१. १२
एते पृष्ठानि रोदसोर्विप्र ९. २२. ५
एते मृष्टा अमर्त्याः ९. २२. ४
एते वदन्ति शतवत् १०. ९४. २
एते वदन्त्यविदन्नना १०. ९४. ३
एते वाता इवोरवः ९. २२. २

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

एते विश्वानि वार्या ९. २१. ४
एते शर्मीभिः सुशमी १०. २८. १२
एते सोमाः पवमानास ९. ६९. ९
एते सोमा अति धारान्यव्या ९. ८८. ६
एते सोमा अभि गव्या ९. ८७. ५
एते सोमा अभि प्रिय ९. ८. १
एते सोमा असृक्षत ९. ६२. २२
एते सोमास आशवो ९. २२. १
एते सोमास इन्दवः ९. ४६. ३
एते स्तोमा नरां नृतम ७. १९. १०
एतो न्वद्य सुध्यो ५. ४५. ५
एनो त्विन्द्रं स्तवाम शुद्धं ८. ९५. ७
एनो त्विन्द्रं स्तवाम सख्यायः ८. २४. १९
एनो त्विन्द्रं स्तवामेशानं ८. ८१. ४
एनी मे गावौ प्रमरस्य १०. २७. २०
एवं मरुतो अश्विना ५. २६. ९
एवु मघ्वो महिन्तरे ८. २४. १६
एनाकृष्णेन वयमिन्द्रवन्तो १. १०५. १९
एना मन्दानो जहि शूर ६. ४४. १७
एना वयं पयसा ३. ३३. ४
एना विश्वान्यर्य आ ९. ६१. ११
एना वो अग्निं नमसोर्जो ७. १६. १
एन्दुमिन्द्राय सिञ्चत ८. २४. १३
एन्दो पार्थिवं रयिं ९. २९. ६
एन्द्र नो गधि प्रियः ८. ९८. ४
एन्द्र याहि पीतये मधु ८. ३३. १३
एन्द्र याहि मत्स्व चित्रेण ८. १. २३
एन्द्र याहि हरिभिरुप ८. ३४. १
एन्द्र यासुप नः परावतो १. १३०. १
एन्द्रबाहो वृषभिः वज्रबाहु १०. ४४. ३
एन्द्र सानसिं रयिं १. ८. १
एन्द्रस्य कुक्षा पवते ९. ८०. ३
एन्द्रो वाहिः सीदतु १०. ३६. ५
एभिर्युभिः सुमना १. ५३. ४
एभिर्न इन्द्राभिर्दशस्य ७. २८. ४
एभिर्नृभिरिन्द्र त्वायुभिष्ट्वा ४. १६. १९
एभिर्नो अर्कैर्भवा नो ४. १०. ३
एभिर्भव सुमना अग्ने ४. ३. १५
एमा अग्मन्नवतीर्विश्वपन्या १०. ३०. १४
एमाशुमाशवे भर १. ४. ७

एमेनं प्रत्येतन ६. ४२. २
एमेनं सृजता सुते १. ९. २
एवाँ अग्निं वसूयवः ५. २५. ९
एवाँ अग्निमजुर्यसु ५. ६. १०
एवा कविस्तुवीरवाँ १०. ६४. १६
एवाग्निं सहस्यं वसिष्ठो ७. ४२. ६
एवाग्निर्गोतमेभिर्ऋतावा १. ७७. ५
एवाग्निर्भरतैः सह १०. ११५. ७
एवा च त्वं सरम १०. १०८. ९
एवा जग्रानं सहसे ६. ३८. ५
एवा त इन्दो सुभ्वं ९. ७९. ५
एवा त इन्दोचय २. १९. ७
एवा तदिन्द्र इन्दुना १०. १४४. ६
एवा तमाहुरुत शृण्व ७. २६. ४
एवा ता विश्वा चकृवांस ६. १७. १३
एवा ते अग्ने विमदो १०. २०. १०
एवा ते अग्ने सुमतिं ५. २७. ३
एवा ते गृत्समदाः २. १९. ८
एवा ते वयमिन्द्र १०. ८९. १७
एवा ते हारियोजना १. ६१. १६
एवा त्वामिन्द्र वज्रिन् ४. १९. १
एवा देव देवताते ९. ९७. २७
एवा देवाँ इन्दो विश्वे १०. ४९. ११
एवा नः सोम परिषिच्यमान ९. ९७. ३६
एवा नः सोम परिषिच्यमानो ९. ३८. १०
एवा नः स्पृधः समजा ६. २५. ९
एवा न इन्दो अभि ९. ९७. २१
एवा न इन्द्र वार्यस्य ७. २४. ६
७. २५. ६
एवा न इन्द्रोतिभिरव ५. ३३. ७
एवा न इन्द्रो मघवा ४. १७. २०
एवा नपातो मम तस्य ६. ५०. १५
एवा नूनमुप स्तुहि ८. २४. २३
एवा नृभिरिन्द्रः सुश्रवस्या १. १७८. ४
एवा नो अग्ने अमृतेषु २. २. ९
एवा नो अग्ने विश्वा ७. ४३. ५
एवा नो अग्ने समिधा १. ९५. ११
१. ९६. ९
एवा पतिं द्रोणसाचं १०. ४४. ९
एवा पवस्व मदिरो ९. ९७. १५

एवा पाहि प्रत्नया ६. १७. ३
एवा पित्रे विश्वदेवाय ४. ५०. ६
एवा पुनान इन्द्रयुर्मदं ९. ६. ९
एवा पुनानो अपः स्वर्गा ९. ९१. ६
एवा भ्रूतेः सुनुरवीवृधद्वो १०. ६३. १७
१०. ६४. १७
एवा वज्रो वृषभ चेकितान २. ३३. १५
एवा महस्तुविजातस्तुविष्मान् १. १९०. ८
एवा महान्बृहद्दिवो १०. १२०. ९
एवा महो असुर वक्षथाय १०. ९९. १२
एवावृताय महे क्षयाय ९. १०९. २
एवा राजेव ऋतुभाँ अमेन ९. ९०. ६
एवा रातिस्तुवीमघ ८. ९२. २९
एवारे वृषभा सुते ८. ४५. ३८
एवा वन्दस्व वरुणं ८. ४२. २
एवा वसिष्ठ इन्द्रमूतये ७. २६. ५
एवा वस्व इन्द्रः सत्यः ४. २१. १०
एवा वामह० इन्द्राग्नी ८. ३८. ९
एवा वामह० नासत्या ८. ४२. ६
एवा सत्यं मघवाना ४. २८. ५
एवा हि ते विभूतय १. ८. ९
एवा हि ते शं सवना १. १७३. ८
एवा हि त्वामृतुथा ५. ३२. १२
एवा हि मां तवसं जज्ञुरुग्रं १०. २८. ७
एवा हि मां तवसं वर्धयन्ति १०. २८. ६
एवा ह्यसि वीरयुरेवा ८. ९२. २८
एवा ह्यस्य काम्या १. ८. १०
एवा ह्यस्य सूनृता १. ८. ८
एवेदिन्द्रं वृषणं वज्रबाहुं ७. २३. ६
एवेदिन्द्रः सुते अस्तावि ६. २३. १०
एवेदिन्द्रः सुहव ऋच्यो ६. २९. ६
एवेदिन्द्राय वृषभाय ४. १६. २०
एवेदेते प्रति मा १. १६५. १२
एवेदेष तुविकूर्मिर्वाजाँ ८. २. ३१
एवेदेषा पुरुतमा दशे १. १२४. ६
एवेद्धने युवतयो नमन्त १०. ३०. ६
एवेन सप्तः पर्येति १. १२८. ३
एवेन्द्राग्निभ्यां पितृवन् ८. ४०. १२
एवेन्द्राग्निभ्यामहावि ५. ८६. ६
एवेन्द्राग्नी पपिवांसा १. १०८. १३

एवेन्तु कं सिन्धुमेभि ७. ३३. ३
एवैवापागपरे सन्तु १०. ४४. ७
एष इन्द्राय वायवे ९. २७. २
एष उ स्य पुरुव्रतो ९. ३. १०
एष उ स्य वृषा रथो ९. ३८. १
एष पतानि चकारेन्द्रो ८. २. ३४
एष कविरभिष्टुतः पवित्रे ९. २७. १
एष क्षेति रथवीतिर्मघवा ५. ६१. १९
एष गव्युरचिक्रदत् ९. २७. ४
एष प्रावेव जरिता ५. ३६. ४
एष च्छागः पुरो अश्वेन १. १६२. ३
एष तुञ्जो अभिष्टुतः ९. ६७. २०
एष ते देव नेता ५. ५०. ५
एष दिवं वि धावति ९. ३. ७
एष दिवं व्यासरत् ९. ३. ८
एष देवः शुभायते ९. २८. ३
एष देवो अमर्त्यः ९. ३. १
एष देवो रथर्यति ९. ३. ५
एष देवो विपन्युभिः ९. ३. ३
एष देवो विपा कृतो ९. ३. २
एष द्रप्सो वृषभो ६. ४१. ३
एष धिया यात्यण्व्या ९. १५. १
एष नृभिर्वि नीयते ९. २७. ३
एष पवित्रे अक्षरत् ९. २८. २
एष पुनानो मधुमाँ ९. ११०. ११
एष पुरू धियायते ९. १५. २
एष प्र कोशे मधुमाँ ९. ७७. १
एष प्रत्नेन जन्मना ९. ३. ९
एष प्रत्नेन मन्मना ९. ४२. २
एष प्रत्नेन वयसा ९. ९७. ४७
एष प्र पूर्वीरव तस्य १. ५६. १
एष रुक्मिभिरीयते ९. १५. ५
एष वः स्तोमो मरुत १. १६५. १५
१. १६६. १५
१. १६७. ११
१. १६८. १०
एष वः स्तोमो मरुतो १. १७१. २
एष वसूनि पिप्रदना ९. १५. ६
एष वां देवाश्विना ४. १५. ९
एष वां स्तोमो अश्विना १. १८४. ५

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

एष वाजी हितो नृभिर्विश्व ९. २८. १
एष विश्वैरभिष्टुतो ९. ३. ६
एष विश्वचित्पवते ९. ९७. ५६
एष विश्वानि वार्या ९. ३. ४
एष वृषा कनिक्रदद् ९. २८. ४
एष वृषा वृषव्रतः ९. ६२. ११
एष शुष्म्यदाभ्यः सोमः ९. २८. ६
एष शुष्म्यसिष्यदद्न्तरिक्षे ९. २७. ६
एष शृङ्गाणि दोधुवच्छिशीते ९. १५. ४
एष सुवानः परि सोमः ९. ८७. ७
एष सूर्यमरोचयत् ९. २८. ५
एष सूर्येण हासते ९. २७. ५
एष सोमो अधि त्वचि ९. ६६. २९
एष स्तोम इन्द्र तुभ्यमस्मे १. १७३. १३
एष स्तोमो अचिक्रदद्वृषा ७. २०. ९
एष स्तोमो मह उग्राय ७. २४. ५
एष स्तोमो मारुतं शर्धो ५. ४२. १५
एष स्तोमो वरुण मित्र ७. ६४. ५
७. ६५. ५
एष स्य कारुर्जरते ७. ६८. ९
एष स्य ते तन्वो २. ३६. ५
एष स्य ते पवत ९. ९७. ४६
एष स्य ते मधुमाँ ९. ८७. ४
एष स्य धारया सुतो ९. १०८. ५
एष स्य परि चिच्यते ९. ६२. १३
एष स्य पीतये सुतो ९. ३८. ६
एष स्य भानुरुदियर्ति ४. ४५. १
एष स्य मथो रसो ९. ३८. ५
एष स्य मानुषीष्वा ९. ३८. ४
एष स्य मित्रावरुणा ७. ६०. २
एष स्य वां पूर्वगत्वेव ७. ६७. ७
एष स्य सोमः पवते ९. ८४. ४
एष स्य सोमो मतिभिः ९. ९६. १५
एष हितो वि नीयते ९. १५. ३
एषा गोभिरुणेभिर्युजाना ५. ८०. ३
एषा जनं दर्शता बोधयन्ती ५. ८०. २
एषा दिवो॰ ज्योतिर्वसाना १. १२४. ३
एषा दिवो॰ व्युच्छन्ती १. ११३. ७
एषा नेत्री राधसः ७. ७६. ७
एषा प्रतीची दुहिता ५. ८०. ६
एषा ययौ परमादन्तरद्रेः ९. ८७. ८
एषायुक्त परावतः १. ४८. ७
एषा व्येनी भवति ५. ८०. ४
एषा शुभ्रा न तन्वो ५. ८०. ५
एषा स्या नव्यमायुर्दधाना ७. ८०. २
एषा स्या नो दुहिता ६ ६५. १
एषा स्या युजाना पराकात् ७. ७५. ४
एषा स्या वो मरुतो १. ८८. ६
एषो उषा अपूर्व्या १. ४६. १
एह गमन्नृषयः सोमशिता १०. १०८. ८
एह देवा मयोभुवा १. ९२. १८
एह वां प्रुषितप्सवो ८. ५. ३३
एह हरी ब्रह्मयुजा ८. २. २७
एहि प्रेहि क्षयो दिव्या ८. ६४. ४
एहि मनुर्देवयुर्यज्ञकामो १०. ५१. ५
एहि वां विमुचो ६. ५५. १
एहि स्तोमाँ अभि १. १०. ४
एहाग्न इह होता नि १. ७६. २
एह्यू षु ब्रवाणि ते १. १६. १६
ऐच्छाम त्वा बहुधा १०. ५१. ३
ऐतान्नयेषु तस्तुपः ५. ५३. २
ऐतु पूषा रयिभगः ८. ३१. ११
ऐभिरग्ने दुवो गिरो १. १४. १
ऐभिरग्ने सरथं याह्यर्वाङ् ३. ६. ९
ऐभिर्ददे वृष्ण्या १०. ५५. ७
ऐतु वाकन्धि पुरुहूत १०. १४७. ३
ऐतु वेतहव्यत्यन्त ८. ६८. १८
ऐतु शावाबृथिवी १०. ९३. १०
ऐतु षा वीरवद्यश ५. ७९. ३
ओकिवांसा सुते सचौ ३. ५९. ३
ओ चित्सखायं सख्या १०. १०. १
ओजस्तदस्य तित्विष ८. ६. ५
ओजिष्ठं ते मध्यतो ३. २१. ५
ओ त्यमह्न आ रथमथा ८. २२. १
ओ त्ये नर इन्द्रभूतये १. १०४. २
ओमानमापो मानुषी ६. ५०. ७
ओमासश्चर्षणीधृतो १. ३. ७
ओर्वभ्रा अमर्त्या निवतो १०. १२७. २
ओ षु वृष्टिर्विदथ्या सभेत ७. ४०. १
ओषधयः सं वदन्ते १०. ९७. २२
ओषधीः प्रति मोदध्वं १०. ९७. ३
ओषधीरिति मातरस्तद्वो १०. ९७. ४
ओषमित्पृथिवीमहं १०. ११९. १०
ओ षु वृष्टिराघसो ७. ५९. ५
ओ षु प्र याहि वाजेभिर्मा ८. २. १९
ओ षु वृष्ण्यः प्रयज्यूना ८. ७. ३३
ओ षु स्वसारः कारवे ३. ३३. ९
ओ षू णो अग्ने शृणुहि १. १३९. ७
ओष्ठाविव मध्वास्ने वदन्ता २. ३९. ६
ओ सुष्टुत इन्द्र याह्यर्वाङ्कुप १. १७७. ५
औच्छत्सा रात्री परितक्म्या ५. ३०. १४
और्वभृगुवच्छुचिमप्रवान ८. १०२. ४
कं ते दाना असक्षत ८. ६४. ९
कं नक्षित्रमिपण्यसि १०. ९९. १
कं यायः कं ह गच्छथः ५. ७४. ३
कः कुमारमजनयद्यं १०. १३५. ५
कः खिद्वृक्षो निष्टितो १. १८२. ७
क इमं दशभिर्ममेन्द्रं ४. २४. १०
क इमं दो निण्यमा १. ९५. ४
क ईं वेद सुते सचा ८. ३३. ७
क ईं व्यक्त नरः सनीळा ७. ५६. १
क ईं स्तवत्कः पृणात्को १. ४७. १५
क ईषते तुज्यते को १. ८४. १७
क उ नु ते महिमनः १०. ५४. ३
क उ श्रवत्कतमो ४. ४३. १
ककर्दवे वृषभो युक्त १०. १०२. ६
ककुहं चित्वा कवे ८. ४५. १४
ककुहः सोम्यो रस ९. ६७. ८
ककुत्तो न ककुतोऽधो १. १९१. १
कण्वा इन्द्रं यदक्रत ८. ६. ३
कण्वा इव भृगवः सूर्या ८. ३. १६
कण्वास इन्द्र ते मतिं ८. ६. ३१
कण्वेभिर्धृष्ण्वा धृषद्वाजं ८. ३३. ३
कतरा पूर्वा कतरापरायोः १. १८५. १
कत्यग्नयः कति सूर्यासः १०. ८८. १८
कथा कदस्या उषसो ४. २३. ५
कथा कविस्तुवीरवान् १०. ६४. ४
कथा त एतदहमा १०. २८. ५
कथा ते अग्ने शुचयन्त १. १४७. १
कथा दाशेमाग्नये ५. ४१. १६
कथा दाशोमाग्नये १. ७७. १
कथा देवानां कतमस्य १०. ६४. १
कथा नूनं वां विमना ८. ८६. २
कथा महामवृधत्कस्य ४. २३. १
कथा महे पुष्टिंभराय ४. ३. ७
कथा महे रुद्रियाय ५. ४१. ११
कथा राधाम सख्यायः १. ४१. ७
कथा शर्धाय मरुतामृताय ४. ३. ८
कथा शृणोति हूयमान ४. २३. ३
कथा सवाधः शशमानो ४. २३. ४
कथा ह तदरुणाय त्वमग्ने ४. ३. ५
कथो नु ते परि चराणि ५. २९. १३
कदत्विषन्त सूरयस्तिरं ८. ९४. ७
कदा क्षत्रश्रियं नरमा १. २५. ५
कदा गच्छाथ मरुत ८. ७. ३०
कदा चन प्र युच्छस्युभे ८. ५२. ७
कदा चन स्तरीरसि ८. ५१. ७
कदा त इन्द्र गिर्वणः ८. ११. २२
कदा भुवन्नक्षयाणि ६. ३५. १
कदा मर्तमराधसं १. ८४. ८
कदा वसो स्तोत्रं हर्यत १०. १०५. १
कदा वां तौग्र्यो विधत् ८. ५. २२
कदा सूनुः पितरं जात १०. ९५. १२
कदित्था नृँः पात्रं १. १२१. १
कदु द्युम्नमिन्द्र त्वावतो १०. २९. ४
कदु प्रियाय धाम्ने ५. ४८. १
कदु प्रेष्ठाविषां रयीणा १. १८१. १
कदु स्तुवन्त ऋतयन्त ८. ३. १४
कदू न्वस्याकृतमिन्द्र ८. ६६. ९
कदू महीरुषा अस्य ८. ६६. १०
कद्व नूनं कधप्रियः १. ३८. १
कद्व नूनं कधप्रियो ८. ७. ३१
कदिष्णयासु वृधसानो ४. ३. ६
कद्वयाय प्रचेतसे १. ४३. १
कद्व ऋतस्य धर्णसि १. १०५. ६
कद्वो अद्य महानां ८. ९४. ८
कनिक्रदज्जनुषं प्रब्रुवाण २. ४२. १
कनिक्रदत्कलशे गोभिरज्यसे ९. ८५. ५
कनिक्रदद्वृ पन्याकृतस्य ९. ९७. ३२
कनिक्रन्ति हरिरा सृज्यमानः ९. ९५. १

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कनीनकेव विद्रधे नये ४. ३२. २३
कन्नव्यो अतसीनां तुरो ८. ३. १३
कन्या इव वहतुमेतवा ४. ५८. ९
कन्या वारवायती ८. ९१. १
कन्येव तन्वा शाशदानां १. १२३. १०
कपृन्नरः कपृथमुद्दधातन १०. १०१. १२
कमु ष्विदस्य सेनया ८. ७५. ७
कमेतं त्वं युवते कुमारं ५. २. २
कया तच्छृण्वे शच्या ४. २०. ९
कया ते अग्ने अङ्गिर ८. ८४. ४
कया त्वं न ऊत्याभि ८. ९३. १९
कया नश्चित्र आ भुव ४. ३१. १
कया नो अग्न ऋतय ५. १२. ३
कया नो अग्ने वि वसः ७. ८. ३
कया शुभा सवयसः १. १६५. १
करम्भ ओषधे भव १. १८७. १०
कर्णगृह्या मघवा शौरदेव्यो ८. ७०. १५
कर्हि स्वित्तदिन्द्र यज्ञरित्रे ६. ३५. ३
कर्हि स्वित्तदिन्द्र यन्नृभिर्नॄन् ६. ३५. २
कर्हि स्वित्सा त इन्द्र १०. ८९. १४
कविं केतुं धासिं भानुमद्रे ७. ६. २
कविं मृजन्ति मर्ज्यं ९. ६३. २०
कविं शशासुः कवयो ४. २. १२
कविः कवित्वा दिवि १०. १२४. ७
कविमग्निमुप स्तुहि १. १२. ७
कविमिव प्रचेतसं यं ८. ८४. २
कविर्न निण्यं विदथानि ४. १६. ३
कविर्नृचक्षा अभि ३. ५४. ६
कविर्वेधस्या पर्येषि ९. ८२. २
कवी नो मित्रावरुणा १. २. ९
कश्छन्दसां योगमा वेद १०. ११४. ९
कस्त उषः कधप्रिये १. ३०. २०
कस्तमिन्द्र त्वावसुमा ७. ३२. १४
कस्ते जामिर्जनानामग्ने १. ७५. ३
कस्ते मद इन्द्र रन्त्यो १०. २९. ३
कस्ते मातरं विधवा ४. १८. १२
कस्त्वा सत्यो मदानां ४. ३१. २
कस्मा अद्य सुजाताय ५. ५३. १२
कस्य नूनं कतमस्यामृतानां १. २४. १
कस्य नूनं परीणसो ८. ८४. ७
कस्य ब्रह्माणि जुजुषुर्युवानः १. १६५. २
कस्य वृषा सुते सचा ८. ९३. २०
कस्य स्वित्सवनं वृषा ८. ६४. ८
का त उपेतिर्मनसो १. ७६. १
का ते अस्त्यरंकृतिः ७. २९. ३
का मर्यादा वयुना कद्ध ४. ५. १३
कामस्तदग्रे समवर्तताधि १०. १२९. ४
कायमानो वना त्वं ३. ९. २
का राधद्धोत्राश्विना १. १२०. १
कारुरहं ततो भिषगुपल ९. ११२. ३
का वां भूदुपमातिः ४. ४३. ४
काव्येभिरदाभ्या यातं ७. ६६. १७
कासीत्प्रमा प्रतिमा कि १०. १३०. ३
का सुष्टुतिः शवसः ४. २४. १
किं ते कृण्वन्ति कीकटेषु ३. ५३. १४
किं देवेषु त्यज एन १०. ७९. ६
किं न इन्द्र जिघांससि १. १७०. २
किं नो अस्य द्रविणं ४. ५. १२
किं नो भ्रातरगस्त्य १. १७०. ३
किं भ्रातासद्यदनाथं १०. १०. ११
किं मयः स्विच्चमस एष ४. ३५. ४
किं स ऋधक्कृणवद्यं ४. १८. ४
किं सुबाहो स्वङ्गुरे १०. ८६. ८
किं स्विदासीदधिष्ठान १०. ८१. २
किं स्विद्वनं० मनीषिणो १०. ८१. ४
किं स्विद्वनं० संतस्थाने १०. ३१. ७
किं स्विन्नो राजा जगृहे १०. १२. ५
कितवासो यद्रिरिपुर्न ५. ८५. ८
किमङ्ग त्वा ब्रह्मणः ६. ५२. ३
किमङ्ग त्वा मघवन् १०. ४२. ३
किमङ्ग रध्रचोदनः ८. ८०. ३
किमत्र दस्रा कृणुथः १. १८२. ३
किमन्ये पर्यासतेऽस्मन् ८. ८. ८
किमयं त्वां वृषाकपि १०. ८६. ३
किमस्य मदे किम्वस्य ६. २७. १
किमाग आस वरुण ज्येष्ठं ७. ८६. ४
किमादमत्रं सख्यं सखिभ्यः ४. २३. ६
किमादुतासि वृत्रहन् ४. ३०. ७
किमिच्छन्ती सरमा १०. १०८. १
किमित्ते विष्णो परिचक्ष्यं ७. १००. ६
किमिदं वां पुराणवज्जरतो ८. ७३. ११
किमु श्रेष्ठः किं यविष्ठो १. १६१. १
किमु ष्विदस्मै निविदो ४. १८. ७
किमू नु वः कृणवामा २. २९. ३
किमेता वाचा कृणवा १०. ९५. २
कियती योषा मर्यतो १०. २७. १२
कियत्स्विदिन्द्रो अध्येति ४. १७. १२
कियात्या यत्समया १. ११३. १०
कीदृङ्ङिन्द्रः सरमे का १०. १०८. ३
कीरिश्चिद्धि त्वामवसे ७. २१. ८
कुतस्त्वमिन्द्र माहिनः १. १६५. ३
कुत्रा चिद्यस्य समृतौ ५. ७. २
कुत्सा एते हर्यश्वाय ७. २५. ५
कुत्साय शुष्णमशुषं ४. १६. १२
कुमारं माता युवतिः ५. २. १
कुमारश्चित्पितरं २. ३३. १२
कुरुश्रवणमावृणि १०. ३३. ४
कुर्मस्त आयुरजरं १०. ५१. ७
कुविच्छकत्कुवित्करन् ८. ९१. ४
कुवित्स देवीः सनयो ४. ५१. ४
कुवित्सस्य प्र हि व्रजं ६. ४५. २४
कुवित्सु नो गविष्टये ८. ७५. ११
कुविदङ्ग नमसा ये ७. ९१. १
कुविदङ्ग प्रति यथा १०. ६४. १३
कुविदङ्ग यवमन्तो १०. १३१. २
कुविद्वृषण्यन्तीभ्यः ९. १९. ५
कुविन्नो अग्निरुचथस्य १. १४३. ६
कुविन्मा गोपां करसे ३. ४३. ५
कुषुम्भकस्तदब्रवीद्गिरेः १. १९१. १६
कुह त्या कुह नु श्रुता ५. ७४. २
कुह यान्ता सुष्टुतिं १. ११७. १२
कुह श्रुत इन्द्रः कस्मिन्नद्य १०. २२. १
कुह स्थः कुह जग्मथुः ८. ७३. ४
कुह स्विद्दोषा कुह वस्तो १०. ४०. २
कूचिज्जायते सनयासु १०. ४. ५
कूष्ठो देवावश्विनाद्या ५. ७४. १
कृणुष्व पाजः प्रसितिं ४. ४. १
कृणोत धूमं वृषणं ३. २९. ९
कृणोत्यस्मै वरिवो ४. २४. ६
कृण्वन्तो वरिवो गवे ९. ६२. ३
कृतं चिद्धि ष्मा सनेमि ४. १०. ७
कृतं न श्वघ्नी वि चिनोति १०. ४३. ५
कृतं नो यज्ञं विदथेषु ७. ८४. ३
कृतानीदस्य कर्त्वा ९. ४७. २
कृते चिदत्र मरुतो ७. ५७. ५
कृधि रत्नं यजमानाय ७. १६. ६
कृधि रत्नं सुसनितर्धनानां ३. १८. ५
कृधी नो अह्रयो देव १०. ९३. ९
कृषन्नित्फाल आशितं १०. ११७. ७
कृष्णं त एम रुशतः ४. ७. ९
कृष्णं नियानं हरयः १. १६४. ४७
कृष्णः श्वेतोऽरुषो यामो १०. २०. ९
कृष्णप्रुतौ वेविजे अस्य १. १४०. ३
कृष्णां यदेनीमभि वर्पसा १०. ३. २
कृष्णा यद्गोष्वरुणीषु १०. ६१. ४
कृष्णा रजांसि पत्सुतः ८. ४३. ६
केतुं कृण्वन्दिवस्परि ९. ६४. ८
केतुं कृण्वन्नकेतवे १. ६. ३
केतुं यज्ञानां विदथस्य ३. ३. ३
के ते अग्ने रिपवे ५. १२. ४
के ते नर इन्द्र ये १०. ५०. ३
केतेन शर्मन्त्सचते ८. ६०. १८
के मे मर्यकं वि यवन्त ५. २. ५
केश्यग्निं केशी विषं १०. १३६. १
के ष्ठा नरः श्रेष्ठतमा ५. ६१. १
को अग्निमीट्टे हविषा १. ८४. १८
को अद्धा० वोचत् १०. १२९. ६
को अद्धा० वोचद् ३. ५४. ५
को अद्य नर्यो देवकाम ४. २५. १
को अद्य युङ्क्ते धुरि १. ८४. १६
को अस्य वीरः सधमाद ४. २३. २
को अस्य वेद प्रथमस्याह्नः १०. १०. ६
को अस्य शुष्मं तविषीं ५. ३२. ९
को ददर्श प्रथमं जायमान १. १६४. ४
को देवयन्तमश्नवज्जनं १. ४०. ७
को देवानामवो अद्या ४. २५. ३
को नानाम वचसा ४. २५. २
को नु मर्या अमिथितः ८. ४५. ३७
को नु वां मित्रावरुणा ५. ४१. १
को नु वां मित्रास्तुतो ५. ६७. ५

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

को न्वत्र मरुतो मामहे १. १६५. १३
को मा ददर्श कतमः १०. ५१. २
को मृळाति कतम ४. ४३. २
को वः स्तोमं राधति १०. ६३. ६
को वस्त्राता वसवः ४. ५५. १
को वां दाशत्सुमतये १. १५८. २
को वामद्य पुरूणामा ५. ७४. ७
को वामद्या करते ४. ४४. ३
को वेद जानमेषां ५. ५३. १
को वेद नूनमेषां ५. ६१. १४
को वोऽन्तर्मरुत ऋष्टि १. १६८. ५
को वो महान्ति महता ५. ५९. ४
को वो वर्षिष्ठ आ नरो १. ३७. ६
क्रतुप्रावा जरिता शश्वतामव १०. १००. ११
क्रतूयन्ति क्रतवो हृत्सु १०. ६४. २
क्रतूयन्ति क्षितयो योग ४. २४. ४
क्रत्वः समह दीनता ७. ८९. ३
क्रत्व इत्पूर्णमुदरं ८. ७८. ७
क्रत्वा दक्षस्य तरुषो ३. २. ३
क्रत्वा दक्षस्य रथ्यमपो ९. १६. २
क्रत्वा दा अस्तु श्रेष्ठो ६. १६. २६
क्रत्वा महाँ अनुष्वधं १. ८१. ४
क्रत्वा यदस्य तविषीषु १. १२८. ५
क्रत्वा शुक्रेभिरक्षभि ९. १०२. ८
क्रत्वा हि द्रोणे अज्यसे ६. २. ८
क्रत्वे दक्षाय नः कवे ९. १००. ५
क्रव्यादमग्निं प्र हिणोमि १०. १६. ९
क्राणा रुद्रा मरुतो विश्व १०. ९२. ६
क्राणा रुद्रेभिर्वसुभिः १. ५८. ३
क्राणा शिशुर्महीनां ९. १०२. १
क्रीळं वः शर्धो मारुत १. ३७. १
क्रीळन्त्यस्य सूनृता ८. १३. ८
क्रीळन्नो रश्म आ भुवः ५. [illegible]. ५
क्रीळुर्मखो न मंहयुः ९. २०. ७
क त्यानि नौ सख्या ७. ८८. ५
क त्या वल्गू पुरुहूताय ६. ६३. १
क त्री चक्रा त्रिवृतो १. ३४. ९
क नूनं कद्वो अर्थं १. ३८. २
क नूनं सुदानवो ८. ७. २०
क वः सुम्ना नव्यांसि १. ३८. ३
क वोऽश्वाः क्वाभीशवः ५. ६१. २
क स्य ते रुद्र मृळयाकु २. ३३. ७
क स्य वीरः को ५. ३०. १
क स्य वृषभो युवा ८. ६४. ७
क स्या वो मरुतः १. १६५. ६
क स्विदद्य कतमा १०. ४०. १४
क स्विदस्य रजसो १. १६८. ६
क स्विदासां कतमा ४. ५१. ६
क्वेयथ क्वेदसि पुरुत्रा ८. १. ७
क्षत्रं जिन्वतमुत ८. ३५. १७
क्षत्राय त्वं श्रवसे १. ११३. ६
क्षत्राय त्वमवसि न ८. ३७. ६
क्षप उस्रश्च दीदिहि ७. १५. ८
क्षपो राजन्नुत त्मनाग्ने १. ७९. ६
क्षियन्तं त्वमक्षियन्तं ४. १७. १३
क्षेति क्षेमेभिः साधुभि ८. ८४. ९
क्षेत्रमिव वि ममुस्तेजनेनँ १. ११०. ५
क्षेत्रस्य पतिना वयं ४. ५७. १
क्षेत्रस्य पते मधुमन्तमूर्मि ४. ५७. २
क्षेत्रादपश्यं सनुतश्चरन्तं ५. २. ४
क्षेमस्य च प्रयुजश्च ८. ३७. ५
खे रथस्य खेऽनसः ८. ९१. ७
गच्छतं दाशुषो गृहमित्था ८. ८५. ६
गणानां त्वा गणपतिं २. २३. १
गन्ता नो यज्ञं यज्ञियाः ५. ८७. ९
गन्तारा हि स्थोऽवसे १. १७. २
गन्तेयान्ति सवना ६. २३. ४
गन्धर्व इत्था पदमस्य ९. ८३. ४
गमद्वाजं वाजयन्निन्द्र ७. ३२. ११
गमन्नस्मे वसून्या हि १०. ४४. ५
गम्भीरां उदधीँरिव ३. ४५. ३
गम्भीरेण न उरुणा ६. २४. ९
गयस्फानो अमीवहा १. ९१. १२
गर्भं धेहि सिनीवालि १०. १८४. २
गर्भे नु नौ जनिता १०. १०. ५
गर्भे नु सन्नन्वेषा ४. २७. १
गर्भे मातुः पितुष्पिता ६. १६. ३५
गर्भे योषामदधुर्वत्स १०. ५३. ११
गर्भो यज्ञस्य देवयुः ८. १२. ११
गर्भो यो अपां गर्भो [illegible]
गवामिव श्रियसे शृङ्गमुत्तमं ५. ५९. ३
गवाशिरं मन्थिनमिन्द्र ३. ३२. २
गव्यन्त इन्द्रं सख्याय ४. १७. १६
गव्यो षु णो यथा पुरा ८. ४६. १०
गाथपतिं मेधपतिं रुद्रं १. ४३. ४
गाथश्रवसं सत्पतिं ८. २. ३८
गामङ्गैष आ ह्वयति १०. १४६. ४
गायत्रेण प्रति मिमीते १. १६४. २४
गायत्साम नभन्यं यथा १. १७३. १
गायन्ति त्वा गायत्रिणो १. १०. १
गार्हपत्येन सन्त्य ऋतुना १. १५. १२
गाव इव ग्रामं यूयुधि १०. १४९. ४
गाव उपावतावतं मही ८. ७२. १२
गावश्चिद्घा समन्यवः ८. २०. २१
गावो न यूथमुप यन्ति ८. ४६. ३०
गावो भगो गाव इन्द्रो ६. २८. ५
गावो यवं प्रयुता अर्यो १०. २७. ८
गिरयश्चिन्नि जिहते ८. ७. ३४
गिरश्च यास्ते गिर्वाह ८. २. ३०
गिरस्त इन्द्र ओजसा ९. २. ७
गिरा जात इह स्तुत ९. ६२. १५
गिरा य एता युनजद्धरी ७. ३६. ४
गिरा यदी सबन्धवः ९. १४. २
गिरा वज्रो न संभृतः ८. ९३. ९
गिरिर्न यः स्वतवाँ ४. २०. ६
गिरीँरज्रान्रेजमानाँ १०. ४४. ८
गिरो जुषेथामध्वरं ८. ३५. ६
गिर्वणः पाहि नः सुतं ३. ४०. ६
गीर्णं भुवनं तमसापगूळ्ह १०. ८८. २
गीर्भिर्विप्रः प्रमतिमिच्छमान ७. ९३. ४
गुहा शिरो निहितमृधगक्षी १०. ७९. २
गुहा सतीरुप त्मना ८. ६. ८
गुहा हितं गुह्यं गूळ्ह २. ११. ५
गूहता गुह्यं तमो वि १. ८६. १०
गृणाना जमदग्निना ३. ६२. १८
गृणानो अङ्गिरोभिर्दस्म १. ६२. ५
गृणे तदिन्द्र ते शव ८. ६२. ८
गृभीतं ते मन इन्द्र ७. २४. २
गृभ्णामि ते सौभगत्वाय १०. ८५. ३६
[illegible] ४. १८. १०
गृहंगृहमहना यात्यच्छा १. १२३. ४
गृहमेधास आ गत मरुतो ७. ५९. १०
गृहो याम्यरंकृतो देवेभ्यो १०. ११९. १३
गोजिता बाहू अमितक्रतुः १. १०२. ६
गोजिन्नः सोमो रथजिद् ९. ७८. ४
गोत्रभिदं गोविदं वज्रबाहुं १०. १०३. ६
गोभिर्मिमिक्षुं दधिरे ३. ५०. ३
गोभिर्यदीमन्ये अस्मन्मृगं ८. २. ६
गोभिर्वाणो अज्यते ८. २०. ८
गोभिष्टरेमामतिं दुरेवां १०. ४२. १०
१०. ४३. १०
१०. ४४. १०
गोमदश्वावद्रथवत्सुवीरं ५. ५७. ७
गोमद् षु नासत्या २. ४१. ७
गोमद्धिरण्यवद्वसु ७. ९४. ९
गोमन्नः सोम वीरवदश्वा ९. ४२. ६
गोमन्न इन्दो अश्ववत् ९. १०५. ४
गोमाँ अग्नेऽविमाँ अश्वी ४. २. ५
गोमातरो यच्छुभयन्ते १. ८५. ३
गोमायुरदादजमायुरदात् ७. १०३. १०
गोमायुरेको अजमायुरेकः ७. १०३. ६
गोवित्पवस्व वसुविद् ९. ८६. ३९
गोषा इन्दो नृषा ९. २. १०
गोषु प्रशस्तिं वनेषु १. ७०. ५
गौरमीमेदनु वत्सं मिषन्तं १. १६४. २८
गौरीर्मिमाय सलिलानि १. १६४. ४१
गौर्धयति मरुतां ८. ९४. १
ग्नाश्च यन्नरश्च वावृधन्त ६. ६८. ४
ग्रन्थिं न वि ष्य ग्रथितं ९. ९७. १८
ग्रावाणः सविता नु वो १०. १७५. ४
ग्रावाणः सोम नो हि कं ६. ५१. १४
ग्रावाण उपरेष्वा महीयन्ते १०. १७५. ३
ग्रावाणेव तदिदर्थं जरेथे २. ३९. १
ग्रावाणो अप दुच्छुनामप १०. १७५. २
ग्रावाणो न सूरयः १०. ७८. ६
ग्रावा वदन्नप रक्षांसि १०. ३६. ४
ग्राव्णा तुन्नो अभिष्टुतः ९. ६७. १९
ग्राव्णो ब्रह्मा युयुजानः ५. ४०. ८
ग्रीवाभ्यस्त उष्णिहाभ्यः १०. १६३. २
घ्नन्नेव विष्वग्वि जह्यराव्ण १. ३६. १६

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

घर्मा समन्ता त्रिवृतं १०. ११४. १
घर्मेव मधु जठरे सनेरू १०. १०६. ८
घृतं न पूतं तनूररेपाः ४. १०. ६
घृतं पवस्व धारया ९. ४९. ३
घृतं मिमिक्षे घृतमस्य २. ३. ११
घृतपृष्ठा मनोयुजो १. १४. ६
घृतप्रतीकं व ऋतस्य १. १४३. ७
घृतप्रुषः सौम्या जीरदानवः ८. ५९. ४
घृतमग्नेर्वध्र्यश्वस्य वर्धनं १०. ६९. २
घृतवती भुवनानामभि ६. ७०. १
घृतवन्तः पावक ते ३. २१. २
घृतवन्तमुप मासि १. १४२. २
घृताहवन दीदिवः १. १२. ५
घृताहवन सन्त्येमा १. ४५. ५
घृतेन द्यावापृथिवी ६. ७०. ४
घृतेनाग्निः समज्यते १०. ११८. ४
घृषुं पावकं वनिनं १. ६४. १२
घृषुः श्येनाय कृत्वन १०. १४४. ३
घ्नन्तो वृत्रमतरन्रोदसी १. ३६. ८
घ्नन्नृभ्राण्यप द्विषो ८. ४३. २६
चकार ता कृणवन्नूनमन्या ७. २६. ३
चकृवांस ऋभवस्तदपृच्छत १. १६१. ४
चक्रं न वृत्तं पुरुहूत ५. ३६. ३
चक्रं यदस्याप्स्वा ०. ७३. ९
चक्राणासः परीणहं १. ३३. ८
चक्राये हि सध्र्यङ्नाम १. १०८. ३
चक्रिर्दिवः पवते कृत्व्यो ९. ७७. ५
चक्रिर्यो विश्वा भुवनाभि ३. १६. ४
चक्षुर्नो देवः सविता १०. १५८. ३
चक्षुर्नो धेहि चक्षुषे १०. १५८. ४
चक्षुषः पिता मनसा १०. ८२. १
चतस्र ईं घृतदुहः ९. ८९. ५
चतुःसहस्रं गव्यस्य ५. ३०. १५
चतुरश्चिद्ददमानाद् १. ४१. ९
चतुर्दशान्ये महिमानो १०. ११४. ७
चतुर्भिः साकं नवतिं १. १५५. ६
चतुष्कपर्दा युवतिः १०. ११४. ३
चतुस्त्रिंशद्वाजिनो १. १६२. १८
चत्तो इतश्चत्तामुतः १०. १५५. २
चत्वार ईं बिभ्रति ५. ४७. ४
चत्वारिंशद्दशरथस्य १. १२६. ४
चत्वारि ते असुर्याणि १०. ५४. ४
चत्वारि वाक्परिमिता १. १६४. ४५
चत्वारि शृङ्गा त्रयो ४. ५८. ३
चत्वारो मा पैजवनस्य ७. १८. २३
चत्वारो मा मशर्शारस्य १. १२२. १५
चनिष्टं देवा ओषधीष्वप्सु ७. ७०. ४
चन्द्रमग्निं चन्द्ररथं ३. ३. ५
चन्द्रमा अप्स्वन्तरा १. १०५. १
चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः १०. ९०. १३
चमूषच्छ्येनः शकुनो ९. ९६. १९
चरन्वत्सो रुशन्निह ८. ७२. ५
चरित्रं हि वेरिवाच्छेदि १. ११६. १५
चरुर्न यस्तमीङ्खयेन्दो ९. ५२. ३
चर्कृत्यं मरुतः पृत्सु १. ६४. १४
चर्षणीधृतं मघवान ३. ५१. १
चाक्लृप्रे तेन ऋषयो १०. १३०. ६
चिकित्विन्मनसं त्वा ५. २२. ३
चिते तद्वां सुराधसा १०. १४३. ४
चित्तिमचित्तिं चिनवद्वि ४. २. ११
चित्तिरा उपबर्हणं १०. ८५. ७
चित्रं तद्वो मरुतो याम २. ३४. १०
चित्रं देवानामुदगादनीकं १. ११५. १
चित्रं ह यद्वां भोजनं ७. ६८. ५
चित्र इच्छिशोस्तरुणस्य १०. ११५. १
चित्र इद्राजा राजका ८. २१. १८
चित्रस्ते भानुः क्रतुप्रा १०. १००. १२
चित्रा वा येषु दीधिति ५. १८. ४
चित्रैरञ्जिभिर्वपुषे १. ६४. ४
चित्रो वोऽस्तु यामश्चित्र १. १७२. १
चोदयतं सूनृताः पिन्वतं १०. ३९. २
चोदयित्री सूनृतानां १. ३. ११
छन्दःस्तुभः कुभन्यव ५. ५२. १२
छर्दिर्यन्तमदाभ्यं ८. ८५. ५
जगता सिन्धुं दिव्यस्तभाय १. १६४. २५
जगृभ्मा ते दक्षिणमिन्द्र १०. ४७. १
जघने चोद एषां वि ५. ६१. ३
जघन्वाँ इन्द्र मित्रेरू १. १७४. ६
जघन्वाँ ठ हरिभिः १. ५२. ८
जघान वृत्रं स्वधितिर्वनेव १०. ८९. ७
जघ्निर्वृत्रममित्रियं ९. ६१. २०
जज्ञानं सप्त मातरो ९. १०२. ४
जज्ञानः सोमं सहसे ७. ९८. ३
जज्ञान एव व्यबाधत १०. ११३. ४
जज्ञानो नु शतक्रतुर्वि ८. ७७. १
जज्ञानो हरितो वृषा ३. ४४. ४
जज्ञिष इत्था गोपीथ्याय १०. ९५. ११
जनं वज्रिन्महि चिन्मन्यमान ६. १९. १२
जनयन्रोचना दिवो ९. ४२. १
जनस्य गोपा अजनिष्ट ५. ११. १
जनाय चिद्य ईवत ६. ७३. २
जनासो अग्निं दधिरे १. ३६. २
जनासो वृक्तबर्हिषो ८. ५. १७
जनिता दिवो जनिता ८. ३६. ४
जनिताश्वानां जनिता ८. ३६. ५
जनिष्ट योषा पतयत् १०. ४०. ९
जनिष्ट हि जेन्यो अग्रे ५. १. ५
जनिष्ठा उग्रः सहसे १०. ७३. १
जनिष्वा देववीतये ६. १५. १८
जनीयन्तो न्वग्रवः ७. ९६. ४
जनूश्चिद्वो मरुतस्त्वेष्येण ७. ५८. २
जनो यो मित्रावरुणावभि १. १२२. ९
जन्मंजन्मन्निहितो ३. १. २१
जम्भयतमभितो रायतः १. १८२. ४
जयतं च प्र स्तुतं च ८. ३५. ११
जयतामिव तन्यतुः १. २३. ११
जयेम कारे पुरुहूत ८. २१. १२
जरतीभिरोषधीभिः ९. ११२. २
जरमाणः समिध्यसे १०. ११८. ५
जराबोध तद्विविड्ढि १. २७. १०
जातवेदसे सुनवाम १. ९९. १
जातो अग्नी रोचते ३. २९. ७
जातो जायते सुदिनत्वे ३. ८. ५
जातो यदग्ने भुवना ७. १३. ३
जानत्यह्नः प्रथमस्य १. १२३. ९
जानन्ति वृष्णो अरुषस्य ३. ७. ५
जानन्तो रूपमकृपन्त १०. १२३. ४
जामिः सिन्धूनां भ्रातेव १. ६५. ४
[illegible] ८. ७२. ४
जाया तप्यते कितवस्य १०. ३४. १०
जायेदस्तं मघवन्त्सेदु ३. ५३. ४
जायेव पत्यावधि शेव ९. ८२. ४
जिघर्म्यग्निं हविषा २. १०. ४
जिह्मं नुनुद्रेऽवतं तया १. ८५. ११
जिह्मश्ये चरितवे मघोन्या १. ११३. ५
जिह्वाभिरह नन्नमदर्चिषा ८. ४३. ८
जीमूतस्येव भवति प्रतीकं ६. ७५. १
जीवं रुदन्ति वि मयन्ते १०. ४०. १०
जीवान्नो अभि धेतना ८. ६७. ५
जुजुरुषो नासत्योत १. ११६. १०
जुषद्धव्या मानुषस्योर्ध्वं १०. २०. ५
जुषस्व नः समिधमग्ने ७. २. १
जुषस्व सप्रथस्तमं १. ७५. १
जुषस्वाग्न इळया सजोषा ५. ४. ४
जुषाणो अग्ने प्रति हर्य १०. १२२. २
जुषाणो अङ्गिरस्तमेमा ८. ४४. ८
जुषेथां यज्ञं० विश्वेह ८. ३५. ४
जुषेथां यज्ञं० सत्तो २. ३६. ६
जुषेथां यज्ञमिष्टये ८. ३८. ४
जुष्ट इन्द्राय मत्सरः ९. १३. ८
जुष्टी नरो ब्रह्मणा वः ७. ३३. ४
जुष्टो दमूना अतिथि ५. ४. ५
जुष्टो मदाय देवतात ९. ९७. १९
जुष्टो हि दूतो असि १. ४४. २
जुष्ट्वी न इन्दो सुपथा ९. ९७. १६
जुहुराणा चिदश्विना ८. २६. ५
जुहुरे वि चितयन्तो ५. १९. २
जेता नृभिरिन्द्रः पृत्सु १. १७८. ३
जोषद्यदीमसुर्या सचध्यै १. १६७. ५
जोषा सवितर्यस्य ते १०. १५८. २
जोष्यग्ने समिधं जोष्याहुति २. ३७. ६
जोहूत्रो अग्निः प्रथमः २. १०. १
ज्ञेया भागं सहसानो २. १०. ६
ज्मया अत्र वसवो रन्त ७. ३९. ३
ज्यायांसमस्य यतुनस्य ५. ४४. ८
ज्येष्ठ आह चमसा द्वा ४. ३३. ५
ज्येष्ठेन सोतरिन्द्राय ८. २. २३
ज्योतिर्यज्ञस्य पवते ९. ८६. १०
ज्योतिर्यज्ञाय रोदसी ३. ३९. ८
ज्योतिर्वृणीत तमसो ३. ३९. ७

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ज्योतिष्मतीमदितिं १. १३६. ३
ज्योतिष्मन्तं केतुमन्तं ८. ५८. ३
तं गायथा पुराण्या ९. ९९. ४
तं गावो अभ्यनूषत ९. २६. २
तं गीर्भिर्वाचमीङ्खयं ९. ३५. ५
तं गूर्तयो नेमन्निषः १. ५६. २
तं गृणीया स्वर्णरं ८. १९. १
तं गोभिर्भृणथा रसं ९. ६. ६
तं घेमित्था० अर्यं ८. ६९. १७
तं घेमित्था० होत्राभि १. ३६. ७
तंतमिद्गाधसे महे ८. ६८. ७
तं ते मदं गृणीमसि ८. १५. ४
तं ते यवं यथा गोभिः ८. २. ३
तं ते सोतारो रसं ९. १०९. ६
तं त्वा गीर्भिरुक्षया १०. ११८. ९
तं त्वा गीर्भिर्गिर्वणसं २. ६. ३
तं त्वा घृतश्चवीमहे ५. २६. २
तं त्वाजनन्त मातरः ८. १०२. १७
तं त्वा दूतं कृण्महे ७. १६. ४
तं त्वा देवेभ्यो मधुमत्तमं ९. ८०. ४
तं त्वा धर्तारमोण्योः ९. ६५. ११
तं त्वा नरो दम आ १. ७३. ४
तं त्वा नृम्णानि बिभ्रतं ९. ४८. १
तं त्वामन्मेषु वाजिनं ८. ४३. २०
तं त्वा मदाय घृष्वय ९. २. ८
तं त्वा मरुत्वती परि ७. ३१. ८
तं त्वा मर्ता अगृभ्णत ३. ९. ६
तं त्वा यज्ञेभिरीमहे ८. ६८. १०
तं त्वा वयं पतिमग्ने १. ६०. ५
तं त्वा वयं पितो १. १८७. ११
तं त्वा वयं विश्ववारा १. ३०. १०
तं त्वा वयं सुध्यो ६. १. ७
तं त्वा वयं हवामहे ८. ४३. २३
तं त्वा वाजेषु वाजिनं १. ४. ९
तं त्वा विप्रा वचोविदः ९. ६४. २३
तं त्वा विप्रा विपन्यवो ३. १०. ९
तं त्वा समिद्भिरङ्गिरो ६. १६. ११
तं त्वा सहस्रचक्षसमथो ९. ६०. २
तं त्वा सुतेष्वाभुवो ९. ६५. २७
तं त्वा हविष्मतीर्विश ८. ६. २७
तं त्वा हस्तिनो मधुमन्त ९. ८०. ५
तं त्वा हिन्वन्ति वेधसः ९. २६. ६
तं त्रिपृष्ठे त्रिवन्धुरे ९. ६२. १७
तं दुरोषमभी नरः ९. १०१. ३
तं देवा वुभ्रे रजसः २. २. ३
तं नव्यसी हृद आ १. ६०. ३
तं नाकमर्यो अगृभीत ५. ५४. १२
तं नेमिभुभवो यथा ८. ७५. ५
तं नो अग्ने अभी नरो ५. ९. ७
तं नो अग्ने मघवद्भ्यः ७. ५. ९
तं नो दात मरुतो २. ३४. ७
तं नो धावापृथिवी १०. ३७. ६
तं नो वाजा ऋभुक्षण ४. ३७. ८
तं नो विश्वा अवस्युवो ९. ४३. २
तं पृच्छता स जगामा १. १४५. १
तं पृच्छन्ती वयहस्तं ६. २२. ५
तं पृच्छन्तोऽवरासः ६. २१. ६
तं प्रत्नथा पूर्वथा ५. ४४. १
तं मर्जयन्त सुक्रतुं ८. ८४. ८
तं मर्ता अमर्त्यं घृतेनाग्निं १०. ११८. ६
तं मर्मृजानं महिषं ९. ९५. ४
तं यज्ञं वर्हिषि प्रौक्षन् १०. ९०. ७
तं यज्ञसाधमपि वातया १. १२८. २
तं युआथां मनसो १. १८३. १
तं युवं देवावश्विना ४. १५. १०
तं वः शर्धं मारुतं २. ३०. ११
तं वः शर्धं रथानां ५. ५३. १०
तं वः शर्धं रथेशुभं ५. ५६. ९
तं वः सख्यायः सं यथा ६. २३. ९
तं वः सख्यो मदाय ९. १०५. १
तं व इन्द्रं चतिनमस्य ६. १९. ४
तं व इन्द्रं न सुक्रतुं ६. ४८. १४
तं वर्धयन्तो मतिभिः १०. ६७. ९
तं वश्मरायां वयं १. ६६. ५
तं वां० पृथुव्रयमश्विना ४. ४४. १
तं वां० स्तोमैरश्विना १. १८०. १०
तं वृधन्तं मारुतं ६. ६६. ११
तं वेधां मेधयाद्यन् ९. २६. ३
तं वो दस्मवृतीषहं ८. ८८. १
तं वो दीर्घायुशोचिषं ९. १८. १
तं वो धिया नव्यस्या ६. २२. ७
तं वो धिया परमया ६. ३८. ३
तं वो महो महाम्यमिन्द्रं ८. ७०. ८
तं वो वाजानां पतिमहूमहि ८. २४. १८
तं वो विं न दुपदं १०. ११५. ३
तं शग्मासो अरुरासो ७. ९७. ६
तं शश्वतीषु मातृषु ४. ७. ६
तं शिशीता सुवृक्तिभि ८. ४०. १०
तं शिशीता स्वध्वरं ८. ४०. ११
तं शुभ्रमग्निमवसे ३. २६. २
तं सखायः पुरोरुचं ९. ९८. १२
तं सभरीचकृतयो ६. ३६. ३
तं सवाधो यतस्रुच ३. २७. ६
तं सानावधि जामयो ९. २६ ५
तं सिन्धवो मत्सरमिन्द्र १०. ३०. ९
तं सुप्रतीकं सुदृशं ६. १५. १०
तं सुष्टुत्या विवासे ८. १६. ३
तं सोतारो धनस्पृतमाशुं ९. ६२. १८
तं स्मा रथं मघवन् १. १०२. ३
तं हिन्वन्ति मदच्युतं ९. ५३. ४
तं हि शश्वन्त ईळते ५. १४. ३
तं हि स्वराजं वृषभं ८. ६१. २
तं हुवेम यतस्रुचः ८. २३. २०
तं होतारमध्वरस्य ७. १६. १२
त आदित्या आ० भूत १. १०६. २
त आदित्या आ० वृधे १०. ३५. ११
त आदित्यास उरवो २. २७. ३
त आयजन्त द्रविणं १०. ८२. ४
त इद्भुभ्राः शवसा ६. ६६. ६
त इद्देवानां सधमाद ७. ७६. ४
त इद्देदिं सुभग त ८. १९. १८
त इन्निण्यं हृदयस्य ७. ३३. ९
त इन्वस्य मधुमद्धि ३. ३२. ४
त उक्षितासो महिमान १. ८५. २
त उग्रासो वृषण उग्र ८. २०. १२
त ऊ षु णो महो यजत्रा १०. ६१. २७
तक्षद्यत्त उशना सहसा १. ५१. १०
तक्षद्यदी मनसो वेनतो ९. ९७. २२
तक्षन्नासत्याभ्यां १. २०. ३
तक्षन्रथं सुकृतं विधना १. १११. १
तच्चक्षुर्देवहितं शुक्रमुच्चरत् ७. ६६. १६
तच्चित्र राध आ भरोषो ७. ८१. ५
ततं मे अपस्तदु तायते १. ११०. १
ततुरिर्वीरो नर्यो विचेताः ६. २४. २
तत्कृण्वानाः सिन्धव:-क्षोदसा ५. ५३. ७
तत्त इन्द्रियं परमं १. १०३. १
तत्तदग्निर्वयो दधे ८. ३९. ४
तत्तदिदग्निनोरवो १. ४६. १२
तत्तदिदस्य पौंस्यं १. १५५. ४
तत्तु प्रयः प्रत्नथा ते १. १३२. ३
तत्ते भद्रं यत्समिद्धः १. ९४. १४
तत्ते यज्ञो अजायत ८. ८९. ६
तत्ते सहस्व ईमहे ८. ४३. ३३
तत्त्वा यामि ब्रह्मणा १. २४. ११
तत्त्वा यामि सुवीर्यं ८. ३. ९
तत्रो अपि प्राणीयत ८. ५६. ४
तत्सविता वोऽमृतत्व १. ११०. ३
तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो ३. ६२. १०
तत्सवितुर्वृणीमहे वयं ५. ८२. १
तत्तु नः शर्म यच्छता ८. १८. १२
तत्तु नः सविता० इन्द्रो ४. ५५. १०
तत्तु नः सविता० शर्म ८. १८. ३
तत्तु नो नव्यं सन्यस ८. ३७. १८
तत्तु नो० वृधे ६. ४५. ३३
तत्तु नो० मरुतः ८. ९४. ३
तत्तु वां मित्रावरुणा ५. ६२. २
तत्सूर्यं रोदसी उभे ८. २५. २१
तत्सूर्यस्य देवत्वं १. ११५. ४
तथा तदस्तु सोमपाः १. ३०. १२
तदग्ने चक्षुः प्रति धेहि १०. ८७. १२
तदग्ने शुम्नमा भर ८. १९. १५
तदथ वाचः प्रथमं १०. ५३. ४
तदद्या चित्त उक्थिनो ८. १५. ६
तदद्याय तदपसे तं ८. ४७. १६
तदस्तु मित्रावरुणा तदग्ने ५. ४७. ७
तदस्मै नव्यमङ्गिरस्वदर्चत २. १७. १
तदस्य प्रियमभि पाथो १. १५४. ५
तदस्यानीकमुत चारु २. ३५. ११
तदस्येदं पश्यता भूरि १. १०३. ५
तदित्समस्यमभि चारु १०. ३२. ४

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तदित्समानमाशाते	१. २५. ६
तदिदास भुवनेषु	१०. १२०. १
तदिद्ध्यस्य सवनं	१०. ७६. ३
तदिद्रुद्रस्य चेतति	८. १३. २०
तदिद्वदन्त्यद्रयो	१०. ९४. १३
तदिन्द्र प्रेव वीर्यं	१. १०३. ७
तदिन्द्राव आ भर	८. २४. २५
तदिन्नक्तं तद्दिवा	१. २४. १२
तदिन्नु ते करणं	५. ३१. ७
तदिन्न्वस्य परिषद्वानो	१०. ६१. १३
तदिन्न्वस्य वृषभस्य	३. ३८. ७
तदिन्न्वस्य सवितुर्नकिर्मे	३. ३८. ८
तदिन्मे छन्त्सद्वपुषो	१०. ३२. ३
तदु प्रयक्षतममस्य	१. ६२. ६
तदु श्रेष्ठं सवनं	१०. ७६. २
तदूचुषे मानुषेमा	१. १०३. ४
तदू षु वामेना कृतं	५. ७३. ४
तदृतं पृथिवि बृहच्छ्रव	५. ६६. ५
तद्दधाना अवस्यवो	८. ६३. १०
तद्देवस्य सवितुर्वार्यं	४. ५३. १
तद्देवानां देवतमाय	२. २४. ३
तद्दि वयं वृणीमहे	१०. १२६. २
तद्बन्धुः सूरिर्दिवि	१०. ६१. १८
तद्भद्रं तव दंसना	३. ९. ७
तद्राधो अद्य सवितुर्वरेण्यं	१. १५९. ५
तद्वः सुजाता मरुतो	१. १६६. १२
तद्व उक्थस्य बर्हणे	६. ४४. ६
तद्वां नरा नासत्यावनु	१. १८२. ८
तद्वां नरा शंस्यं पज्रियेण	१. ११७. ६
तद्वां नरा शंस्यं राध्यं	१. ११६. ११
तद्वां नरा सनये	१. ११६. १२
तद्वामृतं रोदसी	१०. ७९. ४
तद्वार्यं वृणीमहे वरिष्ठं	८. २५. १३
तद्विप्रासो विपन्यवो	१. २२. २१
तद्विविड्ढि यत्त इन्द्रो	८. ९६. १२
तद्विष्णोः परमं पदं	१. २२. २०
तद्वीर्यं वो मरुतो महि	५. ५४. ५
तद्वो अद्य मनामहे	७. ६६. १२
तद्वो गाय सुते सचा	६. ४५. २२
तद्वो जामित्वं मरुतः	१. १६६. १३
तद्वो दिवो दुहितरो	४. ५१. ११
तद्वो यामि द्रविणं	५. ५४. १५
तद्वो वाजा ऋभवः	४. ३६. ३
तनूत्यजेव तस्करा	१०. ४. ६
तनूनपात्पथ ऋतस्य	१०. ११०. २
तनूनपात्पवमानः शृङ्गे	९. ५. २
तनूनपादुच्यते गर्भ	३. २९. ११
तनूनपादृतं यते मध्वा	१. १८८. २
तनूष्टे वाजिन्तन्वं	१०. ५६. २
तन्तुं तन्वन्रजसो	१०. ५३. ६
तन्तुं तन्वानमुत्तममनु	९. २२. ६
तन्नः प्रत्नं सख्यमस्तु	६. १८. ५
तन्न इन्द्रस्तद्वरुण	१. १०७. ३
तन्न इन्द्रो वरुणो	७. ३४. २५
	७. ५६. २५
तन्नस्तुरीपमद्भुतं पुरु	१. १४२. १०
तन्नस्तुरीपमध पोषयित्नु	३. ४. ९
	७. २. ९
तन्नु वोचाम रभसाय	१. १६६. १
तन्नु सत्यं पवमानस्यास्तु	९. ९२. ५
तन्नो अनर्वा सविता	५. ४९. ४
तन्नो देवा यच्छत	१०. ३५. १२
तन्नो रायः पर्वतास्तन्न	७. ३४. २३
तन्नो वातो मयोभु	१. ८९. ४
तन्नो वि वोचो यदि ते	६. २२. ४
तन्नोऽहिर्बुध्न्यो अद्भिरर्कैः	६. ४९. १४
तन्म ऋतमिन्द्र शूर चित्र	८. ९७. १५
तन्मित्रस्य वरुणस्याभि	१. ११५. ५
तपन्ति शत्रुं स्वर्ण भूमा	७. ३४. १०
तपसा ये अनाधृष्या	१०. १५४. २
तपुर्जम्भो वन आ	१. ५८. ५
तपुर्मूर्धा तपतु रक्षसो	१०. १८२. ३
तपोष्पवित्रं विततं	९. ८३. २
तपो ष्वग्ने अन्तराँ	३. १८. २
तम आसीत्तमसा	१०. १२९ ३
तमग्निमस्ते वसवो	७. १. २
तमग्ने पास्युत तं	६. १५. ११
तमग्ने पृतनाषहं	५. २३. २
तमग्रुवः केशिनीः	१. १४०. ८
तमङ्गिरस्वन्नमसा	३. ३१. १९
तमद्य राधसे महे	८. ६४. १२
तमध्वरेष्वीळते देवं	५. १४. २
तमप्सन्त शवस उत्सवेषु	१. १००. ८
तममृक्षन्त वाजिनमुपस्थे	९. २६. १
तमर्केभिस्तं सामभिस्तं	८. १६. ९
तमर्वन्तं न सानसिं	८. १०२. १२
तमर्वन्तं न सानसिमरुषं	४. १५. ६
तमस्मेरा युवतयो	२. ३५. ४
तमस्य द्यावापृथिवी	१०. ११३. १
तमस्य पृक्षमुपरासु	१. १२७. ५
तमस्य मर्जयामसि	९. ९९. ३
तमस्य राजा वरुण	१. १५६. ४
तमस्य विष्णुर्महिमान	१०. ११३. २
तमह्यन्भुरिजोर्धिया	९. २६. ४
तमह्ने वाजसातय	८. १३. ३
तमागन्म सोभरयः	८. १९. ३२
तमा नूनं वृजनमन्यथा	६. ३५. ५
तमा नो अर्कममृताय	७. ९७. ५
तमिड्यौन्नैरार्यन्ति	८. १६. ६
तमित्पृच्छन्ति न सिमो	१. १४५. २
तमित्सखित्व ईमहे	१. १०. ६
तमित्सुहव्यमङ्गिरः	१. ७४. ५
तमिद्गच्छन्ति जुह्वस्त	१. १४५. ३
तमिद्गर्भं प्रथमं दध्र	१०. ८२. ६
तमिद्दोषा तमुषसि	७. ३. ५
तमिद्धनेषु हितेष्वधि	८. १६. ५
तमिद्व इन्द्रं सुहवं	४. १६. १६
तमिद्वर्धन्तु नो गिरो	९. ६१. १४
तमिद्विप्रा अवस्यवः	८. १३. १७
तमिद्वोचेमा विदथेषु	१. ४०. ६
तमिन्द्रं जोहवीमि	८. ९७. १३
तमिन्द्रं दानमीमहे	८. ४६. ६
तमिन्द्रं वाजयामसि	८. ९३. ७
तमिन्द्र मदमा गहि	३. ४२. २
तमिन्नरो वि ह्वयन्ते	४. २४. ३
तमिन्न्वेव समना समान	४. ५. ७
तमीं हिन्वन्ति धीतयो	१. १४४. ५
तमीं हिन्वन्त्यग्रुवो	९. १. ८
तमीं होतारमानुषक्	४. ७. ५
तमीळत प्रथमं यज्ञसाधं	१. ९६. ३
तमीळिष्व य आहुतो	८. ४३. २२
तमीळिष्व यो अर्चिषा	६. ६०. १०
तमीमण्वीः समर्य आ	९. १. ७
तमीमह इन्द्रमस्य	६. २२. ३
तमीमहे पुरुष्टुतं यह्वं	८. १३. २४
तमी मृजन्त्यायवो	९. ६३. १७
तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं	१. ८९. ५
तमुक्षमाणं रजसि स्व आ	२. २. ४
तमुक्षमाणमव्यये वारे	९. ९९. ५
तमु ज्येष्ठं नमसा हविर्भिः	७. ९७. ३
तमु त्वा गोतमो गिरा	१. ७८. २
तमु त्वा दध्यङ्ङृषिः	६. १६. १४
तमु त्वा नूनमसुर	८. ९०. ६
तमु त्वा नूनमीमहे	८. २४. २६
तमु त्वा पाथ्यो वृषा	६. १६. १५
तमु त्वा यः पुरासिथ	६. ४५. ११
तमु त्वा वाजसातम	१. ७८. ३
तमु त्वा वाजिनं नरो	९. १७. ७
तमु त्वा वृत्रहन्तमं	१. ७८. ४
तमु त्वा सत्य सोमपा	६. ४५. १०
तमु द्युमः पुर्वणीक	६. १०. २
तमु नः पूर्वे पितरो	६. २२. २
तमु नूनं तविषीमन्तमेषां	५. ५८. १
तमु ष्टवाम यं गिर	८. ९५. ६
तमु ष्टवाम य इमा	८. ९६. ६
तमु ष्टुहि यः स्विषुः	५. ४२. ११
तमु ष्टुहि यो अभिभूत्योजा	६. १८. १
तमु ष्टुहीन्द्रं यो ह	१. १७३. ५
तमु स्तुष इन्द्रं तं	२. २०. ४
तमु स्तुष इन्द्रं यो	६. २१. २
तमु स्तोतारः पूर्व्यं यथा	१. १५६. ३
तमुस्रामिन्द्रं न रेजमान	१०. ६. ५
तमूतयो रणयञ्छूरसातौ	१. १००. ७
तमूर्मिमापो मधुमत्तमं	७. ४७. २
तमू षु समना गिरा	८. ४१. २
तमृत्विया उप वाचः	१. १९०. २
तमेव ऋषिं तमु ब्रह्माण	१०. १०७. ६
तमोषधीर्दधिरे गर्भ	१०. ९१. ६
तम्वभि प्र गायत	८. १५. १
तम्वभि प्रार्चतेन्द्रं	८. ९२. ५

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तया पवस्व० गाव ९. ४९. २
तया पवस्व० पीतो ९. ४५. ६
तयोरिदमवच्छवस्तिग्मा ५. ८६. ३
तयोरिदवसा वयं १. १७. ६
तयोरिद्धृतवत्पयो १. २२. १४
तरणिं वो जनानां ८. ४५. २८
तरणिरित्सिषासति ७. ३२. २०
तरणिर्विश्वदर्शतो १. ५०. ४
तरत्स मन्दी धावति ९. ५८. १
तरत्समुद्रं पवमान ऊर्मिणा ९. १०७. १५
तरोभिर्वो विदद्वसुमिन्द्रं ८. ६६. १
तव क्रत्वा तव तद् ६. १७. ६
तव क्रत्वा तवोतिभिर्ज्योक् ९. ४. ६
तव क्रत्वा सनेयं तव ८. १९. २९
तव च्यौत्नानि वज्रहस्त ७. १९. ५
तव त्य इन्दो अन्धसो ९. ५१. ३
तव त्य इन्द्र सख्येषु १०. १३८. १
तव त्यदिन्द्रियं बृहत्तव ८. १५. ७
तव त्यन्नर्य नृतोऽप २. २२. ४
तव त्ये अग्ने अर्चयो भ्राजन्तो ५. १०. ५
तव त्ये अग्ने अर्चयो महि ५. ६. ७
तव त्ये अग्ने हरितो ४. ६. ९
तव त्ये पितो ददतस्तव १. १८७. ५
तव त्ये पितो रसा १. १८७. ४
तव त्ये सोम पवमान ९. ९२. ४
तव त्ये सोम शक्तिभि १०. २५. ५
तव त्रिधातु पृथिवी ७. ५. ४
तव त्विषो जनिमन्रेजत ४. १७. २
तव द्युमन्तो अर्चयो ५. २५. ८
तव द्यौरिन्द्र पौंस्यं ८. १५. ८
तव द्रप्सा उदप्रुत ९. १०६. ८
तव द्रप्सो नीलवान् ८. १९. ३१
तव प्रणीतीन्द्र जोहुवानान् ७. २८. ३
तव प्रत्नेभिरध्वभिरव्यो ९. ५२. २
तव प्र यक्षि संदृशमुत ६. १६. ८
तव प्रयाजा अनुयाजाश्च १०. ५१. ९
तव भ्रमास आशुया ४. ४. २
तव वायवृतस्पते ८. २६. २१
तव विश्वे सजोषसो ९. १८. ३
तव व्रते सुभगासः २. २८. २
तव शरीरं पतयिष्ण्वर्वन् १. १६३. ११
तव शुक्रासो अर्चयो ९. ६६. ५
तव श्रिया सुदृशो देव ५. ३. ४
तव श्रिये मरुतो मर्जयन्त ५. ३. ३
तव श्रिये व्यजिहीत २. २३. १८
तव श्रियो वर्ष्यस्येव १०. ९१. ५
तव स्याम पुरुवीरस्य २. २८. ३
तव स्वादिष्ठाग्ने संदृष्टिरिदा ४. १०. ५
तव ह त्यदिन्द्र विश्वमाजौ ६. २०. १३
तवाग्ने होत्रं तव पोत्र २. १. २
१०. ९१. १०
तवायं सोमस्त्वमेह्यर्वाङ् ३. ३५. ६
तवाहं शूर रातिभिः १. ११. ६
तवाहं सोम रारण ९. १०७. १९
तवाहमग्न ऊतिभिर्नेदिष्ठाभिः ८. १९. २८
तवाहमग्न ऊतिभिर्मित्रस्य ५. ९. ६
तवेदं विश्वमभितः ७. ९८. ६
तवेदिन्द्र प्रणीतिपूत ८. ६. २२
तवेदिन्द्रावमं वसु ७. ३२. १६
तवेदिन्द्राहमाशसा ८. ७८. १०
तवेदु ताः सुकीर्तयो ८. ४५. ३३
तवेमाः प्रजा दिव्यस्य ९. ८६. २८
तवेमे सप्त सिन्धवः ९. ६६. ६
तवोतिभिः सचमाना ५. ४२. ८
तस्मा अग्निर्भारतः ४. २५. ४
तस्मा अरं गमाम वो १०. ९. ३
तस्मा अर्षन्ति दिव्या २. २५. ४
तस्मा इदास्ये हविर्जुहोता ७. १०२. ३
तस्मा इद्विश्वे धुनयन्त २. २५. ५
तस्मादश्वा अजायन्त १०. ९०. १०
तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः संभृतं १०. ९०. ८
तस्माद्यज्ञात्सर्वहुत ऋचः १०. ९०. ९
तस्माद्विराळजायत १०. ९०. ५
तस्मिन्ना वेशया गिरो १. १७६. २
तस्मिन्हि सन्त्यूतयो ८. ४६. ७
तस्मै तवस्यमनु दायि २. २०. ८
तस्मै नूनमभिद्यवे ८. ७५. ६
तस्य ते वाजिनो वयं ९. ६५. ९
तस्य द्युमाँ असद्रथो ८. ३१. ३
तस्य वज्रः क्रन्दति १. १००. १३
तस्य वयं सुमतौ ६. ४७. १३
१०. १३१. ७
तस्याः समुद्रा अधि १. १६४. ४२
तस्येदर्वन्तो रंहयन्त ८. १९. ६
तस्येदिह स्तवथ वृष्ण्यानि ४. २१. २
तां जुषस्व गिरं मम ३. ६२. ८
तां पूषञ्छिवतमामेरयस्व १०. ८५. ३७
तां पूष्णः सुमतिं वयं ६. ५७. ५
तां वां धेनुं न वासरीमंशुं १. १३७. ३
तां वो देवाः सुमति ५. ४१. १८
तां सु ते कीर्तिं मघवन् १०. ५४. १
ताँ आ रुद्रस्य मीळ्हुषो ७. ५८. ५
ताँ आशिरं पुरोळाश ८. २. ११
ताँ इयानो महि वरूथ २. ३४. १४
ताँ उशतो वि बोधय १. १२. ४
ता अत्नत वयुनं ५. ४८. २
ता अभि सन्तमस्तृतं ९. ९. ५
ता अस्य ज्येष्ठमिन्द्रियं १०. १२४. ८
ता अस्य नमसा सहः १. ८४. १२
ता अस्य पृशनायुवः १. ८४. ११
ता अस्य वर्णमायुवो २. ५. ५
ता अस्य सूददोहसः ८. ६९. ३
ता आ चरन्ति समना ४. ५१. ८
ता इन्न्वेव समना ४. ५१. ९
ता ईं वर्धन्ति मह्यस्य १. १५५. ३
ता कर्माषतरास्मै १. १७३. ४
ता गृणीहि नमस्येभिः ६. ६८. ३
ता घा ता भद्रा उषसः ४. ५१. ७
ता जिह्वया सदमेदं ६. ६७. ८
ता तू त इन्द्र महतो ४. २२. ५
ता तू ते सत्या तुविनृम्ण ४. २२. ६
ता ते गृणन्ति वेधसो ४. ३२. ११
ता नः शक्तं पार्थिवस्य ५. ६८. ३
ता नः स्तिपा तनूपा ७. ६६. ३
ता न आ वोळ्हमश्विना २. ४१. ९
ता नव्यसो जरमाणस्य ६. ६२. ४
तानीदहानि बहुलान्यासन् ७. ७६. ३
ता नृभ्य आ सौश्रवसा ६. १३. ५
ता नो अद्य वनस्पती १. २८. ८
ता नो रासन्रातिषाचो ७. ३४. २२
ता नो वाजवतीरिष ६. ६०. १२
तान्पूर्वया निविदा १. ८९. ३
तान्यजत्राँ ऋतावृधो १. १४. ७
तान्वन्दस्व मरुतस्ताँ ८. २०. १४
तान्वो महो मरुत २. ३४. ११
ता बाहवा सुचेतुना ५. ६४. २
ताभिरा गच्छतं नरोपेदं ६. ६०. ९
ताभिरा यातं वृषणोप ८. २२. १२
ताभिरा यातमूतिभि ८. ५. २४
ता भुज्युं विभिरद्भ्यः ६. ६२. ६
ता भूरिपाशावनृतस्य ७. ६५. ३
ताभ्यां विश्वस्य राजसि ९. ६६. २
तामग्ने अस्मे इषमेरयस्व ७. ५. ८
ता मन्दसाना मनुषो १०. ४०. १३
तामस्य रीतिं परशोरिव ५. ४८. ४
ता महान्ता सदस्पती १. २१. ५
ता माता विश्ववेदसा ८. २५. ३
ता मित्रस्य प्रशस्तय १. २१. ३
ता मे अश्विना सनीनां ८. ५. ३७
ता मे अश्व्यानां हरीणां ८. २५. २३
ता यज्ञमा शुचिभिश्चक्रमाणा ६. ६२. २
ता यज्ञेषु प्र शंसतेन्द्राग्नी १. २१. २
ता योधिष्टमभि गा ६. ६०. २
ता राजाना शुचिव्रता ६. १६. २४
ता वज्रिणं मन्दिनं १०. ९६. ६
तावदुषो राधो अस्मभ्यं ७. ७९. ४
ता वर्तिर्यातं जयुषा १०. ३९. १३
ता वल्गू दस्रा पुरु ६. ६२. ५
ता वां गीर्भिर्विपन्यवः ७. ९४. ६
ता वां धियोऽवसे ४. ४१. ८
ता वां नरा स्ववसे १. ११८. १०
ता वां मित्रावरुणा १०. १३२. २
ता वां वास्तून्युश्मसि १. १५४. ६
ता वां विश्वस्य गोपा ८. २५. १
ता वां सम्यगद्रुह्वाणेव ५. ७०. २
ता वामद्य तावपरं १. १८४. १
ता वामद्य हवामहे ८. २६. ३
ता वामियानोऽवसे ५. ६५. ३
ता वामेषे रथानामिन्द्राग्नी ५. ८६. ४
ता वामेषे रथानामुर्वी ५. ६६. ३

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ता विग्रं धैये जठरं	६. ६७. ७
ताविदा चिदहानां	८. २२. १३
ताविद्दुःशंसं मर्त्यं	७. ९४. १२
ताविद्दोषा ता उषसि	८. २२. १४
ता विद्वांसा हवामहे	१. १२०. ३
ता वृधन्तावनु द्यून्	५. ८६. ५
ता सम्राजा घृतासुती	२. ४१. ६
ता सानसी शवसाना	७. ९३. २
ता सुजिह्वा उप ह्वये	१. १३. ८
ता सुदेवाय दाशुषे	८. ५. ६
ता ह त्यद्वर्तिर्यदरध्र	६. ६२. ३
ता हि क्षत्रं धारयेथे	६. ६७. ६
ता हि क्षत्रमविह्रुतं	५. ६६. २
ता हि देवानामसुरा	७. ६५. २
ता हि मध्यं भराणामिन्द्रा	८. ४०. ३
ता हि शश्वन्त ईळत	७. ९४. ५
ता हि श्रेष्ठवर्चसा	५. ६५. २
ता हि श्रेष्ठा देवताता	६. ६८. २
ता हुवे ययोरिदं पप्ने	६. ६०. ४
तिग्मं चिदेम महि वर्पो	६. ३. ४
तिग्मजम्भाय तरुणाय	८. १९. २२
तिग्ममायुधं मरुतामनीकं	८. ९६. ९
तिग्ममेको बिभर्ति	८. २९. ३
तिग्मा यदन्तरशनिः	४. १६. १७
तिग्मायुधौ तिग्महेती	६. ७४. ४
तिरः पुरू चिदश्विना	३. ५८. ५
तिरश्चीनो विततो	१०. १२९. ५
तिष्ठा सु कं मघवन्	३. ५३. २
तिष्ठा हरी रथ आ	३. ३५. १
तिस्रः क्षपस्त्रिरहाति	१. ११६. ४
तिस्रो देवीर्बर्हिरिदं	१०. ७०. ८
तिस्रो देष्ट्राय निर्ऋती	१०. ११४. २
तिस्रो द्यावः सवितुर्द्वा	१. ३५. ६
तिस्रो द्यावो निहिता	७. ८७. ५
तिस्रो भूमीर्धारयन्	२. २७. ८
तिस्रो मातॄस्त्रीन्पितॄन्	१. १६४. १०
तिस्रो यदग्ने शरद	१. ७२. ३
तिस्रो यह्वस्य समिधः	३. २. ९
तिस्रो वाचः प्र वद	७. १०१. १
तिस्रो वाच ईरयति	९. ९७. ३४
तिस्रो वाच उदीरते	९. ३३. ४
तीक्ष्णेनाग्ने चक्षुषा रक्ष	१०. ८७. ९
तीव्रस्याभिवयसो अस्य	१०. १६०. १
तीव्राः० गहि सुतासो	८. ८२. २
तीव्राः० गह्याशीर्वन्तः	१. २३. १
तीव्रान्घोषान्कृण्वते	६. ७५. ७
तीव्रो वो मधुमाँ अयं	२. ४१. १४
तुग्रो ह भुज्युमश्विनोदमेघे	१. ११६. ३
तुचे तनाय तत्सु नो	८. १८. १८
तुजे नस्तने पर्वताः	५. ४१. ९
तुजेतुजे य उत्तरे	१. ७. ७
तुभ्यं गावो घृतं पयो	९. ३१. ५
तुभ्यं घेत्ते जना इमे	८. ४३. २९
तुभ्यं ता अङ्गिरस्तम	८. ४३. १८
तुभ्यं दक्ष कविक्रतो	३. १४. ७
तुभ्यं पयो यत्पितरा	१. १२१. ५
तुभ्यं ब्रह्माणि गिर	३. ५१. ६
तुभ्यं भरन्ति क्षितयो	५. १. १०
तुभ्यं वाता अभिप्रिय	९. ३१. ३
तुभ्यं शुक्रासः शुचय	१. १३४. ५
तुभ्यं श्चोतन्त्यध्रिगो	३. २१. ४
तुभ्यं सुतास्तुभ्यमु	१०. १६०. २
तुभ्यं सोमाः सुता इमे	८. ९३. २५
तुभ्यं स्तोका घृतश्चुतो	३. २१. ३
तुभ्यं हिन्वानो वसिष्ठ	२. ३६. १
तुभ्यमग्ने पर्यवहन्	१०. ८५. ३८
तुभ्यमुषासः शुचयः	१. १३४. ४
तुभ्यायं सोमः परिपूतो	१. १३५. २
तुभ्यायमद्रिभिः सुतो	८. ८२. ५
तुभ्येदमग्ने मधुमत्तमं	५. ११. ५
तुभ्येदमिन्द्र परि षिच्यते	१०. १६७. १
तुभ्येदिन्द्र मरुत्वते	८. ७६. ८
तुभ्येदिन्द्र स्व ओक्ये	३. ४२. ८
तुभ्येदिमा सवना शूर	७. २२. ७
तुभ्येदेते बहुला अद्रिदुग्धा	१. ५४. ९
तुभ्येदेते मरुतः सुशेवा	५. ३०. ६
तुभ्येमा भुवना कवे	९. ६२. २७
तुरण्यवोऽङ्गिरसो	७. ५२. ३
तुरण्यवो मधुमन्तं	८. ५१. १०
तुरीयं नाम यज्ञियं	८. ८०. ९
तुविक्षं ते सुकृतं सूमयं	८. ७७. ११
तुविग्रीवो वपोदरः	८. १७. ८
तुविग्रीवो वृषभो	५. २. १२
तुविशुष्म तुविक्रतो	८. ६८. २
तूतुजानो महेमते	८. १३. ११
तूर्वन्नोजीयान्तवसस्तवीयान्	६. २०. ३
तृणस्कन्दस्य नु विशः	१. १७२. ३
तृतीये धानाः सवने	३. ५२. ६
तृदिला अतृदिलासो	१०. ९४. ११
तृषु यदन्ना तृषुणा	४. ७. ११
तृष्टमेतत्कटुकमेत	१०. ८५. ३४
तृष्टामया प्रथमं यातवे	१०. ७५. ६
ते अज्येष्ठा अकनिष्ठास	५. ५९. ६
ते अद्रयो दशयन्त्रास	१०. ९४. ८
ते अस्मभ्यं शर्म	१. ९०. ३
ते अस्य सन्तु केतवो	९. ७०. ३
ते आचरन्ती समनेव	६. ७५. ४
ते क्षोणीभिररुणेभि	२. ३४. १३
ते गव्यता मनसा	४. १. १५
ते घा राजानो अमृतस्य	१०. ९३. ४
ते घेदग्ने स्वाध्यो ये	८. १९. १७
ते घेदग्ने स्वाध्योऽहा	८. ४३. ३०
ते चिद्धि पूर्वीरभि	७. ४८. ३
ते जज्ञिरे दिव ऋष्वास	१. ६४. २
ते जानत स्वमोक्यं	८. ७२. १४
तेजिष्ठया तपनी रक्षसस्तप	२. २३. १४
तेजिष्ठा यस्यारतिर्वनेराट्	६. १२. ३
ते ते अग्ने त्वोता इषयन्तो	६. १६. २७
ते ते देव नेतर्ये चेमाँ	५. ५०. २
ते ते देवाय दाशतः	७. १७. ४
ते त्वा मदा अमदन्	१. ५३. ६
ते त्वा मदा इन्द्र मादयन्तु	७. २३. ५
ते त्वा मदा बृहदिन्द्र	६. १७. ४
ते दशग्वाः प्रथमा	२. ३४. १२
ते नः पूर्वास उपरास	९. ७७. ३
ते नः सन्तु युजः सदा	८. ८३. २
ते नः सहस्रिणं रयिं	९. १३. ५
ते न आस्नो वृकाणा	८. ६७. १४
ते न इन्द्रः पृथिवी	६. ५१. ११
तेन नासत्या गतं	१. ४७. ९
तेन नो० परावतश्चिदा	८. ५. ३०
तेन नो० पश्वे तोकाय	८. ५. २०
तेन सत्येन जागृतमधि	१. २१. ६
तेन स्तोतृभ्य आ भर	८. ७७. ८
ते नस्राध्वं तेऽवत	८. ३०. ३
ते नूनं नोऽयमूतये	१०. १२६. ३
ते नो अर्वन्तो हवनश्रुतो	१०. ६४. ६
ते नो गृणाने महिनी	१. १६०. ५
ते नो गोपा अपाच्यास्त	८. २८. ३
ते नो नावमुरुष्यत	८. २५. ११
ते नो भद्रेण शर्मणा	८. १८. १७
ते नो मित्रो वरुणो	५. ४१. २
ते नो रत्नानि धत्तन	१. २०. ७
ते नो रायो द्युमतो	६. ५०. ११
ते नो रुद्रः सरस्वती	६. ५०. १२
ते नो वसूनि काम्या	५. ६१. १६
ते नो वृष्टिं दिवस्परि	९. ६५. २४
ते प्रत्नासो व्युष्टिषु	९. ९८. ११
तेभ्यो गोधा अयथं	१०. २८. ११
तेभ्यो द्युम्नं बृहद्यश	५. ७९. ७
ते म आहुर्य आययुरुप	५. ५३. ३
ते मन्वत प्रथमं नाम	४. १. १६
ते मर्मृजत ददृवांसो	४. १. १४
ते मायिनो ममिरे	१. १५९. ४
ते राया ते सुवीर्यैः	४. ८. ६
तेऽरुणेभिर्वरमा पिशङ्गैः	१. ८८. २
ते रुद्रासः सुमखा अग्नयो	५. ८७. ७
तेऽवदन्प्रथमा ब्रह्म	१०. १०९. १
तेऽवर्धन्त स्वतवसो	१. ८५. ७
तेऽविन्दन्मनसा दीध्याना	१०. १८१. ३
ते विश्वा दाशुषे वसु	९. ६४. ६
ते वो हृदे मनसे सन्तु	४. ३७. २
तेषां हि चित्रमुक्थ्यं	८. ६७. ३
तेषां हि मह्ना महता	१०. ६५. ३
ते सत्येन मनसा गोपतिं	१०. ६७. ८
ते सत्येन मनसा दीध्यानाः	७. ९०. ५
ते सीषपन्त जोषमा	७. ४३. ४
ते सुतासो मदिन्तमाः	९. ६७. १८
ते सूनवः स्वपसः सुदंससो	१. १५९. ३
ते सोमादो हरी इन्द्रस्य	१०. ९४. ९

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ते स्पन्द्रासो नोक्षणो ५. ५२. ३
ते स्याम देव वरुण ७. ६६. ९
ते स्याम ये अग्नये ४. ८. ५
ते हि द्यावापृथिवी भूरि १०. ९२. ११
ते हि द्यावापृथिवी मातरा १०. ६४. १४
ते हि द्यावापृथिवी विश्व १. १६०. १
ते हिन्विरे अरुणं जेन्यं ८. १०१. ६
ते हि पुत्रासो अदिते ८. १८. ५
ते हि प्रजाया अभरन्त १०. ९२. १०
ते हि यज्ञेषु यज्ञियास ऊमाः ७. ३९. ४
ते हि यज्ञेषु यज्ञियास ऊमा १०. ७७. ८
ते हि वस्वो वसवानास्ते १. ९०. २
ते हि श्रेष्ठवर्चसस्त ६. ५१. १०
ते हि ष्मा वनुषो नरो ८. २५. १५
ते हि सत्या ऋतस्पृश ५. ६७. ४
ते हि स्थिरस्य शवसः ५. ५२. २
तोके हिते तनय उर्वरासु ४. ४१. ६
तोशा वृत्रहणा हुवे ३. १२. ४
तोशासा रथयावाना ८. ३८. २
त्यं चित्पर्वतं गिरिं ८. ६४. ५
त्यं चिदत्रिमृतजुर १०. १४३. १
त्यं चिदर्णं मधुपं ५. ३२. ८
त्यं चिदश्वं न वाजिन १०. १४३. २
त्यं चिदस्य क्रतुभि ५. ३२. ५
त्यं चिदित्था कत्पयं ५. ३२. ६
त्यं चिदेषां स्वधया ५. ३२. ४
त्यं चिद्धा दीर्घं पृथुं १. ३७. ११
त्यं नु मारुतं गणं ८. ९४. १२
त्यं सु मेषं महया १. ५२. १
त्यमु वः सत्रासाहं ८. ९२. ७
त्यमु वो अप्रहणं ६. ४४. ४
त्यमू षु वाजिनं १०. १७८. १
त्यस्य चिन्महतो ५. ३२. ३
त्यान्नु क्षत्रियाँ अव ८. ६७. १
त्यान्नु पूतदक्षसो ८. ९४. १०
त्यान्नु ये वि रोदसी ८. ९४. ११
त्या न्वश्विना हुवे ८. १०. ३
त्रयः कृण्वन्ति भुवनेषु ७. ३३. ७
त्रयः केशिन ऋतुथा १. १६४. ४४
त्रयः कोशासः श्चोतन्ति ८. २. ८
त्रयः पवयो मधुवाहने १. ३४. २
त्रय इन्द्रस्य सोमाः ८. २. ७
त्राता नो वोधि ददृशान ४. १७. १७
त्रातारं त्वा तनूनां २. २३. ८
त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रं ६. ४७. ११
त्रातारो देवा अधि ८. ४८. १४
त्रायन्तामिह देवास्त्रायतां १०. १३७. ५
त्रिंशच्छतं वर्मिण ६. २७. ६
त्रिंशद्धाम वि राजति १०. १८९. ३
त्रिः षष्टिस्त्वा मरुतो ८. ९६. ८
त्रिः सप्त मयूर्यः सप्त १. १९१. १४
त्रिः सप्त यद्गुह्यानि १. ७२. ६
त्रिः सप्त विष्पुलिङ्गका १. १९१. १२
त्रिः सप्त सस्रा नद्यो १०. ६४. ८
त्रिः स्म माह्नः श्नथयो १०. ९५. ५
त्रिकद्रुकेभिः पतति १०. १४. १६
त्रिकद्रुकेषु० गिरः ८. ९२. २१
त्रिकद्रुकेषु० गिरः सदावृधम् ८. १३. १८
त्रिकद्रुकेषु महिषो २. २२. १
त्रितः कूपेऽवहितो १. १०५. १७
त्रिधा हितं पणिभि ४. ५८. ४
त्रिपञ्चाशः क्रीळति १०. ३४. ८
त्रिपाजस्यो वृषभो ३. ५६. ३
त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुषः १०. ९०. ४
त्रिभिः पवित्रैरपुपोद्ध्यर्कं ३. २६. ८
त्रिभिष्ट्वं देव सवित ९. ६७. २६
त्रिमूर्धानं सप्तरश्मिं १. १४६. १
त्रिरन्तरिक्षं सविता ४. ५३. ५
त्रिरश्विना सिन्धुभिः १. ३४. ८
त्रिरस्मै सप्त धेनवो ९. ७०. १
त्रिरस्य ता परमा ४. १. ७
त्रिरा दिवः सवितर्वार्याणि ३. ५६. ६
त्रिरा दिवः सविता ३. ५६. ७
त्रिरुत्तमा दूणशा रोचनानि ३. ५६. ८
त्रिर्देवः पृथिवीमेष ७. १००. ३
त्रिर्नो अश्विना दिव्यानि १. ३४. ६
त्रिर्नो अश्विना यजता १. ३४. ७
त्रिर्नो रयिं वहतमश्विना १. ३४. ५
त्रिर्यातुधानः प्रसितिं १०. ८७. ११
त्रिर्वर्तिर्यातं त्रिरनुव्रते १. [illegible]
त्रिवन्धुरेण त्रिवृता रथेन १. ११८. २
त्रिवन्धुरेण त्रिवृता रथेना ८. ८५. ८
त्रिवन्धुरेण त्रिवृता सुपेशसा १. ४७. २
त्रिविष्टिधातु प्रतिमान १. १०२. ८
त्रिश्चिदक्तोः प्र चिकितु ७. ११. ३
त्रिश्चिन्नो अद्या भवतं १. ३४. १
त्रिषधस्था सप्तधातुः ६. ६१. १२
त्रिषधस्थे बर्हिषि १. ४७. ४
त्रीणि जाना परि १. ९५. ३
त्रीणि त आहुर्दिवि १. १६३. ४
त्रीणि त्रितस्य धारया ९. १०२. ३
त्रीणि पदान्यश्विनोराविः ८. ८. २३
त्रीणि पदा वि चक्रमे १. २२. १८
त्रीणि राजाना विदथे ३. ३८. ६
त्रीणि शता त्री सहस्राण्यग्नि ३. ९. ९
१०. ५२. ६
त्रीणि शतान्यर्वतां सहस्रा ८. ६. ४७
त्रीणि सरांसि पृश्नयो ८. ७. १०
त्रीण्यायूंषि तव जातवेद ३. १७. ३
त्रीण्येक उरुगायो वि ८. २९. ४
त्री यच्छता महिषाणा ५. २९. ८
त्री रोचना दिव्या धारयन्त २. २७. ९
त्री रोचना वरुण त्रीँरुत ५. ६९. १
त्री षधस्था सिन्धवस्त्रिः ३. ५६. ५
त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं ७. ५९. १२
त्र्यर्यमा मनुषो देवताता ५. २९. १
त्र्युदायं देवहितं यथा ४. ३७. ३
त्वं करञ्जमुत पर्णयं १. ५३. ८
त्वं कविं चोदयोऽर्कसातौ ६. २६. ३
त्वं कुत्सं शुष्णहत्ये १. ५१. ६
त्वं कुत्सेनाभि शुष्णमिन्द्रा ६. ३१. ३
त्वं गोत्रमङ्गिरोभ्यो १. ५१. ३
त्वं च सोम नो वशो १. ९१. ६
त्वं चित्ती तव दक्षैर्दिव ८. ७९. ४
त्वं चिन्नः शम्या अग्ने ४. ३. ४
त्वं जघन्थ नमुचिं १०. ७३. ७
त्वं जामिर्जनानामग्ने १. ७५. ४
त्वं जिगेथ न धना १. १०२. १०
त्वं तं देव जिह्वया ६. १६. ३२
त्वं तं [illegible] १. १८. ५
त्वं तदुक्थमिन्द्र बर्हणा ६. २६. ५
त्वं तमग्ने अमृतत्व १. ३१. ७
त्वं तमिन्द्र पर्वतं न १. ५५. ३
त्वं तमिन्द्र पर्वतं महामुरुं १. ५७. ६
त्वं तमिन्द्र मर्त्य ५. ३५. ५
त्वं तमिन्द्र वावृधानो १. १३१. ७
त्वं तस्य द्वयाविनो १. ४२. ४
त्वं ताँ अग्न उभयान्वि १. १८९. ७
त्वं ताँ इन्द्रोभयाँ ६. ३३. ३
त्वं तान्त्सं च प्रति २. १. १५
त्वं तान्वृत्रहत्ये चोदयो १०. २२. १०
त्वं तू न इन्द्र तं रयिं १. १६९. ४
त्वं त्यत्पणीनां विदो ९. १११. २
त्वं त्यमिटतो रथमिन्द्र १०. १७१. १
त्वं त्यमिन्द्र मर्त्य १०. १७१. ३
त्वं त्यमिन्द्र सूर्य पश्चा १०. १७१. ४
त्वं त्यां न इन्द्र देव १. ६३. ८
त्वं त्या चिदच्युताग्ने ६. २. ९
त्वं त्या चिद्वातस्याश्वागा १०. २२. ५
त्वं त्येभिरा गहि १. ३०. २२
त्वंत्वमहर्यथा उपस्तुतः १०. ९६. ५
त्वं दाता प्रथमो राधसा ८. ९०. २
त्वं दिवो धरुणं धिष १. ५६. ६
त्वं दिवो बृहतः सानु १. ५४. ४
त्वं दूतः प्रथमो वरेण्यः १०. १२२. ५
त्वं दूतस्त्वमु नः परस्पा २. ९. २
त्वं दूतो अमर्त्य आ ६. १६. ६
त्वं देवि सरस्वत्यवा ६. ६१. ६
त्वं द्यां च महिव्रत ९. १००. ९
त्वं धियं मनोयुजं ९. १००. ३
त्वं धुनिरिन्द्र धुनिमती १. १७४. ९
६. २०. १२
त्वं धृष्णो धृषता वीतहव्यं ७. १९. ३
त्वं नः पश्चादधरादुत्तरान् ८. ६१. १६
त्वं नः पाह्यंहसो जातवेदो ६. १६. ३०
त्वं नः पाह्यंहसो दोषा ७. १५. १५
त्वं नः सोम विश्वतो गोपा १०. २५. ७
त्वं नः सोम विश्वतो रक्षा १. ९१. ८
त्वं नः सोम विश्वतो वयोधा ८. ४८. १५
त्वं नः सोम सुक्रतु १०. २५. ८

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

त्वं न इन्द्र क्रतुस्त्वा ८. ७०. १०
त्वं न इन्द्र त्वाभिरूती २. २०. २
त्वं न इन्द्र राया तरूषसोग्रं १. १२९. १०
त्वं न इन्द्र राया परीणसा १. १२९. ९
त्वं न इन्द्र वाजयुस्त्वं ७. ३१. ३
त्वं न इन्द्र शूर चूर्दन १०. २२. ९
त्वं न इन्द्रा भरँ ओजो ८. ९८. १०
त्वं न इन्द्रासां हस्ते ८. ७०. १२
त्वं नश्चित्र ऊत्या वसो ६. ४८. ९
त्वं नृचक्षा असि सोम ९. ८६. ३८
त्वं नृचक्षा वृषभानु ३. १५. ३
त्वं नृभिर्हूमनो देववीतौ ७. १९. ४
त्वं नो अग्न आयुषु ८. ३९. १०
त्वं नो अग्न एषां गयं ५. १०. ३
त्वं नो अग्ने अग्निभिर्ब्रह्म १०. १४१. ६
त्वं नो अग्ने अङ्गिरः ५. १०. ७
त्वं नो अग्ने अद्भुत ५. १०. २
त्वं नो अग्ने मघरा १०. ८७. २०
त्वं नो अग्ने तव देव १. ३१. १२
त्वं नो अग्ने पित्रोरुपस्थ १. ३१. ९
त्वं नो अग्ने महोभिः ८. ७१. १
त्वं नो अग्ने वरुणस्य ४. १. ४
त्वं नो अग्ने सनये १. ३१. ८
त्वं नो असि भारताग्ने २. ७. ५
त्वं नो अस्या अनयेऽहन ८. ६६. १४
त्वं नो अस्या इन्द्र १. १२१. १४
त्वं नो अस्या उषसो ३. १५. २
त्वं नो गोषाः पथिकृद् २. २३. ६
त्वं नो वायवेषामपूर्व्यः १. १३४. ६
त्वं नो बृहन्नन्तमेन्द्र १०. २५. ९
त्वं पवित्रे रजसो ९. ८६. ३०
त्वं पाहीन्द्र सहीयसो १. १७१. ६
त्वं पिप्रुं कुत्सं शुशुवांसं ४. १६. १३
त्वं पुरं चरिष्ण्वं वधैः ८. १. २८
त्वं पुर इन्द्र चिकिदेना ८. ९७. १४
त्वं पुरुण्या भरा स्वश्वदा १०. ११३. १०
त्वं पुरू सहस्राणि ८. ६१. ८
त्वं भगो न आ हि ६. १३. २
त्वं भुवः प्रतिमानं १. ५२. १३
त्वं मघस्य दोधतः १०. १७१. २
त्वं महाँ इन्द्र तुभ्यं ४. १७. १
त्वं महाँ इन्द्र यो ह १. ६३. १
त्वं महीमवर्नि विश्वधेनां ४. १९. ६
त्वं मानेभ्य इन्द्र विश्वजन्या १. १६९. ८
त्वं मायाभिरनवद्य १०. १४७. २
त्वं मायाभिरप मायिनो १. ५१. ५
त्वं यविष्ठ दाशुषो ८. ८४. ३
त्वं रथं प्र भरो योध ६. २१. ४
त्वं रयिं पुरुवीरमग्ने ८. ७१. ६
त्वं राजेन्द्र ये च देवा १. १७४. १
त्वं राजेव सुव्रतो गिरः ९. २०. ५
त्वं वरुण उत मित्रो ७. १२. ३
त्वं वरो सुपाम्येऽग्ने ८. २३. २८
त्वं वर्मासि सप्रथः ७. ३१. ६
त्वं वलस्य गोमतो १. ११. ५
त्वं विश्नु प्रदिवः सीद ६. ५. ३
त्वं विप्रस्त्वं कविर्मधु ९. १८. २
त्वं विश्वस्य जगतश्चक्षु १०. १०२. १२
त्वं विश्वस्य धनदा ७. ३२. १७
त्वं विश्वस्य मेधिर १. २५. २०
त्वं विश्वा दधिषे १०. ५४. ५
त्वं विश्वेषां वरुणासि २. २७. १०
त्वं विष्णो सुमतिं विश्व ७. १००. २
त्वं वृषा नद्य इन्द्र १. १३०. ५
त्वं वृष इन्द्र पूर्व्यो ६. २०. ११
त्वं वृषा जनानां मंहिष्ठ ८. १५. १०
त्वं शतान्यव शम्बरस्य ६. ३१. ४
त्वं शर्धाय महिना १०. १४७. ५
त्वं श्रद्धाभिर्मन्दसानः ६. २६. ६
त्वं सत्य इन्द्र धृष्णुरेतान् १. ६३. ३
त्वं सद्यो अपिबो जात ३. ३२. १०
त्वं समुद्रिया अपोऽप्रियो ९. ६२. २६
त्वं समुद्रो असि विश्ववित् ९. ८६. २९
त्वं सिन्धूरवासृजो १०. १३३. २
त्वं सुतस्य पीतये १. ५. ६
त्वं सुतो वृषाह्नो ९. ६७. २
त्वं सुन्वाणो अद्रिभि ९. ६७. ३
त्वं सूकरस्य दर्दृहि ७. ९५. ४
त्वं सूरो हरितो रामयो १. १२१. १३
त्वं सूर्ये न आ भज ९. ४. ५
त्वं सोम क्रतुभिः १. ९१. २
त्वं सोम तनूकृद्भ्यो ८. ७९. ३
त्वं सोम तृषादनः ९. २४. ४
त्वं सोम पणिभ्य आ ९. २२. ७
त्वं सोम पवमानो ९. ५९. ३
त्वं सोम पितृभिः ८. ४८. १३
त्वं सोम प्र चिकितो १. ९१. १
त्वं सोम महे भगे १. ९१. ७
त्वं सोम विपश्चितं तना ९. १६. ८
त्वं सोम विपश्चितं पुनानो ९. ६४. २५
त्वं सोम सूर एषस्तोकस्य ९. ६६. १८
त्वं सोमासि धारयुर्मन्द्र ९. ६७. १
त्वं सोमासि सत्पतिस्त्वं १. ९१. ५
त्वं ह त्यत्सप्तभ्यो ८. ९६. १६
त्वं ह त्यदप्रतिमानमोजो ८. ९६. १७
त्वं ह त्यदिन्द्र कुत्समावः ७. १९. २
त्वं ह त्यदिन्द्र चोदीः १. ६३. ४
त्वं ह त्यदिन्द्र सप्त १. ६३. ७
त्वं ह त्यदिन्द्रारिपिण्यन् १. ६३. ५
त्वं ह त्यहणया इन्द्र १०. ८९. ८
त्वं ह त्यद्वृषभ चर्षणीनां ८. ९६. १८
त्वं ह नु त्यद्दमायो ६. १८. ३
त्वं ह यद्यविष्य ८. ७५. ३
त्वं हि क्षैतवद्यशोऽग्ने ६. २. १
त्वं हि नः पिता वसो ८. ९८. ११
त्वं हि नस्तन्वः सोम ८. ४८. ९
त्वं हि मन्यो अभिभूत् १०. ८३. ४
त्वं हि मानुषे जनेऽग्ने ५. २१. २
त्वं हि राधस्पते राधसो ८. ६१. १४
त्वं हि विश्वतोमुख १. ९७. ६
त्वं हि बृहन्नेषां ८. ९३. ३३
त्वं हि शश्वतीनामिन्द्र ८. ९८. ६
त्वं हि शूर सनिता १. १७५. ३
त्वं हि ष्मा च्यावयन् ३. ३०. ४
त्वं हि सत्यो मघवन् ८. ९०. ४
त्वं हि सुम्नयुरसि ८. २३. २९
त्वं हि सोम वर्धयन् ९. ५१. ४
त्वं हि स्तोमवर्धन ८. १४. ११
त्वं होता मनुर्हितोऽग्ने १. १४. ११
त्वं होता मन्द्रतमो ६. १६. ९
त्वं होता मन्द्रतमो ६. ११. २
त्वं ह्यग्ने अग्निना विभो ८. ४३. १४
त्वं ह्यग्ने दिव्यस्य राजसि १. १४४. ६
त्वं ह्यग्ने प्रथमो मनो ६. १. १
त्वं ह्यङ्ग दैव्या पवमान ९. १०८. ३
त्वं ह्येक ईशिष इन्द्र ४. ३२. ७
त्वं ह्येहि चेरवे विदा ८. ६१. ७
त्वदग्ने काव्या त्वन्मनीषा ४. ११. ३
त्वद्धि पुत्र सहसो वि ३. १४. ६
त्वद्भिया विश आयन् ७. ५. ३
त्वद्भियेन्द्र पार्थिवानि ६. ३१. २
त्वद्वाजी वाजंभरो ४. ११. ४
त्वद्विप्रो जायते वाज्यग्ने ६. ७. ३
त्वद्विश्वा सुभग सौभगान्यग्ने ६. १३. १
त्वमग्न इन्द्रो वृषभः २. १. ३
त्वमग्न ईळितो जातवेदो १०. १५. १२
त्वमग्न उरुशंसाय १. ३१. १४
त्वमग्न ऋभुरक्षे २. १. १०
त्वमग्ने अदितिर्देव २. १. ११
त्वमग्ने गृहपतिस्त्वं ७. १६. ५
त्वमग्ने त्वष्टा विधते २. १. ५
त्वमग्ने द्युभिस्त्वमाशु २. १. १
त्वमग्ने द्रविणोदा २. १. ७
त्वमग्ने पुरूरुपो विशेविशे ५. ८. ५
त्वमग्ने प्रथमो अङ्गिरस्तमः १. ३१. २
त्वमग्ने प्रथमो अङ्गिरा १. ३१. १
त्वमग्ने प्रथमो मातरिश्वन १. ३१. ३
त्वमग्ने प्रमतिस्त्वं पितासि १. ३१. १०
त्वमग्ने प्रयतदक्षिणं १. ३१. १५
त्वमग्ने बृहद्वयो दधासि ८. १०२. १
त्वमग्ने मनवे द्यामवाशयः १. ३१. ४
त्वमग्ने यह्वानां होता ६. १६. १
त्वमग्ने यज्ञेषे पायुरन्तरो १. ३१. १३
त्वमग्ने राजा वरुणो २. १. ४
त्वमग्ने रुद्रो असुरो २. १. ६
त्वमग्ने वनुष्यतो नि ६. १५. १२
त्वमग्ने वनुष्यतो नि ७. ४. ९
त्वमग्ने वरुणो जायसे ५. ३. १
त्वमग्ने वर्धूरिह रुद्रा १. ४५. १
त्वमग्ने वाघते सुप्रणीतिः ४. २. १३

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

त्वमग्ने वीरवद्यशो	७. १५. १२
त्वमग्ने वृजिनवर्तनिं	१. ३१. ६
त्वमग्ने वृषभः पुष्टिवर्धन	१. ३१. ५
त्वमग्ने व्रतपा असि	८. ११. १
त्वमग्ने शशमानाय	१. १४१. १०
त्वमग्ने शोचिषा शोशुचान	७. १३. २
त्वमग्ने सप्रथा असि	५. १३. ४
त्वमग्ने सहसा सहन्तमः	१. १२७. ९
त्वमग्ने सुभृत उत्तमं	२. १. १२
त्वमग्ने सुहवो रण्व	७. १. २१
त्वमङ्ग जरितारं यविष्ठ	५. ३. ११
त्वमङ्ग प्र शंसिषो	१. ८४. १९
त्वमध प्रथमं जायमानो	४. १७. ७
त्वमध्वर्युरुत होतासि	१. ९४. ६
त्वमपामपिधानावृणोरपा	१. ५१. ४
त्वमपो यद्वे तुर्वशाया	५. ३१. ८
त्वमपो यद्ध वृत्रं	३. ३२. ६
त्वमपो वि दुरो विषूची	६. ३०. ५
त्वमर्यमा भवसि यत्कनीनां	५. ३. २
त्वमसि प्रशस्यो विदथेषु	८. ११. २
त्वमस्माकमिन्द्र विश्वध	१. १७४. १०
त्वमस्य पारे रजसो	१. ५२. १२
त्वमायसं प्रति वर्तयो	१. १२१. ९
त्वमाविथ नर्यं तुर्वशं	१. ५४. ६
त्वमाविथ सुश्रवसं	१. ५३. १०
त्वमित्सप्रथा अस्यग्ने	८. ६०. ५
त्वमिन्दो परि स्रव	९. ६२. ९
त्वमिन्द्र नर्यो याँ अवो	१. १२१. १२
त्वमिन्द्र प्रतूर्तिष्वभि	८. ९९. ५
त्वमिन्द्र बलादधि	१०. १५३. २
त्वमिन्द्र यशा अस्यृजीषी	८. ९०. ५
त्वमिन्द्र सजोषसमर्कं	१०. १५३. ४
त्वमिन्द्र स्रवितवा अपस्कः	७. २१. ३
त्वमिन्द्र स्वयशा ऋभुक्षा	७. ३७. ४
त्वमिन्द्राभिभूरसि त्वं	८. ९८. २
त्वमिन्द्राभिभूरसि विश्वा	१०. १५३. ५
त्वमिन्द्राय विष्णवे	९. ५६. ४
त्वमिन्द्रासि वृत्रहा	१०. १५३. ३
त्वमिमा ओषधीः सोम	१. ९१. २२
त्वमिमा वार्या पुरु	६. १६. ५
त्वमीशिषे वसुपते	१. १७०. ५
त्वमीशिषे सुतानामिन्द्र	८. ६४. ३
त्वमुत्तमास्योषधे तव	१०. ९७. २३
त्वमुत्साँ ऋतुभिर्बद्बधानाँ	५. ३२. २
त्वमेकस्य वृत्रहन्नविता	६. ४५. ५
त्वमेतदधारयः कृष्णासु	८. ९३. १३
त्वमेताञ्जनराज्ञो द्विर्दशा	१. ५३. ९
त्वमेतानि पप्रिषे वि	१०. ७३. ८
त्वमेतान्रुदतो जक्षत	१. ३३. ७
त्वया मन्यो सरथ	१०. ८४. १
त्वया यथा गृत्समदासो	२. ४. ९
त्वया वयं पवमानेन	९. ९७. ५८
त्वया वयं मघवन्निन्द्र	१. १७८. ५
त्वया वयं मघवन्पूर्व्ये	१. १३२. १
त्वया वयं शाशद्महे	१०. १२०. ५
त्वया वयं सधन्यस्त्वोता	४. ४. १४.
त्वया वयं सुवृधा	२. २३. ९
त्वया वयमुत्तमं धीमहे	२. २३. १०
त्वया वीरेण वीरवो	९. ३५. ३
त्वया ह० चोदिष्ठेन	८. १०२. ३
त्वया ह० प्रति	८. २१. ११
त्वया हितमप्यमप्सु	२. ३८. ७
त्वया हि नः पितरः	९. ९६. ११
त्वया ह्यग्ने वरुणो	१. १४१. ९
त्वयेदिन्द्र युजा वयं	८. ९२. ३२
त्वष्टा दुहित्रे वहतुं	१०. १७. १
त्वष्टा माया वेदपसा	१०. ५३. ९
त्वष्टा यद्वज्रं सुकृतं	१. ८५. ९
त्वष्टारं वायुमृभवो	१०. ६५. १०
त्वष्टारमग्रजां गोपां	९. ५. ९
त्वष्टा रूपाणि हि प्रभुः	१. १८८. ९
त्वष्टुर्जामातरं वयमीशानं	८. २६. २२
त्वां चित्रश्रवस्तम	१. ४५. ६
त्वां जना ममसत्येष्विन्द्र	१०. ४२. ४
त्वां दूतमग्ने अमृतं	६. १५. ८
त्वां देवेषु प्रथमं	१. १०२. ९
त्वां पूर्व ऋषयो गीर्भि	१०. ९८. ९
त्वां मृजन्ति दश योषणः	९. ६८. ७
त्वां यज्ञेभिरुक्थैरुप	१०. २४. २
त्वां यज्ञेष्वीळतेऽग्ने	१०. २१. ६
त्वां यज्ञेष्वृत्विजं चारु	१०. २१. ७
त्वां यज्ञेष्वृत्विजमग्ने	३. १०. २
त्वां यज्ञैरवीवृधन्पवमान	९. ४. ९
त्वां रिहन्ति मातरो	९. १००. ७
त्वां वर्धन्ति क्षितयः	६. १. ५
त्वां वाजी हवते	६. २६. २
त्वां विश्वे अमृत	६. ७. ४
त्वां विश्वे सजोषसो	५. २१. ३
त्वां विष्णुर्बृहन्क्षयो	८. १५. ९
त्वां शुष्मिन्पुरुहूत	८. ९८. १२
त्वां सुतस्य पीतये	३. ४२. ९
त्वां सोम पवमानं	९. ८६. २४
त्वां स्तोमा अवीवृधन्	१. ५. ८
त्वां ह त्यदिन्द्रार्णसातौ	१. ६३. ६
त्वां हि मन्द्रतममर्कशोकै	६. ४. ७
त्वां हि ष्मा चर्षणयो	६. २. २
त्वां हि सत्यमद्रिवो	८. ४६. २
त्वां हि सुप्सरस्तमं	६. २६. २४
त्वां हीन्द्रावसे विवाचो	६. ३३. २
त्वां ह्यग्ने सदमित्समन्यवो	४. १. १
त्वादत्तेभी रुद्र शंतमेभिः	२. ३३. २
त्वामग्न आदित्यास	२. १. १३
त्वामग्न ऋतायवः	५. ८. १
त्वामग्ने अङ्गिरसो	५. ११. ६
त्वामग्ने अतिथिं पूर्व्यं	५. ८. २
त्वामग्ने दम आ विश्पतिं	२. १. ८
त्वामग्ने धर्णसिं विश्वधा	५. ८. ४
त्वामग्ने पितरमिष्टिभि	२. १. ९
त्वामग्ने पुष्करादध्यथर्वा	६. १६. १३
त्वामग्ने प्रथमं देवयन्तो	४. ११. ५
त्वामग्ने प्रथममायुमायवे	१. ३१. ११
त्वामग्ने प्रदिव आहुतं	५. ८. ७
त्वामग्ने मनीषिणः	३. १०. १
त्वामग्ने मनीषिणस्त्वां	८. ४४. १९
त्वामग्ने मानुषीरीळते	५. ८. ३
त्वामग्ने यजमाना	१०. ४५. ११
त्वामग्ने वसुपतिं	५. ४. १
त्वामग्ने वाजसातमं	५. १३. ५
त्वामग्ने समिधानं	५. ८. ६
त्वामग्ने समिधानो	७. ९. ६
त्वामग्ने स्वाध्यो मर्तासो	६. १६. ७
त्वामग्ने हरितो वावशाना	७. ५. ५
त्वामग्ने हविष्मन्तो	५. ९. १
त्वामच्छा चरामसि	९. १. ५
त्वामस्या व्युषि देव	५. ३. ८
त्वामिच्छवसस्पते	८. ६. २१
त्वामिदत्र वृणते	१०. ९१. ९
त्वामिदस्या उषसो	१०. १२२. ७
त्वामिदा ह्यो नरो	८. ९९. १
त्वामिद्धि त्वायवो नुनो	८. ९२. ३३
त्वामिद्धि सहसस्पुत्र	१. ४०. २
त्वामिद्धि हवामहे	६. ४६. १
त्वामिद्यवयुर्मम कामो	८. ७८. ९
त्वामिद्वृत्रहन्तम जनासो० उग्रं	५. ३५. ६
त्वामिद्वृत्रहन्तम जनासो० हवन्ते	८. ६. ३७
त्वामिद्वृत्रहन्तम सुतावन्तो	८. ९३. ३०
त्वामीळते अजिरं दूत्याय	७. ११. २
त्वामीळे अध द्विता	६. १६. ४
त्वामुग्रमवसे चर्षणीसहं	६. ४६. ६
त्वामु जातवेदसं	१०. १५०. ३
त्वामु ते स्वाभुवः	१०. २१. २
त्वा युजा तव तत्सोम	४. २८. १
त्वा युजा नि खिदत्	४. २८. २
त्वायेन्द्र सोमं सुषुमा	१. १०१. ९
त्वावतः पुरूवसो	८. ४६. १
त्वावतो हीन्द्र क्रत्वे	७. २५. ४
त्विषीमन्तो अध्वरस्येव	६. ६६. १०
त्वे अग्न आहवनानि	७. १. १७
त्वे अग्ने विश्वे अमृतासो	२. १. १४
त्वे अग्ने सुमतिं भिक्षमाणा	१. ७३. ७
त्वे अग्ने स्वाहुत प्रियासः	७. १६. ७
त्वे असुर्यं वसवो न्यृण्वन्	७. ५. ६
त्वे इदग्ने सुभगे यविष्ठ्य	१. ३६. ६
त्वे इन्द्राप्यभूम विप्रा	२. ११. १२
त्वे क्रतुमपि वृञ्जन्ति	१०. १२०. ३
त्वे धर्माण आसते	१०. २१. ३
त्वे धेनुः सुदुघा जातवेदो	१०. ६९. ८
त्वे पितो महानां देवानां	१. १८७. ६
त्वे राय इन्द्र तोशतमाः	१. १६९. ५
त्वे वसूनि पुर्वणीक	६. ५. २

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

त्वे वसूनि संगता विश्वा ८. ७८. ८
त्वे विश्वा तविषी सध्र्यग् १. ५१. ७
त्वे विश्वा सरस्वति २. ४१. १७
त्वेषं गणं तवसं खादिहस्तं ५. ५८. २
त्वेषं वयं रुद्रं यज्ञसाधं १. ११४. ४
त्वेषं रूपं कृणुत उत्तरं १. ९५. ८
त्वेषं रूपं कृणुते वर्णो ९. ७१. ८
त्वेषं शर्धो न मारुतं ६. ४८. १५
त्वेषामित्था समरणं १. १५५. २
त्वेषस्ते धूम ऋण्वति ६. २. ६
त्वेषासो अग्नेरमवन्तो १. ३६. २०
त्वे सु पुत्र शवसो ८. ९२. १४
त्वे सोम प्रथमा वृक्त ९. ११०. ७
त्वे ह यत्पितरश्चिन्न ७. १८. १
त्वोतासस्तवावसा स्याम ९. ६१. २४
त्वोतासस्त्वा युजाप्सु ८. ६८. ९
त्वोतासो मघवन्निन्द्र ४. २९. ५
त्वोता वाज्यह्रयोऽभि १. ७४. ८
दृक्षस्य वादित जन्मनि १०. ६४. ५
दक्षिणावतामिदिमानि १. १२५. ६
दक्षिणावान्प्रथमो हूत १०. १०७. ५
दक्षिणाश्वं दक्षिणा गां १०. १०७. ७
दण्डा इवेद्गोअजनास ७. ३३. ६
ददानमिन्न ददभन्त १. १४८. २
ददी रेक्णस्तन्वे ददिर्वसु ८. ४६. १५
दधन्नृतं धनयन्नस्य १. ७१. ३
दधन्वे वा यदीमनु २. ५. ३
दधानो गोमदश्ववत् ८. ४६. ५
दधामि ते मधुनो ८. १००. २
दधामि ते सुतानां ८. ३४. ५
दधिक्रां वः प्रथममश्विनो ७. ४४. १
दधिक्रामग्निमुषसं ३. २०. ५
दधिक्रामु नमसा ७. ४४. २
दधिक्रावाणं बुबुधानो ७. ४४. ३
दधिक्रावा प्रथमो ७. ४४. ४
दधिक्राव्ण इदु नु ४. ४०. १
दधिक्राव्ण इष ऊर्जो ४. ३९. ४
दधिक्राव्णो अकारिषं ४. ३९. ६
दधिष्वा जठरे सुतं ३. ४०. ५
दधुष्ट्वा भृगवो मानुषेष्वा १. ५८. ६
दध्यङ् ह मे जनुषं १. १३९. ९
दनो विश इन्द्र मृध्रवाचः १. १७४. २
दभ्रं चिद्धि त्वावतः ८. ४५. ३२
दभ्रेभिश्चिच्छशीयांसं ४. ३२. ३
दमूनसो अपसो ये ५. ४२. १२
दर्शं नु विश्वदर्शतं १. २५. १८
दर्शन्नत्र शृतपाँ १०. २७. ६
दविद्युतत्या रुचा ९. ६४. २८
दश क्षिपः पूर्व्यं ३. २३. ३
दश क्षिपो युञ्जते ५. ४३. ४
दश ते कलशानां ४. ३२. १९
दश मह्यं पौतक्रतः ८. ५६. २
दश मासाञ्छशयानः ५. ७८. ९
दश रथान्प्रष्टिमतः ६. ४७. २४
दश राजानः समिता ७. ८३. ७
दश रात्रीरशिवेना १. ११६. २४
दश श्यावा ऋधद्रयो ८. ४६. २३
दशस्यन्ता मनवे पूर्व्यं ८. २२. ६
दशस्यन्तो नो मरुतो ७. ५६. १७
दशस्या नः पुर्वणीक ६. ११. ६
दशानामेकं कपिलं १०. २७. १६
दशावनिभ्यो दशकक्ष्येभ्यो १०. ९४. ७
दशाश्वान्दश कोशान् ६. ४७. २३
दशेमं त्वष्टुर्जनयन्त १. ९५. २
दस्मो हि ष्मा वृषणं १. १२९. ३
दस्यूञ्छिम्यूँश्च पुरुहूत १. १००. १८
दस्रा युवाकवः सुता १. ३. ३
दस्रा हि विश्वमानुषङ् ८. २६. ६
दाता मे पृषतीनां राजा ८. ६५. १०
दादृहाणो वज्रमिन्द्रो १. १३०. ४
दाधार क्षेममोको न १. ६६. २
दाना मृगो न वारणः ८. ३३. ८
दानाय मनः सोमपावन् १. ५५. ७
दानासः पृथुश्रवसः ८. ४६. २४
दा नो अग्ने धिया रयिं ७. १. ५
दा नो अग्ने बृहतो दाः २. २. ७
दामानं विश्वचर्षणे ८. २३. २
दाशराज्ञे परियत्ताय ७. ८३. ८
दाशेम कस्य मनसा ८. ८४. ५
दासपत्नीरहिगोपा [illegible]
दिदृक्षन्त उषसो यामन् ३. ३०. १३
दिदृक्षेण्यः परि काष्ठासु १. १४६. ५
दिवः पीयूषं पूर्व्यं ९. ११०. ८
दिवः पीयूषमुत्तमं ९. ५१. २
दिवक्षसो अग्निजिह्वा १०. ६५. ७
दिवक्षसो धेनवो ३. ७. २
दिवश्चित्ते बृहतो १. ५९. ५
दिवश्चिदस्य वरिमा १. ५५. १
दिवश्चिदा ते रुचयन्त ३. ६. ७
दिवश्चिदा पूर्व्या जायमाना ३. ३९. २
दिवश्चिदा वोऽभवत्तरेभ्यो १०. ७६. ५
दिवश्चिद्वा दुहितरं ४. ३०. ९
दिवश्चिद्रोचनादध्या ८. ८. ७
दिवस्कण्वास इन्दवो १. ४६. ९
दिवस्परि प्रथमं जज्ञे १०. ४५. १
दिवस्पृथिव्याः पर्योज ६. ४७. २७
दिवस्पृथिव्या अधि ९. ३१. २
दिवस्पृथिव्योरव आ १०. ३५. २
दिवा चित्तमः कृण्वन्ति १. ३८. ९
दिवा यान्ति मरुतो १. १६१. १४
दिवि क्षयन्ता रजसः ७. ६४. १
दिवि ते नाभा परमो ९. ७९. ४
दिवि न केतुरधि धायि १०. ९६. ४
दिवि मे अन्यः पक्षो १०. ११९. ११
दिविस्पृशं यज्ञमस्माक १०. ३६. ६
दिवि स्वनो यतते १०. ७५. ३
दिवेदिवे सदृशीरन्यमर्धं ६. ४७. २१
दिवो धर्ता भुवनस्य ४. ५३. २
दिवो धामभिर्वरुण ७. ६६. १८
दिवो न तुभ्यमन्विन्द्र ६. २०. २
दिवो न यस्य रेतसो १. १००. ३
दिवो न यस्य विधतो ६. ३. ७
दिवो न सर्गा अससृग्र ९. ९७. ३०
दिवो न सानु पिप्युषी ९. १६. ७
दिवो न सानु स्तनयन् ९. ८६. ९
दिवो नाके मधुजिह्वा ९. ८५. १०
दिवो नाभा विचक्षणो ९. १२. ४
दिवो नो वृष्टिं मरुतो ५. ८३. ६
दिवो मानं नोत्सदन् ८. ६३. २
दिवो वः स्कम्भो धरुणः ९. ७४. २
दिवो रुक्म उरुचक्षा ७. ६३. ४
दिवो वराहमरुषं १. ११४. ५
दिवो वा सानु स्पृशता १०. ७०. ५
दिव्यं सुपर्णं वायसं १. १६४. ५२
दिव्यः सुपर्णोऽव चक्षि ९. ९७. ३३
दिव्यन्यः सदनं चक्र २. ४०. ४
दिव्या आपो अभि ७. १०३. २
दिशः सूर्यो न मिनाति ३. ३०. १२
दीदिवांसमपूर्व्यं ३. १३. ५
दीर्घं ह्यङ्कुशं यथा शक्तिं १०. १३४. ६
दीर्घतन्तुर्बृहदुक्षायमग्निः १०. ६९. ७
दीर्घतमा मामतेयो १. १५८. ६
दीर्घस्ते अस्त्वङ्कुशो ८. १७. १०
दुराध्यो अदितिं स्रेवयन्तो ७. १८. ८
दुरो अश्वस्य दुर इन्द्र १. ५३. २
दुरोकशोचिः क्रतुर्न १. ६६. ३
दुर्गे चिन्नः सुगं कृधि ८. ९३. १०
दुर्मन्त्रत्वामृतस्य नाम १०. १२. ६
दुहन्ति सप्तैकामुप ८. ७२. ७
दुहानः प्रत्नमित्पयः ९. ४२. ४
दुहान ऊधर्दिव्यं ९. १०७. ५
दुहीयन्मित्रधितये १. १२०. ९
दूणाशं सख्यं तव ६. ४५. २६
दूतं वो विश्ववेदसं ४. ८. १
दूरं किल प्रथमा १०. १११. ८
दूरमित पणयो वरीय १०. १०८. ११
दूराच्चिदा वसतो अस्य ६. ३८. २
दूरादिन्द्रमनयन्ना सुतेन ७. ३३. २
दूरादिहेव यत्सत्यरुणप्सु ८. ५. १
दूरे तन्नाम गुह्यं पराचै १०. ५५. १
दृळ्हा चिदस्मा अनु १. १२७. ४
दृळ्हा चिद्या वनस्पतीन् ५. ८४. ३
दृतेरिव तेऽवृकमस्तु ६. ४८. १८
दृशानो रुक्म उर्विया १०. ४५. ८
दृशेन्यो यो महिना १०. ८८. ७
देवंदेवं राधसे ७. ७९. ५
देवंदेवं वोऽवस ८. १२. १९
देवंदेवं वोऽवसे ८. २७. १३
देवं नरः सवितारं ३. ६२. १२
देवं वो अद्य सवितारमेषे ५. ४९. १

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

देवं वो देवयज्यय.	५.	२१.	४
देव त्वष्टर्यद्ध चारुत्व	१०.	७०.	९
देव बर्हिर्वर्धमानं	२.	३.	४
देवयन्तो यथा मतिमच्छा	१.	६.	६
देवस्त्वष्टा सविता	३.	५५.	१९
देवस्य वयं सवितुः	६.	७१.	२
देवस्य सवितुर्वयं	३.	६२.	११
देवहितिं जुगुपुर्द्वादशस्य	७.	१०३.	९
देवाः कपोत इषितो	१०.	१६५.	१
देवा एतस्यामवदन्त	१०.	१०९.	४
देवानां चक्षुः सुभगा	७.	७७.	३
देवानां दूतः पुरुध	३.	५४.	१९
देवानां नु वयं जाना	१०.	७२.	१
देवानां पत्नीरुशती	५.	४६.	७
देवानां भद्रा सुमति	१.	८९.	२
देवानां माने प्रथमा	१०.	२७.	२३
देवानां युगे प्रथमे	१०.	७२.	३
देवानामिदवो महत्तदा	८.	८३.	१
देवान्वसिष्ठो अमृतान्	१०.	६५.	१५
	१०.	६६.	१५
देवान्वा यच्चकृमा	१.	१८५.	८
देवान्हुवे बृहच्छ्रवसः	१०.	६६.	१
देवाव्यो नः परिषिच्यमानाः	९.	९७.	२६
देवाश्चित्ते अमृता	१०.	६९.	९
देवाश्चित्ते असुर्य	२.	२३.	२
देवाश्चित्ते असुर्याय	७.	२१.	७
देवास आयन्परशूँरबिभ्रन्	१०.	२८.	८
देवासस्त्वा वरुणो मित्रो	१.	३६.	४
देवासो हि ष्मा मनवे	८.	२७.	१४
देवीं वाचमजनयन्त	८.	१००.	११
देवीः षळुर्वीरुरु नः	१०.	१२८.	५
देवी दिवो दुहितरा	१०.	७०.	६
देवी देवस्य रोदसी	७.	९७.	८
देवी देवेभिर्यजते	४.	५६.	२
देवी यदि तविषी	१.	५६.	४
देवीर्द्वारो वि श्रयध्वं	५.	५.	५
देवेन नो मनसा देव	१.	९१.	२३
देवेभिर्देव्यदितेऽरिष्ट	८.	१८.	४
देवेभिर्न्विषितो यज्ञियेभि	१०.	८८.	३
देवेभ्यः कमवृणीत	१०.	१३.	४
देवेभ्यस्त्वा मदाय	९.	८.	५
देवेभ्यस्त्वा वृथा	९.	१०९.	११
देवेभ्यो हि प्रथमं	४.	५४.	२
देवैर्नो देव्यदितिर्नि० तन्नो	१.	१०६.	७
देवैर्नो देव्यदितिर्नि० नहि	४.	५५.	७
देवो देवानामसि	१.	९४.	१३
देवो देवान्परिभूर्ऋतेन	१०.	१२.	२
देवो देवाय धारयेन्द्राय	९.	६.	७
देवो न यः पृथिवीं	१.	७३.	३
देवो न यः सविता	१.	७३.	२
देवो भगः सविता	५.	४२.	५
देवो वो द्रविणोदाः	७.	१६.	११
दैवी पूर्तिर्दक्षिणा	१०.	१०७.	३
दैव्या होतारा प्रथमा न्यृञ्जे	३.	४.	७
	३.	७.	८
दैव्या होतारा प्रथमा पुरोहित	१०.	६६.	१३
दैव्या होतारा प्रथमा विदुष्टर	२.	३.	७
दैव्या होतारा प्रथमा सुवाचा	१०.	११०.	७
दोहेन गामुप शिक्षा	१०.	४२.	२
द्यामिन्द्रो हरिधायसं	३.	४४.	३
द्यावा चिदस्मै पृथिवी	२.	१२.	१३
द्यावा नः पृथिवी इमं	२.	४१.	२०
द्यावा नो अद्य पृथिवी	१०.	३५.	३
द्यावापृथिवी जनयन्नभि	१०.	६६.	९
द्यावाभूमी अदिते त्रासीथां	७.	६२.	४
द्यावा यमग्निं पृथिवी	१०.	४६.	९
द्यावा ह क्षामा प्रथमे	१०.	१२.	१
द्यावो न यस्य पनयन्त्यभ्वं	६.	४.	३
द्यावो न स्तृभिश्चितयन्त	२.	३४.	२
द्युक्षं सुदानुं तविषीभि	८.	८८.	२
द्युतद्यामानं बृहतीमृतेन	५.	८०.	१
द्युतानं वो अतिथिं	६.	१५.	४
द्युभिरक्तुभिः परि	१.	११२.	२५
द्युभिर्हितं मित्रमिव	१०.	७.	५
द्युमत्तमं दक्षं धेह्यस्मे	६.	४४.	९
द्युम्नी वां स्तोमो अश्विना	८.	८७.	१
द्युम्नेषु पृतनाज्ये	३.	३७.	७
द्यौर्न य इन्द्राभि भूमार्य	६.	२०.	१
द्यौर्मे पिता जनिता	१.	१६४.	३३
द्यौर्वः पिता पृथिवी	१.	१९१.	३
द्यौश्च त्वा पृथिवी	३.	६.	३
द्यौश्च नः पृथिवी च	१०.	३६.	२
द्यौश्चिदस्यामवाँ अहेः	१.	५२.	१०
द्यौष्पितः पृथिवि	६.	५१.	५
द्रप्सः समुद्रमभि	१०.	१२३.	८
द्रप्समपश्यं विषुणे	८.	९६.	१४
द्रप्सश्चस्कन्द प्रथमाँ	१०.	१७.	११
द्रवतां त उषसा	३.	१४.	३
द्रविणोदाः पिपीषति	१.	१५.	९
द्रविणोदा ददातु नो	१.	१५.	८
द्रविणोदा द्रविणस	१.	९६.	८
द्रविणोदा द्रविणसो	१.	१५.	७
द्रापिं वसानो यजतो	९.	८६.	१४
द्रुहं जिघांसन्ध्वरस	४.	२३.	७
द्रुहो निषत्ता पृशनी	१०.	७३.	२
द्रुह्वः सर्पिरासुतिः	२.	७.	६
द्वयाँ अग्ने रथिनो	६.	२७.	८
द्वादश द्यून्यदगोह्यस्यातिथ्ये	४.	३३.	७
द्वादश प्रधयश्चक्रमेकं	१.	१६४.	४८
द्वादशारं नहि तज्जराय	१.	१६४.	११
द्वाविमौ वातौ वात	१०.	१३७.	२
द्वा सुपर्णा सयुजा	१.	१६४.	२०
द्विता यदीं कीस्तासो	१.	१२७.	७
द्विताय मृक्तवाहसे	५.	१८.	२
द्विता यो वृत्रहन्तमो	८.	९३.	३२
द्विता वि वव्रे सनजा	१.	६२.	७
द्विता व्यूर्ण्वन्नमृतस्य	९.	९४.	२
द्विधा सूनवोऽसुरं	१०.	५६.	६
द्विमाता होता विदथेषु	३.	५५.	७
द्विर्यं पञ्च जीजनन्	४.	६.	८
द्विर्यं पञ्च स्वयशसं	९.	९८.	६
द्विषो नो विश्वतोमुखाति	१.	९७.	७
द्वे इदस्य क्रमणे स्वर्दृशो	१.	१५५.	५
द्वे ते चक्रे सूर्ये ब्रह्माण	१०.	८५.	१६
द्वे नप्तुर्देववतः शते	७.	१८.	२२
द्वे विरूपे चरतः	१.	९५.	१
द्वेष्टि श्वश्रूरप जाया	१०.	३४.	३
द्वे समीची विभृतश्चरन्तं	१०.	८८.	१६
द्वे स्रुती अशृणवं	१०.	८८.	१५
[illegible]	१०.	४२.	५
धनुर्हस्तादाददानो	१०.	१८.	९
धन्या चिद्धि त्वे धिषणा	६.	११.	३
धन्व च यत्कृन्तत्रं	१०.	८६.	२०
धन्वना गा धन्वनाजिं	६.	७५.	२
धन्वन्त्स्रोतः कृणुते	१.	९५.	१०
धर्ता दिवः पवते	९.	७६.	१
धर्ता दिवो रजसस्पृष्ट	३.	४९.	४
धर्तारो दिव ऋभवः	१०.	६६.	१०
धर्मणा मित्रावरुणा	५.	६३.	७
धाता धातॄणां भुवनस्य	१०.	१२८.	७
धानावन्तं करम्भिण	३.	५२.	१
धामन्ते विश्वं भुवनमधि	४.	५८.	११
धायोभिर्वा यो युज्येभि	६.	३.	८
धारयन्त आदित्यासो	२.	२७.	४
धारावरा मरुतो धृष्ण्वोजसो	२.	३४.	१
धासिं कृण्वान ओषधी	८.	४३.	७
धियं पूषा जिन्वतु	२.	४०.	६
धियं वो अप्सु दधिषे	५.	४५.	११
धिया चक्रे वरेण्यो	३.	२७.	९
धिषा यदि धिषण्यन्तः	४.	२१.	६
धिष्व वज्रं गभस्त्यो	६.	४५.	१८
धिष्वा शवः शूर येन	२.	११.	१८
धीभिः सातानि काण्वस्य	८.	४.	२०
धीभिरर्वद्भिरर्वतो वाजाँ	६.	४५.	१२
धीभिर्हिन्वन्ति वाजिनं	९.	१०६.	११
धीरा त्वस्य महिना	७.	८६.	१
धीरासः पदं कवयो	१.	१४६.	४
धीरो ह्यस्यद्यसद्विप्रो	८.	४४.	२९
धुनेतयः सुप्रकेतं	४.	५०.	२
धूनुथ द्यां पर्वतान्	५.	५७.	३
धृतव्रताः क्षत्रिया	१०.	६६.	८
धृतव्रता आदित्या	२.	२९.	१
धृतव्रतो धनदाः	६.	१९.	५
धृषतश्चिद्धृषन्मनः	८.	६२.	५
धृषत्पिब कलशे	६.	४७.	६
धेनुं न त्वा सूयवसे	७.	१८.	४
धेनुः प्रत्नस्य काम्यं	३.	५८.	१
धेनुर्जिन्वतमुत जिन्वतं	८.	३५.	१८
धेनुष्ट इन्द्र सूनृता	८.	१४.	३
ध्रुवं ज्योतिर्निहितं	६.	९.	५

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ध्रुवं ते राजा वरुणो १०. १७३. ५
ध्रुवं ध्रुवेण हविषाभि १०. १७३. ६
ध्रुवा एव वः पितरो १०. ९४. १२
ध्रुवा द्यौर्ध्रुवा पृथिवी १०. १७३. ४
ध्रुवासु त्वासु क्षितिषु ७. ८८. ७
ध्वस्रयोः पुरुषन्त्योरा ९. ५८. ३
न किः परिष्टिमंहसन् ८. ८८. ६
नकिः सुदासो रथं ७. ३२. १०
नकिरस्य शचीनां ८. ३२. १५
नकिरस्य सहन्त्य १. २७. ८
नकिरिन्द्र त्वदुत्तरो ४. ३०. १
नकिरेषां निन्दिता ३. ३९. ४
नकिर्देवा मिनीमसि १०. १३४. ७
नकिष्टं कर्मणा नशद् ८. ७०. ३
नकिष्टं कर्मणा नशन्न ८. ३१. १७
नकिष्ट एता व्रता १. ६९. ४
नकिष्टद्रयीतरो हरी १. ८४. ६
नकी रेवन्त सख्याय ८. २१. १४
नकीमिन्द्रो निकर्तवे ८. ७८. ५
नकी रेवन्तं सख्याय ८. २१. १४
नक्तोषासा वर्णमामेम्याने १. ९६. ५
नक्तोषासा सुपेशसा १. १३. ७
नक्षद्धवमरुणीः पूर्व्यं १. १२१. ३
नक्षद्धोता परि सद्म १. १७३. ३
नक्षन्त इन्द्रमवसे ८. ५४. २
न क्षोणीभ्यां परिज्मने २. १६. ३
न घा त्वद्रिगप वेति १०. ४३. २
न घा गच्छेन्द्र आ दभ्नो १. १७८. २
न घा वसुर्नि यमते ६. ४५. २३
न घा स मामप जोषं ४. २७. २
न केम्यदा पपन ८. २. १७
न जामये तान्वो ३. ३१. २
न तं जिन्वन्ति बहवो ४. २५. ५
न तं त्रिषं चन त्यजो ८. ४७. ७
न तं गच्छानावदिने १०. ३९. ११
न तं विदाथ य इमा १०. ८२. ७
न त इन्द्र सुमनयो न ७. १८. २०
न तद्दिवा न पृथिव्यानु ६. ५२. १
न तन्नंहो न दुरितं कुतश्चन २. २३. ५
न तन्नंहो न दुरितं देवासो १०. १२६. १
न तमंहो न दुरितानि ७. ८२. ७
न तमग्ने अरातयो ८. ७१. ४
न तमश्नोति कश्चन १०. ६२. ९
न तस्य मायया चन ८. २३. १५
न तस्य विघ्न तदु पु १०. ४०. ११
न ता अर्वा रेणुककाटो ६. २८. ४
न ता नशन्ति न दभाति ६. २८. ३
न ता मिनन्ति मायिनो ३. ५६. १
न तिष्ठन्ति न नि मिषन्त्येते १०. १०. ८
न ते अदेवः प्रदिवो १०. ३७. ३
न ते अन्तः शवसो ६. २९. ५
न ते गिरो अपि मृष्ये ७. २२. ५
न ते त इन्द्राभ्यस्मदृष्वा ५. ३३. ३
न ते दूरे परमा चिद् ३. ३०. २
न ते वर्तास्ति राधस ८. १४. ४
न तें विष्णो जायमानो ७. ९९. २
न ते सखा सख्यं १०. १०. २
न ते सख्यं न दक्षिणं ८. २४. ५
न त्वद्धोता पूर्वो अग्ने ५. ३. ५
न त्वा गभीरः पुरुहूत ३. ३२. १६
न त्वा देवास आशत ८. ९७. ९
न त्वा बृहन्तो अद्रयो ८. ८८. ३
न त्वा रासीयाभिशस्तये ८. १९. २६
न त्वा वरन्ते अन्यथा ४. ३२. ८
न त्वावाँ अन्यो दिव्यो ७. ३२. २३
न त्वा शतं चन हुतो ९. ६१. २७
नदं व भिन्नममुया १. ३२. ८
नदं व ओदतीनां ८. ६९. २
न दक्षिणा वि चिकिते २. २७. ११
नदस्य मा रुधतः काम १. १७९. ४
न दुष्टुती मर्त्यो विन्दते ७. ३२. २१
न देवानामति व्रतं १०. ३३. ९
न देवानामपि हुतः ८. ३१. ७
न द्यावं इन्द्रमोजसा ८. ६. १५
न नूनं ब्रह्मणामृणं ८. ३२. १६
न नूनमस्ति नो श्वः १. १७०. १
न पञ्चभिर्दशभिर्वेवदद्वारम् ५. ३४. ५
न पर्वता न नद्यो वरन्त ५. ५५. ७
नपाता शवसो महः ८. २५. ५
नपातो दुर्गहस्य ये ५. ५५. ६
न पापासो मनामहे ८. ६१. ११
न पूषणं मेयामसि १. ४२. १०
नभीभियों विवस्वतः ९. १४. ५
न प्रमिये सवितुर्दैव्यस्य ४. ५४. ४
न भोजा मम्रुर्न व्यर्थ १०. १०७. ८
नमः पुरा ते वरुणोत २. २८. ८
नम इदुग्रं नम आ ६. ५१. ८
न म इन्द्रेण सख्यं २. १८. ८
न मत्स्री सुभसत्तरा १०. ८६. ६
नमसेदुप सीदत दृभ्रं ९. ११. ६
नमस्ते अग्न ओजसे ८. ७५. १०
नमस्यत हव्यदातिं ३. २. ८
न मा गरन्नथो मातृतमा १. १५८. ५
न मा तमन्न श्रमन्नोत २. ३०. ७
न मा मिमेथ न जिहीळ १०. ३४. २
न मृत्युरासीदमृतं न १०. १२९. २
न मृषा श्रान्तं यदवन्ति १. १७९. ३
नमो दिवे बृहते १. १३६. ६
नमो महद्भ्यो नमो १. २७. १३
नमो मित्रस्य वरुणस्य १०. ३७. १
नमो वाके प्रस्थिते ८. ३५. २३
न यं जरन्ति शरदो ६. २४. ७
न यं दिप्सन्ति दिप्सवो १. २५. १४
न यं दुध्रा वरन्ते ८. ६६. २
न यं रिपवो न रिषण्यवो १. १४८. ५
न यं विविक्तो रोदसी ८. १२. २४
न यं शुष्को न दुराशीर्न ८. २. ५
न यं हिंसन्ति धीतयो ६. ३४. ३
न यः संपृच्छे न ८. १०१. ४
न य इन्त्ते जनुषोऽथा ६. ६६. ४
न यजमान रिष्यसि ८. ३१. १६
न यत्परो नान्तर २. ४१. ८
न यत्पुरा चकृमा कद्ध १०. १०. ४
नयसीद्धति द्विषः ६. ४५. ६
न यस्य ते शवसान ८. ६८. ८
न यस्य देवा देवता १. १००. १५
न यस्य द्यावापृथिवी अनु १. ५२. १४
न यस्य द्यावापृथिवी न १०. ८९. ६
न यस्य वर्ता जनुषा ४. २०. ७
न यस्य सातुर्जनितोरवारि ४. ६. ७
न यस्येन्द्रो वरुणो २. ३८. ९
न यातव इन्द्र जूजुवुर्नो ७. २१. ५
न युष्मे वाजबन्धवो ८. ६८. १९
न ये दिवः पृथिव्या १. ३३. १०
न योरुपब्दिरश्व्यः १. ७४. ७
न यो वराय मरुतामिव १. १४३. ५
नरा गौरेव विद्युतं ७. ६९. ६
नरा दंसिष्ठावत्रये १०. १४३. ३
नरा वा शंसं पूषण १०. ६४. ३
नराशंसं वाजिनं वाजयन्त १. १०६. ४
नराशंसं सुधृष्टममपश्यं १. १८. ९
नराशंसः प्रति धामान्यञ्जन् २. ३. २
नराशंसः सुपूद्तीमं ५. ५. २
नराशंसमिह प्रियमस्मिन् १. १३. ३
नराशंसस्य महिमानमेषां ७. २. २
नराशंसो नोऽवतु १०. १८२. २
न रेवता पणिना ४. २५. ७
नरो ये के चास्मदा १०. २०. ८
नवं नु स्तोममग्नये ७. १५. ४
नवग्वासः सुतसोमास ५. २९. १२
नव यदस्य नवतिं च ५. २९. ६
नव यो नवतिं पुरो ८. ९३. २
न वा अरण्यानिर्हन्त्यन्य १०. १४६. ५
न वा उ एतन्म्रियसे १. १६२. २१
न वा उ ते तन्वा तन्वं १०. १०. १२
न वा उ-देवाः क्षुधमिद् १०. ११७. १
न वा उ मां कृधने १०. २७. ५
न वा उ सोमो वृजिनं ७. १०४. १३
नवानां नवतीनां विपस्य १. १९१. १३
नवा नो अग्न आ भर ५. ६. ८
न वि जानामि यदिवेदमस्मि १. १६४. ३७
न वीळवे नमते न १. ८०. १२
न वेषसा न तन्यतेन्द्रं १०. १००. ७
न वो गुहा चकृम भूरि १०. ८५. १९
नवोनवो भवति जायमानो १. १०५. १२
नव्यं तदुक्थ्यं हितं ५. ७६. २
न संस्कृतं प्र मिमीतो ५. ५४. ७
न स जीयते मरुतो ५. ३७. ४
न स राजा व्यथते १०. ११७. ४
न स सखा यो न

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

न स स्वो दक्षो वरुण ७. ८६. ६
न सायकस्य चिकिते ३. ५३. २३
न सीमदेव आपदिषं ८. ७०. ७
न सेशे यस्य रम्बते १०. ८६. १६
न सेशे यस्य रोमशं १०. ८६. १७
न सोम इन्द्रमसुतो ७. २६. १
नहि ग्रभायारणः ७. ४. ८
नहि ते अग्ने वृषभ ८. ६०. १४
नहि ते क्षत्रं न सहो १. २४. ६
नहि ते पूर्तमक्षिपद् ६. १६. १८
नहि ते शूर राधसो ८. ४६. ११
नहि तेषाममा चन १०. १८५. २
नहि त्वा रोदसी उभे १. १०. ८
नहि त्वा शूर देवा न ८. ८१. ३
नहि त्वा शूरो न तुरो ६. २५. ५
नहि देवो न मर्त्यो १. १९. २
नहि नु ते महिमनः ६. २७. ३
नहि नु यादधीमसीन्द्रं १. ८०. १५
नहि मन्युः पौरुषेय ८. ७१. २
नहि मे अक्षिपच्चना १०. ११९. ६
नहि मे अस्त्यघ्न्या ८. १०२. १९
नहि मे रोदसी उभे १०. ११९. ७
नहि वः शत्रुर्विविदे १. ३९. ४
नहि व ऊतिः पृतनासु ७. ५९. ४
नहि वश्चरमं चन ७. ५९. ३
नहि वां वव्रयामहे ८. ४०. २
नहि वामस्ति दूरके १. २२. ४
नहि वो अस्त्यर्भको ८. ३०. १
नहि षस्तव नो मम ८. ३३. १६
नहि ष्म यद्ध वः पुरा ८. ७. २१
नहि ष्मा ते शतं ४. ३१. ९
नहि स्थूर्यृतुथा यातमस्ति १०. १३१. ३
नही नु वो मरुतो १. १६७. ९
नह्यङ्ग नृतो त्वदन्यं ८. २४. १२
नह्यङ्ग पुरा चन जज्ञे ८. २४. १५
नह्यन्यं बळाकरं मर्डितारं ८. ८०. १
नह्यस्या नाम गृभ्णामि १०. १४५. ४
नाकस्य पृष्ठे अधि १. १२५. ५
नाके सुपर्णमुपपप्तिवांसं ९. ८५. ११
नाके सुपर्णमुप यत्पतन्तं १०. १२३. ६
नाना चक्राते यम्या ३. ५५. ११
नानानं वा उ नो धियो ९. ११२. १
नाना हि त्वा हवमाना १. १०२. ५
नाना ह्यग्नेऽवसे स्पर्धन्ते ६. १४. ३
नानौकांसि दुर्यो विश्वमायुर्वि २. ३८. ५
नापाभूत न वोऽतीतृषामा ४. ३४. ११
नाभा नाभिं न आ ददे ९. १०. ८
नाभा पृथिव्या धरुणो ९. ७२. ७
नाभिं यज्ञानां सदनं ६. ७. २
नाभ्या आसीदन्तरिक्षं १०. ९०. १४
नामानि ते शतक्रतो ३. ३७. ३
नावा न क्षोदः प्रदिशः १०. ५६. ७
नावेव नः पारयतं २. ३९. ४
नासत्याभ्यां बर्हिरिव १. ११६. १
नासत्या मे पितरा ३. ५४. १६
नासदासीन्नो सदासीत् १०. १२९. १
नास्माकमस्ति तत्तर ८. ६७. १९
नास्मै विद्युन्न तन्यतुः १. ३२. १३
नास्य वर्ता न तरुता ६. ६६. ८
नाहं तं वेद दभ्यं १०. १०८. ४
नाहं तं वेद य इति १०. २७. ३
नाहं तन्तुं न वि ६. ९. २
नाहं वेद भ्रातृत्वं १०. १०८. १०
नाहमतो निरया ४. १८. २
नाहमिन्द्राणि रारण १०. ८६. १२
नि काव्या वेधसः १. ७२. १
निक्रमणं निषदनं १. १६२. १४
निखातं चिद्यः पुरुसंभृतं ८. ६६. ४
नि गव्यता मनसा ३. ३१. ९
नि गव्यवोऽनवो ७. १८. १४
नि गावो गोष्ठे असदन्नि १. १९१. ४
नि ग्रामासो अविक्षत १०. १२७. ५
निचेतारो हि मरुतो ७. ५७. २
नि तद्दधिषेऽवरं परं १०. १२०. ७
नितिक्ति यो वारणमन्न ६. ४. ५
नि तिग्ममभ्यंशुं ८. ७२. २
नि तिग्मानि भ्राशयन् १०. ११६. ५
नित्यं न सूनुं मधु १. १६६. २
नित्यश्चाकन्यात्स्वपति १०. ३१. ४
नित्यस्तोत्रो वनस्पति ९. १२. ७
नित्ये चिन्नु यं सदने १. १४८. ३
नि त्वा दधे वर आ ३. २३. ४
नि त्वा दधे वरेण्यं ३. २७. १०
नि त्वा नक्ष्य विश्पते ७. १५. ७
नि त्वामग्ने मनुर्दधे १. ३६. १९
नि त्वा यज्ञस्य साधनमग्ने १. ४४. ११
नि त्वा वसिष्ठा अह्वन्त १०. १२२. ८
नि त्वा होतारमृत्विजं १. ४५. ७
नि दुरोणे अमृतो ३. १. १८
नि दुर्गं इन्द्र श्नथिह्यमित्रा ७. २५. २
निधीयमानमपगूळ्हमप्सु १०. ३२. ६
नि नो होता वरेण्यः १. २६. २
नि पर्वतः साद्यप्रयुच्छन् २. ११. ८
नि पस्त्यासु त्रितः १०. ४६. ६
निमिषश्चिज्जवीयसा ८. ७३. २
नि यद्यामाय वो गिरिर्नि ८. ७. ५
नि यद्युवेथे नियुतः १. १८०. ६
नि यद्वृणक्षि श्वसनस्य १. ५४. ५
नियुत्वन्तो ग्रामजितो ५. ५४. ८
नियुत्वान्वायवा गह्ययं २. ४१. २
नियुवाना नियुतः ७. ९१. ५
नि येन मुष्टिहत्यया १. ८. २
नि ये रिणन्त्योजसा ५. ५६. ४
निरग्नयो रुरुचुर्निरु ८. ३. २०
निराविध्यद्गिरिभ्य आ ८. ७७. ६
निराहावान्कृणोतन १०. १०१. ५
निरिणानो वि धावति ९. १४. ४
निरिन्द्र बृहतीभ्यो ८. ३. १९
निरिन्द्र भूम्या अधि १. ८०. ४
निरु स्वसारमस्कृतोषसं १०. १२७. ३
निर्मथितः सुधित आ ३. २३. १
निर्माया उ त्ये असुरा १०. १२४. ५
निर्यत्पूतेव स्वधितिः ७. ३. ९
निर्यदीं बुध्नान्महिषस्य १. १४१. ३
निर्युवाणो अशस्तीर्नियुत्वाँ ४. ४८. २
नि वर्तध्वं मानु गाता १०. १९. १
नि वेवेति पलितो दूत ३. ५५. ९
नि वो यामाय मानुषो १. ३७. ७
नि शत्रोः सोम वृष्ण्यं ९. १९. ७
नि शुष्ण इन्द्र धर्णसिं ८. ६. १४
नि शुष्ममिन्दवेषां ९. ५२. ४
निश्चर्मण ऋभवो १. ११०. ८
निश्चर्मणो गामरिणीत १. १६१. ७
नि षसाद धृतव्रतो १. २५. १०
नि षीमिदत्र गुह्या ३. ३८. ३
नि षु ब्रह्म जनानां ८. ५. १३
नि षु सीद गणपते १०. ११२. ९
नि षू नमातिमतिं १. १२९. ५
निष्कं वा घा कृणवते ८. ४७. १५
नि ष्वापया मिथूदृशा १. २९. ३
निष्षिध्वरीरोषधीराप ८. ५९. २
निष्षिध्वरीस्त ओषधी ३. ५५. २२
नि सर्वसेन इषुधीँरसक्त १. ३३. ३
नि सामनामिषिरामिन्द्र ३. ३०. ९
नि होता होतृषदने २. ९. १
नीचावया अभवद् १. ३२. ९
नीचा वर्तन्त उपरि १०. ३४. ९
नीचीनबारं वरुणः ५. ८५. ३
नीललोहितं भवति १०. ८५. २८
नू अन्यत्रा चिदद्रिव ८. २४. ११
नू इत्था ते पूर्वथा १. १३२. ४
नू इन्द्र राये वरिवस्कृधी ७. २७. ५
नू इन्द्र शूर स्तवमान ७. १९. ११
नू गृणानो गृणते प्रत्न ६. ३९. ५
नू च पुरा च सदनं १. ९६. ७
नू चित्स भ्रेषते जनो ७. २०. ६
नू चित्सहोजा अमृतो १. ५८. १
नू चिन्न इन्द्रो मघवा ७. २७. ४
नू चिन्नु ते मन्यमानस्य ७. २२. ८
नू त आभिरभिष्टिभिस्तव ५. ३८. ५
नू ते पूर्वस्यावसो २. ४. ८
नूत्रा इदिन्द्र ते वयमूती ८. २१. ७
नू त्वामग्न ईमहे वसिष्ठा ७. ७. ७
७. ८. ७
नू देवासो वरिवः कर्तना ७. ४८. ४
नूनं तदिन्द्र दद्धि नो ८. १३. ५
नूनं न इन्द्रापराय च ६. ३३. ५
नूनं पुनानोऽविभिः ९. १०७. २

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नूनं सा ते प्रति वरं २. ११. २१
२. १५. १०
२. १६. ९
२. १७. ९
२. १८. ९
२. १९. ९
२. २०. ९
नू न इद्धि वार्यमासा ५. १७. ५
नू न इन्द्रावरुणा ६. ६८. ८
नू न पहि वार्यमग्ने ५. १६. ५
नूनमर्चे विदाथसे ८. २३. २४
नू नव्यसे नवीथसे ९. ९. ८
नू नश्चित्रं पुरुवाजाभिकृती ६. १०. ५
नू नस्त्वं रयिपते देव ९. ९७. ४८
नू नो अग्न ऊतये ५. १०. ६
नू नो अग्नेऽवृकेभिः ६. ४. ८
नू नो गोमद्धिरण्यवद्देहि ७. ७५. ८
नू नो रयिं पुरुवीरं ४. ४४. ६
नू नो रयिं महामिन्दो ९. ४०. ३
नू नो रयिं रथ्यं ६. ४९. १५
नू नो रयिमुप मास्व ९. ९३. ५
नू नो रास्व सहस्रवत् ३. १३. ७
नू म आ वाचमुप याहि ६. २१. ११
नू मन्वान एषां देवाँ ५. ५२. १५
नू मर्तो दयते सनिष्यन् ७. १००. १
नू मित्रो वरुणो अर्यमा ७. ६२. ६
७. ६३. ६
नू मे गिरो नासत्याश्विना ८. ८५. ९
नू मे ब्रह्माण्यग्न उच्छशाधि ७. १. २०
७. १. २५
नू मे हवमा शृणुतं ७. ६७. १०
७. ६९. ८
नू रोदसी अभिष्टुते ७. ३९. ७
७. ४०. ७
नू रोदसी अहिना ४. ५५. ६
नू रोदसी बृहद्भिर्नो ४. ५६. ४
नू ष्टुत इन्द्र नू गृणान ४. १६. २१
४. १७. २१
४. १९. ११
४. २०. ११
४. २१. ११
४. २२. ११
४. २३. ११
४. २४. ११
नू ष्टिरं मरुतो वीरवन्त १. ६४. १५
नू सद्मानं दिव्यं नंशि ६. ५१. १२
नृचक्षसं त्वा वयमिन्द्र ९. ८. ९
नृचक्षसो अनिमिषन्तो १०. ६३. ४
नृचक्षा एष दिवो १०. १३९. २
नृचक्षा रक्षः परि १०. ८७. १०
नृणामु त्वा नृतमं ३. ५१. ४
नृधूतो अद्रिपुतो ९. ७२. ४
नृवाहस्यां चोदितो ९. ७२. ५
नृभिर्धूतः सुतो अश्नैरव्यो ८. २. २
नृभिर्येमानो हर्यतो ९. १०७. १६
नृवत्त इन्द्र नृतमाभिरूती ६. १९. १०
नृवद्दधा मनोयुजा ८. ५. २
नृवद्वसो सदमिद्देधस्मे ६. १. १२
नेतार ऊ षु णस्तिरो १०. १२६. ६
नेमिं नमन्ति चक्षसा ८. ९७. १२
नेशत्तमो दुधितं रोचत ४. १. १७
नेह भद्रं रक्षस्विने ८. ४७. १२
नैतावदन्ये मरुतो ७. ५७. ३
नैतावदेना परो अन्य १०. ३१. ८
न्यक्रन्नग्नयिनो वृष्ण्यवाचः ७. ६. ३
न्यक्रन्दयन्नुपयन्त १०. १०२. ५
न्यग्निं जातवेदसं दधाता ५. २२. २
न्यग्निं जातवेदसं होत्रवाहं ५. २६. ७
न्यग्ने नव्यसा वचस्तनूषु ८. ३९. २
न्यग्वातोऽव वाति १०. ६०. ११
न्यङ्ङस्य मूर्धनि चक्रं १. ३०. १९
न्यर्बुदस्य विष्टपं वर्ष्माणं ८. ३२. ३
न्यस्मै देवी स्वधितिः ५. ३२. १०
न्याविध्यदिळीविशस्य १. ३३. १२
न्यु त्रियो मनुषः सादि ७. ७३. २
न्यु षु वाचं प्र मंहे १. ५३. १
पञ्चेव चर्चरं जारं १०. १०६. ७
पञ्च जना मम होत्रं १०. ५३. ५
पञ्च पदानि रुपो १०. १३. ३
पञ्चपादं पितरं द्वादशाकृतिं १. १६४. १२
पञ्चारे चक्रे परिवर्तमाने १. १६४. १३
पतङ्गमक्तमसुरस्य १०. १७७. १
पतङ्गो वाचं मनसा १०. १७७. २
पताति कुण्डृणाच्या १. २९. ६
पतिर्भव वृत्रहन्त्सूनृतानां ३. ३१. १८
पतिर्ह्यध्वराणामग्ने १. ४४. ९
पत्तो जगार प्रत्यञ्चमत्ति १०. २७. १३
पत्नीवन्तः सुता इम ८. ९३. २२
पत्नीव पूर्वहूतिं वावृधध्या १. १२२. २
पथस्पथः परिपतिं ६. ४९. ८
पदं देवस्य नमसा ६. १. ४
पदं देवस्य मीळ्हुषो ८. १०२. १५
पद्या पर्णीरराधसो ८. ६४. २
पदे इव निहिते दस्मे ३. ५५. १५
पदेपदे मे जरिमा ५. ४१. १५
पथा वस्ते पुरुरूपा ३. ५५. १४
पनाय्यं तदश्विना ८. ५७. ३
पन्यंपन्यमित्सोतार ८. २. २५
पन्य आ दर्दिरच्छता ८. ३२. १८
पन्य इदुप गायत ८. ३२. १७
पन्यांसं जातवेदसं ८. ७४. ३
पपृक्षेण्यमिन्द्र त्वे ५. ३३. ६
पप्राथ क्षां महि दंसो ६. १७. ७
पयस्वतीरोषधयः १०. १७. १४
परं मृत्यो अनु परेहि १०. १८. १
परः सो अस्तु तन्वा ७. १०४. ११
पर क्रमा सावीरघ २. २८. ९
परशुं चिद्धि तपति ३. ५३. २२
परस्या अधि संवतो ८. ७५. १५
पराकात्ताच्चिद्विवस्त्वां ८. ९२. २७
परा गावो यवसं ८. ४. १८
परा चिच्छीर्षा वव्रुस्त १. ३३. ५
परा णुदस्व मघवन्नमित्रान् ७. ३२. २५
परा देहि शामुल्यं १०. ८५. २९
पराध देवा वृजिनं १०. ८७. १५
परा पूर्वेषां सख्या ६. ४७. १७
परा मे यन्ति धीतयो १. २५. १६
परावतां मातरमन्वचष्ट ४. १८. ३
परावतीनामन्वेति १. ११३. ८
परा वृजन्ति शक्वरीः ३. ५३. ५
परावतं नासत्यानुदेथां १. ११६. ९
परावतो ये दिधिषन्त १०. ६३. १
परा वीरास एतन ५. ६१. ४
परा व्यक्तो अरुषो ९. ७१. ७
परा शुभ्रा अयासो १. १६७. ४
परा शृणीहि तपसा १०. ८७. १४
परा ह यत्स्थिरं १. ३९. ३
परा हि मे विमन्यवः १. २५. ४
परा हीन्द्र धावसि १०. ८६. २
परि कोशं मधुश्चुत ९. १०३. ३
परिक्षिता पितरा १०. ६५. ८
परि चिन्मर्तो द्रविणं १०. ३१. २
परि णः शर्मयन्त्या ९. ४१. ६
परि णेता मतीनां ९. १०३. ४
परि णो अश्वमश्वविद् ९. ६१. ३
परि णो देववीतये ९. ५४. ४
परि णो याह्यस्मयुर्विश्वा ९. ६४. १८
परि णो वृणजन्नघा ८. ४७. ५
परि णो हेती रुद्रस्य २. ३३. १४
परि तृन्धि पणीनामारया ६. ५३. ५
परि ते जिग्युषो यथा ९. १००. ४
परि ते दूळभो रथो ४. ९. ८
परि त्मना मितद्रुरेति ४. ६. ५
परि त्यं हर्यतं हरिं ९. ९८. ७
परि त्रिधातुरध्वरं ८. ७२. ९
परि त्रिविष्टपध्वरं ४. १५. २
परि त्वा गिर्वणो गिर १. १०. १२
परि त्वाग्ने पुरं वयं १०. ८७. २२
परि दिव्यानि मर्मृशद् ९. १४. ८
परि दैवीरनु स्वधा ९. १०३. ५
परि धुक्षं सहसः ९. ७१. ४
परि धुक्षं सनद्रयिं ९. ५२. १
परि धामानि यानि ते ९. ६६. ३
परि पूषा परस्तादहस्तं ६. ५४. १०
परि प्र धन्वेन्द्राय ९. १०९. १
परिप्रयन्तं वव्यं सुपंसदं ९. ६८. ८
परि प्र सोम ते रसो ९. ६७. १५
परि प्रासिष्यदत्कविः ९. १४. १
परि प्रियः कलशे ९. ९६. ९
परि प्रिया दिवः कविं ९. ९. १

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

परि यत्कविः काव्या ९. ९४. ३
परि यत्काव्या कविर्नृम्णा ९. ७. ४
परि यदिन्द्र रोदसी उभे १. ३३. ९
परि यो रश्मिना दिवो ८. २५. १८
परि यो रोदसी उभे ९. १८. ६
परि राजपतिः कविरग्नि ४. १५. ३
परि वाजे न वाजयुमन्यो ९. ६३. १९
परि वाराण्यव्यया ९. १०३. २
परि विश्वानि चेतसा ९. २०. ३
परि विश्वानि सुधिता ३. ११. ८
परिविष्टं जाहुषं विश्वतः १. ११६. २०
परिवृक्तेव पतिविश्वमानट १०. १०२. ११
परि वो विश्वतो दध १०. १९. ७
परिषद्यं रणस्य ७. ४. ७
परिष्कृण्वन्ननिष्कृतं ९. ३९. २
परिष्कृतास इन्दवो ९. ४६. २
परि ष्य सुवानो अक्षा ९. ९८. ३
परि ष्य सुवानो अव्ययं ९. ९८. २
परि सप्तेव पशुमान्ति ९. ९२. ६
परि सप्तिर्न वाजयुर्देवो ९. १०३. ६
परि सुवानश्चक्षसे ९. १०७. ३
परि सुवानास इन्दवो ९. १०. ४
परि सुवानो गिरिष्ठाः ९. १८. १
परि सुवानो हरिश्चुः ९. ९२. १
परि सोम ऋतं बृहदाशुः ९. ५६. १
परि सोम प्र धन्वा ९. ७५. ५
परि स्पशो वरुणस्य ७. ८७. ३
परि हि ष्मा पुरूवसुं ९. ८७. ६
परिहृतेदना जनो ८. ४७. ६
परीं घृणा चरति १. ५२. ६
परीतो वायवे सुतं ९. ६३. १०
परीतो षिञ्चता सुतं ९. १०७. १
परीमे गामनेषत १०. १५५. ५
परेविवांसं प्रवतो १०. १४. १
परेहि विग्रमस्तृतमिन्द्रं १. ४. ४
परो दिवा पर एना १०. ८२. ५
परोमात्रमृचीषम ८. ६८. ६
परो मात्रया तन्वा ७. ९९. १
परो यत्त्वं परम आ ५. ३०. ५
परो हि मर्त्यैरसि ६. ४८. १९
पर्जन्यः पिता महिषस्य ९. ८२. ३
पर्जन्यवाता वृषभा ६. ४९. ६
पर्जन्यबृहदं महिषं ९. ११३. ३
पर्जन्याय प्र गायत ७. १०२. १
पर्जन्यावाता वृषभा १०. ६५. ९
पर्यू षु प्र धन्व वाजसातये ९. ११०. १
पर्वतश्चिन्महि वृद्धो ५. ६०. ३
पर्शुर्ह नाम मानवी १०. ८६. २३
पर्षि तोकं तनयं ६. ४८. १०
पर्षि दीने गभीर आँ ८. ६७. ११
पवते हर्यतो हरिरति ९. १०६. १३
पवते हर्यतो हरिर्गृणानो ९. ६५. २५
पवन्ते वाजसातये ९. १३. ३
पवमानः सुतो दृभिः ९. ६२. १६
पवमानः सो अद्य नः ९. ६७. २२
पवमान ऋतं बृहच्छुक्रं ९. ६६. २४
पवमान ऋतः कविः ९. ६२. ३०
पवमान धिया हितो ९. २५. २
पवमान नि तोशसे ९. ६३. २१
पवमानमवस्यवो ९. ११. २
पवमान महि श्रव ९. १००. ८
पवमान महि श्रवो ९. ९. ९
पवमान मखर्णो वि ९. ८६. ३४
पवमान रसस्तव ९. ११. १८
पवमान रुचारुचा ९. ६५. २
पवमान विशः० दुष्टरम् ९. ११. ११
पवमान विशः० सुश्रियम् ९. ४३. ४
पवमान सुवीर्यं रयिं ९. ११. ९
पवमानस्य जङ्घ्नतो ९. ६६. २५
पवमानस्य ते कवे ९. ६६. १०
पवमानस्य ते रसो ९. ६१. १८
पवमानस्य ते वयं ९. ६१. ४
पवमानस्य विश्ववित् ९. ६४. ७
पवमान स्वर्विदो ९. ५९. ४
पवमाना असृक्षत पवित्रमति ९. १०७. २५
पवमाना असृक्षत सोमाः ९. ६३. २५
पवमाना दिवस्पर्यन्तरिक्षा ९. ६३. २७
पवमानास आशवः ९. ६३. २६
पवमानास इन्दवस्तिरः ९. ६७. ७
पवमानो अजीजनदिव CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.
पवमानो अति स्रिधो ९. ६६. २२
पवमानो अभि स्नुधो ९. ७. ५
पवमानो अस्मर्ध्या ९. ८५. ८
पवमानो असिष्यदद् ९. ४९. ५
पवमानो रथीतमः ९. ६६. २६
पवमानो व्यव्ययद् ९. ६६. २७
पवस्व गोजिदश्वजिद् ९. ५९. १
पवस्व जनयन्निषो ९. ६६. ४
पवस्व दक्षसाधनो ९. २५. १
पवस्व देवमादनो ९. ८४. १
पवस्व देववीतय ९. १०६. ७
पवस्व देववीरति ९. २. १
पवस्व देवायुगिन्द्रं ९. ६३. २२
पवस्व मधुमत्तम ९. १०८. १
पवस्व वाचो अग्रियः ९. ६२. २५
पवस्व वाजसातमः ९. १००. ६
पवस्व वाजसातयेऽभि ९. १०७. २३
पवस्व वाजसातये विमस्य ९. ४३. ६
पवस्व विश्वचर्षणे ९. ६६. १
पवस्व बृहन्तमोक्थेभि ९. २४. ६
पवस्व दृष्टिमा सु नो ९. ४९. १
पवस्व सोम ऋतुविच्च ९. ८६. ४८
पवस्व सोम दिव्येषु ९. ८६. २२
पवस्व सोम देववीतये ९. ७०. ९
पवस्व सोम द्युम्नी ९. १०९. ४
पवस्व सोम मधुमाँ ९. ९६. १३
पवस्व सोम मन्दयन् ९. ६७. १६
पवस्वाङ्गिरो अदाभ्यः ९. ५९. २
पवस्वेन्दो पवमानो ९. ९६. २१
पवस्वेन्दो वृषा सुतः ९. ६१. २८
पवित्रं ते वितनं ९. ८३. १
पवित्रवन्तः परि ९. ७३. ३
पवित्रेभिः पवमानो ९. ९७. २४
पवीतारः पुनीतन ९. ४. ४
पशुं नः सोम रक्षसि १०. २५. ६
पशून्न चित्रा सुभगा १. ९२. १२
पश्चात्पुरस्तादधरादुदक्तात् १०. ८७. २१
पश्येदमन्यदभवद्यजत्र १०. १४९. ३
पश्यन्नन्यस्या अतिथिं १०. १२४. ३
पश्यन्नायुं विपश्चितं १. ६५. १
पश्वा यत्पश्वा वियुता १०. ६१. १२
पाकः पृच्छामि मनसा १. १६४. ५
पाकत्रा स्थन देवा ८. १८. १५
पातं नो रुद्रा पायुभिरुत ५. ७०. ३
पाता हृन्ना सुतमा ८. २. २६
पाता सुतमिन्द्रो० ग्नेनी ६. २३. ३
पाता सुतमिन्द्रो० हन्ता ६. ४४. १५
पाति प्रियं रिपो अग्रं ३. ५. ५
पान्तमा वो अन्धस ८. ९२. १
पान्ति मित्रावरुणावव्यया १. १६७. ८
पारावतस्य रातिषु ८. ३४. १८
पार्ष्ण्याः प्रस्कण्वं ८. ५१. २
पावकया यश्चितयन्त्या ६. १५. ५
पावकवर्चाः शुक्रवर्चा १०. १४०. २
पावकशोचे तव हि ३. २. ६
पावका नः सरस्वती १. ३. १०
पावमानीर्यो अध्येत्यृषिभिः ९. ६७. ३२
पावीरवी कन्या चित्रायुः ६. ४९. ७
पावीरवी तन्यतुरेकपादजो १०. ६५. १३
पाहि गायान्धसो मद ८. ३३. ४
पाहि न इन्द्र मीढुष १. १२९. ११
पाहि नो अग्न एकया ८. ६०. ९
पाहि नो अग्ने पायुभि १. १८९. ४
पाहि नो अग्ने रक्षसः १. ३६. १५
पाहि नो अग्ने रक्षसो ७. १. १३
पाहि विश्वस्माद्रक्षसो ८. ६०. १०
पिता पद्यानामसुरो ३. ३. ४
पिता यत्स्वां दुहितर १०. ६१. ७
पितुं नु स्तोषं महो १. १८७. १
पितुः प्रत्नस्य जन्मना १. ८७. ५
पितुश्चुतो न तन्तुमित् १०. १७२. २
पितुर्न पुत्रः सुक्रतो ८. १९. २७
पितुर्न पुत्राः क्रतुं १. ६८. ५
पितुर्मातुरध्या ये समस्व ९. ७३. ५
पितुश्च गर्भं जनितुश्च ३. १. १०
पितुश्चिदूधर्जनुषा विवेद ३. १. ९
पितेव पुत्रमभिरक्षतस्ये १०. १९. १०
पित्रे चिच्चकृः सदनं ३. ३१. १२
पिन्वन्त्यपो मरुतः १. ६४. ६
पिपर्तु नो अदितिः २. २७. ७

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पिपर्तु मां तदृतस्य	१०. ३५. ८
पिपीळे अंशुर्मद्यो न	४. २२. ८
पिप्रीहि देवाँ उशतो	१०. २. १
पिबतं घर्मं मधुमन्त	८. ८७. २
पिबतं च तृप्णुतं चा	८. ३५. १०
पिबतं सोमं मधुमन्त	८. ८७. ४
पिबन्ति मित्रो अर्यमा	८. ९४. ५
पिबन्त्यस्य विश्वे देवासो	९. १०९. ८
पिब स्वधैनवानामुत	८. ३२. २०
पिबा त्वस्य गिर्वणः	८. १. २६
पिबापिबेदिन्द्र० मन्दन्तु	२. ११. ११
पिबापिबेदिन्द्र० मा	१०. २२. १५
पिबा वर्धस्व तव घा	३. ३६. ३
पिबा सुतस्य रसिनो	८. ३. १
पिबा सोमं मदाय	८. ९५. ३
पिबा सोमं महत	१०. ११६. १
पिबा सोममभि यमुग्र	६. १७. १
पिबा सोममिन्द्र मन्दतु	७. २२. १
पिबा सोममिन्द्र सुवान	१. १३०. २
पिबेदिन्द्र मरुत्सखा	८. ७६. ९
पिशङ्गभृष्टिमम्भृणं	१. १३३. ५
पिशङ्गरूपः सुभरो	२. ३. ९
पीपाय धेनुरदितिर्ऋताय	१. १५३. ३
पीपाय सः श्रवसा	६. १०. ३
पीपिवांसं सरस्वतः	७. ९६. ६
पीवानं मेषमपचन्त	१०. २७. १७
पीवोअन्नां रयिवृधः	७. ९१. ३
पीवोअश्वाः शुचद्रथा	४. ३७. ४
पुत्रमिव पितरावश्विनोभे	१०. १३१. ५
पुत्रिणा ता कुमारिणा	८. ३१. ८
पुत्रो न जातो रण्वो	१. ६९. ३
पुनः पत्नीमग्निरदादायुषा	१०. ८५. ३९
पुनःपुनर्जायमाना	१. ९२. १०
पुनः समव्यद्विततं	२. ३८. ४
पुनन्तु मां देवजनाः	९. ६७. २७
पुनरेता नि वर्तन्ता	१०. १९. ३
पुनरेना नि वर्तय	१०. १९. २
पुनरेहि वृषाकपे	१०. ८६. २१
पुनर्दाय ब्रह्मजायां	१०. १०९. ७
पुनर्नः पितरो मनो	१०. ५७. ५
पुनर्नो असुं पृथिवी	१०. ५९. ७
पुनर्ये चक्रुः पितरा	४. ३३. ३
पुनर्वै देवा अददुः	१०. १०९. ६
पुनाता दक्षसाधनं	९. १०४. ३
पुनाति ते परिस्रुतं	९. १. ६
पुनानः कलशेष्वा	९. ८. ६
पुनानः सोम जागृवि	९. १०७. ६
पुनानः सोम धारयापो	९. १०७. ४
पुनानः सोम धारयेन्दो	९. ६३. २८
पुनान इन्दवा० त्वं वसूनि	९. १००. २
पुनान इन्दवा० वृषन्निन्दो	९. ४०. ६
पुनान इन्दवेषां पुरुहूत	९. ६४. २७
पुनानश्चमू जनयन्मतिं	९. १०७. १८
पुनानासश्चमूषदो	९. ८. २
पुनाने तन्वा मिथः	४. ५६. ६
पुनानो अक्रमीदभि	९. ४०. १
पुनानो देववीतय	९. ६४. १५
पुनानो याति हर्यतः	९. ४३. ३
पुनानो रूपे अव्यये	९. १६. ६
पुनानो वरिवस्कृध्यूर्जं	९. ६४. १४
पुनीषे वामरक्षसं	७. ८५. १
पुमाँ एनं तनुत उत्	१०. १३०. २
पुरंदरा शिक्षतं वज्र	१. १०९. ८
पुरं न धृष्णवा रुज	८. ७३. १८
पुरः सद्य इत्थाधिये	९. ६१. २
पुरां भिन्दुर्युवा कवि	१. ११. ४
पुराग्ने दुरितेभ्यः पुरा	८. ४४. ३०
पुराणमोकः सख्यं	३. ५८. ६
पुराणाँ अनुवेनन्तं	१०. १३५. २
पुराणा वां वीर्या प्र	१०. ३९. ५
पुरा यत्सूरस्तमसो	१. १२१. १०
पुरा संबाधादभ्या	२. १६. ८
पुरीष्यासो अग्नयः	३. २२. ४
पुरुकुत्सानी हि वाम	४. ४२. ९
पुरुत्रा चिद्धि वां नरा	८. ५. १६
पुरुत्रा हि सदृङ्ङसि	८. ११. ८
	८. ४३. २१
पुरु त्वा दाश्वान्वोचे	१. १५०. १
पुरुद्रप्सा आञ्जिमन्तः	५. ५७. ५
पुरुप्रिया ण ऊतये	८. ५. ४
पुरुमन्द्रा पुरूवसू	८. ८. १२
पुरुष एवेदं सर्वं	१०. ९०. २
पुरुष्टुतस्य धामभिः	३. ३७. ४
पुरु हि वां पुरुभुजा	६. ६३. ८
पुरुहूतं पुरुष्टुतं	८. ९२. २
पुरुहूतो यः पुरुगूर्त	६. ३४. २
पुरूणि दस्मो नि रिणाति	१. १४८. ४
पुरूणि हि त्वा सवना	१०. ८९. १६
पुरूण्यग्ने पुरुधा त्वाया	६. १. १३
पुरूतमं पुरूणां स्तोतॄणां	६. ४५. २९
पुरूतमं पुरूणामीशानं	१. ५. २
पुरू यत्त इन्द्र सन्त्युक्था	५. ३३. ४
पुरूरवो मा मृथा मा	१०. ९५. १५
पुरूरुणा चिद्ध्यस्त्यवो	५. ७०. १
पुरू वर्पांस्यश्विना दधाना	१. ११७. ९
पुरोगा अग्निर्देवानां	१. १८८. ११
पुरोजिती वो अन्धसः	९. १०१. १
पुरोळा अग्ने पचतस्तुभ्यं	३. २८. २
पुरोळा इत्तुर्वशो यक्षु	७. १८. ६
पुरोळाशं च नो घसो	३. ५२. ३
	४. ३२. १६
पुरोळाशं नो अन्धस	८. ७८. १
पुरोळाशं पचत्यं	३. ५२. २
पुरोळाशं यो अस्मै	८. ३१. २
पुरोळाशं सनश्रुत	३. ५२. ४
पुरो वो मन्द्रं दिव्यं	६. १०. १
पुष्टिर्न रण्वा क्षितिर्न	१. ६५. ३
पुष्यात्क्षेमे अभि योगे	५. ३७. ५
पूर्वापरं चरतो माययैतौ	१०. ८५. १८
पूर्वापुषं सुहवं पुरुस्पृहं	८. २२. २
पूर्वामनु प्रदिशं याति	९. १११. ३
पूर्वामनु प्रयतिमा ददे	१. १२६. ५
पूर्वा विश्वस्माद्भुवना	१. १२३. २
पूर्वीभिर्हि ददाशिम	१. ८६. ६
पूर्वीरस्य निष्षिधो	३. ५१. ५
पूर्वीरहं शरदः शश्रमाणा	१. १७९. १
पूर्वीरिन्द्रस्य रातयो	१. ११. ३
पूर्वीरुषसः शरदश्च	४. १९. ८
पूर्वीश्चिद्धि त्वे तुविकूर्मिन्	८. ६६. १२
पूर्वीह इन्द्रोपमातय	८. ४०. ९
पूर्वे अर्धे रजसो	१. १२४. ५
पूर्वो देवा भवतु सुन्वतो	१. ९४. ८
पूर्व्यं होतरस्य नो	१. २६. ५
पूषणं न्वजाश्वमुप	६. ५५. ४
पूषण्वते ते चकृमा	३. ५२. ७
पूषण्वते मरुत्वते	१. १४२. १२
पूषन्तव व्रते वयं	६. ५४. ९
पूषन्ननु प्र गा इहि	६. ५४. ६
पूषा गा अन्वेतु नः	६. ५४. ५
पूषा त्वेतश्च्यावयतु	१०. १७. ३
पूषा त्वेतो नयतु	१०. ८५. २६
पूषा राजानमावृणि	१. २३. १४
पूषा विष्णुर्हवनं मे	८. ५४. ४
पूषा सुबन्धुर्दिव आ	६. ५८. ४
पूषेमा आशा अनु	१०. १७. ५
पूष्णश्चक्रं न रिष्यति	६. ५४. ३
पृक्षप्रयजो द्रविणः	३. ७. १०
पृक्षस्य वृष्णो अरुषस्य	६. ८. १
पृक्षे ता विश्वा भुवना	२. ३४. ४
पृक्षो वपुः पितुमान्नित्य	१. १४१. २
पृच्छामि त्वा परमन्तं	१. १६४. ३४
पृच्छे तदेनो वरुण	७. ८६. ३
पृणीयादिन्नाधमानाय	१०. ११७. ५
पृथक्प्रायन्प्रथमा देवहूत	१०. ४४. ६
पृथुपाजा अमर्त्यो	३. २७. ५
पृथू करस्ना बहुला	६. १९. ३
पृथू रथो दक्षिणाया	१. १२३. १
पृदाकुसानुर्यजतो गवेषण	८. १७. १५
पृषदश्वा मरुतः पृश्निमातरः	१. ८९. ७
पृषध्रे मेध्ये मातरिश्वनीन्द्र	८. ५२. २
पृष्टो दिवि धाय्यग्निः	७. ५. २
पृष्टो दिवि पृष्टो अग्निः	१. ९८. २
पौरं चिद्ध्युदप्रुतं पौर	५. ७४. ४
पौरो अश्वस्य पुरुकृद्	८. ६१. ६
प्र ऋभुभ्यो दूतमिव	४. ३३. १
प्र कविर्देववीतये	९. २०. १
प्र कारवो मनना	३. ६. १
प्र काव्यमुशनेव	९. ९७. ७
प्र कृतान्यृजीषिणः	८. ३२. १
प्र कृष्टिहेव शूष एति	९. ७१. २

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्र केतुना बृहता	१०. ८. १
प्र क्षोदसा धायसा	७. ९५. १
प्र गायताभ्यर्चाम	९. ९७. ४
प्र गायत्रेण गायत	९. ६०. १
प्र घा न्वस्य महतो	२. १५. १
प्र चक्रे सहसा सहो	८. ४. ५
प्र चर्षणिभ्यः पृतना	१. १०९. ६
प्र चित्रमर्कं गृणते	६. ६६. ९
प्रचेतसं त्वा कवेऽग्ने	८. १०२. १८
प्र च्यवानाज्जुजुरुषो	५. ७४. ५
प्रजानन्नग्ने तव योनि	१०. ९१. ४
प्रजापतिर्मह्यमेता रराणो	१०. १६९. ४
प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो	१०. १२१. १०
प्रजाभ्यः पुष्टिं विभजन्त	२. १३. ४
प्रजामृतस्य पिप्रतः	८. ६. २
प्रजावता वचसा	१. ७६. ४
प्रजावतीः सूयवसं	६ २८. ७
प्रजा ह तिस्रो अत्याय	८. १०१. १४
प्र जिह्वया भरते वेपो	१०. ४६. ८
प्र ण इन्दो महे तन	९. ४४. १
प्र ण इन्दो महे रण	९. ६६. १३
प्रणीतिभिष्टे हर्यश्व	१०. १०४. ४
प्र णु त्यं विप्रमध्वरेषु	५. १. ७
प्रणेतारं वस्यो अच्छा	८. १६. १०
प्र णो देवी सरस्वती	६. ६१. ४
प्र णो धन्वन्त्विन्दवो	९. ७९. २
प्र तं विवक्मि वक्म्यो	१. १६७. ७
प्र त आशवः पवमान	९. ८६. १
प्र त आश्विनीः पवमान	९. ८६. ४
प्र त इन्द्र पूर्व्याणि प्र	१०. ११२. ८
प्र तत्ते अद्य शिपिविष्ट	७. १००. ५
प्र तत्ते अद्या करणं	६. १८. १३
प्र तदुःशीमे पृथवाने	१०. ९३. १४
प्र तद्विष्णुः स्तवते	१. १५४. २
प्र तद्वोचेयं भव्या	१. १२९. ६
प्र तमिन्द्र नशीमहि	८. ६. ९
प्र तव्यसीं नव्यसीं	१. १४३. १
प्र तव्यसो नमउक्तिं	५. ४३. ९
प्र तां अग्निर्बभसत्तिग्म	४. ५. ४
प्र तार्यायुः प्रतरं नवीयः	१०. ५९. १
प्रति केतवः प्रथमा	७. ७८. १
प्रति घोराणामेतानामयासां	१. १६९. ७
प्रति चक्ष्व वि चक्ष्वेन्द्रश्च	७. १०४. २५
प्रति ते दस्यवे वृक	८. ५६. १
प्रति त्यं चारुमध्वरं	१. १९. १
प्रति त्वा दुहितर्दिव	७. ८१. ३
प्रति त्वाद्य सुमनसो	७. ७८. ५
प्रति त्वा शवसी वदद्	८. ४५. ५
प्रति त्वा स्तोमैरीळते	७. ७६. ६
प्रति द्युतानामरुषासो	७. ७५. ६
प्रति धाना भरत	३. ५२. ८
प्रति नः स्तोमं त्वष्टा	७. ३४. ११
प्रति प्रयाणमसुरस्य	५. ४९. २
प्रति प्र याहीन्द्र	१. १६९. ६
प्रति प्राशव्यां इतः	८. ३१. ६
प्रति प्रियतमं रथं	५. ७५. १
प्रति ब्रवाणि वर्तयते	१०. ९५. १३
प्रति भद्रा अदृक्षत	४. ५२. ५
प्रति मे स्तोममदिति	५. ४२. २
प्रति यत्स्या नीयादर्शि	१. १०४. ५
प्रति यदापो अदृश्रमा	१०. ३०. १३
प्रति व एना नमसा	१. १७१. १
प्रति वां रथं नृपती	७. ६७. १
प्रति वां सूर उदिते मित्रं	७. ६६. ७
प्रति वां सूर उदिते सूक्तै	७. ६५. १
प्रति वो वृषदञ्जयो	८. २०. ९
प्रति श्रुताय वो धृषत्	८. ३२. ४
प्रति षीमग्निर्जरते	७. ७८. २
प्रति ष्टोभन्ति सिन्धवः	१. १६८. ८
प्रति ष्या सूनरी जनी	४. ५२. १
प्रति स्तोमेभिरुषसं	७. ८०. १
प्रति स्पशो वि सृज	४. ४. ३
प्रति स्मरेथां तुजयद्भि	७. १०४. ७
प्रतीचीने मामहनीष्वाः	१०. १८. १४
प्र तु द्रव परि कोशं	९. ८७. १
प्र तुविद्युम्नस्य स्थविरस्य	६. १८. १२
प्र ते अग्नयोऽग्निभ्यो	७. १. ४
प्र ते अग्ने हविष्मती	३. १९. २
प्र ते अश्नोतु कुक्ष्योः	३. ५१. १२
प्र ते अस्या उषसः	[illegible]
प्र ते दिवो न वृष्टयो	९. ६२. २८
प्र ते धारा अत्यण्वानि	९. ८६. ४७
प्र ते धारा असश्चतो	९. ५७. १
प्र ते धारा मधुमती	९. ९७. ३१
प्र ते नावं न समने	२. १६. ७
प्र ते पूर्वाणि करणानि विप्रा	४. १९. १०
प्र ते पूर्वाणि करणानि वोचं	५. ३१. ६
प्र ते बभ्रू विचक्षण	४. ३२. २२
प्र ते मदासो मदिरास	९. ८६. २
प्र ते महे विदथे शंसिषं	१०. ९६. १
प्र ते यक्षि प्र त इयर्मि	१०. ४. १
प्र ते रथं मिथूकृतमिन्द्रो	१०. १०२. १
प्र तेऽरदद्वरुणो यातवे	१०. ७५. २
प्र ते वोचाम वीर्या	४. ३२. १०
प्र ते सोतार ओण्यो	९. १६. १
प्रत्नं रयीणां युजं	६. ४५. १९
प्रत्नं होतारमीड्यं	८. ४४. ७
प्रत्नवज्जनया गिरः	८. १३. ७
प्रत्नान्मानादध्या ये	९. ७३. ६
प्रत्नो हि कमीड्यो	८. ११. १०
प्रत्यग्निरुषसश्चेकितानो	३. ५. १
प्रत्यग्निरुषसामग्रमख्यद्	४. १३. १
प्रत्यग्निरुषसो जातवेदा	४. १४. १
प्रत्यग्ने मिथुना दह	१०. ८७. २४
प्रत्यग्ने हरसा हरः	१०. ८७. २५
प्रत्यङ् देवानां विशः	१. ५०. ५
प्रत्यञ्चमर्कमनयञ्छाची	१०. १५७. ३
प्रत्यर्ची रुशदस्या	१. ९२. ५
प्रत्यर्धिर्यज्ञानामश्वहयो	१०. २६. ५
प्रत्यस्मै पिपीषते	६. ४२. १
प्रत्यस्य श्रेणयो ददृश्र	१०. १४२. ५
प्रत्यु अदर्श्यायत्युच्छन्ती	७. ८१. १
प्रत्वक्षसः प्रतवसो	१. ८७. १
प्र त्वा दूतं वृणीमहे	१. ३६. ३
प्र त्वा नमोभिरिन्दव	९. १६. ५
प्र त्वा मुञ्चामि वरुणस्य	१०. ८५. २४
प्रथमं जातवेदसमग्निं	८. २३. २२
प्रथमभाजं यशसं	६. ४९. ९
प्रथमा हि सुवाचसा	१. १८८. ७
प्रथश्च यस्य तत्रथश्च	१०. १८१. १
प्रथिष्ट यस्य वीरकर्म	१०. ६१. ५
प्रथिष्ट यामन्पृथिवी	५. ५८. ७
प्रदक्षिणिदभि गृणन्ति	२. ४३. १
प्र दानुदो दिव्यो	९. ९७. २३
प्र दीधितिर्विश्ववारा	३. ४. ३
प्र देवं देववीतये	६. १६. ४१
प्र देवं देव्या धिया	१०. १७६. २
प्र देवत्रा ब्रह्मणे गातु	१०. ३०. १
प्र देवमच्छा मधुमन्त	९. ६८. १
प्र दैवोदासो अग्निर्देवाँ	८. १०३. २
प्र द्यावा० ऋतावृधा	१. १५९. १
प्र द्यावा० नमोभिः	७. ५३. १
प्र द्युम्नाय प्र शवसे	८. ९. २०
प्र धन्वा सोम जागृवि	९. १०६. ४
प्र धारा अस्य शुष्मिणो	९. ३०. १
प्र धारा मध्वो अग्रियो	९. ७. २
प्र नः पूषा चरथं	१०. ९२. १३
प्र नव्यसा सहसः	६. ६. १
प्र निम्नेनेव सिन्धवो	९. १७. १
प्र नु यदैषां महिना	१. १८६. ९
प्र नु वयं सुते या	५. ३०. ३
प्र नु वोचा सुतेषु वां	६. ५९. १
प्र नूनं जातवेदसमश्वं	१०. १८८. १
प्र नूनं जायतामयं	१०. ६२. ८
प्र नूनं धावता पृथङ्	८. १००. ७
प्र नूनं ब्रह्मणस्पति	१. ४०. ५
प्र नू महित्वं वृषभस्य	१. ५९. ६
प्र नू स मर्तः शवसा	१. ६४. १३
प्र नेमस्मिन्ददृशे सोमो	१०. ४८. १०
प्र नो यच्छत्वर्यमा	१०. १४१. २
प्रपथे पथामजनिष्ट	१०. १७. ६
प्र पर्वतानामुशती	३. ३३. १
प्र पवमान धन्वसि	९. २४. ३
प्र पस्त्यामदितिं	४. ५५. ३
प्र पीपय वृषभ	३. १५. ६
प्र पुनानस्य चेतसा	९. १६. ४
प्र पुनानाय वेधसे	९. १०३. १
प्र पूतास्तिग्मशोचिषे	१. ७९. १०
प्र पूर्वजे पितरा	७. ५३. २
प्र पूषणं वृणीमहे	८. ४. १५

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्र प्यायस्व प्र स्यन्दस्व ९. ६७. २८
प्रप्र क्षयाय पन्यसे ९. ९. २
प्रप्र पूष्णस्तुविजातस्य १. १३८. १
प्रप्र वस्त्रिष्टुभमिषं ८. ६९. १
प्रप्रायमग्निर्भरतस्य ७. ८. ४
प्रप्रा वो अस्मे स्वयशो १. १२९. ८
प्र बभ्रवे वृषभाय २. ३३. ८
प्र बाहवा सिसृतं ७. ६२. ५
प्र बुध्न्या व ईरते ७. ५६. १४
प्र बोधयोषः पृणतो १. १२४. १०
प्र बोधयोषो अश्विना ८. ९. १७
प्र ब्रह्माणि नभाकवदिन्द्रा ८. ४०. ५
प्र ब्रह्माणो अङ्गिरसो ७. ४२. १
प्र ब्रह्मैतु सदनादृतस्य ७. ३६. १
प्रभङ्गं दुर्मतीनामिन्द्र ८. ४६. १९
प्रभङ्गी शूरो मघवा ८. ६१. १८
प्रभर्ता रथं गव्यन्त ८. २. ३५
प्र भूर्जयन्तं महां १०. ४६. ५
प्र भ्रातृत्वं सुदानवो ८. ८३. ८
प्र मंहिष्ठाय गायत ८. १०३. ८
प्र मंहिष्ठाय बृहते १. ५७. १
प्र मन्दिने पितुमदर्चता १. १०१. १
प्र मन्महे शवसानाय १. ६२. १
प्र मातुः प्रतरं गुह्य १०. ७९. ३
प्र मात्राभी रिरिचे ३. ४६. ३
प्र मा युयुज्रे प्रयुजो १०. ३३. १
प्र मित्रयोर्वरुणयोः ७. ६६. १
प्र मित्राय प्रार्यम्णे ८. १०१. ५
प्र मे नमी साप्य इषे १०. ४८. ९
प्र मे पन्था देवयाना ७. ७६. २
प्र मे विविक्वाँ अविदन् ३. ५७. १
प्र यं राये निनीषसि ८. १०३. ४
प्र य आरुः शितिपृष्ठस्य ३. ७. १
प्र यज्ञ एतु हेत्वो न ७. ४३. २
प्र यज्ञ एत्वानुषगद्या ५. २६. ८
प्रयज्यवो मरुतो ५. ५५. १
प्र यत्ते अग्ने सूरयो १. ९७. ४
प्र यत्पितुः परमान्नीयते १. १४१. ४
प्र यत्सिन्धवः प्रसवं ३. ३६. ६
प्र यदग्नेः सहस्वतो १. ९७. ५
प्र यदित्था परावतः १. ३९. १
प्र यदित्था महिना १. १७३. ६
प्र यद्भन्दिष्ठ एषां १. ९७. ३
प्र यद्रथेषु पृषती १. ८५. ५
प्र यद्वस्त्रिष्टुभमिषं ८. ७. १
प्र यद्वहध्वे मरुतः १०. ७७. ६
प्र यद्वहेथे महिना १. १८०. ९
प्र यद्वां मित्रावरुणा ६. ६७. ९
प्रयन्तमित्परि जारं १. १५२. ४
प्र यन्ति यज्ञं विपयन्ति ७. २१. २
प्र यन्तु वाजास्तविषी ३. २६. ४
प्र यमन्तर्वृषसवासो १०. ४२. ८
प्र याः सिस्रते सूर्यस्य १०. ३५. ५
प्र या घोषे भृगवाणे १. १२०. ५
प्रयाजान्मे अनुयाजाँश्च १०. ५१. ८
प्र या जिगाति खर्गलेव ७. १०४. १७
प्र यात शीभमाशुभिः १. ३७. १४
प्र याभिर्यासि दाश्वांसं ७. ९२. ३
प्र या महिम्ना महिनासु ६. ६१. १३
प्र युजो वाचो अग्रियो ९. ७. ३
प्रयुञ्जती दिव एति ५. ४७. १
प्र ये गावो न भूर्णय ९. ४१. १
प्र ये गृहादममदुस्त्वाया ७. १८. २१
प्र ये जाता महिना ये ५. ८७. २
प्र ये दिवः पृथिव्या १०. ७७. ३
प्र ये दिवो बृहतः ५. ८७. ३
प्र ये धामानि पूर्व्या ४. ५५. २
प्र ये मित्रं प्रार्यमणं १०. ८९. ९
प्र ये मे वन्ध्वेषे गां ५. ५२. १६
प्र ये ययुरवृकासो ७. ७४. ६
प्र ये वसुभ्य ईवदा ५. ४९. ५
प्र ये शुम्भन्ते जनयो १. ८५. १
प्र यो ननक्षे अभ्योजसा ८. ५१. ८
प्र यो वां मित्रावरुणा ८. १०१. ३
प्र राजा वाचं जनयन् ९. ७८. १
प्र रुद्रेण ययिना यन्ति १०. ९२. ५
प्र रेभ एत्यति वार ९. ८६. ३१
प्र वः पान्तं रघुमन्यवो १. १२२. १
प्र वः पान्तमन्धसो १. १५५. १
प्र वः शंसाम्यद्रुहः ८. २७. १५
प्र वः शर्धाय घृष्वये १. ३७. ४
प्र वः शुक्राय भानवे ७. ४. १
प्र वः सखायो अग्नये ६. १६. २२
प्र वः सतां ज्येष्ठतमाय २. १६. १
प्र वः स्पळक्रन्त्सुविताय ५. ५९. १
प्र व इन्द्राय बृहते ८. ८९. ३
प्र व इन्द्राय मादनं ७. ३१. १
प्र व उग्राय निष्टुरे ८. ३२. २७
प्र व एको मिमय २. २९. ५
प्र व एते सुयुजो याम ५. ४४. ४
प्रवता हि क्रतूनामा ४. ३१. ५
प्रवत्ते अग्ने जनिमा १०. १४२. २
प्रवत्वतीयं पृथिवी ५. ५४. ९
प्रवद्यामना सुवृता १. ११८. ३
प्र वर्तय दिवो अश्मान ७. १०४. १९
प्र वां दंसांस्यश्विना १. ११६. २५
प्र वां निचेरुः ककुहो १. १८१. ५
प्र वां महि द्यवी ४. ५६. ५
प्र वां रथो मनोजवा ७. ६८. ३
प्र वां शरद्वान्वृषभो १. १८१. ६
प्र वां स मित्रावरुणा ७. ६१. २
प्र वां स्तोमाः सुवृक्तयो ८. ८. २२
प्र वाचमिन्दुरिष्यति ९. १२. ६
प्रवाच्यं वचसः किं मे ४. ५. ८
प्रवाच्यं शश्वधा वीर्यं ३. ३३. ७
प्र वाजमिन्दुरिष्यति ९. ३५. ४
प्र वाता इव दोधत १०. ११९. २
प्र वाता वान्ति पतयन्ति ५. ८३. ४
प्र वामन्धांसि मद्यान्यस्थुररं ७. ६८. २
प्र वामर्चन्त्युक्थिनो ३. १२. ५
प्र वामवोचमश्विना ४. ४५. ७
प्र वामश्नोतु सुष्टुति १. १७. ९
प्र वायुमच्छा बृहती ६. ४९. ४
प्र वावृजे सुप्रया ७. ३९. २
प्र विश्वसामन्नत्रिवदर्चा ५. २२. १
प्र विष्णवे शूषमेतु १. १५४. ३
प्र वीरमुग्रं विविचिं ८. ५०. ६
प्र वीरया शुचयो ७. ९०. १
प्र वीराय प्र तवसे ६. ४९. १२
प्रवृण्वन्तो अभियुजः ९. २१. २
प्र वेधसे कवये वेद्याय ५. १५. १
प्र वेपयन्ति पर्वतान् १. ३९. ५
प्र वो ग्रावाणः सविता १०. १७५. १
प्र वोऽच्छा रिरिचे १०. ३२. ५
प्र वो देवं चित्सहसान ७. ७. १
प्र वो देवायाग्नये ३. १३. १
प्र वो धियो मन्द्रयुवो ९. ८६. १७
प्र वो भ्रियन्त इन्दवो १. १४. ४
प्र वो मरुतस्तविषा ५. ५४. २
प्र वो महीमरमतिं ७. ३६. ८
प्र वो महे मतयो ५. ८७. १
प्र वो महे मन्दमाना १०. ५०. १
प्र वो महे महि नमो १. ६२. २
प्र वो महे महिवृधे ७. ३१. १०
प्र वो महे सहसा १. १२७. १०
प्र वो मित्राय गायत ५. ६८. १
प्र वो यज्ञेषु देवयन्तो ७. ४३. १
प्र वो यह्वं पुरूणां १. ३६. १
प्र वो रयिं युक्ताश्वं ५. ४१. ५
प्र वो वाजा अभिद्यवो ३. २७. १
प्र वो वायुं रथयुजं कृणुध्वं ५. ४१. ६
प्र वो वायुं रथयुजं पुरंधिं १०. ६४. ७
प्र शंतमा वरुणं दीधिती ५. ४२. १
प्रशंसमानो अतिथिर्न ८. १९. ८
प्र शंसा गोष्वघ्न्यं १. ३७. ५
प्र शर्ध आर्त प्रथमं ४. १. १२
प्र शर्धाय मारुताय ५. ५४. १
प्र शुक्रासो वयोजुवो ९. ६५. २६
प्र शुक्रैतु देवी मनीषा ७. ३४. १
प्र शुन्ध्युवं वरुणाय ७. ८८. १
प्र शोशुचत्या उषसो १०. ८९. १२
प्र श्यावाश्व धृष्णुयार्चा ५. ५२. १
प्र श्येनो न मदिर ६. २०. ६
प्र सक्षणो दिव्यः कण्व ५. ४१. ४
प्र स क्षयं तिरते वि ८. २७. १६
प्र सद्यो अग्ने अत्ये ५. १. ९
प्र सप्तगुमृतधीतिं १०. ४७. ६
प्र सप्तवध्रिराशसा ८. ७३. ९
प्र सप्तहोता सनका ३. २९. १४
प्र स मित्र मर्तो अस्तु ३. ५९. २

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्र सम्राजं चर्षणीना ८. १६. १
प्र सम्राजे बृहते मन्म ६. ६८. ९
प्र सम्राजे बृहदर्चा ५. ८५. १
प्र सम्राजो असुरस्य ७. ६. १
प्रसवे त उदीरते ९. ५०. २
प्र ससाहिषे पुरुहूत १०. १८०. १
प्र साकमुक्षे अर्चता ७. ५८. १
प्र सा क्षितिरसुर या १. १५१. ४
प्र सा वाचि सुष्टुति ७. ५८. ६
प्र सीमादित्यो असृजद् २. २८. ४
प्र सु ग्मन्ता धियसानस्य १०. ३२. १
प्र सु ज्येष्ठं निचिराभ्यां १. १३६. १
प्र सुन्वानस्यान्धसो ९. १०१. १३
प्र सुमेधा गातुविद् ९. ९२. ३
प्र सु व आपो महिमान १०. ७५. १
प्र सुवान इन्दुरक्षाः ९. ६६. २८
प्र सुवानो धारया ९. ३४. १
प्र सु विश्वान्रक्षसो १. ७६. ३
प्र सु श्रुतं सुराधसमर्चा ८. ५०. १
प्र सु ष विभ्यो मरुतो ४. २६. ४
प्र सुष्टुतिः स्तनयन्तं ५. ४२. १४
प्र सु स्तोमं भरत ८. १००. ३
प्र सू त इन्द्र प्रवता ३. ३०. ६
प्रसूतो भक्षमकरं १०. १६७. ४
प्र सू न एत्वध्वरो ८. २७. ३
प्र सूनव ऋभूणां १०. १७६. १
प्र सू महे सुशरणाय ५. ४२. १३
प्र सेनानीः शूरो अग्रे ९. ९६. १
प्र सो अग्ने तवोतिभिः ८. १९. ३०
प्र सोता जीरो अध्वरे ७. ९२. २
प्र सोम देववीतये ९. १०७. १२
प्र सोम मधुमत्तमो ९. ६३. १६
प्र सोम याहि धारया ९. ६६. ७
प्र सोमस्य पवमान ९. ८१. १
प्र सोमाय व्यश्ववत् ९. ६५. ७
प्र सोमासः स्वाध्यः ९. ३१. १
प्र सोमासो अधन्विषुः ९. २४. १
प्र सोमासो मदच्युतः ९. ३२. १
प्र सोमासो विपश्चितो ९. ३३. १
प्र सोमो अति धारया ९. ३०. ४
प्र स्कम्भदेष्णा अनवभ्र १. १६६. ७
प्रस्तुतिर्वां धाम न १. १५३. २
प्रस्तोक इन्नु राधसस्त ६. ४७. २२
प्र स्तोषदुप गासिष ८. ८१. ५
प्र स्वानासो रथा ९. १०. १
प्र हंसासस्तृपलं मन्यु ९. ९७. ८
प्र हि क्रतुं वृहथो यं २. ३०. ६
प्र हि त्वा पूषन्नजिरं १. १३८. २
प्र हिन्वानास इन्दवो ९. ६४. १६
प्र हिन्वानो जनिता ९. ९०. १
प्र हि रिरिक्ष ओजसा ८. ८८. ५
प्र होता जातो महान् १०. ४६. १
प्र होत्रे पूर्व्यं वचो ३. १०. ५
प्र ह्यच्छा मनीषाः स्पार्हा १०. २६. १
प्राक्तुभ्य इन्द्रः प्र वृधो १०. ८९. ११
प्राग्नये तवसे भरध्वं ७. ५. १
प्राग्नये बृहते यज्ञियाय ५. १२. १
प्राग्नये वाचमीरय १०. १८७. १
प्राग्नये विश्वशुचे धियन्धे ७. १३. १
प्राग्रुवो नभन्वो न वक्वा ४. १९. ७
प्राचीनं बर्हिः प्रदिशा १०. ११०. ४
प्राचीनं बर्हिरोजसा १. १८८. ४
प्राचीनो यज्ञः सुधितं ७. ७. ३
प्राचीमु देवाश्विना धियं ७. ६७. ५
प्राञ्चं यज्ञं चकृम ३. १. २
प्रातः सुतमपिबो ४. ३५. ७
प्रातरग्निं प्रातरिन्द्रं ७. ४१. १
प्रातरग्निः पुरुप्रियो ५. १८. १
प्रातर्जरेथे जरणेव १०. ४०. ३
प्रातर्जितं भगमुग्रं ७. ४१. २
प्रातर्देवीमदितिं ५. ६९. ३
प्रातर्यजध्वमश्विना ५. ७७. २
प्रातर्यावभिरा गतं ८. ३८. ७
प्रातर्यावाणा प्रथमा ५. ७७. १
प्रातर्यावाणा रथ्येव २. ३९. २
प्रातर्याव्णः सहस्कृत १. ४५. ९
प्रातर्युजं नासत्याधि १०. ४१. २
प्रातर्युजा वि बोधया १. २२. १
प्राता रत्नं प्रातरित्वा १. १२५. १
प्राता रथो नवो योजि [illegible]
प्रान्यच्चक्रमबृहः सूर्यस्य ५. २९. १०
प्राव स्तोतारं मघवन् ८. ३६. २
प्रावीविपद्वाच ऊर्मिं ९. ९६. ७
प्रावेपा मा बृहतो १०. ३४. १
प्रास्तौदृष्वौजा ऋष्वेभि १०. १०५. ६
प्रास्मा ऊर्जं घृतश्चुत ८. ८. १६
प्रास्मै गायत्रमर्चत ८. १. ८
प्रास्मै हिनोत मधुमन्त १०. ३०. ८
प्रास्य धारा अक्षरन् ९. २९. १
प्रास्य धारा बृहतीरसृग्र ९. ९६. २२
प्रियं दुग्धं न काम्य ५. १९. ४
प्रियं श्रद्धे ददतः १०. १५१. २
प्रियमेधवदत्रिवज्जातवेदो १. ४५. ३
प्रिया तष्टानि मे कपि १०. ८६. ५
प्रियास इत्ते मघवन्नभिष्टौ ७. १९. ८
प्रियो नो अस्तु विश्पति १. २६. ७
प्रीणीताश्वान्हितं जयाय १०. १०१. ७
प्रेतां यज्ञस्य शंभुवा २. ४१. १९
प्रेता जयता नर इन्द्रो १०. १०३. १३
प्रेतो मुञ्चामि नामुतः १०. ८५. २५
प्रेदं ब्रह्म वृत्रतूर्येष्वाविथ ८. ३७. १
प्रेद्धो अग्ने दीदिहि ७. १. ३
प्रेद्वग्निर्वावृधे स्तोमेभि ३. ५. २
प्रेन्द्रस्य वोचं प्रथमा ७. ९८. ५
प्रेन्द्राग्निभ्यां सुवचस्या १०. ११६. ९
प्रेरय सूरो अर्थं न पारं १०. २९. ५
प्रेष्ठं वो अतिथिं गृणीषे १. १८६. ३
प्रेष्ठं वो अतिथिं स्तुषे ८. ८४. १
प्रेष्ठमु प्रियाणां स्तुह्या ८. १०३. १०
प्रेहि प्रेहि पथिभिः १०. १४. ७
प्रेह्यभीहि धृष्णुहि १. ८०. ३
प्रैतु ब्रह्मणस्पतिः १. ४०. ३
प्रैते वदन्तु प्र वयं १०. ९४. १
प्रैष स्तोमः पृथिवी ५. ४२. १६
प्रैषामज्मेषु विथुरेव १. ८७. ३
प्रो अयासीदिन्दुरिन्द्रस्य ९. ८६. १६
प्रो अश्विनाववसे कृणुध्वं १. १८६. १०
प्रो अस्मा उपस्तुतिं ८. ६२. १
प्रोग्रां पीतिं वृष्ण इयर्मि १०. १०४. ३
[illegible] ६. २१. ९
प्रो त्ये अग्नयोऽग्निषु ५. ६. ६
प्रोथदश्वो न यवसे ७. ३. २
प्रो द्रोणे हरयः कर्मा ६. ३७. २
प्रोरोर्मित्रावरुणा पृथिव्याः ७. ६१. ३
प्रोष्ठेशया वह्येशया ७. ५५. ८
प्रो ष्वस्मै पुरोरथ १०. १३३. १
प्रो स्य वह्निः पथ्याभि ९. ८९. १
बट् सूर्य श्रवसा महाँ ८. १०१. १२
बळस्य नीथा वि पणेश्च १०. ९२. ३
बळित्था तद्वपुषे धायि १. १४१. १
बळित्था देव निष्कृत ५. ६७. १
बळित्था पर्वतानां खिद्रं ५. ८४. १
बळित्था महिमा वामि ६. ५९. २
बळृत्वियाय धाम्ना ८. ६३. ११
बण्महाँ असि सूर्य ८. १०१. ११
बतो बतासि यम नैव १०. १०. १३
बभ्रवे नु स्वतवसे ९. ११. ४
बभ्राणः सूनो सहसो ३. १. ८
बभ्रुरेको विषुणः सूनरो ८. २९. १
बर्हिः प्राचीनमोजसा ९. ५. ४
बर्हिर्वा यत्स्वपत्याय १. ८३. ६
बर्हिषदः पितर ऊत्यर्वा १०. १५. ४
बलं धेहि तनूषु नो ३. ५३. १८
बलविज्ञायः स्थविरः १०. १०३. ५
बहवः सूरचक्षसो ७. ६६. १०
बह्वीः समा अकरमन्त १०. १२४. ४
बह्वीनां पिता बहुरस्य ६. ७५. ५
बाधसे जनान्वृषभेव ६. ४६. ४
बिभया हि त्वावत ८. ४५. ३५
बिभ्रद्द्रापिं हिरण्ययं १. २५. १३
बीभत्सूनां सयुजं १०. १२४. ९
बृबदुक्थं हवामहे ८. ३२. १०
बृहती इव सूनवे १. ५९. ४
बृहत्सुम्नः प्रसवीता ४. ५३. ६
बृहत्स्वश्चन्द्रममवद् १. ५२. ९
बृहदिन्द्राय गायत ८. ८९. १
बृहदु गायिषे वचो ७. ९६. १
बृहद्भिरग्ने अर्चिभिः ६. ४८. ७
बृहद्वदन्ति मदिरेण १०. ९४. ४
बृहद्वयो बृहते तुभ्यमग्ने ५. ४३. १५

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

बृहद्वयो मघवन्बृधो ७. ५८. ३
बृहद्वयो हि भानवे ५. १६. १
बृहद्रूथं मरुतो देवं ८. १८. २०
बृहन्त इद्भानवो ३. १. १४
बृहन्त इन्नु ये ते २. ११. १६
बृहन्नेव गर्भरेषु १०. १०६. ९
बृहन्मघवच्छायो अपताशो १०. २७. १४
बृहस्पिदिध्म एषां भूरि ८. ४५. २
बृहस्पत इन्द्र वर्धतं ४. ५०. ११
बृहस्पतिः प्रथमं ४. ५०. ४
बृहस्पतिः समजयद् ६. ७३. ३
बृहस्पतिरमत हि १०. ६८. ७
बृहस्पतिर्नः परि पातु १०. ४२. ११
१०. ४३. ११
१०. ४४. ११
बृहस्पतिर्नयतु दुर्गहा १०. १८२. १
बृहस्पते अति यदर्यो २. २३. १५
बृहस्पते उपस्व नो ३. ६२. ४
बृहस्पते तपुषाभ्रेव २. ३०. ४
बृहस्पते परि दीया १०. १०३. ४
बृहस्पते प्रति मे देवता १०. ९८. १
बृहस्पते प्रथमं वाचो १०. ७१. १
बृहस्पते या परमा ४. ५०. ३
बृहस्पते युवमिन्द्रश्च ७. ९७. १०
७. ९८. ७
बृहस्पते सदमिन्नः १. १०६. ५
बोधयन्ना हरिभ्यां ४. १५. ७
बोधा मे अस्य वचसो १. १४७. २
बोधा सु मे मघवन् ७. २२. ३
बोधिन्मनसा रथ्येषिरा ५. ७५. ५
बोधिन्मना इहवसु नो ८. ९३. १८
ब्रह्म गामश्वं जनयन्त १०. ६५. ११
ब्रह्म च ते जातवेदो १०. ४. ७
ब्रह्मचारी चरति १०. १०९. ५
ब्रह्म जिन्वतमुत ८. ३५. १६
ब्रह्मणस्पतिरेता सं १०. ७२. २
ब्रह्मणस्पते त्वमस्य २. २३. १९
२. २४. १६
ब्रह्मणस्पतेरभवत्पुरोहितो २. २४. १४
ब्रह्मणस्पते सुयमस्य २. २४. १५
ब्रह्मणाग्निः संविदानो १०. १६२. १
ब्रह्मणा ते ब्रह्मयुजा ३. ३५. ४
ब्रह्मन्वीर ब्रह्मकृतिं ७. २९. २
ब्रह्म प्रजावद्वा भर ६. १६. ३६
ब्रह्मा कृणोति वरुणो १. १०५. १५
ब्रह्माणं ब्रह्मवाहसं ६. ४५. ७
ब्रह्मा ण इन्द्रोप याहि ७. २८. १
ब्रह्माणस्त्वा वयं युजा ८. १७. ३
ब्रह्माणि मे मतयः १. १६५. ४
ब्रह्माणि हि चकृषे ६. २३. ६
ब्रह्मा त इन्द्र गिर्वणः ८. ९०. ३
ब्रह्मा देवानां पदवीः ९. ९६. ६
ब्राह्मणादिन्द्र राधसः १. १५. ५
ब्राह्मणासः पितरः ६. ७५. १०
ब्राह्मणासः सोमिनो ७. १०३. ८
ब्राह्मणासो अतिरात्रे ७. १०३. ७
ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् १०. ९०. १२
भगं धियं वाजयन्तः २. ३८. १०
भग एव भगवाँ अस्तु ७. ४१. ५
भग प्रणेतर्भग सत्य ७. ४१. ३
भगभक्तस्य ते वय १. २४. ५
भगस्य स्वसा वरुणस्य १. १२३. ५
भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम १. ८९. ८
भद्रं ते अग्ने सहसिन् ४. ११. १
भद्रं नो अपि वातय मनः १०. २०. १
भद्रं नो अपि वातय मनो १०. २५. १
भद्रंभद्रं न आ भरे ८. ९३. २८
भद्रं मनः कृणुष्व ८. १९. २०
भद्रं वै वरं वृणते १०. १६४. २
भद्रमिदं रुशमा अग्ने ५. ३०. १२
भद्रमिद्भद्रा कृणवत् ७. ९६. ३
भद्रा अग्नेर्वैश्वस्य १०. ६०. १
भद्रा अश्वा हरितः १. ११५. ३
भद्रा ते अग्ने स्वनीक ४. ६. ६
भद्रा ते हस्ता सुकृतोत ४. २१. ९
भद्रा दहस्र दर्विया ६. ६४. २
भद्रा वस्त्रा समन्या ९. ९७. २
भद्रो नो अग्निराहुतो ८. १९. १९
भद्रो भद्रया सचमान १०. ३. ३
भरध्वदि विरतो वेहिजुह्वत १०. १७०. ३
भरद्वाजाय सप्तयः ६. १६. ३३
भरद्वाजायाव धुक्षत ६. ४८. १३
भरामेध्मं कृणवामा १. ९४. ४
भराय सु भरत भाग १०. १००. २
भरेषु हव्यो नमसोप २. २३. १३
भरेष्विन्द्रं सुहवं १०. ६३. ९
भर्गो ह नामोत यस्य १०. ६१. १४
भवा द्युम्नी वाघ्यश्वोत १०. ६९. ५
भवा नो अग्नेऽवितोत १०. ७. ७
भवा नो अग्ने सुमना ३. १८. १
भवा मित्रो न शेव्यो १. १५६. १
भवा वरूथं गृणते १. ५८. ९
भवा वरूथं मघवन् ७. ३२. ७
भारतीळे सरस्वति १. १८८. ८
भारती पवमानस्य ९. ५. ८
भास्वती नेत्री सूनृतानां १. ९२. ७
भास्वती नेत्री सूनृताना १. ११३. ४
भिनत्पुरो नवतिमिन्द्र १. १३०. ७
भिनद्गिरिं शवसा वज्र ४. १७. ३
भिनद्बलमङ्गिरोभि २. १५. ८
भिन्धि विश्वा अप द्विषः ८. ४५. ४०
भीताय नाधमानाय ५. ७८. ६
भीमो विवेषायुधेभि ७. २१. ४
भुज्युमंहसः पिपृथो १०. ६५. १२
भुरन्तु नो यशसः १०. ७६. ६
भुवत्वितस्य मर्ज्यो ९. ३४. ४
भुवनस्य पितरं गीर्भि ६. ४९. १०
भुवश्चक्षुर्मह क्रतस्य १०. ८. ५
भुवस्त्वमिन्द्र ब्रह्मणा १०. ५०. ४
भुवो जनस्य दिव्यस्य ६. २२. ९
भुवो यज्ञस्य रजसश्च १०. ८. ६
भुवोऽविता वामदेवस्य ४. १६. १८
भूम्या अन्तं पर्येक १०. ११४. १०
भूप इद्वृधे वीर्यायं ६. ३०. १
भूपसा वज्रमचरत् ४. २४. ९
भूयाम ते सुमतौ ८. ३. २
भूयामो पु त्वावतः ४. ३२. ६
भूरि दे अचरन्ती १. १८५. २
भूरिकर्मणे वृषभाय १. १०३. ६
भूरिकर्मणे वृषभाय १. १६५. ७
भूरि चक्र मरुतः ७. ५६. २३
भूरि त इन्द्र वीर्यं १. ५७. ५
भूरि दक्षेभिर्वचनेभि १०. ११३. ९
भूरिदा भूरि देहि नो ४. ३२. २०
भूरिदा ह्यसि श्रुतः ४. ३२. २१
भूरि नाम वन्दमानो ५. ३. १०
भूरिभिः समह ऋषिभि ८. ७०. १४
भूरि हि ते सवना ७. २२. ६
भूरीणि भद्रा नर्येषु १. १६६. १०
भूरीणि हि त्वे दधिरे ३. १९. ४
भूरीदिन्द्र उदिनक्षन्त १०. ८. ९
भूरीदिन्द्रस्य वीर्यं ८. ५५. १
भृज्जन्न उत्तानपदो १०. ७२. ४
भूपन्न योऽधि बभ्रुषु १. १४०. ६
भृमिश्चिद्धासि तृतुजिरा ४. ३२. २
भोजं त्वामिन्द्र वयं २. १७. ८
भोजमश्वाः सुष्टुवाहो १०. १०७. ११
भोजा जिग्युः सुरभिं १०. १०७. ९
भोजायाश्वं सं मृजन्त्यायुं १०. १०७. १०
मꣳसीमहि त्वा वयमस्माकं १०. २६. ४
मंहिष्ठं वो मघोनां ५. ३९. ४
मंहिष्ठा वाजसातमेपयन्ता ८. ५. ५
मक्षू कनायाः सख्यं नवग्वा १०. ६१. १०
मक्षू कनायाः सख्यं नवीयो १०. ६१. ११
मक्षू ता त इन्द्र दानाप्रस १०. २२. ११
मक्षू देववतो रथः ८. ३१. १५
मक्षू न येषु दोहसे ६. ६६. ५
मक्षू न वह्निः प्रजाया १०. ६१. ९
मक्षू हि ष्मा गच्छथ ४. ४३. ३
मखस्य ते तविषस्य ३. ३४. २
मघोनः स्म वृत्रहत्येषु ७. ३२. १५
मघोन आ पवस्व नो ९. ८. ७
मतयः सोमपामुरुं ३. ४१. ५
मती बुधो धिया हितः ९. ४४. २
मत्सि नो वस्यइष्टय १. १७६. १
मत्सि वायुमिष्टये ९. ९७. ४२
मत्सि सोम वरुणं ९. ९०. ५
मत्स्यपायि ते महः १. १७५. १
मत्स्वा सुशिप्र मन्दिभिः १. ९. ३
मत्स्वा सुशिप्र हरिव ८. ९९. २

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मथीद्यदीं विभृतो १. ७१. ४
मथीद्यदीं विष्टो १. १४८. १
मदच्युत्क्षेति सादने ९. १२. ३
मदेनेषितं मदमुग्रमुग्रेण ८. १. २१
मदेमदे हि नो ददिर्यूथा १. ८१. ७
मधु नक्तमुतोषसो १. ९०. ७
मधु नो द्यावापृथिवी ६. ७०. ५
मधुपृष्ठं घोरमयासमश्वं ९. ८९. ४
मधुमतीरोषधीर्द्याव ४. ५७. ३
मधुमन्तं तनूनपाद्यज्ञं १. १३. २
मधुमन्मे परायणं १०. २४. ६
मधुमान्नो वनस्पति १. ९०. ८
मधु वाता ऋतायते १. ९०. ६
मधोर्धारामनु क्षर ९. १७. ८
मध्या यत्कर्त्वमभव १०. ६१. ६
मध्ये होता दुरोणे ६. १२. १
मध्वः पिबतं मधुपेभि ४. ४५. ३
मध्वः सूदं पवस्व ९. ९७. ४४
मध्वः सोमस्याश्विना १. ११९. १
मध्व ऊ षु मधूयुवा ५. ७३. ८
मध्वो वो नाम मारुतं ७. ५७. १
मनीषिणः प्र भरध्वं १०. १११. १
मनीषिभिः पवते पूर्व्यः ९. ८६. २०
मनुष्वत्त्वा नि धीमहि ५. २१. १
मनुष्वदग्ने अङ्गिरस्व १. ३१. १७
मनुष्वदिन्द्र सवनं ३. ३२. ५
मनो अस्या अन १०. ८५. १०
मनोजवंसा वृषणा ८. २२. १६
मनोजवा अयमान ८. १००. ८
मनो न येषु हवनेषु १०. ६१. ३
मनो न योऽध्वनः १. ७१. ९
मनो न्वा हुवामहे १०. ५७. ३
मन्त्रमखर्वं सुधितं ७. ३२. १३
मन्यता नरः कवि ३. २९. ५
मन्दन्तु त्वा मघवन् ८. ४. ४
मन्दन्तु त्वा मन्दिनो १. १३४. २
मन्दमान ऋतादधि १०. ७३. ५
मन्दस्व होत्रादनु २. ३७. १
मन्दस्वा सु स्वर्णर ८. ६. ३९
मन्दामहे दशतयस्य १. १२२. १३
मन्दिष्ट यदुशने काव्ये १. ५१. ११
मन्द्रं होतारं शुचि ३. २. १५
मन्द्रं होतारमुशिजो नमोभि १०. ४६. ४
मन्द्रं होतारमुशिजो यविष्ठ ७. १०. ५
मन्द्रं होतारमृत्विजं ८. ४४. ६
मन्द्रजिह्वा जुगुर्वणी १. १४२. ८
मन्द्रया सोमधारया ५. ६ १
मन्द्रस्य कवेर्दिव्यस्य ६. ३९. १
मन्द्रस्य रूपं विविदु ९. ६८. ६
मन्द्रा कृणुध्वं धिय आ १०. १०१. २
मन्द्रो होता गृहपतिरग्ने १. ३६. ५
मन्युरिन्द्रो मन्युरेवास १०. ८३. २
मन्ये त्वा यज्ञियं ८. ९६. ४
ममच्चन ते मघवन् ४. १८. ९
ममच्चन त्वा युवतिः ४. १८. ८
ममत्तु त्वा दिव्यः सोम १०. ११६. ३
ममत्तु नः परिज्मा १. १२२. ३
मम त्वा सूर उदिते ८. १. २९
मम देवा विहवे सन्तु १०. १२८. २
मम द्विता राष्ट्रं ४. ४२. १
मम पुत्राः शत्रुहणो १०. १५९. ३
मम ब्रह्मेन्द्र याह्यच्छा २. १८. ७
ममाग्ने वर्चो विहवेष्वस्तु १०. १२८. १
मया सो अन्नमत्ति यो १०. १२५. ४
मयि देवा द्रविणमा १०. १२८. ३
मयो दधे मेधिरः ३. १. ३
मयोभूर्वातो अभि १०. १६९. १
मरुतः पिबत ऋतुना १. १५. २
मरुतो मारुतस्य न ८. २०. २३
मरुतो यद्ध वो दिवः ८. ७. ११
मरुतो यद्ध वो बलं १. ३७. १२
मरुतो यस्य हि क्षये १. ८६. १
मरुतो वीळुपाणिभि १. ३८. ११
मरुत्वतो अप्रतीतस्य ५. ४२. ६
मरुत्वन्तं वृषभं वावृधान ३. ४७. ५
६. १९. ११
मरुत्वन्तं हवामह १. २३. ७
मरुत्वन्तमृजीषिण ८. ७६. ५
मरुत्सु वो दधीमहि ५. ५२. ४
मरुत्स्तोत्रस्य वृजनस्य १. १०१. ११
मरुत्वाँ इन्द्र मीढ्वः ८. ७६. ७
मरुत्वाँ इन्द्र वृषभो ३. ४७. १
मर्तश्चिद्वो नृतवो ८. २०. २२
मर्ता अमर्त्यस्य ते ८. ११. ५
मर्माणि ते वर्मणा ६. ७५. १८
मर्मृजानास आयवो ९. ६४. १७
मर्यो न शुभ्रस्तन्वं ९. ९६. २०
महः स राय एषते १. १४९. १
महः सु वो अरमिषे ८. ४६. १७
मह उग्राय तवसे ८. ९६. १०
महत्तत्सोमो महिष ९. ९७. ४१
महत्तदुल्बं स्थविरं १०. ५१. १
महत्तद्वः कवयश्चारु ३. ५४. १७
महत्तन्नाम गुह्यं पुरु १०. ५५. २
महदद्य महतामा १०. ३६. ११
महश्चर्कर्म्यर्वतः क्रतुप्रा ४. ३९. २
महश्चित्त्वमिन्द्र यत १. १६९. १
महश्चिदग्न एनसो ४. १२. ५
महाँ अमत्रो वृजने ३. ३६. ४
महाँ असि महिष ३. ४६. २
महाँ असि सोम ज्येष्ठ २. ६६. १६
महाँ अस्यध्वरस्य ७. ११. १
महाँ आदित्यो नमसोप ३. ५९. ५
महाँ इन्द्रः परश्च नु १. ८. ५
महाँ इन्द्रो नृवदा ६. १९. १
महाँ इन्द्रो य ओजसा ८. ६. १
महाँ उग्रो वावृधे ३. ३६. ५
महाँ उतासि यस्य ७. ३१. ७
महाँ ऋषिर्देवजा ३. ५३. ९
महान्तं कोशमुदचा ५. ८३. ८
महान्तं त्वा महीरन्वापो ९. २. ४
महान्तं महिना वयं ८. १२. २३
महान्ता मित्रावरुणा ८. २५. ४
महान्तो मह्ना विभ्वो १. १६६. ११
महान्त्सधस्थे ध्रुव ३. ६. ४
महिकेरव ऊतये १. ४५. ४
महि क्षेत्रं पुरु श्चन्द्रं ३. ३१. १५
महि ज्योतिर्निहितं ३. ३०. १४
महि ज्योतिर्बिभ्रतं १०. ३७. ८
महि श्रीणामवोऽस्तु १०. १८५. १
महि त्वाष्ट्रमूर्जयन्ती ३. ७. ४
महि द्यावापृथिवी १०. ९३. १
महि प्सरः सुकृतं सोम्यं ९. ७४. ३
महि महे तवसे दीध्ये ५. ३३. १
महि महे दिवे अर्चा ३. ५४. २
महिम्न एषां पितर १०. ५६. ४
महि राधो विश्वजन्यं ६. ४७. २५
महि वो० मित्र दाशुषे ८. ४७. १
महि वो० मित्रार्यमन् ८. ६७. ४
महिषासो मायिनश्चित्र १. ६४. ७
मही अत्र महिना वार १. १५१. ५
मही द्यावापृथिवी इह ४. ५६. १
मही द्यौः पृथिवी च न १. २२. १३
मही मित्रस्य साधथ ४. ५६. ७
महीमे अस्य वृषनाम ९. ९७. ५४
मही यदि धिषणा ३. ३१. १३
महीरस्य प्रणीतयः० नास्य ६. ४५. ३
महीरस्य प्रणीतयः० विश्वा ८. १२. २१
मही वामूतिरश्विना १. ११७. १९
मही समैरच्चम्वा ३. ५५. २०
महे चन त्वामद्रिवः ८. १. ५
महे नो अद्य बोधयोषो ५. ७९. १
महे नो अद्य सुविताय ७. ७५. २
महे यत्पित्र ईं रसं १. ७१. ५
महे शुल्काय वरुणस्य ७. ८२. ६
महो अग्नेः समिधानस्य १०. ३६. १२
महो अर्णः सरस्वती १. ३. १२
महो देवान्यजसि ६. ४८. ४
महो द्रुहो अप विश्वायु ६. २०. ५
महो नो अग्ने सुवितस्य ७. १. २४
महो नो राय आ भर ९. ६१. २६
महो महानि पनयन्त्य ३. ३४. ६
महो यस्पतिः शवसो १०. २२. ३
महो रुजामि बन्धुता ४. ४. ११
महो विश्वाँ अभि षतः ८. २३. २६
मह्यं त्वष्टा वज्रमतक्ष १०. ४८. ३
मह्यं यजन्तु मम १०. १२८. ४
मह्या ते सख्यं वश्मि ३. ३१. १४
मां चत्वार आशवः ८. ७४. १४
मां देवा दधिरे हव्यवाह १०. ५२. ४

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मां धुरिन्द्रं नाम देवता	१०. ४९. २
मां नरः स्वश्वा वाजयन्तो	४. ४२. ५
मा कस्मै धातमभ्यमित्रिणे	१. १२०. ८
मा कस्य नो अररुषो	७. ९४. ८
मा कस्य यक्षं सदमिद्	४. ३. १३
मा कस्याद्भुतक्रतू यक्षं	५. ७०. ४
मा काकम्बीरमुद्वृहो	६. ४८. १७
माकिरेना पथा गाद्येनेमे	८. ५. ३९
माकिर्न एना सख्या वि	१०. २३. ७
माकिर्नेशन्माकीं रिषन्	६. ५४. ७
माकुध्यगिन्द्र शूर	१०. २२. १२
मा चिदन्यद्वि शंसत	८. १. १
मा च्छेद्म रश्मीँरिति	१. १०९. ३
मा जस्वने वृषभ नो	६. ४४. ११
मातली कव्यैर्यमो	१०. १४. ३
माता च यत्र दुहिता	३. ५५. १२
माता देवानामदिते	१. ११३. १९
माता पितरमृत आ	१. १६४. ८
माता रुद्राणां दुहिता	८. १०१. १५
मातुर्दिधिषुमब्रवं	६. ५५. ५
मातुष्पदे परमे शुक्र	५. ४३. १४
मा ते अमाजुरो यथा	८. २१. १५
मा ते अस्यां सहसा	७. १९. ७
मा ते गोदत्र निरराम	८. २१. १६
मा ते राधांसि मा त	१. ८४. २०
मातेव यद्भरसे	५. १५. ४
मा ते हरी वृषणा	३. ३५. ५
मात्र पूषन्नावृण	७. ४०. ६
मात्रे नु ते सुमिते	१०. २९. ६
मा त्वाग्निर्ध्वनयीद्	१. १६२. १५
मा त्वा तपत्प्रिय आत्मा	१. १६२. २०
मा त्वा मूरा अविष्यवो	८. ४५. २३
मा त्वा रुद्र चुक्रुधामा	२. ३३. ४
मा त्वा श्येन उद्वधीन्मा	२. ४२. २
मा त्वा सोमस्य गल्दया	८. १. २०
मादयस्व सुते सचा	१. ८१. ८
मादयस्व हरिभिर्ये	१. १०१. १०
माध्यंदिने सवने	३. २८. ४
माध्यन्दिनस्य सवनस्य	३. ५२. ५
मा नः शंसो अररुषो	१. १८. ३
मा नः समस्य दूढ्यः	८. ७५. ९
मा नः सेतुः सिषेदयं	८. ६७. ८
मा नः सोमपरिबाधो	१. ४३. ८
मा नः सोम सं वीविजो	८. ७९. ८
मा नः स्तेनेभ्यो ये	२. २३. १६
मा न इन्द्र परा वृणग्	८. ९७. ७
मा न इन्द्र पीयत्नवे	८. २. १५
मा न इन्द्राभ्या दिशः	८. ९२. ३१
मा न एकस्मिन्नागसि	८. ४५. ३४
मा नस्तोके तनये	१. ११४. ८
मा निन्दत य इमां	४. ५. २
मा नो अग्ने दुर्भृतये	७. १. २२
मा नो अग्नेऽमतये	३. १६. ५
मा नो अग्नेऽव सृजो	१. १८९. ५
मा नो अग्नेऽवीरते	७. १. १९
मा नो अग्ने सख्या	१. ७१. १०
मा नो अज्ञाता वृजना	७. ३२. २७
मा नो अरातिरीशत	२. ७. २
मा नो अस्मिन्मघवन्	१. ५४. १
मा नो अस्मिन्महाधने	८. ७५. १२
मा नो गव्येभिरश्व्यैः	८. ७३. १५
मा नो गुह्या रिप	२. ३२. २
मा नो देवानां विशः	८. ७५. ८
मा नो निदे च वक्तवे	७. ३१. ५
मा नो मर्ता अभि	१. ५. १०
मा नो मर्ताय रिपवे	८. ६०. ८
मा नो मर्धीरा भरा	४. २०. १०
मा नो महान्तमुत	१. ११४. ७
मा नो मित्रो वरुणो	१. १६२. १
मा नो मृचा रिपूणां	८. ६७. ९
मा नो रक्ष आ वेशी	८. ६०. २०
मा नो रक्षो अभि	७. १०४. २३
मा नो वधाय हत्नवे	१. २५. २
मा नो वधीरिन्द्र मा	१. १०४. ८
मा नो वधी रुद्र मा	७. ४६. ४
मा नो वधैर्वरुण ये	२. २८. ७
मा नो वृकाय वृक्ये	६. ५१. ६
मा नो हिंसीज्जनिता	१०. १२१. ९
मा नोऽहिर्बुध्न्यो रिषे	७. ३४. ९
मा नो हृणीतामतिथि	८. १०३. १२
मा नो हेतिर्विवस्वत	८. ६७. २०
मा पापत्वाय नो नरे	७. ९४. ३
मा पृणन्तो दुरितमेन	१. १२५. ७
मा प्र गाम पथो वयं	१०. ५७. १
मा भूम निष्ट्या इवेन्द्र	८. १. १३
मा भेम मा श्रमिष्मोग्रस्य	८. ४. ७
मा मामिमं तव सन्तमत्र	५. ४०. ७
मायाभिरिन्द्र मायिनं	१. ११. ७
मायाभिरुत्सिसृप्सत	८. १४. १४
माया वां मित्रावरुणा	५. ६३. ४
मारे अस्मद्वि मुमुचो	३. ४१. ८
मार्जाल्यो मृज्यते स्वे	५. १. ८
मा व एनो अन्यकृतं	६. ५१. ७
मा वां वृको मा वृकीरा	१. १८३. ४
मा विदन्परिपन्थिनो	१०. ८५. ३२
मा वो घ्नन्तं मा शपन्तं	१. ४१. ८
मा वो दात्रान्मरुतो	७. ५६. २१
मा वो मृगो न यवसे	१. ३८. ५
मा वो रसानितभा	५. ५३. ९
मा वो रिषत्खनिता	१०. ९७. २०
मा शूने अग्ने नि षदाम	७. १. ११
मा सख्युः शूनमा विदे	८. ४५. ३६
मा सा ते अस्मत्सुमति	१. १२१. १५
मा सीमवद्य आ भागुर्वी	८. ८०. ८
मा स्रेधत सोमिनो	७. ३२. ९
माहं मघोनो वरुण	२. २७. १७
	२. २८. ११
	२. २९. ७
मित्रं कृणुध्वं खलु	१०. ३४. १४
मित्रं न यं शिम्या	१. १५१. १
मित्रं न यं सुधितं	६. १५. २
मित्रं वयं हवामहे	१. २३. ४
मित्रं हुवे पूतदक्षं	१. २. ७
मित्रश्च तुभ्यं वरुणः	३. १४. ४
मित्रश्च नो वरुणश्च	५. ७२. ३
मित्रस्तन्नो वरुणो देवो	७. ६४. ३
मित्रस्तन्नो वरुणो मामहन्त	७. ५२. २
मित्रस्तन्नो वरुणो रोदसी	७. ४०. २
मित्रस्य चर्षणीधृतो	३. ५९. ६
मित्रा नरा न रथ्या	८. २५. २
मित्राय पञ्च येमिरे	३. ५९. ८
मित्राय शिक्ष वरुणाय	१०. ६५. ५
मित्रावरुणवन्ता उत	८. ३५. १३
मित्रो अंहोश्चिदादुरु	५. ६५. ४
मित्रो अग्निर्भवति यत्	३. ५. ४
मित्रो जनान्यातयति	३. ५९. १
मित्रो देवेष्वायुषु	३. ५९. ९
मित्रो नो अत्यंहतिं	८. ६७. २
मिमाति वह्निरेतशः	९. ६४. १९
मिमातु द्यौरदितिर्वीतये	५. ५९. ८
मिमीहि श्लोकमास्ये	१. ३८. १४
मिम्यक्ष येषु रोदसी	६. ५०. ५
मिम्यक्ष येषु सुधिता	१. १६७. ३
मिहः पावकाः प्रतता	३. ३१. २०
मीळ्हुष्मतीव पृथिवी	५. ५६. ३
मुञ्चन्तु मा शपथ्या	१०. ९७. १६
मुञ्चामि त्वा हविषा	१०. १६१. १
मुनयो वातरशनाः	१०. १३६. २
मुमुक्ष्वो मनवे मानव	१. १४०. ४
मुमोद गर्भो वृषभः	१०. ८. २
मुषाय सूर्यं कवे	१. १७५. ४
मूरा अमूर न वयं	१०. ४. ४
मूर्धा दिवो नाभिरग्निः	१. ५९. २
मूर्धानं दिवो अरतिं	६. ७. १
मूर्धा भुवो भवति नक्त	१०. ८८. ६
मूषो न शिश्ना व्यदन्ति	१०. ३३. ३
मृगो न भीमः कुचरो	१०. १८०. २
मृजन्ति त्वा दश क्षिपो	९. ८. ४
मृजन्ति त्वा समग्रुवो	९. ६६. ९
मृजानो वारे पवमानो	९. १०७. २२
मृज्यमानः सुहस्त्य	९. १०७. २१
मृळत नो मरुतो मा	५. ५५. ९
मृळा नो रुद्रोत नो	१. ११४. २
मृत्योः पदं योपयन्तो	१०. १८. २
मेद्यन्तु ते वह्नयो	२. ३७. ३
मेधाकारं विदथस्य	१०. ९१. ८
मेहनाद्वनंकरणाल्लोम	१०. १६३. ५
मैनमग्ने वि दहो माभि	१०. १६. १
मोघमन्नं विन्दते अप्रचेताः	१०. ११७. ६
मो ते रिषन्ये अच्छोक्तिभि	८. १०३. १३

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मो षु णः परापरा	१. ३८. ६	
मो षु णः सोम मृत्यवे	१०. ५९. ४	
मो षु त्वा वाघतश्चनारे	७. ३२. १	
मो षु देवा अदः	१. १०५. ३	
मो षु ब्रह्मेव तन्द्रयु	८. ९२. ३०	
मो षु वरुण मृन्मयं	७. ८९. १	
मो षु वो अस्मदभि	१. १३९. ८	
मो षू ण इन्द्रात्र पृत्सु	१. १७३. १२	
मो षू णो अत्र जुहुरन्त	३. ५५. २	
मो ष्वद्य दुर्हणावान्	८. २. २०	
यं कुमार नवं रथ	१०. १३५. ३	
यं कुमार प्रावर्तयो	१०. १३५. ४	
यं क्रन्दसी अवसा	१०. १२१. ६	
यं क्रन्दसी संयती	२. १२. ८	
यं जनासो हविष्मन्तो	८. ७४. २	
यं ते श्येनः पदाभरन्	८. ८२. ९	
यं ते श्येनश्चारुमवृकं	१०. १४४. ५	
यं त्रायध्व इदमिदं	७. ५९. १	
यं त्वं रथमिन्द्र मेधसा	१. १२९. १	
यं त्वं विप्र मेधसातावग्ने	८. ७१. ५	
यं त्वमग्ने समदहस्तमु	१०. १६. १३	
यं त्वा गोपवनो गिरा	८. ७४. ११	
यं त्वा जनास इन्धते	८. ४३. २७	
यं त्वा जनास ईळते	८. ७४. १२	
यं त्वा जनासो अभि	१०. ४. २	
यं त्वा देवा दधिरे	१०. ४६. १०	
यं त्वा देवापिः शुशुचानो	१०. ९८. ८	
यं त्वा देवासो मनवे	१. ३६. १०	
यं त्वा द्यावापृथिवी यं	१०. २. ७	
यं त्वा पूर्वमीळितो	१०. ६९. ४	३
यं त्वा वाजिन्नघ्न्या	९. ८०. २	२९
यं देवासस्त्रिरहन्	३. ४. २	९४
यं देवासोऽजनयन्ताग्निं	१०. ८८. ९	३५४
यं देवासोऽवथ० त्रायध्वे	१०. ३५. १४	३२९
यं देवासोऽवथ० शूरसाता	१०. ६३. १४	३४१
यं नु नकिः पृतनासु	३. ४९. २	११०
यं बाहुतेव पिप्रति	१. ४१. २	१४
यं मर्त्यः पुरुस्पृहं	५. ७. ६	१४१
यं मे दुरिन्द्रो मरुतः	८. ३. २१	२३२
यं यज्ञं नयथा नर	१. ४१. ५	१४
यं युवं दाश्वध्वराय	६. ६८. ६	
यं रक्षन्ति प्रचेतसो	१. ४१. १	
यं वर्धयन्तीद्गिरः	६. ४४. ५	
यं विप्रा उक्थवाहसो	८. १२. १३	
यं वै सूर्यं स्वर्भानु	५. ४०. ९	
यं सीमकृण्वन्तमसे	४. १३. ३	
यं सीमनु प्रवतेव	४. ३८. ३	
यं सुपर्णः परावतः	१०. १४४. ४	
यं सोममिन्द्र पृथिवी	३. ४६. ५	
यं स्मा पृच्छन्ति कुह	२. १२. ५	
यः ककुभो निधारयः	८. ४१. ४	
यः कुक्षिः सोमपातमः	१. ८. ७	
यः कृन्तदिद्धि योन्यं	८. ४५. ३०	
यः पञ्च चर्षणीरभि	७. १५. २	
यः परस्याः परावतस्तिरो	१०. १८७. २	
यः पावमानीरध्येत्यृषिभिः	९. ६७. ३१	
यः पुष्पिणीश्च प्रस्वश्च	२. १३. ७	
यः पूर्व्याय वेधसे	१. १५६. २	
यः पृथिवीं व्यथमाना	२. १२. २	
यः पौरुषेयेण क्रविषा	१०. ८७. १६	
यः प्राणतो निमिषतो	१०. १२१. ३	
यः शक्रो मृक्षो अश्व्यो	८. ६६. ३	
यः शग्मस्तुविशग्म	६. ४४. २	
यः शम्बरं पर्वतेषु	२. १२. ११	
यः शश्वतो मह्येनो	२. १२. १०	
यः शुक्र इव सूर्यो	१. ४३. ५	
यः शूरेभिर्हव्यो यश्च	१. १०१. ६	
यः श्वेतां अधिनिर्णिज	८. ४१. १०	
यः संस्थे चिच्छतक्रतु	८. ३२. ११	
यः सत्राहा विचर्षणि	६. ४६. ३	
यः सप्तरश्मिर्वृषभ	२. १२. १२	
यः समिधा य आहुती	:. १९. ५	
यः सुनीथो ददाशुषे	२. ८. २	
यः सुन्वते पचते	२. १२. १५	
यः सुन्वन्तमवति यः	२. १२. १४	
यः सुषव्यः सुदक्षिण	८. ३३. ५	
यः सृबिन्दमनर्शनिं	८. ३२. २	
यः सोमः कलशेष्वाँ	९. १२. ५	
यः सोम सख्ये तव	१. ९१. १४	
यः स्त्रीहितीषु पूर्व्यः	[illegible]	
यः स्मारुन्धानो गध्या	४. ३८. ४	
य आत्मदा बलदा	१०. १२१. २	
य आध्राय चकमानाय	१०. ११७. २	
य आनयत्परावतः	६. ४५. १	
य आपिर्नित्यो वरुण	७. ८८. ६	
य आयुं कुत्समतिथिग्व	८. ५३. २	
य आर्जीकेषु कृत्वसु	९. ६५. २३	
य आस्ते यश्च चरति	७. ५५. ६	
य आस्वत्क आशये	८. ४१. ७	
य इद्ध आविवासति	६. ६०. ११	
य इन्दोः पवमानस्यानु	९. ११४. १	
य इन्द्र चमसेष्वा	८. ८२. ७	
य इन्द्र यतयस्त्वा	८. ६. १८	
य इन्द्र शुष्मो मघवन्	७. २७. २	
य इन्द्र सस्त्यव्रतो	८. ९७. ३	
य इन्द्र सोमपातमो	८. १२. १	
य इन्द्राग्नी चित्रतमो	१. १०८. १	
य इन्द्राग्नी सुतेषु वां	६. ५९. ४	
य इन्द्राय वचोयुजा	१. २०. २	
य इन्द्राय सुनवत्	४. २४. ७	
य इमा विश्वा जाता	५. ८२. ९	
य इमा विश्वा भुवनानि	१०. ८१. १	
य इमे उभे अहनी	५. ८२. ८	
य इमे द्यावापृथिवी	१०. ११०. ९	
य इमे रोदसी उभे	३. ५३. १२	
य इमे रोदसी मही सं मातरेव	९. १८. ५	
य इमे रोदसी मही समीची	८. ६. १७	
य ईं चकार न सो	१. १६४. ३२	
य ईं चिकेत गुहा	१. ६७. ४	
य ईं राजानावृतुथा	६. ६२. ९	
य ईं वहन्त आशुभिः	५. ६१. ११	
य ईङ्खयन्ति पर्वतान्	१. १९. ७	
य ईशिरे भुवनस्य	१०. ६३. ८	
य उक्था केवला दधे	८. ५२. ३	
य उक्थेभिर्न विन्धते	८. ५१. ३	
य उग्रः सन्ननिष्टृतः	८. ३३. ९	
य उग्र इव शर्यहा	६. १६. ३९	
य उग्रा अर्कमानृचु	१. १९. ४	
य उग्रेभ्यश्चिदोजीया	९. ६६. १७	
य उदानड् व्ययनं	१०. १९. ५	
य उदृचि यज्ञे अध्वरेष्ठा	१०. ७७. ७	
य उदृचीन्द्र देवगोपाः	१. ५३. ११	
य उद्नः फलिगं भिनन्	८. ३२. २५	
य उशता मनसा	१०. १६०. ३	
य उ श्रिया दमेष्वा	२. ८. ३	
य उस्रिया अप्या अन्त	९. १०८. ६	
य ऋक्षादंहसो मुचद्	८. २४. २७	
य ऋज्रा मह्यं मामहे	८. १. ३२	
य ऋज्रा वातरंहसो	८. ३४. १७	
य ऋते चिदभिश्रिषः	८. १. १२	
य ऋते चिद्गास्पदेभ्यो	८. २. ३९	
य ऋतेन सूर्यमारोहयन्	१०. ६२. ३	
य ऋष्वः श्रावयत्सखा	८. ४६. १२	
य ऋष्वा ऋष्टिविद्युतः	५. ५२. १३	
य एक इच्यावयति	४. १७. ५	
य एक इत्तमु ष्टुहि	६. ४५. १६	
य एक इद्धव्यश्चर्षणी	६. २२. १	
य एक इद्विदयते	१. ८४. ७	
य एकश्चर्षणीनां	१. ७. ९	
य एको अस्ति दंसना	८. १. २७	
य एनमादिदेशति	६. ५६. १	
य ओजिष्ठ इन्द्र तं	६. ३३. १	
य ओजिष्ठस्तमा भर	९. १०१. ९	
य ओहते रक्षसो	५. ४२. १०	
यच्च गोषु दुष्ष्वप्न्यं	८. ४७. १४	
यच्चित्रमप्न उषसो	१. ११३. २०	
यच्चिद्धि ते अपि व्यथि	८. ४५. १९	
यच्चिद्धि ते गणा इमे	५. ७२. ५	
यच्चिद्धि ते पुरुषत्रा	४. १२. ४	
यच्चिद्धि ते विशो यथा	१. २५. १	
यच्चिद्धि त्वं गृहेगृह	१. २८. ५	
यच्चिद्धि त्वा जना इमे	८. १. ३	
यच्चिद्धि वां पुर ऋषयो	८. ८. ६	
यच्चिद्धि शश्वता तना	१. २६. ६	
यच्चिद्धि शश्वतामसीन्द्र	४. ३२. १३	
	८. ६५. ७	
यच्चिद्धि सत्य सोमपा	१. २९. १	
यच्छक्रासि० अतस्त्वा	८. ९७. ४	
यच्छक्रासि० यद्वा समुद्रे	८. १३. १५	

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

यच्छल्मलौ भवति	७. ५०. ३	
यच्छुश्रूया इमं हवं	८. ४५. १८	
यजध्वैनं प्रियमेधा	८. २. ३७	
यजन्ते अस्य सख्यं	७. ३६. ५	
यजमानाय सुन्वत	५. २६. ५	
यजस्व वीर प्र विहि	२. २६. २	
यजस्व होतरिषितो	६. ११. १	
यजा नो मित्रावरुणा	१. ७५. ५	
यजाम इन्नमसा वृद्ध	३. ३२. ७	
यजामह इन्द्रं वज्रदक्षिणं	१०. २३. १	
यजामहे वां महः	१. १५३. १	
यजिष्ठं त्वा यजमाना	१. १२७. २	
यजिष्ठं त्वा ववृमहे	८. १९. ३	
यज्जातवेदो भुवनस्य	१०. ८८. ५	
यज्जायथा अपूर्व्य	८. ८९. ५	
यज्जायथास्तदहरस्य	३. ४८. २	
यज्ञं पृच्छाम्यवमं	१. १०५. ४	
यज्ञ इन्द्रमवर्धयद्	८. १४. ५	
यज्ञस्य केतुं प्रथमं पुरोहितं	१०. १२२. ४	
यज्ञस्य केतुं प्रथमं पुरोहित	५. ११. २	
यज्ञस्य केतुः पवते	९. ८६. ७	
यज्ञस्य वो रथ्यं विश्पतिं	१०. ९२. १	
यज्ञस्य हि स्थ ऋत्विजा	८. ३८. १	
यज्ञानां रथ्ये वयं	८. ४४. २७	
यज्ञायज्ञा वः समना	१. १६८. १	
यज्ञायज्ञा वो अग्नये	६. ४८. १	
यज्ञासाहं दुव इषे	१०. २०. ७	
यज्ञे दिवो नृषदने	७. ९७. १	
यज्ञेन गातुमप्तुरो	२. २१. ५	
यज्ञेन यज्ञमयजन्त	१. १६४. ५०	
	१०. ९०. १६	
यज्ञेन वर्धन जातवेदस	२. २. १	
यज्ञेन वाचः पदवीय	१०. ७१. ३	
यज्ञेनेन्द्रमवसा चक्रे	३. ३२. १३	
यज्ञेभिरद्भुतक्रतुं	८. २३. ८	
यज्ञेभिर्यज्ञवाहसं	८. १२ २०	
यज्ञेयज्ञे स मर्त्यो	१०. ९३. २	
यज्ञैः संमिश्लाः पृषतीभि	२. ३६. २	
यज्ञैरथर्वा प्रथम	१. ८३. ५	
यज्ञैरिषुः संनममानो	१०. ८७. ४	
यज्ञैर्वा यज्ञवाहसो	१. ८६. २	
यज्ञो देवानां प्रत्येति	१. १०७. १	
यज्ञो हि त इन्द्र वर्धनो	३. ३२. १२	
यज्ञो हि ष्मेन्द्रं कश्चिद्	१. १७३. ११	
यज्ञो हीळो वो अन्तर	८. १८. १९	
यत इन्द्र भयामहे	८. ६१. १३	
यता सुजूर्णी रातिनी	४. ६. ३	
यत्किं चेदं वरुण	७. ८९. ५	
यदत्तुसूर एतशं वङ्कू	८. १. ११	
यत्तृतीयं सवनं रत्नधेय	४. ३५. ९	
यत्ते अपो यदोषधीर्मनो	१०. ५८. ७	
यत्ते कृष्णः शकुन आ	१०. १६. ६	
यत्ते गात्रादग्निना	१. ६२. ११	
यत्ते चतस्रः प्रदिशो	१०. ५८. ४	
यत्ते दित्सु प्रराध्यं	५. ३९. ३	
यत्ते दिवं यत्पृथिवीं	१०. ५८. २	
यत्ते पराः परावतो	१०. ५८. ११	
यत्ते पर्वतान्बृहतो	१०. ५८. ९	
यत्ते पवित्रमर्चिषदग्ने	९. ६७. २४	
यत्ते पवित्रमर्चिष्यन्ने	९. ६७. २३	
यत्ते भूतं च भव्यं च	१०. ५८. १२	
यत्ते भूमिं चतुर्भृष्टिं	१०. ५८. ३	
यत्ते मनुर्यदनीकं	१०. ६९. ३	
यत्ते मरीचीः प्रवतो	१०. ५८. ६	
यत्ते यमं वैवस्वतं	१०. ५८. १	
यत्ते राजञ्छृतं हवि	९. ११४. ४	
यत्ते विश्वमिदं जगन्	१०. ५८. १०	
यत्ते समुद्रमर्णवं	१०. ५८. ५	
यत्ते सादे महसा	१. १६२. १७	
यत्ते सूर्यं यदुषसं	१०. ५८. ८	
यत्ते सोम गवाशिरो	१. १८७. ९	
यत्त्वा तुरीयमृतुभि	१. १५. १०	
यत्त्वा देव प्रपिबन्ति	१०. ८५. ५	
यत्त्वा पृच्छादीजानः	८. २४. ३०	
यत्त्वा यामि दद्धि तन्न	१०. ४७. ८	
यत्त्वा सूर्य स्वर्भानु	५. ४०. ५	
यत्त्वा होतारमनजन्	३. १९. ५	
यत्त्वेषयामा नदयन्त	१. १६६. ५	
यत्पर्जन्य कनिक्रदत्	५. ८३. ९	
यत्पाकत्रा मनसा	१०. २. ५	
यत्पाञ्चजन्यया विशेन्द्रे	८. ६३. ७	२६५
यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा	१०. ९०. ११	३५५
यत्पुरुषेण हविषा	१०. ९०. ६	३५५
यत्पूर्व्यं मरुतो यच्च	५. ५५. ८	१५८
यत्प्रायासिष्ट पृषतीभि	५. ५८. ६	१५९
यत्र कामा निकामाश्च	९. ११३. १०	३१४
यत्र क्व च ते मनो	६. १६. १७	१७२
यत्र ग्रावा पृथुबुध्न	१. २८. १	८
यत्र ज्योतिरजस्रं	९. ११३. ७	३१४
यत्र देवाँ ऋघायतो	४. ३०. ५	१२८
यत्र द्वाविव जघना	१. २८. २	८
यत्र नार्यपच्यव	१. २८. ३	८
यत्र बाणाः संपतन्ति	६. ७५. १७	१९५
यत्र ब्रह्मा पवमान	९. ११३. ६	३१४
यत्र मन्यां विबध्नते	१. २८. ४	८
यत्र राजा वैवस्वतो	९. ११३. ८	३१४
यत्र वह्निरभिहितो	५. ५०. ४	१५५
यत्र वेत्थ वनस्पते	५. ५. १०	१४०
यत्र शूरासस्तन्वो	६. ४६. १२	१८३
यत्रा चक्रुरमृता	७. ६३. ५	२१६
यत्रानन्दाश्च मोदाश्च	९. ११३. ११	३१४
यत्रा नरः समयन्ते	७. ८३. २	२२२
यत्रानुकामं चरणं	९. ११३. ९	३१४
यत्रा वदेते अवरः	१०. ८८. १७	३५४
यत्रा समुद्रः स्कभितो	१०. १४९. २	३७८
यत्रा सुपर्णा अमृतस्य	१. १६४. २१	६४
यत्रेदानीं पश्यसि	१०. ८७. ६	३५३
यत्रोत बाधितेभ्यश्चक्रं	४. ३०. ४	१२८
यत्रोत मर्त्याय कमरिणा	४. ३०. ६	१२८
यत्रौषधीः समग्मत	१०. ९७. ६	३५९
यत्संवत्सभृभवो गाम	४. ३३. ४	१३०
यत्सानोः सानुमारुहद्	१. १०. २	३
यत्सिन्धौ यदसिक्न्यां	८. २०. २५	२४४
यत्सोम आ सुते नर	७. ९४. १०	२२५
यत्सोम चित्रमुक्थ्यं	९. १९. १	२८४
यत्सोममिन्द्र विष्णवि	८. १२. १६	२३९
यत्सोमो वाजमर्षति	९. ५६. २	२९०
यत्स्थो दीर्घप्रसद्मनि	८. १०. १	२३७
यथा कण्वे मघवन्नसदस्यवि	८. ४९. १०	२६०
यथा कण्वे मघवन्नेधे	८. ५०. १०	२६०
यथा कलां यथा शफं	८. ४७. १७	
यथा गौरो अपा कृतं	८. ४. ३	
यथा चित्कण्वमावतं	८. ५. २५	
यथा चिद्वृद्धमतसमग्ने	८. ६०. ७	
यथा चिन्मन्यसे हृदा	५. ५६. २	
यथा देवा असुरेषु	१०. १५१. ३	
यथा नो अदितिः करत्	१. ४३. २	
यथा नो मित्रो अर्यमा	८. ३१. १३	
यथा नो मित्रो वरुणो	१. ४३. ३	
यथापवथा मनवे	९. ९६. १२	
यथा पूर्वेभ्यः शतसा	९. ८२. ५	
यथा पूर्वेभ्यो जरितृभ्य	१. १७५. ६	
	१. १७६. ६	
यथाभवदनुदेयी ततो	१०. १३५. ६	
यथा मनौ विवस्वति	८. ५२. १	
यथा मनौ सांवरणौ	८. ५१. १	
यथायजो होत्रमग्ने	३. १७. २	
यथा युगं वरत्रया	१०. ६०. ८	
यथा रुद्रस्य सूनवो	८. २०. १७	
यथा वः स्वाहाग्नये	७. ३. ७	
यथा वरो सुषाम्णे	८. २४. २८	
यथा वशन्ति देवा	८. २८. ४	
यथा वातः पुष्करिणीं	५. ७८. ७	
यथा वातो यथा वनं	५. ७८. ८	
यथा वामत्रिरश्विना	८. ४२. ५	
यथा विद्वाँ अरं करद्	२. ५. ८	
यथा विप्रस्य मनुषो	१. ७६. ५	
यथा ह त्यद्वसवो	४. १२. ६	
	१०. २२६. ८	
यथाहान्यनुपूर्वं	१०. १८. ५	
यथा होतर्मनुषो	६. ४. १	
यथेयं पृथिवी मही	१०. ६०. ९	
यथोत कृत्व्ये धनेंशुं	८. ५. २६	
यदक्रन्दः प्रथमं	१. १६३. १	
यदग्न एषा समिति	१०. ११. ८	
यदग्ने अद्य मिथुना	१०. ८७. १३	
यदग्ने कानि कानि	८. १०२. २०	
यदग्ने दिविजा अस्य	८. ४३. २८	
यदग्ने मर्त्यस्त्वं स्यामहं	८. १९. २५	
यदग्ने स्यामहं त्वं त्वं	८. ४४. २३	

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

यदङ्ग तविषीयवो ८. ७. २
यदङ्ग तविषीयस ८. ६. २६
यदङ्ग त्वा भरताः ३. ३३. ११
यदङ्ग दाशुषे त्वमग्ने १. १. ६
यदचरस्तन्वा वावृधानो १०. ५४. २
यदज्ञातेषु वृजनेष्वासं १०. २७. ४
यदत्त्युपजिह्विका ८. १०२. २१
यददो दिवो अर्णव ८. २६. १७
यददो पितो अजगन् १. १८७. ७
यददो वात ते गृहे १०. १८६. ३
यदद्भिः परिषिच्यसे ९. ६५. ६
यदद्य कच्च वृत्रहन् ८. ९३. ४
यदद्य कर्हि कर्हि ८. ७३. ५
यदद्य त्वा पुरुष्टुत ६. ५६. ४
यदद्य त्वा प्रयति यज्ञे ३. २९. १६
यदद्य भागं विभजासि १. १२३. ३
यदद्य वां नासत्योक्थै ८. ९. ९
यदद्य सूर उदितेऽनागा ७. ६६. ४
यदद्य सूर उदिते यन् ८. २७. २१
यदद्य सूर्य उद्यति ८. २७. १९
यदद्य सूर्य ब्रवोऽनागा ७. ६०. १
यदद्य स्थः परावति ५. ७३. १
यदद्याश्विनावपाग् ८. १०. ५
यदद्याश्विनावहं हुवेय ८. ९. १३
यदध्रिगावो अध्रिगू ८. २२. ११
यदन्तरा परावत ३. ४०. ९
यदन्तरिक्षे पतथः ८. १०. ६
यदन्तरिक्षे यद्दिवि ८. ९. २
यदन्ति यच्च दूरके ९. ६७. २१
यदन्यासु वृषभो ३. ५५. १७
यदपामोषधीनां १. १८७. ८
यदप्सु यदनस्पतौ ८. ९. ५
यदब्रवं प्रथमं वां १. १०८. ६
यदयातं दिवोदासाय १. ११६. १८
यदयातं शुभस्पती १०. ८५. १५
यदयुक्था अरुषा १. ९४. १०
यदर्जुन सारमेय ७. ५५. २
यदश्वस्य क्रविषो १. १६२. ९
यदश्वान्धूर्षु पृषती ५. ५५. ६
यदश्वाय वास उप १. १६२. १६
यदश्विना पृच्छमानाव १०. ८५. १४
यदस्य धामनि प्रिये ८. १२. ३२
यदस्य मन्युरध्वनीद् ८. ६. १३
यदाजिं यात्याजिकृदिन्द्रः ८. ४५. ७
यदा ते मारुतीर्विश ८. १२. २९
यदा ते विष्णुरोजसा ८. १२. २७
यदा ते हर्यता हरी ८. १२. २८
यदादीध्ये न दविषाण्येभिः १०. ३४. ५
यदापीतासो अंशवो ८. ९. १९
यदारमक्रन्नृभवः ४. ३३. २
यदा वज्रं हिरण्यमिदथा १०. २३. ३
यदा वलस्य पीयतो १०. ६८. ६
यदा वाजमसनद् १०. ६७. १०
यदाविर्यदपीच्यं ८. ४७. १३
यदा वीरस्य रेवतो ७. ४२. ४
यदा वृत्रं नदीवृतं ८. १२. २६
यदाशसा निःशसा १०. १६४. ३
यदा समर्य व्यचेद् ४. २४. ८
यदासु मर्तो अमृतासु १०. ९५. ९
यदा सूर्यममुं दिवि ८. १२. ३०
यदि क्षितायुर्यदि वा १०. १६१. २
यदिन्द्र चित्र मेहनास्ति ५. ३९. १
यदिन्द्र ते चतस्रो ५. ३५. २
यदिन्द्र दिवि पार्ये ६. ४०. ५
यदिन्द्र नाहुषीष्वाँ ६. ४६. ७
यदिन्द्र पूर्वो अपराय ७. २०. ७
यदिन्द्र पृतनाज्ये ८. १२. २५
यदिन्द्र प्रागपा० आ याहि ८. ६५. १
यदिन्द्र प्रागपा० सिमा पुरू ८. ४. १
यदिन्द्र ब्रह्मणस्पते १०. १६४. ४
यदिन्द्र मन्मशस्त्वा ८. १५. १२
यदिन्द्र यावतस्त्व ७. ३२. १८
यदिन्द्र राधो अस्ति ८. ५४. ५
यदिन्द्र सर्गे अर्वत ६. ४६. १३
यदिन्द्राग्नी अवमस्यां १. १०८. ९
यदिन्द्राग्नी उदिता १. १०८. १२
यदिन्द्राग्नी जना इमे ८. ४०. ७
यदिन्द्राग्नी दिवि ष्ठो १. १०८. ११
यदिन्द्राग्नी परमस्यां १. १०८. १०
यदिन्द्राग्नी मदथः स्वे १. १०८. ७
यदिन्द्राग्नी यदुषु १. १०८. ८
यदिन्द्राहं यथा त्व ८. १४. १
यदिन्द्राहन्प्रथमजा १. ३२. ४
यदिन्द्रेण सरथं याथो ८. ९. १२
यदिन्द्रो अनयद्रितो ६. ५७. ४
यदिन्द्रिन्द्र पृथिवी १. ५२. ११
यदि प्रवृद्ध सत्पते ८. १२. ८
यदिमा वाजयन्नह १०. ९७. ११
यदि मे रारणः सुत ८. ३२. ६
यदि मे सख्यमावर ८. १३. २१
यदि वाहमनृतदेव ७. १०४. १४
यदि स्तुतस्य मरुतो ७. ५६. १५
यदि स्तोमं मम श्रव ८. १. १५
यदीं गणस्य रशना ५. १. ३
यदीं सुतास इन्दवो ८. ५०. ३
यदीं सोमा बभ्रुधूता ५. ३०. ११
यदी घृतेभिराहुतो ८. १९. २३
यदीदहं युधये संनयान् १०. २७. २
यदी मन्थन्ति बाहुभिर्वि ३. २९. ६
यदी मातुरुप स्वसा २. ५. ६
यदीमिन्द्र श्रवाय्यमिषं ५. ३८. २
यदीमृतस्य पयसा १. ७९. ३
यदीमेनाँ उशतो ७. १०३. ३
यदीशीयामृतानामुत १०. ३३. ८
यदी सुतेभिरिन्दुभिः ६. ४२. ३
यदुत्तमे मरुतो मध्यमे ५. ६०. ६
यदुदञ्चो वृषाकपे १०. ८६. २२
यदुदीरत आजयो १. ८१. ३
यदुद्वतो निवतो यासि १०. १४२. ४
यदुलूको वदति मोघ १०. १६५. ४
यदुष औच्छः प्रथमा १०. ५५. ४
यदुषो यासि भानुना ८. ९. १८
यदूवध्यमुदरस्यापवाति १. १६२. १०
यदेदेनमदधुर्यज्ञियासो १०. ८८. ११
यदेमि प्रस्फुरन्निव ७. ८९. २
यदेषां पृषती रथे ८. ७. २८
यदेषामन्यो अन्यस्य ७. १०३. ५
यद्गायत्रे अधि गायत्र १. १६४. २३
यद्गोपावददितिः शर्म ७. ६०. ८
यद्दधिषे प्रदिवि चार्वन्न ७. ९८. २
यद्दधिषे मनस्यसि ८. ४५. ३१
यद्देवाः शर्म शरणं ८. ४७. १०
यद्देवा अदः सलिले १०. ७२. ६
यद्देवानां मित्रमहः १. ४४. १२
यद्देवापिः शंतनवे १०. ९८. ७
यद्देवा यतयो यथा १०. ७२. ७
यद्द्याव इन्द्र ते शतं ८. ७०. ५
यद्ध त्यद्वां पुरुमीळ्हस्य १. १५१. २
यद्ध त्यन्मित्रावरुणा १. १३९. २
यद्ध नूनं परावति ८. ५०. ७
यद्ध नूनं यद्वा यज्ञे ८. ४९. ७
यद्ध प्राचीरजगन्तोरो १०. १५५. ४
यद्ध यान्ति मरुतः १. ३७. १३
यद्धविष्यमृतुशो देवयानं १. १६२. ४
यद्ध स्या त इन्द्र १. १७८. १
यद्वंहिष्ठं नातिविधे ५. ६२. ९
यद्युञ्जते मरुतो रुक्म २. ३४. ८
यद्युञ्जाथे वृषणमश्विना १. १५७. २
यद्यूयं पृश्निमातरो १. ३८. ४
यद्योधया महतो ७. ९८. ४
यद्रोदसी प्रदिवो ६. ६२. ८
यद्वः श्रान्ताय सुन्वते ८. ६७. ६
यद्वां कक्षीवाँ उत ८. ९. १०
यद्वा उ विश्पतिः शितः ८. २३. १३
यद्वाग्वदन्त्यविचेतनानि ८. १००. १०
यद्वाजिनो दाम संदान १. १६२. ८
यद्वा तृक्षौ मघवन् ६. ४६. ८
यद्वा दिवि पार्ये ६. २३. २
यद्वा प्रवृद्ध सत्पते ८. ९३. ५
यद्वा प्रस्रवणे दिवो ८. ६५. २
यद्वाभिपित्वे असुरा ८. २७. २०
यद्वा मरुत्वः परमे १. १०१. ८
यद्वा यज्ञं मनवे ८. १०. २
यद्वा रुमे रुशमे ८. ४. २
यद्वावन्थ पुरुष्टुत ८. ६६. ५
यद्वावान पुरुतमं १०. ७४. ६
यद्वा शक्र परावति ८. १२. १७
यद्वासि रोचने दिवः ८. ९७. ५
यद्वासि सुन्वतो वृधो ८. १२. १८
यद्वाहिष्ठं तदग्नये ५. २५. ७

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

यद्विजामन्परपि ७. ५०. २
यद्विरूपाचरं मर्त्ये १०. ९५. १६
यद्वीळाविन्द्र यत्स्थिरे ८. ४५. ४१
यद्वृत्रं तव चाशनिं १. ८०. १३
यद्वो देवाश्चकृम १०. ३७. १२
यद्वो वयं प्रमिनाम १०. २. ४
यन्न इन्द्रो जुजुषे ४. २२. १
यन्नासत्या परोक्ष ८. ९. १५
यन्नासत्या परावति॰ अधि १. ४७. ७
यन्नासत्या परावति॰ अध्यम्बरे ८. ८. १४
यन्नासत्या भुरण्यथो ८. ९. ६
यन्निधानं न्ययनं १०. १९. ४
यन्निर्णिजा रेक्णसा १. १६२. २
यन्नीक्षणं मांस्पचन्या १. १६२. १३
यन्नूनं धीभिरश्विना ८. ९. २१
यन्नूनमस्यां गतिं ५. ६४. ३
यन्मन्यसे वरेण्यमिन्द्र ५. ३९. २
यन्मरुतः समरसः ५. ५४. १०
यमग्निं मेध्यातिथिः १. ३६. ११
यम्नो गृत्नु मर्त्यमवा १. २७. ७
यम्नो मन्यसे रयिं १०. २१. ४
यम्नो वाजसातम ५. २०. १
यमन्यमिव वाजिनं ९. ६. ५
यमश्विना ददथुः श्वेत १. ११६. ६
यमश्वी नित्यमुपयाति ७. १. १२
यमस्य मा यम्यं काम १०. १०. ७
यमा चिद्ध्र यमसूरसूत ३. ३९. ३
यमादहं वैवस्वतान् १०. ६०. १०
यमादित्यासो अद्रुहः ८. १९. ३४
यमानो अद्भयो वना ६. ४८. ५
यमाय घृतवद्धविर्जुहोत १०. १४. १४
यमाय मधुमत्तमं राजे १०. १४. १५
यमाय सोमं सुनुत १०. १४. १३
यमासा कृष्णीळं १०. २०. ३
यमिन्द्र दधिषे त्वमश्वं ८. ९७. २
यमिमे त्वं वृषकपिं १०. ८६. ४
यमी हा सवयसा १. १४४. ४
यमी गर्भमृतावृधो ९. १०२. ६
यमु पूर्वमहुवे तमिदं २. ३७. २
यमृत्विजो बहुधा ८. ५८. १
यमे इव यतमाने १०. १३. २
यमेन दत्तं त्रित १. १६३. २
यमेरिरे भृगवो १. १४३. ४
यमैच्छाम मनसा १०. ५३. १
यमो नो गातुं प्रथमो १०. १४. २
यया गा आकरामहे १०. १५६. २
यया रध्रं पारयथा २. ३४. १५
ययोरधि प्र यज्ञा ८. १०. ४
यर्वयर्वं नो अन्यसा ९. ५५. १
यर्वं वृकेणाश्विना १. ११७. २१
यश्चिकेत स सुक्रतु ५. ६५. १
यश्चिदापो महिना १०. १२१. ८
यश्चिद्धि त इत्था भगः १. २४. ४
यश्चिद्धि त्वा बहुभ्य १. ८४. ९
यस्त इध्मं जभरत् ४. २. ६
यस्त इन्द्र प्रियो जनो ७. २०. ८
यस्त इन्द्र महीरपः ८. ६. १६
यस्त ऊरू विहरत्यन्तरा १०. १६२. ४
यस्तस्तम्भ सहसा वि ४. ५०. १
यस्ता चकार स कुद ६. २१. ४
यस्तिग्मशृङ्गो वृषभो ७. १९. १
यस्तित्याज सचिविदं १०. ७१. ६
यस्तुभ्यमग्ने अमृताय दाशद् ४. २. ९
यस्तुभ्यमग्ने अमृताय मर्त्यः १०. ९१. ११
यस्ते अग्ने नमसा ५. १२. ६
यस्ते अग्ने सुमतिं १०. ११. ७
यस्ते अद्य कृणवद् १०. ४५. ९
यस्ते अनु स्वधामसत् ३. ५१. ११
यस्ते गर्भमसीवा १०. १६२. २
यस्ते चित्रश्रवस्तमो ८. ९२. १७
यस्ते द्रप्सः स्कन्दति १०. १७. १२
यस्ते द्रप्सः स्कन्धो १०. १७. १३
यस्ते नूनं शतक्रत ८. ९२. १६
यस्ते भरादभिष्टये ४. २. ७
यस्ते मदः पृतनाषाळयुध्य ६. १९. ७
यस्ते मदो युज्यश्चारुरस्ति ७. २२. २
यस्ते मदो वरेण्यस्तेना ९. ६१. १९
यस्ते मदो वरेण्यो य ८. ४६. ८
यस्ते मन्योऽविधद्वज्र १०. ८३. १
यस्ते यज्ञेन समिधा ८. ५१. ६
यस्ते रथो मनसो १०. ११२. २
यस्ते रेवाँ अशत्रुरिः ८. ४५. १५
यस्ते शृङ्गवृषो नपात् ८. १७. १३
यस्ते साधिष्ठोऽवस ५. ३५. १
यस्ते साधिष्ठोऽवसे ८. ५३. ७
यस्ते सूनो सहसो ६. १३. ४
यस्ते स्तनः शशयो १. १६४. ४९
यस्ते हन्ति पतयन्तं १०. १६२. ३
यस्त्वद्धोता पूर्वो अग्ने ३. १७. ५
यस्त्वा देवि सरस्वत्युपब्रूते ६. ६१. ५
यस्त्वा दोषा य उषसि ४. २. ८
यस्त्वा भ्राता पतिर्भूत्वा १०. १६२. ५
यस्त्वामग्न इनधते ४. १२. १
यस्त्वामग्ने हविष्पति १. १२. ८
यस्त्वा स्वप्नेन तमसा १०. १६२. ६
यस्त्वा स्वश्वः सुहिरण्यो ४. ४. १०
यस्त्वा हृदा कीरिणा ५. ४. १०
यस्पतिर्वार्याणामसि १०. २४. ३
यस्मा अन्ये दश प्रति ८. ३. २३
यस्मा अरासत क्षयं ८. ४७. ४
यस्मा अर्कं सप्तशीर्षाण ८. ५१. ४
यस्मा ऊमासो अमृता १. १६६. ३
यस्मादिन्द्राद्बृहतः २. १६. २
यस्माद्ते न सिष्यति १. १८. ७
यस्माद्रेजन्त कृष्टय ८. १०३. ३
यस्माद्ऋते विजयन्ते ३. १२. ९
यस्मिन्देवा मन्मनि १०. १२. ८
यस्मिन्देवा विदथे १०. १२. ७
यस्मिन्श्वास ऋषभास १०. ९१. १४
यस्मिन्युक्तानि रण्यन्ति ८. १६. २
यस्मिन्वयं दधिमा १०. ४२. ६
यस्मिन्विश्वा अधि श्रियो ८. ९२. २०
यस्मिन्विश्वानि काव्या ८. ४१. ६
यस्मिन्विश्वानि भुवनानि ७. १०१. ४
यस्मिन्विश्वाश्चर्षणय ८. २. ३३
यस्मिन्वृक्षे मध्वदः १. १६४. २२
यस्मिन्वृक्षे सुपलाशे १०. १३५. १
यस्मै त्वं मघवन्निन्द्र ८. ५२. ८
यस्मै त्वं वसो दानाय मंहसे ८. ५२. ६
यस्मै त्वं सुकृते जातवेद ८. ५१. ६
यस्मै त्वं सुकृते जातवेद ५. ४. ११
यस्मै त्वं सुद्रविणो १. ९४. १५
यस्मै त्वमायजसे १. ९४. २
यस्मै धायुरदधा मर्त्या ३. ३०. ७
यस्मै पुत्रासो अदितेः १०. १८५. ३
यस्य गा अन्तरश्मनो ६. ४३. ३
यस्य गावावरुषा ६. २७. ७
यस्य तीव्रसुतं मदं ६. ४३. २
यस्य ते अग्ने अन्ये ८. १९. ३३
यस्य ते द्युम्नवत्पयः ९. ६६. ३०
यस्य ते नू चिदादिशं ८. ९.. ११
यस्य ते पीत्वा वृषभो ९. १०८. २
यस्य ते पूषन्त्सख्ये १. १३८. ३
यस्य ते मधं रसं ९. ६५. १५
यस्य ते महिना महः ८. ६८. ३
यस्य ते विश्वमानुषो ८. ४५. ४२
यस्य ते विश्वा भुवनानि १०. ३७. ९
यस्य ते स्वादु सख्यं ८ ६८. ११
यस्य त्यच्छम्बरं मदे ६. ४३. १
यस्य त्यत्ते महिमानं १०. ११२. ४
यस्य त्यन्महित्वं वाता १०. २६. २
यस्य त्रिधात्वृतं ८. १०२. १४
यस्य त्री पूर्णा मधुना ४. २. १०
यस्य त्वमग्ने अध्वरं ८. ५२. ४
यस्य त्वमिन्द्र स्तोमेषु ८. १९. १०
यस्य त्वमूर्ध्वो अध्वराय ८. ४. ४
यस्य दूतो असि क्षये १. ७४. ४
यस्य द्यावापृथिवी पौंस्यं १. १०१. ३
यस्य द्विबर्हसो बृहत्सहो ८. १५. २
यस्य न इन्द्रः पिबाद्यस्य ९. १०८. १४
यस्य प्रयामन्वन्य ५. ८१. ३
यस्य प्रस्वादसो गिर १०. ३३. ६
यस्य मन्दानो अन्धसो ६. ४३. ४
यस्य मा परुषाः शत ५. २७. ५
यस्य मा हरितो रथे १०. ३३. ५
यस्य वर्णं मधुश्चुतं ९. ६५. ८
यस्य वा सूर्य प्रति ८. २०. १६
यस्य वायोरिव द्रवद् ६. ४५. ३२
यस्य विश्वानि हस्तयोः १. १७६. ३
यस्य विश्वानि हस्तयो ६. ४५. ८

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

यस्य व्रते पृथिवी ५. ८३. ५
यस्य शर्मञ्जुष विश्वे ७. ६. ६
यस्य शश्वत्पिपिँवाँ १०. ११२. ५
यस्य श्रवो रोदसी ७. १८. २४
यस्य श्वेता विचक्षणा ८. ४१. ९
यस्य संस्थे न वृण्वते १. ५. ४
यस्या अनन्तो अहुत ६. ६१. ८
यस्याग्निर्वपुर्गृहे स्तोमं ८. १९. ११
यस्याजस्रं शवसा १. १००. १४
यस्याजुषन्नमस्विनः ८. ७५. १४
यस्या देवा उपस्थे ८. ९४. २
यस्यानक्षा दुहिता १०. २७. ११
यस्यानामः सूर्यस्येव १. १००. २
यस्यानूना गभीरा ८. १६. ४
यस्यामितानि वीर्या ८. २४. २१
यस्यायं विश्व आर्यो ८. ५१. ९
यस्या रुशन्तो अर्चयः १. ४८. १३
यस्यावधीत्पितरं यस्य ५. ३४. ४
यस्याश्वासः प्रदिशि २. १२. ७
यस्येदेवाकुरुप व्रते १०. ६०. ४
यस्येमे हिमवन्तो १०. १२१. ४
यस्यौषधीः प्रसर्पथा १०. ९७. १२
यां त्वा दिवो दुहित ७. ७७. ६
यां पूषन्ब्रह्मचोदनी ६. ५३. ८
यां मे धियं मरुत १०. ६४. १२
याँ आभजो मरुत ३. ३५. ९
याः प्रवतो निवत ७. ५०. ४
याः फलिनीर्या अफला १०. ९७. १५
याः सरूपा विरूपा १०. १६९. २
याः सूर्यो रश्मिभि ७. ४७. ४
या आपो दिव्या उत ७. ४९. २
या इन्द्र प्रस्वस्त्वासा ८. ६. २०
या इन्द्र भुज आभरः ८. ९७. १
या ओषधीः पूर्वा जाता १०. ९७. १
या ओषधीः सोमराज्ञीर्बह्वीः १०. ९७. १८
या ओषधीः सोमराज्ञीर्विष्ठिताः १०. ९७. १९
या गुङ्कूर्या सिनीवाली २. ३२. ८
या गोमतीरुषसः १. ११३. १८
या गौर्वतनि पर्वेनि १०. ६५. ६
या जामयो वृष्ण ३. ५७. ३
यातं छर्दिष्पा उत नः ८. ९. ११
या त ऊतिरभिग्रहन् ६. ४५. १४
या त ऊतिरवमा या ६. २५. १
याति देवः प्रवता १. ३५. ३
या ते अग्ने पर्वतस्येव ३. ५७. ६
या ते अश्वा गोअोपशा ६. ५३. ९
या ते काकुत्सुकूता ६. ४१. २
या ते जिह्वा मधुमती ३. ५७. ५
या ते दिद्युदवसृष्टा ७. ४६. ३
या ते धामानि दिवि १. ९१. ४
या ते धामानि परमाणि १०. ८१. ५
या ते धामानि हविषा १. ९१. १९
या ते भीमान्यायुधा ९. ६१. ३०
या दंपती समनसा ८. ३१. ५
या दक्षा सिन्धुमातरा १. ४६. २
याहगेव दृशे ताहगुच्यते ५. ४४. ६
या देवेषु तन्वमैरयन्त १०. १६९. ३
याद्राध्यं वरुणो योनि २. ३८. ८
या धर्तारा रजसो ५. ६९. ४
या धारयन्त देवाः ७. ६६. २
या नः पीपरदश्विना १. ४६. ६
यानि स्थानान्यश्विना ७. ७०. ३
यानीन्द्राग्नी चक्रथु १. १०८. ५
या नु श्वेतावहो दिव ८. ४०. ८
यान्नाये मर्तान्तसुदूरो १. ७३. ८
यान्वो नरो देवयन्तो ३. ८. १
या प्रतनासु दुष्टरा ५. ८६. २
याभिः कण्वं मेघातिथिं ८. ८. २०
याभिः कण्वमभिष्टिभिः १. ४७. ५
याभिः कुत्समार्जुनेयं १. ११२. २३
याभिः कृशानुमस्ने १. ११२. २१
याभिः पक्थमवथो ८. २२. १०
याभिः पठर्वा अठरस्य १. ११२. १७
याभिः पत्नीर्विंदाय १. ११२. १९
याभिः परिज्मा तनयस्य १. ११२. ४
याभिः शंताती भवथो १. ११२. २०
याभिः शचीभिर्वृषणा १. ११२. ८
याभिः शचीभिश्चमसाँ ३. ६०. २
याभिः शुचन्ति घनसां १. ११२. ७
याभिः सिन्धुं मधुमन्त १. ११२. ६
याभिः सिन्धुमवथ ८. २०. २४
याभिः सुदानू औशिजाय १. ११२. ११
याभिः सूर्यं परियाथः १. ११२. १३
याभिः सोमो मोदते १०. ३०. ५
याभिरङ्गिरो मनसा १. ११२. १८
याभिरन्तर्कं जसमान १. ११२. ६
याभिर्नरं गोषुयुधं १. ११२. २२
याभिर्नरा प्रसदस्यु ८. ८. २१
याभिर्नरा शयवे १. ११२. १६
याभिर्महामतिथिग्वं १. ११२. १४
याभिर्वर्धं विपिपान १. ११२. १५
याभिर्विष्पलां धनसा १. ११२. १०
याभी रसां क्षोदसोद्ध १. ११२. १२
याभी रेभं निहृतं १. ११२. ५
यामथर्वा मनुष्पिता १. ८०. १६
या रुचो जातवेदसो १०. १८८. ३
या वः शर्म शशमानाय १. ८५. १२
यावत्तरस्तन्वो यावदोजो ७. ९१. ४
यावदिदं भुवनं विश्व १. १०८. २
यावन्मात्रमुषसो न १०. ८८. १९
यावयद्वेषस्तं त्वा ४. ५२. ४
यावयद्वेषा ऋतपा १. ११३. १२
यावया वृक्यं वृक १०. १२७. ६
या वां कशा मधुमत्य १. २२. ३
या वां शतं नियुतो याः ७. ९१. ६
या वां सन्ति० अस्मे ता ४. ४७. ४
या वां सन्ति० इन्द्राग्नी ६. ६०. ८
या वा ते सन्ति दाशुषे ७. ३. ८
यावित्था श्लोकमा दिवो १. ९२. १७
या विश्वासां जनितारा ६. ६९. २
या वीर्याणि प्रथमानि १०. ११३. ७
या वृत्रहा परावति ८. ४५. २५
या वो भेषजा मरुतः २. ३३. १३
या वो माया अभिद्रुहे २. २७. १६
या शर्याय मारुताय ६. ४८. १२
याश्चेदुषपृच्छन्ति १०. ९७. २१
यासां तिस्रः पञ्चाशतो १. १३३. ४
यासां राजा वरुणो ७. ४९. ३
यासि कुत्सेन सरथ ४. १६. ११
या सुकूलेकः शोचते सुदंस १०. ९५. ६
या सुनीथे शौचद्रथे ५. ७९. २
या सुनाहुः स्वहरिः २. ३२. ७
या सुरथा रथीतमोभा १. २२. २
यासु राजा वरुणो ७. ४९. ४
यास्ते धारा मधुश्चुतो ९. ६२. ७
यास्ते पूषन्नावो अन्तः ६. ५८. ३
यास्ते प्रजा अमृतस्य १. ४३. ९
यास्ते राके सुमतयः २. ३२. ५
युक्तास्ते अस्तु दक्षिण १. ८२. ५
युक्ता मातासीद्धुरि १. १६४. ९
युक्तो ह यद्वां तौग्र्याय १. १५८. ३
युक्ष्वा हि केशिना हरी १. १०. ३
युक्ष्वा हि त्वं रथासहा ८. २६. २०
युक्ष्वा हि देवहूतमाँ ८. ७५. १
युक्ष्वा हि वाजिनीवत्यश्वाँ १. ९२. १५
युक्ष्वा हि वृत्रहन्तम ८. ३. १७
युक्ष्वा ह्यरुणी रथे १. १४. १२
युगेयुगे विदथ्यं गृणद्भ्यो ६. ८. ५
युङ्ग्ध्वं ह्यरुणी रथे ५. ५६. ६
युजं हि मामकृथा ५. ३०. ८
युजा कर्माणि जनयन् १०. ५५. ८
युजानो अश्वा वातस्य १०. २२. ४
युजानो हरिता रथे ६. ४७. १९
युजे रथं गवेषणं ७. २३. ३
युजे वां ब्रह्म पूर्व्यं १०. १३. १
युजते मन उत युजते ५. ८१. १
युजन्ति ब्रध्नमरुषं १. ६. १
युजन्ति हरी इषिरस्य ८. ९८. ९
युजन्त्यस्य काम्या १. ६. २
युञ्जाथां रासभं रथे ८. ८५. ७
युधा युधमुप घेदेषि १. ५३. ७
युधेन्द्रो मह्ना वरिव ३. ३४. ७
युध्मं सन्तमनर्वाणं ८. ९२. ८
युष्मस्य ते वृषभस्य ३. ४६. १
युष्मो अन्यां स्वकृत् ७. २०. ३
युनक्त सीरा वि युगा १०. १०१. ३
युनज्मि ते ब्रह्मणा १. ८२. ६
युयूषतः सवयसा १. १४४. ३
युवोता शब्मन्त्सचाँ ८. १८. ११
युयोप नाभिरुरस्यायोः १. १०४. ४

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

युवं कण्वाय नासत्या ८. ५. २३
युवं कवी ष्ठः पर्यश्विना १०. ४०. ६
युवं चित्रं ददथुर्भोजनं ७. ७४. २
युवं च्यवानं जरसो ७. ७१. ५
युवं च्यवानं सनयं १०. ३९. ४
युवं च्यवानमश्विना १. ११७. १३
युवं तमिन्द्रापर्वता १. १३२. ६
युवं तासां दिव्यस्य १. ११२. ३
युवं तुग्राय पूर्व्येभि १. ११७. १४
युवं दक्षं धृतव्रत १. १५. ६
युवं देवा ऋतुना ८. ५७. १
युवं धेनुं शयवे १. ११८. ८
युवं नरा स्तुवते कृष्णियाय १. ११७. ७
युवं नरा स्तुवते पज्रियाय १. ११६. ७
युवं नो येषु वरुण ५. ६४. ६
युवं पय उस्रियाया १. १८०. ३
युवं पेदवे पुरुवार १. ११९. १०
युवं प्रत्नस्य साधथो ३. ३८. ९
युवं भुज्युं भुरमाणं १. ११९. ४
युवं भुज्युं समुद्र आ १०. १४३. ५
युवं भुज्युमवविद्धं ७. ६९. ७
युवं मित्रेमं जनं यतयः ५. ६५. ६
युवं मृगं जागृवांसं ८. ५. ३६
युवं रथेन विमदाय १०. ३९. ७
युवं रेभं परिषूते १. ११९. ६
युवं वन्दनं निर्ऋतं १. ११९. ७
युवं वरो सुषाम्णे ८. २६. २
युवं वस्त्राणि पीवसा १. १५२. १
युवं विप्रस्य जरणा १०. ३९. ८
युवं शक्रा मायाविना १०. २४. ४
युवं श्यावाय रुशती १. ११७. ८
युवं श्रियमश्विना ४. ४४. २
युवं श्रीभिर्दर्शताभि ६. ६३. ६
युवं श्वेतं पेदवे १. ११८. ९
युवं श्वेतं पेदवे १०. ३९. १०
युवं सुराममश्विना १०. १३१. ४
युवं ह कृशं युवमश्विना १०. ४०. ८
युवं ह गर्भं जगतीषु १. १५७. ५
युवं ह घर्मं मधुमन्त १. १८० ४
युवं ह भुज्युं युवमश्विना १०. ४०. ७
युवं ह रेभं वृषणा १०. ३९. ९
युवं ह स्थो भिषजा १. १५७. ६
युवं हि ष्मा पुरुभुजे ८. ८६. ३
युवं हि स्थः स्वर्पती ९. १९. २
युवं ह्यप्नराजावसीदतं १०. १३२. ७
युवं ह्यास्तं महो रन् १. १२०. ७
युवमत्यस्याव नक्षयो १. १८०. २
युवमत्रयेऽवनीताय १. ११८. ७
युवमेतं चक्रथुः सिन्धुषु १. १८२. ५
युवमेतानि दिवि रोचना १. ९३. ५
युवां गोतमः पुरुमीळ्हो १. १८३. ५
युवां चिद्धि ष्माश्विनावनु १. १८०. ८
युवां देवास्त्रय एकादशास ८. ५७. २
युवां नरा पश्यमानास ७. ८३. १
युवां पूषेवाश्विना १. १८१. ९
युवां मृगेव वारणा १०. ४०. ४
युवां यज्ञैः प्रथमा १. १५१. ८
युवां स्तोमेभिर्देवयन्तो १. १३९. ३
युवां ह घोषा पर्यश्विना १०. ४०. ५
युवां हवन्त उभयास ७. ८३. ६
युवाकु हि शचीनां १. १७. ४
युवादत्तस्य धिष्ण्या ८. २६. १२
युवानं विश्पतिं कविं ८. ४४. २६
युवाना पितरा पुनः १. २०. ४
युवानो रुद्रा अजरा १. ६४. ३
युवाभ्यां देवी धिषणा १. १०९. ४
युवाभ्यां मित्रावरुणोपमं ५. ६४. ४
युवाभ्यां वाजिनीवसू ८. ५. ३
युवाभिद्धवसे पूर्व्याय ४. ४१. ७
युवाभिद्युत्सु पृतनासु ७. ८२. ४
युवाभिन्द्राग्नी वसुनो १. १०९. ५
युवा स मारुतो गण ५. ६१. १३
युवा सुवासाः परिवीत ३. ८. ४
युवोः त्रियं परि योषा ७. ६९. ४
युवो रजांसि सुयमासो १. १८०. १
युवोरत्रिश्चिकेतति ५. ७३. ६
युवो रथस्य परि चक्र ८. २२. ४
युवोरश्विना वपुषे १. ११९. ५
युवो राष्ट्रं बृहदिन्वति ७. ८४. २
युवोरुषा अनु श्रियं [illegible]
युवोरु षू रथं हुवे ८. २६. १
युवोर्ऋतं रोदसी ३. ५४. ३
युवोर्दानाय सुभरा १. ११२. २
युवोर्यदि सख्यायास्मे १०. ६१. २५
युवोर्हि मातादिति १०. १३२. ६
युष्माँ उ नक्तमूतये ८. ७. ६
युष्माकं देवा अवसाहनि ७. ५२. २
युष्माकं बुध्ने अपां १०. ७७. ४
युष्माकं स्मा रथाँ अनु ५. ५३. ५
युष्मादत्तस्य मरुतो ५. ५४. १३
युष्मे देवा अपि ष्मसि ८. ४७. ८
युष्मेषितो मरुतो १. ३९. ८
युष्मोतो विप्रो मरुतः ७. ५८. ४
यून ऊ षु नविष्ठया ८. २०. १९
यूपव्रस्का उत ये १. १६२. ६
यूयं गावो मेदयथा ६. २८. ६
यूयं तत्सत्यशवस १. ८६. ९
यूयं देवाः प्रमति २. २९. २
यूयं धूर्षु प्रयुजो न १०. ७७. ५
यूयं न उग्रा मरुतः १. १६६. ६
यूयं मर्तं विपन्यवः ५. ६१. १५
यूयं रयिं मरुतः ५. ५४. १४
यूयं राजानः कं चिच्चर्षणी ८. १९. ३५
यूयं राजानमिर्यं जनाय ५. ५८. ४
यूयं विश्वं परि पाथ १०. १२६. ४
यूयं ह रत्नं मघवत्सु ७. ३७. २
यूयं हि देवीर्ऋतयुग्भि ४. ५१. ५
यूयं हि ष्ठा सुदानव० अधा ८. ८३. ९
यूयं हि ष्ठा सुदानव० कर्ता ६. ५१. १५
यूयं हि ष्ठा सुदानवो ८. ७. १२
यूयमस्मभ्यं धिषणाभ्य ४. ३६. ८
यूयमस्मान्नयत वस्यो ५. ५५. १०
ये अंस्या ये अङ्ग्याः १. १९१. ७
ये अग्नयो न शोशुचन् ६. ६६. २
ये अग्निदग्धा ये अनग्नि १०. १५. १४
ये अग्नेः परि जज्ञिरे १०. ६२. ६
ये अग्ने चन्द्र ते गिरः ५. १०. ४
ये अग्ने नेरयन्ति ते ५. २०. २
ये अञ्जिषु ये वाशीषु ५. ५३. ४
ये [illegible] १. १६४. १९
ये अश्विना ये पितरा ४. ३४. ९
ये के च ज्मा महिनो ६. ५२. १५
ये गव्यता मनसा ६. ४६. १०
ये गोमन्तं वाजवन्तं ४. ३४. १०
ये च पूर्व ऋषयो ७. २२. ९
ये चाकनन्त चाकनन्त ५. ३१. १३
ये चार्हन्ति मरुतः ८. २०. १८
ये चित्पूर्व ऋतसाप १०. १५४. ४
ये चिद्धि त्वामृषयः १. ४८. १४
ये चिद्धि पूर्व ऋतसाप १. १७९. २
ये चिद्धि मृत्युबन्धव ८. १८. २२
ये चेह पितरो ये च १०. १५. १३
ये तातृषुर्देवत्रा १०. १५. ९
ये ते त्रिरहन्त्सवितः ४. ५४. ६
ये ते पन्थाः सवितः १. ३५. ११
ये ते पवित्रमूर्मयो ९. ६१. ५
ये ते विप्र ब्रह्मकृतः १०. ५०. ७
ये ते वृषणो वृषभास १. १७७. २
ये ते शुक्रासः शुचयः ६. ६. ४
ये ते शुष्मं ये तविषी ३. ३२. ३
ये ते सन्ति दशग्विनः ८. १. ९
ये ते सरस्व ऊर्मयो ७. ९६. ५
ये त्रिंशति त्रयस्परो ८. २८. १
ये त्वा देवोस्रिकं १. १९०. ५
ये त्वामिन्द्र न तुष्टुवु ८. ६. १२
ये त्वाहिहत्ये मघवन् ३. ४७. ४
ये देवानां यज्ञिया ७. ३५. १५
ये देवास इह स्थन ८. ३०. ४
ये देवासो अभवता ४. ३५. ८
ये देवासो दिव्येकादश १. १३९. ११
ये द्रप्सा इव रोदसी ८. ७. १६
ये नः पूर्वे पितरः १०. १५. ८
ये नः सपत्ना अप १०. १२८. ९
येन चष्टे वरुणो मित्रो ८. १९. १६
येन ज्योतींष्यायवे ८. १५. ५
येन तोकाय तनयाय ५. ५३. १३
येन दीर्घं मरुतः १. १६६. १४
येन द्यौरुग्रा पृथिवी १०. १२१. ५
येन मानासश्चितयन्त १. १७१. ५
येन वंसाम पृतनासु ८. ६०. १२

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

येन वृद्धो न शवसा	६. ४४. ३
येन सिन्धुं महीरपो	८. १२. ३
येन सूर्यं ज्योतिषा	०. ३७. ४
ये नाकस्याधि रोचने	१. १९. ६
येना दशग्वमध्रिगुं	८. १२. २
येना नवग्वो दध्यङ्	९. १०८. ४
येना पावक चक्षसा	१. ५०. ६
येनाव तुर्वशं यदुं	८. ७. १८
येना समुद्रमसृजो	८. ३. १०
येनेन्द्रो० असपत्नः	१०. १७४. ४
येनेन्द्रो० असपत्ना	१०. १५९. ४
येनेमा विश्वा च्यवना	२. १२. ४
ये पाकशंसं विहरन्त	७. १०४. ९
ये पातयन्ते अज्मभि	८. ४६. १८
ये पायवो मामतेयं	१. १४७. ३
	४. ४. १३
ये पृषतीभिर्ऋष्टिभिः	१. ३७. २
येभिः सूर्यमुषसं	६. १७. ५
येभिस्तिस्रः परावतो	८. ५. ८
येभ्यो माता मधुमत्	१०. ६३. ३
येभ्यो होत्रां प्रथमा	१०. ६३. ७
ये महो रजसो विदु	१. १९. ३
ये मूर्धानः क्षितीनां	८. ६७. १३
ये मे पञ्चाशतं ददु	५. १८. ५
ये यजत्रा य ईड्यास्ते	१. १४. ८
ये यज्ञेन दक्षिणया	१०. ६२. १
ये युध्यन्ते प्रधनेषु	१०. १५४ ३
ये राधांसि ददत्यश्व्या	७. १६. १०
ये वध्वश्चन्द्रं वहतुं	१०. ८५. ३१
ये वां दंसांस्यश्विना	८. ९. ३
ये वाजिनं परिपश्यन्ति	१. १६२. १२
ये वायव इन्द्रमादनास	७. ९२. ४
ये वावृधन्त पार्थिवा	५. ५२. ७
ये वृक्णासो अधि	३. ८. ७
ये शुभ्रा घोरवर्पसः	१. १९. ५
येषां श्रियाधि रोदसी	५. ६१. १२
येषामज्मेषु पृथिवी	१. ३७. ८
येषामर्णो न सप्रथो	८. २०. १३
येषामावाध ऋग्मिय	८. २३. ३
येषामिळा घृतहस्ता	७. १६. ८
ये सत्यासो हविरदो	१०. १५. १०
ये सवितुः सत्यसवस्य	१०. ३६. १३
ये सोमासः० ये वादः	९. ६५. २२
ये सोमासः० सर्वाँस्ताँ	८. ९३. ६
ये स्तोतृभ्यो गोअग्रा	२. १. १६
	२. २. १३
ये स्था मनोर्यज्ञियास्ते	१०. ३६. १०
ये ह त्ये ते सहमाना	४. ६. १०
ये हरी मेधयोक्था	४. ३३. १०
यो अग्निं तन्वो दमे	८. ४४. १५
यो अग्निं देववीतये	१. १२. ९
यो अग्निं हव्यदातिभि	८. १९. १३
यो अग्निः क्रव्यवाहनः	१०. १६. ११
यो अग्निः क्रव्यात्प्रविवेश	१०. १६. १०
यो अग्निः सप्तमानुषः	८. ३९. ८
यो अग्नीषोमा हविषा	१. ९३. ८
यो अत्य इव मृज्यते	९. ४३. १
यो अदधाज्ज्योतिषि	१०. ५४. ६
यो अद्रिभित्प्रथमजा	६. ७३. १
यो अध्वरेषु शंतम	१. ७७. २
यो अनिध्मो दीदय	१०. ३०. ४
यो अपाचीने तमसि	७. ६. ४
यो अप्सु चन्द्रमा इव	८. ८२. ८
यो अप्स्वा शुचिना	२. ३५. ८
यो अर्यो मर्तभोजनं	१. ८१. ६
यो अश्वस्य दधिक्राव्णो	४. ३९. ३
यो अश्वानां यो गवां	१. १०१. ४
यो अश्वेभिर्वहते वस्त	८. ४६. २६
यो अस्मा अन्नं तृष्वा	१०. ७९. ५
यो अस्मै घ्रंस उत वा	५. ३४. ३
यो अस्मै हविषाविधन्न	६. ५४. ४
यो अस्मै हव्यदातिभि	८. २३. २१
यो अस्मै हव्यैर्घृतवद्भि	२. २६. ४
यो अस्य पारे रजसः	१०. १८७. ५
योगक्षेमं व आदायाहं	१०. १६६. ५
यो गर्भमोषधीनां गवां	७. १०२. २
यो गृणतामिदासिथा	६. ४५. १७
योगेयोगे तवस्तरं	१. ३०. ७
यो जनान्महिषाँ इवाति	१०. ६० ३
यो जागार तमृचः	[illegible]
यो जात एव प्रथमो	२. १२. १
यो जिनाति न जीयते	९. ५५. ४
यो दभ्रेभिर्हव्यो यश्च	१०. ३८. ४
यो दुष्टरो विश्ववार	८. ४६. ९
यो देवो देवतमो	४. २२. ३
यो देह्यो अनमयद्	७. ६. ५
योद्धासि कृत्वा शवसोत	८. ८८. ४
यो धर्ता भुवनानां य	८. ४१. ५
यो धारया पावकया	९. १०१. २
यो धृषितो योऽवृतो	८. ३३. ६
यो नः कश्चिद्रिरिक्षति	८. १८. १३
यो नः पिता जनिता	१०. ८२. ३
यो नः पूषन्नघो वृको	१. ४२. २
यो नः शश्वत्पुराविथा	८. ८०. २
यो नः सनुत्य उत वा	२. ३०. ९
यो नः सनुत्यो अभि	६. ५. ४
यो नः स्वो अरणो	६. ७५. १९
यो न आगो अभ्येनो	५. ३. ७
यो न इदमिदं पुरा	८. २१. ९
यो न इन्दुः पितरो	८. ४८. १२
यो न इन्द्राभितो जनो	१०. १३३. ४
यो न इन्द्राभिदासति	१०. १३३. ५
यो नन्त्वान्यनमन्	२. २४. २
यो नार्मरं सहवसुं	२. १३. ८
योनिष्ट इन्द्र निषदे	१. १०४. १
योनिष्ट इन्द्र सदने	७. २४. १
यो नो अग्ने अररिवाँ	१. १४७. ४
यो नो अग्ने दुरेव आ	६. १६. ३१
यो नो अग्नेऽभिदासत्यन्ति	१. ७९. ११
यो नो दाता वसूनामिन्द्रं	८. ५१. ५
यो नो दाता स नः पिता	८. ५२. ५
यो नो दास आर्यो वा	१०. ३८. ३
यो नो देवः परावतः	८. १२. ६
यो नो मरुतो अभि	७. ५९. ८
यो नो मरुतो वृकताति	२. ३४. ९
यो नो रसं दिप्सति	७. १०४. १०
यो ब्रह्मणे सुमतिमायजाते	७. ६०. ११
यो भानुभिर्विभावा	१०. ६. २
यो भूयिष्ठं नासत्याभ्यां	५. ७७. ४
यो भोजनं च दयसे	२. १३. ६
यो म इति प्रवोच	५. २७. ४
यो म इमं चिदु त्मना	८. ४६. २७
यो मर्त्येष्वमृत ऋतावा	४. २. १
यो मा पाकेन मनसा	७. १०४. ८
यो मायातुं यातुधाने	७. १०४. १६
यो मित्राय वरुणाया	१. १३६. ५
यो मृळयाति चक्रुषे	७. ८७. ७
यो मे धेनूनां शतं	५. ६१. १०
यो मे राजन्युज्यो वा	२. २८. १०
यो मे शता च विंशतिं	५. २७. २
यो मे हिरण्यसंदृशो	८. ५. ३८
यो यजाति यजात इत्	८. ३१. १
यो यज्ञस्य प्रसाधन	१०. ५७. २
यो यज्ञो विश्वतस्तन्तुभि	१०. १३०. १
यो रक्षांसि निजूर्वति	१०. १८७. ३
यो रजांसि विममे	६. ४९. १३
यो रध्रस्य चोदिता	२. १२. ६
यो रयिवो रयिन्तमो	६. ४४. १
यो राजभ्य ऋतनिभ्यो	२. २७. १२
यो राजा चर्षणीनां	८. ७०. १
यो रायो० तमिन्द्रमभि	८. ३२. १३
यो रायो० तस्मा इन्द्राय	१. ४. १०
यो रेवान्यो अमीवहा	१. १८. २
यो रोहितौ वाजिनौ	५. ३६. ६
यो वः शिवतमो रस	१०. ९. २
यो वः सुनोत्यभिपित्वे	४. ३५. ६
यो वः सेनानीर्महतो	१०. ३४. १२
योऽवरे वृजने विश्वथा	२. २४. ११
यो वर्धन ओषधीनां	७. १०१. २
यो वां गर्त मनसा	७. ६४. ४
यो वां नासत्यावृषि	८. ८. १५
यो वां परिज्मा सुवृदश्विना	१०. ३९. १
यो वां यज्ञेभिरावृतो	८. २६. १३
यो वां यज्ञैः शशमानो	१. १५१. ७
यो वां यज्ञो नासत्या	७. ७०. ६
यो वां रजांस्यश्विना	८. ७३. १३
यो वां रथो नृपती	७. ७१. ४
यो वाघते ददाति	१. ४०. ४
यो वाचा विवाचो	१०. २३. ५
यो वामश्विना मनसो	१. ११७. २

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

यो वामुरुव्यचस्तमं ८. २६. १४
यो वामृजवे क्रमणाय ६. ७०. ३
यो विश्वतः सुप्रतीकः १. ९४. ७
यो विश्वस्य जगतः १. १०१. ५
यो विश्वा दयते वसु ८. १०३. ६
यो विश्वान्यभि व्रता ८. ३२. २८
यो विश्वाभि० पर्षदति १०. १८७. ४
यो विश्वाभि० पूषाविता ३. ६२. ९
यो वृत्राय सिनमत्रा २. ३०. २
यो वेदिष्ठो अव्यथिष्व ८. २. २४
यो वो देवा घृतस्नुना ६. ५२. ८
यो वो वृताभ्यो अकृणोदु १०. ३०. ७
यो व्यंसं जाहृषाणेन १. १०१. २
यो व्यतीरफाणयत् ८. ६९. १३
यो हत्वाहिमरिणात् २. १२. ३
यो ह वां मधुनो दृति ८. ५. १९
यो हव्यान्यैरयता ८. १९. २४
यो ह स्य वां रथिरा ७. ६९. ५
यो होतासीत्प्रथमो १०. ८८. ४
यौ ते श्वानौ यम १०. १४. ११
रक्षा णो अग्ने तव ४. ३. १४
रक्षा सु नो अररुषः ९. २९. ५
रक्षोहणं वाजिनमा १०. ८७. १
रक्षोहा विश्वचर्षणि ९. १. २
रण्वः संदृष्टौ पितुमाँ १०. ६४. ११
रथं नु मारुतं वयं ५. ५६. ८
रथं यान्तं कुह को ह १०. ४०. १
रथं युञ्जते मरुतः शुभे ५. ६३. ५
रथं ये चक्रुः सुवृतं नरेष्ठां ४. ३३. ८
रथं ये चक्रुः सुवृतं सुचेतसो ४. ३६. २
रथं वामनुगायसं ८. ५. ३४
रथं हिरण्यवन्धुरं ८. ५. २८
रथं हिरण्यवन्धुर ४. ४६. ४
रथवाहनं हविरस्य ६. ७५. ८
रथानां न येऽराः १०. ७८. ४
रथाय नावमुत नो १. १४०. १२
रथिरासो हरयो ये ते ८. ५०. ८
रथीतमं कपर्दिनमीशानं ६. ५५. २
रथीव कशया श्वाँ अभि ५. ८३. ३
रथे तिष्ठन्नयति वाजिनः ६. ७५. ६
रथेन पृथुपाजसा ४. ४६. ५
रथेष्ठायाध्वर्यवः सोम ८. ४. १३
रथो न यातः शिक्वभिः १. १४१. ८
रथो यो वां त्रिवन्धुरो ८. २२. ५
रदत्पथो वरुणः सूर्याय ७. ८७. १
रपत्कविरिन्द्रार्कसातौ १. १७४. ७
रपद्गन्धर्वीरप्या च १०. ११. २
रमध्वं मे वचसे ३. ३३. ५
रयिं दिवो दुहितरो ४. ५१. १०
रयिं नश्चित्रमश्विन ९. ४. १०
रयिं सुक्षत्रं स्वपत्य १. ११६. १९
रयिर्न चित्रा सूरो १. ६६. १
रयिर्न यः पितृवित्तो १. ७३. १
ररे हव्यं मतिभिर्यज्ञियानां ७. ३९. ६
रश्मीँरिव यच्छतमध्वराँ ८. ३५. २१
रसं ते मित्रो अर्यमा ९. ६४. २४
रसाय्यः पयसा पिन्वमान ९. ९७. १४
राकामहं सुहवां सुष्टुती २. ३२. ४
राजन्तमध्वराणां १. १. ८
राजानावनभिद्रुहा २. ४१. ५
राजानो न प्रशस्तिभिः ९. १०. ३
राजा मेधाभिरीयते ९. ६५. १६
राजा राष्ट्रानां पेशो ७. ३४. ६
राजा समुद्रं नद्यो वि ९. ८६. ८
राजा सिन्धूनां पवते ९. ८६. ३३
राजा सिन्धूनामवसिष्ट ९. ८९. २
राजेव हि जनिभिः ७. १८. २
राज्ञो नु ते वरुणस्य १. ९१. ३
९. ८८. ८
रातिं यद्वामरक्षसं ८. १०१. ८
रात्रीभिरस्मा अहभि १०. १०. ९
रात्री व्यख्यदायती १०. १२७. १
रायः समुद्रांश्चतुरो ९. ३३. ६
रायस्कामो वज्रहस्तं ७. ३२. ३
रायस्पूर्धि स्वधावो १. ३६. १२
राया वयं ससवांसो ४ ४२. १०
राया हिरण्यया मति ७. ६६. ८
राये नु यं जज्ञतू ७. ९०. ३
रायो धारास्याघृणे ६. ५५. ३
रायो बुध्नः० [illegible]
रायो बुध्नः० विश्वा १०. १३९. ३
रारन्धि सवनेषु ण ३. ४१. ४
रासि क्षयं रासि मित्र २. ११. १४
रिशादसः सत्पतीँ ६. ५१. ४
रुजा दृळ्हा चिद्रक्षसः ९. ९१. ४
रुद्रस्य ये मीळ्हुषः ६. ६६. ३
रुद्राणामेति प्रदिशा १. १०१. ७
रुवति भीमो वृषभ ९. ७०. ७
रुशद्वत्सा रुशती १. ११३. २
रूपंरूपं प्रतिरूपो ६. ४७. १८
रूपंरूपं मघवा ३. ५३. ८
रेभदत्र जनुषा १०. ९२. १५
रेवतीर्नः सधमाद १. ३०. १३
रेवद्वयो दधाथे १. १५१. ९
रेवाँ इद्रेवतः स्तोता ८. २. १३
रैभ्यासीदनुदेयी १०. ८५. ६
रोदसी आ वदता १. ६४. ९
रोहिच्छ्यावा सुमदंशु १. १००. १६
रोहितं मे पाकस्थामा ८. ३. २२
वंसगेव पूषर्या १०. १०६. ५
वंस्व विश्वा वार्याणि ७. १७. ३
वंस्वा नो वार्या पुरु ८. २३. २७
वक्ष्यन्तीवेदा गनीगन्ति ६. ७५. ३
वचो दीर्घप्रसद्मनीशे ८. २५. २०
वचोविदं वाचमुदीरयन्तीं ८. १०१. १६
वच्यन्ते वां ककुहासो १. ४६. ३
वज्रं यश्चक्रे सुहनाय १०. १०५. ७
वज्रेण हि वृत्रहा १०. १११. ६
वद्मा सूनो सहसो ६. १३. ६
वद्मा हि सूनो अस्यद्म ६. ४. ४
वधीं वृत्रं मरुत १. १६५. ८
वधीदिन्द्रो वरशिखस्य ६. २७. ५
वधीर्हि दस्युं धनिनं १. ३३. ४
वधूरियं पतिमिच्छन्त्येति ५. ३७. ३
वधेन दस्युं प्र हि ५. ४. ६
वधैर्दुःशंसाँ अप १. ९४. ९
वनस्पतिं पवमान ९. ५. १०
वनस्पतिरवसृजन्नुप २. ३. १०
वनस्पते रवीनया १०. ७०. १०
वनस्पतेऽव सृजोप ३. ४. १०
७. २. १०
वनस्पते वीड्वङ्गो हि ६. ४७. २६
वनस्पते शतवल्शो ३ ८. ११
वनीवानो मम दूतास १० ४७. ७
वने न वा यो न्यधायि १०. २९. १
वनेम तद्धोत्रया १. १२९. ७
वनेम पूर्वीरर्यो १. ७०. १
वनेषु जायुर्मर्तेषु १. ६७. १
वनेषु व्यन्तरिक्षं ५. ८५. २
वनोति हि सुन्वन्क्षयं १. १३३. ७
वन्दस्व मारुतं गणं १. ३८. १५
वन्वन्नवातो अभि ९. ८९. ७
वपन्ति मरुतो मिहं ८. ७. ४
वपुर्नु तच्चिकितुषे ६. ६६. १
वम्रीभिः पुत्रमग्रुवो ४. १९. ९
वयं घ त्वा सुतावन्त ८. ३३. १
वयं घा ते अपि ष्मसि ८. ३२. ७
वयं घा ते अपूर्व्येन्द्र ८. ६६. ११
वयं घा ते त्वे इद्विन्द्र ८. ६६. १३
वयं चिद्धि वां जरितारः १. १८०. ७
वयं जयेम त्वया युजा १. १०२. ४
वयं त इन्द्र स्तोमेभि ८. ५४. ८
वयं त एभिः पुरुहूत ६. १९. १३
वयं तद्वः सम्राज आ ८. २७. २२
वयं ते अग्न उक्थैर्विधेम ५. ४. ७
वयं ते अग्ने समिधा ७. १४. २
वयं ते अद्य ररिमा ३. १४. ५
वयं ते अस्य वृत्रहन् वसो ९. ९८. ५
वयं ते अस्य वृत्रहन् विद्याम ८. २४. ८
वयं ते अस्यामिन्द्र ६. २६. ८
वयं ते त इन्द्र ये च देव ७. ३०. ४
वयं ते त इन्द्र ये च नरः ५. ३३. ५
वयं ते वय इन्द्र विद्धि २. २०. १
वयं नाम प्र ब्रवामा ४. ५८. २
वयं मित्रस्यावसि ५. ६५. ५
वयं वो वृक्तबर्हिषो ८. २७. ७
वयं शूरेभिरस्तृभिरिन्द्र १. ८. ४
वयं सोम व्रते तव १०. ५७. ६

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

वयं हि ते अमन्मह्या	१. ३०. २१
वयं हि त्वा बन्धुमन्त	८. २१. ४
वयं हि वां हवामह	८. २६. ९
वयं हि वां हवामहे	८. ८७. ६
वयः सुपर्णा उप सेदु	१०. ७३. ११
वयमग्ने अर्वता वा	२. २. १०
वयमग्ने वनुयाम	५. ३. ६
वयमग्नेन्द्रस्य प्रेष्ठा	१. १६७. १०
वयमिद्धः सुदानवः	८. ८३. ६
वयमिन्द्र त्वायवः	१०. १३३. ६
वयमिन्द्र त्वायवोऽभि	७. ३१. ४
वयमिन्द्र त्वायवो हविष्मन्तो	३. ४१. ७
वयमिन्द्र त्वे सचा	४. ३२. ४
वयमु त्वा गृहपते	६. १५. १९
वयमु त्वा तदिदर्था	८. २. ६
वयमु त्वा दिवा सुते	८. ६४. ६
वयमु त्वा पथस्पते	६. ५३. १
वयमु त्वामपूर्व्य	८. २१. १
वयमु त्वा शतक्रतो	८. ९२. १२
वयमेनमिदा ह्योऽपी	८. ६६. ७
वयश्चित्ते पतत्रिणो	१. ४९. ३
वया इदग्ने अग्नयस्ते	१. ५९. १
वयो न ये श्रेणीः	५. ५९. ७
वयो न वृक्षं सुपलाशमा	१०. ४३. ४
वरा इवेद्रैवतासो	५. ६०. ४
वरिवोधातमो भव	९. १. ३
वरिष्ठे न इन्द्र वन्धुरे	६. ४७. ९
वरिष्ठो अस्य दक्षिणा	६. ३७. ४
वरुणं वो रिशादस	५. ६४. १
वरुणः प्राविता भुवन्	१. २३. ६
वरुणो मित्रो अर्यमा	८. २८. २
वरेथे अग्निमातपो	८. ७३. ८
वर्धस्वा सु पुरुष्टुत	८. १३. २५
वर्धाद्यं यज्ञ उत सोम	६. ३८. ४
वर्धान्यं पूर्वीः क्षपो	१. ७०. ४
वर्धान्यं विश्वे मरुतः	६. १७. ११
वर्षिष्ठक्षत्रा उरुचक्षसा	८. १०१. २
ववक्ष इन्द्रो अमित	४. १६. ५
ववक्षुरस्य केतव	८. १२. ७
वव्राजा सीमनदती	३. १. ६
वव्रासो न ये स्वजाः	१. १६८. २
वषट् ते विष्णवास	७. ९९. ७
	७. १००. ७
वसां राजानं वसतिं	५. २. ६
वसिष्ठं ह वरुणो	७. ८८. ४
वसिष्ठासः पितृवद्वाच	१०. ६६. १४
वसिष्वा हि मियेध्य	१. २६. १
वसुं न चित्रमहसं	१०. १२२. १
वसुर्वसुपतिर्हि कमस्यग्ने	८. ४४ २४
वसूनां वा चर्कृष	१०. ७४. १
वसू रुद्रा पुरुमन्तू	१. १५८. १
वसोरिन्द्रं वसुपतिं	१. ९. ९
वस्यां इन्द्रासि मे	८. १. ६
वस्वी ते अग्ने संदृष्टि	६. १६. २५
वह कुत्समिन्द्र यस्मिञ्चाकन	१. १७४. ५
वहन्ति सीमरुणासो	६. ६४. ३
वहन्तु त्वा मनोयुजो	४. ४८. ४
वहन्तु त्वा रथेष्ठामा	८. ३३. १४
वहिष्ठेभिर्विहरन्यासि	४. १३. ४
वह्निं यशसं विदथस्य	१. ६०. १
वाचं सु मित्रावरुणा	५. ६३. ६
वाचमष्टापदीमहं	८. ७६. १२
वाचस्पतिं विश्वकर्माण	१०. ८१. ७
वाचो जन्तुः कवीनां	९. ६७. १३
वाजयन्निव नू रथान्	२. ८. १
वाजिनीवती सूर्यस्य	७. ७५. ५
वाजिन्तमाय सह्यसे	१०. ११५. ६
वाजी वाजेषु धीयते	३. २७. ८
वाजेभिर्नो वाजसाता	१. ११०. ९
वाजेवाजेऽवत वाजिनो	७. ३८. ८
वाजेषु सासहिर्भव	३. ३७. ६
वाजो नु ते शवस	५. १५. ५
वाज्यसि वाजिनेना	१०. ५६. ३
वात आ वातु भेषजं	१०. १८६. १
वातत्विषो मरुतो वर्ष	५. ५७. ४
वातस्य नु महिमानं	१०. १६८. १
वातस्य पत्मन्नीळिता	५. ५. ७
वातस्य युक्तान्त्सुयुज	५. ३१. १०
वातस्याश्वो वायोः	१०. १३६. ५
वातासो न ये धुनयो	१०. ७८. ३
वातेवाजुर्या नद्येव	२. ३९. ५
वातोपधूत इषितो	१०. ९१. ७
वामं नो अस्त्वर्यमन्	८. ८३. ४
वामंवामं त आदुरे	४. ३०. २४
वाममद्य सवितर्वाममु	६. ७१. ६
वामस्य हि प्रचेतस	८. ८३. ५
वामी वामस्य धूतयः	६. ४८. २०
वाय उक्थेभिर्जरन्ते	१. २. २
वायवा याहि दर्शतेमे	१. २. १
वायवा याहि वीतये	५. ५१. ५
वायविन्द्रश्च चेतयः	१. २. ५
वायविन्द्रश्च शुष्मिणा	४. ४७. ३
वायविन्द्रश्च सुन्वत	१. २. ६
वायुरस्मा उपामन्थत्	१०. १३६. ७
वायुर्न यो नियुत्वाँ	९. ८८. ३
वायुर्युङ्क्ते रोहिता वायु	१. १३४. ३
वायो तव प्रपृञ्चती	१. २. ३
वायो याहि शिवा	८. २६. २३
वायो ये ते सहस्रिणो	२. ४१. १
वायो शतं हरीणां	४. ४८. ५
वायो शुक्रो अयामि	४. ४७. १
वार्ण त्वा यव्याभि	८. ९८. ८
वार्त्रहत्याय शवसे	३. ३७. १
वावर्त येषां राया	१०. ९३. १३
वावसाना विवस्वति	१. ४६. १३
वावृधानः शवसा	१०. १२०. २
वावृधान उप द्यवि	८. ६. ४०
वावृधानस्य ते वयं	८. १४. ६
वावृधानाय तूर्वये	९. ४२. ३
वावृधाना शुभस्पती	८. ५. ११
वावृधानो मरुत्सखेन्द्रो	८. ७६. ३
वाशीमन्त ऋष्टिमन्तो	५. ५७. २
वाशीमेको बिभर्ति	८. २९. २
वाश्रा अर्षन्तीन्दवो	९. १३. ७
वाश्रेव विद्युन्मिमाति	१. ३८. ८
वासयसीव वेधसस्त्वं	७. ३७. ६
वास्तोष्पते ध्रुवा स्थूणां	८. १७. १४
वास्तोष्पते प्रतरणो	७. ५४. २
वास्तोष्पते प्रति	७. ५४. १
वास्तोष्पते शग्मया	७. ५४. ३
वाहिष्ठो वां हवानां	८. २६. १६
वि क्रोशनासो विष्वञ्च	१०. २७. १८
वि घ त्वावाँ ऋतजात	१. १८९. ६
विघ्नन्तो दुरिता पुरु	९. ६२. २
वि चक्रमे पृथिवीमेष	७. १००. ४
वि चिद्वृत्रस्य दोधतो	८. ६. ६
वि चेदुच्छन्त्याश्विना	७. ७२. ४
वि जनाञ्छ्यावाः	१. ३५. ५
वि जयुषा रथ्या यात	६. ६२. ७
वि जानीह्यार्यान्ये च	१. ५१. ८
वि जिहीष्व वनस्पते	५. ७८. ५
विजेषकृदिन्द्र इवानव	१०. ८४. ५
वि ज्योतिषा बृहता	५. २. ९
वि तद्ययुररुणयुग्भि	६. ६५. २
वि तन्वते धियो अस्मा	५. ४७. ६
वि तर्तूर्यन्ते मघवन्	८. १. ४
वि तिष्ठध्वं मरुतो	७. १०४. १८
वि ते वज्रासो अस्थिरन्	१. ८०. ८
वि ते विष्वग्वातजूतासो	६. ६. ३
वित्वक्षणः समृतौ चक्र	५. ३४. ६
वि त्वदापो न पर्वतस्य	६. २४. ६
वि त्वा ततस्रे मिथुना	१. १३१. ३
विदद्यत्पूर्व्यं नष्टमुदी	८. ७९. ६
विदद्यदी सरमा	३. ३१. ६
विदा चिन्नु महान्तो	५. ४१. १३
विदा दिवो विष्यन्	५. ४५. १
विदा देवा अधाना	८. ४७. २
विदानासो जन्मनो	४. ३४. २
वि दुर्गा वि द्विषः	१. ४१. ३
विदुष्टे अस्य वीर्यस्य	१. १३१. ४
विदुष्टे विश्वा भुवनानि	४. ४२. ७
वि दृळ्हानि चिदद्रिवो	६. ४५. ९
विद्मा ते अग्ने त्रेधा	१०. ४५. २
विद्मा सखित्वमुत शूर	८. २१. ८
विद्मा हि ते पुरा वय	८. ७५. १६
विद्मा हि त्वा तुविकूर्मिं	८. ८१. २
विद्मा हि त्वा धनंजय	८. ४५. १३
विद्मा हि त्वा धनञ्जयं	३. ४२. ६
विद्मा हि त्वा वृषन्तमं	१. १० १०
विद्मा हि यस्ते अद्रिव	८. ९२. १८

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

विद्या हि रुद्रियाणां ८. २०. ३
विद्या ह्यस्य वीरस्य ८. २. २१
विद्यामादित्या अवसो २. २७. ५
वि द्यामेषि रजस्पृथ्वहा १. ५०. ७
विद्युतो ज्योतिः परि ७. ३३. १०
विद्युद्धस्ता अभिद्यवः ८. ७. २५
विद्युद्रथा मरुत ३. ५४. १३
विद्युन्न या पतन्ती १०. ९५. १०
विद्युन्महसो नरो अश्म ५. ५४. ३
विद्वांसाविद्दुरः पृच्छे १. १२०. २
विद्वाँ अग्ने वयुनानि १. ७२. ७
वि द्वीपानि पापतन् ८. २०. ४
वि द्वेषांसीनुहि वर्धयेळां ६. १०. ७
विधुं दद्राणं समने १०. ५५. ५
विधेम ते परमे २. ९. ३
वि नः पथः सुविताय १. ९०. ४
वि नः सहस्रं शुरुधो ७. ६२. ३
वि न इन्द्र मृधो १०. १५२. ४
वि नो देवासो अद्रुहो ८. २७. ९
वि नो वाजा ऋभुक्षणः ४. ३७. ७
वि पथो वाजसातये ६. ५३. ४
विपश्चिते पवमानाय ९. ८६. ४४
वि पाजसा पृथुना ३. १५. १
वि पित्रोरहिमायस्य ६. २०. ७
वि पूषन्नारया तुद ६. ५३. ६
वि पृक्षो अग्ने मघवानो १. ७३. ५
वि पृच्छामि पाक्या १. १२०. ४
विप्रं विप्रासोऽवसे ८. ११. ६
विप्रं होतारमद्रुहं ८. ४४. १०
वि प्रयतां देवजुष्टं १०. ७०. ४
विप्रस्य वा स्तुवतः ८. १९. १२
विप्रा यज्ञेषु मानुषेषु ७. २. ७
विप्रासो न मन्मभिः १०. ७८. १
विप्रेभिर्विप्र सन्त्य ५. ५१. ३
विभक्तारं हवामहे १. २२. ७
विभक्तासि चित्रभानो १. २७. ६
विभावा देवः सुरणः ३. ३. ९
विभिद्या पुरं शयथे १०. ६७. ५
विभु प्रभु प्रयमं २. २४. १०
विभूतरातिं विप्र ८. १९. २
विभूषन्नग्न उभयाँ ६. १५. ९
विभ्राजज्योतिषा० देवास्त ८. ९८. ३
विभ्राजज्योतिषा० येनेमा १०. १७०. ४
विभ्राजमान उषसा ७. ६३. ३
विभ्राड्बृहत्पिबतु १०. १७०. १
विभ्राड्बृहत्सुभृतं १०. १७०. २
वि मच्छ्रथाय रशना २. २८. ५
वि मृळीकाय ते मनो १. २५. ३
वि मे कर्णा पतयतो ६. ९. ६
वि मे पुरुत्रा पतयन्ति ३. ५५. ३
वि यत्तिरो धरणमच्युतं १. ५६. ५
वि यदस्थाद्यजतो १. १४१. ७
वि यदहेरध त्विषो ८. ९३. १४
वि यद्वरांसि पर्वतस्य ४. २१. ८
वि यद्वाचं कीस्तासो ६. ६७. १०
वि यस्य ते ज्रयसान १०. ११५. ४
वि यस्य ते पृथिव्यां ७. ३. ४
वि या जानाति जसुरिं ५. ६१. ७
वि या सृजति समनं १. ४८. ६
वि ये ते अग्ने भेजिरे ७. १. ९
वि ये दधुः शरदं ७. ६६. ११
वि ये भ्राजन्ते सुमखास १. ८५. ४
वि यो ममे यम्या ९. ६८. ३
वि यो रजांस्यमिमीत ६. ७. ७
वि यो ररप्श ऋषिभि ४. २०. ५
वि यो वीरुत्सु रोधन् १. ६७. ५
वि रक्षो वि मृधो १०. १५२. ३
विराट् सम्राड्विभ्वीः १. १८८. ५
विराण्मित्रावरुणयो १०. १३०. ५
विरूपास इदृषयस्त १०. ६२. ५
वि वातजूतो अतसेषु १. ५८. ४
वि वृक्षान् हन्त्युत हन्ति ५. ८३. २
वि वृत्रं पर्वशो ययुर्वि ८. ७. २३
विवेष यन्मा धिषणा ३. ३२. १४
विव्यक्थ महिना वृषन् ८. ९२. २३
विशंविशं मघवा १०. ४३. ६
विशां कविं विश्पतिं मानुषीणां ५. ४. ३
विशां कविं विश्पतिं मानुषीरिषः ३. २. १०
विशां कविं विश्पतिं शश्वतीनां ६. १. ८
विशां गोपा अस्य [illegible]
विशां राजानमद्भुत ८. ४३. २४
विशामासामभयाना १०. ९२. १४
विशोविश ईड्यमध्वरे ६. ४९. २
विशोविशो वो अतिथिं ८. ७४. १
विश्पतिं यह्वमतिथिं ३. ३. ८
वि श्रयन्तामुर्विया २. ३. ५
वि श्रयन्तामृतावृधः १. १४२. ६
वि श्रयन्तामृतावृधो १. १३. ६
विश्वं पश्यन्तो विभृथा ८. २०. २६
विश्वं प्रतीची सप्रथा ७. ७७. २
विश्वं सत्यं मघवाना २. २४. १२
विश्वकर्मन्हविषा १०. ८१. ६
विश्वकर्मा विमना १०. ८२. २
विश्वजिते धनजिते २. २१. १
विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतो १०. ८१. ३
विश्वदानीं सुमनसः ६. ५२. ५
विश्वमस्या नानाम १. ४८. ८
विश्वमित्सवनं सुतमिन्द्रो १. १६. ८
विश्ववेदसो रयिभिः १. ६४. १०
विश्वस्मा अग्निं भुवनाय १०. ८८. १२
विश्वस्मा इत्स्वर्दृशे ९. ४८. ४
विश्वस्मात्सीमधमाँ ४. २८. ४
विश्वस्मान्नो अदितिः १०. ३६. ३
विश्वस्य केतुर्भुवनस्य १०. ४५. ६
विश्वस्य राजा पवते ९. ७६. ४
विश्वस्य हि प्रचेतसा ५. ७१. २
विश्वस्य हि प्राणनं १. ४८. १०
विश्वस्य हि प्रेषितो १०. ३७. ५
विश्वस्य हि श्रुष्टये २. ३८. २
विश्वाँ अर्यो विपश्चितो ८. ६५. ९
विश्वाः पृतना अभिभूतरं ८. ९७. १०
विश्वा अग्नेऽप दहा ७. १. ७
विश्वा उत त्वया वयं २. ७. ३
विश्वा द्वेषांसि जहि ८. ५३. ४
विश्वा धामानि विश्वचक्ष ९. ८६. ५
विश्वानरस्य वस्पति ८. ६८. ४
विश्वानि देव सवित ५. ८२. ५
विश्वानि देवी भुवना १. ९२. ९
विश्वानि नो दुर्गहा ५. ४. ९
विश्वानि भद्रा मरुतो १. १६६. ९
विश्वानि विश्वमनसो ८. २४. ७
विश्वानि शक्रो नर्याणि ४. १६. ६
विश्वान्देवाँ आ वह १. ४८. १२
विश्वान्देवान्हवामहे १. २३. १०
विश्वान्यन्यो भुवना २. ४०. ५
विश्वाभिर्धीभिर्भुवनेन ८. ३५. २
विश्वामित्रा अरासत ३. ५३. १३
विश्वा रूपाणि प्रति ५. ८१. २
विश्वा रूपाण्याविशन् ९. २५. ४
विश्वा रोधांसि प्रवतश्च ४. २२. ४
विश्वावसुं सोम गन्धर्व १०. १३९. ४
विश्वावसुरभि तन्नो १०. १३९. ५
विश्वा वसूनि संजयन् ९. २२. ४
विश्वासां गृहपति ६. ४८. ८
विश्वासां त्वा विशां १. १२७. ८
विश्वा सोम पवमान ९. ४०. ४
विश्वाहा त्वा सुमनसः १०. ३७. ७
विश्वा हि मर्त्यत्वना ८. ९२. १३
विश्वा हि वो नमस्यानि १०. ६३. २
विश्वाहेन्द्रो अधिवक्ता १. १००. १९
१. १०२. ११
विश्वे अद्य मरुतो १०. ३५. १३
विश्वे अस्या व्युषि ५. ४५. ८
विश्वे चनेदना त्वा ४. ३०. ३
विश्वे त इन्द्र वीर्यं ८. ६२. ७
विश्वेत्ता ते सवनेषु ८. १००. ६
विश्वेत्ता विष्णुराभर ८. ७७. १०
विश्वेदनु रोधना अस्य २. १३. १०
विश्वेदेते जनिमा सं ३. ५४. ८
विश्वे देवाः शास्तन १०. ५२. १
विश्वे देवाः शृणुतेमं ६. ५२. १३
विश्वे देवाः सह धीभिः १०. ६५. १४
विश्वे देवाः स्वाहाकृतिं ९. ५. ११
विश्वे देवा अकृपन्त १०. २४. ५
विश्वे देवा अनमस्यन् ६. ९. ७
विश्वे देवा ऋतावृध ६. ५२. १०
विश्वे देवा नो अद्या ५. ५१. १३
विश्वे देवा मम शृण्वन्तु ६. ५२. १४
विश्वे देवास आ गत २. ४१. १३
६. ५२. ७

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

विश्वे देवासो अध्र १०. ११३. ८
विश्वे देवासो अमुरः १. ३. ८
विश्वे देवासो अस्रिध १. ३. ९
विश्वेभिः सोम्यं मध्वग्न १. १४. १०
विश्वेभिरग्ने अग्निभि १. २६. १०
विश्वेभ्यो हि त्वा भुवने २. २३. १७
विश्वे यजत्रा अधि १०. ६३. ११
विश्वे यद्वां मंहना ६. ६७. ५
विश्वेषां वः सतां ज्येष्ठ ६. ६७. १
विश्वेषां ह्यध्वराणामनीकं १०. २. ६
विश्वेषामदितिर्यज्ञियानां ४. १. २०
विश्वेषामिरज्यन्तं वसूनां ८. ४६. १६
विश्वेषामिरज्यथो देवानां १०. ९३. ३
विश्वेषामिह स्तुहि ८. १०२. १०
विश्वेषु हि त्वा सवनेषु १. १३१. २
विश्वे हि त्वा सजोषसो जनासो ५. २३. ३
विश्वे हि त्वा सजोषसो देवासो ८. २३. १८
विश्वे हि विश्ववेदसो ५. ६७. ३
विश्वे हि ष्मा मनवे ८. २७. ४
विश्वे ह्यस्मै यजताय २. १६. ४
विश्वैर्देवैस्त्रिभिरेकादशै ८. ३५. ३
विश्वो देवस्य नेतुर्मर्तो ५. ५०. १
विश्वो यस्य व्रते जनो ९. ३५. ६
विश्वो विहाया अरति १. १२८. ६
विश्वो ह्यन्यो अरिरा १०. २८. १
विषं गवां यातुधानाः १०. ८७. १८
वि षा होत्रा विश्वमश्नोति १०. ६४. १५
वि षाह्यग्ने गृणते मनीषां ४. ११. २
वि षु द्वेषो व्यंहति ८. ६७. २१
वि षु विश्वा अभियुजो ८. ४५. ८
वि षु विश्वा अरातयो १०. १३३. ३
वि षू चर स्वधा अनु ८. ३२. १९
विषूचो अश्वान्युयुजे १०. ७९. ७
वि षू वृधो जनुषा ५. ३०. ७
विषूवृदिन्द्रो अमतेरुत १०. ४३. ३
विषेण भङ्गुरावतः १०. ८७. २३
विष्टम्भो दिवो धरुणः ९. ८९. ६
विष्ट्वी शमी तरणित्वेन १. ११०. ४
विष्णुं स्तोमासः पुरुदस्म ३. ५४. १४
विष्णुरित्था परममस्य १०. १. ३
विष्णुर्गोपाः परमं पाति ३. ५५. १०
विष्णुर्योनिं कल्पयतु १०. १८४. १
विष्णोः कर्माणि पश्यत १. २२. १९
विष्णोर्नु कं वीर्याणि १. १५४. १
विष्पर्धसो नरां न शंसै १. १७३. १०
वि सद्यो विश्वा दृंहिता ७. १८. १३
विसर्माणं कृणुहि ५. ४२. ९
वि सुपर्णो अन्तरिक्षा १. ३५. ७
वि सूर्यो अमतिं न ५. ४५. २
वि सूर्यो मध्ये अमुचद् १०. १३८. ३
वि हि त्वामिन्द्र पुरुधा १०. ११२. ७
वि हि सोतोरसृक्षत १०. ८६. १
विहि होत्रा अवीता ४. ४८. १
वि ह्यख्यं मनसा १. १०९. १
वीळु चिदारुजत्नुभि १. ६. ५
वीळु चिद्दृळ्हा पितरो १. ७१. २
वीळुपत्मभिराशुहेमभिर्वा १. ११६. २
वीळुपविभिर्मरुत ८. २०. २
वीळौ सतीरभि धीरा ३. ३१. ५
वीतिहोत्रं त्वा कवे ५. २६. ३
वीतिहोत्रा कृतद्वसू ८. ३१. ९
वीती जनस्य दिव्यस्य ९. ९१. २
वीती यो देवं मर्तो ६. १६. ४६
वीन्द्र यासि दिव्यानि १०. ३२. २
वीरस्य नु स्वश्व्यं ३. ५५. १८
वीरेण्यः क्रतुरिन्द्रः १०. १०४. १०
वीरेभिर्वीरान्वनवद् २. २५. २
वृकश्चिदस्य वारण ८. ६६. ८
वृकाय चिज्जसमानाय ७. ६८. ८
वृक्षाश्चिन्मे अभिपित्वे ८. ४. २१
वृक्षेवृक्षे नियता १०. २७. २२
वृज्याम ते परि द्विषो ८. ४५. १०
वृत्रे ह यन्नमसा ६. ११. ५
वृतेव यन्तं बहुभि ६. १. ३
वृत्रखादो वलंरुजः ३. ४५. २
वृत्रस्य त्वा श्वसथा ८. ९६. ७
वृत्राण्यन्यः समिथेषु ७. ८३. ९
वृत्रेण यदहिना बिभ्रदा १०. ११३. ३
वृथा क्रीळन्त इन्दवः ९. २१. ३
वृषणं त्वा वयं वृषन् [illegible]
वृषणं धीभिरप्तुरं ९. ६३. २१
वृषणश्वेन मरुतो ८. २०. १०
वृषणस्ते अभीशवो ८. ३३. ११
वृषन्निन्द्र वृषपाणास १. १३९. ६
वृषभं चर्षणीनां ३. ६२. ६
वृषभो न तिग्मशृङ्गो १०. ८६. १५
वृषाकपायि रेवति १०. ८६. १३
वृषा ग्रावा० वृषन्निन्द्र ५. ४०. २
वृषा ग्रावा० वृषा यज्ञो ८. १३. ३२
वृषा जजान वृषणं ७. २०. ५
वृषाणं वृषभिर्यतं ९. ३४. ३
वृषा ते वज्र उत ते २. १६. ६
वृषा त्वा वृषणं वर्धतु ५. ३६. ५
वृषा त्वा वृषणं हुवे० वावन्य ८. १३. ३३
वृषा त्वा वृषणं हुवे० वृषन्निन्द्र ५. ४०. ३
वृषा न क्रुद्धः पतयद् १०. ४३. ८
वृषा पवस्व धारया ९. ६५. १०
वृषा पुनान आयुषु ९. १९. ३
वृषा मतीनां पवते ९. ८६. १९
वृषा मद इन्द्रे श्लोक ६. २४. १
वृषा यज्ञो वृषणः १०. ६६. ६
वृषायन्ते महे अत्याय ३. ७. ९
वृषायमाणोऽवृणीत १. ३२. ३
वृषायमिन्द्र ते रथ ८. १३. ३१
वृषा यूथेव वंसगः १. ७. ८
वृषारवाय वदते १०. १४६. २
वृषा वि जज्ञे जनयन् ९. १०८. १२
वृषा वृषन्धिं चतुरश्रि ४. २२. २
वृषा वृष्णे दुदुहे दोहसा १०. ११. १
वृषा वृष्णे रोरुवदंशुरस्मै ९. ९१. ३
वृषा वो अंशुर्न किला १०. ९४. १०
वृषा शोणो अभिकनिक्रदद् ९. ९७. १३
वृषासि दिवो वृषभः ६. ४४. २१
वृषा सोता सुनोतु ते ८. ३३. १२
वृषा सोम द्युमाँ असि ९. ६४. १
वृषा ह्यग्ने अजरो ६. ४८. ३
वृषा ह्यसि भानुना ९. ६५. ४
वृषा ह्यसि राधसे ५. ३५. ४
वृषेव यूथा परि कोश ९. ७६. ५
[illegible] ३. २७. १४
वृष्टिं दिवः परि स्रव ९. ८. ८
वृष्टिं दिवः शतधारः ९. ९६. १४
वृष्टिं नो अर्ष दिव्यां ९. ९७. १७
वृष्टिद्यावा रीत्यापेषस्पती ५. ६८. ५
वृष्णः कोशः पवते २. १६. ५
वृष्णस्ते वृष्ण्यं शवो ९. ६४. २
वृष्णे यत्ते वृषणो ५. ३१. ५
वृष्णे शर्धाय सुमखाय १. ६४. १
वृष्णो अस्तोषि भूम्यस्य ५. ४१. १०
वेत्या हि निर्ऋतीनां ८. २४. २४
वेत्या हि वेधो अध्वनः ६. १६. ३
वेत्यग्रुर्जनिवान्वा अति ५. ४४. ७
वेत्यध्वर्युः पथिभी ८. १०१. १०
वेद मासो धृतव्रतो १. २५. ८
वेद यस्त्रीणि विदथान्येषां ६. ५१. २
वेद वातस्य वर्तनि १. २५. ९
वेदा यो वीनां पद १. २५. ७
वेदिषदे प्रियधामाय १. १४०. १
वेधा अदृप्तो अग्नि १. ६९. २
वेमि त्वा पूषन्नृञ्जसे ८. ४. १७
वेरध्वरस्य दूत्यानि ४. ७. ८
वेषि होत्रमुत पोत्रं १०. २. २
वेषि ह्यध्वरीयतामग्ने ६. २. १०
वेषि ह्यध्वरीयतामुपवक्ता ४. ९. ५
वेषीद्वस्य दूत्यं यस्य ४. ९. ६
वैयश्वस्य श्रुतं नरोतो ८. २६. ११
वैश्वानरं कवयो १०. ८८. १३
वैश्वानरं मनसाग्निं ३. २६. १
वैश्वानरं विश्वहा १०. ८८. १४
वैश्वानरः प्रत्नथा ३. २. १२
वैश्वानर तव तत् १. ९८. ३
वैश्वानर तव तानि ६. ७. ५
वैश्वानर तव धामान्या ३. ३. १०
वैश्वानरस्य दंसनाभ्यो ३. ३. ११
वैश्वानरस्य विमितानि ६. ७. ६
वैश्वानरस्य सुमतौ १. ९८. १
वैश्वानराय धिषणा ३. २. १
वैश्वानराय पृथुपाजसे ३. ३. १
वैश्वानराय मीळ्हुषे ४. ५. १
वैश्वानरो महिम्ना १. ५९. ७

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

वोचेमेदिन्द्रं मघवानमेनं	७. २८. ५
	७. २९. ५
	७. ३०. ५
व्यकृणोत चमसं चतुर्धा	४. ३५. ३
व्यक्तून्रुद्रा व्यहानि	५. ५४. ४
व्यचस्वतीरुर्विया वि	१०. ११०. ५
व्यञ्जते दिवो अन्ते	७. ७९. २
व्यञ्जिभिर्दिव आतास्व	१. ११३. १४
व्यनिनस्य धनिनः	१. १५०. २
व्यन्तरिक्षमतिरन्मदे	८. १४. ७
व्यन्त्विन्नु येषु मन्दसान	२. ११. १५
व्यर्य इन्द्र तनुहि	१०. ११६. ६
व्यर्यमा वरुणश्चेति	४. ५५. ४
व्यश्वस्त्वा वसुविद	८. २३. १६
व्यस्तभ्नाद्रोदसी मित्रो	६. ८. ३
व्यस्मे अधि शर्म तत्	८. ४७. ३
व्यानळिन्द्रः पृतनाः	१०. २९. ८
व्युच्छन्ती हि रश्मिभि	१. ४९. ४
व्युच्छा दुहितर्दिवो	५. ७९. ९
व्युषा आवः पथ्या	७. ७९. १
व्युषा आवो दिविजा	७. ७५. १
व्यूर्ण्वती दिवो अन्ताँ	१. ९२. ११
व्येतु दिद्युद्विषामशेवा	७. ३४. ७
व्रजं कृणुध्वं स हि वो	१०. १०१. ८
व्रता ते अग्ने महता	३. ६. ५
व्रतेन स्थो ध्रुवक्षेमा	५. ७२. २
व्रातंव्रातं गणंगणं	३. २६. ६
शं नः करत्यर्वते	१. ४३. ६
शं नः सत्यस्य पतयो	७. ३५. १२
शं नः सूर्य उरुचक्षा	७. ३५. ८
शं नः सोमो भवतु	७. ३५. ७
शं न इन्द्राग्नी भवता	७. ३५. १
शं न इन्द्रो वसुभिर्देवो	७. ३५. ६
शं नो अग्निर्ज्योतिरनीको	७. ३५. ४
शं नो अज एकपादेवो	७. ३५. १३
शं नो अदितिर्भवतु	७. ३५. ९
शं नो देवः सविता	७. ३५. १०
शं नो देवा विश्वदेवा	७. ३५. ११
शं नो देवीरभिष्टय	१०. ९. ४
शं नो द्यावापृथिवी	७. ३५. ५
शं नो धाता शमु धर्ता	७. ३५. ३
शं नो भगः शमु नः	७. ३५. २
शं नो भव चक्षसा	१०. ३७. १०
शं नो भवन्तु वाजिनो	७. ३८. ७
शं नो भव हृद आ	८. ४८. ४
शं नो मित्रः शं वरुणः	१. ९०. ९
शं रोदसी सुबन्धवे	१०. ५९. ८
शंसा महामिन्द्रं यस्मिन	३. ४९. १
शंसा मित्रस्य वरुणस्य	७. ६१. ४
शंसावाध्वर्यो प्रति मे	३. ५३. ३
शंसेदुक्थं सुदानव	७. ३१. २
शकमयं धूममारादपश्यं	१. १६४. ४३
शंकम त्वा समिधं	१. ९४. ३
शग्धि पूर्धि प्र यंसि	१. ४२. ९
शग्धि वाजस्य सुभग	३. १६. ६
शग्धी न इन्द्र यत्त्वा	८. ३. ११
शग्धी नो अस्य यद्ध	८. ३. १२
शग्ध्यू षु शचीपत	८. ६१. ५
शचीभिर्नः शचीवसू	१. १३९. ५
शचीव इन्द्र पुरुकृद्	१. ५३. ३
शचीव इन्द्रमवसे	१०. ७४. ५
शचीवतस्ते पुरुशाक	६. २४. ४
शच्याकर्त पितरा	४. ३५. ५
शतं जीव शरदो	१०. १६१. ४
शतं ते राजन्भिषजः	१. २४. ९
शतं ते शिप्रिन्नूतयः	७. २५. ३
शतं दासे वल्वूथे	८. ४६. ३२
शतं धारा देवजाता	९. ९७. २९
शतं न इन्द्र ऊतिभिः	९. ५२. ५
शतं मे गर्दभानां	८. ५६. ३
शतं मेषान्वृक्ये चक्षदान	१. ११६. १६
शतं मेषान्वृक्ये मामहानं	१. ११७. १७
शतं राज्ञो नाधमानस्य	१. १२६. २
शतं वा यः शुचीनां	१. ३०. २
शतं वा यदसुर्यं	१०. १०५. ११
शतं वा यस्य दश	२. १३. ९
शतं वेणूञ्छतं शुनः	८. ५५. ३
शतं वो अम्ब धामानि	१०. ९७. २
शतं श्वेतास उक्षणो	८. ५५. २
शतक्रतुमर्णवं शाकिनं	[illegible]
शतधारं वायुमर्कं	१०. १०७. ४
शतधारमुत्समक्षीयमाणं	३. २६. ९
शतपवित्राः स्वधया	७. ४७. ३
शतब्रध्न इषुस्तव	८. ७७. ७
शतभुजिभिस्तमभिहुते	१. १६६. ८
शतमश्मन्मयीनां पुरा	४. ३०. २०
शतमहं तिरिन्दिरे	८. ६. ४६
शतमिन्नु शरदो अन्ति	१. ८९. ९
शतानीका हेतयो	८. ५०. २
शतानीकेव प्र जिगाति	८. ४९. २
शतेना नो अभिष्टिभि	४. ४६. २
शतैरपद्रन्पणय	६. २०. ४
शत्रूयन्तो अभि ये न	१०. ८९. १५
शनैश्चिद्यन्तो अद्रिवो	८. ४५. ११
शमग्निरग्निभिः करच्छं	८. १८. ९
शमू षु वां मधूयुवा	५. ७४. ९
शयुः परस्तादध नु	३. ५५. ६
शरस्य चिदार्चत्कस्या	१. ११६. २२
शरासः कुशरासो	१. १९१. ३
शर्धंशर्धं व एषां	५. ५३. ११
शर्धो मारुतमुच्छंस	५. ५२. ८
शर्यणावति सोममिन्द्र	९. ११३. १
शवसा ह्यसि श्रुतो	८. २४. २
शविष्ठं न आ भर	६. १९. ६
शशः क्षुरं प्रत्यञ्चं	१०. २८. ९
शशमानस्य वा नरः	१. ८६. ८
शश्वत्तममीळते दूत्याय	१०. ७०. ३
शश्वत्पुरोषा व्युवास	१. ११३. १३
शश्वदग्निर्वध्र्यश्वस्य	१०. ६९. ११
शश्वदिन्द्रः पोप्रुथद्भि	१. ३०. १६
शश्वद्धि वः सुदानव	८. ६७. १६
शश्वन्तं हि प्रचेतसः	८. ६७. १७
शश्वन्तो हि शत्रवो	७. १८. १८
शाक्मना शाको अरुणः	१०. ५५. ६
शाचिगो शाचिपूजनायं	८. १७. १२
शास इत्था महाँ अस्य	१०. १५२. १
शासद्वह्निर्दुहितुर्नप्त्यं	३. ३१. १
शिक्षा ण इन्द्र राय आ	८. ९२. ९
शिक्षा विभिन्दो अस्मै	८. २. ४१
शिक्षेयमस्मै दित्सेय	८. १४. २
शिक्षेयमिन्महयते	७. ३२. १९
शिप्रिन्वाजानां पते	१. २९. २
शिवः कपोत इषितो	१०. १६५. २
शिवस्त्वष्टरिहा गहि	५. ५. ९
शिवा नः सख्या सन्तु	४. १०. ८
शिशानो वृषभो यथाग्निः	८. ६०. १३
शिशुं जज्ञानं हर्यतं	९. ९६. १७
शिशुं न त्वा जेन्यं	१०. ४. ३
शिशुर्न जातोऽव चक्र	९. ७४. १
शीतिके शीतिकावति	१०. १६. १४
शीरं पावकशोचिषं	८. १०२. ११
शीर्ष्णः शीर्ष्णो जगत	७. ६६. १५
शुकेषु मे हरिमाणं	१. ५०. १२
शुक्रं ते अन्यद्यजतं	६. ५८. १
शुक्रः पवस्व देवेभ्यः	९. १०९. ३
शुक्रः शुशुक्वाँ उषो	१. ६९. १
शुक्रस्याद्य गवाशिर	२. ४१. ३
शुक्रेभिरङ्गै रज	३. १. ५
शुचिं न यामन्निषिरं	३. २. १४
शुचिं नु स्तोमं नवजात	७. ९३. १
शुचिः पावक उच्यते	९. २४. ७
शुचिः पावक वन्द्योऽग्ने	२. ७. ४
शुचिः पावको अद्भुतो	१. १४२. ३
शुचिः पुनानस्तन्व	९. ७०. ८
शुचिः ष्म यस्मा अत्रिवत्	५. ७. ८
शुचिमर्कैर्बृहस्पति	३. ६२. ५
शुचिरपः सूयवसा	२. २७. १३
शुचिरसि पुरुनिष्ठाः	८. २. ९
शुचिर्देवेष्वर्पिता होत्रा	१. १४२. ९
शुची ते चक्रे यात्या	१०. ८५. १२
शुची वो हव्या मरुतः	७. ५६. १२
शुनं नः फाला वि कृषन्तु	४. ५७. ८
शुनं वाहाः शुनं नरः	४. ५७. ४
शुनं हुवेम मघवानमिन्द्र	३. ३०. २२
	३. ३१. २२
	३. ३२. १७
	३. ३४. ११
	३. ३५. ११
	३. ३६. ११
	३. ३८. १०

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

	३. ३९. ९
	३. ४३. ८
	३. ४८. ५
	३. ४९. ५
	३. ५०. ५
	१०. ८९. १८
	१०. १०४. ११
शुनःशेपो ह्यह्वद्गृभीत	१. २४. १३
शुनमन्धाय भरमह्वयन्	१. ११७. १८
शुनमष्ट्राव्यचरत्कपर्दी	१०. १०२. ८
शुनमस्मभ्यमूतये	१०. १२६. ७
शुनश्चिच्छेपं निदितं	५. २. ७
शुनासीराविमां वाचं	४. ५७. ५
शुभ्रं नु ते शुष्मं	२. ११. ४
शुभ्रमन्धो देववातमप्सु	९. ६२. ५
शुम्भमान ऋतायुभि	९. ३६. ४
शुम्भमाना ऋतायुभि	९. ६४. ५
शुश्रुवांसा चिदश्विना	७. ७०. ५
शुष्णं पिप्रुं कुयवं	१. १०३. ८
शुष्मासो ये ते अद्रिवो	५. ३८. ३
शुष्मिन्तमं न ऊतये	३. ३७. ८
शुष्मिन्तमो हि ते मदो	१. १७५. ५
शुष्मी शर्धो न मारुतं	९. ८८. ७
शूरग्रामः सर्ववीरः	९. ९०. ३
शूरस्येव युध्यतो	३. ५५. ८
शूरा इवेद्युयुधयो	१. ८५. ८
शूरो न धत्त आयुधा	९. ७६. २
शूरो वा शूरं वनते	६. २५. ४
शूषेभिर्वृधो जुषाणो	१०. ६. ४
शृङ्गाणीवेच्छृङ्गिणां	३. ८. १०
शृङ्गेव नः प्रथमा	२. ३९. ३
शृणुतं जरितुर्हवं	८. ८५. ४
शृणुतं जरितुर्हवं	७. ९४. २
शृणोतु न ऊर्जां पति	५. ४१. १२
शृण्वन्तं पूषणं वय	६. ५४. ८
शृण्वन्तु नो वृषणः	३. ५४. २०
शृण्वन्तु स्तोमं मरुतः	१. ४४. १४
शृण्वे वीर उग्रमुग्रं	६. ४७. १६
शृण्वे वृष्टेरिव स्वनः	९. ४१. ३
शृतं यदा करसि	१०. १६. २
शेवारे वार्या पुरु	८. १. २२
शेषन्नु त इन्द्र सस्मिन्	१. १७४. ४
शेषे वनेषु मात्रोः	८. ६०. १५
शोचा शोचिष्ठ दीदिहि	८. ६०. ६
श्रयद्वृत्रमुत सनोति	६. ६०. १
श्यावाश्वस्य रेभत	८. ३७. ७
श्यावाश्वस्य सुन्वत	८. ३६. ७
श्यावाश्वस्य सुन्वतो	८. ३८. ८
श्येन आसामदितिः	५. ४४. ११
श्येनाविव पतथो	८. ३५. ९
श्येनो न योनिं सदनं	९. ७१. ६
श्रत्ते दधामि प्रथमाय	१०. १४७. १
श्रद्धयाग्निः समिध्यते	१०. १५१. १
श्रद्धां देवा यजमाना	१०. १५१. ४
श्रद्धां प्रातर्हवामहे	१०. १५१. ५
श्रवः सूरिभ्यो अमृतं	७. ८१. ६
श्रवच्छुत्कर्ण ईयते	७. ३२. ५
श्रवो वाजमिषमूर्जं	६. ६५. ३
श्रातं मन्य ऊधनि	१०. १७९. ३
श्रातं हविरो ष्विन्द्र	१०. १७९. २
श्रायन्त इव सूर्यं	८. ९९. ३
श्रावयेदस्य कर्णा	४. २९. ३
श्रियसे कं भानुभिः	१. ८७. ६
श्रिये कं वो अधि	१. ८८. ३
श्रिये जातः श्रिय आ	९. ९४. ४
श्रिये ते पादा दुव	६. २९. ३
श्रिये ते पृश्निरुपसेचनी	१०. १०५. १०
श्रिये पूषन्निषुकृतेव	१. १८४. ३
श्रिये मर्यासो अञ्जीरकृण्वत	१०. ७७. २
श्रिये सुदृशीरुपरस्य	५. ४४. २
श्रीणन्नुप स्थाद्दिवं	१. ६८. १
श्रीणामुदारो धरुणो	१०. ४५. ५
श्रुतं गायत्रं तकवान	१. १२०. ६
श्रुतं मे मित्रावरुणा	१. १२२. ६
श्रुतं वो वृत्रहन्तमं	८. ९३. १६
श्रुधि श्रुत्कर्ण वह्निभि	१. ४४. १३
श्रुधी न इन्द्र ह्वयामसि	६. २६. १
श्रुधी नो अग्ने सदने	१०. ११. ९
	१०. १२. ९
श्रुधी हवं तिरश्च्या	८. ९५. ४
श्रुधी हवं विपिपानस्याद्रे	७. २२. ४
श्रुधी हवमिन्द्र मा	२. ११. १
श्रुधी हवमिन्द्र शूर	१०. १४८. ५
श्रुष्टी वां यज्ञ उद्यतः	६. ६८. १
श्रुष्टीवानो हि दाशुषे	१. ४५. २
श्रुष्ट्यग्ने नवस्य मे	८. २३. १४
श्रूया अग्निश्चित्रभानु	२. १०. २
श्रेष्ठं नो अद्य सवित	१०. ३५. ७
श्रेष्ठं यविष्ठ भारताग्ने	२. ७. १
श्रेष्ठं यविष्ठमतिथिं	१. ४४. ४
श्रेष्ठं वः पेशो अधि	४. ३६. ७
श्रेष्ठो जातस्य रुद्र	२. ३३. ३
श्रोणामेक उदकं	१. १६१. १०
श्वसित्यप्सु हंसो न	१. ६५. ५
श्वित्यञ्चो मा दक्षिणत	७. ३३. १
श्वेतं रूपं कृणुते	९. ७४. ७
षट्त्रिंशाँश्च चतुरः	१०. ११४. ६
षळश्वाँ आतिथिग्व	८. ६८. १७
षड् भाराँ एको अचरन्	३. ५६. २
षष्टिं सहस्राश्व्यस्यायुता	८. ४६. २२
संक्रन्दनेनानिमिषेण	१०. १०३. २
सं गच्छध्वं सं वदध्वं	१०. १९१. २
संगच्छमाने युवती	१. १८५. ५
सं गच्छस्व पितृभिः	१०. १४. ८
सं गोभिराङ्गिरसो	१०. ६८. २
सं गोमदिन्द्र वाजवदस्मे	१. ९. ७
सं घोषः शृण्वेऽवमैरमित्रैः	३. ३०. १६
सं च त्वे जग्मुर्गिर	६. ३४. १
सं चोदय चित्रमर्वाग्राध	१. ९. ५
संजर्भुराणस्तरुभिः	५. ४४. ५
सं जागृवद्भिर्जरमाण	१०. ९१. १
संजानाना उप सीदन्	१. ७२. ५
सं ते पयांसि समु	१. ९१. १८
सं त्री पवित्रा वितता	९. ९७. ५५
सं दक्षेण मनसा	९. ६८. ५
सं देवैः शोभते वृषा	९. २५. ३
सं नः शिशीहि भुरिजोरिव	८. ४. १६
सं नु वोचावहै पुनर्यतो	१. २५. १७
सं नो राया बृहता	१. ४८. १६
संपश्यमाना अमदन्नभि	३. ३१. १०
सं पूषन्नध्वनस्तिर	१. ४२. १
सं पूषन्विदुषा नय	६. ५४. १
सं प्रेरते अनु वातस्य	१०. १६८. २
सं भानुना यतते	५. ३७. १
सं भूम्या अन्ता ध्वसिरा	७. ८३. ३
सं माग्ने वर्चसा सृज	१. २३. २४
सं मा तपन्त्यभितः० नि	१०. ३३. २
सं मा तपन्त्यभितः० मूषो	१. १०५. ८
सं मातृभिर्न शिशु	९. ९३. २
संमिश्लो अरुषो भव	५. ६१. २१
संमील्य यद्भुवना	१. १६१. १२
सं यं स्तुभोऽवनयो	१. १९०. ७
सं यज्जनान् क्रतुभिः	१. १३२. ५
सं यज्जनौ सुधनौ	५. ३४. ८
सं यत्त इन्द्र मन्यव.	४. ३१. ६
सं यदिषो वनामहे	५. ७. ३
सं यद्धनन्त मन्युभि	७. ५६. २२
सं यद्वयं यवसादो	१०. २७. ९
सं यन्मदाय शुष्मिण	१. ३०. ३
सं यन्मही मिथती	७. ९३. ५
सं यन्मिथः पस्पृधानासो	१. ११९. ३
सं यस्मिन्विश्वा वसूनि	१०. ६. ६
सं या दानूनि येमथु	८. २५. ६
सं वत्स इव मातृभि	९. १०५. २
संवत्सरं शशयाना	७. १०३. १
संवत्सरीणं पय	१०. ८७. १७
सं वां कर्मणा समिषा	६. ६९. १
सं वां शता नासत्या	६. ६३. १०
संवृक्तधृष्णुमुक्थ्यं	९. ४८. २
सं वो मदासो अग्मते	१. २०. ५
संसमिद्युवसे वृषन्	१०. १९१. १
सं सीदस्व महाँ असि	१. ३६. ९
संसृष्टं धनमुभयं	१०. ८४. ७
संहोत्रं स्म पुरा नारी	१०. ८६. १०
स आ गमदिन्द्रो यो	५. ३६. १
स आ नो योनिं सदतु	७. ९७. ४
स आ वक्षि महि न	१०. ३. ७
स आहूतो वि रोचते	१०. ११८. ३
स इज्जनेन स विशा	२. २६. ३
स इत्क्षेति सुधित	४. ५०. ८

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

स इत्तन्तुं स वि	६.	९.	३
स इत्तमोऽवयुनं	६.	२१.	३
स इत्सुदानुः स्ववाँ	६.	६८.	५
स इत्स्वपा भुवनेष्वास	४.	५६.	३
स इदग्निः कण्वतमः	१०.	११५.	५
स इदस्तेव प्रति	६.	३.	५
स इद्दानाय दभ्याय	१०.	६१.	२
स इद्दासं तुवीरवं	१०.	९९.	६
स इद्भोजो यो गृहवे	१०.	११७.	३
स इद्राजा प्रतिजन्यानि	४.	५०.	७
स इद्वने नमस्युभि	१.	५५.	४
स इधान उषसो	२.	२.	८
स इधानो वसुष्कवि	१.	७९.	५
स इन्नु रायः सुभृतस्य	१०.	१४७.	४
स इन्महानि समियानि	१.	५५.	५
स इषुहस्तैः स निषङ्गिभि	१०.	१०३.	३
स ईं पाहि य ऋजीषी	६.	१७.	२
स ईं महीं धुनिमेतो	२.	१५.	५
स ईं मृगो अप्यो	१.	१४५.	५
स ईं रथो न भुरिषाळयोजि	९.	८८.	२
स ईं रेभो न प्रति वस्त	६.	३.	६
स ईं वृषा जनयत्तासु	२.	३५.	१३
स ईं वृषा न फेनमस्य	१०.	६१.	८
स ईं सत्येभिः सखिभिः	१०.	६७.	७
स ईं स्पृधो वनते	६.	२०.	९
सकृद्ध द्यौरजायत	६.	४८.	१२
स केतुरध्वराणामग्नि	३	१०.	४
सक्तुमिव तितउना	१०.	७१.	२
स क्षपः परि षस्वजे	८.	४१.	३
सखायः क्रतुमिच्छत	८.	७०.	३
सखायः सं वः सम्यञ्च	५.	७.	१
सखाय आ नि षीदत पुनानाय	९.	१०४.	१
सखाय आ नि षीदत सविता	१.	२२.	८
सखाय आ शिषामहि	८.	२४.	१
सखायस्त इन्द्र विश्वह	७.	२१.	९
सखायस्ते विषुणा	५.	१२.	५
सखायस्त्वा ववृमहे	३.	९.	१
सखायो ब्रह्मवाहसे	६.	४५.	४
सखा सख्ये अपचत्	५.	२९.	७
सखा ह यत्र सखिभि	३.	३९.	५
सखीयतामविता बोधि	४.	१७.	१८
सखे विष्णो वितरं वि	८.	१००.	१२
सखे सखायमभ्या	४.	१.	३
सख्ये त इन्द्र वाजिनो	१.	११.	२
स गृणानो अद्भिर्देव	१०.	६१.	२६
स गृत्सो अग्निस्तरुण	७.	४.	२
स गोमघा वरित्रे	६.	३५.	४
स गोरश्वस्य वि व्रजं	८.	३२.	५
स ग्रामेभिः सनिता	१.	१००.	१०
स घा तं वृषणं	१.	८२.	४
स घा नः सूनुः शवसा	१.	२७.	२
स घा नो देवः सविता	७.	४५.	३
स घा नो योग आ	१.	५.	३
स घा यस्ते ददाशति	३.	१०.	३
स घा राजा सत्पतिः	१.	५४.	७
स घा वीरो न रिष्यति	१.	१८.	४
स घेदुतासि वृत्रहन्	४.	३०.	२२
स चक्रमे महतो	५.	८७.	४
सचन्त यदुषसः सूर्येण	१०.	१११.	७
स चन्द्रो विप्र मर्त्यो	१.	१५०.	३
सचस्व नायमवसे	६.	२४.	१०
सचा यदासु जहतीष्व	१०.	९५.	८
सचायोरिन्द्रश्चर्कृष	१०.	१०५.	४
सचा सोमेषु पुरुहूत	८.	६६.	६
स चिकेत सहीयसा	८.	३९.	५
स चित्र चित्रं चितयन्त	६.	६.	७
स चेतयन्मनुषो	४.	१.	९
स जातूभर्मा श्रद्दधान	१.	१०३.	३
स जातेभिर्वृत्रहा	३.	३१.	११
स जातो गर्भो असि	१०.	१.	२
स जामिभिर्यत्समजाति	१.	१००.	११
स जायत प्रथमः	४.	१.	११
स जायमानः परमे व्योमनि	६.	८.	२
स जायमानः परमे व्योमन्यावि	१.	१४३.	२
स जायमानः परमे व्योमन् वायु	७.	५.	७
स जिन्वते जठरेषु	३.	२.	११
स जिह्वया चतुरनीक	५.	४८.	५
सजूरादित्यैर्वसुभिः	५.	५१.	१०
सजूर्देवेभिरपां नपातं	७.	३४.	८
सजूर्मित्रावरुणाभ्यां	५.	५१.	९
सजूर्विश्वेभिर्देवेभिरश्वि	५.	५१.	८
सजोषस आदित्यैर्मादयध्वं	४.	३४.	८
सजोषस्त्वा दिवो नरो	६.	२.	३
सजोषा इन्द्र वरुणेन	४.	३४.	७
सजोषा इन्द्र सगणो	३.	४७.	२
सतःसतः प्रतिमानं	३.	३१.	८
स तत्कृधीषितस्तूयमग्ने	६.	५.	६
स तुर्वणिर्महाँ अरेणु	१.	५६.	३
स तु वस्त्राण्यध पेशनानि	१०.	१.	६
स तु श्रुधि श्रुत्या यो	६.	३६.	५
स तु श्रुधीन्द्र नूतनस्य	६.	२१.	८
स तू नो अग्निर्नयतु	४.	१.	१०
स तू पवस्व० रजः	९.	७२.	८
स तू पवस्व० रजो	९.	१०७.	२४
स ते जानाति सुमतिं	४.	४.	६
स तेजीयसा मनसा	३.	१९.	३
सतो नूनं कवयः सं	१०.	५३.	१०
सत्तो होता न ऋत्विय	३.	४१.	२
सत्तो होता मनुष्वदा	१.	१०५.	१४
सत्यं तत्तुर्वशे यदौ	८.	४५.	२७
सत्यं तदिन्द्रावरुणा	८.	५९.	३
सत्यं त्वेषा अमवन्तो	१.	३८.	७
सत्यमित्तन्न त्वावाँ	६.	३०.	४
सत्यमित्त्वा महेनदि	८.	७४.	१५
सत्यमित्था वृषेदसि	८.	३३.	१०
सत्यमिद्वा उ अश्विना	५.	७३.	९
सत्यमिद्वा उ तं वय	८.	६२.	१२
सत्यमुग्रस्य बृहतः	९.	११३.	५
सत्यमूचुर्नर एवा हि	४.	३३.	६
सत्यामाशिषं कृणुता	१०.	६७.	११
सत्या सत्येभिर्महती	७.	७५.	७
सत्येनोत्तभिता भूमिः	१०.	८५.	१
सत्रा ते अनु कृष्टयो	४.	३०.	२
सत्रा त्वं पुरुष्टुतँ	८.	१५.	११
सत्रा मदासस्तव	६.	३६.	१
सत्रा यदीं भार्वरस्य	४.	२१.	७
सत्रासाहं वरेण्यं	३.	३४.	८
सत्रासाहो जनभक्षो	२.	२१.	३
सत्रा सोमा अभवन्	४.	१७.	६
सत्राहणं दाधृषिं	४.	१७.	८
स त्रितस्याधि सानवि	९.	३७.	४
सत्रे ह जाताविषिता	७.	३३.	१३
स त्वं दक्षस्यावृको	६.	१५.	३
स त्वं न इन्द्र धियसानो	५.	३३.	२
स त्वं न इन्द्र वाजेभि	८.	१६.	१२
स त्वं न इन्द्र सूर्ये	१.	१०४.	६
स त्वं न इन्द्राकवाभि	६.	३३.	४
स त्वं न ऊर्जां पते	८.	२३.	१२
स त्वं नश्चित्र वज्रहस्त	६.	४६.	२
स त्वं नो अग्नेऽवमो	४.	१.	५
स त्वं नो अर्वन्निदाया	६.	१२.	६
स त्वं नो देव मनसा	८.	२६.	२५
स त्वं नो रायः शिशीहि	३.	१६.	३
स त्वं विप्राय दाशुषे	८.	४३.	१५
स त्वमग्ने प्रतीकेन	१०.	११८.	८
स त्वमग्ने विभावसुः	८.	४३.	३२
स त्वमग्ने सौभगत्वस्य	१.	९४.	१६
स त्वमस्मदप द्विषो	८.	११.	३
सत्वा भरिषो गविषो	४.	४०.	२
स त्वामदद्वृषा मदः	१.	८०.	२
स दर्शतश्रीरतिथि	१०.	९१.	२
सदसस्पतिमद्भुतं	१.	१८.	६
सदस्य मदे सद्वस्य	६.	२७.	२
सदा कवी सुमतिमा	१.	११७.	२३
सदापृणो यजतो वि	५.	४४.	१२
सदासि रण्वो यवसेव	१०.	११.	५
सदा सुगः पितुमाँ	३.	५४.	२१
सदिद्धि ते तुविजातस्य	६.	१८.	४
स दूतो विश्वेदभि	४.	१.	८
स दृळ्हे चिदभि तृणत्ति	८.	१०३.	५
सदृशीरद्य सदृशीरिदु	१.	१२३.	८
स देवः कविनेषितो	९.	३७.	६
सदो द्वा चक्राते उपमा	८.	२९.	५
सद्मेव प्राचो वि मिमाय	२.	१५.	३
सद्यश्चिद्यः शवसा	१०.	१७८.	३
सद्यश्चिद्यस्य चर्कृतिः	६.	४८.	२१
सद्यश्चिन्नु ते मघवन्	७.	१९.	९
सद्यो अध्वरे रथिरं	७.	७.	४
सद्यो जात ओषधीभि	३.	५.	८
सद्यो जातस्य ददृशान	४.	७.	१०

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सद्यो जातो व्यमिमीत	१०. ११०. ११
सद्योजुवस्ते वाजा	८. ८१. ९
सद्यो ह जातो वृषभः	३. ४८. १
स द्रुह्वणे मनुष	१०. ९९. ७
स द्विबन्धुर्वैतरणो	१०. ६१. १७
स धारयत्पृथिवीं	१. १०३. २
सध्रीचीः सिन्धुमुशती	१०. १११. १०
सध्रीमा यन्ति परि	२. १३. २
स नः क्षुमन्तं सदने	१०. ३८. २
स नः पप्रिः पारयाति	८. १६. ११
स नः पवस्व वाजयु	९. ४४. ४
स नः पवस्व शं गवे	९. ११. ३
स नः पावक दीदिवो	१. १२. १०
स नः पावक दीदिहि	३. १०. ८
स नः पितेव सूनवे	१. १. ९
स नः पुनान० वीरवती	९. ६१. ६
स नः पुनान० स्तोत्रे	९. ४०. ५
स नः पृथु श्रवाय्य	६. १६. १२
स नः शक्रश्चिदा शकद्	८. ३२. १२
स नः शर्माणि वीतये	३. १३. ४
स नः सिन्धुमिव नावयाति	१. ९७. ८
स नः सोमेषु सोमपाः	८. ९७. ६
स नः स्तवान० गायत्रेण	१. १२. ११
स नः स्तवान० रयिं	८. २४. ३
स न इन्द्रः शिवः सखा	८. ९३. ३
स न इन्द्र त्वयताया	७. २०. १०
	७. २१. १०
स न इन्द्राय यज्यवे	९. ६१. १२
स न ईळानया सह	८. १०२. २
स न ऊर्जे व्यव्ययं	९. ४९. ४
सनत्साश्व्यं पशुमुत	५. ६१. ५
सनद्वाजं विप्रवीरं	१०. ४७. ४
स नश्चित्राभिरद्रिवो	४. ३२. ५
सना च सोम जेषि च	९. ४. १
सना ज्योतिः सना स्वर्विश्वा	९. ४. २
सना ता का चिद्भुवना	२. २४. ५
सना ता त इन्द्र नव्या	१. १७४. ८
सना ता त इन्द्र भोजनानि	७. १९. ६
सनात्सनीळा अवनी	१. ६२. १०
सना दक्षमुत क्रतुमप	९. ४. ३
सनादग्ने मृणसि	१०. ८७. १९
सनादेव तव रायो	१. ६२. १२
सनाद्दिवं परि भूमा	१. ६२. ८
सना पुराणमध्येम्यारान्	३. ५४. ९
सनामाना चिद्धसयो	१०. ७३. ६
सनायते गोतम इन्द्र	१. ६२. १३
सनायुवो नमसा नव्यो	१. ६२. ११
सनितः सुसनितरुग्र	८. ४६. २०
सनिता विप्रो अर्वद्भि	८. २. ३६
सनितासि प्रवतो	७. ३७. ५
सनिर्मित्रस्य पप्रथ	८. १२. १२
स नीव्याभिर्जरितार	६. ३२. ४
सनेम तत्सुसनिता	१०. ३६. ९
सनेम तेऽवसा नव्य	६. २०. १०
सनेम ये त ऊतिभि	२. ११. १२
सनेमि कृध्यस्मदा	९. १०४. ६
सनेमि चक्रमजरं वि	१. १६४. १४
सनेमि त्वमस्मदाँ	९. १०५. ६
सनेमि सख्यं स्वप	१. ६२. ९
सनेम्यस्मद्युयोत	७. ५६. ५
स नो अद्य वसुत्तये	९. ४४. ६
स नो अर्ष पवित्र	९. ६४. १२
स नो अर्षाभि दूत्यं	९. ४५. २
स नो ज्योतींषि पूर्व्य	९. ३६. ३
स नो दूराच्चासाच्च	१. २७. ३
स नो देव देवताते	९. ९६. ३
स नो देवेभिः पवमान	९. ९३. ४
स नो धीती वरिष्ठया	५. २५. ३
स नो नव्येभिर्वृषकर्मन्	१. १३०. १०
स नो नियुद्भिः पुरुहूत	६. २२. ११
स नो नियुद्भिरा पृण	६. ४५. २१
स नो नृणां नृतमो	१. ७७. ४
स नो नेदिष्ठं ददृशान	१. १२७. ११
स नो बोधि पुरएता	६. २१. १२
स नो बोधि पुरोळाशं	६. २३. ७
स नो बोधि श्रुधी हव	५. २४. २
स नो बोधि सहस्य	२. २. ११
स नो भगाय वायवे पूष्णे	९. ६१. ९
स नो भगाय वायवे विप्र	९. ४४. ५
स नो मदानां पत	९. १०४. ५
स नो मन्द्राभिरध्वरे	६. १६. २
स नो महाँ अनिमानो	१. २७. ११
स नो मित्रमहस्त्वमग्ने	८. ४४. १४
स नो युवेन्द्रो जोहूत्रः	२. २०. ३
स नो राधांस्या भरेशानः	७. १५. ११
स नो रेवत्समिधानः	२. २. ६
स नो वस्व उप मास्यूर्जो	८. ७१. ९
स नो वाजाय श्रवस	६. १७. १४
स नो वाजेष्वविता	८. ४६. १३
स नो विभावा चक्षणिर्न	६. ४. २
स नो विश्वा दिवो	९. ५७. ४
स नो विश्वान्या भर	८. ९३. २९
स नो विश्वाहा सुक्रतु	१. २५. १२
स नो विश्वेभिर्देवेभि	८. ७१. ३
स नो वृषन्त्सनिष्ठया	८. ९२. १५
स नो वृषन्नमुं चरुं	१. ७. ६
स नो वृष्टिं दिवस्परि	२. ६. ५
स नो वेदो अमात्यमग्नी	७. १५. ३
स नो हरीणां पत	९. १०५. ५
सन्ति ह्यर्य आशिष	८. ५४. ७
स पत्यत उभयोर्नृम्ण	६. २५. ६
स पप्रथानो अभि	७. ६९. २
सपर्यवो भरमाणा	७. २. ४
सपर्येण्यः स प्रियो	६. १. ६
स पर्वतो न धरुणे	१. ५२. २
स पवस्व धनंजय	९. ४६. ५
स पवस्व मदाय कं	९. ४५. १
स पवस्व मदिन्तम	९. ५०. ५
स पवस्व य आविथेन्द्रं	९. ६१. २२
स पवस्व विचर्षण	९. ४१. ५
स पवस्व सहमानः	९. ११०. १२
स पवित्रे विचक्षणो	९. ३७. २
स पित्र्याण्यायुधानि	१०. ८. ८
स पुनान उप सूरे	९. ९७. ३८
स पुनानो मदिन्तमः	९. ९९. ६
स पूर्वया निविदा	१. ९६. २
स पूर्व्यः पवते यं	९. ७७. २
स पूर्व्यो महानां वेनः	८. ६३. १
स पूर्व्यो वसुविज्जायमानो	९. ९६. १०
सप्त क्षरन्ति शिशवे	१०. १३. ५
सप्त त्वा हरितो रथे	१. ५०. ८
सप्त दिशो नानासूर्याः	९. ११४. ३
सप्त धामानि परियन्	१०. १२२. ३
सप्तभिः पुत्रैरदितिरुप	१०. ७२. ९
सप्त मर्यादाः कवय	१०. ५. ६
सप्त मे सप्त शाकिन	५. ५२. १७
सप्त युञ्जन्ति रथमेक	१. १६४. २
सप्त वीरासो अधरा	१०. २७. १५
सप्त स्वसारो अभि	९. ८६. ३६
सप्त स्वसॄररुषी	१०. ५. ५
सप्त होतारस्तमिदीळते	८. ६०. १६
सप्त होत्राणि मनसा	३. ४. ५
सप्तानां सप्त ऋष्टयः	८. २८. ५
सप्तापो देवीः सुरणा	१०. १०४. ८
सप्तार्धगर्भा भुवनस्य	१. १६४. ३६
सप्तास्यासन्परिधयस्त्रिः	१०. ९०. १५
सप्तिं मृजन्ति वेधसो	९. २९. २
सप्ती चिद्धा मदच्युता	८. ३३. १८
स प्रकेत उभयस्य	७. ३३. १२
स प्रत्नया कविवृध	८. ६३. ४
स प्रत्नया सहसा	१. ९६. १
स प्रत्नवन्नवीयसाग्ने	६. १६. २१
स प्रत्नवन्नव्यसे	९. ९१. ५
स प्रथमे व्योमनि	८. १३. २
स प्रवोळ्हॄन्परिगत्या	२. १५. ४
स प्राचीनान्पर्वतान्	२. १७. ५
सबाधो यं जना इमे	८. ७४. ६
स बोधि सूरिर्मघवा	२. ६. ४
स भन्दना उदियर्ति	९. ८६. ४१
सभामेति कितवः	१०. ३४. ६
स भिक्षमाणो अमृतस्य	९. ७०. २
स भूतु यो ह प्रथमाय	२. १७. २
स भ्रातरं वरुणमग्न	४. १. २
समजैषमिमा अहं	१०. १५९. ६
स मज्मना जनिम	६. १८. ७
समज्या पर्वत्या वसूनि	१०. ६९. ६
समजन्तु विश्वे देवाः	१०. ८५. ४७
समत्र गावोऽभितो	५. ३०. १०
स मत्सरः पृत्सु वन्वन्	९. ९६. ८
समत्सु त्वा शूर	१. १७३. ७

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

समत्स्वग्निमवसे ८. ११. ९
समध्वरायोषसो ७. ४१. ६
समना तूर्णिरप्त १०. ७३. ४
समनेव वपुष्यतः ८. ६२. ९
स मन्द्रया चनु ६. २३. ८
स मन्द्रया वन्धसो ३. ४१. ६
६. ४५. २७
स मन्द्रया च जिह्वया ७. १६. ९
समन्या यन्त्युप २. ३५. ३
स मन्युं मर्त्यानामदब्धो ८. ७८. ६
स मन्युमीः समदनस्य १. १००. ६
स मर्तो अग्ने स्वनीक ७. १. २३
स मर्जयान आयुभिः ९. ६६. २३
स मर्जयान आयुभि ९. ५७. ३
स मर्जयान इन्द्रियाय ९. ७०. ५
समश्विनोरवसा नूतनेन ५. ४२. १८
५. ४३. १७
५. ७६. ५
५. ७७. ५
समस्मिन्नायमान आसत १०. ९५. ७
समस्य मन्यवे विशो ८. ६. ४
समस्य हरि हरयो ९. ९६. २
स मह्ना विश्वा दुरितानि ७. १२. २
स मातरा नृतमो दर्शतान ९. ७७. ६
स मातरा विचरन्याजय ९. ६८. ४
स मातरा सूर्येण ६. ३२. २
स मानुषीषा पुरुधार १. ९६. ४
समानं नीळं वृषणो १०. ५. २
समानं पूर्वीरभि १०. १२३. ३
समानं वत्समभि १. १४६. ३
समानं वां सजात्यं ८. ७३. १२
समान ऊर्वे अधि ७. ७६. ५
समानमर्थमश्नवे वि ८. २०. ११
समानमस्मा अनपा १०. ८९. ३
समानमु त्यं पुरुहूत १०. ४१. १
समानमेतदुदकमुच्चै १. १६४. ५१
समानयोजनो हि वां १. ३०. १८
समानी व आकूतिः १०. १९१. ४
स मानुषीषु दूळभो ४. ९. २
स मानुषे वृजने १. १२८. ७
समाने अहन्त्रिरवद्य १. ३४. ३
समानो अध्वा स्वस्रो १. ११३. ३
समानो मन्त्रः समितिः १०. १९१. ३
समानो राजा विभृतः ३. ५५. ४
समान्या वियुते दूरे ३. ५४. ७
स मामृजे तिरो ९. १०७. २१
समावर्ति विदितो २. ३८. ६
स माहिन इन्द्रो अर्णो २ १०. ३
समित्तमघमश्नवत् ८. १८. १४
समित्तान्त्रहाखिदन् ८. ७७. ३
समित्समित्सुमना ३. ४. १
समिद्धमग्निं समिधा ६. १५. ७
समिद्धश्चित्समिध्यसे १०. १५०. १
समिद्धस्य प्रमहसो ५. २८. ४
समिद्धस्य श्रयमाणः ३. ८. २
समिद्धाग्निर्वनवत् ५. ३७. २
समिद्धे अग्नौ सुत इन्द्र ६. ४०. ३
समिद्धेष्वग्निष्वानजाना १. १०८. ४
समिद्धो अग्न आ वह १. १४२. १
समिद्धो अग्न आहुत ५. २८. ५
समिद्धो अग्निर्दिवि ५. २८. १
समिद्धो अग्निर्निहितः ५. ३. १
समिद्धो अद्य मनुषो १०. ११०. १
समिद्धो अद्य राजसि १. १८८. १
समिद्धो विश्वतस्पतिः ५. ५. ८
समिधाग्निं दुवस्यत ८. ४४. १
समिधा जातवेदसे ७. १४. १
समिधानः सहस्रजिद्वाजे ५. २३. ६
समिधान उ सन्त्य ८. ४४. ९
समिधा यस्त आहुतिं ६. २. ५
समिधा यो निशितिं ८. १९. १४
समिध्यमानः प्रथमानु ३. १७. १
समिध्यमानो अध्वरे ३. २७. ४
समिध्यमानो अपृतस्य ५. २८. २
समिन्द्र गर्दभं मृण १. २०. ५
समिन्द्र णो मनसा ५. ४२. ४
समिन्द्र राया समिषा १. ५३. ८
समिन्द्रेणोत वायुना ९. ६१. ८
समिन्द्रेरय गामनड्वाहं १०. ५०. १०
समिन्द्रो गा अजयत्सं ५. ३२. ११
समिन्द्रो रायो बृहती ८. ५२. १०
समीं पणेरजति ५. ३४. ७
समीं रेभासो अस्वरन् ८. ९७. ११
समीचीना अनूषत ९. ३९. ६
समीचीनास आसते ९. १०. ७
समीचीने अभि त्मना ९. १०२. ७
समी रथं न भुरिजो ९. ७१. ५
समी वत्सं न मातृभिः ९. १०४. २
समी सखायो अस्वरन् ९. ४५. ५
समु त्ये महतीरपः ८. ७. २२
समु त्वा धीभिरस्वरन् ९. ६६. ८
समुद्रः सिन्धू रजो १०. ६६. ११
समुद्रज्येष्ठाः सलिलस्य ७. ४९. १
समुद्रमासामव तस्थे ५. ४४. ९
समुद्रादर्णवादधि १०. १९०. २
समुद्रादूर्मिमुदियर्ति १०. १२३. २
समुद्रादूर्मिर्मधुमाँ ४. ५८. १
समुद्रिया अप्सरसो ९. ७८. ३
समुद्रे अन्तः शयत ८. १००. ९
समुद्रेण सिन्धवो ३. ३६. ७
समुद्रे त्वा नृमणा १०. ४५. ३
समुद्रो अप्सु मामृजे ९. २. ५
समु पूष्णा गमेमहि ६. ५४. २
समु प्र यन्ति धीतयः १०. २५. ४
समु प्रिया अनूषत ९. १०१. ८
समु प्रियो सृज्यते ९. ९७. ३
समु वां यज्ञं महयं ७. ६१. ६
समु वो यज्ञं महयन् ७. ४२. ३
स सृज्यते सुकर्मभिर्देवो ९. ९९. ७
स सृज्यमानो दशभिः ९. ७०. ४
सम्मेमहुता इमा गिरो ९. ३४. ६
स मे वपुश्छदयदश्विनोर्यो ६. ४९. ५
समोहे वा य आशत १. ८. ६
सर्मो चिदस्तौ न समं १०. ११७. ९
सम्यक्सम्यञ्चो महिषा ९. ७३. २
सम्यक्स्रवन्ति सरितो ४. ५८. ६
सम्राजा उग्रा वृषभा ५. ६३. ३
सम्राजा या घृतयोनी ५. ६८. २
सम्राजावस्य भुवनस्य ५. ६३. २
सम्राजो उ तद्वपुषे १०. ६३. ५
सम्राज्ञी श्वशुरे भव १०. ८५. ४६
सम्राळन्यः स्वराळन्य ७. ८२. २
स यन्ता विप्र एषां ३. १३. ३
स यद्दयोऽवनीर्गोष्वर्वा १०. ९९. ४
स युध्मः सत्वा खजकृत् ६. १८. २
स योजते अरुषा विश्व ७. १६. २
स यो न मुहे न मिथू ६. १८. ८
स यो वृषा नरां न १. १४९. २
स यो वृषा वृष्ण्येभिः १. १००. १
स यो व्यस्यादभि २. ४. ७
स रंहत उरुगायस्य ९. ९७. ९
स रत्नं मर्त्यो वसु १. ४१. ६
स रथेन रथीतमो ६. ४५. १५
स रन्धयत्सदिवः २. १५. ६
सरस्वति त्वमस्मां २. ३०. ८
सरस्वति देवनिदो ६. ६१. ३
सरस्वति या सरथं १०. १७. ८
सरस्वतीं देवयन्तो १०. १७. ७
सरस्वतीं यां पितरो १०. १७. ९
सरस्वती सरयुः सिन्धु १०. ६४. ९
सरस्वती साधयन्ती २. ३. ८
सरस्वत्यभि नो नेषि ६. ६१. १४
सरस्वान्धीभिर्वरुणो १०. ६६. ५
स राजसि पुरुष्टुतँ ८. १५. ३
स रायस्कामुप सृजा ६. ३६. ४
स रुद्रेभिरशस्तवार १०. ९९. ५
सरूपैरा सु नो गहि ८. ३४. १२
स रेतोधा वृषभः ७. १०१. ६
स रेवाँ इव विश्पति १. २७. १२
स रोचयन्नुषा रोदसी ३. २. २
स रोरुवद्भिः पूर्वा ९. ६८. २
स रोरुवद्वृषभस्तिग्मशृङ्गो १०. २८. २
सर्गो इव सृजतं सुष्टुतीरुप ८. ३५. २०
सर्वं परिक्रोशं जहि १. २९. ७
सर्वे नन्दन्ति यशसा १०. ७१. १०
स वज्रभृद्दस्युहा १. १००. १२
स वर्धिता वर्धनः ९. ९७. ३९
स वह्निः पुत्रः पित्रोः १. १६०. ३
स वह्निः सोम जागृविः ९. ३६. २
स वह्निभिर्ऋक्वभिर्गोषु ६. ३२. ३

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

स वह्निरप्सु दुष्टरो	९.	२०.	६
स वां यज्ञेषु मानवी	९.	९८.	९
स वाजं यातापदुष्पदा	१०.	९९.	३
स वाजं विश्वचर्षणि	१.	२७.	९
स वाजी रोचना दिवः	९.	३७.	३
स वाज्यक्षाः सहस्ररेता	९.	१०९.	९
स वाज्यर्वा स ऋषि	४.	३६.	६
स वायुमिन्द्रमश्विना	९.	७.	७
स वावशान इह पाहि	३.	५१.	८
स वावृधे नर्यो योषणासु	७.	९५.	३
सविता पश्चातात्सविता	१०.	३६.	१४
सविता यन्त्रैः पृथिवी	१०.	१४९.	१
सवितारमुषसमश्विना	१.	४४.	८
स विद्वाँ अङ्गिरोभ्य	८.	६३.	३
स विद्वाँ अपगोहं	२.	१५.	७
स विद्वाँ आ च पिप्रयो	२.	६.	८
स विप्रश्चर्षणीनां शवसा	४.	८.	८
स विश्वा दाशुषे वसु	९.	३६.	५
स वीरो अप्रतिष्कुत	७.	३२.	६
स वीरो दक्षसाधनो	९.	१०१.	१५
स वृत्रहत्ये हव्यः स	४.	२४.	२
स वृत्रहा वृषा सुतो	९.	३७.	५
स वृत्रहेन्द्रः कृष्णयोनीः	२.	२०.	७
स वृत्रहेन्द्र ऋभुक्षाः	८.	९६.	२१
स वृत्रहेन्द्रश्चर्षणीधृत्तं	८.	९६.	२०
स वेतसुं दशमायं	६.	२०.	८
स वेद देव आनमं	४.	८.	३
स वेद सुष्टुतीनामिन्दुर्न	१०.	२६.	३
सव्यामनु स्फिग्यं वावसे	८.	४.	८
स व्राधतः शवसानेभि	१०.	९९.	९
स व्राधतो नहुषो	१.	१२२.	१०
स शुष्मी कलशेष्वा	९.	१८.	७
स शेवृधमधि धा	१.	५४.	११
स श्रुधि यः स्मा	१.	१२९.	२
स श्वितानस्तन्यतू	६.	६.	२
स संनयः स विनयः	२.	२४.	९
स संस्तिरो विष्टिरः	१.	१४०.	७
स सत्पतिः शवसा	६.	१३.	३
स सत्यसत्वन्महते	६.	३१.	५
स सद्म परि णीयते	४.	९.	३
ससन्तु त्या अरातयो	१.	२९.	४
स सप्त धीतिभिर्हितो	९.	९.	४
स समुद्रो अपीच्यस्तुरो	८.	४१.	८
स सर्गेण शवसा तक्तो	६.	३२.	५
ससर्परीरभरत्तूयमेभ्यो	३.	५३.	१६
ससर्परीरमतिं बाधमाना	३.	५३.	१५
स सव्येन यमति	१.	१००.	९
ससस्य यद्वियुता	४.	७.	७
ससानात्यँ उत सूर्य	३.	३४.	९
स सुक्रतुः पुरोहितो	१.	१२८.	४
स सुक्रतुर्ऋतचिदस्तु	७.	८५.	४
स सुक्रतुर्यो वि दुरः	७.	९.	२
स सुक्रतू रणिता यः	८.	९६.	१९
स सुतः पीतये वृषा	९.	३७.	१
स सुन्वत इन्द्रः सूर्यमा	२.	१९.	५
स सुन्वे यो वसूनां	९.	१०८.	१३
स सुष्टुभा स ऋक्वता	४.	५०.	५
स सुष्टुभा स स्तुभा	१.	६२.	४
स सूनुभिर्न रुद्रेभि	१.	१००.	५
स सूनुर्मातरा शुचिर्जातो	९.	९.	३
स सूर्यः पर्युरु वरांस्येन्द्रो	१०.	८९.	२
स सूर्य प्रति पुरो न	७.	६२.	२
स सूर्यस्य रश्मिभिः	९.	८६.	३२
सस्रुषांसमिव त्मनाग्नि	३.	९.	५
स सोम आमिश्लतमः	६.	२९.	४
सस्तु माता सस्तु पिता	७.	५५.	५
स स्तोम्यः स हव्यः	८.	१६.	८
सस्यावाना यवयसि	८.	३७.	४
सस्रिमविन्दच्चरणे	१०.	१३९.	६
स स्मा कृणोति केतुमा	५.	७.	४
सस्वश्चिद्धि तन्वः	७.	५९.	७
सस्वश्चिद्धि समृति	७.	६०.	१०
सहदानुं पुरुहूत	३.	३०.	८
सह वामेन न उषो	१.	४८.	१
स हव्यवाळमर्त्य	३.	११.	२
स ह श्रुत इन्द्रो नाम	२.	२०.	६
सहस्तोमाः सहछन्दस	१०.	१३०.	७
सहस्रं त इन्द्रोतयो	१.	१६७.	१
सहस्रं व्यतीनां युक्ता	४.	३२.	१७
सहस्रं साकमर्चत	१.	[illegible]	[illegible]
सहस्रणीयः शतधारो	९.	८५.	४
सहस्रणीथाः कवयो	१०.	१५४.	५
सहस्रदा ग्रामणीर्मा	१०.	६२.	११
सहस्रधा पञ्चदशान्युक्था	१०.	११४.	८
सहस्रधारं वृषभं	९.	१०८.	८
सहस्रधारः पवते	९.	१०१.	६
सहस्रधारेऽव ता	९.	७४.	६
सहस्रधारेऽव तं	९.	७३.	४
सहस्रधारे वितते	९.	७३.	७
सहस्रवाजमभिमातिषाहं	१०.	१०४.	७
सहस्रशीर्षा पुरुषः	१०.	९०.	१
सहस्रशृङ्गो वृषभो यः	७.	५५.	७
सहस्रसामाग्निवेशिं	५.	३४.	९
सहस्राक्षेण शतशारदेन	१०.	१६१.	३
सहस्राक्षो विचर्षणिरग्नी	१.	७९.	१२
सहस्रा ते शता वयं	४.	३२.	१८
सहस्रेणेव सचते	८.	४.	६
सहस्रे पृषतीनामधि	८.	६५.	११
सहस्रोतिः शतामघो	९.	६२.	१४
सहस्व मन्यो अभिमाति	१०.	८४.	३
सहावा पृत्सु तरणिर्नार्वा	३.	४९.	३
स हि क्रतुः स मर्यः	१.	७७.	३
स हि क्षत्रस्य मनसस्य	५.	४४.	१०
स हि क्षपावाँ अग्नी	१.	७०.	३
स हि क्षयेण क्षम्यस्य	७.	४६.	२
स हि क्षेमो हविर्यज्ञः	१०.	२०.	६
स हि त्वं देव शश्वते	९.	९८.	४
स हि द्युता विद्युता	१०.	९९.	२
स हि द्युभिर्जनानां	५.	१६.	२
स हि द्वरो द्वरिषु	१.	५२.	३
स हि धीभिर्हव्यो	६.	१८.	६
स हि पुरू चिदोजसा	१.	१२७.	३
स हि यो मानुषा युगा	६.	१६.	२३
स हि रत्नानि दाशुषे	५.	८२.	३
स हि विश्वाति पार्थिवा	६.	१६.	२०
स हि विश्वानि पार्थिवाँ	६.	४५.	२०
स हि वेदा वसुधितिं	४.	८.	२
स हि शर्धो न मारुतं	१.	१२७.	६
स हि शुचिः शतपत्रः	७.	९७.	७
स हि श्रवस्युः सदनानि	१.	५५.	६
स हि ष्मा जरितृभ्य	९.	२०.	२
स हि ष्मा धन्वाक्षितं	५.	७.	७
स हि ष्मा विश्वचर्षणि	५.	२३.	४
स हि सत्यो यं पूर्वे	५.	२५.	२
स हि स्वसृत्पृषदश्वो	१.	८७.	४
स होता यस्य रोदसी	३.	६.	१०
स होता विश्वं परि	२.	२.	५
स होता सेदु दूत्यं	४.	८.	४
सहोभिर्विश्वं परि	१०.	५६.	५
सहो षु णो वज्रहस्तैः	८.	७.	३२
सांतपना इदं हविर्मरुत	७.	५९.	९
साकं जातः क्रतुना	२.	२२.	३
साकं जाताः सुभ्वः	५.	५५.	३
साकंजानां सप्तथमाहु	१.	१६४.	१५
साकं यक्ष्म प्र पत	१०.	९७.	१३
साकंयुजा शकुनस्येव	१०.	१०६.	३
साकं वदन्ति बहवो	९.	७२.	२
साकं हि शुचिना शुचिः	२.	५.	४
साकमुक्षो मर्जयन्त	९.	९३.	१
सातिर्न वोऽमवती	१.	१६८.	७
सा ते अग्ने शंतमा	८.	७४.	८
सा ते जीवातुरुत	१०.	२७.	२४
सा द्युम्नैर्द्युम्निनी	८.	७४.	९
साधुर्न गृध्रुरस्तेव	१.	७०.	६
साध्वपांसि सनता	२.	३.	६
साध्वर्या अतिथिनी	१०.	६८.	३
साध्वीमकर्देववीतिं	१०.	५३.	३
सा नो अद्य यस्या	१०.	१२७.	४
सा नो अद्याभरद्वसु	५.	७९.	३
सा नो विश्वा अति द्विषः	६.	६१.	९
साम द्विबर्हा महि	४.	५.	३
सामन्नु राये निधिमन्	१०.	५९.	२
सा मा सत्योक्तिः परि	१०.	३७.	२
सा वसु दधती श्वशुराय	१०.	९५.	४
सा वह योक्षभिरवातोषो	६.	६४.	५
सा विट् सुवीरा मरुद्भि	७.	५६.	३
सास्मा अरं प्रथमं	२.	१८.	२
सास्मा अरं बाहुभ्यां	२.	१७.	६
सास्माकेभिरेतरी न	६.	१२.	४
साहा ये सन्ति मुष्टिहेव	८.	२०.	२०

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

साह्वान्विश्वा अभियुजः ३. ११. ६
सिंहं नसन्त मध्वो ९. ८९. ३
सिंहा इव नानदति १. ६४. ८
सिञ्चन्ति नमसावत ८. ७२. १०
सिध्रा अग्ने धियो अस्मे १०. ७. ४
सिनीवालि पृथुष्टुके २. ३२. ६
सिन्धुर्न क्षोदः शिमीवाँ २. २५. ३
सिन्धुर्ह वां रसया ४. ४३. ६
सिन्धूँरिव प्रवण आशुया ६. ४६. १४
सिन्धोरिव प्रवणे निम्न ९. ६९. ७
सिन्धोरिव प्राध्वने ४. ५८. ७
सिषक्ति सा वां सुमति ७. ७०. २
सिषक्तु न ऊर्जव्यस्य ५. ४१. २०
सिषासतू रयीणां ९. ४७. ५
सीदन्तस्ते वयो यथा ८. २१. ५
सीद होतः स्व उ लोके ३. २९. ८
सीरा युञ्जन्ति कवयो १०. १०१. ४
सुकर्माणः सुरुचो ४. २. १७
सुकिंशुकं शल्मलिं १०. ८५. २०
सुकृत्सुपाणिः स्ववाँ ३. ५४. १२
सुक्षेत्रिया सुगातुया १. ९७. २
सुखं रथं युयुजे १०. ७५. ९
सुगः पन्था अनृक्षर १. ४१. ४
सुगव्यं नो वाजी १. १६२. २२
सुगस्ते अग्ने सनवित्तो ७. ४२. २
सुगुरसत्सुहिरण्यः १. १२५. २
सुगोत ते सुपथा ६. ६४. ४
सुगो हि वो अर्यमन् २. २७. ६
सुज्योतिषः सूर्य ६. ५० २
सुतंभरो यजमानस्य ५. ४४ १३
सुतः सोमो असुतादिन्द्र ६. ४१ ४
सुत इत्वं निमिश्ल ६. २३. १
सुत इन्दो पवित्र आ ९. ९९. ८
सुत इन्द्राय वायवे ९. ३४. २
सुत इन्द्राय विष्णवे ९. ६३. ३
सुत एति पवित्र आ ९. ३९. ३
सुतपाव्ने सुता इमे १. ५. ५
सुता अनु स्वमा रजो ९. ६३. ६
सुता इन्द्राय वज्रिणे ९. ६३. १५
सुता इन्द्राय वायवे वरुणाय ९. ३३. ३
सुता इन्द्राय वायवे सोमासो ५. ५१. ७
सुतावन्तस्त्वा वयं ८. ६५. ६
सुतासो मधुमत्तमाः ९. १०१. ४
सुते अध्वरे अधि १०. ९४. १४
सुतेसुते न्योकसे १. ९. १०
सुत्रामाणं पृथिवीं १०. ६३. १०
सुदक्षो दक्षैः क्रतुनासि १०. ९१. ३
सुदासे दस्रा वसु १. ४७. ६
सुदेवः समहासति ५. ५३. १५
सुदेवाः स्थ काण्वायना ८. ५५. ४
सुदेवो अद्य प्रपतेदनावृत् १०. ९५. १४
सुदेवो असि वरुण ८. ६९. १२
सुनिर्मथा निर्मथितः ३. २९. १२
सुनीतिभिर्नयसि २. २३. ४
सुनीथो घा स मर्त्यो ८. ४६. ४
सुनोता मधुमत्तमं ९. ३०. ६
सुनोता सोमपाव्ने ७. ३२. ८
सुन्वन्ति सोमं रथिरासो १०. ७६. ७
सुपर्णं वस्ते मृगो ६. ७५. ११
सुपर्णं विप्राः कवयो १०. ११४. ५
सुपर्णं हत्या नखमा १०. २८. १०
सुपर्णा एत आसते १. १०५. ११
सुपर्णा वाचमक्रतोप १०. ९४. ५
सुपेशसं माव सृजन्त्यस्तं ५. ३०. १३
सुपेशसं सुखं रथं १. ४९. २
सुप्रतीके वयोवृधा ५. ५. ६
सुप्रवाचनं तव वीर २. १३. ११
सुप्रावर्गं सुवीर्यं सुष्टु ८. २२. १८
सुप्रावीरस्तु स क्षयः ७. ६६. ५
सुप्राव्यः प्रासुषाळेष ४. २५. ६
सुप्रैतुः सूयवसो न १. १९०. ६
सुब्रह्माणं देववन्तं १०. ४७. ३
सुभगः स प्रयज्यवो १. ८६. ७
सुभगः स व ऊतिष्वास ८. २०. १५
सुभागान्नो देवाः कृणुता १०. ७८. ८
सुमङ्गलीरियं वधूरिमां १०. ८५. ३३
सुयुग्भिरश्वैः सुवृता ३. ५८. ३
सुयुग्वहन्ति प्रति ३. ५८. २
सुरथाँ आतिथिग्वे ८. ६८. १६
सुरुक्मे हि सुपेशसा १. १८८. ६
सुरूपकृत्नुमूतये १. ४. १
सुविज्ञानं चिकितुषे ७. १०४. १२
सुवितस्य मनामहे ९. ४१. २
सुविवृतं सुनिरजमिन्द्र १. १०. ७
सुवीरं रयिमा भर ६. १६. २९
सुवीरस्ते जनिता ४. १७. ४
सुवीरासो वयं धना ९. ६१. २३
सुवीर्यं स्वश्व्यं सुगव्य ८. १२. ३३
सुवृद्रथो वर्तते १. १८३. २
सुशंसो बोधि गृणते १. ४४. ६
सुशिल्पे बृहती मही ९. ५. ६
सुशेवो नो मृळयाकु ८. ७९. ७
सुषहा सोम तानि ९. २९. ३
सुषुप्वांसं न निर्ऋते १. ११७. ५
सुषुप्वांस ऋभव १. १६१. १३
सुषुमा यातमद्रिभिर्गो १. १३७. १
सुषोमे शर्यणावत्यार्जीके ८. ७. २९
सुष्टुभो वां वृषण्वसू ५. ७५. ४
सुष्ठामा रथः सुयमा १०. ४४. २
सुष्वाणास इन्द्र स्तुमसि १०. १४८. १
सुष्वाणासो व्यद्रिभि ९. १०१. ११
सुसंकाशा मातृमृष्टेव १. १२३. ११
सुसंदृक्ते स्वनीक प्रतीकं ७. ३. ६
सुसंदृशं त्वा वयं प्रति १०. १५८. ५
सुसंदृशं त्वा वयं मघवन् १. ८२. ३
सुसमिद्धाय शोचिषे ५. ५. १
सुसमिद्धो न आ वह १. १३. १
सूक्तवाकं प्रथममादिदग्नि १०. ८८. ८
सूक्तेभिर्वो वचोभिर्देवजुष्टै ५. ४५. ४
सूनोर्मानेनाश्विना गृणाना १. ११७. ११
सूयवसाद्भगवती हि १. १६४. ४०
सूर उपाके तन्वं दधानो ४. १६. १४
सूरश्चक्रं प्र बृहज्जात १. १३०. ९
सूरश्चिदा हरितो अस्य १०. ९२. ८
सूरश्चिद्रथं परितक्म्यायां ५. ३१. ११
सूरो न यस्य दृशति ६. ३. ३
सूर्यं चक्षुर्गच्छतु १०. १६. ३
सूर्यरश्मिर्हरिकेशः १०. १३९. १
सूर्यस्येव रश्मयो ९. ६९. ६
सूर्यस्येव वक्षथो ७. ३३. ८
सूर्याचन्द्रमसौ धाता १०. १९०. ३
सूर्याया वहतुः प्रागात् १०. ८५. १३
सूर्यायै देवेभ्यो मित्राय १०. ८५. १७
सूर्ये विषमा सजामि १. १९१. १०
सूर्यो देवीमुषसं १. ११५. २
सूर्यो नो दिवस्पातु १०. १५८. १
सूर्यो रश्मिं यथा सृजा ८. ३२. २३
सृजः सिन्धूँरहिना १०. १११. ९
सृजन्ति रश्मिमोजसा ८. ७. ८
सृजो महीरिन्द्र या २. ११. २
सृण्येव जर्भरी तुर्फरीतू १०. १०६. ६
सेदग्निरग्नीँरत्यस्त्वन्यान् ७. १. १४
सेदग्निर्यो वनुष्यतो ७. १. १५
सेदग्ने अस्तु सुभगः ४. ४. ७
सेदुग्रो अस्तु मरुतः ७. ४०. ३
सेदृभवो यमवय ४. ३७. ६
सेनेव सृष्टामं दधात्यस्तु १. ६६. ४
सेमं नः काममा पृण १. १६. ९
सेमं नः स्तोममा गह्युपेदं १. १६. ५
सेमां वेतु वषट्कृतिमग्नि ७. १५. ६
सेमामविड्ढि प्रभृतिं य २. २४. १
सेहान उग्र पृतना अभि ८. ३७. २
सैनानीकेन सुविदत्रो २. ९. ६
सो अग्न ईजे शशमे ६. १. ९
सो अग्न एना नमसा ७. ९३. ७
सो अग्निर्यो वसुर्गृणे ५. ६. २
सो अग्ने अह्नां हरिर्हर्यतो ९. ८६. ४२
सो अङ्गिरसामुचथा २. २०. ५
सो अङ्गिरोभिरङ्गिरस्तमो १. १००. ४
सो अद्धा दाश्वध्वरो ८. १९. ९
सो अप्रतीनि मनवे २. १९. ४
सो अभ्रियो न यवस १०. ९९. ८
सो अर्णवो न नद्यः १. ५५. २
सो अर्षेन्द्राय पीतये ९. ६२. ८
सो अस्य वज्रो हरितो १०. ९६. ३
सो अस्य विशो महि ९. ८६. १५
सो चिन्नु भद्रा क्षुमती १०. ११. ३
सो चिन्नु वृष्टिर्यूथ्या १०. २३. ४
सो चिन्नु सख्या नर्य १०. ५०. २
सोता हि सोममद्रिभि ८. १. १७

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सोदञ्चं सिन्धुमरिणान्	२. १५. ६
सोमं गावो धेनवो	९. ९७. ३५
सोमं मन्यते पपिवान्	१०. ८५. ३
सोमं राजानमवसे	१०. १४१. ३
सोमः पवते जनिता	९. ९६. ५
सोमः पुनान ऊर्मिणाव्यो	९. १०६. १०
सोमः पुनानो अर्षति	९. १३. १
सोमः पुनानो अव्यये	९. ११०. १०
सोमः प्रथमो विविदे	१०. ८५. ४०
सोमः सुतो धारयात्यो	९. ९७. ४५
सोम इद्वः सुतो अस्तु	८. ६६. १५
सोम उ पुवाणः सोतृभि	९. १०७. ८
सोम एकेभ्यः पवते	१०. १५४. १
सोम गीर्भिष्ट्वा वयं	१. ९१. ११
सोममन्य उपासदत्	६. ५७. २
सोममिन्द्राबृहस्पती	४. ४९. ६
सोम यास्ते मयोभुव	१. ९१. ९
सोम राजन्मृळया नः	८. ४८. ८
सोम रारन्धि नो हृदि	१. ९१. १३
सोमस्य धारा पवते	९. ८०. १
सोमस्य मा तवसं	३. १. १
सोमस्य मित्रावरुणोदिता	८. ७२. १७
सोमस्य राज्ञो वरुणस्य	१०. १६७. ३
सोमाः पवन्त इन्दवो	९. १०१. १०
सोमा असृग्रमाशवो	९. २३. १
सोमा असृग्रमिन्दवः	९. १२. १
सोमानं स्वरणं कृणुहि	१. १८. १
सोमापूषणा जनन	२. ४०. १
सोमापूषणा रजसो	२. ४०. ३
सोमारुद्रा धारयेथा	६. ७४. १
सोमारुद्रा युवमेतान्यस्मे	६. ७४. ३
सोमारुद्रा वि वृहतं	६. ७४. २
सोमासो न ये सुता	१. १६८. ३
सोमेनादित्या बलिनः	१०. ८५. २
सोमो अर्षति धर्णसि	९. २३. ५
सोमो अस्मभ्यं द्विपदे	३. ६२. १४
सोमो जिगाति गातुविद्	३. ६२. १३
सोमो ददद्गन्धर्वाय	१०. ८५. ४१
सोमो देवो न सूर्यो	९. ६३. १३
सोमो धेनुं सोमो	१. ९१. २०
सोमो मीढ्वान्पवते	९. १०७. ७
सोमो राजा प्रथमो	१०. १०९. २
सोमो वधूयुरभवदश्विना	१०. ८५. ९
सोषामविन्दत्स स्वः	१०. ६८. ९
स्तम्भीद्ध द्यां स	१. १२१. २
स्तरीरु त्वद्भवति सूत	७. १०१. ३
स्तरीर्यत्सूत सद्यो	१०. ३१. १०
स्तवा नु त इन्द्र	२. ११. ६
स्तविष्यामि त्वामहं	१. ४४. ५
स्तीर्णं ते बर्हिः सुत	३. ३५. ७
स्तीर्णं बर्हिरुप नो	१. १३५. १
स्तीर्णा अस्य संहतो	३. १. ७
स्तीर्णे बर्हिषि समिधाने अग्ना	४. ६. ४
स्तीर्णे बर्हिषि समिधाने अग्नौ	६. ५२. १७
स्तुत इन्द्रो मघवा यद्ध	४. १७. १९
स्तुतश्च यास्त्वा वर्धन्ति	८. २. २९
स्तुतासो नो मरुतो	१. १७१. ३
स्तुष उ वो मह ऋतस्य	६. ५१. ३
स्तुषे जनं सुव्रतं नव्य	६. ४९. १
स्तुषे नरा दिवो अस्य	६. ६२. १
स्तुषेय्यं पुरुवर्पस	१०. १२०. ६
स्तुषे सा वां वरुण	१. १२२. ७
स्तुहि भोजान्त्स्तुवतो	५. ५३. १६
स्तुहि श्रुतं गर्तसदं	२. ३३. ११
स्तुहि श्रुतं विपश्चितं	८. १३. १०
स्तुहि स्तुहीदेते घा ते	८. १. ३०
स्तुहीन्द्रं व्यश्ववदनूर्मिं	८. २४. २२
स्तृणानासो यतस्रुचो	१. १४२. ५
स्तृणीत बर्हिरानुषग्	१. १३. ५
स्तेगो न क्षामत्येति	१०. ३१. ९
स्तेनं राय सारमेय	७. ५५. ३
स्तोता यत्ते अनुव्रत	८. १३. १९
स्तोता यत्ते विचर्षणि	८. १३. ६
स्तोत्रं राधानां पते	१. ३०. ५
स्तोत्रमिन्द्राय गायत	८. ४५. २१
स्तोत्रमिन्द्रो मरुद्गण	६. ५२. ११
स्तोत्रे राये हरिरर्षा	९. ९७. ६
स्तोमं जुषेथां युवशेव	८. ३५. ५
स्तोमं त इन्द्र विमदा	१०. २३. ६
स्तोमं वो अद्य रुद्राय	१०. ९२. ९
स्तोमा आसन्प्रतिधयः	१०. ८५. ८
स्तोमासस्त्वा गौरिवीते	५. २९. ११
स्तोमासस्त्वा विचारिणि	५. ८४. २
स्तोमेन हि दिवि देवासो	१०. ८८. १०
स्त्रियं दृष्ट्वाय कितवं	१०. ३४. ११
स्त्रियः सतीस्ताँ उ मे	१. १६४. १६
स्त्रियो हि दास आयुधानि	५. ३०. ९
स्थिरं मनश्चकृषे जात	५. ३०. ४
स्थिरं हि जानमेषां	१. ३७. ९
स्थिरा वः सन्तु नेमयो	१. ३८. १२
स्थिरा वः सन्त्वायुधा	१. ३९. २
स्थिरेभिरङ्गैः पुरुरूप	२. ३३. ९
स्थिरौ गावौ भवतां	३. ५३. १७
स्थूरं राधः शताश्वं	८. ४. १९
स्थूरस्य रायो बृहतो	४. २१. ४
स्पर्धन्ते वा उ देवहूये	७. ८५. २
स्पार्हा यस्य श्रियो	७. १५. ५
स्मत्पुरन्धिर्न आ गहि	८. ३४. ६
स्मदभीशू कशावन्ता	८. २५. २४
स्मदेतया सुकीर्त्याश्विना	८. २६. १९
स्याम ते त इन्द्र ये	२. ११. १३
स्याम वो मनवो	१०. ६६. १२
स्यूमना वाच उदियर्ति	१. ११३. १७
स्योना पृथिवि भवा	१. २२. १५
स्रक्वे द्रप्सस्य धमतः	९. ७३. १
स्रुवेव यस्य हरिणी	१०. ९६. ९
स्वः स्वाय धायसे	२. ५. ७
स्व आ दमे सुदुघा	२. ३५. ७
स्व आ यस्तुभ्यं दम	१. ७१. ६
स्वग्नयो वो अग्निभिः	८. १९. ७
स्वग्नयो हि वार्यं	१. २६. ८
स्वदस्व हव्या समिषो	३. ५४. २२
स्वधामनु श्रियं नरो	८. २०. ७
स्वध्वरासो मधुमन्तो	४. ४५. ५
स्वना न यस्य भामासः	१०. ३. ५
स्वनो न वोऽमवान्	५. ८७. ५
स्वप्नेनाभ्युप्या चुमुरिं	२. १५. ९
स्वयं कविर्विधर्तरि	९. ४७. ४
स्वयं जित्स मन्यते	८. ४. १२
स्वयं दधिध्वे तविषीं	५. ५५. २
स्वयं यजस्व दिवि	१०. ७. ६
स्वयुरिन्द्र स्वराळसि	३. ४५. ५
स्वरन्ति त्वा सुते नरो	८. ३३. २
स्वर्जितं महि मन्दान	१०. १६७. २
स्वर्जेषे भर आप्रस्य	१. १३२. २
स्वर्णरमन्तरिक्षाणि	१०. ६५. ४
स्वर्ण वस्तोरुषसामरोचि	७. १०. २
स्वर्भानोरध यदिन्द्र	५. ४०. ६
स्वर्यद्वेदि सुदृशीकमर्कै	४. १६. ४
स्वर्वृजं हि त्वामहमिन्द्र	१०. ३८. ५
स्वश्वा यशसा यातमर्वाग्	७. ६९. ३
स्वश्वा सिन्धुः सुरथा	१०. ७५. ८
स्वसा स्वस्रे ज्यायस्यै	१. १२४. ८
स्वस्तये वाजिभिश्च	३. ३०. १८
स्वस्तये वायुमुप ब्रवामहै	५. ५१. १२
स्वस्तिदा विशस्पतिर्वृत्रहा	१०. १५२. २
स्वस्ति नः पथ्यासु	१०. ६३. १५
स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः	१. ८९. ६
स्वस्ति नो दिवो अग्ने	१०. ७. १
स्वस्ति नो मिमीतामश्विना	५. ५१. ११
स्वस्ति पन्थामनु चरेम	५. ५१. १५
स्वस्ति मित्रावरुणा स्वस्ति	५. ५१. १४
स्वस्तिरिद्धि प्रपथे श्रेष्ठा	१०. ६३. १६
स्वादवः सोमा आ याहि	८. २. २८
स्वादिष्ठया मदिष्ठया	९. १. १
स्वादुः पवस्व दिव्याय	९. ८५. ६
स्वादुषंसदः पितरो	६. ७५. ९
स्वादुष्किलायं मधुमाँ	६. ४७. १
स्वादुष्टे अस्तु संसुदे	८. १७. ६
स्वादो पितो मधो पितो	१. १८७. २
स्वादोरभक्षि वयसः	८. ४८. १
स्वादोरित्था विषूवतो	१. ८४. १०
स्वाध्यो दिव आ सप्त	१. ७२. ८
स्वाध्यो वि दुरो देवयन्तो	७. २. ५
स्वायुधं स्ववसं सुनीथं	१०. ४७. २
स्वायुधः पवते देव	९. ८७. २
स्वायुधः सोतृभिः पूयमानो	९. ९६. १६
स्वायुधस्य ते सतो	९. ३१. ६
स्वायुधास इष्मिणः	७. ५६. ६
स्वाहृग्देवस्यामृतं	१०. १२. ३

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

स्वाहाकृतस्य तृम्पतं	८. ३५. २४
स्वाहाकृतान्या गह्युप	१. १४२. १३
स्वाहाग्नये वरुणाय	५. ५. ११
स्वाहा यज्ञं कृणोतनेन्द्राय	१. १३. १२
स्विध्मा यद्वनधिति	१. १२१. ७
हंसः शुचिषद्वसुरन्तरिक्ष	४. ४०. ५
हंसा इव कृणुथ श्लोक	३. ५३. १०
हंसा इव श्रेणिशो यतानाः	३. ८. ९
हंसाविव पतथो अध्वगा	८. ३५. ८
हंसासो ये वां मधुमन्तो	४. ४५. ४
हंसैरिव सखिभिर्वाव	१०. ६७. ३
हतं च शत्रून्यततं च	८. ३५. १२
हतं वृत्रं सुदानवः	१. २३. ९
हतो वृत्राण्यार्या हतो	६. ६०. ६
हनामैनाँ इति त्वष्टा	१. १६१. ५
हन्ता वृत्रं दक्षिणेनेन्द्रः	८. २. ३२
हन्ता वृत्रमिन्द्रः शूशुवानः	७. २०. २
हन्ताहं पृथिवीमिमां	१०. ११९. ९
हन्तो नु किमाससे	८. ८०. ५
हये जाये मनसा तिष्ठ	१०. ९५. १
हये देवा यूयमिदापयः	२. २९. ४
हये नरो मरुतो मृळता	५. ५७. ८
	५. ५८. ८
हयो न विद्वाँ अयुजि	५. ४६. १
हरयो धूमकेतवो	८. ४३. ४
हरिं मृजन्त्यरुषो न	९. ७२. १
हरिं हि योनिमभि	१०. ९६. २
हरिः सृजानः पथ्यामृत	९. ९५. २
हरित्वता वर्चसा सूर्यस्य	१०. ११२. ३
हरिश्मशारुर्हरिकेश	१०. ९६. ८
हरी नु कं रथ इन्द्रस्य	२. १८. ३
हरी नु त इन्द्र	२. ११. ७
हरी न्वस्य या वने	१०. २३. २
हरी यस्य सुयुजा	१०. १०५. २
हर्यन्नुषसमर्चयः सूर्यं	३. ४४. २
हर्यश्वं सत्पतिं चर्षणीसहं	८. २१. १०
हवं त इन्द्र महिमा	७. २८. २
हव एषामसुरो नक्षत	१०. ७४. २
हवन्त उ त्वा हव्यं	७. ३०. २
हविर्हविष्मो महि	९. ८३. ५
हविषा जारो अपां	१. ४६. ४
हविष्कृणुध्वमा गम	८. ७२. १
हविष्पान्तमजरं स्वर्विदि	१०. ८८. १
हवीमभिर्हवते यो	२. ३३. ५
हवे त्वा सूर उदिते	८. १३. १३
हव्यवाळग्निरजरः	५. ४. २
हस्काराद्विद्युतस्पर्यतो	१. २३. १२
हस्तच्युतेभिरद्रिभिः	९. ११. ५
हस्ताभ्यां दशशाखाभ्यां	१०. १३७. ७
हस्ते दधानो नृम्णा	१. ६७. २
हस्तेनैव ग्राह्य आधि	१०. १०९. ३
हस्तेव शक्तिमभि	२. ३९. ७
हारिद्रवेव पतथो	८. ३५. ७
हिङ्कृण्वती वसुपत्नी	१. १६४. २७
हितो न सप्तिरभि	९. ७०. १०
हिनोता नो अध्वरं	१०. ३०. ११
हिन्वन्ति सूरमुस्रयः पवमानं	९. ६७. ९
हिन्वन्ति सूरमुस्रयः स्वसारो	९. ६५. १
हिन्वानासो रथा इव	९. १०. २
हिन्वानो वाचमिष्यसि	९. ६४. ९
हिन्वानो हेतृभिर्यत	९. ६४. २९
हिमेनाग्निं घ्रंसमवारयेथां	१. ११६. ८
हिमेव पर्णा मुषिता	१०. ६८. १०
हिरण्यकर्ण मणिग्रीव	१. १२२. १४
हिरण्यकेशो रजसो	१. ७९. १
हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे	१०. १२१. १
हिरण्यत्वङ्मधुवर्णो	५. ७७. ३
हिरण्यदन्तं शुचिवर्णं	५. २. ३
हिरण्यनिर्णिगयो अस्य	५. ६२. ७
हिरण्यपाणिः सविता विचर्षणि	१. ३५. ९
हिरण्यपाणिः सविता सुजिह्व	३. ५४. ११
हिरण्यपाणिमूतये	१. २२. ५
हिरण्ययी अरणी यं	१०. १८४. ३
हिरण्ययी वां रभिरीषा	८. ५. २९
हिरण्ययेन पुरुभू रथेनेमं	४. ४४. ४
हिरण्ययेन रथेन	८. ५. ३५
हिरण्ययेभिः पविभिः	१. ६४. ११
हिरण्यरूपः स हिरण्य	२. ३५. १०
हिरण्यरूपमुषसो	५. ६२. ८
हिरण्यशृङ्गोऽयो अस्य	१. १६३. ९
हिरण्यस्तूपः सवितर्यथा	१०. १४९. ५
हिरण्यहस्तमश्विना	१. ११७. २४
हिरण्यहस्तो असुरः	१. ३५. १०
हुवे वः सुद्योत्मानं	२. ४. १
हुवे वः सूनुं सहसो	६. ५. १
हुवे वातस्वनं कविं	८. १०२. ५
हुवे वो देवीमदितिं	६. ५०. १
हृणीयमानो अप हि	५. २. ८
हृत्सु पीतासो युध्यन्ते	८. २. १२
हृदा तष्टेषु मनसो	१०. ७१. ८
हृदिस्पृशस्त आसते	१०. २५. २
हेतिः पक्षिणी न दभात्य	१०. १६५. ३
होताजनिष्ट चेतनः	२. ५. १
होता देवो अमर्त्यः	३. २७. ७
होताध्वर्युरावया	१. १६२. ५
होता निषत्तो मनो	१. ६८. ४
होता यक्षद्वनिनो	१. १३९. १०
होतारं चित्ररथमध्वरस्य	१०. १. ५
होतारं त्वा वृणीमहे	५. २०. ३
होतारं विश्ववेदसं	१. ४४. ७
होतारं सप्त जुह्वो	१. ५८. ७
होत्रादहं वरुण बिभ्यदायं	१०. ५१. ४
ह्रदं न हि त्वा न्यृषन्त्यूर्मय	१. ५२. ७
ह्रदा इव कुक्षयः सोमधानाः	३. ३६. ८
ह्रयामसि त्वेन्द्र याह्यर्वा	६. ४१. ५
ह्रयाम्यग्निं प्रथमं स्वस्तये	१. ३५. १

॥ इति ऋग्वेदमन्त्राणां वर्णानुक्रमणी ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

यजुर्वेद संहिता

YAJURVEDA SAMHITĀ

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ओ३म्

यजुर्वेद-संहिता

अथ प्रथमोऽध्यायः

ऋषिः—परमेष्ठी प्रजापतिः १-३१॥

देवता—सविता १, ३, १०, २०, २५, २६। यज्ञः २, ७, १४, १५, २१, २७-३१। विष्णुः ४, ९। अग्निः ५, ८, ११, १७-१९, २३। प्रजापतिः ६। अप्सवितारौ १२। इन्द्रः[१], अग्निः[२], यज्ञः[१] १३। वायुः[२], सविता[१] १६। यज्ञः[२], अग्निसवितारौ[१] २२। द्योविद्युतौ २४॥

छन्दः—स्वराड्बृहती[२], ब्राह्म्युष्णिक्[१] १। स्वराडार्षीत्रिष्टुप् २। भुरिग्जगती ३। अनुष्टुप् ४। आर्चीत्रिष्टुप् ५। आर्चीपङ्क्तिः ६। प्राजापत्याजगती ७। निचृवतिजगती ८। निचृत्त्रिष्टुप् ९। भुरिग्बृहती १०। स्वराड्जगती ११, १४। भुरिगत्यष्टिः १२। निचृदुष्णिक्[१], भुरिगार्चीगायत्री[२], भुरिगुष्णिक्[१] १३। निचृज्जगती[२], याजुषीपङ्क्तिः[१] १५। स्वराड्ब्राह्मी-त्रिष्टुप्[२], विराड्गायत्री[१] १६। निचृद्ब्राह्मीपङ्क्तिः १७। ब्राह्म्युष्णिक्[१], आर्चीत्रिष्टुप्[२], आर्चीपङ्क्तिः[१] १८। निचृद्ब्राह्मीत्रिष्टुप् १९। विराड्ब्राह्मीत्रिष्टुप् २०, २५। गायत्री[२], निचृत्पङ्क्तिः[१] २१। स्वराट्त्रिष्टुप्[२], गायत्री[१] २२। बृहती २३। स्वराड्ब्राह्मीपङ्क्तिः २४। स्वराड्ब्राह्मीपङ्क्तिः[२], भुरिग्ब्राह्मीपङ्क्तिः[१] २६। ब्राह्मीत्रिष्टुप् २७। विराड्ब्राह्मीपङ्क्तिः २८। त्रिष्टुप्[२],[१] २९। निचृज्जगती ३०। जगती[२], अनुष्टुप्[१] ३१॥

स्वरः—मध्यमः[२], ऋषभः[१] १। धैवतः २, ५, ९, १९, २०, २५, २७। निषादः ३, ७, ८, ११, १४, ३०। गान्धारः ४, १२। पञ्चमः ६, १७, २४, २६, २८। मध्यमः १०, २३। ऋषभः[२],[१], षड्जः[२] १३। निषादः[२], पञ्चमः[१] १५। धैवतः[२], षड्जः[१] १६। ऋषभः[२], धैवतः[२], पञ्चमः[१] १८। षड्जः[२], पञ्चमः[१] २१। धैवतः[२], षड्जः[१] २२। धैवतः[२],[१] २९। निषादः[२], गान्धारः[१] ३१॥

॥ ओ३म् ॥ [२]दृषे त्वोर्जे त्वा वायवं स्थ देवो वः सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्मणऽआप्यायध्वमघ्न्याऽइन्द्राय भागं [१]प्रजावतीरनमीवाऽ अयक्ष्मा मा वः स्तेनऽईशत माघशꣳसो ध्रुवाऽअस्मिन् गोपतौ स्यात बह्वीर्यजमानस्य पशून् पाहि ॥ १॥

वसोः पवित्रमसि द्यौरसि पृथिव्यसि मातरिश्वनो घर्मोऽसि विश्वधाऽअसि। परमेण धाम्ना दृꣳहस्व मा ह्वार्मा तें यज्ञपतिर्ह्वार्षीत् ॥ २॥

वसोः पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्रधारम्।
देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्वा कामधुक्षः॥ ३॥

सा विश्वायुः सा विश्वकर्मा सा विश्वधायाः।
इन्द्रस्य त्वा भागꣳसोमेनातनच्मि विष्णो हव्यꣳरक्ष ॥ ४॥

अग्ने व्रतपते व्रतं चरिष्यामि तच्छकेयं तन्मे राध्यताम्।
इदमहमनृतात् सत्यमुपैमि ॥ ५॥

कस्त्वा युनक्ति स त्वा युनक्ति कस्मै त्वा युनक्ति तस्मै त्वा युनक्ति।
कर्मणे वां वेषाय वाम् ॥ ६॥

प्रत्युष्टꣳरक्षः प्रत्युष्टाऽअरातयो निष्टप्तꣳरक्षो निष्टप्ताऽअरातयः।
उर्वन्तरिक्षमन्वेमि ॥ ७॥

धूरसि धूर्व धूर्वन्तं धूर्व तं योऽस्मान् धूर्वति तं धूर्व यं वयं धूर्वामः।
देवानामसि वह्नितमꣳसस्नितमं पप्रितमं जुष्टतमं देवहूतमम् ॥ ८॥

अहुतमसि हविर्धानं दृꣳहस्व मा ह्वार्मा तें यज्ञपतिर्ह्वार्षीत्।
विष्णुस्त्वा क्रमतामुरु वाताया पहतꣳरक्षो यच्छन्तां पञ्च ॥ ९॥

देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्।
अग्नये जुष्टं [२]गृह्णाम्यग्नीषोमाभ्यां जुष्टं [१]गृह्णामि ॥ १०॥

भूतायं त्वा नारातये स्वरभिविख्येषं दृꣳहन्तां दुर्यां: पृथिव्यामुर्वन्तरिक्षमन्वेमि।
पृथिव्यास्त्वा नाभौ सादयाम्यदित्याऽउपस्थेऽग्ने हव्यꣳरक्ष ॥ ११॥

पवित्रे स्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः। देवीरापोऽअग्रेगुवोऽअग्रेपुवोऽग्रऽइममद्य यज्ञं नयताग्रे यज्ञपतिꣳ सुधातुं यज्ञपतिं देवयुवम् ॥ १२॥

[३]युष्माऽइन्दोऽवृणीत वृत्रतूर्ये यूयमिन्दमवृणीध्वं वृत्रतूर्ये प्रोक्षिता स्थ।
अग्नये त्वा जुष्टं प्रोक्षाम्यग्नीषोमाभ्यां त्वा जुष्टं प्रोक्षामि। [१]वैश्वान्य कर्मणे शुन्धध्वं देवयज्यायै यद्वोऽशुद्धाः पराजघ्नुरिदं वस्तच्छुन्धामि॥ १३॥

शर्मास्यवधूतꣳरक्षोऽवधूताऽअरातयोऽदित्यास्त्वगसि प्रति त्वादितिर्वेत्तु।
अद्रिरसि वानस्पत्यो ग्रावासि पृथुबुध्नः प्रति त्वादित्यास्त्वग्वेत्तु॥ १४॥

[२]अग्नेस्तनूरसि वाचो विसर्जनं देववीतये त्वा गृह्णामि बृहद् ग्रावासि वानस्पत्यः सऽइदं देवेभ्यो हविः शमीष्व सुशमि शमीष्व।
[१]हविष्कृदेहि हविष्कृदेहि ॥ १५॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कुक्कुटोऽसि मधुजिह्वऽइषमूर्जमावद त्वया वयꣳसङ्घात्ꣳसङ्घातं जेष्म वर्षवृद्धमसि प्रति त्वा वर्षवृद्धं वेत्तु परापूतꣳरक्षः परापूता अरातयोऽपहतꣳरक्षो वायुर्वो विविनक्तु देवो वः सविता हिरण्यपाणिः प्रतिगृभ्णात्वच्छिद्रेण पाणिना ॥१६॥

धृष्टिरस्यपाऽग्नेऽअग्निमामादं जहि निष्क्रव्यादꣳसेधा देवयजं वह। ध्रुवमसि पृथिवीं दृꣳह ब्रह्मवनिं त्वा क्षत्रवनिं सजातवन्युपदधामि भ्रातृव्यस्य वधाय ॥१७॥

अग्ने ब्रह्मा गृभ्णीष्व धरुणमस्यन्तरिक्षं दृꣳह ब्रह्मवनिं त्वा क्षत्रवनिं सजातवन्युपदधामि भ्रातृव्यस्य वधाय। धर्त्रमसि दिवं दृꣳह ब्रह्मवनिं त्वा क्षत्रवनिं सजातवन्युपदधामि भ्रातृव्यस्य वधाय। विश्वाभ्यस्त्वाशाभ्यऽउपदधामि चितं स्थोर्ध्वचितो भृगूणामङ्गिरसां तपसा तप्यध्वम् ॥१८॥

शर्म्मास्यवधूतꣳ रक्षोऽवधूताऽअरातयोऽदित्यास्त्वगसि प्रति त्वादितिर्वेत्तु। धिषणासि पर्वती प्रति त्वादित्यास्त्वग्वेत्तु दिवः स्कम्भनीरसि धिषणासि पार्वतेयी प्रति त्वा पर्वती वेत्तु ॥१९॥

धान्यमसि धिनुहि देवान् प्राणाय त्वोदानाय त्वा व्यानाय त्वा। दीर्घामनु प्रसितिमायुषे धां देवो वः सविता हिरण्यपाणिः प्रतिगृभ्णात्वच्छिद्रेण पाणिना चक्षुषे त्वा महीनां पयोऽसि ॥२०॥

देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्। सं वपामि समापऽओषधीभिः समोषधयो रसेन।
सꣳरेवतीर्जगतीभिः पृच्यन्ताꣳ सं मधुमतीर्मधुमतीभिः पृच्यन्ताम्॥ २१॥

जनयत्यै त्वा संयौमीदमग्नेरिदमग्नीषोमयोरिषे त्वा घर्मोऽसि विश्वायुरुरुप्रथाऽउरु प्रथस्वोरु ते यज्ञपतिः प्रथतामग्निष्टे त्वचं मा हिꣳसीद्देवस्त्वा सविता श्रपयतु वर्ष्मन्पृथिव्या अधि नाके ॥२२॥

मा भेर्मा संविक्थाऽअतमेरुर्यज्ञोऽतमेरुर्यजमानस्य प्रजा भूयात् त्रिताय त्वा द्विताय त्वैकताय त्वा ॥२३॥

देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्। आददेऽध्वरकृतं देवेभ्यऽइन्द्रस्य बाहुरसि दक्षिणः सहस्रभृष्टिः शततेजा वायुरसि तिग्मतेजा द्विषतो वधः ॥२४॥

पृथिवि देवयजन्योषध्यास्ते मूलं मा हिꣳसिषं व्रजं गच्छ गोष्ठानं वर्षतु ते द्यौर्बधान देव सवितः परमस्यां पृथिव्याꣳ शतेन पाशैर्योऽस्मान्द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मस्तमतो मा मौक् ॥२५॥

अपाररुं पृथिव्यै देवयजनाद्वध्यासं व्रजं गच्छ गोष्ठानं वर्षतु ते द्यौर्बधान देव सवितः परमस्यां पृथिव्याꣳ शतेन पाशैर्योऽस्मान्द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मस्तमतो मा मौक्। अररो दिवं मा पप्तो द्रप्सस्ते द्यां मा स्कन् व्रजं गच्छ गोष्ठानं वर्षतु ते द्यौर्बधान देव सवितः परमस्यां पृथिव्याꣳ शतेन पाशैर्योऽस्मान्द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मस्तमतो मा मौक् ॥२६॥

गायत्रेण त्वा छन्दसा परिगृह्णामि त्रैष्टुभेन त्वा छन्दसा परिगृह्णामि जागतेन त्वा छन्दसा परिगृह्णामि। सुक्ष्मा चासि शिवा चासि स्योना चासि सुषदा चास्यूर्जस्वती चासि पयस्वती च ॥२७॥

पुरा क्रूरस्य विसृपो विरप्शिन्नुदादाय पृथिवीं जीवदानुम्। यामैरयꣳश्चन्द्रमसि स्वधाभिस्तामु धीरासोऽअनुदिश्य यजन्ते। प्रोक्षणीरासादय द्विषतो वधोऽसि ॥२८॥

प्रत्युष्टꣳरक्षः प्रत्युष्टाऽअरातयो निष्टप्तꣳरक्षो निष्टप्ताऽअरातयः। अनिशितोऽसि सपत्नक्षिद्वाजिनं त्वा वाजेध्यायै सम्मार्ज्मि।
प्रत्युष्टꣳरक्षः प्रत्युष्टाऽअरातयो निष्टप्तꣳरक्षो निष्टप्ताऽअरातयः। अनिशितोऽसि सपत्नक्षिद्वाजिनीं त्वा वाजेध्यायै सम्मार्ज्मि ॥२९॥

अदित्यै रास्नासि विष्णोर्वेष्पोस्यूर्जे त्वाऽदब्धेन त्वा चक्षुषावपश्यामि। अग्नेर्जिह्वासि सुहूर्देवेभ्यो धाम्नेधाम्ने मे भव यजुषेयजुषे॥ ३०॥

सवितुस्त्वा प्रसवऽउत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः। सवितुर्वः प्रसवऽउत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः। तेजोऽसि शुक्रमस्यमृतमसि धाम नामासि प्रियं देवानामनाधृष्टं देवयजनमसि ॥३१॥

इति प्रथमोऽध्यायः ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अथ द्वितीयोऽध्यायः

—:०:—

ऋषिः—परमेष्ठी प्रजापतिः १-१६, १८-२०। देवलः १७। वामदेवः २१-३४॥

देवता—यज्ञः १, २, ५। अग्निः ३, ४, ७, ९, १४, १७, २७-३०। विष्णुः ६, ८, २५। इन्द्रः १०, २२। द्यावापृथिवी ११। सविता १२। बृहस्पतिः १३। अग्नीषोमौ ॑, इन्द्राग्नि ᵣ १५। द्यावापृथिवी मित्रावरुणौ च ॑, अग्निः ᵣ १६। विश्वेदेवाः १८। अग्निवायू १९। अग्निसरस्वत्यौ २०। प्रजापतिः २१, २३। त्वष्टा २४। ईश्वरः २६। पितरः ३१-३३। आपः ३४॥

छन्दः—निचृत्पङ्क्तिः १। स्वराड्जगती २। भुरिगार्चीत्रिष्टुप् ᵣ, भुरिगार्चीपङ्क्तिः ॑, पङ्क्तिः ᵣ ३। निचृद्गायत्री ४, ३३। निचृद्ब्राह्मीबृहती ५। ब्राह्मीत्रिष्टुप् ॑, निचृत्त्रिष्टुप् ᵣ ६। बृहती ७। विराड्ब्राह्मीपङ्क्तिः ८। जगती ९। भुरिग्ब्राह्मीपङ्क्तिः १०। ब्राह्मीबृहती ११। भुरिग्बृहती १२। विराड्जगती १३। अनुष्टुप् ॑, भुरिगार्चीगायत्री ᵣ १४। ब्राह्मीबृहती ॑, निचृदतिजगती ᵣ १५। भुरिगार्चीपङ्क्तिः ॑, भुरिक्त्रिष्टुप् ᵣ १६। निचृज्जगती १७। स्वराट्त्रिष्टुप् १८। भुरिक्पङ्क्तिः १९, ३०। भुरिग्ब्राह्मीत्रिष्टुप् २०। भुरिग्ब्राह्मीबृहती २१। विराट्त्रिष्टुप् २२, २४। निचृद्बृहती २३। निचृदार्चीपङ्क्तिः ᵣ, आर्चीपङ्क्तिः ॑, भुरिग्जगती ᵣ २५। उष्णिक् २६। निचृत्पङ्क्तिः ॑, गायत्री ᵣ २७। भुरिगुष्णिक् २८, ३४। स्वराडार्षी अनुष्टुप् २९। बृहती ३१। ब्राह्मीबृहती ॑, निचृद्बृहती ᵣ ३२॥

स्वरः—पञ्चमः १, ८, १०, १९, ३०। निषादः २, ९, १३, १७। धैवतः ᵣ, पञ्चमः ॑, ᵣ ३। षड्जः ४, ३३। मध्यमः ५, ७, ११, १२, २१, २३, ३१, ३२। धैवतः ६, १८, २०, २२, २४। गान्धारः ॑, षड्जः ᵣ १४। मध्यमः ॑, निषादः ᵣ १५। पञ्चमः ॑, धैवतः ᵣ १६। पञ्चमः ᵣ, ॑, निषादः ᵣ २५। ऋषभः २६, २८, ३४। पञ्चमः ॑, षड्जः ᵣ २७। गान्धारः २९॥

कृष्णोऽस्याखरेष्ठोऽग्नये त्वा जुष्टं प्रोक्षामि वेदिरसि बर्हिषे
त्वा जुष्टां प्रोक्षामि बर्हिरसि स्रुग्भ्यस्त्वा जुष्टं प्रोक्षामि ॥१॥
अदित्यै व्युन्दनमसि विष्णो स्तुपोऽस्यूर्णम्रदसं त्वा स्तृणामि स्वासस्थां
देवेभ्यो भुवपतये स्वाहा भुवनपतये स्वाहा भूतानां पतये स्वाहा॥ २॥
ᵣगन्धर्वस्त्वा विश्वावसुः परिदधातु विश्वस्यारिष्ट्यै यजमानस्य परिधिरस्य-
ग्निरिडऽईडितः। ॑इन्द्रस्य बाहुरसि दक्षिणो विश्वस्यारिष्ट्यै यजमानस्य
परिधिरस्यग्निरिडऽईडितः। ᵣमित्रावरुणौ त्वोत्तरतः परिधत्तां ध्रुवेण धर्मणा
विश्वस्यारिष्ट्यै यजमानस्य परिधिरस्यग्निरिडऽईडितः ॥३॥
वीतिहोत्रं त्वा कवे द्युमन्तꣳसमिधीमहि। अग्ने बृहन्तमध्वरे ॥४॥
समिदसि सूर्यस्त्वा पुरस्तात् पातु कस्याश्चिदभिशस्त्यै ।
सवितुर्बाहू स्थऽऊर्णम्रदसं त्वा स्तृणामि स्वासस्थं
देवेभ्यऽआ त्वा वसवो रुद्राऽआदित्याः सदन्तु ॥५॥
॑घृताच्यसि जुहूर्नाम्ना सेदं प्रियेण धाम्ना प्रियꣳ सदऽआसीद
घृताच्यस्युपभृन्नाम्ना सेदं प्रियेण धाम्ना प्रियꣳ सदऽआसीद
घृताच्यसि ध्रुवा नाम्ना सेदं प्रियेण धाम्ना प्रियꣳ सदऽआसीद
ᵣप्रियेण धाम्ना प्रियꣳ सदऽआसीद। ध्रुवाऽअसदन्नृतस्य योनौ ता
विष्णो पाहि पाहि यज्ञं पाहि यज्ञपतिं पाहि मां यज्ञन्यम् ॥६॥
अग्ने वाजजिद् वाजं त्वा सरिष्यन्तं वाजजितꣳ सम्मार्ज्मि ।
नमो देवेभ्यः स्वधा पितृभ्यः सुयमे मे भूयास्तम् ॥७॥
अस्कन्नमद्य देवेभ्यऽआज्यꣳ संभ्रियासमङ्गिरा विष्णो मा
त्वावक्रमिषं वसुमतीमग्ने ते च्छायामुपस्थेषं विष्णो
स्थानमसीतऽइन्द्रो वीर्यमकृणोदूर्ध्वोऽध्वरऽआस्थात् ॥८॥
अग्ने वेहोत्रं वेदूर्त्युमवतां त्वा द्यावापृथिवीऽअव त्वं द्यावापृथिवी
स्विष्टकृद्देवेभ्यऽइन्द्रऽआज्येन हविषा भूस्वाहा सं ज्योतिषा ज्योतिः॥ ९॥
मयीदमिन्द्रऽइन्द्रियं दधात्वस्मान् रायो मघवानः सचन्ताम्।
अस्माकꣳ सन्त्वाशिषः सत्या नः सन्त्वाशिषऽउपहूता
पृथिवी मातोप मां पृथिवी माता ह्वयतामग्निराग्नीध्रात् स्वाहा॥ १०॥
उपहूतो द्यौष्पितोप मां द्यौष्पिता ह्वयतामग्निराग्नीध्रात् स्वाहा।
देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्।
प्रतिगृह्णाम्यग्नेष्ट्वास्येन प्राश्नामि ॥११॥
एतं ते देव सवितर्यज्ञं प्राहुर्बृहस्पतये ब्रह्मणे ।
तेन यज्ञमव तेन यज्ञपतिं तेन मामव ॥१२॥
मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञꣳसमिमं
दधातु। विश्वे देवासऽइह मादयन्तामो३म्प्रतिष्ठ ॥१३॥
॑एषा तेऽअग्ने समित्तया वर्धस्व चा च प्यायस्व ।
वर्धिषीमहि च वयमा च प्यासिषीमहि ।
ᵣअग्ने वाजजिद्वाजं त्वा ससृवाꣳसं वाजजितꣳसम्मार्ज्मि ॥१४॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

[क]अग्नीषोमयोरुज्जितिमनूज्जेषं वाजस्य मा प्रसवेन प्रोहामि। अग्नीषोमौ तमपनुदतां योऽस्मान् द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मो वाजस्यैनं प्रसवेनापोहामि। [ख]इन्द्राग्न्योरुज्जितिमनूज्जेषं वाजस्य मा प्रसवेन प्रोहामि। इन्द्राग्नी तमपनुदतां योऽस्मान् द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मो वाजस्यैनं प्रसवेनापोहामि ॥१५॥

[क]वसुभ्यस्त्वा रुद्रेभ्यस्त्वादित्येभ्यस्त्वा संजानाथां द्यावापृथिवी मित्रावरुणौ त्वा वृष्ट्यावताम्। [ख]व्यन्तु वयोक्तꣳरिहाणा मरुतां पृषतीर्गच्छ वशा पृश्निर्भूत्वा दिवं गच्छ ततो नो वृष्टिमावह। चक्षुष्पाऽअग्नेऽसि चक्षुर्मे पाहि ॥१६॥

यं परिधिं पर्यधत्थाऽअग्ने देवपणिभिर्गुह्यमानः। तं तऽएतमनु जोषं भराम्येष नेत्त्वदपचेतयाताऽअग्नेः प्रियं पाथोऽपीतम् ॥१७॥

सुꣳस्रवभागा स्थेषा बृहन्तः प्रस्तरेष्ठाः परिधेयाश्च देवाः। इमां वाचमभि विश्वे गृणन्तऽआसद्यास्मिन् बर्हिषि मादयध्वꣳ स्वाहा वाट्॥ १८॥

घृताची स्थो धुर्या पातꣳ सुम्ने स्थः सुम्ने मा धत्तम्। यज्ञ नमश्च तऽउप च यज्ञस्य शिवे सन्तिष्ठस्व स्विष्टे मे सन्तिष्ठस्व ॥१९॥

अग्नेऽदब्धायोऽशीतम पाहि मा दिद्योः पाहि प्रसित्यै पाहि दुरिष्टयै पाहि दुरद्मन्याऽअविषं नः पितुं कृणु। सुषदा योनौ स्वाहा वाड्ग्नये संवेशपतये स्वाहा सरस्वत्यै यशोभगिन्यै स्वाहा ॥२०॥

वेदोऽसि येन त्वं देव वेद देवेभ्यो वेदोऽभवस्तेन मह्यं वेदो भूयाः। देवा गातुविदो गातुं वित्त्वा गातुमित ।
मनसस्पतऽइमं देव यज्ञꣳस्वाहा वाते धाः ॥२१॥

सं बर्हिरङ्क्ताꣳहविषा घृतेन समादित्यैर्वसुभिः सम्मरुद्भिः ।
समिन्द्रो विश्वदेवेभिरङ्क्तां दिव्यं नभो गच्छतु यत् स्वाहा ॥२२॥

कस्त्वा विमुञ्चति स त्वा विमुञ्चति कस्मै त्वा विमुञ्चति तस्मै त्वा विमुञ्चति। पोषाय रक्षसां भागोऽसि ॥२३॥

सं वर्चसा पयसा सन्तनूभिरगन्महि मनसा सꣳशिवेन ।
त्वष्टा सुदत्रो विदधातु रायोऽनुमार्ष्टु तन्वो यद्विलिष्टम् ॥२४॥

[ग]दिवि विष्णुर्व्यक्रमꣳस्त जागतेन च्छन्दसा ततो निर्भक्तो योऽस्मान्द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मो[क] ऽन्तरिक्षे विष्णुर्व्यक्रमꣳस्त त्रैष्टुभेन च्छन्दसा ततो निर्भक्तो योऽस्मान्द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मः [घ]पृथिव्यां विष्णुर्व्यक्रमꣳस्त गायत्रेण च्छन्दसा ततो निर्भक्तो योऽस्मान्द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मोऽस्मादन्नादस्यै प्रतिष्ठायाऽअगन्म स्वः सं ज्योतिषापाभूम॥ २५॥

स्वयंभूरसि श्रेष्ठो रश्मिर्वर्चोदाऽअसि वर्चो मे देहि ।
सूर्यस्यावृतमन्वावर्ते ॥२६॥

[क]अग्ने गृहपते सुगृहपतिस्त्वयाऽग्नेऽहं गृहपतिना भूयासꣳसुगृहपतिस्त्वं मयाऽग्ने गृहपतिना भूयाः। [ख]अस्थूरि णौ गार्हपत्यानि सन्तु शतꣳहिमाः सूर्यस्यावृतमन्वावर्ते ॥२७॥

अग्ने व्रतपते व्रतमचारिषं तदशकं तन्मेऽराधीदमहं यऽएवाऽस्मि सोऽस्मि ॥२८॥

अग्नये कव्यवाहनाय स्वाहा सोमाय पितृमते स्वाहा ।
अपहताऽअसुरा रक्षाꣳसि वेदिषदः ॥२९॥

ये रूपाणि प्रतिमुञ्चमानाऽअसुराः सन्तः स्वधया चरन्ति ।
परापुरो निपुरो ये भरन्त्यग्निष्टाँल्लोकात् प्रणुदात्यस्मात् ॥३०॥

अत्र पितरो मादयध्वं यथाभागमावृषायध्वम् ।
अमीमदन्त पितरो यथाभागमावृषायिषत ॥३१॥

[क]नमो वः पितरो रसाय नमो वः पितरः शोषाय नमो वः पितरो जीवाय नमो वः पितरः स्वधायै नमो वः पितरो घोराय नमो वः पितरो मन्यवे [ख]नमो वः पितरः पितरो नमो वो गृहान्नः पितरो दत्त सतो वः पितरो देष्मैतद्वः पितरो वासः ॥३२॥

आधत्त पितरो गर्भं कुमारं पुष्करस्रजम्। यथेह पुरुषोऽसत् ॥३३॥

ऊर्जं वहन्तीरमृतं घृतं पयः कीलालं परिस्रुतम् ।
स्वधा स्थ तर्पयत मे पितॄन् ॥३४॥

इति द्वितीयोऽध्यायः॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अथ तृतीयोऽध्यायः

—:०:—

ऋषिः—विरूप आङ्गिरसः १। वसुश्रुतः २। भरद्वाजः ३, १३। प्रजापतिः ४, ५, ९, १०, ४४, ४५। सर्पराज्ञी कद्रूः ६-८। गोतमः ११, ५१, ५२। विरूपः १२। देववात-भरतौ १४। वामदेवः १५, ३६, ३७। अवत्सारः १६-१९। याज्ञवल्क्यः २०, २१। वैश्वामित्रो मधुछन्दाः २२-२४। सुबन्धुः २५, २६। श्रुतबन्धुः २७। विप्रबन्धुः २८। मेधातिथिः २९। सत्यधृतिर्वारुणिः ३०-३३। मधुच्छन्दाः ३४। विश्वामित्रः ३५। आसुरिः ३८-४१। शंयुः ४२। शंयुर्बार्हस्पत्यः ४३। आगस्त्यः ४६, ४७। और्णवाभः ४८-५०। बन्धुः ५३-५९। वसिष्ठः ६०-६१। नारायणः ६२, ६३॥

देवता—अग्निः १-४, ६-८, ११, १२, १४-१९, २२-२७, ३६, ३८-४०, ४७। अग्निवायुसूर्याः ५। अग्निसूर्यौ ९। अग्निः[क], सूर्यः[ख] १०। इन्द्राग्नी १३। आपः २०। विश्वेदेवाः २१। बृहस्पतिः २८, २९। ब्रह्मणस्पतिः ३०। आदित्यः ३१-३३। इन्द्रः ३४, ५०-५२। सविता ३५। प्रजापतिः ३७। वास्तुपतिरग्निः ४१, ४२। वास्तुपतिः ४३। मरुतः ४४, ४५। इन्द्रमारुतौ ४६। यज्ञः ४८, ४९। मनः ५३-५५। सोमः ५६। रुद्रः ५७-६३॥

छन्दः—गायत्री १, २, ४, ८, १६, २९, ४४, ५६। निचृद्गायत्री ३, ६, ११, १२, ३०, ३२, ३५, ३६, ५५। दैवीबृहती[क], निचृद्बृहती[ख] ५। विराड्गायत्री ७, २३, २४, २७, २८, ३१, ३३, ५४। पङ्क्तिः[क], याजुषीपङ्क्तिः[ख] ९। गायत्री[क], भुरिग्गायत्री[ख] १०। विराट्-त्रिष्टुप १३। निचृदनुष्टुप् १४, ४०, ५७। भुरिक्त्रिष्टुप् १५। त्रिष्टुप् १७। निचृद्ब्राह्मी-पङ्क्तिः १८। जगती १९। भुरिग्बृहती २०, २५, ३९। उष्णिक् २१, ६२। भुरिगासुरीगायत्री[क], गायत्री[ख] २२। स्वराड्बृहती २६। पथ्याबृहती ३४। ब्राह्म्युष्णिक् ३७। अनुष्टुप् ३८, ४२, ४९। आर्षीपङ्क्तिः ४१। भुरिग्जगती ४३, ६३। स्वराडनुष्टुप् ४५। भुरिक्पङ्क्तिः ४६। विराडनुष्टुप् ४७। ब्राह्म्यनुष्टुप् ४८। भुरिगनुष्टुप् ५०। विराट्पङ्क्तिः ५१, ५२, ५८। अतिपादनिचृद्गायत्री ५३। स्वराड्गायत्री ५९। विराड्ब्राह्मीत्रिष्टुप् ६०। पङ्क्तिः ६१॥

स्वरः—षड्जः १-४, ६-८, १०-१२, १६, २२-२४, २७-३३, ३५, ३६, ४४, ५३-५६, ५९। मध्यमः ५, २०, २५, २६, ३४, ३९। पञ्चमः ९, १८, ४१, ४६, ५१, ५२, ५८, ६१। धैवतः १३, १५, १७, ६०। गान्धारः १४, ३८, ४०, ४२, ४५, ४७-५०, ५७। निषादः १९, ४३, ६३। ऋषभः २१, ३७, ६२॥

समिधाग्निं दुवस्यत घृतैर्बोधयतातिथिम्। आस्मिन् हव्या जुहोतन॥१॥
सुसमिद्धाय शोचिषे घृतं तीव्रं जुहोतन। अग्नये जातवेदसे॥२॥
तं त्वा समिद्भिरङ्गिरो घृतेन वर्द्धयामसि। बृहच्छोचा यविष्ठ्य॥३॥
उप त्वाग्ने हविष्मतीर्घृताचीर्यन्तु हर्यत। जुषस्व समिधो मम॥४॥

[क]भूर्भुवः स्वर् [ख]द्यौरिव भूम्ना पृथिवीव वरिम्णा ।
तस्यास्ते पृथिवि देवयजनि पृष्ठेऽग्निमन्नादमन्नाद्यायादधे ॥५॥
आयं गौः पृश्निरक्रमीदसदन् मातरं पुरः। पितरं च प्रयन्त्स्वः॥६॥
अन्तश्चरति रोचनास्य प्राणादपानती। व्यख्यन् महिषो दिवम्॥७॥
त्रिꣳशद्धाम विराजति वाक् पतङ्गाय धीयते। प्रति वस्तोरह द्युभिः॥८॥
[क]अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा।
अग्निर्वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा सूर्यो वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा।
[ख]ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा ॥९॥
[क]सजूर्देवेन सवित्रा सजू रात्र्येन्द्रवत्या। जुषाणोऽअग्निर्वेतु स्वाहा।
[ख]सजूर्देवेन सवित्रा सजूरुषसेन्द्रवत्या। जुषाणः सूर्यो वेतु स्वाहा॥१०॥
उपप्रयन्तोऽअध्वरं मन्त्रं वोचेमाग्नये। आरेऽअस्मे च शृण्वते॥११॥
अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्याऽअयम्। अपाꣳरेताꣳसि जिन्वति॥१२॥
उभा वामिन्द्राग्नीऽआहुवध्याऽउभा राधसः सह मादयध्यै ।
उभा दाताराविषाꣳरयीणामुभा वाजस्य सातये हुवे वाम् ॥१३॥
अयं ते योनिर्ऋत्वियो यतो जातोऽअरोचथाः ।
तं जानन्नग्नऽआरोहाथा नो वर्द्धया रयिम् ॥१४॥
अयमिह प्रथमो धायि धातृभिर्होता यजिष्ठोऽअध्वरेष्वीड्यः ।
यमप्नवानो भृगवो विरुरुचुर्वनेषु चित्रं विभ्वं विशेविशे ॥१५॥
अस्य प्रत्नामनु द्युतꣳशुक्रं दुदुह्रेऽअह्रयः। पयः सहस्रसामृषिम्॥१६॥
तनूपाऽअग्नेऽसि तन्वं मे पाह्यायुर्दाऽअग्नेऽस्यायुर्मे देहि वर्चोदाऽ
अग्नेऽसि वर्चो मे देहि। अग्ने यन्मे तन्वाऽऊनं तन्मऽआपृण॥१७॥
इन्धानास्त्वा शतꣳहिमा द्युमन्तꣳसमिधीमहि। वयस्वन्तो वयस्कृतꣳ
सहस्वन्तः सहस्कृतम्। अग्ने सपत्नदम्भनमदब्धासोऽअदाभ्यम्।
चित्रावसो स्वस्ति ते पारमशीय ॥१८॥
सं त्वमग्ने सूर्यस्य वर्चसागथाः समृषीणाꣳस्तुतेन। सं प्रियेण
धाम्ना समहमायुषा सं वर्चसा सं प्रजया सꣳरायस्पोषेण गमिषीय॥१९॥
अन्थ स्थान्थो वो भक्षीय मह स्थ महो वो भक्षीयोर्ज स्थोर्ज वो
भक्षीय सꣳरायस्पोष स्थ सꣳरायस्पोषं वो भक्षीय ॥२०॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

रेवती रमध्वमस्मिन्योनावस्मिन् गोष्ठेऽस्मिँल्लोकेऽस्मिन् क्षये ।
इहैव स्त माप गात ॥२१॥
*सꣳहितासि विश्वरूप्यूर्जा माविश गौपत्येन ।
[1]उप त्वाग्ने दिवेदिवे दोषावस्तर्द्धिया वयम्। नमो भरन्तऽएमसि॥२२॥
राजन्तमध्वराणां गोपामृतस्य दीदिविम्। वर्द्धमानꣳस्वे दमे॥२३॥
स नः पितेव सूनवेऽग्ने सूपायनो भव। सचस्वा नः स्वस्तये॥२४॥
अग्ने त्वं नोऽअन्तमऽउत त्राता शिवो भवा वरूथ्यः ।
वसुरग्निर्वसुश्रवाऽअच्छा नक्षि द्युमत्तमꣳरयिं दाः ॥२५॥
तं त्वा शोचिष्ठ दीदिवः सुम्नायं नूनमीमहे सखिभ्यः ।
स नो बोधि श्रुधी हवमुरुष्या णोऽअघायतः समस्मात् ॥२६॥
इडऽएह्यदितऽएहि काम्याऽएत। मयि वः काममधरणं भूयात् ॥२७॥
सोमानꣳस्वरणं कृणुहि ब्रह्मणस्पते। कक्षीवन्तं यऽऔशिजः ॥२८॥
यो रेवान् योऽअमीवहा वसुवित्पुष्टिवर्द्धनः। स नः सिषक्तु यस्तुरः॥२९॥
मा नः शꣳसोऽअररुषो धूर्तिः प्रणङ् मर्त्यस्य। रक्षा णो ब्रह्मस्पते॥३०॥
महि त्रीणामवोऽस्तु द्युक्षं मित्रस्यार्य्यम्णः। दुराधर्षं वरुणस्य॥३१॥
नहि तेषाममा चन नाध्वसु वारणेषु। ईशे रिपुरघशꣳसः॥३२॥
ते हि पुत्रासोऽअदितेः प्र जीवसे मर्त्यीय। ज्योतिर्यच्छन्त्यजस्रम्॥३३॥
कदा चन स्तरीरसि नेन्द्र सश्चसि दाशुषे ।
उपोपेन्नु मघवन् भूयऽइन्नु ते दानं देवस्य पृच्यते ॥३४॥
तत् सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्॥३५॥
परि ते दूडभो रथोऽस्माँ२ऽअꣳहोतु विश्वतः। येन रक्षसि दाशुषः॥३६॥
भूर्भुवः स्वः सुप्रजाः प्रजाभिः स्याꣳसुवीरो वीरैः सुपोषः पोषैः।
नयं प्रजां मे पाहि शꣳस्य पशून् मे पाह्यर्थय पितुं मे पाहि॥३७॥
आगन्म विश्ववेदसमस्मभ्यं वसुवित्तमम् ।
अग्ने सम्राडभि द्युम्नमभि सहऽआयच्छस्व ॥३८॥
अयमग्निर्गृहपतिर्गार्हपत्यः प्रजायाः वसुवित्तमः ।
अग्ने गृहपतेऽभि द्युम्नमभि सहऽआयच्छस्व ॥३९॥
अयमाग्निः पुरीष्यो रयिमान् पुष्टिवर्द्धनः ।
अग्ने पुरीष्याभि द्युम्नमभि सहऽआयच्छस्व ॥४०॥
गृहा मा बिभीत मा वेपध्वमूर्जं बिभ्रतऽएमसि ।
ऊर्जं बिभ्रद्वः सुमनाः सुमेधा गृहानैमि मनसा मोदमानः ॥४१॥
येषामध्येति प्रवसन् येषु सौमनसो बहुः ।
गृहानुपह्वयामहे ते नो जानन्तु जानतः ॥४२॥
उपहूताऽइह गावऽउपहूताऽअजावयः। अथोऽअन्नस्य कीलालऽउपहूतो
गृहेषु नः। क्षेमाय वः शान्त्यै प्रपद्ये शिवꣳशग्मꣳशंयोःशंयोः॥४३॥
प्रघासिनो हवामहे मरुतश्च रिशादसः। करम्भेण सजोषसः॥४४॥
यद् ग्रामे यदरण्ये यत् सभायां यदिन्द्रिये ।
यदेनश्चकृमा वयमिदं तदवयजामहे स्वाहा ॥४५॥
मो षू णऽइन्द्रात्र पृत्सु देवैरस्ति हि ष्मा ते शुष्मिन्नवयाः ।
महश्चिद्यस्य मीढुषो यव्या हविष्मतो मरुतो वन्दते गीः ॥४६॥
अक्रन् कर्म कर्मकृतः सह वाचा मयोभुवा ।
देवेभ्यः कर्म कृत्वास्तं प्रेत सचाभुवः ॥४७॥
अवभृथ निचुम्पुण निचेरुरसि निचुम्पुणः ।
अव देवैर्देवकृतमेनोऽयासिषमव मर्त्यैर्मर्त्यकृतं पुरुराव्णो देव रिषस्पाहि॥४८॥
पूर्णा दर्वि परा पत सुपूर्णा पुनरापत ।
वस्नेव विक्रीणावहाऽइषमूर्जꣳशतक्रतो ॥४९॥
देहि मे ददामि ते नि मे धेहि नि ते दधे ।
निहारं च हरासि मे निहारं निहराणि ते स्वाहा ॥५०॥
अक्षन्नमीमदन्त ह्यव प्रियाऽअधूषत ।
अस्तोषत स्वभानवो विप्रा नविष्ठया मती योजा न्विन्द्र ते हरी॥५१॥
सुसन्दृशं त्वा वयं मघवन् वन्दिषीमहि ।
प्र नूनं पूर्णबन्धुर स्तुतो यासि वशाँ२ऽअनु योजा न्विन्द्र ते हरी॥५२॥
मनो न्वाह्वामहे नाराशꣳसेन स्तोमेन। पितॄणां च मन्मभिः॥५३॥
आ नऽएतु मनः पुनः क्रत्वे दक्षाय जीवसे। ज्योक् च सूर्यं दृशे॥५४॥
पुनर्नः पितरो मनो ददातु दैव्यो जनः। जीवं व्रातꣳसचेमहि॥५५॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

व॒यꣳसो॑म व्र॒ते तव॒ मन॑स्त॒नूषु॒ बिभ्र॑तः। प्र॒जाव॑न्तः सचेमहि॥५६॥
ए॒ष ते॑ रुद्र भा॒गः स॒ह स्वस्राम्बि॑कया॒ तं जु॑षस्व॒ स्वाहै॒ष ते॑ रुद्र
भा॒गऽआ॑खु॒स्ते प॒शुः ॥५७॥
अव॑ रु॒द्रमदी॑महे॒ व दे॒वं त्र्य॑म्बकम्।
यथा॑ नो॒ वस्य॑स॒स्कर॒द्यथा॑ नः॒ श्रेय॑स॒स्कर॒द्यथा॑ नो व्यवसा॒याय॑ात्॥५८॥
भे॒ष॒जम॑सि भेष॒जं गवेऽश्वा॑य॒ पुरु॑षाय भेष॒जम्। सु॒खं मे॒षाय॑ मे॒ष्यै॥५९॥
त्र्य॑म्बकं यजामहे सु॒ग॒न्धिं पु॑ष्टि॒व॑र्धनम्।
उ॒र्वा॒रु॒कमि॑व॒ ब॒न्ध॒नान्मृ॒त्योर्मु॑क्षीय॒ मा॒ऽमृता॑त्।
त्र्य॑म्बकं यजामहे सु॒ग॒न्धिं प॑ति॒वे॑द॒नम्।
उ॒र्वा॒रु॒कमि॑व॒ ब॒न्ध॒नादि॒तो मु॑क्षीय॒ माऽमुतः॥६०॥
ए॒तत्ते॑ रुद्रा॒व॒सं तेन॑ प॒रो मूज॑व॒तोऽती॑हि।
अव॑ततधन्वा॒ पि॒ना॒का॒व॒सः कृत्ति॑वासा॒ऽअहि॑ꣳसन्नः शि॒वोऽती॑हि॥६१॥
त्र्या॒यु॒षं ज॒मद॑ग्नेः क॒श्य॒प॒स्य॒ त्र्या॒यु॒षम्।
यद्दे॒वेषु॑ त्र्यायु॒षं तन्नोऽअस्तु त्र्यायु॒षम्॥६२॥
शि॒वो नामा॑सि॒ स्वधि॑तिस्ते पि॒ता नम॑स्तेऽअस्तु मा मा॑ हिꣳसीः।
निव॑र्त्तया॒म्यायु॑षेऽन्नाद्या॑य प्र॒जन॑नाय रा॒यस्पोषा॑य सुप्रजा॒स्त्वाय॑ सुवी॒र्या॑य॥६३॥

इति तृतीयोऽध्यायः॥

अथ चतुर्थोऽध्यायः

—:o:—

ऋषिः—प्रजापतिः १-७। आत्रेयः ८। आङ्गिरसः ९-१५। वत्सः १६-३६। गोतमः ३७॥
देवता—अबोधय्यौ १। आपः २, १२, १३। मेघः ३। परमात्मा ४। यज्ञः ५, ६, १०, २४, २६, ३७। अग्न्यब्बृहस्पतयः ७। ईश्वरः ८। विद्वान् ९, २७। अग्निः ११, १४-१७, २८, २९, ३२। वाग्विद्युतौ १८-२३। सविता २५। वरुणः ३०, ३१। सूर्यविद्वांसौ ३३। यजमानः ३४। सूर्यः ३५, ३६॥
छन्दः—विराड्ब्राह्मीजगती १। स्वराड्ब्राह्मीत्रिष्टुप् २। भुरिगार्चीत्रिष्टुप् ३। निचृद्ब्राह्मी-पङ्क्तिः ४, १९। निचृदार्ष्यनुष्टुप् ५, ६, २९, ३२। पङ्क्तिः ॅ, आर्षीबृहती ृ ७। आर्ष्यनुष्टुप् ८। आर्षीपङ्क्तिः ९। निचृदार्षीजगती ॅ, साम्नीत्रिष्टुप् ृ १०। स्वराड्ब्राह्म्यनुष्टुप् ॅ, आर्ष्युष्णिक् ृ ११। भुरिग्ब्राह्म्यनुष्टुप् १२। भुरिगार्षीबृहती १३। स्वराडार्ष्युष्णिक् १४। ब्राह्मीबृहती १५। भुरिगार्षीपङ्क्तिः १६। आर्चीत्रिष्टुप् १७। स्वराडार्षीबृहती १८। साम्नीजगती ॅ, भुरिगार्ष्युष्णिक् ृ २०। विराडार्षीबृहती २१। ब्राह्मीपङ्क्तिः २२। आस्तारपङ्क्तिः २३। ब्राह्मीजगती ॅ, याजुषीपङ्क्तिः ृ २४। भुरिक्शक्वरी ॅ, भुरिगार्षीगायत्री ृ २५। भुरिग्ब्राह्मीपङ्क्तिः २६, २७। साम्नीबृहती ॅ, साम्नुष्णिक् ृ २८। स्वराड्याजुषीत्रिष्टुप ॅ, आर्षीत्रिष्टुप् ृ ३०। विराडार्षीत्रिष्टुप् ३१। निचृदार्षीगायत्री ॅ, याजुषीजगती ृ ३३। भुरिगार्चीगायत्री ॅ, भुरिगार्चीबृहती ृ, विराडार्च्यनुष्टुप् ृ ३४। निचृदार्षीजगती ३५। विराड्ब्राह्मीबृहती ३६। निचृदार्षीत्रिष्टुप् ३७॥
स्वरः—निषादः १, ३५। धैवतः २, ३, १७, ३०, ३१, ३७। पञ्चमः ४, ९, १६, १९, २२, २३, २६, २७। गान्धारः ५, ६, ८, १२, २९, ३२। पञ्चमः ॅ, मध्यमः ृ ७। निषादः ॅ, धैवतः ृ १०। गान्धारः ॅ, ऋषभः ृ ११। मध्यमः १३, १५, १८, २१, ३६। ऋषभः १४। निषादः ॅ, ऋषभः ृ २०। निषादः ॅ, पञ्चमः ृ २४। धैवतः ॅ षड्जः ृ २५। मध्यमः ॅ, ऋषभः ृ २८। षड्जः ॅ, निषादः ृ ३३। षड्जः ॅ, मध्यमः ृ, गान्धारः ृ ३४॥

ए॒दम॑गन्म दे॒व॒यज॑नं पृथि॒व्या यत्र॑ दे॒वासो॒ऽअजु॑षन्त॒ विश्वे॑।
ऋ॒क्सा॒माभ्या॑ꣳसन्तर॒न्तो॑ यजु॒र्भी रा॒यस्पोषे॑ण॒ समि॒षा म॑देम।
इ॒माऽआप॒ः शमु॑ मे सन्तु दे॒वीः। ओष॑धे॒ त्राय॑स्व॒ स्वधि॑ते॒ मैन॑ꣳहिꣳसीः॥१॥
आपो॑ऽअ॒स्मान् मा॒तर॑ः शुन्धयन्तु घृ॒तेन॑ नो घृ॒तप्व॒ः पुनन्तु।
विश्व॑ꣳहि रि॒प्रं प्र॒वह॑न्ति दे॒वि॒रुदि॑दा॒भ्य॒ः शुचि॒रा पू॒तऽए॑मि।
दी॒क्षा॒तप॑सो॒स्त॒नूर॑सि॒ तां त्वा॑ शि॒वाꣳश॒ग्मां प॑रि॒द॑धे भ॒द्रं व॒र्णं पु॑ष्यन्॥२॥
म॒हीनां॑ पयो॑ऽसि॒ वर्चो॑दाऽअसि॒ वर्चो॑ मे देहि।
वृ॒त्र॒स्या॑सि॒ कनी॑न॒कश्चक्षु॑र्दाऽअसि॒ चक्षु॑र्मे देहि॥३॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

चित्पतिर्मा पुनातु वाक्पतिर्मा पुनातु देवो मा सविता
पुनात्वच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः ।
तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम् ॥४॥
आ वो देवासऽईमहे वामं प्रयत्यध्वरे ।
आ वो देवासऽआशिषो यज्ञियासो हवामहे ॥५॥
स्वाहा यज्ञं मनसः स्वाहोरोरन्तरिक्षात् स्वाहा
द्यावापृथिवीभ्याꣳस्वाहा वातादारभे स्वाहा ॥६॥
[क]आकूत्यै प्रयुजेऽग्नये स्वाहा मेधायै मनसेऽग्नये स्वाहा दीक्षायै
तपसेऽग्नये स्वाहा सरस्वत्यै पूष्णेऽग्नये स्वाहा। [ख]आपो देवीर्बृहतीर्विश्व-
शम्भुवो द्यावापृथिवीऽउरोऽअन्तरिक्ष। बृहस्पतये हविषा विधेम स्वाहा॥७॥
विश्वो देवस्य नेतुर्मर्तो वुरीत सख्यम् ।
विश्वो रायऽइषुध्यति द्युम्नं वृणीत पुष्यसे स्वाहा ॥८॥
ऋक्सामयोः शिल्पे स्थस्ते वामारभे ते मा पातमास्य यज्ञस्योदृचः।
शमीसि शमं मे यच्छ नमस्तेऽअस्तु मा मा हिꣳसीः ॥९॥
[क]ऊर्गस्याङ्गिरस्यूर्णम्रदाऽऊर्जं मयि धेहि। सोमस्य नीविरसि
विष्णोः शमीसि शर्म यजमानस्येन्द्रस्य योनिरसि सुसस्याः कृषीस्कृधि।
[ख]उच्छ्रयस्व वनस्पतऽऊर्ध्वो मा पाह्यꣳहसऽआस्य यज्ञस्योदृचः॥१०॥
[क]व्रतं कृणुत व्रतं कृणुताग्निर्ब्रह्माग्निर्यज्ञो वनस्पतिर्यज्ञियः ।
दैवीं धियं मनामहे सुमृडीकामभिष्टये वर्चोधां यज्ञवाहसꣳसुतीर्थां
नोऽअसद्वशे। [ख]ये देवा मनोजाता मनोयुजो दक्षक्रतवस्ते नोऽवन्तु
ते नः पान्तु तेभ्यः स्वाहा ॥११॥
श्वात्राः पीता भवत यूयमापोऽअस्माकमन्तरुदरे सुशेवाः ।
ताऽअस्मभ्यमयक्ष्माऽअनमीवाऽअनागसः स्वदन्तु देवीरमृताऽऋतावृधः॥१२॥
इयं ते यज्ञिया तनूरापो मुञ्चामि न प्रजाम् ।
अरꣳहोमुचः स्वाहाकृताः पृथिवीमाविशत पृथिव्या सम्भव ॥१३॥
अग्ने त्वꣳ सु जागृहि वयꣳ सु मन्दिषीमहि ।
रक्षा णोऽअप्रयुच्छन् प्रबुधे नः पुनस्कृधि ॥१४॥
पुनर्मनः पुनरायुर्मऽआगन्पुनः प्राणः पुनरात्मा मऽआगन्पुनश्चक्षुः पुनः
श्रोत्रं मऽआगन्। वैश्वानरोऽअदब्धस्तनूपाऽअग्निर्नः [ग]गोपाऽअनिमिषो [घ]वनस्पतीन्पाहि ॥१५॥

त्वमग्ने व्रतपाऽअसि देवऽआ मर्त्येष्वा। त्वं यज्ञेष्वीड्यः ।
रास्वेयत्सोमा भूयो भर देवो नः सविता वसोर्दाता वस्वदात् ॥१६॥
एषा ते शुक्र तनूरेतद्वर्चस्तया सम्भव भ्राजङ्गच्छ ।
जूरसि धृता मनसा जुष्टा विष्णवे ॥१७॥
तस्यास्ते सत्यसवसः प्रसवे तन्वो यन्त्रमशीय स्वाहा ।
शुक्रमसि चन्द्रमस्यमृतमसि वैश्वदेवमसि ॥१८॥
चिदसि मनासि धीरसि दक्षिणासि क्षत्रियासि
यज्ञियास्यदितिरस्युभयतः शीर्ष्णी। सा नः सुप्राची
सुप्रतीच्येधि मित्रस्त्वा पदि बध्नीतां पूषाऽध्वनस्पात्विन्द्रायाध्यक्षाय॥१९॥
[क]अनु त्वा माता मन्यतामनु पिताऽनु भ्राता सगर्भ्योऽनु
सखा सयूथ्यः। [ख]सा देवि देवमच्छेहीन्द्राय सोमꣳरुद्रस्त्वावर्त्तयतु
स्वस्ति सोमसखा पुनरेहि ॥२०॥
वस्व्यस्यदितिरस्यादित्यासि रुद्रासि चन्द्रासि ।
बृहस्पतिष्ट्वा सुम्ने रम्णातु रुद्रो वसुभिराचके ॥२१॥
अदित्यास्त्वा मूर्द्धन्नाजिघर्म्मि देवयजने पृथिव्याऽइडायास्पदमसि
घृतवत् स्वाहा। अस्मे रमस्वास्मे ते बन्धुस्त्वे रायो मे रायो मा
वयꣳ रायस्पोषेण वियौष्म तोतो रायः ॥२२॥
समख्ये देव्या धिया सं दक्षिणयोरुचक्षसा। मा मऽआयुः
प्रमोषीर्मोऽअहं तव वीरं विदेय तव देवि सन्दृशि ॥२३॥
[क]एष ते गायत्रो भागऽइति मे सोमाय ब्रूतादेष ते त्रैष्टुभो
भागऽइति मे सोमाय ब्रूतादेष ते जागतो भागऽइति मे
सोमाय ब्रूताच्छन्दोनामानाꣳसाम्राज्यङ्गच्छेति मे सोमाय
ब्रूतादास्माकोऽसि शुक्रस्ते [ख]ग्रहो विचितस्त्वा विचिन्वन्तु ॥२४॥
[क]अभि त्यं देवꣳसवितारमोण्योः कविक्रतुमर्चामि सत्यसवꣳ
रत्नधामभि प्रियं मतिं कविम्। ऊर्ध्वा यस्यामतिर्भाऽ
अदिद्युतत्सवीमनि हिरण्यपाणिरमिमीत। [ख]सुक्रतुः कृपा स्वः
प्रजाभ्यस्त्वा प्रजास्त्वाऽनुप्राणन्तु प्रजास्त्वमनुप्राणिहि ॥२५॥
शुक्रं त्वा शुक्रेण क्रीणामि चन्द्रं चन्द्रेणामृतममृतेन ।
सुम्मे ते गोरस्मे ते चन्द्राणि तपसस्तनूरसि प्रजापतेर्वर्णः
परमेण पशुना क्रीयसे सहस्रपोषं पुषेयम् ॥२६॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मित्रो नऽएहि सुमित्रधऽइन्द्रस्योरुमाविश दक्षिणमुशन्नुशन्तꣳस्योनः
स्योनम्। स्वान भ्राजाङ्गारे बम्भारे हस्त सुहस्त कृशानवेते वः
सोमक्रयणास्तान्रक्षध्वं मा वो दभन् ॥२७॥
[क]परि माग्ने दुश्चरिताद् बाधस्वा मा सुचरिते भज ।
[र]उदायुषा स्वायुषोदस्थाममृताँ२॥ऽअनु ॥२८॥
प्रति पन्थामपद्महि स्वस्तिगामनेहसम् ।
येन विश्वाः परि द्विषो वृणक्ति विन्दते वसु ॥२९॥
[क]अदित्यास्त्वगस्यदित्यै सदऽआसीद ।
[र]अस्तभ्नाद् द्यां वृषभोऽअन्तरिक्षममिमीत वरिमाणम्पृथिव्याः ।
आसीदद्विश्वा भुवनानि सम्राड् विश्वेत्तानि वरुणस्य व्रतानि ॥३०॥
वनेषु व्यन्तरिक्षं ततान वाजमर्वत्सु पयऽउस्रियासु ।
हृत्सु क्रतुं वरुणो विक्ष्वग्निं दिवि सूर्यमदधात् सोममद्रौ ॥३१॥
सूर्य्यस्य चक्षुरारोहाग्नेरक्ष्णः कनीनकम् ।
यत्रैतशेभिरीयसे भ्राजमानो विपश्चिता ॥३२॥
[क]उस्रावेतं धूर्षाहौ युज्येथामनश्रूऽअवीरहणौ ब्रह्मचोदनौ ।
[र]स्वस्ति यजमानस्य गृहान् गच्छतम् ॥३३॥
[क]भद्रो मेंऽसि प्रच्यवस्व भुवस्पते विश्वान्यभि धामानि। [र]मा त्वा
परिपरिणो विदन्मा त्वा परिपन्थिनो विदन्मा त्वा वृकाऽअघायवो
विदन्। [र]श्येनो भूत्वा परापत यजमानस्य गृहान् गच्छ तन्नौ सꣳस्कृतम्॥३४॥
नमो मित्रस्य वरुणस्य चक्षसे महो देवाय तदृतꣳसपर्यत ।
दूरेदृशे देवजाताय केतवे दिवस्पुत्राय सूर्याय शꣳसत ॥३५॥
वरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्य स्कम्भसर्जनी स्थो वरुणस्यऽ
ऋतसदन्यसि। वरुणस्यऽऋतसदनमसि वरुणस्यऽऋतसदनमासीद॥३६॥
या ते धामानि हविषा यजन्ति ता ते विश्वा परिभूरस्तु यज्ञम्।
गयस्फानः प्रतरणः सुवीरोऽवीरहा प्रचरा सोम दुर्यान् ॥३७॥

इति चतुर्थोऽध्यायः॥

अथ पञ्चमोऽध्यायः

—:o:—

ऋषिः—गोतमः १-१४। मेधातिथिः १५। वसिष्ठः १६, १७। औतथ्यो दीर्घतमा १८-२९। मधुच्छन्दाः ३०-३५। आगस्त्यः ३६-४३॥

देवता—विष्णुः १, १५-२१, ३८, ४१। विष्णुर्यज्ञः २। यज्ञः ३, १३, २२, २३, २५-२८, ४३। अग्निः ४, ६, ८, ९, ३१-३७, ४०, ४२। विद्युत् ५। सोमः ७। वाक् १०-१२। सविता १४। सूर्य्यविद्वांसौ २४। ईश्वरसभाध्यक्षौ २९, ३०। सोमसवितारौ ३९॥

छन्दः—स्वराड्ब्राह्मीबृहती १, ३४। आर्षीगायत्री [भ], आर्चीत्रिष्टुप् [र] २। आर्षीपङ्क्तिः ३। आर्षीत्रिष्टुप् ४। आर्ष्युष्णिक् [भ], भुरिगार्षीपङ्क्तिः [र] ५। विराड्ब्राह्मीपङ्क्तिः ६। आर्षीबृहती [भ], आर्षीजगती [र] ७। विराडार्षीबृहती [भ], निचृदार्षीबृहती [र], [र] ८। भुरिगार्षीगायत्री [र], भुरिग्ब्राह्मीबृहती [र], निचृद्ब्राह्मीजगती [र], याजुष्यनुष्टुप् [र] ९। ब्राह्म्युष्णिक् १०। निचृद्ब्राह्मीत्रिष्टुप् ११, ४०। भुरिग्ब्राह्मीपङ्क्तिः १२। भुरिगार्ष्यनुष्टुप् १३, २४, ३८, ४१। स्वराडार्षीजगती १४। भुरिगार्षीगायत्री १५। स्वराडार्षीत्रिष्टुप् १६, १८। स्वराड्ब्राह्मी-त्रिष्टुप् १७, ३२, ४२। निचृदार्षीजगती १९। विराडार्षीत्रिष्टुप् २०। भुरिगार्चीपङ्क्तिः २१। साम्नीपङ्क्तिः [भ], भुरिगार्षीबृहती [र] २२। याजुषीबृहती [र], आसुरीगायत्री [भ], ब्राह्म्यनुष्टुप् [भ], स्वराड्ब्राह्म्युष्णिक् [र] २३। ब्राह्मीबृहती [भ], आर्षीपङ्क्तिः [र] २५। निचृदार्षीपङ्क्तिः [भ], निचृदार्षीत्रिष्टुप् [र] २६। ब्राह्मीजगती २७। आर्षीजगती २८। अनुष्टुप् २९। आर्ष्युष्णिक् ३०। विराडार्ष्यनुष्टुप् ३१। ब्राह्मीपङ्क्तिः ३३। विराड्ब्राह्मीबृहती ३५। निचृदार्चीत्रिष्टुप् ३६। भुरिगार्षीत्रिष्टुप् ३७। साम्नीबृहती [भ], निचृदार्षीपङ्क्तिः [र] ३९। ब्राह्मीत्रिष्टुप् ४३॥

स्वरः—मध्यमः १, ८, ३४, ३५। षड्जः [भ], धैवतः [र] २। पञ्चमः ३, ६, १२, २१, ३३। धैवतः ४, ११, १६-१८, २०, ३२, ३६, ३७, ४०, ४२, ४३। ऋषभः [भ], पञ्चमः [र] ५। मध्यमः [भ], निषादः [र] ७। षड्जः [१], मध्यमः [१], निषादः [१], गान्धारः [४] ९। ऋषभः १०, ३०। गान्धारः १३, २४, २९, ३१, ३८, ४१। निषादः १४, १९, २७, २८। षड्जः १५। पञ्चमः [भ], मध्यमः [र] २२। मध्यमः [३], षड्जः [भ], गान्धारः [भ], ऋषभः [र] २३। मध्यमः [भ], पञ्चमः [र] २५। पञ्चमः [भ], धैवतः [र] २६। मध्यमः [भ], पञ्चमः [र] ३९॥

अग्नेस्तनूरसि विष्णवे त्वा सोमस्य तनूरसि विष्णवे
त्वाऽतिथेरातिथ्यमसि विष्णवे त्वा श्येनाय त्वा सोमभृते
विष्णवे त्वाऽग्नये त्वा रायस्पोषदे विष्णवे त्वा ॥१॥
[क]अग्नेर्जनित्रमसि वृषणौ स्थऽउर्वश्यस्यायुरसि पुरूरवाऽअसि ।
[र]गायत्रेण त्वा छन्दसा मन्थामि त्रैष्टुभेन त्वा छन्दसा मन्थामि
जागतेन त्वा छन्दसा मन्थामि ॥२॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

भवतं नः समनसौ सचेतसावरेपसौ ।
मा यज्ञꣳहिꣳसिष्टं मा यज्ञपतिं जातवेदसौ शिवौ भवतमद्य नः॥३॥
अग्नावग्निश्चरति प्रविष्टऽऋषीणां पुत्रोऽअभिशस्तिपावा ।
स नः स्योनः सुयजा यजेह देवेभ्यो हव्यꣳसदमप्रयुच्छन्त्स्वाहा ॥४॥
*आपतये त्वा परिपतये गृह्णामि तनूनप्त्रे शाक्वराय शक्वनऽओजिष्ठाय।
[1]अनाधृष्टमस्यनाधृष्यं देवानामोजोऽनभिशस्त्यभिशस्तिपाऽ
अनभिशस्तेन्यमज्जसा सत्यमुपगेषꣳस्विते मा धाः ॥५॥
अग्ने व्रतपास्त्वे व्रतपा या तव तनूरियꣳसा मयि यो मम तनूरेषा सा त्वयि।
सह नौ व्रतपते व्रतान्यनु मे दीक्षां दीक्षापतिर्मन्यतामनु तपस्तपस्पतिः॥६॥
*अꣳशुरꣳशुष्टे देव सोमाप्यायतामिन्द्रायैकधनविदे ।
आ तुभ्यमिन्दुः प्यायतामा त्वमिन्द्राय प्यायस्व ।
[2]आप्याययास्मान्त्सखीन्त्सन्या मेधया स्वस्ति ते देव सोम सुत्यामशीय।
एष्टा रायः प्रेषे भगायऽऋतमृतवादिभ्यो नमो द्यावापृथिवीभ्याम्॥७॥
*या तेऽअग्नेऽयःशया तनूर्वर्षिष्ठा गह्वरेष्ठा ।
उग्रं वचोऽअपावधीत्त्वेषं वचोऽअपावधीत् स्वाहा ।
[3]या तेऽअग्ने रजःशया तनूर्वर्षिष्ठा गह्वरेष्ठा ।
उग्रं वचोऽअपावधीत्त्वेषं वचोऽअपावधीत् स्वाहा ।
[4]या तेऽअग्ने हरिशया तनूर्वर्षिष्ठा गह्वरेष्ठा ।
उग्रं वचोऽअपावधीत्त्वेषं वचोऽअपावधीत् स्वाहा ॥८॥
[5]तप्तायनी मेऽसि वित्तायनी मेऽस्यवतान्मा नाथितादवतान्मा
व्यथितात्। [6]विदेदग्निर्नभो नामाग्नेऽअङ्गिरऽआयुना नाम्नेहि
योऽस्यां पृथिव्यामसि यत्तेऽनाधृष्टं नाम यज्ञियं तेन त्वा दधे
विदेदग्निर्नभो नामाग्नेऽअङ्गिरऽआयुना [7]नाम्नेहि यो द्वितीयस्यां
पृथिव्यामसि यत्तेऽनाधृष्टं नाम यज्ञियं तेन त्वा दधे विदेदग्निर्नभो
नामाग्नेऽअङ्गिरऽआयुना नाम्नेहि यस्तृतीयस्यां पृथिव्यामसि
यत्तेऽनाधृष्टं नाम यज्ञियं तेन त्वा दधे। [8]अनु त्वा देववीतये ॥९॥
सिꣳहोसि सपत्नसाही देवेभ्यः कल्पस्व सिꣳहोसि सपत्नसाही
देवेभ्यः शुन्धस्व सिꣳहोसि सपत्नसाही देवेभ्यः शुम्भस्व ॥१०॥
इन्द्रघोषस्त्वा वसुभिः पुरस्तात्पातु प्रचेतास्त्वा रुद्रैः पश्चात्पातु
मनोजवास्त्वा पितृभिर्दक्षिणतः पातु विश्वकर्मा त्वादित्यैरुत्तरतः
पात्विदमहं तप्तं वार्बृहिर्धा यज्ञान्निःसृजामि ॥११॥
सिꣳहोसि स्वाहा सिꣳहोस्यादित्यवनिः स्वाहा सिꣳहोसि
ब्रह्मवनिः क्षत्रवनिः स्वाहा सिꣳहोसि सुप्रजावनी रायस्पोषवनिः
स्वाहा सिꣳहोस्यावह देवान्यजमानाय स्वाहा भूतेभ्यस्त्वा ॥१२॥
ध्रुवोऽसि पृथिवीं दृꣳह ध्रुवक्षिदस्यन्तरिक्षं दृꣳहाच्युतक्षिदसि
दिवं दृꣳहाग्नेः पुरीषमसि ॥१३॥
युञ्जते मनऽउत युञ्जते धियो विप्रा विप्रस्य बृहतो विपश्चितः।
वि होत्रा दधे वयुनाविदेकऽइन्महो देवस्य सवितुः परिष्टुतिः स्वाहा॥१४॥
इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूढमस्य पाꣳसुरे स्वाहा॥१५॥
इरावती धेनुमती हि भूतꣳसूयवसिनी मनवे दशस्या ।
व्यस्कभ्ना रोदसी विष्णवेते दाधर्थ पृथिवीमभितो मयूखैः स्वाहा॥१६॥
देवश्रुतौ देवेष्वाघोषतं प्राची प्रेतमध्वरं कल्पयन्तीऽऊर्ध्वं यज्ञं नयतं
मा जिह्वरतम्। स्वं गोष्ठमावदतं देवी दुर्य्येऽआयुर्मा निर्वीदिष्टं प्रजां
मा निर्वीदिष्टमत्र रमेथां वर्ष्मन् पृथिव्याः ॥१७॥
विष्णोर्नु कं वीर्याणि प्रवोचं यः पार्थिवानि विममे रजाꣳसि।
योऽअस्कभायदुत्तरꣳसधस्थं विचक्रमाणस्त्रेधोरुगायो विष्णवे त्वा॥१८॥
दिवो वा विष्णऽउत वा पृथिव्या महो वा विष्णऽउरोरन्तरिक्षात्।
उभा हि हस्ता वसुना पृणस्वा प्रयच्छ दक्षिणादोत सव्याद्विष्णवे त्वा॥१९॥
प्र तद्विष्णु स्तवते वीर्येण मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः ।
यस्योरुषु त्रिषु विक्रमणेष्वधिक्षियन्ति भुवनानि विश्वा ॥२०॥
विष्णो रराटमसि विष्णोः श्नप्त्रे स्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोऽसि।
वैष्णवमसि विष्णवे त्वा ॥२१॥
*देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम् ।
[9]आददे नार्यसीदमहꣳरक्षसां ग्रीवाऽअपि कृन्तामि ।
बृहन्नसि बृहद्वा बृहतीमिन्द्राय वाचं वद ॥२२॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उरक्षोहणं वलगहनं कवैष्णवीमिदमहं तं वलगमुत्किरामि खयं मे निष्ट्यो
यममात्यो निचखानेदमहं तं वलगमुत्किरामि यं मे समानो यमसमानो
निचखानेदमहं तं वलगमुत्किरामि यं मे सबन्धुर्यमसबन्धुर्निचखानेदमहं
तं वलगमुत्किरामि यं मे सजातो यमसजातो निचखानोत्कृत्याङ्किरामि॥२३॥
स्वराडसि सपत्नहा सम्राडस्यभिमातिहा
जनराडसि रक्षोहा सर्वराडस्यमित्रहा ॥२४॥
कर्क्षोहणो वो वलगहनः प्रोक्षामि वैष्णवान्रक्षोहणो वो
वलगहनोऽवनयामि वैष्णवान्रक्षोहणो वो वलगहनोऽवस्तृणामि
वैष्णवान्रक्षोहणौ रवां वलगहनाऽउपदधामि वैष्णवी रक्षोहणौ
वां वलगहनौ पर्यूहामि वैष्णवी वैष्णवमसि वैष्णवा स्थ ॥२५॥
कदेवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम् ।
आददे नार्यसीदमहꣳरक्षसां ग्रीवाऽअपि कृन्तामि। रयवोऽसि
यवयास्मद् द्वेषो यवयारातीर्दिवे त्वाऽन्तरिक्षाय त्वा पृथिव्यै त्वा
शुन्धन्ताँल्लोकाः पितृषदनाः पितृषदनमसि ॥२६॥
उद्दिवꣳस्तभानान्तरिक्षं पृण दृꣳहस्व पृथिव्यां द्युतानस्त्वा मारुतो
मिनोतु मित्रावरुणौ ध्रुवेण धर्मणा। ब्रह्मवनिं त्वा क्षत्रवनिं
रायस्पोषवनि पर्यूहामि। ब्रह्म दृꣳह क्षत्रं दृꣳहायुर्दृꣳह प्रजां दृꣳह॥२७॥
ध्रुवासि ध्रुवोऽयं यजमानोऽस्मिन्नायतने प्रजया पशुभिर्भूयात् ।
घृतेन द्यावापृथिवी पूर्येथामिन्द्रस्य छदिरसि विश्वजनस्य छाया॥२८॥
परि त्वा गिर्वणो गिरऽइमा भवन्तु विश्वतः ।
वृद्धायुमनु वृद्धयो जुष्टा भवन्तु जुष्टयः ॥२९॥
इन्द्रस्य स्यूरसीन्द्रस्य ध्रुवोऽसि। ऐन्द्रमसि वैश्वदेवमसि ॥३०॥
विभूरसि प्रवाहणो वह्निरसि हव्यवाहनः ।
श्वात्रोऽसि प्रचेतास्तुथोऽसि विश्ववेदाः ॥३१॥
उशिगसि कविरङ्गारिरसि बम्भारिरवस्यूरसि दुवस्वाञ्छुन्ध्यूरसि
मार्जालीयः। सम्राडसि कृशानुः परिषद्योऽसि पवमानो नभोऽसि
प्रतक्वा मृष्टोऽसि हव्यसूदनऽऋतधामासि स्वर्ज्योतिः ॥३२॥
समुद्रोऽसि विश्वव्यचाऽअजोऽस्येकपादहिरसि बुध्न्यो
वागस्यैन्द्रमसि सदोऽस्यृतस्य द्वारौ मा मा सन्ताप्तमध्वनामध्वपते
प्र मा तिर स्वस्ति मेऽस्मिन् पथि देवयाने भूयात् ॥३३॥

मित्रस्य मा चक्षुषेक्षध्वमग्नयः सगराः सगरा स्थ सगरेण
नाम्ना रौद्रेणानीकेन पात माग्नयः पिपृत मार्ग्नयो गोपायत
मा नमो वोऽस्तु मा मा हिꣳसिष्ट ॥३४॥
ज्योतिरसि विश्वरूपं विश्वेषां देवानांꣳसमित्। त्वꣳसोम
तनूकृद्भ्यो द्वेषोभ्योऽन्यकृतेभ्यऽउरु यन्तासि वरूथꣳस्वाहा
जुषाणोऽअप्तुराज्यस्य वेतु स्वाहा ॥३५॥
अग्ने नयं सुपथा रायेऽअस्मान्विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्।
युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नमऽउक्तिं विधेम॥३६॥
अयं नोऽअग्निर्वरिवस्कृणोत्वयं मृधः पुरऽएतु प्रभिन्दन्।
अयं वाजाञ्जयतु वाजसातावयꣳशत्रूञ्जयतु जर्हृषाणः स्वाहा॥३७॥
उरु विष्णो विक्रमस्वोरु क्षयाय नस्कृधि ।
घृतं घृतयोने पिब प्रप्र यज्ञपतिं तिर स्वाहा ॥३८॥
कदेवं सवितरेष ते सोमस्तꣳरक्षस्व मा त्वा दभन् ।
रएतत्वं देव सोम देवो देवाँ२।ऽउपागाऽइदमहं मनुष्यान्सह
रायस्पोषेण स्वाहा निर्वरुणस्य पाशान्मुच्ये ॥३९॥
अग्ने व्रतपास्त्वे व्रतपा या तव तनूर्मय्यभूद्वेषा सा त्वयि
यो मम तनूस्त्वय्यभूद्यिꣳसा मयि। यथायथं नौ व्रतपते
व्रतान्यनु मे दीक्षां दीक्षापतिरमꣳस्तानु तपस्तपस्पतिः॥४०॥
उरु विष्णो विक्रमस्वोरु क्षयाय नस्कृधि ।
घृतं घृतयोने पिब प्रप्र यज्ञपतिं तिर स्वाहा ॥४१॥
अत्यन्याँ२ऽअगां नान्याँ२ऽउपागामर्वाक् त्वा परेभ्योऽविदं परोऽवरेभ्यः।
तं त्वा जुषामहे देव वनस्पते देवयज्यायै देवास्त्वा देवयज्यायै जुषन्तां
विष्णवे त्वा। ओषधे त्रायस्व स्वधिते मैनꣳहिꣳसीः ॥४२॥
द्यां मा लेखीरन्तरिक्षं मा हिꣳसीः पृथिव्या सम्भव ।
अयꣳहि त्वा स्वधितिस्तेतिजानः प्रणिनाय महते सौभगाय ।
अतस्त्वं देव वनस्पते शतवल्शो विरोह सहस्रवल्शा वि वयꣳरुहेम॥४३॥

इति पञ्चमोऽध्यायः॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अथ षष्ठोऽध्यायः

—:o:—

ऋषिः—आगस्त्यः १। शाकल्यः २। दीर्घतमा ३, ६, ८, ९, १७-२३। मेधातिथिः ४, ५, ७, १०-१६, २४-२८। मधुच्छन्दाः २९-३६। गौतमः ३७॥

देवता—सविता १, २, ३०। विष्णुः ३, ४, ५। विद्वांसः ६, १२, १४, १५। त्वष्टा ७, २०। बृहस्पतिः ८। सविता, अश्विनौ, पूषा ९। आपः १०, १३, १७, २७। वातः ११। द्यावापृथिव्यौ १६, ३५। अग्निः १८, २९। विश्वेदेवाः १९। सेनापतिः २१। वरुणः २२। अप्-यज्ञ-सूर्याः २३। लिंगोक्ता २४। सोमः २५, २६, ३३, ३६। प्रजा २८। प्रजासभ्यराजानः ३१। सभापतीराजा ३२। यज्ञः ३४। इन्द्रः ३७॥

छन्दः—निचृत्पङ्क्तिः[१], आसुर्युष्णिक्[२], भुरिगार्ष्युष्णिक्[१] १। निचृद्गायत्री[२], स्वराट्-पङ्क्तिः[१] २। आर्च्युष्णिक्[२], भुरिगार्च्युष्णिक्[२], निचृत्प्राजापत्यबृहती[१] ३। निचृदार्षीगायत्री ४। गायत्री ५। आर्ष्युष्णिक्[२], भुरिक्साम्नीबृहती ६। निचृदार्षीबृहती ७। प्राजापत्यानुष्टुप्[२], भुरिक्प्राजापत्यबृहती[१] ८। प्राजापत्यबृहती[२], पङ्क्तिः[१], याजुषीत्रिष्टुप्[१] ९। प्राजापत्यबृहती[२], विराडार्चीबृहती[१] १०। भुरिगार्ष्युष्णिक्[२], स्वराडार्ष्युष्णिक्[१] ११। भुरिक्प्राजापत्यानुष्टुप् १२। निचृदार्ष्यनुष्टुप् १३, २३, २८। भुरिगार्षीजगती १४। भुरिगार्चीत्रिष्टुप्[२], आर्षीपङ्क्तिः[१] १५। ब्राह्म्युष्णिक्[२], १६। निचृद्ब्राह्म्यनुष्टुप् १७। प्राजापत्यानुष्टुप्[२] वैदीपङ्क्तिः[१], आर्चीपङ्क्तिः[१] १८। ब्राह्म्यनुष्टुप् १९, २०। साम्नी[२], ब्राह्मी[२], भुरिगार्षी[१] २१। स्वराडब्राह्म्युष्णिक्[२], त्रिपाद्-विराड्गायत्री[१] २२। आर्षीत्रिष्टुप्[२], त्रिपाद्गायत्री[१] २४। विराडार्षीनुष्टुप् २५। भुरिग्गायत्री[२], आर्षीत्रिष्टुप्[१] २६। निचृदार्षीत्रिष्टुप् २७। भुरिगार्षीगायत्री २९। स्वराडार्षीपङ्क्तिः[२], निचृदार्ष्यनुष्टुप्[१] ३०। ब्राह्म्युष्णिक्[२], आर्ष्युष्णिक्[१] ३१। पञ्चपाद्-मध्येज्योतिष्मतिजगती ३२। भुरिगार्षीबृहती ३३। स्वराडार्षीबृहती ३४। भुरिगार्ष्यनुष्टुप् ३५, ३७। उष्णिक् ३६॥

स्वरः—पञ्चमः[१], ऋषभः[२], १। षड्जः,[२] पञ्चमः[१] २। ऋषभः[२],[२], मध्यमः[१] ३। षड्जः ४, ५, २९। ऋषभः[२], मध्यमः[१] ६। मध्यमः ७, १०, ३३, ३४। गान्धारः[२], मध्यमः[१] ८। मध्यमः[२], पञ्चमः[१], धैवतः[१] ९। ऋषभः[२],[१] ११, १६, २१, ३१, ३६। गान्धारः १२, १३, १७, १९, २३, २५, २८, ३५, ३७। निषादः १४, ३२। धैवतः[२] पञ्चमः[१] १५, २०। धैवतः २७। गान्धारः[२], पञ्चमः[१],[१] १८। ऋषभः[२], षड्जः[१] २२। धैवतः[२] षड्जः[१] २४। षड्जः[२], धैवतः[१] २६। पञ्चमः[२], गान्धारः[१] ३०॥

[१]देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम् ।
आददे नार्यसीदमहꣳ रक्षसां ग्रीवाऽअपि कृन्तामि ।
[२]यवोऽसि यवयास्मद् द्वेषो यवयारातीर् [१]दिवे त्वाऽन्तरिक्षाय
त्वा पृथिव्यै त्वा शुन्धन्ताँल्लोकाः पितृषदनाः पितृषदनमसि ॥१॥
[२]अग्रेणीरसि स्वावेशऽउन्नेतृणामेतस्य वित्तादधि त्वा स्थास्यति
[१]देवस्त्वा सविता मध्वानक्तु सुपिप्पलाभ्यस्त्वौषधीभ्यः ।
द्यामग्रेणास्पृक्षऽआन्तरिक्षं मध्येनाप्राः पृथिवीमुपरेणादꣳहीः ॥२॥

[१]या ते धामान्युश्मसि गमध्यै यत्र गावो भूरिशृङ्गाऽअयासः ।
[२]अत्राह तदुरुगायस्य विष्णोः परमं पदमवभारि भूरि ।
[१]ब्रह्मवनिं त्वा क्षत्रवनिं रायस्पोषवनिं पर्यूहामि ।
ब्रह्म दृꣳह क्षत्रं दृꣳहायुर्दृꣳह प्रजां दृꣳह ॥३॥
विष्णोः कर्माणि पश्यत यतो व्रतानि पस्पशे। इन्द्रस्य युज्यः सखा॥४॥
तद्विष्णोः परमं पदꣳ सदा पश्यन्ति सूरयः। दिवीव चक्षुराततम्॥५॥
[२]परिवीरसि परि त्वा दैवीर्विशो व्ययन्तां परीमं यजमानꣳरायो
मनुष्याणाम्। [१]दिवः सूनुरस्येष ते पृथिव्याँल्लोकऽआरण्यस्ते पशुः॥६॥
उपावीरस्युप देवान्दैवीर्विशः प्रागुरुशिजो वह्नितमान् ।
देवं त्वष्टर्वसु रम हव्या ते स्वदन्ताम् ॥७॥
[२]रेवती रमध्वं बृहस्पते धारया वसूनि ।
[१]ऋतस्य त्वा देवहविः पाशेन प्रतिमुञ्चामि धर्षा मानुषः ॥८॥
[२]देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम् ।
[१]अग्नीषोमाभ्यां जुष्टं निर्युनज्मि। अद्भ्यस्त्वौषधीभ्योऽनु त्वा माता
मन्यतामनु पितानु भ्राता सगर्भ्योऽनु सखा सयूथ्यः ।
अग्नीषोमाभ्यां त्वा जुष्टं प्रोक्षामि ॥९॥
[२]अपां पेरुरस्यापो देवीः स्वदन्तु स्वात्तं चित्सदेवहविः ।
[१]सं ते प्राणो वातेन गच्छताꣳ समङ्गानि यजत्रैः सं यज्ञपतिराशिषा॥१०॥
[२]घृतेनात्क्तौ पशूꣳस्त्रायेथाꣳ रेवति यजमाने प्रियं धाऽआविश।
[१]उरोरन्तरिक्षात्सजूर्देवेन वातेनास्य हविषस्मना यज सꣳस्य तन्वा भव।
[२]वर्षो वर्षीयसि यज्ञे यज्ञपतिं धाः स्वाहा देवेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा॥११॥
माहिर्भूर्मा पदाकुर्नमस्तऽआतानानुर्वा प्रेहि ।
[१]घृतस्य कुल्याऽउपऽऋतस्य पथ्याऽअनु ॥१२॥
देवीरापः शुद्धा वोऽद्भ्वः सुपरिविष्टा देवेषु सुपरिविष्टा
वयं परिवेष्टारो भूयास्म ॥१३॥
वाचं ते शुन्धामि प्राणं ते शुन्धामि चक्षुस्ते शुन्धामि
श्रोत्रं ते शुन्धामि नाभिं ते शुन्धामि मेढ्रं ते शुन्धामि
पायुं ते शुन्धामि चरित्रास्ते शुन्धामि ॥१४॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

[क]मनस्तऽआप्यायतां वाक् तऽआप्यायतां प्राणस्तऽआप्यायतां
चक्षुस्तऽआप्यायताꣳ श्रोत्रं तऽआप्यायताम्। [र]यत्ते क्रूरं यदास्थितं
तत्तऽआप्यायतां निष्ट्यायतां तत्ते शुध्यतु शमहोभ्यः ।
ओषधे त्रायस्व स्वधिते मैनꣳहिꣳसीः ॥१५॥
[क]रक्षसां भागोऽसि निरस्तꣳरक्षऽइदमहꣳरक्षोऽभितिष्ठामीदमहꣳ
रक्षोऽवबाधऽइदमहꣳरक्षोऽधमं तमो नयामि। [र]घृतेन द्यावापृथिवी
प्रोर्णुवाथां वायो वे स्तोकानामग्निराज्यस्य वेतु स्वाहा
स्वाहाकृतेऽऊर्ध्वनभसं मारुतं गच्छतम् ॥१६॥
इदमापः प्रवहतावद्यं च मलं च यत् ।
यच्चाभिदुद्रोहानृतं यच्च शेपेऽअभीरुणम् ।
आपो मा तस्मादेनसः पवमानश्च मुञ्चतु ॥१७॥
[क]सं ते मनो मनसा सं प्राणः प्राणेन गच्छताम् ।
[र]रेडस्यग्निष्ट्वा श्रीणात्वापस्त्वा समरिणन्वातस्य त्वा ध्राज्यै
पूष्णो रꣳह्याऽऊष्मणो व्यथिषत्प्रयुतं द्वेषः ॥१८॥
घृतं घृतपावानः पिबत वसां वसापावानः पिबतान्तरिक्षस्य हविरसि
स्वाहा। दिशः प्रदिशऽआदिशो विदिशऽउद्दिशो दिग्भ्यः स्वाहा॥१९॥
ऐन्द्रः प्राणोऽअङ्गेऽअङ्गे निदीध्यदैन्द्रऽउदानोऽअङ्गेऽअङ्गे निधीतः।
देव त्वष्टर्भूरि ते सꣳसमेतु सलक्ष्मा यद्विषुरूपं भवाति ।
देवत्रा यन्तमवसे सखायोऽनु त्वा माता पितरो मदन्तु ॥२०॥
[क]समुद्रं गच्छ स्वाहाऽन्तरिक्षं गच्छ स्वाहा [ख]देवꣳ सवितारं
गच्छ स्वाहा। मित्रावरुणौ गच्छ स्वाहाऽहोरात्रे गच्छ स्वाहा
छन्दाꣳसि गच्छ स्वाहा द्यावापृथिवी गच्छ स्वाहा [र]यज्ञं गच्छ
स्वाहा सोमं गच्छ स्वाहा दिव्यं नभो गच्छ स्वाहाग्निं वैश्वानरं
गच्छ स्वाहा [उ]मनो मे हार्दि यच्छ दिवं ते धूमो गच्छतु
स्वर्ज्योतिः पृथिवीं भस्मनापृण स्वाहा ॥२१॥
[क]मापो मौषधीर्हिꣳसीर्धाम्नोधाम्नो राजँस्ततो वरुण नो मुञ्च ।
यदाहुरघ्न्याऽइति वरुणेति शपामहे ततो वरुण नो मुञ्च ।
[र]सुमित्रिया नऽआपऽओषधयः सन्तु दुर्मित्रियास्तस्मै सन्तु
योऽस्मान् द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मः ॥२२॥
हविष्मतीरिमाऽआपो हविष्माँ२॥ऽआविवासति ।
हविष्मान्देवोऽअध्वरो हविष्माँ२॥ऽअस्तु सूर्यः ॥२३॥
[क]अग्नेर्वोऽपन्नगृहस्य सदसि सादयामीन्द्राग्न्योर्भागधेयी स्थ
मित्रावरुणयोर्भागधेयी स्थ विश्वेषां देवानां भागधेयी स्थ ।
[र]अमूर्याऽउप सूर्ये याभिर्वा सूर्यः सह। ता नो हिन्वन्त्वध्वरम् ॥२४॥
हृदे त्वा मनसे त्वा दिवे त्वा सूर्याय त्वा ।
ऊर्ध्वमिममध्वरं दिवि देवेषु होत्रा यच्छ ॥२५॥
[क]सोम राजन्विश्वास्त्वं प्रजाऽउपावरोह विश्वास्त्वां प्रजाऽउपावरोहन्तु।
[र]शृणोत्वग्निः समिधा हवं मे शृण्वन्त्वापो धिषणाश्च देवीः।
श्रोता ग्रावाणो विदुषो न यज्ञꣳशृणोतु देवः सविता हवं मे स्वाहा॥२६॥
देवीरापोऽअपान्नपाद्यो वऽऊर्म्मिर्हविष्यऽइन्द्रियावान् मदिन्तमः ।
तं देवेभ्यो देवत्रा दत्त शुक्रपेभ्यो येषां भाग स्थ स्वाहा ॥२७॥
कार्षिरसि समुद्रस्य त्वा क्षित्याऽउन्नयामि ।
समापोऽअद्भिरग्मत समोषधीभिरोषधीः ॥२८॥
यमग्ने पृत्सु मर्त्यमवा वाजेषु यं जुनाः। स यन्ता शश्वतीरिषः स्वाहा॥२९॥
[क]देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम् ।
आददे रावासि गभीरमिममध्वरं कृधीन्द्राय सुषूतमम् ।
[र]उत्तमेन पविनोर्जस्वन्तं मधुमन्तं पयस्वन्तं निग्राभ्या स्थ
देवश्रुतस्तर्प्पयत मा ॥३०॥
[क]मनो मे तर्पयत वाचं मे तर्पयत प्राणं मे तर्पयत चक्षुर्मे मे
तर्पयत श्रोत्रं मे तर्पयतात्मानं मे तर्पयत [र]प्रजां मे तर्पयत
पशून्मे तर्पयत गणान्मे तर्पयत गणा मे मा वितृषन् ॥३१॥
इन्द्राय त्वा वसुमते रुद्रवतऽइन्द्राय त्वादित्यवतऽइन्द्राय
त्वाभिमातिघ्ने। श्येनाय त्वा सोमभृतेऽग्नये त्वा रायस्पोषदे ॥३२॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

यत्ते॑ सोम दि॒वि ज्योति॒र्यत्पृ॑थि॒व्यां यदु॒रावन्तरि॑क्षे
तेना॒स्मै य॑जमानायो॒रु रा॒ये कृ॑धि॒ दात्रे॑ वोचः ॥३३॥
श्वा॒त्रा स्थ वृ॒त्रतु॒रो राधो॑गूर्त्ताऽअ॒मृत॑स्य॒ पत्नीः ।
ता दे॑वीर्देव॒त्रेमं य॒ज्ञं न॑यतोपहू॒ताः॒ सोम॑स्य पिबत ॥३४॥
मा भे॒र्मा सं वि॑क्थाऽऊर्जं॑ धत्स्व॒ धि॒षणे॒ वी॒ड्वी स॒ती
वी॑डयेथा॒मूर्जं॑ दधाथाम्। पाप्मा हृ॒तो न सोम॑ः ॥३५॥
प्रागप॒गुदगध॒राक्सर्व॑तस्त्वा॒ दिशऽआधा॑वन्तु ।
अम्ब॒ निर्प्य॑र॒ सम॒रीवि॑दाम् ॥३६॥
त्वम॒ङ्ग प्रश॑ꣳसिषो दे॒वः शं॑विष्ठ॒ मर्त्य॑म् ।
न त्वद॒न्यो म॑घवन्नस्ति मर्डि॒तेन्द्र॒ ब्रवी॑मि ते॒ वचः॑ ॥३७॥

इति षष्ठोऽध्यायः ॥

अथ सप्तमोऽध्यायः

—:o:—

ऋषिः—गोतमः १-६। वसिष्ठः ७। मधुच्छन्दाः ८, ३३। गृत्समदः ९, ३४। त्रिसदस्युः १०। मेधातिथिः ११। वत्सारः काश्यपः १२-२३। भरद्वाजः २४, २५, ३९। देवश्रवाः २६-३० विश्वामित्रः ३१, ३५-३८। त्रिशोकः ३२। वत्सः ४०। प्रस्कण्वः ४१। कुत्सः ४२। आङ्गिरसः ४३-४८॥

देवता—प्राणः १। सोमः २, २१। विद्वांसः ३, ४६। मघवा ४। ईश्वरः ५। योगी ६। वायुः ७। इन्द्रवायू ८। मित्रावरुणौ ९, १०। अश्विनौ ११। विश्वेदेवाः १२-१७, १९, २२-२४, ३२-३४। प्रजापतिः १८, २९, ३०, ३५-३८, ४०, ४४, ४५। यज्ञः २०, २६। वैश्वानरः २५। यज्ञपतिः २७, २८। इन्द्राग्नी ३१। प्रजासेनापतिः ३९। सूर्य्यः ४१, ४२। अन्तर्य्यामी जगदीश्वरः ४३। वरुणः ४७। आत्मा ४८॥

छन्दः—निचृदार्ष्युनुष्टुप् १। निचृदार्षीपङ्क्तिः २। विराड्ब्राह्मीजगती ३। आर्ष्युष्णिक् ४, ४८। आर्षीपङ्क्तिः ५। भुरिक्त्रिष्टुप् ६। निचृज्जगती ७। आर्षीगायत्री[भ], स्वराडार्षीगायत्री[र] ८। आर्षीगायत्री[भ], आसुरीगायत्री[र] ९। ब्राह्मीबृहती १०। ब्राह्म्युष्णिक् ११। निचृदार्षीजगती[भ], पङ्क्तिः[र] १२। निचृदार्षीत्रिष्टुप्[भ], प्राजापत्यागायत्री[र] १३। विराड्जगती १४। निचृद्ब्राह्म्यनुष्टुप् १५। निचृदार्षीत्रिष्टुप्[भ], साम्नीगायत्री[र] १६। स्वराड्ब्राह्मीत्रिष्टुप् १७। निचृत्त्रिष्टुप्[भ], प्राजापत्यागायत्री[र] १८। भुरिगार्षीपङ्क्तिः १९। निचृदार्षीजगती २०। स्वराड्ब्राह्मीत्रिष्टुप्[भ], याजुषीजगती[र] २१। निचृदष्टिः २२। अनुष्टुप्[१], प्राजापत्यानुष्टुप्[१], स्वराट्साम्यनुष्टुप्[१], भुरिगार्चीगायत्री[५], भुरिक्साम्यनुष्टुप्[५] २३। आर्षीत्रिष्टुप् २४, ३१। याजुष्यनुष्टुप्[भ], विराडार्षीबृहती[१,३] २५। स्वराड्ब्राह्मीबृहती २६। आसुर्यनुष्टुप्[१,३,५], आसुर्य्युष्णिक्[१,३], साम्नीगायत्री[५], आसुरीगायत्री[५] २७। ब्राह्मीबृहती २८। आर्चीपङ्क्तिः[भ], भुरिक्साम्नीपङ्क्तिः[र] २९। साम्नीगायत्री[१,१,५,५,१,११], आसुर्यनुष्टुप्[१,५,१०,११], याजुषीपङ्क्तिः[७,९], आसुर्य्युष्णिक्[११] ३०। आर्षीगायत्री[भ], आर्च्युष्णिक्[र] ३२। आर्षीगायत्री[भ], आर्चीबृहती[र] ३३। आर्षीगायत्री[भ], निचृदार्ष्युष्णिक्[र] ३४। आर्षीत्रिष्टुप्[भ], आर्ष्युष्णिक्[र] ३५। विराडार्षीत्रिष्टुप्[१], आर्ष्युष्णिक्[१], साम्न्युष्णिक्[१] ३६। निचृदार्षीत्रिष्टुप्[भ], प्राजापत्यात्रिष्टुप्[र] ३७, ३८। भुरिक्पङ्क्तिः[भ], साम्नीत्रिष्टुप्[र] ३९। आर्षीगायत्री[भ], विराडार्षीगायत्री[र] ४०। भुरिगार्षीगायत्री ४१। भुरिगार्षीत्रिष्टुप् ४२, ४३, ४४, ४६। विराड्जगती ४५। भुरिक्प्राजापत्याजगती[१], स्वराट्प्राजापत्याजगती[१], निचृदार्चीजगती[१], विराडार्चीजगती[५] ४७॥

स्वरः—गान्धारः १, १५। पञ्चमः २, ५, १९, २९। निषादः ३, ७, १४, २०, ४५, ४७। ऋषभः, ४, ११, ४८। धैवतः ६, १७, २४, ३१, ३७, ३८, ४२-४४, ४६। षड्जः ८, ९, ४०, ४१। मध्यमः १०, २२, २६, २८। निषादः[भ], पञ्चमः[र] १२। धैवतः[भ], षडजः[र] १३, १६, १८। धैवतः[भ], निषादः[र] २१। गान्धारः[१,१,१,५], षड्जः[५] २३। गान्धारः[भ], मध्यमः[र] २५। गान्धारः[१,१,५], ऋषभः[१,७], षड्जः[५,५], २७। षड्जः[१,१,५,५,१,११], गान्धारः[५,१,१०,११], पञ्चमः[७,९], ऋषभः[११] ३०। षड्जः[भ], ऋषभः[र] ३२, ३४। षड्जः[भ] मध्यमः[र] ३३। धैवतः[भ], ऋषभः[र] ३५, ३६। पञ्चमः[भ], धैवतः[र] ३९॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

वाचस्पतये पवस्व वृष्णोऽअꣳशुभ्यां गभस्तिपूतः ।
देवो देवेभ्यः पवस्व येषां भागोऽसि ॥१॥
मधुमतीर्नऽइषस्कृधि यत्ते सोमादाभ्यं नाम जागृवि
तस्मै ते सोम सोमाय स्वाहा स्वाहोर्वन्तरिक्षमन्वेमि ॥२॥
स्वाङ्कृतोऽसि विश्वेभ्यऽइन्द्रियेभ्यो दिव्येभ्यः पार्थिवेभ्यो
मनस्त्वाष्टु स्वाहा त्वा सुभव सूर्यीय देवेभ्यस्त्वा
मरीचिपेभ्यो देवाꣳशो यस्मै त्वेडे। तत्सत्यमुपरिप्रुता भङ्क्ष्ने
हुतोऽसौ फट् प्राणाय त्वा व्यानाय त्वा ॥३॥
उपयामगृहीतोऽस्यन्तर्यच्छ मघवन् पाहि सोमम् ।
उरुष्य रायऽएषो यजस्व ॥४॥
अन्तस्ते द्यावापृथिवी दधाम्यन्तर्दधाम्युर्वन्तरिक्षम् ।
सजूर्देवेभिरवरैः परैश्चान्तर्यामे मघवन् मादयस्व ॥५॥
स्वाङ्कृतोऽसि विश्वेभ्यऽइन्द्रियेभ्यो दिव्येभ्यः पार्थिवेभ्यो
मनस्त्वाष्टु स्वाहा त्वा सुभव सूर्यीय देवेभ्यस्त्वा
मरीचिपेभ्यऽउदानाय त्वा ॥६॥
आ वायो भूष शुचिपाऽउप नः सहस्रं ते नियुतो विश्ववार ।
उपो तेऽअन्धो मद्यमयामि यस्य देव दधिषे पूर्वपेयं वायवे त्वा॥७॥
इन्द्रवायूऽइमे सुताऽउप प्रयोभिरागतम्। इन्दवो वामुशन्ति हि।
उपयामगृहीतोऽसि वायवऽइन्द्रवायुभ्यां त्वैष ते योनिः
सजोषोभ्यां त्वा ॥८॥
अयं वां मित्रावरुणा सुतः सोमऽऋतावृधा ।
ममेदिह श्रुतꣳहवम्। उपयामगृहीतोऽसि मित्रावरुणाभ्यां त्वा ॥९॥
राया वयꣳसंसवाꣳसो मदेम हव्येन देवा यवसेन गावः ।
तां धेनुं मित्रावरुणा युवं नो विश्वाहा धत्तमनपस्फुरन्तीमिषं
ते योनिर्ऋतायुभ्यां त्वा ॥१०॥
या वां कशा मधुमत्यश्विना सूनृतावती। तया यज्ञं मिमिक्षतम्।
उपयामगृहीतोऽस्यश्विभ्यां त्वैष ते योनिर्माध्वीभ्यां त्वा ॥११॥

तं प्रत्नथा पूर्वथा विश्वथेमथा ज्येष्ठतातिं बर्हिषदꣳस्वर्विदम्।
प्रतीचीनं वृजनं दोहसे धुनिमाशुं जयन्तमनु यासु वर्द्धसे ।
उपयामगृहीतोऽसि शण्डाय त्वैष ते योनिर्वीरतां पाह्यपमृष्टः
शण्डो देवास्त्वा शुक्रपाः प्रणयन्त्वनाधृष्टासि ॥१२॥
सुवीरो वीरान् प्रजनयन् परीह्यभि रायस्पोषेण यजमानम् ।
संजग्मानो दिवा पृथिव्या शुक्रःशुक्रशोचिषा निरस्तः
शण्डः शुक्रस्यधिष्ठानमसि ॥१३॥
अच्छिन्नस्य ते देव सोम सुवीर्यस्य रायस्पोषस्य ददितारः स्याम।
सा प्रथमा सꣳस्कृतिर्विश्ववारा स प्रथमो वरुणो मित्रोऽअग्निः॥१४॥
स प्रथमो बृहस्पतिश्चिकित्वाँस्तस्माऽइन्द्राय सुतमा जुहोत स्वाहा।
तृम्पन्तु होत्रा मध्वो याः स्विष्टा याः सुप्रीताः सुहुता यत्स्वाहायाड्डग्नीत्॥१५॥
अयं वेनश्चोदयत् पृश्निगर्भा ज्योतिर्जरायू रजसो विमाने।
इमम्पाꣳसङ्गमे सूर्यस्य शिशुं न विप्रा मतिभी रिहन्ति।
उपयामगृहीतोऽसि मर्कीय त्वा ॥१६॥
मनो न येषु हवनेषु तिग्मं विपः शच्या वनुथो वरन्ता ।
आ यः शर्यीभिस्तुविनृम्णोऽअस्याश्रीणीतादिशं गभस्तावेष
ते योनिः प्रजाः। पाह्यपमृष्टो मर्को देवास्त्वा मन्थिपाः
प्रणयन्त्वनाधृष्टासि ॥१७॥
सुप्रजाः प्रजाः प्रजनयन् परीह्यभि रायस्पोषेण यजमानम् ।
संजग्मानो दिवा पृथिव्या मन्थी मन्थिशोचिषा
निरस्तो मर्को मन्थिनोऽधिष्ठानमसि ॥१८॥
ये देवासो दिव्येकादश स्थ पृथिव्यामध्येकादश स्थ ।
अप्सुक्षितो महिनैकादश स्थ ते देवासो यज्ञमिमं जुषध्वम् ॥१९॥
उपयामगृहीतोऽस्याग्रयणोऽसि स्वाग्रयणः। पाहि यज्ञं पाहि यज्ञपतिं
विष्णुस्त्वामिन्द्रियेण पातु विष्णुं त्वं पाह्यभि सवनानि पाहि॥२०॥
सोमः पवते सोमः पवतेऽस्मै ब्रह्मणेऽस्मै क्षत्रायास्मै सुन्वते यजमानाय
पवतऽइषऽऊर्जे पवतेऽद्भ्यऽओषधीभ्यः पवते द्यावापृथिवीभ्यां पवते
सुभूताय पवते विश्वेभ्यस्त्वा देवेभ्यऽएष ते योनिर्विश्वेभ्यस्त्वा देवेभ्यः॥२१॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उपयामगृहीतोऽसीन्द्राय त्वा बृहद्बृते वयस्वतऽउक्थाव्यं गृह्णामि।
यत्तऽइन्द्र बृहद्वयस्तस्मै त्वा विष्णवे त्वैष ते योनिरुक्थेभ्यस्त्वा
देवेभ्यस्त्वा देवाव्यं यज्ञस्यायुषे गृह्णामि ॥२२॥

[1]मित्रावरुणाभ्यां त्वा देवाव्यं यज्ञस्यायुषे गृह्णामीन्द्राय त्वा देवाव्यं
यज्ञस्यायुषे गृह्णामीन्द्राग्निभ्यां त्वा देवाव्यं यज्ञस्यायुषे गृह्णामीन्द्रा-
वरुणाभ्यां त्वा देवाव्यं यज्ञस्यायुषे गृह्णामीन्द्राबृहस्पतिभ्यां त्वा देवाव्यं
यज्ञस्यायुषे गृह्णामीन्द्राविष्णुभ्यां त्वा देवाव्यं यज्ञस्यायुषे गृह्णामि॥२३॥

मूर्द्धानं दिवोऽअरतिं पृथिव्या वैश्वानरमृतऽआजातमग्निम् ।
कविꣳसम्राजमतिथिं जनानामासन्नात्रं जनयन्त देवाः ॥२४॥

[2]उपयामगृहीतोऽसि [3]ध्रुवोऽसि ध्रुवक्षितिर्ध्रुवाणां ध्रुवतमोऽच्युताना-
मच्युतक्षित्तमऽएष ते योनिर्वैश्वानराय त्वा। [4]ध्रुवं ध्रुवेण मनसा
वाचा सोममवनयामि। अथा नऽइन्द्रऽइद्विशोऽसपत्नाः समनसस्करत्॥२५॥

यस्ते द्रप्स स्कन्दति यस्तेऽअꣳशुर्ग्रावच्युतो धिषणयोरुपस्थात् ।
अध्वर्योर्वा परि वा यः पवित्रात्तं ते जुहोमि मनसा
वषट्कृतꣳस्वाहा देवानामुत्क्रमणमसि ॥२६॥

[5]प्राणाय मे वर्चोदा वर्चसे पवस्व [6]व्यानाय मे वर्चोदा वर्चसे
पवस्वोदानाय मे वर्चोदा वर्चसे पवस्व [7]वाचे मे वर्चोदा वर्चसे
पवस्व [8]क्रतूदक्षाभ्यां मे वर्चोदा वर्चसे पवस्व [9]श्रोत्राय मे वर्चोदा
वर्चसे पवस्व [10]चक्षुर्भ्यां मे वर्चोदसौ वर्चसे पवेथाम् ॥२७॥

आत्मने मे वर्चोदा वर्चसे पवस्वौजसे मे वर्चोदा वर्चसे पवस्वायुषे मे
वर्चोदा वर्चसे पवस्व विश्वाभ्यो मे प्रजाभ्यो वर्चोदसौ वर्चसे पवेथाम्॥२८॥

[11]कोऽसि कतमोऽसि कस्यासि को नामासि ।
यस्य ते नाममन्महि यं त्वा सोमेनातीतृपाम ।
[12]भूर्भुवः स्वः सुप्रजाः प्रजाभिः स्याꣳसुवीरो वीरैः सुपोषः पोषैः॥२९॥

[13]उपयामगृहीतोऽसि मधवे त्वौपयामगृहीतोऽसि माधवाय त्वौपयाम-
गृहीतोऽसि शुक्राय त्वौपयामगृहीतोऽसि शुचये त्वौपयामगृहीतोऽसि नभसे
त्वौपयामगृहीतोऽसि नभस्याय त्वौपयामगृहीतोऽसीषे त्वौपयामगृहीतोऽ
स्यूर्जे त्वौपयामगृहीतोऽसि सहसे त्वौपयामगृहीतोऽसि सहस्याय
त्वौपयामगृहीतोऽसि तपसे त्वौपयामगृहीतोऽसि तपस्याय त्वौपया-
मगृहीतोऽस्यꣳहसस्पतये त्वा ॥३०॥

इन्द्राग्नीऽआगतꣳसुतं गीर्भिर्नभो वरेण्यम्। अस्य पातं धियेषिता।
उपयामगृहीतोऽसीन्द्राग्निभ्यां त्वैष ते योनिरिन्द्राग्निभ्यां त्वा ॥३१॥

[14]आ घा येऽअग्निमिन्धते स्तृणन्ति बर्हिरानुषक्। येषामिन्द्रो युवा सखा।
[15]उपयामगृहीतोऽस्यग्नीन्द्राभ्यां त्वैष ते योनिरग्नीन्द्राभ्यां त्वा॥३२॥

[16]ओमासश्चर्षणीधृतो विश्वे देवासऽआगत ।
दाश्वाꣳसो दाशुषः सुतम्। [17]उपयामगृहीतोऽसि
विश्वेभ्यस्त्वा देवेभ्यऽएष ते योनिर्विश्वेभ्यस्त्वा देवेभ्यः ॥३३॥

[18]विश्वे देवासऽआगत शृणुता म इमꣳहवम् ।
एदं बर्हिर्निषीदत। [19]उपयामगृहीतोऽसि विश्वेभ्यस्त्वा
देवेभ्यऽएष ते योनिर्विश्वेभ्यस्त्वा देवेभ्यः ॥३४॥

[20]इन्द्र मरुत्वऽइह पाहि सोमं यथा शार्याते ऽअपिबः सुतस्य ।
तव प्रणीती तव शूर शर्मन्नाविवासन्ति कवयः सुयज्ञाः ।
[21]उपयामगृहीतोऽसीन्द्राय त्वा मरुत्वतऽएष ते योनिरिन्द्राय त्वा मरुत्वते॥३५॥

[22]मरुत्वन्तं वृषभं वावृधानमकवारिं दिव्यꣳशासमिन्द्रम् ।
विश्वासाहमवसे नूतनायोग्रꣳसहोदामिह तꣳहुवेम ।
[23]उपयामगृहीतोऽसीन्द्राय त्वा मरुत्वतऽएष ते योनिरिन्द्राय त्वा मरुत्वते।
[24]उपयामगृहीतोऽसि मरुतां त्वौजसे ॥३६॥

[25]सजोषाऽइन्द्र सगणो मरुद्भिः सोमं पिब वृत्रहा शूर विद्वान्।
जहि शत्रूँर२॥ऽरप मृधो नुदस्वाथाभयं कृणुहि विश्वतो नः ।
[26]उपयामगृहीतोऽसीन्द्राय त्वा मरुत्वतऽएष ते योनिरिन्द्राय त्वा मरुत्वते॥३७॥

[27]मरुत्वाँ२॥ऽइन्द्र वृषभो रणाय पिबा सोममनुष्वधं मदाय ।
आसिञ्चस्व जठरे मध्वऽऊर्मिं त्वꣳराजासि प्रतिपत्सुतानाम् ।
[28]उपयामगृहीतोऽसीन्द्राय त्वा मरुत्वतऽएष ते योनिरिन्द्राय त्वा मरुत्वते॥३८॥

[29]महाँ२॥ऽइन्द्रो नृवदाचर्षणिप्राऽउत द्विबर्हीऽअमिनः सहोभिः ।
अस्मद्र्यग्वावृधे वीर्य्यायोरुः पृथुः सुकृतः कर्तृभिर्भूत् ।
[30]उपयामगृहीतोऽसि महेन्द्राय त्वैष ते योनिर्महेन्द्राय त्वा ॥३९॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

[k]महाँ२॥ऽइन्द्रो यऽओजसा पर्जन्यो वृष्टिमाँ२॥ऽइव। स्तोमैर्व्वत्सस्य वावृधे।
[r]उपयामगृहीतोऽसि महेन्द्राय त्वैष ते योनिर्महेन्द्राय त्वा ॥४०॥
उदु त्यं जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः। दृशे विश्वाय सूर्य्यꣳस्वाहा॥४१॥
चित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः ।
आप्रा द्यावापृथिवीऽअन्तरिक्षꣳसूर्य्यऽआत्मा जगतस्तस्थुषश्च स्वाहा॥४२॥
अग्ने नय सुपथा रायेऽअस्मान्विश्वानि देव वयुनानि विद्वान् ।
युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नमऽउक्तिं विधेम स्वाहा॥४३॥
अयं नोऽअग्निर्वरिवस्कृणोत्वयं मृधः पुरऽएतु प्रभिन्दन् ।
अयं वाजञ्जयतु वाजसातावयꣳशत्रून्जयतु जर्हृषाणः स्वाहा ॥४४॥
रूपेण वो रूपमभ्यागां तुथो वो विश्ववेदा विभजतु ।
ऋतस्य पथा प्रेत चन्द्रदक्षिणा वि स्वः पश्य
व्युन्तरिक्षं यतस्व सदस्यैः ॥४५॥
ब्राह्मणमद्य विदेयं पितृमन्तं पैतृमत्यमृषिमार्षेयꣳसुधातुदक्षिणम् ।
अस्मद्राता देवत्रा गच्छत प्रदातारमाविशत ॥४६॥
[r]अग्नये त्वा मह्यं वरुणो ददातु सोऽमृतत्वमशीयायुर्दात्रऽएधि
मयो मह्यं[1] प्रतिग्रहीत्रे [r]रुद्राय त्वा मह्यं[2] वरुणो ददातु
सोऽमृतत्वमशीय प्राणो दात्रऽएधि वयो मह्यं प्रतिग्रहीत्रे
[r]बृहस्पतये त्वो[3] मह्यं वरुणो ददातु सोऽमृतत्वमशीय
त्वग्दात्रऽएधि मयो मह्यं[4] प्रतिग्रहीत्रे [y]यमाय त्वा मह्यं[5] वरुणो
ददातु सोऽमृतत्वमशीय हयो दात्रऽएधि वयो मह्यं[6] प्रतिग्रहीत्रे॥४७॥
कोऽदात्कस्माऽअदात्कामोऽदात्कामायादात् ।
कामो दाता कामः प्रतिग्रहीता कामैतत्ते ॥४८॥

इति सप्तमोऽध्यायः॥

अथाष्टमोऽध्यायः

—:o:—

ऋषिः—आङ्गिरसः १-३। कुत्सः ४, ५। भरद्वाजः ६-१४। अत्रिः १५-२२, २४-३०। अत्रिः[3], शुनःशेपः[m] २३। गोतमः ३१, ३३, ३५। मेधातिथिः ३२। मधुच्छन्दाः ३४। विवस्वान् ३६, ३७। वैखानसः ३८, ३९। प्रस्कण्वः ४०, ४१। कुसुरुविन्दुः ४२, ४३। शासः ४४-४७। देवाः ४८-५३। वसिष्ठः ५४-६२। कश्यपः ६३॥

देवता—बृहस्पतिस्सोमः १। गृहपतिर्मघवा २। आदित्यो गृहपतिः ३, ४। गृहपतयः ५, ६, १०-१२, १४-१६, १८, २०-२६, ३३-३५, ५३। सविता गृहपतिः ७। विश्वेदेवा गृहपतयः ८, १७, १९। गृहपतयो विश्वेदेवाः ९, १३। वम्पती २७-३२। परमेश्वरः ३६। सम्राड्माण्डलिकौ राजानौ ३७। राजादयो गृहपतयः ३८, ४०। राजादयो गृहस्थाः ३९। सूर्यः ४१। पत्नीः ४२, ४३। इन्द्रः ४४। ईश्वरसभेशौ राजानौ ४५। विश्वकर्मेन्द्रः ४६, ४७। प्रजापतयः ४८, ५०। विश्वेदेवाः प्रजापतयः ४९। प्रजापतयो गृहस्थाः ५१। प्रजापतिः ५२। परमेष्ठी प्रजापतिः ५४। इन्द्रादयः ५५। विश्वेदेवाः गृहस्थाः ५६। विश्वेदेवाः ५७-६१। यज्ञः ६२, ६३॥

छन्दः—आर्चीपङ्क्तिः १। भुरिगार्चीपङ्क्तिः २। निचृदार्षीपङ्क्तिः ३। निचृज्जगती ४। प्राजापत्यानुष्टुप्[m], निचृदार्षीजगती[r] ५। निचृदार्षीत्रिष्टुप् ६, १९। विराडब्राह्म्यनुष्टुप् ७। प्राजापत्यागायत्री[m], निचृदार्षीबृहती[r] ८। प्राजापत्यागायत्री[3], आर्च्युष्णिक्[m], स्वराडार्षीपङ्क्तिः[r] ९। विराड्ब्राह्मीबृहती १०, ४७। भुरिगार्च्यनुष्टुप् ११। आर्षीपङ्क्तिः १२, ४३, ५५। निचृत्साम्न्युष्णिक्[1,2,x], साम्न्युष्णिक्[1], प्राजापत्योष्णिक्[1], निचृदार्च्युष्णिक्[4] १३। विराडार्षीत्रिष्टुप् १४, १६। भुरिगार्षीत्रिष्टुप् १५, ३६। स्वराडार्षीत्रिष्टुप् १७, २०, ६२। आर्षीत्रिष्टुप् १८, २४। स्वराडार्च्युष्णिक् २१। विराडार्च्युष्णिक्[m], विराडार्चीबृहती[r] २२। याजुष्युष्णिक्[3], निचृदार्षीत्रिष्टुप्[m], आसुरीगायत्री[r] २३। भुरिगार्षीपङ्क्तिः २५। स्वराडार्षीबृहती २६। भुरिब्प्राजापत्यानुष्टुप्[m], स्वराडार्षीबृहती[r] २७। भुरिक्साम्न्युष्णिक्[3], प्राजापत्यानुष्टुप्[m] भुरिगासुर्युष्णिक्[r], २८। भुरिगार्च्यनुष्टुप् २९। आर्षीजगती ३०। आर्षीगायत्री ३१, ३२। आर्च्यनुष्टुप्[m], आर्च्युष्णिक्[r] ३३। विराडार्च्यनुष्टुप्[m], विराडार्च्युष्णिक्[r] ३४। विराडार्च्यनुष्टुप्[m], आर्च्युष्णिक्[r] ३५। साम्नीत्रिष्टुप्[m], विराडार्चीत्रिष्टुप्[r] ३७। भुरिक्त्रिपाद्गायत्री[3], स्वराडार्च्यनुष्टुप्[m], भुरिगार्च्यनुष्टुप्[r] ३८। आर्षीगायत्री[3], [m], आर्च्युष्णिक्[r] ३९। आर्षीगायत्री[3], [m], स्वराडार्षीगायत्री[r] ४०। निचृदार्षीगायत्री[m], स्वराडार्षीगायत्री[r] ४१। स्वराड्ब्राह्म्युष्णिक् ४२। निचृदनुष्टुप्[m], स्वराडार्षीगायत्री[r] ४४। भुरिगार्षीत्रिष्टुप्[m], विराडार्च्यनुष्टुप्[r] ४५। निचृदार्षीत्रिष्टुप्[m], विराडार्च्यनुष्टुप्[r] ४६। आसुरीत्रिष्टुप्[1], याजुषीजगती[1,y,z], याजुषीत्रिष्टुप्[1], साम्नीबृहती[4] ४८। विराट्प्राजापत्याजगती[m], निचृदार्च्युष्णिक्[r] ४९। भुरिगार्षीजगती ५०, ५१। निचृदार्षीबृहती ५२। आर्च्यनुष्टुप्[1], आसुर्युष्णिक्[4], प्राजापत्यबृहती[5], विराट्प्राजापत्यापङ्क्तिः[x] ५३। निचृद्ब्राह्म्युष्णिक् ५४। आर्षीबृहती ५६। बृहती ५७। निचृदार्षीजगती ५८। निचृदार्षीजगती[m], विराडार्षीगायत्री[r] ५९। स्वराड्ब्राह्मीत्रिष्टुप् ६०। ब्राह्म्युष्णिक् ६१। स्वराडार्षीगायत्री ६३॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

स्वरः—पञ्चमः १-३, १२, २५, ४३, ५५। निषादः ४, ३०, ५०, ५१, ५८। गान्धारः[क], निषादः[र] ५। धैवतः ६, १४-२०, २४, ३६, ३७, ६०, ६२। गान्धारः ७, ११, २९, ३५। षड्जः[क], मध्यमः[र] ८। षड्जः[उ], ऋषभः[क], पञ्चमः[र] ९। मध्यमः १०, २६, ४७, ५२, ५६, ५७। ऋषभः १३, २१, ४२, ५४, ६१। ऋषभः[क], मध्यमः[र] २२। ऋषभः[उ], धैवतः[क], षड्जः[र] २३। गान्धारः[क], मध्यमः[र] २७। ऋषभः[उ],[र], गान्धारः[क] २८। षड्जः ३१, ३२, ४०, ४१, ६३। गान्धारः[क], ऋषभः[र] ३३, ३४, ३५। षड्जः[क], गान्धारः[र], ३८। षड्जः[उ],[क], ऋषभः[र] ३९। गान्धारः[क], षड्जः[र] ४४। धैवतः[क], गान्धारः[र] ४५, ४६। धैवतः[१],[३], निषादः[२],[४],[५], मध्यमः[६] ४८। निषादः[क], ऋषभः[र], ४९। गान्धारः[१], ऋषभः[२], मध्यमः[३], पञ्चमः[४] ५३। निषादः[क], षड्जः[र] ५९॥

उ॒प॒या॒मगृ॑हीतोऽस्यादि॒त्येभ्य॑स्त्वा ।
विष्ण॑ऽउरुगायै॒ष ते॒ सोम॒स्तꣳर॑क्षस्व॒ मा त्वा॑ दभन् ॥१॥
क॒दा च॒न स्त॒रीर॑सि॒ नेन्द्र॑ सश्चसि दा॒शुषे॑ ।
उपो॒पेन्नु म॑घव॒न्भूय॒ऽइन्नु ते॒ दानं॑ दे॒वस्य॑ पृच्यतऽआदि॒त्येभ्य॑स्त्वा॥२॥
क॒दा च॒न प्रयु॑च्छस्यु॒भे निपा॑सि॒ जन्म॑नी ।
तुरी॑यदित्य॒ सव॑नं तऽइन्द्रि॒यमात॑स्थाव॒मृतं॑ दि॒व्या॒दि॒त्य॑भ्यस्त्वा ॥३॥
य॒ज्ञो दे॒वानां॒ प्रत्ये॑ति सु॒म्नमादि॑त्यासो॒ भव॑ता मृड॒यन्तः॑ ।
आ वो॒ऽर्वाची॑ सु॒मति॒र्वृ॑त्याद॒ꣳहोश्चि॒द्या व॑रिवो॒वित्त॒रास॑दादि॒त्येभ्य॑स्त्वा॥४॥
[क]विव॑स्वन्नादित्यै॒ष ते॑ सोमपी॒थस्तस्मि॑न् मत्स्व ।
[र]श्रद॑स्मै नरो॒ वच॑से दधातन॒ यदा॑शी॒र्दा दम्प॑ती वा॒मम॑श्नु॒तः ।
पुमा॑न् पु॒त्रो जा॑यते वि॒न्दते॒ वस्वधा॑ वि॒श्वाहा॑र॒पऽए॑धते गृ॒हे ॥५॥
वा॒मम॒द्य स॑वितर्वा॒ममु॒ श्वो दि॒वेदि॑वे वा॒मम॒स्मभ्य॑ꣳसावीः ।
वा॒मस्य॒ हि क्षय॑स्य देव॒ भूरे॑र॒या धि॒या वा॑म॒भाजः॑ स्याम ॥६॥
उ॒प॒या॒मगृ॑हीतोऽसि सावि॒त्रो॒ऽसि चनो॒धाश्च॑नो॒धाऽअ॑सि॒ चनो॒ मयि॑ धेहि।
जिन्व॑ य॒ज्ञं जिन्व॑ य॒ज्ञप॑तिं॒ भगा॑य दे॒वाय॑ त्वा सवि॒त्रे ॥७॥
[क]उ॒प॒या॒मगृ॑हीतोऽसि [र]सु॒शर्म्मा॑सि सुप्रसिष्ठा॒नो बृ॒हदु॑क्षाय॒ नमः॑ ।
विश्वे॑भ्यस्त्वा दे॒वेभ्य॑ऽए॒ष ते॒ योनि॒र्विश्वे॑भ्यस्त्वा दे॒वेभ्यः॑ ॥८॥
[उ]उ॒प॒या॒मगृ॑हीतोऽसि॒ [क]बृ॒ह॒स्पति॑सुतस्य देव सोम त॒ऽइन्दो॑रिन्द्रि॒याव॑तः॒
पत्नी॑वतो॒ ग्रहाँ॑२॥ऽऋध्यासम्। [र]अ॒हं प॒रस्ता॑द॒हम॒वस्ता॒द्यद॒न्तरि॑क्षं॒ तदु॑
मे पि॒ताभू॑त्। अ॒हꣳसूर्य॑मु॒भय॒तो॑ ददर्शा॒हं दे॒वानां॑ पर॒मं गुहा॒ यत्॥९॥
अग्ना३इ पत्नी॑वन्त्स॒जूर्दे॒वेन॒ त्वष्ट्रा॒ सोमं॑ पिब॒ स्वाहा॑। प्र॒जाप॑ति॒र्वृषा॑सि
रेतो॒धा रेतो॒ मयि॑ धेहि प्र॒जाप॑तेस्ते॒ वृष्णो॑ रेतो॒धसो॑ रेतो॒धाम॑शीय॥१०॥

उ॒प॒या॒मगृ॑हीतोऽसि॒ हरि॑रसि हारियोज॒नो हरि॑भ्यां त्वा ।
हर्य्यो॑र्द्धा॒ना स्थ॑ स॒हसो॑मा॒ऽइन्द्रा॑य ॥११॥
यस्ते॑ऽअश्व॒सनि॑र्भ॒क्षो यो गो॒सनि॒स्तस्य॑ तऽइ॒ष्टय॑जुष स्तु॒तस्तो॑मस्य
श॒स्तोक्थ॒स्योप॑हू॒तस्योप॑हूतो भक्षयामि ॥१२॥
[१]दे॒वकृ॑त॒स्यैन॑सोऽव॒यज॑नमसि [२]मनु॒ष्य॒कृत॒स्यैन॑सोऽव॒यज॑नमसि
[३]पि॒तृकृ॑त॒स्यैन॑सो ऽ व॒यज॑नमस्या॒त्मकृ॑त॒स्यैन॑सो ऽ व॒यज॑नम॒स्यैन॑सऽ
एनसोऽव॒यज॑नमसि। [६]यच्चा॒हमेनो॑ वि॒द्वाँश्च॒कार॒ यच्चावि॑द्वाँ॒स्तस्य॒
सर्व॒स्यैन॑सोऽव॒यज॑नमसि ॥१३॥
सं वर्च॑सा॒ पय॑सा॒ सं त॒नूभि॒रग॑न्महि॒ मन॑सा॒ सꣳशि॒वेन॑ ।
त्वष्टा॑ सु॒दत्रो॒ विद॑धातु॒ रायोऽनु॑मार्ष्टु त॒न्वो॒ यद्विलि॑ष्टम् ॥१४॥
समि॑न्द्र णो॒ मन॑सा नेषि॒ गोभिः॒ सꣳसू॒रिभि॑र्मघव॒न्त्सꣳस्व॒स्त्या ।
सं ब्रह्म॑णा दे॒वकृ॑तं॒ यदस्ति॒ सं दे॒वाना॑ꣳसुम॒तौ य॒ज्ञिया॑ना॒ꣳस्वाहा॑॥१५॥
सं वर्च्च॑सा॒ पय॑सा॒ सं त॒नूभि॒रग॑न्महि॒ मन॑सा॒ सꣳशि॒वेन॑ ।
त्वष्टा॑ सु॒दत्रो॒ विद॑धातु॒ रायोऽनु॑मार्ष्टु त॒न्वो॒ यद्विलि॑ष्टम् ॥१६॥
धा॒ता रा॒तिः स॑वि॒तेदं जु॑षन्तां प्र॒जाप॑तिर्निधि॒पा दे॒वोऽअ॒ग्निः ।
त्वष्टा॒ विष्णुः॑ प्र॒जया॑ सꣳररा॒णा यज॑मानाय॒ द्रवि॑णं दधात॒ स्वाहा॑॥१७॥
सु॒गा वो॑ देवाः॒ सद॑नाऽअकर्म॒ यऽआ॑ज॒ग्मेदꣳसव॑नं जुषा॒णाः ।
भर॑माणा॒ वह॑माना ह॒वीꣳष्य॒स्मे ध॑त्त वसवो॒ वसू॑नि॒ स्वाहा॑ ॥१८॥
याँ२ऽआव॑हऽउश॒तो दे॑व दे॒वाँस्तान् प्रेर॑य॒ स्वेऽअ॑ग्ने स॒धस्थे॑ ।
ज॒क्षि॒वाꣳसः॑ पपि॒वाꣳस॑श्च॒ विश्वेऽसुं॑ घ॒र्मꣳस्व॒राति॑ष्ठ॒तानु॒ स्वाहा॑॥१९॥
व॒यꣳहि त्वा॑ प्रय॒ति य॒ज्ञेऽअ॒स्मिन्नग्ने॒ होता॑र॒मवृ॑णीमही॒ह ।
ऋध॑गया॒ऽऋध॑गु॒ताश॑मिष्ठाः प्रजा॒नन् य॒ज्ञमुप॑याहि वि॒द्वान्त्स्वाहा॑॥२०॥
देवा॑ गातुविदो गा॒तुं वि॒त्त्वा गा॒तुमि॑त ।
मन॑सस्पतऽइ॒मं दे॑व य॒ज्ञꣳस्वाहा॒ वाते॑ धाः ॥२१॥
[क]यज्ञ॑ य॒ज्ञं ग॑च्छ य॒ज्ञप॑तिं गच्छ॒ स्वां योनिं॑ गच्छ॒ स्वाहा॑ ।
[र]ए॒ष ते॑ य॒ज्ञो य॑ज्ञपते स॒हसू॑क्तवाकः॒ सर्व॑वीर॒स्तं जु॑षस्व॒ स्वाहा॑॥२२॥
[उ]माहि॑र्भू॒र्मा पृदा॑कूः। [क]उ॒रुꣳहि राजा॒ वरु॑णश्च॒कार॒ सूर्या॑य॒ पन्था॒मन्वे॑त॒वाऽउ॑।
अ॒पदे॒ पादा॒ प्रति॑धातवेऽकरु॒ताप॑व॒क्ता हृ॑दया॒विध॑श्चित् ।
[र]नमो॒ वरु॑णाया॒भिष्ठि॑तो॒ वरु॑णस्य॒ पाशः॑ ॥२३॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अग्नेरनीकमुपऽआविवेशोपान्नपात् प्रतिरक्षन्नसुर्य्यम् ।
दमेदमे समिधं यक्ष्यग्ने प्रति ते जिह्वा घृतमुच्चरण्यत् स्वाहा ॥२४॥
समुद्रे ते हृदयमप्स्वन्तः सं त्वा विशन्त्वोषधीरुतापः ।
यज्ञस्य त्वा यज्ञपते सूक्तोक्तौ नमोवाके विधेम यत् स्वाहा ॥२५॥
देवीरापऽएष वो गर्भस्तꣳसुप्रीतꣳसुभृतं बिभृत ।
देवꣳ सोमैष ते लोकस्तस्मिञ्छञ्च वक्ष्व परि च वक्ष्व ॥२६॥
अवभृथ निचुम्पुण निचेरुरसि निचुम्पुणः ।
अव देवैर्देवकृतमेनोऽयासिषमव मर्त्यैर्मर्त्यकृतं पुरुराव्णो
देव रिषस्पाहि। देवानाꣳसमिदसि ॥२७॥
एजतु दशमास्यो गर्भो जरायुणा सह ।
यथायं वायुरेजति यथा समुद्रऽएजति ।
एवायं दशमास्योऽअꣳजरायुणा सह ॥२८॥
यस्यै ते यज्ञियो गर्भो यस्यै योनिर्हिरण्ययी ।
अङ्गान्यहुता यस्य तं मात्रा सꣳजीगमꣳस्वाहा ॥२९॥
पुरूदस्मो विषुरूपऽइन्दुरन्तर्महिमानमानञ्ज धीरः ।
एकंपदीं द्विपदीं त्रिपदीं चतुष्पदीमष्टापदीं भुवनानु प्रथन्ताꣳस्वाहा॥३०॥
मरुतो यस्य हि क्षये पाथा दिवो विमहसः। स सुगोपातमो जनः॥३१॥
मही द्यौः पृथिवी च नऽइमं यज्ञं मिमिक्षताम्। पिपृतां नो भरीमभिः॥३२॥
आतिष्ठ वृत्रहन्नꣳ युक्ता ते ब्रह्मणा हरी ।
अर्वाचीनꣳसु ते मनो ग्रावा कृणोतु वग्नुना। उपयामगृहीतोऽसीन्द्राय
त्वा षोडशिनऽएष ते योनिरिन्द्राय त्वा षोडशिने ॥३३॥
युक्ष्वा हि केशिना हरी वृषणा कक्ष्यप्रा ।
अथा नऽइन्द्र सोमपा गिरामुपश्रुतिं चर। उपयामगृहीतोऽसीन्द्राय
त्वा षोडशिनऽएष ते योनिरिन्द्राय त्वा षोडशिने ॥३४॥
इन्द्रमिद्धरी वहतोऽप्रतिधृष्टशवसम् ।
ऋषीणां च स्तुतीरुप यज्ञं च मानुषाणाम्। उपयामगृहीतोऽसीन्द्राय
त्वा षोडशिनऽएष ते योनिरिन्द्राय त्वा षोडशिने ॥३५॥
यस्मान्न जातः परोऽअन्योऽअस्ति यऽआविवेश भुवनानि विश्वा।
प्रजापतिः प्रजया सꣳरराणस्त्रीणि ज्योतीꣳषि सचते स षोडशी॥३६॥

इन्द्रश्च सम्राड् वरुणश्च राजा तौ ते भक्षं चक्रतुरग्रऽएतम्।
तयोरहमनु भक्षं भक्षयामि वाग्देवी जुषाणा सोमस्य तृप्यतु
सह प्राणेन स्वाहा ॥३७॥
अग्ने पवस्व स्वपाऽअस्मे वर्चः सुवीर्यम्। दधद्रयिं मयि पोषम्।
उपयामगृहीतोऽस्यग्नये त्वा वर्चसऽएष ते योनिरग्नये त्वा वर्चसे।
अग्ने वर्चस्विन्वर्चस्वाँस्त्वं देवेष्वसि वर्चस्वानहं मनुष्येषु भूयासम्॥३८॥
उत्तिष्ठन्नोजसा सह पीत्वी शिप्रेऽअवेपयः। सोममिन्द्र चमू सुतम्।
उपयामगृहीतोऽसीन्द्रायेन्द्रौजिष्ठौजिष्ठस्त्वं देवेष्वस्योजिष्ठोऽहं मनुष्येषु भूयासम् ॥३९॥
अदृश्रमस्य केतवो वि रश्मयो जनाँ२ऽअनु। भ्राजन्तो अग्नयो यथा।
उपयामगृहीतोऽसि सूर्य्याय त्वा भ्राजायैष ते योनिः सूर्याय त्वा भ्राजाय।
सूर्य भ्राजिष्ठ भ्राजिष्ठस्त्वं देवेष्वसि भ्राजिष्ठोऽहं मनुष्येषु भूयासम्॥४०॥
उदु त्यं जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः। दृशे विश्वाय सूर्यम्।
उपयामगृहीतोऽसि सूर्याय त्वा भ्राजायैष ते योनिः सूर्याय त्वा भ्राजाय॥४१॥
आजिघ्र कलशꣳ मह्या त्वा विशन्त्विन्दवः। पुनरूर्जा निवर्त्तस्व
सा नः सहस्रं धुक्ष्वोरुधारा पयस्वती पुनर्मा विशतद्रयिः ॥४२॥
इडे रन्ते हव्ये काम्ये चन्द्रे ज्योतेऽदिते सरस्वति महि विश्रुति।
एता तेऽअघ्न्ये नामानि देवेभ्यो मा सुकृतं ब्रूतात् ॥४३॥
वि नऽइन्द्र मृधो जहि नीचा यच्छ पृतन्यतः ।
योऽअस्माँ२ऽअभिदासत्यधरं गमया तमः ।
उपयामगृहीतोऽसीन्द्राय त्वा विमृधऽएष ते योनिरिन्द्राय त्वा विमृधे॥४४॥
वाचस्पतिं विश्वकर्माणमूतये मनोजुवं वाजेऽअद्या हुवेम ।
स नो विश्वानि हवनानि जोषद्विश्वशम्भूरवसे साधुकर्मा ।
उपयामगृहीतोऽसीन्द्राय त्वा विश्वकर्मणऽएष
ते योनिरिन्द्राय त्वा विश्वकर्मणे ॥४५॥
विश्वकर्मन् हविषा वर्द्धनेन त्रातारमिन्द्रमकृणोरवध्यम् ।
तस्मै विशः समनमन्त पूर्वीरयमुग्रो विहव्यो यथासत् ।
उपयामगृहीतोऽसीन्द्राय त्वा विश्वकर्मणऽएष ते
योनिरिन्द्राय त्वा विश्वकर्मणे ॥४६॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उपयामगृहीतोऽस्यग्नये त्वा गायत्रच्छन्दसं गृह्णामीन्द्राय
त्वा त्रिष्टुप्छन्दसं गृह्णामि विश्वेभ्यस्त्वा देवेभ्यो
जगच्छन्दसं गृह्णाम्यनुष्टुपेऽभिगरः ॥४७॥
[1]श्रेशीनां त्वा पत्मन्नाधूनोमि। [2]कुकूननानां त्वा पत्मन्नाधूनोमि ।
[3]भ्रन्दनानां त्वा पत्मन्नाधूनोमि। [4]मदिन्तमानां त्वा पत्मन्नाधूनोमि।
[5]मधुन्तमानां त्वा पत्मन्नाधूनोमि। [6]शुक्रं त्वा शुक्रऽआधूनोम्यह्नो
रूपे सूर्यस्य रश्मिषु ॥४८॥
[7]कुकुभः रूपं वृषभस्य रोचते बृहच्छुक्रः शुक्रस्य पुरोगाः
सोमः सोमस्य पुरोगाः। [8]यत्ते सोमादाभ्यं नाम जागृवि तस्मै
त्वा गृह्णामि तस्मै ते सोम सोमाय स्वाहा ॥४९॥
उशिक् त्वं देव सोमाग्नेः प्रियं पाथोऽपीहि वशी त्वं देव
सोमेन्द्रस्य प्रियं पाथोऽपीह्यस्मत्सखा त्वं देव सोम विश्वेषां
देवानां प्रियं पाथोऽपीहि ॥५०॥
इह रतिरिह रमध्वमिह धृतिरिह स्वधृतिः स्वाहा ।
उपसृजन्धरुणं मात्रे धरुणो मातरं धयन् ।
रायस्पोषमस्मासु दीधरत् स्वाहा ॥५१॥
सत्रस्यऽऋद्धिरस्यगन्म ज्योतिरमृताऽअभूम ।
दिवं पृथिव्याऽअध्यारुहामाविदाम देवान्त्स्वर्ज्योतिः ॥५२॥
[9]युवं तमिन्द्रापर्वता पुरोयुधा यो नः पृतन्यादप तन्तमिद्धतं
वज्रेण तन्तमिद्धतम्। [10]दूरे चत्ताय छन्त्सद् गहनं यदिनक्षत् ।
[11]अस्माकꣳशत्रून् परि शूर विश्वतो दर्म्मा दर्षीष्ट विश्वतः ।
[12]भूर्भुवः स्वः सुप्रजाः प्रजाभिः स्याम सुवीरा वीरैः सुपोषाः पोषैः॥५३॥
परमेष्ठ्यभिधीतः प्रजापतिर्वाचि व्याहृतायामन्वोऽअच्छैतः ।
सविता सून्यां विश्वकर्मा दीक्षायां पूषा सोमक्रयण्याम् ॥५४॥
इन्द्रश्च मरुतश्च क्रयायोपोत्थितोऽसुरः पण्यमानो मित्रः क्रीतो
विष्णुः शिपिविष्टऽकुरावासन्नो विष्णुर्नरन्धिषः ॥५५॥
प्रोह्यमाणः सोमऽआगतो वरुणऽआसन्द्यामासन्नोऽग्निरागनीध्रऽइन्द्रो
हविर्द्धानेऽथर्वोपावहियमाणः ॥५६॥

विश्वे देवाऽअꣳशुषु न्युप्तो विष्णुराप्रीतपाऽआप्याय्यमानो यमः
सूयमानो विष्णुः सम्भ्रियमाणो वायुः पूयमानः शुक्रः पूतः ।
शुक्रः क्षीरश्रीर्मन्थी सक्तुश्रीः ॥५७॥
विश्वे देवाश्चमसेषून्नीतोऽसुहोमायोद्यतो रुद्रो हूयमानो वातोऽभ्यावृतो
नृचक्षाः। प्रतिख्यातो भक्षो भक्ष्यमाणः पितरो नाराशꣳसाः ॥५८॥
[13]सन्नः सिन्धुरवभृथायोद्यतः समुद्रोऽभ्यवहियमाणः सलिलः
प्रप्लुतो ययोरोजसा स्कभिता रजाꣳसि वीर्येभिर्वीरतमा शविष्ठा।
[14]या पत्येतेऽअप्रतीता सहोभिर्विष्णूऽअगन्वरुणा पूर्वहूतौ ॥५९॥
देवान् दिवमगन्यज्ञस्ततो मा द्रविणमष्टु मनुष्यानन्तरिक्षमगन्यज्ञस्ततो
मा द्रविणमष्टु पितॄन् पृथिवीमगन्यज्ञस्ततो मा द्रविणमष्टु यं
कं च लोकमगन्यज्ञस्ततो मे भद्रमभूत् ॥६०॥
चतुस्त्रिꣳशत्तन्तवो ये वितत्निरे यऽइमं यज्ञꣳस्वधया ददन्ते ।
तेषां छिन्नꣳसम्वेतद्दधामि स्वाहा घर्मोऽअप्येतु देवान् ॥६१॥
यज्ञस्य दोहो विततः पुरुत्रा सोऽअष्टधा दिवमुन्वार्ततान ।
स यंज्ञ धुक्ष्व महि मे प्रजायाꣳरायस्पोषं विश्वमायुरशीय स्वाहा॥६२॥
आपवस्व हिरण्यवदश्ववत्सोम वीरवत्। वाजं गोमन्तमाभर स्वाहा॥६३॥

इत्यष्टमोऽध्यायः॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अथ नवमोऽध्यायः॥

—:०:—

ऋषिः—इन्द्राबृहस्पती १। बृहस्पतिः २-१३। दधिक्रावा १४, १५। वसिष्ठः १६, १८-२५। नाभानेदिष्ठः १७। तापसः २६-३४। वरुणः ३५, ३६। देववातः ३७-४०॥

देवता—सविता १, ५, १३। इन्द्रः २, ३। राजधर्मराजादयः ४। अश्वः ६। सेनापतिः ७। प्रजापतिः ८, १९, २०, २३-२५। वीरः ९। इन्द्राबृहस्पती १०-१२। बृहस्पतिः १४-१८। यज्ञः २१। दिशः २२। सोमाग्न्यादित्यविष्णुसूर्यबृहस्पतयः २६। अर्यमादिमन्त्रोक्ताः २७, २९। अग्निः २८, ३७। सम्राट् ३०। अग्न्यादयो मन्त्रोक्ताः ३१। पूषादयो मन्त्रोक्ताः ३२। मित्रादयो मन्त्रोक्ताः ३३। वस्वादयो मन्त्रोक्ताः ३४। विश्वेदेवाः ३५, ३६। रक्षोघ्नः ३८, ३९। यजमानः ४०॥

छन्दः—स्वराडार्षीत्रिष्टुप् १। आर्षीपङ्क्तिः[क], विकृतिः[र] २। निचृदतिशक्वरी ३। भुरिक्कृतिः ४। भुरिगष्टिः ५। भुरिग्जगती ६। भुरिगुष्णिक् ७। भुरिक्त्रिष्टुप् ८। धृतिः ९। विराडुत्कृतिः १०। जगती ११, १४, १५, १७, २४, ३०। स्वराडतिधृतिः १२। निचृदतिजगती १३। भुरिक्पङ्क्तिः १६। निचृत्त्रिष्टुप् १८। निचृद्धृतिः १९। भुरिक्कृतिः २०। अत्यष्टिः २१। निचृदत्यष्टिः २२। स्वराट्त्रिष्टुप् २३, २५। अनुष्टुप् २६। स्वराडनुष्टुप् २७। भुरिगनुष्टुप् २८। भुरिगार्षगायत्री २९। स्वराडतिधृतिः ३१। कृतिः ३२, ३३। निचृज्जगती[क], निचृद्धृतिः[र] ३४। विराडुत्कृतिः ३५। विकृतिः ३६। निचृदनुष्टुप् ३७। भुरिग्ब्राह्मीबृहती ३८। अतिजगती ३९। स्वराड्ब्राह्मीत्रिष्टुप् ४०॥

स्वरः—धैवतः १, ८, १८, २३, २५, ४०। पञ्चमः[क], मध्यमः[र] २। पञ्चमः ३, १६। निषादः ४, ६, ११, १३-१५, १७, २०, २४, ३०, ३२, ३३, ३९। मध्यमः ५, ३६, ३८। ऋषभः ७, ९, १९। षड्जः १०, १२, २९, ३१, ३५। गान्धारः २१, २२, २६-२८, ३७। निषादः[क], ऋषभः[र] ३४॥

देव॑ सवितः॒ प्रसु॑व य॒ज्ञं प्रसु॑व य॒ज्ञप॑तिं॒ भगा॑य ।
दि॒व्यो ग॑न्ध॒र्वः के॑त॒पूः केतं॑ नः पुनातु वा॒चस्पति॒र्वाजं॑ नः स्वदतु॒ स्वाहा॑॥१॥
[क]ध्रु॒व॒सदं॑ त्वा नृ॒षदं॑ मन॒ःसद॑मुपया॒मगृ॑हीतो॒ऽसीन्द्रा॑य त्वा॒ जुष्टं॑ गृह्णाम्ये॒ष ते॒ योनि॒रिन्द्रा॑य त्वा॒ जुष्ट॑तमम्। [र]अ॒प्सु॒षदं॑ त्वा घृत॒सदं॑ व्योम॒सद॑मुपया॒मगृ॑हीतो॒ऽसीन्द्रा॑य त्वा॒ जुष्टं॑ गृह्णाम्ये॒ष ते॒ योनि॒रिन्द्रा॑य त्वा॒ जुष्ट॑तमम्। पृ॒थि॒वि॒सदं॑ त्वाऽन्तरिक्ष॒सदं॑ दिवि॒सदं॑ देव॒सदं॑ नाक॒सद॑मुपया॒मगृ॑हीतो॒ऽसीन्द्रा॑य त्वा॒ जुष्टं॑ गृह्णाम्ये॒ष ते॒ योनि॒रिन्द्रा॑य त्वा॒ जुष्ट॑तमम् ॥२॥

अ॒पाꣳरस॒मुद्व॑यस॒ꣳसूर्ये॒ सन्त॑ꣳस॒माहि॑तम्।
अ॒पाꣳरस॑स्य॒ यो रस॒स्तं वो॑ गृह्णाम्युत्त॒ममु॑पया॒मगृ॑हीतो॒ऽसीन्द्रा॑य त्वा॒ जुष्टं॑ गृह्णाम्ये॒ष ते॒ योनि॒रिन्द्रा॑य त्वा॒ जुष्ट॑तमम् ॥३॥
ग्रहा॑ऽऊर्जाहुतयो॒ व्यन्तो॒ विप्रा॑य म॒तिम्। तेषां॒ विशि॑प्रियाणां वो॒ऽहमिष॒ममूर्ज॒ꣳसम॑ग्रभमुपया॒मगृ॑हीतो॒ऽसीन्द्रा॑य त्वा॒ जुष्टं॑ गृह्णाम्ये॒ष ते॒ योनि॒रिन्द्रा॑य त्वा॒ जुष्ट॑तमम्। स॒म्पृचौ॑ स्थः॒ सं मा॑ भ॒द्रेण॑ पृङ्क्तं वि॒पृचौ॑ स्थो॒ वि मा॑ पा॒प्मना॑ पृङ्क्तम् ॥४॥
इन्द्र॑स्य॒ वज्रो॑ऽसि वाज॒सास्त्वया॒ऽयं वाज॑ꣳसेत्। वाज॑स्य॒ नु प्र॑स॒वे मा॒तरं॑ म॒हीमदि॑तिं॒ नाम॒ वच॑सा करामहे। यस्या॑मि॒दं विश्वं॒ भुव॑नमावि॒वेश॒ तस्यां॑ नो दे॒वः स॑वि॒ता धर्म॑ साविषत् ॥५॥
अ॒प्स्व॒न्तर॒मृत॑म॒प्सु भे॑ष॒जम॒पामु॒त प्रश॑स्ति॒ष्वश्वा॒ भव॑त वा॒जिनः॑ ।
देवी॑रापो॒ यो व॑ऽऊ॒र्मिः प्रतू॑र्तिः क॒कुन्मा॑न् वाज॒सास्तेना॒यं वाज॑ꣳसेत्॥६॥
वातो॑ वा॒ मनो॑ वा गन्ध॒र्वाः स॒प्तवि॑ꣳशतिः ।
तेऽअग्रेऽश्व॑मयुञ्ज॒ꣳस्तेऽअ॑स्मिन् ज॒वमाद॑धुः ॥७॥
वात॑रꣳहा भव वाजिन् यु॒ज्यमा॑न॒ऽइन्द्र॑स्येव॒ दक्षि॑णः श्रि॒यैधि॑ ।
यु॒ञ्जन्तु॑ त्वा म॒रुतो॑ वि॒श्ववे॑दस॒ऽआ ते॒ त्वष्टा॑ प॒त्सु ज॒वं द॑धातु॥८॥
ज॒वो यस्ते॑ वाजि॒न्निहि॑तो॒ गुहा॒ यः श्ये॒ने परी॑त्तो॒ऽअच॑रच्च॒ वाते॑।
तेन॑ नो वाजि॒न् बल॑वा॒न् बले॑न वाज॒जिच्च॒ भव॒ सम॑ने च पारयि॒ष्णुः।
वाजि॑नो वाजजितो॒ वाज॑ꣳसरि॒ष्यन्तो॒ बृह॒स्पते॑र्भा॒गमव॑जिघ्रत ॥९॥
दे॒वस्या॒हꣳस॑वि॒तुः स॒वे स॒त्यस॑वसो॒ बृह॒स्पते॑रुत्त॒मं नाक॑ꣳरुहेयम् ।
दे॒वस्या॒हꣳस॑वि॒तुः स॒वे स॒त्यस॑वस॒ऽइन्द्र॑स्योत्त॒मं नाक॑ꣳरुहेयम् ।
दे॒वस्या॒हꣳस॑वि॒तुः स॒वे स॒त्यप्र॑सवसो॒ बृह॒स्पते॑रुत्त॒मं नाक॑मरुहम् ।
दे॒वस्या॒हꣳस॑वि॒तुः स॒वे स॒त्यप्र॑सवस॒ऽइन्द्र॑स्योत्त॒मं नाक॑मरुहम् ॥१०॥
बृह॑स्पते॒ वाजं॑ जय॒ बृह॒स्पत॑ये॒ वाचं॑ वदत॒ बृह॒स्पतिं॒ वाजं॑ जापयत।
इन्द्र॒ वाजं॑ ज॒येन्द्रा॑य॒ वाचं॑ वद॒तेन्द्रं॒ वाजं॑ जापयत ॥११॥
ए॒षा वः॒ सा स॒त्या सं॒वाग॑भू॒द्यया॒ बृह॒स्पतिं॒ वाज॒मजी॑जप॒ताजी॑जपत॒ बृह॒स्पतिं॒ वाजं॒ वन॑स्पतयो॒ विमु॑च्यध्वम्। ए॒षा वः॒ सा स॒त्या सं॒वाग॑भू॒द्ययेन्द्रं॒ वाज॒मजी॑जप॒ताजी॑जप॒तेन्द्रं॒ वाजं॒ वन॑स्पतयो॒ विमु॑च्यध्वम्॥१२॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नेवस्याहꣳसवितुः सवे सत्यप्रसवसो बृहस्पतेर्वाजजितो वाजं जेषम्।
वाजिनो वाजजितोऽध्वन स्कभ्नुवन्तो योजना मिमानाः काष्ठां गच्छत॥१३॥
एष स्य वाजी क्षिपणिं तुरण्यति ग्रीवायां बद्धोऽअपिकक्षऽआसनिं।
क्रतुं दधिक्राऽअनु सꣳसनिष्यदत्पथामङ्कांश्यन्वापनीफणत् स्वाहा॥१४॥
उत स्मास्य द्रवतस्तुरण्यतः पर्णं न वेरनुवाति प्रगर्धिनः।
श्येनस्येव ध्रजतोऽअङ्कसं परि दधिक्राव्णः सहोर्जा तरित्रतः स्वाहा॥१५॥
शन्नो भवन्तु वाजिनो हवेषु देवताता मितद्रवः स्वर्काः ।
जम्भयन्तोऽहिं वृकꣳरक्षाꣳसि सनेम्यस्मद्युयवन्नमीवाः ॥१६॥
ते नोऽअर्वन्तो हवनश्रुतो हवं विश्वे शृण्वन्तु वाजिनो मितद्रवः।
सहस्रसा मेधसाता सनिष्यवो महो ये धनꣳसमिथेषु जभ्रिरे॥१७॥
वाजेवाजेऽवत वाजिनो नो धनेषु विप्राऽअमृताऽऋतज्ञाः ।
अस्य मध्वः पिबत मादयध्वं तृप्ता यात पथिभिर्देवयानैः ॥१८॥
आ मा वाजस्य प्रसवो जगम्यादेमे द्यावापृथिवी विश्वरूपे ।
आ मा गन्तां पितरा मातरा चा मा सोमोऽअमृतत्त्वेन गम्यात्।
वाजिनो वाजजितो वाजꣳससृवाꣳसो बृहस्पतेर्भागमवजिघ्रत निमृजानाः॥१९॥
आपये स्वाहा स्वापये स्वाहाऽपिजाय स्वाहा क्रतवे स्वाहा वसवे
स्वाहाऽहूर्पतये स्वाहाऽहे मुग्धाय स्वाहा मुग्धाय वैनꣳ शिनाय
स्वाहा विनꣳशिनऽआन्त्यायनाय स्वाहाऽऽन्त्याय भौवनाय स्वाहा
भुवनस्य पतये स्वाहाऽधिपतये स्वाहा ॥२०॥
आर्युर्यज्ञेन कल्पतां प्राणो यज्ञेन कल्पतां चक्षुर्यज्ञेन कल्पताꣳश्रोत्रं
यज्ञेन कल्पतां पृष्ठं यज्ञेन कल्पतां यज्ञो यज्ञेन कल्पताम् ।
प्रजापतेः प्रजाऽअभूम स्वर्देवाऽअगन्मामृताऽअभूम ॥२१॥
अस्मे वोऽअस्विन्द्रियमस्मे नृम्णमुत क्रतुरस्मे वर्चाꣳसि सन्तु वः।
नमो मात्रे पृथिव्यै नमो मात्रे पृथिव्याऽइयं ते राड्यन्तासि यमनो
ध्रुवोऽसि धरुणः। कृष्यै त्वा क्षेमाय त्वा रय्यै त्वा पोषाय त्वा॥२२॥
वाजस्येमं प्रसवः सुषुवेऽग्रे सोमꣳराजानमोषधीष्वप्सु ।
ताऽअस्मभ्यं मधुमतीर्भवन्तु वयꣳराष्ट्रे जागृयाम पुरोहिताः स्वाहा॥२३॥
वाजस्येमां प्रसवः शिश्रिये दिवमिमा च विश्वा भुवनानि सम्राट्।
अदित्सन्तं दापयति प्रजानन्त्स नो रयिꣳसर्ववीरं नियच्छतु स्वाहा॥२४॥
वाजस्य नु प्रसव आबभूवेमा च विश्वा भुवनानि सर्वतः।
सनेमि राजा परियाति विद्वान्प्रजां पुष्टिं वर्धयमानोऽअस्मे स्वाहा॥२५॥
सोमꣳराजानमवसेऽग्निमन्वारभामहे ।
आदित्यान्विष्णुꣳसूर्य्यं ब्रह्माणं च बृहस्पतिꣳस्वाहा ॥२६॥
अर्य्यमणं बृहस्पतिमिन्द्रं दानाय चोदय ।
वाचं विष्णुꣳसरस्वतीꣳसवितारं च वाजिनꣳस्वाहा ॥२७॥
अग्नेऽअच्छा वदेह नः प्रति नः सुमना भव ।
प्र नो यच्छ सहस्रजित् त्वꣳहि धनदाऽअसि स्वाहा ॥२८॥
प्र नो यच्छत्वर्य्यमा प्र पूषा प्र बृहस्पतिः ।
प्र वाग्देवी ददातु नः स्वाहा ॥२९॥
देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम् ।
सरस्वत्यै वाचो यन्तुर्यन्त्रियं दधामि बृहस्पतेष्ट्वा
साम्राज्येनाभिषिञ्चाम्यसौ ॥३०॥
अग्निरेकाक्षरेण प्राणमुदजयत्तमुज्जेषमश्विनौ द्व्यक्षरेण द्विपदो मनुष्या-
नुदजयतां तानुज्जेषं विष्णुस्त्र्यक्षरेण त्रील्लोँकानुदजयत्तानुज्जेषꣳ
सोमश्चतुरक्षरेण चतुष्पदः पशूनुदजयत्तानुज्जेषम् ॥३१॥
पूषा पञ्चाक्षरेण पञ्च दिशऽउदजयत्ताऽउज्जेषꣳसविता षडक्षरेण
षड् ऋतूनुदजयत्तानुज्जेषं मरुतः सप्ताक्षरेण सप्त ग्राम्यान्
पशूनुदजयँस्तानुज्जेषं बृहस्पतिरष्टाक्षरेण गायत्रीमुदजयत्तामुज्जेषम्॥३२॥
मित्रो नवाक्षरेण त्रिवृत्तꣳस्तोममुदजयत्तमुज्जेषं वरुणो दशाक्षरेण
विराजमुदजयत्तामुज्जेषमिन्द्रऽएकादशाक्षरेण त्रिष्टुभमुदजयत्तामुज्जेषं
विश्वे देवा द्वादशाक्षरेण जगतीमुदजयँस्तामुज्जेषम् ॥३३॥
[क]वसवस्त्रयोदशाक्षरेण त्रयोदशꣳस्तोममुदजयँस्तमुज्जेषꣳरुद्राश्चतुर्दशाक्षरेण
चतुर्दशꣳस्तोममुदजयँस्तमुज्जेषम्। [ख]आदित्याः पञ्चदशाक्षरेण पञ्चदशꣳ
स्तोममुदजयँस्तामुज्जेषमदितिः षोडशाक्षरेण षोडशꣳस्तोममुदजयत्तमुज्जेषं
प्रजापतिः सप्तदशाक्षरेण सप्तदशꣳस्तोममुदजयत्तमुज्जेषम् ॥३४॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

एष ते निर्ऋते भागस्तं जुषस्व स्वाहाऽग्निनेत्रेभ्यो देवेभ्यः पुरःसद्भ्यः स्वाहा यमनेत्रेभ्यो देवेभ्यो दक्षिणासद्भ्यः स्वाहा विश्वदेवनेत्रेभ्यो देवेभ्यः पश्चात्सद्भ्यः स्वाहा मित्रावरुणनेत्रेभ्यो वा मरुन्नेत्रेभ्यो वा देवेभ्यऽउत्तरासद्भ्यः स्वाहा सोमनेत्रेभ्यो देवेभ्यऽउपरिसद्भ्यो दुवस्वद्भ्यः स्वाहा॥३५॥

ये देवाऽअग्निनेत्राः पुरःसदस्तेभ्यः स्वाहा ये देवा यमनेत्रा दक्षिणासदस्तेभ्यः स्वाहा ये देवा विश्वदेवनेत्राः पश्चात्सदस्तेभ्यः स्वाहा ये देवा मित्रावरुणनेत्रा वा मरुन्नेत्रा वोत्तरासदस्तेभ्यः स्वाहा ये देवाः सोमनेत्राऽउपरिसदो दुवस्वन्तस्तेभ्यः स्वाहा ॥३६॥

अग्ने सहस्व पृतनाऽअभिमातीरपास्य ।
दुष्टरस्तरन्नरातीर्वर्चो धा यज्ञवाहसि ॥३७॥

देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम् ।
उपाꣳशोर्वीर्य्येण जुहोमि हुतꣳरक्षः स्वाहा रक्षसां त्वा
वधायावधिषम् रक्षोऽवधिष्मामुमसौ हुतः ॥३८॥

सविता त्वा सवानाꣳसुवतामग्निर्गृहपतीनाꣳसोमो वनस्पतीनाम् ।
बृहस्पतिर्वाचऽइन्द्रो ज्यैष्ठ्याय रुद्रः पशुभ्यो मित्रः सत्यो
वरुणो धर्मपतीनाम् ॥३९॥

इमं देवाऽअसपत्नꣳसुवध्वं महते क्षत्राय महते ज्यैष्ठ्याय
महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय। इमममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै
विशऽएष वोऽमी राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणानाꣳराजा ॥४०॥

इति नवमोऽध्यायः॥

अथ दशमोऽध्यायः॥

—:o:—

ऋषिः—वरुणः १-१७। देववातः १८-२३। वामदेवः २४-२६। शुनःशेपः २७-३४॥

देवता—आपः १, ६। वृषा २। अपांपतिः ३। सूर्यादयो मन्त्रोक्ताः ४। अग्न्यादयो मन्त्रोक्ताः ५, २३। वरुणः ७, २७। यजमानः ८, १०-१४, १८, १९, २८। प्रजापतिः ९, २०। परमात्मा १५। मित्रावरुणौ १६। क्षत्रपतिः १७, २१, ३१, ३२। इन्द्रः २२। सूर्य्यः २४, २५। आसन्दी राजपत्नी २६। अग्निः २९। सवित्रादिमन्त्रोक्ताः ३०। अश्विनौ ३३, ३४॥

छन्दः—निचृदार्षीत्रिष्टुप् १, २२। स्वराड्ब्राह्मीपङ्क्तिः २। अभिकृतिः[क], निचृज्जगती[ख] ३। जगती[१], स्वराट्पङ्क्तिः[२], स्वराड्ब्राह्मीबृहती[३,४], आर्चीपङ्क्तिः[५], भुरिक्त्रिष्टुप्[६,७] ४। स्वराडधृतिः ५। स्वराड्ब्राह्मीबृहती ६। विराडार्षीत्रिष्टुप् ७, २२। कृतिः ८। भुरिगष्टिः ९। विराडार्षीपङ्क्तिः १०। आर्चीपङ्क्तिः ११, १३। निचृदार्ष्यनुष्टुप् १२, ३३। भुरिग्जगती १४, २४। विराडार्चीपङ्क्तिः १५। स्वराडार्षीजगती १६, २९। आर्षीपङ्क्तिः १७। स्वराड्ब्राह्मीत्रिष्टुप् १८। विराड्ब्राह्मीत्रिष्टुप् १९। भुरिगतिधृतिः २०। भुरिग्ब्राह्मीबृहती २१। जगती २३, २५। भुरिगनुष्टुप् २६। पिपीलिकामध्याप्रतिष्ठागायत्री २७। विराड्धृतिः २८। भुरिग्ब्राह्मीत्रिष्टुप् ३०। आर्षीत्रिष्टुप् ३१। निचृद्ब्राह्म्यनुष्टुप् ३२। भुरिक्पङ्क्तिः ३४॥

स्वरः—धैवतः १, ७, १८, १९, २२, ३०-३२। पञ्चमः २, १०, ११, १३, १५, १७, ३४। ऋषभः[क], निषादः[ख] ३। निषादः[१], पञ्चमः[१,५], मध्यमः[१,४], धैवतः[६,७] ४। ऋषभः ५, २८। मध्यमः ६, ९, २१। निषादः ८, १४, १६, २३-२५, २९। गान्धारः १२, २६, ३३। षड्जः २०, २७॥

अपो देवा मधुमतीरगृभ्णन्नूर्जस्वती राजस्वꣳश्चितानाः ।
याभिर्मित्रावरुणावभ्यषिञ्चन् याभिरिन्द्रमनयन्नत्यरातीः ॥१॥

वृष्णऽऊर्मिरसि राष्ट्रदा राष्ट्रं मे देहि स्वाहा वृष्णऽऊर्मिरसि
राष्ट्रदा राष्ट्रममुष्मै देहि वृषसेनोऽसि राष्ट्रदा राष्ट्रं मे
देहि स्वाहा वृषसेनोऽसि राष्ट्रदा राष्ट्रममुष्मै देहि ॥२॥

[क]अर्थेत स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रं मे दत्त स्वाहार्थेत स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रममुष्मै
दत्तौजस्वती स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रं मे दत्त स्वाहौजस्वती स्थ राष्ट्रदा
राष्ट्रममुष्मै दत्तापः परिवाहिणीः स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रं मे दत्त स्वाहापः
परिवाहिणीः स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रममुष्मै दत्तापां पतिरसि राष्ट्रदा राष्ट्रं
मे [ख]देहि स्वाहाऽपां पतिरसि राष्ट्रदा राष्ट्रममुष्मै देह्यपां गर्भोऽसि
राष्ट्रदा राष्ट्रं मे देहि स्वाहाऽपां गर्भोऽसि राष्ट्रदा राष्ट्रममुष्मै देहि॥३॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सूर्यत्वचस स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रं मे दत्त स्वाहा सूर्यत्वचस स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रमुमुष्मै दत्त सूर्यवर्चस स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रं मे दत्त स्वाहा सूर्यवर्चस स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रमुमुष्मै दत्त मान्दा स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रं मे दत्त स्वाहा मान्दा स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रमुमुष्मै दत्त व्रजक्षित स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रं मे दत्त स्वाहा व्रजक्षित स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रमुमुष्मै दत्त वाशा स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रं मे दत्त स्वाहा वाशा स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रमुमुष्मै दत्त शविष्ठा स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रं मे दत्त स्वाहा शविष्ठा स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रमुमुष्मै दत्त शक्वरी स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रं मे दत्त स्वाहा शक्वरी स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रमुमुष्मै दत्त जनभृत स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रं मे दत्त स्वाहा जनभृत स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रमुमुष्मै दत्त विश्वभृत स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रं मे दत्त स्वाहा विश्वभृत स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रममुष्मै दत्तापः स्वराज स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रमुमुष्मै दत्त। मधुमतीर्मधुमतीभिः पृच्यन्तां महि क्षत्रं क्षत्रियाय वन्वानाऽअनाधृष्टाः सीदत सहौजसो महि क्षत्रं क्षत्रियाय दधतीः ॥४॥

सोमस्य त्विषिरसि तवैव मे त्विषिर्भूयात्। अग्नये स्वाहा सोमाय स्वाहा सवित्रे स्वाहा सरस्वत्यै स्वाहा पूष्णे स्वाहा बृहस्पतये स्वाहेन्द्राय स्वाहा घोषाय स्वाहा श्लोकाय स्वाहाऽꣳशाय स्वाहा भगाय स्वाहार्यम्णे स्वाहा ॥५॥

पवित्रे स्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसवऽउत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः। अनिभृष्टमसि वाचो बन्धुस्तपोजाः सोमस्य दात्रमसि स्वाहा राजस्वः ॥६॥

सघमादो द्युम्निनीरापऽएताऽअनाधृष्टाऽअपस्यो वसानाः। पस्त्यासु चक्रे वरुणः सधस्थमपाꣳशिꣳर्मातृतमास्वन्तः ॥७॥

क्षत्रस्योल्बमसि क्षत्रस्य जराय्वसि क्षत्रस्य योनिरसि क्षत्रस्य नाभिरसीन्द्रस्य वार्त्रघ्नमसि मित्रस्यासि वरुणस्यासि त्वयायं वृत्रं वधेत्। दृवासि रुजासि क्षुमासि। पातैनं प्राच्यै पातैनं प्रत्यञ्चै पातैनं तिर्यञ्चै दिग्भ्यः पात ॥८॥

आविर्मर्य्याऽआविक्तोऽअग्निर्गृहपतिराविक्तऽइन्द्रो वृद्धश्रवाऽआविक्तौ मित्रावरुणौ घृतव्रताविक्तः पूषा विश्ववेदाऽआविक्ते द्यावापृथिवी विश्वशम्भुवावाविक्तामदितिरुरुशर्म्मा ॥९॥

अवेष्टा दन्दशूकाः प्राचीमारोह गायत्री त्वावतु रथन्तरꣳसाम त्रिवृत् स्तोमो वसन्तऽऋतुर्ब्रह्म द्रविणम् ॥१०॥

दक्षिणामारोह त्रिष्टुप् त्वावतु बृहत्साम पञ्चदश स्तोमो ग्रीष्मऽऋतुः क्षत्रं द्रविणम् ॥११॥

प्रतीचीमारोह जगती त्वावतु वैरूपꣳसाम सप्तदश स्तोमो वर्षाऽऋतुर्विड् द्रविणम् ॥१२॥

उदीचीमारोहानुष्टुप् त्वावतु वैराजꣳसामैकविꣳश स्तोमः शरदृतुः फलं द्रविणम् ॥१३॥

ऊर्ध्वामारोह पङ्क्तिस्त्वावतु शाक्वररैवते सामनी त्रिणवत्रयस्त्रिꣳशौ स्तोमौ हेमन्तशिशिरावृतू वर्चो द्रविणं प्रत्यस्तं नमुचेः शिरः॥१४॥

सोमस्य त्विषिरसि तवैव मे त्विषिर्भूयात् ।
मृत्योः पाह्योजोऽसि सहोऽस्यमृतमसि ॥१५॥

हिरण्यरूपाऽउषसो विरोकऽउभाविन्द्राऽउदिथः सूर्यश्च। आरोहतं वरुण मित्र गर्त्तं ततश्चक्षाथामदितिं दितिं च मित्रोऽसि वरुणोऽसि॥१६॥

सोमस्य त्वा द्युम्नेनाभिषिञ्चाम्यग्नेर्भ्राजसा सूर्यस्य वर्चसेन्द्रस्येन्द्रियेण क्षत्राणां क्षत्रपतिरेध्यधि दिद्यून् पाहि ॥१७॥

इमं देवाऽअसपत्नꣳसुवध्वं महते क्षत्राय महते ज्यैष्ठ्याय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय। इमममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विशऽएष वोऽमी राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणानाꣳराजा ॥१८॥

प्र पर्वतस्य वृषभस्य पृष्ठान्नावश्चरन्ति स्वसिचऽइयानाः ।
ताऽआववृत्रन्नधरागुदक्ताऽअहिं बुध्न्यमनु रीयमाणाः ।
विष्णोर्विक्रमणमसि विष्णोर्विक्रान्तमसि विष्णोः क्रान्तमसि ॥१९॥

प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा रूपाणि परि ता बभूव ।
यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नोऽअस्त्वयममुष्य पिताऽसावस्य पिता वयꣳस्याम पतयो रयीणाꣳस्वाहा। रुद्र यत्ते क्रिवि परं नाम तस्मिन् हुतमस्यमेष्टमसि स्वाहा ॥२०॥

इन्द्रस्य वज्रोऽसि मित्रावरुणयोस्त्वा प्रशास्त्रोः प्रशिषा युनज्मि।
अव्यथायै त्वा स्वधायै त्वाऽरिष्टो अर्जुनो मरुतां प्रसवेन [illegible] ॥२१॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मा तऽइन्द्र ते वयं तुराषाडयुक्तासोऽअब्रह्मता विदसाम ।
तिष्ठा रथमधि यं वज्रहस्ता रश्मीन्देव यमसे स्वश्वान् ॥२२॥
अग्नये गृहपतये स्वाहा सोमाय वनस्पतये स्वाहा
मरुतामोजसे स्वाहेन्द्रस्येन्द्रियाय स्वाहा ।
पृथिवि मातर्मा मा हिꣳसीर्मोऽअहं त्वाम् ॥२३॥
हꣳसः शुचिषद्वसुरन्तरिक्षसद्धोता वेदिषदतिथिर्दुरोणसत् ।
नृषद्वरसदृतसद्व्योमसदब्जा गोजाऽऋतजाऽअद्रिजाऽऋतं बृहत् ॥२४॥
इयदस्यायुरस्यायुर्मयि धेहि युङ्क्ष्वसि वर्चोऽसि वर्चो मयि
धेह्यूर्गस्यूर्ज्जं मयि धेहि। इन्द्रस्य वां वीर्यकृतो बाहूऽअभ्युपावहरामि॥२५॥
स्योनासि सुषदासि क्षत्रस्य योनिरसि ।
स्योनामासीद सुषदामासीद क्षत्रस्य योनिमासीद ॥२६॥
निषसाद धृतव्रतो वरुणः पस्त्यास्वा। साम्राज्याय सुक्रतुः ॥२७॥
अभिभूरस्येतास्ते पञ्च दिशः कल्पन्तां ब्रह्मँस्त्वं ब्रह्मासि सवितासि
सत्यप्रसवो वरुणोऽसि सत्यौजाऽइन्द्रोऽसि विशौजा रुद्रोऽसि सुशेवः।
बहुकार श्रेयस्कर भूयस्करेन्द्रस्य वज्रोऽसि तेन मे रध्य ॥२८॥
अग्निः पृथुर्धर्मंणस्पतिर्जुषाणोऽअग्निः पृथुर्धर्मंणस्पतिराज्यस्य वेतु स्वाहा।
स्वाहाकृताः सूर्यस्य रश्मिभिर्यतध्वꣳसजाताना मध्यमेष्ठ्याय ॥२९॥
सवित्रा प्रसवित्रा सरस्वत्या वाचा त्वष्ट्रा रूपैः पूष्णा पशुभि-
रिन्द्रेणास्मे बृहस्पतिना ब्रह्मणा वरुणेनौजसाऽग्निना तेजसा
सोमेन राज्ञा विष्णुना दशम्या देवतया प्रसूतः प्रसर्पामि ॥३०॥
अश्विभ्यां पच्यस्व सरस्वत्यै पच्यस्वेन्द्राय सुत्राम्णे पच्यस्व ।
वायुः पूतः पवित्रेण प्रत्यङ् सोमो अतिस्रुतः। इन्द्रस्य युज्यः सखा॥३१॥
कुविदङ्ग यवमन्तो यवं चिद्यथा दान्त्यनुपूर्वं वियूय ।
इहेहैषां कृणुहि भोजनानि ये बर्हिषो नमऽउक्तिं यजन्ति ।
उपयामगृहीतोऽस्यश्विभ्यां त्वा सरस्वत्यै त्वेन्द्राय त्वा सुत्राम्णे॥३२॥
युवꣳसुराममश्विना नमुचावासुरे सचा ।
विपिपाना शुभस्पतीऽइन्द्रं कर्मस्ववतम् ॥३३॥
पुत्रमिव पितरावश्विनोभेन्द्रावथुः काव्यैर्दꣳसनाभिः ।
यत्सुरामं व्यपिबः शचीभिः सरस्वती त्वा मघवन्नभिष्णक् ॥३४॥

इति दशमोऽध्यायः॥

अथैकादशोऽध्यायः॥

—:o:—

ऋषिः—प्रजापतिः १-११। नाभानेदिष्ठः १२, ७५-८३। कुश्रिः १३। शुनःशेपः १४-१६। पुरोधाः १७। मयोभूः १८-२२। गृत्समदः २३, २४, २७-३१, ३६। सोमकः २५। पायुः २६। भरद्वाजः ३२-३४। देवश्रवो देववातः ३५। प्रस्कण्वः ३७। सिन्धुद्वीपः ३८-४०, ५०-६१। विश्वमनाः ४१। कण्वः ४२। त्रितः ४३, ४४, ४६-४८। चित्रः ४५। उत्कीलः ४९। विश्वामित्रः ६२-६६। आत्रेयः ६७-६९। सोमाहुतिः ७०। विरूपः ७१। वारुणिः ७२। जमदग्निः ७३-७४॥

देवता—सविता १-११, ६३, ६७। वाजी १२, १३। क्षत्रपतिः १४, २०। गणपतिः १५। अग्निः १६-१९, २४-२९, ३२-३४, ३६, ३७, ४०-४९, ७०-७८। त्रिणोदाः २१, २२। प्रजापतिः २३। दम्पती ३०। जायापती ३१। होता ३५। आपः ३८, ५०-५२। वायुः ३९। मित्रः ५३, ६२, ६४। रुद्रः ५४। सिनीवाली ५५। अदितिः ५६, ५७, ५९। वसुरुद्रादित्यविश्वेदेवाः ५८। वस्वादयो मन्त्रोक्ताः ६०। आदित्यादयो लिङ्गोक्ताः ६१। वस्वादयो लिङ्गोक्ताः ६५। अग्न्यादयो मन्त्रोक्ताः ६६। अम्बा ६८, ६९। सेनापतिः ७९। अध्यापकोपदेशकौ ८०। पुरोहितयजमानौ ८१। सभापतिर्यजमानः ८२। यजमानपुरोहितौ ८३॥

छन्दः—विराडार्ष्यनुष्टुप् १, ३०। शङ्कुमतीगायत्री २। निचृदनुष्टुप् ३, १८, १९, ३१, ७३, ७९। जगती ४। भुरिक्पङ्क्तिः ५, ११, १६। निचृदार्षीजगती ६। आर्षीत्रिष्टुप् ७, २३, ३२, ३६, ४९, ५९, ६९। भुरिक्शक्वरी ८। भुरिगतिशक्वरी ९। भुरिगनुष्टुप् १०, ४०, ४१, ४८, ७७। आर्षीपङ्क्तिः २१, २४, २७। आस्तारपङ्क्तिः १२। गायत्री १३, १४, ५०-५२, ६८। आर्षीजगती १५। निचृदार्षीत्रिष्टुप् १७, २२, ३५। निचृदार्षीबृहती २०, ३७। निचृद्गायत्री २५, ३३, ३४, ६२। अनुष्टुप् २६, ५४, ६४, ६७, ८०। प्रकृतिः २८। स्वराट्पङ्क्तिः २९। न्यङ्कुसारिणीबृहती ३८। विराट्त्रिष्टुप् ३९, ४३, ७५। उपरिष्टाद्बार्हती ४२, ५३, ८३। विराडनुष्टुप् ४४, ५५, ५६, ७४, ८२। विराट्पथ्याबृहती ४५। बार्हीबृहती ४६। विराड्बार्हीत्रिष्टुप् ४७, ६६। भुरिग्बृहती ५७, ६३। स्वराटसंकृतिः॑, अभिकृतिः॒ ५८। स्वराट्संकृतिः ६०। भुरिक्कृतिः॑, निचृत्प्रकृतिः॒ ६१। भुरिग्धृतिः ६५। विराड्गायत्री ७०, ७१। भुरिगुष्णिक् ७२, ७८। स्वराडार्षीत्रिष्टुप् ७६। निचृदार्षीपङ्क्तिः ८१॥

स्वरः—गान्धारः १, ३, १०, १८, १९, २६, ३०, ३१, ४०, ४१, ४४, ४८, ५४-५६, ६०, ६४, ६७, ७३, ७४, ७७, ७९, ८०, ८२। षड्जः २, १३, १४, २५, ३३, ३४, ५०-५२, ६२, ६८, ७०, ७१। निषादः ४, ६, १५। पञ्चमः ५, ९, ११, १२, १६, २१, २४, २७, २९, ८१। धैवतः ७, ८, १७, २२, २३, २८, ३२, ३५, ३६, ३९, ४३, ४७, ४९, ५९, ६६, ६९, ७५, ७६। मध्यमः २०, ३७, ३८, ४२, ४५, ४६, ५३, ५७, ६३, ८३। गान्धारः॑, ऋषभः॒ ५८। निषादः॑, धैवतः॒ ६१। ऋषभः ६५, ७२, ७८॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

युञ्जानः प्रथमं मनस्तत्त्वाय सविता धियः ।
अग्नेर्ज्योतिर्निचाय्य पृथिव्याऽअध्याभरत् ॥१॥
युक्तेन मनसा वयं देवस्य सवितुः सवे। स्वर्ग्याय शक्त्या ॥२॥
युक्त्वाय सविता देवान्त्स्वर्य्यतो धिया दिवम् ।
बृहज्ज्योतिः करिष्यतः सविता प्रसुवाति तान् ॥३॥
युञ्जते मनऽउत युञ्जते धियो विप्रा विप्रस्य बृहतो विपश्चितः।
वि होत्रा दधे वयुनाविदेकऽइन्मही देवस्य सवितुः परिष्टुतिः॥४॥
युजे वां ब्रह्म पूर्व्यं नमोभिर्वि श्लोकऽएतु पथ्येव सूरेः ।
शृण्वन्तु विश्वेऽअमृतस्य पुत्राऽआ ये धामानि दिव्यानि तस्थुः॥५॥
यस्य प्रयाणमन्वन्यऽइद्ययुर्देवा देवस्य महिमानमोजसा ।
यः पार्थिवानि विममे सऽएतशो रजाꣳसि देवः सविता महित्वना॥६॥
देवं सवितुः प्रसुव यज्ञं प्रसुव यज्ञपतिं भगाय ।
दिव्यो गन्धर्वः केतपूः केतन्नः पुनातु वाचस्पतिर्वाचं नः स्वदतु॥७॥
इमं नो देव सवितर्यज्ञं प्रणय देवाव्यꣳसखिविदꣳसत्राजितं धनजितमꣳस्वर्जितम्।
ऋचा स्तोमꣳसमर्धय गायत्रेण रथन्तरं बृहद्गायत्रवर्त्तनि स्वाहा॥८॥
देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम् ।
आददे गायत्रेण छन्दसाङ्गिरस्वत्पृथिव्याः सधस्थादग्निं
पुरीष्यमङ्गिरस्वदाभरं त्रैष्टुभेन छन्दसाङ्गिरस्वत् ॥९॥
अभ्रिरसि नार्यसि त्वया वयमग्निꣳशकेम खनितुꣳसधस्थ आ ।
जागतेन छन्दसाङ्गिरस्वत् ॥१०॥
हस्तऽआधाय सविता बिभृदग्निꣳहिरण्ययीम् ।
अग्नेर्ज्योतिर्निचाय्य पृथिव्याऽअध्याभरदानुष्टुभेन छन्दसाङ्गिरस्वत्॥११॥
प्रतूर्तं वाजिन्नाद्रव वरिष्ठामनु संवतम् ।
दिवि ते जन्म परममन्तरिक्षे तव नाभिः पृथिव्यामधि योनिरित्॥१२॥
युञ्जाथाꣳरासभं युवमस्मिन् यामे वृषण्वसू। अग्निं भरन्तमस्मयुम्॥१३॥
योगेयोगे तवस्तरं वाजेवाजे हवामहे। सखाय इन्द्रमूतये ॥१४॥
प्रतूर्वन्नेह्यवक्रामन्नशस्ती रुद्रस्य गाणपत्यं मयोभूरेहि ।
उर्वन्तरिक्षं वीहि स्वस्तिगव्यूतिरभयानि कृण्वन् पूष्णा सयुजा सह॥१५॥
पृथिव्याः सधस्थादग्निं पुरीष्यमङ्गिरस्वदाभराग्निं पुरीष्यमङ्गिरस्वद-
च्छेमोऽग्निं पुरीष्यमङ्गिरस्वद्धरिष्यामः ॥१६॥

अन्वग्निरुषसामग्रमक्ख्यदन्वहानि प्रथमो जातवेदाः ।
अनु सूर्यस्य पुरुत्रा च रश्मीननु द्यावापृथिवीऽआततन्थ ॥१७॥
आगत्य वाज्यध्वानꣳसर्वा मृधो विधूनुते ।
अग्निꣳसधस्थे महति चक्षुषा निचिकीषते ॥१८॥
आक्रम्य वाजिन् पृथिवीमग्निमिच्छ रुचा त्वम् ।
भूम्या वृत्वाय नो ब्रूहि यतः खनेम तं वयम् ॥१९॥
द्यौस्ते पृष्ठं पृथिवी सधस्थमात्मान्तरिक्षꣳसमुद्रो योनिः ।
विख्याय चक्षुषा त्वमभि तिष्ठ पृतन्यतः ॥२०॥
उत्क्रामं महते सौभगायास्मादास्थानाद् द्रविणोदा वाजिन् ।
वयꣳस्याम सुमतौ पृथिव्याऽअग्निं खनन्तऽउपस्थेऽअस्याः ॥२१॥
उदक्रमीद् द्रविणोदा वाज्यर्वाकः सुलोकꣳसुकृतं पृथिव्याम् ।
ततः खनेम सुप्रतीकमग्निꣳस्वो रुहाणाऽअधि नाकमुत्तमम् ॥२२॥
आ त्वा जिघर्मि मनसा घृतेन प्रतिक्षियन्तं भुवनानि विश्वा ।
पृथुं तिरश्चा वयसा बृहन्तं व्यचिष्ठमन्नै रभसं दृशानम् ॥२३॥
आ विश्वतः प्रत्यञ्चं जिघर्म्यरक्षसा मनसा तज्जुषेत ।
मर्य्यश्री स्पृहयद्वर्णोऽअग्निर्नाभिमृशे तन्वा जभुराणः ॥२४॥
परि वाजपतिः कविरग्निर्हव्यान्यक्रमीत्। दधद्रत्नानि दाशुषे ॥२५॥
परि त्वाग्ने पुरं वयं विप्रꣳसहस्य धीमहि ।
धृषद्वर्णं दिवेदिवे हन्तारं भङ्गुरावताम् ॥२६॥
त्वमग्ने द्युभिस्त्वमाशुशुक्षणिस्त्वमद्भ्यस्त्वमश्मन्नस्परि ।
त्वं वनेभ्यस्त्वमोषधीभ्यस्त्वं नृणां नृपते जायसे शुचिः ॥२७॥
देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम् ।
पृथिव्याः सधस्थादग्निं पुरीष्यमङ्गिरस्वत् खनामि। ज्योतिष्मन्तं
त्वाग्ने सुप्रतीकमजस्रेण भानुना दीद्यतम्। शिवं प्रजाभ्योऽहिꣳसन्तं
पृथिव्याः सधस्थादग्निं पुरीष्यमङ्गिरस्वत् खनामः ॥२८॥
अपां पृष्ठमसि योनिरग्नेः समुद्रमभितः पिन्वमानम् ।
वर्धमानो महाँऽआ च पुष्करे दिवो मात्रया वरिम्णा प्रथस्व॥२९॥
शर्म च स्थो वर्म च स्थोऽछिद्रे बहुलेऽउभे ।
व्यचस्वती संवसाथां भृतमग्निं पुरीष्यम् ॥३०॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

संव॑साथाꣳस्व॒र्विदा॑ स॒मीची॒ऽउर॑सा॒ त्मना॑ ।
अ॒ग्निम॒न्तर्भ॑रि॒ष्यन्ती॒ ज्योति॑ष्म॒न्तमज॑स्र॒मित् ॥३१॥
पु॒री॒ष्यो॒ऽसि वि॒श्वभ॑रा॒ऽअथ॑र्वा त्वा प्रथ॒मो निर॑मन्थदग्ने ।
त्वाम॑ग्ने॒ पुष्क॑रा॒दध्यथ॑र्वा॒ निर॑मन्थत। मू॒र्ध्नो विश्व॑स्य वा॒घतः॑॥३२॥
तमु॑ त्वा द॒ध्यङ्ङृषिः॑ पु॒त्रऽई॑धे॒ऽअथ॑र्वणः। वृ॒त्र॒हणं॑ पुरन्द॒रम्॥३३॥
तमु॑ त्वा पा॒थ्यो वृषा॒ समी॑धे दस्यु॒हन्त॑मम्। ध॒न॒ञ्ज॒यꣳरणे॑रणे॥३४॥
सीद॑ होतः॒ स्वऽउ॑ लो॒के चि॑कि॒त्वान्त्सा॒दया॑ य॒ज्ञꣳसु॑कृ॒तस्य॒ योनौ॑।
दे॒वा॒वीर्दे॒वान् ह॒विषा॑ यजा॒स्यग्ने॑ बृ॒हद्यज॑माने॒ वयो॑ धाः ॥३५॥
नि होता॑ होतृ॒षद॑ने॒ विदा॑नस्त्वे॒षो दी॑दि॒वाँ२ऽअ॑सदत्सु॒दक्षः॑ ।
अद॑ब्धव्रतप्रमति॒र्वसि॑ष्ठः सहस्रम्भ॒रः शुचि॑जिह्वोऽअ॒ग्निः ॥३६॥
सꣳसी॑दस्व म॒हाँ२ऽअ॑सि॒ शोच॑स्व देव॒वीत॑मः ।
वि धू॒मम॑ग्नेऽअरु॒षं मि॑येध्य सृ॒ज प्र॑शस्त दर्श॒तम् ॥३७॥
अ॒पो दे॒वीरुप॑सृज॒ मधु॑मतीरय॒क्ष्माय॑ प्र॒जाभ्यः॑ ।
तासा॑मा॒स्थना॒दुज्जि॑हता॒मोष॑धयः सुपिप्प॒लाः ॥३८॥
सं ते॑ वा॒युर्मा॑त॒रिश्वा॑ दधातूत्ता॒नाया॒ हृद॑यं॒ यद्विक॑स्तम् ।
यो दे॒वानां॒ चर॑सि प्रा॒णथे॑न॒ कस्मै॑ देव॒ वष॑डस्तु॒ तुभ्य॑म् ॥३९॥
सुजा॑तो॒ ज्योति॑षा॒ स॒ह शर्म॒ वरू॑थ॒मास॑द॒त्स्वः॒ ।
वासो॑ऽअग्ने वि॒श्वरू॑प॒ꣳसंव्य॑यस्व विभावसो ॥४०॥
उदु॑ तिष्ठ स्वध्व॒रावा॑ नो दे॒व्या धि॒या ।
दृ॒शे च॑ भा॒सा बृ॑ह॒ता सु॑शु॒क्वनि॒राग्ने॑ याहि सुश॒स्तिभिः॑ ॥४१॥
ऊ॒र्ध्वऽऊ॒ षु ण॑ऽऊ॒तये॒ तिष्ठा॑ दे॒वो न स॑वि॒ता ।
ऊ॒र्ध्वो वाज॑स्य॒ सनि॑ता॒ यद॒ञ्जिभि॑र्वा॒घद्भि॑र्वि॒ह्वया॑महे ॥४२॥
स जा॒तो गर्भो॑ऽअसि॒ रोद॑स्यो॒रग्ने॒ चारु॒र्विभृ॑त॒ऽओष॑धीषु ।
चि॒त्रः शिशुः॒ परि॒ तमा॑ꣳस्य॒क्तून् प्र मा॒तृभ्यो॒ऽअधि॒ कनि॑क्रदद् गाः॥४३॥
स्थि॒रो भ॑व वी॒ड्व॒ङ्गऽआ॒शुर्भ॑व वा॒ज्य॒र्वन् ।
पृ॒थुर्भ॑व सु॒षद॒स्त्वम॒ग्नेः पु॑रीष॒वाह॑णः ॥४४॥
शि॒वो भ॑व प्र॒जाभ्यो॒ मानु॑षीभ्य॒स्त्वम॑ङ्गिरः ।
मा द्यावा॑पृथि॒वीऽअ॒भि शो॑ची॒र्मान्तरि॑क्षं॒ मा वन॒स्पती॑न् ॥४५॥
प्रैतु॑ वा॒जी कनि॑क्रद॒न्नान॑द॒द्रास॑भः॒ पत्वा॑। भर॑न्न॒ग्निं पु॑री॒ष्यं॒ मा पा॒द्यायु॑षः
पु॒रा। वृषा॒ग्निं वृष॑णं॒ भर॑न्न॒पां गर्भ॑ꣳसमु॒द्रिय॑म्। अग्न॒ऽआया॑हि वी॒तये॑॥४६॥

ऋ॒तꣳस॒त्यमृ॒तꣳस॒त्यम॒ग्निं पु॑री॒ष्य॒मङ्गिर॒स्वद्भ॑रामः ।
ओष॑धयः॒ प्रति॑मोदध्वम॒ग्निमे॒तꣳशि॒वमा॒यन्त॑म॒भ्यत्र॑ यु॒ष्माः ।
व्यस्य॒न् विश्वा॒ऽअनि॑रा॒ऽअमी॑वा नि॒षीद॑न्नो॒ऽअप॑ दुर्म॒तिं ज॑हि ॥४७॥
ओष॑धयः॒ प्रति॑गृभ्णीत॒ पुष्प॑वतीः सुपिप्प॒लाः ।
अ॒यं वो॑ गर्भ॑ऽऋ॒त्वियः॑ प्र॒त्नꣳस॒धस्थ॒मास॑दत् ॥४८॥
वि पाज॑सा पृ॒थुना॒ शोशु॑चानो॒ बाध॑स्व द्वि॒षो र॒क्षसो॒ऽअमी॑वाः ।
सु॒शर्म॑णो बृह॒तः शर्म॑णि स्याम॒ग्नेर॒हꣳसु॒हव॑स्य॒प्रणी॑तौ ॥४९॥
आपो॒ हि ष्ठा म॑यो॒भुव॒स्ता न॑ऽऊ॒र्जे द॑धातन। म॒हे रणा॑य॒ चक्ष॑से॥५०॥
यो वः॑ शि॒वत॑मो॒ रस॒स्तस्य॑ भाजयते॒ह नः॑। उ॒श॒तीरि॑व मा॒तरः॑॥५१॥
तस्मा॒ऽअरं॑ गमाम वो॒ यस्य॒ क्षया॑य॒ जिन्व॑थ। आपो॑ ज॒नय॑था च नः॥५२॥

मि॒त्रः स॒ꣳसृज्य॑ पृथि॒वीं भूमिं॑ च॒ ज्योति॑षा स॒ह।
सुजा॑तं जा॒तवे॑दसमय॒क्ष्माय॑ त्वा॒ सꣳसृ॑जामि प्र॒जाभ्यः॑॥५३॥
रु॒द्राः स॒ꣳसृज्य॑ पृथि॒वीं बृ॒हज्ज्योतिः॒ समी॑धिरे ।
तेषां॑ भा॒नुरज॑स्र॒ऽइच्छु॒क्रो दे॒वेषु॑ रोचते ॥५४॥
सꣳसृ॑ष्टां॒ वसु॑भी रु॒द्रैर्धीरैः॑ कर्म॒ण्यां॒ मृद॑म् ।
हस्ता॑भ्यां मृ॒द्वीं कृ॒त्वा सि॑नीवा॒ली कृ॑णोतु॒ ताम् ॥५५॥
सि॒नी॒वा॒ली सु॑कप॒र्दा सु॑कुरी॒रा स्वौ॑प॒शा ।
सा तुभ्य॑मदिते म॒ह्योखां द॑धातु॒ हस्त॑योः ॥५६॥

उ॒खां कृ॑णोतु॒ शक्त्या॑ बा॒हुभ्या॒मदि॑तिर्धि॒या ।
मा॒ता पु॒त्रं यथो॒पस्थे॒ साग्निं बि॑भर्त्तु॒ गर्भ॒ऽआ। म॒खस्य॒ शिरो॑ऽसि॥५७॥
वस॑वस्त्वा कृण्वन्तु गाय॒त्रेण॒ छन्द॑साऽङ्गिर॒स्वद् ध्रु॒वासि॑ पृथि॒व्य॒सि
धा॒रया॒ मयि॑ प्र॒जाꣳरा॒यस्पोषं॑ गौप॒त्यꣳसु॒वीर्य॑ꣳसजा॒तान्यज॑मानाय
रु॒द्रास्त्वा॑ कृण्वन्तु॒ त्रैष्टु॑भेन॒ छन्द॑साऽङ्गिर॒स्वद् ध्रु॒वास्य॒न्तरि॑क्षमसि
धा॒रया॒ मयि॑ प्र॒जाꣳरा॒यस्पोषं॑ गौप॒त्यꣳसु॒वीर्य॑ꣳसजा॒तान्यज॑मानायाऽऽ
दि॑त्यास्त्वा॑ कृण्वन्तु॒ जाग॑तेन॒ छन्द॑साऽङ्गिर॒स्वद् ध्रु॒वासि॒ द्यौर॑सि
धा॒रया॒ मयि॑ प्र॒जाꣳरा॒यस्पोषं॑ गौप॒त्यꣳसु॒वीर्य॑ꣳसजा॒तान्यज॑मानाय॒
विश्वे॑ त्वा दे॒वा वै॑श्वान॒राः कृ॑ण्व॒न्त्वानु॑ष्टुभेन॒ छन्द॑साङ्गिर॒स्वद्
ध्रु॒वासि॒ दिशो॑ऽसि धा॒रया॒ मयि॑ प्र॒जाꣳरा॒यस्पोषं॑ गौप॒त्यꣳसु॒वीर्य॑ꣳ
सजा॒तान्यज॑मानाय ॥५८॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अदितये रास्नास्यदितिष्टे बिलं गृभ्णातु। कृत्वाय सा महीमुखां
मृन्मयीं योनिमग्नये। पुत्रेभ्यः प्रायच्छददितिः श्रपयानिति ॥५९॥
वसवस्त्वा धूपयन्तु गायत्रेण छन्दसाङ्गिरस्वद् रुद्रास्त्वा धूपयन्तु
त्रैष्टुभेन छन्दसाङ्गिरस्वदादित्यास्त्वा धूपयन्तु जागतेन छन्दसाङ्गिर-
स्वद् विश्वे त्वा देवा वैश्वानरा धूपयन्त्वानुष्टुभेन छन्दसाङ्गिरस्व-
दिन्द्रस्त्वा धूपयतु वरुणस्त्वा धूपयतु विष्णुस्त्वा धूपयतु ॥६०॥
*अदितिष्ट्वा देवी विश्वदेव्यावती पृथिव्याः सुधस्थेऽअङ्गिरस्वत्
खनत्ववट देवानां त्वा पत्नीर्देवीर्विश्वदेव्यावतीः पृथिव्याः सुधस्थेऽ
अङ्गिरस्वद्धंतूखे धिषणास्त्वा देवीर्विश्वदेव्यावतीः पृथिव्याः
सुधस्थेऽअङ्गिरस्वदुभीन्धतामुखे वरूत्रीष्ट्वा देवीर्विश्वदेव्यावतीः
पृथिव्याः सुधस्थेऽअङ्गिरस्वच्छूपयन्तूखे ग्नास्त्वा देवीर्विश्वदेव्यावतीः
पृथिव्याः सुधस्थेऽअङ्गिरस्वत्पचन्तूखे जनयस्त्वाऽछिन्नपत्रा देवीर्विश्व-
देव्यावतीः पृथिव्याः सुधस्थेऽअङ्गिरस्वत्पचन्तूखे ॥६१॥
मित्रस्य चर्षणीधृतोऽवो देवस्य सानसि। द्युम्नं चित्रश्रवस्तमम् ॥६२॥
देवस्त्वा सवितोद्वपतु सुपाणिः स्वङ्गुरिः सुबाहुरुत शक्त्या ।
अव्यथमाना पृथिव्यामाशा दिशऽआपृण ॥६३॥
उत्थाय बृहती भवोदु तिष्ठ ध्रुवा त्वम् ।
मित्रैतां तऽउखां परिदधाम्यभित्याऽएषा मा भेदि ॥६४॥
वसवस्त्वाछृन्दन्तु गायत्रेण छन्दसाङ्गिरस्वदुद्वास्त्वाछृन्दन्तु त्रैष्टुभेन
छन्दसाङ्गिरस्वदादित्यास्त्वाछृन्दन्तु जागतेन छन्दसाङ्गिरस्वद्विश्वे त्वा
देवा वैश्वानराऽआछृन्दन्त्वानुष्टुभेन छन्दसाङ्गिरस्वत् ॥६५॥
आकूतिमग्निं प्रयुजꣳस्वाहा मनो मेधामग्निं प्रयुजꣳस्वाहा चित्तं
विज्ञातमग्निं प्रयुजꣳस्वाहा वाचो विधृतिमग्निं प्रयुजꣳस्वाहा
प्रजापतये मनवे स्वाहाऽग्नये वैश्वानराय स्वाहा ॥६६॥
विश्वो देवस्य नेतुर्मर्तो वुरीत सख्यम् ।
विश्वो राय इषुध्यति द्युम्नं वृणीत पुष्यसे स्वाहा ॥६७॥
मा सु भित्था मा सु रिषोऽष्टे ध्रुष्णु वीरयस्व सु ।
अग्निश्चेदं करिष्यथः ॥६८॥
दृꣳहस्व देवि पृथिवि स्वस्तयऽआसुरी माया स्वधया कृतासि।
जुष्टं देवेभ्यऽइदमस्तु हव्यमरिष्टा त्वमुदिहि यज्ञेऽअस्मिन् ॥६९॥
द्ववन्नः सुपिरासुतिः प्रनो होता वरेण्यः। सहसस्पुत्रोऽअद्भुतः ॥७०॥
परस्याऽअधि संवतोऽवराँ२ऽअभ्यातर। यत्राहमस्मि ताँ२॥ऽअव ॥७१॥
परमस्याः परावतो रोहिदश्वऽइहागहि ।
पुरीष्यः पुरुप्रियोऽग्ने त्वन्तरा मृधः ॥७२॥
यदग्ने कानि कानि चिदा ते दारूणि दध्मसि ।
सर्वं तदस्तु ते घृतं तज्जुषस्व यविष्ठ्य ॥७३॥
यदत्त्युपजिह्विका यद्वम्रोऽअतिसर्पति ।
सर्वं तदस्तु ते घृतं तज्जुषस्व यविष्ठ्य ॥७४॥
अहरहर्प्रयावं भरन्तोऽश्वायेव तिष्ठते घासमस्मै ।
रायस्पोषेण समिषा मदन्तोऽग्ने मा ते प्रतिवेशा रिषाम॥७५॥
नाभा पृथिव्याः समिधानेऽअग्नौ रायस्पोषाय बृहते हवामहे।
इरम्मदं बृहदुक्थं यजत्रं जेतारमग्निं पृतनासु सासहिम्॥७६॥
याः सेनाऽअभीत्वरीराव्याधिनीरुगणाऽउत ।
ये स्तेना ये च तस्करास्ताँस्तेऽअग्नेऽपिदधाम्यास्ये ॥७७॥
दꣳष्ट्राभ्यां मलिम्लून् जम्भ्यैस्तस्करा२॥ऽउत ।
हनुभ्याꣳस्तेनान् भगवस्ताँस्त्वं खाद सुखादितान् ॥७८॥
ये जनेषु मलिम्लव स्तेनासस्तस्करा वने ।
ये कक्षेष्वघायवस्ताँस्ते दधामि जम्भयोः ॥७९॥
योऽअस्मभ्यमरातीयाद्यश्च नो द्वेषते जनः ।
निन्दाद्योऽअस्मान् धिप्साच्च सर्वं तं मस्मसा कुरु ॥८०॥
सꣳशितं मे ब्रह्म सꣳशितं वीर्यं बलम् ।
सꣳशितं क्षत्रं जिष्णु यस्याहमस्मि पुरोहितः ॥८१॥
उदेषां बाहूऽअतिरमुद्वर्चोऽअथो बलम् ।
क्षिणोमि ब्रह्मणामित्रानुन्नयामि स्वाँ२॥ऽअहम् ॥८२॥
अन्नपतेऽन्नस्य नो देह्यनमीवस्य शुष्मिणः ।
प्रप्र दातार तारिषऽऊर्जं नो धेहि द्विपदे चतुष्पदे ॥८३॥

इत्येकादशोऽध्यायः॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अथ द्वादशोऽध्यायः॥

—:o:—

ऋषिः—वत्सप्रीः १, ६-१०, १८-२९, ३३, ४०, ४१। कुत्सः २। श्यावाश्वः ३-५। ध्रुवः ११। शुनःशेपः १२। त्रितः १३-१७। विरूपाक्षः ३०। विरूपः ३६-३९, ११६। तापसः ३१, ३२। वसिष्ठः ३४, ३५। दीर्घतमा ४२। सोमाहुतिः ४३-४६। विश्वामित्रः ४७-५४। प्रियमेधाः ५५। सुतजेतृमधुच्छन्दाः ५६। मधुच्छन्दाः ५७-६५। विश्वावसुः ६६-६८। कुमारहारितः ६९-७४। भिषग् ७५-९०। वरुणः ९१-१०१। हिरण्यगर्भः १०२-१०५। पावकाग्निः १०६-१११। गोतमः ११२-११४। वत्सारः ११५। प्रजापतिः ११७॥

देवता—अग्निः १, २, ६-११, १३, १५-३४, ३६-४४, ४६-५४, ५७-५९, ६६, १०३, १०४, १०६, १०८, १०९, १११, ११५-११७। सविता ३। गरुत्मान् ४। विष्णुः ५। वरुणः १२। जीवेश्वरौ १४। आपः ३५, ५५। पितरः ४५। इन्द्रः ५६। वस्पतौ ६०। पत्नी ६१। निर्ऋतिः ६२-६४। यजमानः ६५। कृषीवलाः कवयो वा ६७, ६८। कृषीवलाः ६९-७१। मित्रावरुणौ लिङ्गोक्ताः ७२। अध्व्याः ७३। अश्विनौ ७४। वैद्यः ७५-७७, ७९, ८१, ८५-८७। चिकित्सुः ७८। ओषधयः ८०, ८२। वैद्याः ८३, ८४, ८८-९३, ९५, ९६, ९८, १००। भिषजः ९४, १०१। भिषग्वराः ९७। ओषधिः ९९। कः १०२। विद्वान् १०५, १०७, ११०। सोमः ११२-११४॥

छन्दः—भुरिक्पङ्क्तिः १, २५। आर्षीत्रिष्टुप् २। विराड्जगती ३। भुरिग्धृतिः ४। भुरिगुत्कृतिः ५। निचृदार्षीत्रिष्टुप् ६, १८-२२, २४, ३३, ४५, ६२, १०२। भुरिगार्ष्यनुष्टुप् ७। आर्षीत्रिष्टुप् ८, ३४, ३५, ४७, ६१, ६४, ७०। निचृदार्षीगायत्री ९, ४०। निचृद्गायत्री १०, ३६, ४१। आर्ष्यनुष्टुप् ११। विराडार्षीत्रिष्टुप् १२, २६-२९, ४२, ६६, ६८। भुरिगार्षीपङ्क्तिः १३, ४८, ४९, ५१, ६३, १०७, ११३। भुरिग्जगती १४। विराट्त्रिष्टुप् १५, १०५। विराडनुष्टुप् १६, १७, ३१, ३२, ४३, ५०, ५४, ५५, ७२, ८२, ८४, ८७-९०, ९४, ९५, ९९। आर्षीत्रिष्टुप् २३। गायत्री ३०, ६७, ११६, ११७। भुरिगार्ष्युष्णिक् ३७। निचृदार्ष्यनुष्टुप् ३८, ५२। निचृदनुष्टुप् ३९, ५६, ७७, ८३, ८६, ९२, ९८, १०१। स्वराडार्षीत्रिष्टुप् ४४। भुरिगार्षीत्रिष्टुप् ४६। स्वराडनुष्टुप् ५३। भुरिगुष्णिक् ५७, ५९,। भुरिगुपरिष्टाद्बृहती ५८। आर्षीपङ्क्तिः ६०, ११०। आर्षीजगती ६५, ७४। त्रिष्टुप् ६९। विराट्पङ्क्तिः ७१। भुरिगार्षीगायत्री ७३। अनुष्टुप् ७५, ७६, ७८-८१, ८५, ९१, ९६, ९७। विराडार्ष्यनुष्टुप् ९३। विराड्बृहती १००। निचृदुष्णिक् १०३। भुरिग्गायत्री १०४। निचृत्पङ्क्तिः १०६, १०८। निचृदार्षीपङ्क्तिः १०९। स्वराडार्षीपङ्क्तिः १११। निचृद्गायत्री ११२, ११५। आसुर्युष्णिक् ११४॥

स्वरः—पञ्चमः १, १३, २५, ४८, ४९, ५१, ६०, ६३, ७१, १०६-१११, ११३। धैवतः २, ६, ८, १२, १५, १८-२४, २६-२९, ३३-३५, ४२, ४४-४७, ६१, ६२, ६४, ६६, ६८-७०, १०२, १०५। निषादः ३, १४, ६५, ७४। ऋषभः ४, ३७, ५७, ५९, १०३, ११४। षड्जः ५, ९, १०, ३०, ३६, ४०, ४१, ६७, ७३, १०४, ११२, ११५-११७। गान्धारः ७, ११, १६, १७, ३१, ३२, ३८, ३९, ४३, ५०, ५२-५६, ७२, ७५-९९, १०१। मध्यमः ५८, १००॥

दृशानो रुक्मऽउर्व्या व्यद्यौद् दुर्मर्षमायुः श्रिये रुचानः ।
अग्निरमृतोऽअभवद्वयोभिर्यदेनं द्यौरजनयत्सुरेताः ॥१॥
नक्तोषासा समनसा विरूपे धापयेते शिशुमेकꣳसमीची ।
द्यावाक्षामा रुक्मोऽअन्तर्विभाति देवाऽअग्निं धारयन् द्रविणोदाः॥२॥
विश्वा रूपाणि प्रतिमुञ्चते कविः प्रासावीद् भद्रं द्विपदे चतुष्पदे।
वि नाकमख्यत्सविता वरेण्योऽनु प्रयाणमुषसो विराजति ॥३॥
सुपर्णोऽसि गरुत्माँस्त्रिवृत्ते शिरो गायत्रं चक्षुर्बृहद्रथन्तरे पक्षौ ।
स्तोमऽआत्मा छन्दाꣳस्यङ्गानि यजूꣳषि नाम ।
साम ते तनूर्वामदेव्यं यज्ञायज्ञियं पुच्छं धिष्ण्याः शफाः ।
सुपर्णोऽसि गरुत्मान्दिवं गच्छ स्वः पत ॥४॥
विष्णोः क्रमोऽसि सपत्नहा गायत्रं छन्दऽआरोह पृथिवीमनु
विक्रमस्व विष्णोः क्रमोऽस्यभिमातिहा त्रैष्टुभं छन्दऽआरोहान्त-
रिक्षमनु विक्रमस्व विष्णोः क्रमोऽस्यरातीयतो हन्ता जागतं
छन्दऽआरोह दिवमनु विक्रमस्व विष्णोः क्रमोऽसि शत्रूयतो
हन्ताऽऽनुष्टुभं छन्दऽआरोह दिशोऽनु विक्रमस्व ॥५॥
अक्रन्ददग्नि स्तनयन्निव द्यौः क्षामा रेरिहद्वीरुधः समञ्जन् ।
सद्यो जज्ञानो वि हीमिद्धोऽअख्यदा रोदसी भानुना भात्यन्तः ॥६॥
अग्नेऽभ्यावर्त्तिन्नभि मा निवर्त्तस्वायुषा वर्चसा प्रजया धनेन ।
सन्या मेधया रय्या पोषेण ॥७॥
अग्नेऽअङ्गिरः शतं ते सन्त्वावृतः सहस्रं तऽउपावृतः ।
अधा पोषस्य पोषेण पुनर्नो नष्टमाकृधि पुनर्नो रयिमाकृधि ॥८॥
पुनरूर्जा निवर्त्तस्व पुनरग्नऽइषायुषा। पुनर्नः पाह्यꣳहसः ॥९॥
सह रय्या निवर्त्तस्वाग्ने पिन्वस्व धारया। विश्वप्स्न्या विश्वतस्परि॥१०॥
आ त्वाहार्षमन्तरभूर्ध्रुवस्तिष्ठाविचाचलिः ।
विशस्त्वा सर्वा वाञ्छन्तु मा त्वद्राष्ट्रमधिभ्रशत् ॥११॥
उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं वि मध्यमꣳश्रथाय।
अथा वयमादित्य व्रते तवानागसोऽअदितये स्याम ॥१२॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अग्ने बृहन्नुषसामूर्ध्वोऽअस्थान्निर्जगन्वान् तमसो ज्योतिषागात्।
अग्निर्भानुना रुशता स्वङ्ङआ जातो विश्वा सद्मान्यप्राः॥१३॥
हꣳसः शुचिषद्वसुरन्तरिक्षसद्धोता वेदिषदतिथिर्दुरोणसत्।
नृषद्वरसदृतसद् व्योमसदब्जा गोजाऽऋतजाऽअद्रिजाऽऋतं बृहत्॥१४॥
सीद त्वं मातुरस्याऽउपस्थे विश्वान्यग्ने वयुनानि विद्वान्।
मैनां तपसा मार्चिषाऽभिशोचीरन्तरस्याꣳशुक्रज्योतिर्विभाहि॥१५॥
अन्तरग्ने रुचा त्वमुखायाः सदने स्वे ।
तस्यास्त्वꣳहरसा तपञ्जातवेदः शिवो भव ॥१६॥
शिवो भूत्वा महामग्नेऽअथो सीद शिवस्त्वम् ।
शिवाः कृत्वा दिशः सर्वाः स्वं योनिमिहासदः ॥१७॥
द्विवस्परि प्रथमं जज्ञेऽअग्निरस्मद् द्वितीयं परि जातवेदाः।
तृतीयमप्सु नृमणाऽअजस्रमिन्धानऽएनं जरते स्वाधीः॥१८॥
विद्मा तेऽअग्ने त्रेधा त्रयाणि विद्मा ते धाम विभृता पुरुत्रा।
विद्मा ते नाम परमं गुहा यद्विद्मा तमुत्सं यतऽआजगन्थ॥१९॥
समुद्रे त्वा नृमणाऽअप्स्वन्तर्नृचक्षाऽईधे दिवो अग्नऽऊधन्।
तृतीये त्वा रजसि तस्थिवाꣳसमपामुपस्थे महिषाऽअवर्धन्॥२०॥
अक्रन्ददग्नि स्तनयन्निव द्यौः क्षामा रेरिहद् वीरुधः समञ्जन्।
सद्यो जज्ञानो वि हीमिद्धोऽअख्यदा रोदसी भानुना भात्यन्तः॥२१॥
श्रीणामुदारो धरुणो रयीणां मनीषाणां प्रार्पणः सोमगोपाः।
वसुः सूनुः सहसोऽअप्सु राजा विभात्यग्रऽउषसामिधानः॥२२॥
विश्वस्य केतुर्भुवनस्य गर्भऽआ रोदसीऽअपृणाज्जायमानः।
वीडुं चिदद्रिमभिनत् परायञ्जना यदग्निमयजन्त पञ्च॥२३॥
उशिक् पावको अरतिः सुमेधा मर्त्येष्वग्निरमृतो नि धायि।
इयर्त्ति धूममरुषं भरिभ्रदुच्छुक्रेण शोचिषा द्यामिनक्षन्॥२४॥
दृशानो रुक्मऽउर्व्या व्यद्यौद्दुर्मर्षमायुः श्रिये रुचानः ।
अग्निरमृतोऽअभवद्वयोभिर्यदेनं द्यौरजनयत्सुरेताः ॥२५॥
यस्तेऽअद्य कृणवद्भद्रशोचेऽपूपं देव घृतवन्तमग्ने ।
प्र तं नय प्रतरं वस्योऽअच्छाभि सुम्नं देवभक्तं यविष्ठ॥२६॥
आ तं भज सौश्रवसेष्वग्नऽउक्थऽउक्थ आ भज शस्यमाने।
प्रियः सूर्ये प्रियोऽअग्ना भवात्युज्जातेन भिनदद्युज्जनित्वैः॥२७॥
त्वामग्ने यजमानाऽअनु द्यून् विश्वा वसु दधिरे वार्याणि।
त्वया सह द्रविणमिच्छमाना व्रजं गोमन्तमुशिजो विवव्रुः॥२८॥
अस्तोष्यग्निर्नराꣳसुशेवो वैश्वानरऽऋषिभिः सोमगोपाः।
अद्वेषे द्यावापृथिवी हुवेम देवा धत्त रयिमस्मे सुवीरम्॥२९॥
समिधाग्निं दुवस्यत घृतैर्बोधयतातिथिम्। आस्मिन् हव्या जुहोतन॥३०॥
उदु त्वा विश्वे देवाऽअग्ने भरन्तु चित्तिभिः ।
स नो भव शिवस्त्वꣳसुप्रतीको विभावसुः ॥३१॥
प्रेदग्ने ज्योतिष्मान् याहि शिवेभिरर्चिभिष्ट्वम् ।
बृहद्भिर्भानुभिर्भासन् मा हिꣳसीस्तन्वा प्रजाः ॥३२॥
अक्रन्ददग्नि स्तनयन्निव द्यौः क्षामा रेरिहद् वीरुधः समञ्जन् ।
सद्यो जज्ञानो वि हीमिद्धोऽअख्यदा रोदसी भानुना भात्यन्तः ॥३३॥
प्रप्रायमग्निर्भरतस्य शृण्वे वि यत्सूर्यो न रोचते बृहद्भाः ।
अभि यः पूरुं पृतनासु तस्थौ दीदायदैव्योऽअतिथिः शिवो नः॥३४॥
आपो देवीः प्रतिगृभ्णीत भस्मैतत्स्योने कृणुध्वꣳसुरभाऽउ लोके।
तस्मै नमन्तां जनयः सुपत्नीर्मातेव पुत्रं बिभृताप्स्वेनत् ॥३५॥
अप्स्वग्ने सधिष्टव सौषधीरनु रुध्यसे। गर्भे सञ्जायसे पुनः॥३६॥
गर्भोऽअस्योषधीनां गर्भो वनस्पतीनाम् ।
गर्भो विश्वस्य भूतस्याग्ने गर्भोऽअपामसि ॥३७॥
प्रसद्य भस्मना योनिमपश्च पृथिवीमग्ने ।
सꣳसृज्य मातृभिष्ट्वं ज्योतिष्मान् पुनरासदः ॥३८॥
पुनरासद्य सदनमपश्च पृथिवीमग्ने ।
शेषे मातुर्यथोपस्थेऽन्तरस्याꣳशिवतमः ॥३९॥
पुनरूर्जा निवर्त्तस्व पुनरग्नऽइषायुषा। पुनर्नः पाह्यꣳहसः॥४०॥
सह रय्या निवर्त्तस्वाग्ने पिन्वस्व धारया। विश्वप्स्न्या विश्वतस्परि॥४१॥
बोधा मेऽअस्य वचसो यविष्ठ मꣳहिष्ठस्य प्रभृतस्य स्वधावः।
पीयति त्वोऽअनु त्वो गृणाति वन्दारुस्ते तन्वं वन्देऽअग्ने॥४२॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

स बोधि सूरिर्मघवा वसुपते वसुदावन्
युयोध्यस्मद् द्वेषांऽसि विश्वकर्मणे स्वाहा ॥४३॥
पुनस्त्वाऽऽदित्या रुद्रा वसवः समिन्धतां पुनर्ब्रह्माणो वसुनीथ यज्ञैः
घृतेन त्वं तन्वं वर्धयस्व सत्याः सन्तु यजमानस्य कामाः॥४४॥
अपेत वीत वि च सर्पतातो येऽत्र स्थ पुराणा ये च नूतनाः।
अदाद्यमोऽवसानं पृथिव्याऽअक्रन्निमं पितरो लोकमस्मै॥४५॥
सज्ञानमसि कामधरणं मयि ते कामधरणं भूयात्
अग्नेर्भस्मास्यग्नेः पुरीषमसि चितं स्थ परिचितऽऊर्ध्वचितः श्रयध्वम्॥४६॥
अयश्सोऽअग्निर्यस्मिन्त्सोममिन्द्रः सुतं दधे जठरे वावशानः।
सहस्रियं वाजमत्यं न सप्तिंससवान्त्सन्त्स्तूयसे जातवेदः॥४७॥
अग्ने यत्ते दिवि वर्चः पृथिव्यां यदोषधीष्वप्स्वा यजत्र।
येनान्तरिक्षमुर्वाततन्थ त्वेषः स भानुरर्णवो नृचक्षाः ॥४८॥
अग्ने दिवोऽअर्णमच्छा जिगास्यच्छा देवाँऽऊचिषे धिष्ण्या ये।
या रोचने परस्तात् सूर्यस्य याश्चावस्तादुपतिष्ठन्तऽआपः॥४९॥
पुरीष्यासोऽअग्नयः प्रावणेभिः सजोषसः
जुषन्तां यज्ञमद्रुहोऽनमीवाऽइषो महीः ॥५०॥
इडामग्ने पुरुदꣳसꣳसनिं गोः शश्वत्तमꣳहवमानाय साध।
स्यान्नः सूनुस्तनयो विजावाग्ने सा ते सुमतिर्भूत्वस्मे ॥५१॥
अयं ते योनिर्ऋत्वियो यतो जातोऽअरोचथाः
तं जानन्नग्नऽआ रोहाथा नो वर्धया रयिम् ॥५२॥
चिदसि तया देवतयाङ्गिरस्वद् ध्रुवा सीद
परिचिदसि तया देवतयाङ्गिरस्वद् ध्रुवा सीद ॥५३॥
लोकं पृण छिद्रं पृणाथो सीद ध्रुवा त्वम्
इन्द्राग्नी त्वा बृहस्पतिरस्मिन् योनावसीषदन् ॥५४॥
ताऽअस्य सूददोहसः सोमꣳश्रीणन्ति पृश्नयः
जन्मन्देवानां विशस्त्रिष्वा रोचने दिवः ॥५५॥
इन्द्रं विश्वाऽअवीवृधन्त्समुद्रव्यचसं गिरः
रथीतमꣳरथीनां वाजानाꣳसत्पतिं पतिम् ॥५६॥
समितꣳसं कल्पेथाꣳसंप्रियौ रोचिष्णू सुमनस्यमानौ।
इषमूर्जमभि संवसानौ ॥५७॥
सं वां मनाꣳसि सं व्रता समु चित्तान्याकरम्
अग्ने पुरीष्याधिपा भव त्वं नऽइषमूर्जं यजमानाय धेहि॥५८॥
अग्ने त्वं पुरीष्यो रयिमान् पुष्टिमाँऽअसि
शिवाः कृत्वा दिशः सर्वाः स्वं योनिमिहासदः ॥५९॥
भवतं नः समनसौ सचेतसावरेपसौ
मा यज्ञꣳहिꣳसिष्टं मा यज्ञपतिं जातवेदसौ शिवौ भवतमद्य नः॥६०॥
मातेव पुत्रं पृथिवी पुरीष्यमग्निꣳस्वे योनावभारुखा
तां विश्वैर्देवैर्ऋतुभिः संविदानः प्रजापतिर्विश्वकर्मा वि मुञ्चतु॥६१॥
असुन्वन्तमयजमानमिच्छ स्तेनस्येत्यामन्विहि तस्करस्य।
अन्यमस्मदिच्छ सा तऽइत्या नमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु॥६२॥
नमः सु ते निर्ऋते तिग्मतेजोऽयस्मयं विचृता बन्धमेतम्।
यमेन त्वं यम्या संविदानोत्तमे नाकेऽअधि रोहयैनम्॥६३॥
यस्यास्ते घोरऽआसन् जुहोम्येषां बन्धानामवसर्जनाय
यां त्वा जनो भूमिरिति प्रमन्दते निर्ऋतिं त्वाहं परि वेद विश्वतः॥६४॥
यं ते देवी निर्ऋतिराबबन्ध पाशं ग्रीवास्वविचृत्यम्
तं ते विष्याम्यायुषो न मध्यादथैतं पितुमद्धि प्रसूतः।
नमो भूत्यै येदं चकार ॥६५॥
निवेशनः सङ्गमनो वसूनां विश्वा रूपाऽभिचष्टे शचीभिः।
देवऽइव सविता सत्यधर्मेन्द्रो न तस्थौ समरे पथीनाम्॥६६॥
सीरा युञ्जन्ति कवयो युगा वितन्वते पृथक्। धीरा देवेषु सुम्नया॥६७॥
युनक्त सीरा वि युगा तनुध्वं कृते योनौ वपतेह बीजम्
गिरा च श्रुष्टिः सभरा असन्नो नेदीयऽइत्सृण्यः पक्वमेयात्॥६८॥
शुनꣳसु फाला वि कृषन्तु भूमिꣳशुनं कीनाशाऽअभि यन्तु वाहैः।
शुनासीरा हविषा तोशमाना सुपिप्पलाऽओषधीः कर्त्तनास्मे ॥६९॥
घृतेन सीता मधुना समज्यतां विश्वैर्देवैरनुमता मरुद्भिः।
ऊर्जस्वती पयसा पिन्वमानास्मान्त्सीते पयसाभ्या ववृत्स्व॥७०॥
लाङ्गलं पवीरवत्सुशेवꣳसोमप्रित्सरु
तदुद्वपति गामविं प्रफर्व्यं च पीवरीं प्रस्थावद्रथवाहनम्॥७१॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कामं॑ कामदुघे धुक्ष्व मि॒त्राय॒ वरु॑णाय च ।
इन्द्रा॑या॒श्विभ्यां॑ पू॒ष्णे प्र॒जाभ्य॒ऽओष॑धीभ्यः ॥७२॥
वि मु॑च्यध्वमघ्न्या देवयाना॒ऽअग॑न्म॒ तम॑सस्पा॒रम॒स्य। ज्योति॑रापाम॥७३॥
स॒जूरब्दो॒ऽअय॑वोभिः स॒जूरु॒षाऽअरु॑णीभिः। स॒जोष॑साव॒श्विना॒
दꣳसो॑भिः स॒जूः सूर॒ऽएत॑शेन स॒जूर्वै॑श्वान॒रऽइड॑या घृ॒तेन॒ स्वाहा॑॥७४॥
या ओष॑धीः॒ पूर्वा॑ जा॒ता दे॒वेभ्य॑स्त्रियु॒गं पु॒रा।
मनै॒ नु ब॒भ्रूणा॑म॒हꣳश॒तं धामा॑नि स॒प्त च॑॥७५॥
श॒तं वो॑ऽअम्ब॒ धामा॑नि स॒हस्र॑मु॒त वो॒ रुहः॑।
अधा॑ शतक्रत्वो यू॒यमि॒मं मे॑ऽअग॒दं कृ॑त॥७६॥
ओष॑धीः॒ प्रति॑मोदध्वं॒ पुष्प॑वतीः प्र॒सूव॑रीः।
अश्वा॑ऽइव स॒जित्व॑रीर्वी॒रुधः॑ पारयि॒ष्ण्वः॒॥७७॥
ओष॑धी॒रिति॑ मातर॒स्तद्वो॑ देवी॒रुप॑ ब्रुवे।
स॒नेय॒मश्वं॒ गां वास॑ऽआ॒त्मानं॒ तव॑ पूरुष॥७८॥
अ॒श्व॒त्थे वो॑ नि॒षद॑नं प॒र्णे वो॑ वस॒तिष्कृ॒ता।
गो॒भाज॒ऽइत् किला॑सथ॒ यत् स॒नव॑थ॒ पूरु॑षम्॥७९॥
यत्रौष॑धीः स॒मग्म॑त॒ राजा॑नः॒ समि॑ताविव।
विप्रः॒ सऽउ॑च्यते भि॒षग्र॑क्षो॒हामी॑व॒चात॑नः॥८०॥
अ॒श्वा॒व॒तीꣳसो॑माव॒तीमू॒र्जय॑न्ती॒मुदो॑जसम्।
आवि॑त्सि॒ सर्वा॒ऽओष॑धीर॒स्मा अ॑रि॒ष्टता॑तये॥८१॥
उच्छुष्मा॒ऽओष॑धीनां॒ गावो॑ गो॒ष्ठादि॑वेरते ।
धनꣳ॑ सनि॒ष्यन्ती॑नामा॒त्मानं॒ तव॑ पूरुष ॥८२॥
इष्कृ॑ति॒र्नाम॑ वो मा॒ताथो॑ यू॒यꣳस्थ॒ निष्कृ॑तीः।
सी॒राः प॑त॒त्रिणी॑ स्थन॒ यदा॒मय॑ति॒ निष्कृ॑थ॥८३॥
अति॒ विश्वाः॑ परि॒ष्ठा स्ते॒नऽइ॑व व्र॒जम॑क्रमुः।
ओष॑धीः॒ प्राचु॑च्यवु॒र्यत्किं च॑ त॒न्वो॒ रपः॑॥८४॥
यदि॒मा वा॒जय॑न्न॒हमोष॑धी॒र्हस्त॑ऽआद॒धे ।
आ॒त्मा यक्ष्म॑स्य नश्यति पु॒रा जी॑व॒गृभो॑ यथा॥८५॥
यस्यौ॑षधीः प्र॒सर्प॒थाङ्ग॑मङ्गं॒ परु॑ष्परुः ।
ततो॒ यक्ष्मं॒ विबा॑धध्वऽउ॒ग्रो म॑ध्यम॒शीरि॑व॥८६॥
सा॒कं य॑क्ष्म॒ प्र प॑त॒ चाषे॑ण किकिदी॒विना॑।
सा॒कं वात॑स्य॒ ध्राज्या॑ सा॒कं न॑श्य नि॒हाक॑या॥८७॥
अ॒न्या वो॑ऽअ॒न्याम॑वत्व॒न्यान्यस्या॒ऽउपा॑वत।
ताः सर्वा॑ संविदा॒नाऽइ॒दं मे॒ प्राव॑ता॒ वचः॑॥८८॥
याः फ॒लिनी॒र्याऽअ॑फ॒लाऽअ॑पु॒ष्पा याश्च॑ पु॒ष्पिणीः॑।
बृह॒स्पति॑प्रसूता॒स्ता नो॑ मुञ्च॒न्त्वꣳह॑सः ॥८९॥
मु॒ञ्चन्तु॑ मा शप॒थ्या॒दथो॑ वरु॒ण्या॒दु॒त ।
अथो॑ य॒मस्य॒ पड्वी॑शा॒त्सर्व॑स्माद् देवकिल्बि॒षात्॥९०॥
अ॒व॒पत॑न्तीरवद॒न्दि॒वऽओष॑धय॒स्परि॑ ।
यं जी॒वम॒श्नवा॑महै॒ न स रि॑ष्याति॒ पूरु॑षः॥९१॥
याऽओष॑धीः॒ सोम॑राज्ञीर्ब॒ह्वीः श॒तवि॑चक्षणाः।
तासा॑मसि॒ त्वमु॑त्त॒मारं॒ कामा॑य॒ शꣳहृ॒दे॥९२॥
याऽओष॑धीः॒ सोम॑राज्ञी॒र्विष्ठि॑ताः पृथि॒वीमनु॑।
बृह॒स्पति॑प्रसूताऽअ॒स्यै संद॑त्त वी॒र्य्य॒म् ॥९३॥
याश्चे॒दमु॑पशृ॒ण्वन्ति॒ याश्च॑ दू॒रं परा॑गताः।
सर्वाः॑ सं॒गत्य॑ वीरुधो॒ऽस्यै संद॑त्त वी॒र्य्य॒म्॥९४॥
मा वो॑ रिषत् खनि॒ता यस्मै॑ चा॒हं खना॑मि वः।
द्वि॒पाच्चतु॑ष्पाद॒स्माकꣳ॒सर्व॑मस्त्वनातु॒रम् ॥९५॥
ओष॑धयः॒ सम॑वदन्त॒ सोमे॑न स॒ह राज्ञा॑ ।
यस्मै॑ कृ॒णोति॑ ब्राह्म॒णस्तꣳरा॑जन् पारयामसि॥९६॥
ना॒श॒यि॒त्री ब॒लास॒स्यार्श॑सऽउप॒चिता॑मसि।
अथो॑ श॒तस्य॒ यक्ष्मा॑णां पाका॒रोर॑सि॒ नाश॑नी॥९७॥
त्वां ग॑न्ध॒र्वाऽअ॑खनँ॒स्त्वामिन्द्र॒स्त्वां बृह॒स्पतिः॑।
त्वामो॑षधे॒ सोमो॒ राजा॑ वि॒द्वान् यक्ष्मा॑दमुच्यत॥९८॥
सह॑स्व मे॒ऽअरा॑तीः॒ सह॑स्व पृतनाय॒तः ।
सह॑स्व॒ सर्वं॑ पा॒प्मानꣳ॒सह॑मानास्योषधे ॥९९॥
दी॒र्घायु॑स्तऽओषधे खनि॒ता यस्मै॑ च त्वा॒ खना॑म्य॒हम्।
अथो॒ त्वं दी॒र्घायु॑र्भू॒त्वा श॒तव॑ल्शा॒ वि रो॑हतात्॥१००॥
त्वमु॑त्त॒मास्यो॑षधे॒ तव॑ वृ॒क्षाऽउप॑स्तयः ।
उप॑स्तिरस्तु॒ सो॒ऽस्माकं॒ योऽअ॒स्माँ२ऽअ॑भि॒दास॑ति॥१०१॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मा मा॑ हिꣳसीज्जनि॒ता यः पृ॑थि॒व्या यो वा॒ दिव॑ꣳस॒त्यध॑र्मा॒ व्यान॑ट्।
यश्चा॒पश्च॒न्द्राः प्र॑थ॒मो ज॒जान॒ कस्मै॑ दे॒वाय॑ ह॒विषा॑ विधेम॥१०२॥
अ॒भ्याव॑र्त्तस्व पृथिवी य॒ज्ञेन॒ पय॑सा स॒ह।
व॒पां ते॑ऽअ॒ग्निरि॑षि॒तोऽअ॑रोहत् ॥१०३॥
अग्ने॒ यत्ते॑ शु॒क्रं यच्च॒न्द्रं यत्पू॒तं यच्च॑ य॒ज्ञिय॑म्। तद्दे॒वेभ्यो॑ भरामसि॥१०४॥
इष॒मूर्ज॑म॒हमि॒तऽआद॑मृ॒तस्य॒ योनिं॑ महि॒षस्य॒ धारा॑म् ।
आ मा॒ गोषु॑ विश॒त्वा त॒नूषु॒ जहा॑मि से॒दिमनि॑रा॒ममी॑वाम्॥१०५॥
अग्ने॒ तव॒ श्रवो॒ वयो॒ महि॑ भ्राजन्तेऽअ॒र्चयो॑ विभावसो।
बृह॑द्भानो॒ शव॑सा॒ वाज॑मु॒क्थ्यं॒ दधा॑सि दा॒शुषे॑ कवे ॥१०६॥
पा॒व॒कव॑र्चाः शु॒क्रव॑र्चा॒ऽअनू॑नवर्चा॒ऽउदि॑यर्षि भा॒नुना॑ ।
पु॒त्रो मा॒तरा॑ वि॒चर॒न्नुपा॑वसि पृ॒णक्षि॒ रोद॑सीऽउ॒भे ॥१०७॥
ऊर्जो॑ नपाज्जातवेदः सुश॒स्तिभि॒र्मन्द॑स्व धी॒तिभि॑र्हि॒तः।
त्वेऽइषः॒ सन्द॑धु॒र्भूरि॑वर्पसश्चि॒त्रोत॑यो वा॒मजा॑ताः ॥१०८॥
इ॒र॒ज्यन्न॑ग्ने प्रथयस्व ज॒न्तुभि॑र॒स्मे रायो॑ऽअमर्त्य ।
स द॑र्श॒तस्य॒ वपु॑षो॒ विरा॑जसि पृ॒णक्षि॑ सान॒सिं क्रतु॑म्॥१०९॥
इ॒ष्क॒र्त्तार॑मध्व॒रस्य॒ प्रचे॑तसं॒ क्षय॑न्त॒ꣳराध॑सो म॒हः ।
रा॒तिं वा॒मस्य॑ सु॒भगां॑ म॒हीमिषं॒ दधा॑सि सान॒सिꣳर॒यिम्॥११०॥
ऋ॒तावा॑नं महि॒षं वि॒श्वद॑र्शतम॒ग्निꣳसु॒म्नाय॑ दधिरे पु॒रो जनाः॑।
श्रुत्क॑र्णꣳस॒प्रथ॑स्तमं त्वा गि॒रा दैव्यं॒ मानु॑षा यु॒गा॥१११॥
आप्या॑यस्व॒ समे॑तु ते वि॒श्वतः॑ सोम॒ वृष्ण्य॑म्। भवा॒ वाज॑स्य सङ्ग॒थे॥११२॥
सं ते॒ पया॑ꣳसि॒ समु॑ यन्तु॒ वाजाः॒ सं वृष्ण्या॑न्यभिमाति॒षाहः॑ ।
आ॒प्याय॑मानोऽअ॒मृता॑य सोम दि॒वि श्रवा॑ꣳस्युत्त॒मानि॑ धिष्व ॥११३॥
आप्याय॑स्व मदिन्तम॒ सोम॒ विश्वे॑भिर॒ꣳशुभिः॑।
भवा॑ नः स॒प्रथ॑स्तमः॒ सखा॑ वृ॒धे ॥११४॥
आ ते॑ व॒त्सो मनो॑ यमत्पर॒माच्चि॑त्स॒धस्था॑त्। अग्ने॒ त्वां का॑मया गि॒रा॥११५॥
तुभ्यं॒ ताऽअ॑ङ्गिरस्तम॒ विश्वाः॑ सुक्षि॒तयः॒ पृथ॑क्। अग्ने॒ कामा॑य येमिरे॥११६॥
अग्निः प्रि॒येषु॒ धाम॑सु॒ कामो॑ भू॒तस्य॒ भव्य॑स्य। स॒म्राडेको॒ विरा॑जति॥११७॥

इति द्वादशोऽध्यायः॥

अथ त्रयोदशोऽध्यायः॥

—:०:—

ऋषिः—वत्सारः १-३। हिरण्यगर्भः ४-८। वामदेवः ९-१४। त्रिशिराः १५-१९। अग्निः २०, २१। इन्द्राग्नी २२-२५। सविता २६। गोतमः २७-३५। भारद्वाजः ३६। विरूपः ३७-५१। उशनाः ५२-५८॥

देवता—अग्निः १, २, ९-१६, १८, १९, २२, ३६-४५, ४७-५२। आदित्यः ३। प्रजापतिः ४, १७, २४, ३०, ५५-५८। ईश्वरः ५। सूर्यः ८, ४६। हिरण्यगर्भः ६, ७। पत्नी २०, २१। बृहस्पतीः २३। ऋतवः २५। क्षत्रपतिः २६। विश्वेदेवाः २७-२९। वरुणः ३१। द्यावापृथिव्यौ ३२। विष्णुः ३३। जातवेदाः ३४, ३५। आपः ५३। प्राणाः ५४॥

छन्दः—आर्चीपङ्क्तिः १। विराट्त्रिष्टुप् २। निचृत्त्रिष्टुप् ३, ५, ११, ४२-४४, ४६। त्रिष्टुप् ४, ३१, ३८, ४१, ४५। भुरिगुष्णिक् ६। अनुष्टुप् ७, १७, २०, २३। निचृदनुष्टुप् ८, २१, २६। भुरिक्पङ्क्तिः ९, १०। भुरिगार्षीपङ्क्तिः १२। निचृदतिजगती १३। भुरिगनुष्टुप् १४, २२। निचृदार्षीत्रिष्टुप् १५। स्वराडार्ष्यनुष्टुप् १६। प्रस्तारपङ्क्तिः १८। भुरिगतिजगती १९। निचृद्धृतिः २४। भुरिगतिजगती[म], भुरिग्ब्राह्मीबृहती[र] २५। निचृद्गायत्री २७, २९, ३३, ३६, ३७, ५२। गायत्री २८, ३२। आर्षीपङ्क्तिः ३०। भुरिक्त्रिष्टुप् ३४। निचृद्बृहती ३५, ३९। निचृदुष्णिक् ४०। विराड्ब्राह्मीपङ्क्तिः ४७। निचृद्ब्राह्मीपङ्क्तिः ४८। कृतिः ४९। भुरिक्कृतिः ५०, ५१। भुरिग्ब्राह्मीपङ्क्तिः[र], ब्राह्मीजगती[म], निचृद्ब्राह्मीपङ्क्तिः[र] ५३। स्वराड्ब्राह्मीजगती ५४। निचृदतिधृतिः ५५, ५६। स्वराड्ब्राह्मीत्रिष्टुप् ५७। विराडाकृतिः ५८॥

स्वरः—पञ्चमः १, ९, १०, १२, १८, ३०, ४७, ४८, ५८। धैवतः २-५, ११, १५, ३१, ३४, ३८, ४१-४६, ५७। ऋषभः ६, २४, ४०। गान्धारः ७, ८, १४, १६, १७, २०-२३, २६। निषादः १३, १९, ४९-५१, ५४। निषादः[म], मध्यमः[र] २५। षड्जः २७-२९, ३२, ३३, ३६, ३७, ५२, ५५, ५६। मध्यमः ३५, ३९। पञ्चमः[र,र], निषादः[म] ५३॥

मयि॑ गृह्णा॒म्यग्रे॑ऽअ॒ग्निꣳरा॒यस्पोषा॑य सुप्रजा॒स्त्वाय॑ सु॒वीर्या॑य।
मामु॑ दे॒वताः॑ सचन्ताम् ॥१॥
अ॒पां पृ॒ष्ठम॑सि॒ योनि॑र॒ग्नेः स॑मु॒द्रम॒भितः॒ पिन्व॑मानम् ।
वर्ध॑मानो म॒हाँ२ऽआ च॒ पुष्क॑रे दि॒वो मात्र॑या वरि॒म्णा प्र॑थस्व॥२॥
ब्रह्म॑ जज्ञा॒नं प्र॑थ॒मं पु॒रस्ता॒द्वि सी॑म॒तः सु॒रुचो॑ वे॒नऽआ॑वः ।
स बु॒ध्न्या॒ऽउप॒माऽअ॑स्य वि॒ष्ठाः स॒तश्च॒ योनि॒मस॑तश्च॒ विवः॑॥३॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेकऽआसीत् ।
स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥४॥
द्रुप्सश्चस्कन्द पृथिवीमनु द्यामिमं च योनिमनु यश्च पूर्वः।
समानं योनिमनु संचरन्तं द्रुप्सं जुहोम्यनु सप्त होत्राः ॥५॥
नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु ।
येऽअन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः ॥६॥
याऽइषवो यातुधानानां ये वा वनस्पतीँ१ऽरनु ।
ये वावटेषु शेरते तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः ॥७॥
ये वामी रोचने दिवो ये वा सूर्यस्य रश्मिषु ।
येषामप्सु सदस्कृतं तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः ॥८॥
कृणुष्व पाजः प्रसितिं न पृथ्वीं याहि राजेवामवाँ२ऽइभेन ।
तृष्वीमनु प्रसितिं द्रूणानोऽस्तासि विध्य रक्षसस्तपिष्ठैः ॥९॥
तव भ्रमास्ऽआशुया पतन्त्यनु स्पृश धृषता शोशुचानः ।
तपूंष्यग्ने जुह्वा पतङ्गानसंदितो विसृज विष्वगुल्काः ॥१०॥
प्रति स्पशो विसृज तूर्णितमो भवा पायुर्विशोऽअस्या अदब्धः।
यो नो दूरेऽअघशंसो योऽअन्त्यग्ने माकिष्टे व्यथिराददधर्षीत्॥११॥
उदग्ने तिष्ठ प्रत्यातनुष्व न्यमित्राँ२ऽओषतात्तिग्महेते ।
यो नोऽअरातिंसमिधान चक्रे नीचा तं धक्ष्यतसं न शुष्कम्॥१२॥
ऊर्ध्वो भव प्रति विध्याध्यस्मदाविष्कृणुष्व दैव्यान्यग्ने ।
अव स्थिरा तनुहि यातुजूनां जामिमजामिं प्रमृणीहि शत्रून् ।
अग्नेष्ट्वा तेजसा सादयामि ॥१३॥
अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्याऽअयम् ।
अपाꣳरेताꣳसि जिन्वति। इन्द्रस्य त्वौजसा सादयामि ॥१४॥
भुवो यज्ञस्य रजसश्च नेता यत्रा नियुद्भिः सचसे शिवाभिः।
दिवि मूर्द्धानं दधिषे स्वर्षां जिह्वामग्ने चकृषे हव्यवाहम् ॥१५॥
ध्रुवासि धरुणास्तृता विश्वकर्मणा ।
मा त्वा समुद्रऽउद्वधीन्मा सुपर्णोऽव्यथमाना पृथिवीं दृꣳह ॥१६॥
प्रजापतिष्ट्वा सादयत्वपां पृष्ठे समुद्रस्येमन् ।
व्यचस्वतीं प्रथस्वतीं प्रथस्व पृथिव्यसि ॥१७॥
भूरसि भूमिरस्यदितिरसि विश्वधाया विश्वस्य भुवनस्य धर्त्री।
पृथिवीं यच्छ पृथिवीं दृꣳह पृथिवीं मा हिꣳसीः॥१८॥
विश्वस्मै प्राणायापानाय व्यानायोदानाय प्रतिष्ठायै चरित्राय।
अग्निष्ट्वाभिपातु मह्या स्वस्त्या छर्दिषा शन्तमेन तया
देवतयाङ्गिरस्वद् ध्रुवा सीद ॥१९॥
काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ती परुषःपरुषस्परि ।
एवा नो दूर्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च ॥२०॥
या शतेन प्रतनोषि सहस्रेण विरोहसि ।
तस्यास्ते देवीष्टके विधेम हविषा वयम् ॥२१॥
यास्तेऽअग्ने सूर्य्ये रुचो दिवमातन्वन्ति रश्मिभिः ।
ताभिर्नोऽअद्य सवीभी रुचे जनाय नस्कृधि ॥२२॥
या वो देवाः सूर्ये रुचो गोष्वश्वेषु या रुचः ।
इन्द्राग्नी ताभिः सवीभी रुचं नो धत्त बृहस्पते ॥२३॥
विराड् ज्योतिरधारयत् स्वराड् ज्योतिरधारयत् ।
प्रजापतिष्ट्वा सादयतु पृष्ठे पृथिव्या ज्योतिष्मतीम्।
विश्वस्मै प्राणायापानाय व्यानाय विश्वं ज्योतिर्यच्छ।
अग्निष्टेऽधिपतिस्तया देवतयाङ्गिरस्वद् ध्रुवा सीद ॥२४॥
मधुश्च माधवश्च वासन्तिकावृतूऽअग्नेरन्तःश्लेषोऽसि कल्पेतां
द्यावापृथिवी कल्पन्तामापऽओषधयः कल्पन्तामग्नयः पृथङ् मम
ज्यैष्ठ्याय सव्रताः। येऽअग्नयः समनसोऽन्तरा द्यावापृथिवीऽइमे।
वासन्तिकावृतूऽअभिकल्पमानाऽइन्द्रमिव देवाऽअभिसंविशन्तु
तया देवतयाङ्गिरस्वद् ध्रुवे सीदतम् ॥२५॥
अषाढासि सहमाना सहस्वारातीः सहस्व पृतनायतः ।
सहस्रवीर्यासि सा मा जिन्व ॥२६॥
मधु वाताऽऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः ।
माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः ॥२७॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मधु नक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिवꣳरजः । वातस्य जूतिं वरुणस्य नाभिमश्वं जज्ञानꣳसरिरस्य मध्ये।
मधु द्यौरस्तु नः पिता ॥२८॥ शिशुं नदीनाथ्ँहरिमद्रिबुध्नमग्ने मा हिꣳसीः परमे व्योमन्॥४२॥
मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमाँ२ऽअस्तु सूर्यः । अजस्रमिन्दुमरुषं भुरण्युमग्निमीडे पूर्वचित्तिं नमोभिः।
माध्वीर्गावो भवन्तु नः ॥२९॥ स पर्वभिर्ऋतुशः कल्पमानो गां मा हिꣳसीरदितिं विराजम्॥४३॥
अपां गम्भन्त्सीद मा त्वा सूर्योऽभितापसीन्माग्निर्वैश्वानरः। वरुत्रीं त्वष्टुर्वरुणस्य नाभिमविं जज्ञानाथ्ँरजसः परस्मात्।
अच्छिन्नपत्राः प्रजाऽअनुवीक्षस्वानु त्वा दिव्या वृष्टिः सचताम्॥३०॥ महीथ्ँसाहस्त्रीमसुरस्य मायामग्ने मा हिꣳसीः परमे व्योमन्॥४४॥
त्रीन्त्समुद्रान्त्समसृपत् स्वर्गानपां पतिर्वृषभऽइष्टकानाम् । योऽअग्निररुणेरध्यजायत शोकात्पृथिव्याऽउत वा दिवस्परि।
पुरीषं वसानः सुकृतस्य लोके तत्र गच्छ यत्र पूर्वे परेताः॥३१॥ येन प्रजा विश्वकर्मा जजान तमग्ने हेडः परि ते वृणक्तु॥४५॥
महो द्यौः पृथिवी च नऽइमं यज्ञं मिमिक्षताम् । चित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः।
पिपृतां नो भरीमभिः ॥३२॥ आप्रा द्यावापृथिवीऽअन्तरिक्षꣳसूर्य्यऽआत्मा जगतस्तस्थुषश्च॥४६॥
विष्णोः कर्माणि पश्यत यतो व्रतानि पस्पशे । इमं मा हिꣳसीर्द्विपादं पशुꣳसहस्त्राक्षो मेधाय चीयमानः।
इन्द्रस्य युज्यः सखा ॥३३॥ मयुं पशुं मेधमग्ने जुषस्व तेन चिन्वानस्तन्वो निषीद।
ध्रुवासि धरुणेतो जज्ञे प्रथममेभ्यो योनिभ्योऽधि जातवेदाः। मयुं ते शुगृच्छतु यं द्विष्मस्तं ते शुगृच्छतु ॥४७॥
स गायत्र्या त्रिष्टुभानुष्टुभा च देवेभ्यो हव्यं वहतु प्रजानन्॥३४॥ इमं मा हिꣳसीरेकशफं पशुं कनिक्रदं वाजिनं वाजिनेषु।
इषे राये रमस्व सहसे द्युम्नऽऊर्जेऽअपत्याय । गौरमारण्यमनु ते दिशामि तेन चिन्वानस्तन्वो निषीद।
सम्राडसि स्वराडसि सारस्वतौ त्वोत्सौ प्रावताम् ॥३५॥ गौरं ते शुगृच्छतु यं द्विष्मस्तं ते शुगृच्छतु ॥४८॥
अग्ने युक्ष्वा हि ये तवाश्वासो देव साधवः । इमꣳसाहस्त्रꣳशतधारमुत्सं व्यच्यमानꣳसरिरस्य मध्ये ।
अरं वहन्ति मन्यवे ॥३६॥ घृतं दुहानामदितिं जनायाग्ने मा हिꣳसीः परमे व्योमन्।
युक्ष्वा हि देवहूतमाँ२ऽअश्वाँ२ऽअग्ने रथीरिव । गवयमारण्यमनु ते दिशामि तेन चिन्वानस्तन्वो निषीद।
नि होता पूर्व्यः सदः ॥३७॥ गवयं ते शुगृच्छतु यं द्विष्मस्तं ते शुगृच्छतु ॥४९॥
सम्यक् स्रवन्ति सरितो न धेनाऽअन्तर्हृदा मनसा पूयमानाः। इममूर्णायुं वरुणस्य नाभिं त्वचं पशूनां द्विपदां चतुष्पदाम्।
घृतस्य धाराऽअभिचाकशीमि हिरण्ययो वेतसो मध्येऽअग्नेः॥३८॥ त्वष्टुः प्रजानां प्रथमं जनित्रमग्ने मा हिꣳसीः परमे व्योमन्।
ऋचे त्वा रुचे त्वा भासे त्वा ज्योतिषे त्वा । उष्ट्रमारण्यमनु ते दिशामि तेन चिन्वानस्तन्वो निषीद।
अभूर्विदं विश्वस्य भुवनस्य वाजिनमग्नेर्वैश्वानरस्य च॥३९॥ उष्ट्रं ते शुगृच्छतु यं द्विष्मस्तं ते शुगृच्छतु ॥५०॥
अग्निर्ज्योतिषा ज्योतिष्मान् रुक्मो वर्चसा वर्चस्वान्। अजो ह्यग्नेरजनिष्ट शोकात्सोऽअपश्यज्जनितारमग्नेः ।
सहस्त्रदाऽअसि सहस्राय त्वा ॥४०॥ तेन देवा देवतामग्रमायँस्तेन रोहमायन्नुप मेध्यासः।
आदित्यं गर्भं पयसा समङ्धि सहस्त्रस्य प्रतिमां विश्वरूपम्। शरभमारण्यमनु ते दिशामि तेन चिन्वानस्तन्वो निषीद।
परिवृङ्धि हरसा माभि मꣳस्थाः शतायुषं कृणुहि चीयमानः॥४१॥ शरभं ते शुगृच्छतु यं द्विष्मस्तं ते शुगृच्छतु ॥५१॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

त्वं य॑विष्ठ दा॒शुषो॒ नॄँः पा॑हि शृणु॒धी गिरः॑। रक्षा॑ तो॒कमु॒त त्मना॑॥५२॥

[उ]अ॒पां त्वेम॑न्त्सादयाम्य॒पां त्वोद्म॑न्त्सादयाम्य॒पां त्वा॒ भस्म॑न्त्सादयाम्य॒पां त्वा॒ ज्योति॑षि सादयाम्य॒पां त्वाय॑ने सादयाम्यर्ण॒वे त्वा॒ सद॑ने सादयामि समु॒द्रे त्वा॒ सद॑ने सादयामि। [क]सरि॒रे त्वा॒ सद॑ने सादयाम्य॒पां त्वा॒ क्षये॑ सादयाम्य॒पां त्वा॒ सधि॑षि सादयाम्य॒पां त्वा॒ सद॑ने सादयाम्य॒पां त्वा॑ स॒धस्थे॑ सादयाम्य॒पां त्वा॒ योनौ॑ सादयाम्य॒पां त्वा॒ पुरी॑षे सादयाम्य॒पां त्वा॒ पाथ॑सि सादयामि [र]गाय॒त्रेण॑ त्वा॒ छन्द॑सा सादयामि॒ त्रैष्टु॑भेन त्वा॒ छन्द॑सा सादयामि॒ जाग॑तेन त्वा॒ छन्द॑सा सादया॒म्यानु॑ष्टुभेन त्वा॒ छन्द॑सा सादयामि॒ पाङ्क्ते॑न त्वा॒ छन्द॑सा सादयामि ॥५३॥

अ॒यं पु॒रो भुव॒स्तस्य॑ प्रा॒णो भौ॑वाय॒नो व॑स॒न्तः प्रा॑णाय॒नो गा॑य॒त्री वा॑स॒न्ती गा॑य॒त्र्यै गा॑य॒त्रं गा॑य॒त्रादु॑पा॒ꣳशुरु॑पा॒ꣳशोस्त्रि॒वृत्त्रि॒वृतो॑ रथन्त॒रं वसि॑ष्ठ॒ऽऋषिः॑ प्र॒जाप॑तिगृहीतया॒ त्वया॑ प्रा॒णं गृ॑ह्णामि प्र॒जाभ्यः॑॥५४॥

अ॒यं द॑क्षि॒णा वि॒श्वक॑र्मा॒ तस्य॒ मनो॑ वैश्वकर्म॒णं ग्री॒ष्मो मा॑न॒सस्त्रि॒ष्टुब्ग्रैष्मी॑ त्रि॒ष्टुभः॑ स्वा॒रꣳस्वा॒राद॑न्तर्या॒मो॒ऽन्तर्या॒मात्प॑ञ्चद॒शः प॑ञ्चद॒शाद् बृ॒हद् भ॒रद्वा॑ज॒ऽऋषिः॑ प्र॒जाप॑तिगृहीतया॒ त्वया॒ मनो॑ गृह्णामि प्र॒जाभ्यः॑॥५५॥

अ॒यं प॒श्चाद् वि॒श्वव्य॑चा॒स्तस्य॒ चक्षु॑र्वैश्वव्यच॒सं व॒र्षाश्चा॑क्षु॒ष्यो॒ जग॑ती वा॒र्षी जग॑त्या॒ऽऋक्स॑ममृक्स॑माच्छु॒क्रः शु॒क्रात्स॑प्तद॒शः स॑प्तद॒शाद्वै॑रू॒पं ज॒मद॑ग्नि॒र्ऋषिः॑ प्र॒जाप॑तिगृहीतया॒ त्वया॒ चक्षु॑र्गृह्णामि प्र॒जाभ्यः॑ ॥५६॥

इ॒दमु॑त्त॒रात् स्व॒स्तस्य॒ श्रोत्र॑ꣳसौ॒वꣳश॒रच्छ्रौ॒त्र्य॒नु॒ष्टुप् शा॑र॒द्य॒नु॒ष्टुभ॑ऽ ऐ॒डमै॒डान्म॒न्थी म॒न्थिन॑ऽएकवि॒ꣳश॒ऽए॑कवि॒ꣳशाद् वै॑रा॒जं वि॒श्वामि॑त्र॒ऽ ऋषिः॑ प्र॒जाप॑तिगृहीतया॒ त्वया॒ श्रोत्रं॑ गृह्णामि प्र॒जाभ्यः॑ ॥५७॥

इ॒यमु॒परि॑ म॒तिस्तस्यै॒ वाङ्मा॒त्या हे॑म॒न्तो वा॒च्यः प॒ङ्क्तिर्हे॑म॒न्ती प॒ङ्क्त्यै नि॒धन॑वन्नि॒धन॑वतऽआग्रय॒णऽआ॑ग्रय॒णात् त्रि॑णवत्रयस्त्रि॒ꣳशौ त्रि॑णव-त्रयस्त्रि॒ꣳशाभ्या॑ꣳशाक्वररैव॒ते वि॒श्वक॑र्म॒ऽऋषिः॑ प्र॒जाप॑तिगृहीतया॒ त्वया॒ वाचं॑ गृह्णामि प्र॒जाभ्यः॑ ॥५८॥

इति त्रयोदशोऽध्यायः॥

अथ चतुर्दशोऽध्यायः॥

—:०:—

ऋषिः—उशनाः १-६। विश्वेदेवाः ७, ९, ११. १४, १६, १७। विश्वदेवः ८, १०, १३, १५, १८-३१। विश्वकर्मा १२॥

देवता—अश्विनौ १-५। ग्रीष्मर्तुः ६। वस्वादयो मन्त्रोक्ताः ७। दम्पती ८। प्रजापत्यादयः ९। विद्वांसः १०। इन्द्राग्नी ११। वायुः १२, १४। दिशः १३। ऋतवः १५-१७, २७। छन्दांसि १८। पृथिव्यादयः १९। अग्न्यादयः २०। विदुषी २१, २२। यज्ञः २३। मेधाविनः २४। वस्वादयो लिङ्गोक्ताः २५। ऋभवः २६। ईश्वरः २८, २९। जगदीश्वरः ३०। प्रजापतिः ३१॥

छन्दः—त्रिष्टुप् १। निचृद्ब्राह्मीबृहती २। विराड्ब्राह्मीबृहती ३। भुरिग्ब्राह्मीबृहती ४। भुरिक्शक्वरी ५। निचृदुत्कृतिः ६। भुरिक्प्रकृतिः[उ], स्वराट्पङ्क्तिः[क], निचृदाकृतिः[र] ७। भुरिग्जगती ८। निचृद्ब्राह्मीपङ्क्तिः[क], शक्वरी[र] ९। निचृदष्टिः १०। भुरिगनुष्टुप् ११। भुरिग्विकृतिः १२। विराट्पङ्क्तिः १३। स्वराड्ब्राह्मीबृहती १४। स्वराडुत्कृतिः १५। उत्कृतिः १६। स्वराडब्राह्म्यनुष्टुप् १७। भुरिगतिजगती १८। आर्षीजगती १९। भुरिग्ब्राह्मीत्रिष्टुप् २०। निचृदनुष्टुप् २१। निचृदुष्णिक् २२। भुरिग्ब्राह्मीपङ्क्तिः[क], भुरिगतिजगती[र] २३। भुरिग्विकृतिः २४। निचृदभिकृतिः २५। निचृदतिजगती २६। भुरिगतिजगती[क], भुरिग्ब्राह्मीबृहती[र] २७। निचृद्विकृतिः २८। आर्षीत्रिष्टुप्[क], ब्राह्मीजगती[र] २९। स्वराडब्राह्मीजगती[क], ब्राह्मीपङ्क्तिः[र] ३०। निचृदतिधृति ३१॥

स्वरः—धैवतः १, ५, २०। मध्यमः २-४, १०, १२, १४, २४, २८। षड्जः ६, १५-१६, ३१। धैवतः[र], पञ्चमः[क],[र] ७। निषादः ८, १८, १९, २६। पञ्चमः[क], धैवतः[र] ९। गान्धारः ११, १७, २१। पञ्चमः १३। ऋषभः २२, २५। पञ्चमः[क], निषादः[र] २३। निषादः[क], मध्यमः[र] २७। धैवतः[क], निषादः[र] २९। निषादः[क], पञ्चमः[र] ३०॥

ध्रु॒वक्षि॑तिर्ध्रु॒वयो॑निर्ध्रु॒वासि॑ ध्रु॒वं योनि॒मासी॑द साधु॒या ।
उख्य॑स्य के॒तुं प्र॑थ॒मं जु॑षा॒णा अ॒श्विना॑ध्व॒र्यू सा॑दयतामि॒ह त्वा॑॥१॥

कु॒ला॒यिनी॑ घृ॒तव॑ती॒ पुर॑न्धिः स्यो॒ने सी॑द॒ सद॑ने पृथि॒व्याः।
अ॒भि त्वा॑ रु॒द्रा वस॑वो गृणन्त्वि॒मा ब्रह्म॑ पीपिहि॒
सौभ॑गाया॒श्विना॑ध्व॒र्यू सा॑दयतामि॒ह त्वा॑ ॥२॥

स्वैर्दक्षै॒र्दक्ष॑पिते॒ह सी॑द दे॒वाना॑ꣳसु॒म्ने बृ॑ह॒ते रणा॑य ।
पि॒तेवै॑धि सू॒नव॒ऽआ सु॒शेवा॑ स्वावे॒शा त॒न्वा॒
संवि॑शस्वा॒श्विना॑ध्व॒र्यू सा॑दयतामि॒ह त्वा॑ ॥३॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पृथिव्याः पुरीषमस्यप्सो नाम त्तां त्वा विश्वेऽअभिगृणन्तु देवाः।
स्तोमपृष्ठा घृतवतीह सीद प्रजावदस्मे द्रविणा
यजस्वाश्विनाध्वर्यू सादयतामिह त्वा ॥४॥
अदित्यास्त्वा पृष्ठे सादयाम्यन्तरिक्षस्य ध्रुत्र्यां विष्टम्भनीं
दिशामधिपत्नीं भुवनानाम्। ऊर्मिर्द्रप्सोऽअपामसि
विश्वकर्मा तऽऋषिरश्विनाध्वर्यू सादयतामिह त्वा ॥५॥
शुक्रश्च शुचिश्च ग्रैष्मावृतूऽअग्नेरन्तःश्लेषोऽसि कल्पेतां द्यावापृथिवी
कल्पन्तामापऽओषधयः कल्पन्तामग्नयः पृथङ् मम ज्यैष्ठ्याय सन्नताः।
येऽअग्नयः समनसोऽन्तरा द्यावापृथिवीऽइमे ग्रैष्मावृतूऽअभिकल्पमानाऽ
इन्द्रमिव देवाऽअभिसंविशन्तु तया देवतयाङ्गिरस्वद् ध्रुवे सीदतम्॥६॥
सजूर्ऋतुभिः सजूर्विधाभिः सजूर्देवैः सजूर्देववैर्योनाधैरग्नये त्वा
वैश्वानरायाश्विनाध्वर्यू सादयतामिह त्वा सजूर्ऋतुभिः सजूर्विधाभिः
सजूर्वसुभिः सजूर्देववैर्योनाधैरग्नये त्वा वैश्वानरायाश्विनाध्वर्यू
सादयतामिह त्वा सजूर्ऋतुभिः सजूर्विधाभिः सजू रुद्रैः
सजूर्देववैर्योनाधैरग्नये त्वा वैश्वानरायाश्विनाध्वर्यू सादयतामिह
त्वा सजूर्ऋतुभिः सजूर्विधाभिः सजूरादित्यैः सजूर्देववैर्योनाधैरग्नये
त्वा वैश्वानरायाश्विनाध्वर्यू सादयतामिह त्वा सजूर्ऋतुभिः
सजूर्विधाभिः सजूर्विश्वैर्देवैः सजूर्देववैर्योनाधैरग्नये त्वा वैश्वानरायाश्विनाध्वर्यू सादयतामिह त्वा ॥७॥
प्राणम्मे पाह्यपानम्मे पाहि व्यानम्मे पाहि चक्षुर्मऽउर्व्या
विभाहि श्रोत्रम्मे श्लोकय। अपः पिन्वौषधीर्जिन्व द्विपादव
चतुष्पात्पाहि दिवो वृष्टिमेरय ॥८॥
मूर्धा वयः प्रजापतिश्छन्दः क्षत्रं वयो मयन्दं छन्दो विष्टम्भो
वयोऽधिपतिश्छन्दो विश्वकर्मा वयः परमेष्ठी छन्दो वस्तो वयो
विबलं छन्दो वृष्णिर्वयो विशालं छन्दः पुरुषो वयस्तन्द्रं छन्दो
व्याघ्रो वयोऽनाधृष्टं छन्दः सिंहो वयश्छदिश्छन्दः पष्ठवाड् वयो
बृहती छन्दऽउक्षा वयः ककुप् छन्दऽऋषभो वयः सतोबृहती छन्दः॥९॥

अनड्वान् वयः पङ्क्तिश्छन्दो धेनुर्वयो जगती छन्दस्यविर्वयस्त्रिष्टुप्
छन्दो दित्यवाड् वयो विराट् छन्दः पञ्चाविर्वयो गायत्री
छन्दस्त्रिवत्सो वयऽउष्णिक् छन्दस्तुर्यवाड् वयोऽनुष्टुप् छन्दः॥१०॥
इन्द्राग्नीऽअवथमानामिष्टकां दृꣳहतं युवम् ।
पृष्ठेन द्यावापृथिवीऽअन्तरिक्षं च विबाधसे ॥११॥
विश्वकर्मा त्वा सादयत्वन्तरिक्षस्य पृष्ठे व्यचस्वतीं प्रथस्वतीमन्तरिक्षं
यच्छान्तरिक्षं दृꣳहान्तरिक्षं मा हिꣳसीः। विश्वस्मै प्राणायापानाय
व्यानायोदानाय प्रतिष्ठायै चरित्राय। वायुष्ट्वाभिपातु मह्या स्वस्त्या
छर्दिषा शन्तमेन तया देवतयाङ्गिरस्वद् ध्रुवा सीद ॥१२॥
राज्ञ्यसि प्राची दिग्विराडसि दक्षिणा दिक् सम्राडसि प्रतीची
दिक् स्वराडस्युदीची दिगधिपत्न्यसि बृहती दिक् ॥१३॥
विश्वकर्मा त्वा सादयत्वन्तरिक्षस्य पृष्ठे ज्योतिष्मतीम् ।
विश्वस्मै प्राणायापानाय व्यानाय विश्वं ज्योतिर्यच्छ ।
वायुष्टेऽधिपतिस्तया देवतयाङ्गिरस्वद् ध्रुवा सीद ॥१४॥
नभश्च नभस्यश्च वार्षिकावृतूऽअग्नेरन्तःश्लेषोऽसि कल्पेतां
द्यावापृथिवी कल्पन्तामापऽओषधयः कल्पन्तामग्नयः पृथङ् मम
ज्यैष्ठ्याय सन्नताः। येऽअग्नयः समनसोऽन्तरा द्यावापृथिवीऽइमे।
वार्षिकावृतूऽअभिकल्पमानाऽइन्द्रमिव देवाऽअभिसंविशन्तु तया
देवतयाङ्गिरस्वद् ध्रुवे सीदतम् ॥१५॥
इषश्चोर्जश्च शारदावृतूऽअग्नेरन्तःश्लेषोऽसि कल्पेतां द्यावापृथिवी
कल्पन्तामापऽओषधयः कल्पन्तामग्नयः पृथङ् मम ज्यैष्ठ्याय सन्नताः।
येऽअग्नयः समनसोऽन्तरा द्यावापृथिवीऽइमे। शारदावृतूऽअभिकल्प-
मानाऽइन्द्रमिव देवाऽअभिसंविशन्तु तया देवतयाङ्गिरस्वद् ध्रुवे सीदतम्॥१६॥
आयुर्मे पाहि प्राणं मे पाह्यपानं मे पाहि व्यानं मे पाहि
चक्षुर्मे पाहि श्रोत्रं मे पाहि वाचम्मे पिन्व मनो मे
जिन्वात्मानम्मे पाहि ज्योतिर्मे यच्छ ॥१७॥
मा च्छन्दः प्रमा च्छन्दः प्रतिमा च्छन्दोऽअस्रीवयश्छन्दः
पङ्क्तिश्छन्दऽउष्णिक् छन्दो बृहती छन्दोऽनुष्टुप् छन्दो विराट्
छन्दो गायत्री छन्दस्त्रिष्टुप् छन्दो जगती छन्दः ॥१८॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पृथिवी छन्दोऽन्तरिक्षं छन्दो द्यौश्छन्दः समाश्छन्दो नक्षत्राणि छन्दो वाक् छन्दो मनश्छन्दः कृषिश्छन्दो हिरण्यं छन्दो गौश्छन्दोऽजाच्छन्दोऽश्वश्छन्दः ॥१९॥

अग्निर्देवता वातो देवता सूर्यो देवता चन्द्रमा देवता वसवो देवता रुद्रा देवताऽऽदित्या देवता मरुतो देवता विश्वे देवा देवता बृहस्पतिर्देवतेन्द्रो देवता वरुणो देवता ॥२०॥

मूर्द्धासि राड् ध्रुवासि धरुणा धर्त्र्यसि धरणी ।
आयुषे त्वा वर्चसे त्वा कृष्यै त्वा क्षेमाय त्वा ॥२१॥

यन्त्री राड् यन्त्र्यसि यमनी ध्रुवासि धरित्री ।
इषे त्वोर्जे त्वा रय्यै त्वा पोषाय त्वा ॥२२॥

आशुस्त्रिवृद्भान्तः पञ्चदशो व्योमा सप्तदशो धरुणऽएकविꣳशः प्रतूर्तिरष्टादशस्तपो नवदशोऽभीवर्त्तः सविꣳशो वर्चो द्वाविꣳशः सम्भरणस्त्रयोविꣳशो योनिश्चतुर्विꣳशः। गर्भाः पञ्चविꣳशऽ-ओजस्त्रिणवः क्रतुरेकत्रिꣳशः प्रतिष्ठा त्रयस्त्रिꣳशो ब्रध्नस्य विष्टपं चतुस्त्रिꣳशो नाकः षट्त्रिꣳशो विवर्त्तोऽष्टाचत्वारिꣳशो धर्त्रं चतुष्टोमः॥२३॥

अग्नेर्भागोऽसि दीक्षायाऽआधिपत्यं ब्रह्म स्पृतं त्रिवृत्स्तोमः। इन्द्रस्य भागोऽसि विष्णोराधिपत्यं क्षत्रꣳस्पृतं पञ्चदश स्तोमः। नृचक्षसां भागोऽसि धातुराधिपत्यं जनित्रꣳस्पृतꣳसप्तदश स्तोमः। मित्रस्य भागोऽसि वरुणस्याधिपत्यं दिवो वृष्टिर्वात स्पृतऽएकविꣳश स्तोमः॥२४॥

वसूनां भागोऽसि रुद्राणामाधिपत्यं चतुष्पात् स्पृतं चतुर्विꣳश स्तोमः। आदित्यानां भागोऽसि मरुतामाधिपत्यं गर्भाः स्पृताः पञ्चविꣳश स्तोमः। अदित्यै भागोऽसि पूष्णऽआधिपत्यमोज स्पृतं त्रिणव स्तोमः। देवस्य सवितुर्भागोऽसि बृहस्पतेराधिपत्यꣳ समीचीर्दिश स्पृताश्चतुष्टोमं स्तोमः ॥२५॥

यवानां भागोऽस्ययवानामाधिपत्यं प्रजा स्पृताश्चतुश्चत्वारिꣳश स्तोमः। ऋभूणां भागोऽसि विश्वेषां देवानामाधिपत्यं भूतꣳस्पृतं त्रयस्त्रिꣳश स्तोमः ॥२६॥

सहश्च सहस्यश्च हैमन्तिकावृतूऽअग्नेरन्तःश्लेषोऽसि कल्पेतां द्यावापृथिवी कल्पन्तामापऽओषधयः कल्पन्तामग्नयः पृथङ् मम ज्यैष्ठ्याय सव्रताः। येऽअग्नयः समनसोऽन्तरा द्यावापृथिवीऽइमे। हैमन्तिकावृतूऽअभिकल्पमानाऽइन्द्रमिव देवाऽअभिसंविशन्तु तया देवतयाङ्गिरस्वद् ध्रुवे सीदतम् ॥२७॥

एकयास्तुवत प्रजाऽअधीयन्त प्रजापतिरधिपतिरासीत् ।
तिसृभिरस्तुवत ब्रह्मासृज्यत ब्रह्मणस्पतिरधिपतिरासीत् ।
पञ्चभिरस्तुवत भूतान्यसृज्यन्त भूतानां पतिरधिपतिरासीत् ।
सप्तभिरस्तुवत सप्त ऋषयोऽसृज्यन्त धाताधिपतिरासीत् ॥२८॥

नवभिरस्तुवत पितरोऽसृज्यन्तादितिरधिपत्न्यासीत् ।
एकादशभिरस्तुवतऽऋतवोऽसृज्यन्तार्त्तवाऽअधिपतयऽआसन् ।
त्रयोदशभिरस्तुवत मासाऽअसृज्यन्त संवत्सरोऽधिपतिरासीत् ।
पञ्चदशभिरस्तुवत क्षत्रमसृज्यतेन्द्रोऽधिपतिरासीत् ।
सप्तदशभिरस्तुवत ग्राम्याः पशवोऽसृज्यन्त बृहस्पतिरधिपतिरासीत्॥२९॥

नवदशभिरस्तुवत शूद्रार्य्यावसृज्येतामहोरात्रेऽअधिपत्नीऽआस्ताम्। एकविꣳशत्यास्तुवतैकशफाः पशवोऽसृज्यन्त वरुणोऽधिपतिरासीत्। त्रयोविꣳशत्यास्तुवत क्षुद्राः पशवोऽसृज्यन्त पूषाधिपतिरासीत्। पञ्चविꣳशत्यास्तुवताऽऽरण्याः पशवोऽसृज्यन्त वायुरधिपतिरासीत्। सप्तविꣳशत्यास्तुवत द्यावापृथिवी व्यैतां वसवो रुद्राऽआदित्याऽ अनुव्यायँस्तऽएवाधिपतयऽआसन् ॥३०॥

नवविꣳशत्यास्तुवत वनस्पतयोऽसृज्यन्त सोमोऽधिपतिरासीत्। एकत्रिꣳशतास्तुवत प्रजाऽअसृज्यन्त यवाश्चायवाश्चाधिपतयऽआसन्। त्रयस्त्रिꣳशतास्तुवत भूतान्यशाम्यन् प्रजापतिः परमेष्ठ्यधिपतिरासीत्॥३१॥

इति चतुर्दशोऽध्यायः॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अथ पञ्चदशोऽध्यायः॥

—:०:—

ऋषिः—परमेष्ठी १-५९। प्रियमेधा ६०। मधुच्छन्दाः ६१, ६५। वसिष्ठः ६२-६४॥

देवता—अग्निः १, २, २०-५६, ६२। दम्पती ३। विद्वांसः ४-७। प्रजापतिः ८, ९। वसवः १०। रुद्राः ११। आदित्याः १२। मरुतः १३। विश्वेदेवाः १४। वसन्तऋतुः १५। ग्रीष्मर्तुः १६। वर्षर्तुः १७। शरदृतुः १८। हेमन्तर्तुः १९। शिशिरर्त्तुः ५७। विदुषी ५८, ६३। इन्द्राग्नी ५९। आपः ६०। इन्द्रः ६१। परमात्मा ६४। विद्वान् ६५॥

छन्दः—त्रिष्टुप् १। भुरिक्त्रिष्टुप् २। ब्राह्मीत्रिष्टुप् ३, ७। भुरिगाकृतिः ४। निचृदभिकृतिः ५। विराडभिकृतिः ६। भुरिगार्ष्यनुष्टुप् ८। विराड्ब्राह्मीजगती ९। विराड्ब्राह्मीत्रिष्टुप्[क] ब्राह्मीबृहती[र] १०। स्वराड्ब्राह्मीत्रिष्टुप्[क] ब्राह्मीबृहती[र] ११, १३। भुरिग्ब्राह्मीजगती[क], ब्राह्मीबृहती[र] १२। ब्राह्मीजगती[क], ब्राह्मीत्रिष्टुप्[र] १४। विकृतिः १५। निचृत्प्रकृतिः १६। कृतिः १७। भुरिगतिधृतिः १८। निचृत्कृतिः १९। निचृद्गायत्री २०-२२। निचृदार्षीत्रिष्टुप् २३, ५२। निचृत्त्रिष्टुप् २४, २५। भुरिगार्षीत्रिष्टुप् २६, ५०। निचृदार्षीजगती २७। विराडार्षीजगती २८। विराडनुष्टुप् २९-३१, ५९, ६०, ६५। विराड्बृहती ३२। निचृद्बृहती ३३। आर्ष्यनुष्टुप् ३४। उष्णिक् ३५, ३८। निचृदुष्णिक् ३६, ३७, ३९, ४०। निचृत्पङ्क्तिः ४१, ४३। आर्षीपङ्क्तिः ४२। आर्षीगायत्री ४४। भुरिगार्षीगायत्री ४५, ४६। विराड्ब्राह्मीत्रिष्टुप् ४७। स्वराड्ब्राह्मीबृहती ४८। आर्षीत्रिष्टुप् ४९, ५४। स्वराडार्षीत्रिष्टुप् ५१। भुरिगार्षीपङ्क्तिः ५३। निचृदनुष्टुप् ५५, ५६, ६१। स्वराडुत्कृतिः ५७। ब्राह्मीबृहती ५८। विराट्त्रिष्टुप् ६२, ६३। आकृतिः ६४॥

स्वरः—धैवतः १-३, ७, १६, २३-२६, ४७, ४९-५२, ५४, ६२, ६३। पञ्चमः ४, ४१-४३, ५३, ६४। ऋषभः ५, ६, ३५-४०। गान्धारः ८, २९-३१, ३४, ५५, ५६, ५९-६१, ६५। निषादः ९, १७, १९, २७, २८। धैवतः[क], मध्यमः[र] १०, ११, १३। निषादः[क], मध्यमः[र] १२। निषादः[क], धैवतः[र] १४। मध्यमः १५, ३२, ३३, ४८, ५८। षड्जः १८, २०-२२, ४४-४६, ५७॥

अग्ने॑ जा॒तान् प्रणु॑दा नः स॒पत्ना॒न् प्रत्यजा॑तान्नुद जातवेदः ।
अधि॑ नो ब्रूहि सु॒मना॒ऽअहे॑डँ॒स्तव॑ स्याम॒ शर्म॑ँस्त्रि॒वरू॑थऽउ॒द्भौ ॥१॥
सह॑सा जा॒तान् प्रणु॑दा नः स॒पत्ना॒न् प्रत्यजा॑तान् जातवेदो नुदस्व।
अधि॑ नो ब्रूहि सु॒म॒नस्यमा॑नो व॒यꣳस्या॑म॒ प्रणु॑दा नः स॒पत्ना॑न्॥२॥
षो॒ड॒शी स्तोम॒ऽओजो॒ द्रवि॑णं चतुश्चत्वारि॒ꣳश स्तोमो॒ वर्चो॒ द्रवि॑णम्।
अ॒ग्नेः पुरी॑षम॒स्यप्सो॒ नाम॒ तां त्वा॒ विश्वे॑ऽअ॒भि गृ॑णन्तु दे॒वाः।
स्तोम॑पृष्ठा घृ॒तव॑ती॒ह सी॑द प्र॒जाव॑द॒स्मे द्रवि॒णा य॑जस्व ॥३॥

ए॒व॒श्छन्दो॒ वरि॑व॒श्छन्दः॑ श॒म्भूश्छन्दः॑ परि॒भूश्छन्द॑ऽआ॒च्छच्छन्दो॒ मन॒श्छन्दो॒ व्यच॒श्छन्दः॒ सिन्धु॒श्छन्दः॑ समु॒द्रश्छन्दः॑ सरि॒रं छन्दः॑ क॒कुप् छन्द॑स्त्रिक॒कुप् छन्दः॑ का॒व्यं छन्दो॑ऽअङ्कु॒पं छन्दो॒ऽक्षर॑पङ्क्ति॒श्छन्दः॑ प॒दप॑ङ्क्ति॒श्छन्दो॑ विष्टा॒रप॑ङ्क्ति॒श्छन्दः॑ क्षु॒रश्छन्दो॒ भ्रज॒श्छन्दः॑ ॥४॥

आ॑च्छच्छन्दः॑ प्र॒च्छच्छन्दः॑ सं॒यच्छन्दो॑ वि॒यच्छन्दो॑ बृ॒हच्छन्दो॑ रथन्त॒रञ्छन्दो॑ निका॒यश्छन्दो॑ विव॒धश्छन्दो॒ गिर॒श्छन्दो॒ भ्रज॒श्छन्दः॑ स॒ꣳस्तुप् छन्दो॑ऽनु॒ष्टुप् छन्द॒ऽए॒व॒श्छन्दो॒ वरि॑व॒श्छन्दो॒ वय॒श्छन्दो॑ वय॒स्कृच्छन्दो॒ विष्प॑र्द्धा॒श्छन्दो॑ विशा॒लं छन्द॑श्छ॒दिश्छन्दो॑ दूरोह॒णं छन्द॑स्त॒न्द्रं छन्दो॑ऽअङ्का॒ङ्कं छन्दः॑ ॥५॥

र॒श्मिना॑ स॒त्याय॑ स॒त्यं जि॑न्व॒ प्रेति॑ना॒ धर्म्म॑णा॒ धर्मं॑ जि॒न्वान्वि॑त्या वि॒वादिवं॑ जिन्व स॒न्धिना॒न्तरि॑क्षेणा॒न्तरि॑क्षं जिन्व प्रति॒धिना॑ पृथि॒व्या पृ॑थि॒वीं जि॑न्व विष्ट॒म्भेन॒ वृष्ट्या॒ वृष्टिं॑ जिन्व प्र॒वयाऽह्नाह॑र्जिन्वानु॒या रात्र्या॒ रात्रीं॑ जिन्वो॒शिजा॒ वसु॑भ्यो॒ वसू॑न् जिन्व प्रके॒तेना॑दि॒त्येभ्य॑ऽआदि॒त्याञ्जि॑न्व ॥६॥

तन्तु॑ना रा॒यस्पोषे॑ण रा॒यस्पोषं॑ जिन्व सꣳस॒र्पेण॑ श्रु॒ताय॑ श्रु॒तं जि॑न्वै॒डे-नौष॑धीभि॒रोष॑धीर्जिन्वोत्त॒मेन॑ त॒नूभि॑स्त॒नूर्जि॑न्व वयो॒धसाधी॑ते॒नाधी॑तं जिन्वाभि॒जिता॒ तेज॑सा॒ तेजो॑ जिन्व ॥७॥

प्र॒ति॒पद॑सि प्रति॒पदे॑ त्वानु॒पद॑स्यनु॒पदे॑ त्वा स॒म्पद॑सि स॒म्पदे॑ त्वा॒ तेजो॑ऽसि॒ तेज॑से त्वा ॥८॥

त्रि॒वृद॑सि त्रि॒वृते॑ त्वा प्र॒वृद॑सि प्र॒वृते॑ त्वा वि॒वृद॑सि वि॒वृते॑ त्वा स॒वृद॑सि स॒वृते॑ त्वाऽऽक्र॒मो॒ऽस्याक्र॒माय॑ त्वा संक्र॒मो॒ऽसि संक्र॒माय॑ त्वोत्क्र॒मो॒ऽस्युत्क्र॒माय॒ त्वोत्क्रा॑न्तिर॒स्युत्क्रा॑न्त्यै॒ त्वाधि॑पतिनो॒र्जोर्जं॑ जिन्व॥९॥

[क]राज्ञ्य॑सि॒ प्राची॒ दिग्वस॑वस्ते दे॒वाऽअधि॑पतयो॒ऽग्निर्हे॑ती॒नां प्र॑तिध॒र्त्ता त्रि॒वृत् त्वा॒ स्तोमः॑ पृथि॒व्याꣳश्र॑य॒त्वाज्यू॑मु॒क्थमव्य॑थायै स्तभ्नातु रथन्त॒रꣳसाम॒ प्रति॑ष्ठित्याऽअ॒न्तरि॑क्ष॒ऽऋष॑यस्त्वा [र]प्रथम॒जा दे॒वेषु॑ दि॒वो मात्र॑या वरि॒म्णा प्र॑थन्तु विध॒र्त्ता चा॒यमधि॑पतिश्च॒ ते त्वा॑ सर्वे॑ संविदा॒ना नाक॑स्य पृ॒ष्ठे स्व॒र्गे लो॒के यज॑मानं च सादयन्तु॥१०॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

॥विराडसि दक्षिणा दिग्गुद्रास्ते देवाऽअधिपतयऽइन्द्रो हेतीनां प्रतिधर्त्ता पञ्चदशस्त्वा स्तोमः पृथिव्याश्श्रयतु प्रऽउगमुक्थमव्यथायै स्तभ्नातु बृहत्साम प्रतिष्ठित्याऽअन्तरिक्षऽऋषयस्त्वा प्रथमजा देवेषु दिवो मात्रया वरिम्णा प्रथन्तु विधर्त्ता चायमधिपतिश्च ते त्वा सर्वे संविदाना नाकस्य पृष्ठे स्वर्गे लोके यजमानं च सादयन्तु ॥११॥

॥सम्राडसि प्रतीची दिगादित्यास्ते देवाऽअधिपतयो वरुणो हेतीनां प्रतिधर्त्ता सप्तदशस्त्वा स्तोमः पृथिव्याश्श्रयतु मरुत्वतीयमुक्थमव्यथायै स्तभ्नातु वैरूपꣳसाम प्रतिष्ठित्याऽअन्तरिक्षऽऋषयस्त्वा प्रथमजा देवेषु दिवो मात्रया वरिम्णा प्रथन्तु विधर्त्ता चायमधिपतिश्च ते त्वा सर्वे संविदाना नाकस्य पृष्ठे स्वर्गे लोके यजमानं च सादयन्तु॥१२॥

॥स्वराडसि प्रतीची दिङ् मरुतस्ते देवाऽअधिपतयः सोमो हेतीनां प्रतिधर्त्तैकविꣳशस्त्वा स्तोमः पृथिव्याश्श्रयतु निष्केवल्यमुक्थमव्यथायै स्तभ्नातु वैराजꣳसाम प्रतिष्ठित्याऽअन्तरिक्षऽऋषयस्त्वा प्रथमजा देवेषु दिवो मात्रया वरिम्णा प्रथन्तु विधर्त्ता चायमधिपतिश्च ते त्वा सर्वे संविदाना नाकस्य पृष्ठे स्वर्गे लोके यजमानं च सादयन्तु॥१३॥

॥अधिपत्न्यसि बृहती दिग्विश्वे ते देवाऽअधिपतयो बृहस्पतिर्हेतीनां प्रतिधर्त्ता त्रिणवत्रयस्त्रिꣳशौ त्वा स्तोमौ पृथिव्याश्श्रयतां वैश्वदेवान्निमारुतेऽउक्थेऽअव्यथायै स्तभ्नीताश्शाक्वररैवते साम्नी प्रतिष्ठित्याऽअन्तरिक्षऽऋषयस्त्वा प्रथमजा देवेषु दिवो मात्रया वरिम्णा प्रथन्तु विधर्त्ता चायमधिपतिश्च ते त्वा सर्वे संविदाना नाकस्य पृष्ठे स्वर्गे लोके यजमानं च सादयन्तु ॥१४॥

अयं पुरो हरिकेशः सूर्यरश्मिस्तस्य रथगृत्सश्च रथौजाश्च सेनानीग्रामण्यौ। पुञ्जिकस्थला च क्रतुस्थला चाप्सरसौ दुङ्क्षणवः पशवो हेतिः पौरुषेयो वधः प्रहेतिस्तेभ्यो नमोऽअस्तु ते नोऽवन्तु ते नो मृडयन्तु ते यं द्विष्मो यश्च नो द्वेष्टि तमेषां जम्भे दध्मः॥१५॥

अयं दक्षिणा विश्वकर्म्मा तस्य रथस्वनश्च रथेचित्रश्च सेनानीग्रामण्यौ। मेनका च सहजन्या चाप्सरसौ यातुधाना हेती रक्षाꣳसि प्रहेतिस्तेभ्यो नमोऽअस्तु ते नोऽवन्तु ते नो मृडयन्तु ते यं द्विष्मो यश्च नो द्वेष्टि तमेषां जम्भे दध्मः ॥१६॥

अयं पश्चाद् विश्वव्यचास्तस्य रथप्रोतश्चासमरथश्च सेनानीग्रामण्यौ। प्रम्लोचन्ती चानुम्लोचन्ती चाप्सरसौ व्याघ्रा हेतिः सर्पाः प्रहेतिस्तेभ्यो नमोऽअस्तु ते नोऽवन्तु ते नो मृडयन्तु ते यं द्विष्मो यश्च नो द्वेष्टि तमेषां जम्भे दध्मः ॥१७॥

अयमुत्तरात् संयद्वसुस्तस्य तार्क्ष्यश्चारिष्टनेमिश्च सेनानीग्रामण्यौ। विश्वाची च घृताची चाप्सरसावापो हेतिर्वातः प्रहेतिस्तेभ्यो नमोऽअस्तु ते नोऽवन्तु ते नो मृडयन्तु ते यं द्विष्मो यश्च नो द्वेष्टि तमेषां जम्भे दध्मः ॥१८॥

अयमुपर्यर्वाग्वसुतस्य सेनजिच्च सुषेणश्च सेनानीग्रामण्यौ। उर्वशी च पूर्वचित्तिश्चाप्सरसाववस्फूर्जन् हेतिर्विद्युत्प्रहेतिस्तेभ्यो नमोऽअस्तु ते नोऽवन्तु ते नो मृडयन्तु ते यं द्विष्मो यश्च नो द्वेष्टि तमेषां जम्भे दध्मः ॥१९॥

अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्याऽअयम्। अपाꣳरेताꣳसि जिन्वति॥२०॥

अयमग्निः सहस्रिणो वाजस्य शतिनस्पतिः। मूर्धा कवी रयीणाम्॥२१॥

त्वामग्ने पुष्करादध्यथर्वा निरमन्थत। मूर्ध्नो विश्वस्य वाघतः॥२२॥

भुवो यज्ञस्य रजसश्च नेता यत्रा नियुद्भिः सचसे शिवाभिः ।
दिवि मूर्धानं दधिषे स्वर्षां जिह्वामग्ने चकृषे हव्यवाहम् ॥२३॥

अबोध्यग्निः समिधा जनानां प्रति धेनुमिवायतीमुषासम् ।
यह्वाऽइव प्र वयामुज्जिहानाः प्र भानवः सिस्रते नाकमच्छ ॥२४॥

अवोचाम कवये मेध्याय वचो वन्दारु वृषभाय वृष्णे ।
गविष्ठिरो नमसा स्तोममग्नौ दिवीव रुक्ममुरुव्यञ्चमश्रेत् ॥२५॥

अयमिह प्रथमो धायि धातृभिर्होता यजिष्ठोऽअध्वरेष्वीड्यः ।
यमप्नवानो भृगवो विरुरुचुर्वनेषु चित्रं विभ्वं विशेविशे ॥२६॥

जनस्य गोपाऽअजनिष्ट जागृविरग्निः सुदक्षः सुविताय नव्यसे।
घृतप्रतीको बृहता दिविस्पृशा द्युमद्विभाति भरतेभ्यः शुचिः ॥२७॥

त्वामग्नेऽअङ्गिरसो गुहा हितमन्वविन्दञ्छिश्रियाणं वनेवने ।
स जायसे मथ्यमानः सहो महत् त्वामाहुः सहसस्पुत्रमङ्गिरः ॥२८॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सखायः सं वः सम्यञ्चमिषꣳस्तोमं चाग्नये । वर्षिष्ठाय क्षितीनामूर्जो नप्त्रे सहस्वते ॥२९॥
सꣳसमिद्युवसे वृषन्नग्ने विश्वान्यर्य्यऽआ । इडस्पदे समिध्यसे स नो वसून्याभर ॥३०॥
त्वां चित्रश्रवस्तम हवन्ते विक्षु जन्तवः । शोचिष्केशं पुरुप्रियाग्ने हव्याय वोढवे ॥३१॥
एना वोऽअग्निं नमसोर्जो नपातमाहुवे । प्रियं चेतिष्ठमरतिꣳस्वध्वरं विश्वस्य दूतममृतम् ॥३२॥
विश्वस्य दूतममृतं विश्वस्य दूतममृतम् । स योजतेऽअरुषा विश्वभोजसा स दुद्रवत् स्वाहुतः ॥३३॥
स दुद्रवत् स्वाहुतः स दुद्रवत् स्वाहुतः । सुब्रह्मा यज्ञः सुशमी वसूनां देवꣳराधो जनानाम् ॥३४॥
अग्ने वाजस्य गोमतऽईशानः सहसो यहो । अस्मे धेहि जातवेदो महि श्रवः ॥३५॥
सऽइधानो वसुष्कविरग्निरीडेन्यो गिरा । रेवदस्मभ्यं पुर्वणीक दीदिहि॥३६॥
क्षपो राजन्नुत त्मनाग्ने वस्तोरुतोषसः । स तिग्मजम्भ रक्षसो दह प्रति॥३७॥
भद्रो नोऽअग्निराहुतो भद्रा रातिः सुभग भद्रोऽअध्वरः । भद्राऽउत प्रशस्तयः ॥३८॥
भद्राऽउत प्रशस्तयो भद्रं मनः कृणुष्व वृत्रतूर्य्ये । येना समत्सु सासहः ॥३९॥
येना समत्सु सासहोऽवं स्थिरा तनुहि भूरि शर्धताम् । वनेमा तेऽअभिष्टिभिः ॥४०॥
अग्निं तं मन्ये यो वसुरस्तं यं यन्ति धेनवः । अस्तमर्वन्तऽआशवोऽस्तं नित्यासो वाजिनऽइषꣳस्तोतृभ्यऽआ भर॥४१॥
सोऽअग्निर्यो वसुर्गृणे सं यमायन्ति धेनवः । समर्वन्तो रघुद्रुवः सꣳसुजातासः सूरयऽइषꣳस्तोतृभ्यऽआ भर॥४२॥

उभे सुश्चन्द्र सर्पिषो दर्वी श्रीणीषऽआसनि । उतो नऽउत्पुपूर्याऽउक्थेषु शवसस्पतऽइषꣳस्तोतृभ्यऽआ भर ॥४३॥
अग्ने तमद्याश्वं न स्तोमैः क्रतुं न भद्रꣳहृदिस्पृशम् । ऋध्यामा तऽओहैः॥४४॥
अधा ह्यग्ने क्रतोर्भद्रस्य दक्षस्य साधोः । रथीर्ऋतस्य बृहतो बभूथ॥४५॥
एभिर्नोऽअर्कैर्भवा नो अर्वाङ् स्वर्ण ज्योतिः । अग्ने विश्वेभिः सुमनाऽअनीकैः ॥४६॥
अग्निꣳहोतारं मन्ये दास्वन्तं वसुꣳसूनुꣳसहसो जातवेदसं विप्रं न जातवेदसम् । यऽऊर्ध्वया स्वध्वरो देवो देवाच्या कृपा । घृतस्य विभ्राष्टिमनु वष्टि शोचिषाऽऽजुह्वानस्य सर्पिषः ॥४७॥
अग्ने त्वं नोऽअन्तमऽउत त्राता शिवो भवा वरूथ्यः । वसुरग्निर्वसुश्रवाऽअच्छा नक्षि द्युमत्तमꣳरयिन्दाः । तं त्वा शोचिष्ठ दीदिवः सुम्नाय नूनमीमहे सखिभ्यः ॥४८॥
येनऽऋषयस्तपसा सत्रमायन्निन्धानाऽअग्निꣳस्वराभरन्तः । तस्मिन्नहं निदधे नाकेऽअग्निं यमाहुर्मनव स्तीर्णबर्हिषम् ॥४९॥
तं पत्नीभिरनु गच्छेम देवाः पुत्रैर्भ्रातृभिरुत वा हिरण्यैः । नाकं गृभ्णानाः सुकृतस्य लोके तृतीये पृष्ठेऽअधि रोचने दिवः॥५०॥
आ वाचो मध्यमरुहद् भुरण्युरयमग्निः सत्पतिश्चेकितानः । पृष्ठे पृथिव्या निहितो दविद्युतदधस्मदं कृणुतां ये पृतन्यवः ॥५१॥
अयमग्निर्वीरतमो वयोधाः संहस्रियो द्योततामप्रयुच्छन् । विभ्राजमानः सरिरस्य मध्यऽउप्र प्र याहि दिव्यानि धाम ॥५२॥
सम्प्रच्यवध्वमुप सम्प्रयातागने पथो देवयानान् कृणुध्वम् । पुनः कृण्वाना पितरा युवानान्वाताꣳसीत् त्वयि तन्तुमेतम् ॥५३॥
उद् बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि त्वमिष्टापूर्ते सꣳसृजेथामयं च । अस्मिन्त्सधस्थेऽअध्युत्तरस्मिन् विश्वे देवा यजमानश्च सीदत ॥५४॥
येन वहꣳसि सहस्रं येनाग्ने सर्ववेदसम् । तेनेमं यज्ञं नो नय स्वर्देवेषु गन्तवे ॥५५॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अयं ते योनिर्ऋत्वियो यतो जातोऽअरोचथाः ।
तं जानन्नग्नऽआ रोहाथा नो वर्धया रयिम् ॥५६॥
तपश्च तपस्यश्च शैशिरावृतूऽअग्नेरन्तःश्लेषोऽसि कल्पेतां द्यावा-
पृथिवी कल्पन्तामापऽओषधयः कल्पन्तामग्नयः पृथङ् मम ज्यैष्ठ्याय
सन्नताः। येऽअग्नयः समनसोऽन्तरा द्यावापृथिवीऽइमे। शैशिरा-
वृतूऽअभिकल्पमानाऽइन्द्रमिव देवाऽअभिसंविशन्तु तया देवतयाऽ-
ङ्गिरस्वद् ध्रुवे सीदतम् ॥५७॥
परमेष्ठी त्वा सादयतु दिवस्पृष्ठे ज्योतिष्मतीम् ।
विश्वस्मै प्राणायापानाय व्यानाय विश्वं ज्योतिर्यच्छ ।
सूर्यस्तेऽधिपतिस्तया देवतयाऽङ्गिरस्वद् ध्रुवा सीद ॥५८॥
लोकं पृण छिद्रं पृणाथो सीद ध्रुवा त्वम् ।
इन्द्राग्नी त्वा बृहस्पतिरस्मिन् योनावसीषदन् ॥५९॥
ताऽअस्य सूददोहसः सोमꣳश्रीणन्ति पृश्नयः ।
जन्मन्देवानां विशस्त्रिष्वारोचने दिवः ॥६०॥
इन्द्रं विश्वाऽअवीवृधन्त्समुद्रव्यचसं गिरः ।
रथीतमꣳरथीनां वाजानाꣳसत्पतिं पतिम् ॥६१॥
प्रोथदश्वो न यवसेऽविष्यन्यदा महः संवरणाद्व्यस्थात् ।
आदस्य वातोऽअनु वाति शोचिरध स्म ते व्रजनं कृष्णमस्ति ॥६२॥
आयोष्टा सदने सादयाम्यवतश्छायायाꣳसमुद्रस्य हृदये ।
रश्मीवतीं भास्वतीमा या द्यां भास्या पृथिवीमोर्वन्तरिक्षम् ॥६३॥
परमेष्ठी त्वा सादयतु दिवस्पृष्ठे व्यचस्वतीं प्रथस्वतीं दिवं यच्छ
दिवं दृꣳह दिवं मा हिꣳसीः। विश्वस्मै प्राणायापानाय व्यानायोदानाय
प्रतिष्ठायै चरित्राय। सूर्यस्त्वाभिपातु मह्या स्वस्त्या छर्दिषा शन्तमेन
तया देवतयाऽङ्गिरस्वद् ध्रुवे सीदतम् ॥६४॥
सहस्रस्य प्रमासि सहस्रस्य प्रतिमासि सहस्रस्योन्मासि
साहस्रोऽसि सहस्राय त्वा ॥६५॥

इति पञ्चदशोऽध्यायः॥

अथ षोडशोऽध्यायः॥

—:o:—

ऋषिः—परमेष्ठी वा कुत्सः १-३। परमेष्ठी ४। बृहस्पतिः ५। प्रजापतिः ६-१४, ३४। कुत्सः १५-३३, ३५-३९। परमेष्ठी प्रजापतिर्वा देवाः ४०-६६॥

देवता—रुद्रः १-४, ६-१७, १९, २९। एकरुद्रः ५। रुद्राः १८, २०-२८, ३०-५५, ५७-६६। बहुरुद्राः ५६॥

छन्दः—आर्षीगायत्री १। स्वराडार्ष्यनुष्टुप् २। विराडार्ष्यनुष्टुप् ३, ५४, ६२। निचृदार्ष्यनुष्टुप् ४, ८, १२, १३, ५३, ५६-५८, ६०, ६१। भुरिगार्षीबृहती ५, ४७। निचृदार्षीपङ्क्तिः ६। विराडार्षीपङ्क्तिः ७। भुरिगार्ष्युष्णिक् ९, १४, ५५। भुरिगार्ष्यनुष्टुप् १०, ६३। निचृदनुष्टुप् ११। स्वराडार्ष्युष्णिक् १४। निचृदार्षीजगती १५, १६। निचृदतिधृतिः १७, २१। निचृदष्टिः १८, २२। विराडतिधृतिः १९। अतिधृतिः २०। निचृदतिजगती २३। शक्वरी २४। भुरिक्शक्वरी २५। भुरिगतिजगती २६, २९। निचृच्छक्वरी २७। आर्षीजगती २८, ४८। विराडार्षीत्रिष्टुप् ३०। स्वराडार्षीपङ्क्तिः ३१, ३९। स्वराडार्षीत्रिष्टुप् ३२, ३४-३६। आर्षीत्रिष्टुप् ३३, ४४, ५०। निचृदार्षीत्रिष्टुप् ३७, ४२, ४५। भुरिगार्षीपङ्क्तिः ३८। अतिशक्वरी ४०। स्वराडार्षीबृहती ४१। जगती ४३। स्वराट्प्रकृतिः ४६। आर्ष्यनुष्टुप् ४९, ५२, ५९। निचृदार्षीयवमध्यात्रिष्टुप् ५१। निचृद्धृतिः ६४। धृतिः ६५, ६६॥

स्वरः—षड्जः १, १७, १९-२१। गान्धारः २-४, ८, १०-१३, ४९, ५२-५४, ५६-६३। मध्यमः ५, १८, २२, ४१, ४७। पञ्चमः ६, ७, ३१, ३८-४०। ऋषभः ९, १४, ५५, ६४-६६। निषादः १५, १६, २३, २६, २८, २९, ४३, ४८। धैवतः २४, २५, २७, ३०, ३२-३७, ४२, ४४-४६, ५०, ५१॥

नमस्ते रुद्र मन्यवऽउतो तऽइषवे नमः। बाहुभ्यामुत ते नमः ॥१॥
या ते रुद्र शिवा तनूरघोराऽपापकाशिनी ।
तया नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभि चाकशीहि ॥२॥
यामिषुं गिरिशन्त हस्ते बिभर्ष्यस्तवे ।
शिवां गिरित्र तां कुरु मा हिꣳसीः पुरुषं जगत् ॥३॥
शिवेन वचसा त्वा गिरिशाच्छा वदामसि ।
यथा नः सर्वमिज्जगदयक्ष्मꣳसुमनाऽअसत् ॥४॥
अध्यवोचदधिवक्ता प्रथमो दैव्यो भिषक् ।
अहीꣳश्च सर्वाञ्जम्भयन्त्सर्वाश्च यातुधान्योऽधराचीः परा सुव ॥५॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

असौ यस्ताम्रोऽअरुणऽउत बभ्रुः सुमङ्गलः ।
ये चैनꣳरुद्राऽअभितो दिक्षु श्रिताः सहस्रशोऽवैषाꣳहेडऽईमहे॥६॥
असौ योऽवसर्पति नीलग्रीवो विलोहितः ।
उतैनं गोपाऽअदृश्रन्नदृश्रन्नुदहार्य्यः स दृष्टो मृडयाति नः ॥७॥
नमोऽस्तु नीलग्रीवाय सहस्राक्षाय मीढुषे ।
अथो येऽअस्य सत्वानोऽहं तेभ्योऽकरं नमः ॥८॥
प्रमुञ्च धन्वनस्त्वमुभयोरार्त्न्योर्ज्याम् ।
याश्च ते हस्तऽइषवः परा ता भगवो वप ॥९॥
विज्यं धनुः कपर्दिनो विशल्यो बाणवाँऽउत ।
अनेशन्नस्य याऽइषवऽआभुरस्य निषङ्गधिः ॥१०॥
या ते हेतिर्मीढुष्टम हस्ते बभूव ते धनुः ।
तयास्मान्विश्वतस्त्वमयक्ष्मया परि भुज ॥११॥
परि ते धन्वनो हेतिरस्मान्वृणक्तु विश्वतः ।
अथो यऽइषुधिस्तवारेऽअस्मन्निधेहि तम् ॥१२॥
अवतत्य धनुष्ट्वꣳसहस्राक्ष शतेषुधे ।
निशीर्य्य शल्यानां मुखा शिवो नः सुमना भव ॥१३॥
नमस्तऽआयुधायानातताय धृष्णवे ।
उभाभ्यामुत ते नमो बाहुभ्यां तव धन्वने ॥१४॥
मा नो महान्तमुत मा नोऽअर्भकं मा नऽउक्षन्तमुत मा नऽउक्षितम्।
मा नो वधीः पितरं मोत मातरं मा नः प्रियास्तन्वो रुद्र रीरिषः॥१५॥
मा नस्तोके तनये मा नऽआयुषि मा नो गोषु मा नोऽअश्वेषु रीरिषः।
मा नो वीरान् रुद्र भामिनो वधीर्हविष्मन्तः सदमित् त्वा हवामहे॥१६॥
नमो हिरण्यबाहवे सेनान्ये दिशां च पतये नमो नमो वृक्षेभ्यो
हरिकेशेभ्यः पशूनां पतये नमो नमः शष्पिञ्जराय त्विषीमते
पथीनां पतये नमो नमो हरिकेशायोपवीतिने पुष्टानां पतये नमः॥१७॥
नमो बभ्लुशाय व्याधिनेऽन्नानां पतये नमो नमो भवस्य हेत्यै
जगतां पतये नमो नमो रुद्रायाततायिने क्षेत्राणां पतये नमो नमः
सूतायाहन्त्यै वनानां पतये नमः ॥१८॥

नमो रोहिताय स्थपतये वृक्षाणां पतये नमो मन्त्रिणे वाणिजाय
कक्षाणां पतये नमो नमऽउच्चैर्घोषायाक्रन्दयते पत्तीनां पतये नमः॥१९॥
नमः कृत्स्नायतया धावते सत्वनां पतये नमो नमः सहमानाय
निव्याधिनऽआव्याधिनीनां पतये नमो नमो निषङ्गिणे ककुभाय
स्तेनानां पतये नमो नमो निचेरवे परिचरायारण्यानां पतये नमः॥२०॥
नमो वञ्चते परिवञ्चते स्तायूनां पतये नमो नमो निषङ्गिणऽइषुधिमते
तस्करानां पतये नमो नमः सृकायिभ्यो जिघाꣳसद्भ्यो मुष्णतां पतये
नमो नमोऽसिमद्भ्यो नक्तं चरद्भ्यो विकृन्तानां पतये नमः ॥२१॥
नमऽउष्णीषिणे गिरिचराय कुलुञ्चानां पतये नमो नमऽइषुमद्भ्यो
धन्वायिभ्यश्च वो नमो नमऽआतन्वानेभ्यः प्रतिदधानेभ्यश्च वो
नमो नमऽआयच्छद्भ्योऽस्यद्भ्यश्च वो नमः ॥२२॥
नमो विसृजद्भ्यो विद्ध्यद्भ्यश्च वो नमो नमः स्वपद्भ्यो
जाग्रद्भ्यश्च वो नमो नमः शयानेभ्यऽआसीनेभ्यश्च वो नमो
नमस्तिष्ठद्भ्यो धावद्भ्यश्च वो नमः ॥२३॥
नमः सभाभ्यः सभापतिभ्यश्च वो नमो नमोऽश्वेभ्योऽश्वपतिभ्यश्च
वो नमो नमऽआव्याधिनीभ्यो विविध्यन्तीभ्यश्च वो नमो
नमऽउगणाभ्यस्तृꣳहतीभ्यश्च वो नमः ॥२४॥
नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यश्च वो नमो नमो व्रातेभ्यो व्रातपतिभ्यश्च
वो नमो नमो गृत्सेभ्यो गृत्सपतिभ्यश्च वो नमो नमो
विरूपेभ्यो विश्वरूपेभ्यश्च वो नमः ॥२५॥
नमः सेनाभ्यः सेनानिभ्यश्च वो नमो नमो रथिभ्योऽअरथेभ्यश्च
वो नमो नमः क्षत्तृभ्यः संग्रहीतृभ्यश्च वो नमो नमो महद्भ्योऽ-
अर्भकेभ्यश्च वो नमः ॥२६॥
नमस्तक्षभ्यो रथकारेभ्यश्च वो नमो नमः कुलालेभ्यः
कर्मारेभ्यश्च वो नमो नमो निषादेभ्यः पुञ्जिष्ठेभ्यश्च
वो नमो नमः श्वनिभ्यो मृगयुभ्यश्च वो नमः ॥२७॥
नमः श्वभ्यः श्वपतिभ्यश्च वो नमो नमो भवाय च रुद्राय च नमः
शर्वाय च पशुपतये च नमो नीलग्रीवाय च शितिकण्ठाय च॥२८॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नमः कपर्दिने च व्युप्तकेशाय च नमः सहस्राक्षाय च शतधन्वने च
नमो गिरिशायाय च शिपिविष्टाय च नमो मीढुष्टमाय चेषुमते च॥२९॥
नमो ह्रस्वाय च वामनाय च नमो बृहते च वर्षीयसे च नमो
वृद्धाय च सवृधे च नमोऽग्र्याय च प्रथमाय च ॥३०॥
नमऽआशवे चाजिराय च नमः शीघ्र्याय च शीभ्याय च
नमऽऊर्म्याय चावस्वन्याय च नमो नादेयाय च द्वीप्याय च॥३१॥
नमो ज्येष्ठाय च कनिष्ठाय च नमः पूर्वजाय चापरजाय च नमो
मध्यमाय चापगल्भाय च नमो जघन्याय च बुध्न्याय च॥३२॥
नमः सोभ्याय च प्रतिसर्याय च नमो याम्याय च क्षेम्याय च
नमः श्लोक्याय चावसान्याय च नमऽउर्वर्याय च खल्याय च॥३३॥
नमो वन्याय च कक्ष्याय च नमः श्रवाय च प्रतिश्रवाय च
नमऽआशुषेणाय चाशुरथाय च नमः शूराय चावभेदिने च॥३४॥
नमो बिल्मिने च कवचिने च नमो वर्मिणे च वरूथिने च नमः
श्रुताय च श्रुतसेनाय च नमो दुन्दुभ्याय चाहनन्याय च॥३५॥
नमो धृष्णवे च प्रमृशाय च नमो निषङ्गिणे चेषुधिमते च
नमस्तीक्ष्णेषवे चायुधिने च नमः स्वायुधाय च सुधन्वने च॥३६॥
नमः स्रुत्याय च पथ्याय च नमः काट्याय च नीप्याय च नमः
कुल्याय च सरस्याय च नमो नादेयाय च वैशन्ताय च॥३७॥
नमः कूप्याय चावट्याय च नमो वीध्याय चातप्याय च नमो
मेघ्याय च विद्युत्याय च नमो वर्ष्याय चावर्ष्याय च॥३८॥
नमो वात्याय च रेष्म्याय च नमो वास्तव्याय च वास्तुपाय च
नमः सोमाय च रुद्राय च नमस्ताम्राय चारुणाय च॥३९॥
नमः शङ्गवे च पशुपतये च नमऽउग्राय च भीमाय च
नमोऽग्रेवधाय च दूरेवधाय च नमो हन्त्रे च हनीयसे च
नमो वृक्षेभ्यो हरिकेशेभ्यो नमस्ताराय ॥४०॥
नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शङ्कराय च
मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च ॥४१॥
नमः पार्याय चावार्याय च नमः प्रतरणाय चोत्तरणाय च
नमस्तीर्थ्याय च कूल्याय च नमः शष्प्याय च फेन्याय च ॥४२॥
नमः सिकत्याय च प्रवाह्याय च नमः किंशिलाय च क्षयणाय च
नमः कपर्दिने च पुलस्तये च नमऽइरिण्याय च प्रपथ्याय च॥४३॥
नमो व्रज्याय च गोष्ठ्याय च नमस्तल्प्याय च गेह्याय च नमो
हृदय्याय च निवेष्याय च नमः काट्याय च गह्वरेष्ठाय च ॥४४॥
नमः शुष्क्याय च हरित्याय च नमः पाꣳसव्याय च रजस्याय च
नमो लोप्याय चोलप्याय च नमऽऊर्व्याय च सूर्व्याय च ॥४५॥
नमः पर्णाय च पर्णशदाय च नमऽउद्गुरमाणाय चाभिघ्नते च
नमऽआखिदते चं प्रखिदते च नमऽइषुकृद्भ्यो धनुष्कृद्भ्यश्च वो
नमो नमो वः किरिकेभ्यो देवानाꣳहृदयेभ्यो नमो विचिन्वत्केभ्यो
नमो विक्षिणत्केभ्यो नमऽआनिर्हतेभ्यः ॥४६॥
द्रापेऽअन्धसस्पते दरिद्र नीललोहित ।
आसां प्रजानामेषां पशूनां मा भेर्मा रोङ् मो चं नः किं चनाममत्॥४७॥
इमा रुद्राय तवसे कपर्दिने क्षयद्वीराय प्र भरामहे मतीः ।
यथा शमसद् द्विपदे चतुष्पदे विश्वं पुष्टं ग्रामेऽअस्मिन्ननातुरम्॥४८॥
या ते रुद्र शिवा तनूः शिवा विश्वाहा भेषजी ।
शिवा रुतस्य भेषजी तया नो मृड जीवसे ॥४९॥
परि नो रुद्रस्य हेतिर्वृणक्तु परि त्वेषस्य दुर्मतिरघायोः ।
अव स्थिरा मघवद्भ्यस्तनुष्व मीढ्वस्तोकाय तनयाय मृड ॥५०॥
मीढुष्टम शिवतम शिवो नः सुमना भव ।
परमे वृक्षऽआयुधं निधाय कृत्तिं वसानऽआ चर पिनाकम्बिभ्रदा गहि॥५१॥
विकिरिद्र विलोहित नमस्तेऽअस्तु भगवः ।
यास्ते सहस्रꣳहेतयोऽन्यमस्मन्नि वपन्तु ताः ॥५२॥
सहस्राणि सहस्रशो बाह्वोस्तव हेतयः ।
तासामीशानो भगवः पराचीना मुखा कृधि ॥५३॥
असंख्याता सहस्राणि ये रुद्राऽअधि भूम्याम् ।
तेषाꣳसहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि ॥५४॥
अस्मिन् महत्यर्णवेऽन्तरिक्षे भवाऽअधि ।
तेषाꣳसहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि ॥५५॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नीलग्रीवाः शितिकण्ठा दिवꣳरुद्राऽउपश्रिताः ।
तेषाꣳसहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि ॥५६॥
नीलग्रीवाः शितिकण्ठाः शर्वाऽअधः क्षमाचराः ।
तेषाꣳसहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि ॥५७॥
ये वृक्षेषु शष्पिञ्जरा नीलग्रीवा विलोहिताः ।
तेषाꣳसहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि ॥५८॥
ये भूतानामधिपतयो विशिखासः कपर्दिनः ।
तेषाꣳसहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि ॥५९॥
ये पथां पथिरक्षयऽऐलबृदाऽआयुर्युधः ।
तेषाꣳसहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि ॥६०॥
ये तीर्थानि प्रचरन्ति सृकाहस्ता निषङ्गिणः ।
तेषाꣳसहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि ॥६१॥
येऽन्नेषु विविध्यन्ति पात्रेषु पिबतो जनान् ।
तेषाꣳसहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि ॥६२॥
यऽएतावन्तश्च भूयाꣳसश्च दिशो रुद्रा वितस्थिरे ।
तेषाꣳसहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि ॥६३॥
नमोऽस्तु रुद्रेभ्यो ये दिवि येषां वर्षमिषवः ।
तेभ्यो दश प्राचीर्दश दक्षिणा दश प्रतीचीर्दशोदीचीर्दशोर्ध्वाः।
तेभ्यो नमोऽअस्तु ते नोऽवन्तु ते नो मृडयन्तु ते यं द्विष्मो
यश्च नो द्वेष्टि तमेषां जम्भे दध्मः ॥६४॥
नमोऽस्तु रुद्रेभ्यो येऽन्तरिक्षे येषां वातऽइषवः ।
तेभ्यो दश प्राचीर्दश दक्षिणा दश प्रतीचीर्दशोदीचीर्दशोर्ध्वाः।
तेभ्यो नमोऽअस्तु ते नोऽवन्तु ते नो मृडयन्तु ते यं द्विष्मो
यश्च नो द्वेष्टि तमेषां जम्भे दध्मः ॥६५॥
नमोऽस्तु रुद्रेभ्यो ये पृथिव्यां येषामन्नमिषवः ।
तेभ्यो दश प्राचीर्दश दक्षिणा दश प्रतीचीर्दशोदीचीर्दशोर्ध्वाः।
तेभ्यो नमोऽअस्तु ते नोऽवन्तु ते नो मृडयन्तु ते यं द्विष्मो
यश्च नो द्वेष्टि तमेषां जम्भे दध्मः ॥६६॥

इति षोडशोऽध्यायः॥

अथ सप्तदशोऽध्यायः॥

—:o:—

ऋषिः—मेधातिथिः १-७, ९। वसुयुः ८। भारद्वाजः १०, १६। लोपामुद्रा ११-१५। भुवनपुत्रो विश्वकर्मा १७-३२। अप्रतिरथः ३३-५८, ६०। विश्वावसुः ५९। मधुच्छन्दाः सुतजेता ६१। विधृतिः ६२-६९। कुत्सः ७०-७३। कण्वः ७४। गृत्समदः ७५, ८८। वसिष्ठः ७६, ७८। परमेष्ठी ७७। सप्तर्षयः ७९-८७। वामदेवः ८९-९९॥

देवता—मरुतः १, ४७, ८०-८४, ८६। अग्निः २-१२, १५, १६, ५०, ५२, ५३, ५५, ५६, ५८, ६५-७३, ७५-७७, ७९, ८७-९०। प्राणः १३, १४। विश्वकर्मा १७-३२, ७८। इन्द्रः ३३-४४, ५१, ६१, ६३। इषुः ४५। योद्धा ४६। इन्द्रबृहस्पत्यादयः ४८। सोमवरुणदेवाः ४९। दिक् ५४। यज्ञः ५७, ६२। आदित्याः ५९, ६०। इन्द्राग्नी ६४। सविता ७४। चातुर्मास्या मरुतः ८५। यज्ञपुरुषः ९१-९९॥

छन्दः—भुरिगतिशक्वरी १। निचृद्विकृतिः २। विराडार्षीपङ्क्तिः ३, १५, ५६। भुरिगार्षीगायत्री ४, ५। आर्षीत्रिष्टुप् ६, २१, २५, २९, ३०, ३३, ३५-३७, ४१, ४९, ५८, ५९, ७०, ७३, ७५, ८७, ९२, ९५, ९८। आर्षीबृहती ७। आर्षीगायत्री ८, ७७, ८१, ८२। निचृदार्षीगायत्री ९, १६। निचृदार्षीजगती १०, १३, ८४। भुरिगार्षीबृहती ११। निचृद्गायत्री १२। आर्षीजगती १४, ७९। निचृदार्षीत्रिष्टुप् १७, २२, २४, २७, ३९, ४३, ४७, ६०, ६६, ७४, ८८, ८९, ९३, ९४, ९६, ९७। भुरिगार्षीपङ्क्तिः १८, ३१, ५५, ६९, ७१। भुरिगार्षीत्रिष्टुप् १९, २३, २६, २८, ३८। स्वराडार्षीत्रिष्टुप् २०, ३४, ५४, ९९। स्वराडार्षीपङ्क्तिः ३२। विराडार्षीत्रिष्टुप् ४०, ४२, ४४, ९०, ९१। आर्ष्यनुष्टुप् ४५, ५१, ६४। विराडार्ष्यनुष्टुप् ४६, ५०, ५३, ६२, ६३, ६५। पङ्क्तिः ४८। निचृदार्ष्यनुष्टुप् ५२, ६१, ६८। निचृदार्षीबृहती ५७। पिपीलिकामध्याबृहती ६७। निचृदार्षीपङ्क्तिः ७२। आर्ष्युष्णिक् ७६, ८०। विराडतिजगती ७८। भुरिगार्ष्युष्णिक् ८३। स्वराडार्षीगायत्री ८५। निचृच्छक्वरी ८६॥

स्वरः—पञ्चमः १, ३, १५, १८, ३१, ३२, ४८, ५५, ५६, ६९, ७१, ७२। मध्यमः २, ७, ११, ५७, ६७। षड्जः ४, ५, ८, ९, १२, १६, ७७, ८१, ८२, ८५। धैवतः ६, १७, १९-३०, ३३-४४, ४७, ४९, ५४, ५८-६०, ६६, ७०, ७३-७५, ८६-९९। निषादः १०, १३, १४, ७८, ७९, ८४। गान्धारः ४५, ४६, ५०-५३, ६१-६५, ६८। ऋषभः ७६, ८०, ८३॥

अश्मन्वती रीयते सꣳरभध्वमुत्तिष्ठत प्रतरता सखायः।
अत्रा जहाम येऽसन्नशेवाः शिवान्वयमुत्तरेमाभि वाजान्॥१॥
अश्मन्वती रीयते सꣳरभध्वमुत्तिष्ठत प्रतरता सखायः।
अत्रा जहाम येऽसन्नशेवाः शिवान्वयमुत्तरेमाभि वाजान्॥२॥
अश्मन्नूर्जं पर्वते शिश्रियाणामद्भ्यऽओषधीभ्यो वनस्पतिभ्योऽअधि
सम्भृतं पयः। तां नऽइषमूर्जं धत्त मरुतः सꣳराणाऽअश्वꣳस्ते क्षुन्
मयि तऽऊर्ग्यं द्विष्मस्तं ते शुगृच्छतु ॥१॥
इमा मेंऽअग्नऽइष्टका धेनवः सन्त्वेका च दश च दश च शतं
च शतं च सहस्रं च सहस्रं चायुतं चायुतं च नियुतं च
नियुतं च प्रयुतं चार्बुदं च न्यर्बुदं च समुद्रश्च मध्यं चान्तश्च
परार्द्धश्चैता मेंऽअग्नऽइष्टका धेनवः सन्त्वमुत्रामुष्मिँल्लोके ॥२॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ऋतव स्थऽऋतावृधऽऋतुष्ठा स्थऽऋतावृधः ।
घृतश्च्युतो मधुश्च्युतो विराजो नाम कामदुघाऽअक्षीयमाणाः ॥३॥
समुद्रस्य त्वावकयाग्ने परि व्ययामसि। पावकोऽअस्मभ्यꣳशिवो भव॥४॥
हिमस्य त्वा जरायुणाग्ने परि व्ययामसि। पावकोऽअस्मभ्यꣳशिवो भव॥५॥
उप त्मन्नुप वेतसेऽवतर नदीष्वा। अग्नेपित्तमुपामसि मण्डूकि
ताभिरागहि सेमं नो यज्ञं पावकवर्णꣳशिवं कृधि ॥६॥
अपामिदं न्ययनꣳसमुद्रस्य निवेशनम् ।
अन्याँस्तेऽअस्मत्तपन्तु हेतयः पावकोऽअस्मभ्यꣳशिवो भव ॥७॥
अग्ने पावक रोचिषा मन्द्रया देव जिह्वया। आ देवान् वक्षि यक्षि च॥८॥
स नः पावक दीदिवोऽग्ने देवाँऽइहावह। उप यज्ञꣳहविश्च नः॥९॥
पावकया यश्चितयन्त्या कृपा क्षामन् रुरुचऽउषसो न भानुना।
तूर्वन्न यामन्नेतशस्य नू रणऽआ यो घृणे न ततृषाणोऽअजरः ॥१०॥
नमस्ते हरसे शोचिषे नमस्तेऽअस्त्वर्चिषे ।
अन्याँस्ते अस्मत्तपन्तु हेतयः पावकोऽअस्मभ्यꣳशिवो भव ॥११॥
नृषदे वेडप्सुषदे वेड् बर्हिषदे वेड् वनसदे वेट् स्वर्विदे वेट् ॥१२॥
ये देवा देवानां यज्ञिया यज्ञियानाꣳसंवत्सरीणमुप भागमासते।
अहुतादो हविषो यज्ञेऽअस्मिन्त्स्वयं पिबन्तु मधुनो घृतस्य ॥१३॥
ये देवा देवेष्वधि देवत्वमायन्ये ब्रह्मणः पुरऽएतारोऽअस्य ।
येभ्यो नऽऋते पवते धाम किं चन न ते दिवो न पृथिव्याऽअधि स्नुषु॥१४॥
प्राणदाऽअपानदा व्यानदा वचोदा वरिवोदाः ।
अन्याँस्तेऽअस्मत्तपन्तु हेतयः पावकोऽअस्मभ्यꣳशिवो भव ॥१५॥
अग्निस्तिग्मेन शोचिषा यासद्विश्वं न्यत्रिणम्। अग्निर्नो वनते रयिम्॥१६॥
यऽइमा विश्वा भुवनानि जुह्वदृषिर्होता न्यसीदत्पिता नः ।
सऽआशिषा द्रविणमिच्छमानः प्रथमच्छदवराँऽआविवेश ॥१७॥
किꣳस्विदासीदधिष्ठानमारम्भणं कतमत् स्वित्कथासीत् ।
यतो भूमिं जनयन्विश्वकर्मा वि द्यामौर्णोन्महिना विश्वचक्षाः॥१८॥
विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतोमुखो विश्वतोबाहुरुत विश्वतस्पात् ।
सं बाहुभ्यां धमति सं पतत्रैर्द्यावाभूमी जनयन्देवऽएकः ॥१९॥

किꣳस्विद्वनं कऽउ स वृक्षऽआस यतो द्यावापृथिवी निष्टतक्षुः।
मनीषिणो मनसा पृच्छतेदु तद्यदध्यतिष्ठद्भुवनानि धारयन् ॥२०॥
या ते धामानि परमाणि यावमा या मध्यमा विश्वकर्मन्नुतेमा।
शिक्षा सखिभ्यो हविषि स्वधावः स्वयं यजस्व तन्वं वृधानः ॥२१॥
विश्वकर्मन् हविषा वावृधानः स्वयं यजस्व पृथिवीमुत द्याम् ।
मुह्यन्त्वन्येऽअभितः सपत्नाऽइहास्माकं मघवा सूरिरस्तु ॥२२॥
वाचस्पतिं विश्वकर्माणमूतये मनोजुवं वाजेऽअद्या हुवेम ।
स नो विश्वानि हवनानि जोषद्विश्वशम्भूरवसे साधुकर्मा ॥२३॥
विश्वकर्मन् हविषा वर्द्धनेन त्रातारमिन्द्रमकृणोरवध्यम् ।
तस्मै विशः समनमन्त पूर्वीरयमुग्रो विहव्यो यथासत् ॥२४॥
चक्षुषः पिता मनसा हि धीरो घृतमेनेऽअजनन्नम्नमाने ।
यदेदन्ताऽअदृहन्त पूर्वऽआदिद् द्यावापृथिवीऽअप्रथेताम् ॥२५॥
विश्वकर्म्मा विमनाऽआद्विहाया धाता विधाता परमोत सन्दृक्।
तेषामिष्टानि समिषा मदन्ति यत्रा सप्तऋषीन् परऽएकमाहुः ॥२६॥
यो नः पिता जनिता यो विधाता धामानि वेद भुवनानि विश्वा।
यो देवानां नामधाऽएकऽएव तꣳसम्प्रश्नं भुवना यन्त्यन्या ॥२७॥
तऽआयजन्त द्रविणꣳसमस्माऽऋषयः पूर्वे जरितारो न भूना ।
असूर्ते सूर्ते रजसि निषत्ते ये भूतानि समकृण्वन्निमानि ॥२८॥
परो दिवा परऽएना पृथिव्या परो देवेभिरसुरैर्य्यदस्ति ।
कꣳस्विद् गर्भं प्रथमं दध्रऽआपो यत्र देवाः समपश्यन्त पूर्वे॥२९॥
तमिद् गर्भं प्रथमं दध्रऽआपो यत्र देवाः समगच्छन्त विश्वे ।
अजस्य नाभावध्येकमर्पितं यस्मिन्विश्वानि भुवनानि तस्थुः ॥३०॥
न तं विदाथ यऽइमा जजानान्यद्युष्माकमन्तरं बभूव ।
नीहारेण प्रावृता जल्प्या चासुतृपऽउक्थशासश्चरन्ति ॥३१॥
विश्वकर्मा ह्यजनिष्ट देवऽआदिद् गन्धर्वोऽअभवद् द्वितीयः ।
तृतीयः पिता जनितौषधीनामपां गर्भं व्यदधात्पुरुत्रा ॥३२॥
आशुः शिशानो वृषभो न भीमो धनाघनः क्षोभणश्चर्षणीनाम्।
संक्रन्दनोऽनिमिषऽएकवीरः शतꣳसेनाऽअजयत्साकमिन्द्रः ॥३३॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

संक्रन्दनेनानिमिषेण जिष्णुना युत्कारेण दुश्च्यवनेन धृष्णुना । यत्र बाणाः सम्पतन्ति कुमारा विशिखाइव ।
तदिन्द्रेण जयत तत्सहध्वं युधो नर इषुहस्तेन वृष्णा ॥३४॥ तन्नऽइन्द्रो बृहस्पतिरदितिः शर्म्म यच्छतु विश्वाहा शर्म्म यच्छतु॥४८॥
सऽइषुहस्तैः स निषङ्गिभिर्वशी सꣳस्रष्टा स युधऽइन्द्रो गणेन। मर्माणि ते वर्मणा छादयामि सोमस्त्वा राजामृतेनानु वस्ताम् ।
सꣳसृष्टजित् सोमपा बाहुशर्ध्युग्रधन्वा प्रतिहिताभिरस्ता ॥३५॥ उरोर्वरीयो वरुणस्ते कृणोतु जयन्तं त्वानु देवा मदन्तु ॥४९॥
बृहस्पते परि दीया रथेन रक्षोहामित्राँ२॥ऽअपबाधमानः । उदेनमुत्तरां नयाग्ने घृतेनाहुत ।
प्रभञ्जन्सेनाः प्रमृणो युधा जयन्नस्माकमेद्धयविता रथानाम् ॥३६॥ रायस्पोषेण सꣳसृज प्रजया च बहुं कृधि ॥५०॥
बलविज्ञायः स्थविरः प्रवीरः सहस्वान् वाजी सहमानऽउग्रः । इन्द्रेमं प्रतरां नय सजातानामसद्वशी ।
अभिवीरोऽअभिसत्वा सहोजा जैत्रमिन्द्र रथमातिष्ठ गोवित् ॥३७॥ समेनं वर्चसा सृज देवानां भागवाऽअसत् ॥५१॥
गोत्रभिदं गोविदं वज्रबाहुं जयन्तमज्म प्रमृणन्तमोजसा । यस्य कुर्मो गृहे हविस्तमग्ने वर्द्धया त्वम् ।
प्रधमꣳसजाताऽअनु वीरयध्वमिन्द्रꣳसखायोऽअनु सꣳरभध्वम् ॥३८॥ तस्मै देवाऽअधि ब्रुवन्नयं च ब्रह्मणस्पतिः ॥५२॥
अभि गोत्राणि सहसाऽगाहमानोऽदयो वीरः शतमन्युरिन्द्रः । उदु त्वा विश्वे देवाऽअग्ने भरन्तु चित्तिभिः ।
वृश्च्यवनः पृतनाषाडयुध्योऽस्माकꣳसेना अवतु प्र युत्सु ॥३९॥ स नो भव शिवस्त्वꣳसुप्रतीको विभावसुः ॥५३॥
इन्द्रऽआसां नेता बृहस्पतिर्दक्षिणा यज्ञः पुरऽएतु सोमः । पञ्च दिशो दैवीर्यज्ञमवन्तु देवीरयामतिं दुर्मतिं बाधमानाः ।
देवसेनानामभिभञ्जतीनां जयन्तीनां मरुतो यन्त्वग्रम् ॥४०॥ रायस्पोषे यज्ञपतिमाभजन्ती रायस्पोषेऽअधि यज्ञोऽअस्थात् ॥५४॥
इन्द्रस्य वृष्णो वरुणस्य राज्ञऽआदित्यानां मरुताꣳशर्द्धऽउग्रम्। समिद्धेऽअग्नावधि मामहानऽउक्थपत्रऽईड्यो गृभीतः ।
महामनसां भुवनच्यवानां घोषो देवानां जयतामुदस्थात् ॥४१॥ तप्तं घर्म्मं परिगृह्यायजन्तोर्जा यज्ञमयजन्त देवाः ॥५५॥
उद्धर्षय मघवन्नायुधान्युत्सत्वनां मामकानां मनाꣳसि । दैव्याय धर्त्रे जोष्ट्रे देवश्रीः श्रीमनाः शतपयाः ।
ऽवृत्रहन्वाजिनां वाजिनान्युद्रथानां जयतां यन्तु घोषाः ॥४२॥ परिगृह्य देवा यज्ञमायन् देवा देवेभ्योऽअध्वर्व्यन्तोऽअस्थुः ॥५६॥
अस्माकमिन्द्रः समृतेषु ध्वजेष्वस्माकं याऽइषवस्ता जयन्तु । वीतꣳहविः शमितꣳशमिता यजध्यै तुरीयो यज्ञो यत्र हव्यमेति।
अस्माकं वीराऽउत्तरे भवन्त्वस्माँ२ऽउ देवाऽअवता हवेषु ॥४३॥ ततो वाकाऽआशिषो नो जुषन्ताम् ॥५७॥
अमीषां चित्तं प्रतिलोभयन्ती गृहाणाङ्गान्यप्वे परेहि । सूर्यरश्मिर्हरिकेशः पुरस्तात्सविता ज्योतिरुदयाँ२॥ऽअजस्रम् ।
अभि प्रेहि निर्दह हृत्सु शोकैरन्धेनामित्रास्तमसा सचन्ताम् ॥४४॥ तस्य पूषा प्रसवे याति विद्वान्त्सम्पश्यन्विश्वा भुवनानि गोपाः॥५८॥
अवसृष्टा परा पत शरव्ये ब्रह्मसꣳशिते । विमानऽएष दिवो मध्यऽआस्तऽआपप्रिवान्रोदसीऽअन्तरिक्षम् ।
गच्छामित्रान् प्र पद्यस्व मामीषां कञ्चनोच्छिषः ॥४५॥ स विश्वाचीरभिचष्टे घृताचीरन्तरा पूर्वमपरं च केतुम् ॥५९॥
प्रेता जयता नरऽइन्द्रो वः शर्म्म यच्छतु । उक्षा समुद्रोऽअरुणः सुपर्णः पूर्वस्य योनिं पितुराविवेश ।
उग्रा वः सन्तु बाहवोऽनाधृष्या यथासथ ॥४६॥ मध्ये दिवो निहितः पृश्निरश्मा विचक्रमे रजसस्पात्यन्तौ ॥६०॥
असौ या सेना मरुतः परेषामभ्यैति नऽओजसा स्पर्द्धमाना । इन्द्रं विश्वाऽअवीवृधन्त्समुद्रव्यचसं गिरः ।
तां गूहत तमसापव्रतेन यथामीऽअन्योऽअन्यन्न जानन् ॥४७॥ रथीतमꣳरथीनां वाजानामꣳसत्पतिं पतिम् ॥६१॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

देवहूर्यज्ञऽआ च वक्षत्सुम्नहूर्यज्ञऽआ च वक्षत् ।
यक्षद्वग्निर्देवो देवाँ२ऽआ च वक्षत् ॥६२॥
वाजस्य मा प्रसवऽउद्ग्राभेणोदग्रभीत् ।
अधा सपत्नानिन्द्रो मे निग्राभेणाधराँ२ऽअकः ॥६३॥
उद्ग्राभं च निग्राभं च ब्रह्म देवाऽअवीवृधन् ।
अधा सपत्नानिन्द्राग्नी मे विषूचीनान्व्यस्यताम् ॥६४॥
क्रमध्वमग्निना नाकमुख्यꣳहस्तेषु बिभ्रतः ।
दिवस्पृष्ठꣳस्वर्गत्वा मिश्रा देवेभिराध्वम् ॥६५॥
प्राचीमनु प्रदिशं प्रेहि विद्वानग्नेरग्ने पुरोऽअग्निर्भवेह ।
विश्वाऽआशा दीद्यानो विभाह्यूर्जं नो धेहि द्विपदे चतुष्पदे ॥६६॥
पृथिव्याऽअहमुदन्तरिक्षमारुहमन्तरिक्षादिवमारुहम् ।
दिवो नाकस्य पृष्ठात् स्वर्ज्योतिरगामहम् ॥६७॥
स्वर्यन्तो नापेक्षन्तऽआ द्याꣳरोहन्ति रोदसी ।
यज्ञं ये विश्वतोधारꣳसुविद्वाꣳसो वितेनिरे ॥६८॥
अग्ने प्रेहि प्रथमो देवयतां चक्षुर्देवानामुत मर्त्यानाम् ।
इयक्षमाणा भृगुभिः सजोषाः स्वर्व्यन्तु यजमानाः स्वस्ति ॥६९॥
नक्तोषासा समनसा विरूपे धापयेते शिशुमेकꣳसमीची ।
द्यावाक्षामा रुक्मोऽअन्तर्विभाति देवाऽअग्निं धारयन् द्रविणोदाः॥७०॥
अग्ने सहस्राक्ष शतमूर्द्धञ्छतं ते प्राणाः सहस्रं व्यानाः ।
त्वꣳसाहस्रस्य रायऽईशिषे तस्मै ते विधेम वाजाय स्वाहा ॥७१॥
सुपर्णोऽसि गरुत्मान् पृष्ठे पृथिव्याः सीद ।
भासान्तरिक्षमापृण ज्योतिषा दिवमुत्तभान तेजसा दिशऽउद् दृꣳह॥७२॥
आजुह्वानः सुप्रतीकः पुरस्तादग्ने स्वं योनिमासीद साधुया ।
अस्मिन्त्सधस्थेऽअध्युत्तरस्मिन् विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत ॥७३॥
ताꣳसवितुर्वरेण्यस्य चित्रामाहं वृणे सुमतिं विश्वजन्याम् ।
यामस्य कण्वो अदुहत्प्रपीनाꣳसहस्रधारां पयसा महीं गाम् ॥७४॥
विधेम ते परमे जन्मन्नग्ने विधेम स्तोमैरवरे सधस्थे ।
यस्माद्योनेरुदारिथा यजे तं प्र त्वे हवीꣳषि जुहुरे समिद्धे ॥७५॥
प्रेद्धोऽअग्ने दीदिहि पुरो नोऽजस्रया सूर्म्या यविष्ठ ।
त्वाꣳशꣳशन्तऽउपयन्ति वाजाः ॥७६॥
अग्ने तमद्याश्वन्न स्तोमैः क्रतुन्न भद्रꣳहृदिस्पृशम्। ऋध्यामा तऽओहैः॥७७॥
चित्तिं जुहोमि मनसा घृतेन यथा देवाऽइहागमन्वीतिहोत्राऽऋतावृधः।
पत्ये विश्वस्य भूमनो जुहोमि विश्वकर्मणे विश्वाहादाभ्यꣳहविः॥७८॥
सप्त तेऽअग्ने समिधः सप्त जिह्वाः सप्तऽऋषयः सप्त धाम प्रियाणि।
सप्त होत्राः सप्तधा त्वा यजन्ति सप्त योनीरापृणस्व घृतेन स्वाहा॥७९॥
शुक्रज्योतिश्च चित्रज्योतिश्च सत्यज्योतिश्च ज्योतिष्माँश्च ।
शुक्रश्चऽऋतपाश्चात्यꣳहाः ॥८०॥
ईदृङ् चान्यादृङ् च सदृङ् च प्रतिसदृङ् च ।
मितश्च सम्मितश्च सभराः ॥८१॥
ऋतश्च सत्यश्च ध्रुवश्च धरुणश्च। धर्त्ता च विधर्त्ता च विधारयः॥८२॥
ऋतजिच्च सत्यजिच्च सेनजिच्च सुषेणश्च ।
अन्तिमित्रश्च दूरेऽअमित्रश्च गणः ॥८३॥
ईदृक्षासऽएतादृक्षासऽऊ षु णः सदृक्षासः प्रतिसदृक्षासऽएतन
मितासश्च सम्मितासो नोऽअद्य सभरसो मरुतो यज्ञेऽअस्मिन् ॥८४॥
स्वतवाँश्च प्रघासी च सान्तपनश्च गृहमेधी च ।
क्रीडी च शाकी चोज्जेषी ॥८५॥
इन्द्रं दैवीर्विशो मरुतोऽनुवर्त्मानोऽभवन्यथेन्द्रं दैवीर्विशो
मरुतोऽनुवर्त्मानोऽभवन्। एवमिमं यजमानं दैवीश्च
विशो मानुषीश्चानुवर्त्मानो भवन्तु ॥८६॥
इमꣳस्तनमूर्जस्वन्तं धयापां प्रपीनमग्ने सरिरस्य मध्ये ।
उत्सं जुषस्व मधुमन्तमर्वन्त्समुद्रियꣳसदनमाविशस्व ॥८७॥
घृतं मिमिक्षे घृतमस्य योनिर्घृते श्रितो घृतमस्य धाम ।
अनुष्वधमावह मादयस्व स्वाहाकृतं वृषभ वक्षि हव्यम् ॥८८॥
समुद्रादूर्मिमधुमाँ२ऽउदारदुपाꣳशुना सममृतत्वमानट् ।
घृतस्य नाम गुह्यं यदस्ति जिह्वा देवानाममृतस्य नाभिः ॥८९॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

वयं नाम प्र ब्रवामा घृतस्यास्मिन् यज्ञे धारयामा नमोभिः ।
उप ब्रह्मा शृणवच्छस्यमानं चतुःशृङ्गोऽवमीद् गौरएतत् ॥९०॥
चत्वारि शृङ्गा त्रयोऽअस्य पादा द्वे शीर्षे सप्त हस्तासोऽअस्य ।
त्रिधा बद्धो वृषभो रोरवीति महो देवो मर्त्याँ२ऽआविवेश ॥९१॥
त्रिधा हितं पणिभिर्गुह्यमानं गवि देवासो घृतमन्वविन्दन् ।
इन्द्रऽएकः सूर्यऽएकञ्जजान वेनादेकं ब्भ्स्वधया निष्टतक्षुः ॥९२॥
एताऽअर्षन्ति हृद्यात्समुद्राच्छतव्रजा रिपुणा नावचक्षे ।
घृतस्य धाराऽअभिचाकशीमि हिरण्ययो वेतसो मध्यऽआसाम् ॥९३॥
सम्यक् स्रवन्ति सरितो न धेनाऽअन्तर्हृदा मनसा पूयमानाः ।
एतेऽअर्षन्त्यूर्मयो घृतस्य मृगाऽइव क्षिपणोरीषमाणाः ॥९४॥
सिन्धोरिव प्राध्वने शूघनासो वातप्रमियः पतयन्ति यह्वाः ।
घृतस्य धारा अरुषो न वाजी काष्ठा भिन्दन्नूर्मिभिः पिन्वमानः॥९५॥
अभिप्रवन्त समनेव योषाः कल्याण्यः स्मयमानासोऽअग्निम् ।
घृतस्य धाराः समिधो नसन्त ता जुषाणो हर्यति जातवेदाः ॥९६॥
कन्याऽइव वहतुमेतवाऽउऽअज्यूज्जानाऽअभि चाकशीमि ।
यत्र सोमः सूयते यत्र यज्ञो घृतस्य धाराऽअभि तत्पवन्ते ॥९७॥
अभ्यर्षत सुष्टुतिं गव्यमाजिमस्मासु भद्रा द्रविणानि धत्त ।
इमं यज्ञं नयत देवता नो घृतस्य धारा मधुमत्पवन्ते ॥९८॥
धामन्ते विश्वं भुवनमधि श्रितमन्तः समुद्रे हृद्यन्तरायुषि ।
अपामनीके समिथे यऽआभृतस्तमश्याम मधुमन्तं तऽऊर्मिम् ॥९९॥

इति सप्तदशोऽध्यायः॥

अथाष्टादशोऽध्यायः॥

—:o:—

ऋषिः—देवाः १-४४। शुनः शेपः ४५-५३। गालवः ५४-५७, ६१। विश्वकर्मा ५८-६०, ६४, ६५। देवश्रवदेववातौ ६२, ६६, ६७। विश्वामित्रः ६३, ७२। इन्द्रः ६८। इन्द्रविश्वामित्रौ ६९। शासः ७०। जयः ७१। कुत्सः ७३। भरद्वाजः ७४। उत्कीलः ७५, ७६। उशनाः ७७॥

देवता—अग्निः १, ४६, ५१, ५२, ५७, ५८, ६६-६७, ७२-७५। प्रजापतिः २-७, ४४, ४५, ५६, ५९-६१। आत्मा ८-१०। श्रीमदात्मा ११। धान्यवात्मा १२। रत्नवान्धनवानात्मा १३। अग्न्यादियुक्तात्मा १४। धनादियुक्तात्मा १५। अग्न्यादिविद्याविदात्मा १६। मित्रैश्वर्य्यसहितात्मा १७। राजैश्वर्यादियुक्तात्मा १८। पदार्थविदात्मा १९। यज्ञानुष्ठानात्मा २०, २९। यज्ञाङ्गवानात्मा २१। यज्ञवानात्मा २२। कालविद्याविदात्मा २३। विषमाङ्कगणितविद्याविदात्मा २४। समाङ्कगणितविद्याविदात्मा २५। पशुविद्याविदात्मा २६। पशुपालनविद्याविदात्मा २७। संग्रामादिविदात्मा २८। राज्यवानात्मा ३०। विश्वेदेवाः ३१, ७६, ७७। अन्नवान् विद्वान् ३२। अन्नपतिः ३३, ३४। रसविद्याविद्विद्वान् ३५, ३६। सम्राड्राजा ३७। ऋतुविद्याविद्विद्वान् ३८। सूर्य्यः ३९, ५०। चन्द्रमाः ४०। वातः ४१। यज्ञः ४२, ५६, ६३-६५। विश्वकर्मा ४३। बृहस्पतिः ४७-४९। इन्दुः ५३-५५। इन्द्रः ६८-७१। विश्वकर्माग्निर्वा ६२॥

छन्दः—शक्वरी १, ९। भुरिगतिजगती २। भुरिक्शक्वरी ३, ११, १८, २२। निचृदत्यष्टिः ४, १९। स्वराट्शक्वरी ५, ८। भुरिगतिशक्वरी ६, १२, १३। भुरिगतिजगती ७। निचृच्छक्वरी १०। भुरिगष्टिः १४। निचृदार्षीपङ्क्तिः १५। निचृदतिशक्वरी १६, २८। स्वराट्शक्वरी १७। स्वराडतिधृतिः २०। विराड्धृतिः २१। पङ्क्तिः २३। संकृतिः॑ विराट्संकृतिः॑ २४। भुरिक्पङ्क्तिः॑, आकृतिः॑ २५। ब्राह्मीबृहती २६। भुरिगार्षीपङ्क्तिः २७, ४४। भुरिगाकृतिः॑, आर्चीबृहती॑ २८। स्वराड्विकृतिः॑, ब्राह्म्युष्णिक्॑ २९। स्वराड्जगती ३०। निचृदार्षीत्रिष्टुप् ३१, ४९, ५९, ६०। निचृदार्ष्यनुष्टुप् ३२, ६२। त्रिष्टुप् ३३, ३४। विराडार्ष्यनुष्टुप् ३५। आर्ष्यनुष्टुप् ३६, ४७। आर्षीपङ्क्तिः ३७, ५३। विराडार्षीत्रिष्टुप् ३८, ४१, ४२। भुरिगार्षीत्रिष्टुप् ३९। निचृदार्षीजगती ४०, ५८। विराडार्षीजगती ४३, ५२। अष्टिः ४५। भुरिगार्ष्यनुष्टुप् ४६, ४८। भुरिगार्ष्युष्णिक् ५०, ५४। स्वराडार्षीत्रिष्टुप् ५१। आर्षीजगती ५५, ६७। आर्ष्युष्णिक् ५६। निचृदार्षीगायत्री ५७। आर्षीत्रिष्टुप् ६१, ६९, ७१, ७३, ७५। निचृदनुष्टुप् ६३, ६४, ७०, ७६। विराडनुष्टुप् ६५। निचृत्त्रिष्टुप् ६६, ७४। निचृद्गायत्री ६८, ७७। आर्षीगायत्री ७२॥

स्वरः—धैवतः १, ३, ५, ८-११, १७, १८, २२, ३१, ३३, ३४, ३८, ३९, ४१, ४२, ४९, ५१, ५९-६१, ६६, ६९, ७१, ७३-७५। निषादः २, ७, ३०, ४०, ४३, ५२, ५५, ५८, ६७। गान्धारः ४, १९, २४, ३२, ३५, ३६, ४६-४८, ६२-६५, ७०, ७६। पञ्चमः ६, १२, १३, १५, १६, २३, २५, २७, ३७, ४४, ५३। मध्यमः १४, २६, ४५। षड्जः २०, ५७, ६८, ७२, ७७। ऋषभः २१, ५०, ५४, ५६। पञ्चमः॑, मध्यमः॑ २८। मध्यमः॑, ऋषभः॑ २९॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

वाजश्च मे प्रसवश्च मे प्रयतिश्च मे प्रसितिश्च मे धीतिश्च
मे क्रतुश्च मे स्वरश्च मे श्लोकश्च मे श्रवश्च मे श्रुतिश्च
मे ज्योतिश्च मे सुवश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥१॥

प्राणश्च मेऽपानश्च मे व्यानश्च मेऽसुश्च मे चित्तं च
मऽआधीतं च मे वाक् च मे मनश्च मे चक्षुश्च मे श्रोत्रं च
मे दक्षश्च मे बलं च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥२॥

ओजश्च मे सहश्च मऽआत्मा च मे तनूश्च मे शर्म च
मे वर्म च मेऽङ्गानि च मेऽस्थानि च मे परूंष्यपि च
मे शरीराणि च मऽआयुश्च मे जरा च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्॥३॥

ज्यैष्ठ्यं च मऽआधिपत्यं च मे मन्युश्च मे भामश्च मेऽमश्च
मेऽम्भश्च मे जेमा च मे महिमा च मे वरिमा च मे
प्रथिमा च मे वर्षिमा च मे द्राघिमा च मे वृद्धं च
मे वृद्धिश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥४॥

सत्यं च मे श्रद्धा च मे जगच्च मे धनं च मे विश्वं च
मे महश्च मे क्रीडा च मे मोदश्च मे जातं च मे जनिष्यमाणं च
मे सूक्तं च मे सुकृतं च मे यज्ञेन कल्पताम् ॥५॥

ऋतं च मेऽमृतं च मेऽयक्ष्मं च मेऽनामयच्च मे जीवातुश्च
मे दीर्घायुत्वं च मेऽनमित्रं च मेऽभयं च मे सुखं च मे शयनं
च मे सूषाश्च मे सुदिनं च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥६॥

यन्ता च मे धर्ता च मे क्षेमश्च मे धृतिश्च मे विश्वं च
मे महश्च मे संविच्च मे ज्ञात्रं च मे सूश्च मे प्रसूश्च मे सीरं च
मे लयश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥७॥

शं च मे मयश्च मे प्रियं च मेऽनुकामश्च मे कामश्च
मे सौमनसश्च मे भगश्च मे द्रविणं च मे भद्रं च
मे श्रेयश्च मे वसीयश्च मे यशश्च मे यज्ञेन कल्पताम् ॥८॥

ऊर्क् च मे सूनृता च मे पयश्च मे रसश्च मे घृतं च
मे मधु च मे सग्धिश्च मे सपीतिश्च मे कृषिश्च मे वृष्टिश्च
मे जैत्रं च मऽऔद्भिद्यं च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥९॥

रयिश्च मे रायश्च मे पुष्टं च मे पुष्टिश्च मे विभु च
मे प्रभु च मे पूर्णं च मे पूर्णतरं च मे कुयवं च मेऽक्षितं च
मेऽन्नं च मेऽक्षुच्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥१०॥

वित्तं च मे वेद्यं च मे भूतं च मे भविष्यच्च मे सुगं च
मे सुपथ्यं च मऽऋद्धं चं मऽऋद्धिश्च मे क्लृप्तं च
मे क्लृप्तिश्च मे मतिश्च मे सुमतिश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्॥११॥

व्रीहयश्च मे यवाश्च मे माषाश्च मे तिलाश्च मे मुद्गाश्च
मे खल्वाश्च मे प्रियङ्गवश्च मेऽणवश्च मे श्यामाकाश्च
मे नीवाराश्च मे गोधूमाश्च मे मसूराश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्॥१२॥

अश्मा च मे मृत्तिका च मे गिरयश्च मे पर्वताश्च मे सिकताश्च
मे वनस्पतयश्च मे हिरण्यं च मेऽयश्च मे श्यामं च
मे लोहञ्च मे सीसं च मे त्रपु च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्॥१३॥

अग्निश्च मऽआपश्च मे वीरुधश्च मऽओषधयश्च मे कृष्टपच्याश्च
मेऽकृष्टपच्याश्च मे ग्राम्याश्च मे पशवऽआरण्याश्च मे वित्तञ्च
मे वित्तिश्च मे भूतञ्च मे भूतिश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्॥१४॥

वसु च मे वसतिश्च मे कर्म च मे शक्तिश्च मेऽर्थश्च
मऽएमश्च मऽइत्या च मे गतिश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्॥१५॥

अग्निश्च मऽइन्द्रश्च मे सोमश्च मऽइन्द्रश्च मे सविता च
मऽइन्द्रश्च मे सरस्वती च मऽइन्द्रश्च मे पूषा च मऽइन्द्रश्च
मे बृहस्पतिश्च मऽइन्द्रश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥१६॥

मित्रश्च मऽइन्द्रश्च मे वरुणश्च मऽइन्द्रश्च मे धाता च
मऽइन्द्रश्च मे त्वष्टा च मऽइन्द्रश्च मे मरुतश्च मऽइन्द्रश्च
मे विश्वे च मे देवाऽइन्द्रश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥१७॥

पृथिवी च मऽइन्द्रश्च मेऽन्तरिक्षं च मऽइन्द्रश्च मे द्यौश्च
मऽइन्द्रश्च मे समाश्च मऽइन्द्रश्च मे नक्षत्राणि च मऽइन्द्रश्च
मे दिशश्च मऽइन्द्रश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥१८॥

अंशुश्च मे रश्मिश्च मेऽदाभ्यश्च मेऽधिपतिश्च मऽउपांशुश्च
मेऽन्तर्यामश्च मऽऐन्द्रवायवश्च मे मैत्रावरुणश्च
मऽआश्विनश्च मे प्रतिप्रस्थानश्च मे शुक्रश्च मे मन्थी
च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥१९॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

आग्रयणश्च मे वैश्वदेवश्च मे ध्रुवश्च मे वैश्वानरश्च
मऽऐन्द्राग्नश्च मे महावैश्वदेवश्च मे मरुत्वतीयाश्च मे
निष्केवल्यश्च मे सावित्रश्च मे सारस्वतश्च मे पात्नीवतश्च
मे हारियोजनश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥२०॥
स्रुचश्च मे चमसाश्च मे वायव्यानि च मे द्रोणकलशश्च
मे ग्रावाणश्च मेऽधिषवणे च मे पूतभृच्च मऽआधवनीयश्च
मे वेदिश्च मे बर्हिश्च मेऽवभृथश्च मे स्वगाकारश्च
मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥२१॥
अग्निश्च मे घर्मश्च मेऽर्कश्च मे सूर्यश्च मे प्राणश्च
मेऽश्वमेधश्च मे पृथिवी च मेऽदितिश्च मे दितिश्च
मे द्यौश्च मेऽङ्गुलयः शक्वरयो दिशश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्॥२२॥
व्रतं च मऽऋतवश्च मे तपश्च मे संवत्सरश्च मेऽहोरात्रेऽऊर्वष्ठीवे
बृहद्रथन्तरे च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥२३॥
[क]एका च मे तिस्रश्च मे तिस्रश्च मे पञ्च च मे पञ्च च
मे सप्त च मे सप्त च मे नव च मे नव च मऽएकादश च
मऽएकादश च मे त्रयोदश च मे त्रयोदश च मे पञ्चदश च
मे पञ्चदश च मे सप्तदश च मे सप्तदश च मे नवदश च
मे नवदश च मऽ[र]एकविꣳशतिश्च मऽएकविꣳशतिश्च
मे त्रयोविꣳशतिश्च मे त्रयोविꣳशतिश्च मे पञ्चविꣳशतिश्च
मे पञ्चविꣳशतिश्च मे सप्तविꣳशतिश्च मे सप्तविꣳशतिश्च
मे नवविꣳशतिश्च मे नवविꣳशतिश्च मऽएकत्रिꣳशच्च
मऽएकत्रिꣳशच्च मे त्रयस्त्रिꣳशच्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥२४॥
[क]चतस्रश्च मेऽष्टौ च मेऽष्टौ च मे द्वादश च मे द्वादश च
मे षोडश च मे षोडश च मे विꣳशतिश्च मे विꣳशतिश्च मे
[र]चतुर्विꣳशतिश्च मे चतुर्विꣳशतिश्च मेऽष्टाविꣳशतिश्च मेऽष्टाविꣳ
शतिश्च मे द्वात्रिꣳशच्च मे द्वात्रिꣳशच्च मे षट्त्रिꣳशच्च मे षट्त्रिꣳ
शच्च मे चत्वारिꣳशच्च मे चत्वारिꣳशच्च मे चतुश्चत्वारिꣳशच्च
मे चतुश्चत्वारिꣳशच्च मेऽष्टाचत्वारिꣳशच्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्॥२५॥

त्रयविꣳशश्च मे त्र्यवी च मे दित्यवाट् च मे दित्यौही च मे
पञ्चाविꣳश मे पञ्चावी च मे त्रिवत्सश्च मे त्रिवत्सा च मे
तुर्यवाट् च मे तुर्यौही च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥२६॥
पष्ठवाट् च मे पष्ठौही च मऽउक्षा च मे वशा च मऽऋषभश्च
मे वेहच्च मेऽनड्वाꣳश्च मे धेनुश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्॥२७॥
[क]वाजाय स्वाहा प्रसवाय स्वाहापिजाय स्वाहा क्रतवे स्वाहा वसवे
स्वाहाऽहर्पतये स्वाहाह्ने मुग्धाय स्वाहा मुग्धाय वैनꣳशिनाय स्वाहा
विनꣳशिन आन्त्यायनाय स्वाहान्त्याय भौवनाय स्वाहा भुवनस्य
पतये स्वाहाधिपतये स्वाहा प्रजापतये स्वाहा। [र]इयं ते राण्मित्राय
यन्तासि यमनऽऊर्जे त्वा वृष्टयै त्वा प्रजानां त्वाधिपत्याय॥२८॥
[क]आयुर्यज्ञेन कल्पतां प्राणो यज्ञेन कल्पतां चक्षुर्यज्ञेन कल्पताꣳ
श्रोत्रं यज्ञेन कल्पतां वाग्यज्ञेन कल्पतां मनो यज्ञेन कल्पतामात्मा
यज्ञेन कल्पतां ब्रह्मा यज्ञेन कल्पतां ज्योतिर्यज्ञेन कल्पताꣳ
स्वर्यज्ञेन कल्पतां पृष्ठं यज्ञेन कल्पतां यज्ञो यज्ञेन कल्पताम्।
[र]स्तोमश्च यजुश्चऽऋक् च साम च बृहच्च रथन्तरञ्च।
स्वर्देवाऽअगन्मामृताऽअभूम प्रजापतेः प्रजाऽअभूम वेट् स्वाहा॥२९॥
वाजस्य नु प्रसवे मातरं महीमदितिं नाम वचसा करामहे।
यस्यामिदं विश्वं भुवनमाविवेश तस्यां नो देवः सविता धर्म्म साविषत्॥३०॥
विश्वेऽअद्य मरुतो विश्वऽऊती विश्वे भवन्त्वग्नयः समिद्धाः।
विश्वे नो देवाऽअवसागमन्तु विश्वमस्तु द्रविणं वाजोऽअस्मे॥३१॥
वाजो नः सप्त प्रदिशश्चतस्रो वा परावतः ।
वाजो नो विश्वैर्देवैर्धनसाताविहावतु ॥३२॥
वाजो नोऽअद्य प्रसुवाति दानं वाजो देवाँ२ऽऋतुभिः कल्पयाति।
वाजो हि मा सर्ववीरं जजान विश्वाऽआशा वाजपतिर्जयेयम्॥३३॥
वाजः पुरस्तादुत मध्यतो नो वाजो देवान् हविषा वर्द्धयाति ।
वाजो हि मा सर्ववीरं चकार सर्वाऽआशा वाजपतिर्भवेयम्॥३४॥
सं मा सृजामि पयसा पृथिव्याः सं मा सृजाम्यद्भिरोषधीभिः ।
सोऽहं वाजꣳसनेयमग्ने ॥३५॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पयः पृथिव्यां पयऽओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयो धाः ।
पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम् ॥३६॥
देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम् ।
सरस्वत्यै वाचो यन्तुर्यन्त्रेणाग्नेः साम्राज्येनाभिषिञ्चामि ॥३७॥
ऋतावृधावृतसापाविन्द्राग्नी आ वां विशन्त्वाहुतासो अध्वरम् ।
ऋतस्य हि वर्तनयः सुजातमा द्यावापृथिवी वर्धयन्ति वृष्टये ॥१॥
ऋतस्य हि धेनवो वायवेदुहे सप्तनामाणं जनयन्त सुक्रतुम् ।
अत्कं कविं पवित्रे मृज्यमानं द्रोणे मतीनां पतिमिन्द्रमिन्दवः ॥२॥
ऋतस्य हि शुरुधः सन्ति पूर्वीर्ऋतस्य हि धेनवो वावशानाः ।
ऋतं भिक्षमाणा उप सेदुरापः ॥३॥
ऋतस्य योना वशमान उक्षा वृषा वृषन्यन्नधनस्यधानाम् ।
घृतप्रुषा मनसा हव्यमुन्दन्नग्ने विभ्वासमिधा समैरत ॥४॥
ऋतस्य पदे कवयो नि पान्ति गुहा नामानि दधिरे परांसि ।
दुष्टरे सूदयन्त सस्मिन्नधि केतवः शिश्रियुरेकरूपाः ॥५॥
ऋतस्य प्रेषा ऋतस्य धीतिर्विश्वायुर्विश्वे अपांसि चक्रुः ।
ऋतस्य योनिं महिषश्चिदर्वन्नारे अकर्म धीतिभिर्गृणन्तः ॥६॥
ऋतस्य गोपावधि तिष्ठथो रथं सत्यधर्माणा परमे व्योमन् ।
यमत्र मित्रावरुणावथो युवं तस्मै वृष्टिर्मधुमत्पिन्वते दिवः ॥७॥
ऋतस्य सामन्त्सरमा जिगाय तं गव्यन्तं पणयो निषेदुषः ।
आरात्तात्सोमो अभवत्परावतः कृधी न इन्द्रोभयाविने गवे ॥८॥
ऋतस्य हि वर्तनयः सुजातमा द्यावापृथिवी वर्धयन्ति वृष्टये ।
पवमानो अजीजनद्दिवश्चित्रं न तनयं पुपुष्टिमिषं स्तोतृभ्य आभर ॥९॥
ऋतस्य हि प्रसितिर्द्यौरुरुर्ऋतस्य हि प्रसितिः पृथिवी गभीरा ।
ऋतस्य योनिं निहितं पुरुक्षुमहो राजान आ विवासन्त्यत्र ॥१०॥
ऋतस्य हि सदसो धीतिरद्यौदुरुर्ऋतस्य हि सदसो धीतिरद्यौत् ।
ऋतस्य हि धेनवो वायवेदुहे सप्तनामाणं जनयन्त सुक्रतुम् ॥११॥
ऋतस्य हि वर्तनयः सुजातमा द्यावापृथिवी वर्धयन्ति वृष्टये ।
पवमानो अजीजनद्दिवश्चित्रं न तनयं पुपुष्टिमिषं स्तोतृभ्य आभर ॥१२॥
ऋतस्य हि शुरुधः सन्ति पूर्वीर्ऋतस्य हि धेनवो वावशानाः ।
ऋतं भिक्षमाणा उप सेदुरापः ॥१३॥
ऋतस्य योना वशमान उक्षा वृषा वृषन्यन्नधनस्यधानाम् ।
घृतप्रुषा मनसा हव्यमुन्दन्नग्ने विभ्वासमिधा समैरत ॥१४॥
ऋतस्य पदे कवयो नि पान्ति गुहा नामानि दधिरे परांसि ।
दुष्टरे सूदयन्त सस्मिन्नधि केतवः शिश्रियुरेकरूपाः ॥१५॥
ऋतस्य प्रेषा ऋतस्य धीतिर्विश्वायुर्विश्वे अपांसि चक्रुः ।
ऋतस्य योनिं महिषश्चिदर्वन्नारे अकर्म धीतिभिर्गृणन्तः ॥१६॥
ऋतस्य गोपावधि तिष्ठथो रथं सत्यधर्माणा परमे व्योमन् ।
यमत्र मित्रावरुणावथो युवं तस्मै वृष्टिर्मधुमत्पिन्वते दिवः ॥१७॥
ऋतस्य सामन्त्सरमा जिगाय तं गव्यन्तं पणयो निषेदुषः ।
आरात्तात्सोमो अभवत्परावतः कृधी न इन्द्रोभयाविने गवे ॥१८॥
ऋतस्य हि वर्तनयः सुजातमा द्यावापृथिवी वर्धयन्ति वृष्टये ।
पवमानो अजीजनद्दिवश्चित्रं न तनयं पुपुष्टिमिषं स्तोतृभ्य आभर ॥१९॥
ऋतस्य हि प्रसितिर्द्यौरुरुर्ऋतस्य हि प्रसितिः पृथिवी गभीरा ।
ऋतस्य योनिं निहितं पुरुक्षुमहो राजान आ विवासन्त्यत्र ॥२०॥
ऋतस्य हि सदसो धीतिरद्यौदुरुर्ऋतस्य हि सदसो धीतिरद्यौत् ।
ऋतस्य हि धेनवो वायवेदुहे सप्तनामाणं जनयन्त सुक्रतुम् ॥२१॥
ऋतस्य हि वर्तनयः सुजातमा द्यावापृथिवी वर्धयन्ति वृष्टये ।
पवमानो अजीजनद्दिवश्चित्रं न तनयं पुपुष्टिमिषं स्तोतृभ्य आभर ॥२२॥
ऋतस्य हि शुरुधः सन्ति पूर्वीर्ऋतस्य हि धेनवो वावशानाः ।
ऋतं भिक्षमाणा उप सेदुरापः ॥२३॥
ऋतस्य योना वशमान उक्षा वृषा वृषन्यन्नधनस्यधानाम् ।
घृतप्रुषा मनसा हव्यमुन्दन्नग्ने विभ्वासमिधा समैरत ॥२४॥
ऋतस्य पदे कवयो नि पान्ति गुहा नामानि दधिरे परांसि ।
दुष्टरे सूदयन्त सस्मिन्नधि केतवः शिश्रियुरेकरूपाः ॥२५॥
ऋतस्य प्रेषा ऋतस्य धीतिर्विश्वायुर्विश्वे अपांसि चक्रुः ।
ऋतस्य योनिं महिषश्चिदर्वन्नारे अकर्म धीतिभिर्गृणन्तः ॥२६॥
ऋतस्य गोपावधि तिष्ठथो रथं सत्यधर्माणा परमे व्योमन् ।
यमत्र मित्रावरुणावथो युवं तस्मै वृष्टिर्मधुमत्पिन्वते दिवः ॥२७॥
ऋतस्य सामन्त्सरमा जिगाय तं गव्यन्तं पणयो निषेदुषः ।
आरात्तात्सोमो अभवत्परावतः कृधी न इन्द्रोभयाविने गवे ॥२८॥
ऋतस्य हि वर्तनयः सुजातमा द्यावापृथिवी वर्धयन्ति वृष्टये ।
पवमानो अजीजनद्दिवश्चित्रं न तनयं पुपुष्टिमिषं स्तोतृभ्य आभर ॥२९॥
ऋतस्य हि प्रसितिर्द्यौरुरुर्ऋतस्य हि प्रसितिः पृथिवी गभीरा ।
ऋतस्य योनिं निहितं पुरुक्षुमहो राजान आ विवासन्त्यत्र ॥३०॥
ऋतस्य हि सदसो धीतिरद्यौदुरुर्ऋतस्य हि सदसो धीतिरद्यौत् ।
ऋतस्य हि धेनवो वायवेदुहे सप्तनामाणं जनयन्त सुक्रतुम् ॥३१॥
ऋतस्य हि वर्तनयः सुजातमा द्यावापृथिवी वर्धयन्ति वृष्टये ।
पवमानो अजीजनद्दिवश्चित्रं न तनयं पुपुष्टिमिषं स्तोतृभ्य आभर ॥३२॥
ऋतस्य हि शुरुधः सन्ति पूर्वीर्ऋतस्य हि धेनवो वावशानाः ।
ऋतं भिक्षमाणा उप सेदुरापः ॥३३॥
ऋतस्य योना वशमान उक्षा वृषा वृषन्यन्नधनस्यधानाम् ।
घृतप्रुषा मनसा हव्यमुन्दन्नग्ने विभ्वासमिधा समैरत ॥३४॥
ऋतस्य पदे कवयो नि पान्ति गुहा नामानि दधिरे परांसि ।
दुष्टरे सूदयन्त सस्मिन्नधि केतवः शिश्रियुरेकरूपाः ॥३५॥
ऋतस्य प्रेषा ऋतस्य धीतिर्विश्वायुर्विश्वे अपांसि चक्रुः ।
ऋतस्य योनिं महिषश्चिदर्वन्नारे अकर्म धीतिभिर्गृणन्तः ॥३६॥
ऋतस्य गोपावधि तिष्ठथो रथं सत्यधर्माणा परमे व्योमन् ।
यमत्र मित्रावरुणावथो युवं तस्मै वृष्टिर्मधुमत्पिन्वते दिवः ॥३७॥
ऋतस्य सामन्त्सरमा जिगाय तं गव्यन्तं पणयो निषेदुषः ।
आरात्तात्सोमो अभवत्परावतः कृधी न इन्द्रोभयाविने गवे ॥३८॥
ऋतस्य हि वर्तनयः सुजातमा द्यावापृथिवी वर्धयन्ति वृष्टये ।
पवमानो अजीजनद्दिवश्चित्रं न तनयं पुपुष्टिमिषं स्तोतृभ्य आभर ॥३९॥
ऋतस्य हि प्रसितिर्द्यौरुरुर्ऋतस्य हि प्रसितिः पृथिवी गभीरा ।
ऋतस्य योनिं निहितं पुरुक्षुमहो राजान आ विवासन्त्यत्र ॥४०॥
ऋतस्य हि सदसो धीतिरद्यौदुरुर्ऋतस्य हि सदसो धीतिरद्यौत् ।
ऋतस्य हि धेनवो वायवेदुहे सप्तनामाणं जनयन्त सुक्रतुम् ॥४१॥
ऋतस्य हि वर्तनयः सुजातमा द्यावापृथिवी वर्धयन्ति वृष्टये ।
पवमानो अजीजनद्दिवश्चित्रं न तनयं पुपुष्टिमिषं स्तोतृभ्य आभर ॥४२॥
ऋतस्य हि शुरुधः सन्ति पूर्वीर्ऋतस्य हि धेनवो वावशानाः ।
ऋतं भिक्षमाणा उप सेदुरापः ॥४३॥
ऋतस्य योना वशमान उक्षा वृषा वृषन्यन्नधनस्यधानाम् ।
घृतप्रुषा मनसा हव्यमुन्दन्नग्ने विभ्वासमिधा समैरत ॥४४॥
ऋतस्य पदे कवयो नि पान्ति गुहा नामानि दधिरे परांसि ।
दुष्टरे सूदयन्त सस्मिन्नधि केतवः शिश्रियुरेकरूपाः ॥४५॥
ऋतस्य प्रेषा ऋतस्य धीतिर्विश्वायुर्विश्वे अपांसि चक्रुः ।
ऋतस्य योनिं महिषश्चिदर्वन्नारे अकर्म धीतिभिर्गृणन्तः ॥४६॥
ऋतस्य गोपावधि तिष्ठथो रथं सत्यधर्माणा परमे व्योमन् ।
यमत्र मित्रावरुणावथो युवं तस्मै वृष्टिर्मधुमत्पिन्वते दिवः ॥४७॥
ऋतस्य सामन्त्सरमा जिगाय तं गव्यन्तं पणयो निषेदुषः ।
आरात्तात्सोमो अभवत्परावतः कृधी न इन्द्रोभयाविने गवे ॥४८॥
ऋतस्य हि वर्तनयः सुजातमा द्यावापृथिवी वर्धयन्ति वृष्टये ।
पवमानो अजीजनद्दिवश्चित्रं न तनयं पुपुष्टिमिषं स्तोतृभ्य आभर ॥४९॥
ऋतस्य हि प्रसितिर्द्यौरुरुर्ऋतस्य हि प्रसितिः पृथिवी गभीरा ।
ऋतस्य योनिं निहितं पुरुक्षुमहो राजान आ विवासन्त्यत्र ॥५०॥
ऋतस्य हि सदसो धीतिरद्यौदुरुर्ऋतस्य हि सदसो धीतिरद्यौत् ।
ऋतस्य हि धेनवो वायवेदुहे सप्तनामाणं जनयन्त सुक्रतुम् ॥५१॥
ऋतस्य हि वर्तनयः सुजातमा द्यावापृथिवी वर्धयन्ति वृष्टये ।
पवमानो अजीजनद्दिवश्चित्रं न तनयं पुपुष्टिमिषं स्तोतृभ्य आभर ॥५२॥
ऋतस्य हि शुरुधः सन्ति पूर्वीर्ऋतस्य हि धेनवो वावशानाः ।
ऋतं भिक्षमाणा उप सेदुरापः ॥५३॥
ऋतस्य योना वशमान उक्षा वृषा वृषन्यन्नधनस्यधानाम् ।
घृतप्रुषा मनसा हव्यमुन्दन्नग्ने विभ्वासमिधा समैरत ॥५४॥
ऋतस्य पदे कवयो नि पान्ति गुहा नामानि दधिरे परांसि ।
दुष्टरे सूदयन्त सस्मिन्नधि केतवः शिश्रियुरेकरूपाः ॥५५॥
ऋतस्य प्रेषा ऋतस्य धीतिर्विश्वायुर्विश्वे अपांसि चक्रुः ।
ऋतस्य योनिं महिषश्चिदर्वन्नारे अकर्म धीतिभिर्गृणन्तः ॥५६॥
ऋतस्य गोपावधि तिष्ठथो रथं सत्यधर्माणा परमे व्योमन् ।
यमत्र मित्रावरुणावथो युवं तस्मै वृष्टिर्मधुमत्पिन्वते दिवः ॥५७॥
ऋतस्य सामन्त्सरमा जिगाय तं गव्यन्तं पणयो निषेदुषः ।
आरात्तात्सोमो अभवत्परावतः कृधी न इन्द्रोभयाविने गवे ॥५८॥
ऋतस्य हि वर्तनयः सुजातमा द्यावापृथिवी वर्धयन्ति वृष्टये ।
पवमानो अजीजनद्दिवश्चित्रं न तनयं पुपुष्टिमिषं स्तोतृभ्य आभर ॥५९॥
ऋतस्य हि प्रसितिर्द्यौरुरुर्ऋतस्य हि प्रसितिः पृथिवी गभीरा ।
ऋतस्य योनिं निहितं पुरुक्षुमहो राजान आ विवासन्त्यत्र ॥६०॥
ऋतस्य हि सदसो धीतिरद्यौदुरुर्ऋतस्य हि सदसो धीतिरद्यौत् ।
ऋतस्य हि धेनवो वायवेदुहे सप्तनामाणं जनयन्त सुक्रतुम् ॥६१॥
ऋतस्य हि वर्तनयः सुजातमा द्यावापृथिवी वर्धयन्ति वृष्टये ।
पवमानो अजीजनद्दिवश्चित्रं न तनयं पुपुष्टिमिषं स्तोतृभ्य आभर ॥६२॥
ऋतस्य हि शुरुधः सन्ति पूर्वीर्ऋतस्य हि धेनवो वावशानाः ।
ऋतं भिक्षमाणा उप सेदुरापः ॥६३॥
ऋतस्य योना वशमान उक्षा वृषा वृषन्यन्नधनस्यधानाम् ।
घृतप्रुषा मनसा हव्यमुन्दन्नग्ने विभ्वासमिधा समैरत ॥६४॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

यत्र धाराऽअनपेता मधोर्घृतस्य च याः ।
तदग्निर्वैश्वकर्मणः स्वर्दृवेपु नो दधत् ॥६५॥
अग्निरस्मि जन्मना जातवेदा घृतं मे चक्षुरमृतं मऽआसन्।
अर्कस्त्रिधातू रजसो विमानोऽजस्रो घर्मो हविरस्मि नाम॥६६॥
ऋचो नामास्मि यजूंष्यपि नामास्मि सामानि नामास्मि।
येऽअग्नयः पाञ्चजन्याऽअस्यां पृथिव्यामधि ।
तेषामसि त्वमुत्तमः प्र नो जीवातवे सुव ॥६७॥
वात्रंहत्याय शवसे पृतनाषाह्याय च। इन्द्र त्वावर्तयामसि॥६८॥
सहदानुम्पुरुहूत क्षियन्तमहस्तमिन्द्र सम्पिणक् कुणारुम्।
अभि वृत्रं वर्द्धमानं पियारुमपार्दमिन्द्र तवसा जघन्थ॥६९॥
वि नऽइन्द्र मृधो जहि नीचा यच्छ पृतन्यतः ।
योऽअस्माँ२॥ऽअभिदासत्यधरं गमया तमः ॥७०॥
मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः परावतऽआजगन्था परस्याः।
सृकꣳसꣳशाय पविमिन्द्र तिग्मं वि शत्रूंस्ताढि वि मृधो नुदस्व॥७१॥
वैश्वानरो नऽऊतयेऽआ प्र यातु परावतः। अग्निर्नः सुष्टुतीरुप॥७२॥
पृष्टो दिवि पृष्टोऽअग्निः पृथिव्यां पृष्टो विश्वाऽओषधीराविवेश।
वैश्वानरः सहसा पृष्टोऽअग्निः स नो दिवा स रिषस्पातु नक्तम्॥७३॥
अश्याम तं काममग्नेतवोतीऽअश्याम रयिꣳरयिवः सुवीरम्।
अश्याम वाजमभि वाजयन्तोऽश्याम द्युम्नमजराजरं ते॥७४॥
वयं तेऽअद्य रꣳरिमा हि काममुत्तानहस्ता नमसोपसद्य।
यजिष्ठेन मनसा यक्षि देवानस्रेधता मन्मना विप्रोऽअग्ने॥७५॥
धामच्छदग्निरिन्द्रो ब्रह्मा देवो बृहस्पतिः ।
सचेतसो विश्वे देवा यज्ञं प्रावन्तु नः शुभे ॥७६॥
त्वं यविष्ठ दाशुषो नॄंः पाहि शृणुधी गिरः। रक्षा तोकमुत त्मना॥७७॥

॥ इत्यष्टादशोऽध्यायः॥

अथैकोनविंशोऽध्यायः॥

—:o:—

ऋषिः—प्रजापतिः १। भारद्वाजः २, ३। आभूतिः ४-९। हैमवर्चिः १०-३५। प्रजापतिः ३६, ३७। वैखानसः ३८-४८। शङ्खः ४९-९५॥

देवता—सोमः १-५, ८-१०, १५, २१, २३, २५, ३४, ३५, ५४, ७२, ७४, ८४। इन्द्रः ६, ७, ३२, ३३, ३८, ७१, ७६, ९१। अग्निः ११, ४०, ४१, ४८, ६४-६६। विद्वांसः १२, ३९। यज्ञः १३, १६, १७, १९, २२, २६-२८, ३०, ३१। अतिथ्यादयो लिङ्गोक्ताः १४। गृहपतिः १८। यजमानः २०। विद्वान् २४। इडा २९। पितरः ३६, ४५, ४७, ४९-५३, ५५-६३, ६७-७०, ८७। सरस्वती ३७, ८३, ८८, ९०, ९४। पवित्रकर्त्ता ४२। सविता ४३, ८०, ८५, ८६। विश्वेदेवाः ४४। श्रीः ४६। अङ्गिरसः ७३। प्रजापतिः ७५, ७७-७९। वरुणः ८१। अश्विनौ ८२, ८९, ९३, ९५। आत्मा ९२॥

छन्दः—निचृच्छक्वरी १, ९। स्वराडनुष्टुप् २। भुरिक्त्रिष्टुप् ३, ७, ७२, ७८, ८०, ८१, ८३, ८५, ८९, ९१। आर्षीगायत्री ४। निचृज्जगती ५, ५९, ९५। विराट्प्रकृतिः ६। निचृत्पङ्क्तिः ८। आर्ष्युष्णिक् १०। शक्वरी ११। भुरिगनुष्टुप् १२, १६, २५, २७। अनुष्टुप् १३-१५, १७, २१-२३, २६, २८, ३०, ३१, ३९, ४६, ६५। निचृदनुष्टुप् १८, १९, २४, २९, ४५, ७०। भुरिगुष्णिक् २०। निचृत्त्रिष्टुप् ३२, ६२, ६६, ७३, ८४। त्रिष्टुप् ३३, ३४, ५३, ५६, ६१, ६९, ७४, ८२, ८६, ९२, ९३। विराट्त्रिष्टुप् ३५, ४४, ४९, ५०, ६०, ६३। निचृदष्टिः ३६, ४८। भुरिगष्टिः ३७। गायत्री ३८, ४२, ७१। निचृद्गायत्री ४०, ४१, ४३। स्वराट्पङ्क्तिः ४७, ५२, ६७, ६८। भुरिक्पङ्क्तिः ५१, ५४, ५५, ८७, ९०। निचृत्पङ्क्तिः ५७। विराट्पङ्क्तिः ५८, ९४। विराडनुष्टुप् ६४। भुरिगतिजगती ७५, ७९। भुरिगतिशक्वरी ७६। अतिशक्वरी ७७। स्वराट्त्रिष्टुप् ८८॥

स्वरः—धैवतः १, ३, ६, ७, ९, ११, ३२-३५, ४४, ४९, ५०, ५३, ५६, ६०-६३, ६६, ६९, ७२-७४, ७८, ८०-८६, ८८, ८९, ९१-९३। गान्धारः २, १२-१९, २१-३१, ३९, ४५, ४६, ६४, ६५, ७०। षड्जः ४, ३८, ४०-४३, ७१। निषादः ५, ५९, ७५, ७९, ९५। पञ्चमः ८, ४७, ५१, ५२, ५४, ५५, ५७, ५८, ६७, ६८, ७६, ७७, ८७, ९०, ९४। ऋषभः १०, २०। मध्यमः ३६, ३७, ४८॥

स्वाद्वीं त्वा स्वादुना तीव्रां तीव्रेणामृतामृतेन ।
मधुमतीं मधुमता सृजामि सꣳसोमेन ।
सोमोऽस्यश्विभ्यां पच्यस्व सरस्वत्यै पच्यस्वेन्द्राय सुत्राम्णे पच्यस्व॥१॥
परीतो षिञ्चता सुतꣳसोमो यऽउत्तमꣳहविः ।
दधन्वान् यो नर्यो अप्स्वन्तरा सुषाव सोममद्रिभिः ॥२॥
वायोः पूतः पवित्रेण प्रत्यङ् सोमोऽअतिद्रुतः। इन्द्रस्य युज्यः सखा।
वायोः पूतः पवित्रेण प्राङ् सोमोऽअतिद्रुतः। इन्द्रस्य युज्यः सखा॥३॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पुनाति ते परिस्रुतꣳसोमꣳसूर्यस्य दुहिता। वारेण शश्वता तना॥४॥
ब्रह्म क्षत्रं पवते तेजऽइन्द्रियꣳसुरया सोमः सुतऽआसुतो मदाय।
शुक्रेण देव देवताः पिपृग्धि रसेनान्नं यजमानाय धेहि ॥५॥
कुविदङ्ग यवमन्तो यवं चिद्यथा दान्त्यनुपूर्वं वियूय
इहेहैषां कृणुहि भोजनानि ये बर्हिषो नमऽउक्तिं यजन्ति ।
उपयामगृहीतोऽस्यश्विभ्यां त्वा सरस्वत्यै त्वेन्द्राय त्वा सुत्राम्णऽएष
ते योनिस्तेजसे त्वा वीर्याय त्वा बलाय त्वा ॥६॥
नाना हि वां देवहितꣳसदस्कृतं मा सꣳसृक्षाथां परमे व्योमन्।
सुरा त्वमसि शुष्मिणी सोमऽएष मा मा हिꣳसीः स्वाँ योनिमाविशन्तीं॥७॥
उपयामगृहीतोऽस्याश्विनं तेजः सारस्वतं वीर्यमैन्द्रं बलम् ।
एष ते योनिर्मोदाय त्वानन्दाय त्वा महसे त्वा ॥८॥
तेजोऽसि तेजो मयि धेहि वीर्यमसि वीर्यं मयि धेहि बलमसि
बलं मयि धेह्योजोऽस्योजो मयि धेहि मन्युरसि मन्युं मयि
धेहि सहोऽसि सहो मयि धेहि ॥९॥

या व्याघ्रं विषूचिकोभौ वृकं च रक्षति ।
श्येनं पतत्रिणꣳसिꣳहꣳसेमं पात्वꣳहसः ॥१०॥
यदापिपेष मातरं पुत्रः प्रमुदितो धयन् ।
एतत्तदग्रेऽअनृणो भवाम्यहतौ पितरौ मया ।
सम्पृच स्थ सं मा भद्रेण पृङ्क्त विपृच
स्थ वि मा पाप्मना पृङ्क्त ॥११॥
देवा यज्ञमतन्वत भेषजं भिषजाश्विना ।
वाचा सरस्वती भिषगिन्द्रायेन्द्रियाणि दधतः॥१२॥
दीक्षायै रूपꣳशष्पाणि प्रायणीयस्य तोक्मानि।
क्रयस्य रूपꣳसोमस्य लाजाः सोमाꣳशवो मधु॥१३॥
आतिथ्यरूपं मासरं महावीरस्य नग्नहुः ।
रूपमुपसदामेतत्तिस्रो रात्रीः सुरासुता ॥१४॥
सोमस्य रूपं क्रीतस्य परिस्रुत्परिषिच्यते ।
अश्विभ्यां दुग्धं भेषजमिन्द्रायैन्द्रꣳसरस्वत्या॥१५॥

आसन्दी रूपꣳराजासन्द्यै वेद्यै कुम्भी सुराधानी।
अन्तरऽउत्तरवेद्या रूपं कारोतरो भिषक् ॥१६॥
वेद्या वेदिः समाप्यते बर्हिषा बर्हिरिन्द्रियम्।
यूपेन यूपऽआप्यते प्रणीतोऽअग्निरग्निना ॥१७॥
हविर्धानं यदश्विनाग्नीध्रं यत्सरस्वती ।
इन्द्रायैन्द्रꣳसदस्कृतं पत्नीशालं गार्हपत्यः ॥१८॥
प्रैषेभिः प्रैषानाप्नोत्याप्रीभिराप्रीर्यज्ञस्य ।
प्रयाजेभिरनुयाजान्वषट्कारेभिराहुतीः ॥१९॥
पशुभिः पशूनाप्नोति पुरोडाशैर्हवीꣳष्या ।
छन्दोभिः सामिधेनीर्याज्याभिर्वषट्कारान् ॥२०॥
धानाः करम्भः सक्तवः परीवापः पयो दधि।
सोमस्य रूपꣳहविषऽआमिक्षा वाजिनं मधु॥२१॥
धानानाꣳरूपं कुवलं परीवापस्य गोधूमाः।
सक्तूनाꣳरूपं बदरमुपवाकाः करम्भस्य ॥२२॥
पयसो रूपं यद्यवा दध्नो रूपं कर्कन्धूनि ।
सोमस्य रूपं वाजिनꣳसौम्यस्य रूपमामिक्षा॥२३॥
आ श्रावयेति स्तोत्रियाः प्रत्याश्रावोऽअनुरूपः।
यजेति धाय्यारूपं प्रगाथा ये यजामहाः ॥२४॥
अर्धऽऋचैरुक्थानाꣳरूपं पदैराप्नोति निविदः।
प्रणवैः शस्त्राणाꣳरूपं पयसा सोमऽआप्यते॥२५॥
अश्विभ्यां प्रातः सवनमिन्द्रेणैन्द्रं माध्यन्दिनम्।
वैश्वदेवꣳसरस्वत्या तृतीयमाप्तꣳसवनम् ॥२६॥
वायव्यैर्वायव्यान्याप्नोति सतेन द्रोणकलशम्।
कुम्भीभ्यामम्भृणौ सुते स्थालीभि स्थालीराप्नोति॥२७॥
यजुर्भिराप्यन्ते ग्रहा ग्रहै स्तोमाश्च विष्टुतीः।
छन्दोभिरुक्थाशस्त्राणि साम्नावभृथऽआप्यते॥२८॥
इडाभिर्भक्षानाप्नोति सूक्तवाकेनाशिषः ।
शंयुना पत्नीसंयाजान्त्समिष्टयजुषा सꣳस्थाम्॥२९॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सूतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाप्नोति दक्षिणाम्।
दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते॥३०॥
एतावद्रूपं यज्ञस्य यद्देवैर्ब्रह्मणा कृतम् ।
तदेतत्सर्वमाप्नोति यज्ञे सौत्रामणी सुते ॥३१॥
सुरावन्तं बर्हिषदꣳसुवीरं यज्ञꣳहिन्वन्ति महिषा नमोभिः।
दधानाः सोमं दिवि देवतासु मदेमेन्द्रं यजमानाः स्वर्काः॥३२॥
यस्ते रसः सम्भृतऽओषधीषु सोमस्य शुष्मः सुरया सुतस्य।
तेन जिन्व यजमानं मदेन सरस्वतीमश्विनाविन्द्रमग्निम्॥३३॥
यमश्विना नमुचेरासुरादधि सरस्वत्यसुनोदिन्द्रियाय ।
इमं तꣳशुक्रं मधुमन्तमिन्दुꣳसोमꣳराजानमिह भक्षयामि॥३४॥
यदन्नं रिप्तꣳरसिनः सुतस्य यदिन्द्रोऽअपिबच्छचीभिः।
अहं तदस्य मनसा शिवेन सोमꣳराजानमिह भक्षयामि॥३५॥
पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः
स्वधा नमः प्रपितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः। अक्षन्
पितरोऽमीमदन्त पितरोऽतीतृपन्त पितरः पितरः शुन्धध्वम्॥३६॥
पुनन्तु मा पितरः सोम्यासः पुनन्तु मा पितामहाः पुनन्तु
प्रपितामहाः। पवित्रेण शतायुषा। पुनन्तु मा पितामहाः पुनन्तु
प्रपितामहाः। पवित्रेण शतायुषा विश्वमायुर्व्यश्नवै ॥३७॥
अग्नेऽआयूꣳषि पवसेऽआ सुवोर्जमिषं च नः।
आरे बाधस्व दुच्छुनाम् ॥३८॥
पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनसा धियः ।
पुनन्तु विश्वा भूतानि जातवेदः पुनीहि मा॥३९॥
पवित्रेण पुनीहि मा शुक्रेण देव दीद्यत्। अग्ने क्रत्वा क्रतूँ२॥ऽरनु॥४०॥
यत्ते पवित्रमर्चिष्यग्ने वितततमन्तरा। ब्रह्म तेन पुनातु मा॥४१॥
पवमानः सोऽअद्य नः पवित्रेण विचर्षणिः। यः पोता स पुनातु मा॥४२॥
उभाभ्यां देव सवितः पवित्रेण सवेन च। मां पुनीहि विश्वतः॥४३॥
वैश्वदेवी पुनती देव्यागाद्यस्यामिमा बह्व्यस्तन्वो वीतपृष्ठाः।
तया मदन्तः सधमादेषु वयꣳस्याम पतयो रयीणाम्॥४४॥

ये समानाः समनसः पितरो यमराज्ये ।
तेषां लोकः स्वधा नमो यज्ञो देवेषु कल्पताम् ॥४५॥
ये समानाः समनसो जीवा जीवेषु मामकाः ।
तेषाꣳश्रीर्मयि कल्पतामस्मिँल्लोके शतꣳसमाः ॥४६॥
द्वे सृतीऽअशृणवं पितॄणामहं देवानामुत मर्त्यानाम् ।
ताभ्यामिदं विश्वमेजत्समेति यदन्तरा पितरं मातरं च॥४७॥
इदं हविः प्रजननं मेऽअस्तु दशवीरꣳसर्वगणꣳस्वस्तये।
आत्मसनि प्रजासनि पशुसनि लोकसन्यभयसनि ।
अग्निः प्रजां बहुलां मे करोत्वन्नं पयो रेतोऽअस्मासु धत्त॥४८॥
उदीरतामवरऽउत्परासऽउन्मध्यमाः पितरः सोम्यासः ।
असुं यऽईयुरवृकाऽऋतज्ञास्ते नोऽवन्तु पितरो हवेषु॥४९॥
अङ्गिरसो नः पितरो नवग्वाऽअथर्वाणो भृगवः सोम्यासः।
तेषां वयꣳसुमतौ यज्ञियानामपि भद्रे सौमनसे स्याम॥५०॥
ये नः पूर्वे पितरः सोम्यासोऽनूहिरे सोमपीथं वसिष्ठाः।
तेभिर्यमः सꣳरराणो हवीꣳष्युशन्नुशद्भिः प्रतिकाममत्तु॥५१॥
त्वꣳ सोम प्रचिकितो मनीषा त्वꣳरजिष्ठमनु नेषि पन्थाम्।
तव प्रणीती पितरो नऽइन्दो देवेषु रत्नमभजन्त धीराः॥५२॥
त्वया हि नः पितरः सोम पूर्वे कर्माणि चक्रुः पवमान धीराः।
वन्वन्नवातः परिधीँ१॥ऽरपोर्णु वीरेभिरश्वैर्मघवा भवा नः ॥५३॥
त्वꣳ सोम पितृभिः संविदानोऽनु द्यावापृथिवीऽआ ततन्थ ।
तस्मै तऽइन्दो हविषा विधेम वयꣳस्याम पतयो रयीणाम् ॥५४॥
बर्हिषदः पितरऽऊत्यर्वागिमा वो हव्या चकृमा जुषध्वम् ।
तऽआ गतावसा शन्तमेनाथा नः शं योरपो दधात ॥५५॥
आहं पितॄन्त्सुविदत्राँ२॥ऽअवित्सि नपातं च विक्रमणं च विष्णोः।
बर्हिषदो ये स्वधया सुतस्य भजन्त पित्वस्तऽइहागमिष्ठाः ॥५६॥
उपहूताः पितरः सोम्यासो बर्हिष्येषु निधिषु प्रियेषु ।
तऽआ गमन्तु तऽइह श्रुवन्त्वधि ब्रुवन्तु तेऽवन्त्वस्मान् ॥५७॥
आ यन्तु नः पितरः सोम्यासोऽग्निष्वात्ताः पथिभिर्देवयानैः ।
अस्मिन् यज्ञे स्वधया मदन्तोऽधि ब्रुवन्तु तेऽवन्त्वस्मान् ॥५८॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अग्निष्वात्ताः पितरऽएह गच्छत सदःसदः सदत सुप्रणीतयः ।
अत्ता हवींष्यृषि प्रयतानि बर्हिष्यथा रयिꣳसर्ववीरं दधातन ॥५९॥
येऽअग्निष्वात्ता येऽअनग्निष्वात्ता मध्ये दिवः स्वधया मादयन्ते।
तेभ्यः स्वराडसुनीतिमेतां यथावशं तन्वं कल्पयाति ॥६०॥
अग्निष्वात्तानृतुमतो हवामहे नाराशꣳसे सोमपीथं यऽआशुः ।
ते नो विप्रासः सुहवा भवन्तु वयꣳस्याम पतयो रयीणाम् ॥६१॥
आच्या जानु दक्षिणतो निषद्येमं यज्ञमभि गृणीत विश्वे ।
मा हिꣳसिष्ट पितरः केन चिन्नो यद्वऽआगः पुरुषता कराम ॥६२॥
आसीनासोऽअरुणीनामुपस्थे रयिं धत्त दाशुषे मर्त्याय ।
पुत्रेभ्यः पितरस्तस्य वस्वः प्र यच्छत तऽइहोर्जं दधात ॥६३॥
यमग्ने कव्यवाहन त्वं चिन्मन्यसे रयिम् ।
तन्नो गीर्भिः श्रवाय्यं देवत्रा पनया युजम् ॥६४॥
योऽअग्निः कव्यवाहनः पितॄन्यक्षदृतावृधः ।
प्रेदु हव्यानि वोचति देवेभ्यश्च पितृभ्यऽआ॥६५॥
त्वमग्नऽईडितः कव्यवाहनावाड्ढव्यानि सुरभीणि कृत्वी ।
प्रादाः पितृभ्यः स्वधया तेऽअक्षन्नद्धि त्वं देव प्रयता हवींष्यृषि॥६६॥
ये चेह पितरो ये च नेह याꣳश्च विद्म याँ२ऽउ च न प्रविद्म।
त्वं वेत्थ यति ते जातवेदः स्वधाभिर्यज्ञꣳसुकृतं जुषस्व ॥६७॥
इदं पितृभ्यो नमोऽअस्त्वद्य ये पूर्वासो यऽउपरासऽईयुः ।
ये पार्थिवे रजस्या निषत्ता ये वा नूनꣳसुवृजनासु विक्षु ॥६८॥
अधा यथा नः पितरः परासः प्रत्नासोऽअग्नऽऋतमाशुषाणाः ।
शुचीदयन्दीधितिमुक्थशासः क्षामा भिन्दन्तोऽअरुणीरपः व्रन् ॥६९॥
उशन्तस्त्वा नि धीमह्युशन्तः समिधीमहि ।
उशन्नुशतऽआ वह पितॄन्हविषेऽअत्तवे ॥७०॥
अपां फेनेन नमुचेः शिरऽइन्द्रोदवर्तयः। विश्वा यदजय स्पृधः॥७१॥
सोमो राजामृतꣳसुतऽऋजीषेणाजहान्मृत्युम् ।
ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपानꣳशुक्रमन्धसऽइन्द्रस्येन्द्रियमिदं
पयोऽमृतं मधु ॥७२॥
अद्भ्यः क्षीरं व्यपिबत् क्रुङ्ङाङ्गिरसो धिया ।
ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपानꣳशुक्रमन्धसऽइन्द्रस्येन्द्रियमिदं
पयोऽमृतं मधु ॥७३॥
सोममद्भ्यो व्यपिबच्छन्दसा हꣳसः शुचिषत् ।
ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपानꣳशुक्रमन्धसऽइन्द्रस्येन्द्रियमिदं
पयोऽमृतं मधु ॥७४॥
अन्नात्परिस्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिबत् क्षत्रं पयः सोमं प्रजापतिः।
ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपानꣳशुक्रमन्धसऽइन्द्रस्येन्द्रियमिदं
पयोऽमृतं मधु ॥७५॥
रेतो मूत्रं वि जहाति योनिं प्रविशदिन्द्रियम् ।
गर्भो जरायुणावृतऽउल्बं जहाति जन्मना ।
ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपानꣳशुक्रमन्धसऽइन्द्रस्येन्द्रियमिदं
पयोऽमृतं मधु ॥७६॥
दृष्ट्वा रूपे व्याकरोत्सत्यानृते प्रजापतिः ।
अश्रद्धामनृतेऽदधाच्छ्रद्धाꣳसत्ये प्रजापतिः ।
ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपानꣳशुक्रमन्धसऽइन्द्रस्येन्द्रियमिदं
पयोऽमृतं मधु ॥७७॥
वेदेन रूपे व्यपिबत्सुतासुतौ प्रजापतिः। ऋतेन सत्यमिन्द्रियं
विपानꣳशुक्रमन्धसऽइन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतं मधु॥७८॥
दृष्ट्वा परिस्रुतो रसꣳशुक्रेण शुक्रं व्यपिबत् पयः सोमं प्रजापतिः।
ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपानꣳशुक्रमन्धसऽइन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतं मधु॥७९॥
सीसेन तन्त्रं मनसा मनीषिणऽऊर्णासूत्रेण कवयो वयन्ति ।
अश्विना यज्ञꣳसविता सरस्वतीन्द्रस्य रूपं वरुणो भिषज्यन् ॥८०॥
तदस्य रूपममृतꣳशचीभिस्तिस्रो दधुर्देवताः सꣳरराणाः ।
लोमानि शष्पैर्बहुधा न तोक्मभिस्त्वगस्य मांसमभवन्न लाजाः॥८१॥
तदश्विना भिषजा रुद्रवर्तनी सरस्वती वयति पेशोऽअन्तरम् ।
अस्थि मज्जान मासरैः कारोत्तरेण दर्धतो गवां त्वचि ॥८२॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सर॑स्वती॒ मन॑सा पेश॒लं वसु॒ नास॑त्याभ्यां वयति दर्श॒तं वपुः॑ ।
रसं॑ परि॒स्रुता॒ न रोहि॑तं न॒ग्नहु॒र्धीर॒स्तस॑रं॒ न वेम॑ ॥८३॥
पय॑सा शु॒क्रम॒मृतं॑ ज॒नित्र॒ꣳसुर॑या॒ मूत्रा॑ज्जनयन्त॒ रेतः॑ ।
अपाम॑तिं दुर्म॒तिं बाध॑माना॒ऽऊव॑ध्यं॒ वात॑ꣳस॒ब्वं॒ तदा॒रात् ॥८४॥
इन्द्रः॑ सु॒त्रामा॒ हृद॑येन स॒त्यं पु॑रो॒डाशे॑न सवि॒ता ज॑जान ।
यकृ॑त् क्लो॒मानं॒ वरु॑णो भिष॒ज्यन् मत॑स्ने वाय॒व्यै॑र्न मि॑नाति पि॒त्तम्॥८५॥
आ॒न्त्राणि॑ स्था॒लीर्मधु॒ पिन्व॑माना॒ गुदाः॒ पात्रा॑णि सु॒दुघा॒ न धे॒नुः।
श्ये॒नस्य॒ पत्रं॒ न प्ली॒हा शची॑भिरास॒न्दी नाभि॑रु॒दरं॒ न मा॒ता ॥८६॥
कु॒म्भो व॑नि॒ष्ठुर्ज॑नि॒ता शची॑भि॒र्यस्मि॒न्नग्रे॒ योन्यां॒ गर्भो॑ऽअ॒न्तः ।
प्ला॒शिर्व्य॑क्तः श॒तधा॑र॒ऽउत्सो॑ दु॒हे न कु॒म्भी स्व॒धां पि॒तृभ्यः॑ ॥८७॥
मुख॒ꣳसद॑स्य॒ शिर॒ऽइत् सते॑न जि॒ह्वा प॒वित्र॑म॒श्विना॒सन्त्सर॑स्वती ।
चप्यं॒ न पा॒युर्भि॒षग॑स्य॒ वालो॑ व॒स्तिर्न शेपो॒ हर॑सा तर॒स्वी ॥८८॥
अ॒श्विभ्यां॒ चक्षु॑र॒मृतं॒ ग्रहा॑भ्यां॒ छागे॑न॒ तेजो॑ ह॒विषा॑ शृ॒तेन॑ ।
पक्ष्मा॑णि गो॒धूमैः॒ कुव॑लैरु॒तानि॒ पेशो॒ न शु॒क्रमसि॑तं वसाते ॥८९॥
अवि॒र्न मे॒षो न॒सि वी॒र्या॒य प्रा॒णस्य॒ पन्था॑ऽअ॒मृतो॒ ग्रहा॑भ्याम् ।
सर॑स्वत्युप॒वाकै॑र्व्या॒नं नस्या॑नि ब॒र्हिर्बद॑रैर्जजान ॥९०॥
इन्द्र॑स्य रू॒पमृ॑ष॒भो बला॑य॒ कर्णा॑भ्या॒ꣳश्रोत्र॑म॒मृतं॒ ग्रहा॑भ्याम् ।
यवा॒ न ब॒र्हिर्भ्रु॒वि केस॑राणि क॒र्कन्धु॑ जज्ञे॒ मधु॑ सार॒घं मुखा॑त्॥९१॥
आ॒त्मन्नु॒पस्थे॒ न वृक॑स्य॒ लोम॒ मुखे॒ श्मश्रू॑णि॒ न व्या॑घ्रलो॒म ।
केशा॒ न शी॒र्षन्यश॑से श्रि॒यै शिखा॑ सि॒ꣳहस्य॒ लोम॒ त्विषि॑रिन्द्रि॒याणि॑॥९२॥
अङ्गा॑न्या॒त्मन् भि॒षजा॒ तद॒श्विना॒त्मान॒मङ्गैः॒ सम॑धा॒त् सर॑स्वती ।
इन्द्र॑स्य रू॒पꣳश॒तमा॑न॒मायु॑श्च॒न्द्रेण॒ ज्योति॑र॒मृतं॒ दधा॑नाः ॥९३॥
सर॑स्वती॒ योन्यां॒ गर्भ॑म॒न्तर॒श्विभ्यां॒ पत्नी॒ सुकृ॑तं बिभर्त्ति ।
अ॒पाꣳरसे॑न॒ वरु॑णो॒ न साम्नेन्द्र॑ꣳश्रि॒यै ज॒नय॑न्न॒प्सु राजा॑ ॥९४॥
तेजः॑ पशू॒नाꣳह॒विरि॑न्द्रि॒याव॑त् परि॒स्रुता॒ पय॑सा सार॒घं मधु॑ ।
अ॒श्विभ्यां॑ दु॒ग्धं भि॒षजा॒ सर॑स्वत्या सुतासु॒ताभ्या॑म॒मृतः॒ सोम॒ऽइन्दुः॑॥९५॥

॥ इत्येकोनविंशोऽध्यायः॥

अथ विंशोऽध्यायः॥

—:०:—

ऋषिः—प्रजापतिः १, २, ४-२०, २२, २३, २७, २८, ३१, ३४, ३५। अश्विनौ ३। प्रस्कण्वः २१। आश्वतराश्विः २४-२६। विश्वामित्रः २९, ५३। नृमेधपुरुषमेधौ ३०। कौण्डिन्यः ३२। काक्षीवत्सुकीर्तिः ३३। आङ्गिरसः ३६-४६। वामदेवः ४७-४९। गर्गः ५०-५२। वसिष्ठः ५४। विदर्भिः ५५-८०। गृत्समदः ८१-८३। मधुच्छन्दाः ८४-९०॥

देवता—सभेशः १-३, ९, १०। सभापतिः ४-६, ८। राजा ७। उपदेशकाः ११। विश्वेदेवाः १२। अध्यापकोदेशकौ १३। अग्निः १४, २२, २४-२६, ७८, ७९। वायुः १५। सूर्यः १६, २१। लिङ्गोक्ताः १७, ३४, ३५। वरुणः १८। आपः १९, २०। समिद् २३। सोमः २७, ३३। इन्द्रः २८-३१, ३६, ३८-४०, ४७-५४, ८७-८९। परमात्मा ३२। तनूनपात् ३७। उषासानक्ता ४१। दैव्याध्यापकोपदेशकौ ४२। तिस्रो दैव्यः ४३। त्वष्टा ४४। वनस्पतिः ४५। स्वाहाकृतयः ४६। अश्विसरस्वतीन्द्राः ५५-६९, ७३-७७, ८०, ९०। इन्द्रसवितृवरुणः ७०-७२। अश्विनौ ८१-८३। सरस्वती ८४-८६॥

छन्दः—द्विपदाविराड्गायत्री १। भुरिगुष्णिक् २, २८। निचृदतिधृतिः ३। निचृदार्षीगायत्री ४। अनुष्टुप् ५, ६, १३, २५, ३४, ५५, ५७, ५९-६२, ६४, ६५, ६८, ७०-७२, ७५। निचृद्गायत्री ७, ८३, ८५, ८७। निचृदनुष्टुप् ८, १४-१६, २४, २६, ५८, ६६, ६९, ७३, ७४, ९०। निचृज्जगती ९। स्वराट्शक्वरी१०। पङ्क्तिः ११, २२, ३२, ४९। निचृत्प्रकृतिः १२। भुरिक्त्रिष्टुप् १७, ४०। भुरिगत्यष्टिः १८। निचृदतिजगती १९। भुरिगनुष्टुप् २०, ६७। विराडनुष्टुप् २१, २७, ५६, ६३, ७६, ८०। स्वराडतिशक्वरी २३। गायत्री २९, ३१, ८४, ८६, ८८, ८९। बृहती ३०। विराट्त्रिष्टुप् ३३, ५०। निचृदुपरिष्टाद्बृहती ३५। त्रिष्टुप् ३६-३८, ४१-४३, ४५, ४६। निचृत्त्रिष्टुप् ३९, ४४, ४८। भुरिक्पङ्क्तिः ४७, ५१, ५२, ५४, ७७, ७९। निचृद्बृहती ५३। जगती ७८। आर्च्युष्णिक् ८१। विराड्गायत्री ८२॥

स्वरः—षड्जः १, ३, ४, ७, २९, ३१, ८२-८९। ऋषभः २, २८, ८१। गान्धारः ५, ६, ८, १३-१६, १८, २०, २१, २४-२७, ३४, ५५-७६, ८०, ९०। निषादः ९, १९, ७८। धैवतः १०, १२, १७, ३३, ३६-४६, ४८, ५०, ७७। पञ्चमः ११, २२, २३, ३२, ४७, ४९, ५१, ५२, ५४, ७७, ७९। मध्यमः ३०, ३५, ५३॥

क्ष॒त्रस्य॒ योनि॑रसि क्ष॒त्रस्य॒ नाभि॑रसि। मा त्वा॑ हिꣳसी॒न्मा मा॑ हिꣳसीः॥१॥
निष॑साद धृ॒तव्र॑तो॒ वरु॑णः प॒स्त्या॒स्वा ।
साम्रा॑ज्याय सु॒क्रतुः॑। मृ॒त्योः पा॑हि वि॒द्योत्पा॑हि ॥२॥
दे॒वस्य॑ त्वा सवि॒तुः प्र॑स॒वे॒ऽश्विनो॑र्बा॒हुभ्यां॑ पू॒ष्णो हस्ता॑भ्याम्।
अ॒श्विनो॒र्भैष॑ज्येन॒ तेज॑से ब्रह्मवर्च॒साया॒भि षि॑ञ्चामि॒ सर॑स्वत्यै॒
भैष॑ज्येन वी॒र्या॒या॒न्नाद्या॑या॒भि षि॑ञ्चा॒मीन्द्र॑स्येन्द्रि॒येण॒ बला॑य श्रि॒यै
यश॑से॒ऽभि षि॑ञ्चामि ॥३॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कोऽसि कतमोऽसि कस्मै त्वा काय त्वा। सुश्लोक सुमङ्गल सत्यराजन्॥४॥
शिरो मे श्रीर्यशो मुखं त्विषिः केशाश्च श्मश्रूणि ।
राजा मे प्राणोऽअमृतꣳसम्राट् चक्षुर्विराट् श्रोत्रम् ॥५॥
जिह्वा मे भद्रं वाङ् महो मनो मन्युः स्वराड् भामः ।
मोदाः प्रमोदाऽअङ्गुलीरङ्गानि मित्रं मे सहः ॥६॥
बाहू मे बलमिन्द्रियꣳहस्तौ मे कर्म वीर्यम्। आत्मा क्षत्रमुरो मम॥७॥
पृष्टीर्मे राष्ट्रमुदरमꣳसौ ग्रीवाश्च श्रोणी ।
ऊरूऽअरत्नी जानुनी विशो मेऽङ्गानि सर्वतः ॥८॥
नाभिर्मे चित्तं विज्ञानं पायुर्मेऽपचितिर्भसत् ।
आनन्दनन्दावाण्डौ मे भगः सौभाग्यं पसः ।
जङ्घाभ्यां पद्भ्यां धर्मोऽस्मि विशि राजा प्रतिष्ठितः ॥९॥
प्रति क्षत्रे प्रति तिष्ठामि राष्ट्रे प्रत्यश्वेषु प्रति तिष्ठामि गोषु।
प्रत्यङ्गेषु प्रति तिष्ठाम्यात्मन् प्रति प्राणेषु प्रति तिष्ठामि
पुष्टे प्रति द्यावापृथिव्योः प्रति तिष्ठामि यज्ञे ॥१०॥
त्रया देवाऽएकादश त्रयस्त्रिꣳशाः सुराधसः ।
बृहस्पतिपुरोहिता देवस्य सवितुः सवे। देवा देवैरवन्तु मा॥११॥
प्रथमा द्वितीयैर्द्वितीयास्तृतीयैस्तृतीयाः सत्येन सत्यं यज्ञेन
यज्ञो यजुर्भिर्यजूꣳषि। सामभिः सामान्यृग्भिर्ऋचः पुरोऽनु-
वाक्याभिः पुरोऽनुवाक्या याज्याभिर्याज्या वषट्कारैर्वषट्-
काराऽआहुतिभिराहुतयो मे कामान्त्समर्धयन्तु भूः स्वाहा॥१२॥
लोमानि प्रयतिर्मम त्वङ् मऽआनतिरागतिः ।
माꣳसं मऽउपनतिर्वस्वस्थि मज्जा मऽआनतिः ॥१३॥
यद्देवा देवहेडनं देवासश्चकृमा वयम् ।
अग्निर्मा तस्मादेनसो विश्वान्मुञ्चत्वꣳहसः ॥१४॥
यदि दिवा यदि नक्तमेनाꣳसि चकृमा वयम् ।
वायुर्मा तस्मादेनसो विश्वान्मुञ्चत्वꣳहसः ॥१५॥
यदि जाग्रद्यदि स्वप्नऽएनाꣳसि चकृमा वयम् ।
सूर्यो मा तस्मादेनसो विश्वान्मुञ्चत्वꣳहसः ॥१६॥

यद् ग्रामे यदरण्ये यत्सभायां यदिन्द्रिये ।
यच्छूद्रे यदर्ये यदेनश्चकृमा वयं यदेकस्याधि धर्मणि तस्यावयजनमसि॥१७॥
यदापोऽअघ्न्याऽइति वरुणेति शपामहे ततो वरुण नो मुञ्च ।
अवभृथ निचुम्पुण निचेरुरसि निचुम्पुणः ।
अव देवैर्देवकृतमेनोऽयक्ष्यव मर्त्यैर्मर्त्यकृतं पुरुराव्णो देव रिषस्पाहि॥१८॥
समुद्रे ते हृदयमप्स्वन्तः सं त्वा विशन्त्वोषधीरुतापः।
सुमित्रिया नऽआपऽ ओषधयः सन्तु दुर्मित्रियास्तस्मै सन्तु
योस्मान् द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मः ॥१९॥
द्रुपदादिव मुमुचानः स्विन्नः स्नातो मलादिव ।
पूतं पवित्रेणेवाज्यमापः शुन्धन्तु मैनसः ॥२०॥
उद्वयं तमसस्परि स्वः पश्यन्तऽउत्तरम् ।
देवं देवत्रा सूर्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम् ॥२१॥
अपोऽअद्यान्वचारिषꣳरसेन समसृक्ष्महि ।
पयस्वानग्नऽआगमं तं मा सꣳसृज वर्चसा प्रजया च धनेन च॥२२॥
एधोऽस्येधिषीमहि समिदसि तेजोऽसि तेजो मयि धेहि ।
समाववर्ति पृथिवी समुषाः समु सूर्यः। समु विश्वमिदं जगत्।
वैश्वानरज्योतिर्भूयासं विभून्कामान्व्यश्नवै भूः स्वाहा ॥२३॥
अभ्यादधामि समिधमग्ने व्रतपते त्वयि ।
व्रतं च श्रद्धां चोपैमीन्धे त्वा दीक्षितोऽअहम् ॥२४॥
यत्र ब्रह्म च क्षत्रं च सम्यञ्चौ चरतः सह ।
तं लोकं पुण्यं प्रज्ञेषं यत्र देवाः सहाग्निना ॥२५॥
यत्रेन्द्रश्च वायुश्च सम्यञ्चौ चरतः सह ।
तं लोकं पुण्यं प्रज्ञेषं यत्र सेदिर्न विद्यते ॥२६॥
अꣳशुना ते अꣳशुः पृच्यतां परुषा परुः ।
गन्धस्ते सोममवतु मदाय रसोऽअच्युतः ॥२७॥
सिञ्चन्ति परि षिञ्चन्त्युत्सिञ्चन्ति पुनन्ति च ।
सुरायै बभ्र्वै मदे किन्त्वो वदति किन्त्वः ॥२८॥
धानावन्तं करम्भिणमपूपवन्तमुक्थिनम्। इन्द्र प्रातर्जुषस्व नः॥२९॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

बृहदिन्द्राय गायत मरुतो वृत्रहन्तमम् ।
येन ज्योतिरजनयन्नृतावृधो देवं देवाय जागृवि ॥३०॥
अध्वर्योऽअद्रिभिः सुतꣳसोमं पवित्रऽआ नय। पुनाहीन्द्राय पातवे॥३१॥
यो भूतानामधिपतिर्यस्मिँल्लोकाऽअधि श्रिताः ।
यऽईशे महतो महाँस्तेन गृह्णामि त्वामहं मयि गृह्णामि त्वामहम्॥३२॥
उपयामगृहीतोऽस्यश्विभ्यां त्वा सरस्वत्यै त्वेन्द्राय त्वा सुत्राम्णऽएष
ते योनिरश्विभ्यां त्वा सरस्वत्यै त्वेन्द्राय त्वा सुत्राम्णे ॥३३॥
प्राणापा मेऽअपानपाश्चक्षुष्पाः श्रोत्रपाश्च मे ।
वाचो मे विश्वभेषजो मनसोऽसि विलायकः ॥३४॥
अश्विनकृतस्य ते सरस्वतिकृतस्येन्द्रेण सुत्राम्णा कृतस्य।
उपहूतऽउपहूतस्य भक्षयामि ॥३५॥
समिद्धऽइन्द्रऽउषसामनीके पुरोरुचा पूर्वकृद्वावृधानः।
त्रिभिर्दैवैस्त्रिꣳशता वज्रबाहुर्जघान वृत्रं वि दुरो ववार॥३६॥
नराशꣳसः प्रति शूरो मिमानस्तनूनपात्प्रति यज्ञस्य धाम ।
गोभिर्वपावान्मधुना समञ्जन्हिरण्यैश्चन्द्री यजति प्रचेताः ॥३७॥
ईडितो देवैर्हरिवाँ२॥ऽअभिष्टिराजुह्वानो हविषा शर्द्धमानः।
पुरन्दरो गोत्रभिद्वज्रबाहुरायातु यज्ञमुप नो जुषाणः ॥३८॥
जुषाणो बर्हिर्हरिवान्नऽइन्द्रः प्राचीनꣳसीदत्प्रदिशा पृथिव्याः।
उरुप्रथाः प्रथमानश्चस्योनमादित्यैरक्तं वसुभिः सजोषाः ॥३९॥
इन्द्रं दुरः कवष्यो धावमाना वृषणं यन्तु जनयः सुपत्नीः।
द्वारो देवीरभितो वि श्रयन्ताश्चसुवीरा वीरं प्रथमाना महोभिः॥४०॥
उषासानक्ता बृहती बृहन्तं पयस्वती सुदुघे शूरमिन्द्रम् ।
तन्तुं ततं पेशसा संवयन्ती देवानां देवं यजतः सुरुक्मे ॥४१॥
दैव्या मिमाना मनुषः पुरुत्रा होताराविन्द्रं प्रथमा सुवाचा।
मूर्द्धन्यज्ञस्य मधुना दधाना प्राचीनं ज्योतिर्हविषा वृधातः॥४२॥
तिस्रो देवीर्हविषा वर्द्धमानाऽइन्द्रं जुषाणा जनयो न पत्नीः।
अच्छिन्नं तन्तुं पयसा सरस्वतीडा देवी भारती विश्वतूर्त्तिः॥४३॥
त्वष्टा दधच्छुष्मिन्द्राय वृष्णेऽपाकोऽचिष्टुर्यशसे पुरूणि।
वृषा यजन्वृषणं भूरिरेता मूर्द्धन्यज्ञस्य समनक्तु देवान्॥४४॥
वनस्पतिरवसृष्टो न पाशैस्तम्यां समञ्जञ्छमिता न देवः।
इन्द्रस्य हव्यैर्जठरं पृणानः स्वदाति यज्ञं मधुना घृतेन॥४५॥
स्तोकानामिन्दुं प्रति शूरऽइन्द्रो वृषायमाणो वृषभस्तुराषाट्।
घृतप्रुषा मनसा मोदमानाः स्वाहा देवाऽअमृता मादयन्ताम्॥४६॥
आयात्विन्द्रोऽवसऽउप नऽइह स्तुतः सधमादस्तु शूरः।
वावृधानस्तविषीर्यस्य पूर्वीर्द्यौर्न क्षत्रमभिभूति पुष्यात्॥४७॥
आ नऽइन्द्रो दूरादा नऽआसादभिष्टिकृदवसे यासदुग्रः।
ओजिष्ठेभिर्नृपतिर्वज्रबाहुः सङ्गे समत्सु तुर्वणिः पृतन्यून्॥४८॥
आ न इन्द्रो हरिभिर्यात्वच्छार्वाचीनोऽवसे राधसे च।
तिष्ठाति वज्री मघवा विरप्शीमं यज्ञमनु नो वाजसातौ॥४९॥
त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रꣳहवेहवे सुहवꣳशूरमिन्द्रम्।
ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्रꣳस्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः॥५०॥
इन्द्रः सुत्रामा स्ववाँ२ऽअवोभिः सुमृडीको भवतु विश्ववेदाः।
बाधतां द्वेषोऽअभयं कृणोतु सुवीर्यस्य पतयः स्याम॥५१॥
तस्य वयꣳ सुमतौ यज्ञियस्यापि भद्रे सौमनसे स्याम ।
स सुत्रामा स्ववाँ२ऽइन्द्रोऽअस्मेऽआराच्चिद् द्वेषः सनुतर्युयोतु ॥५२॥
आ मन्द्रैरिन्द्र हरिभिर्याहि मयूररोमभिः ।
मा त्वा के चिन्नि यमन्विं न पाशिनोऽति धन्वेव ताँ२॥ऽइहि॥५३॥
एवेदिन्द्रं वृषणं वज्रबाहुं वसिष्ठासोऽअभ्यर्चन्त्यर्कैः ।
स नꣳ स्तुतो वीरवद्धातु गोमद्यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥५४॥
समिद्धोऽअग्निरश्विना तप्तो घर्मो विराट् सुतः।
दुहे धेनुः सरस्वती सोमꣳशुक्रमिहेन्द्रियम् ॥५५॥
तनूपा भिषजा सुतेऽश्विनोभा सरस्वती ।
मध्वा रजाꣳसीन्द्रियमिन्द्राय पथिभिर्वहान् ॥५६॥
इन्द्रायेन्दुꣳसरस्वती नराशꣳसेन नग्नहुम् ।
अधातामश्विना मधु भेषजं भिषजा सुते ॥५७॥
आजुह्वाना सरस्वतीन्द्रायेन्द्रियाणि वीर्यम् ।
इडाभिरश्विनाविषꣳसमूर्जꣳसꣳरयिं दधुः ॥५८॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अश्विना नमुचेः सुतꣳसोमꣳशुक्रं परिस्रुता।
सरस्वती तमा भरद् बर्हिषेन्द्राय पातवे ॥५९॥
कुवप्ष्णो न व्यचस्वतीरश्विभ्यां न दुरो दिशः।
इन्दो न रोदसीऽउभे दुहे कामान्त्सरस्वती॥६०॥
उषासानक्तमश्विना दिवेन्द्रꣳसायमिन्द्रियैः ।
संजानाने सुपेशसा समञ्जाते सरस्वत्या ॥६१॥
पातं नोऽअश्विना दिवा पाहि नक्तꣳसरस्वति।
दैव्या होतारा भिषजा पातमिन्द्रꣳसचासुते ॥६२॥
तिस्रस्त्रेधा सरस्वत्यश्विना भारतीडा ।
तीव्रं परिस्रुता सोममिन्द्राय सुषुवुर्मदम् ॥६३॥
अश्विना भेषजं मधु भेषजं नः सरस्वती ।
इन्द्रे त्वष्टा यशः श्रियꣳरूपꣳरूपमधुः सुते॥६४॥
ऋतुथेन्दो वनस्पतिः शशमानः परिस्रुता ।
कीलालमश्विभ्यां मधु दुहे धेनुः सरस्वती॥६५॥
गोभिर्न सोममश्विना मासरेण परिस्रुता ।
समधातꣳसरस्वत्या स्वाहेन्द्रे सुतं मधु ॥६६॥
अश्विना हविरिन्द्रियं नमुचेर्धिया सरस्वती।
आ शुक्रमासुराद्वसु मघमिन्द्राय जभ्रिरे ॥६७॥
यमश्विना सरस्वती हविषेन्द्रमवर्द्धयन् ।
स बिभेद वलं मघं नमुचावासुरे सचा ॥६८॥
तमिन्द्र पशवः सचाश्विनोभा सरस्वती ।
दधानाऽअभ्यनूषत हविषा यज्ञऽइन्द्रियैः ॥६९॥
यऽइन्द्रऽइन्द्रियं दधुः सविता वरुणो भगः।
स सुत्रामा हविष्पतिर्यजमानाय सश्चत ॥७०॥
सविता वरुणो दधद्यजमानाय दाशुषे ।
आदत्त नमुचेर्वसु सुत्रामा बलमिन्द्रियम् ॥७१॥
वरुणः क्षत्रमिन्द्रियं भगेन सविता श्रियम् ।
सुत्रामा यशसा बलं दधाना यज्ञमाशत ॥७२॥

अश्विना गोभिरिन्द्रियमश्वेभिर्वीर्यं बलम् ।
हविषेन्द्रꣳसरस्वती यजमानमवर्द्धयन् ॥७३॥
ता नासत्या सुपेशसा हिरण्यवर्त्तनी नरा ।
सरस्वती हविष्मतीन्द्र कर्मसु नोऽवत ॥७४॥
ता भिषजा सुकर्मणा सा सुदुघा सरस्वती।
स वृत्रहा शतक्रतुरिन्द्राय दधुरिन्द्रियम् ॥७५॥
युवꣳसुराममश्विना नमुचावासुरे सचा ।
विपिपानाः सरस्वतीन्द्रं कर्मस्ववत ॥७६॥
पुत्रमिव पितरावश्विनोभेन्द्रावथुः काव्यैर्दꣳसनाभिः ।
यत्सुरामं व्यपिबः शचीभिः सरस्वती त्वा मघवन्नभिष्णक्॥७७॥
यस्मिन्नश्वासऽऋषभासऽउक्षणो वशा मेषाऽअवसृष्टासऽआहुताः।
कीलालपे सोमपृष्ठाय वेधसे हृदा मतिं जनय चारुमग्नये॥७८॥
अहाव्यग्ने हविरास्ये ते स्रुचीव घृतं चम्वीव सोमः।
वाजसनिꣳरयिमस्मे सुवीरं प्रशस्तं धेहि यशसं बृहन्तम्॥७९॥
अश्विना तेजसा चक्षुः प्राणेन सरस्वती वीर्यम्।
वाचेन्द्रो बलेनेन्द्राय दधुरिन्द्रियम् ॥८०॥
गोमदू षु णासत्याश्वावद्यातमश्विना। वर्त्ती रुद्रा नृपाय्यम्॥८१॥
न यत्परो नान्तरऽआदधर्षद् वृषण्वसू। दुःशꣳसो मर्त्यो रिपुः॥८२॥
ता नऽआ वोढमश्विना रयिं पिशङ्गसन्दृशम्। धिष्ण्या वरिवोविदम्॥८३॥
पावका नः सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवती। यज्ञं वष्टु धियावसुः॥८४॥
चोदयित्री सूनृतानां चेतन्ती सुमतीनाम्। यज्ञं दधे सरस्वती॥८५॥
महोऽअर्णः सरस्वती प्र चेतयति केतुना। धियो विश्वा वि राजति॥८६॥
इन्द्रा याहि चित्रभानो सुताऽइमे त्वायवः। अण्वीभिस्तना पूतासः॥८७॥
इन्द्रा याहि धियेषितो विप्रजूतः सुतावतः। उप ब्रह्माणि वाघतः॥८८॥
इन्द्रा याहि तूतुजान उप ब्रह्माणि हरिवः। सुते दधिष्व नश्चनः॥८९॥
अश्विना पिबतं मधु सरस्वत्या सजोषसा।
इन्द्रः सुत्रामा वृत्रहा जुषन्ताꣳसोम्यं मधु ॥९०॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. ॥ इति विंशोऽध्यायः॥

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अथोत्तरविंशतिः॥

अथैकविंशोऽध्यायः॥

—:०:—

ऋषिः—शुनःशेपः १, २। वामदेवः ३-५। गयस्फानः ६। गयःप्लातः ७। विश्वामित्रः ८। वसिष्ठः ९। आत्रेयः १०, ११, २७। स्वस्त्यात्रेयः १२-२६, २८-६१॥

देवता—वरुणः १, २। अग्निवरुणौ ३, ४। आदित्याः ५। अदितिः ६। स्वर्ग्या नौः ७। मित्रावरुणौ ८। अग्निः ९, १२। ऋत्विजः १०। विद्वांसः ११, १३-१६, २२, २७, ४१, ४४। विश्वेदेवाः १७-२१, २४, २६, २८। रुद्राः २३। इन्द्रः २५। अग्न्यश्वीन्द्रसरस्वत्याद्या लिङ्गोक्ताः २९। अश्व्यादयो लिङ्गोक्ताः ३०। अश्व्यादयः ३१, ३३-४०, ४६, ४७, ४९-५८। सरस्वत्यादयः ३२, ४८। होत्रादयः ४२, ४३। यजमानर्त्विजः ४५। अग्न्यादयः ५९। लिङ्गोक्ताः ६०, ६१॥

छन्दः—निचृद्गायत्री १, ८। निचृत्त्रिष्टुप् २, ११। स्वराट्पङ्क्तिः ३, ४। भुरिक्त्रिष्टुप् ६। यवमध्यागायत्री ७। त्रिष्टुप् ९, ४८, ५०, ५१, ५४। भुरिक्पङ्क्तिः १०। विराडनुष्टुप् १२, १४। अनुष्टुप् १३, १६, १९-२२, २४, २५। निचृदनुष्टुप् १५, १७, १८। भुरिगनुष्टुप् २३, २७, २८। विराड्बृहती २६। निचृदष्टिः २९, ३३, ३६। भुरिगत्यष्टिः ३०। अतिधृतिः ३१, ४१। विराडतिधृतिः ३२। निचृदतिधृतिः ३४। भुरिगष्टिः ३५। धृतिः ३७, ६०। भुरिक्कृतिः ३८। निचृदत्यष्टिः ३९, ५६। विराडत्यष्टिः[क], अत्यष्टिः[र] ४०। आर्च्युष्णिक्[क], विराडकृतिः[र] ४२। याजुषीपङ्क्तिः[क], उत्कृतिः[र] ४३। याजुषीत्रिष्टुप्[क], स्वराडुत्कृतिः[र] ४४। भुरिक्प्राजापत्योष्णिक्[क], भुरिगभिकृतिः[र] ४५। उत्कृतिः[क], स्वराट्संकृतिः[र] ४६। भुरिगाकृतिः[क],[र] ४७। ब्राह्म्युष्णिक् ४९। अतिजगती ५२। भुरिगतिजगती ५३। स्वराट्शक्वरी ५५। अतिशक्वरी ५७। अत्यष्टिः[क], निचृत्त्रिष्टुप्[र] ५८। अष्टिः ५९। भुरिग्विकृतिः ६१॥

स्वरः—षड्जः १, ७, ८, ३१, ३२, ३४, ३५, ४१, ४३, ४४, ४६। धैवतः २, ५, ६, ९, ११, ४४, ४८, ५०, ५१, ५४, ५५, ५८। पञ्चमः ३, ४, १०, ४२, ४३, ४७, ५७। गान्धारः १२-२५, २७, २८, ३०, ३९, ४०, ४६, ५६, ५८। मध्यमः २६, २९, ३३, ३५, ३६, ५९, ६१। ऋषभः ३७, ४२, ४५, ४९, ५९, ६०। निषादः ३८, ५२, ५३॥

इ॒मं मे॑ वरुण श्रु॒धी हव॑म॒द्या च॑ मृडय। त्वाम॑व॒स्युराच॑के॥१॥
तत्त्वा॑ यामि॒ ब्रह्म॑णा॒ वन्द॑मान॒स्तदाशा॑स्ते॒ यज॑मानो ह॒विर्भिः॑।
अहे॑डमानो वरुणे॒ह बो॒ध्युरु॑शꣳस॒ मा न॒ऽआयुः॒ प्र मो॑षीः॥२॥
त्वं नो॑ऽअग्ने॒ वरु॑णस्य वि॒द्वान् दे॒वस्य॒ हेडो॒ऽअव॑ यासिसीष्ठाः।
यजि॑ष्ठो॒ वह्नि॑तमः॒ शोशु॑चानो॒ विश्वा॒ द्वेषा॑ꣳसि॒ प्र मुमु॑ग्ध्य॒स्मत्॥३॥
स त्वं नो॑ऽअग्नेऽव॒मो भ॑वो॒ती नेदि॑ष्ठोऽअ॒स्या उ॒षसो॒ व्यु॒ष्टौ।
अव॑ यक्ष्व नो॒ वरु॑ण॒ꣳररा॑णो वी॒हि मृ॑डी॒कꣳसु॒हवो॑ नऽएधि॥४॥
म॒हीमू॒ षु मा॒तरꣳसु॒व्रताना॑मृ॒तस्य॒ पत्नी॒मव॑से हुवेम ।
तु॒वि॒क्ष॒त्राम॒जर॑न्तीमुरू॒चीꣳ सु॒शर्मा॑ण॒मदि॑तिꣳसु॒प्रणी॑तिम् ॥५॥
सु॒त्रामा॑णं पृथि॒वीं द्याम॑ने॒हसꣳसु॒शर्मा॑ण॒मदि॑तिꣳसु॒प्रणी॑तिम् ।
दैवीं॒ नाव॑ꣳस्वरि॒त्रामना॑गस॒मस्र॑वन्ती॒मा रु॑हेमा स्व॒स्तये॑ ॥६॥
सु॒नाव॒मा रु॑हेय॒मस्र॑वन्ती॒मना॑गसम्। श॒तारि॑त्राꣳस्व॒स्तये॑ ॥७॥
आ नो॑ मित्रावरुणा घृ॒तैर्गव्यू॑तिमुक्षतम्। मध्वा॒ रजा॑ꣳसि सुक्रतू॥८॥
प्र बा॒हवा॑ सिसृतं जी॒वसे॑ न॒ऽआ नो॒ गव्यू॑तिमुक्षतं घृ॒तेन॑ ।
आ मा॒ जने॑ श्रवयतं युवाना श्रु॒तं मे॑ मित्रावरुणा॒ हवे॒मा ॥९॥
शन्नो॑ भवन्तु वा॒जिनो॒ हवे॑षु दे॒वता॑ता मि॒तद्र॑वः स्व॒र्काः ।
ज॒म्भय॒न्तोऽहिं वृक॒ꣳरक्षा॑ꣳसि॒ सने॑म्य॒स्मद्यु॑यव॒न्नमी॑वाः ॥१०॥
वाजे॑वाजेऽवत वाजिनो नो॒ धने॑षु विप्राऽअमृताऽऋतज्ञाः ।
अ॒स्य मध्वः॑ पिबत मा॒दय॑ध्वं तृ॒प्ता या॑त प॒थिभि॑र्देव॒यानैः॑ ॥११॥
समि॑द्धोऽअ॒ग्निः स॒मिधा॒ सुस॑मिद्धो॒ वरे॑ण्यः ।
गा॒य॒त्री छन्द॑ऽइन्द्रि॒यं त्र्यवि॒र्गौर्वयो॑ दधुः ॥१२॥
तनू॒नपा॒च्छुचि॑व्रतस्तनू॒पाश्च॒ सर॑स्वती ।
उ॒ष्णिहा॒ छन्द॑ऽइन्द्रि॒यं दि॑त्य॒वाड् गौर्वयो॑ दधुः ॥१३॥
इडा॑भिर॒ग्निरीड्यः॒ सोमो॑ दे॒वोऽअम॑र्त्यः ।
अ॒नु॒ष्टुप् छन्द॑ऽइन्द्रि॒यं पञ्चा॑वि॒र्गौर्वयो॑ दधुः ॥१४॥
सु॒ब॒र्हिर॒ग्निः पू॑ष॒ण्वान्त्स्ती॒र्णब॑र्हि॒रम॑र्त्यः ।
बृ॒ह॒ती छन्द॑ऽइन्द्रि॒यं त्रि॑व॒त्सो गौर्वयो॑ दधुः ॥१५॥
दुरो॑ दे॒वीर्दिशो॑ म॒हीर्ब्र॒ह्मा दे॒वो बृह॒स्पतिः॑ ।
प॒ङ्क्तिश्छन्द॑ऽइ॒हेन्द्रि॒यं तु॑र्य्य॒वाड् गौर्वयो॑ दधुः ॥१६॥
उ॒षे य॒ह्वी सु॒पेश॑सा॒ विश्वे॑दे॒वाऽअम॑र्त्याः ।
त्रि॒ष्टुप् छन्द॑ऽइ॒हेन्द्रि॒यं प॑ष्ठ॒वाड् गौर्वयो॑ दधुः ॥१७॥
दैव्या॒ होता॑रा भि॒षजेन्द्रे॑ण स॒युजा॑ यु॒जा ।
जग॑ती॒ छन्द॑ऽइन्द्रि॒यम॑न॒ड्वान् गौर्वयो॑ दधुः ॥१८॥
ति॒स्रऽइडा॒ सर॑स्वती॒ भार॑ती म॒रुतो॒ विशः॑ ।
वि॒राट् छन्द॑ऽइ॒हेन्द्रि॒यं धे॒नुर्गौर्न वयो॑ दधुः ॥१९॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

त्वष्टा तुरीपोऽअद्भुतऽइन्द्राग्नी पुष्टिवर्धना ।
द्विपदा छन्दऽइन्द्रियमुक्षा गौर्न वयो दधुः ॥२०॥
शमिता नो वनस्पतिः सविता प्रसुवन् भगम् ।
ककुप् छन्दऽइहेन्द्रियं वशा वेहद्वयो दधुः ॥२१॥
स्वाहा यज्ञं वरुणः सुक्षत्रो भेषजं करत् ।
अतिच्छन्दाऽइन्द्रियं बृहद्वयो गौर्वयो दधुः ॥२२॥
वसन्तेनऽऋतुना देवा वसवस्त्रिवृता स्तुताः ।
रथन्तरेण तेजसा हविरिन्द्रे वयो दधुः ॥२३॥
ग्रीष्मेणऽऋतुना देवा रुद्राः पञ्चदशे स्तुताः ।
बृहता यशसा बलꣳहविरिन्द्रे वयो दधुः ॥२४॥
वर्षाभिरृतुनादित्या स्तोमे सप्तदशे स्तुताः ।
वैरूपेण विशौजसा हविरिन्द्रे वयो दधुः ॥२५॥
शारदेनऽऋतुना देवाऽएकविꣳशऽऋभव स्तुताः ।
वैराजेन श्रिया श्रियꣳहविरिन्द्रे वयो दधुः ॥२६॥
हेमन्तेनऽऋतुना देवास्त्रिणवे मरुतः स्तुताः ।
बलेन शक्वरीः सहो हविरिन्द्रे वयो दधुः ॥२७॥
शैशिरेणऽऋतुना देवास्त्रयस्त्रिꣳशेऽमृता स्तुताः ।
सत्येन रेवतीः क्षत्रꣳहविरिन्द्रे वयो दधुः ॥२८॥
होता यक्षत्समिधाग्निमिडस्पदेऽश्विनेन्द्रꣳसरस्वतीमजो धूम्रो न
गोधूमैः कुवलैर्भेषजं मधु शष्पैर्न तेजऽइन्द्रियं पयः सोमः
परिस्रुता घृतं मधु व्यन्वाज्यस्य होतर्यज ॥२९॥
होता यक्षत्तनूनपात्सरस्वतीमविर्मेषो न भेषजं पथा मधुमता
भरत्नश्विनेन्द्राय वीर्यं वदरैरुपवाकाभिर्भेषजं तोक्मभिः पयः
सोमः परिस्रुता घृतं मधु व्यन्वाज्यस्य होतर्यज ॥३०॥
होता यक्षन्नराशꣳसं न नग्नहुं पतिꣳसुरया भेषजं मेषः सरस्वती
भिषग्रथो न चन्द्रयाश्विनोर्वपाऽइन्द्रस्य वीर्यं वदरैरुपवाकाभिर्भेषजं
तोक्मभिः पयः सोमः परिस्रुता घृतं मधु व्यन्वाज्यस्य होतर्यज ॥३१॥
होता यक्षद्विडेडितऽआजुह्वानः सरस्वतीमिन्द्रं बलेन वर्धयन्नृषभेण
गवेन्द्रिय मश्विनेन्द्राय भेषजं यवैः कर्कन्धुभिर्मधु लाजैर्न मासरं
पयः सोमः परिस्रुता घृतं मधु व्यन्वाज्यस्य होतर्यज ॥३२॥

होता यक्षद् बर्हिरूर्णम्रदा भिषङ् नासत्या भिषजाश्विनाश्वा
शिशुमती भिषग्धेनुः सरस्वती भिषग्दुहऽइन्द्राय भेषजं पयः
सोमः परिस्रुता घृतं मधु व्यन्वाज्यस्य होतर्यज ॥३३॥
होता यक्षद्धुरो दिशः कवष्यो न व्यचस्वतीरश्विभ्यां न दुरो
दिशऽइन्द्रो न रोदसी दुघे दुहे धेनुः सरस्वत्यश्विनेन्द्राय
भेषजꣳशुक्रं न ज्योतिरिन्द्रियं पयः सोमः परिस्रुता घृतं मधु
व्यन्वाज्यस्य होतर्यज ॥३४॥
होता यक्षत्सुपेशसोषे नक्तं दिवाश्विना समञ्जाते सरस्वत्या
त्विषिमिन्द्रे न भेषजꣳश्येनो न रजसा हृदा श्रिया न मासरं पयः
सोमः परिस्रुता घृतं मधु व्यन्वाज्यस्य होतर्यज ॥३५॥
होता यक्षद्वैव्या होतारा भिषजाश्विनेन्द्रं न जागृवि दिवा नक्तं
न भेषजैः शूषꣳसरस्वती भिषक्सीसेन दुहऽइन्द्रियं पयः सोमः
परिस्रुता घृतं मधु व्यन्वाज्यस्य होतर्यज ॥३६॥
होता यक्षत्तिस्रो देवीर्न भेषजं त्रयस्त्रिधातवोऽपसो रूपमिन्द्रे
हिरण्ययमश्विनेडा न भारती वाचा सरस्वती महऽइन्द्राय दुहऽ
इन्द्रियं पयः सोमः परिस्रुता घृतं मधु व्यन्वाज्यस्य होतर्यज ॥३७॥
होता यक्षत्सुरेतसमृषभं नर्यापसं त्वष्टारमिन्द्रमश्विना भिषजं
न सरस्वतीमोजो न जूतिरिन्द्रियं वृको न रभसो भिषग्यशः
सुरया भेषजꣳश्रिया न मासरं पयः सोमः परिस्रुता घृतं मधु
व्यन्वाज्यस्य होतर्यज ॥३८॥
होता यक्षद्वनस्पतिꣳशमितारꣳशतक्रतुं भीमं न मन्युꣳराजानं व्याघ्रं
नमसाश्विना भामꣳसरस्वती भिषगिन्द्राय दुहऽइन्द्रियं पयः सोमः
परिस्रुता घृतं मधु व्यन्वाज्यस्य होतर्यज ॥३९॥
ॐ होता यक्षदग्निꣳस्वाहाज्यस्य स्तोकानाꣳस्वाहा मेदसां पृथक्
स्वाहा छागमश्विभ्याꣳस्वाहा मेषꣳसरस्वत्यै स्वाहाऽऋषभमिन्द्राय
सिꣳहायु सहसऽइन्द्रियꣳस्वाहाग्निं न भेषजꣳस्वाहा सोममिन्द्रियꣳ
स्वाहेन्द्रꣳसुत्रामाणꣳसवितारं वरुणं भिषजां पतिꣳस्वाहा वनस्पतिं
प्रियं पाथो न भेषजꣳस्वाहा देवाऽआज्यपा जुषाणोऽअग्निर्भेषजं
पयः सोमः परिस्रुता घृतं मधु व्यन्वाज्यस्य होतर्यज ॥४०॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

होता॑ यक्षद॒श्विनौ॒ छाग॑स्य व॒पाया॒ मेद॑सो जु॒षेता॑ꣳह॒विर्होत॒र्यज॑।
होता॑ यक्ष॒त्सर॑स्वतीं मे॒षस्य॑ व॒पाया॒ मेद॑सो जु॒षता॑ꣳह॒विर्होत॒र्यज॑।
होता॑ यक्ष॒दिन्द्र॑मृष॒भस्य॑ व॒पाया॒ मेद॑सो जु॒षता॑ꣳह॒विर्होत॒र्यज॑ ॥४१॥

क॒होता॑ यक्षद॒श्विनौ॒ सर॑स्वती॒मिन्द्र॑ꣳसु॒त्रामा॑णमि॒मे सोमाः॑ र॒सुरामा॑ण॒श्छागै॒र्न मे॒षैर्ऋ॑ष॒भैः सु॒ताः शष्पै॒र्न तोक्म॑भिर्ला॒जैर्मह॑स्वन्तो॒ मदा॒ मास॑रेण॒ परि॑ष्कृताः शु॒क्राः पय॑स्वन्तो॒ऽमृता॒ः प्रस्थि॑ता वो मधु॒श्चुत॒स्तान॒श्विना॒ सर॑स्व॒तीन्द्रः॑ सु॒त्रामा॑ वृत्र॒हा जु॒षन्ता॑ꣳसो॒म्यं मधु॒ पिब॑न्तु॒ मद॑न्तु॒ व्यन्तु॒ होत॒र्यज॑ ॥४२॥

क॒होता॑ यक्षद॒श्विनौ॒ छाग॑स्य र॒ह॒विष॒ऽआत्ता॑म॒द्य म॑ध्य॒तो मेद॒ऽउद्भृ॑तं पु॒रा द्वेषो॑भ्यः पु॒रा पौरु॑षेय्या गृ॒भो घस्तां॑ नू॒नं घा॒सेऽअ॑ज्राणां॒ यव॑सप्रथमानाꣳ सु॒मत्क्ष॑राणाꣳशतरु॒द्रिया॑णामग्निष्वा॒त्तानां॒ पीवो॑पवसनानां पार्श्व॒तः श्रो॑णि॒तः शि॑ताम॒तऽउ॑त्साद॒तोऽङ्गा॑दङ्गा॒दव॑त्तानां॒ कर॑तऽए॒वाश्विना॑ जु॒षेता॑ꣳ ह॒विर्होत॒र्यज॑ ॥४३॥

क॒होता॑ यक्ष॒त् सर॑स्वतीं मे॒षस्य॑ र॒ह॒विष॒ऽआव॑यद॒द्य म॑ध्य॒तो मेद॒ऽउद्भृ॑तं पु॒रा द्वेषो॑भ्यः पु॒रा पौरु॑षेय्या गृ॒भो घस॑न्नू॒नं घा॒सेऽअ॑ज्राणां॒ यव॑सप्रथमानाꣳ सु॒मत्क्ष॑राणाꣳ शतरु॒द्रिया॑णामग्निष्वा॒त्तानां॒ पीवो॑पवसनानां पार्श्व॒तः श्रो॑णि॒तः शि॑ताम॒तऽउ॑त्साद॒तोऽङ्गा॑दङ्गा॒दव॑त्तानां॒ कर॑दे॒वꣳसर॑स्वती जु॒षता॑ꣳ ह॒विर्होत॒र्यज॑ ॥४४॥

क॒होता॑ यक्ष॒दिन्द्र॑मृष॒भस्य॑ ह॒विष॒ऽर॒आव॑यद॒द्य म॑ध्य॒तो मेद॒ऽउद्भृ॑तं पु॒रा द्वेषो॑भ्यः पु॒रा पौरु॑षेय्या गृ॒भो घस॑न्नू॒नं घा॒सेऽअ॑ज्राणां॒ यव॑सप्रथमानाꣳ सु॒मत्क्ष॑राणाꣳ शतरु॒द्रिया॑णामग्निष्वा॒त्तानां॒ पीवो॑पवसनानां पार्श्व॒तः श्रो॑णि॒तः शि॑ताम॒तऽउ॑त्साद॒तोऽङ्गा॑दङ्गा॒दव॑त्तानां॒ कर॑दे॒वमिन्द्रो॑ जु॒षता॑ꣳ ह॒विर्होत॒र्यज॑ ॥४५॥

क॒होता॑ यक्ष॒द्वन॒स्पति॑म॒भि हि पि॒ष्टत॑मया॒ रभि॑ष्ठया रश॒नयाधि॑त। यत्रा॒श्विनो॒श्छाग॑स्य ह॒विषः॑ प्रि॒या धामा॑नि॒ यत्र॒ सर॑स्वत्या मे॒षस्य॑ ह॒विषः॑ प्रि॒या धामा॑नि॒ यत्रेन्द्र॑स्यऽऋष॒भस्य॑ ह॒विषः॑ प्रि॒या धामा॑नि॒ यत्रा॒ग्नेः प्रि॒या धामा॑नि॒ यत्र॒ सोम॑स्य प्रि॒या धामा॑नि॒ यत्रेन्द्र॑स्य सु॒त्राम्णः॑ प्रि॒या धामा॑नि॒ र॒यत्र॑ सवि॒तुः प्रि॒या धामा॑नि॒ यत्र॒ वरु॑णस्य प्रि॒या धामा॑नि॒ यत्र॒ वन॒स्पतेः॑ प्रि॒या पाथा॑ꣳसि॒ यत्र॑ दे॒वाना॑माज्य॒पानां॑ प्रि॒या धामा॑नि॒ यत्रा॒ग्नेर्होतुः॑ प्रि॒या धामा॑नि॒ तत्रै॒तान् प्र॒स्तुत्ये॑वोप॒स्तुत्ये॑वो॒पाव॑स्त्रक्ष॒द्रभी॑यसऽइव कृ॒त्वी कर॑दे॒वं दे॒वो वन॒स्पति॑र्जु॒षता॑ꣳह॒विर्होत॒र्यज॑ ॥४६॥

क॒होता॑ यक्षद॒ग्निꣳस्वि॑ष्ट॒कृत॒मया॑ड॒ग्निर॒श्विनो॒श्छाग॑स्य ह॒विषः॑ प्रि॒या धामा॒न्यया॒ट् सर॑स्वत्या मे॒षस्य॑ ह॒विषः॑ प्रि॒या धामा॒न्यया॒डिन्द्र॑स्यऽऋष॒भस्य॑ ह॒विषः॑ प्रि॒या धामा॒न्यया॑ड॒ग्नेः प्रि॒या र॒धामा॒न्यया॒ट् सोम॑स्य प्रि॒या धामा॒न्यया॒डिन्द्र॑स्य सु॒त्राम्णः॑ प्रि॒या धामा॒न्यया॑ट् सवि॒तुः प्रि॒या धामा॒न्यया॒ड् वरु॑णस्य प्रि॒या धामा॒न्यया॒ड् वन॒स्पतेः॑ प्रि॒या पाथा॒ꣳस्यया॑ड् दे॒वाना॑माज्य॒पानां॑ प्रि॒या धामा॑नि॒ यक्ष॑द॒ग्नेर्होतुः॑ प्रि॒या धामा॑नि॒ यक्ष॒त् स्वं म॑हि॒मान॒माय॑जता॒मेज्या॒ऽइषः॑ कृ॒णोतु॒ सोऽअ॑ध्व॒रा जा॒तवे॑दा जु॒षेता॑ꣳह॒विर्होत॒र्यज॑ ॥४७॥

दे॒वं ब॒र्हिः सर॑स्वती सुदे॒वमिन्द्रे॑ऽअ॒श्विना॑ ।
तेजो॒ न चक्षु॑र॒क्ष्यो॒र्ब॒र्हिषा॑ दधुरिन्द्रि॒यं व॑सु॒वने॑ वसु॒धेय॑स्य व्यन्तु॒ यज॑॥४८॥

दे॒वीर्द्वारो॑ऽअ॒श्विना॑ भि॒षजेन्द्रे॒ सर॑स्वती ।
प्रा॒णं न वी॒र्य्यं॑ न॒सि द्वारो॑ दधुरिन्द्रि॒यं व॑सु॒वने॑ वसु॒धेय॑स्य व्यन्तु॒ यज॑॥४९॥

दे॒वीऽउ॒षासा॑व॒श्विना॑ सु॒त्रामेन्द्रे॒ सर॑स्वती ।
बलं॒ न वाच॑मा॒स्य॒ऽउ॒षाभ्यां॑ दधुरिन्द्रि॒यं व॑सु॒वने॑ वसु॒धेय॑स्य व्यन्तु॒ यज॑॥५०॥

दे॒वी जोष्ट्री॒ सर॑स्वत्य॒श्विनेन्द्र॑मवर्धयन्। श्रोत्रं॒ न कर्ण॑यो॒र्यशो॒ जोष्ट्री॑भ्यां दधुरिन्द्रि॒यं व॑सु॒वने॑ वसु॒धेय॑स्य व्यन्तु॒ यज॑ ॥५१॥

दे॒वीऽऊ॒र्जाहु॑ती॒ दुघे॑ सु॒दुघेन्द्रे॒ सर॑स्वत्य॒श्विना॑ भि॒षजा॑वतः। शु॒क्रं न ज्योति॒ स्तन॑यो॒राहु॑ती धत्तऽइन्द्रि॒यं व॑सु॒वने॑ वसु॒धेय॑स्य व्यन्तु॒ यज॑॥५२॥

दे॒वा दे॒वानां॑ भि॒षजा॒ होता॑रा॒विन्द्र॑म॒श्विना॑। व॒ष॒ट्का॒रैः सर॑स्वती॒ त्विषिं॒ न हृद॑ये म॒तिꣳहोतृ॑भ्यां दधुरिन्द्रि॒यं व॑सु॒वने॑ वसु॒धेय॑स्य व्यन्तु॒ यज॑॥५३॥

दे॒वीस्ति॒स्रस्ति॒स्रो दे॒वीर॒श्विनेडा॒ सर॑स्वती ।
शूषं॒ न मध्ये॒ नाभ्या॒मिन्द्रा॑य दधुरिन्द्रि॒यं व॑सु॒वने॑ वसु॒धेय॑स्य व्यन्तु॒ यज॑॥५४॥

दे॒वऽइन्द्रो॒ नरा॒शꣳस॑स्त्रिवरू॒थः सर॑स्वत्या॒श्विभ्या॑मीयते॒ रथः॑ ।
रेतो॒ न रू॒पम॒मृतं॑ ज॒नित्र॒मिन्द्रा॑य॒ त्वष्टा॒ दध॑दिन्द्रि॒याणि॑ व॑सु॒वने॑ वसु॒धेय॑स्य व्यन्तु॒ यज॑ ॥५५॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGaṅgotri Gyaan Kosha

देवो देवैर्वनस्पतिर्हिरण्यपर्णोऽअश्विभ्याꣳसरस्वत्या सुपिप्पलऽ इन्द्राय पच्यते मधु। ओजो न जूतिर्ऋषभो न भामं वनस्पतिर्नो दधदिन्द्रियाणि वसुवने वसुधेयस्य व्यन्तु यज ॥५६॥

देवं बर्हिर्वारितीनामध्वरे स्तीर्णमश्विभ्यामूर्णम्रदाः सरस्वत्या स्योनमिन्द्र ते सदः। ईशायै मन्युꣳराजानं बर्हिषा दधुरिन्द्रियं वसुवने वसुधेयस्य व्यन्तु यज ॥५७॥

ँदेवोऽअग्निः स्विष्टकृद्देवान्यक्षद्यथायथꣳहोतारविन्द्रमश्विना वाचा वाचꣳसरस्वतीमग्निꣳसोमꣳस्विष्टकृत् स्विष्टऽइन्द्रः सुत्रामा सविता वरुणो भिषगिष्टो देवो वनस्पतिः स्विष्टा देवाऽआज्यपाः ँस्विष्टोऽअग्निरग्निना होता होत्रे स्विष्टकृद्यशो न दधदिन्द्रिय-मूर्जमर्पयतिष्ठꣳस्वधां वसुवने वसुधेयस्य व्यन्तु यज ॥५८॥

अग्निमद्य होतारमवृणीतायं यजमानः पचन्पक्तीः पचन्पुरोडाशान् बध्नन्नश्विभ्यां छागꣳसरस्वत्यै मेषमिन्द्रायऽऋषभꣳसुन्वन्नश्विभ्याꣳ सरस्वत्याऽइन्द्राय सुत्राम्णे सुरासोमान् ॥५९॥

सूपस्थाऽअद्य देवो वनस्पतिरभवदश्विभ्यां छागेन सरस्वत्यै मेषेणेन्द्रायऽऋषभेणाक्षूꣳस्तान् मेदस्तः प्रति पचतागृभीषतावीवृधन्त पुरोडाशैरपुरश्विना सरस्वतीन्द्रः सुत्रामा सुरासोमान् ॥६०॥

त्वामद्यऽऋषऽआर्षेयऽऋषीणां नपादवृणीतायं यजमानो बहुभ्यऽआ सङ्गतेभ्यऽएष मे देवेषु वसु वार्यायक्ष्यतऽइति ता या देवा देव दानान्यदुस्तान्यस्माऽआ च शास्वा च गुरस्वेषितश्च होतरसि भद्रवाच्याय प्रेषितो मानुषः सूक्तवाकाय सूक्ता ब्रूहि ॥६१॥

इत्येकविंशोऽध्यायः॥

अथ द्वाविंशोऽध्यायः

—:o:—

ऋषिः—प्रजापतिः १, ३–८, ११–१४, १६, १९, २०, २२–३४। यज्ञपुरुषः २। विश्वामित्रः ९। मेधातिथिः १०। सुतम्भरः १५। विश्वरूपः १७। अरुणत्रसदस्यू १८। स्वस्त्यात्रेयः २१॥

देवता—सविता १, ९–१४। विद्वांसः २। अग्निः ३, १५–१७, १९। विश्वेदेवाः ४। इन्द्रादयः ५। अग्न्यादयः ६, २७। प्राणादयः ७, २३। प्रयत्नवन्तो जीवादयः ८। पवमानः १८। प्रजापत्यादयः २०। विद्वान् २१। लिङ्गोक्ताः २२, २९। विशः २४। जलादयः २५। वातादयः २६। नक्षत्रादयः २८। वस्वादयः ३०। मासाः ३१। वाजादयः ३२। आयुरादयः ३३। यज्ञः ३४॥

छन्दः—निचृत्पङ्क्तिः १। निचृत्त्रिष्टुप् २। भुरिगनुष्टुप् ३। जगती ४, २७। अतिधृतिः ५। भुरिगतिजगती ६। निचृदत्यष्टिः[क], स्वराडत्यष्टिः[ख] ७। भुरिग्धृतिः[क], भुरिगतिधृतिः[ख] ८, २४। निचृद्गायत्री ९, १३, १५, १६। गायत्री १०–१२, १७। पिपीलिकामध्यानिचृद्गायत्री १४। पिपीलिकामध्याविराडनुष्टुप् १८। विकृतिः १९। भुरिग्धृतिः[क], अतिधृतिः[ख] २०। आर्ष्यनुष्टुप् २१। स्वराडुष्णिक् २२। स्वराडनुष्टुप् २३। निचृदतिधृतिः २४। अष्टिः २५। स्वराडभिकृतिः २६। भुरिगष्टिः[क], २८। निचृदत्यष्टिः २९। कृतिः ३०। भुरिगत्यष्टिः ३१। अत्यष्टिः ३२। भुरिक्कृतिः[क], भुरिगतिधृतिः[ख] ३३। भुरिगुष्णिक् ३४॥

स्वरः—पञ्चमः १। धैवतः २, ३३। गान्धारः ३, ७, १८, २१, २३, २९, ३१, ३२। निषादः ४, ६, २७, ३०। षड्जः ५, ९–१७, २०, २२, २४। ऋषभः[क], षड्जः[ख] ८। मध्यमः १९, २५, २८। ऋषभः[क], षड्जः[ख] २०। ऋषभः २६, ३४। निषादः[क], षड्जः[ख] ३३॥

तेजोऽसि शुक्रमृतमायुष्पाऽआयुर्मे पाहि ।
देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्यामाददे ॥१॥

इमामगृभ्णन् रशनामृतस्य पूर्वऽआयुषि विदथेषु कव्या ।
सा नोऽअस्मिन्सुतऽआ बभूवऽऋतस्य सामन्त्सरमारपन्ती ॥२॥

अभिधाऽअसि भुवनमसि यन्तासि धर्त्ता ।
स त्वमग्निं वैश्वानरꣳसप्रथसं गच्छ स्वाहाकृतः ॥३॥

स्वगा त्वा देवेभ्यः प्रजापतये ब्रह्मन्नश्वं भन्त्स्यामि देवेभ्यः प्रजापतये तेन राध्यासम्। तं बधान देवेभ्यः प्रजापतये तेन राध्नुहि ॥४॥

प्रजापतये त्वा जुष्टं प्रोक्षामीन्द्राग्निभ्यां त्वा जुष्टं प्रोक्षामि वायवे त्वा जुष्टं प्रोक्षामि विश्वेभ्यस्त्वा देवेभ्यो जुष्टं प्रोक्षामि सर्वेभ्यस्त्वा देवेभ्यो जुष्टं प्रोक्षामि। योऽअर्वन्तं जिघाꣳसति तमभ्यमीति वरुणः। परो मर्त्तः परः श्वा ॥५॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अग्नये स्वाहा सोमाय स्वाहापां मोदाय स्वाहा सवित्रे स्वाहा वायवे स्वाहा विष्णवे स्वाहेन्द्राय स्वाहा बृहस्पतये स्वाहा मित्राय स्वाहा वरुणाय स्वाहा ॥६॥

क्हिङ्काराय स्वाहा हिङ्कृताय स्वाहा क्रन्दते स्वाहाऽवक्रन्दाय स्वाहा प्रोथते स्वाहा प्रप्रोथाय स्वाहा गन्धाय स्वाहा घ्राताय स्वाहा निविष्टाय स्वाहोपविष्टाय स्वाहा सन्दिताय स्वाहा वल्गते [र]स्वाहा-सीनाय स्वाहा शयानाय स्वाहा स्वपते स्वाहा जाग्रते स्वाहा कूजते स्वाहा प्रबुद्धाय स्वाहा विजृम्भमाणाय स्वाहा विचृताय स्वाहा सꣳहानाय स्वाहोपस्थिताय स्वाहाऽयनाय स्वाहा प्रायणाय स्वाहा ॥७॥

क्यते स्वाहा धावते स्वाहोद्द्रावाय स्वाहोदद्रुताय स्वाहा शूकाराय स्वाहा शूकृताय स्वाहा निषण्णाय स्वाहोत्थिताय स्वाहा जवाय स्वाहा बलाय स्वाहा विवर्त्तमानाय स्वाहा विवृत्ताय स्वाहा विधून्वानाय स्वाहा [र]विधूताय स्वाहा शुश्रूषमाणाय स्वाहा शृण्वते स्वाहेक्षमाणाय स्वाहेक्षिताय स्वाहा वीक्षिताय स्वाहा निमेषाय स्वाहा यदत्ति तस्मै स्वाहा यत्पिबति तस्मै स्वाहा यन्मूत्र[ं] करोति तस्मै स्वाहा कुर्वते स्वाहा कृताय स्वाहा ॥८॥

तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो[ं] देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्॥९॥

हिरण्यपाणिमूतये सवितारमुप ह्वये। स चेत्ता देवता पदम् ॥१०॥

देवस्य चेततो महीं प्र सवितुर्हवामहे। सुमतिꣳसत्यराधसम् ॥११॥

सुष्टुतिꣳसुमतीवृधो रातिꣳसवितुरीमहे। प्र देवाय मतीविदे ॥१२॥

रातिꣳसत्पतिं महे सवितारमुप ह्वये। आसवं देववीतये ॥१३॥

देवस्य सवितुर्मतिमासवं विश्वदेव्यम्। धिया भग[ं] मनामहे ॥१४॥

अग्निꣳस्तोमेन बोधय समिधानोऽअमर्त्यम्। हव्या देवेषु नो दधत्॥१५॥

स हव्यवाडमर्त्यऽउशिग्दूतश्चनोहितः। अग्निर्धिया समृण्वति ॥१६॥

अग्निं दूतं पुरो दधे हव्यवाहमुप ब्रुवे। देवाँ२ऽआ सादयादिह॥१७॥

अजीजनो हि पवमान सूर्य्यं विधारे शक्मना पयः। ॥१८॥

गोजीरया रꣳहमाणः पुरन्ध्या

विभुर्मात्रा प्रभूः पित्राश्वोऽसि हयोऽस्यत्योऽसि मयोऽस्यर्वासि सप्तिरसि वाज्यसि वृषासि नृमणाऽअसि। ययुर्नामाऽसि शिशुर्नामा-स्यादित्यानां पत्वाविहि देवाऽआशापालाऽएतं देवेभ्योऽश्वं मेधाय प्रोक्षितꣳरक्षतेह रन्तिरिह रमतामिह धृतिरिह स्वधृतिः स्वाहा ॥१९॥

क्काय स्वाहा कस्मै स्वाहा कतमस्मै स्वाहा स्वाहाधिमाधीताय स्वाहा मनः प्रजापतये स्वाहा चित्तं विज्ञाताया दित्यै स्वाहादित्यै मह्यै स्वाहादित्यै सुमृडीकायै स्वाहा सरꣳस्वत्यै स्वाहा सरꣳस्वत्यै पावकायै स्वाहा [र]सरꣳस्वत्यै बृहत्यै स्वाहा पूष्णे स्वाहा पूष्णे प्रपथ्याय स्वाहा पूष्णे नरन्धिषाय स्वाहा त्वष्ट्रे स्वाहा त्वष्ट्रे तुरीपाय स्वाहा त्वष्ट्रे पुरुरूपाय स्वाहा विष्णवे स्वाहा विष्णवे निभूयपाय स्वाहा विष्णवे शिपिविष्टाय स्वाहा ॥२०॥

विश्वो देवस्य नेतुर्मर्त्तो वुरीत सख्यम् ।

विश्वो रायऽइषुध्यति द्युम्नं वृणीत पुष्यसे स्वाहा ॥२१॥

आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामा राष्ट्रे राजन्युः शूरऽइषव्योऽतिव्याधी महारथो जायतां दोग्ध्री धेनुर्वोढानड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णू रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायतां निकामेनिकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो नऽओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम् ॥२२॥

प्राणाय स्वाहापानाय स्वाहा व्यानाय स्वाहा चक्षुषे स्वाहा श्रोत्राय स्वाहा वाचे स्वाहा मनसे स्वाहा ॥२३॥

प्राच्यै दिशे स्वाहार्वाच्यै दिशे स्वाहा दक्षिणायै दिशे स्वाहार्वाच्यै दिशे स्वाहा प्रतिच्यै दिशे स्वाहार्वाच्यै दिशे स्वाहोदीच्यै दिशे स्वाहार्वाच्यै दिशे स्वाहोर्ध्वायै दिशे स्वहार्वाच्यै दिशे स्वाहार्वाच्यै दिशे स्वाहार्वाच्यै दिशे स्वाहा ॥२४॥

अद्भ्यः स्वाहा वार्ध्यः स्वाहोदकाय स्वाहा तिष्ठन्तीभ्यः स्वाहा स्रवन्तीभ्यः स्वाहा स्यन्दमानाभ्यः स्वाहा कूप्याभ्यः स्वाहा सूद्याभ्यः स्वाहा धार्याभ्यः स्वाहार्णवाय स्वाहा समुद्राय स्वाहा सरिराय स्वाहा ॥२५॥

वाताय स्वाहा धूमाय स्वाहाभ्राय स्वाहा मेघाय स्वाहा विद्योतमानाय स्वाहा स्तनयते स्वाहावस्फूर्जते स्वाहा वर्षते स्वाहावर्षते स्वाहोग्रं वर्षते स्वाहा शीघ्रं वर्षते स्वाहोद्गृह्णते स्वाहोद्गृहीताय स्वाहा प्रुष्णते स्वाहा शीकायते स्वाहा प्रुष्वाभ्यः स्वाहा ह्रादुनीभ्यः स्वाहा नीहाराय स्वाहा ॥२६॥

अग्नये स्वाहा सोमाय स्वाहेन्द्राय स्वाहा पृथिव्यै स्वाहान्तरिक्षाय स्वाहा दिवे स्वाहा दिग्भ्यः स्वाहाशाभ्यः स्वाहोर्व्यै दिशे स्वाहार्वाच्यै दिशे स्वाहा ॥२७॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

*नक्षत्रेभ्यः स्वाहा नक्षत्रियेभ्यः स्वाहाहोरात्रेभ्यः स्वाहार्धमासेभ्यः स्वाहा मासेभ्यः स्वाहाऽऋतुभ्यः स्वाहार्त्तवेभ्यः स्वाहा संवत्सराय स्वाहा द्यावापृथिवीभ्याꣳस्वाहा चन्द्राय स्वाहा सूर्य्याय स्वाहा 'रश्मिभ्यः स्वाहा वसुभ्यः स्वाहा रुद्रेभ्यः स्वाहादित्येभ्यः स्वाहा मरुद्भ्यः स्वाहा विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा मूलेभ्यः स्वाहा शाखाभ्यः स्वाहा वनस्पतिभ्यः स्वाहा पुष्पेभ्यः स्वाहा फलेभ्यः स्वाहौषधीभ्यः स्वाहा ॥२८॥

पृथिव्यै स्वाहान्तरिक्षाय स्वाहा दिवे स्वाहा सूर्य्याय स्वाहा चन्द्राय स्वाहा नक्षत्रेभ्यः स्वाहाद्भ्यः स्वाहौषधीभ्यः स्वाहा वनस्पतिभ्यः स्वाहा परिप्लवेभ्यः स्वाहा चराचरेभ्यः स्वाहा सरीसृपेभ्यः स्वाहा ॥२९॥

असवे स्वाहा वसवे स्वाहा विभुवे स्वाहा विवस्वते स्वाहा गणश्रिये स्वाहा गणपतये स्वाहाभिभुवे स्वाहाधिपतये स्वाहा शूषाय स्वाहा सꣳसर्पाय स्वाहा चन्द्राय स्वाहा ज्योतिषे स्वाहा मलिम्लुचाय स्वाहा दिवा पतयते स्वाहा ॥३०॥

मधवे स्वाहा माधवाय स्वाहा शुक्राय स्वाहा शुचये स्वाहा नभसे स्वाहा नभस्याय स्वाहेषाय स्वाहोर्जाय स्वाहा सहसे स्वाहा सहस्याय स्वाहा तपसे स्वाहा तपस्याय स्वाहाꣳहसस्पतये स्वाहा ॥३१॥

वाजाय स्वाहा प्रसवाय स्वाहापिजाय स्वाहा क्रतवे स्वाहा स्वः स्वाहा मूर्ध्ने स्वाहा व्यश्नुविने स्वाहान्त्याय स्वाहान्त्याय भौवनाय स्वाहा भुवनस्य पतये स्वाहाधिपतये स्वाहा प्रजापतये स्वाहा ॥३२॥

*आयुर्यज्ञेन कल्पताꣳस्वाहा प्राणो यज्ञेन कल्पताꣳस्वाहापानो यज्ञेन कल्पताꣳस्वाहा व्यानो यज्ञेन कल्पताꣳस्वाहोदानो यज्ञेन कल्पताꣳस्वाहा समानो यज्ञेन कल्पताꣳस्वाहा चक्षुर्यज्ञेन कल्पताꣳ स्वाहा श्रोत्रं यज्ञेन कल्पताꣳस्वाहा 'वाग्यज्ञेन कल्पताꣳस्वाहा मनो यज्ञेन कल्पताꣳस्वाहात्मा यज्ञेन कल्पताꣳस्वाहा ब्रह्मा यज्ञेन कल्पताꣳस्वाहा ज्योतिर्यज्ञेन कल्पताꣳस्वाहा स्वर्यज्ञेन कल्पताꣳ स्वाहा पृष्ठं यज्ञेन कल्पताꣳस्वाहा यज्ञो यज्ञेन कल्पताꣳस्वाहा ॥३३॥

एकस्मै स्वाहा द्वाभ्याꣳस्वाहा शताय स्वाहैकशताय स्वाहा व्युष्टयै स्वाहा स्वर्गाय स्वाहा॥३४॥

॥ इति द्वाविंशोऽध्यायः ॥

अथ त्रयोविंशोऽध्यायः

—:o:—

ऋषिः—प्रजापतिः १-६५।

देवता—परमेश्वरः १-५, ५२। सूर्यः ६, १०। इन्द्रः ७। वाय्यवादयः ८। जिज्ञासुः ९, ११, ४५, ४७। विद्युदादयः १२। ब्रह्मादयः १३, ४८। ब्रह्मा १४। विद्वान् १५। सविता ११। अग्न्यादयः १७। प्राणादयः १८। गणपतिः १९। राजप्रजे २०, २२, २३, ३१। न्यायाधीशः २१। भूमिसूर्यौ २४, २५। श्रीः २६, २७। प्रजापतिः २८। विद्वांसः २९, ३३। राजा ३०, ३२, ४३, ४४। प्रजा ३४, ३५, ४०, ४१। स्त्रियः ३६, ३७। सभासदः ३८। अध्यापकः ३९, ४२। सूर्यादयः ४६। प्रश्नसमाधातारौ ४९। ईश्वरः ५०, ६४, ६५। पूरुषेश्वरः ५१। प्रष्टा ५३, ५५, ५७, ५९, ६१। समाधाता ५४, ५६, ६०, ६२, ६३। समिधा ५८॥

छन्दः—त्रिष्टुप् १, ३, ६०। निचृदाकृतिः २। विकृतिः ४। गायत्री ५। विराडगायत्री ६। निचृद्बृहती ७। निचृदत्यष्टिः ८। निचृदनुष्टुप् ९, १२, १४, १५, २४, २५, २८, ३०, ३४, ३५, ५४। अनुष्टुप् १०, ११, २६, २७, २९, ३१, ३२, ३७, ४०, ४१, ४३, ४६-४९, ५३, ५५। भुरिगतिजगती १३। विराडनुष्टुप् १५, २२, ६३। विराडजगती १६, १८। अतिशक्वरी १७। शक्वरी १९। स्वराडनुष्टुप् २०। भुरिग्गायत्री २१, ३९। बृहती २३। उष्णिक् ३३, ४४। भुरिगुष्णिक् ३५, ३६, ४२। निचृत्त्रिष्टुप् ३८, ४९, ५०, ५७-५९, ६१। पङ्क्तिः ५१। विराट्त्रिष्टुप् ५२, ६२, ६५। स्वराडुष्णिक् ५६। विराडुष्णिक् ६४॥

स्वरः—धैवतः १, ३, १९, ३८, ४९, ५०, ५२, ५७-६२, ६५। पञ्चमः २, १७, ५१। मध्यमः ४, ७, २३। षड्जः ५, ६, २१, ३९। गान्धारः ८-१२, १४, १५, २०, २२, २४-३२, ३४, ३७, ४०, ४१, ४३, ४५-४८, ५३-५५, ६३। निषादः १३, १६, १८। ऋषभः ३३, ३५, ३६, ४२, ४४, ५६, ६४॥

हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेकऽआसीत् ।
स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥१॥

उपयामगृहीतोऽसि प्रजापतये त्वा जुष्टं गृह्णाम्येष ते योनिः सूर्यस्ते महिमा। यस्तेऽहꣳसंवत्सरे महिमा सम्बभूव यस्ते वायावन्तरिक्षे महिमा सम्बभूव यस्ते दिवि सूर्ये महिमा सम्बभूव तस्मै ते महिम्ने प्रजापतये स्वाहा देवेभ्यः ॥२॥

यः प्राणतो निमिषतो महित्वैकऽइद्राजा जगतो बभूव ।
यऽईशेऽअस्य द्विपदश्चतुष्पदः कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥३॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उपयामगृहीतोऽसि प्रजापतये त्वा जुष्टं गृह्णाम्येष ते योनिश्चन्द्रमास्ते महिमा। यस्ते रात्रौ संवत्सरे महिमा सम्बभूव यस्ते पृथिव्यामग्नौ महिमा सम्बभूव यस्ते नक्षत्रेषु चन्द्रमसि महिमा सम्बभूव तस्मै ते महिम्ने प्रजापतये देवेभ्यः स्वाहा ॥४॥

युञ्जन्ति ब्रध्नमरुषं चरन्तं परि तस्थुषः। रोचन्ते रोचना दिवि॥५॥

युञ्जन्त्यस्य काम्या हरी विपक्षसा रथे। शोणा धृष्णू नृवाहसा॥६॥

यद्वातोऽअपोऽअगनीगन्ग्रियामिन्द्रस्य तन्वम् ।
एतꣳस्तौतरनेन पथा पुनरश्वमावर्त्तयासि नः ॥७॥

वसवस्त्वाञ्जन्तु गायत्रेण छन्दसा रुद्रास्त्वाञ्जन्तु त्रैष्टुभेन छन्दसादित्यास्त्वाञ्जन्तु जागतेन छन्दसा। भूर्भुवः स्वर्लाजीञ्छाचीञ्यव्ये गव्यऽएतदन्नमत्त देवाऽएतदन्नमद्धि प्रजापते ॥८॥

कः स्विदेकाकी चरति कऽउ स्विज्जायते पुनः ।
किमꣳस्विद्धिमस्य भेषजं किम्वावपनं महत् ॥९॥

सूर्यऽएकाकी चरति चन्द्रमा जायते पुनः ।
अग्निर्हिमस्य भेषजं भूमिरावपनं महत् ॥१०॥

का स्विदासीत्पूर्वचित्तिः किमꣳस्विदासीद् बृहद्वयः ।
का स्विदासीत्पिलिप्पिला का स्विदासीत्पिशङ्गिला ॥११॥

द्यौरासीत्पूर्वचित्तिरश्वऽआसीद् बृहद्वयः ।
अविरासीत्पिलिप्पिला रात्रिरासीत्पिशङ्गिला ॥१२॥

वायुष्ट्वा पचतैरवत्वसितग्रीवश्छागैर्न्यग्रोधश्चमसैः शल्मलिर्वृद्ध्या। एष स्य राथ्यो वृषा पड्भिश्चतुर्भिरेदगन्ब्रह्माकृष्णश्च नोऽवतु नमोऽग्नयें॥१३॥

सꣳशितो रश्मिना रथः सꣳशितो रश्मिना हयः ।
सꣳशितो अप्स्वप्सुजा ब्रह्मा सोमपुरोगवः ॥१४॥

स्वयं वाजिंस्तन्वं कल्पयस्व स्वयं यजस्व स्वयं जुषस्व ।
महिमा तेऽन्येन न सन्नशे ॥१५॥

न वाऽउऽएतन्म्रियसे न रिष्यसि देवाँ२॥ऽइदेषि पथिभिः सुगेभिः।
यत्रासते सुकृतो यत्र ते ययुस्तत्र त्वा देवः सविता दधातु ॥१६॥

अग्निः पशुरासीत्तेनायजन्त सऽएतं लोकमजयद्यस्मिन्नग्निः स तें लोको भविष्यति तं जेष्यसि पिबैताऽअपः। वायुः पशुरासीत्तेनायजन्त सऽएतं लोकमजयद्यस्मिन्वायुः स तें लोको भविष्यति तं जेष्यसि पिबैताऽअपः। सूर्यः पशुरासीत्तेनायजन्त सऽएतं लोकमजयद्यस्मिन्सूर्यः स तें लोको भविष्यति तं जेष्यसि पिबैताऽअपः ॥१७॥

प्राणाय स्वाहापानाय स्वाहा व्यानाय स्वाहा ।
अम्बेऽअम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन ।
ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम् ॥१८॥

गणानां त्वा गणपतिꣳहवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपतिꣳहवामहे निधीनां त्वा निधिपतिꣳहवामहे वसो मम। आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम् ॥१९॥

ताऽउभौ चतुरः पदः सम्प्रसारयाव स्वर्गे लोके प्रोर्णुवाथां वृषा वाजी रेतोधा रेतो दधातु ॥२०॥

उत्सक्थ्याऽअव गुदं धेहि समञ्जिं चारया वृषन् ।
य स्त्रीणां जीवभोजनः ॥२१॥

यकासकौ शकुन्तिकाहलगिति वञ्चति ।
आहन्ति गभे पसो निगल्गलीति धारका ॥२२॥

यक्वोऽसकौ शकुन्तकऽआहलगिति वञ्चति ।
विवक्षतऽइव ते मुखमध्वर्यो मा नस्त्वमभि भाषथाः ॥२३॥

माता च ते पिता च तेऽग्रे वृक्षस्य रोहतः ।
प्रतिलामीति ते पिता गभे मुष्टिमतꣳसयत् ॥२४॥

माता च ते पिता च तेऽग्रे वृक्षस्य क्रीडतः ।
विवक्षतऽइव ते मुखं ब्रह्मन्मा त्वं वदो बहु ॥२५॥

ऊर्ध्वामेनामुच्छ्रयाप गिरौ भारꣳहरन्निव ।
अथास्यै मध्यमेधताꣳशीते वातें पुनन्निव ॥२६॥

ऊर्ध्वमेनमुच्छ्रयताद् गिरौ भारꣳहरन्निव ।
अथास्य मध्यमेजतु शीते वातें पुनन्निव ॥२७॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

यदस्याऽअꣳहुभेद्याः कृधु स्थूलमुपातसत् । दैव्याऽअध्वर्य्यवस्त्वाच्छ्यन्तु वि च शासतु ।
मुष्काविदस्याऽएजतो गोशफे शकुलाविव ॥२८॥ गात्राणि पर्वशस्ते सिमाः कृण्वन्तु शम्यन्तीः ॥४२॥
यद्देवासो ललामगुं प्र विष्टीमिनमाविषुः । द्यौस्ते पृथिव्युन्तरिक्षं वायुश्छिद्रं पृणातु ते ।
सक्थ्ना देदिश्यते नारी सत्यस्याक्षिभुवो यथा ॥२९॥ सूर्यस्ते नक्षत्रैः सह लोकं कृणोतु साधुया ॥४३॥
यद्धरिणो यवमत्ति न पुष्टं पशु मन्यते । शं ते परेभ्यो गात्रेभ्यः शमस्त्ववरेभ्यः ।
शूद्रा यदर्यजारा न पोषाय धनायति ॥३०॥ शमस्थभ्यो मज्जभ्यः शम्वस्तु तन्वै तव ॥४४॥
यद्धरिणो यवमत्ति न पुष्टं बहु मन्यते । कः स्विदेकाकी चरति कऽउ स्विज्जायते पुनः ।
शूद्रो यदर्यायै जारो न पोषमनु मन्यते ॥३१॥ किꣳस्विद्धिमस्य भेषजं किम्वावपनं महत् ॥४५॥
दधिक्राव्णोऽअकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः । सूर्यऽएकाकी चरति चन्द्रमा जायते पुनः ।
सुरभि नो मुखा करत्प्र णऽआयूꣳषि तारिषत् ॥३२॥ अग्निर्हिमस्य भेषजं भूमिरावपनं महत् ॥४६॥
गायत्री त्रिष्टुब्जगत्यनुष्टुप्पङ्क्त्या सह । किꣳस्वित्सूर्यसमं ज्योतिः किꣳसमुद्रसमꣳसरः ।
बृहत्युष्णिहा ककुप्सूचीभिः शम्यन्तु त्वा ॥३३॥ किꣳस्वित्पृथिव्यै वर्षीयः कस्य मात्रा न विद्यते ॥४७॥
द्विपदा याश्चतुष्पदास्त्रिपदा याश्च षट्पदाः । ब्रह्म सूर्यसमं ज्योतिर्द्यौः समुद्रसमꣳसरः ।
विच्छन्दा याश्च सच्छन्दाः सूचीभिः शम्यन्तु त्वा ॥३४॥ इन्द्रः पृथिव्यै वर्षीयान् गोस्तु मात्रा न विद्यते ॥४८॥
महानाम्न्यो रेवत्यो विश्वा आशाः प्रभूवरीः । पृच्छामि त्वा चितयँ देवसख यदि त्वमत्र मनसा जगन्थ ।
मैधीर्विद्युतो वाचः सूचीभिः शम्यन्तु त्वा ॥३५॥ येषु विष्णुस्त्रिषु पदेष्वेष्टस्तेषु विश्वं भुवनमा विवेशाꣳ ॥४९॥
नार्य्यस्ते पत्न्यो लोम विचिन्वन्तु मनीषया । अपि तेषु त्रिषु पदेष्वस्मि येषु विश्वं भुवनमा विवेशꣳ ।
देवानां पत्न्यो दिशः सूचीभिः शम्यन्तु त्वा ॥३६॥ सद्यः पर्येमि पृथिवीमुत द्यामेकेनाक्षेण दिवोऽअस्य पृष्ठम् ॥५०॥
रजता हरिणीः सीसा युजो युज्यन्ते कर्मभिः । केष्वन्तः पुरुषऽआ विवेशꣳ कान्यन्तः पुरुषेऽअर्पितानि ।
अश्वस्य वाजिनस्त्वचि सिमाः शम्यन्तु शम्यन्तीः ॥३७॥ एतद् ब्रह्मन्नुप वल्हामसि त्वा किꣳस्विन्नः प्रति वोचास्यत्र ॥५१॥
कुविदङ्ग यवमन्तो यवञ्चिद्यथा दान्त्यनुपूर्वं वियूय । पञ्चस्वन्तः पुरुषऽआ विवेशꣳ तान्यन्तः पुरुषेऽअर्पितानि ।
इहेहैषां कृणुहि भोजनानि ये बर्हिषो नमऽउक्तिं यजन्ति ॥३८॥ एतत्त्वात्र प्रतिमन्वानोऽअस्मि न मायया भवस्युत्तरो मत् ॥५२॥
कस्त्वा छ्यति कस्त्वा विशास्ति कस्ते गात्राणि शम्यति । का स्विदासीत्पूर्वचित्तिः किꣳस्विदासीद् बृहद्वयः ।
कऽउ ते शमिता कविः ॥३९॥ का स्विदासीत्पिलिप्पिला का स्विदासीत्पिशङ्गिला ॥५३॥
ऋतवस्तऽऋतुथा पर्व शमितारो वि शासतु । द्यौरासीत्पूर्वचित्तिरश्वऽआसीद् बृहद्वयः ।
संवत्सरस्य तेजसा शमीभिः शम्यन्तु त्वा ॥४०॥ अविरासीत्पिलिप्पिला रात्रिरासीत्पिशङ्गिला ॥५४॥
अर्द्धमासाः परूꣳषि ते मासाऽआ छ्यन्तु शम्यन्तः । काऽईमरे पिशङ्गिला काऽईं कुरुपिशङ्गिला ।
अहोरात्राणि मरुतो विलिष्टꣳसूदयन्तु ते ॥४१॥ काऽईमस्कन्दमर्षति कऽईं पन्थां वि सर्पति ॥५५॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अजारे पिशङ्गिला श्वावित्कुरुपिशङ्गिला ।
शशऽआस्कन्दमर्षत्यहिः पन्थां वि सर्पति ॥५६॥
कत्यस्य विष्ठाः कत्यक्षराणि कति होमासः कतिधा समिद्धः।
यज्ञस्य त्वा विदथा पृच्छमत्र कति होतारऽऋतुशो यजन्ति ॥५७॥
षडस्य विष्ठाः शतमक्षराण्यशीतिर्होमाः समिधो ह तिस्रः ।
यज्ञस्य ते विदथा प्र ब्रवीमि सप्त होतारऽऋतुशो यजन्ति ॥५८॥
कोऽअस्य वेद भुवनस्य नाभिं को द्यावापृथिवीऽअन्तरिक्षम् ।
कः सूर्यस्य वेद बृहतो जनित्रं को वेद चन्द्रमसं यतोजाः ॥५९॥
वेदाहमस्य भुवनस्य नाभिं वेद द्यावापृथिवीऽअन्तरिक्षम् ।
वेद सूर्यस्य बृहतो जनित्रमथो वेद चन्द्रमसं यतोजाः ॥६०॥
पृच्छामि त्वा परमन्तं पृथिव्याः पृच्छामि यत्र भुवनस्य नाभिः।
पृच्छामि त्वा वृष्णोऽअश्वस्य रेतः पृच्छामि वाचः परमं व्योम॥६१॥
इयं वेदिः परोऽअन्तः पृथिव्याऽअयं यज्ञो भुवनस्य नाभिः ।
अयꣳसोमो वृष्णोऽअश्वस्य रेतो ब्रह्मायं वाचः परमं व्योम ॥६२॥
सुभूः स्वयम्भूः प्रथमोऽन्तर्महत्यर्णवे ।
दधे ह गर्भमृत्वियं यतो जातः प्रजापतिः ॥६३॥
होता यक्षत्प्रजापतिꣳसोमस्य महिम्नः। जुषतां पिबतु सोमꣳहोतर्यज॥६४॥
प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा रूपाणि परि ता बभूव ।
यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नोऽअस्तु वयꣳस्याम पतयो रयीणाम् ॥६५॥

इति त्रयोविंशोऽध्यायः ॥

अथ चतुर्विंशोऽध्यायः

—:०:—

ऋषिः—प्रजापतिः १-४०।

देवता—प्रजापतिः १। सोमादयः २। अश्व्यादयः ३। मारुतादयः ४। विश्वेदेवाः ५। अग्न्यादयः ६, ९, १२, १४, १६, २३, ३४। इन्द्रादयः ७, १५। इन्द्राग्न्यादयः ८, १७। अन्तरिक्षदयः १०। वसन्तादयः ११, २०। विराजादयः १३। पितरः १८। वायुः १९। वरुणः २१। सोमादयः २२, २४, ३२। कालावयवाः २५। भूम्यादयः २६। वस्वादयः २७। ईशानादयः २८। प्राजापत्यादयः २९-३१। मित्रादयः ३३। चन्द्रादयः ३५। अश्विन्यादयः ३६। अर्धमासादयः ३७। वर्षादयः ३८। आदित्यादयः ३९। विश्वेदेवादयः ४०॥

छन्दः—भुरिक्संकृतिः १। निचृत्संकृतिः २। निचृदतिजगती ३। विराडतिधृतिः ४। निचृद्बृहती ५, २७। विराट्पङ्क्तिः ६। अतिजगती ७। विराड्बृहती ८, ११। निचृत्पङ्क्तिः ९। विराड्गायत्री १०। स्वराडनुष्टुप् १२। निचृदनुष्टुप् १३। भुरिगतिजगती १४, १८। विराडुष्णिक् १५। शक्वरी १६, ४०। भुरिग्गायत्री १७। त्रिपाद्गायत्री १९। विराड्जगती २०। बृहती २१, २८। विराड्बृहती २२। पङ्क्तिः २३। भुरिक्पङ्क्तिः २४। स्वराट्पङ्क्तिः २५। भुरिगनुष्टुप् २६। विराडनुष्टुप् २९। निचृदतिधृतिः ३०। स्वराट्त्रिष्टुप् ३१, ३९। भुरिग्जगती ३२, ३७। भुरिगतिजगती ३३। स्वराट्शक्वरी ३४। निचृच्छक्वरी ३५। निचृज्जगती ३६। स्वराड्जगती ३८॥

स्वरः—गान्धारः १, २, १२, १३, २६, २९। निषादः ३, ७, १४, १८, २०, ३२, ३३, ३६-३८। षड्जः ४, १०, १७, १९, ३०। मध्यमः ५, ८, ११, २१, २२, २७, २८। ऋषभः ६, १४। पञ्चमः ९, २३-२५। धैवतः १६, ३१, ३४, ३५, ३९, ४०॥

अश्वस्तूपरो गोमृगस्ते प्राजापत्याः कृष्णग्रीवऽआग्नेयो रराटे पुरस्तात् सारस्वती मेष्युधस्ताद्बार्हस्पत्यो वोराश्विनावधोरामौ बाह्वोः सौमापौष्णः श्यामो नाभ्यांऽशौर्यामौ श्वेतश्च कृष्णश्च पार्श्वयोस्त्वाष्ट्रौ लोमशसक्थौ सक्थ्योर्वायव्यः श्वेतः पुच्छऽइन्द्राय स्वपस्याय वेहद्वैष्णवो वामनः ॥१॥
रोहितो धूम्ररोहितः कर्कन्धुरोहितस्ते सौम्या बभ्रुरुणबभ्रुः शुकबभ्रुस्ते वारुणाः शितिरन्ध्रोऽन्यतःशितिरन्ध्रः समन्तशितिरन्ध्रस्ते सावित्राः शितिबाहुरन्यतःशितिबाहुः समन्तशितिबाहुस्ते बार्हस्पत्याः पृषती क्षुद्रपृषती स्थूलपृषती ता मैत्रावरुण्यः ॥२॥
शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो मणिवालस्तऽआश्विनाः श्येतः श्येताक्षोऽरुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णा यामाऽअवलिप्ता रौद्रा नभोरूपाः पार्जन्याः ॥३॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पृश्निस्तिरश्चीनपृश्निरूर्ध्वपृश्निस्ते मारुताः फल्गूर्लोहितोर्णी पलक्षी
ताः सारस्वत्यः प्लीहाकर्णीः शुण्ठाकर्णोऽध्यालोहकर्णस्ते त्वाष्ट्राः
कृष्णग्रीवः शितिकक्षोऽज्जिसक्थस्तऽऐन्द्राग्नाः कृष्णाज्जिरल्पाज्जिर्म-
हाज्जिस्तऽउषस्याः ॥४॥
शिल्पा वैश्वदेव्यो रोहिण्यस्व्यवयो वाचेऽविज्ञाताऽअदित्यै सरूपा
धात्रे वत्सतर्यो देवानां पत्नीभ्यः ॥५॥
कृष्णग्रीवाऽआग्नेयाः शितिभ्रवो वसूनाꣳरोहिता रुद्राणाꣳश्वेताऽ
अंवरोकिणऽआदित्यानां नभोरूपाः पार्जन्याः ॥६॥
उन्नतऽऋषभो वामनस्तऽऐन्द्रावैष्णवाऽउन्नतः शितिबाहुः
शितिपृष्ठस्तऽ ऐन्द्राबार्हस्पत्याः शुक्रूरूपा वाजिनाः
कल्माषाऽआग्निमारुताः श्यामाः पौष्णाः ॥७॥
एताऽऐन्द्राग्ना द्विरूपाऽअग्नीषोमीया वामनाऽअनड्वाहऽ
आग्नावैष्णवा वशा मैत्रावरुण्योऽन्यतऽएन्यो मैत्र्यः ॥८॥
कृष्णग्रीवाऽआग्नेया बभ्रवः सौम्याः श्वेता वायव्याऽअविज्ञाताऽ
अदित्यै सरूपा धात्रे वत्सतर्यो देवानां पत्नीभ्यः ॥९॥
कृष्णा भौमा धूम्राऽआन्तरिक्षा बृहन्तो दिव्याः शबलाः
वैद्युताः सिध्मास्तारकाः ॥१०॥
धूम्रान् वसन्तायालभते श्वेतान् ग्रीष्माय कृष्णान्
वर्षाभ्योऽरुणाञ्छरदे पृषतो हेमन्ताय पिशङ्गाञ्छिशिराय ॥११॥
त्र्यवयो गायत्र्यै पञ्चावयस्त्रिष्टुभे दित्यवाहो जगत्यै
त्रिवत्साऽअनुष्टुभे तुर्यवाहऽउष्णिहे ॥१२॥
पष्ठवाहो विराजऽउक्षाणो बृहत्याऽऋषभाः ककुभेऽनड्वाहः
पङ्क्त्यै धेनवोऽतिछन्दसे ॥१३॥
कृष्णग्रीवाऽआग्नेया बभ्रवः सौम्याऽउपध्वस्ताः सावित्रा वत्सतर्यः
सारस्वत्यः श्यामाः पौष्णाः पृश्नयो मारुता बहुरूपा
वैश्वदेवा वशा द्यावापृथिवीयाः ॥१४॥
उक्ताः सञ्चराऽएताऽऐन्द्राग्नाः कृष्णा वारुणाः पृश्नयो
मारुताः कायास्तूपराः ॥१५॥
अग्नयेऽनीकवते प्रथमजानालभते मरुद्भ्यः सान्तपनेभ्यः सवात्यान्
मरुद्भ्यो गृहमेधिभ्यो बष्किहान् मरुद्भ्यः क्रीडिभ्यः सꣳसृष्टान्
मरुद्भ्यः स्वतवद्भ्योऽनुसृष्टान् ॥१६॥
उक्ताः सञ्चराऽएताऽऐन्द्राग्नाः प्राशृङ्गा माहेन्द्रा बहुरूपा वैश्वकर्मणाः॥१७॥
धूम्रा बभ्रुनीकाशाः पितृणाꣳसोमवतां बभ्रवो धूम्रनीकाशाः
पितृणां बर्हिषदां कृष्णा बभ्रुनीकाशाः पितृणामग्निष्वात्तानां
कृष्णाः पृषन्तस्त्रैयम्बकाः ॥१८॥
उक्ताः सञ्चराऽएताः शुनासीरीयाः श्वेता वायव्याः श्वेताः सौर्याः॥१९॥
वसन्ताय कपिञ्जलानालभते ग्रीष्माय कलविङ्कान्
वर्षाभ्यस्तित्तिरीञ्छरदे वर्त्तिका हेमन्ताय ककराञ्छिशिराय विकंकरान्॥२०॥
समुद्राय शिशुमारानालभते पर्जन्याय मण्डूकानुद्रयो मत्स्यान्
मित्राय कुलीपयान् वरुणाय नाक्रान् ॥२१॥
सोमाय हꣳसानालभते वायवे बलाकाऽइन्द्राग्निभ्यां क्रुञ्चान्
मित्राय मद्गून् वरुणाय चक्रवाकान् ॥२२॥
अग्नये कुटरूनालभते वनस्पतिभ्यऽउलूकानग्नीषोमाभ्यां
चाषानश्विभ्यां मयूरान् मित्रावरुणाभ्यां कपोतान् ॥२३॥
सोमाय लबानालभते त्वष्ट्रे कौलीकान् गोषादीर्देवानां पत्नीभ्यः
कुलीकां देवजामिभ्योऽग्नये गृहपतये पारुष्णान् ॥२४॥
अह्ने पारावतानालभते रात्र्यै सीचापूरहोरात्रयोः सन्धिभ्यो
जतूर्मासेभ्यो दात्यौहान्तसंवत्सराय महतः सुपर्णान् ॥२५॥
भूम्याऽआखूनालभतेऽन्तरिक्षाय पाङ्क्तान् दिवे कशान् दिग्भ्यो
नकुलान् बभ्रुकानवान्तरदिशाभ्यः ॥२६॥
वसुभ्यऽऋश्यानालभते रुद्रेभ्यो रुरूनादित्येभ्यो न्यङ्कून्
विश्वेभ्यो देवेभ्यः पृषतान्साध्येभ्यः कुलुङ्गान् ॥२७॥
ईशानाय परस्वतऽआलभते मित्राय गौरान् वरुणाय महिषान्
बृहस्पतये गवयाँस्त्वष्ट्रऽउष्ट्रान् ॥२८॥
प्रजापतये पुरुषान् हस्तिनऽआलभते वाचे प्लुषीश्चक्षुषे
मशकाञ्छ्रोत्राय भृङ्गाः ॥२९॥
प्रजापतये च वायवे च गोमृगो वरुणायारण्यो मेषो यमाय कृष्णो
मनुष्यराजाय मर्कटः शार्दूलाय रोहिदृषभाय गवयी क्षिप्रश्येनाय
वर्त्तिका नीलङ्गोः क्रिमिः समुद्राय शिशुमारो हिमवते हस्ती ॥३०॥
मयुः प्राजापत्यऽउलूलो हरिक्ष्णो वृषदꣳशस्ते धात्रे दिशां कङ्के
धुङ्क्षाग्नये कलविङ्को लोहिताहिः पुष्करसादस्ते त्वाष्ट्रा वाचे क्रुञ्चः॥३१॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सोमा॑य कुलु॒ङ्गऽआ॑र॒ण्यो॒ऽजो न॑कु॒लः शका॒ ते पौ॒ष्णाः
क्रो॒ष्टा मा॒योरिन्द्र॑स्य गौरमृ॒गः पि॒द्वो न्यङ्कुः॑ कक्क॒टस्तेऽनु॑मत्यै
प्रति॒श्रुत्का॑यै चक्रवा॒कः ॥३२॥
सौ॒री ब॒लाका॑ शा॒र्गः सृ॑ज॒यः श॒याण्ड॑क॒स्ते मै॒त्राः सर॑स्वत्यै॒
शारिः॑ पुरुष॒वाक् श्वा॒विद्भौ॒मी शा॑र्दू॒लो वृकः॒ पृदा॑कु॒स्ते म॒न्यवे॒
सर॑स्वते॒ शुकः॑ पुरुष॒वाक् ॥३३॥
सु॒प॒र्णः पा॑र्ज॒न्यऽआ॒तिर्वा॑ह॒सो दर्वि॑दा॒ ते वा॒यवे॒ बृह॒स्पत॑ये
वा॒चस्पत॑ये पैङ्गरा॒जो॒ऽल॒जऽआ॑न्तरि॒क्षः प्ल॒वो म॒द्गुर्मत्स्य॒स्ते
न॑दीप॒तये॑ द्यावापृथि॒वीयः॑ कू॒र्मः ॥३४॥
पु॒रु॒ष॒मृ॒गश्च॒न्द्रम॑सो गो॒धा काल॑का दार्वाघा॒टस्ते वन॒स्पती॑नां
कृक॒वाकुः॑ सावि॒त्रो ह॒ꣳसो वात॑स्य ना॒क्रो मक॑रः कुली॒पय॒स्तेऽ
कू॑पारस्य ह्रि॒यै॑ शल्य॑कः ॥३५॥
ए॒ण्यह्नो॑ म॒ण्डूको॒ मूषि॑का ति॒त्तिरि॒स्ते स॒र्पाणां॑
लोपा॒शऽआ॑श्वि॒नः कृष्णो॒ रात्र्या॒ऽऋक्षो॑ ज॒तूः सु॑षि॒लीका॒
तऽइ॑तरज॒नानां॒ जह॑का वैष्ण॒वी ॥३६॥
अ॒न्य॒वा॒पो॒ऽर्द्धमा॒साना॒मृश्यो॑ म॒यूरः॑ सुप॒र्णस्ते
ग॑न्ध॒र्वाणा॑म॒पामु॒द्रो मा॒साङ्क॒श्यपो॑ रो॒हित्कु॑ण्डृ॒णाची॑
गो॒लत्ति॑का॒ ते॒ऽप्स॒रसां॑ मृ॒त्यवे॑ऽसि॒तः ॥३७॥
व॒र्षा॒हूर्ऋ॑तू॒नामा॒खुः कशो॑ मान्था॒लस्ते पि॑तॄ॒णां बला॑याजग॒रो वसू॑नां
क॒पिञ्ज॑लः क॒पोत॒ऽउलू॑कः श॒शस्ते निर्ऋ॑त्यै॒ वरु॑णायार॒ण्यो मे॒षः ॥३८॥
श्वि॒त्रऽआ॑दि॒त्याना॒मुष्ट्रो॒ घृणी॑वान् वार्ध्री॒न॒सस्ते म॒त्याऽअर॑ण्याय सृम॒रो
रुरू॑ रौ॒द्रः ववयिः॑ कु॒टरु॑र्दात्यौ॒हस्ते वा॒जिनां॒ कामा॑य पि॒कः ॥३९॥
ख॒ड्गो वै॑श्वदे॒वः श्वा कृ॒ष्णः क॒र्णो ग॑र्द॒भस्त॒रक्षु॒स्ते रक्ष॑सा॒मिन्द्रा॑य
सूक॒रः सि॒ꣳहो मा॑रु॒तः कृ॑कला॒सः पिप्प॑का श॒कुनि॒स्ते श॑र॒व्या॒यै॒
विश्वे॑षां दे॒वानां॑ पृष॒तः ॥४०॥

॥ इति चतुर्विंशोऽध्यायः॥

अथ पञ्चविंशोऽध्यायः॥

—:०:—

ऋषिः—प्रजापतिः १-१६, २३, २७। गोतमः १७-२२, २४-२६, २८-४८॥

देवता—सरस्वत्यादयः १। प्राणादयः २। इन्द्रादयः ३, ५, ८। अग्न्यादयः ४। मरुतादयः ६। पूषादयः ७, ९। हिरण्यगर्भः १०। ईश्वरः ११, १२, १८, १९। परमात्मा १३। यज्ञः १४, २६-२९, ३१-३४, ३६, ३८, ४०, ४१। विद्वांसः १५, २०-२२, २५, ३०, ३७, ३९। विश्वेदेवाः १६, ३५, ४६। वायुः १७। द्यौरित्यादयः २३। मित्रादयः २४। यजमानः ४२। आत्मा ४३, ४४। प्रजा ४५। अग्निः ४७॥

छन्दः—भुरिक्शक्वरी १[क], ४६। निचृदतिशक्वरी १[र],। भुरिगतिशक्वर्यौ २। भुरिक्कृतिः ३। स्वराड्धृतिः ४। स्वराड्विकृतिः ५। निचृदतिधृतिः ६। निचृदष्टिः ७। निचृदभिकृतिः ८। भुरिगत्यष्टिः ९। त्रिष्टुप् १०, ११, २२, २३, २७, ३०, ३१, ४१। स्वराड्पङ्क्तिः १२, ३७, ४२, ४५। निचृत्त्रिष्टुप् १३, २१, २४, २५, ३२, ३३, ४०, ४३। निचृज्जगती १४, १८, २६। जगती १५, १६, २०। भुरिक्त्रिष्टुप् १७, २९, ३४, ४४। स्वराड्बृहती १९। विराट्-त्रिष्टुप् २८। स्वराड्त्रिष्टुप् ३५। भुरिक्पङ्क्तिः ३६, ३८। विराड्पङ्क्तिः ३९। शक्वरी ४७॥

स्वरः—धैवतः[क] १, १०, ११, १३, १७, २१-२५, २७-३५, ४०, ४१, ४३, ४४, ४६, ४७। पञ्चमः[र] १, २, १२, ३६-३९, ४२, ४५। निषादः ३, १४-१६, १८, २०, २६। ऋषभः ४, ८। मध्यमः ५, ७, १९। षड्जः ६। गान्धारः ९॥

[क] शादं॑ द॒द्भिरव॑कां दन्तमू॒लैर्मृदं॒ बर्स्वै॑स्ते॒गान्दꣳष्ट्रा॑भ्या॒ꣳसर॑स्वत्याऽ
अग्रजि॒ह्वं जि॒ह्वाया॑ऽउत्सा॒दम॑वक्र॒न्देन॒ तालु॒ वाज॒ꣳहनु॑भ्याम॒पऽआ॒स्येन॒
वृष॑णमा॒ण्डाभ्या॑मादि॒त्याँ श्मश्रु॑भिः॒ पन्था॑नं भ्रू॒भ्यां द्यावा॑पृथि॒वी
वर्त्तो॑भ्यां वि॒द्युतं॑ क॒नीन॑काभ्याꣳशु॒क्लाय॒ स्वाहा॑ कृ॒ष्णाय॒ स्वाहा॒
पार्या॑णि॒ पक्ष्मा॑ण्यवा॒र्या॒ऽइ॒क्षवो॑ऽवा॒र्या॒णि॒ पक्ष्मा॑णि॒ पार्या॑ऽइ॒क्षवः॑ ॥१॥
वातं॑ प्रा॒णेना॑पा॒नेन॒ नासि॑केऽउपया॒ममध॑रे॒णौष्ठे॑न॒ सदुत्त॑रेण
प्रका॒शेनान्त॑रमनूका॒शेन॒ बाह्यं॑ निवे॒ष्यं मू॒र्ध्ना स्त॑नयि॒त्नुं नि॑र्बा॒धेना॒शनिं॑
म॒स्तिष्के॑ण वि॒द्युतं॑ क॒नीन॑काभ्यां॒ कर्णा॑भ्या॒ꣳश्रोत्र॒ꣳश्रोत्रा॑भ्यां॒ कर्णौ॑
तेद॒नीम॑धरक॒ण्ठेना॒पः शु॑ष्कक॒ण्ठेन॑ चि॒त्तं मन्या॑भि॒रदि॑तिꣳशी॒र्ष्णा
निर्ऋ॑तिं॒ निर्ज॑र्जल्येन शी॒र्ष्णा सं॑क्रो॒शैः प्रा॒णान् रे॒ष्माण॑ꣳस्तु॒पेन॑ ॥२॥
म॒शका॒न् केशै॒रिन्द्र॒ꣳस्वप॑सा॒ वहे॑न॒ बृह॒स्पति॑ꣳशकुनिसा॒देन॑ कू॒र्माञ्छ॒-
फैरा॒क्रम॑णꣳस्थू॒राभ्या॑मृ॒क्षला॑भिः क॒पिञ्ज॑लाञ्ज॒वं जङ्घा॑भ्या॒मध्वा॑नं
बा॒हुभ्यां॒ जाम्बी॑ले॒नार॑ण्यम॒ग्निम॑ति॒रुग्भ्यां॑ पू॒षणं॑ दो॒र्भ्याम॒श्विना॒वꣳ
सा॑भ्याꣳरु॒द्रꣳरोरा॑भ्याम् ॥३॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अग्नेः पक्षतिर्वायोर्निपक्षतिरिन्द्रस्य तृतीया सोमस्य चतुर्थ्यदित्यै
पञ्चमीन्द्राण्यै षष्ठी मरुताꣳसप्तमी बृहस्पतेरष्टम्यर्यम्णो नवमी
धातुर्दशमीन्द्रस्यैकादशी वरुणस्य द्वादशी यमस्य त्रयोदशी ॥४॥
इन्द्राग्न्योः पक्षतिः सरस्वत्यै निपक्षतिर्मित्रस्य तृतीयापां चतुर्थी
निर्ऋत्यै पञ्चम्यग्नीषोमयोः षष्ठी सपर्णाꣳसप्तमी विष्णोरष्टमी
पूष्णो नवमी त्वष्टुर्दशमीन्द्रस्यैकादशी वरुणस्य द्वादशी यम्यै
त्रयोदशी द्यावापृथिव्योर्दक्षिणं पार्श्वं विश्वेषां देवानामुत्तरम् ॥५॥
मरुताꣳस्कन्धा विश्वेषां देवानां प्रथमा कीकसा रुद्राणां
द्वितीयादित्यानां तृतीया वायोः पुच्छमग्नीषोमयोर्भासदौ क्रुञ्चौ
श्रोणिभ्यामिन्द्राबृहस्पतीऽऊरुभ्यां मित्रावरुणावल्गाभ्यामाक्रमणꣳ
स्थूराभ्यां बलं कुष्ठाभ्याम् ॥६॥
पूष्णो वनिष्ठुनान्त्राहीन्त्स्थूलगुदया सर्पान् गुदाभिर्विहुतऽआन्त्रेरपो
वस्तिना वृषणमाण्डाभ्यां वाजिनꣳशेपेन प्रजाꣳरेतसा चाषान् पित्तेन
प्रदरान् पायुना कूश्माञ्छकपिण्डैः ॥७॥
इन्द्रस्य क्रोडोऽदित्यै पाजस्यं दिशां जत्रवोऽदित्यै भसज्जीमूतान्
हृदयौपशेनान्तरिक्षं पुरीतता नभऽउदर्येण चक्रवाकौ मतस्नाभ्यां
दिवं वृक्काभ्यां गिरीन् पलाशिभिरुपलान् प्लीह्ना वल्मीकान्
क्लोमभिर्गर्लौभिर्गुल्मान् हिराभिः स्रवन्तीर्हृदान् कुक्षिभ्याꣳसमुद्रमुदरेण
वैश्वानरं भस्मना ॥८॥
विधृतिं नाभ्यां घृतꣳरसेनापो यूष्णा मरीचीर्विप्रुड्भिर्नीहारमूष्मणा
शीनं वसया प्लुष्वाऽअश्रुभिर्हादुनीर्दूषीकाभिरस्ना रक्षाꣳसि
चित्राण्यङ्गैर्नक्षत्राणि रूपेण पृथिवीं त्वचा जुम्बकाय स्वाहा ॥९॥
हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेकऽआसीत् ।
स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥१०॥
यः प्राणतो निमिषतो महित्वैकऽइद्राजा जगतो बभूव ।
यऽईशेऽअस्य द्विपदश्चतुष्पदः कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥११॥
यस्येमे हिमवन्तो महित्वा यस्य समुद्ररꣳसया सहाहुः ।
यस्येमाः प्रदिशो यस्य बाहू कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥१२॥
यऽआत्मदा बलदा यस्य विश्वऽउपासते प्रशिषं यस्य देवाः ।
यस्य छायामृतं यस्य मृत्युः कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥१३॥
आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतोऽदब्धासोऽअपरीतासऽउद्भिदः।
देवा नो यथा सदमिद् वृधेऽअसन्नप्रायुवो रक्षितारो दिवेदिवे ॥१४॥
देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयतां देवानाꣳरातिरभि नो निवर्त्तताम्।
देवानाꣳसख्यमुपसेदिमा वयं देवा नऽआयुः प्रतिरन्तु जीवसे ॥१५॥
तान् पूर्वया निविदा हूमहे वयं भगं मित्रमदितिं दक्षमस्रिधम्।
अर्यमणं वरुणꣳसोममश्विना सरस्वती नः सुभगा मयस्करत् ॥१६॥
तन्नो वातो मयोभु वातु भेषजं तन्माता पृथिवी तत्पिता द्यौः ।
तद् ग्रावाणः सोमसुतो मयोभुवस्तदश्विना शृणुतं धिष्ण्या युवम्॥१७॥
तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियञ्जिन्वमवसे हूमहे वयम् ।
पूषा नो यथा वेदसामसद् वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये ॥१८॥
स्वस्ति नऽइन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः ।
स्वस्ति नस्तार्क्ष्योऽअरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ॥१९॥
पृषदश्वा मरुतः पृश्निमातरः शुभंयावानो विदथेषु जग्मयः ।
अग्निजिह्वा मनवः सूरचक्षसो विश्वे नो देवाऽअवसागमन्निह॥२०॥
भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः ।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाꣳसस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः ॥२१॥
शतमिन्नु शरदोऽअन्ति देवा यत्रा नश्चक्रा जरसं तनूनाम् ।
पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मा नो मध्या रीरिषतायुर्गन्तोः ॥२२॥
अदितिर्द्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिर्मातासपिताऽसपुत्रः ।
विश्वे देवाऽअदितिः पञ्च जनाऽअदितिर्जातमदितिर्जनित्वम् ॥२३॥
मा नो मित्रो वरुणोऽअर्यमायुरिन्द्रऽऋभुक्षा मरुतः परिख्यन् ।
यद्वाजिनो देवजातस्य सप्तेः प्रवक्ष्यामो विदथे वीर्याणि ॥२४॥
यन्निर्णिजा रेक्णसा प्रावृतस्य रातिं गृभीतां मुखतो नयन्ति ।
सुप्राङजो मेम्यद्विश्वरूपऽइन्द्रापूष्णोः प्रियमप्येति पाथः ॥२५॥
एष छागः पुरोऽअश्वेन वाजिना पूष्णो भागो नीयते विश्वदेव्यः।
अभिप्रियं यत्पुरोडाशमर्वता त्वष्टेदेनꣳसौश्रवसाय जिन्वति ॥२६॥
यद्विष्णवृतुशो देवयानं त्रिर्मानुषाः पर्यश्वं नयन्ति ।
अत्रा पूष्णः प्रथमो भागऽएति यज्ञं देवेभ्यः प्रतिवेदयन्नजः ॥२७॥
CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

होताध्वर्युरावयाऽअग्निमिन्धो ग्रावग्राभऽउत शꣳस्ता सुविप्रः ।
तेन यज्ञेन स्वरङ्कृतेन स्विष्टेन वक्षणा आ पृणध्वम् ॥२८॥
यूपव्रस्काऽउत ये यूपवाहाश्चषालं येऽअश्वयूपाय तक्षति ।
ये चार्वन्ते पचनꣳसम्भरन्त्युतो तेषामभिगूर्त्तिर्नऽइन्वतु ॥२९॥
उप प्रागात्सुमन्मेऽधायि मन्म देवानामाशाऽउप वीतपृष्ठः ।
अन्वेनं विप्राऽऋषयो मदन्ति देवानां पुष्टे चकृमा सुबन्धुम् ॥३०॥
यद्वाजिनो दाम सन्दानमर्वतो या शीर्षण्या रशना रज्जुरस्य ।
यद्वा घास्य प्रभृतमास्ये तृणꣳसर्वा ता तेऽअपि देवेष्वस्तु ॥३१॥
यदश्वस्य क्रविषो मक्षिकाश यद्वा स्वरौ स्वधितौ रिप्तमस्ति ।
यद्धस्तयोः शमितुर्यन्नखेषु सर्वा ता तेऽअपि देवेष्वस्तु ॥३२॥
यदूवध्यमुदरस्यापवाति यऽआमस्य क्रविषो गन्धोऽअस्ति ।
सुकृता तच्छमितारः कृण्वन्तूत मेधꣳशृतपाकं पचन्तु ॥३३॥
यत्ते गात्रादग्निना पच्यमानादभि शूलं निहतस्यावधावति ।
मा तद्भूम्यामाश्रिषन्मा तृणेषु देवेभ्यस्तदुशद्भ्यो रातमस्तु ॥३४॥
ये वाजिनं परिपश्यन्ति पक्वं यऽईमाहुः सुरभिर्निर्हरेति ।
ये चार्वतो माꣳसभिक्षामुपासतऽउतो तेषामभिगूर्त्तिर्नऽइन्वतु ॥३५॥
यन्नीक्षणं माꣳस्पचन्याऽउखाया या पात्राणि यूष्णऽआसेचनानि ।
ऊष्मण्यापिधानाश्चरूणामङ्काः सूनाः परि भूषन्त्यश्वम् ॥३६॥
मा त्वाग्निर्ध्वनयीद् धूमगन्धिर्मोखा भ्राजन्त्यभि विक्त जघ्रिः ।
हृष्टं वीतमभिगूर्त्तं वषट्कृतं तं देवासः प्रति गृभ्णन्त्यश्वम् ॥३७॥
निक्रमणं निषदनं विवर्त्तनं यच्च पड्वीशमर्वतः ।
यच्च पपौ यच्च घासिं जघास सर्वा ता तेऽअपि देवेष्वस्तु ॥३८॥
यदश्वाय वासऽउपस्तृणन्त्यधीवासं या हिरण्यान्यस्मै ।
सन्दानमर्वन्तं पड्वीशं प्रिया देवेष्वा यामयन्ति ॥३९॥
यत्ते सादे महसा शूकृतस्य पाष्ण्यी वा कशया वा तुतोद ।
स्रुचेव ता हविषोऽअध्वरेषु सर्वा ता ते ब्रह्मणा सूदयामि ॥४०॥
चतुस्त्रिꣳशद्वाजिनो देवबन्धोर्वङ्क्रीरश्वस्य स्वधितिः समेति ।
अच्छिद्रा गात्रा वयुना कृणोत परुष्परुरनुघुष्या विशस्त ॥४१॥

एकस्त्वष्टुरश्वस्या विशस्ता द्वा यन्तारा भवतस्तथऽऋतुः ।
या ते गात्राणामृतुथा कृणोमि ता ता पिण्डानां प्र जुहोम्यग्नौ॥४२॥
मा त्वा तपत् प्रियऽआत्मापियन्तं मा स्वधितिस्तन्वऽआ तिष्ठिपत्ते।
मा ते गृध्नुरविशस्तातिहायं छिद्रा गात्राण्यसिना मिथू कः ॥४३॥
न वाऽउऽएतन् म्रियसे न रिष्यसि देवाँ२॥ऽइदेषि पथिभिः सुगेभिः।
हरी ते युञ्जा पृषतीऽअभूतामुपास्थाद्वाजी धुरि रासभस्य ॥४४॥
सुगव्यं नो वाजी स्वश्व्यं पुꣳसः पुत्राँ२॥ऽउत विश्वापुषꣳरयिम्।
अनागास्त्वं नोऽअदितिः कृणोतु क्षत्रं नोऽअश्वो वनताꣳहविष्मान्॥४५॥
द्रुमा नु कं भुवना सीषधामेन्द्रश्च विश्वे च देवाः ।
आदित्यैरिन्द्रः सगणो मरुद्भिरस्मभ्यं भेषजा करत् ।
यज्ञं च नस्तन्वं च प्रजां चादित्यैरिन्द्रः सह सीषधाति ॥४६॥
अग्ने त्वं नोऽअन्तमऽउत त्राता शिवो भवा वरूथ्यः ।
वसुरग्निर्वसुश्रवाऽअच्छा नक्षि द्युमत्तमꣳरयिं दाः ।
तं त्वा शोचिष्ठ दीदिवः सुम्नाय नूनमीमहे सखिभ्यः ॥४७॥

॥ इति पञ्चविंशोऽध्यायः॥

स्व. श्री ओमप्रकाशजी बजारी की स्मृती में समर्पित

ॐ ओमप्रकाश बजारी
४/३१८, शास्त्री नगर
जयपुर (राजस्थान)

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अथ षड्विंशोऽध्यायः॥

—:०:—

ऋषिः—याज्ञवल्क्यः १। लौगाक्षिः २। गृत्समदः ३, २४। रम्याक्षी ४, ५। प्रादुराक्षिः ६। कुत्सः ७-९। वसिष्ठः १०। नोधा गोतमः ११, १२। भारद्वाजः १३, १४। वत्सः १५। महीयवः १६-१८। मुद्गलः १९। मेधातिथिः २०-२३। मधुच्छन्दाः २५, २६॥

देवता—अग्न्यादयः १। ईश्वरः २, ३। इन्द्रः ४, १०, १७। सूर्यः ५। वैश्वानरः ६, ८, ९। वैश्वानरोऽग्निः ७। अग्निः ११-१३, १६, २६। संवत्सरः १४। विद्वान् १५, १८, २०, २१, २३, २४। विद्वांसः १९। सोमः २२, २५॥

छन्दः—अभिकृतिः १। विराडत्यष्टिः २, ७। भुरिगत्यष्टिः ३। स्वराड्जगती ४, ९। भुरिग्जगती ५। जगती ६, ८, २४। निचृज्जगती १०। बृहती ११। विराडनुष्टुप् १२। विराड्गायत्री १३, १५। भुरिग्बृहती १४। निचृद्गायत्री १६, १७। स्वराड्गायत्री १८। त्रिष्टुप् १९। गायत्री २०-२२, २५, २६। भुरिक्पङ्क्तिः २३॥

स्वरः—ऋषभः १। गान्धारः २, ३, ७, १२। निषादः ४-६, ८-१०, २४। मध्यमः ११, १४। षड्जः १३, १५-१८, २०-२२, २५, २६। धैवतः १९। पञ्चमः २३॥

अ॒ग्निश्च॑ पृथि॒वी च॒ सन्न॑ते॒ ते मे॒ सं न॑मताम॒दो वा॒युश्चा॒न्तरि॑क्षं च॒ सन्न॑ते॒ ते मे॒ सं न॑मताम॒दऽआ॑दि॒त्यश्च॒ द्यौश्च॒ सन्न॑ते॒ ते मे॒ सं न॑मताम॒दऽआप॑श्च॒ वरु॑णश्च॒ सन्न॑ते॒ ते मे॒ सं न॑मताम॒दः। स॒प्त स॒ꣳसदो॑ऽअष्ट॒मी भू॑त॒साध॑नी सका॑माँ॒२॥ऽअध्व॑नस्कुरु सं॒ज्ञान॑मस्तु मे॒ऽमुना॑ ॥१॥

यथे॒मां वाचं॑ कल्या॒णीमा॒वदा॑नि॒ जने॑भ्यः। ब्र॒ह्म॒रा॒ज॒न्या॒भ्याꣳशू॒द्राय॒ चार्य्या॑य च॒ स्वाय॒ चार॑णाय च। प्रि॒यो दे॒वानां॒ दक्षि॑णायै दा॒तुरि॒ह भू॑यासम॒यं मे॒ कामः॒ समृ॑ध्यता॒मुप॑ मा॒दो न॑मतु ॥२॥

बृह॑स्पते॒ऽअति॒ यद॒र्योऽअर्हा॑द् द्यु॒मद्वि॒भाति॒ क्रतु॑म॒ज्जने॑षु। यद्दी॒दय॒च्छव॑सऽऋतप्रजात॒ तद॒स्मासु॒ द्रवि॑णं धेहि चि॒त्रम्। उ॒प॒या॒मगृ॑हितोऽसि॒ बृह॒स्पत॑ये त्वै॒ष ते॒ योनि॒र्बृह॒स्पत॑ये त्वा ॥३॥

इन्द्र॒ गोम॑न्नि॒हा या॑हि॒ पिबा॒ सोम॑ꣳशतक्रतो। वि॒द्यद्भि॒र्ग्राव॑भिः सु॒तम्। उ॒प॒या॒मगृ॑हितो॒ऽसीन्द्रा॑य त्वा॒ गोम॑तऽए॒ष ते॒ योनि॒रिन्द्रा॑य त्वा॒ गोम॑ते॥४॥

इन्द्रा या॑हि वृत्रह॒न् पिबा॒ सोम॑ꣳशतक्रतो। गोम॑द्भि॒र्ग्राव॑भिः सु॒तम्। उ॒प॒या॒मगृ॑हितो॒ऽसीन्द्रा॑य त्वा॒ गोम॑तऽए॒ष ते॒ योनि॒रिन्द्रा॑य त्वा॒ गोम॑ते॥५॥

ऋ॒तावा॑नं वैश्वान॒रमृ॒तस्य॒ ज्योति॑ष॒स्पति॑म्। अज॑स्रं घ॒र्ममी॑महे ।
उ॒प॒या॒मगृ॑हितोऽसि वैश्वान॒राय॑ त्वै॒ष ते॒ योनि॑र्वैश्वान॒राय॑ त्वा ॥६॥

वै॒श्वा॒न॒रस्य॑ सुम॒तौ स्या॑म॒ राजा॒ हि कं॒ भुव॑नानामभि॒श्रीः ।
इ॒तो जा॒तो विश्व॑मि॒दं वि च॑ष्टे वैश्वान॒रो य॑तते॒ सूर्ये॑ण ।
उ॒प॒या॒मगृ॑हितोऽसि वैश्वान॒राय॑ त्वै॒ष ते॒ योनि॑र्वैश्वान॒राय॑ त्वा ॥७॥

वै॒श्वा॒न॒रो न॑ऽऊ॒तय॒ऽआ प्र या॑तु परा॒वतः॑। अ॒ग्निरु॒क्थेन॒ वाह॑सा।
उ॒प॒या॒मगृ॑हितोऽसि वैश्वान॒राय॑ त्वै॒ष ते॒ योनि॑र्वैश्वान॒राय॑ त्वा ॥८॥

अ॒ग्निर्ऋषिः॒ पव॑मानः॒ पाञ्च॑जन्यः पु॒रोहि॑तः। तमी॑महे महाग॒यम्।
उ॒प॒या॒मगृ॑हितोऽस्य॒ग्नये॑ त्वा॒ वर्च॑सऽए॒ष ते॒ योनि॑र॒ग्नये॑ त्वा॒ वर्च॑से॥९॥

म॒हाँ२॥ऽइन्द्रो॒ वज्र॑हस्तः षोड॒शी शर्म॑ यच्छतु। हन्तु॑ पा॒प्मानं॒ यो॒ऽस्मान्द्वेष्टि॑।
उ॒प॒या॒मगृ॑हितोऽसि महे॒न्द्राय॑ त्वै॒ष ते॒ योनि॑र्महे॒न्द्राय॑ त्वा ॥१०॥

तं वो॑ द॒स्ममृ॑ती॒षहं॒ वसो॑र्मन्दा॒नमन्ध॑सः ।
अ॒भि व॒त्सं न स्वस॑रेषु धे॒नव॒ऽइन्द्रं॑ गी॒र्भिर्न॑वामहे ॥११॥

यद्वाहि॑ष्ठं॒ तद॒ग्नये॑ बृ॒हद॑र्च विभावसो। महि॑षीव॒ त्वद्र॒यिस्त्वद्वाजा॒ऽउदी॑रते॥१२॥

एह्यू॒ षु ब्रवा॑णि॒ तेऽग्न॑ऽइ॒त्थेत॑रा॒ गिरः॑। ए॒भिर्व॑र्द्धास॒ऽइन्दु॑भिः॥१३॥

ऋ॒तव॑स्ते य॒ज्ञं वि त॑न्वन्तु॒ मासा॑ र॒क्षन्तु॑ ते॒ हविः॑ ।
सं॒व॒त्स॒रस्ते॑ य॒ज्ञं द॑धातु नः प्र॒जां च॒ परि॑ पातु नः ॥१४॥

उ॒प॒ह्वरे गि॑री॒णाꣳस॑ङ्ग॒मे च॑ न॒दीना॑म्। धि॒या विप्रो॑ऽअजायत ॥१५॥

उ॒च्चा ते॑ जा॒तमन्ध॑सो दि॒वि सद्भूम्या द॑दे। उ॒ग्रꣳशर्म॒ महि॒ श्रवः॑॥१६॥

स न॒ऽइन्द्रा॑य॒ यज्य॑वे॒ वरु॑णाय म॒रुद्भ्यः॑। व॒रि॒वो॒वित्परि॑ स्रव॥१७॥

ए॒ना विश्वा॑न्य॒र्यऽआ द्यु॒म्नानि॒ मानु॑षाणाम्। सिषा॑सन्तो वनामहे॥१८॥

अनु॑ वी॒रैरनु॑ पुष्यास्म॒ गोभि॒रन्वश्वै॒रनु॒ सर्वे॑ण पु॒ष्टैः ।
अनु॒ द्विप॒दानु॒ चतु॑ष्पदा व॒यं दे॒वा नो॑ य॒ज्ञमृ॑तु॒था न॑यन्तु ॥१९॥

अग्ने॒ पत्नी॑रि॒हा व॑ह दे॒वाना॑मुश॒तीरुप॑। त्वष्टा॑र॒ꣳसोम॑पीतये ॥२०॥

अ॒भि य॒ज्ञं गृ॑णीहि नो॒ ग्नावो॒ नेष्टः॒ पिब॑ऽऋ॒तुना॑। त्वꣳहि र॑त्न॒धाऽअसि॑॥२१॥

द्र॒वि॒णो॒दाः पि॑पीषति जु॒होत॒ प्र च॑ तिष्ठत। ने॒ष्ट्रादृ॒तुभि॑रिष्यत॥२२॥

तवा॒यꣳसोम॒स्त्वमेह्य॒र्वाङ् श॑श्वत्त॒मꣳसु॒मना॑ऽअ॒स्य पा॑हि ।
अ॒स्मिन्य॒ज्ञे ब॒र्हिष्या नि॒षद्या॑ दधि॒ष्वेमं ज॒ठर॒ऽइन्दु॑मिन्द्र ॥२३॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अमेवं नः सुहवाऽआ हि गन्तन नि बर्हिषि सदतना रणिष्टन।
अथा मदस्व जुजुषाणोऽअन्धसस्त्वष्टर्देवेभिर्जनिभिः सुमद्गणः॥२४॥
स्वादिष्ठया मदिष्ठया पवस्व सोम धारया। इन्द्राय पातवे सुतः॥२५॥
रक्षोहा विश्वचर्षणिरभि योनिमयोहते। द्रोणे सधस्थमासदत्॥२६॥

इति षड्विंशोऽध्यायः॥

अथ सप्तविंशोऽध्यायः॥

—:o:—

ऋषिः—अग्निः १-७, १०-२०। प्रजापतिः ८, ९, २१, २२। वसिष्ठः २३, २४, २७, २८, ३५। हिरण्यगर्भः २५, २६। गृत्समदः २९, ३२, ३३। पुरुमीढः ३०। अजमीढः ३१। अङ्गिरसः ३४। शँय्युबार्हस्पत्यः ३६-३८। वामदेवः ३९-४१। शंयुः ४२, ४४, ४५। भार्गवः ४३॥

देवता—अग्निः १, ३-७, ११, १८, ३९, ४३, ४५। सामिधेन्यः २। विश्वेदेवाः ८, १२। अश्व्यादयः ९। सूर्यः १०। यज्ञः १३, १७, ४२। वह्निः १४। वायुः १५, २३, २४, २७-३५, ४४। वेद्यः १६। इडादयो लिङ्गोक्ताः १९। त्वष्टा २०। विद्वांसः २१। इन्द्रः २२, ३७, ३८, ४०, ४१। प्रजापतिः २५, २६। परमेश्वरः ३६॥

छन्दः—त्रिष्टुप् १, २, ८, ९, २४, २६, २८। विराट्त्रिष्टुप् ३, ३३। स्वराट्त्रिष्टुप् ४, २५। स्वराट्पङ्क्तिः ५, २७। भुरिग्बृहती ६। निचृज्जगती ७। विराडनुष्टुप् १०। उष्णिक् ११, १२। निचृदुष्णिक् १३, १६, १७, २०, २२। भुरिगुष्णिक् १४। स्वराडुष्णिक् १५। भुरिग्गायत्री १८। गायत्री १९, ३१, ३२, ३९। विराडुष्णिक् २१। निचृत्त्रिष्टुप् २३। निचृद्-गायत्री २९, ३४, ४०। अनुष्टुप् ३०। विराडनुष्टुप् ३५, ४३। निचृत्पङ्क्तिः ३६। निचृदनुष्टुप् ३७। स्वराड्बृहती ३८, ४४। पादनिचृद्गायत्री ४१। बृहती ४२। निचृदभिकृतिः ४५॥

स्वरः—धैवतः १-४, ८, ९, २३-२६, २८, ३३। पञ्चमः ५, २७, ३६। मध्यमः ६, ३८, ४२, ४४। निषादः ७। गान्धारः १०, ३०, ३५, ३७, ४३। ऋषभः ११-१७, २०-२२, ४५। षड्जः १८, १९, २९, ३१, ३२, ३४, ३९-४१॥

समास्त्वाग्नऽऋतवो वर्द्धयन्तु संवत्सराऽऋषयो यानि सत्या ।
सं दिव्येन दीदिहि रोचनेन विश्वाऽआ भाहि प्रदिशश्चतस्रः॥१॥
सं चेध्यस्वाग्ने प्र च बोधयैनमुच्च तिष्ठ महते सौभगाय ।
मा च रिषदुपसत्ता तेऽअग्ने ब्रह्माणस्ते यशसः सन्तु माऽन्ये ॥२॥
त्वामग्ने वृणते ब्राह्मणाऽइमे शिवोऽअग्ने संवरणे भवा नः ।
सपत्नहा नोऽअभिमातिजिच्च स्वे गये जागृह्यप्रयुच्छन् ॥३॥
इहैवाग्नेऽअधि धारया रयिं मा त्वा नि क्रन् पूर्वचितो निकारिणः।
क्षत्रमग्ने सुयममस्तु तुभ्यमुपसत्ता वर्द्धतां तेऽअनिष्टृतः ॥४॥
क्षत्रेणाग्ने स्वायुः सऽरभस्व मित्रेणाग्ने मित्रधेये यतस्व ।
सजातानां मध्यमस्थाऽएधि राज्ञामग्ने विहव्यो दीदिहीह ॥५॥
अति निहोऽअति स्त्रिचोऽत्यचित्तिमत्यरातिमग्ने ।
विश्वा ह्यग्ने दुरिता सहस्वाथास्मभ्यꣳसहवीरा रयिं दाः ॥६॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अनाधृष्यो जातवेदाऽअनिष्टृतो विराडग्ने क्षत्रभृद्दीदिहीह । विश्वाऽआशाः प्रमुञ्चन्मानुषीर्भिय इशिवेभिरद्य परि पाहि नो वृधे॥७॥

बृहस्पते सवितर्बोधयैनꣳसश्शितं चित्सन्तराꣳसश्शिशाधि । वर्धयैनं महते सौभगाय विश्वंऽएनमनु मदन्तु देवाः ॥८॥

अमुत्रभूयादधु यद्यमस्य बृहस्पतेऽअभिशस्तेरमुञ्चः । प्रत्यौहतामश्विना मृत्युमस्माद्देवानामग्ने भिषजा शचीभिः ॥९॥

उद्वयन्तमसस्परि स्वः पश्यन्तऽउत्तरम् । देवं देवत्रा सूर्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम् ॥१०॥

ऊर्ध्वाऽअस्य समिधो भवन्त्यूर्ध्वा शुक्रा शोचीꣳष्यग्नेः । द्युमत्तमा सुप्रतीकस्य सूनोः ॥११॥

तनूनपादसुरो विश्ववेदा देवो देवेषु देवः। पथो अनक्तु मध्वा घृतेन॥१२॥

मध्वा यज्ञं नक्षसे प्रीणानो नराशꣳसो अग्ने । सुकृद्देवः सविता विश्ववारः ॥१३॥

अच्छायमेति शवसा घृतेनेडानो वह्निर्नमसा । अग्निꣳस्रुचोऽअध्वरेषु प्रयत्सु ॥१४॥

स यक्षदस्य महिमानमग्नेः सऽईं मन्द्रा सुप्रयसः । वसुश्चेतिष्ठो वसुधातमश्च ॥१५॥

द्वारो देवीरन्वस्य विश्वे व्रता ददन्तेऽअग्नेः । उरुव्यचसो धाम्ना पत्यमानाः ॥१६॥

तेऽअस्य योषणे दिव्ये न योनाऽउषासानक्ता । इमं यज्ञमवतामध्वरं नः ॥१७॥

दैव्या होताराऽऊर्ध्वमध्वरं नोऽग्नेर्जिह्वामभि गृणीतम् । कृणुतं नः स्विष्टिम् ॥१८॥

तिस्रो देवीर्बर्हिरेदꣳसदन्त्विडा सरस्वती भारती। मही गृणाना॥१९॥

तन्नस्तुरीपमद्भुतं पुरुक्षु त्वष्टा सुवीर्यम्। रायस्पोषं वि ष्यतु नाभिमस्मे॥२०॥

वनस्पतेऽव सृजा रराणस्त्मना देवेषु। अग्निर्हव्यꣳशमिता सूदयाति॥२१॥

अग्ने स्वाहा कृणुहि जातवेदऽइन्द्राय हव्यम् । विश्वे देवा हविरिदं जुषन्ताम् ॥२२॥

पीवोऽअन्ना रयिवृधः सुमेधाः श्वेतः सिषक्ति नियुताभिरभिश्रीः। ते वायवे समनसो वि तस्थुर्विश्वेन्नरः स्वपत्यानि चक्रुः ॥२३॥

राये नु यं जज्ञतू रोदसीमे राये देवी धिषणा धाति देवम् । अधं वायुं नियुतः सश्चत स्वाऽउत श्वेतं वसुधितिं निरेके ॥२४॥

आपो ह यद् बृहतीर्विश्वमायन् गर्भं दधाना जनयन्तीरग्निम् । ततो देवानाꣳसमवर्त्ततासुरेकः कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥२५॥

यश्चिदापो महिना पर्यपश्यद्दक्षं दधाना जनयन्तीर्यज्ञम् । यो देवेष्वधि देवऽएकऽआसीत् कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥२६॥

प्र याभिर्यासि दाश्वाꣳसमच्छा नियुद्भिर्वायविष्टये दुरोणे । नि नो रयिꣳसुभोजसं युवस्व नि वीरं गव्यमश्व्यं च राधः ॥२७॥

आ नो नियुद्भिः शतिनीभिरध्वरꣳसहस्त्रिणीभिरुप याहि यज्ञम्। वायोऽअस्मिन्सवने मादयस्व यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥२८॥

नियुत्वान् वायवा गह्ययꣳशुक्रोऽअयामि ते। गन्तासि सुन्वतो गृहम्॥२९॥

वायो शुक्रोऽअयामि ते मध्वोऽअग्रं दिविष्टिषु । आ याहि सोमपीतये स्पार्हो देव नियुत्वता ॥३०॥

वायुरग्रेगा यज्ञप्रीः साकं गन्मनसा यज्ञम्। शिवो नियुद्भिः शिवाभिः॥३१॥

वायो ये ते सहस्त्रिणो रथास्तेभिरा गहि। नियुत्वान्त्सोमपीतये॥३२॥

एकया च दशभिश्च स्वभूते द्वाभ्यामिष्टये विꣳशती च । तिसृभिश्च वहसे त्रिꣳशता च नियुद्भिर्वायविह ता वि मुञ्च ॥३३॥

तवं वायवृतस्पते त्वष्टुर्जामातरद्भुत। अवाꣳस्या वृणीमहे ॥३४॥

अभि त्वा शूर नोनुमोऽदुग्धाऽइव धेनवः । ईशानमस्य जगतः स्वर्दृशमीशानमिन्द्र तस्थुषः ॥३५॥

न त्वावाँ२॥ऽअन्यो दिव्यो न पार्थिवो न जातो न जनिष्यते । अश्वायन्तो मघवन्निन्द्र वाजिनो गव्यन्तस्त्वा हवामहे ॥३६॥

त्वामिद्धि हवामहे सातौ वाजस्य कारवः । त्वां वृत्रेष्विन्द्र सत्पतिं नरस्त्वां काष्ठास्वर्वतः ॥३७॥

स त्वं नश्चित्र वज्रहस्त धृष्णुया महꣳस्तवानोऽअद्रिवः । गामश्वꣳरथ्यमिन्द्र सं किर सत्रा वाजं न जिग्युषे ॥३८॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कया नश्चित्रऽआ भुवदूती सदावृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता॥३९॥
कस्त्वा सत्यो मदानां मꣳहिष्ठो मत्सदन्धसः। दृढा चिदारुजे वसु॥४०॥
अभी षु णः सखीनामविता जरितॄणाम्। शतं भवास्यूतये॥४१॥
यज्ञायज्ञा वोऽअग्नये गिरागिरा च दक्षसे ।
प्रप्र वयममृतं जातवेदसं प्रियं मित्रं न शꣳसिषम् ॥४२॥
पाहि नोऽअग्नऽएकया पाह्युत द्वितीयया ।
पाहि गीर्भिस्तिसृभिरूर्जां पते पाहि चतसृभिर्वसो ॥४३॥
ऊर्जो नपात्ꣳस हिनायमस्मयुर्दाशेम हव्यदातये ।
भुवद्वाजेष्वविता भुवद् वृधऽउत त्राता तनूनाम् ॥४४॥
संवत्सरोऽसि परिवत्सरोऽसीदावत्सरोऽसीद्वत्सरोऽसि वत्सरोऽसि।
उषसस्ते कल्पन्तामहोरात्रास्ते कल्पन्तामर्द्धमासास्ते कल्पन्तां मासास्ते
कल्पन्तामृतवस्ते कल्पन्ताꣳसंवत्सरस्ते कल्पताम्। प्रेत्याऽएत्यै सं चाञ्च
प्र च सारय। सुपर्णचिदसि तया देवतयाङ्गिरस्वद् ध्रुवः सीद ॥४५॥

इति सप्तविंशोऽध्यायः॥

अथाष्टाविंशोऽध्यायः

—:o:—

ऋषिः—बृहदुक्थो वामदेवः १-६। गोतमः ७। बृहदुक्थो वामदेव्यः ८। प्रजापतिः ९-११। अश्विनौ १२-२३। सरस्वती २४-४६॥

देवता—इन्द्रः १-३, ५, ६, ८, ९, ११-१३, १५, १६, १८-२१, २५-२८, ३२, ३३, ३५-४६। रुद्रः ४। अश्विनौ ७, १७, ३०। बृहस्पतिः १०। अहोरात्रे १४, २९। अग्निः २२-२४, ३४। वाय्वः ३१॥

छन्दः—निचृत्त्रिष्टुप् १, ४, २२। निचृदतिजगती २, ५, ९, १२, ४२, ४३। स्वराट्पङ्क्ति ३, १४। त्रिष्टुप् ६, २१। जगती ७। निचृज्जगती ८। स्वराडतिजगती १०, २७, ४५। निचृच्छक्वरी ११, २६, ३९। भुरिक्शक्वरी १३, ३०-३२। भुरिगतिजगती १५, २५, ३७, ३८, ४४। भुरिगाकृतिः १६। भुरिग्जगती १७, ४१। अतिजगती १८, ४०। कृतिः १९, २३। निचृदतिशक्वरी २०, २९। स्वराड्जगती २४। स्वराट्शक्वरी २८। निचृदत्यष्टिः ३३। अतिशक्वरी ३४। भुरिक्त्रिष्टुप् ३५, ३६। आकृतिः ४६॥

स्वरः—धैवतः १, ४, ६, ११, १३, २१, २२, २६, २८, ३०-३२, ३५, ३६, ३९। निषादः २, ५, ७-१०, १२, १५, १७-१९, २३-२५, २७, ३७, ३८, ४०-४५। पञ्चमः ३, १४, १६, २०, २९, ३४, ४६। गान्धारः ३३॥

होता यक्षत्समिधेन्द्रमिडस्पदे नाभा पृथिव्याऽअधि ।
दिवो वर्ष्मन्त्समिध्यतऽओजिष्ठश्चर्षणीसहां वेत्वाज्यस्य होतर्यज॥१॥
होता यक्षत्तनूनपातमूतिभिर्जेतारमपराजितम्। इन्द्रं देवꣳस्वर्विदं
पृथिभिर्मधुमत्तमैर्नराशꣳसेन तेजसा वेत्वाज्यस्य होतर्यज ॥२॥
होता यक्षदिडाभिरिन्द्रमीडितमाजुह्वानमर्मर्त्यम् ।
देवो देवैः सवीर्यो वज्रहस्तः पुरन्दरो वेत्वाज्यस्य होतर्यज ॥३॥
होता यक्षद् बर्हिषीन्द्रं निषद्वरं वृषभं नर्यापसम् ।
वसुभी रुद्रैरादित्यैः सयुग्भिर्बर्हिरासदद्वेत्वाज्यस्य होतर्यज ॥४॥
होता यक्षदोजो न वीर्युꣳसहो द्वारऽइन्द्रमवर्द्धयन्। सुप्रायणाऽअस्मिन्
यज्ञे वि श्रयन्तामृतावृधो द्वारऽइन्द्राय मीढुषे व्यन्त्वाज्यस्य होतर्यज॥५॥
होता यक्षदुषेऽइन्द्रस्य धेनू सुदुघे मातरा मही ।
सवातरौ न तेजसा वत्समिन्द्रमवर्द्धतां वीतामाज्यस्य होतर्यज ॥६॥
होता यक्षद्दैव्या होतारा भिषजा सखाया हुविषेन्द्रं भिषज्यतः ।
कवी देवौ प्रचेतसाविन्द्राय धत्तऽइन्द्रियं वीतामाज्यस्य होतर्यज॥७॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

होता॑ यक्षत्ति॒स्रो दे॒वीर्न भे॑ष॒जं त्रय॑स्त्रि॒धात॑वो॒ऽपस॒ऽइडा॒ सर॑स्वती॒
भार॑ती म॒हीः। इन्द्र॑पत्नीर्ह॒विष्म॑ती॒र्व्यन्त्वाज्य॑स्य॒ होत॒र्यज॑ ॥८॥
होता॑ यक्ष॒त्त्वष्टा॑र॒मिन्द्रं॑ दे॒वं भि॒षज॑ꣳसु॒यजं॑ घृत॒श्रिय॑म् ।
पु॒रु॒रूप॑ꣳसु॒रेत॑सं म॒घोन॒मिन्द्रा॑य॒ त्वष्टा॒ दध॑दिन्द्रि॒याणि॒ वेत्वाज्य॑स्य॒ होत॒र्यज॑॥९॥
होता॑ यक्ष॒द्वन॒स्पति॑ꣳशमि॒तार॑ꣳश॒तक्र॑तुं धि॒यो जो॒ष्टार॑मिन्द्रि॒यम्।
मध्वा॑ सम॒ञ्जन् प॒थिभिः॑ सु॒गेभिः॒ स्वदा॑ति य॒ज्ञं मधु॑ना घृ॒तेन॒
वेत्वाज्य॑स्य॒ होत॒र्यज॑ ॥१०॥
होता॑ यक्ष॒दिन्द्र॒ꣳस्वाहाज्य॑स्य॒ स्वाहा॒ मेद॑सः॒ स्वाहा॑
स्तो॒काना॒ꣳस्वाहा॒ स्वाहा॑कृतीना॒ꣳस्वाहा॑ ह॒व्यसू॑क्तीनाम् ।
स्वाहा॑ दे॒वाऽआ॑ज्य॒पा जु॑षा॒णाऽइन्द्र॒ऽआज्य॑स्य॒ व्यन्तु॒ होत॒र्यज॑ ॥११॥
दे॒वं ब॒र्हिरिन्द्र॑ꣳसुदे॒वं दे॒वैर्वी॒रव॑त् स्ती॒र्णं वेद्या॑मवर्द्धयत्। वस्तो॑र्वृ॒तं
प्राक्तोर्भृ॒तꣳरा॒या ब॒र्हिष्म॒तोऽत्य॑गाद्वसु॒वने॑ वसु॒धेय॑स्य वेतु॒ यज॑॥१२॥
दे॒वीर्द्वार॒ऽइन्द्र॑ꣳसङ्घा॒ते वी॒ड्वीर्याम॑न्नवर्द्धयन्। आ व॒त्सेन॒ तरु॑णेन कुमा॒रेण॑
च मीव॒तापार्वा॑णꣳरे॒णुक॑काटं नुदन्तां व॑सु॒वने॑ वसु॒धेय॑स्य व्यन्तु॒ यज॑॥१३॥
दे॒वीऽउ॒षासा॒नक्तेन्द्रं॑ य॒ज्ञे प्र॑य॒त्य॒ह्वेताम् ।
दैवी॒र्विशः॒ प्राया॑सिष्टा॒ꣳसुप्री॑ते॒ सुधि॑ते व॑सु॒वने॑ वसु॒धेय॑स्य वीतां॒ यज॑॥१४॥
दे॒वी जोष्ट्री॒ वसु॑धिती दे॒वमिन्द्र॑मवर्द्धताम्। अया॑व्य॒न्याघा द्वेषा॒ꣳस्यान्या
व॑क्ष॒द्वसु॒ वार्या॑णि॒ यज॑मानाय शिक्षि॒ते व॑सु॒वने॑ वसु॒धेय॑स्य वीतां॒ यज॑॥१५॥
दे॒वीऽऊ॒र्जाहु॑ति॒ दुघे॑ सु॒दुघे॒ पय॒सेन्द्र॑मवर्द्धताम्। इष॒मूर्ज॑म॒न्या व॑क्ष॒त्सग्धिꣳ
सपी॑तिम॒न्या नवे॑न॒ पूर्वं॒ दय॑माने पुरा॒णेन॒ नव॒मधा॑ता॒मूर्ज॑मू॒र्जाहु॑तीऽऊ॒र्ज-
यमाने॒ वसु॒ वार्या॑णि॒ यज॑मानाय शिक्षि॒ते व॑सु॒वने॑ वसु॒धेय॑स्य वीतां॒ यज॑॥१६॥
दे॒वा दैव्या॒ होता॑रा दे॒वमिन्द्र॑मवर्द्धताम्। ह॒ताघ॑शꣳसा॒वाभा॑र्ष्टां॒ वसु॒
वार्या॑णि॒ यज॑मानाय शिक्षि॒तौ व॑सु॒वने॑ वसु॒धेय॑स्य वीतां॒ यज॑॥१७॥
दे॒वीस्ति॒स्रस्ति॒स्रो दे॒वीः पति॒मिन्द्र॑मवर्द्धयन्। अस्पृ॑क्ष॒द्भार॑ती॒ दिव॑ꣳ
रु॒द्रैर्य॒ज्ञꣳसर॑स्व॒तीडा॒ वसु॑मती गृ॒हान्व॑सु॒वने॑ वसु॒धेय॑स्य व्यन्तु॒ यज॑॥१८॥
दे॒वऽइन्द्रो॒ नरा॒शꣳस॑स्त्रिवरू॒थस्त्रि॑बन्धु॒रो दे॒वमिन्द्र॑मवर्द्धयत्। श॒तेन॑
शितिपृ॒ष्ठाना॒माहि॑तः स॒हस्रे॑ण॒ प्र व॑र्त्तते मि॒त्रावरु॒णेद॑स्य हो॒त्रमर्ह॑तो॒
बृह॒स्पति॑ स्तो॒त्रम॒श्विनाध्व॑र्यवं वसु॒वने॑ वसु॒धेय॑स्य वेतु॒ यज॑ ॥१९॥

दे॒वो दे॒वैर्वन॒स्पति॒र्हिर॑ण्यपर्णो॒ मधु॑शाखः सुपिप्प॒लो दे॒वमिन्द्र॑मवर्द्धयत्।
दिव॒मग्रे॑णास्पृक्ष॒दान्तरि॑क्षं पृथि॒वीम॑दृꣳहीद्व॑सु॒वने॑ वसु॒धेय॑स्य वेतु॒ यज॑॥२०॥
दे॒वं ब॒र्हिर्वारि॑तीनां दे॒वमिन्द्र॑मवर्द्धयत् ।
स्वा॒स॒स्थमिन्द्रे॒णास॑न्नम॒न्या ब॒र्हीꣳष्य॒भ्य॒भूद्वसु॒वने॑ वसु॒धेय॑स्य वेतु॒ यज॑॥२१॥
दे॒वाऽअ॒ग्निः स्वि॑ष्ट॒कृद्दे॒वमिन्द्र॑मवर्द्धयत्। स्वि॑ष्टं कु॒र्वन्त्स्वि॑ष्ट॒कृत्
स्वि॑ष्टम॒द्य क॑रोतु नो वसु॒वने॑ वसु॒धेय॑स्य वेतु॒ यज॑ ॥२२॥
अ॒ग्निम॒द्य होता॑रमवृणीता॒यं यज॑मानः॒ पच॒न् पक्ती॒ः पच॑न् पुरो॒डाशं॑
ब॒ध्नन्निन्द्रा॑य॒ छाग॑म्। सू॒प॒स्थाऽअ॒द्य दे॒वो वन॒स्पति॑रभव॒दिन्द्रा॑य॒ छागे॑न।
अघ॒त्तं मे॑द॒स्तः प्रति॑ पच॒ताग्र॑भी॒दवी॑वृधत्पुरो॒डाशे॑न ॥२३॥
होता॑ यक्षत्समिधा॒नं म॒हद्यशः॒ सुस॑मिद्धं॒ वरे॑ण्यम॒ग्निमिन्द्रं॑ वयो॒धस॑म्।
गा॒य॒त्रीं छन्द॑ऽइन्द्रि॒यं त्र्यविं॒ गां वयो॒ दध॒द्वेत्वाज्य॑स्य॒ होत॒र्यज॑॥२४॥
होता॑ यक्ष॒त्तनू॒नपा॑तमु॒द्भिदं॒ यं गर्भ॒मदि॑तिर्द॒धे शुचि॒मिन्द्रं॑ वयो॒धस॑म्।
उ॒ष्णिहं॒ छन्द॑ऽइन्द्रि॒यं दि॑त्य॒वाहं॒ गां वयो॒ दध॒द्वेत्वाज्य॑स्य॒ होत॒र्यज॑॥२५॥
होता॑ यक्षदी॒डेन्य॑मीडि॒तं वृ॑त्र॒हन्त॑म॒मिडा॑भि॒रीड्य॒ꣳसहः॒ सोम॒मिन्द्रं॑
वयो॒धस॑म्। अ॒नु॒ष्टुभं॒ छन्द॑ऽइन्द्रि॒यं पञ्चा॑विं॒ गां वयो॒
दध॒द्वेत्वाज्य॑स्य॒ होत॒र्यज॑ ॥२६॥
होता॑ यक्षत्सुब॒र्हिषं॑ पूष॒ण्वन्त॒मम॑र्त्य॒ꣳसीद॑न्तं ब॒र्हिषि॑ प्रि॒ये॒ऽमृतेन्द्रं॑ वयो॒धस॑म्
बृ॒ह॒तीं छन्द॑ऽइन्द्रि॒यं त्रि॑व॒त्सं गां वयो॒ दध॒द्वेत्वाज्य॑स्य॒ होत॒र्यज॑॥२७॥
होता॑ यक्ष॒द्व्यच॑स्वतीः सुप्राय॒णाऽऋ॑ता॒वृधो॒ द्वारो॑ दे॒वीर्हि॑र॒ण्य-
यी॑र्ब्र॒ह्माण॒मिन्द्रं॑ वयो॒धस॑म्। प॒ङ्क्तिं छन्द॑ऽइ॒हेन्द्रि॒यं तु॑र्य॒वाहं॒ गां
वयो॒ दध॒द्व्यन्त्वाज्य॑स्य॒ होत॒र्यज॑ ॥२८॥
होता॑ यक्षत्सु॒पेश॑सा सुशि॒ल्पे बृ॑ह॒तीऽउ॒भे नक्तो॒षासा॒ न द॑र्श॒ते
विश्व॒मिन्द्रं॑ वयो॒धस॑म्। त्रि॒ष्टुभं॒ छन्द॑ऽइ॒हेन्द्रि॒यं प॑ष्ठ॒वाहं॒ गां
वयो॒ दध॑द्वी॒तामाज्य॑स्य॒ होत॒र्यज॑ ॥२९॥
होता॑ यक्ष॒त्प्रचे॑तसा दे॒वाना॑मुत्त॒मं यशो॒ होता॑रा॒ दैव्या॑ क॒वी
स॒युजेन्द्रं॑ वयो॒धस॑म्। जग॑तीं॒ छन्द॑ऽइन्द्रि॒यम॑न॒ड्वाहं॒ गां वयो॒
दध॑द्वी॒तामाज्य॑स्य॒ होत॒र्यज॑ ॥३०॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

होता॑ यक्ष॒त्पेश॑स्वतीस्ति॒स्रो दे॒वीर्हि॑र॒ण्ययी॒र्भार॑तीर्बृह॒तीर्म॒हीः
पति॒मिन्द्रं॑ वयो॒धस॑म्। वि॒राजं॒ छन्द॑ऽइ॒हेन्द्रि॒यं धे॒नुं गां न वयो॒
दध॒द्व्यन्त्वाज्य॑स्य॒ होत॒र्यज॑ ॥३१॥
होता॑ यक्षत्सु॒रेत॑सं॒ त्वष्टा॑रं पु॒ष्टिवर्द्ध॑नꣳरू॒पाणि॒ बिभ्र॑तं॒
पृथ॒क् पुष्टि॒मिन्द्रं॑ वयो॒धस॑म्। द्विप॒दं॒ छन्द॑ऽइन्द्रि॒यमु॒क्षाणं॒
गां न वयो॒ दध॒द्वेत्वाज्य॑स्य॒ होत॒र्यज॑ ॥३२॥
होता॑ यक्ष॒द्वन॒स्पति॑ꣳशमि॒तार॑ꣳश॒तक्र॑तु॒ꣳहिर॑ण्यपर्णमु॒क्थिन॑ꣳरश॒नां बिभ्र॑तं
व॒शिं भग॒मिन्द्रं॑ वयो॒धस॑म्। क॒कुभं॒ छन्द॑ऽइ॒हेन्द्रि॒यं व॒शां वे॒हतं॒
गां वयो॒ दध॒द्वेत्वाज्य॑स्य॒ होत॒र्यज॑ ॥३३॥
होता॑ यक्ष॒त् स्वाहा॑कृतीर॒ग्निं गृ॒हप॑तिं॒ पृथ॒ग्वरु॑णं भेष॒जं क॒विं
क्ष॒त्रमिन्द्रं॑ वयो॒धस॑म्। अति॑च्छन्दसं॒ छन्द॑ऽइन्द्रि॒यं बृ॒हदृ॑ष॒भं
गां वयो॒ दध॒द्व्यन्त्वाज्य॑स्य॒ होत॒र्यज॑ ॥३४॥
दे॒वं ब॒र्हिर्व॑यो॒धसं॑ दे॒वमिन्द्र॑मवर्द्धयत् ।
गा॒य॒त्र्या छन्द॑सेन्द्रि॒यं चक्षु॒रिन्द्रे॒ वयो॒ दध॑द्वसु॒वने॑ वसु॒धेय॑स्य वेतु॒ यज॑॥३५॥
दे॒वीर्द्वारो॑ वयो॒धस॒ꣳशुचि॒मिन्द्र॑मवर्द्धयन्। उ॒ष्णिहा॒ छन्द॑सेन्द्रि॒यं
प्रा॒णमिन्द्रे॒ वयो॒ दध॑द्वसु॒वने॑ वसु॒धेय॑स्य व्यन्तु॒ यज॑ ॥३६॥
दे॒वीऽउ॒षासा॒नक्ता॑ दे॒वमिन्द्रं॑ वयो॒धसं॑ दे॒वी दे॒वम॑वर्द्धताम्। अ॒नु॒ष्टुभा॒
छन्द॑सेन्द्रि॒यं बल॒मिन्द्रे॒ वयो॒ दध॑द्वसु॒वने॑ वसु॒धेय॑स्य वीतां॒ यज॑॥३७॥
दे॒वी जोष्ट्री॒ वसु॑धिती दे॒वमिन्द्रं॑ वयो॒धसं॑ दे॒वी दे॒वम॑वर्द्धताम्।
बृ॒ह॒त्या छन्द॑सेन्द्रि॒यꣳश्रोत्र॒मिन्द्रे॒ वयो॒ दध॑द्वसु॒वने॑ वसु॒धेय॑स्य वीतां॒ यज॑॥३८॥
दे॒वीऽऊ॒र्जाहु॑ती॒ दुघे॑ सु॒दुघे॒ पय॒सेन्द्रं॑ वयो॒धसं॑ दे॒वी दे॒वम॑वर्द्धताम्। प॒ङ्क्त्या
छन्द॑सेन्द्रि॒यꣳशु॒क्रमिन्द्रे॒ वयो॒ दध॑द्वसु॒वने॑ वसु॒धेय॑स्य वीतां॒ यज॑॥३९॥
दे॒वा दैव्या॒ होता॑रा दे॒वमिन्द्रं॑ वयो॒धसं॑ दे॒वौ दे॒वम॑वर्द्धताम्। त्रि॒ष्टुभा॒
छन्द॑सेन्द्रि॒यं त्विषि॒मिन्द्रे॒ वयो॒ दध॑द्वसु॒वने॑ वसु॒धेय॑स्य वीतां॒ यज॑॥४०॥
दे॒वीस्ति॒स्रस्ति॒स्रो दे॒वीर्व॑यो॒धसं॒ पति॒मिन्द्र॑मवर्द्धयन्। जग॑त्या॒
छन्द॑सेन्द्रि॒यꣳ शूष॒मिन्द्रे॒ वयो॒ दध॑द्वसु॒वने॑ वसु॒धेय॑स्य व्यन्तु॒ यज॑॥४१॥
दे॒वो नरा॒शꣳसो॑ दे॒वमिन्द्रं॑ वयो॒धसं॑ दे॒वो दे॒वम॑वर्द्धयत् ।
वि॒राजा॒ छन्द॑सेन्द्रि॒यꣳरू॒पमिन्द्रे॒ वयो॒ दध॑द्वसु॒वने॑ वसु॒धेय॑स्य वेतु॒ यज॑॥४२॥
दे॒वो वन॒स्पति॑र्दे॒वमिन्द्रं॑ वयो॒धसं॑ दे॒वो दे॒वम॑वर्द्धयत् ।
द्विप॑दा॒ छन्द॑सेन्द्रि॒यं भग॒मिन्द्रे॒ वयो॒ दध॑द्वसु॒वने॑ वसु॒धेय॑स्य वेतु॒ यज॑॥४३॥
दे॒वं ब॒र्हिर्वारि॑तीनां दे॒वमिन्द्रं॑ वयो॒धसं॑ दे॒वं दे॒वम॑वर्द्धयत् ।
क॒कुभा॒ छन्द॑सेन्द्रि॒यं यश॒ऽइन्द्रे॒ वयो॒ दध॑द्वसु॒वने॑ वसु॒धेय॑स्य वेतु॒ यज॑॥४४॥
दे॒वोऽअ॒ग्निः स्वि॑ष्ट॒कृद्दे॒वमिन्द्रं॑ वयो॒धसं॑ दे॒वो दे॒वम॑वर्द्धयत्।
अति॑च्छन्दसा॒ छन्द॑सेन्द्रि॒यं क्ष॒त्रमिन्द्रे॒ वयो॒ दध॑द्वसु॒वने॑
वसु॒धेय॑स्य वेतु॒ यज॑ ॥४५॥
अ॒ग्निम॒द्य होता॑रमवृणीता॒यं यज॑मानः॒ पच॒न् पक्तीः॒ पच॑न् पुरो॒डाशं॑
ब॒ध्नन्निन्द्रा॑य वयो॒धसे॒ छाग॑म्। सू॒प॒स्थाऽअ॒द्य दे॒वो वन॒स्पति॑रभव॒दिन्द्रा॑य
वयो॒धसे॒ छागे॑न। अघ॒त्तं मे॑द॒स्तः प्रति॑पच॒ताग्र॑भी॒दवी॑वृधत्पुरो॒डाशे॑न ॥४६॥

इत्यष्टाविंशोऽध्यायः॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अथैकोनत्रिंशोऽध्यायः॥

—:o:—

ऋषिः—बृहदुक्थो वामदेवः १-११। भार्गवो जमदग्निः १२-२४। जमदग्निः २५-३६। मधुच्छन्दाः ३७। भारद्वाजः ३८-६०॥

देवता—अग्निः १-५, ११, १३-१८, २०, २८, ३५। मनुष्याः ६, २१, २३। अश्विनौ ७। सरस्वती ८। त्वष्टा ९। सूर्य १०। यजमानः १२। मनुष्यः १९, २४। वायवः २२। विद्वान् २५-२७, ३४, ३८। अन्तरिक्षम् २९। स्त्रियः ३०, ३१। विद्वांसः ३२, ३६, ३७, ५८। वाग् ३३। वीराः ३९-४६, ४८-५०, ५५। धनुर्वेदाध्यापकाः ४७। महावीरः सेनापतिः ५१। सुवीरः ५२। वीरः ५३, ५४। वादयितारो वीराः ५६, ५७। अग्न्यादयः ५९, ६०॥

छन्दः—त्रिष्टुप् १, ५-९, ११, १२, १७, १८, २७, ३१, ३४, ३९, ४१, ४२, ४४-४६, ४८, ५१। विराट्त्रिष्टुप् २, १४, १९, २२। पङ्क्तिः ३। निचृत्पङ्क्तिः ४। निचृत्त्रिष्टुप् १०, १६, २०, २४-२६, ३०, ३५, ३६, ३८, ४०, ५४। भुरिक्त्रिष्टुप् १३, ५५, ५६। भुरिक्पङ्क्तिः १५, २१, २३, २९, ३३, ५२, ५७। स्वराड्बृहती २८। आर्षीत्रिष्टुप् ३२। गायत्री ३७। जगती ४३। विराड्जगती ४७, ५३। विराडनुष्टुप् ४९, ५०। भुरिगत्यष्टिः ५८। भुरिगतिशक्वरी ५९। विराट्प्रकृतिः प्रकृतिः ६०॥

स्वरः—धैवतः १, २, ४-१४, १६-२०, २२, २४-२७, ३०-३२, ३४-३६, ३८-४२, ४४-४६, ४८, ५१, ५४-५६, ६०। पञ्चमः ३, १५, २१, २३, २९, ३३, ५२, ५७, ५९। मध्यमः २८। षड्जः ३७। निषादः ४३, ४७, ५३। गान्धारः ४९, ५०, ५८॥

समिद्धोऽअञ्जन् कृदरं मतीनां घृतमग्ने मधुमत् पिन्वमानः ।
वाजी वहन्वाजिनं जातवेदो देवानां वक्षि प्रियमा सधस्थम् ॥१॥
घृतेनाज्जन्त्सं पथो देवयानान् प्रजानन्वाज्यप्येतु देवान् ।
अनु त्वा सप्ते प्रदिशः सचन्ताꣳस्वधामस्मै यजमानाय धेहि ॥२॥
ईड्यश्चासि वन्द्यश्च वाजिन्नाशुश्चासि मेध्यश्च सप्ते ।
अग्निष्ट्वा देवैर्वसुभिः सजोषाः प्रीतं वह्निं वहतु जातवेदाः ॥३॥
स्तीर्णं बर्हिः सुष्टरीमा जुषाणोरु पृथु प्रथमानं पृथिव्याम् ।
देवेभिर्युक्तमदितिः सजोषाः स्योनं कृण्वाना सुविते दधातु ॥४॥
एताऽउ वः सुभगा विश्वरूपा वि पक्षोभिः श्रयमाणाऽउदातैः।
कृष्वाः सतीः कवषः शुम्भमाना द्वारो देवीः सुप्रायणा भवन्तु॥५॥
अन्तरा मित्रावरुणा चरन्ती मुखं यज्ञानामभि संविदाने ।
उषासा वाꣳसुहिरण्ये सुशिल्पेऽऋतस्य योनाविह सादयामि ॥६॥
प्रथमा वाꣳसरथिना सुवर्णा देवौ पश्यन्तौ भुवनानि विश्वा ।
अपिप्रयं चोदना वां मिमाना होतारा ज्योतिः प्रदिशा दिशन्ता॥७॥
आदित्यैर्नो भारती वष्टु यज्ञꣳसरस्वती सह रुद्रैर्नऽआवीत् ।
इडोपहूता वसुभिः सजोषा यज्ञं नो देवीरमृतेषु धत्त ॥८॥
त्वष्टा वीरं देवकामं जजान त्वष्टुरर्वी जायतऽआशुरश्वः ।
त्वष्टेदं विश्वं भुवनं जजान बहोः कर्त्तारमिह यक्षि होतः ॥९॥
अश्वो घृतेन त्मन्या समक्तऽउप देवाँ२॥ऽऋतुशः पाथऽएतु ।
वनस्पतिर्देवलोकं प्रजानन्नग्निना हव्या स्वदितानि वक्षत् ॥१०॥
प्रजापतेस्तपसा वावृधानः सद्यो जातो दधिषे यज्ञमग्ने ।
स्वाहाकृतेन हविषा पुरोगा याहि साध्या हविरदन्तु देवाः ॥११॥
यदक्रन्दः प्रथमं जायमानऽउद्यन्त्समुद्रादुत वा पुरीषात् ।
श्येनस्य पक्षा हरिणस्य बाहूऽउपस्तुत्यं महि जातं तेऽअर्वन् ॥१२॥
यमेन दत्तं त्रितऽएनमायुनगिन्द्रऽएणं प्रथमोऽअध्यतिष्ठत् ।
गन्धर्वोऽअस्य रशनामगृभ्णात्सूरादश्वं वसवो निरतष्ट ॥१३॥
असि यमोऽअस्यादित्योऽअर्वन्नसि त्रितो गुह्येन व्रतेन ।
असि सोमेन समया विपृक्तऽआहुस्ते त्रीणि दिवि बन्धनानि ॥१४॥
त्रीणि तऽआहुर्दिवि बन्धनानि त्रीण्यप्सु त्रीण्यन्तः समुद्रे ।
उतेव मे वरुणश्छन्त्स्यर्वन्यत्रा तऽआहुः परमं जनित्रम् ॥१५॥
इमा तें वाजिन्नवमार्जनानीमा शफानाꣳसनितुर्निधाना ।
अत्रा ते भद्रा रशनाऽअपश्यमृतस्य याऽअभिरक्षन्ति गोपाः ॥१६॥
आत्मानं ते मनसारादजानामवो दिवा पतयन्तं पतङ्गम् ।
शिरोऽअपश्यं पथिभिः सुगेभिररेणुभिर्जेहमानं पतत्रि ॥१७॥
अत्रा ते रूपमुत्तममपश्यं जिगीषमाणमिषऽआ पदे गोः ।
यदा ते मर्तोऽअनु भोगमानडादिद् ग्रसिष्ठऽओषधीरजीगः ॥१८॥
अनु त्वा रथोऽअनु मर्योऽअर्वन्ननु गावोऽनु भगः कनीनाम् ।
अनु व्रातासऽइषितासऽएवानु देवा ममिरे वीर्यं ते ॥१९॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

हिर॑ण्यशृ॒ङ्गोऽयो॑ऽअस्य॒ पादा॒ मनो॑जवा॒ऽअव॑र॒ऽइन्द्र॑ऽआसीत् ।
दे॒वाऽइद॑स्य हवि॒रद्य॑माय॒न्योऽअर्व॑न्तं प्रथ॒मोऽअ॒ध्यति॑ष्ठत् ॥२०॥
ई॒र्मान्ता॑सः॒ सिलि॑कमध्यमासः॒ सꣳशूर॑णासो दि॒व्यासो॒ऽअत्याः॑ ।
हꣳसाऽइ॑व श्रेणि॒शो य॑तन्ते॒ यदाक्षि॑षुर्दि॒व्यमज्म॒मश्वाः॑ ॥२१॥
तव॒ शरी॑रं पतयि॒ष्ण्व॒र्वन्तव॑ चि॒त्तं वात॑ऽइव॒ ध्रजी॑मान् ।
तव॒ शृङ्गा॑णि॒ विष्ठि॑ता पुरु॒त्रार॑ण्येषु॒ जर्भु॑राणा चरन्ति ॥२२॥
उप॒ प्रागा॒च्छस॑नं वा॒ज्यर्वा॑ देव॒द्रीचा॒ मन॑सा॒ दीध्या॑नः ।
अ॒जः पु॒रो नी॑यते॒ नाभि॑र॒स्यानु॑ प॒श्चात्क॒वयो॑ यन्ति रे॒भाः ॥२३॥
उप॒ प्रागा॑त्पर॒मं यत्स॒धस्थ॒मर्वाँ॒२॥ऽअच्छा॑ पि॒तरं॑ मा॒तरं॑ च ।
अ॒द्या दे॒वाञ्जुष्ट॑तमो॒ हि ग॒म्याऽअथा शा॑स्ते दा॒शुषे॒ वार्या॑णि ॥२४॥
समि॑द्धोऽअ॒द्य मनु॑षो दुरो॒णे दे॒वो दे॒वान्य॑जसि जातवेदः ।
आ च॒ वह॑ मित्रमहश्चिकि॒त्वान्त्वं दू॒तः क॒विर॑सि॒ प्रचे॑ताः ॥२५॥
तनू॑नपात्प॒थऽऋ॒तस्य॒ याना॒न्मध्वा॑ सम॒ञ्जन्त्स्व॑दया सुजिह्व ।
मन्मा॑नि धी॒भिरु॒त य॒ज्ञमृ॒न्धन्दे॑व॒त्रा च॑ कृणुह्यध्व॒रं नः॑ ॥२६॥
नरा॒शꣳस॑स्य महि॒मान॑मेषा॒मुप॑ स्तोषाम यज॒तस्य॑ य॒ज्ञैः ।
ये सु॒क्रतवः॒ शुच॑यो धिय॒न्धाः स्वद॑न्ति दे॒वाऽउ॒भया॑नि ह॒व्या ॥२७॥
आ॒जुह्वा॑न॒ऽईड्यो॒ वन्द्य॒श्चा या॑ह्यग्ने॒ वसु॑भिः स॒जोषाः॑ ।
त्वं दे॒वाना॑मसि यह्व॒ होता॒ सऽए॑नान्यक्षीषि॒तो यजी॑यान् ॥२८॥
प्रा॒चीनं॑ ब॒र्हिः प्र॒दिशा॑ पृथि॒व्या वस्तो॑र॒स्या वृ॑ज्यते॒ऽअग्रे॒ऽअह्ना॑म्।
व्यु॑ प्रथते वित॒रं वरी॑यो दे॒वेभ्यो॒ऽअदि॑तये स्यो॒नम् ॥२९॥
व्यच॑स्वतीरुर्वि॒या वि श्र॑यन्तां॒ पति॑भ्यो॒ न जन॑यः॒ शुम्भ॑मानाः ।
देवी॑र्द्वारो बृहतीर्विश्वमिन्वा दे॒वेभ्यो॑ भवत सुप्राय॒णाः ॥३०॥
आ सु॒ष्वय॑न्ती यज॒तेऽउपा॑केऽउ॒षासा॒नक्ता॑ सदतां॒ नि योनौ॑ ।
दि॒व्ये योष॑णे बृह॒ती सु॑रु॒क्मेऽअधि॒ श्रियꣳशुक्र॒पिशं॒ दधा॑ने ॥३१॥
दैव्या॒ होता॑रा प्रथ॒मा सु॒वाचा॒ मिमा॑ना य॒ज्ञं मनु॑षो॒ यज॑ध्यै ।
प्र॒चो॒दय॑न्ता वि॒दथे॑षु का॒रू प्रा॒चीनं॒ ज्योतिः॑ प्र॒दिशा॑ दि॒शन्ता॑ ॥३२॥
आ नो॑ य॒ज्ञं भार॑ती॒ तूय॑मे॒त्विडा॑ मनु॒ष्वदि॒ह चे॒तय॑न्ती ।
ति॒स्रो दे॒वीर्ब॒र्हिरेदꣳस्यो॒नꣳसर॑स्वती॒ स्वप॑सः सदन्तु ॥३३॥

यऽइ॒मे द्यावा॑पृथि॒वी जनि॑त्री रू॒पैरपि॑ꣳश॒द्भुव॑नानि॒ विश्वा॑ ।
तम॒द्य हो॑तरिषि॒तो यजी॑यान्दे॒वं त्वष्टा॑रमि॒ह य॑क्षि वि॒द्वान् ॥३४॥
उ॒पाव॑सृज॒ त्मन्या॑ सम॒ञ्जन्दे॒वानां॒ पाथ॑ऽऋतु॒था ह॒वीꣳषि॑ ।
वन॒स्पतिः॑ शमि॒ता दे॒वोऽअ॒ग्निः स्वद॑न्तु ह॒व्यं मधु॑ना घृ॒तेन॑ ॥३५॥
स॒द्यो जा॒तो व्य॑मिमीत य॒ज्ञम॒ग्निर्दे॒वाना॑मभवत्पुरो॒गाः ।
अ॒स्य होतुः॑ प्र॒दिश्यृ॒तस्य॑ वा॒चि स्वाहा॑कृतꣳह॒विर॑दन्तु दे॒वाः ॥३६॥
के॒तुं कृ॒ण्वन्न॑के॒तवे॒ पेशो॑ मर्याऽअपे॒शसे॑। समु॒षद्भि॑रजायथाः ॥३७॥
जी॒मूत॑स्येव भवति॒ प्रती॑कं॒ यद्वर्मी याति॑ स॒मदा॑मु॒पस्थे॑ ।
अना॑विद्धया त॒न्वा॒ जय॒ त्वꣳस त्वा॒ वर्म॑णो महि॒मा पि॑पर्त्तु ॥३८॥
धन्व॑ना॒ गा धन्व॑ना॒जिं ज॑येम॒ धन्व॑ना ती॒व्राः स॒मदो॑ जयेम ।
धनुः॒ शत्रो॑रपका॒मं कृ॑णोति॒ धन्व॑ना॒ सर्वाः॑ प्र॒दिशो॑ जयेम ॥३९॥
व॒क्ष्यन्ती॒वेदाग॑नीगन्ति॒ कर्णं॑ प्रि॒यꣳसखा॑यं परिषस्वजा॒ना ।
योषे॑व शिङ्क्ते॒ वित॒ताधि॒ धन्व॒ञ्ज्या इ॒यꣳसम॑ने पा॒रय॑न्ती ॥४०॥
तेऽआ॒चर॑न्ती॒ सम॑नेव॒ योषा॑ मा॒तेव॑ पु॒त्रं बि॑भृतामु॒पस्थे॑ ।
अप॒ शत्रू॑न्विध्यताꣳसंविदा॒नेऽआर्त्नी॑ऽइ॒मे वि॑ष्फु॒रन्ती॑ऽअ॒मित्रा॑न् ॥४१॥
ब॒ह्वी॒नां पि॒ता ब॒हु॑रस्य पु॒त्रश्चि॒श्चा कृ॑णोति॒ सम॑नाव॒गत्य॑ ।
इ॒षु॒धिः सङ्काः॒ पृत॑नाश्च॒ सर्वाः॑ पृ॒ष्ठे निन॑द्धो जयति॒ प्रसू॑तः ॥४२॥
रथे॒ तिष्ठ॑न्नयति वा॒जिनः॑ पु॒रो यत्र॑यत्र का॒मय॑ते सुषार॒थिः ।
अ॒भीशू॑नां महि॒मानं॑ पनायत॒ मनः॑ प॒श्चादनु॑ यच्छन्ति र॒श्मयः॑ ॥४३॥
ती॒व्रान् घोषा॑न् कृण्वते॒ वृष॑पाण॒योऽश्वा॒ रथे॑भिः स॒ह वा॒जय॑न्तः।
अ॒व॒क्राम॑न्तः॒ प्रप॑दैर॒मित्रा॑न् क्षि॒णन्ति॒ शत्रूँ॒१॥ऽरन॑पव्ययन्तः ॥४४॥
र॒थ॒वाह॑नꣳह॒विर॑स्य॒ नाम॒ यत्रायु॑धं॒ निहि॑तमस्य॒ वर्म॑ ।
तत्रा॒ रथ॒मुप॑ श॒ग्मꣳस॑देम वि॒श्वाहा॑ व॒यꣳसु॑मन॒स्यमा॑नाः ॥४५॥
स्वा॒दु॒ष॒ꣳसदः॑ पि॒तरो॑ वयो॒धाः कृ॑च्छ्रे॒श्रितः॒ शक्ती॑वन्तो गभी॒राः।
चि॒त्रसे॑ना॒ऽइषु॑बला॒ऽअमृ॑ध्राः स॒तोवी॑राऽउ॒रवो॑ व्रातसा॒हाः ॥४६॥
ब्राह्म॑णासः॒ पित॑रः॒ सोम्या॑सः शि॒वे नो॒ द्यावा॑पृथि॒वीऽअ॑ने॒हसा॑।
पू॒षा नः॑ पातु दुरि॒तादृ॑तावृधो॒ रक्षा॒ माकि॑र्नोऽअ॒घशꣳसऽईशत ॥४७॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सुपर्णं वस्ते मृगोऽअस्या दन्तो गोभिः सन्नद्धा पतति प्रसूता ।
यत्रा नरः सं च वि च द्रवन्ति तत्रास्मभ्यमिषवः शर्म यंसन्॥४८॥
ऋजीते परि वृङ्धि नोऽश्मा भवतु नस्तनूः ।
सोमोऽअधि ब्रवीतु नोऽदितिः शर्म यच्छतु ॥४९॥
आ जङ्घन्ति सान्वेषां जघनाँ२॥ऽउप जिघ्नते ।
अश्वाजनि प्रचेतसोऽश्वान्त्समत्सु चोदय ॥५०॥
अहिरिव भोगैः पर्येति बाहुं ज्याया हेतिं परिबाधमानः ।
हस्तघ्नो विश्वा वयुनानि विद्वान् पुमान् पुमांसं परि पातु विश्वतः॥५१॥
वनस्पते वीड्वङ्गो हि भूयाऽअस्मत्सखा प्रतरणः सुवीरः ।
गोभिः सन्नद्धोऽसि वीडयस्वास्थाता ते जयतु जेत्वानि ॥५२॥
दिवः पृथिव्याः पर्योजऽउद्भृतं वनस्पतिभ्यः पर्य्याभृतꣳसहः ।
अपामोज्मानं परि गोभिरावृतमिन्द्रस्य वज्रꣳहविषा रथं यज ॥५३॥
इन्द्रस्य वज्रो मरुतामनीकं मित्रस्य गर्भो वरुणस्य नाभिः ।
सेमां नो हव्यदातिं जुषाणो देव रथ प्रति हव्या गृभाय ॥५४॥
उप श्वासय पृथिवीमुत द्यां पुरुत्रा ते मनुतां विष्ठितं जगत् ।
स दुन्दुभे सजूरिन्द्रेण देवैर्दूराद्दवीयोऽअप सेध शत्रून् ॥५५॥
आ क्रन्दय बलमोजो नऽआधा निष्टनिहि दुरिता बाधमानः ।
अप प्रोथ दुन्दुभे दुच्छुनाऽइतऽइन्द्रस्य मुष्टिरसि वीडयस्व ॥५६॥
आमूरज प्रत्यावर्त्तयेमाः केतुमद्दुन्दुभिर्वावदीति ।
समश्वपर्णाश्चरन्ति नो नरोऽस्माकमिन्द्र रथिनो जयन्तु ॥५७॥
आग्नेयः कृष्णग्रीवः सारस्वती मेषी बभ्रुः सौम्यः पौष्णः श्यामः
शितिपृष्ठो बार्हस्पत्यः शितिपाद्यो वैश्वदेवऽऐन्द्रोऽरुणो मारुतः कल्माषऽ
ऐन्द्राग्नः संहितोऽधोरामः सावित्रो वारुणः कृष्णऽएकशितिपात्पेत्वः॥५८॥
अग्नयेऽनीकवते रोहिताञ्जिरनड्वानधोरामौ सावित्रौ पौष्णौ
रजतनाभी वैश्वदेवौ पिशङ्गौ तूपरौ मारुतः कल्माषऽआग्नेयः
कृष्णोऽजः सारस्वती मेषी वारुणः पेत्वः ॥५९॥

एकोनत्रिंशोऽध्यायः

अग्नये गायत्राय त्रिवृते राथन्तरायाष्टाकपालऽइन्द्राय त्रैष्टुभाय
पञ्चदशाय बार्हतायैकादशकपालो विश्वेभ्यो देवेभ्यो जागतेभ्यः
सप्तदशेभ्यो वैरूपेभ्यो द्वादशकपालो मित्रावरुणाभ्यामानुष्टुभाभ्या-
मेकविꣳशाभ्यां वैराजाभ्यां पयस्या बृहस्पतये पाङ्क्ताय त्रिणवाय
शाक्वराय चरुः सवित्रेऽऔष्णिहाय त्रयस्त्रिꣳशाय रैवताय द्वादशकपालः
प्राजापत्यश्चरुरदित्यै विष्णुपत्यै चरुरग्नये वैश्वानराय द्वादशकपालोऽ
नुमत्याऽअष्टाकपालः ॥६०॥

इत्येकोनत्रिंशोऽध्यायः॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अथ त्रिंशोऽध्यायः॥

—:०:—

ऋषिः—नारायणः १-३, ५-२२। मेधातिथिः ४॥

देवता—सविता १-४। परमेश्वरः ५, ६। विद्वांसः ७, ८। विद्वान् ९-१२। ईश्वरः १३। राजेश्वरौ १४-२२॥

छन्दः—त्रिष्टुप् १। निचृद्गायत्री २। गायत्री ३, ४। स्वराडतिशक्वरी ५, ११। निचृदष्टिः ६, ७। कृतिः ८, १३। भुरिगत्यष्टिः ९, १०, २१। विराट्संकृतिः १२। निचृदत्यष्टिः १४। विराट्कृतिः १५, १६। विराड्धृतिः १७। निचृत्प्रकृतिः १८। भुरिग् धृतिः १९। भुरिगतिजगती २०। निचृत्कृतिः २२॥

स्वरः—धैवतः १, १८। षड्जः २-४। पञ्चमः ५, ११। मध्यमः ६, ७। निषादः ८, १३, १५, १६, २०, २२। गान्धारः ९, १०, १२, १४, २१। ऋषभः १७, १९॥

देव॑ सवितः॒ प्र सु॑व य॒ज्ञं प्र सु॑व य॒ज्ञप॑तिं॒ भगा॑य ।
दि॒व्यो ग॑न्ध॒र्वः के॑त॒पूः केतं॑ नः पुनातु वा॒चस्पति॒र्वाचं॑ नः स्वदतु॥ १॥
तत्स॑वि॒तुर्वरे॑ण्यं॒ भर्गो॑ दे॒वस्य॑ धीमहि। धियो॒ यो नः॑ प्रचो॒दया॑त्॥ २॥
विश्वा॑नि देव सवितर्दुरि॒तानि॒ परा॑ सुव। य॑द्भ॒द्रं तन्न॒ऽआ सु॑व॥ ३॥
वि॒भ॒क्तारं॑ हवामहे॒ वसो॑श्चि॒त्रस्य॒ राध॑सः। स॒वि॒तारं॑ नृ॒चक्ष॑सम्॥ ४॥

ब्रह्म॑णे ब्राह्म॒णं क्ष॒त्राय॑ राज॒न्यं॒ म॒रुद्भ्यो॒ वैश्यं॒ तप॑से शू॒द्रं
तम॑से॒ तस्क॑रं नार॒काय॑ वीर॒हणं॑ पा॒प्मने॑ क्ली॒बमा॑क्र॒यायाऽ
अयो॒गूं कामा॑य पुँश्च॒लूमति॑क्रुष्टाय माग॒धम् ॥५॥
नृ॒त्ताय॑ सू॒तं गी॒ताय॑ शैलू॒षं धर्मा॑य सभाच॒रं न॒रिष्ठा॑यै
भीम॒लं न॒र्माय॑ रे॒भꣳहसा॑य॒ कारि॑मान॒न्दाय॑ स्त्रीष॒खं प्र॒मदे॑
कु॒मारीपु॒त्रं मे॒धायै॑ रथका॒रं धैर्य्या॑य॒ तक्षा॑णम् ॥६॥
तप॑से कौला॒लं मा॒यायै॑ क॒र्मारꣳ॑ रू॒पाय॑ मणिका॒रꣳ शु॒भे
व॒पꣳश॑र॒व्या॒याऽइषुका॒रꣳ हे॒त्यै ध॑नुष्का॒रं कर्म॑णे ज्याका॒रं
दि॒ष्टाय॑ रज्जुस॒र्जं मृ॒त्यवे॑ मृग॒युमन्त॑काय श्व॒निन॑म् ॥७॥
न॒दीभ्यः॑ पौञ्जि॒ष्ठमृ॒क्षीका॑भ्यो॒ नैषा॑दं पुरुषव्या॒घ्राय॑ दु॒र्मदं॑
गन्धर्वाप्स॒रोभ्यो॒ व्रात्यं॑ प्र॒युग्भ्य॒ऽउन्म॑त्तꣳ सर्पदेवज॒नेभ्योऽ
प्र॑तिपद॒मये॑भ्यः कित॒वमी॒र्यता॑या॒ऽअकि॑तवं पिशा॒चेभ्यो॑
विदलका॒रीं या॑तु॒धाने॑भ्यः कण्टकीका॒रीम् ॥८॥
स॒न्धये॑ जा॒रं गे॒हायो॑पप॒तिमार्त्यै॒ परि॑वित्तं॒ निर्ऋ॑त्यै परिविविदा॒न-
मरा॑द्ध्याऽएदिधिषुः॒प॒तिं निष्कृ॑त्यै पेशस्का॒रीꣳसं॒ज्ञाना॑य
स्मरका॒रीं प्र॑का॒मोद्या॑योप॒सदं॒ वर्णा॑यानु॒रुधं॒ बला॑योप॒दाम्॥ ९॥
उ॒त्सा॒देभ्यः॑ कु॒ब्जं प्र॒मुदे॑ वाम॒नं द्वा॒र्भ्यः स्त्रा॒मꣳ स्वप्ना॑या॒न्धम-
ध॑र्माय बधि॒रं प॒वित्रा॑य भि॒षजं॑ प्र॒ज्ञाना॑य नक्षत्रद॒र्शमा॑शि॒क्षायै॑
प्र॒श्निन॑मुपशि॒क्षाया॑ऽअभिप्र॒श्निनं॑ म॒र्यादा॑यै प्रश्नविवा॒कम् ॥१०॥
अर्मे॑भ्यो हस्ति॒पं ज॒वाया॑श्व॒पं पुष्ट्यै॑ गोपा॒लं वी॒र्या॒याविपा॒लं
तेज॑सेऽजपा॒लमिरा॑यै की॒नाशं॑ की॒लाला॑य सुराका॒रं भ॒द्राय॑
गृह॒पꣳश्रेय॑से वित्त॒धमाध्य॑क्ष्यायानुक्ष॒त्तार॑म् ॥११॥
भायै॑ दार्वाहा॒रं प्र॒भाया॑ऽअग्न्ये॒धं ब्र॒ध्नस्य॑ वि॒ष्टपा॑याभिषे॒क्तारं॒
वर्षि॑ष्ठाय॒ नाका॑य परिवे॒ष्टारं॑ देवलो॒काय॑ पेशि॒तारं॑ मनुष्यलो॒काय॑
प्रकरि॒तारꣳ॒ सर्वे॑भ्यो लो॒केभ्य॑ऽउपसे॒क्तार॒मव॑ऽऋत्यै व॒धायो॑पमन्थि॒तारं॒
मेधा॑य वासः पल्पू॒लीं प्र॑का॒माय॑ रजयि॒त्रीम् ॥१२॥
ऋ॒तये॑ स्ते॒नहृ॑दयं॒ वैर॑हत्याय॒ पिशु॑नं॒ विवि॑क्त्यै क्ष॒त्तार॒मौप॑द्रष्ट्र्यायानुक्ष॒त्तारं॒
बला॑यानुच॒रं भू॒म्ने प॑रिष्क॒न्दं प्रि॒याय॑ प्रियवा॒दिन॒मरि॑ष्ट्याऽअश्वसा॒दꣳ
स्व॒र्गाय॑ लो॒काय॑ भागदु॒घं वर्षि॑ष्ठाय॒ नाका॑य परिवे॒ष्टार॑म् ॥१३॥
म॒न्यवे॑ऽयस्ता॒पं क्रोधा॑य निस॒रं योगा॑य यो॒क्तारꣳ॒ शोका॑याभिस॒त्तारं॒
क्षेमा॑य विमो॒क्तार॑मुत्कूलनिकू॒लेभ्य॑स्त्रि॒ष्ठिनं॒ वपु॑षे मानस्कृ॒तꣳ
शीला॑याञ्जनीका॒रीं निर्ऋ॑त्यै कोशका॒रीं य॒माया॒सूम् ॥१४॥
य॒माय॑ यम॒सूमथ॑र्व॒भ्योऽव॑तोकाꣳ संवत्स॒राय॑ पर्या॒यिणीं॑ परिवत्स॒रा-
याविजातामिदावत्स॒राया॒तीत्व॑रीमिद्वत्स॒राया॑ति॒ष्कद्व॑रीं वत्स॒राय॒
विज॑र्जराꣳ संवत्स॒राय॒ पलि॑क्नीमृ॒भुभ्यो॑ऽजिनस॒न्धꣳ सा॒ध्येभ्य॑श्चर्न॒म्नम्॥ १५॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सरोभ्यो धैवरमुपस्थावराभ्यो दाशं वैशन्ताभ्यो बैन्दं नड्वलाभ्यः
शौष्कलं पाराय मार्गारमवाराय कैवर्त्तं तीर्थेभ्यऽआन्दं विषमेभ्यो
मैनालꣳ स्वनेभ्यः पर्णकं गुहाभ्यः किरातꣳ सानुभ्यो जम्भकं
पर्वतेभ्यः किम्पूरुषम् ॥१६॥
बीभत्साये पौल्कसं वर्णाय हिरण्यकारं तुलायै वाणिजं
पश्चादोषाय ग्लाविनं विश्वेभ्यो भूतेभ्यः सिध्मलं भूत्यै
जागरणमभूत्यै स्वपनमार्त्यै जनवादिनं व्यृद्ध्याऽअपगल्भꣳ
संशराय प्रच्छिदम् ॥१७॥
अक्षराजाय कितवं कृतायादिनवदर्शं त्रेतायै कल्पिनं
द्वापरायाधिकल्पिनमास्कन्दाय सभास्थाणुं मृत्यवे
गोव्यच्छमन्तकाय गोघातं क्षुधे यो गां विकृन्तन्तं भिक्षमाणऽउप
तिष्ठति दुष्कृताय चरकाचार्यं पाप्मने सैलगम् ॥१८॥
प्रतिश्रुत्काया ऽआर्तनं घोषाय भषमन्ताय बहुवादिनमनन्ताय मूकꣳ
शब्दायाडम्बराघातं महसे वीणावादं क्रोशाय तूणवध्मंबरस्पराय
शङ्खध्मं वनाय वनपमन्यतोरण्याय दावपम् ॥१९॥
नर्माय पुँश्चलूꣳ हसाय कारिं यादसे शाबल्यां ग्रामण्युं
गणकमभिक्रोशकं तान्महसे वीणावादं पाणिघ्नं तूणवध्मं
तान्नृत्तायानन्दाय तलवम् ॥२०॥
अग्नये पीवानं पृथिव्यै पीठसर्पिणं वायवे चाण्डालमन्तरिक्षाय
वꣳशनर्तिनं दिवे खलतिꣳ सूर्याय हर्यक्षं नक्षत्रेभ्यः किर्मिरं
चन्द्रमसे किलासमहे शुक्लं पिङ्गाक्षꣳ रात्र्यै कृष्णं पिङ्गाक्षम्॥ २१॥
अथैतानष्टौ विरूपाना लंभूतेऽतिदीर्घं चातिह्रस्वं चातिस्थूलं
चातिकृशं चातिशुक्लं चातिकृष्णं चातिकुल्वं चातिलोमशं च।
अशूद्राऽअब्राह्मणास्ते प्राजापत्याः। मागधः पुँश्चली
क्लिंतवः क्लीबोऽशूद्राऽअब्राह्मणास्ते प्राजापत्याः ॥२२॥

इति त्रिंशोऽध्यायः॥

अथैकत्रिंशोऽध्यायः॥

—:o:—

ऋषिः—नारायणः १-१६। उत्तरनारायणः १७-२२॥

देवता—पुरुषः १, ३, ४, ६, ८-१६। ईशानः २। स्रष्टा ५। स्रष्टेश्वरः ७। आदित्यः १७-१९, २२। सूर्यः २०। विश्वेदेवाः २१॥

छन्दः—निचृदनुष्टुप् १-३, ८-११, १४। अनुष्टुप् ४, ५, ७, १२, १३, १५, २०, २१। विराडनुष्टुप् ६। विराट्त्रिष्टुप् १६। भुरिक्त्रिष्टुप् १७, १९। निचृत्त्रिष्टुप् १८। निचृदार्षीत्रिष्टुप् २२॥

स्वरः—गान्धारः १-१५, २०, २१। धैवतः १६-१९, २२॥

सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात् ।
स भूमिꣳ सर्वत स्पृत्वात्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम् ॥१॥
पुरुषऽएवेदꣳसर्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम् ।
उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति ॥२॥
एतावानस्य महिमातो ज्यायाँश्च पूरुषः ।
पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि ॥३॥
त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुषः पादोऽस्येहाभवत्पुनः ।
ततो विष्वङ् व्यक्रामत्साशनानशनेऽअभि ॥४॥
ततो विराडजायत विराजोऽअधि पूरुषः ।
स जातोऽअत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथो पुरः ॥५॥
तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्यम् ।
पशूꣳस्ताꣳश्चक्रे वायव्यानारण्या ग्राम्याश्च ये ॥६॥
तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतऽऋचः सामानि जज्ञिरे ।
छन्दाꣳसि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत ॥७॥
तस्मादश्वाऽअजायन्त ये के चोभयादतः ।
गावो ह जज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाताऽअजावयः ॥८॥
तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन् पुरुषं जातमग्रतः ।
तेन देवाऽअयजन्त साध्याऽऋषयश्च ये ॥९॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

यत्पुरु॑षं॒ व्यद॑धुः कति॒धा व्य॑कल्पयन् ।
मुखं॒ किम॑स्यासी॒त्कं बा॒हू किमू॒रू पादा॑ऽउच्येते ॥१०॥
ब्रा॒ह्म॒णो॒ऽस्य॒ मुख॑मासीद् बा॒हू रा॑ज॒न्यः॒ कृ॒तः ।
ऊ॒रू तद॑स्य॒ यद्वैश्यः॑ प॒द्भ्याꣳ शू॒द्रोऽअ॑जायत ॥११॥
च॒न्द्रमा॒ मन॑सो जा॒तश्चक्षोः॒ सूर्यो॑ऽअजायत ।
श्रोत्रा॑द्वा॒युश्च॑ प्रा॒णश्च॒ मुखा॑द॒ग्निर॑जायत ॥१२॥
नाभ्या॑ऽआसीद॒न्तरि॑क्षꣳशी॒र्ष्णो द्यौः सम॑वर्त्तत ।
प॒द्भ्यां भूमि॒र्दिशः॒ श्रोत्रा॒त्तथा॑ लो॒काँ२॥ऽअ॑कल्पयन्॥१३॥
यत्पुरु॑षेण ह॒विषा॑ दे॒वा य॒ज्ञमत॑न्वत ।
व॒स॒न्तो॒ऽस्यासी॒दाज्यं॑ ग्री॒ष्मऽइ॒ध्मः श॒रद्ध॒विः ॥१४॥
स॒प्तास्या॑सन् परि॒धय॒स्त्रिः स॒प्त स॒मिधः॑ कृ॒ताः ।
दे॒वा यद्य॒ज्ञं त॑न्वा॒नाऽअब॑ध्न॒न् पुरु॑षं प॒शुम् ॥१५॥
य॒ज्ञेन॑ य॒ज्ञम॑यजन्त दे॒वास्तानि॒ धर्मा॑णि प्रथ॒मान्या॑सन्।
ते ह॒ नाकं॑ महि॒मानः॑ सचन्त॒ यत्र॒ पूर्वे॑ सा॒ध्याः सन्ति॑ दे॒वाः॥१६॥
अ॒द्भ्यः सम्भृ॑तः पृथि॒व्यै रसा॑च्च वि॒श्वक॑र्मणः॒ सम॑वर्त्त॒ताग्रे॑।
तस्य॒ त्वष्टा॑ वि॒दध॑द्रू॒पमे॑ति॒ तन्मर्त्य॑स्य देव॒त्वमा॒जान॒मग्रे॑॥१७॥
वेदा॒हमे॒तं पुरु॑षं म॒हान्त॑मादि॒त्यव॑र्णं॒ तम॑सः प॒रस्ता॑त्।
तमे॒व वि॑दि॒त्वाति॑ मृ॒त्युमे॑ति॒ नान्यः पन्था॑ विद्य॒तेऽय॑नाय॥१८॥
प्र॒जाप॑तिश्चरति॒ गर्भे॑ऽअ॒न्तरजा॑यमानो बहु॒धा वि जा॑यते।
तस्य॒ योनिं॒ परि॑ पश्यन्ति॒ धीरा॒स्तस्मि॑न्ह तस्थु॒र्भुव॑नानि॒ विश्वा॑॥१९॥
यो दे॒वेभ्य॑ऽआ॒तप॑ति॒ यो दे॒वानां॑ पु॒रोहि॑तः ।
पूर्वो॒ यो दे॒वेभ्यो॑ जा॒तो नमो॑ रु॒चाय॒ ब्राह्म॑ये ॥२०॥
रु॒चं ब्रा॒ह्मं ज॒नय॑न्तो दे॒वाऽअग्रे॒ तद॑ब्रुवन् ।
यस्त्वै॒वं ब्रा॑ह्म॒णो वि॒द्यात्तस्य॑ दे॒वाऽअ॑स॒न्वशे॑ ॥२१॥
श्रीश्च॑ ते ल॒क्ष्मीश्च॒ पत्न्या॑वहोरा॒त्रे पा॒र्श्वे नक्ष॑त्राणि रू॒पम॒श्विनौ॒ व्यात्त॑म्।
इ॒ष्णन्नि॑षाणा॒मुं म॑ऽइषाण सर्वलो॒कं म॑ऽइषाण ॥२२॥

इत्येकत्रिंशोऽध्यायः॥

अथ द्वात्रिंशोऽध्यायः॥

—:०:—

ऋषिः—स्वयम्भु ब्रह्म १-१२। मेधाकामः १३-१५। श्रीकामः १६॥

देवता—परमात्मा १, २, ६-८, १०-१२, १४। हिरण्यगर्भः परमात्मा ३। आत्मा ४। परमेश्वरः ५। विद्वान् ९। इन्द्रः १३। परमेश्वरविद्वांसौ १५। विद्वद्राजानौ १६॥

छन्दः—अनुष्टुप् १, २, १६। निचृत्पङ्क्तिः ३। भुरिक्त्रिष्टुप् ४, ५। निचृत्त्रिष्टुप् ६, ८-११। निचृच्छक्वरी ७। त्रिष्टुप् १२। भुरिग्गायत्री १३। निचृदनुष्टुप् १४। निचृद्-बृहती १५॥

स्वरः—गान्धारः १, २, १४, १६। पञ्चमः ३। धैवतः ४-६, ८-१२। निषादः ७। षड्जः १३। मध्यमः १५॥

तदे॒वाग्निस्तदा॑दि॒त्यस्तद्वा॒युस्तदु॑ च॒न्द्रमाः॑ ।
तदे॒व शु॒क्रं तद् ब्रह्म॒ ताऽआपः॒ स प्र॒जाप॑तिः ॥१॥
सर्वे॑ निमे॒षा ज॑ज्ञिरे वि॒द्युतः॒ पुरु॑षा॒दधि॑ ।
नैन॑मू॒र्ध्वं न ति॒र्य्यञ्चं॒ न मध्ये॒ परि॑ जग्रभत् ॥२॥
न तस्य॑ प्रति॒माऽअ॑स्ति॒ यस्य॒ नाम॑ म॒हद्यशः॑ ।
हि॒र॒ण्य॒ग॒र्भऽइत्ये॒ष मा मा॑ हिꣳसी॒दित्ये॒षा यस्मा॒न्न जा॒तऽइत्ये॒षः॥३॥
ए॒षो ह॑ दे॒वः प्र॒दिशोऽनु॒ सर्वाः॒ पूर्वो॑ ह जा॒तः सऽउ॒ गर्भे॑ऽअ॒न्तः।
सऽए॒व जा॒तः स ज॑नि॒ष्यमा॑णः प्र॒त्यङ् जना॑स्तिष्ठति स॒र्वतो॑मुखः॥४॥
यस्मा॑ज्जा॒तं न पु॒रा किं च॒नैव य आ॑ब॒भूव॒ भुव॑नानि॒ विश्वा॑।
प्र॒जाप॑तिः प्र॒जया॑ सꣳरराणस्त्रीणि॒ ज्योती॑ꣳषि सचते॒ स षो॑ड॒शी॥५॥
येन॒ द्यौरु॒ग्रा पृ॑थि॒वी च॑ दृ॒ढा येन॒ स्व॒ स्तभि॒तं येन॒ नाकः॑ ।
योऽअ॒न्तरि॑क्षे॒ रज॑सो वि॒मानः॒ कस्मै॑ दे॒वाय॑ ह॒विषा॑ विधेम ॥६॥
यं क्रन्द॑सी॒ऽअव॑सा तस्तभा॒नेऽअ॒भ्यैक्षे॑तां॒ मन॑सा॒ रेज॑माने ।
यत्राधि॒ सूर॒ऽउदि॑तो वि॒भाति॒ कस्मै॑ दे॒वाय॑ ह॒विषा॑ विधेम ॥७॥
वे॒नस्तत्प॑श्य॒न्निहि॑तं॒ गुहा॒ सद्यत्र॒ विश्वं॒ भव॒त्येक॑नीडम् ।
तस्मि॑न्न॒दः सं च॒ वि चै॑ति॒ सर्वꣳ॒ सऽओतः॒ प्रोत॑श्च वि॒भूः प्र॒जासु॑॥८॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्र तद्वोचेदमृतं नु विद्वान् गन्धर्वो धाम विभृतं गुहा सत् ।
त्रीणि पदानि निहिता गुहास्य यस्तानि वेद स पितुः पितासत्॥९॥
स नो बन्धुर्जनिता स विधाता धामानि वेद भुवनानि विश्वा।
यत्र देवाऽअमृतमानशानास्तृतीये धामन्नध्यैरयन्त ॥१०॥
परीत्य भूतानि परीत्य लोकान् परीत्य सर्वीः प्रदिशो दिशश्च।
उपस्थाय प्रथमजामृतस्यात्मनात्मानमभि सं विवेश ॥११॥
परि द्यावापृथिवी सद्यऽइत्वा परि लोकान् परि दिशः परि स्वः।
ऋतस्य तन्तुं विततं विचृत्य तदपश्यत्तदभवत्तदासीत् ॥१२॥
सदसस्पतिमद्भुतं प्रियमिन्द्रस्य काम्यम् ।
सनिं मेधामयासिषꣳ स्वाहा ॥१३॥
यां मेधां देवगणाः पितरश्चोपासते ।
तया मामद्य मेधयाग्ने मेधाविनं कुरु स्वाहा ॥१४॥
मेधां मे वरुणो ददातु मेधामग्निः प्रजापतिः ।
मेधामिन्द्रश्च वायुश्च मेधां धाता ददातु मे स्वाहा॥१५॥
इदं मे ब्रह्म च क्षत्रं चोभे श्रियमश्नुताम् ।
मयि देवा दधतु श्रियमुत्तमां तस्यै ते स्वाहा ॥१६॥

इति द्वात्रिंशोऽध्यायः॥

अथ त्रयस्त्रिंशोऽध्यायः॥

—:o:—

ऋषिः—वत्सप्रीः १। विश्वरूपः २, ४। गोतमः ३, १६। कुत्सः ५, ६, २९, ३७, ३८, ४२, ६८। विश्वामित्रः ७, ८, २२, २६, ६०, ६३, ७५। भरद्वाजः ९, १३, ६१, ६९, ८४। मेधातिथिः १०, ४५, ४६, ८१-८३, ९७। पराशरः ११। विश्ववारा १२। वसिष्ठः १४, १८, २०, ४४, ७०, ७१, ७६, ८८। प्रस्कण्वः १५, ३१-३३, ३६। लुशोधानाकः १७। पुरुमीढाजमीढौ १९। सुनीतिः २१। सुचीकः २३। त्रिशोकः २४। मधुच्छन्दाः २५, ५६-५८। अगस्त्यः २७, ३४, ७८, ७९। गौरीवितिः २८, ६४। विभ्राट् ३०। श्रुतकक्षसुकक्षौ ३५। जमदग्निः ३९, ४०, ८५, ८७। नृमेधः ४१, ६६, ६७, ९५, ९६। हिरण्यस्तूपः ४३। कुत्सीदिः ४७। प्रतिक्षत्रः ४८। वत्सारः ४९। प्रगाथः ५०। कूर्मः ५१। लुशः ५२। सुहोत्रः ५३, ७७, ९३। वामदेवः ५४, ६५। ऋजिश्वः ५५। कुशिकः ५९। देवलः ६२। दक्षः ७२, ७३। प्रजापतिः ७४। बृहद्दिवः ८०। तापसः ८६। कण्वः ८९। त्रितः ९०। मनुः ९१, ९४। मेधः ९२॥

देवता—अग्नयः १, २। अग्निः ३-६, ९-१२, १५, १६। विद्वांसः ७, ८, १४। विश्वेदेवाः १३, ३९, ४७-४९, ५१-५४, ७७, ८१-८३, ८९, ९१, ९४। सविता १७, २०, ३४, ६९, ८४। इन्द्रः १८, २२-२९, ५९, ६३-६७, ७९, ९०, ९५, ९६। इन्द्रवायू १९, ४५, ५६, ८६। वेनः २१। सूर्यः ३०-३२, ३५-३८, ४०-४३, ७४। विद्वान् ३३, ७२, ७५। वायुः ४४, ५५, ७०, ८५। वरुणः ४६। महेन्द्रः ५०, ८०, ९७। मित्रावरुणौ ५७, ७१, ८७। अश्विनौ ५८, ८८। वैश्वानरः ६०, ९२। इन्द्राग्नी ६१, ७६, ९३। सोमः ६२। आदित्याः ६८। अध्वर्यू ७३। इन्द्रामरुतौ ७८॥

छन्दः—स्वराट्पङ्क्तिः १, ५, ७, १६, १८, ६८। गायत्री २, ९, १९, ४५, ४६, ५६-५८, ६५, ७१, ७६। निचृद्गायत्री ३, ४, २०, २१, २४, २५, ३१-३३, ३५, ३६, ६१, ६२, ७२, ७३, ७७। भुरिक्पङ्क्तिः ६, १३, २६, २८, ५९। त्रिष्टुप् ८। विराड्गायत्री १०। विराट्त्रिष्टुप् ११, २७, ४३, ७०, ७८। निचृत्त्रिष्टुप् १२, २२, ४२, ४४, ४८, ५२, ५४। अनुष्टुप् १४। बृहती १५। भुरिक्त्रिष्टुप् १७, २३, ६०। जगती २९। विराड्जगती ३०। त्रिष्टुप् ३४, ३७, ३८, ५०, ५१, ५३, ५५, ६३, ६४, ७४, ७९। विराड्बृहती ३९, ८५, ९१। भुरिग्बृहती ४०, ९५। निचृद्बृहती ४१, ८१, ८२, ८६-८८, ९०, ९२, ९६। स्वराडार्चीगायत्री ४७। निचृज्जगती ४९, ६८, ६९, ७५, ८४। भुरिगनुष्टुप् ६६, ८९, ९३। पङ्क्तिः ६७, ८०, ९४। सतोबृहती ८३, ९७॥

स्वरः—पञ्चमः १, ५-७, १३, १६, १८, २६, २८, ५९, ६७, ८०, ९४। षड्जः २-४, ९, १०, १९-२१, २४, २५, ३१-३३, ३५, ३६, ४५-४७, ५६-५८, ६१, ६२, ६५, ७१-७३, ७६, ७७। धैवतः ८, ११, १२, १७, २२, २३, २७, ३४, ३७, ३८, ४२-४४, ४८, ५०-५५, ६०, ६३, ६४, ७०, ७४, ७८, ७९। गान्धारः १४, ६६, ८९, ९३। मध्यमः १५, ३९-४१, ८१-८३, ८५-८८, ९०-९२, ९५-९७। निषादः २९, ३०, ४९, ६८, ६९, ७५, ८४॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अस्याजरासो दमामरित्राऽअर्चद्धूमासोऽअग्नयः पावकाः।
श्वितीचयः श्वात्रासो भुरण्यवो वनर्षदो वायवो न सोमाः॥१॥
हरयो धूमकेतवो वातजूताऽउप द्यवि। यतन्ते वृथगग्नयः॥२॥
यजा नो मित्रावरुणा यजा देवाँ२॥ऽऋतं बृहत्।
अग्ने यक्षि स्वं दमम्॥३॥
युक्ष्वा हि देवहूतमाँ२॥ऽअश्वाँ२॥ऽअग्ने रथीरिव।
नि होता पूर्व्यः सदः॥४॥
द्वे विरूपे चरतः स्वर्थेऽअन्यान्यां वत्समुप धापयेते।
हरिरन्यस्यां भवति स्वधावाञ्छुक्रोऽअन्यस्यां ददृशे सुवर्चीः॥५॥
अयमिह प्रथमो धायि धातृभिर्होता यजिष्ठोऽअध्वरेष्वीड्यः।
यमप्नवानो भृगवो विरुरुचुर्वनेषु चित्रं विभ्वं विशेविशे॥६॥
त्रीणि शता त्री सहस्राण्यग्निं त्रिंशच्च देवा नव चासपर्यन्।
औक्षन् घृतैरस्तृणन् बर्हिरस्माऽआदिद्धोतारं न्यसादयन्त॥७॥
मूर्द्धानं दिवोऽअरतिं पृथिव्या वैश्वानरमृतऽआ जातमग्निम्।
कविꣳ सम्राजमतिथिं जनानामासन्नापात्रं जनयन्त देवाः॥८॥
अग्निर्वृत्राणि जङ्घनद् द्रविणस्युर्विपन्यया। समिद्धः शुक्रऽआहुतः॥९॥
विश्वेभिः सोम्यं मध्वग्नऽइन्द्रेण वायुना। पिबा मित्रस्य धामभिः॥१०॥
आ यदिषे नृपतिं तेजऽआनट् शुचि रेतो निषिक्तं द्यौरभीके।
अग्निः शर्द्धमनवद्यं युवानꣳ स्वाध्यं जनयत्सूदयच्च॥११॥
अग्ने शर्द्ध महते सौभगाय तव द्युम्नान्युत्तमानि सन्तु।
सं जास्पत्यꣳ सुयममा कृणुष्व शत्रूयतामभि तिष्ठा महाꣳसि॥१२॥
त्वाꣳहि मन्द्रतममर्कशोकैर्वावृमहे महि नः श्रोष्यग्ने।
इन्द्रं न त्वा शवसा देवता वायुं पृणन्ति राधसा नृतमाः॥१३॥
त्वेऽअग्ने स्वाहुत प्रियासः सन्तु सूरयः।
यन्तारो ये मघवानो जनानामूर्वान्दयन्त गोनाम्॥१४॥
श्रुधि श्रुत्कर्ण वह्निभिर्देवैरग्ने सयावभिः।
आ सीदन्तु बर्हिषि मित्रोऽअर्य्यमा प्रातर्यावाणोऽअध्वरम्॥१५॥
विश्वेषामदितिर्यज्ञियानां विश्वेषामतिथिर्मानुषाणाम्।
अग्निर्देवानामवऽआवृणानः सुमृडीको भवतु जातवेदाः॥१६॥

मुहोऽअग्नेः समिधानस्य शर्मण्यनागा मित्रे वरुणे स्वस्तये।
श्रेष्ठे स्याम सवितुः सवीमनि तद्देवानामवोऽअद्या वृणीमहे॥१७॥
आपश्चित्पिप्यु स्तर्यो न गावो नक्षन्नृतं जरितारस्तऽइन्द्र।
याहि वायुर्न नियुतो नोऽअच्छा त्वꣳ हि धीभिर्दयसे वि वाजान्॥१८॥
गावऽउपावतावतं मही यज्ञस्य रप्सुदा। उभा कर्णा हिरण्यया॥१९॥
यदद्य सूरऽउदितेऽनागा मित्रोऽअर्य्यमा। सुवाति सविता भगः॥२०॥
आ सुते सिञ्चत श्रियꣳ रोदस्योरभिश्रियम्। रसा दधीत वृषभम्॥२१॥
आतिष्ठन्तं परि विश्वेऽअभूषञ्छ्रियो वसानश्चरति स्वरोचिः।
महत्तद् वृष्णोऽअसुरस्य नामा विश्वरूपोऽअमृतानि तस्थौ॥२२॥
प्र वो महे मन्दमानायान्धसोऽर्चा विश्वानराय विश्वाभुवे।
इन्द्रस्य यस्य सुमखꣳ सहो महि श्रवो नृम्णं च रोदसी सपर्यतः॥२३॥
बृहन्निदिध्मऽएषां भूरि शस्तं पृथुः स्वरुः। येषामिन्द्रो युवा सखा॥२४॥
इन्द्रेहि मत्स्यन्धसो विश्वेभिः सोमपर्वभिः। महाँ२॥ऽअभिष्टिरोजसा॥२५॥
इन्द्रो वृत्रमवृणोच्छर्द्धनीतिः प्र मायिनाममिनाद्वर्पणीतिः।
अहन् व्यꣳसमुशधग्वनेष्वाविर्धेनाऽअकृणोद्राम्याणाम्॥२६॥
कुतस्त्वमिन्द्र माहिनः सन्नेको यासि सत्पते किं तऽइत्था।
सं पृच्छसे समराणः शुभानैर्वोचेस्तन्नो हरिवो यत्तेऽअस्मे॥२७॥
आ तत्तऽइन्द्रायवः पनन्ताभि यऽऊर्वं गोमन्तं तितृत्सान्।
सकृत्स्वं ये पुरुपुत्रां महीꣳ सहस्रधारां बृहतीं दुदुक्षन्॥२८॥
इमां ते धियं प्र भरे महो महीमस्य स्तोत्रे धिषणा यत्तऽआनजे।
तमुत्सवे च प्रसवे च सासहिमिन्द्रं देवासः शवसामदन्ननु॥२९॥
विभ्राड् बृहत्पिबतु सोम्यं मध्वायुर्दधद्यज्ञपतावविंहुतम्।
वातजूतो योऽअभिरक्षति त्मना प्रजाः पुपोष पुरुधा वि राजति॥३०॥
उदु त्यं जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः। दृशे विश्वाय सूर्य्यम्॥३१॥
येना पावक चक्षसा भुरण्यन्तं जनाँ२॥ऽअनु। त्वं वरुण पश्यसि॥३२॥
दैव्यावध्वर्यूऽआ गतꣳ रथेन सूर्यत्वचा। मध्वा यज्ञꣳ समञ्जाथे॥३३॥
आ नऽइडाभिर्विदथे सुशस्ति विश्वानरः सविता देवऽएतु।
अपि यथा युवानो मत्सथा नो विश्वं जगदभिपित्वे मनीषा॥३४॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

यद॒द्य कच्च॑ वृत्रहन्नु॒दगा॑ऽअ॒भि सू॑र्य। सर्वं॒ तदि॑न्द्र ते॒ वशे॑॥३५॥
तु॒रणि॑र्विश्वद॒र्शतो॒ ज्योति॒ष्कृद॑सि सूर्य। विश्व॒मा भा॑सि रोच॒नम्॥३६॥
तत्सूर्य॑स्य देव॒त्वं तन्म॑हि॒त्वं म॒ध्या कर्त्तो॑र्वितत॒ꣳ सं ज॑भार।
य॒देद॑यु॒क्त ह॒रितः॑ स॒धस्था॒दाद्रात्री॑ वासस्तनुते सि॒मस्मै॑॥३७॥
तन्मि॒त्रस्य॑ वरु॒णस्याभि॑चक्षे॒ सूर्यो॑ रू॒पं कृ॑णुते॒ द्योरु॒पस्थे॑।
अ॒न॒न्तम॒न्यद्दृ॒शद॑स्य॒ पाजः॑ कृ॒ष्णम॒न्यद्ध॑रि॒तः सं भ॑रन्ति॥३८॥
बण्म॒हाँ२॑ऽअ॑सि॒ सूर्य॒ बडा॑दित्य म॒हाँ२॑ऽअसि।
म॒हस्ते॑ स॒तो म॑हि॒मा प॑नस्यतेऽद्धा दे॑व म॒हाँ२॑ऽअसि॥३९॥
बट् सू॑र्य॒ श्रव॑सा म॒हाँ२॑ऽअसि स॒त्रा दे॑व म॒हाँ२॑ऽअसि।
म॒ह्ना दे॒वाना॑मसु॒र्यः॑ पु॒रोहि॑तो वि॒भु ज्योति॒रदा॑भ्यम्॥४०॥
श्राय॑न्तऽइव॒ सूर्यं॒ विश्वे॑दिन्द्र॒स्य भ॑क्षत ।
वसू॑नि जा॒ते जन॑मान॒ऽओज॑सा॒ प्रति॑ भा॒गं न दी॑धिम॥४१॥
अ॒द्या दे॑वाऽउदि॒ता सूर्य॑स्य॒ निरꣳह॑सः पिपृता॒ निर॑व॒द्यात्।
तन्नो॑ मि॒त्रो वरु॑णो मामहन्ता॒मदि॑तिः सिन्धुः पृथि॒वीऽउ॒त द्यौः॥४२॥
आ कृ॒ष्णेन॒ रज॑सा॒ वर्त्त॑मानो नि॒वेश॑यन्न॒मृतं॑ मर्त्यं॑ च।
हि॒रण्ययेन॑ सवि॒ता रथे॑ना दे॒वो या॑ति॒ भुव॑नानि॒ पश्य॑न्॥४३॥
प्र वा॑वृजे सुप्र॒या ब॒र्हिरे॑षा॒मा वि॒श्पती॑व॒ बी॒रिट॑इयाते।
वि॒शामु॑क्तो॒षसः॑ पू॒र्वहू॑तौ वा॒युः पू॒षा स्व॒स्तयेे॑ नियु॒त्वान्॥४४॥
इन्द्र॑वायू बृहस्पतिं॑ मि॒त्राग्निं पू॒षणं॑ भग॑म्। आदि॒त्यान्मारु॑तं ग॒णम्॥४५॥
वरु॑णः प्राविता भु॑वन्मि॒त्रो विश्वा॑भिरू॒तिभि॑ः। करा॑तां नः॒ सुरा॑धसः॥४६॥
अधि॑ न इन्द्रैषां॑ विष्णो॑ सजा॒त्याना॑म्। इ॒ता मरु॑तोऽअश्विना॥४७॥
अग्न॑ऽइन्द्र॒ वरु॑ण॒ मित्र॑ देवाः॒ शर्द्धः॑ प्र य॑न्त मारु॒तो॑त विष्णो।
उ॒भा नास॑त्या रु॒द्रोऽअ॑ध॒ ग्नाः पू॒षा भग॒ः सर॑स्वती जुषन्त॥४८॥
इन्द्रा॑ग्नी मि॒त्रावरु॑णादि॒तिꣳ स्वः॒ पृथि॒वीं द्यां म॒रुतः॒ पर्व॑ताँ२॑ऽअ॒पः।
हु॒वे विष्णुं॑ पू॒षणं॑ ब्रह्मणस्पतिं॑ भगं॑ नु शꣳस॑ꣳ सवि॒तार॑मू॒तये॑॥४९॥
अ॒स्मे रु॒द्रा मे॒हना॒ पर्व॑तासो वृत्रहत्ये॒ भर॑हूतौ स॒जोषा॑ः।
यः शꣳस॑ते॒ स्तुव॑ते॒ धायि॑ प॒ज्रऽइन्द्र॑ज्येष्ठाऽअस्माँ२॑ऽअवन्तु देवाः॥५०॥

अ॒र्वाञ्चो॑ऽअ॒द्या भ॑वता यजत्राऽआ वो॒ हार्दि॒ भय॑मानो व्ययेयम्।
त्राध्वं॑ नो देवा नि॒जुरो॒ वृक॑स्य॒ त्राध्वं॑ कर्त्ता॑दव॒पदो॑ यजत्राः॥५१॥
विश्वे॑ऽअ॒द्य म॒रुतो॒ विश्व॑ऽऊ॒ती विश्वे॑ भवन्त्व॒ग्नयः॒ समि॑द्धाः।
विश्वे॑ नो दे॒वाऽअव॒सा ग॑मन्तु॒ विश्व॑मस्तु द्र॒विण॑ं॒ वाजो॑ऽअ॒स्मे॥५२॥
विश्वे॑ दे॒वाः शृ॑णु॒तेम॒ꣳ हव॑ं मे॒ येऽअ॒न्तरि॑क्षे॒ यऽउप॒ द्यवि॒ ष्ठ।
येऽअ॒ग्नि॒जि॒ह्वाऽउ॒त वा॒ यज॑त्राऽआ॒सद्या॒स्मिन् ब॒र्हिषि॑ मादयध्वम्॥५३॥
दे॒वेभ्यो॒ हि प्र॑थ॒मं य॒ज्ञिये॑भ्योऽमृत॒त्वꣳ सु॒वसि॑ भा॒गमु॑त्त॒मम्।
आदि॒द्यामा॑नꣳ सवि॒तर्व्यू॑र्णुषेऽनू॒चीना॑ जी॒विता मानु॑षेभ्यः॥५४॥
प्र वा॒युमच्छा॑ बृह॒ती म॑नी॒षा बृह॒द्रयिं॑ वि॒श्ववा॑रꣳ रथ॒प्राम्।
द्यु॒तद्या॑मा नि॒युतः॑ पत्यमानः क॒विः क॒विमि॑यक्षसि प्रयज्यो॥५५॥
इन्द्र॑वायूऽइ॒मे सु॒ताऽउप॒ प्रयो॑भि॒रा ग॑तम्। इन्द॑वो वामुशन्ति हि॥५६॥
मि॒त्रꣳ हु॑वे पू॒तद॑क्षं॒ वरु॑णं च रि॒शाद॑सम्। धिय॑ं घृ॒ताचीꣳ॑ साध॑न्ता॥५७॥
दस्रा॑ युवाक॒वः॑ सु॒ता नास॑त्या वृ॒क्तब॑र्हिषः। आ या॑तꣳ रुद्रवर्त्तनी॥५८॥
वि॒दद्यदी॑ स॒रमा॑ रु॒ग्णमद्रे॑र्महि॒ पाथः॑ पू॒र्व्यꣳ स॒ध्र्य॑क्कः।
अग्रं॑ नयत्सु॒पद्यक्षरा॑णामच्छा॒ रवं॑ प्रथ॒मा जा॑न॒ती गा॑त्॥५९॥
न॒हि स्पश॑मविदन्न॒न्यम॒स्माद्वै॑श्वान॒रात्पु॑र॒ऽए॒तार॑मग्नेः।
एमे॑नमवृधन्न॒मृता॒ऽअम॑र्त्यं॑ वैश्वान॒रं क्षैत्र॑जित्याय दे॒वाः॥६०॥
उ॒ग्रा वि॑घ॒निना॒ मृधो॑ऽइन्द्राग्नी ह॒वामहे। ता नो॑ मृडात॒ऽई॒दृशे॑॥६१॥
उपा॑स्मै गायता नरः॒ पव॑माना॒येन्द॑वे। अ॒भि दे॒वाँ२॑ऽइ॒यक्ष॑ते॥६२॥
ये त्वा॑हिहत्ये॒ मघ॑वन्नव॒र्द्धन्ये शा॑म्ब॒रे ह॑रिवो॒ ये गवि॑ष्ठौ।
ये त्वा॑ नू॒नम॑नु॒मद॑न्ति॒ विप्रा॒ः पिबे॑न्द्र॒ सोम॒ꣳ सग॑णो॒ मरु॑द्भिः॥६३॥
जनि॑ष्ठाऽउ॒ग्रः सह॑से तु॒राय॑ म॒न्द्रऽओजि॑ष्ठो बहु॒लाभि॑मानः।
अव॑र्द्धन्नि॒न्द्रं॑ मरुत॑श्चिदत्र मा॒ता यद्वी॒रं द॒धन॒द्धनि॑ष्ठा॥६४॥
आ तू न॑ऽइन्द्र वृत्रह॒न्नस्माक॑मू॒र्द्धा गहि॑। म॒हान्म॒हीभि॑रू॒तिभि॑ः॥६५॥
त्वमि॑न्द्र प्रतू॒र्त्तिष्वभि॒ विश्वा॑ऽअसि स्पृधः ।
अ॒श॒स्ति॒हा ज॑नि॒ता वि॑श्व॒तूर॑सि॒ त्वं तू॑र्य्य तरुष्य॒तः॥६६॥
अनु॑ ते॒ शुष्मं॑ तु॒रय॑न्तमीयतुः क्षो॒णी शिशुं॒ न मा॒तरा॑।
विश्वा॑स्ते॒ स्पृधः॑ श्नथयन्त म॒न्यवे॑ वृ॒त्रं यदि॑न्द्र तू॒र्वसि॥६७॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

यज्ञो देवानां प्रत्येति सुम्नमादित्यासो भवता मृडयन्तः ।
आ वोऽर्वाचीं सुमतिर्ववृत्यादꣳहोश्चिद्या वरिवोवित्तरासत् ॥६८॥
अदब्धेभिः सवितः पायुभिष्ट्वꣳ शिवेभिरद्य परि पाहि नो गयम्।
हिरण्यजिह्वः सुविताय नव्यसे रक्षा माकिर्नोऽअघशꣳसऽईशत ॥६९॥
प्र वीरया शुचयो दद्रिरे वामध्वर्युभिर्मधुमन्तः सुतासः ।
वह वायो नियुतो याह्यच्छा पिबा सुतस्यान्धसो मदाय ॥७०॥
गावऽउपावतावतं मही यज्ञस्य रप्सुदा। उभा कर्णा हिरण्यया॥७१॥
काव्ययोराजानेषु क्रत्वा दक्षस्य दुरोणे। रिशादसा सधस्थऽआ॥७२॥
दैव्यावध्वर्यूऽआ गतꣳ रथेन सूर्यत्वचा। मध्वा यज्ञꣳ समञ्जाथे॥७३॥
तिरश्चीनो विततो रश्मिरेषामधः स्विदासीऽदुपरि स्विदासीऽत्।
रेतोधाऽआसन्महिमानऽआसन्त्स्वधाऽअवस्तात्प्रयतिः परस्तात् ॥७४॥
आ रोदसीऽअपृणदा स्वर्महज्जातं यदेनमपसोऽअधारयन् ।
सोऽअध्वराय परि णीयते कविरत्यो न वाजसातये चनोहितः॥७५॥
उक्थेभिर्वृत्रहन्तमा या मन्दाना चिदा गिरा। आङ्गूषैराविवासतः॥७६॥
उप नः सूनवो गिरः शृण्वन्त्वमृतस्य ये। सुमृडीका भवन्तु नः॥७७॥
ब्रह्माणि मे मतयः शꣳसुतासः शुष्मऽइयर्ति प्रभृतो मेऽअद्रिः।
आ शासते प्रति हर्य्यन्त्युक्थेमा हरी वहतस्ता नोऽअच्छ॥७८॥
अनुत्तमा ते मघवन्नकिर्नु न त्वावाँ२॥ऽअस्ति देवता विदानः।
न जायमानो नशते न जातो यानि करिष्या कृणुहि प्रवृद्ध॥७९॥
तदिदास भुवनेषु ज्येष्ठं यतो जज्ञऽउग्रस्त्वेषनृम्णः ।
सद्यो जज्ञानो नि रिणाति शत्रूननु यं विश्वे मदन्त्यूमाः॥८०॥
डुमाऽउ त्वा पुरूवसो गिरो वर्द्धन्तु या मम ।
पावकवर्णाः शुचयो विपश्चितोऽभि स्तोमैरनूषत ॥८१॥
यस्यायं विश्वऽआर्यो दासः शेवधिपाऽअरिः ।
तिरश्चिद्वर्ये रुशमे पवीरवि तुभ्येत्सोऽअज्यते रयिः॥८२॥
अयꣳ सहस्रमृषिभिः सहस्कृतः समुद्रऽइव पप्रथे ।
सत्यः सोऽअस्य महिमा गृणे शवो यज्ञेषु विप्रराज्ये॥८३॥
अदब्धेभिः सवितः पायुभिष्ट्वꣳ शिवेभिरद्य परि पाहि नो गयम्।
हिरण्यजिह्वः सुविताय नव्यसे रक्षा माकिर्नोऽअघशꣳसऽईशत॥८४॥

आ नो यज्ञं दिवि स्पृशं वायो याहि सुमन्मभिः ।
अन्तः पवित्रऽउपरि श्रीणानोऽयꣳ शुक्रोऽअयामि ते ॥८५॥
इन्द्रवायू सुसन्दृशा सुहवेह हवामहे ।
यथा नः सर्वऽइज्जनोऽनमीवः सङ्गमे सुमनाऽअसत् ॥८६॥
ऋधगित्था स मर्त्यः शशमे देवतातये ।
यो नूनं मित्रावरुणावभिष्टयऽआचक्रे हव्यदातये ॥८७॥
आ यातमुप भूषतं मध्वः पिबतमश्विना ।
दुग्धं पयो वृषणा जेन्यावसू मा नो मर्धिष्टमा गतम्॥८८॥
प्रैतु ब्रह्मणस्पतिः प्र देव्येतु सूनृता ।
अच्छा वीरं नर्य्यं पङ्क्तिराधसं देवा यज्ञं नयन्तु नः ॥८९॥
चन्द्रमाऽअप्स्वन्तरा सुपर्णो धावते दिवि ।
रयिं पिशङ्गं बहुलं पुरुस्पृहꣳ हरिरेति कनिक्रदत् ॥९०॥
देवंदेवं वोऽवसे देवं देवमभिष्टये ।
देवंदेवꣳ हुवेम वाजसातये गृणन्तो देव्या धिया ॥९१॥
दिवि पृष्टोऽअरोचताग्निर्वैश्वानरो बृहन् ।
क्षमया वृधानऽओजसा चनोहितो ज्योतिषा बाधते तमः॥९२॥
इन्द्राग्नीऽअपादियं पूर्वागात्पद्वतीभ्यः ।
हित्वी शिरो जिह्वया वावदच्चरत्रिꣳशत्पदा न्यक्रमीत्॥९३॥
देवासो हि ष्मा मनवे समन्यवो विश्वे साकꣳ सरातयः।
ते नोऽअद्य तेऽअपरं तुचे तु नो भवन्तु वरिवोविदः॥९४॥
अर्पाधमद्भिरशस्तीरशस्तिहाथेन्द्रो द्युम्याभवत् ।
देवास्तऽइन्द्र सख्याय येमिरे बृहद्भानो मरुद्गण ॥९५॥
प्र वऽइन्द्राय बृहते मरुतो ब्रह्मार्चत ।
वृत्रꣳ हनति वृत्रहा शतक्रतुर्वज्रेण शतपर्वणा ॥९६॥
अस्येदिन्द्रो वावृधे वृष्ण्यꣳ शवो मदे सुतस्य विष्णवि।
अद्या तमस्य महिमानमायवोऽनु ष्टुवन्ति पूर्वथा ॥९७॥

इति त्रयस्त्रिंशोऽध्यायः॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अथ चतुस्त्रिंशोऽध्यायः॥

—:o:—

ऋषिः—शिवसङ्कल्पः १-६। अगस्त्यः ७-९, ४८। गृत्समदः १०, ११, ५८। हिरण्यस्तूप आङ्गिरसः १२, १३, २४-२७। देवश्रवदेववातौ भारतौ १४, १५, १८, १९। नोधाः १६, १७। गोतमः २०-२३, ३३। प्रस्कण्वः २८। कुत्सः २९, ३०, ३२। हिरण्यस्तूपः ३१, ४७। वसिष्ठः ३४-४०। सुहोत्रः ४१। ऋजिश्वः ४२, ५३। मेधातिथिः ४३, ४४। भरद्वाजः ४५। विहव्यः ४६। प्राजापत्यो यज्ञः ४९। दक्षः ५०-५२। कूर्मः गार्त्समदः ५४। कण्वः ५५-५७॥

देवता—मनः १-६। अन्नम् ७। अनुमतिः ८, ९। सिनीवाली १०। सरस्वती ११। अग्निः १२-१५। इन्द्रः १६-१९। सोमः २०-२३। सविता २४-२७। अश्विनौ २८-३०, ४७। सूर्यः ३१। रात्रिः ३२। उषाः ३३, ४०। अग्न्यादयो लिङ्गोक्ताः ३४। भगः ३५, ३७, ३९। भगवान् ३६, ३८। पूषा ४१, ४२। विष्णुः ४३, ४४। द्यावापृथिव्यौ ४५। लिङ्गोक्ताः ४६, ५३। मरुतः ४८। ऋषयः ४९। हिरण्यतेजः ५०-५२। आदित्याः ५४। अध्यात्मं प्राणाः ५५। ब्रह्मणस्पतिः ५६-५८॥

छन्दः—विराट्त्रिष्टुप् १, १६, २६, २७, २९, ३१, ४२। त्रिष्टुप् २, ४, ५, १३, १४, ३०, ३९, ४९, ५४। स्वराट्त्रिष्टुप् ३, ६। उष्णिक् ७। निचृदनुष्टुप् ८, ९, ११। अनुष्टुप् १०। विराड्जगती १२। विराडनुष्टुप् १५। निचृत्त्रिष्टुप् १७-२०, २२, २३, ३५, ३६, ३८, ४०, ५२, ५८। भुरिक्पङ्क्तिः २१, २४, ५३। निचृज्जगती २५, ३४, ४५। निचृद्गायत्री २८, ४३। पथ्यावृहती ३२। निचृत्परोष्णिक् ३३। पङ्क्तिः ३७, ४८। गायत्री ४१, ४४। भुरिग्त्रिष्टुप् ४६। जगती ४७। भुरिगुष्णिक् ५०। भुरिक्छक्वरी ५१। भुरिग्जगती ५५। निचृद्वृहती ५६। विराड्वृहती ५७॥

स्वरः—धैवतः १-६, १३, १४, १६-२०, २२, २३, २६, २७, २९-३१, ३५, ३६, ३८-४०, ४२, ४६, ४९, ५१, ५२, ५४, ५८। ऋषभः ७, ३३, ५०। गान्धारः ८-११, १५। निषादः १२, २५, ३४, ४५, ४७, ५५। पञ्चमः २१, २४, ३७, ४८, ५३। षड्जः २८, ४१, ४३, ४४। मध्यमः ३२, ५६, ५७॥

यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवं तदु सुप्तस्य तथैवैति ।
दूरङ्गमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥१॥

येन कर्माण्यपसो मनीषिणो यज्ञे कृण्वन्ति विदथेषु धीराः।
यदपूर्वं यक्षमन्तः प्रजानां तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु ॥२॥

यत्प्रज्ञानमुत चेतो धृतिश्च यज्ज्योतिरन्तरमृतं प्रजासु ।
यस्मान्नऋते किं चन कर्म क्रियते तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥३॥

येनेदं भूतं भुवनं भविष्यत्परिगृहीतममृतेन सर्वम् ।
येन यज्ञस्तायते सप्तहोता तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु ॥४॥

यस्मिन्नृचः साम यजूंष्यृषि यस्मिन् प्रतिष्ठिता रथनाभाविवाराः।
यस्मिँश्चित्तꣳ सर्वमोतं प्रजानां तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥५॥

सुषारथिरश्वानिव यन्मनुष्यान्नेनीयतेऽभीशुभिर्वाजिनऽइव।
हृत्प्रतिष्ठं यदजिरं जविष्ठं तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु ॥६॥

पितुं नु स्तोषं महो धर्माणं तविषीम् ।
यस्य त्रितो व्योजसा वृत्रं विपर्वमर्दयत् ॥७॥

अन्विदनुमते त्वं मन्यासै शं च नस्कृधि ।
क्रत्वे दक्षाय नो हिनु प्र णऽआयुꣳषि तारिषः॥८॥

अनु नोऽद्यानुमतिर्यज्ञं देवेषु मन्यताम् ।
अग्निश्च हव्यवाहनो भवतं दाशुषे मयः ॥९॥

सिनीवालि पृथुष्टुके या देवानामसि स्वसा ।
जुषस्व हव्यमाहुतं प्रजां देवि दिदिड्ढि नः ॥१०॥

पञ्च नद्यः सरस्वतीमपि यन्ति सस्रोतसः ।
सरस्वती तु पञ्चधा सो देशेऽभवत्सरित् ॥११॥

त्वमग्ने प्रथमोऽअङ्गिराऽऋषिर्देवो देवानामभवः शिवः सखा।
तव व्रते कवयो विद्मनापसोऽजायन्त मरुतो भ्राजदृष्टयः॥१२॥

त्वं नोऽअग्ने तव देव पायुभिर्मघोनो रक्ष तन्वश्च वन्द्य।
त्राता तोकस्य ननये गवामस्यनिमेषꣳ रक्षमाणस्तव व्रते॥१३॥

उत्तानायामव भरा चिकित्वान्त्सद्यः प्रवीता वृषणं जजान।
अरुषस्तूपो रुशदस्य पाजऽइडायास्पुत्रो वयुनेऽजनिष्ट॥१४॥

इडायास्त्वा पदे वयं नाभा पृथिव्याऽअधि ।
जातवेदो निधीमह्यग्ने हव्याय वोढवे ॥१५॥

प्र मन्महे शवसानाय शूषमाङ्गूषं गिर्वणसेऽअङ्गिरस्वत्।
सुवृक्तिभिः स्तुवतऽऋग्मियायार्चामार्कं नरे विश्रुताय॥१६॥

प्र वो महे महि नमो भरध्वमाङ्गूष्यꣳ शवसानाय साम।
येना नः पूर्वे पितरः पदज्ञाऽअर्चन्तोऽअङ्गिरसो गाऽअविन्दन्॥१७॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

इच्छन्ति त्वा सोम्यासः सखायः सुन्वन्ति सोमं दधति प्रयांश्सि।
तितिक्षन्तेऽअभिशस्तिं जनानामिन्द्र त्वदा कश्चन हि प्रकेतः॥१८॥
न ते दूरे परमा चिदजाꣳस्या तु प्र याहि हरिवो हरिभ्याम्।
स्थिराय वृष्णे सवना कृतेमा युक्ता ग्रावाणः समिधानेऽअग्नौ॥१९॥
अषाढं युत्सु पृतनासु पप्रिꣳ स्वर्षामप्सां वृजनस्य गोपाम्।
भरेषुजाꣳसुक्षितिꣳसुश्रवसं जयन्तं त्वामनु मदेम सोम॥२०॥
सोमो धेनुꣳसोमोऽअर्वन्तमाशुꣳसोमो वीरं कर्मण्यं ददाति।
सादन्यं विदथ्यꣳसभेयं पितृश्रवणं यो ददाशदस्मै॥२१॥
त्वमिमाऽओषधीः सोम विश्वास्त्वमपोऽअजनयस्त्वं गाः।
त्वमा ततन्थोर्वन्तरिक्षं त्वं ज्योतिषा वि तमो ववर्थ॥२२॥
देवेन नो मनसा देव सोम रायो भागꣳसहसावन्नभि युध्य।
मा त्वा तनदीशिषे वीर्यस्योभयेभ्यः प्र चिकित्सा गविष्टौ॥२३॥
अष्टौ व्यख्यत्ककुभः पृथिव्यास्त्री धन्व योजना सप्त सिन्धून्।
हिरण्याक्षः सविता देवऽआगाद्दधद्रत्ना दाशुषे वार्याणि॥२४॥
हिरण्यपाणिः सविता विचर्षणिरुभे द्यावापृथिवीऽअन्तरीयते।
अपामीवां बाधते वेति सूर्यमभि कृष्णेन रजसा द्यामृणोति॥२५॥
हिरण्यहस्तोऽअसुरः सुनीथः सुमृडीकः स्ववाँ यात्वर्वाङ्।
अपसेधन्रक्षसो यातुधानानस्थाद्देवः प्रतिदोषं गृणानः॥२६॥
ये ते पन्थाः सवितः पूर्व्यासोऽरेणवः सुकृताऽअन्तरिक्षे।
तेभिर्नोऽअद्य पथिभिः सुगेभी रक्षा च नोऽअधि च ब्रूहि देव॥२७॥
उभा पिबतमश्विनोभा नः शर्म यच्छतम्। अविद्रियाभिरूतिभिः॥२८॥
अप्नस्वतीमश्विना वाचमस्मे कृतं नो दस्रा वृषणा मनीषाम्।
अद्यूत्येऽवसे निह्वये वां वृधे च नो भवतं वाजसातौ॥२९॥
द्युभिरक्तुभिः परि पातमस्मानरिष्टेभिरश्विना सौभगेभिः।
तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्तामदितिः सिन्धुः पृथिवीऽउत द्यौः॥३०॥
आ कृष्णेन रजसा वर्त्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च।
हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्॥३१॥
आ रात्रि पार्थिवꣳ रजः पितुरप्रायि धामभिः।
दिवः सदाꣳसि बृहती वि तिष्ठस आ त्वेषं वर्त्तते तमः॥३२॥
उषस्तच्चित्रमा भरास्मभ्यं वाजिनीवति।
येन तोकं च तनयं च धामहे॥३३॥
प्रातरग्निं प्रातरिन्द्रꣳ हवामहे प्रातर्मित्रावरुणा प्रातरश्विना।
प्रातर्भगं पूषणं ब्रह्मणस्पतिं प्रातः सोममुत रुद्रꣳ हुवेम॥३४॥
प्रातर्जितं भगमुग्रꣳ हुवेम वयं पुत्रमदितेर्यो विधर्त्ता।
आध्रश्चिद्यं मन्यमानस्तुरश्चिद्राजा चिद्यं भगं भक्षीत्याह॥३५॥
भग प्रणेतर्भग सत्यराधो भगेमां धियमुदवा ददन्नः।
भग प्र नो जनय गोभिरश्वैर्भग प्र नृभिर्नृवन्तः स्याम॥३६॥
उतेदानीं भगवन्तः स्यामोत प्रपित्वऽउत मध्येऽअह्नाम्।
उतोदिता मघवन्त्सूर्यस्य वयं देवानाꣳ सुमतौ स्याम॥३७॥
भगऽएव भगवाँ२ऽअस्तु देवास्तेन वयं भगवन्तः स्याम।
तं त्वा भग सर्वऽइज्जोहवीति स नो भग पुरऽएता भवेह॥३८॥
समध्वरायोषसो नमन्त दधिक्रावेव शुचये पदाय।
अर्वाचीनं वसुविदं भगं नो रथमिवाश्वा वाजिनऽआ वहन्तु॥३९॥
अश्वावतीर्गोमतीर्नऽउषासो वीरवतीः सदमुच्छन्तु भद्राः।
घृतं दुहाना विश्वतः प्रपीता यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥४०॥
पूषन्तव व्रते वयं न रिष्येम कदा चन। स्तोतारस्तऽइह स्मसि॥४१॥
पथस्पथः परिपतिं वचस्या कामेन कृतोऽअभ्यानडर्कम्।
स नो रासच्छुरुधश्चन्द्राग्रा धियंधियꣳ सीषधाति प्र पूषा॥४२॥
त्रीणि पदा विचक्रमे विष्णुर्गोपाऽअदाभ्यः। अतो धर्माणि धारयन्॥४३॥
तद्विप्रासो विपन्यवो जागृवाꣳसः समिन्धते। विष्णोर्यत्परमं पदम्॥४४॥
घृतवती भुवनानामभिश्रियोर्वी पृथ्वी मधुदुघे सुपेशसा।
द्यावापृथिवी वरुणस्य धर्मणा विष्कभिते अजरे भूरिरेतसा॥४५॥
ये नः सपत्नाऽअप ते भवन्त्विन्द्राग्निभ्यामवबाधामहे तान्।
वसवो रुद्राऽआदित्याऽउपरिस्पृशं मोग्रं चेत्तारमधिराजमक्रन्॥४६॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

आ नासत्या त्रिभिरेकादशैरिह देवेभिर्यातं मधुपेयमश्विना ।
प्रायुस्तारिष्टं नी रपाꣳसि मृक्षतꣳ सेधतं द्वेषो भवतꣳ सचाभुवा॥४७॥

एष व स्तोमो मरुतऽइयं गीर्मान्दार्यस्य मान्यस्य कारोः।
एषा यासीष्ट तन्वे वयां विद्यामेषं वृजनं जीरदानुम्॥४८॥

सहस्तोमाः सहच्छन्दसऽआवृतः सहप्रमाऽऋषयः सप्त दैव्याः।
पूर्वेषां पन्थामनुदृश्य धीराऽअन्वालेभिरे रथ्यो न रश्मीन्॥४९॥

आयुष्यं वर्चस्यꣳ रायस्पोषमौद्भिदम् ।
इदꣳहिरण्यं वर्चस्वज्जैत्रायाविशतादु माम् ॥५०॥

न तदक्षाꣳसि न पिशाचास्तरन्ति देवानामोजः प्रथमजꣳ ह्येतत्।
यो बिभर्ति दाक्षायणꣳ हिरण्यꣳ स देवेषु कृणुते दीर्घमायुः
स मनुष्येषु कृणुते दीर्घमायुः ॥५१॥

यदाबध्नन्दाक्षायणा हिरण्यꣳ शतानीकाय सुमनस्यमानाः।
तन्मऽआ बध्नामि शतशारदायायुष्माञ्जरदष्टिर्यथासम्॥५२॥

उत नोऽहिर्बुध्न्यः शृणोत्वजऽएकपात्पृथिवी समुद्रः ।
विश्वेदेवाऽऋतावृधो हुवाना स्तुता मन्त्राः कविशस्ताऽअवन्तु॥५३॥

इमा गिरऽआदित्येभ्यो घृतस्नूः सनादाजभ्यो जुह्वा जुहोमि ।
शृणोतु मित्रोऽअर्य्यमा भगो नस्तुविजातो वरुणो दक्षोऽअꣳशः॥५४॥

सप्तऽऋषयः प्रतिहिताः शरीरे सप्त रक्षन्ति सदमप्रमादम् ।
सप्तापः स्वपतो लोकमीयुस्तत्र जागृतोऽअस्वप्नजौ सत्रसदौ च देवौ॥५५॥

उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते देवयन्तस्त्वेमहे ।
उप प्र यन्तु मरुतः सुदानवऽइन्द्र प्राशूर्भवा सचा ॥५६॥

प्र नूनं ब्रह्मणस्पतिर्मन्त्रं वदत्युक्थ्यम् ।
यस्मिन्निन्द्रो वरुणो मित्रोऽअर्य्यमा देवाऽओकाꣳसि चक्रिरे ॥५७॥

ब्रह्मणस्पते त्वमस्य यन्ता सूक्तस्य बोधि तनयं च जिन्व ।
विश्वं तद्भद्रं यदवन्ति देवा बृहद्वदेम विदथे सुवीराः ॥५८॥

इति चतुस्त्रिंशोऽध्यायः॥

अथ पञ्चत्रिंशोऽध्यायः॥

—:o:—

ऋषिः—आदित्या देवा वा १, ३, ५, ८। आदित्या देवाः २, ४, ६, ९, १२-१४, १६, २०, २२। सङ्कसुकः ७, १५। सुचीकः १०। शुनःशेपः ११। वैखानसः १७। भरद्वाजः शिरिम्बिठः १८। दमनः १९। मेधातिथिः २१॥

देवता—पितरः १। सविता २, ३। वायुसवितारौ ४, ५। प्रजापतिः ६। यमः ७। विश्वेदेवाः ८-१०। आपः ११, १२। कृषीवलाः १३। सूर्यः १४। ईश्वरः १५। अग्निः १६, १७, १९, २२। इन्द्रः १८। जातवेदाः २०। पृथिवी २१॥

छन्दः—पिपीलिकामध्यागायत्री ᵐ, प्राजापत्यावृहती ʳ १। गायत्री २, १६। उष्णिक् ३, ६। अनुष्टुप् ४, ८। भुरिग्गायत्री ५। त्रिष्टुप् ७, १५, १९। स्वराड्बृहती ९। निचृत्त्रिष्टुप् १०। विराडनुष्टुप् ११, १४, १८। निचृदनुष्टुप् १२। स्वराडनुष्टुप् १३। स्वराट्त्रिष्टुप् १७, २०। निचृद्गायत्री ᵐ, प्राजापत्यागायत्री ʳ २१। स्वराड्गायत्री २२॥

स्वरः—षड्जः १ᵐ, २, ५, १६, २१, २२। मध्यमः १ʳ, ९। ऋषभः ३, ६। गान्धारः ४, ८, ११-१४, १८। धैवतः ७, १०, १५, १७, १९, २०॥

ᵐअपेतो यन्तु पणयोऽसुम्ना देवपीयवः ।
अस्य लोकः सुतावतः ।
ʳद्युभिरहोभिरक्तुभिर्व्यक्तं यमो ददात्ववसानमस्मै॥१॥

सविता ते शरीरेभ्यः पृथिव्यां लोकमिच्छतु ।
तस्मै युज्यन्तामुस्रियाः ॥२॥

वायुः पुनातु सविता पुनात्वग्नेर्भ्राजसा सूर्यस्य वर्चसा।
वि मुच्यन्तामुस्रियाः ॥३॥

अश्वत्थे वो निषदनं पर्णे वो वसतिष्कृता ।
गोभाजऽइत्किलासथ यत्सनवथ पूरुषम् ॥४॥

सविता ते शरीराणि मातुरुपस्थऽआ वपतु। तस्मै पृथिवि शं भव॥५॥
प्रजापतौ त्वा देवतायामुपोदके लोके निदधाम्यसौ। अप नः शोशुचदघम्॥६॥
परᵐ मृत्योऽअनु परेहि पन्थां यस्तेऽअन्यऽइतरो देवयानात् ।
चक्षुष्मते शृण्वते ते ब्रवीमि मा नः प्रजाꣳरीरिषो मोत वीरान्॥७॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

शं वातः शꣳहि ते घृणिः शं ते भवन्त्विष्टकाः।
शं ते भवन्त्वग्नयः पार्थिवासो मा त्वाभि शूशुचन्॥८॥
कल्पन्तां ते दिशस्तुभ्यमापः शिवतमास्तुभ्यं भवन्तु सिन्धवः।
अन्तरिक्षꣳशिवं तुभ्यं कल्पन्तां ते दिशः सर्वाः॥९॥
अश्मन्वती रीयते सꣳरभध्वमुत्तिष्ठत प्र तरता सखायः।
अत्रा जहीमोऽशिवा येऽअसञ्छिवान्वयमुत्तरेमाभि वाजान्॥१०॥
अपाघमप किल्बिषमप कृत्यामपो रपः ।
अपामार्ग त्वमस्मदप दुःष्वप्न्यꣳ सुव ॥११॥
सुमित्रिया नऽआपऽओषधयः सन्तु दुर्मित्रियास्तस्मै
सन्तु योऽस्मान् द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मः ॥१२॥
अनड्वाहमन्वारभामहे सौरभेयꣳस्वस्तये ।
स नऽइन्द्रऽइव देवेभ्यो वह्निः सन्तरणो भव ॥१३॥
उद्वयं तमसस्परि स्वः पश्यन्तऽउत्तरम् ।
देवं देवत्रा सूर्य्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम् ॥१४॥
इमं जीवेभ्यः परिधिं दधामि मैषां नु गादपरोऽअर्थमेतम्।
शतं जीवन्तु शरदः पुरूचीरन्तर्मृत्युं दधतां पर्वतेन ॥१५॥
अग्नऽआयूꣳषि पवसऽआ सुवोर्जमिषं च नः। आरे बाधस्व दुच्छुनाम्॥१६॥
आयुष्मानग्ने हविषा वृधानो घृतप्रतीको घृतयोनिरेधि ।
घृतं पीत्वा मधु चारु गव्यं पितेव पुत्रमभि रक्षतादिमान्स्वाहा॥१७॥
परीमे गामनेषत पर्य्यग्निमहृषत। देवेष्वक्रत श्रवः कऽइमाँ२॥ऽआ दधर्षति॥१८॥
क्रव्यादमग्निं प्र हिणोमि दूरं यमराज्यं गच्छतु रिप्रवाहः ।
इहैवायमितरो जातवेदा देवेभ्यो हव्यं वहतु प्रजानन् ॥१९॥
वह वपां जातवेदः पितृभ्यो यत्रैनान्वेत्थ निहितान् पराके ।
मेदसः कुल्याऽउप तान्त्स्रवन्तु सत्याऽएषामाशिषः सं नमन्ताꣳ स्वाहा॥२०॥
स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरा निवेशनी। यच्छा नः शर्म सप्रथाः।
अप नः शोशुचदघम् ॥२१॥
अस्मात्त्वमधि जातोऽसि त्वदयं जायतां पुनः।
असौ स्वर्गाय लोकाय स्वाहा ॥२२॥

इति पञ्चत्रिंशोऽध्यायः॥

अथ षट्त्रिंशोऽध्यायः॥

—:o:—

ऋषिः—दध्यङ्ङाथर्वणः १, २, ७-१२, १७-१९, २१-२४। विश्वामित्रः ३। वामदेवः ४-६। मेधातिथिः १३। सिन्धुद्वीपः १४-१६। लोपामुद्रा २०॥

देवता—अग्निः १, २०। बृहस्पतिः २। सविता ३। इन्द्रः ४-८। मित्रावरुणौ लिङ्गोक्ताः ९। वातादयः १०। लिङ्गोक्ताः ११। आपः १२, १४-१६। पृथिवी १३। ईश्वरः १७-१९, २१, २२। सोमः २३। सूर्यः २४॥

छन्दः—पङ्क्तिः १। निचृत्पङ्क्तिः २। दैवीबृहती निचृद्गायत्री ३। गायत्री ४, १२, १४-१६। निचृद्गायत्री ५। पादनिचृद्गायत्री ६, १९। वर्द्धमानागायत्री ७। द्विपाद्विराड्-गायत्री ८। निचृदनुष्टुप् ९, २३। विराडनुष्टुप् १०। अतिशक्वरी ११। पिपीलिकामध्यानिचृद् गायत्री १३। भुरिक्शक्वरी १७। भुरिग्जगती १८। भुरिग्बृहती २०। अनुष्टुप् २१। भुरिगुष्णिक् २२। भुरिग्राहीत्रिष्टुप् २४॥

स्वरः—पञ्चमः १, २, ११। मध्यमः ३, २०। षड्जः ३, ४-८, १२-१६, १९। गान्धारः ९, १०, २१, २३। धैवतः १७, २४। निषादः १८। ऋषभः २२।

ऋचं वाचं प्र पद्ये मनो यजुः प्र पद्ये साम प्राणं प्र पद्ये
चक्षुः श्रोत्रं प्र पद्ये। वागोजः सहौजो मयि प्राणापानौ ॥१॥
यन्मे छिद्रं चक्षुषो हृदयस्य मनसो वातितृण्णं बृहस्पतिर्मे तद्दधातु।
शं नो भवतु भुवनस्य यस्पतिः ॥२॥
भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि ।
धियो यो नः प्रचोदयात् ॥३॥
कया नश्चित्रऽआ भुवदूती सदावृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता॥४॥
कस्त्वा सत्यो मदानां मꣳहिष्ठो मत्सदन्धसः। दृढा चिदारुजे वसु॥५॥
अभी षु णः सखीनामविता जरितॄणाम्। शतं भवास्यूतिभिः ॥६॥
कया त्वं नऽऊत्याभि प्र मन्दसे वृषन्। कया स्तोतृभ्यऽआ भर॥७॥
इन्द्रो विश्वस्य राजति। शन्नोऽअस्तु द्विपदे शं चतुष्पदे ॥८॥
शन्नो मित्रः शं वरुणः शन्नो भवत्वर्य्यमा ।
शन्नऽइन्द्रो बृहस्पतिः शन्नो विष्णुरुरुक्रमः ॥९॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

शन्नो॒ वातः॑ पवता॒ꣳ शन्न॑स्तपतु॒ सूर्य्यः॑ ।
शन्नः॒ कनि॑क्रदद्दे॒वः प॒र्जन्यो॑ऽअ॒भि व॑र्षतु ॥१०॥
अहा॑नि॒ शं भव॑न्तु नः॒ शꣳरात्रीः॒ प्रति॑ धीयताम् ।
शन्न॑ऽइन्द्रा॒ग्नी भ॑वता॒मवो॑भिः॒ शन्न॒ऽइन्द्रा॒वरु॑णा रा॒तह॑व्या ।
शन्न॑ऽइन्द्रापू॒षणा॒ वाज॑सातौ॒ शमिन्द्रा॒सोमा॑ सुवि॒ताय॒ शंयोः ॥११॥
शन्नो॑ दे॒वीर॒भिष्ट॑य॒ऽआपो॑ भवन्तु पी॒तये॑। शंयोर॒भि स्र॑वन्तु नः॥१२॥
स्यो॒ना पृ॑थिवि नो भवानृक्ष॒रा नि॒वेश॑नी। यच्छा॑ नः॒ शर्म॑ स॒प्रथाः॑॥१३॥
आपो॒ हि ष्ठा म॑यो॒भुव॒स्ता न॑ऽऊ॒र्जे द॑धातन। म॒हे रणा॑य॒ चक्ष॑से॥१४॥
यो वः॑ शि॒वत॑मो॒ रस॒स्तस्य॑ भाजयते॒ह नः॑। उ॒श॒तीरि॑व मा॒तरः॑॥१५॥
तस्मा॒ऽअरं॑ गमाम वो॒ यस्य॒ क्षया॑य॒ जिन्व॑थ। आपो॑ ज॒नय॑था च नः॥१६॥
द्यौः शान्ति॑र॒न्तरि॑क्षꣳ शान्तिः॑ पृथि॒वी शान्ति॒रापः॒ शान्ति॒रोष॑धयः॒
शान्तिः॑। वन॒स्पत॑यः॒ शान्ति॒र्विश्वे॑ दे॒वाः शान्ति॒र्ब्रह्म॒ शान्तिः॒ सर्व॒ꣳ
शान्तिः॒ शान्ति॑रे॒व शान्तिः॒ सा मा॒ शान्ति॑रेधि ॥१७॥
दृते॒ दृꣳह॑ मा मि॒त्रस्य॑ मा॒ चक्षु॑षा॒ सर्वा॑णि भू॒तानि॒ समी॑क्षन्ताम्।
मि॒त्रस्या॒हं चक्षु॑षा॒ सर्वा॑णि भू॒तानि॒ समी॑क्षे। मि॒त्रस्य॒ चक्षु॑षा॒ समी॑क्षामहे॥१८॥
दृते॒ दृꣳह॑ मा। ज्योक्ते॑ सं॒दृशि॑ जीव्यासं॒ ज्योक्ते॑ सं॒दृशि॑ जीव्यासम्॥१९॥
नम॑स्ते॒ हर॑से शो॒चिषे॒ नम॑स्तेऽअस्त्व॒र्चिषे॑ ।
अ॒न्याँस्ते॑ऽअ॒स्मत्त॑पन्तु हे॒तयः॑ पाव॒कोऽअ॒स्मभ्य॑ꣳशिवो भ॑व॥२०॥
नम॑स्तेऽअस्तु वि॒द्युते॒ नम॑स्ते स्तनयि॒त्नवे॑ ।
नम॑स्ते भगवन्नस्तु॒ यतः॒ स्वः॒ स॒मीह॑से ॥२१॥
यतो॑ यतः स॒मीह॑से॒ ततो॑ नो॒ऽअभ॑यं कुरु ।
शं नः॑ कुरु प्र॒जाभ्योऽभ॑यं नः प॒शुभ्यः॑ ॥२२॥
सु॒मि॒त्रि॒या न॒ऽआप॒ऽओष॑धयः सन्तु दुर्मित्रि॒यास्तस्मै॑ सन्तु॒
यो॒ऽस्मान् द्वेष्टि॒ यं च॑ व॒यं द्वि॒ष्मः ॥२३॥
तच्चक्षु॑र्दे॒वहि॑तं पु॒रस्ता॑च्छु॒क्रमुच्च॑रत्। पश्ये॑म श॒रदः॑ श॒तं
जीवे॑म श॒रदः॑ श॒तꣳ शृणु॑याम श॒रदः॑ श॒तं प्र ब्र॑वाम श॒रदः॑
श॒तमदी॑नाः स्याम श॒रदः॑ श॒तं भूय॑श्च श॒रदः॑ श॒तात् ॥२४॥

इति षट्त्रिंशोऽध्यायः॥

अथ सप्तत्रिंशोऽध्यायः॥

—:०:—

ऋषिः—दध्यङ्ङाथर्वणः १, ३-६, ८-१६, १८। श्यावाश्वः २। कण्वः ७। दीर्घतमाः १७। अथर्वणः १९-२१।

देवता—सविता १, २, ११। द्यावापृथिव्यौ ३। यज्ञः ४-६, ८। ईश्वरः ७, १४, १६-२१। विद्वान् ९, १३। विद्वांसः १०। पृथिवी १२। अग्निः १५॥

छन्दः—निचृदुष्णिक् १। जगती २। ब्राह्मीगायत्री ३। निचृत्पङ्क्तिः ४। स्वराड्ब्राह्मी गायत्री ५। भुरिगतिजगती ६। निचृदष्टिः ७। स्वराडतिधृतिः ८। अतिशक्वरी ९। स्वराट्पङ्क्तिः १०। त्रिष्टुप् ११। स्वराडुत्कृतिः १२। निचृद्गायत्री १३। भुरिगनुष्टुप् १४। निचृद्ब्राह्म्यनुष्टुप् १५। भुरिग्बृहती १६। निचृत्त्रिष्टुप् १७। निचृदत्यष्टिः १८। विराडुष्णिक् १९। निचृदतिजगती २०। अनुष्टुप् २१॥

स्वरः—ऋषभः १, १९। निषादः २, ६, २०। षड्जः ३, ५, १२, १३। पञ्चमः ४, ९, १०। मध्यमः ७, ८, १६। धैवतः ११, १७। गान्धारः १४, १५, १८, २१॥

दे॒वस्य॑ त्वा सवि॒तुः प्र॑स॒वे॒ऽश्विनो॑र्बा॒हुभ्यां॑ पू॒ष्णो हस्ता॑भ्याम् ।
आ द॑दे॒ नारि॑रसि ॥१॥
यु॒ञ्जते॒ मन॑ऽउ॒त यु॑ञ्जते॒ धियो॒ विप्रा॒ विप्र॑स्य बृह॒तो वि॑प॒श्चितः॑।
वि होत्रा॑ दधे वयुना॒विदेक॒ऽइन्म॒ही दे॒वस्य॑ सवि॒तुः परि॑ष्टुतिः॥२॥
देवी॑ द्यावापृथिवी म॒खस्य॑ वाम॒द्य शिरो॑ राध्यासं देव॒यज॑ने पृथि॒व्याः।
म॒खाय॑ त्वा म॒खस्य॑ त्वा शी॒र्ष्णे ॥३॥
देव्यो॑ वम्र्यो भू॒तस्य॑ प्रथम॒जा म॒खस्य॑ वो॒ऽद्य शिरो॑ राध्यासं
देव॒यज॑ने पृथि॒व्याः। म॒खाय॑ त्वा म॒खस्य॑ त्वा शी॒र्ष्णे ॥४॥
इय॒त्यग्र॑ऽआसीन्म॒खस्य॑ ते॒ऽद्य शिरो॑ राध्यासं देव॒यज॑ने पृथि॒व्याः।
म॒खाय॑ त्वा म॒खस्य॑ त्वा शी॒र्ष्णे ॥५॥
इन्द्र॒स्यौजः॑ स्थ म॒खस्य॑ वो॒ऽद्य शिरो॑ राध्यासं देव॒यज॑ने पृथि॒व्याः।
म॒खाय॑ त्वा म॒खस्य॑ त्वा शी॒र्ष्णे। म॒खाय॑ त्वा म॒खस्य॑ त्वा शी॒र्ष्णे।
म॒खाय॑ त्वा म॒खस्य॑ त्वा शी॒र्ष्णे ॥६॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्रैतु ब्रह्मणस्पतिः प्र देव्येतु सूनृता । अच्छा वीरं नर्यं पङ्क्तिराधसं देवा यज्ञं नयन्तु नः। मुखाय त्वा मुखस्य त्वा शीर्ष्णे । मुखाय त्वा मुखस्य त्वा शीर्ष्णे । मुखाय त्वा मुखस्य त्वा शीर्ष्णे ॥७॥

मुखस्य शिरोऽसि मुखाय त्वा मुखस्य त्वा शीर्ष्णे। मुखस्य शिरोऽसि मुखाय त्वा मुखस्य त्वा शीर्ष्णे। मुखस्य शिरोऽसि मुखाय त्वा मुखस्य त्वा शीर्ष्णे। मुखाय त्वा मुखस्य त्वा शीर्ष्णे । मुखाय त्वा मुखस्य त्वा शीर्ष्णे । मुखाय त्वा मुखस्य त्वा शीर्ष्णे ॥८॥

अश्वस्य त्वा वृष्णः शक्ना धूपयामि देवयजने पृथिव्याः । मुखाय त्वा मुखस्य त्वा शीर्ष्णे । अश्वस्य त्वा वृष्णः शक्ना धूपयामि देवयजने पृथिव्याः । मुखाय त्वा मुखस्य त्वा शीर्ष्णे । अश्वस्य त्वा वृष्णः शक्ना धूपयामि देवयजने पृथिव्याः । मुखाय त्वा मुखस्य त्वा शीर्ष्णे। मुखाय त्वा मुखस्य त्वा शीर्ष्णे। मुखाय त्वा मुखस्य त्वा शीर्ष्णे। मुखाय त्वा मुखस्य त्वा शीर्ष्णे॥९॥

ऋजवे त्वा साधवे त्वा सुक्षित्यै त्वा। मुखाय त्वा मुखस्य त्वा शीर्ष्णे। मुखाय त्वा मुखस्य त्वा शीर्ष्णे। मुखाय त्वा मुखस्य त्वा शीर्ष्णे॥१०॥

यमाय त्वा मुखाय त्वा सूर्य्यस्य त्वा तपसे । देवस्त्वा सविता मध्वानक्तु पृथिव्याः सꣳ स्पृशस्पाहि। अर्चिरसि शोचिरसि तपोऽसि ॥११॥

अनाधृष्टा पुरस्ताद्वह्नेराधिपत्यऽआयुर्मे दाः । पुत्रवती दक्षिणतऽइन्द्रस्याधिपत्ये प्रजां मे दाः । सुषदा पश्चाद्दैवस्य सवितुराधिपत्ये चक्षुर्मे दाः । आश्रुतिरुत्तरतो धातुराधिपत्ये रायस्पोषं मे दाः । विधृतिरुपरिष्टाद् बृहस्पतेराधिपत्यऽओजो मे दाः । विश्वाभ्यो मा नाष्ट्राभ्यस्पाहि मनोरश्वासि ॥१२॥

स्वाहा मरुद्भिः परि श्रीयस्व दिवः सꣳ स्पृशस्पाहि। मधु मधु मधु ॥१३॥

गर्भो देवानां पिता मतीनां पतिः प्रजानाम् । सं देवो देवेन सवित्रा गत सꣳ सूर्य्येण रोचते ॥१४॥

समग्निरग्निना गत सं दैवेन सवित्रा सꣳसूर्य्येणारोचिष्ट। स्वाहा समग्निस्तपसा गत सं दैव्येन सवित्रा सꣳसूर्य्येणारूरुचत॥१५॥

धर्त्ता दिवो वि भाति तपसस्पृथिव्यां धर्त्ता देवो देवानाममर्त्यस्तपोजाः। वाचमस्मे नि यच्छ देवायुवम् ॥१६॥

अपश्यं गोपामनिपद्यमानमा च परा च पथिभिश्चरन्तम् । स सध्रीचीः स विषूचीर्वसानऽआ वरीवर्त्ति भुवनेष्वन्तः ॥१७॥

विश्वासां भुवां पते विश्वस्य मनसस्पते विश्वस्य वचसस्पते सर्वस्य वचसस्पते। देवश्रुत्त्वं देव धर्म देवो देवान् पाह्यत्र प्रावीरनु वां देववीतये। मधु माध्वीभ्यां मधु माधूचीभ्याम् ॥१८॥

हृदे त्वा मनसे त्वा दिवे त्वा सूर्य्याय त्वा। ऊर्ध्वोऽअध्वरं दिवि देवेषु धेहि ॥१९॥

पिता नोऽसि पिता नो बोधि नमस्तेऽअस्तु मा मा हिꣳसीः। त्वष्टर्मन्तस्त्वा सपेम पुत्रान् पशून् मयि धेहि प्रजामस्मासु धेह्यरिष्टाहꣳसह पत्या भूयासम् ॥२०॥

अहः केतुना जुषताꣳ सुज्योतिर्ज्योतिषा स्वाहा । रात्रिः केतुना जुषताꣳ सुज्योतिर्ज्योतिषा स्वाहा ॥२१॥

इति सप्तत्रिंशोऽध्यायः॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अथाष्टात्रिंशोऽध्यायः॥

—:o:—

ऋषिः—अथर्वणः १-४। दीर्घतमाः ५-२८॥

देवता—सविता १, २४। सरस्वती २, ४। पूषा ३। वाक् ५। अश्विनौ ६, १०, १२, १३। वातः ७। इन्द्रः ८, २६। वायुः ९। यज्ञः ११, १८-२२, २७, २८। द्यावापृथिवी १४। पूषावयो लिङ्गोक्ताः १५। रुद्रादयः १६। अग्निः १७। आपः २३। ईश्वरः २५॥

छन्दः—उष्णिक् १। निचृद्गायत्री २। भुरिक्साम्नीबृहती ३। आर्चीपङ्क्तिः ४, १२। निचृदतिजगती ५। निचृदत्यष्टिः ६। भुरिगष्टिः ७। अष्टिः ८। भुरिग्गायत्री ९। अनुष्टुप् १०, २१। विराडुष्णिक् ११। निचृदुष्णिक् १३। अतिशक्वरी १४। स्वराड्जगती १५। भुरिगतिधृतिः १६। निचृदतिशक्वरी १७। भुरिगाकृतिः १८। निचृदुपरिष्टाद्बृहती १९। निचृत्त्रिष्टुप् २०। परोष्णिक् २२। निचृदनुष्टुप् २३। विराडनुष्टुप् २४। साम्नीपङ्क्तिः २५। स्वराट्पङ्क्तिः २६। पङ्क्तिः २७। स्वराड्धृतिः २८॥

स्वरः—ऋषभः १, ११, १३, २२। षड्जः २, ९, १६। मध्यमः ३, ७, ८, १९। पञ्चमः ४, १२, १४, १७, १८, २५-२८। निषादः ५, १५। गान्धारः ६, १०, २१, २३, २४। धैवतः २०॥

देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्।
आ ददेऽविंत्यै रास्नासि ॥१॥
इडऽएहविंतऽएहि सरस्वत्येहि। असावेह्यसावेह्यसावेहि॥२॥
अविंत्यै रास्नासीन्द्राण्याऽउष्णीषः। पूषासि घर्माय दीष्व॥३॥
अश्विभ्यां पिन्वस्व सरस्वत्यै पिन्वस्वेन्द्राय पिन्वस्व।
स्वाहेन्द्रवत् स्वाहेन्द्रवत् स्वाहेन्द्रवत् ॥४॥
यस्ते स्तनः शशयो यो मयोभूर्यो रत्नधा वसुविद्यः सुदत्रः।
येन विश्वा पुष्यसि वार्याणि सरस्वति तमिह धातवेऽकः।
उर्वन्तरिक्षमन्वेमि ॥५॥
गायत्रं छन्दोऽसि त्रैष्टुभं छन्दोऽसि द्यावापृथिवीभ्यां त्वा परि
गृह्णाम्युन्तरिक्षेणोप यच्छामि। इन्द्राश्विना मधुनः सारघस्य घर्मं
पात वसवो यजत वाट् स्वाहा सूर्य्यस्य रश्मये वृष्टिवनये॥६॥
समुद्राय त्वा वाताय स्वाहा। सरिराय त्वा वाताय स्वाहा।
अनाधृष्याय त्वा वाताय स्वाहा। अप्रतिधृष्याय त्वा वाताय स्वाहा।
अवस्यवे त्वा वाताय स्वाहा। अशिमिदाय त्वा वाताय स्वाहा॥७॥
इन्द्राय त्वा वसुमते रुद्रवते स्वाहेन्द्राय त्वादित्यवते स्वाहेन्द्राय
त्वाभिमातिघ्ने स्वाहा। सवित्रे त्वाऽऋभुमते विभुमते वाजवते
स्वाहा बृहस्पतये त्वा विश्वदेव्यावते स्वाहा ॥८॥
यमाय त्वाङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा। स्वाहा घर्माय स्वाहा घर्मः पित्रे॥९॥
विश्वाऽआशा दक्षिणसद्विश्वान्देवानयाड्डिह ।
स्वाहाकृतस्य घर्मस्य मधोः पिबतमश्विना ॥१०॥
दिवि धाऽडूमं यज्ञमिमं यज्ञं दिवि धाः ।
स्वाहाग्नये यज्ञियाय शं यजुर्भ्यः ॥११॥
अश्विना घर्मं पातꣳहार्द्वानमहर्दिवाभिरूतिभिः ।
तन्नायिणे नमो द्यावापृथिवीभ्याम् ॥१२॥
अपातामश्विना घर्ममनु द्यावापृथिवीऽअमꣳसाताम्।
इहैव रातयः सन्तु ॥१३॥
इषे पिन्वस्वोर्जे पिन्वस्व ब्रह्मणे पिन्वस्व क्षत्राय पिन्वस्व
द्यावापृथिवीभ्यां पिन्वस्व। धर्मासि सुधर्मामेन्यस्मे नृम्णानि
धारय ब्रह्म धारय क्षत्रं धारय विशं धारय॥१४॥
स्वाहा पूष्णे शरसे स्वाहा ग्रावभ्यः स्वाहा प्रतिरवेभ्यः।
स्वाहा पितृभ्यऽऊर्ध्वबर्हिर्भ्यो घर्मपावभ्यः स्वाहा
द्यावापृथिवीभ्याꣳ स्वाहा विश्वेभ्यो देवेभ्यः ॥१५॥
स्वाहा रुद्राय रुद्रहूतये स्वाहा सं ज्योतिषा ज्योतिः।
अहः केतुना जुषताꣳ सुज्योतिर्ज्योतिषा स्वाहा।
रात्रिः केतुना जुषताꣳ सुज्योतिर्ज्योतिषा स्वाहा।
मधु हुतमिन्द्रतमेऽअग्नावश्याम ते देव घर्म
नमस्तेऽअस्तु मा मा हिꣳसीः ॥१६॥
अभीमं महिमा दिवं विप्रो बभूव सप्रथाः ।
उत श्रवसा पृथिवीꣳसꣳसीदस्व महाँ२॥ऽअसि रोचस्व देववीतमः।
वि धूममग्ने अरुषं मियेध्य सृज प्रशस्त दर्शतम् ॥१७॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

या ते घर्म दिव्या शुग्या गायत्र्याश्छ हविर्धाने ।
सा तऽआ प्यायतान्निष्ट्यायतां तस्यै ते स्वाहा ।
या ते घर्मान्तरिक्षे शुग्या त्रिष्टुब्भ्याग्नीध्रे ।
सा तऽआ प्यायतान्निष्ट्यायतां तस्यै ते स्वाहा ।
या ते घर्म पृथिव्याश्छ शुग्या जगत्याश्छसवस्या ।
सा तऽआ प्यायतान्निष्ट्यायतां तस्यै ते स्वाहा ॥१८॥
क्षत्रस्य त्वा पुरस्पाय ब्रह्मणस्तन्वं पाहि ।
विशस्त्वा धर्मणा वयमनु क्रामाम सुविताय नव्यसे॥१९॥
चतुःस्त्रक्तिनाभिर्ऋतस्य सप्रथाः स नो विश्वायुः सप्रथाः स नः
सर्वायुः सप्रथाः। अप द्वेषोऽअप ह्वरोऽन्यव्रतस्य सश्चिम॥२०॥
घर्मैतत्ते पुरीषं तेन वर्द्धस्व चा च प्यायस्व ।
वर्द्धिषीमहि च वयमा च प्यासिषीमहि ॥२१॥
अचिक्रदद् वृषा हरिर्महान्मित्रो न दर्शतः ।
सꣳसूर्य्येण दिद्युतदुदधिर्निधिः ॥२२॥
सुमित्रिया नऽआपऽओषधयः सन्तु दुर्मित्रियास्तस्मै
सन्तु योऽस्मान् द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मः ॥२३॥
उद्वयन्तमसस्परि स्वः पश्यन्तऽउत्तरम् ।
देवं देवत्रा सूर्य्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम् ॥२४॥
एधोऽस्येधिषीमहि समिदसि तेजोऽसि तेजो मयि धेहि ॥२५॥
यावती द्यावापृथिवी यावच्च सप्त सिन्धवो वितस्थिरे ।
तावन्तमिन्द्र ते ग्रहमूर्जा गृह्णाम्यक्षितं मयि गृह्णाम्यक्षितम् ॥२६॥
मयि त्यदिन्द्रियं बृहन्मयि दक्षो मयि क्रतुः ।
घर्मस्त्रिशुग्वि राजति विराजा ज्योतिषा सह ब्रह्मणा तेजसा सह॥२७॥
पर्यसो रेतऽआभृतं तस्य दोहमशीमह्युत्तरामुत्तराꣳ समाम् ।
त्विषः संवृक्तक्त्वे दक्षस्य ते सुषुम्णस्य ते सुषुम्णाग्निहुतः ।
इन्द्रपीतस्य प्रजापतिभक्षितस्य मधुमतऽउपहूतऽउपहूतस्य भक्षयामि॥२८॥

इत्याष्टात्रिंशोऽध्यायः॥

अथैकोनचत्वारिंशोऽध्यायः॥

—:o:—

ऋषिः—दीर्घतमाः १-१३॥

देवता—प्राणादयो लिङ्गोक्ताः १। विगादयो लिङ्गोक्ताः २। वागादयो लिङ्गोक्ताः ३। श्रीः ४। प्रजापतिः ५। सवितादयः ६। मरुतः ७। अग्न्यादयो लिङ्गोक्ताः ८। उग्रादयो लिङ्गोक्ताः ९। अग्निः १०-१३॥

छन्दः—पङ्क्तिः १। भुरिगनुष्टुप् २। स्वराडनुष्टुप् ३। निचृद्बृहती ४। कृतिः ५। विराड्धृतिः ६। भुरिग्गायत्री ७। निचृदत्यष्टिः ८। भुरिगष्टिः ९। आकृतिः १०। स्वराड् जगती ११। त्रिष्टुप् १२। निचृत्त्रिष्टुप् १३॥

स्वरः—पञ्चमः १, १०। गान्धारः २, ३, ८। मध्यमः ४, ९। निषादः ५, ११। धैवतः ६, १२, १३। षड्जः ७॥

स्वाहा प्राणेभ्यः साधिपतिकेभ्यः। पृथिव्यै स्वाहाग्नये स्वाहान्तरिक्षाय स्वाहा वायवे स्वाहा दिवे स्वाहा सूर्य्याय स्वाहा ॥१॥
दिग्भ्यः स्वाहा चन्द्राय स्वाहा नक्षत्रेभ्यः स्वाहाद्भ्यः स्वाहा
वरुणाय स्वाहा। नाभ्यै स्वाहा पूताय स्वाहा ॥२॥
वाचे स्वाहा प्राणाय स्वाहा प्राणाय स्वाहा ।
चक्षुषे स्वाहा चक्षुषे स्वाहा। श्रोत्राय स्वाहा श्रोत्राय स्वाहा॥३॥
मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीय ।
पशूनाꣳरूपमन्नस्य रसो यशः श्रीः श्रयतां मयि स्वाहा॥४॥
प्रजापतिः सम्भ्रियमाणः सम्राट् सम्भृतो वैश्वदेवः सꣳसन्नो
घर्मः प्रवृक्तस्तेजऽउद्यतऽआश्विनः पर्यस्यानीयमाने पौष्णो
विष्यन्दमाने मारुतः क्लर्थन्। मैत्रः शरसि सन्ताय्यमाने
वायव्यो हूयमाणऽआग्नेयो हूयमानो वाग्घुतः ॥५॥
सविता प्रथमेऽहन्नग्निर्द्वितीये वायुस्तृतीयऽआदित्यश्चतुर्थे चन्द्रमाः
पञ्चमऽऋतुः षष्ठे मरुतः सप्तमे बृहस्पतिरष्टमे। मित्रो नवमे
वरुणो दशमऽइन्द्रऽएकादशे विश्वेदेवा द्वादशे ॥६॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उग्रश्चं भीमश्च ध्वान्तश्च धुनिश्च ।
सासह्वाँश्चाभियुग्वा चं विक्षिपः स्वाहा ॥७॥
अग्निःहृदयेनाशनिःहृदयाग्रेण पशुपतिं कृत्स्नहृदयेन भुवं युक्ना।
शर्वं मतस्नाभ्यामीशानं मन्युना महादेवमन्तः पर्शव्येनोग्रं देवं
वनिष्युना वसिष्ठहनुः शिङ्गीनि कोश्याभ्याम् ॥८॥
उग्रं लोहितेन मित्रःसौव्रत्येन रुद्रं दौव्रत्येनेन्द्रं प्रक्रीडेन मरुतो
बलेन साध्यान् प्रमुदा। भवस्य कण्ठ्यःरुद्रस्यान्तः पार्श्व्यं
महादेवस्य यकृच्छर्वस्य वनिष्ठुः पशुपतेः पुरीतत्॥९॥
लोमभ्यः स्वाहा लोमभ्यः स्वाहा त्वचे स्वाहा त्वचे स्वाहा
लोहिताय स्वाहा लोहिताय स्वाहा मेदोभ्यः स्वाहा
मेदोभ्यः स्वाहा। माँसेभ्यः स्वाहा माँसेभ्यः स्वाहा
स्नावभ्यः स्वाहा स्नावभ्यः स्वाहास्थभ्यः स्वाहास्थभ्यः स्वाहा
मज्जभ्यः स्वाहा मज्जभ्यः स्वाहा। रेतसे स्वाहा पायवे स्वाहा॥१०॥
आयासाय स्वाहा प्रायासाय स्वाहा संयासाय स्वाहा
वियासाय स्वाहोद्यासाय स्वाहा। शुचे स्वाहा शोचते स्वाहा
शोचमानाय स्वाहा शोकाय स्वाहा ॥११॥
तपसे स्वाहा तप्यते स्वाहा तप्यमानाय स्वाहा
तप्ताय स्वाहा घर्माय स्वाहा। निष्कृत्यै स्वाहा
प्रायश्चित्यै स्वाहा भेषजाय स्वाहा ॥१२॥
यमाय स्वाहान्तकाय स्वाहा मृत्यवे स्वाहा ।
ब्रह्मणे स्वाहा ब्रह्महत्यायै स्वाहा विश्वेभ्यो
देवेभ्यः स्वाहा द्यावापृथिवीभ्याँस्वाहा ॥१३॥

इत्येकोनचत्वारिंशोऽध्यायः॥

अथ चत्वारिंशोऽध्यायः॥

—:o:—

ऋषिः—दीर्घतमाः १-१७॥
देवता—आत्मा १-३, ५-१७। ब्रह्म ४॥
छन्दः—अनुष्टुप् १, ३, ९-११, १३, १७। भुरिगनुष्टुप् २। निचृत्त्रिष्टुप् ४, १६। निचृदनुष्टुप् ५-७, १२। स्वराड्जगती ८। स्वराडुष्णिक् १४, १५॥
स्वरः—गान्धारः १, ३, ५-७, ९-१३, १७। धैवतः ४, १६। निषादः ८। ऋषभः १४, १५॥

ईशा वास्यमिदःसर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत् ।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्य स्विद्धनम् ॥१॥
कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतःसमाः ।
एवं त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे ॥२॥
असुर्य्या नाम ते लोकाऽअन्धेन तमसावृताः ।
ताँस्ते प्रेत्यापि गच्छन्ति ये के चात्महनो जनाः ॥३॥
अनेजदेकं मनसो जवीयो नैनद्देवाऽआप्नुवन् पूर्वमर्शत् ।
तद्धावतोऽन्यानत्येति तिष्ठत्तस्मिन्नपो मातरिश्वा दधाति ॥४॥
तदेजति तन्नैजति तद् दूरे तद्वन्तिके ।
तदन्तरस्य सर्वस्य तदु सर्वस्यास्य बाह्यतः ॥५॥
यस्तु सर्वाणि भूतान्यात्मन्नेवानुपश्यति ।
सर्वभूतेषु चात्मानं ततो न वि चिकित्सति ॥६॥
यस्मिन्त्सर्वाणि भूतान्यात्मैवाभूद्विजानतः ।
तत्र को मोहः कः शोकऽएकत्वमनुपश्यतः ॥७॥
स पर्य्यगाच्छुक्रमकायमव्रणमस्नाविरःशुद्धमपापविद्धम् ।
कविर्मनीषी परिभूः स्वयम्भूर्याथातथ्यतोऽर्थान्
व्यदधाच्छाश्वतीभ्यः समाभ्यः ॥८॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अन्धन्तमः प्र विशन्ति येऽसम्भूतिमुपासते ।
ततो भूयऽइव ते तमो यऽउ सम्भूत्याꣳ रताः ॥९॥
अन्यदेवाहुः सम्भवादन्यदाहुरसम्भवात् ।
इति शुश्रुम धीराणां ये नस्तद्विचचक्षिरे ॥१०॥
सम्भूतिं च विनाशं च यस्तद्वेदोभयꣳसह ।
विनाशेन मृत्युं तीर्त्वा सम्भूत्यामृतमश्नुते ॥११॥
अन्धन्तमः प्र विशन्ति येऽविद्यामुपासते ।
ततो भूयऽइव ते तमो यऽउ विद्यायाꣳरताः ॥१२॥
अन्यदेवाहुर्विद्यायाऽअन्यदाहुरविद्यायाः ।
इति शुश्रुम धीराणां ये नस्तद्विचचक्षिरे ॥१३॥
विद्यां चाविद्यां च यस्तद्वेदोभयꣳसह ।
अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा विद्ययामृतमश्नुते ॥१४॥
वायुरनिलममृतमथेदं भस्मान्तꣳशरीरम् ।
ओ३म् क्रतो स्मर क्लिबे स्मर कृतꣳस्मर ॥१५॥
अग्ने नय सुपथा रायेऽअस्मान्विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्।
युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नमऽउक्तिं विधेम॥१६॥
हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितं मुखम् ।
योऽसावादित्ये पुरुषः सोऽसावहम्। ओ३म् खं ब्रह्म॥१७॥

इति चत्वारिंशोऽध्यायः॥
इत्युत्तरविंशतिः समाप्ता॥
समाप्ता यजुर्वेद-संहिता॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अथ शुक्लयजुर्वेदमन्त्राणां वर्णानुक्रमणी

	अ.	क.
अंशुना ते अंशुः	२०.	२७
अंशुरंशुष्टे देव	५.	७
अंशुश्च मे रश्मिश्च	१८.	१९
अक्रन्कर्म कर्मकृतः	३.	४७
अक्रन्ददग्नि स्तनयन्	१२.	६
	१२.	२१
	१२.	३३
अक्षन्नमीमदन्त ह्यव	३.	५१
अक्षराजाय कितवङ्कृताया	३०.	१८
अग्न आयूंषि पवस	१९.	३८
	३५.	१६
अग्न इन्द्र वरुण मित्र	३३.	४८
अग्नये कव्यवाहनाय	२.	२९
अग्नये कुटरुनालभते	२४.	२३
अग्नये गायत्राय त्रिवृते	२९.	६०
अग्नये गृहपतये स्वाहा	१०.	२३
अग्नये त्वा मह्यं वरुणो	७.	४७
अग्नयेनीकवते प्रथमजा	२४.	१६
अग्नयेनीकवते रोहिता	२९.	५९
अग्नये पीवानम्पृथिव्यै	३०.	२१
अग्नये स्वाहा० स्वाहापां	२२.	६
अग्नये स्वाहा० स्वाहेन्द्राय	२२.	२७
अग्ना इ पत्नीवन्त्सजूर्देवेन	८.	१०
अग्नावग्निश्चरति प्रविष्ट	५.	४
अग्निं युनज्मि शवसा	१८.	५१
अग्निं स्तोमेन बोधय	२२.	१५
अग्निं हृदयेनाशनिं	३९.	८
अग्निं होतारम्मन्ये	१५.	४७
अग्निः पशुरासीत्तेना	२३.	१७
अग्निः पृथुर्धर्मणस्पति	१०.	२९
अग्निः प्रियेषु धामसु	१२.	११७
अग्निन्तम्मन्ये यो	१५.	४१
अग्निन्दूतम्पुरो दधे	२२.	१७
अग्निमद्य० पुरोडाशं० छागम्	२८.	२३
अग्निमद्य० पुरोडाशं० वयोधसे	२८.	४६
अग्निमद्य० पुरोडाशान्	२१.	५९
अग्निरस्मि जन्मना	१८.	६६
अग्निरेकाक्षरेण प्राण	९.	३१
अग्निर्ऋषिः पवमानः	२६.	९
अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः	३.	९
अग्निर्ज्योतिषा ज्योतिष्मान्	१३.	४०
अग्निर्देवता वातो देवता	१४.	२०
अग्निर्मूर्द्धा० जिन्वति ।	३.	१२
	१५.	२०
अग्निर्मूर्द्धा० जिन्वति । इन्द्रस्य	१३.	१४
अग्निर्वृत्राणि जङ्घनद्	३३.	९
अग्निश्च पृथिवी च	२६.	१
अग्निश्च म आपश्च	१८.	१४
अग्निश्च म इन्द्रश्च	१८.	१६
अग्निश्च मे घर्मश्च	१८.	२२
अग्निष्वात्ताः पितर	१९.	५९
अग्निष्वात्तानृतुमतो	१९.	६१
अग्निस्तिग्मेन शोचिषा	१७.	१६
अग्नीषोमयोरुज्जिति	२.	१५
अग्नेः पक्षतिर्वायो	२५.	४
अग्ने अङ्गिरः शतन्ते	१२.	८
अग्ने अच्छा वदेह नः	९.	२८
अग्ने गृहपते सुगृहपति	२.	२७
अग्ने जातान्प्रणुदा नः	१५.	१
अग्ने तमद्याश्वन्न स्तोमैः	१५.	४४
	१७.	७७
अग्ने तव श्रवो वयो	१२.	१०६
अग्ने त्वं सुजागृहि वयं	४.	१४
अग्ने त्वन्नो० दाः ।	३.	२५
अग्ने त्वन्नो० दाः । तं त्वा	१५.	४८
	२५.	४७
अग्ने त्वम्पुरीष्यो रयिमान्	१२.	५९
अग्नेदब्धायोशीतम	२.	२०
अग्ने दिवो अर्णमच्छा	१२.	४९
अग्ने नय० विधेम ।	५.	३६
	४०.	१६
अग्ने नय० विधेम स्वाहा ।	७.	४३
अग्ने पत्नीरिहावह	२६.	२०
अग्ने पवस्व स्वपा	८.	३८
अग्ने पावक रोचिषा	१७.	८
अग्ने प्रेहि प्रथमो	१७.	६९
अग्ने ब्रह्म गृभ्णीष्व	१.	१८
अग्नेभ्यावर्तिन्नभि मा	१२.	७
अग्ने यत्ते दिवि वर्चः	१२.	४८
अग्ने यत्ते शुक्रं यच्चन्द्रं	१२.	१०४
अग्ने युक्ष्वा हि ये	१३.	३६
अग्नेरनीकमप आविवेशा	८.	२४
अग्नेर्जनित्रमसि वृषणो	५.	२
अग्नेर्भागोसि दीक्षाया	१४.	२४
अग्नेर्वोपन्नगृहस्य सदसि	६.	२४
अग्ने वाजजिद्वाजन्त्वा	२.	७
अग्ने वाजस्य गोमत	१५.	३५
अग्ने वेर्होत्रं वेर्दूत्यमवता	२.	९
अग्ने व्रतपते व्रतञ्चरिष्यामि	१.	५
अग्ने व्रतपते व्रतमचारिषन	२.	२८
अग्ने व्रतपास्त्वे० तनूरियं	५.	६
अग्ने व्रतपास्त्वे० तनूर्मय्यभूदेषा	५.	४०
अग्ने शर्द्ध महते	३३.	१२
अग्ने सहस्राक्ष शतमूर्द्ध	१७.	७१
अग्ने सहस्व पृतना	९.	३७
अग्नेस्तनूरसि वाचो	१.	१५
अग्नेस्तनूरसि विष्णवे	५.	१
अग्ने स्वाहा कृणुहि	२७.	२२
अग्रेणीरसि स्वावेश	६.	२
अग्रे बृहन्नुषसामूर्द्धो	१२.	१३
अङ्गान्यात्मन्भिषजा	१९.	९३
अङ्गिरसो नः पितरो	१९.	५०
अचिक्रदद्वृषा हरिर्महान्	३८.	२२
अच्छायमेति शवसा	२७.	१४
अच्छिन्नस्य ते देव	७.	१४
अजस्रमिन्दुमरुषम्	१३.	४३
अजारे पिशङ्गिला	२३.	५६
अजीजनो हि पवमान	२२.	१८
अजो ह्यग्नेरजनिष्ट	१३.	५१
अति निहो अति स्रिधो	२७.	६
अति विश्वाः परिष्ठा	१२.	८४
अत्यन्यां अगान्नान्यां	५.	४२
अत्र पितरो मादयध्वं	२.	३१
अत्रा ते रूपमुत्तम	२९.	१८
अथैतानष्टौ विरूपा	३०.	२२
अदब्धेभिः सवितः	३३.	६९
	३३.	८४
अदितिर्द्यौरदितिरन्तरिक्ष	२५.	२३
अदितिष्ट्वा देवी विश्व	११.	६१
अदित्यास्त्वगस्यदित्यै	४.	३०
अदित्यास्त्वा पृष्ठे	१४.	५
अदित्यास्त्वा मूर्द्धन्	४.	२२
अदित्यै रास्नासि विष्णो	१.	३०
अदित्यै रास्नासीन्द्राण्या	३८.	३
अदित्यै रास्नास्यदितिष्टे	११.	५९
अदित्यै व्युन्दनमसि	२.	२
अदृश्रमस्य केतवो वि	८.	४०
अद्भ्यः क्षीरं व्यपिबत्	१९.	७३
अद्भ्यः सम्भृतः पृथिव्यै	३१.	१७
अद्भ्यः स्वाहा वार्भ्यः	२२.	२५
अद्या देवा उदिता	३३.	४२
अधा यथा नः पितरः	१९.	६९
अधा ह्यग्ने क्रतोर्भद्रस्य	१५.	४५
अधि न इन्द्रैषां विष्णो	३३.	४७
अधिपत्न्यसि बृहती	१५.	१४
अध्यवोचदधिवक्ता	१६.	५
अध्वर्यो अद्रिभिः सुतं	२०.	३१
अनड्वान्वयः पङ्क्तिश्छन्दो	१४.	१०

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अनड्वाहकव्यारभामहे ३५. १३
अनाधृष्टा पुरस्तादग्ने १७. १२
अनाधृष्यो जातवेदा २७. ७
अनु ते शुष्मन्तुरयन्त ३३. ६७
अनुत्तमा ते मघवन्नकिर्नु ३३. ७९
अनु त्वा माता मन्यतामनु ४. २०
अनु त्वा रथो अनु मर्यो २९. १९
अनु वीरानुमतिर्यज्ञ ३४. ९
अनु वीरैरनु पुष्यास्व २६. १९
अनेजदेकमनसो ४०. ४
अन्तरो रुद्रा त्वनुस्वाधाः १२. १६
अन्तरा मित्रावरुणा २९. ६
अन्तश्चरति रोचनास्य ३. ७
अन्तस्ते द्यावापृथिवी ७. ५
अन्धन्तमः० येविधा ४०. १२
अन्धन्तमः० येसम्भूति ४०. ९
अन्ध स्थान्धो वो भक्षीय ३. २०
अन्नपतेऽन्नस्य नो ११. ८३
अन्नात्परिस्रुतो रसं १९. ७५
अन्यदेवाहुः सम्भवा ४०. १०
अन्यदेवाहुर्विद्याया ४०. ११
अन्यद्यदोर्धमासाना २४. ३७
अन्या वो अन्यामव १२. ८८
अन्वग्निरुषसामग्रमक्रय ११. १७
अन्विदनुमते त्वमन्यासी ३४. ८
अपघ्नन्नोपशामनिषध ३७. १७
अपां रसमुदवर्सं सूर्ये ९. ३
अपाग्नेय क्विन्निषमर ३५. ११
अपाङ्प्राङ्मन्तसीद मा १३. ३०
अपात्रामग्निना पथ्यया ३८. ११
अपाश्वमग्निरास्तीरक्षसि ३३. ९५
अपान्नेवमन्तरायाम्यान् ११. ५३
अपाद्विश्वयवं १७. ७
अपान्नपाद्यसि योनिरग्नेः ११. २९
११. ३
९. १०
अपाममेवस्यात्मो देवीः १९. ७१
अपारक्रमृषिवित् १. २१
अपि तेषु त्रिषु पदे २३. ५०
अपेत वीत वि च १२. ४५
अपेतो यन्तु पणयो ३५. १
अपो अथान्वचारिषं २०. २२
अपो देवा मधुमती १०. १
अपो देवीरुप सृज ११. १८
अप्रस्वतीमग्निना ३४. २९
अप्वाग्ने सधिष्टव १२. ३६
अप्वन्तरमृतमप्सु ९. ६
अबोध्यग्निः समिधा १५. २४
अभि गोत्राणि सहसा १७. ३९
अभि त्यन्देवं सवितार ४. २५
अभि त्वा शूर नोनुमो २७. ३५
अभिधा असि भुवनमसि २२. ३
अभिप्रयन्त समनेव १७. ९६
अभिभूरस्येतास्ते पञ्च १०. २८
अभि यद्गावोऽशीहि नो २६. २१
अभीममहिमा दिवं ३८. १७
अभी षु णः० भवास्यूतये २७. ४१
अभी षु णः० भवास्यूतिभिः ३६. ६
अभ्यर्षत सुष्टुतिमुक्थ्य १७. ९८
अभ्यादधामि समिधमग्ने २०. २४
अभ्यावर्तस्व पृथिवि १२. १०३
अभिरसि नार्यसि त्वया ११. १०
अमीषाचित्तम्प्रतिलोभयन्ती १७. ४४
अमुत्रभूयादध यद्यमस्य २७. ९
अमेव नः सुहवा आ हि २६. २४
अयं वामभिनावल्गा सुतः ७. ९
अयं वेनश्चोदयत्पृश्निगर्भा ७. १६
अयं सहस्रमृषिभिः ३३. ८३
अयं सो अग्निर्यस्मिन् १२. ४७
अयन्ते योनिर्ऋत्वियो ३. १४
१२. ५२
१५. ५६
अयन्दक्षिणा० मनो १३. ५५
अयन्दक्षिणा० रथ १५. १६
अयज्ञो अग्निर्ययिवि ५. ३७
७. ४४
अयमग्निः पुरीष्यो ३. ४०
अयमग्निः सहस्रिणो १५. २१
अयमग्निर्गृहपतिर्गार्हपत्यः ३. ३९
अयमग्निर्वीरतमो १५. ५३
अयमिह प्रथमो धायि ३. १५
१५. २६
३३. ६
अयमुत्तरात्संयद्वसुस्तस्य १५. १८
अयमुर्वर्याग्वसुस्तस्य १५. १९
अयम्प्रभाद्रिश्वव्यचास्तस्य चक्षु १३. ५६
अयम्प्रभाद्रिश्वव्यचास्तस्य रथ १५. १७
अयम्पुरो भुवस्तस्य १३. ५४
अयम्पुरो हरिकेशः १५. १५
अर्यत स्थ राष्ट्रदा १०. ३
अर्ध ऋचैरुक्थानां १९. २५
अर्धमासाः परूंषि ते २३. ४१
अर्मेभ्यो हस्तिपञ्चवा ३०. ११
अर्यमणम्बृहस्पतिमिन्द्र ९. २७
अर्वाञ्चो अद्या भवता ३३. ५१
अवतत्य धनुष्टं १६. १३
अवपतन्तीरवदन्दिव १२. ९१
अवभृथ० रिपस्पाहि । ३. ४८
अवभृथ० रिपस्पाहि । देवानां ८. २७
अव रुद्रमदीमहव ३. ५८
अवसृष्टा परापत १७. ४५
अविर्न मेषो नसि १९. ९०
अवेष्टा दन्दशूकाः १०. १०
अवोचाम कवये १५. २५
अश्मन्नूर्जम्पर्वते १७. १
अश्मन्वती रीयते ३५. १०
अश्मा च मे मृत्तिका १८. १३
अश्याम तान्त्वामग्ने १८. ७४
अश्वत्थे वो निषदनम् १२. ७९
३५. ४
अश्वत्नूपरो गोषृणस्ते २४. १
अश्वस्य त्वा वृष्णः ३७. ९
अश्वावतीं सोमावती १२. ८१
अश्वावतीर्गोमतीर्न ३४. ४०
अश्विनकृतस्य ते २०. ३५
अश्विना गोभिरिन्द्रिय २०. ७३
अश्विना घर्मप्रीतं ३८. १२
अश्विना तेजसा चक्षुः २०. ८०
अश्विना नमुचेः सुतं २०. ५९
अश्विभ्यां प्रातःसवन २०. ९०
अश्विना भेषजम्मधु २०. ६४
अश्विना हविरिन्द्रिय २०. ६७
अश्विभ्यामश्वशुरवृत १९. ८९
अश्विभ्याम्पच्यस्व १०. ३१
अश्विभ्याम्पिन्वस्व ३८. ४
अश्विभ्याम्प्रातःसवन १९. २६
अश्वो घृतेन त्मन्या २९. १०
अषाढं युत्सु पृतनासु ३४. २०
अषाढासि सहमाना १३. २६
अष्टौ व्यख्यत्ककुभः ३४. २४
असङ्ख्याता सहस्राणि १६. ५४
असवे स्वाहा वसवे २२. ३०
असि यमो अस्यादित्यो २९. १४
असुन्वन्तमयजमानमिच्छ १२. ६२
असुर्या नाम ते लोका ४०. ३
असौ यस्ताम्रो अरुण १६. ६
असौ या सेना मरुतः १७. ४७
असौ योवसर्पति १६. ७
अस्कन्नमद्य देवेभ्य २. ८
अस्ताव्यग्निर्नरां सुशेवो १२. २९
अस्माकमिन्द्रः समृतेषु १७. ४३
अस्मात्त्वमधिजातोसि ३५. २२
अस्मिन्महत्यर्णवे १६. ५५
अस्मे रुद्रा मेहना ३३. ५०
अस्मे यो अस्त्विन्द्रिय ९. २२
अस्य प्रज्ञामनु द्युतं ३. १६
अस्याजरासो दमामरित्रा ३३. १
अस्येदिन्द्रो वावृधे ३३. ९७
अहः केतुना जुषतां ३७. २१
अहरहर्प्रयावभरन्तो ११. ७५
अहानि शम्भवन्तु नः ३६. ११
अह्नाम्ग्ने हविरास्ये २०. ७९
अहिरिव भोगैः पर्येति २९. ५१
अद्रे पारावतानालभते २४. २५
आहुतमसि हविर्धान १. ९
आकूतिमग्निम्प्रयुजं ११. ६६
आकूत्यै प्रयुजेग्नये ४. ७
आ कृष्णेन रजसा ३३. ४३
३४. ३१
आक्रम्य वलमोजो २९. ५६

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

आक्रम्य वाजिन्पृथिवी	११.	१९
आगत्य वाज्यध्वानं	११.	१८
आगन्म विश्ववेदस	३.	३८
आग्नेयः कृष्णग्रीवः	२९.	५८
आग्रायणश्च मे वैश्वदेवश्च	१८.	२०
आ घा ये अग्निमिन्धते	७.	३२
आच्छच्छन्दः प्रच्छच्छन्दः	१५.	५
आच्या जानु दक्षिणतो	१९.	६२
आजघ्नन्ति सान्वेषा	२९.	५०
आजिघ्र कलशम्मह्या	८.	४२
आजुह्वानः सुप्रतीकः	१७.	७३
आजुह्वान ईड्यो वन्द्य	२९.	२८
आजुह्वाना सरस्वती	२०.	५८
आ तत्त इन्द्रायवः	३३.	२८
आ तम्भज सौश्रवसेष्वग्न	१२.	२७
आतिथ्यरूपं मासरम्	१९.	१४
आतिष्ठन्तम्परि विश्वे	३३.	२२
आतिष्ठ वृत्रहन्रथं युक्ता	८.	३३
आ तू न इन्द्र वृत्रहन्	३३.	६५
आ ते वत्सो मनो यमत्	१२.	११५
आत्मने मे वर्चोदा वर्चसे	७.	२८
आत्मन्नुपस्थे न वृकस्य	१९.	९२
आत्मानन्ते मनसा	२९.	१७
आ त्वा जिघर्मि मनसा	११.	२३
आ त्वाहार्षमन्तरभू	१२.	११
आदित्यङ्गर्भम्पयसा	१३.	४१
आदित्यैर्नो भारती	२९.	८
आधत्त पितरो गर्भ	२.	३३
आ न इडाभिर्विदथे	३३.	३४
आ न इन्द्रो दूरादा	२०.	४८
आ न इन्द्रो हरिभि	२०.	४९
आ न एतु मनः पुनः	३.	५४
आ नासत्या त्रिभिरेका	३४.	४७
आ नो नियुद्भिः शतिनी	२७.	२८
आ नो भद्राः क्रतवो	२५.	१४
आ नो मित्रावरुणा	२१.	८
आ नो यज्ञन्दिविस्पृशं	३३.	८५
आ नो यज्ञम्भारती	२९.	३३
आन्त्राणि स्थालीर्मधु	१९.	८६
आपतये त्वा परिपतये	५.	५
आपये स्वाहा स्वापये	९.	२०
आपवस्व हिरण्यवदश्ववत्	८.	६३
आपश्चित्पिप्यु स्तर्यो	३३.	१८
आपो अस्मान्मातरः	४.	२
आपो देवीः प्रतिगृभ्णीत	१२.	३५
आपो ह यद्बृहतीर्विश्व	२७.	२५
आपो हि ष्ठा मयोभुव	११.	५०
	३६.	१४
आप्यायस्व मदिन्तम	१२.	११४
आप्यायस्व समेतु ते	१२.	११२
आ ब्रह्मन्ब्राह्मणो ब्रह्म	२२.	२२
आ मन्द्रैरिन्द्र हरिभि	२०.	५३
आ मा वाजस्य प्रसवो	९.	१९
आमूरज प्रत्यावर्तयेमाः	२९.	५७
आयङ्गौः पृश्निरक्रमी	३.	६
आ यदिषे नृपतिन्तेज	३३.	११
आयन्तु नः पितरः	१९.	५८
आयातमुपभूषतम्	३३.	८८
आयात्विन्द्रोवस उप	२०.	४७
आयासाय स्वाहा	३९.	११
आयुर्म्मे पाहि प्राणम्मे	१४.	१७
आयुर्यज्ञेन कल्पतां स्वाहा	२२.	३३
आयुर्यज्ञेन कल्पताम्प्राणो० पृष्ठं	९.	२१
आयुर्यज्ञेन कल्पताम्प्राणो० वाग्	१८.	२९
आयुष्मानग्ने हविषा	३५.	१७
आयुष्यं वर्चस्यं राय	३४.	५०
आयोष्ट्वा सदने सादया	१५.	६३
आ रात्रि पार्थिवं रजः	३४.	३२
आ रोदसी अपृणदा	३३.	७५
आ वाचो मध्यमरुहद्	१५.	५१
आ वायो भूष शुचिपा	७.	७
आविर्मर्या आवित्तो	१०.	९
आ विश्वतः प्रत्यञ्च	११.	२४
आ वो देवास ईमहे	४.	५
आशुः शिशानो वृषभो	१७.	३३
आशुस्त्रिवृद्भान्तः पञ्चदशो	१४.	२३
आश्रावयेति स्तोत्रियाः	१९.	२४
आसन्दी रूपं राजा	१९.	१६
आसीनासो अरुणीना	१९.	६३
आ सुते सिञ्चत श्रियं	३३.	२१
आ सुष्वयन्ती यजते	२९.	३१
आहम्पितॄन्त्सुविदत्रां	१९.	५६
इच्छन्ति त्वा सोम्यासः	३४.	१८
इड एह्यदित एहि काम्या एत	३.	२७
इड एह्यदित एहि सरस्वत्येहि	३८.	२
इडाभिरग्निरीड्यः सोमो	२१.	१४
इडाभिर्भक्षानाप्नोति	१९.	२९
इडामग्ने पुरुदंसं सनिङ्गोः	१२.	५१
इडायास्त्वा पदे वयन्नाभा	३४.	१५
इडे रन्ते हव्ये काम्ये	८.	४३
इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा	५.	१५
इदं हविः प्रजननम्	१९.	४८
इदमापः प्रवहतावद्यञ्च	६.	१७
इदमुत्तरात्स्वस्तस्य	१३.	५७
इदस्पितृभ्यो नमो	१९.	६८
इदम्मे ब्रह्म च क्षत्रञ्चोभे	३२.	१६
इन्दुर्दक्षः श्येन ऋतावा	१८.	५३
इन्द्रं विश्वा अवीवृधन्	१२.	५६
	१५.	६१
	१७.	६१
इन्द्रः सुत्रामा स्ववाँ	२०.	५१
इन्द्रः सुत्रामा हृदयेन	१९.	८५
इन्द्र आसान्नेता बृहस्पति	१७.	४०
इन्द्र गोमन्निहायाहि	२६.	४
इन्द्रघोषस्त्वा वसुभिः	५.	११
इन्द्रन्दुरः कवष्यो	२०.	४०
इन्द्रन्दैवीर्विशो मरुतो	१७.	८६
इन्द्र मरुत्व इह पाहि	७.	३५
इन्द्रमिद्धरी वहतो	८.	३५
इन्द्रवायू इमे०हि ।	३३.	५६
इन्द्रवायू इमे०हि । उपयाम	७.	८
इन्द्रवायू बृहस्पतिम्	३३.	४५
इन्द्रवायू सुसन्दृशा	३३.	८६
इन्द्रश्च मरुतश्च	८.	५५
इन्द्रश्च सम्राड्वरुणश्च	८.	३७
इन्द्रस्य क्रोडोदित्यै	२५.	८
इन्द्रस्य रूपमृषभो	१९.	९१
इन्द्रस्य वज्रो मरुता	२९.	५४
इन्द्रस्य वज्रोसि मित्रा	१०.	२१
इन्द्रस्य वज्रोसि वाजसा	९.	५
इन्द्रस्य वृष्णो वरुणस्य	१७.	४१
इन्द्रस्य स्यूरसीन्द्रस्य	५.	३०
इन्द्रस्यौजस्य मखस्य	३७.	६
इन्द्राग्नी अपादियम्	३३.	९३
इन्द्राग्नी अव्ययमाना	१४.	११
इन्द्राग्नी आगतं सुत	७.	३१
इन्द्राग्नी मित्रावरुणा	३३.	४९
इन्द्राग्न्योः पक्षतिः	२५.	५
इन्द्राय त्वा वसुमते रुद्रवत	६.	३२
इन्द्राय त्वा वसुमते रुद्रवते	३८.	८
इन्द्रायाहि चित्रभानो	२०.	८७
इन्द्रायाहि तूतुजान	२०.	८९
इन्द्रायाहि धियेषितो	२०.	८८
इन्द्रायाहि वृत्रहन्पिबा	२६.	५
इन्द्रायेन्दुं सरस्वती	२०.	५७
इन्द्रेमम्प्रतरान्नय	१७.	५१
इन्द्रेहि मत्स्यन्धसो	३३.	२५
इन्द्रो विश्वस्य राजति	३६.	८
इन्द्रो वृत्रमवृणोच्छर्धनीतिः	३३.	२६
इन्धानास्त्वा शतं हिमा	३.	१८
इमं साहस्रं शतधारमुत्सं	१३.	४९
इमं स्तनमूर्जस्वन्त	१७.	८७
इमञ्जीवेभ्यः परिधि	३५.	१५
इमन्देवा असपत्नं	९.	४०
	१०.	१८
इमन्नो देव सवितर्यज्ञम्	११.	८
इममूर्णायुं वरुणस्य	१३.	५०
इमम्मा हिंसीरेकशफम्	१३.	४८
इमम्मा हिंसीर्द्विपादम्	१३.	४७
इमम्मे वरुण श्रुधी	२१.	१
इमा उ त्वा पुरूवसो	३३.	८१
इमा गिर आदित्येभ्यो	३४.	५४
इमा ते वाजिन्नवमार्जना	२९.	१६
इमा नु कम्भुवना	२५.	४६
इमान्ते धियम्प्रभरे	३३.	२९
इमामगृभ्णन्रशनामृतस्य	२२.	२
इमा मे अग्न इष्टका	१७.	२
इमा रुद्राय तवसे	१६.	४८
इमौ ते पक्षावजरौ	१८.	५२
इयं वेदिः परो अन्तः	२३.	६२

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

इयत्यग्र आसीन्मखस्य	३७.	५
इयदस्यायुरस्यायुर्मयि	१०.	२५
इयन्ते यज्ञिया तनूरपो	४.	१३
इयमुपरि मतिस्तस्यै	१३.	५८
इरज्यन्नग्ने प्रथयस्व	१२.	१०९
इरावती धेनुमती हि	५.	१६
इषमूर्जमहमित आदमृतस्य	१२.	१०५
इषश्चोर्जश्च शारदावृतू	१४.	१६
इषिरो विश्वव्यचा	१८.	४१
इषे त्वोर्जे त्वा वायव	१.	१
इषे पिन्वस्वोर्जे पिन्वस्व	३८.	१४
इषे राये रमस्व सहसे	१३.	३५
इष्कर्तारमद्धरस्य प्रचेतसं	१२.	११०
इष्कृतिर्नाम वो मातायो	१२.	८३
इष्टो अग्निराहुतः पिपर्तु	१८.	५७
इष्टो यज्ञो भृगुभिराशीर्दा	१८.	५६
इह रतिरिह रमध्वमिह	८.	५१
ईहैवाग्ने अधिधारया	२७.	४
ईडितो देवैर्हरिवाँ	२०.	३८
ईड्यश्चासि वन्द्यश्च	२९.	३
ईदृक्षास एतादृक्षास	१७.	८४
ईदृङ्नान्यादृङ् सदृङ्	१७.	८१
ईर्मान्तासः सिलिक	२९.	२१
ईशानाय परस्वत	२४.	२८
ईशा वास्यमिदं सर्वं	४०.	१
उक्ताः सञ्चरा एताः	२४.	१९
उक्ताः सञ्चरा एता० कृष्णा	२४.	१५
उक्ताः सञ्चरा एता० प्राशृङ्गा	२४.	१७
उक्थेभिर्वृत्रहन्तमा	३३.	७६
उक्षा समुद्रो अरुणः	१७.	६०
उखाङ्कृणोतु शक्त्या	११.	५७
उग्रं लोहितेन मित्रं	३९.	९
उग्रश्च भीमश्च ध्वान्तश्च	३९.	७
उग्रा विघनिना मृध	३३.	६१
उच्चा ते जातमन्धसो	२६.	१६
उच्छुष्मा ओषधीनाङ्गावो	१२.	८२
उत नोहिर्बुध्न्यः शृणोत्वज	३४.	५३
उत स्मास्य द्रवतस्तुरण्यतः	९.	१५
उतेदानीम्भगवन्तः स्यामोत	३४.	३७
उत्क्राम महते सौभगाया	११.	२१
उत्तानायामवभरा	३४.	१४
उत्तिष्ठन्नोजसा सह	८.	३९
उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते	३४.	५६
उत्थाय बृहती भवोदु	११.	६४
उत्सक्थ्या अव गुदन्धेहि	२३.	२१
उत्सादेभ्यः कुब्जम्	३०.	१०
उदक्रमीद्द्रविणोदा	११.	२२
उदग्ने तिष्ठ प्रत्यातनुष्व	१३.	१२
उदीचीमारोहानुष्टुप्	१०.	१३
उदीरतामवर उत्परास	१९.	४९
उदु तिष्ठ स्वध्वरावा	११.	४१
उदुत्तमं वरुण पाश	१२.	१२
उदु त्यञ्जातवेदसन्देवं० सूर्यं स्वाहा	७.	४१
उदु त्यञ्जातवेदसन्देवं० सूर्यम् ।	३३.	३१
उदु त्यञ्जातवेदसन्देवं० सूर्यम् । उपयाम	८.	४१
उदु त्वा विश्वे देवा	१२.	३१
	१७.	५३
उदेनमुत्तरान्नयाग्ने	१७.	५०
उदेषाम्बाहू अतिरमुद्वर्चो	११.	८२
उद्ग्राभञ्च निग्राभञ्च	१७.	६४
उद्दिवं स्तभानान्तरिक्षम्	५.	२७
उद्धर्षय मघवन्नायुधा	१७.	४२
उद्बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि	१५.	५४
	१८.	६१
उद्यन्तमसस्परि स्वः	२०.	२१
	२७.	१०
	३५.	१४
	३८.	२४
उन्नत ऋषभो वामनस्त	२४.	७
उप ज्मन्नुप वेतसेवतर	१७.	६
उप त्वाग्ने हविष्मती	३.	४
उप नः सूनवो गिरः	३३.	७७
उपप्रयन्तो अध्वरम्मन्त्रं	३.	११
उपप्रागाच्छसनं वाज्यर्वा	२९.	२३
उपप्रागात्परमं यत्सधस्थ	२९.	२४
उपप्रागात्सुमन्मेधायि	२५.	३०
उपयामगृहीतोसि ध्रुवोसि	७.	२५
उपयामगृहीतोसि प्रजा० योनिः	२३.	२
उपयामगृहीतोसि प्रजा० योनि	२३.	४
उपयामगृहीतोसि बृहस्पति	[illegible]	[illegible]
उपयामगृहीतोसि मधवे	७.	३०
उपयामगृहीतोसि सावित्रोसि	८.	७
उपयामगृहीतोसि सुशर्मासि	८.	८
उपयामगृहीतोसि हरिरसि	८.	११
उपयामगृहीतोसीन्द्राय त्वा	७.	२२
उपयामगृहीतोस्यग्नये त्वा	८.	४७
उपयामगृहीतोस्यन्तर्यच्छ	७.	४
उपयामगृहीतोस्यश्विभ्यान्त्वा	२०.	३३
उपयामगृहीतोस्याग्रयणोसि	७.	२०
उपयामगृहीतोस्यादित्येभ्यस्त्वा	८.	१
उपयामगृहीतोस्याश्विनन्तेजः	१९.	८
उपश्वासय पृथिवीमुत	२९.	५५
उपहूताः पितरः सोम्यासो	१९.	५७
उपहूता इह गाव उपहूता	३.	४३
उपहूतो द्यौष्पितोप	२.	११
उपह्वरे गिरीणां सङ्गमे	२६.	१५
उपावसृज त्मन्या	२९.	३५
उपावीरस्युप देवान्	६.	७
उपास्मै गायता नरः	३३.	६२
उभा पिबतमश्विनोभा	३४.	२८
उभाभ्यान्देव सवितः	१९.	४३
उभा वामिन्द्राग्नी	३.	१३
उभे सुश्चन्द्र सर्पिषो	१५.	४३
उरु विष्णो विक्रमस्वोरु	५.	३८
	५.	४१
उशन्तस्त्वा निधीमह्युशन्तः	१९.	७०
उशिक्त्वन्देव सोमाग्नेः	८.	५०
उशिक्पावको अरतिः	१२.	२४
उशिगसि कविरङ्घारि	५.	३२
उषस्तच्चित्रमाभरा	३४.	३३
उषासानक्तमश्विना	२०.	६१
उषासानक्ता बृहती	२०.	४१
उषे यह्वी सुपेशसा	२१.	१७
उस्रावेतन्धूर्षाहौ	४.	३३
ऊर्क्च मे सूनृता च	१८.	९
ऊर्गस्याङ्गिरस्यूर्णम्रदा	४.	१०
ऊर्जं वहन्तीरमृतङ्घृत	२.	३४
ऊर्जो नपाज्जातवेदः	१२.	१०८
ऊर्जो नपातं स हिनाय	२७.	४४
ऊर्ध्वं [illegible]	११.	४२
ऊर्ध्वमेनमुच्छ्रयताद्गिरो	२३.	२७
ऊर्ध्वा अस्य समिधो	२७.	११
ऊर्ध्वामारोह पङ्क्तिस्त्वा	१०.	१४
ऊर्ध्वामेनामुच्छ्रापय	२३.	२६
ऊर्ध्वो भव प्रतिविद्ध्या	१३.	१३
ऋक्सामयोः शिल्पे	४.	९
ऋचं वाचम्प्रपद्ये मनो	३६.	१
ऋचे त्वा रुचे त्वा	१३.	३९
ऋचो नामास्मि यजूंषि	१८.	६७
ऋजवे त्वा साधवे त्वा	३७.	१०
ऋजीते परिवृङ्धि नो	२९.	४९
ऋतं सत्यमृतं सत्य	११.	४७
ऋतजिच्च सत्यजिच्च	१७.	८३
ऋतञ्च मेमृतञ्च मे	१८.	६
ऋतये स्तेनहृदयं	३०.	१३
ऋतवस्त ऋतुथा पर्व	२३.	४०
ऋतवस्ते यज्ञं वितन्वन्तु	२६.	१४
ऋतव स्थ ऋतावृध	१७.	३
ऋतश्च सत्यश्च ध्रुवश्च	१७.	८२
ऋतावानं वैश्वानर	२६.	६
ऋतावानम्महिषं	१२.	१११
ऋतापाडृतधामाग्नि	१८.	३८
ऋतुथेन्द्रो वनस्पतिः	२०.	६५
ऋधगित्था स मर्त्यः	३३.	८७
एकया च दशभिश्च	२७.	३३
एकयास्तुवत प्रजा	१४.	२८
एकस्त्वष्टुरश्वस्या	२५.	४२
एकस्मै स्वाहा द्वाभ्यां	२२.	३४
एका च मे तिस्रश्च	१८.	२४
एजतु दशमास्यो गर्भो	८.	२८
एण्यह्नो मण्डूको मूषिका	२४.	३६
एतं सधस्थ परि ते	१८.	५९
एतञ्जानाय परमे	१८.	६०
एतत्ते रुद्रावसन्तेन	३.	६१
एतन्ते देव सवितर्यज्ञम्	२.	१२
एता अर्षन्ति हृद्यात्	१७.	९३
एता उ वः सुभगा	२९.	५
एता ऐन्द्राग्ना द्विरूपा	२४.	८
एतावद्रूपं यज्ञस्य	१९.	३१
एतावानस्य महिमातो	३१.	३

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

एदमगन्म देवयजनम्	४.	१
एधोस्येधिषीमहि० धेहि ।	३८.	२५
एधोस्येधिषीमहि० धेहि । समाववर्ति	२०.	२३
एना विश्वान्यर्य आ	२६.	१८
एना वो अग्निन्नमसोर्जो	१५.	३२
एभिर्नो अर्कैर्भवा	१५.	४६
एवश्छन्दो वरिवश्छन्दः	१५.	४
एवेदिन्द्रं वृषणं वज्रबाहुं	२०.	५४
एष च्छागः पुरो अश्वेन	२५.	२६
एष ते गायत्रो भाग	४.	२४
एष ते निर्ऋते भाग	९.	३५
एष ते रुद्र भागः सह	३.	५७
एष व स्तोमो मरुत	३४.	४८
एष स्य वाजी क्षिपणि	९.	१४
एषा ते अग्ने समित्तया	२.	१४
एषा ते शुक्र तनूरेतद्	४.	१७
एषा वः सा सत्या	९.	१२
एषो ह देवः प्रदिशोनु	३२.	४
एह्यू षुब्रवाणि तेग्न	२६.	१३
ऐन्द्रः प्राणो अङ्गे अङ्गे	६.	२०
ओजश्च मे सहश्च	१८.	३
ओमासश्चर्षणीधृतो	७.	३३
ओषधयः प्रतिगृभ्णीत	११.	४८
ओषधयः समवदन्त	१२.	९६
ओषधीः प्रतिमोदध्वम्	१२.	७७
ओषधीरिति मातरस्तद्वो	१२.	७८
कः स्विदेकाकी चरति	२३.	९
	२३.	४५
ककुभं रूपं वृषभस्य	८.	४९
कत्यस्य विष्ठाः कत्यक्षराणि	२३.	५७
कदा चन प्रयुच्छस्युभे	८.	३
कदा चन स्तरीरसि० पृच्यत	८.	२
कदा चन स्तरीरसि० पृच्यते ।	३.	३४
कन्या इव वहतुमेतवा	१७.	९७
कया त्वन्न ऊत्याभि	३६.	७
कया नश्चित्र आभुव	२७.	३९
	३६.	४
कल्पन्तान्ते दिशस्तुभ्य	३५.	९
कल्प्यो न व्यचस्वती	२०.	६०
कस्त्वाच्छ्यति कस्त्वा	२३.	३९
कस्त्वा युनक्ति स त्वा	१.	६
कस्त्वा विमुञ्चति स त्वा	२.	२३
कस्त्वा सत्यो मदानाम्	२७.	४०
	३६.	५
का ईमरे पिशङ्गिला	२३.	५५
काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ती	१३.	२०
कामङ्कामदुघे धुक्ष्व	१२.	७२
काय स्वाहा कस्मै	२२.	२०
कार्पिरसि समुद्रस्य	६.	२८
काव्योराजानेषु क्रत्वा	३३.	७२
का स्विदासीत्पूर्वचित्तिः	२३.	११
	२३.	५३
किं स्वित्सूर्यसमञ्ज्योति	२३.	४७
किं स्विदासीदधिष्ठान	१७.	१८
किं स्विद्वनङ्क उ स वृक्ष	१७.	२०
कुक्कुटोसि मधुजिह्व	१.	१६
कुतस्त्वमिन्द्र माहिनः	३३.	२७
कुम्भो वनिष्ठुर्जनिता	१९.	८७
कुर्वन्नेवेह कर्माणि	४०.	२
कुलायिनी घृतवती	१४.	२
कुविदङ्ग० यजन्ति ।	२३.	३८
कुविदङ्ग० यजन्ति । उपयाम० सुत्राम्ण	१९.	६
कुविदङ्ग० यजन्ति । उपयाम० सुत्राम्णे	१०.	३२
कृणुष्व पाजः प्रसितिन्न	१३.	९
कृष्णग्रीवा आग्नेयाः शितिभ्रवो	२४.	६
कृष्णग्रीवा आग्नेया बभ्रवः सौम्याः	२४.	९
कृष्णग्रीवा आग्नेया बभ्रवः सौम्या	२४	१४
कृष्णा भौमा धूम्रा	२४.	१०
कृष्णोस्याखरेष्ठोग्नये	२.	१
केतुङ्कृण्वन्नकेतवे पेशो	२९.	३७
केष्वन्तः पुरुष आविवेश	२३.	५१
को अस्य वेद भुवनस्य	२३.	५९
कोदात्कस्मा अदात्	७.	४८
कोसि कतमोसि कस्मै	२०.	४
कोसि कतमोसि कस्यासि	७.	२९
क्रमध्वमग्निना नाकमुख्यं	१७.	६५
क्रव्यादमग्निम्प्रहिणोमि	३५.	१९
क्षत्रस्य त्वा परस्याय	३८.	१९
क्षत्रस्य योनिरसि	२०.	१
क्षत्रस्योल्बमसि क्षत्रस्य	१०.	८
क्षत्रेणाग्ने स्वायुः संरभस्व	२७.	५
क्षपो राजन्नुत त्मनाग्ने	१५.	३७
खड्गो वैश्वदेवः श्वा	२४.	४०
गणानान्त्वा गणपतिं	२३.	१९
गन्धर्वस्त्वा विश्वावसुः	२.	३
गर्भो अस्योषधीनाङ्गर्भो	१२.	३७
गर्भो देवानाम्पिता	३७.	१४
गायत्रञ्छन्दोसि त्रैष्टुभ	३८.	६
गायत्री त्रिष्टुब्जगत्य	२३.	३३
गायत्रेण त्वा छन्दसा	१.	२७
गाव उपावतावतम्	३३.	१९
	३३.	७१
गृहा मा बिभीत मा	३.	४१
गोत्रभिदङ्गोविदं वज्रबाहु	१७.	३८
गोभिर्न सोममश्विना	२०.	६६
गोमदू षु णासत्या	२०.	८१
ग्रहा ऊर्जाहुतयो व्यन्तो	९.	४
ग्रीष्मेण ऋतुना देवा	२१.	२४
घर्मैतत्ते पुरीषन्तेन	३८.	२१
घृतङ्घृतपावानः पिबत	६.	१९
घृतम्मिमिक्षे घृतमस्य	१७.	८८
घृतवती भुवनानामभि	३४.	४५
घृताची स्थो धुर्यो	२.	१९
घृताच्यसि जुहूर्नाम्ना	२.	६
घृतेन सीता मधुना	१२.	७०
घृतेनाक्तौ पशूँस्त्रायेथां	६.	११
घृतेनाञ्जन्त्सम्पथो	२९.	२
चक्षुषः पिता मनसा	१७.	२५
चतस्रश्च मेष्टौ च	१८.	२५
चतुःस्रक्तिर्नाभिर्ऋतस्य	३८.	२०
चतुस्त्रिंशत्तन्तवो ये	८.	६१
चतुस्त्रिंशद्वाजिनो	२५.	४१
चत्वारि शृङ्गा त्रयो	१७.	९१
चन्द्रमा अप्स्वन्तरा	३३.	९०
चन्द्रमा मनसो जात	३१.	१२
चित्तिञ्जुहोमि मनसा	१७.	७८
चित्पतिर्मा पुनातु	४.	४
चित्रन्देवाना० तस्थुषश्च	१३.	४६
चित्रन्देवाना० तस्थुषश्च स्वाहा	७.	४२
चिदसि तया देवतया	१२.	५३
चिदसि मनासि धीरसि	४.	१९
चोदयित्री सूनृताना	२०.	८५
जनयत्यै त्वा संयौमीदमग्ने	१.	२२
जनस्य गोपा अजनिष्ट	१५.	२७
जनिष्ठा उग्रः सहसे	३३.	६४
जपो यस्ते वाजिन्निहितो	९.	९
जिह्वा मे भद्रं वाङ्महो	२०.	६
जीमूतस्य भवति प्रतीकं	२९.	३८
जुषाणो बर्हिर्हरिवान्न	२०.	३९
ज्यैष्ठ्यञ्च म आधिपत्यञ्च	१८.	४
ज्योतिरसि विश्वरूपं	५.	३५
तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन्	३१.	९
तं वो दस्ममृतीषहं	२६.	११
त आयजन्त द्रविणं	१७.	२८
तच्चक्षुर्देवहितम्पुरस्ता	३६.	२४
ततो विराडजायत	३१.	५
तत्त्वा यामि ब्रह्मणा	१८.	४९
	२१.	२
तत्सवितुर्वरेण्यम्भर्गो	३.	३५
	२२.	९
	३०.	२
तत्सूर्यस्य देवत्व	३३.	३७
तदश्विना भिषजा	१९.	८२
तदस्य रूपममृतं	१९.	८१
तदिदास भुवनेषु	३३.	८०
तदेजति तन्नैजति	४०.	५
तदेवाग्निस्तदादित्य	३२.	१
तद्विप्रासो विपन्यवो	३४.	४४
तद्विष्णोः परमम्पदं	६.	५
तनूनपाच्छुचिव्रत	२१.	१३
तनूनपात्पथ ऋतस्य	२९.	२६
तनूनपादसुरो विश्ववेदा	२७.	१२
तनूपा अग्नेसि तन्वम्मे	३.	१७
तनूपा भिषजा सुते	२०.	५६
तन्तुना रायस्पोषेण	१५.	७
तन्त्वा शोचिष्ठ दीदिवः	३.	२६
तन्त्वा समिद्भिरङ्गिरो	३.	३
तन्नस्तुरीपमद्भुतम्	२७.	२०
तन्नो वातो मयोभु	२५.	१७
तन्मित्रस्य वरुणस्या	३३.	३८

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तत्त्वा तरत्वव सैशिरा १५. ५७
तत्ते कौत्सव्यापारो ३०. ७
तत्ते स्वाहा तन्वते स्वाहा १९. १२
तत्पत्नी वेत्ति विश्वपत्नी ५. ९
तत्सिद्धमभ्यक्षणमद्य १७. ३०
तत्सिन्नभन्यतः सखा २०. ९९
तत्सीमानजगतस्तस्थुष २५. १८
तनु त्वा दध्यङ्मृषिः ११. ३३
तनु त्वा शाक्वरो कृधा ११. ३४
तन्मजीमिरुगच्छेम १५. ५०
तन्मजत्वा पूर्वया ७. १२
तरणिर्विश्वदर्शतो ३३. ३६
तव भ्रमास आशुया १३. १०
तव वायवृतस्पते २७. ३४
तव शरीरम्पतविष्व २९. २२
तवार्यं सोमस्त्वमेषाङ्ग् २६. २३
तस्मा अरङ्गमाम वो ११. ५२
२६. १६
तस्मादश्वा अजायन्त ३१. ८
तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः ३१. ६
तस्माद्यज्ञात्सर्वहुत ३१. ७
तस्य वर्प सुमतौ २०. ५२
तस्यास्ते सत्यसवसः ४. १८
तां सवितुर्वरेण्यस्य १७. ७४
ता अस्य सूददोहसः १२. ५५
१५. ६०
ता उर्वी चतुरः पदः २३. २०
ता न आयोडग्निना २०. ८३
ता मा सत्या सुपेशसा ३०. ७४
तान्पूर्वया निविदा हूमहे २५. १६
ता निषद्या सुकर्मणा २०. ७५
निरधीनो विततो रश्मि ३३. ७४
तिस्र इळा सरस्वती २१. ११
तिसस्त्रेधा सरस्वत्यश्विना २०. ६३
तिस्रो देवीर्मोहिरेदं २७. १९
तिस्रो देवीर्बर्हिरेदं २०. ४३
तीव्रान्घोषान्कृण्वते २९. ४४
तुञ्जन्ता अग्निरस्तम १२. ११६
ते अस्य योनये दिवे २७. १७
ते आयजन्त सनकेव २९. ४१
तेजः पशूनां हवि १९. ९५
तेजोसि तेजो मयि १९. ९
तेजोसि शुक्रमसृत २२. १
ते नो अर्वन्तो हवनश्रुतो ९. १७
ते हि पुत्रासो अदितेः ३. ३३
त्रया देवा एकादश २०. ११
त्रातारमिन्द्रमवितार २०. ५०
त्रिंशद्धाम विराजति ३. ८
त्रिधा हितम्पणिभिर्गुह्य १७. ९२
त्रिषधस्थ ऊँदसुरुभः ३१. ४
त्रिहृदसि त्रिहृते त्वा १५. ९
त्रीणि त आहुर्दिवि २९. १५
त्रीणि पदा विचक्रमे ३४. ४३
त्रीणि शता त्री सहस्रा ३३. ७
त्रीन्तसुद्रान्तस्समसृपत् १३. ३१
त्र्यम्बकं यजामहे ३. ६०
त्र्यवयो गायत्र्यै पञ्चा २४. १२
त्र्यविध मे ध्रुवी च १८. २६
त्र्यायुषञ्जमदग्नेः ३. ६२
त्वं यविष्ठ दाशुषो १३. ५२
१८. ७७
त्वं सोम पितृभिः १९. ५४
त्वं सोम प्रचिकितो १९. ५२
त्वञ्जो अग्ने तव देव ३४. १३
त्वञ्जो अग्ने वरुणस्य २१. ३
त्वमग्न ईळितः कव्यवाहना १९. ६६
त्वमग्ने द्युभिस्त्वमाशुशुक्षणि ११. २७
त्वमग्ने प्रथमो अङ्गिरा ३४. १२
त्वमग्ने व्रतपा असि ४. १६
त्वमङ्ग प्रशंसिषो देवः ६. ३७
त्वमिन्द्र प्रगर्धिन्यमि ३३. ६६
त्वमिमा ओषधीः सोम ३४. २२
त्वमुत्तमास्योषधे तव १२. १०१
त्वया हि नः पितरः १९. ५३
त्वष्टा तुरीपो अद्भुत २१. २०
त्वष्टा दधच्छुष्मिन्द्राय २०. ४४
त्वष्टा रीन्वेषकाम २९. ९
त्वां हि मन्द्रतममर्कशोके ३३. १३
त्वाङ्गिरसो नक्षमाणास्त्वाग्नि १२. ९८
त्वाजिञ्जबस्तम ह्वयन्ते १५. ३१
त्वामग्ने अङ्गिरसो गुहा १५. २८
त्वामग्ने पुष्करादध्यथर्वा १५. २२
त्वामग्ने यजमाना अनु १२. २८
त्वामग्ने वृणते ब्राह्मणा २७. ३
त्वामद्य ऋष आर्षेय २१. ६१
त्वामिद्धि हवामहे सातौ २७. ३७
त्वे अग्ने स्वाहुत प्रियासः ३३. १४
दंष्ट्राभ्याम्मलिम्लूञ्जम्भ्यै ११. ७८
दक्षिणामारोह मित्रावा १०. ११
दधिक्राव्णो अकारिष २३. ३२
दत्रा युवाकवः सुता ३३. ५८
दिग्भ्यः स्वाहा चन्द्राय २९. २
दिवः पृथिव्याः पर्योज २९. ५३
दिवस्परि प्रथमञ्जे १२. १८
दिवि द्यौ इमं यज्ञमिमं ३८. ११
दिवि पृष्टो अरोचता ३३. ९२
दिवि विष्णुर्व्यक्रमत २. २५
दिशो मूर्द्धासि पृथिव्या १८. ५४
दिशो वा विष्ण उत वा ५. १९
दीक्षायै रूपं शाक्वाणि १९. १३
दीर्घायुस्त्व ओषधे १२. १००
दुरो देवीर्दिशो मही २१. १६
दृंहस्व देवि पृथिवि ११. ६९
दृते दृंह मा । ज्योक्ते ३६. १९
दृते दृंह मा मित्रस्य ३६. १८
दृशानो रुक्म उर्व्या १२. १
१२. २५
दृष्ट्वा परिस्रुतो रसं १९. ७२
दृष्ट्वा रूपे व्याकरोत् १९. ७७
देव इन्दो० त्रिवन्धुरो २८. १९
देव इन्दो० सरस्वत्यश्वि २१. ५५
देवकृतस्यैनसोवयजनमसि ८. १३
देवन्देवं वोवसे देव ३३. ९१
देवम्बर्हिः सरस्वती २१. ४८
देवम्बर्हिरिन्द्रं सुदेव २८. १२
देवम्बर्हिर्वयोधसन्देव २८. ३५
देवम्बर्हिर्वारितीनान्देवमिन्द्रं २८. ४४
देवम्बर्हिर्वारितीनान्देवमिन्द्र २८. २१
देवम्बर्हिर्वारितीनामध्वरे २१. ५७
देवयुर्वो देवयतां ५. १७
देव सवितः० स्वदतु । ११. ७
३०. १
देव सवितः० स्वदतु स्वाहा ९. १
देव सवितरेष ते ५. ३९
देवस्त्वा सवितोद्वपतु ११. ६३
देवस्य चेततो महीम् २२. ११
देवस्य त्वा० अग्नये जुष्टं १. १०
देवस्य त्वा० अग्नीषोमाभ्यां ६. ९
देवस्य त्वा० अश्विनोर्भैषज्येन २०. ३
देवस्य त्वा० आददे गायत्रेण ११. ९
देवस्य त्वा० आददेदित्यै ३८. १
देवस्य त्वा० आददेध्वरकृतं १. २४
देवस्य त्वा० आददे नारिरसि ३७. १
देवस्य त्वा० आददे नार्यसी० बृहच्छसि ५. २२
देवस्य त्वा० आददे नार्यसी० यवोसि ५. २६
६. १
देवस्य त्वा० आददे राया ६. ३०
देवस्य त्वा० उपांशोर्वीर्येण ९. ३८
देवस्य त्वा० पृथिव्याः ११. २८
देवस्य त्वा० सं वपामि १. २१
देवस्य त्वा० सरस्वत्यै० यन्तुर्यन्त्रियै ९. ३०
देवस्य त्वा० सरस्वत्यै० यन्तुर्यन्त्रेणाग्नेः १८. ३७
देवस्य सवितुर्मतिमास २२. १४
देवस्याहं० सत्यप्रसवसो ९. १३
देवस्याहं० सत्यसवसो ९. १०
देवहूर्यंश आ च वक्षत् १७. ६२
देवा गातुविदो गातुं ८. २१
देवा देवानाम्भिपत्रा २१. ५३
देवा दैव्या० देवमिन्द्रं २८. ४०
देवा दैव्या० देवमिन्द्र २८. १७
देवानाम्भद्रा सुमति २५. १५
देवान्दिवमगन्यज्ञस्ततो ८. ६०
देवा यज्ञमतन्वत १९. १२
देवासो हि ष्मा मनवे ३३. ९४
देवी उषासानक्ता २८. ३७
देवी उषासानक्तेन्द्रं २८. १४
देवी उषासावश्विना २१. ५०
देवी ऊर्जा० सुदुघेन्द्रे २१. ५२
देवी ऊर्जा० सुदुघे पयसेन्द्रं २८. ३९
देवी ऊर्जा० सुदुघे पयसेन्द्र २८. १६

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

देवी जोष्ट्री० देवमिन्द्रं	२८.	३८
देवी जोष्ट्री० देवमिन्द्र	२८.	१५
देवी जोष्ट्री सरस्वत्यश्वि	२१.	५१
देवी द्यावापृथिवी	३७.	३
देवीरापः शुद्धा वोढ्वं	६.	१३
देवीराप एष वो	८.	२६
देवीरापो अपान्नपाद्	६.	२७
देवीर्द्वार इन्द्रं सङ्घाते	२८.	१३
देवीर्द्वारो अश्विना	२१.	४९
देवीर्द्वारो वयोधसं	२८.	३६
देवीस्तिस्रस्तिस्रो देवीः	२८.	१८
देवीस्तिस्रस्तिस्रो देवीरश्विनेडा	२१.	५४
देवीस्तिस्रस्तिस्रो देवीर्वयोधसं	२८.	४१
देवेन नो मनसा देव	३४.	२३
देवेभ्यो हि प्रथमं	३३.	५४
देवो अग्निः स्विष्टकृद्देवमिन्द्रं	२८.	४५
देवो अग्निः स्विष्टकृद्देवमिन्द्र	२८.	२२
देवो अग्निः स्विष्टकृद्देवान्	२१.	५८
देवो देवै० अश्विभ्यां	२१.	५६
देवो देवै० मधुशालः	२८.	२०
देवो नराशंसो देवमिन्द्रं	२८.	४२
देवो वनस्पतिर्देवमिन्द्रं	२८.	४३
देव्यो वध्र्यो भूतस्य	३७.	४
देहि मे ददामि ते	३.	५०
दैव्या अध्वर्यवस्त्वा	२३.	४२
दैव्या मिमाना मनुषः	२०.	४२
दैव्याय धर्त्रे जोष्ट्रे	१७.	५६
दैव्यावध्वर्यू० तम्प्रत्नथायं वेनः	३३.	७३
दैव्यावध्वर्यू० तम्प्रत्नथायं वेनश्चित्रं	३३.	३३
दैव्या होतारा ऊर्ध्वं	२७.	१८
दैव्या होतारा प्रथमा	२९.	३२
दैव्या होतारा भिषजेन्द्रेण	२१.	१८
द्याम्मा लेखीरन्तरिक्षम्	५.	४३
द्युभिरक्तुभिः परिपात	३४.	३०
द्यौः शान्तिरन्तरिक्षं	३६.	१७
द्यौरासीत्पूर्वचित्ति	२३.	१२
	२३.	५४
द्यौस्ते पृथिव्यन्तरिक्षं	२३.	४३
द्यौस्ते पृष्ठम्पृथिवी	११.	२०
द्रप्सश्चस्कन्द पृथिवी	१३.	५
द्रविणोदाः पिपीषति	२६.	२२
द्रापे अन्धसस्पते	१६.	४७
द्रुपदादिव मुमुचानः	२०.	२०
द्रुन्नः सर्पिरासुतिः	११.	७०
द्वारो देवीरन्वस्य	२७.	१६
द्विपदा याश्चतुष्पदा	२३.	३४
द्वे विरूपे चरतः	३३.	५
द्वे सृती अशृणवम्	१९.	४७
ध्वन्वना गा धन्वनाजि	२९.	३९
धर्ता दिवो विभाति	३७.	१६
धाता रातिः सवितेः	८.	१७
धानाः करम्भः सक्तवः	१९.	२१
धानानां रूपङ्कुवलम्	१९.	२२
धानावन्तङ्करम्भिण	२०.	२९
धान्यमसि धिनुहि	१.	२०
धामच्छदग्निरिन्द्रो	१८.	७६
धामन्ते विश्वम्भुवन	१७.	९९
धूम्रान्वसन्तायालभते	२४.	११
धूम्रा बभ्रुनीकाशाः	२४.	१८
धूरसि धूर्व धूर्वन्तन्धूर्व	१.	८
धृष्टिरस्यपाग्ने अग्निमा	१.	१७
ध्रुवक्षितिर्ध्रुवयोनिर्ध्रुवासि	१४.	१
ध्रुवसदन्त्वा नृषदम्मनः	९.	२
ध्रुवासि धरुणास्तृता	१३.	१६
ध्रुवासि धरुणेतो जज्ञे	१३.	३४
ध्रुवासि ध्रुवोयं यजमानो	५.	२८
ध्रुवोसि पृथिवीन्दृंह	५.	१३
नक्तोषासा समनसा	१२.	२
	१७.	७०
नक्षत्रेभ्यः स्वाहा नक्षत्रियेभ्यः	२२.	२८
न तं विदाथ य इमा	१७.	३१
न तद्रक्षांसि न पिशाचा	३४.	५१
न तस्य प्रतिमा अस्ति	३२.	३.
न ते दूरे परमा चिद्	३४.	१९
न त्वावाँ अन्यो दिव्यो	२७.	३६
नदीभ्यः पौञ्जिष्ठमृक्षीकाभ्यो	३०.	८
नभश्च नभस्यश्च वार्षिकावृतू	१४.	१५
नमः कपर्दिने च व्युप्तकेशाय	१६.	२९
नमः कूप्याय चावट्याय	१६.	३८
नमः कृत्स्नायतया धावते	१६.	२०
नमः पर्णाय च पर्णशदाय	१६.	४६
नमः पार्याय चावार्याय	१६.	४२
नमः शङ्गवे च पशुपतये	१६.	४०
नमः शम्भवाय च मयोभवाय	१६.	४१
नमः शुष्क्याय च हरित्याय	१६.	४५
नमः श्वभ्यः श्वपतिभ्यश्च	१६.	२८
नमः सभाभ्यः सभापतिभ्यश्च	१६.	२४
नमः सिकत्याय च प्रवाह्याय	१६.	४३
नमः सु ते निर्ऋते तिग्मतेजो	१२.	६३
नमः सेनाभ्यः सेनानिभ्यश्च	१६.	२६
नमः सोभ्याय च प्रतिसर्याय	१६.	३३
नमः स्रुत्याय च पथ्याय	१६.	३७
नम आशवे चाजिराय	१६.	३१
नम उष्णीषिणे गिरिचराय	१६.	२२
नमस्त आयुधायानातताय	१६.	१४
नमस्तक्षभ्यो रथकारेभ्यश्च	१६.	२७
नमस्ते अस्तु विद्युते	३६.	२१
नमस्ते रुद्र मन्यव	१६.	१
नमस्ते हरसे शोचिषे	१७.	११
	३६.	२०
नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यश्च	१६.	२५
नमो ज्येष्ठाय च कनिष्ठाय	१६.	३२
नमो धृष्णवे च प्रमृशाय	१६.	३६
नमो बभ्लुशाय व्याधिने	१६.	१८
नमो बिल्मिने च कवचिने	१६.	३५
नमो मित्रस्य वरुणस्य	४.	३५
नमो रोहिताय स्थपतये	१६.	१९
नमो वः पितरो रसाय	२.	३२
नमो वञ्चते परिवञ्चते	१६.	२१
नमो वन्याय च कक्ष्याय	१६.	३४
नमो वात्याय च रेष्म्याय	१६.	३९
नमो विसृजद्भ्यो विद्ध्यद्भ्यश्च	१६.	२३
नमो व्रज्याय च गोष्ठ्याय	१६.	४४
नमोस्तु नीलग्रीवाय	१६.	८
नमोस्तु रुद्रेभ्यो ये दिवि	१६.	६४
नमोस्तु रुद्रेभ्यो येन्तरिक्षे	१६.	६५
नमोस्तु रुद्रेभ्यो ये पृथिव्यां	१६.	६६
नमोस्तु सर्पेभ्यो ये	१३.	६
नमो हिरण्यबाहवे	१६.	१७
नमो हरस्याय च वामनाय	१६.	३०
न यत्परो नान्तर	२०.	८२
नराशंसः प्रति शूरो	२०.	३७
नराशंसस्य महिमानमेषा	२९.	२७
नर्माय पुँश्चलूं हसाय	३०.	२०
नवदशभिरस्तुवत	१४.	३०
नवभिरस्तुवत पितरो	१४.	२९
नवविंशत्यास्तुवत	१४.	३१
न वा उ एतन्० यत्रासते	२३.	१६
न वा उ एतन्० हरी ते	२५.	४४
नहि तेषाममा चन	३.	३२
नहि स्पशमविदन्नन्य	३३.	६०
नाना हि वान्देवहितं	१९.	७
नाभा पृथिव्याः समिधाने	११.	७६
नाभिर्मे चित्तं विज्ञानम्	२०.	९
नाभ्या आसीदन्तरिक्षं	३१.	१३
नार्यस्ते पत्न्यो लोम	२३.	३६
नाशयित्री बलासस्यार्शस	१२.	९७
निक्रमणन्निषदनं	२५.	३८
नियुत्वान्वायवागह्ययं	२७.	२९
निवेशनः सङ्गमनो वसूनां	१२.	६६
निषसाद० सुक्रतुः ।	१०.	२७
निषसाद० सुक्रतुः । मृत्योः	२०.	२
नि होता होतृषदने	११.	३६
नीलग्रीवाः शितिकण्ठाः	१६.	५७
नीलग्रीवाः शितिकण्ठा	१६.	५६
नृत्ताय सूतङ्गीताय	३०.	६
नृषदे वेडप्सुषदे	१७.	१२
पञ्च दिशो दैवीर्यज्ञ	१७.	५४
पञ्च नद्यः सरस्वती	३४.	११
पञ्चस्वन्तः पुरुष	२३.	५२
पयस्पयः परिपतिं	३४.	४२
पयः पृथिव्याम्पय	१८.	३६
पयसा शुक्रममृत	१९.	८४
पयसो रूपं यद्यवा	१९.	२३
पयसो रेत आभृतन्तस्य	३८.	२८
परमस्याः परावतो.	११.	७२
परमेष्ठी० ज्योतिष्मतीम्	१५.	५८
परमेष्ठी० व्यचस्वतीं	१५.	६४
परमेष्ठ्यभिधीतः प्रजापति	८.	५४
परम्मृत्यो अनुपरेहि	३५.	७

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

परस्या अधि संवतोवराँ	११.	७१
परि ते वृद्धमो रथोस्माँ	३.	३६
परि ते धन्वनो हेति	१६.	१२
परि त्वा गिर्वणो गिर	५.	२९
परि त्वाग्ने पुरं वयं	११.	२६
परि द्यावापृथिवी सद्य	३२.	१२
परि नो रुद्रस्य हेति	१६.	५०
परि माग्ने दुश्चरिताद्	४.	२८
परि वाजपतिः कवि	११.	२५
परिवीरसि परि त्वा	६.	६
परीतो षिञ्चता सुतं	१९.	२
परीत्य भूतानि परीत्य	३२.	११
परीमे गामनेषत	३५.	१८
परो दिवा पर एना	१७.	२९
पवमानः सो अद्य नः	१९.	४२
पवित्रेण पुनीहि मा	१९.	४०
पवित्रे स्थो० अनिशृष्टमसि	१०.	६
पवित्रे स्थो० देवीरापो	१.	१२
पशुभिः पशूनाप्नोति	१९.	२०
पष्ठवाट् च मे पष्ठौही च	१८.	२७
पष्ठवाहो विराज उक्षाणो	२४.	१३
पातन्नो अश्विना दिवा	२०.	६२
पावकया यश्चितयन्त्या	१७.	१०
पावकवर्चाः शुक्रवर्चा	१२.	१०७
पावका नः सरस्वती	२०.	८४
पाहि नो अग्न एकया	२७.	४३
पिता नोसि पिता नो	३७.	२०
पितुन्नु स्तोषम्महो	३४.	७
पितृभ्यः स्वधायिभ्यः	१९.	३६
पीवो अन्ना रयिवृधः	२७.	२३
पुत्रमिव पितरा	१०.	३४
	२०.	७७
पुनन्तु मा देवजनाः	१९.	३९
पुनन्तु मा पितरः	१९.	३७
पुनरासद्य सदनमपश्च	१२.	३९
पुनरूर्जा निवर्तस्व	१२.	९
	१२.	४०
पुनर्नः पितरो मनो	३.	५५
पुनर्मनः पुनरायुर्म	४.	१५
पुनस्त्वादित्या रुद्रा	१२.	४४
पुनाति ते परिस्रुतं	१९.	४
पुरा क्रूरस्य विसृपो	१.	२८
पुरीष्यासो अग्नयः	१२.	५०
पुरीष्योसि विश्वभरा	११.	३२
पुरुदस्मो विषुरूप	८.	३०
पुरुष एवेदं सर्वं	३१.	२
पुरुषमृगश्चन्द्रमसो	२४.	३५
पूर्णा दर्वि परापत	३.	४९
पूषणं वनिष्ठुनान्वाहीन्	२५.	७
पूषन्तव व्रते वयन्न	३५.	४१
पूषा पञ्चाक्षरेण पञ्च	९.	३२
पृच्छामि त्वा चितये	२३.	४९
पृच्छामि त्वा परमन्त	२३.	६१
पृथिवि देवयजन्योषध्यास्ते	१.	२५
पृथिवी च म इन्द्रश्च	१८.	१८
पृथिवी च्छन्दोन्तरिक्षञ्छन्दो	१४.	१९
पृथिव्याः पुरीषमस्यप्सो	१४.	४
पृथिव्याः सधस्थादग्निम्	११.	१६
पृथिव्या अहमुदन्तरिक्ष	१७.	६७
पृथिव्यै स्वाहान्तरिक्षाय	२२.	२९
पृश्निस्तिरश्चीनपृश्नि	२४.	४
पृषदश्वा मरुतः पृश्नि	२५.	२०
पृष्टीर्मे राष्ट्रमुदरमंसौ	२०.	८
पृष्टो दिवि पृष्टो अग्निः	१८.	७३
प्रवासिनो हवामहे	३.	४४
प्रजापतये च वायवे	२४.	३०
प्रजापतये त्वा जुष्ट	२२.	५
प्रजापतये पुरुषान्	२४.	२९
प्रजापतिः सम्भ्रियमाणः	३९.	५
प्रजापतिर्विश्वकर्मा	१८.	४३
प्रजापतिश्चरति गर्भे	३१.	१९
प्रजापतिष्ट्वा सादयत्वपाम्	१३.	१७
प्रजापते० अस्तु वयं	२३.	६५
प्रजापते० अस्त्वयममुष्य	१०.	२०
प्रजापतेस्तपसा वावृधानः	२९.	११
प्रजापतौ त्वा देवताया	३५.	६
प्र तद्विष्णु स्तवते	५.	२०
प्र तद्वोचेदमृतन्नु	३२.	९
प्रति क्षत्रे प्रतितिष्ठामि	२०.	१०
प्रतिपदसि प्रतिपदे	[illegible]	[illegible]
प्रति पन्थामपद्महि	४.	२९
प्रतिश्रुत्काया अर्तन	३०.	१९
प्रति स्पशो विसृज	१३.	११
प्रतीचीमारोह जगती	१०.	१२
प्रतूर्तं वाजिन्नाद्रव	११.	१२
प्रतूर्वन्नेह्यवक्रामन्	११.	१५
प्रत्युष्टं० अनिशितो	१.	२९
प्रत्युष्टं० उर्वन्तरिक्ष	१.	७
प्रथमा द्वितीयैर्द्वितीया	२०.	१२
प्रथमा वां सरथिना	२९.	७
प्र नूनम्ब्रह्मणस्पति	३४.	५७
प्र नो यच्छत्वर्यमा	९.	२९
प्र पर्वतस्य वृषभस्य	१०.	१९
प्रप्रायमग्निर्भरतस्य	१२.	३४
प्र बाहवा सिसृतञ्जीवसे	२१.	९
प्रमन्महे शवसानाय	३४.	१६
प्रमुञ्च धन्वनस्त्वमुभयो	१६.	९
प्र याभिर्यासि दाश्वांस	२७.	२७
प्र व इन्द्राय बृहते	३३.	९६
प्र वायुमच्छा बृहती	३३.	५५
प्रवावृजे सुप्रया बर्हि	३३.	४४
प्रवीरया शुचयो दद्रिरे	३३.	७०
प्र वो महे मन्दमाना	३३.	२३
प्र वो महे महि नमो	३४.	१७
प्रसद्य भस्मना योनि	१२.	३८
प्रस्तरेण परिधिना	१८.	६३
प्रागपागुदगधराक्	६.	३६
प्राचीनम्बर्हिः प्रदिशा	२९.	२९
प्राचीमनु प्रदिशम्प्रेहि	१७.	६६
प्राच्यै दिशे स्वाहा	२२.	२४
प्राणदा अपानदा	१७.	१५
प्राणपा मे अपानपा	२०.	३४
प्राणम्मे पाह्यपानम्मे	१४.	८
प्राणश्च मेपानश्च मे	१८.	२
प्राणाय मे वर्चोदा	७.	२७
प्राणाय स्वाहा० अम्बे	२३.	१८
प्राणाय स्वाहा० चक्षुषे	२२.	२३
प्रातरग्निम्प्रातरिन्द्रं	३४.	३४
प्रातर्जितम्भगमुग्रं	३४.	३५
[illegible]	१७.	४६
प्रेदग्ने ज्योतिष्मान्याहि	१२.	३२
प्रेद्धो अग्ने दीदिहि	१७.	७६
प्रैतु ब्रह्मणस्पतिः० नः ।	३३.	८९
प्रैतु ब्रह्मणस्पतिः० नः । मखाय त्वा	३७.	७
प्रैतु वाजी कनिक्रदन्	११.	४६
प्रैषेभिः प्रैषानाप्नोत्या	१९.	१९
प्रोथदश्वो न यवसे	१५.	६२
प्रोह्यमाणः सोम आगतो	८.	५६
बट्सूर्य श्रवसा महाँ	३३.	४०
बण्महाँ असि सूर्य	३३.	३९
बर्हिषदः पितर	१९.	५५
बलविज्ञाय स्थविरः	१७.	३७
बह्वीनाम्पिता बहुरस्य	२९.	४२
बाहू मे बलमिन्द्रियं	२०.	७
बीभत्सायै पौल्कसं	३०.	१७
बृहदिन्द्राय गायत	२०.	३०
बृहन्निदिध्म एषा	३३.	२४
बृहस्पते अति यदर्यो	२६.	३
बृहस्पते परिदीया	१७.	३६
बृहस्पते वाजञ्जय	९.	११
बृहस्पते सवितर्बोधयैनं	२७.	८
बोधा मे अस्य वचसो	१२.	४२
ब्रह्म क्षत्रम्पवते तेज	१९.	५
ब्रह्म जज्ञानम्प्रथमम्	१३.	३
ब्रह्मणस्पते त्वमस्य	३४.	५८
ब्रह्मणे ब्राह्मणङ्क्षत्राय	३०.	५
ब्रह्म सूर्यसमञ्ज्योति	२३.	४८
ब्रह्माणि मे मतयः शं	३३.	७८
ब्राह्मणमद्य विदेयम्	७.	४६
ब्राह्मणासः पितरः	२९.	४७
ब्राह्मणोस्य मुखमासीद्	३१.	११
भग एव भगवाँ अस्तु	३४.	३८
भग प्रणेतर्भग सत्यराधो	३४.	३६
भद्रङ्कर्णेभिः शृणुयाम	२५.	२१
भद्रा उत प्रशस्तयो	१५.	३९
भद्रो नो अग्निराहुतो	१५.	३८
भद्रो मेसि प्रच्यवस्व	४.	३४
भवतन्नः समनसौ	५.	३
	१२.	६०
भायै दार्वाहारम्प्रभाया	३०.	१२

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

भुज्युः सुपर्णो यज्ञो	१८.	४२
भुवो यज्ञस्य रजसश्च	१३.	१५
	१५.	२३
भूताय त्वा नारातये	१.	११
भूम्या आवृनालभते	२४.	२६
भूरसि भूमिरस्यदितिरसि	१३.	१८
भूर्भुवः स्वः । तत्सवितु	३६.	३
भूर्भुवः स्वः सुप्रजाः	३.	३७
भूर्भुवः स्वर्द्यौरिव भूम्ना	३.	५
भेषजमसि भेषजङ्गवेश्वाय	३.	५९
मखस्य शिरोसि । मखाय	३७.	८
मघवे स्वाहा माघवाय	२२.	३१
मधु नक्तमुतोषसो	१३.	२८
मधुमतीर्न इषस्कृधि	७.	२
मधुमान्नो वनस्पति	१३.	२९
मधु वाता ऋतायते	१३.	२७
मधुश्च माधवश्च	१३.	२५
मध्वा यज्ञन्नक्षसे	२७.	१३
मनसः काममाकूतिं	३९.	४
मनस्त आप्यायतां	६.	१५
मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य	२.	१३
मनो न येषु हवनेषु	७.	१७
मनो न्वाह्वामहे नाराशंसेन	३.	५३
मनो मे तर्पयत वाचम्मे	६.	३१
मन्यवेयस्तापङ्कोधाय	३०.	१४
मयि गृह्णाम्यग्रे अग्निं	१३.	१
मयि त्यदिन्द्रियम्बृहन्	३८.	२७
मयीदमिन्द्र इन्द्रिय	२.	१०
मयुः प्राजापत्य उलो	२४.	३१
मरुतां स्कन्धा विश्वेषा	२५.	६
मरुतो यस्य हि क्षये	८.	३१
मरुत्वन्तं वृषभं वावृधान	७.	३६
मरुत्वाँ इन्द्र वृषभो	७.	३८
मर्माणि ते वर्मणा	१७.	४९
मशकान्केशैरिन्द्रं	२५.	३
महाँ इन्द्रो नृवदा	७.	३९
महाँ इन्द्रो य ओजसा	७.	४०
महाँ इन्द्रो वज्रहस्तः	२६.	१०
महानाम्न्यो रेवत्यो	२३.	३५
महि त्रीणामवोस्तु	३.	३१
मही द्यौः पृथिवी च	८.	३२
	१३.	३२
महीनाम्पयोसि वर्चोदा	४.	३
महीमू षु मातरं	२१.	५
महो अग्नेः समिधानस्य	३३.	१७
महो अर्णः सरस्वती	२०.	८६
मा च्छन्दः प्रमा च्छन्दः	१४.	१८
मा त इन्द्र ते वयन्	१०.	२२
माता च ते पिता च तेग्रं	२३.	२४
माता च ते पिता च तेग्रे	२३.	२५
मातेव पुत्रम्पृथिवी	१२.	६१
मा त्वाग्निर्ध्वनयीद्	२५.	३७
मा त्वा तपत्प्रिय आत्मा	२५.	४३
मा नः शंसो अररुषो	३.	३०
मा नस्तोके तनये	१६.	१६
मा नो महान्तमुत	१६.	१५
मा नो मित्रो वरुणो	२५.	२४
मापो मौषधीर्हिंसीर्धाम्नो	६.	२२
मा भेर्मा संविक्था अतमेरु	१.	२३
मा भेर्मा संविक्था ऊर्जन्धत्स्व	६.	३५
मा मा हिंसीज्जनिता	१२.	१०२
मा वो रिषत्खनिता	१२.	९५
मा सु भित्था मा सु	११.	६८
माहिर्भूर्मा पृदाकुः । उरुं	८.	२३
माहिर्भूर्मा पृदाकुर्नमस्त	६.	१२
मित्रं हुवे पूतदक्षं	३३.	५७
मित्रः संसृज्य पृथिवीम्	११.	५३
मित्रश्च म इन्द्रश्च	१८.	१७
मित्रस्य चर्षणीधृतो	११.	६२
मित्रस्य मा चक्षुषेक्षध्व	५.	३४
मित्रावरुणाभ्यान्त्वा	७.	२३
मित्रो न एहि सुमित्रध	४.	२७
मित्रो नवाक्षरेण त्रिवृतं	९.	३३
मीढुष्टम शिवतम शिवो	१६.	५१
मुखं सदस्य शिर इत्	१९.	८८
मुञ्चन्तु मा शपथ्यादथो	१२.	९०
मूर्धानन्दिवो अरतिम्	७.	२४
	३३.	८
मूर्धा वयः प्रजापति	१४.	९
मूर्धासि राड्ध्रुवासि	१४.	२१
मृगो न भीमः कुचरो	१८.	७१
मेधाम्मे वरुणो ददातु	३२.	१५
मो षू ण इन्द्रात्र पृत्सु	३.	४६
यः प्राणतो निमिषतो	२३.	३
	२५.	११
य आत्मदा बलदा	२५.	१३
य इन्द्र इन्द्रियन्दधुः	२०.	७०
य इमा विश्वा भुवनानि	१७.	१७
य इमे द्यावापृथिवी	२९.	३४
य एतावन्तश्च भूयांसश्च	१६.	६३
यकासकौ शकुन्तिका	२३.	२२
यकोसकौ शकुन्तक	२३.	२३
यङ्क्रन्दसी अवसा	३२.	७
यजा नो मित्रावरुणा	३३.	३
यजुर्भिराप्यन्ते प्रहा	१९.	२८
यज्ञाप्रतो दूरमुदैति	१.	१
यज्ञ यज्ञङ्गच्छ यज्ञपति	८.	२२
यज्ञस्य दोहो विततः	८.	६२
यज्ञायज्ञा वो अग्नये	२७.	४२
यज्ञेन यज्ञमयजन्त	३१.	१६
यज्ञो देवानाम्० वित्तरासत्	३३.	६८
यज्ञो देवानाम्० वित्तरासदा	८.	४
यते स्वाहा धावते	२२.	८
यतोयतः समीहसे	३६.	२२
यत्ते गात्रादग्निना	२५.	३४
यत्ते पवित्रमर्चिष्यग्ने	१९.	४१
यत्ते सादे महसा	२५.	४०
यत्ते सोम दिवि ज्योति	६.	३३
यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा	३१.	१०
यत्पुरुषेण हविषा	३१.	१४
यत्प्रज्ञानमुत चेतो	३४.	३
यत्र धारा अनपेता	१८.	६५
यत्र बाणाः सम्पतन्ति	१७.	४८
यत्र ब्रह्म च क्षत्रञ्च	२०.	२५
यत्रेन्द्रश्च वायुश्च	२०.	२६
यत्रौषधीः समग्मत	१२.	८०
यथेमां वाचङ्कल्याणी	२६.	२
यदक्रन्दः प्रथमञ्जायमान	२९.	१२
यदग्ने कानि कानि चिदा	११.	७३
यदत्युपजिह्विका यद्वम्रो	११.	७४
यदत्र रिप्तं रसिनः	१९.	३५
यदद्य कच्च वृत्रहन्	३३.	३५
यदद्य सूर उदितेनागा	३३.	२०
यदश्वस्य क्रविषो	२५.	३२
यदश्वाय वास उप	२५.	३९
यदस्या अंहुभेद्याः	२३.	२८
यदाकूतात्समसुस्रोद्	१८.	५८
यदापिपेष मातरम्पुत्रः	१९.	११
यदापो अघ्न्या इति	२०.	१८
यदाबध्नन्दाक्षायणा	३४.	५२
यदि जाग्रद्यदि स्वप्न	२०.	१६
यदि दिवा यदि नक्त	२०.	१५
यदिमा वाजयन्नह	१२.	८५
यदूवध्यमुदरस्यापवाति	२५.	३३
यद्ग्रामे० यच्छूद्रे	२०.	१७
यद्ग्रामे० यदेनश्चकृमा	३.	४५
यद्दत्तं यत्परादानं	१८.	६४
यद्देवा देवहेडनन्देवास	२०.	१४
यद्देवासो ललामगुम्	२३.	२९
यद्धरिणो यवमत्ति न पुष्टं पशु	२३.	३०
यद्धरिणो यवमत्ति न पुष्टं बहु	२३.	३१
यद्धविष्यमृतुशो देवयान	२५.	२७
यद्वाजिनो दाम सन्दान	२५.	३१
यद्वातो अपो अगनी	२३.	७
यद्वाहिष्ठन्तदग्नये	२६.	१२
यन्ता च मे धर्ता च	१८.	७
यन्ते देवी निर्ऋति	१२.	६५
यन्त्री राड्यन्त्र्यसि	१४.	२२
यन्निर्णिजा रेक्णसा	२५.	२५
यन्नीक्षणम्माँस्पचन्या	२५.	३६
यन्मे छिद्रञ्चक्षुषो	३६.	२
यमग्ने कव्यवाहन	१९.	६४
यमग्ने पृत्सु मर्त्यमवा	६.	२९
यमश्विना नमुचेरासुरा	१९.	३४
यमश्विना सरस्वती	२०.	६८
यमाय त्वाङ्गिरस्वते	३८.	९
यमाय त्वा मखाय त्वा	३७.	११
यमाय यमसूमथर्वभ्यो	३०.	१५
यमाय स्वाहान्तकाय	३९.	१३
यमेन दत्तत्रित एन	२९.	१३

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

यम्परिधिम्पर्यधत्था	२.	१७
यवानाम्भागोस्ययवाना	१४.	२६
यश्चिदापो महिना	२७.	२६
यस्तु सर्वाणि भूता	४०.	६
यस्ते अद्य कृणवद्	१२.	२६
यस्ते अश्वसनिर्भक्षो	८.	१२
यस्ते द्रप्स स्कन्दति	७.	२६
यस्ते रसः सम्भृत	१९.	३३
यस्ते स्तनः शशयो	३८.	५
यस्माज्जातन्न पुरा	३२.	५
यस्मान्न जातः परो	८.	३६
यस्मिन्त्सर्वाणि भूता	४०.	७
यस्मिन्नश्वास ऋषभास	२०.	७८
यस्मिन्नृचः साम यजूंषि	३४.	५
यस्य कुर्मो गृहे हवि	१७.	५२
यस्य प्रयाणमन्वन्य	११.	६
यस्यायं विश्व आर्यो	३३.	८२
यस्यास्ते घोर आस	१२.	६४
यस्येमे हिमवन्तो महित्वा	२५.	१२
यस्यै ते यज्ञियो गर्भो	८.	२९
यस्यौषधीः प्रसर्पथाङ्ग	१२.	८६
याँ आवह उशतो देव	८.	१९
याः फलिनीर्या अफला	१२.	८५
याः सेना अभीत्वरी	११.	७७
या इषवो यातुधानानां	१३.	७
या ओषधीः पूर्वा जाता	१२.	७५
या ओषधीः सोमराज्ञीर्बह्वीः	१२.	९२
या ओषधीः सोमराज्ञीर्विष्ठिताः	१२.	९३
या ते अग्नेयःशया	५.	८
या ते घर्मं दिव्या	३८.	१८
या ते धामानि परमाणि	१७.	२१
या ते धामानि हविषा	४.	३७
या ते धामान्युश्मसि	६.	३
या ते रुद्र शिवा तनूः	१६.	४९
या ते रुद्र शिवा तनू	१६.	२
या ते हेतिर्मीढुष्टम	१६.	११
यामिषुङ्गिरिशन्त	१६.	३
याम्मेधान्देवगणाः	३२.	१४
यावती द्यावापृथिवी	३८.	२६
या वाङ्कुशा मधुमत्यश्विना	७.	११
या वो देवाः सूर्ये	१३.	२३
	१८.	४७
या व्याघ्रं विषूचिकोभौ	१९.	१०
या शतेन प्रतनोषि	१३.	२१
याश्चेदमुपशृण्वन्ति	१२.	९४
यास्ते अग्ने सूर्ये रुचो	१३.	२२
	१८.	४६
युक्तेन मनसा वयन्देवस्य	११.	२
युक्त्वाय सविता देवान्	११.	३
युक्ष्वा हि केशिना हरी	८.	३४
युक्ष्वा हि देवहूतमाँ	१३.	३७
	३३.	४
युजे वाम्ब्रह्म पूर्व्यन्नमोभि	११.	५
युञ्जते मन उत युञ्जते	११.	४
	३७.	२
युञ्जते मन उत युञ्जते० स्वाहा	५.	१४
युञ्जन्ति ब्रध्नमरुषञ्चरन्त	२३.	५
युञ्जन्त्यस्य काम्या हरी	२३.	६
युञ्जाथां रासभं युव	११.	१३
युञ्जानः प्रथमम्मन	११.	१
युनक्त सीरा वि युगा	१२.	६८
युवं सुराम० विपिपानाः	२०.	७६
युवं सुराम० विपिपाना	१०.	३३
युवन्तमिन्द्रापर्वता	८.	५३
युष्मा इन्द्रोवृणीत	१.	१३
यूपव्रस्का उत ये	२५.	२९
ये अग्निष्वात्ता ये	१९.	६०
ये चेह पितरो ये	१९.	६७
ये जनेषु मलिम्लव	११.	७९
ये तीर्थानि प्रचरन्ति	१६.	६१
ये ते पन्थाः सवितः	३४.	२७
ये त्वाहिहत्ये मघवन्	३३.	६३
ये देवा अग्निनेत्राः	९.	३६
ये देवा देवानां यज्ञिया	१७.	१३
ये देवा देवेष्वधि	१७.	१४
ये देवासो दिव्येकादश	७.	१९
ये नः पूर्वे पितरः	१९.	५१
ये नः सपत्ना अप	३४.	४६
येन ऋषयस्तपसा	१५.	४९
येन कर्माण्यपसो	३४.	२
येन द्यौरुग्रा पृथिवी	३२.	६
येन वहसि सहस्रं	१५.	५५
	१८.	६२
येना पावक चक्षसा	३३.	३२
येना समत्सु सासहो	१५.	४०
येनेदम्भूतम्भुवनम्	३४.	४
येन्नेषु विविद्ध्यन्ति	१६.	६२
ये पथाम्पथिरक्षय	१६.	६०
ये भूतानामधिपतयो	१६.	५९
ये रूपाणि प्रतिमुञ्चमाना	२.	३०
ये वाजिनम्परिपश्यन्ति	२५.	३५
ये वामी रोचने दिवो	१३.	८
ये वृक्षेषु शष्पिञ्जरा	१६.	५८
येषामध्येति प्रवसन्	३.	४२
ये समानाः समनसः	१९.	४५
ये समानाः समनसो	१९.	४६
यो अग्निः कव्यवाहनः	१९.	६५
यो अग्निरग्नेरध्यजायत	१३.	४५
यो अस्मभ्यमरातीयाद्	११.	८०
योगेयोगे तव स्तरं	११.	१४
यो देवेभ्य आतपति	३१.	२०
यो नः पिता जनिता	१७.	२७
यो भूतानामधिपति	२०.	३२
यो रेवान्यो अमीवहा	३.	२९
यो वः शिवतमो रस	११.	५१
	३६.	१५
रक्षसाम्भागोसि निरस्तं	६.	१६
रक्षोहणं वलगहनं	५.	२३
रक्षोहणो वो वलगहनः	५.	२५
रक्षोहा विश्वचर्षणिरभि	२६.	२६
रजता हरिणीः सीसा	२३.	३७
रथवाहणं हविरस्य	२९.	४५
रथे तिष्ठन्नयति वाजिनः	२९.	४३
रयिश्च मे रायश्च मे	१८.	१०
रश्मिना सत्याय सत्य	१५.	६
राजन्तमध्वराणाङ्गोपा	३.	२३
राज्ञ्यसि प्राची दिग्वसवस्ते	१५.	१०
राज्ञ्यसि प्राची दिग्विराडसि	१४.	१३
रातिं सत्पतिम्महे	२२.	१३
राया वयं ससवांसो	७.	१०
राये नु यज्ञज्ञतू रोदसी	२७.	२४
रुचन्नो धेहि ब्राह्मणेषु	१८.	४८
रुचम्ब्राह्मञ्जनयन्तो	३१.	२१
रुद्राः संसृज्य पृथिवीम्	११.	५४
रूपेण वो रूपमभ्यागान्तुथो	७.	४५
रेतो मूत्रं विजहाति	१९.	७६
रेवती रमध्वमस्मिन्	३.	२१
रेवती रमध्वम्बृहस्पते	६.	८
रोहितो धूम्ररोहितः	२४.	२
लाङ्गलम्पवीरवत्सुशेवं	१२.	७१
लोकम्पृण च्छिद्रम्पृणाथो	१२.	५४
	१५.	५९
लोमभ्यः स्वाहा लोमभ्यः	३९.	१०
लोमानि प्रयतिर्मम	२०.	१३
वक्ष्यन्तीवेदागनीगन्ति	२९.	४०
वनस्पतिरवसृष्टो न	२०.	४५
वनस्पतेवसृजा रराण	२७.	२१
वनस्पते वीड्वङ्गो हि	२९.	५२
वनेषु व्यन्तरिक्षन्ततान	४.	३१
वयं सोम व्रते तव	३.	५६
वयं हि त्वा प्रयति	८.	२०
वयन्ते अद्य ररिमा	१८.	७५
वयन्नाम प्रब्रवामा	१७.	९०
वरुणः क्षत्रमिन्द्रियम्	२०.	७२
वरुणः प्राविता भुवन्	३३.	४६
वरुणस्योत्तम्भनमसि	४.	३६
वरूत्रीन्त्वष्टुर्वरुणस्य	१३.	४४
वर्षाभिर्ऋतुनादित्या	२१.	२५
वर्षाहूर्ऋतूनामाखुः	२४.	३८
वसन्ताय कपिञ्जला	२४.	२०
वसन्तेन ऋतुना देवा	२१.	२३
वसवस्त्रयोदशाक्षरेण	९.	३४
वसवस्त्वा कृण्वन्तु	११.	५८
वसवस्त्वाच्छृन्दन्तु	११.	६५
वसवस्त्वाञ्जन्तु	२३.	८
वसवस्त्वा धूपयन्तु	११.	६०
वसु च मे वसतिश्च	१८.	१५
वसुभ्य ऋश्यानालभते	२४.	२७
वसुभ्यस्त्वा रुद्रेभ्यस्त्वा	२.	१६
वसूनाम्भागोसि रुद्रा	१४.	२५

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

वसोः पवित्रमसि द्यौरसि	१.	२
वसोः पवित्रमसि शतधारं	१.	३
वस्व्यस्यदितिरस्यादित्यासि	४.	२१
वह वपाआतिवेदः	३५.	२०
वाचन्ते शुन्धामि प्राणन्ते	६.	१४
वाचस्पतये पवस्व वृष्णो	७.	१
वाचस्पतिं विश्वकर्माणमूतये	१७.	२३
वाचस्पतिं विश्वकर्माणमूतये० उपयाम	८.	४५
वाचे स्वाहा प्राणाय	३९.	३
वाजः पुरस्तादुत	१८.	३४
वाजश्च मे प्रसवश्च	१८.	१
वाजस्य नु प्रसव आ	९.	२५
वाजस्य नु प्रसवे	१८.	३०
वाजस्य मा प्रसव	१७.	६३
वाजस्येमम्प्रसवः	९.	२३
वाजस्येमाम्प्रसवः	९.	२४
वाजाय स्वाहा प्रसवाय० वसवे	१८.	२८
वाजाय स्वाहा प्रसवाय० स्वः	२२.	३२
वाजेवाजेवत वाजिनो	९.	१८
	२१..	११
वाजो नः सप्त प्रदिश	१८.	३२
वाजो नो अद्य प्रसुवाति	१८.	३३
वातम्प्राणेनापानेन	२५.	२
वातरंहा भव वाजिन्युज्य	९.	८
वातस्य जूतिं वरुणस्य	१३.	४२
वाताय स्वाहा धूमाय	२२.	२६
वातो वा मनो वा	९.	७
वाममद्य सवितर्वाममु	८.	६
वायव्यैर्वायव्यान्याप्नोति	१९.	२७
वायुः पुनातु सविता	३५.	३
वायुरग्रेगा यज्ञप्रीः	२७.	३१
वायुरनिलममृतमथे	४०.	१५
वायुष्ट्वा पचतैरवत्वसित	२३.	१३
वायोः पूतः पवित्रेण	१९.	३
वायो ये ते सहस्रिणो	२७.	३२
वायो शुक्रो अयामि ते	२७.	३०
वार्त्रहत्याय शवसे	१८.	६८
विकिरिद्र विलोहित	१६.	५२
विज्यन्धनुः कपर्दिनो	१६.	१०
वित्तञ्च मे वेद्यञ्च मे	१८.	११
विदद्यदी सरमा रुग्ण	३३.	५९
विद्मा ते अग्ने त्रेधा	१२.	१९
विद्याञ्चाविद्याञ्च यस्तद्	४०.	१४
विधृतिन्नाभ्या घृतं	२५.	९
विधेम ते परमे जन्मन्	१७.	७५
वि न इन्द्र मृधो जहि	१८.	७०
वि न इन्द्र मृधो जहि० उपयाम	८.	४४
वि पाजसा पृथुना	११.	४९
विभक्तारं हवामहे	३०.	४
विभूरसि प्रवाहणो	५.	३१
विभूर्मात्रा प्रभूः पित्रा	२२.	१९
विभ्राड्बृहत्पिबतु सोम्यम्	३३.	३०
विमान एष दिवो मद्ध्य	१७.	५९
विमुच्यध्वमघ्न्या देवयाना	१२.	७३
विराडसि दक्षिणा दिग्	१५.	११
विराड्ज्योतिरधारयत्	१३.	२४
विवस्वन्नादित्यैष ते	८.	५
विश्वकर्मन्हविषा वर्द्धनेन	१७.	२४
विश्वकर्मन्हविषा वर्द्धनेन० उपयाम	८.	४६
विश्वकर्मन्हविषा वावृधानः	१७.	२२
विश्वकर्मा त्वा० ज्योतिष्मतीम्	१४.	१४
विश्वकर्मा त्वा० व्यचस्वतीम्	१४.	१२
विश्वकर्मा विमना आद्विहाया	१७.	२६
विश्वकर्मा ह्यजनिष्ट	१७.	३२
विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतो	१७.	१९
विश्वस्मै प्राणायापानाय	१३.	१९
विश्वस्य केतुर्भुवनस्य	१२.	२३
विश्वस्य दूतममृतं	१५.	३३
विश्वस्य मूर्द्धन्नधितिष्ठसि	१८.	५५
विश्वा आशा दक्षिण	३८.	१०
विश्वानि देव सवितर्दुरितानि	३०.	३
विश्वा रूपाणि प्रतिमुञ्चते	१२.	३
विश्वासाम्भुवाम्पते विश्वस्य	३७.	१८
विश्वे अद्य मरुतो विश्व	१८.	३१
	३३.	५२
विश्वे देवाः शृणुतेमं	३३.	५३
विश्वे देवा अंशुषु न्युप्तो	८.	५७
विश्वे देवाश्चमसेषूज्जीतो	८.	५८
विश्वे देवास आगत	७.	३४
विश्वेभिः सोम्यम्मध्वग्न	३३.	१०
विश्वेषामदितिर्यज्ञियानां	३३.	१६
विश्वो देवस्य नेतुर्मर्तो	४.	८
	११.	६७
	२२.	२१
विष्णोः कर्माणि पश्यत	६.	४
	१३.	३३
विष्णोः क्रमोसि सपत्नहा	१२.	५
विष्णो रराटमसि विष्णोः	५.	२१
विष्णोर्नुकं वीर्याणि	५.	१८
वीतं हविः शमितं	१७.	५७
वीतिहोत्रन्त्वा कवे	२.	४
वृष्ण ऊर्मिरसि राष्ट्रदा	१०.	२
वेदाहमस्य भुवनस्य	२३.	६०
वेदाहमेतम्पुरुषम्	३१.	१८
वेदेन रूपे व्यपिबत्	१९.	७८
वेदोसि येन त्वन्देव	२.	२१
वेद्या वेदिः समाप्यते	१९.	१७
वेनस्तत्पश्यन्निहितङ्गुहा	३२.	८
वैश्वदेवी पुनती देव्यागाद्	१९.	४४
वैश्वानरस्य सुमतौ स्याम	२६.	७
वैश्वानरो न० अग्निरुक्थेन	२६.	८
वैश्वानरो न० अग्निर्नः	१८.	७२
व्यचस्वतीरुर्विया वि	२९.	३०
व्रतङ्कृणुत व्रतङ्कृणुताग्नि	४.	११
व्रतञ्च म ऋतवश्च	१८.	२३
व्रतेन दीक्षामाप्नोति	१९.	३०
व्रीहयश्च मे यवाश्च	१८.	१२
व्रेशीनान्त्वा पत्मन्	८.	४८
शं वातः शं हि ते	३५.	८
शञ्च मे मयश्च मे	१८.	८
शतं वो अम्ब धामानि	१२.	७६
शतमिन्नु शरदो अन्ति	२५.	२२
शन्ते परेभ्यो गात्रेभ्यः	२३.	४४
शन्नो देवीरभिष्टय	३६.	१२
शन्नो भवन्तु वाजिनो	९.	१६
	२१.	१०
शन्नो मित्रः शं वरुणः	३६.	९
शन्नो वातः पवतां	३६.	१०
शमिता नो वनस्पतिः	२१.	२१
शर्म च स्थो वर्म च	११.	३०
शर्मास्यवधूतं० अद्रिरसि	१.	१४
शर्मास्यवधूतं० धिषणासि	१.	१९
शादन्दद्भिरवकान्दन्तमूलै	२५.	१
शारदेन क्रतुना देवा	२१.	२६
शिरो मे श्रीर्यशो मुख	२०.	५
शिल्पा वैश्वदेव्यो रोहिण्य	२४.	५
शिवेन वचसा त्वा	१६.	४
शिवो नामासि स्वधितिस्ते	३.	६३
शिवो भव प्रजाभ्यो	११.	४५
शिवो भूत्वा मह्यमग्ने	१२.	१७
शुक्रज्योतिश्च चित्रज्योतिश्च	१७.	८०
शुक्रन्त्वा शुक्रेण क्रीणामि	४.	२६
शुक्रश्च शुचिश्च ग्रैष्मावृतू	१४.	६
शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो	२४.	३
शुनं सुफाला विकृषन्तु	१२.	६९
शैशिरेण क्रतुना देवा	२१.	२८
श्रायन्त इव सूर्यं विश्वे	३३.	४१
श्रीणामुदारो धरुणो	१२.	२२
श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च	३१.	२२
श्रुधि श्रुत्कर्ण वह्निभि	३३.	१५
श्वात्राः पीता भवत	४.	१२
श्वात्रा स्थ वृत्रतुरो	६.	३४
श्वित्र आदित्यानामुष्ट्रो	२४.	३९
षडस्य विष्ठाः शतमक्षरा	२३.	५८
षोडशी स्तोम ओजो	१५.	३
संवत्सरोसि परिवत्सरो	२७.	४५
संवर्चसा पयसा सन्तनूभि	२.	२४
	८.	१४
	८.	१६
संवसाथां स्वर्विदा समीची	११.	३१
सं वाम्मनांसि संव्रता	१२.	५८
संशितम्मे ब्रह्म संशितं	११.	८१
संशितो रश्मिना रथः	२३.	१४
संसमिद्युवसे वृषन्	१५.	३०
संसीदस्व महाँ असि	११.	३७
संसृष्टां वसुभी रुद्रैर्धीरैः	११.	५५
संस्रवभागा स्थेषा बृहन्तः	२.	१८
संहितासि विश्वरूप्यूर्जा	३.	२२
संहितो विश्वसामा सूर्यो	१८.	३९
स इधानो वसुष्कवि	१५.	३६

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

स इषुहस्तैः स निषङ्गिभि	१७.	३५
सखायः सं वः सम्यञ्च	१५.	२९
सङ्क्रन्दनेनानिमिषेण	१७.	३४
स जातो गर्भो असि	११.	४३
सजूरब्दो अयवोभिः	१२.	७४
सजूर्ऋतुभिः सजूर्विधाभिः	१४.	७
सजूर्देवेन सवित्रा	३.	१०
सजोषा इन्द्र सगणो	७.	३७
सञ्चेध्यस्वाग्ने प्र च	२७.	२
सज्ञानमसि कामधरणम्	१२.	४६
सत्यञ्च मे श्रद्धा च	१८.	५
सत्रस्य ऋद्धिरस्यगन्म	८.	५२
स त्वन्नश्चित्र वज्रहस्त	२७.	३८
स त्वन्नो अग्नेवमो	२१.	४
सदसस्पतिमद्भुतम्	३२.	१३
स दुद्रवत्स्वाहुतः	१५.	३४
सद्यो जातो व्यमिमीत	२९.	३६
सधमादो द्युम्निनीराप	१०.	७
स नः पावक दीदिवो	१७.	९
स नः पितेव सूनवेग्ने	३.	२४
स न इन्द्राय यज्यवे	२६.	१७
स नो बन्धुर्जनिता	३२.	१०
स नो भुवनस्य पते	१८.	४४
सन्ते पयांसि समु यन्तु	१२.	११३
सन्ते मनो मनसा सम्प्राणः	६.	१८
सन्ते वायुर्मातरिश्वा	११.	३९
सन्त्वमग्ने सूर्यस्य वर्चसा	३.	१९
सन्धये जारङ्गेहायोपपति	३०.	९
सन्नः सिन्धुरवभृथायोद्यतः	८.	५९
स पर्यगाच्छुक्रमकाय	४०.	८
सप्त ऋषयः प्रतिहिताः	३४.	५५
सप्त ते अग्ने समिधः	१७.	७९
सप्तास्यासन्परिधयस्त्रिः	३१.	१५
स प्रथमो बृहस्पति	७.	१५
स बोधि सूरिर्मघवा	१२.	४३
समख्ये देव्या धिया	४.	२३
समग्निरग्निना गत	३७.	१५
समध्वरायोषसो नमन्त	३४.	३९
समास्त्वाग्न ऋतवो	२७.	१
समितं सङ्कल्पेथां	१२.	५७
समिदसि सूर्यस्त्वा	२.	५
समिद्ध इन्द्र उषसामनीके	२०.	३६
समिद्धे अग्नावधि	१७.	५५
समिद्धो अग्निः समिधा	२१.	१२
समिद्धो अग्निरश्विना	२०.	५५
समिद्धो अञ्जन्कृदरम्	२९.	१
समिद्धो अद्य मनुषो	२९.	२५
समिधाग्निन्दुवस्यत	३.	१
	१२.	३०
समिन्द्र णो मनसा नेषि	८.	१५
समुद्रङ्गच्छ स्वाहान्तरिक्ष	६.	२१
समुद्रस्य त्वावकयाग्ने	१७.	४
समुद्रादूर्मिर्मधुमाँ उदार	१७.	८९
समुद्राय त्वा वाताय	३८.	७
समुद्राय शिशुमारानालभते	२४.	२१
समुद्रे ते हृदय० यज्ञस्य	८.	२५
समुद्रे ते हृदय० सुमित्रिया	२०.	१९
समुद्रे त्वा नृमणा	१२.	२०
समुद्रोसि नभस्वानार्द्रदानुः	१८.	४५
समुद्रोसि विश्वव्यचा	५.	३३
सम्प्रच्यवध्वमुप सम्	१५.	५३
सम्बर्हिरङ्क्तां हविषा	२.	२२
सम्भूतिञ्च विनाशञ्च	४०.	११
सम्मा सृजामि पयसा	१८.	३५
सम्यक्स्रवन्ति० एते	१७.	९४
सम्यक्स्रवन्ति० घृतस्य	१३.	३८
सम्राडसि प्रतीची	१५.	१२
स यक्षदस्य महिमान	२७.	१५
सरस्वती मनसा पेशलं	१९.	८३
सरस्वती योन्याङ्गर्भ	१९.	९४
सरोभ्यो धैवरमुपस्था	३०.	१६
सर्वे निमेषा जज्ञिरे	३२.	२
सविता ते शरीराणि	३५.	५
सविता ते शरीरेभ्यः	३५.	२
सविता त्वा सवानां	९.	३९
सविता प्रथमेहन्नग्नि	३९.	६
सविता वरुणो दधद्	२०.	७१
सवितुस्त्वा प्रसव	१.	३१
सवित्रा प्रसवित्रा	१०.	३०
सहदानुम्पुरुहूत	१८.	६९
सह रय्या निवर्तस्वाग्ने	१२.	१०
	१२.	४१
स हव्यवाडमर्त्य उशिग्	२२.	१६
सहश्च सहस्यश्च	१४.	२७
सहसा जातान्प्रणुदा	१५.	२
सहस्तोमाः सहछन्दस	३४.	४९
सहस्रशीर्षा पुरुषः	३१.	१
सहस्रस्य प्रमासि	१५.	६५
सहस्राणि सहस्रशो	१६.	५३
सहस्व मे अरातीः	१२.	९९
साकं यक्ष्म प्रपत चाषेण	१२.	८७
सा विश्वायुः सा विश्वकर्मा	१.	४
सिंह्यसि सपत्नसाही	५.	१०
सिंह्यसि स्वाहा सिंह्यस्यादित्य	५.	१२
सिञ्चन्ति परिषिञ्चन्त्युत्	२०.	२८
सिनीवालि पृथुष्टुके	३४.	१०
सिनीवाली सुकपर्दा	११.	५६
सिन्धोरिव प्राध्वने	१७.	९५
सीद त्वम्मातुरस्या	१२.	१५
सीद होतः स्व उ लोके	११.	३५
सीरा युञ्जन्ति कवयो	१२.	६७
सीसेन तन्त्रम्मनसा	१९.	८०
सुगव्यन्नो वाजी स्वश्व्यम्	२५.	४५
सुगा वो देवाः सदना	८.	१८
सुजातो ज्योतिषा सह	११.	४०
सुत्रामाणम्पृथिवी	२१.	६
सुनावमारुहेयमस्रवन्ती	२१.	७
सुपर्णं वस्ते मृगो अस्या	२९.	४८
सुपर्णः पार्जन्य आतिर्वाहसो	२४.	३४
सुपर्णोसि गरुत्माँस्त्रिवृत्ते	१२.	४
सुपर्णोसि गरुत्मान्पृष्ठे	१७.	७२
सुप्रजाः प्रजाः प्रजनयन्	७.	१८
सुबर्हिरग्निः पूषण्वान्	२१.	१५
सुभूः स्वयम्भूः प्रथमो	२३.	६३
सुमित्रिया न आप	३५.	१२
	३६.	२३
	३८.	२३
सुरावन्तं बर्हिषदं सुवीरं	१९.	३२
सुवीरो वीरान्प्रजनयन्	७.	१३
सुषारथिरश्वानिव	३४.	६
सुषुम्णः सूर्यरश्मिश्चन्द्रमा	१८.	४०
सुष्टुतिं सुमतीवृधो	२२.	१२
सुसन्दृशन्त्वा वयम्	३.	५२
सुसमिद्धाय शोचिषे	३.	२
सूपस्था अद्य देवो	२१.	६०
सूर्य एकाकी चरति	२३.	१०
	२३.	४६
सूर्यत्वचस स्थ राष्ट्रदा	१०.	४
सूर्यरश्मिर्हरिकेशः	१७.	५८
सूर्यस्य चक्षुरारोहाग्ने	४.	३२
सो अग्निर्यो वसुर्गृणे	१५.	४२
सोमं राजानमवसे	९.	२६
सोगः पवते सोमः पवते	७.	२१
सोममद्भ्यो व्यपिबत्	१९.	७४
सोम राजन्विश्वास्त्वम्	६.	२६
सोमस्य त्वा द्युम्नेनाभि	१०.	१७
सोमस्य त्विषिरसि० अग्नये	१०.	५
सोमस्य त्विषिरसि० मृत्योः	१०.	१५
सोमस्य रूपङ्क्षीतस्य	१९.	१५
सोमानं स्वरणङ्कृणुहि	३.	२८
सोमाय कुलुङ्ग आरण्योजो	२४.	३२
सोमाय लवानालभते	२४.	२४
सोमाय हंसानालभते	२४.	२२
सोमो धेनुं सोमो अर्वन्त	३४.	२१
सोमो राजामृतं सुत	१९.	७२
सौरी बलाका शार्गः	२४.	३३
स्तीर्णम्बर्हिः सुष्टरीमा	२९.	४
स्तोकानामिन्दुम्प्रति	२०.	४६
स्थिरो भव वीड्वङ्ग	११.	४४
स्योना पृथिवि नो	३६.	१३
स्योना पृथिवि नो० । अप	३५.	२१
स्योनासि सुषदासि	१०.	२६
स्रुचश्च मे चमसाश्च	१८.	२१
स्वगा त्वा देवेभ्यः	२२.	४
स्वतवाँश्च प्रघासी च	१७.	८५
स्वयं वाजिँस्तन्वङ्कल्पयस्व	२३.	१५
स्वयम्भूरसि श्रेष्ठो	२.	२६
स्वराडसि सपत्नहा	५.	२४
स्वराडस्युदीची दिङ्	१५.	१३
स्वर्ण घर्मः स्वाहा	१८.	५०

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

स्वर्यन्तो नापेक्षन्त १७. ६८
स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः २५. १९
स्वाहुतोसि विश्वेभ्य ७. ६, ३
स्वादिष्ठया मदिष्ठया २६. २५
स्वादुपंसदः पितरो २९. ४६
स्वादून्त्वा स्वादुना १९. १
स्वाहा पूष्णे शरसे ३८. १५
स्वाहा प्राणेभ्यः साधिपति ३९. १
स्वाहा मरुद्भिः परिश्रीयस्व ३७. १३
स्वाहा यतां परुषः २१. २२
स्वाहा यज्ञम्मनसः ४. ६
स्वाहा रुद्राय रुद्रहूतये ३८. १६
स्वैर्दक्षैर्दक्षपितेह १४. ३
हंसः शुचिषद्वसुरन्तरिक्ष १०. २४
१२. १४
हरयो धूमकेतवो ३३. २
हविर्धानं यदश्विना १९. १८
हविष्मतीरिमा आपो ६. २३
हस्त आधाय सविता ११. ११
हिङ्काराय स्वाहा हिङ्कृताय २२. ७
हिमस्य त्वा जरायुणाग्ने १७. ५
हिरण्मयेन पात्रेण ४०. १७
हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे १३. ४
२३. १
२५. १०
हिरण्यपाणिः सविता ३४. २५
हिरण्यपाणिमूतये २२. १०
हिरण्यरूपा उषसो १०. १६
हिरण्यशृङ्गोयो अस्य २९. २०
हिरण्यहस्तो असुरः ३४. २६
हृदे त्वा मनसे० ऊर्ध्व ६. २५
हृदे त्वा मनसे० ऊर्ध्वो ३७. १९
हेमन्तेन ऋतुना देवा २१. २७
होताध्वर्युरावया २५. २८
होता यक्षत्तनूनपातमुद्भिदं २८. २५
होता यक्षत्तनूनपातमूतिभि २८. २
होता यक्षत्तनूनपात् २१. ३०
होता यक्षत्तिस्रो० भिषातवोपस २८. ८
होता यक्षत्तिस्रो० भिषातवोपसो २१. ३७
होता यक्षत्त्वष्टारमिन्द्र २८. ९
होता यक्षत्पेशस्वती २८. ३१
होता यक्षत्प्रचेतसा २८. ३०
होता यक्षत्प्रजापतिं २३. ६४
होता यक्षत्समिधाग्नि २१. २९
होता यक्षत्समिधानम् २८. २४
होता यक्षत्समिधेन्द्र २८. १
होता यक्षत्सरस्वतीम् २१. ४४
होता यक्षत्सुपेशसा २८. २९
होता यक्षत्सुपेशसोषे २१. ३५
होता यक्षत्सुबर्हिषम् २८. २७
होता यक्षत्सुरेतसं २८. ३२
होता यक्षत्सुरेतसमृषभं २१. ३८
होता यक्षत्स्वाहाकृती २८. ३४
होता यक्षदग्निं स्वाहा २१. ४०
होता यक्षदग्निं स्विष्टकृत २१. ४७
होता यक्षदश्विनौ छागस्य वपाया २१. ४१
होता यक्षदश्विनौ छागस्य हविष २१. ४३
होता यक्षदश्विनौ सरस्वती २१. ४२
होता यक्षदाजभिरिन्द्र २८. ३
होता यक्षदिडेडित २१. ३२
होता यक्षदिन्द्रं स्वाहा २८. ११
होता यक्षदिन्द्रवृषभस्य २१. ४५
होता यक्षदिन्द्रमीडितं २८. २६
होता यक्षदुषे इन्द्रस्य २८. ६
होता यक्षदोजो न वीर्यं २८. ५
होता यक्षद्पुरो दिशः २१. ३४
होता यक्षद्वैन्या० भिषजाश्विनेन्द्रं २१. ३६
होता यक्षद्वैन्या० भिषजा सरस्वत्या २८. ७
होता यक्षद्बर्हिरूर्णम्प्रदा २१. ३३
होता यक्षद्बर्हिषीन्द्र २८. ४
होता यक्षद्वनस्पतिं० घियो २८. १०
होता यक्षद्वनस्पतिं० भीमं २१. ३९
होता यक्षद्वनस्पतिं० हिरण्य २८. ३३
होता यक्षद्वनस्पतिमभि २१. ४६
होता यक्षद्वयस्वतीः २८. २८
होता यक्षन्नराशंसत्र २१. ३१

॥ इति शुक्लयजुर्वेदमन्त्राणां वर्णानुक्रमणी ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सामवेद संहिता

SĀMVEDA SAṀHITĀ

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ओ३म्

सामवेद-संहिता

पूर्वार्चिकः

अथ आग्नेयं काण्डम्

अथ प्रथमोऽध्यायः

प्रथमप्रपाठके प्रथमोऽर्धः

प्रथमा दशतिः

ऋषिः—१, २, ४, ७, ९ भरद्वाजः; ३ मेधातिथिः; ५ उशनाः; ६ सुदीति-पुरुमीढौ तयोर्वान्यतरः; ८ वत्सः; १० वामदेवः॥ देवता—अग्निः॥
छन्दः—गायत्री; २ शङ्कुमती पिपीलिकामध्यागायत्री; ५ विराड्गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

अग्न आ याहि वीतये गृणानो हव्यदातये। नि होता सत्सि बर्हिषि॥ १॥
त्वमग्ने यज्ञानां होता विश्वेषां हितः। देवेभिर्मानुषे जने॥ २॥
अग्निं दूतं वृणीमहे होतारं विश्ववेदसम्। अस्य यज्ञस्य सुक्रतुम्॥ ३॥
अग्निर्वृत्राणि जङ्घनद् द्रविणस्युर्विपन्यया। समिद्धः शुक्र आहुतः॥ ४॥
प्रेष्ठं वो अतिथिं स्तुषे मित्रमिव प्रियम्। अग्ने रथं न वेद्यम्॥ ५॥
त्वं नो अग्ने महोभिः पाहि विश्वस्या अरातेः। उत द्विषो मर्त्यस्य॥ ६॥
एह्यू षु ब्रवाणि तेऽग्न इत्थेतरा गिरः। एभिर्वर्धास इन्दुभिः॥ ७॥
आ ते वत्सो मनो यमत् परमाच्चित् सधस्थात्। अग्ने त्वां कामये गिरा॥ ८॥
त्वामग्ने पुष्करादध्यथर्वा निरमन्थत। मूर्ध्नो विश्वस्य वाघतः॥ ९॥
अग्ने विवस्वदा भरास्मभ्यमूतये महे। देवो ह्यसि नो दृशे॥ १०॥

द्वितीया दशतिः

ऋषिः—१ आयुरक्षवाहिः; २ वामदेवः; ३, ८, ९ प्रयोगः; ४ मधुच्छन्दाः; ५, ७ शुनःशेपः; ६ मेधातिथिः; १० वत्सः॥ देवता—अग्निः॥
छन्दः—गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

नमस्ते अग्न ओजसे गृणन्ति देव कृष्टयः। अमैरमित्रमर्दय॥ १॥
दूतं वो विश्ववेदसं हव्यवाहममर्त्यम्। यजिष्ठमृञ्जसे गिरा॥ २॥
उप त्वा जामयो गिरो देदिशतीर्हविष्कृतः। वायोरनीके अस्थिरन्॥ ३॥
उप त्वाग्ने दिवेदिवे दोषावस्तर्धिया वयम्। नमो भरन्त एमसि॥ ४॥
जराबोध तद्विविड्ढि विशेविशे यज्ञियाय। स्तोमं रुद्राय दृशीकम्॥ ५॥
प्रति त्यं चारुमध्वरं गोपीथाय प्र हूयसे। मरुद्भिरग्न आ गहि॥ ६॥
अश्वं न त्वा वारवन्तं वन्दध्या अग्निं नमोभिः। सम्राजन्तमध्वराणाम्॥ ७॥
और्वभृगुवच्छुचिमप्रवानवदा हुवे। अग्निं समुद्रवाससम्॥ ८॥
अग्निमिन्धानो मनसा धियं सचेत मर्त्यः। अग्निमिन्धे विवस्वभिः॥ ९॥
आदित् प्रत्नस्य रेतसो ज्योतिः पश्यन्ति वासरम्। परो यदिध्यते दिवि॥ १०॥

तृतीया दशतिः

ऋषिः—१ प्रयोगः; २, ५ भरद्वाजः; ३, १० वामदेवः; ४, ६ वसिष्ठः; ७ विरूपः; ८ शुनःशेपः; ९ गोपवनः; ११ प्रस्कण्वः; १२ मेधातिथिः; १३ सिन्धु-द्वीप आम्बरीषः, त्रित आप्त्यो वा; १४ उशना॥ देवता—अग्निः॥
छन्दः—१ विराड्गायत्री; २-१४ गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

अग्निं वो वृधन्तमध्वराणां पुरूतमम्। अच्छा नप्त्रे सहस्वते॥ १॥
अग्निस्तिग्मेन शोचिषा यंसद् विश्वं न्याऽत्रिणम्। अग्निर्नो वंसते रयिम्॥ २॥
अग्ने मृड महाँ अस्यय आ देवयुं जनम्। इयेथ बर्हिरासदम्॥ ३॥
अग्ने रक्षा णो अंहसः प्रति स्म देव रीषतः। तपिष्ठैरजरो दह॥ ४॥
अग्ने यूयोध्या हि ये तवाश्वासो देव साधवः। अरं वहन्त्याशवः॥ ५॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नि त्वा नक्ष्य विश्पते द्युमन्तं धीमहे वयम्। सुवीरमग्न आहुत॥ ६॥
अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम्। अपां रेतांसि जिन्वति॥ ७॥
इममू षु त्वमस्माकं सनिं गायत्रं नव्यांसम्। अग्ने देवेषु प्र वोचः॥ ८॥
तं त्वा गोपवनो गिरा जनिष्ठदग्ने अङ्गिरः। स पावक श्रुधी हवम्॥ ९॥
परि वाजपतिः कविरग्निर्हव्यान्यक्रमीत्। दधद्रत्नानि दाशुषे॥ १०॥
उदु त्यं जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः। दृशे विश्वाय सूर्यम्॥ ११॥
कविमग्निमुप स्तुहि सत्यधर्माणमध्वरे। देवममीवचातनम्॥ १२॥
शं नो देवीरभिष्टये शं नो भवन्तु पीतये। शं योरभि स्त्रवन्तु नः॥ १३॥
कस्य नूनं परीणसि धियो जिन्वसि सत्पते। गोषाता यस्य ते गिरः॥ १४॥

चतुर्थी दशतिः

ऋषिः—१, ३ शंयुः; २, ५, ८, ९ भर्गः; ४ वसिष्ठः; ६ प्रस्कण्वः; ७ तृणपाणिः; १० सोभरिः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—बृहती॥ स्वरः—मध्यमः॥

३५. यज्ञायज्ञा वो अग्नये गिरागिरा च दक्षसे ।
प्रप्र वयममृतं जातवेदसं प्रियं मित्रं न शंसिषम् ॥ १॥
पाहि नो अग्न एकया पाह्यूत द्वितीयया ।
पाहि गीर्भिस्तिसृभिरूर्जां पते पाहि चतसृभिर्वसो ॥ २॥
बृहद्भिरग्ने अर्चिभिः शुक्रेण देव शोचिषा ।
भरद्वाजे समिधानो यविष्ठ्य रेवत् पावक दीदिहि ॥ ३॥
त्वे अग्ने स्वाहुत प्रियासः सन्तु सूरयः ।
यन्तारो ये मघवानो जनानामूर्वान् दयन्त गोनाम् ॥ ४॥
अग्ने जरितर्विश्पतिस्तपानो देव रक्षसः ।
अप्रोषिवान् गृहपते महाँ असि दिवस्पायुर्दुरोणयुः ॥ ५॥
अग्ने विवस्वदुषसश्चित्रं राधो अमर्त्य ।
आ दाशुषे जातवेदो वहा त्वमद्या देवाँ उषर्बुधः ॥ ६॥

त्वं नश्चित्र ऊत्या वसो राधांसि चोदय ।
अस्य रायस्त्वमग्ने रथीरसि विदा गाधं तुचे तु नः ॥ ७॥
त्वमित् सप्रथा अस्यग्ने त्रातरृतः कविः ।
त्वां विप्रासः समिधान दीदिव आ विवासन्ति वेधसः ॥ ८॥
आ नो अग्ने वयोवृधं रयिं पावक शंस्यम् ।
रास्वा च न उपमाते पुरुस्पृहं सुनीती सुयशस्तरम् ॥ ९॥
यो विश्वा दयते वसु होता मन्द्रो जनानाम् ।
मधोर्न पात्रा प्रथमान्यस्मै प्र स्तोमा यन्त्वग्नये ॥ १०॥

पञ्चमी दशतिः

ऋषिः—१ वसिष्ठः; २ भर्गः; ३, ७ सोभरिः; ४ मनुः; ५ सुदीतिपुरुमीढौ; ६ प्रस्कण्वः; ८ मेधातिथिर्मेध्यातिथिश्च; ९ विश्वामित्रः; १० कण्वः॥ देवता—१-७, ९, १० अग्निः; ८ इन्द्रः॥ छन्दः—बृहती॥ स्वरः—मध्यमः॥

एना वो अग्निं नमसोर्जो नपातमा हुवे ।
प्रियं चेतिष्ठमरतिं स्वध्वरं विश्वस्य दूतममृतम् ॥ १॥
शेषे वनेषु मातृषु सं त्वा मर्तास इन्धते ।
अतन्द्रो हव्यं वहसि हविष्कृत आदिद्देवेषु राजसि ॥ २॥
अदर्शि गातुवित्तमो यस्मिन् व्रतान्यादधुः ।
उपो षु जातमार्यस्य वर्धनमग्निं नक्षन्तु नो गिरः ॥ ३॥
अग्निरुक्थे पुरोहितो ग्रावाणो बर्हिरध्वरे ।
ऋचा यामि मरुतो ब्रह्मणस्पते देवा अवो वरेण्यम् ॥ ४॥
अग्निमीडिष्वावसे गाथाभिः शीरशोचिषम् ।
अग्निं राये पुरुमीढ श्रुतं नरोऽग्निः सुदीतये छर्दिः ॥ ५॥
श्रुधि श्रुत्कर्ण वह्निभिर्देवैरग्ने सयावभिः ।
आ सीदन्तु बर्हिषि मित्रो अर्यमा प्रातर्यावभिरध्वरे ॥ ६॥

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्र दैवोदासो अग्निर्देव इन्द्रो न मज्मना ।
अनु मातरं पृथिवीं वि वावृते तस्थौ नाकस्य शर्मणि ॥ ७ ॥
अध ज्मो अध वा दिवो बृहतो रोचनादधि ।
अया वर्धस्व तन्वा गिरा मम जाता सुक्रतो पृण ॥ ८ ॥
कायमानो वना त्वं यन्मातृरजगन्नपः ।
न तत्ते अग्ने प्रमृषे निवर्तनं यद् दूरे सन्निहाभुवः ॥ ९ ॥
नि त्वामग्ने मनुर्दधे ज्योतिर्जनाय शश्वते ।
दीदेथ कण्व ऋतजात उक्षितो यं नमस्यन्ति कृष्टयः ॥ १० ॥

अथ प्रथमप्रपाठके द्वितीयोऽर्धः

षष्ठी दशतिः

ऋषिः—१, ७ वसिष्ठः; २, ३, ५ कण्वः; ४ सोभरिः; ६ उत्कीलः; ८ विश्वामित्रः ॥ देवता—१, ४-८ अग्निः; २ ब्रह्मणस्पतिः; ३ यूपः ॥ छन्दः—बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

देवो वो द्रविणोदाः पूर्णां विवष्ट्यासिचम् ।
उद्वा सिञ्चध्वमुप वा पृणध्वमादिद् वो देव ओहते ॥ १ ॥
प्रैतु ब्रह्मणस्पतिः प्र देव्येतु सूनृता ।
अच्छा वीरं नर्यं पङ्क्तिराधसं देवा यज्ञं नयन्तु नः ॥ २ ॥
ऊर्ध्व ऊ षु ण ऊतये तिष्ठा देवो न सविता ।
ऊर्ध्वो वाजस्य सनिता यदञ्जिभिर्वाघद्भिर्विह्वयामहे ॥ ३ ॥
प्र यो रायो निनीषति मर्तो यस्ते वसो दाशत् ।
स वीरं धत्ते अग्न उक्थशंसिनं त्मना सहस्रपोषिणम् ॥ ४ ॥
प्र वो यह्वं पुरूणां विशां देवयतीनाम् ।
अग्निं सूक्तेभिर्वचोभिर्वृणीमहे यं समिदन्य इन्धते ॥ ५ ॥

अयमग्निः सुवीर्यस्येशे हि सौभगस्य ।
राय ईशे स्वपत्यस्य गोमत ईशे वृत्रहथानाम् ॥ ६ ॥
त्वमग्ने गृहपतिस्त्वं होता नो अध्वरे ।
त्वं पोता विश्ववार प्रचेता यक्षि यासि च वार्यम् ॥ ७ ॥
सखायस्त्वा ववृमहे देवं मर्तासं ऊतये ।
अपां नपातं सुभगं सुदंससं सुप्रतूर्तिमनेहसम् ॥ ८ ॥

सप्तमी दशतिः

ऋषिः—१ श्यावाश्ववामदेवौ; २ उपस्तुतो वार्ष्टिहव्यः; ३ बृहदुक्थः; ४ कुत्सः; ५, ६ भरद्वाजः; ७ वामदेवः; ८, १० वसिष्ठः; ९ त्रिशिरास्त्वाष्ट्रः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१, ३, ५-९ त्रिष्टुप्; २, ४ जगती; १० त्रिपाद् विराड् गायत्री ॥ स्वरः—१, ३, ५-९ धैवतः; २, ४ निषादः; १० षड्जः ॥

आ जुहोता हविषा मर्जयध्वं नि होतारं गृहपतिं दधिध्वम् ।
इडस्पदे नमसा रातहव्यं सपर्यता यजतं पस्त्यानाम् ॥ १ ॥
चित्र इच्छिशोस्तरुणस्य वक्षथो न यो मातरावन्वेति धातवे ।
अनूधा यदजीजनदधा चिदा ववक्षत्सद्यो महि दूत्यं३ चरन् ॥ २ ॥
इदं त एकं पर ऊ त एकं तृतीयेन ज्योतिषा सं विशस्व ।
संवेशनस्तन्वे३ चारुरेधि प्रियो देवानां परमे जनित्रे ॥ ३ ॥
इमं स्तोममर्हते जातवेदसे रथमिव सं महेमा मनीषया ।
भद्रा हि नः प्रमतिरस्य संसद्यग्ने सख्ये मा रिषामा वयं तव ॥ ४ ॥
मूर्धानं दिवो अरतिं पृथिव्या वैश्वानरमृत आ जातमग्निम् ।
कविं सम्राजमतिथिं जनानामासन्नः पात्रं जनयन्त देवाः ॥ ५ ॥
वि त्वदापो न पर्वतस्य पृष्ठादुक्थेभिरग्ने जनयन्त देवाः ।
तं त्वा गिरः सुष्टुतयो वाजयन्त्याजिं न गिर्वाहो जिग्युरश्वाः ॥ ६ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

आ वो राजानमध्वरस्य रुद्रं होतारं सत्ययजं रोदस्योः।
अग्निं पुरा तनयित्नोरचित्ताद्धिरण्यरूपमवसे कृणुध्वम्॥ ७॥
इन्धे राजा समर्यो नमोभिर्यस्य प्रतीकमाहुतं घृतेन ।
नरो हव्येभिरीडते सबाध आग्निरग्रमुषसामशोचि ॥ ८॥
प्र केतुना बृहता यात्यग्निरा रोदसी वृषभो रोरवीति ।
दिवश्चिदन्तादुपमामुदानडपामुपस्थे महिषो ववर्ध ॥ ९॥
अग्निं नरो दीधितिभिररण्योर्हस्तच्युतं जनयत प्रशस्तम् ।
दूरेदृशं गृहपतिमथव्युम् ॥ १०॥

अष्टमी दशतिः

ऋषिः—१ बुधगविष्ठिरौ; २, ५ वत्सप्रीः; ३ भरद्वाजः; ४, ७ विश्वामित्रः; ६ वसिष्ठः; ८ पायुः॥ देवता—१, २, ४-८ अग्निः; ३ पूषा॥ छन्दः—त्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः॥

अबोध्यग्निः समिधा जनानां प्रति धेनुमिवायतीमुषासम्।
यह्वाइव प्र वयामुज्जिहानाः प्र भानवः सस्रते नाकमच्छ॥ १॥
प्र भूर्जयन्तं महां विपोधां मूरेरमूरं पुरां दर्माणम्।
नयन्तं गीर्भिर्वना धियं धा हरिश्मश्रुं न वर्मणा धनर्चिम्॥ २॥
शुक्रं ते अन्यद्यजतं ते अन्यद् विषुरूपे अहनी द्यौरिवासि।
विश्वा हि माया अवसि स्वधावन्भद्रा ते पूषन्निह रातिरस्तु॥ ३॥
इडामग्ने पुरुदंसं सनिं गोः शश्वत्तमं हवमानाय साध।
स्यान्नः सूनुस्तनयो विजावाग्ने सा ते सुमतिर्भूत्वस्मे॥ ४॥
प्र होता जातो महान्नभोविन्नृषद्मा सीददपां विवर्ते।
दधद्यो धायी सुते वयांसि यन्ता वसूनि विधते तनूपाः॥ ५॥
प्र सम्राजमसुरस्य प्रशस्तं पुंसः कृष्टीनामनुमाद्यस्य।
इन्द्रस्येव प्र तवसस्कृतानि वन्दद्वारा वन्दमाना विवष्टु॥ ६॥

अरण्योर्निहितो जातवेदा गर्भइवेत् सुभृतो गर्भिणीभिः।
दिवेदिव ईड्यो जागृवद्भिर्हविष्मद्भिर्मनुष्येभिरग्निः॥ ७॥
सनादग्ने मृणसि यातुधानान्न त्वा रक्षांसि पृतनासु जिग्युः।
अनु दह सहमूरान् कयादो मा ते हेत्या मुक्षत दैव्यायाः॥ ८॥

नवमी दशतिः

ऋषिः—१ गय आत्रेयः; २ वामदेवः; ३, ४ भरद्वाजः; ५ मृक्तवाहा द्वितः; ६ वसूयव आत्रेयः; ७, ९ गोपवनः; ८ पूरुरात्रेयः; १० वामदेवः, कश्यपो वा मारीचो मनुर्वा वैवस्वतः; उभौ वा॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—अनुष्टुप्॥ स्वरः—गान्धारः॥

८१. अग्न ओजिष्ठमा भर द्युम्नमस्मभ्यमध्रिगो।
प्र नो रायै पनीयसे रत्सि वाजाय पन्थाम्॥ १॥
यदि वीरो अनु ष्यादग्निमिन्धीत मर्त्यः।
आजुह्वद्व्यमानुषक् शर्म भक्षीत दैव्यम्॥ २॥
त्वेषस्ते धूम ऋण्वति दिवि संञ्छुक्र आततः।
सूरो न हि द्युता त्वं कृपा पावक रोचसे॥ ३॥
त्वं हि क्षैतवद् यशोऽग्ने मित्रो न पत्यसे।
त्वं विचर्षणे श्रवो वसो पुष्टिं न पुष्यसि॥ ४॥
प्रातरग्निः पुरुप्रियो विश स्तवेतातिथिः।
विश्वे यस्मिन्नमर्त्ये हव्यं मर्तास इन्धते॥ ५॥
यद् वाहिष्ठं तदग्नये बृहदर्च विभावसो।
महिषीव त्वद् रयिस्त्वद् वाजा उदीरते॥ ६॥
विशोविशो वो अतिथिं वाजयन्तः पुरुप्रियम्।
अग्निं वो दुर्यं वचः स्तुषे शूषस्य मन्मभिः॥ ७॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

बृहद् वयो हि भानवेऽर्चा देवायाग्नये।
यं मित्रं न प्रशस्तये मर्तासो दधिरे पुरः॥ ८॥
अगन्म वृत्रहन्तमं ज्येष्ठमग्निमानवम्।
यः स्म श्रुतवन्नाक्षे बृहदनीक इध्यते॥ ९॥
जातः परेण धर्मणा यत् सवृद्भिः सहाभुवः।
पिता यत्कश्यपस्याग्निः श्रद्धा माता मनुः कविः॥ १०॥

दशमी दशतिः

ऋषिः—१ अग्निस्तापसः; २ वामदेवः; ३ काश्यपोऽसितो देवलो वा; ४ सोमाहुतिर्भार्गवः; ५ पायुः; ६ प्रस्कण्वः॥ देवता—१ विश्वेदेवाः; २ अङ्गिराः; ३-६ अग्निः॥ छन्दः—अनुष्टुप्॥ स्वरः—गान्धारः॥

सोमं राजानं वरुणमग्निमन्वारभामहे।
आदित्यं विष्णुं सूर्यं ब्रह्माणं च बृहस्पतिम्॥ १॥
इत एत उदारुहन् दिवः पृष्ठान्या रुहन्।
प्र भूर्जयो यथा पथोद् द्यामङ्गिरसो ययुः॥ २॥
रायेऽग्ने महे त्वा दानाय समिधीमहि।
ईडिष्वा हि महे वृषं द्यावा होत्राय पृथिवी॥ ३॥
दधन्वे वा यदीमनु वोचद् ब्रह्मेति वेरु तत्।
परि विश्वानि काव्या नेमिश्चक्रमिवाभुवत्॥ ४॥
प्रत्यग्ने हरसा हरः शृणाहि विश्वतस्परि।
यातुधानस्य रक्षसो बलं न्युब्ज वीर्यम्॥ ५॥
त्वमग्ने वसूँरिह रुद्राँ आदित्याँ उत।
यजा स्वध्वरं जनं मनुजातं घृतप्रुषम्॥ ६॥

इति प्रथमः प्रपाठकः समाप्तः॥

अथ द्वितीयप्रपाठके प्रथमोऽर्धः

एकादशी दशतिः

ऋषिः—१ दीर्घतमाः; २, ४ विश्वामित्रः; ३ गोतमः; ५ त्रितः; ६ इरिम्बिठिः; ७, ८, १० विश्वमना वैयश्वः; ९ ऋजिष्वा भारद्वाजः॥ देवता—१-४, ७-१० अग्निः, ५ पवमानः; ६ अदितिः॥ छन्दः—उष्णिक्॥ स्वरः—ऋषभः॥

पुरु त्वा दाशिवां वोचेऽरिरग्ने तव स्विदा। तोदस्येव शरण आ महस्य॥ १॥
प्र होत्रे पूर्व्यं वचोऽग्नये भरता बृहत्। विपां ज्योतींषि बिभ्रते न वेधसे॥ २॥
अग्ने वाजस्य गोमत ईशानः सहसो यहो। अस्मे देहि जातवेदो महि श्रवः॥ ३॥
अग्ने यजिष्ठो अध्वरे देवां देवयते यज। होता मन्द्रो वि राजस्यति स्रिधः॥ ४॥
जज्ञानः सप्त मातृभिर्मेधामाशासत श्रिये। अयं ध्रुवो रयीणां चिकेतदा॥ ५॥
उत स्या नो दिवा मतिरदितिरूत्या गमत्। सा शन्ताता मयस्करदप स्रिधः॥ ६॥
ईडिष्वा हि प्रतीव्यां३ यजस्व जातवेदसम्। चरिष्णुधूममगृभीतशोचिषम्॥ ७॥
न तस्य मायया च न रिपुरीशीत मर्त्यः। यो अग्नये ददाश हव्यदातये॥ ८॥
अप त्यं वृजिनं रिपुं स्तेनमग्ने दुराध्यम्। दविष्ठमस्य सत्पते कृधी सुगम्॥ ९॥
श्रुष्ट्यग्ने नवस्य मे स्तोमस्य वीर विश्पते। नि मायिनस्तपसा रक्षसो दह॥ १०॥

द्वादशी दशतिः

ऋषिः—१ प्रयोगो भार्गवः; २, ३, ५-७ सोभरिः; ४ प्रयोगो भार्गवः; सोभरिः काण्वो वा; ८ विश्वमनाः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—ककुबुष्णिक्॥ स्वरः—ऋषभः॥

प्र मंहिष्ठाय गायत ऋताव्ने बृहते शुक्रशोचिषे। उपस्तुतासो अग्नये॥ १॥
प्र सो अग्ने तवोतिभिः सुवीराभिस्तरति वाजकर्मभिः। यस्य त्वं सख्यमाविथ॥ २॥
तं गूर्धया स्वर्णरं देवासो देवमरतिं दधन्विरे। देवत्रा हव्यमूहिषे॥ ३॥
मा नो हृणीथा अतिथिं वसुरग्निः पुरुप्रशस्त एषः। यः सुहोता स्वध्वरः॥ ४॥
भद्रो नो अग्निराहुतो भद्रा रातिः सुभग भद्रो अध्वरः। भद्रा उत प्रशस्तयः॥ ५॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

यजिष्ठं त्वा ववृमहे देवं देवत्रा होतारममर्त्यम्। अस्य यज्ञस्य सुक्रतुम्॥ ६॥
तदग्ने द्युम्नमा भर यत्सासाहा सदने कं चिदत्रिणम्। मन्युं जनस्य दूढ्यम्॥ ७॥
यद्वा उ विश्पतिः शितः सुप्रीतो मनुषो विशे। विश्वेदग्निः प्रति रक्षांसि सेधति॥ ८॥

इति प्रथमोऽध्यायः॥

इति सामवेदसंहितायामाग्नेयं काण्डम्॥

अथ ऐन्द्रं काण्डम्

अथ द्वितीयोऽध्यायः

प्रथमा दशतिः

ऋषिः—१ शंयुर्बार्हस्पत्यः; २, ४, ५ श्रुतकक्षः; ३ हर्यतः प्रागाथः; ६ इन्द्रमातरो देवजामयः; ७, ८ गोषूक्त्यश्वसूक्तिनौ; ९, १० मेधातिथिरात्रिरसः प्रियमेधः काण्वश्च॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

तद्वो गाय सुते सचा पुरुहूताय सत्वने। शं यद्गवे न शाकिने॥ १॥
यस्ते नूनं शतक्रतविन्द्र द्युम्नितमो मदः। तेन नूनं मदे मदेः॥ २॥
गाव उप वदावटे महो यज्ञस्य रप्सुदा। उभा कर्णा हिरण्यया॥ ३॥
अरमश्वाय गायत श्रुतकक्षाय गर्वे। अरमिन्द्रस्य धाम्ने॥ ४॥
तमिन्द्रं वाजयामसि महे वृत्राय हन्तवे। स वृषा वृषभो भुवत्॥ ५॥
त्वमिन्द्र बलादधि सहसो जात ओजसः। त्वं सन्वृषन् वृषेदसि॥ ६॥
यज्ञ इन्द्रमवर्धयद् यद्भूमिं व्यवर्तयत्। चक्राण ओपशं दिवि॥ ७॥
यदिन्द्राहं यथा त्वमीशीय वस्व एक इत्। स्तोता मे गोसखा स्यात्॥ ८॥
पन्यंपन्यमित् सोतार आ धावत मद्याय। सोमं वीराय शूराय॥ ९॥
इदं वसो सुतमन्धः पिबा सुपूर्णमुदरम्। अनाभयिन् ररिमा ते॥ १०॥

द्वितीया दशतिः

ऋषिः—१, २ सुकक्षश्रुतकक्षौ; ३ भरद्वाजः; ४ श्रुतकक्षः; ५, ६ मधुच्छन्दाः; ७, ९, १० त्रिशोकः; ८ वसिष्ठः। देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

उद् घेदभि श्रुतामघं वृषभं नर्यापसम्। अस्तारमेषि सूर्य॥ १॥
यदद्य कच्च वृत्रहन्नुदगा अभि सूर्य। सर्वं तदिन्द्र ते वशे॥ २॥
य आनयत् परावतः सुनीती तुर्वशं यदुम्। इन्द्रः स नो युवा सखा॥ ३॥
मा न इन्द्राभ्याऽऽ३दिशः सूरो अक्तुष्वा यमत्। त्वा युजा वनेम तत्॥ ४॥
एन्द्र सानसिं रयिं सजित्वानं सदासहम्। वर्षिष्ठमूतये भर॥ ५॥
इन्द्रं वयं महाधन इन्द्रमर्भे हवामहे। युजं वृत्रेषु वज्रिणम्॥ ६॥
अपिबत् कद्रुवः सुतमिन्द्रः सहस्रबाह्वे। तत्रादिष्ट पौंस्यम्॥ ७॥
वयमिन्द्र त्वायवोऽभि प्र नोनुमो वृषन्। विद्धी त्वाऽस्य नो वसो॥ ८॥
आ घा ये अग्निमिन्धते स्तृणन्ति बर्हिरानुषक्। येषामिन्द्रो युवा सखा॥ ९॥
भिन्धि विश्वा अप द्विषः परि बाधो जही मृधः। वसु स्पार्हं तदा भर॥ १०॥

तृतीया दशतिः

ऋषिः—१ कण्वो घौरः; २ त्रिशोकः; ३, ९ वत्सः काण्वः; ४ कुसीदी काण्वः; ५ मेधातिथिः; ६ श्रुतकक्षः; ७ श्यावाश्वः; ८ प्रगाथः काण्वः; १० इरिम्बिठिः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

इहेव शृण्व एषां कशा हस्तेषु यद्वदान्। नि यामं चित्रमृञ्जते॥ १॥
इम उ त्वा वि चक्षते सखाय इन्द्र सोमिनः। पुष्टवन्तो यथा पशुम्॥ २॥
समस्य मन्यवे विशो विश्वा नमन्त कृष्टयः। समुद्रायेव सिन्धवः॥ ३॥
देवानामिदवो महत्तदा वृणीमहे वयम्। वृष्णामस्मभ्यमूतये॥ ४॥
सोमानां स्वरणं कृणुहि ब्रह्मणस्पते। कक्षीवन्तं य औशिजः॥ ५॥
बोधन्मना इदस्तु नो वृत्रहा भूर्यासुतिः। शृणोतु शक्र आशिषम्॥ ६॥
अद्या नो देव सवितः प्रजावत् सावीः सौभगम्। परा दुःष्वप्न्यं सुव॥ ७॥
क्वाऽस्य वृषभो युवा तुविग्रीवो अनानतः। ब्रह्मा कस्तं सपर्यति॥ ८॥
[illegible] गिरिणः सङ्गमे च नदीनाम्। धिया विप्रो अजायत॥ ९॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्र सम्राजं चर्षणीनामिन्द्रं स्तोता नव्यं गीर्भिः। नरं नृषाहं मंहिष्ठम्॥ १०॥

इति द्वितीयः प्रपाठकः प्रथमोऽर्धः॥

अथ द्वितीयप्रपाठके द्वितीयोऽर्धः

चतुर्थी दशतिः

ऋषिः—१ श्रुतकक्षः; २ मेधातिथिः; ३ गोतमः; ४ भरद्वाजः; ५ बिन्दुः पूतदक्षो वा; ६, ७ श्रुतकक्षः सुकक्षो वा; ८ वत्सः काण्वः; ९ शुनःशेपः; १० शुनःशेपो वामदेवो वा॥ देवता—इन्द्रः; ५ मरुतः॥ छन्दः—गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

अपादु शिप्रिन्धसः सुदक्षस्य प्रहोषिणः। इन्दोरिन्द्रो यवाशिरः॥ १॥

इमा उ त्वा पुरूवसोऽभि प्र नोनुवुर्गिरः। गावो वत्सं न धेनवः॥ २॥

अत्राह गोरमन्वत नाम त्वष्टुरपीच्यम्। इत्था चन्द्रमसो गृहे॥ ३॥

यदिन्द्रो अनयद्रितो महीरपो वृषन्तमः। तत्र पूषाभुवत् सचा॥ ४॥

गौर्धयति मरुतां श्रवस्युर्माता मघोनाम्। युक्ता वह्नी रथानाम्॥ ५॥

उप नो हरिभिः सुतं याहि मदानां पते। उप नो हरिभिः सुतम्॥ ६॥

इष्टा होत्रा असृक्षतेन्द्रं वृधन्तो अध्वरे। अच्छावभृथमोजसा॥ ७॥

अहमिद्धि पितुष्परि मेधामृतस्य जग्रह। अहं सूर्यइवाजनि॥ ८॥

रेवतीर्नः सधमाद इन्द्रे सन्तु तुविवाजाः। क्षुमन्तो याभिर्मदेम॥ ९॥

सोमः पूषा च चेततुर्विश्वासां सुक्षितीनाम्। देवत्रा रथ्याहिता॥ १०॥

पञ्चमी दशतिः

ऋषिः—१, ४ श्रुतकक्षः; २ वसिष्ठः; ३ मेधातिथिप्रियमेधौ; ५ इरिम्बिठिः; ६, १० मधुच्छन्दाः; ७ त्रिशोकः; ८ कुसीदी; ९ शुनःशेपः॥ देवता—इन्द्रः; ६ प्रजापतिः॥ छन्दः—१ अनुष्टुप्; गायत्री॥ स्वरः—१ गान्धारः; षड्जः॥

पान्तमा वो अन्धस इन्द्रमभि प्र गायत। विश्वासाहं शतक्रतुं मंहिष्ठं चर्षणीनाम्॥ १॥

१५६. प्र व इन्द्राय मादनं हर्यश्वाय गायत। सखायः सोमपाव्ने॥ २॥

वयमु त्वा तदिदर्था इन्द्र त्वायन्तः सखायः। कण्वा उक्थेभिर्जरन्ते॥ ३॥

इन्द्राय मद्वने सुतं परि ष्टोभन्तु नो गिरः। अर्कमचन्तु कारवः॥ ४॥

अयं त इन्द्र सोमो निपूतो अधि बर्हिषि। एहीमस्य द्रवा पिब॥ ५॥

सुरूपकृत्नुमूतये सुदुघामिव गोदुहे। जुहूमसि द्यविद्यवि॥ ६॥

अभि त्वा वृषभा सुते सुतं सृजामि पीतये। तृम्पा व्यश्नुही मदम्॥ ७॥

य इन्द्र चमसेष्वा सोमश्चमूषु ते सुतः। पिबेदस्य त्वमीशिषे॥ ८॥

योगेयोगे तवस्तरं वाजेवाजे हवामहे। सखाय इन्द्रमूतये॥ ९॥

आ त्वेता नि षीदतेन्द्रमभि प्र गायत। सखायः स्तोमवाहसः॥ १०॥

षष्ठी दशतिः

ऋषिः—१ विश्वामित्रः; २ मधुच्छन्दाः; ३ कुसीदी काण्वः; ४ प्रियमेधः; ५, ८ वामदेवः; ६, ९ श्रुतकक्षः; ७ मेधातिथिः; १० बिन्दुः पूतदक्षो वा॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

इदं ह्यन्वोजसा सुतं राधानां पते। पिबा त्वाऽस्य गिर्वणः॥ १॥

महाँ इन्द्रः पुरश्च नो महित्वमस्तु वज्रिणे। द्यौर्न प्रथिना शवः॥ २॥

आ तू न इन्द्र क्षुमन्तं चित्रं ग्राभं सं गृभाय। महाहस्ती दक्षिणेन॥ ३॥

अभि प्र गोपतिं गिरेन्द्रमर्च यथा विदे। सूनुं सत्यस्य सत्पतिम्॥ ४॥

कया नश्चित्र आ भुवदूती सदावृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता॥ ५॥

त्यमु वः सत्रासाहं विश्वासु गीर्ष्वायतम्। आ च्यावयस्यूतये॥ ६॥

सदसस्पतिमद्भुतं प्रियमिन्द्रस्य काम्यम्। सनिं मेधामयासिषम्॥ ७॥

ये ते पन्था अधो दिवो येभिर्व्यश्वमैरयः। उत श्रोषन्तु नो भुवः॥ ८॥

भद्रंभद्रं न आ भरेषमूर्जं शतक्रतो। यदिन्द्र मृडयासि नः॥ ९॥

अस्ति सोमो अयं सुतः पिबन्त्यस्य मरुतः। उत स्वराजो अश्विना॥ १०॥

सप्तमी दशतिः

ऋषिः—१ इन्द्रमातरो देवजामयः; २ गोधा; ३ दध्यङ्ङथर्वणः; ४ प्रस्कण्वः; ५ गोतमः; ६ मधुच्छन्दाः; ७ वामदेवः; ८ वत्सः; ९ शुनःशेपः; १० वातायन उलः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ईङ्खयन्तीरपस्युव इन्द्रं जातमुपासते। वन्वानासः सुवीर्यम्॥ १॥
न कि देवा इनीमसि न क्या योपयामसि। मन्त्रश्रुत्यं चरामसि॥ २॥
दोषो आगाद् बृहद्गाय द्युमद्गामन्नाथर्वण। स्तुहि देवं सवितारम्॥ ३॥
एषो उषा अपूर्व्या व्युच्छति प्रिया दिवः। स्तुषे वामश्विना बृहत्॥ ४॥
इन्द्रो दधीचो अस्थभिर्वृत्राण्यप्रतिष्कुतः। जघान नवतीर्नव॥ ५॥
इन्द्रेहि मत्स्यन्धसो विश्वेभिः सोमपर्वभिः। महाँ अभिष्टिरोजसा॥ ६॥
आ तू न इन्द्र वृत्रहन्त्स्माकमर्धमा गहि। महान्महीभिरूतिभिः॥ ७॥
ओजस्तदस्य तित्विष उभे यत् समवर्तयत्। इन्द्रश्चर्मेव रोदसी॥ ८॥
अयमु ते समतसि कपोतइव गर्भधिम्। वचस्तच्चिन्न ओहसे॥ ९॥
वात आ वातु भेषजं शम्भु मयोभु नो हृदे। प्र न आयूंषि तारिषत्॥ १०॥

अष्टमी दशतिः

ऋषिः—१ कण्वः; २, ३, ९ वत्सः; ४ श्रुतकक्षः; ५ मधुच्छन्दाः; ६ वामदेवः; ७ इरिम्बिठिः; ८ वारुणिः सत्यधृतिः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

यं रक्षन्ति प्रचेतसो वरुणो मित्रो अर्यमा। न किः स दभ्यते जनः॥ १॥
गव्यो षु णो यथा पुराश्वयोत रथया। वरिवस्या महोनाम्॥ २॥
इमास्त इन्द्र पृश्नयो घृतं दुहत आशिरम्। एनामृतस्य पिप्युषीः॥ ३॥
अया धिया च गव्यया पुरुणामन्पुरुष्टुत। यत् सोमेसोम आभुवः॥ ४॥
पावका नः सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवती। यज्ञं वष्टु धियावसुः॥ ५॥
क इमं नाहुषीष्वा इन्द्रं सोमस्य तर्पयात्। स नो वसून्या भरात्॥ ६॥
आ याहि सुषुमा हि त इन्द्र सोमं पिबा इमम्। एदं बर्हिः सदो मम॥ ७॥
महि त्रीणामवस्तु द्युक्षं मित्रस्यार्यम्णः। दुराधर्षं वरुणस्य॥ ८॥
त्वावतः पुरूवसो वयमिन्द्र प्रणेतः। स्मसि स्थातर्हरीणाम्॥ ९॥

इति द्वितीयः प्रपाठकः समाप्तः॥

अथ तृतीयप्रपाठके प्रथमोऽर्धः

नवमी दशतिः

ऋषिः—१ प्रगाथः; २ विश्वामित्र; ३, १० वामदेवः; ४, ६ श्रुतकक्षः; ५ मधुच्छन्दाः; ७ गृत्समदः; ८, ९ भरद्वाजः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

उत्त्वा मन्दन्तु सोमाः कृणुष्व राधो अद्रिवः। अव ब्रह्मद्विषो जहि।
गिर्वणः पाहि नः सुतं मधोर्धाराभिरज्यसे। इन्द्र त्वादातमिद्यशः॥ २॥
सदा व इन्द्रश्चकृषदा उपो नु स सपर्यन्। न देवो वृतः शूर इन्द्रः॥ ३॥
आ त्वा विशन्त्विन्दवः समुद्रमिव सिन्धवः। न त्वामिन्द्राति रिच्यते॥ ४॥
इन्द्रमिद्गाथिनो बृहदिन्द्रमर्केभिरर्किणः। इन्द्रं वाणीरनूषत॥ ५॥
इन्द्र इषे ददातु न ऋभुक्षणमृभुं रयिम्। वाजी ददातु वाजिनम्॥ ६॥
इन्द्रो अङ्ग महद्भयमभी षदप चुच्यवत्। स हि स्थिरो विचर्षणिः॥ ७॥
इमा उ त्वा सुतेसुते नक्षन्ते गिर्वणो गिरः। गावो वत्सं न धेनवः॥ ८॥
इन्द्रा नु पूषणा वयं सख्याय स्वस्तये। हुवेम वाजसातये॥ ९॥
न कि इन्द्र त्वदुत्तरं न ज्यायो अस्ति वृत्रहन्। न क्येवं यथा त्वम्॥ १०॥

दशमी दशतिः

ऋषिः—१, ४ त्रिशोकः; २ मधुच्छन्दाः; ३ वत्सः; ५ सुकक्षः; ६, ९ वामदेवः; ७ विश्वामित्रः; ८ गोपूक्त्यश्वसूक्तिनौ; १० श्रुतकक्षः सुकक्षो वा॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

तरणिं वो जनानां त्रदं वाजस्य गोमतः। समानमु प्र शंसिषम्॥ १॥
असृग्रमिन्द्र ते गिरः प्रति त्वामुदहासत। सजोषा वृषभं पतिम्॥ २॥
सुनीथो घा स मर्त्यो यं मरुतो यमर्यमा। मित्रास्पान्त्यद्रुहः॥ ३॥
यद्वीडाविन्द्र यत् स्थिरे यत्पर्शाने पराभृतम्। वसु स्पार्हं तदा भर॥ ४॥
श्रुधी हवं तिरश्चद्या इन्द्र शर्ध चर्षणीनाम्। आशिषे राधसे महे॥ ५॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अरं त इन्द्र श्रवसे गमेम शूर त्वावतः। अरं शक्र परेमणि॥ ६॥
धानावन्तं करम्भिणमपूपवन्तमुक्थिनम्। इन्द्र प्रातर्जुषस्व नः॥ ७॥
अपां फेनेन नमुचेः शिर इन्द्रोदवर्तयः। विश्वा यदजय स्पृधः॥ ८॥
इमे त इन्द्र सोमाः सुतासो ये च सोत्वाः। तेषां मत्स्व प्रभूवसो॥ ९॥
तुभ्यं सुतासः सोमाः स्तीर्णं बर्हिर्विभावसो। स्तोतृभ्य इन्द्र मृडय॥ १०॥

एकादशी दशतिः

ऋषिः—१ शुनःशेपः; २ श्रुतकक्षः; ३ त्रिशोकः; ४, ९ मेधातिथिः; ५ गोतमः; ६ ब्रह्मातिथिः; ७ विश्वामित्रो जमदग्निर्वा; ८ प्रस्कण्वः॥
देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

आ व इन्द्रं कृविं यथा वाजयन्तः शतक्रतुम्। मंहिष्ठं सिञ्च इन्दुभिः॥ १॥
अतश्चिदिन्द्र न उपा याहि शतवाजया। इषा सहस्रवाजया॥ २॥
आ बुन्दं वृत्रहा ददे जातः पृच्छाद् वि मातरम्। क उग्राः के ह शृण्विरे॥ ३॥
बृबदुक्थं हवामहे सृप्रकरस्नमूतये। साधः कृण्वन्तमवसे॥ ४॥
ऋजुनीती नो वरुणो मित्रो नयति विद्वान्। अर्यमा देवैः सजोषाः॥ ५॥
दूरादिहेव यत्सतोऽरुणप्सुरशिश्चितत्। वि भानुं विश्वथातनत्॥ ६॥
आ नो मित्रावरुणा घृतैर्गव्यूतिमुक्षतम्। मध्वा रजांसि सुक्रतू॥ ७॥
उदु त्ये सूनवो गिरः काष्ठा यज्ञेष्वत्नत। वाश्रा अभिज्ञु यातवे॥ ८॥
इदं विष्णुर्वि चक्रमे त्रेधा नि दधे पदम्। समूढमस्य पांसुले॥ ९॥

द्वादशी दशतिः

ऋषिः—१, ७, ८ मेधातिथिः; २ वामदेवः; ३, ५ मेधातिथिप्रियमेधौ; ४ विश्वामित्रः; ६ कौत्सो दुर्मित्रः सुमित्रो वा; ९ विश्वामित्रो गाथिनोऽभीपाद उदलो वा; १० श्रुतकक्षः॥ देवता—इन्द्रः॥
छन्दः—गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

अतीहि मन्युषाविणं सुषुवांसमुपेरय। अस्य रातौ सुतं पिब॥ १॥
कदु प्रचेतसे महे वचो देवाय शस्यते। तदिद्धर्यस्य वर्धनम्॥ २॥
उक्थं च न शस्यमानं नागो रयिरा चिकेत। न गायत्रं गीयमानम्॥ ३॥
इन्द्र उक्थेभिर्मन्दिष्ठो वाजानां च वाजपतिः। हरिवान्त्सुतानां सखा॥ ४॥
आ याह्युप नः सुतं वाजेभिर्मा हृणीयथाः। महाँइव युवजानिः॥ ५॥
कदा वसो स्तोत्रं हर्यत आ अव श्मशा रुधद्वाः। दीर्घं सुतं वाताप्याय॥ ६॥
ब्राह्मणादिन्द्र राधसः पिबा सोममृतूँरनु। तवेदं सख्यमस्तृतम्॥ ७॥
वयं घा ते अपि स्मसि स्तोतार इन्द्र गिर्वणः। त्वं नो जिन्व सोमपाः॥ ८॥
एन्द्र पृक्षु कासु चित्रृष्णं तनूषु धेहि नः। सत्राजिदुग्र पौंस्यम्॥ ९॥
एवा ह्यसि वीरयुरेवा शूर उत स्थिरः। एवा ते राध्यं मनः॥ १०॥

इति द्वितीयोऽध्यायः॥

अथ तृतीयोऽध्यायः

प्रथमा दशतिः

ऋषिः—१, ६, ९ वसिष्ठः; २ भरद्वाजः; ३ बालखिल्याः; ४ नोधाः; ५ कलिः प्रागाथः; ७ मेधातिथिः; ८ भर्गः; १० प्रगाथः काण्वः॥ देवता—१-८, १० इन्द्रः; ९ मरुतः॥ छन्दः—बृहती॥ स्वरः—मध्यमः॥

अभि त्वा शूर नोनुमोऽदुग्धाइव धेनवः।
ईशानमस्य जगतः स्वर्दृशमीशानमिन्द्र तस्थुषः॥ १॥
त्वामिद्धि हवामहे सातौ वाजस्य कारवः।
त्वां वृत्रेष्विन्द्र सत्पतिं नरस्त्वां काष्ठास्वर्वतः॥ २॥
अभि प्र वः सुराधसमिन्द्रमर्च यथा विदे।
यो जरितृभ्यो मघवा पुरूवसुः सहस्रेणेव शिक्षति॥ ३॥
तं वो दस्ममृतीषहं वसोर्मन्दानमन्धसः।
अभि वत्सं न स्वसरेषु धेनव इन्द्रं गीर्भिर्नवामहे॥ ४॥
तरोभिर्वो विदद्वसुमिन्द्रं सबाध ऊतये।
बृहद्गायन्तः सुतसोमे अध्वरे हुवे भरं न कारिणम्॥ ५॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तरणिरित् सिषासति वाजं पुरन्ध्या युजा ।
आ व इन्द्रं पुरुहूतं नमे गिरा नेमिं तष्टेव सुद्रुवम् ॥ ६ ॥
पिबा सुतस्य रसिनो मत्स्वा न इन्द्र गोमतः ।
आपिर्नो बोधि सधमाद्ये वृधे३ऽस्माँ अवन्तु ते धियः ॥ ७ ॥
त्वं ह्येहि चेरवे विदा भगं वसुत्तये ।
उद्वावृषस्व मघवन् गविष्टय उदिन्द्राश्वमिष्टये ॥ ८ ॥
न हि वश्चरमं च न वसिष्ठः परिमंसते ।
अस्माकमद्य मरुतः सुते सचा विश्वे पिबन्तु कामिनः ॥ ९ ॥
मा चिदन्यद् वि शंसत सखायो मा रिषण्यत ।
इन्द्रमित् स्तोता वृषणं सचा सुते मुहुरुक्था च शंसत ॥ १० ॥

इति तृतीयप्रपाठके प्रथमोऽर्धः ॥

अथ तृतीयप्रपाठके द्वितीयोऽर्धः

द्वितीया दशतिः

ऋषिः—१ आङ्गिरसः पुरुहन्मा; २, ३, ७-९ मेधातिथिर्मेध्यातिथिश्च; ४ विश्वामित्रः; ५ गोतमः; ६ नृमेधपुरुमेधौ; १० देवातिथिः काण्वः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

२४३. न किष्टं कर्मणा नशद् यश्चकार सदावृधम् ।
इन्द्रं न यज्ञैर्विश्वगूर्तमृभ्वसमधृष्टं धृष्णुमोजसा ॥ १ ॥
य ऋते चिदभिश्रिषः पुरा जत्रुभ्य आतृदः ।
सन्धाता सन्धिं मघवा पुरूवसुर्निष्कर्ता विह्रुतं पुनः ॥ २ ॥
आ त्वा सहस्रमा शतं युक्ता रथे हिरण्यये ।
ब्रह्मयुजो हरय इन्द्र केशिनो वहन्तु सोमपीतये ॥ ३ ॥
आ मन्द्रैरिन्द्र हरिभिर्याहि मयूररोमभिः ।
मा त्वा के चिन्नि येमुरिन्न पाशिनोऽति धन्वेव ताँ इहि ॥ ४ ॥

त्वमङ्ग प्र शंसिषो देवः शविष्ठ मर्त्यम् ।
न त्वदन्यो मघवन्नस्ति मर्डितेन्द्र ब्रवीमि ते वचः ॥ ५ ॥
त्वमिन्द्र यशा अस्यृजीषी शवसस्पतिः ।
त्वं वृत्राणि हंस्यप्रतीन्येक इत् पुर्वनुत्तश्चर्षणीधृतिः ॥ ६ ॥
इन्द्रमिद्देवतातय इन्द्रं प्रयत्यध्वरे ।
इन्द्रं समीके वनिनो हवामह इन्द्रं धनस्य सातये ॥ ७ ॥
इमा उ त्वा पुरूवसो गिरो वर्धन्तु या मम ।
पावकवर्णाः शुचयो विपश्चितोऽभि स्तोमैरनूषत ॥ ८ ॥
उदु त्ये मधुमत्तमा गिर स्तोमास ईरते ।
सत्राजितो धनसा अक्षितोतयो वाजयन्तो रथाइव ॥ ९ ॥
यथा गौरो अपा कृतं तृष्यन्नेत्यवेरिणम् ।
आपित्वे नः प्रपित्वे तूयमा गहि कण्वेषु सु सचा पिब ॥ १० ॥

तृतीया दशतिः

ऋषिः—१ भर्गः; २ रेभः काश्यपः; ३ जमदग्निः; ४, ९ मेधातिथिः; ५, ६ नृमेधपुरुमेधौ; ७ वसिष्ठः; ८ रेभः; १० भरद्वाजः ॥ देवता—१, २, ४-१० इन्द्रः; ३ आदित्याः ॥ छन्दः—बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

शग्ध्यू३षु शचीपत इन्द्र विश्वाभिरूतिभिः ।
भगं न हि त्वा यशसं वसुविदमनु शूर चरामसि ॥ १ ॥
या इन्द्र भुज आभरः स्वर्वाँ असुरेभ्यः ।
स्तोतारमिन्मघवन्नस्य वर्धय ये च त्वे वृक्तबर्हिषः ॥ २ ॥
प्र मित्राय प्रार्यम्णे सचथ्यमृतावसो ।
वरूथ्ये३ वरुणे छन्द्यं वचः स्तोत्रं राजसु गायत ॥ ३ ॥
अभि त्वा पूर्वपीतय इन्द्र स्तोमेभिरायवः ।
समीचीनास ऋभवः समस्वरन् रुद्रा गृणन्त पूर्व्यम् ॥ ४ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्र व इन्द्राय बृहते मरुते ब्रह्मार्चत ।
वृत्रं हनति वृत्रहा शतक्रतुर्वज्रेण शतपर्वणा ॥ ५ ॥
बृहदिन्द्राय गायत मरुतो वृत्रहन्तमम् ।
येन ज्योतिरजनयन्नृतावृधो देवं देवाय जागृवि ॥ ६ ॥
इन्द्र क्रतुं न आ भर पिता पुत्रेभ्यो यथा ।
शिक्षा णो अस्मिन्पुरुहूत यामनि जीवा ज्योतिरशीमहि ॥ ७ ॥
मा न इन्द्र परावृणग्भवा नः सधमाद्ये ।
त्वं न ऊती त्वमिन्न आप्यं मा न इन्द्र परावृणक् ॥ ८ ॥
वयं घ त्वा सुतावन्त आपो न वृक्तबर्हिषः ।
पवित्रस्य प्रस्रवणेषु वृत्रहन् परि स्तोतार आसते ॥ ९ ॥
यदिन्द्र नाहुषीष्वा ओजो नृम्णं च कृष्टिषु ।
यद्वा पञ्च क्षितीनां द्युम्नमा भर सत्रा विश्वानि पौंस्या ॥ १० ॥

चतुर्थी दशतिः

ऋषिः—१ मेधातिथिः; २ रेभः; ३ वत्सः; ४ भरद्वाजः; ५ नृमेधः; ६ पुरुहन्मा; ७ नृमेधपुरुमेधौ; ८ वसिष्ठः; ९ मेधातिथिर्मेध्यातिथिश्च; १० कलिः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

सत्यमित्था वृषेदसि वृषजूतिर्नोऽविता ।
वृषा ह्युग्र शृण्विषे परावति वृषो अर्वावति श्रुतः ॥ १ ॥
यच्छक्रासि परावति यदर्वावति वृत्रहन् ।
अतस्त्वा गीर्भिर्द्युगदिन्द्र केशिभिः सुतावाँ आ विवासति ॥ २ ॥
अभि वो वीरमन्धसो मदेषु गाय गिरा महा विचेतसम् ।
इन्द्रं नाम श्रुत्यं शाकिनं वचो यथा ॥ ३ ॥
इन्द्र त्रिधातु शरणं त्रिवरूथं स्वस्तये ।
छर्दिर्यच्छ मघवद्भ्यश्च मह्यं च यावया दिद्युमेभ्यः ॥ ४ ॥

पूर्वार्चिकः

श्रायन्तइव सूर्यं विश्वेदिन्द्रस्य भक्षत ।
वसूनि जातो जनिमान्योजसा प्रति भागं न दीधिमः ॥ ५ ॥
न सीमदेव आप तदिषं दीर्घायो मर्त्यः ।
एतग्वा चिद्य एतशो युयोजत इन्द्रो हरी युयोजते ॥ ६ ॥
आ नो विश्वासु हव्यमिन्द्रं समत्सु भूषत ।
उप ब्रह्माणि सवनानि वृत्रहन् परमज्या ऋचीषम ॥ ७ ॥
तवेदिन्द्रावमं वसु त्वं पुष्यसि मध्यमम् ।
सत्रा विश्वस्य परमस्य राजसि न किष्टा गोषु वृण्वते ॥ ८ ॥
क्वेयथ क्वेदसि पुरुत्रा चिद्धि ते मनः ।
अलर्षि युध्म खजकृत् पुरन्दर प्र गायत्रा अगासिषुः ॥ ९ ॥
वयमेनमिदा ह्योऽपीपेमेह वज्रिणम् ।
तस्मा उ अद्य सवने सुतं भरा नूनं भूषत श्रुते ॥ १० ॥

पञ्चमी दशतिः

ऋषिः—१, ६ पुरुहन्मा; २ भर्गः; ३ इरिम्बिठिः; ४ जमदग्निः; ५, ७ देवातिथिः; ८ वसिष्ठः; ९ भरद्वाजः; १० बालखिल्याः ॥ देवता—१-३, ५-८, १० इन्द्रः; ४ सूर्यः; ९ इन्द्राग्नी ॥ छन्दः—बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

यो राजा चर्षणीनां याता रथेभिरध्रिगुः ।
विश्वासां तरुता पृतनानां ज्येष्ठ यो वृत्रहा गृणे ॥ १ ॥
यत इन्द्र भयामहे ततो नो अभयं कृधि ।
मघवञ्छग्धि तव तन्न ऊतये वि द्विषो वि मृधो जहि ॥ २ ॥
वास्तोष्पते ध्रुवा स्थूणां सत्रं सोम्यानाम् ।
द्रप्सः पुरां भेत्ता शश्वतीनामिन्द्रो मुनीनां सखा ॥ ३ ॥
बण्महाँ असि सूर्य बडादित्य महाँ असि ।
महस्ते सतो महिमा पनिष्टम मह्ना देव महाँ असि ॥ ४ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अश्वी रथी सुरूप इद्गोमाँ यदिन्द्र ते सखा ।
श्वात्रभाजा वयसा सचते सदा चन्द्रैर्याति सभामुप ॥ ५ ॥

यद् द्याव इन्द्र ते शतं शतं भूमीरुत स्युः ।
न त्वा वज्रिन्त्सहस्रं सूर्या अनु न जातमष्ट रोदसी ॥ ६ ॥

यदिन्द्र प्रागपागुदग्न्यग्वा हूयसे नृभिः ।
सिमा पुरू नृषूतो अस्यानवेऽसि प्रशर्ध तुर्वशे ॥ ७ ॥

कस्तमिन्द्र त्वा वसवा मर्त्यो दधर्षति ।
श्रद्धा हि ते मघवन् पार्ये दिवि वाजी वाजं सिषासति ॥ ८ ॥

इन्द्राग्नी अपादियं पूर्वागात् पद्वतीभ्यः ।
हित्वा शिरो जिह्वया रारपच्चरत् त्रिंशत् पदा न्यक्रमीत् ॥ ९ ॥

इन्द्र नेदीय एदिहि मितमेधाभिरूतिभिः ।
आ शन्तम शन्तमाभिरभिष्टिभिरा स्वापे स्वापिभिः ॥ १० ॥

षष्ठी दशतिः

ऋषिः—१ नृमेधः; २, ३ वसिष्ठः; ४ भरद्वाजः; ५ पुरुच्छेपः; ६ वामदेवः; ७ मेध्यातिथिः; ८ भर्गः; ९, १० मेधातिथिर्मेध्यातिथिश्च ॥ देवता—१-४, ७-१० इन्द्रः; ५ अश्विनौ; ६ वरुणः ॥ छन्दः—बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

२८३. इत ऊती वो अजरं प्रहेतारमप्रहितम् ।
आशुं जेतारं हेतारं रथीतममतूर्तं तुग्रियावृधम् ॥ १ ॥

मो षु त्वा वाघतश्च नारे अस्मन्नि रीरमन् ।
आरात्ताद्वा सधमादं न आ गहीह वा सन्नुप श्रुधि ॥ २ ॥

सुनोता सोमपात्रे सोममिन्द्राय वज्रिणे ।
पचता पक्तौरवसे कृणुध्वमित् पृणन्नित् पृणते मयः ॥ ३ ॥

यः सत्राहा विचर्षणिरिन्द्रं तं हूमहे वयम् ।
सहस्रमन्यो तुविनृम्ण सत्पते भवा समत्सु नो वृधे ॥ ४ ॥

शचीभिर्नः शचीवसू दिवानक्तं दिशस्यतम् ।
मा वां रातिरुप दसत् कदा च नास्मद्रातिः कदा च न ॥ ५ ॥

यदा कदा च मीढुषे स्तोता जरेत मर्त्यः ।
आदिद् वन्देत वरुणं विपा गिरा धर्तारं विव्रतानाम् ॥ ६ ॥

पाहि गा अन्धसो मद इन्द्राय मेध्यातिथे ।
यः सम्मिश्लो हर्योर्यो हिरण्यय इन्द्रो वज्री हिरण्ययः ॥ ७ ॥

उभयं शृणवच्च न इन्द्रो अवागिदं वचः ।
सत्राच्या मघवान्त्सोमपीतये धिया शविष्ठ आ गमत् ॥ ८ ॥

महे च न त्वाद्रिवः परा शुल्काय दीयसे ।
न सहस्राय नायुताय वज्रिवो न शताय शतामघ ॥ ९ ॥

वस्याँ इन्द्रासि मे पितुरुत भ्रातुरभुञ्जतः ।
माता च मे छदयथः समा वसो वसुत्वनाय राधसे ॥ १० ॥

इति तृतीयः प्रपाठकः समाप्तः ॥

अथ चतुर्थप्रपाठके प्रथमोऽर्धः

सप्तमी दशतिः

ऋषिः—१ वसिष्ठः; २, ६, ७ वामदेवः; ३ मेधातिथिर्मेध्यातिथी; विश्वामित्र इत्येके; ४ नोधाः; ५ मेधातिथिः; ८ बालखिल्याः; ९ मेध्यातिथिः; १० नृमेधः ॥ देवता—१-६, ८-१० इन्द्रः; ७ बहवः-(पर्जन्यब्रह्मणस्पत्यदितयो विश्वेदेवाः) ॥ छन्दः—बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

इम इन्द्राय सुन्विरे सोमासो दध्याशिरः ।
ताँ आ मदाय वज्रहस्त पीतये हरिभ्यां याह्योक आ ॥ १ ॥

इम इन्द्र मदाय ते सोमाश्चिकित्र उक्थिनः ।
मधोः पपान उप नो गिरः शृणु रास्व स्तोत्राय गिर्वणः ॥ २ ॥

आ त्वाऽऽद्य सबर्दुघां हुवे गायत्रवेपसम् ।
इन्द्रं धेनुं सुदुघामन्यामिषमुरुधारामरङ्कृतम् ॥ ३ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

न त्वा बृहन्तो अद्रयो वरन्त इन्द्र वीडवः ।
यच्छिक्षसि स्तुवते मावते वसु न किष्टदा मिनाति ते ॥ ४ ॥
क ईं वेद सुते सचा पिबन्तं कद्वयो दधे ।
अयं यः पुरो विभिनत्योजसा मन्दानः शिप्रिन्धसः ॥ ५ ॥
यदिन्द्र शासो अव्रतं च्यावया सदसस्परि ।
अस्माकमंशुं मघवन् पुरुस्पृहं वसव्ये अधि बर्हय ॥ ६ ॥
त्वष्टा नो दैव्यं वचः पर्जन्यो ब्रह्मणस्पतिः ।
पुत्रैर्भ्रातृभिरदितिर्नु पातु नो दुष्टरं त्रामणं वचः ॥ ७ ॥
कदा च न स्तरीरसि नेन्द्र सश्चसि दाशुषे ।
उपोपेन्नु मघवन् भूय इन्नु ते दानं देवस्य पृच्यते ॥ ८ ॥
युङ्क्ष्वा हि वृत्रहन्तम हरी इन्द्र परावतः ।
अर्वाचीनो मघवन्त्सोमपीतय उग्र ऋष्वेभिरा गहि ॥ ९ ॥
त्वामिदा ह्यो नरोऽपीप्यन् वज्रिन् भूर्णयः ।
स इन्द्र स्तोमवाहस इह श्रुध्युप स्वसरमा गहि ॥ १० ॥

अयं वां मधुमत्तमः सुतः सोमो दिविष्टिषु ।
तमश्विना पिबतं तिरोअह्न्यं धत्तं रत्नानि दाशुषे ॥ ४ ॥
आ त्वा सोमस्य गल्दया सदा याचन्नहं ज्या ।
भूर्णिं मृगं न सवनेषु चुक्रुधं क ईशानं न याचिषत् ॥ ५ ॥
अध्वर्यो द्रावया त्वं सोममिन्द्रः पिपासति ।
उपो नूनं युयुजे वृषणा हरी आ च जगाम वृत्रहा ॥ ६ ॥
अभीषतस्तदा भरेन्द्र ज्यायः कनीयसः ।
पुरूवसुर्हि मघवन् बभूविथ भरेभरे च हव्यः ॥ ७ ॥
यदिन्द्र यावतस्त्वमेतावदहमीशीय ।
स्तोतारमिद्धिषिषे रदावसो न पापत्वाय रंसिषम् ॥ ८ ॥
त्वमिन्द्र प्रतूर्तिष्वभि विश्वा असि स्पृधः ।
अशस्तिहा जनिता वृत्रतूरसि त्वं तूर्य तरुष्यतः ॥ ९ ॥
प्र यो रिरिक्ष ओजसा दिवः सदोभ्यस्परि ।
न त्वा विव्याच रज इन्द्र पार्थिवमति विश्वं ववक्षिथ ॥ १० ॥

अष्टमी दशतिः

ऋषिः—१, २, ७, ८ वसिष्ठः; ३ पौर आत्रेयः; ४ प्रस्कण्वः; ५ मेधातिथि-मेध्यातिथी; ६ देवातिथिः; ९ नृमेधः; १० नोधाः॥ देवता—१ उषा; २, ३ अश्विनौ; ४-१० इन्द्रः॥ छन्दः—बृहती॥ स्वरः—मध्यमः॥

३०३. प्रत्यु अदर्शयायत्यूच्छन्ती दुहिता दिवः ।
अपो मही वृणुते चक्षुषा तमो ज्योतिष्कृणोति सूनरी ॥ १ ॥
इमा उ वां दिविष्टय उस्रा हवन्ते अश्विना ।
अयं वामह्वेऽवसे शचीवसू विशंविशं हि गच्छथः ॥ २ ॥
कुष्ठः को वामश्विना तपानो देवा मर्त्यः ।
घ्नता वामश्नया क्षपमाणोऽशुनेत्थमु आद्वन्यथा ॥ ३ ॥

असावि देवं गोऋजीकमन्धो न्यस्मिन्निन्द्रो जनुषेमुवोच ।
बोधामसि त्वा हर्यश्व यज्ञैर्बोधा न स्तोममन्धसो मदेषु ॥ १ ॥
योनिष्ट इन्द्र सदने अकारि तमा नृभिः पुरुहूत प्र याहि ।
असो यथा नोऽविता वृधश्चिद्ददो वसूनि ममदश्च सोमैः ॥ २ ॥
अददरुत् समसृजो वि खानि त्वमर्णवान् बद्बधानाँ अरम्णाः ।
महान्तमिन्द्र पर्वतं वि यद्वः सृजन्द्वारा अव यद्दानवान् हन् ॥ ३ ॥

नवमी दशतिः

ऋषिः—१, २, ६ वसिष्ठः; ३ गातुः; ४ पृथुर्वैन्यः; ५ सप्तगुः; ७ गौरिवीतिः; ८ वेनो भार्गवः; ९ बृहस्पतिर्नकुलो वा; १० सुहोत्रः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—त्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सुष्वाणास इन्द्र स्तुमसि त्वा सनिष्यन्तश्चित्तुविनृम्ण वाजम्।
आ नो भर सुवितं यस्य कोना तना त्मना सह्याम त्वोताः ॥ ४ ॥
जगृह्मा ते दक्षिणमिन्द्र हस्तं वसूयवो वसुपते वसूनाम्।
विद्मा हि त्वा गोपतिं शूर गोनामस्मभ्यं चित्रं वृषणं रयिं दाः ॥ ५ ॥
इन्द्रं नरो नेमधिता हवन्ते यत्पार्या युनजते धियस्ताः।
शूरो नृषाता श्रवसश्च काम आ गोमति व्रजे भजा त्वं नः ॥ ६ ॥
वयः सुपर्णा उप सेदुरिन्द्रं प्रियमेधा ऋषयो नाधमानाः।
अप ध्वान्तमूर्णुहि पूर्धि चक्षुर्मुमुग्ध्यस्मान्निधयेव बद्धान् ॥ ७ ॥
नाके सुपर्णमुप यत् पतन्तं हृदा वेनन्तो अभ्यचक्षत त्वा।
हिरण्यपक्षं वरुणस्य दूतं यमस्य योनौ शकुनं भुरण्युम् ॥ ८ ॥
ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचो वेन आवः।
स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः ॥ ९ ॥
अपूर्व्या पुरुतमान्यस्मै महे वीराय तवसे तुराय।
विरप्शिने वज्रिणे शन्तमानि वचस्यस्मै स्थविराय तक्षुः ॥ १० ॥

दशमी दशतिः

ऋषिः—१, २, ४ द्युतानः; ३ बृहदुक्थः; ५ वामदेवः; ६, ८ वसिष्ठः; ७ विश्वामित्रः; ९ गौरिवीतिः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१-५, ७-९ त्रिष्टुप्; ६ त्रिपदा विराडनुष्टुप् ॥ स्वरः—१-५, ७-९ धैवतः; ६ गान्धारः ॥

अव द्रप्सो अंशुमतीमतिष्ठदीयानः कृष्णो दशभिः सहस्रैः।
आवत्तमिन्द्रः शच्या धमन्तमप स्नीहितिं नृमणा अधद्राः ॥ १ ॥
वृत्रस्य त्वा श्वसथादीषमाणा विश्वे देवा अजहुर्ये सखायः।
मरुद्भिरिन्द्र सख्यं ते अस्त्वथेमा विश्वाः पृतना जयासि ॥ २ ॥
विधुं दद्राणं समने बहूनां युवानं सन्तं पलितो जगार।
देवस्य पश्य काव्यं महित्वाद्या ममार स ह्यः समान ॥ ३ ॥

त्वं ह त्यत् सप्तभ्यो जायमानोऽशत्रुभ्यो अभवः शत्रुरिन्द्र।
गूढे द्यावापृथिवी अन्वविन्दो विभुमद्भ्यो भुवनेभ्यो रणं धाः ॥ ४ ॥
मेडिं न त्वा वज्रिणं भृष्टिमन्तं पुरुधस्मानं वृषभं स्थिरप्स्नुम्।
करोष्यर्यस्तरुषीर्दुवस्युरिन्द्र द्युक्षं वृत्रहणं गृणीषे ॥ ५ ॥
प्र वो महे महेवृधे भरध्वं प्रचेतसे प्र सुमतिं कृणुध्वम्।
विशः पूर्वीः प्र चर चर्षणिप्राः ॥ ६ ॥
शुनं हुवेम मघवानमिन्द्रमस्मिन् भरे नृतमं वाजसातौ।
शृण्वन्तमुग्रमूतये समत्सु घ्नन्तं वृत्राणि सञ्जितं धनानि ॥ ७ ॥
उदु ब्रह्माण्यैरत श्रवस्येन्द्रं समर्ये महया वसिष्ठ।
आ यो विश्वानि श्रवसा ततानोपश्रोता म ईवतो वचांसि ॥ ८ ॥
चक्रं यदस्याप्वा निषत्तमुतो तदस्मै मध्वित्च्चच्छद्यात्।
पृथिव्यामतिषितं यदूधः पयो गोष्वदधा ओषधीषु ॥ ९ ॥

एकादशी दशतिः

ऋषिः—१ अरिष्टनेमिस्तार्क्ष्यः; २ भरद्वाजः; ३ वसुक्रो विमदो वा; ४-६, ७ विश्वामित्रः; ८ रेणुः; ९ वामदेवः; १० गोतमः ॥ देवता—१ तार्क्ष्यः; २-६, ८-१० इन्द्रः; ७ इन्द्रापर्वतौ ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

त्यमू षु वाजिनं देवजूतं सहोवानं तरुतारं रथानाम्।
अरिष्टनेमिं पृतनाजमाशुं स्वस्तये तार्क्ष्यमिहा हुवेम ॥ १ ॥
त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रं हवेहवे सुहवं शूरमिन्द्रम्।
हुवे नु शक्रं पुरुहूतमिन्द्रमिदं हविर्मघवा वेत्विन्द्रः ॥ २ ॥
यजामह इन्द्रं वज्रदक्षिणं हरीणां रथ्यां३ विव्रतानाम्।
प्र श्मश्रुभिर्दोधुवदूर्ध्वधा भुवद्वि सेनाभिर्भयमानो वि राधसा ॥ ३ ॥
सत्राहणं दाधृषिं तुम्रमिन्द्रं महामपारं वृषभं सुवज्रम्।
हन्ता यो वृत्रं सनितोत वाजं दाता मघानि मघवा सुराधाः ॥ ४ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

यो नो वनुष्यन्नभिदाति मर्त्त उगणा वा मन्यमानस्तुरो वा ।
क्षिधी युधा शवसा वा तमिन्द्राभी ष्याम वृषमणस्त्वोताः ॥ ५ ॥
यं वृत्रेषु क्षितयः स्पर्धमाना यं युक्तेषु तुरयन्तो हवन्ते ।
यं शूरसातौ यमपामुपज्मन् यं विप्रासो वाजयन्ते स इन्द्रः ॥ ६ ॥
इन्द्रापर्वता बृहता रथेन वामीरिष आ वहतं सुवीराः ।
वीतं हव्यान्यध्वरेषु देवा वर्धेथां गीर्भिरिडया मदन्ता ॥ ७ ॥
इन्द्राय गिरो अनिशितसर्गा अपः प्रैरयत् सगरस्य बुध्नात् ।
यो अक्षेणेव चक्रियो शचीभिर्विष्वक्तस्तम्भ पृथिवीमुत द्याम् ॥ ८ ॥
आ त्वा सखायः सख्या ववृत्युस्तिरः पुरू चिदर्णवांजगम्याः ।
पितुर्नपातमा दधीत वेधा अस्मिन् क्षये प्रतरां दीद्यानः ॥ ९ ॥
को अद्य युङ्क्ते धुरि गा ऋतस्य शिमीवतो भामिनो दुर्ह्णायून् ।
आसन्नेषामप्सुवाहो मयोभून्य एषां भृत्यामृणधत्स जीवात् ॥ १० ॥

इति चतुर्थप्रपाठकस्य प्रथमोऽर्धः ॥

अथ चतुर्थप्रपाठके द्वितीयोऽर्धः

द्वादशी दशतिः

ऋषिः—१ मधुच्छन्दाः; २ जेता माधुच्छन्दसः; ३, ६ गोतमः; ४ अत्रिः; ५, ८, ९ तिरश्चीः; ७ काण्वो नीपातिथिः; १० शंयुर्बार्हस्पत्यः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—अनुष्टुप् ॥ स्वरः—गान्धारः ॥

३४२. गायन्ति त्वा गायत्रिणोऽर्चन्त्यर्कमर्किणः ।
ब्रह्माणस्त्वा शतक्रत उद्वंशमिव येमिरे ॥ १ ॥
इन्द्रं विश्वा अवीवृधन्त्समुद्रव्यचसं गिरः ।
रथीतमं रथीनां वाजानां सत्पतिं पतिम् ॥ २ ॥
इममिन्द्र सुतं पिब ज्येष्ठममर्त्यं मदम् ।
शुक्रस्य त्वाभ्यक्षरन् धारा ऋतस्य सादने ॥ ३ ॥

यदिन्द्र चित्र म इह नास्ति त्वादातमद्रिवः ।
राधस्तन्नो विदद्वस उभयाहस्त्या भर ॥ ४ ॥
श्रुधी हवं तिरश्च्या इन्द्र यस्त्वा सपर्यति ।
सुवीर्यस्य गोमतो रायस्पूर्धि महाँ असि ॥ ५ ॥
असावि सोम इन्द्र ते शविष्ठ धृष्णवा गहि ।
आ त्वा पृणक्त्विन्द्रियं रजः सूर्यो न रश्मिभिः ॥ ६ ॥
एन्द्र याहि हरिभिरुप कण्वस्य सुष्टुतिम् ।
दिवो अमुष्य शासतो दिवं यय दिवावसो ॥ ७ ॥
आ त्वा गिरो रथीरिवास्थुः सुतेषु गिर्वणः ।
अभि त्वा समनूषत गावो वत्सं न धेनवः ॥ ८ ॥
एतो न्विन्द्रं स्तवाम शुद्धं शुद्धेन साम्ना ।
शुद्धैरुक्थैर्वावृध्वांसं शुद्धैराशीर्वान् ममत्तु ॥ ९ ॥
यो रयिं वो रयिन्तमो यो द्युम्नैर्द्युम्नवत्तमः ।
सोमः सुतः स इन्द्र तेऽस्ति स्वधापते मदः ॥ १० ॥

इति तृतीयोऽध्यायः ॥

अथ चतुर्थोऽध्यायः

प्रथमा दशतिः

ऋषिः—१ भरद्वाजः; २ वामदेवः शाकपूतो वा; ३ प्रियमेधः; ४ प्रगाथः; ५ श्यावाश्व आत्रेयः; ६ शंयुः; ७ वामदेवः; ८ जेता माधुच्छन्दसः ॥ देवता—१-४, ६, ८ इन्द्रः; ५ मरुतः; ७ दधिक्रावा अग्निः ॥ छन्दः—अनुष्टुप् ॥ स्वरः—गान्धारः ॥

प्रत्यस्मै पिपीषते विश्वानि विदुषे भर ।
अरङ्गमाय जग्मयेऽपश्चादध्वने नरः ॥ १ ॥
आ नो वयो वयःशयं महान्तं गह्वरेष्ठाम् ।
महान्तं पूर्विनेष्ठामुग्रं वचो अपावधीः ॥ २ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

आ त्वा रथं यथोतये सुम्नाय वर्तयामसि ।
तुविकूर्मिमृतीषहमिन्द्रं शविष्ठ सत्पतिम् ॥ ३ ॥
स पूर्व्यो महोनां वेनः क्रतुभिरानजे ।
यस्य द्वारा मनुः पिता देवेषु धिय आनजे ॥ ४ ॥
यदी वहन्त्याशवो भ्राजमाना रथेष्वा ।
पिबन्तो मदिरं मधु तत्र श्रवांसि कृण्वते ॥ ५ ॥
त्यमु वो अप्रहणं गृणीषे शवसस्पतिम् ।
इन्द्रं विश्वासाहं नरं शचिष्ठं विश्ववेदसम् ॥ ६ ॥
दधिक्राव्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः ।
सुरभि नो मुखा करत् प्र न आयूँषि तारिषत् ॥ ७ ॥
पुरां भिन्दुर्युवा कविरमितौजा अजायत ।
इन्द्रो विश्वस्य कर्मणो धर्ता वज्री पुरुष्टुतः ॥ ८ ॥

द्वितीया दशतिः

ऋषिः—१, ३, ५ प्रियमेधः; २, १० वामदेवः; ४ मधुच्छन्दाः; ६ भरद्वाजः; ७ अत्रिः; ८ प्रस्कण्वः; ९ आप्त्यस्त्रितः ॥ देवता—१-७ इन्द्रः; ८ उषाः; ९ विश्वेदेवाः; १० ऋक्सामौ ॥ छन्दः—अनुष्टुप् ॥ स्वरः—गान्धारः ॥

प्रप्र वस्त्रिष्टुभमिषं वन्दद्वीरायेन्दवे ।
धिया वो मेधसातये पुरन्ध्या विवासति ॥ १ ॥
कश्यपस्य स्वर्विदो यावाहुः सयुजाविति ।
ययोर्विश्वमपि व्रतं यज्ञं धीरा निचाय्य ॥ २ ॥
अर्चत प्रार्चता नरः प्रियमेधासो अर्चत ।
अर्चन्तु पुत्रका उत पुरमिद् धृष्ण्वर्चत ॥ ३ ॥
उक्थमिन्द्राय शंस्यं वर्धनं पुरुनिष्षिधे ।
शक्रो यथा सुतेषु नो रारणत् सख्येषु च ॥ ४ ॥

विश्वानरस्य वस्पतिमनानतस्य शवसः ।
एवैश्च चर्षणीनामूती हुवे रथानाम् ॥ ५ ॥
स घा यस्ते दिवो नरो धिया मर्तस्य शमतः ।
ऊती स बृहतो दिवो द्विषो अंहो न तरति ॥ ६ ॥
विभोष्ट इन्द्र राधसो विभ्वी रातिः शतक्रतो ।
अथा नो विश्वचर्षणे द्युम्नं सुदत्र मंहय ॥ ७ ॥
वयश्चित्ते पतत्रिणो द्विपाच्चतुष्पादर्जुनि ।
उषः प्रारन्नृतूँरनु दिवो अन्तेभ्यस्परि ॥ ८ ॥
अमी ये देवा स्थन मध्य आ रोचने दिवः ।
कद्व ऋतं कदमृतं का प्रत्ना व आहुतिः ॥ ९ ॥
ऋचं साम यजामहे याभ्यां कर्माणि कृण्वते ।
वि ते सदसि राजतो यज्ञं देवेषु वक्षतः ॥ १० ॥

तृतीया दशतिः

ऋषिः—१ रेभः; २ सुवेदाः शैलूषिः; ३ वामदेवः; ४, ७, ८ सव्य आङ्गिरसः; ५ विश्वामित्रः; ६ कृष्ण आङ्गिरसः; ९ भरद्वाजः; १० मेधातिथिः; ११ कुत्सः ॥ देवता—१-८, १०, ११ इन्द्रः; ९ द्यावापृथिवी ॥ छन्दः—१-९, ११ जगती; १० महापङ्क्तिः ॥ स्वरः—१-९, ११ निषादः; १० पञ्चमः ॥

विश्वाः पृतना अभिभूतरं नरः सजूस्ततक्षुरिन्द्रं जजनुश्च राजसे ।
क्रत्वे वरे स्थेमन्यामुरीमुतोग्रमोजिष्ठं तरसं तरस्विनम् ॥ १ ॥
श्रत्ते दधामि प्रथमाय मन्यवेऽहन् यद् दस्युं नर्यं विवेरपः ।
उभे यत्त्वा रोदसी धावतामनु भ्यसात्ते शुष्मात् पृथिवी चिदद्रिवः ॥ २ ॥
समेत विश्वा ओजसा पतिं दिवो य एक इद् भूरतिथिर्जनानाम् ।
स पूर्व्यो नूतनमाजिगीषं तं वर्त्तनीरनु वावृत एक इत् ॥ ३ ॥
इमे त इन्द्र ते वयं पुरुष्टुत ये त्वारभ्य चरामसि प्रभूवसो ।
न हि त्वदन्यो गिर्वणो गिरः सघत् क्षोणीरिव प्रति तद्धर्य नो वचः ॥ ४ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

चर्षणीधृतं मघवानमुक्थ्याऽइन्द्रं गिरो बृहतीरभ्यनूषत । वावृधानं पुरुहूतं सुवृक्तिभिरमर्त्यं जरमाणं दिवेदिवे ॥ ५ ॥

अच्छा व इन्द्रं मतयः स्वर्युवः सधीचीर्विश्वा उशतीरनूषत । परि ष्वजन्त जनयो यथा पतिं मर्यं न शुन्ध्युं मघवानमूतये ॥ ६ ॥

अभि त्यं मेषं पुरुहूतमृग्मियमिन्द्रं गीर्भिर्मदता वस्वो अर्णवम् । यस्य द्यावो न विचरन्ति मानुषं भुजे मंहिष्ठमभि विप्रमर्चत ॥ ७ ॥

त्यं सु मेषं महया स्वर्विदं शतं यस्य सुभुवः साकमीरते । अत्यं न वाजं हवनस्यदं रथमिन्द्रं ववृत्यामवसे सुवृक्तिभिः ॥ ८ ॥

घृतवती भुवनानामभिश्रियोर्वी पृथ्वी मधुदुघे सुपेशसा । द्यावापृथिवी वरुणस्य धर्मणा विष्कभिते अजरे भूरिरेतसा ॥ ९ ॥

उभे यदिन्द्र रोदसी आपप्राथोषाइव । महान्तं त्वा महीनां सम्राजं चर्षणीनाम् । देवी जनित्र्यजीजनद्भद्रा जनित्र्यजीजनत् ॥ १० ॥

प्र मन्दिने पितुमदर्चता वचो यः कृष्णगर्भा निरहन्नृजिश्वना । अवस्यवो वृषणं वज्रदक्षिणं मरुत्वन्तं सख्याय हुवेमहि ॥ ११ ॥

चतुर्थी दशतिः

ऋषिः—१ नारदः, २, ३ गोपूक्त्यश्वसूक्तिनौ; ४ पर्वतः; ५-७, १० विश्वमना वैयश्वः; ८ नृमेधः; ९ गोतमः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—उष्णिक् ॥ स्वरः—ऋषभः ॥

इन्द्र सुतेषु सोमेषु क्रतुं पुनीष उक्थ्यम् । विदे वृधस्य दक्षस्य महाँ हि षः ॥ १ ॥

तमु अभि प्र गायत पुरुहूतं पुरुष्टुतम् । इन्द्रं गीर्भिस्तविषमा विवासत ॥ २ ॥

तं ते मदं गृणीमसि वृषणं पृक्षु सासहिम् । उ लोककृत्नुमद्रिवो हरिश्रियम् ॥ ३ ॥

यत्सोममिन्द्र विष्णवि यद्वा घ त्रित आप्त्ये । यद्वा मरुत्सु मन्दसे समिन्दुभिः ॥ ४ ॥

एदु मधोर्मदिन्तरं सिञ्चाध्वर्यो अन्धसः । एवा हि वीर स्तवते सदावृधः ॥ ५ ॥

एन्दुमिन्द्राय सिञ्चत पिबाति सोम्यं मधु । प्र राधांसि चोदयते महित्वना ॥ ६ ॥

एतो न्विन्द्रं स्तवाम सखायः स्तोम्यं नरम् । कृष्टीर्यो विश्वा अभ्यस्त्येक इत् ॥ ७ ॥

इन्द्राय साम गायत विप्राय बृहते बृहत् । ब्रह्मकृते विपश्चिते पनस्यवे ॥ ८ ॥

य एक इद्विदयते वसु मर्ताय दाशुषे । ईशानो अप्रतिष्कुत इन्द्रो अङ्ग ॥ ९ ॥

सखाय आ शिषामहे ब्रह्मेन्द्राय वज्रिणे । स्तुष ऊ षु वो नृतमाय धृष्णवे ॥ १० ॥

इति चतुर्थः प्रपाठकः समाप्तः ॥

अथ पञ्चमप्रपाठके प्रथमोऽर्धः

पञ्चमी दशतिः

ऋषिः—१ प्रगाथः; २ भरद्वाजः; ३ नृमेधः; ४ पर्वतः; ५, ७ इरिम्बिठिः; ६ विश्वमनाः; ८ वसिष्ठः ॥ देवता—१-४, ६, ८ इन्द्रः; ५, ७ आदित्याः ॥ छन्दः—१-७ उष्णिक्; ८ त्रिपदा विराडनुष्टुप् ॥ स्वरः—१-७ ऋषभः; ८ गान्धारः ॥

गृणे तदिन्द्र ते शव उपमं देवतातये । यद्धंसि वृत्रमोजसा शचीपते ॥ १ ॥

यस्य त्यच्छम्बरं मदे दिवोदासाय रन्धयन् । अयं स सोम इन्द्र ते सुतः पिब ॥ २ ॥

एन्द्र नो गधि प्रिय सत्राजिदगोह्य । गिरिर्न विश्वतः पृथुः पतिर्दिवः ॥ ३ ॥

य इन्द्र सोमपातमो मदः शविष्ठ चेततिं । येना हंसि न्याऽत्रिणं तमीमहे ॥ ४ ॥

तुचे तुनाय तत्सु नो द्राघीय आयुर्जीवसे । आदित्यासः समहसः कृणोतन ॥ ५ ॥

वेत्था हि निर्ऋतीनां वज्रहस्त परिवृजम् । अहरहः शुन्ध्युः परिपदामिव ॥ ६ ॥

अपामीवामप स्त्रिधमप सेधत दुर्मतिम् । आदित्यासो युयोतना नो अंहसः ॥ ७ ॥

पिबा सोममिन्द्र मन्दतु त्वा यं ते सुषाव हर्यश्वाद्रिः । सोतुर्बाहुभ्यां सुयतो नार्वा ॥ ८ ॥

षष्ठी दशतिः

ऋषिः—१-६, ९, १० सोभरिः; ७, ८ नृमेधः ॥ देवता—१, २, ४, ५, ७-१० इन्द्रः; ३, ६ मरुतः ॥ छन्दः—ककुबुष्णिक् ॥ स्वरः—ऋषभः ॥

अभ्रातृव्यो अना त्वमनापिरिन्द्र जनुषा सनादसि । युधेदापित्वमिच्छसे ॥ १ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

यो न इदमिदं पुरा प्र वस्य आनिनाय तमु व स्तुषे। सखाय इन्द्रमूतये ॥ २ ॥

४०१. आ गन्ता मा रिषण्यत प्रस्थावानो माप स्थात समन्यवः।
दृढा चिद्यमयिष्णवः ॥ ३ ॥

आ याह्यायमिन्दवेऽश्वपते गोपत उर्वरापते। सोमं सोमपते पिब ॥ ४ ॥

त्वया ह स्विद्युजा वयं प्रति श्वसन्तं वृषभ ब्रुवीमहि। संस्थे जनस्य गोमतः ॥ ५ ॥

गावश्चिद् घा समन्यवः सजात्येन मरुतः सबन्धवः। रिहते ककुभो मिथः ॥ ६ ॥

त्वं न इन्द्रा भर ओजो नृम्णं शतक्रतो विचर्षणे। आ वीरं पृतनासहम् ॥ ७ ॥

अथा ह्यिन्द्र गिर्वण उप त्वा काम ईमहे ससृग्महे। उदेव ग्मन्त उदभिः ॥ ८ ॥

सीदन्तस्ते वयो यथा गोश्रीते मधौ मदि रे विवक्षणे। अभि त्वामिन्द्र नोनुमः ॥ ९ ॥

वयमु त्वामपूर्व्य स्थूरं न कच्चिद्भरन्तोऽवस्यवः। वज्रिञ्चित्रं हवामहे ॥ १० ॥

सप्तमी दशतिः

ऋषिः—१-८ गोतमः; ९ त्रितः; १० अवस्युः॥ देवता—१-८ इन्द्रः; ९ विश्वेदेवाः; १० अश्विनौ॥ छन्दः—पङ्क्तिः॥ स्वरः—पञ्चमः॥

स्वादोरित्था विषूवतो मधोः पिबन्ति गौर्यः।

या इन्द्रेण सयावरीर्वृष्णा मदन्ति शोभथा वस्वीरनु स्वराज्यम् ॥ १ ॥

इत्था हि सोम इन्मदो ब्रह्म चकार वर्धनम्।

शविष्ठ वज्रिन्नोजसा पृथिव्या निः शशा अहिमर्चन्ननु स्वराज्यम् ॥ २ ॥

इन्द्रो मदाय वावृधे शवसे वृत्रहा नृभिः।

तमिन्महत् स्वाजिषूतिमर्भे हवामहे स वाजेषु प्र नोऽविषत् ॥ ३ ॥

इन्द्र तुभ्यमिदद्रिवोऽनुत्तं वज्रिन् वीर्यम्।

यद्ध त्यं मायिनं मृगं तव त्वन्माययावधीरर्चन्ननु स्वराज्यम् ॥ ४ ॥

प्रेह्यभीहि धृष्णुहि न ते वज्रो नि यंसते।

इन्द्र नृम्णं हि ते शवो हनो वृत्रं जया अपोऽर्चन्ननु स्वराज्यम् ॥ ५ ॥

यदुदीरत आजयो धृष्णवे धीयते धनम्।

युङ्क्ष्वा मदच्युता हरी कं हनः कं वसौ दधोऽस्माँ इन्द्र वसौ दधः ॥ ६ ॥

अक्षन्नमीमदन्त ह्यव प्रिया अधूषत।

अस्तोषत स्वभानवो विप्रा नविष्ठया मती योजा न्विन्द्र ते हरी ॥ ७ ॥

उपो षु शृणुही गिरो मघवन्मातथाइव।

कदा नः सूनृतावतः कर इदर्थयास इद्योजा न्विन्द्र ते हरी ॥ ८ ॥

चन्द्रमा अप्स्वा३न्तरा सुपर्णो धावते दिवि।

न वो हिरण्यनेमयः पदं विन्दन्ति विद्युतो वित्तं मे अस्य रोदसी ॥ ९ ॥

प्रति प्रियतमं रथं वृषणं वसुवाहनम्।

स्तोता वामश्विनावृषि स्तोमेभिर्भूषति प्रति माध्वी मम श्रुतं हवम् ॥ १० ॥

अष्टमी दशतिः

ऋषिः—१, ७ वसुश्रुतः; २, ४ विमदः; ३ सत्यश्रवाः; ५, ६ गोतमः; ८ अंहोमुग्वाम-देव्यः॥ देवता—१, २, ७ अग्निः; ३ उषाः; ४ सोमः; ५, ६ इन्द्रः; ८ विश्वेदेवाः॥ छन्दः—१-७ पङ्क्तिः; ८ उपरिष्टाद् बृहती॥ स्वरः—१-७ पञ्चमः; ८ मध्यमः॥

आ ते अग्न इधीमहि द्युमन्तं देवाजरम्।

यद्ध स्या ते पनीयसी समिद् दीदयति द्यवीषं स्तोतृभ्य आ भर ॥ १ ॥

आग्निं न स्ववृक्तिभिर्होतारं त्वा वृणीमहे।

शीरं पावकशोचिषं वि वो मदे यज्ञेषु स्तीर्णबर्हिषं विवक्षसे ॥ २ ॥

महे नो अद्य बोधयोषो राये दिवित्मती।

यथा चिन्नो अबोधयः सत्यश्रवसि वाय्ये सुजाते अश्वसूनृते ॥ ३ ॥

भद्रं नो अपि वातय मनो दक्षमुत क्रतुम्।

अथा ते सख्ये अन्धसो वि वो मदे रणा गावो न यवसे विवक्षसे ॥ ४ ॥

क्रत्वा महाँ अनुष्वधं भीम आ ववृते शवः।

श्रिय ऋष्व उपाकयोर्नि शिप्री हरिवां दधे हस्तयोर्वज्रमायसम् ॥ ५ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

स घा तं वृषणं रथमधि तिष्ठाति गोविदम् ।
यः पात्रं हारियोजनं पूर्णमिन्द्रा चिकेतति योजा न्विन्द्र ते हरी ॥ ६ ॥
अग्निं तं मन्ये यो वसुरस्तं यं यन्ति धेनवः ।
अस्तमर्वन्त आशवोऽस्तं नित्यासो वाजिन इषं स्तोतृभ्य आ भर ॥ ७ ॥
न तमंहो न दुरितं देवासो अष्ट मर्त्यम् ।
सजोषसो यमर्यमा मित्रो नयति वरुणो अति द्विषः ॥ ८ ॥

नवमी दशतिः

ऋषिः—१, ३-५, १० धिष्ण्या ऐश्वरयोऽग्नयः; २, ६ त्र्यरुणत्रसदस्यू; ७ वसिष्ठः; ८, ९ वामदेवः॥ देवता—१-६, १० पवमानः; ७ मरुतः; ८ अग्निः; ९ वाजिनां स्तुतिः॥ छन्दः—१, ३, ४, ५, ७, १० द्विपदा पङ्क्तिः; २, ६ त्रिपदा अनुष्टुप्पिपीलिकामध्या; ८ पदपङ्क्तिः; ९ पुरउष्णिक्॥ स्वरः—१, ३-५, ७, ८, १० पञ्चमः; २, ६ गान्धारः; ९ ऋषभः॥

परि प्र धन्वेन्द्राय सोम स्वादुर्मित्राय पूष्णे भगाय ॥ १ ॥
पर्यू षु प्र धन्व वाजसातये परि वृत्राणि सक्षणिः ।
द्विषस्तरध्या ऋणया न ईरसे ॥ २ ॥
पवस्व सोम महान्त्समुद्रः पिता देवानां विश्वाभि धाम ॥ ३ ॥
पवस्व सोम मंहे दक्षायाश्वो न निक्तो वाजी धनाय ॥ ४ ॥
इन्दुः पविष्ट चारुर्मदायापामुपस्थे कविर्भगाय ॥ ५ ॥
अनु हि त्वा सुतं सोम मदामसि महे समर्यराज्ये ।
वाजाँ अभि पवमान प्र गाहसे ॥ ६ ॥
क ईं व्यक्ता नरः सनीडा रुद्रस्य मर्या अथा स्वश्वाः ॥ ७ ॥
अग्ने तमद्याश्वं न स्तोमैः क्रतुं न भद्रं हृदिस्पृशम् ।
ऋध्यामा त ओहैः ॥ ८ ॥
आविर्मर्या आ वाजं वाजिनो अग्मं देवस्य सवितुः सवम्।
स्वर्गा अर्वन्तो जयत ॥ ९ ॥
पवस्य सोम द्युम्नि सुधारो महाँ अवीनामनुपूर्व्यः ॥ १० ॥

इति पञ्चमप्रपाठके प्रथमोऽर्धः॥

अथ पञ्चमप्रपाठके द्वितीयोऽर्धः

दशमी दशतिः

ऋषिः—१, २, ५, ६, ८-१० वामदेवः; ३, ४ अवस्युः; ७ संवर्तः॥ देवता—१-५, ८-१० इन्द्रः; ६ विश्वेदेवाः; ७ उषाः॥ छन्दः—द्विपदाविराट्पङ्क्तिः॥ स्वरः—पञ्चमः॥

विश्वतोदावन् विश्वतो न आ भर यं त्वा शविष्ठमीमहे॥ १ ॥
एष ब्रह्मा य ऋत्वियइन्द्रो नाम श्रुतो गृणे॥ २ ॥
ब्रह्माण इन्द्रं महयन्तो अर्केरवर्धयन्नहये हन्तवा उ॥ ३ ॥
अनवस्ते रथमश्वाय तक्षुस्त्वष्ट वज्रं पुरुहूत द्युमन्तम्॥ ४ ॥
शं पदं मघं रयीषिणे न काममव्रतो हिनोति न स्पृशद्रयिम्॥ ५ ॥
सदा गावः शुचयो विश्वधायसः सदा देवा अरेपसः॥ ६ ॥
आ याहि वनसा सह गावः सचन्त वर्तनिं यदूधभिः॥ ७ ॥
उप प्रक्षे मधुमति क्षियन्तः पुष्येम रयिं धीमहे त इन्द्र॥ ८ ॥
अर्चन्त्यर्कं मरुतः स्वर्का आ स्तोभति श्रुतो युवा स इन्द्रः॥ ९ ॥
प्र व इन्द्राय वृत्रहन्तमाय विप्राय गाथं गायत यं जुजोषते॥ १० ॥

एकादशी दशतिः

ऋषिः १, ३, ४, ७, ९, १० वामदेवः; २ बन्धुः; ५ संवर्त्तः; ६ भुवन आप्त्यः; ८ भरद्वाजः॥ देवता—१, २, ३ अग्निः; ४, ८, १० इन्द्रः; ५ उषाः; ६, ७, ९ विश्वेदेवाः॥ छन्दः—१, ३, ४, ७ द्विपदा गायत्री; २, ५, ६ द्विपदा पङ्क्तिः; ८, ९ द्विपदा त्रिष्टुप्; १० एकपदा गायत्री॥ स्वरः—१, ३, ४, ७, १० षड्जः; २, ५, ६ पञ्चमः; ८, ९ धैवतः॥

अचेत्यग्निश्चिकितिर्हव्यवाड् न सुमद्रथः ॥ १ ॥
अग्ने त्वं नो अन्तम उत त्राता शिवो भुवो वरूथ्यः ॥ २ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

भगो न चित्रो अग्निर्महोनां दधाति रत्नम् ॥ ३ ॥

विश्वस्य प्र स्तोभ पुरो वा सन् यदि वेह नूनम् ॥ ४ ॥

उषा अप स्वसुष्टमः सं वर्तयति वर्तनिं सुजाता ॥ ५ ॥

इमा नु कं भुवना सीषधेमेन्द्रश्च विश्वे च देवाः ॥ ६ ॥

वि स्रुतयो यथा पथ इन्द्र त्वद्यन्तु रातयः ॥ ७ ॥

अया वाजं देवहितं सनेम मदेम शतहिमाः सुवीराः ॥ ८ ॥

ऊर्जा मित्रो वरुणः पिन्वतेडाः पीवरीमिषं कृणुहि न इन्द्र ॥ ९ ॥

इन्द्रो विश्वस्य राजति ॥ १० ॥

द्वादशी दशतिः

ऋषिः—१, १० गृत्समदः; २ गौराङ्गिरसः; ३, ५, ९ परुच्छेपः; ४ रेभः; ६ एवयामरुत्; ७ अनानतः पारुच्छेपिः; ८ नकुलः॥ देवता—१, ३, ४, १० इन्द्रः; २ सूर्यः; ५ विश्वेदेवाः; ६ मरुतः; ७ पवमानः; ८ सविता; ९ अग्निः॥ छन्दः—१, १० अष्टिः; २, ४, ६ जगती; ३, ५, ७, ९ अत्यष्टिः; ८, १० अति-शक्वरी॥ स्वरः—१, १० मध्यमः; २, ४, ६ निषादः; ३, ५, ७, ९ गान्धारः; ८, १० पञ्चमः॥

त्रिकद्रूकेषु महिषो यवाशिरं तुविशुष्मस्तृम्पत्सोममपिब-
द्विष्णुना सुतं यथावशम्। स ई ममाद महि कर्म कर्तवे
महामुरुं सैनं सश्चद्देवो देवं सत्य इन्दुः सत्यमिन्द्रम् ॥ १ ॥

अयं सहस्रमानवो दृशः कवीनां मतिर्ज्योतिर्विधर्मा।
ब्रध्नः समीचीरुषसः समैरयदरेपसः सचेतसः स्वसरे
मन्युमन्तश्चिता गोः ॥ २ ॥

एन्द्र याह्युप नः परावतो नायमच्छा विदथानीव
सत्पतिरस्ता राजेव सत्पतिः। हवामहे त्वा प्रयस्वन्तः
सुतेष्वा पुत्रासो न पितरं वाजसातये मंहिष्ठं वाजसातये ॥ ३ ॥

तमिन्द्रं जोहवीमि मघवानमुग्रं सत्रा दधानमप्रतिष्कुतं
श्रवांसि भूरिः। मंहिष्ठो गीर्भिरा च यज्ञियो ववर्त राये
नो विश्वा सुपथा कृणोतु वज्री ॥ ४ ॥

अस्तु श्रौषट् पुरो अग्निं धिया दध आ नु त्यच्छर्द्धो
दिव्यं वृणीमह इन्द्रवायू वृणीमहे ।
यद्ध क्राणा विवस्वते नाभा सन्दाय नव्यसे ।
अध प्र नूनमुप यन्ति धीतयो देवाँ अच्छा न धीतयः ॥ ५ ॥

प्र वो महे मतयो यन्तु विष्णवे मरुत्वते गिरिजा
एवयामरुत्। प्र शर्धाय प्र यज्यवे सुखादये तवसे
भन्ददिष्टये धुनिव्रताय शवसे ॥ ६ ॥

अया रुचा हरिण्या पुनानो विश्वा द्वेषांसि तरति सयुग्वभिः
सूरो न सयुग्वभिः। धारा पृष्ठस्य रोचते पुनानो अरुषो
हरिः। विश्वा यद्रूपा परियास्यृक्वभिः ससास्येभिर्ऋक्वभिः ॥ ७ ॥

अभि त्यं देवं सवितारमोण्योः कविक्रतुमर्चामि सत्यसवं
रत्नधामभि प्रियं मतिम्। ऊर्ध्वा यस्यामतिर्भा अदिद्युतत्
सवीमनि हिरण्यपाणिरमिमीत सुक्रतुः कृपा स्वः ॥ ८ ॥

अग्निं होतारं मन्ये दास्वन्तं वसोः सूनुं सहसो जातवेदसं विप्रं
न जातवेदसम्। य ऊर्ध्वया स्वध्वरो देवो देवाच्या कृपा।
घृतस्य विभ्राष्टिमनु शुक्रशोचिष आजुह्वानस्य सर्पिषः ॥ ९ ॥

तव त्यन्नर्यं नृतोऽप इन्द्र प्रथमं पूर्व्यं दिवि प्रवाच्यं कृतम्।
यो देवस्य शवसा प्रारिणा असु रिणन्नपः ।
भुवो विश्वमभ्यदेवमोजसा विदेदूर्जं शतक्रतुर्विदेदिषम् ॥ १० ॥

इति सामवेद संहितायामैन्द्रं काण्डम्॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अथ पवमानं काण्डम्

अथ पञ्चमोऽध्यायः

प्रथमा दशतिः

ऋषिः—१, ४ अमहीयुः; २ मधुच्छन्दाः; ३ भृगुर्वारुणिः; ५ त्रितः; ६ कश्यपः; ७ जमदग्निः; ८ दृढच्युत आगस्त्यः; ९, १० काश्यपोऽसितः॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

उच्चा ते जातमन्धसो दिवि सद्भूम्या ददे। उग्रं शर्म महि श्रवः॥ १॥
स्वादिष्ठया मदिष्ठया पवस्व सोम धारया। इन्द्राय पातवे सुतः॥ २॥
वृषा पवस्व धारया मरुत्वते च मत्सरः। विश्वा दधान ओजसा॥ ३॥
यस्ते मदो वरेण्यस्तेन पवस्वान्धसा। देवावीरघशंसहा॥ ४॥
तिस्रो वाच उदीरते गावो मिमन्ति धेनवः। हरिरेति कनिक्रदत्॥ ५॥
इन्द्रायेन्दो मरुत्वते पवस्व मधुमत्तमः। अर्कस्य योनिमासदम्॥ ६॥
असाव्यंशुर्मदायाप्सु दक्षो गिरिष्ठाः। श्येनो न योनिमासदत्॥ ७॥
पवस्व दक्षसाधनो देवेभ्यः पीतये हरे। मरुद्भ्यो वायवे मदः॥ ८॥
परि स्वानो गिरिष्ठाः पवित्रे सोमो अक्षरत्। मदेषु सर्वधा असि॥ ९॥
परि प्रिया दिवः कविर्वयांसि नप्त्योर्हितः। स्वानैर्याति कविक्रतुः॥ १०॥

द्वितीया दशतिः

ऋषिः—१ श्यावाश्वः; २ त्रितः; ३, ८ अमहीयुः; ४ भृगुः; ५, ६ कश्यपः; ७ निधुविः काश्यपः; ९, १० काश्यपोऽसितः॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

प्र सोमासो मदच्युतः श्रवसे नो मघोनाम्। सुता विदथे अक्रमुः॥ १॥
प्र सोमासो विपश्चितोऽपो नयन्त ऊर्मयः। वनानि महिषाइव॥ २॥
पवस्वेन्दो वृषा सुतः कृधी नो यशसो जने। विश्वा अप द्विषो जहि॥ ३॥
वृषा ह्यसि भानुना द्युमन्तं त्वा हवामहे। पवमान स्वर्दृशम्॥ ४॥
इन्दुः पविष्ट चेतनः प्रियः कवीनां मतिः। सृजदश्वं रथीरिव॥ ५॥
असृक्षत प्र वाजिनो गव्या सोमासो अश्वया। शुक्रासो वीरयाशवः॥ ६॥
पवस्व देव आयुषगिन्द्रं गच्छतु ते मदः। वायुमा रोह धर्मणा॥ ७॥
पवमानो अजीजनद् दिवश्चित्रं न तन्यतुम्। ज्योतिर्वैश्वानरं बृहत्॥ ८॥
परि स्वानास इन्दवो मदाय बर्हणा गिरा। मधो अर्षन्ति धारया॥ ९॥
परि प्रासिष्यदत् कविः सिन्धोरूर्मावधि श्रितः। कारुं बिभ्रत् पुरुस्पृहम्॥ १०॥

इति पञ्चमः प्रपाठकः समाप्तः॥

अथ षष्ठप्रपाठके प्रथमोऽर्धः

तृतीया दशतिः

ऋषिः—१, ८, ९ अमहीयुः; २ बृहन्मतिराङ्गिरसः; ३ जमदग्निः; ४ प्रभूवसुः; ५ मेध्यातिथिः; ६, ७ निधुविः काश्यपः; १० उचथ्यः॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

उपो षु जातमप्तुरं गोभिर्भङ्गं परिष्कृतम्। इन्दुं देवा अयासिषुः॥ १॥
पुनानो अक्रमीदभि विश्वा मृधो विचर्षणिः। शुम्भन्ति विप्रं धीतिभिः॥ २॥
आविशन् कलशं सुतो विश्वा अर्षन्नभि श्रियः। इन्दुरिन्द्राय धीयते॥ ३॥
असर्जि रथ्यो यथा पवित्रे चम्वोः सुतः। कार्ष्मन् वाजी न्यक्रमीत्॥ ४॥
प्र यद्गावो न भूर्णयस्त्वेषा अयासो अक्रमुः। घ्नन्तः कृष्णामप त्वचम्॥ ५॥
अपघ्नन् पवसे मृधः क्रतुवित् सोम मत्सरः। नुदस्वादेवयुं जनम्॥ ६॥
अया पवस्व धारया यया सूर्यमरोचयः। हिन्वानो मानुषीरपः॥ ७॥
स पवस्व य आविथेन्द्रं वृत्राय हन्तवे। वव्रिवांसं महीरपः॥ ८॥
अया वीती परि स्रव यस्त इन्दो मदेष्वा। अवाहन्नवतीर्नव॥ ९॥
परि द्युक्ष सनद्रयिं भरद्वाजं नो अन्धसा। स्वानो अर्ष पवित्र आ॥ १०॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

चतुर्थी दशतिः

ऋषिः—१ मेधातिथिः; २, ७ भृगुः; ३ उचथ्यः; ४ अवत्सारः; ५ निधुविः काश्यपः; ६, १० असितः; ८, ९ कश्यपो मारीचः; ११ कविः; १२ जमदग्निः; १३ अयास्य आङ्गिरसः; १४ अमहीयुः। देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

अचिक्रदद् वृषा हरिर्महान् मित्रो न दर्शतः। स सूर्येण दिद्युते॥ १॥
आ ते दक्षं मयोभुव वह्निमद्या वृणीमहे। पान्तमा पुरुस्पृहम्॥ २॥
अध्वर्यो अद्रिभिः सुतं सोमं पवित्र आ नय। पुनाहीन्द्राय पातवे॥ ३॥
तरत् स मन्दी धावति धारा सुतस्यान्धसः। तरत् स मन्दी धावति॥ ४॥
आ पवस्व सहस्त्रिणं रयिं सोम सुवीर्य्यम्। अस्मे श्रवांसि धारय॥ ५॥
अनु प्रत्नास आयवः पदं नवीयो अक्रमुः। रुचे जनन्त सूर्यम्॥ ६॥
अर्षा सोम द्युमत्तमोऽभि द्रोणानि रोरुवत्। सीदन् योनौ वनेष्वा॥ ७॥
वृषा सोम द्युमाँ असि वृषा देव वृषव्रतः। वृषा धर्माणि दधिषे॥ ८॥
इषे पवस्व धारया मृज्यमानो मनीषिभिः। इन्दो रुचाभि गा इहि॥ ९॥
मन्द्रया सोम धारया वृषा पवस्व देवयुः। अव्या वारेभिरस्मयुः॥ १०॥
अया सोम सुकृत्यया महान्त्सन्त्रभ्यवर्धथाः। मन्दान इद् वृषायसे॥ ११॥
अयं विचर्षणिर्हितः पवमानः स चेतति। हिन्वान आप्यं बृहत्॥ १२॥
प्र न इन्दो महे तु न ऊर्मिं न बिभ्रदर्षसि। अभि देवाँ अयास्यः॥ १३॥
अपघ्नन् पवते मृधोऽप सोमो अराव्णः। गच्छन्निन्द्रस्य निष्कृतम्॥ १४॥

पञ्चमी दशतिः

ऋषिः—भरद्वाजः कश्यपो गोतमोऽत्रिर्विश्वामित्रो जमदग्निर्वसिष्ठः॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—बृहती॥ स्वरः—मध्यमः॥

पुनानः सोम धारयापो वसानो अर्षसि।
आ रत्नधा योनिमृतस्य सीदस्युत्सो देवो हिरण्ययः॥ १॥
परीतो षिञ्चता सुतं सोमो य उत्तमं हविः।
दधन्वाँ यो नर्यो अप्स्वाऽन्तरा सुषाव सोममद्रिभिः॥ २॥
आ सोम स्वानो अद्रिभिस्तिरो वाराण्यव्यया।
जनो न पुरि चम्वोर्विशद्धरिः सदो वनेषु दधिषे॥ ३॥
प्र सोम देववीतये सिन्धुर्न पिप्ये अर्णसा।
अंशोः पयसा मदिरो न जागृविरच्छा कोशं मधुश्चुतम्॥ ४॥
सोम उ ष्वाणः सोतृभिरधि ष्णुभिरवीनाम्।
अश्वयेव हरिता याति धारया मन्द्रया याति धारया॥ ५॥
तवाहं सोम रारण सख्य इन्दो दिवेदिवे।
पुरूणि बभ्रो नि चरन्ति मामव परिधीं रति ताँ इहि॥ ६॥
मृज्यमानः सुहस्त्या समुद्रे वाचमिन्वसि।
रयिं पिशङ्गं बहुलं पुरुस्पृहं पवमानाभ्यर्षसि॥ ७॥
अभि सोमास आयवः पवन्ते मद्यं मदम्।
समुद्रस्याधि विष्टपे मनीषिणो मत्सरासो मदच्युतः॥ ८॥
पुनानः सोम जागृविरव्या वारैः परि प्रियः।
त्वं विप्रो अभवोऽङ्गिरस्तम मध्वा यज्ञं मिमिक्ष णः॥ ९॥
इन्द्राय पवते मदः सोमो मरुत्वते सुतः।
सहस्त्रधारो अत्यव्यमर्षति तमी मृजन्त्यायवः॥ १०॥
पवस्व वाजसातमोऽभि विश्वानि वार्या।
त्वं समुद्रः प्रथमे विधर्मन् देवेभ्यः सोम मत्सरः॥ ११॥
पवमाना असृक्षत पवित्रमति धारया।
मरुत्वन्तो मत्सर इन्द्रिया हया मेधामभि प्रयांसि च॥ १२॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

षष्ठी दशतिः

ऋषिः—१, ९ उशनाः काव्यः; २ वृषगणो वासिष्ठः; ३, ७ पराशरः शाक्त्यः; ४, ६ वसिष्ठो मैत्रावरुणः; ५, १० प्रतर्दनो दैवोदासिः; ८ प्रस्कण्वः काण्वः॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—त्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः॥

प्र तु द्रव परि कोशं नि षीद नृभिः पुनानो अभि वाजमर्ष ।
अश्वं न त्वा वाजिनं मर्जयन्तोऽच्छा बर्ही रशनाभिर्नयन्ति ॥ १ ॥

प्र काव्यमुशनेव ब्रुवाणो देवो देवानां जनिमा विवक्ति ।
महिव्रतः शुचिबन्धुः पावकः पदा वराहो अभ्येति रेभन् ॥ २ ॥

तिस्रो वाच ईरयति प्र वह्निर्ऋतस्य धीतिं ब्रह्मणो मनीषाम् ।
गावो यन्ति गोपतिं पृच्छमानाः सोमं यन्ति मतयो वावशानाः ॥ ३ ॥

अस्य प्रेषा हेमना पूयमानो देवो देवेभिः समपृक्त रसम् ।
सुतः पवित्रं पर्येति रेभन् मितेव सद्म पशुमन्ति होता ॥ ४ ॥

सोमः पवते जनिता मतीनां जनिता दिवो जनिता पृथिव्याः ।
जनिताग्नेर्जनिता सूर्यस्य जनितेन्द्रस्य जनितोत विष्णोः ॥ ५ ॥

अभि त्रिपृष्ठं वृषणं वयोधामङ्गोषिणमवावशन्त वाणीः ।
वना वसानो वरुणो न सिन्धुर्वि रत्नधा दयते वार्याणि ॥ ६ ॥

अक्रान्त्समुद्रः प्रथमे विधर्मं जनयन्प्रजा भुवनस्य गोपाः ।
वृषा पवित्रे अधि सानो अव्ये बृहत्सोमो वावृधे स्वानो अद्रिः ॥ ७ ॥

कनिक्रन्ति हरिरा सृज्यमानः सीदन् वनस्य जठरे पुनानः ।
नृभिर्यतः कृणुते निर्णिजं गामतो मतिं जनयत स्वधाभिः ॥ ८ ॥

एष स्य ते मधुमाँ इन्द्र सोमो वृषा वृष्णः परि पवित्रे अक्षाः ।
सहस्रदाः शतदा भूरिदावा शश्वत्तमं बर्हिरा वाज्यस्थात् ॥ ९ ॥

पवस्व सोम मधुमाँ ऋतावापो वसानो अधि सानो अव्ये ।
अव द्रोणानि घृतवन्ति रोह मदिन्तमो मत्सरः इन्द्रपानः ॥ १० ॥

सप्तमी दशतिः

ऋषिः—१ प्रतर्दनः; २, १० पराशरः शाक्त्यः; ३ इन्द्रप्रमतिर्वासिष्ठः; ४ वसिष्ठो मैत्रावरुणः; ५ मृडीको वासिष्ठः; ६ नोधा गोतमः; ७ कण्वो घौरः; ८ मन्युर्वासिष्ठः; ९ कुत्स आङ्गिरसः; ११ कश्यपो मारीचः; १२ प्रस्कण्वः काण्वः॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—त्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः॥

प्र सेनानीः शूरो अग्रे रथानां गव्यन्नेति हर्षते अस्य सेना ।
भद्रान्कृण्वन्निन्द्रहवान्त्सखिभ्य आ सोमो वस्त्रा रभसानि दत्ते ॥ १ ॥

प्र ते धारा मधुमतीरसृग्रन् वारं यत्पूतो अत्येष्यव्यम् ।
पवमान पवसे धाम गोनां जनयन्त्सूर्यमपिन्वो अर्कैः ॥ २ ॥

प्र गायताभ्यर्चाम देवान्त्सोमं हिनोत महते धनाय ।
स्वादुः पवतामति वारमव्यमा सीदतु कलशं देव इन्दुः ॥ ३ ॥

प्र हिन्वानो जनिता रोदस्यो रथो न वाजं सनिषन्नयासीत् ।
इन्द्रं गच्छन्नायुधा संशिशानो विश्वा वसु हस्तयोरादधानः ॥ ४ ॥

तक्षद्यदी मनसो वेनतो वाग् ज्येष्ठस्य धर्म द्युक्षोरनीके ।
आदीमायन् वरमा वावशाना जुष्टं पतिं कलशे गाव इन्दुम् ॥ ५ ॥

साकमुक्षो मर्जयन्त स्वसारो दश धीरस्य धीतयो धनुत्रीः ।
हरिः पर्यद्रवज्जाः सूर्यस्य द्रोणं ननक्षे अत्यो न वाजी ॥ ६ ॥

अधि यदस्मिन् वाजिनीव शुभः स्पर्धन्ते धियः सूरे न विशः ।
अपो वृणानः पवते कवीयान् व्रजं न पशुवर्धनाय मन्म ॥ ७ ॥

इन्दुर्वाजी पवते गोन्योघा इन्द्रे सोमः सह इन्वन्मदाय ।
हन्ति रक्षो बाधते पर्यरातिं वरिवस्कृण्वन् वृजनस्य राजा ॥ ८ ॥

अया पवा पवस्वैना वसूनि माँश्चत्व इन्दो सरसि प्र धन्व ।
ब्रध्नश्चिद्यस्य वातो न जूतिं पुरुमेधाश्चित्तकवे नरं धात् ॥ ९ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

महत् तत् सोमो महिषश्चकारापां यद्गर्भोऽ वृणीत देवान् ।
अदधादिन्द्रे पवमान ओजोऽजनयत् सूर्ये ज्योतिरिन्दुः ॥ १० ॥
असर्जि वक्वा रथ्ये यथाजौ धिया मनोता प्रथमा मनीषा ।
दश स्वसारो अधि सानो अव्ये मृजन्ति वह्निं सदनेष्वच्छ ॥ ११ ॥
अपामिवेदूर्मयस्तर्तुराणाः प्र मनीषा ईरते सोममच्छ ।
नमस्यन्तीरुप च यन्ति सं चाच विशन्त्युशतीरुशन्तम् ॥ १२ ॥

इति षष्ठप्रपाठकस्य प्रथमोऽर्धः ॥

अथ षष्ठप्रपाठके द्वितीयोऽर्धः

अष्टमी दशतिः

ऋषिः—१ अन्धीगुः श्यावाश्विः; २ नहुषो मानवः; ३ ययातिर्नाहुषः; ४ मनुः सांवरणः; ५, ८ ऋजिष्वाम्बरीषौ; ६, ७ रेभसूनू काश्यपौ; ९ प्रजापतिर्वाच्यो वा ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—१-६, ८, ९ अनुष्टुप्; ७ बृहती ॥ स्वरः—१-६, ८, ९ गान्धारः; ७ मध्यमः ॥

५४५. पुरोजिती वो अन्धसः सुताय मादयित्नवे ।
अप श्वानं श्नथिष्टन सखायो दीर्घजिह्व्यम् ॥ १ ॥
अयं पूषा रयिर्भगः सोमः पुनानो अर्षति ।
पतिर्विश्वस्य भूमनो व्यख्यद्रोदसी उभे ॥ २ ॥
सुतासो मधुमत्तमाः सोमा इन्द्राय मन्दिनः ।
पवित्रवन्तो अक्षरन् देवान् गच्छन्तु वो मदाः ॥ ३ ॥
सोमाः पवन्त इन्दवोऽस्मभ्यं गातुवित्तमाः ।
मित्राः स्वाना अरेपसः स्वाध्यः स्वर्विदः ॥ ४ ॥
अभी नो वाजसातमं रयिमर्ष शतस्पृहम् ।
इन्दो सहस्त्रभर्णसं तुविद्युम्नं विभासहम् ॥ ५ ॥

अभी नवन्ते अद्रुहः प्रियमिन्द्रस्य काम्यम् ।
वत्सं न पूर्व आयुनि जातं रिहन्ति मातरः ॥ ६ ॥
आ हर्यताय धृष्णवे धनुष्टन्वन्ति पौंस्यम् ।
शुक्रा वि यन्त्यसुराय निर्णिजे विपामग्रे महीयुवः ॥ ७ ॥
परि त्यं हर्यतं हरिं बभ्रुं पुनन्ति वारेण ।
यो देवान् विश्वाँ इत् परि मदेन सह गच्छति ॥ ८ ॥
प्र सुन्वानायान्धसो मतीं न वष्ट तद्वचः ।
अप श्वानमराधसं हतां मखं न भृगवः ॥ ९ ॥

नवमी दशतिः

ऋषिः—१-३, ५ कविर्भार्गवः; ४, ६ ऋषिगणः; ७ रेणुर्वैश्वामित्रः; ८ वेनो भार्गवः; ९ वसुर्भारद्वाजः; १० वत्सप्रीः; ११ अत्रिर्भौमः; १२ पवित्र आङ्गिरसः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—जगती ॥ स्वरः—निषादः ॥

अभि प्रियाणि पवते चनोहितो नामानि यह्वो अधि येषु वर्धते ।
आ सूर्यस्य बृहतो बृहन्नधि रथं विष्वञ्चमरुहद् विचक्षणः ॥ १ ॥
अचोदसो नो धन्वन्विन्दवः प्र स्वानासो बृहद् देवेषु हरयः ।
वि चिदश्नाना इषयो अरातयोऽर्यो नः सन्तु सनिषन्तु नो धियः ॥ २ ॥
एष प्र कोशे मधुमाँ अचिक्रददिन्द्रस्य वज्रो वपुषो वपुष्टमः ।
अभ्यृतस्य सुदुघा घृतश्चुतो वाश्रा अर्षन्ति पयसा च धेनवः ॥ ३ ॥
प्रो अयासीदिन्दुरिन्द्रस्य निष्कृतं सखा सख्युर्न प्र मिनाति सङ्गिरम् ।
मर्यइव युवतिभिः समर्षति सोमः कलशे शतयामना पथा ॥ ४ ॥
धर्ता दिवः पवते कृत्व्यो रसो दक्षो देवानामनुमाद्यो नृभिः ।
हरिः सृजानो अत्यो न सत्वभिर्वृथा पाजांसि कृणुषे नदीष्वा ॥ ५ ॥
वृषा मतीनां पवते विचक्षणः सोमो अह्नां प्रतरीतोषसां दिवः ।
प्राणा सिन्धूनां कलशाँ अचिक्रददिन्द्रस्य हार्द्याविशन्मनीषिभिः ॥ ६ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

त्रिरस्मै सप्त धेनवो दुदुह्रिरे सत्यामाशिरं परमे व्योमनि।
चत्वार्यन्या भुवनानि निर्णिजे चारूणि चक्रे यदृतैरवर्धत॥ ७॥

इन्द्राय सोम सुषुतः परि स्रवापामीवा भवतु रक्षसा सह।
मा ते रसस्य मत्सत द्व्याविनो द्रविणस्वन्त इह सन्त्विन्दवः॥ ८॥

असावि सोमो अरुषो वृषा हरी राजेव दस्मो अभि गा अचिक्रदत्।
पुनानो वारमत्येष्यव्ययं श्येनो न योनिं घृतवन्तमासदत्॥ ९॥

प्र देवमच्छा मधुमन्त इन्दवोऽसिष्यदन्त गाव आ न धेनवः।
बर्हिषदो वचनावन्त ऊधभिः परिस्रुतमुस्रिया निर्णिजं धिरे॥ १०॥

अञ्जते व्यञ्जते समञ्जते क्रतुं रिहन्ति मध्वाभ्यञ्जते।
सिन्धोरुच्छ्वासे पतयन्तमुक्षणं हिरण्यपावाः पशुमप्सु गृभ्णते॥ ११॥

पवित्रं ते विततं ब्रह्मणस्पते प्रभुर्गात्राणि पर्येषि विश्वतः।
अतप्ततनूर्न तदामो अश्नुते शृतास इद् वहन्तः सं तदाशत॥ १२॥

दशमी दशतिः

ऋषिः—१, ७, ११ अग्निश्चाक्षुषः; २ चक्षुर्मानवः; ३, ४, ९, १० पर्वतनारदौ; ५ व्रित आप्त्यः; ६ मनुराप्सवः; ८, १२ द्वित आप्त्यः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—उष्णिक्॥ स्वरः—ऋषभः॥

इन्द्रमच्छ सुता इमे वृषणं यन्तु हरयः। श्रुष्टे जातास इन्दवः स्वर्विदः॥ १॥
प्र धन्वा सोम जागृविरिन्द्रायेन्दो परि स्रव। द्युमन्तं शुष्ममा भर स्वर्विदम्॥ २॥
सखाय आ नि षीदत पुनानाय प्र गायत। शिशुं न यज्ञैः परि भूषत श्रिये॥ ३॥
तं वः सखायो मदाय पुनानमभि गायत। शिशुं न हव्यैः स्वदयन्त गूर्तिभिः॥ ४॥
प्राणा शिशुर्महीनां हिन्वन्नृतस्य दीधितिम्। विश्वा परि प्रिया भुवदध द्विता॥ ५॥
पवस्व देववीतय इन्दो धाराभिरोजसा। आ कलशं मधुमान्त्सोम नः सदः॥ ६॥
सोमः पुनान ऊर्मिणाव्यं वारं वि धावति। अग्रे वाचः पवमानः कनिक्रदत्॥ ७॥

प्र पुनानाय वेधसे सोमाय वच उच्यते। भृतिं न भरा मतिभिर्जुजोषते॥ ८॥
गोमन्न इन्दो अश्ववत् सुतः सुदक्ष धनिव। शुचिं च वर्णमधि गोषु धारय॥ ९॥
अस्मभ्यं त्वा वसुविदमभि वाणीरनूषत। गोभिष्टे वर्णमभि वासयामसि॥ १०॥
पवते हर्यतो हरिरति ह्वरांसि रंह्या। अभ्यर्ष स्तोतृभ्यो वीरवद्यशः॥ ११॥
परि कोशं मधुश्चुतं सोमः पुनानो अर्षति। अभि वाणीरृषीणां सप्ता नूषत॥ १२॥

एकादशी दशतिः

ऋषिः—१ गौरिवीतिः शाक्त्यः; २ ऊर्ध्वसद्मा आङ्गिरसः; ३ ऋजिश्वा भरद्वाजः; ४ कृतयशा आङ्गिरसः; ५ ऋणञ्चयः; ६ शक्तिर्वासिष्ठः; ७, ८ उरुराङ्गिरसः॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—१-४, ६ ककुबुष्णिक्; ५ यवमध्या गायत्री; ७, ८ काकुभः प्रगाथः (७ ककुबुष्णिक्; ८ सतोबृहती)॥ स्वरः—१-४, ६ ऋषभः; ५ षड्जः; ७, ८ मध्यमः॥

पवस्व मधुमत्तम इन्द्राय सोम क्रतुवित्तमो मदः। महि द्युक्षतमो मदः॥ १॥
अभि द्युम्नं बृहद्यश इषस्पते दिदीहि देव देवयुम्। वि कोशं मध्यमं युव॥ २॥
आ सोता परि षिञ्चताश्वं न स्तोममप्तुरं रजस्तुरम्। वनप्रक्षमुदप्रुतम्॥ ३॥
एतमु त्यं मदच्युतं सहस्रधारं वृषभं दिवोदुहम्। विश्वा वसूनि बिभ्रतम्॥ ४॥
स सुन्वे यो वसूनां यो रायामानेता य इडानाम्। सोमो यः सुक्षितीनाम्॥ ५॥
त्वं ह्याङ्ग दैव्य पवमान जनिमानि द्युमत्तमः। अमृतत्वाय घोषयन्॥ ६॥
एष स्य धारया सुतोऽव्या वारेभिः पवते मदिन्तमः। क्रीळन्नूर्मिरपामिव॥ ७॥
य उस्रिया अपि या अन्तरश्मनि निर्गा अकृन्तदोजसा। अभि व्रजं तत्निषे गव्यमश्व्यं वर्मीव धृष्णवा रुज। ओ३म् वर्मीव धृष्णवा रुज॥ ८॥

इति षष्ठप्रपाठकस्य द्वितीयोऽर्धः॥

इति पञ्चमोऽध्यायः॥

इति पवमानं काण्डम्॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अथ आरण्यं काण्डम्

अथ षष्ठोऽध्यायः

अथ षष्ठप्रपाठकस्य तृतीयोऽर्धः

प्रथमा दशतिः

ऋषिः—१ भरद्वाजः; २ वसिष्ठः; ३, ६ वामदेवः; ४ शुनःशेपः; ५ गृत्समदः; ७, ८ अमहीयुः; ९ आत्मा॥ देवता—१-३ इन्द्रः; ४ वरुणः; ५, ७, ८ पवमानः सोमः; ६ विश्वेदेवाः; ९ अन्नम्॥ छन्दः—१ बृहती; २, ४, ५, ९ त्रिष्टुप्; ३, ७, ८ गायत्री; ६ एकपदा त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१ मध्यमः; २, ४-६, ९ धैवतः; ३, ७, ८ षडजः॥

इन्द्र ज्येष्ठं न आ भर ओजिष्ठं पुपुरि श्रवः ।
यद्धिधृक्षेम वज्रहस्त रोदसी ओभे सुशिप्र पप्राः ॥ १ ॥

इन्द्रो राजा जगतश्चर्षणीनामधिक्षमा विश्वरूपं यदस्य ।
ततो ददाति दाशुषे वसूनि चोदद्राध उपस्तुतं चिदर्वाक् ॥ २ ॥

यस्येदमा रजोयुजस्तुजे जने वनं स्वः । इन्द्रस्य रन्त्यं बृहत् ॥ ३ ॥

उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं वि मध्यमं श्रथाय ।
अथादित्य व्रते वयं तवानागसो अदितये स्याम ॥ ४ ॥

त्वया वयं पवमानेन सोम भरे कृतं वि चिनुयाम शश्वत् ।
तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्तामदितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः ॥ ५ ॥

इमं वृषणं कृणुते कमिन्माम् ॥ ६ ॥

स न इन्द्राय यज्यवे वरुणाय मरुद्भ्यः ।
वरिवोवित् परिस्रव ॥ ७ ॥

एना विश्वान्यर्य आ द्युम्नानि मानुषाणाम् ।
सिषासन्तो वनामहे ॥ ८ ॥

पूर्वार्चिकः

अहमस्मि प्रथमजा ऋतस्य पूर्वं देवेभ्यो अमृतस्य नाम ।
यो मा ददाति स इदेवमावदहमन्नमन्नमदन्तमद्मि ॥ ९ ॥

द्वितीया दशतिः

ऋषिः—१ श्रुतकक्षः; २ पवित्रः; ३, ४ मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः; ५ प्रथः; ६ गृत्समदः; ७ नृमेधपुरुमेधौ॥ देवता—१, ३, ४, ७ इन्द्रः; २ पवमानः; ५ विंश्वेदेवाः; ६ वायुः॥ छन्दः—१, ३, ४, ६ गायत्री; २ जगती; ५ त्रिष्टुप्; ७ अनुष्टुप्॥ स्वरः—१, ३, ४, ६ षड्जः; २ निषादः; ५ धैवतः; ७ गान्धारः॥

त्वमेतदधारयः कृष्णासु रोहिणीषु च । परुष्णीषु रुशत् पयः ॥ १ ॥

अरूरुचदुषसः पृश्निरग्रिय उक्षा मिमेति भुवनेषु वाजयुः ।
मायाविनो ममिरे अस्य मायया नृचक्षसः पितरो गर्भमादधुः ॥ २ ॥

इन्द्र इद्धर्योः सचा सम्मिश्ल आ वचोयुजा ।
इन्द्रो वज्री हिरण्ययः ॥ ३ ॥

इन्द्र वाजेषु नोऽव सहस्रप्रधनेषु च । उग्र उग्राभिरूतिभिः ॥ ४ ॥

प्रथश्च यस्य सप्रथश्च नामानुष्टुभस्य हविषो हविर्यत् ।
धातुर्द्युतानात् सवितुश्च विष्णो रथन्तरमा जभारा वसिष्ठः ॥ ५ ॥

नियुत्वान् वायवा गह्ययं शुक्रो अयामि ते । गन्तासि सुन्वतो गृहम्॥ ६ ॥

यज्जायथा अपूर्व्य मघवन्वृत्रहत्याय । तत्पृथिवीमप्रथयस्तदस्तभ्ना उतो दिवम्॥ ७ ॥

तृतीया दशतिः

ऋषिः—१, ५, ७, १० वामदेवः; २, ३ गोतमः; ४ मधुच्छन्दाः; ६ गृत्समदः; ८, ९ भरद्वाजो बार्हस्पत्यः; ११ हिरण्यस्तूपः; १२, १३ विश्वामित्रः॥ देवता—१ प्रजापतिः; २, ३ पवमानः सोमः; ४-६, १३ अग्निः; ७ रात्रिः; ८ वैश्वानरः; ९ विश्वेदेवाः; १० लिङ्गोक्ताः; ११ इन्द्रः; १२ आत्मा॥ छन्दः—१, ७ अनुष्टुप्; २, ३, ५, ६, ९, ११-१३ त्रिष्टुप्; ४ गायत्री; ८ जगती; १० महापङ्क्तिः॥ स्वरः—१, ७ गान्धारः; २, ३, ५, ६, ९, ११-१३ धैवतः; ४ षड्जः; ८ निषादः; १० पञ्चमः॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मयि वर्चो अथो यशोऽथो यज्ञस्य यत्पयः ।
परमेष्ठी प्रजापतिर्दिवि द्यामिव दूंहतु ॥ १ ॥
सं ते पयांसि समु यन्तु वाजाः सं वृष्ण्यान्यभिमातिषाहः ।
आप्यायमानो अमृताय सोम दिवि श्रवांस्युत्तमानि धिष्व ॥ २ ॥
त्वमिमा ओषधीः सोम विश्वास्त्वमपो अजनयस्त्वं गाः ।
त्वमातनोरुवाँ३न्तरिक्षं त्वं ज्योतिषा वि तमो ववर्थ ॥ ३ ॥
अग्निमीडे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्। होतारं रत्नधातमम् ॥ ४ ॥
ते मन्वत प्रथमं नाम गोनां त्रिः सप्त परमं नाम जानन् ।
ता जानती रभ्यनूषत क्षा आविर्भुवन्नरुणीर्यशसा गावः ॥ ५ ॥
समन्या यन्त्युपयन्त्यन्याः समानमूर्वं नद्यस्पृणन्ति ।
तमू शुचिं शुचयो दीदिवांसमपान्नपातमुप यन्त्यापः ॥ ६ ॥
आ प्रागाद्भद्रा युवतिरह्नः केतून्त्समीर्त्सति ।
अभूद्भद्रा निवेशनी विश्वस्य जगतो रात्री ॥ ७ ॥
प्रक्षस्य वृष्णो अरुषस्य नू मह प्र नो वचो विदथा जातवेदसे।
वैश्वानराय मतिर्नव्यसे शुचिः सोमइव पवते चारुरग्नये ॥ ८ ॥
विश्वे देवा मम शृण्वन्तु यज्ञमुभे रोदसी अपां नपाच्च मन्म ।
मा वो वचांसि परिचक्ष्याणि वोचं सुम्नेष्विद्वो अन्तमा मदेम ॥ ९ ॥
यशो मा द्यावापृथिवी यशो मेन्द्रबृहस्पती ।
यशो भगस्य विन्दतु यशो मा प्रतिमुच्यताम् ।
यशस्व्या३स्याः संसदोऽहं प्रवदिता स्याम् ॥ १० ॥
इन्द्रस्य नु वीर्याणि प्रवोचं यानि चकार प्रथमानि वज्री ।
अहन्नहिमन्वपस्ततर्द प्र वक्षणा अभिनत् पर्वतानाम् ॥ ११ ॥

अग्निरस्मि जन्मना जातवेदा घृतं मे चक्षुरमृतं म आसन् ।
त्रिधातुरर्को रजसो विमानोऽजस्रं ज्योतिर्हविरस्मि सर्वम् ॥ १२ ॥
पात्यग्निर्विपो अग्रं पदं वेः पाति यह्वश्चरणं सूर्यस्य ।
पाति नाभा सप्तशीर्षाणमग्निः पाति देवानामुपमादमृष्वः ॥ १३ ॥

चतुर्थी दशतिः

ऋषिः—१, २, ८-१२ वामदेवः; ३-७ नारायणः॥ देवता—१ अग्निः; २ ऋतुः; ३-७ पुरुषः; ८ द्यावापृथिवी; ९, ११ इन्द्रः; १० आत्मन आशीः; १२ गौः॥ छन्दः—१, २ पङ्क्तिः; ३—७, ९, १० अनुष्टुप्; ८, ११, १२ त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१, २ पञ्चमः; ३-७, ९, १० गान्धारः; ८, ११, १२ धैवतः॥

भ्राजन्त्यग्ने समिधान दीदिवो जिह्वा चरत्यन्तरासनि ।
स त्वं नो अग्ने पयसा वसुविद्रयिं वर्चा दृशेऽदाः ॥ १ ॥
वसन्त इन्नु रन्त्यो ग्रीष्म इन्नु रन्त्यः ।
वर्षाण्यनु शरदो हेमन्तः शिशिर इन्नु रन्त्यः ॥ २ ॥
सहस्रशीर्षाः पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात् ।
स भूमिं सर्वतो वृत्वात्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम् ॥ ३ ॥
त्रिपादूर्ध्व उदैत् पुरुषः पादोऽस्येहाभवत् पुनः ।
तथा विष्वङ् व्यक्रामदशनानशने अभि ॥ ४ ॥
पुरुष एवेदं सर्वं यद् भूतं यच्च भाव्यम् ।
पादोऽस्य सर्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि ॥ ५ ॥
तावानस्य महिमा ततो ज्यायाँश्च पूरुषः ।
उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति ॥ ६ ॥
ततो विराडजायत विराजो अधि पूरुषः ।
स जातो अत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथो पुरः ॥ ७ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मन्ये वां द्यावापृथिवी सुभोजसौ ये अप्रथेथाममितमभि योजनम् ।
द्यावापृथिवी भवतं स्योने ते नो मुञ्चतमंहसः ॥८॥

हरी त इन्द्र शमश्रूणयुतो ते हरितौ हरी ।
तं त्वा स्तुवन्ति कवयः पुरुषासो वनर्गवः ॥९॥

यद्वच्चो हिरण्यस्य यद्वा वचो गवामुत ।
सत्यस्य ब्रह्मणो वचस्तेन मा सं सृजामसि ॥१०॥

सहस्तन्न इन्द्र दद्धयोज ईशे ह्यस्य महतो विरप्शिन् ।
क्रतुं न नृम्णं स्थविरं च वाजं वृत्रेषु शत्रून्त्सुहना कृधी नः ॥११॥

सहर्षभाः सहवत्सा उदेत विश्वा रूपाणि बिभ्रतीर्द्वर्यूष्नीः ।
उरुः पृथुरयं वो अस्तु लोक इमा आपः सुप्रपाणा इह स्त ॥१२॥

पञ्चमी दशतिः

ऋषिः—१ शतं वैखानसाः; २ विभ्राट् सौर्यः; ३ कुत्सः; ४-६ सार्पराज्ञी; ७-१४ प्रस्कण्वः काण्वः॥ देवता—१ अग्निः पवमानः; २-१४ सूर्यः॥ छन्दः—१, ४-१४ गायत्री; २ जगती; ३ त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१, ४-१४ षड्जः; २ निषादः; ३ धैवतः॥

अग्न आयूंषि पवस आसुवोर्जमिषं च नः। आरे बाधस्व दुच्छुनाम् ॥१॥
विभ्राड् बृहत् पिबतु सोम्यं मध्वायुर्दधद्यज्ञपतावविंहुतम् ।
वातजूतो यो अभिरक्षति त्मना प्रजाः पिपर्ति बहुधा वि राजति ॥२॥
चित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः ।
आप्रा द्यावापृथिवी अन्तरिक्षं सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च ॥३॥
आयं गौः पृश्निरक्रमीदसदन्मातरं पुरः। पितरं च प्रयन्त्स्वः ॥४॥
अन्तश्चरति रोचनास्य प्राणादपानती। व्यख्यन्महिषो दिवम् ॥५॥
त्रिंशद्धाम वि राजति वाक् पतङ्गाय धीयते। प्रति वस्तोरह द्युभिः ॥६॥
अप त्ये तायवो यथा नक्षत्रा यन्त्यक्तुभिः। सूराय विश्वचक्षसे ॥७॥

अदृश्रन्नस्य केतवो वि रश्मयो जनाँ अनु। भ्राजन्तो अग्नयो यथा ॥८॥
तरणिर्विश्वदर्शतो ज्योतिष्कृदसि सूर्य। विश्वमाभासि रोचनम् ॥९॥
प्रत्यङ् देवानां विशः प्रत्यङ्ङुदेषि मानुषान्। प्रत्यङ् विश्वं स्वर्दृशे ॥१०॥
येना पावक चक्षसा भुरण्यन्तं जनाँ अनु। त्वं वरुण पश्यसि ॥११॥
उद् द्यामेषि रजः पृथ्वहा मिमानो अक्तुभिः। पश्यञ्जन्मानि सूर्य ॥१२॥
अयुक्त सप्त शुन्ध्युवः सूरो रथस्य नप्त्यः। ताभिर्याति स्वयुक्तिभिः ॥१३॥
सप्त त्वा हरितो रथे वहन्ति देव सूर्य। शोचिष्केशं विचक्षण ॥१४॥

इत्यारण्यं काण्डम्॥

इति षष्ठप्रपाठकः षष्ठोऽध्यायः समाप्तः॥

इति सामवेद-संहितायां पूर्वार्चिकः॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अथ महानाम्न्यार्चिकः

ऋषिः—१-१० इन्द्रो वा प्रजापतिर्वा विष्णुर्वा विश्वामित्रो वा ॥ देवता—१-९ इन्द्रः; १० लिङ्गोक्ताः ॥ छन्दः—१-९ विराट्; १० पदपङ्क्तिः ॥

स्वरः—१-९ गान्धारः; १० पञ्चमः ॥

६४१. विदा मघवन् विदा गातुमनुशंसिषो दिशः ।
शिक्षा शचीनां पते पूर्वीणां पुरूवसो ॥ १ ॥
आभिष्ट्वमभिष्टिभिः स्वा३ऽन्नाशुः ।
प्रचेतन प्रचेतयेन्द्र द्युम्नाय न इषे ॥ २ ॥
एवा हि शक्रो राये वाजाय वज्रिवः ।
शविष्ठ वज्रिन्नृञ्जसे महिष्ठ वज्रिन्नृञ्जस आ याहि पिब मत्स्व ॥ ३ ॥
विदा राये सुवीर्यं भवो वाजानां पतिर्वशा अनु
महिष्ठ वज्रिन्नृञ्जसे यः शविष्ठः शूराणाम् ॥ ४ ॥
यो महिष्ठो मघोनामशुर्न शोचिः ।
चिकित्वो अभि नो नयेन्द्रो विदे तमु स्तुहि ॥ ५ ॥
ईशे हि शक्रस्तमूतये हवामहे जेतारमपराजितम् ।
स नः स्वर्षदति द्विषः क्रतुश्छन्द ऋतं बृहत् ॥ ६ ॥
इन्द्रं धनस्य सातये हवामहे जेतारमपराजितम् ।
स नः स्वर्षदति द्विषः स नः स्वर्षदति द्विषः ॥ ७ ॥
पूर्वस्य यत्ते अद्रिवोऽशुर्मदाय ।
सुम्न आ धेहि नो वसो पूर्तिः शविष्ठ शस्यते ।
वशी हि शक्रो नूनं तन्नव्यं संन्यसे ॥ ८ ॥
प्रभो जनस्य वृत्रहन्त्समर्येषु ब्रवावहै ।
शूरो यो गोषु गच्छति सखा सुशेवो अद्वयुः ॥ ९ ॥
एवाह्योऽ३ऽ३ऽ३व। एवा ह्यग्ने। एवा हीन्द्र ।
एवा हि पूषन्। एवा हि देवाः। ओं एवा हि देवाः ॥ १० ॥

इति महानाम्न्यार्चिकः समाप्तः ॥

उत्तरार्चिकः

अथ प्रथमोऽध्यायः

प्रथमप्रपाठकस्य प्रथमोऽर्धः

(१)

ऋषिः—असितः काश्यपो देवलो वा ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥

छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

उपास्मै गायता नरः पवमानायेन्दवे। अभि देवाँ इयक्षते ॥ १ ॥
अभि ते मधुना पयोऽथर्वाणो अशिश्रयुः। देवं देवाय देवयु ॥ २ ॥
स नः पवस्व शं गवे शं जनाय शमर्वते। शं राजन्नोषधीभ्यः ॥ ३ ॥

(२)

ऋषिः—कश्यपो मारीचः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥

स्वरः—षड्जः ॥

दविद्युतत्या रुचा परिष्टोभन्त्या कृपा। सोमाः शुक्रा गवाशिरः ॥ १ ॥
हिन्वानो हेतृभिर्हित आ वाजं वाज्यक्रमीत्। सीदन्तो वनुषो यथा ॥ २ ॥
ऋधक्सोम स्वस्तये संजग्मानो दिवा कवे। पवस्व सूर्यो दृशे ॥ ३ ॥

(३)

ऋषिः—शतं वैखानसाः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥

स्वरः—षड्जः ॥

पवमानस्य ते कवे वाजिन्त्सर्गा असृक्षत। अर्वन्तो न श्रवस्यवः ॥ १ ॥
अच्छा कोशं मधुश्चुतमसृग्रं वारे अव्यये। अवावशन्त धीतयः ॥ २ ॥
अच्छा समुद्रमिन्दवोऽस्तं गावो न धेनवः। अग्मन्नृतस्य योनिमा ॥ ३ ॥

(४)

ऋषिः—भरद्वाजः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अग्न आ याहि वीतये गृणानो हव्यदातये। नि होता सत्सि बर्हिषि ॥ १ ॥
तं त्वा समिद्भिरङ्गिरो घृतेन वर्धयामसि। बृहच्छोचा यविष्ठ्य ॥ २ ॥
स नः पृथु श्रवाय्यमच्छा देव विवाससि। बृहदग्ने सुवीर्यम् ॥ ३ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

(५)

ऋषिः—विश्वामित्रो जमदग्निर्वा ॥ देवता—मित्रावरुणौ ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

आ नो मित्रावरुणा घृतैर्गव्यूतिमुक्षतम्। मध्वा रजांसि सुक्रतू ॥ १ ॥
उरुशंसा नमोवृधा मह्ना दक्षस्य राजथः। द्राघिष्ठाभिः शुचिव्रता ॥ २ ॥
गृणाना जमदग्निना योनावृतस्य सीदतम्। पातं सोममृतावृधा ॥ ३ ॥

(६)

ऋषिः—हरिम्बिठिः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

आ याहि सुषुमा हि त इन्द्र सोमं पिबा इमम्। एदं बर्हिः सदो मम ॥ १ ॥
आ त्वा ब्रह्मयुजा हरी वहतामिन्द्र केशिना। उप ब्रह्माणि नः शृणु ॥ २ ॥
ब्रह्माणस्त्वा युजा वयं सोमपामिन्द्र सोमिनः। सुतावन्तो हवामहे ॥ ३ ॥

(७)

ऋषिः—विश्वामित्रो गाथिनः ॥ देवता—इन्द्राग्नी ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

इन्द्राग्नी आ गतं सुत गीर्भिर्नभो वरेण्यम्। अस्य पातं धियेषिता ॥ १ ॥
इन्द्राग्नी जरितुः सचा यज्ञो जिगाति चेतनः। अया पातमिमं सुतम् ॥ २ ॥
इन्द्रमग्निं कविच्छदा यज्ञस्य जूत्या वृणे। ता सोमस्येह तृम्पताम् ॥ ३ ॥

(८)

ऋषिः—अमहीयुराङ्गिरसः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

उच्चा ते जातमन्धसो दिवि सद्भूम्या ददे। उग्रं शर्म महि श्रवः ॥ १ ॥
स न इन्द्राय यज्यवे वरुणाय मरुद्भ्यः। वरिवोवित् परि स्रव ॥ २ ॥
एना विश्वान्यर्य आ द्युम्नानि मानुषाणाम्। सिषासन्तो वनामहे ॥ ३ ॥

(९)

ऋषिः—समर्थयः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—१ बार्हतः प्रगाथः, २ सतोबृहती ॥ स्वरः—१ मध्यमः, २ पञ्चमः ॥

६७५. पुनानः सोम धारयापो वसानो अर्षसि ।
आ रत्नधा योनिमृतस्य सीदस्युत्सो देवो हिरण्ययः ॥ १ ॥

दुहान ऊधर्दिव्यं मधु प्रियं प्रत्नं सधस्थमासदत् ।
आपृच्छ्यं धरुणं वाज्यर्षसि नृभिर्धौतो विचक्षणः ॥ २ ॥

(१०)

ऋषिः—उशनाः काव्यः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

प्र तु द्रव परि कोशं नि षीद नृभिः पुनानो अभि वाजमर्ष ।
अश्वं न त्वा वाजिनं मर्जयन्तोऽच्छा बर्ही रशनाभिर्नयन्ति ॥ १ ॥
स्वायुधः पवते देव इन्दुरशस्तिहा वृजना रक्षमाणः ।
पिता देवानां जनिता सुदक्षो विष्टम्भो दिवो धरुणः पृथिव्याः ॥ २ ॥
ऋषिर्विप्रः पुरएता जनानामृभुर्धीर उशना काव्येन ।
स चिद्विवेद निहितं यदासामपीच्यां३ गुह्यं नाम गोनाम् ॥ ३ ॥

(११)

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१ बार्हतः प्रगाथः, २ सतोबृहती ॥ स्वरः—१ मध्यमः, २ पञ्चमः ॥

अभि त्वा शूर नोनुमोऽदुग्धाइव धेनवः ।
ईशानमस्य जगतः स्वर्दृशमीशानमिन्द्र तस्थुषः ॥ १ ॥
न त्वावाँ अन्यो दिव्यो न पार्थिवो न जातो न जनिष्यते ।
अश्वायन्तो मघवन्निन्द्र वाजिनो गव्यन्तस्त्वा हवामहे ॥ २ ॥

(१२)

ऋषिः—वामदेवः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

कया नश्चित्र आ भुवदूती सदावृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता ॥ १ ॥
कस्त्वा सत्यो मदानां महिष्ठो मत्सदन्धसः। दृढा चिदारुजे वसु ॥ २ ॥
अभी षु णः सखीनामविता जरितॄणाम्। शतं भवास्यूतये ॥ ३ ॥

(१३)

ऋषिः—नोधा गोतमः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१ बार्हतः प्रगाथः, २ सतोबृहती ॥ स्वरः—१ मध्यमः, २ पञ्चमः ॥

तं वो दस्ममृतीषहं वसोर्मन्दानमन्धसः ।
अभि वत्सं न स्वसरेषु धेनव इन्द्रं गीर्भिर्नवामहे ॥ १ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

द्युक्षं सुदानुं तविषीभिरावृतं गिरिं न पुरुभोजसम् ।
क्षुमन्तं वाजं शतिनं सहस्त्रिणं मक्षू गोमन्तमीमहे ॥ २ ॥

(१४)

ऋषिः—कलिः प्रागाथः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१ बार्हतः प्रगाथः, २ सतोबृहती ॥ स्वरः—१ मध्यमः, २ पञ्चमः ॥

तरोभिर्वो विदद्वसुमिन्द्रं सबाध ऊतये ।
बृहद्गायन्तः सुतसोमे अध्वरे हुवे भरं न कारिणम् ॥ १ ॥
न यं दुधा वरन्ते न स्थिरा मुरो मदेषु शिप्रमन्धसः ।
य आदृत्या शशमानाय सुन्वते दाता जरित्र उक्थ्यम् ॥ २ ॥

(१५)

ऋषिः—मधुच्छन्दाः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

स्वादिष्ठया मदिष्ठया पवस्व सोम धारया । इन्द्राय पातवे सुतः ॥ १ ॥
रक्षोहा विश्वचर्षणिरभि योनिमयोहते । द्रोणे सधस्थमासदत् ॥ २ ॥
वरिवोधातमो भुवो मंहिष्ठो वृत्रहन्तमः । पर्षि राधो मघोनाम् ॥ ३ ॥

(१६)

ऋषिः—गौरिवीतिः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—काकुभः प्रगाथः (१ ककुप्, २ सतोबृहती) ॥ स्वरः—१ ऋषभः, २ पञ्चमः ॥

पवस्व मधुमत्तम इन्द्राय सोम क्रतुवित्तमो मदः । महि द्युक्षतमो मदः ॥ १ ॥
यस्य ते पीत्वा वृषभो वृषायतेऽस्य पीत्वा स्वर्विदः ।
स सुप्रकेतो अभ्यक्रमीदिषोऽच्छा वाजं नैतशः ॥ २ ॥

(१७)

ऋषिः—अग्निश्चाक्षुषः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—उष्णिक् ॥ स्वरः—ऋषभः ॥

६९४. इन्द्रमच्छ सुता इमे वृषणं यन्तु हरयः ।
श्रुष्टे जातास इन्दवः स्वर्विदः ॥ १ ॥
अयं भराय सानसिरिन्द्राय पवते सुतः ।
सोमो जैत्रस्य चेतति यथा विदे ॥ २ ॥

अस्येदिन्द्रो मदेष्वा ग्राभं गृभ्णाति सानसिम् ।
वज्रं च वृषणं भरत् समप्सुजित् ॥ ३ ॥

(१८)

ऋषिः—अन्धीगुः श्यावाश्विः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—आनुष्टुभः प्रगाथः (१ अनुष्टुप्, २-३ गायत्री) ॥ स्वरः—१ गान्धारः, २-३ षड्जः ॥

पुरोजिती वो अन्धसः सुताय मादयित्नवे ।
अप श्वानं श्नथिष्टन सखायो दीर्घजिह्वयम् ॥ १ ॥
यो धारया पावकया परिप्रस्यन्दते सुतः । इन्दुरश्वो न कृत्व्यः ॥ २ ॥
तं दुरोषमभी नरः सोमं विश्वाच्या धिया । यज्ञाय सन्त्वद्रयः ॥ ३ ॥

(१९)

ऋषिः—कविर्भार्गवः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—जगती ॥ स्वरः—निषादः ॥

अभि प्रियाणि पवते चनोहितो नामानि यह्वो अधि येषु वर्धते ।
आ सूर्यस्य बृहतो बृहन्नधि रथं विष्वञ्चमरुहद्विचक्षणः ॥ १ ॥
ऋतस्य जिह्वा पवते मधु प्रियं वक्ता पतिर्धियो अस्या अदाभ्यः ।
दधाति पुत्रः पित्रोरपीच्यां३ नाम तृतीयमधि रोचनं दिवः ॥ २ ॥
अव द्युतानः कलशाँ अचिक्रदन्नृभिर्यमाणः कोश आ हिरण्यये ।
अभी ऋतस्य दोहना अनूषताधि त्रिपृष्ठ उषसो वि राजसि ॥ ३ ॥

(२०)

ऋषिः—शंयुर्बार्हस्पत्यः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१ बार्हतः प्रगाथः, २ सतोबृहती ॥ स्वरः—१ मध्यमः, २ पञ्चमः ॥

७०३. यज्ञायज्ञा वो अग्नये गिरागिरा च दक्षसे ।
प्रप्र वयममृतं जातवेदसं प्रियं मित्रं न शंसिषम् ॥ १ ॥
ऊर्जो नपातं स हिनायमस्मयुदाशेम हव्यदातये ।
भुवद्वाजेष्विता भुवद्वृध उत त्राता तनूनाम् ॥ २ ॥

(२१)

ऋषिः—भरद्वाजः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

एह्यू षु ब्रवाणि तेऽग्न इत्थेतरा गिरः । एभिर्वर्धास इन्दुभिः ॥ १ ॥
यत्र क्व च ते मनो दक्षं दधस उत्तरम् । तत्र योनिं कृणवसे ॥ २ ॥
वेषि होत्रमुत पोत्रमृत्विय मग्ने बृहन्नुक्थशा ऊतिभिर्नय । अथा दुवो वनवसे ॥ ३ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

(२२)

ऋषिः—सोभरिः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—काकुभः प्रगाथः (१ ककुप्, २ सतोबृहती)॥ स्वरः—१ ऋषभः, २ पञ्चमः॥

वयमु त्वामपूर्व्य स्थूरं न कच्चिद्भरन्तोऽवस्यवः। वज्रिञ्चित्रं हवामहे॥ १॥
उप त्वा कर्मन्नूतये स नो युवोग्रश्चक्राम यो धृषत्।
त्वामिध्यवितारं ववृमहे सखाय इन्द्र सानसिम् ॥ २॥

(२३)

ऋषिः—नृमेधः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१ ककुबुष्णिक्, २ उष्णिक्, ३ पुरउष्णिक्॥ स्वरः—ऋषभः॥

अधा हीन्द्र गिर्वण उप त्वा काम ईमहे समृग्महे। उदेव ग्मन्त उदभिः॥ १॥
वार्णं त्वा यव्याभिर्वर्धन्ति शूर ब्रह्माणि। वावृध्वांसं चिदद्रिवो दिवेदिवे॥ २॥
युञ्जन्ति हरी इषिरस्य गाथयोरौ रथ उरुयुगे वचोयुजा ।
इन्द्रवाहा स्वर्विदा ॥ ३॥

इति प्रथमोऽध्यायः, प्रथमप्रपाठकस्य प्रथमोऽर्धः॥

अथ द्वितीयोऽध्यायः

प्रथमप्रपाठकस्य द्वितीयोऽर्धः

(१)

ऋषिः—श्रुतकक्षः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१ अनुष्टुप्; २-३ गायत्री॥ स्वरः—१ गान्धारः; २-३ षड्जः॥

७१३. पान्तमा वो अन्धस इन्द्रमभि प्र गायत ।
विश्वासाहं शतक्रतुं मंहिष्ठं चर्षणीनाम् ॥ १॥
पुरुहूत पुरुष्टुत गाथान्या३ सनश्रुतम्। इन्द्र इति ब्रवीतन ॥ २॥
इन्द्र इन्नो महोनां दाता वाजानां नृतुः। महाँ अभिज्ञ्वा यमत् ॥ ३॥

(२)

ऋषिः—वसिष्ठः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

प्र व इन्द्राय मादनं हर्यश्वाय गायत। सखायः सोमपाव्ने॥ १॥
शंसेदुक्थं सुदानव उत द्युक्षं यथा नरः। चकृमा सत्यराधसे॥ २॥
त्वं न इन्द्र वाजयुस्त्वं गव्युः शतक्रतो। त्वं हिरण्ययुर्वसो ॥ ३॥

(३)

ऋषिः—मेधातिथिप्रियमेधौ॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

वयमु त्वा तदिदर्था इन्द्र त्वायन्तः सखायः। कण्वा उक्थेभिर्जरन्ते ॥ १॥
न घेमन्यदा पपन वज्रिन्नपसो नविष्टौ। तवेदु स्तोमैश्चिकेत ॥ २॥
इच्छन्ति देवाः सुन्वन्तं न स्वप्नाय स्पृहयन्ति। यन्ति प्रमादमतन्द्राः ॥ ३॥

(४)

ऋषिः—श्रुतकक्षः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

इन्द्राय मद्वने सुतं परि ष्टोभन्तु नो गिरः। अर्कमर्चन्तु कारवः ॥ १॥
यस्मिन् विश्वा अधि श्रियो रणन्ति सप्त संसदः। इन्द्रं सुते हवामहे ॥ २॥
त्रिकद्रुकेषु चेतनं देवासो यज्ञमत्नत। तमिद्वर्धन्तु नो गिरः ॥ ३॥

(५)

ऋषिः—इरिम्बिठिः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

अयं त इन्द्र सोमो निपूतो अधि बर्हिषि। एहीमस्य द्रवा पिब ॥ १॥
शाचिगो शाचिपूजनाय रणाय ते सुतः। आखण्डल प्र हूयसे ॥ २॥
यस्ते शृङ्गवृषो णपात् प्रणपात् कुण्डपाय्यः। न्यस्मिन् दध्र आ मनः ॥ ३॥

(६)

ऋषिः—कुसीदी काण्वः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

आ तू न इन्द्र क्षुमन्तं चित्रं ग्राभं सं गृभाय। महाहस्ती दक्षिणेन ॥ १॥
विद्मा हि त्वा तुविकूर्मिं तुविदेष्णं तुवीमघम्। तुविमात्रमवोभिः ॥ २॥
न हि त्वा शूर देवा न मर्तासो दित्सन्तम्। भीमं न गां वारयन्ते ॥ ३॥

(७)

ऋषिः—त्रिशोकः काण्वः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

अभि त्वा वृषभा सुते सुतं सृजामि पीतये। तृम्पा व्यश्नुही मदम् ॥ १॥
मा त्वा मूरा अविष्यवो मोपहस्वान आ दभन्। मा कीं ब्रह्मद्विषो वनः ॥ २॥
इह त्वा गोपरीणसं महे मन्दन्तु राधसे। सरो गौरो यथा पिब ॥ ३॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

(८)

ऋषिः—मेधातिथिप्रियमेधौ ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

इदं वसो सुतमन्धः पिबा सुपूर्णमुदरम्। अनाभयिन् ररिमा ते ॥ १ ॥
नृभिर्धौतः सुतो अश्नैरव्या वारैः परिपूतः। अश्वो न निक्तो नदीषु ॥ २ ॥
तं ते यवं यथा गोभिः स्वादुमकर्म श्रीणन्तः। इन्द्र त्वास्मिन्त्सधमादे ॥ ३ ॥

(९)

ऋषिः—विश्वामित्रः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

इदं ह्यन्वोजसा सुतं राधानां पते। पिबा त्वाऽस्य गिर्वणः ॥ १ ॥
यस्ते अनु स्वधामसत् सुते नि यच्छ तन्वम्। स त्वा ममत्तु सोम्य ॥ २ ॥
प्र ते अश्नोतु कुक्ष्योः प्रेन्द्र ब्रह्मणा शिरः। प्र बाहू शूर राधसा ॥ ३ ॥

(१०)

ऋषिः—मधुच्छन्दाः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

आ त्वेता नि षीदतेन्द्रमभि प्र गायत। सखाय स्तोमवाहसः ॥ १ ॥
पुरूतमं पुरूणामीशानं वार्याणाम्। इन्द्रं सोमे सचा सुते ॥ २ ॥
स घा नो योग आ भुवत् स राये स पुरन्ध्या। गमद् वाजेभिरा स नः ॥ ३ ॥

(११)

ऋषिः—शुनःशेपः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

योगेयोगे तवस्तरं वाजेवाजे हवामहे। सखाय इन्द्रमूतये ॥ १ ॥
अनु प्रत्नस्यौकसो हुवे तुविप्रतिं नरम्। यं ते पूर्वं पिता हुवे ॥ २ ॥
आ घा गमद्यदि श्रवत्सहस्रिणीभिरूतिभिः। वाजेभिरुप नो हवम् ॥ ३ ॥

(१२)

ऋषिः—नारदः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—उष्णिक् ॥ स्वरः—ऋषभः ॥

इन्द्र सुतेषु सोमेषु क्रतुं पुनीष उक्थ्यम्। विदे वृधस्य दक्षस्य महाँ हि षः ॥ १ ॥
स प्रथमे व्योमनि देवानां सदने वृधः। सुपारः सुश्रवस्तमः समप्सुजित् ॥ २ ॥
७४८. तमु हुवे वाजसातय इन्द्रं भराय शुष्मिणम्।
भवा नः सुम्ने अन्तमः सखा वृधे ॥ ३ ॥

(१३)

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—बार्हतः प्रगाथः (१ बृहती, २ सतोबृहती) ॥ स्वरः—१ मध्यमः; २ पञ्चमः ॥

एना वो अग्निं नमसोर्जो नपातमा हुवे।
प्रियं चेतिष्ठमरतिं स्वध्वरं विश्वस्य दूतममृतम् ॥ १ ॥
स योजते अरुषा विश्वभोजसा स दुद्रवत् स्वाहुतः।
सुब्रह्मा यज्ञः सुशमी वसूनां देवं राधो जनानाम् ॥ २ ॥

(१४)

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—उषाः ॥ छन्दः—बार्हतः प्रगाथः (१ बृहती, २ सतोबृहती) ॥ स्वरः—१ मध्यमः; २ पञ्चमः ॥

प्रत्यु अदर्शायत्यूच्छन्ती दुहिता दिवः।
अपो मही वृणुते चक्षुषा तमो ज्योतिष्कृणोति सूनरी ॥ १ ॥
उदुस्रियाः सृजते सूर्यः सचा उद्यन्नक्षत्रमर्चिवत्।
तवेदुषो व्युषि सूर्यस्य च सं भक्तेन गमेमहि ॥ २ ॥

(१५)

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—अश्विनौ ॥ छन्दः—बार्हतः प्रगाथः (१ बृहती, २ सतोबृहती) ॥ स्वरः—१ मध्यमः; २ पञ्चमः ॥

इमा उ वां दिविष्टय उस्रा हवन्ते अश्विना।
अयं वामह्वेऽवसे शचीवसू विशंविशं हि गच्छथः ॥ १ ॥
युवं चित्रं ददथुर्भोजनं नरा चोदेथां सूनृतावते।
अवाग्रथं समनसा नि यच्छतं पिबतं सोम्यं मधु ॥ २ ॥

(१६)

ऋषिः—अवत्सारः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अस्य प्रत्नामनु द्युतं शुक्रं दुदुह्रे अह्रयः। पयः सहस्रसामृषिम् ॥ १ ॥
अयं सूर्य इवोपदृगयं सरांसि धावति। सप्त प्रवत आ दिवम् ॥ २ ॥
अयं विश्वानि तिष्ठति पुनानो भुवनोपरि। सोमो देवो न सूर्यः ॥ ३ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

(१७)

ऋषिः—१ शुनःशेपः; २-३ मेध्यातिथिः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥
छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

एष प्रत्नेन जन्मना देवो देवेभ्यः सुतः । हरिः पवित्रे अर्षति ॥ १ ॥
एष प्रत्नेन मन्मना देवो देवेभ्यस्परि । कविर्विप्रेण वावृधे ॥ २ ॥
दुहानः प्रत्नमित्पयः पवित्रे परि षिच्यसे । क्रन्दं देवाँ अजीजनः ॥ ३ ॥

(१८)

ऋषिः—१, ३ असितः काश्यपो देवलो वा; २ अमहीयुराङ्गिरसः ॥
देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

उप शिक्षापतस्थुषो भियसमा धेहि शत्रवे । पवमान विदा रयिम् ॥ १ ॥
उपो षु जातमप्तुरं गोभिर्भङ्गं परिष्कृतम् । इन्दुं देवा अयासिषुः ॥ २ ॥
उपास्मै गायता नरः पवमानायेन्दवे । अभि देवाँ इयक्षते ॥ ३ ॥

(१९)

ऋषिः—त्रित आप्त्यः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥
स्वरः—षड्जः ॥

प्र सोमासो विपश्चितोऽपो नयन्त ऊर्मयः । वनानि महिषाइव ॥ १ ॥
अभि द्रोणानि बभ्रवः शुक्रा ऋतस्य धारया । वाजं गोमन्तमक्षरन् ॥ २ ॥
सुता इन्द्राय वायवे वरुणाय मरुद्भ्यः । सोमा अर्षन्तु विष्णवे ॥ ३ ॥

(२०)

ऋषिः—भरद्वाजादयः सप्तर्षयः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—बार्हतः प्रगाथः
(१ बृहती, २ सतोबृहती) ॥ स्वरः—१ मध्यमः; २ पञ्चमः ॥

प्र सोम देववीतये सिन्धुर्न पिप्ये अर्णसा ।
अंशोः पयसा मदिरो न जागृविरच्छा कोशं मधुश्चुतम् ॥ १ ॥
आ हर्यतो अर्जुनो अत्के अव्यत प्रियः सूनुर्न मर्ज्यः ।
तमी हिन्वन्त्यपसो यथा रथं नदीष्वा गभस्त्योः ॥ २ ॥

(२१)

ऋषिः—श्यावाश्वः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

प्र सोमासो मदच्युतः श्रवसे नो मघोनाम् । सुता विदथे अक्रमुः ॥ १ ॥
आदीं हंसो यथा गणं विश्वस्यावीवशन्मतिम् । अत्यो न गोभिरज्यते ॥ २ ॥
आदीं त्रितस्य योषणो हरिं हिन्वन्त्यद्रिभिः । इन्दुमिन्द्राय पीतये ॥ ३ ॥

(२२)

ऋषिः—१-२ अग्निश्चाक्षुषः; ३ प्रजापतिर्वैश्वामित्रो वाच्यो वा ॥
देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—१-२ उष्णिक्; ३ अनुष्टुप् ॥
स्वरः—१-२ ऋषभः; ३ गान्धारः ॥

अया पवस्व देवयू रेभन् पवित्रं पर्येषि विश्वतः । मधोर्धारा असृक्षत ॥ १ ॥
पवते हर्यतो हरिरति ह्वरांसि रंह्या । अभ्यर्ष स्तोतृभ्यो वीरवद्यशः ॥ २ ॥
७७४. प्र सुन्वानायान्धसो मत्तो न वष्ट तद्वचः ।
अप श्वानमरातिसं हता मखं न भृगवः ॥ ३ ॥

इति द्वितीयोऽध्यायः, प्रथमप्रपाठकश्च समाप्तः ॥

अथ तृतीयोऽध्यायः

द्वितीयप्रपाठकस्य प्रथमोऽर्धः

(१)

ऋषिः—जमदग्निः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

पवस्व वाचो अग्रियः सोम चित्राभिरूतिभिः । अभि विश्वानि काव्या ॥ १ ॥
त्वं समुद्रिया अपोऽग्रियो वाच ईरयन् । पवस्व विश्वचर्षणे ॥ २ ॥
तुभ्येमा भुवना कवे महिम्ने सोम तस्थिरे । तुभ्यं धावन्ति धेनवः ॥ ३ ॥

(२)

ऋषिः—अमहीयुः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

पवस्वेन्दो वृषा सुतः कृधी नो यशसो जने । विश्वा अप द्विषो जहि ॥ १ ॥
यस्य ते सख्ये वयं सासह्याम पृतन्यतः । तवेन्दो द्युम्न उत्तमे ॥ २ ॥
या ते भीमान्यायुधा तिग्मानि सन्ति धूर्वणे । रक्षा समस्य नो निदः ॥ ३ ॥

(३)

ऋषिः—कश्यपः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

वृषा सोम द्युमाँ असि वृषा देव वृषव्रतः । वृषा धर्माणि दधिषे ॥ १ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

वृष्णस्ते वृष्ण्यं शवो वृषा वनं वृषा सुतः। स त्वं वृषन्वृषेदसि ॥ २ ॥
अश्वो न चक्रदो वृषा सं गा इन्दो समर्वतः। वि नो राये दुरो वृधि ॥ ३ ॥

(४)

ऋषिः—भृगुर्वारुणिर्जमदग्निर्वा ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

वृषा ह्यसि भानुना द्युमन्तं त्वा हवामहे। पवमान स्वर्दृशम् ॥ १ ॥
यदद्भिः परिषिच्यसे मर्मृज्यमान आयुभिः। द्रोणे सधस्थमश्नुषे ॥ २ ॥
आ पवस्व सुवीर्यं मन्दमानः स्वायुध। इहो ष्विन्दवा गहि ॥ ३ ॥

(५)

ऋषिः—अमहीयुः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

पवमानस्य ते वयं पवित्रमभ्युन्दतः। सखित्वमा वृणीमहे ॥ १ ॥
ये ते पवित्रमूर्मयोऽभिक्षरन्ति धारया। तेभिर्नः सोम मृडय ॥ २ ॥
स नः पुनान आ भर रयिं वीरवतीमिषम्। ईशानः सोम विश्वतः ॥ ३ ॥

(६)

ऋषिः—मेधातिथिः काण्वः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अग्निं दूतं वृणीमहे होतारं विश्ववेदसम्। अस्य यज्ञस्य सुक्रतुम् ॥ १ ॥
अग्निमग्निं हवीमभिः सदा हवन्त विश्पतिम्। हव्यवाहं पुरुप्रियम् ॥ २ ॥
अग्ने देवाँ इहा वह जज्ञानो वृक्तबर्हिषे। असि होता न ईड्यः ॥ ३ ॥

(७)

ऋषिः—मेधातिथिः काण्वः ॥ देवता—मित्रावरुणौ ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

मित्रं वयं हवामहे वरुणं सोमपीतये। या जाता पूतदक्षसा ॥ १ ॥
ऋतेन यावृतावृधावृतस्य ज्योतिषस्पती। ता मित्रावरुणा हुवे ॥ २ ॥
वरुणः प्राविता भुवन्मित्रो विश्वाभिरूतिभिः। करतां नः सुराधसः ॥ ३ ॥

(८)

ऋषिः—मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

इन्द्रमिद्गाथिनो बृहदिन्द्रमर्केभिरर्किणः। इन्द्रं वाणीरनूषत ॥ १ ॥
इन्द्र इद्धर्योः सचा सम्मिश्ल आ वचोयुजा। इन्द्रो वज्री हिरण्ययः ॥ २ ॥
इन्द्र वाजेषु नोऽव सहस्रप्रधनेषु च। उग्र उग्राभिरूतिभिः ॥ ३ ॥

इन्द्रो दीर्घाय चक्षस आ सूर्यं रोहयद्दिवि। वि गोभिरद्रिमैरयत् ॥ ४ ॥

(९)

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—इन्द्राग्नी ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

इन्द्रे अग्ना नमो बृहत् सुवृक्तिमेरयामहे। धिया धेना अवस्यवः ॥ १ ॥
ता हि शश्वन्त ईडत इत्था विप्रास ऊतये। सबाधो वाजसातये ॥ २ ॥
ता वां गीर्भिर्विपन्युवः प्रयस्वन्तो हवामहे। मेधसाता सनिष्यवः ॥ ३ ॥

(१०)

ऋषिः—भृगुर्वारुणिर्जमदग्निर्वा ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥

स्वरः—षड्जः ॥

वृषा पवस्व धारया मरुत्वते च मत्सरः। विश्वा दधान ओजसा ॥ १ ॥
तं त्वा धर्त्तारमोण्योः पवमान स्वर्दृशम्। हिन्वे वाजेषु वाजिनम् ॥ २ ॥
अया चित्तो विपानया हरिः पवस्व धारया। युजं वाजेषु चोदय ॥ ३ ॥

(११)

ऋषिः—उपमन्युर्वासिष्ठः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

वृषा शोणो अभिकनिक्रदद् गा नदयन्नेषि पृथिवीमुत द्याम्।
इन्द्रस्येव वग्गुरा शृण्व आजौ प्रचोदयन्नर्षसि वाचमेमाम् ॥ १ ॥
रसाय्यः पयसा पिन्वमान ईरयन्नेषि मधुमन्तमंशुम्।
पवमान सन्तनिमेषि कृण्वन्निन्द्राय सोम परिषिच्यमानः ॥ २ ॥
एवा पवस्व मदिरो मदायोदग्राभस्य नमयन् वधस्नुम्।
परि वर्णं भरमाणो रुशन्तं गव्युर्नो अर्ष परि सोम सिक्तः ॥ ३ ॥

(१२)

ऋषिः—शंयुर्बार्हस्पत्यः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—बार्हतः प्रगाथः (१ बृहती, २ सतोबृहती) ॥ स्वरः—१ मध्यमः; २ पञ्चमः ॥

८०९. त्वामिद्धि हवामहे सातौ वाजस्य कारवः।
त्वां वृत्रेष्विन्द्र सत्पतिं नरस्त्वां काष्ठास्ववर्वतः ॥ १ ॥
स त्वं नश्चित्र वज्रहस्त धृष्णुया मह स्तवानो अद्रिवः।
गामश्वं रथ्यमिन्द्र सं किर सत्रा वाजं न जिग्युषे ॥ २ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

(१३)

ऋषिः—प्रस्कण्वः काण्वः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—बार्हतः प्रगाथः (१ बृहती, २ सतोबृहती) ॥ स्वरः—१ मध्यमः; २ पञ्चमः ॥

अभि प्र वः सुराधसमिन्द्रमर्च यथा विदे ।
यो जरितृभ्यो मघवा पुरूवसुः सहस्रेणेव शिक्षति ॥ १ ॥
शतानीकेव प्र जिगाति धृष्णुया हन्ति वृत्राणि दाशुषे ।
गिरेरिव प्र रसा अस्य पिन्विरे दत्राणि पुरुभोजसः ॥ २ ॥

(१४)

ऋषिः—नृमेधः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—बार्हतः प्रगाथः (१ बृहती, २ सतोबृहती) ॥ स्वरः—१ मध्यमः; २ पञ्चमः ॥

त्वामिदा ह्यो नरोऽपीप्यन् वज्रिन् भूर्णयः ।
स इन्द्र स्तोमवाहस इह श्रुष्टुप स्वसरमा गहि ॥ १ ॥
मत्स्वा सुशिप्रिन् हरिवस्तमीमहे त्वया भूषन्ति वेधसः ।
तव श्रवांस्युपमान्युक्थ्य सुतेष्विन्द्र गिर्वणः ॥ २ ॥

(१५)

ऋषिः—अमहीयुः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

यस्ते मदो वरेण्यस्तेना पवस्वान्धसा । देवावीरघशंसहा ॥ १ ॥
जघ्निर्वृत्रममित्रियं सस्निर्वाजं दिवेदिवे । गोषातिरश्वसा असि ॥ २ ॥
सम्मिश्लो अरुषो भुवः सूपस्थाभिर्न धेनुभिः । सीदञ्छ्येनो न योनिमा ॥ ३ ॥

(१६)

ऋषिः—नहुषो मानवः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—अनुष्टुप् ॥ स्वरः—गान्धारः ॥

अयं पूषा रयिर्भगः सोमः पुनानो अर्षति ।
पतिर्विश्वस्य भूमनो व्यख्यद्रोदसी उभे ॥ १ ॥
समु प्रिया अनूषत गावो मदाय घृष्वयः ।
सोमासः कृण्वते पथः पवमानास इन्दवः ॥ २ ॥
य ओजिष्ठस्तमा भर पवमान श्रवाय्यम् ।
यः पञ्च चर्षणीरभि रयिं येन वनामहे ॥ ३ ॥

(१७)

ऋषिः—१-२ सिकतानिवावरी, ३ पृश्नयोऽजाः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—जगती ॥ स्वरः—निषादः ॥

वृषा मतीनां पवते विचक्षणः सोमो अह्नां प्रतरीतोषसां दिवः ।
प्राणा सिन्धूनां कलशाँ अचिक्रददिन्द्रस्य हार्द्याविशन्मनीषिभिः ॥ १ ॥
मनीषिभिः पवते पूर्व्यः कविर्नृभिर्यतः परि कोशाँ असिष्यदत् ।
त्रितस्य नाम जनयन्मधु क्षरन्निन्द्रस्य वायुं सख्याय वर्धयन् ॥ २ ॥
अयं पुनान उषसो अरोचयदयं सिन्धुभ्यो अभवदु लोककृत् ।
अयं त्रिः सप्त दुदुहान आशिरं सोमो हृदे पवते चारु मत्सरः ॥ ३ ॥

(१८)

ऋषिः—श्रुतकक्षः सुकक्षो वा ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

एवा ह्यसि वीरयुरेवा शूर उत स्थिरः । एवा ते राध्यं मनः ॥ १ ॥
एवा रातिस्तुविमघ विश्वेभिर्धायि धातृभिः । अधा चिदिन्द्र नः सचा ॥ २ ॥
मो षु ब्रह्मेव तन्द्रयुर्भुवो वाजानां पते । मत्स्वा सुतस्य गोमतः ॥ ३ ॥

(१९)

ऋषिः—जेता माधुच्छन्दसः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—अनुष्टुप् ॥ स्वरः—गान्धारः ॥

८२७. इन्द्रं विश्वा अवीवृधन्त्समुद्रव्यचसं गिरः ।
रथीतमं रथीनां वाजानां सत्पतिं पतिम् ॥ १ ॥
सख्ये त इन्द्र वाजिनो मा भेम शवसस्पते ।
त्वामभि प्र णोनुमो जेतारमपराजितम् ॥ २ ॥
पूर्वीरिन्द्रस्य रातयो न वि दस्यन्त्यूतयः ।
यदा वाजस्य गोमत स्तोतृभ्यो मंहते मघम् ॥ ३ ॥

इति तृतीयोऽध्यायः, द्वितीयप्रपाठकस्य प्रथमोऽर्धः ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अथ चतुर्थोऽध्यायः

द्वितीयोप्रपाठकस्य द्वितीयोऽर्धः

(१)

ऋषिः—जमदग्निः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

एत असृग्रमिन्दवस्तिरः पवित्रमाशवः । विश्वान्यभि सौभगा ॥ १ ॥
विघ्नन्तो दुरिता पुरु सुगा तोकाय वाजिनः । त्मना कृण्वन्तो अर्वतः ॥ २ ॥
कृण्वन्तो वरिवो गवेऽभ्यर्षन्ति सुष्टुतिम् । इडामस्मभ्यं संयतम् ॥ ३ ॥

(२)

ऋषिः—भृगुर्वारुणिर्जमदग्निर्भार्गवो वा ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

राजा मेधाभिरीयते पवमानो मनावधि । अन्तरिक्षेण यातवे ॥ १ ॥
आ नः सोम सहो जुवो रूपं न वर्चसे भर । सुष्वाणो देववीतये ॥ २ ॥
आ न इन्दो शतग्विनं गवां पोषं स्वश्व्यम् । वहा भगत्तिमूतये ॥ ३ ॥

(३)

ऋषिः—कविर्भार्गवः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

तं त्वा नृम्णानि बिभ्रतं सधस्थेषु महो दिवः । चारुं सुकृत्ययेमहे ॥ १ ॥
संवृक्तधृष्णुमुक्थ्यं महामहिव्रतं मदम् । शतं पुरो रुरुक्षणिम् ॥ २ ॥
अतस्त्वा रयिरभ्ययद्राजानं सुक्रतो दिवः । सुपर्णो अव्यथी भरत् ॥ ३ ॥
अधा हिन्वान इन्द्रियं ज्यायो महित्वमानशे । अभिष्टिकृद्विचर्षणिः ॥ ४ ॥
विश्वस्मा इत्स्वर्दृशे साधारणं रजस्तुरम् । गोपामृतस्य विर्भरत् ॥ ५ ॥

(४)

ऋषिः—कश्यपः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

इषे पवस्व धारया मृज्यमानो मनीषिभिः । इन्दो रुचाभि गा इहि ॥ १ ॥
पुनानो वरिवस्कृध्यूर्जं जनाय गिर्वणः । हरे सृजान आशिरम् ॥ २ ॥
पुनानो देववीतय इन्द्रस्य याहि निष्कृतम् । द्युतानो वाजिभिर्हितः ॥ ३ ॥

(५)

ऋषिः—मेधातिथिः काण्वः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अग्निनाग्निः समिध्यते कविर्गृहपतिर्युवा । हव्यवाड् जुह्वास्यः ॥ १ ॥
यस्त्वामग्ने हविष्पतिर्दूतं देव सपर्यति । तस्य स्म प्राविता भव ॥ २ ॥
यो अग्निं देववीतये हविष्माँ आविवासति । तस्मै पावक मृडय ॥ ३ ॥

(६)

ऋषिः—मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः ॥ देवता—मित्रावरुणौ ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

मित्र हुवे पूतदक्षं वरुणं च रिशादसम् । धियं घृताचीं साधन्ता ॥ १ ॥
ऋतेन मित्रावरुणावृतावृधावृतस्पृशा । क्रतुं बृहन्तमाशाथे ॥ २ ॥
कवी नो मित्रारुणा तुविजाता उरुक्षया । दक्षं दधाते अपसम् ॥ ३ ॥

(७)

ऋषिः—मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः ॥ देवता—मरुत इन्द्रश्च ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

इन्द्रेण सं हि दृक्षसे संजग्मानो अबिभ्युषा । मन्दू समानवर्चसा ॥ १ ॥
आदह स्वधामनु पुनर्गर्भत्वमेरिरे । दधाना नाम यज्ञियम् ॥ २ ॥
वीडु चिदारुजत्नुभिर्गुहा चिदिन्द्र वह्निभिः । अविन्द उस्त्रिया अनु ॥ ३ ॥

(८)

ऋषिः—भरद्वाजो बार्हस्पत्यः ॥ देवता—इन्द्राग्नी ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

ता हुवे ययोरिदं पप्ने विश्वं पुरा कृतम् । इन्द्राग्नी न मर्धतः ॥ १ ॥
उग्रा विघनिना मृध इन्द्राग्नी हवामहे । ता नो मृडात ईदृशे ॥ २ ॥
हथो वृत्राण्यार्या हथो दासानि सत्पती । हथो विश्वा अप द्विषः ॥ ३ ॥

(९)

ऋषिः—सप्तर्षयः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—बार्हतः प्रगाथः (१ बृहती, २ सतोबृहती); ३ द्विपदाविराट् ॥ स्वरः—१ मध्यमः; २-३ पञ्चमः ॥

८५६. अभि सोमास आयवः पवन्ते मद्यं मदम् ।
समुद्रस्याधि विष्टपि मनीषिणो मत्सरासो मदच्युतः ॥ १ ॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तरत्समुद्रं पवमान ऊर्मिणा राजा देव ऋतं बृहत् ।
अर्षा मित्रस्य वरुणस्य धर्मणा प्र हिन्वान ऋतं बृहत् ॥ २ ॥
नृभिर्येमाणो हर्यतो विचक्षणो राजा देवः समुद्र्यः ॥ ३ ॥

(१०)

ऋषिः—पराशरः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

तिस्रो वाच ईरयति प्र वह्निर्ऋतस्य धीतिं ब्रह्मणो मनीषाम् ।
गावो यन्ति गोपतिं पृच्छमानाः सोमं यन्ति मतयो वावशानाः ॥ १ ॥
सोमं गावो धेनवो वावशानाः सोमं विप्रा मतिभिः पृच्छमानाः ।
सोमः सुत ऋच्यते पूयमानः सोमे अर्कास्त्रिष्टुभः सं नवन्ते ॥ २ ॥
एवा नः सोम परिषिच्यमान आ पवस्व पूयमानः स्वस्ति ।
इन्द्रमा विश बृहता मदेन वर्धया वाचं जनया पुरन्धिम् ॥ ३ ॥

(११)

ऋषिः—पुरुहन्मा ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—बार्हतः प्रगाथः (१ बृहती, २ सतोबृहती) ॥ स्वरः—१ मध्यमः; २ पञ्चमः ॥

यद्याव इन्द्र ते शतंशतं भूमीरुत स्युः ।
न त्वा वज्रिन्त्सहस्रं सूर्या अनु न जातमष्ट रोदसी ॥ १ ॥
आ पप्राथ महिना वृष्ण्या वृषन् विश्वा शविष्ठ शवसा ।
अस्माँ अव मघवन् गोमति व्रजे वज्रिञ्चित्राभिरूतिभिः ॥ २ ॥

(१२)

ऋषिः—मेध्यातिथिः काण्वः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

वयं घ त्वा सुतावन्त आपो न वृक्तबर्हिषः ।
पवित्रस्य प्रस्रवणेषु वृत्रहन् परि स्तोतार आसते ॥ १ ॥
स्वरन्ति त्वा सुते नरो वसो निरेक उक्थिनः ।
कदा सुतं तृषाण ओक आ गम इन्द्र स्वब्दीव वंसगः ॥ २ ॥
कण्वेभिर्धृष्णवा धृषद्वाजे दर्षि सहस्त्रिणम् ।
पिशङ्गरूपं मघवन्विचर्षणे मक्षू गोमन्तमीमहे ॥ ३ ॥

(१३)

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—बार्हतः प्रगाथः (१ वृहती, २ सतोबृहती) ॥ स्वरः—१ मध्यमः; २ पञ्चमः ॥

तरणिरित्सिषासति वाजं पुरन्ध्या युजा ।
आ व इन्द्रं पुरुहूतं नमे गिरा नेमिं तष्टेव सुद्रुवम् ॥ १ ॥
न दुष्टुतिर्द्रविणोदेषु शस्यते न स्त्रेधन्तं रयिर्नशत् ।
सुशक्तिरिन् मघवन् तुभ्यं मावते देष्णं यत्पार्ये दिवि ॥ २ ॥

(१४)

ऋषिः—त्रितः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

तिस्रो वाच उदीरते गावो मिमन्ति धेनवः हरिरेति कनिक्रदत् ॥ १ ॥
अभि ब्रह्मीरनूषत यह्वीर्ऋतस्य मातरः । मर्जयन्तीर्दिवः शिशुम् ॥ २ ॥
रायः समुद्रांश्चतुरोऽस्मभ्यं सोम विश्वतः । आ पवस्व सहस्त्रिणः ॥ ३ ॥

(१५)

ऋषिः—ययातिर्नाहुषः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—अनुष्टुप् ॥ स्वरः—गान्धारः ॥

८७२. सुतासो मधुमत्तमाः सोमा इन्द्राय मन्दिनः ।
पवित्रवन्तो अक्षरं देवान् गच्छन्तु वो मदाः ॥ १ ॥
इन्दुरिन्द्राय पवत इति देवासो अब्रुवन् ।
वाचस्पतिर्मखस्यते विश्वस्येशान ओजसः ॥ २ ॥
सहस्रधारः पवते समुद्रो वाचमीङ्खयः ।
सोमस्पती रयीणां सखेन्द्रस्य दिवेदिवे ॥ ३ ॥

(१६)

ऋषिः—पवित्रः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—जगती ॥ स्वरः—निषादः ॥

पवित्रं ते विततं ब्रह्मणस्पते प्रभुर्गात्राणि पर्येषि विश्वतः ।
अतप्ततनूर्न तदामो अश्नुते शृतास इद्वहन्तः सं तदाशत ॥ १ ॥
तपोष्पवित्रं विततं दिवस्पदेऽर्चन्तो अस्य तन्तवो व्यस्थिरन् ।
अवन्त्यस्य पवितारमाशवो दिवः पृष्ठमधि रोहन्ति तेजसा ॥ २ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अरूरुचदुषसः पृश्निरग्रिय उक्षा मिमेति भुवनेषु वाजयुः।
मायाविनो ममिरे अस्य मायया नृचक्षसः पितरो गर्भमा दधुः ॥ ३ ॥

(१७)

ऋषिः—सोभरिः काण्वः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—काकुभः प्रगाथः
(१ ककुबुष्णिक्, २ सतोबृहती) ॥ स्वरः—१ ऋषभः; २ पञ्चमः ॥

प्र मंहिष्ठाय गायत ऋताव्ने बृहते शुक्रशोचिषे। उपस्तुतासो अग्नये ॥ १ ॥
आ वंसते मघवा वीरवद्यशः समिद्धो द्युम्न्याहुतः ।
कुविन्नो अस्य सुमतिर्भवीयस्यच्छा वाजेभिरागमत् ॥ २ ॥

(१८)

ऋषिः—गोपूक्त्यश्वसूक्तिनौ काण्वायनौ ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—उष्णिक् ॥
स्वरः—ऋषभः ॥

तं ते मदं गृणीमसि वृषणं पृक्षु सासहिम् ।
उ लोककृत्नुमद्रिवो हरिश्रियम् ॥ १ ॥
येन ज्योतींष्यायवे मनवे च विवेदिथ ।
मन्दानो अस्य बर्हिषो वि राजसि ॥ २ ॥
तदद्या चित्त उक्थिनोऽनु ष्टुवन्ति पूर्वथा ।
वृषपत्नीरपो जया दिवेदिवे ॥ ३ ॥

(१९)

ऋषिः—तिरश्चीः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—अनुष्टुप् ॥ स्वरः—गान्धारः ॥

श्रुधी हवं तिरश्च्या इन्द्र यस्त्वा सपर्यति ।
सुवीर्यस्य गोमतो रायस्पूर्धि महाँ असि ॥ १ ॥
यस्त इन्द्र नवीयसीं गिरं मन्द्रामजीजनत् ।
चिकित्विन्मनसं धियं प्रत्नामृतस्य पिप्युषीम् ॥ २ ॥
तमु ष्टवाम यं गिर इन्द्रमुक्थ्यानि वावृधुः ।
पुरूण्यस्य पौंस्या सिषासन्तो वनामहे ॥ ३ ॥

इति चतुर्थोऽध्यायः, द्वितीयप्रपाठकश्च समाप्तः ॥

अथ पञ्चमोऽध्यायः

तृतीयप्रपाठकस्य प्रथमोऽर्धः

(१)

ऋषिः—अकृष्टा माषाः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—जगती ॥
स्वरः—निषादः ॥

प्र त आश्विनीः पवमान धेनवो दिव्या असृग्रन् पयसा धरीमणि ।
प्रान्तरिक्षात् स्थाविरीस्ते असृक्षत ये त्वा मृजन्त्यृषिषाण वेधसः ॥ १ ॥
उभयतः पवमानस्य रश्मयो ध्रुवस्य सतः परि यन्ति केतवः ।
यदी पवित्रे अधि मृज्यते हरिः सत्ता नि योनौ कलशेषु सीदति ॥ २ ॥
विश्वा धामानि विश्वचक्ष ऋभ्वसः प्रभोष्टे सतः परि यन्ति केतवः ।
व्यानशी पवसे सोम धर्मणा पतिर्विश्वस्य भुवनस्य राजसि ॥ ३ ॥

(२)

ऋषिः—अमहीयुः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

पवमानो अजीजनद्दिवश्चित्रं न तन्यतुम्। ज्योतिर्वैश्वानरं बृहत् ॥ १ ॥
पवमान रसस्तव मदो राजन्नदुच्छुनः। वि वारमव्यमर्षति ॥ २ ॥
पवमानस्य ते रसो दक्षो वि राजति द्युमान्। ज्योतिर्विश्वं स्वर्दृशे ॥ ३ ॥

(३)

ऋषिः—मेध्यातिथिः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

८९२. प्र यद्गावो न भूर्णयस्त्वेषा अयासो अक्रमुः ।
घ्नन्तः कृष्णामप त्वचम् ॥ १ ॥
सुवितस्य वनामहेऽति सेतुं दुराय्यम्। साह्याम दस्युमव्रतम् ॥ २ ॥
शृण्वे वृष्टेरिव स्वनः पवमानस्य शुष्मिणः। चरन्ति विद्युतो दिवि ॥ ३ ॥
आ पवस्व महीमिषं गोमदिन्दो हिरण्यवत्। अश्ववत् सोम वीरवत् ॥ ४ ॥
पवस्व विश्वचर्षण आ मही रोदसी पृण। उषाः सूर्यो न रश्मिभिः ॥ ५ ॥
परि नः शर्मयन्त्या धारया सोम विश्वतः। सरा रसेव विष्टपम् ॥ ६ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

(४)

ऋषिः—बृहन्मतिः॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

आशुरर्ष बृहन्मते परि प्रियेण धाम्ना। यत्रा देवा इति ब्रुवन् ॥ १ ॥
परिष्कृण्वन्ननिष्कृतं जनाय यातयन्निषः। वृष्टिं दिवः परि स्रव ॥ २ ॥
अयं स यो दिवस्परि रघुयामा पवित्र आ। सिन्धोरूर्मा व्यक्षरत् ॥ ३ ॥
सुत एति पवित्र आ त्विषिं दधान ओजसा। विचक्षाणो विरोचयन् ॥ ४ ॥
आविवासन् परावतो अथो अर्वावतः सुतः। इन्द्राय सिच्यते मधु ॥ ५ ॥
समीचीना अनूषत हरिं हिन्वन्त्यद्रिभिः। इन्दुमिन्द्राय पीतये ॥ ६ ॥

(५)

ऋषिः—भृगुर्वारुणिर्जमदग्निर्भार्गवो वा॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

हिन्वन्ति सूरमुस्रयः स्वसारो जामयस्पतिम्। महामिन्दुं महीयुवः ॥ १ ॥
पवमान रुचारुचा देव देवेभ्यः सुतः। विश्वा वसून्या विश ॥ २ ॥
आ पवमान सुष्टुतिं वृष्टिं देवेभ्यो दुवः। इषे पवस्व संयतम् ॥ ३ ॥

(६)

ऋषिः—सुतम्भर आत्रेयः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—जगती॥ स्वरः—निषादः॥

जनस्य गोपा अजनिष्ट जागृविरग्निः सुदक्षः सुविताय नव्यसे ।
घृतप्रतीको बृहता दिविस्पृशा द्युमद्वि भाति भरतेभ्यः शुचिः ॥ १ ॥
त्वामग्ने अङ्गिरसो गुहा हितमन्वविन्दञ्छिश्रियाणं वनेवने ।
स जायसे मथ्यमानः सहो महत्त्वामाहुः सहसस्पुत्रमङ्गिरः ॥ २ ॥
यज्ञस्य केतुं प्रथमं पुरोहितमग्निं नरस्त्रिषधस्थे समिन्धते ।
इन्द्रेण देवैः सरथं स बर्हिषि सीदन् नि होता यजथाय सुक्रतुः ॥ ३ ॥

(७)

ऋषिः—गृत्समदः॥ देवता—मित्रावरुणौ॥ छन्दः—गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

अयं वां मित्रावरुणा सुतः सोम ऋतावृधा। ममेदिह श्रुतं हवम् ॥ १ ॥
राजानावनभिद्रुहा ध्रुवे सदस्युत्तमे। सहस्त्रस्थूण आशाते ॥ २ ॥
ता सम्राजा घृतासुती आदित्या दानुनस्पती। सचेते अनवह्वरम् ॥ ३ ॥

(८)

ऋषिः—गोतमो राहूगणः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

इन्द्रो दधीचो अस्थभिर्वृत्राण्यप्रतिष्कुतः। जघान नवतीर्नव ॥ १ ॥
इच्छन्नश्वस्य यच्छिरः पर्वतेष्वपश्रितम्। तद्विदच्छर्यणावति ॥ २ ॥
अत्राह गोरमन्वत नाम त्वष्टुरपीच्यम्। इत्था चन्द्रमसो गृहे ॥ ३ ॥

(९)

ऋषिः—वसिष्ठः॥ देवता—इन्द्राग्नी॥ छन्दः—गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

इयं वामस्य मन्मन इन्द्राग्नी पूर्व्यस्तुतिः। अभ्राद् वृष्टिरिवाजनि ॥ १ ॥
शृणुतं जरितुर्हवमिन्द्राग्नी वनतं गिरः। ईशाना पिप्यतं धियः ॥ २ ॥
मा पापत्वाय नो नरेन्द्राग्नी माभिशस्तये। मा नो रीरधतं निदे ॥ ३ ॥

(१०)

ऋषिः—दृढच्युत आगस्त्यः॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

पवस्व दक्षसाधनो देवेभ्यः पीतये हरे। मरुद्भ्यो वायवे मदः ॥ १ ॥
स देवैः शोभते वृषा कविर्योनावधि प्रियः। पवमानो अदाभ्यः ॥ २ ॥
पवमान धिया हितोऽभि योनिं कनिक्रदत्। धर्मणा वायुमारुहः ॥ ३ ॥

(११)

ऋषिः—सप्तर्षयः॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—बार्हतः प्रगाथः (१ बृहती, २ सतोबृहती)॥ स्वरः—१ मध्यमः; २ पञ्चमः॥

९२२. तवाहं सोम रारण सख्य इन्दो दिवेदिवे।
पुरूणि बभ्रो नि चरन्ति मामव परिधीरति ता इहि॥ १ ॥
तवाहं नक्तमुत सोम ते दिवा दुहानो बभ्र ऊधनि।
घृणा तपन्तमति सूर्यं परः शकुनाइव पप्तिम॥ २ ॥

(१२)

ऋषिः—बृहन्मतिः॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

पुनानो अक्रमीदभि विश्वा मृधो विचर्षणिः। शुम्भन्ति विप्रं धीतिभिः॥ १ ॥
आ योनिमरुणो रुहद्गमदिन्द्रो वृषा सुतम्। ध्रुवे सदसि सीदतु॥ २ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नू नो रयिं महामिन्दोऽस्मभ्यं सोम विश्वतः। आ पवस्व सहस्त्रिणम्॥ ३॥

(१३)

ऋषिः—वसिष्ठः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—विराडनुष्टुप्॥ स्वरः—गान्धारः॥

पिबा सोममिन्द्र मन्दतु त्वा यं ते सुषाव हर्यश्वाद्रिः।
सोतुर्बाहुभ्यां सुयतो नार्वा॥ १॥
यस्ते मदो युज्यश्चारुरस्ति येन वृत्राणि हर्यश्व हंसि।
स त्वामिन्द्र प्रभूवसो ममत्तु॥ २॥
बोधा सु मे मघवन् वाचमेमां यां ते वसिष्ठो अर्चति प्रशस्तिम्।
इमा ब्रह्म सधमादे जुषस्व॥ ३॥

(१४)

ऋषिः—रेभः काश्यपः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१ अतिजगती; २-३ उपरिष्टाद् बृहती॥ स्वरः—निषादः॥

विश्वाः पृतना अभिभूतरं नरः सजूस्ततक्षुरिन्द्रं जजनुश्च राजसे।
क्रत्वे वरे स्थेमन्यामुरीमुतोग्रमोजिष्ठं तरसं तरस्विनम्॥ १॥
नेमिं नमन्ति चक्षसा मेषं विप्रा अभिस्वरे।
सुदीतयो वो अद्रुहोऽपि कर्णे तरस्विनः समृक्वभिः॥ २॥
समु रेभासो अस्वरन्निन्द्रं सोमस्य पीतये।
स्वःपतिर्यदी वृधे धृतव्रतो ह्योजसा समूतिभिः॥ ३॥

(१५)

ऋषिः—पुरुहन्मा॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—बार्हतः प्रगाथः (१ बृहती, २ सतोबृहती)॥ स्वरः—१ मध्यमः; २ पञ्चमः॥

९३३. यो राजा चर्षणीनां याता रथेभिरध्रिगुः।
विश्वासां तरुता पृतनानां ज्येष्ठं यो वृत्रहा गृणे॥ १॥
इन्द्रं तं शुम्भ पुरुहन्मन्नवसे यस्य द्विता विधर्त्तरि।
हस्तेन वज्रः प्रति धायि दर्शतो महान्देवो न सूर्यः॥ २॥

(१६)

ऋषिः—असितः काश्यपो देवलो वा॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

परि प्रिया दिवः कविर्वयांसि नप्त्योर्हितः। स्वानैर्याति कविक्रतुः॥ १॥
स सूनुर्मातरा शुचिर्जातो जाते अरोचयत्। महान्मही ऋतावृधा॥ २॥
प्रप्र क्षयाय पन्यसे जनाय जुष्टो अद्रुहः। वीत्यर्ष पनिष्टये॥ ३॥

(१७)

ऋषिः—१ शक्तिः; २ उरुः॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—काकुभः प्रगाथः (१ ककुबुष्णिक्, २ सतोबृहती)॥ स्वरः—१ ऋषभः; २ पञ्चमः॥

त्वं ह्याङ्ग दैव्य पवमान जनिमानि द्युमत्तमः अमृतत्वाय घोषयन्॥ १॥
येना नवग्वा दध्यङ्ङपोर्णुते येन विप्रास आपिरे।
देवानां सुम्ने अमृतस्य चारुणो येन श्रवांस्याशत॥ २॥

(१८)

ऋषिः—अग्निश्चाक्षुषः॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—उष्णिक्॥ स्वरः—ऋषभः॥

सोमः पुनान ऊर्मिणाव्यं वारं वि धावति।
अग्रे वाचः पवमानः कनिक्रदत्॥ १॥
धीभिर्मृजन्ति वाजिनं वने क्रीडन्तमत्यविम्।
अभि त्रिपृष्ठं मतयः समस्वरन्॥ २॥
असर्जि कलशाँ अभि मीढ्वान्त्सप्तिर्न वाजयुः।
पुनानो वाचं जनयन्नसिष्यदत्॥ ३॥

(१९)

ऋषिः—प्रतर्दनो दैवोदासिः॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—त्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः॥

सोमः पवते जनिता मतीनां जनिता दिवो जनिता पृथिव्याः।
जनिताग्नेर्जनिता सूर्यस्य जनितेन्द्रस्य जनितोत विष्णोः॥ १॥
ब्रह्मा देवानां पदवीः कवीनामृषिर्विप्राणां महिषो मृगाणाम्।
श्येनो गृध्राणां स्वधितिर्वनानां सोमः पवित्रमत्येति रेभन्॥ २॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्रावीविपद्वाच ऊर्मिं न सिन्धुर्गिर स्तोमान् पवमानो मनीषाः ।
अन्तः पश्यन् वृजनेमावराण्या तिष्ठति वृषभो गोषु जानन् ॥ ३ ॥

(२०)

ऋषिः—प्रयोगो भार्गव अग्निर्वा पावको बार्हस्पत्यः; गृहपतियविष्ठौ सहसः सुतौ तयोर्वान्यतरः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अग्निं वो वृधन्तमध्वराणां पुरूतमम् । अच्छा नप्त्रे सहस्वते ॥ १ ॥
अयं यथा न आभुवत् त्वष्टा रूपेव तक्ष्या । अस्य क्रत्वा यशस्वतः ॥ २ ॥
अयं विश्वा अभि श्रियोऽग्निर्देवेषु पत्यते । आ वाजैरुप नो गमत् ॥ ३ ॥

(२१)

ऋषिः—गोतमो राहूगणः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—अनुष्टुप् ॥ स्वरः—गान्धारः ॥

९४९. इममिन्द्र सुतं पिब ज्येष्ठममर्त्यं मदम् ।
शुक्रस्य त्वाभ्यक्षरन् धारा ऋतस्य सादने ॥ १ ॥
न किष्ट्वद्रथीतरो हरी यदिन्द्र यच्छसे ।
न किष्ट्वानु मज्मना न किः स्वश्व आनशे ॥ २ ॥
इन्द्राय नूनमर्चतोक्थानि च ब्रवीतन ।
सुता अमत्सुरिन्दवो ज्येष्ठं नमस्यता सहः ॥ ३ ॥

(२२)

ऋषिः—भृगुः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

इन्द्र जुषस्व प्र वहा याहि शूर हरिह ।
पिबा सुतस्य मतिर्न मधोश्चकानश्चारुर्मदाय ॥ १ ॥
इन्द्र जठरं नव्यं न पृणस्व मधोर्दिवो न ।
अस्य सुतस्य स्वाऽनोप त्वा मदाः सुवाचो अस्थुः ॥ २ ॥
इन्द्रस्तुराषाण्मित्रो न जघान वृत्रं यतिर्न ।
बिभेद वलं भृगुर्न ससाहे शत्रून् मदे सोमस्य ॥ ३ ॥

इति पञ्चमोऽध्यायः, तृतीयप्रपाठकस्य प्रथमोऽर्धः ॥

अथ षष्ठोऽध्यायः

तृतीयप्रपाठकस्य द्वितीयोऽर्धः

(१)

ऋषिः—अकृष्टा माषाः, सिकतानिवावरी, पृश्नयोऽजाश्च ऋषिगणाः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—जगती ॥ स्वरः—निषादः ॥

गोवित्पवस्व वसुविद्धिरण्यविद्रेतोधा इन्दो भुवनेष्वर्पितः ।
त्वं सुवीरो असि सोम विश्ववित्तं त्वा नर उप गिरेम आसते ॥ १ ॥
त्वं नृचक्षा असि सोम विश्वतः पवमान वृषभ ता वि धावसि ।
स नः पवस्व वसुमद्धिरण्यवद्वयं स्याम भुवनेषु जीवसे ॥ २ ॥
ईशान इमा भुवनानि ईयसे युजान इन्दो हरितः सुपर्ण्यः ।
तास्ते क्षरन्तु मधुमद् घृतं पयस्तव व्रते सोम तिष्ठन्तु कृष्टयः ॥ ३ ॥

(२)

ऋषिः—कश्यपः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

पवमानस्य विश्ववित् प्र ते सर्गा असृक्षत । सूर्यस्येव न रश्मयः ॥ १ ॥
केतुं कृण्वन्दिवस्परि विश्वा रूपाभ्यर्षसि । समुद्रः सोम पिन्वसे ॥ २ ॥
जज्ञानो वाचमिष्यसि पवमान विधर्मणि । क्रन्दन् देवो न सूर्यः ॥ ३ ॥

(३)

ऋषिः—असितः काश्यपो देवलो वा ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

प्र सोमासो अधन्विषुः पवमानास इन्दवः । श्रीणाना अप्सु वृञ्जते ॥ १ ॥
अभि गावो अधन्विषुरापो न प्रवता यतीः । पुनाना इन्द्रमाशत ॥ २ ॥
प्र पवमान धन्वसि सोमेन्द्राय मादनः । नृभिर्यतो वि नीयते ॥ ३ ॥
इन्दो यदद्रिभिः सुतः पवित्रं परिधीयसे । अरमिन्द्रस्य धाम्ने ॥ ४ ॥
त्वं सोम नृमादनः पवस्व चर्षणीधृतिः । सस्निर्यो अनुमाद्यः ॥ ५ ॥
पवस्व वृत्रहन्तम उक्थेभिरनुमाद्यः । शुचिः पावको अद्भुतः ॥ ६ ॥
शुचिः पावक उच्यते सोमः सुतः स मधुमान् । देवावीरघशंसहा ॥ ७ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

(४)

ऋषिः—असितः काश्यपो देवलो वा ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥
छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

प्र कविर्देववीतयेऽव्या वारेभिरव्यत। साह्वान्विश्वा अभि स्पृधः ॥१॥
स हि ष्मा जरितृभ्य आ वाजं गोमन्तमिन्वति। पवमानः सहस्रिणम् ॥२॥
परि विश्वानि चेतसा मृज्यसे पवसे मती। स नः सोम श्रवो विदः ॥३॥
अभ्यर्ष बृहद्यशो मघवद्भ्यो ध्रुवं रयिम्। इषं स्तोतृभ्य आ भर ॥४॥
त्वं राजेव सुव्रतो गिरः सोमा विवेशिथ। पुनानो वह्ने अद्भुत ॥५॥
स वह्निरप्सु दुष्टरो मृज्यमानो गभस्त्योः। सोमश्चमूषु सीदति ॥६॥
क्रीडुर्मखो न मंहयुः पवित्रं सोम गच्छसि। दधत् स्तोत्रे सुवीर्यम् ॥७॥

(५)

ऋषिः—अवत्सारः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

यवंयवं नो अन्धसा पुष्टंपुष्टं परि स्रव। विश्वा च सोम सौभगा ॥१॥
इन्दो यथा तव स्तवो यथा ते जातमन्धसः। नि बर्हिषि प्रिये सदः ॥२॥
उत नो गोविदश्ववित् पवस्व सोमान्धसा। मक्षूतमेभिरहभिः ॥३॥
यो जिनाति न जीयते हन्ति शत्रुमभीत्य। स पवस्व सहस्रजित् ॥४॥

(६)

ऋषिः—जमदग्निः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥
स्वरः—षड्जः ॥

यास्ते धारा मधुश्चुतोऽसृग्रमिन्द ऊतये। ताभिः पवित्रमासदः ॥१॥
सो अर्षेन्द्राय पीतये तिरो वाराण्यव्यया। सीदन्नृतस्य योनिमा ॥२॥
त्वं सोम परि स्रव स्वादिष्ठो अङ्गिरोभ्यः। वरिवोविद् घृतं पयः ॥३॥

(७)

ऋषिः—अरुणो वैतहव्यः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—जगती ॥ स्वरः—निषादः ॥

तव श्रियो वर्ष्यस्येव विद्युतोऽग्नेश्चिकित्र उषसामिवेतयः ।
यदोषधीरभिसृष्टो वनानि च परि स्वयं चिनुषे अन्नमासनि ॥१॥
वातोपजूत इषितो वशाँ अनु तृषु यदन्ना वेविषद्वितिष्ठसे ।
आ ते यतन्ते रथ्यो३ यथा पृथक् शर्धांस्यग्ने अजरस्य धक्षतः ॥२॥
मेधाकारं विदथस्य प्रसाधनमग्निं होतारं परिभूतरं मतिम् ।
त्वामर्भस्य हविषः समानमित् त्वां महो वृणते नान्यं त्वत् ॥३॥

(८)

ऋषिः—उरुचक्रिरात्रेयः ॥ देवता—मित्रावरुणौ ॥ छन्दः—गायत्री ॥
स्वरः—षड्जः ॥

पुरूरुणा चिद्ध्यस्त्यवो नूनं वां वरुण। मित्र वंसि वां सुमतिम् ॥१॥
ता वां सम्यगद्रुह्वाणेषमश्याम धाम च। वयं वां मित्रा स्याम ॥२॥
पातं नो मित्रा पायुभिरुत त्रायेथां सुत्रात्रा। साह्याम दस्यून् तनूभिः ॥३॥

(९)

ऋषिः—कुरुसुतिः काण्वः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

उत्तिष्ठन्नोजसा सह पीत्वा शिप्रे अवेपयः। सोममिन्द्र चमू सुतम् ॥१॥
अनु त्वा रोदसी उभे स्पर्धमानमददेताम्। इन्द्र यद्दस्युहाभवः ॥२॥
वाचमष्टापदीमहं नवस्रक्तिमृतावृधम्। इन्द्रात् परितन्वं ममे ॥३॥

(१०)

ऋषिः—भरद्वाजो बार्हस्पत्यः ॥ देवता—इन्द्राग्नी ॥ छन्दः—गायत्री ॥
स्वरः—षड्जः ॥

इन्द्राग्नी युवामिमे३ऽभि स्तोमा अनूषत। पिबतं शम्भुवा सुतम् ॥१॥
या वां सन्ति पुरुस्पृहो नियुतो दाशुषे नरा। इन्द्राग्नी ताभिरा गतम् ॥२॥
ताभिरा गच्छतं नरोपेदं सवनं सुतम्। इन्द्राग्नी सोमपीतये ॥३॥

(११)

ऋषिः—भृगुर्वारुणिर्जमदग्निर्भार्गवो वा ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥
छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अर्षा सोम द्युमत्तमोऽभि द्रोणानि रोरुवत्। सीदन्योनौ वनेष्वा ॥१॥
अप्सा इन्द्राय वायवे वरुणाय मरुद्भ्यः। सोमा अर्षन्तु विष्णवे ॥२॥
इषं तोकाय नो दधदस्मभ्यं सोम विश्वतः। आ पवस्व सहस्रिणम् ॥३॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

(१२)

ऋषिः—सप्तर्षयः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

९९७. सोम उ ष्वाणः सोतृभिरधि ष्णुभिरवीनाम् ।
अश्वयेव हरिता याति धारया मन्द्रया याति धारया ॥ १ ॥
अनूपे गोमान् गोभिरक्षाः सोमो दुग्धाभिरक्षाः ।
समुद्रं न संवरणान्यग्मन् मन्दी मदाय तोशते ॥ २ ॥

(१३)

ऋषिः—असितः काश्यपो देवलो वा ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

यत्सोम चित्रमुक्थ्यं दिव्यं पार्थिवं वसु । तन्नः पुनान आ भर ॥ १ ॥
वृषा पुनान आयूंषि स्तनयन्नधि बर्हिषि । हरिः सन्योनिमासदः ॥ २ ॥
युवं हि स्थः स्वःपती इन्द्रश्च सोम गोपती । ईशाना पिप्यतं धियः ॥ ३ ॥

(१४)

ऋषिः—गोतमो राहूगणः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—पङ्क्तिः ॥ स्वरः—पञ्चमः ॥

इन्द्रो मदाय वावृधे शवसे वृत्रहा नृभिः ।
तमिन्महत्स्वाजिषूतिमर्भे हवामहे स वाजेषु प्र नोऽविषत् ॥ १ ॥
असि हि वीर सेन्योऽसि भूरि पराददिः ।
असि दभ्रस्य चिद् वृधो यजमानाय शिक्षसि सुन्वते भूरि ते वसु ॥ २ ॥
यदुदीरत आजयो धृष्णवे धीयते धनम् ।
युङ्क्ष्वा मदच्युता हरी कं हनः कं वसौ दधोऽस्मे इन्द्र वसौ दधः ॥ ३ ॥

(१५)

ऋषिः—गोतमो राहूगणः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—पङ्क्तिः ॥ स्वरः—पञ्चमः ॥

स्वादोरित्था विषूवतो मधोः पिबन्ति गौर्यः ।
या इन्द्रेण सयावरीर्वृष्णा मदन्ति शोभथा वस्वीरनु स्वराज्यम् ॥ १ ॥
ता अस्य पृशनायुवः सोमं श्रीणन्ति पृश्नयः ।
प्रिया इन्द्रस्य धेनवो वज्रं हिन्वन्ति सायकं वस्वीरनु स्वराज्यम् ॥ २ ॥
ता अस्य नमसा सहः सपर्यन्ति प्रचेतसः ।
व्रतान्यस्य सश्चिरे पुरूणि पूर्वचित्तये वस्वीरनु स्वराज्यम् ॥ ३ ॥

(१६)

ऋषिः—जमदग्निः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

असाव्यंशुर्मदायाप्सु दक्षो गिरिष्ठाः । श्येनो न योनिमासदत् ॥ १ ॥
शुभ्रमन्धो देववातमप्सु धौतं नृभिः सुतम् । स्वदन्ति गावः पयोभिः ॥ २ ॥
आदीमश्वं न हेतारमशूशुभन्नमृताय । मधौ रसं सधमादे ॥ ३ ॥

(१७)

ऋषिः—१ ऊर्ध्वसद्मा, २ कृतयशाः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—काकुभः प्रगाथः (१ ककुबुष्णिक्, २ सतोबृहती) ॥ स्वरः—१ ऋषभः, २ पञ्चमः ॥

अभि द्युम्नं बृहद्यश इषस्पते दिदीहि देव देवयुम् । वि कोशं मध्यमं युव ॥ १ ॥
आ वच्यस्व सुदक्ष चम्वोः सुतो विशां वह्निर्न विश्पतिः ।
वृष्टिं दिवः पवस्व रीतिमपो जिन्वन् गविष्टये धियः ॥ २ ॥

(१८)

ऋषिः—त्रितः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—उष्णिक् ॥ स्वरः—ऋषभः ॥

प्राणा शिशुर्महीनां हिन्वन्नृतस्य दीधितिम् । विश्वा परि प्रिया भुवदध द्विता ॥ १ ॥
उप त्रितस्य पाष्योऽरभक्त यद् गुहा पदम् । यज्ञस्य सप्त धामभिरध प्रियम् ॥ २ ॥
त्रीणि त्रितस्य धारया पृष्ठेष्वेरयद्रयिम् । मिमीते अस्य योजना वि सुक्रतुः ॥ ३ ॥

(१९)

ऋषिः—रेभसूनू काश्यपौ ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—अनुष्टुप् ॥ स्वरः—गान्धारः ॥

१०१६. पवस्व वाजसातये पवित्रे धारया सुतः ।
इन्द्राय सोम विष्णवे देवेभ्यो मधुमत्तरः ॥ १ ॥
त्वां रिहन्ति धीतयो हरिं पवित्रे अद्रुहः ।
वत्सं जातं न मातरः पवमान विधर्मणि ॥ २ ॥
त्वं द्यां च महिव्रत पृथिवीं चाति जभ्रिषे ।
प्रति द्रापिममुञ्चथाः पवमान महित्वना ॥ ३ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

(२०)

ऋषिः—मन्युर्वासिष्ठः॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—त्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः॥

इन्दुर्वाजी पवते गोन्योघा इन्द्रे सोमः सह इन्वन्मदाय ।
हन्ति रक्षो बाधते पर्यरातिं वरिवस्कृण्वन् वृजनस्य राजा ॥ १ ॥
अध धारया मध्वा पृचानस्तिरो रोम पवते अद्रिदुग्धः ।
इन्दुरिन्द्रस्य सख्यं जुषाणो देवो देवस्य मत्सरो मदाय ॥ २ ॥
अभि व्रतानि पवते पुनानो देवो देवान्त्स्वेन रसेन पृञ्चन् ।
इन्दुर्धर्माण्यृतुथा वसानो दश क्षिपो अव्यत सानो अव्ये ॥ ३ ॥

(२१)

ऋषिः—वसुश्रुत आत्रेयः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—पङ्क्तिः॥ स्वरः—पञ्चमः॥

आ ते अग्न इधीमहि द्युमन्तं देवाजरम् ।
यद्ध स्या ते पनीयसी समिद्दीदयति द्यवीषं स्तोतृभ्य आ भर ॥ १ ॥
आ ते अग्न ऋचा हविः शुक्रस्य ज्योतिषस्पते ।
सुश्चन्द्र दस्म विश्पते हव्यवाट् तुभ्यं हूयत इषं स्तोतृभ्य आ भर ॥ २ ॥
ओभे सुश्चन्द्र विश्पते दर्वी श्रीणीष आसनि ।
उतो न उत्पुपूर्या उक्थेषु शवसस्पत इषं स्तोतृभ्य आ भर ॥ ३ ॥

(२२)

ऋषिः—नृमेधः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—उष्णिक्॥ स्वरः—ऋषभः॥

इन्द्राय साम गायत विप्राय बृहते बृहत्। ब्रह्मकृते विपश्चिते पनस्यवे॥ १ ॥
त्वमिन्द्राभिभूरसि त्वं सूर्यमरोचयः। विश्वकर्मा विश्वदेवो महाँ असि॥ २ ॥
१०२७. विभ्राजं ज्योतिषा स्वाऽरगच्छो रोचनं दिवः ।
देवास्त इन्द्र सख्याय येमिरे ॥ ३ ॥

(२३)

ऋषिः—गोतमो राहूगणः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—अनुष्टुप्॥ स्वरः—गान्धारः॥

असावि सोम इन्द्र ते शविष्ठ धृष्णवा गहि ।
आ त्वा पृणक्त्विन्द्रियं रजः सूर्यो न रश्मिभिः ॥ १ ॥
आ तिष्ठ वृत्रहन् रथं युक्ता ते ब्रह्मणा हरी ।
अर्वाचीनं सु ते मनो ग्रावा कृणोतु वग्नुना ॥ २ ॥
इन्द्रमिद्धरी वहतोऽप्रतिधृष्टशवसम् ।
ऋषीणां सुष्टुतीरुप यज्ञं च मानुषाणाम् ॥ ३ ॥

इति षष्ठोऽध्यायः, तृतीयप्रपाठकश्च समाप्तः॥

अथ सप्तमोऽध्यायः

चतुर्थप्रपाठकस्य प्रथमोऽर्धः

(१)

ऋषिः—अकृष्टा माषाः, सिकतानिवावरी, पृश्नयोऽजाश्च॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—जगतीः॥ स्वरः—निषादः॥

ज्योतिर्यज्ञस्य पवते मधु प्रियं पिता देवानां जनिता विभूवसुः ।
दधाति रत्नं स्वधयोरपीच्यं मदिन्तमो मत्सर इन्द्रियो रसः ॥ १ ॥
अभिक्रन्दन् कलशं वाज्यर्षति पतिर्दिवः शतधारो विचक्षणः ।
हरिर्मित्रस्य सदनेषु सीदति मर्मृजानोऽविभिः सिन्धुभिर्वृषा ॥ २ ॥
अग्रे सिन्धूनां पवमानो अर्षस्यग्रे वाचो अग्रियो गोषु गच्छसि ।
अग्रे वाजस्य भजसे महद् धनं स्वायुधः सोतृभिः सोम सूयसे ॥ ३ ॥

(२)

ऋषिः—कश्यपः॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

असृक्षत प्र वाजिनो गव्या सोमासो अश्वया। शुक्रासो वीरयाशवः ॥ १ ॥
शुम्भमाना ऋतायुभिर्मृज्यमाना गभस्त्योः। पवन्ते वारे अव्यये ॥ २ ॥
ते विश्वा दाशुषे वसु सोमा दिव्यानि पार्थिवा। पवन्तामान्तरिक्ष्या ॥ ३ ॥

(३)

ऋषिः—मेधातिथिः॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

पवस्व देववीरति पवित्रं सोम रंह्या। इन्द्रमिन्दो वृषा विश ॥ १ ॥
आ वच्यस्व महि प्सरो वृषेन्दो द्युम्नवत्तमः। आ योनिं धर्णसिः सदः ॥ २ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अधुक्षत प्रियं मधु धारा सुतस्य वेधसः। अपो वसिष्ट सुक्रतुः ॥ ३ ॥
महान्तं त्वा महीरन्वापो अर्षन्ति सिन्धवः। यद्गोभिर्वासयिष्यसे ॥ ४ ॥
समुद्रो अप्सु मामृजे विष्टम्भो धरुणो दिवः। सोमः पवित्रे अस्मयुः ॥ ५ ॥
अचिक्रदद् वृषा हरिर्महान्मित्रो न दर्शतः। सं सूर्येण दिद्युते ॥ ६ ॥
गिरस्त इन्द ओजसा मर्मृज्यन्ते अपस्युवः। याभिर्मदाय शुम्भसे ॥ ७ ॥
तं त्वा मदाय घृष्वय उ लोककृत्नुमीमहे। तव प्रशस्तये महे ॥ ८ ॥
गोषा इन्दो नृषा अस्यश्वसा वाजसा उत। आत्मा यज्ञस्य पूर्व्यः ॥ ९ ॥
अस्मभ्यमिन्दविन्द्रियं मधोः पवस्व धारया। पर्जन्यो वृष्टिमाँइव ॥ १० ॥

(४)

ऋषिः—हिरण्यस्तूपः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

सना च सोम जेषि च पवमान महि श्रवः। अथा नो वस्यसस्कृधि ॥ १ ॥
सना ज्योतिः सना स्वाऽविश्वा च सोम सौभगा। अथा नो वस्यसस्कृधि ॥ २ ॥
सना दक्षमुत क्रतुमप सोम मृधो जहि। अथा नो वस्यसस्कृधि ॥ ३ ॥
पवीतारः पुनीतन सोममिन्द्राय पातवे। अथा नो वस्यसस्कृधि ॥ ४ ॥
त्वं सूर्य न आ भज तव क्रत्वा तवोतिभिः। अथा नो वस्यसस्कृधि ॥ ५ ॥
तव क्रत्वा तवोतिभिर्ज्योक् पश्येम सूर्यम्। अथा नो वस्यसस्कृधि ॥ ६ ॥
अभ्यर्ष स्वायुध सोम द्विबर्हसं रयिम्। अथा नो वस्यसस्कृधि ॥ ७ ॥
अभ्याऽर्षा नपच्युतो वाजिन्त्समत्सु सासहिः। अथा नो वस्यसस्कृधि ॥ ८ ॥
त्वां यज्ञैरवीवृधन् पवमान विधर्मणि। अथा नो वस्यसस्कृधि ॥ ९ ॥
रयिं नश्चित्रमश्विनमिन्दो विश्वायुमा भर। अथा नो वस्यसस्कृधि ॥ १० ॥

(५)

ऋषिः—अवत्सारः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

तरत्स मन्दी धावति धारा सुतस्यान्धसः। तरत्स मन्दी धावति ॥ १ ॥
उस्रा वेद वसूनां मर्त्तस्य देव्यवसः। तरत्स मन्दी धावति ॥ २ ॥
ध्वस्रयोः पुरुषन्त्योरा सहस्राणि दद्महे। तरत्स मन्दी धावति ॥ ३ ॥
आ ययोस्त्रिंशतं तना सहस्राणि च दद्महे। तरत्स मन्दी धावति ॥ ४ ॥

(६)

ऋषिः—जमदग्निः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

एते सोमा असृक्षत गृणानाः शवसे महे। मदिन्तमस्य धारया ॥ १ ॥
अभि गव्यानि वीतये नृम्णा पुनानो अर्षसि। सनद्वाजः परि स्रव ॥ २ ॥
उत नो गोमतीरिषो विश्वा अर्ष परिष्टुभः। गृणानो जमदग्निना ॥ ३ ॥

(७)

ऋषिः—कुत्स आङ्गिरसः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—जगतीः ॥ स्वरः—निषादः ॥

इमं स्तोममर्हते जातवेदसे रथमिव सं महेमा मनीषया ।
भद्रा हि नः प्रमतिरस्य संसद्यग्ने सख्ये मा रिषामा वयं तव ॥ १ ॥
भरामेध्मं कृणवामा हवींषि ते चितयन्तः पर्वणापर्वणा वयम् ।
जीवातवे प्रतरां साधया धियोऽग्ने सख्ये मा रिषामा वयं तव ॥ २ ॥
शकेम त्वा समिधं साधया धियस्त्वे देवा हविरदन्त्याहुतम् ।
त्वमादित्याँ आ वह तान् ह्यूश्मस्यग्ने सख्ये मा रिषामा वयं तव ॥ ३ ॥

(८)

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—आदित्यः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

प्रति वां सूर उदिते मित्र गृणीषे वरुणम्। अर्यमणं रिशादसम् ॥ १ ॥
राया हिरण्यया मतिरियमवृकाय शवसे। इयं विप्रा मेधसातये ॥ २ ॥
ते स्याम देव वरुण ते मित्र सूरिभिः सह। इषं स्वश्च धीमहि ॥ ३ ॥

(९)

ऋषिः—त्रिशोकः काण्वः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

भिन्धि विश्वा अप द्विषः परि बाधो जही मृधः। वसु स्पार्ह तदा भर ॥ १ ॥
यस्य ते विश्वमानुषग्भूरेर्दत्तस्य वेदति। वसु स्पार्ह तदा भर ॥ २ ॥
यद्वीडाविन्द्र यत् स्थिरे यत् पर्शाने पराभृतम्। वसु स्पार्ह तदा भर ॥ ३ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

(१०)

ऋषिः—श्यावाश्वः ॥ देवता—इन्द्राग्नी ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

यज्ञस्य हि स्थ ऋत्विजा सस्नी वाजेषु कर्मसु। इन्द्राग्नी तस्य बोधतम् ॥ १ ॥
तोशासा रथयावाना वृत्रहणापराजिता। इन्द्राग्नी तस्य बोधतम् ॥ २ ॥
इदं वां मदिरं मध्वधुक्षन्नद्रिभिर्नरः। इन्द्राग्नी तस्य बोधतम् ॥ ३ ॥

(११)

ऋषिः—कश्यपः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

इन्द्रायेन्दो मरुत्वते पवस्व मधुमत्तमः। अर्कस्य योनिमासदम् ॥ १ ॥
तं त्वा विप्रा वचोविदः परिष्कृण्वन्ति धर्णसिम्। सं त्वा मृजन्त्यायवः ॥ २ ॥
रसं ते मित्रो अर्यमा पिबन्तु वरुणः कवे। पवमानस्य मरुतः ॥ ३ ॥

(१२)

ऋषिः—सप्तर्षयः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—बार्हतः प्रगाथः (१ बृहती, २ सतोबृहती) ॥ स्वरः—१ मध्यमः, २ पञ्चमः ॥

१०७९. मृज्यमानः सुहस्त्या समुद्रे वाचमिन्वसि ।
रयिं पिशङ्गं बहुलं पुरुस्पृहं पवमानाभ्यर्षसि ॥ १ ॥
पुनानो वारे पवमानो अव्यये वृषो अचिक्रदद्वने ।
देवानां सोम पवमान निष्कृतं गोभिरञ्जानो अर्षसि ॥ २ ॥

(१३)

ऋषिः—अमहीयुः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

एतमु त्यं दश क्षिपो मृजन्ति सिन्धुमातरम्। समादित्येभिरख्यत ॥ १ ॥
समिन्द्रेणोत वायुना सुत एति पवित्र आ। सं सूर्यस्य रश्मिभिः ॥ २ ॥
स नो भगाय वायवे पूष्णे पवस्व मधुमान्। चारुर्मित्रे वरुणे च ॥ ३ ॥

(१४)

ऋषिः—शुनःशेप आजीगर्तिः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

रेवतीर्नः सधमाद इन्द्रे सन्तु तुविवाजाः। क्षुमन्तो याभिर्मदेम ॥ १ ॥
आ घ त्वावान् त्मना युक्त स्तोतृभ्यो धृष्णवीयानः। ऋणोरक्षं न चक्र्योः ॥ २ ॥
आ यद् दुवः शतक्रतवा कामं जरितॄणाम्। ऋणोरक्षं न शचीभिः ॥ ३ ॥

(१५)

ऋषिः—मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

सुरूपकृत्नुमूतये सुदुघामिव गोदुहे। जुहूमसि द्यविद्यवि ॥ १ ॥
उप नः सवना गहि सोमस्य सोमपाः पिब। गोदा इद्रेवतो मदः ॥ २ ॥
अथा ते अन्तमानां विद्याम सुमतीनाम्। मा नो अति ख्य आ गहि ॥ ३ ॥

(१६)

ऋषिः—१-३ मान्धाता यौवनाश्वः, २ उत्तरार्धस्य गोधाः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—महापङ्क्तिः ॥ स्वरः—पञ्चमः ॥

उभे यदिन्द्र रोदसी आपप्राथोषाइव ।
महान्तं त्वा महीनां सम्राजं चर्षणीनाम् ।
देवी जनित्र्यजीजनद्भद्रा जनित्र्यजीजनत् ॥ १ ॥
दीर्घं ह्यङ्कुशं यथा शक्तिं बिभर्षि मन्तुमः ।
पूर्वेण मघवन् पदा वयामजो यथा यमः ।
देवी जनित्र्यजीजनद्भद्रा जनित्र्यजीजनत् ॥ २ ॥
अव स्म दुर्हणायतो मर्त्तस्य तनुहि स्थिरम् ।
अधस्पदं तमीं कृधि यो अस्मां अभिदासति ।
देवी जनित्र्यजीजनद्भद्रा जनित्र्यजीजनत् ॥ ३ ॥

(१७)

ऋषिः—असितः काश्यपो देवलो वा ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१०९३. परि स्वानो गिरिष्ठाः पवित्रे सोमो अक्षरत् ।
मदेषु सर्वधा असि ॥ १ ॥
त्वं विप्रस्त्वं कविर्मधु प्र जातमन्धसः ।
मदेषु सर्वधा असि ॥ २ ॥
त्वे विश्वे सजोषसो देवासः पीतिमाशत ।
मदेषु सर्वधा असि ॥ ३ ॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

(१८)

ऋषिः—१ ऋणञ्चयः, २ शक्तिः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥
छन्दः—१ यवमध्या गायत्री, २ सतोबृहतीः ॥
स्वरः—१ षड्जः, २ पञ्चमः ॥

स सुन्वे यो वसूनां यो रायामानेता य इडानाम् ।
सोमो यः सुक्षितीनाम् ॥ १ ॥
यस्य त इन्द्रः पिबाद्यस्य मरुतो यस्य वार्यमणा भगः ।
आ येन मित्रावरुणा करामह एन्द्रमवसे महे ॥ २ ॥

(१९)

ऋषिः—पर्वतनारदौ ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—उष्णिक् ॥
स्वरः—ऋषभः ॥

तं वः सखायो मदाय पुनानमभि गायत ।
शिशुं न हव्यैः स्वदयन्त गूर्तिभिः ॥ १ ॥
सं वत्सइव मातृभिरिन्दुर्हिन्वानो अज्यते ।
देवावीर्मदो मतिभिः परिष्कृतः ॥ २ ॥
अयं दक्षाय साधनोऽयं शर्धाय वीतये ।
अयं देवेभ्यो मधुमत्तरः सुतः ॥ ३ ॥

(२०)

ऋषिः—मनुः सांवरणः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—अनुष्टुप् ॥
स्वरः—गान्धारः ॥

सोमाः पवन्त इन्दवोऽस्मभ्यं गातुवित्तमाः ।
मित्राः स्वाना अरेपसः स्वाध्यः स्वर्विदः ॥ १ ॥
ते पूतासो विपश्चितः सोमासो दध्याशिरः ।
सूरासो न दर्शतासो जिगत्नवो ध्रुवा घृते ॥ २ ॥
सुष्वाणासो व्यद्रिभिश्चिताना गोरधि त्वचि ।
इषमस्मभ्यमभितः समस्वरन् वसुविदः ॥ ३ ॥

(२१)

ऋषिः—कुत्स आङ्गिरसः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥
स्वरः—धैवतः ॥

अया पवा पवस्वैना वसूनि मांश्चत्व इन्दो सरसि प्र धन्व।
ब्रध्नश्चिद्यस्य वातो न जूतिं पुरुमेधाश्चित्तकवे नरं धात् ॥ १ ॥
उत न एना पवया पवस्वाधि श्रुते श्रवाय्यस्य तीर्थे।
षष्टिं सहस्रा नैगुतो वसूनि वृक्षं न पक्वं धूनवद्रणाय ॥ २ ॥
महीमे अस्य वृष नाम शूषे मांश्चत्वे वा पृशने वा वधत्रे।
अस्वापयन् निगुतः स्नेहयच्चापामित्राँ अपाचितो अचेतः ॥ ३ ॥

(२२)

ऋषिः—बन्धुः सुबन्धुः श्रुतबन्धुर्विप्रबन्धुश्च गौपायना लौपायना वा ॥
देवता—अग्निः ॥ छन्दः—द्विपदा विराट् ॥ स्वरः—पञ्चमः ॥
अग्ने त्वं नो अन्तम उत त्राता शिवो भुवो वरूथ्यः ॥ १ ॥
वसुरग्निर्वसुश्रवा अच्छा नक्षि द्युमत्तमो रयिं दाः ॥ २ ॥
तं त्वा शोचिष्ठ दीदिवः सुम्नाय नूनमीमहे सखिभ्यः ॥ ३ ॥

(२३)

ऋषिः—भुवन आप्त्यः साधनो वा भौवनः ॥ देवता—विश्वेदेवाः ॥
छन्दः—द्विपदा त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥
इमा नु कं भुवना सीषधेमेन्द्रश्च विश्वे च देवाः ॥ १ ॥
यज्ञं च नस्तन्वं च प्रजां चादित्यैरिन्द्रः सह सीषधातु ॥ २ ॥
आदित्यैरिन्द्रः सगणो मरुद्भिरस्मभ्यं भेषजा करत् ॥ ३ ॥

(२४)

ऋषिः—वामदेवः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—द्विपदा विराट् ॥ स्वरः—पञ्चमः ॥
प्र व इन्द्राय वृत्रहन्तमाय विप्राय गाथं गायत यं जुजोषते ॥ १ ॥
अर्चन्त्यर्कं मरुतः स्वर्का आ स्तोभति श्रुतो युवा स इन्द्रः ॥ २ ॥
उप प्रक्षे मधुमति क्षियन्तः पुष्येम रयिं धीमहे त इन्द्र ॥ ३ ॥

इति सप्तमोऽध्यायः, चतुर्थप्रपाठकस्य प्रथमोऽर्धः ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अथाष्टमोऽध्यायः

चतुर्थप्रपाठकस्य द्वितीयोऽर्धः

(१)

ऋषिः—१-३ वृषगणो वसिष्ठः; ४-१२ असितः काश्यपो देवलो वा॥
देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—१-३ त्रिष्टुप्; ४-१२ गायत्री॥
स्वरः—१-३ धैवतः; ४-१२ षड्जः॥

१११६. प्र काव्यमुशनेव ब्रुवाणो देवो देवानां जनिमा विवक्ति।
महिव्रतः शुचिबन्धुः पावकः पदा वराहो अभ्येति रेभन्॥ १॥
प्र हंसासस्तृपला वग्रुमच्छामादस्तं वृषगणा अयासुः।
अङ्गोषिणं पवमानं सखायो दुर्मर्षं वाणं प्र वदन्ति साकम्॥ २॥
स योजत उरुगायस्य जूतिं वृथा क्रीडन्तं मिमते न गावः।
परीणसं कृणुते तिग्मशृङ्गो दिवा हरिर्ददृशे नक्तमृज्रः॥ ३॥
प्र स्वानासो रथाइवार्वन्तो न अवस्यवः। सोमासो राये अक्रमुः॥ ४॥
हिन्वानासो रथाइव दधन्विरे गभस्त्योः। भरासः कारिणामिव॥ ५॥
राजानो न प्रशस्तिभिः सोमासो गोभिरञ्जते। यज्ञो न सप्त धातृभिः॥ ६॥
परि स्वानास इन्दवो मदाय बर्हणा गिरा। मधो अर्षन्ति धारया॥ ७॥
आपानासो विवस्वतो जिन्वन्त उषसो भगम्। सूरा अण्वं वि तन्वते॥ ८॥
अप द्वारा मतीनां प्रत्ना ऋण्वन्ति कारवः। वृष्णो हरसः आयवः॥ ९॥
समीचीनास आशत होतारः सप्तजानयः। पदमेकस्य पिप्रतः॥ १०॥
नाभा नाभिं न आ ददे चक्षुषा सूर्यं दृशे। कवेरपत्यमा दुहे॥ ११॥
अभि प्रियं दिवस्पदमध्वर्युभिर्गुहा हितम्। सूरः पश्यति चक्षसा॥ १२॥

(२)

ऋषिः—१-९ असितः काश्यपो देवलो वा; १०-१२ भृगुर्वारुणिर्जमदग्निर्भार्गवो वा॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

असृग्रमिन्दवः पथा धर्मन्नृतस्य सुश्रियः। विदाना अस्य योजना॥ १॥
प्र धारा मधो अग्रियो महीरपो वि गाहते। हविर्हविःषु वन्द्यः॥ २॥
प्र युजा वाचो अग्रियो वृषा अचिक्रदद्वने। सद्माभि सत्यो अध्वरः॥ ३॥
परि यत्काव्या कविर्नृम्णा पुनानो अर्षति। स्ववाजी सिषासति॥ ४॥
पवमानो अभि स्पृधो विशो राजेव सीदति। यदीमृण्वन्ति वेधसः॥ ५॥
अव्या वारे परि प्रियो हरिर्वनेषु सीदति। रेभो वनुष्यते मती॥ ६॥
स वायुमिन्द्रमश्विना साकं मदेन गच्छति। रणा यो अस्य धर्मणा॥ ७॥
आ मित्रे वरुणे भगे मधोः पवन्त ऊर्मयः। विदाना अस्य शक्मभिः॥ ८॥
अस्मभ्यं रोदसी रयिं मध्वो वाजस्य सातये। श्रवो वसूनि सञ्जितम्॥ ९॥
आ ते दक्ष मयोभुव वह्निमद्या वृणीमहे। पान्तमा पुरुस्पृहम्॥ १०॥
आ मन्द्रमा वरेण्यमा विप्रमा मनीषिणम्। पान्तमा पुरुस्पृहम्॥ ११॥
आ रयिमा सुचेतुनमा सुक्रतो तनूष्वा। पान्तमा पुरुस्पृहम्॥ १२॥

(३)

ऋषिः—भरद्वाजो बार्हस्पत्य॥ देवता—वैश्वानरः॥ छन्दः—त्रिष्टुप्॥
स्वरः—धैवतः॥

मूर्धानं दिवो अरतिं पृथिव्या वैश्वानरमृत आ जातमग्निम्।
कविं सम्राजमतिथिं जनानामासन्नः पात्रं जनयन्त देवाः॥ १॥
त्वां विश्वे अमृत जायमानं शिशुं न देवा अभि सं नवन्ते।
तव क्रतुभिरमृतत्वमायन् वैश्वानर यत्पित्रोरदीदेः॥ २॥
नाभिं यज्ञानां सदनं रयीणां महामाह्वमभि सं नवन्त।
वैश्वानरं रथ्यमध्वराणां यज्ञस्य केतुं जनयन्त देवाः॥ ३॥

(४)

ऋषिः—यजत आत्रेयः॥ देवता—मित्रावरुणौ॥ छन्दः—गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

प्र वो मित्राय गायत वरुणाय विपा गिरा। महिक्षत्रावृतं बृहत्॥ १॥
सम्राजा या घृतयोनी मित्रश्रोभा वरुणश्च। देवा देवेषु प्रशस्ता॥ २॥
ता नः शक्तं पार्थिवस्य महो रायो दिव्यस्य। महि वां क्षत्रं देवेषु॥ ३॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

(५)

ऋषिः—मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

इन्द्रा याहि चित्रभानो सुता इमे त्वायवः। अण्वीभिस्तना पूतासः ॥ १ ॥
इन्द्रा याहि धियेषितो विप्रजूतः सुतावतः। उप ब्रह्माणि वाघतः ॥ २ ॥
इन्द्रा याहि तूतुजान उप ब्रह्माणि हरिवः। सुते दधिष्व नश्चनः ॥ ३ ॥

(६)

ऋषिः—भरद्वाजो बार्हस्पत्यः॥ देवता—इन्द्राग्नी॥ छन्दः—गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

तमीडिष्व यो अर्चिषा वना विश्वा परिष्वजत्। कृष्णा कृणोति जिह्वया ॥ १ ॥
य इन्द्र आविवासति सुम्नमिन्द्रस्य मर्त्यः। द्युम्नाय सुतरा अपः ॥ २ ॥
ता नो वाजवतीरिष आशून् पिपृतमर्वतः। एन्द्रमग्निं च वोढवे ॥ ३ ॥

(७)

ऋषिः—सिकतानिवावरी॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—जगती॥ स्वरः—निषादः॥

प्रो अयासीदिन्दुरिन्द्रस्य निष्कृतं सखा सख्युर्न प्र मिनाति सङ्गिरम्।
मर्यइव युवतिभिः समर्षति सोमः कलशे शतयामना पथा ॥ १ ॥
प्र वो धियो मन्द्रयुवो विपन्युवः पनस्युवः संवरणेष्वक्रमुः।
हरिं क्रीडन्तमप्यनूषत स्तुभोऽभि धेनवः पयसेदशिश्रयुः ॥ २ ॥
आ नः सोम संयतं पिप्युषीमिषमिन्दो पवस्व पवमान ऊर्मिणा।
या नो दोहते त्रिरहन्नसश्चुषी क्षुमद्वाजवन्मधुमत्सुवीर्यम् ॥ ३ ॥

(८)

ऋषिः—पुरुहन्मा॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—बार्हतः प्रगाथः (१ बृहती, २ सतोबृहती)॥ स्वरः—१ मध्यमः, २ पञ्चमः॥

११५५. न किष्टे कर्मणा नशद्यश्चकार सदावृधम्।
इन्द्रं न यज्ञैर्विश्वगूर्तमृभ्वसमधृष्टं धृष्णुमोजसा ॥ १ ॥
अषाढमुग्रं पृतनासु सासहिं यस्मिन्महीरुरुज्रयः।
सं धेनवो जायमाने अनोनवुर्द्यावः क्षामीरनोनवुः ॥ २ ॥

(९)

ऋषिः—पर्वतनारदौ शिखण्डिन्यावप्सरसौ काश्यपौ वा॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—उष्णिक्॥ स्वरः—ऋषभः॥

सखाय आ नि षीदत पुनानाय प्र गायत। शिशुं न यज्ञैः परि भूषत श्रिये ॥ १ ॥
समी वत्सं न मातृभिः सृजता गयसाधनम्। देवाव्यां३ मदमभि द्विशवसम् ॥ २ ॥
पुनाता दक्षसाधनं यथा शर्धाय वीतये। यथा मित्राय वरुणाय शन्तमम् ॥ ३ ॥

(१०)

ऋषिः—अग्नयो धिष्ण्या ऐश्वराः॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—द्विपदा विराट्॥ स्वरः—पञ्चमः॥

प्र वाज्यक्षाः सहस्रधारस्तिरः पवित्र वि वारमव्यम्॥ १ ॥
स वाज्यक्षाः सहस्ररेता अद्भिर्मृजानो गोभिः श्रीणानः॥ २ ॥
प्र सोम याहीन्द्रस्य कुक्षा नृभिर्यमानो अद्रिभिः सुतः॥ ३ ॥

(११)

ऋषिः—भृगुर्वारुणिर्जमदग्निर्भार्गवो वा॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

ये सोमासः परावति ये अर्वावति सुन्विरे। ये वादः शर्यणावति॥ १ ॥
य आर्जीकेषु कृत्वसु ये मध्ये पस्त्यानाम्। ये वा जनेषु पञ्चसु॥ २ ॥
ते नो वृष्टिं दिवस्परि पवन्तामा सुवीर्यम्। स्वाना देवास इन्दवः॥ ३ ॥

(१२)

ऋषिः—वत्सः काण्वः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

आ ते वत्सो मनो यमत् परमाच्चित् सधस्थात्। अग्ने त्वां कामये गिरा॥ १ ॥
पुरुत्रा हि सदृङ्ङसि दिशा विश्वा अनु प्रभुः। समत्सु त्वा हवामहे॥ २ ॥
समत्स्वग्निमवसे वाजयन्तो हवामहे। वाजेषु चित्रराधसम् ॥ ३ ॥

(१३)

ऋषिः—नृमेधः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१-२ ककुबुष्णिक्, ३ पुरउष्णिक्॥ स्वरः—ऋषभः॥

त्वं न इन्द्रा भर ओजो नृम्णं शतक्रतो विचर्षणे। आ वीरं पृतनासहम्॥ १ ॥
त्वं हि नः पिता वसो त्वं माता शतक्रतो बभूविथ। अधा ते सुम्नमीमहे॥ २ ॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

त्वां शुष्मिन् पुरुहूत वाजयन्तमुप ब्रुवे सहस्कृत। स नो रास्व सुवीर्यम्॥ ३॥

(१४)

ऋषिः—अत्रिः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—अनुष्टुप्॥ स्वरः—गान्धारः॥

११७२. यदिन्द्र चित्र म इह नास्ति त्वादातमद्रिवः।
राधस्तन्नो विदद्वस उभयाहस्त्या भर॥ १॥
यन्मन्यसे वरेण्यमिन्द्र द्युक्ष तदा भर।
विद्याम तस्य ते वयमकूपारस्य दावनः॥ २॥
यत्ते दिक्षु प्रराध्यं मनो अस्ति श्रुत बृहत्।
तेन दृढा चिदद्रिव आ वाजं दर्षि सातये॥ ३॥

इत्यष्टमोऽध्यायः, चतुर्थप्रपाठकश्च समाप्तः॥

अथ नवमोऽध्यायः

पञ्चमप्रपाठकस्य प्रथमोऽर्धः

(१)

ऋषिः—प्रतर्दनो दैवोदासिः॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—त्रिष्टुप्॥
स्वरः—धैवतः॥

शिशुं जज्ञानं हर्यतं मृजन्ति शुम्भन्ति विप्रं मरुतो गणेन।
कविर्गीर्भिः काव्येन कविः सन्त्सोमः पवित्रमत्येति रेभन्॥ १॥
ऋषिमना य ऋषिकृत् स्वर्षाः सहस्रनीथः पदवीः कवीनाम्।
तृतीयं धाम महिषः सिषासन्त्सोमो विराजमनु राजति ष्टुप्॥ २॥
चमूषच्छ्येनः शकुनो विभृत्वा गोविन्दुर्द्रप्स आयुधानि बिभ्रत्।
अपामूर्मिं सचमानः समुद्रं तुरीयं धाम महिषो विवक्ति॥ ३॥

(२)

ऋषिः—असितः काश्यपो देवलो वा॥ देवता—पवमानः सोमः॥
छन्दः—गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

एते सोमा अभि प्रियमिन्द्रस्य काममक्षरन्। वर्धन्तो अस्य वीर्यम्॥ १॥
पुनानासश्चमूषदो गच्छन्तो वायुमश्विना। ते नो धत्त सुवीर्यम्॥ २॥
इन्द्रस्य सोम राधसे पुनानो हार्दि चोदय। देवानां योनिमासदम्॥ ३॥
मृजन्ति त्वा दश क्षिपो हिन्वन्ति सप्त धीतयः। अनु विप्रा अमादिषुः॥ ४॥
देवेभ्यस्त्वा मदाय कं सृजानमति मेष्यः। सं गोभिर्वासयामसि॥ ५॥
पुनानः कलशेष्वा वस्त्राण्यरुषो हरिः। परि गव्यान्यव्यत॥ ६॥
मघोन आ पवस्व नो जहि विश्वा अप द्विषः। इन्दो सखायमा विश॥ ७॥
नृचक्षसं त्वा वयमिन्द्रपीतं स्वर्विदम्। भक्षीमहि प्रजामिषम्॥ ८॥
वृष्टिं दिवः परि स्रव द्युम्नं पृथिव्या अधि। सहो नः सोम पृत्सु धाः॥ ९॥

(३)

ऋषिः—असितः काश्यपो देवलो वा॥ देवता—पवमानः सोमः॥
छन्दः—गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

सोमः पुनानो अर्षति सहस्रधारो अत्यविः। वायोरिन्द्रस्य निष्कृतम्॥ १॥
पवमानमवस्यवो विप्रमभि प्र गायत। सुष्वाणं देववीतये॥ २॥
पवन्ते वाजसातये सोमाः सहस्रपाजसः। गृणाना देववीतये॥ ३॥
उत नो वाजसातये पवस्व बृहतीरिषः। द्युमदिन्दो सुवीर्यम्॥ ४॥
अत्या हियाना न हेतृभिरसृग्रं वाजसातये। वि वारमव्यमाशवः॥ ५॥
ते नः सहस्रिणं रयिं पवन्तामा सुवीर्यम्। स्वाना देवास इन्दवः॥ ६॥
वाश्रा अर्षन्तीन्दवोऽभि वत्सं न मातरः। दधन्विरे गभस्त्योः॥ ७॥
जुष्ट इन्द्राय मत्सरः पवमानः कनिक्रदत्। विश्वा अप द्विषो जहि॥ ८॥
अपघ्नन्तो अराव्णः पवमानाः स्वर्दृशः। योनावृतस्य सीदत॥ ९॥

(४)

ऋषिः—असितः काश्यपो देवलो वा॥ देवता—पवमानः सोमः॥
छन्दः—गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

सोमा असृग्रमिन्दवः सुता ऋतस्य धारया। इन्द्राय मधुमत्तमाः॥ १॥
अभि विप्रा अनूषत गावो वत्सं न धेनवः। इन्द्रं सोमस्य पीतये॥ २॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मदच्युत् क्षेति सादने सिन्धोरूर्मा विपश्चित्। सोमो गौरी अधि श्रितः॥ ३॥
दिवो नाभा विचक्षणोऽव्या वारे महीयते। सोमो यः सुक्रतुः कविः॥ ४॥
यः सोमः कलशेष्वा अन्तः पवित्र आहितः। तमिन्दुः परि षस्वजे॥ ५॥
प्र वाचमिन्दुरिष्यति समुद्रस्याधि विष्टपि। जिन्वन् कोशं मधुश्चुतम्॥ ६॥
नित्यस्तोत्रो वनस्पतिर्धेनामन्तः सबर्दुघाम्। हिन्वानो मानुषा युजा॥ ७॥
आ पवमान धारय रयिं सहस्रवर्चसम्। अस्मे इन्दो स्वाभुवम्॥ ८॥
अभि प्रिया दिवः कविर्विप्रः स धारया सुतः। सोमो हिन्वे परावति॥ ९॥

(५)

ऋषिः—उचथ्यः॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

उत्ते शुष्मास ईरते सिन्धोरूर्मेरिव स्वनः। वाणस्य चोदया पविम्॥ १॥
प्रसवे त उदीरते तिस्रो वाचो मखस्युवः। यदव्य एषि सानवि॥ २॥
अव्या वारः परि प्रियं हरिं हिन्वन्त्यद्रिभिः। पवमानं मधुश्चुतम्॥ ३॥
आ पवस्व मदिन्तम पवित्रं धारया कवे। अर्कस्य योनिमासदम्॥ ४॥
स पवस्व मदिन्तम गोभिरञ्जानो अक्तुभिः। इन्द्रस्य जठरे विश॥ ५॥

(६)

ऋषिः—अमहीयुः॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

अया वीती परि स्रव यस्त इन्दो मदेष्वा। अवाहन्नवतीर्नव॥ १॥
पुरः सद्य इत्थाधिये दिवोदासाय शंबरम्। अध त्यं तुर्वशं यदुम्॥ २॥
परि नो अश्वमश्वविद्गोमदिन्दो हिरण्यवत्। क्षरा सहस्रिणीरिषः॥ ३॥

(७)

ऋषिः—अमहीयुः॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

अपघ्नन् पवते मृधोऽप सोमो अराव्णः। गच्छन्निन्द्रस्य निष्कृतम्॥ १॥
महो नो राय आ भर पवमान जही मृधः। रास्वेन्दो वीरवद्यशः॥ २॥
न त्वा शतं च न हुतो राधो दित्सन्तमा मिनन्। सत्पतानो मखस्यसे॥ ३॥

(८)

ऋषिः—निधुविः काश्यपः॥ देवता—पवमानः सोमः॥

छन्दः—गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

अया पवस्व धारया यया सूर्यमरोचयः। हिन्वानो मानुषीरपः॥ १॥
अयुक्त सूर एतशं पवमानो मनावधि। अन्तरिक्षेण यातवे॥ २॥
उत त्या हरितो रथे सूरो अयुक्त यातवे। इन्दुरिन्द्र इति ब्रुवन्॥ ३॥

(९)

ऋषिः—वसिष्ठः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—त्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः॥

अग्निं वो देवमग्निभिः सजोषा यजिष्ठं दूतमध्वरे कृणुध्वम्।
यो मर्त्येषु निधुविर्ऋतावा तपुर्मूर्धा घृतान्नः पावकः॥ १॥
प्रोथदश्वो न यवसेऽविष्यन् यदा महः संवरणाद्व्यस्थात्।
आदस्य वातो अनु वाति शोचिरध स्म ते व्रजनं कृष्णमस्ति॥ २॥
उद्यस्य ते नवजातस्य वृष्णोऽग्ने चरन्त्यजरा इधानाः।
अच्छा द्यामरुषो धूम एषि स दूतो अग्न ईयसे हि देवान्॥ ३॥

(१०)

ऋषिः—सुकक्षः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

तमिन्द्रं वाजयामसि महे वृत्राय हन्तवे। स वृषा वृषभो भुवत्॥ १॥
इन्द्रः स दामने कृत ओजिष्ठः स बले हितः। द्युम्नी श्लोकी स सोम्यः॥ २॥
गिरा वज्रो न सम्भृतः सबलो अनपच्युतः। ववक्ष उग्रो अस्तृतः॥ ३॥

(११)

ऋषिः—उचथ्यः॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

अध्वर्यो अद्रिभिः सुतं सोमं पवित्र आ नय। पुनाहीन्द्राय पातवे॥ १॥
तव त्य इन्दो अन्धसो देवा मधोर्व्याशत। पवमानस्य मरुतः॥ २॥
दिवः पीयूषमुत्तमं सोममिन्द्राय वज्रिणे। सुनोता मधुमत्तमम्॥ ३॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

(१२)

ऋषिः—कविः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—जगती ॥ स्वरः—निषादः ॥

धर्ता दिवः पवते कृत्व्यो रसो दक्षो देवानामनुमाद्यो नृभिः ।
हरिः सृजानो अत्यो न सत्वभिर्वृथा पाजांसि कृणुषे नदीष्वा ॥ १ ॥
शूरो न धत्त आयुधा गभस्त्योः स्वा३ः सिषासन् रथिरो गविष्टिषु ।
इन्द्रस्य शुष्ममीरयन्नपस्युभिरिन्दुर्हिन्वानो अज्यते मनीषिभिः ॥ २ ॥
इन्द्रस्य सोम पवमान ऊर्मिणा तविष्यमाणो जठरेष्वा विश ।
प्र नः पिन्व विद्युदभ्रेव रोदसी धिया नो वाजाँ उप माहि शश्वतः ॥ ३ ॥

(१३)

ऋषिः—देवातिथिः काण्वः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—बार्हतः प्रगाथः (१ बृहती, २ सतोबृहती) ॥ स्वरः—१ मध्यमः, २ पञ्चमः ॥

१२३१. यदिन्द्र प्रागपागुदन्यग्वा हूयसे नृभिः ।
सिमा पुरू नृषूतो अस्यानवेऽसि प्रशर्ध तुर्वशे ॥ १ ॥
यद्वा रुमे रुशमे श्यावके कृप इन्द्र मादयसे सचा ।
कण्वासस्त्वा स्तोमेभिर्ब्रह्मवाहस इन्द्रा यच्छन्त्या गहि ॥ २ ॥

(१४)

ऋषिः—भर्गः प्रागाथः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—बार्हतः प्रगाथः (१ बृहती, २ सतोबृहती) ॥ स्वरः—१ मध्यमः, २ पञ्चमः ॥

उभयं शृणवच्च न इन्द्रो अवागिदं वचः ।
सत्राच्या मघवान्त्सोमपीतये धिया शविष्ठ आ गमत् ॥ १ ॥
तं हि स्वराजं वृषभं तमोजसा धिषणे निष्टतक्षतुः ।
उतोपमानां प्रथमो नि षीदसि सोमकामं हि ते मनः ॥ २ ॥

(१५)

ऋषिः—निधुविः काश्यपः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

पवस्व देव आयुषगिन्द्रं गच्छतु ते मदः । वायुमा रोह धर्मणा ॥ १ ॥
पवमान नि तोशसे रयिं सोम श्रवाय्यम् । इन्दो समुद्रमा विश ॥ २ ॥
अपघ्नन् पवसे मृधः क्रतुवित्सोम मत्सरः । नुदस्वादेवयुं जनम् ॥ ३ ॥

(१६)

ऋषिः—अम्बरीषः, ऋजिश्वा च ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—अनुष्टुप् ॥ स्वरः—गान्धारः ॥

अभी नो वाजसातमं रयिमर्ष शतस्पृहम् ।
इन्दो सहस्त्रभर्णसं तुविद्युम्नं विभासहम् ॥ १ ॥
वयं ते अस्य राधसो वसोर्वसो पुरुस्पृहः ।
नि नेदिष्ठतमा इषः स्याम सुम्ने ते अध्रिगो ॥ २ ॥
परि स्य स्वानो अक्षरदिन्दुरव्ये मदच्युतः ।
धारा य ऊर्ध्वो अध्वरे भ्राजा न याति गव्ययुः ॥ ३ ॥

(१७)

ऋषिः—अग्नयो धिष्ण्या ऐश्वराः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—द्विपदा विराट् पङ्क्तिः ॥ स्वरः—पञ्चमः ॥

पवस्व सोम महान्त्समुद्रः पिता देवानां विश्वाभि धाम ॥ १ ॥
शुक्रः पवस्व देवेभ्यः सोम दिवे पृथिव्यै शं च प्रजाभ्यः ॥ २ ॥
दिवो धर्तासि शुक्रः पीयूषः सत्ये विधर्मन् वाजी पवस्व ॥ ३ ॥

(१८)

ऋषिः—उशनाः काव्यः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

प्रेष्ठं वो अतिथिं स्तुषे मित्रमिव प्रियम् । अग्ने रथं न वेद्यम् ॥ १ ॥
कविमिव प्रशंस्यं यं देवास इति द्विता । नि मर्त्येष्वादधुः ॥ २ ॥
त्वं यविष्ठ दाशुषो नॄः पाहि शृणुही गिरः । रक्षा तोकमुत त्मना ॥ ३ ॥

(१९)

ऋषिः—नृमेधः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—उष्णिक् ॥ स्वरः—ऋषभः ॥

एन्द्र नो गधि प्रिय सत्राजिदगोह्य । गिरिर्न विश्वतः पृथुः पतिर्दिवः ॥ १ ॥
अभि हि सत्य सोमपा उभे बभूथ रोदसी । इन्द्रासि सुन्वतो वृधः पतिर्दिवः ॥ २ ॥
त्वं हि शश्वतीनामिन्द्र धर्ता पुरामसि । हन्ता दस्योर्मनोवृधः पतिर्दिवः ॥ ३ ॥

(२०)

ऋषिः—जेता माधुच्छन्दसः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—अनुष्टुप् ॥ स्वरः—गान्धारः ॥

१२५०. पुरां भिन्दुर्युवा कविरमितौजा अजायत ।
इन्द्रो विश्वस्य कर्मणो धर्ता वज्री पुरुष्टुतः ॥ १ ॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

त्वं वलस्य गोमतोऽपावरद्रिवो बिलम् ।
त्वां देवा अबिभ्युषस्तुज्यमानास आविषुः ॥ २ ॥
इन्द्रमीशानमोजसाभि स्तोमैरनूषत ।
सहस्रं यस्य रातय उत वा सन्ति भूयसीः ॥ ३ ॥

इति नवमोऽध्यायः, पञ्चमप्रपाठकस्य प्रथमोऽर्धः ॥

अथ दशमोऽध्यायः

पञ्चमप्रपाठकस्य द्वितीयोऽर्धः

(१)

ऋषिः—पराशरः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

अक्रान्त्समुद्रः प्रथमे विधर्मन् जनयन् प्रजा भुवनस्य गोपाः ।
वृषा पवित्रे अधि सानो अव्ये बृहत्सोमो वावृधे स्वानो अद्रिः ॥ १ ॥
मत्सि वायुमिष्टये राधसे ना मत्सि मित्रावरुणा पूयमानः ।
मत्सि शर्धो मारुतं मत्सि देवान् मत्सि द्यावापृथिवी देव सोम ॥ २ ॥
महत्तत्सोमो महिषश्चकारापां यद्गर्भोऽवृणीत देवान् ।
अदधादिन्द्रे पवमान ओजोऽजनयत् सूर्ये ज्योतिरिन्दुः ॥ ३ ॥

(२)

ऋषिः—शुनःशेपः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

एष देवो अमर्त्यः पर्णवीरिव दीयते । अभि द्रोणान्यासदम् ॥ १ ॥
एष विप्रैरभिष्टुतोऽपो देवो वि गाहते । दधद्रत्नानि दाशुषे ॥ २ ॥
एष विश्वानि वार्या शूरो यन्निव सत्वभिः । पवमानः सिषासति ॥ ३ ॥
एष देवो रथर्यति पवमानो दिशस्यति । आविष्कृणोति वग्वनुम् ॥ ४ ॥
एष देवो विपन्युभिः पवमान ऋतायुभिः । हरिर्वाजाय मृज्यते ॥ ५ ॥
एष देवो विपा कृतोऽति ह्वरांसि धावति । पवमानो अदाभ्यः ॥ ६ ॥
एष दिवं वि धावति तिरो रजांसि धारया । पवमानः कनिक्रदत् ॥ ७ ॥
एष दिवं व्यासरत्तिरो रजांस्यस्तृतः । पवमानः स्वध्वरः ॥ ८ ॥

एष प्रत्नेन जन्मना देवो देवेभ्यः सुतः । हरिः पवित्रे अर्षति ॥ ९ ॥
एष उ स्य पुरुव्रतो जज्ञानो जनयन्निषः । धारया पवते सुतः ॥ १० ॥

(३)

ऋषिः—असितः काश्यपो देवलो वा ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

एष धिया यात्यण्व्या शूरो रथेभिराशुभिः । गच्छन्निन्द्रस्य निष्कृतम् ॥ १ ॥
एष पुरू धियायते बृहते देवतातये । यत्रामृतास आशत ॥ २ ॥
एतं मृजन्ति मर्ज्यमुप द्रोणेष्वायवः प्रचक्राणं महीरिषः ॥ ३ ॥
एष हितो वि नीयतेऽन्तः शुभ्यावता पथा । यदी तुञ्जन्ति भूर्णयः ॥ ४ ॥
एष रुक्मिभिरीयते वाजी शुभ्रेभिरंशुभिः । पतिः सिन्धूनां भवन् ॥ ५ ॥
एष शृङ्गाणि दोधुवच्छिशीते यूथ्यो३ वृषा । नृम्णा दधान ओजसा ॥ ६ ॥
एष वसूनि पिब्दनः परुषा ययिवाँ अति । अव शादेषु गच्छति ॥ ७ ॥
एतमु त्यं दश क्षिपो हरिं हिन्वन्ति यातवे । स्वायुधं मदिन्तमम् ॥ ८ ॥

(४)

ऋषिः—राहूगणः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

एष उ स्य वृषा रथोऽव्या वारेभिरव्यत । गच्छन् वाजं सहस्रिणम् ॥ १ ॥
एतं त्रितस्य योषणो हरिं हिन्वन्त्यद्रिभिः । इन्दुमिन्द्राय पीतये ॥ २ ॥
एष स्य मानुषीष्वा श्येनो न विक्षु सीदति । गच्छञ्जारो न योषितम् ॥ ३ ॥
एष स्य मद्यो रसोऽव चष्टे दिवः शिशुः । य इन्दुर्वारमाविशत् ॥ ४ ॥
एष स्य पीतये सुतो हरिरर्षति धर्णसिः । क्रन्दन् योनिमभि प्रियम् ॥ ५ ॥
एतं त्यं हरितो दश मर्मृज्यन्ते अपस्युवः । याभिर्मदाय शुम्भते ॥ ६ ॥

(५)

ऋषिः—प्रियमेधः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

एष वाजी हितो नृभिर्विश्वविन् मनसस्पतिः । अव्यं वारं वि धावति ॥ १ ॥
एष पवित्रे अक्षरत् सोमो देवेभ्यः सुतः । विश्वा धामान्याविशन् ॥ २ ॥
एष देवः शुभायतेऽधि योनावमर्त्यः । वृत्रहा देववीतमः ॥ ३ ॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

एष वृषा कनिक्रदद् दशभिर्जामिभिर्यतः। अभि द्रोणानि धावति ॥ ४ ॥
एष सूर्यमरोचयत् पवमानो अधि द्यवि। पवित्रे मत्सरो मदः ॥ ५ ॥
एष सूर्येण हासते संवसानो-विवस्वता। पतिर्वाचो अदाभ्यः ॥ ६ ॥

(६)

ऋषिः—नृमेधः॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

एष कविरभिष्टुतः पवित्रे अधि तोशते। पुनानो घ्नन्नप द्विषः ॥ १ ॥
एष इन्द्राय वायवे स्वर्जित् परि षिच्यते। पवित्रे दक्षसाधनः ॥ २ ॥
एष नृभिर्वि नीयते दिवो मूर्धा वृषा सुतः। सोमो वनेषु विश्ववित् ॥ ३ ॥
एष गव्युरचिक्रदत् पवमानो हिरण्ययुः। इन्दुः सत्राजिदस्तृतः ॥ ४ ॥
एष शुष्म्यसिष्यददन्तरिक्षे वृषा हरिः। पुनान इन्दुरिन्द्रमा ॥ ५ ॥
एष शुष्म्यदाभ्यः सोमः पुनानो अर्षति। देवावीरघशंसहा ॥ ६ ॥

(७)

ऋषिः—राहूगणः॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

स सुतः पीतये वृषा सोमः पवित्रे अर्षति। विघ्नन् रक्षांसि देवयुः ॥ १ ॥
स पवित्रे विचक्षणो हरिरर्षति धर्णसिः। अभि योनिं कनिक्रदत् ॥ २ ॥
स वाजी रोचनं दिवः पवमानो वि धावति। रक्षोहा वारमव्ययम् ॥ ३ ॥
स त्रितस्याधि सानवि पवमानो अरोचयत्। जामिभिः सूर्यं सह ॥ ४ ॥
स वृत्रहा वृषा सुतो वरिवोविददभ्यः। सोमो वाजमिवासरत् ॥ ५ ॥
स देवः कविनेषितो३ऽभि द्रोणानि धावति। इन्दुरिन्द्राय मंहयन् ॥ ६ ॥

(८)

ऋषिः—पवित्रो वसिष्ठो वोभौ वा॥ देवता—पावमान्यध्येतृस्तुतिः॥
छन्दः—अनुष्टुप्॥ स्वरः—गान्धारः॥

१२९८. यः पावमानीरध्येत्यृषिभिः संभृतं रसम्। सर्वं स पूतमश्नाति स्वदितं मातरिश्वना ॥ १ ॥
पावमानीर्यो अध्येत्यृषिभिः संभृतं रसम्। तस्मै सरस्वती दुहे क्षीरं सर्पिर्मधूदकम् ॥ २ ॥

पावमानीः स्वस्त्ययनीः सुदुघा हि घृतश्चुतः। ऋषिभिः संभृतो रसो ब्राह्मणेष्वमृतं हितम् ॥ ३ ॥
पावमानीर्दधन्तु न इमं लोकमथो अमुम्। कामान्त्समर्धयन्तु नो देवीर्देवैः समाहिताः ॥ ४ ॥
येन देवाः पवित्रेणात्मानं पुनते सदा। तेन सहस्रधारेण पावमानीः पुनन्तु नः ॥ ५ ॥
पावमानीः स्वस्त्ययनीस्ताभिर्गच्छति नान्दनम्। पुण्याँश्च भक्षान् भक्षयत्यमृतत्वं च गच्छति ॥ ६ ॥

(९)

ऋषिः—वसिष्ठः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—त्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः॥

अगन्म महा नमसा यविष्ठं यो दीदाय समिद्धः स्वे दुरोणे। चित्रभानुं रोदसी अन्तरुर्वी स्वाहुतं विश्वतः प्रत्यञ्चम् ॥ १ ॥
स मह्या विश्वा दुरितानि साह्वानग्निं स्तवे दम आ जातवेदाः। स नो रक्षिषद् दुरितादवद्यादस्मान् गृणत उत नो मघोनः ॥ २ ॥
त्वं वरुण उत मित्रो अग्ने त्वां वर्धन्ति मतिभिर्वसिष्ठाः। त्वे वसु सुषणनानि सन्तु यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ३ ॥

(१०)

ऋषिः—वत्सः काण्वः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—गायत्री॥
स्वरः—षड्जः॥

महाँ इन्द्रो य ओजसा पर्जन्यो वृष्टिमाँइव। स्तोमैर्वत्सस्य वावृधे ॥ १ ॥
कण्वा इन्द्रं यदक्रत स्तोमैर्यज्ञस्य साधनम्। जामि ब्रुवत आयुधा ॥ २ ॥
प्रजामृतस्य पिप्रतः प्र यद्धरन्त वह्नयः। विप्रा ऋतस्य वाहसा ॥ ३ ॥

(११)

ऋषिः—शतं वैखानसाः॥ देवता—पवमानः सोमः॥
छन्दः—गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

पवमानस्य जिघ्नतो हरेश्चन्द्रा असुक्षत। जीरा अजिरशोचिषः ॥ १ ॥
पवमानो रथीतमः शुभ्रेभिः शुभ्रशस्तमः। हरिश्चन्द्रो मरुद्गणः ॥ २ ॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पवमान व्यश्नुहि रश्मिभिर्वाजसातमः। दधत्स्तोत्रे सुवीर्यम् ॥ ३ ॥

(१२)

ऋषिः—सप्तर्षयः॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—१, २ बार्हतः प्रगाथः (१ बृहती, २ सतोबृहती); ३ द्विपदाविराट्पङ्क्तिः॥ स्वरः—१ मध्यमः, २, ३ पञ्चमः॥

परीतो षिञ्चता सुतं सोमो य उत्तमं हविः ।
दधन्वां यो नर्यो अप्स्वा३ऽन्तरा सुषाव सोममद्रिभिः ॥ १ ॥
नूनं पुनानोऽविभिः परि स्रवादब्धः सुरभिन्तरः ।
सुते चित्वाप्सु मदामो अन्धसा श्रीणन्तो गोभिरुत्तरम् ॥ २ ॥
परि स्वानश्चक्षसे देवमादनः क्रतुरिन्दुर्विचक्षणः ॥ ३ ॥

(१३)

ऋषिः—वसुर्भारद्वाजः॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—जगती॥ स्वरः—निषादः॥

असावि सोमो अरुषो वृषा हरी राजेव दस्मो अभि गा अचिक्रदत् ।
पुनानो वारमत्येष्यव्ययं श्येनो न योनिं घृतवन्तमासदत् ॥ १ ॥
पर्जन्यः पिता महिषस्य पर्णिनो नाभा पृथिव्या गिरिषु क्षयं दधे ।
स्वसार आपो अभि गा उदासरन्त्सं ग्रावभिर्वसते वीते अध्वरे ॥ २ ॥
कविर्वेधस्या पर्येषि माहिनमत्यो न मृष्टो अभि वाजमर्षसि ।
अपसेधन् दुरिता सोम नो मृड घृता वसानः परि यासि निर्णिजम् ॥ ३ ॥

(१४)

ऋषिः—नृमेधः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—बार्हतः प्रगाथः (१ बृहती, २ सतोबृहती)॥ स्वरः—१ मध्यमः, २ पञ्चमः॥

श्रायन्तइव सूर्यं विश्वेदिन्द्रस्य भक्षत ।
वसूनि जातो जनिमान्योजसा प्रति भागं न दीधिमः ॥ १ ॥
अलर्षिरातिं वसुदामुप स्तुहि भद्रा इन्द्रस्य रातयः ।
यो अस्य कामं विधतो न रोषति मनो दानाय चोदयन् ॥ २ ॥

(१५)

ऋषिः—भर्गः प्रागाथः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—बार्हतः प्रगाथः (१ बृहती, २ सतोबृहती)॥ स्वरः—१ मध्यमः, २ पञ्चमः॥

यत इन्द्र भयामहे ततो नो अभयं कृधि ।
मघवञ्छग्धि तव तन्न ऊतये वि द्विषो वि मृधो जहि ॥ १ ॥
त्वं हि राधसस्पते राधसो महः क्षयस्यासि विधर्ता ।
तं त्वा वयं मघवन्निन्द्र गिर्वणः सुतावन्तो हवामहे ॥ २ ॥

(१६)

ऋषिः—भरद्वाजः॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

त्वं सोमासि धारयुर्मन्द्र ओजिष्ठो अध्वरे। पवस्व मंहयद्रयिः ॥ १ ॥
त्वं सुतो मदिन्तमो दधन्वान्मत्सरिन्तमः। इन्दुः सत्राजिदस्तृतः ॥ २ ॥
त्वं सुष्वाणो अद्रिभिरभ्यर्ष कनिक्रदत्। द्युमन्तं शुष्ममा भर ॥ ३ ॥

(१७)

ऋषिः—मनुराप्सवः॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—उष्णिक्॥ स्वरः—ऋषभः॥

पवस्व देववीतय इन्दो धाराभिरोजसा। आ कलशं मधुमान्त्सोम नः सदः ॥ १ ॥
तव द्रप्सा उदप्रुत इन्द्रं मदाय वावृधुः। त्वां देवासो अमृताय कं पपुः ॥ २ ॥
१३२८. आ नः सुतास इन्दवः पुनाना धावता रयिम् ।
वृष्टिद्यावो रीत्यापः स्वर्विदः ॥ ३ ॥

(१८)

ऋषिः—अम्बरीष ऋजिश्वा च॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—अनुष्टुप्॥ स्वरः—गान्धारः॥

परि त्यं हर्यतं हरिं बभ्रुं पुनन्ति वारेण ।
यो देवान्विश्वा इत्परि मदेन सह गच्छति ॥ १ ॥
द्विर्यं पञ्च स्वयशसं सखायो अद्रिसंहतम् ।
प्रियमिन्द्रस्य काम्यं प्रस्नापयन्त ऊर्मयः ॥ २ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

इन्द्राय सोम पातवे वृत्रघ्ने परि षिच्यसे ।
नरे च दक्षिणावते वीराय सदनासदे ॥ ३ ॥

(१९)

ऋषिः—अग्नयो धिष्ण्या ऐश्वराः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥
छन्दः—द्विपदा विराट्पङ्क्तिः ॥ स्वरः—पञ्चमः ॥

पवस्व सोम महे दक्षायाश्वो न निक्तो वाजी धनाय ॥ १ ॥
प्र ते सोतारो रसं मदाय पुनन्ति सोमं महे द्युम्नाय ॥ २ ॥
शिशुं जज्ञानं हरिं मृजन्ति पवित्रे सोमं देवेभ्य इन्दुम् ॥ ३ ॥

(२०)

ऋषिः—अमहीयुः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥
स्वरः—षड्जः ॥

उपो षु जातमप्तुरं गोभिर्भङ्गं परिष्कृतम्। इन्दुं देवा अयासिषुः ॥ १ ॥
तमिद्वर्धन्तु नो गिरो वत्सं संशिश्वरीरिव। य इन्द्रस्य हृदं सनिः ॥ २ ॥
अर्षा नः सोम शं गवे धुक्षस्व पिप्युषीमिषम्। वर्धा समुद्रमुक्थ्य ॥ ३ ॥

(२१)

ऋषिः—त्रिशोकः काण्वः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥
स्वरः—षड्जः ॥

आ घा ये अग्निमिन्धते स्तृणन्ति बर्हिरानुषक्। येषामिन्द्रो युवा सखा ॥ १ ॥
बृहन्निदिध्म एषां भूरि शस्त्रं पृथुः स्वरुः। येषामिन्द्रो युवा सखा ॥ २ ॥
अयुद्ध इद्युधा वृतं शूर आजति सत्वभिः। येषामिन्द्रो युवा सखा ॥ ३ ॥

(२२)

ऋषिः—गोतमो राहूगणः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—उष्णिक् ॥
स्वरः—ऋषभः ॥

य एक इद्विदयते वसु मर्ताय दाशुषे ।
ईशानो अप्रतिष्कुत इन्द्रो अङ्ग ॥ १ ॥
यश्चिद्धि त्वा बहुभ्य आ सुतावाँ आविवासति ।
उग्रं तत् पत्यते शव इन्द्रो अङ्ग ॥ २ ॥
कदा मर्त्तमराधसं पदा क्षुम्पमिव स्फुरत् ।
कदा नः शुश्रवद् गिर इन्द्रो अङ्ग ॥ ३ ॥

(२३)

ऋषिः—मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—अनुष्टुप् ॥
स्वरः—गान्धारः ॥

१३४४. गायन्ति त्वा गायत्रिणोऽर्चन्त्यर्कमर्किणः ।
ब्रह्माणस्त्वा शतक्रत उद्वंशमिव येमिरे ॥ १ ॥
यत्सानोः सान्वारुहो भूर्यस्पष्ट कर्त्वम् ।
तदिन्द्रो अर्थं चेतति यूथेन वृष्णिरेजति ॥ २ ॥
युङ्क्ष्वा हि केशिना हरी वृषणा कक्ष्यप्रा ।
अथा न इन्द्र सोमपा गिरामुपश्रुतिं चर ॥ ३ ॥

इति दशमोऽध्यायः, पञ्चमप्रपाठकश्च समाप्तः ॥

अथैकादशोऽध्यायः

षष्ठप्रपाठकस्य प्रथमोऽर्धः

(१)

ऋषिः—मेधातिथिः काण्वः ॥ देवता—१ इध्मः समिद्धो वाग्निः; २ तनूनपात्; ३ नराशंसः; ४ इडः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

सुषमिद्धो न आ वह देवाँ अग्ने हविष्मते। होतः पावक यक्षि च ॥ १ ॥
मधुमन्तं तनूनापद्यज्ञं देवेषु नः कवे। अद्या कृणुह्यूतये ॥ २ ॥
नराशंसमिह प्रियमस्मिन्यज्ञ उप ह्वये। मधुजिह्वं हविष्कृतम् ॥ ३ ॥
अग्ने सुखतमे रथे देवाँ ईडित आ वह। असि होता मनुर्हितः ॥ ४ ॥

(२)

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—आदित्यः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

यदद्य सूर उदितेऽनागा मित्रो अर्यमा। सुवाति सविता भगः ॥ १ ॥
सुप्रावीरस्तु स क्षयः प्र नु यामन्त्सुदानवः। ये नो अंहोऽतिपिप्रति ॥ २ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उत स्वराजो अदितिरदब्धस्य व्रतस्य ये। मह्ना राजान ईशते ॥ ३ ॥

(३)

ऋषिः—प्रगाथः काण्वः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

उ त्वा मदन्तु सोमाः कृणुष्व राधो अद्रिवः। अव ब्रह्मद्विषो जहि ॥ १ ॥

पदा पणीनराधसो नि बाधस्व महाँ असि। न हि त्वा कश्च न प्रति ॥ २ ॥

त्वमीशिषे सुतानामिन्द्र त्वमसुतानाम्। त्वं राजा जनानाम् ॥ ३ ॥

(४)

ऋषिः—पराशरः॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—त्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः॥

आ जागृविर्विप्र ऋता मतीनां सोमः पुनानो असदच्चमूषु ।

सपन्ति यं मिथुनासो निकामा अध्वर्यवो रथिरासः सुहस्ताः ॥ १ ॥

स पुनान उप सूरे दधान ओभे अप्रा रोदसी वी ष आवः ।

प्रिया चिद्यस्य प्रियसास ऊती सतो धनं कारिणे न प्र यंसत् ॥ २ ॥

स वर्धिता वर्धनः पूयमानः सोमो मीढ्वाँ अभि नो ज्योतिषावित् ।

यत्र नः पूर्वे पितरः पदज्ञाः स्वर्विदो अभि गा अद्रिमिष्णन् ॥ ३ ॥

(५)

ऋषिः—प्रगाथो घौरः काण्वः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—बार्हतः प्रगाथः (१ बृहती, २ सतोबृहती)॥ स्वरः—१ मध्यमः, २ पञ्चमः॥

१३६०. मा चिदन्यद्वि शंसत सखायो मा रिषण्यत ।

इन्द्रमित् स्तोता वृषणं सचा सुते मुहुरुक्था च शंसत ॥ १ ॥

अवक्रक्षिणं वृषभं यथा जुवं गां न चर्षणीसहम् ।

विद्वेषणं संवननमुभयङ्करं मंहिष्ठमुभयाविनम् ॥ २ ॥

(६)

ऋषिः—मेधातिथिः काण्वः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—बार्हतः प्रगाथः (१ बृहती, २ सतोबृहती)॥ स्वरः—१ मध्यमः, २ पञ्चमः॥

उदु त्ये मधुमत्तमा गिरः स्तोमास ईरते ।

सत्राजितो धनसा अक्षितोतयो वाजयन्तो रथाइव ॥ १ ॥

कण्वाइव भृगवः सूर्याइव विश्वमिद्धीतमाशत ।

इन्द्रं स्तोमेभिर्महयन्त आयवः प्रियमेधासो अस्वरन् ॥ २ ॥

(७)

ऋषिः—त्र्यरुणस्त्रसदस्यू॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—पिपीलिकामध्या अनुष्टुप्॥ स्वरः—गान्धारः॥

पर्यू षु प्र धन्व वाजसातये परि वृत्राणि सक्षणिः ।

द्विषस्तरध्या ऋणया न ईरसे ॥ १ ॥

अजीजनो हि पवमान सूर्यं विधारे शक्मना पयः ।

गोजीरया रंहमाणः पुरन्ध्या ॥ २ ॥

अनु हि त्वा सुतं सोम मदामसि महे समर्यराज्ये ।

वाजाँ अभि पवमान प्र गाहसे ॥ ३ ॥

(८)

ऋषिः—अग्रयो धिष्ण्या ऐश्वराः॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—द्विपदा विराट्पङ्क्तिः॥ स्वरः—पञ्चमः॥

परि प्र धन्वेन्द्राय सोम स्वादुर्मित्राय पूष्णे भगाय ॥ १ ॥

एवामृताय महे क्षयाय स शुक्रो अर्ष दिव्यः पीयूषः ॥ २ ॥

इन्द्रस्ते सोम सुतस्य पेयात् क्रत्वे दक्षाय विश्वे च देवाः ॥ ३ ॥

(९)

ऋषिः—हिरण्यस्तूपः॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—जगती॥ स्वरः—निषादः॥

सूर्यस्येव रश्मयो द्रावयित्नवो मत्सरासः प्रसुतः साकमीरते ।

तन्तुं ततं परि सर्गास आशवो नेन्द्रादृते पवते धाम किं चन ॥ १ ॥

उपो मतिः पृच्यते सिच्यते मधु मन्द्राजनी चोदते अन्तरासनि ।

पवमानः सन्तनिः सुन्वतामिव मधुमान् द्रप्सः परि वारमर्षति ॥ २ ॥

उक्षा मिमेति प्रति यन्ति धेनवो देवस्य देवीरुप यन्ति निष्कृतम् ।

अत्यक्रमीदर्जुनं वारमव्ययमत्कं न निक्तं परि सोमो अव्यत ॥ ३ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

(१०)

ऋषिः—वशिष्ठः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—विराडनुष्टुप्॥ स्वरः—गान्धारः॥

अग्निं नरो दीधितिभिरर॑ण्योर्हस्तच्युतं जनयत प्रशस्तम् ।
दूरेदृशं गृहपतिमथव्युम् ॥ १ ॥
तमग्निमस्ते वसवो न्यृण्वन्त्सुप्रतिचक्षमवसे कुतश्चित् ।
दक्षाय्यो यो दम आस नित्यः ॥ २ ॥
प्रेद्धो अग्ने दीदिहि पुरो नोऽजस्रया सूर्म्या यविष्ठ ।
त्वां शश्वन्त उप यन्ति वाजाः ॥ ३ ॥

(११)

ऋषिः—सार्पराज्ञी॥ देवता—सूर्यः॥ छन्दः—गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

आयं गौः पृश्निरक्रमीदसदन्मातरं पुरः। पितरं च प्रयन्त्स्वः ॥ १ ॥
अन्तश्चरति रोचनास्य प्राणादपानती। व्यख्यन्महिषो दिवम् ॥ २ ॥
त्रिंशद्धाम वि राजति वाक्पतङ्गाय धीयते। प्रति वस्तोरह द्युभिः ॥ ३ ॥

इत्यैकादशोऽध्यायः, षष्ठप्रपाठकस्य प्रथमोऽर्धः॥

अथ द्वादशोऽध्यायः

षष्ठप्रपाठकस्य द्वितीयोऽर्धः

(१)

ऋषिः—१, २, ४ गोतमो राहूगणः; ३ वसिष्ठः॥ देवता—अग्निः॥
छन्दः—गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

उपप्रयन्तो अध्वरं मन्त्रं वोचेमाग्नये। आरे अस्मे च शृण्वते ॥ १ ॥
यः स्त्रीहितीषु पूर्व्यः सञ्जग्मानासु कृष्टिषु। अरक्षद्दाशुषे गयम् ॥ २ ॥
स नो वेदो अमात्यमग्नी रक्षतु शन्तमः। उतास्मान् पात्वंहसः ॥ ३ ॥
उत ब्रुवन्तु जन्तव उदग्निर्वृत्रहाजनि। धनञ्जयो रणेरणे ॥ ४ ॥

(२)

ऋषिः—भरद्वाजो बार्हस्पत्यः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

अग्ने युङ्क्ष्वा हि ये तवाश्वासो देव साधवः। अरं वहन्त्याशवः ॥ १ ॥
अच्छा नो याह्या वहाभि प्रयांसि वीतये। आ देवान्त्सोमपीतये ॥ २ ॥
उदग्ने भारत द्युमदजस्रेण दविद्युतत्। शोचा वि भाह्यजर ॥ ३ ॥

(३)

ऋषिः—प्रजापतिः॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—अनुष्टुप्॥
स्वरः—गान्धारः॥

१३८६. प्र सुन्वानायान्धसो मर्त्तो न वष्ट तद्वचः ।
अप श्वानमराधसं हता मखं न भृगवः ॥ १ ॥
आ जामिरत्के अव्यत भुजे न पुत्र ओण्योः ।
सरज्जारो न योषणां वरो न योनिमासदम् ॥ २ ॥
स वीरो दक्षसाधनो वि यस्तस्तम्भ रोदसी ।
हरिः पवित्रे अव्यत वेधा न योनिमासदम् ॥ ३ ॥

(४)

ऋषिः—सोभरिः काण्वः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—काकुभः प्रगाथः
(१ ककुबुष्णिक्, २ सतोबृहती)॥ स्वरः—१ ऋषभः;
२ पञ्चमः॥

अभ्रातृव्यो अना त्वमनापिरिन्द्र जनुषा सनादसि। युधेदापित्वमिच्छसे ॥ १ ॥
न की रेवन्तं सख्याय विन्दसे पीयन्ति ते सुराश्वः ।
यदा कृणोषि नदनुं समूहस्यादित्पितेव हूयसे ॥ २ ॥

(५)

ऋषिः—मेधातिथिर्मेध्यातिथी काण्वौ॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—बृहती॥
स्वरः—मध्यमः॥

आ त्वा सहस्रमा शतं युक्ता रथे हिरण्यये ।
ब्रह्मयुजो हरय इन्द्र केशिनो वहन्तु सोमपीतये ॥ १ ॥
आ त्वा रथे हिरण्यये हरी मयूरशिप्या ।
शितिपृष्ठा वहतां मध्वो अन्धसो विवक्षणस्य पीतये ॥ २ ॥
पिबा त्वाऽस्य गिर्वणः सुतस्य पूर्वपाइव ।
परिष्कृतस्य रसिन इयमासुतिश्चारुर्मदाय पत्यते ॥ ३ ॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

(६)

ऋषिः—१ ऋजिश्वा; २ ऊर्ध्वसद्मा॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—काकुभः प्रगाथः (१ ककुबुष्णिक्, २ सतोबृहती)॥ स्वरः—१ ऋषभः; २ पञ्चमः॥

आ सोता परि षिञ्चताश्वं न स्तोममप्तुरं रजस्तुरम्। वनप्रक्षमुदप्रुतम् ॥ १ ॥
सहस्रधारं वृषभं पयोदुहं प्रियं देवाय जन्मने ।
ऋतेन य ऋतजातो विवावृधे राजा देव ऋतं बृहत् ॥ २ ॥

(७)

ऋषिः—भरद्वाजो बार्हस्पत्यः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

अग्निर्वृत्राणि जङ्घनद् द्रविणस्युर्विपन्यया। समिद्धः शुक्र आहुतः ॥ १ ॥
गर्भे मातुः पितुष्पिता विदिद्युतानो अक्षरे। सीदन्नृतस्य योनिमा ॥ २ ॥
ब्रह्म प्रजावदा भर जातवेदो विचर्षणे। अग्ने यद्दीदयद्दिवि ॥ ३ ॥

(८)

ऋषिः—वसिष्ठः॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—त्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः॥

अस्य प्रेषा हेमना पूयमानो देवो देवेभिः समपृक्त रसम् ।
सुतः पवित्रं पर्येति रेभन् मितेव सद्म पशुमन्ति होता ॥ १ ॥
भद्रा वस्त्रा समन्या३ वसानो महान् कविर्निवचनानि शंसन् ।
आ वच्यस्व चम्वोः पूयमानो विचक्षणो जागृविर्देववीतौ ॥ २ ॥
समु प्रियो मृज्यते सानो अव्ये यशस्तरो यशसां क्षैतो अस्मे ।
अभि स्वर धन्वा पूयमानो यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ३ ॥

(९)

ऋषिः—तिरश्चीः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—अनुष्टुप्॥ स्वरः—गान्धारः॥

एतो न्विन्द्रं स्तवाम शुद्धं शुद्धेन साम्ना ।
शुद्धैरुक्थैर्वावृध्वांसं शुद्धैराशीर्वान् ममत्तु ॥ १ ॥
इन्द्र शुद्धो न आ गहि शुद्धः शुद्धाभिरूतिभिः ।
शुद्धो रयिं नि धारय शुद्धो ममद्धि सोम्य ॥ २ ॥
इन्द्र शुद्धो हि नो रयिं शुद्धो रत्नानि दाशुषे ।
शुद्धो वृत्राणि जिघ्नसे शुद्धो वाजं सिषाससि ॥ ३ ॥

(१०)

ऋषिः—सुतम्भर आत्रेयः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

अग्ने स्तोमं मनामहे सिध्रमद्य दिविस्पृशः। देवस्य द्रविणस्यवः॥ १ ॥
अग्निर्जुषत नो गिरो होता यो मानुषेष्वा। स यक्षद् दैव्यं जनम्॥ २ ॥
त्वमग्ने सप्रथा असि जुष्टो होता वरेण्यः। त्वया यज्ञं वि तन्वते॥ ३ ॥

(११)

ऋषिः—वसिष्ठः॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—त्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः॥

अभि त्रिपृष्ठं वृषणं वयोधामङ्गैषिणमवावशंत वाणीः ।
वना वसानो वरुणो न सिन्धुर्वि रत्नधा दयते वार्याणि ॥ १ ॥
शूरग्रामः सर्ववीरः सहावान् जेता पवस्व सनिता धनानि ।
तिग्मायुधः क्षिप्रधन्वा समत्स्वषाढः साह्वान् पृतनासु शत्रून् ॥ २ ॥
उरुगव्यूतिरभयानि कृण्वन्त्समीचीने आ पवस्वा पुरन्धी ।
अपः सिषासन्नुषसः स्वा३र्गाः सं चिक्रदो महो अस्मभ्यं वाजान् ॥ ३ ॥

(१२)

ऋषिः—नृमेधपुरुमेधौ॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—बार्हतः प्रगाथः (१ बृहती, २ सतोबृहती)॥ स्वरः—१ मध्यमः; २ पञ्चमः॥

१४११. त्वमिन्द्र यशा अस्यृजीषी शवसस्पतिः ।
त्वं वृत्राणि हंस्यप्रतीन्येक इत्पुवनुत्तश्चर्षणीधृतिः ॥ १ ॥
तमु त्वा नूनमसुर प्रचेतसं राधो भागमिवेमहे ।
महीव कृत्तिः शरणा त इन्द्र प्र ते सुम्ना नो अश्नुवन् ॥ २ ॥

(१३)

ऋषिः—सोभरिः काण्वः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—काकुभः प्रगाथः (१ ककुबुष्णिक्, २ सतोबृहती)॥ स्वरः—१ ऋषभः; २ पञ्चमः॥

यजिष्ठं त्वा ववृमहे देवं देवत्रा होतारममर्त्यम् ।
अस्य यज्ञस्य सुक्रतुम् ॥ १ ॥
अपां नपातं सुभगं सुदीदितिमग्निमु श्रेष्ठशोचिषम् ।
स नो मित्रस्य वरुणस्य सो अपामा सुम्नं यक्षते दिवि ॥ २ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

(१४)

ऋषिः—शुनःशेप आजीगर्तिः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—गायत्री॥
स्वरः—षड्जः॥

यमग्ने पृत्सु मर्त्यमवा वाजेषु यं जुनाः। स यन्ता शश्वतीरिषः॥ १॥
न किरस्य सहन्त्य पर्येता कयस्य चित्। वाजो अस्ति श्रवाय्यः॥ २॥
स वाजं विश्वचर्षणिरर्वद्भिरस्तु तरुता। विप्रेभिरस्तु सनिता॥ ३॥

(१५)

ऋषिः—नोधाः॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—त्रिष्टुप्॥
स्वरः—धैवतः॥

साकमुक्षो मर्जयन्त स्वसारो दश धीरस्य धीतयो धनुत्रीः।
हरिः पर्यद्रवज्जाः सूर्यस्य द्रोणं ननक्षे अत्यो न वाजी॥ १॥
सं मातृभिर्न शिशुर्वावशानो वृषा दधन्वे पुरुवारो अद्भिः।
मर्यो न योषामभि निष्कृतं यन्त्सं गच्छते कलश उस्त्रियाभिः॥ २॥
उत प्र पिप्य ऊधरघ्न्याया इन्दुर्धाराभिः सचते सुमेधाः।
मूर्धानं गावः पयसा चमूष्वभि श्रीणन्ति वसुभिर्न निक्तैः॥ ३॥

(१६)

ऋषिः—मेधातिथिः काण्वः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—बार्हतः प्रगाथः (१ बृहती, २ सतोबृहती)॥ स्वरः—१ मध्यमः; २ पञ्चमः॥

पिबा सुतस्य रसिनो मत्स्वा न इन्द्र गोमतः।
आपिर्नो बोधि सधमाद्ये वृधेऽस्मां अवन्तु ते धियः॥ १॥
भूयाम ते सुमतौ वाजिनो वयं मा न स्तरभिमातये।
अस्मां चित्राभिरवतादभिष्टिभिरा नः सुम्नेषु यामय॥ २॥

(१७)

ऋषिः—रेणुर्वैश्वामित्रः॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—जगती॥ स्वरः—निषादः॥

त्रिरस्मै सप्त धेनवो दुदुह्रिरे सत्यामाशिरं परमे व्योमनि।
चत्वार्यन्या भुवनानि निर्णिजे चारूणि चक्रे यदृतैरवर्धत॥ १॥
स भक्षमाणो अमृतस्य चारुण उभे द्यावा काव्येना वि शश्रथे।
तेजिष्ठा अपो मंहना परि व्यत यदी देवस्य श्रवसा सदो विदुः॥ २॥

ते अस्य सन्तु केतवोऽमृत्यवोऽदाभ्यासो जनुषी उभे अनु।
येभिर्नृम्णा च देव्या च पुनत आदिद्राजानं मनना अगृभ्णत॥ ३॥

(१८)

ऋषिः—कुत्सः॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—त्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः॥

अभि वायुं वीत्यर्षा गृणानोऽभि मित्रावरुणा पूयमानः।
अभी नरं धीजवनं रथेष्ठामभीन्द्रं वृषणं वज्रबाहुम्॥ १॥
अभि वस्त्रा सुवसनान्यर्षाभि धेनूः सुदुघाः पूयमानः।
अभि चन्द्रा भर्त्तवे नो हिरण्याभ्यश्वान् रथिनो देव सोम॥ २॥
अभी नो अर्ष दिव्या वसून्यभि विश्वा पार्थिवा पूयमानः।
अभि येन द्रविणमश्नवामाभ्यार्षेयं जमदग्निवन्नः॥ ३॥

(१९)

ऋषिः—नृमेधपुरुमेधौ॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१, २ अनुष्टुप्; ३ बृहती॥
स्वरः—१, २ गान्धारः; ३ मध्यमः॥

१४२९. यज्जायथा अपूर्व्य मघवन् वृत्रहत्याय।
तत्पृथिवीमप्रथयस्तदस्तभ्ना उतो दिवम्॥ १॥
तत्ते यज्ञो अजायत तदर्क उत हस्कृतिः।
तद्विश्वमभिभूरसि यज्जातं यच्च जन्त्वम्॥ २॥
आमासु पक्वमैरय आ सूर्यं रोहयो दिवि।
घर्मं न साम तपता सुवृक्तिभिर्जुष्टं गिर्वणसे बृहत्॥ ३॥

(२०)

ऋषिः—अगस्त्यः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१ स्कन्धोग्रीवी बृहती; २, ३ अनुष्टुप्॥
स्वरः—१ मध्यमः; २, ३ गान्धारः॥

मत्स्यपायि ते महः पात्रस्येव हरिवो मत्सरो मदः।
वृषा ते वृष्ण इन्दुर्वाजी सहस्रसातमः॥ १॥
आ नस्ते गन्तु मत्सरो वृषा मदो वरेण्यः।
सहावाँ इन्द्र सानसिः पृतनाषाडमर्त्यः॥ २॥

CC-0. Ranini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

त्वं हि शूरः सनिता चोदयो मनुषो रथम् ।
सहावान् दस्युमव्रतमोषः पात्रं न शोचिषा ॥ ३ ॥

इति द्वादशोऽध्यायः, षष्ठप्रपाठकस्य द्वितीयोऽर्धः ॥

अथ त्रयोदशोऽध्यायः

षष्ठप्रपाठकस्य तृतीयोऽर्धः

(१)

ऋषिः—कविर्भार्गवः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

पवस्व वृष्टिमा सु नोऽपामूर्मिं दिवस्परि। अयक्ष्मा बृहतीरिषः ॥ १ ॥
तया पवस्व धारया यया गाव इहागमन्। जन्यास उप नो गृहम् ॥ २ ॥
घृतं पवस्व धारया यज्ञेषु देववीतमः। अस्मभ्यं वृष्टिमा पव ॥ ३ ॥
स न ऊर्जे व्याव्यय पवित्र धाव धारया। देवासः शृणवन् हि कम् ॥ ४ ॥
पवमानो असिष्यदद्रक्षांस्यपजङ्घनत्। प्रन्नवद्दोचयन्नुचः ॥ ५ ॥

(२)

ऋषिः—भरद्वाजो बार्हस्पत्यः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१-३ अनुष्टुप्; ४ बृहती ॥ स्वरः—१-३ गान्धारः; ४ मध्यमः ॥

१४४०. प्रत्यस्मै पिपीषते विश्वानि विदुषे भर ।
अरङ्गमाय जग्मयेऽपश्चादध्वने नरः ॥ १ ॥
एमेनं प्रत्येतन सोमेभिः सोमपातमम् ।
अमत्रेभिर्ऋजीषिणमिन्द्रं सुतेभिरिन्दुभिः ॥ २ ॥
यदी सुतेभिरिन्दुभिः सोमेभिः प्रतिभूषथ ।
वेदा विश्वस्य मेधिरो धृषत्तन्तमिदेषते ॥ ३ ॥
अस्माअस्मा इदन्धसोऽध्वर्यो प्र भरा सुतम् ।
कुवित्समस्य जेन्यस्य शर्धतोऽभिशस्तेरवस्वरत् ॥ ४ ॥

(३)

ऋषिः—असितः काश्यपो देवलो वा ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

बभ्रवे नु स्वतवसेऽरुणाय दिविस्पृशे। सोमाय गाथमर्चत ॥ १ ॥
हस्तच्युतेभिरद्रिभिः सुतं सोमं पुनीतन। मधावा धावता मधु ॥ २ ॥
नमसेदुप सीदत दध्नेदभि श्रीणीतन। इन्दुमिन्द्रे दधातन ॥ ३ ॥
अमित्रहा विचर्षणिः पवस्व सोम शं गवे। देवेभ्यो अनुकामकृत् ॥ ४ ॥
इन्द्राय सोम पातवे मदाय परि षिच्यसे। मनश्चिन्मनसस्पतिः ॥ ५ ॥
पवमान सुवीर्यं रयिं सोम रिरीहि णः। इन्दविन्द्रेण नो युजा ॥ ६ ॥

(४)

ऋषिः—सुकक्षः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

उद् घेदभि श्रुतामघं वृषभं नर्यापसम्। अस्तारमेषि सूर्य ॥ १ ॥
नव यो नवतिं पुरो बिभेद बाह्वोजसा। अहिं च वृत्रहावधीत् ॥ २ ॥
स न इन्द्रः शिवः सखाश्वावद्गोमद्यवमत्। उरुधारेव दोहते ॥ ३ ॥

(५)

ऋषिः—विभ्राट् सौर्यः ॥ देवता—सूर्यः ॥ छन्दः—जगती ॥ स्वरः—निषादः ॥

विभ्राड् बृहत् पिबतु सोम्यं मध्वायुर्दधद्यज्ञपतावविहुतम् ।
वातजूतो यो अभिरक्षति त्मना प्रजाः पिपर्त्ति बहुधा वि राजति ॥ १ ॥
विभ्राड् बृहत्सुभृतं वाजसातमं धर्म दिवो धरुणे सत्यमर्पितम् ।
अमित्रहा वृत्रहा दस्युहन्तमं ज्योतिर्जज्ञे असुरहा सपत्नहा ॥ २ ॥
इदं श्रेष्ठं ज्योतिषां ज्योतिरुत्तमं विश्वजिद्धनजिदुच्यते बृहत् ।
विश्वभ्राड् भ्राजो महि सूर्यो दृश उरु पप्रथे सह ओजो अच्युतम् ॥ ३ ॥

(६)

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—बार्हतः प्रगाथः (१ बृहती, २ सतोबृहती) ॥ स्वरः—१ मध्यमः; २ पञ्चमः ॥

इन्द्र क्रतुं न आ भर पिता पुत्रेभ्यो यथा ।
शिक्षा णो अस्मिन् पुरुहूत यामनि जीवा ज्योतिरशीमहि ॥ १ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मा नो अज्ञाता वृजना दुराध्यो३ माशिवासोऽव क्रमुः ।
त्वया वयं प्रवतः शश्वतीरपोऽति शूर तरामसि ॥ २ ॥

(७)

ऋषिः—भर्गः प्रागाथः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—बार्हतः प्रगाथः (१ बृहती, २ सतोबृहती) ॥ स्वरः—१ मध्यमः; २ पञ्चमः ॥

अद्याद्या श्वःश्व इन्द्र त्रास्व परे च नः ।
विश्वा च नो जरितॄन्त्सत्पते अहा दिवा नक्तं च रक्षिषः ॥ १ ॥
प्रभङ्गी शूरो मघवा तुवीमघः सम्मिश्लो वीर्याय कम् ।
उभा ते बाहू वृषणा शतक्रतो नि या वज्रं मिमिक्षतुः ॥ २ ॥

(८)

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—सरस्वान् ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१४६०. जनीयन्तो न्वग्रवः पुत्रीयन्त सुदानवः ।
सरस्वन्तं हवामहे ॥ १ ॥

(९)

ऋषिः—भरद्वाजो बार्हस्पत्यः ॥ देवता—सरस्वती ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

उत नः प्रिया प्रियासु सप्तस्वसा सुजुष्टा ।
सरस्वती स्तोम्या भूत् ॥ १ ॥

(१०)

ऋषिः—१ विश्वामित्रः, २ मेधातिथिः, ३ शतं वैखानसाः ॥ देवता—१ सविता, २ ब्रह्मणस्पतिः, ३ अग्निः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात् ॥ १ ॥
सोमानां स्वरणं कृणुहि ब्रह्मणस्पते। कक्षीवन्तं य औशिजः ॥ २ ॥
अग्न आयूंषि पवस आ सुवोर्जमिषं च नः। आरे बाधस्व दुच्छुनाम् ॥ ३ ॥

(११)

ऋषिः—यजत आत्रेयः ॥ देवता—मित्रावरुणौ ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

ता नः शक्तं पार्थिवस्य महो रायो दिव्यस्य। महि वा क्षत्रं देवेषु ॥ १ ॥
ऋतमृतेन सपन्तेषिरं दक्षमाशाते। अद्रुहा देवौ वर्धेते ॥ २ ॥
वृष्टिद्यावा रीत्यापेषस्पती दानुमत्याः। बृहन्तं गर्तमाशाते ॥ ३ ॥

(१२)

ऋषिः—मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

युञ्जन्ति ब्रध्नमरुषं चरन्तं परि तस्थुषः। रोचन्ते रोचना दिवि ॥ १ ॥
युञ्जन्त्यस्य काम्या हरी विपक्षसा रथे। शोणा धृष्णू नृवाहसा ॥ २ ॥
केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशो मर्या अपेशसे। समुषद्भिरजायथाः ॥ ३ ॥

(१३)

ऋषिः—उशनाः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

अयं सोम इन्द्र तुभ्यं सुन्वे तुभ्यं पवते त्वमस्य पाहि ।
त्वं ह यं चकृषे त्वं ववृष इन्दुं मदाय युज्याय सोमम् ॥ १ ॥
स ईं रथो न भुरिषाडयोजि महः पुरूणि सातये वसूनि ।
आदीं विश्वा नहूष्याणि जाता स्वर्षाता वन ऊर्ध्वा नवन्त ॥ २ ॥
शुष्मी शर्धो न मारुतं पवस्वानभिशस्ता दिव्या यथा विट् ।
आपो न मक्षू सुमतिर्भवा नः सहस्त्राप्साः पृतनाषाड् न यज्ञः ॥ ३ ॥

(१४)

ऋषिः—भरद्वाजो बार्हस्पत्यः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१ वर्धमाना गायत्री; २, ३ गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

त्वमग्ने यज्ञानां होता विश्वेषां हितः। देवेभिर्मानुषे जने ॥ १ ॥
स नो मन्द्राभिरध्वरे जिह्वाभिर्यजा महः। आ देवान् वक्षि यक्षि च ॥ २ ॥
वेत्था हि वेधो अध्वनः पथश्च देवाञ्जसा। अग्ने यज्ञेषु सुक्रतो ॥ ३ ॥

(१५)

ऋषिः—विश्वामित्रः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

होता देवो अमर्त्यः पुरस्तादेति मायया। विदथानि प्रचोदयन् ॥ १ ॥
वाजी वाजेषु धीयतेऽध्वरेषु प्र णीयते। विप्रो यज्ञस्य साधनः ॥ २ ॥
धिया चक्रे वरेण्यो भूतानां गर्भमा दधे। दक्षस्य पितरं तना ॥ ३ ॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

(१६)

ऋषिः—हर्यतः प्रागाथः॥ देवता—अग्निर्वीषि वा॥ छन्दः—गायत्री॥
स्वरः—षड्जः॥

आ सुते सिञ्चत श्रियं रोदस्योरभिश्रियम्। रसा दधीत वृषभम् ॥ १ ॥
ते जानत स्वमोक्यꣳ सं वत्सासो न मातृभिः। मिथो नसन्त जामिभिः॥ २ ॥
उप स्रक्वेषु बप्सतः कृण्वते धरुणं दिवि। इन्द्रे अग्रा नमः स्वः ॥ ३ ॥

(१७)

ऋषिः—बृहद्दिव आथर्वणः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—त्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः॥

तदिदास भुवनेषु ज्येष्ठं यतो जज्ञ उग्रस्त्वेषनृम्णः।
सद्यो जज्ञानो नि रिणाति शत्रूननु यं विश्वे मदन्त्यूमाः ॥ १ ॥
वावृधानः शवसा भूर्योजाः शत्रुर्दासाय भियसं दधाति।
अव्यनच्च व्यनच्च सस्नि सं ते नवन्त प्रभृता मदेषु ॥ २ ॥
त्वे क्रतुमपि वृञ्जन्ति विश्वे द्विर्यदेते त्रिर्भवन्त्यूमाः।
स्वादोः स्वादीयः स्वादुना सृजा समदः सु मधु मधुनाभि योधीः ॥ ३ ॥

(१८)

ऋषिः—गृत्समदः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१ अष्टिः; २, ३ अतिशक्वरी॥
स्वरः—१ मध्यमः; २-३ पञ्चमः॥

१४८६. त्रिकद्रुकेषु महिषो यवाशिरं तुविशुष्मस्तृम्पत्
सोममपिबद्विष्णुना सुतं यथावशम्।
स ईं ममाद महि कर्म कर्तवे महामुरुं सैनं
सश्चद्देवो देवं सत्य इन्दुः सत्यमिन्द्रम् ॥ १ ॥
साकं जातः क्रतुना साकमोजसा ववक्षिथ
साकं वृद्धो वीर्यैः सासहिर्मृधो विचर्षणिः।
दाता राध स्तुवते काम्यं वसु प्रचेतन सैनं
सश्चद्देवो देवं सत्य इन्दुः सत्यमिन्द्रम् ॥ २ ॥
अध त्विषीमाँ अभ्योजसा कृविं युधाभवदा
रोदसी अपृणदस्य मज्मना प्र वावृधे।
अधत्तान्यं जठरे प्रेमरिच्यत प्र चेतय सैनं
सश्चद्देवो देवं सत्य इन्दुः सत्यमिन्द्रम् ॥ ३ ॥

इति त्रयोदशोऽध्यायः, षष्ठप्रपाठकश्च समाप्तः॥

अथ चतुर्दशोऽध्यायः

सप्तमप्रपाठकस्य प्रथमोऽर्धः

(१)

ऋषिः—प्रियमेधः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

अभि प्र गोपतिं गिरेन्द्रमर्च यथा विदे। सूनुं सत्यस्य सत्पतिम्॥ १ ॥
आ हरयः ससृज्रिरेऽरुषीरधि बर्हिषि। यत्राभि संनवामहे॥ २ ॥
इन्द्राय गाव आशिरं दुदुह्रे वज्रिणे मधु। यत्सीमुपह्वरे विदत्॥ ३ ॥

(२)

ऋषिः—नृमेधपुरुमेधौ॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—बार्हतः प्रगाथः (१ बृहती, २ सतोबृहती)॥ स्वरः—१ मध्यमः; २ पञ्चमः॥

आ नो विश्वासु हव्यमिन्द्र समत्सु भूषत।
उप ब्रह्माणि सवनानि वृत्रहन् परमज्या ऋचीषम ॥ १ ॥
त्वं दाता प्रथमो राधसामस्यसि सत्य ईशानकृत्।
तुविद्युम्नस्य युज्या वृणीमहे पुत्रस्य शवसो महः ॥ २ ॥

(३)

ऋषिः—त्र्यरुणत्रसदस्यू॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—ऊर्ध्वा बृहती॥
स्वरः—मध्यमः॥

प्रत्नं पीयूषं पूर्व्यं यदुक्थ्यं महो गाहाद्दिव आ निरधुक्षत।
इन्द्रमभि जायमानं समस्वरन् ॥ १ ॥
आदीं के चित् पश्यमानास आप्यं वसुरुचो दिव्या अभ्यनूषत।
दिवो न वारं सविता व्यूर्णुते ॥ २ ॥
अध यदिमे पवमान रोदसी इमा च विश्वा भुवनाभि मज्मना।
यूथे न निष्ठा वृषभो वि राजसि ॥ ३ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

(४)

ऋषिः—शुनःशेप आजीगर्तिः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

इममू षु त्वमस्माकं सनिं गायत्रं नव्यांसम्। अग्ने देवेषु प्र वोचः ॥ १ ॥
विभक्तासि चित्रभानो सिन्धोरूर्मा उपाक आ। सद्यो दाशुषे क्षरसि ॥ २ ॥
आ नो भज परमेष्वा वाजेषु मध्यमेषु। शिक्षा वस्वो अन्तमस्य ॥ ३ ॥

(५)

ऋषिः—वत्सः काण्वः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अहमिद्धि पितुष्परि मेधामृतस्य जग्रह। अहं सूर्यइवाजनि ॥ १ ॥
अहं प्रत्नेन जन्मना गिरः शुम्भामि कण्ववत्। येनेन्द्रः शुष्ममिद्दधे ॥ २ ॥
ये त्वामिन्द्र न तुष्टुवुर्ऋषयो ये च तुष्टुवुः। ममेद् वर्धस्व सुष्टुतः ॥ ३ ॥

(६)

ऋषिः—अग्निस्तापसः ॥ देवता—विश्वेदेवाः ॥ छन्दः—अनुष्टुप् ॥ स्वरः—गान्धारः ॥

अग्ने विश्वेभिरग्निभिर्जोषि ब्रह्म सहस्कृत।
ये देवत्रा य आयुषु तैर्भिर्नो महया गिरः ॥ १ ॥
प्र स विश्वेभिरग्निभिरग्निः स यस्य वाजिनः।
तनये तोके अस्मदा सम्यङ् वाजैः परीवृतः ॥ २ ॥
त्वं नो अग्ने अग्निभिर्ब्रह्म यज्ञं च वर्धय।
त्वं नो देवतातये रायो दानाय चोदय ॥ ३ ॥

(७)

ऋषिः—त्र्यरुणत्रसदस्यू ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—ऊर्ध्वा बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

त्वे सोम प्रथमा वृक्तबर्हिषो महे वाजाय श्रवसे धियं दधुः।
स त्वं नो वीर वीर्याय चोदय ॥ १ ॥
अभ्यभि हि श्रवसा ततर्दिथात्सं न कं चिज्जनपानमक्षितम्।
शयाभिर्न भरमाणो गभस्त्योः ॥ २ ॥
अजीजनो अमृत मर्त्याय कमृतस्य धर्मन्नमृतस्य चारुणः।
सदासरो वाजमच्छा सनिष्यदत् ॥ ३ ॥

(८)

ऋषिः—विश्वमना वैयश्वः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—उष्णिक् ॥ स्वरः—ऋषभः ॥

एन्दुमिन्द्राय सिञ्चत पिबाति सोम्यं मधु। प्र राधांसि चोदयते महित्वना ॥ १ ॥
उपो हरीणां पतिं राधः पृञ्चन्तमब्रवम्। नूनं श्रुधि स्तुवतो अश्व्यस्य ॥ २ ॥
न ह्याऽङ्ग पुरा च न जज्ञे वीरतरस्त्वत्। न की राया नैवथा न भन्दना ॥ ३ ॥

(९)

ऋषिः—प्रियमेध आङ्गिरसः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—निचृदुष्णिक् ॥ स्वरः—ऋषभः ॥

१५१२. नदं व ओदतीनां नदं योयुवतीनाम्।
पतिं वो अघ्न्यानां धेनूनामिषुध्यसि ॥ १ ॥

(१०)

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—बार्हतः प्रगाथः (१ बृहती, २ सतोबृहती) ॥ स्वरः—१ मध्यमः; २ पञ्चमः ॥

देवो वो द्रविणोदाः पूर्णां विवष्ट्यासिचम्।
उद्वा सिञ्चध्वमुप वा पृणध्वमादिद्वो देव ओहते ॥ १ ॥
तं होतारमध्वरस्य प्रचेतसं वह्निं देवा अकृण्वत।
दधाति रत्नं विधते सुवीर्यमग्निर्जनाय दाशुषे ॥ २ ॥

(११)

ऋषिः—सोभरिः काण्वः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

अदर्शि गातुवित्तमो यस्मिन् व्रतान्यादधुः।
उपो षु जातमार्यस्य वर्धनमग्निं नक्षन्तु नो गिरः ॥ १ ॥
यस्माद्रेजन्त कृष्टयश्चर्कृत्यानि कृण्वतः।
सहस्रसा मेधसाताविव त्मनाग्निं धीभिर्नमस्यत ॥ २ ॥
प्र दैवोदासो अग्निर्देव इन्द्रो न मज्मना।
अनु मातरं पृथिवीं वि वावृते तस्थौ नाकस्य शर्मणि ॥ ३ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

(१२)

ऋषिः—शतं वैखानसाः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अग्न आयूंषि पवस आसुवोर्जमिषं च नः। आरे बाधस्व दुच्छुनाम् ॥ १ ॥

अग्निर्ऋषिः पवमानः पाञ्चजन्यः पुरोहितः। तमीमहे महागयम् ॥ २ ॥

अग्ने पवस्व स्वपा अस्मे वर्चः सुवीर्यम्। दधद्रयिं मयि पोषम् ॥ ३ ॥

(१३)

ऋषिः—वसूयव आत्रेयाः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अग्ने पावक रोचिषा मन्द्रया देव जिह्वया। आ देवान् वक्षि यक्षि च ॥ १ ॥

तं त्वा घृतस्नवीमहे चित्रभानो स्वर्दृशम्। देवाँ आ वीतये वह ॥ २ ॥

वीतिहोत्रं त्वा कवे द्युमन्तं समिधीमहि। अग्ने बृहन्तमध्वरे ॥ ३ ॥

(१४)

ऋषिः—गोतमो राहूगणः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अवा नो अग्न ऊतिभिर्गायत्रस्य प्रभर्मणि। विश्वासु धीषु वन्द्य ॥ १ ॥

आ नो अग्ने रयिं भर सत्रासाहं वरेण्यम्। विश्वासु पृत्सु दुष्टरम् ॥ २ ॥

आ नो अग्ने सुचेतुना रयिं विश्वायुपोषसम्। मार्डीकं धेहि जीवसे ॥ ३ ॥

(१५)

ऋषिः—केतुराग्नेयः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अग्निं हिन्वन्तु नो धियः सप्तिमाशुमिवाजिषु। तेन जेष्म धनंधनम् ॥ १ ॥

यया गा आकरामहे सेनयाग्ने तवोत्या। तां नो हिन्व मघत्तये ॥ २ ॥

आग्ने स्थूरं रयिं भर पृथुं गोमन्तमश्विनम्। अङ्धि खं वर्तया पविम् ॥ ३ ॥

अग्ने नक्षत्रमजरमा सूर्यं रोहयो दिवि। दधज्ज्योतिर्जनेभ्यः ॥ ४ ॥

अग्ने केतुर्विशामसि प्रेष्ठः श्रेष्ठ उपस्थसत्। बोधा स्तोत्रे वयो दधत् ॥ ५ ॥

(१६)

ऋषिः—विरूप आङ्गिरसः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अग्निर्मूर्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम्। अपां रेतांसि जिन्वति ॥ १ ॥

ईशिषे वार्यस्य हि दात्रस्याग्ने स्वःपतिः। स्तोता स्यां तव शर्मणि ॥ २ ॥

उदग्ने शुचयस्तव शुक्रा भ्राजन्त ईरते। तव ज्योतींष्यर्चयः ॥ ३ ॥

इति चतुर्दशोऽध्यायः, सप्तमप्रपाठकस्य प्रथमोऽर्धः ॥

अथ पञ्चदशोऽध्यायः

सप्तमप्रपाठकस्य द्वितीयोऽर्धः

(१)

ऋषिः—गोतमो राहूगणः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

कस्ते जामिर्जनानामग्ने को दाश्वध्वरः। को ह कस्मिन्नसि श्रितः ॥ १ ॥

त्वं जामिर्जनानामग्ने मित्रो असि प्रियः। सखा सखिभ्य ईड्यः ॥ २ ॥

यजा नो मित्रावरुणा यजा देवाँ ऋतं बृहत्। अग्ने यक्षि स्वं दमम् ॥ ३ ॥

(२)

ऋषिः—विश्वामित्रः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

ईड्न्यो नमस्यस्तिरस्तमांसि दर्शतः। समग्निरिध्यते वृषा ॥ १ ॥

वृषो अग्निः समिध्यतेऽश्वो न देववाहनः। तं हविष्मन्त ईडते ॥ २ ॥

वृषणं त्वा वयं वृषन् वृषणः समिधीमहि। अग्ने दीद्यतं बृहत् ॥ ३ ॥

(३)

ऋषिः—विरूप आङ्गिरसः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

उत्ते बृहन्तो अर्चयः समिधानस्य दीदिवः। अग्ने शुक्रास ईरते ॥ १ ॥

उप त्वा जुह्वो३ मम घृताचीर्यन्तु हर्यत। अग्ने हव्या जुषस्व नः ॥ २ ॥

मन्द्रं होतारमृत्विजं चित्रभानुं विभावसुम्। अग्निमीडे स उ श्रवत् ॥ ३ ॥

(४)

ऋषिः—भर्गः प्रागाथः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—बार्हतः प्रगाथः (१ बृहती, २ सतोबृहती) ॥ स्वरः—१ मध्यमः; २ पञ्चमः ॥

१५४४. पाहि नो अग्न एकया पाह्यूत द्वितीयया ।

पाहि गीर्भिस्तिसृभिरूर्जां पते पाहि चतसृभिर्वसो ॥ १ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पाहि विश्वस्माद्रक्षसो अराव्णः प्र स्म वाजेषु नोऽव ।
त्वामिद्धि नेदिष्ठं देवतातय आपिं नक्षामहे वृधे ॥ २ ॥

(५)

ऋषिः—त्रित आप्त्यः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

इनो राजन्नरतिः समिद्धो रौद्रो दक्षाय सुषुमाँ अदर्शि ।
चिकिद्वि भाति भासा बृहतासिक्नीमेति रुशतीमपाजन् ॥ १ ॥
कृष्णा यदेनीमभि वर्पसाभूज्जनयन्योषां बृहतः पितुर्जाम् ।
ऊर्ध्वं भानुं सूर्यस्य स्तभायन् दिवो वसुभिररतिर्वि भाति ॥ २ ॥
भद्रो भद्रया सचमान आगात् स्वसारं जारो अभ्येति पश्चात् ।
सुप्रकेतैर्द्युभिरग्निर्वितिष्ठन् रुशद्भिर्वर्णैरभि राममस्थात् ॥ ३ ॥

(६)

ऋषिः—उशनाः काव्यः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

कया ते अग्ने अङ्गिर ऊर्जो नपादुपस्तुतिम् । वराय देव मन्यवे ॥ १ ॥
दाशेम कस्य मनसा यज्ञस्य सहसो यहो । कदु वोच इदं नमः ॥ २ ॥
अधा त्वं हि नस्करो विश्वा अस्मभ्यं सुक्षितीः । वाजद्रविणसो गिरः ॥ ३ ॥

(७)

ऋषिः—भर्गः प्रागाथः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—बार्हतः प्रगाथः (१ बृहती, २ सतोबृहती) ॥ स्वरः—१ मध्यमः; २ पञ्चमः ॥

अग्न आ याह्यग्निभिर्होतारं त्वा वृणीमहे ।
आ त्वामनक्तु प्रयता हविष्मती यजिष्ठं बर्हिरासदे ॥ १ ॥
अच्छा हि त्वा सहसः सूनो अङ्गिरः स्रुचश्चरन्त्यध्वरे ।
ऊर्जो नपातं घृतकेशमीमहेऽग्निं यज्ञेषु पूर्व्यम् ॥ २ ॥

(८)

ऋषिः—सुदीतिपुरुमीढौ तयोर्वान्यतरः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—बार्हतः प्रगाथः (१ बृहती, २ सतोबृहती) ॥ स्वरः—१ मध्यमः; २ पञ्चमः ॥

अच्छा नः शीरशोचिषं गिरो यन्तु दर्शतम् ।
अच्छा यज्ञासो नमसा पुरूवसुं पुरुप्रशस्तमूतये ॥ १ ॥

अग्निं सूनुं सहसो जातवेदसं दानाय वार्याणाम् ।
द्विता यो भूदमृतो मर्त्येष्वा होता मन्द्रतमो विशि ॥ २ ॥

(९)

ऋषिः—विश्वामित्रः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अदाभ्यः पुरएता विशामग्निर्मानुषीणाम् । तूर्णी रथः सदा नवः ॥ १ ॥
अभि प्रयांसि वाहसा दाश्वाँ अश्नोति मर्त्यः । क्षयं पावकशोचिषः ॥ २ ॥
साह्वान् विश्वा अभियुजः क्रतुर्देवानाममृक्तः । अग्निस्तुविश्रवस्तमः ॥ ३ ॥

(१०)

ऋषिः—सोभरिः काण्व ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—काकुभः प्रगाथः (१ ककुबुष्णिक्, २ सतोबृहती) ॥ स्वरः—१ ऋषभः; २ पञ्चमः ॥

भद्रो नो अग्निराहुतो भद्रा रातिः सुभग भद्रो अध्वरः ।
भद्रा उत प्रशस्तयः ॥ १ ॥
भद्रं मनः कृणुष्व वृत्रतूर्ये येना समत्सु सासहिः ।
अव स्थिरा तनुहि भूरि शर्धतां वनेमा ते अभिष्टये ॥ २ ॥

(११)

ऋषिः—गोतमो राहूगणः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—उष्णिक् ॥ स्वरः—ऋषभः ॥

अग्ने वाजस्य गोमत ईशानः सहसो यहो । अस्मे देहि जावेदो महि श्रवः ॥ १ ॥
स इधानो वसुष्कविरग्निरीड्यो गिरा । रेवदस्मभ्यं पुर्वणीक दीदिहि ॥ २ ॥
क्षपो राजन्नुत त्मनाग्ने वस्तोरुतोषसः । स तिग्मजम्भ रक्षसो दह प्रति ॥ ३ ॥

(१२)

ऋषिः—गोपवन आत्रेयः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—आनुष्टुभः प्रगाथः (१ अनुष्टुप्; २-३ गायत्री) ॥ स्वरः—१ गान्धारः; २-३ षड्जः ॥

१५६४. विशोविशो वो अतिथिं वाजयन्तः पुरुप्रियम् ।
अग्निं वो दुर्यं वच स्तुषे शूषस्य मन्मभिः ॥ १ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सामवेदः

यं जनासो हविष्मन्तो मित्रं न सर्पिरासुतिम्। प्रशंसन्ति प्रशस्तिभिः ॥ २ ॥
पन्यांसं जातवेदसं यो देवतात्युद्यता। हव्यान्यैरयद् दिवि ॥ ३ ॥

(१३)

ऋषिः—भरद्वाजो बार्हस्पत्यो वीतहव्यो वा ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—जगती ॥ स्वरः—निषादः ॥

समिद्धमग्निं समिधा गिरा गृणे शुचिं पावकं पुरो अध्वरे ध्रुवम् ।
विप्रं होतारं पुरुवारमद्रुहं कविं सुम्नैरीमहे जातवेदसम् ॥ १ ॥
त्वां दूतमग्ने अमृतं युगेयुगे हव्यवाहं दधिरे पायुमीड्यम् ।
देवासश्च मर्त्तासश्च जागृविं विभुं विश्पतिं नमसा नि षेदिरे ॥ २ ॥
विभूषन्नग्न उभया अनु व्रता दूतो देवानां रजसी समीयसे ।
यस्ते धीतिं सुमतिमावृणीमहेऽध स्मा नस्त्रिवरूथः शिवो भव ॥ ३ ॥

(१४)

ऋषिः—प्रयोगो भार्गवः; पावकोऽग्निर्बार्हस्पत्यो वा, गृहपतियविष्ठौ सहसः सुतौ तयोर्वान्यतरो वा ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

उप त्वा जामयो गिरो देदिशतीर्हविष्कृतः। वायोरनीके अस्थिरन् ॥ १ ॥
यस्य त्रिधात्ववृतं बर्हिस्तस्थावसन्दिनम्। आपश्चिन्नि दधा पदम् ॥ २ ॥
पदं देवस्य मीळुषोऽनाधृष्टाभिरूतिभिः। भद्रा सूर्यइवोपदृक् ॥ ३ ॥

इति पञ्चदशोऽध्यायः, सप्तमप्रपाठकस्य द्वितीयोऽर्धः ॥

अथ षोडशोऽध्यायः

सप्तमप्रपाठकस्य तृतीयोऽर्धः

(१)

ऋषिः—मेधातिथिः काण्वः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—बार्हतः प्रगाथः (१ बृहती, २ सतोबृहती) ॥ स्वरः—१ मध्यमः; २ पञ्चमः ॥

अभि त्वा पूर्वपीतये इन्द्र स्तोमेभिरायवः ।
समीचीनास ऋभवः समस्वरन् रुद्रा गृणन्त पूर्व्यम् ॥ १ ॥

उत्तरार्चिकः

अस्येदिन्द्रो वावृधे वृष्ण्यं शवो मदे सुतस्य विष्णवि ।
अद्या तमस्य महिमानमायवोऽनु ष्टुवन्ति पूर्वथा ॥ २ ॥

(२)

ऋषिः—विश्वामित्रः ॥ देवता—इन्द्राग्नी ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

प्र वामर्चन्त्युक्थिनो नीथाविदो जरितारः। इन्द्राग्नी इष आ वृणे ॥ १ ॥
इन्द्राग्नी नवतिं पुरो दासपत्नीरधूनुतम्। साकमेकेन कर्मणा ॥ २ ॥
इन्द्राग्नी अपसस्पर्युप प्र यन्ति धीतयः। ऋतस्य पथ्या३ अनु ॥ ३ ॥
इन्द्राग्नी तविषाणि वां सधस्थानि प्रयांसि च। युवोरसूर्यं हितम् ॥ ४ ॥

(३)

ऋषिः—भर्गः प्रागाथः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—बार्हतः प्रगाथः (१ बृहती, २ सतोबृहती) ॥ स्वरः—१ मध्यमः; २ पञ्चमः ॥

शग्ध्यू३ षु शचीपत इन्द्र विश्वाभिरूतिभिः ।
भगं न हि त्वा यशसं वसुविदमनु शूर चरामसि ॥ १ ॥
पौरो अश्वस्य पुरुकृद्गवामस्युत्सो देव हिरण्ययः ।
न किहि दानं परि मर्धिषत् त्वे यद्यद्यामि तदा भर ॥ २ ॥

(४)

ऋषिः—भर्गः प्रागाथः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—बार्हतः प्रगाथः (१ बृहती, २ सतोबृहती) ॥ स्वरः—१ मध्यमः; २ पञ्चमः ॥

त्वं होहि चेरवे विदा भगं वसुत्तये ।
उद्वावृषस्व मघवन् गविष्टय उदिन्द्राश्वमिष्टये ॥ १ ॥
त्वं पुरू सहस्त्राणि शतानि च यूथा दानाय मंहसे ।
आ पुरन्दरं चकृम विप्रवचस इन्द्रं गायन्तोऽवसे ॥ २ ॥

(५)

ऋषिः—सोभरिः काण्वः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—बार्हतः प्रगाथः (१ बृहती, २ सतोबृहती) ॥ स्वरः—१ मध्यमः; २ पञ्चमः ॥

यो विश्वा दयते वसु होता मन्द्रो जनानाम् ।
मधोर्न पात्रा प्रथमान्यस्मै प्र स्तोमा यन्त्वग्नये ॥ १ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अश्वं न गीर्भी रथ्यं सुदानवो मर्मृज्यन्ते देवयवः ।
उभे तोके तनये दस्म विश्पते पर्षि राधो मघोनाम् ॥ २ ॥

(६)

ऋषिः—शुनःशेप आजीगर्तिः ॥ देवता—वरुणः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

इमं मे वरुण श्रुधी हवमद्या च मृडय ।
त्वामवस्युरा चके ॥ १ ॥

(७)

ऋषिः—सुकक्षः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

कया त्वं न ऊत्याभि प्र मन्दसे वृषन् ।
कया स्तोतृभ्य आ भर ॥ १ ॥

(८)

ऋषिः—मेधातिथिः काण्वः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—बार्हतः प्रगाथः (१ बृहती, २ सतोबृहती) ॥ स्वरः—१ मध्यमः; २ पञ्चमः ॥

इन्द्रमिद्देवतातय इन्द्रं प्रयत्यध्वरे ।
इन्द्रं समीके वनिनो हवामह इन्द्रं धनस्य सातये ॥ १ ॥
इन्द्रो मह्ना रोदसी पप्रथच्छव इन्द्रः सूर्यमरोचयत् ।
इन्द्रे ह विश्वा भुवनानि येमिर इन्द्रे स्वानास इन्दवः ॥ २ ॥

(९)

ऋषिः—विश्वकर्मा भौवनः ॥ देवता—विश्वकर्मा ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

विश्वकर्मन् हविषा वावृधानः स्वयं यजस्व तन्वा३ स्वाहुतः ।
मुह्यन्त्वन्ये अभितो जनास इहास्माकं मघवा सूरिरस्तु ॥ १ ॥

(१०)

ऋषिः—अनानतः पारुच्छेपिः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—अत्यष्टिः ॥ स्वरः—गान्धारः ॥

१५९०. अया रुचा हरिण्या पुनानो विश्वा द्वेषांसि
तरति स्युग्वभिः सूरो न स्युग्वभिः ।
धारा पृष्ठस्य रोचते पुनानो अरुषो हरिः ।
विश्वा यद्रूपा परियास्यृक्वभिः ससास्येभिर्ऋक्वभिः ॥ १ ॥

प्राचीमनु प्रदिशं याति चेकितत्सं रश्मिभिर्यतते
दर्शतो रथो दैव्यो दर्शतो रथः ।
अग्मन्नुक्थानि पौंस्येन्द्र जैत्राय हर्षयन् ।
वज्रश्च यद्धवथो अनपच्युता समत्स्वनपच्युता ॥ २ ॥
त्वं ह त्यत्पणीनां विदो वसु सं मातृभिर्मर्जयसि
स्व आ दम ऋतस्य धीतिभिर्दमे ।
परावतो न साम तद्यत्रा रणन्ति धीतयः ।
त्रिधातुभिररुषीभिर्वयो दधे रोचमानो बयो दधे ॥ ३ ॥

(११)

ऋषिः—भरद्वाजो बार्हस्पत्यः ॥ देवता—पूषा ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

उत नो गोषणिं धियमश्वसां वाजसामुत। नृवत्कृणुह्यूतये ॥ १ ॥

(१२)

ऋषिः—गोतमो राहूगणः ॥ देवता—मरुतः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

शशमानस्य वा नरः स्वेदस्य सत्यशवसः। विदा कामस्य वेनतः ॥ १ ॥

(१३)

ऋषिः—ऋजिश्वाः ॥ देवता—विश्वदेवाः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

उप नः सूनवो गिरः शृण्वन्त्वमृतस्य ये। सुमृडीका भवन्तु नः ॥ १ ॥

(१४)

ऋषिः—वामदेवः ॥ देवता—द्यावापृथिव्यौ ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

प्र वां महि द्यवी अभ्युपस्तुतिं भरामहे। शुची उप प्रशस्तये ॥ १ ॥
पुनाने तन्वा मिथः स्वेन दक्षेण राजथः। ऊह्याथे सनादृतम् ॥ २ ॥
मही मित्रस्य साधथस्तरन्ती पिप्रती ऋतम्। परि यज्ञं नि षेदथुः ॥ ३ ॥

(१५)

ऋषिः—शुनःशेप आजीगर्तिः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अयमु ते समतसि कपोतइव गर्भधिम्। वचस्तच्चिन्न ओहसे ॥ १ ॥
स्तोत्रे राधाना पते गिर्वाहो वीर यस्य ते। विभूतिरस्तु सूनृता ॥ २ ॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ऊर्ध्वस्तिष्ठा न ऊतयेऽस्मिन् वाजे शतक्रतो। समन्येषु ब्रवावहै ॥ ३ ॥

(१६)

ऋषिः—हर्यतः प्रागाथः ॥ देवता—अग्निर्वीषि वा ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

गाव उप वदावटे मही यज्ञस्य रप्सुदा। उभा कर्णा हिरण्यया ॥ १ ॥

अभ्यारमिदद्रयो निषिक्तं पुष्करे मधु। अवटस्य विसर्जने ॥ २ ॥

सिञ्चन्ति नमसावटमुच्चाचक्रं परिज्मानम्। नीचीनवारमक्षितम् ॥ ३ ॥

(१७)

ऋषिः—देवातिथिः काण्वः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—बार्हतः प्रगाथः (१ बृहती, २ सतोबृहती) ॥ स्वरः—१ मध्यमः; २ पञ्चमः ॥

मा भेम मा श्रमिष्मोग्रस्य सख्ये तव ।

महत्ते वृष्णो अभिचक्ष्यं कृतं पश्येम तुर्वशं यदुम् ॥ १ ॥

सव्यामनु स्फिग्यं वावसे वृषा न दानो अस्य रोषति ।

मध्वा सम्पृक्ताः सारघेण धेनवस्तूयमेहि द्रवा पिब ॥ २ ॥

(१८)

ऋषिः—मेधातिथिः काण्वः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—बार्हतः प्रगाथः (१ बृहती, २ सतोबृहती) ॥ स्वरः—१ मध्यमः; २ पञ्चमः ॥

इमा उ त्वा पुरूवसो गिरो वर्धन्तु या मम ।

पावकवर्णाः शुचयो विपश्चितोऽभि स्तोमैरनूषत ॥ १ ॥

अयं सहस्रमृषिभिः सहस्कृतः समुद्रइव पप्रथे ।

सत्यः सो अस्य महिमा गृणे शवो यज्ञेषु विप्राज्ये ॥ २ ॥

(१९)

ऋषिः—शुष्टिगुः काण्वः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—बार्हतः प्रगाथः (१ बृहती, २ सतोबृहती) ॥ स्वरः—१ मध्यमः; २ पञ्चमः ॥

यस्यायं विश्व आर्यो दासः शेवधिपा अरिः ।

तिरश्चिदर्ये रुशमे पवीरवि तुभ्येत् सो अज्यते रयिः ॥ १ ॥

तुरण्यवो मधुमन्तं घृतश्चुतं विप्रासो अर्कमानृचुः ।

अस्मे रयिः पप्रथे वृष्ण्यं शवोऽस्मे स्वानास इन्दवः ॥ २ ॥

(२०)

ऋषिः—पर्वतनारदौ ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—उष्णिक् ॥ स्वरः—ऋषभः ॥

गोमन्न इन्दो अश्ववत् सुतः सुदक्ष धनिव। शुचिं च वर्णमधि गोषु धारय ॥ १ ॥

स नो हरीणां पत इन्दो देवप्सरस्तमः। सखेव सख्ये नर्यो रुचे भव ॥ २ ॥

१६१३. सनेमि त्वमस्मदा अदेवं कं चिदत्रिणम् ।

साह्वाँ इन्दो परि बाधो अप द्वयुम् ॥ ३ ॥

(२१)

ऋषिः—अत्रिः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—जगती ॥ स्वरः—निषादः ॥

अज्यते व्यज्यते समञ्जते क्रतुं रिहन्ति मध्वाभ्यञ्जते ।

सिन्धोरुच्छ्वासे पतयन्तमुक्षणं हिरण्यपावाः पशुमप्सु गृभ्णते ॥ १ ॥

विपश्चिते पवमानाय गायत मही न धारात्यन्धो अर्षति ।

अहिर्न जूर्णामति सर्पति त्वचमत्यो न क्रीडन्नसरद् वृषा हरिः ॥ २ ॥

अग्रेगो राजाप्यस्तविष्यते विमानो अह्नां भुवनेष्वर्पितः ।

हरिर्घृतस्नुः सुदृशीको अर्णवो ज्योतीरथः पवते राय ओक्यः ॥ ३ ॥

इति षोडशोऽध्यायः, सप्तमप्रपाठकश्च समाप्तः ॥

अथ सप्तदशोऽध्यायः

अष्टमप्रपाठकस्य प्रथमोऽर्धः

(१)

ऋषिः—शुनःशेप आजीगर्तिः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

विश्वेभिरग्ने अग्निभिरिमं यज्ञमिदं वचः। चनो धाः सहसो यहो ॥ १ ॥

यच्चिद्धि शश्वता तना देवंदेवं यजामहे। त्वे इद्धूयते हविः ॥ २ ॥

प्रियो नो अस्तु विश्पतिर्होता मन्द्रो वरेण्यः। प्रियाः स्वग्नयो वयम् ॥ ३ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

(२)

ऋषिः—मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥

स्वरः—षड्जः ॥

इन्द्रं वो विश्वतस्परि हवामहे जनेभ्यः । अस्माकमस्तु केवलः ॥ १ ॥

स नो वृषन्नमुं चरुं सत्रादावन्नपा वृधि । अस्मभ्यमप्रतिष्कृतः ॥ २ ॥

वृषा यूथेव वंसगः कृष्टीरियर्त्योजसा । ईशानो अप्रतिष्कुतः ॥ ३ ॥

(३)

ऋषिः—शंयुर्बार्हस्पत्यः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—बार्हतः प्रगाथः (१ वृहती, २ सतोबृहती) ॥ स्वरः—१ मध्यमः; २ पञ्चमः ॥

त्वं नश्चित्र ऊत्या वसो राधांसि चोदय ।

अस्य रायस्त्वमग्ने रथीरसि विदा गाधं तुचे तु नः ॥ १ ॥

पर्षि तोकं तनयं पर्तृभिष्ट्वमदब्धैरप्रयुत्वभिः ।

अग्ने हेडांसि दैव्या युयोधि नोऽदेवानि हरांसि च ॥ २ ॥

(४)

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—विष्णुः ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

किमित्ते विष्णो परिचक्षि नाम प्र यद्ववक्षे शिपिविष्टो अस्मि ।

मा वर्पो अस्मदप गूह एतद्यदन्यरूपः समिथे बभूथ ॥ १ ॥

प्र तत्ते अद्य शिपिविष्ट हव्यमयं शंसामि वयुनानि विद्वान् ।

तं त्वा गृणामि तवसमतव्यान् क्षयन्तमस्य रजसः पराके ॥ २ ॥

वषट् ते विष्णवास आ कृणोमि तन्मे जुषस्व शिपिविष्ट हव्यम् ।

वर्धन्तु त्वा सुष्टुतयो गिरो मे यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ३ ॥

(५)

ऋषिः—वामदेवः ॥ देवता—१ वायुः; २-३ इन्द्रवायू ॥ छन्दः—अनुष्टुप् ॥

स्वरः—गान्धारः ॥

१६२८. वायो शुक्रो अयामि ते मध्वो अग्रं दिविष्टिषु ।

आ याहि सोमपीतये स्पार्हो देव नियुत्वता ॥ १ ॥

इन्द्रश्च वायवेषां सोमानां पीतिमर्हथः ।

युवां हि यन्तीन्दवो निम्नमापो न सध्र्यक् ॥ २ ॥

वायविन्द्रश्च शुष्मिणा सरथं शवसस्पती ।

नियुत्वन्ता न ऊतय आ यातं सोमपीतये ॥ ३ ॥

(६)

ऋषिः—रेभसूनू काश्यपौ ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—अनुष्टुप् ॥

स्वरः—गान्धारः ॥

अध क्षपा परिष्कृतो वाजाँ अभि प्र गाहसे ।

यदी विवस्वतो धियो हरिं हिन्वन्ति यातवे ॥ १ ॥

तमस्य मर्जयामसि मदो य इन्द्रपातमः ।

यं गाव आसभिर्दधुः पुरा नूनं च सूरयः ॥ २ ॥

तं गाथया पुराण्या पुनानमभ्यनूषत ।

उतो कृपन्त धीतयो देवानां नाम बिभ्रतीः ॥ ३ ॥

(७)

ऋषिः—शुनःशेप आजीगर्तिः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—गायत्री ॥

स्वरः—षड्जः ॥

अश्वं न त्वा वारवन्तं वन्दध्या अग्निं नमोभिः । सम्राजन्तमध्वराणाम् ॥ १ ॥

स घा नः सूनुः शवसा पृथुप्रगामा सुशेवः । मीढ्वाँ अस्माकं बभूयात् ॥ २ ॥

स नो दूराच्चासाच्च नि मर्त्यादघायोः । पाहि सदमिद्विश्वायुः ॥ ३ ॥

(८)

ऋषिः—नृमेधः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—बार्हतः प्रगाथः (१ बृहती, २ सतोबृहती) ॥ स्वरः—१ मध्यमः; २ पञ्चमः ॥

१६३७. त्वमिन्द्र प्रतूर्तिष्वभि विश्वा असि स्पृधः ।

अशस्तिहा जनिता वृत्रतूरसि त्वं तूर्य तरुष्यतः ॥ १ ॥

अनु ते शुष्मं तुरयन्तमीयतुः क्षोणी शिशुं न मातरा ।

विश्वास्ते स्पृधः श्नथयन्त मन्यवे वृत्रं यदिन्द्र तूर्वसि ॥ २ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

(९)

ऋषिः—गोषूक्त्यश्वसूक्तिनौ काण्वायनौ ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥

स्वरः—षड्जः ॥

यज्ञ इन्द्रमवर्धयद् यद्भूमिं व्यवर्तयत्। चक्राण ओपशं दिवि ॥ १ ॥

व्याऽन्तरिक्षमतिरन् मदे सोमस्य रोचना। इन्द्रो यदभिनद् वलम् ॥ २ ॥

उद्ना आजदङ्गिरोभ्य आविष्कृण्वन् गुहा सतीः। अर्वाञ्चं नुनुदे वलम् ॥ ३ ॥

(१०)

ऋषिः—श्रुतकक्षः सुकक्षो वा आङ्गिरसः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥

स्वरः—षड्जः ॥

त्यमु वः सत्रासाहं विश्वासु गीर्ष्वायतम्। आ च्यावयस्यूतये ॥ १ ॥

युष्मं सन्तमनर्वाणं सोमपामनपच्युतम्। नरमवार्यक्रतुम् ॥ २ ॥

शिक्षा ण इन्द्र राय आ पुरु विद्वाँ ऋचीषम। अवा नः पार्ये धने ॥ ३ ॥

(११)

ऋषिः—गोषूक्त्यश्वसूक्तिनौ काण्वायनौ ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—उष्णिक् ॥

स्वरः—ऋषभः ॥

तव त्यदिन्द्रियं बृहत्तव दक्षमुत क्रतुम्। वज्रं शिशाति धिषणा वरेण्यम् ॥ १ ॥

तव द्यौरिन्द्र पौंस्यं पृथिवी वर्धति श्रवः। त्वामापः पर्वतासश्च हिन्विरे ॥ २ ॥

त्वां विष्णुर्बृहन् क्षयो मित्रो गृणाति वरुणः। त्वां शर्धो मदत्यनु मारुतम् ॥ ३ ॥

(१२)

ऋषिः—विरूप आङ्गिरसः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—गायत्री ॥

स्वरः—षड्जः ॥

नमस्ते अग्न ओजसे गृणन्ति देव कृष्टयः। अमैरमित्रमर्दय ॥ १ ॥

कुवित्सु नो गविष्टयेऽग्ने संवेषिषो रयिम्। उरुकृदुरु णस्कृधि ॥ २ ॥

मा नो अग्ने महाधने परा वर्ग्भारभृद्यथा। संवर्गं सं रयिं जय ॥ ३ ॥

(१३)

ऋषिः—वत्सः काण्वः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

समस्य मन्यवे विशो विश्वा नमन्त कृष्टयः। समुद्रायेव सिन्धवः ॥ १ ॥

वि चिद् वृत्रस्य दोधतः शिरो बिभेद वृष्णिना। वज्रेण शतपर्वणा ॥ २ ॥

ओजस्तदस्य तित्विष उभे यत्समवर्त्तयत्। इन्द्रश्चर्मेव रोदसी ॥ ३ ॥

(१४)

ऋषिः—शुनःशेप आजीगर्तिः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१ एकपदापङ्क्तिः; २-३ गायत्री ॥ स्वरः—१ पञ्चमः; २-३ षड्जः ॥

सुमन्मा वस्वी रन्ती सूनरी ॥ १ ॥

सरूप वृषन्ना गहीमौ भद्रौ धुर्यावभि। ताविमा उप सर्पतः ॥ २ ॥

नीव शीर्षाणि मृद्वं मध्य आपस्य तिष्ठति। शृङ्गैर्भिर्दशभिर्दिशन् ॥ ३ ॥

इति सप्तदशोऽध्यायः, अष्टमप्रपाठकस्य प्रथमोऽर्धः ॥

अथाष्टादशोऽध्यायः

अष्टमप्रपाठकस्य द्वितीयोऽर्धः

(१)

ऋषिः—मेधातिथिः काण्वः प्रियमेधश्चाङ्गिरसः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

पन्यंपन्यमित् सोतार आ धावत मद्याय। सोमं वीराय शूराय ॥ १ ॥

एह हरी ब्रह्मयुजा शग्मा वक्षतः सखायम्। इन्द्रं गीर्भिर्गिर्वणसम् ॥ २ ॥

पाता वृत्रहा सुतमा घा गमन्नारे अस्मत्। नि यमते शतमूतिः ॥ ३ ॥

(२)

ऋषिः—श्रुतकक्षः सुकक्षो वा ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥

स्वरः—षड्जः ॥

आ त्वा विशन्त्विन्दवः समुद्रमिव सिन्धवः। न त्वामिन्द्राति रिच्यते ॥ १ ॥

विव्यक्थ महिना वृषन्भक्षं सोमस्य जागृवे। य इन्द्र जठरेषु ते ॥ २ ॥

अरं त इन्द्र कुक्षये सोमो भवतु वृत्रहन्। अरं धामभ्य इन्दवः ॥ ३ ॥

(३)

ऋषिः—शुनःशेप आजीगर्तिः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—गायत्री ॥

स्वरः—षड्जः ॥

जराबोध तद्विविड्ढि विशेविशे यज्ञियाय। स्तोमं रुद्राय दृशीकम् ॥ १ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

स नो महाँ अनिमानो धूमकेतुः पुरुश्चन्द्रः। धियेवाजाय हिन्वतु ॥ २ ॥
स रेवाँइव विश्पतिर्दैव्यः केतुः शृणोतु नः। उक्थैरग्निर्बृहद्भानुः ॥ ३ ॥

(४)

ऋषिः—शंयुर्बार्हस्पत्यः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

तद्वो गाय सुते सचा पुरुहूताय सत्वने। शं यद् गवे न शाकिने ॥ १ ॥
न घा वसुनि यमते दानं वाजस्य गोमतः। यत् सीमुप श्रवद्गिरः ॥ २ ॥
कुवित्सस्य प्र हि व्रजं गोमन्तं दस्युहा गमत्। शचीभिरप नो वरत् ॥ ३ ॥

(५)

ऋषिः—मेधातिथिः ॥ देवता—विष्णुः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

इदं विष्णुर्वि चक्रमे त्रेधा नि दधे पदम्। समूढमस्य पांसुले ॥ १ ॥
त्रीणि पदा वि चक्रमे विष्णुर्गोपा अदाभ्यः। अतो धर्माणि धारयन् ॥ २ ॥
विष्णोः कर्माणि पश्यत यतो व्रतानि पस्पशे। इन्द्रस्य युज्यः सखा ॥ ३ ॥
तद्विष्णोः परमं पदं सदा पश्यन्ति सूरयः। दिवीव चक्षुराततम् ॥ ४ ॥
तद्विप्रासो विपन्युवो जागृवांसः समिन्धते। विष्णोर्यत्परमं पदम् ॥ ५ ॥
अतो देवा अवन्तु नो यतो विष्णुर्विचक्रमे। पृथिव्या अधि सानवि ॥ ६ ॥

(६)

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—बार्हतः प्रगाथः (१ बृहती, २ सतोबृहती)॥ स्वरः—१ मध्यमः; २ पञ्चमः ॥

मो षु त्वा वाघतश्च नारे अस्मन्नि रीरमन्।
आरात्ताद्वा सधमादं न आ गहीह वा सन्नुप श्रुधि ॥ १ ॥
इमे हि ते ब्रह्मकृतः सुते सचा मधौ न मक्ष आसते।
इन्द्रे कामं जरितारो वसूयवो रथे न पादमा दधुः ॥ २ ॥

(७)

ऋषिः—आयुः काण्वः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—बार्हतः प्रगाथः (१ बृहती, २ सतोबृहती)॥ स्वरः—१ मध्यमः; २ पञ्चमः ॥

अस्ताव्यग्निर्मन्म पूर्व्यं ब्रह्मेन्द्राय वोचत।
पूर्वीरृतस्य बृहतीरनूषत स्तोतुर्मेधा असृक्षत ॥ १ ॥
समिन्द्रो रायो बृहतीरधूनुत सं क्षोणी समु सूर्यम्।
सं शुक्रासः शुचयः सं गवाशिरः सोमा इन्द्रममन्दिषुः ॥ २ ॥

(८)

ऋषिः—अम्बरीष ऋजिश्वा च ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—अनुष्टुप् ॥ स्वरः—गान्धारः ॥

इन्द्राय सोम पातवे वृत्रघ्ने परि षिच्यसे।
नरे च दक्षिणावते वीराय सदनासदे ॥ १ ॥
तं सखायः पुरूरुचं वयं यूयं च सूरयः।
अश्याम वाजगन्ध्यं सनेम वाजपस्त्यम् ॥ २ ॥
परि त्यं हर्यतं हरिं बभ्रुं पुनन्ति वारेण।
यो देवान्विश्वाँ इत् परि मदेन सह गच्छति ॥ ३ ॥

(९)

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—बार्हतः प्रगाथः (१ बृहती, २ सतोबृहती)॥ स्वरः—१ मध्यमः; २ पञ्चमः ॥

१६८२. कस्तमिन्द्र त्वा वसवा मर्त्यो दधर्षति।
श्रद्धा हि ते मघवन् पार्ये दिवि वाजी वाजं सिषासति ॥ १ ॥
मघोनः स्म वृत्रहत्येषु चोदय ये ददति प्रिया वसु।
तव प्रणीती हर्यश्व सूरिभिर्विश्वा तरेम दुरिता ॥ २ ॥

(१०)

ऋषिः—विश्वमना वैयश्वः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—उष्णिक् ॥ स्वरः—ऋषभः ॥

एदु मधोर्मदिन्तरं सिञ्चाध्वर्यो अन्धसः। एवा हि वीर स्तवते सदावृधः ॥ १ ॥
इन्द्र स्थातर्हरीणां न किष्टे पूर्व्यस्तुतिम्। उदानंश शवसा न भन्दना ॥ २ ॥
तं वो वाजानां पतिमहूमहि श्रवस्यवः। अप्रायुभिर्यज्ञेभिर्वावृधेन्यम् ॥ ३ ॥

(११)

ऋषिः—सोभरिः काण्वः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—काकुभः प्रगाथः (१ ककुबुष्णिक्, २ सतोबृहती)॥ स्वरः—१ ऋषभः; २ पञ्चमः ॥

तं गूर्धया स्वर्णरं देवासो देवमरतिं दधन्विरे। देवत्रा हव्यमूहिषे ॥ १ ॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

विभूतरातिं विप्र चित्रशोचिषमग्निमीडिष्व यन्तुरम् ।
अस्य मेधस्य सोम्यस्य सोभरे प्रेमध्वराय पूर्व्यम् ॥ २ ॥

(१२)

ऋषिः—सप्तर्षयः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—बार्हतः प्रगाथः (१ बृहती, २ सतोबृहती) ॥ स्वरः—१ मध्यमः; २ पञ्चमः ॥

आ सोम स्वानो अद्रिभिस्तिरो वाराण्यव्यया ।
जनो न पुरि चम्वोर्विशद्धरिः सदो वनेषु दधिषे ॥ १ ॥
स मामृजे तिरो अण्वानि मेष्यो मीढ्वान्त्सप्तिर्न वाजयुः ।
अनुमाद्यः पवमानो मनीषिभिः सोमो विप्रेभिर्ऋक्वभिः ॥ २ ॥

(१३)

ऋषिः—कलिः प्रागाथः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—बार्हतः प्रगाथः (१ बृहती, २ सतोबृहती) ॥ स्वरः—१ मध्यमः; २ पञ्चमः ॥

वयमेनमिदा ह्योऽपीपेमेह वज्रिणम् ।
तस्मा उ अद्य सवने सुतं भरा नूनं भूषत श्रुते ॥ १ ॥
वृकश्चिदस्य वारण उरामथिरा वयुनेषु भूषति ।
सेमं न स्तोमं जुजुषाण आ गहीन्द्र प्र चित्रया धिया ॥ २ ॥

(१४)

ऋषिः—विश्वामित्रः ॥ देवता—इन्द्राग्नी ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

इन्द्राग्नी रोचना दिवः परि वाजेषु भूषथः । तद्वां चेति प्र वीर्यम् ॥ १ ॥
इन्द्राग्नी अपसस्पर्युप प्र यन्ति धीतयः । ऋतस्य पथ्या३ अनु ॥ २ ॥
इन्द्राग्नी तविषाणि वां सधस्थानि प्रयांसि च । युवोरप्तूर्यं हितम् ॥ ३ ॥

(१५)

ऋषिः—मेधातिथिः काण्वः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

१६९६. क ईं वेद सुते सचा पिबन्तं कद्वयो दधे ।
अयं यः पुरो विभिनत्योजसा मन्दानः शिप्र्यन्धसः ॥ १ ॥
दाना मृगो न वारणः पुरुत्रा चरथं दधे ।
न किष्ट्वा नि यमदा सुते गमो महाश्चरस्योजसा ॥ २ ॥

य उग्रः सन्ननिष्टृतः स्थिरो रणाय संस्कृतः ।
यदि स्तोतुर्मघवा शृणवद्धवं नेन्द्रो योषत्या गमत् ॥ ३ ॥

(१६)

ऋषिः—निधुविः काश्यपः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

पवमाना असृक्षत सोमाः शुक्रास इन्दवः । अभि विश्वानि काव्या ॥ १ ॥
पवमाना दिवस्पर्यन्तरिक्षादसृक्षत । पृथिव्या अधि सानवि ॥ २ ॥
पवमानास आशवः शुभ्रा असृग्रमिन्दवः । घ्नन्तो विश्वा अप द्विषः ॥ ३ ॥

(१७)

ऋषिः—विश्वामित्रः ॥ देवता—इन्द्राग्नी ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

तोशा वृत्रहणा हुवे सजित्वानापराजिता । इन्द्राग्नी वाजसातमा ॥ १ ॥
प्र वामर्चन्त्युक्थिनो नीथाविदो जरितारः । इन्द्राग्नी इष आ वृणे ॥ २ ॥
इन्द्राग्नी नवतिं पुरो दासपत्नीरधूनुतम् । साकमेकेन कर्मणा ॥ ३ ॥

(१८)

ऋषिः—भरद्वाजो बार्हस्पत्यः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

उप त्वा रण्वसन्दृशं प्रयस्वन्तः सहस्कृत । अग्ने ससृज्महे गिरः ॥ १ ॥
उप च्छायामिव घृणेरगन्म शर्म ते वयम् । अग्ने हिरण्यसन्दृशः ॥ २ ॥
य उग्रइव शर्यहा तिग्मशृङ्गो न वंसगः । अग्ने पुरो रुरोजिथः ॥ ३ ॥

(१९)

ऋषिः—भरद्वाजो बार्हस्पत्यः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

ऋतावानं वैश्वानरमृतस्य ज्योतिषस्पतिम् । अजस्रं घर्ममीमहे ॥ १ ॥
य इदं प्रतिपप्रथे यज्ञस्य स्वरुत्तिरन् । ऋतूनुत्सृजते वशी ॥ २ ॥
अग्निः प्रियेषु धामसु कामो भूतस्य भव्यस्य । सम्राडेको विराजति ॥ ३ ॥

इत्यष्टादशोऽध्यायः, अष्टमप्रपाठकस्य द्वितीयोऽर्धः ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अथैकोनविंशोऽध्यायः

अष्टमप्रपाठकस्य तृतीयोऽर्धः

(१)

ऋषिः—विरूप आङ्गिरसः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अग्निः प्रत्नेन जन्मना शुम्भानस्तन्वा३ स्वाम्। कविर्विप्रेण वावृधे ॥ १ ॥

ऊर्जो नपातमा हुवेऽग्निं पावकशोचिषम्। अस्मिन् यज्ञे स्वध्वरे ॥ २ ॥

स नो मित्रमहस्त्वमग्ने शुक्रेण शोचिषा। देवैरा सत्सि बर्हिषि ॥ ३ ॥

(२)

ऋषिः—अवत्सारः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

उत्ते शुष्मासो अस्थू रक्षो भिन्दन्तो अद्रिवः। नुदस्व याः परिस्पृधः ॥ १ ॥

अया निजघ्निरोजसा रथसङ्गे धने हिते। स्तवा अबिभ्युषा हृदा ॥ २ ॥

अस्य व्रतानि नाधृषे पवमानस्य दूढ्या। रुज यस्त्वा पृतन्यति ॥ ३ ॥

तं हिन्वन्ति मदच्युतं हरिं नदीषु वाजिनम्। इन्दुमिन्द्राय मत्सरम् ॥ ४ ॥

(३)

ऋषिः—विश्वामित्रः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

आ मन्द्रैरिन्द्र हरिभिर्याहि मयूररोमभिः ।

मा त्वा के चिन्नि येमुरिन्न पाशिनोऽति धन्वेव ताँ इहि ॥ १ ॥

वृत्रखादो वलं रुजः पुरां दर्मो अपामजः ।

स्थाता रथस्य हर्योरभिस्वर इन्द्रो दृढा चिदारुजः ॥ २ ॥

गम्भीराँ उदधीरिव क्रतुं पुष्यसि गाइव ।

प्र सुगोपा यवसं धेनवो यथा ह्रदं कुल्याइवाशत ॥ ३ ॥

(४)

ऋषिः—देवातिथिः काण्वः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—बार्हतः प्रगाथः (१ बृहती, २ सतोबृहती) ॥ स्वरः—१ मध्यमः; २ पञ्चमः ॥

यथा गौरो अपा कृतं तृष्यन्नेत्यवेरिणम् ।

आपित्वे नः प्रपित्वे तूयमा गहि कण्वेषु सु सचा पिब ॥ १ ॥

(५)

ऋषिः—गोतमो राहूगणः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—बार्हतः प्रगाथः (१ बृहती, २ सतोबृहती) ॥ स्वरः—१ मध्यमः; २ पञ्चमः ॥

१७२३. त्वमङ्ग प्र शंसिषो देवः शविष्ठ मर्त्यम् ।

न त्वदन्यो मघवन्नस्ति मर्डितेन्द्र ब्रवीमि ते वचः ॥ १ ॥

मा ते राधांसि मा त ऊतयो वसोऽस्मान् कदा चना दभन्।

विश्वा च न उपमिमीहि मानुष वसूनि चर्षणिभ्य आ ॥ २ ॥

(६)

ऋषिः—वामदेवः ॥ देवता—उषाः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

प्रति ष्या सूनरी जनी व्युच्छन्ती परि स्वसुः। दिवो अदर्शि दुहिता ॥ १ ॥

अश्वेव चित्रारुषी माता गवामृतावरी। सखा भूदश्विनोरुषाः ॥ २ ॥

उत सखास्यश्विनोरुत माता गवामसि। उतोषो वस्व ईशिषे ॥ ३ ॥

(७)

ऋषिः—प्रस्कण्वः काण्वः ॥ देवता—अश्विनौ ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

एषो उषा अपूर्व्या व्युच्छति प्रिया दिवः। स्तुषे वामश्विना बृहत् ॥ १ ॥

या दस्रा सिन्धुमातरा मनोतरा रयीणाम्। धिया देवा वसुविदा ॥ २ ॥

वच्यन्ते वां ककुहासो जूर्णायामधि विष्टपि। यद्वां रथो विभिष्पतात् ॥ ३ ॥

(८)

ऋषिः—गोतमो राहूगणः ॥ देवता—उषाः ॥ छन्दः—उष्णिक् ॥ स्वरः—ऋषभः ॥

उषस्तच्चित्रमा भरास्मभ्यं वाजिनीवति ।

येन तोकं च तनयं च धामहे ॥ १ ॥

उषो अद्येह गोमत्यश्वावति विभावरि ।

स्वदस्व व्युच्छ सूनृतावति ॥ २ ॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

युङ्क्ष्वा हि वाजिनीवत्यश्वाँ अद्यारणाँ उषः ।
अथा नो विश्वा सौभगान्या वह ॥ ३ ॥

(९)

ऋषिः—गोतमो राहूगणः ॥ देवता—अश्विनौ ॥ छन्दः—उष्णिक् ॥
स्वरः—ऋषभः ॥

१७३४. अश्विना वर्तिरस्मदा गोमद् दस्रा हिरण्यवत् ।
अर्वाग्रथं समनसा नि यच्छतम् ॥ १ ॥
एह देवा मयोभुवा दस्रा हिरण्यवर्त्तनी ।
उषर्बुधो वहन्तु सोमपीतये ॥ २ ॥
यावित्था श्लोकमा दिवो ज्योतिर्जनाय चक्रथुः ।
आ न ऊर्जं वहतमश्विना युवम् ॥ ३ ॥

(१०)

ऋषिः—वसुश्रुत आत्रेयः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—पङ्क्तिः ॥ स्वरः—पञ्चमः ॥

अग्निं तं मन्ये यो वसुरस्तं यं यन्ति धेनवः ।
अस्तमर्वन्त आशवोऽस्तं नित्यासो वाजिन इषं स्तोतृभ्य आ भर ॥ १ ॥
अग्निर्हि वाजिनं विशे ददाति विश्वचर्षणिः ।
अग्नी राये स्वाभुवं स प्रीतो याति वार्यमिषं स्तोतृभ्य आ भर ॥ २ ॥
सो अग्नियों वसुर्गृणे सं यमायन्ति धेनवः ।
समर्वन्तो रघुद्रुवः स सुजातासः सूरय इषं स्तोतृभ्य आ भर ॥ ३ ॥

(११)

ऋषिः—सत्यश्रवा आत्रेयः ॥ देवता—उषाः ॥ छन्दः—पङ्क्तिः ॥
स्वरः—पञ्चमः ॥

महे नो अद्य बोधयोषो राये दिवित्मती ।
यथा चित्नो अबोधयः सत्यश्रवसि वाय्ये सुजाते अश्वसूनृते ॥ १ ॥
या सुनीथे शौचद्रथे व्यौच्छो दुहितर्दिवः ।
सा व्युच्छ सहीयसि सत्यश्रवसि वाय्ये सुजाते अश्वसूनृते ॥ २ ॥

सा नो अद्याभरद्वसुर्व्युच्छा दुहितर्दिवः ।
यो व्यौच्छः सहीयसि सत्यश्रवसि वाय्ये सुजाते अश्वसूनृते ॥ ३ ॥

(१२)

ऋषिः—अवस्युरात्रेयः ॥ देवता—अश्विनौ ॥ छन्दः—पङ्क्तिः ॥
स्वरः—पञ्चमः ॥

प्रति प्रियतमं रथं वृषणं वसुवाहनम् ।
स्तोता वामश्विनावृषि स्तोमेभिर्भूषति प्रति माध्वी मम श्रुतं हवम् ॥ १ ॥
अत्यायातमश्विना तिरो विश्वा अहं सना ।
दस्रा हिरण्यवर्त्तनी सुषुम्णा सिन्धुवाहसा माध्वी मम श्रुतं हवम् ॥ २ ॥
आ नो रत्नानि बिभ्रतावश्विना गच्छतं युवम् ।
रुद्रा हिरण्यवर्तनी जुषाणा वाजिनीवसू माध्वी मम श्रुतं हवम् ॥ ३ ॥

(१३)

ऋषिः—बुधगविष्ठिरावात्रेयौ ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥
स्वरः—धैवतः ॥

अबोध्यग्निः समिधा जनानां प्रति धेनुमिवायतीमुषासम् ।
यह्वाइव प्र वयामुज्जिहानाः प्र भानवः सस्रते नाकमच्छ ॥ १ ॥
अबोधि होता यजथाय देवानूर्ध्वो अग्निः सुमनाः प्रातरस्थात् ।
समिद्धस्य रुशददर्शि पाजो महान् देवस्तमसो निरमोचि ॥ २ ॥
यदीं गणस्य रशनामजीगः शुचिरङ्क्ते शुचिभिर्गोभिरग्निः ।
आद्दक्षिणा युज्यते वाजयन्त्युत्तानामूर्ध्वो अधयज्जुहूभिः ॥ ३ ॥

(१४)

ऋषिः—कुत्स आङ्गिरसः ॥ देवता—उषाः ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥
स्वरः—धैवतः ॥

इदं श्रेष्ठं ज्योतिषां ज्योतिरागाच्चित्रः प्रकेतो अजनिष्ट विभ्वा ।
यथा प्रसूता सवितुः सवायैवा रात्र्युषसे योनिमारैक् ॥ १ ॥
रुशद्वत्सा रुशती श्वेत्यागादारैगु कृष्णा सदनान्यस्याः ।
समानबन्धू अमृते अनूची द्यावा वर्णं चरत आमिनाने ॥ २ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

समानो अध्वा स्वस्त्रोरनन्तस्तमन्यान्या चरतो देवशिष्टे ।
न मेथेते न तस्थतुः सुमेके नक्तोषासा समनसा विरूपे ॥ ३ ॥

(१५)

ऋषिः—अत्रिः ॥ देवता—अश्विनौ ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

१७५२. आ भात्यग्निरुषसामनीकमुद्विप्राणां देवया वाचो अस्थुः ।
अर्वाञ्चा नूनं रथ्येह यातं पीपिवांसमश्विना घर्ममच्छ ॥ १ ॥
न संस्कृतं प्र मिमीतो गमिष्ठान्ति नूनमश्विनोपस्तुतेह ।
दिवाभिपित्वेऽवसागमिष्ठा प्रत्यवर्त्तिं दाशुषे शम्भविष्ठा ॥ २ ॥
उता यातं संगवे प्रातरह्नो मध्यन्दिन उदिता सूर्यस्य ।
दिवा नक्तमवसा शन्तमेन नेदानीं पीतिरश्विना ततान ॥ ३ ॥

(१६)

ऋषिः—गोतमो राहूगणः ॥ देवता—उषाः ॥ छन्दः—जगती ॥ स्वरः—निषादः ॥

एता उ त्या उषसः केतुमक्रत पूर्वे अर्धे रजसो भानुमञ्जते ।
निष्कृण्वाना आयुधानीव धृष्णवः प्रति गावोऽरुषीर्यन्ति मातरः ॥ १ ॥
उदपप्तन्नरुणा भानवो वृथा स्वायुजो अरुषीगा अयुक्षत ।
अक्रन्नुषासो वयुनानि पूर्वथा रुशन्तं भानुमरुषीरशिश्रयुः ॥ २ ॥
अर्चन्ति नारीरपसो न विष्टिभिः समानेन योजनेना परावतः ।
इषं वहन्तीः सुकृते सुदानवे विश्वेदह यजमानाय सुन्वते ॥ ३ ॥

(१७)

ऋषिः—दीर्घतमा औचथ्यः ॥ देवता—अश्विनौ ॥ छन्दः—जगती ॥ स्वरः—निषादः ॥

अबोध्यग्निर्जम उदेति सूर्यो व्यूषाश्चन्द्रा महावो अर्चिषा ।
आयुक्षातामश्विना यातवे रथं प्रासावीद्देवः सविता जगत् पृथक् ॥ १ ॥
यद्युञ्जाथे वृषणमश्विना रथं घृतेन नो मधुना क्षत्रमुक्षतम् ।
अस्माकं ब्रह्म पृतनासु जिन्वतं वयं धना शूरसाता भजेमहि ॥ २ ॥

अर्वाङ् त्रिचक्रो मधुवाहनो रथो जीराश्वो अश्विनोर्यातु सुष्टुतः ।
त्रिबन्धुरो मघवा विश्वसौभगः शं न आ वक्षद् द्विपदे चतुष्पदे ॥ ३ ॥

(१८)

ऋषिः—अवत्सारः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

प्र ते धारा असश्चतो दिवो न यन्ति वृष्टयः । अच्छा वाजं सहस्त्रिणम् ॥ १ ॥
अभि प्रियाणि काव्या विश्वा चक्षाणो अर्षति । हरिस्तुञ्जान आयुधा ॥ २ ॥
स मर्मृजान आयुभिरभो राजेव सुव्रतः । श्येनो न वंसु षीदति ॥ ३ ॥
स नो विश्वा दिवो वसूतो पृथिव्या अधि । पुनान इन्दवा भर ॥ ४ ॥

इत्येकोनविंशोऽध्यायः, अष्टमप्रपाठकश्च समाप्तः ॥

अथ विंशोऽध्यायः

नवमप्रपाठकस्य प्रथमोऽर्धः

(१)

ऋषिः—नृमेधः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

प्रास्य धारा अक्षरन् वृष्णः सुतस्यौजसः । देवाँ अनु प्रभूषतः ॥ १ ॥
ससिं मृजन्ति वेधसो गृणन्तः कारवो गिरा । ज्योतिर्जज्ञानमुक्थ्यम् ॥ २ ॥
सुषहा सोम तानि ते पुनानाय प्रभूवसो । वर्धा समुद्रमुक्थ्य ॥ ३ ॥

(२)

ऋषिः—वामदेवः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—द्विपदा गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१७६८. एष ब्रह्मा य ऋत्वियं इन्द्रो नाम श्रुतो गृणे ॥ १ ॥
त्वामिच्छवसस्पते यन्ति गिरो न संयतः ॥ २ ॥
वि स्रुतयो यथा पथ इन्द्र त्वद् यन्तु रातयः ॥ ३ ॥

(३)

ऋषिः—प्रियमेधः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—आनुष्टुभः प्रगाथः (१ अनुष्टुप्, २-३ गायत्री) ॥ स्वरः—१ गान्धारः; २-३ षड्जः ॥

आ त्वा रथं यथोतये सुम्नाय वर्त्तयामसि ।
तुविकूर्मिमृतीषहमिन्द्रं शविष्ठ सत्पतिम् ॥ १ ॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तुविशुष्म तुविक्रतो शचीवो विश्वया मते ।
आ पप्राथ महित्वना ॥ २ ॥
यस्य ते महिना महः परि ज्मायन्तमीयतुः ।
हस्ता वज्रं हिरण्ययम् ॥ ३ ॥

(४)

ऋषिः—दीर्घतमा औचथ्यः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—उष्णिक् (१ विराट्, २ भुरिक्, ३ निचृत्) ॥ स्वरः—पञ्चमः ॥

आ यः पुरं नार्मिणीमदीदेदत्यः कविर्नभन्योऽ३ नार्वा ।
सूरो न रुरुक्वाञ्छतात्मा ॥ १ ॥
अभि द्विजन्मा त्री रोचनानि विश्वा रजांसि शुशुचानो अस्थात् ।
होता यजिष्ठो अपां सधस्थे ॥ २ ॥
अयं स होता यो द्विजन्मा विश्वा दधे वार्याणि श्रवस्या ।
मर्तो यो अस्मै सुतुको ददाश ॥ ३ ॥

(५)

ऋषिः—वामदेवः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—पदपङ्क्तिः ॥ स्वरः—पञ्चमः ॥

अग्ने तमद्याश्वं न स्तोमैः क्रतुं न भद्रं हृदिस्पृशम् । ऋध्यामा त ओहैः ॥ १ ॥
अधा ह्यग्ने क्रतोर्भद्रस्य दक्षस्य साधोः । रथीर्ऋतस्य बृहतो बभूथ ॥ २ ॥
एभिर्नो अर्कैर्भवा नो अर्वाङ् स्वाऽ३र्ण ज्योतिः ।
अग्ने विश्वेभिः सुमना अनीकैः ॥ ३ ॥

(६)

ऋषिः—प्रस्कण्वः काण्वः ॥ देवता—अग्निरश्विनावुषाश्च ॥ छन्दः—बार्हतः प्रगाथः (१ बृहती, २ सतोबृहती) ॥ स्वरः—१ मध्यमः; २ पञ्चमः ॥

अग्ने विवस्वदुषसश्चित्रं राधो अमर्त्य ।
आ दाशुषे जातवेदो वहा त्वमद्या देवाँ उषर्बुधः ॥ १ ॥
जुष्टो हि दूतो असि हव्यवाहनोऽ३ग्ने रथीरध्वराणाम् ।
सजूरश्विभ्यामुषसा सुवीर्यमस्मे धेहि श्रवो बृहत् ॥ २ ॥

(७)

ऋषिः—बृहदुक्थो वामदेव्यः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

विधुं दद्राणं समने बहूनां युवानं सन्तं पलितो जगार ।
देवस्य पश्य काव्यं महित्वाद्या ममार स ह्यः समान ॥ १ ॥
शाक्मना शाको अरुणः सुपर्ण आ यो महः शूरः सनादनीडः ।
यच्चिकेत सत्यमित्तन्न मोघं वसु स्पार्हमुत जेतोत दाता ॥ २ ॥
ऐभिर्ददे वृष्ण्या पौंस्यानि येभिरौक्षद् वृत्रहत्याय वज्री ।
ये कर्मणः क्रियमाणस्य मह्न ऋतेकर्ममुदजायन्त देवाः ॥ ३ ॥

(८)

ऋषिः—बिन्दुः पूतदक्षो वा ॥ देवता—मरुतः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अस्ति सोमो अयं सुतः पिबन्त्यस्य मरुतः । उत स्वराजो अश्विना ॥ १ ॥
पिबन्ति मित्रो अर्यमा तना पूतस्य वरुणः । त्रिषधस्थस्य जावतः ॥ २ ॥
उतो न्वस्य जोषमा इन्द्रः सुतस्य गोमतः । प्रातर्होतेव मत्सति ॥ ३ ॥

(९)

ऋषिः—जमदग्निर्भार्गवः ॥ देवता—सूर्यः ॥ छन्दः—बार्हतः प्रगाथः (१ बृहती, २ सतोबृहती) ॥ स्वरः—१ मध्यमः; २ पञ्चमः ॥

१७८८. बण्महाँ असि सूर्य बडादित्य महाँ असि ।
महस्ते सतो महिमा पनिष्टम मह्ना देव महाँ असि ॥ १ ॥
बट् सूर्य श्रवसा महाँ असि सत्रा देव महाँ असि ।
मह्ना देवानामसुर्यः पुरोहितो विभु ज्योतिरदाभ्यम् ॥ २ ॥

(१०)

ऋषिः—सुकक्षः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

उप नो हरिभिः सुतं याहि मदानां पते । उप नो हरिभिः सुतम् ॥ १ ॥
द्विता यो वृत्रहन्तमो विद इन्द्रः शतक्रतुः । उप नो हरिभिः सुतम् ॥ २ ॥
त्वं हि वृत्रहन्नेषां पाता सोमानामसि । उप नो हरिभिः सुतम् ॥ ३ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

(११)

ऋषिः—वसिष्ठः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—भुरिगनुष्टुप्॥
स्वरः—गान्धारः॥

प्र वो महे महेवृधे भरध्वं प्रचेतसे प्र सुमतिं कृणुध्वम् ।
विशः पूर्वीः प्र चर चर्षणिप्राः ॥ १ ॥
उरुव्यचसे महिने सुवृक्तिमिन्द्राय ब्रह्म जनयन्त विप्राः ।
तस्य व्रतानि न मिनन्ति धीराः ॥ २ ॥
इन्द्रं वाणीरनुत्तमन्युमेव सत्रा राजानं दधिरे सहध्यै ।
हर्यश्वाय बर्हया समापीन् ॥ ३ ॥

(१२)

ऋषिः—वसिष्ठः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—बार्हतः प्रगाथः
(१ बृहती, २ सतोबृहती)॥ स्वरः—१ मध्यमः;
२ पञ्चमः॥

यदिन्द्र यावतस्त्वमेतावदहमीशीय ।
स्तोतारमिद्दधिषे रदावसो न पापत्वाय रंसिषम् ॥ १ ॥
शिक्षेयमिन्महयते दिवेदिवे राय आ कुहचिद् विदे ।
न हि त्वदन्यन्मघवन्न आप्यं वस्यो अस्ति पिता च न ॥ २ ॥

(१३)

ऋषिः—वसिष्ठः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—विराडनुष्टुप्॥
स्वरः—गान्धारः॥

श्रुधी हवं विपिपानस्यार्द्रबोधा विप्रस्यार्चतो मनीषाम् ।
कृष्वा दुवांस्यन्तमा सचेमा ॥ १ ॥
न ते गिरो अपि मृष्ये तुरस्य न सुष्टुतिमसुर्यस्य विद्वान् ।
सदा ते नाम स्वयशो विवक्मि ॥ २ ॥
भूरि हि ते सवना मानुषेषु भूरि मनीषी हवते त्वामित् ।
मारे अस्मन्मघवन् ज्योक्कः ॥ ३ ॥

(१४)

ऋषिः—सुदाः पैजवनः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—शक्वरी॥ स्वरः—धैवतः॥

प्रो ष्वस्मै पुरोरथमिन्द्राय शूषमर्चत ।
अभीके चिदु लोककृत् सङ्गे समत्सु वृत्रहा ।
अस्माकं बोधि चोदिता नभन्तामन्यकेषां ज्याका अधि धन्वसु ॥ १ ॥
त्वं सिन्धूँरवासृजोऽधराचो अहन्नहिम् ।
अशत्रुरिन्द्र जज्ञिषे विश्वं पुष्यसि वार्यम् ।
तं त्वा परि ष्वजामहे नभन्तामन्यकेषां ज्याका अधि धन्वसु ॥ २ ॥
वि षु विश्वा अरातयोऽर्यो नशन्त नो धियः ।
अस्तासि शत्रवे वधं यो न इन्द्र जिघांसति ।
या ते रातिर्ददिर्वसु नभन्तामन्यकेषां ज्याका अधि धन्वसु ॥ ३ ॥

(१५)

ऋषिः—मेधातिथिः काण्वः प्रियमेधश्चाङ्गिरसः॥ देवता—इन्द्रः॥
छन्दः—गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

रेवाँ इद्रेवत स्तोता स्यात् त्वावतो मघोनः। प्रेदु हरिवः सुतस्य ॥ १ ॥
उक्थं च न शस्यमानं नागो रयिरा चिकेत। न गायत्रं गीयमानम् ॥ २ ॥
मा न इन्द्र पीयत्नवे मा शर्धते परा दाः। शिक्षा शचीवः शचीभिः ॥ ३ ॥

(१६)

ऋषिः—नीपातिथिः काण्वः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—अनुष्टुप्॥
स्वरः—गान्धारः॥

१८०७. एन्द्र याहि हरिभिरुप कण्वस्य सुष्टुतिम् ।
दिवो अमुष्य शासतो दिवं यय दिवावसो ॥ १ ॥
अत्रा वि नेमिरेषामुरां न धूनुते वृकः ।
दिवो अमुष्य शासतो दिवं यय दिवावसो ॥ २ ॥
आ त्वा ग्रावा वदन्निह सोमी घोषेण वक्षतु ।
दिवो अमुष्य शासतो दिवं यय दिवावसो ॥ ३ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

(१७)

ऋषिः—जमदग्निर्भार्गवः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—द्विपदा गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

पवस्व सोम मन्दयन्निन्द्राय मधुमत्तमः ॥ १ ॥
ते सुतासो विपश्चितः शुक्रा वायुमसृक्षत् ॥ २ ॥
असृग्रं देववीतये वाजयन्तो रथाइव ॥ ३ ॥

(१८)

ऋषिः—परुच्छेपो दैवोदासिः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—अत्यष्टिः ॥ स्वरः—गान्धारः ॥

अग्निं होतारं मन्ये दास्वन्तं वसोः
सूनुं सहसो जातवेदसं विप्रं न जातवेदसम् ।
य ऊर्ध्वया स्वध्वरो देवो देवाच्या कृपा
घृतस्य विभ्राष्टिमनु शुक्रशोचिष आजुह्वानस्य सर्पिषः ॥ १ ॥
यजिष्ठं त्वा यजमाना हुवेम ज्येष्ठमङ्गिरसां
विप्र मन्मभिर्विप्रेभिः शुक्र मन्मभिः ।
परिज्मानमिव द्यां होतारं चर्षणीनाम् ।
शोचिष्केशं वृषणं यमिमा विशः प्रावन्तु जूतये विशः ॥ २ ॥
स हि पुरू चिदोजसा विरुक्मता
दीद्यानो भवति द्रुहन्तरः परशुर्न द्रुहन्तरः ।
वीडु चिद्यस्य समृतौ श्रुवद्वनेव यत्स्थिरम् ।
निष्षहमाणो यमते नायते धन्वासह्रा नायते ॥ ३ ॥

इति नवमप्रपाठकस्य प्रथमोऽर्धः ॥

नवमप्रपाठकस्य द्वितीयोऽर्धः

(१)

ऋषिः—अग्निः पावकः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१-२ विष्टारपङ्क्तिः; ३-५ सतोबृहती; ६ उपरिष्टाज्ज्योतिस्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१-५ पञ्चमः; ६ धैवतः ॥

अग्ने तव श्रवो वयो महि भ्राजन्ते अर्चयो विभावसो ।
बृहद्भानो शवसा वाजमुक्थ्यं३ दधासि दाशुषे कवे ॥ १ ॥
पावकवर्चाः शुक्रवर्चा अनूनवर्चा उदियर्षि भानुना ।
पुत्रो मातरा विचरन्नुपावसि पृणक्षि रोदसी उभे ॥ २ ॥
ऊर्जो नपाज्जातवेदः सुशस्तिभिर्मन्दस्व धीतिभिर्हितः ।
त्वे इषः सं दधुर्भूरिवर्पसश्चित्रोतयो वामजाताः ॥ ३ ॥
इरज्यन्नग्ने प्रथयस्व जन्तुभिरस्मे रायो अमर्त्य ।
स दर्शतस्य वपुषो वि राजसि पृणक्षि दर्शतं क्रतुम् ॥ ४ ॥
इष्कर्तारमध्वरस्य प्रचेतसं क्षयन्तं राधसो महः ।
रातिं वामस्य सुभगां महीमिषं दधासि सानसिं रयिम् ॥ ५ ॥
ऋतावानं महिषं विश्वदर्शतमग्निं सुम्नाय दधिरे पुरो जनाः ।
श्रुत्कर्णं सप्रथस्तमं त्वा गिरा दैव्यं मानुषा युगा ॥ ६ ॥

(२)

ऋषिः—सोभरिः काण्वः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—काकुभः प्रगाथः (१ ककुबुष्णिक्, २ सतोबृहती) ॥ स्वरः—१ ऋषभः; २ पञ्चमः ॥

प्र सो अग्ने तवोतिभिः सुवीराभिस्तरति वाजकर्मभिः ।
यस्य त्वं सख्यमाविथ ॥ १ ॥
तव द्रप्सो नीलवान् वाश ऋत्विय इन्धानः सिष्णवा ददे ।
त्वं महीनामुषसामसि प्रियः क्षपो वस्तुषु राजसि ॥ २ ॥

(३)

ऋषिः—अरुणो वैतहव्यः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—जगती ॥ स्वरः—निषादः ॥

तमोषधीर्दधिरे गर्भमृत्वियं तमापो अग्निं जनयन्त मातरः ।
तमित् समानं वनिनश्च वीरुधोऽन्तर्वतीश्च सुवते च विश्वहा ॥ १ ॥

(४)

ऋषिः—अग्निश्चाक्षुषः प्रजापतिर्वा ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१८२५. अग्निरिन्द्राय पवते दिवि शुक्रो वि राजति ।
महिषीव वि जायते ॥ १ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

(५)

ऋषिः—अवत्सारः काश्यपः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—त्रिष्टुप्॥
स्वरः—धैवतः॥

यो जागार तमृचः कामयन्ते यो जागार तमु सामानि यन्ति ।
यो जागार तमयं सोम आह तवाहमस्मि सख्ये न्योकाः ॥ १ ॥

(६)

ऋषिः—अवत्सारः काश्यपः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—त्रिष्टुप्॥
स्वरः—धैवतः॥

अग्निर्जागार तमृचः कामयन्तेऽग्निर्जागार तमु सामानि यन्ति ।
अग्निर्जागार तमयं सोम आह तवाहमस्मि सख्ये न्योकाः ॥ १ ॥

(७)

ऋषिः—मृगः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—गायत्री॥
स्वरः—षड्जः॥

नमः सखिभ्यः पूर्वसद्भ्यो नमः साकंनिषेभ्यः। युञ्जे वाचं शतपदीम् ॥ १ ॥
युञ्जे वाचं शतपदीं गाये सहस्रवर्तनि। गायत्रं त्रैष्टुभं जगत् ॥ २ ॥
गायत्रं त्रैष्टुभं जगद् विश्वा रूपाणि सम्भृता। देवा ओकांसि चक्रिरे ॥ ३ ॥

(८)

ऋषिः—अवत्सारो वत्सप्रीर्वा॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—गायत्री॥
स्वरः—षड्जः॥

अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निरिन्द्रो ज्योतिर्ज्योतिरिन्द्रः। सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः ॥ १ ॥
पुनरूर्जा नि वर्त्तस्व पुनरग्न इषायुषा। पुनर्नः पाह्यंहसः ॥ २ ॥
सह रय्या नि वर्त्तस्वाग्ने पिन्वस्व धारया। विश्वप्स्न्या विश्वतस्परि ॥ ३ ॥

(९)

ऋषिः—गोषूक्त्यश्वसूक्तिनौ काण्वायनौ॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—गायत्री॥
स्वरः—षड्जः॥

यदिन्द्राहं यथा त्वमीशीय वस्व एक इत्। स्तोता मे गोसखा स्यात् ॥ १ ॥
शिक्षेयमस्मै दित्सेयं शचीपते मनीषिणे। यदहं गोपतिः स्याम् ॥ २ ॥
धेनुष्ट इन्द्र सूनृता यजमानाय सुन्वते। गामश्वं पिप्युषी दुहे ॥ ३ ॥

(१०)

ऋषिः—त्रिशिरास्त्वाष्ट्रः सिन्धुद्वीपो वाम्बरीषः॥ देवता—आपः॥
छन्दः—गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

आपो हि ष्ठा मयोभुवस्ता न ऊर्जे दधादन। महे रणाय चक्षसे ॥ १ ॥
यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः। उशतीरिव मातरः ॥ २ ॥
तस्मा अरं गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ। आपो जनयथा च नः ॥ ३ ॥

(११)

ऋषिः—उलो वातायनः॥ देवता—वायुः॥ छन्दः—गायत्री॥
स्वरः—षड्जः॥

वात आ वातु भेषजं शम्भु मयोभु नो हृदे। प्र न आयूंषि तारिषत् ॥ १ ॥
उत वात पितासि न उत भ्रातोत नः सखा। स नो जीवातवे कृधि ॥ २ ॥
यददो वात ते गृहेऽमृतं निहितं गुहा। तस्य नो धेहि जीवसे ॥ ३ ॥

(१२)

ऋषिः—सुपर्णः॥ देवता—सूर्यः॥ छन्दः—त्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः॥

अभि वाजी विश्वरूपो जनित्रं हिरण्ययं बिभ्रदत्कं सुपर्णः ।
सूर्यस्य भानुमृतुथा वसानः परि स्वयं मेधमृज्रो जजान ॥ १ ॥
अप्सु रेतः शिश्रिये विश्वरूपं तेजः पृथिव्यामधि यत् सम्बभूव ।
अन्तरिक्षे स्वं महिमानं मिमानः कनिक्रन्ति वृष्णो अश्वस्य रेतः ॥ २ ॥
अयं सहस्रा परि युक्ता वसानः सूर्यस्य भानु यज्ञो दाधार ।
सहस्रदाः शतदा भूरिदावा धर्त्ता दिवो भुवनस्य विश्पतिः ॥ ३ ॥

(१३)

ऋषिः—वेनः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—त्रिष्टुप्॥
स्वरः—धैवतः॥

नाके सुपर्णमुप यत्पतन्तं हृदा वेनन्तो अभ्यचक्षत त्वा ।
हिरण्यपक्षं वरुणस्य दूतं यमस्य योनौ शकुनं भुरण्युम् ॥ १ ॥
ऊर्ध्वो गन्धर्वो अधि नाके अस्थात् प्रत्यङ् चित्रा बिभ्रदस्यायुधानि ।
वसानो अत्कं सुरभिं दृशे कं स्वाऽर्णं नाम जनत प्रियाणि ॥ २ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

द्रप्सः समुद्रमभि यज्जिगाति पश्यन् गृध्रस्य चक्षसा विधर्मन् ।
भानुः शुक्रेण शोचिषा चकानस्तृतीये चक्रे रजसि प्रियाणि ॥ ३ ॥

इति विंशोऽध्यायः, नवमप्रपाठकस्य द्वितीयोऽर्धः ॥

अथैकविंशोऽध्यायः

नवमप्रपाठकस्य तृतीयोऽर्धः

(१)

ऋषिः—अप्रतिरथ ऐन्द्रः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

आशुः शिशानो वृषभो न भीमो घनाघनः क्षोभणश्चर्षणीनाम् ।
सङ्क्रन्दनोऽनिमिष एकवीरः शतं सेना अजयत् साकमिन्द्रः ॥ १ ॥
सङ्क्रन्दनेनानिमिषेण जिष्णुना युत्कारेण दुश्च्यवनेन धृष्णुना ।
तदिन्द्रेण जयत तत्सहध्वं युधो नर इषुहस्तेन वृष्णा ॥ २ ॥
स इषुहस्तैः स निषङ्गिभिर्वशी सं स्रष्टा स युध इन्द्रो गणेन ।
सं सृष्टजित् सोमपा बाहुशर्ध्यूग्रधन्वा प्रतिहिताभिरस्ता ॥ ३ ॥

(२)

ऋषिः—अप्रतिरथ ऐन्द्रः ॥ देवता—१ बृहस्पतिः; २-३ इन्द्रः ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

बृहस्पते परि दीया रथेन रक्षोहामित्रां अपबाधमानः ।
प्रभञ्जन्सेनाः प्रमृणो युधा जयन्नस्माकमेध्यविता रथानाम् ॥ १ ॥
बलविज्ञायः स्थविरः प्रवीरः सहस्वान् वाजी सहमान उग्रः ।
अभिवीरो अभिसत्वा सहोजा जैत्रमिन्द्र रथमा तिष्ठ गोवित् ॥ २ ॥
गोत्रभिदं गोविदं वज्रबाहुं जयन्तमज्म प्रमृणन्तमोजसा ।
इमं सजाता अनु वीरयध्वमिन्द्रं सखायो अनु सं रभध्वम् ॥ ३ ॥

(३)

ऋषिः—अप्रतिरथ ऐन्द्रः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

अभि गोत्राणि सहसा गाहमानोऽदयो वीरः शतमन्युरिन्द्रः ।
दुश्च्यवनः पृतनाषाडयुध्योऽस्माकं सेना अवतु प्र युत्सु ॥ १ ॥
इन्द्र आसां नेता बृहस्पतिर्दक्षिणा यज्ञः पुर एतु सोमः ।
देवसेनानामभिभञ्जतीनां जयन्तीनां मरुतो यन्त्वग्रम् ॥ २ ॥
इन्द्रस्य वृष्णो वरुणस्य राज्ञ आदित्यानां मरुतां शर्ध उग्रम् ।
महामनसां भुवनच्यवानां घोषो देवानां जयतामुदस्थात् ॥ ३ ॥

(४)

ऋषिः—अप्रतिरथ ऐन्द्रः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

उद्धर्षय मघवन्नायुधान्युत् सत्वनां मामकानां मनांसि ।
उद् वृत्रहन् वाजिनां वाजिनान्युद्रथानां जयतां यन्तु घोषाः ॥ १ ॥
अस्माकमिन्द्रः समृतेषु ध्वजेष्वस्माकं या इषवस्ता जयन्तु ।
अस्माकं वीरा उत्तरे भवन्त्वस्मां उ देवा अवता हवेषु ॥ २ ॥
असौ या सेना मरुतः परेषामभ्येति न ओजसा स्पर्धमाना ।
तां गूहत तमसापव्रतेन यथैतेषामन्यो अन्यं न जानात् ॥ ३ ॥

(५)

ऋषिः—१-२ अप्रतिरथ ऐन्द्रः; ३ पायुर्भारद्वाजः ॥ देवता—१ अप्वा; २ इन्द्रो मरुतो वा; ३ इषवः ॥ छन्दः—१ त्रिष्टुप्; २-३ अनुष्टुप् ॥ स्वरः—१ धैवतः; २-३ गान्धारः ॥

१८६१. अमीषां चित्तं प्रतिलोभयन्ती गृहाणाङ्गान्यप्वे परेहि ।
अभि प्रेहि निर्दह हृत्सु शोकैरन्धेनामित्रास्तमसा सचन्ताम् ॥ १ ॥
प्रैता जयता नर इन्द्रो वः शर्म यच्छतु ।
उग्रा वः सन्तु बाहवोऽनाधृष्या यथासथ ॥ २ ॥
अवसृष्टा परा पत शरव्ये ब्रह्मसंशिते ।
गच्छामित्रान् प्र पद्यस्व मामीषां कं च नोच्छिषः ॥ ३ ॥

(६)

ऋषिः—पायुर्भारद्वाजः ॥ देवता—१-२ इन्द्रः; ३ संग्रामाशिषः ॥ छन्दः—१ त्रिष्टुप्; २ अनुष्टुप्; ३ पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१ धैवतः; २ गान्धारः; ३ पञ्चमः ॥

कङ्काः सुपर्णा अनु यन्त्वेनान् गृध्राणामन्नमसावस्तु सेना ।
मैषां मोच्यघहारश्च नैन्द्र वयांस्येषाननुसंयन्तु सर्वान् ॥ १ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अमित्रसेनां मघवन्नस्माञ्छत्रुयतीमभि । भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः ।
उभौ तामिन्द्र वृत्रहन्नग्निश्च दहतं प्रति ॥ २ ॥ स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवांसस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः ॥ २ ॥
यत्र बाणाः सम्पतन्ति कुमारा विशिखाइव । स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः ।
तत्र नो ब्रह्मणस्पतिरदितिः शर्म यच्छतु विश्वाहा शर्म यच्छतु ॥ ३ ॥ स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ।
स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधात ॥ ३ ॥

(७)

ऋषिः—शासो भारद्वाजः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१-२ अनुष्टुप्; ३ विराड् जगती ॥
स्वरः—१-२ गान्धारः; ३ निषादः ॥

वि रक्षो वि मृधो जहि वि वृत्रस्य हनू रुज ।
वि मन्युमिन्द्र वृत्रहन्नमित्रस्याभिदासतः ॥ १ ॥
वि न इन्द्र मृधो जहि नीचा यच्छ पृतन्यतः ।
यो अस्माँ अभिदासत्यधरं गमया तमः ॥ २ ॥
इन्द्रस्य बाहू स्थविरौ युवानावनाधृष्यौ सुप्रतीकावसह्यौ ।
तौ युञ्जीत प्रथमौ योग आगते याभ्यां जितमसुराणां सहो महत् ॥ ३ ॥

(८)

ऋषिः—शासो भारद्वाजः ॥ देवता—संग्रामाशिषः ॥ छन्दः—१ त्रिष्टुप्; २ अनुष्टुप्;
३ पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१ धैवतः; २ गान्धारः; ३ पञ्चमः ॥

ममाणि ते वर्मणा च्छादयामि सोमस्त्वा राजामृतेनानु वस्ताम् ।
उरोर्वरीयो वरुणस्ते कृणोतु जयन्तं त्वानु देवा मदन्तु ॥ १ ॥
अन्धा अमित्रा भवताशीर्षाणोऽहयइव ।
तेषां वो अग्निनुन्नानामिन्द्रो हन्तु वरंवरम् ॥ २ ॥
यो नः स्वोऽरणो यश्च निष्ट्यो जिघांसति ।
देवास्तं सर्वे धूर्वन्तु ब्रह्म वर्म ममान्तरं शर्म वर्म ममान्तरम् ॥ ३ ॥

(९)

ऋषिः—१ जय ऐन्द्रः; २-३ गोतमो राहूगणः ॥ देवता—१ इन्द्रः; २-३ विश्वेदेवाः ॥
छन्दः—१-२ त्रिष्टुप्; ३ विराट् स्थाना त्रिष्टुप् ॥ ॥ स्वरः—धैवतः ॥

मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः परावत आ जगन्था परस्याः ।
सृकं संशाय पविमिन्द्र तिग्मं वि शत्रून् ताढि वि मृधो नुदस्व ॥ ४ ॥

इत्येकविंशोऽध्यायः, नवमप्रपाठकश्च समाप्तः ॥

इत्युत्तरार्चिकः ॥

इति सामवेदसंहिता ॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अथ सामवेदमन्त्राणां वर्णानुक्रमणी

	आ.	प्र.	अ.	सू.	ऋ.
अक्रन्ससमुद्रः प्रथमे	पू.	६.	१.	४.	७
	उ.	५.	२.	१.	१
अक्षन्नमीमदन्त ह्यव	पू.	५.	१.	३.	७
अगन्म महा नमसा	उ.	५.	२.	९.	१
अगन्म कृत्रहन्तमं	पू.	१.	२.	७.	९
अग्न आ याहि वीतये	पू.	१.	१.	१.	१
	उ.	१.	१.	४.	१
अग्न आ यात्यग्निभि	उ.	७.	२.	७.	१
अग्न आयूंषि पवस	आ.			५.	१
अग्न आयूंषि पवसे	उ.	६.	३.	१०.	३
	उ.	७.	१.	१२.	१
अग्न ओजिष्ठमा भर	पू.	१.	२.	९.	१
अग्निं तं मन्ये यो	पू.	५.	१.	४.	७
	उ.	८.	३.	१०.	१
अग्निं दूतं वृणीमहे	पू.	१.	१.	१.	३
	उ.	२.	१.	६.	१
अग्निं नरो दीधितिभि	पू.	१.	२.	७.	१०
	उ.	६.	१.	१०.	१
अग्निं वो देवमग्निभिः	उ.	५.	१.	९.	१
अग्निं वो वृधन्तमध्वराणां	पू.	१.	१.	३.	१
	उ.	३.	१.	२०.	१
अग्निं सूनुं सहसो जात	उ.	७.	२.	८.	२
अग्निं हिन्वन्तु नो धियः	उ.	७.	१.	१५.	१
अग्निं होतारं मन्ये	पू.	५.	२.	८.	९
	उ.	९.	१.	१८.	१
अग्निः प्रत्नेन जन्मना	उ.	८.	३.	१.	१
अग्निः प्रियेषु धामसु	उ.	८.	२.	१९.	३
अग्निनाग्निः समिध्यते	उ.	२.	२.	५.	१
अग्निमग्निं हवीमभिः	उ.	२.	१.	६.	२
अग्निमिन्धानो मनसा	पू.	१.	१.	२.	९
अग्निमीडिष्वावसे	पू.	१.	१.	५.	५
	उ.	७.	२.	११.	१
अग्ने विवस्वदा भर	पू.	१.	१.	१.	१०
अग्ने विवस्वदुषस	पू.	१.	१.	४.	६
	उ.	९.	१.	६.	१

	आ.	प्र.	अ.	सू.	ऋ.
अग्निमीडे पुरोहितं	आ.			३.	४
अग्निरस्मि जन्मना	आ.			३.	१२
अग्निरिन्द्राय पवते	उ.	९.	२.	४.	१
अग्निरुक्थे पुरोहितो	पू.	१.	१.	५.	४
अग्निर्ऋषिः पवमानः	उ.	७.	१.	१२.	२
अग्निर्जागार तमृचः	उ.	९.	२.	६.	१
अग्निर्नुपत नो गिरो	उ.	६.	२.	१०.	२
अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः	उ.	९.	२.	८.	१
अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्	पू.	१.	१.	३.	७
	उ.	७.	१.	१६.	१
अग्निर्वृत्राणि जङ्घनत्	पू.	१.	१.	१.	४
	उ.	६.	२.	७.	१
अग्निर्हि वाजिनं विशे	उ.	८.	३.	१०.	२
अग्निस्तिग्मेन शोचिषा	पू.	१.	१.	३.	२
अग्ने केतुर्विशामसि	उ.	७.	१.	१५.	५
अग्ने जरितर्विंदपति	पू.	१.	१.	४.	५
अग्ने तमद्याश्वं न	पू.	५.	१.	५.	८
	उ.	९.	१.	५.	१
अग्ने तव श्रवो वयो	उ.	९.	२.	१.	१
अग्ने त्वं नो अन्तम	पू.	५.	२.	७.	२
	उ.	४.	१.	२२.	१
अग्ने देवाँ इहा वह	उ.	२.	१.	६.	३
अग्ने नक्षत्रमजरमा	उ.	७.	१.	१५.	४
अग्ने पवस्व स्वपा	उ.	७.	१.	१२.	३
अग्ने पावक रोचिषा	उ.	७.	१.	१३.	१
अग्ने मृड महाँ अस्यय	पू.	१.	१.	३.	३
अग्ने यजिष्ठो अध्वरे	पू.	२.	१.	१.	४
अग्ने युङ्क्ष्वा हि ये	पू.	१.	१.	३.	५
	उ.	६.	२.	२.	१
अग्ने रक्षा णो अंहसः	पू.	१.	१.	३.	४
अग्ने वाजस्य गोमत	पू.	२.	१.	१.	३
अथाथा श्वःश्च इन्द्र	उ.	६.	३.	७.	१
अध क्षपा परिष्कृतो	उ.	८.	१.	६.	१
अध ज्मो अध वा	पू.	१.	१.	५.	८
अध त्विषीमां अभ्योजसा	उ.	६.	३.	१८.	३

	आ.	प्र.	अ.	सू.	ऋ.
अग्ने विश्वेभिरग्निभि	उ.	७.	१.	६.	१
अग्ने सुक्षतमे रये	उ.	६.	१.	१.	४
अग्ने स्तोमं मनामहे	उ.	६.	२.	१०.	१
अग्रेगो राजाप्यस्तविष्यते	उ.	७.	३.	२१.	३
अग्रे सिन्धूनां पवमानो	उ.	४.	१.	१.	३
अचिक्रदद्वृषा हरि	पू.	६.	१.	२.	१
	उ.	४.	१.	३.	६
अचेत्यग्निश्चिकिति	पू.	५.	२.	७.	१
अचोदसो नो धन्वन्त्विन्द्रवः	पू.	६.	२.	७.	२
अच्छा कोशं मधुश्चुत	उ.	१.	१.	३.	२
अच्छा नः शीरशोचिषं	उ.	७.	२.	८.	१
अच्छा नो याह्या वहाभि	उ.	६.	२.	२.	२
अच्छा व इन्द्रं मतयः	पू.	४.	२.	९.	६
अच्छा समुद्रमिन्दवो	उ.	१.	१.	३.	३
अच्छा हि त्वा सहसः	उ.	७.	२.	७.	२
अजीजनो अमृत मर्त्यांय	उ.	७.	१.	७.	३
अजीजनो हि पवमान	उ.	६.	१.	७.	२
अञ्जते व्यञ्जते समञ्जते	पू.	६.	२.	७.	११
	उ.	७.	३.	२१.	१
अतश्चिदिन्द्र न उपा	पू.	३.	१.	३.	२
अतस्त्वा रयिरभ्ययद्	उ.	२.	२.	३.	३
अतीहि मन्युषाविणं	पू.	३.	१.	४.	१
अतो देवा अवन्तु	उ.	८.	२.	५.	६
अत्यायातमश्विना	उ.	८.	३.	१२.	२
अत्या हियाना न	उ.	५.	१.	३.	५
अत्रा वि नेमिरेषा	उ.	९.	१.	१६.	२
अत्राह गोरमन्वत	पू.	२.	२.	६.	३
	उ.	३.	१.	८.	३
अथा ते अन्तमानां	उ.	४.	१.	१५.	३
अदर्श्रस्समसृजो	पू.	४.	१.	३.	३
अदर्शि गातुवित्तमो	पू.	१.	१.	५.	३
	उ.	७.	१.	११.	१
अदाभ्यः पुरएता	उ.	७.	२.	९.	१
अदभ्रञ्चस्य केतवो	आ.			५.	८
अथ नो देव सवितः	पू.	२.	१.	५.	७

	आ.	प्र.	अ.	सू.	ऋ.
अध धारया मध्वा	उ.	३.	२.	२०.	२
अध यदिमे पवमान	उ.	७.	१.	३.	३
अधा त्वं हि नस्करो	उ.	७.	२.	६.	३
अधा हिन्वान इन्द्रियं	उ.	२.	२.	३.	४
अधा हीन्द्र गिर्वण	पू.	५.	१.	२.	८
	उ.	१.	१.	२३.	१
अधा ह्यग्ने क्रतोर्भद्रस्य	उ.	९.	१.	५.	२
अधि यदस्मिन्वाजिनीव	पू.	६.	१.	५.	७
अधुक्षत प्रियं मधु	उ.	४.	१.	३.	३
अध्वर्यो अद्रिभिः सुतं	पू.	६.	१.	२.	३
	उ.	५.	१.	११.	१
अध्वर्यो द्रावया त्वं	पू.	४.	१.	२.	६
अनवस्ते रथमश्वाय	पू.	५.	२.	६.	४
अनु ते शुष्मं तुरयन्त	उ.	८.	१.	८.	२
अनु त्वा रोदसी उभे	उ.	३.	२.	९.	२
अनु प्रत्नस्यौकसो	उ.	१.	२.	११.	२
अनु प्रवास आयवः	पू.	६.	१.	२.	६
अनु हि त्वा सुतं	पू.	५.	१.	५.	६
	उ.	६.	१.	७.	३
अनूपे गोमान्गोभिरक्षाः	उ.	३.	२.	१२.	२
अन्तश्चरति रोचनास्य	आ.			५.	५
	उ.	६.	१.	११.	२
अन्धा अमित्रा भवता	उ.	९.	३.	८.	२
अपघ्नन्तो अराव्णः	उ.	५.	१.	३.	९
अपघ्नन्पवते मृधो	पू.	६.	१.	२.	१४
	उ.	५.	१.	७.	१
अपघ्नन्पवसे मृधः	पू.	६.	१.	१.	६
	उ.	५.	१.	१५.	३
अप त्यं वृजिनं रिपुं	पू.	२.	१.	१.	९
अप त्ये तायवो यथा	आ.			५.	७
अप द्वारा मतीनां	उ.	४.	२.	१.	९
अपां नपातं सुभगं	उ.	६.	२.	१३.	२
अपां फेनेन नमुचेः	पू.	३.	१.	२.	८
अपादु शिप्रान्धसः	पू.	२.	२.	६.	१
अपाग्निर्देवूर्मयस्तर्तुराणाः	पू.	६.	१.	५.	१२

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अपामीवामप स्त्रिधमप	पू. ५.	१.	१.	७
अपिबत्कद्रुवः सुतमिन्द्रः	पू. २.	१.	४.	७
अपूर्व्या पुरुतमान्यस्मै	पू. ४.	१.	३.	१०
अप्सा इन्द्राय वायवे	उ. ३.	२.	११.	२
अप्सु रेतः शिश्रिये	उ. ९.	२.	१२.	२
अबोधि होता यजथाय	उ. ८.	३.	१३.	२
अबोध्यग्निः समिधा	पू. १.	२.	८.	१
	उ. ८.	३.	१३.	१
अबोध्यग्निर्ज्म उदेति	उ. ८.	३.	१७.	१
अभिक्रन्दन्कलशं	उ. ४.	१.	१.	२
अभि गव्यानि वीतये	उ. ४.	१.	६.	२
अभि गावो अधन्विषु	उ. ३.	२.	३.	२
अभि गोत्राणि सहसा	उ. ९.	३.	३.	१
अभि ते मधुना पयो	उ. १.	१.	१.	२
अभि त्यं देवं सवितारं	पू. ५.	२.	८.	८
अभि त्यं मेषं पुरुहूत	पू. ४.	२.	९.	७
अभि त्रिपृष्ठं वृषणं	पू. ६.	१.	४.	६
	उ. ६.	२.	११.	१
अभि त्वा पूर्वपीतय	पू. ३.	२.	७.	४
	उ. ७.	३.	१.	१
अभि त्वा वृषभा सुते	पू. २.	२.	७.	७
	उ. १.	२.	७.	१
अभि त्वा शूर नोनुमो	पू. ३.	१.	५.	१
	उ. १.	१.	११.	१
अभि द्युम्नं बृहद्यश	पू. ६.	२.	९.	२
	उ. ३.	२.	१७.	१
अभि द्रोणानि बभ्रवः	उ. १.	२.	१९.	२
अभि द्विजन्मा त्री	उ. ९.	१.	४.	२
अभि प्र गोपतिं	पू. २.	२.	८.	४
	उ. ७.	१.	१.	१
अभि प्रयांसि वाहसा	उ. ७.	२.	९.	२
अभि प्र वः सुराधस	पू. ३.	१.	५.	३
	उ. २.	१.	१३.	१
अभि प्रियं दिवस्पद	उ. ४.	२.	१.	१२
अभि प्रियाणि काव्या	उ. ८.	३.	१८.	२
अभि प्रियाणि पवते	पू. ६.	२.	७.	१
	उ. १.	१.	१९.	१
अभि प्रिया दिवः कवि	उ. ५.	१.	४.	९
अभि ब्रह्मीरनूषत	उ. २.	२.	१४.	२
अभि वस्त्रा सुवसनां	उ. ६.	२.	१८.	२
अभि वाजी विश्वरूपो	उ. ९.	२.	१२.	१
अभि वायुं वीत्यर्षा	उ. ६.	२.	१८.	१
अभि विप्रा अनूषत	उ. ५.	१.	४.	२
अभि वो वीरमन्धसो	पू. ३.	२.	८.	६
अभि व्रतानि पवते	उ. ३.	२.	२०.	३
अभि सोमास आयवः	पू. ६.	१.	३.	८
	उ. २.	२.	९.	१
अभि हि सत्य सोमपा	उ. ५.	१.	१९.	२
अभी नवन्ते अद्रुहः	पू. ६.	२.	६.	६
अभी नो अर्ष दिव्या	उ. ६.	२.	१८.	३
अभी नो वाजसातमं	पू. ६.	२.	६.	५
	उ. ५.	१.	१६.	१
अभी षतस्तदा भरेन्द्र	पू. ४.	१.	२.	७
अभी षु णः सखी	उ. १.	१.	१२.	३
अभ्यभि हि श्रवसा	उ. ७.	१.	७.	२
अभ्यर्ष बृहद्यशो	उ. ३.	२.	४.	४
अभ्यर्ष स्वायुध सोम	उ. ४.	१.	४.	७
अभ्यारमिदद्रयो	उ. ७.	३.	१६.	२
अभ्यार्षानपच्युतो	उ. ४.	१.	४.	८
अभ्रातृव्यो अना	पू. ५.	१.	२.	१
	उ. ६.	२.	४.	१
अमित्रसेनां मघवन्	उ. ९.	३.	६.	२
अमित्रहा विचर्षणिः	उ. ६.	३.	३.	४
अमी ये देवा स्थन	पू. ४.	२.	८.	९
अमीषां चित्तं प्रति	उ. ९.	३.	५.	१
अयं त इन्द्र सोमो	पू. २.	२.	७.	५
	उ. १.	२.	५.	१
अयं दक्षाय साधनो	उ. ४.	१.	१९.	३
अयं पुनान उषसो	उ. २.	१.	१७.	३
अयं पूषा रयिर्भगः	पू. ६.	२.	६.	२
	उ. २.	१.	१६.	१
अयं भराय सानसि	उ. १.	१.	१७.	२
अयं यथा न आभुवत्	उ. ३.	१.	२०.	२
अयं वां मधुमत्तमः	पू. ४.	१.	२.	४
अयं वां मित्रावरुणा	उ. ३.	१.	७.	१
अयं विचर्षणिर्हितः	पू. ६.	१.	२.	१२
अयं विश्वा अभि श्रियो	उ. ३.	१.	२०.	३
अयं विश्वानि तिष्ठति	उ. १.	२.	१६.	३
अयं स यो दिवस्परि	उ. ३.	१.	४.	३
अयं सहस्रमानवो	पू. ५.	२.	८.	२
अयं सहस्रमृषिभिः	उ. ७.	३.	१८.	२
अयं सहस्रा परि	उ. ९.	२.	१२.	३
अयं स होता यो	उ. ९.	१.	४.	३
अयं सूर्य इवोपदृगयं	उ. १.	२.	१६.	२
अयं सोम इन्द्र तुभ्यं	उ. ६.	३.	१३.	१
अयमग्निः सुवीर्यस्येशे	पू. १.	२.	६.	६
अयमु ते समतसि	पू. २.	२.	९.	९
	उ. ७.	३.	१५.	१
अया चित्तो विपानया	उ. २.	१.	१०.	३
अया धिया च गव्यया	पू. २.	२.	१०.	४
अया निजघ्निरोजसा	उ. ८.	३.	२.	२
अया पवस्व देवयु	उ. १.	२.	२२.	१
अया पवस्व धारया	पू. ६.	१.	१.	७
	उ. ५.	१.	८.	१
अया पवा पवस्वैना	पू. ६.	१.	५.	९
	उ. ४.	१.	२१.	१
अया रुचा हरिण्या	पू. ५.	२.	८.	७
	उ. ७.	३.	१०.	१
अया वाजं देवहितं	पू. ५.	२.	७.	८
अया वीती परि स्रव	पू. ६.	१.	१.	९
	उ. ५.	१.	६.	१
अया सोम सुकृत्यया	पू. ६.	१.	२.	११
अयुक्त सप्त शुन्ध्युवः	आ.		५.	१३
अयुक्त सूर एतशं	उ. ५.	१.	८.	२
अयुद्ध इद्युधा वृतं	उ. ५.	२.	२१.	३
अरं त इन्द्र कुक्षये	उ. ८.	२.	२.	३
अरं त इन्द्र श्रवसे	पू. ३.	१.	२.	६
अरण्योर्निहितो जातवेदा	पू. १.	२.	८.	७
अरमश्वाय गायत	पू. २.	१.	३.	४
अरूरुचदुषसः पृश्नि	आ.		२.	२
	उ. २.	२.	१६.	३
अर्चत प्रार्चता नरः	पू. ४.	२.	८.	३
अर्चन्ति नारीरपसो	उ. ८.	३.	१६.	३
अर्चन्त्यर्क मरुतः	पू. ५.	२.	६.	९
	उ. ४.	१.	२४.	२
अर्वाङ्चिक्रो मधुवाहनो	उ. ८.	३.	१७.	३
अर्षा नः सोम शं गवे	उ. ५.	२.	२०.	३
अर्षा सोम द्युमत्तमो	पू. ६.	१.	२.	७
	उ. ३.	२.	११.	१
अवर्षिरातिं वसुदामुप	उ. ५.	२.	१४.	२
अवक्रक्षिणं वृषभं	उ. ६.	१.	५.	२
अव द्युतानः कलशां	उ. १.	१.	१९.	३
अव द्रप्सो अंशुमती	पू. ४.	१.	४.	१
अवसृष्टा परा पत	उ. ९.	३.	५.	३
अव स्म दुर्हणायतो	उ. ४.	१.	१६.	३
अवा नो अग्न ऊतिभि	उ. ७.	१.	१४.	१
अव्या वारे परि प्रियो	उ. ४.	२.	२.	६
अव्या वारैः परि प्रियं	उ. ५.	१.	५.	३
अश्वं न गीर्भी रथ्यं	उ. ७.	३.	५.	२
अश्वं न त्वा वारवन्तं	पू. १.	१.	२.	७
	उ. ८.	१.	७.	१
अश्विना वर्तिरस्मदा	उ. ८.	३.	९.	१
अश्वी रथी सुरूप	पू. ३.	२.	९.	५
अश्वेव चित्रारुषी	उ. ८.	३.	६.	२
अश्वो न चक्रदो वृषा	उ. २.	१.	३.	३
अषाढमुग्रं पृतनासु	उ. ४.	२.	८.	२
असर्जि कलशाँ अभि	उ. ३.	१.	१८.	३
असर्जि रथ्यो यथा	पू. ६.	१.	१.	४
असर्जि वक्वा रथ्ये	पू. ६.	१.	५.	११
असावि देवं गोऋजीक	पू. ४.	१.	३.	१
असावि सोम इन्द्र ते	पू. ४.	२.	६.	६
	उ. ३.	२.	२३.	१
असावि सोमो अरुषो	पू. ६.	२.	७.	९
	उ. ५.	२.	१३.	१
असाव्यंशुर्मदायाप्सु	पू. ५.	२.	९.	७
	उ. ३.	२.	१६.	१
असि हि वीर सेन्यो	उ. ३.	२.	१४.	२
असृक्षत प्र वाजिनो	पू. ५.	२.	१०.	६
	उ. ४.	१.	२.	१
असृग्रं देववीतये	उ. ९.	१.	१७.	३
असृग्रमिन्दवः पथा	उ. ४.	२.	२.	१
असृग्रमिन्द्र ते गिरः	पू. ३.	१.	२.	२
असौ या सेना मरुतः	उ. ९.	३.	४.	३
अस्तावि मन्म पूर्व्यं	उ. ८.	२.	७.	१
अस्ति सोमो अयं सुतः	पू. २.	२.	८.	१०
	उ. ९.	१.	८.	१
अस्तु श्रौषट् पुरो अग्निं	पू. ५.	२.	८.	५
अस्मभ्यं त्वा वसुविद	पू. ६.	२.	८.	१०
अस्मभ्यं रोदसी रयिं	उ. ४.	२.	२.	९
अस्मभ्यमिन्दविन्द्रियं	उ. ४.	१.	३.	१०

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अस्माअस्मा इदन्धसो	उ.	६.	३.	२. ४
अस्माकमिन्द्रः समृतेषु	उ.	९.	३.	४. २
अस्य प्रत्नामनु द्युतं	उ.	१.	२.	१६. १
अस्य प्रेषा हेमना	पू.	६.	१.	४. ४
	उ.	६.	२.	८. १
अस्य व्रतानि नाधृषे	उ.	८.	३.	२. ३
अस्येदिन्द्रो मदेष्वा	उ.	१.	१.	१७. ३
अस्येदिन्द्रो वावृधे	उ.	७.	३.	१. २
अहं प्रत्नेन जन्मना	उ.	७.	१.	५. २
अहमस्मि प्रथमजा	आ.			१. ९
अहमिद्धि पितुष्परि	पू.	२.	२.	६. ८
	उ.	७.	१.	५. १
आ गन्ता मा रिपण्यत	पू.	५.	१.	२. ३
आग्निं न स्ववृक्तिभि	पू.	५.	१.	४. २
आग्ने स्थूरं रयिं भर	उ.	७.	१.	१५. ३
आ घ त्वावां त्मना	उ.	४.	१.	१४. २
आ घा गमद्यदि श्रवत्	उ.	१.	२.	११. ३
आ घा ये अग्निमिन्धते	पू.	२.	१.	४. ९
	उ.	५.	२.	२१. १
आ जागृविर्विप्र ऋतं	उ.	६.	१.	४. १
आ जामित्के अव्यत	उ.	६.	२.	३. २
आ जुहोता हविषा	पू.	१.	२.	७. १
आ तिष्ठ वृत्रहन्रथं	उ.	३.	२.	२३. २
आ तू न इन्द्र क्षुमन्तं	पू.	२.	२.	८. ३
	उ.	१.	२.	६. १
आ तू न इन्द्र वृत्रहन्	पू.	२.	२.	९. ७
आ ते अग्न इधीमहि	पू.	५.	१.	४. १
	उ.	३.	२.	२१. १
आ ते अग्न ऋचा हविः	उ.	३.	२.	२१. २
आ ते दक्षं मयोभुवं	पू.	६.	१.	२. २
	उ.	४.	२.	२. १०
आ ते वत्सो मनो यमत्	पू.	१.	१.	१. ८
	उ.	४.	२.	१२. १
आ त्वा गिरो रथीरिव	पू.	४.	२.	६. ८
आ त्वा ग्रावा वदन्निह	उ.	९.	१.	१६. ३
आ त्वाघ सबर्दुघां	पू.	४.	१.	१. ३
आ त्वा ब्रह्मयुजा हरी	उ.	१.	१.	६. २
आ त्वा रथं यथोतये	पू.	४.	२.	७. ३
	उ.	९.	१.	३. १
आ त्वा रथे हिरण्यये	उ.	६.	२.	५. २
आ त्वा विशन्त्विन्दवः	पू.	३.	१.	१. ४
	उ.	८.	२.	२. १
आ त्वा सत्यायः सख्या	पू.	४.	१.	५. ९
आ त्वा सहस्रमा शतं	पू.	३.	२.	६. ३
	उ.	६.	२.	५. १
आ त्वा सोमस्य गन्दर्य	पू.	४.	१.	२. ५
आ त्वेता नि षीदतेन्द्र	पू.	२.	२.	७. १०
	उ.	१.	२.	१०. १
आदह स्वधामनु	उ.	२.	२.	७. २
आदित्यस्य व्रतेसो	पू.	१.	१.	२. १०
आदित्यैरिन्द्रः सगणो	उ.	४.	१.	२३. ३
आदीं के चित्पश्यमानास	उ.	७.	१.	३. २
आदीं त्रितस्य योपणो	उ.	१.	२.	२१. ३
आदीं हंसो यथा गणं	उ.	१.	२.	२१. २
आदीमश्वं न हेतार	उ.	३.	२.	१६. ३
आ नः सुतास इन्दवः	उ.	५.	२.	१७. ३
आ नः सोम संयतं	उ.	४.	२.	७. ३
आ नः सोम सहो जुवो	उ.	२.	२.	२. २
आ न इन्दो शतग्विनं	उ.	२.	२.	५. ३
आ नस्ते गन्तु मत्सरो	उ.	६.	२.	२०. २
आ नो अग्ने रयिं भर	उ.	७.	१.	१४. २
आ नो अग्ने वयोदृधं	पू.	१.	१.	४. ९
आ नो अग्ने सुचेतुना	उ.	७.	१.	१४. ३
आ नो भज परमेष्वा	उ.	७.	१.	४. ३
आ नो मित्रावरुणा	पू.	३.	१.	३. ७
	उ.	१.	१.	५. १
आ नो रत्नानि बिभ्रता	उ.	८.	३.	१२. ३
आ नो वयो वयःशयं	पू.	४.	२.	७. २
आ नो विश्वासु हव्य	पू.	३.	२.	८. ७
	उ.	७.	१.	२. १
आ पप्राथ महिना	उ.	२.	२.	११. २
आ पवमान धारय	उ.	५.	१.	४. ८
आ पवमान सुष्टुतिं	उ.	३.	१.	५. ३
आ पवस्व मदिन्तम	उ.	५.	१.	५. ४
आ पवस्व महीमिषं	उ.	३.	१.	३. ४
आ पवस्व सहस्रिणं	पू.	६.	१.	२. ५
आ पवस्व सुवीर्यं	उ.	२.	१.	४. ३
आपानासो विवस्वतो	उ.	४.	२.	१. ८
आपो हि ष्ठा मयोभुव	उ.	९.	२.	१०. १
आ प्रागाद्भद्रा युवति	आ.			३. ७
आ बुन्दं वृत्रहा ददे	पू.	३.	१.	३. ३
आ भात्यग्निरुषसा	उ.	८.	३.	१५. १
आभिष्टमभिष्टिभिः	म.			२
आ मन्द्रमा वरेण्यमा	उ.	४.	२.	२. ११
आ मन्द्रैरिन्द्र हरिभि	पू.	३.	२.	६. ४
	उ.	८.	३.	३. १
आमास पक्वमैरय	उ.	६.	२.	१९. ३
आ मित्रे वरुणे भगे	उ.	४.	२.	२. ८
आयं गौः पृश्निरक्रमी	आ.			५. ४
	उ.	६.	१.	११. १
आ यः पुरं नार्मिणी	उ.	९.	१.	४. १
आ रहुवः शतक्रतवा	उ.	४.	१.	१४. ३
आ ययोस्त्रिंशतं तना	उ.	४.	१.	५. ४
आ याहि वनसा सह	पू.	५.	२.	६. ७
आ याहि सुषुमा हित	पू.	२.	२.	१०. ७
	उ.	१.	१.	६. १
आ याह्यग्निमिन्दवे	पू.	५.	१.	२. ४
आ याह्युप नः सुतं	पू.	३.	१.	४. ५
आ योनिमरुणो रुहद्	उ.	३.	१.	१२. २
आ रयिमा सुचेतुनमा	उ.	४.	२.	२. १२
आ वंसते मघवा	उ.	२.	२.	१७. २
आ व इन्द्रं क्रविं यथा	पू.	३.	१.	३. १
आ वच्यस्व महि प्सरो	उ.	४.	१.	३. २
आ वच्यस्व सुदक्ष	उ.	३.	२.	१७. २
आविर्मर्या आ वाजं	पू.	५.	१.	५. ९
आविवासन्परावतो	उ.	३.	१.	४. ५
आविश्नक्लर्शं सुतो	पू.	६.	१.	१. ३
आ वो राजानमध्वरस्य	पू.	१.	२.	७. ७
आशुः शिशानो वृषभो	उ.	९.	३.	१. १
आशुर्पं बृहन्मते	उ.	३.	१.	४. १
आ सुते सिञ्चत श्रियं	उ.	६.	३.	१६. १
आ सोता परि षिञ्चताश्वं	पू.	६.	२.	९. ३
	उ.	६.	२.	६. १
आ सोम स्वानो अद्रिभि	पू.	६.	१.	३. ३
	उ.	८.	२.	१२. १
आ हरयः ससृज्रिरे	उ.	७.	१.	१. २
आ हर्यताय धृष्णवे	पू.	६.	२.	६. ७
आ हर्यतो अर्जुनो	उ.	१.	२.	२०. २
इच्छन्ति देवाः सुन्वन्तं	उ.	१.	२.	३. ३
इच्छन्नश्वस्य यच्छिरः	उ.	३.	१.	८. २
इडामग्ने पुरुदंसं सनिं	पू.	१.	२.	८. ४
इत ऊती वो अजरं	पू.	३.	२.	१०. १
इत एत उदारुहन्दिवः	पू.	१.	२.	१०. २
इत्था हि सोम इन्मदो	पू.	५.	१.	३. २
इदं त एकं पर ऊ	पू.	१.	२.	७. ३
इदं वसो सुतमन्धः	पू.	२.	१.	३. १०
	उ.	१.	२.	८. १
इदं वां मदिरं मध्वधुक्षन्	उ.	४.	१.	१०. ३
इदं विष्णुर्वि चक्रमे	पू.	३.	१.	३. ९
	उ.	८.	२.	५. १
इदं श्रेष्ठं० ज्योतिरागा	उ.	८.	३.	१४. १
इदं श्रेष्ठं० ज्योतिरुत्तमं	उ.	६.	३.	५. ३
इदं ह्यन्वोजसा सुतं	पू.	२.	२.	८. १
	उ.	१.	२.	९. १
इनो राजन्नरतिः	उ.	७.	२.	५. १
इन्दुः पविष्ट चारु	पू.	५.	१.	५. ५
इन्दुः पविष्ट चेतनः	पू.	५.	२.	१०. ५
इन्दुरिन्द्राय पवत	उ.	२.	२.	१५. २
इन्दुर्वाजी पवते	पू.	६.	१.	५. ८
	उ.	३.	२.	२०. १
इन्दो यथा तव स्तवो	उ.	३.	२.	५. २
इन्दो यदद्रिभिः सुतः	उ.	३.	२.	३. ४
इन्द्रं तं शुम्भ पुरुहन्	उ.	३.	१.	१५. २
इन्द्रं धनस्य सातये	म.			७
इन्द्रं नरो नेमधिता	पू.	४.	१.	३. ६
इन्द्रं वयं महाधन	पू.	२.	१.	४. ६
इन्द्रं वाणीरनुत्तमन्युमेव	उ.	९.	१.	११. ३
इन्द्रं विश्वा अवीवृधन	पू.	४.	२.	६. २
	उ.	२.	१.	१९. १
इन्द्रं वो विश्वतस्परि	उ.	८.	१.	२. १
इन्द्रः स दामने कृत	उ.	५.	१.	१०. २
इन्द्र आसां नेता	उ.	९.	३.	३. २
इन्द्र इद्धर्यो: सचा	आ.			२. ३
	उ.	२.	१.	८. २
इन्द्र इज्जो महोनां	उ.	१.	२.	१. ३
इन्द्र इषे ददातु न	पू.	३.	१.	१. ६
इन्द्र उक्थेभिर्मन्दिष्ठो	पू.	३.	१.	४. ४
इन्द्र ऋतुं न आ भर	पू.	३.	२.	७. ७
	उ.	३.	३.	१. १
इन्द्र ऊतरं नव्यं न	उ.	३.	१.	२२. २

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

इन्द्र जुषस्व प्र वहा उ. ३. १. २२. १
इन्द्र ज्येष्ठं न आ भर आ. १. १
इन्द्र तुभ्यमिद्रिवो पू. ५. १. ३. ४
इन्द्र त्रिधातु शरणं पू. ३. २. ८. ४
इन्द्र नेदीय एदिहि पू. ३. २. ९. १०
इन्द्रमग्निं कविच्छदा उ. १. १. ७. ३
इन्द्रमच्छ सुता इमे पू. ६. २. ८. १
उ. १. १. १७. १
इन्द्रमिद्धरिणो वृहदिन्द्र पू. ३. १. १. ५
उ. २. १. ८. १
इन्द्रमिदेवतातय पू. ३. २. ६. ७
उ. ७. ३. ८. १
इन्द्रमिद्धरी वहतो उ. ३. २. २३. ३
इन्द्रमीशानमोजसा उ. ५. १. २०. ३
इन्द्र वाजेषु नोव आ. २. ४
उ. २. १. ८. ३
इन्द्र शुद्धो न आ गहि उ. ६. २. ९. २
इन्द्र शुद्धो हि नो रयिं उ. ६. २. ९. ३
इन्द्रश्च वायवेषां उ. ८. १. ५. २
इन्द्र सुतेषु सोमेषु पू. ४. २. १०. १
उ. १. २. १२. १
इन्द्रस्तुराषाण्मित्रो न उ. ३. १. २२. ३
इन्द्रस्ते सोम सुतस्य उ. ६. १. ८. ३
इन्द्र स्यातहरीणां उ. ८. २. १०. २
इन्द्रस्य नु वीर्याणि आ. ३. ११
इन्द्रस्य बाहू स्थविरौ उ. ९. ३. ७. ३
इन्द्रस्य वृष्णो वरुणस्य उ. ९. ३. ३. ३
इन्द्रस्य सोम पवमान उ. ५. १. १२. ३
इन्द्रस्य सोम रारहे उ. ५. १. २. ३
इन्द्राग्नी अपसस्परि उ. ८. २. १४. २
इन्द्राग्नी अपसस्पुरु उ. ७. ३. २. ३
इन्द्राग्नी अपादियं पू. ३. २. ९. ९
इन्द्राग्नी आ गतं सुतं उ. १. १. ७. १
इन्द्राग्नी जरितुः सचा उ. १. १. ७. २
इन्द्राग्नी तविषाणि वां उ. ७. ३. २. ४
उ. ८. २. १४. ३
इन्द्राग्नी नवतिं पुरः उ. ८. २. १७. ३
इन्द्राग्नी नवतिं पुरो उ. ७. ३. २. २
इन्द्राग्नी युवामिमे उ. ३. २. १०. १
इन्द्राग्नी रोचना दिवः उ. ८. २. १४. १
इन्द्रा नु पूषणा वयं पू. ३. १. १. ९
इन्द्रापर्वता बृहता पू. ४. १. ५. ७
इन्द्राय गाव आशिरं उ. ७. १. १. ३
इन्द्राय गिरो अनिशित पू. ४. १. ५. ८
इन्द्राय नूनमर्चतोक्थानि उ. ३. १. २१. ३
इन्द्राय पवते मदः पू. ६. १. ३. १०
इन्द्राय मद्वने सुतं पू. २. २. ७. ४
उ. १. २. ४. १
इन्द्राय साम गायत पू. ४. २. १०. ८
उ. ३. २. २२. १
इन्द्राय सोम पातवे मदाय उ. ६. ३. ३. ५
इन्द्राय सोम पातवे वृत्रघ्ने उ. ५. २. १८. ३
उ. ८. २. ८. १
इन्द्राय सोम सुषुतः पू. ६. २. ७. ८
इन्द्रा याहि चित्रभानो उ. ४. २. ५. १
इन्द्रा याहि तूतुजान उ. ४. २. ५. ३
इन्द्रा याहि धियेषितो उ. ४. २. ५. २
इन्द्रायेन्दो मरुत्वते पू. ५. २. ९. ६
उ. ४. १. ११. १
इन्द्रे अश्वा नमो बृहत् उ. २. १. ९. १
इन्द्रेण सं हि दृक्षसे उ. २. २. ७. १
इन्द्रेहि मत्स्यन्धसो पू. २. २. ९. ६
इन्द्रो अङ्ग महद्भय पू. ३. १. १. ७
इन्द्रो दधीचो अस्थभि पू. २. २. ९. ५
उ. ३. १. ८. १
इन्द्रो दीर्घाय चक्षस उ. २. १. ८. ४
इन्द्रो मदाय वावृधे पू. ५. १. ३. ३
उ. ३. २. १४. १
इन्द्रो मह्ना रोदसी उ. ७. ३. ८. २
इन्द्रो राजा जगत आ. १. २
इन्द्रो विश्वस्य राजति पू. ५. २. ७. १०
इन्द्रो राजा समर्यो पू. १. २. ७. ८
इमं मे वरुण श्रुधी उ. ७. ३. ६. १
इमं वृष्णं कृणुतेक आ. १. ६
इमं स्तोममर्हते पू. १. २. ७. ४
उ. ४. १. ७. १
इम इन्द्र मदाय ते पू. ४. १. १. २
इम इन्द्राय सुन्विरे पू. ४. १. १. १
इम उ त्वा वि चक्षते पू. २. १. ५. २
इममिन्द्र सुतं पिब पू. ४. २. ६. ३
उ. ३. १. २१. १
इममू षु त्वमस्माकं पू. १. १. ३. ८
उ. ७. १. ४. १
इमा उ त्वा पुरुवसो गिरो पू. ३. २. ६. ८
उ. ७. ३. १८. १
इमा उ त्वा पुरुवसोभि पू. २. २. ६. २
इमा उ त्वा सुतेसुते पू. ३. १. १. ८
इमा उ वां दिविष्टय पू. ४. १. २. २
उ. १. २. १५. १
इमा नु कं भुवना पू. ५. २. ७. ६
उ. ४. १. २३. १
इमास्त इन्द्र पृश्नयो पू. २. २. १०. ३
इमे त इन्द्र ते वयं पू. ४. २. ९. ४
इमे त इन्द्र सोमाः पू. ३. १. २. ९
इमे हि ते ब्रह्मकृतः उ. ८. २. ६. २
इयं वामस्य मन्मन उ. ३. १. ९. १
इरज्यन्नग्ने प्रथयस्व उ. ९. २. १. ४
इषं तोकाय नो दध उ. ३. २. ११. ३
इषे पवस्व धारया पू. ६. १. २. ९
उ. २. २. ४. १
इष्कर्तारमध्वरस्य उ. ९. २. १. ५
इशा होत्रा असृक्षतेन्द्रं पू. २. २. ६. ७
इह त्वा गोपरीणसं उ. १. २. ७. ३
इहेव शृण्व एषां पू. २. १. ५. १
ईङ्खयन्तीरपस्युव पू. २. २. ९. १
ईडिष्वा हि प्रतीत्यां पू. २. १. १. ७
ईडेन्यो नमस्यस्तिरस्त उ. ७. २. २. १
ईशान इमा भुवनानि उ. ३. २. १. ३
ईशिषे वार्यस्य हि उ. ७. १. १६. २
ईशे हि शक्रस्तमूतये म. ६
उक्थं च न शस्यमानं पू. ३. १. ४. ३
उ. ९. १. १५. २
उक्थमिन्द्राय शंस्यं पू. ४. २. ८. ४
उक्षा मिमेति प्रति उ. ६. १. ९. ३
उग्रा विघनिना मृध उ. २. २. ८. २
उग्रा ते जातमन्धसो पू. ५. २. ९. १
उ. १. १. ८. १
उत त्या हरितो दश उ. ८. १. ८. ३
उत नः प्रिया प्रियासु उ. ६. ३. ९. १
उत न एना पवया उ. ४. १. २१. २
उत नो गोमतीरिषो उ. ४. १. ६. ३
उत नो गोविदश्ववित् उ. ३. २. ५. ३
उत नो गोपतिं धिय उ. ७. ३. ११. १
उत नो वाजसातये उ. ५. १. ३. ४
उत प्र पिप्य ऊधर उ. ६. २. १५. ३
उत भुवन्तु जन्तव उ. ६. २. १. ४
उत वात पितासि न उ. ९. २. ११. २
उत सखास्यश्विनोरुत उ. ८. ३. ६. ३
उत स्या नो दिवा मति पू. २. १. १. ६
उत स्वराजो अदितिं उ. ६. १. २. ३
उता यातं संगवे उ. ८. ३. १५. ३
उतो त्वस्य जोषमा उ. ९. १. ८. ३
उत्तिष्ठन्नोजसा सह उ. ३. २. ९. १
उत्ते बृहन्तो अर्चयः उ. ७. २. ३. १
उत्ते शुष्मास ईरते उ. ५. १. ५. १
उत्ते शुष्मासो अस्थू उ. ८. ३. २. १
उत्वा मन्दन्तु सोमाः पू. ३. १. १. १
उ. ६. १. ३. १
उदग्ने भारत द्युमद् उ. ६. २. २. ३
उदग्ने शुचयस्तव उ. ७. १. १६. ३
उदपप्तन्नरुणा भानवो उ. ८. ३. १६. २
उदुत्तमं वरुण पाश आ. ५. ४
उदु त्यं जातवेदसं पू. १. १. ३. ११
उदु त्ये मधुमत्तमा पू. ३. २. ६. ९
उ. ६. १. ६. १
उदु त्ये सूनवो गिरः पू. ३. १. ३. ८
उदु ब्रह्माण्यैरत पू. ४. १. ४. ८
उदुस्रियाः सृजते उ. १. २. १४. २
उद्वा आजद्गिरोभ्य उ. ८. १. ९. ३
उद्वेदमि श्रुतामघं पू. २. १. ४. १
उ. ६. ३. ४. १
उद्वायोपि रजः पृथ्वहा आ. ५. १२
उद्वर्षय मघवन्नायुधा उ. ९. ३. ४. १
उद्यस्य ते नवजातस्य उ. ५. १. ९. ३
उप च्छायामिव वृणे उ. ८. २. १८. २
उप त्रितस्य पाष्यो उ. ३. २. १८. २
उप त्वा कर्मन्नूतये उ. १. १. २२. २
उप त्वाग्ने दिवेदिवे पू. १. १. २. ४

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उप त्वा जामयो गिरो	पू. १.	१.	२.	३
	उ. ७.	२.	१४.	१
उप त्वा जुह्वो मम	उ. ७.	२.	३.	२
उप त्वा रण्वसंदृशं	उ. ८.	२.	१८.	१
उप नः सवना गहि	उ. ४.	१.	१५.	२
उप नः सूनवो गिरः	उ. ७.	३.	१३.	१
उप नो हरिभिः सुतं	पू. २.	२.	६.	६
	उ. ९.	१.	१०.	१
उप प्रक्षे मधुमति	पू. ५.	२.	६.	८
	उ. ४.	१.	२४.	३
उपप्रयन्तो अध्वरं	उ. ६.	२.	१.	१
उप शिक्षापतस्थुषो	उ. १.	२.	१८.	१
उप स्रक्वेषु बप्सतः	उ. ६.	३.	१६.	३
उपह्वरे गिरीणां सङ्गमे	पू. २.	१.	५.	९
उपास्मै गायता नरः	उ. १.	१.	१.	१
	उ. १.	२.	१८.	३
उपो मतिः पृच्यते	उ. ६.	१.	९.	२
उपो षु जातमप्तुरं	पू. ६.	१.	१.	१
	उ. ५.	२.	२०.	१
उपो षु जातमप्तुरम्	उ. १.	२.	१८.	२
उपो षु शृणुही गिरो	पू. ५.	१.	३.	८
उपो हरीणां पतिं	उ. ७.	१.	८.	२
उभयं शृणवच्च न	पू. ३.	२.	१०.	८
	उ. ५.	१.	१४.	१
उभयतः पवमानस्य	उ. ३.	१.	१.	२
उभे यदिन्द्र रोदसी	पू. ४.	२.	९.	१०
	उ. ४.	१.	१६.	१
उरुगव्यूतिरभयानि	उ. ६.	२.	११.	३
उरुव्यचसे महिने	उ. ९.	१.	११.	२
उरुशंसा नमोवृधा	उ. १.	१.	५.	२
उपस्तचित्रमा भरा	उ. ८.	३.	८.	१
उषा अप स्वसुष्टमः	पू. ५.	२.	७.	५
उषो अद्येह गोमत्य	उ. ८.	३.	८.	२
उस्रा वेद वसूनां	उ. ४.	१.	५.	२
ऊर्जा मित्रो वरुणः	पू. ५.	२.	७.	९
ऊर्जो नपाज्जातवेदः	उ. ९.	२.	१.	३
ऊर्जो नपातं स हिनाय	उ. १.	१.	२०.	२
ऊर्जो नपातमा हुवे	उ. ८.	३.	१.	२
ऊर्द्ध्व ऊ षु ण ऊतये	पू. १.	२.	६.	३
ऊर्द्ध्वस्तिष्ठा न ऊतये	उ. ७.	३.	१५.	३
ऊर्द्ध्वो गन्धर्वो अधि	उ. ९.	२.	१३.	२
ऋचं साम यजामहे	पू. ४.	२.	८.	१०
ऋजुनीती नो वरुणो	पू. ३.	१.	३.	५
ऋतमृतेन सपन्तेषिरं	उ. ६.	३.	११.	२
ऋतस्य जिह्वा पवते	उ. १.	१.	१९.	२
ऋतावानं महिषं	उ. ९.	२.	१.	६
ऋतावानं वैश्वानर	उ. ८.	२.	१९.	१
ऋतेन मित्रावरुणा	उ. २.	२.	६.	२
ऋतेन यावृतावृधा	उ. २.	१.	७.	२
ऋधक्सोम स्वस्तये	उ. १.	१.	२.	३
ऋषिमना य ऋषिकृत्	उ. ५.	१.	१.	२
ऋषिर्विप्रः पुरएता	उ. १.	१.	१०.	३
एतं त्यं हरितो दश	उ. ५.	२.	४.	६
एतं त्रितस्य योषणो	उ. ५.	२.	४.	२
एतं मृजन्ति मर्ज्यमुप	उ. ५.	२.	३.	३
एत असृग्रमिन्दव	उ. २.	२.	१.	१
एतमु त्यं दश० मृजन्ति	उ. ४.	१.	१३.	१
एतमु त्यं दश० हरिं	उ. ५.	२.	३.	८
एतमु त्यं मदच्युतं	पू. ६.	२.	९.	४
एता उ त्या उषसः	उ. ८.	३.	१६.	१
एते सोमा अभि प्रिय	उ. ५.	१.	२.	१
एते सोमा असृक्षत	उ. ४.	१.	६.	१
एतो न्विन्द्रं० शुद्धं	पू. ४.	२.	६.	९
	उ. ६.	२.	९.	१
एतो न्विन्द्रं० सखाय	पू. ४.	२.	१०.	७
एदु मधोर्मदिन्तरं	पू. ४.	२.	१०.	५
	उ. ८.	२.	१०.	१
एना विश्वान्यर्य आ	आ.		१.	८
	उ. १.	१.	८.	३
एना वो अग्निं नमसो	पू. १.	१.	५.	१
	उ. १.	२.	१३.	१
एन्दुमिन्द्राय सिञ्चत	पू. ४.	२.	१०.	६
	उ. ७.	१.	८.	१
एन्द्र नो गधि प्रिय	पू. ५.	१.	१.	३
	उ. ५.	१.	१९.	१
एन्द्र पृक्षु कासु चिन्नृम्णं	पू. ३.	१.	४.	९
एन्द्र याहि हरिभिरुप	पू. ४.	२.	६.	७
	उ. ९.	१.	१६.	१
एन्द्र याह्युप नः परावतो	पू. ५.	२.	८.	३
एन्द्र सानसिं रयिं	पू. २.	१.	४.	५
एभिर्नो अर्कैर्भवा	उ. ९.	१.	५.	३
एमेनं प्रत्येतन सोमेभिः	उ. ६.	३.	२.	२
एवा नः सोम परि	उ. २.	२.	१०.	३
एवा पवस्व मदिरो	उ. २.	१.	११.	३
एवामृताय महे	उ. ६.	१.	८.	२
एवा रातिस्तुवीमघ	उ. २.	१.	१८.	२
एवा हि शक्रो राये	म.			३
एवा ह्यसि वीरयुरेवा	पू. ३.	१.	४.	१०
	उ. २.	१.	१८.	१
एवा ह्येव । एवा ह्यग्ने	म.			१०
एष इन्द्राय वायवे	उ. ५.	२.	६.	२
एष उ स्य पुरुव्रतो	उ. ५.	२.	२.	१०
एष उ स्य वृषा रथो	उ. ५.	२.	४.	१
एष कविरभिष्टुतः	उ. ५.	२.	६.	१
एष गव्युरचिक्रदत्	उ. ५.	२.	६.	४
एष दिवं वि धावति	उ. ५.	२.	२.	७
एष दिवं व्यासरत्	उ. ५.	२.	२.	८
एष देवः शुभायते	उ. ५.	२.	५.	३
एष देवो अमर्त्यः	उ. ५.	२.	२.	१
एष देवो रथर्यति	उ. ५.	२.	२.	४
एष देवो विपन्युभिः	उ. ५.	२.	२.	५
एष देवो विपा कृतो	उ. ५.	२.	२.	६
एष धिया यात्यण्व्या	उ. ५.	२.	३.	१
एष नृभिर्वि नीयते	उ. ५.	२.	६.	३
एष पवित्रे अक्षरत्	उ. ५.	२.	५.	२
एष पुरू धियायते	उ. ५.	२.	३.	२
एष प्र कोशे मधुमाँ	पू. ६.	२.	७.	३
एष प्रत्नेन जन्मना	उ. १.	२.	१७.	१
	उ. ५.	२.	२.	९
एष प्रत्नेन मन्मना	उ. १.	२.	१७.	२
एष ब्रह्मा य ऋत्विय	पू. ५.	२.	६.	२
	उ. ९.	१.	२.	१
एष रुक्मिभिरीयते	उ. ५.	२.	३.	५
एष वसूनि पिब्दनः	उ. ५.	२.	३.	७
एष वाजी हितो नृभि	उ. ५.	२.	५.	१
एष विप्रैरभिष्टुतो	उ. ५.	२.	२.	२
एष विश्वानि वार्या	उ. ५.	२.	२.	३
एष वृषा कनिक्रदद्	उ. ५.	२.	५.	४
एष शुष्म्यदाभ्यः सोमः	उ. ५.	२.	६.	६
एष शुष्म्यसिष्यद	उ. ५.	२.	६.	५
एष शृङ्गाणि दोधुव	उ. ५.	२.	३.	६
एष सूर्यमरोचयन्	उ. ५.	२.	५.	५
एष सूर्येण हासते	उ. ५.	२.	५.	६
एष स्य ते मधुमाँ	पू. ६.	१.	४.	९
एष स्य धारया सुतो	पू. ६.	२.	९.	७
एष स्य पीतये सुतो	उ. ५.	२.	४.	५
एष स्य मद्यो रसो	उ. ५.	२.	४.	४
एष स्य मानुषीष्वा	उ. ५.	२.	४.	३
एष हितो वि नीयते	उ. ५.	२.	३.	४
एषो उषा अपूर्व्या	पू. २.	२.	९.	४
	उ. ८.	३.	७.	१
एह देवा मयोभुवा	उ. ८.	३.	९.	२
एह हरी ब्रह्मयुजा	उ. ८.	२.	१.	२
एह्यू षु ब्रवाणि तेग्न	पू. १.	१.	१.	७
	उ. १.	१.	२१.	१
ऐभिर्ददे वृष्ण्या	उ. ९.	१.	७.	३
ओजस्तदस्य तित्विष	पू. २.	२.	९.	८
	उ. ८.	१.	१३.	३
ओभे सुश्चन्द्र विश्पते	उ. ३.	२.	२१.	३
और्वभृगुवच्छुचिमप्न	पू. १.	१.	२.	८
क इमं नाहुषीष्वा	पू. २.	२.	१०.	६
क ईं वेद सुते सचा	पू. ४.	१.	१.	५
	उ. ८.	२.	१५.	१
क ईं व्यक्ता नरः	पू. ५.	१.	५.	७
कङ्काः सुपर्णा अनु	उ. ९.	३.	६.	१
कण्वा इन्द्रं यदक्रत	उ. ५.	२.	१०.	२
कण्वा इव भृगवः	उ. ६.	१.	६.	२
कण्वेभिर्धृष्णवा धृषद्	उ. २.	२.	१२.	३
कदा च न स्तरीरसि	पू. ४.	१.	१.	८
कदा मर्त्तमराधसं	उ. ५.	२.	२२.	३
कदा वसो स्तोत्रं	पू. ३.	१.	४.	६
कदु प्रचेतसे महे	पू. ३.	१.	४.	२
कनिक्रन्ति हरिरा	पू. ६.	१.	४.	८
कया ते अग्ने अङ्गिर	उ. ७.	२.	६.	१
कया त्वं न ऊत्याभि	उ. ७.	३.	७.	१
कया नश्चित्र आ भुव	पू. २.	२.	८.	५
	उ. १.	१.	१२.	१
कविमग्निमुप स्तुहि	पू. १.	१.	३.	१२
कविमिव प्रशंस्यं	उ. ५.	१.	१८.	२
कविर्वेधस्या पर्येषि	उ. ५.	२.	१३.	३

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कवी नो मित्रावरुणा	उ.	२.	२.	६. ३
कश्यपस्य स्वर्विदो	पू.	४.	२.	८. २
कस्त्वामिन्द्र त्वा वसवा	पू.	३.	२.	९.. ८
कस्त्वामिन्द्र त्वावसो	उ.	८.	२.	९.. १
कस्ते जामिर्जनानाम्ने	उ.	७.	२.	१. १
कस्त्वा सत्यो मदानां	उ.	१.	१.	१२. २
कस्य नूनं परीणसि	पू.	१.	१.	३. १४
काममानो वना त्वं	पू.	१.	१.	५.. ९
किमित्ते विष्णो परिचक्षि	उ.	८.	१.	४.. १
कुविन्नस्य प्र हि व्रजं	उ.	८.	२.	४.. ३
कुविन्नु नो गविष्टये	उ.	८.	१.	१२. २
कु ष्ठः को वामश्विना	पू.	४.	१.	२.. ३
कृण्वन्तो वरिवो गवे	उ.	२.	२.	१.. ३
कृष्णां यदेनीमभि	उ.	७.	२.	५.. २
कृतुं कृण्वं दिवस्परि	उ.	३.	२.	२.. २
कृतुं कृण्वन्नकर्तवे	उ.	६.	३.	१२. ३
को अद्य युङ्क्ते धुरि	पू.	४.	१.	५. १०
क्रत्वा महाँ अनुष्वधं	पू.	५.	१.	४.. ५
क्रीडुर्मनो न मंहयुः	उ.	३.	२.	४.. ७
क्षत्रस्य वृषभो युवा	पू.	२.	१.	५.. ८
क्षेत्रय क्षेत्रसि पुत्रका	पू.	३.	२.	८.. ९
क्षपो राजन्नुत त्मना	उ.	७.	२.	११. ३
ग्नाश्चौर्ववृधीरिव	उ.	८.	३.	३.. ३
गर्ने मातुः पितुष्पिता	उ.	६.	२.	७.. २
गव्यो षु णो यथा	पू.	२.	२.	१०. २
गायत्रं वैकुभं जगद्	उ.	९.	२.	७.. ३
गायन्ति त्वा गायत्रिणो	पू.	४.	२.	६.. १
	उ.	५.	२.	२३. १
गाव उप वदावटे	पू.	२.	१.	३.. ३
	उ.	७.	३.	१६. १
गावश्चिद्धा समन्यवः	पू.	५.	१.	२.. ६
गिरस्त इन्द्र ओजसा	उ.	४.	१.	३.. ७
गिरा वज्रो न सम्भृतः	उ.	५.	१.	१०.. ३
गिर्वणः पाहि नः सुतं	पू.	३.	१.	१.. २
गृणाना जमदग्निना	उ.	१.	१.	५.. ३
गृणे तदिन्द्र ते शव	पू.	५.	१.	१.. १
गोभिर्हि गोचिदं	उ.	९.	३.	२.. ३
गोमन्न इन्दो अश्ववत्	पू.	६.	२.	८.. ९
	उ.	७.	३.	२०.. १
गोचित्पतस्य वसुविदि	उ.	३.	२.	१.. १
गोत्रा इन्दो वृषा अस्य	उ.	४.	१.	३.. ९
गौर्यंयति मरुतां श्रवस्यु	पू.	२.	२.	६.. ५
घृतं पवस्व धारया	उ.	६.	३.	१.. ३
घृतवती भुवनानामभि	पू.	४.	२.	९.. ९
चक्रं यदस्यापव्या	पू.	४.	१.	४.. ९
चन्द्रमा अप्स्वान्तरा	पू.	५.	१.	३.. ९
चमूषच्छ्येनः शकुनो	उ.	५.	१.	१.. ३
चर्षणीधृतं मघवान	पू.	४.	२.	९.. ५
चित्रं देवानामुदगादनीकं	आ.			५.. ३
चित्र इच्छिशोस्तरुणस्य	पू.	१.	२.	७.. २
जुगृक्षा ते दक्षिणमिन्द्र	पू.	४.	१.	३.. ५
जमिर्नो त्रममित्रियं	उ.	२.	१.	१५.. २
जज्ञानः सप्त मातृभि	पू.	२.	१.	१.. ५
जज्ञानो वाचमिष्यसि	उ.	३.	२.	२.. ३
जनस्य गोपा अजनिष्ट	उ.	३.	१.	६.. १
जनीयन्तो न्वग्रवः	उ.	६.	३.	८.. १
जरावोध तद्विविड्ढि	पू.	१.	१.	२.. ५
	उ.	८.	२.	३.. १
जातः परेण धर्मणा	पू.	१.	२.	९. १०
जुष्ट इन्द्राय मत्सरः	उ.	५.	१.	३.. ८
जुष्टो हि दूतो असि	उ.	९.	१.	६.. २
ज्योतिर्यज्ञस्य पवते	उ.	४.	१.	१.. १
तं गाथया पुराण्या	उ.	८.	१.	६.. ३
तं गूर्धया स्वर्णरं	पू.	२.	१.	२.. ३
	उ.	८.	२.	११.. १
तं ते मदं गृणीमसि	पू.	४.	२.	१०.. ३
	उ.	२.	२.	१८.. १
तं ते यवं यथा गोभिः	उ.	१.	२.	८.. ३
तं त्वा गोपवनो गिरा	पू.	१.	१.	३.. ९
तं त्वा घृतस्नवीमहे	उ.	७.	१.	१३.. २
तं त्वा वर्त्तारमोण्योः	उ.	२.	१.	१०.. २
तं त्वा वृष्णानि बिभ्रतं	उ.	२.	२.	३.. १
तं त्वा मदाय वृष्णय	उ.	४.	१.	३.. ८
तं त्वा विप्रा वचोविदः	उ.	४.	१.	११.. २
तं त्वा शोचिष्ठ दीदिवः	उ.	४.	१.	२२.. ३
तं त्वा समिद्भिरङ्गिरो	उ.	१.	१.	४.. २
तं दुरोषमभी नरः	उ.	१.	१.	१८.. ३
तं वः सखायो मदाय	पू.	३.	२.	८.. ४
	उ.	४.	१.	१९.. १
तं वो दस्मवृतीषहं	पू.	३.	१.	५.. ४
	उ.	१.	१.	१३.. १
तं वो वाजानां पतिं	उ.	८.	२.	१०.. ३
तं सखायः पुरूरुचं	उ.	८.	२.	८.. २
तं हिन्वन्ति मदच्युतं	उ.	८.	३.	२.. ४
तं हि स्वराजं वृषभं	उ.	५.	१.	१४.. २
तं होतारमध्वरस्य	उ.	७.	१.	१०.. २
तक्षद्यदी मनसो	पू.	६.	१.	५.. ५
ततो विराडजायत	आ.			४.. ७
तत्ते यज्ञो अजायत	उ.	६.	२.	१९.. २
तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो	उ.	६.	३.	१०.. १
तदग्ने द्युम्नमा भर	पू.	२.	१.	२.. ७
तदद्या चित्त उक्थिनो	उ.	२.	२.	१८.. ३
तदिदास भुवनेषु	उ.	६.	३.	१७.. १
तद्विप्रासो विपन्युवो	उ.	८.	२.	५.. ५
तद्विष्णोः परमं पदं	उ.	८.	२.	५.. ४
तद्वो गाय सुते सचा	पू.	२.	१.	३.. १
	उ.	८.	२.	४.. १
तपोष्पवित्रं वितनं	उ.	२.	२.	१६.. २
तमग्निमस्ते वसवो	उ.	६.	१.	१०.. २
तमस्य मर्जयामसि	उ.	८.	१.	६.. २
तमिद्वर्द्धन्तु नो गिरो	उ.	५.	२.	२०.. २
तमिन्द्रं जोहवीमि	पू.	५.	२.	८.. ४
तमिन्द्रं वाजयामसि	पू.	२.	१.	३.. ५
	उ.	५.	१.	१०.. १
तमीडिष्व यो अर्चिषा	उ.	४.	२.	६.. १
तमु अभि प्र गायत	पू.	४.	२.	१०.. २
तमु त्वा नूनमसुर	उ.	६.	२.	१२.. २
तमु ष्टवाम यं गिर	उ.	२.	२.	१९.. ३
तमु हुवे वाजसातय	उ.	१.	२.	१२.. ३
तमोषधीर्दधिरे गर्भं	उ.	९.	२.	३.. १
तया पवस्व धारया	उ.	६.	३.	१.. २
तरणिं वो जनानां	पू.	३.	१.	२.. १
तरणिरित्सिषासति	पू.	३.	१.	५.. ६
	उ.	२.	२.	१३.. १
तरणिर्विश्वदर्शतो	आ.			५.. ९
तरत्स मन्दी धावति	पू.	६.	१.	२.. ४
	उ.	४.	१.	५.. १
तरत्समुद्रं पवमान	उ.	२.	२.	९.. २
तरोभिर्वो विदद्वसुं	पू.	३.	१.	५.. ५
	उ.	१.	१.	१४.. १
तव क्रत्वा तवोतिभि	उ.	४.	१.	४.. ६
तव त्य इन्दो अन्धसो	उ.	५.	१.	११.. २
तव त्यदिन्द्रियं बृहत्	उ.	८.	१.	११.. १
तव त्यन्नर्यं नृतोप	पू.	५.	२.	८. १०
तव द्यौरिन्द्र पौंस्यं	उ.	८.	१.	११.. २
तव द्रप्सा उदप्रुत	उ.	५.	२.	१७.. २
तव द्रप्सो नीलवान्	उ.	९..	२.	२.. २
तव श्रियो वर्ष्यस्येव	उ.	३.	२.	७.. १
तवाहं नक्तमुत सोम	उ.	३.	१.	११.. २
तवाहं सोम रारण	पू.	६.	१.	३.. ६
	उ.	३.	१.	११.. १
तवेदिन्द्रावमं वसु	पू.	३.	२.	८.. ८
तस्मा अरं गमाम वो	उ.	९..	२.	१०.. ३
ता अस्य नमसा सहः	उ.	३.	२.	१५.. ३
ता अस्य पृशनायुवः	उ.	३.	२.	१५.. २
ता नः शक्तं पार्थिवस्य	उ.	४.	२.	४.. ३
	उ.	६.	३.	११.. १
ता नो वाजवतीरिष	उ.	४.	२.	६.. ३
ताभिरा गच्छतं नरो	उ.	३.	२.	१०.. ३
ता वां गीर्भिर्विपन्युवः	उ.	२.	१.	९.. ३
ता वां सम्यगुद्यतीषु	उ.	३.	२.	८.. २
तावानस्य महिमा	आ.			४.. ६
तः सम्राजा घृतासुती	उ.	३.	१.	७.. ३
ता हि शश्वन्त ईडत	उ.	२.	१.	९.. २
ता हुवे ययोरिदं	उ.	२.	२.	८.. १
तिस्रो वाच ईरयति	पू.	६.	१.	४.. ३
	उ.	२.	२.	१०.. १
तिस्रो वाच उदीरते	पू.	५.	२.	९.. ५
	उ.	२.	२.	१४.. १
तुचे तुनाय तत्सु नो	पू.	५.	१.	१.. ५
तुभ्यं सुतासः सोमा	पू.	३.	१.	२.. १०
तुभ्येमा भुवना कवे	उ.	२.	१.	१.. ३
तुरण्यवो मधुमन्तं	उ.	७.	३.	१९.. २
तुविशुष्म तुविक्रतो	उ.	९.	१.	३.. २
ते अस्य सन्तु केतवो	उ.	६.	२.	१७.. ३
ते जानत स्वमोक्यां	उ.	६.	३.	१६.. २
ते नः सहस्रिणं रयिं	उ.	५.	१.	३.. ६
ते नो वृष्टिं दिवस्परि	उ.	४.	२.	११.. ३
ते पूतासो विपश्चितः	उ.	४.	१.	२०.. २
ते मन्वत प्रथमं नाम	आ.			३.. ५

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ते विश्वा दाशुषे वसु	उ. ४.	१.	२.	३
ते सुतासो विपश्चितः	उ. ९.	१.	१७.	२
ते स्याम देव वरुण	उ. ४.	१.	८.	३
तोशा वृत्रहणा हुवे	उ. ८.	२.	१७.	१
तोशासा रथयावाना	उ. ४.	१.	१०.	२
त्यं सु मेषं महया	पू. ४.	२.	९.	८
त्यमु वः सत्रासाहं	पू. २.	२.	८.	६
	उ. ८.	१.	१०.	१
त्यमु वो अप्रहणं	पू. ४.	२.	७.	६
त्यमू षु वाजिनं देवजूतं	पू. ४.	१.	५.	१
त्रातारमिन्द्रमवितार	पू. ४.	१.	५.	२
त्रिंशद्धाम वि राजति	आ.		५.	६
	उ. ६.	१.	११.	३
त्रिकद्रुकेषु चेतनं	उ. १.	२.	४.	३
त्रिकद्रुकेषु महिषो	पू. ५.	२.	८.	१
	उ. ६.	३.	१८.	१
त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुषः	आ.		४.	४
त्रिरस्मै सप्त धेनवो	पू. ६.	२.	७.	७
	उ. ६.	२.	१७.	१
त्रीणि त्रितस्य धारया	उ. ३.	२.	१८.	३
त्रीणि पदा वि चक्रमे	उ. ८.	२.	५.	२
त्वं जामिर्जनानामग्ने	उ. ७.	२.	१.	२
त्वं दाता प्रथमो राध	उ. ७.	१.	२.	२
त्वं द्यां च महिव्रत	उ. ३.	२.	१९.	३
त्वं न इन्द्र वाजयु	उ. १.	२.	२.	३
त्वं न इन्द्रा भर	पू. ५.	१.	२.	७
	उ. ४.	२.	१३.	१
त्वं नश्चित्र ऊत्या	पू. १.	१.	४.	७
	उ. ८.	१.	३.	१
त्वं नृचक्षा असि सोम	उ. ३.	२.	१.	२
त्वं नो अग्ने अग्निभि	उ. ७.	१.	६.	३
त्वं नो अग्ने महोभिः	पू. १.	१.	१.	६
त्वं पुरू सहस्राणि	उ. ७.	३.	४.	२
त्वं बलस्य गोमतो	उ. ५.	१.	२०.	२
त्वं यविष्ठ दाशुषो	उ. ५.	१.	१८.	३
त्वं राजेव सुव्रतो	उ. ३.	२.	४.	५
त्वं वरुण उत मित्रो	उ. ५.	२.	९.	३
त्वं विप्रस्त्वं कविर्मधु	उ. ४.	१.	१७.	२
त्वं समुद्रिया अपो	उ. २.	१.	१.	२
त्वं सिन्धूँरवासृजो	उ. ९.	१.	१४.	२
त्वं सुतो मदिन्तमो	उ. ५.	२.	१६.	२
त्वं सुष्वाणो अद्रिभि	उ. ५.	२.	१६.	३
त्वं सूर्ये न आ भज	उ. ४.	१.	४.	५
त्वं सोम नृमादनः	उ. ३.	२.	३.	५
त्वं सोम परि स्रव	उ. ३.	२.	६.	३
त्वं सोमासि धारयु	उ. ५.	२.	१६.	१
त्वं ह त्यत्पणीनां विदो	उ. ७.	३.	१०.	३
त्वं ह त्यत्सप्तभ्यो	पू. ४.	१.	४.	४
त्वं हि क्षैतवद्यशो	पू. १.	२.	९.	४
त्वं हि नः पिता वसो	उ. ४.	२.	१३.	२
त्वं हि राधसस्पते	उ. ५.	२.	१५.	२
त्वं हि वृत्रहन्नेषां	उ. ९.	१.	१०.	३
त्वं हि शश्वतीनामिन्द्र	उ. ५.	१.	१९.	३
त्वं हि शूरः सनिता	उ. ६.	२.	२०.	३
त्वं ह्याङ्ग दैव्य पवमान	पू. ६.	२.	९.	६
	उ. ३.	१.	१७.	१
त्वं ह्येहि चेरवे विदा	पू. ३.	१.	५.	८
	उ. ७.	३.	४.	१
त्वमग्ने गृहपतिस्त्वं	पू. १.	२.	६.	७
त्वमग्ने यज्ञानां होता	पू. १.	१.	१.	२
	उ. ६.	३.	१४.	१
त्वमग्ने वसूँरिह रुद्राँ	पू. १.	२.	१०.	६
त्वमग्ने सप्रथा असि	उ. ६.	२.	१०.	३
त्वमङ्ग प्र शंसिषो	पू. ३.	२.	६.	५
	उ. ८.	३.	५.	१
त्वमित्सप्रथा अस्यग्ने	पू. १.	१.	४.	८
त्वमिन्द्र प्रतूर्तिष्वभि	पू. ४.	१.	२.	९
	उ. ८.	१.	८.	१
त्वमिन्द्र बलादधि	पू. २.	१.	३.	६
त्वमिन्द्र यशा अस्यृजीषी	पू. ३.	२.	६.	६
	उ. ६.	२.	१२.	१
त्वमिन्द्राभिभूरसि	उ. ३.	२.	२२.	२
त्वमिमा ओषधीः सोम	आ.		३.	३
त्वमीशिषे सुतानामिन्द्र	उ. ६.	१.	३.	३
त्वमेतदधारयः कृष्णासु	आ.		२.	१
त्वया वयं पवमानेन	आ.		१.	५
त्वया ह स्विद्युजा वयं	पू. ५.	१.	२.	५
त्वष्टा नो दैव्यं वचः	पू. ४.	१.	१.	७
त्वां दूतमग्ने अमृतं	उ. ७.	२.	१३.	२
त्वां यज्ञैरवीवृधन्	उ. ४.	१.	४.	९
त्वां रिहन्ति धीतयो	उ. ३.	२.	१९.	२
त्वां विश्वे अमृत	उ. ४.	२.	३.	२
त्वां विष्णुर्बृहन्क्षयो	उ. ८.	१.	११.	३
त्वां शुष्मिन्पुरुहूत	उ. ४.	२.	१३.	३
त्वामग्ने अङ्गिरसो गुहा	उ. ३.	१.	६.	२
त्वामग्ने पुष्करादध्यथर्वा	पू. १.	१.	१.	९
त्वामिच्छवसस्पते	उ. ९.	१.	२.	२
त्वामिदा ह्यो नरोपी	पू. ४.	१.	१.	१०
	उ. २.	१.	१४.	१
त्वामिद्धि हवामहे	पू. ३.	१.	५.	२
	उ. २.	१.	१२.	१
त्वावतः पुरूवसो	पू. २.	२.	१०.	९
त्वे अग्ने स्वाहुत	पू. १.	१.	४.	४
त्वे क्रतुमपि वृञ्जन्ति	उ. ६.	३.	१७.	३
त्वे विश्वे सजोषसो	उ. ४.	१.	१७.	३
त्वेषस्ते धूम ऋण्वति	पू. १.	२.	९.	३
त्वे सोम प्रथमा वृक्त	उ. ७.	१.	७.	१
दुधन्वे वा यदीमनु	पू. १.	२.	१०.	४
दधिक्राव्णो अकारिषं	पू. ४.	२.	७.	७
दविद्युतत्या रुचा	उ. १.	१.	२.	१
दाना मृगो न वारणः	उ. ८.	२.	१५.	२
दाशेम कस्य मनसा	उ. ७.	२.	६.	२
दिवः पीयूषमुत्तमं	उ. ५.	१.	११.	३
दिवो धर्त्तासि शुक्रः	उ. ५.	१.	१७.	३
दिवो नाभा विचक्षणो	उ. ५.	१.	४.	४
दीर्घं ह्यङ्कुशं यथा	उ. ४.	१.	१६.	२
दुहानः प्रत्नमित्पयः	उ. १.	२.	१७.	३
दुहान ऊधर्दिव्यं	उ. १.	१.	९.	२
दूतं वो विश्ववेदसं	पू. १.	१.	२.	२
दूरादिहेव यत्सतो	पू. ३.	१.	३.	६
देवानामिदवो महत्	पू. २.	१.	५.	४
देवेभ्यस्त्वा मदाय कं	उ. ५.	१.	२.	५
देवो वो द्रविणोदाः	पू. १.	२.	६.	१
	उ. ७.	१.	१०.	१
दोषो आगाद्बृहद्गाय	पू. २.	२.	९.	३
द्युक्षं सुदानुं तविषीभि	उ. १.	१.	१३.	२
द्रप्सः समुद्रमभि	उ. ९.	२.	१३.	३
द्विता यो वृत्रहन्तमो	उ. ९.	१.	१०.	२
द्विर्यं पञ्च स्वयशसं	उ. ५.	२.	१८.	२
धर्ता दिवः पवते	पू. ६.	२.	७.	५
	उ. ५.	१.	१२.	१
धानावन्तं करम्भिण	पू. ३.	१.	२.	७
धिया चक्रे वरेण्यो	उ. ६.	३.	१५.	३
धीभिर्मृजन्ति वाजिनं	उ. ३.	१.	१८.	२
धेनुष्ट इन्द्र सूनृता	उ. ९.	२.	९.	३
ध्वस्रयोः पुरुषन्त्योरा	उ. ४.	१.	५.	३
न कि इन्द्र त्वदुत्तरं	पू. ३.	१.	१.	१०
न कि देवा इनीमसि	पू. २.	२.	९.	२
न किरस्य सहन्त्य	उ. ६.	२.	१४.	२
न किष्टं कर्मणा नशद्	पू. ३.	२.	६.	१
	उ. ४.	२.	८.	१
न किष्ट्वद्रयीतरो हरी	उ. ३.	१.	२१.	२
न की रेवन्तं सख्याय	उ. ६.	२.	४.	२
न घा वसुनिं यमते	उ. ८.	२.	४.	२
न घेमन्यदा पपन	उ. १.	२.	३.	२
न तमंहो न दुरितं	पू. ५.	१.	४.	८
न तस्य मायया च	पू. २.	१.	१.	८
न ते गिरो अपि मृष्ये	उ. ९.	१.	१३.	२
न त्वा बृहन्तो अद्रयो	पू. ४.	१.	१.	४
न त्वावाँ अन्यो दिव्यो	उ. १.	१.	११.	२
न त्वा शतं च न हुतो	उ. ५.	१.	७.	३
नदं व ओदतीनां	उ. ७.	१.	९.	१
न दुष्टुतिर्द्रविणोदेषु	उ. २.	२.	१३.	२
नमः सखिभ्यः पूर्वसद्भ्यो	उ. ९.	२.	७.	१
नमसेदुप सीदत	उ. ६.	३.	३.	३
नमस्ते अग्न ओजसे	पू. १.	१.	२.	१
	उ. ८.	१.	१२.	१
न यं दुध्रा वरन्ते	उ. १.	१.	१४.	२
नराशंसमिह प्रिय	उ. ६.	१.	१.	३
नव यो नवतिं पुरो	उ. ६.	३.	४.	२
न संस्कृतं प्र मिमीतो	उ. ८.	३.	१५.	२
न सीमदेव आप तदिषं	पू. ३.	२.	८.	६
न हि ते पूर्तमक्षिपद्	उ. १.	१.	२१.	३
न हि त्वा शूर देवा	उ. १.	२.	६.	३
न हि वश्चरमं च न	पू. ३.	१.	५.	९
न ह्यांग पुरा चन	उ. ७.	१.	८.	३
नाके सुपर्णमुप यत्	पू. ४.	१.	३.	८
	उ. ९.	२.	१३.	१

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नाभा नाभिं न आ ददे उ. ४. २. १. ११
नाभिं यज्ञानां सदनं उ. ४. २. ३. ३
नित्यस्तोत्रो वनस्पतिः उ. ५. १. ४. ७
नि त्वा नक्ष्य विश्पते पू. १. १. ३. ६
नि त्वामग्ने मनुर्दधे पू. १. १. ५. १०
नियुत्वान्वायवा गहि आ. २. ६
नीच शीर्षाणि मृदुं उ. ८. १. १४. ३
नूनं पुनानोविदिभिः उ. ५. २. १२. २
नू नो रयिं महामिन्दो उ. ३. १. १२. ३
नृचक्षसं त्वा वयमिन्द्र उ. ५. १. २. ८
नृभिर्धौतः सुतो अश्नै उ. १. २. ८. २
नृभिर्यमाणो हर्यतो उ. २. २. ९. ३
नेमिं नमन्ति चक्षसा उ. ३. १. १४. २
पृदं देवस्य मीढुषो उ. ७. २. १४. ३
पदा पणीनराधसो उ. ६. १. ३. २
पन्यंपन्यमित्सोताऽ पू. २. १. ३. ९
उ. ८. २. १. १
पन्यांसं जातवेदसं उ. ७. २. १२. ३
परि कोशं मधुश्चुतं पू. ६. २. ८. १२
परि त्यं हर्यतं हरिं पू. ६. २. ६. ८
उ. ५. २. १८. १
उ. ८. २. ८. ३
परि द्युक्षं सनद्रयिं पू. ६. १. १. १०
परि नः शर्मयन्त्या उ. ३. १. ३. ६
परि नो अश्वमश्वविद् उ. ५. १. ६. ३
परि प्र धन्वेन्द्राय पू. ५. १. ५. १
उ. ६. १. ८. १
परि प्रासिष्यदत्कविः पू. ५. २. १०. १०
परि प्रिया दिवः कविः पू. ५. २. ९. १०
उ. ३. १. १६. १
परि बल्काव्या कविः उ. ४. २. २. ४
परि बाजपतिः कविः पू. १. १. ३. १०
परि विश्वानि चेतसा उ. ३. २. ४. ३
परिष्कृण्वन्निष्कृतं उ. ३. १. ४. २
परि स्य स्वानो अक्षरत् उ. ५. १. १६. ३
परि स्वानश्चक्षसे उ. ५. २. १२. ३
परि स्वानास इन्दवो पू. ५. २. १०. ९
उ. ४. २. १. ७
परि स्वानो गिरिष्ठाः पू. ५. २. ९. ९
उ. ४. १. १७. १
परीतो षिञ्चता सुतं पू. ६. १. ३. २
उ. ५. २. १२. १
पर्जन्यः पिता महिषस्य उ. ५. २. १३. २
पर्षू षु प्र धन्व पू. ५. १. ५. २
उ. ६. १. ७. १
पर्षि तोकं तनयं उ. ८. १. ३. २
पवते हर्यतो हरिः उ. १. २. २२. २
पवते हर्यतो हरिरति पू. ६. २. ८. ११
पवन्ते वाजसातये उ. ५. १. ३. ३
पवमान धिया हितो उ. ३. १. १०. ३
पवमान नि तोशसे उ. ५. १. १५. २
पवमानमवस्यवो उ. ५. १. ३. २
पवमान रसस्तव उ. ३. १. २. २
पवमान रुचारुचा उ. ३. १. ५. २
पवमान व्यश्नुहि उ. ५. २. ११. ३
पवमान सुवीर्यं रयिं उ. ६. ३. ३. ६
पवमानस्य जिघ्नतो उ. ५. २. ११. १
पवमानस्य ते कवे उ. १. १. ३. १
पवमानस्य ते रसो उ. ३. १. २. ३
पवमानस्य ते वयं उ. २. १. ५. १
पवमानस्य विश्ववित् उ. ३. २. २. १
पवमाना असृक्षत पवित्र पू. ६. १. ३. १२
पवमाना असृक्षत सोमाः उ. ८. २. १६. १
पवमाना दिवस्पर्यन्त उ. ८. २. १६. २
पवमानास आशवः उ. ८. २. १६. ३
पवमानो अजीजनद् पू. ५. २. १०. ८
उ. ३. १. २. १
पवमानो अभि स्पृधो उ. ४. २. २. ५
पवमानो असिष्यदद् उ. ६. ३. १. ५
पवमानो रथीतमः उ. ५. २. ११. २
पवस्व दक्षसाधनो पू. ५. २. ९. ८
उ. ३. १. १०. १
पवस्व देव आयुषगिन्द्रं पू. ५. २. १०. ७
उ. ५. १. १५. १
पवस्व देववीतय पू. ६. २. ८. ६
उ. ५. २. १७. १
पवस्व देवीरति उ. ४. १. ३. १
पवस्व मधुमत्तम पू. ६. २. ९. १
उ. १. १. १६. १
पवस्व वाचो अग्रियः उ. २. १. १. १
पवस्व वाजसातमो पू. ६. १. ३. ११
पवस्व वाजसातये उ. ३. २. १९. १
पवस्व विश्वचर्षण उ. ३. १. ३. ५
पवस्व वृत्रहन्तम उ. ३. २. ३. ६
पवस्व वृष्टिमा सु उ. ६. ३. १. १
पवस्व सोम द्युम्नी पू. ५. १. ५. १०
पवस्व सोम मधुमाँ पू. ६. १. ४. १०
पवस्व सोम मन्दयन् उ. ९. १. १७. १
पवस्व सोम महान् पू. ५. १. ५. ३
उ. ५. १. १७. १
पवस्व सोम महे दक्षा पू. ५. १. ५. ४
उ. ५. २. १९. १
पवस्वेन्दो वृषा सुतः पू. ५. २. १०. ३
उ. २. १. २. १
पवित्रं ते विततं पू. ६. २. ७. १२
उ. २. २. १६. १
पवीतारः पुनीतन उ. ४. १. ४. ४
पातं नो मित्रा पायुभि उ. ३. २. ८. ३
पाता वृत्रहा सुतमा उ. ८. २. १. ३
पात्यग्निर्विपो अग्रं आ. ३. १३
पान्तमा वो अन्धस पू. २. २. ७. १
उ. १. २. १. १
पावकवर्चाः शुक्रवर्चा उ. ९. २. १. २
पावका नः सरस्वती पू. २. २. १०. ५
पावमानीः स्वस्त्ययनीः उ. ५. २. ८. ३
पावमानीः स्वस्त्ययनी उ. ५. २. ८. ६
पावमानीर्दधन्तु न उ. ५. २. ८. ४
पावमानीर्यो अध्येत्यृषिभिः उ. ५. २. ८. २
पाहि गा अन्धसो मद पू. ३. २. १०. ७
पाहि नो अग्न एकया पू. १. १. ४. २
उ. ७. २. ४. १
पाहि विश्वस्माद्रक्षसो उ. ७. २. ४. २
पिबन्ति मित्रो अर्यमा उ. ९. १. ८. २
पिबा त्वास्य गिर्वणः उ. ६. २. ५. ३
पिबा सुतस्य रसिनो पू. ३. १. ५. ७
उ. ६. २. १६. १
पिबा सोममिन्द्र मन्दतु पू. ५. १. १. ८
उ. ३. १. १३. १
पुनर्ऊर्जा नि वर्तस्व उ. ९. २. ८. २
पुनाता दक्षसाधनं उ. ४. २. ९. ३
पुनानः कलशेष्वा उ. ५. १. २. ६
पुनानः सोम आयुषि पू. ६. १. ३. ९
पुनानः सोम धारयापो पू. ६. १. ३. १
उ. १. १. ९. १
पुनानासश्चमूषदो उ. ५. १. २. २
पुनाने तन्वा मिथः उ. ७. ३. १४. २
पुनानो अक्रमीदभि पू. ६. १. १. २
उ. ३. १. १२. १
पुनानो देववीतय उ. २. २. ४. ३
पुनानो वरिवस्कृध्यूर्जं उ. २. २. ४. २
पुनानो वारे पवमानो उ. ४. १. १२. २
पुरः सद्य इत्थाधिये उ. ५. १. ६. २
पुरां भिन्दुर्युवा कविः पू. ४. २. ७. ८
उ. ५. १. २०. १
पुरुत्रा हि सदङ्ङसि उ. ४. २. १२. २
पुरु त्वा दाशिवाँ वोचे पू. २. १. १. १
पुरुष एवेदं सर्वं आ. ४. ५
पुरुहूतं पुरुष्टुतं उ. १. २. १. २
पुरुतमं पुरूणामीशानं उ. १. २. १०. २
पुरूरुणा चिद्ध्यस्त्यवो उ. ३. २. ८. १
पुरोजिती वो अन्धसः पू. ६. २. ६. १
उ. १. १. १८. १
पूर्वस्य यत्ते अद्रिवो म. ८
पूर्वीरिन्द्रस्य रातयो उ. २. १. १९. ३
पौरो अश्वस्य पुरुकृद् उ. ७. ३. ३. २
प्र कविर्देववीतये उ. ३. २. ४. १
प्र काव्यमुशनेव ब्रुवाणे पू. ६. १. ४. २
उ. ४. २. १. १
प्र केतुना बृहता पू. १. २. ७. ९
प्रक्षस्य वृष्णो अरुषस्य आ. ३. ८
प्र गायताभ्यर्चाम पू. ६. १. ५. ३
प्रजामृतस्य पिप्रतः उ. ५. २. १०. ३
प्र त आश्विनीः पवमान उ. ३. १. १. १
प्र तत्ते अद्य शिपिविष्ट उ. ८. १. ४. २
प्रति त्यं चारुमध्वरं पू. १. १. २. ६
प्रति प्रियतमं रथं पू. ५. १. ३. १०
उ. ८. ३. १२. १
प्रति वां सूर उदिते उ. ४. १. ८. १

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्रति ष्या सूनरी जनी उ. ८. ३. ६. १
प्र तु द्रव परि कोशं पू. ६. १. ४. १
उ. १. १. १०. १
प्र ते अश्नोतु कुक्ष्योः उ. १. २. ९. ३
प्र ते धारा असश्चतो उ. ८. ३. १८. १
प्र ते धारा मधुमती पू. ६. १. ५. २
प्र ते सोतारो रसं उ. ५. २. १९. २
प्रत्नं पीयूषं पूर्व्यं उ. ७. १. ३. १
प्रत्यग्ने हरसा हरः पू. १. २. १०. ५
प्रत्यङ् देवानां विशः आ. ५. १०
प्रत्यस्मै पिपीषते पू. ४. २. ७. १
उ. ६. ३. २. १
प्रत्यु अदर्श्यायत्यूच्छन्ती पू. ४. १. २. १
उ. १. २. १४. १
प्रयश्च यस्य सप्रयश्च आ. २. ५
प्र देवमच्छा मधुमन्त पू. ६. २. ७. १०
प्र दैवोदासो अग्निः उ. ७. १. ११. ३
प्र दैवोदासो अग्निर्देव पू. १. १. ५. ७
प्र धन्वा सोम जागृवि पू. ६. २. ८. २
प्र धारा मधो अग्रियो उ. ४. २. २. २
प्र न इन्दो महे तु न पू. ६. १. २. १३
प्र पवमान धन्वसि उ. ३. २. ३. ३
प्र पुनानाय वेधसे पू. ६. २. ८. ८
प्रप्र क्षयाय पन्यसे उ. ३. १. १६. ३
प्रप्र वस्त्रिष्टुभमिषं पू. ४. २. ८. १
प्रभङ्गी शूरो मघवा उ. ६. ३. ७. २
प्र भूर्जयन्तं महां पू. १. २. ८. २
प्रभो जनस्य वृत्रहन् म. ९
प्र मंहिष्ठाय गायत पू. २. १. २. १
उ. २. २. १७. १
प्र मन्दिने पितुमदर्चता पू. ४. २. ९. ११
प्र मित्राय प्रार्यम्णे पू. ३. २. ७. ३
प्र यद्गावो न भूर्णय पू. ६. १. १. ५
उ. ३. १. ३. १
प्र युजा वाचो अग्रियो उ. ४. २. २. ३
प्र यो राये निनीषति पू. १. २. ६. ४
प्र यो रिरिक्ष ओजसा पू. ४. १. २. १०
प्र व इन्द्राय बृहते पू. ३. २. ७. ५
प्र व इन्द्राय मादनं पू. २. २. ७. २
उ. १. २. २. १
प्र व इन्द्राय बृहन्तमाय पू. ५. २. ६. १०
उ. ४. १. २४. १
प्र वां महि द्यवी उ. ७. ३. १४. १
प्र वाचमिन्दुरिष्यति पू. ५. १. ४. ६
प्र वाज्यक्षाः सहस्रधार उ. ४. २. १०. १
प्र वामर्चन्त्युक्थिनः उ. ८. २. १७. २
प्र वामर्चन्त्युक्थिनो उ. ७. ३. २. १
प्र वो धियो मन्द्रयुवो उ. ४. २. ७. २
प्र वो महे मतयो पू. ५. २. ८. ६
प्र वो महे महेवृधे पू. ४. १. ४. ६
उ. ९. १. ११. १
प्र वो मित्राय गायत उ. ४. २. ४. १
प्र वो यहं पुरूणां पू. १. २. ६. ५
प्र सम्राजं चर्षणी पू. २. १. ५. १०
प्र सम्राजमसुरस्य पू. १. २. ८. ६
प्र स विश्वेभिरग्निभि उ. ७. १. ६. २
प्रसवे त उदीरते उ. ५. १. ५. २
प्र सुन्वानायान्धसः उ. १. २. २२. ३
प्र सुन्वानायान्धसो पू. ६. २. ६. ९
उ. ६. २. ३. १
प्र सेनानीः शूरो अग्रे पू. ६. १. ५. १
प्र सो अग्ने ततवीतिभिः पू. २. १. २. २
उ. ९. २. २. १
प्र सोम देववीतये पू. ६. १. ३. ४
उ. १. २. २०. १
प्र सोम याहीन्द्रस्य उ. ४. २. १०. ३
प्र सोमासो अधन्विषुः उ. ३. २. ३. १
प्र सोमासो मदच्युतः पू. ५. २. १०. १
उ. १. २. २१. १
प्र सोमासो विपश्चितो पू. ५. २. १०. २
उ. १. २. १९. १
प्र स्वानासो रथा उ. ४. २. १. ४
प्र हंसासस्तृपळा उ. ४. २. १. २
प्र हिन्वानो जनिता पू. ६. १. ५. ४
प्र होता जातो महान् पू. १. २. ८. ५
प्र होत्रे पूर्व्यं वचो पू. २. १. १. २
प्राचीमनु प्रदिशं उ. ७. ३. १०. २
प्राणा शिशुर्महीनां पू. ६. २. ८. ५
उ. ३. २. १८. १
प्रातरग्निः पुरुप्रियो पू. १. २. ९. ५
प्राचीविपद्वाच ऊर्मिं उ. ३. १. १९. ३
प्रास्य धारा अक्षरन् उ. ९. १. १. १
प्रियो नो अस्तु विश्पति उ. ८. १. १. ३
प्रेता जयता नर इन्द्रो उ. ९. ३. ५. २
प्रेद्धो अग्ने दीदिहि उ. ६. १. १०. ३
प्रेष्ठं वो अतिथिं स्तुषे पू. १. १. १. ५
उ. ५. १. १८. १
प्रेष्ठभीहि धृष्णुहि पू. ५. १. ३. ५
प्रैतु ब्रह्मणस्पतिः पू. १. २. ६. २
प्रो अयासीदिन्दु पू. ६. २. ७. ४
उ. ४. २. ७. १
प्रोथदश्वो न यवसे उ. ५. १. ९. २
प्रो ष्वस्मै पुरोरथं उ. ९. १. १४. १
बृट् सूर्य श्रवसा महाँ पू. ३. २. ९. ४
बण्महाँ असि सूर्य उ. ९. १. ९. १
बभ्रवे नु स्वतवसे उ. ६. ३. ३. १
बलविज्ञायः स्थविरः उ. ९. ३. २. २
बृहदुक्थं हवामहे पू. ३. १. ३. ४
बृहदिन्द्राय गायत पू. ३. २. ७. ६
बृहद्भिरग्ने अर्चिभिः पू. १. १. ४. ३
बृहद्वयो हि भानवे पू. १. २. ९. ८
बृहच्चिदिध्म एषां उ. ५. २. २१. २
बृहस्पते परि दीया उ. ९. ३. २. १
बोधन्मना इदस्तु नो पू. २. १. ५. ६
बोधा सु मे मघवन् उ. ३. १. १३. ३
ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पू. ४. १. ३. ९
ब्रह्म प्रजावद्रा भर उ. ६. २. ७. ३
ब्रह्माण इन्द्रं महयन्तो पू. ५. २. ६. ३
ब्रह्माणस्त्वा युजा वयं उ. १. १. ६. ३
ब्रह्मा देवानां पदवीः उ. ३. १. १९. २
ब्राह्मणादिन्द्र राधसः पू. ३. १. ४. ७
भृगो न चित्रो अग्नि पू. ५. २. ७. ३
भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम उ. ९. ३. ९. २
भद्रं नो अपि वातय पू. ५. १. ४. ४
भद्रंभद्रं न आ भरे पू. २. २. ८. ९
भद्रं मनः कृणुष्व उ. ७. २. १०. २
भद्रा वस्त्रा समन्या उ. ६. २. ८. २
भद्रो नो अग्निराहुतो पू. २. १. २. ५
उ. ७. २. १०. १
भद्रो भद्रया सचमान उ. ७. २. ५. ३
भरामेध्मं कृणवामा उ. ४. १. ७. २
भिन्धि विश्वा अप पू. २. १. ४. १०
पू. ४. १. ९. १
भूयाम ते सुमतौ उ. ६. २. १६. २
भूरि हि ते सवना उ. ९. १. १३. ३
भ्राजन्नग्ने समिधान आ. ४. १
मघोनः स्म वृत्रहत्येषु उ. ८. २. ९. २
मघोन आ पवस्व नो उ. ५. १. २. ७
मत्सि वायुमिष्टये उ. ५. २. १. २
मत्स्वपायि ते मह उ. ६. २. २०. १
मत्स्वा सुशिप्रिन्हरिव उ. २. १. १४. २
मदच्युत्क्षेति सादने उ. ५. १. ४. ३
मधुमन्तं तनूनपाद् उ. ६. १. १. २
मनीषिभिः पवते उ. २. १. १७. २
मन्दन्तु त्वा मघवन् उ. ८. ३. ४. २
मन्द्रं होतारमृत्विजं उ. ७. २. ३. ३
मन्द्रया सोम धारया पू. ६. १. २. १०
मन्ये वां द्यावापृथिवी आ. ४. ८
मयि वर्चो अथो यशो आ. ३. १
मर्माणि ते वर्मणा उ. ९. ३. ८. १
महत्तत्सोमो महिष पू. ६. १. ५. १०
उ. ५. २. १. ३
महाँ इन्द्रः पुरश्च नो पू. २. २. ८. २
महाँ इन्द्रो य ओजसा उ. ५. २. १०. १
महान्तं त्वा महीरन्वापो उ. ४. १. ३. ४
महि त्रीणामवरस्तु पू. २. २. १०. ८
मही मित्रस्य साधथ उ. ७. ३. १४. ३
महीमे अस्य वृष्ण उ. ४. १. २१. ३
महे च न त्वाद्रिवः पू. ३. २. १०. ९
महे नो अद्य बोधयोषो पू. ५. १. ४. ३
उ. ८. ३. ११. १
महो नो राय आ भर उ. ५. १. ७. २
मा चिदन्यद्वि शंसत पू. ३. १. ५. १०
उ. ६. १. ५. १
मा ते राधांसि मा त उ. ८. ३. ५. २
मा त्वा मूरा अविष्यवो उ. १. २. ७. २
मा न इन्द्र परा वृणग् पू. ३. २. ७. ८
मा न इन्द्र पीयत्नवे उ. ९. १. १५. ३
मा न इन्द्राभ्या दिशः पू. २. १. ४. ४

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मा नो अग्ने महावधे उ. ८. १. १२. ३
मा नो अज्ञाता वृजना उ. ६. ३. ६. २
मा नो हृणीया अतिथिं पू. २. १. २. ४
मा पापत्वाय नो नरे उ. ३. १. ९. ३
मा भेम मा श्रमिष्मो उ. ७. ३. १७. १
मित्रं वयं हवामहे उ. २. १. ७. १
मित्रं हुवे पूतदक्षं उ. २. २. ६. १
मूर्द्धानं दिवो अरतिं पू. १. २. ७. ५
उ. ४. २. ३. १
मृगो न भीमः कुचरो उ. ९. ३. ९. १
मृजन्ति त्वा दश क्षिपो उ. ५. १. २. ४
मृज्यमानः सुहस्त्या पू. ६. १. ३. ७
उ. ४. १. १२. १
मेदिं न त्वा वज्रिणं पू. ४. १. ४. ५
मेधाकारं विदथस्य उ. ३. २. ७. ३
मो षु त्वा वाघतश्च पू. ३. २. १०. २
उ. ८. २. ६. १
मो षु ब्रह्मेव तन्द्रयु उ. २. १. १८. ३
यूयं वनानसो हविष्मन्तो उ. ७. २. १२. २
यं रक्षन्ति प्रचेतसो पू. २. २. १०. १
यं वृत्रेषु क्षितय पू. ४. १. ५. ६
यः पावमानीरध्येत्यृषिभिः उ. ५. २. ८. १
यः सप्ताग्रा विचर्षणि पू. ३. २. १०. ४
यः सोमः कन्नशोच्या उ. ५. १. ४. ५
यः स्त्रीहितीषु पूर्व्यः उ. ६. २. १. २
य आनयत्परावतः पू. २. १. ४. ३
य आर्जीकेषु कृत्वसु उ. ४. २. ११. २
य इदं प्रतिभये उ. ८. २. १५. २
य इद्ध आविवाससति उ. ४. २. ६. २
य इन्द्र चमसेष्वा पू. २. २. ७. ८
य इन्द्र सोमपातमो पू. ५. १. १. ४
य उग्रः सन्ननिष्टृतः उ. ८. २. १५. ३
य ऊर्ध्व इव शर्यहा उ. ८. २. १८. ३
य उक्षिया अपि या पू. ६. २. ९. ८
य क्रते चिदभिश्रिषः पू. ३. २. ६. २
य एक इद्विदयते पू. ४. २. १०. ९
उ. ५. २. २२. १
य ओजिष्ठस्तमा भर उ. २. १. १६. ३
यच्चिद्धि शश्वता तना उ. ८. १. १. २
यच्छक्रासि परावति पू. ३. २. ८. २
यजा नो मित्रावरुणा उ. ७. २. १. ३
यजामह इन्द्रं वज्र पू. ४. १. ५. ३
यजिष्ठं त्वा यजमाना उ. ९. १. १८. २
यजिष्ठं त्वा वहतमहे पू. २. १. २. ६
उ. ६. २. १३. १
यज्ञायथा अपूर्व्य आ. २. ७
उ. ६. २. १९. १
यज्ञं च नस्तन्वं च उ. ४. १. २३. २
यज्ञ इन्द्रमवर्धयद् पू. २. १. ३. ७
उ. ८. १. ९. १
यज्ञस्य केतुं प्रथमं उ. ३. १. ६. ३
यज्ञस्य हि स्थ ऋत्विजा उ. ४. १. १०. १
यज्ञायज्ञा वो अग्नये पू. १. १. ४. १
उ. १. १. २०. १
यत इन्द्र भयामहे पू. ३. २. ९. २
उ. ५. २. १५. १
यत्ते दिक्षु प्रराध्यं उ. ४. २. १४. ३
यत्र क च ते मनो उ. १. १. २१. २
यत्र बाणाः सम्पतन्ति उ. ९. ३. ६. ३
यत्सानोः सान्वारुहो उ. ५. २. २३. २
यत्सोम चित्रमुक्थ्यं उ. ३. २. १३. १
यत्सोममिन्द्र विष्णवि पू. ४. २. १०. ४
यथा गौरो अपा कृतं पू. ३. २. ६. १०
उ. ८. ३. ४. १
यददो वात ते गृहे उ. ९. २. ११. ३
यदद्भिः परिषिच्यसे उ. २. १. ४. २
यदथ कच्च वृत्रहन् पू. २. १. ४. २
यदथ सूर उदितेनागा उ. ६. १. २. १
यदा कदा च मीढुषे पू. ३. २. १०. ६
यदिन्द्र चित्र म इह पू. ४. २. ६. ४
उ. ४. २. १४. १
यदिन्द्र नाहुषीष्वा पू. ३. २. ७. १०
यदिन्द्र प्रागपागुदग् पू. ३. २. ९. ७
उ. ५. १. १३. १
यदिन्द्र यावतस्त्वमेता पू. ४. १. २. ८
उ. ९. १. १२. १
यदिन्द्र शासो अवतं पू. ४. १. १. ६
यदिन्द्राहं यथा त्व पू. २. १. ३. ८
उ. ९. २. ९. १
यदिन्द्रो अनयद्रितो पू. २. २. ६. ७
यदि वीरो अनु प्या पू. १. २. ९. २ ५००
यदीं गणस्य रशना उ. ८. ३. १३. ३ ५६९
यदी वहन्त्याशवो पू. ४. २. ७. ५ ५१२
यदी सुतेभिरिन्दुभिः उ. ६. ३. २. ३ ५५६
यदुदीरत आजयः उ. ३. २. १४. ३ ५३९
यदुदीरत आजयो पू. ५. १. ३. ६ ५१४
यद्दाव इन्द्र ते शतं पू. ३. २. ९. ६ ५०८
उ. २. २. ११. १ ५३३
यद्युञ्जाथे वृषणमश्विना उ. ८. ३. १७. २ ५७०
यद्वर्चो हिरण्यस्य आ. ४. १० ५२३
यद्वा उ विश्पतिः पू. २. १. २. ८ ५०१
यद्वा रुमे रुशमे उ. ५. १. १३. २ ५४७
यद्वाहिष्ठं तदग्नये पू. १. २. ९. ६ ५००
यद्वीडाविन्द्र यत्स्थिरे पू. ३. १. २. ४ ५०४
उ. ४. १. ९. ३ ५४१
यन्मन्यसे वरेण्यमिन्द्र उ. ४. २. १४. २ ५४५
यमग्ने पृत्सु मर्त्यमवा उ. ६. २. १४. १ ५५४
यया गा आकरामहै उ. ७. १. १५. २ ५५९
यवंयवं नो अन्धसा उ. ३. २. ५. १ ५३८
यशो मा द्यावापृथिवी आ. ३. १० ५२३
यश्चिद्धि त्वा बहुभ्य उ. ५. २. २२. २ ५५१
यस्त इन्द्र नवीयसीं उ. २. २. १९. २ ५३४
यस्ते अनु स्वधामसत् उ. १. २. ९. २ ५२८
यस्ते नूनं शतक्रत पू. २. १. ३. २ ५०२
यस्ते मदो युज्यश्चारु उ. ३. १. १३. २ ५३६
यस्ते मदो वरेण्यस्तेना पू. ५. २. ९. ४ ५१६
उ. २. १. १५. १ ५३१
यस्ते शृङ्गवृषो नपात् उ. १. २. ५. ३ ५२८
यस्त्वाग्ने हविष्मति उ. २. २. ५. २ ५३२
यस्माद्बृहन्त कृष्टय उ. ७. १. ११. २ ५५९
यस्मिन्विश्वा अधि उ. १. २. ४. २ ५२८
यस्य त इन्द्र पिबाद् उ. ४. १. १८. २ ५४२
यस्य ते पीत्वा वृषभो उ. १. १. १६. २ ५२६
यस्य ते महिना महः उ. ९. १. ३. ३ ५७०
यस्य ते विश्वमानुषग् उ. ४. १. ९. २ ५४१
यस्य ते सख्ये वयं उ. २. १. २. २ ५३०
यस्य त्यच्छम्बरं मदे पू. ५. १. १. २ ५१३
यस्य त्रिधात्वृतं उ. ७. २. १४. २ ५६१
यस्यायं विश्व आर्यो उ. ७. ३. १९. १ ५६३
यस्येदमा रजोयुज आ. १. ३ ५२१
या इन्द्र भुज आभरः पू. ३. २. ७. २
या ते भीमान्यायुधा उ. २. १. २. ३
या दस्रा सिन्धुमातरा उ. ८. ३. ७. २
या वां सन्ति पुरुस्पृहो उ. ३. २. १०. २
यावित्था श्लोकमा दिवो उ. ८. ३. ९. ३
या सुनीये शौचद्रथे उ. ८. ३. ११. २
यास्ते धारा मधुश्चुतो उ. ३. २. ६. १
युञ्ज्ञ्वा हि केशिना उ. ५. २. २३. ३
युञ्ज्ञ्वा हि वाजिनी उ. ८. ३. ८. ३
युञ्ज्ञ्वा हि वृत्रहन्तम पू. ४. १. १. ९
युञ्जन्ति ब्रध्नमरुषं उ. ६. ३. १२. १
युञ्जन्ति हरी इषिरस्य उ. १. १. २३. ३
युञ्जन्त्यस्य काम्या उ. ६. ३. १२. २
युञ्जे वाचं शतपदीं उ. ९. २. ७. २
युञ्जं सन्तमनर्वाणं उ. ८. १. १०. २
युवं चित्रं ददथुर्भोजनं उ. १. २. १५. २
युवं हि स्थः स्वःपती उ. ३. २. १३. ३
ये ते पन्या अधो पू. २. २. ८. ८
ये ते पवित्रमूर्मयो उ. २. १. ५. २
ये त्वामिन्द्र न तुष्टुवु उ. ७. १. ५. ३
येन ज्योतींष्यायवे उ. २. २. १८. २
येन देवाः पवित्रेण उ. ५. २. ८. ५
येना नवग्वा दध्यङ् उ. ३. १. १७. २
येना पावक चक्षसा आ. ५. ११
ये सोमासः परावति उ. ४. २. ११. १
यो अग्निं देववीतये उ. २. २. ५. ३
योगेयोगे तवस्तरं पू. २. २. ७. ९
उ. १. २. ११. १
यो जागार तमृचः उ. ९. २. ५. १
यो जिनाति न जीयते उ. ३. २. ५. ४
यो धारया पावकया उ. १. १. १८. २
यो नः स्वोरणो वश उ. ९. ३. ८. ३
यो न इदमिदं पुरा पू. ५. १. २. २
योनिष्ट इन्द्र सदने पू. ४. १. ३. २
यो नो वनुष्यन्नभि पू. ४. १. ५. ५
यो मंहिष्ठो मघोना म. ५
यो रयिं वो रयिन्तमो पू. ४. २. ६. १०
यो राजा चर्षणीनां पू. ३. २. ९. १
उ. ३. १. १५. १
यो वः शिवतमो रस उ. ९. २. १०. २

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

यो विश्वा दयते वसु पू. १. १. ४. १०
उ. ७. ३. ५. १
ऋक्षोहा विश्वचर्षणि उ. १. १. १५. २
रयिं नश्चित्रमश्विन उ. ४. १. ४. १०
रसं ते मित्रो अर्यमा उ. ४. १. ११. ३
रसाव्यः पयसा पिन्वमान उ. २. १. ११. २
राजानावनभिद्रुहा उ. ३. १. ७. २
राजानो न प्रशस्तिभिः उ. ४. २. १. ६
राजा मेधाभिरीयते उ. २. २. २. १
रायः समुद्रांश्चतुरो उ. २. २. १४. ३
राया हिरण्यया मति उ. ४. १. ८. २
राये अग्ने महे त्वा पू. १. २. १०. ३
रुशद्वत्सा रुशती उ. ८. ३. १४. २
रेवतीर्नः सधमाद पू. २. २. ६. ९
उ. ४. १. १४. १
रेवाँ इद्रेवत स्तोता उ. ९. १. १५. १
व्यच्यन्ते वां ककुहासो उ. ८. ३. ७. ३
वयं घ त्वा सुतावन्त पू. ३. २. ७. ९
उ. २. २. १२. १
वयं घा ते अपि स्मसि पू. ३. १. ४. ८
वयं ते अस्य राधसो उ. ५. १. १६. २
वयः सुपर्णा उप सेदु पू. ४. १. ३. ७
वयमिन्द्र त्वायवो पू. २. १. ४. ८
वयमु त्वा तदिदर्था पू. २. २. ७. ३
उ. १. २. ३. १
वयमु त्वामपूर्व्य पू. ५. १. २. १०
उ. १. १. २२. १
वयमेनमिदा ह्योपी पू. ३. २. ८. १०
उ. ८. २. १३. १
वयश्चित्ते पतत्रिणो पू. ४. २. ८. ८
वरिवोधातमो भुवो उ. १. १. १५. ३
वरुणः प्राविता भुवन् उ. २. १. ७. ३
वपट्ते विष्णवास आ उ. ८. १. ४. ३
वसन्त इत्तु रन्त्यो आ. ४. २
वसुरग्निर्वसुश्रवा उ. ४. १. २२. २
वस्यां इन्द्रासि मे पितु पू. ३. २. १०. १०
वाचमष्टापदीमहं उ. ३. २. ९. ३
वाजी वाजेषु धीयते उ. ६. ३. १५. २
वात आ वातु भेषजं पू. २. २. ९. १०
उ. ९. २. ११. १
वातोपजूत इषितो उ. ३. २. ७. २
वायविन्द्रश्च शुष्मिणा उ. ८. १. ५. ३
वायो शुक्रो अयामि उ. ८. १. ५. १
वार्णं त्वा यव्याभि उ. १. १. २३. २
वावृधानः शवसा उ. ६. ३. १७. २
वाश्रा अर्षन्तीन्दवो उ. ५. १. ३. ७
वास्तोष्पते ध्रुवा स्थूणां पू. ३. २. ९. ३
विप्रन्तो दुरिता पुरु उ. २. २. १. २
पि चिद्वेषस्य दोधतः उ. ८. १. १३. २
वि त्वदापो न पर्वतस्य पू. १. २. ७. ६
विदा मघवन् विदा म. १
विदा राये सुवीर्यं म. ४
विभ्रा हि त्वा तुविकूर्मि उ. १. २. ६. २
विधुं दद्राणं समने पू. ४. १. ४. ३
उ. ९. १. ७. १
वि न इन्द्र मृधो जहि उ. ९. ३. ७. २
विपश्चिते पवमानाय उ. ७. ३. २१. २
विभक्तासि चित्रभानो उ. ७. १. ४. २
विभूतरातिं विप्र उ. ८. २. ११. २
विभूषन्नग्न उभयाँ उ. ७. २. १३. ३
विभोष्ट इन्द्र राधसो पू. ४. २. ८. ७
विभ्राजं ज्योतिषा उ. ३. २. २२. ३
विभाड्बृहत्पिवतु सोम्यं आ. ५. २
उ. ६. ३. ५. १
विभ्राड् बृहत्सुभृतं उ. ६. ३. ५. २
वि रक्षो वि मृधो जहि उ. ९. ३. ७. १
विव्यक्थ महिना वृष उ. ८. २. २. २
विशोविशो वो अतिथिं पू. १. २. ९. ७
उ. ७. २. १२. १
विश्वकर्मन्हविषा उ. ७. ३. ९. १
विश्वतोदावन्विश्वतो पू. ५. २. ६. १
विश्वस्मा इत्स्वर्दृशे उ. २. २. ३. ५
विश्वस्य प्र स्तोभ पू. ५. २. ७. ४
विश्वाः पृतना अभि पू. ४. २. ९. १
उ. ३. १. १४. १
विश्वा धामानि विश्वचक्ष उ. ३. १. १. ३
विश्वानरस्य वस्पति पू. ४. २. ८. ५
विश्वे देवा मम शृण्वन्तु आ. ३. ९
विश्वेभिरग्ने अग्निभिरिमं उ. ८. १. १. १
वि पु विश्वा अरातयो उ. ९. १. १४. ३
विष्णोः कर्माणि पश्यत उ. ८. २. ५. ३
वि श्रुतयो यथा पथः उ. ९. १. २. ३
वि श्रुतयो यथा पथा पू. ५. २. ७. ७
वीडु चिदारुजत्नुभि उ. २. २. ७. ३
वीतिहोत्रं त्वा कवे उ. ७. १. १३. ३
वृकश्चिदस्य वारण उ. ८. २. १३. २
वृत्रखादो वलं रुजः उ. ८. ३. ३. २
वृत्रस्य त्वा श्वसथा पू. ४. १. ४. २
वृषणं त्वा वयं वृषन् उ. ७. २. २. ३
वृषा पवस्व धारया पू. ५. २. ९. ३
उ. २. १. १०. १
वृषा पुनान आयुँषि उ. ३. २. १३. २
वृषा मतीनां पवते पू. ६. २. ७. ६
उ. २. १. १७. १
वृषा यूथेव वंसगः उ. ८. १. २. ३
वृषा शोणो अभि उ. २. १. ११. १
वृषा सोम द्युमाँ असि पू. ६. १. २. ८
उ. २. १. ३. १
वृषा हासि भानुना पू. ५. २. १०. ४
उ. २. १. ४. १
वृषो अग्निः समिध्यते उ. ७. २. २. २
वृष्टिं दिवः परि स्रव उ. ५. १. २. ९
वृष्टिद्यावा रीत्यापेष उ. ६. ३. ११. ३
वृष्णस्ते वृष्ण्यं शवो उ. २. १. ३. २
वेत्था हि निर्ऋतीनां पू. ५. १. १. ६
वेत्था हि वेधो अध्वनः उ. ६. ३. १४. ३
व्यान्तरिक्षमतिरन्मदे उ. ८. १. ९. २
शं नो देवीरभिष्टये पू. १. १. ३. १३
शं पदं मर्ध रचीषिणे पू. ५. २. ६. ५
शंसेदुक्थं सुदानव उ. १. २. २. २
शकेम त्वा समिधं उ. ४. १. ७. ३
शग्ध्यू षु शचीपत पू. ३. २. ७. १
उ. ७. ३. ३. १
शचीभिर्नः शचीवसू पू. ३. २. १०. ५
शतानीकेव प्र जिगाति उ. २. १. १३. २
शशमानस्य वा नरः उ. ७. ३. १२. १
शाक्मना शाको अरुणः उ. ९. १. ७. २
शाचिगो शाचिपूजनायं उ. १. २. ५. २
शिक्षा ण इन्द्र राय आ उ. ८. १. १०. ३
शिक्षेयमस्मै दित्सेयं उ. ९. २. ९. २
शिक्षेयमिन्महयते उ. ९. १. १२. २
शिशुं जज्ञानं हरिं उ. ५. २. १९. ३
शिशुं जज्ञानं हर्यतं उ. ५. १. १. १
शुक्रं ते अन्यद्यजतं पू. १. २. ८. ३
शुक्रः पवस्व देवेभ्यः उ. ५. १. १७. २
शुचिः पावक उच्यते उ. ३. २. ३. ७
शुनं हुवेम मघवान पू. ४. १. ४. ७
शुभ्रमन्धो देववात उ. ३. २. १६. २
शुम्भमाना ऋतायुभि उ. ४. १. २. २
शुष्मी शर्द्धो न मारुतं उ. ६. ३. १३. ३
शूरआमः सर्ववीरः उ. ६. २. ११. २
शूरो न धत्त आयुधा उ. ५. १. १२. २
शृणुतं जरितुर्हव उ. ३. १. ९. २
शृण्वे वृष्टेरिव स्वनः उ. ३. १. ३. ३
शेपे वनेषु मातृषु पू. १. १. ५. २
श्रत्ते दधामि प्रथमाय पू. ४. २. ९. २
श्रायन्त इव सूर्यं पू. ३. २. ८. ५
उ. ५. २. १४. १
श्रुतं वो वृत्रहन्तमं पू. ३. १. २. ५
श्रुधि श्रुत्कर्ण वह्निभि पू. १. १. ५. ६
श्रुधी हवं तिरश्च्या पू. ४. २. ६. ५
उ. २. २. १९. १
श्रुधी हवं विपिपान उ. ९. १. १३. १
श्रुष्टयग्ने नवस्य मे पू. २. १. १. १०
सं ते पयांसि समु आ. ३. २
सं देवैः शोभते वृषा उ. ३. १. १०. २
सं मातृभिर्न शिशु उ. ६. २. १५. २
सं वत्स इव मातृभि उ. ४. १. १९. २
संवृक्तघृष्णुमुक्थ्यं उ. २. २. ३. २
स इधानो वसुष्कवि उ. ७. २. ११. २
स इषुहस्तैः स निषङ्गिभि उ. ९. ३. १. ३
स ई रथो न भुरिषा उ. ६. ३. १३. २
सखाय आ नि षीदत पू. ६. २. ८. ३
उ. ४. २. ९. १
सखाय आ शिषामहे पू. ४. २. १०. १०
सखायस्त्वा ववृमहे पू. १. २. ६. ८
सत्रये त इन्द्र याजिनो उ. २. १. १९. २
सत्रे ह नं वृषणं रथ पू. ५. १. ४. ६
स घा नः सूनुः शवसा उ. ८. १. ७. २
स घा नो योग आ उ. १. २. १०. ३

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

स घा यस्ते दिवो	पू. ४. २. ८. ६	स प्रथमे व्योमनि	उ. १. २. १२. २	स पूर्व्यो महोनां	पू. ४. २. ७. ४	सन्यामनु स्फिग्यं	उ. ७. ३. १७. २
सकुन्दनेनानिमिषेण	उ. ९. ३. १. २	स भक्षमाणो अमृतस्य	उ. ६. २. १७. २	सप्त त्वा हरितो रथे	आ. ५. १४	स सुतः पीतये वृषा	उ. ५. २. ७. १
सत्यमित्था वृषेदसि	पू. ३. २. ८. १	समत्स्वग्निमवसे	उ. ४. २. १२. ३	सप्ति मृजन्ति वेधसो	उ. ९. १. १. २	स सुन्वे यो वसूनां	पू. ६. २. ९. ५
सत्राहणं दाधृषिं	पू. ४. १. ५. ४	समन्या यन्त्युपयन्त्यन्याः	आ. ३. ६		उ. ४. १. १८. १	सूर्यस्येव रश्मयो	उ. ६. १. ९. १
स त्रितस्याधि सानवि	उ. ५. २. ७. ४	स मर्मृजान आयुभि	उ. ८. ३. १८. ३	स मृनर्मातरा शुचि	उ. ३. १. १६. २	सो अग्नियों वसुर्गृणे	उ. ८. ३. १०. ३
स त्वं नश्चित्र वज्रहस्त	उ. २. १. १२. २	समस्य मन्यवे विशो	पू. २. १. ५. ३	सह रय्या नि वर्तस्वाग्ने	उ. ९. २. ८. ३	सो अर्षेन्द्राय पीतये	उ. ३. २. ६. २
सदसस्पतिमद्भुतं	पू. २. २. ८. ७		उ. ८. १. १३. १	सहर्षभाः सहवत्सा	आ. ४. १२	सोमं गावो धेनवो	उ. २. २. १०. २
सदा गावः शुचयो	पू. ५. २. ६. ६	स मह्ना विश्वा दुरितानि	उ. ५. २. ९. २	सहस्तन्न इन्द्र दद्धयोज	आ. ४. ११	सोमं राजानं वरुण	पू. १. २. १०. १
सदा व इन्द्रश्चर्कृषदा	पू. ३. १. १. ३	समानो अध्वा स्वस्रो	उ. ८. ३. १४. ३			सोमः पवते जनिता	पू. ६. १. ४. ५
स देवः कविनेषितो	उ. ५. २. ७. ६	स मामृजे तिरो अण्वानि	उ. ८. २. १२. २	सहस्रधारं वृषभं	उ. ६. २. ६. २		उ. ३. १. १९. १
स नः पवस्व शं गवे	उ. १. १. १. ३	समिद्धमग्निं समिधा	उ. ७. २. १३. १	सहस्रधारः पवते	उ. २. २. १५. ३	सोमः पुनान ऊर्मिणाव्यं	पू. ६. २. ८. ७
स नः पवस्व शं गवे	उ. २. १. ५. ३	समिन्द्रेणोत वायुना	उ. ४. १. १३. २	सहस्रशीर्षाः पुरुषः	आ. ४. ३		उ. ३. १. १८. १
स नः पृथु श्रवाय्य	उ. १. १. ४. ३	समिन्द्रो रायो बृहती	उ. ८. २. ७. २	स हि पुरू चिदोजसा	उ. ९. १. १८. ३	सोमः पुनानो अर्षति	उ. ५. १. ३. १
स न इन्द्रः शिवः सखा	उ. ६. ३. ४. ३	समीचीना अनूषत	उ. ३. १. ४. ६	स हि ष्मा जरितृभ्य	उ. ३. २. ४. २	सोमः पूषा च चेततु	पू. २. २. ६. १०
स न इन्द्राय यज्यवे	आ. १. ७	समीचीनास आशत	उ. ४. २. १. १०	सार्क जातः क्रतुना	उ. ६. ३. १८. २	सोम उ ष्वाणः सोतृभि	पू. ६. १. ३. ५
	उ. १. १. ८. २	समी वत्सं न मातृभिः	उ. ४. २. ९. २	साकमुक्षो मर्जयन्त	पू. ६. १. ५. ६		उ. ३. २. १२. १
स न ऊर्जे व्यव्ययं	उ. ६. ३. १. ४	समुद्रो अप्सु मामृजे	उ. ४. १. ३. ५		उ. ६. २. १५. १	सोमाः पवन्त इन्दवो	पू. ६. २. ६. ४
सना च सोम जेषि	उ. ४. १. ४. १	समु प्रिया अनूषत	उ. २. १. १६. २	सा नो अद्याभरद्	उ. ८. ३. ११. ३		उ. ४. १. २०. १
सना ज्योतिः सना	उ. ४. १. ४. २	समु प्रियो मृज्यते	उ. ६. २. ८. ३	साह्वान्विश्वा अभियुजः	उ. ७. २. ९. ३	सोमा असृग्रमिन्दवः	उ. ५. १. ४. १
सना दक्षमुत क्रतुम	उ. ४. १. ६. ३	समु रेभासो अस्वरन्	उ. ३. १. १४. ३	सिञ्चन्ति नमसावट	उ. ७. ३. १६. ३	सोमानां स्वरणं कृणुहि	पू. २. १. ५. ५
सनादग्ने मृणसि	पू. १. २. ८. ८	समेत विश्वा ओजसा	पू. ४. २. ९. ३	सीदन्तस्ते वयो यथा	पू. ५. १. २. ९		उ. ६. ३. १०. २
सनेमि त्वमस्मदा	उ. ७. ३. २०. ३	सम्मिश्लो अरुषो भुवः	उ. २. १. १५. ३	सुत पति पवित्र आ	उ. ३. १. ४. ४	स्तोत्रं राधानां पते	उ. ७. ३. १५. २
स नो दूराच्चासाच	उ. ८. १. ७. ३	सम्राजा या घृतयोनी	उ. ४. २. ४. २	सुता इन्द्राय वायवे	उ. १. २. १९. ३	स्वरन्ति त्वा सुते नरो	उ. २. २. १२. २
स नो भगाय वायवे	उ. ४. १. १३. ३	स योजत उरुगायस्य	उ. ४. २. १. ३	सुतासो मधुमत्तमाः	पू. ६. २. ६. ३	स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः	उ. ९. ३. ९. ३
स नो मन्द्राभिरध्वरे	उ. ६. ३. १४. २	स योजते अरुषा	उ. १. २. १३. २		उ. २. २. १५. १	स्वादिष्टया मदिष्ठया	पू. ५. २. ९. २
स नो महाँ अनिमानो	उ. ८. २. ३. २	सरूप वृषभा गहीमौ	उ. ८. १. १४. २	सुनीथो घा स मर्त्यो	पू. ३. १. २. ३		उ. १. १. १५. १
स नो मित्रमहस्त्वमग्ने	उ. ८. ३. १. ३	स रेवाँ इव विश्पति	उ. ८. २. ३. ३	सुनोत सोमपाये	पू. ३. २. १०. ३	स्वादोरित्या विपूवतः	उ. ३. २. १५. १
स नो विश्वा दिवो	उ. ८. ३. १८. ४	स वह्निरप्सु दुष्टरो	उ. ३. २. ४. ६	सुप्राशीरस्तु स क्षयः	उ. ६. १. २. २	स्वादोरित्या विपूवतो	पू. ५. १. ३. १
स नो वृषन्नमुं चरुं	उ. ८. १. २. २	स वाजं विश्वचर्षणि	उ. ६. २. १४. ३	सुमन्मा वस्वी रन्ती	उ. ८. १. १४. १	स्वायुधः पवते देव	उ. १. १. १०. २
स नो वेदो अमात्यमग्नी	उ. ६. २. १. ३	स वाजी रोचनं दिवः	उ. ५. २. ७. ३	सुरूपकृत्नुमूतये	पू. २. २. ७. ६	हुयो बृहाण्यार्या हयो	उ. २. २. ८. ३
स नो हरीणां पत	उ. ७. ३. २०. २	स वाज्यक्षाः सहस्ररेता	उ. ४. २. १०. २		उ. ४. १. १५. १	हरी त इन्द्र श्मश्रूण्युतो	आ. ४. ९
स पवस्व मदिन्तम	उ. ५. १. ५. ५	स वायुमिन्द्रमश्विना	उ. ४. २. २. ७	सुवितस्य वनामहे	उ. ३. १. ३. २	हस्तच्युतेभिरद्रिभिः	उ. ६. ३. ३. २
स पवस्व य आविथेन्द्रं	पू. ६. १. १. ८	स वीरो दक्षसाधनो	उ. ६. २. ३. ३	सुषमिद्धो न आ वह	उ. ६. १. १. १	हिन्वन्ति सूरमुस्रयः	उ. ३. १. ५. १
स पवित्रे विचक्षणो	उ. ५. २. ७. २	स वृत्रहा वृषा सुतो	उ. ५. २. ७. ५	सुषहा सोम तानि ते	उ. ९. १. १. ३	हिन्वानासो रथा इव	उ. ४. २. १. ५
स पुनान उप सूरे	उ. ६. १. ४. २			सुष्वाणास इन्द्र स्तुमसि	पू. ४. १. ३. ४	हिन्वानो हेतृभिर्हित	उ. १. १. २. २
				सुष्वाणासो व्यद्रिभि	उ. ४. १. २०. ३	होता देवो अमर्त्यः	उ. ६. ३. १५. १

॥ इति सामवेदमन्त्राणां वर्णानुक्रमणी ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अथर्ववेद संहिता

ATHARVAVEDA SAMHITĀ

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ओ३म्

अथर्ववेदसंहिता

अथ प्रथमं काण्डम्

अथ प्रथमः प्रपाठकः

अथ प्रथमोऽनुवाकः [१] प्रथमं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा॥ देवता—वाचस्पतिः॥ छन्दः—१-३ अनुष्टुप्; ४ चतुष्पदाविराडुरोबृहती॥

ये त्रिषप्ताः परियन्ति विश्वा रूपाणि बिभ्रतः।
वाचस्पतिर्बला तेषां तन्वो अद्य दधातु मे॥ १॥
पुनरेहि वाचस्पते देवेन मनसा सह।
वसोष्पते नि रमय मय्येवास्तु मयि श्रुतम्॥ २॥
इहैवाभि वि तनूभे आर्ल्वीइव ज्यया।
वाचस्पतिर्नि यच्छतु मय्येवास्तु मयि श्रुतम्॥ ३॥
उपहूतो वाचस्पतिरुपास्मान्वाचस्पतिर्ह्वयताम्।
सं श्रुतेन गमेमहि मा श्रुतेन वि राधिषि॥ ४॥

[२] द्वितीयं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा॥ देवता—पर्जन्यः॥ छन्दः—१, २, ४ अनुष्टुप्; ३ त्रिपदाविराण्नामगायत्री॥

विद्मा शरस्य पितरं पर्जन्यं भूरिधायसम्।
विद्मो ष्वस्य मातरं पृथिवीं भूरिवर्पसम्॥ १॥
ज्याकि परि णो नमाश्मानं तन्वं कृधि।
वीडुवरीयोऽरातीरप द्वेषांस्या कृधि ॥ २॥
वृक्षं यद्वावः परिषस्वजाना अनुस्फुरं शरमचैन्त्यृभुम्।
शरुमस्मद्यावय दिद्युमिन्द्र ॥ ३॥
यथा द्यां च पृथिवीं चान्तस्तिष्ठति तेजनम्।
एवा रोगं चास्रावं चान्तस्तिष्ठतु मुञ्ज इत्॥ ४॥

[३] तृतीयं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा॥ देवता—पर्जन्यादयो मन्त्रोक्ताः॥ छन्दः—१-५ पथ्यापङ्क्तिः; ६, ७, ८, ९ अनुष्टुप्॥

विद्मा शरस्य पितरं पर्जन्यं शतवृष्ण्यम्।
तेना ते तन्वे३ शं करं पृथिव्यां ते निषेचनं बहिष्टे अस्तु बालिति॥ १॥
विद्मा शरस्य पितरं मित्रं शतवृष्ण्यम्।
तेना ते तन्वे३ शं करं पृथिव्यां ते निषेचनं बहिष्टे अस्तु बालिति॥ २॥
विद्मा शरस्य पितरं वरुणं शतवृष्ण्यम्।
तेना ते तन्वे३ शं करं पृथिव्यां ते निषेचनं बहिष्टे अस्तु बालिति॥ ३॥
विद्मा शरस्य पितरं चन्द्रं शतवृष्ण्यम्।
तेना ते तन्वे३ शं करं पृथिव्यां ते निषेचनं बहिष्टे अस्तु बालिति॥ ४॥
विद्मा शरस्य पितरं सूर्यं शतवृष्ण्यम्।
तेना ते तन्वे३ शं करं पृथिव्यां ते निषेचनं बहिष्टे अस्तु बालिति॥ ५॥
यदान्त्रेषु गवीन्योर्यद्वस्तावधि संश्रुतम्।
एवा ते मूत्रं मुच्यतां बहिर्बालितिं सर्वकम् ॥ ६॥
प्र ते भिनद्मि मेहनं वर्त्रं वेशन्त्याइव।
एवा ते मूत्रं मुच्यतां बहिर्बालितिं सर्वकम् ॥ ७॥
विषितं ते वस्तिबिलं समुद्रस्योदधेरिव।
एवा ते मूत्रं मुच्यतां बहिर्बालितिं सर्वकम् ॥ ८॥
यथेषुका परापतदवसृष्टाऽधि धन्वनः।
एवा ते मूत्रं मुच्यतां बहिर्बालितिं सर्वकम् ॥ ९॥

[४] चतुर्थं सूक्तम्

ऋषिः—सिन्धुद्वीपः कृतिर्वा॥ देवता—आपः॥ छन्दः—१-३ गायत्री; ४ पुरस्ताद्बृहती॥

अम्बयो यन्त्यध्वभिर्जामयो अध्वरीयताम्। पृञ्चतीर्मधुना पयः॥ १॥
अमूर्या उप सूर्ये याभिर्वा सूर्यः सह। ता नो हिन्वन्त्वध्वरम्॥ २॥
अपो देवीरुप ह्वये यत्र गावः पिबन्ति नः। सिन्धुभ्यः कर्त्वं हविः॥ ३॥
अप्स्वन्तरमृतमप्सु भेषजम्।
अपामुत प्रशस्तिभिरश्वा भवथ वाजिनो गावो भवथ वाजिनीः॥ ४॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

[५] पञ्चमं सूक्तम्

ऋषिः—सिन्धुद्वीपः कृतिर्वा॥ देवता—आपः॥ छन्दः—गायत्री॥

आपो॒ हि ष्ठा म॑यो॒भुव॒स्ता न॑ ऊ॒र्जे द॑धातन। म॒हे रणा॑य॒ चक्ष॑से॥ १॥
यो वः॑ शि॒वत॑मो॒ रस॒स्तस्य॑ भाजयते॒ह नः॑। उ॒श॒तीरि॑व मा॒तरः॑॥ २॥
तस्मा॒ अरं॑ गमाम वो॒ यस्य॒ क्षया॑य॒ जिन्व॑थ। आपो॑ ज॒नय॑था च नः॥ ३॥
ईशा॑ना॒ वार्या॑णां॒ क्षय॑न्तीश्चर्षणी॒नाम्। अ॒पो या॑चामि भेष॒म्॥ ४॥

[६] षष्ठं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा कृतिर्वा॥ देवता—आपः॥ छन्दः—१-३ गायत्री; ४ पथ्यापङ्क्तिः॥

शं नो॑ दे॒वीर॒भिष्ट॑य॒ आपो॑ भवन्तु पा॒तये॑। शं योर॒भि स्र॑वन्तु नः॥ १॥
अ॒प्सु मे॒ सोमो॑ अब्रवीद॒न्तर्विश्वा॑नि भेष॒जा। अ॒ग्निं च॑ वि॒श्वश॑म्भुवम्॥ २॥
आपः॑ पृणा॒त भे॑ष॒जं वरू॑थं त॒न्वे॒३॒॑ मम॑। ज्योक्च॒ सूर्यं॑ दृ॒शे॥ ३॥
शं न॒ आपो॑ धन्व॒न्या॒३॒॑ः शमु॑ सन्त्वनू॒प्याः॑। शं नः॑ खनि॒त्रिमा॒
आपः॒ शमु॒ याः कु॒म्भ आभृ॑ताः शि॒वा नः॑ सन्तु॒ वार्षि॑कीः ॥ ४॥

अथ द्वितीयोऽनुवाकः

[७] सप्तमं सूक्तम्

ऋषिः—चातनः॥ देवता—१, २, ४-७ अग्निः; ३ इन्द्रश्च॥
छन्दः—१-४, ६, ७ अनुष्टुप्; ५ त्रिष्टुप्॥

स्तु॒वा॒नम॑ग्न॒ आ व॑ह यातु॒धानं॑ किमी॒दिन॑म्।
त्वं हि दे॑व वन्दि॒तो ह॒न्ता दस्यो॑र्ब॒भूवि॑थ ॥ १॥
आज्य॑स्य परमेष्ठि॒ञ्जात॑वेद॒स्तनू॑वशिन्।
अग्ने॑ तौ॒लस्य॒ प्राशा॑न यातु॒धाना॒न्वि ला॑पय ॥ २॥
वि ल॑पन्तु यातु॒धाना॑ अ॒त्रिणो॒ ये कि॑मी॒दिनः॑।
अथे॒दम॑ग्ने नो ह॒विरिन्द्र॑श्च॒ प्रति॑ हर्यतम् ॥ ३॥
अ॒ग्निः पूर्व॒ आ र॑भतां॒ प्रेन्द्रो॑ नुदतु बाहु॒मान्।
ब्रवी॑तु॒ सर्वो॑ यातु॒मान॒यम॒स्मीत्येत्य॑ ॥ ४॥
पश्या॑म ते वा॒र्यं॑ जातवेदः॒ प्र णो॑ ब्रूहि यातु॒धाना॑न्नृचक्षः।
त्वया॒ सर्वे॒ परि॑तप्ताः पु॒रस्ता॒त्त आ य॑न्तु प्रब्रुवा॒णा उपे॒दम् ॥ ५॥
आ र॑भस्व जातवेदो॒ऽस्माकार्था॑य जज्ञिषे।
दू॒तो नो॑ अग्ने भू॒त्वा या॑तु॒धाना॒न्वि ला॑पय ॥ ६॥
त्वम॑ग्ने यातु॒धाना॒नुप॑बद्धाँ इ॒हा व॑ह।
अथै॑षा॒मिन्द्रो॒ वज्रे॒णापि॑ शी॒र्षाणि वृश्चतु ॥ ७॥

[८] अष्टमं सूक्तम्

ऋषिः—चातनः॥ देवता—१, २ बृहस्पतिरग्निषोमौ च; ३, ४ अग्निः॥
छन्दः—१-३ अनुष्टुप्; ४ बार्हतगर्भात्रिष्टुप्॥

इ॒दं ह॒विर्या॑तु॒धाना॑न्न॒दी फेन॑मि॒वा व॑हत्।
य इ॒दं स्त्री पुमा॒नक॑रि॒ह स स्तु॑वतां॒ जनः॑ ॥ १॥
अ॒यं स्तु॑वा॒न आग॑मदि॒मं स्म॒ प्रति॑ हर्यत।
बृह॑स्पते॒ वशे॑ ल॒ब्ध्वाग्नी॑षोमा॒ वि वि॑ध्यतम् ॥ २॥
या॒तुधान॑स्य सोमप ज॒हि प्र॒जां नय॑स्व च।
नि स्तु॑वा॒नस्य॑ पातय॒ पर॒मक्ष्यु॒ताव॑रम् ॥ ३॥
यत्रै॑षामग्ने॒ जनि॑मानि॒ वेत्थ॒ गुहा॑ स॒ताम॒त्रिणां॑ जातवेदः।
तांस्त्वं ब्रह्म॑णा वावृधा॒नो ज॒ह्ये॑षां शत॒तर्ह॑मग्ने ॥ ४॥

[९] नवमं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा॥ देवता—१, २ वस्वादयो मन्त्रोक्ताः; ३, ४ अग्निः॥
छन्दः—त्रिष्टुप्॥

अ॒स्मिन्वसु॒ वस॑वो धारय॒न्त्विन्द्रः॑ पू॒षा वरु॑णो मि॒त्रो अ॒ग्निः।
इ॒ममा॑दि॒त्या उ॒त विश्वे॑ च दे॒वा उत्त॑रस्मि॒ञ्ज्योति॑षि धारयन्तु॥ १॥
अ॒स्य दे॑वाः प्र॒दिशि॒ ज्योति॑रस्तु॒ सूर्यो॑ अ॒ग्निरुत॒ वा॒ हिर॑ण्यम्।
स॒पत्ना॑ अ॒स्मदध॑रे भवन्तूत्त॒मं नाक॒मधि॑ रोहये॒मम् ॥ २॥
येनेन्द्रा॑य स॒मभ॑रः॒ पयां॑स्युत्त॒मेन॒ ब्रह्म॑णा जातवेदः।
तेन॒ त्वम॑ग्न इ॒ह व॑र्धये॒मं स॑जा॒तानां॒ श्रैष्ठ्य॒ आ धे॑ह्येनम् ॥ ३॥
ऐषां॑ य॒ज्ञमु॒त वर्चो॑ ददे॒ऽहं रा॒यस्पोष॑मु॒त चि॒त्तान्य॑ग्ने।
स॒पत्ना॑ अ॒स्मदध॑रे भवन्तूत्त॒मं नाक॒मधि॑ रोहये॒मम् ॥ ४॥

[१०] दशमं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा॥ देवता—१ असुरः; २-४ वरुणः॥ छन्दः—१, २ त्रिष्टुप्;
३ ककुम्मत्यनुष्टुप्; ४ अनुष्टुप्॥

अ॒यं दे॒वाना॒मसु॑रो॒ वि रा॑जति॒ वशा॒ हि स॒त्या वरु॑णस्य॒ राज्ञः॑।
तत॒स्परि॒ ब्रह्म॑णा॒ शाश॑दान उ॒ग्रस्य॑ म॒न्योरुदि॒मं न॑यामि ॥ १॥
नम॑स्ते राजन्वरुणास्तु म॒न्यवे॒ विश्वं॒ ह्यु॑ग्र निचि॒केषि॑ द्रु॒ग्धम्।
स॒हस्र॑म॒न्यान्प्र सु॑वामि सा॒कं श॒तं जी॑वाति श॒रद॒स्तवा॒यम् ॥ २॥
यदु॒वक्थानृ॑तं जि॒ह्वया॑ वृजि॒नं ब॒हु।
राज्ञ॑स्त्वा स॒त्यध॑र्मणो मु॒ञ्चामि॒ वरु॑णाद॒हम् ॥ ३॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मुञ्चामि त्वा वैश्वानरादर्णवान्महतस्परि ।
सजातानुग्रेहा वदु ब्रह्म चापः चिकीहि नः ॥ ४ ॥

[११] एकादशं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा ॥ देवता—पूषादयो मन्त्रोक्ताः ॥ छन्दः—१ पङ्क्तिः; २ अनुष्टुप्; ३ चतुष्पदोष्णिग्गर्भा ककुम्मत्यनुष्टुप्; ४-६ पथ्यापङ्क्तिः ॥

वर्षट् ते पूषन्नस्मिन्त्सूतावर्यमा होता कृणोतु वेधाः ।
सिस्रतां नार्यृतप्रजाता वि पर्वीणि जिहतां सूतवा उ ॥ १ ॥
चतस्रो दिवः प्रदिशश्चतस्रो भूम्या उत ।
देवा गर्भं समैरयन्तं व्यूर्णुवन्तु सूतवे ॥ २ ॥
सूषा व्यूर्णोतु वि योनिं हापयामसि ।
श्रथया सूषणे त्वमव त्वं बिष्कले सृज ॥ ३ ॥
नेव मांसे न पीवसि नेव मज्जस्वाहतम् ।
अवैतु पृश्नि शेवलं शुनें जराय्वत्तवेऽवं जरायु पद्यताम् ॥ ४ ॥
वि ते भिनद्मि मेहनं वि योनिं वि गवीनिके ।
वि मातरं च पुत्रं च वि कुमारं जरायुणावं जरायु पद्यताम् ॥ ५ ॥
यथा वातो यथा मनो यथा पतन्ति पक्षिणः ।
एवा त्वं दशमास्य साकं जरायुणा पतावं जरायु पद्यताम् ॥ ६ ॥

अथ तृतीयोऽनुवाकः [१२] द्वादशं सूक्तम्

ऋषिः—भृग्वङ्गिराः ॥ देवता—यक्ष्मनाशनम् ॥ छन्दः—१ जगती; २, ३ त्रिष्टुप्; ४ अनुष्टुप् ॥

जरायुजः प्रथम उस्रियो वृषा वातंभ्रजा स्तनयन्नेति वृष्ट्या ।
स नो मृडाति तन्वः ऋजुगो रुजन्य एकमोजस्त्रेधा विचक्रमे ॥ १ ॥
अङ्गेअङ्गे शोचिषा शिश्रियाणं नमस्यन्तस्त्वा हविषा विधेम ।
अङ्क्नन्त्समङ्क्नदुविषा विधेम यो अग्रभात्पर्वीस्या ग्रभीता ॥ २ ॥
मुञ्च शीर्षक्त्या उत कासं एनं परुष्परुराविवेशा यो अस्य ।
यो अभ्रजा वातजा यश्च शुष्मो वनस्पतींन्त्सचतां पर्वतांश्च ॥ ३ ॥
शं मे परस्मै गात्राय शमस्त्ववराय मे ।
शं मे चतुर्भ्यो अङ्गेभ्यः शमस्तु तन्वे३ मम ॥ ४ ॥

[१३] त्रयोदशं सूक्तम्

ऋषिः—भृग्वङ्गिराः ॥ देवता—विद्युत् ॥ छन्दः—१, २ अनुष्टुप्; ३ चतुष्पाद्विराड्जगती; ४ त्रिष्टुप्पराबृहतीगर्भापङ्क्तिः ॥

नमस्ते अस्तु विद्युते नमस्ते स्तनयित्नवे ।
नमस्ते अस्त्वश्मने येना दूडाशे अस्यसि ॥ १ ॥
नमस्ते प्रवतो नपाद्यतस्तपः समूहसि ।
मृडया नस्तनूभ्यो मयस्तोकेभ्यस्कृधि ॥ २ ॥
प्रवतो नपान्नम एवास्तु तुभ्यं नमस्ते हेतये तपुषे च कृण्मः ।
विद्म ते धाम परमं गुहा यत्समुद्रे अन्तर्निहितासि नाभिः ॥ ३ ॥
यां त्वा देवा असृजन्त विश्व इषुं कृण्वाना असनाय धृष्णुम् ।
सा नो मृड विदथे गृणाना तस्यै ते नमो अस्तु देवि ॥ ४ ॥

[१४] चतुर्दशं सूक्तम्

ऋषिः—भृग्वङ्गिराः ॥ देवता—यमः ॥ छन्दः—१ ककुम्मत्यनुष्टुप्; २, ४ अनुष्टुप्; ३ चतुष्पदाविराडनुष्टुप् ॥

भगमस्या वर्च आदिष्यधि वृक्षादिव स्रजम् ।
महाबुध्नइव पर्वतो ज्योक्पितृष्वास्ताम् ॥ १ ॥
एषा ते राजन्कन्या वधूर्नि धूयतां यम ।
सा मातुर्बध्यतां गृहेऽथो भ्रातुरथो पितुः ॥ २ ॥
एषा ते कुलपा राजन्तामु ते परि दद्मसि ।
ज्योक्पितृष्वासाता आ शीर्ष्णः समोप्यात् ॥ ३ ॥
असितस्य ते ब्रह्मणा कश्यपस्य गयस्य च ।
अन्तःकोशमिव जामयोऽपि नह्यामि ते भगम् ॥ ४ ॥

[१५] पञ्चदशं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा ॥ देवता—सिन्ध्वादयो मन्त्रोक्ताः ॥ छन्दः—१ भुरिग्बृहती; २ भुरिक्पथ्यापङ्क्तिः; ३, ४ अनुष्टुप् ॥

सं सं स्रवन्तु सिन्धवः सं वाताः सं पतत्रिणः ।
इमं यज्ञं प्रदिवो मे जुषन्तां संस्राव्येण हविषा जुहोमि ॥ १ ॥
इहैव हवमा यात म इह संस्रावणा उतेमं वर्धयता गिरः ।
इहैतु सर्वो यः पशुरस्मिन्तिष्ठतु या रयिः ॥ २ ॥
ये नदीनां संस्रवन्त्युत्सासः सदमक्षिताः ।
तेभिर्मे सर्वैः संस्रावैर्धनं सं स्रावयामसि ॥ ३ ॥
ये सर्पिषः संस्रवन्ति क्षीरस्य चोदकस्य च ।
तेभिर्मे सर्वैः संस्रावैर्धनं सं स्रावयामसि ॥ ४ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

[१६] षोडशं सूक्तम्

ऋषिः—चातनः॥ देवता—१ अग्निः; २ वरुणः, अग्निः, इन्द्रश्च; ३, ४ सीसम्॥ छन्दः—१-३ अनुष्टुप्; ४ ककुम्मत्यनुष्टुप्॥

येमावास्यां रात्रिमुदस्थुर्व्रजमत्रिणः ।
अग्निस्तुरीयो यातुहा सो अस्मभ्यमधि ब्रवत् ॥ १ ॥
सीसायाध्याहु वरुणः सीसायाग्निरुपावति ।
सीसं म इन्द्रः प्रायच्छत्तद्ब्रह्म यातुचातनम् ॥ २ ॥
इदं विष्कन्धं सहत इदं बाधते अत्रिणः ।
अनेन विश्वा ससहे या जातानि पिशाच्याः ॥ ३ ॥
यदि नो गां हंसि यद्यश्वं यदि पूरुषम् ।
तं त्वा सीसेन विध्यामो यथा नोऽसो अवीरहा ॥ ४ ॥

॥ इति प्रथमः प्रपाठकः ॥

अथ द्वितीयः प्रपाठकः ॥

अथ चतुर्थोऽनुवाकः [१७] सप्तदशं सूक्तम्

ऋषिः—ब्रह्मा॥ देवता—योषितो धमन्यश्च॥ छन्दः—१ भुरिगनुष्टुप्; २, ३ अनुष्टुप्; ४ त्रिपदार्षीगायत्री॥

अमूर्या यन्ति योषितो हिरा लोहितवाससः ।
अभ्रातरइव जामयस्तिष्ठन्तु हतवर्चसः ॥ १ ॥
तिष्ठावरे तिष्ठ पर उत त्वं तिष्ठ मध्यमे ।
कनिष्ठिका च तिष्ठति तिष्ठादिद्धुमतीर्महि ॥ २ ॥
शतस्य धमनीनां सहस्रस्य हिराणाम् ।
अस्थुरिन्मध्यमा इमाः साकमन्ता अरंसत ॥ ३ ॥
परि वः सिकतावती धनूर्बृहत्यक्रमीत् ।
तिष्ठतेलयता सु कम् ॥ ४ ॥

[१८] अष्टादशं सूक्तम्

ऋषिः—द्रविणोदाः॥ देवता—सवित्राद्यो मन्त्रोक्ताः॥ छन्दः—१ उपरिष्टाद्विराड्-बृहती; २ निचृज्जगती; ३ विराडास्तारपङ्क्तिस्त्रिष्टुप्; ४ अनुष्टुप्॥

निर्लक्ष्म्यं ललाम्यं निररातिं सुवामसि ।
अथ या भद्रा तानि नः प्रजाया अरातिं नयामसि ॥ १ ॥
निरराणिं सविता सावीषक्पदोर्निर्हस्तयोर्वरुणो मित्रो अर्यमा।
निरस्मभ्यमनुमती रराणा प्रेमां देवा असाविषुः सौभगाय॥ २ ॥
यत्त आत्मनि तन्वां घोरमस्ति यद्वा केशेषु प्रतिचक्षणे वा।
सर्वं तद्वाचाप हन्मो वयं देवस्त्वा सविता सूदयतु ॥ ३ ॥
रिश्यपदीं वृषदतीं गोषेधां विधमामुत ।
विलीढ्यं ललाम्यं ता अस्मन्नाशयामसि ॥ ४ ॥

[१९] एकोनविंशं सूक्तम्

ऋषिः—ब्रह्मा॥ देवता—१ इन्द्रः; २ मनुष्येषवः; ३ रुद्रः; ४ देवाः॥ छन्दः—१, ४ अनुष्टुप्; २ पुरस्ताद्बृहती; ३ पथ्यापङ्क्तिः॥

मा नो विदन्विव्याधिनो मो अभिव्याधिनो विदन् ।
आराच्छरव्या अस्मद्विधूचीरिन्द्र पातय ॥ १ ॥
विष्वञ्चो अस्मच्छरवः पतन्तु ये अस्ता ये चास्याः ।
दैवीर्मनुष्येषवो ममामित्रान्वि विध्यत ॥ २ ॥
यो नः स्वो यो अरणः सजात उत निष्ट्यो यो अस्माँ अभिदासति।
रुद्रः शरव्या यैतान्ममामित्रान्वि विध्यतु ॥ ३ ॥
यः सपत्नो योऽसपत्नो यश्च द्विषञ्छपाति नः ।
देवास्तं सर्वे धूर्वन्तु ब्रह्म वर्म ममान्तरम् ॥ ४ ॥

[२०] विंशं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा॥ देवता—१ सोमो मरुतश्च; २ मित्रावरुणौ; ३ वरुणः; ४ इन्द्रः॥ छन्दः—१ त्रिष्टुप्; २-४ अनुष्टुप्॥

अदारसृद्भवतु देव सोमास्मिन्यज्ञे मरुतो मृडता नः ।
मा नो विददभिभा मो अशस्तिर्मा नो विदद् वृजिना द्वेष्या या॥ १ ॥
यो अद्य सेन्यो वधोघायूनामुदीरते ।
युवं तं मित्रावरुणावस्मद्यावयतं परि ॥ २ ॥
इतश्च यदमुतश्च यद्बुधं वरुण यावय ।
वि महच्छर्म यच्छ वरीयो यावया वधम् ॥ ३ ॥
शास इत्था महाँ असि मित्रसाहो अस्तृतः ।
न यस्य हन्यते सखा न जीयते कदा चन ॥ ४ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

[२१] एकविंशं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—अनुष्टुप् ॥

स्वस्तिदा विशां पतिर्वृत्रहा विमृधो वशी।
वृषेन्द्रः पुर एतु नः सोमपा अभयङ्करः ॥ १ ॥
वि न इन्द्र मृधो जहि नीचा यच्छ पृतन्यतः।
अधमं गमया तमो यो अस्माँ अभिदासति ॥ २ ॥
वि रक्षो वि मृधो जहि वि वृत्रस्य हनू रुज।
वि मन्युमिन्द्र वृत्रहन्नमित्रस्याभिदासतः ॥ ३ ॥
अपेन्द्र द्विषतो मनोऽप जिज्यासतो वधम्।
वि महच्छर्म यच्छ वरीयो यावया वधम् ॥ ४ ॥

अथ पञ्चमोऽनुवाकः [२२] द्वाविंशं सूक्तम्

ऋषिः—ब्रह्मा ॥ देवता—सूर्यः, हरिमा, ह्रदोगश्च ॥ छन्दः—अनुष्टुप् ॥

अनु सूर्यमुदयतां हृद्द्योतो हरिमा च ते।
गो रोहितस्य वर्णेन तेन त्वा परि दध्मसि ॥ १ ॥
परि त्वा रोहितैर्वर्णैर्दीर्घायुत्वाय दध्मसि।
यथाऽयमरपा असदथो अहरितो भुवत् ॥ २ ॥
या रोहिणीर्देवत्या गावो या उत रोहिणीः।
रूपंरूपं वयोवयस्ताभिष्ट्वा परि दध्मसि ॥ ३ ॥
शुकेषु ते हरिमाणं रोपणाकासु दध्मसि।
अथो हारिद्रवेषु ते हरिमाणं नि दध्मसि ॥ ४ ॥

[२३] त्रयोविंशं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा ॥ देवता—वनस्पतयः (रामा, कृष्णा, असिक्नी च) ॥ छन्दः—अनुष्टुप् ॥

नक्तञ्जातास्योषधे रामे कृष्णे असिक्नि च।
इदं रंजनि रजय किलासं पलितं च यत् ॥ १ ॥
किलासं च पलितं च निरितो नाशया पृषत्।
आ त्वा स्वो विशतां वर्णः परा शुक्लानि पातय ॥ २ ॥
असितं ते प्रलयनमास्थानमसितं तव।
असिक्न्यस्योषधे निरितो नाशया पृषत् ॥ ३ ॥

अस्थिजस्य किलासस्य तनूजस्य च यत्त्वचि।
दूष्या कृतस्य ब्रह्मणा लक्ष्म श्वेतमनीनशम् ॥ ४ ॥

[२४] चतुर्विंशं सूक्तम्

ऋषिः—ब्रह्मा ॥ देवता—आसुरी वनस्पतिः ॥ छन्दः—१, ३, ४ अनुष्टुप्; २ निचृत्पथ्यापङ्क्तिः ॥

सुपर्णो जातः प्रथमस्तस्य त्वं पित्तमासिथ ।
तदासुरी युधा जिता रूपं चक्रे वनस्पतीन् ॥ १ ॥
आसुरी चक्रे प्रथमेदं किलासभेषजमिदं किलासनाशनम्।
अनीनशत् किलासं सरूपामकरत्त्वचम् ॥ २ ॥
सरूपा नाम ते माता सरूपो नाम ते पिता ।
सरूपकृत्त्वमोषधे सा सरूपमिदं कृधि ॥ ३ ॥
श्यामा संरूपङ्करणी पृथिव्या अध्युद्भृता ।
इदमू षु प्र साधय पुना रूपाणि कल्पय ॥ ४ ॥

[२५] पञ्चविंशं सूक्तम्

ऋषिः—भृग्वङ्गिराः ॥ देवता—यक्ष्मनाशनोऽग्निः ॥ छन्दः—१ त्रिष्टुप्; २, ३ विराड्गर्भात्रिष्टुप्; ४ पुरोऽनुष्टुप् ॥

यदग्निरापो अदहत्प्रविश्य यत्राकृण्वन्धर्मधृतो नमांसि ।
तत्र त आहुः परमं जनित्रं स नः संविद्वान्परि वृङ्ग्धि तक्मन् ॥ १ ॥
यद्यर्चिर्यदि वाऽसि शोचिः शकल्येषि यदि वा ते जनित्रम्।
हूडुर्नामासि हरितस्य देव स नः संविद्वान्परि वृङ्ग्धि तक्मन् ॥ २ ॥
यदि शोको यदि वाभिऽशोको यदि वा राज्ञो वरुणस्यासि पुत्रः।
हूडुर्नामासि हरितस्य देव स नः संविद्वान्परि वृङ्ग्धि तक्मन् ॥ ३ ॥
नमः शीताय तक्मने नमो रूराय शोचिषे कृणोमि ।
यो अन्येद्युरुभयद्युरभ्येति तृतीयकाय नमो अस्तु तक्मने ॥ ४ ॥

[२६] षड्विंशं सूक्तम्

ऋषिः—ब्रह्मा ॥ देवता—इन्द्रादयो मन्त्रोक्ताः ॥ छन्दः—१, ३ गायत्री; २ त्रिपदासाम्नीत्रिष्टुप् (एकावसाना); ४ पादनिचृद्गायत्री (एकावसाना) ॥

आरे अस्मदमतिमारे अंहो दुर्विदत्रमारे अघायुरघशंसः सुदानो।
आरे विश्वां दुरिता यन्नो अस्मत्सर्वाण्यारे अभयं पशुभ्यः ॥ १ ॥
सखा सखिभ्यः परिपाहि पश्चोत पुरस्तादुत मध्यतो नः।
सर्वतो नो रुद्रस्य हेतिर्वृणक्तु परि त्वेषस्य दुर्मतिरघायोः ॥ २ ॥
सखेन्द्रो नः सुहवो मरुत्वान्त्सखा गोपीथे अस्तु नो यमः।
सखा सासत्सुमतिर्नो अस्तु दिवंदिवे सखेन्द्रो नो रातिः सखेन्द्रो भगः सविता चित्रराधाः ॥ ३ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

यूयं नः प्रवतो नपान्मरुतः सूर्यत्वचसः। शर्म यच्छाथ सुप्रथाः॥ ३॥
सुषूदत मृडत मृडया नस्तनूभ्यो मयस्तोकेभ्यस्कृधि॥ ४॥

[२७] सप्तविंशं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा (स्वस्त्ययनकामः)॥ देवता—इन्द्राणी॥
छन्दः—१ पथ्यापङ्क्तिः; २-४ अनुष्टुप्॥

अमूः पारे पृदाक्वः स्त्रिषसा निर्जरायवः।
तासां जरायुभिर्वयमक्ष्या३वपि व्ययामस्यघायोः परिपन्थिनः॥ १॥
विषूच्येतु कृन्तती पिनाकमिव बिभ्रती।
विष्वक्पुनर्भुवा मनोऽसंमृद्धा अघायवः॥ २॥
न बहवः समशकन्नार्भका अभि दाधृषुः।
वेणोरग्रा इवाभितोऽसंमृद्धा अघायवः॥ ३॥
प्रेतं पादौ प्र स्फुरतं वहतं पृणतो गृहान्।
इन्द्राण्येतु प्रथमाजीतामुषिता पुरः॥ ४॥

[२८] अष्टाविंशं सूक्तम्

ऋषिः—चातनः॥ देवता—१, २ (पूर्वार्धस्य) अग्निः, २ (उत्तरार्धात्) ४ यातुधान्यः॥ छन्दः—१, २ अनुष्टुप्; ३ विराट्पथ्या-बृहती; ४ पथ्यापङ्क्तिः॥

उप प्रागाद्देवो अग्नी रक्षोहामीवचातनः।
दहन्नप द्व्याविनो यातुधानान्किमीदिनः॥ १॥
प्रति दह यातुधानान्प्रति देव किमीदिनः।
प्रतीचीः कृष्णवर्तने सं दह यातुधान्यः॥ २॥
या शशाप शपनेन याघं मूरमादधे।
या रसस्य हरणाय जातमारेभे तोकमत्तु सा॥ ३॥
पुत्रमत्तु यातुधानीः स्वसारमुत नप्त्यम्।
अधा मिथो विकेश्यो३ वि नश्यतां यातुधान्यो३ वि तृंहन्तामराय्यः॥ ४॥

अथ षष्ठोऽनुवाकः [२९] एकोनत्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः॥ देवता—ब्रह्मणस्पतिः; अभीवर्तमणिः॥
छन्दः—अनुष्टुप्॥

अभीवर्तेन मणिना येनेन्द्रो अभिवावृधे।
तेनास्मान्ब्रह्मणस्पतेऽभि राष्ट्राय वर्धय॥ १॥
अभिवृत्य सपत्नानभि या नो अरातयः।
अभि पृतन्यन्तं तिष्ठाभि यो नो दुरस्यति॥ २॥

अभि त्वा देवः सविताभि सोमो अवीवृधत्।
अभि त्वा विश्वा भूतान्यभीवर्तो यथाससि॥ ३॥
अभीवर्तो अभिभवः सपत्नक्षयणो मणिः।
राष्ट्राय मह्यं बध्यतां सपत्नेभ्यः पराभुवे॥ ४॥
उदसौ सूर्यो अगादुदिदं मामकं वचः।
यथाहं शत्रुहोऽसान्यसपत्नः सपत्नहा॥ ५॥
सपत्नक्षयणो वृषाभिराष्ट्रो विषासहिः।
यथाहमेषां वीराणां विराजानि जनस्य च॥ ६॥

[३०] त्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा (आयुष्कामः)॥ देवता—विश्वे देवाः॥ छन्दः—१, २, ४ त्रिष्टुप्; ३ शाक्वरगर्भाविराड्जगती॥

विश्वे देवा वसवो रक्षतेममुतादित्या जागृत यूयमस्मिन्।
मेमं सनाभिरुत वान्यनाभिर्मेमं प्रापत्पौरुषेयो वधो यः॥ १॥
ये वो देवाः पितरो ये च पुत्राः सचेतसो मे शृणुतेदमुक्तम्।
सर्वेभ्यो वः परि ददाम्येतं स्वस्त्येनं जरसे वहाथ॥ २॥
ये देवा दिवि ष्ठ ये पृथिव्यां ये अन्तरिक्ष ओषधीषु पशुष्वप्स्वन्तः।
ते कृणुत जरसमायुरस्मै शतमन्यान्परि वृणक्तु मृत्यून्॥ ३॥
येषां प्रयाजा उत वानुयाजा हुतभागा अहुतादश्च देवाः।
येषां वः पञ्च प्रदिशो विभक्तास्तान्वो अस्मै सत्रसदः कृणोमि॥ ४॥

[३१] एकत्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—ब्रह्मा॥ देवता—आशापालाः (वास्तोष्पतयः)॥ छन्दः—१, २ अनुष्टुप्; ३ विराट्त्रिष्टुप्; ४ परानुष्टुप् त्रिष्टुप्॥

आशानामाशापालेभ्यश्चतुर्भ्यो अमृतेभ्यः।
इदं भूतस्याध्यक्षेभ्यो विधेम हविषा वयम्॥ १॥
य आशानामाशापालाश्चत्वार स्थन देवाः।
ते नो निर्ऋत्याः पाशेभ्यो मुञ्चतांहसोअंहसः॥ २॥
अस्त्रामस्त्वा हविषा यजाम्यश्लोणस्त्वा घृतेन जुहोमि।
य आशानामाशापालस्तुरीयो देवः स नः सुभूतमेह वक्षत्॥ ३॥
स्वस्ति मात्र उत पित्रे नो अस्तु स्वस्ति गोभ्यो जगते पुरुषेभ्यः।
विश्वं सुभूतं सुविदत्रं नो अस्तु ज्योगेव दृशेम सूर्यम्॥ ४॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

[३२] द्वात्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—ब्रह्मा॥ देवता—द्यावापृथिवी॥ छन्दः—१, ३, ४ अनुष्टुप्; २ ककुम्मत्यनुष्टुप्॥

इदं जनासो विदथं महद् ब्रह्म वदिष्यति।
न तत्पृथिव्यां नो दिवि येन प्राणन्ति वीरुधः॥ १॥
अन्तरिक्ष आसां स्थाम श्रान्तसदामिव ।
आस्थानमस्य भूतस्य विदुष्टद्वेधसो न वा॥ २॥
यद्रोदसी रेजमाने भूमिश्च निरतक्षतम् ।
आद्रं तदद्य सर्वदा समुद्रस्येव स्रोत्याः॥ ३॥
विश्वंमन्यामभावरं तदन्यस्यामधि श्रितम्।
दिवे च विश्ववेदसे पृथिव्यै चाकरं नमः॥ ४॥

[३३] त्रयस्त्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—शन्तातिः॥ देवता—आपः॥ छन्दः—त्रिष्टुप्॥

हिरण्यवर्णाः शुचयः पावका यासु जातः सविता यास्वग्निः।
या अग्निं गर्भं दधिरे सुवर्णास्ता न आपः शं स्योना भवन्तु॥ १॥
यासां राजा वरुणो याति मध्ये सत्यानृते अवपश्यञ्जनानाम्।
या अग्निं गर्भं दधिरे सुवर्णास्ता न आपः शं स्योना भवन्तु॥ २॥
यासां देवा दिवि कृण्वन्ति भक्षं या अन्तरिक्षे बहुधा भवन्ति।
या अग्निं गर्भं दधिरे सुवर्णास्ता न आपः शं स्योना भवन्तु॥ ३॥
शिवेन मा चक्षुषा पश्यतापः शिवया तन्वोप स्पृशत त्वचं मे।
घृतश्चुतः शुचयो याः पावकास्ता न आपः शं स्योना भवन्तु॥ ४॥

[३४] चतुस्त्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा॥ देवता—मधुवनस्पतिः॥ छन्दः—अनुष्टुप्॥

इयं वीरुन्मधुजाता मधुना त्वा खनामसि।
मधोरधि प्रजातासि सा नो मधुमतस्कृधि॥ १॥
जिह्वाया अग्रे मधु मे जिह्वामूले मधूलकम्।
ममेदह क्रतावसो मम चित्तमुपायसि ॥ २॥
मधुमन्मे निक्रमणं मधुमन्मे परायणम् ।
वाचा वदामि मधुमद्भूयासं मधुसंदृशः ॥ ३॥
मधोरस्मि मधुतरो मदुघान्मधुमत्तरः ।
मामित्किल त्वं वनाः शाखां मधुमतीमिव॥ ४॥

परि त्वा परित्नुनेक्षुणागामविद्विषे ।
यथा मां कामिन्यसो यथा मन्नापगा असः॥ ५॥

[३५] पञ्चत्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा (आयुष्कामः)॥ देवता—हिरण्यम्॥ छन्दः—१-३ जगती; ४ अनुष्टुब्गर्भाचतुष्पदात्रिष्टुप्॥

यदाबध्नन्दाक्षायणा हिरण्यं शतानीकाय सुमनस्यमानाः ।
तत्ते बध्नाम्यायुषे वर्चसे बलाय दीर्घायुत्वाय शतशारदाय॥ १॥
नैनं रक्षांसि न पिशाचाः सहन्ते देवानामोजः प्रथमजं ह्येतत्।
यो बिभर्ति दाक्षायणं हिरण्यं स जीवेषु कृणुते दीर्घमायुः॥ २॥
अपां तेजो ज्योतिरोजो बलं च वनस्पतीनामुत वीर्याणि।
इन्द्रइवेन्द्रियाण्यधि धारयामो अस्मिन्तद्दक्षमाणो बिभरद्धिरण्यम्॥ ३॥
समानां मासामृतुभिष्ट्वा वयं संवत्सरस्य पयसा पिपर्मि ।
इन्द्राग्नी विश्वे देवास्तेऽनु मन्यन्तामहृणीयमानाः ॥ ४॥

॥इति प्रथमं काण्डम्॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अथ द्वितीयं काण्डम्॥

अथ तृतीयः प्रपाठकः॥

अथ प्रथमोऽनुवाकः

[१] प्रथमं सूक्तम्

ऋषिः—वेनः॥ देवता—ब्रह्म, आत्मा॥ छन्दः—१, २, ४, ५ त्रिष्टुप्; ३ जगती॥

वे॒नस्तत्प॑श्यत्पर॒मं गुहा॒ यद्यत्र॒ विश्वं॒ भव॒त्येक॑रूपम् ।
इ॒दं पृश्नि॑रदुह॒ज्जाय॑मानाः स्व॒र्विदो॑ अ॒भ्य॑नूषत॒ व्राः ॥१॥
प्र तद्वो॑चेद॒मृत॑स्य वि॒द्वान्ग॑न्ध॒र्वो धाम॑ पर॒मं गुहा॒ यत् ।
त्रीणि॑ प॒दानि॒ निहि॑ता॒ गुहा॑स्य॒ यस्तानि॒ वेद॒ स पि॒तुष्पि॒तास॑त्॥२॥
स नः॑ पि॒ता ज॑नि॒ता स उ॒त बन्धु॒र्धामा॑नि वेद॒ भुव॑नानि॒ विश्वा॑।
यो दे॒वानां॑ नाम॒ध एक॑ ए॒व तं सं॑प्र॒श्नं भुव॑ना यन्ति॒ सर्वा॑॥३॥
परि॒ द्यावा॑पृथि॒वी स॒द्य आ॑य॒मुपा॑तिष्ठे प्रथम॒जामृ॒तस्य॑ ।
वाच॑मिव व॒क्तरि॑ भुवने॒ष्ठा धा॒स्युरे॒ष न॒न्वे॒३॒॑षो अ॒ग्निः ॥४॥
परि॒ विश्वा॒ भुव॑नान्यायमृ॒तस्य॒ तन्तुं॒ वित॑तं दृ॒शे कम् ।
यत्र॑ दे॒वा अ॒मृत॑मानशा॒नाः स॑मा॒ने योना॒वध्यैर॑यन्त ॥५॥

[२] द्वितीयं सूक्तम्

ऋषिः—मातृनामा॥ देवता—गन्धर्वाप्सरसः॥ छन्दः—१ विराड्जगती; २, ३ त्रिष्टुप्; ४ त्रिपदा विराण्नामगायत्री; ५ भुरिगनुष्टुप्॥

दि॒व्यो ग॑न्ध॒र्वो भुव॑नस्य॒ यस्पति॒रेक॑ ए॒व न॑म॒स्यो॑ वि॒क्ष्वीड्यः॑।
तं त्वा॑ यौमि॒ ब्रह्म॑णा दिव्य देव॒ नम॑स्ते अस्तु दि॒वि ते॑ स॒धस्थ॑म्॥१॥
दि॒वि स्पृ॒ष्टो य॑ज॒तः सूर्य॑त्वगवया॒ता हर॑सो॒ दैव्य॑स्य ।
मृ॒डाद्ग॑न्ध॒र्वो भुव॑नस्य॒ यस्पति॒रेक॑ ए॒व न॑म॒स्यः॑ सु॒शेवाः॑ ॥२॥
अ॒न॒व॒द्याभिः॒ समु॑ जग्म आभिरप्स॒रास्वपि॑ गन्ध॒र्व आ॑सीत् ।
स॒मु॒द्र आ॑सां॒ सद॑नं म आहु॒र्यतः॑ स॒द्य आ च॒ परा॑ च॒ यन्ति॑॥३॥
अभ्रि॑ये॒ दिद्यु॒न्नक्ष॑त्रिये॒ या वि॒श्वाव॑सुं गन्ध॒र्वं सच॑ध्वे ।
ताभ्यो॑ वो देवा॒र्नम॒ इत्कृ॑णोमि ॥४॥
याः क्ल॒न्दास्तमि॑षीचयो॒ऽक्षका॑मा मनो॒मुहः॑ ।
ताभ्यो॑ गन्ध॒र्वप॑त्नीभ्योऽप्स॒राभ्यो॑ऽकरं॒ नमः॑ ॥५॥

[३] तृतीयं सूक्तम्

ऋषिः—अङ्गिराः॥ देवता—(आस्राव)-भेषजम्॥ छन्दः—१-५ अनुष्टुप्; ६ त्रिपदास्वराडुपरिष्टान्महाबृहती॥

अ॒दो यद॑व॒धाव॑त्यव॒त्कमधि॒ पर्व॑तात् ।
तत्ते॑ कृणोमि भेष॒जं सुभे॑षजं॒ यथास॑सि ॥१॥
आद॒ङ्गा कु॒विद॒ङ्गा श॒तं या भे॑ष॒जानि॑ ते ।
तेषा॑मसि॒ त्वमु॑त्तमम॑नास्रा॒वमरो॑गणम् ॥२॥
नी॒चैः ख॑न॒न्त्यसु॑रा अरु॒ः स्राण॑मि॒दं म॒हत् ।
तदा॑स्रा॒वस्य॑ भेष॒जं तदु॒ रोग॑मनीनशत् ॥३॥
उ॒प॒जीका॒ उद्ध॑रन्ति समु॒द्रादधि॑ भेष॒जम् ।
तदा॑स्रा॒वस्य॑ भेष॒जं तदु॒ रोग॑मशीशमत् ॥४॥
अ॒रु॒ः स्राण॑मि॒दं म॒हत्पृ॑थि॒व्या अध्युद् भृ॑तम् ।
तदा॑स्रा॒वस्य॑ भेष॒जं तदु॒ रोग॑मनीनशत् ॥५॥
शं नो॑ भवन्त्व॒प ओष॑धयः शि॒वाः। इन्द्र॑स्य॒ वज्रो॒
अप॑ हन्तु र॒क्षस॑ आ॒राद्विसृ॑ष्टा॒ इष॑वः पतन्तु र॒क्षसा॑म्॥६॥

[४] चतुर्थं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा॥ देवता—जङ्गिडमणिः॥ छन्दः—१ विराट्-प्रस्तारपङ्क्तिः; २-६ अनुष्टुप्॥

दा॒र्घा॒युत्वाय॑ बृह॒ते रणा॒यारि॑ष्यन्तो॒ दक्ष॑माणाः॒ सदै॒व।
म॒णिं वि॑ष्कन्ध॒दूष॑णं जङ्गि॒डं बि॑भृमो व॒यम् ॥१॥
ज॒ङ्गि॒डो ज॒म्भाद्वि॑श॒राद्विष्क॑न्धादभि॒शोच॑नात् ।
म॒णिः स॒हस्र॑वीर्यः॒ परि॑ णः पातु वि॒श्वतः॑ ॥२॥
अ॒यं विष्क॑न्धं सहते॒ऽयं बा॑धते अ॒त्रिणः॑ ।
अ॒यं नो॑ वि॒श्वभे॑षजो जङ्गि॒डः पा॒त्वंह॑सः ॥३॥
दे॒वैर्द॒त्तेन॑ म॒णिना॑ जङ्गि॒डेन॑ मयो॒भुवा॑ ।
विष्क॑न्धं॒ सर्वा॒ रक्षां॑सि व्याया॒मे स॑हामहे ॥४॥
श॒णश्च॑ मा जङ्गि॒डश्च॒ विष्क॑न्धाद॒भि र॑क्षताम्।
अर॑ण्यादन्य आभृ॑तः कृ॒ष्या अ॒न्यो रसे॑भ्यः ॥५॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कृत्यादूषिरयं मणिरथो अरातिदूषिः ।
अथो सहस्वान् जङ्गिडः प्र ण आयूंषि तारिषत् ॥ ६ ॥

[५] पञ्चमं सूक्तम्

ऋषिः—भृगुराथर्वणः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१ निचृदुपरिष्टाद्बृहती; २ विराडुपरिष्टाद्बृहती; ३ विराट्पथ्याबृहती; ४ जगतीपुरोविराट् त्रिष्टुप्; ५-७ त्रिष्टुप् ॥

इन्द्र जुषस्व प्र वहा याहि शूर हरिभ्याम् ।
पिबा सुतस्य मतेरिह मधोश्चकानश्चारुमदाय ॥ १ ॥
इन्द्र जठरं नव्यो न पृणस्व मधोर्दिवो न ।
अस्य सुतस्य स्वार्णोप त्वा मदाः सुवाचो अगुः ॥ २ ॥
इन्द्रस्तुराषाण्मित्रो वृत्रं यो जघान यतीर्न ।
बिभेद वलं भृगुर्न ससहे शत्रून्मदे सोमस्य ॥ ३ ॥
आ त्वा विशन्तु सुतास इन्द्र पृणस्व कुक्षी विड्ढि शक्र धियेह्या नः ।
श्रुधी हवं गिरो मे जुषस्वेन्द्र स्वयुग्भिर्मत्स्वेह महे रणाय ॥ ४ ॥
इन्द्रस्य नु प्रा वोचं वार्याणि यानि चकार प्रथमानि वज्री ।
अहन्नहिमन्वपस्ततर्द प्र वक्षणा अभिनत्पर्वतानाम् ॥ ५ ॥
अहन्नहिं पर्वते शिश्रियाणं त्वष्टास्मै वज्रं स्वर्यं ततक्ष ।
वाश्राइव धेनवः स्यन्दमाना अञ्जः समुद्रमव जग्मुरापः ॥ ६ ॥
वृषायमाणो अवृणीत सोमं त्रिकद्रुकेष्वपिबत्सुतस्य ।
आ सायकं मघवादत्त वज्रमहन्नेनं प्रथमजामहीनाम् ॥ ७ ॥

अथ द्वितीयोऽनुवाकः [६] षष्ठं सूक्तम्

ऋषिः—शौनकः (सम्पत्कामः) ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१-३ त्रिष्टुप्; ४ चतुष्पदाऽऽर्षीपङ्क्तिः; ५ विराट्प्रस्तारपङ्क्तिः ॥

समास्त्वाग्न ऋतवो वर्धयन्तु संवत्सरा ऋषयो यानि सत्या ।
सं दिव्येन दीदिहि रोचनेन विश्वा आ भाहि प्रदिशश्चतस्रः ॥ १ ॥
सं चेध्यस्वाग्ने प्र च वर्धयेममुच्च तिष्ठ महते सौभगाय ।
मा ते रिषन्नुपसत्तारो अग्ने ब्रह्माणस्ते यशसः सन्तु मान्ये ॥ २ ॥
त्वामग्ने वृणते ब्राह्मणा इमे शिवो अग्ने संवरणे भवा नः ।
सपत्नहाग्ने अभिमातिजिद्ध्रुव स्वे गये जागृह्यप्रयुच्छन् ॥ ३ ॥
क्षत्रेणाग्ने स्वेन सं रभस्व मित्रेणाग्ने मित्रधा यतस्व ।
सजातानां मध्यमेष्ठा राज्ञामग्ने विहव्यो दीदिहीह ॥ ४ ॥

अति निहो अति स्रधोऽत्यचित्तीरति द्विषः ।
विश्वा ह्यग्ने दुरिता तर त्वमथास्मभ्यं सहवीरं रयिं दाः ॥ ५ ॥

[७] सप्तमं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा ॥ देवता—वनस्पतिः (दूर्वा) ॥ छन्दः—१ भुरिगनुष्टुप्; २, ३, ५ अनुष्टुप्; ४ विराडुपरिष्टाद्बृहती ॥

अघद्विष्टा देवजाता वीरुच्छपथयोपनी ।
आपो मलमिव प्राणैक्षीत्सर्वान्मच्छपथाँ अधि ॥ १ ॥
यश्च सापत्नः शपथो जाम्याः शपथश्च यः ।
ब्रह्मा यन्मन्युतः शपात्सर्वं तन्नो अधस्पदम् ॥ २ ॥
दिवो मूलमवततं पृथिव्या अध्युत्ततम् ।
तेन सहस्रकाण्डेन परि णः पाहि विश्वतः ॥ ३ ॥
परि मां परि मे प्रजां परि णः पाहि यद्धनम् ।
अरातिर्नो मा तारीन्मा नस्तारिषुरभिमातयः ॥ ४ ॥
शमारमेतु शपथो यः सुहार्त्तेन नः सह ।
चक्षुर्मन्त्रस्य दुर्हार्दः पृष्टीरपि शृणीमसि ॥ ५ ॥

[८] अष्टमं सूक्तम्

ऋषिः—भृग्वङ्गिराः ॥ देवता—क्षेत्रिय-(यक्ष्मकुष्ठादि)-नाशनम् ॥ छन्दः—१, २ अनुष्टुप्; ३ पथ्यापङ्क्तिः; ४ विराडनुष्टुप्; ५ निचृत्पथ्यापङ्क्तिः ॥

उदगातां भगवती विचृतौ नाम तारके ।
वि क्षेत्रियस्य मुञ्चतामधमं पाशमुत्तमम् ॥ १ ॥
अपेयं रात्र्युच्छत्वपोच्छन्त्वभिकृत्वरीः ।
वीरुत्क्षेत्रियनाशन्यप क्षेत्रियमुच्छतु ॥ २ ॥
बभ्रोरर्जुनकाण्डस्य यवस्य ते पलाल्या तिलस्य तिलपिञ्ज्या ।
वीरुत्क्षेत्रियनाशन्यप क्षेत्रियमुच्छतु ॥ ३ ॥
नमस्ते लाङ्गलेभ्यो नम ईषायुगेभ्यः ।
वीरुत्क्षेत्रियनाशन्यप क्षेत्रियमुच्छतु ॥ ४ ॥
नमः सनिस्रसाक्षेभ्यो नमः संदेश्येभ्यो नमः क्षेत्रस्य पतये ।
वीरुत्क्षेत्रियनाशन्यप क्षेत्रियमुच्छतु ॥ ५ ॥

[९] नवमं सूक्तम्

ऋषिः—भृग्वङ्गिराः ॥ देवता—वनस्पतिः ॥ छन्दः—१ विराट्प्रस्तारपङ्क्तिः; २-५ अनुष्टुप् ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

दशवृक्ष मुञ्चेमं रक्षसो ग्राह्या अधि यैनं जग्राह पर्वसु।
अथो एनं वनस्पते जीवानां लोकमुन्नय ॥ १ ॥
आगादुदगादयं जीवानां व्रातमप्यगात् ।
अभूदु पुत्राणां पिता नृणां च भगवत्तमः ॥ २ ॥
अधीतीरध्यगादयमधि जीवपुरा अगन् ।
शतं ह्यस्य भिषजः सहस्रमुत वीरुधः ॥ ३ ॥
देवास्ते चीतिमविदन्ब्रह्माण उत वीरुधः ।
चीतिं ते विश्वे देवा अविदुन्भूम्यामधि ॥ ४ ॥
यश्चकार स निष्करत्स एव सुभिषक्तमः ।
स एव तुभ्यं भेषजानि कृणवद्भिषजा शुचिः ॥ ५ ॥

[१०] दशमं सूक्तम्

ऋषिः—भृग्वङ्गिराः ॥ देवता—निर्ऋतिद्यावापृथिव्यादयो मन्त्रोक्ताः ॥
छन्दः—१ त्रिष्टुप्; २ सप्तपदाष्टिः; ३-५, ७, ८ सप्तपदाधृतिः; ६ सप्तपदात्यष्टिः ॥

क्षेत्रियात्त्वा निर्ऋत्या जामिशंसाद् द्रुहो मुञ्चामि वरुणस्य पाशात्।
अनागसं ब्रह्मणा त्वा कृणोमि शिवे ते द्यावापृथिवी उभे स्ताम् ॥ १ ॥
शं ते अग्निः सहाद्भिरस्तु शं सोमः सहौषधीभिः ।
एवाहं त्वां क्षेत्रियान्निर्ऋत्या जामिशंसाद् द्रुहो मुञ्चामि वरुणस्य पाशात्।
अनागसं ब्रह्मणा त्वा कृणोमि शिवे ते द्यावापृथिवी उभे स्ताम् ॥ २ ॥
शं ते वातो अन्तरिक्षे वयो धाच्छं ते भवन्तु प्रदिशश्चतस्रः।
एवाहं त्वां क्षेत्रियान्निर्ऋत्या जामिशंसाद् द्रुहो मुञ्चामि वरुणस्य पाशात्।
अनागसं ब्रह्मणा त्वा कृणोमि शिवे ते द्यावापृथिवी उभे स्ताम् ॥ ३ ॥
इमा या देवीः प्रदिशश्चतस्रो वातपत्नीरभि सूर्यो विचष्टे ।
एवाहं त्वां क्षेत्रियान्निर्ऋत्या जामिशंसाद् द्रुहो मुञ्चामि वरुणस्य पाशात्।
अनागसं ब्रह्मणा त्वा कृणोमि शिवे ते द्यावापृथिवी उभे स्ताम् ॥ ४ ॥
तासु त्वान्तर्जरस्या दधामि प्र यक्ष्म एतु निर्ऋतिः पराचैः ।
एवाहं त्वां क्षेत्रियान्निर्ऋत्या जामिशंसाद् द्रुहो मुञ्चामि वरुणस्य पाशात्।
अनागसं ब्रह्मणा त्वा कृणोमि शिवे ते द्यावापृथिवी उभे स्ताम् ॥ ५ ॥
अमुक्था यक्ष्मादुरितादवद्याद् द्रुहः पाशाद् ग्राह्याश्चोदमुक्थाः ।
एवाहं त्वां क्षेत्रियान्निर्ऋत्या जामिशंसाद् द्रुहो मुञ्चामि वरुणस्य पाशात्।
अनागसं ब्रह्मणा त्वा कृणोमि शिवे ते द्यावापृथिवी उभे स्ताम् ॥ ६ ॥
अहा अरातिमविदः स्योनमप्यभूभ्द्रे सुकृतस्य लोके ।
एवाहं त्वां क्षेत्रियान्निर्ऋत्या जामिशंसाद् द्रुहो मुञ्चामि वरुणस्य पाशात्।
अनागसं ब्रह्मणा त्वा कृणोमि शिवे ते द्यावापृथिवी उभे स्ताम् ॥ ७ ॥
सूर्यमृतं तमसो ग्राह्या अधि देवा मुञ्चन्तो असृजन्निरेणसः ।
एवाहं त्वां क्षेत्रियान्निर्ऋत्या जामिशंसाद् द्रुहो मुञ्चामि वरुणस्य पाशात्।
अनागसं ब्रह्मणा त्वा कृणोमि शिवे ते द्यावापृथिवी उभे स्ताम् ॥ ८ ॥

अथ तृतीयोऽनुवाकः [११] एकादशं सूक्तम्

ऋषिः—शुक्रः ॥ देवता—मन्त्रोक्ताः ॥ छन्दः—१ चतुष्पदाविराड्गायत्री; २, ३, ५ त्रिपदापरोष्णिक्; ४ पिपीलिकामध्यानिचृदुष्णिक् ॥

दूष्या दूषिरसि हेत्या हेतिरसि मेन्या मेनिरसि।
आप्नुहि श्रेयांसमति समं क्राम ॥ १ ॥
स्रक्त्योऽसि प्रतिसरोऽसि प्रत्यभिचरणोऽसि।
आप्नुहि श्रेयांसमति समं क्राम ॥ २ ॥
प्रति तमभि चर योऽस्मान्द्वेष्टि यं वयं द्विष्मः।
आप्नुहि श्रेयांसमति समं क्राम ॥ ३ ॥
सूरिरसि वर्चोधा असि तनूपानोऽसि ।
आप्नुहि श्रेयांसमति समं क्राम ॥ ४ ॥
शुक्रोऽसि भ्राजोऽसि स्वरसि ज्योतिरसि।
आप्नुहि श्रेयांसमति समं क्राम ॥ ५ ॥

[१२] द्वादशं सूक्तम्

ऋषिः—भरद्वाजः ॥ देवता—१ द्यावापृथिवी अन्तरिक्षं च; २ देवाः; ३ इन्द्रः; ४ आदित्यवस्वङ्गिरसः पितरः; ५ सोम्यासः पितरः; ६ मरुतः; ७ यमसादनम्, ब्रह्म; ८ अग्निः ॥ छन्दः—१, ३-६ त्रिष्टुप्; २ जगती; ७-८ अनुष्टुप् ॥

द्यावापृथिवी उर्वन्तरिक्षं क्षेत्रस्य पत्न्युरुगायोऽद्भुतः ।
उतान्तरिक्षमुरु वातगोपं त इह तप्यन्तां मयि तप्यमाने ॥ १ ॥
इदं देवाः शृणुत ये यज्ञिया स्थ भरद्वाजो महामुक्थानि शंसति।
पाशे स बब्धो दुरिते नि युज्यतां यो अस्माकं मन इदं हिनस्ति ॥ २ ॥
इदमिन्द्र शृणुहि सोमपु यत्त्वा हृदा शोचता जोहवीमि ।
वृश्चामि तं कुलिशेनेव वृक्षं यो अस्माकं मन इदं हिनस्ति ॥ ३ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अशीतिभिस्तिसृभिः सामगेभिरादित्येभिर्वसुभिरङ्गिरोभिः ।
इष्टापूर्तमवतु नः पितृणामामुं ददे हरसा दैव्येन ॥ ४ ॥
द्यावापृथिवी अनु मा दीधीथां विश्वे देवासो अनु मा रभध्वम् ।
अङ्गिरसः पितरः सोम्यासः पापमार्छत्वपकामस्य कर्ता ॥ ५ ॥
अतीव यो मरुतो मन्यते नो ब्रह्म वा यो निन्दिषत्क्रियमाणम् ।
तपूंषि तस्मै वृजिनानि सन्तु ब्रह्मद्विषं द्यौरभिसंतपाति ॥ ६ ॥
सप्त प्राणानष्टौ मन्यस्तांस्ते वृश्चामि ब्रह्मणा ।
अया यमस्य सादनमग्निदूतो अरंकृतः ॥ ७ ॥
आ दधामि ते पदं समिद्धे जातवेदसि ।
अग्निः शरीरं वेवेष्ट्वसुं वागपि गच्छतु ॥ ८ ॥

[१३] त्रयोदशं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा ॥ देवता—१ अग्निः; २, ३ बृहस्पतिः; ४, ५ विश्वे देवाः ॥ छन्दः—१-३ त्रिष्टुप्; ४ अनुष्टुप्; ५ विराड्जगती ॥

आयुर्दा अग्ने जरसं वृणानो घृतप्रतीको घृतपृष्ठो अग्ने ।
घृतं पीत्वा मधु चारु गव्यं पितेव पुत्रानभि रक्षतादिमम् ॥ १ ॥
परि धत्त धत्त नो वर्चसेमं जरामृत्युं कृणुत दीर्घमायुः ।
बृहस्पतिः प्रायच्छद्वास एतत्सोमाय राज्ञे परिधातवा उ ॥ २ ॥
परीदं वासो अधिथाः स्वस्तयेऽभूर्गृष्टीनामभिशस्तिपा उ ।
शतं च जीव शरदः पुरूची रायश्च पोषमुपसंव्ययस्व ॥ ३ ॥
एह्यश्मानमा तिष्ठाश्मा भवतु ते तनूः ।
कृण्वन्तु विश्वे देवा आयुष्टे शरदः शतम् ॥ ४ ॥
यस्य ते वासः प्रथमवास्यं हरामस्तं त्वा विश्वेऽवन्तु देवाः ।
तं त्वा भ्रातरः सुवृधा वर्धमानमनु जायन्तां बहवः सुजातम् ॥ ५ ॥

[१४] चतुर्दशं सूक्तम्

ऋषिः—चातनः ॥ देवता—अग्निभूतपतीन्द्रा मन्त्रोक्ताः ॥ छन्दः—१, ३, ५, ६ अनुष्टुप्; २ भुरिगनुष्टुप्; ४ उपरिष्टाद्विराड्बृहती ॥

निःसालां धृष्णुं धिषणामेकवाद्यां जिघत्स्वम् ।
सर्वाश्चण्डस्य नप्त्यो नाशयामः सदान्वाः ॥ १ ॥
निर्वो गोष्ठादजामसि निरक्षान्निरुपानसात् ।
निर्वो मगुन्द्या दुहितरो गृहेभ्यश्चातयामहे

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

असौ यो अध्वराद् गृहस्तत्र सन्त्वराय्यः ।
तत्र सेदिर्न्युच्यतु सर्वांश्च यातुधान्यः ॥ ३ ॥
भूतपतिर्निरजत्विन्द्रश्चेतः सदान्वाः ।
गृहस्य बुध्न आसीनास्ता इन्द्रो वज्रेणाधि तिष्ठतु ॥ ४ ॥
यदि स्थ क्षेत्रियाणां यदि वा पुरुषेषिताः ।
यदि स्थ दस्युभ्यो जाता नश्यतेतः सदान्वाः ॥ ५ ॥
परि धामान्यासामाशुर्गाष्ठामिवासरम् ।
अजैषं सर्वीनाजीन्वो नश्यतेतः सदान्वाः ॥ ६ ॥

[१५] पञ्चदशं सूक्तम्

ऋषिः—ब्रह्मा ॥ देवता—प्राणः ॥ छन्दः—त्रिपाद्गायत्री ॥

यथा द्यौश्च पृथिवी च न बिभीतो न रिष्यतः ।
एवा मे प्राण मा बिभेः ॥ १ ॥
यथाहश्च रात्री च न बिभीतो न रिष्यतः ।
एवा मे प्राण मा बिभेः ॥ २ ॥
यथा सूर्यश्च चन्द्रश्च न बिभीतो न रिष्यतः ।
एवा मे प्राण मा बिभेः ॥ ३ ॥
यथा ब्रह्म च क्षत्रं च न बिभीतो न रिष्यतः ।
एवा मे प्राण मा बिभेः ॥ ४ ॥
यथा सत्यं चानृतं च न बिभीतो न रिष्यतः ।
एवा मे प्राण मा बिभेः ॥ ५ ॥
यथा भूतं च भव्यं च न बिभीतो न रिष्यतः ।
एवा मे प्राण मा बिभेः ॥ ६ ॥

[१६] षोडशं सूक्तम्

ऋषिः—ब्रह्मा ॥ देवता—१ प्राणापानौ; २ द्यावापृथिवी; ३ सूर्यः; ४ अग्निः; ५ विश्वम्भरः ॥ छन्दः—१, ३ एकपदाऽऽसुरीत्रिष्टुप्; २ एकपदाऽऽसुर्युष्णिक्; ४, ५ द्विपदाऽऽसुरीगायत्री ॥

प्राणापानौ मृत्योर्मा पातं स्वाहा ॥ १ ॥
द्यावापृथिवी उपश्रुत्या मा पातं स्वाहा ॥ २ ॥
सूर्य चक्षुषा मा पाहि स्वाहा ॥ ३ ॥
अग्ने वैश्वानर विश्वैर्मा देवैः पाहि स्वाहा ॥ ४ ॥

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

विश्वंभर॒ विश्वेन॒ मा॒ भर॑सा पाहि॒ स्वाहा॑ ॥ ५ ॥

[१७] सप्तदशं सूक्तम्

ऋषिः—ब्रह्मा ॥ देवता—ओजःप्रभृतीनि ॥ छन्दः—१-६ एकपदाऽऽसुरी-त्रिष्टुप्; ७ आसुर्युष्णिक् ॥

ओजो॒ऽस्योजो॑ मे दा॒ः स्वाहा॑ ॥ १ ॥
सहो॑ऽसि॒ सहो॑ मे दा॒ः स्वाहा॑ ॥ २ ॥
बल॑मसि॒ बल॑ मे दा॒ः स्वाहा॑ ॥ ३ ॥
आयु॑र॒स्यायु॑र्मे दा॒ः स्वाहा॑ ॥ ४ ॥
श्रोत्र॑मसि॒ श्रोत्र॑ मे दा॒ः स्वाहा॑ ॥ ५ ॥
चक्षु॑रसि॒ चक्षु॑र्मे दा॒ः स्वाहा॑ ॥ ६ ॥
परि॒पाण॑मसि परि॒पाण॑ मे दा॒ः स्वाहा॑ ॥ ७ ॥

॥ इति तृतीयः प्रपाठकः ॥

अथ चतुर्थः प्रपाठकः ॥

अथ चतुर्थोऽनुवाकः [१८] अष्टादशं सूक्तम्

ऋषिः—चातनः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—द्विपदासाम्नीबृहती ॥

भ्रातृ॒व्यक्षय॑णमसि भ्रातृ॒व्यचा॑तनं मे दा॒ः स्वाहा॑ ॥ १ ॥
स॒प॒त्न॒क्षय॑णमसि सपत्न॒चा॑तनं मे दा॒ः स्वाहा॑ ॥ २ ॥
अरा॑य॒क्षय॑णमस्यराय॒चा॑तनं मे दा॒ः स्वाहा॑ ॥ ३ ॥
पि॒शा॒च॒क्षय॑णमसि पिशाच॒चा॑तनं मे दा॒ः स्वाहा॑ ॥ ४ ॥
स॒दा॒न्वा॒क्षय॑णमसि सदान्वा॒चा॑तनं मे दा॒ः स्वाहा॑ ॥ ५ ॥

[१९] एकोनविंशं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१-४ निचृद्विषमात्रिपाद्गायत्री; ५ भुरिग्विषमात्रिपाद्गायत्री ॥

अग्ने॒ यत्ते॒ तप॒स्तेन॒ तं प्रति॑ तप॒ यो॒३॒॑ऽस्मान्द्वेष्टि॒ यं व॒यं द्वि॒ष्मः ॥ १ ॥
अग्ने॒ यत्ते॒ हर॒स्तेन॒ तं प्रति॑ हर॒ यो॒३॒॑ऽस्मान्द्वेष्टि॒ यं व॒यं द्वि॒ष्मः ॥ २ ॥
अग्ने॒ यत्ते॒ऽर्चिस्तेन॒ तं प्रत्यर्च॑ यो॒३॒॑ऽस्मान्द्वेष्टि॒ यं व॒यं द्वि॒ष्मः ॥ ३ ॥
अग्ने॒ यत्ते॑ शो॒चिस्तेन॒ तं प्रति॑ शोच॒ यो॒३॒॑ऽस्मान्द्वेष्टि॒ यं व॒यं द्वि॒ष्मः ॥ ४ ॥
अग्ने॒ यत्ते॒ तेज॒स्तेन॒ तम॑ते॒जसं॑ कृणु॒ यो॒३॒॑ऽस्मान्द्वेष्टि॒ यं व॒यं द्वि॒ष्मः ॥ ५ ॥

[२०] विंशं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा ॥ देवता—वायुः ॥ छन्दः—१-४ निचृद्विषमात्रिपाद्गायत्री; ५ भुरिग्विषमात्रिपाद्गायत्री ॥

वायो॒ यत्ते॒ तप॒स्तेन॒ तं प्रति॑ तप॒ यो॒३॒॑ऽस्मान्द्वेष्टि॒ यं व॒यं द्वि॒ष्मः ॥ १ ॥
वायो॒ यत्ते॒ हर॒स्तेन॒ तं प्रति॑ हर॒ यो॒३॒॑ऽस्मान्द्वेष्टि॒ यं व॒यं द्वि॒ष्मः ॥ २ ॥
वायो॒ यत्ते॒ऽर्चिस्तेन॒ तं प्रत्यर्च॑ यो॒३॒॑ऽस्मान्द्वेष्टि॒ यं व॒यं द्वि॒ष्मः ॥ ३ ॥
वायो॒ यत्ते॑ शो॒चिस्तेन॒ तं प्रति॑ शोच॒ यो॒३॒॑ऽस्मान्द्वेष्टि॒ यं व॒यं द्वि॒ष्मः ॥ ४ ॥
वायो॒ यत्ते॒ तेज॒स्तेन॒ तम॑ते॒जसं॑ कृणु॒ यो॒३॒॑ऽस्मान्द्वेष्टि॒ यं व॒यं द्वि॒ष्मः ॥ ५ ॥

[२१] एकविंशं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा ॥ देवता—सूर्यः ॥ छन्दः—१-४ निचृद्विषमात्रिपाद्गायत्री; ५ भुरिग्विषमात्रिपाद्गायत्री ॥

सूर्य॒ यत्ते॒ तप॒स्तेन॒ तं प्रति॑ तप॒ यो॒३॒॑ऽस्मान्द्वेष्टि॒ यं व॒यं द्वि॒ष्मः ॥ १ ॥
सूर्य॒ यत्ते॒ हर॒स्तेन॒ तं प्रति॑ हर॒ यो॒३॒॑ऽस्मान्द्वेष्टि॒ यं व॒यं द्वि॒ष्मः ॥ २ ॥
सूर्य॒ यत्ते॒ऽर्चिस्तेन॒ तं प्रत्यर्च॑ यो॒३॒॑ऽस्मान्द्वेष्टि॒ यं व॒यं द्वि॒ष्मः ॥ ३ ॥
सूर्य॒ यत्ते॑ शो॒चिस्तेन॒ तं प्रति॑ शोच॒ यो॒३॒॑ऽस्मान्द्वेष्टि॒ यं व॒यं द्वि॒ष्मः ॥ ४ ॥
सूर्य॒ यत्ते॒ तेज॒स्तेन॒ तम॑ते॒जसं॑ कृणु॒ यो॒३॒॑ऽस्मान्द्वेष्टि॒ यं व॒यं द्वि॒ष्मः ॥ ५ ॥

[२२] द्वाविंशं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा ॥ देवता—चन्द्रः ॥ छन्दः—१-४ निचृद्विषमात्रिपाद्गायत्री; ५ भुरिग्विषमात्रिपाद्गायत्री ॥

चन्द्र॒ यत्ते॒ तप॒स्तेन॒ तं प्रति॑ तप॒ यो॒३॒॑ऽस्मान्द्वेष्टि॒ यं व॒यं द्वि॒ष्मः ॥ १ ॥
चन्द्र॒ यत्ते॒ हर॒स्तेन॒ तं प्रति॑ हर॒ यो॒३॒॑ऽस्मान्द्वेष्टि॒ यं व॒यं द्वि॒ष्मः ॥ २ ॥
चन्द्र॒ यत्ते॒ऽर्चिस्तेन॒ तं प्रत्यर्च॑ यो॒३॒॑ऽस्मान्द्वेष्टि॒ यं व॒यं द्वि॒ष्मः ॥ ३ ॥
चन्द्र॒ यत्ते॑ शो॒चिस्तेन॒ तं प्रति॑ शोच॒ यो॒३॒॑ऽस्मान्द्वेष्टि॒ यं व॒यं द्वि॒ष्मः ॥ ४ ॥
चन्द्र॒ यत्ते॒ तेज॒स्तेन॒ तम॑ते॒जसं॑ कृणु॒ यो॒३॒॑ऽस्मान्द्वेष्टि॒ यं व॒यं द्वि॒ष्मः ॥ ५ ॥

[२३] त्रयोविंशं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा ॥ देवता—आपः ॥ छन्दः—१-४ समविषमात्रिपाद्गायत्री; ५ स्वराड्विषमात्रिपाद्गायत्री ॥

आपो॒ यद्व॒स्तप॒स्तेन॒ तं प्रति॑ तपत॒ यो॒३॒॑ऽस्मान्द्वेष्टि॒ यं व॒यं द्वि॒ष्मः ॥ १ ॥
आपो॒ यद्वो॒ हर॒स्तेन॒ तं प्रति॑ हरत॒ यो॒३॒॑ऽस्मान्द्वेष्टि॒ यं व॒यं द्वि॒ष्मः ॥ २ ॥
आपो॒ यद्वो॒ऽर्चिस्तेन॒ तं प्रत्यर्चत॒ यो॒३॒॑ऽस्मान्द्वेष्टि॒ यं व॒यं द्वि॒ष्मः ॥ ३ ॥
आपो॒ यद्वः॑ शो॒चिस्तेन॒ तं प्रति॑ शोचत॒ यो॒३॒॑ऽस्मान्द्वेष्टि॒ यं व॒यं द्वि॒ष्मः ॥ ४ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

आपो यद्वस्तेजस्तेन तमतेजसं कृणुत यो३स्मान्द्वेष्टि यं वयं द्विष्मः॥५॥

[२४] चतुर्विंशं सूक्तम्

ऋषिः—ब्रह्मा॥ देवता—आयुः॥ छन्दः—१, २, पुरउष्णिक्पङ्क्तिः, ३, ४ पुरोदेवत्यापङ्क्तिः; ५ चतुष्पदाबृहती; ६-८ भुरिक्चतुष्पदाबृहती॥

शेरभक शेरभ पुनर्वो यन्तु यातवः पुनर्हेतिः किमीदिनः।
यस्य स्थ तमत्त यो वः प्राहैत्तमत्त स्वा मांसान्यत्त॥१॥
शेवृधक शेवृध पुनर्वो यन्तु यातवः पुनर्हेतिः किमीदिनः।
यस्य स्थ तमत्त यो वः प्राहैत्तमत्त स्वा मांसान्यत्त॥२॥
म्रोकान्म्रोक पुनर्वो यन्तु यातवः पुनर्हेतिः किमीदिनः।
यस्य स्थ तमत्त यो वः प्राहैत्तमत्त स्वा मांसान्यत्त॥३॥
सर्पान्सर्प पुनर्वो यन्तु यातवः पुनर्हेतिः किमीदिनः।
यस्य स्थ तमत्त यो वः प्राहैत्तमत्त स्वा मांसान्यत्त॥४॥
जूर्णि पुनर्वो यन्तु यातवः पुनर्हेतिः किमीदिनीः।
यस्य स्थ तमत्त यो वः प्राहैत्तमत्त स्वा मांसान्यत्त॥५॥
उपब्दे पुनर्वो यन्तु यातवः पुनर्हेतिः किमीदिनीः।
यस्य स्थ तमत्त यो वः प्राहैत्तमत्त स्वा मांसान्यत्त॥६॥
अर्जुनि पुनर्वो यन्तु यातवः पुनर्हेतिः किमीदिनीः।
यस्य स्थ तमत्त यो वः प्राहैत्तमत्त स्वा मांसान्यत्त॥७॥
भरूजि पुनर्वो यन्तु यातवः पुनर्हेतिः किमीदिनीः।
यस्य स्थ तमत्त यो वः प्राहैत्तमत्त स्वा मांसान्यत्त॥८॥

[२५] पञ्चविंशं सूक्तम्

ऋषिः—चातनः॥ देवता—पृश्निपर्णी॥ छन्दः—१-३, ५ अनुष्टुप्; ४ भुरिगनुष्टुप्॥

शं नो देवी पृश्निपर्ण्यशं निर्ऋत्या अकः।
उग्रा हि कण्वजम्भनी तामभक्षि सहस्वतीम्॥१॥
सहमानेयं प्रथमा पृश्निपर्ण्यजायत।
तयाहं दुर्णाम्नां शिरो वृश्चामि शकुनेरिव॥२॥
अरायमसृक्पावानं यश्च स्फातिं जिहीर्षति।
गर्भादं कण्वं नाशय पृश्निपर्णि सहस्व च॥३॥
गिरिमेनाँ आ वेशय कण्वाञ्जीवितयोपनान्।
तांस्त्वं दैवि पृश्निपर्ण्यग्निरिवानुदहन्निहि॥४॥
पराच एनान्प्र णुद कण्वाञ्जीवितयोपनान्।
तमांसि यत्र गच्छन्ति तत्क्रव्यादो अजीगमम्॥५॥

[२६] षड्विंशं सूक्तम्

ऋषिः—सविता॥ देवता—पशवः॥ छन्दः—१, २ त्रिष्टुप्; ३ उपरिष्टाद्विराड्बृहती; ४ भुरिगनुष्टुप्; ५ अनुष्टुप्॥

एह यन्तु पशवो ये परेयुर्वायुर्येषां सहचारं जुजोष।
त्वष्टा येषां रूपधेयानि वेदास्मिन्तान्गोष्ठे सविता नि यच्छतु॥१॥
इमं गोष्ठं पशवः सं स्रवन्तु बृहस्पतिरा नयतु प्रजानन्।
सिनीवाली नयत्वाग्रमेषामाजग्मुषो अनुमते नि यच्छ॥२॥
सं सं स्रवन्तु पशवः समश्वाः समु पूरुषाः।
सं धान्यस्य या स्फातिः संस्राव्येण हविषा जुहोमि॥३॥
सं सिञ्चामि गवां क्षीरं समाज्येन बलं रसम्।
संसिक्ता अस्माकं वीरा ध्रुवा गावो मयि गोपतौ॥४॥
आ हरामि गवां क्षीरमाहार्षं धान्यं१ रसम्।
आहता अस्माकं वीरा आ पत्नीरिदमस्तकम्॥५॥

अथ पञ्चमोऽनुवाकः [२७] सप्तविंशं सूक्तम्

ऋषिः—कपिञ्जलः॥ देवता—१-५ ओषधिः; ६ रुद्रः; ७ इन्द्रः॥ छन्दः—अनुष्टुप्॥

नेच्छत्रुः प्राशं जयाति सहमानाभिभूरसि।
प्राशं प्रतिप्राशो जह्यरसान्कृण्वोषधे॥१॥
सुपर्णस्त्वान्वविन्दत्सूकरस्त्वाखनन्नसा।
प्राशं प्रतिप्राशो जह्यरसान्कृण्वोषधे॥२॥
इन्द्रो ह चक्रे त्वा बाहावसुरेभ्य स्तरीतवे।
प्राशं प्रतिप्राशो जह्यरसान्कृण्वोषधे॥३॥
पाटामिन्द्रो व्याश्निादसुरेभ्य स्तरीतवे।
प्राशं प्रतिप्राशो जह्यरसान्कृण्वोषधे॥४॥
तयाहं शत्रूंत्साक्ष इन्द्रः सालावृकाँइव।
प्राशं प्रतिप्राशो जह्यरसान्कृण्वोषधे॥५॥
रुद्र जलाषभेषज नीलशिखण्ड कर्मकृत्।
प्राशं प्रतिप्राशो जह्यरसान्कृण्वोषधे॥६॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तस्य प्राशं त्वं जहि यो नं इन्द्राभिदासति।
अधि नो ब्रूहि शक्तिभिः प्राशि मामुत्तरं कृधि॥७॥

[२८] अष्टाविंशं सूक्तम्

ऋषिः—शम्भूः॥ देवता—१, ३ जरिमा, आयुः; २ मित्रावरुणौ; ४, ५ द्यावापृथिव्यादयः॥ छन्दः—१ जगती; २-४ त्रिष्टुप्; ५ भुरिक्त्रिष्टुप्॥

तुभ्यमेव जरिमन्वर्धतामयं मेममन्ये मृत्यवो हिंसिषुः शतं ये।
मातेव पुत्रं प्रमना उपस्थे मित्र एनं मित्रियात्पात्वंहसः॥१॥
मित्र एनं वरुणो वा रिशादा जरामृत्युं कृणुतां संविदानौ।
तदग्निर्होता वयुनानि विद्वान्विश्वा देवानां जनिमा विवक्ति॥२॥
त्वमीशिषे पशूनां पार्थिवानां ये जाता उत वा ये जनित्राः।
मेमं प्राणो हांसीन्मो अपानो मेमं मित्रा वधिषुर्मो अमित्राः॥३॥
द्यौष्टा पिता पृथिवी माता जरामृत्युं कृणुतां संविदाने।
यथा जीवा अदितेरुपस्थे प्राणापानाभ्यां गुपितः शतं हिमाः॥४॥
इमममग्न आयुषे वर्चसे नय प्रियं रेतो वरुण मित्र राजन्।
मातेवास्मा अदिते शर्म यच्छ विश्वे देवा जरदष्टिर्यथासत्॥५॥

[२९] एकोनत्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा॥ देवता—१ अग्निः, सूर्यः, बृहस्पतिः; २ जातवेदाः, त्वष्टा, सविता; ३, ७ इन्द्रः; ४, ५ द्यावापृथिव्यौ, विश्वेदेवाः, मरुतः, आपः; ६ अश्विनौ॥ छन्दः—१ अनुष्टुप्; २, ३, ५-७ त्रिष्टुप्; ४ पराबृहतीनिचृत्प्रस्तारपङ्क्तिः॥

पार्थिवस्य रसे देवा भगस्य तन्वो३ बले।
आयुष्यमस्मा अग्निः सूर्यो वर्च आ धाद् बृहस्पतिः॥१॥
आयुरस्मै धेहि जातवेदः प्रजां त्वष्टरधिनिधेह्यस्मै।
रायस्पोषं सवितरा सुवास्मै शतं जीवाति शरदस्तवायम्॥२॥
आशीर्णं ऊर्जमुत सौप्रजास्त्वं दक्षं धत्तं द्रविणं सचेतसौ।
जयं क्षेत्राणि सहसायमिन्द्र कृण्वानो अन्यानधरान्त्सपत्नान्॥३॥
इन्द्रेण दत्तो वरुणेन शिष्टो मरुद्भिरुग्रः प्रहितो न आगन्।
एष वां द्यावापृथिवी उपस्थे मा क्षुधन्मा तृषत्॥४॥
ऊर्जमस्मा ऊर्जस्वती धत्तं पयो अस्मै पयस्वती धत्तम्।
ऊर्जमस्मै द्यावापृथिवी अधातां विश्वे देवा मरुत ऊर्जमापः॥५॥

शिवाभिष्टे हृदयं तर्पयाम्यनमीवो मोदिषीष्ठाः सुवर्चीः।
सवासिनौ पिबतां मन्थमेतमश्विनौ रूपं परिधाय मायाम्॥६॥
इन्द्र एतां ससृजे विब्दो अग्रं ऊर्जां स्वधामजरां सा त एषा।
तया त्वं जीव शरदः सुवर्चा मा त आ सुस्रोद्भिषजस्ते अक्रन्॥७॥

[३०] त्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—प्रजापतिः॥ देवता—१ मनः; २ अश्विनौ; ३, ४ ओषधिः; ५ दम्पती॥ छन्दः—१ पथ्यापङ्क्तिः; २, ४, ५ अनुष्टुप्; ३ भुरिगनुष्टुप्॥

यथेदं भूम्या अधि तृणं वातो मथायति।
एवा मन्थामि ते मनो यथा मां कामिन्यसो यथा मन्नापगा असः॥१॥
सं चेन्नयाथो अश्विना कामिना सं च वक्षथः।
सं वां भगासो अग्मत सं चित्तानि समु व्रता॥२॥
यत्सुपर्णा विवक्षवो अनमीवा विवक्षवः।
तत्र मे गच्छताद्भवं शल्यइव कुल्मलं यथा॥३॥
यदन्तरं तद्बाह्यं यद्बाह्यं तदन्तरम्।
कन्यानां विश्वरूपाणां मनो गृभायौषधे॥४॥
एयमगन्पतिकामा जनिकामोऽहमागमम्।
अश्वः कनिक्रदद्यथा भगेनाहं सहागमम्॥५॥

[३१] एकत्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—काण्वः॥ देवता—१ मही; २-५ क्रिमिजम्भनम्॥ छन्दः—१ अनुष्टुप्; २, ४ उपरिष्टाद्बिराड्बृहतीः ३, ५ आर्षीत्रिष्टुप्॥

इन्द्रस्य या महो दूषत्क्रिमेर्विश्वस्य तर्हणी।
तया पिनष्मि सं क्रिमीन्दूषदा खल्वाँइव॥१॥
दृष्टमदृष्टमतृहमथो कुरूरुमतृहम्।
अल्गण्डून्त्सर्वान्छलुनान्क्रिमीन्वचसा जम्भयामसि॥२॥
अल्गण्डून्हन्मि महता वधेन दूना अदूना अरसा अभूवन्।
शिष्टानशिष्टान्त्रि तिरामि वाचा यथा क्रिमीणां नकिरुच्छिषातै॥३॥
अन्वान्त्रयं शीर्षण्यान्थो पार्ष्टेयं क्रिमीन्।
अवस्कवं व्यध्वरं क्रिमीन्वचसा जम्भयामसि॥४॥
ये क्रिमयः पर्वतेषु वनेष्वोषधीषु पशुष्वप्स्वन्तः।
ये अस्माकं तन्वमाविविशुः सर्वं तद्धन्मि जनिमं क्रिमीणाम्॥५॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अथ षष्ठोऽनुवाकः [३२] द्वात्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—काण्वः॥ देवता—आदित्यः॥ छन्दः—१ त्रिपाद्भुरिग्गायत्री; २-५ अनुष्टुप्; ६ चतुष्पान्निचृदुष्णिक्॥

उद्यन्नादित्यः क्रिमीन्हन्तु निम्रोचन्हन्तु रश्मिभिः।
ये अन्तः क्रिमयो गवि ॥ १ ॥
विश्वरूपं चतुरक्षं क्रिमिं सारङ्गमर्जुनम्।
शृणाम्यस्य पृष्टीरपि वृश्चामि यच्छिरः ॥ २ ॥
अत्रिवद्वः क्रिमयो हन्मि कण्ववज्जमदग्निवत्।
अगस्त्यस्य ब्रह्मणा सं पिनष्म्यहं क्रिमीन्॥ ३ ॥
हतो राजा क्रिमीणामुतैषां स्थपतिर्हतः ।
हतो हतमाता क्रिमिर्हतभ्राता हतस्वसा ॥ ४ ॥
हतासो अस्य वेशसो हतासः परिवेशसः।
अथो ये क्षुल्लकाइव सर्वे ते क्रिमयो हताः॥ ५ ॥
प्र ते शृणामि शृङ्गे याभ्यां वितुदायसि।
भिनद्मि ते कुषुम्भं यस्ते विषधानः ॥ ६ ॥

[३३] त्रयस्त्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—ब्रह्मा॥ देवता—यक्ष्मविवर्हणम्॥ छन्दः—१, २, अनुष्टुप्; ३ ककुम्मत्यनुष्टुप्; ४ चतुष्पदाभुरिगुष्णिक्; ५ उपरिष्टाद्बृहती; ६ उष्णिग्गर्भानिचृदनुष्टुप्; ७ पथ्यापङ्क्तिः॥

अक्षीभ्यां ते नासिकाभ्यां कर्णाभ्यां छुबुकादधि ।
यक्ष्मं शीर्ष्ण्यं मस्तिष्काज्जिह्वाया वि वृहामि ते ॥ १ ॥
ग्रीवाभ्यस्त उष्णिहाभ्यः कीकसाभ्यो अनूक्यात् ।
यक्ष्मं दोषण्यं मंसाभ्यां बाहुभ्यां वि वृहामि ते ॥ २ ॥
हृदयात्ते परि क्लोम्नो हलीक्ष्णात्पार्श्वाभ्याम् ।
यक्ष्मं मतस्नाभ्यां प्लाह्नो यकनस्ते वि वृहामसि ॥ ३ ॥
आन्त्रेभ्यस्ते गुदाभ्यो वनिष्ठोरुदरादधि ।
यक्ष्मं कुक्षिभ्यां प्लाशेर्नाभ्या वि वृहामि ते ॥ ४ ॥
ऊरुभ्यां ते अष्ठीवद्भ्यां पाष्णिभ्यां प्रपदाभ्याम् ।
यक्ष्मं भसद्यं श्रोणिभ्यां भासदं भंससो वि वृहामि ते॥ ५ ॥
अस्थिभ्यस्ते मज्जभ्यः स्नावभ्यो धमनिभ्यः ।
यक्ष्मं पाणिभ्यामङ्गुलिभ्यो नखेभ्यो वि वृहामि ते ॥ ६ ॥

अङ्गेअङ्गे लोम्निलोम्नि यस्ते पर्वणिपर्वणि ।
यक्ष्मं त्वचस्यं ते वयं कश्यपस्य वीबर्हेण विष्वञ्चं वि वृहामसि॥ ७ ॥

[३४] चतुस्त्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा॥ देवता—१ पशुपतिः; २ देवाः; ३ अग्निर्विश्वकर्मा; ४ वायुः, प्रजापतिः; ५ आशीः॥ छन्दः—त्रिष्टुप्॥

य ईशे पशुपतिः पशूनां चतुष्पदामुत यो द्विपदाम्।
निष्क्रीतः स यज्ञियं भागमेतु रायस्पोषा यजमानं सचन्ताम्॥ १ ॥
प्रमुञ्चन्तो भुवनस्य रेतो गातुं धत्त यजमानाय देवाः।
उपाकृतं शशमानं यदस्थात्प्रियं देवानामप्येतु पाथः ॥ २ ॥
ये बध्यमानमनु दीध्यानाः अन्वैक्षन्त मनसा चक्षुषा च।
अग्निष्टानग्रे प्र मुमोक्तु देवो विश्वकर्मा प्रजया संरराणः॥ ३ ॥
ये ग्राम्याः पशवो विश्वरूपा विरूपाः सन्तो बहुधैकरूपाः।
वायुष्टानग्रे प्र मुमोक्तु देवः प्रजापतिः प्रजया संरराणः॥ ४ ॥
प्रजानन्तः प्रति गृह्णन्तु पूर्वे प्राणमङ्गेभ्यः पर्याचरन्तम्।
दिवं गच्छ प्रति तिष्ठा शरीरैः स्वर्गं याहि पथिभिर्देवयानैः॥ ५ ॥

[३५] पञ्चत्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—अङ्गिराः॥ देवता—विश्वकर्मा॥ छन्दः—१ बृहतीगर्भा-त्रिष्टुप्; २, ३ त्रिष्टुप्; ४, ५ भुरिक्त्रिष्टुप्॥

ये भक्षयन्तो न वसून्यानृधुर्यानग्रयो अन्वतप्यन्त धिष्ण्याः।
या तेषामवया दुरिष्टिः स्विष्टिं नस्तान्कृणवद्विश्वकर्मा॥ १ ॥
यज्ञपतिमृषय एनसाहुर्निर्भक्तं प्रजा अनुतप्यमानम् ।
मथव्यान्स्तोकानप यान्राध सं नष्टेभिः सृजतु विश्वकर्मा॥ २ ॥
अदान्यान्त्सोमपान्मन्यमानो यज्ञस्य विद्वान्त्समये न धीरः।
यदेनश्चकृवान्बद्ध एष तं विश्वकर्मन्प्र मुञ्चा स्वस्तये॥ ३ ॥
घोरा ऋषयो नमो अस्त्वेभ्यश्चक्षुर्यदेषां मनसश्च सत्यम्।
बृहस्पतये महिष द्युमन्नमो विश्वकर्मन्नमस्ते पाह्यस्मान्॥ ४ ॥
यज्ञस्य चक्षुः प्रभृतिर्मुखं च वाचा श्रोत्रेण मनसा जुहोमि।
इमं यज्ञं वितंतं विश्वकर्मणा देवा यन्तु सुमनस्यमानाः॥ ५ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

[३६] षट्त्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—पतिवेदनः॥ देवता—१ अग्निः; २ सोमः, अर्यमा, धाता; ३ अग्नीषोमौ; ४ इन्द्रः; ५ सूर्यः; ६ धनपतिः; ७ हिरण्यम्, भगः; ८ ओषधिः॥ छन्दः—१ भुरिक्त्रिष्टुप्; २, ५-७ अनुष्टुप्; ३, ४ त्रिष्टुप्; ८ निचृत्पुरउष्णिक्॥

आ नो अग्ने सुमतिं संभलो गमेदिमां कुमारीं सह नो भगेन।
जुष्टा वरेषु समनेषु वल्गुरोषं पत्या सौभगमस्त्वस्यै ॥१॥
सोमंजुष्टं ब्रह्मजुष्टमर्यम्णा संभृतं भगम्।
धातुर्देवस्य सत्येन कृणोमि पतिवेदनम् ॥२॥
इयमग्ने नारी पतिं विदेष्ट सोमो हि राजा सुभगां कृणोति।
सुवाना पुत्रान्महिषी भवाति गत्वा पतिं सुभगा वि राजतु॥३॥
यथाखरो मघवंश्चारुरेष प्रियो मृगाणां सुषदा बभूव।
एवा भगस्य जुष्टेयमस्तु नारी संप्रिया पत्याविराधयन्ती॥४॥
भगस्य नावमा रोह पूर्णामनुपदस्वतीम्।
तयोपप्रतारय यो वरः प्रतिकाम्यः ॥५॥
आ क्रन्दय धनपते वरमामनसं कृणु।
सर्वं प्रदक्षिणं कृणु यो वरः प्रतिकाम्यः ॥६॥
इदं हिरण्यं गुल्गुल्वयमौक्षो अथो भगः।
एते पतिभ्यस्त्वामदुः प्रतिकामाय वेत्तवे ॥७॥
आ ते नयतु सविता नयतु पतिर्यः प्रतिकाम्यः।
त्वमस्यै धेह्योषधे ॥८॥

इति चतुर्थः प्रपाठकः॥

॥इति द्वितीयं काण्डम्॥

अथ तृतीयं काण्डम्॥

अथ पञ्चमः प्रपाठकः॥

अथ प्रथमोऽनुवाकः [१] प्रथमं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा॥ देवता—१ अग्निः; २ मरुतः; ३-६ इन्द्रः॥ छन्दः—१, ४ त्रिष्टुप्; २ विराड्गर्भाभुरिक्त्रिष्टुप्; ३, ६ अनुष्टुप्; ५ विराट्पुरउष्णिक्॥

अग्निर्नः शत्रून्प्रत्येतु विद्वान्प्रतिदहन्नभिशस्तिमरातिम्।
स सेनां मोहयतु परेषां निर्हस्तांश्च कृणवज्जातवेदाः ॥१॥
यूयमुग्रा मरुत एदृशे स्थाभि प्रेत मृणत सहध्वम्।
अमीमृणन्वसवो नाथिता इमे अग्निर्ह्येषां दूतः प्रत्येतु विद्वान्॥२॥
अमित्रसेनां मघवन्नस्माञ्छत्रूयतीमभि।
युवं तानिन्द्र वृत्रहन्नग्निश्च दहतं प्रति ॥३॥
प्रसूत इन्द्र प्रवता हरिभ्यां प्र ते वज्रः प्रमृणन्नेतु शत्रून्।
जहि प्रतीचो अनूचः पराचो विष्वक्सत्यं कृणुहि चित्तमेषाम्॥४॥
इन्द्र सेनां मोहयामित्राणाम्।
अग्नेर्वातस्य ध्राज्या तान्विषूचो वि नाशय ॥५॥
इन्द्रः सेनां मोहयतु मरुतो घ्नन्त्वोजसा।
चक्षूंष्यग्निरा दत्तां पुनरेतु पराजिता ॥६॥

[२] द्वितीयं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा॥ देवता—१, २ अग्निः; ३, ४ इन्द्रः; ५ द्यौः; ६ मरुतः॥ छन्दः—१, ५, ६ त्रिष्टुप्; २-४ अनुष्टुप्॥

अग्निर्नो दूतः प्रत्येतु विद्वान्प्रतिदहन्नभिशस्तिमरातिम्।
स चित्तानि मोहयतु परेषां निर्हस्तांश्च कृणवज्जातवेदाः॥१॥
अयमग्निरमूमुहद्यानि चित्तानि वो हृदि।
वि वो धमत्वोकसः प्र वो धमतु सर्वतः ॥२॥
इन्द्र चित्तानि मोहयन्नर्वाङाकूत्या चर।
अग्नेर्वातस्य ध्राज्या तान्विषूचो वि नाशय ॥३॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

व्यकृतय एषामिताथो चित्तानि मुह्यत ।
अथो यदद्यैषां हृदि तदेषां परि निर्जहि ॥ ४ ॥
अमीषां चित्तानि प्रतिमोहयन्ती गृहाणाङ्गान्यप्वे परेहि।
अभि प्रेहि निर्दह हृत्सु शोकैर्ग्राह्यामित्रांस्तमसा विध्य शत्रून् ॥ ५ ॥
असौ या सेना मरुतः परेषामस्मानैत्यभ्योजसा स्पर्धमाना।
तां विध्यत तमसापव्रतेन यथैषामन्यो अन्यं न जानात् ॥ ६ ॥

[३] तृतीयं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा ॥ देवता—अग्न्यादयो मन्त्रोक्ताः ॥ छन्दः—१, २, ४ त्रिष्टुप्; ३ चतुष्पदाभुरिक्पङ्क्तिः; ५, ६ अनुष्टुप् ॥

अचिक्रदत्सवपा इह भुवदग्ने व्यचिस्व रोदसी उरूची ।
युञ्जन्तु त्वा मरुतो विश्ववेदस आमुं नय नमसा रातहव्यम् ॥ १ ॥
दूरे चित्सन्तमरुषास इन्द्रमा च्यावयन्तु सख्याय विप्रम् ।
यद्गायत्रीं बृहतीमर्कमस्मै सौत्रामण्या दधृषन्त देवाः ॥ २ ॥
अद्भ्यस्त्वा राजा वरुणो ह्वयतु सोमस्त्वा ह्वयतु पर्वतेभ्यः ।
इन्द्रस्त्वा ह्वयतु विड्भ्य आभ्यः श्येनो भूत्वा विश आ पतेमाः ॥ ३ ॥
श्येनो हव्यं नयत्वा परस्मादन्यक्षेत्रे अपरुद्धं चरन्तम् ।
अश्विना पन्थां कृणुतां सुगं त इमं संजाता अभिसंविशध्वम् ॥ ४ ॥
ह्वयन्तु त्वा प्रतिजनाः प्रति मित्रा अवृषत ।
इन्द्राग्नी विश्वे देवास्ते विशि क्षेममदीधरन् ॥ ५ ॥
यस्ते हवं विवदत्सजातो यश्च निष्ट्यः ।
अपाञ्चमिन्द्र तं कृत्वाथेममिहाव गमय ॥ ६ ॥

[४] चतुर्थं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१ जगती; २, ३, ६, ७ त्रिष्टुप्; ४, ५ भुरिक्त्रिष्टुप् ॥

आ त्वा गन्त्राष्ट्रं सह वर्चसोदिहि प्राङ्विशां पतिरेकराट् त्वं वि राज।
सर्वास्त्वा राजन्प्रदिशो ह्वयन्तूपसद्यो नमस्यो भवेह ॥ १ ॥
त्वां विशो वृणतां राज्यायि त्वामिमाः प्रदिशः पञ्च देवीः।
वर्ष्मन्राष्ट्रस्य ककुदि श्रयस्व ततो न उग्रो वि भजा वसूनि ॥ २ ॥
अच्छं त्वा यन्तु हविनः सजाता अग्निर्दूतो अजिरः सं चरातै।
जायाः पुत्राः सुमनसो भवन्तु बहुं बलिं प्रति पश्यासा एषाम् ॥ ३ ॥
अश्विना त्वाग्रे मित्रावरुणोभा विश्वे देवा मरुतस्त्वा ह्वयन्तु।
अधा मनो वसुदेयाय कृणुष्व ततो न उग्रो वि भजा वसूनि ॥ ४ ॥
आ प्र द्रव परमस्याः परावतः शिवे ते द्यावापृथिवी उभे स्ताम्।
तदयं राजा वरुणस्तथाह स त्वायमह्वत्स उपेदमेहि ॥ ५ ॥
इन्द्रेन्द्र मनुष्यास्त्वेः परेहि सं ह्यज्ञास्था वरुणैः संविदानः।
स त्वायमह्वत्स्वे सधस्थे स देवान्यक्षत्स उ कल्पयाद्विशः ॥ ६ ॥
पथ्या रेवतीर्बहुधा विरूपाः सवीः संगत्य वरीयस्ते अक्रन्।
तास्त्वा सवीः संविदाना ह्वयन्तु दशमीमुग्रः सुमना वशेह ॥ ७ ॥

[५] पञ्चमं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा ॥ देवता—सोमः, पर्णमणिः ॥ छन्दः—१ पुरोऽनुष्टुप्त्रिष्टुप्; २, ३, ५-७ अनुष्टुप्; ४ त्रिष्टुप्; ८ विराडुरोबृहती ॥

आयमगन्पर्णमणिर्बली बलेन प्रमृणन्त्सपत्नान् ।
ओजो देवानां पय ओषधीनां वर्चसा मा जिन्वत्वप्रयावन् ॥ १ ॥
मयि क्षत्रं पर्णमणे मयि धारयताद्रयिम् ।
अहं राष्ट्रस्याभीवर्गे निजो भूयासमुत्तमः ॥ २ ॥
यं निदधुर्वनस्पतौ गुह्यं देवाः प्रियं मणिम् ।
तमस्मभ्यं सहार्युषा देवा ददतु भर्तवे ॥ ३ ॥
सोमस्य पर्णः सह उग्रमागन्निन्द्रेण दत्तो वरुणेन शिष्टः।
तं प्रियासं बहु रोचमानो दीर्घायुत्वाय शतशारदाय ॥ ४ ॥
आ मारुक्षत्पर्णमणिर्मह्या अरिष्टतातये ।
यथाहमुत्तरोऽसान्यर्यम्ण उत संविदः ॥ ५ ॥
ये धीवानो रथकाराः कर्मारा ये मनीषिणः ।
उपस्तीर्पर्ण मह्यं त्वं सर्वान्कृण्वभितो जनान् ॥ ६ ॥
ये राजानो राजकृतः सूता ग्रामण्यश्च ये ।
उपस्तीर्पर्ण मह्यं त्वं सर्वान्कृण्वभितो जनान् ॥ ७ ॥
पर्णोऽसि तनूपानः सयोनिर्वीरो वीरेण मया ।
संवत्सरस्य तेजसा तेन बध्नामि त्वा मणे ॥ ८ ॥

अथ द्वितीयोऽनुवाकः [६] षष्ठं सूक्तम्

ऋषिः—जगद्बीजं पुरुषः ॥ देवता—अश्वत्थः ॥ छन्दः—अनुष्टुप् ॥

पुमान्पुंसः परिजातोऽश्वत्थः खदिरादधि ।
स हंतु शत्रून्मामकान्यानहं द्वेष्मि ये च माम् ॥ १ ॥

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तानश्वत्थ निः शृणीहि शत्रून्वैबाधदोधतः ।
इन्द्रेण वृत्रघ्ना मेदी मित्रेण वरुणेन च ॥ २ ॥
यथाश्वत्थ निरभनोऽन्तर्महत्यर्णवे ।
एवा तान्त्सर्वान्त्रिभिर्ऽन्धि यानहं द्वेष्मि ये च माम् ॥ ३ ॥
यः सहमानश्चरसि सासह्वानइव ऋषभः ।
तेनाश्वत्थ त्वया वयं सपत्नान्त्सहिषीमहि ॥ ४ ॥
सिनात्वेनान्त्रिऋतिर्मृत्योः पाशैरमोक्यैः ।
अश्वत्थ शत्रून्मामकान्यानहं द्वेष्मि ये च माम् ॥ ५ ॥
यथाश्वत्थ वानस्पत्यानारोहन्कृणुषेऽधरान् ।
एवा मे शत्रोर्मूर्धानं विष्वग्भिन्द्धि सहस्व च ॥ ६ ॥
तेऽधराञ्चः प्र प्लवन्तां छिन्ना नौरिव बन्धनात् ।
न वैबाधप्रणुत्तानां पुनरस्ति निवर्तनम् ॥ ७ ॥
प्रैणान्नुदे मनसा प्र चित्तेनोत ब्रह्मणा ।
प्रैणान्वृक्षस्य शाखयाश्वत्थस्य नुदामहे ॥ ८ ॥

[७] सप्तमं सूक्तम्

ऋषिः—भृग्वङ्गिराः॥ देवता—१-३ हरिणः; ४ विचृतौ तारके; ५ आपः; ६, ७ यक्ष्मनाशनम्॥ छन्दः—१-५, ७ अनुष्टुप्; ६ भुरिगनुष्टुप्॥

हरिणस्य रघुष्यदोऽधिं शीर्षणि भेषजम् ।
स क्षेत्रियं विषाणया विषूचीनमनीनशत् ॥ १ ॥
अनु त्वा हरिणो वृषा पद्भिश्चतुर्भिरक्रमीत् ।
विषाणे वि ष्य गुष्तितं यदस्य क्षेत्रियं हृदि ॥ २ ॥
अदो यदवरोचते चतुष्पक्षमिव च्छदिः ।
तेनां ते सर्वं क्षेत्रियमङ्गेभ्यो नाशयामसि ॥ ३ ॥
अमू ये दिवि सुभगे विचृतौ नाम तारके ।
वि क्षेत्रियस्य मुञ्चतामधमं पाशमुत्तमम् ॥ ४ ॥
आप इद्वा उ भेषजीरापो अमीवचातनीः ।
आपो विश्वस्य भेषजीस्तास्त्वा मुञ्चन्तु क्षेत्रियात् ॥ ५ ॥
यदासुतेः क्रियमाणायाः क्षेत्रियं त्वा व्यानशे ।
वेदाहं तस्य भेषजं क्षेत्रियं नाशयामि त्वत् ॥ ६ ॥
अपवासे नक्षत्राणामपवास उषसामुत ।
अपास्मत्सर्वं दुर्भूतमपं क्षेत्रियमुच्छतु ॥ ७ ॥

[८] अष्टमं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा॥ देवता—१-४ मित्रादयो, विश्वे देवाः; ५, ६ मनः॥ छन्दः—१, ३ त्रिष्टुप्; २, ६ जगती; ४ विराड्बृहतीगर्भा-चतुष्पदात्रिष्टुप्; ५ अनुष्टुप्॥

आ यातु मित्र ऋतुभिः कल्पमानः संवेशयन्पृथिवीमुस्रियाभिः ।
अथास्मभ्यं वरुणो वायुरग्निर्बृहद्राष्ट्रं संवेश्यं दधातु ॥ १ ॥
धाता रातिः सवितेदं जुषन्तामिन्द्रस्त्वष्टा प्रति हर्यन्तु मे वचः ।
हुवे देवीमदितिं शूरपुत्रां सजातानां मध्यमेष्ठा यथासानि ॥ २ ॥
हुवे सोमं सवितारं नमोभिर्विश्वानादित्याँ अहमुत्तरत्वे ।
अयमग्निर्दीदायद्दीर्घमेव संजातैरिद्धोऽप्रतिब्रुवद्भिः ॥ ३ ॥
इहेदसाथ न परो गमाथेयौ गोपाः पुष्टपतिर्व आजत् ।
अस्मै कामायोप कामिनीर्विश्वे वो देवा उपसंयन्तु ॥ ४ ॥
सं वो मनांसि सं व्रता समाकूतीर्नमामसि ।
अमी ये विव्रता स्थन तान्वः सं नमयामसि ॥ ५ ॥
अहं गृभ्णामि मनसा मनांसि मम चित्तमनु चित्तेभिरेत ।
मम वशेषु हृदयानि वः कृणोमि मम यातमनुवर्त्मान एत ॥ ६ ॥

[९] नवमं सूक्तम्

ऋषिः—वामदेवः॥ देवता—द्यावापृथिव्यौ; विश्वे देवाः॥ छन्दः—१-३, ५ अनुष्टुप्; ४ चतुष्पात्रिचृद्बृहती; ६ भुरिगनुष्टुप्॥

कर्शफस्य विशफस्य द्यौष्पिता पृथिवी माता ।
यथाभिचक्र देवास्तथाप कृणुता पुनः ॥ १ ॥
अश्रेष्माणो अधारयन्तथा तन्मनुना कृतम् ।
कृणोमि वध्रि विष्कन्धं मुष्काबर्हो गवामिव ॥ २ ॥
पिशङ्गे सूत्रे खृगलं तदा बध्नन्ति वेधसः ।
श्रवस्युं शुष्मं काबवं वध्रिं कृण्वन्तु बन्धुरः ॥ ३ ॥
येना श्रवस्यवश्चरथ देवाइवासुरमायया ।
शुनां कपिरिव दूषणो बन्धुरा काबवस्य च ॥ ४ ॥
दुष्टयै हि त्वा भन्त्स्यामि दूषयिष्यामि काबवम् ।
उदाशवो रथाइव शपथेभिः सरिष्यथ ॥ ५ ॥
एकशतं विष्कन्धानि विष्ठिता पृथिवीमनु ।
तेषां त्वामग्र उज्जहरुर्मणिं विष्कन्धदूषणम् ॥ ६ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

[१०] दशमं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा ॥ देवता—अष्टका ॥ छन्दः—१-३, ८-११, १३ अनुष्टुप्; ४-६, १२ त्रिष्टुप्; ७ षट्पदाविराड्गर्भातिजगती।

प्रथमा ह व्युवास सा धेनुरभवद्यमे । सा नः पयस्वती दुहामुत्तरामुत्तरां समाम् ॥ १ ॥
यां देवाः प्रतिनन्दन्ति रात्रिं धेनुमुपायतीम् । संवत्सरस्य या पत्नी सा नो अस्तु सुमङ्गली ॥ २ ॥
संवत्सरस्य प्रतिमां यां त्वा रात्र्युपास्महे । सा न आयुष्मतीं प्रजां रायस्पोषेण सं सृज ॥ ३ ॥
इयमेव सा या प्रथमा व्यौच्छदास्वितरासु चरति प्रविष्टा । महान्तो अस्यां महिमानो अन्तर्वधूर्जिगाय नवगज्जनित्री ॥ ४ ॥
वानस्पत्या ग्रावाणो घोषमक्रत हविष्कृण्वन्तः परिवत्सरीणम् । एकाष्टके सुप्रजसः सुवीरा वयं स्याम पतयो रयीणाम् ॥ ५ ॥
इडायास्पदं घृतवत्सरीसृपं जातवेदः प्रति हव्या गृभाय । ये ग्राम्याः पशवो विश्वरूपास्तेषां सप्तानां मयि रन्तिरस्तु ॥ ६ ॥
आ मा पुष्टे च पोषे च रात्रि देवानां सुमतौ स्याम । पूर्णा दर्वे परा पत सुपूर्णा पुनरा पत । सर्वान्यज्ञान्त्संभुञ्जतीषमूर्जं न आ भर ॥ ७ ॥
आयमगन्त्संवत्सरः पतिरेकाष्टके तव । सा न आयुष्मतीं प्रजां रायस्पोषेण सं सृज ॥ ८ ॥
ऋतून्यज ऋतुपतीनार्तवानुत हायनान् । समाः संवत्सरान्मासान्भूतस्य पतये यजे ॥ ९ ॥
ऋतुभ्यष्ट्वार्तवेभ्यो मादभ्यः संवत्सरेभ्यः । धात्रे विधात्रे समृधे भूतस्य पतये यजे ॥ १० ॥
इडया जुह्वतो वयं देवान्घृतवता यजे । गृहानलुभ्यतो वयं सं विशेमोप गोमतः ॥ ११ ॥
एकाष्टका तपसा तप्यमाना जजान गर्भं महिमानमिन्द्रम् । तेन देवा व्यषहन्त शत्रून्हन्ता दस्यूनामभवच्छचीपतिः ॥ १२ ॥
इन्द्रपुत्रे सोमपुत्रे दुहितासि प्रजापतेः । कामानस्माकं पूरय प्रति गृह्णाहि नो हविः ॥ १३ ॥

अथ तृतीयोऽनुवाकः [११] एकादशं सूक्तम्

ऋषिः—ब्रह्मा, भृग्वङ्गिराश्च ॥ देवता—इन्द्राग्नी, आयुः, यक्ष्मनाशनम्। छन्दः—१-३ त्रिष्टुप्; ४ शक्वरीगर्भाजगती; ५, ६ अनुष्टुप्; ७ उष्णिग्बृहतीगर्भापथ्यापङ्क्तिः; ८ षट्पदाबृहतीगर्भाजगती ॥

मुञ्चामि त्वा हविषा जीवनाय कमज्ञातयक्ष्मादुत राजयक्ष्मात्। ग्राहिर्जग्राह यदेतदेनं तस्या इन्द्राग्नी प्र मुमुक्तमेनम् ॥ १ ॥
यदि क्षितायुर्यदि वा परेतो यदि मृत्योरन्तिकं नीत एव । तमा हरामि निर्ऋतेरुपस्थादस्पार्शमेनं शतशारदाय ॥ २ ॥
सहस्राक्षेण शतवीर्येण शतायुषा हविषाहार्षमेनम् । इन्द्रो यथैनं शरदो नयात्यति विश्वस्य दुरितस्य पारम् ॥ ३ ॥
शतं जीव शरदो वर्धमानः शतं हेमन्तान्छतमु वसन्तान् । शतं त इन्द्रो अग्निः सविता बृहस्पतिः शतायुषा हविषाहार्षमेनम् ॥ ४ ॥
प्र विशतं प्राणापानावनड्वाहाविव व्रजम् । व्यन्ये यन्तु मृत्यवो यानाहुरितरान्छतम् ॥ ५ ॥
इहैव स्तं प्राणापानौ माप गातमितो युवम् । शरीरमस्याङ्गानि जरसे वहतं पुनः ॥ ६ ॥
जरायै त्वा परि ददामि जरायै नि धुवामि त्वा । जरा त्वा भद्रा नैष्ट व्यन्ये यन्तु मृत्यवो यानाहुरितरान्छतम् ॥ ७ ॥
अभि त्वा जरिमाहित गामुक्षणमिव रज्वा । यस्त्वा मृत्युरभ्यधत्त जायमानं सुपाशया । तं ते सत्यस्य हस्ताभ्यामुदमुञ्चद् बृहस्पतिः ॥ ८ ॥

[१२] द्वादशं सूक्तम्

ऋषिः—ब्रह्मा ॥ देवता—शाला, वास्तोष्पतिः ॥ छन्दः—१, ४-५ त्रिष्टुप्; २ विराड्जगती; ३ बृहती; ६ शक्वरीगर्भाजगती; ७ आर्ष्यनुष्टुप्; ८ भुरिक्त्रिष्टुप्; ९ अनुष्टुप् ॥

इहैव ध्रुवां नि मिनोमि शालां क्षेमे तिष्ठाति घृतमुक्षमाणा। तां त्वा शाले सर्ववीराः सुवीरा अरिष्टवीरा उप सं चरेम ॥ १ ॥
इहैव ध्रुवा प्रति तिष्ठ शालेऽश्वावती गोमती सूनृतावती । ऊर्जस्वती घृतवती पयस्वत्युच्छ्रयस्व महते सौभगाय ॥ २ ॥
धरुण्यसि शाले बृहच्छन्दाः पूर्तिधान्या । आ त्वा वत्सो गमेदा कुमार आ धेनवः सायमास्पन्दमानाः ॥ ३ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

इमां शाल्मे सविता वायुरिन्द्रो बृहस्पतिर्नि मिनोतु प्रजानन् ।
उक्षन्नूदना मरुतो घृतेन भगो नो राजा नि कृषिं तनोतु ॥४॥
मानस्य पत्नि शरणा स्योना देवी देवेभिर्निमितास्यग्रे ।
तृणं वसाना सुमना असस्त्वमथास्मभ्यं सहवीरं रयिं दाः ॥५॥
ऋतेन स्थूणामधि रोह वंशोग्रो विराजन्नप वृङ्क्ष्व शत्रून् ।
मा ते रिषन्नुपसत्तारो गृहाणां शाले शतं जीवेम शरदः सर्ववीराः ॥६॥
एमां कुमारस्तरुण आ वत्सो जगता सह ।
एमां परिस्रुतः कुम्भ आ दध्नः कलशैरगुः ॥७॥
पूर्णं नारि प्र भर कुम्भमेतं घृतस्य धारामृतेन संभृताम् ।
इमां पातॄनमृतेना समङ्ग्धीष्टापूर्तमभि रक्षात्येनाम् ॥८॥
इमा आपः प्र भराम्ययक्ष्मा यक्ष्मनाशनीः ।
गृहानुप प्र सीदाम्यमृतेन सहाग्निना ॥९॥

[१३] त्रयोदशं सूक्तम्

ऋषिः—भृगुः ॥ देवता—सिन्धुः, आपः, वरुणः ॥
छन्दः—१ निचृदनुष्टुप्; २-४, ७ अनुष्टुप्;
५ विराड्जगती; ६ निचृत्त्रिष्टुप् ॥

यदुदः संप्रयतीरहावनदता हते ।
तस्मादा नद्योऽ३ नाम स्थ ता वो नामानि सिन्धवः ॥१॥
यत्प्रेषिता वरुणेनाच्छीभं समवल्गत ।
तदाप्नोदिन्द्रो वो यतीस्तस्मादापो अनु ष्ठन ॥२॥
अपकामं स्यन्दमाना अवीवरत वो हि कम् ।
इन्द्रो वः शक्तिभिर्देवीस्तस्माद्वार्नाम वो हितम् ॥३॥
एको वो देवोऽप्यतिष्ठत्स्यन्दमाना यथावशम् ।
उदानिषुर्महीरिति तस्मादुदकमुच्यते ॥४॥
आपो भद्रा घृतमिदाप आसन्नग्नीषोमौ बिभ्रत्याप इत्ताः ।
तीव्रो रसो मधुपृचामरंगम आ मा प्राणेन सह वर्चसा गमेत् ॥५॥
आदित्पश्याम्युत वा शृणोम्या मा घोषो गच्छति वाङ्मासाम् ।
मन्ये भेजानो अमृतस्य तर्हि हिरण्यवर्णा अतृपं यदा वः ॥६॥
इदं व आपो हृदयमयं वत्स ऋतावरीः ।
इहेत्थमेत शक्वरीर्यत्रेदं वेशयामि वः ॥७॥

[१४] चतुर्दशं सूक्तम्

ऋषिः—ब्रह्मा ॥ देवता—गोष्ठः, अर्यमादयो मन्त्रोक्ताः ॥
छन्दः—१-५ अनुष्टुप्; ६ आर्षीत्रिष्टुप् ॥

सं वो गोष्ठेन सुषदा सं रय्या सं सुभूत्या ।
अहर्जातस्य यन्नाम तेना वः सं सृजामसि ॥१॥
सं वः सृजत्वर्यमा सं पूषा सं बृहस्पतिः ।
समिन्द्रो यो धनंजयो मयि पुष्यत यद्वसु ॥२॥
संजग्माना अबिभ्युषीरस्मिन्गोष्ठे करीषिणीः ।
बिभ्रतीः सोम्यं मध्वनमीवा उपेतन ॥३॥
इहैव गाव एतनेहो शकेव पुष्यत ।
इहैवोत प्र जायध्वं मयि संज्ञानमस्तु वः ॥४॥
शिवो वो गोष्ठो भवतु शारिशाकेव पुष्यत ।
इहैवोत प्र जायध्वं मया वः सं सृजामसि ॥५॥
मया गावो गोपतिना सचध्वमयं वो गोष्ठ इह पोषयिष्णुः ।
रायस्पोषेण बहुला भवन्तीर्जीवा जीवन्तीरुप वः सदेम ॥६॥

[१५] पञ्चदशं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा (पण्यकामः) ॥ देवता—१ इन्द्रः; २ पन्थानः; ३ अग्निः; ४ प्रपणः विक्रयश्च; ५ देवाः, अग्निः; ६ देवाः, इन्द्रः, प्रजापतिः, सविता, सोमः, अग्निः; ७ वैश्वानरः; ८ जातवेदाः ॥ छन्दः—१ भुरिक् त्रिष्टुप्; २, ३, ६ त्रिष्टुप्; ४ षट्पदाबृहतीगर्भाविराडत्यष्टिः; ५ विराड्जगती; ७ अनुष्टुप्; ८ निचृत्त्रिष्टुप् ॥

इन्द्रमहं वणिजं चोदयामि स न ऐतु पुरएता नो अस्तु ।
नुदन्नरातिं परिपन्थिनं मृगं स ईशानो धनदा अस्तु मह्यम् ॥१॥
ये पन्थानो बहवो देवयाना अन्तरा द्यावापृथिवी संचरन्ति ।
ते मा जुषन्तां पयसा घृतेन यथा क्रीत्वा धनमाहराणि ॥२॥
इध्मेनाग्न इच्छमानो घृतेन जुहोमि हव्यं तरसे बलाय ।
यावदीशे ब्रह्मणा वन्दमान इमां धियं शतसेयाय देवीम् ॥३॥
इमामग्ने शरणिं मीमृषो नो यमध्वानमगाम दूरम् ।
शुनं नो अस्तु प्रपणो विक्रयश्च प्रतिपणः फलिनं मा कृणोतु ।
इदं हव्यं संविदानौ जुषेथां शुनं नो अस्तु चरितमुत्थितं च ॥४॥
येन धनेन प्रपणं चरामि धनेन देवा धनमिच्छमानः ।
तन्मे भूयो भवतु मा कनीयोऽग्ने सातघ्नो देवान्हविषा नि षेध ॥५॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

येन॒ धने॑न प्रप॒णं चरा॑मि॒ धने॑न देवा॒ धन॑मिच्छमा॒नः ।
तस्मि॑न्म॒ इन्द्रो॒ रुचि॒मा द॑धातु प्र॒जाप॑तिः सवि॒ता सोमो॑ अ॒ग्निः ॥ ६ ॥
उप॑ त्वा॒ नम॑सा व॒यं होत॑र्वैश्वानर स्तु॒मः ।
स नः॑ प्र॒जास्वा॒त्मसु॒ गोषु॒ प्राणे॑षु॒ जागृहि ॥ ७ ॥
वि॒श्वाहा॑ ते॒ सद॒मिद्भ॒रेमाश्वा॑येव॒ तिष्ठ॑ते॒ जात॑वेदः ।
रा॒यस्पोषे॑ण॒ समि॒षा मद॑न्तो॒ मा ते॑ अग्ने॒ प्रति॑वेशा रिषाम ॥ ८ ॥

॥ इति पञ्चमः प्रपाठकः ॥

अथ षष्ठः प्रपाठकः ॥

अथ चतुर्थोऽनुवाकः [१६] षोडशं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा ॥ देवता—१ अग्नीन्द्रादयो मन्त्रोक्ताः; २-६ भगः; ७ उषाः ॥ छन्दः—१ आर्षीजगती; २, ३, ५-७ त्रिष्टुप्; ४ भुरिक्पङ्क्तिः ॥

प्रा॒तर॒ग्निं प्रा॒तरिन्द्रं॑ हवामहे प्रा॒तर्मि॒त्रावरु॑णा प्रा॒तर॒श्विना॑ ।
प्रा॒तर्भगं॑ पू॒षणं॒ ब्रह्म॑णस्पतिं॒ प्रातः॑ सो॒ममु॒त रु॒द्रं ह॑वामहे ॥ १ ॥
प्रा॒तर्जितं॒ भग॑मु॒ग्रं ह॑वामहे व॒यं पु॒त्रम॑दि॒तेर्यो॑ विधर्ता ।
आ॒ध्र॒श्चिद्यं मन्य॑मानस्तु॒रश्चि॒द्राजा॑ चि॒द्यं भगं॑ भ॒क्षीत्याह ॥ २ ॥
भग॒ प्रणे॑तर्भग॒ सत्य॑राधो॒ भगे॒मां धिय॒मुद॑वा॒ दद॑न्नः ।
भग॒ प्र णो॑ जनय॒ गोभि॒रश्वै॒र्भग॒ प्र नृभि॑र्नृ॒वन्तः॑ स्याम ॥ ३ ॥
उ॒तेदानीं॒ भग॑वन्तः स्यामो॒त प्र॑पि॒त्व उ॒त मध्ये॒ अह्ना॑म् ।
उ॒तोदि॑ता॒ मघ॑वन्त्सू॒र्यस्य॑ व॒यं दे॒वाना॑ सु॒मतौ॑ स्याम ॥ ४ ॥
भग॑ ए॒व भग॑वाँ अस्तु दे॒वस्तेना॑ व॒यं भग॑वन्तः स्याम ।
तं त्वा॑ भग॒ सर्व॒ इज्जो॑हवीमि॒ स नो॑ भग पुरए॒ता भ॑वे॒ह ॥ ५ ॥
सम॑ध्व॒रायो॒षसो॑ नमन्त दधि॒क्रावे॑व॒ शुच॑ये प॒दाय॑ ।
अ॒र्वा॒ची॒नं व॑सु॒विद॑ं॒ भगं॑ मे॒ रथ॑मि॒वाश्वा॑ वा॒जिन॒ आ व॑हन्तु ॥ ६ ॥
अश्वा॑वतीर्गो॒मती॑र्न॒ उषा॑सो वी॒रव॑तीः सदमुच्छन्तु भ॒द्राः ।
घृ॒तं दुहा॑ना वि॒श्वत॒ः प्रपी॑ता॒ यूय॑ं पात स्व॒स्तिभि॒ः सदा॑ नः ॥ ७ ॥

[१७] सप्तदशं सूक्तम्

ऋषिः—विश्वामित्रः ॥ देवता—सीता ॥ छन्दः—१ आर्षीगायत्री; २, ५, ९ त्रिष्टुप्; ३ पथ्यापङ्क्तिः; ४, ६ अनुष्टुप्; ७ विराट्पुरउष्णिक्; ८ निचृदनुष्टुप् ॥

सीरा॑ युञ्जन्ति क॒वयो॑ यु॒गा वि त॑न्वते पृ॒थक् ।
धीरा॑ दे॒वेषु॑ सु॒म्नयौ॑ ॥ १ ॥
यु॒नक्त॑ सीरा॒ वि यु॒गा त॑नोत कृ॒ते योनौ॑ वपतेह बी॒जम् ।
वि॒रा॒जः॑ श्नु॒ष्टिः स॒भरा॑ असन्नो॒ नेदी॑य॒ इत्सृ॒ण्यः॑ प॒क्वमा य॑वन् ॥ २ ॥
लाङ्ग॑लं पवी॒रव॑त्सु॒शीमं॑ सो॒मस॑त्सरु ।
उद्वि॑पतु॒ गाम॑विं॒ प्र॒स्थाव॑द्रथ॒वाह॑नं॒ पीव॑रीं च प्रफ॒र्व्य॑म् ॥ ३ ॥
इन्द्रः॑ सीतां॒ नि गृ॑ह्णातु॒ तां पू॑षा॒भि रक्ष॑तु ।
सा नः॒ पय॑स्वती दुहामुत्तरा॒मुत्तरा॑ स॒माम् ॥ ४ ॥
शु॒नं सु॑फा॒ला वि तु॑दन्तु॒ भूमिं॑ शु॒नं की॒नाशा॒ अनु॑ यन्तु वा॒हान् ।
शु॒नासी॒रा ह॒विषा॒ तोश॑माना सुपिप्प॒ला ओष॑धीः कर्तम॒स्मै ॥ ५ ॥
शु॒नं वा॒हाः शु॒नं नरः॑ शु॒नं कृ॑षतु॒ लाङ्ग॑लम् ।
शु॒नं व॑र॒त्रा ब॑ध्यन्तां शु॒नमष्ट्रा॒मुदि॑ङ्गय ॥ ६ ॥
शु॒नासी॑रे॒ह स्म॑ मे जुषेथाम् ।
यद्दि॒वि च॒क्रथुः॒ पय॒स्तेने॒मामुप॑ सिञ्चतम् ॥ ७ ॥
सीते॒ वन्दा॑महे त्वा॒र्वाची॑ सुभगे भव ।
यथा॑ नः॒ सुम॑ना॒ असो॒ यथा॑ नः॒ सुफ॑ला॒ भुवः॑ ॥ ८ ॥
घृ॒तेन॒ सीता॒ मधु॑ना॒ सम॑क्ता॒ विश्वै॒र्दे॒वैर॑नुम॒ता म॒रुद्भिः॑ ।
सा नः॑ सीते॒ पय॑सा॒भ्याव॑वृत्स्वो॒र्जस्वती॑ घृ॒तव॒त्पिन्व॑माना ॥ ९ ॥

[१८] अष्टादशं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा ॥ देवता—वनस्पतिः (वाणपर्णी) ॥ छन्दः—१-३, ५ अनुष्टुप्; ४ अनुष्टुब्गर्भाचतुष्पादुष्णिक्; ६ उष्णिग्गर्भापथ्यापङ्क्तिः ॥

इ॒मां ख॑ना॒म्योष॑धिं वी॒रुधां॒ बल॑वत्तमाम् ।
यया॑ स॒पत्नीं॑ बाध॑ते॒ यया॑ संवि॒न्दते॒ पति॑म् ॥ १ ॥
उत्ता॑नपर्णे॒ सुभ॑गे देव॒जूते॒ सह॑स्वति ।
स॒पत्नीं॑ मे॒ परा॑ णुद॒ पतिं॑ मे॒ केव॑लं कृधि ॥ २ ॥
नहि ते॒ नाम॑ ज॒ग्राह॒ नो अ॒स्मिन्र॑मसे॒ पतौ॑ ।
परा॑मे॒व प॑रा॒वत॑ं स॒पत्नीं॑ गमयामसि ॥ ३ ॥
उत्त॑राहमु॒त्तर॒ उत्त॑रेदु॒त्तरा॑भ्यः ।
अ॒धः स॒पत्ना॒ या मम॑ाध॒रा सा॑धरा॒भ्यः ॥ ४ ॥
अ॒हमा॑स्मि॒ सह॑मानाथो॒ त्वम॑सि सास॒हिः ।
उ॒भे स॑हस्वती भू॒त्वा स॒पत्नीं॑ मे सहावहै ॥ ५ ॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अभि तेऽधां सहमानामुप तेऽधां सहीयसीम् ।
मामनु प्र ते मनो वत्सं गौरिव धावतु पथा वारिव धावतु ॥ ६ ॥

[१९] एकोनविंशं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—विश्वे देवाः; इन्द्रः ॥ छन्दः—१ पथ्याबृहती; २, ४ अनुष्टुप्; ३ भुरिग्बृहती; ५ त्रिष्टुप्; ६ षट्पदा-त्रिष्टुप्कुकुम्मतीगर्भाऽतिजगती; ७ विराडास्तार-पङ्क्तिः; ८ पथ्यापङ्क्तिः ॥

संशितं म इदं ब्रह्म संशितं वीर्यं बलम् ।
संशितं क्षत्रमजरमस्तु जिष्णुर्येषामस्मि पुरोहितः ॥ १ ॥
समहमेषां राष्ट्रं स्यामि समोजो वीर्यं बलम् ।
वृश्चामि शत्रूणां बाहूननेन हविषाहम् ॥ २ ॥
नाचैः पद्यन्तामधरे भवन्तु ये नः सूरिं मघवानं पृतन्यान् ।
क्षिणामि ब्रह्मणामित्रानुन्नयामि स्वानहम् ॥ ३ ॥
तीक्ष्णीयांसः परशोरग्नेस्तीक्ष्णतरा उत ।
इन्द्रस्य वज्रात्तीक्ष्णीयांसो येषामस्मि पुरोहितः ॥ ४ ॥
एषामहमायुधा सं स्यामेषां राष्ट्रं सुवीरं वर्धयामि ।
एषां क्षत्रमजरमस्तु जिष्वेषां चित्तं विश्वेऽवन्तु देवाः ॥ ५ ॥
उद्वर्षन्तां मघवन्वाजिनान्युद्वीराणां जयतामेतु घोषः ।
पृथग्घोषा उलुलयः केतुमन्त उदीरताम् ।
देवा इन्द्रज्येष्ठा मरुतो यन्तु सेनया ॥ ६ ॥
प्रेता जयता नर उग्रा वः सन्तु बाहवः ।
ताक्ष्णेषवोऽबलधन्वनो हतोग्रायुधा अबलानुग्रबाहवः ॥ ७ ॥
अवसृष्टा परा पत शरव्ये ब्रह्मसंशिते ।
जयामित्रान्प्र पद्यस्व जह्येषां वरंवरं मामीषां मोचि कश्चन ॥ ८ ॥

[२०] विंशं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—१, २, ५ अग्निः; ३ अर्यमा, भगः, बृहस्पतिः, देवी; ४ सोमः, अग्निः, आदित्यः, विष्णुः, ब्रह्मा, बृहस्पतिः; ६ इन्द्रवायू; ७ अर्यमा, बृहस्पतिः, इन्द्रः, वातः, विष्णुः, सरस्वती, सविता, वाजी; ८ विश्वानि भुवनानि; ९ पञ्च प्रदिशः; १० वायुः, त्वष्टा ॥ छन्दः—१-५, ७, ९, १० अनुष्टुप्; ६ पथ्यापङ्क्तिः; ८ विराड्जगती ॥

अयं ते योनिर्ऋत्वियो यतो जातो अरोचथाः ।
तं जानन्नग्न आ रोहाथा नो वर्धया रयिम् ॥ १ ॥
अग्ने अच्छा वदेह नः प्रत्यङ्नः सुमना भव ।
प्र णो यच्छ विशां पते धनदा असि नस्त्वम् ॥ २ ॥
प्र णो यच्छत्वर्यमा प्र भगः प्र बृहस्पतिः ।
प्र देवीः प्रोत सूनृता रयिं देवी दधातु मे ॥ ३ ॥
सोमं राजानमवसेऽग्निं गीर्भिर्हवामहे ।
आदित्यं विष्णुं सूर्यं ब्रह्माणं च बृहस्पतिम् ॥ ४ ॥
त्वं नो अग्ने अग्निभिर्ब्रह्म यज्ञं च वर्धय ।
त्वं नो देव दातवे रयिं दानाय चोदय ॥ ५ ॥
इन्द्रवायू उभाविह सुहवेह हवामहे। यथा नः
सर्व इज्जनः संगत्यां सुमना असद्दानकामश्च नो भुवत् ॥ ६ ॥
अर्यमणं बृहस्पतिमिन्द्रं दानाय चोदय ।
वातं विष्णुं सरस्वतीं सवितारं च वाजिनम् ॥ ७ ॥
वाजस्य नु प्रसवे सं बभूविमेमा च विश्वा भुवनान्यन्तः ।
उतादित्सन्तं दापयतु प्रजानन्रयिं च नः सर्ववीरं नि यच्छ ॥ ८ ॥
दुहां मे पञ्च प्रदिशो दुहामुर्वीर्यथाबलम् ।
प्रापेयं सर्वा आकूतीर्मनसा हृदयेन च ॥ ९ ॥
गोसनिं वाचमुदेयं वर्चसा माभ्युदिहि ।
आ रुन्धां सर्वतो वायुस्त्वष्टा पोषं दधातु मे ॥ १० ॥

अथ पञ्चमोऽनुवाकः [२१] एकविंशं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—१-७ अग्निः, ८-११ सवित्रादयो मन्त्रोक्ताः ॥ छन्दः—१ पुरोऽनुष्टुज्जिष्टुप्; २, ३, ८ भुरिक्त्रिष्टुप्; ४ त्रिष्टुप्; ५ जगती; ६ उपरिष्टाद्विराड्बृहती; ७ विराड्गर्भात्रिष्टुप्; ९ निचृदनुष्टुप्; १० अनुष्टुप् ॥

ये अग्रयो अप्स्वन्तर्ये वृत्रे ये पुरुषे ये अश्मसु ।
य आविवेशौषधीर्यो वनस्पतींस्तेभ्यो अग्निभ्यो हुतमस्त्वेतत् ॥ १ ॥
यः सोमे अन्तर्यो गोष्वन्तर्य आविष्टो वयःसु यो मृगेषु ।
य आविवेश द्विपदो यश्चतुष्पदस्तेभ्यो अग्निभ्यो हुतमस्त्वेतत् ॥ २ ॥
य इन्द्रेण सरथं याति देवो वैश्वानर उत विश्वदाव्यः ।
यं जोहवीमि पृतनासु सासहिं तेभ्यो अग्निभ्यो हुतमस्त्वेतत् ॥ ३ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

यो देवो विश्वाद्यमु कामंमाहुर्यं दातारं प्रतिगृह्णन्तमाहुः ।
यो धीरः शक्रः परिभूरदाभ्यस्तेभ्यो अग्निभ्यो हुतमस्त्वेतत् ॥ ४ ॥
यं त्वा होतारं मनसाभि संविदुस्त्रयोदश भौवनाः पञ्च मानवाः ।
वर्चोधसे यशसे सूनृतावते तेभ्यो अग्निभ्यो हुतमस्त्वेतत् ॥ ५ ॥
उक्षान्नाय वशान्नाय सोमपृष्ठाय वेधसे ।
वैश्वानरज्येष्ठेभ्यस्तेभ्यो अग्निभ्यो हुतमस्त्वेतत् ॥ ६ ॥
दिवं पृथिवीमन्वन्तरिक्षं ये विद्युतमनुसंचरन्ति ।
ये दिक्ष्वन्तर्ये वाते अन्तस्तेभ्यो अग्निभ्यो हुतमस्त्वेतत् ॥ ७ ॥
हिरण्यपाणिं सवितारमिन्द्रं बृहस्पतिं वरुणं मित्रमग्निम् ।
विश्वान्देवानङ्गिरसो हवामह इमं क्रव्यादं शमयन्त्वग्निम् ॥ ८ ॥
शान्तो अग्निः क्रव्याच्छान्तः पुरुषरेषणः ।
अथो यो विश्वदाव्यस्तं क्रव्यादमशीशमम् ॥ ९ ॥
ये पर्वताः सोमपृष्ठा आपः उत्तानशीवरीः ।
वातः पर्जन्य आदग्निस्ते क्रव्यादमशीशमन् ॥ १० ॥

[२२] द्वाविंशं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—विश्वे देवाः, बृहस्पतिः, वर्चः ॥ छन्दः—१ विराट्-त्रिष्टुप्; २, ५, ६ अनुष्टुप्; ३ पञ्चपदापरानुष्टुप्त्रिराडतिजगती; ४ षट्पदाजगती ॥

हस्तिवर्चसं प्रथतां बृहद्यशो अदित्या यत्तन्वः संबभूव ।
तत्सर्वे समदुर्महामेतद्विश्वे देवा अदितिः सजोषाः ॥ १ ॥
मित्रश्च वरुणश्चेन्द्रो रुद्रश्च चेततुः ।
देवासो विश्वधायसस्ते मांज्जन्तु वर्चसा ॥ २ ॥
येन हस्ती वर्चसा संबभूव येन राजा मनुष्येष्वप्स्वन्तः ।
येन देवा देवतामग्र आयन्तेन मामद्य वर्चसाग्रे वर्चस्विनं कृणु ॥ ३ ॥
यत्ते वर्चो जातवेदो बृहद्धवत्याहुतेः ।
यावत्सूर्यस्य वर्चो आसुरस्य च हस्तिनः ।
तावन्मे अश्विना वर्च आ धत्तां पुष्करस्रजा ॥ ४ ॥
यावच्चतस्रः प्रदिशश्चक्षुर्यावत्समश्नुते ।
तावत्समैत्विन्द्रियं मयि तद्धस्तिवर्चसम् ॥ ५ ॥
हस्ती मृगाणां सुषदामतिष्ठावान्बभूव हि ।
तस्य भगेन वर्चसाऽभि षिञ्चामि मामहम् ॥ ६ ॥

[२३] त्रयोविंशं सूक्तम्

ऋषिः—ब्रह्मा ॥ देवता—योनिः ॥ छन्दः—१-४ अनुष्टुप्; ५ उपरिष्टाद्बृहती; ६ स्कन्धोग्रीवीबृहती ॥

येन वेहद् बभूविथ नाशयामसि तत्त्वत् ।
इदं तदन्यत्र त्वदप दूरे नि दध्मसि ॥ १ ॥
आ ते योनिं गर्भे एतु पुमान्बाणइवेषुधिम् ।
आ वीरोऽत्र जायतां पुत्रस्ते दशमास्यः ॥ २ ॥
पुमांसं पुत्रं जनय तं पुमाननु जायताम् ।
भवासि पुत्राणां माता जातानां जनयाश्च यान् ॥ ३ ॥
यानि भद्राणि बीजान्यृषभा जनयन्ति च ।
तैस्त्वं पुत्रं विन्दस्व सा प्रसूर्धेनुका भव ॥ ४ ॥
कृणोमि ते प्राजापत्यमा योनिं गर्भे एतु ते ।
विन्दस्व त्वं पुत्रं नारि यस्तुभ्यं शमसच्छमु तस्मै त्वं भव ॥ ५ ॥
यासां द्यौष्पिता पृथिवी माता समुद्रो मूलं वीरुधां बभूव ।
तास्त्वा पुत्रविद्याय दैवीः प्रावन्त्वोषधयः ॥ ६ ॥

[२४] चतुर्विंशं सूक्तम्

ऋषिः—भृगुः ॥ देवता—वनस्पतिः, प्रजापतिः ॥ छन्दः—१, ३-७ अनुष्टुप्; २ निचृत्पथ्यापङ्क्तिः ॥

पयस्वतारोषधयः पयस्वन्मामकं वचः ।
अथो पयस्वतीनामा भरेऽहं सहस्रशः ॥ १ ॥
वेदाहं पयस्वन्तं चकारं धान्यं बहु ।
संभृत्वा नाम यो देवस्तं वयं हवामहे योयो अयज्वनो गृहे ॥ २ ॥
इमा याः पञ्च प्रदिशो मानवीः पञ्च कृष्टयः ।
वृष्टे शापं नदीरिवेह स्फातिं समावहान् ॥ ३ ॥
उदत्सं शतधारं सहस्रधारमक्षितम् ।
एवास्माकेदं धान्यं सहस्रधारमक्षितम् ॥ ४ ॥
शतहस्त समाहर सहस्रहस्त सं किर ।
कृतस्य कार्यस्य चेह स्फातिं समावह ॥ ५ ॥
तिस्रो मात्रा गन्धर्वाणां चतस्रो गृहपत्न्याः ।
तासां या स्फातिमत्तमा तया त्वाभि मृशामसि ॥ ६ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उपोह्श्चं समूहश्चं क्षत्तारौं ते प्रजापते । ताविहा वंहतां स्फातिं बहुं भूमानमक्षितम् ॥७॥

[२५] पञ्चविंशं सूक्तम्

ऋषिः—भृगुः॥ देवता—कामेषुः, मित्रावरुणौ॥ छन्दः—अनुष्टुप्॥

उत्तुदस्त्वोत्तुदतु मा धृथाः शयनें स्वे । इषुः कामस्य या भीमा तया विध्यामि त्वा हृदि॥१॥
आधीपर्णां कामशल्यामिषुं सङ्कल्पकुल्मलाम् । तां सुसंनतां कृत्वा कामो विध्यतु त्वा हृदि ॥२॥
या प्लीहानं शोषयंति कामस्येषुः सुसंनता । प्राचीनपक्षा व्योषिा तया विध्यामि त्वा हृदि ॥३॥
शुचा विद्धा व्योषिया शुष्कास्याभि सर्प मा । मृदुर्निमन्युः केवली प्रियवादिन्यनुव्रता ॥४॥
आजामि त्वाजन्या परि मातुरथो पितुः । यथा मम क्रतावसो मम चित्तमुपायसि ॥५॥
व्यस्यै मित्रावरुणौ हृदश्चित्तान्यस्यतम् । अथैनामक्रतुं कृत्वा ममैव कृणुतं वशे ॥६॥

अथ षष्ठोऽनुवाकः [२६] षड्विंशं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा॥ देवता—१ साग्रयो हेतयः; २ सकामा अविष्यवः; ३ अव्युक्ता वैराजः; ४ सवाता प्रविध्यन्तः; ५ सौपर्णिका निलिम्पाः; ६ बृहस्पतियुक्ता अवस्वन्तः॥ छन्दः—१ त्रिष्टुप्; २, ५, ६ जगती; ३, ४ भुरिक्त्रिष्टुप्; सर्वाः (१-६) पञ्चपदा विपरीतपादलक्ष्माः॥

येऽस्यां स्थ प्राच्यां दिशि हेतयो नाम देवास्तेषां वो अग्निरिषवः। ते नो मृडत ते नोऽधि ब्रूत तेभ्यो वो नमस्तेभ्यो वः स्वाहा॥१॥
येऽस्यां स्थ दक्षिणायां दिश्यविष्यवो नाम देवास्तेषां वः काम इषवः। ते नो मृडत ते नोऽधि ब्रूत तेभ्यो वो नमस्तेभ्यो वः स्वाहा॥२॥
येऽस्यां स्थ प्रतीच्यां दिशि वैराजा नाम देवास्तेषां व आप इषवः। ते नो मृडत ते नोऽधि ब्रूत तेभ्यो वो नमस्तेभ्यो वः स्वाहा॥३॥
येऽस्यां स्थोदीच्यां दिशि प्रविध्यन्तो नाम देवास्तेषां वो वात इषवः। ते नो मृडत ते नोऽधि ब्रूत तेभ्यो वो नमस्तेभ्यो वः स्वाहा॥४॥
येऽस्यां स्थ ध्रुवायां दिशि निलिम्पा नाम देवास्तेषां व ओषधीरिषवः। ते नो मृडत ते नोऽधि ब्रूत तेभ्यो वो नमस्तेभ्यो वः स्वाहा॥५॥
येऽस्यां स्थोर्ध्वायां दिश्यवस्वन्तो नाम देवास्तेषां वो बृहस्पतिरिषवः। ते नो मृडत ते नोऽधि ब्रूत तेभ्यो वो नमस्तेभ्यो वः स्वाहा॥६॥

[२७] सप्तविंशं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा॥ देवता—१ प्राची, अग्निः, असितः, आदित्याः; २ दक्षिणा, इन्द्रः, तिरश्चिराजिः, पितरः; ३ प्रतीची, वरुणः, पृदाकुः, अन्नम्; ४ उदीची, सोमः, स्वजः, अशनिः; ५ ध्रुवा, विष्णुः, कल्माषग्रीवः, वीरुधः; ६ ऊर्ध्वा, बृहस्पतिः, श्वित्रः, वर्षम्॥ छन्दः—१, ३, ४, ६ अष्टिः; २ अत्यष्टिः; ५ भुरिगष्टिः; सर्वाः (१-६) पञ्चपदाः; ५ ककुम्मतीगर्भाभुरिगष्टिः॥

प्राची दिगग्निरधिपतिरसितो रक्षितादित्या इषवः । तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु। यो३स्मान्द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः ॥१॥
दक्षिणा दिगिन्द्रोऽधिपतिस्तिरश्चिराजी रक्षिता पितर इषवः । तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु। यो३स्मान्द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः ॥२॥
प्रतीची दिग्वरुणोऽधिपतिः पृदाकू रक्षितान्नमिषवः । तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु। यो३स्मान्द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः ॥३॥
उदीची दिक्सोमोऽधिपतिः स्वजो रक्षिताशनिरिषवः । तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु। यो३स्मान्द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः ॥४॥
ध्रुवा दिग्विष्णुरधिपतिः कल्माषग्रीवो रक्षिता वीरुध इषवः । तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु। यो३स्मान्द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः ॥५॥
ऊर्ध्वा दिग्बृहस्पतिरधिपतिः श्वित्रो रक्षिता वर्षमिषवः । तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु। यो३स्मान्द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः ॥६॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

[२८] अष्टाविंशं सूक्तम्

ऋषिः—ब्रह्मा ॥ देवता—यमिनी ॥ छन्दः—१ अतिशक्वरीगर्भाचतुष्पदातिजगती; २, ३ अनुष्टुप्; ४ यवमध्याविराड्ककुप्; ५ त्रिष्टुप्; ६ विराड्गर्भाप्रस्तारपङ्क्तिः ॥

एकैकयैषा सृष्ट्या सं बभूव यत्र गा असृजन्त भूतकृतो विश्वरूपाः ।
यत्र विजायते यमिन्यपर्तुः सा पशून्क्षिणाति रिफती रुशती ॥ १ ॥
एषा पशून्त्सं क्षिणाति क्रव्याद्भूत्वा व्यद्वरी ।
उतैनां ब्रह्मणे दद्यात्तथा स्योना शिवा स्यात् ॥ २ ॥
शिवा भव पुरुषेभ्यो गोभ्यो अश्वेभ्यः शिवा ।
शिवास्मै सर्वस्मै क्षेत्राय शिवा न इहैधि ॥ ३ ॥
इह पुष्टिरिह रस इह सहस्रसातमा भव। पशून्यमिनि पोषय ॥ ४ ॥
यत्रा सुहार्दः सुकृतो मदन्ति विहाय रोगं तन्वः स्वायाः ।
तं लोकं यमिन्यभिसंबभूव सा नो मा हिंसीत्पुरुषान्पशूंश्च ॥ ५ ॥
यत्रा सुहार्दां सुकृतामग्निहोत्रहुतां यत्र लोकः ।
तं लोकं यमिन्यभिसंबभूव सा नो मा हिंसीत्पुरुषान्पशूंश्च ॥ ६ ॥

[२९] एकोनत्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—उद्दालकः ॥ देवता—१-६ शितिपाद् अविः; ७ कामः; ८ भूमिः ॥ छन्दः—१, ३ पथ्यापङ्क्तिः; २, ४-६ अनुष्टुप्; ७ षट्पद्मा उपरिष्टाद्बृहती-विराड्जगती; ८ उपरिष्टाद्बृहती ॥

यद्राजानो विभजन्त इष्टापूर्तस्य षोडशं यमस्यामी सभासदः ।
अविस्तस्मात्प्र मुञ्चति दत्तः शितिपात्स्वधा ॥ १ ॥
सर्वान्कामान्पूरयत्याभवन्प्रभवन्भवन् ।
आकूतिप्रोऽविर्दत्तः शितिपात्रोप दस्यति ॥ २ ॥
यो ददाति शितिपादमविं लोकेन संमितम् ।
स नाकमभ्यारोहति यत्र शुल्को न क्रियते अबलेन बलीयसे ॥ ३ ॥
पञ्चापूपं शितिपादमविं लोकेन संमितम् ।
प्रदातोप जीवति पितृणां लोकेऽक्षितम् ॥ ४ ॥
पञ्चापूपं शितिपादमविं लोकेन संमितम् ।
प्रदातोप जीवति सूर्यामासयोरक्षितम् ॥ ५ ॥
इरेव नोप दस्यति समुद्रइव पयो महत् ।
देवौ संवासिनाविव शितिपात्रोप दस्यति ॥ ६ ॥
क इदं कस्मा अदात्कामः कामायादात् ।
कामो दाता कामः प्रतिग्रहीता कामः समुद्रमा विवेश ।
कामेन त्वा प्रति गृह्णामि कामैतत्ते ॥ ७ ॥
भूमिष्ट्वा प्रति गृह्णात्वन्तरिक्षमिदं महत् ।
माहं प्राणेन मात्मना मा प्रजया प्रतिगृह्य वि राधिषि ॥ ८ ॥

[३०] त्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा ॥ देवता—सांमनस्यम् ॥ छन्दः—१-४ अनुष्टुप्; ५ विराड्जगती; ६ प्रस्तारपङ्क्तिः; ७ त्रिष्टुप् ॥

सहृदयं सांमनस्यमविद्वेषं कृणोमि वः ।
अन्यो अन्यमभि हर्यत वत्सं जातमिवाघ्न्या ॥ १ ॥
अनुव्रतः पितुः पुत्रो मात्रा भवतु संमनाः ।
जाया पत्ये मधुमतीं वाचं वदतु शन्तिवान् ॥ २ ॥
मा भ्राता भ्रातरं द्विक्षन्मा स्वसारमुत स्वसा ।
सम्यञ्चः सव्रता भूत्वा वाचं वदत भद्रया ॥ ३ ॥
येन देवा न वियन्ति नो च विद्विषते मिथः ।
तत्कृण्मो ब्रह्म वो गृहे संज्ञानं पुरुषेभ्यः ॥ ४ ॥
ज्यायस्वन्तश्चित्तिनो मा वि यौष्ट संराधयन्तः सधुराश्चरन्तः ।
अन्यो अन्यस्मै वल्गु वदन्त एत सध्रीचीनान्वः संमनसस्कृणोमि ॥ ५ ॥
समानी प्रपा सह वोऽन्नभागः समाने योक्त्रे सह वो युनज्मि ।
सम्यञ्चोऽग्निं सपर्यतारा नाभिमिवाभितः ॥ ६ ॥
सध्रीचीनान्वः संमनसस्कृणोम्येकश्नुष्टीन्त्संवननेन सर्वान् ।
देवाइवामृतं रक्षमाणाः सायंप्रातः सौमनसो वो अस्तु ॥ ७ ॥

[३१] एकत्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—ब्रह्मा ॥ देवता—अग्न्यादयः पाप्महनो मन्त्रोक्ताः ॥ छन्दः—१-३, ६-११ अनुष्टुप्; ४ भुरिगनुष्टुप्; ५ विराट्प्रस्तारपङ्क्तिः ॥

वि देवा जरसावृतन्वि त्वमग्ने अरात्या ।
व्यहं सर्वेण पाप्मना वि यक्ष्मेण समायुषा ॥ १ ॥
व्यार्त्या पवमानो वि शक्रः पापकृत्यया ।
व्यहं सर्वेण पाप्मना वि यक्ष्मेण समायुषा ॥ २ ॥
वि ग्राम्याः पशव आरण्यैर्व्यापस्तृष्ण्यायासरन् ।
व्यहं सर्वेण पाप्मना वि यक्ष्मेण समायुषा ॥ ३ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

वी॒३॒॑मे द्यावा॑पृथि॒वी इ॒तो वि प॒न्थां॑नो दिशं॑दिशम्।
व्य॒॑॑हं सर्वे॑ण पा॒प्मना॒ वि यक्ष्मे॑ण॒ समा॑युषा ॥४॥
त्वष्टा॑ दुहि॒त्रे व॑हतुं यु॒नक्ती॒तीदं विश्वं॒ भुव॑नं॒ वि या॑ति।
व्य॒॑॑हं सर्वे॑ण पा॒प्मना॒ वि यक्ष्मे॑ण॒ समा॑युषा ॥५॥
अ॒ग्निः प्रा॒णान्त्सं द॑धाति च॒न्द्रः प्रा॒णेन॒ संहि॑तः ।
व्य॒॑॑हं सर्वे॑ण पा॒प्मना॒ वि यक्ष्मे॑ण॒ समा॑युषा ॥६॥
प्रा॒णेन॑ वि॒श्वतो॑वीर्यं दे॒वाः सूर्यं॑ समैरयन् ।
व्य॒॑॑हं सर्वे॑ण पा॒प्मना॒ वि यक्ष्मे॑ण॒ समा॑युषा ॥७॥
आयु॑ष्मतामायु॒ष्कृतां॑ प्रा॒णेन॑ जीव॒ मा मृ॑थाः ।
व्य॒॑॑हं सर्वे॑ण पा॒प्मना॒ वि यक्ष्मे॑ण॒ समा॑युषा ॥८॥
प्रा॒णेन॑ प्रा॒णतां॑ प्रा॒णेहैव भ॑व॒ मा मृ॑थाः ।
व्य॒॑॑हं सर्वे॑ण पा॒प्मना॒ वि यक्ष्मे॑ण॒ समा॑युषा ॥९॥
उदा॑यु॒षा समा॑युषो॒दोष॑धीनां॒ रसे॑न ।
व्य॒॑॑हं सर्वे॑ण पा॒प्मना॒ वि यक्ष्मे॑ण॒ समा॑युषा ॥१०॥
आ प॒र्जन्य॑स्य वृ॒ष्टयो॑द॒स्थामा॒मृता॑ व॒यम् ।
व्य॒॑॑हं सर्वे॑ण पा॒प्मना॒ वि यक्ष्मे॑ण॒ समा॑युषा ॥११॥

॥ इति षष्ठः प्रपाठकः ॥
॥ इति तृतीयं काण्डम् ॥

अथ चतुर्थं काण्डम्

अथ सप्तमः प्रपाठकः

अथ प्रथमोऽनुवाकः

[१] प्रथमं सूक्तम्

ऋषिः—वेनः ॥ देवता—बृहस्पतिः, आदित्यः ॥ छन्दः—१, ३, ४, ६, ७ त्रिष्टुप्; २, ५ पुरोऽनुष्टुप्त्रिष्टुप् ॥

ब्रह्मा॑ जज्ञा॒नं प्र॑थ॒मं पु॒रस्ता॒द्वि सी॑मत॒ः सुरु॑चो॒ वे॒न आ॑वः।
स बु॒ध्न्या॑ उप॒मा अ॑स्य वि॒ष्ठाः स॒तश्च॒ योनि॒मस॑तश्च॒ वि व॑ः॥ १॥
इ॒यं पित्र्या॒ राष्ट्र्ये॒त्वग्रे॑ प्रथ॒माय॑ ज॒नुषे॑ भुवने॒ष्ठाः।
तस्मा॑ ए॒तं सु॒रुचं॑ ह्वा॒रम॑ह्यं घ॒र्मं श्री॑णन्तु प्रथ॒माय॑ धा॒स्यवे॑॥ २॥
प्र यो ज॒ज्ञे वि॒द्वान॑स्य॒ बन्धु॑र्विश्वा॑ दे॒वाना॑ं जनि॒मा विव॑क्ति।
ब्रह्म॒ ब्रह्मा॑ण॒ उज्ज॑भार॒ मध्या॒न्नीचै॒रुच्चैः॒ स्वधा॒ अ॒भि प्र त॑स्थौ॥ ३॥
स हि दि॒वः स पृ॑थि॒व्या ऋ॒तस्था म॒ही क्षेमं॑ रोद॒सी अस्क॑भायत्।
म॒हान्म॒ही अस्क॑भाय॒द्वि जा॒तो द्यां सद्म॒ पार्थि॑वं च॒ रज॑ः॥ ४॥
स बु॒ध्न्या॑दाष्ट्र ज॒नुषो॒ऽभ्यग्रं॑ बृह॒स्पति॑र्दे॒वता॒ तस्य॑ स॒म्राट्।
अ॒र्ह॒यच्छु॒क्रं ज्योति॑षो॒ जनि॒ष्टाथ॑ द्यु॒मन्तो॒ वि व॑सन्तु॒ विप्रा॑ः॥ ५॥
नूनं॑ तदस्य॒ का॒व्यो हि॑नोति म॒हो दे॒वस्य॑ पू॒र्व्यस्य॒ धाम॑।
ए॒ष ज॑ज्ञे ब॒हुभि॑ः सा॒कमि॒त्था पूर्वे॑ अ॒र्धे वि॒षि॑ते स॒सन्नु॥ ६॥
योऽथ॑र्वाणं पि॒तर॑ं दे॒वब॑न्धुं बृह॒स्पति॑ं नम॒सावं॑ च॒ गच्छा॑त्।
त्वं विश्वे॑षां जनि॒ता यथास॑ः क॒विर्दे॒वो न दभा॑यत्स्व॒धावा॑न्॥ ७॥

[२] द्वितीयं सूक्तम्

ऋषिः—वेनः ॥ देवता—आत्मा ॥ छन्दः—१-५, ८ त्रिष्टुप्; ६ पुरोऽनुष्टुप्त्रिष्टुप्; ७ उपरिष्टाज्ज्योतिस्त्रिष्टुप् ॥

य आ॑त्म॒दा ब॑ल॒दा यस्य॒ विश्व॑ उपास॒ते प्र॒शिष॒ं यस्य॑ दे॒वाः।
यो॒३॒॑स्येशे॑ द्वि॒पदो॒ यश्चतु॑ष्पद॒ः कस्मै॑ दे॒वाय॑ ह॒विषा॑ विधेम॥ १॥
यः प्रा॑ण॒तो नि॑मिष॒तो म॑हि॒त्वैको॒ राजा॒ जग॑तो ब॒भूव॑।
यस्य॑ छा॒यामृ॒तं यस्य॑ मृ॒त्युः कस्मै॑ दे॒वाय॑ ह॒विषा॑ विधेम॥ २॥
यं क्र॒न्दसी॒ अव॑तश्चस्कभा॒ने भि॒यसा॑ने रोद॒सी अ॑ह्वयेथाम्।
यस्या॒सौ प॒न्था॒ रज॑सो वि॒मा॒नः कस्मै॑ दे॒वाय॑ ह॒विषा॑ विधेम॥ ३॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

यस्य द्यौरुर्वी पृथिवी च मही यस्यादुर्वन्तरिक्षम्।
यस्यासौ सूरो विततो महित्वा कस्मै देवाय हविषा विधेम॥ ४॥
यस्य विश्वे हिमवन्तो महित्वा समुद्रे यस्य रसामिदाहुः।
इमाश्च प्रदिशो यस्य बाहू कस्मै देवाय हविषा विधेम॥ ५॥
आपो अग्रे विश्वमावन्नगर्भं दधाना अमृता ऋतज्ञाः।
यासु देवीष्वधि देव आसीत्कस्मै देवाय हविषा विधेम॥ ६॥
हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।
स दाधार पृथिवीमुत द्यां कस्मै देवाय हविषा विधेम॥ ७॥
आपो वत्सं जनयन्तीर्गर्भमग्रे समैरयन्। तस्योत
जायमानस्योल्ब आसीद्धिरण्ययः कस्मै देवाय हविषा विधेम॥ ८॥

[३] तृतीयं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा॥ देवता—व्याघ्रः॥ छन्दः—१ पथ्यापङ्क्तिः, २, ४-६ अनुष्टुप्; ३ गायत्री; ७ ककुम्मतीगर्भोपरिष्टाद्बृहती॥

उदितस्त्रयो अक्रमन्व्याघ्रः पुरुषो वृकः। हिरुग्घि यन्ति
सिन्धवो हिरुग्देवो वनस्पतिर्हिरुङ् नमन्तु शत्रवः॥ १॥
परेणैतु पथा वृकः परमेणोत तस्करः।
परेण दत्वती रज्जुः परेणाघायुरर्षतु॥ २॥
अक्ष्यौ च ते मुखं च ते व्याघ्र जम्भयामसि।
आत्सवींन्विंशतिं नखान्॥ ३॥
व्याघ्रं दत्वतो वयं प्रथमं जम्भयामसि।
आदुं ष्टेनमथो अहिं यातुधानमथो वृकम्॥ ४॥
यो अद्य स्तेन आयति स संपिष्टो अपायति।
पथामपथ्वंसेनैत्विन्द्रो वज्रेण हन्तु तम्॥ ५॥
मूर्णा मृगस्य दन्ता अपिशीर्णा उ पृष्टयः।
निमुक्ते गोधा भवतु नीचायच्छशयुर्मृगः॥ ६॥
यत्संयमो न वि यमो वि यमो यत्र संयमः।
इन्द्रजाः सोमजा आथर्वणमसि व्याघ्रजम्भनम्॥ ७॥

[४] चतुर्थं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा॥ देवता—वनस्पतिः (उच्छुष्मौषधिः); ६ अग्निः, सविता, सरस्वती, ब्रह्मणस्पतिः॥ छन्दः—१-३, ५, ८ अनुष्टुप्; ४ पुरउष्णिक्; ६, ७ भुरिगनुष्टुप्॥

यां त्वा गन्धर्वो अखनद्वरुणाय मृतभ्रजे।
तां त्वा वयं खनामस्योषधिं शेपहर्षणीम्॥ १॥
उदुषा उदु सूर्य उदिदं मामकं वचः।
उदेजतु प्रजापतिर्वृषा शुष्मेण वाजिना॥ २॥
यथा स्म ते विरोहतोऽभितस्तमिवानति।
ततस्ते शुष्मवत्तरमियं कृणोत्वोषधिः॥ ३॥
उच्छुष्मौषधीनां सारं ऋषभाणाम्।
सं पुंसामिन्द्र वृष्ण्यमस्मिन्धेहि तनूवशिन्॥ ४॥
अपां रसः प्रथमजोऽथो वनस्पतीनाम्।
उत सोमस्य भ्रातास्युताश्मसि वृष्ण्यम्॥ ५॥
अद्याग्रे अद्य सवितरद्य देवि सरस्वति।
अद्यास्य ब्रह्मणस्पते धनुरिवा तानया पसः॥ ६॥
आहं तनोमि ते पसो अधि ज्यामिव धन्वनि।
क्रमस्वर्शइव रोहितमनवग्लायता सदा॥ ७॥
अश्वस्याश्वतरस्याजस्य पेत्वस्य च।
अथ ऋषभस्य ये वाजास्तानस्मिन्धेहि तनूवशिन्॥ ८॥

[५] पञ्चमं सूक्तम्

ऋषिः—ब्रह्मा॥ देवता—वृषभः, स्वापनम्॥ छन्दः—१, ३-६ अनुष्टुप्; २ भुरिगनुष्टुप्; ७ पुरस्ताज्ज्योतिस्त्रिष्टुप्॥

सहस्रशृङ्गो वृषभो यः समुद्रादुदाचरत्।
तेना सहस्येना वयं नि जनान्त्स्वापयामसि॥ १॥
न भूमिं वातो अति वाति नाति पश्यति कश्चन।
स्त्रियश्च सर्वाः स्वापय शुनश्चेन्द्रसखा चरन्॥ २॥
प्रोष्ठेशयास्तल्पेशया नारीर्या वह्यशीवरीः।
स्त्रियो याः पुण्यगन्धयस्ताः सर्वाः स्वापयामसि॥ ३॥
एजदेजदजग्रभं चक्षुः प्राणमजग्रभम्।
अङ्गान्यजग्रभं सर्वा रात्रीणामतिशर्वरे॥ ४॥
य आस्ते यश्चरति यश्च तिष्ठन्विपश्यति।
तेषां सं दध्मो अक्षीणि यथेदं हर्म्यं तथा॥ ५॥
स्वसुं माता स्वसुं पिता स्वसु श्वा स्वसुं विश्पतिः।
स्वपन्त्वस्य ज्ञातयः स्वप्त्वयमभितो जनः॥ ६॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

स्वप्नं स्वप्नाभिकरणेन सर्वं नि ष्वापया जनम् ।
ओत्सूर्यमन्यान्त्स्वापयाव्युषं जागृतादहमिन्द्रइवारिष्टो अक्षितः ॥ ७ ॥

अथ द्वितीयोऽनुवाकः [६] षष्ठं सूक्तम्

ऋषिः—गरुत्मान्॥ देवता—१ ब्राह्मणः; २ द्यावापृथिवी, सप्त सिन्धवः; ३ सुपर्णः; ४-८ विषम्॥ छन्दः—अनुष्टुप्॥

ब्राह्मणो जज्ञे प्रथमो दशशीर्षो दशास्यः ।
स सोमं प्रथमः पपौ स चकारारसं विषम् ॥ १ ॥
यावती द्यावापृथिवी वरिम्णा यावत्सप्त सिन्धवो वितष्ठिरे ।
वाचं विषस्य दूषणीं तामितो निरवादिषम् ॥ २ ॥
सुपर्णस्त्वा गरुत्मान्विष प्रथममावयत् ।
नामीमदो नारूरुप उतास्मा अभवः पितुः ॥ ३ ॥
यस्त आस्यत्पञ्चाङ्गुरिर्वक्राच्चिदधि धन्वनः ।
अपस्कम्भस्य शल्यान्निरवोचमहं विषम् ॥ ४ ॥
शल्याद्विषं निरवोचं प्राञ्जनादुत पर्णधेः ।
अपाष्ठाच्छृङ्गात्कुल्मलान्निरवोचमहं विषम् ॥ ५ ॥
अरसस्त इषो शल्योऽथो ते अरसं विषम् ।
उतारसस्य वृक्षस्य धनुष्टे अरसारसम् ॥ ६ ॥
ये अपीषन्ये अदिहन्य आस्यन्ये अवासृजन् ।
सर्वे ते वध्रयः कृता वध्रिर्विषगिरिः कृतः ॥ ७ ॥
वध्रयस्ते खनितारो वध्रिस्त्वमस्योषधे ।
वध्रिः स पर्वतो गिरिर्यतो जातमिदं विषम् ॥ ८ ॥

[७] सप्तमं सूक्तम्

ऋषिः—गरुत्मान्॥ देवता—वनस्पतिः॥ छन्दः—१-३, ५-७ अनुष्टुप्; ४ स्वराडनुष्टुप्॥

वारिदं वारयातै वरणावत्यामधि ।
तत्रामृतस्यासिक्तं तेना ते वारये विषम् ॥ १ ॥
अरसं प्राच्यं विषमरसं यदुदीच्यम् ।
अथेदमधराच्यं करम्भेण वि कल्पते ॥ २ ॥
करम्भं कृत्वा तिर्यं पीबस्पाकमुदारथिम् ।
क्षुधा किल त्वा दुष्टनो जक्षिवान्त्स न रूरुपः ॥ ३ ॥
वि ते मदं मदावति शरमिव पातयामसि ।
प्र त्वा चरुमिव येषन्तं वचसा स्थापयामसि ॥ ४ ॥
परि ग्राममिवाचितं वचसा स्थापयामसि ।
तिष्ठा वृक्षइव स्थाम्न्यभ्रिखाते न रूरुपः ॥ ५ ॥
पवस्तैस्त्वा पर्यक्रीणन्दूर्शेभिरजिनैरुत ।
प्रक्रीरसि त्वमोषधेऽभ्रिखाते न रूरुपः ॥ ६ ॥
अनाप्ता ये वः प्रथमा यानि कर्माणि चक्रिरे ।
वीरान्नो अत्र मा दभन्तद्व एतत्पुरो दधे ॥ ७ ॥

[८] अष्टमं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वाङ्गिराः॥ देवता—राज्याभिषेकः, आपः, (मन्त्रोक्ता राजादयः)॥ छन्दः—१, ७ भुरिक्त्रिष्टुप्; २, ४, ६ अनुष्टुप्; ३ त्रिष्टुप्; ५ विराट्प्रस्तारपङ्क्तिः॥

भूतो भूतेषु पय आ दधाति स भूतानामधिपतिर्बभूव ।
तस्य मृत्युश्चरति राजसूयं स राजा राज्यमनु मन्यतामिदम् ॥ १ ॥
अभि प्रेहि माप वेन उग्रश्चेत्ता सपत्नहा ।
आ तिष्ठ मित्रवर्धन तुभ्यं देवा अधि ब्रुवन् ॥ २ ॥
आतिष्ठन्तं परि विश्वे अभूषं छ्रियं वसानश्चरति स्वरोचिः ।
महत्तद् वृष्णो असुरस्य नामा विश्वरूपो अमृतानि तस्थौ ॥ ३ ॥
व्याघ्रो अधि वैयाघ्रे वि क्रमस्व दिशो महीः ।
विशस्त्वा सर्वा वाञ्छन्त्वापो दिव्याः पयस्वतीः ॥ ४ ॥
या आपो दिव्याः पयसा मदन्त्यन्तरिक्ष उत वा पृथिव्याम् ।
तासां त्वा सर्वासामपामभि षिञ्चामि वर्चसा ॥ ५ ॥
अभि त्वा वर्चसासिचन्नापो दिव्याः पयस्वतीः ।
यथासो मित्रवर्धनस्तथा त्वा सविता करत् ॥ ६ ॥
एना व्याघ्रं परिषस्वजानाः सिंहं हिन्वन्ति महते सौभगाय ।
समुद्रं न सुभुवस्तस्थिवांसं मर्मृज्यन्ते द्वीपिनमप्स्व१न्तः ॥ ७ ॥

[९] नवमं सूक्तम्

ऋषिः—भृगुः॥ देवता—त्रैककुदाञ्जनम्॥ छन्दः—१, ४-१० अनुष्टुप्; २ ककुम्मत्यनुष्टुप्; ३ पथ्यापङ्क्तिः॥

एहि जीवं त्रायमाणं पर्वतस्यास्यक्ष्यम् ।
विश्वभिर्देवदत्तं परिधिर्जीवनाय कम् ॥ १ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

परिपाणं पुरुषाणां परिपाणं गवामसि ।
अश्वानामवँतां परिपाणाय तस्थिषे ॥ २ ॥
उतासि परिपाणं यातुजम्भनमाञ्जन ।
उतामृतस्य त्वं वेत्थाथो असि जीवभोजनमथो हरितभेषजम् ॥ ३ ॥
यस्याञ्जन प्रसर्पस्यङ्गमङ्गं परुष्परुः ।
ततो यक्ष्मं वि बाधस उग्रो मध्यमशीरिव ॥ ४ ॥
नैनं प्राप्नोति शपथो न कृत्या नाभिशोचनम् ।
नैनं विष्कन्धमश्नुते यस्त्वा बिभर्त्याञ्जन ॥ ५ ॥
असन्मन्त्रादुष्वप्न्यादुष्कृताच्छमलादुत ।
दुर्हार्दश्चक्षुषो घोरात्तस्मान्नः पाह्याञ्जन ॥ ६ ॥
इदं विद्वानाञ्जन सत्यं वक्ष्यामि नानृतम् ।
सनेयमश्वं गामहमात्मानं तवं पूरुष ॥ ७ ॥
त्रयो दासा आञ्जनस्य तक्मा बलासः आदहिः ।
वर्षिष्ठः पर्वतानां त्रिककुन्नाम ते पिता ॥ ८ ॥
यदाञ्जनं त्रैककुदं जातं हिमवतस्परि ।
यातूंश्च सर्वाञ्जम्भयत्सर्वांश्च यातुधान्यः ॥ ९ ॥
यदि वासि त्रैककुदं यदि यामुनमुच्यसे ।
उभे ते भद्रे नाम्नी ताभ्यां नः पाह्याञ्जन ॥ १० ॥

[१०] दशमं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा ॥ देवता—शङ्खमणिः, कृशनः ॥ छन्दः—१-५ अनुष्टुप्; ६ पथ्यापङ्क्तिः; ७ पञ्चपदापरानुष्टुप्शाक्वरी ॥

वाताज्जातो अन्तरिक्षाद्विद्युतो ज्योतिषस्परि ।
स नो हिरण्यजाः शङ्खः कृशनः पात्वंहसः ॥ १ ॥
यो अग्रतो रोचनानां समुद्रादधि जज्ञिषे ।
शङ्खेन हत्वा रक्षांस्यत्रिणो वि षहामहे ॥ २ ॥
शङ्खेनामीवामर्मतिं शङ्खेनोत सदान्वाः ।
शङ्खो नो विश्वभेषजः कृशनः पात्वंहसः ॥ ३ ॥
दिवि जातः समुद्रजः सिन्धुतस्पर्याभृतः ।
स नो हिरण्यजाः शङ्ख आयुष्प्रतरणो मणिः ॥ ४ ॥
समुद्राज्जातो मणिर्वृत्राज्जातो दिवाकरः ।
सो अस्मान्त्सर्वतः पातु हेत्या देवासुरेभ्यः ॥ ५ ॥
हिरण्यानामेकोऽसि सोमात्त्वमधि जज्ञिषे ।
रथे त्वमसि दर्शत इषुधौ रोचनस्त्वं प्र ण आयूंषि तारिषत् ॥ ६ ॥
देवानामस्थि कृशनं बभूव तदात्मन्वच्चरत्यप्स्वन्तः ।
तत्ते बध्नाम्यायुषे वर्चसे बलाय दीर्घायुत्वाय शतशारदाय
कार्शनस्त्वाभि रक्षतु ॥ ७ ॥

अथ तृतीयोऽनुवाकः [११] एकादशं सूक्तम्

ऋषिः—भृग्वङ्गिराः ॥ देवता—अनड्वान् इन्द्ररूपः ॥ छन्दः—१, ४ जगती; २ भुरिक्त्रिष्टुप्; ३, ५, ६ त्रिष्टुप्; ७ षट्पदाऽनुष्टुब्गर्भोपरिष्टाज्जगती निचृच्छक्वरी; ८-१२ अनुष्टुप् ॥

अनड्वान्दाधार पृथिवीमुत द्यामनड्वान्दाधारोर्वन्तरिक्षम् ।
अनड्वान्दाधार प्रदिशः षडुर्वीरनड्वान्विश्वं भुवनमा विवेश ॥ १ ॥
अनड्वानिन्द्रः स पशुभ्यो वि चष्टे त्रयां छक्रो वि मिमीते अध्वनः ।
भूतं भविष्यद्धुवना दुहानः सवीं देवानां चरति व्रतानि ॥ २ ॥
इन्द्रो जातो मनुष्येष्वन्तर्धर्मस्तप्तश्चरति शोशुचानः ।
सुप्रजाः सन्त्स उदारे न सर्ष्यद्यो नाशनीयादनडुहो विजानन् ॥ ३ ॥
अनड्वान्दुहे सुकृतस्य लोक ऐनं प्याययति पवमानः पुरस्तात् ।
पर्जन्यो धारा मरुत ऊधो अस्य यज्ञः पयो दक्षिणा दोहो अस्य ॥ ४ ॥
यस्य नेशे यज्ञपतिर्न यज्ञो नास्य दातेशे न प्रतिग्रहीता ।
यो विश्वजिद्विश्वभृद्विश्वकर्मा घर्मं नो ब्रूत यतमश्चतुष्पात् ॥ ५ ॥
येन देवाः स्वरारुरुहुर्हित्वा शरीरमसृतस्य नाभिम् ।
तेन गेष्म सुकृतस्य लोकं घर्मस्य व्रतेन तपसा यशस्यवः ॥ ६ ॥
इन्द्रो रूपेणाग्निर्वहैन प्रजापतिः परमेष्ठी विराट् ।
विश्वानरे अक्रमत वैश्वानरे अक्रमतानडुह्यक्रमत ।
सो दूहयत सोधिरयत ॥ ७ ॥
मध्यमेतदनडुहो यत्रैष वहु आहितः ।
एतावदस्य प्राचीनं यावान्प्रत्यङ् समाहितः ॥ ८ ॥
यो वेदानडुहो दोहान्त्सप्तानुपदस्वतः ।
प्रजां च लोकं चाप्नोति तथा सप्तऋषयो विदुः ॥ ९ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri GyaanKosha

पद्भिः सेदिमव क्रामन्त्रिरां जङ्घाभिरुत्खिदन्।
श्रमेणानड्वान्क्रीलालं कीनाशश्चाभि गच्छतः ॥ १० ॥
द्वादश वा एता रात्रीर्व्रत्या आहुः प्रजापतेः।
तत्रोप ब्रह्म यो वेद तद्वा अनड्वाहो व्रतम् ॥ ११ ॥
दुहे सायं दुहे प्रातर्दुहे मध्यंदिनं परि।
दोहा ये अस्य संयन्ति तान्विद्मानुपदस्वतः ॥ १२ ॥

[१२] द्वादशं सूक्तम्

ऋषिः—ऋभुः॥ देवता—रोहिणी वनस्पतिः॥ छन्दः—१ त्रिपदागायत्री; २-५ अनुष्टुप्; ६ त्रिपदायवमध्याभुरिग्गायत्री; ७ बृहती॥

रोहण्यसि रोहण्युस्थश्छित्रस्य रोहणी।
रोहयेदमरुन्धति ॥ १ ॥
यत्ते रिष्टं यत्ते द्युत्तमस्ति पेष्टृं त आत्मनि।
धाता तद्भद्रया पुनः सं दधत्परुषा परुः ॥ २ ॥
सं ते मज्जा मज्ञा भवतु समु ते परुषा परुः।
सं ते मांसस्य विस्रस्तं समस्थ्यपि रोहतु ॥ ३ ॥
मज्जा मज्ञा सं धीयतां चर्मणा चर्म रोहतु।
असृक्ते अस्थि रोहतु मांसं मांसेन रोहतु ॥ ४ ॥
लोम लोम्ना सं कल्पया त्वचा सं कल्पया त्वचम्।
असृक्ते अस्थि रोहतु छिन्नं सं धेह्योषधे ॥ ५ ॥
स उत्तिष्ठ प्रेहि प्र द्रव रथः सुचक्रः सुपविः सुनाभिः।
प्रति तिष्ठोर्ध्वः ॥ ६ ॥
यदि कर्तं पतित्वा संशश्रे यदि वाश्मा प्रहृतो जघान।
ऋभू रथस्येवाङ्गानि सं दधत्परुषा परुः ॥ ७ ॥

[१३] त्रयोदशं सूक्तम्

ऋषिः—शन्तातिः॥ देवता—विश्वेदेवाः॥ छन्दः—अनुष्टुप्॥

उत दैवा अवहितं देवा उन्नयथा पुनः।
उतागश्चक्रुषं देवा देवा जीवयथा पुनः ॥ १ ॥
द्वाविमौ वातौ वात आ सिन्धोरा परावतः।
दक्षं ते अन्य आवातु व्यन्यो वातु यद्रपः ॥ २ ॥
आ वात वाहि भेषजं वि वात वाहि यद्रपः।
त्वं हि विश्वभेषज देवानां दूत ईयसे ॥ ३ ॥
त्रायन्तामिमं देवास्त्रायन्तां मरुतां गणाः।
त्रायन्तां विश्वा भूतानि यथायमरपा असत् ॥ ४ ॥
आ त्वागमं शंतातिभिरथो अरिष्टतातिभिः।
दक्षं त उग्रमाभारिषं परा यक्ष्मं सुवामि ते ॥ ५ ॥
अयं मे हस्तो भगवानयं मे भगवत्तरः।
अयं मे विश्वभेषजोऽयं शिवाभिमर्शनः ॥ ६ ॥
हस्ताभ्यां दशशाखाभ्यां जिह्वा वाचः पुरोगवी।
अनामयित्नुभ्यां हस्ताभ्यां ताभ्यां त्वाभि मृशामसि ॥ ७ ॥

[१४] चतुर्दशं सूक्तम्

ऋषिः—भृगुः॥ देवता—अग्निः, आज्यम्॥ छन्दः—१, ५, ६ त्रिष्टुप्; २, ४ अनुष्टुप्; ३ प्रस्तारपङ्क्तिः; ७, ९ जगती; ८ पञ्चपदाऽतिशक्करी॥

अजो ह्यग्नेरजनिष्ट शोकात्सो अपश्यज्जनितारमग्रे।
तेन देवा देवतामग्र आयन्तेन रोहान्रुरुहुर्मेध्यासः ॥ १ ॥
क्रमध्वमग्निना नाकमुख्यान्हस्तेषु बिभ्रतः।
दिवस्पृष्ठं स्वर्गित्वा मिश्रा देवेभिराध्वम् ॥ २ ॥
पृष्ठात्पृथिव्या अहमन्तरिक्षमारुहमन्तरिक्षाद्दिवमारुहम्।
दिवो नाकस्य पृष्ठात्स्वर्ज्योतिरगामहम् ॥ ३ ॥
स्वर्यन्तो नापेक्षन्त आ द्यां रोहन्ति रोदसी।
यज्ञं ये विश्वतोधारं सुविद्वांसो वितेनिरे ॥ ४ ॥
अग्ने प्रेहि प्रथमो देवतानां चक्षुर्देवानामुत मानुषाणाम्।
इयक्षमाणा भृगुभिः सजोषाः स्वर्यन्तु यजमानाः स्वस्ति ॥ ५ ॥
अजमनज्मि पयसा घृतेन दिव्यं सुपर्णं पयसं बृहन्तम्।
तेन गेष्म सुकृतस्य लोकं स्वर्गा रोहन्तो अभि नाकमुत्तमम् ॥ ६ ॥
पञ्चौदनं पञ्चभिरञ्जलिभिर्दर्व्योर्द्धरं पञ्चधैतमोदनम्।
प्राच्यां दिशि शिरो अजस्य धेहि दक्षिणायां दिशि दक्षिणं धेहि पार्श्वम् ॥ ७ ॥
प्रतीच्यां दिशि भसदस्य धेह्युत्तरस्यां दिश्युत्तरं धेहि पार्श्वम्।
ऊर्ध्वायां दिश्यस्यानूकं धेहि दिशि ध्रुवायां धेहि पाजस्यमन्तरिक्षे
मध्यतो मध्यमस्य ॥ ८ ॥
शृतमजं शृतया प्रोणुहि त्वचा सर्वैरङ्गैः संभृतं विश्वरूपम्।
स उत्तिष्ठतो अभि नाकमुत्तमं पद्भिश्चतुर्भिः प्रति तिष्ठ दिक्षु ॥ ९ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

[१५] पञ्चदशं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा॥ देवता—१ दिशः; २, ३ वीरुधः; ४ मारुतपर्जन्यौ; ५-९ मरुतः; १० अग्निः; ११ प्रजापतिः, स्तनयित्नुः; १२ वरुणः; १३-१५ मण्डूकाः (१५ पितरः); १६ वातः॥ छन्दः—१, २, ५ विराड्जगती; ३, ६, ८, ११, १४, १६ त्रिष्टुप्; ४ विराट्पुरस्ताद्बृहती; ७, १३ अनुष्टुप्; ९ पथ्या-पङ्क्तिः; १० भुरिक्त्रिष्टुप्; १२ पञ्चपदाऽनुष्टुब्गर्भा भुरिक्त्रिष्टुप्॥

समुत्पतन्तु प्रदिशो नभस्वतीः समभ्राणि वातजूतानि यन्तु ।
महऋषभस्य नदतो नभस्वतो वाश्रा आपः पृथिवीं तर्पयन्तु ॥ १ ॥
समीक्षयन्तु तविषाः सुदानवोऽपां रसा ओषधीभिः सचन्ताम् ।
वर्षस्य सर्गा महयन्तु भूमिं पृथग्जायन्तामोषधयो विश्वरूपाः ॥ २ ॥
समीक्षयस्व गायतो नभोस्यपां वेगासः पृथगुद्विजन्ताम् ।
वर्षस्य सर्गा महयन्तु भूमिं पृथग्जायन्तां वीरुधो विश्वरूपाः ॥ ३ ॥
गुणास्त्वोप गायन्तु मारुताः पर्जन्य घोषिणः पृथक् ।
सर्गा वर्षस्य वर्षतो वर्षन्तु पृथिवीमनु ॥ ४ ॥
उदीरयत मरुतः समुद्रतस्त्वेषो अर्को नभ उत्पातयाथ ।
महऋषभस्य नदतो नभस्वतो वाश्रा आपः पृथिवीं तर्पयन्तु ॥ ५ ॥
अभि क्रन्द स्तनयार्दयोदधिं भूमिं पर्जन्य पयसा समङ्ग्धि ।
त्वया सृष्टं बहुलमैतु वर्षमाशारैषी कृशगुरेत्वस्तम् ॥ ६ ॥
सं वोऽवन्तु सुदानव उत्सा अजगरा उत ।
मरुद्भिः प्रच्युता मेघा वर्षन्तु पृथिवीमनु ॥ ७ ॥
आशामाशां वि द्योततां वाता वान्तु दिशोदिशः ।
मरुद्भिः प्रच्युता मेघाः सं यन्तु पृथिवीमनु ॥ ८ ॥
आपो विद्युदभ्रं वर्ष सं वोऽवन्तु सुदानव उत्सा अजगरा उत ।
मरुद्भिः प्रच्युता मेघाः प्रावन्तु पृथिवीमनु ॥ ९ ॥
अपामग्निस्तनूभिः संविदानो य ओषधीनामधिपा बभूव ।
स नो वर्ष वनुतां जातवेदाः प्राणं प्रजाभ्यो अमृतं दिवस्परि ॥ १० ॥
प्रजापतिः सलिलादः समुद्रादापं ईरयन्नुदधिमर्दयाति ।
प्र प्यायतां वृष्णो अश्वस्य रेतोऽर्वाङेतेन स्तनयित्नुनेहि ॥ ११ ॥
अपो निषिञ्चन्नसुरः पिता नः शमन्तु गर्गरा अपां वरुणाव
नीचीरपः सृज। वदन्तु पृश्निबाहवो मण्डूका इरिणानु ॥ १२ ॥
संवत्सरं शशयाना ब्राह्मणा व्रतचारिणः ।
वाचं पर्जन्यजिन्विता प्र मण्डूका अवादिषुः ॥ १३ ॥
उपप्रवद मण्डूकि वर्षमा वद तादुरि ।
मध्ये ह्रदस्य प्लवस्व विगृह्य चतुरः पदः ॥ १४ ॥
खण्वखाइङ खैमखाइङ मध्ये तदुरि ।
वर्षं वनुष्वं पितरो मरुतां मन इच्छत ॥ १५ ॥
महान्तं कोशमुदचाभि षिञ्च सविद्युतं भवतु वातु वातः ।
तन्वतां यज्ञं बहुधा विसृष्टा आनन्दिनीरोषधयो भवन्तु ॥ १६ ॥

अथ चतुर्थोऽनुवाकः [१६] षोडशं सूक्तम्

ऋषिः—ब्रह्मा॥ देवता—वरुणः, सत्यानृतान्वीक्षणम्॥ छन्दः—१ अनुष्टुप्; २-४, ६ त्रिष्टुप्; ५ भुरिक्त्रिष्टुप्; ७ जगती; ८ त्रिपान्महाबृहती; ९ विराण्नाम त्रिपाद्गायत्री॥

बृहन्नेषामधिष्ठाता अन्तिकादिव पश्यति ।
यस्तायन्मन्यते चरन्त्सर्वं देवा इदं विदुः ॥ १ ॥
यस्तिष्ठति चरति यश्च वञ्चति यो निलायं चरति यः प्रतङ्कम्।
द्वौ संनिषद्य यन्मन्त्रयेते राजा तद्वेद वरुणस्तृतीयः ॥ २ ॥
उतेयं भूमिर्वरुणस्य राज्ञ उतासौ द्यौर्बृहती दूरेअन्ता ।
उतो समुद्रौ वरुणस्य कुक्षी उतास्मिन्नल्प उदके निलीनः ॥ ३ ॥
उत यो द्यामतिसर्पात्परस्तान्न स मुच्यातै वरुणस्य राज्ञः ।
दिव स्पशः प्र चरन्तीदमस्य सहस्राक्षा अति पश्यन्ति भूमिम् ॥ ४ ॥
सर्वं तद्राजा वरुणो वि चष्टे यदन्तरा रोदसी यत्परस्तात् ।
संख्याता अस्य निमिषो जनानामक्षानिव श्वघ्नी नि मिनोति तानि ॥ ५ ॥
ये ते पाशा वरुण सप्तसप्त त्रेधा तिष्ठन्ति विषिता रुशन्तः ।
छिनन्तु सर्वे अनृतं वदन्तं यः सत्यवाद्यति तं सृजन्तु ॥ ६ ॥
शतेन पाशैरभि धेहि वरुणैनं मा तें मोच्यनृतवाङ् नृचक्षः ।
आस्तां जाल्म उदरं श्रंसयित्वा कोशइवाबन्धः परिकृत्यमानः ॥ ७ ॥
यः समाम्योर्३ वरुणो यो व्याम्योर्३ यः संदेश्योर्३ वरुणो यो विदेश्यः ।
यो देव्यो वरुणो यश्च मानुषः ॥ ८ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तैस्त्वा सर्वैरभि ष्यामि पाशैरसावामुष्यायणामुष्याः पुत्र ।
तानु ते सर्वाननुसंदिशामि ॥९॥

[१७] सप्तदशं सूक्तम्

ऋषिः—शुक्रः॥ देवता—अपामार्गो वनस्पतिः॥ छन्दः—अनुष्टुप्॥

ईशानां त्वा भेषजानामुज्जेष आ रभामहे ।
चक्रे सहस्रवीर्यं सर्वस्मा ओषधे त्वा ॥१॥
सत्यजितं शपथयार्वनीं सहमानां पुनःसराम् ।
सर्वाः समह्वयोषधीरितो नः पारयादिति ॥२॥
या शशाप शपनेन याघं मूरमादधे ।
या रसस्य हरणाय जातमारेभे तोकमत्तु सा ॥३॥
यां ते चक्रुरामे पात्रे यां चक्रुर्नीललोहिते ।
आमे मांसे कृत्यां यां चक्रुस्तया कृत्याकृतो जहि॥४॥
दौष्वन्यं दौर्जीवित्यं रक्षो अभ्वमिराव्यः ।
दुर्णाम्नीः सर्वा दुर्वाचस्ता अस्मन्नाशयामसि ॥५॥
क्षुधामारं तृष्णामारमगोतामनपत्यताम् ।
अपामार्ग त्वया वयं सर्वं तदप मृज्महे ॥६॥
तृष्णामारं क्षुधामारमथो अक्षपराजयम् ।
अपामार्ग त्वया वयं सर्वं तदप मृज्महे ॥७॥
अपामार्ग ओषधीनां सर्वासामेक इद्वशी ।
तेन ते मृज्म आस्थितमथ त्वमुदशश्चर ॥८॥

[१८] अष्टादशं सूक्तम्

ऋषिः—शुक्रः॥ देवता—अपामार्गो वनस्पतिः॥ छन्दः—१-५, ७, ८ अनुष्टुप्; ६ बृहतीगर्भानुष्टुप्॥

समं ज्योतिः सूर्येणाह्ना रात्री समावती ।
कृणोमि सत्यमूतयेऽरसाः सन्तु कृत्वरीः ॥१॥
यो देवाः कृत्यां कृत्वा हरादविदुषो गृहम् ।
वत्सो धारुरिव मातरं तं प्रत्यगुप पद्यताम् ॥२॥
अमा कृत्वा पाप्मानं यस्तेनान्यं जिघांसति ।
अश्मानस्तस्यां दग्धायां बहुलाः फट्करिक्रति ॥३॥
सहस्रधामन्विशिखान्विग्रीवां छयया त्वम् ।
प्रतिं स्म चक्रुषे कृत्यां प्रियां प्रियावते हर ॥४॥

अनयाहमोषध्या सर्वीः कृत्या अदूदुषम् ।
यां क्षेत्रे चक्रुर्यां गोषु यां वा ते पुरुषेषु ॥५॥
यश्चकार न शशाक कर्तुं शश्रे पादमङ्गुरिम् ।
चकार भद्रमस्मभ्यमात्मने तपनं तु सः ॥६॥
अपामार्गोऽप मार्ष्टु क्षेत्रियं शपथश्च यः ।
अपाहं यातुधानीरप सर्वा अराय्यः ॥७॥
अपमृज्य यातुधानानप सर्वा अराय्यः ।
अपामार्ग त्वया वयं सर्वं तदप मृज्महे ॥८॥

[१९] एकोनविंशं सूक्तम्

ऋषिः—शुक्रः॥ देवता—अपामार्गो वनस्पतिः॥ छन्दः—१, ३-८ अनुष्टुप्; २ पथ्यापङ्क्तिः॥

उतो अस्यबन्धुकृदुतो असि नु जामिकृत् ।
उतो कृत्याकृतः प्रजां नडमिवा च्छिन्धि वार्षिकम्॥१॥
ब्राह्मणेन पर्युक्तासि कण्वेन नार्षदेन ।
सेनेवैषि त्विषीमती न तत्र भयमस्ति यत्र प्राप्नोष्योषधे॥२॥
अग्रमेष्योषधीनां ज्योतिषेवाभिदीपयन् ।
उत त्रातासि पाकस्याथो हन्तासि रक्षसः ॥३॥
यददो देवा असुरांस्त्वयाग्रे निरकुर्वत ।
ततस्त्वमध्योषधेऽपामार्गो अजायथाः ॥४॥
विभिन्दती शतशाखा विभिन्दन्नाम ते पिता ।
प्रत्यग्वि भिन्धि त्वं तं यो अस्माँ अभिदासति ॥५॥
असद्भम्याः समभवत्तद्यामेति महद् व्यचः ।
तद्वै ततो विधूपायत्प्रत्यक्कर्तारमृच्छतु ॥६॥
प्रत्यङ् हि संबभूविथ प्रतीचीनफलस्त्वम् ।
सर्वान्मच्छपथाँ अधि वरीयो यावया वधम् ॥७॥
शतेन मा परि पाहि सहस्रेणाभि रक्ष मा ।
इन्द्रस्ते वीरुधां पत उग्र ओज्मानमा दधत् ॥८॥

[२०] विंशं सूक्तम्

ऋषिः—मातृनामा॥ देवता—ओषधिः॥ छन्दः—१ स्वराडनुष्टुप्; २-८ अनुष्टुप्; ९ भुरिगनुष्टुप्॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

आ पश्यति प्रति पश्यति परा पश्यति पश्यति ।
दिवमन्तरिक्षमाद्भूमिं सर्वं तद्देवि पश्यति ॥ १ ॥
तिस्रो दिवस्तिस्रः पृथिवीः षट् चेमाः प्रदिशः पृथक् ।
त्वयाहं सर्वा भूतानि पश्यानि देव्योषधे ॥ २ ॥
दिव्यस्य सुपर्णस्य तस्य हासि कनीनिका ।
सा भूमिमा रुरोहिथ वह्यं श्रान्ता वधूरिव ॥ ३ ॥
तां मे सहस्राक्षो देवो दक्षिणे हस्त आ दधत् ।
तयाहं सर्वाः पश्यामि यश्च शूद्र उतार्यः ॥ ४ ॥
आविष्कृणुष्व रूपाणि मात्मानमप गूहथाः ।
अथो सहस्रचक्षो त्वं प्रति पश्याः किमीदिनः ॥ ५ ॥
दर्शय मा यातुधानान्दर्शय यातुधान्यः ।
पिशाचान्त्सर्वान्दर्शयेति त्वा रभ ओषधे ॥ ६ ॥
कश्यपस्य चक्षुरसि शुन्याश्च चतुरक्ष्याः ।
वीध्रे सूर्यमिव सर्पन्तं मा पिशाचं तिरस्करः ॥ ७ ॥
उदग्रभं परिपाणाद्यातुधानं किमीदिनम् ।
तेनाहं सर्वाः पश्याम्युत शूद्रमुतार्यम् ॥ ८ ॥
यो अन्तरिक्षेण पतति दिवं यश्चातिसर्पति ।
भूमिं यो मन्यते नाथं तं पिशाचं प्र दर्शय ॥ ९ ॥

॥ इति सप्तमः प्रपाठकः ॥

अथाष्टमः प्रपाठकः ॥

अथ पञ्चमोऽनुवाकः [२१] एकविंशं सूक्तम्

ऋषिः—ब्रह्मा ॥ देवता—गावः ॥ छन्दः—१, ५-७ त्रिष्टुप्; २-४ जगती ॥

आ गावो अग्मन्नुत भद्रमक्रन्त्सीदन्तु गोष्ठे रणयन्त्वस्मे ।
प्रजावतीः पुरुरूपा इह स्युरिन्द्राय पूर्वीरुषसो दुहानाः ॥ १ ॥
इन्द्रो यज्वने गृणते च शिक्षत उपेद्ददाति न स्वं मुषायति ।
भूयोभूयो रयिमिदस्य वर्धयन्नभिन्ने खिल्ये नि दधाति देवयुम् ॥ २ ॥
न ता नशन्ति न दभाति तस्करो नासामामित्रो व्यथिरा दधर्षति ।
देवांश्च याभिर्यजते ददाति च ज्योगित्ताभिः सचते गोपतिः सह ॥ ३ ॥
न ता अर्वा रेणुककाटोऽश्नुते न संस्कृतत्रमुप यन्ति ता अभि ।
उरुगायमभयं तस्य ता अनु गावो मर्तस्य वि चरन्ति यज्वनः ॥ ४ ॥
गावो भगो गाव इन्द्रो म इच्छाद्गावः सोमस्य प्रथमस्य भक्षः ।
इमा या गावः स जनास इन्द्र इच्छामि हृदा मनसा चिदिन्द्रम् ॥ ५ ॥
यूयं गावो मेदयथा कृशं चिदश्रीरं चित्कृणुथा सुप्रतीकम् ।
भद्रं गृहं कृणुथ भद्रवाचो बृहद्वो वय उच्यते सभासु ॥ ६ ॥
प्रजावतीः सूयवसे रुशन्तीः शुद्धा अपः सुप्रपाणे पिबन्तीः ।
मा वः स्तेन ईशत माघशंसः परि वो रुद्रस्य हेतिर्वृणक्तु ॥ ७ ॥

[२२] द्वाविंशं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः अथर्वा वा ॥ देवता—इन्द्रः, क्षत्रियो राजा ॥
छन्दः—त्रिष्टुप् ॥

इमामिन्द्र वर्धय क्षत्रियं म इमं विशामेकवृषं कृणु त्वम् ।
निरमित्रानक्षणुह्यस्य सर्वांस्तान्नध्यास्मा अहमुत्तरेषु ॥ १ ॥
एमं भज ग्रामे अश्वेषु गोषु निष्टं भज यो अमित्रो अस्य ।
वर्म क्षत्राणामयमस्तु राजेन्द्र शत्रूं रन्धय सर्वमस्मै ॥ २ ॥
अयमस्तु धनपतिर्धनानामयं विशां विशपतिरस्तु राजा ।
अस्मिन्निन्द्र महि वर्चांसि धेह्यवर्चसं कृणुहि शत्रुमस्य ॥ ३ ॥
अस्मै द्यावापृथिवी भूरि वामं दुहाथां धर्मदुघेइव धेनू ।
अयं राजा प्रिय इन्द्रस्य भूयात्प्रियो गवामोषधीनां पशूनाम् ॥ ४ ॥
युनज्मि त उत्तरावन्तमिन्द्रं येन जयन्ति न पराजयन्ते ।
यस्त्वा करदेकवृषं जनानामुत राज्ञामुत्तमं मानवानाम् ॥ ५ ॥
उत्तरस्त्वमधरे ते सपत्ना ये के च राजन्प्रतिशत्रवस्ते ।
एकवृष इन्द्रसखा जिगीवां छत्रूयतामा भरा भोजनानि ॥ ६ ॥
सिंहप्रतीको विशो अद्धि सर्वा व्याघ्रप्रतीकोऽव बाधस्व शत्रून् ।
एकवृष इन्द्रसखा जिगीवां छत्रूयतामा खिदा भोजनानि ॥ ७ ॥

[२३] त्रयोविंशं सूक्तम्

ऋषिः—मृगारः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१, २, ५, ७ त्रिष्टुप्;
३ पुरस्तज्ज्योतिष्मती त्रिष्टुप्; ४ अनुष्टुप्; ६ प्रस्तारपङ्क्तिः ॥

अग्नेर्मन्वे प्रथमस्य प्रचेतसः पाञ्चजन्यस्य बहुधा यमिन्धते ।
विशो विशः प्रतिशिवांसमीमहे स नो मुञ्चत्वंहसः ॥ १ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

यथा॑ ह॒व्यं वह॑सि जातवेदो॒ यथा॑ य॒ज्ञं क॒ल्पय॑सि प्रजा॒नन्।
ए॒वा दे॒वेभ्यः॑ सुम॒तिं न॒ आ व॑ह॒ स नो॑ मुञ्च॒त्वंह॑सः ॥ २ ॥
याम॑न्याम॒न्नुप॑युक्तं॒ वहि॑ष्ठं॒ कर्म॑न्कर्म॒न्नाभ॑गम् ।
अ॒ग्निमी॑डे र॒क्षो॒हणं॑ यज्ञ॒वृधं॑ घृ॒ताहु॑तं॒ स नो॑ मुञ्च॒त्वंह॑सः ॥ ३ ॥
सुजा॑तं जा॒तवे॑दसम॒ग्निं वै॑श्वान॒रं वि॒भुम् ।
ह॒व्य॒वाहं॑ हवामहे॒ स नो॑ मुञ्च॒त्वंह॑सः ॥ ४ ॥
येन॒ ऋष॑यो ब॒लमद्यो॑तयन्यु॒जा येनासु॑राणा॒मयु॑वन्त मा॒याः।
येना॒ग्निना॑ प॒णीनिन्द्रो॑ जि॒गाय॒ स नो॑ मुञ्च॒त्वंह॑सः ॥ ५ ॥
येन॑ दे॒वा अ॒मृत॑म॒न्वविन्द॒न्येनौष॑धी॒र्मधु॑मती॒रकृ॑ण्वन् ।
येन॑ दे॒वाः स्व१॒॑राभ॑र॒न्त्स नो॑ मुञ्च॒त्वंह॑सः ॥ ६ ॥
यस्ये॒दं प्र॒दिशि॒ यद्वि॒रोच॑ते॒ यज्जा॒तं ज॑नित॒व्यं॑ च॒ केव॑लम्।
स्तौम्य॒ग्निं ना॑थि॒तो जो॑हवीमि॒ स नो॑ मुञ्च॒त्वंह॑सः ॥ ७ ॥

[२४] चतुर्विंशं सूक्तम्

ऋषिः—मृगारः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१ शक्वरीगर्भा पुरःशक्वरी; २-७ त्रिष्टुप्॥

इन्द्र॑स्य मन्महे॒ शश्व॒दिद॑स्य मन्महे वृत्र॒घ्न स्तोमा॒ उप॑ मे॒म आगुः॑।
यो दा॒शुषः॑ सु॒कृतो॒ हव॒मेति॒ स नो॑ मुञ्च॒त्वंह॑सः ॥ १ ॥
य उ॒ग्रीणा॑मुग्रबा॑हुर्य॒युर्यो दा॑न॒वानां॒ बल॑मारु॒रोज॑ ।
येन॑ जि॒ताः सिन्ध॑वो॒ येन॒ गावः॒ स नो॑ मुञ्च॒त्वंह॑सः ॥ २ ॥
यश्च॑र्षणि॒प्रो वृ॑ष॒भः स्व॒र्विद्यस्मै॒ ग्रावा॑णः प्र॒वद॑न्ति नृ॒म्णम् ।
यस्या॑ध्व॒रः स॒प्तहो॑ता॒ मदि॑ष्ठः॒ स नो॑ मुञ्च॒त्वंह॑सः ॥ ३ ॥
यस्य॑ व॒शास॑ ऋष॒भास॑ उ॒क्षणो॒ यस्मै॑ मी॒यन्ते॒ स्वर॑वः स्व॒र्विदे॑।
यस्मै॑ शु॒क्रः पव॑ते॒ ब्रह्म॑शुम्भितः॒ स नो॑ मुञ्च॒त्वंह॑सः ॥ ४ ॥
यस्य॒ जुष्टिं॑ सो॒मिनः॑ का॒मय॑न्ते॒ यं हव॑न्त॒ इषु॑मन्तं॒ गवि॑ष्टौ।
यस्मि॑न्न॒र्कः शि॑श्रि॒ये यस्मि॒न्नोजः॒ स नो॑ मुञ्च॒त्वंह॑सः ॥ ५ ॥
यः प्र॑थ॒मः क॑र्म॒कृत्या॑य ज॒ज्ञे यस्य॑ वी॒र्यं॑ प्रथ॒मस्यानु॑बुद्धम्।
येनोद्य॑तो॒ वज्रो॒ऽभ्याय॒ताहिं॒ स नो॑ मुञ्च॒त्वंह॑सः ॥ ६ ॥
यः सं॑ग्रा॒मान्नय॑ति॒ सं यु॒धे व॒शी यः पु॒ष्टानि॑ संसृ॒जति॑ द्व॒यानि॑।
स्तौमीन्द्रं॑ नाथि॒तो जो॑हवीमि॒ स नो॑ मुञ्च॒त्वंह॑सः ॥ ७ ॥

[२५] पञ्चविंशं सूक्तम्

ऋषिः—मृगारः॥ देवता—वायुसवितारौ॥ छन्दः—१, २, ४-६ त्रिष्टुप्; ३ अतिशक्वरी; ७ पथ्याबृहती॥

वा॒योः स॑वि॒तुर्वि॒दथा॑नि मन्महे॒ यावा॑त्म॒न्वद्वि॒शथो॒ यौ च॒ रक्ष॑थः।
यौ विश्व॑स्य परि॒भू ब॑भू॒वथु॒स्तौ नो॑ मुञ्चत॒मंह॑सः ॥ १ ॥
ययोः॒ संख्या॑ता॒ वरि॑मा॒ पार्थि॑वानि॒ याभ्यां॒ रजो॑ युपि॒तम॒न्तरि॑क्षे।
ययोः॑ प्रा॒यं नान्वा॑न॒शे कश्च॒न तौ नो॑ मुञ्चत॒मंह॑सः ॥ २ ॥
तव॑ व्र॒ते नि वि॑शन्ते॒ जना॑स॒स्त्वय्युदि॑ते॒ प्रेर॑ते चित्रभानो।
यु॒वं वा॑यो सवि॒ता च॒ भुव॑नानि रक्षथ॒स्तौ नो॑ मुञ्चत॒मंह॑सः ॥ ३ ॥
अपे॒तो वा॑यो सवि॒ता च॑ दुष्कृ॒तमप॒ रक्षां॑सि॒ शिमि॑दां च सेधतम्।
सं ह्यू३॒र्जया॑ सृ॒जथः॒ सं बले॑न॒ तौ नो॑ मुञ्चत॒मंह॑सः ॥ ४ ॥
र॒यिं मे॒ पोषं॑ सवि॒तोत वायुस्त॒नू दक्ष॒मा सु॑वतां सु॒शेव॑म्।
अ॒य॒क्ष्मता॑तिं॒ मह॑ इ॒ह ध॑त्तं॒ तौ नो॑ मुञ्चत॒मंह॑सः ॥ ५ ॥
प्र सु॑म॒तिं स॑वितर्वाय ऊ॒तये॒ मह॑स्वन्तं मत्स॒रं मा॑दयाथः।
अ॒र्वाग्वा॒मस्य॑ प्र॒वतो॒ नि य॑च्छतं॒ तौ नो॑ मुञ्चत॒मंह॑सः ॥ ६ ॥
उप॒ श्रेष्ठा॑ न आ॒शिषो॑ दे॒वयो॒र्धाम॑न्नस्थिरन् ।
स्तौमि॑ दे॒वं स॑वि॒तारं॑ च वा॒युं तौ नो॑ मुञ्चत॒मंह॑सः ॥ ७ ॥

अथ षष्ठोऽनुवाकः

[२६] षड्विंशं सूक्तम्

ऋषिः—मृगारः॥ देवता—द्यावापृथिवी॥ छन्दः—१ पुरोऽष्टिर्जगती; २-६ त्रिष्टुप्; ७ शाक्वरगर्भामध्येज्योतिस्त्रिष्टुप्॥

म॒न्वे वां॑ द्यावापृथिवी सुभोजसौ॒ सचे॑तसौ॒ ये अप्र॑थेथा॒ममि॑ता॒
योज॑नानि। प्र॒ति॒ष्ठे ह्यभ॑वतं॒ वसू॑नां॒ ते नो॑ मुञ्चत॒मंह॑सः ॥ १ ॥
प्र॒ति॒ष्ठे ह्यभ॑वतं॒ वसू॑नां॒ प्रवृ॑द्धे देवी सुभगे उरूची ।
द्यावा॑पृथिवी॒ भव॑तं मे स्यो॒ने ते नो॑ मुञ्चत॒मंह॑सः ॥ २ ॥
अ॒स॒न्ता॒पे सु॒तप॑सौ हुवे॒ऽहमु॒र्वी ग॑म्भी॒रे क॒विभि॑र्नम॒स्ये॑ ।
द्यावा॑पृथिवी॒ भव॑तं मे स्यो॒ने ते नो॑ मुञ्चत॒मंह॑सः ॥ ३ ॥
ये अ॒मृतं॑ बिभृ॒थो ये ह॒वींषि॒ ये स्रो॒त्या बि॑भृ॒थो ये म॑नु॒ष्या॑न्।
द्यावा॑पृथिवी॒ भव॑तं मे स्यो॒ने ते नो॑ मुञ्चत॒मंह॑सः ॥ ४ ॥
ये उ॒स्त्रिया॑ बिभृ॒थो ये वन॒स्पती॒न्ययो॑र्वां॒ विश्वा॒ भुव॑नान्य॒न्तः।
द्यावा॑पृथिवी॒ भव॑तं मे स्यो॒ने ते नो॑ मुञ्चत॒मंह॑सः ॥ ५ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ये कीलालेन तर्पयथो ये घृतेन याभ्यामृते न किं चन शक्नुवन्ति।
द्यावापृथिवी भवतं मे स्योने ते नो मुञ्चतमंहसः ॥ ६ ॥
यन्मेदमभिशोचति येनयेन वा कृतं पौरुषेयान्न दैवात् ।
स्तौमि द्यावापृथिवी नाथितो जोहवीमि ते नो मुञ्चतमंहसः ॥ ७ ॥

[२७] सप्तविंशं सूक्तम्

ऋषिः—मृगारः ॥ देवता—मरुतः ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥

मरुतां मन्वे अधि मे ब्रुवन्तु प्रेमं वाजं वाजसाते अवन्तु।
आशूनिव सुयमानह्व ऊतये ते नो मुञ्चन्त्वंहसः ॥ १ ॥
उत्समक्षितं व्यचन्ति ये सदा य आसिञ्चन्ति रसमोषधीषु।
पुरो दधे मरुतः पृश्निमातॄंस्ते नो मुञ्चन्त्वंहसः ॥ २ ॥
पयो धेनूनां रसमोषधीनां जवमर्वतां कवयो य इन्वथ।
शग्मा भवन्तु मरुतो नः स्योनास्ते नो मुञ्चन्त्वंहसः ॥ ३ ॥
अपः समुद्रादिवमुद्वहन्ति दिवस्पृथिवीमभि ये सृजन्ति।
ये अद्भिरीशाना मरुतश्चरन्ति ते नो मुञ्चन्त्वंहसः ॥ ४ ॥
ये कीलालेन तर्पयन्ति ये घृतेन ये वा वयो मेदसा संसृजन्ति।
ये अद्भिरीशाना मरुतो वर्षयन्ति ते नो मुञ्चन्त्वंहसः ॥ ५ ॥
यदीदिदं मरुतो मारुतेन यदि देवा दैव्येनेदृगारं ।
यूयमीशिध्वे वसवस्तस्य निष्कृतेस्ते नो मुञ्चन्त्वंहसः ॥ ६ ॥
तिग्ममनीकं विदितं सहस्वन्मारुतं शर्धः पृतनासूग्रम् ।
स्तौमि मरुतो नाथितो जोहवीमि ते नो मुञ्चन्त्वंहसः ॥ ७ ॥

[२८] अष्टाविंशं सूक्तम्

ऋषिः—मृगारः ॥ देवता—भवाशर्वौ ॥ छन्दः—१ अतिजागतगर्भाभुरिक्त्रिष्टुप्; २-७ त्रिष्टुप् ॥

भवाशर्वौ मन्वे वां तस्य वित्तं ययोर्वामिदं प्रदिशि यद्विरोचते।
यावस्येशाथे द्विपदो यौ चतुष्पदस्तौ नो मुञ्चतमंहसः ॥ १ ॥
ययोरभ्यध्व उत यद्रुरे चिद्यौ विदितावितिषुभृतामसिष्ठौ।
यावस्येशाथे द्विपदो यौ चतुष्पदस्तौ नो मुञ्चतमंहसः ॥ २ ॥
सहस्राक्षौ वृत्रहणा हुवेऽहं दूरेगव्यूती स्तुवत्रेम्युग्रौ।
यावस्येशाथे द्विपदो यौ चतुष्पदस्तौ नो मुञ्चतमंहसः ॥ ३ ॥
यावारेभाथे बहु साकमग्रे प्र चेदस्राष्टमभिभां जनेषु।
यावस्येशाथे द्विपदो यौ चतुष्पदस्तौ नो मुञ्चतमंहसः ॥ ४ ॥
ययोर्वर्धान्नापपद्यते कश्चनान्तर्देवेषूत मानुषेषु ।
यावस्येशाथे द्विपदो यौ चतुष्पदस्तौ नो मुञ्चतमंहसः ॥ ५ ॥
यः कृत्याकृन्मूलकृद्यातुधानो नि तस्मिन्धत्तं वज्रमुग्रौ।
यावस्येशाथे द्विपदो यौ चतुष्पदस्तौ नो मुञ्चतमंहसः ॥ ६ ॥
अधि नो ब्रूतं पृतनासूग्रौ सं वज्रेण सृजतं यः किमीदी।
स्तौमि भवाशर्वौ नाथितो जोहवीमि तौ नो मुञ्चतमंहसः ॥ ७ ॥

[२९] एकोनत्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—मृगारः ॥ देवता—मित्रावरुणौ ॥ छन्दः—१-६ त्रिष्टुप्; ७ शक्वरीगर्भाऽतिजगती ॥

मन्वे वां मित्रावरुणावृतावृधौ सचेतसौ द्रुह्वणो यौ नुदेथे।
प्र सत्यावानमवथो भरेषु तौ नो मुञ्चतमंहसः ॥ १ ॥
सचेतसौ द्रुह्वणो यौ नुदेथे प्र सत्यावानमवथो भरेषु।
यौ गच्छथो नृचक्षसौ बभ्रुणा सुतं तौ नो मुञ्चतमंहसः ॥ २ ॥
यावङ्गिरसमवथो यावगस्तिं मित्रावरुणा जमदग्निमत्रिम्।
यौ कश्यपमवथो यौ वसिष्ठं तौ नो मुञ्चतमंहसः ॥ ३ ॥
यौ श्यावाश्वमवथो वध्र्यश्वं मित्रावरुणा पुरुमीढमत्रिम्।
यौ विमदमवथः सप्तवध्रिं तौ नो मुञ्चतमंहसः ॥ ४ ॥
यौ भरद्वाजमवथो यौ गविष्ठिरं विश्वामित्रं वरुण मित्र कुत्सम्।
यौ कक्षीवन्तमवथः प्रोत कण्वं तौ नो मुञ्चतमंहसः ॥ ५ ॥
यौ मेधातिथिमवथो यौ त्रिशोकं मित्रावरुणावुशनां काव्यं यौ।
यौ गोतममवथः प्रोत मुद्गलं तौ नो मुञ्चतमंहसः ॥ ६ ॥
ययो रथः सत्यवर्त्मर्जुरश्मिर्मिथुया चरन्तमभियाति दूषयन्।
स्तौमि मित्रावरुणौ नाथितो जोहवीमि तौ नो मुञ्चतमंहसः ॥ ७ ॥

[३०] त्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा ॥ देवता—सर्वरूपा सर्वात्मिका सर्वदेवमयी वाक् ॥

छन्दः—१-५, ७, ८ त्रिष्टुप्; ६ जगती ॥

अहं रुद्रेभिर्वसुभिश्चराम्यहमादित्यैरुत विश्वदेवैः ।
अहं मित्रावरुणोभा बिभर्म्यहमिन्द्राग्नी अहमश्विनोभा ॥ १ ॥
अहं राष्ट्री संगमनी वसूनां चिकितुषी प्रथमा यज्ञियानाम्।
तां मा देवा व्यदधुः पुरुत्रा भूरिस्थात्रां भूर्यावेशयन्तीः ॥ २ ॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अहमेव स्वयमिदं वदामि जुष्टं देवानामुत मानुषाणाम्।
यं कामये तंतमुग्रं कृणोमि तं ब्रह्माणं तमृषिं तं सुमेधाम्॥ ३॥
मया सोऽन्नमत्ति यो विपश्यति यः प्राणति य ईं शृणोत्युक्तम्।
अमन्तवो मां त उप क्षियन्ति श्रुधि श्रुत श्रद्धेयं ते वदामि॥ ४॥
अहं रुद्राय धनुरा तनोमि ब्रह्मद्विषे शरवे हन्तवा उ।
अहं जनाय समदं कृणोम्यहं द्यावापृथिवी आ विवेश॥ ५॥
अहं सोममाहनसं बिभर्म्यहं त्वष्टारमुत पूषणं भगम्।
अहं दधामि द्रविणा हविष्मते सुप्राव्याय यजमानाय सुन्वते॥ ६॥
अहं सुवे पितरमस्य मूर्धन्मम योनिरप्स्वन्तः समुद्रे।
ततो वि तिष्ठे भुवनानि विश्वोतामूं द्यां वर्ष्मणोप स्पृशामि॥ ७॥
अहमेव वातइव प्र वाम्यारभमाणा भुवनानि विश्वा।
परो दिवा पर एना पृथिव्यैतावती महिम्ना सं बभूव॥ ८॥

॥ इत्यष्टमः प्रपाठकः॥

अथ नवमः प्रपाठकः॥

अथ सप्तमोऽनुवाकः [३१] एकत्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—ब्रह्मास्कन्दः॥ देवता—मन्युः॥ छन्दः—१, ३ त्रिष्टुप्; २, ४ भुरिक्त्रिष्टुप्; ५-७ जगती॥

त्वया मन्यो सरथमारुजन्तो हर्षमाणा हृषितासो मरुत्वन्।
तिग्मेषव आयुधा संशिशाना उप प्र यन्तु नरो अग्निरूपाः॥ १॥
अग्निरिव मन्यो त्विषितः सहस्व सेनानीर्नः सहुरे हूत एधि।
हत्वाय शत्रून्वि भजस्व वेद ओजो मिमानो वि मृधो नुदस्व॥ २॥
सहस्व मन्यो अभिमातिमस्मै रुजन्मृणन्प्रमृणन्प्रेहि शत्रून्।
उग्रं ते पाजो नन्वा रुरुध्रे वशी वशं नयासा एकज त्वम्॥ ३॥
एको बहूनामसि मन्य ईडितो विशंविशं युद्धाय सं शिशाधि।
अकृत्तरुक्त्वया युजा वयं द्युमन्तं घोषं विजयाय कृण्मसि॥ ४॥
विजेषकृदिन्द्र इवानवब्रवोऽस्माकं मन्यो अधिपा भवेह।
प्रियं ते नाम सहुरे गृणीमसि विद्मा तमुत्सं यत आबभूथ॥ ५॥
आभूत्या सहजा वज्र सायक सहो बिभर्षि सहभूत उत्तरम्।
क्रत्वा नो मन्यो सह मेद्येधि महाधनस्य पुरुहूत संसृजि॥ ६॥

संसृष्टं धनमुभयं समाकृतमस्मभ्यं धत्तां वरुणश्च मन्युः।
भियो दधाना हृदयेषु शत्रवः पराजितासो अप नि लयन्ताम्॥ ७॥

[३२] द्वात्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—ब्रह्मास्कन्दः॥ देवता—मन्युः॥ छन्दः—१ जगती; २-७ त्रिष्टुप्॥

यस्ते मन्योऽविधद्वज्र सायक सह ओजः पुष्यति विश्वमानुषक्।
साह्याम दासमार्यं त्वया युजा वयं सहस्कृतेन सहसा सहस्वता॥ १॥
मन्युरिन्द्रो मन्युरेवास देवो मन्युर्होता वरुणो जातवेदाः।
मन्युर्विश ईडते मानुषीर्याः पाहि नो मन्यो तपसा सजोषाः॥ २॥
अभी हि मन्यो तवसस्तवीयान्तपसा युजा वि जहि शत्रून्।
अमित्रहा वृत्रहा दस्युहा च विश्वा वसून्या भरा त्वं नः॥ ३॥
त्वं हि मन्यो अभिभूत्योजाः स्वयंभूर्भामो अभिमातिषाहः।
विश्वचर्षणिः सहुरिः सहीयानस्मास्वोजः पृतनासु धेहि॥ ४॥
अभागः सन्नप परेतो अस्मि तव क्रत्वा तविषस्य प्रचेतः।
तं त्वा मन्यो अक्रतुर्जिहीडाहं स्वा तनूर्बलदावा न एहि॥ ५॥
अयं ते अस्म्युप न एह्यर्वाङ् प्रतीचीनः सहुरे विश्वदावन्।
मन्यो वज्रिन्नभि न आ ववृत्स्व हनाव दस्यूरुत बोध्यापेः॥ ६॥
अभि प्रेहि दक्षिणतो भवा नोऽधा वृत्राणि जङ्घनाव भूरि।
जुहोमि ते धरुणं मध्वो अग्रमुभावुपांशु प्रथमा पिबाव॥ ७॥

[३३] त्रयस्त्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—ब्रह्मा॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—गायत्री॥

अप नः शोशुचदघमग्ने शुशुग्ध्या रयिम्। अप नः शोशुचदघम्॥ १॥
सुक्षेत्रिया सुगातुया वसूया च यजामहे। अप नः शोशुचदघम्॥ २॥
प्र यद्वन्दिष्ट एषां प्रास्माकासश्च सूरयः। अप नः शोशुचदघम्॥ ३॥
प्र यत्ते अग्ने सूरयो जायेमहि प्र ते वयम्। अप नः शोशुचदघम्॥ ४॥
प्र यदग्नेः सहस्वतो विश्वतो यन्ति भानवः। अप नः शोशुचदघम्॥ ५॥
त्वं हि विश्वतोमुख विश्वतः परिभूरसि। अप नः शोशुचदघम्॥ ६॥
द्विषो नो विश्वतोमुखाति नावेव पारय। अप नः शोशुचदघम्॥ ७॥
स नः सिन्धुमिव नावाति पर्षा स्वस्तये। अप नः शोशुचदघम्॥ ८॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

[३४] चतुस्त्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा॥ देवता—ब्रह्मौदनम्॥ छन्दः—१-३ त्रिष्टुप्; ४ भुरिक्त्रिष्टुप्; ५ सप्तपदाकृतिः; ६ पञ्चपदाऽतिशक्वरी; ७ पञ्चपदा-भुरिक्शक्वरी; ८ जगती॥

ब्रह्मास्य शीर्षं बृहदस्य पृष्ठं वामदेव्यमुदरमोदनस्य । छन्दांसि पक्षौ मुखमस्य सत्यं विष्टारी जातस्तपसोऽधि यज्ञः ॥ १ ॥
अनस्थाः पूताः पवनेन शुद्धाः शुचयः शुचिमपि यन्ति लोकम्। नैषां शिश्नं प्र दहति जातवेदाः स्वर्गे लोके बहु स्त्रैणमेषाम् ॥ २ ॥
विष्टारिणमोदनं ये पचन्ति नैनानवर्तिः सचते कदा चन । आस्ते यम उप याति देवान्त्सं गन्धर्वैर्मदते सोम्येभिः ॥ ३ ॥
विष्टारिणमोदनं ये पचन्ति नैनान्यमः परि मुष्णाति रेतः । रथी ह भूत्वा रथयान ईयते पक्षी ह भूत्वाति दिवः समेति ॥ ४ ॥
एष यज्ञानां विततो वहिष्ठो विष्टारिणं पक्त्वा दिवमा विवेश । आण्डीकं कुमुदं सं ततोति बिसं शालूकं शफको मुलाली ।
एतास्त्वा धारा उप यन्तु सर्वीः स्वर्गे लोके मधुमत्पिन्वमाना उप त्वा तिष्ठन्तु पुष्करिणीः समन्ताः ॥ ५ ॥
घृतह्रदा मधुकूलाः सुरोदकाः क्षीरेण पूर्णा उदकेन दध्ना । एतास्त्वा धारा उप यन्तु सर्वीः स्वर्गे लोके मधुमत्पिन्वमाना उप त्वा तिष्ठन्तु पुष्करिणीः समन्ताः ॥ ६ ॥
चतुरः कुम्भांश्चतुर्धा ददामि क्षीरेण पूर्णा उदकेन दध्ना । एतास्त्वा धारा उप यन्तु सर्वीः स्वर्गे लोके मधुमत्पिन्वमाना उप त्वा तिष्ठन्तु पुष्करिणीः समन्ताः ॥ ७ ॥
इममोदनं नि दधे ब्राह्मणेषु विष्टारिणं लोकजितं स्वर्गम् । स मे मा क्षेष्ट स्वधया पिन्वमानो विश्वरूपा धेनुः कामदुघा मे अस्तु ॥ ८ ॥

[३५] पञ्चत्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—प्रजापतिः॥ देवता—अतिमृत्युः॥ छन्दः—१, २, ४-७ त्रिष्टुप्; ३ भुरिग्जगती॥

यमोदनं प्रथमजा ऋतस्य प्रजापतिस्तपसा ब्रह्मणोऽपचत् । यो लोकानां विधृतिर्नाभिरेषात्तेनौदनेनाति तराणि मृत्युम् ॥ १ ॥
येनातरन्भूतकृतोऽति मृत्युं यमन्वविन्दन्तपसा श्रमेण । यं पपाच ब्रह्मणे ब्रह्म पूर्वं तेनौदनेनाति तराणि मृत्युम् ॥ २ ॥
यो दाधार पृथिवीं विश्वभोजसं यो अन्तरिक्षमापृणाद्रसेन । यो अस्तभ्नाद्दिवमूर्ध्वो महिम्ना तेनौदनेनाति तराणि मृत्युम् ॥ ३ ॥
यस्मान्मासा निर्मितास्त्रिंशदराः संवत्सरो यस्मान्निर्मितो द्वादशारः । अहोरात्रा यं परियन्तो नापुस्तेनौदनेनाति तराणि मृत्युम् ॥ ४ ॥
यः प्राणदः प्राणदवान्बभूव यस्मै लोका घृतवन्तः क्षरन्ति । ज्योतिष्मतीः प्रदिशो यस्य सर्वास्तेनौदनेनाति तराणि मृत्युम् ॥ ५ ॥
यस्मात्पक्वादमृतं संबभूव यो गायत्र्या अधिपतिर्बभूव । यस्मिन्वेदा निहिता विश्वरूपास्तेनौदनेनाति तराणि मृत्युम् ॥ ६ ॥
अवं बाधे द्विषन्तं देवपीयुं सपत्ना ये मेऽप ते भवन्तु । ब्रह्मौदनं विश्वजितं पचामि शृण्वन्तु मे श्रद्दधानस्य देवाः ॥ ७ ॥

अथाष्टमोऽनुवाकः [३६] षट्त्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—चातनः॥ देवता—सत्यौजा अग्निः॥ छन्दः—१-८, १० अनुष्टुप्; ९ भुरिगनुष्टुप्॥

तान्त्सत्यौजाः प्र दहत्वग्निर्वैश्वानरो वृषा । यो नो दुरस्याद्दिप्साच्चाथो यो नो अरातियात् ॥ १ ॥
यो नो दिप्सददिप्सतो दिप्सतो यश्च दिप्सति । वैश्वानरस्य दंष्ट्रयोरग्नेरपि दधामि तम् ॥ २ ॥
य आगरे मृगयन्ते प्रतिक्रोशेऽमावास्ये । क्रव्यादो अन्यान्दिप्सतः सर्वांस्तान्त्सहसा सहे ॥ ३ ॥
सहे पिशाचान्त्सहसैषां द्रविणं ददे । सर्वान्दुरस्यतो हन्मि सं म आकूतिर्ऋध्यताम् ॥ ४ ॥
ये देवास्तेन हासन्ते सूर्येण मिमते जवम् । नदीषु पर्वतेषु ये सं तैः पशुभिर्विदे ॥ ५ ॥
तपनो अस्मि पिशाचानां व्याघ्रो गोमतामिव । श्वानः सिंहमिव दृष्ट्वा ते न विन्दन्ते न्यञ्चनम् ॥ ६ ॥
न पिशाचैः सं शक्नोमि न स्तेनैर्न वनर्गुभिः । पिशाचास्तस्मान्नश्यन्ति यमहं ग्राममाविशे ॥ ७ ॥
यं ग्राममाविशत इदमुग्रं सहो मम । पिशाचास्तस्मान्नश्यन्ति न पापमुप जानते ॥ ८ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ये मा क्रोधयन्ति लपिता हस्तिनं मशकाइव।
तानहं मन्ये दुर्हितान्जने अल्पशयूनिव॥ ९॥
अभि तं निर्ऋतिर्धत्तामश्वमिवाश्वाभिधान्या।
मल्वो यो मह्यं क्रुध्यति स उ पाशान्न मुच्यते॥ १०॥

[३७] सप्तत्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—बादरायणिः॥ देवता—१, २, ६, १० ओषधिः (अजशृङ्गी); ३-५ अप्सरसः; ७-९, ११, १२ गन्धर्वाप्सरसः॥ छन्दः—१, २, ४, ६, ८-१० अनुष्टुप्; ३ षट्पदात्रिष्टुप्; ५ प्रस्तारपङ्क्तिः; ७ परोष्णिक्; ११ षट्पदाजगती; १२ निचृदनुष्टुप्॥

त्वया पूर्वमथर्वाणो जघ्नू रक्षांस्योषधे ।
त्वया जघान कश्यपस्त्वया कण्वो अगस्त्यः ॥ १॥
त्वया वयमप्सरसो गन्धर्वांश्चातयामहे ।
अजशृङ्ग्यज रक्षः सर्वान्गन्धेन नाशय ॥ २॥
नदीं यन्त्वप्सरसोऽपां तारमवश्वसम् ।
गुल्गुलूः पीला नलद्यौक्षगन्धिः प्रमन्दनी ।
तत्परेताप्सरसः प्रतिबुद्धा अभूतन ॥ ३॥
यत्राश्वत्था न्यग्रोधा महावृक्षाः शिखण्डिनः ।
तत्परेताप्सरसः प्रतिबुद्धा अभूतन ॥ ४॥
यत्र वः प्रेङ्खा हरिता अर्जुना उत यत्राघाटाः कर्कर्यः
संवदन्ति। तत्परेताप्सरसः प्रतिबुद्धा अभूतन ॥ ५॥
एयमगन्नोषधीनां वीरुधां वीर्याविती ।
अजशृङ्ग्यरिष्टकी तीक्ष्णशृङ्गी व्यृषतु ॥ ६॥
आनृत्यतः शिखण्डिनो गन्धर्वस्याप्सरापतेः ।
भिनद्मि मुष्काववपि यामि शेपः ॥ ७॥
भीमा इन्द्रस्य हेतयः शतमृष्टीरयस्मयीः ।
ताभिर्हविरदान्धर्वानवकादान्व्यृषतु ॥ ८॥
भीमा इन्द्रस्य हेतयः शतमृष्टीर्हिरण्ययीः ।
ताभिर्हविरदान्धर्वानवकादान्व्यृषतु ॥ ९॥
अवकादानभिशोचान्प्सु ज्योतय मामकान् ।
पिशाचान्त्सर्वानोषधे प्र मृणीहि सहस्व च ॥ १०॥
श्वेवैकः कपिरिवैकः कुमारः सर्वकेशकः ।
प्रियो दृशइव भूत्वा गन्धर्वः संचते
स्त्रियस्तमितो नाशयामसि ब्रह्मणा वीर्याविता ॥ ११॥
जाया इद्वो अप्सरसो गन्धर्वाः पतयो यूयम् ।
अपं धावतामर्त्या मर्त्यान्मा संचध्वम् ॥ १२॥

[३८] अष्टात्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—बादरायणिः॥ देवता—१-४ अप्सराः; ५-७ वाजिनीवान् ऋषभः॥ छन्दः—१, २, ४ अनुष्टुप्; ३ षट्पदाजगती; ५ भुरिगत्यष्टिः; ६ त्रिष्टुप्; ७ पञ्चपदानुष्टुब्गर्भापुरउपरिष्टाज्ज्योतिष्मतीजगती॥

उद्भिन्दतीं संजयन्तीमप्सरां साधुदेविनीम्।
ग्लहे कृतानि कृण्वानामप्सरां तामिह हुवे॥ १॥
विचिन्वतीमाकिरन्तीमप्सरां साधुदेविनीम् ।
ग्लहे कृतानि गृह्णानामप्सरां तामिह हुवे ॥ २॥
यायैः परिनृत्यत्याददाना कृतं ग्लहात् ।
सा नः कृतानि सीषती प्रहामाप्नोतु मायया।
सा नः पर्यस्वत्यैतु मा नो जैषुरिदं धनम्॥ ३॥
या अक्षेषु प्रमोदन्ते शुचं क्रोधं च बिभ्रती।
आनन्दिनीं प्रमोदिनीमप्सरां तामिह हुवे॥ ४॥
सूर्यस्य रश्मीननु याः संचरन्ति मरीचीर्वा या अनुसंचरन्ति ।
यासामृषभो दूरतो वाजिनीवान्त्सद्यः सर्वाँल्लोकान्पर्येति रक्षन् ।
स न ऐतु होममिमं जुषाणोऽन्तरिक्षेण सह वाजिनीवान् ॥ ५॥
अन्तरिक्षेण सह वाजिनीवन्कर्कीं वत्सामिह रक्ष वाजिन् ।
इमे तैस्तोका बहुला एह्यर्वाङियं तै कर्कीह ते मनोऽस्तु ॥ ६॥
अन्तरिक्षेण सह वाजिनीवन्कर्कीं वत्सामिह रक्ष वाजिन् ।
अयं घासो अयं व्रज इह वत्सा नि बध्नीमः। यथानाम वं ईश्महे स्वाहा॥ ७॥

[३९] एकोनचत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—१-८ अङ्गिराः; ९, १० ब्रह्मा॥ देवता—१, २ पृथिव्यग्नी; ३, ४ वाय्वन्तरिक्षे; ५, ६ दिवादित्यौः ७, ८ दिक्चन्द्रमसः; ९, १० जातवेदसोऽग्निः॥ छन्दः—१, ३, ५, ७ त्रिपदामहाबृहती; २, ४, ६, ८ संस्तारपङ्क्तिः; ९, १० त्रिष्टुप्॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पृथिव्यामग्नये समनमन्त्स आर्ध्नोत् ।
यथा पृथिव्यामग्नये समनमन्नेवा मह्यं संनमः सं नमन्तु ॥ १ ॥
पृथिवी धेनुस्तस्या अग्निर्वत्सः ।
सा मेऽग्निना वत्सेनेषमूर्जं कामं दुहाम् ।
आयुः प्रथमं प्रजां पोषं रयिं स्वाहा ॥ २ ॥
अन्तरिक्षे वायवे समनमन्त्स आर्ध्नोत् ।
यथान्तरिक्षे वायवे समनमन्नेवा मह्यं संनमः सं नमन्तु ॥ ३ ॥
अन्तरिक्षं धेनुस्तस्या वायुर्वत्सः ।
सा मे वायुना वत्सेनेषमूर्जं कामं दुहाम् ।
आयुः प्रथमं प्रजां पोषं रयिं स्वाहा ॥ ४ ॥
दिव्याय दित्याय समनमन्त्स आर्ध्नोत् ।
यथा दिव्याय दित्याय समनमन्नेवा मह्यं संनमः सं नमन्तु ॥ ५ ॥
द्यौर्धेनुस्तस्या आदित्यो वत्सः ।
सा म आदित्येन वत्सेनेषमूर्जं कामं दुहाम् ।
आयुः प्रथमं प्रजां पोषं रयिं स्वाहा ॥ ६ ॥
दिक्षु चन्द्राय समनमन्त्स आर्ध्नोत् ।
यथा दिक्षु चन्द्राय समनमन्नेवा मह्यं संनमः सं नमन्तु ॥ ७ ॥
दिशो धेनवस्तासां चन्द्रो वत्सः ।
ता मे चन्द्रेण वत्सेनेषमूर्जं कामं दुहाम् ।
आयुः प्रथमं प्रजां पोषं रयिं स्वाहा ॥ ८ ॥
अग्नावग्निश्चरति प्रविष्ट ऋषीणां पुत्रो अभिशस्तिपा उ ।
नमस्कारेण नमसा ते जुहोमि मा देवानां मिथुया कर्म भागम् ॥ ९ ॥
हृदा पूतं मनसा जातवेदो विश्वानि देव वयुनानि विद्वान् ।
सप्तास्यानि तव जातवेदस्तेभ्यो जुहोमि स जुषस्व हव्यम् ॥ १० ॥

[४०] चत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—शुक्रः ॥ देवता—जातवेदः; १ अग्निः; २ यमः; ३ वरुणः; ४ सोमः; ५ भूमिः; ६ वायुः; ७ सूर्यः; ८ ब्रह्म ॥ छन्दः—१, ३-७ त्रिष्टुप्; २ जगती; ८ पुरोऽतिशक्वरीपाद्युग्जगती ॥

ये पुरस्ताज्जुह्वति जातवेदः प्राच्या दिशोऽभिदासन्त्यस्मान् ।
अग्निमृत्वा ते पराञ्चो व्यथन्तां प्रत्यगेनान्प्रतिसरेण हन्मि ॥ १ ॥
ये दक्षिणतो जुह्वति जातवेदो दक्षिणाया दिशोऽभिदासन्त्यस्मान् ।
यममृत्वा ते पराञ्चो व्यथन्तां प्रत्यगेनान्प्रतिसरेण हन्मि ॥ २ ॥
ये पश्चाज्जुह्वति जातवेदः प्रतीच्या दिशोऽभिदासन्त्यस्मान् ।
वरुणमृत्वा ते पराञ्चो व्यथन्तां प्रत्यगेनान्प्रतिसरेण हन्मि ॥ ३ ॥
य उत्तरतो जुह्वति जातवेद उदीच्या दिशोऽभिदासन्त्यस्मान् ।
सोममृत्वा ते पराञ्चो व्यथन्तां प्रत्यगेनान्प्रतिसरेण हन्मि ॥ ४ ॥
येऽधस्ताज्जुह्वति जातवेदो ध्रुवाया दिशोऽभिदासन्त्यस्मान् ।
भूमिमृत्वा ते पराञ्चो व्यथन्तां प्रत्यगेनान्प्रतिसरेण हन्मि ॥ ५ ॥
येऽन्तरिक्षाज्जुह्वति जातवेदो व्यध्वाया दिशोऽभिदासन्त्यस्मान् ।
वायुमृत्वा ते पराञ्चो व्यथन्तां प्रत्यगेनान्प्रतिसरेण हन्मि ॥ ६ ॥
य उपरिष्टाज्जुह्वति जातवेद ऊर्ध्वाया दिशोऽभिदासन्त्यस्मान् ।
सूर्यमृत्वा ते पराञ्चो व्यथन्तां प्रत्यगेनान्प्रतिसरेण हन्मि ॥ ७ ॥
ये दिशामन्तर्देशेभ्यो जुह्वति जातवेदः सर्वाभ्यो दिग्भ्योऽभिदासन्त्यस्मान् ।
ब्रह्मृत्वा ते पराञ्चो व्यथन्तां प्रत्यगेनान्प्रतिसरेण हन्मि ॥ ८ ॥

॥ इति नवमः प्रपाठकः ॥
॥ इति चतुर्थं काण्डम् ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अथ पञ्चमं काण्डम्

अथ दशमः प्रपाठकः॥

अथ प्रथमोऽनुवाकः [१] प्रथमं सूक्तम्

ऋषिः—बृहद्दिवोऽथर्वा॥ देवता—वरुणः॥ छन्दः—१ पराबृहतीत्रिष्टुप्; २-६, ८ त्रिष्टुप्; ७ विराट्त्रिष्टुप्; ९ षट्पदाऽत्यष्टिः॥

ऋधङ्मन्त्रो योनिं य आबभूवामृतासुर्वर्धमानः सुजन्मा।
अदब्धासुर्भ्राजमानोऽहेव त्रितो धर्ता दाधार त्रीणि॥ १॥
आ यो धर्माणि प्रथमः ससाद ततो वपूंषि कृणुषे पुरूणि।
धास्युर्योनिं प्रथम आ विवेशा यो वाचमनुदितां चिकेत॥ २॥
यस्ते शोकाय तन्वं रिरेच क्षरद्भिरण्यं शुचयोऽनु स्वाः।
अत्रा दधते अमृतानि नामास्मे वस्वाणि विश एरयन्ताम्॥ ३॥
प्र यदेते प्रतरं पूर्व्यं गुः सदःसद आतिष्ठन्तो अजुर्यम्।
कविः शुषस्य मातरा रिहाणे जाम्यै धुर्यं पतिमेरयेथाम्॥ ४॥
तदू षु ते महत्पृथुज्मन्नमः कविः काव्येना कृणोमि।
यत्सम्यञ्चावभियन्तावभि क्षामत्रा मही रोधचक्रे वावृधेते॥ ५॥
सप्त मर्यादाः कवयस्ततक्षुस्तासामिदेकामभ्यंहुरो गात्।
आयोहं स्कम्भ उपमस्य नीडे पथां विसर्गे धरुणेषु तस्थौ॥ ६॥
उतामृतासुर्व्रतं एमि कृण्वन्नसुरात्मा तन्वस्तस्मुद्गुः।
उत वा शक्रो रत्नं दधात्यूर्जया वा यत्सचते हविर्दाः॥ ७॥
उत पुत्रः पितरं क्षत्रमीडे ज्येष्ठं मर्यादमह्वयन्त्स्वस्तये।
दर्शन्नु ता वरुण यास्ते विष्ठा आवव्रीततः कृणवो वपूंषि॥ ८॥
अर्धमर्धेन पयसा पृणक्ष्यर्धेन शुष्म वर्धसे अमुर।
अविं वृधाम शम्मियं सखायं वरुणं पुत्रमदित्या इषिरम्।
कविशस्तान्यस्मै वपूंष्यवोचाम रोदसी सत्यवाचा॥ ९॥

[२] द्वितीयं सूक्तम्

ऋषिः—बृहद्दिवोऽथर्वा॥ देवता—वरुणः॥ छन्दः—१-८ त्रिष्टुप्; ९ भुरिक्पराऽतिजागतात्रिष्टुप्॥

तदिदास भुवनेषु ज्येष्ठं यतो जज्ञ उग्रस्त्वेषनृम्णः।
सद्यो जज्ञानो नि रिणाति शत्रूननु यदेनं मदन्ति विश्व ऊमाः॥ १॥
वावृधानः शवसा भूर्योजाः शत्रुर्दासाय भियसं दधाति।
अव्यनच्च व्यनच्च सस्नि सं ते नवन्त प्रभृता मदेषु॥ २॥
त्वे क्रतुमपि पृञ्चन्ति भूरि द्विर्यदेते त्रिर्भवन्त्यूमाः।
स्वादोः स्वादीयः स्वादुना सृजा समदः सु मधु मधुनाभि योधीः॥ ३॥
यदि चित्रु त्वा धना जयन्तं रणेरणे अनुमदन्ति विप्राः।
ओजीयः शुष्मिन्तिस्थिरमा तनुष्व मा त्वा दभन्दुरेवासः कुशोकाः॥ ४॥
त्वया वयं शाशदग्हे रणेषु प्रपश्यन्तो युधेन्यानि भूरि।
चोदयामि त आयुधा वचोभिः सं ते शिशामि ब्रह्मणा वयांसि॥ ५॥
नि तद्धिषेवरे परे च यस्मिन्नाविथावसा दुरोणे।
आ स्थापयत मातरं जिगत्नुमत इन्वत कवेराणि भूरि॥ ६॥
स्तुष्व वर्ष्मन्पुरुवर्पीनं समृभ्वाणमिनतममाप्त्यानाम्।
आ दर्शति शवसा भूर्योजाः प्र संक्षति प्रतिमानं पृथिव्याः॥ ७॥
इमा ब्रह्म बृहद्दिवः कृणवदिन्द्राय शूषमंगिरसः स्वर्षाः।
महो गोत्रस्य क्षयति स्वराजा तुरश्चिद्विश्वमर्णवत्तपस्वान्॥ ८॥
एवा महान्बृहद्दिवो अथर्वावोचत्स्वां तन्वमिन्द्रमेव।
स्वसारो मातरिश्वरी अरिप्रे ह्विन्वन्ति चैने शवसा वर्धयन्ति च॥ ९॥

[३] तृतीयं सूक्तम्

ऋषिः—बृहद्दिवोऽथर्वा॥ देवता—१, २ अग्निः; ३, ४ देवाः; ५ द्रविणोदादयः; ६, ९,१० विश्वेदेवाः; ७ सोमः; ८, ११ इन्द्रः॥ छन्दः—१, ३-९, ११ त्रिष्टुप्; २ भुरिक्त्रिष्टुप्; १० विराड्जगती॥

ममाग्ने वचो विहवेष्वस्तु वयं त्वेन्धानास्तन्वं पुषेम।
मह्यं नमन्तां प्रदिशश्चतस्रस्त्वयाध्यक्षेण पृतना जयेम॥ १॥
अग्ने मन्युं प्रतिनुदन्परेषां त्वं नो गोपाः परि पाहि विश्वतः।
अपाञ्चो यन्तु निवता दुरस्यवोऽमैषां चित्तं प्रबुधां वि नैशत्॥ २॥
मम देवा विहवे सन्तु सर्व इन्द्रवन्तो मरुतो विष्णुरग्निः।
ममान्तरिक्षमुरुलोकमस्तु मह्यं वातः पवतां कामायास्मै॥ ३॥
मह्यं यजन्तां मम यानीष्टाकूतिः सत्या मनसो मे अस्तु।
एना मा नि गां कतमच्चनाहं विश्वे देवा अभि रक्षन्तु मेह॥ ४॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मयि॑ दे॒वा द्रवि॑ण॒मा य॑जन्तां॒ मय्या॒शीर॑स्तु॒ मयि॑ दे॒वहू॑तिः।
दै॒वा होता॑रः सनिषन्न ए॒तदरि॑ष्टाः स्याम त॒न्वा॑ सु॒वीराः॑॥५॥
दैवीः॑ षडुर्वीरु॒रु नः॑ कृणोत॒ विश्वे॑ देवास इ॒ह मा॑दयध्वम्।
मा नो॑ विददभि॒भा मो अश॑स्ति॒र्मा नो॑ विदद् वृजि॒ना द्वेष्या॒ या॥६॥
ति॒स्रो दे॑वी॒र्महि॑ नः॒ शर्म॑ यच्छत प्र॒जायै॑ नस्त॒न्वे॒३॒॑ यच्च॑ पु॒ष्टम्।
मा हा॑स्महि प्र॒जया॒ मा त॒नूभि॒र्मा र॑धाम द्विष॒ते सो॑म राजन्॥७॥
उ॒रु॒व्यचा॑ नो महि॒षः शर्म॑ यच्छत्व॒स्मिन्हवे॑ पुरुहू॒तः पु॑रु॒क्षु।
स नः॑ प्र॒जायै॑ हर्यश्व मृ॒डेन्द्र॒ मा नो॑ रीरिषो॒ मा परा॑ दाः॥८॥
धा॒ता वि॑धा॒ता भुव॑नस्य॒ यस्पति॑र्दे॒वः स॑वि॒ताभि॑मातिषा॒हः ।
आ॒दि॒त्या रु॒द्रा अ॒श्विनो॒भा दे॒वाः पा॑न्तु॒ यज॑मानं निर्ऋ॒थात् ॥९॥
ये नः॑ स॒पत्ना॒ अप॒ ते भ॑वन्त्विन्द्रा॒ग्निभ्या॒मव॑ बाधामह एनान्।
आ॒दि॒त्या रु॒द्रा उ॑परि॒स्पृशो॑ न उ॒ग्रं चे॒त्तार॑मधिरा॒जम॑क्रत ॥१०॥
अ॒र्वाञ्च॒मिन्द्र॑म॒मुतो॑ हवामहे॒ यो गो॒जिद्ध॑न॒जिद॑श्व॒जिद्यः ।
इ॒मं नो॑ य॒ज्ञं वि॑ह॒वे शृ॑णोत्व॒स्माक॑मभूर्हर्यश्व मे॒दी ॥११॥

[४] चतुर्थं सूक्तम्

ऋषिः—भृग्वङ्गिराः॥ देवता—कुष्ठस्तक्मनाशनः॥ छन्दः—१-४, ७-९ अनुष्टुप्; ५ भुरिगनुष्टुप्; ६ गायत्री; १० उष्णिग्गर्भानिचृदनुष्टुप्॥

यो गि॒रिष्वजा॑यथा वी॒रुधां॒ बल॑वत्तमः ।
कुष्ठेहि॑ तक्मनाशन त॒क्मानं॑ ना॒शय॑न्नि॒तः ॥१॥
सु॒प॒र्ण॒सुव॑ने गि॒रौ जा॒तं हि॒मव॑त॒स्परि॑ ।
धनै॑र॒भि श्रु॒त्वा य॑न्ति वि॒दुर्हि त॑क्म॒नाश॑नम् ॥२॥
अ॒श्व॒त्थो दे॑व॒सद॑नस्तृ॒तीय॑स्यामि॒तो दि॒वि ।
तत्रा॒मृत॑स्य॒ चक्ष॑णं दे॒वाः कुष्ठ॑मवन्वत ॥३॥
हि॒र॒ण्ययी॒ नौर॑चर॒द्धिर॑ण्यबन्धना दि॒वि ।
तत्रा॒मृत॑स्य॒ पुष्पं॑ दे॒वाः कुष्ठ॑मवन्वत ॥४॥
हि॒र॒ण्यया॒ः पन्था॑न आस॒न्नरि॑त्राणि हिर॒ण्यया॑ ।
नावो॑ हिर॒ण्ययी॑रास॒न्याभि॒ः कुष्ठं॑ नि॒राव॑हन् ॥५॥
इ॒मं मे॑ कुष्ठ॒ पूरु॑षं॒ तमा व॑ह॒ तं निष्कु॑रु ।
तमु॑ मे अग॒दं कृ॑धि ॥६॥
दे॒वेभ्यो॒ अधि॑ जा॒तो॑ऽसि॒ सोम॑स्यासि॒ सखा॑ हि॒तः।
स प्रा॒णाय॑ व्या॒नाय॒ चक्षु॑षे मे अ॒स्मै मृ॑ड ॥७॥
उद॑ङ् जा॒तो हि॒मव॑तः॒ स प्रा॒च्यां नी॑यसे॒ जन॑म् ।
तत्र॒ कुष्ठ॑स्य॒ नामा॑न्युत्त॒मानि॒ वि भे॑जिरे ॥८॥
उ॒त्त॒मो नाम॑ कुष्ठास्युत्त॒मो नाम॑ ते पि॒ता ।
यक्ष्मं॑ च॒ सर्वं॑ ना॒शय॑ त॒क्मानं॑ चार॒सं कृ॑धि ॥९॥
शी॒र्षा॒म॒यमु॑पह॒त्याम॒क्ष्योस्त॒न्वो॒३॒॑ रपः॑ ।
कुष्ठ॒स्तत्सर्वं॒ निष्क॑र॒द्दैवं॑ समह॒ वृष्ण्य॑म् ॥१०॥

[५] पञ्चमं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा॥ देवता—लाक्षा॥ छन्दः—अनुष्टुप्॥

रात्री॑ मा॒ता नभः॑ पि॒तार्य॒मा ते॑ पिताम॒हः ।
सि॒ला॒ची नाम॒ वा अ॑सि॒ सा दे॒वाना॑मसि॒ स्वसा॑ ॥१॥
यस्त्वा॒ पिब॑ति॒ जीव॑ति॒ त्राय॑से॒ पुरु॑षं॒ त्वम् ।
भ॒र्त्री हि शश्व॑ता॒मसि॒ जना॑नां च॒ न्यञ्च॑नी ॥२॥
वृ॒क्षंवृ॑क्ष॒मा रो॑हसि वृष॒ण्यन्ती॑व क॒न्यला॑ ।
जय॑न्ती प्रत्या॒तिष्ठ॑न्ती॒ स्पर॑णी॒ नाम॒ वा अ॑सि ॥३॥
यद्द॒ण्डेन॒ यदिष्वा॒ यद्वारु॒र्हर॑सा कृ॒तम् ।
तस्य॒ त्वम॑सि॒ निष्कृ॑तिः॒ सेमं निष्कृ॑धि॒ पूरु॑षम् ॥४॥
भ॒द्रात्प्ल॒क्षान्निस्ति॑ष्ठस्यश्व॒त्थात्ख॑दि॒राद्ध॒वात् ।
भ॒द्रान्न्य॒ग्रोधा॑त्प॒र्णात्सा न॒ एह्य॑रुन्धति ॥५॥
हिर॑ण्यवर्णे॒ सुभ॑गे॒ सूर्य॑वर्णे॒ वपु॑ष्टमे ।
रु॒तं ग॑च्छासि निष्कृते॒ निष्कृ॑ति॒र्नाम॒ वा अ॑सि ॥६॥
हिर॑ण्यवर्णे॒ सुभ॑गे॒ शुष्मे॒ लोम॑शवक्षणे ।
अ॒पामसि॒ स्वसा॑ लाक्षे॒ वातो॑ हा॒त्मा ब॑भूव ते ॥७॥
सि॒ला॒ची नाम॑ कानी॒नोऽज॑बभ्रु पि॒ता तव॑ ।
अश्वो॑ य॒मस्य॒ यः श्या॒वस्तस्य॑ हा॒स्रास्यु॑क्षि॒ता ॥८॥
अश्व॑स्या॒स्रः संप॑तिता॒ सा वृ॒क्षाँ अ॒भि सि॑ष्यदे ।
स॒रा प॑त॒त्रिणी॑ भू॒त्वा सा न॒ एह्य॑रुन्धति ॥९॥

अथ द्वितीयोऽनुवाकः

[६] षष्ठं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा॥ देवता—१ ब्रह्म, आदित्यः; २ कर्माणि; ३, ४ रुद्रगणाः; ५-८ सोमरुद्रौ; ९ हेतिः; १० अग्निः; ११-१४ सर्वात्मको रुद्रः॥ छन्दः—१, ९ त्रिष्टुप्; २ अनुष्टुप्; ३ जगती; ४ अनुष्टुबुष्णिक् त्रिष्टुब्गर्भापञ्चपदाजगती; ५-७ त्रिपदाविराण्नामगायत्री;

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

८ द्विपदाऽऽर्च्यनुष्टुप्; १० प्रस्तारपङ्क्तिः; ११-१३ पङ्क्तिः; १४ स्वराट्पङ्क्तिः॥

ब्रह्मा जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचो वेन आवः ।
स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च वि वः॥ १॥
अनांसो ये वः प्रथमा यानि कर्माणि चक्रिरे ।
वीरान्नो अत्र मा दंभन्तद्व एतत्पुरो दधे ॥ २॥
सहस्रधार एव ते समस्वरन्दिवो नाके मधुजिह्वा असश्चतः ।
तस्य स्पशो न नि मिषन्ति भूर्णयः पदेपदे पाशिनः सन्ति सेतवे॥ ३॥
पर्यू षू प्र धन्वा वाजसातये परि वृत्राणि सक्षणिः ।
द्विषस्तदध्यर्णवेनयसे सनिस्रसो नाम्नासि त्रयोदशो मास इन्द्रस्य गृहः॥ ४॥
न्वेतेनारात्सीरसौ स्वाहा ।
तिग्मायुधौ तिग्महेती सुशेवौ सोमारुद्राविह सु मृडतं नः॥ ५॥
अवैतेनारात्सीरसौ स्वाहा ।
तिग्मायुधौ तिग्महेती सुशेवौ सोमारुद्राविह सु मृडतं नः॥ ६॥
अपैतेनारात्सीरसौ स्वाहा ।
तिग्मायुधौ तिग्महेती सुशेवौ सोमारुद्राविह सु मृडतं नः॥ ७॥
मुमुक्तमस्मान्दुरितादवद्याज्जुषेथां यज्ञममृतमस्मासु धत्तम् ॥ ८॥
चक्षुषो हेते मनसो हेते ब्रह्मणो हेते तपसश्च हेते ।
मेन्या मेनिरस्यमेनयस्ते सन्तु येऽस्माँ अभ्यघायन्ति ॥ ९॥
योऽस्मांश्चक्षुषा मनसा चित्त्याकूत्या च यो अघायुरभिदासात् ।
त्वं तानग्ने मेन्यामेनीन्कृणु स्वाहा ॥ १०॥
इन्द्रस्य गृहोऽसि। तं त्वा प्र पद्ये तं त्वा प्र विशामि सर्वंगुः
सर्वंपूरुषः सर्वात्मा सर्वंतनूः सह यन्मेऽस्ति तेन ॥ ११॥
इन्द्रस्य शर्मासि। तं त्वा प्र पद्ये तं त्वा प्र विशामि सर्वंगुः
सर्वंपूरुषः सर्वात्मा सर्वंतनूः सह यन्मेऽस्ति तेन ॥ १२॥
इन्द्रस्य वर्मासि। तं त्वा प्र पद्ये तं त्वा प्र विशामि सर्वंगुः
सर्वंपूरुषः सर्वात्मा सर्वंतनूः सह यन्मेऽस्ति तेन ॥ १३॥
इन्द्रस्य वरूथमसि। तं त्वा प्र पद्ये तं त्वा प्र विशामि सर्वंगुः
सर्वंपूरुषः सर्वात्मा सर्वंतनूः सह यन्मेऽस्ति तेन ॥ १४॥

[७] सप्तमं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा॥ देवता—१-३, ६-१० अरातयः; ४, ५ सरस्वती॥
छन्दः—१ विराड्गर्भाप्रस्तारपङ्क्तिः; २, ३, ५, ७-१० अनुष्टुप्; ४ पथ्यावृहती; ६ प्रस्तारपङ्क्तिः॥

आ नो भर मा परि ष्ठा अराते मा नो रक्षीर्दक्षिणां
नीयमानाम्। नमो वीत्सायां असमृद्धये नमो अस्त्वरातये॥ १॥
यमराते पुरोधत्से पुरुषं परिरापिणम् ।
नमस्ते तस्मै कृण्मो मा वनिं व्यथयीर्मम ॥ २॥
प्र णो वनिर्देवकृता दिवा नक्तं च कल्पताम् ।
अरातिमनुप्रेमो वयं नमो अस्त्वरातये ॥ ३॥
सरस्वतीमनुमतिं भगं यन्तो हवामहे ।
वाचं जुष्टां मधुमतीमवादिषं देवानां देवहूतिषु ॥ ४॥
यं याचाम्यहं वाचा सरस्वत्या मनोयुजा ।
श्रद्धा तमद्य विन्दतु दत्ता सोमेन बभ्रुणा ॥ ५॥
मा वनिं मा वाचं नो वीत्सीरुभाविन्द्राग्नी आ भरतां
नो वसूनि। सर्वे नो अद्य दित्सन्तोऽरातिं प्रति हर्यत॥ ६॥
परोऽपेह्यसमृद्धे वि ते हेतिं नयामसि ।
वेदं त्वाहं निमीवन्तीं नितुदन्तीमराते ॥ ७॥
उत नग्ना बोभुवती स्वप्रया संचसे जनम् ।
अराते चित्तं वीर्त्सन्त्याकूतिं पुरुषस्य च ॥ ८॥
या महती महोन्मानां विश्वा आशा व्यानशे ।
तस्यै हिरण्यकेश्यै निर्ऋत्या अकरं नमः ॥ ९॥
हिरण्यवर्णा सुभगा हिरण्यकशिपुर्महो ।
तस्यै हिरण्यद्रापयेऽरात्या अकरं नमः ॥ १०॥

॥ इति दशमः प्रपाठकः॥

अथैकादशः प्रपाठकः॥

[८] अष्टमं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा॥ देवता—१, २ अग्निः; ३ विश्वे देवाः; ४-९ इन्द्रः॥
छन्दः—१, ५, ८ अनुष्टुप्; २ षट्पदाजगती; ३, ४ भुरिक्पथ्यापङ्क्तिः; ६ आस्तारपङ्क्तिः; ७ द्व्युष्णिग्गर्भापथ्यापङ्क्तिः; ९ षट्पदाद्व्यनुष्टुब्गर्भाजगती॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

वैकङ्कतेनेध्मेन देवेभ्य आज्यं वह ।
अग्ने तांँ इह मादय सर्वं आ यन्तु मे हवम् ॥ १ ॥
इन्द्रा याहि मे हवमिदं करिष्यामि तच्छृणु ।
इम ऐन्द्रा अंतिसरा आकूतिं सं नमन्तु मे ।
तेभिः शकेम वीर्यं जातवेदस्तनूवशिन् ॥ २ ॥
यदसावमुतो देवा अदेवः संश्चिकीर्षति। मा तस्याग्रिर्हव्यं
वाक्षीद्धवं देवा अस्य मोप गुर्ममैव हवमेतन ॥ ३ ॥
अति धावतातिसरा इन्द्रस्य वचसा हत ।
अविं वृकइव मथ्नीत स वो जीवन्मा
मोचि प्राणमस्यापि नह्यत ॥ ४ ॥
यममी पुरोदधिरे ब्रह्माणमपभूतये ।
इन्द्र स तैं अधस्पदं तं प्रत्यस्यामि मृत्यवे ॥ ५ ॥
यदिं प्रेयुर्देवपुरा ब्रह्म वर्मीणि चक्रिरे ।
तनूपानं परिपाणं कृण्वाना यदुपोचिरे सर्वं तदरसं कृधि ॥ ६ ॥
यानसावतिसरांश्चकार कृणवच्च यान् ।
त्वं तानिन्द्र वृत्रहन्प्रतीचः पुनरा कृधि यथामुं तृणहां जनम् ॥ ७ ॥
यथेन्द्रं उद्वाचनं लब्ध्वा चक्रे अधस्पदम् ।
कृण्वेऽहमधरांस्तथामूञ्छश्वतीभ्यः समाभ्यः ॥ ८ ॥
अत्रैनानिन्द्र वृत्रहन्वज्रो मर्मणि विध्य ।
अत्रैवैनानभि तिष्ठेन्द्र मेद्यन्हं तव ।
अनु त्वेन्द्रा रभामहे स्याम सुमतौ तव ॥ ९ ॥

[९] नवमं सूक्तम्

ऋषिः—ब्रह्मा ॥ देवता—वास्तोष्पतिः ॥ छन्दः—१, ५ दैवीबृहती; २, ६ दैवी त्रिष्टुप्; ३, ४ दैवीजगती; ७ विराडुष्णिग्बृहतीगर्भापञ्चपदाजगती; ८ पुरस्कृतित्रिष्टुब्बृहतीगर्भापञ्चपदातिजगती ॥

दिवे स्वाहा ॥ १ ॥ पृथिव्यै स्वाहा ॥ २ ॥
अन्तरिक्षाय स्वाहा ॥ ३ ॥ अन्तरिक्षाय स्वाहा ॥ ४ ॥
दिवे स्वाहा ॥ ५ ॥ पृथिव्यै स्वाहा ॥ ६ ॥
सूर्यो मे चक्षुर्वातः प्राणोऽन्तरिक्षमात्मा पृथिवी शरीरम् ।
अस्तृतो नामाहमयमस्मि स आत्मानं नि दधे
द्यावापृथिवीभ्यां गोपीथाय ॥ ७ ॥

उदायुरुद्वलमुत्कृतमुत्कृत्यामुन्मनीषामुदिन्द्रियम् ।
आयुष्कृदायुष्पत्नी स्वधावन्तौ गोपा मे स्तं गोपायतं मा ।
आत्मसदौ मे स्तं मा मा हिंसिष्टम् ॥ ८ ॥

[१०] दशमं सूक्तम्

ऋषिः—ब्रह्मा ॥ देवता—वास्तोष्पतिः ॥ छन्दः—१-६ यवमध्यात्रिपदागायत्री; ७ यवमध्याककुप्; ८ पुरोधृत्यनुष्टुब्गर्भापराष्टिषट्पदातिजगती ॥

अश्मवर्म मेऽसि यो मा प्राच्या दिशोऽघायुरभिदासात् ।
एतत्स ऋच्छात् ॥ १ ॥
अश्मवर्म मेऽसि यो मा दक्षिणाया दिशोऽघायुरभिदासात् ।
एतत्स ऋच्छात् ॥ २ ॥
अश्मवर्म मेऽसि यो मा प्रतीच्या दिशोऽघायुरभिदासात् ।
एतत्स ऋच्छात् ॥ ३ ॥
अश्मवर्म मेऽसि यो मोदीच्या दिशोऽघायुरभिदासात् ।
एतत्स ऋच्छात् ॥ ४ ॥
अश्मवर्म मेऽसि यो मा ध्रुवाया दिशोऽघायुरभिदासात् ।
एतत्स ऋच्छात् ॥ ५ ॥
अश्मवर्म मेऽसि यो मोर्ध्वाया दिशोऽघायुरभिदासात् ।
एतत्स ऋच्छात् ॥ ६ ॥
अश्मवर्म मेऽसि यो मा दिशामन्तर्देशेभ्योऽघायुरभिदासात् ।
एतत्स ऋच्छात् ॥ ७ ॥
बृहता मन उप ह्वये मातरिश्वना प्राणापानौ ।
सूर्याच्चक्षुरन्तरिक्षाच्छ्रोत्रं पृथिव्याः शरीरम् ।
सरस्वत्या वाचमुप ह्वयामहे मनोयुजा ॥ ८ ॥

अथ तृतीयोऽनुवाकः [११] एकादशं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा ॥ देवता—वरुणः ॥ छन्दः—१ भुरिक्त्रिष्टुप्; २, ४, ५, ७-१० त्रिष्टुप्; ३ पङ्क्तिः; ६ पञ्चपदाऽतिशक्वरी; ११ षट्पदाऽत्यष्टिः ॥

कथं महे असुरायाब्रवीरिह कथं पित्रे हरये त्वेषनृम्णः ।
पृश्निं वरुण दक्षिणां ददावान्पुनर्मघ त्वं मनसाचिकित्सीः ॥ १ ॥
न कामेन पुनर्मघो भवामि सं चक्षे कं पृश्निमेतामुपाजे ।
केन नु त्वमथर्वन्काव्येन केनं जातेनासि जातवेदाः ॥ २ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सत्यमहं गभीरः काव्येन सत्यं जातेनास्मि जातवेदाः।
न मे दासो नार्यो महित्वा व्रतं मीमाय यदहं धरिष्ये॥ ३॥
न त्वदन्यः कवितरो न मेधया धीरतरो वरुण स्वधावन्।
त्वं ता विश्वा भुवनानि वेत्थ स चिन्नु त्वज्जनो माययी बिभाय॥ ४॥
त्वं ह्यङ्ग वरुण स्वधावन्विश्वा वेत्थ जनिमा सुप्रणीते।
किं रजस एना परो अन्यदस्त्येना किं परेणावरमुर॥ ५॥
एकं रजस एना परो अन्यदस्त्येना पर एकेन दुर्णशं चिदर्वाक्।
तत्ते विद्वान्वरुण प्र ब्रवीम्यधोवचसः पणयो भवन्तु नीचैर्दासा
उप सर्पन्तु भूमिम्॥ ६॥
त्वं ह्यङ्ग वरुण ब्रवीषि पुनर्मघेष्ववद्यानि भूरि।
मो षु पणीरभ्येतावतो भून्मा त्वा वोचन्नराधसं जनासः॥ ७॥
मा मां वोचन्नराधसं जनासः पुनस्ते पृश्निं जरितर्ददामि।
स्तोत्रं मे विश्वमा याहि शचीभिरन्तर्विश्वासु मानुषीषु दिक्षु॥ ८॥
आ ते स्तोत्राण्युद्यतानि यन्त्वन्तर्विश्वासु मानुषीषु दिक्षु।
देहि नु मे यन्मे अदत्तो असि युन्यो मे सप्तपदुः सखासि॥ ९॥
समा नौ बन्धुर्वरुण समा जा वेदाहं तद्यन्नावेषा समा जा।
ददामि तद्यत्ते अदत्तो अस्मि युन्यस्ते सप्तपदुः सखास्मि॥ १०॥
देवो देवाय गृणते वयोधा विप्रो विप्राय स्तुवते सुमेधाः।
अजीजनो हि वरुण स्वधावन्नर्थवाणं पितरं देवबन्धुम्।
तस्मा उ राधः कृणुहि सुप्रशस्तं सखा नो असि परमं च बन्धुः॥ ११॥

[१२] द्वादशं सूक्तम्

ऋषिः—अङ्गिराः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—१, २, ४-११ त्रिष्टुप्; ३ पङ्क्तिः॥

समिद्धो अद्य मनुषो दुरोणे देवो देवान्यजसि जातवेदः।
आ च वह मित्रमहश्चिकित्वान्त्वं दूतः कविरसि प्रचेताः॥ १॥
तनूनपात्पथ ऋतस्य यानान्मध्वा समञ्जन्त्स्वदया सुजिह्व।
मन्मानि धीभिरुत यज्ञमृन्धन्देवत्रा च कृणुह्यध्वरं नः॥ २॥
आजुह्वान ईड्यो वन्द्यश्चा याह्यग्ने वसुभिः सजोषाः।
त्वं देवानामसि यह्व होता स एनान्यक्षीषितो यजीयान्॥ ३॥
प्राचीनं बर्हिः प्रदिशा पृथिव्या वस्तोरस्या वृज्यते अग्रे अह्नाम्।
व्युं प्रथते वितरं वरीयो देवेभ्यो अदितये स्योनम्॥ ४॥
व्यचस्वतीरुर्विया वि श्रयन्तां पतिभ्यो न जनयः शुम्भमानाः।
देवीर्द्वारो बृहतीर्विश्वमिन्वा देवेभ्यो भवत सुप्रायणाः॥ ५॥
आ सुष्वयन्ती यजते उपाके उषासानक्ता सदतां नि योनौ।
दिव्ये योषणे बृहती सुरुक्मे अधि श्रियं शुक्रपिशं दधाने॥ ६॥
दैव्या होतारा प्रथमा सुवाचा मिमाना यज्ञं मनुषो यजध्यै।
प्रचोदयन्ता विदथेषु कारू प्राचीनं ज्योतिः प्रदिशा दिशन्ता॥ ७॥
आ नो यज्ञं भारती तूयमेत्विडा मनुष्वदिह चेतयन्ती।
तिस्रो देवीर्बर्हिरेदं स्योनं सरस्वतीः स्वपसः सदन्ताम्॥ ८॥
य इमे द्यावापृथिवी जनित्री रूपैरपिंशद्भुवनानि विश्वा।
तमद्य होतरिषितो यजीयान्देवं त्वष्टारमिह यक्षि विद्वान्॥ ९॥
उपावसृज त्मन्या समञ्जन्देवानां पाथ ऋतुथा हवींषि।
वनस्पतिः शमिता देवो अग्निः स्वदन्तु हव्यं मधुना घृतेन॥ १०॥
सद्यो जातो व्यमिमीत यज्ञमग्निर्देवानामभवत्पुरोगाः।
अस्य होतुः प्रशिष्यृतस्य वाचि स्वाहाकृतं हविरदन्तु देवाः॥ ११॥

[१३] त्रयोदशं सूक्तम्

ऋषिः—गरुत्मान्॥ देवता—सर्पविषनाशनम्॥ छन्दः—१, ३ जगती; २ आस्तारपङ्क्तिः; ४, ७, ८ अनुष्टुप्; ५ त्रिष्टुप्; ६ पथ्यापङ्क्तिः; ९ भुरिग्जगती; १०, ११ निचृद्गायत्री॥

ददिर्हि मह्यं वरुणो दिवः कविर्वचोभिरुग्रैर्नि रिणामि ते विषम्।
खातमखातमुत सक्तमग्रभमिरेव धन्वन्नि जंजास ते विषम्॥ १॥
यत्ते अपोदकं विषं तत्त एतास्वग्रभम्।
गृह्णामि ते मध्यममुत्तमं रसमुतावमं भियसा नेशदादु ते॥ २॥
वृषा मे रवो नभसा न तन्यतुरुग्रेण ते वचसा बाधु आदु ते।
अहं तमस्य नृभिरग्रभं रसं तमसइव ज्योतिरुदेतु सूर्यः॥ ३॥
चक्षुषा ते चक्षुर्हन्मि विषेण हन्मि ते विषम्।
अहे म्रियस्व मा जीवीः प्रत्यगभ्येतु त्वा विषम्॥ ४॥
कैरात पृश्न उपतृण्य बभ्रु आ मे शृणुतासिता अलीकाः।
मा मे सख्युः स्तामानमपि ष्ठाताश्रावयन्तो नि विषे रमध्वम्॥ ५॥
असितस्य तैमातस्य बभ्रोरपोदकस्य च।
सात्रासाहस्याहं मन्योरव ज्यामिव धन्वनो वि मुञ्चामि रथाँइव॥ ६॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

आलिंगी च विलिंगी च पिता च माता च ।
विद्म वः सर्वतो बन्ध्वरसाः किं करिष्यथ ॥७॥
उरुगूलाया दुहिता जाता दास्यसिक्न्या ।
प्रतङ्कं दद्रुषीणां सर्वासामरसं विषम् ॥८॥
कर्णा श्वावित्तदब्रवीद्गिरेरवचरन्तिका ।
याः काश्चेमाः खनित्रिमास्तासामरसतमं विषम् ॥९॥
ताबुवं न ताबुवं न घेत्त्वमसि ताबुवम्। ताबुवेनारसं विषम्॥१०॥
तस्तुवं न तस्तुवं न घेत्त्वमसि तस्तुवम्। तस्तुवेनारसं विषम्॥११॥

[१४] चतुर्दशं सूक्तम्

ऋषिः—शुक्रः॥ देवता—वनस्पतिः॥ छन्दः—१, २, ४, ६, ७, ९ अनुष्टुप्; ३, ५, १२ भुरिगनुष्टुप्; ८ त्रिपदाविराडनुष्टुप्; १० निचृद्बृहती; ११ त्रिपदासाम्नीत्रिष्टुप्; १३ स्वराडनुष्टुप्॥

सुपर्णस्त्वान्वविन्दत्सूकरस्त्वाखनन्नसा ।
दिप्सौषधे त्वं दिप्सन्तमव कृत्याकृतं जहि ॥१॥
अव जहि यातुधानानव कृत्याकृतं जहि ।
अथो यो अस्मान्दिप्सति तमु त्वं जह्योषधे ॥२॥
रिश्यस्येव परीशासं परिकृत्य परि त्वचः ।
कृत्यां कृत्याकृते देवा निष्कमिव प्रति मुञ्चत ॥३॥
पुनः कृत्यां कृत्याकृते हस्तगृह्य परा णय ।
समक्षमस्मा आ धेहि यथा कृत्याकृतं हनत् ॥४॥
कृत्याः सन्तु कृत्याकृते शपथः शपथीयते ।
सुखो रथइव वर्ततां कृत्या कृत्याकृतं पुनः ॥५॥
यदि स्त्री यदि वा पुमान्कृत्यां चकार पाप्मने ।
तामु तस्मै नयामस्यश्वमिवाश्वाभिधान्या ॥६॥
यदि वासि देवकृता यदि वा पुरुषैः कृता ।
तां त्वा पुनर्णयामसीन्द्रेण सयुजा वयम् ॥७॥
अग्ने पृतनाषाट् पृतनाः सहस्व ।
पुनः कृत्यां कृत्याकृते प्रतिहरणेन हरामसि ॥८॥
कृतव्यधनि विध्य तं यश्चकार तमिज्जहि ।
न त्वामचक्रुषे वयं वधाय सं शिशीमहि ॥९॥

पुत्रइव पितरं गच्छ स्वजइवाभिष्ठितो दश ।
बन्धमिवावक्रामी गच्छ कृत्ये कृत्याकृतं पुनः॥१०॥
उदेणीव वारण्य भिस्कन्दं मृगीव ।
कृत्या कर्तारमृच्छतु ॥११॥
इष्वा ऋजीयः पततु द्यावापृथिवी तं प्रति ।
सा तं मृगमिव गृह्णातु कृत्या कृत्याकृतं पुनः॥१२॥
अग्निरिवैतु प्रतिकूलमनुकूलमिवोदकम् ।
सुखो रथइव वर्ततां कृत्या कृत्याकृतं पुनः॥१३॥

[१५] पञ्चदशं सूक्तम्

ऋषिः—विश्वामित्रः॥ देवता—मधुला ओषधिः॥ छन्दः—१-३, ६, १०, ११ अनुष्टुप्; ४ पुरस्ताद्बृहती; ५, ७-९ भुरिगनुष्टुप्॥

एका च मे दश च मेऽपवक्तार ओषधे।
ऋतजात ऋतावरि मधु मे मधुला करः ॥१॥
द्वे च मे विंशतिश्च मेऽपवक्तार ओषधे।
ऋतजात ऋतावरि मधु मे मधुला करः ॥२॥
तिस्रश्च मे त्रिंशच्च मेऽपवक्तार ओषधे।
ऋतजात ऋतावरि मधु मे मधुला करः ॥३॥
चतस्रश्च मे चत्वारिंशच्च मेऽपवक्तार ओषधे।
ऋतजात ऋतावरि मधु मे मधुला करः ॥४॥
पञ्च च मे पञ्चाशच्च मेऽपवक्तार ओषधे।
ऋतजात ऋतावरि मधु मे मधुला करः ॥५॥
षट् च मे षष्टिश्च मेऽपवक्तार ओषधे ।
ऋतजात ऋतावरि मधु मे मधुला करः ॥६॥
सप्त च मे सप्ततिश्च मेऽपवक्तार ओषधे।
ऋतजात ऋतावरि मधु मे मधुला करः ॥७॥
अष्ट च मेऽशीतिश्च मेऽपवक्तार ओषधे।
ऋतजात ऋतावरि मधु मे मधुला करः ॥८॥
नव च मे नवतिश्च मेऽपवक्तार ओषधे।
ऋतजात ऋतावरि मधु मे मधुला करः ॥९॥
दश च मे शतं च मेऽपवक्तार ओषधे ।
ऋतजात ऋतावरि मधु मे मधुला करः ॥१०॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

शतं च मे सहस्रं चापवक्तारं ओषधे ।
ऋतजात ऋतावरि मधु मे मधुला करः ॥ ११ ॥

॥ इत्येकादशः प्रपाठकः ॥

अथ द्वादशः प्रपाठकः

अथ चतुर्थोऽनुवाकः [१६] षोडशं सूक्तम्

ऋषिः—विश्वामित्रः ॥ देवता—एकवृषः ॥ छन्दः—१, ४, ५, ७-१० द्विपदासाम्न्युष्णिक्; २, ३, ६ द्विपदाऽऽसुर्यनुष्टुप्; ११ द्विपदाऽऽसुरीगायत्री ॥

यद्येकवृषोऽसि सृजारसोऽसि ॥ १ ॥
यदि द्विवृषोऽसि सृजारसोऽसि ॥ २ ॥
यदि त्रिवृषोऽसि सृजारसोऽसि ॥ ३ ॥
यदि चतुर्वृषोऽसि सृजारसोऽसि ॥ ४ ॥
यदि पञ्चवृषोऽसि सृजारसोऽसि ॥ ५ ॥
यदि षड्वृषोऽसि सृजारसोऽसि ॥ ६ ॥
यदि सप्तवृषोऽसि सृजारसोऽसि ॥ ७ ॥
यद्यष्टवृषोऽसि सृजारसोऽसि ॥ ८ ॥
यदि नववृषोऽसि सृजारसोऽसि ॥ ९ ॥
यदि दशवृषोऽसि सृजारसोऽसि ॥ १० ॥
यद्येकादशोऽसि सोऽपोदकोऽसि ॥ ११ ॥

[१७] सप्तदशं सूक्तम्

ऋषिः—मयोभूः ॥ देवता—ब्रह्मजाया ॥ छन्दः—१-६ त्रिष्टुप्; ७-१८ अनुष्टुप् ॥

तेऽवदन्प्रथमा ब्रह्मकिल्बिषेऽकूपारः सलिलो मातरिश्वा ।
वीडुहरास्तप उग्रं मयोभूरापो देवीः प्रथमजा ऋतस्य ॥ १ ॥
सोमो राजा प्रथमो ब्रह्मजायां पुनः प्रायच्छदहृणीयमानः ।
अन्वर्तिता वरुणो मित्र आसीदग्निर्होता हस्तगृह्या निनाय ॥ २ ॥
हस्तेनैव ग्राह्यऽआधिरस्या ब्रह्मजायेति चेदवोचत् ।
न दूताय प्रहेया तस्थ एषा तथा राष्ट्रं गुपितं क्षत्रियस्य ॥ ३ ॥
यामाहुस्तारकैषा विकेशीति दुच्छुनां ग्राममवपद्यमानाम् ।
सा ब्रह्मजाया वि दुनोति राष्ट्रं यत्र प्रापादि शश ईलकमात्रः ॥ ४ ॥

ब्रह्मचारी चरति वेविषद्विषः स देवानां भवत्येकमङ्गम् ।
तेन जायामन्वविन्दद् बृहस्पतिः सोमेन नीतां जुह्वं न देवाः ॥ ५ ॥
देवा वा एतस्यामवदन्त पूर्वे सप्तऋषयस्तपसा ये निषेदुः ।
भीमा जाया ब्राह्मणस्योपनीता दुर्धां दधाति परमे व्योमन् ॥ ६ ॥
ये गर्भां अवपद्यन्ते जगद्यच्चापलुप्यते ।
वीरा ये तृह्यन्ते मिथो ब्रह्मजाया हिंनस्ति तान् ॥ ७ ॥
उत यत्पतयो दश स्त्रियाः पूर्वे अब्राह्मणाः ।
ब्रह्मा चेद्धस्तमग्रहीत्स एव पतिरेकधा ॥ ८ ॥
ब्राह्मण एव पतिर्न राजन्योऽ न वैश्यः ।
तत्सूर्यः प्रब्रुवन्नेति पञ्चभ्यो मानवेभ्यः ॥ ९ ॥
पुनर्वै देवा अददुः पुनर्मनुष्याऽ अददुः ।
राजानः सत्यं गृह्णाना ब्रह्मजायां पुनर्ददुः ॥ १० ॥
पुनर्दाय ब्रह्मजायां कृत्वा देवैर्निकिल्बिषम् ।
ऊर्जं पृथिव्या भक्त्वोरुगायमुपासते ॥ ११ ॥
नास्य जाया शतवाही कल्याणी तल्पमा शये ।
यस्मिन् राष्ट्रे निरुध्यते ब्रह्मजायाचित्त्या ॥ १२ ॥
न विकर्णः पृथुशिरास्तस्मिन्वेश्मनि जायते ।
यस्मिन्राष्ट्रे निरुध्यते ब्रह्मजायाचित्त्या ॥ १३ ॥
नास्य क्षत्ता निष्कग्रीवः सूनानामेत्यग्रतः ।
यस्मिन्राष्ट्रे निरुध्यते ब्रह्मजायाचित्त्या ॥ १४ ॥
नास्य श्वेतः कृष्णकर्णो धुरि युक्तो महीयते ।
यस्मिन्राष्ट्रे निरुध्यते ब्रह्मजायाचित्त्या ॥ १५ ॥
नास्य क्षेत्रे पुष्करिणी नाण्डीकं जायते बिसम् ।
यस्मिन्राष्ट्रे निरुध्यते ब्रह्मजायाचित्त्या ॥ १६ ॥
नास्मै पृश्निं वि दुहन्ति येऽस्या दोहमुपासते ।
यस्मिन्राष्ट्रे निरुध्यते ब्रह्मजायाचित्त्या ॥ १७ ॥
नास्य धेनुः कल्याणी नानड्वान्त्सहते धुरम् ।
विजानिर्यत्र ब्राह्मणो रात्रिं वसति पापया ॥ १८ ॥

[१८] अष्टादशं सूक्तम्

ऋषिः—मयोभूः ॥ देवता—ब्रह्मगवी ॥ छन्दः—१-३, ६, ७, १०-१२, १४, १५ अनुष्टुप्; ४ भुरिक्त्रिष्टुप्; ५, ८, ९, १३ त्रिष्टुप् ॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नैतां ते देवा अददुस्तुभ्यं नृपते अत्तवे ।
मा ब्राह्मणस्य राजन्य गां जिघत्सो अनाद्याम् ॥ १ ॥
अक्षद्ध्रुग्धो राजन्यः पाप आत्मपराजितः ।
स ब्राह्मणस्य गामद्यादद्य जीवानि मा श्वः ॥ २ ॥
आविष्टिताघविषा पृदाकूरिव चर्मणा ।
सा ब्राह्मणस्य राजन्य तृष्टैषा गौरनाद्या ॥ ३ ॥
निर्वै क्षत्रं नयति हन्ति वर्चोऽग्निरिवारब्धो वि दुनोति सर्वम् ।
यो ब्राह्मणं मन्यते अन्नमेव स विषस्य पिबति तैमातस्य ॥ ४ ॥
य एनं हन्ति मृदुं मन्यमानो देवपीयुर्धनकामो न चित्तात् ।
सं तस्येन्द्रो हृदयेऽग्निमिन्ध उभे एनं द्विष्टो नभसी चरन्तम् ॥ ५ ॥
न ब्राह्मणो हिंसितव्योऽग्निः प्रियतनोरिव ।
सोमो ह्यस्य दायाद इन्द्रो अस्याभिशस्तिपाः ॥ ६ ॥
शतापाष्ठां नि गिरति तां न शक्नोति निःखिदन् ।
अन्नं यो ब्रह्मणां मल्वः स्वाद्वदीत्ति मन्यते ॥ ७ ॥
जिह्वा ज्या भवति कुल्मलं वाङ्नाडीका दन्तास्तपसाभिदिग्धाः ।
तेभिर्ब्रह्मा विध्यति देवपीयून्हृद्बलैर्धनुभिर्देवजूतैः ॥ ८ ॥
तीक्ष्णेषवो ब्राह्मणा हेतिमन्तो यामस्यन्ति शरव्यां न सा मृषा ।
अनुहाय तपसा मन्युना चोत दूरादव भिन्दन्त्येनम् ॥ ९ ॥
ये सहस्रमराजन्नासन्दशशता उत ।
ते ब्राह्मणस्य गां जग्ध्वा वैतहव्याः पराभवन् ॥ १० ॥
गौरेव तान्हन्यमाना वैतहव्याँ अवातिरत् ।
ये केसरप्राबन्धायाश्चरमाजामपेचिरन् ॥ ११ ॥
एकशतं ता जनता या भूमिर्व्यधूनुत ।
प्रजां हिंसित्वा ब्राह्मणीमसंभव्यं पराभवन् ॥ १२ ॥
देवपीयुश्चरति मर्त्येषु गरगीर्णो भवत्यस्थिभूयान् ।
यो ब्राह्मणं देवबन्धुं हिनस्ति न स पितॄयाणमप्येति लोकम् ॥ १३ ॥
अग्निर्वै नः पदवायः सोमो दायाद उच्यते ।
हन्ताभिशस्तेन्द्रस्तथा तद्वेधसो विदुः ॥ १४ ॥
इषुरिव दिग्धा नृपते पृदाकूरिव गोपते ।
सा ब्राह्मणस्येषुर्घोरा तया विध्यति पीयतः ॥ १५ ॥

[१९] एकोनविंशं सूक्तम्

ऋषिः—मयोभूः ॥ देवता—ब्रह्मगवी ॥ छन्दः—१, ३-६, ८-१५ अनुष्टुप्; २ विराट्पुरस्ताद्बृहती; ७ विराडुपरिष्टाद्बृहती ॥

अतिमात्रमवर्धन्त नोदिव दिवमस्पृशन् ।
भृगुं हिंसित्वा सृञ्जया वैतहव्याः पराभवन् ॥ १ ॥
ये बृहत्सामानमाङ्गिरसमार्पयन्ब्राह्मणं जनाः ।
पेत्वस्तेषामुभयादमविंस्तोकान्यावयत् ॥ २ ॥
ये ब्राह्मणं प्रत्यष्ठीवन्ये वास्मिन्छुल्कमीषिरे ।
अस्रस्ते मध्ये कुल्यायाः केशान्खादन्त आसते ॥ ३ ॥
ब्रह्मगवी पच्यमाना यावत्साभि विजङ्गहे ।
तेजो राष्ट्रस्य निर्हन्ति न वीरो जायते वृषा ॥ ४ ॥
क्रूरमस्या आशसनं तृष्टं पिशितमस्यते ।
क्षीरं यदस्याः पीयते तद्वै पितृषु किल्बिषम् ॥ ५ ॥
उग्रो राजा मन्यमानो ब्राह्मणं यो जिघत्सति ।
परा तत्सिच्यते राष्ट्रं ब्राह्मणो यत्र जीयते ॥ ६ ॥
अष्टापदी चतुरक्षी चतुःश्रोत्रा चतुर्हनुः ।
द्व्यास्या द्विजिह्वा भूत्वा सा राष्ट्रमव धूनुते ब्रह्मज्यस्य ॥ ७ ॥
तद्वै राष्ट्रमा स्रवति नावं भिन्नामिवोदकम् ।
ब्रह्माणं यत्र हिंसन्ति तद्राष्ट्रं हन्ति दुच्छुना ॥ ८ ॥
तं वृक्षा अप सेधन्ति च्छायां नो मोपगा इति ।
यो ब्राह्मणस्य सद्धनमभि नारद मन्यते ॥ ९ ॥
विषमेतद्देवकृतं राजा वरुणोऽब्रवीत् ।
न ब्राह्मणस्य गां जग्ध्वा राष्ट्रे जागार कश्चन ॥ १० ॥
नवैव ता नवतयो या भूमिर्व्यधूनुत ।
प्रजां हिंसित्वा ब्राह्मणीमसंभव्यं पराभवन् ॥ ११ ॥
यां मृतायानुबध्नन्ति कूद्यं पद्योपनीम् ।
तद्वै ब्रह्मज्य ते देवा उपस्तरणमब्रुवन् ॥ १२ ॥
अश्रूणि कृपमाणस्य यानि जीतस्य वावृतुः ।
तं वै ब्रह्मज्य ते देवा अपां भागमधारयन् ॥ १३ ॥
येन मृतं स्नपयन्ति श्मश्रूणि येनोन्दते ।
तं वै ब्रह्मज्य ते देवा अपां भागमधारयन् ॥ १४ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

न वर्षं मैत्रावरुणं ब्रह्मज्यमभि वर्षति ।
नास्मै समितिः कल्पते न मित्रं नयते वशम्॥ १५॥

[२०] विंशं सूक्तम्

ऋषिः—ब्रह्मा॥ देवता—वानस्पत्यो दुन्दुभिः॥ छन्दः—१ जगती; २-१२ त्रिष्टुप्॥

उच्चैर्घोषो दुन्दुभिः सत्वनायन्वानस्पत्यः संभृत उस्रियाभिः।
वाचं क्षुणुवानो दुमर्यन्त्सपत्नान्तिसंहइव जेष्यन्नभि तँस्तनीहि॥ १॥
सिंहइवास्तानीद्द्रुवयो विबद्धोऽभिक्रन्दन्नृषभो वासितामिव।
वृषा त्वं वध्रयस्ते सपत्ना ऐन्द्रस्ते शुष्मो अभिमातिषाहः॥ २॥
वृषेव यूथे सहसा विदानो गव्यन्नभि रुव सन्धनाजित्।
शुचा विध्य हृदयं परेषां हित्वा ग्रामान्प्रच्युता यन्तु शत्रवः॥ ३॥
संजयन्पृतना ऊर्ध्वमायुर्गृह्या गृह्णानो बहुधा वि चक्ष्व।
दैवीं वाचं दुन्दुभ आ गुरस्व वेधाः शत्रूणामुप भरस्व वेदः॥ ४॥
दुन्दुभेर्वाचं प्रयतां वदन्तीमाशृण्वती नाथिता घोषबुद्धा।
नारीं पुत्रं धावतु हस्तगृह्यामित्री भीता समरे वधानाम्॥ ५॥
पूर्वो दुन्दुभे प्र वदासि वाचं भूम्याः पृष्ठे वद रोचमानः।
अमित्रसेनामभिजञ्जमानो द्युमद्वद दुन्दुभे सूनृतावत् ॥ ६॥
अन्तरेमे नभसी घोषो अस्तु पृथक्ते ध्वनयो यन्तु शीभम्।
अभि क्रन्द स्तनयोत्पिपानः श्लोकुकृन्मित्रतूर्याय स्वर्धी॥ ७॥
धीभिः कृतः प्र वदाति वाचमुद्दर्षय सत्वनामायुधानि।
इन्द्रमेदी सत्वनो नि ह्वयस्व मित्रैरमित्रान् अव जङ्घनीहि॥ ८॥
संक्रन्दनः प्रवदो धृष्णुषेणः प्रवेदकृद्बहुधा ग्रामघोषी।
श्रेयो वन्वानो वयुनानि विद्वान्कीर्तिं बहुभ्यो वि हर द्विराजे॥ ९॥
श्रेयःकेतो वसुजित्सहीयान्त्संग्रामजित्संशितो ब्रह्मणासि।
अंशूनिव ग्रावाधिषवणे अद्रिर्गव्यन्दुन्दुभेऽधि नृत्य वेदः॥ १०॥
शत्रूषाणीषाडभिमातिषाहो गवेषणः सहमान उद्भित् ।
वाग्वीव मन्त्रं प्र भरस्व वाचं सांग्रामजित्यायेषमुद्वदेह॥ ११॥
अच्युतच्युत्समदो गमिष्ठो मृधो जेता पुरएतायोध्यः ।
इन्द्रेण गुप्तो विदथा निचिक्यन्दूद्द्योतनो द्विषतां याहि शीभम्॥ १२॥

[२१] एकविंशं सूक्तम्

ऋषिः—ब्रह्मा॥ देवता—वानस्पत्यो दुन्दुभिः; १०-१२ आदित्यादयः॥ छन्दः—१, ४, ५ पथ्यापङ्क्तिः; २, ३, ७-१० अनुष्टुप्; ६ जगती; ११ बृहतीगर्भात्रिष्टुप्; १२ त्रिपदा-यवमध्यागायत्री॥

विहृदयं वैमनस्यं वदामित्रेषु दुन्दुभे ।
विद्वेषं कश्मशं भयममित्रेषु नि दध्मस्यवैनान्दुन्दुभे जहि॥ १॥
उद्वेपमाना मनसा चक्षुषा हृदयेन च ।
धावन्तु बिभ्यतोऽमित्राः प्रत्रासेनाज्ये हुते ॥ २॥
वानस्पत्यः संभृत उस्रियाभिर्विश्वगोत्र्यः ।
प्रत्रासममित्रेभ्यो वदान्यैनाभिघारितः ॥ ३॥
यथा मृगाः संविजन्त आरण्याः पुरुषादधि। एवा त्वं
दुन्दुभेऽमित्रानभि क्रन्द प्र त्रासयाथो चित्तानि मोहय॥ ४॥
यथा वृकादजावयो धावन्ति बहु बिभ्यतीः। एवा त्वं
दुन्दुभेऽमित्रानभि क्रन्द प्र त्रासयाथो चित्तानि मोहय॥ ५॥
यथा श्येनात्पतत्रिणः संविजन्ते अहर्दिवि सिंहस्य
स्तनथोर्यथा। एवा त्वं दुन्दुभेऽमित्रानभि क्रन्द प्र
त्रासयाथो चित्तानि मोहय ॥ ६॥
परामित्रान्दुन्दुभिना हरिणस्याजिनेन च ।
सर्वे देवा अतित्रसन्ये संग्रामस्येशते ॥ ७॥
यैरिन्द्रः प्रक्रीडते पद्भोषैश्छायया सह ।
तैरमित्रांस्त्रसन्तु नोऽमी ये यन्त्यनीकशः ॥ ८॥
ज्याघोषा दुन्दुभयोऽभि क्रोशन्तु या दिशः ।
सेनाः पराजिता यतीरमित्राणामनीकशः ॥ ९॥
आदित्य चक्षुरा दत्स्व मरीचयोऽनु धावत ।
पत्सङ्गिनीरा संजन्तु विगते बाहुवीर्ये ॥ १०॥
यूयमुग्रा मरुतः पृश्निमातर इन्द्रेण युजा प्र मृणीत शत्रून्।
सोमो राजा वरुणो राजा महादेव उत मृत्युरिन्द्रः॥ ११॥
एता देवसेनाः सूर्यकेतवः सचेतसः ।
अमित्रान्नो जयन्तु स्वाहा ॥ १२॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अथ पञ्चमोऽनुवाकः [२२] द्वाविंशं सूक्तम्

ऋषिः—भृग्वङ्गिराः॥ देवता—तक्मनाशनः॥ छन्दः—१ भुरिक्त्रिष्टुप्; २ त्रिष्टुप्; ३, ४, ६-१४ अनुष्टुप्; ५ विराट्पथ्याबृहती॥

अग्निस्तक्मानमप बाधतामितः सोमो ग्रावा वरुणः पूतदक्षाः।
वेदिर्बर्हिः समिधः शोशुचाना अप द्वेषांस्यमुया भवन्तु॥ १॥
अयं यो विश्वान्हरितान्कृणोष्युच्छोचयन्नग्निरिवाभिदुन्वन्।
अधा हि तक्मन्नरसो हि भूया अधा न्यङ्ङ्धराङ् वा परेहि॥ २॥
यः पंरुषः पारुषेयोऽविध्वंसइवारुणः ।
तक्मानं विश्वधावीर्याधराञ्चं परा सुव ॥ ३॥
अधराञ्चं प्र हिणोमि नमः कृत्वा तक्मनें ।
शकम्भरस्य मुष्टिहा पुनरेतु महावृषान् ॥ ४॥
ओकौ अस्य मूजवन्त ओकौ अस्य महावृषाः ।
यावज्जातस्तक्मंस्तावानसि बल्हिकेषु न्योचरः ॥ ५॥
तक्मन्व्याल्लि वि गद व्यङ्ङ् भूरिं यावय ।
दासीं निष्टक्वरीमिच्छ तां वज्रेण समर्पय ॥ ६॥
तक्मन्मूजवतो गच्छ बल्हिकान्वा परस्तराम् ।
शूद्रामिच्छ प्रफर्व्यं तां तक्मन्वीव धूनुहि ॥ ७॥
महावृषान्मूजवतो बन्ध्वद्धि परेत्य ।
प्रैतानि तक्मनें ब्रूमो अन्यक्षेत्राणि वा इमा ॥ ८॥
अन्यक्षेत्रे न रमसे वशी सन्मृडयासि नः ।
अभूदु प्रार्थस्तक्मा स गमिष्यति बल्हिकान् ॥ ९॥
यत्त्वं शीतोऽथो रूरः सह कासावेपयः ।
भीमास्ते तक्मन्हेतयस्ताभिः स्म परि वृङ्ग्धि नः ॥ १०॥
मा स्मैतान्त्सखीन्कुरुथा बलासं कासमुद्युगम् ।
मा स्मातोऽवाङैः पुनस्तत्त्वा तक्मन्नुप ब्रुवे ॥ ११॥
तक्मन्भ्रात्रा बलासेन स्वस्रा कासिकया सह ।
पाप्मा भ्रातृव्येण सह गच्छमुमरणं जनम् ॥ १२॥
तृतीयकं वितृतीयं सदन्दिमुत शारदम् ।
तक्मानं शीतं रूरं ग्रैष्मं नाशय वार्षिकम् ॥ १३॥

गन्धारिभ्यो मूजवद्भ्योऽङ्गेभ्यो मगधेभ्यः ।
प्रैष्यन्जनमिव शेवधिं तक्मानं परि दद्मसि ॥ १४॥

[२३] त्रयोविंशं सूक्तम्

ऋषिः—काण्वः॥ देवता—इन्द्रादयः॥ छन्दः—१-१२ अनुष्टुप्; १३ विराडनुष्टुप्॥

ओतें मे द्यावापृथिवी ओता देवी सरस्वती।
ओतौ म इन्द्रश्चाग्निश्च क्रिमिं जम्भयतामिति॥ १॥
अस्येन्द्र कुमारस्य क्रिमीन्धनपते जहि।
हता विश्वा अरातय उग्रेण वचसा मम॥ २॥
यो अक्ष्यौ परिसर्पति यो नासे परिसर्पति।
दतां यो मध्यं गच्छति तं क्रिमिं जम्भयामसि॥ ३॥
सरूपौ द्वौ विरूपौ द्वौ कृष्णौ द्वौ रोहितौ द्वौ।
बभ्रुश्च बभ्रुकर्णश्च गृध्रः कोकश्च ते हताः॥ ४॥
ये क्रिमयः शितिकक्षा ये कृष्णाः शितिबाहवः।
ये के च विश्वरूपास्तान्क्रिमीन्जम्भयामसि॥ ५॥
उत्पुरस्तात्सूर्य एति विश्वदृष्टो अदृष्टहा ।
दृष्टांश्च घ्नन्नदृष्टांश्च सर्वांश्च प्रमृणन्क्रिमीन्॥ ६॥
येवाषासः कष्कषास एजत्काः शिपविलुकाः।
दृष्टश्च हन्यतां क्रिमिरुतादृष्टश्च हन्यताम्॥ ७॥
हतो येवाषः क्रिमीणां हतो नंदनिमोत ।
सर्वान्नि मंष्मषाकरं दृषदा खल्वाँइव ॥ ८॥
त्रिशीर्षाणं त्रिककुदं क्रिमिं सारङ्गमर्जुनम्।
शृणाम्यस्य पृष्टीरपि वृश्चामि यच्छिरः ॥ ९॥
अत्रिवद्वः क्रिमयो हन्मि कण्ववज्जमदग्निवत्।
अगस्त्यस्य ब्रह्मणा सं पिनष्म्यहं क्रिमीन्॥ १०॥
हतो राजा क्रिमीणामुतैषां स्थपतिर्हतः।
हतो हतमाता क्रिमिर्हतभ्राता हतस्वसा॥ ११॥
हतासो अस्य वेशसो हतासः परिवेशसः।
अथो ये क्षुल्लकाइव सर्वे ते क्रिमयो हताः॥ १२॥
सर्वेषां च क्रिमीणां सर्वासां च क्रिमीणाम्।
भिनद्मश्मनाशिरो दहाम्यग्निना मुखम्॥ १३॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

[२४] चतुर्विंशं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा॥ देवता—१ सविता; २ अग्निः; ३ द्यावापृथिवी; ४ वरुणः; ५ मित्रावरुणौ; ६ मरुतः; ७ सोमः; ८ वायुः; ९ सूर्यः; १० चन्द्रमाः; ११ इन्द्रः; १२ मरुतां पिता; १३ मृत्युः; १४ यमः; १५ पितरः; १६ ताताः; १७ तातामहः॥ छन्दः—१-१०, १२-१४ अतिशक्वरी; ११ शक्वरी; १५, १६ त्रिपदा भुरिग्जगती; १७ त्रिपदा विराट्शक्वरी॥

सविता प्रसवानामधिपतिः स मावतु ।
अस्मिन्ब्रह्मण्यस्मिन्कर्मण्यस्यां पुरोधायामस्यां प्रतिष्ठायामस्यां
चित्त्यामस्यामाकूत्यामस्यामाशिष्यस्यां देवहूत्यां स्वाहा ॥ १ ॥
अग्निर्वनस्पतीनामधिपतिः स मावतु ।
अस्मिन्ब्रह्मण्यस्मिन्कर्मण्यस्यां पुरोधायामस्यां प्रतिष्ठायामस्यां
चित्त्यामस्यामाकूत्यामस्यामाशिष्यस्यां देवहूत्यां स्वाहा ॥ २ ॥
द्यावापृथिवी दातृणामधिपत्नी ते मावताम् ।
अस्मिन्ब्रह्मण्यस्मिन्कर्मण्यस्यां पुरोधायामस्यां प्रतिष्ठायामस्यां
चित्त्यामस्यामाकूत्यामस्यामाशिष्यस्यां देवहूत्यां स्वाहा ॥ ३ ॥
वरुणोऽपामधिपतिः स मावतु ।
अस्मिन्ब्रह्मण्यस्मिन्कर्मण्यस्यां पुरोधायामस्यां प्रतिष्ठायामस्यां
चित्त्यामस्यामाकूत्यामस्यामाशिष्यस्यां देवहूत्यां स्वाहा ॥ ४ ॥
मित्रावरुणौ वृष्ट्याधिपती तौ मावताम् ।
अस्मिन्ब्रह्मण्यस्मिन्कर्मण्यस्यां पुरोधायामस्यां प्रतिष्ठायामस्यां
चित्त्यामस्यामाकूत्यामस्यामाशिष्यस्यां देवहूत्यां स्वाहा ॥ ५ ॥
मरुतः पर्वतानामधिपतयस्ते मावन्तु ।
अस्मिन्ब्रह्मण्यस्मिन्कर्मण्यस्यां पुरोधायामस्यां प्रतिष्ठायामस्यां
चित्त्यामस्यामाकूत्यामस्यामाशिष्यस्यां देवहूत्यां स्वाहा ॥ ६ ॥
सोमो वीरुधामधिपतिः स मावतु ।
अस्मिन्ब्रह्मण्यस्मिन्कर्मण्यस्यां पुरोधायामस्यां प्रतिष्ठायामस्यां
चित्त्यामस्यामाकूत्यामस्यामाशिष्यस्यां देवहूत्यां स्वाहा ॥ ७ ॥
वायुरन्तरिक्षस्याधिपतिः स मावतु ।
अस्मिन्ब्रह्मण्यस्मिन्कर्मण्यस्यां पुरोधायामस्यां प्रतिष्ठायामस्यां
चित्त्यामस्यामाकूत्यामस्यामाशिष्यस्यां देवहूत्यां स्वाहा ॥ ८ ॥
सूर्यश्चक्षुषामधिपतिः स मावतु ।
अस्मिन्ब्रह्मण्यस्मिन्कर्मण्यस्यां पुरोधायामस्यां प्रतिष्ठायामस्यां
चित्त्यामस्यामाकूत्यामस्यामाशिष्यस्यां देवहूत्यां स्वाहा ॥ ९ ॥
चन्द्रमा नक्षत्राणामधिपतिः स मावतु ।
अस्मिन्ब्रह्मण्यस्मिन्कर्मण्यस्यां पुरोधायामस्यां प्रतिष्ठायामस्यां
चित्त्यामस्यामाकूत्यामस्यामाशिष्यस्यां देवहूत्यां स्वाहा ॥ १० ॥
इन्द्रो दिवोऽधिपतिः स मावतु ।
अस्मिन्ब्रह्मण्यस्मिन्कर्मण्यस्यां पुरोधायामस्यां प्रतिष्ठायामस्यां
चित्त्यामस्यामाकूत्यामस्यामाशिष्यस्यां देवहूत्यां स्वाहा ॥ ११ ॥
मरुतां पिता पशूनामधिपतिः स मावतु ।
अस्मिन्ब्रह्मण्यस्मिन्कर्मण्यस्यां पुरोधायामस्यां प्रतिष्ठायामस्यां
चित्त्यामस्यामाकूत्यामस्यामाशिष्यस्यां देवहूत्यां स्वाहा ॥ १२ ॥
मृत्युः प्रजानामधिपतिः स मावतु ।
अस्मिन्ब्रह्मण्यस्मिन्कर्मण्यस्यां पुरोधायामस्यां प्रतिष्ठायामस्यां
चित्त्यामस्यामाकूत्यामस्यामाशिष्यस्यां देवहूत्यां स्वाहा ॥ १३ ॥
यमः पितृणामधिपतिः स मावतु ।
अस्मिन्ब्रह्मण्यस्मिन्कर्मण्यस्यां पुरोधायामस्यां प्रतिष्ठायामस्यां
चित्त्यामस्यामाकूत्यामस्यामाशिष्यस्यां देवहूत्यां स्वाहा ॥ १४ ॥
पितरः परे ते मावन्तु ।
अस्मिन्ब्रह्मण्यस्मिन्कर्मण्यस्यां पुरोधायामस्यां प्रतिष्ठायामस्यां
चित्त्यामस्यामाकूत्यामस्यामाशिष्यस्यां देवहूत्यां स्वाहा ॥ १५ ॥
तता अवरे ते मावन्तु ।
अस्मिन्ब्रह्मण्यस्मिन्कर्मण्यस्यां पुरोधायामस्यां प्रतिष्ठायामस्यां
चित्त्यामस्यामाकूत्यामस्यामाशिष्यस्यां देवहूत्यां स्वाहा ॥ १६ ॥
ततस्तताम्महास्ते मावन्तु ।
अस्मिन्ब्रह्मण्यस्मिन्कर्मण्यस्यां पुरोधायामस्यां प्रतिष्ठायामस्यां
चित्त्यामस्यामाकूत्यामस्यामाशिष्यस्यां देवहूत्यां स्वाहा ॥ १७ ॥

[२५] पञ्चविंशं सूक्तम्

ऋषिः—ब्रह्मा॥ देवता—योनिः, गर्भः, पृथिव्यादयः॥ छन्दः—१-१२ अनुष्टुप्; १३ विराट्पुरस्ताद्बृहती॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प॑र्वताद्दि॒वो योने॒रङ्गा॑दङ्गात्स॒माभृ॑तम् ।
शेपो॒ गर्भ॑स्य रेतो॒धाः सरौ॑ प॒र्णमि॒वा द॑धत् ॥ १ ॥
यथे॒यं पृ॑थि॒वी म॒ही भू॒तानां॒ गर्भ॑माद॒धे ।
ए॒वा द॑धामि ते॒ गर्भं॒ तस्मै॒ त्वामव॑से हुवे ॥ २ ॥
गर्भं॑ धेहि सिनीवालि॒ गर्भं॑ धेहि सरस्वति ।
गर्भं॑ ते अ॒श्विनो॒भा ध॑त्तां॒ पुष्क॑रस्रजा ॥ ३ ॥
गर्भं॑ ते मि॒त्रावरु॑णौ॒ गर्भं॑ दे॒वो बृह॒स्पतिः॑ ।
गर्भं॑ त॒ इन्द्र॑श्चा॒ग्निश्च॒ गर्भं॑ धा॒ता द॑धातु ते ॥ ४ ॥
विष्णु॒र्योनिं॑ कल्पयतु त्वष्टा॑ रू॒पाणि॑ पिंशतु ।
आ सि॑ञ्चतु प्र॒जाप॑तिर्धा॒ता गर्भं॑ दधातु ते ॥ ५ ॥
यद्वेद॒ राजा॒ वरु॑णो॒ यद्वा॑ दे॒वी सर॑स्वती ।
यदिन्द्रो॑ वृत्र॒हा वेद॒ तद्ग॑र्भ॒कर॑णं पिब ॥ ६ ॥
गर्भो॑ अ॒स्योष॑धीनां॒ गर्भो॒ वन॒स्पती॑नाम् ।
गर्भो॒ विश्व॑स्य भू॒तस्य॒ सो अ॑ग्ने॒ गर्भ॒मेह धाः॑ ॥ ७ ॥
अधि॑ स्कन्द वी॒रय॑स्व॒ गर्भ॒मा धे॑हि॒ योन्या॑म् ।
वृषा॑सि वृष्ण्यावन्प्र॒जायै॒ त्वा न॑यामसि ॥ ८ ॥
वि जि॑हीष्व बार्हत्सामे॒ गर्भ॑स्ते॒ योनि॒मा श॑याम् ।
अदु॑ष्टे दे॒वाः पु॒त्रं सो॑म॒पा उ॑भया॒विन॑म् ॥ ९ ॥
धातः॒ श्रेष्ठे॑न रू॒पेणा॒स्या नार्या॑ गवी॒न्योः ।
पुमां॑सं पु॒त्रमा धे॑हि दश॒मे मा॒सि सूत॑वे ॥ १० ॥
त्वष्टः॒ श्रेष्ठे॑न रू॒पेणा॒स्या नार्या॑ गवी॒न्योः ।
पुमां॑सं पु॒त्रमा धे॑हि दश॒मे मा॒सि सूत॑वे ॥ ११ ॥
सवि॑तः॒ श्रेष्ठे॑न रू॒पेणा॒स्या नार्या॑ गवी॒न्योः ।
पुमां॑सं पु॒त्रमा धे॑हि दश॒मे मा॒सि सूत॑वे ॥ १२ ॥
प्रजा॑पते॒ श्रेष्ठे॑न रू॒पेणा॒स्या नार्या॑ गवी॒न्योः ।
पुमां॑सं पु॒त्रमा धे॑हि दश॒मे मा॒सि सूत॑वे ॥ १३ ॥

[२६] षड्विंशं सूक्तम्

ऋषिः—ब्रह्मा ॥ देवता—१ अग्निः; २ सविता; ३, ११ इन्द्रः; ४ निविदः; ५ मरुतः; ६ अदितिः; ७ विष्णुः; ८ त्वष्टाः; ९ भगः; १० सोमः; १२ अश्विनौ, बृहस्पतिः ॥ छन्दः—१, ५ द्विपदाऽऽर्च्युष्णिक्; २, ४, ६-८, १०, ११ द्विपदाप्राजापत्याबृहती; ३ त्रिपदाविराड्गायत्री; ९ त्रिपदापिपीलिकामध्यापुरउष्णिक्; [एता एकावसानाः] १२ परातिशक्वरीचतुष्पदाजगती ॥

यजूं॑षि य॒ज्ञे स॒मिधः॒ स्वाहा॒ग्निः प्र॑वि॒द्वानि॒ह वो॑ युनक्तु ॥ १ ॥
यु॒नक्तु॑ दे॒वः स॑वि॒ता प्र॑जा॒नन्न॒स्मिन्य॒ज्ञे म॑हि॒षः स्वाहा॑ ॥ २ ॥
इन्द्र॑ उक्थाम॒दान्य॒स्मिन्य॒ज्ञे प्र॑वि॒द्वान्यु॑नक्तु सु॒युजः॒ स्वाहा॑ ॥ ३ ॥
प्रै॒षा य॒ज्ञे नि॒विदः॒ स्वाहा॑ शि॒ष्टाः पत्नी॑भिर्वहते॒ह यु॒क्ताः ॥ ४ ॥
छन्दां॑सि य॒ज्ञे म॑रुतः॒ स्वाहा॑ मा॒तेव॑ पु॒त्रं पि॑पृते॒ह यु॒क्ताः ॥ ५ ॥
एयम॑गन्ब॒र्हिषा॒ प्रोक्ष॑णीभिर्य॒ज्ञं त॑न्वा॒नादि॑तिः॒ स्वाहा॑ ॥ ६ ॥
विष्णु॑र्युनक्तु बहु॒धा तपां॑स्य॒स्मिन्य॒ज्ञे सु॒युजः॒ स्वाहा॑ ॥ ७ ॥
त्वष्टा॑ युनक्तु बहु॒धा नु रू॒पा अ॒स्मिन्य॒ज्ञे सु॒युजः॒ स्वाहा॑ ॥ ८ ॥
भगो॑ युनक्त्वा॒शिषो॒ न्व१॒॑स्मा अ॒स्मिन्य॒ज्ञे प्र॑वि॒द्वान्यु॑नक्तु सु॒युजः॒ स्वाहा॑ ॥ ९ ॥
सोमो॑ युनक्तु बहु॒धा पयां॑स्य॒स्मिन्य॒ज्ञे सु॒युजः॒ स्वाहा॑ ॥ १० ॥
इन्द्रो॑ युनक्तु बहु॒धा वी॒र्या॑ण्य॒स्मिन्य॒ज्ञे सु॒युजः॒ स्वाहा॑ ॥ ११ ॥
अश्वि॑ना॒ ब्रह्म॒णा या॑तम॒र्वाञ्चौ॑ वषट्का॒रेण॑ य॒ज्ञं व॒र्धय॑न्तौ ।
बृह॑स्पते॒ ब्रह्म॒णा या॑ह्य॒र्वाङ् य॒ज्ञो अ॒यं स्व॑रि॒दं यज॑मानाय॒ स्वाहा॑ ॥ १२ ॥

अथ षष्ठोऽनुवाकः [२७] सप्तविंशं सूक्तम्

ऋषिः—ब्रह्मा ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१ बृहतीगर्भात्रिष्टुप्; २ द्विपदासाम्नीभुरिगनुष्टुप्; ३ द्विपदाऽऽर्चीबृहती; ४ द्विपदासाम्नीभुरिग्बृहती; ५ द्विपदासाम्नीत्रिष्टुप्; ६ द्विपदाविराण्नामगायत्री; ७ द्विपदासाम्नीबृहती; ८ संस्तारपङ्क्तिः; ९ षट्पदाऽनुष्टुब्गर्भापरातिजगती; १०-१२ पुरउष्णिक् ॥

ऊ॒र्ध्वा अ॑स्य स॒मिधो॑ भवन्त्यू॒र्ध्वा शु॒क्रा शो॒चींष्य॒ग्नेः ।
द्यु॒मत्त॑मा सु॒प्रती॑कः॒ ससू॑नु॒स्तनू॒नपा॒दसु॑रो॒ भूरि॑पाणिः ॥ १ ॥
दे॒वो दे॒वेषु॑ दे॒वः प॒थो अ॑नक्ति॒ मध्वा॑ घृ॒तेन॑ ॥ २ ॥
मध्वा॑ य॒ज्ञं न॑क्षति प्रैणा॒नो नरा॒शंसो॑ अ॒ग्निः सु॒कृद्दे॒वः स॑वि॒ता वि॒श्ववा॑रः ॥ ३ ॥
अच्छा॒यमे॑ति॒ शव॑सा घृ॒ता चि॒दीडा॑नो॒ वह्नि॒र्नम॑सा ॥ ४ ॥
अ॒ग्निः स्रुचो॑ अध्व॒रेषु॑ प्र॒यक्षु॒ स य॑क्षदस्य महि॒मान॑म॒ग्नेः ॥ ५ ॥
त॒री म॒न्द्रासु॑ प्र॒यक्षु॒ वस॑व॒श्चाति॑ष्ठन्वसु॒धात॑रश्च ॥ ६ ॥
द्वारो॑ दे॒वीरन्व॑स्य॒ विश्वे॑ व्र॒तं र॑क्षन्ति वि॒श्वहा॑ ॥ ७ ॥
उ॒रु॒व्यच॑सा॒ग्नेर्धाम्ना॒ पत्य॑माने ।
आ सु॒ष्वय॑न्ती यजते उ॒पाके॑ उ॒षासा॒नक्ते॒मं य॒ज्ञम॑वतामध्व॒रं नः॑ ॥ ८ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

दैवा॒ होता॑र ऊ॒र्ध्वमध्व॒रं नो॑ऽग्रे॒र्जि॒ह्वया॒भि गृ॑णत गृणतां॒ नः॒ स्वि॒ष्टये।
ति॒स्रो दे॒वीर्ब॒र्हिरे॒दं स॑दन्ता॒मिड॒ सर॑स्वती म॒ही भार॑ती गृणा॒ना ॥ ९ ॥
तन्न॑स्तु॒रीप॒मद्भु॑तं पुरुक्षु। देवं॑ त्वष्टा॒ रा॒यस्पोषं॒ वि ष्य॒ नाभि॑मस्य॥ १० ॥
वन॑स्पतेऽवं॑ सृजा॒ ररा॑णः। त्मना॑ दे॒वेभ्यो॑ अ॒ग्निर्ह॒व्यं श॑मि॒ता स्व॑दयतु॥ ११ ॥
अग्ने॒ स्वाहा॑ कृणुहि जातवेदः ।
इन्द्रा॑य य॒ज्ञं विश्वे॑ दे॒वा ह॒विरि॒दं जु॑षन्ताम् ॥ १२ ॥

[२८] अष्टाविंशं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा॥ देवता—त्रिवृत्, अग्न्यादयः॥ छन्दः—१-५, ८, ११, १४ त्रिष्टुप्; ६ पञ्चपदाऽतिशक्वरी; ७, ९, १०, १२ ककुम्मत्यनुष्टुप्; १३ पुरउष्णिक्॥

नव॑ प्रा॒णान्न॒वभि॒: सं मि॑मीते दीर्घायु॒त्वाय॑ श॒तशा॑रदाय ।
ह॒रि॒ते त्रीणि॑ रजते त्रीण्यय॑सि॒ त्रीणि॒ तप॒सावि॑ष्टितानि ॥ १ ॥
अ॒ग्निः सूर्य॑श्च॒न्द्रमा॒ भूमि॒रापो॒ द्यौर॒न्तरि॑क्षं॒ प्रदि॑शो॒ दिश॑श्च ।
आर्त॑वा ऋ॒तुभि॑: संविदा॒ना अ॒नेन॑ मा॒ त्रिवृ॑ता॒ पार॑यन्तु ॥ २ ॥
त्रय॒: पोषा॑स्त्रि॒वृति॑ श्रयन्ता॒मन॑क्तु॒ पूषा॒ पय॑सा घृ॒तेन॑ ।
अन्न॑स्य॒ भूमा॒ पुरु॑षस्य॒ भूमा॒ भूमा॑ प॒शूना॑ त इ॒ह श्र॑यन्ताम् ॥ ३ ॥
इ॒ममा॑दित्या॒ वसु॑ना॒ सम्यु॑क्षते॒मम॑ग्ने॒ वर्ध॑य॒ वावृ॑धा॒नः ।
इ॒ममि॑न्द्र॒ सं सृ॑ज वी॒र्ये॑ण॒ास्मिन्त्रि॒वृच्छ्रय॑तां पोष॒यिष्णु॒ ॥ ४ ॥
भूमि॑ष्ट्वा पातु॒ हरि॑तेन॒ विश्व॑भृद॒ग्निः पि॑पर्त्वय॒सा स॒जोषा॑: ।
वी॒रुद्वि॑ष्टे॒ अर्जु॑नं संविदा॒नं दक्षं॑ दधातु॒ सुम॑न॒स्यमा॑नम् ॥ ५ ॥
त्रे॒धा जा॒तं जन्म॑नेदं हिरण्यम॒ग्नेरे॑कं प्रि॒यत॑मं बभूव॒ सोम॒स्यैकं॑ हिंसि॒तस्य॒ परा॑पतत्। अ॒पामे॑कं॒ वेध॑सां॒ रेत॑ आहु॒स्तत्ते॑ हिरण्यं॒ त्रिवृ॑दस्त्वायु॒षे॥ ६ ॥
त्र्या॑युषं॒ ज॒मद॑ग्नेः क॒श्यप॑स्य॒ त्र्या॑युषम् ।
त्रे॒धामृ॑त॒स्य॒ चक्ष॑णं॒ त्रीण्या॒यूंषि॑ तेऽकरम् ॥ ७ ॥
त्रय॑: सुप॒र्णास्त्रि॒वृता॒ यदा॑य॒न्त्रेका॒क्षर॑मभि॒संभू॑य॒ शक्रा॑: ।
प्रत्यौ॑हन्मृ॒त्युम॒मृते॑न॒ साक॑मन्त॒र्दधा॑ना दुरि॒तानि॒ विश्वा॑॥ ८ ॥
दि॒वस्त्वा॑ पातु॒ हरि॑तं॒ मध्या॑त्त्वा पात्वर्जु॒नम् ।
भूम्या॑ अय॒स्मय॑ं पातु॒ प्रागा॑दे॒वपु॑रा॒ अय॑म् ॥ ९ ॥
इ॒मास्ति॒स्रो दे॑व॒पुरा॒स्तास्त्वा॑ रक्षन्तु॒ सर्व॑तः ।
तास्त्वं वि॑भ्रद्वर्च॒स्व्युत्त॑रो द्वि॒षतां॑ भव ॥ १० ॥

पुरं॑ दे॒वाना॑ममृतं॑ हिरण्यं॒ य आ॑बि॒भे प्र॑थ॒मो दे॒वो अ॒ग्निः।
तस्मै॒ नमो॒ दश॒ प्राचीः॑ कृणोम्यनु॒ मन्य॑तां त्रिवृ॒दा॒बधे॑ मे॥ ११ ॥
आ त्वा॑ घृ॒तत्व॑र्यमा पू॒षा बृ॒हस्पति॑: ।
अह॑र्जातस्य॒ यन्ना॑म॒ तेन॒ त्वाति॑ घृ॒तामसि ॥ १२ ॥
ऋ॒तुभि॑ष्ट्वार्त॒वैरा॑र्यु॒षे वर्च॑से॒ त्वा ।
सं॑वत्स॒रस्य॒ तेज॑सा॒ तेन॒ संहे॑नु कृण्मसि ॥ १३ ॥
घृ॒तादु॑ल्लु॑प्तं॒ मधु॑ना॒ सम॑क्तं॒ भूमि॑दृंहमच्यु॒तं पार॑यि॒ष्णु।
भि॒न्दन्त्स॒पत्ना॑नधरां॑श्च कृण्वदा मा॑ रोह महते॒ सौभ॑गाय॥ १४ ॥

[२९] एकोनत्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—चातनः॥ देवता—जातवेदाः, मन्त्रोक्ताः॥ छन्दः—१, २, ४, ६-११ त्रिष्टुप्; ३ त्रिपदाविराण्नामगायत्री; ५ पुरोऽतिजगती-विराड्जगती; १२ भुरिगनुष्टुप्; १३, १५ अनुष्टुप्; १४ चतुष्पदापराबृहतीककुम्मत्यनुष्टुप्॥

पु॒रस्ता॒द्यु॒क्तो व॑ह जातवेदोऽग्ने॑ वि॒द्धि क्रि॒यमा॑णं॒ यथे॒दम्।
त्वं भि॒षग्भे॑षज॒स्यासि॑ कर्ता॒ त्वया॒ गामश्वं॑ पुरु॒षं स॑नेम॥ १ ॥
तथा॒ तद॑ग्ने कृणु जातवेदो॒ विश्वे॑भि॒र्दे॒वैः स॒ह सं॑विदा॒नः।
यो नो॑ दि॒देव॑ यत॒मो ज॒घास॒ यथा॒ सो अ॒स्य प॑रि॒धिष्प॑तात्॥ २ ॥
यथा॒ सो अ॒स्य प॑रि॒धिष्प॑ता॒त्ति॒ तथा॒ तद॑ग्ने कृणु जातवेदः।
विश्वे॑भि॒र्दे॒वैः स॒ह सं॑विदा॒नः ॥ ३ ॥
अ॒क्ष्यौ॒३॑ नि वि॑ध्य॒ हृद॑यं॒ नि वि॑ध्य॒ जिह्वां॑ नि तृ॑न्द्धि॒ प्र द॒तो मृ॑णीहि।
पि॒शा॒चो अ॒स्य य॑त॒मो ज॒घासाग्ने॑ यविष्ठ॒ प्रति॑ तं शृणीहि॥ ४ ॥
यद॑स्य हृ॒तं वि॑हृ॒तं यत्परा॑भृतमा॒त्मनो॑ ज॒ग्धं य॒तम॒त्पि॑शा॒चैः।
तद॑ग्ने वि॒द्वान्पु॒नरा भ॑र॒ त्वं शरी॑रि मां॒समसु॒मेर॑यामः॥ ५ ॥
आ॒मे सु॑पक्वे॒ शब॑ले॒ विप॑क्वे॒ यो मा॑ पिशा॒चो अश॑ने द॒दम्भ॑।
तदा॒त्मना॑ प्र॒जया॑ पिशा॒चा वि या॑तयन्तामगदो॒३॑यम॑स्तु॥ ६ ॥
क्षी॒रे मा॑ म॒न्थे य॑त॒मो द॒दम्भा॑कृ॒ष्टप॒च्ये अश॑ने धा॒न्ये॒३॑ यः।
तदा॒त्मना॑ प्र॒जया॑ पिशा॒चा वि या॑तयन्तामगदो॒३॑ यम॑स्तु॥ ७ ॥
अ॒पां मा॒ पाने॑ यत॒मो द॒दम्भ॑ क्रव्या॒द्यातू॑नां शय॒ने॑ शया॑नम्।
तदा॒त्मना॑ प्र॒जया॑ पिशा॒चा वि या॑तयन्तामगदो॒३॑ यम॑स्तु॥ ८ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

दिवा मा नक्तं यतमो ददम्भ क्रव्याद्यातूनां शयने शयानम् ।
तदात्मना प्रजया पिशाचा वि यातयन्तामगदो३ यमस्तु ॥ ९ ॥
क्रव्यादमग्ने रुधिरं पिशाचं मनोहनं जहि जातवेदः ।
तमिन्द्रो वाजी वज्रेण हन्तु च्छिनत्तु सोमः शिरो अस्य धृष्णुः ॥ १० ॥
सनादग्ने मृणसि यातुधानान्न त्वा रक्षांसि पृतनासु जिग्युः ।
सहमूरानन्नु दह क्रव्यादो मा ते हेत्या मुक्षत दैव्यायाः ॥ ११ ॥
समाहर जातवेदो यद्भूतं यत्पराभृतम् ।
गात्राण्यस्य वर्धन्तामंशुरिवा प्यायतामयम् ॥ १२ ॥
सोमस्येव जातवेदो अंशुरा प्यायतामयम् ।
अग्ने विरप्शिन्मेध्यमयक्ष्मं कृणु जीवतु ॥ १३ ॥
एतास्ते अग्ने समिधः पिशाचजम्भनीः ।
तास्त्वं जुषस्व प्रति चैना गृहाण जातवेदः ॥ १४ ॥
ताष्टार्धीरग्ने समिधः प्रति गृह्णाह्यर्चिषा ।
जहातु क्रव्याद्रूपं यो अस्य मांसं जिहीर्षति ॥ १५ ॥

[३०] त्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—उन्मोचनः (आयुष्यकामः)॥ देवता—मन्त्रोक्ताः, आयुः ॥
छन्दः—१ पथ्यापङ्क्तिः; २-८, १०, ११, १३, १५, १६ अनुष्टुप्; ९ भुरिगनुष्टुप्; १२ चतुष्पदा-विराड्जगती; १४ विराट्प्रस्तारपङ्क्तिः; १७ षट्पदाजगती ॥

आवर्तस्त आवर्तः परावर्तस्त आवर्तः ।
इहैव भव मा नु गा मा पूर्वाननु गाः पितॄनसुं
बध्नामि ते दृढम् ॥ १ ॥
यत्त्वाभिचेरुः पुरुषः स्वो यदरणो जनः ।
उन्मोचनप्रमोचने उभे वाचा वदामि ते ॥ २ ॥
यददुद्रोहिथ शेपिषे स्त्रियै पुंसे अचित्त्या ।
उन्मोचनप्रमोचने उभे वाचा वदामि ते ॥ ३ ॥
यदेनसो मातृकृताच्छेषे पितृकृताच्च यत् ।
उन्मोचनप्रमोचने उभे वाचा वदामि ते ॥ ४ ॥
यत्ते माता यत्ते पिता जामिर्भ्राता च सर्जतः ।
प्रत्यक्सेवस्व भेषजं जरदष्टिं कृणोमि त्वा ॥ ५ ॥
इहैधि पुरुष सर्वेण मनसा सह ।
दूतौ यमस्य मानु गा अधि जीवपुरा इहि ॥ ६ ॥
अनुहूतः पुनरेहि विद्वानुदयनं पथः ।
आरोहणमाक्रमणं जीवतोजीवतोऽयनम् ॥ ७ ॥
मा बिभेर्न मरिष्यसि जरदष्टिं कृणोमि त्वा ।
निरवोचमहं यक्ष्ममङ्गेभ्यो अङ्गज्वरं तव ॥ ८ ॥
अङ्गभेदो अङ्गज्वरो यश्च ते हृदयामयः ।
यक्ष्मः श्येनइव प्रापप्तद्वाचा साढः परस्तराम् ॥ ९ ॥
ऋषी बोधप्रतीबोधावस्वप्नो यश्च जागृविः ।
तौ ते प्राणस्य गोप्तारौ दिवा नक्तं च जागृताम् ॥ १० ॥
अयमग्निरुपसद्य इह सूर्य उदेतु ते ।
उदेहि मृत्योर्गम्भीरात्कृष्णाच्चित्तमसस्परि ॥ ११ ॥
नमो यमाय नमो अस्तु मृत्यवे नमः पितृभ्य उत ये नयन्ति ।
उत्पारणस्य यो वेद तमग्निं पुरो दधेऽस्मा अरिष्टतातये ॥ १२ ॥
ऐतु प्राण ऐतु मन ऐतु चक्षुरथो बलम् ।
शरीरमस्य सं विदां तत्पद्भ्यां प्रति तिष्ठतु ॥ १३ ॥
प्राणेनाग्ने चक्षुषा सं सृजेमं समीरय तन्वा३ सं बलेन ।
वेत्थामृतस्य मा नु गान्मा नु भूमिगृहो भुवत् ॥ १४ ॥
मा ते प्राण उप दसन्मो अपानोऽपि धायि ते ।
सूर्यस्त्वाधिपतिर्मृत्योरुदायच्छतु रश्मिभिः ॥ १५ ॥
हृयमन्तर्वदति जिह्वा बद्धा पनिष्पदा ।
त्वया यक्ष्मं निरवोचं शतं रोपींश्च तक्मनः ॥ १६ ॥
अयं लोकः प्रियतमो देवानामपराजितः ।
यस्मै त्वमिह मृत्यवे दिष्टः पुरुष जज्ञिषे ।
स च त्वानु ह्वयामसि मा पुरा जरसो मृथाः ॥ १७ ॥

[३१] एकत्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—शुक्रः ॥ देवता—कृत्याप्रतिहरणम् ॥ छन्दः—१-१० अनुष्टुप्; ११ बृहतीगर्भाऽनुष्टुप्; १२ पथ्याबृहती ॥

यां ते चक्रुरामे पात्रे यां चक्रुर्मिश्रधान्ये ।
अप्येवां ते कृत्यां यां चक्रुः पुनः प्रति हरामि ताम् ॥ १ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

यां ते चक्रुः कृकवाकावजे वा यां कुरीरिणि।
अव्यो ते कृत्यां यां चक्रुः पुनः प्रति हरामि ताम्॥ २॥
यां ते चक्रुरेकशफे पशूनामुभयादति ।
गर्दभे कृत्यां यां चक्रुः पुनः प्रति हरामि ताम्॥ ३॥
यां ते चक्रुरमूलायां वल्गं वा नराच्याम् ।
क्षेत्रे ते कृत्यां यां चक्रुः पुनः प्रति हरामि ताम्॥ ४॥
यां ते चक्रुर्गार्हपत्ये पूर्वाग्रावुत दुश्चितः ।
शालायां कृत्यां यां चक्रुः पुनः प्रति हरामि ताम्॥ ५॥
यां ते चक्रुः सभायां यां चक्रुरधिदेवने ।
अक्षेषु कृत्यां यां चक्रुः पुनः प्रति हरामि ताम्॥ ६॥
यां ते चक्रुः सेनायां यां चक्रुरिष्वायुधे ।
दुन्दुभौ कृत्यां यां चक्रुः पुनः प्रति हरामि ताम्॥ ७॥
यां ते कृत्यां कूपेऽवदधुः श्मशाने वा निचख्नुः।
सद्मनि कृत्यां यां चक्रुः पुनः प्रति हरामि ताम्॥ ८॥
यां ते चक्रुः पुरुषास्थे अग्नौ संकसुके च याम्।
म्रोकं निर्दाहं क्रव्यादं पुनः प्रति हरामि ताम्॥ ९॥
अपथेना जभारैणां तां पथेतः प्र हिण्मसि ।
अधीरो मर्याधीरेभ्यः सं जभाराचित्त्या ॥ १०॥
यश्चकार न शशाक कर्तुं शश्रे पादमङ्गुरिम्।
चकार भद्रमस्मभ्यमभगो भगवद्भ्यः ॥ ११॥
कृत्याकृतं वलगिनं मूलिनं शपथेय्यम्।
इन्द्रस्तं हन्तु महता वधेनाग्निर्विध्यत्वस्तया ॥ १२॥

इति द्वादशः प्रपाठकः॥
इति पञ्चमं काण्डम्॥

अथ षष्ठं काण्डम्

अथ त्रयोदशः प्रपाठकः॥

अथ प्रथमोऽनुवाकः [१] प्रथमं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा॥ देवता—सविता॥ छन्दः—१ त्रिपदापिपीलिकामध्यासाम्नीजगती; २, ३ पिपीलिकामध्यापुरउष्णिक्॥

दोषो गाय बृहद्गाय द्युमद्धेह्यार्भवण ।
स्तुहि देवं सवितारम् ॥ १॥
तमु ष्टुहि यो अन्तः सिन्धौ सूनुः सत्यस्य युवानम्।
अद्रोघवाचं सुशेवम् ॥ २॥
स घा नो देवः सविता साविषदमृतानि भूरि ।
उभे सुष्टुती सुगातवे ॥ ३॥

[२] द्वितीयं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा॥ देवता—सोमो वनस्पतिः॥ छन्दः—परोष्णिक्॥

इन्द्राय सोममृत्विजः सुनोता च धावत ।
स्तोतुर्यो वचः शृणवद्धवं च मे ॥ १॥
आ यं विशन्तीन्दवो वयो न वृक्षमन्धसः ।
विरप्शिन्वि मृधो जहि रक्षस्विनीः ॥ २॥
सुनोता सोमपात्रे सोममिन्द्राय वज्रिणे ।
युवा जेतेशानः स पुरुष्टुतः ॥ ३॥

[३] तृतीयं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा (स्वस्त्ययनकामः)॥ देवता—इन्द्रापूषादयः॥ छन्दः—१ पथ्याबृहती; २, ३ जगती॥

पातं नः इन्द्रापूषणादितिः पान्तु मरुतः ।
अपां नपात्सिन्धवः सप्त पांतन पातु नो विष्णुरुत द्यौः ॥ १॥
पातां नो द्यावापृथिवी अभिष्टये पातु ग्रावा पातु सोमो नो अंहसः।
पातु नो देवी सुभगा सरस्वती पात्वग्निः शिवा ये अस्य पायवः॥ २॥
पातां नो देवाश्विना शुभस्पती उषासानक्तोत नः उरुष्यताम् ।
अपां नपादभिहुतो गयस्य चिद्देव त्वष्टर्वर्धय सर्वतातये ॥ ३॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

[४] चतुर्थं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा (स्वस्त्ययनकामः)॥ देवता—त्वष्ट्रादयः॥ छन्दः—१ पथ्याबृहती; २ संस्तारपङ्क्तिः; ३ त्रिपदाविराड्गायत्री॥

त्वष्टा॑ मे॒ दैव्यं॒ वचः॑ प॒र्जन्यो॒ ब्रह्म॑ण॒स्पतिः॑।
पु॒त्रैर्भ्रातृ॑भि॒रदि॑ति॒र्नु पा॑तु नो दु॒ष्टरं॒ त्राय॑माणं॒ सहः॑॥ १॥
अंशो॒ भगो॒ वरु॑णो मि॒त्रो अ॑र्य॒मादि॑तिः॒ पान्तु॑ म॒रुतः॑।
अप॒ तस्य॒ द्वेषो॑ गमेदभि॒ह्रुतो॑ यावय॒च्छत्रु॒मन्ति॑तम्॥ २॥
धि॒ये सम॑श्विना॒ प्राव॑तं न उरु॒ष्या ण॑ उरुज्म॒न्नप्र॑युच्छन्।
द्यौ॒३॒॑ष्पित॑र्या॒वय॑ दु॒च्छुना॒ या ॥ ३॥

[५] पञ्चमं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा॥ देवता—१, ३ अग्निः; २ इन्द्रः॥ छन्दः—१, ३ अनुष्टुप्; २ भुरिगनुष्टुप्॥

उदे॑नमुत्त॒रं न॒याग्ने॑ घृ॒तेना॑हुत ।
समे॑नं॒ वर्च॑सा सृज प्र॒जया॑ च ब॒हुं कृ॑धि ॥ १॥
इन्द्रे॒मं प्र॑त॒रं कृ॑धि सजा॒ताना॑मसद्व॒शी ।
रा॒यस्पोषे॑ण॒ सं सृ॑ज जी॒वात॑वे ज॒रसे॑ नय ॥ २॥
यस्य॑ कृ॒ण्मो ह॒विर्गृ॒हे तम॑ग्ने वर्धया॒ त्वम् ।
तस्मै॒ सोमो॒ अधि॑ ब्रवद॒यं च॒ ब्रह्म॑ण॒स्पतिः॑॥ ३॥

[६] षष्ठं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा॥ देवता—१ ब्रह्मणस्पतिः; २, ३ सोमः॥ छन्दः—अनुष्टुप्॥

यो॒३॒॑स्मान्ब्र॑ह्मणस्प॒तेऽदे॑वो अभि॒मन्य॑ते ।
सर्वं॒ तं र॑न्धयासि मे॒ यज॑मानाय सुन्व॒ते ॥ १॥
यो नः॑ सोम सुशं॒सिनो॑ दुः॒शंस॑ आ॒दिदे॑शति।
वज्रे॑णास्य॒ मुखे॑ जहि॒ स संपि॑ष्टो॒ अपा॑यति॥ २॥
यो नः॑ सोमाभि॒दास॑ति॒ सना॑भि॒र्यश्च॒ निष्ट्यः॑।
अप॒ तस्य॒ बलं॑ तिर म॒हीव॒ द्यौर्व॑ध त्मना॥ ३॥

[७] सप्तमं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा॥ देवता—१, २ सोमः; ३ विश्वेदेवाः॥ छन्दः—१ निचृद्गायत्री; २, ३ गायत्री॥

येन॑ सो॒मादि॑तिः प॒था मि॒त्रा वा॒ यन्त्य॒द्रुहः॑। तेना॒ नोऽव॒सा ग॑हि॥ १॥
येन॑ सोम साह॒न्त्यासु॑रान्र॒न्धया॑सि नः। तेना॑ नो॒ अधि॑ वोचत॥ २॥
येन॑ देवा॒ असु॑राणा॒मोजां॒स्यवृ॑णीध्वम्। तेना॑ नः॒ शर्म॑ यच्छत॥ ३॥

[८] अष्टमं सूक्तम्

ऋषिः—जमदग्निः॥ देवता—कामात्मा॥ छन्दः—पथ्यापङ्क्तिः॥

यथा॑ वृ॒क्षं लिबु॑जा सम॒न्तं प॑रिषस्व॒जे ।
ए॒वा परि॑ ष्वजस्व॒ मां यथा॒ मां का॒मिन्यसो॒ यथा॒ मन्नाप॑गा॒ असः॑॥ १॥
यथा॑ सुप॒र्णः प्र॒पत॑न्प॒क्षौ नि॒हन्ति॒ भूम्या॑म् ।
ए॒वा नि ह॑न्मि ते॒ मनो॒ यथा॒ मां का॒मिन्यसो॒ यथा॒ मन्नाप॑गा॒ असः॑॥ २॥
यथे॒मे द्यावा॑पृथि॒वी स॒द्यः प॒र्येति॒ सूर्यः॑ ।
ए॒वा पर्ये॑मि ते॒ मनो॒ यथा॒ मां का॒मिन्यसो॒ यथा॒ मन्नाप॑गा॒ असः॑॥ ३॥

[९] नवमं सूक्तम्

ऋषिः—जमदग्निः॥ देवता—कामात्मा॥ छन्दः—अनुष्टुप्॥

वाञ्छ॑ मे त॒न्वं१॒॑ पादौ॒ वाञ्छा॒क्ष्यौ॒३॒॑ वाञ्छ॑ स॒क्थ्यौ॑।
अ॒क्ष्यौ॑ वृष॒ण्यन्त्याः॒ केशा॒ मां ते॒ कामे॑न शुष्यन्तु॥ १॥
मम॑ त्वा दोषणि॒श्रिषं॑ कृ॒णोमि॑ हृदय॒श्रिष॑म् ।
यथा॒ मम॒ क्रता॒वसो॒ मम॑ चि॒त्तमु॒पाय॑सि ॥ २॥
यासां॒ नाभि॑रा॒रेह॑णं हृ॒दि सं॒वन॑नं कृ॒तम् ।
गावो॑ घृ॒तस्य॑ मा॒तरो॒ऽमूं सं वा॑नयन्तु मे ॥ ३॥

[१०] दशमं सूक्तम्

ऋषिः—शन्तातिः॥ देवता—१ अग्निः; २ वायुः; ३ सूर्यः॥ छन्दः—१ साम्नीत्रिष्टुप्; २ प्राजापत्याबृहती; ३ साम्नीबृहती॥

पृथि॒व्यै श्रोत्रा॑य॒ वन॒स्पति॑भ्यो॒ऽग्नयेऽधि॑पतये॒ स्वाहा॑॥ १॥
प्रा॒णाया॒न्तरि॑क्षाय॒ वयो॑भ्यो वा॒यवेऽधि॑पतये॒ स्वाहा॑॥ २॥
दि॒वे चक्षु॑षे॒ नक्ष॑त्रेभ्यः॒ सूर्या॒याधि॑पतये॒ स्वाहा॑ ॥ ३॥

अथ द्वितीयोऽनुवाकः

[११] एकादशं सूक्तम्

ऋषिः—प्रजापतिः॥ देवता—१, २ रेतः; ३ मन्त्रोक्ताः॥ छन्दः—अनुष्टुप्॥

श॒मीम॑श्व॒त्थ आरू॑ढ॒स्तत्र॑ पुं॒सव॑नं कृ॒तम् ।
तद्वै पु॒त्रस्य॒ वेद॑नं॒ तत्स्त्री॒ष्वा भ॑रामसि ॥ १॥
पुं॒सि वै रेतो॑ भवति॒ तत्स्त्रि॒यामनु॑ षिच्यते।
तद्वै पु॒त्रस्य॒ वेद॑नं॒ तत्प्र॒जाप॑तिरब्रवीत् ॥ २॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्र॒जाप॑ति॒रनु॑मतिः सिनीवा॒ल्य॑चीक्लृपत् ।
स्त्रैषू॑यम॒न्यत्र॒ दध॒त्पुमां॑समु दधदि॒ह ॥ ३ ॥

[१२] द्वादशं सूक्तम्

ऋषिः—गरुत्मान्॥ देवता—विषनिवारणम्॥ छन्दः—अनुष्टुप्॥

परि॒ द्यामि॑व॒ सूर्योऽही॑नां॒ जनि॑मागमम् ।
रात्री॒ जग॑दिवा॒न्यद्धं॒सात्तेना॑ ते वारये वि॒षम्॥ १ ॥
यद् ब्र॒ह्मभि॒र्यदृषि॑भि॒र्यद्दे॒वैर्वि॑दि॒तं पुरा ।
यद्भू॒तं भव्य॑मास॒न्वत्तेना॑ ते वारये वि॒षम्॥ २ ॥
मध्वा॑ पृञ्चे न॒द्य१॒ः पर्व॑ता गि॒रयो॒ मधु॑।
मधु॒ परु॑ष्णी॒ शीपा॑ला॒ शमा॒स्रे अ॑स्तु॒ शं हृ॒दे॥ ३ ॥

[१३] त्रयोदशं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा (स्वस्त्यनकामः)॥ देवता—मृत्युः॥
छन्दः—अनुष्टुप्॥

नमो॑ देवव॒धेभ्यो॒ नमो॑ राजव॒धेभ्यः॑ ।
अथो॒ ये विश्या॑नां व॒धास्तेभ्यो॑ मृत्यो॒ नमो॑ऽस्तु ते॥ १ ॥
नम॑स्ते अधिवा॒काय॑ परावा॒काय॑ ते॒ नमः॑।
सु॒मत्यै मृ॑त्यो ते॒ नमो॑ दुर्म॒त्यै त॑ इ॒दं नमः॑॥ २ ॥
नम॑स्ते यातु॒धाने॑भ्यो॒ नम॑स्ते भेष॒जेभ्यः॑।
नम॑स्ते मृत्यो॒ मूले॑भ्यो ब्राह्म॒णेभ्य॑ इ॒दं नमः॑॥ ३ ॥

[१४] चतुर्दशं सूक्तम्

ऋषिः—बभ्रुपिङ्गलः॥ देवता—बलासः॥ छन्दः—अनुष्टुप्॥

अ॒स्थि॒स्रं॒सं प॑रुस्रं॒समास्थि॑तं हृदयाम॒यम् ।
ब॒लासं॒ सर्वं॑ नाशयाङ्गे॒ष्ठा यश्च॒ पर्व॑सु ॥ १ ॥
निर्ब॒लासं॑ बला॒सिनः॑ क्षि॒णोमि॑ मुष्क॒रं य॑था।
छि॒नद्म्य॑स्य॒ बन्ध॑नं॒ मूल॑मुर्वा॒र्वाइ॑व ॥ २ ॥
निर्ब॑लासे॒तः प्र प॑ताशुं॒ङ्गः शि॑शु॒को य॑था।
अथो॒ इट॑इव हाय॒नोप॑ द्रा॒ह्यवी॑रहा ॥ ३ ॥

[१५] पञ्चदशं सूक्तम्

ऋषिः—उद्दालकः॥ देवता—वनस्पतिः॥ छन्दः—अनुष्टुप्॥

उ॒त्त॒मो अ॒स्योष॑धीनां॒ तव॑ वृ॒क्षा उ॑प॒स्तयः॑।
उ॒प॒स्तिर॑स्तु॒ सो॒३॒॑स्माकं॒ यो अ॒स्माँ अ॑भि॒दास॑ति॥ १ ॥
सब॑न्धु॒श्चास॑बन्धुश्च॒ यो अ॒स्माँ अ॑भि॒दास॑ति।
तेषां॒ सा वृ॒क्षाणा॑मिवा॒हं भू॑यासमुत्त॒मः ॥ २ ॥
यथा॒ सोम॒ ओष॑धीनामुत्त॒मो ह॒विषां॑ कृ॒तः।
त॒लाशा॑ वृ॒क्षाणा॑मिवा॒हं भू॑यासमुत्त॒मः ॥ ३ ॥

[१६] षोडशं सूक्तम्

ऋषिः—शौनकः॥ देवता—मन्त्रोक्ताः॥ छन्दः—१ निचृत्त्रिपदागायत्री; २ अनुष्टुप्; ३ बृहतीगर्भाककुम्मत्यनुष्टुप्; ४ त्रिपदाप्रतिष्ठागायत्री॥

आब॑यो॒ अना॑बयो॒ रस॑स्त उ॒ग्र आ॑बयो ।
आ ते॑ कर॒म्भम॑द्मसि ॥ १ ॥
वि॒हल्हो॒ नाम॑ ते पि॒ता म॒दाव॑ती॒ नाम॑ ते मा॒ता।
स हि॑न॒ त्वम॑सि॒ यस्त्वमा॒त्मान॒माव॑यः ॥ २ ॥
तौवि॑लि॒के॑ऽवेल॒यावा॒यमै॑ल॒ब ऐ॑लयीत् ।
ब॒भ्रुश्च॑ ब॒भ्रुक॑र्ण॒श्चापे॑हि॒ निरा॑ल ॥ ३ ॥
अ॒ल॒साला॑सि॒ पूर्वी॑ सि॒लाञ्जा॑ला॒स्युत्त॑रा ।
नी॒ला॒ग॒ल॒साला॑ ॥ ४ ॥

[१७] सप्तदशं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा॥ देवता—गर्भदृंहणम्॥ छन्दः—अनुष्टुप्॥

यथे॒यं पृ॑थि॒वी म॒ही भू॒तानां॒ गर्भ॑माद॒धे।
ए॒वा ते॑ ध्रियतां॒ गर्भो॒ अनु॒ सूतुं॒ सवि॑तवे॥ १ ॥
यथे॒यं पृ॑थि॒वी म॒ही दा॒धारे॒मान्वन॒स्पती॑न्।
ए॒वा ते॑ ध्रियतां॒ गर्भो॒ अनु॒ सूतुं॒ सवि॑तवे॥ २ ॥
यथे॒यं पृ॑थि॒वी म॒ही दा॒धार॒ पर्व॑तान्गि॒रीन्।
ए॒वा ते॑ ध्रियतां॒ गर्भो॒ अनु॒ सूतुं॒ सवि॑तवे॥ ३ ॥
यथे॒यं पृ॑थि॒वी म॒ही दा॒धार॒ विष्ठि॑तं॒ जग॑त्।
ए॒वा ते॑ ध्रियतां॒ गर्भो॒ अनु॒ सूतुं॒ सवि॑तवे॥ ४ ॥

[१८] अष्टादशं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा॥ देवता—ईर्ष्याविनाशनम्॥ छन्दः—अनुष्टुप्॥

ई॒र्ष्याया॒ ध्राजिं॑ प्रथ॒मां प्र॑थ॒मस्या॑ उ॒ताप॑राम्।
अ॒ग्निं हृ॑द॒य्यं१॒॑ शोकं॒ तं ते॒ निर्वा॑पयामसि॥ १ ॥
यथा॒ भूमि॑र्मृ॒तम॑ना मृ॒तान्मृ॒तम॑नस्तरा ।
यथो॒त म॒म्रुषो॒ मन॑ ए॒वेर्ष्योर्मृ॒तं मनः॑ ॥ २ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अदो यत्ते हृदि श्रितं मनस्कं पतयिष्णुकम्।
ततस्त ईर्ष्यां मुञ्चामि निरूष्माणं दृतेरिव॥ ३॥

[१९] एकोनविंशं सूक्तम्

ऋषिः—शन्तातिः॥ देवता—मन्त्रोक्ताः॥ छन्दः—१ अनुष्टुप्; २, ३ गायत्री॥

पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनवो धिया ।
पुनन्तु विश्वा भूतानि पवमानः पुनातु मा॥ १॥
पवमानः पुनातु मा क्रत्वे दक्षाय जीवसे ।
अथो अरिष्टतातये ॥ २॥
उभाभ्यां देव सवितः पवित्रेण सवेन च ।
अस्मान्पुनीहि चक्षसे ॥ ३॥

[२०] विंशं सूक्तम्

ऋषिः—भृग्वङ्गिराः॥ देवता—यक्ष्मनाशनम्॥ छन्दः—१ अतिजगती; २ ककुम्मतीप्रस्तारपङ्क्तिः; ३ सतःपङ्क्तिः॥

अग्नेरिवास्य दहत एति शुष्मिणः उतेव मत्तो विलपन्नपायति।
अन्यमस्मदिच्छतु कं चिदव्रतस्तपुर्वधाय नमो अस्तु तक्मने॥ १॥
नमो रुद्राय नमो अस्तु तक्मने नमो राज्ञे वरुणाय त्विषीमते।
नमो दिवे नमः पृथिव्यै नम ओषधीभ्यः ॥ २॥
अयं यो अभिशोचयिष्णुर्विश्वा रूपाणि हरिता कृणोषि।
तस्मै तेऽरुणाय बभ्रवे नमः कृणोमि वन्याय तक्मने॥ ३॥

अथ तृतीयोऽनुवाकः [२१] एकविंशं सूक्तम्

ऋषिः—शन्तातिः॥ देवता—चन्द्रमाः॥ छन्दः—अनुष्टुप्॥

इमा यास्तिस्रः पृथिवीस्तासां हु भूमिरुत्तमा।
तासामधि त्वचो अहं भेषजं समु जग्रभम्॥ १॥
श्रेष्ठमसि भेषजानां वसिष्ठं वीरुधानाम्।
सोमो भगइव यामेषु देवेषु वरुणो यथा॥ २॥
रेवतीरनाधृषः सिषासवः सिषासथ ।
उत स्थ केशदृंहणीरथो ह केशवर्धनीः ॥ ३॥

[२२] द्वाविंशं सूक्तम्

ऋषिः—शन्तातिः॥ देवता—१ आदित्यरश्मिः; २, ३ मरुतः॥ छन्दः—१, ३ त्रिष्टुप्; २ चतुष्पदाभुरिग्जगती॥

कृष्णं नियानं हरयः सुपर्णा अपो वसाना दिवमुत्पतन्ति।
त आववृत्रन्त्सदनादृतस्यादिद् घृतेन पृथिवीं व्युदुः ॥ १॥
पर्यस्वतीः कृणुथाप ओषधीः शिवा यदेजथा मरुतो रुक्मवक्षसः।
ऊर्जं च तत्र सुमतिं च पिन्वत यत्रा नरो मरुतः सिञ्चथा मधु॥ २॥
उद्प्रुतो मरुतस्ताँ इयर्त वृष्टिर्या विश्वा निवतस्पृणाति।
एजाति ग्लहा कन्येव तुन्नैरुं तुन्दाना पत्येव जाया॥ ३॥

[२३] त्रयोविंशं सूक्तम्

ऋषिः—शन्तातिः॥ देवता—आपः॥ छन्दः—१ अनुष्टुप्; २ त्रिपदागायत्री; ३ परोष्णिक्॥

सस्रुषीस्तदपसो दिवा नक्तं च सस्रुषीः।
वरेण्यक्रतुरहमपो देवीरुप ह्वये ॥ १॥
ओता आपः कर्मण्या मुञ्चन्तिवतः प्रणीतये।
सद्यः कृण्वन्त्येवते ॥ २॥
देवस्य सवितुः सवे कर्म कृण्वन्तु मानुषाः।
शं नो भवन्त्वप ओषधीः शिवाः ॥ ३॥

[२४] चतुर्विंशं सूक्तम्

ऋषिः—शन्तातिः॥ देवता—आपः॥ छन्दः—अनुष्टुप्॥

हिमवतः प्र स्रवन्ति सिन्धौ समह संगमः।
आपो ह मह्यं तद्वेवीर्ददन्हृद्द्योतभेषजम्॥ १॥
यन्मे अक्ष्योरादिद्योत पार्ष्ण्योः प्रपदोश्च यत्।
आपस्तत्सर्वं निष्करन्भिषजां सुभिषक्तमाः॥ २॥
सिन्धुपत्नीः सिन्धुराज्ञीः सर्वा या नद्यः स्थन।
दत्त नस्तस्य भेषजं तेना वो भुनजामहै॥ ३॥

[२५] पञ्चविंशं सूक्तम्

ऋषिः—शुनःशेपः॥ देवता—मन्याविनाशनम्॥ छन्दः—अनुष्टुप्॥

पञ्च च याः पञ्चाशच्च संयन्ति मन्या अभि।
इतस्ताः सर्वा नश्यन्तु वाका अपचितामिव॥ १॥
सप्त च याः सप्ततिश्च संयन्ति ग्रैव्या अभि।
इतस्ताः सर्वा नश्यन्तु वाका अपचितामिव॥ २॥
नव च या नवतिश्च संयन्ति स्कन्ध्या अभि।
इतस्ताः सर्वा नश्यन्तु वाका अपचितामिव॥ ३॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

[२६] षड्विंशं सूक्तम्

ऋषिः—ब्रह्मा॥ देवता—पाप्मा॥ छन्दः—अनुष्टुप्॥

अव॑ मा पाप्मन्त्सृज व॒शी सन्मृ॑डयासि नः।
आ मा॑ भ॒द्रस्य॑ लो॒के पा॑प्मन्धे॒ह्यवि॑ह्रुतम्॥ १॥
यो नः॑ पाप्म॒न्न जहा॑सि॒ तमु॑ त्वा जहिमो व॒यम्।
प॒थामनु॑ व्या॒वर्त॑ने॒ऽन्यं पा॒प्मानु॑ पद्यताम्॥ २॥
अ॒न्यत्रा॒स्मन्न्यु॑च्यतु सहस्रा॒क्षो अम॑र्त्यः ।
यं द्वेषा॑म॒ तमृ॑च्छतु॒ यमु॑ द्वि॒ष्मस्तमिज्ज॑हि ॥ ३॥

[२७] सप्तविंशं सूक्तम्

ऋषिः—भृगुः॥ देवता—यमः; निर्ऋतिः॥ छन्दः—१, ३ जगती; २ त्रिष्टुप्॥

देवाः॑ क॒पोत॑ इषि॒तो यदि॒च्छन्दू॒तो निर्ऋ॑त्या इ॒दमा॑ज॒गाम॑।
तस्मा॑ अर्चाम कृ॒णवा॑म॒ निष्कृ॑तिं॒ शं नो॑ अस्तु द्वि॒पदे॒ शं चतु॑ष्पदे॥ १॥
शि॒वः क॒पोत॑ इषि॒तो नो॑ अस्त्वना॒गा दे॑वाः शकु॒नो गृ॒हं नः॑।
अ॒ग्निर्हि विप्रो॑ जु॒षतां॑ ह॒विर्नः॒ परि॑ हे॒तिः प॒क्षिणी॑ नो वृणक्तु॥ २॥
हे॒तिः प॒क्षिणी॒ न द॑भात्य॒स्माना॒ष्ट्री प॒दं कृ॑णुते अग्नि॒धाने॑।
शि॒वो गोभ्य॑ उ॒त पुरु॑षेभ्यो नो अस्तु॒ मा नो॑ देवा इ॒ह हिं॑सीत्क॒पोतः॑॥ ३॥

[२८] अष्टाविंशं सूक्तम्

ऋषिः—भृगुः॥ देवता—यमः; निर्ऋतिः॥ छन्दः—१ त्रिष्टुप्; २ अनुष्टुप्; ३ जगती॥

ऋ॒चा क॒पोतं॑ नुदत प्र॒णोद॒मिषं॒ मद॑न्तः॒ परि॒ गां न॑यामः ।
सं॒लो॒भय॑न्तो दुरि॒ता प॒दानि॑ हि॒त्वा न॒ ऊर्जं॒ प्र प॑दा॒त्पथि॑ष्ठः ॥ १॥
परी॒मे॒३॒॑ग्निम॑र्षत॒ परी॒मे गाम॑नेषत ।
दे॒वेष्व॑क्रत॒ श्रवः॒ क इ॒माँ आ द॑धर्षति ॥ २॥
यः प्र॑थ॒मः प्र॒वत॑मास॒साद॑ ब॒हुभ्यः॒ पन्था॑मनुपस्पशा॒नः ।
यो॒३॒॑स्येशे॑ द्वि॒पदो॒ यश्चतु॑ष्पद॒स्तस्मै॑ य॒माय॒ नमो॑ अस्तु मृ॒त्यवे॑॥ ३॥

[२९] एकोनत्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—भृगुः॥ देवता—यमः; निर्ऋतिः॥ छन्दः—१, २ त्रिपदाविराण्नामगायत्री; ३ सप्तपदाविराडष्टिः॥

अ॒मून्हे॒तिः प॑त॒त्रिणी॒ न्ये॑तु॒ यदुलू॑को॒ वद॑ति मो॒घमे॒तत् ।
यद्वा॑ क॒पोतः॑ प॒दम॒ग्नौ कृ॒णोति॑ ॥ १॥
यौ ते॑ दू॒तौ निर्ऋ॑त इ॒दमे॒तोऽप्र॑हितौ॒ प्रहि॑तौ वा गृ॒हं नः॑ ।
क॒पो॒तो॒लू॒काभ्या॒मप॑दं॒ तद॑स्तु ॥ २॥
अ॒वै॒र॒ह॒त्याये॒दमा प॑पत्यात्सुवी॒रता॑या इ॒दमा स॑सद्यात् ।
परा॑ङे॒व परा॑ वद॒ परा॑ची॒मनु॑ सं॒वत॑म् ।
यथा॑ य॒मस्य॑ त्वा गृ॒हेऽर॒सं प्र॑ति॒चाक॑शाना॒भूकं॑ प्रति॒चाक॑शान्॥ ३॥

[३०] त्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—उपरिबभ्रवः॥ देवता—शमी॥ छन्दः—१ जगती; २ त्रिष्टुप्; ३ चतुष्पदाशङ्कुमत्यनुष्टुप्॥

दे॒वा इ॒मं मधु॑ना॒ संयु॑तं॒ यवं॒ सर॑स्वत्या॒मधि॑ म॒णाव॑चर्कृषुः।
इन्द्र॑ आसी॒त्सीर॑पतिः श॒तक्र॑तुः की॒नाशा॑ आसन्म॒रुतः॑ सु॒दान॑वः॥ १॥
यस्ते॒ मदो॑ऽवके॒शो वि॑के॒शो येना॑भि॒हस्यं॒ पुरु॑षं कृ॒णोषि॑।
आ॒रात्त्वद॒न्या वना॑नि वृक्षि॒ त्वं श॑मि श॒तव॑ल्शा॒ वि रो॑ह॥ २॥
बृह॑त्पलाशे॒ सुभ॑गे॒ वर्ष॑वृद्ध॒ ऋता॑वरि ।
मा॒तेव॑ पु॒त्रेभ्यो॑ मृड॒ केशे॑भ्यः शमि ॥ ३॥

[३१] एकत्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—उपरिबभ्रवः॥ देवता—गौः॥ छन्दः—गायत्री॥

आयं गौः पृश्नि॑रक्रमी॒दस॑दन्मा॒तरं॑ पु॒रः। पि॒तरं॑ च प्र॒यन्त्स्वः॑॥ १॥
अ॒न्तश्च॑रति रोच॒ना अ॒स्य प्रा॒णाद॑पान॒तः। व्य॑ख्यन्महि॒षः स्वः॑॥ २॥
त्रिं॒शद्धामा॒ वि रा॑जति॒ वाक्प॑त॒ङ्गो अ॑शिश्रियत्। प्रति॒ वस्तो॒रह॒र्द्युभिः॑॥ ३॥

अथ चतुर्थोऽनुवाकः [३२] द्वात्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—१, २ चातनः; ३ अथर्वा॥ देवता—१ अग्निः; २ रुद्रः; ३ मित्रावरुणौ॥ छन्दः—१, ३ त्रिष्टुप्; २ प्रस्तारपङ्क्तिः॥

अ॒न्त॒र्दा॒वे जु॑हु॒ता स्वे॒३॒॑तद्या॑तुधान॒क्षय॑णं घृ॒तेन॑ ।
आ॒राद्रक्षां॑सि॒ प्रति॑ दह॒ त्वम॑ग्ने॒ न नो॑ गृहाणा॒मुप॑ तीतपासि॥ १॥
रु॒द्रो वो॑ ग्री॒वा अश॑रैत्पिशाचाः पृ॒ष्टीर्वोऽपि॑ शृणातु यातुधानाः।
वी॒रुद्वो॑ वि॒श्वतो॑वीर्या य॒मेन॒ सम॑जीगमत् ॥ २॥
अभ॑यं मित्रावरुणावि॒हास्तु॑ नो॒ऽर्चिषा॒त्रिणो॑ नुदतं प्र॒तीचः॑ ।
मा ज्ञा॒तारं॒ मा प्र॑ति॒ष्ठां वि॑दन्त मि॒थो वि॑घ्ना॒ना उप॑ यन्तु मृ॒त्युम्॥ ३॥

[३३] त्रयस्त्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—जाटिकायनः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१, ३ गायत्री; २ अनुष्टुप्॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

यस्येदमा रजो युजस्तुजे जना वनं स्वः।
इन्द्रस्य रन्त्यं बृहत् ॥ १ ॥
नाधृष आ दधृषते धृषाणो धृषितः शवः।
पुरा यथा व्यथिः श्रव इन्द्रस्य नाधृषे शवः ॥ २ ॥
स नो ददातु तां रयिमुरुं पिशङ्गसंदृशम्।
इन्द्रः पतिस्तुविष्टमो जनेष्वा ॥ ३ ॥

[३४] चतुस्त्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—चातनः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—गायत्री ॥

प्राग्नये वाचमीरय वृषभाय क्षितीनाम्। स नः पर्षदति द्विषः ॥ १ ॥
यो रक्षांसि निजूर्वत्यग्निस्तिग्मेन शोचिषा। स नः पर्षदति द्विषः ॥ २ ॥
यः परस्याः परावतस्तिरो धन्वातिरोचते। स नः पर्षदति द्विषः ॥ ३ ॥
यो विश्वाभि विपश्यति भुवना सं च पश्यति। स नः पर्षदति द्विषः ॥ ४ ॥
यो अस्य पारे रजसः शुक्रो अग्निरजायत। स नः पर्षदति द्विषः ॥ ५ ॥

[३५] पञ्चत्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—कौशिकः ॥ देवता—वैश्वानरः ॥ छन्दः—गायत्री ॥

वैश्वानरो न ऊतय आ प्र यातु परावतः। अग्निर्नः सुष्टुतीरुप ॥ १ ॥
वैश्वानरो न आगमदिमं यज्ञं सजूरुप। अग्निरुक्थेष्वंहसु ॥ २ ॥
वैश्वानरोऽङ्गिरसां स्तोममुक्थं च चाक्लृपत्। ऐषु द्युम्नं स्वर्यमत् ॥ ३ ॥

[३६] षट्त्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा (स्वस्त्ययनकामः)॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—गायत्री ॥

ऋतावानं वैश्वानरमृतस्य ज्योतिषस्पतिम्। अजस्रं घर्ममीमहे ॥ १ ॥
स विश्वा प्रति चाक्लृप ऋतूंरुत्सृजते वशी। यज्ञस्य वयं उत्तिरन् ॥ २ ॥
अग्निः परेषु धामसु कामो भूतस्य भव्यस्य। सम्राडेको वि राजति ॥ ३ ॥

[३७] सप्तत्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा (स्वस्त्ययनकामः)॥ देवता—चन्द्रमाः ॥ छन्दः—अनुष्टुप् ॥

उप प्रागात्सहस्राक्षो युक्त्वा शपथो रथम्।
शासारमन्विच्छन्मम वृकं हृदावविमतो गृहम् ॥ १ ॥
परि णो वृङ्ग्धि शपथ ह्रदमग्निरिवा दहन्।
शासारमत्र नो जहि दिवो वृक्षमिवाशनिः ॥ २ ॥
यो नः शपादशपतः शपतो यश्च नः शपात्।
शुने पेष्ट्रमिवावक्षामं तं प्रत्यस्यामि मृत्यवे ॥ ३ ॥

[३८] अष्टात्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा (वर्चस्कामः)॥ देवता—त्विषिः; बृहस्पतिः ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥

सिंहे व्याघ्रे उत या पृदाकौ त्विषिरग्नौ ब्राह्मणे सूर्ये या।
इन्द्रं या देवी सुभगा जजान सा न ऐतु वर्चसा संविदाना ॥ १ ॥
या हस्तिनि द्वीपिनि या हिरण्ये त्विषिरप्सु गोषु या पुरुषेषु।
इन्द्रं या देवी सुभगा जजान सा न ऐतु वर्चसा संविदाना ॥ २ ॥
रथे अक्षेष्वृषभस्य वाजे वाते पर्जन्ये वरुणस्य शुष्मे।
इन्द्रं या देवी सुभगा जजान सा न ऐतु वर्चसा संविदाना ॥ ३ ॥
राजन्ये दुन्दुभावायतायामश्वस्य वाजे पुरुषस्य मायौ।
इन्द्रं या देवी सुभगा जजान सा न ऐतु वर्चसा संविदाना ॥ ४ ॥

[३९] एकोनचत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा (वर्चस्कामः)॥ देवता—बृहस्पतिः ॥ छन्दः—१ जगती; २ त्रिष्टुप्; ३ अनुष्टुप् ॥

यशो हविर्वर्धतामिन्द्रजूतं सहस्रवीर्यं सुभृतं सहस्कृतम्।
प्रसस्त्रीणामनु दीर्घाय चक्षसे हविष्मन्तं मा वर्धय ज्येष्ठतातये ॥ १ ॥
अच्छा न इन्द्रं यशसं यशोभिर्यशस्विनं नमसाना विधेम।
स नो रास्व राष्ट्रमिन्द्रजूतं तस्य ते रातौ यशसः स्याम ॥ २ ॥
यशा इन्द्रौ यशा अग्निर्यशाः सोमो अजायत।
यशा विश्वस्य भूतस्याहमस्मि यशस्तमः ॥ ३ ॥

[४०] चत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—१, २ अथर्वा (अभयकामः); ३ अथर्वा (स्वस्त्ययनकामः)॥ देवता—१, २ मन्त्रोक्ताः; ३ इन्द्रः ॥ छन्दः—१, २ जगती; ३ अनुष्टुप् ॥

अभयं द्यावापृथिवी इहास्तु नोऽभयं सोमः सविता नः कृणोतु।
अभयं नोऽस्तूर्वन्तरिक्षं सप्तऋषीणां च हविषाभयं नो अस्तु ॥ १ ॥
अस्मै ग्रामाय प्रदिशश्चतस्र ऊर्जं सुभूतं स्वस्ति सविता नः कृणोतु।
अशत्रिन्द्रो अभयं नः कृणोत्वन्यत्र राज्ञामभि यातु मन्युः ॥ २ ॥
अनमित्रं नो अधरादनमित्रं न उत्तरात्।
इन्द्रानमित्रं नः पश्चादनमित्रं पुरस्कृधि ॥ ३ ॥

[४१] एकचत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—ब्रह्मा ॥ देवता—मन आदयो दैव्या ऋषयः ॥ छन्दः—१ भुरिगनुष्टुप्; २ अनुष्टुप्; ३ त्रिष्टुप् ॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मन॑से॒ चेत॑से धि॒य आकू॑तय उ॒त चित्त॑ये ।
म॒त्यै श्रु॒ताय॒ चक्ष॑से वि॒धेम॑ ह॒विषा॑ व॒यम् ॥ १ ॥
अ॒पा॒नाय॑ व्या॒नाय॑ प्रा॒णाय॒ भूरि॑धायसे ।
सर॑स्वत्या उरु॒व्यचे॑ वि॒धेम॑ ह॒विषा॑ व॒यम् ॥ २ ॥
मा नो॑ हासिषु॒र्ऋष॑यो॒ दैव्या॒ ये त॑नू॒पा ये न॑स्त॒न्व॑स्तनू॒जाः ।
अम॑र्त्या॒ मर्त्यां॑ अ॒भि नः॑ सचध्व॒मायु॑र्धत्त प्रत॒रं जी॒वसे॑ नः ॥ ३ ॥

अथ पञ्चमोऽनुवाकः [४२] द्वाचत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—भृग्वङ्गिराः (परस्परं चित्तैकीकरणकामः)॥ देवता—मन्युः॥
छन्दः—१, २ भुरिगनुष्टुप्; ३ अनुष्टुप्॥

अव॒ ज्यामि॑व॒ धन्व॑नो म॒न्युं त॑नोमि ते हृ॒दः ।
यथा॒ संम॑नसौ भू॒त्वा सखा॑याविव॒ सचा॑वहै ॥ १ ॥
सखा॑याविव सचावहा॒ अव॑ म॒न्युं त॑नोमि ते ।
अ॒धस्ते॒ अश्म॑नो म॒न्युमुपा॑स्यामसि॒ यो गु॒रुः ॥ २ ॥
अ॒भि ति॑ष्ठामि ते म॒न्युं पाष्ण्या॒ प्रप॑देन च ।
यथा॑व॒शो न वादि॑षो॒ मम॑ चि॒त्तमु॒पाय॑सि ॥ ३ ॥

[४३] त्रिचत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—भृग्वङ्गिराः (परस्परं चित्तैकीकरणकामः)॥ देवता—मन्युशमनम्॥
छन्दः—अनुष्टुप्॥

अ॒यं द॒र्भो विम॑न्युकः॒ स्वाय॒ चार॑णाय च ।
म॒न्योर्विम॑न्युकस्या॒यं म॑न्यु॒शम॑न उच्यते ॥ १ ॥
अ॒यं यो भूरि॑मूलः समु॒द्रम॑व॒तिष्ठ॑ति ।
द॒र्भः पृ॑थि॒व्या उत्थि॑तो मन्यु॒शम॑न उच्यते ॥ २ ॥
वि ते॑ हन॒व्यां॑ श॒रणिं॒ वि ते॒ मुख्यां॑ नयामसि ।
यथा॑व॒शो न वादि॑षो॒ मम॑ चि॒त्तमु॒पाय॑सि ॥ ३ ॥

[४४] चतुश्चत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—विश्वामित्रः॥ देवता—मन्त्रोक्ताः॥ छन्दः—१, २ अनुष्टुप्;
३ त्रिपदामह्यबृहती॥

अस्था॒द् द्यौरस्था॑त्पृथि॒व्यस्था॒द्विश्व॑मि॒दं जग॑त् ।
अस्थु॑र्वृ॒क्षा ऊ॒र्ध्वस्व॑प्ना॒स्तिष्ठा॒द्रोगो॑ अ॒यं तव॑ ॥ १ ॥
श॒तं या भे॑ष॒जानि॑ ते स॒हस्रं॒ संग॑तानि च ।
श्रेष्ठ॑मास्रावभेष॒जं वसि॑ष्ठं रोग॒नाश॑नम् ॥ २ ॥
रु॒द्रस्य॒ मूत्र॑मस्य॒मृत॑स्य॒ नाभिः॑ ।
वि॒षा॒ण॒का नाम॒ वा अ॑सि पितॄ॒णां मूला॒दुत्थि॑ता वातीकृत॒नाश॑नी ॥ ३ ॥

[४५] पञ्चचत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—अङ्गिराः; प्रचेताः; यमश्च॥ देवता—दुःष्वप्ननाशनम्॥
छन्दः—१ पथ्यापङ्क्तिः; २ भुरिक्त्रिष्टुप्; ३ अनुष्टुप्॥

प॒रोऽपे॑हि मनस्पाप॒ किमश॑स्तानि शंससि ।
परे॑हि॒ न त्वा॑ कामये वृ॒क्षां वना॑नि॒ सं च॑र गृ॒हेषु॒ गोषु॑ मे॒ मनः॑ ॥ १ ॥
अ॒व॒शसा॑ निः॒शसा॒ यत्प॑रा॒शसो॑पारि॒म जाग्र॑तो॒ यत्स्व॒पन्तः॑ ।
अ॒ग्निर्विश्वा॒न्यप॑ दुष्कृ॒तान्यजु॑ष्टान्या॒रे अ॒स्मद्द॑धातु ॥ २ ॥
यदि॑न्द्र ब्रह्मणस्प॒तेऽपि॒ मृषा॒ चरा॑मसि ।
प्रचे॑ता न आङ्गिर॒सो दु॑रि॒तात्पा॒त्वंह॑सः ॥ ३ ॥

[४६] षट्चत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—अङ्गिराः; प्रचेताः; यमश्च॥ देवता—दुःष्वप्ननाशनम्॥
छन्दः—१ विष्टारपङ्क्तिः; २ शक्वरीगर्भापञ्चपदाजगती;
३ अनुष्टुप्॥

यो न जी॒वोऽसि॒ न मृ॒तो दे॒वाना॑ममृतग॒र्भो॑ऽसि स्वप्न ।
व॒रु॒णा॒नी ते॑ मा॒ता य॒मः पि॒तार॑रु॒र्नामा॑सि ॥ १ ॥
विद्म॒ ते॑ स्वप्न ज॒नित्रं॑ देवजामी॒नां पु॒त्रो॑ऽसि य॒मस्य॒ कर॑णः ।
अन्त॑कोऽसि मृ॒त्युर॑सि ।
तं त्वा॑ स्वप्न॒ तथा॒ सं वि॑द्म॒ स नः॑ स्वप्न दु॒ष्वप्न्या॑त्पाहि ॥ २ ॥
यथा॑ क॒लां यथा॑ श॒फं यथ॒र्णं सं॒नय॑न्ति ।
ए॒वा दु॒ष्वप्न्यं॒ सर्वं॑ द्विष॒ते सं न॑यामसि ॥ ३ ॥

[४७] सप्तचत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—अङ्गिराः; प्रचेताः; यमश्च॥ देवता—१ अग्निः; २ विश्वे देवाः;
३ सुधन्वा॥ छन्दः—त्रिष्टुप्॥

अ॒ग्निः प्रा॑तःसव॒ने पा॑त्व॒स्मान्वै॑श्वान॒रो वि॑श्व॒कृद्वि॒श्वशं॑भूः ।
स नः॑ पाव॒को द्रवि॑णे दधा॒त्वायु॑ष्मन्तः स॒हभ॑क्षा स्याम ॥ १ ॥
विश्वे॑ दे॒वा म॒रुत॒ इन्द्रो॑ अ॒स्मान॒स्मिन्द्वि॒तीये॒ सव॑ने॒ न ज॑ह्युः ।
आयु॑ष्मन्तः प्रि॒यमे॑षां॒ वद॑न्तो व॒यं दे॒वानां॑ सुम॒तौ स्या॑म ॥ २ ॥
इ॒दं तृ॒तीयं॒ सव॑नं कवी॒नामृ॒तेन॒ ये च॑म॒समैर॑यन्त ।
ते सौ॑धन्व॒नाः स्व॑रानशा॒नाः स्वि॑ष्टिं नो अ॒भि वस्यो॑ नयन्तु ॥ ३ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

[४८] अष्टचत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—अङ्गिराः; प्रचेताः; यमश्च ॥ देवता—मन्त्रोक्ताः ॥ छन्दः—उष्णिक् ॥

श्येनोऽसि गायत्रच्छन्दा अनु त्वा रभे ।
स्वस्ति मा सं वहास्य यज्ञस्योदृचि स्वाहा ॥ १ ॥
ऋभुरसि जगच्छन्दा अनु त्वा रभे ।
स्वस्ति मा सं वहास्य यज्ञस्योदृचि स्वाहा ॥ २ ॥
वृषासि त्रिष्टुप्छन्दा अनु त्वा रभे ।
स्वस्ति मा सं वहास्य यज्ञस्योदृचि स्वाहा ॥ ३ ॥

[४९] एकोनपञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—गार्ग्यः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१ अनुष्टुप्; २ जगती; ३ निचृज्जगती ॥

नहि ते अग्ने तन्वः क्रूरमानंश मर्त्यः ।
कपिर्बभस्ति तेजनं स्वं जरायु गौरिव ॥ १ ॥
मेषइव वै सं च वि चोर्वि च्यसे यदुत्तरद्रावुपरश्च खादतः ।
शीर्ष्णा शिरोऽप्सुसाप्सो अर्दयन्नंशून्बभस्ति हरितेभिरासभिः ॥ २ ॥
सुपर्णा वाचमक्रतोप द्यव्याखरे कृष्णा इषिरा अनर्तिषुः ।
नि यन्नियन्त्युपरस्य निष्कृतिं पुरू रेतो दधिरे सूर्यश्रितः ॥ ३ ॥

[५०] पञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा (अभयकामः) ॥ देवता—अश्विनौ ॥ छन्दः—१ विराड्जगती; २, ३ पथ्यापङ्क्तिः ॥

हुतं तदं समङ्क्ष्माखुमश्विना छिन्तं शिरो अपिं पृष्टीः शृणीतम् ।
यवान्नेददानपिं नह्यतं मुखमथाभयं कृणुतं धान्याय ॥ १ ॥
तर्द है पतङ्ग है जभ्य हा उपक्वस ।
ब्रह्मेवासंस्थितं हविरनदन्त इमान्यवानहिंसन्तो अपोदित ॥ २ ॥
तदीपते वघापते तृष्टजम्भा आ शृणोत मे ।
य आरण्या व्यद्विरा ये के च स्थ व्यद्विरास्तान्त्सर्वाञ्जम्भयामसि ॥ ३ ॥

[५१] एकपञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—शन्तातिः ॥ देवता—१ सोमः; २ आपः; ३ वरुणः ॥ छन्दः—१ गायत्री; २ त्रिष्टुप्; ३ जगती ॥

वायोः पूतः पवित्रेण प्रत्यङ् सोमो अति द्रुतः ।
इन्द्रस्य युज्यः सखा ॥ १ ॥
आपो अस्मान्मातरः सूदयन्तु घृतेन नो घृतप्वः पुनन्तु ।
विश्वं हि रिप्रं प्रवहन्ति देवीरुदिदाभ्यः शुचिरा पूत एमि ॥ २ ॥
यत्किं चेदं वरुण दैव्ये जनेऽभिद्रोहं मनुष्याश्चरन्ति ।
अचित्त्या चेत्तव धर्मा युयोपिम मा नस्तस्मादेनसो देव रीरिषः ॥ ३ ॥

इति त्रयोदशः प्रपाठकः ॥

अथ चतुर्दशः प्रपाठकः ॥

अथ षष्ठोऽनुवाकः [५२] द्विपञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—भागलिः ॥ देवता—१ सूर्यः; २ गावः; ३ भेषजम् ॥ छन्दः—अनुष्टुप् ॥

उत्सूर्यो दिव एति पुरो रक्षांसि निजूर्वन् ।
आदित्यः पर्वतेभ्यो विश्वदृष्टो अदृष्टहा ॥ १ ॥
नि गावो गोष्ठे असदन्नि मृगासो अविक्षत ।
न्यूमासो नदीनान्न्यपां दृष्टा अलिप्सत ॥ २ ॥
आयुर्ददं विपश्चितं श्रुतां कण्वस्य वीरुधम् ।
आभारिषं विश्वभेषजीमस्यादृष्टान्नि शमयत् ॥ ३ ॥

[५३] त्रिपञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—बृहच्छुक्रः ॥ देवता—पृथिव्यादयो मन्त्रोक्ताः ॥ छन्दः—१ जगती; २, ३ त्रिष्टुप् ॥

द्यौश्च म इदं पृथिवी च प्रचेतसौ शुक्रो बृहन्दक्षिणया पिपर्तु ।
अनु स्वधा चिकितां सोमो अग्निर्वायुर्नः पातु सविता भगश्च ॥ १ ॥
पुनः प्राणः पुनरात्मा न ऐतु पुनश्चक्षुः पुनरसुर्न ऐतु ।
वैश्वानरो नो अदब्धस्तनूपा अन्तस्तिष्ठाति दुरितानि विश्वा ॥ २ ॥
सं वर्चसा पयसा सं तनूभिरगन्महि मनसा सं शिवेन ।
त्वष्टा नो अत्र वरीयः कृणोत्वनु नो मार्ष्टु तन्वो यद्विरिष्टम् ॥ ३ ॥

[५४] चतुष्पञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—ब्रह्मा ॥ देवता—अग्नीषोमौ ॥ छन्दः—अनुष्टुप् ॥

इदं तद्युज उत्तरमिन्द्रं शुम्भाम्यष्टये ।
अस्य क्षत्रं श्रियं महीं वृष्टिरिव वर्धया तृणम् ॥ १ ॥
अस्मै क्षत्रमग्नीषोमावस्मै धारयतं रयिम् ।
इमं राष्ट्रस्याभीवर्गे कृणुतं युज उत्तरम् ॥ २ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सबन्धुश्चासबन्धुश्च यो अस्माँ अभिदासति।
सर्वं तं रन्धयासि मे यजमानाय सुन्वते॥ ३॥

[५५] पञ्चपञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—ब्रह्मा॥ देवता—१ विश्वे देवाः; २, ३ रुद्रः॥
छन्दः—१, ३ जगती; २ त्रिष्टुप्॥

ये पन्थानो बहवो देवयाना अन्तरा द्यावापृथिवी संचरन्ति।
तेषामज्यानिं यतमो वहाति तस्मै मा देवाः परि धत्तेह सर्वे॥ १॥
ग्रीष्मो हेमन्तः शिशिरो वसन्तः शरद्वर्षाः स्विते नो दधात।
आ नो गोषु भजता प्रजायां निवात इद्वः शरणे स्याम॥ २॥
इदावत्सरायं परिवत्सरायं संवत्सरायं कृणुता बृहन्नमः।
तेषां वयं सुमतौ यज्ञियानामपि भद्रे सौमनसे स्याम॥ ३॥

[५६] षट्पञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—शन्तातिः॥ देवता—१ विश्वे देवाः; २, ३ रुद्रः॥
छन्दः—१ उष्णिग्गर्भापथ्यापङ्क्तिः; २ निचृदनुष्टुप्;
३ विराडनुष्टुप्॥

मा नो देवा अहिर्बुध्नीत्सतोकान्त्सहपूरुषान्।
संयतं न वि ष्यद्वयात्तं न सं यमन्नमो देवजनेभ्यः॥ १॥
नमोऽस्त्वसिताय नमस्तिरश्चिराजये।
स्वजाय बभ्रवे नमो नमो देवजनेभ्यः॥ २॥
सं ते हन्मि दता दतः समु ते हन्वा हनू।
सं ते जिह्वया जिह्वां सम्वास्त्राहं आस्यम्॥ ३॥

[५७] सप्तपञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—शन्तातिः॥ देवता—१, २ रुद्रः; ३ भेषजम्॥
छन्दः—१, २ अनुष्टुप्; ३ पथ्याबृहती॥

इदमिद्वा उ भेषजमिदं रुद्रस्य भेषजम्।
येनेषुमेकतेजनां शतशल्यामपब्रवत्॥ १॥
जालाषेणाभि षिञ्चत जालाषेणोप सिञ्चत।
जालाषमुग्रं भेषजं तेन नो मृड जीवसे॥ २॥
शं च नो मयश्च नो मा च नः किं चनाममत्।
क्षमा रपो विश्वं नो अस्तु भेषजं सर्वं नो अस्तु भेषजम्॥ ३॥

[५८] अष्टपञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा (यशस्कामः)॥ देवता—इन्द्रादयो मन्त्रोक्ताः॥ छन्दः—१ जगती;
२ प्रस्तारपङ्क्तिः; ३ अनुष्टुप्॥

यशसं मेन्द्रो मघवान्कृणोतु यशसं द्यावापृथिवी उभे इमे।
यशसं मा देवः सविता कृणोतु प्रियो दातुर्दक्षिणाया इह स्याम्॥ १॥
यथेन्द्रो द्यावापृथिव्योर्यशस्वान्यथाप ओषधीषु यशस्वतीः।
एवा विश्वेषु देवेषु वयं सर्वेषु यशसः स्याम॥ २॥
यशा इन्द्रो यशा अग्निर्यशाः सोमो अजायत।
यशा विश्वस्य भूतस्याहमस्मि यशस्तमः॥ ३॥

[५९] एकोनषष्टितमम् सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा॥ देवता—अरुन्धत्यादयो मन्त्रोक्ताः॥ छन्दः—अनुष्टुप्॥

अनडुद्भ्यस्त्वं प्रथमं धेनुभ्यस्त्वमरुन्धति।
अधेनवे वयसे शर्म यच्छ चतुष्पदे॥ १॥
शर्म यच्छत्वोषधिः सह देवीररुन्धती।
करत्पयस्वन्तं गोष्ठमयक्ष्मां उत पूरुषान्॥ २॥
विश्वरूपां सुभगामच्छावदामि जीवलाम्।
सा नो रुद्रस्यास्तां हेतिं दूरं नयतु गोभ्यः॥ ३॥

[६०] षष्टितमम् सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा॥ देवता—अर्यमा॥ छन्दः—अनुष्टुप्॥

अयमा यात्यर्यमा पुरस्ताद्विषितस्तुपः।
अस्या दुच्छुनयुवै पतिमुत जायामजानये॥ १॥
अश्रमदियमर्यमन्नन्यासां समनं यती।
अङ्गे न्वर्यमन्नस्या अन्याः समनमायति॥ २॥
धाता दाधार पृथिवीं धाता द्यामुत सूर्यम्।
धातास्या अयुवै पतिं दधातु प्रतिकाम्यम्॥ ३॥

[६१] एकषष्टितमं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा॥ देवता—रुद्रः॥ छन्दः—१ त्रिष्टुप्; २, ३ भुरिक्त्रिष्टुप्॥

मह्यमापो मधुमदेरयन्तां मह्यं सूर्यो अभरज्ज्योतिषे कम्।
मह्यं देवा उत विश्वे तपोजा मह्यं देवः सविता व्यचो धात्॥ १॥
अहं विवेच पृथिवीमुत द्यामहमृतूंरजनयं सप्त साकम्।
अहं सत्यमनृतं यद्वदाम्यहं दैवीं परि वाचं विशश्च॥ २॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अहं जजान पृथिवीमुत द्यामहमृतूंरजनयं सप्त सिन्धून्।
अहं सत्यमनृतं यद्वदामि यो अग्नीषोमावजुषे सखाया॥ ३॥

अथ सप्तमोऽनुवाकः [६२] द्विषष्टितमं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा॥ देवता—वैश्वानरादयो मन्त्रोक्ताः॥ छन्दः—त्रिष्टुप्॥

वैश्वानरो रश्मिभिर्नः पुनातु वातः प्राणेनेषिरो नभोभिः।
द्यावापृथिवी पयसा पयस्वती ऋतावरी यज्ञिये नः पुनीताम्॥ १॥
वैश्वानरीं सूनृतामा रभध्वं यस्या आशास्तन्वो वीतपृष्ठाः।
तया गृणन्तः सधमादेषु वयं स्याम पतयो रयीणाम्॥ २॥
वैश्वानरीं वर्चसा आ रभध्वं शुद्धा भवन्तः शुचयः पावकाः।
इहेडया सधमादं मदन्तो ज्योक्पश्येम सूर्यमुच्चरन्तम्॥ ३॥

[६३] त्रिषष्टितमं सूक्तम्

ऋषिः—ब्रह्मणः (१-३ आयुर्वर्चोबलकामः)॥ देवता—१ निर्ऋतिः; २ यमः; ३ मृत्युः; ४ अग्निः॥ छन्दः—१-३ त्रिष्टुप्; ४ अनुष्टुप्॥

यत्ते देवी निर्ऋतिराबबन्ध दामग्रीवास्त्वविमोक्यं यत्।
तत्ते वि ष्याम्यायुषे वर्चसे बलायादोमदमन्नमद्धि प्रसूतः॥ १॥
नमोऽस्तु ते निर्ऋते तिग्मतेजोऽयस्मयान्वि चृता बन्धपाशान्।
यमो मह्यं पुनरित्त्वां ददाति तस्मै यमाय नमो अस्तु मृत्यवे॥ २॥
अयस्मये द्रुपदे बेधिष इहाभिहितो मृत्युभिर्ये सहस्रम्।
यमेन त्वं पितृभिः संविदान उत्तमं नाकमधि रोहयेमम्॥ ३॥
संसमिद्युवसे वृषन्नग्ने विश्वान्यर्य आ ।
इडस्पदे समिध्यसे स नो वसून्या भर ॥ ४॥

[६४] चतुःषष्टितमं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा॥ देवता—सांमनस्यम्॥ छन्दः—१, ३ अनुष्टुप्; २ त्रिष्टुप्॥

सं जानीध्वं सं पृच्यध्वं सं वो मनांसि जानताम् ।
देवा भागं यथा पूर्वे संजानाना उपासते ॥ १॥
समानो मन्त्रः समितिः समानी समानं व्रतं सह चित्तमेषाम्।
समानेन वो हविषा जुहोमि समानं चेतो अभिसंविशध्वम्॥ २॥
समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः ।
समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति ॥ ३॥

[६५] पञ्चषष्टितमं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा॥ देवता—पराशरः; इन्द्रः॥ छन्दः—१ पथ्यापङ्क्तिः; २, ३ अनुष्टुप्॥

अव मन्युरवायतावं बाहू मनोयुजा ।
पराशर त्वं तेषां पराञ्चं शुष्ममर्दयाधा नो रयिमा कृधि॥ १॥
निर्हस्तेभ्यो नैर्हस्तं यं देवाः शरुमस्यथ ।
वृश्चामि शत्रूणां बाहूननेनं हविषाहम् ॥ २॥
इन्द्रश्चकार प्रथमं नैर्हस्तमसुरेभ्यः ।
जयन्तु सत्वानो मम स्थिरेणेन्द्रेण मेदिना ॥ ३॥

[६६] षट्षष्टितमं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१ त्रिष्टुप्; २, ३ अनुष्टुप्॥

निर्हस्तः शत्रुरभिदासन्नस्तु ये सेनाभिर्युधमायन्त्यस्मान्।
समर्पयेन्द्र महता वधेन द्रात्वेषामघहारो विविन्दः॥ १॥
आतन्वाना आयच्छन्तोऽस्यन्तो ये च धावथ ।
निर्हस्ताः शत्रवः स्थनेन्द्रो वोऽद्य पराशरीत् ॥ २॥
निर्हस्ताः सन्तु शत्रवोऽङ्गैषां म्लापयामसि ।
अथैषामिन्द्र वेदांसि शतशो वि भजामहै ॥ ३॥

[६७] सप्तषष्टितमं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—अनुष्टुप्॥

परि वर्त्मानि सर्वत इन्द्रः पूषा च सस्रतुः।
मुह्यन्त्वद्यामूः सेना अमित्राणां परस्तराम् ॥ १॥
मूढा अमित्राश्चरताशीर्षाणोहवाहयः ।
तेषां वो अग्निर्मूढनामिन्द्रो हन्तु वरंवरम्॥ २॥
ऐषु नह्य वृषाजिनं हरिणस्या भियं कृधि।
पराङमित्र एषत्वर्वाची गौरुपैषतु ॥ ३॥

[६८] अष्टषष्टितमं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा॥ देवता—सवित्रादयो मन्त्रोक्ताः॥ छन्दः—१ पुरोविराडति-शक्वरीगर्भाचतुष्पदाजगती; २ अनुष्टुप्; ३ अतिजगतीगर्भात्रिष्टुप्॥

आयमगन्त्सविता क्षुरेणोष्णेन वाय उदकेनेहि ।
आदित्या रुद्रा वसव उन्दन्तु सचेतसः सोमस्य राज्ञो वपत प्रचेतसः॥ १॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अदितिः श्मश्रु वपतु वापं उन्दन्तु वर्चसा ।
चिकित्सतु प्रजापतिर्दीर्घायुत्वाय चक्षसे ॥ २ ॥
येनावपत्सविता क्षुरेण सोमस्य राज्ञो वरुणस्य विद्वान् ।
तेन ब्रह्मणो वपतेदमस्य गोमानश्ववानयमस्तु प्रजावान् ॥ ३ ॥

[६९] एकोनसप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा (वर्चस्कामो यशस्कामश्च)॥ देवता—बृहस्पतिः; अश्विनौ ॥ छन्दः—अनुष्टुप्॥

गिरावरगराटेषु हिरण्ये गोषु यद्यशः ।
सुरायां सिच्यमानायां कीलाले मधु तन्मयि ॥ १ ॥
अश्विना सारघेण मा मधुनाङ्क्तं शुभस्पती ।
यथा भगंस्वतीं वाचमावदानि जनाँ अनु ॥ २ ॥
मयि वर्चो अथो यशोऽथो यज्ञस्य यत्पयः ।
तन्मयि प्रजापतिर्दिवि द्यामिव दृंहतु ॥ ३ ॥

[७०] सप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—काङ्कायनः॥ देवता—अघ्न्या॥ छन्दः—जगती॥

यथा मांसं यथा सुरा यथाक्षा अधिदेवने ।
यथा पुंसो वृषण्यत स्त्रियां निहन्यते मनः ।
एवा तें अघ्न्ये मनोऽधि वत्से नि हन्यताम् ॥ १ ॥
यथा हस्ती हस्तिन्याः पदेन पदमुद्युजे ।
यथा पुंसो वृषण्यत स्त्रियां निहन्यते मनः ।
एवा तें अघ्न्ये मनोऽधि वत्से नि हन्यताम् ॥ २ ॥
यथा प्रधिर्यथोपधिर्यथा नभ्यं प्रधावधि ।
यथा पुंसो वृषण्यत स्त्रियां निहन्यते मनः ।
एवा तें अघ्न्ये मनोऽधि वत्से नि हन्यताम् ॥ ३ ॥

[७१] एकसप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—ब्रह्मा॥ देवता—१, २ अग्निः; ३ विश्वे देवाः॥ छन्दः—१, २ जगती; ३ त्रिष्टुप्॥

यदन्नमद्म्यनृतेन देवा दास्यन्नदास्यन्नुत संगृणामि ।
वैश्वानरस्य महतो महिम्ना शिवं मह्यं मधुमदस्त्वन्नम् ॥ ३ ॥

[७२] द्विसप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वाङ्गिराः॥ देवता—शेपोऽर्कः॥ छन्दः—१ जगती; २ अनुष्टुप्; ३ भुरिगनुष्टुप्॥

यथासितः प्रथयते वशाँ अनु वपूंषि कृण्वन्नसुरस्य मायया ।
एवा ते शेपः सहसायमर्कोऽङ्गेनाङ्गं संसमकं कृणोतु ॥ १ ॥
यथा पसस्तायादरं वातेन स्थूलभं कृतम् ।
यावत्परस्वतः पसस्तावत्ते वर्धतां पसः ॥ २ ॥
यावदङ्गीनं पारस्वतं हास्तिनं गार्दभं च यत् ।
यावदश्वस्य वाजिनस्तावत्ते वर्धतां पसः ॥ ३ ॥

अथाष्टमोऽनुवाकः [७३] त्रिसप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा॥ देवता—वरुणादयो मन्त्रोक्ताः॥ छन्दः—१, ३ भुरिक्त्रिष्टुप्; २ त्रिष्टुप्॥

एह यातु वरुणः सोमो अग्निर्बृहस्पतिर्वसुभिरेह यातु ।
अस्य श्रियमुपसंयात सर्वे उग्रस्य चेत्तुः संमनसः सजाताः ॥ १ ॥
यो वः शुष्मो हृदयेष्वन्तरा कूर्तिर्या वो मनसि प्रविष्टा ।
तान्त्सीव्यामि हविषा घृतेन मयि सजाता रमतिर्वो अस्तु ॥ २ ॥
इहैव स्त मापयाताध्यस्मत्पूषा परस्तादपथं वः कृणोतु ।
वास्तोष्पतिरनु वो जोहवीतु मयि सजाता रमतिर्वो अस्तु ॥ ३ ॥

[७४] चतुःसप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा॥ देवता—ब्रह्मणस्पत्यादयो मन्त्रोक्ताः॥ छन्दः—१, २ अनुष्टुप्; ३ त्रिष्टुप्॥

सं वः पृच्यन्तां तन्वः सं मनांसि समु व्रता ।
सं वोऽयं ब्रह्मणस्पतिर्भगः सं वो अजीगमत् ॥ १ ॥
संज्ञपनं वो मनसोऽथो संज्ञपनं हृदः ।
अथो भगस्य यच्छान्तं तेन संज्ञपयामि वः ॥ २ ॥
यथादित्या वसुभिः संबभूवुर्मरुद्भिरुग्रा अहणीयमानाः ।
एवा विशामुन्नहणीयमान इमाञ्जनान्त्संमनसस्कृधीह ॥ ३ ॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

[७५] पञ्चसप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—कबन्धः (सपत्नक्षयकामः)॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१, २ अनुष्टुप्; ३ षट्पदाजगती॥

निर्मुं नुद ओकसः सपत्नो यः पृतन्यति ।
नैर्बाध्येनं हविषेन्द्र एनं पराशरीत् ॥ १ ॥
परमां तं परावतमिन्द्रो नुदतु वृत्रहा ।
यतो न पुनरायति शश्वतीभ्यः समाभ्यः ॥ २ ॥
एतु तिस्रः परावत एतु पञ्च जनाँ अति ।
एतु तिस्रोऽति रोचना यतो न पुनरायति
शश्वतीभ्यः समाभ्यो यावत्सूर्यो असद्दिवि ॥ ३ ॥

[७६] षट्सप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—कबन्धः॥ देवता—सान्तपनाग्निः॥ छन्दः—१, २, ४ अनुष्टुप्; ३ ककुम्मत्यनुष्टुप्॥

य एनं परिषीदन्ति समादधति चक्षसे ।
संप्रेद्धो अग्निर्जिह्वाभिरुदेतु हृदयादधि ॥ १ ॥
अग्नेः सांतपनस्याहमायुषे पदमा रभे ।
अब्द्यातिर्यस्य पश्यति धूममुद्यन्तमास्यतः ॥ २ ॥
यो अस्य समिधं वेद क्षत्रियेण समाहिताम् ।
नाभिह्वारे पदं नि दधाति स मृत्यवे ॥ ३ ॥
नैनं घ्नन्ति पर्यायिणो न सन्नाँ अव गच्छति ।
अग्नेर्यः क्षत्रियो विद्वान्नाम गृह्णात्यायुषे ॥ ४ ॥

[७७] सप्तसप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—कबन्धः॥ देवता—जातवेदाः॥ छन्दः—अनुष्टुप्॥

अस्थाद् द्यौरस्थात्पृथिव्यस्थाद्विश्वमिदं जगत्।
आस्थाने पर्वता अस्थु स्थाम्न्यश्वाँ अतिष्ठिपम् ॥ १ ॥
य उदानद् परायणं य उदानण्न्यायनम्।
आवर्तनं निवर्तनं यो गोपा अपि तं हुवे ॥ २ ॥
जातवेदो नि वर्तय शतं तें सन्त्वावृतः।
सहस्रं त उपावृतस्ताभिर्नः पुनरा कृधि ॥ ३ ॥

[७८] अष्टसप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा॥ देवता—१, २ चन्द्रमाः; ३ त्वष्टा॥ छन्दः—अनुष्टुप्॥

तेनं भूतेन हविषायमा प्यायतां पुनः।
जायां यामस्मा आवाक्षुस्तां रसेनाभि वर्धताम् ॥ १ ॥
अभि वर्धतां पयसाभि राष्ट्रेण वर्धताम्।
रय्या सहस्रवर्चसेमौ स्तामनुपक्षितौ ॥ २ ॥
त्वष्टा जायामजनयत्त्वष्टास्यै त्वां पतिम् ।
त्वष्टा सहस्रमायूँषि दीर्घमायुः कृणोतु वाम् ॥ ३ ॥

[७९] एकोनाशीतितमं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा॥ देवता—संस्फानम्॥ छन्दः—१, २ गायत्री; ३ त्रिपदाप्राजापत्यागायत्री॥

अयं नो नभसस्पतिः संस्फानो अभि रक्षतु। असमातिं गृहेषु नः ॥ १ ॥
त्वं नो नभसस्पत ऊर्जं गृहेषु धारय। आ पुष्टमेत्वा वसु ॥ २ ॥
देव संस्फान सहस्रापोषस्यैशिषे ।
तस्य नो रास्व तस्य नो धेहि तस्य ते भक्तिवांसः स्याम ॥ ३ ॥

[८०] अशीतितमं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा॥ देवता—चन्द्रमाः॥ छन्दः—१ भुरिगनुष्टुप्; २ अनुष्टुप्; ३ प्रस्तारपङ्क्तिः॥

अन्तरिक्षेण पतति विश्वा भूतावचाकशत् ।
शुनो दिव्यस्य यन्महस्तेना ते हविषा विधेम ॥ १ ॥
ये त्रयः कालकाञ्जा दिवि देवाइव श्रिताः ।
तान्त्सर्वानह्र ऊतयेऽस्मा अरिष्टातये ॥ २ ॥
अप्सु ते जन्म दिवि ते सधस्थं समुद्रे अन्तर्महिमा ते पृथिव्याम्।
शुनो दिव्यस्य यन्महस्तेना ते हविषा विधेम ॥ ३ ॥

[८१] एकाशीतितमं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा॥ देवता—आदित्यः॥ छन्दः—अनुष्टुप्॥

यन्तासि यच्छसे हस्तावप रक्षांसि सेधसि ।
प्रजां धनं च गृह्णानः परिहस्तो अभूदयम् ॥ १ ॥
परिहस्त वि धारय योनिं गर्भाय धातवे ।
मयीदं पुत्रमा धेहि तं त्वमा गमयागमे ॥ २ ॥
यं परिहस्तमबिभरदितिः पुत्रकाम्या ।
त्वष्टा तमस्या आ बध्नाद्यथा पुत्रं जनादिति ॥ ३ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

[८२] द्व्यशीतितमं सूक्तम्

ऋषिः—भगः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—अनुष्टुप्॥

आ॒गच्छ॑त॒ आग॑तस्य॒ नाम॑ गृह्णाम्याय॒तः ।
इन्द्र॑स्य वृत्र॒घ्नो व॑न्वे वास॒वस्य॑ श॒तक्र॑तोः ॥ १ ॥
येन॑ सू॒र्यां सा॑वि॒त्रीम॒श्विनो॒हतुः॑ प॒था ।
तेन॒ माम॑ब्रवी॒द्भगो॑ जा॒यामा व॑हता॒दिति॑ ॥ २ ॥
यस्ते॑ऽङ्कु॒शो व॑सु॒दानो॑ बृ॒हन्नि॑न्द्र हिर॒ण्यय॑ः ।
तेना॑ जनीय॒ते जा॒यां मह्यं॑ धेहि शचीपते ॥ ३ ॥

अथ नवमोऽनुवाकः [८३] त्र्यशीतितमं सूक्तम्

ऋषिः—भगः॥ देवता—सूर्यादयः॥ छन्दः—१-३ अनुष्टुप्; ४ द्विपदानिचृदार्च्यनुष्टुप्॥

अप॑चितः॒ प्र प॑तत सुप॒र्णो व॑स॒तेरि॑व ।
सूर्यः॑ कृ॒णोतु॑ भेष॒जं च॒न्द्रमा॒ वोऽपो॑च्छतु ॥ १ ॥
एन्येका॒ श्येन्येका॑ कृ॒ष्णैका॒ रोहि॑णी॒ द्वे ।
सर्वा॑सामग्रभं॒ नामावी॑रघ्नी॒रपे॑तन ॥ २ ॥
अ॒सूति॑का रामाय॒ण्य॑ प॒चित्प्र प॑तिष्यति ।
ग्लौरि॒तः प्र प॑तिष्यति॒ स ग॑लु॒न्तो न॑शिष्यति ॥ ३ ॥
वी॒हि स्वामाहु॑तिं जुषा॒णो मन॑सा॒ स्वाहा॒ मन॑सा॒ यदि॒दं जु॒होमि॑ ॥ ४ ॥

[८४] चतुरशीतितमं सूक्तम्

ऋषिः—भगः॥ देवता—निर्ऋतिः॥ छन्दः—१ भुरिग्जगती; २ त्रिपदाऽऽर्चीबृहती; ३ जगती; ४ भुरिक्त्रिष्टुप्॥

यस्या॑स्त आ॒सनि॑ घो॒रे जु॒होम्ये॒षां ब॒द्धाना॑मव॒सर्ज॑नाय॒ कम्।
भूमि॒रिति॑ त्वाभि॒प्रम॑न्वते॒ जना॒ निर्ऋ॑ति॒रिति॑ त्वा॒हं परि॑ वेद स॒र्वतः॑ ॥ १ ॥
भूते॑ ह॒विष्म॑ती भवै॒ष ते॑ भा॒गो यो अ॒स्मासु॑ ।
मु॒ञ्चेमान॒मूनेन॑सः॒ स्वाहा॑ ॥ २ ॥
ए॒वो ष्व१॒॑स्मन्नि॑र्ऋतेऽने॒हा त्वम॑य॒स्मया॒न्वि चृ॑ता बन्धपा॒शान् ।
य॒मो मह्यं॒ पुन॒रित्त्वां द॑दाति॒ तस्मै॑ य॒माय॒ नमो॑ अस्तु मृ॒त्यवे॑ ॥ ३ ॥
अ॒य॒स्मये॑ द्रु॒प॒दे बे॑धिष इ॒हाभिहि॑तो मृ॒त्युभि॒र्ये स॒हस्र॑म् ।
य॒मेन॒ त्वं पि॒तृभिः॑ संविदा॒न उ॑त्त॒मं नाक॒मधि॑ रोहये॒मम् ॥ ४ ॥

[८५] पञ्चाशीतितमं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा (यक्ष्मनाशनकामः)॥ देवता—वनस्पतिः॥ छन्दः—अनुष्टुप्॥

व॒र॒णो वा॑रयाता अ॒यं दे॒वो वन॒स्पतिः॑।
यक्ष्मो॒ यो अ॒स्मिन्नावि॑ष्ट॒स्तमु॑ दे॒वा अ॑वीवरन् ॥ १ ॥
इन्द्र॑स्य॒ वच॑सा व॒यं मि॒त्रस्य॒ वरु॑णस्य च।
दे॒वानां॒ सर्वे॑षां वा॒चा यक्ष्मं॑ ते वारयामहे ॥ २ ॥
यथा॑ वृ॒त्र इ॒मा आप॑स्त॒स्तम्भ॑ वि॒श्वधा॑ य॒तीः।
ए॒वा ते॑ अ॒ग्निना॒ यक्ष्मं॑ वैश्वान॒रेण॑ वारये ॥ ३ ॥

[८६] षडशीतितमं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा (वृषकामः)॥ देवता—एकवृषः॥ छन्दः—अनुष्टुप्॥

वृषेन्द्र॑स्य॒ वृषा॑ दि॒वो वृषा॑ पृथि॒व्या अ॒यम्।
वृषा॒ विश्व॑स्य भू॒तस्य॒ त्वमे॑कवृ॒षो भ॑व ॥ १ ॥
स॒मुद्र ई॑शे स्र॒वता॑म॒ग्निः पृ॑थि॒व्या व॒शी।
च॒न्द्रमा॒ नक्ष॑त्राणामीशे॒ त्वमे॑कवृ॒षो भ॑व ॥ २ ॥
स॒म्राड॒स्यसु॑राणां क॒कुन्म॑नु॒ष्या॑णाम् ।
दे॒वाना॑मर्ध॒भाग॑सि॒ त्वमे॑कवृ॒षो भ॑व ॥ ३ ॥

[८७] सप्ताशीतितमं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा॥ देवता—ध्रुवः॥ छन्दः—अनुष्टुप्॥

आ त्वा॑हार्षम॒न्तर॑भूर्ध्रु॒वस्ति॒ष्ठावि॑चाचलत् ।
विश॑स्त्वा॒ सर्वा॑ वाञ्छन्तु॒ मा त्वद्रा॒ष्ट्रमधि॑ भ्रशत् ॥ १ ॥
इ॒हैवैधि॒ माप॑ च्योष्ठाः॒ पर्व॑त इ॒वावि॑चाचलत्।
इन्द्रे॒हैव ध्रु॒वस्ति॑ष्ठे॒ह रा॒ष्ट्रमु॑ धारय ॥ २ ॥
इन्द्र॑ ए॒तम॑दीधरद् ध्रु॒वं ध्रु॒वेण॑ ह॒विषा॑ ।
तस्मै॒ सोमो॒ अधि॑ ब्रवद॒यं च॒ ब्रह्म॑ण॒स्पतिः॑ ॥ ३ ॥

[८८] अष्टाशीतितमं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा॥ देवता—ध्रुवः॥ छन्दः—१, २ अनुष्टुप्; ३ त्रिष्टुप्॥

ध्रु॒वा द्यौर्ध्रु॒वा पृ॑थि॒वी ध्रु॒वं विश्व॑मि॒दं जग॑त् ।
ध्रु॒वासः॒ पर्व॑ता इ॒मे ध्रु॒वो राजा॑ वि॒शाम॒यम् ॥ १ ॥
ध्रु॒वं ते॒ राजा॒ वरु॑णो ध्रु॒वं दे॒वो बृह॒स्पतिः॑ ।
ध्रु॒वं त॒ इन्द्र॑श्चा॒ग्निश्च॑ रा॒ष्ट्रं धा॑रयतां ध्रु॒वम् ॥ २ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ध्रुवोऽच्युतः प्र मृणीहि शत्रूञ्छत्रूयतोऽधरान्पादयस्व।
सर्वा दिशः संमनसः सधीचीर्ध्रुवाय ते समितिः कल्पतामिह॥ ३॥

[८९] एकोननवतितमं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा॥ देवता—मन्त्रोक्ताः॥ छन्दः—अनुष्टुप्॥

इदं यत्प्रेण्यः शिरो दत्तं सोमेन वृष्ण्यम्।
ततः परि प्रजातेन हार्दि ते शोचयामसि॥ १॥
शोचयामसि ते हार्दि शोचयामसि ते मनः।
वातं धूमइव सध्र्यङ् मामेवान्वेतु ते मनः॥ २॥
मह्यं त्वा मित्रावरुणौ मह्यं देवी सरस्वती।
मह्यं त्वा मध्यं भूम्या उभावन्तौ समस्यताम्॥ ३॥

[९०] नवतितमं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा॥ देवता—रुद्रः॥ छन्दः—१, २ अनुष्टुप्; ३ आर्षीभुरिगुष्णिक्॥

यां ते रुद्र इषुमास्यदङ्गेभ्यो हृदयाय च।
इदं तामद्य त्वद्वयं विषूचीं वि वृहामसि॥ १॥
यास्ते शतं धमनयोऽङ्गान्यनु विष्ठिताः।
तासां ते सर्वासां वयं निर्विषाणि ह्वयामसि॥ २॥
नमस्ते रुद्रास्यते नमः प्रतिहितायै।
नमो विसृज्यमानायै नमो निपतितायै॥ ३॥

[९१] एकनवतितमं सूक्तम्

ऋषिः—भृग्वङ्गिराः॥ देवता—१, २ यक्ष्मनाशनम्; ३ आपः॥ छन्दः—अनुष्टुप्॥

इमं यवमष्टायोगैः षडश्वयोगेभिरचर्कृषुः।
तेना ते तन्वो३ रपोऽपाचीनमप व्यये॥ १॥
न्यङ्ङ्वातो वाति न्यक्तपति सूर्यः।
नीचीनमघ्न्या दुहे न्यक्ष्मभवतु ते रपः॥ २॥
आप इद्वा उ भेषजीरापो अमीवचातनीः।
आपो विश्वस्य भेषजीस्तास्ते कृण्वन्तु भेषजम्॥ ३॥

[९२] द्विनवतितमं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा॥ देवता—वाजी॥ छन्दः—१ जगती; २, ३ त्रिष्टुप्॥

वातरंहा भव वाजिन्युज्यमान इन्द्रस्य याहि प्रसवे मनोजवाः।
युञ्जन्तु त्वा मरुतो विश्ववेदस आ ते त्वष्टा पत्सु जवे दधातु॥ १॥

जवस्ते अर्वन्निहितो गुहा यः श्येने वातं उत योऽचरत्परीत्तः।
तेन त्वं वाजिन्बलवान्बलेनाजिं जय समने पारयिष्णुः॥ २॥
तनूष्टे वाजिन्तन्वं नयन्ती वाममस्मभ्यं धावतु शर्म तुभ्यम्।
अहुतो महो धरुणाय देवो दिवीव ज्योतिः स्वमा मिमीयात्॥ ३॥

अथ दशमोऽनुवाकः [९३] त्रिनवतितमं सूक्तम्

ऋषिः—शन्तातिः॥ देवता—यमादयो मन्त्रोक्ताः॥ छन्दः—त्रिष्टुप्॥

यमो मृत्युरघमारो निर्ऋथो बभ्रुः शर्वोऽस्ता नीलशिखण्डः।
देवजनाः सेनयोत्तस्थिवांसस्ते अस्माकं परि वृज्जन्तु वीरान्॥ १॥
मनसा होमैर्हरसा घृतेन शर्वायास्त्रं उत राज्ञे भवाय।
नमस्येभ्यो नम एभ्यः कृणोम्यन्यत्रास्मदघविषा नयन्तु॥ २॥
त्रायध्वं नो अघविषाभ्यो वधाद्विश्वे देवा मरुतो विश्ववेदसः।
अग्नीषोमा वरुणः पूतदक्षा वातापर्जन्ययोः सुमतौ स्याम॥ ३॥

[९४] चतुर्नवतितमं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वाङ्गिराः॥ देवता—सरस्वती॥ छन्दः—१, ३ अनुष्टुप्; २ विराड्जगती॥

सं वो मनांसि सं व्रता समाकूतीर्नमामसि।
अमी ये विव्रता स्थन तान्वः सं नमयामसि॥ १॥
अहं गृभ्णामि मनसा मनांसि मम चित्तमनु चित्तेभिरेत।
मम वशेषु हृदयानि वः कृणोमि मम यातमनुवर्त्मान एत॥ २॥
ओतं मे द्यावापृथिवी ओता देवी सरस्वती।
ओतौ म इन्द्रश्चाग्निश्चाध्यस्मेदं सरस्वति॥ ३॥

[९५] पञ्चनवतितमं सूक्तम्

ऋषिः—भृग्वङ्गिराः॥ देवता—वनस्पतिः (कुष्ठः)॥ छन्दः—अनुष्टुप्॥

अश्वत्थो देवसदनस्तृतीयस्यामितो दिवि।
तत्रामृतस्य चक्षणं देवाः कुष्ठमवन्वत॥ १॥
हिरण्ययी नौरचरद्धिरण्यबन्धना दिवि।
तत्रामृतस्य पुष्पं देवाः कुष्ठमवन्वत॥ २॥
गर्भो ओषधीनां गर्भो हिमवतामुत।
गर्भो विश्वस्य भूतस्येमं मे अगदं कृधि॥ ३॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

[९६] षण्णवतितमं सूक्तम्

ऋषिः—भृग्वङ्गिराः॥ देवता—१, २ वनस्पतिः; ३ सोमः॥
छन्दः—१, २ अनुष्टुप्; ३ विराण्नामगायत्री॥

या ओषधयः सोमराज्ञीर्बह्वीः शतविचक्षणाः ।
बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्वंहसः ॥ १ ॥
मुञ्चन्तु मा शपथ्या३दथो वरुण्यादुत ।
अथो यमस्य पड्वीशाद्विश्वस्माद्देवकिल्बिषात् ॥ २ ॥
यच्चक्षुषा मनसा यच्च वाचोपारिम जाग्रतो यत्स्वपन्तः ।
सोमस्तानि स्वधया नः पुनातु ॥ ३ ॥

[९७] सप्तनवतितमं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा॥ देवता—१, ३ देवः; २ मित्रावरुणौ॥ छन्दः—१ त्रिष्टुप्; २ जगती; ३ भुरिक्त्रिष्टुप्॥

अभिभूर्यज्ञो अभिभूररिरभिभूः सोमो अभिभूरिन्द्रः ।
अभ्यहं विश्वाः पृतना यथासान्येवा विधेमाग्निहोत्रा हुदं हविः॥ १ ॥
स्वधास्तु मित्रावरुणा विपश्चिता प्रजावत्क्षत्रं मधुनेह पिन्वतम्।
बाधेथां दूरं निर्ऋतिं पराचैः कृतं चिदेनः प्र मुमुक्तमस्मत्॥ २ ॥
इमं वीरमनु हर्षध्वमुग्रमिन्द्रं सखायो अनु सं रभध्वम्।
ग्रामजितं गोजितं वज्रबाहुं जयन्तमज्म प्रमृणन्तमोजसा॥ ३ ॥

[९८] अष्टनवतितमं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१, ३ त्रिष्टुप्; २ बृहतीगर्भास्तारपङ्क्तिः॥

इन्द्रो जयाति न परा जयाता अधिराजो राजसु राजयातै।
चर्कृत्य ईड्यो वन्द्यश्चोपसद्यो नमस्यो भवेह ॥ १ ॥
त्वमिन्द्राधिराजः श्रवस्युस्त्वं भूरभिभूतिर्जनानाम् ।
त्वं दैवीर्विशं इमा वि राजायुष्मत्क्षत्रमजरं ते अस्तु ॥ २ ॥
प्राच्या दिशस्त्वमिन्द्रासि राजोतोदीच्या दिशो वृत्रहञ्छत्रुहोसि।
यत्र यन्ति स्रोत्यास्तज्जितं तं दक्षिणतो वृषभ एषि हव्यः॥ ३ ॥

[९९] नवनवतितमं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा॥ देवता—१, २ इन्द्रः; ३ इन्द्रः, सोमः, सविता च॥
छन्दः—१, २ अनुष्टुप्; ३ भुरिग्बृहती॥

अभि त्वेन्द्र वरिमतः पुरा त्वाहूरणाद्धुवे।
हयाम्युग्रं चेत्तारं पुरुणामानमेकजम् ॥ १ ॥
यो अद्य सेन्यो वधो जिघांसन्न उदीरते ।
इन्द्रस्य तत्र बाहू समन्तं परि दद्मः ॥ २ ॥
परि दद्म इन्द्रस्य बाहू समन्तं त्रातुस्त्रायतां नः।
देवं सवितः सोमं राजन्त्सुमनसं मा कृणु स्वस्तये॥ ३ ॥

[१००] शततमं सूक्तम्

ऋषिः—गरुत्मान्॥ देवता—वनस्पतिः॥ छन्दः—अनुष्टुप्॥

देवा अदुः सूर्यं अदाद् द्यौरदात्पृथिव्यदात्।
तिस्रः सरस्वतीरदुः सचित्ता विषदूषणम् ॥ १ ॥
यद्वो देवा उपजीका आसिञ्चन्धन्वन्युदकम्।
तेन देवप्रसूतेनेदं दूषयता विषम् ॥ २ ॥
असुराणां दुहितासि सा देवानामसि स्वसा।
दिवस्पृथिव्याः संभूता सा चकर्थारसं विषम्॥ ३ ॥

[१०१] एकोत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वाङ्गिराः॥ देवता—ब्रह्मणस्पतिः॥ छन्दः—अनुष्टुप्॥

आ वृषायस्व श्वसिहि वर्धस्व प्रथयस्व च।
यथाङ्गं वर्धतां शेपस्तेन योषितमिज्जहि॥ १ ॥
येन कृशं बाजयन्ति येन हिन्वन्त्यातुरम्।
तेनास्य ब्रह्मणस्पते धनुरिवा तानया पसः॥ २ ॥
आहं तनोमि ते पसो अधि ज्यामिव धन्वनि।
क्रमस्वर्शमिव रोहितमनवग्लायता सदा ॥ ३ ॥

[१०२] द्व्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—जमदग्निः (अभिसंमनस्कामः)॥ देवता—अश्विनौ॥ छन्दः—अनुष्टुप्॥

यथायं वाहो अश्विना समैति सं च वर्तते।
एवा मामभि ते मनः समैतु सं च वर्तताम्॥ १ ॥
आहं खिदामि ते मनो राजाश्वः पृष्ट्यामिव।
रेष्मच्छिन्नं यथा तृणं मयि ते वेष्टतां मनः॥ २ ॥
आञ्जनस्य मदुघस्य कुष्ठस्य नलदस्य च।
तुरो भगस्य हस्ताभ्यामनुरोधनमुद्धरे ॥ ३ ॥

॥ इति चतुर्दशः प्रपाठकः॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अथ पञ्चदशः प्रपाठकः ॥

अथैकादशोऽनुवाकः [१०३] त्र्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—उच्छोचनः ॥ देवता—बृहस्पत्यादयो मन्त्रोक्ताः ॥ छन्दः—अनुष्टुप् ॥

संदानं वो बृहस्पतिः संदानं सविता करत्।
संदानं मित्रो अर्यमा संदानं भगो अश्विना ॥ १ ॥
सं पर्मान्त्समवमानथो सं द्यामि मध्यमान्।
इन्द्रस्तान्पर्यहार्दाम्ना तानग्रे सं द्या त्वम् ॥ २ ॥
अमी ये युधमायन्ति केतून्कृत्वानीकशः।
इन्द्रस्तान्पर्यहार्दाम्ना तानग्रे सं द्या त्वम् ॥ ३ ॥

[१०४] चतुरुत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—प्रमोचनः ॥ देवता—१, २ इन्द्राग्नी; ३ इन्द्राग्नी, सोमः, इन्द्रश्च ॥ छन्दः—अनुष्टुप् ॥

आदानेन संदानेनामित्राना द्यामसि ।
अपाना ये चैषां प्राणा असुनासून्त्समच्छिदन् ॥ १ ॥
इदमादानमकरं तपसेन्द्रेण संशितम् ।
अमित्रा येऽत्र नः सन्ति तानग्र आ द्या त्वम् ॥ २ ॥
ऐनान्द्यतामिन्द्राग्नी सोमो राजा च मेदिनौ।
इन्द्रो मरुत्वानादानममित्रेभ्यः कृणोतु नः ॥ ३ ॥

[१०५] पञ्चोत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—उन्मोचनः ॥ देवता—कासा ॥ छन्दः—अनुष्टुप् ॥

यथा मनो मनस्केतैः परापतत्याशुमत् ।
एवा त्वं कासे प्र पत मनसोऽनु प्रवाय्यम् ॥ १ ॥
यथा बाणः सुसंशितः परापतत्याशुमत्।
एवा त्वं कासे प्र पत पृथिव्या अनु संवतम् ॥ २ ॥
यथा सूर्यस्य रश्मयः परापतन्त्याशुमत्।
एवा त्वं कासे प्र पत समुद्रस्यानु विक्षरम् ॥ ३ ॥

[१०६] षडुत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—प्रमोचनः ॥ देवता—दूर्वा, शाला ॥ छन्दः—अनुष्टुप् ॥

आर्यने ते परायणे दूर्वा रोहन्तु पुष्पिणीः।
उत्सो वा तत्र जायतां ह्रदो वा पुण्डरीकवान् ॥ १ ॥
अपामिदं न्ययनं समुद्रस्य निवेशनम्।
मध्ये ह्रदस्य नो गृहाः पराचीना मुखा कृधि ॥ २ ॥
हिमस्य त्वा जरायुणा शाले परि व्ययामसि।
शीतह्रदा हि नो भुवोऽग्निष्कृणोतु भेषजम् ॥ ३ ॥

[१०७] सप्तोत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—शन्तातिः ॥ देवता—विश्वजित् ॥ छन्दः—अनुष्टुप् ॥

विश्वजित् त्रायमाणायै मा परि देहि ।
त्रायमाणे द्विपाच्च सर्वं नो रक्ष चतुष्पाद्यच्च नः स्वम् ॥ १ ॥
त्रायमाणे विश्वजिते मा परि देहि ।
विश्वजिद् द्विपाच्च सर्वं नो रक्ष चतुष्पाद्यच्च नः स्वम् ॥ २ ॥
विश्वजित्कल्याण्यै मा परि देहि ।
कल्याणि द्विपाच्च सर्वं नो रक्ष चतुष्पाद्यच्च नः स्वम् ॥ ३ ॥
कल्याणि सर्वविदे मा परि देहि ।
सर्वविद् द्विपाच्च सर्वं नो रक्ष चतुष्पाद्यच्च नः स्वम् ॥ ४ ॥

[१०८] अष्टोत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—शौनकः ॥ देवता—१-३, ५ मेधा; ४ अग्निः ॥ छन्दः—१, ४, ५ अनुष्टुप्; २ उरोबृहती; ३ पथ्याबृहती ॥

त्वं नो मेधे प्रथमा गोभिरश्वेभिरा गहि ।
त्वं सूर्यस्य रश्मिभिस्त्वं नो असि यज्ञिया ॥ १ ॥
मेधामहं प्रथमां ब्रह्मणवतीं ब्रह्मजूतामृषिष्टुताम् ।
प्रपीतां ब्रह्मचारिभिर्देवानामवसे हुवे ॥ २ ॥
यां मेधामृभवो विदुर्यां मेधामसुरा विदुः ।
ऋषयो भद्रां मेधां यां विदुस्तां मय्या वेशयामसि ॥ ३ ॥
यामृषयो भूतकृतो मेधां मेधाविनो विदुः ।
तया मामद्य मेधयाग्ने मेधाविनं कृणु ॥ ४ ॥
मेधां सायं मेधां प्रातर्मेधां मध्यन्दिनं परि ।
मेधां सूर्यस्य रश्मिभिर्वचसा वेशयामहे ॥ ५ ॥

[१०९] नवोत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा ॥ देवता—पिप्पली ॥ छन्दः—अनुष्टुप् ॥

पिप्पली क्षिप्तभेषज्यूर्ध्वा तातिर्विद्धभेषजी ।
ता देवाः समकल्पयन्नियं जीवितवा अलम् ॥ १ ॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पिप्पल्यः समवदन्तायतीर्जनंनादधि ।
यं जीवमश्नवामहै न स रिष्याति पूरुषः ॥ २ ॥
असुरास्त्वा न्यखनन्देवास्त्वोदवपन्पुनः ।
वातीकृतस्य भेषजीमथो क्षिप्तस्य भेषजीम् ॥ ३ ॥

[११०] दशोत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१ पङ्क्तिः; २, ३ त्रिष्टुप् ॥

प्रलो हि कमीड्यो अध्वरेषु सनाच्च होता नव्यश्च सत्सि ।
स्वां चाग्ने तन्वं पिप्रायस्वास्मभ्यं च सौभगमा यजस्व ॥ १ ॥
ज्येष्ठघ्न्यां जातो विचृतोर्यमस्य मूलबर्हणात्परि पाह्येनम् ।
अत्येनं नेषदुरितानि विश्वा दीर्घायुत्वाय शतशारदाय ॥ २ ॥
व्याघ्रेऽह्न्यजनिष्ट वीरो नक्षत्रजा जायमानः सुवीरः ।
स मा वधीत्पितरं वर्धमानो मा मातरं प्र मिनीज्जनित्रीम् ॥ ३ ॥

[१११] एकादशोत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१ परानुष्टुब्गर्भोपरिष्टाद्बृहती, २-४ अनुष्टुप् ॥

इमं मे अग्ने पुरुषं मुमुग्ध्यय यो बब्धः सुयतो लालपीति ।
अतोऽधि ते कृणवद्भागधेयं यदानुन्मदितोऽसति ॥ १ ॥
अग्निष्टे नि शमयतु यदि ते मन उद्युतम् ।
कृणोमि विद्वान्भेषजं यथानुन्मदितोऽससि ॥ २ ॥
देवैनसादुन्मदितमुन्मत्तं रक्षसस्परि ।
कृणोमि विद्वान्भेषजं यदानुन्मदितोऽसति ॥ ३ ॥
पुनस्त्वा दुरप्सरसः पुनरिन्द्रः पुनर्भगः ।
पुनस्त्वा दुर्विश्वे देवा यथानुन्मदितोऽससि ॥ ४ ॥

[११२] द्वादशोत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥

मा ज्येष्ठं वधीदयमग्र एषां मूलबर्हणात्परि पाह्येनम् ।
स ग्राह्याः पाशान्वि चृत प्रजानन्तुभ्यं देवा अनु जानन्तु विश्वे ॥ १ ॥
उन्मुञ्च पाशांस्त्वमग्र एषां त्रयस्त्रिभिरुत्सिता येभिरासन् ।
स ग्राह्याः पाशान्वि चृत प्रजानन्पितापुत्रौ मातरं मुञ्च सर्वान् ॥ २ ॥
येभिः पाशैः परिवित्तो विबद्धोऽङ्गेअङ्ग आर्पित उत्सितश्च ।
वि तं मुञ्चन्तां विमुचो हि सन्ति भूणघ्नि पूषन्दुरितानि मृक्ष्व ॥ ३ ॥

[११३] त्रयोदशोत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा ॥ देवता—पूषा ॥ छन्दः—१, २ त्रिष्टुप्; ३ पङ्क्तिः ॥

त्रिते देवा अमृजतैतदेनस्त्रिते एनन्मनुष्येषु ममृजे ।
ततो यदि त्वा ग्राहिरानशे तां ते देवा ब्रह्मणा नाशयन्तु ॥ १ ॥
मरीचीर्धूमान्प्र विशानु पाप्मन्नुदारान्गच्छोत वा नीहारान् ।
नदीनां फेनाँ अनु तान्वि नश्य भूणघ्नि पूषन्दुरितानि मृक्ष्व ॥ २ ॥
द्वादशधा निहितं त्रितस्यार्षमृष्टं मनुष्यैनसानि ।
ततो यदि त्वा ग्राहिरानशे तां ते देवा ब्रह्मणा नाशयन्तु ॥ ३ ॥

अथ द्वादशोऽनुवाकः [११४] चतुर्दशोत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—ब्रह्मा ॥ देवता—विश्वे देवाः ॥ छन्दः—अनुष्टुप् ॥

यद्देवा देवहेडनं देवासश्चकृमा वयम् ।
आदित्यास्तस्मान्नो यूयमृतस्यर्तेन मुञ्चत ॥ १ ॥
ऋतस्यर्तेनादित्या यजत्रा मुञ्चतेह नः ।
यज्ञं यज्ञवाहसः शिक्षन्तो नोपशेकिम ॥ २ ॥
मेदस्वता यजमानाः स्रुचाज्यानि जुह्वतः ।
अकामा विश्वे वो देवाः शिक्षन्तो नोप शेकिम ॥ ३ ॥

[११५] पञ्चदशोत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—ब्रह्मा ॥ देवता—विश्वे देवाः ॥ छन्दः—अनुष्टुप् ॥

यद्विद्वांसो यदविद्वांस एनांसि चकृमा वयम् ।
यूयं नस्तस्मान्मुञ्चत विश्वे देवाः सजोषसः ॥ १ ॥
यदि जाग्रद्यदि स्वपन्नेन एनस्योऽकरम् ।
भूतं मा तस्माद्भव्यं च द्रुपदादिव मुञ्चताम् ॥ २ ॥
द्रुपदादिव मुमुचानः स्विन्नः स्नात्वा मलादिव ।
पूतं पवित्रेणेवाज्यं विश्वे शुम्भन्तु मैनसः ॥ ३ ॥

[११६] षोडशोत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—जाटिकायनः ॥ देवता—विवस्वान् ॥ छन्दः—१, ३ जगती; २ त्रिष्टुप् ॥

यद्यामं चक्रुर्निखनन्तो अग्रे कार्षीवणा अन्नविदो न विद्यया ।
वैवस्वते राजनि तज्जुहोम्यथ यज्ञियं मधुमदस्तु नोऽन्नम् ॥ १ ॥
वैवस्वतः कृणवद्भागधेयं मधुभागो मधुना सं सृजाति ।
यमराज्ञे हविषा यज्ञकामं ॥
यमराज्ञे हविषा आगन्यद्वा पितापराद्धो जिहीडे ॥ २ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

यदीदं मातुर्यदि वा पितुर्नः परि भ्रातुः पुत्राच्चेतस एन आगन्।
यावन्तो अस्मान्पितरः सचन्ते तेषां सर्वेषां शिवो अस्तु मन्युः॥ ३॥

[११७] सप्तदशोत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—कौशिकः (अनृणकामः)॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—त्रिष्टुप्॥

अपमित्यमप्रतीत्तं यदस्मि यमस्य येन बलिना चरामि।
इदं तदग्ने अनृणो भवामि त्वं पाशान्विचृतं वेत्थ सर्वान्॥ १॥
इहैव सन्तः प्रति दद्म एनज्जीवा जीवेभ्यो नि हराम एनत्।
अपमित्यं धान्यं यज्ञघासाहमिदं तदग्ने अनृणो भवामि॥ २॥
अनृणा अस्मिन्ननृणाः परस्मिन्तृतीये लोके अनृणाः स्याम।
ये देवयानाः पितृयाणाश्च लोकाः सर्वान्पथो अनृणा आ क्षियेम॥ ३॥

[११८] अष्टादशोत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—कौशिकः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—त्रिष्टुप्॥

यद्बस्ताभ्यां चकृम किल्बिषाण्यक्षाणां गल्तुमुपलिप्समानाः।
उग्रंपश्ये उग्रजितौ तदद्याप्सरसावनु दत्तामृणं नः॥ १॥
उग्रंपश्ये राष्ट्रभृत्किल्बिषाणि यदक्षवृत्तमनु दत्तं न एतत्।
ऋणान्नो नर्णमित्समानो यमस्य लोके अधिरज्जुरायत्॥ २॥
यस्मा ऋणं यस्य जायामुपैमि यं याचमानो अभ्यैमि देवाः।
ते वाचं वादिषुर्मोत्तरां मद्देवपत्नी अप्सरसावधीतम्॥ ३॥

[११९] एकोनविंशत्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—कौशिकः (अनृणकामः)॥ देवता—वैश्वानरोऽग्निः॥ छन्दः—त्रिष्टुप्॥

यददीव्यन्नृणमहं कृणोम्यदास्यन्नग्न उत संगृणामि।
वैश्वानरो नो अधिपा वसिष्ठ उदित्रयाति सुकृतस्य लोकम्॥ १॥
वैश्वानराय प्रति वेदयामि यद्यृणं संगरो देवतासु।
स एतान्पाशान्विचृतं वेद सर्वानथ पक्वेन सह सं भवेम॥ २॥
वैश्वानरः पवितो मा पुनातु यत्संगरमभिधावाम्याशाम्।
अनाजानन्मनसा याचमानो यत्तत्रैनो अप तत्सुवामि॥ ३॥

[१२०] विंशत्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—कौशिकः॥ देवता—अन्तरिक्षादयो मन्त्रोक्ताः॥ छन्दः—१ जगती; २ पङ्क्तिः; ३ त्रिष्टुप्॥

यदन्तरिक्षं पृथिवीमुत द्यां यन्मातरं पितरं वा जिहिंसिम।
अयं तस्माद्गार्हपत्यो नो अग्निरुदित्रयाति सुकृतस्य लोकम्॥ १॥
भूमिर्मातादितिर्नो जनित्रं भ्राता न्तरिक्षमभिशस्त्या नः।
द्यौर्नः पिता पित्र्याच्छं भवाति जामिमृत्वा माव पत्सि लोकात्॥ २॥
यत्रा सुहार्दः सुकृतो मदन्ति विहाय रोगं तन्वः स्वायाः।
अश्लोणा अङ्गैरहुताः स्वर्गे तत्र पश्येम पितरौ च पुत्रान्॥ ३॥

[१२१] एकविंशत्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—कौशिकः॥ देवता—अग्न्यादयो मन्त्रोक्ताः॥ छन्दः—१, २ त्रिष्टुप्; ३, ४ अनुष्टुप्॥

विषाणा पाशान्वि ष्याध्यस्मद्य उत्तमा अधमा वारुणा ये।
दुष्वप्न्यं दुरितं नि ष्वास्मदथं गच्छेम सुकृतस्य लोकम्॥ १॥
यदारुणि बध्यसे यच्च रज्वां यद्धूम्यां बध्यसे यच्च वाचा।
अयं तस्माद्गार्हपत्यो नो अग्निरुदित्रयाति सुकृतस्य लोकम्॥ २॥
उदगातां भगवती विचृतौ नाम तारके।
प्रेहामृतस्य यच्छतां प्रैतु बद्धकमोचनम्॥ ३॥
वि जिहीष्व लोकं कृणु बन्धान्मुञ्चासि बद्धकम्।
योन्याइव प्रच्युतो गर्भः पथः सर्वाँ अनु क्षिय॥ ४॥

[१२२] द्वाविंशत्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—भृगुः॥ देवता—विश्वकर्मा॥ छन्दः—१-३ त्रिष्टुप्; ४, ५ जगती॥

एतं भागं परि ददामि विद्वान्विश्वकर्मन्प्रथमजा ऋतस्य।
अस्माभिर्दत्तं जरसः परस्तादच्छिन्नं तन्तुमनु सं तरेम॥ १॥
ततं तन्तुमन्वेके तरन्ति येषां दत्तं पित्र्यमायनेन।
अबन्ध्वेके ददतः प्रयच्छन्तो दातुं चेच्छिक्षान्त्स स्वर्ग एव॥ २॥
अन्वारभेथामनुसंरभेथामेतं लोकं श्रद्दधानाः सचन्ते।
यद्वौ पक्वं परिविष्टमग्नौ तस्य गुप्तये दम्पती सं श्रयेथाम्॥ ३॥
यज्ञं यन्तं मनसा बृहन्तमन्वारोहामि तपसा सयोनिः।
उपहूता अग्ने जरसः परस्तात्तृतीये नाके सधमादं मदेम॥ ४॥
शुद्धाः पूता योषितो यज्ञिया इमा ब्रह्माणां हस्तेषु प्रपृथक्सादयामि।
यत्काम इदमभिषिञ्चामि वोऽहमिन्द्रो मरुत्वान्त्स ददातु तन्मे॥ ५॥

[१२३] त्रयोविंशत्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—भृगुः॥ देवता—विश्वे देवाः॥ छन्दः—१, २ त्रिष्टुप्; ३ द्विपदा-साम्न्यनुष्टुप्; ४ द्विपदाप्राजापत्याभुरिगनुष्टुप् (एकावसाना); ५ अनुष्टुप्॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

एतं सधस्थाः परि वो ददामि यं शेवधिमावहाज्जातवेदाः।
अन्वागन्ता यजमानः स्वस्ति तं स्म जानीत परमे व्योमन्॥ १॥
जानीत स्मैनं परमे व्योमन्देवाः सधस्था विद लोकमत्र।
अन्वागन्ता यजमानः स्वस्ती ष्टापूर्तं स्म कृणुताविरस्मै॥ २॥
देवाः पितरः पितरो देवाः। यो अस्मि सो अस्मि॥ ३॥
स पचामि स ददामि स यजे स दत्तान्मा यूषम् ॥ ४॥
नाकै राजन्प्रतिं तिष्ठ तत्रैतत्प्रतिं तिष्ठतु ।
विद्धि पूर्तस्य नो राजन्त्स दैव सुमना भव ॥ ५॥

[१२४] चतुर्विंशत्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा॥ देवता—दिव्या आपः॥ छन्दः—त्रिष्टुप्॥

दिवो नु मां बृहतो अन्तरिक्षादपां स्तोको अभ्यपप्तद्रसेन।
समिन्द्रियेण पयसाहमग्ने छन्दोभिर्यज्ञैः सुकृतां कृतेन॥ १॥
यदिं वृक्षाद्भ्यपप्तत्फलं तद्यद्यन्तरिक्षात्स उं वायुरेव।
यत्रास्पृक्षत्तन्वो३ यच्च वासस आपो नुदन्तु निर्ऋतिं पराचैः॥ २॥
अभ्यञ्जनं सुरभि सा समृद्धिर्हिरण्यं वर्चस्तदु पूत्रिममेव।
सर्वा पवित्रा वितताध्यस्मत्तन्मा तारीन्निर्ऋतिर्मो अरातिः॥ ३॥

अथ त्रयोदशोऽनुवाकः [१२५] पञ्चविंशत्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा॥ देवता—वनस्पतिः॥ छन्दः—१, ३ त्रिष्टुप्; २ जगती॥

वनस्पते वीड्वङ्गो हि भूया अस्मत्सखा प्रतरणः सुवीरः।
गोभिः संनद्धो असि वीडयस्वास्थाता तें जयतु जेत्वानि॥ १॥
दिवस्पृथिव्याः पर्योज उद्भृतं वनस्पतिभ्यः पर्याभृतं सहः।
अपामोज्मानं परि गोभिरावृतमिन्द्रस्य वज्रं हविषा रथं यज॥ २॥
इन्द्रस्यौजो मरुतामनीकं मित्रस्य गर्भो वरुणस्य नाभिः।
स इमां नो हव्यदातिं जुषाणो देव रथ प्रति हव्या गृभाय॥ ३॥

[१२६] षड्विंशत्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा॥ देवता—दुन्दुभिः॥ छन्दः—१, २ भुरिक्त्रिष्टुप्; ३ पुरोबृहतीगर्भात्रिष्टुप्॥

उप श्वासय पृथिवीमुत द्यां पुरुत्रा ते वन्वतां विष्ठितं जगत्।
स दुन्दुभे सजूरिन्द्रेण देवैर्दूराद्दवीयो अप सेध शत्रून्॥ १॥
आ क्रन्दय बलमोजो न आ धा अभि ष्टन दुरिता बाधमानः।
अप सेध दुन्दुभे दुच्छुनामित इन्द्रस्य मुष्टिरसि वीडयस्व॥ २॥
प्रामूं जयाभी३मे जयन्तु केतुमद्दुन्दुभिर्वावदीतु ।
समश्वपर्णाः पतन्तु नो नरोऽस्माकमिन्द्र रथिनो जयन्तु॥ ३॥

[१२७] सप्तविंशत्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—भृग्वङ्गिराः॥ देवता—वनस्पतिः; यक्ष्मनाशनम्॥ छन्दः—१, २ अनुष्टुप्; ३ षट्पदाजगती॥

विद्रधस्य बलासस्य लोहितस्य वनस्पते।
विसल्पकस्योषधे मोच्छिषः पिशितं चन॥ १॥
यौ ते बलास तिष्ठतः कक्षे मुष्कावपाश्रितौ।
वेदाहं तस्य भेषजं चीपुद्रुरभिचक्षणम्॥ २॥
यो अङ्ग्यो यः कण्र्यो यो अक्ष्योर्विसल्पकः।
वि वृहामो विसल्पकं विद्रधं हृदयामयम्।
परा तमज्ञातं यक्ष्ममधराञ्चं सुवामसि॥ ३॥

[१२८] अष्टाविंशत्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—अङ्गिराः॥ देवता—शकधूमः, सोमः॥ छन्दः—अनुष्टुप्॥

शकधूमं नक्षत्राणि यद्राजानमकुर्वत ।
भद्राहमस्मै प्रायच्छन्निदं राष्ट्रमसादिति ॥ १॥
भद्राहं नो मध्यन्दिने भद्राहं सायमस्तु नः।
भद्राहं नो अह्नां प्राता रात्री भद्राहमस्तु नः॥ २॥
अहोरात्राभ्यां नक्षत्रेभ्यः सूर्याचन्द्रमसाभ्याम्।
भद्राहमस्मभ्यं राजञ्छकधूम त्वं कृधि ॥ ३॥
यो नो भद्राहमकरः सायं नक्तमथो दिवा।
तस्मै ते नक्षत्रराज शकधूम सदा नमः॥ ४॥

[१२९] एकोनत्रिंशदुत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा॥ देवता—भगः॥ छन्दः—अनुष्टुप्॥

भगेन मा शांशपेन साकमिन्द्रेण मेदिना।
कृणोमि भगिनं मापं द्रान्त्वरातयः॥ १॥
येन वृक्षाँ अभ्यभवो भगेन वर्चसा सह।
तेन मा भगिनं कृण्वपं द्रान्त्वरातयः॥ २॥
यो अन्धो यः पुनःसरो भगो वृक्षेष्वाहितः।
तेन मा भगिनं कृण्वपं द्रान्त्वरातयः॥ ३॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

[१३०] त्रिंशदुत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा॥ देवता—स्मरः॥ छन्दः—१ विराट्पुरस्ताद्बृहती; २-४ अनुष्टुप्॥

रथजितां राथजितेयीनामप्सरसामयं स्मरः।
देवाः प्र हिणुत स्मरमसौ मामनु शोचतु॥ १॥
असौ मे स्मरतादिति प्रियो मे स्मरतादिति।
देवाः प्र हिणुत स्मरमसौ मामनु शोचतु॥ २॥
यथा मम स्मरादसौ नामुष्याहं कदा चन।
देवाः प्र हिणुत स्मरमसौ मामनु शोचतु॥ ३॥
उन्मादयत मरुत उदन्तरिक्ष मादय ।
अग्न उन्मादयात्वमसौ मामनु शोचतु ॥ ४॥

[१३१] एकत्रिंशदुत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा॥ देवता—स्मरः॥ छन्दः—अनुष्टुप्॥

नि शीर्षतो नि पत्तत आध्योः३ नि तिरामि ते।
देवाः प्र हिणुत स्मरमसौ मामनु शोचतु॥ १॥
अनुमतेऽन्विदं मन्यस्वाकूते समिदं नमः।
देवाः प्र हिणुत स्मरमसौ मामनु शोचतु॥ २॥
यद्धावसि त्रियोजनं पञ्चयोजनमाश्विनम्।
ततस्त्वं पुनरायसि पुत्राणां नो असः पिता॥ ३॥

[१३२] द्वात्रिंशदुत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा॥ देवता—स्मरः॥ छन्दः—१ त्रिपादनुष्टुप्; २, ४, ५ (महा)बृहती; ३ भुरिगनुष्टुप्॥

यं देवाः स्मरमसिञ्चन्नप्स्वन्तः शोशुचानं सहाध्या।
तं तें तपामि वरुणस्य धर्मणा ॥ १॥
यं विश्वे देवाः स्मरमसिञ्चन्नप्स्वन्तः शोशुचानं सहाध्या।
तं तें तपामि वरुणस्य धर्मणा ॥ २॥
यमिन्द्राणी स्मरमसिञ्चदप्स्वन्तः शोशुचानं सहाध्या।
तं तें तपामि वरुणस्य धर्मणा ॥ ३॥
यमिन्द्राग्नी स्मरमसिञ्चतामप्स्वन्तः शोशुचानं सहाध्या।
तं तें तपामि वरुणस्य धर्मणा ॥ ४॥
यं मित्रावरुणौ स्मरमसिञ्चतामप्स्वन्तः शोशुचानं सहाध्या।
तं तें तपामि वरुणस्य धर्मणा ॥ ५॥

[१३३] त्रयस्त्रिंशदुत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—अगस्त्यः॥ देवता—मेखला॥ छन्दः—१ भुरिक्त्रिष्टुप्; २, ५ अनुष्टुप्; ३ त्रिष्टुप्; ४ जगती॥

य इमां देवो मेखलामाबबन्ध यः संननाह य उ नो युयोज।
यस्य देवस्य प्रशिषा चरामः स पारमिच्छात्स उ नो वि मुञ्चात्॥ १॥
आहुतास्यभिहुत ऋषीणामस्यायुधम् ।
पूर्वी व्रतस्य प्राश्नती वीरघ्नी भव मेखले ॥ २॥
मृत्योरहं ब्रह्मचारी यदस्मि निर्याचन्भूतात्पुरुषं यमाय।
तमहं ब्रह्मणा तपसा श्रमेणानयैनं मेखलया सिनामि॥ ३॥
श्रद्धायां दुहिता तपसोऽधि जाता स्वसऋषीणां भूतकृतां बभूव।
सा नो मेखले मतिमा धेहि मेधामथो नो धेहि तप इन्द्रियं च॥ ४॥
यां त्वा पूर्वे भूतकृत ऋषयः परिबेधिरे ।
सा त्वं परि ष्वजस्व मां दीर्घायुत्वाय मेखले ॥ ५॥

[१३४] चतुस्त्रिंशदुत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—शुक्रः॥ देवता—वज्रः॥ छन्दः—१ परानुष्टुब्विष्टुप्; २ भुरिक्त्रिपदागायत्री; ३ अनुष्टुप्॥

अयं वज्रस्तर्पयतामृतस्यावास्य राष्ट्रमप हन्तु जीवितम्।
शृणातु ग्रीवाः प्र शृणातूष्णिहा वृत्रस्येव शचीपतिः॥ १॥
अधरोऽधर उत्तरेभ्यो गूढः पृथिव्या मोत्सृपत् ।
वज्रेणावहतः शयाम् ॥ २॥
यो जिनाति तमन्विच्छ यो जिनाति तमिज्जहि ।
जिनतो वज्र त्वं सीमन्तमन्वञ्चमनु पातय ॥ ३॥

[१३५] पञ्चत्रिंशदुत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—शुक्रः॥ देवता—वज्रः॥ छन्दः—अनुष्टुप्॥

यदश्नामि बलं कुर्व इत्थं वज्रमा ददे।
स्कन्धानमुष्य शातयन्वृत्रस्येव शचीपतिः ॥ १॥
यत्पिबामि सं पिबामि समुद्रइव संपिबः।
प्राणानमुष्य संपाय सं पिबामो अमुं वयम्॥ २॥
यद्गिरामि सं गिरामि समुद्रइव संगिरः।
प्राणानमुष्य संगीर्य सं गिरामो अमुं वयम्॥ ३॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

[१३६] षट्त्रिंशदुत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—वीतहव्यः (केशवर्धनकामः)॥ देवता—नितत्नी वनस्पतिः॥ छन्दः—१, ३ अनुष्टुप्; २ द्विपदासाम्नीबृहती (एकावसाना)॥

देवी देव्यामधि जाता पृथिव्यामस्योषधे।
तां त्वा नितत्नि केशेभ्यो दृंहणाय खनामसि॥ १॥
दृंह प्रत्नाञ्जनयाजातान्नु वर्धीयसस्कृधि॥ २॥
यस्ते केशोऽवपद्यते समूलो यश्च वृश्चते।
इदं तं विश्वभेषन्याभि षिञ्चामि वीरुधा॥ ३॥

[१३७] सप्तत्रिंशदुत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—वीतहव्यः (केशवर्धनकामः)॥ देवता—नितत्नी वनस्पतिः॥ छन्दः—अनुष्टुप्॥

यां जमदग्निरखनद्रुहित्रे केशवर्धनीम्।
तां वीतहव्य आभरदसितस्य गृहेभ्यः॥ १॥
अभीशूना मेया आसन्व्यामेनानुमेयाः।
केशा नडाइव वर्धन्तां शीर्ष्णस्ते असिताः परि॥ २॥
दृंह मूलमाग्रं यच्छ वि मध्यं यामयौषधे।
केशा नडाइव वर्धन्तां शीर्ष्णस्ते असिताः परि॥ ३॥

[१३८] अष्टात्रिंशदुत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा॥ देवता—वनस्पतिः॥ छन्दः—१, २, ४, ५ अनुष्टुप्; ३ पथ्यापङ्क्तिः॥

त्वं वीरुधां श्रेष्ठतमाभिश्रुतास्योषधे।
इमं मे अद्य पूरुषं क्लीबमोषधिनं कृधि॥ १॥
क्लीबं कृण्वोषधिनमथो कुरीरिणं कृधि।
अथास्येन्द्रो ग्रावभ्यामुभे भिनत्त्वाण्ड्यौ॥ २॥
क्लीबं क्लीबं त्वाकरं वध्रे वधिं त्वाकरमरसारसं त्वाकरम्।
कुरीरमस्य शीर्षणि कुम्बं चाधिनिदध्मसि॥ ३॥
ये तें नाड्यौ देवकृते ययोस्तिष्ठति वृष्ण्यम्।
ते तें भिनद्मि शम्ययामुष्या अधि मुष्कयोः॥ ४॥
यथा नडं कशिपुने स्त्रियो भिन्दन्त्यश्मना।
एवा भिनद्मि ते शेपोऽमुष्या अधि मुष्कयोः॥ ५॥

[१३९] एकोनचत्वारिंशदुत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा॥ देवता—वनस्पतिः॥ छन्दः—१ षट्पदाविराड्जगती; २-५ अनुष्टुप्॥

न्यस्तिका रुरोहिथ सुभगंकरणी मम।
शतं तवं प्रतानास्त्रयस्त्रिंशन्नितानाः।
तया सहस्रपुण्र्या हृदयं शोषयामि ते॥ १॥
शुष्यतु मयि ते हृदयमथो शुष्यत्वास्यम्।
अथो नि शुष्य मां कामेनाथो शुष्कास्या चर॥ २॥
संवनंनी समुष्पला बभ्रु कल्याणि सं नुद।
अमूं च मां च सं नुद समानं हृदयं कृधि॥ ३॥
यथोदकमपपुषोऽपशुष्यत्यास्यम्।
एवा नि शुष्य मां कामेनाथो शुष्कास्या चर॥ ४॥
यथा नकुलो विच्छिद्य संदधात्यहिं पुनः।
एवा कामस्य विच्छिन्नं सं धेहि वीर्यावति॥ ५॥

[१४०] चत्वारिंशदुत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा॥ देवता—ब्रह्मणस्पतिः, दन्ताः॥ छन्दः—१ उरोबृहती; २ उपरिष्टाज्ज्योतिष्मती त्रिष्टुप्; ३ आस्तारपङ्क्तिः॥

यौ व्याघ्रावबरूढौ जिघत्सतः पितरं मातरं च।
तौ दन्तौ ब्रह्मणस्पते शिवौ कृणु जातवेदः॥ १॥
व्रीहिमत्तं यवमत्तमथो माषमथो तिलम्।
एष वां भागो निहितो रत्नधेयाय दन्तौ मा हिंसिष्टं पितरं मातरं च॥ २॥
उपहूतौ सयुजौ स्योनौ दन्तौ सुमङ्गलौ।
अन्यत्र वां घोरं तन्वः परैतु दन्तौ मा हिंसिष्टं पितरं मातरं च॥ ३॥

[१४१] एकचत्वारिंशदुत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—विश्वामित्रः॥ देवता—अश्विनौ॥ छन्दः—अनुष्टुप्॥

वायुरेनाः समाकरत्त्वष्टा पोषाय धियताम्।
इन्द्र आभ्यो अधि ब्रवद्रुद्रो भूम्ने चिकित्सतु॥ १॥
लोहितेन स्वधितिना मिथुनं कर्णयोः कृधि।
अकर्तामश्विना लक्ष्म तदस्तु प्रजया बहु॥ २॥
यथा चक्रुर्देवासुरा यथा मनुष्या उत।
एवा सहस्रपोषाय कृणुतं लक्ष्माश्विना॥ ३॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

[१४२] द्विचत्वारिंशदुत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—विश्वामित्रः॥ देवता—वायुः॥ छन्दः—अनुष्टुप्॥

उच्छ्रयस्व बहुर्भव स्वेन महसा यव ।
मृणीहि विश्वा पात्राणि मा त्वा दिव्याशनिर्वधीत्॥ १॥
आशृण्वन्तं यवं देवं यत्र त्वाच्छावदामसि ।
तदुच्छ्रयस्व द्यौरिव समुद्रइवैध्यक्षितः॥ २॥
अक्षितास्त उपसदोऽक्षिताः सन्तु राशयः ।
पूणन्तो अक्षिताः सन्त्वत्तारः सन्त्वक्षिताः॥ ३॥

इति पञ्चदशः प्रपाठकः॥

॥ इति षष्ठं काण्डम्॥

अथ सप्तमं काण्डम्

अथ षोडशः प्रपाठकः॥

अथ प्रथमोऽनुवाकः [१] प्रथमं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा (ब्रह्मवर्चसकामः)॥ देवता—आत्मा॥ छन्दः—१ त्रिष्टुप्; २ विराड्जगती॥

धीती वा ये अनयन्वाचो अग्रं मनसा वा येऽवदन्नृतानि।
तृतीयेन ब्रह्मणा वावृधानास्तुरीयेणामन्वत नाम धेनोः॥ १॥
स वेद पुत्रः पितरं स मातरं स सूनुर्भुवत्स भुवत्पुनर्मघः।
स द्यामौर्णोदन्तरिक्षं स्वर्१ः स इदं विश्वमभवत्स आभवत्॥ २॥

[२] द्वितीयं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा (ब्रह्मवर्चसकामः)॥ देवता—आत्मा॥ छन्दः—त्रिष्टुप्॥

अथर्वाणं पितरं देवबन्धुं मातुर्गर्भं पितुरसुं युवानम्।
य इमं यज्ञं मनसा चिकेत प्र णो वोचस्तमिहेह ब्रवः॥ १॥

[३] तृतीयं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा (ब्रह्मवर्चसकामः)॥ देवता—आत्मा॥ छन्दः—त्रिष्टुप्॥

अया विष्ठा जनयन्कर्वराणि स हि घृणिरुरुवराय गातुः।
स प्रत्युदैद्धरुणं मध्वो अग्रं स्वया तन्वा तन्वं मैरयत॥ १॥

[४] चतुर्थं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा (ब्रह्मवर्चसकामः)॥ देवता—वायुः॥ छन्दः—त्रिष्टुप्॥

एकया च दशभिश्चा सुहुते द्वाभ्यामिष्टये विंशत्या चं।
तिसृभिश्च वहसे त्रिंशता च वियुग्भिर्वाय इह ता वि मुञ्च॥ १॥

[५] पञ्चमं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा (ब्रह्मवर्चसकामः)॥ देवता—आत्मा॥ छन्दः—१, २, ५ त्रिष्टुप्; ३ पङ्क्तिः; ४ अनुष्टुप्॥

यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।
ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः॥ १॥
यज्ञो बभूव स आ बभूव स प्र जज्ञे स उ वावृधे पुनः।
स देवानां॥ धिपतिर्बभूव सो अस्मासु द्रविणमा दधातु॥ २॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

यद्देवा देवान्हविषायजन्तामर्त्यान्मनसामर्त्येन।
मदेम तत्र परमे व्योमन्पश्येम तदुदितौ सूर्यस्य॥ ३॥
यत्पुरुषेण हविषा यज्ञं देवा अतन्वत।
अस्ति नु तस्मादोजीयो यद्विहव्येनेजिरे ॥४॥
मुग्धा देवा उत शुनायजन्तोत गोरङ्गैः पुरुधायजन्त।
य इमं यज्ञं मनसा चिकेत प्र णो वोचस्तमिहेह ब्रवः॥५॥

[६] षष्ठं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा (ब्रह्मवर्चसकामः)॥ देवता—अदितिः॥ छन्दः—१ त्रिष्टुप्; २ भुरिक्त्रिष्टुप्; ३, ४ विराड्जगती॥

अदितिर्द्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिर्माता स पिता स पुत्रः।
विश्वे देवा अदितिः पञ्च जना अदितिर्जातमदितिर्जनित्वम्॥ १॥
महीमू षु मातरं सुव्रतानामृतस्य पत्नीमवसे हवामहे।
तुविक्षत्रामजरन्तीमुरूचीं सुशर्माणमदितिं सुप्रणीतिम् ॥२॥
सुत्रामाणं पृथिवीं द्यामनेहसं सुशर्माणमदितिं सुप्रणीतिम्।
दैवीं नावं स्वरित्रामनागसो अस्रवन्तीमा रुहेमा स्वस्तये॥ ३॥
वाजस्य नु प्रसवे मातरं महीमदितिं नाम वचसा करामहे।
यस्या उपस्थ उर्व१न्तरिक्षं सा नः शर्म त्रिवरूथं नि यच्छात्॥ ४॥

[७] सप्तमं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा (ब्रह्मवर्चसकामः)॥ देवता—अदितिः॥ छन्दः—आर्षीजगती॥

दितेः पुत्राणामदितेरकार्षमव देवानां बृहतामनर्मणाम् ।
तेषां हि धाम गभिषक्समुद्रियं नैनान्नमसा परो अस्ति कश्चन॥ १॥

[८] अष्टमं सूक्तम्

ऋषिः—उपरिबभ्रवः॥ देवता—बृहस्पतिः॥ छन्दः—त्रिष्टुप्॥

भद्रादधि श्रेयः प्रेहि बृहस्पतिः पुरएता ते अस्तु ।
अथेममस्या वर आ पृथिव्या आरेशत्रुं कृणुहि सर्ववीरम्॥ १॥

[९] नवमं सूक्तम्

ऋषिः—उपरिबभ्रवः॥ देवता—पूषा॥ छन्दः—१, २ त्रिष्टुप्; ३ त्रिपदाऽऽर्षीगायत्री; ४ अनुष्टुप्॥

प्रपथे पथामजनिष्ट पूषा प्रपथे दिवः प्रपथे पृथिव्याः।
उभे अभि प्रियतमे सधस्थे आ च परा च चरति प्रजानन्॥ १॥
पूषेमा आशा अनु वेद सर्वाः सो अस्माँ अभयतमेन नेषत्।
स्वस्तिदा आघृणिः सर्ववीरोऽप्रयुच्छन्पुर एतु प्रजानन्॥ २॥
पूषन्तव व्रते वयं न रिष्येम कदा चन। स्तोतारस्त इह स्मसि॥ ३॥
परि पूषा परस्ताद्धस्तं दधातु दक्षिणम् ।
पुनर्नो नष्टमाजतु सं नष्टेन गमेमहि ॥४॥

[१०] दशमं सूक्तम्

ऋषिः—शौनकः॥ देवता—सरस्वती॥ छन्दः—त्रिष्टुप्॥

यस्ते स्तनः शशयुर्यो मयोभूर्यः सुम्नयुः सुहवो यः सुदत्रः।
येन विश्वा पुष्यसि वार्याणि सरस्वति तमिह धातवे कः॥ १॥

[११] एकादशं सूक्तम्

ऋषिः—शौनकः॥ देवता—सरस्वती॥ छन्दः—त्रिष्टुप्॥

यस्ते पृथु स्तनयित्नुर्य ऋष्वो दैवः केतुर्विश्वमाभूषतीदम्।
मा नो वधीर्विद्युता देव सस्यं मोत वधी रश्मिभिः सूर्यस्य॥ १॥

[१२] द्वादशं सूक्तम्

ऋषिः—शौनकः॥ देवता—१ सभा, समितिः, पितरश्च; २ सभा; ३ इन्द्रः; ४ मनः॥ छन्दः—१ भुरिक्त्रिष्टुप् २-४ अनुष्टुप्॥

सभा च मा समितिश्चावतां प्रजापतेर्दुहितरौ संविदाने।
येना संगच्छा उप मा स शिक्षाच्चारु वदानि पितरः संगतेषु॥ १॥
विद्म ते सभे नाम नरिष्टा नाम वा असि ।
ये ते के च सभासदस्ते मे सन्तु सवाचसः ॥२॥
एषामहं समासीनानां वर्चो विज्ञानमा ददे ।
अस्याः सर्वस्याः संसदो मामिन्द्र भगिनं कृणु॥ ३॥
यद्वो मनः परागतं यद्बद्धमिह वेह वा ।
तद्व आ वर्तयामसि मयि वो रमतां मनः ॥४॥

[१३] त्रयोदशं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा (द्विषो वर्चोहर्तुकामः)॥ देवता—सूर्यः॥ छन्दः—अनुष्टुप्॥

यथा सूर्यो नक्षत्राणामुद्यंस्तेजांस्याददे ।
एवा स्त्रीणां च पुंसां च द्विषतां वर्च आ ददे॥ १॥
यावन्तो मा सपत्नानामायन्तं प्रतिपश्यथ।
उद्यन्त्सूर्य इव सुप्तानां द्विषतां वर्च आ ददे॥ २॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अथ द्वितीयोऽनुवाकः [१४] चतुर्दशं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा॥ देवता—सविता॥ छन्दः—१, २ अनुष्टुप्; ३ त्रिष्टुप्; ४ जगती॥

अभि त्यं देवं सवितारमोण्योः कविक्रतुम्। अर्चामि सत्यसवं रत्नधामभि प्रियं मतिम्॥१॥
ऊर्ध्वा यस्यामतिर्भा अदिद्युतत्सवीमनि। हिरण्यपाणिरमिमीत सुक्रतुः कृपात्स्वः॥२॥
सावीर्हि देव प्रथमाय पित्रे वर्ष्माणमस्मै वरिमाणमस्मै।
अथास्मभ्यं सवितर्वार्याणि दिवोदिव आ सुवा भूरि पश्वः॥३॥
दमूना देवः सविता वरेण्यो दधद्रत्नं दक्षं पितृभ्य आयूंषि।
पिबात्सोमं ममददेनमिष्टे परिज्मा चित् क्रमते अस्य धर्मणि॥४॥

[१५] पञ्चदशं सूक्तम्

ऋषिः—भृगुः॥ देवता—सविता॥ छन्दः—त्रिष्टुप्॥

तां सवितः सत्यसवां सुचित्रामाहं वृणे सुमतिं विश्ववाराम्।
यामस्य कण्वो अदुहत्प्रपीनां सहस्रधारां महिषो भगाय॥१॥

[१६] षोडशं सूक्तम्

ऋषिः—भृगुः॥ देवता—सविता॥ छन्दः—त्रिष्टुप्॥

बृहस्पते सवितर्वर्धयैनं ज्योतयैनं महते सौभगाय।
संशितं चित्संतरं सं शिशाधि विश्व एनमनु मदन्तु देवाः॥१॥

[१७] सप्तदशं सूक्तम्

ऋषिः—भृगुः॥ देवता—धात्रादयो मन्त्रोक्ताः॥ छन्दः—१ त्रिपदाऽऽर्षीगायत्री; २ अनुष्टुप्; ३, ४ त्रिष्टुप्॥

धाता ददातु नो रयिमीशानो जगत्पतिः। स नः पूर्णेन यच्छतु॥१॥
धाता ददातु दाशुषे प्राचीं जीवातुमक्षिताम्। वयं देवस्य धीमहि सुमतिं विश्वराधसः॥२॥
धाता विश्वा वार्या दधातु प्रजाकामाय दाशुषे दुरोणे।
तस्मै देवा अमृतं सं व्ययन्तु विश्वे देवा अदितिः सजोषाः॥३॥
धाता रातिः सवितेदं जुषन्तां प्रजापतिर्निधिपतिर्नो अग्निः।
त्वष्टा विष्णुः प्रजया संरराणो यजमानाय द्रविणं दधातु॥४॥

[१८] अष्टादशं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा॥ देवता—पृथिवी, पर्जन्यः॥ छन्दः—१ चतुष्पाद्भुरिगुष्णिक्; २ त्रिष्टुप्॥

प्र नभस्व पृथिवि भिन्द्धीदं दिव्यं नभः। उद्नो दिव्यस्य नो धातरीशानो वि ष्या दृतिम्॥१॥
न ग्रभायताप न हिंसो जघान प्र नभतां पृथिवी जीरदानुः।
आपश्चिदस्मै घृतमित्क्षरन्ति यत्र सोमः सदमित्तत्र भद्रम्॥२॥

[१९] एकोनविंशं सूक्तम्

ऋषिः—ब्रह्मा॥ देवता—प्रजापतिः, धाता॥ छन्दः—जगती॥

प्रजापतिर्जनयति प्रजा इमा धाता ददातु सुमनस्यमानः।
संजानानाः संमनसः सयोनयो मयि पुष्टं पुष्टपतिर्दधातु॥१॥

[२०] विंशं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा॥ देवता—अनुमतिः॥ छन्दः—१, २ अनुष्टुप्; ३ त्रिष्टुप्; ४ भुरिक्त्रिष्टुप्; ५ जगती; ६ अतिशाक्वरगर्भाजगती॥

अन्वद्य नोऽनुमतिर्यज्ञं देवेषु मन्यताम्। अग्निश्च हव्यवाहनो भवतां दाशुषे मम॥१॥
अन्विदनुमते त्वं मंसासे शं च नस्कृधि। जुषस्व हव्यमाहुतं प्रजां देवि ररास्व नः॥२॥
अनु मन्यतामनुमन्यमानः प्रजावन्तं रयिमक्षीयमाणम्।
तस्य वयं हेडसि मापि भूम सुमृडीके अस्य सुमतौ स्याम॥३॥
यत्ते नाम सुहवं सुप्रणीतेऽनुमते अनुमतं सुदानु।
तेना नो यज्ञं पिपृहि विश्ववारे रयिं नो धेहि सुभगे सुवीरम्॥४॥
एमं यज्ञमनुमतिर्जगाम सुक्षेत्रतायै सुवीरतायै सुजातम्।
भद्रा ह्यस्याः प्रमतिर्बभूव सेमं यज्ञमवतु देवगोपा॥५॥
अनुमतिः सर्वमिदं बभूव यत्तिष्ठति चरति यदु च विश्वमेजति।
तस्यास्ते देवि सुमतौ स्यामानुमते अनु हि मंसासे नः॥६॥

[२१] एकविंशं सूक्तम्

ऋषिः—ब्रह्मा॥ देवता—आत्मा॥ छन्दः—शक्वरीविराड्गर्भाजगती॥

समेतु विश्वे वचसा पतिं दिव एको विभूरतिथिर्जनानाम्।
स पूर्व्यो नूतनमाविवासत्तं वर्तनिरनु वावृत एकमित्पुरु॥१॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

[२२] द्वाविंशं सूक्तम्

ऋषिः—ब्रह्मा ॥ देवता—लिङ्गोक्ताः, (ब्रध्नः) ॥ छन्दः—१ द्विपदाविराड्गायत्री (एकावसाना); २ त्रिपदाऽनुष्टुप् ॥

अयं सहस्रमा नो दृशे कवीनां मतिर्ज्योतिर्विधर्मणि ॥ १ ॥
ब्रध्नः समीचीरुषसः समैरयन् ।
अरेपसः सचेतसः स्वसरे मन्युमत्तमाश्चिते गोः ॥ २ ॥

अथ तृतीयोऽनुवाकः [२३] त्रयोविंशं सूक्तम्

ऋषिः—यमः ॥ देवता—दुःष्वप्ननाशनम् ॥ छन्दः—अनुष्टुप् ॥

दौर्ष्वप्न्यं दौर्जीवित्यं रक्षो अभ्वं मराय्यः ।
दुर्णाम्नीः सर्वा दुर्वाचस्ता अस्मन्नाशयामसि ॥ १ ॥

[२४] चतुर्विंशं सूक्तम्

ऋषिः—ब्रह्मा ॥ देवता—सविता ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥

यत्र इन्द्रो अखनद्यदुग्रिर्विश्वे देवा मरुतो यत्स्वर्काः ।
तदस्मभ्यं सविता सत्यधर्मा प्रजापतिरनुमतिर्नि यच्छात् ॥ १ ॥

[२५] पञ्चविंशं सूक्तम्

ऋषिः—मेधातिथिः ॥ देवता—विष्णुः ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥

ययोरोजसा स्कभिता रजांसि यौ वीर्यैर्वीरतमा शविष्ठा ।
यौ पत्येते अप्रतीतौ सहोभिर्विष्णुमगन्वरुणं पूर्वहूतिः ॥ १ ॥
यस्येदं प्रदिशि यद्विरोचते प्र चानति वि च चष्टे शचीभिः ।
पुरा देवस्य धर्मणा सहोभिर्विष्णुमगन्वरुणं पूर्वहूतिः ॥ २ ॥

[२६] षड्विंशं सूक्तम्

ऋषिः—मेधातिथिः ॥ देवता—विष्णुः ॥ छन्दः—१, ८ त्रिष्टुप्; २ त्रिपदाविराड्गायत्री; ३ षट्पदाविराट्शक्वरी; ४-७ गायत्री ॥

विष्णोर्नु कं प्रा वोचं वीर्याणि यः पार्थिवानि विममे रजांसि ।
यो अस्कभायदुत्तरं सधस्थं विचक्रमाणस्त्रेधोरुगायः ॥ १ ॥
प्र तद्विष्णु स्तवते वीर्येण मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः ।
परावत आ जगम्यात्परस्याः ॥ २ ॥
यस्योरुषु त्रिषु विक्रमणेष्वधिक्षियन्ति भुवनानि विश्वा ।
उरु विष्णो वि क्रमस्वोरु क्षयाय नस्कृधि ।
घृतं घृतयोने पिब प्रप्र यज्ञपतिं तिर ॥ ३ ॥
इदं विष्णुर्वि चक्रमे त्रेधा नि दधे पदा । समूढमस्य पांसुरे ॥ ४ ॥
त्रीणि पदा वि चक्रमे विष्णुर्गोपा अदाभ्यः । इतो धर्माणि धारयन् ॥ ५ ॥
विष्णोः कर्माणि पश्यत यतो व्रतानि पस्पशे । इन्द्रस्य युज्यः सखा ॥ ६ ॥
तद्विष्णोः परमं पदं सदा पश्यन्ति सूरयः । दिवीव चक्षुराततम् ॥ ७ ॥
दिवो विष्ण उत वा पृथिव्या महो विष्ण उरोरन्तरिक्षात् ।
हस्तौ पृणस्व बहुभिर्वसव्यैराप्रयच्छ दक्षिणादोत सव्यात् ॥ ८ ॥

[२७] सप्तविंशं सूक्तम्

ऋषिः—मेधातिथिः ॥ देवता—इडा ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥

इडैवास्माँ अनु वस्तां व्रतेन यस्याः पदे पुनते देवयन्तः ।
घृतपदी शक्वरी सोमपृष्ठोप यज्ञमस्थित वैश्वदेवी ॥ १ ॥

[२८] अष्टाविंशं सूक्तम्

ऋषिः—मेधातिथिः ॥ देवता—वेदः ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥

वेदः स्वस्तिर्द्रुघणः स्वस्तिः परशुर्वेदिः परशुर्नः स्वस्ति ।
हविष्कृतो यज्ञिया यज्ञकामास्ते देवासो यज्ञमिमं जुषन्ताम् ॥ १ ॥

[२९] एकोनत्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—मेधातिथिः ॥ देवता—अग्राविष्णू ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥

अग्राविष्णू महि तद्वां महित्वं पाथो घृतस्य गुह्यस्य नाम ।
दमेदमे सप्त रत्ना दधानौ प्रति वां जिह्वा घृतमा चरण्यात् ॥ १ ॥
अग्राविष्णू महि धाम प्रियं वां वीथो घृतस्य गुह्या जुषाणौ ।
दमेदमे सुष्टुत्या वावृधानौ प्रति वां जिह्वा घृतमुच्चरण्यात् ॥ २ ॥

[३०] त्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—भृग्वङ्गिराः ॥ देवता—द्यावापृथिवी, मित्रः, ब्रह्मणस्पतिः, सविता च ॥ छन्दः—बृहती ॥

स्वाक्तं मे द्यावापृथिवी स्वाक्तं मित्रो अकरयम् ।
स्वाक्तं मे ब्रह्मणस्पतिः स्वाक्तं सविता करत् ॥ १ ॥

[३१] एकत्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—भृग्वङ्गिराः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—भुरिक्त्रिष्टुप् ॥

इन्द्रोतिभिर्बहुलाभिर्नो अद्य यावच्छ्रेष्ठाभिर्मघवञ्छूर जिन्व ।
यो नो द्वेष्यधरः सस्पदीष्ट यमु द्विष्मस्तमु प्राणो जहातु ॥ १ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

[३२] द्वात्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—ब्रह्मा॥ देवता—आयुः॥ छन्दः—अनुष्टुप्॥

उप॑ प्रि॒यं पनि॑प्रतं॒ युवा॑नमाहुती॒वृध॑म्।
अग॑न्म॒ बिभ्र॑तो॒ नमो॑ दी॒र्घमायुः॑ कृणोतु मे॥ १॥

[३३] त्रयस्त्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—ब्रह्मा॥ देवता—मरुतः, पूषा, बृहस्पतिः, अग्निश्च॥ छन्दः—पथ्यापङ्क्तिः॥

सं मा॑ सिञ्चन्तु म॒रुतः॒ सं पू॒षा सं बृह॒स्पतिः॑ ।
सं मा॒यम॒ग्निः सि॑ञ्चतु प्र॒जया॑ च॒ धने॑न च दी॒र्घमायुः॑ कृणोतु मे॥ १॥

[३४] चतुस्त्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा॥ देवता—जातवेदाः॥ छन्दः—जगती॥

अग्ने॑ जा॒तान्प्र णु॑दा मे स॒पत्नान्प्रत्यजा॑ताञ्जातवेदो नुदस्व।
अ॒ध॒स्प॒दं कृ॑णुष्व॒ ये पृ॑त॒न्यवोऽना॑गस॒स्ते व॒यमदि॑तये स्याम॥ १॥

[३५] पञ्चत्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा॥ देवता—जातवेदाः॥ छन्दः—१, ३ त्रिष्टुप्; २ अनुष्टुप्॥

प्रान्यान्त्स॒पत्ना॒न्त्सह॑सा॒ सह॑स्व॒ प्रत्यजा॑ताञ्जातवेदो नुदस्व।
इ॒दं रा॒ष्ट्रं पि॑पृ॒हि सौभ॑गाय॒ विश्व॑ एन॒मनु॑ मदन्तु दे॒वाः॥ १॥
इ॒मा यास्ते॑ श॒तं हि॒राः स॒हस्रं॑ ध॒मनी॑रु॒त ।
तासां॑ ते॒ सर्वा॑साम॒हमश्म॑ना॒ बिल॒मप्य॑धाम् ॥ २॥
परं॒ योने॒रव॑रं ते कृणोमि॒ मा त्वा॑ प्र॒जाभि भू॒न्मोत सूनुः॑।
अ॒स्वं१॒॑ त्वाप्र॑जसं कृणो॒म्यश्मा॑नं ते अपि॒धानं॑ कृणोमि॥ ३॥

[३६] षट्त्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा॥ देवता—अक्षि, मनः॥ छन्दः—अनुष्टुप्॥

अ॒क्ष्यौ॑ नौ॒ मधु॑संकाशे॒ अनी॑कं नौ स॒मञ्ज॑नम्।
अ॒न्तः कृ॑णुष्व॒ मां हृ॒दि मन॒ इन्नौ॑ स॒हास॑ति॥ १॥

[३७] सप्तत्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा॥ देवता—वासः॥ छन्दः—अनुष्टुप्॥

अ॒भि त्वा॒ मनु॑जातेन॒ दधा॑मि॒ मम॒ वास॑सा।
यथासो॒ मम॒ केव॑लो॒ नान्यासां॑ की॒र्तया॑श्च॒न॥ १॥

[३८] अष्टात्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा॥ देवता—वनस्पतिः (आसुरी)॥ छन्दः—१, २, ४, ५ अनुष्टुप्; ३ चतुष्पदा उष्णिक्॥

इ॒दं ख॑नामि भेष॒जं मां॑प॒श्यम॑भिरोरु॒दम् ।
प॒रा॒य॒तो नि॒वर्त॑नमाय॒तः प्र॑ति॒नन्द॑नम् ॥ १॥
येना॑ निच॒क्र आ॑सु॒रीन्द्रं॑ दे॒वेभ्य॒स्परि॑ ।
तेना॒ नि कु॑र्वे॒ त्वाम॒हं यथा॒ तेऽसा॑नि॒ सुप्रि॑या॥ २॥
प्र॒तीची॒ सोम॑मसि प्र॒तीच्यु॒त सूर्य॑म् ।
प्र॒तीची॒ विश्वा॑न्दे॒वान्तां त्वा॒च्छाव॑दामसि ॥ ३॥
अ॒हं व॑दामि॒ नेत्त्वं स॒भाया॒मह॒ त्वं वद॑।
ममेदस॒स्त्वं केव॑लो॒ नान्यासां॑ की॒र्तया॑श्च॒न॥ ४॥
यदि॒ वासि॑ तिरोज॒नं यदि॑ वा न॒द्य॑ स्ति॒रः।
इ॒यं ह॒ मह्यं॒ त्वामोष॑धिर्ब॒द्ध्वेव॒ न्यान॑यत्॥ ५॥

अथ चतुर्थोऽनुवाकः [३९] एकोनचत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—प्रस्कण्वः॥ देवता—मन्त्रोक्ताः॥ छन्दः—त्रिष्टुप्॥

दि॒व्यं सु॑प॒र्णं प॑य॒सं बृ॒हन्त॑म॒पां गर्भं॑ वृष॒भमोष॑धीनाम्।
अ॒भी॒प॒तो वृ॒ष्ट्या त॒र्पय॑न्त॒मा नो॑ गो॒ष्ठे र॑यि॒ष्ठां स्था॑पयाति॥ १॥

[४०] चत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—प्रस्कण्वः॥ देवता—सरस्वान्॥ छन्दः—१ भुरिक्त्रिष्टुप्; २ त्रिष्टुप्॥

यस्य॑ व्र॒तं प॒शवो॒ यन्ति॒ सर्वे॒ यस्य॑ व्र॒त उ॑प॒तिष्ठ॑न्त॒ आपः॑।
यस्य॑ व्र॒ते पु॑ष्ट॒पति॒र्निवि॑ष्ट॒स्तं सर॑स्वन्त॒मव॑से हवामहे॥ १॥
आ प्र॒त्यञ्चं॑ दाशुषे॑ दा॒श्वांसं॒ सर॑स्वन्तं पुष्ट॒पतिं॑ रयि॒ष्ठाम्।
रा॒यस्पोषं॑ श्रव॒स्युं वसा॑ना इ॒ह हु॑वेम॒ सद॑नं रयी॒णाम्॥ २॥

[४१] एकचत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—प्रस्कण्वः॥ देवता—श्येनः॥ छन्दः—१ जगती; २ त्रिष्टुप्॥

अति॒ धन्वा॒न्यत्य॒पस्त॑तर्द श्ये॒नो नृ॒चक्षा॑ अवसानद॒र्शः।
तर॒न्विश्वा॒न्यव॑रा॒ रजां॒सीन्द्रे॑ण॒ सख्या॑ शि॒व आ ज॑गम्यात्॥ १॥
श्ये॒नो नृ॒चक्षा॑ दि॒व्यः सु॑प॒र्णः स॒हस्र॑पाच्छ॒तयो॑निर्वयो॒धाः।
स नो॒ नि य॑च्छा॒द्वसु॒ यत्परा॑भृतम॒स्माक॑मस्तु पि॒तृषु॑ स्व॒धाव॑त्॥ २॥

[४२] द्विचत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—प्रस्कण्वः॥ देवता—सोमारुद्रौ॥ छन्दः—त्रिष्टुप्॥

सोमा॑रुद्रा॒ वि वृ॑हतं॒ विषू॑ची॒ममी॑वा॒ या नो॒ गय॑मावि॒वेश॑।
बाधे॑थां दू॒रं निर्ऋ॑तिं परा॒चैः कृ॒तं चि॒देनः॒ प्र मु॑मुक्तम॒स्मत्॥ १॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सोमारुद्रा युवमेतान्यस्मद्विश्वा तनूषु भेषजानि धत्तम्।
अव स्यतं मुञ्चतं यन्नो असत्तनूषु बद्धं कृतमेनो अस्मत्॥ २॥

[४३] त्रिचत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—प्रस्कण्वः॥ देवता—वाक्॥ छन्दः—त्रिष्टुप्॥

शिवास्त एका अशिवास्त एकाः सर्वा बिभर्षि सुमनस्यमानः।
तिस्रो वाचो निहिता अन्तरस्मिन्तासामेका वि पपातानु घोषम्॥ १॥

[४४] चतुश्चत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—प्रस्कण्वः॥ देवता—इन्द्रः, विष्णुः॥ छन्दः—भुरिक्त्रिष्टुप्॥

उभा जिग्यथुर्न परा जयेथे न परा जिग्ये कतरश्चनैनयोः।
इन्द्रश्च विष्णो यदपस्पृधेथां त्रेधा सहस्रं वि तदैरयेथाम्॥ १॥

[४५] पञ्चचत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—प्रस्कण्वः॥ देवता—ईर्ष्यापनयनम्॥ छन्दः—अनुष्टुप्॥

जनाद्विश्वजनीनात्सिन्धुतस्पर्याभृतम्।
दूरात्त्वा मन्य उद्भृतमीर्ष्याया नाम भेषजम्॥ १॥
अग्नेरिवास्य दहतो दावस्य दहतः पृथक्।
एतामेतस्येर्ष्यामुद्राग्निमिव शमय॥ २॥

[४६] षट्चत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा॥ देवता—सिनीवाली॥ छन्दः—१, २ अनुष्टुप्; ३ त्रिष्टुप्॥

सिनीवालि पृथुष्टुके या देवानामसि स्वसा।
जुषस्व हव्यमाहुतं प्रजां देवि दिदिड्ढि नः॥ १॥
या सुबाहुः स्वङ्गुरिः सुषूमा बहुसूवरी।
तस्यै विश्पत्न्यै हविः सिनीवाल्यै जुहोतन॥ २॥
या विश्पत्नीन्द्रमसि प्रतीची सहस्रस्तुकाभियन्ती देवी।
विष्णोः पत्नि तुभ्यं राता हवींषि पतिं देवि राधसे चोदयस्व॥ ३॥

[४७] सप्तचत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा॥ देवता—कुहूः॥ छन्दः—१ जगती; २ त्रिष्टुप्॥

कुहूं देवीं सुकृतं विद्मनापसमस्मिन्यज्ञे सुहवा जोहवीमि।
सा नो रयिं विश्ववारं नि यच्छाद्दातु वीरं शतदायमुक्थ्यम्॥ १॥
कुहूर्देवानाममृतस्य पत्नी हव्या नो अस्य हविषो जुषेत।
शृणोतु यज्ञमुशती नो अद्य रायस्पोषं चिकितुषी दधातु॥ २॥

[४८] अष्टचत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा॥ देवता—राका॥ छन्दः—जगती॥

राकामहं सुहवा सुष्टुती हुवे शृणोतु नः सुभगा बोधतु त्मना।
सीव्यत्वपः सूच्याच्छिद्यमानया ददातु वीरं शतदायमुक्थ्यम्॥ १॥
यास्ते राके सुमतयः सुपेशसो याभिर्ददासि दाशुषे वसूनि।
ताभिर्नो अद्य सुमना उपागहि सहस्रापोषं सुभगे रराणा॥ २॥

[४९] एकोनपञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा॥ देवता—देवपत्न्यः॥ छन्दः—१ आर्षीजगती; २ चतुष्पदाप्रस्तारपङ्क्तिः॥

देवानां पत्नीरुशतीरवन्तु नः प्रावन्तु नस्तुजये वाजसातये।
याः पार्थिवासो या अपामपि व्रते ता नो देवीः सुहवाः शर्म यच्छन्तु॥ १॥
उत ग्ना व्यन्तु देवपत्नीरिन्द्राण्यग्नायीश्विनी राट्।
आ रोदसी वरुणानी शृणोतु व्यन्तु देवीर्य ऋतुर्जनीनाम्॥ २॥

[५०] पञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—अङ्गिराः (कितववधकामः)॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१, २, ५, ८, ९ अनुष्टुप्; ३, ७ त्रिष्टुप्; ४ जगती; ६ भुरिक्त्रिष्टुप्॥

यथा वृक्षमशनिर्विश्वाहा हन्त्यप्रति।
एवाहमद्य किंतवानक्षैर्बिध्यासमप्रति॥ १॥
तुराणामतुराणां विशामवर्जुषीणाम्।
सर्वेषु विश्वतो भगो अन्तर्हस्तं कृतं मम॥ २॥
ईडे अग्निं स्ववसुं नमोभिरिह प्रसक्तो वि चयत्कृतं नः।
रथैरिव प्र भरे वाजयद्भिः प्रदक्षिणं मरुतां स्तोममृध्याम्॥ ३॥
वयं जयेम त्वया युजा वृतमस्माकमंशमुदवा भरेभरे।
अस्मभ्यमिन्द्र वरीयः सुगं कृधि प्र शत्रूणां मघवन्वृष्ण्या रुज॥ ४॥
अजैषं त्वा संलिखितमजैषमुत संरुधम्।
अविं वृको यथा मथदेवा मंश्रामि ते कृतम्॥ ५॥
उत प्रहामतिदीवा जयति कृतमिव श्वघ्नी वि चिनोति काले।
यो देवकामो न धनं रुणद्धि समित्तं राय: सृजति स्वधाभिः॥ ६॥
गोभिष्टरेमामतिं दुरेवां यवेन वा क्षुधं पुरुहूत विश्वाम्।
वयं राजसु प्रथमा धनान्यरिष्टासो वृजनीभिर्जयेम॥ ७॥
कृतं मे दक्षिणे हस्ते जयो मे सव्य आहितः।
गोजिद्भूयासमश्वजिद्धनंजयो हिरण्यजित्॥ ८॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अक्षाः फलवतीं द्युवं दत्त गां क्षीरिणीमिव ।
सं मा कृतस्य धारया धनुः स्नाव्नेव नह्यत ॥ ९ ॥

[५१] एकपञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—अङ्गिराः ॥ देवता—इन्द्रावृहस्पती ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥

बृहस्पतिर्नः परि पातु पश्चादुतोत्तरस्मादधरादघायोः ।
इन्द्रः पुरस्तादुत मध्यतो नः सखा सखिभ्यो वरीयः कृणोतु ॥ १ ॥

अथ पञ्चमोऽनुवाकः [५२] द्विपञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा ॥ देवता—सांमनस्यम्, अश्विनौ ॥ छन्दः—१ ककुम्मत्यनुष्टुप्; २ जगती ॥

संज्ञानं नः स्वेभिः संज्ञानमरणेभिः ।
संज्ञानमश्विना युवमिहास्मासु नि यच्छतम् ॥ १ ॥
सं जानामहै मनसा सं चिकित्वा मा युत्स्महि मनसा दैव्येन ।
मा घोषा उत्थुर्बहुले विनिर्हते मेषुः पप्तदिन्द्रस्याहन्यागते ॥ २ ॥

[५३] त्रिपञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—ब्रह्मा ॥ देवता—आयुः, बृहस्पतिः, अश्विनौ च ॥ छन्दः—१, २ त्रिष्टुप्; ३ भुरिक्त्रिष्टुप्; ४ उष्णिग् गर्भापंक्तिः; ५-७ अनुष्टुप् ॥

अमुत्रभूयादधि यद्यमस्य बृहस्पतेरभिशस्तेरमुञ्चः ।
प्रत्यौहतामश्विना मृत्युमस्मद्देवानामग्ने भिषजा शचीभिः ॥ १ ॥
सं क्रामतं मा जहीतं शरीरं प्राणापानौ ते सयुजाविह स्ताम् ।
शतं जीव शरदो वर्धमानोऽग्निष्टे गोपा अधिपा वसिष्ठः ॥ २ ॥
आयुर्यत्ते अतिहितं परा चैरपानः प्राणः पुनरा ताविताम् ।
अग्निष्टदाहार्निर्ऋतेरुपस्थात्तदात्मनि पुनरा वेशयामि ते ॥ ३ ॥
मेमं प्राणो हासीन्मो अपानोऽवहाय परा गात् ।
सप्तर्षिभ्य एनं परि ददामि त एनं स्वस्ति जरसे वहन्तु ॥ ४ ॥
प्र विंशतं प्राणापानावनड्वाहाविव व्रजम् ।
अयं जरिम्णः शेवधिररिष्ट इह वर्धताम् ॥ ५ ॥
आ ते प्राणं सुवामसि परा यक्ष्मं सुवामि ते ।
आयुर्नो विश्वतो दधदयमग्निर्वरेण्यः ॥ ६ ॥
उद्वयं तमसस्परि रोहन्तो नाकमुत्तमम् ।
देवं देवत्रा सूर्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम् ॥ ७ ॥

[५४] चतुष्पञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—१ ब्रह्मा; २ भृगुः ॥ देवता—ऋक्सामनी; २ इन्द्रश्च ॥ छन्दः—अनुष्टुप् ॥

ऋचं साम यजामहे याभ्यां कर्माणि कुर्वते ।
एते सदसि राजतो यज्ञं देवेषु यच्छतः ॥ १ ॥
ऋचं साम यदप्राक्षं हविरोजो यजुर्बलम् ।
एष मा तस्मान्मा हिंसीद्वेदः पृष्टः शचीपते ॥ २ ॥

[५५] पञ्चपञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—भृगुः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—विराट्परोष्णिक् ॥

ये ते पन्थानोऽव दिवो येभिर्विश्वमैरयः ।
तेभिः सुम्नया धेहि नो वसो ॥ १ ॥

[५६] षट्पञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा ॥ देवता—वृश्चिकादयः; २ वनस्पतिः; ४ ब्रह्मणस्पतिः (विषभैषज्यम्) ॥ छन्दः—१-३, ५-८ अनुष्टुप्; ४ विराट्प्रस्तारपङ्क्तिः ॥

तिरश्चिराजेरसितात्पृदाकोः परि संभृतम् ।
तत्कङ्कपर्वणो विषमियं वीरुदनीनशत् ॥ १ ॥
इयं वीरुन्मधुजाता मधुश्चुन्मधुला मधूः ।
सा विह्रुतस्य भेषज्यथो मशकजम्भनी ॥ २ ॥
यतो दष्टं यतो धीतं ततस्ते निर्ह्वयामसि ।
अर्भस्य तृप्रदंशिनो मशकस्यारसं विषम् ॥ ३ ॥
अयं यो वक्रो विपरुव्यङ्गो मुखानि वक्रा वृजिना कृणोषि ।
तानि त्वं ब्रह्मणस्पत इषीकामिव सं नमः ॥ ४ ॥
अरसस्य शर्कोटस्य नीचीनस्योपसर्पतः ।
विषं ह्यस्यादिष्यथो एनमजीजभम् ॥ ५ ॥
न ते बाह्वोर्बलमस्ति न शीर्षे नोत मध्यतः ।
अथ किं पापयामुया पुच्छे बिभर्ष्यर्भकम् ॥ ६ ॥
अदन्ति त्वा पिपीलिका वि वृश्चन्ति मयूर्यः ।
सर्वे भल ब्रवाथ शार्कोटमरसं विषम् ॥ ७ ॥
य उभाभ्यां प्रहरसि पुच्छेन चास्ये न च ।
आस्ये न ते विषं किमु ते पुच्छधावसत् ॥ ८ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

[५७] सप्तपञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—वामदेवः॥ देवता—सरस्वती॥ छन्दः—जगती॥

यदाशसा॒ वद॑तो मे विचु॒क्षुभे यद्याच॑मानस्य॒ चर॑तो॒ जना॑ँ अनु॑।
यदा॒त्मनि॑ त॒न्वो॑ मे॒ विरि॑ष्टं॒ सर॑स्वती॒ तदा पृ॑णद् घृ॒तेन॑॥ १॥
स॒प्त क्षर॑न्ति शिश॑वे म॒रुत्व॑ते पि॒त्रे पु॒त्रासो॒ अप्य॑वीवृतन्नृ॒तानि॑।
उ॒भे इद॑स्यो॒भे अ॑स्य राजत उ॒भे य॑तेते॒ उ॒भे अ॑स्य पुष्यतः॥ २॥

[५८] अष्टपञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—कौरुपथिः॥ देवता—इन्द्रावरुणौ॥ छन्दः—१ जगती; २ त्रिष्टुप्॥

इन्द्रा॑वरुणा सुतपावि॒मं सु॒तं सोमं॑ पिबतं॒ मद्यं॑ धृतव्रतौ।
यु॒वो रथो॑ अध्व॒रो दे॒ववी॑तये॒ प्रति॒ स्वस॑र॒मुप॑ यातु पी॒तये॑॥ १॥
इन्द्रा॑वरुणा॒ मधु॑मत्तमस्य॒ वृष्ण॒: सोम॑स्य॒ वृष॑णा॒ वृषे॑थाम्।
इ॒दं वा॒मन्ध॑: परिषि॑क्तमा॒सद्या॒स्मिन्ब॒र्हिषि॑ मादयेथाम्॥ २॥

[५९] एकोनषष्टितमं सूक्तम्

ऋषिः—बादरायणिः॥ देवता—अरिनाशनम्॥ छन्दः—अनुष्टुप्॥

यो नः॒ शपा॒दशं॑पतः॒ शप॑तो॒ यश्च॑ नः॒ शपा॑त्।
वृक्ष॑ इव वि॒द्युता॑ हत॒ आ मूला॒दनु॑ शुष्यतु॥ १॥
॥इति षोडशः प्रपाठकः॥

अथ सप्तदशः प्रपाठकः

अथ षष्ठोऽनुवाकः॥ [६०] षष्टितमं सूक्तम्

ऋषिः—ब्रह्मा॥ देवता—गृह्याः, वास्तोष्पतिः॥ छन्दः—१ परानुष्टुब्विष्टुप्; २-७ अनुष्टुप्॥

ऊर्जं॑ बिभ्रद्वसु॒वनिः॑ सु॒मेधा॑ अघो॒रेण॒ चक्षु॑षा मि॒त्रिये॑ण।
गृहा॑नैमि॑ सु॒मना॒ वन्द॑मानो॒ रम॑ध्वं मा बिभीत॒ मत्॥ १॥
इ॒मे गृहा॑ मयो॒भुव॒ ऊर्जं॑स्वन्तः॒ पय॑स्वन्तः।
पू॒र्णा वा॒मेन॒ तिष्ठ॑न्तस्ते नो॑ जानन्त्वायतः॥ २॥
येषा॑मध्ये॒ति प्र॒वस॒न्येषु॑ सौमन॒सो ब॒हुः।
गृहा॑नुप॑ ह्वयामहे॒ ते नो॑ जानन्त्वायतः॥ ३॥
उप॑हूता॒ भूरि॑धना॒: सखा॑यः स्वा॒दुसं॑मुदः।
अ॒क्षु॒ध्या अ॑तृ॒ष्या स्त॒ गृहा॒ मास्मद् बि॑भीतन॥ ४॥

उप॑हूता इ॒ह गाव॒ उप॑हूता अजा॒वयः॑।
अथो॒ अन्न॑स्य की॒लाल॒ उप॑हूतो गृहेषु नः॥ ५॥
सू॒नृता॑वन्तः सु॒भगा॒ इरा॑वन्तो हसामु॒दाः।
अ॒तृ॒ष्या अ॑क्षु॒ध्या स्त गृहा॒ मास्मद् बि॑भीतन॥ ६॥
इ॒हैव स्त मानु॑ गात॒ वि श्वा॑ रू॒पाणि॑ पुष्यत।
ऐष्या॑मि भ॒द्रेणा॑ स॒ह भूयां॑सो भवता॒ मया॑॥ ७॥

[६१] एकषष्टितमं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—अनुष्टुप्॥

यद॑ग्ने॒ तप॑सा॒ तप॑ उप॒तप्या॑मह॒े तपः॑ ।
प्रि॒याः श्रु॒तस्य॑ भूया॒स्मायु॑ष्मन्तः सु॒मे॒धस॑ः॥ १॥
अग्ने॒ तप॑स्तप्यामह॒ उप॑ तप्यामह॒े तपः॑ ।
श्रु॒तानि॑ शृ॒ण्वन्तो॑ व॒यमायु॑ष्मन्तः सु॒मे॒धस॑ः॥ २॥

[६२] द्विषष्टितमं सूक्तम्

ऋषिः—मरीचिः काश्यपः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—जगती॥

अ॒यम॒ग्निः सत्प॑तिर्वृ॒द्धवृ॑ष्णो र॒थीव॑ प॒त्तीन॑जयत्पु॒रोहि॑तः।
नाभा॑ पृथि॒व्यां निहि॑तो॒ दवि॑द्युतदध॒स्प॒दं कृ॑णुतां ते पृतन्य॒वः॥ १॥

[६३] त्रिषष्टितमं सूक्तम्

ऋषिः—मरीचिः काश्यपः॥ देवता—जातवेदाः॥ छन्दः—जगती॥

पृ॒त॒नाजि॑तं सहमानम॒ग्निमु॒क्थैर्ह॑वामहे पर॒मात्स॒धस्था॑त् ।
स नः॑ पर्ष॒दति॑ दु॒र्गाणि॒ विश्वा॒ क्षाम॑द्दे॒वोऽति॑ दुरि॒ता॒न्य॒ग्निः॥ १॥

[६४] चतुःषष्टितमं सूक्तम्

ऋषिः—यमः॥ देवता—१ आपः; २ अग्निः॥ छन्दः—१ भुरिगनुष्टुप्; २ न्यङ्कुसारिणी बृहती॥

इ॒दं यत्कृ॒ष्णः शकु॑निर॒भि॒नि॒ष्प॒त॒न्नपी॑पतत् ।
आपो॑ मा॒ तस्मा॒त्सर्व॑स्मादुरि॒तात्पा॒न्त्वंह॑सः॥ १॥
इ॒दं यत्कृ॒ष्णः शकु॑नि॒र्वामू॑क्षन्नि॒त्रमृ॑ते ते॒ मुखे॑न।
अ॒ग्निर्मा॒ तस्मा॒देन॑सो गार्हपत्यः॒ प्र मु॑ञ्चतु॥ २॥

[६५] पञ्चषष्टितमं सूक्तम्

ऋषिः—शुक्रः॥ देवता—अपामार्गः॥ छन्दः—अनुष्टुप्॥

प्र॒ती॒चीन॑फलो॒ हि त्वमपा॑मार्ग रु॒रोहि॑थ।
सर्वा॒न्मच्छ॑पथाँ॒ अधि॒ वरी॑यो यावया इ॒तः॥ १॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

यद्दुष्कृतं यच्छमलं यद्वा चेरिम पापया।
त्वया तद्विश्वतोमुखापामार्गाप मृज्महे ॥ २ ॥
श्यावदंता कुनखिना वण्डेन यत्सहासिम।
अपामार्ग त्वया वयं सर्वं तदप मृज्महे॥ ३ ॥

[६६] षट्षष्टितमं सूक्तम्

ऋषिः—ब्रह्मा॥ देवता—ब्राह्मणम्॥ छन्दः—त्रिष्टुप्॥

यद्यन्तरिक्षे यदि वात आस यदि वृक्षेषु यदि वोलपेषु।
यदस्त्रवन्पशव उद्यमानं तद् ब्राह्मणं पुनरस्मानुपैतु॥ १ ॥

[६७] सप्तषष्टितमं सूक्तम्

ऋषिः—ब्रह्मा॥ देवता—आत्मा॥ छन्दः—पुरःपरोष्णिग्बृहती॥

पुनर्मैत्विन्द्रियं पुनरात्मा द्रविणं ब्राह्मणं च।
पुनरग्नयो धिष्ण्या यथास्थाम कल्पयन्तामिहैव॥ १ ॥

[६८] अष्टषष्टितमं सूक्तम्

ऋषिः—शन्तातिः॥ देवता—सरस्वती॥ छन्दः—१ अनुष्टुप्; २ त्रिष्टुप्; ३ गायत्री॥

सरस्वति व्रतेषु ते दिव्येषु देवि धामसु ।
जुषस्व हव्यमाहुतं प्रजां देवि ररास्व नः ॥ १ ॥
इदं ते हव्यं घृतवत्सरस्वतीदं पितृणां हविरास्यं1 यत्।
इमानि त उदिता शन्तमानि तेभिर्वयं मधुमन्तः स्याम॥ २ ॥
शिवा नः शंतमा भव सुमृडीका सरस्वति ।
मा ते युयोम संदृशः ॥ ३ ॥

[६९] एकोनसप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—शन्तातिः॥ देवता—सुखम्॥ छन्दः—पथ्यापङ्क्तिः॥

शं नो वातो वातु शं नस्तपतु सूर्यः ।
अहानि शं भवन्तु नः शं रात्री प्रति धीयतां शमुषा नो व्युच्छतु॥ १ ॥

[७०] सप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा॥ देवता—श्येनादयो मन्त्रोक्ताः॥ छन्दः—१ त्रिष्टुप्; २ अतिजगतीगर्भाजगती; ३ पुरःककुम्मत्यनुष्टुप्; ४, ५ अनुष्टुप्॥

यत्किं चासौ मनसा यच्च वाचा यज्ञैर्जुहोति हविषा यजुषा।
तन्मृत्युना निर्ऋतिः संविदाना पुरा सत्यादाहुतिं हन्त्वस्य॥ १ ॥
यातुधाना निर्ऋतिरादु रक्षस्ते अस्य घ्नन्त्वनृतेन सत्यम्।
इन्द्रेषिता देवा आज्यमस्य मथ्नन्तु मा तत् सं पादि यदसौ जुहोति॥ २ ॥
अजिराधिराजौ श्येनौ संपातिनाविव ।
आज्यं पृतन्यतो हतां यो नः कश्चाभ्यघायति ॥ ३ ॥
अपाञ्चौ त उभौ बाहू अपि नह्याम्यास्यम् ।
अग्नेर्देवस्य मन्युना तेनं तेऽवधिषं हविः ॥ ४ ॥
अपि नह्यामि ते बाहू अपि नह्याम्यास्यम् ।
अग्नेर्घोरस्य मन्युना तेनं तेऽवधिषं हविः ॥ ५ ॥

[७१] एकसप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—अनुष्टुप्॥

परिं त्वाग्ने पुरं वयं विप्रं सहस्य धीमहि।
धृषद्वर्णं दिवेदिवे हन्तारं भङ्गुरावतः ॥ १ ॥

[७२] द्विसप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१ अनुष्टुप्; २, ३ त्रिष्टुप्॥

उत्तिष्ठतावं पश्यतेन्द्रस्य भागमृत्वियम् ।
यदिं श्रातं जुहोतन यद्यश्रातं ममत्तन ॥ १ ॥
श्रातं हविरो ष्विन्द्र प्र याहि जगाम सूरो अध्वनो वि मध्यम्।
परिं त्वासते निधिभिः सखायः कुलपा न व्राजपतिं चरन्तम्॥ २ ॥
श्रातं मन्य ऊधनि श्रातमग्नौ सुश्रृतं मन्ये तदृतं नवीयः।
माध्यन्दिनस्य सवनस्य दृध्नः पिबेन्द्र वज्रिन्पुरुकृज्जुषाणः॥ ३ ॥

[७३] त्रिसप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा॥ देवता—धर्मः, अश्विनौ, प्रत्यृचं मन्त्रोक्ता वा॥ छन्दः—१, ४, ६ जगती; २ पथ्याबृहती; ३, ५, ७-११ त्रिष्टुप्॥

समिद्धो अग्निर्वृषणा रथी दिवस्तप्तो घर्मो दुह्यते वामिषे मधु।
वयं हि वां पुरुदमासो अश्विना हवामहे सधमादेषु कारवः॥ १ ॥
समिद्धो अग्निरश्विना तप्तो वां घर्म आ गतम् ।
दुह्यन्ते नूनं वृषणेह धेनवो दस्रा मदन्ति वेधसः ॥ २ ॥
स्वाहाकृतः शुचिर्देवेषु यज्ञो यो अश्विनोश्चमसो देवपानः।
तमु विश्वे अमृतासो जुषाणा गन्धर्वस्य प्रत्यास्ना रिहन्ति॥ ३ ॥
यदुस्रियास्वाहुतं घृतं पयोऽयं स वामश्विना भाग आ गतम्।
माध्वी धर्तारा विदथस्य सत्पती तप्तं घर्मं पिबतं रोचने दिवः॥ ४ ॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तप्तो वां घर्मो नक्षतु स्वहोता प्र वामध्वर्युश्चरतु पयस्वान्।
मधोर्दुग्धस्याश्विना तनायां वीतं पातं पयस उस्रियायाः॥५॥
उप द्रव पयसा गोधुगोषमा घर्मे सिञ्च पय उस्रियायाः।
वि नाकमख्यत्सविता वरेण्योऽनुप्रयाणमुषसो वि राजति॥६॥
उप ह्वये सुदुघां धेनुमेतां सुहस्तो गोधुगुत दोहदेनाम्।
श्रेष्ठं सवं सविता साविषन्नोऽभीद्धो घर्मस्तदु षु प्र वोचत्॥७॥
हिङ्कृण्वती वसुपत्नी वसूनां वत्समिच्छन्ती मनसा न्यागन्।
दुहामश्विभ्यां पयो अघ्न्येयं सा वर्धतां महते सौभगाय॥८॥
जुष्टो दमूना अतिथिर्दुरोण इमं नो यज्ञमुप याहि विद्वान्।
विश्वा अग्ने अभियुजो विहत्य शत्रूयतामा भरा भोजनानि॥९॥
अग्ने शर्ध महते सौभगाय तव द्युम्नान्युत्तमानि सन्तु।
सं जास्पत्यं सुयममा कृणुष्व शत्रूयतामभि तिष्ठा महांसि॥१०॥
सूयवसाद्भगवती हि भूया अधा वयं भगवन्तः स्याम।
अद्धि तृणमघ्ये विश्वदानीं पिब शुद्धमुदकमाचरन्ती॥११॥

अथ सप्तमोऽनुवाकः [७४] चतुःसप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वाङ्गिराः॥ देवता—मन्त्रोक्ताः; ४ जातवेदाः॥
छन्दः—१-३ अनुष्टुप्; ४ त्रिष्टुप्॥

अपचितां लोहिनीनां कृष्णा मातेति शुश्रुम ।
मुनेर्देवस्य मूलेन सर्वा विध्यामि ता अहम् ॥१॥
विध्याम्यासां प्रथमां विध्याम्युत मध्यमाम् ।
इदं जघन्यां मासामा च्छिनद्मि स्तुकामिव ॥२॥
त्वाष्ट्रेणाहं वचसा वि तं इर्ष्यामीमदम् ।
अथो यो मन्युस्ते पते तमु ते शमयामसि ॥३॥
व्रतेन त्वं व्रतपते समक्तो विश्वाहा सुमना दीदिहीह।
तं त्वा वयं जातवेदः समिद्धं प्रजावन्त उप सदेम सर्वे॥४॥

[७५] पञ्चसप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—उपरिबभ्रवः॥ देवता—अघ्न्याः॥ छन्दः—१ त्रिष्टुप्;
२ पञ्चपदाभुरिक्पथ्यापङ्क्तिः॥

प्रजावतीः सूयवसे रुशन्तीः शुद्धा अपः सुप्रपाणे पिबन्तीः।
मा वः स्तेन ईशत माघशंसः परि वो रुद्रस्य हेतिर्वृणक्तु॥१॥

पदज्ञा स्थ रमतयः संहिता विश्वनाम्नीः। उप मा देवीर्देवेभिरेत।
इमं गोष्ठमिदं सदो घृतेनास्मान्त्समुक्षत ॥२॥

[७६] षट्सप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा॥ देवता—१, २ अपचिद् भैषज्यम्; ३-५ जायान्यः; ६ इन्द्रः॥
छन्दः—१ विराडनुष्टुप्; २ परोष्णिक्; ३, ४ अनुष्टुप् ५ भुरिगनुष्टुप्;
६ त्रिष्टुप्॥

आ सुस्रसः सुस्रसो असंतीभ्यो असंत्तराः ।
सेहोरुरसंतरा लवणाद्विक्लेदीयसीः ॥१॥
या ग्रैव्या अपचितोऽथो या उपपक्ष्याः ।
विजाम्नि या अपचितः स्वयंस्रसः ॥२॥
यः कीकसाः प्रशृणाति तलीद्यं मवतिष्ठति ।
निरास्तं सर्वं जायान्यं यः कश्च कुकुदि श्रितः ॥३॥
पक्षी जायान्यः पतति स आ विशति पूरुषम् ।
तदक्षितस्य भेषजमुभयोः सुक्षतस्य च ॥४॥
विद्म वै ते जायान्यु जानं यतो जायान्यु जायसे ।
कथं हु तत्र त्वं हनो यस्य कृण्मो हविर्गृहे ॥५॥
धृषत्पिब कलशे सोममिन्द्र वृत्रहा शूर समरे वसूनाम्।
माध्यन्दिने सवन आ वृषस्व रयिष्ठानो रयिमस्मासु धेहि॥६॥

[७७] सप्तसप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—अङ्गिराः॥ देवता—मरुतः॥ छन्दः—१ त्रिपदागायत्री;
२ त्रिष्टुप्; ३ जगती॥

सांतपना इदं हविर्मरुतस्तज्जुजुष्टन। अस्माकोती रिशादसः॥१॥
यो नो मर्तो मरुतो दुर्हृणायुस्तिरश्चित्तानि वसवो जिघांसति।
द्रुहः पाशान्प्रति मुञ्चतां स तपिष्ठेन तपसा हन्तना तम्॥२॥
संवत्सरीणा मरुतः स्वर्का उरुक्षयाः सगणा मानुषासः।
ते अस्मत्पाशान्प्र मुञ्चन्त्वेनसः सांतपना मत्सरा मादयिष्णवः॥३॥

[७८] अष्टसप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—१ परोष्णिक्; २ त्रिष्टुप्॥

वि ते मुञ्चामि रशनां वि योक्त्रं वि नियोजनम्। इहैव त्वमजस्र एध्यग्ने॥१॥
अस्मै क्षत्राणि धारयन्तमग्ने युनज्मि त्वा ब्रह्मणा दैव्येन ।
दीर्घायुत्वाय शतशारदाय हविर्णेह भद्रं प्रेमं वोचो हविर्दां देवतासु ॥२॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

[७९] एकोनाशीतितमं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा॥ देवता—अमावास्या॥ छन्दः—१ जगती; २-४ त्रिष्टुप्॥

यत्ते॑ दे॒वा अकृ॑ण्वन्भाग॒धेयममा॑वास्ये सं॒वस॑न्तो महि॒त्वा।
तेना॑ नो य॒ज्ञं पि॑पृहि विश्ववारे र॒यिं नो॑ धेहि सुभगे सु॒वीर॑म्॥ १॥
अ॒हमे॒वास्म्य॑मावा॒स्या॒३॒॑ मामा व॑सन्ति सु॒कृतो॒ मयी॒मे।
मयि॑ दे॒वा उ॒भये॑ सा॒ध्याश्चेन्द्र॑ज्येष्ठाः॒ सम॑गच्छन्त॒ सर्वे॑॥ २॥
आग॒न्रात्री॑ सं॒गम॑नी॒ वसू॑ना॒मूर्जं॑ पु॒ष्टं वस्वा॑वे॒शय॑न्ती।
अ॒मा॒वा॒स्या॑ यै ह॒विषा॑ विधे॒मोर्जं॒ दुहा॑ना॒ पय॑सा न॒ आग॑न्॥ ३॥
अमा॑वास्ये॒ न त्वदे॒तान्य॒न्यो विश्वा॑ रू॒पाणि॑ परि॒भूर्ज॑जान।
यत्का॑मास्ते जुहु॒मस्तन्नो॑ अस्तु व॒यं स्या॑म॒ पत॑यो रयी॒णाम्॥ ४॥

[८०] अशीतितमं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा॥ देवता—१, २, ४ पौर्णमासी; ३ प्रजापतिः॥ छन्दः—१, ३, ४ त्रिष्टुप्; २ अनुष्टुप्॥

पू॒र्णा प॒श्चादु॒त पू॒र्णा पु॒रस्ता॒दुन्म॑ध्य॒तः पौ॑र्णमा॒सी जि॑गाय।
तस्यां॑ दे॒वैः सं॒वस॑न्तो महि॒त्वा नाक॑स्य पृ॒ष्ठे समि॒षा म॑देम॥ १॥
वृ॒ष॒भं वा॒जिनं॑ व॒यं पौ॑र्णमा॒सं य॑जामहे ।
स नो॑ ददा॒त्वक्षि॑तां र॒यिमनु॑पदस्वतीम् ॥ २॥
प्रजा॑पते॒ न त्वदे॒तान्य॒न्यो विश्वा॑ रूपाणि॑ परि॒भूर्ज॑जान।
यत्का॑मास्ते जुहु॒मस्तन्नो॑ अस्तु व॒यं स्या॑म॒ पत॑यो रयी॒णाम्॥ ३॥
पौ॒र्ण॒मा॒सी प्र॑थ॒मा य॒ज्ञिया॑सी॒दह्नां॒ रात्री॑णामतिशर्व॒रेषु॑।
ये त्वां य॒ज्ञैर्य॑ज्ञिये अ॒र्धय॑न्त्य॒मी ते नाके॑ सु॒कृतः॒ प्रवि॑ष्टाः॥ ४॥

[८१] एकाशीतितमं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा॥ देवता—सावित्री, सूर्यः, चन्द्रश्च॥ छन्दः—१, २, ६ त्रिष्टुप्; ३ अनुष्टुप्; ४ आस्तारपङ्क्तिः; ५ स्वराडास्तारपङ्क्तिः॥

पू॒र्वा॒प॒रं च॑रतो मा॒ययै॒तौ शिशू॒ क्रीड॑न्तौ॒ परि॑ यातोऽर्ण॒वम्।
विश्वा॒न्यो भुव॑ना वि॒चष्ट॑ ऋ॒तूँर॒न्यो वि॒दध॑ज्जायसे॒ नवः॑॥ १॥
नवो॑नवो भवसि॒ जाय॑मा॒नोऽह्नां॑ के॒तुरु॒षसा॑मे॒ष्यग्र॑म् ।
भा॒गं दे॒वेभ्यो॒ वि द॑धास्या॒यन्प्र च॑न्द्रमस्तिरसे दी॒र्घमायुः॑॥ २॥
सोम॑स्यांशो युधां प॒तेऽनू॑नो॒ नाम॒ वा अ॑सि ।
अनू॑नं दर्श मा कृधि प्र॒जया॑ च॒ धने॑न च ॥ ३॥
द॒र्शो॑ऽसि दर्श॒तो॑ऽसि॒ सम॑ग्रोऽसि॒ सम॑न्तः ।
सम॑ग्रः॒ सम॑न्तो भूयासं॒ गोभि॒रश्वैः॑ प्र॒जया॑ प॒शुभि॑र्गृ॒हैर्धने॑न॥ ४॥
यो॒३॒॑स्मान्द्वेष्टि॒ यं व॒यं द्वि॒ष्मस्तस्य॒ त्वं प्रा॒णेना प्या॑यस्व।
आ व॒यं प्या॑सिषीमहि॒ गोभि॒रश्वैः॑ प्र॒जया॑ प॒शुभि॑र्गृ॒हैर्धने॑न॥ ५॥
यं दे॒वा अं॒शुमा॑प्या॒यय॑न्ति॒ यमक्षि॑तमक्षि॑ता भ॒क्षय॑न्ति।
तेना॒स्मानिन्द्रो॒ वरु॑णो॒ बृह॒स्पति॒रा प्या॑ययन्तु॒ भुव॑नस्य गो॒पाः॥ ६॥

अथाष्टमोऽनुवाकः

[८२] द्व्यशीतितमं सूक्तम्

ऋषिः—शौनकः (सम्पत्कामः)॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—१, ४-६ त्रिष्टुप्; २ ककुम्मतीबृहती; ३ जगती॥

अ॒भ्य॑र्चत सुष्टु॒तिं गव्य॑मा॒जिम॒स्मासु॑ भ॒द्रा द्रवि॑णानि धत्त।
इ॒मं य॒ज्ञं न॑यत दे॒वता॑ नो घृ॒तस्य॒ धारा॒ मधु॑मत्पवन्ताम्॥ १॥
मय्यग्रे॑ अ॒ग्निं गृ॑ह्णामि स॒ह क्ष॒त्रेण॒ वर्च॑सा॒ बले॑न ।
मयि॑ प्र॒जां मय्यायु॑र्दधामि॒ स्वाहा॒ मय्य॒ग्निम् ॥ २॥
इ॒हैवाग्ने॒ अधि॑ धारया र॒यिं मा त्वा॒ नि क्र॒न्पूर्व॑चित्ता निका॒रिणः॑।
क्ष॒त्रेणा॑ग्ने सु॒यम॑मस्तु॒ तुभ्य॑मुपस॒त्ता व॑र्धतां ते॒ अनि॑ष्टृतः॥ ३॥
अन्व॒ग्निरु॒षसा॒मग्र॑मख्य॒दन्वहा॑नि प्रथ॒मो जा॒तवे॑दाः ।
अनु॒ सूर्यं॑ उ॒षसो॒ अनु॑ र॒श्मीननु॒ द्यावा॑पृथि॒वी आ वि॑वेश॥ ४॥
प्रत्य॒ग्निरु॒षसा॒मग्र॑मख्य॒त्प्रत्यहा॑नि प्रथ॒मो जा॒तवे॑दाः ।
प्रति॒ सूर्य॑स्य पुरु॒धा च॑ र॒श्मीन्प्रति॒ द्यावा॑पृथि॒वी आ त॑तान॥ ५॥
घृ॒तं ते॑ अग्ने दि॒व्ये स॒धस्थे॑ घृ॒तेन॒ त्वां मनु॑र॒द्या समि॑न्धे।
घृ॒तं ते॑ दे॒वीर्न॒प्त्य१॒॑ आ व॑हन्तु घृ॒तं तुभ्यं॑ दुह्रतां॒ गावो॑ अग्ने॥ ६॥

[८३] त्र्यशीतितमं सूक्तम्

ऋषिः—शुनःशेपः॥ देवता—वरुणः॥ छन्दः—१ अनुष्टुप्; २ पथ्यापङ्क्तिः; ३ त्रिष्टुप्; ४ बृहतीगर्भात्रिष्टुप्॥

अ॒प्सु ते॑ राजन्वरुण गृ॒हो हि॑र॒ण्ययो॑ मि॒थः ।
ततो॑ धृ॒तव्र॑तो॒ राजा॒ सर्वा॒ धामा॑नि मुञ्चतु ॥ १॥
धाम्नो॑धाम्नो राजन्नि॒तो व॑रुण मुञ्च नः ।
यदापो॑ अ॒घ्न्या इति॒ वरु॒णेति॒ यदू॑चि॒म ततो॑ वरुण मुञ्च नः॥ २॥
उदु॑त्त॒मं व॑रुण॒ पाश॑म॒स्मदवा॑ध॒मं वि म॑ध्य॒मं श्र॑थाय ।
अधा॑ व॒यमा॑दित्य व्र॒ते तवाना॑गसो॒ अदि॑तये स्याम ॥ ३॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्रास्मत्पाशान्वरुण मुञ्च सर्वान्य उत्तमा अधमा वारुणा ये।
दुःष्वप्न्यं दुरितं निः ष्वास्मदथं गच्छेम सुकृतस्य लोकम्॥ ४॥

[८४] चतुरशीतितमं सूक्तम्

ऋषिः—भृगुः॥ देवता—१ अग्निः; २, ३ इन्द्रः॥
छन्दः—१ जगती; २, ३ त्रिष्टुप्॥

अनाधृष्यो जातवेदा अमर्त्यो विराडग्ने क्षत्रभृद्दीदिहीह ।
विश्वा अमीवाः प्रमुञ्चन्मानुषीभिः शिवाभिरद्य परि पाहि नो गयम्॥ १॥
इन्द्र क्षत्रमभि वाममोजोऽजायथा वृषभ चर्षणीनाम् ।
अपानुदो जनममित्रायन्तमुरुं देवेभ्यो अकृणोरु लोकम् ॥ २॥
मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः परावत आ जगम्यात्परस्याः।
सृकं संशाय पविमिन्द्र तिग्मं वि शत्रून्ताढि वि मृधो नुदस्व॥ ३॥

[८५] पञ्चाशीतितमं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा (स्वस्त्ययनकामः)॥ देवता—तार्क्ष्यः॥
छन्दः—त्रिष्टुप्॥

त्यमू षु वाजिनं देवजूतं सहोवानं तरुतारं रथानाम्।
अरिष्टनेमिं पृतनाजिमाशुं स्वस्तये तार्क्ष्यमिहा हुवेम॥ १॥

[८६] षडशीतितमं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा (स्वस्त्ययनकामः)॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—त्रिष्टुप्॥

त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रं हवेहवे सुहवं शूरमिन्द्रम्।
हुवे नु शक्रं पुरुहूतमिन्द्रं स्वस्ति न इन्द्रो मघवान्कृणोतु॥ १॥

[८७] सप्ताशीतितमं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा॥ देवता—रुद्रः॥ छन्दः—जगती॥

यो अग्नौ रुद्रो यो अप्स्वन्तर्य ओषधीर्वीरुध आविवेश।
य इमा विश्वा भुवनानि चाक्लृपे तस्मै रुद्राय नमो अस्त्वग्नये॥ १॥

[८८] अष्टाशीतितमं सूक्तम्

ऋषिः—गरुत्मान्॥ देवता—सर्पविषापाकरणम्॥ छन्दः—बृहती॥

अपेह्यरिरस्यरिर्वा असि। विषे विषमपृक्था विषमिद्वा अपृक्थाः।
अहिमेवाभ्यपेहि तं जहि ॥ १॥

[८९] एकोननवतीतमं सूक्तम्

ऋषिः—सिन्धुद्वीपः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—१-३ अनुष्टुप्; ४ त्रिपदानिचृत्परोष्णिक्॥

अपो दिव्या अचायिषं रसेन समपृक्ष्महि ।
पयस्वानग्न आगमं तं मा सं सृज वर्चसा ॥ १॥
सं मांग्ने वर्चसा सृज सं प्रजया समायुषा ।
विद्युर्मे अस्य देवा इन्द्रो विद्यात्सह ऋषिभिः ॥ २॥
इदमापः प्र वहतावद्यं च मलं च यत् ।
यच्चाभिदुद्रोहानृतं यच्च शेपे अभीरुणम् ॥ ३॥
एधोऽस्येधिषीय समिदसि समेधिषीय ।
तेजोऽसि तेजो मयि धेहि ॥ ४॥

[९०] नवतीतमं सूक्तम्

ऋषिः—अङ्गिराः॥ देवता—मन्त्रोक्ताः॥ छन्दः—१ गायत्री; २ विराट्पुरस्ताद्बृहती; ३ षट्पदाभुरिग्जगती॥

अपिं वृश्च पुराणवद् व्रततेरिव गुष्पितम् ।
ओजो दास्यस्य दम्भय ॥ १॥
वयं तदस्य संभृतं वस्विन्द्रेण वि भजामहै ।
म्लापयामि भ्रजः शिभ्रं वरुणस्य व्रतेन ते ॥ २॥
यथा शेपो अपायातै स्त्रीषु चासदनावयाः ।
अवस्थस्य क्रदीवतः शाङ्कुरस्य नितोदिनः
यदातत्तमव तत्तनु यदुत्ततं नि तत्तनु ॥ ३॥

अथ नवमोऽनुवाकः [९१] एकनवतीतमं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा॥ देवता—चन्द्रमाः॥ छन्दः—त्रिष्टुप्॥

इन्द्रः सुत्रामा स्ववाँ अवोभिः सुमृडीको भवतु विश्ववेदाः।
बाधतां द्वेषो अभयं नः कृणोतु सुवीर्यस्य पतयः स्याम॥ १॥

[९२] द्विनवतीतमं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा॥ देवता—चन्द्रमाः॥ छन्दः—त्रिष्टुप्॥

स सुत्रामा स्ववाँ इन्द्रो अस्मदाराच्चिद् द्वेषः सनुतर्युयोतु।
तस्य वयं सुमतौ यज्ञियस्यापि भद्रे सौमनसे स्याम॥ १॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

[९३] त्रिनवतीतमं सूक्तम्

ऋषिः—भृग्वङ्गिराः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—गायत्री॥

इन्द्रे॑ण म॒न्युना॑ व॒यम॒भि स्या॑म पृतन्य॒तः। घ्नन्तो॑ वृ॒त्राण्य॑प्र॒ति॥ १॥

[९४] चतुर्नवतीतमं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा॥ देवता—सोमः॥ छन्दः—अनुष्टुप्॥

ध्रु॒वं ध्रु॒वेण॑ ह॒विषाव॒ सोमं॑ नयामसि।
यथा॑ न॒ इन्द्रः॒ केव॑ली॒र्विशः॒ संम॑नस॒स्कर॑त्॥ १॥

[९५] पञ्चनवतीतमं सूक्तम्

ऋषिः—कपिञ्जलः॥ देवता—गृध्रौ॥ छन्दः—१ अनुष्टुप्; २, ३ भुरिगनुष्टुप्॥

उद॑स्य श्या॒वौ वि॑थु॒रौ गृध्रौ॒ द्यामि॑व पेततुः।
उ॒च्छो॒च॒न॒प्र॒शो॒च॒नाव॒स्योच्छोच॑नौ ह॒दः॥ १॥
अ॒हमे॑ना॒वुद॑तिष्ठिपं॒ गावौ॑ श्रान्त॒सदा॑विव।
कु॒र्कु॒रावि॑व॒ कूज॑न्तावु॒दव॑न्तौ॒ वृका॑विव॥ २॥
आ॒तो॒दिनौ॑ नितो॒दिना॒वथो॑ संतो॒दिना॑वु॒त।
अपि॑ नह्याम्यस्य॒ मेढ्रं॒ य इ॒त स्त्री पुमा॑ञ्ज॒भार॑॥ ३॥

[९६] षड्नवतीतमं सूक्तम्

ऋषिः—कपिञ्जलः॥ देवता—वयः॥ छन्दः—अनुष्टुप्॥

अस॑द॒न्गावः॒ सद॒नेऽप॑प्तद्वस॒तिं वयः॑।
आ॒स्थाने॒ पर्व॑ता अस्थुः॒ स्थाम्नि॑ वृ॒क्काव॑तिष्ठिपम्॥ १॥

[९७] सप्तनवतीतमं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा॥ देवता—इन्द्राग्नी॥ छन्दः—१-४ त्रिष्टुप्; ५ त्रिपदाऽऽर्षी भुरिग्गायत्री; ६ त्रिपदाप्राजापत्याबृहती; ७ त्रिपदासाम्नीभुरिग्जगती; ८ उपरिष्टाद्बृहती॥

यद॒द्य त्वा॑ प्रय॒ति य॒ज्ञे अ॒स्मिन्होत॑श्चिकित्व॒न्नवृ॑णीमही॒ह।
ध्रु॒वम॑यो ध्रु॒वमु॒ता श॑विष्ठ प्रवि॒द्वान्य॒ज्ञमुप॑ याहि॒ सोम॑म्॥ १॥
समि॑न्द्र नो॒ मन॑सा नेष॒ गोभिः॒ सं सू॒रिभि॑र्हरिव॒न्त्सं स्व॒स्त्या।
सं ब्रह्म॑णा दे॒वहि॑तं॒ यदस्ति॒ सं दे॒वानां॑ सुम॒तौ य॒ज्ञिया॑नाम्॥ २॥
यानाव॑ह उश॒तो दे॑व दे॒वांस्तान्प्रेर॑य॒ स्वे अ॑ग्ने स॒धस्थे॑।
ज॒क्षि॒वांसः॑ पपि॒वांसो॒ मधू॑न्य॒स्मै ध॑त्त वसवो॒ वसू॑नि॥ ३॥

सु॒गा वो॑ देवाः॒ सद॑ना अकर्म॒ य आ॑ज॒ग्म सव॑ने मा जुषा॒णाः।
वह॑माना॒ भर॑माणाः॒ स्वा वसू॑नि॒ वसुं॑ घ॒र्मं दिव॒मा रो॑ह॒तानु॑॥ ४॥
यज्ञ॑ य॒ज्ञं ग॑च्छ य॒ज्ञप॑तिं गच्छ। स्वां योनिं॑ गच्छ॒ स्वाहा॑॥ ५॥
ए॒ष ते॑ य॒ज्ञो य॑ज्ञपते स॒हसू॑क्तवाकः। सु॒वीर्यः॒ स्वाहा॑॥ ६॥
वष॑ड्ढु॒तेभ्यो॒ वष॒डहु॑तेभ्यः। देवा॑ गातुविदो गा॒तुं वि॒त्त्वा गा॒तुमि॑त॥ ७॥
मन॑सस्पत इ॒मं नो॑ दि॒वि दे॒वेषु॑ य॒ज्ञम्।
स्वाहा॑ दि॒वि स्वाहा॑ पृथि॒व्यां स्वाहा॒न्तरि॑क्षे॒ स्वाहा॒ वाते॑ धां॒ स्वाहा॑॥ ८॥

[९८] अष्टनवतीतमं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा॥ देवता—मन्त्रोक्ताः॥ छन्दः—विराट्॥

सं ब॒र्हिर॒क्तं ह॒विषा॑ घृ॒तेन॒ समिन्द्रे॑ण॒ वसु॑ना॒ सं म॒रुद्भिः॑।
सं दे॒वैर्वि॒श्वदे॑वेभिर॒क्तमिन्द्रं॑ गच्छतु ह॒विः स्वाहा॑॥ १॥

[९९] एकोनशततमं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा॥ देवता—वेदिः॥ छन्दः—भुरिक्त्रिष्टुप्॥

परि॑ स्तृणीहि॒ परि॑ धेहि॒ वेदिं॒ मा जा॒मिं मो॑षीरमु॒या शया॑नाम्।
हो॒तृ॒षद॑नं॒ हरि॑तं हिर॒ण्ययं॑ नि॒ष्का ए॒ते यज॑मानस्य लो॒के॥ १॥

[१००] शततमं सूक्तम्

ऋषिः—यमः॥ देवता—दुःष्वप्ननाशनम्॥ छन्दः—अनुष्टुप्॥

प॒र्याव॑र्ते दुः॒ष्वप्न्या॑त्पा॒पात्स्वप्न्या॒दभू॑त्याः।
ब्रह्मा॒हमन्त॑रं कृण्वे॒ परा॒ स्वप्न॑मुखाः॒ शुचः॑॥ १॥

[१०१] एकशततमं सूक्तम्

ऋषिः—यमः॥ देवता—दुःष्वप्ननाशनम्॥ छन्दः—अनुष्टुप्॥

यत्स्वप्ने॒ अन्न॑म॒श्नामि॒ न प्रा॒तर॑धिग॒म्यते॑।
सर्वं॒ तद॑स्तु मे शि॒वं न॒हि तद् दृ॒श्यते॒ दिवा॑॥ १॥

[१०२] द्व्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—प्रजापतिः॥ देवता—द्यावापृथिव्यादयो मन्त्रोक्ताः॥ छन्दः—विराट्पुरस्ताद्बृहती॥

न॒म॒स्कृत्य॒ द्यावा॑पृथि॒वीभ्या॑म॒न्तरि॑क्षाय मृ॒त्यवे॑।
मे॒क्षाम्यू॒र्ध्वस्तिष्ठ॒न्मा मा॑ हिंसिषुरीश्व॒राः॥ १॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अथ दशमोऽनुवाकः [१०३] त्र्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—ब्रह्मा ॥ देवता—आत्मा ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥

को अस्या नो द्रुहोऽवद्यवत्या उन्नेष्यति क्षत्रियो वस्य इच्छन्।
को यज्ञकामः क उ पूर्तिकामः को देवेषु वनुते दीर्घमायुः ॥ १ ॥

[१०४] चतुरुत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—ब्रह्मा ॥ देवता—आत्मा ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥

कः पृश्निं धेनुं वरुणेन दत्तामथर्वणे सुदुघां नित्यवत्साम्।
बृहस्पतिना सख्यं जुषाणो यथावशं तन्वः कल्पयाति ॥ १ ॥

[१०५] पञ्चोत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा ॥ देवता—मन्त्रोक्ता ॥ छन्दः—अनुष्टुप् ॥

अपक्रामन्पौरुषेयाद् वृणानो दैव्यं वचः।
प्रणीतीरभ्यावर्तस्व विश्वेभिः सखिभिः सह ॥ १ ॥

[१०६] षडुत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा ॥ देवता—जातवेदाः, वरुणश्च ॥ छन्दः—बृहतीगर्भात्रिष्टुप् ॥

यदस्मृति चकृम किं चिदग्न उपारिम चरणे जातवेदः।
ततः पाहि त्वं नः प्रचेतः शुभे सखिभ्यो अमृतत्वमस्तु नः ॥ १ ॥

[१०७] सप्तोत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—भृगुः ॥ देवता—सूर्यः, आपश्च ॥ छन्दः—अनुष्टुप् ॥

अवं दिवस्तारयन्ति सप्त सूर्यस्य रश्मयः।
आपः समुद्रिया धारास्तास्तें शल्यमसिस्रसन् ॥ १ ॥

[१०८] अष्टोत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—भृगुः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१ बृहतीगर्भात्रिष्टुप्; २ त्रिष्टुप् ॥

यो नस्तायद्दिप्सति यो न आविः स्वो विद्वानरणो वा नो अग्ने।
प्रतीच्येत्वरणी दत्वती तान्मैषामग्ने वास्तु भून्मो अपत्यम् ॥ १ ॥
यो नः सुप्ताञ्जाग्रतो वाभिदासात्तिष्ठतो वा चरतो जातवेदः।
वैश्वानरेण सयुजा सजोषास्तान्प्रतीचो निर्दह जातवेदः ॥ २ ॥

[१०९] नवोत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—बादरायणिः ॥ देवता—अग्न्यादयो मन्त्रोक्ताः ॥ छन्दः—१ विराट्पुरस्ताद्-बृहती; २, ३, ५, ६ त्रिष्टुप्; ४, ७ अनुष्टुप् ॥

इदमुग्राय बभ्रवे नमो यो अक्षेषु तनूवशी ।
घृतेन कलिं शिक्षामि स नो मृडातीदृशे ॥ १ ॥

घृतमप्सराभ्यो वह त्वमग्ने पांसूनक्षेभ्यः सिकता अपश्च।
यथाभागं हव्यदातिं जुषाणा मदन्ति देवा उभयानि हव्या ॥ २ ॥
अप्सरसः सधमादं मदन्ति हविर्धानमन्तरा सूर्यं च।
ता मे हस्तौ सं सृजन्तु घृतेन सपत्नं मे कितवं रन्धयन्तु ॥ ३ ॥
आदिनवं प्रतिदीव्ने घृतेनास्माँ अभि क्षर ।
वृक्षमिवाशन्या जहि यो अस्मान्प्रतिदीव्यति ॥ ४ ॥
यो नो द्युवे धनमिदं चकार यो अक्षाणां ग्लहनं शेषणं च।
स नो देवो हविरिदं जुषाणो गन्धर्वेभिः सधमादं मदेम ॥ ५ ॥
संवसव इतिं वो नामधेयमुग्रंपश्या राष्ट्रभृतो ह्यक्षाः।
तेभ्यो व इन्दवो हविषा विधेम वयं स्याम पतयो रयीणाम् ॥ ६ ॥
देवान्यन्नाथितो हुवे ब्रह्मचर्यं यदूषिम ।
अक्षान्यद् बभ्रूनालभे ते नो मृडन्त्वीदृशे ॥ ७ ॥

[११०] दशोत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—भृगुः ॥ देवता—इन्द्राग्नी ॥ छन्दः—१ गायत्री; २ त्रिष्टुप्; ३ अनुष्टुप् ॥

अग्न इन्द्रश्च दाशुषे हतो वृत्राण्यप्रति। उभा हि वृत्रहन्तमा ॥ १ ॥
याभ्यामजयन्त्स्वरग्र एव यावातस्थतुर्भुवनानि विश्वा।
प्रचर्षणी वृषणा वज्रबाहू अग्निमिन्द्रं वृत्रहणा हुवेऽहम् ॥ २ ॥
उप त्वा देवो अग्रभीच्चमसेन बृहस्पतिः ।
इन्द्र गीर्भिर्न आ विश यजमानाय सुन्वते ॥ ३ ॥

[१११] एकादशोत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—ब्रह्मा ॥ देवता—वृषभः ॥ छन्दः—पराबृहतीत्रिष्टुप् ॥

इन्द्रस्य कुक्षिरसि सोमधानं आत्मा देवानामुत मानुषाणाम्।
इह प्रजा जनय यास्त आसु या अन्यत्रेह तास्ते रमन्ताम् ॥ १ ॥

[११२] द्वादशोत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—ब्रह्मा ॥ देवता—आपः ॥ छन्दः—१ भुरिगनुष्टुप्; २ अनुष्टुप् ॥

शुम्भनी द्यावापृथिवी अन्तिसुम्ने महिव्रते।
आपः सप्त सुस्रुवुर्देवीस्ता नो मुञ्चन्त्वंहसः ॥ १ ॥
मुञ्चन्तु मा शप्थ्याद्३थो वरुण्यादुत।
अथो यमस्य पड्बीशाद्विश्वस्माद्देवकिल्बिषात् ॥ २ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

[११३] त्रयोदशोत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—भार्गवः॥ देवता—तृष्टिका॥ छन्दः—१ विराडनुष्टुप्; २ शङ्कुमतीचतुष्पदाभुरिगुष्णिक्॥

तृष्टि॑के॒ तृष्ट॑वन्दन॒ उद॒मूं छि॑न्धि तृष्टिके ।
यथा॑ कृ॒तद्वि॒ष्टासो॒ऽमुष्मै॑ शे॒प्याव॑ते ॥ १ ॥
तृ॒ष्टासि॑ तृष्टि॒का वि॒षा वि॑षात॒क्य᳡ सि ।
परि॑वृक्ता॒ यथास॑स्यृष॒भस्य॑ व॒शेव॑ ॥ २ ॥

[११४] चतुर्दशोत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—भार्गवः॥ देवता—अग्नीषोमौ॥ छन्दः—अनुष्टुप्॥

आ ते॑ ददे व॒क्षणा॑भ्य॒ आ ते॒ऽहं हृद॑याद्ददे।
आ ते॒ मुख॑स्य॒ संका॑शा॒त्सर्वं॑ ते॒ वर्च॒ आ द॑दे॥ १ ॥
प्रेतो य॑न्तु॒ व्या᳡ध्यः॒ प्रानु॒ध्याः प्रो अश॑स्तयः।
अ॒ग्नी र॑क्ष॒स्विनी॑र्हन्तु॒ सोमो॑ हन्तु दुरस्य॒तीः॥ २ ॥

[११५] पञ्चदशोत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वाङ्गिराः॥ देवता—सविता, जातवेदाः॥ छन्दः—१, ४ अनुष्टुप्; २, ३ त्रिष्टुप्॥

प्र प॑ते॒तः पा॑पि लक्ष्मि॒ नश्ये॒तः प्रामुतः॑ पत ।
अ॒य॒स्मये॑ना॒ङ्केन॑ द्विष॒ते त्वा स॑जामसि ॥ १ ॥
या मा॑ ल॒क्ष्मीः प॑तया॒लूरजु॑ष्टाभिच॒स्कन्द॒ वन्द॑नेव वृ॒क्षम् ।
अ॒न्यत्रा॒स्मत्स॑वित॒स्तामि॒तो धा॒ हिर॑ण्यहस्तो॒ वसु॑ नो॒ ररा॑णः ॥ २ ॥
एक॑शतं ल॒क्ष्म्यो॒३॒॑ मर्त्य॑स्य सा॒कं त॒न्वा᳡ ज॒नुषोऽधि॑ जा॒ताः।
तासां॒ पापि॑ष्ठा॒ निरि॒तः प्र हि॑ण्मः शि॒वा अ॒स्मभ्यं॑ जातवेदो॒ नि य॑च्छ॥ ३ ॥
ए॒ता ए॑ना॒ व्याक॑रं खि॒ले गा विष्ठि॑ताइव ।
रम॑न्तां॒ पुण्या॑ ल॒क्ष्मीर्याः पा॒पीस्ता अ॑नीनशम् ॥ ४ ॥

[११६] षोडशोत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वाङ्गिराः॥ देवता—चन्द्रमाः, ज्वरः॥ छन्दः—१ परोष्णिक्; २ द्विपदाऽऽर्च्यनुष्टुप् (एकावसाना)॥

नमो॑ रू॒राय॒ च्यव॑नाय॒ चोद॑नाय धृ॒ष्णवे॑ ।
नमः॑ शी॒ताय॑ पूर्वकाम॒कृत्व॑ने ॥ १ ॥
यो अ॑न्ये॒द्युरु॑भय॒द्युर॒भ्येती॒मं म॒ण्डूक॑म॒भ्ये᳡त्ववतः॥ २ ॥

[११७] सप्तदशोत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वाङ्गिराः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—पथ्याबृहती॥

आ म॒न्द्रैरि॑न्द्र॒ हरि॑भिर्या॒हि म॒यूर॑रोमभिः ।
मा त्वा॒ के चि॒द्वि य॑म॒न्विं न पा॒शिनोऽति॒ धन्वे॑व॒ ताँ इ॑हि॥ १ ॥

[११८] अष्टादशोत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वाङ्गिराः॥ देवता—सोमः, वरुणः, देवश्च॥ छन्दः—त्रिष्टुप्॥

मर्मा॑णि॒ ते॒ वर्म॑णा छादयामि॒ सोम॑स्त्वा॒ राजा॒मृते॒नानु॑ वस्ताम्।
उ॒रोर्वरी॑यो॒ वरु॑णस्ते कृणोतु॒ जय॑न्तं॒ त्वानु॑ दे॒वा म॑दन्तु॥ १ ॥

॥ इति सप्तदशः प्रपाठकः॥

॥ इति सप्तमं काण्डम्॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अथाष्टमं काण्डम्॥

अथाष्टादशः प्रपाठकः॥

अथ प्रथमोऽनुवाकः [१] प्रथमं सूक्तम्

ऋषिः—ब्रह्मा॥ देवता—आयुः॥ छन्दः—१ पुरोबृहती त्रिष्टुप्; २, ३, १७-२१ अनुष्टुप्; ४, ९, १५, १६ प्रस्तारपङ्क्तिः; ५, ६, १०, ११ त्रिष्टुप्; ७ त्रिपाद्विराड्गायत्री; ८ विराट्पथ्याबृहती; १२ पञ्चपदाजगती; १३ त्रिपदाभुरिङ्महाबृहती; १४ द्विपदासाम्नीभुरिग्बृहती॥

अन्तकाय मृत्यवे नमः प्राणा अपाना इह ते रमन्ताम् ।
इहायमस्तु पुरुषः सहासुना सूर्यस्य भागे अमृतस्य लोके ॥१॥
उदेनं भगो अग्रभीदुदेनं सोमो अंशुमान् ।
उदेनं मरुतो देवा उदिन्द्राग्नी स्वस्तये ॥२॥
इह तेऽसुरिह प्राण इहायुरिह ते मनः ।
उत्त्वा निर्ऋत्याः पाशेभ्यो दैव्या वाचा भरामसि ॥३॥
उल्कामातः पुरुष मावं पत्था मृत्योः षड्बीशमवमुञ्चमानः ।
मा च्छित्था अस्माल्लोकाद्ग्नेः सूर्यस्य संदृशः ॥४॥
तुभ्यं वातः पवतां मातरिश्वा तुभ्यं वर्षन्त्वमृतान्यापः ।
सूर्यस्ते तन्वे३ शं तपाति त्वां मृत्युर्दयतां मा प्र मेष्ठाः ॥५॥
उद्यानं ते पुरुष नावयानं जीवातुं ते दक्षतातिं कृणोमि ।
आ हि रोहेममृतं सुखं रथमथ जिर्विर्विदथमा वदासि ॥६॥
मा ते मनस्तत्र गान्मा तिरो भून्मा जीवेभ्यः प्र मदो मानु
गाः पितॄन्। विश्वे देवा अभि रक्षन्तु त्वेह ॥७॥
मा गतानामा दीधीथा ये नयन्ति परावतम् ।
आ रोह तमसो ज्योतिरेह्या ते हस्तौ रभामहे ॥८॥
श्यामश्चं त्वा मा शबलश्च प्रेषितौ यमस्य यौ पथिरक्षी श्वानौ ।
अर्वाङेहि मा वि दीध्यो मात्र तिष्ठः पराङ्मनाः ॥९॥
मैतं पन्थामनु गा भीम एष येन पूर्वं नेयथ तं ब्रवीमि ।
तमं एतत्पुरुष मा प्र पत्था भयं परस्तादभयं ते अर्वाक् ॥१०॥

रक्षन्तु त्वाग्रयो ये अप्स्वन्ता रक्षतु त्वा मनुष्या३ यमिन्धते ।
वैश्वानरो रक्षतु जातवेदा दिव्यस्त्वा मा प्र धाग्विद्युता सह॥११॥
मा त्वा क्रव्यादभि मंस्तारात्संकसुकाच्चर ।
रक्षतु त्वा द्यौ रक्षतु पृथिवी सूर्यश्च त्वा रक्षतां चन्द्रमाश्च ।
अन्तरिक्षं रक्षतु देवहेत्याः ॥१२॥
बोधश्चं त्वा प्रतीबोधश्च रक्षतामस्वप्नश्चं त्वानवद्राणश्चं रक्षताम् ।
गोपायंश्चं त्वा जागृविश्च रक्षताम् ॥१३॥
ते त्वा रक्षन्तु ते त्वा गोपायन्तु तेभ्यो नमस्तेभ्यः स्वाहा॥१४॥
जीवेभ्यस्त्वा समुदे वायुरिन्द्रो धाता दधातु सविता त्रायमाणः ।
मा त्वा प्राणो बलं हासीदसुं तेऽनु ह्वयामसि ॥१५॥
मा त्वा जम्भः संहनुर्मा तमो विदन्मा जिह्वा बर्हिः प्रमयुः
कथा स्याः। उत्त्वादित्या वसवो भरन्तूदिन्द्राग्नी स्वस्तये॥१६॥
उत्त्वा द्यौरुत्पृथिव्युताजापतिरग्रभीत् ।
उत्त्वा मृत्योरोषधयः सोमराज्ञीरपीपरन् ॥१७॥
अयं देवा इहैवास्त्वयं मामुत्र गादितः ।
इमं सहस्त्रवीर्येण मृत्योरुत्पारयामसि ॥१८॥
उत्त्वा मृत्योरपीपरं सं धमन्तु वयोधसः ।
मा त्वा व्यस्तकेश्यो३ मा त्वाघरुदो रुदन्॥१९॥
आहार्षमविदं त्वा पुनरागाः पुनर्णवः ।
सर्वाङ्ग सर्वं ते चक्षुः सर्वमायुश्च तेऽविदम्॥२०॥
व्यावित्ते ज्योतिरभूदप त्वत्तमो अक्रमीत् ।
अप त्वन्मृत्युं निर्ऋतिमप यक्ष्मं नि दध्मसि॥२१॥

[२] द्वितीयं सूक्तम्

ऋषिः—ब्रह्मा॥ देवता—आयुः॥ छन्दः—१, २, ७ भुरिक्त्रिष्टुप्; ३, २६ आस्तारपङ्क्तिः; ४ प्रस्तारपङ्क्तिः; ५, १०, १६, १८, २०, २३-२५, २७ अनुष्टुप्; ६, १५ पथ्यापङ्क्तिः; ८ पुरस्तात्-ज्योतिष्मतीजगती; ९ पञ्चपदाजगती; ११ विष्टारपङ्क्तिः; १२, २२, २८ पुरस्तादबृहती; १३ त्रिष्टुप्; १४ षट्-पदाजगती; १७ त्रिपादनुष्टुप्; १९ उपरिष्टाद्-बृहती; २१ सतःपङ्क्तिः॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri Kavya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

आ रभस्वेमाममृतस्य शनुष्टिमच्छिद्यमाना जरदष्टिरस्तु ते।
असुं त आयुः पुनरा भरामि रजस्तमो मोप गा मा प्र मेष्ठाः ॥ १ ॥
जीवतां ज्योतिरभ्येह्यर्वाङ् त्वा हरामि शतशारदाय ।
अवमुञ्चन्मृत्युपाशानशस्तिं द्राघीय आयुः प्रतरं ते दधामि ॥ २ ॥
वातात्ते प्राणमविदं सूर्याच्चक्षुरहं तव ।
यत्ते मनस्त्वयि तद्धारयामि सं वित्स्वाङ्गैर्वदं जिह्वयालपन् ॥ ३ ॥
प्राणेन त्वा द्विपदां चतुष्पदामग्निमिव जातमभि सं धमामि ।
नमस्ते मृत्यो चक्षुषे नमः प्राणाय तेऽकरम् ॥ ४ ॥
अयं जीवतु मा मृतेमं समीरयामसि ।
कृणोम्यस्मै भेषजं मृत्यो मा पुरुषं वधीः ॥ ५ ॥
जीवलां नघारिषां जीवन्तीमोषधीमहम् ।
त्रायमाणां सहमानां सहस्वतीमिह हुवेऽस्मा अरिष्टतातये ॥ ६ ॥
अधि ब्रूहि मा रभथाः सृजेमं तवैव सन्त्सर्वहाया इहास्तु ।
भवाशर्वौ मृडतं शर्म यच्छतमप सिध्यं दुरितं धत्तमायुः ॥ ७ ॥
अस्मै मृत्यो अधि ब्रूहीमं दयस्वोदितोऽयमेतु ।
अरिष्टः सर्वाङ्गः सुश्रुज्जरसां शतहायन आत्मना भुजमश्नुताम् ॥ ८ ॥
देवानां हेतिः परि त्वा वृणक्तु पारयामि त्वा रजस उत्त्वा मृत्योरपीपरम् ।
आरादग्निं क्रव्यादं निरूहं जीवातवे ते परिधिं दधामि ॥ ९ ॥
यत्ते नियानं रजसं मृत्यो अनवधर्ष्यम् ।
पथ इमं तस्माद्रक्षन्तो ब्रह्मास्मै वर्म कृण्मसि ॥ १० ॥
कृणोमि ते प्राणापानौ जरां मृत्युं दीर्घमायुः स्वस्ति ।
वैवस्वतेन प्रहितान्यमदूतांश्चरतोऽप सेधामि सर्वान् ॥ ११ ॥
आरादरातिं निर्ऋतिं परो ग्राहिं क्रव्यादः पिशाचान् ।
रक्षो यत्सर्वं दुर्भूतं तत्तमङ्ग्वाप हन्मसि ॥ १२ ॥
अग्नेष्टे प्राणममृतादायुष्मतो वन्वे जातवेदसः ।
यथा न रिष्या अमृतः सजूरस्तत्ते कृणोमि तदु ते समृध्यताम् ॥ १३ ॥
शिवे ते स्तां द्यावापृथिवी असंतापे अभिश्रियौ ।
शं ते सूर्य आ तपतु शं वातो वातु ते हृदे ।
शिवा अभि क्षरन्तु त्वापो दिव्याः पयस्वतीः ॥ १४ ॥
शिवास्ते सन्त्वोषधय उत्त्वाहार्षमधरस्या उत्तरां पृथिवीमभि।
तत्र त्वादित्यौ रक्षतां सूर्याचन्द्रमसावुभा ॥ १५ ॥

यत्ते वासः परिधानं यां नीविं कृणुषे त्वम् ।
शिवं ते तन्वे३ तत्कृण्मः संस्पर्शेऽदृक्ष्णमस्तु ते ॥ १६ ॥
यत्क्षुरेण मर्चयता सुतेजसा वसा वपसि केशश्मश्रु ।
शुभं मुखं मा न आयुः प्र मोषीः ॥ १७ ॥
शिवौ ते स्तां व्रीहियवावबलासावदोमधौ।
एतौ यक्ष्मं वि बाधेते एतौ मुञ्चतो अंहसः ॥ १८ ॥
यदश्नासि यत्पिबसि धान्यं कृष्याः पयः।
यदाद्यं१ यदनाद्यं सर्वं ते अन्नमविषं कृणोमि ॥ १९ ॥
अह्ने च त्वा रात्र्ये चोभाभ्यां परि दद्मसि।
अरायेभ्यो जिघत्सुभ्यः इमं मे परि रक्षत ॥ २० ॥
शतं तेऽयुतं हायनान्द्वे युगे त्रीणि चत्वारि कृण्मः।
इन्द्राग्नी विश्वे देवास्तेऽनु मन्यन्तामहृणीयमानाः ॥ २१ ॥
शरदे त्वा हेमन्ताय वसन्ताय ग्रीष्माय परि दद्मसि।
वर्षाणि तुभ्यं स्योनानि येषु वर्धन्त ओषधीः ॥ २२ ॥
मृत्युरीशे द्विपदां मृत्युरीशे चतुष्पदाम् ।
तस्मात्त्वां मृत्योर्गोपतेरुद्धरामि स मा बिभेः ॥ २३ ॥
सो रिष्ट न मरिष्यसि न मरिष्यसि मा बिभेः।
न वै तत्र म्रियन्ते नो यन्त्यधमं तमः ॥ २४ ॥
सर्वो वै तत्र जीवति गौरश्वः पुरुषः पशुः।
यत्रेदं ब्रह्म क्रियते परिधिर्जीवनाय कम् ॥ २५ ॥
परि त्वा पातु समानेभ्योऽभिचारात्सबन्धुभ्यः।
अमग्निर्भवामृतोऽतिजीवो मा ते हासिषुरसवः शरीरम् ॥ २६ ॥
ये मृत्यव एकशतं या नाष्ट्रा अंतितायाः।
मुञ्चन्तु तस्मात्त्वां देवा अग्नेर्वैश्वानरादधि ॥ २७ ॥
अग्नेः शरीरमसि पारयिष्णु रक्षोहासि सपत्नहा।
अथो अमीवचातनः पूतुद्रुर्नाम भेषजम् ॥ २८ ॥

अथ द्वितीयोऽनुवाकः [३] तृतीयं सूक्तम्

ऋषिः—चातनः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१-६, ८-११, १३, १६, १८-२०, २४ त्रिष्टुप्; ७, १२, १४, १५, १७, २१ भुरिक्त्रिष्टुप्; २२, २३ अनुष्टुप्; २५ बृहती-गर्भाजगती; २६ गायत्री ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

रक्षोहणं वाजिनमा जिघर्मि मित्रं प्रथिष्टमुपं यामि शर्म।
शिशानो अग्निः क्रतुभिः समिद्धः स नो दिवा स रिषः पातु नक्तम्॥ १॥

अयोदंष्ट्रो अर्चिषा यातुधानानुप स्पृश जातवेदः समिद्धः।
आ जिह्वया मूरदेवान्रभस्व क्रव्यादो वृष्ट्वापि धत्स्वासन्॥ २॥

उभोभयाविन्नुप धेहि दंष्ट्रौ हिंस्रः शिशानोऽवरं परं च।
उतान्तरिक्षे परि याह्यग्रे जम्भैः सं धेह्यभि यातुधानान्॥ ३॥

अग्ने त्वचं यातुधानस्य भिन्धि हिंस्राशनिर्हरसा हन्त्वेनम्।
प्र पर्वाणि जातवेदः शृणीहि क्रव्यात्क्रविष्णुर्वि चिनोत्वेनम्॥ ४॥

यत्रेदानीं पश्यसि जातवेदस्तिष्ठन्तमग्न उत वा चरन्तम्।
उतान्तरिक्षे पतन्तं यातुधानं तमस्ता विध्य शर्वा शिशानः॥ ५॥

यज्ञैरिषूः संनममानो अग्ने वाचा शल्यां अशनिभिर्दिहानः।
ताभिर्विध्य हृदये यातुधानान्प्रतीचो बाहून्प्रति भङ्ग्ध्येषाम्॥ ६॥

उतारब्धान्त्स्मृणुहि जातवेद उतारेभाणाँ ऋष्टिभिर्यातुधानान्।
अग्ने पूर्वो नि जहि शोशुचान आमादः क्ष्विङ्कास्तमदन्त्वेनीः॥ ७॥

इह प्र ब्रूहि यतमः सो अग्ने यातुधानो य इदं कृणोति।
तमा रभस्व समिधा यविष्ठ नृचक्षसश्चक्षुषे रन्धयैनम्॥ ८॥

तीक्ष्णेनाग्ने चक्षुषा रक्ष यज्ञं प्राञ्चं वसुभ्यः प्र णय प्रचेतः।
हिंस्रं रक्षांस्यभि शोशुचानं मा त्वा दभन्यातुधानाः नृचक्षः॥ ९॥

नृचक्षा रक्षः परि पश्य विक्षु तस्य त्रीणि प्रति शृणीह्यग्रा।
तस्याग्ने पृष्टीर्हरसा शृणीहि त्रेधा मूलं यातुधानस्य वृश्च॥ १०॥

त्रियातुधानः प्रसितिं त एत्वृतं यो अग्ने अनृतेन हन्ति।
तमर्चिषा स्फूर्जयञ्जातवेदः समक्षमेनं गृणते नि युङ्ग्धि॥ ११॥

यदग्ने अद्य मिथुना शपातो यद्वाचस्तृष्टं जनयन्त रेभाः।
मन्योर्मनसः शरव्या३ जायते या तया विध्य हृदये यातुधानान्॥ १२॥

परा शृणीहि तपसा यातुधानान्पराग्ने रक्षो हरसा शृणीहि।
परार्चिषा मूरदेवाञ्छृणीहि परासुतृपः शोशुचतः शृणीहि॥ १३॥

पराद्य देवा वृजिनं शृणन्तु प्रत्यगेनं शपथा यन्तु सृष्टाः।
वाचास्तेनं शरव ऋच्छन्तु मर्मन्विश्वयैतु प्रसितिं यातुधानः॥ १४॥

यः पौरुषेयेण क्रविषा समङ्क्ते यो अश्व्येन पशुना यातुधानः।
यो अघ्न्याया भरति क्षीरमग्ने तेषां शीर्षाणि हरसापि वृश्च॥ १५॥

विषं गवां यातुधानाः भरन्तामा वृश्चन्तामदितये दुरेवाः।
परैणान्देवः सविता ददातु परा भागमोषधीनां जयन्ताम्॥ १६॥

संवत्सरीणं पय उस्त्रियायास्तस्य माशीद्यातुधानो नृचक्षः।
पीयूषमग्ने यतमस्तितृप्सात्तं प्रत्यञ्चमर्चिषा विध्य मर्मणि॥ १७॥

सनादग्ने मृणसि यातुधानान्न त्वा रक्षांसि पृतनासु जिग्युः।
सहमूराननु दह क्रव्यादो मा ते हेत्या मुक्षत दैव्यायाः॥ १८॥

त्वं नो अग्ने अधरादुदक्तस्त्वं पश्चादुत रक्षा पुरस्तात्।
प्रति ते ते अजरासस्तपिष्ठा अघशंसं शोशुचतो दहन्तु॥ १९॥

पश्चात्पुरस्तादधरादुतोत्तरात्क्विः काव्येन परि पाह्यग्ने।
सखा सखायमजरो जरिम्णे अग्ने मर्तो अमर्त्यस्त्वं नः॥ २०॥

तदग्ने चक्षुः प्रति धेहि रेभे शफारुजो येन पश्यसि यातुधानान्।
अथर्ववज्ज्योतिषा दैव्येन सत्यं धूर्वन्तमचितं न्योषि॥ २१॥

परि त्वाग्ने पुरं वयं विप्रं सहस्य धीमहि।
धृषद्वर्णं दिवेदिवे हन्तारं भङ्गुरावतः॥ २२॥

विषेण भङ्गुरावतः प्रति स्म रक्षसो जहि।
अग्ने तिग्मेन शोचिषा तपुरग्राभिरर्चिभिः॥ २३॥

वि ज्योतिषा बृहता भात्यग्निराविर्विश्वानि कृणुते महित्वा।
प्रादेवीर्मायाः सहते दुरेवाः शिशीते शृङ्गे रक्षोभ्यो विनिक्षवे॥ २४॥

ये ते शृङ्गे अजरे जातवेदस्तिग्महेती ब्रह्मसंशिते।
ताभ्यां दुर्हार्दमभिदासन्तं किमीदिनं प्रत्यञ्चमर्चिषा जातवेदो वि निक्ष्व॥ २५॥

अग्नी रक्षांसि सेधति शुक्रशोचिरमर्त्यः। शुचिः पावक ईड्यः॥ २६॥

[४] चतुर्थं सूक्तम्

ऋषिः—चातनः॥ देवता—इन्द्रासोमादयो मन्त्रोक्ताः॥ छन्दः—१-७, १५, १८, २१, जगती; ८-१४, १६, १७, १९, २२, २४ त्रिष्टुप्; २०, २३ भुरिक्त्रिष्टुप्; २५ अनुष्टुप्॥

इन्द्रासोमा तपतं रक्ष उब्जतं न्यर्पयतं वृषणा तमोवृधः।
परा शृणीतमचितो न्योषितं हतं नुदेथां नि शिशीतमत्रिणः॥ १॥

इन्द्रासोमा समघशंसमभ्यघं तपुर्ययस्तु चरुरग्निमाँइव।
ब्रह्मद्विषे क्रव्यादे घोरचक्षसे द्वेषो धत्तमनवायं किमीदिने॥ २॥

इन्द्रासोमा दुष्कृतो वव्रे अन्तरनारम्भणे तमसि प्र विध्यतम्।
यथा नैषां पुनरेकश्चनोदयत्तद्वामस्तु सहसे मन्युमच्छवः॥ ३॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

इन्द्रासोमा वर्तयतं दिवो वधं सं पृथिव्या अघशंसाय तर्हणम्।
उत्तक्षतं स्वर्यं१ पर्वतेभ्यो येन रक्षो वावृधानं निजूर्वथः॥४॥
इन्द्रासोमा वर्तयतं दिवस्पर्यग्नितप्तेभिर्युवमश्मन्मयेभिः।
तपुर्वधेभिरजरेभिरत्रिणो नि पर्शाने विध्यतं यन्तु निस्वरम्॥५॥
इन्द्रासोमा परि वां भूतु विश्वत इयं मतिः कक्ष्याश्वेव वाजिना।
यां वां होत्रां परिहिनोमि मेधयेमा ब्रह्माणि नृपतीइव जिन्वतम्॥६॥
प्रति स्मरेथां तुजयद्भिरेवैर्हतं द्रुहो रक्षसो भङ्गुरावतः।
इन्द्रासोमा दुष्कृते मा सुगं भूद्यो मा कदा चिदभिदासति द्रुहुः॥७॥
यो मा पाकेन मनसा चरन्तमभिचष्टे अनृतेभिर्वचोभिः।
आपइव काशिना संगृभीता असन्नस्त्वासत इन्द्र वक्ता॥८॥
ये पाकशंसं विहरन्त ऐवैर्ये वा भद्रं दूषयन्ति स्वधाभिः।
अहये वा तान्प्रददातु सोम आ वा दधातु निर्ऋतेरुपस्थे॥९॥
यो नो रसं दिप्सति पित्वो अग्ने अश्वानां गवां यस्तनूनाम्।
रिपु स्तेन स्तेयकृद्भ्यमेतु नि ष हीयतां तन्वा३ तना च॥१०॥
परः सो अस्तु तन्वा३ तना च तिस्रः पृथिवीरधो अस्तु विश्वाः।
प्रति शुष्यतु यशो अस्य देवा यो मा दिवा दिप्सति यश्च नक्तम्॥११॥
सुविज्ञानं चिकितुषे जनाय सच्चासच्च वचसी पस्पृधाते।
तयोर्यत्सत्यं यतरदृजीयस्तदित्सोमोऽवति हन्त्यासत्॥१२॥
न वा उ सोमो वृजिनं हिनोति न क्षत्रियं मिथुया धारयन्तम्।
हन्ति रक्षो हन्त्यासद्वदन्तमुभाविन्द्रस्य प्रसितौ शयाते॥१३॥
यदि वाहमनृतदेवो अस्मि मोघं वा देवाँ अप्यूहे अग्ने।
किमस्मभ्यं जातवेदो हृणीषे द्रोघवाचस्ते निर्ऋथं संचन्ताम्॥१४॥
अद्या मुरीय यदि यातुधानो अस्मि यदि वायुस्तप पूरुषस्य।
अधा स वीरैर्दशभिर्वि यूया यो मा मोघं यातुधानेत्याह॥१५॥
यो मायातुं यातुधानेत्याह यो वा रक्षाः शुचिरस्मीत्याह।
इन्द्रस्तं हन्तु महता वधेन विश्वस्य जन्तोरधमस्पदीष्ट॥१६॥
प्र या जिगाति खर्गलेव नक्तमप द्रुहुस्तन्वं१ गूहमाना।
वव्रमनन्तमव सा पदीष्ट ग्रावाणो घ्नन्तु रक्षस उपब्दैः॥१७॥
वि तिष्ठध्वं मरुतो विक्ष्वी३च्छत गृभायत रक्षसः सं पिनष्टन।
वयो ये भूत्वा पतयन्ति नक्तभिर्ये वा रिपो दधिरे देवे अध्वरे॥१८॥

प्र वर्तय दिवोऽश्मानमिन्द्र सोमशितं मघवन्त्सं शिशाधि।
प्राक्तो अप्राक्तो अधरादुदक्तोऽभि जहि रक्षसः पर्वतेन॥१९॥
एत उ त्ये पतयन्ति श्वयातव इन्द्रं दिप्सन्ति दिप्सवोऽदाभ्यम्।
शिशीते शक्रः पिशुनेभ्यो वधं नूनं सृजदशनिं यातुमद्भ्यः॥२०॥
इन्द्रो यातूनामभवत्पराशरो हविर्मथीनामभ्या३विवासताम्।
अभीदु शक्रः पर शर्यथा वनं पात्रेव भिन्दन्सत एतु रक्षसः॥२१॥
उलूकयातुं शुशुलूकयातुं जहि श्वयातुमुत कोकयातुम्।
सुपर्णयातुमुत गृध्रयातुं दृषदेव प्र मृण रक्ष इन्द्र॥२२॥
मा नो रक्षो अभि नड्यातुमावदपोच्छन्तु मिथुना ये किमीदिनः।
पृथिवी नः पार्थिवात्पात्वंहसोऽन्तरिक्षं दिव्यात्पात्वस्मान्॥२३॥
इन्द्र जहि पुमांसं यातुधानमुत स्त्रियं मायया शाशदानाम्।
विग्रीवासो मूरदेवा ऋदन्तु मा ते दृशन्त्सूर्यमुच्चरन्तम्॥२४॥
प्रति चक्ष्व वि चक्ष्वेन्द्रश्च सोम जागृतम्।
रक्षोभ्यो वधमस्यतमशनिं यातुमद्भ्यः॥२५॥

अथ तृतीयोऽनुवाकः [५] पञ्चमं सूक्तम्

ऋषिः—शुक्रः॥ देवता—मन्त्रोक्ताः॥ छन्दः—१, ६ उपरिष्टाद्बृहती; २ त्रिपदा-विराड्गायत्री; ३ भुरिग्जगती; ४, १२, १३, १६-१८ अनुष्टुप्; ५ भुरिक् संस्तारपङ्क्तिः; ७, ८ ककुम्मत्यनुष्टुप्; ९ पुरस्कृतिर्जगती; १० त्रिष्टुप्; ११ पथ्यापङ्क्तिः; १४ षट्पदाजगती; १५ पुरस्ताद्बृहती; १९ जगती-गर्भात्रिष्टुप्; २० विराड्गर्भाऽऽस्तारपङ्क्तिः; २१ विराट्त्रिष्टुप्; २२ सप्तपदाविराड्गर्भाभुरिक्शक्वरी॥

अयं प्रतिसरो मणिर्वीरो वीराय बध्यते।
वीर्यावान्त्सपत्नहा शूरवीरः परिपाणः सुमङ्गलः॥१॥
अयं मणिः सपत्नहा सुवीरः सहस्वान्वाजी सहमान उग्रः।
प्रत्यक्कृत्या दूषयन्नेति वीरः॥२॥
अनेनेन्द्रो मणिना वृत्रमहन्नेनासुरान्पराभावयन्मनीषी।
अनेनाजयद्द्यावापृथिवी उभे इमे अनेनाजयत्प्रदिशश्चतस्रः॥३॥
अयं स्वाक्त्यो मणिः प्रतीवर्तः प्रतिसरः।
ओजस्वान्विमृधो वशी सो अस्मान्पातु सर्वतः॥४॥
तद्वग्निराह तदु सोम आह बृहस्पतिः सविता तदिन्द्रः।
ते मे देवाः पुरोहिताः प्रतीचीः कृत्याः प्रतिसरैरजन्तु॥५॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अन्तर्दधे द्यावापृथिवी उताहरुत सूर्यम् ।
ते मे देवाः पुरोहिताः प्रतीचीः कृत्याः प्रतिसरैरजन्तु ॥ ६ ॥
ये स्राक्त्यं मणिं जना वर्मीणि कृण्वते ।
सूर्यइव दिवमारुह्य वि कृत्या बाधते वशी ॥ ७ ॥
स्राक्त्येन मणिना ऋषिणेव मनीषिणा ।
अजैषं सर्वाः पृतना वि मृधो हन्मि रक्षसः ॥ ८ ॥

याः कृत्या आङ्गिरसीर्याः कृत्या आसुरीर्याः कृत्याः स्वयंकृता या उ चान्येभिराभृताः । उभयीस्ताः परा यन्तु परावतो नवतिं नाव्या३ अति ॥ ९ ॥

अस्मै मणिं वर्म बध्नन्तु देवा इन्द्रो विष्णुः सविता रुद्रो अग्निः ।
प्रजापतिः परमेष्ठी विराड्वैश्वानर ऋषयश्च सर्वे ॥ १० ॥

उत्तमो अस्योषधीनामनड्वाञ्जगतामिव व्याघ्रः श्वपदामिव ।
यमैच्छमाविदाम तं प्रतिस्पार्शनमन्तितम् ॥ ११ ॥
स इद्व्याघ्रो भवत्यथो सिंहो अथो वृषा ।
अथो सपत्नकर्शनो यो बिभर्तीमं मणिम् ॥ १२ ॥
नैनं घ्नन्त्यप्सरसो न गन्धर्वा न मर्त्याः ।
सर्वा दिशो वि राजति यो बिभर्तीमं मणिम् ॥ १३ ॥
कश्यपस्त्वामसृजत कश्यपस्त्वा समैरयत् ।
अबिभस्त्वेन्द्रो मानुषे बिभ्रत्संश्रेषिणेजियत् ।
मणिं सहस्रवीर्यं वर्म देवा अकृण्वत ॥ १४ ॥
यस्त्वा कृत्याभिर्यस्त्वा दीक्षाभिर्यज्ञैर्यस्त्वा जिघांसति ।
प्रत्यक्त्वमिन्द्र तं जहि वज्रेण शतपर्वणा ॥ १५ ॥
अयमिद्व प्रतीवर्त ओजस्वान्त्संजयो मणिः ।
प्रजां धनं च रक्षतु परिपाणः सुमङ्गलः ॥ १६ ॥
असपत्नं नो अधरादसपत्नं न उत्तरात् ।
इन्द्रासपत्नं नः पश्चाज्ज्योतिः शूर पुरस्कृधि ॥ १७ ॥
वर्म मे द्यावापृथिवी वर्माहर्वर्म सूर्यः ।
वर्म म इन्द्रश्चाग्निश्च वर्म धाता दधातु मे ॥ १८ ॥
ऐन्द्राग्नं वर्म बहुलं यदुग्रं विश्वे देवा नाति विध्यन्ति सर्वे ।
तन्मे तन्वं त्रायतां सर्वतो बृहदायुष्मा जरदष्टिर्यथासानि ॥ १९ ॥
आ मारुक्षदेवमणिर्मह्या अरिष्टतातये ।
इमं मेथिमभिसंविशध्वं तनूपानं त्रिवरूथमोजसे ॥ २० ॥

अस्मिन्निन्द्रो नि दधातु नृम्णमिमं देवासो अभिसंविशध्वम् ।
दीर्घायुत्वाय शतशारदायायुष्माञ्जरदष्टिर्यथासत् ॥ २१ ॥
स्वस्तिदा विशां पतिर्वृत्रहा विमृधो वशी ।
इन्द्रो बध्नातु ते मणिं जिगीवाँ अपराजितः सोमपा अभयंकरो वृषा ।
स त्वा रक्षतु सर्वतो दिवा नक्तं च विश्वतः ॥ २२ ॥

॥ इत्यष्टादशः प्रपाठकः ॥

अथैकोनविंशः प्रपाठकः ॥

[६] षष्ठं सूक्तम्

ऋषिः—मातृनामा ॥ देवता—१-१४, १६-२६ मन्त्रोक्ताः, मातृनामा; १५ ब्रह्मणस्पतिः ॥

छन्दः—१, ३-९, १३, १८-२६ अनुष्टुप्; २ पुरस्ताद्बृहती; १० षट्पदाजगती; ११, १२, १४, १६ पथ्यापङ्क्तिः; १५ सप्तपदाशक्वरी; १७ सप्तपदाजगती ॥

यौ ते मातोन्मार्जं जातायाः पतिवेदनौ ।
दुर्णामा तत्र मा गृधद्वलिंश उत वत्सपः ॥ १ ॥
पलालानुपलालौ शकुं कोकं मलिम्लुचं पलीजकम् ।
आश्रेषं वव्रिवांससमृक्षग्रीवं प्रमीलिनम् ॥ २ ॥
मा सं वृतो मोप सृप ऊरू माव सृपोऽन्तरा ।
कृणोम्यस्यै भेषजं बजं दुर्णामचातनम् ॥ ३ ॥
दुर्णामा च सुनामा चोभा संवृतमिच्छतः ।
अरायानप हन्मः सुनामा स्त्रैणमिच्छताम् ॥ ४ ॥
यः कृष्णः केश्यसुर स्तम्बज उत तुण्डिकः ।
अरायानस्या मुष्काभ्यां भंससोप हन्मसि ॥ ५ ॥
अनुजिघ्रं प्रमृशन्तं क्रव्यादमुत रेरिहम् ।
अरायीछकिकिष्किणो बजः पिङ्गे अनीनशत् ॥ ६ ॥
यस्त्वा स्वप्ने निपद्यते भ्राता भूत्वा पितेव च ।
बजस्तान्त्संहतामितः क्लीबरूपास्तिरीटिनः ॥ ७ ॥
यस्त्वा स्वपन्तीं त्सरति यस्त्वा दिप्सति जाग्रतीम् ।
छायामिव प्र तान्त्सूर्यः परिक्रामन्नयीनशत् ॥ ८ ॥
यः कृणोति मृतवत्सामवतोकामिमां स्त्रियम् ।
तमौषधे त्वं नाशयास्याः कमलमज्जिवम् ॥ ९ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ये शालाः परिनृत्यन्ति सायं गर्दभनादिनः।
कुसूला ये च कुक्षिलाः ककुभाः क्रुमुकाः स्त्रिमाः।
तानोषधे त्वं गन्धेन विषूचीनान्वि नाशय ॥१०॥

ये कुकुन्धाः कुकूरभाः कृत्तीर्दूर्शानि बिभ्रति ।
क्लीबाइव प्रनृत्यन्तो वने ये कुर्वते घोषं तानितो नाशयामसि ॥११॥

ये सूर्यं न तितिक्षन्त आतपन्तमुं दिवः ।
अरायान्बस्तवासिनो दुर्गन्धीँल्लोहितास्यान्मर्कान्नाशयामसि ॥१२॥

य आत्मानमतिमात्रमंसं आधाय बिभ्रति ।
स्त्रीणां श्रोणिप्रतोदिन इन्द्र रक्षांसि नाशय ॥१३॥

ये पूर्वे वध्वोऽयं यन्ति हस्ते शृङ्गाणि बिभ्रतः। आपाकेस्थाः
प्रहासिनं स्तम्बे ये कुर्वते ज्योतिस्तानितो नाशयामसि ॥१४॥

येषां पश्चात्प्रपदानि पुरः पार्ष्णीः पुरो मुखा। खलजाः
शकधूमजा उरुण्डा ये च मद्मटाः कुम्भमुष्का अयाशवः।
तानस्या ब्रह्मणस्पते प्रतीबोधेन नाशय ॥१५॥

पर्यस्ताक्षा अपचक्षशा अस्त्रैणाः सन्तु पण्डगाः ।
अवं भेषज पादय य इमां संविवृत्सत्यपतिः स्वपतिं स्त्रियम् ॥१६॥

उद्बर्हिणं मुनिकेशं जम्भयन्तं मरीमृशम्।
उपेषन्तमुदुम्बलं तुण्डेलमुत शार्लुडम्।
पदा प्र विध्य पाष्ण्यी स्थालीं गौरिव स्पन्दना ॥१७॥

यस्ते गर्भं प्रतिमृशाज्जातं वा मारयाति ते।
पिङ्गस्तमुग्रधन्वा कृणोतु हृदयाविधम् ॥१८॥

ये अम्नो जातान्मारयन्ति सूतिका अनुशेरते।
स्त्रीभागान्पिङ्गो गन्धर्वान्वातो अभ्रमिवाजतु ॥१९॥

परिसृष्टं धारयतु यद्धितं माव पादि तत्।
गर्भं त उग्रौ रक्षतां भेषजौ नीविभार्यौ ॥२०॥

पवीनसात्तङ्गल्वाच्छायकादुत नग्नकात् ।
प्रजायै पत्ये त्वा पिङ्गः परि पातु किमीदिनः ॥२१॥

द्व्याच्चतुरक्षात्पञ्चपादादनड्गुरेः ।
वृन्ताद्भि प्रसर्पतः परि पाहि वरीवृतात् ॥२२॥

य आमं मांसमदन्ति पौरुषेयं च ये क्रविः।
गर्भान्खादन्ति केशवास्तानितो नाशयामसि ॥२३॥

ये सूयीत्परिसर्पन्ति स्नुषेव श्वशुरादधि।
बजश्च तेषां पिङ्गश्च हृदयेऽधि नि विध्यताम् ॥२४॥

पिङ्ग रक्ष जार्यमानं मा पुमांसं स्त्रियं क्रन्।
आण्डादो गर्भान्मा दभन्बार्धस्वेतः किमीदिनः ॥२५॥

अप्रजास्त्वं मातेवत्समाद्रोदमुघमावयम् ।
वृक्षादिव स्रजं कृत्वाप्रिये प्रति मुञ्च तत् ॥२६॥

अथ चतुर्थोऽनुवाकः [७] सप्तमं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा॥ देवता—भैषज्यं, आयुष्यं, ओषधयः॥ छन्दः—१, ७, ८, ११, १३, १६-२३, २७ अनुष्टुप्; २ उपरिष्टाद्बृहती; ३ पुरउष्णिक्; ४ पञ्चपदापरानुष्टुबतिजगती; ५, १०, २५ पथ्यापङ्क्तिः; ६ विराड्-गर्भाभुरिक्पथ्यापङ्क्तिः; ९ द्विपदाऽऽर्चीभुरिगनुष्टुप्; १२ पञ्चपदा-विराडतिशक्वरी; १४ उपरिष्टादनिचृद्बृहती; १५ त्रिष्टुप्; २४ षट्पदाजगती; २६ निचृदनुष्टुप्; २८ भुरिगनुष्टुप्॥

या बभ्रवो याश्च शुक्रा रोहिणीरुत पृश्नयः ।
असिक्नीः कृष्णा ओषधीः सर्वा अच्छावदामसि ॥१॥

त्रायन्तामिमं पुरुषं यक्ष्मादेवेषितादधि ।
यासां द्यौष्पिता पृथिवी माता समुद्रो मूलं वीरुधां बभूव ॥२॥

आपो अग्रं दिव्या ओषधयः ।
तास्ते यक्ष्ममेनस्यं मज्ञदङ्गादनीनशन् ॥३॥

प्रस्तृणती स्तम्बिनीरेकं शुङ्गाः प्रतन्वतीरोषधीरा वदामि।
अंशुमतीः काण्डनीर्या विशाखा ह्वयामि ते वीरुधौ
वैश्वदेवीरुग्राः पुरुषजीवनीः ॥४॥

यद्वः सहः सहमाना वीर्यं यच्च वो बलम् ।
तेनेममस्माद्यक्ष्मात्पुरुषं मुञ्चतौषधीरथो कृणोमि भेषजम् ॥५॥

जीवलां नघारिषां जीवन्तीमोषधीमहम् ।
अरुन्धतीमुन्नयन्तीं पुष्पां मधुमतीमिह हुवेऽस्मा अरिष्टतातये ॥६॥

इहा यन्तु प्रचेतसो मेदिनीर्वचसो मम ।
यथेमं पारयामसि पुरुषं दुरितादधि ॥७॥

अग्नेर्घासो अपां गर्भो या रोहन्ति पुनर्णवाः ।
ध्रुवाः सहस्रनाम्नीर्भेषजीः सन्वाभृताः ॥८॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अवकोल्बा उदकात्मान ओषधयः। व्यृषिन्तु दुरितं तीक्ष्णशृङ्ग्यः॥ ९॥
उन्मुञ्चन्तीर्विवरुणा उग्रा या विषदूषणीः ।
अथो बलासनाशनीः कृत्यादूषणीश्च यास्ता इहा यन्वोषधीः॥ १०॥
अपक्रीताः सहीयसीर्वीरुधो या अभिष्टुताः
त्रायन्तामस्मिन्ग्रामे गामश्वं पुरुषं पशुम् ॥ ११॥
मधुमन्मूलं मधुमदग्रमासां मधुमन्मध्यं वीरुधां बभूव ।
मधुमत्पर्णं मधुमत्पुष्पमासां मधोः संभक्ता अमृतस्य
भक्षो घृतमन्ने दुहतां गोपुरोगवम् ॥ १२॥
यावतीः कियतीश्चेमाः पृथिव्यामध्योषधीः
ता मा सहस्रपुण्र्यो मृत्योर्मुञ्चन्तंहसः ॥ १३॥
वैयाघ्रो मणिर्वीरुधां त्रायमाणोऽभिशस्तिपाः ।
अमीवाः सर्वा रक्षांस्यप हन्त्वधि दूरमस्मत् ॥ १४॥
सिंहस्येव स्तनथोः सं विजन्तेऽग्नेरिव विजन्त आभृताभ्यः।
गवां यक्ष्मः पुरुषाणां वीरुद्भिरतिनुत्तो नाव्या एतु स्रोत्याः॥ १५॥
मुमुचाना ओषधयोऽग्नेर्वैश्वानरादधि ।
भूमिं सन्तन्वतीरित यासां राजा वनस्पतिः॥ १६॥
या रोहन्त्याङ्गिरसीः पर्वतेषु समेषु च।
ता नः पयस्वतीः शिवा ओषधीः सन्तु शं हृदे॥ १७॥
याश्चाहं वेद वीरुधो याश्च पश्यामि चक्षुषा।
अज्ञाता जानीमश्च या यासु विद्म च संभृतम्॥ १८॥
सर्वीः समग्रा ओषधीर्बोधन्तु वचसो मम।
यथेमं पारयामसि पुरुषं दुरितादधि ॥ १९॥
अश्वत्थो दर्भो वीरुधां सोमो राजामृतं हविः।
व्रीहियवश्च भेषजौ दिवस्पुत्रावमर्त्यौ ॥ २०॥
उज्जिहीध्वे स्तनयत्यभिक्रन्दत्योषधीः ।
यदा वः पृश्निमातरः पर्जन्यो रेतसावति॥ २१॥
तस्यामृतस्येमं बलं पुरुषं पाययामसि ।
अथो कृणोमि भेषजं यथासच्छतहायनः ॥ २२॥
वराहो वेद वीरुधं नकुलो वेद भेषजीम्।
सर्पा गन्धर्वा या विदुस्ता अस्मा अवसे हुवे॥ २३॥
याः सुपर्णा आङ्गिरसीर्दिव्या या रघवो विदुः ।
वयांसि हंसा या विदुर्याश्च सर्वे पतत्रिणः
मृगा या विदुरोषधीस्ता अस्मा अवसे हुवे ॥ २४॥
यावतीनामोषधीनां गावः प्राश्नन्त्यघ्न्या यावतीनामजावयः।
तावतीस्त्वभ्यमोषधीः शर्म यच्छन्त्वाभृताः ॥ २५॥
यावतीषु मनुष्याभिषजं भिषजौ विदुः ।
तावतीर्विश्वभेषजीरा भरामि त्वामभि ॥ २६॥
पुष्पवतीः प्रसूमतीः फलिनीरफला उत ।
संमातरइव दुह्रामस्मा अरिष्टातये ॥ २७॥
उत्त्वाहार्षं पञ्चशलादथो दशशलादुत ।
अथो यमस्य षड्बीशाद्विश्वस्माद्देवल्बिषात् ॥ २८॥

[८] अष्टमं सूक्तम्

ऋषिः—भृग्वङ्गिराः॥ देवता—इन्द्रः, वनस्पतिः, परसेनाहननं च॥ छन्दः—१, ५, १३-१८, अनुष्टुप्; २, ८-१०, २३ उपरिष्टाद्बृहती; ३ विराड्बृहती; ४ बृहतीपुरस्तात्प्रस्तारपङ्क्तिः; ६ आस्तारपङ्क्तिः; ७ विपरीतपादलक्ष्मा-चतुष्पदाऽतिजगती; ११ पथ्याबृहती; १२ भुरिगनुष्टुप्; १९ पुरस्ताद् विराड्बृहती; २० निचृत्पुरस्ताद्बृहती; २१ त्रिष्टुप्; २२ चतुष्पदा-शक्वरी; २४ त्रिष्टुबुष्णिग्गर्भापराशक्वरीपञ्चपदाजगती॥

इन्द्रो मन्थतु मन्थिता शक्रः शूरः पुरन्दरः।
यथा हनाम सेना अमित्राणां सहस्रशः॥ १॥
पूतिरज्जुरुपध्मानी पूतिं सेनां कृणोत्वमूम्।
धूममग्निं परावृश्यामित्रा हत्वा दधतां भयम्॥ २॥
अमूनश्वत्थ निः शृणीहि खादामून्खदिराजिरम्।
ताजद्भङ्गइव भज्यन्तां हन्त्वेनान्वधको वधैः॥ ३॥
परुषानमून्परुषाह्नः कृणोतु हन्त्वेनान्वधको वधैः।
क्षिप्रं शरइव भज्यन्तां बृहज्जालेन संदिताः॥ ४॥
अन्तरिक्षं जालमासीज्जालदण्डा दिशो महीः।
तेनाभिधाय दस्यूनां शक्रः सेनामपावपत्॥ ५॥
बृहद्धि जालं बृहतः शक्रस्य वाजिनीवतः ।
तेन शत्रूनभि सर्वान्न्युब्जि यथा न मुच्यातै कतमश्चनैषाम्॥ ६॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

बृहत्ते जालं बृहत इन्द्र शूर सहस्रार्घस्य शतवीर्यस्य।
तेन शतं सहस्रमयुतं न्यर्बुदं जघान शक्रो दस्यूनामभिधाय सेनया॥७॥
अयं लोको जालमासीच्छक्रस्य महतो महान्।
तेनाहमिन्द्रजालेनामूंस्तमसाभि दधामि सवीन्॥८॥
सेदिरुग्रा व्यृद्धिरातिश्चानपवाचना।
श्रमस्तन्द्रीश्च मोहश्च तैरमूनभि दधामि सवीन्॥९॥
मृत्यवेऽमून्प्र यच्छामि मृत्युपाशैरमी सिताः।
मृत्योर्ये अघला दूतास्तेभ्य एनान्प्रति नयामि बद्ध्वा॥१०॥
नयतामून्मृत्युदूता यमदूता अपोम्भत।
परः सहस्रा हन्यन्तां तृणेद्ववैनान्मत्यृ भवस्य॥११॥
साध्या एकं जालदण्डमुद्यत्यं यन्त्योजसा।
रुद्रा एकं वसव एकमादित्यैरेकं उद्यतः॥१२॥
विश्वे देवा उपरिष्टादुब्जन्तो यन्त्वोजसा।
मध्येन घ्नन्तो यन्तु सेनामङ्गिरसो महीम्॥१३॥
वनस्पतीन्वानस्पत्यानोषधीरुत वीरुधः।
द्विपाच्चतुष्पादिष्यामि यथा सेनाममूं हनन्॥१४॥
गन्धर्वाप्सरसः सर्पान्देवान्पुण्यजनान्पितॄन्।
दृष्टानदृष्टानिष्यामि यथा सेनाममूं हनन्॥१५॥
इम उप्सा मृत्युपाशा यानाक्रम्य न मुच्यसे।
अमुष्या हन्तु सेनाया इदं कूटं सहस्रशः॥१६॥
घर्मः समिद्धो अग्निनायं होमः सहस्रहः।
भवश्च पृश्निबाहुश्च शर्व सेनाममूं हतम्॥१७॥
मृत्योराषमा पद्यन्तां क्षुधं सेदिं वधं भयम्।
इन्द्रश्चाक्षुजालाभ्यां शर्व सेनाममूं हतम्॥१८॥
पराजिताः प्र त्रसतामित्रा नुत्ता धावत ब्रह्मणा।
बृहस्पतिप्रणुत्तानां मामीषां मोचि कश्चन॥१९॥
अवं पद्यन्तामेषामायुधानि मा शकन्प्रतिधामिषुम्।
अथैषां बहु बिभ्यतामिषवो घ्नन्तु मर्मणि॥२०॥
सं क्रोशतामेनान्द्यावापृथिवी समन्तरिक्षं सह दैवताभिः।
मा ज्ञातारं मा प्रतिष्ठां विदन्त मिथो विघ्ना उप यन्तु मृत्युम्॥२१॥

दिशश्चतस्रोऽश्वतर्यो देवरथस्य पुरोडाशाः शफा अन्तरिक्षमुद्धिः।
द्यावापृथिवी पक्षसी ऋतवोऽभीशवोऽन्तर्देशाः किंकरा वाक्परिरथ्यम्॥२२॥
संवत्सरो रथः परिवत्सरो रथोपस्थो विराड्धीषाग्नी रथमुखम्।
इन्द्रः सव्यष्ठाश्चन्द्रमाः सारथिः॥२३॥
इतो जयतो वि जयत सं जयत जयत स्वाहा।
इमे जयन्तु परामी जयन्तां स्वाहेभ्यो दुराहामीभ्यः।
नीललोहितेनामूनभ्यवर्तनोमि॥२४॥

अथ पञ्चमोऽनुवाकः [९] नवमं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा॥ देवता—मन्त्रोक्ताः॥ छन्दः—१, ६, ७, १०, १३, १५-२१, २४ त्रिष्टुप्; २ पङ्क्तिः; ३ आस्तारपङ्क्तिः; ४, ५, २३, २५, २६ अनुष्टुप्; ८, ११, १२, २२ जगती; ९ भुरिक्त्रिष्टुप्; १४ चतुष्पदाऽतिजगती॥

कुतस्तौ जातौ कतमः सो अर्धः कस्माल्लोकात्कतमस्याः पृथिव्याः।
वत्सौ विराजः सलिलादजैतां तौ त्वा पृच्छामि कतरेण दुग्धा॥१॥
यो अक्रन्दयत्सलिलं महित्वा योनिं कृत्वा त्रिभुजं शयानः।
वत्सः कामदुघो विराजः स गुहा चक्रे तन्वः परावैः॥२॥
यानि त्रीणि बृहन्ति येषां चतुर्थं वियुनक्ति वाचम्।
ब्रह्मैनद्विद्यात्तपसा विपश्चिद्यस्मिन्नेकं युज्यते यस्मिन्नेकम्॥३॥
बृहतः परि सामानि षष्ठात्पञ्चाधि निर्मिता।
बृहद्बृहन्म निर्मितं कुतोऽधि बृहती मिता॥४॥
बृहती परि मात्राया मातुर्मात्राधि निर्मिता।
माया ह जज्ञे मायाया मायाया मातली परि॥५॥
वैश्वानरस्य प्रतिमोपरि द्यौर्यावद्रोदसी विबबाधे अग्निः।
ततः षष्ठादामुतो यन्ति स्तोमा उदितो यन्त्यभि षष्ठमहः॥६॥
षट् त्वा पृच्छाम ऋषयः कश्यपेमे त्वं हि युक्तं युयुक्षे योग्यं च।
विराजमाहुर्ब्रह्मणः पितरं तां नो वि धेहि यतिधा सखिभ्यः॥७॥
यां प्रच्युतामनु यज्ञाः प्रच्यवन्त उपतिष्ठन्त उपतिष्ठमानाम्।
यस्या व्रते प्रसवे यक्षमेजति सा विराडृषयः परमे व्योमन्॥८॥
अप्राणैति प्राणेन प्राणतीनां विराट् स्वराजमभ्येति पश्चात्।
विश्वं मृशन्तीमभिरूपां विराजं पश्यन्ति त्वे न त्वे पश्यन्त्येनाम्॥९॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

को विराजो मिथुनत्वं प्र वेद क ऋतून्क उ कल्पमस्याः।
क्रमान्को अस्याः कतिधा विदुर्ग्धान्को अस्या धामं कतिधा व्युष्टीः॥ १०॥
द्वयमेव सा या प्रथमा व्यौच्छदास्वितरासु चरति प्रविष्टा।
महान्तौ अस्यां महिमानौ अन्तर्वधूर्जिगाय नवगज्जनित्री॥ ११॥
छन्दःपक्षे उषसा पेपिशाने समानं योनिमनु सं चरेते।
सूर्यपत्नी सं चरतः प्रजानती केतुमती अजरे भूरिरेतसा॥ १२॥
ऋतस्य पन्थामनु तिस्र आगुस्त्रयो घर्मा अनु रेत आगुः।
प्रजामेका जिन्वत्यूर्जमेका राष्ट्रमेका रक्षति देवयूनाम्॥ १३॥
अग्नीषोमावदधुर्या तुरीयासींद्यज्ञस्य पक्षावृषयः कल्पयन्तः।
गायत्रीं त्रिष्टुभं जगतीमनुष्टुभं बृहदर्कीं यजमानाय स्वराभरन्तीम्॥ १४॥
पञ्च व्युष्टीरनु पञ्च दोहा गां पञ्चनाम्नीमृतवोऽनु पञ्च।
पञ्च दिशः पञ्चदशेन क्लृप्तास्ता एकमूर्ध्नीरभि लोकमेकम्॥ १५॥
षड् जाता भूता प्रथमजर्तस्य षडु सामानि षडहं वहन्ति।
षडयोगं सीरमनु सामसाम षडाहुर्द्यावापृथिवीः षडुर्वीः॥ १६॥
षडाहुः शीतान्षडु मास उष्णानृतूं नो ब्रूत यतमोऽतिरिक्तः।
सप्त सुपर्णाः कवयो नि षेदुः सप्त च्छन्दांस्यनु सप्त दीक्षाः॥ १७॥
सप्त होमाः समिधो ह सप्त मधूनि सप्तर्तवो ह सप्त।
सप्ताज्यानि परि भूतमायन्ताः संसगृध्रा इति शुश्रुमा वयम्॥ १८॥
सप्त च्छन्दांसि चतुरुत्तराण्यन्यो अन्यस्मिन्नध्यार्पितानि।
कथं स्तोमाः प्रति तिष्ठन्ति तेषु तानि स्तोमेषु कथमार्पितानि॥ १९॥
कथं गायत्री त्रिवृतं व्यापि कथं त्रिष्टुप्पञ्चदशेन कल्पते।
त्रयस्त्रिंशेन जगती कथमनुष्टुप्कथमेकविंशः ॥ २०॥
अष्ट जाता भूता प्रथमजर्तस्याष्टेन्द्रर्त्विजो दैव्या ये ।
अष्टयोनिरदितिरष्टपुत्राष्टमीं रात्रिमभि हव्यमेति ॥ २१॥
इत्थं श्रेयो मन्यमानेदमागमं युष्माकं सख्ये अहमस्मि शेवा।
समानजन्मा क्रतुरस्ति वः शिवः स वः सर्वाः सं चरति प्रजानन्॥ २२॥
अष्टेन्द्रस्य षड्यमस्य ऋषीणां सप्त संसधा ।
अपो मनुष्याꣳनोषधीस्ताँ उ पञ्चानु सेचिरे ॥ २३॥
केवलीन्द्राय दुदुहे हि गृष्टिर्वंशं पीयूषं प्रथमं दुहाना ।
अथातपयच्चतुरश्चतुर्धा देवान्मनुष्याँ३ असुरानुत ऋषीन् ॥ २४॥
को नु गौः क एकऋषिः किमु धाम का आशिषः ।
यक्षं पृथिव्यामेकवृदेकर्तुः कतमो नु सः ॥ २५॥
एको गौरेक एकऋषिरेकं धामैकधाशिषः ।
यक्षं पृथिव्यामेकवृदेकर्तुर्नानेति रिच्यते ॥ २६॥

[१०] दशमं सूक्तम्, प्रथमः पर्यायः

ऋषिः—अथर्वाचार्यः॥ देवता—विराट्॥ छन्दः—१ आर्चीपङ्क्तिः; २, ४, ६, ८, १०, १२ याजुषीजगती; ३, ९ साम्न्यनुष्टुप्; ५ आर्च्यनुष्टुप्; ७, १३ विराड्गायत्री; ११ साम्नीबृहती॥

विराड्वा इदमग्र आसीत्तस्या जाताया: सर्वमभिबिभेदियमेवेदं भविष्यतीति॥ १॥
सोदक्रामत्सा गार्हपत्ये न्यक्रामत् ॥ २॥
गृहमेधी गृहपतिर्भवति य एवं वेद ॥ ३॥
सोदक्रामत्साहवनीये न्यक्रामत् ॥ ४॥
यन्त्यस्य देवा देवहूतिं प्रियो देवानां भवति य एवं वेद॥ ५॥
सोदक्रामत्सा दक्षिणाग्नौ न्यक्रामत् ॥ ६॥
यज्ञतौ दक्षिणीयो वासतेयो भवति य एवं वेद ॥ ७॥
सोदक्रामत्सा सभायां न्यक्रामत् ॥ ८॥
यन्त्यस्य सभां सभ्यौ भवति य एवं वेद ॥ ९॥
सोदक्रामत्सा समितौ न्यक्रामत् ॥ १०॥
यन्त्यस्य समितिं साभित्यो भवति य एवं वेद ॥ ११॥
सोदक्रामत्सामन्त्रणेन्यक्रामत् ॥ १२॥
यन्त्यस्यामन्त्रणमामन्त्रणीयो भवति य एवं वेद ॥ १३॥

[१०] दशमं सूक्तम्, द्वितीयः पर्यायः

ऋषिः—अथर्वाचार्यः॥ देवता—विराट्॥ छन्दः—१ त्रिपदासाम्न्यनुष्टुप्; २ उष्णिग्गर्भाचतुष्पदोपरिष्टाद्विराड्बृहती; ३ एकपदायाजुषीगायत्री; ४ एकपदासाम्नीपङ्क्तिः; ५ विराड्गायत्री; ६ आर्च्यनुष्टुप्; ७ साम्नीपङ्क्तिः; ८ आसुरीगायत्री; ९ साम्न्यनुष्टुप्; १० साम्नीबृहती॥

सोदक्रामत्सान्तरिक्षे चतुर्धा विक्रान्तातिष्ठत्॥ १॥
तां दैवमनुष्या अब्रुवन्त्रियमेव तद्वेद यदुभयं
उपजीवेमेमामुप ह्वयामहा इति ॥ २॥
तामुपाह्वयन्त ॥ ३॥
ऊर्ज एहि स्वध एहि सुनृत एहीरावत्येहीति॥ ४॥
तस्या इन्द्रो वत्स आसीद्गायत्र्यभिधान्यभ्रमूधः॥ ५॥
बृहच्च रथन्तरं च द्वौ स्तनावास्तां यज्ञायज्ञियं च वामदेव्यं च द्वौ॥ ६॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ओषधीरे॒व रथ॑न्तरेण॒ दे॒वा अ॑दुह॒न्व्यचो॑ बृ॒हता ॥ ७ ॥
अ॒पो वा॑मदे॒व्येन॑ य॒ज्ञं य॑ज्ञा॒य॒ज्ञिये॑न ॥ ८ ॥
ओषधीरे॒वास्मै॑ रथन्त॒रं दु॑हे॒ व्यचो॑ बृ॒हत् ॥ ९ ॥
अ॒पो वा॑मदे॒व्यं य॒ज्ञं य॑ज्ञा॒य॒ज्ञिय॑ं य एवं वेद ॥ १० ॥

[१०] दशमं सूक्तम्, तृतीयः पर्यायः

ऋषिः—अथर्वाचार्यः ॥ देवता—विराट् ॥ छन्दः—१ चतुष्पदाविराडनुष्टुप्; २ आर्चीत्रिष्टुप्; ३, ५, ७ चतुष्पदाप्राजापत्यापङ्क्तिः; ४, ६, ८ आर्चीबृहती ॥

सोऽक्रामत्सा व॒न॒स्प॒ती॒नाग॑च्छत्तां
व॒न॒स्प॒तय॒ोऽघ्न॒त सा सं॑वत्स॒रे सम॑भवत् ॥ १ ॥
तस्माद्व॒न॒स्प॒तीनां संवत्स॒रे वृ॒क्ण॒मपि॑ रोहति
वृ॒श्च॒ते॒ऽस्याप्रि॑यो॒ भ्रातृ॑व्यो॒ य एवं वेद ॥ २ ॥
सोऽक्रामत्सा पि॒तृ॒नाग॑च्छत्तां पि॒तर॑ोऽघ्नत॒ सा मा॒सि सम॑भवत् ॥ ३ ॥
तस्मा॑त्पि॒तृ॒भ्यो॑ मा॒स्यु॑पमास्यं ददति॒ प्र पि॑तृ॒याण॑ं
पन्थां॑ जानाति॒ य एवं वेद ॥ ४ ॥
सोऽक्रामत्सा दे॒वानाग॑च्छत्तां दे॒वा अ॑घ्नत॒ सार्ध॑मा॒से सम॑भवत् ॥ ५ ॥
तस्मा॑द्दे॒वेभ्यो॑ऽर्धमा॒से व॑षट्कु॒र्वन्ति॒ प्र दे॑व॒यान॑ं
पन्थां॑ जानाति॒ य एवं वेद ॥ ६ ॥
सोऽक्रामत्सा म॑नु॒ष्या॒३॑नाग॑च्छत्तां म॑नु॒ष्या॑ अघ्नत॒ सा स॒द्यः सम॑भवत् ॥ ७ ॥
तस्मा॑न्मनु॒ष्ये॑भ्य उभय॒द्यु॒रुप॑ हर॒न्त्युपा॑स्य गृ॒हे ह॑र॒न्ति॒ य एवं वेद ॥ ८ ॥

[१०] दशमं सूक्तम्, चतुर्थः पर्यायः

ऋषिः—अथर्वाचार्यः ॥ देवता—विराट् ॥ छन्दः—१, ५ चतुष्पदासाम्नीजगती; २, ६, १० साम्नीबृहती; ३, १४ साम्न्युष्णिक्; ४, ८ आर्च्यनुष्टुप्; ७ आसुरीगायत्री; ९, १३ चतुष्पदोष्णिक्; ११ प्राजापत्यानुष्टुप्; १२, १६ आर्चीत्रिष्टुप्; १५ विराड्गायत्री ॥

सोऽक्रामत्सासु॑रा॒नाग॑च्छत्तामसु॑रा॒ उपा॑ह्वयन्त मा॒य॒ एहीति॑ ॥ १ ॥
तस्या॑ वि॒रोच॑न॒ः प्राह्ला॑दिर्व॒त्स आसी॑दयस्पा॒त्रं पात्रम् ॥ २ ॥
तां द्विमू॑र्धा॒त्व्यो॑ऽधो॒क्तां मा॒याम॒वाधो॑क् ॥ ३ ॥
तां मा॒यामसु॑रा उप॑ जीवन्त्युपजीव॒नीयो॑ भवति॒ य एवं वेद ॥ ४ ॥
सोऽक्रामत्सा पि॒तृ॒नाग॑च्छत्तां पि॒तर॒ उपा॑ह्वयन्त स्वध॒ एहीति॑ ॥ ५ ॥
तस्या॑ य॒मो राजा॑ व॒त्स आसी॑द्रजतपा॒त्रं पात्रम् ॥ ६ ॥
तामन्त॑को मार्त्यवो॑ऽधो॒क्तां स्व॒धाम॒वाधो॑क् ॥ ७ ॥
तां स्व॒धां पि॒तर॒ उप॑ जीवन्त्युपजीव॒नीयो॑ भवति॒ य एवं वेद ॥ ८ ॥
सोऽक्रामत्सा म॑नु॒ष्या॒३॑नाग॑च्छत्तां म॑नु॒ष्या॒३॑ उपा॑ह्वयन्तेरा॑व॒त्येहीति॑ ॥ ९ ॥
तस्या॒ मनु॑र्वैवस्व॒तो व॒त्स आसी॑त्पृथि॒वी पात्रम् ॥ १० ॥
तां पृथ्वी॑ वैन्यो॑ऽधो॒क्तां कृषिं॑ च॒ स॒स्यं चा॑धोक् ॥ ११ ॥
ते कृषिं॑ च॒ स॒स्यं च॒ मनु॑ष्या॒३॑ उप॑ जीवन्ति कृ॒ष्टा॒धिरुप॑-
जीव॒नीयो॑ भवति॒ य एवं वेद ॥ १२ ॥
सोऽक्रामत्सा स॑प्तऋ॒षीनाग॑च्छत्तां स॑प्तऋ॒षय॒ उपा॑ह्वयन्त
ब्रह्म॑ण्व॒त्येहीति॑ ॥ १३ ॥
तस्या॒ः सोमो॒ राजा॑ व॒त्स आसी॒च्छन्दः॑ पात्रम् ॥ १४ ॥
तां बृ॒हस्पति॑राङ्गिर॒सो॑ऽधो॒क्तां ब्रह्म॑ च॒ तप॑श्चाधोक् ॥ १५ ॥
तद् ब्रह्म॑ च॒ तप॑श्च स॒प्तऋ॒षय॒ उप॑ जीवन्ति ब्रह्मवर्च॒स्युप॑-
जीव॒नीयो॑ भवति॒ य एवं वेद ॥ १६ ॥

[१०] दशमं सूक्तम्, पञ्चमः पर्यायः

ऋषिः—अथर्वाचार्यः ॥ देवता—विराट् ॥ छन्दः—१, १३ चतुष्पदासाम्नीजगती; २, ३ साम्न्युष्णिक्; ४, १६ आर्च्यनुष्टुप्; ५ चतुष्पदाप्राजापत्याजगती; ६ साम्नीबृहतीत्रिष्टुप्; ७, ११ विराड्गायत्री; ८ आर्चीत्रिष्टुप्; ९ चतुष्पदोष्णिक्; १०, १४ साम्नीबृहती; १२ त्रिपदा-ब्राह्मीभुरिग्गायत्री; १५ साम्न्यनुष्टुप् ॥

सोऽक्रामत्सा दे॒वानाग॑च्छत्तां दे॒वा उपा॑ह्वयन्तो॒र्ज एहीति॑ ॥ १ ॥
तस्या॒ इन्द्रो॑ व॒त्स आसी॑च्च॒मसः॑ पात्रम् ॥ २ ॥
तां दे॒वः स॑वि॒ताधो॒क्तामू॒र्जां॑ मे॒वाधो॑क् ॥ ३ ॥
तामू॒र्जां दे॒वा उप॑ जीवन्त्युपजीव॒नीयो॑ भवति॒ य एवं वेद ॥ ४ ॥
सोऽक्रामत्सा ग॑न्ध॒र्वाप्स॒रस॒ आग॑च्छत्तां
ग॑न्ध॒र्वाप्स॒रस॒ उपा॑ह्वयन्त पुण्य॒ग॑न्ध॒ एहीति॑ ॥ ५ ॥
तस्या॑श्चि॒त्ररथः॑ सौर्यव॒र्च॒सो व॒त्स आसी॑त्पुष्करप॒र्णं पात्रम् ॥ ६ ॥
तां वसु॑रुचिः सौर्यवर्च॒सो॑ऽधो॒क्तां पुण्य॑मे॒व ग॒न्ध॒मधो॑क् ॥ ७ ॥
तं पुण्यं॑ ग॒न्धं ग॑न्ध॒र्वाप्स॒रस॒ उप॑ जीवन्ति पुण्य॒ग॑न्धि॒रुप॑-
जीव॒नीयो॑ भवति॒ य एवं वेद ॥ ८ ॥
सोऽक्रामत्सेतरजना॒नाग॑च्छत्तामि॑तरज॒ना उपा॑ह्वयन्त तिरो॑ध॒ एहीति॑ ॥ ९ ॥
तस्या॒ः कु॒बेरो॑ वैश्रव॒णो व॒त्स आसी॑दामपा॒त्रं पात्रम् ॥ १० ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तां र॑ज॒तना॑भिः काबेर॒को॑ऽधो॒क्तां ति॑रो॒धामे॒वाधो॑क् ॥ ११ ॥
तां ति॑रो॒धामि॑तरज॒ना उप॑ जीवन्ति ति॒रो ध॑त्ते॒ सर्वं॑ पा॒प्मान॑मुप-
जीव॒नीयो॑ भवति॒ य ए॒वं वेद॑ ॥ १२ ॥
सोद॑क्राम॒त्सा स॒र्पानाग॑च्छ॒त्तां स॒र्पा उपा॑ह्वयन्त॒ विष॑व॒त्येहीति॑ ॥ १३ ॥
तस्या॑स्तक्ष॒को वै॑शाले॒यो व॒त्स आसी॑दलाबुपा॒त्रं पात्र॑म् ॥ १४ ॥
तां धृ॒तरा॑ष्ट्र ऐराव॒तो॑ऽधो॒क्तां वि॒षमे॒वाधो॑क् ॥ १५ ॥
तद्वि॒षं स॒र्पा उप॑ जीवन्त्युपजीव॒नीयो॑ भवति॒ य ए॒वं वेद॑ ॥ १६ ॥

[१०] दशमं सूक्तम्, षष्ठः पर्यायः

ऋषिः—अथर्वाचार्यः॥ देवता—विराट्॥ छन्दः—१ द्विपदाविराड्गायत्री; २ द्विपदा-साम्नीत्रिष्टुप्; ३ द्विपदाप्राजापत्यानुष्टुप्; ४ द्विपदाऽऽर्च्युष्णिक्॥

तद्यस्मा॑ ए॒वं वि॒दुषे॒लाऽबु॑नाभिषि॒ञ्चेत्प्र॒त्याह॑न्यात् ॥ १ ॥
न च॑ प्रत्याहु॒न्यान्मन॑सा त्वा प्र॒त्याहु॒न्मीति॑ प्र॒त्याह॑न्यात् ॥ २ ॥
यत्प्र॑त्या॒हन्ति॑ वि॒षमे॒व तत्प्र॒त्याह॑न्ति ॥ ३ ॥
वि॒षमे॒वास्याप्रि॑यं॒ भ्रातृ॑व्यमनु॒विषि॑च्यते॒ य ए॒वं वेद॑ ॥ ४ ॥

इत्येकोनविंशः प्रपाठकः॥

इति अष्टमं काण्डम्॥

अथ नवमं काण्डम्॥

अथ विंशः प्रपाठकः॥

अथ प्रथमोऽनुवाकः [१] प्रथमं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा॥ देवता—मधु, अश्विनौ॥ छन्दः—१, ४, ५ त्रिष्टुप्; २ त्रिष्टुब्गर्भापङ्क्तिः; ३ पराऽनुष्टुप्; ६ अतिशाक्वरगर्भायवमध्या-महाबृहती; ७ अतिजागतगर्भायवमध्यामहाबृहती; ८ बृहतीगर्भा-संस्तारपङ्क्तिः; ९ पराबृहतीप्रस्तारपङ्क्तिः; १० पुरोष्णिक्-पङ्क्तिः; ११-१३, १५, १६, १८, १९ अनुष्टुप्; १४ पुरोष्णिक्; १७ उपरिष्टाद्विराड्बृहती; २० भुरिक्विष्टारपङ्क्तिः; २१ द्विपदाऽऽर्च्यनुष्टुप् (एकावसाना); २२ द्विपदाब्राह्मीपुरोष्णिक्; २३ द्विपदाऽऽर्चीपङ्क्तिः; २४ षट्पदाऽष्टिः॥

दि॒वस्पृ॑थि॒व्या अ॒न्तरि॑क्षात्समु॒द्राद॒ग्नेर्वाता॑न्मधुक॒शा हि ज॒ज्ञे।
तां चा॑यि॒त्वामृतं॒ वसा॑नां हृ॒द्भिः प्र॒जाः प्रति॑ नन्दन्ति॒ सर्वाः॑ ॥ १ ॥
म॒हत्पयो॑ वि॒श्वरू॑पमस्याः समु॒द्रस्य॑ त्वो॒त रेत॑ आहुः।
यत॒ ऐति॑ मधुक॒शा ररा॑णा॒ तत्प्रा॒णस्तद॒मृतं॒ निवि॑ष्टम् ॥ २ ॥
पश्य॑न्त्यस्याश्चरि॒तं पृ॑थि॒व्यां पृथ॒ङ्नरो॑ बहु॒धा मीमां॑समानाः।
अ॒ग्नेर्वाता॑न्मधुक॒शा हि ज॒ज्ञे म॒रुता॑मु॒ग्रा न॒प्तिः ॥ ३ ॥
मा॒तादि॒त्यानां॑ दुहि॒ता वसू॑नां प्रा॒णः प्र॒जाना॑म॒मृत॑स्य नाभिः॑।
हिर॑ण्यवर्णा मधुक॒शा घृ॒ताची॑ म॒हान्भर्ग॑श्चरति॒ मर्त्ये॑षु ॥ ४ ॥
मधो॒ः कशा॑मजनयन्त दे॒वास्तस्या॒ गर्भो॑ अभवद्वि॒श्वरू॑पः।
तं जा॒तं तरु॑णं पिपर्ति मा॒ता स जा॒तो विश्वा॒ भुव॑ना॒ वि च॑ष्टे ॥ ५ ॥
कस्तं प्र वे॑द॒ क उ॒ तं चि॑केत॒ यो अ॑स्या हृ॒दः क॒लशः॑
सोम॒धानो॒ अक्षि॑तः। ब्र॒ह्मा सु॑मे॒धाः सो अ॑स्मिन्मदेत ॥ ६ ॥
स तौ प्र वे॑द॒ स उ॒ तौ चि॑केत॒ याव॑स्याः॒ स्तनौ॑
स॒हस्र॑धारा॒वक्षि॑तौ। ऊर्जं॑ दुहाते॒ अन॑पस्फुरन्तौ ॥ ७ ॥
हि॒ङ्करि॑क्रती बृह॒ती व॑यो॒धा उ॒च्चैर्घो॑षा॒भ्येति॒ या व्र॒तम्।
त्रीन्घ॒र्मान॒भि वा॑वशा॒ना मिमा॑ति मा॒युं पय॑ते॒ पयो॑भिः ॥ ८ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

यामापी॑नामुप॒सीद॒न्त्यापः॑ शाक्व॒रा वृ॑ष॒भा ये स्व॒राजः॑।
ते व॑र्षन्ति॒ ते व॑र्षयन्ति त॒द्विदे॒ काम॒मूर्ज॒मापः॑ ॥९॥
स्त॒न॒यि॒त्नुस्ते॒ वाक्प्र॑जापते॒ वृषा॒ शुष्मं॑ क्षिपसि॒ भूम्या॒मधि॑।
अ॒ग्नेर्वाता॑न्मधुक॒शा हि ज॒ज्ञे म॒रुता॑मु॒ग्रा न॒प्तिः ॥१०॥
यथा॒ सोमः॑ प्रातःसव॒ने अ॒श्विनो॒र्भव॑ति प्रि॒यः ।
ए॒वा मे॑ अश्विना॒ वर्च॑ आ॒त्मनि॑ ध्रियताम् ॥११॥
यथा॒ सोमो॑ द्वि॒तीये॒ सव॑न इन्द्रा॒ग्न्योर्भव॑ति प्रि॒यः ।
ए॒वा म॑ इन्द्राग्नी॒ वर्च॑ आ॒त्मनि॑ ध्रियताम् ॥१२॥
यथा॒ सोम॑स्तृ॒तीये॒ सव॑न ऋभू॒णां भव॑ति प्रि॒यः ।
ए॒वा म॑ ऋभवो॒ वर्च॑ आ॒त्मनि॑ ध्रियताम् ॥१३॥
मधु॑ जनिषीय॒ मधु॑ वंशिषीय ।
पय॑स्वानग्न॒ आग॑मं॒ तं मा॒ सं सृ॑ज॒ वर्च॑सा ॥१४॥
सं मा॑ग्ने॒ वर्च॑सा सृज॒ सं प्र॒[illegible] समायु॑षा ।
वि॒द्युर्मे॑ अ॒स्य दे॒वा इन्द्रो॑ विद्या॒त्स॒ह ऋषि॑भिः ॥१५॥
यथा॒ मधु॑ मधु॒कृतः॑ सं॒भर॑न्ति॒ मधा॒वधि॑ ।
ए॒वा मे॑ अश्विना॒ वर्च॑ आ॒त्मनि॑ ध्रियताम् ॥१६॥
यथा॒ मक्षा॑ इ॒दं मधु॑ न्य॒ञ्जन्ति॒ मधा॒वधि॑ ।
ए॒वा मे॑ अश्विना॒ वर्च॒स्तेजो॒ बल॒मोज॑श्च ध्रियताम् ॥१७॥
यद्गि॒रिषु॒ पर्व॑तेषु॒ गोष्वश्वे॑षु॒ यन्मधु॑ ।
सुरा॑यां सि॒च्यमा॑नायां॒ यत्तत्र॒ मधु॒ तन्मयि॑ ॥१८॥
अश्वि॑ना सार॒घेण॑ मा॒ मधु॑नाङ्क्तं शुभस्पती ।
यथा॒ वर्च॑स्वतीं॒ वाच॑मा॒वदा॑नि॒ जनाँ॒ अनु॑ ॥१९॥
स्त॒न॒यि॒त्नुस्ते॒ वाक्प्र॑जापते॒ वृषा॒ शुष्मं॑ क्षिपसि॒ भूम्यां॑ दि॒वि।
तां प॒शव॒ उप॑ जीवन्ति॒ सर्वे॒ तेनो॒ सेष॒मूर्जं॑ पिपर्ति॥२०॥
पृ॒थि॒वी द॒ण्डो॒३॒॑न्तरि॑क्षं॒ गर्भो॒ द्यौः कशा॑ वि॒द्युत्प्र॑क॒शो
हि॑र॒ण्ययो॑ बि॒न्दुः ॥२१॥
यो वै कशा॑याः स॒प्त मधू॑नि॒ वेद॒ मधु॑मान्भवति। ब्रा॒ह्म॒णश्च॒
राजा॑ च धे॒नुश्चा॑न॒ड्वांश्च॑ व्री॒हिश्च॒ यव॑श्च॒ मधु॑ सप्त॒मम्॥२२॥
मधु॑मान्भवति॒ मधु॑मदस्याहा॒र्यं॑ भवति ।
मधु॑मतो लो॒काञ्ज॑यति॒ य ए॒वं वेद॑ ॥२३॥

यद्वी॒ध्रे स्त॒नय॑ति प्र॒जाप॑तिरे॒व तत्प्र॒जाभ्यः॑ प्रा॒दुर्भ॑वति।
तस्मा॑त्प्राचीनोपवी॒तस्ति॑ष्ठे॒ प्रजा॑प॒तेऽनु॑ मा बुध्य॒स्वेति॑।
अन्वे॑नं प्र॒जा अनु॑ प्र॒जाप॑तिर्बुध्यते॒ य ए॒वं वेद॑॥२४॥

[२] द्वितीयं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा॥ देवता—कामः॥ छन्दः—१-४, ६, ९, १०, १९, २४, २५ त्रिष्टुप्; ५ अतिजगती; ७, १४, १५, १७, १८, २१, २२ जगती; ८ त्रिपदाऽऽर्चीपङ्क्तिः; ११, २०, २३ भुरिक्-त्रिष्टुप्; १२ अनुष्टुप्; १३ द्विपदाऽऽर्च्यनुष्टुप्; १६ चतुष्पदाशक्वरीगर्भापराजगती॥

स॒प॒त्न॒हन॑मृष॒भं घृ॒तेन॒ कामं॑ शिक्षामि ह॒विषाज्ये॑न ।
नी॒चैः स॒पत्ना॒न्मम॑ पादय॒ त्वम॒भिष्टु॑तो मह॒ता वी॒र्ये॑ण ॥१॥
यन्मे॒ मन॑सो॒ न प्रि॒यं न चक्षु॑षो॒ यन्मे॒ बभ॑स्ति॒ नाभि॒नन्द॑ति ।
तद्दु॒ष्वप्न्यं॒ प्रति॑ मुञ्चामि स॒पत्ने॒ कामं॑ स्तु॒त्वोद॒हं भि॑देयम् ॥२॥
दु॒ष्वप्न्यं॑ काम दुरि॒तं च॑ कामाप्र॒जस्ता॑मस्व॒गता॒मव॑र्तिम् ।
उ॒ग्र ईशा॑नः॒ प्रति॑ मुञ्च॒ तस्मि॒न्यो अ॒स्मभ्य॑मंहूर॒णा चिकि॑त्सात् ॥३॥
नु॒दस्व॑ काम॒ प्र णु॑दस्व का॒मावर्तिं॑ यन्तु॒ मम॒ ये स॒पत्नाः॑ ।
तेषां॑ नु॒त्ताना॑मध॒मा तमां॒स्यग्ने॒ वास्तू॑नि॒ निर्द॑ह॒ त्वम् ॥४॥
सा ते॑ काम दुहि॒ता धे॒नुरु॑च्यते॒ यामा॒हुर्वाचं॑ क॒वयो॑ वि॒राज॑म् ।
तया॑ स॒पत्ना॒न्परि॑ वृङ्ग्धि॒ ये मम॒ पर्ये॑नान्प्रा॒णः प॒शवो॒ जीव॑नं वृणक्तु॥५॥
काम॒स्येन्द्र॑स्य॒ वरु॑णस्य॒ राज्ञो॒ विष्णो॒र्बले॑न सवि॒तुः स॒वेन॑ ।
अ॒ग्नेर्हो॒त्रेण॒ प्र णु॑दे स॒पत्ना॑ञ्छ॒म्बीव॒ नाव॑मुद॒केषु॒ धीरः॑ ॥६॥
अध्य॑क्षो वा॒जी मम॒ काम॑ उ॒ग्रः कृ॒णोतु॒ मह्य॑मसप॒त्नमे॒व ।
विश्वे॑ दे॒वा मम॑ ना॒थं भ॑वन्तु॒ सर्वे॑ दे॒वा हव॒मा य॑न्तु म इ॒मम् ॥७॥
इ॒दमाज्यं॑ घृ॒तव॑ज्जुषा॒णाः काम॑ज्येष्ठा इ॒ह मा॑दयध्वम् ।
कृ॒ण्वन्तो॒ मह्य॑मसप॒त्नमे॒व ॥८॥
इ॒न्द्रा॒ग्नी का॑म स॒रथं॒ हि भू॒त्वा नी॒चैः स॒पत्ना॒न्मम॑ पादयाथः ।
तेषां॑ प॒न्नाना॑मध॒मा तमां॒स्यग्ने॒ वास्तू॑न्यनु॒निर्द॑ह॒ त्वम् ॥९॥
ज॒हि त्वं का॑म॒ मम॒ ये स॒पत्ना॑ अ॒न्धा तमां॒स्यव॑ पादयैनान् ।
निरि॑न्द्रिया अर॒साः स॑न्तु॒ सर्वे॒ मा ते जी॑विषुः कत॒मच्च॒नाहः॑ ॥१०॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अवधीत्कामो मम ये सपत्ना उरुं लोकमकरन्मह्यमेधतुम् ।
मह्यं नमन्तां प्रदिशश्चतस्रो मह्यं षड्वीर्धृतमा वहन्तु ॥ ११ ॥
तेऽधिराज्ञः प्र प्लवन्तां छिन्ना नौरिव बन्धनात् ।
न सायकप्रणुत्तानां पुनरस्ति निवर्तनम् ॥ १२ ॥
अग्निर्यव इन्द्रो यवः सोमो यवः ।
यवयावानो देवा यावयन्त्वेनम् ॥ १३ ॥
असंर्ववीरश्चरतु प्रणुत्तो द्वेष्यो मित्राणां परिवर्ग्यो नः स्वानाम् ।
उत पृथिव्यामव स्यन्ति विद्युत उग्रो वो देवः प्र मृणत्सपत्नान् ॥ १४ ॥
च्युता चेयं बृहत्यच्युता च विद्युद्बिभर्ति स्तनयित्नूंश्च सवीन् ।
उद्यन्नादित्यो द्रविणेन तेजसा नीचैः सपत्नान्नुदतां मे सहस्वान् ॥ १५ ॥
यत्ते काम शर्म त्रिवरूथमुद्भु ब्रह्म वर्म विततमनतिव्याध्यं कृतम् ।
तेन सपत्नान्परि वृङ्ग्धि ये मम पर्येनान्प्राणः पशवो जीवनं वृणक्तु ॥ १६ ॥
येन देवा असुरान्प्राणुदन्त येनेन्द्रो दस्यूनधमं तमो निनाय ।
तेन त्वं काम मम ये सपत्नास्तानस्माल्लोकात्प्र णुदस्व दूरम् ॥ १७ ॥
यथा देवा असुरान्प्राणुदन्त यथेन्द्रो दस्यूनधमं तमो बबाधे ।
तथा त्वं काम मम ये सपत्नास्तानस्माल्लोकात्प्र णुदस्व दूरम् ॥ १८ ॥
कामो जज्ञे प्रथमो नैनं देवा आपुः पितरो न मर्त्याः ।
ततस्त्वमसि ज्यायान्विश्वहा महांस्तस्मै ते काम नम इत्कृणोमि ॥ १९ ॥
यावती द्यावापृथिवी वरिम्णा यावदापः सिष्यदुर्यावदग्निः ।
ततस्त्वमसि ज्यायान्विश्वहा महांस्तस्मै ते काम नम इत्कृणोमि ॥ २० ॥
यावतीर्दिशः प्रदिशो विषूचीर्यावतीराशा अभिचक्षणा दिवः ।
ततस्त्वमसि ज्यायान्विश्वहा महांस्तस्मै ते काम नम इत्कृणोमि ॥ २१ ॥
यावतीर्भूम्ना जत्वः कुरूरवो यावतीर्वर्षा वृक्षसर्प्यो बभूवुः ।
ततस्त्वमसि ज्यायान्विश्वहा महांस्तस्मै ते काम नम इत्कृणोमि ॥ २२ ॥
ज्यायांस्त्रिमिषतोऽसि तिष्ठतो ज्यायान्त्समुद्रादसि काम मन्यो ।
ततस्त्वमसि ज्यायान्विश्वहा महांस्तस्मै ते काम नम इत्कृणोमि ॥ २३ ॥
न वै वातश्चन कामयाप्नोति नाग्निः सूर्यो नोत चन्द्रमाः ।
ततस्त्वमसि ज्यायान्विश्वहा महांस्तस्मै ते काम नम इत्कृणोमि ॥ २४ ॥
यास्ते शिवास्तन्वः काम भद्रा याभिः सत्यं भवति यद् वृणीषे ।
ताभिष्टमस्माँ अभिसंविशस्वान्यत्र पापीरप वेशया धियः ॥ २५ ॥

अथ द्वितीयोऽनुवाकः [३] तृतीयं सूक्तम्

ऋषिः—भृग्वङ्गिराः ॥ देवता—शाला ॥ छन्दः—१-५, ८-१४, १६, १८-२०, २२-२४ अनुष्टुप्; ६ पथ्यापङ्क्तिः; ७ पुरोष्णिक्; १५ पञ्चपदातिशक्वरी; १७ प्रस्तारपङ्क्तिः; २१ आस्तारपङ्क्तिः; २५, ३१ त्रिपदाप्राजापत्यावृहती; २६ त्रिपदासाम्नीत्रिष्टुप्; २७-३० त्रिपदाप्रतिष्ठानामगायत्री; (२५-३१ एकावसाना) ॥

उपमितां प्रतिमितामथो परिमितामुत ।
शालाया विश्ववाराया नद्धानि वि चृतामसि ॥ १ ॥
यत्ते नद्धं विश्ववारे पाशो ग्रन्थिश्च यः कृतः ।
बृहस्पतिरिवाहं बलं वाचा वि स्रंसयामि तत् ॥ २ ॥
आ यंयाम सं बंबर्ह ग्रन्थींश्चकार ते दृढान् ।
परूंषि विद्वाञ्छस्तेवेन्द्रेण वि चृतामसि ॥ ३ ॥
वंशानां ते नहनानां प्राणाहस्य तृणस्य च ।
पक्षाणां विश्ववारे ते नद्धानि वि चृतामसि ॥ ४ ॥
संदंशानां पलदानां परिष्वञ्जल्यस्य च ।
इदं मानस्य पत्न्या नद्धानि वि चृतामसि ॥ ५ ॥
यानि तेऽन्तः शिक्यान्याबेधू रण्यायि कम् ।
प्र ते तानि चृतामसि शिवा मानस्य पत्नी न उद्भिदा तन्वे भव ॥ ६ ॥
हविर्धानमग्रिशालं पत्नीनां सदनं सदः ।
सदो देवानामसि देवि शाले ॥ ७ ॥
अक्षुमोपशं वितंतं सहस्राक्षं विषूवतिं ।
अवनद्धमभिहितं ब्रह्मणा वि चृतामसि ॥ ८ ॥
यस्त्वा शाले प्रतिगृह्णाति येन चासि मिता त्वम् ।
उभौ मानस्य पत्नि तौ जीवतां जरदष्टी ॥ ९ ॥
अमुत्रैनमा गच्छताद्दृढा नद्धा परिष्कृता ।
यस्यास्ते विचृतामस्यङ्गमङ्गं परुष्परुः ॥ १० ॥
यस्त्वा शाले निमिमाय संजभार वनस्पतीन् ।
प्रजायै चक्रे त्वा शाले परमेष्ठी प्रजापतिः ॥ ११ ॥
नमस्तस्मै नमो दात्रे शालापतये च कृण्मः ।
नमोऽग्नये प्रचरते पुरुषाय च ते नमः ॥ १२ ॥
गोभ्यो अश्वेभ्यो नमो यच्छालायां विजायते ।
विजावति प्रजावति वि ते पाशांश्चृतामसि ॥ १३ ॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अ॒ग्निम॒न्तश्छा॑दयसि॒ पुरु॑षान्प॒शुभिः॑ स॒ह ।
विजा॑वति॒ प्रजा॑वति॒ वि ते॒ पाशां॑श्तृ॒तामसि ॥ १४ ॥
अ॒न्त॒रा द्यां च॑ पृथि॒वीं च॒ यद् व्यच॒स्तेन॒ शालां॒ प्रति॑
गृह्णामि त इ॒माम्। यद॒न्तरि॑क्षं॒ रज॑सो वि॒मानं॒ तत्कृ॑ण्वे॒ऽहमु॒दरं॑
शेव॒धिभ्यः॑। तेन॒ शालां॒ प्रति॑ गृह्णामि॒ तस्मै॑ ॥ १५ ॥
ऊर्ज॑स्वती॒ पय॑स्वती पृथि॒व्यां निमि॑ता मि॒ता।
वि॒श्वा॒न्नं बिभ्र॑ती॒ शाले॒ मा हिं॑सीः प्रतिगृह्ण॒तः ॥ १६ ॥
तृणै॒रावृ॑ता पल॒दान्वसा॑ना॒ रात्री॑व॒ शाला॒ जग॑तो नि॒वेश॑नी।
मि॒ता पृ॑थि॒व्यां ति॑ष्ठसि ह॒स्तिनी॑व प॒द्वती॑ ॥ १७ ॥
इट॑स्य ते॒ वि चृ॑ता॒म्यपि॑नद्धमपोर्णु॒वन् ।
वरु॑णेन॒ समु॑ब्जितां मि॒त्रः प्रा॒तर्व्यु॑ब्जितु ॥ १८ ॥
ब्रह्म॑णा॒ शालां॒ निमि॑तां क॒विभि॒र्निमि॑तां मि॒ताम्।
इ॒न्द्रा॒ग्नी र॑क्षतां॒ शाला॑म॒मृतौ॑ सो॒म्यं सदः॑ ॥ १९ ॥
कु॒लायेऽधि॑ कु॒लायं॒ कोशे॒ कोशः॒ समु॑ब्जितः।
तत्र॒ मर्तो॒ वि जा॑यते॒ यस्मा॒द्विश्वं॑ प्र॒जाय॑ते ॥ २० ॥
या द्विप॑क्षा॒ चतु॑ष्पक्षा॒ षट्प॑क्षा॒ या नि॑मी॒यते॑ ।
अ॒ष्टाप॑क्षां॒ दश॑पक्षां॒ शालां॒ मान॑स्य॒ पत्नी॑म॒ग्निर्गर्भ॑ इ॒वा श॑ये ॥ २१ ॥
प्र॒तीचीं॑ त्वा प्रती॒चीनः॒ शाले॒ प्रैम्यहिं॑सतीम्।
अ॒ग्निर्ह्य१॒॑न्तराप॑श्चर्त॒स्य॑ प्रथ॒मा द्वाः ॥ २२ ॥
इ॒मा आपः॒ प्र भ॑राम्यय॒क्ष्मा य॑क्ष्म॒नाश॑नीः।
गृ॒हानुप॒ प्र सी॑दाम्य॒मृते॑न स॒हाग्निना॑ ॥ २३ ॥
मा नः॒ पाशं॒ प्रति॑ मुचो गु॒रुर्भा॒रो लघुर्भ॑व।
व॒धूमि॑व त्वा शाले यत्र॒कामं॑ भरामसि ॥ २४ ॥
प्राच्या॑ दि॒शः शाला॑या॒ नमो॑ महि॒म्ने स्वाहा॑ दे॒वेभ्यः॑ स्वा॒ह्ये॑भ्यः ॥ २५ ॥
दक्षि॑णाया दि॒शः शाला॑या॒ नमो॑ महि॒म्ने स्वाहा॑ दे॒वेभ्यः॑ स्वा॒ह्ये॑भ्यः ॥ २६ ॥
प्र॒तीच्या॑ दि॒शः शाला॑या॒ नमो॑ महि॒म्ने स्वाहा॑ दे॒वेभ्यः॑ स्वा॒ह्ये॑भ्यः ॥ २७ ॥
उदी॑च्या दि॒शः शाला॑या॒ नमो॑ महि॒म्ने स्वाहा॑ दे॒वेभ्यः॑ स्वा॒ह्ये॑भ्यः ॥ २८ ॥
ध्रु॒वाया॑ दि॒शः शाला॑या॒ नमो॑ महि॒म्ने स्वाहा॑ दे॒वेभ्यः॑ स्वा॒ह्ये॑भ्यः ॥ २९ ॥
ऊ॒र्ध्वाया॑ दि॒शः शाला॑या॒ नमो॑ महि॒म्ने स्वाहा॑ दे॒वेभ्यः॑ स्वा॒ह्ये॑भ्यः ॥ ३० ॥
दि॒शोदि॑शः॒ शाला॑या॒ नमो॑ महि॒म्ने स्वाहा॑ दे॒वेभ्यः॑ स्वा॒ह्ये॑भ्यः ॥ ३१ ॥

[४] चतुर्थं सूक्तम्

ऋषिः—ब्रह्मा ॥ देवता—ऋषभः ॥ छन्दः—१-५, ७, ९, २२ त्रिष्टुप्; ६, १०, २४ जगती; ८ भुरिक्त्रिष्टुप्; ११-१७, १९, २०, २३ अनुष्टुप्; १८ उपरिष्टाद्बृहती; २१ आस्तारपङ्क्तिः ॥

सा॒ह॒स्रस्त्वे॒ष ऋ॑ष॒भः पय॑स्वा॒न्विश्वा॑ रू॒पाणि॑ व॒क्षणा॑सु॒ बिभ्र॑त्।
भ॒द्रं दा॒त्रे यज॑मानाय॒ शिक्ष॑न्बार्हस्प॒त्य उ॒स्रिय॒स्तन्तु॒माता॑न् ॥ १ ॥
अ॒पां यो अग्रे॑ प्रति॒मा ब॒भूव॑ प्र॒भूः सर्व॑स्मै पृथि॒वीव॑ दे॒वी।
पि॒ता व॒त्सानां॒ पति॑र॒घ्न्यानां॑ साह॒स्रे पोषे॒ अपि॑ नः कृणोतु ॥ २ ॥
पुमा॑न॒न्तर्वा॒न्त्स्थवि॑रः पय॑स्वा॒न्वसोः॒ कब॑न्धमृष॒भो बि॑भर्ति।
तमिन्द्रा॑य प॒थिभि॑र्देव॒यानै॑र्हु॒तम॒ग्निर्व॑हतु जा॒तवे॑दाः ॥ ३ ॥
पि॒ता व॒त्सानां॒ पति॑र॒घ्न्याना॒मथो॑ पि॒ता म॑ह॒तां गर्ग॑राणाम्।
व॒त्सो ज॒रायु॑ प्रति॒धुक्पी॒यूष॑ आ॒मिक्षा॑ घृ॒तं तद्व॑स्य॒ रेतः॑ ॥ ४ ॥
दे॒वानां॑ भा॒ग उ॑पना॒ह ए॒षो॒३॒॑पां रस॒ ओष॑धीनां घृ॒तस्य॑।
सोम॑स्य भ॒क्षम॑वृणीत श॒क्रो बृ॒हन्नद्रि॑रभव॒द्यच्छरी॑रम् ॥ ५ ॥
सोमे॑न पू॒र्णं क॒लशं॑ बिभर्षि॒ त्वष्टा॑ रू॒पाणां॑ जनि॒ता प॑शू॒नाम्।
शि॒वास्ते॑ सन्तु प्रज॒न्व॑ इ॒ह या इ॒मा न्य१॒॑स्मभ्यं॑ स्वधिते यच्छ॒ या अ॒मूः ॥ ६ ॥
आज्यं॑ बिभर्ति घृ॒तम॑स्य॒ रेतः॑ साह॒स्रः पोष॒स्तमु॑ य॒ज्ञमा॑हुः।
इन्द्र॑स्य रू॒पमृ॑ष॒भो वसा॑नः॒ सो अ॒स्मान्दे॑वाः शि॒व ऐतु॑ द॒त्तः ॥ ७ ॥
इन्द्र॒स्यौजो॒ वरु॑णस्य बा॒हू अ॒श्विनो॒रंसौ॑ म॒रुता॑मि॒यं क॒कुत्।
बृह॒स्पतिं॒ संभृ॑तमे॒तमा॑हु॒र्ये धीरा॑सः क॒वयो॒ ये म॑नी॒षिणः॑ ॥ ८ ॥
दैवी॒र्विशः॒ पय॑स्वा॒ना त॑नोषि॒ त्वामिन्द्रं॒ त्वां सर॑स्वन्तमाहुः।
स॒हस्रं॒ स एक॑मुखा ददाति॒ यो ब्रा॑ह्म॒ण ऋ॑ष॒भमा॑जु॒होति॑ ॥ ९ ॥
बृह॒स्पतिः॑ सवि॒ता ते॒ वयो॑ दधौ॒ त्वष्टु॑र्वा॒योः पर्या॒त्मा त॒ आभृ॑तः।
अ॒न्तरि॑क्षे॒ मन॑सा त्वा जुहोमि ब॒र्हिष्टे॒ द्यावा॑पृथि॒वी उ॒भे स्ता॑म् ॥ १० ॥
य इन्द्र॑इव दे॒वेषु॒ गोष्वेति॑ वि॒वाव॑दत्।
तस्य॑ ऋष॒भस्याङ्गा॑नि ब्र॒ह्मा सं स्तौ॑तु भ॒द्रया॑ ॥ ११ ॥
पा॒र्श्वे आ॑स्ता॒मनु॑मत्या॒ भग॑स्यास्तामनू॒वृजौ॑ ।
अ॒ष्ठी॒वन्ता॑वब्रवीन्मि॒त्रो ममै॒तौ केव॑ला॒विति॑ ॥ १२ ॥
भ॒सदा॑सीदादि॒त्यानां॒ श्रोणी॑ आस्तां॒ बृह॒स्पतेः॑।
पुच्छं॒ वात॑स्य दे॒वस्य॒ तेन॑ धूनो॒त्योष॑धीः ॥ १३ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

गुदा आसन्त्सिनीवाल्याः सूर्यायास्त्वचमब्रुवन्।
उत्थातुरब्रुवन्पद ऋषभं यदकल्पयन् ॥ १४ ॥
क्रोड आसीज्जामिशंसस्य सोमस्य कलशो धृतः।
देवाः संगत्य यत्सर्वे ऋषभं व्यकल्पयन्॥ १५ ॥
ते कुष्ठिकाः सरमायै कूर्मेभ्यो अदधुः शफान्।
ऊर्ध्वमस्य कीटेभ्यः श्वर्तेभ्यो अधारयन्॥ १६ ॥
शृङ्गाभ्यां रक्ष ऋषत्यवर्तिं हन्ति चक्षुषा।
शृणोति भद्रं कर्णाभ्यां गवां यः पतिरघ्न्यः॥ १७ ॥
शतयाजं स यजते नैनं दुन्वन्त्यग्रयः ।
जिन्वन्ति विश्वे तं देवा यो ब्राह्मण ऋषभमाजुहोति॥ १८ ॥
ब्राह्मणेभ्य ऋषभं दत्त्वा वरीयः कृणुते मनः।
पुष्टिं सो अघ्न्यानां स्वे गोष्ठेऽव पश्यते॥ १९ ॥
गावः सन्तु प्रजाः सन्त्वथो अस्तु तनूबलम्।
तत्सर्वमनु मन्यन्तां देवा ऋषभदायिने॥ २० ॥
अयं पिपान इन्द्र इद्रयिं दधातु चेतनीम् ।
अयं धेनुं सुदुघां नित्यवत्सां वशं दुहां विपश्चितं परो दिवः॥ २१ ॥
पिशङ्गरूपो नभसो वयोधा ऐन्द्रः शुष्मो विश्वरूपो न आगन्।
आयुरस्मभ्यं दधत्प्रजां च रायश्च पोषैरभि नः सचताम्॥ २२ ॥
उपेहोपपर्चनास्मिन्गोष्ठ उप पृञ्च नः।
उप ऋषभस्य यद्रेत उपेन्द्र तव वीर्यम्॥ २३ ॥
एतं वो युवानं प्रति दध्मो अत्र तेन क्रीडन्तीश्चरत वशाँ अनु।
मा नो हासिष्ट जनुषा सुभागा रायश्च पोषैरभि नः सचध्वम्॥ २४ ॥

अथ तृतीयोऽनुवाकः [५] पञ्चमं सूक्तम्

ऋषिः—भृगुः॥ देवता—अजः पञ्चौदनः॥ छन्दः—१, २, ५-९, ११-१३, १५, १९, २६ त्रिष्टुप्; ३ चतुष्पदापुरोऽतिशक्वरीजगती; ४, १० जगती; १४, १७, २७, २८, २९ अनुष्टुप्; ३० ककुम्मत्यनुष्टुप्; १६ त्रिपदानुष्टुप्; १८, ३७ त्रिपदाविराड्गायत्री; २०-२२, २५ पञ्चपदानुष्टुबुष्णिग्गर्भोपरिष्टाद् बार्हताभुरिक्त्रिष्टुप्; २३ पुरउष्णिक्; २४ पञ्चपदाऽनुष्टुबुष्णिग्गर्भोपरिष्टाद् बार्हताविराड्जगती; ३१ सप्तपदाऽष्टिः; ३२, ३३-३५ दशपदाप्रकृतिः; ३६ दशपदाऽऽकृतिः; ३८ द्विपदासाम्नीत्रिष्टुप् (एकावसाना)॥

आ नयैतमा रभस्व सुकृतां लोकमपि गच्छतु प्रजानन् ।
तीर्त्वा तमांसि बहुधा महान्त्यजो नाकमा क्रमतां तृतीयम् ॥ १ ॥
इन्द्राय भागं परि त्वा नयाम्यस्मिन्यज्ञे यजमानाय सूरिम् ।
ये नो द्विषन्त्यनु तान्रभस्वानागसो यजमानस्य वीराः ॥ २ ॥
प्र पदोऽव नेनिग्धि दुश्चरितं यच्चचार शुद्धैः शफैरा क्रमतां प्रजानन्।
तीर्त्वा तमांसि बहुधा विपश्यन्नजो नाकमा क्रमतां तृतीयम् ॥ ३ ॥
अनु च्छय श्यामेन त्वचमेतां विशस्तर्यथापर्वासिना माभि मंस्थाः।
माभि द्रुहः परुशः कल्पयैनं तृतीये नाके अधि वि श्रयैनम् ॥ ४ ॥
ऋचा कुम्भीमध्यग्नौ श्रयाम्या सिञ्चोदकमव धेह्योनम् ।
पर्याधत्ताग्निना शमितारः शृतो गच्छतु सुकृतां यत्र लोकः ॥ ५ ॥
उत्क्रामातः परि चेदतमस्तमाच्चरोरधि नाकं तृतीयम् ।
अग्नेरग्निरधि संबभूविथ ज्योतिष्मन्तमभि लोकं जयैतम् ॥ ६ ॥
अजो अग्निरजमु ज्योतिराहुरजं जीवता ब्रह्मणे देयमाहुः ।
अजस्तमांस्यप हन्ति दूरमस्मिंल्लोके श्रद्दधानेन दत्तः ॥ ७ ॥
पञ्चौदनः पञ्चधा वि क्रमतामाक्रंस्यमानस्त्रीणि ज्योतींषि ।
ईजानानां सुकृतां प्रेहि मध्यं तृतीये नाके अधि वि श्रयस्व ॥ ८ ॥
अजा रोह सुकृतां यत्र लोकः शरभो न चत्तोऽति दुर्गाण्येषः ।
पञ्चौदनो ब्रह्मणे दीयमानः स दातारं तृप्त्या तर्पयाति ॥ ९ ॥
अजस्त्रिनाके त्रिदिवे त्रिपृष्ठे नाकस्य पृष्ठे ददिवांसं दधाति ।
पञ्चौदनो ब्रह्मणे दीयमानो विश्वरूपा धेनुः कामदुघास्येका ॥ १० ॥
एतद्वो ज्योतिः पितरस्तृतीयं पञ्चौदनं ब्रह्मणेऽजं ददाति ।
अजस्तमांस्यप हन्ति दूरमस्मिंल्लोके श्रद्दधानेन दत्तः ॥ ११ ॥
ईजानानां सुकृतां लोकमीप्सन्पञ्चौदनं ब्रह्मणेऽजं ददाति ।
स व्याप्तिमभि लोकं जयैतं शिवोऽस्मभ्यं प्रतिगृहीतो अस्तु ॥ १२ ॥
अजो ह्यग्नेरजनिष्ट शोकाद्विप्रो विप्रस्य सहसो विपश्चित् ।
इष्टं पूर्तमभिपूर्तं वषट्कृतं तद्देवा ऋतुशः कल्पयन्तु ॥ १३ ॥
अमोतं वासो दद्याद्धिरण्यमपि दक्षिणाम् ।
तथा लोकान्तसमाप्नोति ये दिव्या ये च पार्थिवाः ॥ १४ ॥
एतास्त्वाजोप यन्तु धाराः सोम्या देवीर्घृतपृष्ठा मधुश्चुतः ।
स्तभान पृथिवीमुत द्यां नाकस्य पृष्ठेऽधि सप्तरश्मौ ॥ १५ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अजो३ऽस्यज स्वर्गोऽसि त्वया लोकमङ्गिरसः प्राजानन् ।
तं लोकं पुण्यं प्र ज्ञेषम् ॥ १६ ॥
येना सहस्रं वहसि येनाग्ने सर्ववेदसम् ।
तेनेमं यज्ञं नो वह स्वर्देवेषु गन्तवे ॥ १७ ॥
अजः पक्वः स्वर्गे लोके दधाति पञ्चौदनो निर्ऋतिं बाधमानः ।
तेन लोकान्त्सूर्यवतो जयेम ॥ १८ ॥
यं ब्राह्मणे निदधे यं च विक्षु या विप्रुषः ओदनानामजस्य ।
सर्वं तदग्ने सुकृतस्य लोके जानीतान्नः सुगमने पथीनाम् ॥ १९ ॥
अजो वा इदमग्रे व्यक्रिमत तस्योर इयमभवद् द्यौः पृष्ठम् ।
अन्तरिक्षं मध्यं दिशः पार्श्वे समुद्रौ कुक्षी ॥ २० ॥
सत्यं चर्तं च चक्षुषी विश्वं सत्यं श्रद्धा प्राणो विराट् शिरः ।
एष वा अपरिमितो यज्ञो यदजः पञ्चौदनः ॥ २१ ॥
अपरिमितमेव यज्ञमाप्नोत्यपरिमितं लोकमव रुन्द्धे ।
योऽजं पञ्चौदनं दक्षिणाज्योतिषं ददाति ॥ २२ ॥
नास्यास्थीनि भिन्द्यान्न मज्ञो निर्धयेत् ।
सर्वमेनं समादायेदमिदं प्र वेशयेत् ॥ २३ ॥
इदमिदमेवास्य रूपं भवति तेनैनं सं गमयति ।
इषं मह ऊर्जमस्मै दुहे योऽजं पञ्चौदनं दक्षिणाज्योतिषं ददाति ॥ २४ ॥
पञ्च रुक्मा पञ्च नवानि वस्त्रा पञ्चास्मै धेनवः कामदुघा भवन्ति ।
योऽजं पञ्चौदनं दक्षिणाज्योतिषं ददाति ॥ २५ ॥
पञ्च रुक्मा ज्योतिरस्मै भवन्ति वर्म वासांसि तन्वे भवन्ति ।
स्वर्गं लोकमश्नुते योऽजं पञ्चौदनं दक्षिणाज्योतिषं ददाति ॥ २६ ॥
या पूर्वं पतिं वित्त्वाथान्यं विन्दतेऽपरम् ।
पञ्चौदनं च तावजं ददातो न वि योषतः ॥ २७ ॥
समानलोको भवति पुनर्भुवापरः पतिः ।
योऽजं पञ्चौदनं दक्षिणाज्योतिषं ददाति ॥ २८ ॥
अनुपूर्ववत्सां धेनुमनड्वाहमुपबर्हणम् ।
वासो हिरण्यं दत्त्वा ते यन्ति दिवमुत्तमाम् ॥ २९ ॥
आत्मानं पितरं पुत्रं पौत्रं पितामहम् ।
जायां जनित्रीं मातरं ये प्रियास्तानुप ह्वये ॥ ३० ॥

यो वै नैदाघं नामर्तुं वेद । एष वै नैदाघो नामर्तुर्यदजः पञ्चौदनः ।
निरेवाप्रियस्य भ्रातृव्यस्य श्रियं दहति भवत्यात्मना ।
योऽजं पञ्चौदनं दक्षिणाज्योतिषं ददाति ॥ ३१ ॥
यो वै कुर्वन्तं नामर्तुं वेद ।
कुर्वतीं कुर्वतीमेवाप्रियस्य भ्रातृव्यस्य श्रियमा दत्ते ।
एष वै कुर्वन्नामर्तुर्यदजः पञ्चौदनः ।
निरेवाप्रियस्य भ्रातृव्यस्य श्रियं दहति भवत्यात्मना ।
योऽजं पञ्चौदनं दक्षिणाज्योतिषं ददाति ॥ ३२ ॥
यो वै संयन्तं नामर्तुं वेद ।
संयतीं संयतीमेवाप्रियस्य भ्रातृव्यस्य श्रियमा दत्ते ।
एष वै संयन्नामर्तुर्यदजः पञ्चौदनः ।
निरेवाप्रियस्य भ्रातृव्यस्य श्रियं दहति भवत्यात्मना ।
योऽजं पञ्चौदनं दक्षिणाज्योतिषं ददाति ॥ ३३ ॥
यो वै पिन्वन्तं नामर्तुं वेद ।
पिन्वतीं पिन्वतीमेवाप्रियस्य भ्रातृव्यस्य श्रियमा दत्ते ।
एष वै पिन्वन्नामर्तुर्यदजः पञ्चौदनः ।
निरेवाप्रियस्य भ्रातृव्यस्य श्रियं दहति भवत्यात्मना ।
योऽजं पञ्चौदनं दक्षिणाज्योतिषं ददाति ॥ ३४ ॥
यो वा उद्यन्तं नामर्तुं वेद ।
उद्यतीमुद्यतीमेवाप्रियस्य भ्रातृव्यस्य श्रियमा दत्ते ।
एष वा उद्यन्नामर्तुर्यदजः पञ्चौदनः ।
निरेवाप्रियस्य भ्रातृव्यस्य श्रियं दहति भवत्यात्मना ।
योऽजं पञ्चौदनं दक्षिणाज्योतिषं ददाति ॥ ३५ ॥
यो वा अभिभुवं नामर्तुं वेद ।
अभिभवन्तीमभिभवन्तीमेवाप्रियस्य भ्रातृव्यस्य श्रियमा दत्ते ।
एष वा अभिभूनामर्तुर्यदजः पञ्चौदनः ।
निरेवाप्रियस्य भ्रातृव्यस्य श्रियं दहति भवत्यात्मना ।
योऽजं पञ्चौदनं दक्षिणाज्योतिषं ददाति ॥ ३६ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अजं च पचत पञ्च चौदनान् ।
सर्वा दिशः संमनसः सुधीचीः सान्तर्देशाः प्रति गृह्णन्तु त एतम् ॥ ३७ ॥
तास्ते रक्षन्तु तव तुभ्यमेतं ताभ्य आज्यं हविरिदं जुहोमि ॥ ३८ ॥
॥ इति विंशः प्रपाठकः ॥

अथैकविंशः प्रपाठकः ॥

[६] षष्ठं सूक्तम्, प्रथमः पर्यायः

ऋषिः—ब्रह्मा ॥ देवता—अतिथिः, विद्या ॥ छन्दः—१ नागीनामत्रिपदागायत्री; २ त्रिपदाऽऽर्षीगायत्री; ३, ७ साम्नीत्रिष्टुप्; ४, ९ आर्च्यनुष्टुप्; ५ आसुरीगायत्री; ६ त्रिपदासाम्नीजगती; ८ याजुषीत्रिष्टुप्; १० साम्नीभुरिग्बृहती; ११, १४-१६ साम्यनुष्टुप्; १२ विराड्गायत्री; १३ साम्नीनिचृत्पङ्क्तिः; १७ त्रिपदाभुरिग्विराड्गायत्री ॥

यो विद्याद् ब्रह्म प्रत्यक्षं परूंषि यस्य संभारा ऋचो यस्यानूक्यम् ॥ १ ॥
सामानि यस्य लोमानि यजुर्हृदयमुच्यते परिस्तरणमिद्धविः ॥ २ ॥
यद्वा अतिथिपतिरतिथीन्प्रतिपश्यति देवयजनं प्रेक्षते ॥ ३ ॥
यदभिवदति दीक्षामुपैति यदुदकं याचत्यपः प्र णयति ॥ ४ ॥
या एव यज्ञ आपः प्रणीयन्ते ता एव ताः ॥ ५ ॥
यत्तर्पणमाहरन्ति य एवाग्नीषोमीयः पशुर्बध्यते स एव सः ॥ ६ ॥
यदावसथान्कल्पयन्ति सदोहविर्धानान्येव तत्कल्पयन्ति ॥ ७ ॥
यदुपस्तृणन्ति बर्हिरेव तत् ॥ ८ ॥
यदुपरिशयनमाहरन्ति स्वर्गमेव तेन लोकमव रुन्द्धे ॥ ९ ॥
यत्कशिपूपबर्हणमाहरन्ति परिधय एव ते ॥ १० ॥
यदाञ्जनाभ्यञ्जनमाहरन्त्याज्यमेव तत् ॥ ११ ॥
यत्पुरा परिवेषात्खादमाहरन्ति पुरोडाशावेव तौ ॥ १२ ॥
यदशनकृतं ह्वयन्ति हविषकृतमेव तद्ध्वयन्ति ॥ १३ ॥
ये व्रीहयो यवा निरुप्यन्तेंऽशव एव ते ॥ १४ ॥
यान्युलूखलमुसलानि ग्रावाण एव ते ॥ १५ ॥
शूर्पं पवित्रं तुषा ऋजीषाभिषवणीरापः ॥ १६ ॥
स्रुग्दर्विर्नेक्षणमायवनं द्रोणकलशाः कुम्भ्योवाय्व्यानि
पात्राणीयमेव कृष्णाजिनम् ॥ १७ ॥

[६] षष्ठं सूक्तम्, द्वितीयः पर्यायः

ऋषिः—ब्रह्मा ॥ देवता—अतिथिः, विद्या ॥ छन्दः—१ विराट्पुरस्ताद्बृहती; २, १२ साम्नीत्रिष्टुप्; ३ आसुर्यनुष्टुप्; ४ साम्न्युष्णिक्; ५ साम्नीबृहती; ६ आर्च्यनुष्टुप्; ७ पञ्चपदाविराट्पुरस्ताद्बृहती; ८ आसुरीगायत्री; ९ साम्न्यनुष्टुप्; १० त्रिपदाऽऽर्चीत्रिष्टुप्; ११ भुरिक्साम्नीबृहती; १३ त्रिपदाऽऽर्चीपङ्क्तिः ॥

यजमानब्राह्मणं वा एतदतिथिपतिः कुरुते यदाहार्याणि ।
प्रेक्षत इदं भूया३ इदा३मिति ॥ १ ॥
यदाह भूय उद्धरेति प्राणमेव तेन वर्षीयांसं कुरुते ॥ २ ॥
उप हरति हवींष्या सादयति ॥ ३ ॥
तेषामासन्नानामतिथिरात्मञ्जुहोति ॥ ४ ॥
स्रुचा हस्तेन प्राणे यूपे स्रुक्कारेण वषट्कारेण ॥ ५ ॥
एते वै प्रियाश्चाप्रियाश्चर्त्विजः स्वर्गं लोकं गमयन्ति यदतिथयः ॥ ६ ॥
स य एवं विद्वान्न द्विषन्नश्नीयान्न द्विषतोऽन्नमश्नीयान्न ।
मीमांसितस्य न मीमांसमानस्य ॥ ७ ॥
सर्वो वा एष जग्धपाप्मा यस्यान्नमश्नन्ति ॥ ८ ॥
सर्वो वा एषोऽजग्धपाप्मा यस्यान्नं नाश्नन्ति ॥ ९ ॥
सर्वदा वा एष युक्तग्रावार्द्रपवित्रो वितताध्वर आर्द्रतयज्ञक्रतुर्यं उपहरति ॥ १० ॥
प्राजापत्यो वा एतस्य यज्ञो वितत्तो य उपहरति ॥ ११ ॥
प्रजापतेर्वा एष विक्रमाननुविक्रमते य उपहरति ॥ १२ ॥
योऽतिथीनां स आहवनीयो यो वेश्मनि स गार्हपत्यो
यस्मिन्पचन्ति स दक्षिणाग्निः ॥ १३ ॥

[६] षष्ठं सूक्तम्, तृतीयः पर्यायः

ऋषिः—ब्रह्मा ॥ देवता—अतिथिः, विद्या ॥ छन्दः—१-६, ९ त्रिपदापिपीलिकामध्यागायत्री; ७ साम्नीबृहती; ८ पिपीलिकामध्योष्णिक् ॥

इष्टं च वा एष पूर्तं च गृहाणामश्नाति यः पूर्वोऽतिथेरश्नाति ॥ १ ॥
पयश्च वा एष रसं च गृहाणामश्नाति यः पूर्वोऽतिथेरश्नाति ॥ २ ॥
ऊर्जां च वा एष स्फातिं च गृहाणामश्नाति यः पूर्वोऽतिथेरश्नाति ॥ ३ ॥
प्रजां च वा एष पशूंश्च गृहाणामश्नाति यः पूर्वोऽतिथेरश्नाति ॥ ४ ॥
कीर्तिं च वा एष यशश्च गृहाणामश्नाति यः पूर्वोऽतिथेरश्नाति ॥ ५ ॥
श्रियं च वा एष संविदं च गृहाणामश्नाति यः पूर्वोऽतिथेरश्नाति ॥ ६ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पुष वा अतिथिर्यच्छ्रोत्रियस्तस्मात्पूर्वो नाश्नीयात् ॥ ७ ॥
अशितावत्यतिथावश्नीयाद्यज्ञस्य सात्मत्वाय यज्ञस्यावि च्छेदाय तद् व्रतम् ॥ ८ ॥
एतद्वा उ स्वादीयो यदधिगवं क्षीरं वा मांसं वा तदेव नाश्नीयात् ॥ ९ ॥

[६] षष्ठं सूक्तम्, चतुर्थः पर्यायः

ऋषिः—ब्रह्मा ॥ देवता—अतिथिः, विद्या ॥ छन्दः—१, ३, ५, ७ प्राजापत्याऽनुष्टुप्; २, ४, ६, ८ त्रिपदागायत्री; ९ भुरिगनुष्टुप्; १० चतुष्पदाप्रस्तारपङ्क्तिः ॥

स य एवं विद्वान्क्षीरमुपसिच्योपहरति ॥ १ ॥
यावदग्निष्टोमेनेष्ट्वा सुसमृद्धेनावरुन्द्धे तावदेनेनावं रुन्द्धे ॥ २ ॥
स य एवं विद्वान्सर्पिरुपसिच्योपहरति ॥ ३ ॥
यावदतिरात्रेणेष्ट्वा सुसमृद्धेनावरुन्द्धे तावदेनेनावं रुन्द्धे ॥ ४ ॥
स य एवं विद्वान्मधूपसिच्योपहरति ॥ ५ ॥
यावत्सत्रसद्येनेष्ट्वा सुसमृद्धेनावरुन्द्धे तावदेनेनावं रुन्द्धे ॥ ६ ॥
स य एवं विद्वान्मांसमुपसिच्योपहरति ॥ ७ ॥
यावद् द्वादशाहेनेष्ट्वा सुसमृद्धेनावरुन्द्धे तावदेनेनावं रुन्द्धे ॥ ८ ॥
स य एवं विद्वानुदकमुपसिच्योपहरति ॥ ९ ॥
प्रजानां प्रजननाय गच्छति प्रतिष्ठां प्रियः प्रजानां
भवति य एवं विद्वानुदकमुपसिच्योपहरति ॥ १० ॥

[६] षष्ठं सूक्तम्, पञ्चमः पर्यायः

ऋषिः—ब्रह्मा ॥ देवता—अतिथिः, विद्या ॥ छन्दः—१ साम्न्युष्णिक्; २ पुरउष्णिक्; ३, १० (५, ७ अनयोरुत्तरार्धः), भुरिक्साम्नी बृहती; ४, ६, ९ साम्न्यनुष्टुप्; ५ (पूर्वार्धः) त्रिपदानिचृद्-विषमानामगायत्री; ७ (पूर्वार्धः) त्रिपदाविराड्-विषमानामगायत्री; ८ त्रिपदाविराडनुष्टुप् ॥

तस्मा उषा हिङ्कृणोति सविता प्र स्तौति ॥ १ ॥
बृहस्पतिरूर्जयोद्गायति त्वष्टा पुष्ट्या प्रति हरति विश्वे देवा निधनम् ॥ २ ॥
निधनं भूत्याः प्रजायाः पशूनां भवति य एवं वेद ॥ ३ ॥
तस्मा उद्यन्त्सूर्यो हिङ्कृणोति संगवः प्र स्तौति ॥ ४ ॥
मध्यन्दिन उद्गायत्यपराह्णः प्रति हरत्यस्तंयन्निधनम् ।
निधनं भूत्याः प्रजायाः पशूनां भवति य एवं वेद ॥ ५ ॥
तस्मा अभ्रो भवन्हिङ्कृणोति स्तनयन्प्र स्तौति ॥ ६ ॥
विद्योतमानः प्रति हरति वर्षन्नुद्गायत्युदगृह्णन्निधनम् ।
निधनं भूत्याः प्रजायाः पशूनां भवति य एवं वेद ॥ ७ ॥

स्व. श्री ओमप्रकाशजी बजारी की स्मृती में सप्रेम भेंट !

अतिथीन्प्रति पश्यति हिङ्कृणोत्यभि वदति प्र स्तौत्युदकं याचत्युद्गायति ॥ ८ ॥
उप हरति प्रति हरत्युच्छिष्टं निधनम् ॥ ९ ॥
निधनं भूत्याः प्रजायाः पशूनां भवति य एवं वेद ॥ १० ॥

[६] षष्ठं सूक्तम्, षष्ठः पर्यायः

ऋषिः—ब्रह्मा ॥ देवता—अतिथिः, विद्या ॥ छन्दः—१ आसुरी गायत्री; २ साम्न्यनुष्टुप्; ३, ५ त्रिपदाऽऽर्चीपङ्क्तिः; ४ एकपदाप्राजापत्या-गायत्री; ६-११ आर्चीबृहती; १२ एकपदासुरीजगती; १३ याजुषीत्रिष्टुप्; १४ एकपदासुर्युष्णिक् ॥

यत्क्षत्तारं ह्वयत्या श्रावयत्येव तत् ॥ १ ॥
यत्प्रतिशृणोति प्रत्याश्रावयत्येव तत् ॥ २ ॥
यत्परिवेष्टारः पात्रहस्ताः पूर्वे चापरे च प्रपद्यन्ते चमसाध्वर्यव एव ते ॥ ३ ॥
तेषां न कश्चनाहोता ॥ ४ ॥
यद्वा अतिथिपतिरतिथीन्परिविष्य गृहानुपोदैत्यवभृथमेव तदुपावैति ॥ ५ ॥
यत्सभागयति दक्षिणाः सभागयति यदनुतिष्ठत उदवस्यत्येव तत् ॥ ६ ॥
स उपहूतः पृथिव्यां भक्षयत्युपहूतस्तस्मिन्यत्पृथिव्यां विश्वरूपम् ॥ ७ ॥
स उपहूतोऽन्तरिक्षे भक्षयत्युपहूतस्तस्मिन्यदन्तरिक्षे विश्वरूपम् ॥ ८ ॥
स उपहूतो दिवि भक्षयत्युपहूतस्तस्मिन्यद्दिवि विश्वरूपम् ॥ ९ ॥
स उपहूतो देवेषु भक्षयत्युपहूतस्तस्मिन्यद्देवेषु विश्वरूपम् ॥ १० ॥
स उपहूतो लोकेषु भक्षयत्युपहूतस्तस्मिन्यल्लोकेषु विश्वरूपम् ॥ ११ ॥
स उपहूत उपहूतः ॥ १२ ॥
आप्रोतीमं लोकमाप्रोत्यमुम् ॥ १३ ॥
ज्योतिष्मतो लोकाञ्जयति य एवं वेद ॥ १४ ॥

अथ चतुर्थोऽनुवाकः [७] सप्तमं सूक्तम्

ऋषिः—ब्रह्मा ॥ देवता—गौः ॥ छन्दः—१ आर्चीबृहती; २ आर्च्युष्णिक्; ३, ५ आर्च्यनुष्टुप्; ४, १४-१६ साम्नीबृहती; ६, ८ आसुरीगायत्री; ७ त्रिपदा-पिपीलिकामध्यानिचृद्गायत्री; ९, १३ साम्नीगायत्री; १० पुरउष्णिक्; ११, १२, १७, २५ साम्न्युष्णिक्; १८, २२ एकपदाऽऽसुरीजगती; १९ एकपदाऽऽसुरीपङ्क्तिः; २० याजुषीजगती; २१ आसुर्यनुष्टुप्; २३ एकपदाऽऽसुरीबृहती; २४ साम्नीभुरिग्बृहती; २६ साम्नी-त्रिष्टुप्; (इहानुत्कपादा द्विपदा) ॥

प्रजापतिश्च परमेष्ठी च शृङ्गे इन्द्रः शिरो अग्निर्ललाटं यमः कृकाटम् ॥ १ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सोमो॒ राजा॑ मस्तिष्को॒ द्यौरु॑त्तरहनुः॒ पृथि॒व्यधि॑रहनुः ॥ २ ॥
विद्यु॒ज्जिह्वा॑ मरुतो॒ दन्ता॑ रे॒वतीर्ग्रीवाः॑ कृत्तिका॒ स्कन्धा॑ धर्मो॑ वहः॑ ॥ ३ ॥
विश्वे॑ वा॒युः स्व॒र्गो लो॒कः कृ॒ष्णाद्रं॑ वि॒धर॑णी नि॒वेष्यः॑ ॥ ४ ॥
श्ये॒नः क्रो॒डो॒३॒॑न्तरि॑क्षं पाज॒स्यं॑ बृहस्पतिः॑ क॒कुद् बृ॑हतीः॑ कीकसाः॑ ॥ ५ ॥
दे॒वाना॑ं पत्नीः॑ पृष्टय॑ उप॒सदः॑ पशवः॑ ॥ ६ ॥
मि॒त्रश्च॒ वरु॑णश्चांसौ॒ त्वष्टा॑ चार्य॒मा च॑ दो॒षणी॑ महादे॒वो बा॒हू ॥ ७ ॥
इ॒न्द्रा॒णी भ॒सद्वा॑युः पुच्छं॑ पव॒मानो॒ बाला॑ः ॥ ८ ॥
ब्रह्म॑ च क्ष॒त्रं च॒ श्रोणी॒ बल॑मूरू ॥ ९ ॥
धा॒ता च॑ सवि॒ता चाष्ठी॑वन्तौ॒ जङ्घा॑ गन्ध॒र्वा अ॑प्स॒र॑सः
कु॒ष्ठिका॒ अदि॑तिः॒ शफाः॑ ॥ १० ॥
चेतो॒ हृद॑यं॒ यक॑न्मे॒धा व्र॒तं पु॑री॒तत् ॥ ११ ॥
क्षुत्कु॒क्षिरि॑रा॑ वनि॒ष्ठुः पर्वता॑ः प्ला॒शय॑ः ॥ १२ ॥
क्रोधो॑ वृ॒क्कौ म॒न्यु॒राण्डौ॒ प्रजा॑ शेप॑ः ॥ १३ ॥
न॒दी सू॒त्री व॒र्षस्य॒ पत॑य॒ स्तना॑ स्तनयि॒त्नुरू॒धः॑ ॥ १४ ॥
वि॒श्वव्य॑चाश्च॒र्मौष॑धयो॒ लोमा॑नि॒ नक्ष॑त्राणि॒ रूप॑म् ॥ १५ ॥
दे॒वज॑ना॒ गुदा॑ मनु॒ष्या॑ आ॒न्त्राण्य॒त्रा उ॒दर॑म् ॥ १६ ॥
रक्षा॑सि॒ लोहि॑तमितरज॒ना ऊ॑बध्य॒म् ॥ १७ ॥
अ॒भ्रं पी॒बो॑ म॒ज्जा नि॒धन॑म् ॥ १८ ॥
अ॒ग्निरासी॑न॒ उत्थि॑तो॒ऽश्विना॑ ॥ १९ ॥
इन्द्रः॑ प्राङ्ति॒ष्ठन्द॑क्षि॒णा ति॑ष्ठन्य॒मः ॥ २० ॥
प्र॒त्यङ्ति॑ष्ठन्धा॒तोद॑ङ्ति॒ष्ठन्त्स॑वि॒ता ॥ २१ ॥
तृणा॑नि॒ प्रा॒सः॑ सोमो॒ राजा॑ ॥ २२ ॥
मि॒त्र ई॑क्षमा॒ण आवृ॑त्त आन॒न्दः॑ ॥ २३ ॥
यु॒ज्यमा॑नो वैश्वदे॒वो यु॒क्तः प्र॒जाप॑ति॒र्वि॑मु॒क्तः॑ सर्वं॑म् ॥ २४ ॥
एत॒द्वै वि॒श्वरू॑पं॒ सर्वं॑रूपं गोरू॒पम् ॥ २५ ॥
उपै॑नं वि॒श्वरू॑पाः॒ सर्वं॑रूपाः॒ प॒शव॑स्तिष्ठन्ति॒ य एवं॑ वेद॑ ॥ २६ ॥

[८] अष्टमं सूक्तम्

ऋषिः—भृग्वङ्गिराः॥ देवता—सर्वशीर्षामयापाकरणम्॥ छन्दः—१-११, १३, १४, १६-२० अनुष्टुप्; १२ अनुष्टुब्गर्भाककुम्मतीचतुष्पदोष्णिक्; १५ विराडनुष्टुप्; २१ विराट्पथ्याबृहती; २२ पथ्यापङ्क्तिः॥

शी॒र्ष॒क्तिं शी॑र्षा॒मयं क॑र्ण॒शूलं॑ वि॒लोहि॑तम्।
सर्वं॑ शीर्ष॒ण्यं॑ ते रोगं॑ ब॒हिर्नि॑र्मन्त्रयामहे॥ १ ॥
कर्णा॑भ्यां ते कङ्कू॒षेभ्यः॑ कर्णशू॒लं वि॒सल्प॑कम्।
सर्वं॑ शीर्ष॒ण्यं॑ ते रोगं॑ ब॒हिर्नि॑र्मन्त्रयामहे॥ २ ॥
यस्य॑ हे॒तोः प्र॒च्यव॑ते॒ यक्ष्मः॑ कर्ण॒त आ॑स्य॒तः।
सर्वं॑ शीर्ष॒ण्यं॑ ते रोगं॑ ब॒हिर्नि॑र्मन्त्रयामहे॥ ३ ॥
यः कृ॒णोति॑ प्रमो॒तम॒न्धं कृ॒णोति॒ पूरु॑षम्।
सर्वं॑ शीर्ष॒ण्यं॑ ते रोगं॑ ब॒हिर्नि॑र्मन्त्रयामहे॥ ४ ॥
अ॒ङ्गभे॑दमङ्गव्र॒णं वि॑श्वाङ्ग्यं॑ वि॒सल्प॑कम् ।
सर्वं॑ शीर्ष॒ण्यं॑ ते रोगं॑ ब॒हिर्नि॑र्मन्त्रयामहे॥ ५ ॥
यस्य॑ भी॒मः प्र॑तीका॒श उद्वे॒पय॑ति॒ पूरु॑षम्।
त॒क्मानं॑ वि॒श्वशा॑रदं ब॒हिर्नि॑र्मन्त्रयामहे ॥ ६ ॥
य ऊ॒रू अ॑नुस॒र्प॑त्यथो॒ एति॑ ग॒वीनि॑के ।
यक्ष्मं॑ ते अ॒न्तर॒ङ्गेभ्यो॑ ब॒हिर्नि॑र्मन्त्रयामहे ॥ ७ ॥
यदि॒ कामा॑दपका॒माद्धृद॑या॒ज्जाय॑ते॒ परि॑ ।
हृ॒दो ब॒लास॒मङ्गे॑भ्यो ब॒हिर्नि॑र्मन्त्रयामहे ॥ ८ ॥
हरि॑माणं॒ ते अङ्गे॑भ्यो॒ऽप्वामन्त॒रोद॑रात् ।
य॒क्ष्मो॒धाम॒न्तरा॒त्मनो॑ ब॒हिर्नि॑र्मन्त्रयामहे ॥ ९ ॥
आसो॑ ब॒लास॒ो भव॑तु मू॒त्रं भव॑त्वा॒मय॑त्।
यक्ष्मा॑णां॒ सर्वे॑षां वि॒षं नि॑र॒वोच॒मह॑ं त्वत्॥ १० ॥
ब॒हिर्बि॑लं॒ निर्द्र॑वतु॒ काहा॑बाहुं॒ तवो॒दरा॑त्।
यक्ष्मा॑णां॒ सर्वे॑षां वि॒षं नि॑र॒वोच॒मह॑ं त्वत्॥ ११ ॥
उ॒दरा॑त्ते क्लो॒म्नो नाभ्या॒ हृद॑या॒दधि॑।
यक्ष्मा॑णां॒ सर्वे॑षां वि॒षं नि॑र॒वोच॒मह॑ं त्वत्॥ १२ ॥
याः सी॒मान॑ं विरु॒जन्ति॑ मू॒र्धान॑ं प्रत्य॒र्ष॒णीः।
अहिं॑सन्तीरना॒मया॒ निर्द्र॑वन्तु ब॒हिर्बि॑लम्॥ १३ ॥
या हृ॒दय॑मुप॒र्ष॒न्त्य॒नु॒त॒न्व॒न्ति॒ कीक॑साः।
अहिं॑सन्तीरना॒मया॒ निर्द्र॑वन्तु ब॒हिर्बि॑लम्॥ १४ ॥
याः पा॒र्श्वे उप॒र्ष॒न्त्य॒नु॒नि॒क्ष॒न्ति॒ पृ॒ष्टीः।
अहिं॑सन्तीरना॒मया॒ निर्द्र॑वन्तु ब॒हिर्बि॑लम्॥ १५ ॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

यास्तिरश्चीरुपर्षन्त्यर्षणीर्वक्षणासु ते।
अहिंसन्तीरनामया निर्द्रवन्तु बहिर्बिलम्॥ १६॥
या गुदा अनुसर्पन्त्यान्त्राणि मोहयन्ति च।
अहिंसन्तीरनामया निर्द्रवन्तु बहिर्बिलम्॥ १७॥
या मज्ञो निर्धयन्ति परूंषि विरुजन्ति च।
अहिंसन्तीरनामया निर्द्रवन्तु बहिर्बिलम्॥ १८॥
ये अङ्गानि मदयन्ति यक्ष्मासो रोपणास्तव।
यक्ष्माणां सर्वेषां विषं निरवोचमहं त्वत्॥ १९॥
विसल्पस्य विद्रधस्य वातीकारस्य वालजेः।
यक्ष्माणां सर्वेषां विषं निरवोचमहं त्वत्॥ २०॥
पादाभ्यां ते जानुभ्यां श्रोणिभ्यां परि भंससः।
अनूकादर्षणीरुष्णिहाभ्यः शीर्ष्णो रोगमनीनशम्॥ २१॥
सं ते शीर्ष्णः कपालानि हृदयस्य च यो विधुः।
उद्यन्नादित्य रश्मिभिः शीर्ष्णो रोगमनीनशोऽङ्गभेदमशीशमः॥ २२॥

अथ पञ्चमोऽनुवाकः [९] नवमं सूक्तम्

ऋषिः—ब्रह्मा॥ देवता—आदित्यः, अध्यात्मम्॥ छन्दः—१-११, १३, १५, १७, १९-२२ त्रिष्टुप्; १२, १४, १६, १८ जगती॥

अस्य वामस्य पलितस्य होतुस्तस्य भ्राता मध्यमो अस्त्यश्नः।
तृतीयो भ्राता घृतपृष्ठो अस्यात्रापश्यं विश्पतिं सप्तपुत्रम्॥ १॥
सप्त युञ्जन्ति रथमेकचक्रमेको अश्वो वहति सप्तनामा।
त्रिनाभि चक्रमजरमनर्वं यत्रेमा विश्वा भुवनाधि तस्थुः॥ २॥
इमं रथमधि ये सप्त तस्थुः सप्तचक्रं सप्त वहन्त्यश्वाः।
सप्त स्वसारो अभि सं नवन्त यत्र गवां निहिता सप्त नामा॥ ३॥
को ददर्श प्रथमं जायमानमस्थन्वन्तं यदनस्था बिभर्ति।
भूम्या असुरसृगात्मा क्व स्वित्को विद्वांसमुप गात्प्रष्टुमेतत्॥ ४॥
इह ब्रवीतु य ईमङ्ग वेदास्य वामस्य निहितं पदं वेः।
शीर्ष्णः क्षीरं दुहते गावो अस्य वव्रिं वसाना उदकं पदापुः॥ ५॥
पाकः पृच्छामि मनसाविजानन्देवानामेना निहिता पदानि।
वत्से बष्कयेऽधि सप्त तन्तून्वि तत्निरे कवय ओतवा उ॥ ६॥
अचिकित्वांश्चिकितुषश्चिदत्र कवीन्पृच्छामि विद्वनो न विद्वान्।
वि यस्तस्तम्भ षडिमा रजांस्यजस्य रूपे किमपि स्विदेकम्॥ ७॥

माता पितरमृत आ बभाज धीत्यग्रे मनसा सं हि जग्मे।
सा बीभत्सुर्गभरसा निविद्धा नमस्वन्त इदुपवाकमीयुः॥ ८॥
युक्ता मातासीद्धुरि दक्षिणाया अतिष्ठद्गर्भो वृजनीष्वन्तः।
अमीमेद्वत्सो अनु गामपश्यद्विश्वरूप्यं त्रिषु योजनेषु॥ ९॥
तिस्रो मातॄस्त्रीन्पितॄन्बिभ्रदेक ऊर्ध्वस्तस्थौ नेमव ग्लापयन्त।
मन्त्रयन्ते दिवो अमुष्य पृष्ठे विश्वविदो वाचमविश्वविन्नाम्॥ १०॥
पञ्चारे चक्रे परिवर्तमाने यस्मिन्नातस्थुर्भुवनानि विश्वा।
तस्य नाक्षस्तप्यते भूरिभारः सनादेव न छिद्यते सनाभिः॥ ११॥
पञ्चपादं पितरं द्वादशाकृतिं दिव आहुः परे अर्धे पुरीषिणम्।
अथेमे अन्य उपरे विचक्षणे सप्तचक्रे षडर आहुरर्पितम्॥ १२॥
द्वादशारं नहि तज्जराय वर्वर्ति चक्रं परि द्यामृतस्य।
आ पुत्रा अग्ने मिथुनासो अत्र सप्त शतानि विंशतिश्च तस्थुः॥ १३॥
सनेमि चक्रमजरं वि वावृत उत्तानायां दश युक्ता वहन्ति।
सूर्यस्य चक्षू रजसैत्यावृतं यस्मिन्नातस्थुर्भुवनानि विश्वा॥ १४॥
स्त्रियः सतीस्ताँ उ मे पुंस आहुः पश्यदक्षण्वान्न वि चेतदन्धः।
कविर्यः पुत्रः स ईमा चिकेत यस्ता विजानात्स पितुष्पितासत्॥ १५॥
साकंजानां सप्तथमाहुरेकजं षडिद्यमा ऋषयो देवजा इति।
तेषामिष्टानि विहितानि धामश स्थात्रे रेजन्ते विकृतानि रूपशः॥ १६॥
अवः परेण पर एनावरेण पदा वत्सं बिभ्रती गौरुदस्थात्।
सा कद्रीची कं स्विदर्धं परागात्क्व स्वित्सूते नहि यूथे अस्मिन्॥ १७॥
अवः परेण पितरं यो अस्य वेदावः परेण पर एनावरेण।
कवीयमानः क इह प्र वोचद्देवं मनः कुतो अधि प्रजातम्॥ १८॥
ये अर्वाञ्चस्ताँ उ पराच आहुर्ये पराञ्चस्ताँ उ अर्वाच आहुः।
इन्द्रश्च या चक्रथुः सोम तानि धुरा न युक्ता रजसो वहन्ति॥ १९॥
द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया समानं वृक्षं परि षस्वजाते।
तयोरन्यः पिप्पलं स्वाद्वत्त्यनश्नन्नन्यो अभि चाकशीति॥ २०॥
यस्मिन्वृक्षे मध्वदः सुपर्णा निविशन्ते सुवते चाधि विश्वे।
तस्य यदाहुः पिप्पलं स्वाद्वग्रे तन्नोन्नशद्यः पितरं न वेद॥ २१॥
यत्रा सुपर्णा अमृतस्य भक्षमनिमेषं विदथाभिस्वरन्ति।
इनो विश्वस्य भुवनस्य गोपाः स मा धीरः पाकमत्रा विवेश॥ २२॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

[१०] दशमं सूक्तम्

ऋषिः—ब्रह्मा॥ देवता—गौः, विराट्, अध्यात्मम्; २३ मित्रावरुणौ॥ छन्दः—१, ७, १४, १७, १८ जगती; २, २६, २७ भुरिक्त्रिष्टुप्; ३-६, ८-१३, १५, १६, १९, २०, २२, २३, २५, २८ त्रिष्टुप्; २१ पञ्च-पदाऽतिशक्वरी; २४ चतुष्पदापुरस्कृतिर्भुरिगतिजगती॥

यद्गा॑य॒त्रे अधि॑ गाय॒त्रमाहि॑तं॒ त्रैष्टु॑भं वा॒ त्रैष्टु॑भान्नि॒रत॑क्षत।
यद्वा॒ जग॒ज्जग॒त्याहि॑तं प॒दं य इत्तद्वि॒दुस्ते अ॑मृत॒त्वमा॑नशुः॥ १॥
गा॒य॒त्रेण॒ प्रति॑ मिमीते अ॒र्कम॒र्केण॒ साम॒ त्रैष्टु॑भेन वा॒कम्।
वा॒केन॑ वा॒कं द्वि॒पदा॒ चतु॑ष्पदा॒क्षरे॑ण मिमते स॒प्त वाणीः॑॥ २॥
जग॑ता॒ सिन्धुं॑ दि॒व्य॑स्कभायद्रथन्त॒रे सूर्यं॒ पर्य॑पश्यत्।
गा॒य॒त्रस्य॑ स॒मिध॑स्ति॒स्र आ॑हु॒स्ततो॑ म॒ह्ना प्र रि॑रिचे महि॒त्वा॥ ३॥
उप॑ ह्वये सु॒दुघां॑ धे॒नुमे॒तां सु॒हस्तो॑ गो॒धुगु॒त दो॑हदेनाम्।
श्रेष्ठं॑ स॒वं स॑वि॒ता सा॑विषन्नो॒ऽभी॑द्धो घ॒र्मस्तदु॒ षु प्र वो॑चत्॥ ४॥
हि॒ङ्कृ॒ण्व॒ती व॑सु॒पत्नी॒ वसू॑नां व॒त्समि॒च्छन्ती॒ मन॑सा॒भ्यागा॑त्।
दु॒हाम॒श्विभ्यां॒ पयो॑ अ॒घ्न्येयं सा व॑र्धतां मह॒ते सौभ॑गाय॥ ५॥
गौर॑मीमेद॒भि व॒त्सं मि॒षन्तं॑ मू॒र्धानं॒ हिङ्ङ॑कृणो॒न्मात॒वा उ॑।
सृक्वा॑णं घ॒र्मम॒भि वा॑वशा॒ना मिमा॑ति मा॒युं पय॑ते॒ पयो॑भिः॥ ६॥
अ॒यं स शि॑ङ्क्ते॒ येन॒ गौर॒भीवृ॑ता॒ मिमा॑ति मा॒युं ध्व॒सना॒वधि॑ श्रि॒ता।
सा चि॒त्तिभि॒र्नि हि च॒कार॒ मर्त्या॑न्वि॒द्युद्भव॑न्ती॒ प्रति॑ व॒व्रिमौ॑हत॥ ७॥
अ॒नच्छ॑ये तु॒रगा॑तु जी॒वमेज॑द् ध्रुवं मध्य॒ आ प॒स्त्या॑नाम्।
जी॒वो मृ॒तस्य॑ चरति स्व॒धाभि॒रम॑र्त्यो॒ मर्त्ये॑ना॒ सयो॑निः॥ ८॥
वि॒धुं द॑द्रा॒णं स॑लि॒लस्य॑ पृ॒ष्ठे युवा॑नं॒ सन्तं॑ पलि॒तो ज॑गार।
दे॒वस्य॑ पश्य॒ काव्यं॑ महि॒त्वाद्या म॒मार॒ स ह्यः समा॑न॥ ९॥
य ईं॑ च॒कार॒ न सो अ॒स्य वे॑द॒ य ईं॑ द॒दर्श॒ हिरु॒गिन्नु तस्मा॑त्।
स मा॒तुर्योना॒ परि॑वीतो अ॒न्तर्ब॑हुप्र॒जा निर्ऋ॑ति॒रा वि॑वेश॥ १०॥
अप॑श्यं गो॒पाम॑नि॒पद्य॑मान॒मा च॒ परा॑ च प॒थिभि॒श्चर॑न्तम्।
स स॒ध्रीचीः॒ स विषू॑ची॒र्वसा॑न॒ आ व॑रीवर्ति॒ भुव॑नेष्व॒न्तः॥ ११॥
द्यौर्नः॑ पि॒ता ज॑नि॒ता नाभि॒रत्र॒ बन्धु॑र्नो मा॒ता पृ॑थि॒वी म॒हीयम्।
उ॒त्ता॒नयो॑श्च॒म्वो॒३॒॑र्योनि॑र॒न्तरत्रा॑ पि॒ता दु॑हि॒तुर्गर्भ॒माधा॑त्॥ १२॥
पृ॒च्छामि॑ त्वा॒ पर॒मन्तं॑ पृथि॒व्याः पृ॒च्छामि॒ वृष्णो॒ अश्व॑स्य॒ रेतः॑।
पृ॒च्छामि॒ विश्व॑स्य॒ भुव॑नस्य॒ नाभिं॑ पृ॒च्छामि॑ वा॒चः प॑र॒मं व्यो॑म॥ १३॥
इ॒यं वेदिः॒ परो॒ अन्तः॑ पृथि॒व्या अ॒यं सोमो॒ वृष्णो॒ अश्व॑स्य॒ रेतः॑।
अ॒यं य॒ज्ञो विश्व॑स्य॒ भुव॑नस्य॒ नाभि॑र्ब्र॒ह्मायं वा॒चः प॑र॒मं व्यो॑म॥ १४॥
न वि जा॑नामि॒ यदि॑वे॒दमस्मि॑ नि॒ण्यः संन॑द्धो॒ मन॑सा चरामि।
य॒दा माग॑न्प्रथम॒जा ऋ॒तस्यादिद्वा॒चो अ॑श्नुवे भा॒गम॒स्याः॥ १५॥
अपा॒ङ् प्राङे॑ति स्व॒धया॑ गृभी॒तोऽम॑र्त्यो॒ मर्त्ये॑ना॒ सयो॑निः।
ता शश्व॑न्ता विषू॒चीना॑ वि॒यन्ता॒ न्य१॒॑न्यं चि॒क्युर्न नि चि॑क्युर॒न्यम्॥ १६॥
स॒प्तार्ध॑ग॒र्भा भुव॑नस्य॒ रेतो॒ विष्णो॑स्तिष्ठन्ति प्र॒दिशा॒ विध॑र्मणि।
ते धी॒तिभि॒र्मन॑सा॒ ते वि॑प॒श्चितः॑ परि॒भुवः॒ परि॑ भवन्ति वि॒श्वतः॑॥ १७॥
ऋ॒चो अ॒क्षरे॑ पर॒मे व्यो॑म॒न्यस्मि॑न्दे॒वा अधि॒ विश्वे॑ निषे॒दुः।
यस्तन्न वेद॒ किमृ॒चा क॑रिष्यति॒ य इत्तद्वि॒दुस्ते अ॒मी समा॑सते॥ १८॥
ऋ॒चः प॒दं मात्र॑या क॒ल्पय॑न्तोऽर्ध॒र्चेन॑ चाक्लृपु॒र्विश्व॒मेज॑त्।
त्रि॒पाद् ब्रह्म॑ पुरु॒रूपं॒ वि त॑ष्ठे॒ तेन॑ जीवन्ति प्र॒दिश॒श्चत॑स्रः॥ १९॥
सू॒य॒व॒साद्भग॑वती॒ हि भू॒या अधा॑ व॒यं भग॑वन्तः स्याम।
अ॒द्धि तृण॑मघ्न्ये विश्व॒दानीं॒ पिब॑ शु॒द्धमु॑द॒कमा॒चर॑न्ती॥ २०॥
गौरिन्मि॑माय सलि॒लानि॒ तक्ष॒त्येक॑पदी द्वि॒पदी॒ सा चतु॑ष्पदी।
अ॒ष्टाप॑दी॒ नव॑पदी बभू॒वुषी॑ स॒हस्रा॑क्षरा॒ भुव॑नस्य
प॒ङ्क्तिस्तस्याः॑ समु॒द्रा अधि॒ वि क्ष॑रन्ति ॥ २१॥
कृ॒ष्णं नि॒यानं॒ हर॑यः सुप॒र्णा अ॒पो वसा॑ना॒ दिव॒मुत्प॑तन्ति।
त आव॑वृत्र॒न्त्सद॑नादृ॒तस्यादिद् घृ॒तेन॑ पृथि॒वीं व्यू॑दुः ॥ २२॥
अ॒पादे॑ति प्रथ॒मा प॒द्वती॑नां॒ कस्तद्वां॑ मित्रावरु॒णा चि॑केत।
गर्भो॑ भा॒रं भ॑र॒त्या चि॑दस्या ऋ॒तं पिप॒र्त्यनृ॑तं॒ नि पा॑ति॥ २३॥
वि॒राड्वाग्वि॒राट् पृ॑थि॒वी वि॒राड॒न्तरि॑क्षं वि॒राट् प्र॒जाप॑तिः।
वि॒राण्मृ॒त्युः सा॒ध्याना॑मधिरा॒जो ब॑भूव॒ तस्य॑ भू॒तं
भव्यं॒ वशे॒ स मे॑ भू॒तं भव्यं॒ वशे॒ कृणोतु ॥ २४॥
श॒क॒मयं॑ धू॒ममा॒राद॑पश्यं विषू॒वता॑ प॒र ए॒नाव॑रेण ।
उ॒क्षाणं॒ पृश्नि॑मपचन्त वी॒रास्तानि॒ धर्मा॑णि प्रथ॒मान्या॑सन्॥ २५॥
त्रयः॑ के॒शिन॑ ऋतु॒था वि च॑क्षते संवत्स॒रे व॑पत॒ एक॑ एषाम्।
विश्व॑म॒न्यो अ॑भि॒चष्टे॒ शची॑भि॒र्ध्राजि॒रेक॑स्य ददृशे॒ न रू॒पम्॥ २६॥
च॒त्वारि॒ वाक्परि॑मिता प॒दानि॒ तानि॑ विदुर्ब्राह्म॒णा ये म॑नी॒षिणः॑।
गुहा॒ त्रीणि॒ निहि॑ता॒ नेङ्ग॑यन्ति तु॒रीयं॑ वा॒चो म॑नु॒ष्या॑ वदन्ति॥ २७॥
इन्द्रं॑ मि॒त्रं वरु॑णम॒ग्निमा॑हु॒रथो॑ दि॒व्यः स सु॑प॒र्णो ग॒रुत्मा॑न्।
ए॒कं सद्विप्रा॑ बहु॒धा व॑दन्त्य॒ग्निं य॒मं मा॑त॒रिश्वा॑नमाहुः॥ २८॥

इत्येकविंशः प्रपाठकः॥

॥इति नवमं काण्डम्॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अथ दशमं काण्डम्

अथ द्वाविंशः प्रपाठकः ॥

अथ प्रथमोऽनुवाकः [१] प्रथमं सूक्तम्

ऋषिः—प्रत्यङ्गिरसः ॥ देवता—मन्त्रोक्ताः ॥ छन्दः—१ महाबृहती; २ विराण्नामगायत्री; ३-८, १०, ११, १४, २१, २५-२७, ३०, ३१ अनुष्टुप्; ९ पथ्यापङ्क्तिः; १२ पङ्क्तिः; १३ उरोबृहती; १५ चतुष्पदाविराड्जगती; १६, १८ त्रिष्टुप्; १७, २४ प्रस्तारपङ्क्तिः; १९ चतुष्पदाजगती; २० विराट्प्रस्तारपङ्क्तिः; २२ द्विपदाऽऽर्च्युष्णिक् (एकावसाना); २३ त्रिपदाभुरिग्विषमागायत्री; २८ त्रिपदागायत्री; २९ मध्येज्योतिष्मतीजगती; ३२ द्व्यनुष्टुब्गर्भापञ्चपदातिजगती ॥

यां कल्पयन्ति वहतौ वधूमिव विश्वरूपां हस्तकृतां चिकित्सवः।
सारादेत्वप नुदाम एनाम् ॥ १ ॥

शीर्षण्वतीं नस्वतीं कर्णिनीं कृत्याकृता संभृता विश्वरूपा।
सारादेत्वप नुदाम एनाम् ॥ २ ॥

शूद्रकृता राजकृता स्त्रीकृता ब्रह्मभिः कृता।
जाया पत्या नुत्तेव कर्तारं बन्ध्वृच्छतु ॥ ३ ॥

अनयाहमोषध्या सर्वीः कृत्या अदूदुषम्।
यां क्षेत्रे चक्रुर्यां गोषु यां वा ते पुरुषेषु ॥ ४ ॥

अघमस्त्वघकृते शपथः शपथीयते ।
प्रत्यक्प्रतिप्रहिण्मो यथा कृत्याकृतं हनत् ॥ ५ ॥

प्रतीचीन आङ्गिरसोऽध्यक्षो नः पुरोहितः।
प्रतीचीः कृत्या आकृत्यामूःकृत्याकृतो जहि ॥ ६ ॥

यस्त्वोवाच परेहीति प्रतिकूलमुदाय्यम्।
तं कृत्येऽभिनिवर्तस्व मास्मानिच्छो अनागसः ॥ ७ ॥

यस्ते परूंषि संदधौ रथस्येववभृर्धिया ।
तं गच्छ तत्र तेऽयनमज्ञातस्तेऽयं जनः ॥ ८ ॥

ये त्वा कृत्वालेभिरे विद्वला अभिचारिणः ।
शंभ्वीदं कृत्यादूषणं प्रतिवर्त्म पुनःसरं तेन त्वा स्नपयामसि ॥ ९ ॥

यदुर्भगां प्रस्नपितां मृतवत्सामुपेयिम ।
अपैतु सर्वं मत्पापं द्रविणं मोप तिष्ठतु ॥ १० ॥

यत्ते पितृभ्यो ददतो यज्ञे वा नाम जगृहुः ।
संदेश्यात्सर्वस्मात्पापादिमा मुञ्चन्तु त्वौषधीः ॥ ११ ॥

देवैनसात्पित्र्यान्नामग्राहात्संदेश्यादिभिनिष्कृतात् ।
मुञ्चन्तु त्वा वीरुधो वीर्येण ब्रह्मण ऋग्भिः पयस ऋषीणाम् ॥ १२ ॥

यथा वातश्च्यावयति भूम्या रेणुमन्तरिक्षाच्चाभ्रम् ।
एवा मत्सर्वं दुर्भूतं ब्रह्मनुत्तमपायति ॥ १३ ॥

अप क्राम नानदती विनद्धा गर्दभीव ।
कर्तृन्रक्षस्वेतो नुत्ता ब्रह्मणा वीर्याविता ॥ १४ ॥

अयं पन्थाः कृत्य इति त्वा नयामोऽभिप्रहितां प्रति त्वा प्र हिण्मः।
तेनाभि याहि भञ्जत्यनस्वतीव वाहिनी विश्वरूपा कुरूटिनी ॥ १५ ॥

परास्के ज्योतिरपथं ते अर्वागन्यत्रास्मदयना कृणुष्व ।
परेणोहि नवतिं नाव्या अति दुर्गाः स्रोत्या मा क्षणिष्ठाः परेहि ॥ १६ ॥

वातइव वृक्षान्नि मृणीहि पादय मा गामश्वं पुरुषमुच्छिष एषाम्।
कर्तृन्निवृत्येतः कृत्येऽप्रजास्त्वाय बोधय ॥ १७ ॥

यां ते बर्हिषि यां श्मशाने क्षेत्रे कृत्यां वलगं वा निचखनुः।
अग्नौ वा त्वा गार्हपत्येऽभिचेरुः पाकं सन्तं धीरतरा अनागसम् ॥ १८ ॥

उपाहृतमनुबुद्धं निखातं वैरं त्सार्यन्वविदाम कर्त्रम् ।
तदेतु यत आभृतं तत्राश्वइव वि वर्ततां हन्तु कृत्याकृतः प्रजाम् ॥ १९ ॥

स्वायसा असयः सन्ति नो गृहे विद्मा ते कृत्ये यतिधा परूंषि।
उत्तिष्ठैव परेहीतोऽज्ञाते किमिहेच्छसि ॥ २० ॥

ग्रीवास्ते कृत्ये पादौ चापि कर्त्स्यामि निर्द्रव ।
इन्द्राग्नी अस्मान्रक्षतां यौ प्रजानां प्रजावती ॥ २१ ॥

सोमो राजाधिपा मृडिता च भूतस्य नः पतयो मृडयन्तु ॥ २२ ॥

भवाशर्वावस्यतां पापकृते कृत्याकृते। दुष्कृते विद्युतं देवहेतिम् ॥ २३ ॥

यद्येयथ द्विपदी चतुष्पदी कृत्याकृता संभृता विश्वरूपा ।
सेतोष्टापदी भूत्वा पुनः परेहि दुच्छुने ॥ २४ ॥

अभ्यक्तक्ता स्वङ्कृता सर्वं भरन्ती दुरितं परेहि ।
जानीहि कृत्ये कर्तारं दुहितेव पितरं स्वम् ॥ २५ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

परेहि कृत्ये मा तिष्ठो विद्धस्येव पदं नय ।
मृगः स मृगयुस्त्वं न त्वा निकर्तुमर्हति ॥ २६ ॥
उत हन्ति पूर्वासिनं प्रत्यादायापरं इष्वा ।
उत पूर्वस्य निघ्नतो नि हन्त्यपरः प्रति ॥ २७ ॥
एतद्धि शृणु मे वचोऽथेहि यत एयथ। यस्त्वा चकार तं प्रति ॥ २८ ॥
अनागोहत्या वै भीमा कृत्ये मा नो गामश्वं पुरुषं वधीः।
यत्रयत्रासि निहिता ततस्त्वोत्थापयामसि पुणाल्लघीयसी भव ॥ २९ ॥
यदि स्थ तमसावृता जालेनाभिहिताइव ।
सर्वाः संलुप्येतः कृत्याः पुनः कर्त्रे प्र हिण्मसि ॥ ३० ॥
कृत्याकृतो वलगिनोऽभिनिष्कारिणः प्रजाम् ।
मृणीहि कृत्ये मोच्छिषोऽमून्कृत्याकृतो जहि ॥ ३१ ॥
यथा सूर्यो मुच्यते तमसस्परि रात्रिं जहात्युषसश्च केतून्। एवाहं
सर्वं दुर्भूतं कर्त्रं कृत्याकृतां कृतं हस्तीव रजो दुरितं जहामि ॥ ३२ ॥

[२] द्वितीयं सूक्तम्

ऋषिः—नारायणः ॥ देवता—पुरुषः, ब्रह्मप्रकाशनम् (३१, ३२ साक्षात् ब्रह्म-प्रकाशिन्यौ) ॥ छन्दः—१-४, ७, ८ त्रिष्टुप्; ५, ९, १०, १२-२७, २९-३३ अनुष्टुप्; ६, ११ जगती; २८ भुरिग्बृहती ॥

केन पार्ष्णी आभृते पुरुषस्य केन मांसं संभृतं केन गुल्फौ ।
केनाङ्गुलीः पेशनीः केन खानि केनोच्छ्लङ्खौ मध्यतः कः प्रतिष्ठाम् ॥ १ ॥
कस्मान्नु गुल्फावधरावकृण्वन्नष्ठीवन्तावुत्तरौ पूरुषस्य ।
जङ्घे निरृत्य न्यदिधुः क्व स्विज्जानुनोः संधी क उ तच्चिकेत ॥ २ ॥
चतुष्टयं युन्यते संहितान्तं जानुभ्यामूर्ध्वं शिथिरं कबन्धम् ।
श्रोणी यदूरू क उ तज्जजान याभ्यां कुसिन्धं सुदृढं बभूव ॥ ३ ॥
कति देवाः कतमे त आसन्य उरो ग्रीवाश्चिक्युः पूरुषस्य ।
कति स्तनौ व्यदिधुः कः कफोडौ कति स्कन्धान्कति पृष्टीरचिन्वन् ॥ ४ ॥
को अस्य बाहू समभरद्वीर्यं करवादिति ।
अंसौ को अस्य तद्देवः कुसिन्धे अध्या ददौ ॥ ५ ॥
कः सप्त खानि वि ततर्द शीर्षणि कर्णावुमौ नासिके चक्षणी मुखम्।
येषां पुरुत्रा विजयस्य महानि चतुष्पादो द्विपदो यन्ति यामम् ॥ ६ ॥
हन्वोर्हि जिह्वामदधात्पुरूचीमधा महीमधि शिश्राय वाचम् ।
स आ वरीवर्ति भुवनेष्वन्तरपो वसानः क उ तच्चिकेत ॥ ७ ॥
मस्तिष्कमस्य यतमो ललाटं कपाटिकां प्रथमो यः कपालम् ।
चित्वा चित्यं हन्वोः पूरुषस्य दिवं रुरोह कतमः स देवः ॥ ८ ॥
प्रियाप्रियाणि बहुला स्वप्नं संबाधतन्द्र्यः।
आनन्दानुग्रो नन्दांश्च कस्माद्बहति पूरुषः ॥ ९ ॥
आर्तिरर्वतिर्निर्ऋतिः कुतो नु पुरुषेऽमतिः।
राद्धिः समृद्धिरव्यृद्धिर्मतिरुदितयः कुतः ॥ १० ॥
को अस्मिन्नापो व्यदिधाद्विषूवृतः पुरूवृतः सिन्धुसृत्याय जाताः।
तीव्रा अरुणा लोहिनीस्ताम्रधूम्रा ऊर्ध्वा अवाचीः पुरुषे तिरश्चीः ॥ ११ ॥
को अस्मिन्रूपमदधात्को महानं च नामं च।
गातुं को अस्मिन्कः केतुं कश्चरित्राणि पूरुषे ॥ १२ ॥
को अस्मिन्प्राणमवयत्को अपानं व्यानमुं।
समानमस्मिन्को देवोधि शिश्राय पूरुषे ॥ १३ ॥
को अस्मिन्यज्ञमदधादेको देवोऽधि पूरुषे।
को अस्मिन्त्सत्यं कोऽनृतं कुतो मृत्युः कुतोऽमृतम् ॥ १४ ॥
को अस्मै वासः पर्यदधात्को अस्यायुरकल्पयत्।
बलं को अस्मै प्रायच्छत्को अस्याकल्पयज्जवम् ॥ १५ ॥
केनापो अन्वतनुत केनाहरकरोदुषे ।
उषसं केनान्वैन्द्ध केनं सायंभवं ददे ॥ १६ ॥
को अस्मिन्प्रेतो न्यदिधात्तन्तुरा तायतामिति ।
मेधां को अस्मिन्नध्यौहत्को बाणं को नृतौ दधौ ॥ १७ ॥
केनेमां भूमिमौर्णोत्केन पर्यभवद्दिवम् ।
केनाभि मह्ना पर्वतान्केन कर्माणि पूरुषः ॥ १८ ॥
केनं पर्जन्यमन्वेति केन सोमं विचक्षणम्।
केनं यज्ञं च श्रद्धां च केनास्मिन्निहितं मनः ॥ १९ ॥
केन श्रोत्रियमाप्नोति केनेमं परमेष्ठिनम् ।
केनेममग्निं पूरुषः केनं संवत्सरं ममे ॥ २० ॥
ब्रह्म श्रोत्रियमाप्नोति ब्रह्मेमं परमेष्ठिनम् ।
ब्रह्मेममग्निं पूरुषो ब्रह्मं संवत्सरं ममे ॥ २१ ॥
केनं देवाँ अनु क्षियति केन दैवजनीर्विशः।
केनेदमन्यन्नक्षत्रं केन सक्षत्रमुच्यते ॥ २२ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ब्रह्म॑ दे॒वाँ अनु॑ क्षियति॒ ब्रह्म॒ दैव॑जनी॒र्विशः॑।
ब्रह्मे॒दम॒न्यन्नक्ष॑त्रं॒ ब्रह्म॒ सत्क्ष॒त्रमु॑च्यते ॥२३॥
केने॒यं भूमि॒र्विहि॑ता॒ केन॒ द्यौरुत्त॑रा हि॒ता।
केने॒दमू॒र्ध्वं ति॒र्यक्चा॒न्तरि॑क्षं॒ व्यचो॑ हि॒तम्॥२४॥
ब्रह्म॑णा॒ भूमि॒र्विहि॑ता॒ ब्रह्म॒ द्यौरुत्त॑रा हि॒ता।
ब्रह्मे॒दमू॒र्ध्वं ति॒र्यक्चा॒न्तरि॑क्षं॒ व्यचो॑ हि॒तम्॥२५॥
मू॒र्धान॑मस्य सं॒सीव्याथ॑र्वा॒ हृद॑यं च॒ यत्।
म॒स्तिष्का॑दू॒र्ध्वः प्रैर॑य॒त्पव॑मा॒नोऽधि॑ शीर्ष॒तः॥२६॥
तद्वा अथ॑र्वणः॒ शिरो॑ देवको॒शः समु॑ब्जितः।
तत्प्रा॒णो अ॒भि र॑क्षति॒ शिरो॒ अन्न॒मथो॒ मनः॑॥२७॥
ऊ॒र्ध्वो नु सृ॒ष्टा३॒॑स्ति॒र्यङ् नु सृ॒ष्टा३ः सर्वा॒ दिशः॒ पुरु॑ष॒
आ ब॑भू॒वाँ३। पुरं॒ यो ब्रह्म॑णो॒ वेद॒ यस्याः॒ पुरु॑ष उ॒च्यते॑॥२८॥
यो वै तां ब्रह्म॑णो॒ वेदा॒मृते॒नावृ॑तां॒ पुर॑म्।
तस्मै॒ ब्रह्म॑ च ब्रा॒ह्माश्च॒ चक्षुः॑ प्रा॒णं प्र॒जां द॑दुः॥२९॥
न वै तं चक्षु॑र्जहाति॒ न प्रा॒णो ज॒रसः॑ पु॒रा।
पुरं॒ यो ब्रह्म॑णो॒ वेद॒ यस्याः॒ पुरु॑ष उ॒च्यते॑॥३०॥
अ॒ष्टाच॑क्रा॒ नव॑द्वारा दे॒वानां॒ पूर॑यो॒ध्या।
तस्यां॑ हिर॒ण्ययः॒ कोशः॑ स्व॒र्गो ज्योति॒षावृ॑तः॥३१॥
तस्मि॑न्हिर॒ण्यये॒ कोशे॒ त्र्य॑रे॒ त्रिप्र॑तिष्ठिते।
तस्मि॒न्यद्य॒क्षमा॑त्म॒न्वत्तद्वै ब्र॑ह्म॒विदो॑ विदुः॥३२॥
प्र॒भ्राज॑मानां॒ हरि॑णीं॒ यश॑सा सं॒परी॑वृताम्।
पुरं॑ हिर॒ण्ययीं॒ ब्रह्मा वि॑वे॒शाप॑राजिताम्॥३३॥

अथ द्वितीयोऽनुवाकः [३] तृतीयं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा॥ देवता—वरणमणिः, वनस्पतिः॥ छन्दः—१, ४, ५, ७, ९, १०, १२ अनुष्टुप्; २, ३, ६ भुरिक्त्रिष्टुप्; ८, १३, १४ पथ्यापङ्क्तिः; ११, १६ भुरिगनुष्टुप्; १५, १७-२५ षट्पदाजगती॥

अ॒यं मे॑ वर॒णो म॒णिः स॑पत्न॒क्षय॑णो॒ वृषा॑ ।
तेना र॑भस्व॒ त्वं शत्रू॒न्प्र मृ॑णीहि दुरस्य॒तः ॥१॥
प्रैणा॑ञ्छृणीहि॒ प्र मृ॒णा र॑भस्व म॒णिस्ते॑ अस्तु पुरए॒ता पु॒रस्ता॑त्।
अवा॑रयन्त वर॒णेन॑ दे॒वा अ॑भ्याचा॒रमसु॑राणां॒ श्वःश्वः॑ ॥२॥
अ॒यं म॒णिर्व॑र॒णो वि॒श्वभे॑षजः सहस्रा॒क्षो हरि॑तो हिर॒ण्ययः॑।
स ते॒ शत्रू॒नध॑रान्पादयाति॒ पूर्व॒स्तान्द॑भ्नुहि॒ ये त्वा॑ द्वि॒षन्ति॑॥३॥
अ॒यं ते॑ कृ॒त्यां वित॑तां॒ पौरु॑षेयाद॒यं भ॒यात्।
अ॒यं त्वा॒ सर्व॑स्मात्पा॒पाद्व॑र॒णो वा॑रयिष्यते॥४॥
व॒र॒णो वा॑रयाता अ॒यं दे॒वो वन॒स्पतिः॑।
यक्ष्मो॒ यो अ॒स्मिन्नावि॑ष्ट॒स्तमु॑ दे॒वा अ॑वीवरन्॥५॥
स्वप्नं॑ सु॒प्त्वा यदि॒ पश्या॑सि पा॒पं मृ॒गः सृ॒तिं यति॒ धावा॒दजु॑ष्टाम्।
प॒रि॒क्ष॒वाच्छ॒कुनेः॑ पापवा॒दाद॒यं म॒णिर्व॑र॒णो वा॑रयिष्यते॥६॥
अरा॑त्यास्त्वा॒ निर्ऋ॑त्या अभिचा॒रादथो॑ भ॒यात्।
मृ॒त्योरोजी॑यसो व॒धाद्व॑र॒णो वा॑रयिष्यते॥७॥
यन्मे॑ मा॒ता यन्मे॑ पि॒ता भ्रात॑रो॒ यच्च॑ मे॒ स्वा यदेन॑श्चकृ॒मा व॒यम्।
ततो॑ नो वारयिष्यते॒ऽयं दे॒वो वन॒स्पतिः॑ ॥८॥
व॒र॒णेन॒ प्रव्य॑थिता॒ भ्रातृ॑व्या मे॒ सब॑न्धवः।
अ॒सूर्तं॒ रजो॒ अप्य॑गु॒स्ते य॑न्त्वध॒मं तमः॑ ॥९॥
अरि॑ष्टो॒ऽहमरि॑ष्टगु॒रायु॑ष्मा॒न्त्सर्व॑पूरुषः ।
तं मा॒यं व॑र॒णो म॒णिः परि॑ पातु दि॒शोदि॑शः॥१०॥
अ॒यं मे॑ वर॒ण उर॑सि॒ राजा॑ दे॒वो वन॒स्पतिः॑।
स मे॒ शत्रू॒न्वि बा॑धता॒मिन्द्रो॒ दस्यू॑नि॒वासु॑रान्॥११॥
इ॒मं बि॑भर्मि वर॒णमायु॑ष्माञ्छ॒तशा॑रदः।
स मे॑ रा॒ष्ट्रं च॑ क्ष॒त्रं च॑ प॒शूनोज॑श्च मे दधत्॥१२॥
यथा॒ वातो॒ वन॒स्पती॑न्वृ॒क्षान्भ॒नक्त्योज॑सा ।
ए॒वा स॒पत्ना॑न्मे भङ्ग्धि॒ पूर्वी॑ञ्जा॒ताँ उ॒ताप॑रान्वर॒णस्त्वा॒भि र॑क्षतु॥१३॥
यथा॒ वात॑श्चा॒ग्निश्च॑ वृ॒क्षान्प्सा॒तो वन॒स्पती॑न् ।
ए॒वा स॒पत्ना॑न्मे प्साहि॒ पूर्वी॑ञ्जा॒ताँ उ॒ताप॑रान्वर॒णस्त्वा॒भि र॑क्षतु॥१४॥
यथा॒ वाते॑न॒ प्रक्षी॑णा वृ॒क्षाः शेरे॒ न्य॑र्पिताः।
ए॒वा स॒पत्नां॒स्त्वं मम॒ प्र क्षि॑णीहि॒ न्य॑र्पय॒
पूर्वी॑ञ्जा॒ताँ उ॒ताप॑रान्वर॒णस्त्वा॒भि र॑क्षतु॥१५॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तांस्त्वं प्र छिन्द्धि वरण पुरा दिष्टात्पुरायुषः।
य एनं पशुषु दिप्सन्ति ये चास्य राष्ट्रदिप्सवः॥ १६॥
यथा सूर्यो अतिभाति यथास्मिन्तेज आहितम्।
एवा में वरुणो मणिः कीर्तिं भूतिं नि यच्छतु
तेजसा मा समुक्षतु यशसा समनक्तु मा॥ १७॥
यथा यशश्चन्द्रमस्यादित्ये च नृचक्षसि।
एवा में वरुणो मणिः कीर्तिं भूतिं नि यच्छतु
तेजसा मा समुक्षतु यशसा समनक्तु मा॥ १८॥
यथा यशः पृथिव्यां यथास्मिञ्जातवेदसि।
एवा में वरुणो मणिः कीर्तिं भूतिं नि यच्छतु
तेजसा मा समुक्षतु यशसा समनक्तु मा॥ १९॥
यथा यशः कन्यायां यथास्मिन्त्संभृते रथे।
एवा में वरुणो मणिः कीर्तिं भूतिं नि यच्छतु
तेजसा मा समुक्षतु यशसा समनक्तु मा॥ २०॥
यथा यशः सोमपीथे मधुपर्के यथा यशः।
एवा में वरुणो मणिः कीर्तिं भूतिं नि यच्छतु
तेजसा मा समुक्षतु यशसा समनक्तु मा॥ २१॥
यथा यशोऽग्निहोत्रे वषट्कारे यथा यशः।
एवा में वरुणो मणिः कीर्तिं भूतिं नि यच्छतु
तेजसा मा समुक्षतु यशसा समनक्तु मा॥ २२॥
यथा यशो यजमाने यथास्मिन्यज्ञ आहितम्।
एवा में वरुणो मणिः कीर्तिं भूतिं नि यच्छतु
तेजसा मा समुक्षतु यशसा समनक्तु मा॥ २३॥
यथा यशः प्रजापतौ यथास्मिन्परमेष्ठिनि।
एवा में वरुणो मणिः कीर्तिं भूतिं नि यच्छतु
तेजसा मा समुक्षतु यशसा समनक्तु मा॥ २४॥
यथा देवेष्वमृतं यथौषु सत्यमाहितम्।
एवा में वरुणो मणिः कीर्तिं भूतिं नि यच्छतु
तेजसा मा समुक्षतु यशसा समनक्तु मा॥ २५॥

[४] चतुर्थं सूक्तम्

ऋषिः—गरुत्मान्॥ देवता—सर्पविषापाकरणम्॥ छन्दः—१ पथ्यापङ्क्तिः; २ त्रिपदा-यवमध्यागायत्री; ३, ४ पथ्याबृहती; ५-७, ९-११, १३-१५, १७-२०, २२, २४, २५ अनुष्टुप्; ८ उष्णिग्गर्भापराबृहतीत्रिष्टुप्; १२ भुरिग्गायत्री; १६ त्रिपदाप्रतिष्ठागायत्री; २१ ककुम्मत्यनुष्टुप्; २३ त्रिष्टुप्; २६ षट्पदाबृहतीगर्भाककुम्मतीभुरिक्त्रिष्टुप्॥

इन्द्रस्य प्रथमो रथो देवानामपरो रथो वरुणस्य तृतीय इत्।
अहीनामपमा रथं स्थाणुर्मारदर्धर्षत् ॥ १॥
दर्भः शोचिस्तरूणकमश्वस्य वारः परुषस्य वारः।
रथस्य बन्धुरम् ॥ २॥
अवं श्वेत पदा जहि पूर्वेण चापरेण च।
उदप्लुतमिव दार्वहीनामरसं विषं वारुग्रम्॥ ३॥
अरंघुषो निमन्योन्मन्यु पुनरब्रवीत्।
उदप्लुतमिव दार्वहीनामरसं विषं वारुग्रम्॥ ४॥
पैद्वो हन्ति कसर्णीलं पैद्वः श्वित्रमुतासितम्।
पैद्वो रथर्व्याः शिरः सं बिभेद पृदाक्वाः॥ ५॥
पैद्व प्रेहि प्रथमोऽनु त्वा वयमेमसि।
अहीन्व्यस्यितात्पथो येन स्मा वयमेमसि ॥ ६॥
इदं पैद्वो अजायतेदमस्य परायणम्।
इमान्यवैतः पदाहिघ्न्यो वाजिनीवतः ॥ ७॥
संयतं न वि ष्यरद् व्यात्तं न सं यमत्।
अस्मिन्क्षेत्रे द्वावही स्त्री च पुमांश्च तावुभावर्रसा॥ ८॥
अरसास इहार्हयो ये अन्ति ये च दूरके।
घनेन हन्मि वृश्चिकमहिं दण्डेनागतम्॥ ९॥
अघाश्वस्येदं भेषजमुभयोः स्वजस्य च।
इन्द्रो मेऽहिमघायन्तमहिं पैद्वो अरन्धयत्॥ १०॥
पैद्वस्य मन्महे वयं स्थिरस्य स्थिरधाम्नः।
इमे पश्चा पृदाकवः प्रदीर्ध्यत आसते॥ ११॥
नष्टासवो नष्टविषा हता इन्द्रेण वज्रिणा।
जघानेन्द्रो जघ्निमा वयम् ॥ १२॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

हतास्तिरश्चिराजयो निपिष्टासः पृदाकवः।
दर्वि करिक्रतं श्वित्रं दुर्भेष्वसितं जहि ॥ १३ ॥
कैरातिका कुमारिका सका खनति भेषजम्।
हिरण्ययीभिरभ्रिभिर्गिरीणामुप सानुषु ॥ १४ ॥
आयमगन्युवा भिषक्पृश्निहापराजितः ।
स वै स्वजस्य जम्भन उभयोर्वृश्चिकस्य च ॥ १५ ॥
इन्द्रो मेऽहिमरन्धयन्मित्रश्च वरुणश्च ।
वातापर्जन्योरुभा ॥ १६ ॥
इन्द्रो मेऽहिमरन्धयत्पृदाकुं च पृदाक्वम्।
स्वजं तिरश्चिराजिं कसर्णीलं दशोनसिम् ॥ १७ ॥
इन्द्रो जघान प्रथमं जनितारमहे तव।
तेषामु तृह्यमाणानां कः स्वित्तेषामसद्रसः ॥ १८ ॥
सं हि शीर्षण्यग्रभं पौञ्जिष्टइव कर्वरम्।
सिन्धोर्मध्यं परेत्य व्यनिजमहेर्विषम् ॥ १९ ॥
अहीनां सर्वेषां विषं परा वहन्तु सिन्धवः।
हतास्तिरश्चिराजयो निपिष्टासः पृदाकवः ॥ २० ॥
ओषधीनामहं वृण उर्वरीरिव साधुया।
नयाम्यर्वतीरिवाहे निरैतु ते विषम् ॥ २१ ॥
यदग्नौ सूर्ये विषं पृथिव्यामोषधीषु यत्।
कान्दाविषं कनक्नकं निरैत्वैतु ते विषम् ॥ २२ ॥
ये अग्निजा ओषधिजा अहीनां ये अप्सुजा विद्युत आबभूवुः।
येषां जातानि बहुधा महान्ति तेभ्यः सर्पेभ्यो नमसा विधेम ॥ २३ ॥
तौदी नामासि कन्या घृताची नाम वा असि।
अधस्पदेन ते पदमा ददे विषदूषणम् ॥ २४ ॥
अङ्गादङ्गात्प्र च्यावय हृदयं परि वर्जय।
अधा विषस्य यत्तेजोऽवाचीनं तदेतु ते ॥ २५ ॥
आरे अभूद्विषमरौद्विषे विषमप्रागपि ।
अग्निर्विषमहेर्निरधात्सोमो निरणयीत् ।
दंष्टारमन्वगाद्विषमहिरमृत ॥ २६ ॥

अथ तृतीयोऽनुवाकः [५] पञ्चमं सूक्तम्

ऋषिः—१-२४ सिन्धुद्वीपः; २५-३६ कौशिकः; ३७-४१ ब्रह्मा; ४२-५० विहव्यः॥ देवता—१-२४ आपः; २५-४१ मन्त्रोक्ताः; ४२-५० प्रजापतिः॥ छन्दः—१, २-५ त्रिपदापुरोभिकृतिः ककुम्मतीगर्भापङ्क्तिः; ६ चतुष्पदाजगतीगर्भाजगती; ७-१४ पञ्चपदाविपरीतपादलक्ष्माबृहती (११, १४ पथ्यापङ्क्तिः); १५-२१ दशपदात्रैष्टुब्गर्भाऽतिधृतिः (१९, २० कृतिः); २२, २३, ४२, ४३, ४५-४७ अनुष्टुप्; २४ त्रिपदाविराड्-गायत्री; २५-३५ षट्पदायथाक्षरंशक्वर्यतिशक्वरी; ३६ पञ्चपदाऽतिशाक्वराति-जागतगर्भाऽष्टिः; ३७ विराट्पुरस्ताद्बृहती; ३८ पुरउष्णिक्; ३९, ४१ आर्षी-गायत्री; ४० विराड्विषमागायत्री; ४४ त्रिपदागायत्रीगर्भाऽनुष्टुप्; ४८, ४९, ५० त्रिष्टुप्॥

इन्द्रस्यौज स्थेन्द्रस्य सहु स्थेन्द्रस्य बलं स्थेन्द्रस्य वीर्यं स्थेन्द्रस्य नृम्णं स्थ।
जिष्णवे योगाय ब्रह्मयोगैर्वो युनज्मि ॥ १ ॥
इन्द्रस्यौज स्थेन्द्रस्य सहु स्थेन्द्रस्य बलं स्थेन्द्रस्य वीर्यं स्थेन्द्रस्य नृम्णं स्थ।
जिष्णवे योगाय क्षत्रयोगैर्वो युनज्मि ॥ २ ॥
इन्द्रस्यौज स्थेन्द्रस्य सहु स्थेन्द्रस्य बलं स्थेन्द्रस्य वीर्यं स्थेन्द्रस्य नृम्णं स्थ।
जिष्णवे योगायेन्द्रयोगैर्वो युनज्मि ॥ ३ ॥
इन्द्रस्यौज स्थेन्द्रस्य सहु स्थेन्द्रस्य बलं स्थेन्द्रस्य वीर्यं स्थेन्द्रस्य नृम्णं स्थ।
जिष्णवे योगाय सोमयोगैर्वो युनज्मि ॥ ४ ॥
इन्द्रस्यौज स्थेन्द्रस्य सहु स्थेन्द्रस्य बलं स्थेन्द्रस्य वीर्यं स्थेन्द्रस्य नृम्णं स्थ।
जिष्णवे योगायाप्सुयोगैर्वो युनज्मि ॥ ५ ॥
इन्द्रस्यौज स्थेन्द्रस्य सहु स्थेन्द्रस्य बलं स्थेन्द्रस्य वीर्यं स्थेन्द्रस्य नृम्णं स्थ।
जिष्णवे योगाय विश्वानि मा भूतान्युप तिष्ठन्तु युक्तां म आप स्थ ॥ ६ ॥
अग्नेर्भाग स्थ। अपां शुक्रमापो देवीर्वर्चो अस्मासु धत्त ।
प्रजापतेर्वो धाम्नास्मै लोकाय सादये ॥ ७ ॥
इन्द्रस्य भाग स्थ। अपां शुक्रमापो देवीर्वर्चो अस्मासु धत्त ।
प्रजापतेर्वो धाम्नास्मै लोकाय सादये ॥ ८ ॥
सोमस्य भाग स्थ। अपां शुक्रमापो देवीर्वर्चो अस्मासु धत्त ।
प्रजापतेर्वो धाम्नास्मै लोकाय सादये ॥ ९ ॥
वरुणस्य भाग स्थ। अपां शुक्रमापो देवीर्वर्चो अस्मासु धत्त ।
प्रजापतेर्वो धाम्नास्मै लोकाय सादये ॥ १० ॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मित्रावरुणयोर्भाग स्थ। अपां शुक्रमापो देवीर्वर्चो अस्मासु धत्त।
प्रजापतेर्वो धाम्नास्मै लोकाय सादये ॥ ११ ॥
यमस्य भाग स्थ। अपां शुक्रमापो देवीर्वर्चो अस्मासु धत्त ।
प्रजापतेर्वो धाम्नास्मै लोकाय सादये ॥ १२ ॥
पितृणा भाग स्थ। अपां शुक्रमापो देवीर्वर्चो अस्मासु धत्त ।
प्रजापतेर्वो धाम्नास्मै लोकाय सादये ॥ १३ ॥
देवस्य सवितुर्भाग स्थ। अपां शुक्रमापो देवीर्वर्चो अस्मासु धत्त।
प्रजापतेर्वो धाम्नास्मै लोकाय सादये ॥ १४ ॥

यो वं आपोऽपां भागोऽप्स्वन्तर्यजुष्यो देवयजनः।
इदं तमति सृजामि तं माभ्यवनिक्षि ।
तेन तमभ्यतिसृजामो योऽस्मान्द्वेष्टि यं वयं द्विष्मः ।
तं वधेयं तं स्तृषीयानेन ब्रह्मणानेन कर्मणानया मेन्या ॥ १५ ॥
यो वं आपोऽपामूर्मिरप्स्वन्तर्यजुष्यो देवयजनः ।
इदं तमति सृजामि तं माभ्यवनिक्षि ।
तेन तमभ्यतिसृजामो योऽस्मान्द्वेष्टि यं वयं द्विष्मः ।
तं वधेयं तं स्तृषीयानेन ब्रह्मणानेन कर्मणानया मेन्या ॥ १६ ॥
यो वं आपोऽपां वत्सोऽप्स्वन्तर्यजुष्यो देवयजनः।
इदं तमति सृजामि तं माभ्यवनिक्षि ।
तेन तमभ्यतिसृजामो योऽस्मान्द्वेष्टि यं वयं द्विष्मः।
तं वधेयं तं स्तृषीयानेन ब्रह्मणानेन कर्मणानया मेन्या ॥ १७ ॥
यो वं आपोऽपां वृषभोऽप्स्वन्तर्यजुष्यो देवयजनः।
इदं तमति सृजामि तं माभ्यवनिक्षि ।
तेन तमभ्यतिसृजामो योऽस्मान्द्वेष्टि यं वयं द्विष्मः।
तं वधेयं तं स्तृषीयानेन ब्रह्मणानेन कर्मणानया मेन्या ॥ १८ ॥
यो वं आपोऽपां हिरण्यगर्भोऽप्स्वन्तर्यजुष्यो दिवयजनः।
इदं तमति सृजामि तं माभ्यवनिक्षि ।
तेन तमभ्यतिसृजामो योऽस्मान्द्वेष्टि यं वयं द्विष्मः।
तं वधेयं तं स्तृषीयानेन ब्रह्मणानेन कर्मणानया मेन्या ॥ १९ ॥
यो वं आपोऽपामश्मा पृश्निर्दिव्योऽप्स्वन्तर्यजुष्यो देवयजनः ।
इदं तमति सृजामि तं माभ्यवनिक्षि ।
तेन तमभ्यतिसृजामो योऽस्मान्द्वेष्टि यं वयं द्विष्मः ।
तं वधेयं तं स्तृषीयानेन ब्रह्मणानेन कर्मणानया मेन्या ॥ २० ॥
यो वं आपोऽपामग्रयोऽप्स्वन्तर्यजुष्या देवयजनाः ।
इदं तानति सृजामि तान्माभ्यवनिक्षि ।
तैस्तमभ्यतिसृजामो योऽस्मान्द्वेष्टि यं वयं द्विष्मः ।
तं वधेयं तं स्तृषीयानेन ब्रह्मणानेन कर्मणानया मेन्या ॥ २१ ॥
यदर्वाचीनं त्रैहायणादनृतं किं चोदिम ।
आपो मा तस्मात्सर्वस्मादुरितात्पान्त्वंहसः ॥ २२ ॥
समुद्रं वः प्र हिणोमि स्वां योनिमपीतन ।
अरिष्टाः सर्वहायसो मा च नः किं चनाममत् ॥ २३ ॥
अरिप्रा आपो अप रिप्रमस्मत् ।
प्रास्मदेनो दुरितं सुप्रतीकाः प्र दुष्वप्न्यं प्र मलं वहन्तु ॥ २४ ॥
विष्णोः क्रमोऽसि सपत्नहा पृथिवीसंशितोऽग्रितेजाः ।
पृथिवीमनु वि क्रमेऽहं पृथिव्यास्तं निर्भजामो योऽस्मान्द्वेष्टि
यं वयं द्विष्मः। स मा जीवीत्तं प्राणो जहातु ॥ २५ ॥
विष्णोः क्रमोऽसि सपत्नहान्तरिक्षसंशितो वायुतेजाः ।
अन्तरिक्षमनु वि क्रमेहमन्तरिक्षात्तं निर्भजामो योऽस्मान्द्वेष्टि
यं वयं द्विष्मः। स मा जीवीत्तं प्राणो जहातु ॥ २६ ॥
विष्णोः क्रमोऽसि सपत्नहा द्यौसंशितः सूर्यतेजाः ।
दिवमनु वि क्रमेऽहं दिवस्तं निर्भजामो योऽस्मान्द्वेष्टि
यं वयं द्विष्मः। स मा जीवीत्तं प्राणो जहातु ॥ २७ ॥
विष्णोः क्रमोऽसि सपत्नहा दिक्संशितो मनस्तेजाः ।
दिशोऽनु वि क्रमेऽहं दिग्भ्यस्तं निर्भजामो योऽस्मान्द्वेष्टि
यं वयं द्विष्मः। स मा जीवीत्तं प्राणो जहातु ॥ २८ ॥
विष्णोः क्रमोऽसि सपत्नहाशासंशितो वातंतेजाः ।
आशा अनु वि क्रमेऽहमाशाभ्यस्तं निर्भजामो योऽस्मान्द्वेष्टि
यं वयं द्विष्मः। स मा जीवीत्तं प्राणो जहातु ॥ २९ ॥
विष्णोः क्रमोऽसि सपत्नह ऋक्संशितः सामतेजाः ।
ऋचोनु वि क्रमेऽहमृग्भ्यस्तं निर्भजामो योऽस्मान्द्वेष्टि
यं वयं द्विष्मः। स मा जीवीत्तं प्राणो जहातु ॥ ३० ॥
विष्णोः क्रमोऽसि सपत्नहा यज्ञसंशितो ब्रह्मतेजाः ।
यज्ञमनु वि क्रमेऽहं यज्ञात्तं निर्भजामो योऽस्मान्द्वेष्टि
यं वयं द्विष्मः। स मा जीवीत्तं प्राणो जहातु ॥ ३१ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

विष्णोः क्रमोऽसि सपत्नहौषधीसंशितः सोमतेजाः ।
ओषधीरनु वि क्रमेऽहमोषधीभ्यस्तं निर्भजामो यो३स्मान्द्वेष्टि
यं वयं द्विष्मः। स मा जीवीत्तं प्राणो जहातु ॥३२॥
विष्णोः क्रमोऽसि सपत्नहाऽप्सुसंशितो वरुणतेजाः ।
अपोऽनु वि क्रमेऽहमद्भ्यस्तं निर्भजामो यो३स्मान्द्वेष्टि
यं वयं द्विष्मः। स मा जीवीत्तं प्राणो जहातु ॥३३॥
विष्णोः क्रमोऽसि सपत्नहा कृषिसंशितोऽन्नतेजाः ।
कृषिमनु वि क्रमेऽहं कृष्यास्तं निर्भजामो यो३स्मान्द्वेष्टि
यं वयं द्विष्मः। स मा जीवीत्तं प्राणो जहातु ॥३४॥
विष्णोः क्रमोऽसि सपत्नहा प्राणसंशितः पुरुषतेजाः ।
प्राणमनु वि क्रमेऽहं प्राणात्तं निर्भजामो यो३स्मान्द्वेष्टि
यं वयं द्विष्मः। स मा जीवीत्तं प्राणो जहातु ॥३५॥

जितमस्माकमुद्भिन्नमस्माकमभ्यष्ठां विश्वाः पृतना अरातीः।
इदमहमामुष्यायणस्यामुष्याः पुत्रस्य वर्चस्तेजः
प्राणमायुर्नि वेष्टयामीदमेनमधराञ्चं पादयामि ॥३६॥
सूर्यस्यावृतमन्वावर्ते दक्षिणामन्वावृतम् ।
सा मे द्रविणं यच्छतु सा मे ब्राह्मणवर्चसम् ॥३७॥
दिशो ज्योतिष्मतीरभ्यावर्ते ।
ता मे द्रविणं यच्छन्तु ता मे ब्राह्मणवर्चसम्॥३८॥
सप्तऋषीनभ्यावर्ते ।
ते मे द्रविणं यच्छन्तु ते मे ब्राह्मणवर्चसम्॥३९॥
ब्रह्माभ्यावर्ते। तन्मे द्रविणं यच्छतु तन्मे ब्राह्मणवर्चसम्॥४०॥
ब्राह्मणाँ अभ्यावर्ते। ते मे द्रविणं यच्छन्तु ते मे ब्राह्मणवर्चसम्॥४१॥
यं वयं मृगयामहे तं वधै स्तृणवामहै ।
व्यात्ते परमेष्ठिनो ब्रह्मणापीपदाम तम् ॥४२॥
वैश्वानरस्य दंष्ट्राभ्यां हेतिस्तं समधादभि ।
इयं तं प्सात्वाहुतिः समिद्देवी सहीयसी ॥४३॥
राज्ञो वरुणस्य बन्धोऽसि ।
सो३ऽमुमामुष्यायणममुष्याः पुत्रमन्ने प्राणे बधान॥४४॥
यत्ते अन्नं भुवस्पत आक्षियति पृथिवीमनु ।
तस्य नस्त्वं भुवस्पते संप्रयच्छ प्रजापते ॥४५॥

अपो दिव्या अचायिषं रसेन समपृक्ष्महि ।
पयस्वानग्न आगमं तं मा सं सृज वर्चसा ॥४६॥
सं माग्ने वर्चसा सृज सं प्रजया समायुषा ।
विद्युर्मे अस्य देवा इन्द्रो विद्यात्सह ऋषिभिः॥४७॥
यदग्ने अद्य मिथुना शपातो यद्वाचस्तृष्टं जनयन्त रेभाः।
मन्योर्मनसः शरव्या३ जायते या तया विध्य हृदये यातुधानान्॥४८॥
परा शृणीहि तपसा यातुधानान्पराऽग्ने रक्षो हरसा शृणीहि।
पराऽर्चिषा मूरदेवाञ्छृणीहि परासुतृपः शोशुचतः शृणीहि॥४९॥
अपामस्मै वज्रं प्र हरामि चतुर्भृष्टिं शीर्षभिद्याय विद्वान्।
सो अस्याङ्गानि प्र शृणातु सर्वा तन्मे देवा अनु जानन्तु विश्वे॥५०॥

॥इति द्वाविंशः प्रपाठकः॥

अथ त्रयोविंशः प्रपाठकः॥

[६] षष्ठं सूक्तम्

ऋषिः—बृहस्पतिः॥ देवता—वनस्पतिः, फालमणिः; ३ आपः॥ छन्दः—१, ४, २१ गायत्री; २, ३, १८, १९, २२, २८-३०, ३२-३४ अनुष्टुप्; ५, ३१ षट्पदाजगती; ६ सप्तपदाविराट्शक्वरी; ७-९ अष्टपदाऽष्टिः; १० नवपदाधृतिः; ११, २०, २३-२७ पथ्यापङ्क्तिः; १२-१७ षट्पदा (?; सप्तपदा) शक्वरी; ३५ पञ्चपदात्र्यनुष्टुब्गर्भाजगती॥

अरातीयोर्भ्रातृव्यस्य दुर्हार्दो द्विषतः शिरः। अपि वृश्चाम्योजसा॥१॥
वर्म मह्यमयं मणिः फालाज्जातः करिष्यति।
पूर्णो मन्थेन मागमद्रसेन सह वर्चसा॥२॥
यत्त्वा शिक्वः पराऽवधीत्तक्षा हस्तेन वास्या।
आपस्त्वा तस्माज्जीवलाः पुनन्तु शुचयः शुचिम्॥३॥
हिरण्यस्त्रगयं मणिः श्रद्धां यज्ञं महो दधत्। गृहे वसतु नोऽतिथिः॥४॥
तस्मै घृतं सुरां मध्वन्नमन्नं क्षदामहे। स नः पितेव पुत्रेभ्यः
श्रेयः श्रेयश्चिकित्सतु भूयोभूयः श्वःश्वो देवेभ्यो मणिरेत्य ॥५॥
यमबध्नाद् बृहस्पतिर्मणिं फालं घृतश्चुतमुग्रं खदिरमोजसे ।
तमग्निः प्रत्यमुञ्चत सो अस्मै दुह आज्यं
भूयोभूयः श्वःश्वस्तेन त्वं द्विषतो जहि ॥६॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

यमब॑ध्ना॒द् बृह॒स्पति॑र्म॒णिं फालं॑ घृत॒श्चुत॑मु॒ग्रं ख॑दि॒रमोज॑से ।
तमिन्द्रः॒ प्रत्य॑मुञ्च॒तौज॑से वी॒र्या॑य॒ कम् ।
सो अ॑स्मै॒ बलमिद्दु॑हे॒ भूयो॑भूयः॒ श्वःश्व॒स्तेन॒ त्वं द्वि॑ष॒तो ज॑हि॥ ७॥
यमब॑ध्ना॒द् बृह॒स्पति॑र्म॒णिं फालं॑ घृत॒श्चुत॑मु॒ग्रं ख॑दि॒रमोज॑से ।
तं सोमः॒ प्रत्य॑मुञ्चत म॒हे श्रोत्रा॑य॒ चक्ष॑से ।
सो अ॑स्मै॒ वर्च॒ इद्दु॑हे॒ भूयो॑भूयः॒ श्वःश्व॒स्तेन॒ त्वं द्वि॑ष॒तो ज॑हि॥ ८॥
यमब॑ध्ना॒द् बृह॒स्पति॑र्म॒णिं फालं॑ घृत॒श्चुत॑मु॒ग्रं ख॑दि॒रमोज॑से ।
तं सूर्यः॒ प्रत्य॑मुञ्चत॒ तेने॒मा अ॑जय॒द्दिशः॑ ।
सो अ॑स्मै॒ भूति॒मिद्दु॑हे॒ भूयो॑भूयः॒ श्वःश्व॒स्तेन॒ त्वं द्वि॑ष॒तो ज॑हि॥ ९॥
यमब॑ध्ना॒द् बृह॒स्पति॑र्म॒णिं फालं॑ घृत॒श्चुत॑मु॒ग्रं ख॑दि॒रमोज॑से।
तं बिभ्र॑च्च॒न्द्रमा॑ म॒णिमसु॑राणां॒ पुरो॑ऽजयद्दान॒वानां॑ हिर॒ण्ययीः॑।
सो अ॑स्मै॒ श्रिय॒मिद्दु॑हे॒ भूयो॑भूयः॒ श्वःश्व॒स्तेन॒ त्वं द्वि॑ष॒तो ज॑हि॥ १०॥
यमब॑ध्ना॒द् बृह॒स्पति॑र्वाता॑य म॒णिमा॒शवे॑।
सो अ॑स्मै॒ वा॒जिनं॑ दुहे॒ भूयो॑भूयः॒ श्वःश्व॒स्तेन॒ त्वं द्वि॑ष॒तो ज॑हि॥ ११॥
यमब॑ध्ना॒द् बृह॒स्पति॒र्वाता॑य म॒णिमा॒शवे॑।
तेने॒मां म॒णिना॑ कृ॒षिम॒श्विना॑व॒भिर॑क्षतः।
स भि॒षग्भ्यां॒ महो॑ दुहे॒ भूयो॑भूयः॒ श्वःश्व॒स्तेन॒ त्वं द्वि॑ष॒तो ज॑हि॥ १२॥
यमब॑ध्नाद् बृह॒स्पति॒र्वाता॑य म॒णिमा॒शवे॑।
तं बिभ्र॑त्सवि॒ता म॒णिं तेने॒दम॑जय॒त्स्वः॑।
सो अ॑स्मै सू॒नृतां॑ दुहे॒ भूयो॑भूयः॒ श्वःश्व॒स्तेन॒ त्वं द्वि॑ष॒तो ज॑हि॥ १३॥
यमब॑ध्ना॒द् बृह॒स्पति॒र्वाता॑य म॒णिमा॒शवे॑।
तमापो॒ बिभ्र॑तीर्म॒णिं सदा॑ धाव॒न्त्यक्षि॑ताः।
स आ॑भ्यो॒ऽमृत॒मिद्दु॑हे॒ भूयो॑भूयः॒ श्वःश्व॒स्तेन॒ त्वं द्वि॑ष॒तो ज॑हि॥ १४॥
यमब॑ध्ना॒द् बृह॒स्पति॒र्वाता॑य म॒णिमा॒शवे॑।
तं राजा॒ वरु॑णो म॒णिं प्रत्य॑मुञ्चत शं॒भुव॑म्।
सो अ॑स्मै स॒त्यमिद्दु॑हे॒ भूयो॑भूयः॒ श्वःश्व॒स्तेन॒ त्वं द्वि॑ष॒तो ज॑हि॥ १५॥
यमब॑ध्ना॒द् बृह॒स्पति॒र्वाता॑य म॒णिमा॒शवे॑।
तं दे॒वा बिभ्र॑तो म॒णिं सर्वाँ॑ल्लो॒कान्यु॒धाज॑यन्।
स ए॑भ्यो॒ जिति॒मिद्दु॑हे॒ भूयो॑भूयः॒ श्वःश्व॒स्तेन॒ त्वं द्वि॑ष॒तो ज॑हि॥ १६॥
यमब॑ध्ना॒द् बृह॒स्पति॒र्वाता॑य म॒णिमा॒शवे॑।
तमि॒मं दे॒वता॑ म॒णिं प्रत्य॑मुञ्चन्त शं॒भुव॑म्।
स आ॑भ्यो॒ विश्व॒मिद्दु॑हे॒ भूयो॑भूयः॒ श्वःश्व॒स्तेन॒ त्वं द्वि॑ष॒तो ज॑हि॥ १७॥

ऋ॒तव॒स्तम॑बध्नतार्त॒वास्तम॑बध्नत ।
सं॒व॒त्स॒रस्तं ब॒द्ध्वा सर्वं॑ भू॒तं वि र॑क्षति॥ १८॥
अ॒न्त॒र्दे॒शा अ॑बध्नत प्र॒दिश॒स्तम॑बध्नत ।
प्र॒जाप॑तिसृष्टो म॒णिर्द्वि॑ष॒तो मेऽध॑राँ अकः॥ १९॥
अथ॑र्वाणो अबध्नताथर्व॒णा अ॑बध्नत।
तैर्मे॒दिनो॒ अङ्गि॑रसो॒ दस्यू॑नां बिभिदुः॒ पुर॒स्तेन॒ त्वं द्वि॑ष॒तो ज॑हि॥ २०॥
तं धा॒ता प्रत्य॑मुञ्चत॒ स भू॒तं व्य॑कल्पयत्। तेन॒ त्वं द्वि॑ष॒तो ज॑हि॥ २१॥
यमब॑ध्ना॒द् बृह॒स्पति॑र्दे॒वेभ्यो॒ असु॑रक्षितिम् ।
स मा॒यं म॒णिराग॑म॒द्रसे॑न स॒ह वर्च॑सा ॥ २२॥
यमब॑ध्ना॒द् बृह॒स्पति॑र्दे॒वेभ्यो॒ असु॑रक्षितिम् ।
स मा॒यं म॒णिराग॑मत्स॒ह गोभि॑रजा॒विभि॒रन्ने॑न प्र॒जया॑ स॒ह॥ २३॥
यमब॑ध्ना॒द् बृह॒स्पति॑र्दे॒वेभ्यो॒ असु॑रक्षितिम् ।
स मा॒यं म॒णिराग॑मत्स॒ह व्री॑हिय॒वाभ्यां॒ मह॑सा॒ भूत्या॑ स॒ह॥ २४॥
यमब॑ध्ना॒द् बृह॒स्पति॑र्दे॒वेभ्यो॒ असु॑रक्षितिम् ।
स मा॒यं म॒णिराग॑म॒न्मधो॑र्घृ॒तस्य॒ धार॑या की॒लाले॑न म॒णिः स॒ह॥ २५॥
यमब॑ध्ना॒द् बृह॒स्पति॑र्दे॒वेभ्यो॒ असु॑रक्षितिम् ।
स मा॒यं म॒णिराग॑मदू॒र्जया॒ पय॑सा स॒ह द्रवि॑णेन श्रि॒या स॒ह॥ २६॥
यमब॑ध्ना॒द् बृह॒स्पति॑र्दे॒वेभ्यो॒ असु॑रक्षितिम् ।
स मा॒यं म॒णिराग॑म॒त्तेज॑सा॒ त्विष्या॑ स॒ह यश॑सा की॒र्त्या॑ स॒ह॥ २७॥
यमब॑ध्ना॒द् बृह॒स्पति॑र्दे॒वेभ्यो॒ असु॑रक्षितिम् ।
स मा॒यं म॒णिराग॑म॒त्सर्वा॑भि॒र्भूति॑भिः स॒ह ॥ २८॥
तमि॒मं दे॒वता॑ म॒णिं मह्यं॑ ददतु॒ पुष्ट॑ये ।
अ॒भि॒भुं क्ष॑त्र॒वर्ध॑नं सपत्न॒दम्भ॑नं म॒णिम् ॥ २९॥
ब्रह्म॑णा॒ तेज॑सा स॒ह प्रति॑ मुञ्चामि मे शि॒वम्।
अ॒स॒प॒त्नः स॑पत्न॒हा स॒पत्ना॒न्मेऽध॑राँ अकः ॥ ३०॥
उत्त॑रं द्विष॒तो माम॒यं म॒णिः कृ॑णोतु देव॒जाः।
यस्य॑ लो॒का इ॒मे त्रयः॒ पयो॑ दु॒ग्धमु॒पास॑ते ।
स मा॒यमधि॑ रोहतु म॒णिः श्रैष्ठ्या॑य मूर्ध॒तः ॥ ३१॥
यं दे॒वाः पि॒तरो॑ मनु॒ष्या॑ उप॒जीव॑न्ति सर्व॒दा।
स मा॒यमधि॑ रोहतु म॒णिः श्रैष्ठ्या॑य मूर्ध॒तः ॥ ३२॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

यथा॒ बीज॑मु॒र्वरा॑यां कृ॒ष्टे फाले॑न॒ रोह॑ति ।
ए॒वा मयि॑ प्र॒जा प॒शवोऽन्न॑मन्नं॒ वि रो॑हतु ॥ ३३ ॥
यस्मै॑ त्वा यज्ञवर्धन॒ मणे॑ प्र॒त्यमु॑चं शि॒वम् ।
तं त्वं श॑तदक्षिण॒ मणे॒ श्रैष्ठ्या॑य जिन्वतात् ॥ ३४ ॥
ए॒तमि॒ध्मं स॒माहि॑तं जुषा॒णो अग्ने॒ प्रति॑ हर्य॒ होमैः॑। तस्मि॑न्विदेम
सुम॒तिं स्व॒स्ति प्र॒जां चक्षुः॑ प॒शून्त्समि॑द्धे जा॒तवे॑दसि॒ ब्रह्म॑णा ॥ ३५ ॥

अथ चतुर्थोऽनुवाकः [७] सप्तमं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा॥ देवता—स्कम्भः, अध्यात्मम्॥ छन्दः—१ विराड्जगती; २, ८ भुरिक्त्रिष्टुप्; ३-६, ९, ३८, ४२, ४३ त्रिष्टुप्; ७, १३ परोष्णिक्; १०, १४, १६, १८, १९ उपरिष्टाद्बृहती; ११, १२, १५, २०, २२, ३९ उपरिष्टाज्ज्योतिर्जगती; १७ षट्पदाजगती; २१ बृहती-गर्भाऽनुष्टुप्; २३-३०, ३७, ४० अनुष्टुप्; ३१ मध्येज्योतिर्जगती; ३२, ३४, ३६ उपरिष्टाद्विराड्बृहती; ३३ पराविराडनुष्टुप्; ३५ चतुष्पदाजगती; ४१ आर्षीत्रिपदागायत्री; ४४ द्विपदाऽऽर्च्यनुष्टुप्, पञ्चपदानिचृत्पदपङ्क्तिर्वा (एकावसाना)॥

कस्मि॒न्नङ्गे॒ तपो॑ अ॒स्याधि॑ तिष्ठति॒ कस्मि॒न्नङ्गे॑ ऋ॒तम॒स्याध्याहि॑तम्।
क्व॑ व्र॒तं क्व॑ श्र॒द्धास्य॑ तिष्ठति॒ कस्मि॒न्नङ्गे॑ स॒त्यम॑स्य॒ प्रति॑ष्ठितम् ॥ १ ॥
कस्मा॒दङ्गा॑द्दीप्यते अ॒ग्निर॑स्य॒ कस्मा॒दङ्गा॑त्पवते मात॒रिश्वा॑ ।
कस्मा॒दङ्गा॒द्वि मि॑मी॒तेऽधि॑ च॒न्द्रमा॑ म॒ह स्क॒म्भस्य॒ मिमा॑नो॒ अङ्ग॑म् ॥ २ ॥
कस्मि॒न्नङ्गे॑ तिष्ठति॒ भूमि॑रस्य॒ कस्मि॒न्नङ्गे॑ तिष्ठत्य॒न्तरि॑क्षम्।
कस्मि॒न्नङ्गे॑ तिष्ठ॒त्याहि॑ता॒ द्यौः कस्मि॒न्नङ्गे॑ तिष्ठ॒त्युत्त॑रं दि॒वः ॥ ३ ॥
क्व१॒॑ प्रेप्स॑न्दीप्यत ऊ॒र्ध्वो अ॒ग्निः क्व१॒॑ प्रेप्स॑न्पवते मात॒रिश्वा॑।
यत्र॒ प्रेप्स॑न्तीरभि॒यन्त्या॒वृतः॑ स्क॒म्भं तं ब्रू॑हि कत॒मः स्वि॑दे॒व सः ॥ ४ ॥
क्वा॒र्धमा॒साः क्व॑ यन्ति॒ मासाः॑ संवत्स॒रेण॑ स॒ह सं॑विदा॒नाः।
यत्र॒ यन्त्यृ॒तवो॒ यत्रा॑र्त॒वाः स्क॒म्भं तं ब्रू॑हि कत॒मः स्वि॑दे॒व सः ॥ ५ ॥
क्व१॒॑ प्रेप्स॑न्ती युव॒ती विरू॑पे अहोरा॒त्रे द्र॑वतः संविदा॒ने।
यत्र॒ प्रेप्स॑न्तीरभि॒यन्त्यापः॑ स्क॒म्भं तं ब्रू॑हि कत॒मः स्वि॑दे॒व सः ॥ ६ ॥
यस्मि॑न्त्स्त॒ब्ध्वा प्र॒जाप॑तिर्लो॒कान्त्सर्वाँ॒ अधा॑रयत्।
स्क॒म्भं तं ब्रू॑हि कत॒मः स्वि॑दे॒व सः ॥ ७ ॥
यत्प॑र॒मम॑व॒मं यच्च॑ मध्य॒मं प्र॒जाप॑तिः ससृ॒जे वि॒श्वरू॑पम्।
किय॑ता स्क॒म्भः प्र वि॑वेश॒ तत्र॒ यन्न प्रावि॑श॒त्किय॒द्बभू॑व ॥ ८ ॥

किय॑ता स्क॒म्भः प्र वि॑वेश भू॒तं किय॑द्भवि॒ष्यद॒न्वाश॑येऽस्य।
एकं॒ यदङ्ग॒मकृ॑णोत्सहस्र॒धा किय॑ता स्क॒म्भः प्र वि॑वेश॒ तत्र॑ ॥ ९ ॥
यत्र॑ लो॒कांश्च॒ कोशां॒च्चापो॒ ब्रह्म॒ जना॑ वि॒दुः।
अस॑च्च॒ यत्र॒ सच्चा॒न्त स्क॒म्भं तं ब्रू॑हि कत॒मः स्वि॑दे॒व सः ॥ १० ॥
यत्र॒ तपः॑ परा॒क्रम्य॑ व्र॒तं धा॒रय॒त्युत्त॑रम्।
ऋ॒तं च॒ यत्र॑ श्र॒द्धा चापो॒ ब्रह्म॑ स॒माहि॑ताः
स्क॒म्भं तं ब्रू॑हि कत॒मः स्वि॑दे॒व सः ॥ ११ ॥
यस्मि॒न्भूमि॑र॒न्तरि॑क्षं॒ द्यौर्यस्मि॒न्नध्याहि॑ता।
यत्रा॒ग्निश्च॒न्द्रमाः॒ सूर्यो॒ वात॒स्तिष्ठ॒न्त्यार्पि॑ताः
स्क॒म्भं तं ब्रू॑हि कत॒मः स्वि॑दे॒व सः ॥ १२ ॥
यस्य॒ त्रय॑स्त्रिंशद्दे॒वा अङ्गे॒ सर्वे॑ स॒माहि॑ताः।
स्क॒म्भं तं ब्रू॑हि कत॒मः स्वि॑दे॒व सः ॥ १३ ॥
यत्र॒ ऋष॑यः प्रथम॒जा ऋचः॒ साम॒ यजु॑र्म॒ही ।
ए॒क॒र्षिर्यस्मि॒न्नार्पि॑तः स्क॒म्भं तं ब्रू॑हि कत॒मः स्वि॑दे॒व सः ॥ १४ ॥
यत्रा॒मृतं॑ च मृ॒त्युश्च॒ पुरु॒षेऽधि॑ स॒माहि॑ते।
स॒मु॒द्रो यस्य॑ ना॒ड्य१॒॑ः पुरु॒षेऽधि॑ स॒माहि॑ताः
स्क॒म्भं तं ब्रू॑हि कत॒मः स्वि॑दे॒व सः ॥ १५ ॥
यस्य॒ चत॑स्रः प्र॒दिशो॑ ना॒ड्य१॒॑स्तिष्ठ॑न्ति प्रथ॒माः ।
य॒ज्ञो यत्र॒ परा॑क्रान्तः स्क॒म्भं तं ब्रू॑हि कत॒मः स्वि॑दे॒व सः ॥ १६ ॥
ये पुरु॑षे॒ ब्रह्म॑ वि॒दुस्ते वि॑दुः परमे॒ष्ठिन॑म्।
यो वेद॑ परमे॒ष्ठिनं॒ यश्च॒ वेद॑ प्र॒जाप॑तिम्।
ज्ये॒ष्ठं ये ब्राह्म॑णं वि॒दुस्ते स्क॒म्भम॑नु॒संवि॑दुः ॥ १७ ॥
यस्य॒ शिरो॑ वैश्वान॒रश्चक्षु॒रङ्गि॑र॒सोऽभ॑वन् ।
अङ्गा॑नि॒ यस्य॑ या॒तवः॑ स्क॒म्भं तं ब्रू॑हि कत॒मः स्वि॑दे॒व सः ॥ १८ ॥
यस्य॒ ब्रह्म॒ मुख॑मा॒हुर्जि॒ह्वां म॑धुक॒शामु॒त ।
वि॒राज॒मूधो॒ यस्या॒हुः स्क॒म्भं तं ब्रू॑हि कत॒मः स्वि॑दे॒व सः ॥ १९ ॥
यस्मा॒दृचो॑ अ॒पात॑क्षन्यजु॒र्यस्मा॑द॒पाक॑षन्।
सामा॑नि॒ यस्य॒ लोमा॑न्यथर्वाङ्गि॒रसो॒ मुखं॑
स्क॒म्भं तं ब्रू॑हि कत॒मः स्वि॑दे॒व सः ॥ २० ॥
अ॒स॒च्छा॒खां प्र॒तिष्ठ॑न्तीं पर॒ममि॑व॒ जना॑ विदुः।
उ॒तो सम्म॑न्य॒न्तेऽव॑रे॒ ये ते॒ शाखा॑मु॒पास॑ते ॥ २१ ॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

यत्रादित्याश्च रुद्राश्च वसवश्च समाहिताः।
भूतं च यत्र भव्यं च सर्वे लोकाः प्रतिष्ठिताः
स्कम्भं तं ब्रूहि कतमः स्विदेव सः॥ २२॥
यस्य त्रयस्त्रिंशद्देवा निधिं रक्षन्ति सर्वदा।
निधिं तमद्य को वेद यं देवा अभिरक्षथ॥ २३॥
यत्र देवा ब्रह्मविदो ब्रह्म ज्येष्ठमुपासते।
यो वै तान्विद्यात्प्रत्यक्षं स ब्रह्मा वेदितास्यात्॥ २४॥
बृहन्तो नाम ते देवा येऽसतः परि जज्ञिरे।
एकं तदङ्गं स्कम्भस्यासदाहुः परो जनाः॥ २५॥
यत्र स्कम्भः प्रजनयन्पुराणं व्यवर्तयत्।
एकं तदङ्गं स्कम्भस्य पुराणमनुसंविदुः॥ २६॥
यस्य त्रयस्त्रिंशद्देवा अङ्गे गात्रा विभेजिरे।
तान्वै त्रयस्त्रिंशद्देवानेके ब्रह्मविदो विदुः॥ २७॥
हिरण्यगर्भं परममनत्युद्यं जना विदुः।
स्कम्भस्तदग्रे प्रासिञ्चद्धिरण्यं लोके अन्तरा॥ २८॥
स्कम्भे लोकाः स्कम्भे तपः स्कम्भेऽध्यृतमाहितम्।
स्कम्भं त्वा वेद प्रत्यक्षमिन्द्रे सर्वं समाहितम्॥ २९॥
इन्द्रे लोका इन्द्रे तप इन्द्रेध्यृतमाहितम्।
इन्द्रं त्वा वेद प्रत्यक्षं स्कम्भे सर्वं प्रतिष्ठितम्॥ ३०॥
नाम नाम्ना जोहवीति पुरा सूर्यात्पुरोषसः। यदजः प्रथमं संबभूव
स ह तत्स्वराज्यमियाय यस्मान्नान्यत्परमस्ति भूतम्॥ ३१॥
यस्य भूमिः प्रमान्तरिक्षमुतोदरम्।
दिवं यश्चक्रे मूर्धानं तस्मै ज्येष्ठाय ब्रह्मणे नमः॥ ३२॥
यस्य सूर्यश्चक्षुश्चन्द्रमाश्च पुनर्णवः।
अग्निं यश्चक्र आस्यं तस्मै ज्येष्ठाय ब्रह्मणे नमः॥ ३३॥
यस्य वातः प्राणापानौ चक्षुरङ्गिरसोऽभवन्।
दिशो यश्चक्रे प्रज्ञानीस्तस्मै ज्येष्ठाय ब्रह्मणे नमः॥ ३४॥
स्कम्भो दाधार द्यावापृथिवी उभे इमे स्कम्भो दाधारोर्वन्तरिक्षम्।
स्कम्भो दाधार प्रदिशः षडुर्वीः स्कम्भ इदं विश्वं भुवनमा विवेश॥ ३५॥
यः श्रमात्तपसो जातो लोकान्त्सर्वान्त्समानशे।
सोमं यश्चक्रे केवलं तस्मै ज्येष्ठाय ब्रह्मणे नमः॥ ३६॥

कथं वातो नेलयति कथं न रमते मनः।
किमापः सत्यं प्रेप्सन्तीर्नेलयन्ति कदा चन॥ ३७॥
महद्यक्षं भुवनस्य मध्ये तपसि क्रान्तं सलिलस्य पृष्ठे।
तस्मिञ्छ्रयन्ते य उ के च देवा वृक्षस्य स्कन्धः परित इव शाखाः॥ ३८॥
यस्मै हस्ताभ्यां पादाभ्यां वाचा श्रोत्रेण चक्षुषा।
यस्मै देवाः सदा बलिं प्रयच्छन्ति विमितेऽमितं
स्कम्भं तं ब्रूहि कतमः स्विदेव सः॥ ३९॥
अप तस्य हुतं तमो व्यावृत्तः स पाप्मना।
सर्वाणि तस्मिञ्ज्योतींषि यानि त्रीणि प्रजापतौ॥ ४०॥
यो वेतसं हिरण्ययं तिष्ठन्तं सलिले वेद। स वै गुह्यः प्रजापतिः॥ ४१॥
तन्त्रमेके युवती विरूपे अभ्याक्रामं वयतः षण्मयूखम्।
प्रान्या तन्तूंस्तिरते धत्ते अन्या नाप वृञ्जाते न गमातो अन्तम्॥ ४२॥
तयोरहं परिनृत्यन्त्योरिव न वि जानामि यतरा परस्तात्।
पुमानेनद्वयत्युद् गृणत्ति पुमानेनद्वि जभाराधि नाके॥ ४३॥
इमे मयूखा उप तस्तभुर्दिवं सामानि चक्रुस्तसराणि वातवे॥ ४४॥

[८] अष्टमं सूक्तम्

ऋषिः—कुत्सः॥ देवता—अध्यात्मम्॥ छन्दः—१ उपरिष्टाद्विराड्बृहती; २ बृहतीगर्भाऽनुष्टुप्; ३, ४, ८, ९, १३, १६-१८, २४, २८, ३५, ३६, ४०, ४४ त्रिष्टुप्; ५ भुरिगनुष्टुप्; ६, १४, १९-२१, २३, २५, २९, ३१-३४, ३७, ३८, ४१, ४३ अनुष्टुप्; ७ पराबृहतीत्रिष्टुप्; १० अनुष्टुब्गर्भात्रिष्टुप्; ११ जगती; १२ पुरोबृहतीत्रिष्टुब्गर्भापंक्तिः; १५, २७ भुरिग्बृहती; २२ पुरउष्णिक्; २६ द्व्यष्णिग्गर्भाऽनुष्टुप्; ३० भुरिक्त्रिष्टुप्; ३९ बृहतीगर्भात्रिष्टुप्; ४२ त्रिपदाविराड्गायत्री॥

यो भूतं च भव्यं च सर्वं यश्चाधितिष्ठति।
स्वर्यस्य च केवलं तस्मै ज्येष्ठाय ब्रह्मणे नमः॥ १॥
स्कम्भेनेमे विष्टभिते द्यौश्च भूमिश्च तिष्ठतः।
स्कम्भ इदं सर्वमात्मन्वद्यत्प्राणन्निमिषच्च यत्॥ २॥
तिस्रो ह प्रजा अत्यायमायन्न्यन्या अर्कमभितोऽविशन्त।
बृहन्ह तस्थौ रजसो विमानो हरितो हरिणीरा विवेश॥ ३॥
द्वादश प्रधयश्चक्रमेकं त्रीणि नभ्यानि क उ तच्चिकेत।
तस्मिन्ह तस्थुस्त्रीणि शतानि शङ्कवः षष्टिश्च खीला अविचाचलाः ये॥ ४॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

इदं सवितर्वि जानीहि षड्यमा एक एकजः।
तस्मिन्हापित्वमिच्छन्ते य एषामेक एकजः॥५॥
आविः सन्निहितं गुहा जरन्नाम महत्पदम्।
तत्रेदं सर्वमार्पितमेजत्प्राणत्प्रतिष्ठितम् ॥६॥
एकचक्रं वर्तत एकनेमि सहस्राक्षरं प्र पुरो नि पश्चा ।
अर्धेन विश्वं भुवनं जजान यदस्यार्धं क्वधित्तद्बभूव ॥७॥
पञ्चवाही वहत्यग्रमेषां प्रष्टयो युक्ता अनुसंवहन्ति ।
अयातमस्य ददृशे न यातं परं नेदीयोऽवरं दवीयः ॥८॥
तिर्यग्बिलश्चमस ऊर्ध्वबुध्नस्तस्मिन्यशो निहितं विश्वरूपम् ।
तदासत ऋषयः सप्त साकं ये अस्य गोपा महतो बभूवुः ॥९॥
या पुरस्ताद्युज्यते या च पश्चाद्या विश्वतो युज्यते या च सर्वतः।
यया यज्ञः प्राङ्तायते तां त्वा पृच्छामि कतमा स ऋचाम्॥१०॥
यदेजति पतति यच्च तिष्ठति प्राणदप्राणन्निमिषच्च यद्भुवत्।
तदाधार पृथिवीं विश्वरूपं तत्संभूय भवत्येकमेव ॥११॥
अनन्तं विततं पुरुत्रानन्तमन्तवच्चा समन्ते ।
ते नाकपालश्चरति विचिन्वन्विद्वान्भूतमुत भव्यमस्य ॥१२॥
प्रजापतिश्चरति गर्भे अन्तरदृश्यमानो बहुधा वि जायते ।
अर्धेन विश्वं भुवनं जजान यदस्यार्धं कतमः स केतुः ॥१३॥
ऊर्ध्वं भरन्तमुदकं कुम्भेनेवोदहार्यम्।
पश्यन्ति सर्वे चक्षुषा न सर्वे मनसा विदुः॥१४॥
दूरे पूर्णेन वसति दूर ऊनेन हीयते।
महद्यक्षं भुवनस्य मध्ये तस्मै बलिं राष्ट्रभृतो भरन्ति॥१५॥
यतः सूर्य उदेत्यस्तं यत्र च गच्छति।
तदेव मन्येऽहं ज्येष्ठं तदु नात्येति किं चन॥१६॥
ये अर्वाङ्मध्य उत वा पुराणं वेदं विद्वांसमभितो वदन्ति।
आदित्यमेव ते परि वदन्ति सर्वे अग्निं द्वितीयं त्रिवृतं च हंसम्॥१७॥
सहस्राक्षं वियतावस्य पक्षौ हरेर्हंसस्य पततः स्वर्गम्।
स देवान्त्सर्वानुरस्युपदद्य संपश्यन्याति भुवनानि विश्वा॥१८॥
सत्येनोर्ध्वस्तपति ब्रह्मणाऽवाङ् वि पश्यति ।
प्राणेन तिर्यङ् प्राणति यस्मिञ्ज्येष्ठमधि श्रितम् ॥१९॥

यो वै ते विद्यादरणी याभ्यां निर्मथ्यते वसु ।
स विद्वाञ्ज्येष्ठं मन्येत स विद्याद् ब्राह्मणं महत् ॥२०॥
अपादग्रे समभवत्सो अग्रे स्वराभरत् ।
चतुष्पाद्भूत्वा भोग्यः सर्वमादत्त भोजनम् ॥२१॥
भोग्यो भवदथो अन्नमदद्भुवु ।
यो देवमुत्तरावन्तमुपासाते सनातनम् ॥२२॥
सनातनमेनमाहुरुताद्य स्यात्पुनर्णवः ।
अहोरात्रे प्र जायेते अन्यो अन्यस्य रूपयोः॥२३॥
शतं सहस्रमयुतं न्यर्बुदमसंख्येयं स्वर्गस्मिन्निविष्टम्।
तदस्य घ्नन्त्यभिपश्यत एव तस्माद्देवो रोचत एष एतत्॥२४॥
बालादेकमणीयस्कमुतैकं नैव दृश्यते ।
ततः परिष्वजीयसी देवता सा मम प्रिया ॥२५॥
इयं कल्याण्यजरा मर्त्यस्यामृता गृहे ।
यस्मै कृता शये स यश्चकार जजार सः ॥२६॥
त्वं स्त्री त्वं पुमानसि त्वं कुमार उत वा कुमारी।
त्वं जीर्णो दण्डेन वञ्चसि त्वं जातो भवसि विश्वतोमुखः॥२७॥
उतैषां पितोत वा पुत्र एषामुतैषां ज्येष्ठ उत वा कनिष्ठः।
एको ह देवो मनसि प्रविष्टः प्रथमो जातः स उ गर्भे अन्तः॥२८॥
पूर्णात्पूर्णमुदचति पूर्णं पूर्णेन सिच्यते ।
उतो तदद्य विद्याम यतस्तत्परिषिच्यते ॥२९॥
एषा सनत्नी सनमेव जातैषा पुराणी परि सर्वं बभूव।
महीं देव्युषसो विभाती सैकैकनैकेन मिषता वि चष्टे॥३०॥
अविर्वै नाम देवतैनास्ते परीवृता ।
तस्या रूपेणेमे वृक्षा हरिता हरितस्रजः ॥३१॥
अन्ति सन्तं न जहात्यन्ति सन्तं न पश्यति ।
देवस्य पश्य काव्यं न ममार न जीर्यति ॥३२॥
अपूर्वेणेषिता वाचस्ता वदन्ति यथायथम् ।
वदन्तीर्यत्र गच्छन्ति तदाहुर्ब्राह्मणं महत् ॥३३॥
यत्र देवाश्च मनुष्याश्चारा नाभाविव श्रिताः ।
आपं त्वा पृष्टा पृच्छामि यत्र तन्माययार्पितम् ॥३४॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

येभिर्वातं इषितः प्रवाति ये दर्दन्ते पञ्च दिशः सधीचीः।
य आहुतिमत्यमन्यन्त देवा अपां नेतारः कतमे त आसन्॥ ३५॥
इमामेषां पृथिवीं वस्त एकोऽन्तरिक्षं पर्येको बभूव।
दिवमेषां ददते यो विधर्ता विश्वा आशाः प्रति रक्षन्त्येकः॥ ३६॥
यो विद्यात्सूत्रं विततं यस्मिन्नोताः प्रजा इमाः।
सूत्रं सूत्रस्य यो विद्यात्स विद्याद् ब्राह्मणं महत्॥ ३७॥
वेदाहं सूत्रं विततं यस्मिन्नोताः प्रजा इमाः।
सूत्रं सूत्रस्याहं वेदाथो यद् ब्राह्मणं महत्॥ ३८॥
यदन्तरा द्यावापृथिवी अग्निरैत्प्रदहन्विश्वदाव्यः ।
यत्रातिष्ठन्नेकपत्नीः परस्तात्क्वेविासीन्मातरिश्वा तदानीम् ॥ ३९॥
अप्स्वासिन्मातरिश्वा प्रविष्टः प्रविष्टा देवाः संलिलान्यासन्।
बृहन्ह तस्थौ रजसो विमानः पवमानो हरित आ विवेश॥ ४०॥
उत्तरेणैव गायत्रीममृतेऽधि वि चक्रमे ।
साम्ना ये साम संविदुर्जस्तद्दृशे क्व ॥ ४१॥
निवेशनः संगमनो वसूनां देवइव सविता सत्यधर्मा।
इन्द्रो न तस्थौ समरे धनानाम् ॥ ४२॥
पुण्डरीकं नवद्वारं त्रिभिर्गुणेभिरावृतम् ।
तस्मिन्यद्यक्षमात्मन्वत्तद्वै ब्रह्मविदो विदुः ॥ ४३॥
अकामो धीरो अमृतः स्वयंभू रसेन तृप्तो न कुतश्चनोनः।
तमेव विद्वान्न बिभाय मृत्योरात्मानं धीरमजरं युवानम्॥ ४४॥

अथ पञ्चमोऽनुवाकः [९] नवमं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा॥ देवता—शतौदना॥ छन्दः—१ त्रिष्टुप्; २-११, १३, १४-२४ अनुष्टुप्; १२ पथ्यापङ्क्तिः; २५ द्व्युष्णिग्गर्भाऽनुष्टुप्; २६ पञ्चपदाबृहत्यनुष्टुबुष्णिग्गर्भाजगती; २७ पञ्चपदाऽति-जागताऽनुष्टुब्गर्भा शक्वरी॥

अघायतामपिनह्या मुखानि सपत्नेषु वज्रमपर्यतम्।
इन्द्रेण दत्ता प्रथमा शतौदना भ्रातृव्यघ्नी यजमानस्य गातुः॥ १॥
वेदिष्टे चर्म भवतु बर्हिर्लोमानि यानि ते।
एषा त्वा रशनाग्रभीद् ग्रावा त्वैषोऽधि नृत्यतु॥ २॥
बालास्ते प्रोक्षणीः सन्तु जिह्वा सं मार्ष्ट्वन्ये।
शुद्धा त्वं यज्ञिया भूत्वा दिवं प्रेहि शतौदने॥ ३॥
यः शतौदनां पचति कामप्रेण स कल्पते।
प्रीता ह्यस्यर्त्विजः सर्वे यन्ति यथायथम्॥ ४॥
स स्वर्गमा रोहति यत्रादस्त्रिदिवं दिवः।
अपूपनाभिं कृत्वा यो ददाति शतौदनाम्॥ ५॥
स तांल्लोकान्त्समाप्नोति ये दिव्या ये च पार्थिवाः।
हिरण्यज्योतिषं कृत्वा यो ददाति शतौदनाम्॥ ६॥
ये ते देवि शमितारः पक्तारो ये च ते जनाः।
ते त्वा सर्वे गोप्स्यन्ति मैभ्यो भैषीः शतौदने॥ ७॥
वसवस्त्वा दक्षिणत उत्तरान्मरुतस्त्वा ।
आदित्याः पश्चाद्गोप्स्यन्ति साग्निष्टोममतिं द्रव॥ ८॥
देवाः पितरो मनुष्याः गन्धर्वाप्सरसश्च ये।
ते त्वा सर्वे गोप्स्यन्ति सातिरात्रमतिं द्रव॥ ९॥
अन्तरिक्षं दिवं भूमिमादित्यान्मरुतो दिशः।
लोकान्त्स सर्वानाप्नोति यो ददाति शतौदनाम्॥ १०॥
घृतं प्रोक्षन्ती सुभगा देवी देवान्गमिष्यति।
पक्तारमन्ये मा हिंसीर्दिवं प्रेहि शतौदने॥ ११॥
ये देवा दिविषदो अन्तरिक्षसदश्च ये ये चेमे भूम्यामधि।
तेभ्यस्त्वं धुक्ष्व सर्वदा क्षीरं सर्पिरथो मधु॥ १२॥
यत्ते शिरो यत्ते मुखं यौ कर्णौ ये च ते हनू।
आमिक्षां दुहतां दात्रे क्षीरं सर्पिरथो मधु॥ १३॥
यौ त ओष्ठौ ये नासिके ये शृङ्गे ये च तेऽक्षिणी।
आमिक्षां दुहतां दात्रे क्षीरं सर्पिरथो मधु॥ १४॥
यत्ते क्लोमा यद्धृदयं पुरीतत्सहकण्ठिका।
आमिक्षां दुहतां दात्रे क्षीरं सर्पिरथो मधु॥ १५॥
यत्ते यकृद्ये मतस्ने यदान्त्रं याश्च ते गुदाः।
आमिक्षां दुहतां दात्रे क्षीरं सर्पिरथो मधु॥ १६॥
यस्ते प्लाशियौ वनिष्ठुर्यौ कुक्षी यच्च चर्म ते।
आमिक्षां दुहतां दात्रे क्षीरं सर्पिरथो मधु॥ १७॥
यत्ते मज्जा यदस्थि यन्मांसं यच्च लोहितम्।
आमिक्षां दुहतां दात्रे क्षीरं सर्पिरथो मधु॥ १८॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

यौ ते बाहू ये दोषणी यावंसौ या च ते ककुत्।
आमिक्षां दुहतां दात्रे क्षीरं सर्पिरथो मधु॥ १९॥
यास्ते ग्रीवा ये स्कन्धा याः पृष्टीर्याश्च पर्शवः।
आमिक्षां दुहतां दात्रे क्षीरं सर्पिरथो मधु॥ २०॥
यौ त ऊरू अष्ठीवन्तौ ये श्रोणी या च ते भसत्।
आमिक्षां दुहतां दात्रे क्षीरं सर्पिरथो मधु॥ २१॥
यत्ते पुच्छं ये ते बाला यदूधो ये च ते स्तनाः।
आमिक्षां दुहतां दात्रे क्षीरं सर्पिरथो मधु॥ २२॥
यास्ते जङ्घा याः कुष्ठिका ऋच्छरा ये च ते शफाः।
आमिक्षां दुहतां दात्रे क्षीरं सर्पिरथो मधु॥ २३॥
यत्ते चर्म शतौदने यानि लोमान्यध्ये।
आमिक्षां दुहतां दात्रे क्षीरं सर्पिरथो मधु॥ २४॥
क्रोडौ ते स्तां पुरोडाशावाज्येनाभिघारितौ ।
तौ पक्षौ दैवि कृत्वा सा पक्तारं दिवं वह ॥ २५॥
उलूखले मुसले यश्च चर्मणि यो वा शूर्पे तण्डुलः कर्णः।
यं वा वातो मातरिश्वा पवमानो ममाथाग्निष्टद्वोता सुहुतं कृणोतु॥ २६॥
अपो देवीर्मधुमतीर्घृतश्चुतो ब्रह्मणां हस्तेषु प्रपृथक्सादयामि।
यत्काम इदमभिषिञ्चामि वोऽहं तन्मे सर्वं सं पद्यतां
वयं स्याम पतयो रयीणाम्॥ २७॥

[१०] दशमं सूक्तम्

ऋषिः—कश्यपः॥ देवता—वशा॥ छन्दः—१ ककुम्मत्यनुष्टुप्; २-४, ७, ९, ११-२२, २५, २८, ३०, ३३, ३४ अनुष्टुप्; ५ पञ्चपदाऽतिजागता-नुष्टुब्गर्भास्कन्धोग्रीवीबृहती; ६, ८, १० विराडनुष्टुप्; २३ बृहती; २४ उपरिष्टाद्बृहती; २६ आस्तारपङ्क्तिः; २७ शङ्कुमत्यनुष्टुप्; २९ त्रिपदाविराड्गायत्री; ३१ उष्णिग्गर्भाऽनुष्टुप्; ३२ विराट्पथ्याबृहती॥

नमस्ते जायमानायै जातायां उत ते नमः।
बालेभ्यः शफेभ्यो रूपायाज्ये ते नमः॥ १॥
यो विद्यात्सप्त प्रवतः सप्त विद्यात्परावतः।
शिरो यज्ञस्य यो विद्यात्स वशां प्रति गृह्णीयात्॥ २॥
वेदाहं सप्त प्रवतः सप्त वेद परावतः।
शिरो यज्ञस्याहं वेद सोमं चास्यां विचक्षणम्॥ ३॥
यया द्यौर्यया पृथिवी ययापो गुपिता द्रुमाः।
वशां सहस्रधारां ब्रह्मणाच्छावदामसि ॥ ४॥
शतं कंसाः शतं दोग्धारः शतं गोसारो अधि पृष्ठे अस्याः।
ये देवास्तस्यां प्राणन्ति ते वशां विदुरेकधा ॥ ५॥
यज्ञपदीराक्षीरा स्वधाप्राणा महीलुका।
वशा पर्जन्यपत्नी देवाँ अप्येति ब्रह्मणा॥ ६॥
अनु त्वाग्निः प्राविशदनु सोमो वशे त्वा।
ऊर्धस्ते भद्रे पर्जन्यो विद्युतस्ते स्तना वशे॥ ७॥
अपस्त्वं धुक्षे प्रथमा उर्वरा अपरा वशे।
तृतीयं राष्ट्रं धुक्षेऽन्नं क्षीरं वशे त्वम्॥ ८॥
यदादित्यैर्हूयमानोपातिष्ठ ऋतावरि ।
इन्द्रः सहस्रं पात्रान्त्सोमं त्वापाययद्वशे॥ ९॥
यदनूचीन्द्रमैरात्त्वं ऋषभोह्रियत् ।
तस्मात्ते वृत्रहा पयः क्षीरं क्रुब्दोऽहरद्वशे॥ १०॥
यत्ते क्रुब्दो धनपतिरा क्षीरमहरद्वशे।
इदं तदद्य नाकस्त्रिषु पात्रेषु रक्षति॥ ११॥
त्रिषु पात्रेषु तं सोममा देव्यहरद्वशा।
अथर्वा यत्र दीक्षितो बर्हिष्यास्त हिरण्ययें॥ १२॥
सं हि सोमेनागत समु सर्वेण पद्वता।
वशा समुद्रमध्यष्ठाद्गन्धर्वैः कलिभिः सह॥ १३॥
सं हि वातेनागत समु सर्वैः पतत्रिभिः।
वशा समुद्रे प्रानृत्यद्वचः सामानि बिभ्रती॥ १४॥
सं हि सूर्येणागत समु सर्वेण चक्षुषा।
वशा समुद्रमत्यख्यद्ध्रदा ज्योतींषि बिभ्रती॥ १५॥
अभीवृता हिरण्येन यदतिष्ठ ऋतावरि।
अश्वः समुद्रो भूत्वाध्यस्कन्दद्वशे त्वा॥ १६॥
तद्ध्रदाः समगच्छन्त वशा देष्ट्र्यथो स्वधा।
अथर्वा यत्र दीक्षितो बर्हिष्यास्त हिरण्ययें॥ १७॥
वशा माता राजन्यस्य वशा माता स्वधे तव।
वशाया यज्ञ आयुधं ततश्चित्तमजायत॥ १८॥
ऊर्ध्वो बिन्दुरुदचरद्ब्रह्मणः ककुदादधि।
ततस्त्वं जज्ञिषे वशे ततो होताजायत॥ १९॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

आस्रस्ते गाथा अभवन्नुष्णिहाभ्यो बलं वशे।
पाजस्याज्जिज्ञे यज्ञ स्तनेभ्यो रश्मयस्तव॥ २०॥
ईर्माभ्यामयनं जातं सक्थिभ्यां च वशे तव।
आन्त्रेभ्यो जज्ञिरे अत्रा उदरादधि वीरुधः॥ २१॥
यदुदरं वरुणस्यानुप्राविशथा वशे ।
ततस्त्वा ब्रह्मोदह्वयत्स हि नेत्रमवेत्तवं ॥ २२॥
सर्वे गर्भीदवेपन्त जार्यमानादसूस्वः ।
ससूव हि तामाहुर्वशेति ब्रह्माभिः क्लृप्तः स ह्यस्या बन्धुः॥ २३॥
युध एकः सं सृजति यो अस्या एक इद्वशी।
तरीसि यज्ञा अभवन्तरसां चक्षुर्भवद्वशा॥ २४॥
वशा यज्ञं प्रत्यगृह्णद्वशा सूर्यमधारयत्।
वशायामन्तरविशदोदनो ब्रह्मणा सह॥ २५॥
वशामेवामृतमाहुर्वशां मृत्युमुपासते ।
वशेदं सर्वमभवद्देवा मनुष्याउ असुराः पितर ऋषयः॥ २६॥
य एवं विद्यात्स वशां प्रतिं गृह्णीयात्।
तथा हि यज्ञः सर्वमाबुहे दात्रेऽनपस्फुरन्॥ २७॥
तिस्रो जिह्वा वरुणस्यान्तर्दीद्यत्यासनि।
तासां या मध्ये राजति सा वशा दुष्प्रतिग्रहा॥ २८॥
चतुर्धा रेतो अभवद्वशायाः ।
आपस्तुरीयममृतं तुरीयं यज्ञस्तुरीयं पशवस्तुरीयम् ॥ २९॥
वशा द्यौर्वशा पृथिवी वशा विष्णुः प्रजापतिः।
वशायां दुग्धमपिबन्त्साध्या वसवश्च ये॥ ३०॥
वशायां दुग्धं पीत्वा साध्या वसवश्च ये।
ते वै ब्रध्नस्य विष्टपि पयो अस्या उपासते॥ ३१॥
सोममेनामेके दुहे घृतमेक उपासते।
ये एवं विदुषे वशां ददुस्ते गतास्त्रिदिवं दिवः॥ ३२॥
ब्राह्मणेभ्यो वशां दत्त्वा सर्वाँल्लोकान्तसमश्नुते।
ऋतं ह्यस्यामार्पितमपि ब्रह्माथो तपः ॥ ३३॥
वशां देवा उप जीवन्ति वशां मनुष्याउ उत।
वशेदं सर्वमभवद्यावत्सूर्यो विपश्यति॥ ३४॥

इति त्रयोविंशः प्रपाठकः॥

॥इति दशमं काण्डम्॥

अथैकादशं काण्डम्॥

अथ चतुर्विंशः प्रपाठकः॥

अथ प्रथमोऽनुवाकः [१] प्रथमं सूक्तम्

ऋषिः—ब्रह्मा॥ देवता—ब्रह्मौदनः॥ छन्दः—१ अनुष्टुब्गर्भाभुरिक्पङ्क्तिः; २, ५ बृहतीगर्भाविराट्त्रिष्टुप्; ३ चतुष्पदाशाक्वरगर्भाजगती; ४, १५, १६, ३१ भुरिक्त्रिष्टुप्; ६ उष्णिक्; ७, १२-१४, १९, २२, २३, २९, ३०, ३२-३४ त्रिष्टुप्; ८ विराड्गायत्री; ९ शाक्वरातिजागतगर्भा-जगती; १० पुरोतिजगतीविराड्जगती; ११ जगती; १७, २१, २४-२६, ३७ विराड्जगती; १८ अतिजागतगर्भापराति-जागताविराडतिजगती; २० अतिजागतगर्भापराशाक्वरा-चतुष्पदाभुरिग्जगती; २७ अतिजागतगर्भाभुरिग्जगती; २८ भुरिग् जगती; ३५ चतुष्पदाककुम्मत्युष्णिक्; ३६ पुरोविराड्त्रिष्टुप्॥

अग्ने जायस्वादितिर्नाथितेयं ब्रह्मौदनं पचति पुत्रकामा ।
सप्तऋषयो भूतकृतस्ते त्वा मन्थन्तु प्रजया सहेह ॥ १॥
कृणुत धूमं वृषणः सखायोऽद्रोघविता वाचमच्छ ।
अयमग्निः पृतनाषाट् सुवीरो येन देवा असहन्त दस्यून् ॥ २॥
अग्नेऽजनिष्ठा महते वीर्याय ब्रह्मौदनाय पक्तवे जातवेदः।
सप्तऋषयो भूतकृतस्ते त्वाजीजनन्नस्यै रयिं सर्ववीरं नि यच्छ॥ ३॥
समिद्धो अग्ने समिधा समिध्यस्व विद्वान्देवान्यज्ञियाँ एह वक्षः।
तेभ्यो हविः श्रपयँ जातवेद उत्तमं नाकमधि रोहयेमम्॥ ४॥
त्रेधा भागो निहितो यः पुरा वो देवानां पितृणां मर्त्यानाम्।
अंशाञ्जानीध्वं वि भजामि तान्वो यो देवानां स इमां पारयाति॥ ५॥
अग्ने सहस्वानभिभूरभीदसि नीचो न्युब्जि द्विषतः सपत्नान्।
इयं मात्रा मीयमाना मिता च सजातांस्ते बलिहृतः कृणोतु॥ ६॥
साकं संजातैः पयसा सहैध्युदुब्जैनां महते वीर्याय ।
ऊर्ध्वो नाकस्याधि रोह विष्टपं स्वर्गो लोक इति यं वदन्ति॥ ७॥
इयं मही प्रति गृह्णातु चर्म पृथिवी देवी सुमनस्यमाना।
अथ गच्छेम सुकृतस्य लोकम् ॥ ८॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

एतौ ग्रावाणौ सयुजा युङ्ग्धि चर्मणि निर्भिन्ध्यंशून्यजमानाय साधु।
अवघ्नती नि जहि य द्रुमां पृतन्यवं ऊर्ध्वं प्रजामुद्धरन्त्युदूहः॥ ९॥
गृह्णाण ग्रावाणौ सुकृतौ वीर हस्त आ ते देवा यज्ञिया यज्ञमगुः।
त्रयो वरा यतमांस्त्वं वृणीषे तास्ते समृद्धीरिह राधयामि॥ १०॥
इयं ते धीतिरिदमु ते जनित्रं गृह्णातु त्वामदितिः शूरपुत्रा।
परा पुनीहि य द्रुमां पृतन्यवोऽस्यै रयिं सर्ववीरं नि यच्छ॥ ११॥
उपश्वसे द्रुवये सीदता यूयं वि विंच्यध्वं यज्ञियास्तुभैः ।
श्रिया समानानति सवीन्त्स्यामाधस्पदं द्विषतस्पादयामि ॥ १२॥
परेहि नारि पुनरेहि क्षिप्रमपां त्वा गोष्ठोऽध्यरुक्षद्धरायै।
तासां गृह्णीताद्यतमा यज्ञिया असन्विभाज्यं धीरीतरा जहीतात्॥ १३॥
एमा अगुर्योषितः शुम्भमाना उत्तिष्ठ नारि तवसं रभस्व।
सुपत्नी पत्या प्रजया प्रजावत्या त्वागन्यज्ञः प्रति कुम्भं गृभाय॥ १४॥
ऊर्जो भागो निहितो यः पुरा व ऋषिप्रशिष्टाप आ भरैताः।
अयं यज्ञो गातुवित्तोथवित्प्रजाविदुग्रः पशुविद्वीरविद्वो अस्तु॥ १५॥
अग्ने चरुर्यज्ञियस्त्वाध्यरुक्षच्छुचिस्तपिष्ठस्तपसा तपैनम् ।
आर्षेया दैवा अभिसंगत्य भागमिमं तपिष्ठा ऋतुभिस्तपन्तु॥ १६॥
शुम्भाः पूता योषितो यज्ञिया द्रुमा आपश्चरुमव सर्पन्तु शुभ्राः।
अदुः प्रजां बहुलान्पशून्नः पक्तौदनस्य सुकृतामेतु लोकम्॥ १७॥
ब्रह्मणा शुम्भा उत पूता घृतेन सोमस्यांशवस्तण्डुला यज्ञिया द्रुमे।
अपः प्र विशत प्रति गृह्णातु वश्चरुरिमं पक्त्वा सुकृतामेत लोकम्॥ १८॥
उरुः प्रथस्व महता महिम्ना सहस्रपृष्ठः सुकृतस्य लोके।
पितामहाः पितरः प्रजोपजाऽहं पक्ता पञ्चदशस्ते अस्मि॥ १९॥
सहस्रपृष्ठः शतधारो अक्षितो ब्रह्मौदनो देवयानः स्वर्गः ।
अमूंस्त आ दधामि प्रजया रेषयैनान्बलिहाराय मृडतान्मह्यमेव॥ २०॥
उदेहि वेदिं प्रजया वर्धयैनां नुदस्व रक्षः प्रतरं धेह्योनाम् ।
श्रिया समानानति सवीन्त्स्यामाधस्पदं द्विषतस्पादयामि॥ २१॥
अभ्यावर्तस्व पशुभिः सहैनां प्रत्यङेनां देवताभिः सहैधि ।
मा त्वा प्रापच्छपथो माभिचारः स्वे क्षेत्रे अनमीवा वि राज॥ २२॥
ऋतेन तष्टा मनसा हितैषा ब्रह्मौदनस्य विहिता वेदिरग्रे ।
अंसद्वतीं शुम्भामुप धेहि नारि तत्रौदनं सादय दैवानाम् ॥ २३॥

अदितेर्हस्तां स्रुचमेतां द्वितीयां सप्तऋषयो भूतकृतो यामकृण्वन्।
सा गात्राणि विदुष्योदनस्य दर्विर्वेद्याग्रमध्येनं चिनोतु ॥ २४॥
शृतं त्वा हव्यमुप सीदन्तु देवा निःसृष्याग्नेः पुनरेनान्र सीद।
सोमेन पूतो जठरे सीद ब्रह्मणामार्षेयास्ते मा रिषन्नाशितारः॥ २५॥
सोमं राजन्त्संज्ञानमा वपैभ्यः सुब्राह्मणा यतमे त्वोपसीदान्।
ऋषीनार्षेयांस्तपसोऽधि जातान्ब्रह्मौदने सुहवा जोहवीमि ॥ २६॥
शुद्धाः पूता योषितो यज्ञिया द्रुमा ब्रह्मणां हस्तेषु प्रपृथक्सादयामि।
यत्कामा द्रुदमभिषिञ्चामि वोऽहमिन्द्रो मरुत्वान्त्स ददादिदं मे॥ २७॥
इदं मे ज्योतिरमृतं हिरण्यं पक्वं क्षेत्रात्कामदुघा म एषा ।
इदं धनं नि दधे ब्राह्मणेषु कृण्वे पन्थां पितृषु यः स्वर्गः॥ २८॥
अग्नौ तुषाना वप जातवेदसि पुरः कुम्बूकाँ अप मृद्धि दूरम्।
एतं शुश्रुम गृहराजस्य भागमथौ विन्द्र निर्ऋतेर्भागधेयम् ॥ २९॥
श्राम्यतः पचतो विद्धि सुन्वतः पन्थां स्वर्गमधि रोहयैनम् ।
येन रोहात्परमापद्य यद्वयं उत्तमं नाकं परमं व्योमि ॥ ३०॥
बभ्रेरध्वर्यो मुखमेतद्वि मृड्ढ्याज्याय लोकं कृणुहि प्रविद्वान् ।
घृतेन गात्रानु सर्वा वि मृड्ढि कृण्वे पन्थां पितृषु यः स्वर्गः॥ ३१॥
बभ्रे रक्षः समदमा वपैभ्योऽब्राह्मणा यतमे त्वोपसीदान् ।
पुरीषिणः प्रथमानाः पुरस्तादार्षेयास्ते मा रिषन्नाशितारः ॥ ३२॥
आर्षेयेषु नि दध ओदन त्वा नानार्षेयाणामप्यस्त्यत्र ।
अग्निर्मे गोप्ता मरुतश्च सर्वे विश्वे देवा अभि रक्षन्तु पक्वम्॥ ३३॥
यज्ञं दुहानं सदमित्प्रपीनं पुमांसं धेनुं सदनं रयीणाम् ।
प्रजामृतत्वमुत दीर्घमायू रायश्च पोषैरुप त्वा सदेम ॥ ३४॥
वृषभोऽसि स्वर्ग ऋषीनार्षेयान्गच्छ ।
सुकृतां लोके सीद तत्र नौ संस्कृतम् ॥ ३५॥
समाचिनुष्वानुसंप्रयाह्यग्ने पथः कल्पय देवयानान् ।
एतैः सुकृतैरनु गच्छेम यज्ञं नाके तिष्ठन्तमधि सप्तरश्मौ ॥ ३६॥
येनं देवा ज्योतिषा द्यामुदायन्ब्रह्मौदनं पक्त्वा सुकृतस्य लोकम्।
तेनं गेष्म सुकृतस्य लोकं स्वरारोहन्तो अभि नाकमुत्तमम्॥ ३७॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

[२] द्वितीयं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा॥ देवता—भवादयो मन्त्रोक्ताः॥ छन्दः—१ परातिजागताविराड्जगती; २ अनुष्टुब्गर्भापञ्चपदापथ्याजगती; ३ चतुष्पदास्वराडुष्णिक्; ४, ५, ७, १३, १५, १६, २१ अनुष्टुप्; ६ आर्षीगायत्री; ८ महाबृहती; ९ आर्षीत्रिष्टुप्; १० पुरःकृतिः त्रिपदाविराट्त्रिष्टुप्; ११ पञ्चपदाजगतीगर्भाविराट्शक्वरी; १२ भुरिक्त्रिष्टुप्; १४, १७-१९, २३, २६, २७ [त्रिपदा] विराड्-गायत्री; २० भुरिग्गायत्री; २२ विषमपादलक्ष्मात्रिपदामहाबृहती; २४, २९ जगती; २५ पञ्चपदातिशक्वरी; २८ त्रिष्टुप्; ३० चतुष्पदा उष्णिक्; ३१ विपरीत-पादलक्ष्माषट्पदात्रिष्टुप्॥

भवा॑शर्वौ मृ॒डतं॒ माभि या॑तं॒ भूत॑पती॒ पशु॑पती॒ नमो॑ वाम् ।
प्रति॑हिता॒माय॑तां॒ मा वि स्रा॑ष्टं॒ मा नो॑ हिंसिष्टं द्वि॒पदो॒ मा चतु॑ष्पदः॥ १॥
शुने॑ क्रो॒ष्ट्रे मा शरी॑राणि॒ कर्त॑म॒लिक्ल॑वेभ्यो॒ गृध्रे॑भ्यो॒ ये च॑
कृ॒ष्णा अ॑वि॒ष्यवः॑। मक्षि॑कास्ते पशुपते॒ वयां॑सि ते विघ॒से मा वि॑दन्त ॥ २॥
क्रन्दा॑य ते प्रा॒णाय॒ याश्च॑ ते भव॒ रोप॑यः।
नम॑स्ते रुद्र कृण्मः सहस्रा॒क्षाया॑मर्त्य ॥ ३॥
पु॒रस्ता॑त्ते॒ नमः॑ कृण्म उत्त॒राद॑ध॒रादु॒त ।
अ॒भी॒व॒र्गाद्दि॒वस्पर्य॒न्तरि॑क्षाय ते॒ नमः॑ ॥ ४॥
मुखा॑य ते पशुपते॒ यानि॒ चक्षूं॑षि ते भव।
त्व॒चे रू॒पाय॑ सं॒दृशे॑ प्रती॒चीना॑य ते॒ नमः॑॥ ५॥
अङ्गे॑भ्यस्त उ॒दरा॑य जि॒ह्वाया॑ आ॒स्या॑य ते।
द॒द्भ्यो ग॒न्धाय॑ ते॒ नमः॑ ॥ ६॥
अस्त्रा॒ नील॑शिखण्डेन सहस्रा॒क्षेण॑ वा॒जिना॑।
रु॒द्रेणा॑र्धकघा॒तिना॒ तेन॒ मा सम॑रामहि ॥ ७॥
स नो॑ भ॒वः परि॑ वृणक्तु वि॒श्वत॒ आप॑इवा॒ग्निः
परि॑ वृणक्तु नो भ॒वः। मा नो॒ऽभि मां॑स्त॒ नमो॑ अस्त्वस्मै॥ ८॥
च॒तुर्नमो॑ अष्ट॒कृत्वो॑ भ॒वाय॒ दश॒ कृत्वः॑ पशुपते॒ नम॑स्ते।
तवे॒मे पञ्च॑ प॒शवो॒ विभ॑क्ता॒ गावो॒ अश्वाः॒ पुरु॑षा अजा॒वयः॑॥ ९॥
तव॒ चत॑स्रः प्र॒दिश॒स्तव॒ द्यौस्तव॑ पृथि॒वी तवे॒दमु॑ग्रो॒र्व१॒॑न्तरि॑क्षम्।
तवे॒दं सर्व॑मात्म॒न्वद्यत्प्रा॒णत्पृ॑थि॒वीमनु॑ ॥ १०॥
उ॒रुः कोशो॑ वसु॒धान॒स्तवा॒यं यस्मि॑न्नि॒मा विश्वा॒ भुव॑नान्य॒न्तः।
स नो॑ मृड पशुपते॒ नम॑स्ते प॒रः क्रो॒ष्टारो॑ अभि॒भाः श्वानः॑
प॒रो य॑न्त्वघ॒रुदो॑ विके॒श्यः॑ ॥ ११॥
धनु॑र्बिभर्षि॒ हरि॑तं हिर॒ण्ययं॑ सहस्र॒घ्नि श॒तव॑धं शिखण्डिन्।
रु॒द्रस्येषु॑श्चरति देवहे॒तिस्तस्यै॒ नमो॑ यत॒मस्यां॑ दि॒शी॒३॒॑तः॥ १२॥
यो॒३॒॑भिया॑तो नि॒लय॑ते॒ त्वां रु॑द्र नि॒चिकी॑र्षति ।
प॒श्चाद॑नु॒प्रयु॑ङ्क्षे॒ तं वि॒द्धस्य॑ पद॒नीरि॑व ॥ १३॥
भ॒वा॒रु॒द्रौ स॒युजा॑ संविदा॒नावु॒भावु॒ग्रौ च॑रतो वी॒र्या॑य ।
ताभ्यां॒ नमो॑ यत॒मस्यां॑ दि॒शी॒३॒॑तः ॥ १४॥
नम॑स्तेऽस्त्वाय॒ते नमो॑ अस्तु पराय॒ते ।
नम॑स्ते रुद्र॒ तिष्ठ॑त॒ आसी॑नायो॒त ते॒ नमः॑ ॥ १५॥
नमः॑ सा॒यं नमः॑ प्रा॒तर्नमो॒ रात्र्या॒ नमो॒ दिवा॑ ।
भ॒वाय॑ च श॒र्वाय॑ चो॒भाभ्या॑मकरं॒ नमः॑ ॥ १६॥
स॒ह॒स्रा॒क्षम॑तिप॒श्यं पु॒रस्ता॑द्रु॒द्रमस्य॑न्तं बहु॒धा वि॑प॒श्चित॑म्।
मोपा॑राम जि॒ह्वयेय॑मानम् ॥ १७॥
श्या॒वाश्वं॑ कृ॒ष्णमसि॑तं मृ॒णन्तं॑ भी॒मं रथं॑ के॒शिनः॑ पा॒दय॑न्तम्।
पूर्वे॒ प्रती॑मो॒ नमो॑ अस्त्वस्मै ॥ १८॥
मा नो॒ऽभि स्रा॑ म॒त्यं॑ देवहे॒तिं मा नः॑ क्रुधः पशुपते॒ नम॑स्ते।
अ॒न्यत्रा॒स्मद्दि॒व्यां शाखां॒ वि धू॑नु ॥ १९॥
मा नो॑ हिंसी॒रधि॑ नो ब्रूहि॒ परि॑ णो वृङ्ग्धि॒ मा क्रु॑धः।
मा त्वया॒ सम॑रामहि ॥ २०॥
मा नो॒ गोषु॒ पुरु॑षेषु॒ मा गृ॑धो नो अजा॒विषु॑।
अ॒न्यत्रो॑ग्र॒ वि व॑र्तय॒ पिया॑रूणां प्र॒जां ज॑हि ॥ २१॥
यस्य॑ त॒क्मा कासि॑का हे॒तिरेक॒मश्व॑स्येव॒ वृष॑णः॒ क्रन्द॒ एति॑।
अ॒भि॒पू॒र्वं नि॒र्णय॑ते॒ नमो॑ अस्त्वस्मै ॥ २२॥
यो॒३॒॑न्तरि॑क्षे॒ तिष्ठ॑ति॒ विष्ट॑भि॒तोऽय॑ज्वनः प्रमृ॒णन्दे॑वपी॒यून्।
तस्मै॒ नमो॑ द॒शभिः॒ शक्व॑रीभिः ॥ २३॥
तुभ्य॑मार॒ण्याः प॒शवो॑ मृ॒गा वने॑ हि॒ता हं॒साः सु॑प॒र्णाः श॑कु॒ना वयां॑सि।
तव॑ य॒क्षं प॑शुपते अ॒प्स्व१॒॑न्तस्तुभ्यं॑ क्षरन्ति दि॒व्या आपो॑ वृ॒धे॥ २४॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

शिंशुमारा अजगराः पुरीकया जषा मत्स्या रजसा येभ्यो अस्यसि।
न ते दूरं न परिष्ठास्ति ते भव सद्यः सर्वान्परि पश्यसि
भूमिं पूर्वस्माद्बृंस्युत्तरस्मिन्त्समुद्रे ॥ २५ ॥
मा नो रुद्र तवस्मना मा विषेण मा नः सं स्रा दिव्येनाग्निना।
अन्यत्रास्मद्विद्युतं पातयैताम् ॥ २६ ॥
भवो दिवो भव ईशे पृथिव्या भव आ पप्र उर्वन्तरिक्षम्।
तस्मै नमो यतमस्यां दिशीतः ॥ २७ ॥
भवं राजन्यजमानाय मृड पशूनां हि पशुपतिर्बभूथ।
यः श्रद्दधाति सन्ति देवा इति चतुष्पदे द्विपदेऽस्य मृड ॥ २८ ॥
मा नो महान्तमुत मा नो अर्भकं मा नो वहन्तमुत मा नो वक्ष्यतः।
मा नो हिंसीः पितरं मातरं च स्वां तन्वं रुद्र मा रीरिषो नः ॥ २९ ॥
रुद्रस्यैलबकारेभ्योऽसंसूक्तगिलेभ्यः ।
इदं महास्येभ्यः श्वभ्यो अकरं नमः ॥ ३० ॥
नमस्ते घोषिणीभ्यो नमस्ते केशिनीभ्यः ।
नमो नमस्कृताभ्यो नमः संभुञ्जतीभ्यः ।
नमस्ते देव सेनाभ्यः स्वस्ति नो अभयं च नः ॥ ३१ ॥

अथ द्वितीयोऽनुवाकः [३] तृतीयं सूक्तम्, प्रथमपर्यायः

ऋषिः—अथर्वा ॥ देवता—बार्हस्पत्यौदनः ॥ छन्दः—१, १४ आसुरीगायत्री; २ त्रिपदासमविषमागायत्री; ३, ६, १० आसुरीपङ्क्तिः; ४, ८ साम्न्यनुष्टुप्; ५, १३, १५, २५ साम्न्युष्णिक्; ७, १९-२२ प्राजापत्यानुष्टुप्; ९, १७, १८ आसुर्यनुष्टुप्; ११ भुरिगार्च्यनुष्टुप्; १२ याजुषीजगती; १६, २३ आसुरीबृहती; २४ त्रिपदाप्राजापत्याबृहती; २६ आर्च्युष्णिक्; २७ साम्नीगायत्री; २८ साम्नीबृहती; २९ भुरिक्साम्नीबृहती; ३० याजुषीत्रिष्टुप्; ३१ अल्पशःपङ्क्तिरुतयाजुषी॥

तस्यौदनस्य बृहस्पतिः शिरो ब्रह्म मुखम् ॥ १ ॥
द्यावापृथिवी श्रोत्रे सूर्याचन्द्रमसावक्षिणी सप्तऋषयः प्राणापानाः ॥ २ ॥
चक्षुर्मुसलं कामं उलूखलम् ॥ ३ ॥
दितिः शूर्पमदितिः शूर्पग्राही वातोऽपाविनक् ॥ ४ ॥
अश्वाः कणा गावस्तण्डुला मशकास्तुषाः ॥ ५ ॥
कन्नु फलीकरणाः शरोऽभ्रम् ॥ ६ ॥
श्यामम्मयोऽस्य मांसानि लोहितमस्य लोहितम् ॥ ७ ॥
त्रपु भस्म हरितं वर्णः पुष्करमस्य गन्धः ॥ ८ ॥
खलः पात्रं स्फ्यावंसावीषे अनूक्ये ॥ ९ ॥
आन्त्राणि जत्रवो गुदा वरत्राः ॥ १० ॥
इयमेव पृथिवी कुम्भी भवति राध्यमानस्यौदनस्य द्यौरपिधानम् ॥ ११ ॥
सीताः पर्शवः सिकता ऊबध्यम् ॥ १२ ॥
ऋतं हस्तावनेजनं कुल्योपसेचनम् ॥ १३ ॥
ऋचा कुम्भ्यधिहितार्त्विज्येन प्रेषिता ॥ १४ ॥
ब्रह्मणा परिगृहीता साम्ना पर्यूढा ॥ १५ ॥
बृहदायवनं रथन्तरं दर्विः ॥ १६ ॥
ऋतवः पक्तारः आर्तवाः समिन्धते ॥ १७ ॥
चरुं पञ्चबिलमुखं घर्मोऽभीन्धे ॥ १८ ॥
ओदनेन यज्ञवचः सर्वे लोकाः समाप्याः ॥ १९ ॥
यस्मिन्त्समुद्रो द्यौर्भूमिस्त्रयोऽवरपरं श्रिताः ॥ २० ॥
यस्य देवा अकल्पन्तोच्छिष्टे षडशीतयः ॥ २१ ॥
तं त्वौदनस्य पृच्छामि यो अस्य महिमा महान् ॥ २२ ॥
स य ओदनस्य महिमानं विद्यात् ॥ २३ ॥
नाल्प इति ब्रूयान्नानुपसेचन इति नेदं च किं चेति ॥ २४ ॥
यावद्ह्याभिमनस्येत तन्नाति वदेत् ॥ २५ ॥
ब्रह्मवादिनो वदन्ति परांच्मोदनं प्राशीः प्रत्यञ्चा३मिति ॥ २६ ॥
त्वमोदनं प्राशी३स्त्वामोदना३ इति ॥ २७ ॥
परांच्वं चैनं प्राशीः प्राणास्त्वा हास्यन्तीत्येनमाह ॥ २८ ॥
प्रत्यञ्चं चैनं प्राशीरपानास्त्वा हास्यन्तीत्येनमाह ॥ २९ ॥
नैवाहमोदनं न मामोदनः ॥ ३० ॥
ओदन एवौदनं प्राशीत् ॥ ३१ ॥

[३] तृतीयं सूक्तम्, द्वितीयपर्यायः

ऋषिः—अथर्वा ॥ देवता—मन्त्रोक्ताः ॥ छन्दः—३२, ३८, ४१ (प्र०), ३२-४९ (स०) साम्नीत्रिष्टुप्; ३२, ३५, ४२ (द्वि०), ३२-४९ (तृ०), ३३, ३४, ४४-४८ (पञ्च०) एकपदाऽऽसुरीगायत्री; ३२, ४१, ४३, ४७ (च०) दैवीजगती; ३८, ४४, ४६ (द्वि०), ३२, ३५-४३, ४९ (पञ्च०) एकपदाऽऽसुर्यनुष्टुप्; ३२-४९ (ष०) साम्न्यनुष्टुप्; ३३-३६, ३९, ४०, ४२-४९ (प्र०) आर्च्यनुष्टुप्; ३७ (प्र०) साम्नीपङ्क्तिः; ३३, ३६, ४०, ४७, ४८ (द्वि०) आसुरीबृहती; ३३, ४४ (च०) आसुरीजगती; ३४, ३७, ४१, ४३, ४५ (द्वि०) आसुरीपङ्क्तिः;

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

३४ (च०) आसुरीत्रिष्टुप्; ३५, ४६, ४८ (च०) याजुषी-गायत्री; ३६, ३७, ४० (च०) दैवीपङ्क्तिः; ३८, ३९ (चतु०) प्राजापत्यागायत्री; ३९ (द्वि०) आसुर्युष्णिक्; ४२, ४५, ४९ (च०) दैवीत्रिष्टुप्; ४९ (द्वि०) एकपदा-भुरिक्साम्नीबृहती॥

ततश्चैनमन्येन शीर्ष्णा प्राशीर्येन चैतं पूर्व ऋषयः प्राश्नन्।
ज्येष्ठतस्ते प्रजा मरिष्यतीत्येनमाह ।
तं वा अहं नार्वाञ्चं न पराञ्चं न प्रत्यञ्चम्।
बृहस्पतिना शीर्ष्णा। तेनैनं प्राशिषं तेनैनमजीगमम्।
एष वा ओदनः सर्वौङ्गः सर्वपरुः सर्वतनूः ।
सर्वौङ्ग एव सर्वपरुः सर्वतनूः सं भवति य एवं वेद॥ ३२॥

ततश्चैनमन्याभ्यां श्रोत्राभ्यां प्राशीर्याभ्यां चैतं पूर्व ऋषयः प्राश्नन्।
बधिरो भविष्यसीत्येनमाह। तं वा अहं नार्वाञ्चं न पराञ्चं न प्रत्यञ्चम्।
द्यावापृथिवीभ्यां श्रोत्राभ्याम्। ताभ्यामेनं प्राशिषं ताभ्यामेनमजीगमम्।
एष वा ओदनः सर्वौङ्गः सर्वपरुः सर्वतनूः ।
सर्वौङ्ग एव सर्वपरुः सर्वतनूः सं भवति य एवं वेद ॥ ३३॥

ततश्चैनमन्याभ्यामक्षीभ्यां प्राशीर्याभ्यां चैतं पूर्व ऋषयः प्राश्नन्।
अन्धो भविष्यसीत्येनमाह। तं वा अहं नार्वाञ्चं न पराञ्चं न प्रत्यञ्चम्।
सूर्याचन्द्रमसाभ्यामक्षीभ्याम्। ताभ्यामेनं प्राशिषं ताभ्यामेनमजीगमम्।
एष वा ओदनः सर्वौङ्गः सर्वपरुः सर्वतनूः ।
सर्वौङ्ग एव सर्वपरुः सर्वतनूः सं भवति य एवं वेद ॥ ३४॥

ततश्चैनमन्येन मुखेन प्राशीर्येन चैतं पूर्व ऋषयः प्राश्नन्।
मुखतस्ते प्रजा मरिष्यतीत्येनमाह ।
तं वा अहं नार्वाञ्चं न पराञ्चं न प्रत्यञ्चम् ।
ब्रह्मणा मुखेन। तेनैनं प्राशिषं तेनैनमजीगमम् ।
एष वा ओदनः सर्वौङ्गः सर्वपरुः सर्वतनूः ।
सर्वौङ्ग एव सर्वपरुः सर्वतनूः सं भवति य एवं वेद ॥ ३५॥

ततश्चैनमन्यया जिह्वया प्राशीर्यया चैतं पूर्व ऋषयः प्राश्नन्।
जिह्वा ते मरिष्यतीत्येनमाह। तं वा अहं नार्वाञ्चं न पराञ्चं न प्रत्यञ्चम्।
अग्नेर्जिह्वया। तयैनं प्राशिषं तयैनमजीगमम् ।
एष वा ओदनः सर्वौङ्गः सर्वपरुः सर्वतनूः ।
सर्वौङ्ग एव सर्वपरुः सर्वतनूः सं भवति य एवं वेद ॥ ३६॥

ततश्चैनमन्यैर्दन्तैः प्राशीर्यैश्चैतं पूर्व ऋषयः प्राश्नन् ।
दन्तास्ते शत्स्यन्तीत्येनमाह। तं वा अहं नार्वाञ्चं न पराञ्चं न प्रत्यञ्चम्।
ऋतुभिर्दन्तैः। तैरेनं प्राशिषं तैरेनमजीगमम् ।
एष वा ओदनः सर्वौङ्गः सर्वपरुः सर्वतनूः ।
सर्वौङ्ग एव सर्वपरुः सर्वतनूः सं भवति य एवं वेद ॥ ३७॥

ततश्चैनमन्यैः प्राणापानैः प्राशीर्यैश्चैतं पूर्व ऋषयः प्राश्नन्।
प्राणापानास्त्वा हास्यन्तीत्येनमाह ।
तं वा अहं नार्वाञ्चं न पराञ्चं न प्रत्यञ्चम् ।
सप्तर्षिभिः प्राणापानैः। तैरेनं प्राशिषं तैरेनमजीगमम् ।
एष वा ओदनः सर्वौङ्गः सर्वपरुः सर्वतनूः ।
सर्वौङ्ग एव सर्वपरुः सर्वतनूः सं भवति य एवं वेद ॥ ३८॥

ततश्चैनमन्येन व्यचसा प्राशीर्येन चैतं पूर्व ऋषयः प्राश्नन्।
राजयक्ष्मस्त्वा हनिष्यतीत्येनमाह ।
तं वा अहं नार्वाञ्चं न पराञ्चं न प्रत्यञ्चम् ।
अन्तरिक्षेण व्यचसा। तेनैनं प्राशिषं तेनैनमजीगमम् ।
एष वा ओदनः सर्वौङ्गः सर्वपरुः सर्वतनूः ।
सर्वौङ्ग एव सर्वपरुः सर्वतनूः सं भवति य एवं वेद ॥ ३९॥

ततश्चैनमन्येन पृष्ठेन प्राशीर्येन चैतं पूर्व ऋषयः प्राश्नन्।
विद्युत्त्वा हनिष्यतीत्येनमाह। तं वा अहं नार्वाञ्चं न पराञ्चं न प्रत्यञ्चम्।
दिवा पृष्ठेन। तेनैनं प्राशिषं तेनैनमजीगमम् ।
एष वा ओदनः सर्वौङ्गः सर्वपरुः सर्वतनूः ।
सर्वौङ्ग एव सर्वपरुः सर्वतनूः सं भवति य एवं वेद ॥ ४०॥

ततश्चैनमन्येनोरसा प्राशीर्येन चैतं पूर्व ऋषयः प्राश्नन्।
कृष्या न रात्स्यसीत्येनमाह। तं वा अहं नार्वाञ्चं न पराञ्चं न प्रत्यञ्चम्।
पृथिव्योरसा। तेनैनं प्राशिषं तेनैनमजीगमम् ।
एष वा ओदनः सर्वौङ्गः सर्वपरुः सर्वतनूः ।
सर्वौङ्ग एव सर्वपरुः सर्वतनूः सं भवति य एवं वेद ॥ ४१॥

ततश्चैनमन्येनोदरेण प्राशीर्येन चैतं पूर्व ऋषयः प्राश्नन्।
उदरदारस्त्वा हनिष्यतीत्येनमाह ।
तं वा अहं नार्वाञ्चं न पराञ्चं न प्रत्यञ्चम् ।
सत्येनोदरेण। तेनैनं प्राशिषं तेनैनमजीगमम् ।
एष वा ओदनः सर्वौङ्गः सर्वपरुः सर्वतनूः ।
सर्वौङ्ग एव सर्वपरुः सर्वतनूः सं भवति य एवं वेद ॥ ४२॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ततश्चैनमन्येन वस्तिना प्राशीर्येन चैतं पूर्व ऋषयः प्राश्नन्।
अप्सु मरिष्यसीत्येनमाह। तं वा अहं नार्वाञ्चं न पराञ्चं न प्रत्यञ्चम्।
समुद्रेण वस्तिना। तेनैनं प्राशिषं तेनैनमजीगमम् ।
एष वा ओदनः सवीङ्गः सवँपरुः सवँतनूः ।
सवीङ्ग एव सवँपरुः सवँतनूः सं भवति य एवं वेद ॥४३॥
ततश्चैनमन्याभ्यामूरुभ्यां प्राशीर्याभ्यां चैतं पूर्व ऋषयः प्राश्नन्।
क्रूरं ते मरिष्यत इत्येनमाह। तं वा अहं नार्वाञ्चं न पराञ्चं न प्रत्यञ्चम्।
मित्रावरुणयोरूरुभ्याम्। ताभ्यामेनं प्राशिषं ताभ्यामेनमजीगमम्।
एष वा ओदनः सवीङ्गः सवँपरुः सवँतनूः ।
सवीङ्ग एव सवँपरुः सवँतनूः सं भवति य एवं वेद ॥४४॥
ततश्चैनमन्याभ्यामष्ठीवद्भ्यां प्राशीर्याभ्यां चैतं पूर्व ऋषयः प्राश्नन्।
स्रामो भविष्यसीत्येनमाह। तं वा अहं नार्वाञ्चं न पराञ्चं न प्रत्यञ्चम्।
त्वष्टुरष्ठीवद्भ्याम्। ताभ्यामेनं प्राशिषं ताभ्यामेनमजीगमम्।
एष वा ओदनः सवीङ्गः सवँपरुः सवँतनूः ।
सवीङ्ग एव सवँपरुः सवँतनूः सं भवति य एवं वेद ॥४५॥
ततश्चैनमन्याभ्यां पादाभ्यां प्राशीर्याभ्यां चैतं पूर्व ऋषयः प्राश्नन्।
बहुचारी भविष्यसीत्येनमाह। तं वा अहं नार्वाञ्चं न पराञ्चं न प्रत्यञ्चम्।
अश्विनोः पादाभ्याम्। ताभ्यामेनं प्राशिषं ताभ्यामेनमजीगमम्।
एष वा ओदनः सवीङ्गः सवँपरुः सवँतनूः ।
सवीङ्ग एव सवँपरुः सवँतनूः सं भवति य एवं वेद ॥४६॥
ततश्चैनमन्याभ्यां प्रपदाभ्यां प्राशीर्याभ्यां चैतं पूर्व ऋषयः प्राश्नन्।
सर्पस्त्वा हनिष्यतीत्येनमाह। तं वा अहं नार्वाञ्चं न पराञ्चं न प्रत्यञ्चम्।
सवितुः प्रपदाभ्याम्। ताभ्यामेनं प्राशिषं ताभ्यामेनमजीगमम्।
एष वा ओदनः सवीङ्गः सवँपरुः सवँतनूः ।
सवीङ्ग एव सवँपरुः सवँतनूः सं भवति य एवं वेद ॥४७॥
ततश्चैनमन्याभ्यां हस्ताभ्यां प्राशीर्याभ्यां चैतं पूर्व ऋषयः प्राश्नन्।
ब्राह्मणं हनिष्यसीत्येनमाह। तं वा अहं नार्वाञ्चं न पराञ्चं न प्रत्यञ्चम्।
ऋतस्य हस्ताभ्याम्। ताभ्यामेनं प्राशिषं ताभ्यामेनमजीगमम्।
एष वा ओदनः सवीङ्गः सवँपरुः सवँतनूः ।
सवीङ्ग एव सवँपरुः सवँतनूः सं भवति य एवं वेद ॥४८॥

ततश्चैनमन्यया प्रतिष्ठया प्राशीर्यया चैतं पूर्व ऋषयः प्राश्नन्।
अप्रतिष्ठानोऽनायतनो मरिष्यसीत्येनमाह ।
तं वा अहं नार्वाञ्चं न पराञ्चं न प्रत्यञ्चम्। सत्ये प्रतिष्ठाय।
तयैनं प्राशिषं तयैनमजीगमम्। एष वा ओदनः सवीङ्गः सवँपरुः सवँतनूः।
सवीङ्ग एव सवँपरुः सवँतनूः सं भवति य एवं वेद॥४९॥

[३] तृतीयं सूक्तम्, तृतीयपर्यायः

ऋषिः—अथर्वा॥ देवता—मन्त्रोक्ताः॥ छन्दः—५० आसुर्यनुष्टुप्; ५१ आर्च्युष्णिक्; ५२ त्रिपदाभुरिक्साम्नीत्रिष्टुप्; ५३ आसुरीबृहती; ५४ द्विपदाभुरिक्साम्नीबृहती; ५५ साम्न्युष्णिक्; ५६ प्राजापत्याबृहती॥

एतद्वै ब्रध्नस्य विष्टपं यदोदनः ॥५०॥
ब्रध्नलोको भवति ब्रध्नस्य विष्टपि श्रयते य एवं वेद॥५१॥
एतस्माद्वा ओदनात्त्रयस्त्रिंशतं लोकान्निरमिमीत प्रजापतिः॥५२॥
तेषां प्रज्ञानाय यज्ञमसृजत ॥५३॥
स य एवं विदुषं उपद्रष्टा भवति प्राणं रुणद्धि ॥५४॥
न च प्राणं रुणद्धि सर्वज्यानिं जीयते ॥५५॥
न च सर्वज्यानिं जीयते पुरैनं जरसः प्राणो जहाति ॥५६॥

[४] चतुर्थं सूक्तम्

ऋषिः—भार्गवो वैदर्भिः॥ देवता—प्राणः॥ छन्दः—१ शङ्कुमत्यनुष्टुप्; २-७, ९-१३, १६-१९, २३-२५ अनुष्टुप्; ८ पथ्यापङ्क्तिः; १४ निचृदनुष्टुप्; १५ भुरिगनुष्टुप्; २० अनुष्टुब्गर्भा त्रिष्टुप्; २१ मध्येज्योतिर्जगती; २२ त्रिष्टुप्; २६ बृहतीगर्भाऽनुष्टुप्॥

प्राणाय नमो यस्य सर्वमिदं वशे ।
यो भूतः सर्वस्येश्वरो यस्मिन्त्सर्वं प्रतिष्ठितम्॥१॥
नमस्ते प्राण क्रन्दाय नमस्ते स्तनयित्नवे।
नमस्ते प्राण विद्युते नमस्ते प्राण वर्षते॥२॥
यत्प्राण स्तनयित्नुनाभिक्रन्दत्योषधीः ।
प्र वीयन्ते गर्भान्दधतेऽथो बह्वीर्वि जायन्ते॥३॥
यत्प्राण ऋतावागतेऽभिक्रन्दत्योषधीः ।
सर्वं तदा प्र मोदते यत्किं च भूम्यामधि॥४॥
यदा प्राणो अभ्यवर्षीद्वर्षेण पृथिवीं महीम्।
पशवस्तत आमोदन्ते महो वै नो भविष्यति॥५॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अ॒भिवृ॑ष्टा॒ ओष॑धयः प्रा॒णेन॒ सम॑वादिरन्।
आयु॒र्वै नः॒ प्राती॑तरः॒ सर्वा॑ नः सुर॒भीर॑कः॥ ६॥
नम॑स्ते अस्त्वाय॒ते नमो॑ अस्तु पराय॒ते।
नम॑स्ते प्राण॒ तिष्ठ॑त॒ आसी॑नायो॒त ते॒ नमः॑॥ ७॥
नम॑स्ते प्राण प्राण॒ते नमो॑ अस्त्वपान॒ते ।
प॒रा॒चीना॑य ते॒ नमः॑ प्रती॒चीना॑य ते॒ नमः॒ सर्व॑स्मै त इ॒दं नमः॑॥ ८॥
या ते॑ प्राण प्रि॒या त॒नूर्यो ते॑ प्राण॒ प्रेय॑सी।
अथो॒ यद्भे॑ष॒जं तव॒ तस्य॑ नो धेहि जी॒वसे॑॥ ९॥
प्रा॒णः प्र॒जा अनु॑ वस्ते पि॒ता पु॒त्रमि॑व प्रि॒यम्।
प्रा॒णो ह॒ सर्व॑स्येश्व॒रो यच्च॑ प्रा॒णति॒ यच्च॒ न॥ १०॥
प्रा॒णो मृ॒त्युः प्रा॒णस्त॒क्मा प्रा॒णं दे॒वा उपा॑सते।
प्रा॒णो ह॑ सत्यवा॒दिन॑मुत्त॒मे लो॒क आ द॑धत्॥ ११॥
प्रा॒णो वि॒राट् प्रा॒णो देष्ट्री॑ प्रा॒णं सर्व॒ उपा॑सते।
प्रा॒णो ह॒ सूर्य॑श्च॒न्द्रमाः॑ प्रा॒णमा॑हुः प्र॒जाप॑तिम्॥ १२॥
प्रा॒णा॒पा॒नौ व्री॑हिय॒वाव॑न॒ड्वान्प्रा॒ण उ॑च्यते।
यवे॑ ह प्रा॒ण आहि॑तोऽपा॒नो व्री॒हिरु॑च्यते॥ १३॥
अपा॑नति॒ प्राण॑ति॒ पुरु॑षो॒ गर्भे॑ अन्त॒रा।
य॒दा त्वं प्रा॑ण॒ जिन्व॒स्यथ॒ स जा॑यते॒ पुनः॑॥ १४॥
प्रा॒णमा॑हुर्मात॒रिश्वा॑नं॒ वातो॑ ह प्रा॒ण उ॑च्यते।
प्रा॒णे ह॑ भू॒तं भव्यं॑ च प्रा॒णे सर्वं॒ प्रति॑ष्ठितम्॥ १५॥
आ॒थ॒र्व॒णीरा॑ङ्गिर॒सीर्दैवी॑र्मनुष्य॒जा उ॒त ।
ओष॑धयः॒ प्र जा॑यन्ते य॒दा त्वं प्रा॑ण॒ जिन्व॑सि॥ १६॥
य॒दा प्रा॒णो अ॒भ्यव॑र्षीद्व॒र्षेण॑ पृथि॒वीं म॒हीम्।
ओष॑धयः॒ प्र जा॑य॒न्तेऽथो॒ याः काश्च॑ वी॒रुधः॑॥ १७॥
यस्ते॑ प्राणे॒दं वेद॒ यस्मि॒ंश्चासि॒ प्रति॑ष्ठितः।
सर्वे॒ तस्मै॑ ब॒लिं ह॑रान॒मुष्मिँ॑ल्लो॒क उ॑त्त॒मे॥ १८॥
यथा॑ प्राण बलि॒हृत॒स्तुभ्यं॒ सर्वाः॑ प्र॒जा इ॒माः।
ए॒वा तस्मै॑ ब॒लिं ह॑रा॒न्यस्त्वा॑ शृ॒णव॑त्सुश्रवः॥ १९॥
अ॒न्तर्गर्भ॑श्चरति दे॒वता॒स्वाभू॑तो भू॒तः स उ॑ जायते॒ पुनः॑।
स भू॒तो भव्यं॑ भवि॒ष्यत्पि॒ता पु॒त्रं प्र वि॑वेशा॒ शची॑भिः॥ २०॥

एकं॒ पादं॒ नोत्खि॑दति सलि॒लाद्धं॒स उ॒च्चर॑न्। यद॒ङ्ग स
तमु॑त्खि॒देन्नैवाद्य न श्वः स्या॒न्न रात्री॒ नाहः॑ स्या॒न्न व्यु॑च्छेत्क॒दा च॒न॥ २१॥
अ॒ष्टाच॑क्रं वर्तत॒ एक॑नेमि स॒हस्रा॑क्षरं॒ प्र पु॒रो नि प॒श्चा।
अ॒र्धेन॒ विश्वं॒ भुव॑नं ज॒जान॒ यद॑स्या॒र्धं क॑त॒मः स के॒तुः॥ २२॥
यो अ॒स्य वि॒श्वज॑न्मन॒ ईशे॒ विश्व॑स्य॒ चेष्ट॑तः ।
अन्ये॑षु क्षि॒प्रध॑न्वने॒ तस्मै॑ प्राण॒ नमो॑ऽस्तु ते ॥ २३॥
यो अ॒स्य स॒र्वज॑न्मन॒ ईशे॒ सर्व॑स्य॒ चेष्ट॑तः ।
अत॑न्द्रो॒ ब्रह्म॑णा॒ धीरः॑ प्रा॒णो मानु॑ तिष्ठतु ॥ २४॥
ऊ॒र्ध्वः सु॒प्तेषु॑ जागार न॒नु ति॒र्यङ् नि प॑द्यते ।
न सु॒प्तम॑स्य सु॒प्तेष्वनु॑ शुश्राव॒ कश्च॒न ॥ २५॥
प्राण॒ मा म॑त्प॒र्यावृ॑तो॒ न मद॒न्यो भ॑विष्यसि ।
अ॒पां गर्भ॑मिव जी॒वसे॒ प्राण॑ ब॒ध्नामि॑ त्वा॒ मयि॑ ॥ २६॥

अथ तृतीयोऽनुवाकः [५] पञ्चमं सूक्तम्

ऋषिः—ब्रह्मा॥ देवता—ब्रह्मचारी॥ छन्दः—१ पुरोऽतिजागताविराड्गर्भात्रिष्टुप्; २ पञ्चपदाबृहतीगर्भाविराट्शक्वरी; ३ उरोबृहती; ४, ५, २४ त्रिष्टुप्; ६ शाक्वरगर्भाचतुष्पदाजगती; ७ विराड्गर्भात्रिष्टुप्; ८ पुरोऽतिजागताविराड्जगती; ९ बृहतीगर्भात्रिष्टुप्; १० भुरिक्त्रिष्टुप्; ११, १३ जगती; १२ शाक्वरगर्भाचतुष्पदाविराडतिजगती; १४, १६-२२ अनुष्टुप्; १५ पुरस्ताज्ज्योतिस्त्रिष्टुप्; २३ पुरोबार्हतातिजागतगर्भात्रिष्टुप्; २५ आर्च्युष्णिक् (एकावसाना); २६ मध्येज्योतिरुष्णिग्गर्भात्रिष्टुप्॥

ब्र॒ह्म॒चा॒रीष्णंश्च॑रति॒ रोद॑सी उ॒भे तस्मि॑न्दे॒वाः संम॑नसो भवन्ति ।
स दा॑धार पृथि॒वीं दिवं॑ च॒ स आ॑चा॒र्यं१॒॑ तप॑सा पिपर्ति ॥ १॥
ब्र॒ह्म॒चा॒रिणं॑ पि॒तरो॑ देवज॒नाः पृथ॑ग्दे॒वा अ॑नु॒संय॑न्ति॒ सर्वे॑ ।
ग॒न्ध॒र्वा ए॑न॒मन्वा॑य॒न्त्रय॑स्त्रिंशत्त्रिश॒ताः ष॑ट्सह॒स्राः
सर्वा॒न्त्स दे॒वांस्तप॑सा पिपर्ति ॥ २॥
आ॒चा॒र्य॑ उप॒नय॑मानो ब्रह्मचा॒रिणं॑ कृणुते॒ गर्भ॑म॒न्तः ।
तं रात्री॑स्ति॒स्र उ॒दरे॑ बिभर्ति॒ तं जा॒तं द्रष्टु॑मभि॒संय॑न्ति दे॒वाः ॥ ३॥
इ॒यं स॒मित्पृ॑थि॒वी द्यौर्द्वि॒तीयो॒तान्तरि॑क्षं स॒मिधा॑ पृणाति ।
ब्र॒ह्म॒चा॒री स॒मिधा॒ मेख॑लया॒ श्रमे॑ण लो॒कांस्तप॑सा पिपर्ति ॥ ४॥
पूर्वो॑ जा॒तो ब्रह्म॑णो ब्रह्मचा॒री घ॒र्मं वसा॑न॒स्तप॒सोद॑तिष्ठत् ।
तस्माज्जा॒तं ब्राह्म॑णं॒ ब्रह्म॑ ज्ये॒ष्ठं दे॒वाश्च॒ सर्वे॑ अ॒मृते॑न सा॒कम् ॥ ५॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ब्रह्मचार्येति समिधा समिद्धः काष्णं वसानो दीक्षितो दीर्घश्मश्रुः।
स सद्य एति पूर्वस्मादुत्तरं समुद्रं लोकान्त्संगृभ्य मुहुराचरिक्रत् ॥ ६ ॥
ब्रह्मचारी जनयन्ब्रह्मापो लोकं प्रजापतिं परमेष्ठिनं विराजम् ।
गर्भो भूत्वामृतस्य योनाविन्द्रो ह भूत्वासुरांस्ततर्ह ॥ ७ ॥
आचार्य स्तपस ब्रह्मचारी तस्मिन्देवाः संमनसो भवन्ति ॥ ८ ॥
इमां भूमिं पृथिवीं ब्रह्मचारी भिक्षामा जभार प्रथमो दिवं च ।
ते कृत्वा समिधावुपास्ते तयोरार्पिता भुवनानि विश्वा ॥ ९ ॥
अर्वागन्यः परो अन्यो दिवस्पृष्ठाद्बृहा निधी निहितौ ब्राह्मणस्य ।
तौ रक्षति तपसा ब्रह्मचारी तत्केवलं कृणुते ब्रह्म विद्वान् ॥ १० ॥
अर्वागन्य इतो अन्यः पृथिव्या अग्नी समेतो नभसी अन्तरेमे ।
तयोः श्रयन्ते रश्मयोऽधि दृढास्ताना तिष्ठति तपसा ब्रह्मचारी ॥ ११ ॥
अभिक्रन्दन् स्तनयन्नरुणः शिंशिङ्गो बृहच्छेपोऽनु भूमौ जभार ।
ब्रह्मचारी सिञ्चति सानौ रेतः पृथिव्यां तेन जीवन्ति प्रदिशश्चतस्रः ॥ १२ ॥
अग्नौ सूर्ये चन्द्रमसि मातरिश्वन्ब्रह्मचार्यप्सु समिधमा दधाति ।
तासामर्चींषि पृथगभ्रे चरन्ति तासामाज्यं पुरुषो वर्षमापः ॥ १३ ॥
आचार्यो मृत्युर्वरुणः सोम ओषधयः पयः ।
जीमूता आसन्त्सत्वानस्तैरिदं स्वराभृतम् ॥ १४ ॥
अमा घृतं कृणुते केवलमाचार्यो भूत्वा वरुणो यद्यदैच्छत्प्रजापतौ।
तद् ब्रह्मचारी प्रायच्छत्स्वान्मित्रो अध्यात्मनः ॥ १५ ॥
आचार्यो ब्रह्मचारी ब्रह्मचारी प्रजापतिः।
प्रजापतिर्वि राजति विराडिन्द्रोऽभवद्वशी ॥ १६ ॥
ब्रह्मचर्येण तपसा राजा राष्ट्रं वि रक्षति।
आचार्यो ब्रह्मचर्येण ब्रह्मचारिणमिच्छते ॥ १७ ॥
ब्रह्मचर्येण कन्या युवानं विन्दते पतिम्।
अनड्वान्ब्रह्मचर्येणाश्वो घासं जिगीर्षति ॥ १८ ॥
ब्रह्मचर्येण तपसा देवा मृत्युमपाघ्नत।
इन्द्रो ह ब्रह्मचर्येण देवेभ्यः स्वराभरत् ॥ १९ ॥
ओषधयो भूतभव्यमहोरात्रे वनस्पतिः।
संवत्सरः सहर्तुभिस्ते जाता ब्रह्मचारिणः ॥ २० ॥

पार्थिवा दिव्याः पशव आरण्या ग्राम्याश्च ये।
अपक्षाः पक्षिणश्च ये ते जाता ब्रह्मचारिणः ॥ २१ ॥
पृथक्सर्वे प्राजापत्याः प्राणानात्मसु बिभ्रति।
तान्त्सर्वान्ब्रह्म रक्षति ब्रह्मचारिण्याभृतम् ॥ २२ ॥
देवानामेतत्परिषूतमनभ्यारूढं चरति रोचमानम् ।
तस्माज्जातं ब्राह्मणं ब्रह्म ज्येष्ठं देवाश्च सर्वे अमृतेन साकम् ॥ २३ ॥
ब्रह्मचारी ब्रह्म भ्राजद्बिभर्ति तस्मिन्देवा अधि विश्वे समोताः।
प्राणापानौ जनयन्नाद् व्यानं वाचं मनो हृदयं ब्रह्म मेधाम् ॥ २४ ॥
चक्षुः श्रोत्रं यशो अस्मासु धेह्यन्नं रेतो लोहितमुदरम् ॥ २५ ॥
तानि कल्पन्द् ब्रह्मचारी सलिलस्य पृष्ठे तपोऽतिष्ठत्तप्यमानः समुद्रे।
स स्नातो बभ्रुः पिङ्गलः पृथिव्यां बहु रोचते ॥ २६ ॥

॥ इति चतुर्विंशः प्रपाठकः ॥

अथ पञ्चविंशः प्रपाठकः ॥

[६] षष्ठं सूक्तम्

ऋषिः—शन्तातिः ॥ देवता—अग्न्यादयो मन्त्रोक्ताः ॥ छन्दः—१-२२ अनुष्टुप्; २३ बृहतीगर्भाऽनुष्टुप् ॥

अग्निं ब्रूमो वनस्पतीनोषधीरुत वीरुधः।
इन्द्रं बृहस्पतिं सूर्यं ते नो मुञ्चन्त्वंहसः ॥ १ ॥
ब्रूमो राजानं वरुणं मित्रं विष्णुमथो भगम्।
अंशुं विवस्वन्तं ब्रूमस्ते नो मुञ्चन्त्वंहसः ॥ २ ॥
ब्रूमो देवं सवितारं धातारमुत पूषणम्।
त्वष्टारमग्रियं ब्रूमस्ते नो मुञ्चन्त्वंहसः ॥ ३ ॥
गन्धर्वाप्सरसो ब्रूमो अश्विना ब्रह्मणस्पतिम्।
अर्यमा नाम यो देवस्ते नो मुञ्चन्त्वंहसः ॥ ४ ॥
अहोरात्रे इदं ब्रूमः सूर्याचन्द्रमसावुभा।
विश्वानादित्यान्ब्रूमस्ते नो मुञ्चन्त्वंहसः ॥ ५ ॥
वातं ब्रूमः पर्जन्यमन्तरिक्षमथो दिशः।
आशाश्च सर्वा ब्रूमस्ते नो मुञ्चन्त्वंहसः ॥ ६ ॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मुञ्चन्तु मा शपथ्या दहोरात्रे अथो उषाः।
सोमो मा देवो मुञ्चतु यमाहुश्चन्द्रमा इति॥७॥
पार्थिवा दिव्याः पशव आरण्या उत ये मृगाः।
शकुन्तान्पक्षिणो ब्रूमस्ते नो मुञ्चन्त्वंहसः॥८॥
भवाशर्वाविदं ब्रूमो रुद्रं पशुपतिश्च यः।
इषूर्या एषां संविद्म ता नः सन्तु सदा शिवाः॥९॥
दिवं ब्रूमो नक्षत्राणि भूमिं यक्षाणि पर्वतान्।
समुद्रा नद्यो वेशन्तास्ते नो मुञ्चन्त्वंहसः॥१०॥
सप्तर्षीन्वा इदं ब्रूमोऽपो देवीः प्रजापतिम्।
पितॄन्यमश्रेष्ठान्ब्रूमस्ते नो मुञ्चन्त्वंहसः ॥११॥
ये देवा दिविषदो अन्तरिक्षसदश्च ये ।
पृथिव्यां शक्रा ये श्रितास्ते नो मुञ्चन्त्वंहसः॥१२॥
आदित्या रुद्रा वसवो दिवि देवा अथर्वाणः।
अङ्गिरसो मनीषिणस्ते नो मुञ्चन्त्वंहसः ॥१३॥
यज्ञं ब्रूमो यजमानमृचः सामानि भेषजा।
यजूंषि होत्रा ब्रूमस्ते नो मुञ्चन्त्वंहसः॥१४॥
पञ्च राज्यानि वीरुधां सोमश्रेष्ठानि ब्रूमः।
दर्भो भङ्गो यवः सहस्ते नो मुञ्चन्त्वंहसः॥१५॥
अरायान्ब्रूमो रक्षांसि सर्पान्पुण्यजनान्पितॄन्।
मृत्यूनेकशतं ब्रूमस्ते नो मुञ्चन्त्वंहसः॥१६॥
ऋतून्ब्रूम ऋतुपतीनार्तवानुत हायनान् ।
समाः संवत्सरान्मासांस्ते नो मुञ्चन्त्वंहसः॥१७॥
एत देवा दक्षिणतः पश्चात्प्राञ्च उदेत ।
पुरस्तादुत्तराच्छक्रा विश्वे देवाः समेत्य ते नो मुञ्चन्त्वंहसः॥१८॥
विश्वान्देवानिदं ब्रूमः सत्यसंधानृतावृधः।
विश्वाभिः पत्नीभिः सह ते नो मुञ्चन्त्वंहसः॥१९॥
सर्वान्देवानिदं ब्रूमः सत्यसंधानृतावृधः ।
सर्वाभिः पत्नीभिः सह ते नो मुञ्चन्त्वंहसः॥२०॥
भूतं ब्रूमो भूतपतिं भूतानामुत यो वशी।
भूतानि सर्वा संगत्य ते नो मुञ्चन्त्वंहसः॥२१॥

या देवीः पञ्च प्रदिशो ये देवा द्वादशर्तवः।
संवत्सरस्य ये दंष्ट्रास्ते नः सन्तु सदा शिवाः॥२२॥
यन्मातली रथक्रीतममृतं वेद भेषजम्।
तदिन्द्रो अप्सु प्रावेशयत्तदापो दत्त भेषजम्॥२३॥

अथ चतुर्थोऽनुवाकः [७] सप्तमं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा॥ देवता—उच्छिष्टः, अध्यात्मम्॥ छन्दः—१-५, ७-२०, २३-२७ अनुष्टुप्; ६ पुरउष्णिग्बार्हतपराऽनुष्टुप्; २१ स्वराडनुष्टुप्; २२ विराट्पथ्याबृहती॥

उच्छिष्टे नाम रूपं चोच्छिष्टे लोक आहितः।
उच्छिष्ट इन्द्रश्चाग्निश्च विश्वमन्तः समाहितम्॥१॥
उच्छिष्टे द्यावापृथिवी विश्वं भूतं समाहितम्।
आपः समुद्र उच्छिष्टे चन्द्रमा वात आहितः॥२॥
सन्नुच्छिष्टे असंश्चोभौ मृत्युर्वाजः प्रजापतिः।
लौक्या उच्छिष्ट आयत्ता व्रश्च द्रश्चापि श्रीर्मयि॥३॥
दृढो दृंहस्थिरो न्यो ब्रह्म विश्वसृजो दश।
नाभिमिव सर्वतश्चक्रमुच्छिष्टे देवताः श्रिताः॥४॥
ऋक्साम यजुरुच्छिष्ट उद्गीथः प्रस्तुतं स्तुतम्।
हिङ्कार उच्छिष्टे स्वरः साम्नो मेडिश्चि तन्मयि॥५॥
ऐन्द्राग्नं पावमानं महानाम्नीर्महाव्रतम् ।
उच्छिष्टे यज्ञस्याङ्गान्यन्तर्गर्भइव मातरि ॥६॥
राजसूयं वाजपेयमग्निष्टोमस्तदध्वरः ।
अर्काश्वमेधावुच्छिष्टे जीवबर्हिर्मदिन्तमः ॥७॥
अग्न्याधेयमथो दीक्षा कामप्रश्छन्दसा सह।
उत्सन्ना यज्ञाः सत्राण्युच्छिष्टेऽधि समाहिताः॥८॥
अग्निहोत्रं च श्रद्धा च वषट्कारो व्रतं तपः।
दक्षिणेष्टं पूर्तं चोच्छिष्टेऽधि समाहिताः॥९॥
एकरात्रो द्विरात्रः सद्यःक्रीः प्रक्रीरुक्थ्यः।
ओतं निहितमुच्छिष्टे यज्ञस्याणूनि विद्यया॥१०॥
चतूरात्रः पञ्चरात्रः षड्रात्रश्चोभयः सह ।
षोडशी सप्तरात्रश्चोच्छिष्टाज्जज्ञिरे सर्वे ये यज्ञा अमृते हिताः॥११॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्रतीहारो निधनं विश्वजिच्चाभिजिच्च यः।
साह्नातिरात्रावुच्छिष्टे द्वादशाहोऽपि तन्मयि॥ १२॥
सूनृता संनतिः क्षेमः स्वधोर्जामृतं सहः।
उच्छिष्टे सर्वे प्रत्यञ्चः कामाः कामेन तातृपुः॥ १३॥
नव भूमीः समुद्रा उच्छिष्टेऽधि श्रिता दिवः।
आ सूर्यो भात्युच्छिष्टेऽहोरात्रे अपि तन्मयि॥ १४॥
उपहव्यं विषूवन्तं ये च यज्ञा गुहा हिताः।
बिभर्ति भर्ता विश्वस्योच्छिष्टो जनितुः पिता॥ १५॥
पिता जनितुरुच्छिष्टोऽसोः पौत्रः पितामहः।
स क्षियति विश्वस्येशानो वृषा भूम्यामतिष्ठ्यः॥ १६॥
ऋतं सत्यं तपो राष्ट्रं श्रमो धर्मश्च कर्म च।
भूतं भविष्यदुच्छिष्टे वीर्यं लक्ष्मीर्बलं बले॥ १७॥
समृद्धिरोज आकूतिः क्षत्रं राष्ट्रं षडुर्व्यः।
संवत्सरोऽध्युच्छिष्ट इडा प्रैषा ग्रहा हविः॥ १८॥
चतुर्होतार आप्रियश्चातुर्मास्यानि नीविदः।
उच्छिष्टे यज्ञा होत्राः पशुबन्धास्तदिष्टयः॥ १९॥
अर्धमासाश्च मासाश्चार्तवा ऋतुभिः सह।
उच्छिष्टे घोषिणीरापः स्तनयित्नुः श्रुतिर्महो॥ २०॥
शर्करा सिकता अश्मान ओषधयो वीरुधस्तृणा।
अभ्राणि विद्युतो वर्षमुच्छिष्टे संश्रिता श्रिता॥ २१॥
राद्धिः प्राप्तिः समाप्तिर्व्याप्तिर्महो एधतुः।
अत्याप्तिरुच्छिष्टे भूतिश्चाहिता निहिता हिता॥ २२॥
यच्च प्राणति प्राणेन यच्च पश्यति चक्षुषा।
उच्छिष्टाजज्ञिरे सर्वे दिवि देवा दिविश्रितः॥ २३॥
ऋचः सामानि च्छन्दांसि पुराणं यजुषा सह।
उच्छिष्टाजज्ञिरे सर्वे दिवि देवा दिविश्रितः॥ २४॥
प्राणापानौ चक्षुः श्रोत्रमक्षितिश्च क्षितिश्च या।
उच्छिष्टाजज्ञिरे सर्वे दिवि देवा दिविश्रितः॥ २५॥
आनन्दा मोदाः प्रमुदोऽभीमोदमुदश्च ये।
उच्छिष्टाजज्ञिरे सर्वे दिवि देवा दिविश्रितः॥ २६॥

देवाः पितरो मनुष्या गन्धर्वाप्सरसश्च ये।
उच्छिष्टाजज्ञिरे सर्वे दिवि देवा दिविश्रितः॥ २७॥

[८] अष्टमं सूक्तम्

ऋषिः—कौरुपथिः॥ देवता—मन्युः, अध्यात्मम्॥ छन्दः—१-३२, ३४ अनुष्टुप्; ३३ पथ्यापङ्क्तिः॥

यन्मन्युर्जायामावहत्संकल्पस्य गृहादधि।
क आसं जन्याः के वराः क उ ज्येष्ठवरोऽभवत्॥ १॥
तपश्चैवास्तां कर्म चान्तर्महत्यर्णवे।
त आसं जन्यास्ते वरा ब्रह्म ज्येष्ठवरोऽभवत्॥ २॥
दश साकं जायन्त देवा देवेभ्यः पुरा।
यो वै तान्विद्यात्प्रत्यक्षं स वा अद्य महद्देवत्॥ ३॥
प्राणापानौ चक्षुः श्रोत्रमक्षितिश्च क्षितिश्च या।
व्यानोदानौ वाङ्मनस्ते वा आकूतिमावहन्॥ ४॥
अजाता आसन्नृतवोऽथो धाता बृहस्पतिः।
इन्द्राग्नी अश्विना तर्हि कं ते ज्येष्ठमुपासत॥ ५॥
तपश्चैवास्तां कर्म चान्तर्महत्यर्णवे।
तपो ह जज्ञे कर्मणस्तत्ते ज्येष्ठमुपासत॥ ६॥
येत आसीद्भूमिः पूर्वा यामद्धातय इद्विदुः।
यो वै तां विद्यान्नामथा स मन्येत पुराणवित्॥ ७॥
कुत इन्द्रः कुतः सोमः कुतो अग्निरजायत।
कुतस्त्वष्टा समभवत्कुतो धाताजायत॥ ८॥
इन्द्रादिन्द्रः सोमात्सोमो अग्नेरग्निरजायत।
त्वष्टा ह जज्ञे त्वष्टुर्धातुर्धाताजायत॥ ९॥
ये त आसन्दश जाता देवा देवेभ्यः पुरा।
पुत्रेभ्यो लोकं दत्त्वा कस्मिंस्ते लोक आसते॥ १०॥
यदा केशानस्थि स्नाव मांसं मज्जानमाभरत्।
शरीरं कृत्वा पादवत्कं लोकमनु प्राविशत्॥ ११॥
कुतः केशान्कुतः स्नाव कुतो अस्थीन्याभरत्।
अङ्गा पर्वाणि मज्जानं को मांसं कुत आभरत्॥ १२॥
संसिचो नाम ते देवा ये संभारान्त्समभरन्।
सर्वं संसिच्य मर्त्यं देवाः पुरुषमाविशन्॥ १३॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ऊरू पादावष्ठीवन्तौ शिरो हस्तावथो मुखम्।
पृष्ठीर्बर्जह्ये पार्श्वे कस्तत्समदधादृषिः ॥१४॥
शिरो हस्तावथो मुखं जिह्वां ग्रीवाश्च कीकसाः।
त्वचा प्रावृत्य सर्वं तत्संधा समदधान्मही ॥१५॥
यत्तच्छरीरमशयत्संधया संहितं महत् ।
येनेदमद्य रोचते को अस्मिन्वर्णमाभरत् ॥१६॥
सर्वे देवा उपाशिक्षन्तदजानाद्वधूः सती ।
ईशा वशस्य या जाया सास्मिन्वर्णमाभरत् ॥१७॥
यदा त्वष्टा व्यतृणत्पिता त्वष्टुर्य उत्तरः ।
गृहं कृत्वा मर्त्यं देवाः पुरुषमाविशन् ॥१८॥
स्वप्नो वै तन्द्रीर्निर्ऋतिः पाप्मानो नाम देवताः।
जरा खालत्यं पालित्यं शरीरमनु प्राविशन् ॥१९॥
स्तेयं दुष्कृतं वृजिनं सत्यं यज्ञो यशो बृहत्।
बलं च क्षत्रमोजश्च शरीरमनु प्राविशन् ॥२०॥
भूतिश्च वा अभूतिश्च रातयोऽरातयश्च याः ।
क्षुधश्च सर्वास्तृष्णाश्च शरीरमनु प्राविशन् ॥२१॥
निन्दाश्च वा अनिन्दाश्च यच्च हन्तेति नेति च।
शरीरं श्रद्धा दक्षिणाश्रद्धा चानु प्राविशन् ॥२२॥
विद्याश्च वा अविद्याश्च यच्चान्यदुपदेश्यम् ।
शरीरं ब्रह्म प्राविशदृचः सामाथो यजुः ॥२३॥
आनन्दा मोदाः प्रमुदोऽभीमोदमुदश्च ये ।
हसो नरिष्टा नृत्तानि शरीरमनु प्राविशन् ॥२४॥
आलापाश्च प्रलापाश्चाभीलापलपश्च ये ।
शरीरं सर्वे प्राविशन्नायुजः प्रयुजो युजः ॥२५॥
प्राणापानौ चक्षुः श्रोत्रमक्षितिश्च क्षितिश्च या।
व्यानोदानौ वाङ् मनः शरीरेण त ईयन्ते ॥२६॥
आशिषश्च प्रशिषश्च संशिषो विशिषश्च याः।
चित्तानि सर्वे संकल्पाः शरीरमनु प्राविशन् ॥२७॥
आस्रेयीश्च वास्तेयीश्च त्वरणाः कृपणाश्च याः।
गुह्याः शुक्रा स्थूला अपस्ता बीभत्सावसादयन् ॥२८॥

अस्थि कृत्वा समिधं तदष्टापो असादयन्।
रेतः कृत्वाज्यं देवाः पुरुषमाविशन् ॥२९॥
या आपो याश्च देवता या विराड् ब्रह्मणा सह।
शरीरं ब्रह्म प्राविशच्छरीरेऽधि प्रजापतिः ॥३०॥
सूर्यश्चक्षुर्वातः प्राणं पुरुषस्य वि भेजिरे ।
अथास्येतरमात्मानं देवाः प्रायच्छन्नग्नये ॥३१॥
तस्माद्वै विद्वान्पुरुषमिदं ब्रह्मेति मन्यते ।
सर्वा ह्यस्मिन्देवता गावो गोष्ठइवासते ॥३२॥
प्रथमेन प्रमारेण त्रेधा विष्वङ् वि गच्छति ।
अद एकेन गच्छत्यद एकेन गच्छतीहैकेन नि षेवते ॥३३॥
अप्सु स्तीमासु वृद्धासु शरीरमन्तरा हितम् ।
तस्मिञ्छवोऽध्यन्तरा तस्माच्छवोऽध्युच्यते ॥३४॥

अथ पञ्चमोऽनुवाकः [९] नवमं सूक्तम्

ऋषिः—काङ्कायनः॥ देवता—अर्बुदिः॥ छन्दः—१ सप्तपदाविराट्शक्वरी; २, ५-८, १०, १२, १३, १८-२१ अनुष्टुप्; ३ परोष्णिक्; ४ उष्णिग्बृहती-गर्भापरात्रिष्टुप् षट्पदातिजगती; ९, ११, १४, २३, २६ पथ्यापङ्क्तिः; १५, २२, २४, २५ सप्तपदाशक्वरी; १६ पञ्चपदाविराडुपरिष्टाज्ज्योति-स्त्रिष्टुप्; १७ त्रिपदागायत्री॥

ये बाहवो या इषवो धन्वनां वीर्याणि च ।
असीन्परशूनायुधं चित्ताकूतं च यद्धृदि ।
सर्वं तदर्बुदे त्वममित्रेभ्यो दृशे कुरूदारांश्च प्र दर्शय ॥१॥
उत्तिष्ठत सं नह्यध्वं मित्रा देवजना यूयम् ।
संदृष्टा गुप्ता वः सन्तु या नो मित्राण्यर्बुदे ॥२॥
उत्तिष्ठतमा रभेथामादानसंदानाभ्याम् ।
अमित्राणां सेना अभि धत्तमर्बुदे ॥३॥
अर्बुदिर्नाम यो देव ईशानश्च न्यर्बुदिः ।
याभ्यामन्तरिक्षमावृतमियं च पृथिवी मही ।
ताभ्यामिन्द्रमेदिभ्यामहं जितमन्वेमि सेनया ॥४॥
उत्तिष्ठ त्वं देवजनार्बुदे सेनया सह ।
भञ्जन्नमित्राणां सेनां भोगेभिः परि वारय ॥५॥
सप्त जातान्न्यर्बुद उदाराणां समीक्षयन् ।
तेभिष्ट्वमाज्ये हुते सर्वैरुत्तिष्ठ सेनया ॥६॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्रतिघ्नानाश्रुमुखी कृधुकर्णी च क्रोशतु ।
विकेशी पुरुषे हते रदिते अर्बुदे तव ॥ ७ ॥
संकर्षन्ती करूकरं मनसा पुत्रमिच्छन्ती ।
पतिं भ्रातरमात्स्वान्रदिते अर्बुदे तव ॥ ८ ॥
अलिक्लवा जाष्कमदा गृध्राः श्येनाः पतत्रिणः ।
ध्वाङ्क्षाः शकुनयस्तृप्यन्त्वमित्रेषु समीक्षयन्रदिते अर्बुदे तव ॥ ९ ॥
अथो सर्वं श्वापदं मक्षिका तृप्यतु क्रिमिः ।
पौरुषेयेऽधि कुणपे रदिते अर्बुदे तव ॥ १० ॥
आ गृह्णीतं सं बृहतं प्राणापानान्न्यर्बुदे ।
निवाशा घोषाः सं यन्त्वमित्रेषु समीक्षयन्रदिते अर्बुदे तव ॥ ११ ॥
उद्वेपय सं विजन्तां भियामित्रान्त्सं सृज ।
उरुग्राहैर्बाह्वङ्कैर्विध्यामित्रान्न्यर्बुदे ॥ १२ ॥
मुह्यन्त्वेषां बाहवश्चित्ताकूतं च यद्धृदि ।
मैषामुच्छेषि किं चन रदिते अर्बुदे तव ॥ १३ ॥
प्रतिघ्नानाः सं धावन्तूरः पटूरावाघ्नानाः ।
अघारिणीर्विकेश्यो रुदत्यः पुरुषे हते रदिते अर्बुदे तव ॥ १४ ॥
श्वन्वितीरप्सरसो रूपका उतार्बुदे ।
अन्तःपात्रे रेरिहतीं रिशां दुर्णिहितैषिणीम् ।
सर्वास्ता अर्बुदे त्वममित्रेभ्यो दृशे कुरूदारांश्च प्र दर्शय ॥ १५ ॥
खडूरेऽधिचङ्क्रमां खर्विकां खर्ववासिनीम् ।
य उदारा अन्तर्हिता गन्धर्वाप्सरसश्च ये। सर्पा इतरजना रक्षांसि ॥ १६ ॥
चतुर्दंष्ट्राञ्छ्यावदतः कुम्भमुष्काँ असृङ्मुखान्।
स्वभ्यसा ये चोद्भ्यसाः ॥ १७ ॥
उद्वेपय त्वमर्बुदेऽमित्राणाममूः सिचः ।
जयांश्च जिष्णुश्चामित्राँ जयतामिन्द्रमेदिनौ ॥ १८ ॥
प्रब्लीनो मृदितः शयां हतो३मित्रो न्यर्बुदे।
अग्निजिह्वा धूमशिखा जयन्तीर्यन्तु सेनया ॥ १९ ॥
तयार्बुदे प्रणुत्तानामिन्द्रो हन्तु वरंवरम् ।
अमित्राणां शचीपतिर्मामीषां मोचि कश्चन ॥ २० ॥
उत्कसन्तु हृदयान्यूर्ध्वः प्राण उदीषतु ।
शौष्कास्यमनु वर्तताममित्रान्मोत मित्रिणः ॥ २१ ॥

ये च धीरा ये चाधीराः पराञ्चो बधिराश्च ये ।
तमसा ये च तूपरा अथो बस्ताभिवासिनः ।
सर्वांस्ताँ अर्बुदे त्वममित्रेभ्यो दृशे कुरूदारांश्च प्र दर्शय ॥ २२ ॥
अर्बुदिश्च त्रिषन्धिश्चामित्रान्नो वि विध्यताम् ।
यथैषामिन्द्र वृत्रहन्हनाम शचीपतेऽमित्राणां सहस्रशः ॥ २३ ॥
वनस्पतीन्वानस्पत्यानोषधीरुत वीरुधः ।
गन्धर्वाप्सरसः सर्पान्देवान्पुण्यजनान्पितॄन् ।
सर्वांस्ताँ अर्बुदे त्वममित्रेभ्यो दृशे कुरूदारांश्च प्र दर्शय ॥ २४ ॥
ईशां वो मरुतो देव आदित्यो ब्रह्मणस्पतिः ।
ईशां व इन्द्रश्चाग्निश्च धाता मित्रः प्रजापतिः ।
ईशां व ऋषयश्चक्रुरमित्रेषु समीक्षयन्रदिते अर्बुदे तव ॥ २५ ॥
तेषां सर्वेषामीशाना उत्तिष्ठत सं नह्यध्वं मित्रा देवजना यूयम्।
इमं संग्रामं संजित्य यथालोकं वि तिष्ठध्वम् ॥ २६ ॥

[१०] दशमं सूक्तम्

ऋषिः—भृग्वङ्गिराः॥ देवता—त्रिषन्धिः॥ छन्दः—१ विराट्पथ्याबृहती; २ षट्पदा-त्रिष्टुब्गर्भाऽतिजगती; ३ विराडास्तारपङ्क्तिः; ४ विराडनुष्टुप्; ५-७, १०, ११, १४, १५, १८-२०, २३, २४ अनुष्टुप्; ८ विराट्त्रिष्टुप्; ९ पुरोविराड्-पुरस्ताज्ज्योतिस्त्रिष्टुप्; १२ पञ्चपदापथ्यापङ्क्तिः; १३ षट्पदाजगती; १६ षट्पदाककुम्मत्यनुष्टुप् त्रिष्टुब्गर्भाशक्वरी; १७ पथ्यापङ्क्तिः; २१ त्रिपदागायत्री; २२ विराट्पुरस्ताद्बृहती; २५ ककुभुष्णिक्; २६ प्रस्तारपङ्क्तिः॥

उत्तिष्ठत सं नह्यध्वमुदाराः केतुभिः सह ।
सर्पा इतरजना रक्षांस्यमित्राननु धावत ॥ १ ॥
ईशां वो वेद राज्यं त्रिषन्धे अरुणैः केतुभिः सह।
ये अन्तरिक्षे ये दिवि पृथिव्यां ये च मानवाः ।
त्रिषन्धेस्ते चेतसि दुर्णामान उपासताम् ॥ २ ॥
अयोमुखाः सूचीमुखा अथो विकङ्कतीमुखाः ।
क्रव्यादो वातरंहस आ सजन्त्वमित्रान्वज्रेण त्रिषन्धिना ॥ ३ ॥
अन्तर्धेहि जातवेद आदित्य कुणपं बहु ।
त्रिषन्धेरियं सेना सुहितास्तु मे वशे ॥ ४ ॥
उत्तिष्ठ त्वं देवजनार्बुदे सेनया सह ।
अयं बलिर्व आहुतस्त्रिषन्धेराहुतिः प्रिया ॥ ५ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

शितिपदी सं द्यतु शरव्येयं चतुष्पदी ।
कृत्येऽमित्रेभ्यो भव त्रिषन्धेः सह सेनया ॥ ६ ॥
धूमाक्षी सं पततु कृधुकर्णी च क्रोशतु ।
त्रिषन्धेः सेनया जिते अरुणाः सन्तु केतवः ॥ ७ ॥
अवायन्तां पक्षिणो ये वयांस्यन्तरिक्षे दिवि ये चरन्ति ।
श्वापदो मक्षिकाः सं रभन्तामामादो गृध्राः कुणपे रदन्ताम् ॥ ८ ॥
यामिन्द्रेण सन्धां समधत्था ब्रह्मणा च बृहस्पते ।
तयाहमिन्द्रसंधया सर्वान्देवानिह हुव इतो जयत मामुतः ॥ ९ ॥
बृहस्पतिराङ्गिरस ऋषयो ब्रह्मसंशिताः ।
असुरक्षयणं वधं त्रिषंधिं दिव्याश्रयन् ॥ १० ॥
येनासौ गुप्त आदित्य उभाविन्द्रश्च तिष्ठतः ।
त्रिषन्धिं देवा अभजन्तौजसे च बलाय च ॥ ११ ॥
सर्वाँल्लोकान्त्समजयन्देवा आहुत्यानया ।
बृहस्पतिराङ्गिरसो वज्रं यमसिञ्चतासुरक्षयणं वधम् ॥ १२ ॥
बृहस्पतिराङ्गिरसो वज्रं यमसिञ्चतासुरक्षयणं वधम् ।
तेनाहममूं सेनां नि लिम्पामि बृहस्पतेऽमित्रान्हन्म्योजसा ॥ १३ ॥
सर्वे देवा अत्यायन्ति ये अश्नन्ति वषट्कृतम् ।
इमां जुषध्वमाहुतिमितो जयत मामुतः ॥ १४ ॥
सर्वे देवा अत्यायन्तु त्रिषन्धेराहुतिः प्रिया ।
सन्धां महतीं रक्षत यथाग्रे असुरा जिताः ॥ १५ ॥
वायुरमित्राणामिष्वग्राण्याञ्चतु । इन्द्र एषां बाहून्प्रति भनक्तु मा शकन्प्रतिधामिषुम् । आदित्य एषामस्त्रं वि नाशयतु चन्द्रमा युतामगतस्य पन्थाम् ॥ १६ ॥
यदि प्रेयुर्देवपुरा ब्रह्म वर्मीणि चक्रिरे ।
तनूपानं परिपाणं कृण्वाना यदुपोचिरे सर्वं तदरसं कृधि ॥ १७ ॥
क्रव्यादानुवर्तयन्मृत्युना च पुरोहितम् ।
त्रिषन्धे प्रेहि सेनया जयामित्रान्प्र पद्यस्व ॥ १८ ॥
त्रिषन्धे तमसा त्वमुमित्रान्परि वारय ।
पृषदाज्यप्रणुत्तानां मामीषां मोचि कश्चन ॥ १९ ॥
शितिपदी सं पतत्वमित्राणामूः सिचः ।
मुह्यन्त्वद्यामूः सेना अमित्राणां न्यर्बुदे ॥ २० ॥

मूढा अमित्रा न्यर्बुदे जह्येषां वरंवरम् ।
अनया जहि सेनया ॥ २१ ॥
यश्च कवची यश्चाकवचोऽमित्रो यश्चाज्मनि ।
ज्यापाशैः कवचपाशैरज्मनाभिहतः शयाम् ॥ २२ ॥
ये वर्मिणो येऽवर्माणोऽमित्रा ये च वर्मिणः ।
सर्वांस्ताँ अर्बुदे हताञ्छ्वानोऽदन्तु भूम्याम् ॥ २३ ॥
ये रथिनो ये अरथा असादा ये च सादिनः ।
सर्वानदन्तु तान्हतान्गृध्राः श्येनाः पतत्रिणः ॥ २४ ॥
सहस्रकुणपा शेतामामित्री सेना समरे वधानाम् ।
विविद्धा कक्जाकृता ॥ २५ ॥
मर्माविधं रोरुवतं सुपर्णैरदन्तु दुश्चितं मृदितं शयानम् ।
य इमां प्रतीचीमाहुतिममित्रो नो युयुत्सति ॥ २६ ॥
यां देवा अनुतिष्ठन्ति यस्या नास्ति विराधनम् ।
तयेन्द्रो हन्तु वृत्रहा वज्रेण त्रिषन्धिना ॥ २७ ॥

इति पञ्चविंशः प्रपाठकः ॥

॥ इत्येकादशं काण्डम् ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अथ द्वादशं काण्डम्॥

अथ षड्विंशः प्रपाठकः॥

अथ प्रथमोऽनुवाकः [१] प्रथमं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा॥ देवता—भूमिः॥ छन्दः—१, ३, १७, २९, ३१, ५५, ६०, त्रिष्टुप्; २ भुरिक्त्रिष्टुप्; ४-६, १०, ३८ षट्पदाजगती; ७ प्रस्तारपङ्क्तिः; ८, ११ षट्पदाविराडष्टिः; ९ परानुष्टुप्त्रिष्टुप्; १२, १३, १५, ३७ पञ्चपदाशक्वरी; १४ महाबृहती; १६, २१ साम्नीत्रिष्टुप्; १८ षट्पदात्रिष्टुबनुष्टुब्गर्भाति-शक्वरी; १९ उरोबृहती; २० विराडुरोबृहती; २२ षट्पदाविराडति-जगती; २३ पञ्चपदाविराडतिजगती; २४ पञ्चपदानुष्टुब्गर्भा-जगती; २५ सप्तपदोष्णिगनुष्टुब्गर्भाशक्वरी; २६, २७, २८, ३३, ३५, ३९, ४०, ५०, ५४, ५६, ५९, ६३ अनुष्टुप्; ५३ पुरोबार्हतानुष्टुप्; ३० [त्रिपदा] विराड्गायत्री; ३२ पुरस्ताज्ज्योतिस्त्रिष्टुप्; ३४ षट्पदात्रिष्टुब्बृहतीगर्भातिजगती; ३६ विपरीतपादलक्ष्मापङ्क्तिः; ४१ षट्पदाककुम्मतीशक्वरी; ४२ स्वराडनुष्टुप्; ४३ विराडास्तारपङ्क्तिः; ४४, ४५, ४९ जगती; ४६ षट्पदाऽनुष्टुब्गर्भापरा-शक्वरी; ४७ षट्पदोष्णिगनुष्टुब्गर्भापरातिशक्वरी; ४८ पुरोऽनुष्टुप्त्रिष्टुप्; ५१ षट्पदाऽनुष्टुब्गर्भाककुम्मतीशक्वरी; ५२ पञ्चपदाऽनुष्टुब्गर्भा-परातिजगती; ५७ पुरोतिजागताजगती; ५८ पुरस्ताद्बृहती; ६१ पुरोबार्हतात्रिष्टुप्; ६२ पराविराट्त्रिष्टुप्॥

सत्यं बृहदृतमुग्रं दीक्षा तपो ब्रह्म यज्ञः पृथिवीं धारयन्ति।
सा नो भूतस्य भव्यस्य पत्न्युरुं लोकं पृथिवी नः कृणोतु॥ १॥

असंबाधं मध्यतो मानवानां यस्या उद्वतः प्रवतः समं बहु।
नानावीर्या ओषधीर्या बिभर्ति पृथिवी नः प्रथतां राध्यतां नः॥ २॥

यस्यां समुद्र उत सिन्धुरापो यस्यामन्नं कृष्टयः संबभूवुः।
यस्यामिदं जिन्वति प्राणदेजत्सा नो भूमिः पूर्वपेये दधातु॥ ३॥

यस्याश्चतस्रः प्रदिशः पृथिव्या यस्यामन्नं कृष्टयः संबभूवुः।
या बिभर्ति बहुधा प्राणदेजत्सा नो भूमिर्गोष्वप्यन्ने दधातु॥ ४॥

यस्यां पूर्वे पूर्वजना विचक्रिरे यस्यां देवा असुरानभ्यवर्तयन्।
गवामश्वानां वयसश्च विष्ठा भगं वर्चः पृथिवी नो दधातु॥ ५॥

विश्वंभरा वसुधानी प्रतिष्ठा हिरण्यवक्षा जगतो निवेशनी।
वैश्वानरं बिभ्रती भूमिरग्निमिन्द्रऋषभा द्रविणे नो दधातु॥ ६॥

यां रक्षन्त्यस्वप्ना विश्वदानीं देवा भूमिं पृथिवीमप्रमादम्।
सा नो मधु प्रियं दुहामथो उक्षतु वर्चसा॥ ७॥

यार्णवेधि सलिलमग्र आसीद्यां मायाभिरन्वचरन्मनीषिणः।
यस्या हृदयं परमे व्योमन्त्सत्येनावृतममृतं पृथिव्याः।
सा नो भूमिस्त्विषिं बलं राष्ट्रे दधातूत्तमे॥ ८॥

यस्यामापः परिचराः समानीरहोरात्रे अप्रमादं क्षरन्ति।
सा नो भूमिर्भूरिधारा पयो दुहामथो उक्षतु वर्चसा॥ ९॥

यामश्विनावमिमातां विष्णुर्यस्यां विचक्रमे।
इन्द्रो यां चक्र आत्मनेऽनमित्रां शचीपतिः।
सा नो भूमिर्वि सृजतां माता पुत्राय मे पयः॥ १०॥

गिरयस्ते पर्वता हिमवन्तोऽरण्यं ते पृथिवि स्योनमस्तु।
बभ्रुं कृष्णां रोहिणीं विश्वरूपां ध्रुवां भूमिं पृथिवीमिन्द्रगुप्ताम्।
अजीतोऽहतो अक्षतोऽध्यष्ठां पृथिवीमहम्॥ ११॥

यत्ते मध्यं पृथिवि यच्च नभ्यं यास्त ऊर्जस्तन्वः संबभूवुः।
तासु नो धेह्यभि नः पवस्व माता भूमिः पुत्रो अहं पृथिव्याः।
पर्जन्यः पिता स उ नः पिपर्तु॥ १२॥

यस्यां वेदिं परिगृह्णन्ति भूम्यां यस्यां यज्ञं तन्वते विश्वकर्माणः।
यस्यां मीयन्ते स्वरवः पृथिव्यामूर्ध्वाः शुक्रा आहुत्याः पुरस्तात्।
सा नो भूमिर्वर्धयद्वर्धमाना॥ १३॥

यो नो द्वेषत्पृथिवि यः पृतन्याद्योऽभिदासान्मनसा यो वधेन।
तं नो भूमे रन्धय पूर्वकृत्वरि॥ १४॥

त्वज्जातास्त्वयि चरन्ति मर्त्यास्त्वं बिभर्षि द्विपदस्त्वं चतुष्पदः।
तवेमे पृथिवि पञ्च मानवा येभ्यो ज्योतिरमृतं मर्त्येभ्य
उद्यन्त्सूर्यो रश्मिभिरातनोति॥ १५॥

ता नः प्रजाः सं दुहतां समग्रा वाचो मधु पृथिवि धेहि मह्यम्॥ १६॥

विश्वस्वं मातरमोषधीनां ध्रुवां भूमिं पृथिवीं धर्मणा धृताम्।
शिवां स्योनामनु चरेम विश्वहा॥ १७॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

महत्सधस्थं महती बभूविथ महान्वेग एजथुर्वेपथुष्टे ।
महांस्त्वेन्द्रो रक्षत्यप्रमादम् ।
सा नो भूमे प्र रोचय हिरण्यस्येव संदृशि मा नो द्विक्षत कश्चन ॥ १८ ॥
अग्निर्भूम्यामोषधीष्वग्निमापो बिभ्रत्यग्निरश्मसु ।
अग्निरन्तः पुरुषेषु गोष्वश्वेष्वग्नयः ॥ १९ ॥
अग्निर्दिव आ तपत्यग्नेर्देवस्योर्वन्तरिक्षम् ।
अग्निं मर्तास इन्धते हव्यवाहं घृतप्रियम् ॥ २० ॥
अग्निर्वासाः पृथिव्यै सितज्रूस्विषीमन्तं संशितं मा कृणोतु ॥ २१ ॥
भूम्यां देवेभ्यो ददति यज्ञं हव्यमरंकृतम् ।
भूम्यां मनुष्या जीवन्ति स्वधयान्नेन मर्त्याः ।
सा नो भूमिः प्राणमायुर्दधातु जरदष्टिं मा पृथिवी कृणोतु ॥ २२ ॥
यस्ते गन्धः पृथिवि संबभूव यं बिभ्रत्योषधयो यमापः । यं गन्धर्वा
अप्सरसश्च भेजिरे तेन मा सुरभिं कृणु मा नो द्विक्षत कश्चन ॥ २३ ॥
यस्ते गन्धः पुष्करमाविवेश यं संजभ्रुः सूर्यायै विवाहे ।
अमर्त्याः पृथिवि गन्धमग्रे तेन मा सुरभिं कृणु मा नो द्विक्षत कश्चन ॥ २४ ॥
यस्ते गन्धः पुरुषेषु स्त्रीषु पुंसु भगो रुचिः ।
यो अश्वेषु वीरेषु यो मृगेषूत हस्तिषु ।
कन्यायां यां वर्चो यद्भूमे तेनास्मां अपि सं सृज मा नो द्विक्षत कश्चन ॥ २५ ॥
शिला भूमिरश्मा पांसुः सा भूमिः संधृता धृता ।
तस्यै हिरण्यवक्षसे पृथिव्या अकरं नमः ॥ २६ ॥
यस्यां वृक्षा वानस्पत्या ध्रुवास्तिष्ठन्ति विश्वहा ।
पृथिवीं विश्वधायसं धृतामच्छावदामसि ॥ २७ ॥
उदीराणा उतासीनास्तिष्ठन्तः प्रक्रामन्तः ।
पद्भ्यां दक्षिणसव्याभ्यां मा व्यथिष्महि भूम्याम् ॥ २८ ॥
विमृग्वरीं पृथिवीमा वदामि क्षमां भूमिं ब्रह्मणा वावृधानाम् ।
ऊर्जं पुष्टं बिभ्रतीमन्नभागं घृतं त्वाभि नि षीदेम भूमे ॥ २९ ॥
शुद्धा न आपस्तन्वे क्षरन्तु यो नः सेदुरप्रिये तं नि दध्मः ।
पवित्रेण पृथिवि मोत्पुनामि ॥ ३० ॥
यास्ते प्राचीः प्रदिशो या उदीचीर्यास्ते भूमे अधराद्याश्च पश्चात् ।
स्योनास्ता मह्यं चरते भवन्तु मा नि पप्तं भुवने शिश्रियाणः ॥ ३१ ॥
मा नः पश्चान्मा पुरस्तान्नुदिष्ठा मोत्तरादधरादुत ।
स्वस्ति भूमे नो भव मा विदन्परिपन्थिनो वरीयो यावया वधम् ॥ ३२ ॥
यावत्तेऽभि विपश्यामि भूमे सूर्येण मेदिना ।
तावन्मे चक्षुर्मा मेष्टोत्तरामुत्तरां समाम् ॥ ३३ ॥
यच्छयानः पर्यावर्ते दक्षिणं सव्यमभि भूमे पार्श्वम् ।
उत्तानास्त्वा प्रतीचीं यत्पृष्टीभिरधिशेमहे ।
मा हिंसीस्तत्र नो भूमे सर्वस्य प्रतिशीवरि ॥ ३४ ॥
यत्ते भूमे विखनामि क्षिप्रं तदपि रोहतु ।
मा ते मर्म विमृग्वरि मा ते हृदयमर्पिपम् ॥ ३५ ॥
ग्रीष्मस्ते भूमे वर्षाणि शरद्धेमन्तः शिशिरो वसन्तः ।
ऋतवस्ते विहिता हायनीरहोरात्रे पृथिवि नो दुहाताम् ॥ ३६ ॥
यास्ते सर्पं विजमाना विमृग्वरी यस्यामासन्नग्नयो ये अप्स्वन्तः ।
परा दस्यून्ददती देवपीयूनिन्द्रं वृणाना पृथिवी न वृत्रम् ।
शक्राय दध्रे वृषभाय वृष्णे ॥ ३७ ॥
यस्यां सदोहविर्धाने यूपो यस्यां निमीयते ।
ब्रह्माणो यस्यामर्चन्त्यृग्भिः साम्ना यजुर्विदः ।
युन्यन्ते यस्यामृत्विजः सोममिन्द्राय पातवे ॥ ३८ ॥
यस्यां पूर्वे भूतकृत ऋषयो गा उदानृचुः ।
सप्त सत्रेण वेधसो यज्ञेन तपसा सह ॥ ३९ ॥
सा नो भूमिरा दिशतु यद्धनं कामयामहे ।
भगो अनुप्रयुङ्क्तामिन्द्र एतु पुरोगवः ॥ ४० ॥
यस्यां गायन्ति नृत्यन्ति भूम्यां मर्त्या व्यैलबाः ।
युध्यन्ते यस्यामाक्रन्दो यस्यां वदति दुन्दुभिः ।
सा नो भूमिः प्र णुदतां सपत्नानसपत्नं मा पृथिवी कृणोतु ॥ ४१ ॥
यस्यामन्नं व्रीहियवौ यस्या इमाः पञ्च कृष्टयः ।
भूम्यै पर्जन्यपत्न्यै नमोऽस्तु वर्षमेदसे ॥ ४२ ॥
यस्याः पुरो देवकृताः क्षेत्रे यस्या विकुर्वते ।
प्रजापतिः पृथिवीं विश्वगर्भामाशामाशां रण्यां नः कृणोतु ॥ ४३ ॥
निधिं बिभ्रती बहुधा गुहा वसु मणिं हिरण्यं पृथिवी ददातु मे ।
वसूनि नो वसुदा रासमाना देवी दधातु सुमनस्यमाना ॥ ४४ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जनं बिभ्रती बहुधा विवाचसं नानाधर्माणं पृथिवी यथौकसम्।
सहस्रं धारा द्रविणस्य मे दुहां ध्रुवेव धेनुरनपस्फुरन्ती ॥४५॥
यस्ते सर्पो वृश्चिकस्तृष्टदंशमा हेमन्तजम्भो भृमलो गुहा शये।
क्रिमिर्जिन्वत्पृथिवि यद्यदेजसि प्रावृषि तन्नः सर्पन्मोप
सृपद्यच्छिवं तेन नो मृड ॥४६॥
ये ते पन्थानो बहवो जनायना रथस्य वर्त्मानसश्च यातवे ।
यैः संचरन्त्युभये भद्रपापास्तं पन्थानं जयेमानमित्रमतस्करं
यच्छिवं तेन नो मृड ॥४७॥
मल्वं बिभ्रती गुरुभृद्भद्रपापस्य निधनं तितिक्षुः ।
वराहेण पृथिवी संविदाना सूकराय वि जिहीते मृगाय ॥४८॥
ये त आरण्याः पशवो मृगा वने हिताः सिंहा व्याघ्राः पुरुषादश्चरन्ति।
उलं वृकं पृथिवि दुच्छुनामित ऋक्षीकां रक्षो अप बाधयास्मत् ॥४९॥
ये गन्धर्वा अप्सरसो ये चारायाः किमीदिनः ।
पिशाचान्त्सर्वा रक्षांसि तानस्मद्भूमे यावय ॥५०॥
यां द्विपादः पक्षिणः संपतन्ति हंसाः सुपर्णाः शकुना वयांसि ।
यस्यां वातो मातरिश्वेयते रजांसि कृण्वंश्च्यावयंश्च वृक्षान् ।
वातस्य प्रवामुपवामनु वात्यर्चिः ॥५१॥
यस्यां कृष्णमरुणं च संहिते अहोरात्रे विहिते भूम्यामधि ।
वर्षेण भूमिः पृथिवी वृतावृता सा नो दधातु भद्रया प्रिये धामन्निधामनि ॥५२॥
द्यौश्च मे इदं पृथिवी चान्तरिक्षं च मे व्यचः ।
अग्निः सूर्य आपो मेधां विश्वे देवाश्च सं ददुः ॥५३॥
अहमस्मि सहमान उत्तरो नाम भूम्याम् ।
अभीषाडस्मि विश्वाषाडाशामाशां विषासहिः ॥५४॥
अदो यदेवि प्रथमाना पुरस्ताद्देवैरुक्ता व्यसर्पो महित्वम् ।
आ त्वा सुभूतमविशत्तदानीमकल्पयथाः प्रदिशश्चतस्रः ॥५५॥
ये ग्रामा यदरण्यं याः सभा अधि भूम्याम् ।
ये संग्रामाः समितयस्तेषु चारु वदेम ते ॥५६॥
अश्वंइव रजो दुधुवे वि ताञ्जनान्य आक्षियन्पृथिवीं यादजायत।
मन्द्राग्रेत्वरी भुवनस्य गोपा वनस्पतीनां गृभिरोषधीनाम् ।
यद्वदामि मधुमत्तद्वदामि यदीक्षे तद्वनन्ति मा
त्विषीमानस्मि जूतिमानवान्यान्हन्मि दोधतः ॥५७॥
शन्तिवा सुरभिः स्योना कीलालोघ्नी पयस्वती ।
भूमिरधि ब्रवीतु मे पृथिवी पयसा सह ॥५९॥
यामन्वैच्छद्ध्रुविषा विश्वकर्मान्तरर्णवे रजसि प्रविष्टाम् ।
भुजिष्यं पात्रं निहितं गुहा यदाविर्भोगे अभवन्मातृमद्भ्यः ॥६०॥
त्वमस्यावपनी जनानामदितिः कामदुघा पप्रथाना ।
यत्त ऊनं तत्त आ पूरयाति प्रजापतिः प्रथमजा ऋतस्य ॥६१॥
उपस्थास्ते अनमीवा अयक्ष्मा अस्मभ्यं सन्तु पृथिवि प्रसूताः ।
दीर्घं न आयुः प्रतिबुध्यमाना वयं तुभ्यं बलिहृतः स्याम ॥६२॥
भूमे मातर्नि धेहि मा भद्रया सुप्रतिष्ठितम् ।
संविदाना दिवा कवे श्रियां मा धेहि भूत्याम् ॥६३॥

अथ द्वितीयोऽनुवाकः [२] द्वितीयं सूक्तम्

ऋषिः—भृगुः॥ देवता—अग्निः; मन्त्रोक्ताः; २१-३३ मृत्युः॥ छन्दः—१, ४, १०, ११, २१-३३, ५३ त्रिष्टुप्; २, ५, १२-१५, १७, १९, २०, ३४-३६, ३८, ३९, ४१, ४३, ५१, ५४ अनुष्टुप्; ३ आस्तारपङ्क्तिः; ६ भुरिगार्षीपङ्क्तिः; ७, ४५ जगती; ८, ४८, ४९ भुरिक्त्रिष्टुप्; ९ अनुष्टुब्गर्भाविपरीतपादलक्ष्मापङ्क्तिः; १६ ककुम्मतीपराबृहत्यनुष्टुप्; १८ निचृदनुष्टुप्; ३७ पुरस्तादबृहती; ४० पुरस्तात्ककुम्मत्यनुष्टुप्; ४२ त्रिपदाभुरिगार्चीगायत्री; ४४ द्विपदाऽर्चीबृहती; ४६ द्विपदासाम्नीत्रिष्टुप्; (४२, ४४, ४६ एकावसाना); ४७ पञ्चपदाबार्हतवैराजगर्भाजगती; ५० उपरिष्टाद्बिराड्बृहती; ५२ पुरस्ताद्बिराड्बृहती; ५५ बृहतीगर्भात्रिष्टुप्॥

नुदमा रोह न ते अत्र लोक इदं सीसं भागधेयं त एहि ।
यो गोषु यक्ष्मः पुरुषेषु यक्ष्मस्तेन त्वं साकमधराङ् परेहि ॥१॥
अघशंसदुःशंसाभ्यां करेणानुकरेण च ।
यक्ष्मं च सर्वं तेनेतो मृत्युं च निरजामसि ॥२॥
निरितो मृत्युं निर्ऋतिं निररातिमजामसि ।
यो नो द्वेष्टि तमद्य्यग्ने अक्रव्याद्यमुं द्विष्मस्तमु ते प्र सुवामसि ॥३॥
यद्यग्निः क्रव्याद्यदि वा व्याघ्र इमं गोष्ठं प्रविवेशान्योकाः ।
तं माषाज्यं कृत्वा प्र हिणोमि दूरं स गच्छत्वप्सुषदोऽप्यग्नीन् ॥४॥
यत्त्वा क्रुद्धाः प्रचक्रुर्मन्युना पुरुषे मृते ।
सुकल्पमग्ने तत्तवा पुनस्त्वोद्दीपयामसि ॥५॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पुनस्त्वादित्या रुद्रा वसवः पुनर्ब्रह्मा वसुनीतिरग्ने ।
पुनस्त्वा ब्रह्मणस्पतिराधाद्दीर्घायुत्वाय शतशारदाय ॥ ६ ॥
यो अग्निः क्रव्यात्प्रविवेश नो गृहमिमं पश्यन्नितरं जातवेदसम्।
तं हरामि पितृयज्ञाय दूरं स धर्ममिन्धां परमे सधस्थे ॥ ७ ॥
क्रव्यादमग्निं प्र हिणोमि दूरं यमराज्ञो गच्छतु रिप्रवाहः ।
इहायमितरो जातवेदा देवो देवेभ्यो हव्यं वहतु प्रजानन् ॥ ८ ॥
क्रव्यादमग्निमिषितो हरामि जनान्दृंहन्तं वज्रेण मृत्युम् ।
नि तं शास्मि गार्हपत्येन विद्वान्यिर्तृणां लोकेऽपि भागो अस्तु ॥ ९ ॥
क्रव्यादमग्निं शंशमानमुक्थ्यं प्र हिणोमि पथिभिः पितृयाणैः।
मा देवयानैः पुनरा गा अत्रैवैधि पितृषु जागृहि त्वम् ॥ १० ॥
समिन्धते संकसुकं स्वस्तये शुद्धा भवन्तः शुचयः पावकाः।
जहाति रिप्रमत्येन एति समिद्धो अग्निः सुपुना पुनाति ॥ ११ ॥
देवो अग्निः संकसुको दिवस्पृष्ठान्यारुहत् ।
मुच्यमानो निरेणसोऽमोगस्माँ अशस्त्याः ॥ १२ ॥
अस्मिन्वयं संकसुके अग्नौ रिप्राणि मृज्महे ।
अभूम यज्ञियाः शुद्धाः प्र ण आयूंषि तारिषत् ॥ १३ ॥
संकसुको विकसुको निर्ऋथो यश्च निस्वरः।
ते ते यक्ष्मं सवेदसो दूराद्दूरमनीनशन् ॥ १४ ॥
यो नो अश्वेषु वीरेषु यो नो गोष्वजाविषु ।
क्रव्यादं निर्णुदामसि यो अग्निर्जनयोपनः ॥ १५ ॥
अन्येभ्यस्त्वा पुरुषेभ्यो गोभ्यो अश्वेभ्यस्त्वा।
निः क्रव्यादं नुदामसि यो अग्निर्जीवितयोपनः ॥ १६ ॥
यस्मिन्देवा अमृजत यस्मिन्मनुष्या उत ।
तस्मिन्घृतस्तावौ मृष्ट्वा त्वमग्ने दिवं रुह ॥ १७ ॥
समिद्धो अग्न आहुत स नो माभ्यपक्रमीः ।
अत्रैव दीदिहि द्यवि ज्योक्च सूर्यं दृशे ॥ १८ ॥
सीसे मृड्ढ्वं नडे मृंड्ढ्वमग्नौ संकसुके च यत्।
अथो अव्यां रामायां शीर्षक्तिमुपबर्हणे ॥ १९ ॥
सीसे मलं सादयित्वा शीर्षक्तिमुपबर्हणे ।
अव्यामसिक्न्यां मृष्ट्वा शुद्धा भवत यज्ञियाः ॥ २० ॥
परं मृत्यो अनु परेहि पन्थां यस्ते एष इतरो देवयानात्।
चक्षुष्मते शृण्वते ते ब्रवीमीहेमे वीरा बहवो भवन्तु ॥ २१ ॥
इमे जीवा वि मृतैराववृत्रन्नभूद्भद्रा देवहूतिर्नो अद्य ।
प्राञ्चो अगाम नृतये हसाय सुवीरासो विदथमा वदेम ॥ २२ ॥
इमं जीवेभ्यः परिधिं दधामि मैषां नु गादपरो अर्थमेतम्।
शतं जीवन्तः शरदः पुरूचीस्तिरो मृत्युं दधतां पर्वतेन ॥ २३ ॥
आ रोहतायुर्जरसं वृणाना अनुपूर्वं यतमाना यति स्थ ।
तान्वस्त्वष्टा सुजनिमा सजोषाः सर्वमायुर्नयतु जीवनाय ॥ २४ ॥
यथाहान्यनुपूर्वं भवन्ति यथर्तवं ऋतुभिर्यन्ति साकम् ।
यथा न पूर्वमपरो जहात्येवा धातरायूंषि कल्पयैषाम् ॥ २५ ॥
अश्मन्वती रीयते सं रभध्वं वीरयध्वं प्र तरता सखायः।
अत्रा जहीत ये असन्दुरेवा अनमीवानुत्तरेमाभि वाजान् ॥ २६ ॥
उत्तिष्ठता प्र तरहता सखायोऽश्मन्वती नदी स्यन्दत इयम्।
अत्रा जहीत ये असन्नशिवाः शिवान्त्स्योनानुत्तरेमाभि वाजान् ॥ २७ ॥
वैश्वदेवीं वर्चस आ रभध्वं शुद्धा भवन्तः शुचयः पावकाः।
अतिक्रामन्तो दुरिता पदानि शतं हिमाः सर्ववीरा मदेम ॥ २८ ॥
उदीचीनैः पथिभिर्वायुमद्भिरतिक्रामन्तोऽवरान्परेभिः ।
त्रिः सप्त कृत्व ऋषयः परैता मृत्युं प्रत्यौहन्पदयोपनेन ॥ २९ ॥
मृत्योः पदं योपयन्त एत द्राघीय आयुः प्रतरं दधानाः।
आसीना मृत्युं नुदता सधस्थेऽथ जीवासो विदथमा वदेम ॥ ३० ॥
इमा नारीरविधवाः सुपत्नीराञ्जनेन सर्पिषा सं स्पृशन्ताम्।
अनश्रवो अनमीवाः सुरत्ना आ रोहन्तु जनयो योनिमग्रे ॥ ३१ ॥
व्याकरोमि हविषाहमेतौ तौ ब्रह्मणा व्यहं कल्पयामि।
स्वधां पितृभ्यो अजरां कृणोमि दीर्घेणायुषा समिमान्त्सृजामि ॥ ३२ ॥
यो नो अग्निः पितरो हृत्स्वन्तरविवेशामृतो मर्त्येषु।
मय्यहं तं परि गृह्णामि देवं मा सो अस्मान्द्विक्षत मा वयं तम् ॥ ३३ ॥
अपावृत्य गार्हपत्यात्क्रव्यादा प्रेत दक्षिणा ।
प्रियं पितृभ्य आत्मने ब्रह्मभ्यः कृणुता प्रियम् ॥ ३४ ॥
द्विभागधनमादाय प्र क्षिणात्यवर्त्या ।
अग्निः पुत्रस्य ज्येष्ठस्य यः क्रव्यादनिराहितः ॥ ३५ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

यत्कृषते यद्वनुते यच्च वस्नेन विन्दते ।
सर्वं मर्त्यस्य तन्नास्ति क्रव्याच्चेदनिराहितः ॥३६॥
अयज्ञियो हतवर्चा भवति नैनेन हविरत्तवे ।
छिनत्ति कृष्या गोर्धनाद्यं क्रव्यादनुवर्तते ॥३७॥
मुहुर्गृध्यैः प्र वदत्यार्तिं मर्त्यो नीत्य ।
क्रव्याद्यानग्निरन्तिकादनुविद्वान्वितावति ॥३८॥
ग्राह्या गृहाः सं सृज्यन्ते स्त्रिया यन्म्रियते पतिः ।
ब्रह्मैव विद्वानेष्यो३ यः क्रव्यादं निरादधत् ॥३९॥
यद्रिप्रं शमलं चकृम यच्च दुष्कृतम् ।
आपो मा तस्माच्छुम्भन्त्वग्नेः संकसुकाच्च यत् ॥४०॥
ता अधरादुदीचीराववृत्रन्प्रजानतीः पथिभिर्देवयानैः ।
पर्वतस्य वृषभस्याधि पृष्ठे नवाश्चरन्ति सरितः पुराणीः ॥४१॥
अग्ने अक्रव्यान्निः क्रव्यादं नुदा देवयजनं वह ॥४२॥
इमं क्रव्यादा विवेशायं क्रव्यादमन्वगात् ।
व्याघ्रौ कृत्वा नानानं तं हरामि शिवापरम् ॥४३॥
अन्तर्धिर्देवानां परिधिर्मनुष्याणामग्निर्गार्हपत्य उभयानन्तरा श्रितः ॥४४॥
जीवानामायुः प्र तिर त्वमग्ने पितॄणां लोकमपि गच्छन्तु ये मृताः ।
सुगार्हपत्यो वितपन्नरातिमुषामुषां श्रेयसीं धेह्यस्मै ॥४५॥
सर्वानग्ने सहमानः सपत्नानैषामूर्जं रयिमस्मासु धेहि ॥४६॥
इममिन्द्रं वह्निं पप्रिमन्वारभध्वं स वो निर्वक्षद्दुरितादवद्यात् ।
तेनाप हत शरुमापतन्तं तेन रुद्रस्य परि पातास्ताम् ॥४७॥
अनड्वाहं प्लवमन्वारभध्वं स वो निर्वक्षद्दुरितादवद्यात् ।
आ रोहत सवितुर्नावमेतां षड्भिरुर्वीभिरमतिं तरेम ॥४८॥
अहोरात्रे अन्वेषि बिभ्रत्क्षेम्यस्तिष्ठन्प्रतरणः सुवीरः ।
अनातुरान्त्सुमनसस्तल्प बिभ्रज्ज्योगेव नः पुरुषगन्धिरेधि ॥४९॥
ते देवेभ्य आ वृश्चन्ते पापं जीवन्ति सर्वदा ।
क्रव्याद्यानग्निरन्तिकादश्वइवानुवपते नडम् ॥५०॥
येऽश्रद्धा धनकाम्या क्रव्यादा समासते ।
ते वा अन्येषां कुम्भीं पर्यादधति सर्वदा ॥५१॥
प्रेव पिपतिषति मनसा मुहुरा वर्तते पुनः ।
क्रव्याद्यानग्निरन्तिकादनुविद्वान्वितावति ॥५२॥
अविः कृष्णा भागधेयं पशूनां सीसं क्रव्यादपि चन्द्रं त आहुः ।
माषाः पिष्टा भागधेयं ते हव्यमरण्यान्या गह्वरं सचस्व ॥५३॥
इषीकां जरतीमिष्ट्वा तिल्पिञ्जं दण्डनं नडम् ।
तमिन्द्र इध्म कृत्वा यमस्याग्निं निरादधौ ॥५४॥
प्रत्यञ्चमर्कं प्रत्यर्पयित्वा प्रविद्वान्पन्थां वि ह्या विवेश ।
परामीषामसून्दिदेश दीर्घेणायुषा समिमान्त्सृजामि ॥५५॥

अथ तृतीयोऽनुवाकः [३] तृतीयं सूक्तम्

ऋषिः—यमः॥ देवता—स्वर्गः; ओदनः; अग्निः॥ छन्दः—१, ४२, ४३, ४७ भुरिक्त्रिष्टुप्; २-७, ९-११, १४-१६, १८-२०, २३, २५-३३, ३५-३८, ४०, ४१, ४५, ४६, ४८-५४ त्रिष्टुप्; ८, १२, २१, २२, २४ जगती; १३, १७ स्वराडार्षीपङ्क्तिः; ३४ विराड्गर्भा-त्रिष्टुप्; ३९ अनुष्टुब्गर्भात्रिष्टुप्; ४४ पराबृहतीत्रिष्टुप्; ५५-६० सप्तपदाः शङ्कुमत्यतिजागतशाक्वराति-शाक्वरधार्त्यगर्भाअतिधृति; [५५, ५७-६० कृतिः; ५६ विराट्कृति]॥

पुमान्पुंसोऽधि तिष्ठ चर्मेहि तत्र ह्वयस्व यतमा प्रिया ते ।
यावन्तावग्रे प्रथमं समेयथुस्तद्वां वयो यमराज्ये समानम् ॥१॥
तावद्वां चक्षुस्तति वीर्याणि तावत्तेजस्ततिधा वाजिनानि ।
अग्निः शरीरं सचते यदैधोऽधा पक्वान्मिथुना सं भवाथः ॥२॥
समस्मिँल्लोके समु देवयाने सं स्मा समेतं यमराज्येषु ।
पूतौ पवित्रैरुप तद्ध्वयेथां यद्यद्रेतो अधि वां संबभूव ॥३॥
आपस्पुत्रासो अभि सं विशध्वमिमं जीवं जीवधन्याः समेत्य ।
तासां भजध्वममृतं यमाहुर्यमोदनं पचति वां जनित्री ॥४॥
यं वां पिता पचति यं च माता रिप्रान्निर्मुक्त्यै शमलाच्च वाचः ।
स ओदनः शतधारः स्वर्ग उभे व्याप नभसी महित्वा ॥५॥
उभे नभसी उभयांश्च लोकान्ये यज्वनामभिजिताः स्वर्गाः ।
तेषां ज्योतिष्मान्मधुमान्यो अग्रे तस्मिन्पुत्रैर्जरसि सं श्रयेथाम् ॥६॥
प्राचीं प्राचीं प्रदिशमा रभेथामेतं लोकं श्रद्दधानाः सचन्ते ।
यद्वां पक्वं परिविष्टमग्नौ तस्य गुप्तये दम्पती सं श्रयेथाम् ॥७॥
दक्षिणां दिशमभि नक्षमाणौ पर्यावर्तेथामभि पात्रमेतत् ।
तस्मिन्वां यमः पितृभिः संविदानः पक्वाय शर्म बहुलं नि यच्छात् ॥८॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्रतीची दिशामियमिद्वरं यस्यां सोमो अधिपा मृडिता च।
तस्यां श्रयेथां सुकृतः सचेथामधा पक्वान्मिथुना सं भवाथः॥ ९॥
उत्तरं राष्ट्रं प्रजयोत्तरावद्दिशामुदीची कृणवन्नो अग्रम्।
पाङ्क्तं छन्दः पुरुषो बभूव विश्वैर्विश्वाङ्गैः सह सं भवेम॥ १०॥
ध्रुवेयं विराण्नमो अस्त्वस्यै शिवा पुत्रेभ्य उत मह्यमस्तु।
सा नो देव्यदिते विश्ववार इर्यइव गोपा अभि रक्ष पक्वम्॥ ११॥
पितेव पुत्रानभि सं स्वजस्व नः शिवा नो वाता इह वान्तु भूमौ।
यमोदनं पचतो देवते इह तन्नस्तप उत सत्यं च वेत्तु॥ १२॥
यद्यत्कृष्णः शकुन एह गत्वा त्सरन्विषक्तं बिल आससाद।
यद्वा दास्या३र्द्रहस्ता समङ्क्त उलूखलं मुसलं शुम्भतापः॥ १३॥
अयं ग्रावा पृथुबुध्नो वयोधाः पूतः पवित्रैरप हन्तु रक्षः।
आ रोह चर्म महि शर्म यच्छ मा दंपती पौत्रमघं नि गाताम्॥ १४॥
वनस्पतिः सह देवैर्न आगन्रक्षः पिशाचाँ अपबाधमानः।
स उच्छ्रयातै प्र वदाति वाचं तेन लोकाँ अभि सर्वाञ्जयेम॥ १५॥
सप्त मेधान्पशवः पर्यगृह्णन्य एषां ज्योतिष्माँ उत यश्चकर्श।
त्रयस्त्रिंशद्देवतास्तान्त्सचन्ते स नः स्वर्गमभि नेष लोकम्॥ १६॥
स्वर्गं लोकमभि नो नयासि सं जायया सह पुत्रैः स्याम।
गृह्णामि हस्तमनु मैत्वत्र मा नस्तारीन्निर्ऋतिर्मो अरातिः॥ १७॥
ग्राहिं पाप्मानमति ताँ अयाम तमो व्यस्य प्र वदासि वल्गु।
वानस्पत्य उद्यतो मा जिहिंसीर्मा तण्डुलं वि शरीर्देवयन्तम्॥ १८॥
विश्वव्यचा घृतपृष्ठो भविष्यन्त्सयोनिर्लोकमुप याह्येतम् ।
वर्षवृद्धमुप यच्छ शूर्पं तुषं पलावानप तद्विनक्तु ॥ १९॥
त्रयो लोकाः संमिता ब्राह्मणेन द्यौरेवासौ पृथिव्य१न्तरिक्षम्।
अंशून्गृभीत्वान्वारभेथामा प्यायन्तां पुनरा यन्तु शूर्पम् ॥ २०॥
पृथग्रूपाणि बहुधा पशूनामेकरूपो भवसि सं समृद्ध्या।
एतां त्वचं लोहिनीं तां नुदस्व ग्रावा शुम्भाति मलगइव वस्त्रा॥ २१॥
पृथिवीं त्वा पृथिव्यामा वेशयामि तनूः समानी विकृता त एषा।
यद्यद् द्युत्तं लिखितमर्पणेन तेन मा सुस्रोर्ब्रह्मणापि तद्वपामि॥ २२॥
जनित्रीव प्रति हर्यासि सूनुं सं त्वा दधामि पृथिवीं पृथिव्या।
उखा कुम्भी वेद्यां मा व्यथिष्ठा यज्ञायुधैराज्येनातिषक्ता॥ २३॥

अग्निः पचन्रक्षतु त्वा पुरस्तादिन्द्रो रक्षतु दक्षिणतो मरुत्वान्।
वरुणस्त्वा दृंहाद्धरुणे प्रतीच्या उत्तरात्त्वा सोमः सं ददातै॥ २४॥
पूताः पवित्रैः पवन्ते अभ्राद्दिवं च यन्ति पृथिवीं च लोकान्।
ता जीवला जीवधन्याः प्रतिष्ठाः पात्र आसिक्ताः पर्यग्निरिन्धाम्॥ २५॥
आ यन्ति दिवः पृथिवीं सचन्ते भूम्याः सचन्ते अध्यन्तरिक्षम्।
शुद्धाः सतीस्ता उ शुम्भन्त एव ता नः स्वर्गमभि लोकं नयन्तु॥ २६॥
उतेव प्रभ्वीरुत संमितास उत शुक्राः शुचयश्चामृतासः।
ता ओदनं दंपतिभ्यां प्रशिष्टा आपः शिक्षन्तीः पचता सुनाथाः॥ २७॥
संख्याता स्तोकाः पृथिवीं सचन्ते प्राणापानैः संमिता ओषधीभिः।
असंख्याता ओप्यमानाः सुवर्णाः सर्वं व्यापुः शुचयः शिचित्वम्॥ २८॥
उद्योधन्त्यभि वल्गन्ति तप्ताः फेनमस्यन्ति बहुलांश्च बिन्दून्।
योषेव दृष्ट्वा पतिमृत्वियायैतैस्तण्डुलैर्भवता समापः ॥ २९॥
उत्थापय सीदतो बुध्न एनानद्भिरात्मानमभि सं स्पृशन्ताम्।
अमासि पात्रैरुदकं यदेतन्मितास्तण्डुलाः प्रदिशो यदीमाः॥ ३०॥

॥ इति षड्विंशः प्रपाठकः॥

अथ सप्तविंशः प्रपाठकः॥

प्र यच्छ पर्शुं त्वरया हरौषमहिंसन्त ओषधीर्दान्तु पर्वन्।
यासां सोमः परि राज्यं बभूवामन्युता नो वीरुधो भवन्तु॥ ३१॥
नवं बर्हिरोदनाय स्तृणीत प्रियं हृदश्चक्षुषो वल्ग्वस्तु।
तस्मिन्देवाः सह दैवीर्विशन्त्विमं प्राश्नन्त्वृतुभिर्निषद्य ॥ ३२॥
वनस्पते स्तीर्णमा सीद बर्हिरग्निष्टोमैः संमितो देवताभिः।
त्वष्ट्रेव रूपं सुकृतं स्वधित्यैना एहाः परि पात्रे ददृश्राम्॥ ३३॥
षष्ट्यां शरत्सु निधिपा अभीच्छात्स्वः पक्वेनाभ्यश्निवातै।
उपैनं जीवान्पितरश्च पुत्रा एतं स्वर्गं गमयान्तमग्नेः ॥ ३४॥
धर्ता ध्रियस्व धरुणे पृथिव्या अच्युतं त्वा देवताश्च्यावयन्तु।
तं त्वा दंपती जीवन्तौ जीवपुत्रावुद्वासयातः पर्यग्निधानात्॥ ३५॥
सर्वान्त्समागा अभिजित्य लोकान्यावन्तः कामाः समतीतृपस्तान्।
वि गाहेथामायवनं च दर्विरेकस्मिन्पात्रे अध्युद्धरैनम् ॥ ३६॥
उप स्तृणीहि प्रथय पुरस्ताद् घृतेन पात्रमभि घारयैतत् ।
वाश्रेवोस्रा तरुणं स्तनस्युमिमं देवासो अभिहिंकृणोत ॥ ३७॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उपास्तरीरकरो लोकमेतमुरुः प्रथतामसमः स्वर्गः ।
तस्मिञ्छ्रयातै महिषः सुपर्णो देवा एनं देवताभ्यः प्र यच्छान्॥ ३८ ॥
यद्यज्जाया पचति त्वत्परःपरः पतिर्वा जाये त्वत्तिरः।
सं तत्सृजेथां सह वां तदस्तु संपादयन्तौ सह लोकमेकम्॥ ३९ ॥
यावन्तो अस्याः पृथिवीं सचन्ते अस्मत्पुत्राः परि ये संबभूवुः।
सर्वांस्ताँ उप पात्रे ह्वयेथां नाभिं जानानाः शिशवः समायान्॥ ४० ॥
वसोर्या धारा मधुना प्रपीना घृतेन मिश्रा अमृतस्य नाभयः।
सर्वास्ता अव रुन्धे स्वर्गः षष्ट्यां शरत्सु निधिपा अभीच्छात्॥ ४१ ॥
निधिं निधिपा अभ्येनिमिच्छादनीश्वरा अभितः सन्तु येऽन्ये।
अस्माभिर्दत्तो निहितः स्वर्गस्त्रिभिः काण्डैस्त्रीन्त्स्वर्गानरुक्षत्॥ ४२ ॥
अग्नी रक्षस्तपतु यद्विदेवं क्रव्यात्पिशाच इह मा प्र पास्त.
नुदाम एनमप रुध्मो अस्मदादित्या एनमङ्गिरसः सचन्ताम्॥ ४३ ॥
आदित्येभ्यो अङ्गिरोभ्यो मध्विदं घृतेन मिश्रं प्रति वेदयामि।
शुद्धहस्तौ ब्राह्मणस्यानिहत्यैतं स्वर्गं सुकृतावपीतम् ॥ ४४ ॥
इदं प्रापमुत्तमं काण्डमस्य यस्माल्लोकात्परमेष्ठी समाप।
आ सिञ्च सर्पिर्घृतवत्समङ्ग्ध्येष भागो अङ्गिरसो नो अत्र॥ ४५ ॥
सत्याय च तपसे देवताभ्यो निधिं शेवधिं परि दद्म एतम्।
मा नो द्यूतेऽवं गान्मा समित्यां मा स्मान्यस्मा उत्सृजता पुरा मत्॥ ४६ ॥
अहं पचाम्यहं ददामि ममेदु कर्मन्कुरुणेऽधि जाया।
कौमारो लोको अजनिष्ट पुत्रोऽन्वारभेथां वयं उत्तरावत्॥ ४७ ॥
न किल्बिषमत्र नाधारो अस्ति न यन्मित्रैः सममामान् एति।
अनूनं पात्रं निहितं न एतत्पक्तारं पक्वः पुनरा विशाति॥ ४८ ॥
प्रियं प्रियाणां कृणवाम तमस्ते यन्तु यतमे द्विषन्ति।
धेनुरनड्वान्वयोवय आयदेव पौरुषेयमप मृत्युं नुदन्तु॥ ४९ ॥
समग्रयो विदुरन्यो अन्यं य ओषधीः सचते यश्च सिन्धून्।
यावन्तो देवा दिव्याय तपन्ति हिरण्यं ज्योतिः पचतो बभूव॥ ५० ॥
एषा त्वचां पुरुषे सं बभूवानग्नाः सर्वे पशवो ये अन्ये।
क्षत्रेणात्मानं परि धापयाथोऽमोतं वासो मुखमोदनस्य॥ ५१ ॥
यदक्षेषु वदा यत्समित्यां यद्वा वदा अनृतं वित्तकाम्या।
समानं तन्तुमभि संवसानौ तस्मिन्त्सर्वं शमलं सादयाथः॥ ५२ ॥
वर्षं वनुष्वापि गच्छ देवांस्त्वचो धूमं पर्युत्पतयासि।
विश्वव्यचा घृतपृष्ठो भविष्यन्त्सयोनिर्लोकमुप याह्येतम्॥ ५३ ॥
तन्वं स्वर्गो बहुधा वि चक्रे यथा विद आत्मन्नन्यवर्णाम्।
अपाजैत्कृष्णां रुशतीं पुनानो या लोहिनी तां तें अग्नौ जुहोमि॥ ५४ ॥
प्राच्यै त्वा दिशेऽग्नयेऽधिपतयेऽसिताय रक्षित्र आदित्यायेषुमते।
एतं परि दद्मस्तं नो गोपायतास्माकमैतोः। दिष्टं नो अत्र जरसे
नि नैषज्जरा मृत्यवे परि णो ददात्वथ पक्वेन सह सं भवेम॥ ५५ ॥
दक्षिणायै त्वा दिश इन्द्रायाधिपतये तिरश्चिराजये रक्षित्रे यमायेषुमते।
एतं परि दद्मस्तं नो गोपायतास्माकमैतोः। दिष्टं नो अत्र जरसे
नि नैषज्जरा मृत्यवे परि णो ददात्वथ पक्वेन सह सं भवेम॥ ५६ ॥
प्रतीच्यै त्वा दिशे वरुणायाधिपतये पृदाकवे रक्षित्रेऽन्नायेषुमते।
एतं परि दद्मस्तं नो गोपायतास्माकमैतोः। दिष्टं नो अत्र जरसे
नि नैषज्जरा मृत्यवे परि णो ददात्वथ पक्वेन सह सं भवेम॥ ५७ ॥
उदीच्यै त्वा दिशे सोमायाधिपतये स्वजाय रक्षित्रेऽशन्या इषुमत्यै।
एतं परि दद्मस्तं नो गोपायतास्माकमैतोः। दिष्टं नो अत्र जरसे
नि नैषज्जरा मृत्यवे परि णो ददात्वथ पक्वेन सह सं भवेम॥ ५८ ॥
ध्रुवायै त्वा दिशे विष्णवेऽधिपतये कल्माषग्रीवाय रक्षित्र ओषधीभ्य
इषुमतीभ्यः। एतं परि दद्मस्तं नो गोपायतास्माकमैतोः। दिष्टं नो अत्र
जरसे नि नैषज्जरा मृत्यवे परि णो ददात्वथ पक्वेन सह सं भवेम॥ ५९ ॥
ऊर्ध्वायै त्वा दिशे बृहस्पतयेऽधिपतये श्वित्राय रक्षित्रे वर्षायेषुमते।
एतं परि दद्मस्तं नो गोपायतास्माकमैतोः। दिष्टं नो अत्र जरसे
नि नैषज्जरा मृत्यवे परि णो ददात्वथ पक्वेन सह सं भवेम॥ ६० ॥

अथ चतुर्थोऽनुवाकः [४] चतुर्थं सूक्तम्

ऋषिः—कश्यपः॥ देवता—वशा॥ छन्दः—१-६, ८-१९, २१-३१, ३३-४१, ४३-५३ अनुष्टुप्; ७ भुरिगनुष्टुप्; २० विराडनुष्टुप्; ३२ उष्णिग्बृहती-गर्भाऽनुष्टुप्; ४२ बृहतीगर्भाऽनुष्टुप्॥

ददामीत्येव ब्रूयादनु चैनामभुत्सत ।
वशां ब्रह्मभ्यो याचद्भ्यस्तत्प्रजावदपत्यवत् ॥ १ ॥
प्रजया स वि क्रीणीते पशुभिश्चोप दस्यति ।
य अग्नये ब्राह्मणाय याचद्भ्यो देवानां गां न दित्सति॥ २ ॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कूटयास्य सं शीर्यन्ते श्लोणयां काटमर्दति ।
बण्डयां दह्यन्ते गृहाः काणयां दीयते स्वम् ॥ ३ ॥
विलोहितो अधिष्ठानाच्छक्नो विन्दति गोपतिम् ।
तथा वशायाः संविद्यं दुरदुभ्ना ह्युच्यसे ॥ ४ ॥
पदोरस्या अधिष्ठानाद्विक्लिन्दुर्नाम विन्दति ।
अनामनात्सं शीर्यन्ते या मुखेनोपजिघ्रति ॥ ५ ॥
यो अस्याः कर्णावास्कुनोत्या स देवेषु वृश्चते ।
लक्ष्मं कुर्व इति मन्यते कनीयः कृणुते स्वम् ॥ ६ ॥
यदस्याः कस्मै चिद्भोगाय बालान्कश्चित्प्रकृन्तति ।
ततः किशोरा म्रियन्ते वत्सांश्च घातुको वृकः ॥ ७ ॥
यदस्या गोपतौ सत्या लोम ध्वाङ्क्षो अजीहिडत् ।
ततः कुमारा म्रियन्ते यक्ष्मो विन्दत्यनामनात् ॥ ८ ॥
यदस्याः पल्पूलनं शकृद्वासी समस्यति ।
ततोऽपरूपं जायते तस्मादव्यैष्यदेनसः ॥ ९ ॥
जायमानाभि जायते देवान्तसब्राह्मणान्वशा ।
तस्माद् ब्रह्मभ्यो देयैषा तदाहुः स्वस्य गोपनम् ॥ १० ॥
य एनां वनिमायन्ति तेषां देवकृता वशा ।
ब्रह्मज्येयं तदब्रुवन्य एनां निप्रियायते ॥ ११ ॥
य आर्षेयेभ्यो याचद्भ्यो देवानां गां न दित्सति ।
आ स देवेषु वृश्चते ब्राह्मणानां च मन्यवे ॥ १२ ॥
यो अस्य स्याद्वशाभोगो अन्यामिच्छेत तर्हि सः ।
हिंस्ते अदत्ता पुरुषं याचितां च न दित्सति ॥ १३ ॥
यथा शेवधिर्निहितो ब्राह्मणानां तथा वशा ।
तामेतदुच्छयन्ति यस्मिन्कस्मिंश्च जायते ॥ १४ ॥
स्वमेतदुच्छयन्ति यद्वशां ब्राह्मणा अभि ।
यथैनानन्यस्मिञ्जिनीयादेवास्यां निरोधनम् ॥ १५ ॥
चरेदेवा त्रैहायणादविज्ञातगदा सती ।
वशां च विद्यान्नारद ब्राह्मणास्तर्होष्याः ॥ १६ ॥
य एनामवशामाह देवानां निहितं निधिम् ।
उभौ तस्मै भवाशर्वौ परिक्रम्येषुमस्यतः ॥ १७ ॥

यो अस्या ऊधो न वेदाथो अस्या स्तनानुत ।
उभयेनैवास्मै दुहे दातुं चेदशकद्वशाम् ॥ १८ ॥
दुरदुभ्नैनमा शये याचितां च न दित्सति ।
नास्मै कामाः समृध्यन्ते यामदत्त्वा चिकीर्षति ॥ १९ ॥
देवा वशामयाचन्मुखं कृत्वा ब्राह्मणम् ।
तेषां सर्वेषामदद्ब्रह्मेडं न्येति मानुषः ॥ २० ॥
हेडं पशूनां न्येति ब्राह्मणेभ्योऽददद्वशाम् ।
देवानां निहितं भागं मर्त्यश्चेन्निप्रियायते ॥ २१ ॥
यदन्ये शतं याचेयुर्ब्राह्मणा गोपतिं वशाम् ।
अथैनां देवा अब्रुवन्नेवं ह विदुषो वशा ॥ २२ ॥
य एवं विदुषेऽदत्त्वाथान्येभ्यो ददद्वशाम् ।
दुर्गा तस्मा अधिष्ठानं पृथिवी सहदेवता ॥ २३ ॥
देवा वशामयाचन्यस्मिन्नग्रे अजायत ।
तामेतां विद्यान्नारदः सह देवैरुदाजत ॥ २४ ॥
अनपत्यमल्पपशुं वशा कृणोति पूरुषम् ।
ब्राह्मणैश्च याचितामथैनां निप्रियायते ॥ २५ ॥
अग्नीषोमाभ्यां कामाय मित्राय वरुणाय च ।
तेभ्यो याचन्ति ब्राह्मणास्तेष्वा वृश्चतेऽददत् ॥ २६ ॥
यावदस्या गोपतिर्नोपशृणुयादृचः स्वयम् ।
चरेदस्य तावद्गोषु नास्य श्रुत्वा गृहे वसेत् ॥ २७ ॥
यो अस्या ऋचं उपश्रुत्याथ गोष्वचीचरत् ।
आयुश्च तस्य भूतिं च देवा वृश्चन्ति हीडिताः ॥ २८ ॥
वशा चरन्ति बहुधा देवानां निहितो निधिः ।
आविष्कृणुष्व रूपाणि यदा स्थाम जिघांसति ॥ २९ ॥
आविरात्मानं कृणुते यदा स्थाम जिघांसति ।
अथो ह ब्रह्मभ्यो वशा याच्ञायै कृणुते मनः ॥ ३० ॥
मनसा सं कल्पयति तद्देवाँ अपि गच्छति ।
ततो ह ब्रह्माणो वशामुपप्रयन्ति याचितुम् ॥ ३१ ॥
स्वधाकारेण पितृभ्यो यज्ञेन देवताभ्यः ।
दानेन राजन्यो वशाया मातुर्हेडं न गच्छति ॥ ३२ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

वशा माता राजन्यस्य तथा संभूतमग्रशः ।
तस्या आहुरर्पणं यद् ब्रह्मभ्यः प्रदीयते ॥ ३३ ॥
यथाज्यं प्रगृहीतमालुम्पेत्स्रुचो अग्नये ।
एवा ह ब्रह्मभ्यो वशामग्नय आ वृश्चतेऽददत् ॥ ३४ ॥
पुरोडाशवत्सा सुदुघा लोकेऽस्मा उप तिष्ठति ।
सास्मै सर्वान्कामान्वशा प्रदुदुषे दुहे ॥ ३५ ॥
सर्वान्कामान्यमराज्ये वशा प्रददुषे दुहे ।
अथाहुर्नारकं लोकं निरुन्धानस्य याचिताम् ॥ ३६ ॥
प्रवीयमाना चरति क्रुद्धा गोपतये वशा ।
वेहतं मा मन्यमानो मृत्योः पाशेषु बध्यताम् ॥ ३७ ॥
यो वेहतं मन्यमानोऽमा च पचते वशाम् ।
अप्यस्य पुत्रान्पौत्रांश्च याचयते बृहस्पतिः ॥ ३८ ॥
महदेषाव तपति चरन्ती गोषु गौरपि ।
अथो ह गोपतये वशाददुषे विषं दुहे ॥ ३९ ॥
प्रियं पशूनां भवति यद् ब्रह्मभ्यः प्रदीयते ।
अथो वशाया स्तल्प्रियं यद्देवत्रा हविः स्यात् ॥ ४० ॥
या वशा उदकल्पयन्देवा यज्ञादुदेत्य ।
तासां विलिप्त्यं भीमामुदाकुरुत नारदः ॥ ४१ ॥
तां देवा अमीमांसन्त वशेयाऽमवशेति ।
तामब्रवीन्नारद एषा वशानां वशतमेति ॥ ४२ ॥
कति नु वशा नारद यास्त्वं वेत्थ मनुष्यजाः ।
तास्त्वा पृच्छामि विद्वांसं कस्या नाश्नीयादब्राह्मणः ॥ ४३ ॥
विलिप्त्या बृहस्पते या च सूतवशा वशा ।
तस्या नाश्नीयादब्राह्मणो य आशंसेत भूत्याम् ॥ ४४ ॥
नमस्ते अस्तु नारदानुष्ठु विदुषे वशा ।
कृतमासां भीमतमा यामदत्त्वा पराभवेत् ॥ ४५ ॥
विलिप्सी या बृहस्पतेऽथो सूतवशा वशा ।
तस्या नाश्नीयादब्राह्मणो य आशंसेत भूत्याम् ॥ ४६ ॥
त्रीणि वै वशाजातानि विलिप्सी सूतवशा वशा ।
ताः प्र यच्छेद् ब्रह्मभ्यः सोऽनाव्रस्कः प्रजापतौ ॥ ४७ ॥

एतद्वो ब्राह्मणा हविरितिं मन्वीत याचितः ।
वशां चेदेनं याचेयुर्या भीमाददुषो गृहे ॥ ४८ ॥
देवा वशां पर्यवदन्न नोऽदादिति हीडिताः ।
एताभिर्ऋग्भिर्भेदं तस्माद्वै स पराभवत् ॥ ४९ ॥
उतैनां भेदो नाददाद्वशामिन्द्रेण याचितः ।
तस्मात्तं देवा आगसोऽवृश्चन्नहमुत्तरे ॥ ५० ॥
ये वशायाा अदानाय वदन्ति परिरापिणः ।
इन्द्रस्य मन्यवे जाल्मा आ वृश्चन्ते अचित्त्या ॥ ५१ ॥
ये गोपतिं पराणीयाथाहुर्मा ददा इति ।
रुद्रस्यास्तां ते हेतिं परि यन्त्यचित्त्या ॥ ५२ ॥
यदि हुतां यद्यहुतामथा च पचते वशाम् ।
देवान्त्सब्राह्मणानृत्वा जिह्मो लोकान्निर्ऋच्छति ॥ ५३ ॥

अथ पञ्चमोऽनुवाकः [५] पञ्चमं सूक्तम्; प्रथमः पर्यायः

ऋषिः—कश्यपः ॥ देवता—ब्रह्मगवी ॥ छन्दः—१ प्राजापत्यानुष्टुप्; २ भुरिक् साम्न्यनुष्टुप्; ३ चतुष्पदास्वराडुष्णिक्; ४ आसुर्यनुष्टुप्; ५ साम्नी-पङ्क्तिः; ६ साम्न्युष्णिक् ॥

श्रमेण तपसा सृष्टा ब्रह्मणा वित्तेर्ते श्रिता ॥ १ ॥
सत्येनावृता श्रिया प्रावृता यशसा परीवृता ॥ २ ॥
स्वधया परिहिता श्रद्धया पर्यूढा दीक्षया गुप्ता यज्ञे
प्रतिष्ठिता लोको निधनम् ॥ ३ ॥
ब्रह्म पदवायं ब्राह्मणोऽधिपतिः ॥ ४ ॥
तामाददानस्य ब्रह्मगवीं जिनतो ब्राह्मणं क्षत्रियस्य ॥ ५ ॥
अप क्रामति सूनृता वीर्यं पुण्या लक्ष्मीः ॥ ६ ॥

[५] पञ्चमं सूक्तम्; द्वितीयः पर्यायः

ऋषिः—कश्यपः ॥ देवता—ब्रह्मगवी ॥ छन्दः—७ साम्नीत्रिष्टुप्; ८ भुरिगार्च्यनुष्टुप्; ९ आर्च्यनुष्टुप्; १० उष्णिक्; ११ आर्चीनिचृत्पङ्क्तिः ॥

ओजश्च तेजश्च सहश्च बलं च वाक्चेन्द्रियं च श्रीश्च धर्मश्च ॥ ७ ॥
ब्रह्म च क्षत्रं च राष्ट्रं च विशश्च त्विषिश्च यशश्च वर्चश्च द्रविणं च ॥ ८ ॥
आयुश्च रूपं च नाम च कीर्तिश्च प्राणश्चापानश्च चक्षुश्च श्रोत्रं च ॥ ९ ॥
पयश्च रसश्चान्नं चान्नाद्यं चर्तं च सत्यं चेष्टं च पूर्तं च प्रजा च पशवश्च ॥ १० ॥
तानि सर्वाण्यप क्रामन्ति ब्रह्मगवीमाददानस्य जिनतो ब्राह्मणं क्षत्रियस्य ॥ ११ ॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

[५] पञ्चमं सूक्तम्; तृतीयः पर्यायः

ऋषिः—कश्यपः॥ देवता—ब्रह्मगवी॥ छन्दः—१२ विराड्विषमागायत्री; १३ आसुर्यनुष्टुप्; १४, २६ साम्न्युष्णिक्; १५ गायत्री; १६, १७, १९, २० प्राजापत्यानुष्टुप्; १८ याजुषीजगती; २१, २५ साम्न्यनुष्टुप्; २२ साम्नीबृहती; २३ याजुषीत्रिष्टुप्; २४ आसुरीगायत्री; २७ आर्च्युष्णिक्॥

सैषा भी॒मा ब्र॑ह्मग॒व्य१॒॑घवि॑षा सा॒क्षात्कृ॒त्या कूल्ब॑ज॒मावृ॑ता ॥ १२ ॥
सर्वा॑ण्यस्यां घो॒राणि॒ सर्वे॑ च मृ॒त्यवः॑ ॥ १३ ॥
सर्वा॑ण्यस्यां क्रू॒राणि॒ सर्वे॑ पुरुषव॒धाः ॥ १४ ॥
सा ब्र॑ह्म॒ज्यं दे॑वपी॒युं ब्र॑ह्मग॒व्या॑ दी॒यमा॑ना मृ॒त्योः पड्बी॑श॒ आ द्य॑ति ॥ १५ ॥
मे॒निः श॒तव॑धा॒ हि सा ब्र॑ह्म॒ज्यस्य॒ क्षिति॒र्हि सा ॥ १६ ॥
तस्मा॒द्वै ब्रा॑ह्म॒णानां॒ गौर्दु॑रा॒धर्षा॑ विजान॒ता ॥ १७ ॥
वज्रो॒ धाव॑न्ती वैश्वान॒र उद्वी॑ता ॥ १८ ॥
हे॒तिः श॒फानु॑त्खि॒दन्ती॑ महादे॒वो३॒॑पेक्ष॑माणा ॥ १९ ॥
क्षु॒रप॑वि॒रीक्ष॑माणा॒ वाश्य॑माना॒भि स्फू॑र्जति ॥ २० ॥
मृ॒त्युर्हि॑ङ्कृण्व॒त्यु१॒॑ग्रो दे॒वः पुच्छं॑ प॒र्यस्य॑न्ती ॥ २१ ॥
स॒र्व॒ज्या॒निः कर्णौ॑ वरीव॒र्जय॑न्ती राजय॒क्ष्मो मेह॑न्ती ॥ २२ ॥
मे॒निर्दु॒ह्यमा॑ना शीर्ष॒क्तिर्दु॒ग्धा ॥ २३ ॥
से॒दिरु॑प॒तिष्ठ॑न्ती मिथोयो॒धः परा॑मृष्टा ॥ २४ ॥
श॒र॒व्या३॒॑ मुखे॑ऽपिन॒ह्यमा॑न॒ ऋति॑र्ह॒न्यमा॑ना ॥ २५ ॥
अ॒घवि॑षा नि॒पत॑न्ती॒ तमो॒ निप॑तिता ॥ २६ ॥
अ॒नु॒गच्छ॑न्ती प्रा॒णानुप॑ दासयति ब्रह्मग॒वी ब्र॑ह्म॒ज्यस्य॑ ॥ २७ ॥

[५] पञ्चमं सूक्तम्; चतुर्थः पर्यायः

ऋषिः—कश्यपः॥ देवता—ब्रह्मगवी॥ छन्दः—२८ आसुरीगायत्री; २९, ३७ आसुर्यनुष्टुप्; ३० साम्न्यनुष्टुप्; ३१ याजुषीत्रिष्टुप्; ३२ साम्नीगायत्री; ३३, ३४ साम्नीबृहती; ३५ भुरिक् साम्न्यनुष्टुप्; ३६ साम्न्युष्णिक्; ३८ प्रतिष्ठागायत्री॥

वैरं॑ विकृ॒त्यमा॑ना॒ पौत्रा॑द्यं विभा॒ज्यमा॑ना ॥ २८ ॥
दे॒व॒हे॒तिर्ह्रि॒यमा॑णा॒ व्यृ॑द्धिर्हृ॒ता ॥ २९ ॥
पा॒प्माधि॑धी॒यमा॑ना॒ पारु॑ष्यमवधी॒यमा॑ना ॥ ३० ॥
वि॒षं प्र॒यस्य॑न्ती त॒क्मा प्रय॑स्ता ॥ ३१ ॥
अ॒घं प॒च्यमा॑ना दु॒ष्वप्न्यं॑ प॒क्वा ॥ ३२ ॥
मू॒ल॒बर्ह॑णी पर्याक्रि॒यमा॑णा॒ क्षितिः॑ प॒र्याकृ॑ता ॥ ३३ ॥
असं॑ज्ञा ग॒न्धेन॒ शुगु॑द्ध्रियमा॑णाशीवि॒ष उद्धृ॑ता ॥ ३४ ॥
अभू॑तिरुपह्रि॒यमा॑णा॒ परा॑भूति॒रुप॑हृता ॥ ३५ ॥
श॒र्वः क्रु॒द्धः पि॒श्यमा॑ना॒ शिमि॑दा पिशि॒ता ॥ ३६ ॥
अव॑र्तिर॒श्यमा॑ना॒ निर्ऋ॑तिरशि॒ता ॥ ३७ ॥
अ॒शि॒ता लो॒काच्छि॑नत्ति ब्रह्मग॒वी ब्र॑ह्म॒ज्यम॒स्माच्चा॒मुष्मा॑च्च ॥ ३८ ॥

[५] पञ्चमं सूक्तम्; पञ्चमः पर्यायः

ऋषिः—कश्यपः॥ देवता—ब्रह्मगवी॥ छन्दः—३९ साम्नीपङ्क्तिः; ४० याजुष्यनुष्टुप्; ४१, ४६ भुरिक्साम्न्यनुष्टुप्; ४२ आसुरीबृहती; ४३ साम्नीबृहती; ४४ पिपीलिकामध्यानुष्टुप्; ४५ आर्चीबृहती॥

तस्या॑ आ॒हन॑नं कृ॒त्या मे॒निरा॒शस॑नं वल॒ग ऊब॑ध्यम् ॥ ३९ ॥
अ॒स्व॒गता॒ परि॑ह्रुता ॥ ४० ॥
अ॒ग्निः क्र॒व्याद्भू॒त्वा ब्र॑ह्मग॒वी ब्र॑ह्म॒ज्यं प्र॒विश्या॑त्ति ॥ ४१ ॥
सर्वा॒स्याङ्गा॒ पर्वा॒ मूला॑नि वृश्चति ॥ ४२ ॥
छि॒नत्त्य॑स्य पितृब॒न्धु परा॑ भावयति मातृब॒न्धु ॥ ४३ ॥
वि॒वा॒हां ज्ञा॒तीन्त्सर्वा॒नपि॑ क्षापयति ब्रह्मग॒वी
ब्र॑ह्म॒ज्यस्य॑ क्ष॒त्रिये॒णापु॑नर्दीयमाना ॥ ४४ ॥
अ॒वा॒स्तुमे॑न॒मस्व॑ग॒मप्र॑जसं करोत्यपरापर॒णो भ॑वति क्षी॒यते॑ ॥ ४५ ॥
य ए॒वं वि॒दुषो॑ ब्राह्म॒णस्य॑ क्ष॒त्रियो॒ गामा॑द॒त्ते ॥ ४६ ॥

[५] पञ्चमं सूक्तम्; षष्ठः पर्यायः

ऋषिः—कश्यपः॥ देवता—ब्रह्मगवी॥ छन्दः—४७, ४९, ५१-५३, ५७-५९, ६१ प्राजापत्यानुष्टुप्; ४८ आर्च्यनुष्टुप्; ५० साम्नीबृहती; ५४, ५५ प्राजापत्योष्णिक्; ५६ आसुरीगायत्री; ६० गायत्री॥

क्षि॒प्रं वै तस्या॒हन॑ने॒ गृध्राः॑ कुर्वत ऐल॒बम् ॥ ४७ ॥
क्षि॒प्रं वै तस्या॒दह॑नं॒ परि॑ नृत्यन्ति के॒शिनी॑राघ्ना॒नाः
पा॒णिनोर॑सि कुर्वा॒णाः पा॒पमै॑ल॒बम् ॥ ४८ ॥
क्षि॒प्रं वै तस्य॒ वास्तु॑षु॒ वृकाः॑ कुर्वत ऐल॒बम् ॥ ४९ ॥
क्षि॒प्रं वै तस्य॑ पृच्छन्ति॒ यत्तदासी॑३दि॒दं नु ता३दिति॑ ॥ ५० ॥
छि॒न्ध्या च्छि॑न्धि॒ प्र च्छि॒न्ध्यपि॑ क्षापय क्षा॒पय॑ ॥ ५१ ॥
आ॒ददा॑नमाङ्गिरसि ब्रह्म॒ज्यमुप॑ दासय ॥ ५२ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

वैश्वदेवी ह्युच्यसे कृत्या कूल्बजमावृता ॥५३॥
ओषन्ती समोषन्ती ब्रह्मणो वज्रः ॥५४॥
क्षुरपविर्मृत्युर्भूत्वा वि धाव त्वम् ॥५५॥
आ दत्से जिनतां वर्च इष्टं पूर्तं चाशिषः ॥५६॥
आदाय जीतं जीताय लोकेऽमुष्मिन्प्र यच्छसि ॥५७॥
अघ्न्ये पदवीर्भव ब्राह्मणस्याभिशस्त्या ॥५८॥
मेनिः शरव्या भवाघादघविषा भव ॥५९॥
अघ्न्ये प्र शिरो जहि ब्रह्मज्यस्य कृतागसो देवपीयोरराधसः ॥६०॥
त्वया प्रमूर्णं मृदितमग्निर्दहतु दुश्चितम् ॥६१॥

[५] पञ्चमं सूक्तम्; सप्तमः पर्यायः

ऋषि—कश्यपः॥ देवता—ब्रह्मगवी॥ छन्दः—६२-६४, ६६, ६८-७० प्राजापत्यानुष्टुप्; ६५ गायत्री; ६७ प्राजापत्यागायत्री; ७१ आसुरीपङ्क्तिः; ७२ प्राजापत्यात्रिष्टुप्; ७३ आसुर्युष्णिक्॥

वृश्च प्र वृश्च सं वृश्च दह प्र दह सं दह॥६२॥
ब्रह्मज्यं देव्यघ्न्य आ मूलादनुसंदह ॥६३॥
यथायाद्यमसादनात्पापलोकान्परावतः ॥६४॥
एवा त्वं देव्यघ्न्ये ब्रह्मज्यस्य कृतागसो
देवपीयोरराधसः ॥६५॥
वज्रेण शतपर्वणा तीक्ष्णेन क्षुरभृष्टिना ॥६६॥
प्र स्कन्धान्प्र शिरो जहि ॥६७॥
लोमान्यस्य सं छिन्धि त्वचमस्य वि वेष्टय॥६८॥
मांसान्यस्य शातय स्नावान्यस्य सं वृह ॥६९॥
अस्थीन्यस्य पीडय मज्जानमस्य निर्जहि ॥७०॥
सर्वास्याङ्गा पर्वाणि वि श्रथय ॥७१॥
अग्निरेनं क्रव्यात्पृथिव्या नुदतामुदोषतु
वायुरन्तरिक्षान्महतो वरिम्णः ॥७२॥
सूर्य एनं दिवः प्र णुदतां न्योषितु ॥७३॥

इति सप्तविंशः प्रपाठकः॥
॥इति द्वादशं काण्डम्॥

अथ त्रयोदशं काण्डम्॥

अथाष्टाविंशः प्रपाठकः॥

अथ प्रथमोऽनुवाकः [१] प्रथमं सूक्तम्

ऋषिः—ब्रह्मा॥ देवता—अध्यात्मम्, रोहितः, आदित्यः; ३ मरुतः; २८-३० अग्निः; ३१ अग्न्यादयो मन्त्रोक्ताः॥ छन्दः—१, २, ६, ७, १०, ११, २०, २२-२५, २७, ३३, ३४, ३८, ४१, त्रिष्टुप्; ३-५, ९, १२ जगती; ८ भुरिक्त्रिष्टुप्; १३ अतिशाक्वरगर्भातिजगती; १४ त्रिपदापुरःपरशाक्वराविपरीतपादलक्ष्मापङ्क्तिः; १५ अतिजागतगर्भापराजगती; १६ विराड्बृहती; १७ पञ्चपदाककुम्मतीजगती; १८ पञ्चपदापरशाक्वराभुरिक् ककुम्मत्यतिजगती; १९ पञ्चपदापरातिजागताककुम्मत्यतिजगती; २१ आर्षीनिचृद्गायत्री; २६ विराट्परोष्णिक्; २८ भुरिगनुष्टुप्; २९, ३०, ३२, ३९, ४०, ४५, ४६-५१, ५३, ५४, ५६, ५८ अनुष्टुप्; ३१ पञ्चपदाककुम्मतीशाक्वरगर्भाजगती; ३५ उपरिष्टाद्बृहती; ३६ निचृन्महाबृहती; ३७ परशाक्वराविराडतिजगती; ४२ विराड्जगती; ४३ विराण्महाबृहती; ४४ परोष्णिक्; ५२ पथ्यापङ्क्तिः; ५५ ककुम्मतीबृहतीगर्भापथ्यापङ्क्तिः; ५७ ककुम्मत्यनुष्टुप्; ५९, ६० गायत्री॥

उदेहि वाजिन्यो अप्स्वन्तरिदं राष्ट्रं प्र विश सूनृतावत्।
यो रोहितो विश्वमिदं जजान स त्वा राष्ट्राय सुभृतं बिभर्तु॥१॥
उद्वाज आ गन्यो अप्स्वन्तर्विश आ रोह त्वद्योनयो याः।
सोमं दधानोऽप ओषधीर्गाश्चतुष्पदो द्विपद आ वेशयेह॥२॥
यूयमुग्रा मरुतः पृश्निमातर इन्द्रेण युजा प्र मृणीत शत्रून्।
आ वो रोहितः शृणवत्सुदानवस्त्रिषप्तासो मरुतः स्वादुसंमुदः॥३॥
रुहो रुहोह रोहित आ रुरोह गर्भो जनीनां जनुषामुपस्थम्।
ताभिः संरब्धमन्वविन्दन्षडुर्वीर्गातुं प्रपश्यन्निह राष्ट्रमाहाः॥४॥
आ ते राष्ट्रमिह रोहितोऽहार्षीद् व्यास्थन्मृधो अभयं ते अभूत्।
तस्मै ते द्यावापृथिवी रेवतीभिः कामं दुहाथामिह शक्वरीभिः॥५॥
रोहितो द्यावापृथिवी जजान तत्र तन्तुं परमेष्ठी ततान ।
तत्र शिश्रियेऽज एकपादोऽदृंहद् द्यावापृथिवी बलेन ॥६॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

रोहितो द्यावापृथिवी अदृंहत्तेन स्व॒स्तिभितं तेन नाकः।
तेनान्तरिक्षं॑ विमिता रजांसि॒ तेन॑ देवा अमृत॒मन्वविन्दन्॥ ७॥
वि रोहितो अमृशद्विश्वरूपं समाकुर्वाणः प्रुरुहो रुहश्च।
दिवं॑ रूढ्वा महता महि॒म्ना सं तें॑ राष्ट्रमनक्तु पयसा घृतेन॥ ८॥
यास्ते रुहः प्रुरुहो यास्त आरुहो याभि॒रापृणासि॒ दिव॒मन्तरिक्षम्।
तासां॑ ब्रह्मणा पयसा वावृधानो वि॒शि राष्ट्रे जागृहि रोहितस्य॥ ९॥
यास्ते॒ विशस्तपसः संबभूवुर्वत्सं गा॑यत्रीमनु ता इहागुः।
तास्त्वा विशन्तु मनसा शि॒वेन॑ संमाता व॒त्सो अ॒भ्येतु॒ रोहितः॥ १०॥
ऊ॒र्ध्वो रोहितो अधि॒ नाके॑ अस्थाद्विश्वा॑ रूपाणि॑ ज॒नय॒न्युवा॑ क॒विः।
ति॒ग्मेना॒ग्निर्द्यौति॑षा॒ वि भा॑ति तृ॒तीये॑ चक्रे॑ रजसि॒ प्रिया॑णि॥ ११॥
स॒हस्र॑शृङ्गो वृषभो जा॒तवे॑दा घृताहु॒तः सोमपृष्ठः सुवीरः।
मा मा॑ हासीन्नाथि॒तो नेत्त्वा॒ जहा॑नि गोपो॒षं च॑ वीरपो॒षं च॑ धेहि॥ १२॥
रोहितो य॒ज्ञस्य॑ जनि॒ता मुखं॑ च॒ रोहि॑ताय वा॒चा श्रोत्रे॑ण॒ मन॑सा जुहोमि।
रोहितं॑ देवा यन्ति सुमन॒स्यमा॑नाः स मा॒ रोहैः॑ सामि॒त्यै रो॑हयतु॥ १३॥
रोहितो य॒ज्ञं व्यदिधाद्विश्वकर्मणे॒ तस्मा॒त्तेजां॑स्यु॒प मे॒मान्या॑गुः।
वो॒चेय॑ं॒ ते नाभिं॑ भुवन॒स्याधि॑ म॒ज्मनि॑॥ १४॥
आ त्वा॑ रुरोह बृह॒त्यू॒३॒॑त प॒ङ्क्तिरा क॒कुब्व॑र्चसा जातवेदः।
आ त्वा॑ रुरोहोष्णिहाक्षरो॒ वष॑दकार॒ आ त्वा॑ रुरोह रोहितो रेतसा स॒ह॥ १५॥
अ॒यं व॑स्ते॒ गर्भ॑ः पृथि॒व्या दिव॑ं॒ वस्ते॒ऽयम॒न्तरि॑क्षम्।
अ॒यं ब्र॒ध्नस्य॑ वि॒ष्टपि॒ स्वर्लो॑कान्व्या॒निशे॑॥ १६॥
वाचस्पते पृथिवी॑ नः स्यो॒ना स्यो॒ना यो॒नि॒स्तल्पा॑ नः सुशेवा।
इ॒हैव प्रा॒णः सु॒ख्ये नो॑ अस्तु तं त्वा॑ परमेष्ठि॒न्पर्यग्नि॑रायु॒षा वर्च॑सा दधातु॥ १७॥
वाचस्पत ऋतव॒ः पञ्च॒ ये नो॑ वैश्वकर्म॒णाः परि॒ ये सं॑बभू॒वुः। इ॒हैव प्रा॒णः
सु॒ख्ये नो॑ अस्तु तं त्वा॑ परमेष्ठि॒न्परि॒ रोहि॑त आयु॒षा वर्च॑सा दधातु॥ १८॥
वाचस्पते सौमन॒सं मन॑श्च गोष्ठे नो॒ गा ज॒नय॒ यो॒नि॒षु प्र॒जाः।
इ॒हैव प्रा॒णः सु॒ख्ये नो॑ अस्तु तं त्वा॑ परमेष्ठि॒न्पर्यहमायु॒षा वर्च॑सा दधामि॥ १९॥
परि॑ त्वा धात्सवि॒ता दे॒वो अ॒ग्निर्वर्च॑सा मि॒त्रावरु॑णावभि॒ त्वा।
स्व॑र्वा॒ अरा॑तीरवक्रा॒मन्त्रे॒हीदं रा॒ष्ट्रमक॑रः सू॒नृता॑वत्॥ २०॥
यं त्वा॑ पृथ॒ती रथे॒ प्रष्टि॑र्वहति॒ रोहि॑त। शु॒भा या॑सि॒ रि॒णन्न॒पः॥ २१॥
अ॒नु॒व्रता॑ रोहि॒णी रोहि॑तस्य सू॒रिः सु॒वर्णा॑ बृहती सुव॒र्चाः।
तया॒ वाजा॑न्वि॒श्वरू॑पां॒ जये॑म॒ तया॒ विश्वाः॑ पृत॒ना अ॒भि ष्या॑म॥ २२॥

इ॒दं सदो॒ रोहि॑णी॒ रोहि॑तस्या॒सौ पन्था॑ः पृषती॒ येन॒ याति॑।
तां ग॑न्ध॒र्वाः क॒श्यप॒ा उन्न॑यन्ति॒ तां र॑क्षन्ति क॒वयोऽप्र॑मादम्॥ २३॥
सू॒र्य॒स्याश्वा॑ हर॑यः केतु॒मन्त॑ः सदा॑ वहन्त्य॒मृता॑ः सु॒खं रथ॑म्।
घृ॒त॒पाव्ना॑ रोहि॒तो भ्रा॑जमानो॒ दिव॑ं॒ दे॒वः पृ॑षती॒मा वि॑वेश॥ २४॥
यो रोहि॑तो वृष॒भस्ति॒ग्मशृ॑ङ्गः॒ पर्य॒ग्निं परि॒ सूर्य॑ं॒ ब॒भूव॑।
यो विष्टभ्नाति॑ पृथि॒वीं दिव॑ं॒ च॒ तस्मा॒द्वै॒वा अधि॒ सृष्टी॑ः सृजन्ते॥ २५॥
रोहि॑तो दि॒व॒मारु॑हन्महु॒तः पर्य॑॑र्ण॒वात्। सर्वा॑ रुरोह॒ रोहि॑तो रुहः॥ २६॥
वि मि॑मीष्व पयस्वतीं घृ॒ताचीं॑ दे॒वानां॑ धे॒नुरन॑पस्पृगे॒षा।
इन्द्रः॒ सोमं॑ पिबतु॒ क्षेमो॑ अस्त्व॒ग्निः प्र स्तौ॑तु॒ वि मृधो॑ नुदस्व॥ २७॥
समि॑द्धो अ॒ग्निः स॑मिधा॒नो घृ॑तवृ॒द्धो घृ॒ताहु॑तः।
अ॒भी॒षाड् वि॑श्वा॒षाड॒ग्निः स॒पत्ना॑न्हन्तु॒ ये मम॑॥ २८॥
हन्त्वे॑ना॒न्प्र द॑हरत्व॒रिर्यो नः॑ पृत॒न्यति॑।
क्र॒व्या॒दाग्निना॑ व॒यं स॒पत्ना॒न्प्र द॑हामसि॥ २९॥
अ॒वा॒चीना॒नव॑ जहीन्द्र व॒ज्रेण॑ बाहुमान्।
अधा॑ स॒पत्ना॑न्मामकान॒ग्नेस्तेजो॑ऽभिरादिधि॥ ३०॥
अग्ने॑ स॒पत्ना॑नधरा॒न्पादया॒स्मद् व्यथया॑ सजा॒तमु॒त्पिपा॑नं बृहस्पते।
इन्द्रा॑ग्नी मित्रा॑वरुणा॒वधरे॑ पद्यन्ता॒मप्र॑तिमन्यूयमानाः॥ ३१॥
उद्यं॑स्त्वं देव॑ सूर्य स॒पत्ना॑नव॑ मे जहि।
अवै॑ना॒नश्म॑ना जहि ते यन्त्वध॒मं तमः॥ ३२॥
व॒त्सो वि॒राजो॑ वृष॒भो म॑ती॒नामा रु॑रोह शु॒क्रपृ॑ष्ठो॒ऽन्तरि॑क्षम्।
घृ॒तेना॒र्कम॒भ्यर्चि॑न्ति व॒त्सं ब्रह्म॑ सन्तं॒ ब्रह्म॑णा वर्धयन्ति॥ ३३॥
दिव॑ं॒ च॒ रोह॑ पृथि॒वीं च॑ रोह॒ रा॒ष्ट्रं च॒ रोह॒ द्रवि॑णं च रोह।
प्र॒जां च॒ रोह॒मृत॑ं॒ च रोह॒ रोहि॑तेन॒ त॒न्वं॒॑ सं स्पृ॑शस्व॥ ३४॥
ये दे॒वा रा॒ष्ट्रभृ॑तो॒ऽभित॑ो॒ यन्ति॑ सू॒र्य॑म्।
तैष्टे रोहि॑तः संविदा॒नो रा॒ष्ट्रं द॑धातु सुमन॒स्यमा॑नः॥ ३५॥
उत्त्वा॑ य॒ज्ञा ब्रह्म॑पूता वहन्त्यध्व॒गतो॒ हर॑यस्त्वा वहन्ति।
ति॒रः स॑मु॒द्रम॑ति॑ रोचसेऽर्ण॒वम्॥ ३६॥
रोहि॑ते॒ द्यावा॑पृथि॒वी अधि॑ श्रिते॒ वसु॑जिति॑ गो॒जिति॑ संधना॒जिति॑।
स॒हस्रं॑ यस्य॒ जनि॑मानि स॒प्त च॑ वो॒चेय॑ं॒ ते नाभिं॑ भुवन॒स्याधि॑ म॒ज्मनि॑॥ ३७॥
य॒शा या॑सि॒ प्रदि॑शो दि॒शश्च॒ य॒शाः प॑शू॒नामु॒त च॑र्षणी॒नाम्।
य॒शा॒ः पृ॑थि॒व्या॑ अ॒दि॑त्या उ॒पस्थे॒ऽहं भू॑यासं सवि॒तेव॒ चारुः॥ ३८॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अमुत्र सन्निह वेत्थेतः संस्तानि पश्यसि ।
इतः पश्यन्ति रोचनं दिवि सूर्यं विपश्चितम् ॥ ३९ ॥
देवो देवान्मर्चयस्यन्तश्चरस्यर्णवे ।
समानमग्निमिन्धते तं विदुः कवयः परे ॥ ४० ॥
अवः परेण पर एनावरेण पदा वत्सं बिभ्रती गौरुदस्थात् ।
सा कद्रीची कं स्विदर्धं परागात्क्व स्वित्सूते नहि यूथे अस्मिन् ॥ ४१ ॥
एकपदी द्विपदी सा चतुष्पद्यष्टापदी नवपदी बभूवुषी ।
सहस्राक्षरा भुवनस्य पङ्क्तिस्तस्याः समुद्रा अधि वि क्षरन्ति ॥ ४२ ॥
आरोहन्द्यामृतः प्राव मे वचः ।
उत्त्वा यज्ञा ब्रह्मपूता वहन्त्यध्वगतो हरयस्त्वा वहन्ति ॥ ४३ ॥
वेद तत्ते अमर्त्य यत्त आक्रमणं दिवि। यत्ते सधस्थं परमे व्योमन् ॥ ४४ ॥
सूर्यो द्यां सूर्यः पृथिवीं सूर्य आपोऽतिं पश्यति।
सूर्यो भूतस्यैकं चक्षुरा रुरोह दिवं महीम् ॥ ४५ ॥
उर्वीरासन्परिधयो वेदिर्भूमिरकल्पत ।
तत्रैतावग्नी आधत्त हिमं घ्रंसं च रोहितः ॥ ४६ ॥
हिमं घ्रंसं चाधाय यूपान्कृत्वा पर्वतान् ।
वर्षाज्यावग्नी ईजाते रोहितस्य स्वर्विदः ॥ ४७ ॥
स्वर्विदो रोहितस्य ब्रह्मणाग्निः समिध्यते ।
तस्माद् घ्रंसस्तस्माद्धिमस्तस्माद्यज्ञोऽजायत ॥ ४८ ॥
ब्रह्मणाग्नी वावृधानौ ब्रह्मावृद्धौ ब्रह्महुतौ ।
ब्रह्मेन्द्रावग्नी ईजाते रोहितस्य स्वर्विदः ॥ ४९ ॥
सत्ये अन्यः समाहितोऽप्स्वन्यः समिध्यते ।
ब्रह्मेन्द्रावग्नी ईजाते रोहितस्य स्वर्विदः ॥ ५० ॥
यं वातः परिशुम्भति यं वेन्द्रो ब्रह्मणस्पतिः।
ब्रह्मेन्द्रावग्नी ईजाते रोहितस्य स्वर्विदः ॥ ५१ ॥
वेदिं भूमिं कल्पयित्वा दिवं कृत्वा दक्षिणाम् ।
घ्रंसं तदग्निं कृत्वा चकार विश्वमात्मन्वद्वर्षणाज्येन रोहितः ॥ ५२ ॥
वर्षमाज्यं घ्रंसो अग्निर्वेदिर्भूमिरकल्पत ।
तत्रैतान्पर्वतानग्निर्गीरभिरूध्वाँ अकल्पयत् ॥ ५३ ॥
गीर्भिरूर्ध्वान्कल्पयित्वा रोहितो भूमिमब्रवीत्।
त्वयीदं सर्वं जायतां यद्भूतं यच्च भाव्यम् ॥ ५४ ॥

स यज्ञः प्रथमो भूतो भव्यो अजायत। तस्माद्ध जज्ञ
इदं सर्वं यत्किं चेदं विरोचते रोहितेन ऋषिणाभृतम् ॥ ५५ ॥
यश्च गां पदा स्फुरति प्रत्यङ् सूर्यं च मेहति ।
तस्य वृश्चामि ते मूलं न च्छायां करवोऽपरम् ॥ ५६ ॥
यो मांभिच्छायमत्येषि मां चाग्निं चान्तरा ।
तस्य वृश्चामि ते मूलं न च्छायां करवोऽपरम् ॥ ५७ ॥
यो अद्य देव सूर्य त्वां च मां चान्तरायति।
दुष्वप्न्यं तस्मिञ्छमलं दुरितानि च मृज्महे ॥ ५८ ॥
मा प्र गाम पथो वयं मा यज्ञादिन्द्र सोमिनः।
मान्त स्थुर्नो अरातयः ॥ ५९ ॥
यो यज्ञस्य प्रसाधनस्तन्तुर्देवेष्वाततः ।
तमाहुतमशीमहि ॥ ६० ॥

अथ द्वितीयोऽनुवाकः [२] द्वितीयं सूक्तम्

ऋषिः—ब्रह्मा ॥ देवता—अध्यात्मम्, रोहितः, आदित्यः ॥ छन्दः—१, १२-१५, ३९-४१ अनुष्टुप्; २, ३, ८, ४३, जगती; ४-७, ९ २८, ३१, ३२, ३३, ३५, ३६, ३८, ४२, ४६ त्रिष्टुप्; १० आस्तारपङ्क्तिः; ११ बृहतीगर्भात्रिष्टुप्; १६, १७-२४ आर्षीगायत्री; २५ ककुम्मत्यास्तारपङ्क्तिः; २६ पुरोद्व्यति-जागताभुरिग्जगती; २७ विराड्जगती; २९ बार्हतगर्भानुष्टुप्; ३० पञ्चपदोष्णिग्बृहतीगर्भाऽतिजगती; ३४ आर्षीपङ्क्तिः; ३७ पञ्चपदाविराड्गर्भाजगती; ४४ चतुष्पदापुरः-शाक्वराभुरिग्जगती; ४५ अतिजागतगर्भाजगती ॥

उदस्य केतवो दिवि शुक्रा भ्राजन्त ईरते ।
आदित्यस्य नृचक्षसो महिव्रतस्य मीढुषः ॥ १ ॥
दिशां प्रज्ञानीं स्वरयन्तमर्चिषा सुपक्षमाशुं पतयन्तमर्णवे।
स्तवाम सूर्यं भुवनस्य गोपां यो रश्मिभिर्दिशं आभाति सर्वीः ॥ २ ॥
यत्प्राङ् प्रत्यङ् स्वधया यासि शीभं नानारूपे अहनी कर्षि मायया।
तदादित्य महि तत्ते महि श्रवो यदेको विश्वं परि भूम जायसे ॥ ३ ॥
विपश्चितं तरणिं भ्राजमानं वहन्ति यं हरितः सप्त बह्वीः।
स्तुताद्यमत्रिर्दिवमुन्निनाय तं त्वा पश्यन्ति परियान्तमाजिम् ॥ ४ ॥
मा त्वा दभन्परियान्तमाजिं स्वस्ति दुर्गां अति याहि शीभम्।
दिवं च सूर्य पृथिवीं च देवीमहोरात्रे विमिमानो यदेषि ॥ ५ ॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

स्वस्ति ते सूर्य चरसे रथाय येनोभावन्तौ परियासि सद्यः ।
यं ते वहन्ति हरितो वहिष्ठाः शतमश्वा यदि वा सप्त बह्वीः ॥ ६ ॥
सुखं सूर्य रथमंशुमन्तं स्योनं सुवह्निमधि तिष्ठ वाजिनम् ।
यं ते वहन्ति हरितो वहिष्ठाः शतमश्वा यदि वा सप्त बह्वीः ॥ ७ ॥
सप्त सूर्यो हरितो यातवे रथे हिरण्यत्वचसो बृहतीरयुक्त ।
अमोचि शुक्रो रजसः परस्ताद्विधूय देवस्तमो दिवमारुहत् ॥ ८ ॥
उत्केतुना बृहता देव आगन्नपावृक्तमोऽभि ज्योतिरश्रैत् ।
दिव्यः सुपर्णः स वीरो व्यख्यिददितेः पुत्रो भुवनानि विश्वा ॥ ९ ॥
उद्यन्त्रश्मीना तनुषे विश्वा रूपाणि पुष्यसि ।
उभा समुद्रौ क्रतुना वि भासि सर्वाँल्लोकान्परिभूर्भ्राजमानः ॥ १० ॥
पूर्वापरं चरतो माययैतौ शिशू क्रीडन्तौ परि यातोऽर्णवम् ।
विश्वान्यो भुवना विचष्टे हैरण्यैरन्यं हरितो वहन्ति ॥ ११ ॥
दिवि त्वात्रिरधारयत्सूर्यं मासाय कर्तवे ।
स एषि सुधृतस्तपन्विश्वा भूतावचाकशत् ॥ १२ ॥
उभावन्तौ समर्षसि वत्सः संमातराविव ।
नन्वेतदितः पुरा ब्रह्मा देवा अमी विदुः ॥ १३ ॥
यत्समुद्रमनु श्रितं तत्सिषासति सूर्यः ।
अध्वास्य विततो महान्पूर्वश्चापरश्च यः ॥ १४ ॥
तं समाप्नोति जूतिभिस्ततो नापं चिकित्सति ।
तेनामृतस्य भक्षं देवानां नाव रुन्धते ॥ १५ ॥
उदु त्यं जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः । दृशे विश्वाय सूर्यम् ॥ १६ ॥
अप त्ये तायवो यथा नक्षत्रा यन्त्यक्तुभिः । सूराय विश्वचक्षसे ॥ १७ ॥
अदृश्रन्नस्य केतवो वि रश्मयो जनाँ अनु । भ्राजन्तो अग्नयो यथा ॥ १८ ॥
तरणिर्विश्वदर्शतो ज्योतिष्कृदसि सूर्य । विश्वमा भासि रोचन ॥ १९ ॥
प्रत्यङ् देवानां विशः प्रत्यङ्ङुदेषि मानुषीः । प्रत्यङ्विश्वं स्वर्दृशे ॥ २० ॥
येना पावक चक्षसा भुरण्यन्तं जनाँ अनु । त्वं वरुण पश्यसि ॥ २१ ॥
वि द्यामेषि रजस्पृथ्वहर्मानो अक्तुभिः । पश्यञ्जन्मानि सूर्य ॥ २२ ॥
सप्त त्वा हरितो रथे वहन्ति देव सूर्य । शोचिष्केशं विचक्षणम् ॥ २३ ॥
अयुक्त सप्त शुन्ध्युवः सूरो रथस्य नप्त्यः । ताभिर्याति स्वयुक्तिभिः ॥ २४ ॥
रोहितो दिवमारुहत्तपसा तपस्वी ।
स योनिमेति स उ जायते पुनः स देवानामधिपतिर्बभूव ॥ २५ ॥
यो विश्वचर्षणिरुत विश्वतोमुखो यो विश्वतस्पाणिरुत विश्वतस्पृथः ।
सं बाहुभ्यां भरति सं पतत्रैर्द्यावापृथिवी जनयन्देव एकः ॥ २६ ॥
एकपाद् द्विपदो भूयो वि चक्रमे द्विपात्त्रिपादमभ्येति पश्चात् ।
द्विपाद्ध षट्पदो भूयो वि चक्रमे त एकपदस्तन्वः समासते ॥ २७ ॥
अतन्द्रो यास्यन्हरितो यदास्थाद् द्वे रूपे कृणुते रोचमानः ।
केतुमानुद्यन्त्सहमानो रजांसि विश्वा आदित्य प्रवतो वि भासि ॥ २८ ॥
बण्महाँ असि सूर्य बडादित्य महाँ असि ।
महांस्ते महतो महिमा त्वमादित्य महाँ असि ॥ २९ ॥
रोचसे दिवि रोचसे अन्तरिक्षे पतङ्ग पृथिव्यां रोचसे रोचसे अप्स्वन्तः ।
उभा समुद्रौ रुच्या व्यापिथ देवो देवासि महिषः स्वर्जित् ॥ ३० ॥
अर्वाङ् परस्तात्प्रयतो व्यध्व आशुर्विपश्चित्पतयन्पतङ्गः ।
विष्णुर्विचित्तः शवसाधितिष्ठन्न्र केतुना सहते विश्वमेजत् ॥ ३१ ॥
चित्रश्चिकित्वान्महिषः सुपर्ण आरोचयन्रोदसी अन्तरिक्षम् ।
अहोरात्रे परि सूर्यं वसाने प्रास्य विश्वा तिरतो वीर्याणि ॥ ३२ ॥
तिग्मो विभ्राजन्तन्वं शिशानोऽरंगमासः प्रवतो ररांणः ।
ज्योतिष्मान्पक्षी महिषो वयोधा विश्वा आस्थात्प्रदिशः कल्पमानः ॥ ३३ ॥
चित्रं देवानां केतुरनीकं ज्योतिष्मान्प्रदिशः सूर्य उद्यन् ।
दिवाकरोऽति द्युम्नैस्तमांसि विश्वातारीद्रितानि शुक्रः ॥ ३४ ॥
चित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः ।
आप्राद् द्यावापृथिवी अन्तरिक्षं सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च ॥ ३५ ॥
उच्चा पतन्तमरुणं सुपर्णं मध्ये दिवस्तरणिं भ्राजमानम् ।
पश्याम त्वा सवितारं यमाहुरजस्रं ज्योतिर्यदविन्दुदत्रिः ॥ ३६ ॥
दिवस्पृष्ठे धावमानं सुपर्णमदित्याः पुत्रं नाथकाम उप यामि भीतः ।
स नः सूर्य प्र तिर दीर्घमायुर्मा रिषाम सुमतौ ते स्याम ॥ ३७ ॥
सहस्राक्षयं वियतावस्य पक्षौ हरेर्हंसस्य पततः स्वर्गम् ।
स देवान्त्सर्वानुरस्युपदद्य संपश्यन्याति भुवनानि विश्वा ॥ ३८ ॥
रोहितः कालो अभवद्रोहितोऽग्रे प्रजापतिः ।
रोहितो यज्ञानां मुखं रोहितः स्वराभरत् ॥ ३९ ॥
रोहितो लोको अभवद्रोहितोऽत्यतपद्दिवम् ।
रोहितो रश्मिभिर्भूमिं समुद्रमनु सं चरत् ॥ ४० ॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सर्वा॒ दिशः॒ सम॑चर॒द्रोहि॒तोऽधि॑पतिर्दि॒वः ।
दिवं॑ समु॒द्रमाद्भूमिं॒ सर्वं॑ भू॒तं वि र॑क्षति ॥ ४१ ॥
आ॒रोह॑ञ्छु॒क्रो बृ॑ह॒तीरत॑न्द्रो॒ द्वे रू॒पे कृ॑णु॒ते रोच॑मानः ।
चि॒त्रश्चि॑कि॒त्वान्म॑हि॒षो वात॑माया॒ याव॑तो लो॒कान॒भि यद्वि॒भाति॑ ॥ ४२ ॥
अ॒भ्य१॒॑न्यदे॑ति॒ पर्य॒न्यद॑स्यतेऽहोरा॒त्राभ्यां॑ महि॒षः कल्प॑मानः ।
सूर्यं॑ व॒यं रज॑सि क्षि॒यन्तं॑ गातु॒विदं॑ हवामहे॒ नाध॑मानाः ॥ ४३ ॥
पृ॒थि॒वी॒प्रो म॑हि॒षो नाध॑मानस्य गा॒तुरद॑ब्धचक्षुः॒ परि॒ विश्वं॑ ब॒भूव॑ ।
विश्वं॑ सं॒पश्य॑न्त्सुवि॒दत्रो॒ यज॑त्र इ॒दं शृ॑णोतु॒ यद॒हं ब्रवी॑मि ॥ ४४ ॥
पर्य॑स्य महि॒मा पृ॑थि॒वीं स॑मु॒द्रं ज्योति॑षा वि॒भ्राज॒न्परि॒ द्याम॒न्तरि॑क्षम् ।
सर्वं॑ सं॒पश्य॑न्त्सुवि॒दत्रो॒ यज॑त्र इ॒दं शृ॑णोतु॒ यद॒हं ब्रवी॑मि ॥ ४५ ॥
अबो॑ध्य॒ग्निः स॒मिधा॒ जना॑नां॒ प्रति॑ धे॒नुमि॑वाय॒तीमु॒षास॑म् ।
य॒ह्वाइ॑व॒ प्र व॒यामु॒ज्जिहा॑नाः॒ प्र भा॒नवः॑ सिस्रते॒ नाक॒मच्छ॑ ॥ ४६ ॥

अथ तृतीयोऽनुवाकः [३] तृतीयं सूक्तम्

ऋषिः—ब्रह्मा ॥ देवता—अध्यात्मम्, रोहितः, आदित्यः ॥ छन्दः—१, १६, १८, २१ अष्टपदाऽऽकृतिः; २ षट्पदाभुरिगष्टिः; ३ षट्पदाऽष्टिः; ४ षट्पदाऽतिशाक्वरगर्भाधृतिः; ५, ६ सप्तपदाशाक्वरातिशाक्वरगर्भाप्रकृतिः; ७ सप्तपदाऽनुष्टुब्गर्भाऽतिधृतिः; ८, २०, २२ षट्पदाऽत्यष्टिः; ९-१२ सप्तपदाभुरिगतिधृतिः १३, १४, २३, २५, अष्टपदाविकृतिः; १५ सप्तपदानिचृदतिधृतिः; १७, २४ सप्तपदाकृतिः; १९ अष्टपदाभुरिगाकृतिः; २६ त्रिष्टुप् ॥

य इ॒मे द्यावा॑पृथि॒वी ज॒जान॒ यो द्रापिं॑ कृ॒त्वा भुव॑नानि॒ वस्ते॑ ।
यस्मि॑न्क्षि॒यन्ति॑ प्र॒दिशः॒ षडु॒र्वीर्याः प॑त॒ङ्गो अनु॑ वि॒चाक॑शीति॒
तस्य॑ दे॒वस्य॑ । क्रु॒द्धस्यै॒तदागो॒ य ए॒वं वि॒द्वांसं॑ ब्राह्म॒णं जि॒नाति॑ ।
उद्वे॑पय रोहित॒ प्र क्षि॑णीहि ब्रह्म॒ज्यस्य॒ प्रति॑ मुञ्च॒ पाशा॑न् ॥ १ ॥
यस्मा॒द्वाता॑ ऋतु॒था पव॑न्ते॒ यस्मा॑त्समु॒द्रा अधि॑ वि॒क्षरन्ति
तस्य॑ दे॒वस्य॑ । क्रु॒द्धस्यै॒तदागो॒ य ए॒वं वि॒द्वांसं॑ ब्राह्म॒णं जि॒नाति॑ ।
उद्वे॑पय रोहित॒ प्र क्षि॑णीहि ब्रह्म॒ज्यस्य॒ प्रति॑ मुञ्च॒ पाशा॑न् ॥ २ ॥
यो मा॒रय॑ति प्रा॒णय॑ति॒ यस्मा॑त्प्रा॒णन्ति॒ भुव॑नानि॒ विश्वा॒
तस्य॑ दे॒वस्य॑ । क्रु॒द्धस्यै॒तदागो॒ य ए॒वं वि॒द्वांसं॑ ब्राह्म॒णं जि॒नाति॑ ।
उद्वे॑पय रोहित॒ प्र क्षि॑णीहि ब्रह्म॒ज्यस्य॒ प्रति॑ मुञ्च॒ पाशा॑न् ॥ ३ ॥
यः प्रा॒णेन॒ द्यावा॑पृथि॒वी त॒र्पय॑त्यपा॒नेन॑ समु॒द्रस्य॑ ज॒ठरं॒ यः पिप॑र्ति॒
तस्य॑ दे॒वस्य॑ । क्रु॒द्धस्यै॒तदागो॒ य ए॒वं वि॒द्वांसं॑ ब्राह्म॒णं जि॒नाति॑ ।
उद्वे॑पय रोहित॒ प्र क्षि॑णीहि ब्रह्म॒ज्यस्य॒ प्रति॑ मुञ्च॒ पाशा॑न् ॥ ४ ॥
यस्मि॑न्वि॒राट् प॑रमे॒ष्ठी प्र॒जाप॑तिर॒ग्निर्वै॑श्वान॒रः स॒ह प॒ङ्क्त्या श्रि॒तः ।
यः पर॑स्य प्रा॒णं प॑र॒मस्य॒ तेज॑ आद॒देतस्य॑ दे॒वस्य॑ ।
क्रु॒द्धस्यै॒तदागो॒ य ए॒वं वि॒द्वांसं॑ ब्राह्म॒णं जि॒नाति॑ ।
उद्वे॑पय रोहित॒ प्र क्षि॑णीहि ब्रह्म॒ज्यस्य॒ प्रति॑ मुञ्च॒ पाशा॑न् ॥ ५ ॥
यस्मि॒न्षडु॒र्वीः पञ्च॒ दिशो॒ अधि॑ श्रि॒ताश्चत॑स्र॒ आपो॑ य॒ज्ञस्य॒ त्रयो॒ऽक्षराः॑ ।
यो अ॑न्त॒रा रोद॑सी क्रु॒द्धश्चक्षु॒षैक्ष॑त तस्य॑ दे॒वस्य॑ ।
क्रु॒द्धस्यै॒तदागो॒ य ए॒वं वि॒द्वांसं॑ ब्राह्म॒णं जि॒नाति॑ ।
उद्वे॑पय रोहित॒ प्र क्षि॑णीहि ब्रह्म॒ज्यस्य॒ प्रति॑ मुञ्च॒ पाशा॑न् ॥ ६ ॥
यो अ॑न्ना॒दो अन्न॑पतिर्ब॒भूव॒ ब्रह्म॑ण॒स्पति॑रु॒त यः ।
भू॒तो भ॑वि॒ष्यद्भुव॑नस्य॒ यस्पतिः॒ तस्य॑ दे॒वस्य॑ ।
क्रु॒द्धस्यै॒तदागो॒ य ए॒वं वि॒द्वांसं॑ ब्राह्म॒णं जि॒नाति॑ ।
उद्वे॑पय रोहित॒ प्र क्षि॑णीहि ब्रह्म॒ज्यस्य॒ प्रति॑ मुञ्च॒ पाशा॑न् ॥ ७ ॥
अ॒हो॒रा॒त्रैर्विमि॑तं त्रिं॒शद॑ङ्गं त्रयोद॒शं मासं॒ यो नि॒र्मिमी॑ते तस्य॑ दे॒वस्य॑ ।
क्रु॒द्धस्यै॒तदागो॒ य ए॒वं वि॒द्वांसं॑ ब्राह्म॒णं जि॒नाति॑ ।
उद्वे॑पय रोहित॒ प्र क्षि॑णीहि ब्रह्म॒ज्यस्य॒ प्रति॑ मुञ्च॒ पाशा॑न् ॥ ८ ॥
कृ॒ष्णं नि॒यानं॒ हर॑यः सुप॒र्णा अ॒पो वसा॑ना॒ दिव॒मुत्प॑तन्ति ।
त आव॑वृत्र॒न्त्सद॑नादृ॒तस्य॑ तस्य॑ दे॒वस्य॑ ।
क्रु॒द्धस्यै॒तदागो॒ य ए॒वं वि॒द्वांसं॑ ब्राह्म॒णं जि॒नाति॑ ।
उद्वे॑पय रोहित॒ प्र क्षि॑णीहि ब्रह्म॒ज्यस्य॒ प्रति॑ मुञ्च॒ पाशा॑न् ॥ ९ ॥
यत्ते॑ च॒न्द्रं क॑श्यप रोच॒नाव॒द्यत्सं॑हि॒तं पु॑ष्कलं चि॒त्रभा॑नु ।
यस्मि॒न्त्सूर्या॒ आर्पि॑ताः स॒प्त सा॒कम् तस्य॑ दे॒वस्य॑ ।
क्रु॒द्धस्यै॒तदागो॒ य ए॒वं वि॒द्वांसं॑ ब्राह्म॒णं जि॒नाति॑ ।
उद्वे॑पय रोहित॒ प्र क्षि॑णीहि ब्रह्म॒ज्यस्य॒ प्रति॑ मुञ्च॒ पाशा॑न् ॥ १० ॥
बृ॒हदे॑न॒मनु॑ वस्ते पु॒रस्ता॑द्रथंत॒रं प्रति॑ गृह्णाति प॒श्चात् ।
ज्योति॒र्वसा॑ने॒ सद॒मप्र॑माद॒म् तस्य॑ दे॒वस्य॑ ।
क्रु॒द्धस्यै॒तदागो॒ य ए॒वं वि॒द्वांसं॑ ब्राह्म॒णं जि॒नाति॑ ।
उद्वे॑पय रोहित॒ प्र क्षि॑णीहि ब्रह्म॒ज्यस्य॒ प्रति॑ मुञ्च॒ पाशा॑न् ॥ ११ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

बृहदुन्यतः पक्ष आसीद्रथन्तरमुन्यतः सबले सधीचीं ।
यद्रोहितमजनयन्त देवास्तस्य देवस्य ।
क्रुद्धस्यैतदागो य एवं विद्वांसं ब्राह्मणं जिनाति ।
उद्वेपय रोहित प्र क्षिणीहि ब्रह्मज्यस्य प्रतिं मुञ्च पाशान् ॥ १२ ॥
स वरुणः सायमग्निर्भवति स मित्रो भवति प्रातरुद्यन् ।
स सविता भूत्वान्तरिक्षेण याति स इन्द्रो भूत्वा तपति मध्यतो दिवं
तस्य देवस्य। क्रुद्धस्यैतदागो य एवं विद्वांसं ब्राह्मणं जिनाति ।
उद्वेपय रोहित प्र क्षिणीहि ब्रह्मज्यस्य प्रतिं मुञ्च पाशान् ॥ १३ ॥
सहस्राक्षयं वियतावस्य पक्षौ हरेर्हंसस्य पततः स्वर्गम् ।
स देवान्त्सर्वानुरस्युपदद्य संपश्यन्याति भुवनानि विश्वा
तस्य देवस्य। क्रुद्धस्यैतदागो य एवं विद्वांसं ब्राह्मणं जिनाति ।
उद्वेपय रोहित प्र क्षिणीहि ब्रह्मज्यस्य प्रतिं मुञ्च पाशान् ॥ १४ ॥
अयं स देवो अप्स्वन्तः सहस्वमूलः पुरुशाको अत्रिः ।
य इदं विश्वं भुवनं जजान तस्य देवस्य ।
क्रुद्धस्यैतदागो य एवं विद्वांसं ब्राह्मणं जिनाति ।
उद्वेपय रोहित प्र क्षिणीहि ब्रह्मज्यस्य प्रतिं मुञ्च पाशान् ॥ १५ ॥
शुक्रं वहन्ति हरयो रघुष्यदो देवं दिवि वर्चसा भ्राजमानम् ।
यस्योध्वां दिवं तन्वस्तपन्त्यर्वाङ् सुवर्णैः पटरैर्वि भाति
तस्य देवस्य। क्रुद्धस्यैतदागो य एवं विद्वांसं ब्राह्मणं जिनाति ।
उद्वेपय रोहित प्र क्षिणीहि ब्रह्मज्यस्य प्रतिं मुञ्च पाशान् ॥ १६ ॥
येनादित्यान्हरितः संवहन्ति येन यज्ञेन बहवो यन्ति प्रजानन्तः ।
यदेकं ज्योतिर्बहुधा विभाति तस्य देवस्य ।
क्रुद्धस्यैतदागो य एवं विद्वांसं ब्राह्मणं जिनाति ।
उद्वेपय रोहित प्र क्षिणीहि ब्रह्मज्यस्य प्रतिं मुञ्च पाशान् ॥ १७ ॥
सप्त युञ्जन्ति रथमेकचक्रमेको अश्वो वहति सप्तनामा ।
त्रिनाभि चक्रमजरमनर्वं यत्रेमा विश्वा भुवनाधि तस्थुस्तस्य
देवस्य। क्रुद्धस्यैतदागो य एवं विद्वांसं ब्राह्मणं जिनाति ।
उद्वेपय रोहित प्र क्षिणीहि ब्रह्मज्यस्य प्रतिं मुञ्च पाशान् ॥ १८ ॥
अष्टधा युक्तो वहति वह्निरुग्रः पिता देवानां जनिता मतीनाम् ।
ऋतस्य तन्तुं मनसा मिमानः सर्वा दिशः पवते मातरिश्वा
तस्य देवस्य। क्रुद्धस्यैतदागो य एवं विद्वांसं ब्राह्मणं जिनाति ।
उद्वेपय रोहित प्र क्षिणीहि ब्रह्मज्यस्य प्रतिं मुञ्च पाशान् ॥ १९ ॥
सम्यञ्चं तन्तुं प्रदिशोऽनु सर्वा अन्तर्गोयत्र्यामृतस्य गर्भे
तस्य देवस्य। क्रुद्धस्यैतदागो य एवं विद्वांसं ब्राह्मणं जिनाति ।
उद्वेपय रोहित प्र क्षिणीहि ब्रह्मज्यस्य प्रतिं मुञ्च पाशान् ॥ २० ॥
निम्रुचस्तिस्रो व्युषो ह तिस्रस्त्रीणि रजांसि दिवो अङ्ग तिस्रः ।
विद्मा ते अग्ने त्रेधा जनित्रं त्रेधा देवानां जनिमानि विद्म
तस्य देवस्य। क्रुद्धस्यैतदागो य एवं विद्वांसं ब्राह्मणं जिनाति ।
उद्वेपय रोहित प्र क्षिणीहि ब्रह्मज्यस्य प्रतिं मुञ्च पाशान् ॥ २१ ॥
वि य और्णोत्पृथिवीं जायमान आ समुद्रमदधादन्तरिक्षे
तस्य देवस्य। क्रुद्धस्यैतदागो य एवं विद्वांसं ब्राह्मणं जिनाति ।
उद्वेपय रोहित प्र क्षिणीहि ब्रह्मज्यस्य प्रतिं मुञ्च पाशान् ॥ २२ ॥
त्वमग्ने क्रतुभिः केतुभिर्हितो ३ र्कः समिद्ध उदरोचथा दिवि ।
किमभ्यार्चिन्मरुतः पृश्निमातरो यद्रोहितमजनयन्त देवास्तस्य
देवस्य। क्रुद्धस्यैतदागो य एवं विद्वांसं ब्राह्मणं जिनाति ।
उद्वेपय रोहित प्र क्षिणीहि ब्रह्मज्यस्य प्रतिं मुञ्च पाशान् ॥ २३ ॥
य आत्मदा बलदा यस्य विश्व उपासते प्रशिषं यस्य देवाः ।
यो ३ स्येशे द्विपदो यश्चतुष्पदस्तस्य देवस्य ।
क्रुद्धस्यैतदागो य एवं विद्वांसं ब्राह्मणं जिनाति ।
उद्वेपय रोहित प्र क्षिणीहि ब्रह्मज्यस्य प्रतिं मुञ्च पाशान् ॥ २४ ॥
एकपाद् द्विपदो भूयो वि चक्रमे द्विपात्रिपादमभ्येति पश्चात् ।
चतुष्पाच्चक्रे द्विपदामभिस्वरे संपश्यन्पङ्क्तिमुपतिष्ठमानस्तस्य
देवस्य। क्रुद्धस्यैतदागो य एवं विद्वांसं ब्राह्मणं जिनाति ।
उद्वेपय रोहित प्र क्षिणीहि ब्रह्मज्यस्य प्रतिं मुञ्च पाशान् ॥ २५ ॥
कृष्णायाः पुत्रो अजुनो रात्र्या वत्सोऽजायत ।
स ह द्यामधि रोहति रुहो रुरोह रोहितः ॥ २६ ॥

अथ चतुर्थोऽनुवाकः [४] चतुर्थं सूक्तम्; प्रथमः पर्यायः

ऋषिः—ब्रह्मा ॥ देवता—अध्यात्मम् ॥ छन्दः—१-११ प्राजापत्यानुष्टुप्; १२ विराड्गायत्री; १३ आसुर्युष्णिक् ॥

स एति सविता स्वर्दिवस्पृष्ठेऽध्वाकशत् ॥ १ ॥
रश्मिभिर्नभ आभृतं महेन्द्र एत्यावृतः ॥ २ ॥
स धाता स विधर्ता स वायुर्नभ उच्छ्रितम् ।
रश्मिभिर्नभ आभृतं महेन्द्र एत्यावृतः ॥ ३ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सोऽर्यमा स वरुणः स रुद्रः स महादेवः ।
रश्मिभिर्नभ आभृतं महेन्द्र एत्यावृतः ॥४॥
सो अग्निः स उ सूर्यः स उ एव महायमः ।
रश्मिभिर्नभ आभृतं महेन्द्र एत्यावृतः ॥५॥
तं वत्सा उप तिष्ठन्त्येकशीर्षाणो युता दश ।
रश्मिभिर्नभ आभृतं महेन्द्र एत्यावृतः ॥६॥
पश्चात्प्राञ्च आ तन्वन्ति यदुदेति वि भासति ।
रश्मिभिर्नभ आभृतं महेन्द्र एत्यावृतः ॥७॥
तस्यैष मारुतो गणः स एति शिक्याकृतः ॥८॥
रश्मिभिर्नभ आभृतं महेन्द्र एत्यावृतः ॥९॥
तस्येमे नव कोशा विष्टम्भा नवधा हिताः ॥१०॥
स प्रजाभ्यो वि पश्यति यच्च प्राणति यच्च न ॥११॥
तमिदं निगतं सहः स एष एक एकवृदेक एव ॥१२॥
एते असिन्देवा एकवृतो भवन्ति ॥१३॥

[४] चतुर्थं सूक्तम्; द्वितीयः पर्यायः

ऋषिः—ब्रह्मा ॥ देवता—अध्यात्मम् ॥ छन्दः—१४ भुरिक्साम्नीत्रिष्टुप्; १५ आसुरीपङ्क्तिः; १६, १९ प्राजापत्यानुष्टुप्; १७, १८ आसुरी-गायत्री; २० विराड्गायत्री; २१ आसुर्युष्णिक् (१५-२१ य एतमित्यस्योक्तमेव) ॥

कीर्तिश्च यशश्चाम्भश्च नभश्च ब्राह्मणवर्चसं चान्नं चान्नाद्यं च ॥१४॥
य एतं देवमेकवृतं वेद ॥१५॥
न द्वितीयो न तृतीयश्चतुर्थो नाप्युच्यते । य एतं देवमेकवृतं वेद ॥१६॥
पञ्चमो न षष्ठः सप्तमो नाप्युच्यते । य एतं देवमेकवृतं वेद ॥१७॥
नाष्टमो न नवमो दशमो नाप्युच्यते । य एतं देवमेकवृतं वेद ॥१८॥
स सर्वस्मै वि पश्यति यच्च प्राणति यच्च न । य एतं देवमेकवृतं वेद ॥१९॥
तमिदं निगतं सहः स एष एक एकवृदेक एव । य एतं देवमेकवृतं वेद ॥२०॥
सर्वे अस्मिन्देवा एकवृतो भवन्ति । य एतं देवमेकवृतं वेद ॥२१॥

[४] चतुर्थं सूक्तम्; तृतीयः पर्यायः

ऋषिः—ब्रह्मा ॥ देवता—अध्यात्मम् ॥ छन्दः—२२ भुरिक्प्राजापत्या त्रिष्टुप् (य एतमित्यस्योक्तमेव); २३ आर्चीगायत्री; २४ आसुरीपङ्क्तिः २५ एकपदाऽऽसुरीगायत्री; २६ आर्षीगायत्री; २७, २८ प्राजापत्यानुष्टुप् ॥

ब्रह्म च तपश्च कीर्तिश्च यशश्चाम्भश्च नभश्च
ब्राह्मणवर्चसं चान्नं चान्नाद्यं च । य एतं देवमेकवृतं वेद ॥२२॥
भूतं च भव्यं च श्रद्धा च रुचिश्च स्वर्गश्च स्वधा च ॥२३॥
य एतं देवमेकवृतं वेद ॥२४॥
स एव मृत्युः सोऽमृतं सोऽभ्वं स रक्षः ॥२५॥
स रुद्रो वसुवनिर्वसुदेयो नमोवाके वषट्कारोऽनु संहितः ॥२६॥
तस्येमे सर्वे यातव उप प्रशिषमासते ॥२७॥
तस्यामू सर्वा नक्षत्रा वशे चन्द्रमसा सह ॥२८॥

[४] चतुर्थं सूक्तम्; चतुर्थः पर्यायः

ऋषिः—ब्रह्मा ॥ देवता—अध्यात्मम् ॥ छन्दः—२९, ३३, ३९, ४०, ४५ आसुरीगायत्री; ३०, ३२, ३५, ३६, ४२ प्राजापत्यानुष्टुप्; ३१ विराड्गायत्री; ३४, ३७, ३८ साम्न्युष्णिक्; ४१ साम्नीबृहती; ४३ आर्षीगायत्री; ४४ साम्न्यनुष्टुप् ॥

स वा अह्नोऽजायत तस्मादहरजायत ॥२९॥
स वै रात्र्या अजायत तस्माद्रात्रिरजायत ॥३०॥
स वा अन्तरिक्षादजायत तस्मादन्तरिक्षमजायत ॥३१॥
स वै वायोरजायत तस्माद्वायुरजायत ॥३२॥
स वै दिवोऽजायत तस्माद् द्यौरज्यजायत ॥३३॥
स वै दिग्भ्योऽजायत तस्माद्दिशोऽजायन्त ॥३४॥
स वै भूमेरजायत तस्माद्भूमिरजायत ॥३५॥
स वा अग्नेरजायत तस्मादग्निरजायत ॥३६॥
स वा अद्भ्योऽजायत तस्मादापोऽजायन्त ॥३७॥
स वा ऋग्भ्योऽजायत तस्मादृचोऽजायन्त ॥३८॥
स वै यज्ञादजायत तस्माद्यज्ञोऽजायत ॥३९॥
स यज्ञस्तस्य यज्ञः स यज्ञस्य शिरस्कृतम् ॥४०॥
स स्तनयति स वि द्योतते स उ अश्मानमस्यति ॥४१॥
पापाय वा भद्राय वा पुरुषायासुराय वा ॥४२॥
यद्वा कृणोष्योषधीर्यद्वा वर्षसि भद्रया यद्वा जन्यमवीवृधः ॥४३॥
तावांस्ते मघवन्महिमोपो ते तन्वः शतम् ॥४४॥
उपो ते ब्रह्मे ब्रह्मानि यदि वासि न्यर्बुदम् ॥४५॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

[४] चतुर्थं सूक्तम्; पञ्चमः पर्यायः

ऋषिः—ब्रह्मा॥ देवता—अध्यात्मम्॥ छन्दः—४६ आसुरीगायत्री; ४७ यवमध्या-गायत्री; ४८ साम्न्युष्णिक्; ४९ निचृत्साम्नीबृहती; ५० प्राजापत्याऽनुष्टुप्; ५१ विराड्गायत्री (५०, ५१ नमस्ते इत्यस्यान्नाद्येनित्यस्य चोक्तमेव)॥

भूयानिन्द्रो नमुराद्भूयानिन्द्रासि मृत्युभ्यः ॥४६॥

भूयानरात्याः शच्याः पतिस्त्वमिन्द्रासि विभूः प्रभूरिति त्वोपास्महे वयम्॥४७॥

नमस्ते अस्तु पश्यत पश्यं मा पश्यत ॥४८॥

अन्नाद्येन यशसा तेजसा ब्राह्मणवर्चसेन ॥४९॥

अम्भो अमो महः सहु इति त्वोपास्महे वयम् ।

नमस्ते अस्तु पश्यत पश्यं मा पश्यत ।

अन्नाद्येन यशसा तेजसा ब्राह्मणवर्चसेन ॥५०॥

अम्भो अरुणं रजतं रजः सहु इति त्वोपास्महे वयम्।

नमस्ते अस्तु पश्यत पश्यं मा पश्यत ।

अन्नाद्येन यशसा तेजसा ब्राह्मणवर्चसेन ॥५१॥

[४] चतुर्थं सूक्तम्; षष्ठः पर्यायः

ऋषिः—ब्रह्मा॥ देवता—अध्यात्मम्॥ छन्दः—५२, ५३ प्राजापत्याऽनुष्टुप् (नमस्ते इत्यस्यान्नाद्येनित्यस्य चोक्तमेव); ५४ द्विपदाऽर्षीगायत्री; ५५ साम्न्युष्णिक्; ५६ निचृत्साम्नीबृहती॥

उरुः पृथुः सुभूर्भुव इति त्वोपास्महे वयम् ।

नमस्ते अस्तु पश्यत पश्यं मा पश्यत ।

अन्नाद्येन यशसा तेजसा ब्राह्मणवर्चसेन ॥५२॥

प्रथो वरो व्यचो लोक इति त्वोपास्महे वयम्।

नमस्ते अस्तु पश्यत पश्यं मा पश्यत ।

अन्नाद्येन यशसा तेजसा ब्राह्मणवर्चसेन ॥५३॥

भवद्वसुरिदद्वसुः संयद्वसुरायद्वसुरिति त्वोपास्महे वयम्॥५४॥

नमस्ते अस्तु पश्यत पश्यं मा पश्यत ॥५५॥

अन्नाद्येन यशसा तेजसा ब्राह्मणवर्चसेन ॥५६॥

इत्यष्टाविंशः प्रपाठकः॥

॥इति त्रयोदशं काण्डम्॥

अथ चतुर्दशं काण्डम्॥

अथैकोनत्रिंशः प्रपाठकः॥

अथ प्रथमोऽनुवाकः [१] प्रथमं सूक्तम्

ऋषिः—सावित्री सूर्या॥ देवता—आत्मा; १-५ सोमः; ६-२२ विवाहः; २३ सोमार्कौ; २४ चन्द्रमाः; २५, २७ वधूवासः संस्पर्शमोचनम्; २६, २८-६४ विवाहमन्त्राशिषः॥ छन्दः—१-१३, १६-१८, २२, २५-२८, ३०, ३५, ३६, ४१-४४, ५१, ५२, ६२, ६३ अनुष्टुप्; १४ विराट्प्रस्तारपङ्क्तिः; १५ आस्तारपङ्क्तिः; १९, २०, २४, ३२, ३३, ३७, ३९, ४०, ४७, ४९, ५०, ५३, ५६-५९, ६१ त्रिष्टुप्; २१, ४६, ६४ जगती; २३, ३१, ४५, ६० त्रिष्टुप्; २९, ५५ पुरस्ताद्बृहती; ३४ प्रस्तारपङ्क्तिः; ३८ पुरोबृहती त्रिपदापरोष्णिक्; ४८ पथ्यापङ्क्तिः; ५४ भुरिक्त्रिष्टुप्॥

सत्येनोत्तभिता भूमिः सूर्येणोत्तभिता द्यौः।

ऋतेनादित्यास्तिष्ठन्ति दिवि सोमो अधि श्रितः॥१॥

सोमेनादित्या बलिनः सोमेन पृथिवी मही।

अथो नक्षत्राणामेषामुपस्थे सोम आहितः॥२॥

सोमं मन्यते पपिवान्यत्संपिंषन्त्योषधिम्।

सोमं यं ब्रह्माणो विदुर्न तस्याश्नाति पार्थिवः॥३॥

यत्त्वा सोम प्रपिबन्ति तत आ प्यायसे पुनः।

वायुः सोमस्य रक्षिता समानां मास आकृतिः॥४॥

आच्छद्विधानैर्गुपितो बार्हतैः सोम रक्षितः।

ग्राव्णामिच्छृण्वन्तिष्ठसि न ते अश्नाति पार्थिवः॥५॥

चित्तिरा उपबर्हणं चक्षुरा अभ्यञ्जनम् ।

द्यौर्भूमिः कोश आसीद्यदयात्सूर्या पतिम्॥६॥

ऐभ्यासीदनुदेयी नाराशंसी न्योचनी ।

सूर्याया भद्रमिद्वासो गाथयैति परिष्कृता ॥७॥

स्तोमा आसन्प्रतिधयः कुरीरं छन्द ओपशः।

सूर्याया अश्विना वराग्निरासीत्पुरोगवः ॥८॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सोमो॑ वधू॒युर॑भवद॒श्विना॑स्तामु॒भा व॒रा ।
सू॒र्यां यत्पत्ये॒ शंस॑न्तीं॒ मन॑सा सवि॒ताद॑दात् ॥ ९ ॥
मनो॑ अस्या॒ अन॑ आसी॒द् द्यौरा॑सीदु॒त च्छ॒दिः ।
शु॒क्राव॑न॒ड्वाहा॑वास्तां॒ यदया॑त्सू॒र्या पति॑म् ॥ १० ॥
ऋ॒क्सा॒माभ्या॑म॒भिहि॑तौ॒ गावौ॑ ते साम॒नावै॑ताम् ।
श्रोत्रे॑ ते च॒क्रे आ॑स्तां दि॒वि पन्था॑श्चराच॒रः ॥ ११ ॥
शुची॑ ते च॒क्रे या॒त्या व्या॒नो अक्ष॒ आह॑तः ।
अनो॑ मन॒स्मयं॑ सू॒र्यारो॑हत्प्रय॒ती पति॑म् ॥ १२ ॥
सू॒र्याया॑ वह॒तुः प्रागा॑त्सवि॒ता यम॒वासृ॑जत् ।
म॒घासु॑ ह॒न्यन्ते॒ गावः॒ फल्गु॑नीषु॒ व्यु॑ह्यते ॥ १३ ॥
यद॑श्विना पृ॒च्छमा॑ना॒वया॑तं त्रिच॒क्रेण॑ वह॒तुं सू॒र्यायाः॑ ।
क्वैकं॑ च॒क्रं वा॑मासी॒त्क्व॑ दे॒ष्ट्राय॑ तस्थथुः ॥ १४ ॥
यदया॑तं शुभस्पती वरे॒यं स॒र्यामुप॑ ।
विश्वे॑ दे॒वा अनु॒ तद्वा॑मजानन्पु॒त्रः पि॒तर॑मवृणीत पू॒षा ॥ १५ ॥
द्वे ते॑ च॒क्रे सूर्ये॑ ब्र॒ह्माण॑ ऋतु॒था वि॑दुः ।
अथैकं॑ च॒क्रं यद् गुहा॒ तद॑द्धा॒तय॒ इद्वि॑दुः ॥ १६ ॥
अ॒र्य॒मणं॑ यजामहे सुब॒न्धुं प॑ति॒वेद॑नम् ।
उ॒र्वा॒रु॒कमि॑व॒ बन्ध॑ना॒त्प्रेतो मु॑ञ्चामि॒ नामुतः॑ ॥ १७ ॥
प्रेतो मु॑ञ्चामि॒ नामुतः॑ सुब॒द्धाम॒मुत॑स्करम् ।
यथे॒यमि॑न्द्र मीढ्वः॑ सुपु॒त्रा सु॒भगास॑ति ॥ १८ ॥
प्र त्वा॑ मुञ्चामि॒ वरु॑णस्य॒ पाशा॒द्येन॒ त्वाब॑ध्नात्सवि॒ता सु॒शेवाः॑ ।
ऋ॒तस्य॒ योनौ॑ सुकृ॒तस्य॑ लो॒के स्यो॒नं ते॑ अस्तु स॒हसं॑भलायै ॥ १९ ॥
भग॑स्त्वे॒तो न॑यतु हस्त॒गृह्या॒श्विना॑ त्वा॒ प्र व॑हतां॒ रथे॑न ।
गृ॒हान्ग॑च्छ गृ॒हप॑त्नी॒ यथासो॑ व॒शिनी॒ त्वं वि॒दथ॒मा व॑दासि ॥ २० ॥
इ॒ह प्रि॒यं प्र॒जायै॑ ते॒ समृ॑ध्यताम॒स्मिन्गृ॒हे गार्ह॑पत्याय जागृहि ।
ए॒ना पत्या॑ त॒न्वं१॒॑ सं स्पृ॑श॒स्वाथ॒ जिर्वि॑र्वि॒दथ॒मा व॑दासि ॥ २१ ॥
इहैव स्तं॒ मा वि यौ॑ष्टं॒ विश्व॒मायु॒र्व्य॑श्नुतम् ।
क्रीड॑न्तौ पु॒त्रैर्नप्तृ॑भि॒र्मोद॑मानौ स्वस्त॒कौ ॥ २२ ॥
पू॒र्वा॒प॒रं च॑रतो मा॒ययै॒तौ शिशू॒ क्रीड॑न्तौ॒ परि॑ यातोऽर्ण॒वम् ।
विश्वा॒न्यो भुव॑ना वि॒चष्ट॑ ऋ॒तूँर॒न्यो वि॒दध॑ज्जायसे॒ नवः॑ ॥ २३ ॥
नवो॑नवो भवसि॒ जाय॑मा॒नोऽह्नां॑ के॒तुरु॒षसा॑मे॒ष्यग्र॑म् ।
भा॒गं दे॒वेभ्यो॒ वि द॑धास्या॒यन्प्र च॑न्द्रमस्तिरसे दी॒र्घमायुः॑ ॥ २४ ॥
परा॑ देहि शामु॒ल्यं॑ ब्र॒ह्मभ्यो॒ वि भ॑जा॒ वसु॑ ।
कृ॒त्यैषा प॒द्वती॑ भू॒त्वा जा॒या वि॑शते॒ पति॑म् ॥ २५ ॥
नी॒ल॒लो॒हि॒तं भ॑वति कृ॒त्यास॒क्तिर्व्य॑ज्यते ।
एध॑न्ते अस्या ज्ञा॒तयः॒ पति॑र्ब॒न्धेषु॑ बध्यते ॥ २६ ॥
अ॒श्ली॒ला त॒नूर्भ॑वति॒ रुश॑ती पा॒पया॑मु॒या ।
पति॒र्यद्व॒ध्वो॒३॒॑ वास॑सः॒ स्वमङ्ग॑मभ्यूर्णु॒ते ॥ २७ ॥
आ॒शस॑नं वि॒शस॑न॒मथो॑ अधिवि॒कर्त॑नम् ।
सू॒र्यायाः॑ पश्य रू॒पाणि॒ तानि॑ ब्र॒ह्मोत शु॑म्भति ॥ २८ ॥
तृ॒ष्टमे॒तत्कटु॑कमपा॒ष्ठव॑द्वि॒षव॒न्नैतदत्त॑वे ।
सू॒र्यां यो ब्र॒ह्मा वेद॒ स इद्वाधू॑यमर्हति ॥ २९ ॥
स इत्तत्स्यो॒नं ह॑रति ब्र॒ह्मा वासः॑ सुम॒ङ्गल॑म् ।
प्राय॑श्चित्तिं॒ यो अ॒ध्येति॒ येन॑ जा॒या न रिष्य॑ति ॥ ३० ॥
यु॒वं भगं॒ सं भ॑रतं॒ समृ॑द्धमृ॒तं वद॑न्तावृ॒तोद्ये॑षु ।
ब्रह्म॑णस्पते॒ पति॑म॒स्यै रो॑चय॒ चारु॑ संभ॒लो व॑दतु॒ वाच॑मे॒ताम् ॥ ३१ ॥
इ॒हेद॑साथ॒ न प॒रो ग॑माथे॒मं गा॑वः प्र॒जया॑ वर्धयाथ ।
शुभं॑ यतीरु॒स्त्रियाः॒ सोम॑वर्चसो॒ विश्वे॑ दे॒वाः क्रन्नि॒ह वो॒ मनां॑सि ॥ ३२ ॥
इ॒मं गा॑वः प्र॒जया॒ सं वि॑शाथा॒यं दे॒वानां॒ न मि॑नाति भा॒गम् ।
अ॒स्मै वः॑ पू॒षा म॒रुत॑श्च॒ सर्वे॑ अ॒स्मै वो॑ धा॒ता स॑वि॒ता सु॑वाति ॥ ३३ ॥
अ॒नृ॒क्ष॒रा ऋ॒जवः॑ सन्तु॒ पन्था॑नो॒ येभिः॒ सखा॑यो॒ यन्ति॑ नो वरे॒यम् ।
सं भगे॑न॒ सम॑र्य॒म्णा सं धा॒ता सृ॑जतु॒ वर्च॑सा ॥ ३४ ॥
यच्च॒ वर्चो॑ अ॒क्षेषु॒ सुरा॑यां च॒ यदाहि॑तम् ।
यद्गोष्व॒श्विना॒ वर्च॒स्तेने॒मां वर्च॑सावतम् ॥ ३५ ॥
येन॑ महान॒घ्न्या ज॒घन॒मश्वि॑ना॒ येन॑ वा॒ सुरा॑ ।
येना॒क्षा अ॒भ्यषि॑च्यन्त॒ तेने॒मां वर्च॑सावतम् ॥ ३६ ॥
यो अ॑नि॒ध्मो दी॒दय॑द॒प्स्व१॒॑न्तर्यं विप्रा॑स॒ ईड॑ते अध्व॒रेषु॑ ।
अपां॑ नपा॒न्मधु॑मतीर॒पो दा॒ याभि॒रिन्द्रो॑ वावृ॒धे वी॒र्या॑वान् ॥ ३७ ॥
इ॒दम॒हं रुश॑न्तं ग्रा॒भं त॑नू॒दूषि॒मपो॑हामि ।
यो भ॒द्रो रो॑च॒नस्तमुद॑चामि ॥ ३८ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

आस्यै ब्राह्मणाः स्रपनीर्हरन्त्ववीरघ्नीरुदजन्त्वापः ।
अर्यम्णो अग्निं पर्येतु पूषन्प्रतीक्षन्ते श्वशुरो देवरश्च ॥ ३९ ॥
शं ते हिरण्यं शमु सन्त्वापः शं मेथिभवतु शं युगस्य तन्वे ।
शं त आपः शतपवित्रा भवन्तु शमु पत्या तन्वं सं स्पृशस्व ॥ ४० ॥
खे रथस्य खेऽनसः खे युगस्य शतक्रतो ।
अपालामिन्द्र त्रिष्पूत्वाकृणोः सूर्यत्वचम् ॥ ४१ ॥
आशासाना सौमनसं प्रजां सौभाग्यं रयिम् ।
पत्युरनुव्रता भूत्वा सं नह्यस्वामृताय कम् ॥ ४२ ॥
यथा सिन्धुर्नदीनां साम्राज्यं सुषुवे वृषा ।
एवा त्वं सम्राज्ञ्येधि पत्युरस्तं परेत्य ॥ ४३ ॥
सम्राज्ञ्येधि श्वशुरेषु सम्राज्ञ्युत देवृषु ।
ननान्दुः सम्राज्ञ्येधि सम्राज्ञ्युत श्वश्र्वाः ॥ ४४ ॥
या अकृन्तन्नवयन्याश्च तत्निरे या देवीरन्ताँ अभितोऽददन्त ।
तास्त्वा जरसे सं व्ययन्त्वायुष्मतीदं परिधत्स्व वासः ॥ ४५ ॥
जीवं रुदन्ति वि नयन्त्यध्वरं दीर्घामनु प्रसितिं दीध्युर्नरः ।
वामं पितृभ्यो य इदं समीरिरे मयः पतिभ्यो जनये परिष्वजे ॥ ४६ ॥
स्योनं ध्रुवं प्रजायै धारयामि तेऽश्मानं देव्याः पृथिव्या उपस्थे ।
तमा तिष्ठानुमाद्या सुवर्ची दीर्घं त आयुः सविता कृणोतु ॥ ४७ ॥
येनाग्निरस्या भूम्या हस्तं जग्राह दक्षिणम् ।
तेनं गृह्णामि ते हस्तं मा व्यथिष्ठा मया सह प्रजया च धनेन च ॥ ४८ ॥
देवस्ते सविता हस्तं गृह्णातु सोमो राजा सुप्रजसं कृणोतु ।
अग्निः सुभगां जातवेदाः पत्ये पत्नीं जरदष्टिं कृणोतु ॥ ४९ ॥
गृह्णामि ते सौभगत्वाय हस्तं मया पत्या जरदष्टिर्यथासः ।
भगो अर्यमा सविता पुरंधिर्मह्यं त्वादुर्गार्हपत्याय देवाः ॥ ५० ॥
भगस्ते हस्तमग्रहीत्सविता हस्तमग्रहीत् ।
पत्नी त्वमसि धर्मणाहं गृहपतिस्तव ॥ ५१ ॥
ममेयमस्तु पोष्या मह्यं त्वादाद् बृहस्पतिः ।
मया पत्या प्रजावति सं जीव शरदः शतम् ॥ ५२ ॥
त्वष्टा वासो व्यदधाच्छुभे कं बृहस्पतेः प्रशिषा कवीनाम् ।
तेनेमां नारीं सविता भगश्च सूर्यामिव परि धत्तां प्रजया ॥ ५३ ॥
इन्द्राग्नी द्यावापृथिवी मातरिश्वा मित्रावरुणा भगो अश्विनोभा ।
बृहस्पतिर्मरुतो ब्रह्म सोमं इमां नारीं प्रजया वर्धयन्तु ॥ ५४ ॥
बृहस्पतिः प्रथमः सूर्यायाः शीर्षे केशाँ अकल्पयत् ।
तेनेमामश्विना नारीं पत्ये सं शोभयामसि ॥ ५५ ॥
इदं तद्रूपं यदवस्त योषा जायां जिज्ञासे मनसा चरन्तीम् ।
तामन्वर्तिष्ये सखिभिर्नवग्वैः क इमान्विद्वान्वि चचर्त पाशान् ॥ ५६ ॥
अहं वि ष्यामि मयि रूपमस्या वेददित्पश्यन्मनसः कुलायम् ।
न स्तेयमद्मि मनसोदमुच्ये स्वयं श्रथ्नानो वरुणस्य पाशान् ॥ ५७ ॥
प्र त्वा मुञ्चामि वरुणस्य पाशाद्येन त्वाबध्नात्सविता सुशेवाः ।
उरुं लोकं सुगमत्र पन्थां कृणोमि तुभ्यं सहपत्न्यै वधु ॥ ५८ ॥
उद्यच्छध्वमप रक्षो हनाथेमां नारीं सुकृते दधात ।
धाता विपश्चित्पतिमस्यै विवेद भगो राजा पुर एतु प्रजानन् ॥ ५९ ॥
भगस्ततक्ष चतुरः पादान्भगस्ततक्ष चत्वार्युष्पलानि ।
त्वष्टा पिपेश मध्यतोऽनु वर्ध्रान्सा नो अस्तु सुमङ्गली ॥ ६० ॥
सुकिंशुकं वहतुं विश्वरूपं हिरण्यवर्णं सुवृतं सुचक्रम् ।
आ रोह सूर्ये अमृतस्य लोकं स्योनं पतिभ्यो वहतुं कृणु त्वम् ॥ ६१ ॥
अभ्रातृघ्नीं वरुणापशुघ्नीं बृहस्पते ।
इन्द्रापतिघ्नीं पुत्रिणीमास्मभ्यं सवितर्वह ॥ ६२ ॥
मा हिंसिष्टं कुमार्यं स्थूणे देवकृते पथि ।
शालाया देव्या द्वारं स्योनं कृण्मो वधूपथम् ॥ ६३ ॥
ब्रह्मापरं युज्यतां ब्रह्म पूर्वं ब्रह्मान्ततो मध्यतो ब्रह्म सर्वतः ।
अनाव्याधां देवपुरां प्रपद्य शिवा स्योना पतिलोके वि राज ॥ ६४ ॥

अथ द्वितीयोऽनुवाकः [२] द्वितीयं सूक्तम्

ऋषिः—सावित्री सूर्या ॥ देवता—आत्मा; १० यक्ष्मनाशनी; ११ दम्पत्योः परिपन्थिनाशनी; ३६ देवाः ॥ छन्दः—१-४, ७, ८, १०, ११, १६, २१, २२, २३, २७-३०, ४५, ४६, ५३-५८, ६३-६७, ७२, ७३ अनुष्टुप्; ५, ६, १२, ३१, ४० जगती; ९ षट्पदाविराडत्यष्टिः; १३, १४, १७-१९, ३६, ३८, ४१, ४२, ४९, ६१, ७०, ७४, ७५ त्रिष्टुप्; १५, ५१ भुरिग-नुष्टुप्; २० पुरस्ताद्बृहती; २४, २५, ३२, ३४ पुरानुष्टुप्त्रिष्टुप्; २६ त्रिपदाविराण्नामगायत्री; ३३ विराडास्तारपङ्क्तिः; ३५ पुरो-बृहतीत्रिष्टुप्; ३७, ३९ भुरिक्त्रिष्टुप्; ४३ त्रिष्टुब्गर्भा-पङ्क्तिः; ४४ प्रस्तारपङ्क्तिः; ४७ पथ्याबृहती;

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

४८ सतःपङ्क्तिः; ५० उपरिष्टाद्निचृदबृहती; ५२ विराट्परोष्णिक्; ५९, ६०, ६२ पथ्यापङ्क्तिः; ६८ पुरउष्णिक्; ६९ षट्पदातिशक्वरी; ७१ बृहती॥

तुभ्यमग्रे पर्यवहन्सूर्या वहतुना सह ।
स नः पतिभ्यो जायां दा अग्ने प्रजया सह॥ १॥
पुनः पत्नीमग्निरदादायुषा सह वर्चसा ।
दीर्घायुरस्या यः पतिर्जीवाति शरदः शतम्॥ २॥
सोमस्य जाया प्रथमं गन्धर्वस्तेऽपरः पतिः।
तृतीयो अग्निष्टे पतिस्तुरीयस्ते मनुष्यजाः॥ ३॥
सोमो ददद्गन्धर्वाय गन्धर्वो दददग्नये ।
रयिं च पुत्रांश्चादादग्निर्मह्यमथो इमाम् ॥ ४॥

आ वामगन्त्सुमतिर्वाजिनीवसू न्यश्विना हृत्सु कामा अरंसत।
अभूतं गोपा मिथुना शुभस्पती प्रिया अर्यम्णो दुर्यो अशीमहि॥ ५॥
सा मन्दसाना मनसा शिवेन रयिं धेहि सवीरं वचस्यम्।
सुगं तीर्थं सुप्रपाणं शुभस्पती स्थाणुं पथिष्ठामप दुर्मतिं हतम्॥ ६॥
या ओषधयो या नद्योऽ यानि क्षेत्राणि या वना ।
तास्त्वा वधु प्रजावतीं पत्ये रक्षन्तु रक्षसः ॥ ७॥
एमं पन्थामरुक्षाम सुगं स्वस्तिवाहनम् ।
यस्मिन्वीरो न रिष्यत्यन्येषां विन्दते वसु ॥ ८॥
इदं सु मे नरः शृणुत यथाशिषा दंपती वाममश्नुतः।
ये गन्धर्वा अप्सरसश्च देवीरेषु वानस्पत्येषु येऽधि तस्थुः।
स्योनास्ते अस्यै वध्वै भवन्तु मा हिंसिषुर्बहुतमुह्यमानम्॥ ९॥
ये वध्वश्चन्द्रं वहतुं यक्ष्मा यन्ति जनाँ अनु ।
पुनस्तान्यज्ञिया देवा नयन्तु यत आगताः ॥ १०॥
मा विदन्परिपन्थिनो य आसीदन्ति दम्पती ।
सुगेन दुर्गमतीतामप द्रान्त्वरातयः ॥ ११॥

सं काशयामि वहतुं ब्रह्मणा गृहैरघोरेण चक्षुषा मित्रियेण।
पर्याणद्धं विश्वरूपं यदस्ति स्योनं पतिभ्यः सविता तत्कृणोतु॥ १२॥
शिवा नारीयमस्तमार्ग्नियं धाता लोकमस्यै दिदेश ।
तामर्यमा भगो अश्विनोभा प्रजापतिः प्रजया वर्धयन्तु ॥ १३॥
आत्मन्वत्युर्वरा नारीयमागन्तस्यां नरो वपत बीजमस्याम्।
सा वः प्रजां जनयद्वक्षणाभ्यो बिभ्रती दुग्धमृषभस्य रेतः॥ १४॥

प्रति तिष्ठ विराडसि विष्णुरिवेह सरस्वति ।
सिनीवालि प्र जायतां भगस्य सुमतावसत् ॥ १५॥
उद्वं कुर्मिः शम्या हन्त्वापो योक्त्राणि मुञ्चत ।
मादुष्कृतौ व्येनिसावघ्न्यावर्शुनमारताम् ॥ १६॥
अघोरचक्षुरपतिघ्नी स्योना शग्मा सुशेवा सुयमा गृहेभ्यः।
वीरसूर्देवृकामा सं त्वयैधिषीमहि सुमनस्यमाना ॥ १७॥
अदेवृघ्न्यपतिघ्नीहैधि शिवा पशुभ्यः सुयमा सुवर्चीः।
प्रजावती वीरसूर्देवृकामा स्योनेममग्निं गार्हपत्यं सपर्य॥ १८॥
उत्तिष्ठेतः किमिच्छन्तीदमागा अहं त्वेडे अभिभूः स्वाद् गृहात्।
शून्यैषी निर्ऋते याजगन्थोत्तिष्ठाराते प्र पत मेह रंस्थाः॥ १९॥
यदा गार्हपत्यमसपर्यैत्पूर्वमग्निं वधूरियम्।
अथा सरस्वत्यै नारि पितृभ्यश्च नमस्कुरु॥ २०॥
शर्म वर्मैतदा हरास्यै नार्यै उपस्तिरे।
सिनीवालि प्र जायतां भगस्य सुमतावसत्॥ २१॥
यं बल्बजं न्यस्यथ चर्म चोपस्तृणीथन।
तदा रोहतु सुप्रजा या कन्या विन्दते पतिम्॥ २२॥
उप स्तृणीहि बल्बजमधि चर्मणि रोहिते।
तत्रोपविश्य सुप्रजा इममग्निं संपर्यतु॥ २३॥
आ रोहू चर्मोप सीदाग्निमेष देवो हन्ति रक्षांसि सर्वा ।
इह प्रजां जनय पत्ये अस्मै सुन्यैष्ट्यो भवत्पुत्रस्त एषः॥ २४॥
वि तिष्ठन्तां मातुरस्या उपस्थान्नानारूपाः पशवो जायमानाः।
सुमङ्गल्युप सीदेममग्निं संपत्नी प्रति भूषेह देवान् ॥ २५॥
सुमङ्गली प्रतरणी गृहाणां सुशेवा पत्ये श्वशुराय शंभूः।
स्योना श्वश्रै प्र गृहान्विशेमान् ॥ २६॥
स्योना भव श्वशुरेभ्यः स्योना पत्ये गृहेभ्यः।
स्योनास्यै सर्वस्यै विशे स्योना पुष्टायैषां भव॥ २७॥
सुमङ्गलीरियं वधूरिमां समेत पश्यत ।
सौभाग्यमस्यै दत्त्वा दौर्भाग्यैर्विपरेतन ॥ २८॥
या दुर्हार्दो युवतयो याश्चेह जरतीरपि।
वर्चो न्वासां सं दत्ताथास्तं विपरेतन॥ २९॥
रुक्मप्रस्तरणं वह्निं विश्वा रूपाणि बिभ्रतम्।
अग्निं होतारं सावित्री बृहते सौभगाय कम्॥ ३०॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

आ रोंहतल्पं सुमनस्यमानेह प्रजां जनय पत्ये अस्मै ।
इन्द्राणीव सुबुधा बुध्यमाना ज्योतिरग्रा उषसः प्रति जागरासि ॥ ३१ ॥
देवा अग्रे न्यपद्यन्त पत्नीः समस्पृशन्त तन्वस्तनूभिः ।
सूर्येव नारि विश्वरूपा महित्वा प्रजावती पत्या सं भवेह ॥ ३२ ॥
उत्तिष्ठतो विश्वावसो नमसेडामहे त्वा ।
जामिमिच्छ पितृषदं न्यक्तां स तै भागो जनुषा तस्य विद्धि ॥ ३३ ॥
अप्सरसः सधमादं मदन्ति हविर्धानमन्तरा सूर्यं च ।
तास्ते जनित्रमभि ताः परेहि नमस्ते गन्धर्वतृना कृणोमि ॥ ३४ ॥
नमो गन्धर्वस्य नमसे नमो भामाय चक्षुषे च कृण्मः ।
विश्वावरो ब्रह्मणा ते नमोऽभि जाया अप्सरसः परेहि ॥ ३५ ॥
राया वयं सुमनसः स्याम उदितो गन्धर्वमावीवृताम ।
अगन्त्स देवः परमं सधस्थमगन्म यत्र प्रतिरन्त आयुः ॥ ३६ ॥
सं पितरावृत्विये सृजेथां माता पिता च रेतसो भवाथः ।
मयीव योषामधिरोहतैनां प्रजां कृण्वाथामिह पुष्यतं रयिम् ॥ ३७ ॥
तां पूषं छिवतमामेरयस्व यस्यां बीजं मनुष्या३ वपन्ति ।
या न ऊरू उशती विश्रयाति यस्यामुशन्तः प्रहरेम शेपः ॥ ३८ ॥
आ रोंहोरुमुपं धत्स्व हस्तं परिं ष्वजस्व जायां सुमनस्यमानः ।
प्रजां कृण्वाथामिह मोदमानौ दीर्घं वामायुः सविता कृणोतु ॥ ३९ ॥
आ वां प्रजां जनयतु प्रजापतिरहोरात्राभ्यां समनक्त्वर्यमा ।
अदुर्मङ्गली पतिलोकमा विशेमं शं नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे ॥ ४० ॥
देवैर्दत्तं मनुना साकमेतद्वाधूयं वासो वध्वश्च वस्त्रम् ।
यो ब्रह्मणे चिकितुषे ददाति स इद्रक्षांसि तल्पानि हन्ति ॥ ४१ ॥
यं मे दत्तो ब्रह्मभागं वधूयोर्वाधूयं वासो वध्वश्च वस्त्रम् ।
युवं ब्रह्मणेऽनुमन्यमानौ बृहस्पते साकमिन्द्रश्च दत्तम् ॥ ४२ ॥
स्योनाद्योनेरधि बुध्यमानौ हसामुदौ महसा मोदमानौ ।
सुगू सुपुत्रौ सुगृहौ तराथो जीवावुषसो विभातीः ॥ ४३ ॥
नवं वसानः सुरभिः सुवासा उदागां जीव उषसो विभातीः ।
आण्डात्पतत्रीवामुष्मि विश्वस्मादेनसस्परि ॥ ४४ ॥
शुम्भनी द्यावापृथिवी अन्तिसुम्ने महिव्रते ।
आपः सप्त सुस्रुवुर्देवीस्ता नो मुञ्चन्त्वंहसः ॥ ४५ ॥
सूर्यायै देवेभ्यो मित्राय वरुणाय च ।
ये भूतस्य प्रचेतस्तेभ्य इदमकरं नमः ॥ ४६ ॥
य ऋते चिदभिश्रिषः पुरा जत्रुभ्य आतृदः ।
संधाता संधिं मघवा पुरूवसुर्निष्कर्ता विह्रुतं पुनः ॥ ४७ ॥
अपास्मत्तमं उच्छतु नीलं पिशङ्गमुत लोहितं यत् ।
निर्दहनी या पृषातक्यस्मिन्तां स्थाणावध्या संजामि ॥ ४८ ॥
यावतीः कृत्या उपवासने यावन्तो राज्ञो वरुणस्य पाशाः ।
व्यृद्धियो या असमृद्धयो या अस्मिन्ता स्थाणावधि सादयामि ॥ ४९ ॥
या मे प्रियतमा तनूः सा मे बिभाय वाससः ।
तस्याग्ने त्वं वनस्पते नीविं कृणुष्व मा वयं रिषाम ॥ ५० ॥
ये अन्ता यावतीः सिचो य ओतवो ये च तन्तवः ।
वासो यत्पत्नीभिरुतं तन्नः स्योनमुप स्पृशात् ॥ ५१ ॥
उशतीः कन्यला डुमाः पितृलोकात्पतिं यतीः ।
अवं दीक्षामसृक्षत स्वाहा ॥ ५२ ॥
बृहस्पतिनावसृष्टां विश्वे देवा अधारयन् ।
वर्चो गोषु प्रविष्टं यत्तेनेमां सं सृजामसि ॥ ५३ ॥
बृहस्पतिनावसृष्टां विश्वे देवा अधारयन् ।
तेजो गोषु प्रविष्टं यत्तेनेमां सं सृजामसि ॥ ५४ ॥
बृहस्पतिनावसृष्टां विश्वे देवा अधारयन् ।
भगो गोषु प्रविष्टो यस्तेनेमां सं सृजामसि ॥ ५५ ॥
बृहस्पतिनावसृष्टां विश्वे देवा अधारयन् ।
यशो गोषु प्रविष्टं यत्तेनेमां सं सृजामसि ॥ ५६ ॥
बृहस्पतिनावसृष्टां विश्वे देवा अधारयन् ।
पयो गोषु प्रविष्टं यत्तेनेमां सं सृजामसि ॥ ५७ ॥
बृहस्पतिनावसृष्टां विश्वे देवा अधारयन् ।
रसो गोषु प्रविष्टो यस्तेनेमां सं सृजामसि ॥ ५८ ॥
यदीमे केशिनो जना गृहे ते सुमनस्तिषु रोदेन कृण्वन्तो अघम् ।
अग्निष्टा तस्मादेनसः सविता च प्र मुञ्चताम् ॥ ५९ ॥
यदीयं दुहिता तव विकेश्यरुदद् गृहे रोदेन कृण्वत्यघम् ।
अग्निष्टा तस्मादेनसः सविता च प्र मुञ्चताम् ॥ ६० ॥

CC-0, Parimi Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

यज्ञामयो यद्व्रुवतयो गृहे तें सुमनर्तिषू रोदेन कृण्वतीरघम्।
अग्निष्ट्वा तस्मादेनसः सविता च प्र मुञ्चताम् ॥६१॥
यत्ते प्रजायां पशुषु यद्वा गृहेषु निष्ठितमघकृद्भिरघं कृतम्।
अग्निष्ट्वा तस्मादेनसः सविता च प्र मुञ्चताम् ॥६२॥
इयं नार्युप ब्रूते पूल्यान्यावपन्तिका ।
दीर्घायुरस्तु मे पतिर्जीवाति शरदः शतम्॥६३॥
इहेमाविन्द्र सं नुद चक्रवाकेव दम्पती।
प्रजयैनौ स्वस्तकौ विश्वमायुर्व्यश्नुताम्॥६४॥
यदासन्द्यामुपधाने यद्वोपवासने कृतम्।
विवाहे कृत्यां यां चक्रुरास्ताने तां नि दध्मसि॥६५॥
यद्दुष्कृतं यच्छमलं विवाहे वहतौ च यत्।
तत्संभलस्य कम्बले मृज्महे दुरितं वयम्॥६६॥
संभले मलं सादयित्वा कंम्बले दुरितं वयम्।
अभूम यज्ञियाः शुब्दाः प्र ण आयूंषि तारिषत्॥६७॥
कृत्रिमः कण्टकः शतदन्य एषः ।
अपास्याः केश्यं मलमप शीर्षण्यं लिखात्॥६८॥
अङ्गादङ्गाद्वयमस्या अप यक्ष्मं नि दध्मसि ।
तन्मा प्रापत्पृथिवीं मोत देवान्दिवं मा प्रापदुर्वन्तरिक्षम्।
अपो मा प्रापन्मलमेतदग्ने यमं मा प्रापत्पितृंश्च सर्वान्॥६९॥
पं त्वा नह्यामि पयसा पृथिव्याः सं त्वा नह्यामि पयसौषधीनाम्।
i त्वा नह्यामि प्रजया धनेन सा संनद्धा सनुहि वाजमेमम्॥७०॥
अमोऽहमस्मि सा त्वं सामाहमस्म्यृक्त्वं द्यौरहं पृथिवी त्वम्।
ताविह सं भवाव प्रजामा जनयावहै ॥७१॥
जनियन्ति नावग्रवः पुत्रियन्ति सुदानवः ।
अरिष्टासू सचेवहि बृहते वाजसातये ॥७२॥
ये पितरो वधूदर्शा इमं वहतुमागमन् ।
ते अस्यै वध्वै संपत्न्यै प्रजावच्छर्म यच्छन्तु ॥७३॥
येदं पूर्वागन्ब्रशनायमाना प्रजामस्यै द्रविणं चेह दत्त्वा।
तां वहन्त्वगतस्यानु पन्थां विराड्इयं सुप्रजा अत्यजैषीत्॥७४॥
प्र बुध्यस्य सुबुधा बुध्यमाना दीर्घायुत्वाय शतशारदाय।
गृहान्गच्छ गृहपत्नी यथासो दीर्घं त आयुः सविता कृणोतु॥७५॥

इत्येकोनत्रिंशः प्रपाठकः॥

॥इति चतुर्दशं काण्डम्॥

अथ पञ्चदशं काण्डम्॥

अथ त्रिंशः प्रपाठकः॥

अथ प्रथमोऽनुवाकः [१] प्रथमं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा॥ देवता—अध्यात्मम्, व्रात्यः॥ छन्दः—१ साम्नीपङ्क्तिः; २ द्विपदासाम्नी-बृहती; ३ एकपदायजुर्ब्राह्म्यनुष्टुप्; ४ एकपदाविराड्गायत्री; ५ साम्यनुष्टुप्; ६ त्रिपदाप्राजापत्याबृहती; ७ आसुरीपङ्क्तिः; ८ त्रिपदाऽनुष्टुप्॥

व्रात्य आसीदीयमान एव स प्रजापतिं समैरयत्॥१॥
स प्रजापतिः सुवर्णमात्मन्नपश्यत्तत्प्राजनयत् ॥२॥
तदेकमभवत्तल्ललाममभवत्तन्महदभवत्तज्ज्येष्ठमभवत्तद्
ब्रह्माभवत्तत्तपोऽभवत्तत्सत्यमभवत्तेन प्राजायत ॥३॥
सोऽवर्धत स महानभवत्स महादेवोऽभवत् ॥४॥
स देवानामीशां पर्यैत्स ईशानोऽभवत् ॥५॥
स एकव्रात्योऽभवत्स धनुरादत्त तदेवेन्द्रधनुः ॥६॥
नीलमस्योदरं लोहितं पृष्ठम् ॥७॥
नीलेनैवाप्रियं भ्रातृव्यं प्रोर्णोति लोहितेन
द्विषन्तं विध्यतीति ब्रह्मवादिनो वदन्ति ॥८॥

[२] द्वितीयं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा॥ देवता—अध्यात्मम्, व्रात्यः॥ छन्दः—१, ६, ९, १५, २१, २६ साम्यनुष्टुप्; २, १६, २२ साम्नीत्रिष्टुप्; ३ द्विपदाऽऽर्चीपङ्क्तिः; ४, १८, २४ द्विपदाब्राह्मीगायत्री; ५, १३, १९, २५ द्विपदाऽऽर्चीजगती; ७, २७ पदपङ्क्तिः; ८ त्रिपदाप्राजापत्यात्रिष्टुप्; १० एकपदोष्णिक्; ११ द्विपदाऽऽर्षीभुरिक्त्रिष्टुप्; १२ आर्षीपरानुष्टुप्; १४ साम्नी-पङ्क्तिः; १७ द्विपदाविराडार्षीपङ्क्तिः; २० आसुरीगायत्री; २३ निचृदार्षीपङ्क्तिः; २८ त्रिपदाप्राजापत्यात्रिष्टुप्॥

स उदतिष्ठत्प्राचीं दिशमनु व्यचलत् ॥१॥
तं बृहच्च रथन्तरं चादित्याश्च विश्वे च देवा अनुव्यचलन्॥२॥
बृहते च वै स रथन्तराय चादित्येभ्यश्च विश्वेभ्यश्च
देवेभ्य आ वृश्चते य एवं विद्वांसं व्रात्यमुपवदति ॥३॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

बृहतश्च वै स रथन्तरस्यं चादित्यानां च विश्वेषां च
देवानां प्रियं धामं भवति तस्य प्राच्यां दिशि ॥ ४ ॥
श्रद्धा पुंश्चली मित्रो मागधो विज्ञानं वासोऽहरुष्णीषं
रात्री केशा हरितौ प्रवर्तौ कल्मलिर्मणिः ॥ ५ ॥
भूतं च भविष्यच्च परिष्कन्दौ मनो विपथम् ॥ ६ ॥
मातरिश्वा च पवमानश्च विपथवाहौ वातः सारथी रेष्मा प्रतोदः ॥ ७ ॥
कीर्तिश्च यशश्च पुरःसरावैनं कीर्तिर्गच्छत्या यशो गच्छति य एवं वेद ॥ ८ ॥
स उदतिष्ठत्स दक्षिणां दिशमनु व्यचिलत् ॥ ९ ॥
तं यज्ञायज्ञियं च वामदेव्यं च यज्ञश्च यजमानश्च पशवश्चानुव्यचिलन् ॥ १० ॥
यज्ञायज्ञियाय च वै स वामदेव्यायं च यज्ञाय च यजमानाय
च पशुभ्यश्चा वृश्चते य एवं विद्वांसं व्रात्यमुपवदति ॥ ११ ॥
यज्ञायज्ञियस्य च वै स वामदेव्यस्य च यज्ञस्य च यजमानस्य
च पशूनां च प्रियं धामं भवति तस्य दक्षिणायां दिशि ॥ १२ ॥
उषाः पुंश्चली मन्त्रो मागधो विज्ञानं वासोऽहरुष्णीषं
रात्री केशा हरितौ प्रवर्तौ कल्मलिर्मणिः ॥ १३ ॥
अमावास्या च पौर्णमासी च परिष्कन्दौ मनो विपथम्।
मातरिश्वा च पवमानश्च विपथवाहौ वातः सारथी
रेष्मा प्रतोदः। कीर्तिश्च यशश्च पुरःसरावैनं कीर्तिर्गच्छत्या
यशो गच्छति य एवं वेद ॥ १४ ॥
स उदतिष्ठत्स प्रतीचीं दिशमनु व्यचिलत् ॥ १५ ॥
तं वैरूपं च वैराजं चापश्च वरुणश्च राजानुव्यचिलन् ॥ १६ ॥
वैरूपायं च वै स वैराजाय चाद्भ्यश्च वरुणाय च
राज्ञ आ वृश्चते य एवं विद्वांसं व्रात्यमुपवदति ॥ १७ ॥
वैरूपस्य च वै वैराजस्य चापां च वरुणस्य च
राज्ञः प्रियं धामं भवति तस्य प्रतीच्यां दिशि ॥ १८ ॥
इरा पुंश्चली हसो मागधो विज्ञानं वासोऽहरुष्णीषं
रात्री केशा हरितौ प्रवर्तौ कल्मलिर्मणिः ॥ १९ ॥
अहश्च रात्री च परिष्कन्दौ मनो विपथम्। मातरिश्वा च
पवमानश्च विपथवाहौ वातः सारथी रेष्मा प्रतोदः। कीर्तिश्च
यशश्च पुरःसरावैनं कीर्तिर्गच्छत्या यशो गच्छति य एवं वेद ॥ २० ॥
स उदतिष्ठत्स उदीचीं दिशमनु व्यचिलत् ॥ २१ ॥
तं श्यैतं च नौधसं च सप्तर्षयश्च सोमश्च राजानुव्यचिलन् ॥ २२ ॥
श्यैतायं च वै स नौधसाय च सप्तर्षिभ्यश्च सोमाय च
राज्ञ आ वृश्चते य एवं विद्वांसं व्रात्यमुपवदति ॥ २३ ॥
श्यैतस्य च वै स नौधसस्य च सप्तर्षीणां च सोमस्य च
राज्ञः प्रियं धामं भवति तस्योदीच्यां दिशि ॥ २४ ॥
विद्युत्पुंश्चली स्तनयित्नुर्मागधो विज्ञानं वासोऽहरुष्णीषं
रात्री केशा हरितौ प्रवर्तौ कल्मलिर्मणिः ॥ २५ ॥
श्रुतं च विश्रुतं च परिष्कन्दौ मनो विपथम् ॥ २६ ॥
मातरिश्वा च पवमानश्च विपथवाहौ वातः
सारथी रेष्मा प्रतोदः ॥ २७ ॥
कीर्तिश्च यशश्च पुरःसरावैनं कीर्तिर्गच्छत्या यशो
गच्छति य एवं वेद ॥ २८ ॥

[३] तृतीयं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा ॥ देवता—अध्यात्मम्, व्रात्यः ॥ छन्दः—१ पिपीलिकामध्यागायत्री; २ साम्न्युष्णिक्; ३ याजुषीजगती; ४ द्विपदाऽऽर्च्युष्णिक्; ५ आर्चीबृहती; ६ आसुर्यनुष्टुप्; ७ साम्नीगायत्री; ८ आसुरीपङ्क्तिः; ९ आसुरीजगती; १० प्राजापत्यात्रिष्टुप्; ११ विराड्गायत्री ॥

स संवत्सरमूर्ध्वोऽतिष्ठत्तं देवा अब्रुवन्व्रात्य किं नु तिष्ठसीति ॥ १ ॥
सोऽब्रवीदासन्दीं मे सं भरन्तिति ॥ २ ॥
तस्मै व्रात्यायासन्दीं समभरन् ॥ ३ ॥
तस्यां ग्रीष्मश्च वसन्तश्च द्वौ पादावास्तां शरच्च वर्षाश्च द्वौ ॥ ४ ॥
बृहच्च रथंतरं चानूच्ये आस्तां यज्ञायज्ञियं च वामदेव्यं च तिरश्च्ये ॥ ५ ॥
ऋचः प्राञ्चस्तन्तवो यजूंषि तिर्यञ्चः ॥ ६ ॥
वेदं आस्तरणं ब्रह्मोपबर्हणम् ॥ ७ ॥
सामासाद उद्गीथोऽपश्रयः ॥ ८ ॥
तामासन्दीं व्रात्य आरोहत् ॥ ९ ॥
तस्य देवजनाः परिष्कन्दा आसन्त्संकल्पाः
प्रहाया विश्वानि भूतान्युपसदः ॥ १० ॥
विश्वान्देवान्त्संकल्पस्य भूतान्युपसदो भवन्ति य एवं वेद ॥ ११ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

[४] चतुर्थं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा ॥ देवता—अध्यात्मम्, व्रात्यः ॥ छन्दः—१, १३, १६ दैवीजगती; २, ८ आर्च्यनुष्टुप्; ३, १२ द्विपदाप्राजापत्याजगती; ४, ७, १० प्राजापत्यागायत्री; ५ प्राजापत्यापङ्क्तिः; ६ आर्चीजगती; ९ आर्चीत्रिष्टुप्; ११ साम्नीत्रिष्टुप्; १४ प्राजापत्यावृहती; १५, १८ द्विपदाऽऽर्चीपङ्क्तिः; १७ आर्च्युष्णिक् ॥

तस्मै प्राच्या दिशः ॥ १ ॥
वासन्तौ मासौ गोप्तारावकुर्वन्बृहच्च रथन्तरं चानुष्टातारौ ॥ २ ॥
वासन्तावेनं मासौ प्राच्या दिशो गोपायतो बृहच्च
रथन्तरं चानु तिष्ठतो य एवं वेद ॥ ३ ॥
तस्मै दक्षिणाया दिशः ॥ ४ ॥
ग्रैष्मौ मासौ गोप्तारावकुर्वन्यज्ञायज्ञियं च वामदेव्यं चानुष्टातारौ ॥ ५ ॥
ग्रैष्मावेनं मासौ दक्षिणाया दिशो गोपायतो यज्ञायज्ञियं च
वामदेव्यं चानु तिष्ठतो य एवं वेद ॥ ६ ॥
तस्मै प्रतीच्या दिशः ॥ ७ ॥
वार्षिकौ मासौ गोप्तारावकुर्वन्वैरूपं च वैराजं चानुष्टातारौ ॥ ८ ॥
वार्षिकावेनं मासौ प्रतीच्या दिशो गोपायतो वैरूपं च
वैराजं चानु तिष्ठतो य एवं वेद ॥ ९ ॥
तस्मा उदीच्या दिशः ॥ १० ॥
शारदौ मासौ गोप्तारावकुर्वञ्छयैतं च नौधसं चानुष्टातारौ ॥ ११ ॥
शारदावेनं मासावुदीच्या दिशो गोपायतः श्यैतं च
नौधसं चानु तिष्ठतो य एवं वेद ॥ १२ ॥
तस्मै ध्रुवाया दिशः ॥ १३ ॥
हैमनौ मासौ गोप्तारावकुर्वन्भूमिं चाग्निं चानुष्टातारौ ॥ १४ ॥
हैमनावेनं मासौ ध्रुवाया दिशो गोपायतो
भूमिश्चाग्निश्चानु तिष्ठतो य एवं वेद ॥ १५ ॥
तस्मा ऊर्ध्वाया दिशः ॥ १६ ॥
शैशिरौ मासौ गोप्तारावकुर्वन्दिवं चादित्यं चानुष्टारौ ॥ १७ ॥
शैशिरावेनं मासावूर्ध्वाया दिशो गोपायतो
द्यौश्चादित्यश्चानु तिष्ठतो य एवं वेद ॥ १८ ॥

[५] पञ्चमं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा ॥ देवता—रुद्रः ॥ छन्दः—१ त्रिपदासमविषमागायत्री; २ त्रिपदाभुरिगार्चीत्रिष्टुप्; ३, १६ द्विपदाप्राजापत्याऽनुष्टुप्; ४ त्रिपदास्वराट्प्राजापत्यापङ्क्तिः; ५, ७, ९, ११, १३ त्रिपदाब्राह्मीगायत्री [नास्य इत्यस्योक्तम्]; ६, ८, १२ त्रिपदाककुप्; १०, १४ आर्षीगायत्री; १५ विराड्बृहती ॥

तस्मै प्राच्या दिशो अन्तर्देशाद्भवमिष्वासमनुष्टातारमकुर्वन् ॥ १ ॥
भव एनमिष्वासः प्राच्या दिशो अन्तर्देशादनुष्टातानु
तिष्ठति नैनं शर्वो न भवो नेशानः ॥ २ ॥
नास्य पशून्न समानान्हिनस्ति य एवं वेद ॥ ३ ॥
तस्मै दक्षिणाया दिशो अन्तर्देशाच्छर्वमिष्वासमनुष्टातारमकुर्वन् ॥ ४ ॥
शर्व एनमिष्वासो दक्षिणाया दिशो अन्तर्देशादनुष्टातानु
तिष्ठति नैनं शर्वो न भवो नेशानः ।
नास्य पशून्न समानान्हिनस्ति य एवं वेद ॥ ५ ॥
तस्मै प्रतीच्या दिशो अन्तर्देशात्पशुपतिमिष्वासमनुष्टातारमकुर्वन् ॥ ६ ॥
पशुपतिरेनमिष्वासः प्रतीच्या दिशो अन्तर्देशादनुष्टातानु
तिष्ठति नैनं शर्वो न भवो नेशानः ।
नास्य पशून्न समानान्हिनस्ति य एवं वेद ॥ ७ ॥
तस्मा उदीच्या दिशो अन्तर्देशादुग्रं देवमिष्वासमनुष्टातारमकुर्वन् ॥ ८ ॥
उग्र एनं देव इष्वास उदीच्या दिशो अन्तर्देशादनुष्टातानु
तिष्ठति नैनं शर्वो न भवो नेशानः ।
नास्य पशून्न समानान्हिनस्ति य एवं वेद ॥ ९ ॥
तस्मै ध्रुवाया दिशो अन्तर्देशाद्रुद्रमिष्वासमनुष्टातारमकुर्वन् ॥ १० ॥
रुद्र एनमिष्वासो ध्रुवाया दिशो अन्तर्देशादनुष्टातानु
तिष्ठति नैनं शर्वो न भवो नेशानः ।
नास्य पशून्न समानान्हिनस्ति य एवं वेद ॥ ११ ॥
तस्मा ऊर्ध्वाया दिशो अन्तर्देशान्महादेवमिष्वासमनुष्टातारमकुर्वन् ॥ १२ ॥
महादेव एनमिष्वास ऊर्ध्वाया दिशो अन्तर्देशादनुष्टातानु
तिष्ठति नैनं शर्वो न भवो नेशानः ।
नास्य पशून्न समानान्हिनस्ति य एवं वेद ॥ १३ ॥
तस्मै सर्वेभ्यो अन्तर्देशेभ्य ईशानमिष्वासमनुष्टातारमकुर्वन् ॥ १४ ॥
ईशान एनमिष्वासः सर्वेभ्यो अन्तर्देशेभ्योऽनुष्टातानु
तिष्ठति नैनं शर्वो न भवो नेशानः ॥ १५ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नास्य पशून्न समानान्हिंनस्ति य एवं वेद ॥ १६ ॥

[६] षष्ठं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा ॥ देवता—अध्यात्मम्, व्रात्यः ॥ छन्दः—१, ४ आसुरीपङ्क्तिः; २, १७ आर्चीपङ्क्तिः; ३ आर्षीपङ्क्तिः; ५, ११ साम्नीत्रिष्टुप्; ६, १२ निचृद्बृहती; ७, १०, १३, १६, २४ आसुरीबृहती; ८ साम्नीपङ्क्तिः; ९ प्राजापत्यात्रिष्टुप्; १४, २३ आर्चीत्रिष्टुप्; १५, १८ विराड्जगती; १९ आर्च्युष्णिक्; २० साम्न्यनुष्टुप्; २१ आर्चीबृहती; २२ परोष्णिक्; २५ आर्च्यनुष्टुप्; २६ विराड्बृहती ॥

स ध्रुवां दिशमनु व्यचिलत् ॥ १ ॥
तं भूमिश्चाग्निश्चौषधयश्च वनस्पतयश्च
वानस्पत्याश्च वीरुधश्चानुव्यचिलन् ॥ २ ॥
भूमेश्च वै सोऽग्नेश्चौषधीनां च वनस्पतीनां च वानस्पत्यानां
च वीरुधां च प्रियं धाम भवति य एवं वेद ॥ ३ ॥
स ऊर्ध्वां दिशमनु व्यचिलत् ॥ ४ ॥
तमृतं च सत्यं च सूर्यश्च चन्द्रश्च नक्षत्राणि चानुव्यचिलन् ॥ ५ ॥
ऋतस्य च वै स सत्यस्य च सूर्यस्य च चन्द्रस्य च
नक्षत्राणां च प्रियं धाम भवति य एवं वेद ॥ ६ ॥
स उत्तमां दिशमनु व्यचिलत् ॥ ७ ॥
तमृचश्च सामानि च यजूंषि च ब्रह्म चानुव्यचिलन् ॥ ८ ॥
ऋचां च वै स साम्नां च यजुषां च ब्रह्मणश्च प्रियं
धाम भवति य एवं वेद ॥ ९ ॥
स बृहतीं दिशमनुव्यचिलत् ॥ १० ॥
तमितिहासश्च पुराणं च गाथाश्च नाराशंसीश्चानुव्यचिलन् ॥ ११ ॥
इतिहासस्य च वै स पुराणस्य च गाथानां च
नाराशंसीनां च प्रियं धाम भवति य एवं वेद ॥ १२ ॥
स परमां दिशमनु व्यचिलत् ॥ १३ ॥
तमाहवनीयश्च गार्हपत्यश्च दक्षिणाग्निश्च
यज्ञश्च यजमानश्च पशवश्चानुव्यचिलन् ॥ १४ ॥
आहवनीयस्य च वै स गार्हपत्यस्य च दक्षिणाग्नेश्च यज्ञस्य
च यजमानस्य च पशूनां च प्रियं धाम भवति य एवं वेद ॥ १५ ॥
सोऽनादिष्टां दिशमनु व्यचिलत् ॥ १६ ॥
तमृतवश्चार्तवाश्च लोकाश्च लौक्याश्च
मासाश्चार्धमासाश्चाहोरात्रे चानुव्यचिलन् ॥ १७ ॥
ऋतूनां च वै स आर्तवानां च लोकानां च लौक्यानां च मासानां
चार्धमासानां चाहोरात्रयोश्च प्रियं धाम भवति य एवं वेद ॥ १८ ॥
सोऽनावृत्तां दिशमनु व्यचिलत्ततो नावर्त्यन्नमन्यत ॥ १९ ॥
तं दितिश्चादितिश्चेडा चेन्द्राणी चानुव्यचिलन् ॥ २० ॥
दितेश्च वै सोऽदितेश्चेडायाश्चेन्द्राण्याश्च प्रियं धाम
भवति य एवं वेद ॥ २१ ॥
स दिशोऽनु व्यचिलत्तं विराडनु व्यचिलत्सर्वे च देवाः
सर्वांश्च देवताः ॥ २२ ॥
विराजश्च वै स सर्वेषां च देवानां सर्वासां च
देवतानां प्रियं धाम भवति य एवं वेद ॥ २३ ॥
स सर्वानन्तर्देशाननु व्यचिलत् ॥ २४ ॥
तं प्रजापतिश्च परमेष्ठी च पिता च पितामहश्चानुव्यचिलन् ॥ २५ ॥
प्रजापतेश्च वै स परमेष्ठिनश्च पितुश्च पितामहस्य
च प्रियं धाम भवति य एवं वेद ॥ २६ ॥

[७] सप्तमं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा ॥ देवता—अध्यात्मम्, व्रात्यः ॥ छन्दः—१ त्रिपदानिचृद्गायत्री; २ एकपदाविराड्बृहती; ३ विराडुष्णिक्; ४ एकपदागायत्री; ५ पङ्क्तिः ॥

स महिमा सद्भूर्भूत्वान्तं पृथिव्या अगच्छत्स समुद्रोऽभवत् ॥ १ ॥
तं प्रजापतिश्च परमेष्ठी च पिता च पितामहश्चापश्च
श्रद्धा च वर्षं भूत्वानुव्यवर्तयन्त ॥ २ ॥
ऐनमापो गच्छत्यैनं श्रद्धा गच्छत्यैनं वर्षं गच्छति य एवं वेद ॥ ३ ॥
तं श्रद्धा च यज्ञश्च लोकश्चान्नं चान्नाद्यं च भूत्वाभिपर्यावर्तन्त ॥ ४ ॥
ऐनं श्रद्धा गच्छत्यैनं यज्ञो गच्छत्यैनं लोको गच्छत्यैनमन्नं
गच्छत्यैनमन्नाद्यं गच्छति य एवं वेद ॥ ५ ॥

अथ द्वितीयोऽनुवाकः [८] अष्टमं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा ॥ देवता—अध्यात्मम्, व्रात्यः ॥ छन्दः—१ साम्न्युष्णिक्; २ प्राजापत्याऽनुष्टुप्; ३ आर्चीपङ्क्तिः ॥

सोऽरिष्यत्ततो राजन्योऽजायत ॥ १ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

स विशः सर्बन्धूनन्नमन्नाद्यमभ्युदतिष्ठत् ॥ २ ॥
विशां च वै स सर्बन्धूनां चान्नस्य चान्नाद्यस्य च
प्रियं धाम भवति य एवं वेद ॥ ३ ॥

[९] नवमं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा ॥ देवता—अध्यात्मम्; व्रात्यः ॥ छन्दः—१ आसुरीजगती;
२ आर्चीगायत्री; ३ आर्चीपङ्क्तिः ॥

स विशोऽनु व्यचिलत् ॥ १ ॥
तं सभा च समितिश्च सेना च सुरा चानुव्यचिलन् ॥ २ ॥
सभायाश्च वै स समितेश्च सेनायाश्च सुरायाश्च
प्रियं धाम भवति य एवं वेद ॥ ३ ॥

[१०] दशमं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा ॥ देवता—अध्यात्मम्; व्रात्यः ॥ छन्दः—१ द्विपदासाम्नीबृहती;
२ त्रिपदाऽऽर्चीपङ्क्तिः; ३ द्विपदाप्राजापत्यापङ्क्तिः; ४ त्रिपदावर्धमानागायत्री;
५ त्रिपदासाम्नीबृहती; ६, ८, १० द्विपदाऽऽसुरीगायत्री;
७, ९ साम्न्युष्णिक्; ११ आसुरीबृहती ॥

तद्यस्यैवं विद्वान्व्रात्यो राज्ञोऽतिथिर्गृहानागच्छेत् ॥ १ ॥
श्रेयांसमेनमात्मनो मानयेत्तथा क्षत्राय ना वृश्चते तथा राष्ट्राय ना वृश्चते ॥ २ ॥
अतो वै ब्रह्म च क्षत्रं चोदतिष्ठतां ते अब्रूतां कं प्र विशावेति ॥ ३ ॥
अतो वै बृहस्पतिमेव ब्रह्म प्रा विशत्विन्द्रं क्षत्रं तथा वा इति ॥ ४ ॥
अतो वै बृहस्पतिमेव ब्रह्म प्राविशदिन्द्रं क्षत्रम् ॥ ५ ॥
इयं वा उ पृथिवी बृहस्पतिर्द्यौरेवेन्द्रः ॥ ६ ॥
अयं वा उ अग्निर्ब्रह्मासावादित्यः क्षत्रम् ॥ ७ ॥
ऐनं ब्रह्म गच्छति ब्रह्मवर्चसी भवति ॥ ८ ॥
यः पृथिवीं बृहस्पतिमग्निं ब्रह्म वेद ॥ ९ ॥
ऐनमिन्द्रियं गच्छतीन्द्रियवान्भवति ॥ १० ॥
य आदित्यं क्षत्रं दिवमिन्द्रं वेद ॥ ११ ॥

[११] एकादशं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा ॥ देवता—अध्यात्मम्; व्रात्यः ॥ छन्दः—१ दैवीपङ्क्तिः;
२ द्विपदापूर्वात्रिष्टुबतिशक्वरी; ३-६, ८ निचृदार्चीबृहती;
७, ९ द्विपदाप्राजापत्याबृहती; १० भुरिगार्चीबृहती;
११ द्विपदाऽऽर्च्यनुष्टुप् ॥

तद्यस्यैवं विद्वान्व्रात्योऽतिथिर्गृहानागच्छेत् ॥ १ ॥
स्वयमेनमभ्युदेत्य ब्रूयाद् व्रात्य क्वाऽऽवात्सीर्व्रात्योदकं व्रात्य
तर्पयन्तु व्रात्य यथा ते प्रियं तथास्तु व्रात्य यथा ते
वशस्तथास्तु व्रात्य यथा ते निकामस्तथास्त्विति ॥ २ ॥
यदेनमाह व्रात्य क्वाऽऽवात्सीरिति पथ एव तेन देवयानानव रुन्द्धे ॥ ३ ॥
यदेनमाह व्रात्योदकमित्यप एव तेनाव रुन्द्धे ॥ ४ ॥
यदेनमाह व्रात्य तर्पयन्त्विति प्राणमेव तेन वर्षीयांसं कुरुते ॥ ५ ॥
यदेनमाह व्रात्य यथा ते प्रियं तथास्त्विति प्रियमेव तेनाव रुन्द्धे ॥ ६ ॥
ऐनं प्रियं गच्छति प्रियः प्रियस्य भवति य एवं वेद ॥ ७ ॥
यदेनमाह व्रात्य यथा ते वशस्तथास्त्विति वशमेव तेनाव रुन्द्धे ॥ ८ ॥
ऐनं वशो गच्छति वशी वशिनो भवति य एवं वेद ॥ ९ ॥
यदेनमाह व्रात्य यथा ते निकामस्तथास्त्विति निकाममेव तेनाव रुन्द्धे ॥ १० ॥
ऐनं निकामो गच्छति निकामे निकामस्य भवति य एवं वेद ॥ ११ ॥

[१२] द्वादशं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा ॥ देवता—अध्यात्मम्; व्रात्यः ॥ छन्दः—१ त्रिपदा-
गायत्री; २ प्राजापत्याबृहती; ३, ४ भुरिक्प्राजापत्याऽनुष्टुप्;
५, ६, ९, १० आसुरीगायत्री; ८ विराड्गायत्री;
७, ११ त्रिपदाप्राजापत्यात्रिष्टुप् ॥

तद्यस्यैवं विद्वान्व्रात्य उद्धृतेष्वग्निष्वधिश्रितेऽग्निहोत्रेऽतिथिर्गृहानागच्छेत् ॥ १ ॥
स्वयमेनमभ्युदेत्य ब्रूयाद् व्रात्यातिं सृज होष्यामीति ॥ २ ॥
स चातिसृजेज्जुहुयात्र चातिसृजेन्न जुहुयात् ॥ ३ ॥
स य एवं विदुषा व्रात्येनातिसृष्टो जुहोति ॥ ४ ॥
प्र पितृयाणं पन्थां जानाति प्र देवयानम् ॥ ५ ॥
न देवेष्वा वृश्चते हुतमस्य भवति ॥ ६ ॥
पर्येस्यास्मिँल्लोक आयतनं शिष्यते य एवं विदुषा
व्रात्येनातिसृष्टो जुहोति ॥ ७ ॥
अथ य एवं विदुषा व्रात्येनानतिसृष्टो जुहोति ॥ ८ ॥
न पितृयाणं पन्थां जानाति न देवयानम् ॥ ९ ॥
आ देवेषु वृश्चते अहुतमस्य भवति ॥ १० ॥
नास्यास्मिँल्लोक आयतनं शिष्यते य एवं विदुषा
व्रात्येनानतिसृष्टो जुहोति ॥ ११ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

[१३] त्रयोदशं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा ॥ देवता—अध्यात्मम्; व्रात्यः ॥ छन्दः—१ साम्युष्णिक्; २, ६ प्राजापत्याऽनुष्टुप्; ३, ५, ७ आसुरीगायत्री; ४, ८ साम्नीबृहती; ९ द्विपदानिचृद्गायत्री; १० द्विपदाविराड्गायत्री; ११ प्राजापत्यापङ्क्तिः; १२ आसुरीजगती; १३ सतःपङ्क्तिः; १४ अक्षरपङ्क्तिः ॥

तद्यस्यैवं विद्वान्व्रात्य एकां रात्रिमतिथिर्गृहे वसति ॥ १ ॥
ये पृथिव्यां पुण्या लोकास्तानेव तेनाव रुन्द्धे ॥ २ ॥
तद्यस्यैवं विद्वान्व्रात्यो द्वितीयां रात्रिमतिथिर्गृहे वसति ॥ ३ ॥
येऽन्तरिक्षे पुण्या लोकास्तानेव तेनाव रुन्द्धे ॥ ४ ॥
तद्यस्यैवं विद्वान्व्रात्यस्तृतीयां रात्रिमतिथिर्गृहे वसति ॥ ५ ॥
ये दिवि पुण्या लोकास्तानेव तेनाव रुन्द्धे ॥ ६ ॥
तद्यस्यैवं विद्वान्व्रात्यश्चतुर्थीं रात्रिमतिथिर्गृहे वसति ॥ ७ ॥
ये पुण्यानां पुण्या लोकास्तानेव तेनाव रुन्द्धे ॥ ८ ॥
तद्यस्यैवं विद्वान्व्रात्योऽपरिमिता रात्रीरतिथिर्गृहे वसति ॥ ९ ॥
य एवापरिमिताः पुण्या लोकास्तानेव तेनाव रुन्द्धे ॥ १० ॥
अथ यस्याव्रात्यो व्रात्यब्रुवो नामबिभ्रत्यतिथिर्गृहानागच्छेत् ॥ ११ ॥
कर्वैदेनं न चैनं कर्षेत् ॥ १२ ॥
अस्यै देवतायाऽउदकं याचामीमां देवतां वासय इमामिमां देवतां परिं वेवेष्मीत्येनं परिं वेविष्यात् ॥ १३ ॥
तस्यामेवास्य तद्देवतायां हुतं भवति य एवं वेद ॥ १४ ॥

[१४] चतुर्दशं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा ॥ देवता—अध्यात्मम्; व्रात्यः ॥ छन्दः—१ त्रिपदाऽनुष्टुप्; २, ४, ६, ८, १० २०, २२, २४ आसुरीगायत्री; ३, ९ पुरउष्णिक्; ५ अनुष्टुप्; ७ प्रस्तारपङ्क्तिः; ११ स्वराड्गायत्री; १२, १४, १६, १८ भुरिक्प्राजापत्याऽनुष्टुप्; १३, १५ आर्चीपङ्क्तिः; १७, २३ आर्चीत्रिष्टुप्; १९ भुरिङ्नाम्नीगायत्री; २१ प्राजापत्यात्रिष्टुप् ॥

स यत्प्राचीं दिशमनु व्यचलन्मारुतं शर्धो भूत्वानुव्यचलन्मनोऽन्नादं कृत्वा ॥ १ ॥
मनसान्नादेनान्नमत्ति य एवं वेद ॥ २ ॥
स यद्दक्षिणां दिशमनु व्यचलदिन्द्रो भूत्वानुव्यचिलद् बलमन्नादं कृत्वा ॥ ३ ॥
बलेनान्नादेनान्नमत्ति य एवं वेद ॥ ४ ॥
स यत्प्रतीचीं दिशमनु व्यचलद्वरुणो राजा भूत्वानुव्यचिलदपोऽन्नादीः कृत्वा ॥ ५ ॥
अद्भिरन्नादीभिरन्नमत्ति य एवं वेद ॥ ६ ॥
स यदुदीचीं दिशमनु व्यचलत्सोमो राजा भूत्वानुव्यचिलत्सप्तर्षिभिर्हुत आहुतिमन्नादीं कृत्वा ॥ ७ ॥
आहुत्यान्नाद्यान्नमत्ति य एवं वेद ॥ ८ ॥
स यद् ध्रुवां दिशमनु व्यचलद्विष्णुर्भूत्वानुव्यचिलद् विराजमन्नादीं कृत्वा ॥ ९ ॥
विराजान्नाद्यान्नमत्ति य एवं वेद ॥ १० ॥
स यत्पशूननु व्यचलद्रुद्रो भूत्वानुव्यचलदोषधीरन्नादीः कृत्वा ॥ ११ ॥
ओषधीभिरन्नादीभिरन्नमत्ति य एवं वेद ॥ १२ ॥
स यत्पितॄननु व्यचलद्यमो राजा भूत्वानुव्यचलत्स्वधाकारमन्नादं कृत्वा ॥ १३ ॥
स्वधाकारेणान्नादेनान्नमत्ति य एवं वेद ॥ १४ ॥
स यन्मनुष्यान्ननु व्यचलदग्निर्भूत्वानुव्यचिलत्स्वाहाकारमन्नादं कृत्वा ॥ १५ ॥
स्वाहाकारेणान्नादेनान्नमत्ति य एवं वेद ॥ १६ ॥
स यदूर्ध्वां दिशमनु व्यचलद् बृहस्पतिर्भूत्वानुव्यचिलद्वषट्कारमन्नादं कृत्वा ॥ १७ ॥
वषट्कारेणान्नादेनान्नमत्ति य एवं वेद ॥ १८ ॥
स यद्देवाननु व्यचलदीशानो भूत्वानुव्यचिलन्मन्युमन्नादं कृत्वा ॥ १९ ॥
मन्युनान्नादेनान्नमत्ति य एवं वेद ॥ २० ॥
स यत्प्रजा अनु व्यचलत् प्रजापतिर्भूत्वानुव्यचिलत्प्राणमन्नादं कृत्वा ॥ २१ ॥
प्राणेनान्नादेनान्नमत्ति य एवं वेद ॥ २२ ॥
स यत्सर्वानन्तर्देशाननु व्यचलत्परमेष्ठी भूत्वानुव्यचिलद् ब्रह्मान्नादं कृत्वा ॥ २३ ॥
ब्रह्मणान्नादेनान्नमत्ति य एवं वेद ॥ २४ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

[१५] पञ्चदशं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा॥ देवता—अध्यात्मम्; व्रात्यः॥ छन्दः—१ दैवीपङ्क्तिः; २ आसुरीबृहती; ३ प्राजापत्याऽनुष्टुप्; ४, ७, ८ भुरिक्प्राजापत्याऽनुष्टुप्; ५, ६ द्विपदासाम्नीबृहती; ९ विराड्गायत्री; (३-९ तस्य व्रात्यस्येत्यस्योक्तम्)॥

तस्य॒ व्रात्य॑स्य॥ १॥
स॒प्त प्रा॒णाः स॒प्तापा॒नाः स॒प्त व्या॒नाः॥ २॥
तस्य॒ व्रात्य॑स्य। यो॑ऽस्य प्रथ॒मः प्रा॒ण ऊ॒र्ध्वो नामा॒यं सो अ॒ग्निः॥ ३॥
तस्य॒ व्रात्य॑स्य। यो॑ऽस्य द्वि॒तीयः॑ प्रा॒णः प्रौ॒ढो॒ नामा॒सौ स आ॑दि॒त्यः॥ ४॥
तस्य॒ व्रात्य॑स्य। यो॑ऽस्य तृ॒तीयः॑ प्रा॒णो॒३॒॑भ्यू॑ढो॒ नामा॒सौ स च॒न्द्रमाः॑॥ ५॥
तस्य॒ व्रात्य॑स्य। यो॑ऽस्य चतु॒र्थः॑ प्रा॒णो वि॒भूर्नामा॒यं स पर्व॑मानः॥ ६॥
तस्य॒ व्रात्य॑स्य। यो॑ऽस्य पञ्च॒मः प्रा॒णो योनि॒र्नाम॒ ता इ॒मा आपः॑॥ ७॥
तस्य॒ व्रात्य॑स्य। यो॑ऽस्य ष॒ष्ठः प्रा॒णः प्रि॒यो नाम॒ त इ॒मे प॒शवः॑॥ ८॥
तस्य॒ व्रात्य॑स्य। यो॑ऽस्य स॒प्त॒मः प्रा॒णोऽप॑रिमितो॒ नाम॒ ता इ॒माः प्र॒जाः॥ ९॥

[१६] षोडशं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा॥ देवता—अध्यात्मम्; व्रात्यः॥ छन्दः—१, ३ साम्न्युष्णिक्; २, ४, ५ प्राजापत्योष्णिक्; ६ याजुषीत्रिष्टुप्; ७ आसुरीगायत्री; (१-७ तस्य व्रात्यस्येत्यस्योक्तम्)॥

तस्य॒ व्रात्य॑स्य। यो॑ऽस्य प्रथ॒मोऽपा॒नः सा पौ॒र्णमा॒सी॥ १॥
तस्य॒ व्रात्य॑स्य। यो॑ऽस्य द्वि॒तीयो॑ऽपा॒नः साष्टका॥ २॥
तस्य॒ व्रात्य॑स्य। यो॑ऽस्य तृ॒तीयो॑ऽपा॒नः सामा॑वा॒स्या॑॥ ३॥
तस्य॒ व्रात्य॑स्य। यो॑ऽस्य चतु॒र्थो॑ऽपा॒नः सा श्र॒द्धा॥ ४॥
तस्य॒ व्रात्य॑स्य। यो॑ऽस्य पञ्च॒मो॑ऽपा॒नः सा दी॒क्षा॥ ५॥
तस्य॒ व्रात्य॑स्य। यो॑ऽस्य ष॒ष्ठो॑ऽपा॒नः स य॒ज्ञः॥ ६॥
तस्य॒ व्रात्य॑स्य। यो॑ऽस्य स॒प्त॒मो॑ऽपा॒नस्ता इ॒मा दक्षि॑णाः॥ ७॥

[१७] सप्तदशं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा॥ देवता—अध्यात्मम्; व्रात्यः॥ छन्दः—१, ५ प्राजापत्योष्णिक्; २, ७ आसुर्यनुष्टुप्; ३ याजुषीपङ्क्तिः; ४ साम्न्युष्णिक्; ६ याजुषीत्रिष्टुप्; ८ प्रतिष्ठाऽऽर्चीपङ्क्तिः; ९ द्विपदासाम्नीत्रिष्टुप्; १० साम्न्यनुष्टुप्; (१-१० तस्य व्रात्यस्येत्यस्योक्तम्)॥

तस्य॒ व्रात्य॑स्य। यो॑ऽस्य प्रथ॒मो व्या॒नः सेयं भूमिः॑॥ १॥
तस्य॒ व्रात्य॑स्य। यो॑ऽस्य द्वि॒तीयो॑ व्या॒नस्तदु॒न्तरि॑क्षम्॥ २॥
तस्य॒ व्रात्य॑स्य। यो॑ऽस्य तृ॒तीयो॑ व्या॒नः सा द्यौः॑॥ ३॥
तस्य॒ व्रात्य॑स्य। यो॑ऽस्य चतु॒र्थो॑ व्या॒नस्तानि॒ नक्ष॑त्राणि॥ ४॥
तस्य॒ व्रात्य॑स्य। यो॑ऽस्य पञ्च॒मो व्या॒नस्त ऋ॒तवः॑॥ ५॥
तस्य॒ व्रात्य॑स्य। यो॑ऽस्य ष॒ष्ठो व्या॒नस्त आ॒र्त॒वाः॑॥ ६॥
तस्य॒ व्रात्य॑स्य। यो॑ऽस्य स॒प्त॒मो व्या॒नः स सं॑व॒त्स॒रः॑॥ ७॥
तस्य॒ व्रात्य॑स्य। स॒मा॒नम॑र्थं परि॒ यन्ति दे॒वाः सं॑व॒त्स॒रं वा एत॑दृ॒तवो॑ऽनुपरि॒यन्ति॒ व्रात्यं॑ च॥ ८॥
तस्य॒ व्रात्य॑स्य। यदा॑दि॒त्यम॑भिसंवि॒शन्त्य॑मावा॒स्यां॑ चै॒व तत्पौ॑र्णमा॒सीं च॑॥ ९॥
तस्य॒ व्रात्य॑स्य। एक॑ं तदे॑षाममृत॒त्वमित्याहु॑ति॒रेव॥ १०॥

[१८] अष्टादशं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा॥ देवता—अध्यात्मम्; व्रात्यः॥ छन्दः—१ दैवीपङ्क्तिः; २, ३ आर्चीबृहती; ४ आर्च्यनुष्टुप्; ५ साम्न्युष्णिक्॥

तस्य॒ व्रात्य॑स्य॥ १॥
यद॑स्य॒ दक्षि॑ण॒मक्ष्य॑सौ स आ॑दि॒त्यो यद॑स्य स॒व्यमक्ष्य॑सौ स च॒न्द्रमाः॑॥ २॥
यो॑ऽस्य॒ दक्षि॑णः॒ कर्णो॑ऽयं सो अ॒ग्निर्यो॑ऽस्य स॒व्यः कर्णो॑ऽयं स पर्व॑मानः॥ ३॥
अ॒हो॒रात्रे नासि॑के दिति॒श्चादि॑तिश्च शी॒र्ष॒क॒पा॒ले सं॑व॒त्स॒रः शिरः॑॥ ४॥
अह्ना॑ प्र॒त्यङ् व्रात्यो॒ रात्र्या॒ प्राङ् नमो॒ व्रात्या॑य॥ ५॥

इति त्रिंशः प्रपाठकः॥

॥ इति पञ्चदशं काण्डम्॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अथ षोडशं काण्डम्॥

अथैकत्रिंशः प्रपाठकः॥

अथ प्रथमोऽनुवाकः [१] प्रथमं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा॥ देवता—प्रजापतिः॥ छन्दः—१, ३ द्विपदासाम्नीबृहती; २, १० याजुषीत्रिष्टुप्; ४ आसुरीगायत्री; ५, ८ द्विपदासाम्नीपङ्क्तिः; ६ साम्न्यनुष्टुप्; ७ निचृद् [द्विपदा] विराड्गायत्री; ९ आसुरीपङ्क्तिः; ११ साम्न्युष्णिक्; १२, १३ [द्विपदा] आर्च्यनुष्टुप्॥

अतिसृष्टो अपां वृषभोऽतिसृष्टा अग्रयो दिव्याः॥ १॥
रुजन्परिरुजन्मृणन्प्रमृणन् ॥ २॥
प्रोको मनोहा खनो निर्दाह आत्मदूषिस्तनूदूषिः॥ ३॥
इदं तमति सृजामि तं माभ्यवनिक्षि ॥ ४॥
तेन तमभ्यतिसृजामो योऽस्मान्द्वेष्टि यं वयं द्विष्मः॥ ५॥
अपामग्रमसि समुद्रं वोऽभ्यवसृजामि ॥ ६॥
योऽप्स्वग्निरिति तं सृजामि प्रोकं खनिं तनूदूषिम्॥ ७॥
यो व आपोऽग्निराविवेश स एष यद्वो घोरं तदेतत्॥ ८॥
इन्द्रस्य व इन्द्रियेणाभि षिञ्चेत् ॥ ९॥
अरिप्रा आपो अप रिप्रमस्मत् ॥ १०॥
प्रास्मदेनो वहन्तु प्र दुष्वप्न्यं वहन्तु ॥ ११॥
शिवेन मा चक्षुषा पश्यतापः शिवया तन्वोप स्पृशत त्वचं मे॥ १२॥
शिवान्ग्रीनप्सुषदो हवामहे मयि क्षत्रं वर्च आ धत्त देवीः ॥ १३॥

[२] द्वितीयं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा॥ देवता—वाक्॥ छन्दः—१ आसुर्यनुष्टुप्; २ आसुर्युष्णिक्; ३ साम्न्युष्णिक्; ४ त्रिपदासाम्नीबृहती; ५ आर्च्यनुष्टुप्; ६ निचृद् [द्विपदा] विराड्गायत्री॥

निर्दुरमण्य ऊर्जा मधुमती वाक् ॥ १॥
मधुमती स्थ मधुमतीं वाचमुदेयम् ॥ २॥
उपहूतो मे गोपा उपहूतो गोपीथः ॥ ३॥
सुश्रुतौ कर्णौ भद्रश्रुतौ कर्णौ भद्रं श्लोकं श्रयासम्॥ ४॥
सुश्रुतिश्च मोपश्रुतिश्च मा हासिष्टां सौपर्णं चक्षुरजस्रं ज्योतिः॥ ५॥
ऋषीणां प्रस्तरोऽसि नमोऽस्तु दैवाय प्रस्तराय ॥ ६॥

[३] तृतीयं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा॥ देवता—ब्रह्मादित्यौ॥ छन्दः—१ आसुरीगायत्री; २, ३ आर्च्यनुष्टुप्; ४ प्राजापत्यात्रिष्टुप्; ५ साम्न्युष्णिक्; ६ द्विपदासाम्नीत्रिष्टुप्॥

मूर्धाहं रयीणां मूर्धा समानानां भूयासम् ॥ १॥
रुजश्च मा वेनश्च मा हासिष्टां मूर्धा च मा विधर्मा च मा हासिष्टाम्॥ २॥
उर्वश्च मा चमसश्च मा हासिष्टां धर्ता च मा धरुणश्च मा हासिष्टाम्॥ ३॥
विमोकश्च मार्द्रपविश्च मा हासिष्टामार्द्रदानुश्च मा मातरिश्वा च मा हासिष्टाम् ॥ ४॥
बृहस्पतिर्म आत्मा नृमणा नाम हृद्यः ॥ ५॥
असंतापं मे हृदयमुर्वी गव्यूतिः समुद्रो अस्मि विधर्मणा॥ ६॥

[४] चतुर्थं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा॥ देवता—ब्रह्मादित्यौ॥ छन्दः—१, ३ साम्न्यनुष्टुप्; २ साम्न्युष्णिक्; ४ त्रिपदाऽनुष्टुप्; ५ आसुरीगायत्री; ६ आर्च्युष्णिक्; ७ त्रिपदाविराड्गर्भाऽनुष्टुप्॥

नाभिरहं रयीणां नाभिः समानानां भूयासम् ॥ १॥
स्वासदसि सूषा अमृतो मर्त्येष्वा ॥ २॥
मा मां प्राणो हासीन्मो अपानोऽविहाय परा गात्॥ ३॥
सूर्यो माह्नः पात्वग्निः पृथिव्या वायुरन्तरिक्षाद्यमो मनुष्येभ्यः सरस्वती पार्थिवेभ्यः ॥ ४॥
प्राणापानौ मा मा हासिष्टं मा जने प्र मेषि ॥ ५॥
स्वस्त्यहोषसो दोषसश्च सर्वं आपः सर्वगणो अशीय॥ ६॥
शक्वरी स्थ पशवो मोप स्थेषुर्मित्रावरुणौ मे प्राणापानावग्निर्मे दक्षं दधातु ॥ ७॥

अथ द्वितीयोऽनुवाकः [५] पञ्चमं सूक्तम्

ऋषिः—यमः॥ देवता—दुःष्वप्ननाशनम्॥ छन्दः—१, ४-६ (प्र०) विराड्गायत्री; २, ४-७ (द्वि०), ९ प्राजापत्यगायत्री; ३, ४-७ (तृ०), १० द्विपदासाम्नीबृहती; ७ (प्र०) भुरिग्विराड्गायत्री; ८ स्वराड्विराड्गायत्री॥

विश्वे त स्वप्न जनित्रं ग्राह्याः पुत्रोऽसि यमस्य करणः॥ १॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अन्तकोऽसि मृत्युरसि ॥ २ ॥
तं त्वा स्वप्न तथा सं विद्म स नः स्वप्न दुष्वप्न्यात्पाहि ॥ ३ ॥
विद्म ते स्वप्न जनित्रं निर्ऋत्याः पुत्रोऽसि यमस्य करणः।
अन्तकोऽसि मृत्युरसि।
तं त्वा स्वप्न तथा सं विद्म स नः स्वप्न दुष्वप्न्यात्पाहि ॥ ४ ॥
विद्म ते स्वप्न जनित्रमभूत्याः पुत्रोऽसि यमस्य करणः।
अन्तकोऽसि मृत्युरसि।
तं त्वा स्वप्न तथा सं विद्म स नः स्वप्न दुष्वप्न्यात्पाहि ॥ ५ ॥
विद्म ते स्वप्न जनित्रं निर्भूत्याः पुत्रोऽसि यमस्य करणः।
अन्तकोऽसि मृत्युरसि।
तं त्वा स्वप्न तथा सं विद्म स नः स्वप्न दुष्वप्न्यात्पाहि ॥ ६ ॥
विद्म ते स्वप्न जनित्रं पराभूत्याः पुत्रोऽसि यमस्य करणः।
अन्तकोऽसि मृत्योरसि।
तं त्वा स्वप्न तथा सं विद्म स नः स्वप्न दुष्वप्न्यात्पाहि ॥ ७ ॥
विद्म ते स्वप्न जनित्रं देवजामीनां पुत्रोऽसि यमस्य करणः ॥ ८ ॥
अन्तकोऽसि मृत्युरसि ॥ ९ ॥
तं त्वा स्वप्न तथा सं विद्म स नः स्वप्न दुष्वप्न्यात्पाहि ॥ १० ॥

[६] षष्ठं सूक्तम्

ऋषिः—यमः ॥ देवता—दुःष्वप्ननाशनम्, उषा ॥ छन्दः—१-४ प्राजापत्याऽनुष्टुप्; ५ साम्नीपङ्क्तिः; ६ निचृदार्चीबृहती; ७ द्विपदासाम्नीबृहती; ८ आसुरीजगती; ९ आसुरीबृहती; १० आर्च्युष्णिक्; ११ त्रिपदायवमध्यागायत्री वा आर्च्यनुष्टुप् वा ॥

अजैष्माद्यासनामाद्याभूमानागसो वयम् ॥ १ ॥
उषो यस्मादुष्वप्न्यादभैष्माप तदुच्छतु ॥ २ ॥
द्विषते तत्परा वह शपते तत्परा वह ॥ ३ ॥
यं द्विष्मो यश्च नो द्वेष्टि तस्मा एनद्गमयामः ॥ ४ ॥
उषा देवी वाचा संविदाना वाग्देव्युषसा संविदाना ॥ ५ ॥
उषस्पतिर्वाचस्पतिना संविदानो वाचस्पतिरुषस्पतिना संविदानः ॥ ६ ॥
तेऽमुष्मै परा वहन्त्वरायान्दुर्णाम्नः सदान्वाः ॥ ७ ॥
कुम्भीका दूषीकाः पीयकान्
जाग्रद्दुष्वप्न्यं स्वप्नेदुष्वप्न्यम् ॥ ९ ॥
अनागमिष्यतो वरानवित्तेः संकल्पानमुच्या दुहः पाशान् ॥ १० ॥
तदमुष्मा अग्ने देवाः परा वहन्तु वध्रिर्यथासद्विथुरो न साधुः ॥ ११ ॥

[७] सप्तमं सूक्तम्

ऋषिः—यमः ॥ देवता—दुःष्वप्ननाशनम् ॥ छन्दः—१ पङ्क्तिः; २ साम्न्यनुष्टुप्; ३ आसुर्युष्णिक्; ४ प्राजापत्यागायत्री; ५ आर्च्युष्णिक्; ६, ९, ११ साम्नीबृहती; ७ याजुषीगायत्री; ८ प्राजापत्याबृहती; १० साम्नीगायत्री; १२ भुरिक्प्राजापत्याऽनुष्टुप्; १३ आसुरीत्रिष्टुप् ॥

तेनैनं विध्याम्यभूत्यैनं विध्यामि निर्भूत्यैनं विध्यामि
पराभूत्यैनं विध्यामि ग्राहीनं विध्यामि तमसैनं विध्यामि ॥ १ ॥
देवानामेनं घोरैः क्रूरैः प्रैषैरभिप्रेष्यामि ॥ २ ॥
वैश्वानरस्यैनं दंष्ट्रयोरपि दधामि ॥ ३ ॥
एवानेवाव सा गरत् ॥ ४ ॥
योऽस्मान्द्वेष्टि तमात्मा द्वेष्टु यं वयं द्विष्मः स आत्मानं द्वेष्टु ॥ ५ ॥
निर्द्विषन्तं दिवो निः पृथिव्या निरन्तरिक्षाद्भजाम ॥ ६ ॥
सूर्यमंश्चाक्षुष ॥ ७ ॥
इदमहमामुष्यायणेऽमुष्याः पुत्रे दुष्वप्न्यं मृजे ॥ ८ ॥
यददोअदो अभ्यगच्छन्यद्दोषा यत्पूर्वा रात्रिम् ॥ ९ ॥
यज्जाग्रद्यत्सुप्तो यद्दिवा यन्नक्तम् ॥ १० ॥
यदहरहरभिगच्छामि तस्मादेनमव दये ॥ ११ ॥
तं जहि तेन मन्दस्व तस्य पृष्टीरपि शृणीहि ॥ १२ ॥
स मा जीवीत्तं प्राणो जहातु ॥ १३ ॥

[८] अष्टमं सूक्तम्

ऋषिः—यमः ॥ देवता—दुःष्वप्ननाशनम् ॥ छन्दः—१, ५-२९ (प्र०), ३० एकपदायजुर्ब्राह्म्यनुष्टुप्; २, ५-२९ (द्वि०), ३१ त्रिपदानिचृद्गायत्री; ३ प्राजापत्यागायत्री; ४, ५-२९ (च०), ३३ त्रिपदाप्राजापत्यात्रिष्टुप्; ५-७ १२, २०, २२, २७ (सर्वेषां तृ०) आसुरीजगती; ८, १०, ११, १३, १४, १६, २१ (सर्वेषां तृ०) आसुरीत्रिष्टुप्; ९, १५, १७-१९, २३-२६ (सर्वेषां तृ०), ३२ आसुरीपङ्क्तिः; २८, २९ (द्वयोः तृ०) आसुरीबृहती ॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जितमस्माकमुद्भिन्नमस्माकमृतमस्माकं तेजोऽस्माकं ब्रह्मास्माकं स्वरस्माकं यज्ञोऽस्माकं पशवोऽस्माकं प्रजा अस्माकं वीरा अस्माकम्॥ १॥
तस्मादमुं निर्भजामोऽमुमामुष्यायणममुष्याः पुत्रमसौ यः ॥ २॥
स ग्राह्याः पाशान्मा मोचि ॥ ३॥
तस्येदं वर्चस्तेजः प्राणमायुर्नि वेष्टयामीदमेनमधराञ्चं पादयामि॥ ४॥ (१)

जितमस्माकमुद्भिन्नमस्माकमृतमस्माकं तेजोऽस्माकं ब्रह्मास्माकं स्वरस्माकं यज्ञोऽस्माकं पशवोऽस्माकं प्रजा अस्माकं वीरा अस्माकम् ।
तस्मादमुं निर्भजामोऽमुमामुष्यायणममुष्याः पुत्रमसौ यः ।
स निर्ऋत्याः पाशान्मा मोचि ।
तस्येदं वर्चस्तेजः प्राणमायुर्नि वेष्टयामीदमेनमधराञ्चं पादयामि॥ ५॥ (२)

जितमस्माकमुद्भिन्नमस्माकमृतमस्माकं तेजोऽस्माकं ब्रह्मास्माकं स्वरस्माकं यज्ञोऽस्माकं पशवोऽस्माकं प्रजा अस्माकं वीरा अस्माकम् ।
तस्मादमुं निर्भजामोऽमुमामुष्यायणममुष्याः पुत्रमसौ यः ।
सोऽभूत्याः पाशान्मा मोचि ।
तस्येदं वर्चस्तेजः प्राणमायुर्नि वेष्टयामीदमेनमधराञ्चं पादयामि॥ ६॥ (३)

जितमस्माकमुद्भिन्नमस्माकमृतमस्माकं तेजोऽस्माकं ब्रह्मास्माकं स्वरस्माकं यज्ञोऽस्माकं पशवोऽस्माकं प्रजा अस्माकं वीरा अस्माकम् ।
तस्मादमुं निर्भजामोऽमुमामुष्यायणममुष्याः पुत्रमसौ यः ।
स निर्भूत्याः पाशान्मा मोचि ।
तस्येदं वर्चस्तेजः प्राणमायुर्नि वेष्टयामीदमेनमधराञ्चं पादयामि॥ ७॥ (४)

जितमस्माकमुद्भिन्नमस्माकमृतमस्माकं तेजोऽस्माकं ब्रह्मास्माकं स्वरस्माकं यज्ञोऽस्माकं पशवोऽस्माकं प्रजा अस्माकं वीरा अस्माकम् ।
तस्मादमुं निर्भजामोऽमुमामुष्यायणममुष्याः पुत्रमसौ यः ।
स पराभूत्याः पाशान्मा मोचि ।
तस्येदं वर्चस्तेजः प्राणमायुर्नि वेष्टयामीदमेनमधराञ्चं पादयामि॥ ८॥ (५)

जितमस्माकमुद्भिन्नमस्माकमृतमस्माकं तेजोऽस्माकं ब्रह्मास्माकं स्वरस्माकं यज्ञोऽस्माकं पशवोऽस्माकं प्रजा अस्माकं वीरा अस्माकम् ।
तस्मादमुं निर्भजामोऽमुमामुष्यायणममुष्याः पुत्रमसौ यः ।
स देवजामीनां पाशान्मा मोचि ।
तस्येदं वर्चस्तेजः प्राणमायुर्नि वेष्टयामीदमेनमधराञ्चं पादयामि॥ ९॥ (६)

जितमस्माकमुद्भिन्नमस्माकमृतमस्माकं तेजोऽस्माकं ब्रह्मास्माकं स्वरस्माकं यज्ञोऽस्माकं पशवोऽस्माकं प्रजा अस्माकं वीरा अस्माकम् ।
तस्मादमुं निर्भजामोऽमुमामुष्यायणममुष्याः पुत्रमसौ यः ।
स बृहस्पतेः पाशान्मा मोचि ।
तस्येदं वर्चस्तेजः प्राणमायुर्नि वेष्टयामीदमेनमधराञ्चं पादयामि॥ १०॥ (७)

जितमस्माकमुद्भिन्नमस्माकमृतमस्माकं तेजोऽस्माकं ब्रह्मास्माकं स्वरस्माकं यज्ञोऽस्माकं पशवोऽस्माकं प्रजा अस्माकं वीरा अस्माकम् ।
तस्मादमुं निर्भजामोऽमुमामुष्यायणममुष्याः पुत्रमसौ यः ।
स प्रजापतेः पाशान्मा मोचि ।
तस्येदं वर्चस्तेजः प्राणमायुर्नि वेष्टयामीदमेनमधराञ्चं पादयामि॥ ११॥ (८)

जितमस्माकमुद्भिन्नमस्माकमृतमस्माकं तेजोऽस्माकं ब्रह्मास्माकं स्वरस्माकं यज्ञोऽस्माकं पशवोऽस्माकं प्रजा अस्माकं वीरा अस्माकम् ।
तस्मादमुं निर्भजामोऽमुमामुष्यायणममुष्याः पुत्रमसौ यः ।
स ऋषीणां पाशान्मा मोचि ।
तस्येदं वर्चस्तेजः प्राणमायुर्नि वेष्टयामीदमेनमधराञ्चं पादयामि॥ १२॥ (९)

जितमस्माकमुद्भिन्नमस्माकमृतमस्माकं तेजोऽस्माकं ब्रह्मास्माकं स्वरस्माकं यज्ञोऽस्माकं पशवोऽस्माकं प्रजा अस्माकं वीरा अस्माकम् ।
तस्मादमुं निर्भजामोऽमुमामुष्यायणममुष्याः पुत्रमसौ यः ।
स आर्षेयाणां पाशान्मा मोचि ।
तस्येदं वर्चस्तेजः प्राणमायुर्नि वेष्टयामीदमेनमधराञ्चं पादयामि॥ १३॥(१०)

जितमस्माकमुद्भिन्नमस्माकमृतमस्माकं तेजोऽस्माकं ब्रह्मास्माकं स्वरस्माकं यज्ञोऽस्माकं पशवोऽस्माकं प्रजा अस्माकं वीरा अस्माकम् ।
तस्मादमुं निर्भजामोऽमुमामुष्यायणममुष्याः पुत्रमसौ यः ।
सोऽङ्गिरसां पाशान्मा मोचि ।
तस्येदं वर्चस्तेजः प्राणमायुर्नि वेष्टयामीदमेनमधराञ्चं पादयामि॥ १४॥(११)

जितमस्माकमुद्भिन्नमस्माकमृतमस्माकं तेजोऽस्माकं ब्रह्मास्माकं स्वरस्माकं यज्ञोऽस्माकं पशवोऽस्माकं प्रजा अस्माकं वीरा अस्माकम् ।
तस्मादमुं निर्भजामोऽमुमामुष्यायणममुष्याः पुत्रमसौ यः ।
स आङ्गिरसानां पाशान्मा मोचि ।
तस्येदं वर्चस्तेजः प्राणमायुर्नि वेष्टयामीदमेनमधराञ्चं पादयामि॥ १५॥(१२)

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जितमस्माकमुद्भिन्नमस्माकमृतमस्माकं तेजोऽस्माकं ब्रह्मास्माकं स्वरिस्माकं
यज्ञोऽस्माकं पशवोऽस्माकं प्रजा अस्माकं वीरा अस्माकम् ।
तस्मादमुं निर्भजामोऽमुमामुष्यायणममुष्याः पुत्रमसौ यः ।
सोऽथर्वणां पाशान्मा मोचि ।
तस्येदं वर्चस्तेजः प्राणमायुर्नि वेष्टयामीदमेनमधराञ्चं पादयामि ॥ १६ ॥(१३)
जितमस्माकमुद्भिन्नमस्माकमृतमस्माकं तेजोऽस्माकं ब्रह्मास्माकं स्वरिस्माकं
यज्ञोऽस्माकं पशवोऽस्माकं प्रजा अस्माकं वीरा अस्माकम् ।
तस्मादमुं निर्भजामोऽमुमामुष्यायणममुष्याः पुत्रमसौ यः ।
स आथर्वणानां पाशान्मा मोचि ।
तस्येदं वर्चस्तेजः प्राणमायुर्नि वेष्टयामीदमेनमधराञ्चं पादयामि ॥ १७ ॥(१४)
जितमस्माकमुद्भिन्नमस्माकमृतमस्माकं तेजोऽस्माकं ब्रह्मास्माकं स्वरिस्माकं
यज्ञोऽस्माकं पशवोऽस्माकं प्रजा अस्माकं वीरा अस्माकम् ।
तस्मादमुं निर्भजामोऽमुमामुष्यायणममुष्याः पुत्रमसौ यः ।
स वनस्पतीनां पाशान्मा मोचि ।
तस्येदं वर्चस्तेजः प्राणमायुर्नि वेष्टयामीदमेनमधराञ्चं पादयामि ॥ १८ ॥(१५)
जितमस्माकमुद्भिन्नमस्माकमृतमस्माकं तेजोऽस्माकं ब्रह्मास्माकं स्वरिस्माकं
यज्ञोऽस्माकं पशवोऽस्माकं प्रजा अस्माकं वीरा अस्माकम् ।
तस्मादमुं निर्भजामोऽमुमामुष्यायणममुष्याः पुत्रमसौ यः ।
स वानस्पत्यानां पाशान्मा मोचि ।
तस्येदं वर्चस्तेजः प्राणमायुर्नि वेष्टयामीदमेनमधराञ्चं पादयामि ॥ १९ ॥(१६)
जितमस्माकमुद्भिन्नमस्माकमृतमस्माकं तेजोऽस्माकं ब्रह्मास्माकं स्वरिस्माकं
यज्ञोऽस्माकं पशवोऽस्माकं प्रजा अस्माकं वीरा अस्माकम् ।
तस्मादमुं निर्भजामोऽमुमामुष्यायणममुष्याः पुत्रमसौ यः ।
स ऋतूनां पाशान्मा मोचि ।
तस्येदं वर्चस्तेजः प्राणमायुर्नि वेष्टयामीदमेनमधराञ्चं पादयामि ॥ २० ॥(१७)
जितमस्माकमुद्भिन्नमस्माकमृतमस्माकं तेजोऽस्माकं ब्रह्मास्माकं स्वरिस्माकं
यज्ञोऽस्माकं पशवोऽस्माकं प्रजा अस्माकं वीरा अस्माकम् ।
तस्मादमुं निर्भजामोऽमुमामुष्यायणममुष्याः पुत्रमसौ यः ।
स आर्तवानां पाशान्मा मोचि ।
तस्येदं वर्चस्तेजः प्राणमायुर्नि वेष्टयामीदमेनमधराञ्चं पादयामि ॥ २१ ॥(१८)

जितमस्माकमुद्भिन्नमस्माकमृतमस्माकं तेजोऽस्माकं ब्रह्मास्माकं स्वरिस्माकं
यज्ञोऽस्माकं पशवोऽस्माकं प्रजा अस्माकं वीरा अस्माकम् ।
तस्मादमुं निर्भजामोऽमुमामुष्यायणममुष्याः पुत्रमसौ यः ।
स मासानां पाशान्मा मोचि ।
तस्येदं वर्चस्तेजः प्राणमायुर्नि वेष्टयामीदमेनमधराञ्चं पादयामि ॥ २२ ॥(१९)
जितमस्माकमुद्भिन्नमस्माकमृतमस्माकं तेजोऽस्माकं ब्रह्मास्माकं स्वरिस्माकं
यज्ञोऽस्माकं पशवोऽस्माकं प्रजा अस्माकं वीरा अस्माकम् ।
तस्मादमुं निर्भजामोऽमुमामुष्यायणममुष्याः पुत्रमसौ यः ।
सोऽर्धमासानां पाशान्मा मोचि ।
तस्येदं वर्चस्तेजः प्राणमायुर्नि वेष्टयामीदमेनमधराञ्चं पादयामि ॥ २३ ॥(२०)
जितमस्माकमुद्भिन्नमस्माकमृतमस्माकं तेजोऽस्माकं ब्रह्मास्माकं स्वरिस्माकं
यज्ञोऽस्माकं पशवोऽस्माकं प्रजा अस्माकं वीरा अस्माकम् ।
तस्मादमुं निर्भजामोऽमुमामुष्यायणममुष्याः पुत्रमसौ यः ।
सोऽहोरात्रयोः पाशान्मा मोचि ।
तस्येदं वर्चस्तेजः प्राणमायुर्नि वेष्टयामीदमेनमधराञ्चं पादयामि ॥ २४ ॥(२१)
जितमस्माकमुद्भिन्नमस्माकमृतमस्माकं तेजोऽस्माकं ब्रह्मास्माकं स्वरिस्माकं
यज्ञोऽस्माकं पशवोऽस्माकं प्रजा अस्माकं वीरा अस्माकम् ।
तस्मादमुं निर्भजामोऽमुमामुष्यायणममुष्याः पुत्रमसौ यः ।
सोऽह्नोः संयतोः पाशान्मा मोचि ।
तस्येदं वर्चस्तेजः प्राणमायुर्नि वेष्टयामीदमेनमधराञ्चं पादयामि ॥ २५ ॥(२२)
जितमस्माकमुद्भिन्नमस्माकमृतमस्माकं तेजोऽस्माकं ब्रह्मास्माकं स्वरिस्माकं
यज्ञोऽस्माकं पशवोऽस्माकं प्रजा अस्माकं वीरा अस्माकम् ।
तस्मादमुं निर्भजामोऽमुमामुष्यायणममुष्याः पुत्रमसौ यः ।
स द्यावापृथिव्योः पाशान्मा मोचि ।
तस्येदं वर्चस्तेजः प्राणमायुर्नि वेष्टयामीदमेनमधराञ्चं पादयामि ॥ २६ ॥(२३)
जितमस्माकमुद्भिन्नमस्माकमृतमस्माकं तेजोऽस्माकं ब्रह्मास्माकं स्वरिस्माकं
यज्ञोऽस्माकं पशवोऽस्माकं प्रजा अस्माकं वीरा अस्माकम् ।
तस्मादमुं निर्भजामोऽमुमामुष्यायणममुष्याः पुत्रमसौ यः ।
स इन्द्राग्न्योः पाशान्मा मोचि ।
तस्येदं वर्चस्तेजः प्राणमायुर्नि वेष्टयामीदमेनमधराञ्चं पादयामि ॥ २७ ॥(२४)

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जितमस्माकमुद्भिन्नमस्माकमृतमस्माकं तेजोऽस्माकं ब्रह्मास्माकं स्वरिस्माकं
यज्ञोऽ३ऽस्माकं पशवोऽस्माकं प्रजा अस्माकं वीरा अस्माकम् ।
तस्मादमुं निर्भजामोऽमुमामुष्यायणममुष्याः पुत्रमसौ यः ।
स मित्रावरुणयोः पाशान्मा मोचि ।
तस्येदं वर्चस्तेजः प्राणमायुर्नि वेष्टयामीदमेनमधराञ्चं पादयामि ॥ २८ ॥(२५)
जितमस्माकमुद्भिन्नमस्माकमृतमस्माकं तेजोऽस्माकं ब्रह्मास्माकं स्वरिस्माकं
यज्ञोऽ३ऽस्माकं पशवोऽस्माकं प्रजा अस्माकं वीरा अस्माकम् ।
तस्मादमुं निर्भजामोऽमुमामुष्यायणममुष्याः पुत्रमसौ यः ।
स राज्ञो वरुणस्य पाशान्मा मोचि ।
तस्येदं वर्चस्तेजः प्राणमायुर्नि वेष्टयामीदमेनमधराञ्चं पादयामि ॥ २९ ॥(२६)
जितमस्माकमुद्भिन्नमस्माकमृतमस्माकं तेजोऽस्माकं ब्रह्मास्माकं स्वरिस्माकं
यज्ञोऽ३ऽस्माकं पशवोऽस्माकं प्रजा अस्माकं वीरा अस्माकम् ॥ ३० ॥
तस्मादमुं निर्भजामोऽमुमामुष्यायणममुष्याः पुत्रमसौ यः ॥ ३१ ॥
स मृत्योः षड्बीशात्पाशान्मा मोचि ॥ ३२ ॥
तस्येदं वर्चस्तेजः प्राणमायुर्नि वेष्टयामीदमेनमधराञ्चं पादयामि ॥ ३३ ॥(२७)

[९] नवमं सूक्तम्

ऋषिः—यमः ॥ देवता—१ प्रजापतिः; २ मन्त्रोक्ताः; ३, ४ सूर्यः ॥
छन्दः—१ आर्च्यनुष्टुप्; २ आर्च्युष्णिक्; ३ साम्नीपङ्क्तिः;
४ परोष्णिक् ॥

जितमस्माकमुद्भिन्नमस्माकमभ्यृष्टिं विश्वाः पृतना अरातीः ॥ १ ॥
तदग्निराह तदु सोम आह पूषा मा धात्सुकृतस्य लोके ॥ २ ॥
अगन्म स्वः१ः स्वरगन्म सं सूर्यस्य ज्योतिषागन्म ॥ ३ ॥
वस्योभूयाय वसुमान्यज्ञो वसु वंशिषीय वसुमान्भूयासं वसु मयि धेहि ॥ ४ ॥

इत्येकत्रिंशः प्रपाठकः ॥
॥ इति षोडशं काण्डम् ॥

अथ सप्तदशं काण्डम् ॥

अथ द्वात्रिंशः प्रपाठकः ॥

अथ प्रथमोऽनुवाकः [१] प्रथमं सूक्तम्

ऋषि—ब्रह्मा ॥ देवता—आदित्यः ॥ छन्दः—१ षट्पदाजगती; २-५ षट्पदाति-
जगती; ६, ७, १९ अत्यष्टि; ८, ११, १६ सप्तपदातिधृतिः; ९, १४,
१५ पञ्चपदाशक्वरी; १० अष्टपदाधृतिः; १२ कृतिः; १३ प्रकृतिः;
१७ पञ्चपदाविराडतिशक्वरी; १८ भुरिगष्टिः; २० ककुप्;
२१ चतुष्पदोपरिष्टाद्बृहती; २२, २५, २६ अनुष्टुप्;
२३ निचृद्बृहती; २४ विराडत्यष्टिः; २७,
३० जगती; २८, २९ त्रिष्टुप् ॥

विषासहिं सहमानं सासह्वांसं सहीयांसम् ।
सहमानं सहोजितं स्वर्जितं गोजितं संधनाजितम् ।
ईड्यं नाम ह्व इन्द्रमार्युष्मान्भूयासम् ॥ १ ॥
विषासहिं सहमानं सासह्वांसं सहीयांसम् ।
सहमानं सहोजितं स्वर्जितं गोजितं संधनाजितम् ।
ईड्यं नाम ह्व इन्द्रं प्रियो देवानां भूयासम् ॥ २ ॥
विषासहिं सहमानं सासह्वांसं सहीयांसम् ।
सहमानं सहोजितं स्वर्जितं गोजितं संधनाजितम् ।
ईड्यं नाम ह्व इन्द्रं प्रियः प्रजानां भूयासम् ॥ ३ ॥
विषासहिं सहमानं सासह्वांसं सहीयांसम् ।
सहमानं सहोजितं स्वर्जितं गोजितं संधनाजितम् ।
ईड्यं नाम ह्व इन्द्रं प्रियः पशूनां भूयासम् ॥ ४ ॥
विषासहिं सहमानं सासह्वांसं सहीयांसम् ।
सहमानं सहोजितं स्वर्जितं गोजितं संधनाजितम् ।
ईड्यं नाम ह्व इन्द्रं प्रियः समानानां भूयासम् ॥ ५ ॥
उदिह्युदिहि सूर्य वर्चसा माभ्युदिहि ।
द्विषंश्च मह्यं रध्यंतु मा चाहं द्विषते रधं तवेद्विष्णो बहुधा वीर्याणि ।
त्वं नः पृणाहि पशुभिर्विश्वरूपैः सुधायां मा धेहि परमे व्योमन् ॥ ६ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उदिह्युदिहि सूर्य वर्चसा माभ्युदिहि ।
यांश्च पश्यामि यांश्च न तेषु मा सुमतिं कृधि तवेद्विष्णो बहुधा वीर्याणि ।
त्वं नः पृणीहि पशुभिर्विश्वरूपैः सुधायां मा धेहि परमे व्योमिन् ॥ ७ ॥
मा त्वा दभन्त्सलिले अप्स्वन्तर्ये पाशिन उपतिष्ठन्त्यत्र ।
हित्वाशस्तिं दिवमारुक्ष एतां स नो मृड सुमतौ
तें स्याम तवेद्विष्णो बहुधा वीर्याणि ।
त्वं नः पृणीहि पशुभिर्विश्वरूपैः सुधायां मा धेहि परमे व्योमिन् ॥ ८ ॥
त्वं न इन्द्र महते सौभगायादब्धेभिः परि
पाह्यक्तुभिस्तवेद्विष्णो बहुधा वीर्याणि ।
त्वं नः पृणीहि पशुभिर्विश्वरूपैः सुधायां मा धेहि परमे व्योमिन् ॥ ९ ॥
त्वं न इन्द्रोतिभिः शिवाभिः शंतमो भव ।
आरोहँस्त्रिदिवं दिवो गृणानः सोमपीतये प्रियधामा
स्वस्तये तवेद्विष्णो बहुधा वीर्याणि ।
त्वं नः पृणीहि पशुभिर्विश्वरूपैः सुधायां मा धेहि परमे व्योमिन् ॥ १० ॥
त्वमिन्द्रासि विश्वजित्सर्ववित्पुरुहूतस्त्वमिन्द्र ।
त्वमिन्द्रेमं सुहवं स्तोममेरयस्व स नो मृड सुमतौ
तें स्याम तवेद्विष्णो बहुधा वीर्याणि ।
त्वं नः पृणीहि पशुभिर्विश्वरूपैः सुधायां मा धेहि परमे व्योमिन् ॥ ११ ॥
अदब्धो दिवि पृथिव्यामुतासि न ते आपुर्महिमानमन्तरिक्षे ।
अदब्धेन ब्रह्मणा वावृधानः स त्वं नं इन्द्र
दिवि षंच्छर्म यच्छ तवेद्विष्णो बहुधा वीर्याणि ।
त्वं नः पृणीहि पशुभिर्विश्वरूपैः सुधायां मा धेहि परमे व्योमिन् ॥ १२ ॥
या ते इन्द्र तनूरप्सु या पृथिव्यां यान्तरग्नौ या ते इन्द्र पवमाने स्वर्विदे ।
यया न्द्र तन्वान्तरिक्षं व्यापिथ तया न इन्द्र
तन्वा शर्म यच्छ तवेद्विष्णो बहुधा वीर्याणि ।
त्वं नः पृणीहि पशुभिर्विश्वरूपैः सुधायां मा धेहि परमे व्योमिन् ॥ १३ ॥
त्वामिन्द्र ब्रह्मणा वर्धयन्तः सत्रं नि षेदुर्ऋषयो
नाधमानास्तवेद्विष्णो बहुधा वीर्याणि ।
त्वं नः पृणीहि पशुभिर्विश्वरूपैः सुधायां मा धेहि परमे व्योमिन् ॥ १४ ॥
त्वं तृतं त्वं पर्येष्युत्सं सहस्रधारं विदथं स्वर्विदं तवेद्विष्णो बहुधा वीर्याणि ।
त्वं नः पृणीहि पशुभिर्विश्वरूपैः सुधायां मा धेहि परमे व्योमिन् ॥ १५ ॥

त्वं रक्षसे प्रदिशश्चतस्रस्त्वं शोचिषा नभसी वि भासि ।
त्वमिमा विश्वा भुवनानु तिष्ठस ऋतस्य
पन्थामन्वेषि विद्वांस्तवेद्विष्णो बहुधा वीर्याणि ।
त्वं नः पृणीहि पशुभिर्विश्वरूपैः सुधायां मा धेहि परमे व्योमिन् ॥ १६ ॥
पञ्चभिः पराङ् तपस्येकयार्वाङशस्तिमेषि सुदिने
बाधमानस्तवेद्विष्णो बहुधा वीर्याणि ।
त्वं नः पृणीहि पशुभिर्विश्वरूपैः सुधायां मा धेहि परमे व्योमिन् ॥ १७ ॥
त्वमिन्द्रस्त्वं महेन्द्रस्त्वं लोकस्त्वं प्रजापतिः ।
तुभ्यं यज्ञो वि तायते तुभ्यं जुह्वति जुह्वतस्तवेद्विष्णो बहुधा वीर्याणि ।
त्वं नः पृणीहि पशुभिर्विश्वरूपैः सुधायां मा धेहि परमे व्योमिन् ॥ १८ ॥
असति सत्प्रतिष्ठितं सति भूतं प्रतिष्ठितम् ।
भूतं ह भव्य आहितं भव्यं भूते प्रतिष्ठितं तवेद्विष्णो बहुधा वीर्याणि ।
त्वं नः पृणीहि पशुभिर्विश्वरूपैः सुधायां मा धेहि परमे व्योमिन् ॥ १९ ॥
शुक्रोऽसि भ्राजोऽसि ।
स यथा त्वं भ्राजता भ्राजोऽस्येवाहं भ्राजता भ्राज्यासम् ॥ २० ॥
रुचिरसि रोचोऽसि । स यथा त्वं रुच्या रोचोऽ-
स्येवाहं पशुभिश्च ब्राह्मणवर्चसेन च रुचिषीय ॥ २१ ॥
उद्यते नमः उदायते नमः उदिताय नमः ।
विराजे नमः स्वराजे नमः सम्राजे नमः ॥ २२ ॥
अस्तंयते नमोऽस्तमेष्यते नमोऽस्तमिताय नमः ।
विराजे नमः स्वराजे नमः सम्राजे नमः ॥ २३ ॥
उदगादयमादित्यो विश्वेन तपसा सह ।
सपत्नान्मह्यं रन्धयन्मा चाहं द्विषते रधं तवेद्विष्णो बहुधा वीर्याणि ।
त्वं नः पृणीहि पशुभिर्विश्वरूपैः सुधायां मा धेहि परमे व्योमिन् ॥ २४ ॥
आदित्य नावमारुक्षः शतारित्रां स्वस्तये ।
अहर्मात्यपीपरो रात्रिं सत्रातिं पारय ॥ २५ ॥
सूर्य नावमारुक्षः शतारित्रां स्वस्तये ।
रात्रिं मात्यपीपरोऽहः सत्रातिं पारय ॥ २६ ॥
प्रजापतेरावृतो ब्रह्मणा वर्मणाहं कश्यपस्य ज्योतिषा वर्चसा च ।
जरदष्टिः कृत्वीर्यो विहायाः सहस्रायुः सुकृतश्चरेयम् ॥ २७ ॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

परीवृतो ब्रह्मणा वर्मणाहं कश्यपस्य ज्योतिषा वर्चसा च।
मा मा प्रापन्निषवो दैव्या या मा मानुषीरवसृष्टा वधाय॥ २८॥
ऋतेन गुप्त ऋतुभिश्च सर्वैर्भूतेन गुप्तो भव्येन चाहम्।
मा मा प्रापत्पाप्मा मोत मृत्युरन्तर्दधेऽहं संलिलेन वाचः॥ २९॥
अग्निर्मा गोपा परि पातु विश्वत उद्यन्त्सूर्यो नुदतां मृत्युपाशान्।
व्युच्छन्तीरुषसः पर्वता ध्रुवाः सहस्रं प्राणा मय्या यतन्ताम्॥ ३०॥

इति द्वात्रिंशः प्रपाठकः॥
॥ इति सप्तदशं काण्डम्॥

अथाष्टादशं काण्डम्॥

अथ त्रयस्त्रिंशः प्रपाठकः॥

अथ प्रथमोऽनुवाकः [१] प्रथमं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा॥ देवता—यमः; मन्त्रोक्ताः; ४० रुद्रः; ४१-४२ सरस्वती; ४४-४६, ५१, ५२ पितरः॥ छन्दः—१-७, ९-१३, १६, १७, २४-३६, ३९-४८, ५१-५५, ५८, ६० त्रिष्टुप्; ८, १५ आर्षीपङ्क्तिः; १४, ४९, ५० भुरिक्त्रिष्टुप्; १८-२३ जगती; ३७, ३८ परोष्णिक्; ५६, ५७, ६१ अनुष्टुप्; ५९ पुरोबृहती॥

ओ चित्सखायं सख्या ववृत्यां तिरः पुरू चिदर्णवं जगन्वान्।
पितुर्नपातमा दधीत वेधा अधि क्षमि प्रतरं दीध्यानः॥ १॥
न ते सखा सख्यं वष्ट्येतत्सलक्ष्मा यद्विषुरूपा भवाति।
महस्पुत्रासो असुरस्य वीरा दिवो धर्तार उर्विया परि ख्यन्॥ २॥
उशन्ति घा ते अमृतास एतदेकस्य चित्त्यजसं मर्त्यस्य।
नि ते मनो मनसि धाय्यस्मे जन्युः पतिस्तन्वमा विविश्याः॥ ३॥
न यत्पुरा चकृमा कद्ध नूनमृतं वदन्तो अनृतं रपेम।
गन्धर्वो अप्स्वप्या च योषा सा नो नाभिः परमं जामि तन्नौ॥ ४॥
गर्भे नु नौ जनिता दंपती कर्देवस्त्वष्टा सविता विश्वरूपः।
नकिरस्य प्र मिनन्ति व्रतानि वेद नावस्य पृथिवी उत द्यौः॥ ५॥
को अद्य युङ्क्ते धुरि गा ऋतस्य शिमीवतो भामिनो दुर्हणायून्।
आसन्निषून्हृत्सु मयोभून्य एषां भृत्यामृणधत्स जीवात्॥ ६॥
को अस्य वेद प्रथमस्याह्नः क ईं ददर्श क इह प्र वोचत्।
बृहन्मित्रस्य वरुणस्य धाम कदु ब्रव आहनो वीच्या नॄन्॥ ७॥
यमस्य मा यम्यं काम आगन्त्समाने योनौ सहशेय्याय।
जायेव पत्ये तन्वं रिरिच्यां वि चिद्वृहेव रथ्येव चक्रा॥ ८॥
न तिष्ठन्ति न नि मिषन्त्येते देवानां स्पश इह ये चरन्ति।
अन्येन मदाहनो याहि तूयं तेन वि वृह रथ्येव चक्रा॥ ९॥
रात्रीभिरस्मा अहभिर्दशस्येत्सूर्यस्य चक्षुर्मुहुरुन्मिमीयात्।
दिवा पृथिव्या मिथुना सबन्धू यमीर्यमस्य विवृहादजामि॥ १०॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

आ घा॒ ता ग॑च्छा॒नुत्त॑रा यु॒गानि॒ यत्र॑ जा॒मयः॑ कृ॒णव॒न्नजा॑मि।
उप॑ बर्बृहि वृष॒भाय॑ बा॒हुम॒न्यमि॑च्छस्व सुभगे॒ पतिं॒ मत्॥ ११॥
किं भ्राता॑स॒द्यद॑ना॒थं भवा॑ति॒ किमु॒ स्वसा॒ यन्निर्ऋ॑तिर्नि॒गच्छा॑त्।
काम॑मूता ब॒ह्वे॒३॒॑तद्र॑पामि त॒न्वा॑मि त॒न्वं॑१॒॑ सं पि॑पृग्धि॥ १२॥
न ते॑ ना॒थं य॒म्यत्रा॒हम॑स्मि॒ न ते॑ त॒नूं त॒न्वा॒३॒॑ सं प॑पृच्याम्।
अ॒न्येन॒ मत्प्र॒मुदः॑ कल्पयस्व॒ न ते॒ भ्राता॑ सुभगे वष्ट्ये॒तत्॥ १३॥
न वा उ॑ ते त॒नूं त॒न्वा॒३॒॑ सं प॑पृच्यां पा॒पमा॑हु॒र्यः स्वसा॑रं नि॒गच्छा॑त्।
असं॑यदे॒तन्मन॑सो हृ॒दो मे॒ भ्राता॒ स्वसुः॒ शय॑ने॒ यच्छ॑यीय॥ १४॥
ब॒तो ब॑तासि यम॒ नैव ते॒ मनो॒ हृद॑यं चाविदाम।
अ॒न्या किल॒ त्वां क॒क्ष्ये॑व यु॒क्तं परि॑ ष्वजातै॒ लिबु॑जेव वृ॒क्षम्॥ १५॥
अ॒न्यमू॒ षु य॑म्य॒न्य उ॒ त्वां परि॑ ष्वजातै॒ लिबु॑जेव वृ॒क्षम्।
तस्य॑ वा॒ त्वं मन॑ इ॒च्छा स वा॒ तवाधा॑ कृणुष्व सं॒विदं॒ सुभ॑द्राम्॥ १६॥
त्रीणि॒ च्छन्दां॑सि क॒वयो॒ वि ये॑तिरे पुरु॒रूपं॑ दर्श॒तं वि॒श्वच॑क्षणम्।
आपो॒ वाता॒ ओष॑धय॒स्तान्येक॑स्मि॒न्भुव॑न॒ आर्पि॑तानि ॥ १७॥
वृषा॒ वृष्णे॑ दुदुहे॒ दोह॑सा दि॒वः पयां॑सि य॒ह्वो अदि॑ते॒रदा॑भ्यः ।
विश्वं॒ स वे॑द॒ वरु॑णो॒ यथा॑ धि॒या स य॒ज्ञियो॑ यजति य॒ज्ञियाँ॑ ऋ॒तून्॥ १८॥
रप॑द्गन्ध॒र्वीरप्या॑ च॒ योष॑णा न॒दस्य॑ ना॒दे परि॑ पातु नो॒ मनः॑ ।
इ॒ष्टस्य॒ मध्ये॒ अदि॑ति॒र्नि धा॑तु नो॒ भ्राता॑ नो ज्ये॒ष्ठः प्र॑थ॒मो वि वो॑चति॥ १९॥
सो चि॒न्नु भ॒द्रा क्षु॒मती॒ यश॑स्वत्यु॒षा उ॑वास॒ मन॑वे॒ स्व॑र्विती।
यदी॑मु॒शन्त॑मुश॒तामनु॒ क्रतु॑म॒ग्निं होता॑रं वि॒दथा॑य॒ जीज॑नन्॥ २०॥
अध॒ त्यं द्र॒प्सं वि॒भ्वं॑ विचक्ष॒णं विराभ॑रदिषि॒रः श्ये॒नो अ॑ध्व॒रे।
यदी॒ विशो॑ वृ॒णते॑ द॒स्ममार्या॑ अ॒ग्निं होता॑र॒मध॒ धीर॑जायत॥ २१॥
सदा॑सि र॒ण्वो यव॑सेव॒ पुष्य॑ते॒ होत्रा॑भिरग्ने॒ मनु॑षः स्वध्व॒रः।
विप्र॑स्य वा॒ यच्छ॑शमा॒न उ॒क्थ्यो॒३॒॑ वाजं॑ सस॒वाँ उ॑प॒यासि॒ भूरि॑भिः॥ २२॥
उदी॑रय पि॒तरा॑ जा॒र आ भग॒मिय॑क्षति हर्य॒तो हृ॒त्त इ॑ष्यति।
विव॑क्ति॒ वह्निः॑ स्वप॒स्यते॑ म॒खस्त॑वि॒ष्यते॒ असु॑रो॒ वेप॑ते म॒ती॥ २३॥
यस्ते॑ अग्ने सुम॒तिं मर्तो॒ अख्य॒त्सह॑सः सूनो॒ अति॒ स प्र शृ॑ण्वे।
इषं॒ दधा॑नो॒ वह॑मानो॒ अश्वै॒रा स द्यु॒माँ अम॑वान्भूषति॒ द्यून्॥ २४॥
श्रु॒धी नो॑ अग्ने॒ सद॑ने स॒धस्थे॑ यु॒क्ष्वा रथ॑म॒मृत॑स्य द्रवि॒त्नुम्।
आ नो॑ वह॒ रोद॑सी दे॒वपु॑त्रे॒ माकि॑र्दे॒वाना॒मप॑ भूरि॒ह स्याः॑॥ २५॥

यद॑ग्न ए॒षा समि॑ति॒र्भवा॑ति दे॒वी दे॒वेषु॑ यज॒ता य॑जत्र।
रत्ना॑ च॒ यद्वि॒भजा॑सि स्वधावो भा॒गं नो॒ अत्र॒ वसु॑मन्तं वीतात्॥ २६॥
अ॒न्व॒ग्निरु॒षसा॒मग्र॑मख्य॒दन्वहा॑नि प्रथ॒मो जा॒तवे॑दाः ।
अनु॒ सूर्यं॑ उ॒षसो॒ अनु॑ र॒श्मीननु॒ द्यावा॑पृथि॒वी आ वि॑वेश॥ २७॥
प्रत्य॒ग्निरु॒षसा॒मग्र॑मख्य॒त्प्रत्यहा॑नि प्रथ॒मो जा॒तवे॑दाः ।
प्रति॒ सूर्य॑स्य पुरु॒धा च॑ र॒श्मीन्प्रति॒ द्यावा॑पृथि॒वी आ त॑तान॥ २८॥
द्यावा॑ ह॒ क्षामा॑ प्रथ॒मे ऋ॒तेना॑भिश्रा॒वे भ॑वतः सत्य॒वाचा॑।
दे॒वो यन्मर्ता॑न्य॒जथा॑य कृ॒ण्वन्त्सीद॒द्धोता॑ प्र॒त्यङ् स्वमसुं॒ यन्॥ २९॥
दे॒वो दे॒वान्प॑रि॒भूर्ऋ॒तेन॒ वहा॑ नो ह॒व्यं प्र॑थ॒मश्चि॑कि॒त्वान् ।
धू॒मके॑तुः स॒मिधा॒ भाऋ॑जीको म॒न्द्रो होता॒ नित्यो॑ वा॒चा यजी॑यान्॥ ३०॥
अर्चा॑मि वां॒ वर्धा॒यापो॑ घृतस्नू॒ द्यावा॑भूमि शृणु॒तं रो॑दसी मे।
अहा॒ यद्दे॒वा असु॑नीति॒माय॒न्मध्वा॑ नो॒ अत्र॑ पि॒तरा॑ शिशीताम्॥ ३१॥
स्वावृ॑ग्दे॒वस्या॒मृतं॒ यदी॒ गोरतो॑ जा॒तासो॑ धारयन्त उ॒र्वी।
विश्वे॑ दे॒वा अनु॒ तत्ते॒ यजु॑र्गुर्दु॒हे यदेनी॑ दि॒व्यं घृ॒तं वाः॥ ३२॥
किं स्वि॑न्नो॒ राजा॑ जगृहे॒ कद॒स्याति॑ व्र॒तं च॑कृमा॒ को वि वे॑द।
मि॒त्रश्चि॒द्धि ष्मा॑ जुहुरा॒णो दे॒वाञ्छ्लोको॒ न या॒तामपि॒ वाजो॒ अस्ति॑॥ ३३॥
दु॒र्मन्त्वत्रा॒मृत॑स्य॒ नाम॒ सल॑क्ष्मा॒ यद्विषु॑रूपा॒ भवा॑ति ।
य॒मस्य॒ यो म॒नव॑ते सु॒मन्त्वग्ने॒ तमृ॑ष्व पा॒ह्यप्र॑युच्छन् ॥ ३४॥
यस्मि॑न्दे॒वा वि॒दथे॑ मा॒दय॑न्ते वि॒वस्व॑तः॒ सद॑ने धा॒रय॑न्ते ।
सूर्ये॒ ज्योति॒रद॑धुर्मा॒स्य१॒॑क्तून्परि॑ द्योत॒निं च॑रतो॒ अज॑स्रा ॥ ३५॥
यस्मि॑न्दे॒वा मन्म॑नि सं॒चर॑न्त्यपी॒च्ये॒३॒॑ न व॒यम॑स्य विद्म ।
मि॒त्रो नो॒ अत्रादि॑ति॒रना॑गान्त्सवि॒ता दे॒वो वरु॑णाय वोचत्॥ ३६॥
सखा॑य॒ आ शि॑षामहे॒ ब्रह्मेन्द्रा॑य व॒ज्रिणे॑ ।
स्तु॒ष ऊ॒ षु नृत॑माय धृ॒ष्णवे॑ ॥ ३७॥
शव॑सा॒ ह्यसि॑ श्रु॒तो वृ॑त्र॒हत्ये॑न वृत्र॒हा ।
म॒घैर्म॒घोनो॒ अति॑ शूर दाशसि ॥ ३८॥
स्ते॒गो न क्षामत्ये॑षि पृथि॒वीं म॒ही नो॒ वाता॑ इ॒ह वा॑न्तु॒ भूमौ॑।
मि॒त्रो नो॒ अत्र॒ वरु॑णो यु॒ज्यमा॑नो अ॒ग्निर्वने॒ न व्यसृ॑ष्ट॒ शोक॑म्॥ ३९॥
स्तु॒हि श्रु॒तं ग॑र्त॒सदं॒ जना॑नां॒ राजा॑नं भी॒ममु॑पह॒त्नुमु॒ग्रम्।
मृ॒डा ज॑रित्रे रु॑द्र॒ स्तवा॑नो अ॒न्यम॒स्मत्ते॒ नि व॑पन्तु॒ सेन्य॑म्॥ ४०॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सरस्वतीं देवयन्तो हवन्ते सरस्वतीमध्वरे तायमाने ।
सरस्वतीं सुकृतो हवन्ते सरस्वती दाशुषे वार्यं दात् ॥४१॥
सरस्वतीं पितरो हवन्ते दक्षिणा यज्ञमभिनक्षमाणाः ।
आसद्यास्मिन्बर्हिषि मादयध्वमनमीवा इष आ धेह्यस्मे ॥४२॥
सरस्वति या सरथं ययाथोक्थैः स्वधाभिर्देवि पितृभिर्मदन्ती ।
सहस्रार्घमिडो अत्र भागं रायस्पोषं यजमानाय धेहि ॥४३॥
उदीरतामवर उत्परास उन्मध्यमाः पितरः सोम्यासः ।
असुं य ईयुरवृका ऋतज्ञास्ते नोऽवन्तु पितरो हवेषु ॥४४॥
आहं पितून्त्सुविदत्राँ अवित्सि नपातं च विक्रमणं च विष्णोः ।
बर्हिषदो ये स्वधया सुतस्य भजन्त पित्वस्त इहागमिष्ठाः ॥४५॥
इदं पितृभ्यो नमो अस्त्वद्य ये पूर्वासो ये अपरास ईयुः ।
ये पार्थिवे रजस्या निषत्ता ये वा नूनं सुवृजनासु दिक्षु ॥४६॥
मातलीकव्यैर्यमो अङ्गिरोभिर्बृहस्पतिर्ऋक्वभिर्वावृधानः ।
यांश्च देवा वावृधुर्ये च देवांस्ते नोऽवन्तु पितरो हवेषु ॥४७॥
स्वादुष्किलायं मधुमाँ उतायं तीव्रः किलायं रसवाँ उतायम् ।
उतो न्वस्य पपिवांसमिन्द्रं न कश्चन सहत आहवेषु ॥४८॥
परेयिवांसं प्रवतो महीरिति बहुभ्यः पन्थामनुपस्पशानम् ।
वैवस्वतं संगमनं जनानां यमं राजानं हविषा सपर्यत ॥४९॥
यमो नो गातुं प्रथमो विवेद नैषा गव्यूतिरपभर्तवा उ ।
यत्रा नः पूर्वे पितरः परेता एना जज्ञानाः पथ्याऽनु स्वाः ॥५०॥
बर्हिषदः पितर ऊत्यर्वागिमा वो हव्या चकृमा जुषध्वम् ।
त आ गतावसा शंतमेनाथा नः शं योररपो दधात ॥५१॥
आच्या जानु दक्षिणतो निषद्येदं नो हविरभि गृणन्तु विश्वे ।
मा हिंसिष्ट पितरः केन चिन्नो यद्व आगः पुरुषता करास ॥५२॥
त्वष्टा दुहित्रे वहतुं कृणोति तेनेदं विश्वं भुवनं समेति ।
यमस्य माता पर्युह्यमाना महो जाया विवस्वतो ननाश ॥५३॥
प्रेहि प्रेहि पथिभिः पूर्याणैर्येना ते पूर्वे पितरः परेताः ।
उभा राजानौ स्वधया मदन्तौ यमं पश्यासि वरुणं च देवम् ॥५४॥
अपेत वीत वि च सर्पतातोऽस्मा एतं पितरो लोकमक्रन् ।
अहोभिरद्भिरक्तुभिर्व्यक्तं यमो ददात्यवसानमस्मै ॥५५॥

उशन्तस्त्वेधीमह्युशन्तः समिधीमहि ।
उशन्नुशत आ वह पितॄन्हविषे अत्तवे ॥५६॥
द्युमन्तस्त्वेधीमहि द्युमन्तः समिधीमहि ।
द्युमान्द्युमत आ वह पितॄन्हविषे अत्तवे ॥५७॥
अङ्गिरसो नः पितरो नवग्वा अथर्वाणो भृगवः सोम्यासः ।
तेषां वयं सुमतौ यज्ञियानामपि भद्रे सौमनसे स्याम ॥५८॥
अङ्गिरोभिर्यज्ञियैरा गहीह यम वैरूपैरिह मादयस्व ।
विवस्वन्तं हुवे यः पिता तेऽस्मिन्बर्हिष्या निषद्य ॥५९॥
इमं यम प्रस्तरमा हि रोहाङ्गिरोभिः पितृभिः संविदानः ।
आ त्वा मन्त्राः कविशस्ता वहन्त्वेना राजन्हविषा मादयस्व ॥६०॥
इत एत उदारुहन्दिवस्पृष्ठान्यारुहन् ।
प्र भूर्जयो यथा पथा द्यामङ्गिरसो ययुः ॥६१॥

अथ द्वितीयोनुवाकः [२] द्वितीयं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा ॥ देवता—यमः; मन्त्रोक्ताः; ४, ३४ अग्निः; ५ जातवेदाः २९ पितरः ॥ छन्दः—१-३, ६, १४-१८, २०, २२, २३, २५, ३०, ३४, ३६, ४६, ४८, ५०, ५१, ५२, ५६ अनुष्टुप्; ४, ७, ९, १३ जगती; ५, २६, ४९, ५७ भुरिक्त्रिष्टुप्; ८, १०-१२, २१, २७-२९, ३१-३३, ३५, ४७, ५३-५५, ५८-६० त्रिष्टुप्; १९ त्रिपदागायत्री; २४ त्रिपदासमविषमाऽऽर्षीगायत्री; ३७ विराड्जगती; ३८, ३९, ४१ आर्षीगायत्री; ४०, ४२-४४ भुरिगार्षीगायत्री; ४५ ककुम्मत्यनुष्टुप् ॥

यमाय सोमः पवते यमाय क्रियते हविः ।
यमं ह यज्ञो गच्छत्यग्निदूतो अरंकृतः ॥१॥
यमाय मधुमत्तमं जुहोता प्र च तिष्ठत ।
इदं नम ऋषिभ्यः पूर्वजेभ्यः पूर्वेभ्यः पथिकृद्भ्यः ॥२॥
यमाय घृतवत्पयो राज्ञे हविर्जुहोतन ।
स नो जीवेष्वा यमेद्दीर्घमायुः प्र जीवसे ॥३॥
मैनमग्ने वि दहो माभि शूशुचो मास्य त्वचं चिक्षिपो मा शरीरम् ।
शृतं यदा करसि जातवेदोऽथेमेनं प्र हिणुतात्पितृभ्यः ॥४॥
यदा शृतं कृणवो जातवेदोऽथेममेनं परि दत्तात्पितृभ्यः ।
यदा गच्छात्यसुनीतिमेतामथा देवानां वशनीर्भवाति ॥५॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

त्रिक॑द्रुकेभिः पवते॒ षड॒र्वीरे॒कमि॑द् बृ॒हत् ।
त्रि॒ष्टुब्गा॑य॒त्री छन्दां॑सि॒ सर्वा॒ ता य॒म आर्पि॑ता ॥ ६ ॥
सूर्यं॑ चक्षु॒षा गच्छ॒ वात॑मा॒त्मना॒ दिवं॑ च॒ गच्छ॑ पृथि॒वीं च॒ धर्मं॑भिः ।
अ॒पो वा॑ गच्छ॒ यदि॒ तत्र॑ ते हि॒तमोष॑धीषु॒ प्रति॑ तिष्ठा॒ शरी॑रैः ॥ ७ ॥
अ॒जो भा॒गस्तप॑स॒स्तं त॑पस्व॒ तं ते॑ शो॒चिस्त॑पतु॒ तं ते॑ अ॒र्चिः ।
यास्ते॑ शि॒वास्त॒न्वो॑ जातवेदस्ताभि॑र्वहैनं सु॒कृता॑मु लो॒कम् ॥ ८ ॥
यास्ते॑ शो॒चयो॒ रंह॑यो जातवेदो॒ याभि॒रापृ॑णासि॒ दिव॑मन्तरि॒क्षम् ।
अ॒जं यन्त॒मनु॒ ताः सम्पृ॑ण्वतामथेत॒राभिः॒ शिव॑तमाभि॒ शृतं॑ कृधि ॥ ९ ॥
अव॑ सृज॒ पुन॑रग्ने॒ पि॒तृभ्यो॒ यस्त॒ आहु॑त॒श्चर॑ति स्व॒धावा॑न् ।
आयु॑र्वसा॒न उप॑ यातु॒ शेषः॒ सं ग॑च्छतां त॒न्वा॑ सु॒वर्चीः ॥ १० ॥
अति॑ द्रव॒ श्वानौ॑ सारमे॒यौ च॑तुर॒क्षौ श॒बलौ॑ सा॒धुना॑ प॒था ।
अथा॑ पि॒तॄन्त्सु॑वि॒दत्रा॑ँ अपीहि य॒मेन॒ ये स॑ध॒मादं॒ मद॑न्ति ॥ ११ ॥
यौ ते॒ श्वानौ॑ यम रक्षि॒तारौ॑ चतुर॒क्षौ प॑थि॒रक्षी॑ नृचक्षसा ।
ताभ्यां॑ राजन्परि॑ धेह्येनं स्व॒स्त्यस्मा॒ अन॑मीवं च॒ धेहि ॥ १२ ॥
उ॒रू॒णसावसुतृपावुदुम्बलौ य॒मस्य॑ दूतौ॒ चर॑तो॒ जना॑ँ अनु॑ ।
ताव॒स्मभ्यं॑ दृ॒शये॒ सूर्या॑य॒ पुन॑र्दाता॒मस॑मृ॒द्येह भ॒द्रम् ॥ १३ ॥
सोम॒ एके॑भ्यः पवते घृ॒तमेक॒ उपा॑सते ।
येभ्यो॒ मधु॑ प्र॒धाव॑ति॒ ताँश्चि॑दे॒वापि॑ गच्छतात् ॥ १४ ॥
ये चि॒त्पूर्व॑ ऋ॒तसा॑ता ऋ॒तजा॑ता ऋ॒ता॒वृधः॑ ।
ऋषी॑न्तपस्वतो॒ यम तपो॒जाँ अपि॑ गच्छतात् ॥ १५ ॥
तप॑सा॒ ये अ॑ना॒धृष्यास्तप॑सा॒ ये स्व॑र्य॒युः॑ ।
तपो॒ ये च॑क्रि॒रे मह॒स्ताँश्चि॑दे॒वापि॑ गच्छतात् ॥ १६ ॥
ये यु॒ध्यन्ते॒ प्रध॑नेषु॒ शूरा॑सो॒ ये त॑नू॒त्यज॑ः ।
ये वा॑ स॒हस्र॑दक्षिणा॒स्ताँश्चि॑दे॒वापि॑ गच्छतात् ॥ १७ ॥
स॒हस्र॑णीथाः॒ क॒वयो॒ ये गो॑पा॒यन्ति॒ सूर्यं॑म् ।
ऋषी॑न्तपस्वतो॒ यम तपो॒जाँ अपि॑ गच्छतात् ॥ १८ ॥
स्यो॒नास्मै॑ भव पृथिव्यनृक्ष॒रा नि॒वेश॑नी ।
यच्छा॑स्मै॒ शर्म॑ स॒प्रथाः॑ ॥ १९ ॥
अ॒स॑म्बाधे पृथि॒व्या उ॒रौ लो॒के नि धी॑यस्व ।
स्व॒धा या॑श्वकृषे जीव॒न्तास्ते॑ सन्तु मधु॒श्चुतः॑ ॥ २० ॥
ह्वया॑मि ते॒ मन॑सा॒ मन॑ इ॒हेमान्गृ॒हाँ उप॑ जुजुषा॒ण एहि॑ ।
सं ग॑च्छस्व पि॒तृभि॒ः सं य॒मेन॑ स्यो॒नास्त्वा॒ वाता॒ उप॑ वन्तु॒ शं भुवा॑ ॥ २१ ॥
उत्त्वा॑ वहन्तु म॒रुत॑ उदवा॒हा उ॑द॒प्रुतः॑ ।
अ॒जेन॑ कृण्वन्तः॑ शी॒तं व॒र्षेणो॑क्षन्तु बालि॒तिं ॥ २२ ॥
उद॑ह्व॒मायु॒रायु॑षे क्र॒त्वे दक्षा॑य जी॒वसे॑ ।
स्वान्॑च्छतु॒ ते॒ मनो॒ अथा॑ पि॒तॄँरु॑प॒ द्रव॑ ॥ २३ ॥
मा ते॒ मनो॒ मासो॒र्मा॒ङ्गा॒नां॑ मा॒ रस॑स्य ते ।
मा ते॑ हास्त त॒न्वा॑॑ः किं च॒नेह ॥ २४ ॥
मा त्वा॑ वृ॒क्षः सं बा॑धिष्ट॒ मा दे॒वी पृ॑थि॒वी म॒ही ।
लो॒कं पि॒तृषु॑ वित्त्वैध॒स्व य॒मरा॑जसु ॥ २५ ॥
यत्ते॒ अङ्ग॒मति॑हितं परा॒चैर॑पा॒नः प्रा॒णो य उ॑ वा ते॒ पर॑तः ।
तत्ते॑ सं॒गत्य॑ पि॒तर॒ः सनी॑डा घा॒साद् घा॒सं पुन॒रा वे॑शयन्तु ॥ २६ ॥
अपे॒मं जी॒वा अ॑रुधन्गृहे॒भ्यस्तं नि॑र्वृ॒हत॒ परि॒ ग्रामा॑दितः ।
मृ॒त्यु॒र्यम॒स्यासी॒दूतः॒ प्रचे॑ता॒ असू॑न्पि॒तृभ्यो॑ गम॒यां च॑कार ॥ २७ ॥
ये दस्य॑वः पि॒तृषु॒ प्रवि॑ष्टा ज्ञा॒तिमु॑खा अ॒हु॒ता॒द॒श्च॒रन्ति॑ ।
परा॑पुरो॒ नि॒पुरो॒ ये भर॑न्त्य॒ग्निष्टा॒नस्मात्र॑ धमाति य॒ज्ञात् ॥ २८ ॥
सं वि॑शन्ति॒वह पि॒तर॒ः स्वा नः॑ स्यो॒नान् कृ॑ण्वन्तः॑ प्रति॒रन्त॒ आयुः॑ ।
तेभ्यः॑ शकेम हु॒विषा॒ नक्ष॑माणा॒ ज्योग्जी॑वन्तः॒ शर॑दः॒ पुरू॑चीः ॥ २९ ॥
यां ते॑ धे॒नुं नि॑पृ॒णामि॑ यमु॒ ते क्षीर॑ ओ॒दन॑म् ।
तेना॒ जन॑स्यासो॒ भर्ता॑ यो॑ऽत्रा॒स॒दजी॑वनः ॥ ३० ॥
अश्वा॑वतीं॒ प्र त॑र॒ या सु॒शे॒वा॒र्क्षाकं॑ वा प्रत॒रं न॒वीय॑ः ।
यस्त्वा॑ ज॒घान॒ वध्य॒ः सो अ॑स्तु मा॒ सो अ॒न्यद्वि॑दत भाग॒धेय॑म् ॥ ३१ ॥
य॒मः प॑रो॒ऽव॑रो॒ विव॑स्वा॒न्ततः॒ परं॒ नाति॑ पश्यामि॒ किं च॒न ।
य॒मे अ॑ध्व॒रो अधि॑ मे॒ नि॑विष्टो॒ भुवो॑ वि॒वस्वा॑न॒न्वात॑तान ॥ ३२ ॥
अपा॑गूहन्नृ॒मृतां॑ मर्त्ये॒भ्यः कृ॒त्वा सव॑र्णा॒मद॑धुर्वि॒वस्व॑ते ।
उ॒ताश्वि॑नावभर॒द्यत्तदासी॒दज॑हादु द्वा मिथु॒ना स॑र॒ण्यूः ॥ ३३ ॥
ये नि॑खा॒ता॒ ये पर॑ो॒ता॒ ये दु॒ग्धा ये चो॒द्धि॑ताः ।
सर्वां॒स्तान॒ग्न॒ आ व॑ह पि॒तॄन्ह॒विषे॒ अत्त॑वे ॥ ३४ ॥
ये अ॑ग्नि॒द॒ग्धा ये अ॑न॒ग्नि॒द॒ग्धा॒ मध्ये॑ दि॒वः स्व॒धया॑ मा॒द॒य॒न्ते ।
त्वं तान्वे॑त्थ॒ यदि॒ ते जा॑तवेदः स्व॒धया॑ य॒ज्ञं स्व॑धितिं जुषन्ताम् ॥ ३५ ॥
शं त॑प॒ माति॑ तपो॒ अग्ने॒ मा त॒न्व॑॑ं तपः ।
तनू॒षु॒ शम्भो॑ अ॒स्त॒ ते॒ पृथि॒व्यामस्तु॒ यद्धरः॑ ॥ ३६ ॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ददाम्यस्मा अवसानमेतद्य एष आगन्मम चेदभूदिह ।
यमश्विकित्वान्प्रत्येतदाह ममैष राय उप तिष्ठतामिह ॥ ३७ ॥
इमां मात्रां मिमीमहे यथापरं न मासातै । शते शरत्सु नो पुरा ॥ ३८ ॥
प्रेमां मात्रां मिमीमहे यथापरं न मासातै । शते शरत्सु नो पुरा ॥ ३९ ॥
अपेमां मात्रां मिमीमहे यथापरं न मासातै । शते शरत्सु नो पुरा ॥ ४० ॥
वीमां मात्रां मिमीमहे यथापरं न मासातै । शते शरत्सु नो पुरा ॥ ४१ ॥
निरिमां मात्रां मिमीमहे यथापरं न मासातै । शते शरत्सु नो पुरा ॥ ४२ ॥
उदिमां मात्रां मिमीमहे यथापरं न मासातै । शते शरत्सु नो पुरा ॥ ४३ ॥
समिमां मात्रां मिमीमहे यथापरं न मासातै । शते शरत्सु नो पुरा ॥ ४४ ॥
अमासि मात्रां स्वरिगामायुष्मान्भूयासम् ।
यथापरं न मासातै शते शरत्सु नो पुरा ॥ ४५ ॥
प्राणो अपानो व्यान आयुश्चक्षुर्दृशये सूर्याय ।
अपरिपरेण पथा यमराज्ञः पितॄन्गच्छ ॥ ४६ ॥
ये अग्रवः शशमानाः परेयुर्हित्वा द्वेषांस्यनपत्यवन्तः ।
ते द्यामुदित्यावित्दन्त लोकं नाकस्य पृष्ठे अधि दीध्यानाः ॥ ४७ ॥
उदन्वती द्यौरवमा पीलुमतीति मध्यमा ।
तृतीया ह प्रद्यौरिति यस्यां पितर आसते ॥ ४८ ॥
ये नः पितु पितरो ये पितामहा य आविविशुरुर्वन्तरिक्षम् ।
य आक्षियन्ति पृथिवीमुत द्यां तेभ्यः पितृभ्यो नमसा विधेम ॥ ४९ ॥
इदमिद्वा उ नापरं दिवि पश्यसि सूर्यम् ।
माता पुत्रं यथा सिचाभ्येनिं भूम ऊर्णुहि ॥ ५० ॥
इदमिद्वा उ नापरं जरस्यन्यदितोऽपरम् ।
जाया पतिमिव वाससाभ्येनिं भूम ऊर्णुहि ॥ ५१ ॥
अभि त्वोर्णोमि पृथिव्या मातुर्वस्त्रेण भद्रया ।
जीवेषु भद्रं तन्मयि स्वधा पितृषु सा त्वयि ॥ ५२ ॥
अग्नीषोमा पथिकृता स्योनं देवेभ्यो रत्नं दधथुर्वि लोकम् ।
उप प्रेष्यन्तं पूषणं यो वहात्यञ्जोयानैः पथिभिस्तत्र गच्छतम् ॥ ५३ ॥
पूषा त्वेतश्च्यावयतु प्र विद्वाननष्टपशुर्भुवनस्य गोपाः ।
स त्वैतेभ्यः परि ददत्पितृभ्योऽग्निर्देवेभ्यः सुविदत्रियेभ्यः ॥ ५४ ॥
आयुर्विश्वायुः परि पातु त्वा पूषा त्वा पातु प्रपथे पुरस्तात् ।
यत्रासते सुकृतो यत्र त ईयुस्तत्र त्वा देवः सविता दधातु ॥ ५५ ॥
इमौ युनज्मि ते वह्नी असुनीताय वोढवे ।
ताभ्यां यमस्य सादनं समितीश्चाव गच्छतात् ॥ ५६ ॥
एतत्त्वा वासः प्रथमं न्वागन्नपैतदूहु यदिहाबिभः पुरा ।
इष्टापूर्तमनुसंक्रामं विद्वान्यत्र ते दत्तं बहुधा विबन्धुषु ॥ ५७ ॥
अग्नेर्वर्म परि गोभिर्व्ययस्व सं प्रोर्णुष्व मेदसा पीवसा च ।
नेत्त्वा धृष्णुर्हरसा जर्हृषाणो दधृग्विधक्षन्परीळयातै ॥ ५८ ॥
दण्डं हस्तादाददानो गतासोः सह श्रोत्रेण वर्चसा बलेन ।
अत्रैव त्वमिह वयं सुवीरा विश्वा मृधो अभिमातीर्जयेम ॥ ५९ ॥
धनुर्हस्तादाददानो मृतस्य सह क्षत्रेण वर्चसा बलेन ।
समागृभाय वसु भूरि पुष्टमर्वाङ् त्वमेह्युप जीवलोकम् ॥ ६० ॥

॥ इति त्रयस्त्रिंशः प्रपाठकः ॥

अथ चतुस्त्रिंशः प्रपाठकः

अथ तृतीयोऽनुवाकः [३] तृतीयं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा ॥ देवता—यमः, मन्त्रोक्ताः; ५, ६ अग्निः; ५० भूमिः; ५४ इन्दुः; ५६ आपः ॥ छन्दः—१-३, ७, ९, १०, १२-१७, १९-२२, २४, ३८, ४०-४३, ४५, ४८, ५१, ५३, ५५, ५७, ५९, ६१-६३, ६५, ६६, ७३ त्रिष्टुप्; ४, ८, ११, २३ सतःपङ्क्तिः; ५ त्रिपदानिचृद्गायत्री; ६, ६८, ७०, ७२ अनुष्टुप्; १८ भुरिग्जगती; २५-२८, ४४, ४६ जगती; २९ विराड्जगती; ३० पञ्चपदाति-जगती; ३१ विराट्शक्वरी; ३२-३५, ४७, ४९, ५२ भुरिक्त्रिष्टुप्; ३६ आसुर्य-नुष्टुप् (एकावसाना); ३७ आसुरीगायत्री (एकावसाना); ३९ परात्रिष्टुप्पङ्क्तिः; ५० प्रस्तारपङ्क्तिः; ५४ पुरोऽनुष्टुब्बिष्टुप्; ५६ आर्ष्यनुष्टुप्; ५८ विराट्-त्रिष्टुप्; ६० षट्पदाजगती; ६४ भुरिक्पथ्यापङ्क्तिः; ६७ पथ्याबृहती; ६९, ७१ उपरिष्टाद्बृहती ॥

इयं नारी पतिलोकं वृणाना नि पद्यत उप त्वा मर्त्य प्रेतम् ।
धर्मं पुराणमनुपालयन्ती तस्यै प्रजां द्रविणं चेह धेहि ॥ १ ॥
उदीर्ष्व नार्यभि जीवलोकं गतासुमेतमुप शेष एहि ।
हस्तग्राभस्य दधिषोस्तवेदं पत्युर्जनित्वमभि सं बभूथ ॥ २ ॥
अपश्यं युवतिं नीयमानां जीवां मृतेभ्यः परिणीयमानाम् ।
अन्धेन यत्तमसा प्रावृतासीत्प्राक्तो अपाचीमनयं तदेनाम् ॥ ३ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्रजानत्यघ्न्ये जीवलोकं देवानां पन्थामनुसंचरन्ती ।
अयं ते गोपतिस्तं जुषस्व स्वर्गं लोकमधि रोहयैनम् ॥ ४ ॥
उप द्यामुप वेतसमवत्तरो नदीनाम्। अग्ने पित्तमपामसि ॥ ५ ॥
यं त्वमग्ने समदहस्तमु निर्वापया पुनः ।
क्याम्बूरत्र रोहतु शाण्डदूर्वा व्यल्किशा ॥ ६ ॥
इदं त एकं पर ऊ त एकं तृतीयेन ज्योतिषा सं विशस्व।
संवेशने तन्वा३ चारुरेधि प्रियो देवानां परमे सधस्थे ॥ ७ ॥
उत्तिष्ठ प्रेहि प्र द्रवौकः कृणुष्व सलिलें सधस्थे।
तत्र त्वं पितृभिः संविदानः सं सोमेन मदस्व सं स्वधाभिः ॥ ८ ॥
प्र च्यवस्व तन्वं१ सं भरस्व मा ते गात्रा वि हायि मो शरीरम्।
मनो निविष्टमनुसंविशस्व यत्र भूमेर्जुषसे तत्र गच्छ ॥ ९ ॥
वर्चसा मां पितरः सोम्यासो अञ्जन्तु देवा मधुना घृतेन।
चक्षुषे मा प्रतरं तारयन्तो जरसे मा जरदष्टिं वर्धन्तु ॥ १० ॥
वर्चसा मां समनक्त्वग्निर्मेधां मे विष्णुर्न्यनिक्त्वासन् ।
रयिं मे विश्वे नि यच्छन्तु देवाः स्योना मापः पर्वतैः पुनन्तु ॥ ११ ॥
मित्रावरुणा परि मामधातामादित्या मा स्वरवो वर्धयन्तु।
वर्चो म इन्द्रो न्यनक्तु हस्तयोर्जरदष्टिं मा सविता कृणोतु ॥ १२ ॥
यो ममार प्रथमो मर्त्यानां यः प्रेयाय प्रथमो लोकमेतम्।
वैवस्वतं संगमनं जनानां यमं राजानं हविषा सपर्यत ॥ १३ ॥
परा यात पितर आ च यातायं वो यज्ञो मधुना समक्तः।
दत्तो अस्मभ्यं द्रविणेह भद्रं रयिं च नः सर्ववीरं दधात ॥ १४ ॥
कण्वः कक्षीवान्पुरुमीढो अगस्त्यः श्यावाश्वः सोभर्यश्चनानाः।
विश्वामित्रोऽयं जमदग्निरत्रिर्वन्तु नः कश्यपो वामदेवः ॥ १५ ॥
विश्वामित्र जमदग्ने वसिष्ठ भरद्वाज गोतम वामदेव।
शर्दिनो अत्रिरग्नभीन्नमोभिः सुसंशासः पितरो मृडता नः ॥ १६ ॥
कस्ये मृजाना अति यन्ति रिप्रमायुर्दधानाः प्रतरं नवीयः।
आप्यायमानाः प्रजया धनेनाधः स्याम सुरभयो गृहेषु ॥ १७ ॥
अञ्जते व्यञ्जिते समञ्जते क्रतुं रिहन्ति मधुनाभ्यञ्जिते।
सिन्धोरुच्छ्वासे पतयन्तमुक्षणं हिरण्यपावाः पशुमासु गृह्णते ॥ १८ ॥
यद्वो मुद्रं पितरः सोम्यं च तेनो सचध्वं स्वर्यशसो हि भूत।
ते अर्वाणः कवय आ शृणोत सुविदत्रा विदथे हूयमानाः ॥ १९ ॥

ये अत्रयो अङ्गिरसो नवग्वा इष्टावन्तो रातिषाचो दधानाः।
दक्षिणावन्तः सुकृतो य उ स्थासद्यास्मिन्बर्हिषि मादयध्वम् ॥ २० ॥
अधा यथा नः पितरः परासः प्रत्नासो अग्न ऋतमाशशाणाः।
शुचीदयन्दीध्यत उक्थशासः क्षामा भिन्दन्तो अरुणीरप व्रन् ॥ २१ ॥
सुकर्मीणः सुरुचो देवयन्तो अयो न देवा जनिमा धमन्तः।
शुचन्तो अग्निं वावृधन्त इन्द्रमुर्वीं गव्यां परिषदं नो अक्रन् ॥ २२ ॥
आ यूथेव क्षुमति पश्वो अख्यद्देवानां जनिमान्त्युग्रः।
मर्तासश्चिदुर्वशीरकृप्रन्वृधे चिदर्य उपरस्यायोः ॥ २३ ॥
अकर्म ते स्वपसो अभूम ऋतमवस्रन्नुषसो विभातीः।
विश्वं तद्भद्रं यदवन्ति देवा बृहद्वदेम विदथे सुवीराः ॥ २४ ॥
इन्द्रो मा मरुत्वान्प्राच्या दिशः पातु बाहुच्युता पृथिवी द्यामिवोपरि।
लोककृतः पथिकृतो यजामहे ये देवानां हुतभागा इह स्थ ॥ २५ ॥
धाता मा निर्ऋत्या दक्षिणाया दिशः पातु बाहुच्युता पृथिवी द्यामिवोपरि।
लोककृतः पथिकृतो यजामहे ये देवानां हुतभागा इह स्थ ॥ २६ ॥
अदितिर्मादित्यैः प्रतीच्या दिशः पातु बाहुच्युता पृथिवी द्यामिवोपरि।
लोककृतः पथिकृतो यजामहे ये देवानां हुतभागा इह स्थ ॥ २७ ॥
सोमो मा विश्वैर्देवैरुदीच्या दिशः पातु बाहुच्युता पृथिवी द्यामिवोपरि।
लोककृतः पथिकृतो यजामहे ये देवानां हुतभागा इह स्थ ॥ २८ ॥
धर्ता हं त्वा धरुणो धारयाता ऊर्ध्वं भानुं सविता द्यामिवोपरि ।
लोककृतः पथिकृतो यजामहे ये देवानां हुतभागा इह स्थ ॥ २९ ॥
प्राच्यां त्वा दिशि पुरा संवृतः स्वधायामा दधामि बाहुच्युता पृथिवी द्यामिवोपरि। लोककृतः पथिकृतो यजामहे ये देवानां हुतभागा इह स्थ ॥ ३० ॥
दक्षिणायां त्वा दिशि पुरा संवृतः स्वधायामा दधामि बाहुच्युता पृथिवी द्यामिवोपरि। लोककृतः पथिकृतो यजामहे ये देवानां हुतभागा इह स्थ ॥ ३१ ॥
प्रतीच्यां त्वा दिशि पुरा संवृतः स्वधायामा दधामि बाहुच्युता पृथिवी द्यामिवोपरि। लोककृतः पथिकृतो यजामहे ये देवानां हुतभागा इह स्थ ॥ ३२ ॥
उदीच्यां त्वा दिशि पुरा संवृतः स्वधायामा दधामि बाहुच्युता पृथिवी द्यामिवोपरि। लोककृतः पथिकृतो यजामहे ये देवानां हुतभागा इह स्थ ॥ ३३ ॥
ध्रुवायां त्वा दिशि पुरा संवृतः स्वधायामा दधामि बाहुच्युता पृथिवी द्यामिवोपरि। लोककृतः पथिकृतो यजामहे ये देवानां हुतभागा इह स्थ ॥ ३४ ॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ऊर्ध्वायां त्वा दिशि पुरा संवृतः स्वधायामा दधामि बाहुच्युता पृथिवी द्यामिवोपरि। लोककृतः पथिकृतो यजामहे ये देवानां हुतभागा इह स्थ ॥ ३५ ॥

धर्तासि धरुणोऽसि वंसगोऽसि ॥ ३६ ॥

उदपूरसि मधुपूरसि वातपूरसि ॥ ३७ ॥

इतश्च मामुतश्चावतां यमेइव यतमाने यदैतम् ।
प्र वां भरन्मानुषा देवयन्त आ सीदतां स्वमु लोकं विदाने ॥ ३८ ॥
स्वासस्थे भवतमिन्दवे नो युजे वां ब्रह्म पूर्व्यं नमोभिः।
वि श्लोक एति पथ्येव सूरिः शृण्वन्तु विश्वे अमृतास एतत् ॥ ३९ ॥
त्रीणि पदानि रुपो अन्वरोहच्चतुष्पदीमन्वैतद् व्रतेन ।
अक्षरेण प्रति मिमीते अर्कमृतस्य नाभावभि सं पुनाति ॥ ४० ॥
देवेभ्यः कमवृणीत मृत्युं प्रजायै किममृतं नावृणीत ।
बृहस्पतिर्यज्ञमतनुत ऋषिः प्रियां यमस्तन्वा मा रिरेच ॥ ४१ ॥
त्वमग्न ईडितो जातवेदोऽवाड्ढव्यानि सुरभीणि कृत्वा ।
प्रादाः पितृभ्यः स्वधया ते अक्षन्नद्धि त्वं देव प्रयता हवींषि ॥ ४२ ॥
आसीनासो अरुणीनामुपस्थे रयिं धत्त दाशुषे मर्त्याय ।
पुत्रेभ्यः पितरस्तस्य वस्वः प्र यच्छत त इहोर्जं दधात ॥ ४३ ॥
अग्निष्वात्ताः पितर एह गच्छत सदःसदः सदत सुप्रणीतयः।
अत्तो हवींषि प्रयतानि बर्हिषि रयिं च नः सर्ववीरं दधात ॥ ४४ ॥
उपहूता नः पितरः सोम्यासो बर्हिष्येषु निधिषु प्रियेषु।
त आ गमन्तु त इह श्रुवन्त्वधि ब्रुवन्तु तेऽवन्त्वस्मान् ॥ ४५ ॥
ये नः पितुः पितरो ये पितामहा अनूजहिरे सोमपीथं वसिष्ठाः।
तेभिर्यमः संरराणो हवींष्युशन्नुशद्भिः प्रतिकाममत्तु ॥ ४६ ॥
ये तातृषुर्देवत्रा जेहमाना होत्राविदः स्तोमतष्टासो अर्कैः।
आग्ने याहि सहस्रं देववन्दैः सत्यैः कविभिर्ऋषिभिर्घर्मसद्भिः ॥ ४७ ॥
ये सत्यासो हविरदो हविष्पा इन्द्रेण देवैः सरथं तुरेण।
आग्ने याहि सुविदत्रेभिरर्वाङ्स्पार्हैः पूर्वैर्ऋषिभिर्घर्मसद्भिः ॥ ४८ ॥
उप सर्प मातरं भूमिमेतामुरुव्यचसं पृथिवी सुशेवाम्।
ऊर्णम्रदाः पृथिवी दक्षिणावत एषा त्वा पातु प्रपथे पुरस्तात् ॥ ४९ ॥
उच्छ्रञ्चस्व पृथिवि मा नि बाधथाः सूपायनास्मै भव सूपसर्पणा।
माता पुत्रं यथा सिचाभ्येनं भूम ऊर्णुहि ॥ ५० ॥

उच्छ्रञ्चमाना पृथिवी सु तिष्ठतु सहस्रं मित उप हि श्रयन्ताम्।
ते गृहासो घृतश्चुतः स्योना विश्वाहास्मै शरणाः सन्त्वत्र ॥ ५१ ॥
उत्ते स्तभ्नामि पृथिवीं त्वत्परीमं लोगं निदधन्मो अहं रिषम्।
एतां स्थूणां पितरो धारयन्ति ते तत्र यमः सादना ते कृणोतु ॥ ५२ ॥
इमममृग्ने चमसं मा वि जिह्वरः प्रियो देवानामुत सोम्यानाम्।
अयं यश्चमसो देवपानस्तस्मिन्देवा अमृता मादयन्ताम् ॥ ५३ ॥
अथर्वा पूर्णं चमसं यमिन्द्रायाबिभर्वाजिनीवते ।
तस्मिन्कृणोति सुकृतस्य भक्षं तस्मिन्निन्दुः पवते विश्वदानीम् ॥ ५४ ॥
यत्ते कृष्णः शकुन आतुतोद पिपीलः सर्प उत वा श्वापदः।
अग्निष्टद्विश्वादगदं कृणोतु सोमश्च यो ब्राह्मणाँ आविवेश ॥ ५५ ॥
पयस्वतीरोषधयः पयस्वन्मामकं पयः ।
अपां पयसो यत्पयस्तेन मा सह शुम्भतु ॥ ५६ ॥
इमा नारीरविधवाः सुपत्नीराञ्जनेन सर्पिषा सं स्पृशन्ताम्।
अनश्रवो अनमीवाः सुरत्ना आ रोहन्तु जनयो योनिमग्रे ॥ ५७ ॥
सं गच्छस्व पितृभिः सं यमेनेष्टापूर्तेन परमे व्योमन् ।
हित्वावद्यं पुनरस्तमेहि सं गच्छतां तन्वा सुवर्चाः ॥ ५८ ॥
ये नः पितुः पितरो ये पितामहा य आविविशुरुर्वन्तरिक्षम्।
तेभ्यः स्वराडसुनीतिर्नो अद्य यथावशं तन्वः कल्पयाति ॥ ५९ ॥
शं ते नीहारो भवतु शं ते प्रुष्वाव शीयताम् ।
शीतिके शीतिकावति ह्लादिके ह्लादिकावति ।
मण्डूक्यप्सु शं भुव इमं स्वग्निं शमय ॥ ६० ॥
विवस्वान्नो अभयं कृणोतु यः सुत्रामा जीरदानुः सुदानुः।
इहेमे वीरा बहवो भवन्तु गोमदश्ववन्मय्यस्तु पुष्टम् ॥ ६१ ॥
विवस्वान्नो अमृतत्वे दधातु परैतु मृत्युरमृतं न ऐतु ।
इमान्रक्षतु पुरुषानजरिम्णो मो ष्वेषामसवो यमं गुः ॥ ६२ ॥
यो दधे अन्तरिक्षे न मह्ना पितॄणां कविः प्रमतिर्मतीनाम्।
तमर्चत विश्वमित्रा हविर्भिः स नो यमः प्रतरं जीवसे धात् ॥ ६३ ॥
आ रोहत दिवमुत्तमामृषयो मा बिभीतन ।
सोमपाः सोमपायिन इदं वः क्रियते हावेरगन्म ज्योतिरुत्तमम् ॥ ६४ ॥
प्र केतुना बृहता भात्यग्निरा रोदसी वृषभो रोरवीति ।
दिवश्चिदन्ता उपमामुदानडपामुपस्थे महिषो ववर्ध ॥ ६५ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नाके सुपर्णमुप यत्पतन्तं हृदा वेनन्तो अभ्यचक्षत त्वा।
हिरण्यपक्षं वरुणस्य दूतं यमस्य योनौ शकुनं भुरण्युम्॥६६॥
इन्द्र क्रतुं न आ भर पिता पुत्रेभ्यो यथा ।
शिक्षा णो अस्मिन्पुरुहूत यामनि जीवा ज्योतिरशीमहि ॥६७॥
अपूपापिहितान्कुम्भान्यांस्ते देवा अधारयन् ।
ते ते सन्तु स्वधावन्तो मधुमन्तो घृतश्चुतः ॥६८॥
यास्ते धाना अनुकिरामि तिलमिश्राः स्वधावतीः ।
तास्ते सन्तु विभ्वीः प्रभ्वीस्तास्ते यमो राजानु मन्यताम्॥६९॥
पुनर्देहि वनस्पते य एष निहितस्त्वयि ।
यथा यमस्य सादन आसाते विदथा वदन् ॥७०॥
आ रभस्व जातवेदस्तेजस्वद्भरो अस्तु ते ।
शरीरमस्य सं दहाथैनं धेहि सुकृतामु लोके ॥७१॥
ये ते पूर्वे परागता अपरे पितरश्च ये ।
तेभ्यो घृतस्य कुल्यैतु शतधारा व्युन्दती ॥७२॥
एतदा रोह वयं उन्मृजानः स्वा इह बृहदु दीदयन्ते ।
अभि प्रेहि मध्यतो मापं हास्थाः पितृणां लोकं प्रथमो यो अत्र॥७३॥

अथ चतुर्थोऽनुवाकः [४] चतुर्थं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा॥ देवता—१-८० यमः, मन्त्रोक्ताः; ८१-८७ पितरः; ८८ अग्निः; ८९ चन्द्रमाः॥ छन्दः—१, ४, ७, १४, ३६, ६० भुरिक्त्रिष्टुप्; २; ५, ११, २९, ५०, ५१, ५८ जगतीः; ३ पञ्चपदाभुरिगतिजगती; ६, १३ पञ्चपदाशक्वरी; ८ पञ्चपदाऽतिशक्वरी; ९ पञ्चपदाभुरिक्शक्वरी; १०, १५, २८, ३०, ३४, ३५, ३७, ४०, ४४-४८; ५२, ५४, ६४, ६५, ६९, ७० त्रिष्टुप्; १२ महाबृहती; १६-२४ त्रिपदाभुरिङ्महाबृहती; २५, ३१, ३२, ३८, ४१, ४२, ५५, ५७, ५९, ६१ अनुष्टुप्; २६, ३३, ४३ उपरिष्टाद्बृहती; २७ याजुषीगायत्री; ३९ पुरोविराडास्तारपङ्क्तिः; ४९ अनुष्टुब्गर्भात्रिष्टुप्; ५३ पुरोविराड्सतःपङ्क्तिः; ५६ ककुम्मत्यनुष्टुप्; ६२ भुरिगास्तारपङ्क्तिः; ६३ स्वराडास्तारपङ्क्तिः; ६६ त्रिपदास्वराड्गायत्री; ६७ द्विपदाऽऽर्च्यनुष्टुप्; ६८, ७१ आसुर्यनुष्टुप्; ७२-७४, ७९ आसुरीपङ्क्तिः; ७५ आसुरीगायत्री; ७६ आसुर्युष्णिक्; ७७ दैवीजगती; ७८ आसुरीत्रिष्टुप्; ८० आसुरीजगती; ८१ प्राजापत्याऽनुष्टुप्; ८२ साम्नीबृहती; ८३, ८४ साम्नीत्रिष्टुप्; ८५ आसुरीबृहती; ८६ चतुष्पदाककुम्मत्युष्णिक्; ८७ चतुष्पदाशङ्कुमत्युष्णिक्; ८८ पथ्यापङ्क्तिः; ८९ पञ्चपदापथ्यापङ्क्तिः॥

आ रोहत जनित्रीं जातवेदसः पितृयाणैः सं व आ रोहयामि ।
अवाड्व्येषितो हव्यवाह ईजानं युक्ताः सुकृतां धत्त लोके ॥१॥
देवा यज्ञमृतवः कल्पयन्ति हविः पुरोडाशं स्रुचो यज्ञायुधानि ।
तेभिर्याहि पथिभिर्देवयानैर्यैरीजानाः स्वर्गं यन्ति लोकम् ॥२॥
ऋतस्य पन्थामनु पश्य साध्वङ्गिरसः सुकृतो येन यन्ति। तेभिर्याहि पथिभिः स्वर्गं यत्रादित्या मधु भक्षयन्ति तृतीये नाके अधि वि श्रयस्व॥३॥
त्रयः सुपर्णा उपरस्य मायू नाकस्य पृष्ठे अधि विष्टपि श्रिताः ।
स्वर्गा लोका अमृतेन विष्ठा इषमूर्जं यजमानाय दुह्राम् ॥४॥
जुहूर्दीधार द्यामुपभृदन्तरिक्षं ध्रुवा दाधार पृथिवीं प्रतिष्ठाम् ।
प्रतीमां लोका घृतपृष्ठाः स्वर्गाः कामंकामं यजमानाय दुह्राम् ॥५॥
ध्रुव आ रोह पृथिवीं विश्वभोजसमन्तरिक्षमुपभृदा क्रमस्व। जुहु द्यां गच्छ यजमानेन साकं स्रुवेण वत्सेन दिशः प्रपीनाः सवीं धुक्ष्वाहूणीयमानः॥६॥
तीर्थैस्तरन्ति प्रवतो महीरिति यज्ञकृतः सुकृतो येन यन्ति ।
अत्रादधुर्यजमानाय लोकं दिशो भूतानि यदकल्पयन्त ॥७॥
अङ्गिरसामयनं पूर्वो अग्निरादित्यानामयनं गार्हपत्यो दक्षिणानामयनं दक्षिणाग्निः। महिमानमग्नेर्विहितस्य ब्रह्मणा समङ्गः सर्व उप याहि शग्मः॥८॥
पूर्वो अग्निष्ट्वा तपतु शं पुरस्ताच्छं पश्चात्तपतु गार्हपत्यः।
दक्षिणाग्निष्टे तपतु शर्म वर्मोत्तरतो मध्यतो
अन्तरिक्षाद्दिशोदिशो अग्ने परि पाहि घोरात् ॥९॥
यूयमग्ने शंतमाभिस्तनूभिरीजानमभि लोकं स्वर्गम् ।
अश्वा भूत्वा पृष्टिवाहो वहाथ यत्र देवैः संधमादं मदन्ति॥१०॥
शमग्ने पश्चात्तपु शं पुरस्ताच्छमुत्तराच्छमधरात्तपैनम्।
एकस्त्रेधा विहितो जातवेदः सम्यगेनं धेहि सुकृतामु लोके॥११॥
शमग्नयः समिद्धा आ रभन्तां प्राजापत्यं मेध्यं जातवेदसः।
शृतं कृण्वन्त इह मावं चिक्षिपन् ॥१२॥
यज्ञ एति विततः कल्पमान ईजानमभि लोकं स्वर्गम्।
तमग्नयः सवीहुतं जुषन्तां प्राजापत्यं मेध्यं जातवेदसः।
शृतं कृण्वन्त इह मावं चिक्षिपन् ॥१३॥
ईजानश्चितमारुक्षदुग्निं नाकस्य पृष्ठाद्दिवमुत्पतिष्यन् ।
तस्मै प्र भाति [illegible] ज्योतिषीमान्त्स्वर्गः पन्थाः सुकृते देवयानः॥१४॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अग्निर्होताध्वर्युष्टे बृहस्पतिरिन्द्रो ब्रह्मा दक्षिणतस्ते अस्तु।
हुतोऽयं संस्थितो यज्ञ एति यत्र पूर्वमर्यनं हुतानाम्॥ १५॥
अपूपवान्क्षीरवांश्चरुरेह सीदतु।
लोककृतः पथिकृतो यजामहे ये देवानां हुतभागा इह स्थ॥ १६॥
अपूपवान्दधिवांश्चरुरेह सीदतु।
लोककृतः पथिकृतो यजामहे ये देवानां हुतभागा इह स्थ॥ १७॥
अपूपवान्द्रप्सवांश्चरुरेह सीदतु।
लोककृतः पथिकृतो यजामहे ये देवानां हुतभागा इह स्थ॥ १८॥
अपूपवान्घृतवांश्चरुरेह सीदतु।
लोककृतः पथिकृतो यजामहे ये देवानां हुतभागा इह स्थ॥ १९॥
अपूपवान्मांसवांश्चरुरेह सीदतु।
लोककृतः पथिकृतो यजामहे ये देवानां हुतभागा इह स्थ॥ २०
अपूपवानन्नवांश्चरुरेह सीदतु।
लोककृतः पथिकृतो यजामहे ये देवानां हुतभागा इह स्थ॥ २१॥
अपूपवान्मधुमांश्चरुरेह सीदतु।
लोककृतः पथिकृतो यजामहे ये देवानां हुतभागा इह स्थ॥ २२॥
अपूपवान्रसवांश्चरुरेह सीदतु।
लोककृतः पथिकृतो यजामहे ये देवानां हुतभागा इह स्थ॥ २३॥
अपूपवानपवांश्चरुरेह सीदतु।
लोककृतः पथिकृतो यजामहे ये देवानां हुतभागा इह स्थ॥ २४॥
अपूपापिहितान्कुम्भान्यांस्ते देवा अधारयन्।
ते ते सन्तु स्वधावन्तो मधुमन्तो घृतश्चुतः ॥ २५॥
यास्ते धाना अनुकिरामि तिलमिश्राः स्वधावतीः ।
तास्ते सन्तूदभ्वीः प्रभ्वीस्तास्ते यमो राजानु मन्यताम्॥ २६॥
अक्षितिं भूयसीम्॥ २७॥

द्रप्सश्चस्कन्द पृथिवीमनु द्यामिमं च योनिमनु यश्च पूर्वः।
समानं योनिमनु संचरन्तं द्रप्सं जुहोम्यनु सप्त होत्राः॥ २८॥
शतधारं वायुमर्कं स्वर्विदं नृचक्षसस्ते अभि चक्षते रयिम्।
ये पृणन्ति प्र च यच्छन्ति सर्वदा ते दुहते दक्षिणां सप्तमातरम्॥ २९॥
कोशं दुहन्ति कलशं चतुर्बिलमिडां धेनुं मधुमतीं स्वस्तये।
ऊर्जं मदन्तीमदितिं जनेष्वग्ने मा हिंसीः परमे व्योमन्॥ ३०॥

एतत्ते देवः सविता वासो ददाति भर्तवे।
तत्त्वं यमस्य राज्ये वसानस्ताप्यँ चर ॥ ३१॥
धाना धेनुरभवद्वत्सो अस्यास्तिलोऽभवत् ।
तां वै यमस्य राज्ये अक्षितामुप जीवति ॥ ३२॥
एतास्ते असौ धेनवः कामदुघा भवन्तु ।
एनीः श्येनीः सरूपा विरूपास्तिलवत्सा उप तिष्ठन्तु त्वात्र॥ ३३॥
एनीर्धाना हरिणीः श्येनीरस्य कृष्णा धाना रोहिणीर्धेनवस्ते।
तिलवत्सा ऊर्जमस्मै दुहाना विश्वाहा सन्त्वनपस्फुरन्तीः॥ ३४॥
वैश्वानरे हविरिदं जुहोमि साहस्रं शतधारमुत्सम् ।
स बिभर्ति पितरं पितामहान्प्रपितामहान्बिभर्ति पिन्वमानः॥ ३५॥
सहस्रधारं शतधारमुत्समक्षितं व्यच्यमानं सलिलस्य पृष्ठे।
ऊर्जं दुहानमनपस्फुरन्तमुपासते पितरः स्वधाभिः ॥ ३६॥
इदं कसाम्बु चयनेन चितं तत्सजाता अव पश्यतेतं।
मर्त्योऽयममृतत्वमेति तस्मै गृहान्कृणुत यावत्सबन्धु ॥ ३७॥
इहैवैधि धनसनिरिहचित्त इहक्रतुः ।
इहैधि वीर्यँ वत्तरो वयोधा अपराहतः ॥ ३८॥
पुत्रं पौत्रमभितर्पयन्तीरापो मधुमतीरिमाः ।
स्वधां पितृभ्यो अमृतं दुहाना आपो देवीरुभयांस्तर्पयन्तु॥ ३९॥
आपो अग्निं प्र हिणुत पितॄँरुपेमं यज्ञं पितरो मे जुषन्ताम्।
आसीनामूर्जमुप ये सचन्ते ते नो रयिं सर्ववीरं नि यच्छान्॥ ४०॥
समिन्धते अमर्त्यं हव्यवाहं घृतप्रियम् ।
स वेद निहितान्निधीन्पितॄन्परावतो गतान् ॥ ४१॥
यं ते मन्थं यमोदनं यन्मांसं निपृणामि ते ।
ते ते सन्तु स्वधावन्तो मधुमन्तो घृतश्चुतः ॥ ४२॥
यास्ते धाना अनुकिरामि तिलमिश्राः स्वधावतीः ।
तास्ते सन्तूदभ्वीः प्रभ्वीस्तास्ते यमो राजानु मन्यताम् ॥ ४३॥
इदं पूर्वमपरं नियानं येना ते पूर्वे पितरः परेताः ।
पुरोगवा ये अभिशाचो अस्य ते त्वा वहन्ति सुकृतामु लोकम्॥ ४४॥
सरस्वतीं देवयन्तो हवन्ते सरस्वतीमध्वरे तायमाने ।
सरस्वती सुकृतो हवन्ते सरस्वती दाशुषे वार्यं दात् ॥ ४५॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सरस्वतीं पितरो हवन्ते दक्षिणा यज्ञमभिनक्षमाणाः ।
आसद्यास्मिन्बर्हिषि मादयध्वमनमीवा इष आ धेह्यस्मे ॥४६॥
सरस्वति या सरथं ययाथोक्थैः स्वधाभिर्देवि पितृभिर्मदन्ती ।
सहस्रार्घमिडो अत्र भागं रायस्पोषं यजमानाय धेहि ॥४७॥
पृथिवीं त्वा पृथिव्यामा वेशयामि देवो नो धाता प्र तिरात्यायुः ।
परापरैता वसुविद्वो अस्त्वधा मृताः पितृषु सं भवन्तु ॥४८॥
आ प्र च्यवेथामप तन्मृजेथां यद्वामभिभा अत्रोचुः ।
अस्मादेतमध्न्यौ तद्वशीयो दातुः पितृष्विहभोजनौ मम ॥४९॥
एयमगन्दक्षिणा भद्रतो नो अनेन दत्ता सुदुघा वयोधाः ।
यौवने जीवानुपपृञ्चती जरा पितृभ्य उपसंपराणयादिमान् ॥५०॥
इदं पितृभ्यः प्र भरामि बर्हिर्जीवं देवेभ्य उत्तरं स्तृणामि ।
तदा रोह पुरुष मेध्यो भवन्प्रति त्वा जानन्तु पितरः परेतम् ॥५१॥
एदं बर्हिरसदो मेध्योऽभूः प्रति त्वा जानन्तु पितरः परेतम् ।
यथापरु तन्वं१ सं भरस्व गात्राणि ते ब्रह्मणा कल्पयामि ॥५२॥
पूर्णो राजापिधानं चरूणामूर्जो बलं सह ओजो न आगन् ।
आयुर्जीवेभ्यो विदधद्दीर्घायुत्वाय शतशारदाय ॥५३॥
ऊर्जो भागो य इमं जजानाश्मान्नानामाधिपत्यं जगाम ।
तमर्चत विश्वमित्रा हविर्भिः स नो यमः प्रतरं जीवसे धात् ॥५४॥
यथा यमाय हर्म्यमवपन्पञ्च मानवाः ।
एवा वपामि हर्म्यं यथा मे भूरयोऽसत ॥५५॥
इदं हिरण्यं बिभृहि यत्ते पिताबिभः पुरा ।
स्वर्गं यतः पितुर्हस्तं निमृङ्ढि दक्षिणम् ॥५६॥
ये च जीवा ये च मृता ये जाता ये च यज्ञियाः ।
तेभ्यो घृतस्य कुल्यैतु मधुधारा व्युन्दती ॥५७॥
वृषा मतीनां पवते विचक्षणः सूरो अह्नां प्रतरीतोषसां दिवः ।
प्राणः सिन्धूनां कलशाँ अचिक्रददिन्द्रस्य हार्दिमाविशन्मनीषया ॥५८॥
त्वेषस्ते धूम ऊर्णोतु दिवि षंच्छुक्र आततः ।
सूरो न हि द्युता त्वं कृपा पावक रोचसे ॥५९॥
प्र वा एतीन्दुरिन्द्रस्य निष्कृतिं सखा सख्युर्न प्र मिनाति संगिरः ।
मर्य इव योषाः समर्षसे सोमः कलशे शतयामना पथा ॥६०॥
अक्षन्नमीमदन्त ह्यव प्रियाँ अधूषत ।
अस्तोषत स्वभानवो विप्रा यविष्ठा ईमहे ॥६१॥
आ यात पितरः सोम्यासो गम्भीरैः पथिभिः पितृयाणैः ।
आयुरस्मभ्यं दधतः प्रजां च रायश्च पोषैरभि नः सचध्वम् ॥६२॥
परा यात पितरः सोम्यासो गम्भीरैः पथिभिः पूर्याणैः ।
अधा मासि पुनरा यात नो गृहान्हविरत्तुं सुप्रजसः सुवीराः ॥६३॥
यद्वो अग्निरजहादेकमङ्गं पितृलोकं गमयं जातवेदाः ।
तद्व एतत्पुनरा प्यायया मि साङ्गाः स्वर्गे पितरो मादयध्वम् ॥६४॥
अभूद्दूतः प्रहितो जातवेदाः सायं न्यह्नः उपवन्द्यो नृभिः ।
प्रादाः पितृभ्यः स्वधया ते अक्षन्नद्धि त्वं देव प्रयता हवींषि ॥६५॥
असौ हा इह ते मनः ककुत्सलमिव जामयः । अभ्येनिं भूम ऊर्णुहि ॥६६॥
शुम्भन्तां लोकाः पितृषदनाः पितृषदने त्वा लोक आ सादयामि ॥६७॥
ये३ऽस्माकं पितरस्तेषां बर्हिरसि ॥६८॥
उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं वि मध्यमं श्रथाय ।
अधा वयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम ॥६९॥
प्रास्मत्पाशान्वरुण मुञ्च सर्वान्यैः समामे बध्यते यैर्व्यामे ।
अधा जीवेम शरदं शतानि त्वया राजन्गुपिता रक्षमाणाः ॥७०॥
अग्नये कव्यवाहनाय स्वधा नमः ॥७१॥
सोमाय पितृमते स्वधा नमः ॥७२॥
पितृभ्यः सोमवद्भ्यः स्वधा नमः ॥७३॥
यमाय पितृमते स्वधा नमः ॥७४॥
एतत्ते प्रतातामह स्वधा ये च त्वामनु ॥७५॥
एतत्ते ततामह स्वधा ये च त्वामनु ॥७६॥
एतत्ते तत स्वधा ॥७७॥
स्वधा पितृभ्यः पृथिविषद्भ्यः ॥७८॥
स्वधा पितृभ्यो अन्तरिक्षसद्भ्यः ॥७९॥
स्वधा पितृभ्यो दिविषद्भ्यः ॥८०॥
नमो वः पितर ऊर्जे नमो वः पितरो रसाय ॥८१॥
नमो वः पितरो भामाय नमो वः पितरो मन्यवे ॥८२॥
नमो वः पितरो यद् घोरं तस्मै नमो वः पितरो यत्क्रूरं तस्मै ॥८३॥
नमो वः पितरो यच्छिवं तस्मै नमो वः पितरो यत्स्योनं तस्मै ॥८४॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नमो वः पितरः स्वधा वः पितरः ॥ ८५ ॥
येऽत्र पितरः पितरो येऽत्र यूयं स्थ युष्माँस्तेऽनु यूयं तेषां श्रेष्ठा भूयास्थ ॥ ८६ ॥
य इह पितरो जीवा इह वयं स्मः । अस्माँस्तेऽनु वयं तेषां श्रेष्ठा भूयास्म ॥ ८७ ॥
आ त्वाग्न इधीमहि द्युमन्तं देवाजरम् ।
यद् घ सा ते पनीयसी समिद्दीदयति द्यवि । इषं स्तोतृभ्य आ भर ॥ ८८ ॥
चन्द्रमा अप्स्वन्तरा सुपर्णो धावते दिवि ।
न वो हिरण्यनेमयः पदं विन्दन्ति विद्युतो वित्तं मे अस्य रोदसी ॥ ८९ ॥

इति चतुस्त्रिंशः प्रपाठकः ॥
॥ इत्यष्टादशं काण्डम् ॥

अथैकोनविंशं काण्डम् ॥

अथ पञ्चत्रिंशः प्रपाठकः ॥

अथ प्रथमोऽनुवाकः [१] प्रथमं सूक्तम्

ऋषिः—ब्रह्मा ॥ देवता—यज्ञः ॥ छन्दः—१, २ पथ्यावृहती; ३ पङ्क्तिः ॥
सं सं स्रवन्तु नद्यः सं वाताः सं पतत्रिणः ।
यज्ञमिमं वर्धयता गिरः संस्राव्येण हविषा जुहोमि ॥ १ ॥
इमं होमा यज्ञमवतेमं संस्रावणा उत ।
यज्ञमिमं वर्धयता गिरः संस्राव्येण हविषा जुहोमि ॥ २ ॥
रूपंरूपं वयोवयः सुरभ्यैनं परि ष्वजे ।
यज्ञमिमं चतस्रः प्रदिशो वर्धयन्तु संस्राव्येण हविषा जुहोमि ॥ ३ ॥

[२] द्वितीयं सूक्तम्

ऋषिः—सिन्धुद्वीपः ॥ देवता—आपः ॥ छन्दः—अनुष्टुप् ॥
शं त आपो हैमवती शमु ते सन्तूत्स्याः ।
शं ते सनिष्यदा आपः शमु ते सन्तु वर्ष्याः ॥ १ ॥
शं त आपो धन्वन्याः शं ते सन्त्वनूप्याः ।
शं ते खनित्रिमा आपः शं याः कुम्भेभिराभृताः ॥ २ ॥
अनभ्रयः खनमाना विप्रा गम्भीरे अपसः ।
भिषग्भ्यो भिषक्तरा आपो अच्छा वदामसि ॥ ३ ॥
अपामहं दिव्यानामपां स्रोतस्यानाम् ।
अपामहं प्रणेजनेऽश्वा भवथ वाजिनः ॥ ४ ॥
ता अपः शिवा अपोऽयक्ष्मंकरणीरपः ।
यथैव तृप्यते मयस्तास्त आ दत्त भेषजीः ॥ ५ ॥

[३] तृतीयं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वाङ्गिराः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१, ३, ४ त्रिष्टुप्; २ भुरिक्त्रिष्टुप् ॥
दिवस्पृथिव्याः पर्यन्तरिक्षाद्वनस्पतिभ्यो अध्योषधीभ्यः ।
सम्भृतं विश्वभृतो जातवेदास्तत स्तुतो जुषमाणो न एहि ॥ १ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

यस्ते अप्सु महिमा यो वनेषु य ओषधीषु पशुष्वप्स्वन्तः।
अग्ने सर्वास्तन्वः सं रभस्व ताभिर्नः एहि द्रविणोदा अजस्रः॥ २॥
यस्ते देवेषु महिमा स्वर्गो या ते तनूः पितृष्वाविवेश।
पुष्टिर्या ते मनुष्येषु पप्रथेऽग्ने तया रयिमस्मासु धेहि॥ ३॥
श्रुत्कर्णाय कवये वेद्याय वचोभिर्वीकैरुपं यामि रातिम्।
यतो भयमभयं तन्नो अस्त्ववं देवानां यज हेडो अग्ने॥ ४॥

[४] चतुर्थं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वाङ्गिराः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—१ पञ्चपदाविराडतिजगतीः; २ जगती; ३ अनुष्टुप्; ४ त्रिष्टुप्॥

यामाहुतिं प्रथमामथर्वा या जाता या हव्यमकृणोज्जातवेदाः।
तां त एतां प्रथमो जोहवीमि ताभिष्टुमो वहतु हव्यमग्निरग्नये स्वाहा॥ १॥
आकूतिं देवीं सुभगां पुरो दधे चित्तस्य माता सुहवा नो अस्तु।
यामाशामेमि केवली सा मे अस्तु विदेयमेनां मनसि प्रविष्टाम्॥ २॥
आकूत्या नो बृहस्पत आकूत्या नु उपा गहि।
अथो भगस्य नो धेह्यथो नः सुहवो भव॥ ३॥
बृहस्पतिर्म आकूतिमाङ्गिरसः प्रतिं जानातु वाचमेताम्।
यस्य देवा देवताः संबभूवुः स सुप्रणीताः कामो अन्वेत्वस्मान्॥ ४॥

[५] पञ्चमं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वाङ्गिराः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—त्रिष्टुप्॥

इन्द्रो राजा जगतश्चर्षणीनामधि क्षमि विषुरूपं यदस्ति।
ततो ददाति दाशुषे वसूनि चोदद्राधो उपस्तुतश्चिदर्वाक्॥ १॥

[६] षष्ठं सूक्तम्

ऋषिः—नारायणः॥ देवता—पुरुषः॥ छन्दः—अनुष्टुप्॥

सहस्रबाहुः पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्।
स भूमिं विश्वतो वृत्वात्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम्॥ १॥
त्रिभिः पद्भिर्द्यामरोहत्पादस्येहाभवत्पुनः।
तथा व्यक्रामद्विष्वङ्ङशनानशने अनु॥ २॥
तावन्तो अस्य महिमानस्ततो ज्यायांश्च पूरुषः।
पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि॥ ३॥
पुरुष एवेदं सर्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम्।
उतामृतत्वस्येशानो यदन्येनाभवत्सह

यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन्।
मुखं किमस्य किं बाहू किमूरू पादा उच्येते॥ ५॥
ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद्बाहू राजन्योऽभवत्।
मध्यं तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्यां शूद्रो अजायत॥ ६॥
चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत।
मुखादिन्द्रश्चाग्निश्च प्राणाद्वायुरजायत॥ ७॥
नाभ्या आसीदन्तरिक्षं शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत।
पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ अकल्पयन्॥ ८॥
विराडग्रे समभवद्विराजो अधि पूरुषः।
स जातो अत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथो पुरः॥ ९॥
यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत।
वसन्तो अस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः॥ १०॥
तं यज्ञं प्रावृषा प्रौक्षन्पुरुषं जातमग्रशः।
तेन देवा अयजन्त साध्या वसवश्च ये॥ ११॥
तस्मादश्वा अजायन्त ये च के चोभयादतः।
गावो ह जज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाता अजावयः॥ १२॥
तस्माद्यज्ञात्सर्वहुत ऋचः सामानि जज्ञिरे।
छन्दो ह जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत॥ १३॥
तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः संभृतं पृषदाज्यम्।
पशूँस्तांश्चक्रे वायव्यानारण्या ग्राम्याश्च ये॥ १४॥
सप्तास्यासन्परिधयस्त्रिः सप्त समिधः कृताः।
देवा यद्यज्ञं तन्वाना अबध्नन्पुरुषं पशुम्॥ १५॥
मूर्ध्नो देवस्य बृहतो अंशवः सप्त संसतीः।
राज्ञः सोमस्याजायन्त जातस्य पुरुषादधि॥ १६॥

[७] सप्तमं सूक्तम्

ऋषिः—गार्ग्यः॥ देवता—नक्षत्राणि॥ छन्दः—१-३, ५ त्रिष्टुप्; ४ भुरिक्त्रिष्टुप्॥

चित्राणि साकं दिवि रोचनानि सरीसृपाणि भुवने जवानि।
तुर्मिशं सुमतिमिच्छमानो अहानि गीर्भिः सपर्यामि नाकम्॥ १॥
सुहवमग्ने कृत्तिका रोहिणी चास्तु भद्रं मृगशिरः शमार्द्रा।
पुनर्वसू सूनृता चारु पुष्यो भानुराश्लेषा अयनं मघा मे॥ २॥

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पुण्यं पूर्वा फल्गुन्यौ चात्र हस्तश्चित्रा शिवा स्वाति सुखो मे अस्तु।
राधे विशाखे सुहवानुराधा ज्येष्ठा सुनक्षत्रमरिष्ट मूलम् ॥ ३ ॥
अन्नं पूर्वा रासतां मे अषाढा ऊर्जं देव्युत्तरा आ वहन्तु।
अभिजिन्मे रासतां पुण्यमेव श्रवणः श्रविष्ठाः कुर्वतां सुपुष्टिम्॥ ४ ॥
आ मे महच्छतभिषग्वरीय आ मे द्वया प्रोष्ठपदा सुशर्म।
आ रेवतीं चाश्वयुजौ भगं म आ मे रयिं भरण्य आ वहन्तु॥ ५ ॥

[८] अष्टमं सूक्तम्

ऋषिः—गार्ग्यः॥ देवता—नक्षत्राणि॥ छन्दः—१ विराड्जगती; २ महाबृहतीत्रिष्टुप्; ३ विराट्स्थानात्रिष्टुप्; ४-६ अनुष्टुप्; ७ द्विपदानिचृत्त्रिष्टुप्॥

यानि नक्षत्राणि दिव्यन्तरिक्षे अप्सु भूमौ यानि नगेषु दिक्षु।
प्रकल्पयंश्चन्द्रमा यान्येति सर्वाणि ममैतानि शिवानि सन्तु॥ १ ॥
अष्टाविंशानि शिवानि शग्मानि सह योगं भजन्तु मे।
योगं प्र पद्ये क्षेमं च क्षेमं प्र पद्ये योगं च नमोऽहोरात्राभ्यामस्तु॥ २ ॥
स्वस्तितं मे सुप्रातः सुसायं सुदिवं सुमृगं सुशकुनं मे अस्तु।
सुहवमग्ने स्वस्ति मर्त्यं गत्वा पुनरायाभिनन्दन् ॥ ३ ॥
अनुहूवं परिहूवं परिवादं परिक्षवम् ।
सर्वं मे रिक्तकुम्भान्परा तान्त्सवितः सुव ॥ ४ ॥
अपपापं परिक्षवं पुण्यं भक्षीमहि क्षवम् ।
शिवा तें पाप नासिकां पुण्यगन्धाभि मेहताम् ॥ ५ ॥
इमा या ब्रह्मणस्पते विषूचीर्वात ईरते ।
सध्रीचीरिन्द्र ताः कृत्वा मह्यं शिवतमास्कृधि ॥ ६ ॥
स्वस्ति नो अस्त्वभयं नो अस्तु नमोऽहोरात्राभ्यामस्तु॥ ७ ॥

[९] नवमं सूक्तम्

ऋषिः—शन्तातिः॥ देवता—मन्त्रोक्ताः॥ छन्दः—१ विराडुरोबृहती; २-४, ६-८, १०, ११, १३ अनुष्टुप्; ५ पञ्चपदापथ्यापङ्क्तिः; ९ पञ्चपदाककुम्मतीत्रिष्टुप्; १२ सप्तपदाऽष्टिः; १४ चतुष्पदासंकृतिः॥

शान्ता द्यौः शान्ता पृथिवी शान्तमिदमुर्वन्तरिक्षम् ।
शान्ता उदन्वतीरापः शान्ता नः सन्त्वोषधीः ॥ १ ॥
शान्तानि पूर्वरूपाणि शान्तं नो अस्तु कृताकृतम् ।
शान्तं भूतं च भव्यं च सर्वमेव शमस्तु नः ॥ २ ॥
इयं या परमेष्ठिनी वाग्देवी ब्रह्मसंशिता ।
ययैव ससृजे घोरं तयैव शान्तिरस्तु नः
इदं यत्परमेष्ठिनं मनो वां ब्रह्मसंशितम् ।
येनैव ससृजे घोरं तेनैव शान्तिरस्तु नः ॥ ४ ॥
इमानि यानि पञ्चेन्द्रियाणि मनःषष्ठानि मे हृदि ब्रह्मणा
संशितानि। तैरेव ससृजे घोरं तैरेव शान्तिरस्तु नः ॥ ५ ॥
शं नो मित्रः शं वरुणः शं विष्णुः शं प्रजापतिः ।
शं न इन्द्रो बृहस्पतिः शं नो भवत्वर्यमा ॥ ६ ॥
शं न मित्रः शं वरुणः शं विवस्वाञ्छमन्तकः ।
उत्पाताः पार्थिवान्तरिक्षाः शं नो दिविचरा ग्रहाः ॥ ७ ॥
शं नो भूमिर्वेप्यमाना शमुल्का निर्हतं च यत् ।
शं गावो लोहितक्षीराः शं भूमिरव तीर्यतीः ॥ ८ ॥
नक्षत्रमुल्काभिहतं शमस्तु नः शं नोऽभिचाराः शमु सन्तु कृत्याः।
शं नो निखाता वल्गाः शमुल्का दैवोपसर्गाः शमु नो भवन्तु॥ ९ ॥
शं नो ग्रहाश्चान्द्रमसाः शमादित्यश्च राहुणा ।
शं नो मृत्युर्धूमकेतुः शं रुद्रास्तिग्मतेजसः ॥ १० ॥
शं रुद्राः शं वसवः शमादित्याः शमग्नयः ।
शं नो महर्षयो देवाः शं देवाः शं बृहस्पतिः ॥ ११ ॥
ब्रह्मा प्रजापतिर्धाता लोका वेदाः सप्तऋषयोऽग्नयः ।
तैर्मे कृतं स्वस्त्ययनमिन्द्रो मे शर्म यच्छतु ब्रह्मा मे शर्म यच्छतु।
विश्वे मे देवाः शर्म यच्छन्तु सर्वे मे देवाः शर्म यच्छन्तु॥ १२ ॥
यानि कानि चिच्छान्तानि लोके सप्तऋषयो विदुः ।
सर्वाणि शं भवन्तु मे शं मे अस्त्वभयं मे अस्तु ॥ १३ ॥
पृथिवी शान्तिरन्तरिक्षं शान्तिर्द्यौः शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिर्वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे मे देवाः शान्तिः सर्वे मे देवाः शान्तिः शान्तिः शान्तिभिः। ताभिः शान्तिभिः सर्वं शान्तिभिः शमयामोऽहं यदिह घोरं यदिह क्रूरं यदिह पापं तच्छान्तं तच्छिवं सर्वमेव शमस्तु नः ॥ १४ ॥

अथ द्वितीयोऽनुवाकः [१०] दशमं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः॥ देवता—मन्त्रोक्ताः॥ छन्दः—त्रिष्टुप्॥

शं न इन्द्राग्नी भवतामवोभिः शं न इन्द्रावरुणा रातहव्या।
शमिन्द्रासोमा सुविताय शं योः शं न इन्द्रापूषणा वाजसातौ॥ १ ॥
शं नो भगः शमु नः शंसो अस्तु शं नः पुरंधिः शमु सन्तु रायः।
शं नः सत्यस्य सुयमस्य शंसः शं नो अर्यमा पुरुजातो अस्तु॥ २ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

शं नो धाता शमु धर्ता नो अस्तु शं न उरूची भवतु स्वधाभिः।
शं रोदसी बृहती शं नो अद्रिः शं नो देवानां सुहवानि सन्तु॥ ३॥
शं नो अग्निर्ज्योतिरनीको अस्तु शं नो मित्रावरुणावश्विना शम्।
शं नः सुकृतां सुकृतानि सन्तु शं न इषिरो अभि वातु वातः॥ ४॥
शं नो द्यावापृथिवी पूर्वहूतौ शमन्तरिक्षं दृशये नो अस्तु।
शं न ओषधीर्वनिनो भवन्तु शं नो रजसस्पतिरस्तु जिष्णुः॥ ५॥
शं न इन्द्रो वसुभिर्देवो अस्तु शमादित्येभिर्वरुणः सुशंसः।
शं नो रुद्रो रुद्रेभिर्जलाषः शं नस्त्वष्टा ग्नाभिरिह शृणोतु॥ ६॥
शं नः सोमो भवतु ब्रह्म शं नः शं नो ग्रावाणः शमु सन्तु यज्ञाः।
शं नः स्वरूणां मितयो भवन्तु शं नः प्रस्वः शम्वस्तु वेदिः॥ ७॥
शं नः सूर्य उरुचक्षा उदेतु शं नो भवन्तु प्रदिशश्चतस्रः।
शं नः पर्वता ध्रुवयो भवन्तु शं नः सिन्धवः शमु सन्त्वापः॥ ८॥
शं नो अदितिर्भवतु व्रतेभिः शं नो भवन्तु मरुतः स्वर्काः।
शं नो विष्णुः शमु पूषा नो अस्तु शं नो भवित्रं शम्वस्तु वायुः॥ ९॥
शं नो देवः सविता त्रायमाणः शं नो भवन्तूषसो विभातीः।
शं नः पर्जन्यो भवतु प्रजाभ्यः शं नः क्षेत्रस्य पतिरस्तु शंभुः॥ १०॥

[११] एकादशं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः॥ देवताः—मन्त्रोक्ताः॥ छन्दः—त्रिष्टुप्॥

शं नः सत्यस्य पतयो भवन्तु शं नो अर्वन्तः शमु सन्तु गावः।
शं न ऋभवः सुकृतः सुहस्ताः शं नो भवन्तु पितरो हवेषु॥ १॥
शं नो देवा विश्वदेवा भवन्तु शं सरस्वती सह धीभिरस्तु।
शमभिषाचः शमु रातिषाचः शं नो दिव्याः पार्थिवाः शं नो अप्याः॥ २॥
शं नो अज एकपादेवो अस्तु शमहिर्बुध्न्यः शं समुद्रः।
शं नो अपां नपात्पेरुरस्तु शं नः पृश्निर्भवतु देवगोपा॥ ३॥
आदित्या रुद्रा वसवो जुषन्तामिदं ब्रह्म क्रियमाणं नवीयः।
शृण्वन्तु नो दिव्याः पार्थिवासो गोजाता उत ये यज्ञियासः॥ ४॥
ये देवानामृत्विजो यज्ञियासो मनोर्यजत्रा अमृता ऋतज्ञाः।
ते नो रासन्तामुरुगायमद्य यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥ ५॥
तदस्तु मित्रावरुणा तदग्ने शं योरस्मभ्यमिदमस्तु शस्तम्।
अशीमहि गाधमुत प्रतिष्ठां नमो दिवे बृहते सादनाय॥ ६॥

[१२] द्वादशं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः॥ देवता—उषा॥ छन्दः—त्रिष्टुप्॥

उषा अप स्वसुस्तमः सं वर्तयति वर्तनिं सुजातता।
अया वाजं देवहितं सनेम मदेम शतहिमा सुवीराः॥ १॥

[१३] त्रयोदशं सूक्तम्

ऋषिः—अप्रतिरथः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१, २, ७-१० त्रिष्टुप्; ३-६, ११ भुरिक्त्रिष्टुप्॥

इन्द्रस्य बाहू स्थविरौ वृषाणौ चित्रा ह्युमा वृषभौ पारयिष्णू।
तौ योक्षे प्रथमो योग आगते याभ्यां जितमसुराणां स्वर्यत्॥ १॥
आशुः शिशानो वृषभो न भीमो घनाघनः क्षोभणश्चर्षणीनाम्।
संक्रन्दनोऽनिमिष एकवीरः शतं सेना अजयत्साकमिन्द्रः॥ २॥
संक्रन्दनेनानिमिषेण जिष्णुनाऽयोध्येन दुश्च्यवनेन धृष्णुना।
तदिन्द्रेण जयत तत्सहध्वं युधो नर इषुहस्तेन वृष्णा॥ ३॥
स इषुहस्तैः स निषङ्गिभिर्वशी संस्रष्टा स युध इन्द्रो गणेन।
संसृष्टजित्सोमपा बाहुशर्ध्युग्रधन्वा प्रतिहिताभिरस्ता॥ ४॥
बलविज्ञायः स्थविरः प्रवीरः सहस्वान्वाजी सहमान उग्रः।
अभिवीरो अभिषत्वा सहोजिजैत्रमिन्द्र रथमा तिष्ठ गोविदम्॥ ५॥
इमं वीरमनु हर्षध्वमुग्रमिन्द्रं सखायो अनु सं रभध्वम्।
ग्रामजितं गोजितं वज्रबाहुं जयन्तमज्म प्रमृणन्तमोजसा॥ ६॥
अभि गोत्राणि सहसा गाहमानोदाय उग्रः शतमन्युरिन्द्रः।
दुश्च्यवनः पृतनाषाडयोध्योऽस्माकं सेना अवतु प्र युत्सु॥ ७॥
बृहस्पते परि दीया रथेन रक्षोहामित्राँ अपबाधमानः।
प्रभञ्जन्त्सेनाः प्रमृणन्नमित्रान्त्समाकमेध्यविता तनूनाम्॥ ८॥
इन्द्र एषां नेता बृहस्पतिर्दक्षिणा यज्ञः पुर एतु सोमः।
देवसेनानामभिभञ्जतीनां जयन्तीनां मरुतो यन्तु मध्ये॥ ९॥
इन्द्रस्य वृष्णो वरुणस्य राज्ञ आदित्यानां मरुतां शर्ध उग्रम्।
महामनसां भुवनच्यवानां घोषो देवानां जयतामुदस्थात्॥ १०॥
अस्माकमिन्द्रः समृतेषु ध्वजेष्वस्माकं या इषवस्ता जयन्तु।
अस्माकं वीरा उत्तरे भवन्त्वस्मान्देवासोऽवता हवेषु॥ ११॥

[१४] चतुर्दशं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा॥ देवता—द्यावापृथिव्यौ॥ छन्दः—त्रिष्टुप्॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

इदमुच्छ्रेयोऽवसानमागां शिवे मे द्यावापृथिवी अभूताम् ।
असपत्ना प्रदिशो मे भवन्तु न वै त्वा द्विष्मो अभयं नो अस्तु॥ १॥

[१५] पञ्चदशं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा॥ देवता—१-४ इन्द्रः; ५, ६ मन्त्रोक्ताः॥ छन्दः—१ पथ्याबृहती; २, ५ जगती; ३ विराट्पथ्यापङ्क्तिः; ४, ६ त्रिष्टुप्॥

यत इन्द्र भयामहे ततो नो अभयं कृधि ।
मघवञ्छग्धि तव त्वं न ऊतिभिर्वि द्विषो वि मृधो जहि॥ १॥
इन्द्रं वयमनूराधं हवामहेऽनु राध्यास्म द्विपदा चतुष्पदा।
मा नः सेना अरुषीरुप गुर्विषूचीरिन्द्र द्रुहो वि नाशय॥ २॥
इन्द्रस्त्रातोत वृत्रहा परस्फानो वरेण्यः ।
स रक्षिता चरमतः स मध्यतः स पश्चात्स पुरस्तान्नो अस्तु॥ ३॥
उरुं नो लोकमनु नेषि विद्वान्त्स्वर्यज्योतिरभयं स्वस्ति।
उग्रा त इन्द्र स्थविरस्य बाहू उप क्षयेम शरणा बृहन्ता॥ ४॥
अभयं नः करत्यन्तरिक्षमभयं द्यावापृथिवी उभे इमे।
अभयं पश्चादभयं पुरस्तादुत्तरादधरादभयं नो अस्तु॥ ५॥
अभयं मित्रादभयममित्रादभयं ज्ञातादभयं परोक्षात्।
अभयं नक्तमभयं दिवा नः सर्वा आशा मम मित्रं भवन्तु॥ ६॥

[१६] षोडशं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा॥ देवता—मन्त्रोक्ताः॥ छन्दः—१ अनुष्टुप्; २ सप्तपदाबृहतीगर्भातिशक्वरी॥

असपत्नं पुरस्तात्पश्चान्नो अभयं कृतम् ।
सविता मा दक्षिणत उत्तरान्मा शचीपतिः ॥ १॥
दिवो मादित्या रक्षन्तु भूम्या रक्षन्त्वग्रयः ।
इन्द्राग्नी रक्षतां मा पुरस्तादश्विनावभितः शर्म यच्छताम्।
तिरश्चीनघ्न्या रक्षतु जातवेदा भूतकृतो मे सर्वतः सन्तु वर्म॥ २॥

[१७] सप्तदशं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा॥ देवता—मन्त्रोक्ताः॥ छन्दः—१-४, ८ जगती; ५, ७, १० अतिजगती; ६ भुरिग्जगती; ९ पञ्चपदाऽतिशक्वरी॥

अग्निर्मा पातु वसुभिः पुरस्तात्तस्मिन्क्रमे तस्मिञ्छ्रये तां पुरं प्रैमि।
स मा रक्षतु स मा गोपायतु तस्मा आत्मानं परि ददे स्वाहा॥ १॥
वायुर्मान्तरिक्षेणोतस्यां दिशः पातु तस्मिन्क्रमे तस्मिञ्छ्रये तां पुरं प्रैमि।
स मा रक्षतु स मा गोपायतु तस्मा आत्मानं परि ददे स्वाहा॥ २॥
सोमो मा रुद्रैर्दक्षिणाया दिशः पातु तस्मिन्क्रमे तस्मिञ्छ्रये तां पुरं प्रैमि।
स मा रक्षतु स मा गोपायतु तस्मा आत्मानं परि ददे स्वाहा॥ ३॥
वरुणो मादित्यैरेतस्यां दिशः पातु तस्मिन्क्रमे तस्मिञ्छ्रये तां पुरं प्रैमि।
स मा रक्षतु स मा गोपायतु तस्मा आत्मानं परि ददे स्वाहा॥ ४॥
सूर्यो मा द्यावापृथिवीभ्यां प्रतीच्या दिशः पातु तस्मिन्क्रमे तस्मिञ्छ्रये तां पुरं प्रैमि। स मा रक्षतु स मा गोपायतु तस्मा आत्मानं परि ददे स्वाहा॥ ५॥
आपो मौषधीमतीरेतस्यां दिशः पान्तु तासु क्रमे तासु श्रये तां पुरं प्रैमि।
ता मा रक्षन्तु ता मा गोपायन्तु ताभ्य आत्मानं परि ददे स्वाहा॥ ६॥
विश्वकर्मा मा सप्तऋषिभिरुदीच्या दिशः पातु
तस्मिन्क्रमे तस्मिञ्छ्रये तां पुरं प्रैमि ।
स मा रक्षतु स मा गोपायतु तस्मा आत्मानं परि ददे स्वाहा॥ ७॥
इन्द्रो मा मरुत्वानेतस्यां दिशः पातु तस्मिन्क्रमे तस्मिञ्छ्रये तां पुरं प्रैमि।
स मा रक्षतु स मा गोपायतु तस्मा आत्मानं परि ददे स्वाहा॥ ८॥
प्रजापतिर्मा प्रजननवान्सह प्रतिष्ठाया ध्रुवाया दिशः पातु
तस्मिन्क्रमे तस्मिञ्छ्रये तां पुरं प्रैमि ।
स मा रक्षतु स मा गोपायतु तस्मा आत्मानं परि ददे स्वाहा॥ ९॥
बृहस्पतिर्मा विश्वैर्देवैरूर्ध्वाया दिशः पातु तस्मिन्क्रमे तस्मिञ्छ्रये तां पुरं प्रैमि। स मा रक्षतु स मा गोपायतु तस्मा आत्मानं परि ददे स्वाहा॥ १०॥

[१८] अष्टादशं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा॥ देवता—मन्त्रोक्ताः॥ छन्दः—१, ८ साम्नीत्रिष्टुप्; २-४, ६ आर्च्यनुष्टुप्; ५ सम्राड् (स्वराड्) आर्च्यनुष्टुप्; ७, ९, १० प्राजापत्यात्रिष्टुप्; (सर्वाद्विपदाः)॥

अग्निं ते वसुवन्तमृच्छन्तु। ये मांऽघायवः प्राच्या दिशोऽभिदासात्॥ १॥
वायुं ते अन्तरिक्षवन्तमृच्छन्तु। ये मांऽघायव एतस्या दिशोऽभिदासात्॥ २॥
सोमं ते रुद्रवन्तमृच्छन्तु। ये मांऽघायवो दक्षिणाया दिशोऽभिदासात्॥ ३॥
वरुणं त आदित्यवन्तमृच्छन्तु। ये मांऽघायव एतस्या दिशोऽभिदासात्॥ ४॥
सूर्यं ते द्यावापृथिवीवन्तमृच्छन्तु। ये मांऽघायवः प्रतीच्या दिशोऽभिदासात्॥ ५॥
अपस ओषधीमतीरृच्छन्तु। ये मांऽघायव एतस्या दिशोऽभिदासात्॥ ६॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

विश्वकर्माणं ते सप्तऋषिवन्तमृच्छन्तु ।
ये मांऽघायव उदीच्या दिशोऽभिदासात् ॥७॥
इन्द्रं ते मरुत्वन्तमृच्छन्तु ।
ये मांऽघायवं एतस्या दिशोऽभिदासात् ॥८॥
प्रजापतिं ते प्रजननवन्तमृच्छन्तु ।
ये मांऽघायवो ध्रुवाया दिशोऽभिदासात् ॥९॥
बृहस्पतिं ते विश्वदेववन्तमृच्छन्तु ।
ये मांऽघायवं ऊर्ध्वाया दिशोऽभिदासात् ॥१०॥

[१९] एकोनविंशं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा ॥ देवता—मन्त्रोक्ताः ॥ छन्दः—१, ३, ९ भुरिग्बृहती; २, ४-८, ११ अनुष्टुब्गर्भापङ्क्तिः; १० स्वराट्पङ्क्तिः ॥

मित्रः पृथिव्योदक्रामत्तां पुरं प्र णयामि वः ।
तामा विशत तां प्र विशत सा वः शर्म च वर्म च यच्छतु ॥१॥
वायुरन्तरिक्षेणोदक्रामत्तां पुरं प्र णयामि वः ।
तामा विशत तां प्र विशत सा वः शर्म च वर्म च यच्छतु ॥२॥
सूर्यो दिवोदक्रामत्तां पुरं प्र णयामि वः ।
तामा विशत तां प्र विशत सा वः शर्म च वर्म च यच्छतु ॥३॥
चन्द्रमा नक्षत्रैरुदक्रामत्तां पुरं प्र णयामि वः ।
तामा विशत तां प्र विशत सा वः शर्म च वर्म च यच्छतु ॥४॥
सोम ओषधीभिरुदक्रामत्तां पुरं प्र णयामि वः ।
तामा विशत तां प्र विशत सा वः शर्म च वर्म च यच्छतु ॥५॥
यज्ञो दक्षिणाभिरुदक्रामत्तां पुरं प्र णयामि वः ।
तामा विशत तां प्र विशत सा वः शर्म च वर्म च यच्छतु ॥६॥
समुद्रो नदीभिरुदक्रामत्तां पुरं प्र णयामि वः ।
तामा विशत तां प्र विशत सा वः शर्म च वर्म च यच्छतु ॥७॥
ब्रह्म ब्रह्मचारिभिरुदक्रामत्तां पुरं प्र णयामि वः ।
तामा विशत तां प्र विशत सा वः शर्म च वर्म च यच्छतु ॥८॥
इन्द्रो वीर्येणोदक्रामत्तां पुरं प्र णयामि वः ।
तामा विशत तां प्र विशत सा वः शर्म च वर्म च यच्छतु ॥९॥
देवा अमृतेनोदक्रामंस्तां पुरं प्र णयामि वः ।
तामा विशत तां प्र विशत सा वः शर्म च वर्म च यच्छतु ॥१०॥

प्रजापतिः प्रजाभिरुदक्रामत्तां पुरं प्र णयामि वः ।
तामा विशत तां प्र विशत सा वः शर्म च वर्म च यच्छतु ॥११॥

[२०] विंशं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा ॥ देवता—मन्त्रोक्ताः ॥ छन्दः—१ त्रिष्टुप्, २ जगती; ३ पुरस्ताद्बृहती; ४ अनुष्टुब्गर्भात्रिष्टुप् ॥

अप न्यधुः पौरुषेयं वधं यमिन्द्राग्नी धाता सविता बृहस्पतिः ।
सोमो राजा वरुणो अश्विना यमः पूषास्मान्परि पातु मृत्योः ॥१॥
यानि चकार भुवनस्य यस्पतिः प्रजापतिर्मातरिश्वा प्रजाभ्यः ।
प्रदिशो यानि वसते दिशश्च तानि मे वर्माणि बहुलानि सन्तु ॥२॥
यत्ते तनूष्वनह्यन्त देवा द्युराजयो देहिनः ।
इन्द्रो यच्चक्रे वर्म तदस्मान्पातु विश्वतः ॥३॥
वर्म मे द्यावापृथिवी वर्माहर्वर्म सूर्यः ।
वर्म मे विश्वे देवाः क्रन्मा मा प्रापत्प्रतीचिका ॥४॥

अथ तृतीयोऽनुवाकः [२१] एकविंशं सूक्तम्

ऋषिः—ब्रह्मा ॥ देवता—छन्दासि ॥ छन्दः—द्विपदासाम्नीबृहती (एकावसाना) ॥

गायत्र्युष्णिगनुष्टुब्बृहती पङ्क्तिस्त्रिष्टुब्जगत्यै ॥१॥

[२२] द्वाविंशं सूक्तम्

ऋषिः—अङ्गिराः ॥ देवता—मन्त्रोक्ताः ॥ छन्दः—१ साम्न्युष्णिक्; २, ६, १४-१६, २० दैवीपङ्क्तिः; ३, १९ प्राजापत्यागायत्री; ४, ७, ११, १७ दैवीजगती; ५, १२, १३ दैवीत्रिष्टुप्; ८-१० आसुरीजगती; १८ आसुर्यनुष्टुप्; २१ चतुष्पदात्रिष्टुप् ॥

आङ्गिरसानामाद्यैः पञ्चानुवाकैः स्वाहा ॥१॥
षष्ठाय स्वाहा ॥२॥ सप्तमाष्टमाभ्यां स्वाहा ॥३॥
नीलनखेभ्यः स्वाहा ॥४॥ हरितेभ्यः स्वाहा ॥५॥
क्षुद्रेभ्यः स्वाहा ॥६॥ पर्यायिकेभ्यः स्वाहा ॥७॥
प्रथमेभ्यः शङ्खेभ्यः स्वाहा ॥८॥ द्वितीयेभ्यः शङ्खेभ्यः स्वाहा ॥९॥
तृतीयेभ्यः शङ्खेभ्यः स्वाहा ॥१०॥ उपोत्तमेभ्यः स्वाहा ॥११॥
उत्तमेभ्यः स्वाहा ॥१२॥ उत्तरेभ्यः स्वाहा ॥१३॥
ऋषिभ्यः स्वाहा ॥१४॥ शिखिभ्यः स्वाहा ॥१५॥
गणेभ्यः स्वाहा ॥१६॥ महागणेभ्यः स्वाहा ॥१७॥
सर्वेभ्योऽङ्गिरोभ्यो विदगणेभ्यः स्वाहा ॥१८॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पृथक्सहस्राभ्यां स्वाहा ॥ १९ ॥ ब्रह्मणे स्वाहा ॥ २० ॥
ब्रह्मज्येष्ठा संभृता वीर्याणि ब्रह्माग्रे ज्येष्ठं दिवमा ततान।
भूतानां ब्रह्मा प्रथमोत जज्ञे तेनार्हति ब्रह्मणा स्पर्धितुं कः ॥ २१ ॥

[२३] द्वाविंशं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा ॥ देवता—मन्त्रोक्ताः ॥ छन्दः—१ आसुरीबृहती; २-७, २०, २३, २७ दैवीत्रिष्टुप्; ८, १०-१२, १४-१६ प्राजापत्यागायत्री; १७, १९, २१, २४, २५, २९ दैवीपङ्क्तिः; ९, १३, १८, २२, २६, २८ दैवीजगती; ३० चतुष्पदात्रिष्टुप् ॥

आथर्वणानां चतुर्ऋचेभ्यः स्वाहा ॥ १ ॥ पञ्चर्चेभ्यः स्वाहा ॥ २ ॥
षडृचेभ्यः स्वाहा ॥ ३ ॥ सप्तर्चेभ्यः स्वाहा ॥ ४ ॥
अष्टर्चेभ्यः स्वाहा ॥ ५ ॥ नवर्चेभ्यः स्वाहा ॥ ६ ॥
दशर्चेभ्यः स्वाहा ॥ ७ ॥ एकादशर्चेभ्यः स्वाहा ॥ ८ ॥
द्वादशर्चेभ्यः स्वाहा ॥ ९ ॥ त्रयोदशर्चेभ्यः स्वाहा ॥ १० ॥
चतुर्दशर्चेभ्यः स्वाहा ॥ ११ ॥ पञ्चदशर्चेभ्यः स्वाहा ॥ १२ ॥
षोडशर्चेभ्यः स्वाहा ॥ १३ ॥ सप्तदशर्चेभ्यः स्वाहा ॥ १४ ॥
अष्टादशर्चेभ्यः स्वाहा ॥ १५ ॥ एकोनविंशतिः स्वाहा ॥ १६ ॥
विंशतिः स्वाहा ॥ १७ ॥ महत्काण्डाय स्वाहा ॥ १८ ॥
तृचेभ्यः स्वाहा ॥ १९ ॥ एकर्चेभ्यः स्वाहा ॥ २० ॥
क्षुद्रेभ्यः स्वाहा ॥ २१ ॥ एकानृचेभ्यः स्वाहा ॥ २२ ॥
रोहितेभ्यः स्वाहा ॥ २३ ॥ सूर्याभ्यां स्वाहा ॥ २४ ॥
व्रात्याभ्यां स्वाहा ॥ २५ ॥ प्राजापत्याभ्यां स्वाहा ॥ २६ ॥
विषासहै स्वाहा ॥ २७ ॥ मङ्गलिकेभ्यः स्वाहा ॥ २८ ॥
ब्रह्मणे स्वाहा ॥ २९ ॥

ब्रह्मज्येष्ठा संभृता वीर्याणि ब्रह्माग्रे ज्येष्ठं दिवमा ततान।
भूतानां ब्रह्मा प्रथमोत जज्ञे तेनार्हति ब्रह्मणा स्पर्धितुं कः ॥ ३० ॥

[२४] चतुर्विंशं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा ॥ देवता—मन्त्रोक्ताः ॥ छन्दः—१-३ अनुष्टुप्; ४-६, ८ त्रिष्टुप्; ७ त्रिपदाऽऽर्षीगायत्री ॥

येनं देवं सवितारं परि देवा अधारयन् ।
तेनेमं ब्रह्मणस्पते परि राष्ट्राय धत्तन ॥ १ ॥
परीममिन्द्रमायुषे महे क्षत्राय धत्तन ।
यथैनं जरसे नयां ज्योक्क्षत्रेऽधि जागरत् ॥ २ ॥
परीमं सोममायुषे महे श्रोत्राय धत्तन ।
यथैनं जरसे नयां ज्योक्श्रोत्रेऽधि जागरत् ॥ ३ ॥
परि धत्त धत्त नो वर्चसेमं जरामृत्युं कृणुत दीर्घमायुः।
बृहस्पतिः प्रायच्छद्वास एतत्सोमाय राज्ञे परिधातवा उ ॥ ४ ॥
जरां सु गच्छ परि धत्स्व वासो भवा गृष्टीनामभिशस्तिपा उ।
शतं च जीव शरदः पुरूची रायश्च पोषमुपसंव्ययस्व ॥ ५ ॥
परीदं वासो अधिथाः स्वस्तयेऽभूर्वापीनामभिशस्तिपा उ।
शतं च जीव शरदः पुरूचीर्वसूनि चारुर्वि भजासि जीवन् ॥ ६ ॥
योगेयोगे तवस्तरं वाजेवाजे हवामहे। सखाय इन्द्रमूतये ॥ ७ ॥
हिरण्यवर्णो अजरः सुवीरो जरामृत्युः प्रजया सं विशस्व।
तदग्निराह तदु सोम आह बृहस्पतिः सविता तदिन्द्रः ॥ ८ ॥

[२५] पञ्चविंशं सूक्तम्

ऋषिः—गोपथः ॥ देवता—वाजी ॥ छन्दः—अनुष्टुप् ॥

अश्रान्तस्य त्वा मनसा युनज्मि प्रथमस्य च।
उत्कूलमुद्वहो भवोदुह्य प्रति धावतात् ॥ १ ॥

[२६] षड्विंशं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा ॥ देवता—अग्निः; हिरण्यम् ॥ छन्दः—१, २ त्रिष्टुप्; ३ अनुष्टुप्; ४ पथ्यापङ्क्तिः ॥

अग्नेः प्रजातं परि यद्धिरण्यममृतं दुद्रे अधि मर्त्येषु।
य एनद्वेद स इदेनमर्हति जरामृत्युर्भवति यो बिभर्ति ॥ १ ॥
यद्धिरण्यं सूर्येण सुवर्णं प्रजावन्तो मनवः पूर्व ईषिरे।
तत्त्वा चन्द्रं वर्चसा सं सृजत्यायुष्मान्भवति यो बिभर्ति ॥ २ ॥
आयुषे त्वा वर्चसे त्वौजसे च बलाय च ।
यथा हिरण्यतेजसा विभासासि जनाँ अनु ॥ ३ ॥
यद्वेद राजा वरुणो वेद देवो बृहस्पतिः ।
इन्द्रो यद् वृत्रहा वेद तत्त आयुष्यं भुवत्तत्ते वर्चस्यं भुवत् ॥ ४ ॥

अथ चतुर्थोऽनुवाकः [२७] सप्तविंशं सूक्तम्

ऋषिः—भृग्वङ्गिराः ॥ देवता—त्रिवृत् ॥ छन्दः—१, २, ४-८, १४ अनुष्टुप्; ३, ९ त्रिष्टुप्; १० जगती; ११ आर्च्युष्णिक्; १२ आर्च्यनुष्टुप्; १३ साम्नीत्रिष्टुप्; १५ षट्पदाऽतिशक्वरी ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

गोभिष्ट्वा पात्वृषभो वृषा त्वा पातु वाजिभिः ।
वायुष्ट्वा ब्रह्मणा पात्विन्द्रस्त्वा पात्विन्द्रियैः ॥ १ ॥
सोमस्त्वा पात्वोषधीभिर्नक्षत्रैः पातु सूर्यः ।
माद्भ्यस्त्वा चन्द्रो वृत्रहा वातः प्राणेन रक्षतु ॥ २ ॥
तिस्रो दिवस्तिस्रः पृथिवीस्त्रीण्यन्तरिक्षाणि चतुरः समुद्रान् ।
त्रिवृतं स्तोमं त्रिवृत आप आहुस्तास्त्वा रक्षन्तु त्रिवृता त्रिवृद्भिः ॥ ३ ॥
त्रीन्नाकांस्त्रीन्त्समुद्रांस्त्रीन्ब्रध्नांस्त्रीन्वैष्टपान् ।
त्रीन्मातरिश्वनस्त्रीन्त्सूर्यान्गोमृन्कल्पयामि ते ॥ ४ ॥
घृतेन त्वा समुक्षाम्यग्न आज्येन वर्धयन् ।
अग्नेश्चन्द्रस्य सूर्यस्य मा प्राणं मायिनो दभन् ॥ ५ ॥
मा वः प्राणं मा वोऽपानं मा हरो मायिनो दभन् ।
भ्राजन्तो विश्ववेदसो देवा दैव्येन धावत ॥ ६ ॥
प्राणेनाग्निं सं सृजति वातः प्राणेन संहितः ।
प्राणेनं विश्वतोमुखं सूर्यं देवा अजनयन् ॥ ७ ॥
आयुषायुष्कृतां जीवायुष्माञ्जीव मा मृथाः ।
प्राणेनात्मन्वतां जीव मा मृत्योरुदगा वशम् ॥ ८ ॥
देवानां निहितं निधिं यमिन्द्रोऽन्वविन्दत्पथिभिर्देवयानैः ।
आपो हिरण्यं जुगुपुस्त्रिवृद्भिस्तास्त्वा रक्षन्तु त्रिवृता त्रिवृद्भिः ॥ ९ ॥
त्रयस्त्रिंशद्देवतास्त्रीणि च वीर्याणि प्रियायमाणा जुगुपुरप्स्वन्तः ।
अस्मिंश्चन्द्रे अधि यद्धिरण्यं तेनायं कृणवद्वीर्याणि ॥ १० ॥
ये देवा दिव्येकादश स्थ ते देवासो हविरिदं जुषध्वम् ॥ ११ ॥
ये देवा अन्तरिक्ष एकादश स्थ ते देवासो हविरिदं जुषध्वम् ॥ १२ ॥
ये देवाः पृथिव्यामेकादश स्थ ते देवासो हविरिदं जुषध्वम् ॥ १३ ॥
असपत्नं पुरस्तात्पश्चान्नो अभयं कृतम् ।
सविता मा दक्षिणत उत्तरान्मा शचीपतिः ॥ १४ ॥
दिवो मादित्या रक्षन्तु भूम्या रक्षन्त्वग्नयः ।
इन्द्राग्नी रक्षतां मा पुरस्तादश्विनावभितः शर्म यच्छताम् ।
तिरश्चीनघ्न्या रक्षतु जातवेदा भूतकृतो मे सर्वतः सन्तु वर्म ॥ १५ ॥

[२८] अष्टाविंशं सूक्तम्

ऋषिः—ब्रह्मा ॥ देवता—दर्भमणिः ॥ छन्दः—अनुष्टुप् ॥

इमं बध्नामि ते मणिं दीर्घायुत्वाय तेजसे ।
दर्भं संपत्नदम्भनं द्विषतस्तपनं हृदः ॥ १ ॥
द्विषतस्तापयन्हृदः शत्रूणां तापयन्मनः ।
दुर्हार्दः सर्वांस्त्वं दर्भ घर्मइवाभीन्त्संतापयन् ॥ २ ॥
घर्मइवाभितपन्दर्भ द्विषतो नितपन्मणे ।
हृदः सपत्नानां भिन्द्धीन्द्रइव विरुजं बलम् ॥ ३ ॥
भिन्द्धि दर्भ सपत्नानां हृदयं द्विषतां मणे ।
उद्यन्त्वर्चमिव भूम्याः शिर एषां वि पातय ॥ ४ ॥
भिन्द्धि दर्भ सपत्नान्मे भिन्द्धि मे पृतनायतः ।
भिन्द्धि मे सर्वान्दुर्हार्दो भिन्द्धि मे द्विषतो मणे ॥ ५ ॥
छिन्द्धि दर्भ सपत्नान्मे छिन्द्धि मे पृतनायतः ।
छिन्द्धि मे सर्वान्दुर्हार्दश्छिन्द्धि मे द्विषतो मणे ॥ ६ ॥
वृश्च दर्भ सपत्नान्मे वृश्च मे पृतनायतः
वृश्च मे सर्वान्दुर्हार्दो वृश्च मे द्विषतो मणे ॥ ७ ॥
कृन्त दर्भ सपत्नान्मे कृन्त मे पृतनायतः ।
कृन्त मे सर्वान्दुर्हार्दः कृन्त मे द्विषतो मणे ॥ ८ ॥
पिंश दर्भ सपत्नान्मे पिंश मे पृतनायतः ।
पिंश मे सर्वान्दुर्हार्दः पिंश मे द्विषतो मणे ॥ ९ ॥
विध्य दर्भ सपत्नान्मे विध्य मे पृतनायतः ।
विध्य मे सर्वान्दुर्हार्दो विध्य मे द्विषतो मणे ॥ १० ॥

[२९] एकोनत्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—ब्रह्मा ॥ देवता—दर्भमणिः ॥ छन्दः—अनुष्टुप् ॥

निक्ष दर्भ सपत्नान्मे निक्ष मे पृतनायतः ।
निक्ष मे सर्वान्दुर्हार्दो निक्ष मे द्विषतो मणे ॥ १ ॥
तृन्द्धि दर्भ सपत्नान्मे तृन्द्धि मे पृतनायतः ।
तृन्द्धि मे सर्वान्दुर्हार्दस्तृन्द्धि मे द्विषतो मणे ॥ २ ॥
रुन्द्धि दर्भ सपत्नान्मे रुन्द्धि मे पृतनायतः ।
रुन्द्धि मे सर्वान्दुर्हार्दो रुन्द्धि मे द्विषतो मणे ॥ ३ ॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मृण दर्भ सपत्नान्मे मृण मे पृतनायतः।
मृण मे सर्वान्दुर्हार्दो मृण मे द्विषतो मणे॥ ४॥
मन्थ दर्भ सपत्नान्मे मन्थ मे पृतनायतः।
मन्थ मे सर्वान्दुर्हार्दो मन्थ मे द्विषतो मणे॥ ५॥
पिण्ड्डि दर्भ सपत्नान्मे पिण्ड्डि मे पृतनायतः।
पिण्ड्डि मे सर्वान्दुर्हार्दः पिण्ड्डि मे द्विषतो मणे॥ ६॥
ओष दर्भ सपत्नान्मे ओष मे पृतनायतः।
ओष मे सर्वान्दुर्हार्द ओष मे द्विषतो मणे॥ ७॥
दह दर्भ सपत्नान्मे दह मे पृतनायतः।
दह मे सर्वान्दुर्हार्दो दह मे द्विषतो मणे॥ ८॥
जहि दर्भ सपत्नान्मे जहि मे पृतनायतः।
जहि मे सर्वान्दुर्हार्दो जहि मे द्विषतो मणे॥ ९॥

[३०] त्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—ब्रह्मा॥ देवता—दर्भमणिः॥ छन्दः—अनुष्टुप्॥

यत्ते दर्भ जरामृत्युः शतं वर्मसु वर्म ते।
तेनेमं वर्मिणं कृत्वा सपत्नां जहि वीर्यैः॥ १॥
शतं ते दर्भ वर्माणि सहस्रं वीर्याणि ते।
तमस्मै विश्वे त्वां देवा जरसे भर्तवा अदुः॥ २॥
त्वामाहुर्देववर्म त्वां दर्भ ब्रह्मणस्पतिम्।
त्वामिन्द्रस्याहुर्वर्म त्वं राष्ट्राणि रक्षसि॥ ३॥
सपत्नक्षयणं दर्भ द्विषतस्तपनं हृदः।
मणिं क्षत्रस्य वर्धनं तनूपानं कृणोमि ते॥ ४॥
यत्समुद्रो अभ्यक्रन्दत्पर्जन्यो विद्युता सह।
ततो हिरण्ययो बिन्दुस्ततो दुर्भो अजायत॥ ५॥

[३१] एकत्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—सविता (पुष्टिकामः)॥ देवता—औदुम्बरमणिः॥ छन्दः—१-४, ७-१० अनुष्टुप्; ५, १२ त्रिष्टुप्; ६ विराट्प्रस्तारपङ्क्तिः; ११, १३ पञ्चपदाशक्वरी; १४ विराडास्तारपङ्क्तिः॥

औदुम्बरेण मणिना पुष्टिकामाय वेधसा।
पशूनां सर्वेषां स्फातिं गोष्ठे मे सविता करत्॥ १॥
यो नो अग्निर्गार्हपत्यः पशूनामधिपा असत्।
औदुम्बरो वृषा मणिः सं मा सृजतु पुष्ट्या॥ २॥
करीषिणीं फलवतीं स्वधामिरां च नो गृहे।
औदुम्बरस्य तेजसा धाता पुष्टिं दधातु मे॥ ३॥
यद् द्विपाच्च चतुष्पाच्च यान्यन्नानि ये रसाः।
गृह्णेऽहं त्वेषां भूमानं बिभ्रदौदुम्बरं मणिम्॥ ४॥
पुष्टिं पशूनां परि जग्रभाहं चतुष्पदां द्विपदां यच्च धान्यम्।
पयः पशूनां रसमोषधीनां बृहस्पतिः सविता मे नि यच्छात्॥ ५॥
अहं पशूनामधिपा असानि मयि पुष्टं पुष्टपतिर्दधातु।
मह्यमौदुम्बरो मणिर्द्रविणानि नि यच्छतु॥ ६॥
उप मौदुम्बरो मणिः प्रजया च धनेन च।
इन्द्रेण जिन्वितो मणिरा मागन्त्सह वर्चसा॥ ७॥
देवो मणिः सपत्नहा धनसा धनसातये।
पशोरन्नस्य भूमानं गवां स्फातिं नि यच्छतु॥ ८॥
यथाग्ने त्वं वनस्पते पुष्ट्या सह जज्ञिषे।
एवा धनस्य मे स्फातिमा दधातु सरस्वती॥ ९॥
आ मे धनं सरस्वती पयस्फातिं च धान्यम्।
सिनीवाल्युपा वहादयं चौदुम्बरो मणिः॥ १०॥
त्वं मणीनामधिपा वृषासि त्वयि पुष्टं पुष्टपतिर्जजान। त्वयीमे वाजा द्रविणानि सर्वौदुम्बरः स त्वमस्मत्सहस्वादरातिममतिं क्षुधं च॥ ११॥
ग्रामणीरसि ग्रामणीरुत्थायाभिषिक्तोऽभि मा सिञ्च वर्चसा।
तेजोऽसि तेजो मयि धारयाधि रयिरसि रयिं मे धेहि॥ १२॥
पुष्टिरसि पुष्ट्या मा समङ्ग्धि गृहमेधी गृहपतिं मा कृणु।
औदुम्बरः स त्वमस्मासु धेहि रयिं च नः सर्ववीरं नि यच्छ रायस्पोषाय प्रति मुञ्चे अहं त्वाम्॥ १३॥
अयमौदुम्बरो मणिर्वीरो वीराय बध्यते।
स नः सुनिं मधुमतीं कृणोतु रयिं च नः सर्ववीरं नि यच्छात्॥ १४॥

[३२] द्वात्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—भृगुः (आयुष्कामः)॥ देवता—दर्भः॥ छन्दः—१-७ अनुष्टुप्; ८ पुरस्ताद्बृहती; ९ त्रिष्टुप्; १० जगती॥

शतकाण्डो दुश्च्यवनः सहस्रपर्ण उत्तिरः।
दुर्भो य उग्र ओषधिस्तं ते बध्नाम्यायुषे॥ १॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नास्य केशान्प्र वपन्ति नोरसि ताडमा घ्नते।
यस्मा अच्छिन्नपर्णेन दुर्भेण शर्म यच्छति॥ २॥
दिवि ते तूलमोषधे पृथिव्यामसि निष्ठितः।
त्वया सहस्रकाण्डेनायुः प्र वर्धयामहे ॥ ३॥
तिस्रो दिवो अत्यतृणत्तिस्र इमाः पृथिवीरुत।
त्वयाहं दुर्हार्दो जिह्वां नि तृणद्मि वचांसि॥ ४॥
त्वमसि सहमानोऽहमस्मि सहस्वान् ।
उभौ सहस्वन्तौ भूत्वा सपत्नान्त्सहीषीमहि॥ ५॥
सहस्व नो अभिमातिं सहस्व पृतनायतः ।
सहस्व सर्वान्दुर्हार्दः सुहार्दो मे बहून्कृधि॥ ६॥
दुर्भेण देवजातेन दिवि ष्टम्भेन शश्वदित्।
तेनाहं शश्वतो जनाँ असनं सनवानि च॥ ७॥
प्रियं मा दर्भ कृणु ब्रह्मराजन्याभ्यां शूद्राय चार्याय च ।
यस्मै च कामयामहे सर्वस्मै च विपश्यते ॥ ८॥
यो जायमानः पृथिवीमदूंहद्यो अस्तभ्नादन्तरिक्षं दिवं च ।
यं बिभ्रतं ननु पाप्मा विवेद स नोऽयं दुर्भो वरुणो दिवा कः॥ ९॥
सपत्नहा शतकाण्डः सहस्वानोषधीनां प्रथमः सं बभूव।
स नोऽयं दुर्भः परि पातु विश्वतस्तेन साक्षीय पृतनाः पृतन्यतः॥ १०॥

[३३] त्रयस्त्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—भृगुः॥ देवता—दर्भः॥ छन्दः—१ जगती; २, ५ त्रिष्टुप्; ३ आर्षीपङ्क्तिः; ४ आस्तारपङ्क्तिः॥

सहस्राधः शतकाण्डः पर्यस्वानुपामग्निर्वीरुधां राजसूर्यम् ।
स नोऽयं दुर्भः परि पातु विश्वतो देवो मणिरायुषा सं सृजाति नः॥ १॥
घृतादुल्लुप्तो मधुमान्पयस्वान्भूमिदूंहोऽच्युतश्च्यावयिष्णुः ।
नुदन्त्सपत्नानधरांश्च कृण्वन्दर्भो रोह महतामिन्द्रियेण ॥ २॥
त्वं भूमिमत्येष्योजसा त्वं वेद्यां सीदसि चारुरध्वरे ।
त्वां पवित्रमृषयोऽभरन्त त्वं पुनीहि दुरितान्यस्मत् ॥ ३॥
तीक्ष्णो राजा विषासही रक्षोहा विश्वचर्षणिः ।
ओजो देवानां बलमुग्रमेतत्तं ते बध्नामि जरसे स्वस्तये ॥ ४॥
दुर्भेण त्वं कृणवद्वीर्याणि दुर्भं बिभ्रदात्मना मा व्यथिष्ठाः ।
अतिष्ठाया वर्चसाधान्यान्त्सूर्य इवा भाहि प्रदिशश्चतस्रः ॥ ५॥

अथ पञ्चमोऽनुवाकः [३४] चतुस्त्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—अङ्गिराः॥ देवता—जङ्गिडो वनस्पतिः॥ छन्दः—अनुष्टुप्॥

जङ्गिडोऽसि जङ्गिडो रक्षितासि जङ्गिडः।
द्विपाच्चतुष्पादस्माकं सर्वं रक्षतु जङ्गिडः॥ १॥
या गृत्स्यस्त्रिपञ्चाशीः शतं कृत्याकृतश्च ये।
सर्वान्विनक्तु तेजसोऽरसां जङ्गिडस्करत् ॥ २॥
अरसं कृत्रिमं नादमरसाः सन्त विस्रसः।
अपेतो जङ्गिडामतिमिषुमस्तेव शातय ॥ ३॥
कृत्यादूषण एवायमथो अरातिदूषणः ।
अथो सहस्वञ्जङ्गिडः प्र ण आयूंषि तारिषत्॥ ४॥
स जङ्गिडस्य महिमा परि णः पातु विश्वतः।
विष्कन्धं येन सासहु संस्कन्धमोज ओजसा॥ ५॥
त्रिष्ठा देवा अजनयन्त्रिष्ठितं भूम्यामधि।
तमु त्वाङ्गिरा इति ब्राह्मणाः पूर्व्या विदुः॥ ६॥
न त्वा पूर्वा ओषधयो न त्वा तरन्ति या नवाः।
विबाधु उग्रो जङ्गिडः परिपाणः सुमङ्गलः॥ ७॥
अथोपदान भगवो जङ्गिडामितवीर्य ।
पुरा त उग्रा ग्रसत उपेन्द्रो वीर्यं ददौ ॥ ८॥
उग्र इत्ते वनस्पत इन्द्र ओज्मानमा दधौ ।
अमीवाः सर्वाश्चातय जहि रक्षांस्योषधे ॥ ९॥
आशरीकं विशरीकं बलासं पृष्ट्यामयम् ।
तक्मानं विश्वशारदमरसां जङ्गिडस्करत् ॥ १०॥

[३५] पञ्चत्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—अङ्गिराः॥ देवता—जङ्गिडो वनस्पतिः॥ छन्दः—१, २, ५ अनुष्टुप्; ३ पथ्यापङ्क्तिः; ४ निचृत्त्रिष्टुप्॥

इन्द्रस्य नामं गृह्णन्त ऋषयो जङ्गिडं ददुः।
देवा यं चक्रुर्भेषजमग्रे विष्कन्धदूषणम् ॥ १॥
स नो रक्षतु जङ्गिडो धनपालो धनेव ।
देवा यं चक्रुर्ब्राह्मणाः परिपाणमरातिहम् ॥ २॥
दुर्हार्दः संधोरं चक्षुः पापकृत्वानमागमम् ।
तास्त्वं सहस्रचक्षो प्रतीबोधेन नाशय परिपाणोऽसि जङ्गिडः॥ ३॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

परि मा दिवः परि मा पृथिव्याः पर्यन्तरिक्षात्परि मा वीरुद्भ्यः।
परि मा भूतात्परि मोत भव्यादिशोदिशो जङ्गिडः पात्वस्मान्॥ ४॥
य ऋष्णवो देवकृता य उतो ववृतेऽन्यः।
सर्वांस्तान्विश्वभेषजोऽरसां जङ्गिडस्करत् ॥ ५॥

[३६] षट्त्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—ब्रह्मा॥ देवता—शतवारः॥ छन्दः—अनुष्टुप्॥

शतवारो अनीनशद्यक्ष्मान्रक्षांसि तेजसा ।
आरोहन्वर्चसा सह मणिर्दुर्णाम्नाचातनः ॥ १॥
शृङ्गाभ्यां रक्षो नुदते मूलेन यातुधान्यः।
मध्येन यक्ष्मं बाधते नैनं पाप्मातितत्रति॥ २॥
ये यक्ष्मासो अर्भका महान्तो ये च शब्दिनः।
सर्वान्दुर्णाम्नहा मणिः शतवारो अनीनशत्॥ ३॥
शतं वीरानजनयच्छतं यक्ष्मानपावपत् ।
दुर्णाम्नः सर्वान्हत्वाव रक्षांसि धूनुते ॥ ४॥
हिरण्यशृङ्ग ऋषभः शातवारो अयं मणिः।
दुर्णाम्नः सर्वांस्तृड्ढाव रक्षांस्यक्रमीत् ॥ ५॥
शतमुहं दुर्णाम्नीनां गन्धर्वाप्सरसां शतम् ।
शतं शश्वन्वतीनां शतवारेण वारये ॥ ६॥

[३७] सप्तत्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—१ त्रिष्टुप्; २ आस्तारपङ्क्तिः; ३ त्रिपदामह्यबृहती; ४ पुरउष्णिक्॥

इदं वर्चो अग्निना दत्तमागन्भर्गो यशः सह ओजो वयो बलम्।
त्रयस्त्रिंशद्यानि च वीर्याणि तान्यग्निः प्र ददातु मे ॥ १॥
वर्च आ धेहि मे तन्वां३ सह ओजो वयो बलम् ।
इन्द्रियाय त्वा कर्मणे वीर्याय प्रति गृह्णामि शतशारदाय ॥ २॥
ऊर्जे त्वा बलाय त्वौजसे सहसे त्वा ।
अभिभूयाय त्वा राष्ट्रभृत्याय पर्यूहामि शतशारदाय॥ ३॥
ऋतुभ्यष्ट्वार्तवेभ्यो मादभ्यः संवत्सरेभ्यः ।
धात्रे विधात्रे समृधे भूतस्य पतये यजे ॥ ४॥

[३८] अष्टात्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—अथर्वा॥ देवता—गुल्गुलः॥ छन्दः—१ अनुष्टुप्; २ चुतष्पदोष्णिक्; ३ प्राजापत्याऽनुष्टुप्॥

न तं यक्ष्मा अरुन्धते नैनं शपथो अश्नुते।
यं भेषजस्य गुल्गुलोः सुरभिर्गन्धो अश्नुते॥ १॥
विष्वञ्चस्तस्माद्यक्ष्मा मृगा अश्वाइवेरते ।
यद् गुल्गुलु सैन्धवं यद्वाप्यासि समुद्रियम्॥ २॥
उभयोरग्रभं नामास्मा अरिष्टतातये ॥ ३॥

[३९] एकोनचत्वारिंशं सुक्तम्

ऋषिः—भृग्वङ्गिराः॥ देवता—कुष्ठः॥ छन्दः—१, ९, १० अनुष्टुप्; २, ३ पञ्चपदापथ्यापङ्क्तिः; ४ षट्पदाजगती; ५ सप्तपदाशक्वरी; ६-८ अष्टिः॥

एतु देवस्त्रायमाणः कुष्ठो हिमवतस्परि ।
तक्मानं सर्वं नाशय सर्वाश्च यातुधान्यः॥ १॥
त्रीणि ते कुष्ठ नामानि नद्यमारो नद्यारिषः।
नद्यायं पुरुषो रिषत् ।
यस्मै परिब्रवीमि त्वा सायंप्रातरथो दिवा॥ २॥
जीवला नाम ते माता जीवन्तो नाम ते पिता।
नद्यायं पुरुषो रिषत् ।
यस्मै परिब्रवीमि त्वा सायंप्रातरथो दिवा॥ ३॥
उत्तमो अस्योषधीनामनड्वाञ्जगतामिव व्याघ्रः
श्वपदामिव। नद्यायं पुरुषो रिषत् ।
यस्मै परिब्रवीमि त्वा सायंप्रातरथो दिवा॥ ४॥
त्रिः शाम्बुभ्यो अङ्गिरेभ्यस्त्रिरादित्येभ्यस्परि।
त्रिर्जातो विश्वदेवेभ्यः ।
स कुष्ठो विश्वभेषजः साकं सोमेन तिष्ठति।
तक्मानं सर्वं नाशय सर्वाश्च यातुधान्यः॥ ५॥
अश्वत्थो देवसदनस्तृतीयस्यामितो दिवि ।
तत्रामृतस्य चक्षणं ततः कुष्ठो अजायत ।
स कुष्ठो विश्वभेषजः साकं सोमेन तिष्ठति।
तक्मानं सर्वं नाशय सर्वाश्च यातुधान्यः॥ ६॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

हिरण्ययी नौरचरद्धिरण्यबन्धना दिवि ।
तत्रामृतस्य चक्षणं ततः कुष्ठो अजायत।
स कुष्ठो विश्वभेषजः साकं सोमेन तिष्ठति।
तक्मानं सर्वं नाशय सर्वीश्च यातुधान्यः॥ ७॥
यत्र नावप्रभ्रंशनं यत्र हिमवतः शिरः।
तत्रामृतस्य चक्षणं ततः कुष्ठो अजायत।
स कुष्ठो विश्वभेषजः साकं सोमेन तिष्ठति।
तक्मानं सर्वं नाशय सर्वीश्च यातुधान्यः॥ ८॥
यं त्वा वेद पूर्व इक्ष्वाकुो यं वा त्वा कुष्ठ काम्यः।
यं वा वसो यमात्स्यस्तेनासि विश्वभेषजः॥ ९॥
शीर्षलोकं तृतीयकं सदन्दिर्यश्चं हायनः।
तक्मानं विश्वधावीर्याधराञ्चं परा सुव ॥ १०॥

[४०] चत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—ब्रह्मा॥ देवता—विश्वे देवाः; बृहस्पतिः॥ छन्दः—१ परानुष्टुप्त्रिष्टुप्; २ पुरःककुम्मत्युपरिष्टाद्बृहती; ३ बृहतीगर्भाऽनुष्टुप्; ४ त्रिपदाऽऽर्षीगायत्री॥

यन्मे छिद्रं मनसो यच्च वाचः सरस्वती मन्युमन्तं जगाम।
विश्वैस्तद्देवैः सह संविदानः सं दधातु बृहस्पतिः ॥ १॥
मा न आपो मेधां मा ब्रह्म प्र मथिष्टन ।
शुष्यदा यूयं स्यन्दध्वमुपहूतोऽहं सुमेधा वर्चस्वी ॥ २॥
मा नो मेधां मा नो दीक्षां मा नो हिंसिष्टं यत्तपः ।
शिवा नः शं सन्त्वायुषे शिवा भवन्तु मातरः ॥ ३॥
या नः पीपरदश्विना ज्योतिष्मती तमस्तिरः ।
तामस्मे रासताामिषम् ॥ ४॥

[४१] एकचत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—ब्रह्मा॥ देवता—तपः॥ छन्दः—त्रिष्टुप्॥

भद्रमिच्छन्त ऋषयः स्वर्विदस्तपो दीक्षामुपनिषेदुरग्रे ।
ततो राष्ट्रं बलमोजश्च जातं तदस्मै देवा उपसंनमन्तु॥ १॥

[४२] द्विचत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—ब्रह्मा॥ देवता—ब्रह्म ॥ छन्दः—१ अनुष्टुप्; २ ककुम्मतीपथ्यापङ्क्तिः; ३ त्रिष्टुप्; ४ जगती॥

ब्रह्म होता ब्रह्मा यज्ञा ब्रह्मणा स्वरवो मिताः ।
अध्वर्युर्ब्रह्मणो जातो ब्रह्मणोऽन्तर्हितं हविः ॥ १॥
ब्रह्म स्रुचो घृतवतीर्ब्रह्मणा वेदिरुद्धिता। ब्रह्मा यज्ञस्य तत्त्वं च ऋत्विजो ये हविष्कृतः। शमिताय स्वाहा ॥ २॥
अंहोमुचे प्र भरे मनीषामा सुत्राव्णे सुमतिमावृणानः ।
इदमिन्द्र प्रति हव्यं गृभाय सत्याः सन्तु यजमानस्य कामाः॥ ३॥
अंहोमुचं वृषभं यज्ञियानां विराजन्तं प्रथममध्वराणाम्।
अपां नपातमश्विना हुवे धियं इन्द्रियेण त इन्द्रियं दत्तमोजः॥ ४॥

[४३] त्रिचत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—ब्रह्मा॥ देवता—अग्न्यादयो मन्त्रोक्ताः॥ छन्दः—शङ्कुमतीपथ्यापङ्क्तिः॥

यत्र ब्रह्मविदो यान्ति दीक्षया तपसा सह ।
अग्निर्मा तत्र नयत्वग्निर्मेधा दधातु मे। अग्नये स्वाहा ॥ १॥
यत्र ब्रह्मविदो यान्ति दीक्षया तपसा सह ।
वायुर्मा तत्र नयतु वायुः प्राणान्दधातु मे। वायवे स्वाहा॥ २॥
यत्र ब्रह्मविदो यान्ति दीक्षया तपसा सह ।
सूर्यो मा तत्र नयतु चक्षुः सूर्यो दधातु मे। सूर्याय स्वाहा॥ ३॥
यत्र ब्रह्मविदो यान्ति दीक्षया तपसा सह ।
चन्द्रो मा तत्र नयतु मनश्चन्द्रो दधातु मे। चन्द्राय स्वाहा॥ ४॥
यत्र ब्रह्मविदो यान्ति दीक्षया तपसा सह ।
सोमो मा तत्र नयतु पयः सोमो दधातु मे। सोमाय स्वाहा॥ ५॥
यत्र ब्रह्मविदो यान्ति दीक्षया तपसा सह ।
इन्द्रो मा तत्र नयतु बलमिन्द्रो ददातु मे। इन्द्राय स्वाहा॥ ६॥
यत्र ब्रह्मविदो यान्ति दीक्षया तपसा सह ।
आपो मा तत्र नयन्त्वमृतं मोप तिष्ठतु। अद्भ्यः स्वाहा॥ ७॥
यत्र ब्रह्मविदो यान्ति दीक्षया तपसा सह ।
ब्रह्मा मा तत्र नयतु ब्रह्मा ब्रह्म दधातु मे। ब्रह्मणे स्वाहा॥ ८॥

[४४] चतुश्चत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—भृगुः॥ देवता—आञ्जनम्; ८, ९ वरुणः॥ छन्दः—१-३, ६-१० अनुष्टुप्; ४ चतुष्पदाशङ्कुमत्युष्णिक्; ५ त्रिपदानिचृद्विषमागायत्री॥

आयुषोऽसि प्रतरणं विप्रं भेषजमुच्यसे।
तदाञ्जन त्वं शंताते शमापो अभयं कृतम्॥ १॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

यो हरिमा जायान्योऽङ्गभेदो विसल्पकः ।
सर्वं ते यक्ष्ममङ्गेभ्यो बहिर्निर्हन्त्वाञ्जनम् ॥ २ ॥
आञ्जनं पृथिव्यां जातं भद्रं पुरुषजीवनम् ।
कृणोत्वप्रमायुकं रथजूतिमनागसम् ॥ ३ ॥
प्राणं प्राणं त्रायस्वासो असवे मृड ।
निर्ऋते निर्ऋत्या नः पाशेभ्यो मुञ्च ॥ ४ ॥
सिन्धोर्गर्भोऽसि विद्युतां पुष्पम् ।
वातः प्राणः सूर्यश्चक्षुर्द्यावस्पर्यः ॥ ५ ॥
देवाञ्जन त्रैककुदं परि मा पाहि विश्वतः ।
न त्वा तरन्त्योषधयो बाह्याः पर्वतीया उत ॥ ६ ॥
वीरुदं मध्यमवासृपद्रक्षोहामीवचातनः ।
अमीवाः सर्वांश्चातयन्नाशयदभिभा इतः ॥ ७ ॥
बह्वीदं राजन्वरुणानृतमाह पूरुषः ।
तस्मात्सहस्रवीर्यं मुञ्च नः पर्यंहसः ॥ ८ ॥
यदापो अघ्न्या इति वरुणेति यदूचिम ।
तस्मात्सहस्रवीर्यं मुञ्च नः पर्यंहसः ॥ ९ ॥
मित्रश्च त्वा वरुणश्चानुप्रेयतुराञ्जन ।
तौ त्वानुगत्य दूरं भोगाय पुनरोहतुः ॥ १० ॥

[४५] पञ्चचत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—भृगुः ॥ देवता—१-५ आञ्जनम्; ६-१० अग्न्यादयो मन्त्रोक्ताः ॥
छन्दः—१, २ अनुष्टुप्; ३-५ त्रिष्टुप्; ६ विराण्महाबृहती;
७-१० निचृन्महाबृहती ॥

ऋणादृणमिव संनयन्कृत्यां कृत्याकृतो गृहम् ।
चक्षुर्मन्त्रस्य दुर्हार्दः पृष्टीरपि शृणाञ्जन ॥ १ ॥
यदस्मासु दुष्वप्न्यं यद्रोषु यच्च नो गृहे ।
अनामगस्तं च दुर्हार्दः प्रियः प्रति मुञ्चताम् ॥ २ ॥
अपामूर्ज ओजसो वावृधानमग्रेर्जातमधि जातवेदसः ।
चतुर्वीरं पर्वतीयं यदाञ्जनं दिशः प्रदिशः करदिच्छिवास्ते ॥ ३ ॥
चतुर्वीरं वध्यत आञ्जनं ते सर्वा दिशो अभयास्ते भवन्तु ।
ध्रुवस्तिष्ठासि सविनेव चायै ड्मा विशो अभि हरन्तु ते बलिम् ॥ ४ ॥
आक्षवैकं मणिमेकं कृष्णुष्व स्नाह्येकेना पिबैकमेषाम् ।
चतुर्वीरं नैर्ऋतेभ्यश्चतुर्भ्यो ग्राह्या बन्धेभ्यः परि पात्वस्मान् ॥ ५ ॥

अग्निर्माग्निनावतु प्राणायापानायायुषे वर्चस ।
ओजसे तेजसे स्वस्तयै सुभूतये स्वाहा ॥ ६ ॥
इन्द्रो मेन्द्रियेणावतु प्राणायापानायायुषे वर्चस ।
ओजसे तेजसे स्वस्तयै सुभूतये स्वाहा ॥ ७ ॥
सोमो मा सौम्येनावतु प्राणायापानायायुषे वर्चस ।
ओजसे तेजसे स्वस्तयै सुभूतये स्वाहा ॥ ८ ॥
भगो मा भगेनावतु प्राणायापानायायुषे वर्चस ।
ओजसे तेजसे स्वस्तयै सुभूतये स्वाहा ॥ ९ ॥
मरुतो मा गणैरवन्तु प्राणायापानायायुषे वर्चस ।
ओजसे तेजसे स्वस्तयै सुभूतये स्वाहा ॥ १० ॥

अथ षष्ठोऽनुवाकः [४६] षट्चत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—प्रजापतिः ॥ देवता—अस्तृतमणिः ॥ छन्दः—१ पञ्चपदाज्योतिष्मतीत्रिष्टुप्;
२ षट्पदाभुरिगशक्वरी; ३, ७ पञ्चपदापथ्यापङ्क्तिः; ४ चतुष्पदात्रिष्टुप्;
५ पञ्चपदातिशक्वरी; ६ पञ्चपदौष्णिग्गर्भाविराड्जगती ॥

प्रजापतिष्ट्वा बध्नात्प्रथममस्तृतं वीर्यायि कम् ।
तत्ते बध्नाम्यायुषे वर्चस ओजसे च बलाय चास्तृतस्त्वाभि रक्षतु ॥ १ ॥
ऊर्ध्वस्तिष्ठतु रक्षन्नप्रमादमस्तृतेमं मा त्वा दभन्पणयो यातुधानाः ।
इन्द्रइव दस्यूनव धूनुष्व पृतन्यतः सर्वा छत्रून्वि षहस्वास्तृतस्त्वाभि रक्षतु ॥ २ ॥
शतं च न प्रहरन्तो निघ्नन्तो न तस्थिरे ।
तस्मिन्नन्द्रः पर्यदत्त चक्षुः प्राणमथो बलमस्तृतस्त्वाभि रक्षतु ॥ ३ ॥
इन्द्रस्य त्वा वर्मणा परि धापयामो यो देवानामधिराजो बभूव ।
पुनस्त्वा देवाः प्र णयन्तु सर्वेऽस्तृतस्त्वाभि रक्षतु ॥ ४ ॥
अस्मिन्मणावेकशतं वीर्याणि सहस्रं प्राणा अस्मिन्नस्तृते । व्याघ्रः
शत्रूनभि तिष्ठ सर्वान्यस्त्वा पृतन्यादधरः सो अस्त्वस्तृतस्त्वाभि रक्षतु ॥ ५ ॥
घृतादुल्लुप्तो मधुमान्पयस्वान्त्सहस्रप्राणः शतयोनिर्वयोधाः ।
शंभूश्च मयोभूश्चोर्जस्वांश्च पयस्वांश्चास्तृतस्त्वाभि रक्षतु ॥ ६ ॥
यथा त्वमुत्तरोऽसो असपत्नः सपत्नहा ।
सजातानामसद्वशी तथा त्वा सविता करदस्तृतस्त्वाभि रक्षतु ॥ ७ ॥

[४७] सप्तचत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—गोपथः ॥ देवता—रात्रिः ॥ छन्दः—१ पथ्याबृहती; २ पञ्चपदाऽनुष्टुब्गर्भा-
परातिजगती; ३-५, ८, ९ अनुष्टुप्; ६ पुरस्ताद्बृहती; ७ षट्पदाजगती ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

आ रात्रि पार्थिवं रजः पितुरप्रायि धामभिः ।
दिवः सदांसि बृहती वि तिष्ठस आ त्वेषं वर्तते तमः ॥ १ ॥
न यस्याः पारं ददृशे न योर्युवद्विश्वमस्यां नि विशते यदेजति ।
अरिष्टासस्त उर्वि तमस्वति रात्रि पारमशीमहि भद्रे पारमशीमहि ॥ २ ॥
ये ते रात्रि नृचक्षसो द्रष्टारो नवतिर्नव ।
अशीतिः सन्त्यष्टा उतो ते सप्त सप्ततिः ॥ ३ ॥
षष्टिश्च षट् च रेवति पञ्चाशत्पञ्च सुम्नयि ।
चत्वारश्चत्वारिंशच्च त्रयस्त्रिंशच्च वाजिनि ॥ ४ ॥
द्वौ च ते विंशतिश्च ते रात्र्येकादशावमाः ।
तेभिर्नो अद्य पायुभिर्नु पाहि दुहितर्दिवः ॥ ५ ॥
रक्षा माकिर्नो अघशंस ईशत मा नो दुःशंस ईशत ।
मा नो अद्य गवां स्तेनो मावीनां वृक ईशत ॥ ६ ॥
माश्वानां भद्रे तस्करो मा नृणां यातुधान्यः ।
परमेभिः पथिभिः स्तेनो धावतु तस्करः ।
परेण दत्वती रज्जुः परेणाघायुरर्षतु ॥ ७ ॥
अधं रात्रि तृष्टधूममशीर्षाणमहिं कृणु ।
हनू वृकस्य जम्भयास्तेन तं द्रुपदे जहि ॥ ८ ॥
त्वयि रात्रि वसामसि स्वपिष्यामसि जागृहि ।
गोभ्यो नः शर्म यच्छाश्वेभ्यः पुरुषेभ्यः ॥ ९ ॥

[४८] अष्टचत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—गोपथः ॥ देवता—रात्रिः ॥ छन्दः—१ त्रिपदाऽऽर्षीगायत्री; २ त्रिपदाविराडनुष्टुप्; ३ बृहतीगर्भाऽनुष्टुप्; ४, ६ अनुष्टुप्; ५ पथ्यापङ्क्तिः ॥

अथो यानि च यस्मा हु यानि चान्तः परीणहि ।
तानि ते परि दद्मसि ॥ १ ॥
रात्रि मातरुषसे नः परि देहि ।
उषा नो अह्ने परि ददात्वहस्तुभ्यं विभावरि ॥ २ ॥
यत्किं चेदं पतयति यत्किं चेदं सरीसृपम् ।
यत्किं च पर्वतायासत्वं तस्मात्त्वं रात्रि पाहि नः ॥ ३ ॥
सा पश्चात्पाहि सा पुरः सोत्तरादधरादुत ।
गोपाय नो विभावरि स्तोतारस्त इह स्मसि ॥ ४ ॥
ये रात्रिमनुतिष्ठन्ति ये च भूतेषु जाग्रति ।
पशून्ये सर्वान्रक्षन्ति ते न आत्मसु जाग्रति ते नः पशुषु जाग्रति ॥ ५ ॥
वेद वै रात्रि ते नाम घृताची नाम वा असि ।
तां त्वां भरद्वाजो वेद सा नो वित्तेऽधि जाग्रति ॥ ६ ॥

[४९] एकोनपञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—१-९ गोपथः; १० गोपथो भरद्वाजश्च ॥ देवता—रात्रिः ॥ छन्दः—१-५, ८ त्रिष्टुप्; ६ आस्तारपङ्क्तिः; ७ पथ्यापङ्क्तिः; ९ अनुष्टुप्; १० षट्पदाजगती ॥

इषिरा योषा युवतिर्दमूना रात्री देवस्य सवितुर्भगस्य ।
अश्वक्षभा सुहवा संभृतश्रीरा पप्रौ द्यावापृथिवी महित्वा ॥ १ ॥
अति विश्वान्यरुहद्भ्भीरो वर्षिष्ठमरुहन्त श्रविष्ठाः ।
उशती रात्र्यनु सा भद्राभि तिष्ठते मित्रइव स्वधाभिः ॥ २ ॥
वर्ये वन्दे सुभगे सुजात आजगन्रात्रि सुमना इह स्याम् ।
अस्मांस्त्रायस्व नर्याणि जाता अथो यानि गव्यानि पुष्ट्या ॥ ३ ॥
सिंहस्य रात्र्युशती पीषस्य व्याघ्रस्य द्वीपिनो वर्च आ ददे ।
अश्वस्य ब्रध्नं पुरुषस्य मायुं पुरु रूपाणि कृणुषे विभाती ॥ ४ ॥
शिवां रात्रिमनुसूर्यं च हिमस्य माता सुहवा नो अस्तु ।
अस्य स्तोमस्य सुभगे नि बोध येन त्वा वन्दे विश्वासु दिक्षु ॥ ५ ॥
स्तोमस्य नो विभावरि रात्रि राजेव जोषसे ।
असाम सर्ववीरा भवाम सर्ववेदसो व्युच्छन्तीरनूषसः ॥ ६ ॥
शम्या हु नाम दधिषे मम दिप्सन्ति ये धना ।
रात्रीहि तानसुतपा य स्तेनो न विद्यते यत्पुनर्न विद्यते ॥ ७ ॥
भद्रासि रात्रि चमसो न विष्टो विष्वङ् गोरूपं युवतिर्बिभर्षि ।
चक्षुष्मती मे उशती वपूंषि प्रति त्वं दिव्या न क्षाममुक्थाः ॥ ८ ॥
यो अद्य स्तेन आयत्यघायुर्मर्त्यो रिपुः ।
रात्री तस्य प्रतीत्य प्र ग्रीवाः प्र शिरो हनत् ॥ ९ ॥
प्र पादौ न यथायति प्र हस्तौ न यथाशिषत् ।
यो मलिम्लुरुपायति स संपिष्टो अपायति ।
अपायति स्वपायति शुष्के स्थाणावपायति ॥ १० ॥

[५०] पञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—गोपथः ॥ देवता—रात्रिः ॥ छन्दः—अनुष्टुप् ॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अधं रात्रि तृष्टधूममशीर्षाणमहिं कृणु ।
अक्षौ वृकस्य निर्जह्यास्तेन तं द्रुपदे जहि ॥ १ ॥
ये ते रात्र्यनड्वाहस्तीक्ष्णशृङ्गाः स्वाशवः ।
तेभिर्नो अद्य पारयाति दुर्गाणि विश्वहा ॥ २ ॥
रात्रिं रात्रिमरिष्यन्तस्तरेम तन्वा वयम् ।
गम्भीरमप्लवाइव न तरेयुररातयः ॥ ३ ॥
यथा शाम्याकः प्रपतन्नपवान्नानुविद्यते ।
एवा रात्रि प्र पातय यो अस्माँ अभ्यघायति ॥ ४ ॥
अप स्तेनं वासो गोअजमुत तस्करम् ।
अथो यो अर्वतः शिरोऽभिधाय निनीषति ॥ ५ ॥
यद्या रात्रि सुभगे विभजन्त्यो वसु ।
यदेतदस्मान्भोजय यथेदन्यानुपायसि ॥ ६ ॥
उषसे नः परि देहि सर्वान्रात्र्यनागसः ।
उषा नो अह्ने आ भजादहस्तुभ्यं विभावरि ॥ ७ ॥

[५१] एकपञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—ब्रह्मा ॥ देवता—१ आत्मा; २ सविता ॥ छन्दः—१ एकपदाब्राह्मयनुष्टुप्; २ त्रिपदायवमध्योष्णिक् ॥

अयुतोऽहमयुतो म आत्मायुतं मे चक्षुरयुतं मे श्रोत्रमयुतो
मे प्राणोऽयुतो मेऽपानोऽयुतो मे व्यानोऽयुतोऽहं सर्वः ॥ १ ॥
देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्यां प्रसूत आ रभे ॥ २ ॥

[५२] द्विपञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—ब्रह्मा ॥ देवता—कामः ॥ छन्दः—१, २, ४ त्रिष्टुप्; ३ चतुष्पदोष्णिक्; ५ उपरिष्टाद्बृहती ॥

कामस्तदग्रे समवर्तत मनसो रेतः प्रथमं यदासीत् ।
स कामं कामेन बृहता सयोनी रायस्पोषं यजमानाय धेहि ॥ १ ॥
त्वं काम सहसासि प्रतिष्ठितो विभुर्विभावा सख आ सखीयते ।
त्वमुग्रः पृतनासु सासहिः सह ओजो यजमानाय धेहि ॥ २ ॥
दूराच्चक्रमानाय प्रतिपाणायाक्षये ।
आस्मा अशृण्वन्नाशाः कामेनाजनयन्स्त्रियः ॥ ३ ॥
कामेन मा काम आगन्हृदयाद्धृदयं परि ।
यदमीषामदो मनस्तदैतूप मामिह ॥ ४ ॥
यत्काम कामयमाना इदं कृण्मसि ते हविः ।
तन्नः सर्वं समृध्यतामथैतस्य हविषो वीहि स्वाहा ॥ ५ ॥

[५३] त्रिपञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—भृगुः ॥ देवता—कालः ॥ छन्दः—१-४ त्रिष्टुप्; ५ निचृत्पुरस्ताद्बृहती; ६-१० अनुष्टुप् ॥

कालो अश्वो वहति सप्तरश्मिः सहस्राक्षो अजरो भूरिरेताः ।
तमा रोहन्ति कवयो विपश्चितस्तस्य चक्रा भुवनानि विश्वा ॥ १ ॥
सप्त चक्रान्वहति काल एष सप्तास्य नाभीरमृतं न्वक्षः ।
स इमा विश्वा भुवनान्यञ्जत्कालः स ईयते प्रथमो नु देवः ॥ २ ॥
पूर्णः कुम्भोऽधि काल आहितस्तं वै पश्यामो बहुधा नु सन्तः ।
स इमा विश्वा भुवनानि प्रत्यङ् कालं तमाहुः परमे व्योमन् ॥ ३ ॥
स एव सं भुवनान्याभरत्स एव सं भुवनानि पर्यैत् ।
पिता सन्नभवत्पुत्र एषां तस्माद्वै नान्यत्परमस्ति तेजः ॥ ४ ॥
कालोऽमूं दिवमजनयत्काल इमाः पृथिवीरुत ।
काले ह भूतं भव्यं चेषितं ह वि तिष्ठते ॥ ५ ॥
कालो भूतिमसृजत काले तपति सूर्यः ।
काले ह विश्वा भूतानि काले चक्षुर्वि पश्यति ॥ ६ ॥
काले मनः काले प्राणः काले नाम समाहितम् ।
कालेन सर्वा नन्दन्त्यागतेन प्रजा इमाः ॥ ७ ॥
काले तपः काले ज्येष्ठं काले ब्रह्म समाहितम् ।
कालो ह सर्वस्येश्वरो यः पितासीत्प्रजापतेः ॥ ८ ॥
तेनेषितं तेन जातं तदु तस्मिन्प्रतिष्ठितम् ।
कालो ह ब्रह्म भूत्वा बिभर्ति परमेष्ठिनम् ॥ ९ ॥
कालः प्रजा असृजत कालो अग्रे प्रजापतिम् ।
स्वयंभूः कश्यपः कालात्तपः कालादजायत ॥ १० ॥

[५४] चतुष्पञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—भृगुः ॥ देवता—कालः ॥ छन्दः—१, ३, ४ अनुष्टुप्; २ त्रिपदाऽऽर्षीगायत्री; ५ षट्पदाविराडष्टिः ॥

कालादापः समभवन्कालाद् ब्रह्म तपो दिशः ।
कालेनोदेति सूर्यः काले नि विशते पुनः ॥ १ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कालेन वातः पवते कालेनं पृथिवी मही।
द्यौर्मही काल आहिता ॥ २ ॥
कालो ह भूतं भव्यं च पुत्रो अजनयत्पुरा।
कालादृचः समभवन्यजुः कालादजायत ॥ ३ ॥
कालो यज्ञं समैरयद्देवेभ्यो भागमक्षितम् ।
काले गन्धर्वाप्सरसः काले लोकाः प्रतिष्ठिताः ॥ ४ ॥
कालेऽयमङ्गिरा देवोऽथर्वा चाधि तिष्ठतः ।
इमं च लोकं परमं च लोकं पुण्यांश्च लोकान्विधृतीश्च पुण्याः।
सर्वांल्लोकानभिजित्य ब्रह्मणा कालः स ईयते परमो नु देवः ॥ ५ ॥

अथ सप्तमोऽनुवाकः [५५] पञ्चपञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—भृगुः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१, ३, ४ त्रिष्टुप्; २ आस्तारपङ्क्तिः; ५ विराट्पुरउष्णिक्; ६ निचृदनुष्टुप्; ७ निचृत्त्रिष्टुप्॥

रात्रिंरात्रिमप्रयातं भरन्तोऽश्वायेव तिष्ठते घासमस्मै ।
रायस्पोषेण समिषा मदन्तो मा तै अग्ने प्रतिवेशा रिषाम ॥ १ ॥
या ते वसोर्वात इषुः सा त एषा तया नो मृड ।
रायस्पोषेण समिषा मदन्तो मा तै अग्ने प्रतिवेशा रिषाम ॥ २ ॥
सायंसायं गृहपतिर्नो अग्निः प्रातःप्रातः सौमनसस्य दाता।
वसोर्वसोर्वसुदान एधि वयं त्वेन्धानास्तन्वं पुषेम ॥ ३ ॥
प्रातःप्रातर्गृहपतिर्नो अग्निः सायंसायं सौमनसस्य दाता ।
वसोर्वसोर्वसुदान एधीन्धानास्त्वा शतंहिमा ऋधेम ॥ ४ ॥
अपश्चादघ्नान्नस्य भूयासम् ।
अन्नादायान्नपतये रुद्राय नमो अग्नये ॥ ५ ॥
सभ्यः सभां मे पाहि ये च सभ्याः सभासदः ।
त्वमिन्द्रा पुरुहूत विश्वमायुर्व्यश्नवम् ॥ ६ ॥
अहरहर्बलिमित्ते हरन्तोऽश्वायेव तिष्ठते घासमग्ने ।
रायस्पोषेण समिषा मदन्तो मा तै अग्ने प्रतिवेशा रिषाम ॥ ७ ॥

[५६] षट्पञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—यमः ॥ देवता—दुःष्वप्ननाशनम् ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥

यमस्य लोकादध्या बभूविथ प्रमदा मर्त्यान्प्र युनक्षि धीरः ।
एकाकिना सरथं यासि विद्वान्त्स्वप्नं मिमानो असुरस्य योनौ ॥ १ ॥
बन्धस्त्वाग्रे विश्वचया अपश्यत्पुरा रात्र्या जनितोरेके अह्नि ।
ततः स्वप्नेदमध्या बभूविथ भिषग्भ्यो रूपमपगूहमानः ॥ २ ॥
बृहद्गावासुरेभ्योऽधि देवानुपावर्तत महिमानमिच्छन् ।
तस्मै स्वप्नाय दधुराधिपत्यं त्रयस्त्रिंशासः स्वरिनशानाः ॥ ३ ॥
नैतां विदुः पितरो नोत देवा येषां जल्पिश्चरत्यन्तरेदम्।
त्रिते स्वप्नमदधुराप्त्ये नर आदित्यासो वरुणेनानुशिष्टाः ॥ ४ ॥
यस्य क्रूरमभजन्त दुष्कृतोऽस्वप्नेन सुकृतः पुण्यमायुः।
स्वमिदसि परमेण बन्धुना तप्यमानस्य मनसोऽधि जज्ञिषे ॥ ५ ॥
विद्म ते सर्वाः परिजाः पुरस्ताद्विद्म स्वप्न यो अधिपा बुहा तै।
यशस्विनो नो यशसेह पाह्यारात् द्विषेभिरप याहि दूरम् ॥ ६ ॥

[५७] सप्तपञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—यमः ॥ देवता—दुःष्वप्ननाशनम् ॥ छन्दः—१ अनुष्टुप्; २ पङ्क्तिः; ३ षट्पदात्रिष्टुप्; ४ षट्पदोष्णिग्बृहतीगर्भाविराट्शक्वरी; ५ पञ्चपदापरशाक्वराऽतिजगती ॥

यथा कलं यथा शफं यथर्णं संनयन्ति ।
एवा दुष्वप्न्यं सर्वमप्रिये सं नयामसि ॥ १ ॥
सं राजानो अगुः समृणान्यगुः सं कुष्ठा अगुः सं कुला अगुः।
समस्मासु यदुःष्वप्न्यं निर्द्विषते दुःष्वप्न्यं सुवाम ॥ २ ॥
देवानां पत्नीनां गर्भं यमस्य करं यो भद्रः स्वप्न ।
स मम यः पापस्तद् द्विषते प्र हिण्मः ।
मा तृष्टा नामासि कृष्णशकुनेर्मुखम् ॥ ३ ॥
तं त्वा स्वप्न तथा सं विद्म स त्वं स्वप्नाश्वइव कायमश्वंइव नीनाहम्।
अनास्माकं दैवपीयुं पियारुं वप यदस्मासु दुःष्वप्न्यं यद्गोषु यच्च नो गृहे ॥ ४ ॥
अनास्माकस्तदैवपीयुः पियारुर्निष्कमिव प्रति मुञ्चताम्।
नवारत्नीनपमया अस्माकं ततः परि ।
दुःष्वप्न्यं सर्वं द्विषते निर्दयामसि ॥ ५ ॥

[५८] अष्टपञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—ब्रह्मा ॥ देवता—मन्त्रोक्ताः ॥ छन्दः—१, ४ त्रिष्टुप्; २ पुरोऽनुष्टुप्; ३ चतुष्पदाऽतिशक्वरी; ५ भुरिक्त्रिष्टुप्; ६ स्वराट्त्रिष्टुप् ॥

घृतस्य जूतिः संमनाः सदेवाः संवत्सरं हविषा वर्धयन्ती।
शोचन्ती यज्ञं प्रयतेऽन्तिरेवो नो अस्त्वच्छिन्ना वयमायुषो वर्चसः ॥ १ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri
Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उपास्मान्प्राणो ह्वयतामुप वयं प्राणं हवामहे ।
वर्चो जग्राह पृथिव्यन्तरिक्षं वर्चः सोमो बृहस्पतिर्विधर्त्ता ॥ २ ॥
वर्चस्वो द्यावापृथिवी संग्रहणी बभूवथुर्वर्चो गृहीत्वा पृथिवीमनु सं चरेम।
यशसा गावो गोपतिमुप तिष्ठन्त्यायतीर्यशो गृहीत्वा पृथिवीमनु सं चरेम॥ ३ ॥
व्रजं कृणुध्वं स हि वो नृपाणो वर्मी सीव्यध्वं बहुला पृथूनि।
पुरः कृणुध्वमायसीरधृष्टा मा वः सुस्रोच्चमसो दृंहता तम्॥ ४ ॥
यज्ञस्य चक्षुः प्रभृतिर्मुखं च वाचा श्रोत्रेण मनसा जुहोमि।
इमं यज्ञं विततं विश्वकर्मणा देवा यन्तु सुमनस्यमानाः॥ ५ ॥
ये देवानामृत्विजो ये च यज्ञिया येभ्यो हव्यं क्रियते भागधेयम्।
इमं यज्ञं सह पत्नीभिरेत्य यावन्तो देवास्तविषा मादयन्ताम्॥ ६ ॥

[५९] एकोनषष्टितमं सूक्तम्

ऋषिः—ब्रह्मा॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—१ गायत्री; २, ३ त्रिष्टुप्॥

त्वमग्ने व्रतपा असि देव आ मर्त्येष्वा। त्वं यज्ञेष्वीड्यः ॥ १ ॥
यद्वो वयं प्रमिनाम व्रतानि विदुषां देवा अविदुष्टरासः ।
अग्निष्टद्विश्वादा पृणातु विद्वान्त्सोमस्य यो ब्राह्मणाँ आविवेश॥ २ ॥
आ देवानामपि पन्थामगन्म यच्छक्नवाम तदनुप्रवोढुम् ।
अग्निर्विद्वान्त्स यजात्स इद्धोता सोऽध्वरान्त्स ऋतून्कल्पयाति॥ ३ ॥

[६०] षष्टितमं सूक्तम्

ऋषिः—ब्रह्मा॥ देवता—वागादिमन्त्रोक्ताः॥ छन्दः—१ पथ्याबृहती; २ ककुम्मतीपुरउष्णिक्॥

वाङ्म आसन्नसोः प्राणश्चक्षुरक्ष्णोः श्रोत्रं कर्णयोः।
अपलिताः केशा अशोणा दन्ता बहु बाह्वोर्बलम्॥ १ ॥
ऊर्वोरोजो जङ्घयोर्जवः पादयोः प्रतिष्ठा ।
अरिष्टानि मे सर्वात्मानिभृष्टः ॥ २ ॥

[६१] एकषष्टितमं सूक्तम्

ऋषिः—ब्रह्मा॥ देवता—ब्रह्मणस्पतिः॥ छन्दः—विराट्पथ्याबृहती॥

तनूस्तन्वा मे सहे दतः सर्वमायुरशीय।
स्योनं मे सीद पुरुः पृणस्व पवमानः स्वर्गे॥ १ ॥

[६२] द्विषष्टितमं सूक्तम्

ऋषिः—ब्रह्मा॥ देवता—ब्रह्मणस्पतिः॥ छन्दः—अनुष्टुप्॥

प्रियं मा कृणु देवेषु प्रियं राजसु मा कृणु।
प्रियं सर्वस्य पश्यत उत शूद्र उतार्ये ॥ १ ॥

[६३] त्रिषष्टितमं सूक्तम्

ऋषिः—ब्रह्मा॥ देवता—ब्रह्मणस्पतिः॥ छन्दः—विराडुपरिष्टाद्बृहती॥

उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते देवान्यज्ञेन बोधय ।
आयुः प्राणं प्रजां पशुं कीर्तिं यजमानं च वर्धय॥ १ ॥

[६४] चतुःषष्टितमं सूक्तम्

ऋषिः—ब्रह्मा॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—अनुष्टुप्॥

अग्ने समिधमाहार्षं बृहते जातवेदसे ।
स मे श्रद्धां च मेधां च जातवेदाः प्र यच्छतु॥ १ ॥
इध्मेन त्वा जातवेदः समिधा वर्धयामसि ।
तथा त्वमस्मान्वर्धय प्रजया च धनेन च ॥ २ ॥
यदग्ने यानि कानि चिदा ते दारूणि दध्मसि ।
सर्वं तदस्तु मे शिवं तज्जुषस्व यविष्ठ्य ॥ ३ ॥
एतास्ते अग्ने समिधस्त्वमिद्धः समिद्धव ।
आयुरस्मासु धेह्यमृतत्वमाचार्याय ॥ ४ ॥

[६५] पञ्चषष्टितमं सूक्तम्

ऋषिः—ब्रह्मा॥ देवता—सूर्यो जातवेदाः॥ छन्दः—जगती॥

हरिः सुपर्णो दिवमारुहोऽर्चिषा ये त्वा दिप्सन्ति दिवमुत्पतन्तम्।
अव तां जहि हरसा जातवेदोऽबिभ्यदुग्रोऽर्चिषा दिवमा रोह सूर्य॥ १ ॥

[६६] षट्षष्टितमं सूक्तम्

ऋषिः—ब्रह्मा॥ देवता—सूर्यो जातवेदा वज्रः॥ छन्दः—अतिजगती॥

अयोजालाः असुरा मायिनोऽस्यस्मयैः पाशैरद्भिनो ये चरन्ति ।
तांस्ते रन्धयामि हरसा जातवेदः सहस्रभृष्टिः सपत्नान्प्रमृणन्पाहि वज्रः॥ १ ॥

[६७] सप्तषष्टितमं सूक्तम्

ऋषिः—ब्रह्मा॥ देवता—सूर्यः॥ छन्दः—प्राजापत्यागायत्री॥

पश्येम शरदः शतम्॥ १ ॥ जीवेम शरदः शतम्॥ २ ॥
बुध्येम शरदः शतम्॥ ३ ॥ रोहेम शरदः शतम्॥ ४ ॥
पूषेम शरदः शतम्॥ ५ ॥ भवेम शरदः शतम्॥ ६ ॥
भूयेम शरदः शतम्॥ ७ ॥ भूयसीः शरदः शतम्॥ ८ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

[६८] अष्टषष्टितमं सूक्तम्

ऋषिः—ब्रह्मा ॥ देवता—मन्त्रोक्ताः, कर्म ॥ छन्दः—अनुष्टुप् ॥

अव्यसश्च व्यचसश्च बिलं वि ष्यामि मायया ।
ताभ्यामुद्धृत्य वेदमथ कर्मणि कृण्महे ॥ १ ॥

[६९] एकोनसप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—ब्रह्मा ॥ देवता—आपः ॥ छन्दः—१ आसुर्यनुष्टुप्; २ साम्न्यनुष्टुप्; ३ आसुरीगायत्री; ४ साम्न्युष्णिक् ॥

जीवा स्थ जीव्यासं सर्वमायुर्जीव्यासम् ॥ १ ॥
उपजीवा स्थोप जीव्यासं सर्वमायुर्जीव्यासम् ॥ २ ॥
संजीवा स्थ सं जीव्यासं सर्वमायुर्जीव्यासम् ॥ ३ ॥
जीवला स्थ जीव्यासं सर्वमायुर्जीव्यासम् ॥ ४ ॥

[७०] सप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—ब्रह्मा ॥ देवता—इन्द्रादयो मन्त्रोक्ताः ॥ छन्दः—गायत्री ॥

इन्द्र जीव सूर्य जीव देवा जीवा जीव्यासमहम् । सर्वमायुर्जीव्यासम् ॥ १ ॥

[७१] एकसप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—ब्रह्मा ॥ देवता—गायत्री ॥ छन्दः—पञ्चपदाऽतिजगती ॥

स्तुता मया वरदा वेदमाता प्र चोदयन्तां पावमानी द्विजानाम् ।
आयुः प्राणं प्रजां पशुं कीर्तिं द्रविणं ब्रह्मवर्चसम् ।
मह्यं दत्त्वा व्रजत ब्रह्मलोकम् ॥ १ ॥

[७२] द्विसप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—भृग्वङ्गिरा ब्रह्मा ॥ देवता—परमात्मा देवाश्च ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥

यस्मात्कोशादुदभराम वेदं तस्मिन्नन्तरव दध्म एनम् ।
कृतमिष्टं ब्रह्मणो वीर्येण तेन मा देवास्तपसावतेह ॥ १ ॥

इति पञ्चत्रिंशः प्रपाठकः ॥
॥ इत्येकोनविंशं काण्डम् ॥

अथ विंशं काण्डम् ॥

अथ षट्त्रिंशः प्रपाठकः ॥

अथ प्रथमोऽनुवाकः [१] प्रथमं सूक्तम्

ऋषिः—१ विश्वामित्रः; २ गोतमः; ३ विरूपः ॥ देवता—१ इन्द्रः; २ मरुतः; ३ अग्निः ॥ छन्दः—गायत्री ॥

इन्द्रं त्वा वृषभं वयं सुते सोमे हवामहे । स पाहि मध्वो अन्धसः ॥ १ ॥
मरुतो यस्य हि क्षये पाथा दिवो विमहसः । स सुगोपातमो जनः ॥ २ ॥
उक्षान्नाय वशान्नाय सोमपृष्ठाय वेधसे । स्तोमैर्विधेमाग्नये ॥ ३ ॥

[२] द्वितीयं सूक्तम्

ऋषिः—गृत्समदो मेधातिथिर्वा ॥ देवता—१ मरुतः; २ अग्निः; ३ इन्द्रः; ४ द्रविणोदाः ॥ छन्दः—१, २ विराड्गायत्री; ३ आर्च्युष्णिक्; ३ साम्नीत्रिष्टुप् ॥

मरुतः पोत्रात्सुष्टुभः स्वर्कादृतुना सोमं पिबतु ॥ १ ॥
अग्निराग्नीध्रात्सुष्टुभः स्वर्कादृतुना सोमं पिबतु ॥ २ ॥
इन्द्रो ब्रह्मा ब्राह्मणात्सुष्टुभः स्वर्कादृतुना सोमं पिबतु ॥ ३ ॥
देवो द्रविणोदाः पोत्रात्सुष्टुभः स्वर्कादृतुना सोमं पिबतु ॥ ४ ॥

[३] तृतीयं सूक्तम्

ऋषिः—इरिम्बिठिः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥

आ याहि सुषुमा हि त इन्द्र सोमं पिबा इमम् । एदं बर्हिः सदो मम ॥ १ ॥
आ त्वा ब्रह्मयुजा हरी वहतामिन्द्र केशिना । उप ब्रह्माणि नः शृणु ॥ २ ॥
ब्रह्माणस्त्वा वयं युजा सोमपामिन्द्र सोमिनः । सुतावन्तो हवामहे ॥ ३ ॥

[४] चतुर्थं सूक्तम्

ऋषिः—इरिम्बिठिः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥

आ नो याहि सुतावतोऽस्माकं सुष्टुतीरुप । पिबा सु शिप्रिन्नन्धसः ॥ १ ॥
आ ते सिञ्चामि कुक्ष्योरनु गात्रा वि धावतु । गृभाय जिह्वया मधु ॥ २ ॥
स्वादुष्टे अस्तु संसुदे मधुमान्तनवेऽवृ तव । सोमः शमस्तु ते हृदे ॥ ३ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

[५] पञ्चमं सूक्तम्

ऋषिः—इरिम्बिठिः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—गायत्री॥

अयमु त्वा विचर्षणे जनीरिवाभि संवृतः। प्र सोम इन्द्र सर्पतु॥ १॥
तुविग्रीवो वपोदरः सुबाहुरन्धसो मदे। इन्द्रो वृत्राणि जिघ्नते॥ २॥
इन्द्र प्रेहि पुरस्त्वं विश्वस्येशान ओजसा। वृत्राणि वृत्रहं जहि॥ ३॥
दीर्घस्ते अस्त्वङ्कुशो येना वसु प्रयच्छसि। यजमानाय सुन्वते॥ ४॥
अयं त इन्द्र सोमो निपूतो अधि बर्हिषि। एहीमस्य द्रवा पिब॥ ५॥
शाचिगो शाचिपूजनायं रणाय ते सुतः। आखण्डल प्र हूयसे॥ ६॥
यस्ते शृङ्गवृषो नपात्प्रणपात्कुण्डपाय्यः। न्यस्मिन्दध्र आ मनः॥ ७॥

[६] षष्ठं सूक्तम्

ऋषिः—विश्वामित्रः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—गायत्री॥

इन्द्रं त्वा वृषभं वयं सुते सोमे हवामहे। स पाहि मध्वो अन्धसः॥ १॥
इन्द्र क्रतुविदं सुतं सोमं हर्य पुरुष्टुत। पिबा वृषस्व तातृपिम्॥ २॥
इन्द्र प्र णो धितावानं यज्ञं विश्वेभिर्देवेभिः। तिर स्तवान विश्पते॥ ३॥
इन्द्र सोमाः सुता इमे तव प्र यन्ति सत्पते। क्षयं चन्द्रास इन्दवः॥ ४॥
दधिष्वा जठरे सुतं सोममिन्द्र वरेण्यम्। तव द्युक्षास इन्दवः॥ ५॥
गिर्वणः पाहि नः सुतं मधोर्धाराभिरज्यसे। इन्द्र त्वादातमिद्यशः॥ ६॥
अभि द्युम्नानि वनिन इन्द्रं सचन्ते अक्षिता। पीत्वी सोमस्य वावृधे॥ ७॥
अर्वावतो न आ गहि परावतश्च वृत्रहन्। इमा जुषस्व नो गिरः॥ ८॥
यदन्तरा परावतमर्वावतं च हूयसे। इन्द्रेह तत आ गहि॥ ९॥

[७] सप्तमं सूक्तम्

ऋषिः—१-३ सुकक्षः; ४ विश्वामित्रः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—गायत्री॥

उद्वेदभि श्रुतामघं वृषभं नर्यापसम्। अस्तारमेषि सूर्य॥ १॥
नव यो नवतिं पुरो बिभेद बाह्वोजसा। अहिं च वृत्रहावधीत्॥ २॥
स न इन्द्रः शिवः सखाश्वावद्गोमद्यवमत्। उरुधारेव दोहते॥ ३॥
इन्द्रं क्रतुविदं सुतं सोमं हर्य पुरुष्टुत। पिबा वृषस्व तातृपिम्॥ ४॥

[८] अष्टमं सूक्तम्

ऋषिः—१ भरद्वाजः; २ कुत्सः; ३ विश्वामित्रः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—त्रिष्टुप्॥

एवा पाहि प्रत्नथा मन्दतु त्वा शुधि ब्रह्म वावृधस्वोत गीर्भिः।
आविः सूर्यं कृणुहि पीपिहीषो जहि शत्रूँरभि गा इन्द्र तृन्धि॥ १॥
अर्वाङेहि सोमकामं त्वाहुरयं सुतस्तस्य पिबा मदाय।
उरुव्यचा जठर आ वृषस्व पितेव नः शृणुहि हूयमानः॥ २॥
आपूर्णो अस्य कलशः स्वाहा सेक्तेव कोशं सिसिचे पिबध्यै।
समु प्रिया आववृत्रन्मदाय प्रदक्षिणिदभि सोमास इन्द्रम्॥ ३॥

[९] नवमं सूक्तम्

ऋषिः—१, २ नोधाः; ३, ४ मेध्यातिथिः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१-४ बार्हतः प्रगाथः (बृहती+सतोबृहती)॥

तं वो दस्ममृतीषहं वसोर्मन्दानमन्धसः।
अभि वत्सं न स्वसरेषु धेनव इन्द्रं गीर्भिर्नवामहे॥ १॥
द्युक्षं सुदानुं तविषीभिरावृतं गिरिं न पुरुभोजसम्।
क्षुमन्तं वाजं शतिनं सहस्रिणं मक्षू गोमन्तमीमहे॥ २॥
तत्त्वा यामि सुवीर्यं तद् ब्रह्म पूर्वचित्तये।
येना यतिभ्यो भृगवे धने हिते येन प्रस्कण्वमाविथ॥ ३॥
येना समुद्रमसृजो महीरपस्तदिन्द्र वृष्णि ते शवः।
सद्यः सो अस्य महिमा न संनशे यं क्षोणीरनुचक्रदे॥ ४॥

[१०] दशमं सूक्तम्

ऋषिः—मेध्यातिथिः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—बार्हतः प्रगाथः (बृहती+सतोबृहती)॥

उदु त्ये मधुमत्तमा गिरः स्तोमास ईरते।
सत्राजितो धनसा अक्षितोतयो वाजयन्तो रथाइव॥ १॥
कण्वाइव भृगवः सूर्याइव विश्वमिद्धीतमानशुः।
इन्द्रं स्तोमेभिर्महयन्त आयवः प्रियमेधासो अस्वरन्॥ २॥

[११] एकादशं सूक्तम्

ऋषिः—विश्वामित्रः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—त्रिष्टुप्॥

इन्द्रः पूर्भिदातिरद्दासमर्कैर्विदद्वसुर्दयमानो वि शत्रून्।
ब्रह्मजूतस्तन्वा वावृधानो भूरिदात्र आपृणद्रोदसी उभे॥ १॥
मखस्य ते तविषस्य प्र जूतिमियर्मि वाचमदमृताय भूषन्।
इन्द्र क्षितीनामसि मानुषीणां विशां दैवीनामुत पूर्वयावा॥ २॥
इन्द्रो वृत्रमवृणोच्छर्धनीतिः प्र मायिनाममिनाद्वर्पणीतिः।
अहन्व्यंसमुशधग्वनेष्वाविर्धेना अकृणोद्राम्याणाम्॥ ३॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

इन्द्रः॑ स्व॒र्षा ज॒नय॒न्नहा॑नि जि॒गायो॒शिग्भिः॒ पृत॑ना अभि॒ष्टिः।
प्रारो॑चय॒न्मन॑वे के॒तुमह्ना॒मवि॑न्द॒ज्ज्योति॑र्बृह॒ते रणा॑य॥ ४॥
इन्द्र॒स्तुजो॑ ब॒र्हणा॒ आ वि॑वेश नृ॒वद्दधा॑नो॒ नर्या॑ पु॒रूणि॑।
अचे॑तय॒द्धिय॑ इ॒मा ज॑रि॒त्रे प्रेमं वर्ण॑मतिरच्छु॒क्रमा॑साम्॥ ५॥
म॒हो म॒हानि॑ पनयन्त्य॒स्येन्द्र॑स्य॒ कर्म॒ सुकृ॑ता पु॒रूणि॑।
वृ॒जने॑न वृजि॒नान्त्सं पि॑पेष मा॒याभि॒र्दस्यूँ॑र॒भिभू॑त्योजाः॥ ६॥
यु॒धेन्द्रो॑ म॒ह्ना वरि॑वश्चकार दे॒वेभ्यः॒ सत्प॑तिश्चर्षणि॒प्राः।
वि॒वस्व॑तः॒ सद॑ने अस्य॒ तानि॒ विप्रा॑ उ॒क्थेभिः॑ क॒वयो॑ गृणन्ति॥ ७॥
स॒त्रा॒साहं॒ वरे॑ण्यं सहो॒दां स॑स॒वांसं॒ स्व॑र॒पश्च॑ दे॒वीः।
स॒सान॒ यः पृ॑थि॒वीं द्यामु॒तेमामिन्द्रं॑ मद॒न्त्यनु॒ धीर॑णासः॥ ८॥
स॒सानात्याँ॑ उ॒त सूर्यं॑ ससा॒नेन्द्रः॑ ससान पुरु॒भोज॑सं॒ गाम्।
हि॒र॒ण्यय॑मु॒त भोगं॑ ससान ह॒त्वी दस्यू॒न्प्रार्यं॒ वर्ण॑मावत्॥ ९॥
इन्द्र॒ ओष॑धीरसनो॒दहा॑नि॒ वन॒स्पतीँ॑रसनोद॒न्तरि॑क्षम्।
बि॒भेद॑ व॒लं नु॑नु॒दे विवा॒चोऽथा॑भवद्दमि॒ताभिक्र॑तूनाम्॥ १०॥
शु॒नं हु॑वेम म॒घवा॑न॒मिन्द्र॑म॒स्मिन्भरे॒ नृत॑मं॒ वाज॑सातौ।
शृ॒ण्वन्त॑मु॒ग्रमू॒तये॑ स॒मत्सु॒ घ्नन्तं॑ वृ॒त्राणि॑ सं॒जितं॒ धना॑नाम्॥ ११॥

[१२] द्वादशं सूक्तम्

ऋषिः—१-६ वसिष्ठः; ७ अत्रिः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—त्रिष्टुप्॥

उदु॒ ब्रह्मा॑ण्यैरत श्रव॒स्येन्द्रं॑ सम॒र्ये म॑हया वसिष्ठ।
आ यो विश्वा॑नि॒ शव॑सा त॒तानो॑पश्रो॒ता म॒ ईव॑तो॒ वचां॑सि॥ १॥
अया॑मि॒ घोष॑ इन्द्र दे॒वजा॑मिरिर॒ज्यन्त॒ यच्छु॒रुधो॒ विवा॑चि।
न॒हि स्वमायु॑श्चिकि॒ते जने॑षु॒ तानीदंहां॒स्यति॑ पर्ष्य॒स्मान्॥ २॥
यु॒जे रथं॑ ग॒वेष॑णं॒ हरि॑भ्या॒मुप॒ ब्रह्मा॑णि जुजुषा॒णम॑स्थुः।
वि बा॑धिष्ट॒ स्य रोद॑सी महि॒त्वेन्द्रो॑ वृ॒त्राण्य॑प्र॒ती ज॑घ॒न्वान्॥ ३॥
आप॑श्चित्पिप्यु स्त॒र्यो॒३॒॑ न गावो॒ नक्ष॑न्नृ॒तं ज॑रि॒तार॑स्त इन्द्र।
या॒हि वा॒युर्न नि॒युतो॑ नो॒ अच्छा॒ त्वं हि धी॒भिर्दय॑से॒ वि वाजा॑न्॥ ४॥
ते त्वा॒ मदा॑ इन्द्र मादयन्तु शु॒ष्मिणं॑ तुवि॒राध॑सं जरि॒त्रे।
एको॑ देव॒त्रा दय॑से॒ हि मर्ता॑न॒स्मिन्छू॑र॒ सव॑ने मादयस्व॥ ५॥
ए॒वेदिन्द्रं॒ वृष॑णं॒ वज्र॑बाहुं॒ वसि॑ष्ठासो अ॒भ्य॑र्चन्त्य॒र्कैः।
स न॑ स्तु॒तो वी॒रव॑द्धातु॒ गोम॑द्यू॒यं पा॑त स्व॒स्तिभिः॒ सदा॑ नः॥ ६॥
ऋ॒जी॒षी व॒ज्री वृ॑ष॒भस्तु॑रा॒षाट्छु॒ष्मी राजा॑ वृत्र॒हा सो॑म॒पावा॑।
यु॒क्त्वा हरि॑भ्या॒मुप॑ यासद॒र्वाङ्माध्यं॑दिने॒ सव॑ने मत्स॒दिन्द्रः॑॥ ७॥

[१३] त्रयोदशं सूक्तम्

ऋषिः—१ वामदेवः; २ गोतमः; ३ कुत्सः; ४ विश्वामित्रः॥ देवता—१ इन्द्रा-बृहस्पती; २ मरुतः; ३, ४ अग्निः॥ छन्दः—१-३ जगती; ४ त्रिष्टुप्॥

इन्द्र॑श्च॒ सोमं॑ पिबतं बृहस्पते॒ऽस्मिन्य॒ज्ञे म॑न्दसा॒ना वृ॑षण्वसू।
आ वां॑ विश॒न्त्विन्द॑वः स्वा॒भुवो॒ऽस्मे र॒यिं सर्व॑वीरं॒ नि य॑च्छतम्॥ १॥
आ वो॑ वहन्तु॒ सप्त॑यो रघु॒ष्यदो॑ रघु॒पत्वा॑नः॒ प्र जि॑गात बा॒हुभिः॑।
सीद॒ता ब॒र्हिरु॒रु वः॒ सद॑स्कृतं मा॒दय॑ध्वं मरुतो॒ मध्वो॒ अन्ध॑सः॥ २॥
इ॒मं स्तोम॒मर्ह॑ते जा॒तवे॑दसे॒ रथ॑मिव॒ सं म॑हेमा मनी॒षया॑।
भ॒द्रा हि नः॒ प्रम॑तिरस्य सं॒सद्यग्ने॑ स॒ख्ये मा रि॑षामा व॒यं तव॑॥ ३॥
ऐभि॑रग्ने स॒रथं॑ याह्य॒र्वाङ् ना॑नार॒थं वा॑ वि॒भवो॒ ह्यश्वाः॑।
पत्नी॑वतस्त्रिं॒शतं॒ त्रींश्च॑ दे॒वान॑नुष्व॒धमा व॑ह मा॒दय॑स्व॥ ४॥

अथ द्वितीयोऽनुवाकः [१४] चतुर्दशं सूक्तम्

ऋषिः—सौभरिः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—काकुभः प्रगाथः (विषमा-ककुप्+समा-सतोबृहती)॥

व॒यमु॒ त्वाम॑पूर्व्य स्थू॒रं न कच्चि॒द्भर॑न्तोऽव॒स्यवः॑।
वाजे॑ चि॒त्रं ह॑वामहे॥ १॥
उप॑ त्वा॒ कर्म॑न्नू॒तये॒ स नो॒ युवो॒ग्रश्च॑क्राम॒ यो धृ॒षत्।
त्वामिद्ध्य॑वि॒तारं॑ ववृ॒महे॒ सखा॑य इन्द्र सान॒सिम्॥ २॥
यो न॑ इ॒दमि॑दं पु॒रा प्र वस्य॑ आनि॒नाय॒ तमु॑ व स्तुषे।
सखा॑य॒ इन्द्र॑मू॒तये॑॥ ३॥
हर्य॑श्वं॒ सत्प॑तिं चर्षणी॒सहं॒ स हि ष्मा॒ यो अम॑न्दत।
आ तु नः॒ स व॑यति॒ गव्य॒मश्व्यं॑ स्तो॒तृभ्यो॑ म॒घवा॑ श॒तम्॥ ४॥

[१५] पञ्चदशं सूक्तम्

ऋषिः—गोतमः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—त्रिष्टुप्॥

प्र मंहि॑ष्ठाय बृह॒ते बृ॒हद्र॑ये स॒त्यशु॑ष्माय त॒वसे॑ म॒तिं भ॑रे।
अ॒पामि॑व प्रव॒णे यस्य॑ दु॒र्धरं॒ राधो॑ वि॒श्वायु॒ शव॑से॒ अपा॑वृतम्॥ १॥
अध॑ ते॒ विश्व॒मनु॑ हासदि॒ष्टय॒ आपो॑ नि॒म्नेव॒ सव॑ना ह॒विष्म॑तः।
यत्पर्व॑ते॒ न स॒मशी॑त हर्य॒त इन्द्र॑स्य॒ वज्रः॒ श्नथि॑ता हिर॒ण्ययः॑॥ २॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अस्मै भीमाय नमसा समध्वर उषो न शुभ्र आ भरा पनीयसे।
यस्य धाम श्रवसे नामेन्द्रियं ज्योतिरकारि हरितो नायसे॥ ३॥
इमे त इन्द्र ते वयं पुरुष्टुत ये त्वारभ्य चरामसि प्रभूवसो।
नहि त्वदन्यो गिर्वणो गिरः सघत्क्षोणीरिव प्रति नो हर्य तद्वचः॥ ४॥
भूरि त इन्द्र वीर्यं तव स्मस्यस्य स्तोतुर्मघवन्कामम आ पृण।
अनु ते द्यौर्बृहती वीर्यं मम इयं च ते पृथिवी नेम ओजसे॥ ५॥
त्वं तमिन्द्र पर्वतं महामुरुं वज्रेण वज्रिन्पर्वशश्चकर्तिथ।
अवासृजो निवृताः सर्तवा अपः सत्रा विश्वं दधिषे केवलं सहः॥ ६॥

[१६] षोडशं सूक्तम्

ऋषिः—अयास्यः॥ देवता—बृहस्पतिः॥ छन्दः—त्रिष्टुप्॥

उदप्रुतो न वयो रक्षमाणा वावदतो अभ्रियस्येव घोषाः।
गिरिभ्रजो नोर्मयो मदन्तो बृहस्पतिमभ्यर्का अनावन्॥ १॥
सं गोभिराङ्गिरसो नक्षमाणो भगं इवेदर्यमणं निनाय।
जनेमित्रो न दम्पती अनक्ति बृहस्पते वाजयाशूँरिवाजौ॥ २॥
साध्वर्या अतिथिनीरिषिरा स्पार्हाः सुवर्णा अमवद्यरूपाः।
बृहस्पतिः पर्वतेभ्यो वितूर्या निर्गा ऊपे यवमिव स्थिविभ्यः॥ ३॥
आप्रुषायन्मधुन ऋतस्य योनिमवक्षिपन्नर्क उल्कामिव द्योः।
बृहस्पतिरुद्धरन्नश्मनो गा भूम्या उदनेव वि त्वचं बिभेद॥ ४॥
अप ज्योतिषा तमो अन्तरिक्षादुदनः शीपालमिव वातः आजत्।
बृहस्पतिरनुमृश्यां बलस्याभ्रमिव वात आ चक्र आ गाः॥ ५॥
यदा वलस्य पीयतो जसुं भेद् बृहस्पतिरग्नितपोभिरर्कैः।
दद्धिनं जिह्मं परिविष्टमादिदाविर्निधीँरकृणोदुस्रियाणाम्॥ ६॥
बृहस्पतिरमत हि त्यदासां नाम स्वरीणां सदने गुहा यत्।
आण्डेव भित्त्वा शकुनस्य गर्भमुदुस्रियाः पर्वतस्य त्मनाजत्॥ ७॥
अश्नापिनद्धं मधु पर्यपश्यन्मत्स्यं न दीन उदनि क्षियन्तम्।
निष्टज्जभार चमसं न वृक्षाद् बृहस्पतिर्वरेणा विकृत्य॥ ८॥
सोषामविन्दत्स स्वः सो अग्निं सो अर्केण वि बबाधे तमांसि।
बृहस्पतिर्गोवपुषो वलस्य निर्मज्जानं न पर्वणो जभार॥ ९॥
हिमेव पर्णा मुषिता वनानि बृहस्पतिनाकृपयद्वलो गाः।
अनानुकृत्यमपुनश्चकार यात्सूर्यामासा मिथ उच्चरातः॥ १०॥

अभि श्यावं न कृशनेभिरश्वं नक्षत्रेभिः पितरो द्यामपिंशन्।
रात्र्यां तमो अदधुर्ज्योतिरह्न्बृहस्पतिर्भिनदद्रिं विदद्गाः॥ ११॥
इदमकर्म नमो अभ्रियाय यः पूर्वीरन्वानोनवीति।
बृहस्पतिः स हि गोभिः सो अश्वैः स वीरेभिः स नृभिर्नो वयो धात्॥ १२॥

[१७] सप्तदशं सूक्तम्

ऋषिः—कृष्णः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१-१० जगती; ११, १२ त्रिष्टुप्॥

अच्छा म इन्द्रं मतयः स्वर्विदः सधीचीर्विश्वा उशतीरनूषत।
परि ष्वजन्ते जनयो यथा पतिं मर्यं न शुन्ध्युं मघवानमूतये॥ १॥
न घा त्वद्रिगप वेति मे मनस्त्वे इत्कामं पुरुहूत शिश्रय।
राजेव दस्म नि षदोऽधि बर्हिष्यस्मिन्त्सु सोमेऽवपानमस्तु ते॥ २॥
विषूवृदिन्द्रो अमतेरुत क्षुधः स इद्रायो मघवा वस्व ईशते।
तस्येदिमे प्रवणे सप्त सिन्धवो वयो वर्धन्ति वृषभस्य शुष्मिणः॥ ३॥
वयो न वृक्षं सुपलाशमासदन्त्सोमास इन्द्रं मन्दिनश्चमूषदः।
प्रैषामनीकं शवसा दविद्युतद्वि दत्स्वर्मनवे ज्योतिरार्यम्॥ ४॥
कृतं न श्वघ्नी वि चिनोति देवने संवर्गं यन्मघवा सूर्यं जयत्।
न तत्ते अन्यो अनु वीर्यं शक्त्र पुराणो मघवन्नोत नूतनः॥ ५॥
विशंविशं मघवा पर्यशायत जनानां धेना अवचाकशद् वृषा।
यस्याहं शक्रः सवनेषु रण्यति स तीव्रैः सोमैः सहते पृतन्यतः॥ ६॥
आपो न सिन्धुमभि यत्समक्षरन्त्सोमास इन्द्रं कुल्याइव ह्रदम्।
वर्धन्ति विप्रा महो अस्य सादने यवं न वृष्टिर्दिव्येन दानुना॥ ७॥
वृषा न क्रुद्धः पतयद्रजःस्वा यो अर्यपत्नीरकृणोदिमा अपः।
स सुन्वते मघवा जीरदानवेऽविन्दज्ज्योतिर्मनवे हविष्मते॥ ८॥
उज्जायतां परशुर्ज्योतिषा सह भूया ऋतस्य सुदुघा पुराणवत्।
वि रोचतामरुषो भानुना शुचिः स्वर्ण शुक्रं शुशुचीत सत्पतिः॥ ९॥
गोभिष्टरेमामतिं दुरेवां यवेन क्षुधं पुरुहूत विश्वाम्।
वयं राजभिः प्रथमा धनान्यस्माकेन वृजनेना जयेम॥ १०॥
बृहस्पतिर्नः परि पातु पश्चादुतोत्तरस्मादधरादघायोः।
इन्द्रः पुरस्तादुत मध्यतो नः सखा सखिभ्यो वरिवः कृणोतु॥ ११॥
बृहस्पते युवमिन्द्रश्च वस्वो दिव्यस्येशाथे उत पार्थिवस्य।
धत्तं रयिं स्तुवते कीरयें चिद्यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥ १२॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अथ तृतीयोऽनुवाकः [१८] अष्टादशं सूक्तम्

ऋषिः—१-३ मेधातिथिः प्रियमेधश्च; ४-६ वसिष्ठः॥ देवता—इन्द्रः॥
छन्दः—गायत्री॥

वयमु त्वा तदिदर्था इन्द्र त्वायन्तः सखायः। कण्वा उक्थेभिर्जरन्ते॥ १॥
न घेमन्यदा पपन वज्रिन्नपसो नविष्टौ। तवेदु स्तोमं चिकेत॥ २॥
इच्छन्ति देवाः सुन्वन्तं न स्वप्नाय स्पृहयन्ति। यन्ति प्रमादमतन्द्राः॥ ३॥
वयमिन्द्र त्वायवोऽभि प्र णोनुमो वृषन्। विद्धी त्वस्य नो वसो॥ ४॥
मा नो निदे च वक्तवेऽर्यो रन्धीरराव्णे। त्वे अपि क्रतुर्मम॥ ५॥
त्वं वर्मासि सप्रथः पुरोयोधश्च वृत्रहन्। त्वया प्रति ब्रुवे युजा॥ ६॥

[१९] एकोनविंशं सूक्तम्

ऋषिः—विश्वामित्रः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—गायत्री॥

वात्रंहत्याय शवसे पृतनाषाह्याय च। इन्द्र त्वा वर्तयामसि॥ १॥
अर्वाचीनं सु ते मन उत चक्षुः शतक्रतो। इन्द्र कृण्वन्तु वाघतः॥ २॥
नामानि ते शतक्रतो विश्वाभिर्गीर्भिरीमहे। इन्द्राभिमातिषाह्ये॥ ३॥
पुरुष्टुतस्य धामभिः शतेन महयामसि। इन्द्रस्य चर्षणीधृतः॥ ४॥
इन्द्रं वृत्राय हन्तवे पुरुहूतमुप ब्रुवे। भरेषु वाजसातये॥ ५॥
वाजेषु सासहिर्भव त्वामीमहे शतक्रतो। इन्द्र वृत्राय हन्तवे॥ ६॥
द्युम्नेषु पृतनाज्ये पृत्सुतूर्षु श्रवःसु च। इन्द्र साक्ष्वाभिमातिषु॥ ७॥

[२०] विंशं सूक्तम्

ऋषिः—१-४ विश्वामित्रः; ५-७ गृत्समदः॥ देवता—इन्द्रः॥
छन्दः—गायत्री; ४ अनुष्टुप्॥

शुष्मिन्तमं न ऊतये द्युम्निनं पाहि जागृविम्। इन्द्र सोमं शतक्रतो॥ १॥
इन्द्रियाणि शतक्रतो या ते जनेषु पञ्चसु। इन्द्र तानि त आ वृणे॥ २॥
अगन्निन्द्र श्रवो बृहद्द्युम्नं दधिष्व दुष्टरम्। उत्ते शुष्मं तिरामसि॥ ३॥
अर्वावतो न आ गह्यथो शक्र परावतः।
उ लोको यस्ते अद्रिव इन्द्रेह तत आ गहि॥ ४॥
इन्द्रो अङ्ग महद्भयमभी षदपचुच्यवत्। स हि स्थिरो विचर्षणिः॥ ५॥
इन्द्रश्च मृडयाति नो न नः पश्चादघं नशत्। भद्रं भवाति नः पुरः॥ ६॥
इन्द्र आशाभ्यस्परि सर्वाभ्यो अभयं करत्। जेता शत्रून्विचर्षणिः॥ ७॥

[२१] एकविंशं सूक्तम्

ऋषिः—सव्यः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१-९ जगती; १०, ११ त्रिष्टुप्॥

न्यूषुषु वाचं प्र महे भरामहे गिर इन्द्राय सदने विवस्वतः।
नू चिद्धि रत्नं ससतामिवाविदद्वसुष्टितिर्द्रविणोदेषु शस्यते॥ १॥
दुरो अश्वस्य दुर इन्द्र गोरसि दुरो यवस्य वसुन इनस्पतिः।
शिक्षानरः प्रदिवो अकामकर्शनः सखा सखिभ्यस्तमिदं गृणीमसि॥ २॥
शचीव इन्द्र पुरुकृद्द्युमत्तम तवेदिदमभितश्चेकिते वसु।
अतः संगृभ्याभिभूत आ भर मा त्वायतो जरितुः काममूनयीः॥ ३॥
एभिर्द्युभिः सुमना एभिरिन्दुभिर्निरुन्धानो अमतिं गोभिरश्विना।
इन्द्रेण दस्युं दरयन्त इन्दुभिर्युतद्वेषसः समिषा रभेमहि॥ ४॥
समिन्द्र राया समिषा रभेमहि सं वाजेभिः पुरुश्चन्द्रैरभिद्युभिः।
सं देव्या प्रमत्या वीरशुष्मया गोअग्रयाश्वावत्या रभेमहि॥ ५॥
ते त्वा मदा अमदन्तानि वृष्ण्या ते सोमासो वृत्रहत्येषु सत्पते।
यत्कारवे दशं वृत्राण्यप्रति बर्हिरिष्मते नि सहस्राणि बर्हयः॥ ६॥
युधा युधमुप घेदेषि धृष्णुया पुरा पुरं समिदं हंस्योजसा।
नम्या यदिन्द्र सख्या परावति निबर्हयो नमुचिं नाम मायिनम्॥ ७॥
त्वं करञ्जमुत पर्णयं वधीस्तेजिष्ठयातिथिग्वस्य वर्तनी।
त्वं शता वङ्गृदस्याभिनत्पुरोऽनानुदः परिषूता ऋजिश्वना॥ ८॥
त्वमेतां जनराज्ञो द्विर्दशाबन्धुना सुश्रवसोपजग्मुषः।
षष्टिं सहस्रा नवतिं नव श्रुतो नि चक्रेण रथ्या दुष्पदावृणक्॥ ९॥
त्वमाविथ सुश्रवसं तवोतिभिस्तव त्रामभिरिन्द्र तूर्वयाणम्।
त्वमस्मै कुत्समतिथिग्वमायुं महे राज्ञे यूने अरन्धनायः॥ १०॥
य उदृचीन्द्र देवगोपाः सखायस्ते शिवतमा असाम।
त्वां स्तोषाम त्वया सुवीरा द्राघीय आयुः प्रतरं दधानाः॥ ११॥

[२२] द्वाविंशं सूक्तम्

ऋषिः—१-३ त्रिशोकः; ४-६ प्रियमेधः॥ देवता—इन्द्रः॥
छन्दः—गायत्री॥

अभि त्वा वृषभा सुते सुतं सृजामि पीतये। तृम्पा व्यश्नुही मदम्॥ १॥
मा त्वा मूरा अविष्यवो मोपहस्वान आ दभन्। माकीं ब्रह्मद्विषो वनः॥ २॥
इह त्वा गोपरीणसा महे मन्दन्तु राधसे। सरो गौरो यथा पिब॥ ३॥
अभि प्र गोपतिं गिरेन्द्रमर्च यथा विदे। सूनुं सत्यस्य सत्पतिम्॥ ४॥
आ हरयः ससृज्रिरेऽरुषीरधि बर्हिषि। यत्राभि संनवामहे॥ ५॥
इन्द्राय गावः आशिरं दुदुह्रे वज्रिणे मधु। यत्सीमुपहरे विदत्॥ ६॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

[२३] त्रयोविंशं सूक्तम्

ऋषिः—विश्वामित्रः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—गायत्री॥

आ तू न इन्द्र मद्रयुग्घुवानः सोमपीतये। हरिभ्यां याह्यद्रिवः॥ १॥
सत्तो होता न ऋत्वियस्तिस्तिरे बर्हिरानुषक्। अयुज्रन्प्रातरद्रयः॥ २॥
इमा ब्रह्म ब्रह्मवाहः क्रियन्त आ बर्हिः सीद। वीहि शूर पुरोडाशम्॥ ३॥
रारन्धि सवनेषु ण एषु स्तोमेषु वृत्रहन्। उक्थेष्विन्द्र गिर्वणः॥ ४॥
मतयः सोमपामुरुं रिहन्ति शवसस्पतिम्। इन्द्रं वत्सं न मातरः॥ ५॥
स मन्दस्वा ह्यन्धसो राधसे तन्वा महे। न स्तोतारं निदे करः॥ ६॥
वयमिन्द्र त्वायवो हविष्मन्तो जरामहे। उत त्वमस्मयुर्वसो॥ ७॥
मारे अस्मद्वि मुमुचो हरिप्रियार्वाङ् याहि। इन्द्र स्वधावो मत्स्वेह॥ ८॥
अर्वाञ्चं त्वा सुखे रथे वहतामिन्द्र केशिना। घृतस्नू बर्हिरासदे॥ ९॥

[२४] चतुर्विंशं सूक्तम्

ऋषिः—विश्वामित्रः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—गायत्री॥

उप नः सुतमा गहि सोममिन्द्र गवाशिरम्। हरिभ्यां यस्ते अस्मयुः॥ १॥
तमिन्द्र मदमा गहि बर्हिष्ठां ग्रावभिः सुतम्। कुविन्त्वस्य तृप्णवः॥ २॥
इन्द्रमित्था गिरो ममाच्छागुरिषिता इतः। आवृते सोमपीतये॥ ३॥
इन्द्रं सोमस्य पीतये स्तोमैरिह हवामहे। उक्थेभिः कुविदागमत्॥ ४॥
इन्द्र सोमाः सुता इमे तान्दधिष्व शतक्रतो। जठरे वाजिनीवसो॥ ५॥
विद्मा हि त्वा धनंजयं वाजेषु दधृषं कवे। अधा ते सुम्नमीमहे॥ ६॥
इममिन्द्र गवाशिरं यवाशिरं च नः पिब। आगत्या वृषभिः सुतम्॥ ७॥
तुभ्येदिन्द्र स्व ओक्ये सोमं चोदामि पीतये। एष रारन्तु ते हृदि॥ ८॥
त्वां सुतस्य पीतये प्रत्नमिन्द्र हवामहे। कुशिकासो अवस्यवः॥ ९॥

[२५] पञ्चविंशं सूक्तम्

ऋषिः—१-६ गोतमः; ७ अष्टकः॥ देवता—इन्द्रः॥
छन्दः—१-६ जगती; ७ त्रिष्टुप्॥

अश्वावति प्रथमो गोषु गच्छति सुप्रावीरिन्द्र मर्त्यस्तवोतिभिः।
तमित्पृणक्षि वसुना भवीयसा सिन्धुमापो यथाभितो विचेतसः॥ १॥
आपो न देवीरुप यन्ति होत्रियमवः पश्यन्ति वितंतं यथा रजः।
प्राचैर्देवासः प्र णयन्ति देवयुं ब्रह्मप्रियं जोषयन्ते वराइव॥ २॥
अधि द्वयोरदधा उक्थ्यं वचो यतस्रुचा मिथुना या सपर्यतः।
असंयत्तो व्रते ते क्षेति पुष्यति भद्रा शक्तिर्यजमानाय सुन्वते॥ ३॥
आदङ्गिराः प्रथमं दधिरे वय इद्ब्राह्मणयाः शम्या ये सुकृत्यया।
सर्वं पणेः समविन्दन्त भोजनमश्वावन्तं गोमन्तमा पशुं नरः॥ ४॥
यज्ञैरथर्वा प्रथमः पथस्तते ततः सूर्यो व्रतपा वेन आजनि।
आ गा आजदुशना काव्यः सचा यमस्य जातममृतं यजामहे॥ ५॥
बर्हिर्वा यत्स्वपत्याय वृज्यतेऽर्को वा श्लोकमाघोषते दिवि।
ग्रावा यत्र वदति कारुरुक्थ्यस्तस्येदिन्द्रो अभिपित्वेषु रण्यति॥ ६॥
प्रोग्रां पीतिं वृष्णा इयर्मि सत्यां प्रयै सुतस्य हर्यश्व तुभ्यम्।
इन्द्र धेनाभिरिह मादयस्व धीभिर्विश्वाभिः शच्या गृणानः॥ ७॥

[२६] षड्विंशं सूक्तम्

ऋषिः—१-३ शुनःशेपः; ४-६ मधुच्छन्दाः॥ देवता—इन्द्रः॥
छन्दः—गायत्री॥

योगेयोगे तवस्तरं वाजेवाजे हवामहे। सखाय इन्द्रमूतये॥ १॥
आ घा गमद्यदि श्रवत्सहस्रिणीभिरूतिभिः। वाजेभिरुप नो हवम्॥ २॥
अनु प्रत्नस्यौकसो हुवे तुविप्रतिं नरम्। यं ते पूर्वं पिता हुवे॥ ३॥
युञ्जन्ति ब्रध्नमरुषं चरन्तं परि तस्थुषः। रोचन्ते रोचना दिवि॥ ४॥
युञ्जन्त्यस्य काम्या हरी विपक्षसा रथे। शोणा धृष्णू नृवाहसा॥ ५॥
केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशो मर्या अपेशसे। समुषद्भिरजायथाः॥ ६॥

[२७] सप्तविंशं सूक्तम्

ऋषिः—गोपूवक्त्यश्वसूक्तिनौ॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—गायत्री॥

यदिन्द्राहं यथा त्वमीशीय वस्व एक इत्। स्तोता मे गोषखा स्यात्॥ १॥
शिक्षेयमस्मै दित्सेयं शचीपते मनीषिणे। यदहं गोपतिः स्याम्॥ २॥
धेनुष्ट इन्द्र सूनृता यजमानाय सुन्वते। गामश्वं पिप्युषी दुहे॥ ३॥
न तै वर्तास्ति राधस इन्द्र देवो न मर्त्यः। यद्दित्ससि स्तुतो मघम्॥ ४॥
यज्ञ इन्द्रमवर्धयद्यद्भूमिं व्यवर्तयत्। चक्राण ओपशं दिवि॥ ५॥
वावृधानस्य ते वयं विश्वा धनानि जिग्युषः। ऊतिमिन्द्रा वृणीमहे॥ ६॥

[२८] अष्टाविंशं सूक्तम्

ऋषिः—गोपूवक्त्यश्वसूक्तिनौ॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—गायत्री॥

व्यन्तरिक्षमतिरन्मदे सोमस्य रोचना। इन्द्रो यदभिनद्बलम्॥ १॥
उद्ना आजदङ्गिरोभ्य आविष्कृण्वन्गुहा सतीः। अर्वाञ्चं नुनुदे वलम्॥ २॥
इन्द्रेण रोचना दिवो दृढानि दृंहितानि च। स्थिराणि न पराणुदे॥ ३॥
अपामूर्मिर्मदन्निव सोम इन्द्राजिरायते। वि ते मदा अराजिषुः॥ ४॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

[२९] एकोनत्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—गोपूक्त्यश्वसूक्तिनौ ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥

त्वं हि स्तोमवर्धन इन्द्रास्युक्थवर्धनः। स्तोतृणामुत भद्रकृत् ॥ १ ॥
इन्द्रमित्केशिना हरी सोमपेयाय वक्षतः। उप यज्ञं सुराधसम् ॥ २ ॥
अपां फेनेन नमुचेः शिर इन्द्रोदवर्तयः। विश्वा यदजय स्पृधः ॥ ३ ॥
मायाभिरुत्सिसृप्सत इन्द्र द्यामारुरुक्षतः। अव दस्यूँरधूनुथाः ॥ ४ ॥
असुन्वामिन्द्र संसदं विषूचीं व्यनाशयः। सोमपा उत्तरो भवन् ॥ ५ ॥

[३०] त्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—बरुः सर्वहरिर्वा ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—जगती ॥

प्र ते महे विदथे शंसिषं हरी प्र ते वन्वे वनुषो हर्यतं मदम्।
घृतं न यो हरिभिश्चारु सेचत आ त्वा विशन्तु हरिवर्पसं गिरः ॥ १ ॥
हरिं हि योनिमभि ये समस्वरन्हिन्वन्तो हरी दिव्यं यथा सदः।
आ यं पृणन्ति हरिभिर्न धेनव इन्द्राय शूषं हरिवन्तमर्चत ॥ २ ॥
सो अस्य वज्रो हरितो य आयसो हरिर्निकामो हरिरा गभस्त्योः।
द्युम्नी सुशिप्रो हरिमन्युसायक इन्द्रे नि रूपा हरिता मिमिक्षिरे ॥ ३ ॥
दिवि न केतुरधि धायि हर्यतो विव्यचद्वज्रो हरितो न रंह्या।
तुददहिं हरिशिप्रो य आयसः सहस्त्रशोका अभवद्धरिभ्यः ॥ ४ ॥
त्वंत्वमहर्यथा उपस्तुतः पूर्वेभिरिन्द्र हरिकेश यज्वभिः ।
त्वं हर्यसि तव विश्वमुक्थ्यं१मसामि राधो हरिजात हर्यतम् ॥ ५ ॥

[३१] एकत्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—बरुः सर्वहरिर्वा ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—जगती ॥

ता वज्रिणं मन्दिनं स्तोम्यं मद इन्द्रं रथे वहतो हर्यता हरी।
पुरूण्यस्मै सवनानि हर्यत इन्द्राय सोमा हरयो दधन्विरे ॥ १ ॥
अरं कामाय हरयो दधन्विरे स्थिराय हिन्वन्हरयो हरी तुरा।
अर्वद्भिर्यो हरिभिर्जोषमीयते सो अस्य कामं हरिवन्तमानशे ॥ २ ॥
हरिश्मशारुर्हरिकेश आयससस्त्रुरस्पेये यो हरिपा अवर्धत।
अर्वद्भिर्यो हरिभिर्वाजिनीवसुरति विश्वा दुरिता पारिषद्धरी ॥ ३ ॥
स्तुवेव यस्य हरिणी विपेततुः शिप्रे वाजाय हरिणी दविध्वतः।
प्र यत्कृते चमसे मर्मृजद्धरी पीत्वा मदस्य हर्यतस्यान्धसः ॥ ४ ॥
उत स्म सद्म हर्यतस्य पस्त्योरत्यो न वाजं हरिवाँ अचिक्रदत्।
महो चिद्धि धिषणाहर्यदोजसा बृहद्वयो दधिषे हर्यताश्विना ॥ ५ ॥

[३२] द्वात्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—बरुः सर्वहरिर्वा ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१ जगती; २, ३ त्रिष्टुप् ॥

आ रोदसी हर्यमाणो महित्वा नव्यंनव्यं हर्यसि मन्म नु प्रियम्।
प्र पस्त्यमसुर हर्यतं गोरावाविष्कृधि हरये सूर्याय ॥ १ ॥
आ त्वा हर्यन्तं प्रयुजो जनानां रथे वहन्तु हरिशिप्रमिन्द्र ।
पिबा यथा प्रतिभृतस्य मध्वो हर्यन्यज्ञं समधमादे दशोणिम् ॥ २ ॥
अपाः पूर्वेषां हरिवः सुतानामथो इदं सवनं केवलं ते ।
ममद्धि सोमं मधुमन्तमिन्द्र सत्रा वृषं जठर आ वृषस्व ॥ ३ ॥

[३३] त्रयोत्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—अष्टकः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥

अप्सु धूतस्य हरिवः पिबेह नृभिः सुतस्य जठरं पृणस्व।
मिमिक्ष्वर्यमद्रय इन्द्र तुभ्यं तेभिर्वर्धस्व मदमुक्थवाहः ॥ १ ॥
प्रोग्रां पीतिं वृष्ण इयर्मि सत्यां प्रयै सुतस्य हर्यश्व तुभ्यम्।
इन्द्र धेनाभिरिह मादयस्व धीभिर्विश्वाभिः शच्या गृणानः ॥ २ ॥
ऊती शचीवस्तव वीर्येण वयो दधाना उशिजः ऋतज्ञाः।
प्रजावदिन्द्र मनुषो दुरोणे तस्थुर्गृणन्तः सधमाद्यासः ॥ ३ ॥

अथ चतुर्थोऽनुवाकः [३४] चतुस्त्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—गृत्समदः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥

यो जात एव प्रथमो मनस्वान्देवो देवान्क्रतुना पर्यभूषत्।
यस्य शुष्माद्रोदसी अभ्यसेतां नृम्णस्य मह्ना स जनास इन्द्रः ॥ १ ॥
यः पृथिवीं व्यथमानामदृंहद्यः पर्वतान्प्रकुपिताँ अरम्णात्।
यो अन्तरिक्षं विममे वरीयो यो द्यामस्तभ्नात्स जनास इन्द्रः ॥ २ ॥
यो हत्वाहिमरिणात्सप्त सिन्धून्यो गा उदाजदपधा वलस्य।
यो अश्मनोरन्तरग्निं जजान संवृक्समत्सु स जनास इन्द्रः ॥ ३ ॥
येनेमा विश्वा च्यवना कृतानि यो दासं वर्णमधरं गुहाकः।
श्वघ्नीव यो जिगीवाँ लक्षमाददर्यः पुष्टानि स जनास इन्द्रः ॥ ४ ॥
यं स्मा पृच्छन्ति कुह सेति घोरमुतेमाहुर्नैषो अस्तीत्येनम्।
सो अर्यः पुष्टीर्विजइवा मिनाति श्रदस्मै धत्त स जनास इन्द्रः ॥ ५ ॥
यो रध्रस्य चोदिता यः कृशस्य यो ब्रह्मणो नाधमानस्य कीरेः।
युक्तग्राव्णो योऽविता सुशिप्रः सुतसोमस्य स जनास इन्द्रः ॥ ६ ॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

यस्याश्वासः प्रदिशि यस्य गावो यस्य ग्रामा यस्य विश्वे रथासः।
यः सूर्यं य उषसं जजान यो अपां नेता स जनास इन्द्रः॥७॥
यं क्रन्दसी संयती विह्वयेते परेऽवर उभया अमित्राः।
समानं चिद्रथमातस्थिवांसा नाना हवेते स जनास इन्द्रः॥८॥
यस्मान्न ऋते विजयन्ते जनासो यं युध्यमाना अवसे हवन्ते।
यो विश्वस्य प्रतिमानं बभूव यो अच्युतच्युत्स जनास इन्द्रः॥९॥
यः शश्वतो महोनो दधानानमन्यमानाञ्छर्वा जघान।
यः शर्धते नानुददाति शृध्यां यो दस्योर्हन्ता स जनास इन्द्रः॥१०॥
यः शम्बरं पर्वतेषु क्षियन्तं चत्वारिंश्यां शरद्यन्वविन्दत्।
ओजायमानं यो अहिं जघान दानुं शयानं स जनास इन्द्रः॥११॥
यः शम्बरं पर्यतरत्कसीभिर्योऽचारुकास्त्रापिबत्सुतस्य।
अन्तर्गिरौ यजमानं बहुं जनं यस्मिन्नामूर्छत्स जनास इन्द्रः॥१२॥
यः सप्तरश्मिर्वृषभस्तुविष्मानवासृजत्सर्तवे सप्त सिन्धून्।
यो रौहिणमस्फुरद्वज्रबाहुर्द्यामारोहन्तं स जनास इन्द्रः॥१३॥
द्यावा चिदस्मै पृथिवी नमेते शुष्माच्चिदस्य पर्वता भयन्ते।
यः सोमपा निचितो वज्रबाहुर्यो वज्रहस्तः स जनास इन्द्रः॥१४॥
यः सुन्वन्तमवति यः पचन्तं यः शंसन्तं यः शशमानमूती।
यस्य ब्रह्म वर्धनं यस्य सोमो यस्येदं राधः स जनास इन्द्रः॥१५॥
जातो ब्युख्यत्पित्रोरुपस्थे भुवो न वेद जनितुः परस्य।
स्तविष्यमाणो नो यो अस्मद् व्रता देवानां स जनास इन्द्रः॥१६॥
यः सोमकामो हर्यश्वः सूरिर्यस्माद्रेजन्ते भुवनानि विश्वा।
यो जघान शम्बरं यश्च शुष्णं य एकवीरः स जनास इन्द्रः॥१७॥
यः सुन्वते पचते दुध्र आ चिद्वाजं ददर्षि स किलासि सत्यः।
वयं त इन्द्र विश्वह प्रियासः सुवीरासो विदथमा वदेम॥१८॥

[३५] पञ्चत्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—नोधाः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—त्रिष्टुप्॥

अस्मा इदु प्र तवसे तुराय प्रयो न हर्मि स्तोमं माहिनाय।
ऋचीषमायाधिगव ओहमिन्द्राय ब्रह्माणि राततमा॥१॥
अस्मा इदु प्रयइव प्र यंसि भरम्याङ्गूषं बाधे सुवृक्ति।
इन्द्राय हृदा मनसा मनीषा प्रत्नाय पत्ये धियो मर्जयन्त॥२॥
अस्मा इदु त्यमुपमं स्वर्षां भरांम्याङ्गूषमास्येन।
मंहिष्ठमच्छोक्तिभिर्मतीनां सुवृक्तिभिः सूरिं वावृधध्यै॥३॥
अस्मा इदु स्तोमं सं हिनोमि रथं न तष्टेव तत्सिनाय।
गिरश्च गिर्वाहसे सुवृक्तीन्द्राय विश्वमिन्वं मेधिराय॥४॥
अस्मा इदु सप्तिमिव श्रवस्येन्द्रायार्कं जुह्वा३ समञ्जे।
वीरं दानौकसं वन्दध्यै पुरां गूर्तश्रवसं दर्माणम्॥५॥
अस्मा इदु त्वष्टा तक्षद्वज्रं स्वपस्तमं स्वर्यं३ रणाय।
वृत्रस्य चिद्विदद्येन मर्म तुजन्नीशानस्तुजता किये धाः॥६॥
अस्येदु मातुः सवनेषु सद्यो महः पितुं पपिवां चार्वन्ना।
मुषायद्विष्णुः पचतं सहीयान्विध्यद्वराहं तिरो अद्रिमस्ता॥७॥
अस्मा इदु ग्राश्चिद्देवपत्नीरिन्द्रायार्कमहिहत्यं ऊवुः।
परि द्यावापृथिवी जभ्र उर्वी नास्य ते महिमानं परि ष्टः॥८॥
अस्येदेव प्र रिरिचे महित्वं दिवस्पृथिव्याः पर्यन्तरिक्षात्।
स्वराडिन्द्रो दम आ विश्वगूर्तः स्वरिरमत्रो ववक्षे रणाय॥९॥
अस्येदेव शवसा शुषन्तं वि वृश्चद्वज्रेण वृत्रमिन्द्रः।
गा न व्राणा अवनीरमुञ्चदभि श्रवो दावने सचेताः॥१०॥
अस्येदु त्वेषसा रन्त सिन्धवः परि यद्वज्रेण सीमयच्छत्।
ईशानकृद्दाशुषे दशस्यन्तुर्वीतये गाधं तुर्वणिः कः॥११॥
अस्मा इदु प्र भरा तूतुजानो वृत्राय वज्रमीशानः किये धाः।
गोर्न पर्व वि रदा तिरश्चेष्यन्नर्णांस्यपां चरध्यै॥१२॥
अस्येदु प्र ब्रूहि पूर्व्याणि तुरस्य कर्माणि नव्य उक्थैः।
युधे यदिष्णान आयुधान्यृघायमाणो निरिणाति शत्रून्॥१३॥
अस्येदु भिया गिरयश्च दृढा द्यावा च भूमा जनुषस्तुजेते।
उपो वेनस्य जोगुवान ओणिं सद्यो भुवद्वीर्याय नोधाः॥१४॥
अस्मा इदु त्यदनु दाय्येषामेको यद्वव्ने भूरेरीशानः।
प्रैतशं सूर्ये पस्पृधानं सौवश्व्ये सुष्विमाववृन्द्रः॥१५॥
एवा ते हारियोजना सुवृक्तीन्द्र ब्रह्माणि गोतमासो अक्रन्।
ऐषु विश्वपेशसं धियं धाः प्रातर्मक्षू धियावसुर्जगम्यात्॥१६॥

[३६] षट्त्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—भरद्वाजः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—त्रिष्टुप्॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

य एक॒ इद्धव्य॑श्चर्षणी॒नामिन्द्रं॒ तं गी॒र्भिर॒भ्य॑र्च आ॒भिः।
यः पत्य॑ते वृष॒भो वृष्ण्या॑वान्त्स॒त्यः सत्वा॑ पुरुमा॒यः सह॑स्वान्॥ १॥
तमु॑ नः॒ पूर्वे॑ पि॒तरो॒ नव॑ग्वाः स॒प्त विप्रा॑सो अ॒भि वा॒जय॑न्तः।
न॒क्ष॒द्दा॒भं ततु॑रिं पर्वते॒ष्ठामद्रो॑घवाचं म॒तिभिः॒ शवि॑ष्ठम्॥ २॥
तमी॑मह॒ इन्द्र॑मस्य रा॒यः पु॑रु॒वीर॑स्य नृ॒वतः॑ पुरु॒क्षोः।
यो अस्कृ॑धोयुर॒जरः॒ स्व॒र्वा॒न्तमा भ॑र हरिवो माद॒यध्यै॑॥ ३॥
तन्नो॒ वि वो॑चो॒ यदि॑ ते पु॒रा चि॑ज्जरि॒तार॑ आन॒शुः सु॒म्नमि॑न्द्र।
कस्ते॑ भा॒गः किं वयो॑ दुध्र खिद्वः॒ पुरु॑हूत पुरूवसोऽसुर॒घ्नः॥ ४॥
तं पृ॒च्छन्ती॒ वज्र॑हस्तं रथे॒ष्ठामिन्द्रं॒ वेपी॒ वक्व॑री॒ यस्य॒ नू गीः।
तु॒वि॒ग्रा॒भं तु॑विकू॒र्मिं र॑भो॒दां गा॒तुमि॑षे॒ नक्ष॑ते॒ तुम्र॒मच्छ॑॥ ५॥
अ॒या ह॒ त्यं मा॒यया॑ वावृधा॒नं म॑नो॒जुवा॑ स्वतवः॒ पर्व॑तेन।
अच्यु॑ता चिद्वीढि॒ता स्वो॑जो रु॒जो वि दृ॒ढा धृ॑ष॒ता वि॑रप्शिन्॥ ६॥
तं वो॑ धि॒या नव्य॑स्या॒ शवि॑ष्ठं प्र॒त्नं प्र॑त्न॒वत्प॑रितंस॒यध्यै॑।
स नो॑ वक्षदनिमा॒नः सु॒वह्येन्द्रो॒ विश्वा॒न्यति॑ दु॒र्गहा॑णि॥ ७॥
आ जना॑य॒ द्रुह्व॑णे॒ पार्थि॑वानि दि॒व्यानि॑ दीपयो॒ऽन्तरि॑क्षा।
तपा॑ वृषन्वि॒श्वतः॑ शो॒चिषा॒ तान्ब्र॑ह्म॒द्विषे॑ शोचय॒ क्षाम॒पश्च॑॥ ८॥
भुवो॒ जन॑स्य दि॒व्यस्य॒ राजा॒ पार्थि॑वस्य॒ जग॑तस्त्वेषसंदृक्।
धि॒ष्व वज्रं॒ दक्षि॑ण इन्द्र॒ हस्ते॒ विश्वा॑ अजुर्य दयसे॒ वि मा॒याः॥ ९॥
आ सं॒यत॑मिन्द्र णः स्व॒स्तिं श॑त्रु॒तूर्या॑य बृह॒तीममृ॑ध्राम्।
यया॒ दासा॒न्यार्या॑णि वृ॒त्रा करो॑ वज्रिन्त्सु॒तुका॒ नाहु॑षाणि॥ १०॥
स नो॑ नि॒युद्भिः॑ पुरुहूत वेधो वि॒श्ववा॑राभि॒रा ग॑हि प्रयज्यो।
न या अदे॑वो॒ वर॑ते॒ न दे॒व आभि॑र्याहि॒ तूय॒मा म॑द्र्य॒द्रिक्॥ ११॥

[३७] सप्तत्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—त्रिष्टुप्॥

यस्ति॒ग्मशृ॑ङ्गो वृष॒भो न भी॒म एकः॑ कृ॒ष्टीश्च्या॒वय॑ति॒ प्र विश्वाः॑।
यः शश्व॑तो॒ अदा॑शुषो॒ गय॑स्य प्रय॒न्तासि॒ सुष्वि॑तराय॒ वेदः॑॥ १॥
त्वं ह॒ त्यदि॑न्द्र॒ कुत्स॑मावः॒ शुश्रू॑षमाणस्त॒न्वा॑ सम॒र्ये।
दासं॒ यच्छुष्णं॒ कुय॑वं॒ न्य॑स्मा॒ अर॑न्धय आर्जुने॒याय॒ शिक्ष॑न्॥ २॥
त्वं धृ॑ष्णो धृष॒ता वी॒तह॑व्यं॒ प्रावो॒ विश्वा॑भिरू॒तिभिः॑ सु॒दास॑म्।
प्र पौरु॑कुत्सिं त्र॒सद॑स्युमावः॒ क्षेत्र॑साता वृत्र॒हत्ये॑षु पू॒रुम्॥ ३॥
त्वं नृभि॑र्नृमणो दे॒ववी॑तौ॒ भूरी॑णि वृ॒त्रा ह॑र्यश्व हंसि।
त्वं नि दस्युं॒ चुमु॑रिं॒ धुनिं॒ चास्वा॑पयो द॒भीत॑ये सु॒हन्तु॑॥ ४॥
तव॑ च्यौ॒त्नानि॑ वज्रहस्त॒ तानि॒ नव॒ यत्पुरो॑ नव॒तिं च॑ स॒द्यः।
नि॒वेश॑ने शतत॒मावि॑वेषी॒रहं॑ च वृ॒त्रं नमु॑चिमु॒ताह॑न्॥ ५॥
सना॒ ता त॑ इन्द्र॒ भोज॑नानि रा॒तह॑व्याय दा॒शुषे॑ सु॒दासे॑।
वृष्णे॑ ते॒ हरी॒ वृष॑णा युनज्मि॒ व्यन्तु॒ ब्रह्मा॑णि पुरुशाक॒ वाज॑म्॥ ६॥
मा ते॑ अ॒स्यां स॑हसाव॒न्परि॑ष्टाव॒घाय॑ भूम हरिवः परा॒दै।
त्राय॑स्व नोऽवृ॒केभि॒र्वरू॑थै॒स्तव॑ प्रि॒यासः॑ सू॒रिषु॑ स्याम॥ ७॥
प्रि॒यास॒ इत्ते॑ मघवन्न॒भिष्टौ॒ नरो॑ मदेम शर॒णे सखा॑यः।
नि तु॒र्वशं॒ नि याद्वं॑ शिशीह्यतिथि॒ग्वाय॒ शंस्यं॑ करि॒ष्यन्॥ ८॥
स॒द्यश्चि॒न्नु ते॑ मघवन्न॒भिष्टौ॒ नरः॑ शंसन्त्युक्थ॒शास॑ उ॒क्था।
ये ते॒ हवे॑भि॒र्वि प॒णीँरदा॑शन्न॒स्मान्वृ॑णीष्व॒ युज्या॑य॒ तस्मै॑॥ ९॥
ए॒ते स्तोमा॑ न॒रां नृ॑तम॒ तुभ्य॑मस्म॒द्र्य॑ञ्चो॒ दद॑तो म॒घानि॑।
तेषा॑मिन्द्र वृत्र॒हत्ये॑ शि॒वो भूः॒ सखा॑ च॒ शूरो॑ऽवि॒ता च॑ नृ॒णाम्॥ १०॥
नू इ॑न्द्र शूर॒ स्तव॑मान ऊ॒ती ब्रह्म॑जूतस्त॒न्वा॑ वावृधस्व।
उप॑ नो॒ वाजा॑न्मिमी॒ह्युप॒ स्तीन्यू॒यं पा॑त स्व॒स्तिभिः॒ सदा॑ नः॥ ११॥

अथ पञ्चमोऽनुवाकः [३८] अष्टात्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—१-३ इरिम्बिठिः; ४-६ मधुच्छन्दाः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—गायत्री॥

आ या॑हि सुषु॒मा हि त॒ इन्द्र॒ सोमं॒ पिबा॑ इ॒मम्। एदं ब॒र्हिः स॑दो॒ मम॑॥ १॥
आ त्वा॑ ब्रह्म॒युजा॒ हरी॒ वह॑तामिन्द्र के॒शिना॑। उप॒ ब्रह्मा॑णि नः शृणु॥ २॥
ब्र॒ह्माण॑स्त्वा व॒यं यु॒जा सो॑म॒पामि॑न्द्र सो॒मिनः॑। सु॒ताव॑न्तो हवामहे॥ ३॥
इन्द्र॒मिद्गा॒थिनो॑ बृ॒हदिन्द्र॑म॒र्केभि॑र॒र्किणः॑। इन्द्रं॒ वाणी॑रनूषत॥ ४॥
इन्द्र॒ इद्धर्यो॒ः सचा॒ संमि॑श्ल॒ आ व॑चो॒युजा॑। इन्द्रो॑ व॒ज्री हि॑र॒ण्ययः॑॥ ५॥
इन्द्रो॑ दी॒र्घाय॒ चक्ष॑स॒ आ सूर्यं॑ रोहयद्दि॒वि। वि गोभि॒रद्रि॑मैरयत्॥ ६॥

[३९] एकोनचत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—१ मधुच्छन्दाः; २-५ गोषूक्त्यश्वसूक्तिनौ॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—गायत्री॥

इन्द्रं॑ वो वि॒श्वत॒स्परि॒ हवा॑महे॒ जने॑भ्यः। अ॒स्माक॑मस्तु॒ केव॑लः॥ १॥
व्य१॒॑न्तरि॑क्षमतिर॒न्मदे॒ सोम॑स्य रोच॒ना। इन्द्रो॒ यदभि॑नद्व॒लम्॥ २॥
उद्गा आ॑ज॒दङ्गि॑रोभ्य आ॒विष्कृ॒ण्वन्गुहा॑ स॒तीः। अ॒र्वाञ्चं॑ नुनुदे व॒लम्॥ ३॥
इन्द्रे॑ण रोच॒ना दि॒वो दृ॒ढानि॑ दृंहि॒तानि॑ च। स्थि॒राणि॒ न प॑रा॒णुदे॑॥ ४॥
अ॒पामू॒र्मिर्मद॑न्निव॒ स्तोम॑ इन्द्राजिरायते। वि ते॒ मदा॑ अराजिषुः॥ ५॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

[४०] चत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—मधुच्छन्दाः॥ देवता—१, २ इन्द्रः; ३ मरुतः॥
छन्दः—गायत्री॥

इन्द्रेण॑ सं हि दृक्ष॑से संजग्मा॒नो अबि॑भ्युषा। म॒न्दू स॑मा॒नव॑र्चसा॥ १॥
अ॒नव॒द्यैर॒भिद्यु॑भि॒र्मख॑ः सहस्वदर्चति। ग॒णैरिन्द्र॑स्य॒ काम्यैः॥ २॥
आदह॑ स्व॒धामनु॒ पुनर्ग॑र्भ॒त्वमे॑रिरे। दधा॑ना॒ नाम॑ य॒ज्ञिय॑म्॥ ३॥

[४१] एकचत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—गोतमः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—गायत्री॥

इन्द्रो॑ दधी॒चो अ॒स्थभि॑र्वृ॒त्राण्यप्र॑तिष्कुतः। ज॒घान॑ नव॒तीर्नव॑॥ १॥
इ॒च्छन्नश्व॑स्य॒ यच्छिर॒ः पर्व॑ते॒ष्वप॑श्रितम्। तद्विदच्छ॑र्यणा॒वति॥ २॥
अत्राह॒ गोर॑मन्वत॒ नाम॒ त्वष्टु॒रप॑ीच्य॒म्। इ॒त्था च॒न्द्रम॑सो गृ॒हे॥ ३॥

[४२] द्विचत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—कुरुसुतिः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—गायत्री॥

वाच॑मष्टाप॒दीमहं॑ नवस्रक्ति॒मृत॒स्पृश॑म्। इन्द्रा॒त्परि॑ त॒न्व॑ ममे॥ १॥
अनु॑ त्वा रोदसी उ॒भे क्रक्ष॑माणमकृपेताम्। इन्द्र॒ यद्ह॑स्यु॒हाभ॑वः॥ २॥
उ॒त्ति॒ष्ठ॒न्नोज॑सा स॒ह पी॒त्वी शिप्रे॑ अवेपयः। सोम॑मिन्द्र च॒मू सु॒तम्॥ ३॥

[४३] त्रिचत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—त्रिशोकः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—गायत्री॥

भि॒न्धि विश्वा॒ अप॒ द्विषः॒ परि॒ बाधो॑ ज॒ही मृधः॑। वसु॑ स्पा॒हं तदा भ॑र॥ १॥
यद्वी॒डावि॑न्द्र॒ यत्स्थि॒रे यत्पर्शा॑ने॒ पराभृ॑तम्। वसु॑ स्पा॒हं तदा भ॑र॥ २॥
यस्य॑ ते॒ विश्व॑मानु॒षो भूरे॑र्दत्तस्य॒ वेद॑ति। वसु॑ स्पा॒हं तदा भ॑र॥ ३॥

[४४] चतुश्चत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—इरिम्बिठिः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—गायत्री॥

प्र स॒म्राजं॑ चर्षणी॒नामिन्द्रं॑ स्तोता॒ नव्यं॑ गी॒र्भिः। नरं॑ नृषा॒हं मं॑हिष्ठम्॥ १॥
यस्मि॒न्नुक्था॑नि रण्य॒न्ति विश्वा॑नि च श्रव॒स्या॑। अ॒पाम॑वो॒ न स॑मु॒द्रे॥ २॥
तं सु॑ष्टु॒त्या वि॑वासे॒ ज्येष्ठ॑राजं॒ भरे॑ कृ॒त्नुम्। म॒हो वा॒जिनं॑ स॒निभ्य॑ः॥ ३॥

[४५] पञ्चचत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—शुनःशेपो देवरातापरनामा॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—गायत्री॥

अ॒यमु॒ ते समतसि क॒पोत॑इव गर्भ॒धिम्। वच॒स्तच्चि॑न्न ओहसे॥ १॥
स्तो॒त्रं रा॑धानां पते॒ गिर्वा॑हो वीर॒ यस्य॑ ते। विभू॑तिरस्तु सू॒नृता॑॥ २॥
ऊ॒र्ध्वास्ति॑ष्ठा न ऊ॒तये॒ऽस्मिन्वाजे॑ शतक्रतो। सम॒न्येषु॑ ब्रवावहै॥ ३॥

[४६] षट्चत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—इरिम्बिठिः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—गायत्री॥

प्र॒णेता॑रं॒ वस्यो॒ अच्छा॒ कर्ता॑रं॒ ज्योति॑ः स॒मत्सु॑। सा॒स॒ह्वांसं॑ युधामि॒त्रान्॥ १॥
स नः॒ पप्रि॑ः पारयाति स्व॒स्ति ना॒वा पु॑रुहू॒तः। इन्द्रो॒ विश्वा॒ अति॒ द्विष॑ः॥ २॥
स त्वं न॑ इन्द्र॒ वाजे॑भि॒र्दश॑स्या च॑ गातु॒या च॑। अच्छा॑ च नः॒ सुम्नं॑ नेषि॥ ३॥

[४७] सप्तचत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—१-३ सुकक्षः; ४-६, १०-१२ मधुच्छन्दाः; ७-९ इरिम्बिठिः; १३-२१ प्रस्कण्वः॥ देवता—१-१२ इन्द्रः; १३-२१ सूर्यः॥
छन्दः—गायत्री॥

तमिन्द्रं॑ वाजयामसि म॒हे वृ॒त्राय॒ हन्त॑वे। स वृषा॑ वृष॒भो भु॑वत्॥ १॥
इन्द्रः॒ स दाम॑ने कृ॒त ओजि॑ष्ठः॒ स मदे॑ हि॒तः। द्यु॒म्नी श्लो॒की स सो॒म्यः॥ २॥
गि॒रा व॒ज्रो न संभृ॑तः सबल॒ो अन॑पच्युतः। व॒वक्ष॒ ऋष्वो॑ अस्तृ॒तः॥ ३॥
इन्द्र॒मिद्गा॑थिनो॒ बृह॒दिन्द्र॒मर्के॑भि॒रर्किण॑ः। इन्द्रं॑ वाणी॒रनू॑षत॥ ४॥
इन्द्र॒ इद्धर्यो॑ः सचा॒ सं॑मिश्ल॒ आ व॑चो॒युजा॑। इन्द्रो॑ व॒ज्री हि॑र॒ण्ययः॑॥ ५॥
इन्द्रो॑ दी॒र्घाय॒ चक्ष॑स॒ आ सूर्यं॑ रोहयद्दि॒वि। वि गो॒भिर॑द्रिमैरयत्॥ ६॥
आ या॑हि सुषु॒मा हि त॒ इन्द्र॒ सोमं॑ पिबा॒ इ॒मम्। एदं ब॒र्हिः सदो॒ मम॑॥ ७॥
आ त्वा॑ ब्रह्मयु॒जा॒ हरी॒ वह॑तामिन्द्र के॒शिना॑। उप॒ ब्रह्मा॑णि नः शृणु॥ ८॥
ब्रह्मा॑णस्त्वा व॒यं यु॒जा सो॑म॒पामि॑न्द्र सो॒मिनः॑। सुतावन्तो॒ हवामहे॥ ९॥
युञ्ज॑न्ति॒ ब्रध्न॑मरु॒षं चर॑न्तं॒ परि॒ त॒स्थुषः॑। रोच॑न्ते रोच॒ना दि॒वि॥ १०॥
युञ्ज॑न्त्य॒स्य॒ काम्या॒ हरी॒ विप॑क्षसा॒ रथे॑। शोणा॑ धृ॒ष्णू नृ॒वाह॑सा॥ ११॥
के॒तुं कृ॑ण्वन्न॒के॒तवे॒ पेशो॑ मर्या॒ अपे॒शसे॑। समु॒षद्भि॑रजायथाः॥ १२॥
उदु॒ त्यं जा॒तवे॑दसं दे॒वं व॑हन्ति के॒तवः॑। दृ॒शे विश्वा॑य॒ सूर्य॑म्॥ १३॥
अप॒ त्ये ता॒यवो॑ यथा॒ नक्ष॑त्रा यन्त्यक्तु॒भिः॑। सूरा॑य वि॒श्वच॑क्षसे॥ १४॥
अदृ॑श्रन्नस्य के॒तवो॒ वि र॒श्मयो॒ जना॒ँ अनु॑। भ्राज॑न्तो अ॒ग्नयो॑ यथा॥ १५॥
त॒रणि॑र्वि॒श्वद॑र्शतो॒ ज्योति॒ष्कृद॑सि॒ सूर्य॑। विश्व॒मा भा॑सि रोचन॥ १६॥
प्र॒त्यङ् दे॒वाना॑ं विश॑ः प्र॒त्यङ्ङु॑दे॒षि॒ मानु॑षीः। प्र॒त्यङ् विश्व॑ं स्व॒र्दृशे॑॥ १७॥
येना॑ पावक॒ चक्ष॑सा भु॒रण्य॑न्तं॒ जना॒ँ अनु॑। त्वं व॑रुण पश्यसि॥ १८॥
वि द्यामे॑षि॒ रज॑स्पृथ्व॒हर्मा॑नो अक्तु॒भिः॑। पश्य॑ं जन्मा॑नि सूर्य॥ १९॥
स॒प्त त्वा॑ हरि॒तो॒ रथे॒ वह॑न्ति देव सूर्य। शो॒चिष्के॑शं विचक्षण॥ २०॥
अयु॑क्त स॒प्त शु॒न्ध्यव॑ः सू॒रो रथ॑स्य न॒प्त्यः॑। ताभि॑र्याति स्वयु॒क्ति॒भिः॥ २१॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

[४८] अष्टचत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—१-३ खिलः; ४-६ उपरिबभ्रवः सार्पराज्ञी वा॥ देवता—१-३ सूर्यः; ४-६ गौः॥ छन्दः—गायत्री॥

अभि त्वा वर्चसा गिरः सिञ्चन्तीराचरण्यवः। अभि वत्सं न धेनवः॥ १॥
ता अर्षन्ति शुभ्रियः पृञ्चन्तीर्वर्चसा प्रियः। जातं जात्रीर्यथा हुदा॥ २॥
वज्रापवसाध्यः कीतिर्भियमाणमावहन्। मह्यमायुर्घृतं पयः॥ ३॥
आयं गौः पृश्निरक्रमीदसदन्मातरं पुरः। पितरं च प्रयन्त्स्वः॥ ४॥
अन्तश्चरति रोचना अस्य प्राणादपानतः। व्यख्यन्महिषः स्वः॥ ५॥
त्रिंशद्धामा वि राजति वाक्पतङ्गो असिश्रियत्। प्रति वस्तोरहर्द्युभिः॥ ६॥

[४९] एकोनपञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—१-३ खिलः; ४, ५ नोधाः; ६, ७ मेध्यातिथिः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१-३ गायत्री; ४-७ बार्हतः प्रगाथः (समा-बृहती+विषमा-सतोबृहती)॥

यच्छक्रा वाचमारुहन्नन्तरिक्षं सिषासथः। सं देवा अमदन्वृषा॥ १॥
शक्रो वाचमधृष्टायोरुवाचो अधृष्णुहि। मंहिष्ठ आ मदर्दिवि॥ २॥
शक्रो वाचमधृष्णुहि धामधर्मन्विराजति। विमदन्बर्हिरासरन्॥ ३॥
तं वो दस्ममृतीषहं वसोर्मन्दानमन्धसः।
अभि वत्सं न स्वसरेषु धेनव इन्द्रं गीर्भिर्नवामहे॥ ४॥
द्युक्षं सुदानुं तविषीभिरावृतं गिरिं न पुरुभोजसम्।
क्षुमन्तं वाजं शतिनं सहस्रिणं मक्षू गोमन्तमीमहे॥ ५॥
तत्त्वा यामि सुवीर्यं तद् ब्रह्म पूर्वचित्तये।
येना यतिभ्यो भृगवे धनं हिते येन प्रस्कण्वमाविथ॥ ६॥
येना समुद्रमसृजो महीरपस्तदिन्द्र वृष्णि ते शवः।
सद्यः सो अस्य महिमा न संनशे यं क्षोणीरनुचक्रदे॥ ७॥

[५०] पञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—मेध्यातिथिः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—बार्हतः प्रगाथः (बृहती+सतोबृहती)॥

कन्नव्यो अतसीनां तुरो गृणीत मर्त्यः।
नही न्वस्य महिमानमिन्द्रियं स्वर्गृणन्त आनशुः॥ १॥
कदु स्तुवन्त ऋतयन्त देवत ऋषिः को विप्र ओहते।
कदा हवं मघवन्निन्द्र सुन्वतः कदु स्तुवत आ गमः॥ २॥

[५१] एकपञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—१, २ प्रस्कण्वः; ३, ४ पुष्टिगुः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—बार्हतः प्रगाथः (विषमा-बृहती+समा-सतोबृहती)॥

अभि प्र वः सुराधसमिन्द्रमर्च यथा विदे।
यो जरितृभ्यो मघवा पुरूवसुः सहस्रेणेव शिक्षति॥ १॥
शतानीकेव प्र जिगाति धृष्णुया हन्ति वृत्राणि दाशुषे।
गिरेरिव प्र रसा अस्य पिन्विरे दत्राणि पुरुभोजसः॥ २॥
प्र सु श्रुतं सुराधसमर्चा शक्रमभिष्टये।
यः सुन्वते स्तुवते काम्यं वसु सहस्रेणेव मंहते॥ ३॥
शतानीका हेतयो अस्य दुष्टरा इन्द्रस्य समिषो महीः।
गिरिर्न भुज्मा मघवत्सु पिन्वते यदीं सुता अमन्दिषुः॥ ४॥

[५२] द्विपञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—मेध्यातिथिः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—बृहती॥

वयं घ त्वा सुतावन्त आपो न वृक्तबर्हिषः।
पवित्रस्य प्रस्रवणेषु वृत्रहन्परि स्तोतार आसते॥ १॥
स्वरन्ति त्वा सुते नरो वसो निरेक उक्थिनः।
कदा सुतं तृषाण ओक आ गम इन्द्र स्वब्दीव वंसगः॥ २॥
कण्वेभिर्धृष्णवा धृषद्वाजं दर्षि सहस्त्रिणम्।
पिशङ्गरूपं मघवन्विचर्षणे मक्षू गोमन्तमीमहे॥ ३॥

[५३] त्रिपञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—मेध्यातिथिः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—बृहती॥

क ईं वेद सुते सचा पिबन्तं कद्वयो दधे।
अयं यः पुरो विभिनत्त्योजसा मन्दानः शिप्र्यन्धसः॥ १॥
दाना मृगो न वारणः पुरुत्रा चरथं दधे।
नकिष्ट्वा नि यमदा सुते गमो महाँश्चरस्योजसा॥ २॥
य उग्रः सन्ननिष्टृतः स्थिरो रणाय संस्कृतः।
यदिं स्तोतुर्मघवा शृणवद्धवं नेन्द्रो योषत्या गमत्॥ ३॥

[५४] चतुष्पञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—रेभः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१ अतिजगती; २, ३ उपरिष्टाद्बृहती॥

विश्वाः पृतना अभिभूतरं नरं सजूस्ततक्षुरिन्द्रं जजनुश्च राजसे।
क्रत्वे वरे शाम्मुरिमुतोग्रमोजिष्ठं तवसं तरस्विनम्॥ १॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

समी॑ रे॒भासो॑ अस्वर॒न्निन्द्रं॑ सोम॑स्य पी॒तये॑ ।
स्व॒र्पति॑तं॒ यदी॑ वृ॒धे धृ॒तव्र॑तो॒ ह्योज॑सा॒ समू॒तिभिः॑ ॥ २ ॥
ने॒मिं न॑मन्ति॒ चक्ष॑सा मे॒षं विप्रा॑ अभि॒स्वरा॑ ।
सु॒दी॒तयो॑ वो अ॒द्रुहोऽपि॒ कर्णे॑ तर॒स्विनः॑ समृक्व॒भिः॑ ॥ ३ ॥

[५५] पञ्चपञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—रेभः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१ अतिजगती; २, ३ बृहती ॥

तमिन्द्रं॑ जोहवीमि म॒घवा॑नमु॒ग्रं स॒त्रा दधा॑न॒मप्र॑तिष्कुतं॒ शवां॑सि ।
मंहि॑ष्ठो गी॒र्भिरा च॑ य॒ज्ञियो॑ व॒वर्त॑द्रा॒ये नो॒ विश्वा॑ सु॒पथा॑ कृणोतु व॒ज्री ॥ १ ॥
या इ॑न्द्र भु॒ज आभ॑र॒ः स्व॒र्वि॑ अस॑ु॒रेभ्यः॑ ।
स्तो॒तार॒मिन्म॑घवन्नस्य वर्धय॒ ये च॒ त्वे वृ॒क्तब॑र्हिषः ॥ २ ॥
यमि॑न्द्र दधि॒षे त्वमश्वं॑ गां भा॒गमव्ययम् ।
यज॑माने सुन्व॒ति दक्षि॑णावति त॒स्मिन्तं धे॑हि मा प॒णौ ॥ ३ ॥

[५६] षट्पञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—गोतमः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—पङ्क्तिः ॥

इन्द्रो॒ मदा॑य वावृधे॒ शव॑से वृत्र॒हा नृभिः॑ ।
तमिन्म॒हत्स्वा॒जिषू॒तेमर्भे॑ हवामहे॒ स वाजे॑षु॒ प्र नो॑ऽविषत् ॥ १ ॥
अ॒सि हि वी॑र॒ सेन्योऽसि॒ भूरि॑ परा॒दुदिः॑ ।
अ॒सि॑ द॒भ्रस्य॑ चिद् वृ॒धो यज॑मानाय शिक्षसि सुन्व॒ते भूरि॑ ते॒ वसु॑ ॥ २ ॥
यदु॒दीर॑त आ॒जयो॑ धृ॒ष्णवे॑ धीयते॒ धना॑ ।
यु॒क्ष्वा म॑दु॒च्यु॒ता हरी॒ कं हन॒ः कं वसौ॑ दधो॒ऽस्मॉ इ॑न्द्र॒ वसौ॑ दधः ॥ ३ ॥
मदे॑मदे॒ हि नो॑ द॒दिर्यू॒था गवा॑मृजु॒क्रतुः॑ ।
सं गृ॑भाय पु॒रू श॒तोभ॑याहस्त्या॒ वसु॑ शिशी॒हि रा॒य आ भ॑र ॥ ४ ॥
मा॒दय॑स्व सु॒ते सचा॒ शव॑से शूर॒ राध॑से ।
वि॒द्मा हि त्वा॑ पुरूवसु॒मुप॑ कामा॒न्त्ससृ॑ज्महेऽथा॑ नोऽवि॒ता भ॑व ॥ ५ ॥
प्रु॒ते त॑ इन्द्र जु॒न्तवो॒ विश्वं॑ पुष्यन्ति॒ वार्य॑म् ।
अ॒न्तर्हि ख्यो॑ जना॒नामर्यो॑ वेदो॒ अदा॑शुषां॒ तेषा॑ नो॒ वेद॒ आ भ॑र ॥ ६ ॥

[५७] सप्तपञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—१-३ मधुच्छन्दाः; ४-७ विश्वामित्रः; ८-१० गृत्समदः;
११-१६ मेध्यातिथिः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१-६,
८-१० गायत्री; ७ अनुष्टुप्; ११-१६ बृहती ॥

सु॒रू॒पकृ॑त्नुमू॒तये॑ सु॒दुघा॑मिव गो॒दुहे॑। जु॒हू॒मसि॒ द्यवि॑द्यवि ॥ १ ॥

उप॑ नः सव॒ना ग॑हि॒ सोम॑स्य सोमपाः पिब। गो॒दा इद्रे॒वतो॒ मदः॑ ॥ २ ॥
अथा॑ ते अन्त॒मानां॑ वि॒द्याम॑ सुमती॒नाम्। मा नो॒ अति॑ ख्य॒ आ ग॑हि ॥ ३ ॥
शु॒ष्मिन्त॑मं न ऊ॒तये॒ द्युम्नि॑नं पाहि॒ जागृ॑विम्। इन्द्र॒ सोम॑ं शतक्रतो ॥ ४ ॥
इ॒न्द्रि॒याणि॑ शतक्रतो॒ या ते॒ जने॑षु॒ पञ्च॑सु। इन्द्र॒ तानि॑ त॒ आ वृ॑णे ॥ ५ ॥
अग॑न्निन्द्र॒ श्रवो॑ बृ॒हद् द्यु॒म्नं द॑धिष्व दुष्टर॑म्। उत्ते॒ शुष्मं॑ तिरामसि ॥ ६ ॥
अ॒र्वा॒वतो॑ न॒ आ ग॒ह्यथो॑ शक्र परा॒वतः॑।
उ लो॒को यस्ते॑ अद्रिव॒ इन्द्रे॒ह त॑त॒ आ ग॑हि ॥ ७ ॥
इन्द्रो॑ अङ्ग महद्भ॒यमभी षदप॑ चुच्यवत्। स हि स्थि॒रो विच॑र्षणिः ॥ ८ ॥
इन्द्र॑श्च मृ॒डया॑ति नो॒ न न॑ः प॒श्चाद॒घं न॑शत्। भ॒द्रं भ॑वाति नः पु॒रः ॥ ९ ॥
इन्द्र॒ आशा॑भ्य॒स्परि॒ सर्वी॑भ्यो॒ अभ॑यं करत्। जेता॒ शत्रू॒न्विच॑र्षणिः ॥ १० ॥
क ई॑ वेद सु॒ते सचा॒ पिब॑न्तं॒ कद्व॒यो॑ दधे।
अ॒यं यः पुरो॑ वि॒भिन॑त्त्योजसा॒ मन्दा॑नः शिप्र्य॒न्ध॑सः ॥ ११ ॥
दा॒ना मृ॒गो न वार॑ण॒ः पु॑रु॒त्रा च॒रथं॑ दधे।
नकि॑ष्ट्वा नि य॑मते सु॒ते ग॑मो म॒हाँश्च॑र॒स्योज॑सा ॥ १२ ॥
य उ॒ग्रः सन्ननि॑ष्टृतः स्थि॒रो रणा॑य॒ संस्कृ॑तः।
यदि॑ स्तो॒तुर्म॑घवा॒ शृण॑व॒द्ध॒वं नेन्द्रो॑ योष॒त्या ग॑मत् ॥ १३ ॥
व॒यं घ॑ त्वा सु॒तावन्त॒ आपो॒ न वृ॒क्तब॑र्हिषः।
प॒वित्र॑स्य प्रस्रव॒णेषु॑ वृत्रहन्परि॑ स्तो॒तार॑ आसते ॥ १४ ॥
स्वर॑न्ति त्वा सु॒ते नरो॒ वसो॑ निरे॒क उ॒क्थिनः॑ ।
क॒दा सु॒तं तृ॑षा॒ण ओक॒ आ ग॑म॒ इन्द्र॑ स्व॒ब्दीव॑ वंस॒गः ॥ १५ ॥
कण्वे॑भिर्धृ॒ष्णवा धृ॑षद्वाजं॑ दर्षि सहस्रिणम् ।
पि॒शङ्ग॑रूपं मघवन्विचर्षणे म॒क्षू गोम॑न्तमीमहे ॥ १६ ॥

[५८] अष्टपञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—१, २, नृमेधः; ३, ४ भरद्वाजः ॥ देवता—१, २ इन्द्रः; ३, ४ सूर्यः ॥
छन्दः—बार्हतः प्रगाथः (विषमा-बृहती+समा-सतोबृहती) ॥

आ॒र्यन्तइव॒ सूर्यं॑ विश्वेदिन्द्र॑स्य भक्षत ।
वसू॑नि जा॒ते जन॑मान॒ ओज॑सा॒ प्रति॑ भा॒गं न दी॑धिम ॥ १ ॥
अन॑र्शरातिं॒ वसु॒दामुप॑ स्तुहि भ॒द्रा इन्द्र॑स्य रा॒तय॑ः ।
सो अ॑स्य॒ कामं॑ विधतो न रो॑षति॒ मनो॑ दा॒नाय॑ चो॒दय॑न् ॥ २ ॥
वण्म॒हाँ अ॑सि सू॒र्य॑ बडादित्य म॒हाँ अ॑सि ।
महस्ते॑ स॒तो म॑हि॒मा प॑नस्ततेऽद्धा देव म॒हाँ अ॑सि ॥ ३ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

 Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

बट् सूर्य श्रवसा महाँ असि सत्रा देव महाँ असि।
मह्ना देवानामसुर्यः पुरोहितो विभु ज्योतिरदाभ्यम् ॥ ४ ॥

[५९] एकोनषष्टितमं सूक्तम्

ऋषिः—१, २ मेध्यातिथिः; ३, ४ वसिष्ठः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—बार्हतः प्रगाथः (विषमा-बृहती+समा-सतोबृहती)॥

उदु त्ये मधुमत्तमा गिर स्तोमास ईरते ।
सत्राजितो धनसा अक्षितोतयो वाजयन्तो रथाइव ॥ १ ॥
कण्वाइव भृगवः सूर्याइव विश्वमिद्धीतमानशुः ।
इन्द्रं स्तोमेभिर्महयन्त आयवः प्रियमेधासो अस्वरन् ॥ २ ॥
उदिन्वस्य रिच्यतेंऽशो धनं न जिग्युषः ।
य इन्द्रो हरिवान्न दभन्ति तं रिपो दक्षं दधाति सोमिनि ॥ ३ ॥
मन्त्रमखर्वं सुधितं सुपेशसं दधात यज्ञियेष्वा ।
पूर्वीश्चन प्रसितयस्तरन्ति तं य इन्द्रे कर्मणा भुवत् ॥ ४ ॥

[६०] षष्टितमं सूक्तम्

ऋषिः—१-३ सुतकक्षः सुकक्षो वा; ४-६ मधुच्छन्दा;॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—गायत्री॥

एवा ह्यसि वीरयुरेवा शूर उत स्थिरः। एवा ते राध्यं मनः॥ १ ॥
एवा रातिस्तुवीमघ विश्वेभिर्धायि धातृभिः। अधा चिदिन्द्र मे सचा॥ २ ॥
मो षु ब्रह्मेव तन्द्रयुर्भुवो वाजानां पते। मत्स्वा सुतस्य गोमतः॥ ३ ॥
एवा ह्यस्य सूनृता विरप्शी गोमती मही। पक्वा शाखा न दाशुषे॥ ४ ॥
एवा हि ते विभूतय ऊतय इन्द्र मावते। सद्यश्चित्सन्ति दाशुषे॥ ५ ॥
एवा ह्यस्य काम्या स्तोम उक्थं च शंस्या। इन्द्राय सोमपीतये॥ ६ ॥

[६१] एकषष्टितमं सूक्तम्

ऋषिः—गोपूक्त्यश्वसूक्तिनौ॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—उष्णिक्॥

तं ते मदं गृणीमसि वृषणं पृत्सु सासहिम् ।
उ लोककृत्नुमद्रिवो हरिश्रियम् ॥ १ ॥
येन ज्योतिर्ष्यायवे मनवे च विवेदिथ ।
मन्दानो अस्य बर्हिषो वि राजसि ॥ २ ॥
तदद्या चित्त उक्थिनोऽनु ष्टुवन्ति पूर्वथा ।
वृषपत्नीरपो जया दिवेदिवे ॥ ३ ॥
तम्वभि प्र गायत पुरुहूतं पुरुष्टुतम् ।
इन्द्रं गीर्भिस्तविषमा विवासत ॥ ४ ॥
यस्य द्विबर्हसो बृहत्सहो दाधार रोदसी ।
गिरीँरज्राँ अपः स्वर्विषत्वना ॥ ५ ॥
स राजसि पुरुष्टुतँ एको वृत्राणि जिघ्नसे ।
इन्द्र जैत्रा श्रवस्या च यन्तवे ॥ ६ ॥

[६२] द्विषष्टितमं सूक्तम्

ऋषिः—१-४ सौभरिः; ५-७ नृमेधः; ८-१० गोपूक्त्यश्वसूक्तिनौ॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१-४ काकुभः प्रगाथः (विषमा-ककुप्+समा-सतोबृहती); ५-१० उष्णिक्॥

वयमु त्वामपूर्व्य स्थूरं न कच्चिद्भरन्तोऽवस्यवः ।
वाजे चित्रं हवामहे ॥ १ ॥
उप त्वा कर्मन्नूतये स नो युवोग्रश्चक्राम यो धृषत् ।
त्वामिद्ध्यवितारं ववृमहे सखाय इन्द्र सानसिम् ॥ २ ॥
यो न इदमिदं पुरा प्र वस्य आनिनाय तमु व स्तुषे ।
सखायः इन्द्रमूतये ॥ ३ ॥
हर्यश्वं सत्पतिं चर्षणीसहं स हि ष्मा यो अमन्दत ।
आ तु नः स वयति गव्यमश्व्यं स्तोतृभ्यो मघवा शतम् ॥ ४ ॥
इन्द्राय साम गायत विप्राय बृहते बृहत् । धर्मकृते विपश्चिते पनस्यवे ॥ ५ ॥
त्वमिन्द्राभिभूरसि त्वं सूर्यमरोचयः । विश्वकर्मा विश्वदेवो महाँ असि ॥ ६ ॥
विभ्राजञ्ज्योतिषा स्वर्गच्छो रोचनं दिवः । देवास्त इन्द्र सख्याय येमिरे ॥ ७ ॥
तम्वभि प्र गायत पुरुहूतं पुरुष्टुतम् । इन्द्रं गीर्भिस्तविषमा विवासत ॥ ८ ॥
यस्य द्विबर्हसो बृहत्सहो दाधार रोदसी । गिरीँरज्राँ अपः स्वर्विषत्वना ॥ ९ ॥
स राजसि पुरुष्टुतँ एको वृत्राणि जिघ्नसे । इन्द्र जैत्रा श्रवस्या च यन्तवे ॥ १० ॥

[६३] त्रिषष्टितमं सूक्तम्

ऋषिः—१-२, ३ (पूर्वार्धस्य) भुवनः साधनो वा; ३ (उत्तरार्धस्य) भरद्वाजः; ५-६ गोतमः; ७-९ पर्वतः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१-३ त्रिष्टुप्; ४-९ उष्णिक्॥

इमा नु कं भुवना सीषधामेन्द्रश्च विश्वे च देवाः ।
यज्ञं च नस्तन्वं च प्रजां चादित्यैरिन्द्रः सह चीकॢपाति ॥ १ ॥
आदित्यैरिन्द्रः सगणो मरुद्भिरस्माकं भूत्वविता तनूनाम् ।
हत्वाय देवा असुरान्यदायन्देवा देवत्वमभिरक्षमाणाः ॥ २ ॥
प्रत्यञ्चमर्कमनयं छचीभिरादित्स्वधामिषिरां पर्यपश्यन् ।
अस्मा वज्रं देवहितं सनेम मदेम शतहिमाः सुवीराः ॥ ३ ॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

य एक इद्विदयंते वसु मर्ताय दाशुषे ।
ईशानो अप्रतिष्कुत इन्द्रो अङ्ग ॥४॥
कदा मर्तमराधसं पदा क्षुम्पमिव स्फुरत्।
कदा नः शुश्रवद्गिर इन्द्रो अङ्ग ॥५॥
यश्चिद्धि त्वा बहुभ्य आ सुतावाँ आविवासति।
उग्रं तत्पत्यते शव इन्द्रो अङ्ग ॥६॥
य इन्द्र सोमपातमो मदः शविष्ठ चेतति ।
येना हंसि न्यत्त्रिणं तमीमहे ॥७॥
येना दशग्वमधिगुं वेपयन्तं स्वर्णिरम् ।
येना समुद्रमाविथा तमीमहे ॥८॥
येन सिन्धुं महीरपो रथाँइव प्रचोदयः ।
पन्थामृतस्य यातवे तमीमहे ॥९॥

[६४] चतुःषष्टितमं सूक्तम्

ऋषिः—१-३ नृमेधः; ४-६ विश्वमनाः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—उष्णिक्॥

एन्द्र नो गधि प्रियः सत्राजिदगोह्यः ।
गिरिर्न विश्वतस्पृथुः पतिर्दिवः ॥१॥
अभि हि सत्य सोमपा उभे बभूथ रोदसी।
इन्द्रासि सुन्वतो वृधः पतिर्दिवः ॥२॥
त्वं हि शश्वतीनामिन्द्र दुर्ता पुरामसि ।
हन्ता दस्योर्मनोर्वृधः पतिर्दिवः ॥३॥
एदु मध्वो मदिन्तरं सिञ्च वाध्वर्यो अन्धसः।
एवा हि वीर स्तवते सदावृधः ॥४॥
इन्द्रं स्थातर्हरीणां न किष्टे पूर्व्यस्तुतिम् ।
उदानंश शवसा न भन्दना ॥५॥
तं वो वाजानां पतिमहूमहि श्रवस्यवः ।
अप्रायुभिर्यज्ञेभिर्वावृधेन्यम् ॥६॥

[६५] पञ्चषष्टितमं सूक्तम्

ऋषिः—१-३ विश्वमनाः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—उष्णिक्॥

एतो न्विन्द्रं स्तवाम सखाय स्तोम्यं नरम्।
कृष्टीर्यो विश्वा अभ्यस्त्येक इत् ॥१॥
अगोरुधाय गविषे द्युक्षाय दस्म्यं वचः ।
घृतात्स्वादीयो मधुनश्च वोचत ॥२॥
यस्यामितानि वीर्या३ न राधः पर्येतवे ।
ज्योतिर्न विश्वमभ्यस्ति दक्षिणा ॥३॥

[६६] षट्षष्टितमं सूक्तम्

ऋषिः—१-३ विश्वमनाः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—उष्णिक्॥

स्तुहीन्द्रं व्यश्ववदनूर्मिं वाजिनं यमम्। अर्यो गयं मंहमानं वि दाशुषे॥१॥
एवा नूनमुप स्तुहि वैयश्व दशमं नवम्। सुविद्वांसं चर्कृत्यं चरणीनाम्॥२॥
वेत्था हि निर्ऋतीनां वज्रहस्त परिवृजम्। अहरहः शुन्ध्युः परिपदामिव॥३॥

अथ षष्ठोऽनुवाकः [६७] सप्तषष्टितमं सूक्तम्

ऋषिः—१-३ परुच्छेपः; ४-७ गृत्समदः॥ देवता—१, ६ इन्द्रः; २, ४ मरुतः; ३, ५ अग्निः; ७ द्रविणोदाः॥ छन्दः—१-३ अत्यष्टिः; ४-७ जगती॥

वनोति हि सुन्वन्क्षयं परीणसः सुन्वानो हि ष्मा यजत्यव द्विषो
देवानामव द्विषः। सुन्वान इत्सिषासति सहस्रा वाज्यवृतः ।
सुन्वानायेन्द्रो ददात्याभुवं रयिं ददात्याभुवम् ॥१॥
मो षु वो अस्मदभि तानि पौंस्या सना भूवन्द्युम्नानि मोत
जारिषुरस्मत्पुरोत जारिषुः। यद्वश्चित्रं युगेयुगे नव्यं घोषादमर्त्यम्।
अस्मासु तन्मरुतो यच्च दुष्टरं दिधृता यच्च दुष्टरम् ॥२॥
अग्निं होतारं मन्ये दास्वन्तं वसुं सूनुं सहसो जातवेदसं विप्रं
न जातवेदसम्। य ऊर्ध्वया स्वध्वरो देवो देवाच्या कृपा ।
घृतस्य विभ्राष्टिमनु वष्टि शोचिषाजुह्वानस्य सर्पिषः ॥३॥
यज्ञैः संमिश्लाः पृषतीभिर्ऋष्टिभिर्यामं छुभ्रासो अञ्जिषु प्रिया उत।
आसद्या बर्हिर्भरतस्य सूनवः पोत्रादा सोमं पिबता दिवो नरः ॥४॥
आ वक्षि देवाँ इह विप्र यक्षि चोशन्होतर्नि षदा योनिषु त्रिषु ।
प्रति वीहि प्रस्थितं सोम्यं मधु पिबाग्नीध्रात्तव भागस्य तृप्णुहि ॥५॥
एष स्य ते तन्वो नृम्णवर्धनः सह ओजः प्रदिवि बाह्वोर्हितः ।
तुभ्यं सुतो मघवन्तुभ्यमाभृतस्त्वमस्य ब्राह्मणादा तृपत्पिब ॥६॥
यमु पूर्वमहुवे तमिदं हुवे सेदु हव्यो ददिर्यो नाम पत्यते ।
अध्वर्युभिः प्रस्थितं सोम्यं मधु पोत्रात्सोमं द्रविणोदः पिब ऋतुभिः॥७॥

[६८] अष्टषष्टितमं सूक्तम्

ऋषिः—मधुच्छन्दाः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—गायत्री॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सुरूपकृत्नुमूतये सुदुघामिव गोदुहे। जुहूमसि द्यविद्यवि ॥ १ ॥
उप नः सवना गहि सोमस्य सोमपाः पिब। गोदा इद्रेवतो मदः ॥ २ ॥
अथा ते अन्तमानां विद्याम सुमतीनाम्। मा नो अति ख्य आ गहि ॥ ३ ॥
परेहि विग्रमस्तृतमिन्द्रं पृच्छा विपश्चितम्। यस्ते सखिभ्य आ वरम् ॥ ४ ॥
उत ब्रुवन्तु नो निदो निरन्यतश्चिदारत। दधाना इन्द्र इद्दुवः ॥ ५ ॥
उत नः सुभगाँ अरिर्वोचेयुर्दस्म कृष्टयः। स्यामेदिन्द्रस्य शर्मणि ॥ ६ ॥
एमाशुमाशवे भर यज्ञश्रियं नृमादनम्। पतयन्मन्दयत्सखम् ॥ ७ ॥
अस्य पीत्वा शतक्रतो घनो वृत्राणामभवः। प्रावो वाजेषु वाजिनम् ॥ ८ ॥
तं त्वा वाजेषु वाजिनं वाजयामः शतक्रतो। धनानामिन्द्र सातये ॥ ९ ॥
यो रायोऽवनिर्महान्त्सुपारः सुन्वतः सखा। तस्मा इन्द्राय गायत ॥ १० ॥
आ त्वेता नि षीदतेन्द्रमभि प्र गायत। सखायः स्तोमवाहसः ॥ ११ ॥
पुरूतमं पुरूणामीशानं वार्याणाम्। इन्द्रं सोमे सचा सुते ॥ १२ ॥

[६९] एकोनसप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—मधुच्छन्दाः ॥ देवता—१-११ इन्द्रः १२ मरुतः ॥ छन्दः—गायत्री ॥

स घा नो योग आ भुवत्स राये स पुरंध्याम्। गमद्वाजेभिरा स नः ॥ १ ॥
यस्य संस्थे न वृण्वते हरी समत्सु शत्रवः। तस्मा इन्द्राय गायत ॥ २ ॥
सुतपाव्ने सुता इमे शुचयो यन्ति वीतये। सोमासो दध्याशिरः ॥ ३ ॥
त्वं सुतस्य पीतये सद्यो वृद्धो अजायथाः। इन्द्र ज्यैष्ठ्याय सुक्रतो ॥ ४ ॥
आ त्वा विशन्त्वाशवः सोमास इन्द्र गिर्वणः। शं ते सन्तु प्रचेतसे ॥ ५ ॥
त्वां स्तोमा अवीवृधन्त्वामुक्था शतक्रतो। त्वां वर्धन्तु नो गिरः ॥ ६ ॥
अक्षितोतिः सनेदिमं वाजमिन्द्रः सहस्त्रिणम्। यस्मिन्विश्वानि पौंस्या ॥ ७ ॥
मा नो मर्ताय अभि द्रुहन्तनूनामिन्द्र गिर्वणः। ईशानो यवया वधम् ॥ ८ ॥
युञ्जन्ति ब्रध्नमरुषं चरन्तं परि तस्थुषः। रोचन्ते रोचना दिवि ॥ ९ ॥
युञ्जन्त्यस्य काम्या हरी विपक्षसा रथे। शोणा धृष्णू नृवाहसा ॥ १० ॥
केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशो मर्या अपेशसे। समुषद्भिरजायथाः ॥ ११ ॥
आदह स्वधामनु पुनर्गर्भत्वमेरिरे। दधाना नाम यज्ञियम् ॥ १२ ॥

[७०] सप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—मधुच्छन्दाः ॥ देवता—१, २, ६-२० इन्द्रमरुतः; ३-५ मरुतः ॥ छन्दः—गायत्री ॥

वीडु चिदारुजत्नुभिर्गुहा चिदिन्द्र वह्निभिः। अविन्द उस्त्रिया अनु ॥ १ ॥
देवयन्तो यथा मतिमच्छा विदद्वसुं गिरः। महामनूषत श्रुतम् ॥ २ ॥
इन्द्रेण सं हि दृक्षसे संजग्मानो अबिभ्युषा। मन्दू समानवर्चसा ॥ ३ ॥
अनवद्यैरभिद्युभिर्मखः सहस्वदर्चति। गणैरिन्द्रस्य काम्यैः ॥ ४ ॥
अतः परिज्मन्ना गहि दिवो वा रोचनादधि। सर्मस्मिन्नृञ्जते गिरः ॥ ५ ॥
उतो वा सातिमीमहे दिवो वा पार्थिवादधि। इन्द्रं महो वा रजसः ॥ ६ ॥
इन्द्रमिद्गाथिनो बृहदिन्द्रमर्केभिरर्किणः। इन्द्रं वाणीरनूषत ॥ ७ ॥
इन्द्र इद्धर्योः सचा संमिश्ल आ वचोयुजा। इन्द्रो वज्री हिरण्ययः ॥ ८ ॥
इन्द्रो दीर्घाय चक्षस आ सूर्यं रोहयद्दिवि। वि गोभिरद्रिमैरयत् ॥ ९ ॥
इन्द्र वाजेषु नोऽव सहस्त्रप्रधनेषु च। उग्र उग्राभिरूतिभिः ॥ १० ॥
इन्द्रं वयं महाधन इन्द्रमर्भे हवामहे। युजं वृत्रेषु वज्रिणम् ॥ ११ ॥
स नो वृषन्नमुं चरुं सत्रादावन्नपा वृधि। अस्मभ्यमप्रतिष्कुतः ॥ १२ ॥
तुञ्जेतुञ्जे य उत्तरे स्तोमा इन्द्रस्य वज्रिणः। न विन्धे अस्य सुष्टुतिम् ॥ १३ ॥
वृषा यूथेव वंसगः कृष्टीरियर्त्योजसा। ईशानो अप्रतिष्कुतः ॥ १४ ॥
य एकश्चर्षणीनां वसूनामिरज्यति। इन्द्रः पञ्च क्षितीनाम् ॥ १५ ॥
इन्द्रं वो विश्वतस्परि हवामहे जनेभ्यः। अस्माकमस्तु केवलः ॥ १६ ॥
एन्द्र सानसिं रयिं सजित्वानं सदासहम्। वर्षिष्ठमूतये भर ॥ १७ ॥
नि येन मुष्टिहत्यया नि वृत्रा रुणधामहै। त्वोतासो न्यर्वता ॥ १८ ॥
इन्द्र त्वोतास आ वयं वज्रं घना ददीमहि। जयेम सं युधि स्पृधः ॥ १९ ॥
वयं शूरेभिरस्तृभिरिन्द्र त्वया युजा वयम्। सासह्याम पृतन्यतः ॥ २० ॥

[७१] एकसप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—मधुच्छन्दाः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥

महाँ इन्द्रः परश्च नु महित्वमस्तु वज्रिणे। द्यौर्न प्रथिना शवः ॥ १ ॥
समोहे वा य आशत नरस्तोकस्य सनितौ। विप्रासो वा धियायवः ॥ २ ॥
यः कुक्षिः सोमपातमः समुद्र इव पिन्वते। उर्वीरापो न काकुदः ॥ ३ ॥
एवा ह्यस्य सूनृता विरप्शी गोमती मही। पक्वा शाखा न दाशुषे ॥ ४ ॥
एवा हि ते विभूतय ऊतय इन्द्र मावते। सद्यश्चित्सन्ति दाशुषे ॥ ५ ॥
एवा ह्यस्य काम्या स्तोम उक्थं च शंस्या। इन्द्राय सोमपीतये ॥ ६ ॥
इन्द्रेहि मत्स्यन्धसो विश्वेभिः सोमपर्वभिः। महाँ अभिष्टिरोजसा ॥ ७ ॥
एमेनं सृजता सुते मन्दिमिन्द्राय मन्दिने। चक्रिं विश्वानि चक्रये ॥ ८ ॥
मत्स्वा सुशिप्र मन्दिभिः स्तोमेभिर्विश्वचर्षणे। सचैषु सवनेष्वा ॥ ९ ॥
असृग्रमिन्द्र ते गिरः प्रति त्वामुदहासत। अजोषा वृषभं पतिम् ॥ १० ॥
सं चोदय चित्रमर्वाग्राध इन्द्र वरेण्यम्। असदित्ते विभु प्रभु ॥ ११ ॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अस्मान्त्सु तत्र चोदयेन्द्र राये रभस्वतः। तुविद्युम्न यशस्वतः ॥ १२ ॥
सं गोमदिन्द्र वाजवदस्मे पृथु श्रवो बृहत्। विश्वायुर्धेह्यक्षितम् ॥ १३ ॥
अस्मे धेहि श्रवो बृहद् द्युम्नं सहस्रसातमम्। इन्द्र ता रथिनीरिषः ॥ १४ ॥
वसोरिन्द्रं वसुपतिं गीर्भिर्गृणन्त ऋग्मियम्। होम गन्तारमूतये ॥ १५ ॥
सुतेसुते न्योकसे बृहद् बृहत एदरिः। इन्द्राय शूषमर्चति ॥ १६ ॥

अथ सप्तमोऽनुवाकः [७२] द्विसप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—परुच्छेपः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—अत्यष्टिः ॥

विश्वेषु हि त्वा सवनेषु तुञ्जते समानमेकं वृषमण्यवः पृथक्स्वञ्चः
सनिष्यवः पृथक्। तं त्वा नावं न पर्षणिं शूषस्य धुरि धीमहि।
इन्द्रं न यज्ञैश्चितयन्त आयव स्तोमेभिरिन्द्रमायवः ॥ १ ॥
वि त्वा ततस्रे मिथुना अवस्यवो व्रजस्य साता गव्यस्य निःसृजः
सक्षन्त इन्द्र निःसृजः। यद्व्यन्ता द्वा जना स्वर्यन्ता समूहसि।
आविष्करिक्रद् वृषणं सचाभुवं वज्रमिन्द्र सचाभुवम् ॥ २ ॥
उतो नो अस्या उषसो जुषेत ह्यर्कस्य बोधि हविषो हवीमभिः
स्वर्षाता हवीमभिः। यदिन्द्र हन्तवे मृधो वृषा वज्रिञ्चिकेतसि।
आ मे अस्य वेधसो नवीयसो मन्म श्रुधि नवीयसः ॥ ३ ॥

[७३] त्रिसप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—१-३ वसिष्ठः; ४-६ वसुक्रः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१-३ विराडनुष्टुप्; ४, ५ जगती; ६ अभिसारिणीत्रिष्टुप् ॥

तुभ्येदिमा सवना शूर विश्वा तुभ्यं ब्रह्माणि वर्धना कृणोमि।
त्वं नृभिर्हव्यो विश्वधासि ॥ १ ॥
नू चित्नु ते मन्यमानस्य दस्मोदंशनुवन्ति महिमानमुग्र ।
न वीर्यमिन्द्र ते न राधः ॥ २ ॥
प्र वो महे महिवृधे भरध्वं प्रचेतसे प्र सुमतिं कृणुध्वम् ।
विशः पूर्वीः प्र चरा चर्षणिप्राः ॥ ३ ॥
यदा वज्रं हिरण्यमिदथा रथं हरी यमस्य वहतो वि सूरिभिः।
आ तिष्ठति मघवा सनश्रुत इन्द्रो वाजस्य दीर्घश्रवस्पतिः ॥ ४ ॥
सो चित्नु वृष्टिर्यूथ्या३ स्वा सचाँ इन्द्रः श्मश्रूणि हरिताभि प्रुष्णुते।
अव वेति सुक्षयं सुते मधूदिद्धूनोति वातो यथा वनम् ॥ ५ ॥
यो वाचा विवाचो मृधवाचः पुरू सहस्राशिवा जघान।
तत्तदिदस्य पौंस्यं गृणीमसि पितेव यस्तविषीं वावृधे शवः ॥ ६ ॥

[७४] चतुःसप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—शुनःशेपः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—पङ्क्तिः ॥

यच्चिद्धि सत्य सोमपा अनाशस्ताइव स्मसि ।
आ तू न इन्द्र शंसय गोष्वश्वेषु शुभ्रिषु सहस्रेषु तुवीमघ ॥ १ ॥
शिप्रिन्वाजानां पते शचीवस्तव दंसना ।
आ तू न इन्द्र शंसय गोष्वश्वेषु शुभ्रिषु सहस्रेषु तुवीमघ ॥ २ ॥
नि ष्वापया मिथूदृशा सस्तामबुध्यमाने ।
आ तू न इन्द्र शंसय गोष्वश्वेषु शुभ्रिषु सहस्रेषु तुवीमघ ॥ ३ ॥
ससन्तु त्या अरातयो बोधन्तु शूर रातयः ।
आ तू न इन्द्र शंसय गोष्वश्वेषु शुभ्रिषु सहस्रेषु तुवीमघ ॥ ४ ॥
समिन्द्र गर्दभं मृण नुवन्तं पापयामुया ।
आ तू न इन्द्र शंसय गोष्वश्वेषु शुभ्रिषु सहस्रेषु तुवीमघ ॥ ५ ॥
पताति कुण्डृणाच्या दूरं वातो वनादधि ।
आ तू न इन्द्र शंसय गोष्वश्वेषु शुभ्रिषु सहस्रेषु तुवीमघ ॥ ६ ॥
सर्वं परिक्रोशं जहि जम्भया कृकदाश्वम् ।
आ तू न इन्द्र शंसय गोष्वश्वेषु शुभ्रिषु सहस्रेषु तुवीमघ ॥ ७ ॥

[७५] पञ्चसप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—परुच्छेपः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—अत्यष्टिः ॥

वि त्वा ततस्रे मिथुना अवस्यवो व्रजस्य साता गव्यस्य निःसृजः
सक्षन्त इन्द्र निःसृजः। यद्व्यन्ता द्वा जना स्वर्यन्ता समूहसि।
आविष्करिक्रद् वृषणं सचाभुवं वज्रमिन्द्र सचाभुवम् ॥ १ ॥
विदुष्टे अस्य वीर्यस्य पूरवः पुरो यदिन्द्र शारदीर्वातिरः
सासह्वानो अवातिरः। शासस्तमिन्द्र मर्त्यमयज्युं शवसस्पते ।
महीममुष्णाः पृथिवीमिमा अपो मन्दसान इमा अपः ॥ २ ॥
आदित्ते अस्य वीर्यस्य चक्रिरन्मदेषु वृषन्नुशिजो यदाविथ
सखीयतो यदाविथ। चकर्थ कारमेभ्यः पृतनासु प्रवन्तवे ।
ते अन्यामन्यां नद्यं सनिष्णत श्रवस्यन्तः सनिष्णत ॥ ३ ॥

[७६] षट्सप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—वसुक्रः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥

वने न वा यो न्यधायि चाकञ्छुचिर्वां स्तोमो भुरणावजीगः।
यमर्वदिन्द्रः पुरुदिनेषु होता नृणां नर्यो नृतमः क्षपावान् ॥ १ ॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

 Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्र तें अस्या उषसः प्रापरस्या नृतौ स्याम नृतमस्य नृणाम्।
अनु त्रिशोकः शतमावहन्रुत्सेन रथो यो असत्ससवान्॥ २॥
कस्ते मद इन्द्र रन्त्यो भूद्वीरो गिरो अभ्युग्रो वि धाव ।
कद्वाहो अर्वागुप मा मनीषा आ त्वा शक्यामुपमं राधो अन्नैः॥ ३॥
कदु द्युम्नमिन्द्र त्वावतो नृन्कया धिया करसे कन्न आगन्।
मित्रो न सत्य उरुगाय भृत्या अन्ने समस्य यदसन्मनीषाः॥ ४॥
प्रेरय सूरो अर्थं न पारं ये अस्य कामं जनिधाईव ग्मन्।
गिरश्च ये ते तुविजात पूर्वीर्नरं इन्द्र प्रतिशिक्षन्त्यन्नैः ॥ ५॥
मात्रे नु ते सुमिते इन्द्र पूर्वी द्यौर्मन्मना पृथिवी काव्येन।
वराय ते घृतवन्तः सुतासः स्वाद्वन्भवन्तु पीतये मधूनि॥ ६॥
आ मध्वो अस्मा असिचन्नमत्रमिन्द्राय पूर्णं स हि सत्यराधाः।
स वावृधे वरिमन्ना पृथिव्या अभि क्रत्वा नर्यः पौंस्यैश्च ॥ ७॥
व्यानडिन्द्रः पृतनाः स्वोजा आस्मै यतन्ते सख्याय पूर्वीः।
आ स्मा रथं न पृतनासु तिष्ठ यं भद्रया सुमत्या चोदयासे॥ ८॥

[७७] सप्तसप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—वामदेवः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—त्रिष्टुप्॥

आ सत्यो यातु मघवाँ ऋजीषी द्रवन्त्वस्य हरयः उप नः ।
तस्मा इदन्धः सुषुमा सुदक्षमिहाभिपित्वं करते गृणानः ॥ १॥
अव स्य शूराध्वनो नान्तेऽस्मिन्नो अद्य सवने मन्दध्यै ।
शंसात्युक्थमुशनेव वेधाश्चिकितुषे असुर्याय मन्म ॥ २॥
कविर्न निण्यं विदथानि साधन्वृषा यत्सेकं विपिपानो अर्चात्।
दिव इत्था जीजनत्सप्त कारूनहा चिच्चक्रुर्वयुना गृणन्तः॥ ३॥
स्वर्यद्वेदि सुदृशीकमर्कैर्महि ज्योती रुरुचुर्यद्ध वस्तोः ।
अन्धा तमांसि दुधिता विचक्षे नृभ्यश्चकार नृतमो अभिष्टौ॥ ४॥
ववक्ष इन्द्रो अमितमृजीष्यु भे आ पप्रौ रोदसी महित्वा।
अतश्चिदस्य महिमा वि रेच्यभि यो विश्वा भुवना बभूव॥ ५॥
विश्वानि शक्रो नर्याणि विद्वानपो रिरेच सखिभिर्निकामैः ।
अश्मानं चिद्वि बिभिदुर्वचोभिर्व्रजं गोमन्तमुशिजो वि वव्रुः॥ ६॥
अपो वृत्रं वव्रिवांसं परोहन्प्रावत्ते वज्रं पृथिवी सचेताः।
प्राणीसि समुद्रियाण्यैनोः पतिर्भवञ्छवसा शूर धृष्णो ॥ ७॥

अपो यदद्रिं पुरुहूत ददरावि र्भुवत्सरमा पूर्व्यं ते ।
स नो नेता वाजमा दर्षि भूरिं गोत्रा रुजन्नङ्गिरोभिर्गृणानः ॥ ८॥

[७८] अष्टसप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—शंयुः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—गायत्री॥

तद्वो गाय सुते सचा पुरुहूताय सत्वने। शं यदवे न शाकिने॥ १॥
न घा वसुर्नि यमते दानं वाजस्य गोमतः। यत्सीमुप श्रवद्गिरः॥ २॥
कुवित्सस्य प्र हि व्रजं गोमन्तं दस्युहा गमत्। शचीभिरप नो वरत्॥ ३॥

[७९] एकोनाशीतितमं सूक्तम्

ऋषिः—१ (पूर्वार्धस्य) शक्तिः; १ (उत्तरार्धस्य), २ वसिष्ठः (शाट्यायनके); १-२ वसिष्ठः (ताण्डके)॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—बार्हतः प्रगाथः (बृहती+सतोबृहती)॥

इन्द्र क्रतुं न आ भर पिता पुत्रेभ्यो यथा ।
शिक्षा णो अस्मिन्पुरुहूत यामनि जीवा ज्योतिरशीमहि॥ १॥
मा नो अज्ञाता वृजना दुराध्योऽ३ माशिवासो अव क्रमुः।
त्वया वयं प्रवतः शश्वतीरपोऽति शूर तरामसि ॥ २॥

[८०] अशीतितमं सूक्तम्

ऋषिः—शंयुः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—बार्हतः प्रगाथः (बृहती+सतोबृहती)॥

इन्द्रं ज्येष्ठं न आ भरँ ओजिष्ठं पपुरि श्रवः।
येनेमे चित्र वज्रहस्त रोदसी ओभे सुशिप्र प्राः॥ १॥
त्वामुग्रमवसे चर्षणीसहं राजन्देवेषु हूमहे ।
विश्वा सु नो विथुरा पिब्दना वसोऽमित्रान्सुषहान्कृधि॥ २॥

[८१] एकाशीतितमं सूक्तम्

ऋषिः—पुरुहन्मा॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—बार्हतः प्रगाथः (बृहती+सतोबृहती)॥

यद् द्यावं इन्द्र ते शतं शतं भूमीरुत स्युः ।
न त्वा वज्रिन्त्सहस्रं सूर्या अनु न जातमष्ट रोदसी ॥ १॥
आ पप्राथ महिना वृष्ण्या वृषन्विश्वा शविष्ठ शवसा।
अस्माँ अव मघवन्गोमति व्रजे वज्रिं चित्राभिरूतिभिः॥ २॥

[८२] द्व्यशीतितमं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—बार्हतः प्रगाथः (बृहती+सतोबृहती)॥

यदिन्द्र यावतस्त्वमेतावदहमीशीय ।
स्तोतारमिद्दिधेषेय रदावसो न पापत्वाय रासीय॥ १॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

शिक्षेयमिन्महयते दिवेदिवे राय आ कुहचिद्विदे।
नहि त्वदन्यन्मघवन्न आप्यं वस्यो अस्ति पिता चन॥ २॥

[८३] त्र्यशीतितमं सूक्तम्

ऋषिः—शंयुः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—बार्हतः प्रगाथः (बृहती+सतोबृहती)॥

इन्द्रं त्रिधातु शरणं त्रिवरूथं स्वस्तिमत्।
छर्दिर्यच्छ मघवद्भ्यश्च मह्यं च यावया दिद्युमेभ्यः॥ १॥
ये गव्यता मनसा शत्रुमादभुरभिप्रघ्नन्ति धृष्णुया।
अधा स्मा नो मघवन्निन्द्र गिर्वणस्तनूपा अन्तमो भव॥ २॥

[८४] चतुरशीतितमं सूक्तम्

ऋषिः—मधुच्छन्दाः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—गायत्री॥

इन्द्रा याहि चित्रभानो सुता इमे त्वायवः। अण्वीभिस्तना पूतासः॥ १॥
इन्द्रा याहि धियेषितो विप्रजूतः सुतावतः। उप ब्रह्माणि वाघतः॥ २॥
इन्द्रा याहि तूतुजान उप ब्रह्माणि हरिवः। सुते दधिष्व नश्चनः॥ ३॥

[८५] पञ्चाशीतितमं सूक्तम्

ऋषिः—१, २ प्रगाथः; ३, ४ मेध्यातिथिः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—बार्हतः प्रगाथः (बृहती+सतोबृहती)॥

मा चिदन्यद्वि शंसत सखायो मा रिषण्यत।
इन्द्रमित्स्तोता वृषणं सचा सुते मुहुरुक्था च शंसत॥ १॥
अवक्रक्षिणं वृषभं यथाजुरं गां न चर्षणीसहम्।
विद्वेषणं संवननोऽभयंकरं मंहिष्ठमुभयाविनम्॥ २॥
यच्चिद्धि त्वा जना इमे नाना हवन्त ऊतये।
अस्माकं ब्रह्मेदमिन्द्र भूतु तेऽह्या विश्वा च वर्धनम्॥ ३॥
वि ततूर्यन्ते मघवन्विपश्चितोऽर्यो विपो जनानाम्।
उप क्रमस्व पुरुरूपमा भर वाजं नेदिष्ठमूतये॥ ४॥

[८६] षडशीतितमं सूक्तम्

ऋषिः—विश्वामित्रः। देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—त्रिष्टुप्॥

ब्रह्मणा ते ब्रह्मयुजा युनज्मि हरी सखाया सधमादा आशू।
स्थिरं रथं सुखमिन्द्राधितिष्ठन्प्रजानन्विद्वाँ उप याहि सोमम्॥ १॥

[८७] सप्ताशीतितमं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः॥ देवता—१-६ इन्द्रः; ७ इन्द्राबृहस्पतिः॥ छन्दः—त्रिष्टुप्॥

अध्वर्यवोऽरुणं दुग्धमंशुं जुहोतन वृषभाय क्षितीनाम्।
गौराद्वेदीयाँ अवपानमिन्द्रो विश्वाहेह्याति सुतसोममिच्छन्॥ १॥
यद्देधिषे प्रदिवि चार्वन्नं दिवेदिवे पीतिमिदस्य वक्षि।
उत हूदोत मनसा जुषाण उशन्निन्द्र प्रस्थितान्पाहि सोमान्॥ २॥
जज्ञानः सोमं सहसे पपाथ प्र तें माता महिमानमुवाच।
एन्द्र पप्राथोर्वन्तरिक्षं युधा देवेभ्यो वरिवश्चकर्थ॥ ३॥
यद्योधया महतो मन्यमानान्साक्षाम तान्बाहुभिः शाशदानान्।
यद्वा नृभिर्वृत इन्द्राभियुध्यास्तं त्वयाजिं सौश्रवसं जयेम॥ ४॥
प्रेन्द्रस्य वोचं प्रथमा कृतानि प्र नूतना मघवा या चकार।
यदेददेवीरसहिष्ट माया अथाभवत्केवलः सोमो अस्य॥ ५॥
तवेदं विश्वमभितः पशव्यं यत्पश्यसि चक्षसा सूर्यस्य।
गवामसि गोपतिरेक इन्द्र भक्षीमहि ते प्रयतस्य वस्वः॥ ६॥
बृहस्पते युवमिन्द्रश्च वस्वो दिव्यस्येशाथे उत पार्थिवस्य।
धत्तं रयिं स्तुवते कीरयेऽचिद्युयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥ ७॥

[८८] अष्टाशीतितमं सूक्तम्

ऋषिः—वामदेवः॥ देवता—बृहस्पतिः॥ छन्दः—त्रिष्टुप्॥

यस्तस्तम्भ सहसा वि ज्मो अन्तान्बृहस्पतिस्त्रिषधस्थो रवेण।
तं प्रत्नास ऋषयो दीध्यानाः पुरो विप्रा दधिरे मन्द्रजिह्वम्॥ १॥
धुनेतयः सुप्रकेतं मदन्तो बृहस्पते अभि ये नस्ततस्रे।
पृषन्तं सृप्रमदब्धमूर्वं बृहस्पते रक्षतादस्य योनिम्॥ २॥
बृहस्पते या परमा परावदत आ त ऋतस्पृशो नि षेदुः।
तुभ्यं खाता अवता अद्रिदुग्धा मध्व श्चोतन्त्यभितो विरप्शम्॥ ३॥
बृहस्पतिः प्रथमं जायमानो महो ज्योतिषः परमे व्योमन्।
सप्तास्यस्तुविजातो रवेण वि सप्तरश्मिरधमत्तमांसि॥ ४॥
स सुष्टुभा स ऋक्वता गणेन वलं रुरोज फलिगं रवेण।
बृहस्पतिरुस्रिया हव्यसूदः कनिक्रदद्वावशतीरुदाजत्॥ ५॥
एवा पित्रे विश्वदेवाय वृष्णे यज्ञैर्विधेम नमसा हविर्भिः।
बृहस्पते सुप्रजा वीरवन्तो वयं स्याम पतयो रयीणाम्॥ ६॥

[८९] एकोननवतितमं सूक्तम्

ऋषिः—कृष्णः॥ देवता—इन्द्रः। छन्दः—त्रिष्टुप्॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अस्तेव सु प्रतरं लायमस्यन्भूर्षन्निव प्र भरा स्तोममस्मै।
वाचा विप्रास्तरत वाचमर्यो नि रामय जरितः सोम इन्द्रम्॥ १॥
दोहेन गामुप शिक्षा सखायं प्र बोधय जरितर्जारमिन्द्रम्।
कोशं न पूर्णं वसुना न्यृष्टमा च्यावय मघदेयाय शूरम्॥ २॥
किमङ्ग त्वा मघवन्भोजमाहुः शिशीहि मा शिश्रयं त्वा शृणोमि।
अप्रस्वती मम धीरस्तु शक्र वसुविदं भगमिन्द्रा भरा नः॥ ३॥
त्वां जना ममसत्येष्विन्द्र संतस्थाना वि ह्वयन्ते समीके।
अत्रा युजं कृणुते यो हविष्मान्त्रासुन्वता सख्यं वष्टि शूरः॥ ४॥
धनं न स्पन्द्रं बहुलं यो अस्मै तीव्रान्त्सोमाँ आसुनोति प्रयस्वान्।
तस्मै शत्रून्त्सुतुकान्प्रातरह्नो नि स्वष्ट्रान्युवति हन्ति वृत्रम्॥ ५॥
यस्मिन्वयं दधिमा शंसमिन्द्रे यः शिश्राय मघवा कामम्स्मे।
आराच्चित्सन्भयतामस्य शत्रुर्न्यस्मै द्युम्ना जन्या नमन्ताम्॥ ६॥
आराच्छत्रुमप बाधस्व दूरमुग्रो यः शम्बः पुरुहूत तेन।
अस्मे धेहि यवमद्गोमदिन्द्र कृधी धियं जरित्रे वाजरत्नाम्॥ ७॥
प्र यमन्तर्वृषसवासो अग्मन्तीव्राः सोमा बहुलान्तास इन्द्रम्।
नाहं दामानं मघवा नि यंसन्नि सुन्वते वहति भूरि वामम्॥ ८॥
उत प्रहामतिदीवा जयति कृतमिव श्वघ्नी वि चिनोति काले।
यो देवकामो न धनं रुणद्धि समित्तं राय स्जति स्वधाभिः॥ ९॥
गोभिष्टरेमामतिं दुरेवां यवेन वा क्षुधं पुरुहूत विश्वे।
वयं राजसु प्रथमा धनान्यरिष्टासो वृजनीभिर्जयेम ॥ १०॥
बृहस्पतिर्नः परि पातु पश्चादुतोत्तरस्मादधरादघायोः ।
इन्द्रः पुरस्तादुत मध्यतो नः सखा सखिभ्यो वरीवः कृणोतु॥ ११॥

[९०] नवतितमं सूक्तम्

ऋषिः—भरद्वाजः॥ देवता—बृहस्पतिः॥ छन्दः—त्रिष्टुप्॥

यो अद्रिभित्प्रथमजा ऋतावा बृहस्पतिरा॒ङ्गिरसो हविष्मान्।
द्विबर्हज्मा प्राघर्मसत्पिता नु आ रोदसी वृषभो रोरवीति॥ १॥
जनाय चिद्य ईवत उ लोकं बृहस्पतिर्देवहूतौ चकार।
घ्नन्वृत्राणि वि पुरो ददरीति जयञ्छत्रूँरमित्रान्पृत्सु साहन्॥ २॥
बृहस्पतिः समजयद्वसूनि महो व्रजान्गोमतो देव एषः।
अपः सिषासन्त्स्वरप्रतीतो बृहस्पतिर्हन्त्यमित्रमर्कैः॥ ३॥

अथाष्टमोऽनुवाकः [९१] एकनवतितमं सूक्तम्

ऋषिः—अयास्यः॥ देवता—बृहस्पतिः॥ छन्दः—त्रिष्टुप्॥

इमां धियं सप्तशीर्ष्णीं पिता न ऋतप्रजातां बृहतीमविन्दत्।
तुरीयं स्विज्जनयद्विश्वजन्योऽयास्य उक्थमिन्द्राय शंसन्॥ १॥
ऋतं शंसन्त ऋजु दीध्यानाः दिवस्पुत्रासो असुरस्य वीराः।
विप्रं पदमङ्गिरसो दधाना यज्ञस्य धाम प्रथमं मनन्त॥ २॥
हंसैरिव सखिभिर्वावदद्भिरश्मन्मयानि नहना व्यस्यन्।
बृहस्पतिरभिकनिक्रदद्गा उत प्रास्तौदुच्च विद्वाँ अगायत्॥ ३॥
अवो द्वाभ्यां पर एकया गा गुहा तिष्ठन्तीरनृतस्य सेतौ।
बृहस्पतिस्तमसि ज्योतिरिच्छन्नुदुस्रा आकर्वि हि तिस्र आवः॥ ४॥
विभिद्या पुरं शयथेमपाचीं निस्त्रीणि साकमुदधेरकृन्तत्।
बृहस्पतिरुषसं सूर्यं गामर्कं विवेद स्तनयन्निव द्यौः॥ ५॥
इन्द्रो वलं रक्षितारं दुघानां करेणेव वि चकर्ता रवेण।
स्वेदाञ्जिभिराशिरमिच्छमानोऽरोदयत्पणिमा गा अमुष्णात्॥ ६॥
स ईं सत्येभिः सखिभिः शुचद्भिर्गोधायसं वि धनसैरदर्दः।
ब्रह्मणस्पतिर्वृषभिर्वराहैर्धर्मस्वेदेभिर्द्रविणं व्यानिट् ॥ ७॥
ते सत्येन मनसा गोपतिं गा इयानास इषणयन्त धीभिः।
बृहस्पतिर्मिथोअवद्यपेभिरुदुस्रियाः असृजत स्वयुग्भिः ॥ ८॥
तं वर्धयन्तो मतिभिः शिवाभिः सिंहमिव नानदतं सधस्थे।
बृहस्पतिं वृषणं शूरसातौ भरेभरे अनु मदेम जिष्णुम्॥ ९॥
यदा वाजमसनद्विश्वरूपमा द्यामरुक्षदुत्तराणि सद्म ।
बृहस्पतिं वृषणं वर्धयन्तो नाना सन्तो बिभृतो ज्योतिरासा॥ १०॥
सत्यामाशिषं कृणुता वयोधै कीरिं चिद्ध्यवथ स्वेभिरेवैः।
पश्चा मृधो अप भवन्तु विश्वास्तद्रोदसी शृणुतं विश्वमिन्वे॥ ११॥
इन्द्रो मह्ना महतो अर्णवस्य वि मूर्धानमभिनदर्बुदस्य।
अहन्नहिमरिणात्सप्त सिन्धून्देवैर्द्यावापृथिवी प्रावतं नः॥ १२॥

[९२] द्विनवतितमं सूक्तम्

ऋषिः—१-१२ प्रियमेधः; १६-२१ पुरुहन्मा॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१-३ गायत्री; ४-७, ९-१२ अनुष्टुप्; ८, १३ पङ्क्तिः; १४, १५ बृहती; १६-२१ बार्हतः प्रगाथः (समा-बृहती+विषमा-सतोबृहती)॥

अभि प्र गोपतिं गिरेन्द्रमर्च यथा विदे। सूनुं सत्यस्य सत्पतिम्॥ १॥
आ हर्यः ससृज्रिरेऽरुषीरधि बर्हिषि। यत्राभि संनवामहे ॥ २॥
इन्द्राय गाव आशिरं दुदुह्रे वज्रिणे मधु। यत्सीमुपहरे विदत्॥ ३॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उद्यद् ब्रध्नस्य विष्टपं गृहमिन्द्रश्च गन्वहि ।
मध्वः पीत्वा सचेवहि त्रिः सप्त सख्युः पदे ॥ ४ ॥
अचैंत प्राचैंत प्रियमेधासो अचैंत ।
अचैंन्तु पुत्रका उत पुरं न धृष्णवर्चित ॥ ५ ॥
अवं स्वराति गर्गरो गोधा परि सनिष्वणत् ।
पिङ्गा परि चनिष्कददिन्द्रायं ब्रह्मोद्यतम् ॥ ६ ॥
आ यत्पतन्त्येन्यः सुदुघा अनपस्फुरः ।
अपस्फुरं गृभायत सोममिन्द्रायं पातवे ॥ ७ ॥
अपादिन्द्रो अपादग्निर्विश्वे देवा अमत्सत ।
वरुणं इद्विह क्षयत्तमापो अभ्यनूषत वत्सं संशिश्वरीरिव ॥ ८ ॥
सुदेवो असि वरुण यस्य ते सप्त सिन्धवः ।
अनुक्षरन्ति काकुदं सूर्यं सुषिरामिव ॥ ९ ॥
यो व्यतीँरफाणयत्सुयुक्तान् उप दाशुषे ।
तक्वो नेता तदिद्वपुरुपमा यो अमुच्यत ॥ १० ॥
अतीदु शक्र ओहत इन्द्रो विश्वा अति द्विषः ।
भिनत्कनीन ओदनं पच्यमानं परो गिरा ॥ ११ ॥
अर्भको न कुमारकोऽधि तिष्ठन्नवं रथम् ।
स पक्षन्महिषं मृगं पित्रे मात्रे विभुक्रतुम् ॥ १२ ॥
आ तू सुशिप्र दंपते रथं तिष्ठा हिरण्ययम् ।
अधं द्युक्षं सचेवहि सहस्रपादमरुषं स्वस्तिगामनेहसम् ॥ १३ ॥
तं घेमित्था नमस्विन उप स्वराजमासते ।
अधं चिदस्य सुधितं यदेतव आवर्तयन्ति दावने ॥ १४ ॥
अनु प्रत्नस्यौकसः प्रियमेधास एषाम् ।
पूर्वामनु प्रयतिं वृक्तबर्हिषो हितप्रयस आशत ॥ १५ ॥
यो राजा चर्षणीनां याता रथेभिरध्रिगुः ।
विश्वासां तरुता पृतनानां ज्येष्ठो यो वृत्रहा गृणे ॥ १६ ॥
इन्द्रं तं शुम्भ पुरुहन्मन्नवसे यस्य द्विता विधर्तरि ।
हस्तायं वज्रः प्रति धायि दर्शतो महो दिवे न सूर्यः ॥ १७ ॥
नकिष्टं कर्मणा नशद्यश्चकार सदावृधम् ।
इन्द्रं न यज्ञैर्विश्वगूर्तमृभ्वसमधृष्टं धृष्णवोजिसम् ॥ १८ ॥
अषाढमुग्रं पृतनासु सासहिं यस्मिन्महीरुरुज्रयः ।
सं धेनवो जायमाने अनोनवुर्द्यावः क्षामो अनोनवुः ॥ १९ ॥
यद् द्यावं इन्द्र ते शतं शतं भूमीरुत स्युः ।
न त्वा वज्रिन्त्सहस्रं सूर्या अनु न जातमष्ट रोदसी ॥ २० ॥
आ पप्राथ महिना वृष्ण्या वृषन्विश्वा शविष्ठ शवसा ।
अस्माँ अव मघवन्गोमति व्रजे वज्रिञ्चित्राभिरूतिभिः ॥ २१ ॥

[९३] त्रिनवतितमं सूक्तम्

ऋषिः—१-३ प्रगाथः ४-८ देवजामयः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥

उत्त्वा मन्दन्तु स्तोमाः कृणुष्व राधो अद्रिवः । अवं ब्रह्मद्विषो जहि ॥ १ ॥
पदा पणीँरराधसो नि बाधस्व महाँ असि । नहि त्वा कश्चन प्रति ॥ २ ॥
त्वमीशिषे सुतानामिन्द्र त्वमसुतानाम् । त्वं राजा जनानाम् ॥ ३ ॥
ईङ्खयन्तीरपस्युव इन्द्रं जातमुपासते । भेजानासः सुवीर्यम् ॥ ४ ॥
त्वमिन्द्र बलादधि सहसो जात ओजसः । त्वं वृषन्वृषेदसि ॥ ५ ॥
त्वमिन्द्रासि वृत्रहा व्यन्तरिक्षमतिरः । उद् द्यामस्तभ्ना ओजसा ॥ ६ ॥
त्वमिन्द्र सजोषसमर्कं बिभर्षि बाह्वोः । वज्रं शिशान ओजसा ॥ ७ ॥
त्वमिन्द्राभिभूरसि विश्वा जातान्योजसा । स विश्वा भुव आभवः ॥ ८ ॥

[९४] चतुर्नवतितमं सूक्तम्

ऋषिः—कृष्णः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१-३, १०, ११ त्रिष्टुप्; ४-९ जगती ॥

आ यात्विन्द्रः स्वपतिर्मदायं यो धर्मणा तूतुजानस्तुविष्मान् ।
प्रत्वक्षाणो अति विश्वा सहांस्यपारेण महता वृष्ण्येन ॥ १ ॥
सुष्ठामा रथः सुयमा हरी ते मिम्यक्ष वज्रो नृपते गभस्तौ ।
शीभं राजन्त्सुपथा याह्यर्वाङ्वर्धीम ते पपुषो वृष्ण्यानि ॥ २ ॥
एन्द्रवाहो नृपतिं वज्रबाहुमुग्रमुग्रासस्तविषास एनम् ।
प्रत्वक्षसं वृषभं सत्यशुष्ममेमस्मत्रा सधमादो वहन्तु ॥ ३ ॥
एवा पतिर्द्रोणसाचं सचेतसमूर्जं स्कम्भं धरुणं आ वृषायसे ।
ओजः कृष्व सं गृभाय त्वे अप्यसो यथा केनिपानामिनो वृधे ॥ ४ ॥
गमन्नस्मे वसून्या हि शंसिषं स्वाशिषं भरमा याहि सोमिनः ।
त्वमीशिषे सास्मिन्ना सत्सि बर्हिष्यनाधृष्या तव पात्राणि धर्मणा ॥ ५ ॥
पृथक्प्रायन्प्रथमा देवहूतयोऽकृण्वत श्रवस्यानि दुष्टरा ।
न ये शेकुर्यज्ञियां नावमारुहमीर्मैव ते न्यविशन्त केपयः ॥ ६ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

एवैवापागपरे सन्तु दूढ्योऽश्वा येषां दुर्युज आयुयुज्रे ।
इत्था ये प्रागुपरे सन्ति दावने पुरूणि यत्र वयुनानि भोजना ॥ ७ ॥
गिरीँरज्राँरजमानाँ अधारयद् द्यौः क्रन्ददन्तरिक्षाणि कोपयत् ।
समीचीने धिषणे वि ष्कभायति वृष्णः पीत्वा मद उक्थानि शंसति ॥ ८ ॥
इमं बिभर्मि सुकृतं ते अङ्कुशं येनारुजासि मघवञ्छफारुजः ।
अस्मिन्त्सु ते सवने अस्त्वोक्यं सुत इष्टौ मघवन्बोध्याभगः ॥ ९ ॥
गोभिष्टरेमामतिं दुरेवां यवेन क्षुधं पुरुहूत विश्वाम् ।
वयं राजभिः प्रथमा धनान्यस्माकेन वृजनेना जयेम ॥ १० ॥
बृहस्पतिर्नः परि पातु पश्चादुतोत्तरस्मादधरादघायोः ।
इन्द्रः पुरस्तादुत मध्यतो नः सखा सखिभ्यो वरिवः कृणोतु ॥ ११ ॥

[९५] पञ्चनवतितमं सूक्तम्

ऋषिः—१ गृत्समदः; २-४ सुदाः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१ अष्टिः; २-४ शक्वरी ॥

त्रिकद्रुकेषु महिषो यवाशिरं तुविशुष्मस्तृपत्सोममपिबद्विष्णुना सुतं यथावशत् । स ईं ममाद महि कर्म कर्तवे महामुरुं सैनं सश्चद्देवो देवं सत्यमिन्द्रं सत्य इन्दुः ॥ १ ॥
प्रो ष्वस्मै पुरोरथमिन्द्राय शूषमर्चत ।
अभीके चिदु लोककृत्संगे समत्सु वृत्रहास्माकं बोधि
चोदिता नभन्तामन्यकेषां ज्याका अधि धन्वसु ॥ २ ॥
त्वं सिन्धूँरवासृजोऽधराचो अहन्नहिम् ।
अशत्रुरिन्द्र जज्ञिषे विश्वं पुष्यसि वार्यं तं त्वा परि
ष्वजामहे नभन्तामन्यकेषां ज्याका अधि धन्वसु ॥ ३ ॥
वि षु विश्वा अरातयोऽर्यो नशन्त नो धियः ।
अस्तासि शत्रवे वधं यो न इन्द्र जिघांसति या तै
रातिर्ददिर्वसु नभन्तामन्यकेषां ज्याका अधि धन्वसु ॥ ४ ॥

[९६] षण्णवतितमं सूक्तम्

ऋषिः—१-१० पूरणः; ६-९ ब्रह्मा च, भृग्वङ्गिराश्च, १० ब्रह्मा च; ११-१६ रक्षोहाः; १७-२३ ब्रह्मा; २४ प्रचेताः ॥ देवता—१-५ इन्द्रः; ६-१०, १७-२३ यक्ष्मनाशनम्; ११-१६ गर्भदोषनाशनम्; २४ दुःष्वप्ननाशनम् ॥ छन्दः—१-८ त्रिष्टुप्; ९ शक्वरीगर्भा जगती; १०-१८, २४ अनुष्टुप्; १९ ककुम्मत्यनुष्टुप्; २० चतुष्पदाभुरिगुष्णिक्; २१ उपरिष्टाद्बृहती; २२ उष्णिग्गर्भानिचृदनुष्टुप् २३ पथ्यापङ्क्तिः ॥

तीव्रस्याभिवयसो अस्य पाहि सर्वरथा वि हरी इह मुञ्च ।
इन्द्र मा त्वा यजमानासो अन्ये नि रीरमन्तुभ्यमिमे सुतासः ॥ १ ॥
तुभ्यं सुतास्तुभ्यमु सोत्वासस्त्वां गिरः श्वात्र्या आ ह्वयन्ति ।
इन्द्रेदमद्य सवनं जुषाणो विश्वस्य विद्वाँ इह पाहि सोमम् ॥ २ ॥
य उशता मनसा सोममस्मै सर्वहृदा देवकामः सुनोति ।
न गा इन्द्रस्तस्य परा ददाति प्रशस्तमिच्चारुमस्मै कृणोति ॥ ३ ॥
अनुस्पष्टो भवत्येषो अस्य यो अस्मै रेवान्न सुनोति सोमम् ।
निररत्रौ मघवा तं दधाति ब्रह्मद्विषो हन्त्यनानुदिष्टः ॥ ४ ॥
अश्वायन्तो गव्यन्तो वाजयन्तो हवामहे त्वोपगन्तवा उ ।
आभूषन्तस्ते सुमतौ नवायां वयमिन्द्र त्वा शुनं हुवेम ॥ ५ ॥
मुञ्चामि त्वा हविषा जीवनाय कमज्ञातयक्ष्मादुत राजयक्ष्मात् ।
ग्राहिर्जग्राह यद्येतदेनं तस्या इन्द्राग्नी प्र मुमुक्तमेनम् ॥ ६ ॥
यदि क्षितायुर्यदि वा परेतो यदि मृत्योरन्तिकं नीत एव ।
तमा हरामि निर्ऋतेरुपस्थादस्पार्शमेनं शतशारदाय ॥ ७ ॥
सहस्राक्षेण शतवीर्येण शतायुषा हविषाहार्षमेनम् ।
इन्द्रो यथैनं शरदो नयात्यति विश्वस्य दुरितस्य पारम् ॥ ८ ॥
शतं जीव शरदो वर्धमानः शतं हेमन्ताञ्छतमु वसन्तान् ।
शतं त इन्द्रो अग्निः सविता बृहस्पतिः शतायुषा हविषाहार्षमेनम् ॥ ९ ॥
आहार्षमविदं त्वा पुनरागाः पुनर्णवः ।
सर्वाङ्ग सर्वं ते चक्षुः सर्वमायुश्च तेऽविदम् ॥ १० ॥
ब्रह्मणाग्निः संविदानो रक्षोहा बाधतामितः ।
अमीवा यस्ते गर्भं दुर्णामा योनिमाशये ॥ ११ ॥
यस्ते गर्भममीवा दुर्णामा योनिमाशये ।
अग्निष्टं ब्रह्मणा सह निष्क्रव्यादमनीनशत् ॥ १२ ॥
यस्ते हन्ति पतयन्तं निषत्स्नुं यः सरीसृपम् ।
जातं यस्ते जिघांसति तमितो नाशयामसि ॥ १३ ॥
यस्ते ऊरू विहरत्यन्तरा दम्पती शये ।
योनिं यो अन्तरारेढि तमितो नाशयामसि ॥ १४ ॥
यस्त्वा भ्राता पतिर्भूत्वा जारो भूत्वा निपद्यते ।
प्रजां यस्ते जिघांसति तमितो नाशयामसि ॥ १५ ॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

यस्त्वा स्वप्नेन तमसा मोहयित्वा निपद्यते ।
प्रजां यस्ते जिघांसति तमितो नाशयामसि ॥ १६ ॥
अक्षीभ्यां ते नासिकाभ्यां कर्णाभ्यां छुबुकादधि ।
यक्ष्मं शीर्षण्यं मस्तिष्काज्जिह्वाया वि वृहामि ते ॥ १७ ॥
ग्रीवाभ्यस्त उष्णिहाभ्यः कीकसाभ्यो अनूक्यात् ।
यक्ष्मं दोषण्यं मंसाभ्यां बाहुभ्यां वि वृहामि ते ॥ १८ ॥
हृदयात्ते परि क्लोम्नो हलीक्ष्णात्पार्श्वाभ्याम् ।
यक्ष्मं मतस्नाभ्यां प्लीह्नो यकनस्ते वि वृहामसि ॥ १९ ॥
आन्त्रेभ्यस्ते गुदाभ्यो वनिष्ठोरुदरादधि ।
यक्ष्मं कुक्षिभ्यां प्लाशोनाभ्या वि वृहामि ते ॥ २० ॥
ऊरुभ्यां ते अष्ठीवद्भ्यां पार्ष्णिभ्यां प्रपदाभ्याम् ।
यक्ष्मं भसद्यं श्रोणिभ्यां भासदं भंससो वि वृहामि ते ॥ २१ ॥
अस्थिभ्यस्ते मज्जभ्यः स्नावभ्यो धमनिभ्यः ।
यक्ष्मं पाणिभ्यामङ्गुलिभ्यो नखेभ्यो वि वृहामि ते ॥ २२ ॥
अङ्गेअङ्गे लोम्निलोम्नि यस्ते पर्वणिपर्वणि ।
यक्ष्मं त्वचस्यं ते वयं कश्यपस्य वीबर्हेण विष्वञ्चं वि वृहामसि ॥ २३ ॥
अपेहि मनसस्पतेऽप क्राम परश्चर ।
परो निर्ऋत्या आ चक्ष्व बहुधा जीवतो मनः ॥ २४ ॥

अथ नवमोऽनुवाकः [९७] सप्तनवतितमं सूक्तम्

ऋषिः—कलिः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१, २ बार्हतः प्रगाथः (बृहती+सतोबृहती); ३ बृहती ॥

वयमेनमिदा ह्योऽपीपेमेह वज्रिणम् ।
तस्मा उ अद्य समना सुतं भरा नूनं भूषत श्रुते ॥ १ ॥
वृकश्चिदस्य वारण उरामथिरा वयुनेषु भूषति ।
सेमं न स्तोमं जुजुषाण आ गहीन्द्र प्र चित्रया धिया ॥ २ ॥
कदू नवं स्यादृतमिन्द्रस्यास्ति पौंस्यम् ।
केनो नु कं श्रोमतेन न शुश्रुवे जनुषः परि वृत्रहा ॥ ३ ॥

[९८] अष्टनवतितमं सूक्तम्

ऋषिः—शंयुः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—बार्हतः प्रगाथः (बृहती+सतोबृहती) ॥

त्वामिद्धि हवामहे साता वाजस्य कारवः ।
त्वां वृत्रेष्विन्द्र सत्पतिं नरस्त्वां काष्ठास्ववंतः ॥ १ ॥
स त्वं नश्चित्र वज्रहस्त धृष्णुया मह स्तवानो अद्रिवः ।
गामश्वं रथ्यं मिन्द्र सं किर सत्रा वाजं न जिग्युषे ॥ २ ॥

[९९] नवनवतितमं सूक्तम्

ऋषिः—मेध्यातिथिः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—बार्हतः प्रगाथः (बृहती+सतोबृहती) ॥

अभि त्वा पूर्वपीतय इन्द्र स्तोमेभिरायवः ।
समीचीनास ऋभवः समस्वरन्रुदा गृणन्त पूर्व्यम् ॥ १ ॥
अस्येदिन्द्रो वावृधे वृष्ण्यं शवो मदे सुतस्य विष्णवि ।
अद्या तमस्य महिमानमायवोऽनु ष्टुवन्ति पूर्वथा ॥ २ ॥

[१००] शततमं सूक्तम्

ऋषिः—नृमेधः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—उष्णिक् ॥

अधा हीन्द्र गिर्वण उप त्वा कामान्महः ससृज्महे । उदेव यन्त उदभिः ॥ १ ॥
वार्ण त्वा यव्याभिर्वर्धन्ति शूर ब्रह्माणि । वावृध्वांसं चिदद्रिवो दिवेदिवे ॥ २ ॥
युञ्जन्ति हरी इषिरस्य गाथयोरौ रथ उरुयुगे । इन्द्रवाहा वचोयुजा ॥ ३ ॥

[१०१] एकोत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—मेध्यातिथिः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—गायत्री ॥

अग्निं दूतं वृणीमहे होतारं विश्ववेदसम् । अस्य यज्ञस्य सुक्रतुम् ॥ १ ॥
अग्निमग्निं हवीमभिः सदा हवन्त विश्पतिम् । हव्यवाहं पुरुप्रियम् ॥ २ ॥
अग्ने देवाँ इहा वह जज्ञानो वृक्तबर्हिषे । असि होता न ईड्यः ॥ ३ ॥

[१०२] द्व्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—विश्वामित्रः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—गायत्री ॥

ईडेन्यो नमस्य स्तिरस्तमांसि दर्शतः । समग्निरिध्यते वृषा ॥ १ ॥
वृषो अग्निः समिध्यतेऽश्वो न देववाहनः । तं हुविष्मन्त ईडते ॥ २ ॥
वृषणं त्वा वयं वृषन्वृषणः समिधीमहि । अग्ने दीद्यतं बृहत् ॥ ३ ॥

[१०३] त्र्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—१ सुदीतिपुरुमीढौ; २, ३ भर्गः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१, २ बृहती; ३ सतोबृहती ॥

अग्निमीडिष्वावसे गाथाभिः शीरशोचिषम् ।
अग्निं राये पुरुमीढ श्रुतं नरोऽग्निं सुदीतये छर्दिः ॥ १ ॥
अग्न आ याह्यग्निभिर्होतारं त्वा वृणीमहे ।
आ त्वामनक्तु प्रयता हविष्मती यजिष्ठं बर्हिरासदे ॥ २ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अच्छा॒ हि त्वा॑ सहसः सूनो अङ्गिरः॒ स्रुच॒श्चर॑न्त्यध्व॒रे।
ऊ॒र्जो नपा॑तं घृ॒तके॑शमीमहे॒ऽग्निं य॒ज्ञेषु॑ पू॒र्व्यम् ॥ ३ ॥

[१०४] चतुरुत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—१, २ मेध्यातिथिः; ३, ४ नृमेधः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—बार्हतः प्रगाथः (विषमा-बृहती+समा-सतोबृहती)॥

इ॒मा उ॑ त्वा पुरूवसो॒ गिरो॑ वर्धन्तु॒ या मम॑ ।
पा॒व॒कव॑र्णाः॒ शुच॑यो विप॒श्चितो॒ऽभि स्तोमै॑रनूषत ॥ १ ॥
अ॒यं स॒हस्र॒मृषि॑भिः॒ सह॑स्कृतः समु॒द्रइ॑व पप्रथे ।
स॒त्यः सो अ॑स्य महि॒मा गृ॑णे॒ शवो॑ य॒ज्ञेषु॑ विप्र॒राज्ये॑ ॥ २ ॥
आ नो॒ विश्वा॑सु॒ हव्य॒ इन्द्रः॑ स॒मत्सु॑ भूषतु ।
उप॒ ब्रह्मा॑णि॒ सव॑नानि वृत्र॒हा प॑रम॒ज्या ऋची॑षमः ॥ ३ ॥
त्वं दा॒ता प्र॑थ॒मो राध॑साम॒स्यसि॑ स॒त्य ई॑शान॒कृत्।
तु॒वि॒द्यु॒म्नस्य॒ युज्या वृ॑णीमहे पु॒त्रस्य॒ शव॑सो म॒हः ॥ ४ ॥

[१०५] पञ्चोत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—१-३ नृमेधः; ४, ५ पुरुहन्मा॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१, २, ४, ५ बार्हतः प्रगाथः (१, ४ बृहती; २, ५ सतोबृहती); ३ बृहती॥

त्वमि॑न्द्र॒ प्रतू॑र्तिष्व॒भि विश्वा॑ असि॒ स्पृधः॑ ।
अ॒श॒स्ति॒हा ज॑नि॒ता वि॑श्व॒तूर॑सि॒ त्वं तू॑र्य तरुष्य॒तः ॥ १ ॥
अनु॑ ते॒ शुष्मं॑ तु॒रय॑न्तमीयतुः क्षो॒णी शिशुं॒ न मा॒तरा॑।
विश्वा॑स्ते॒ स्पृधः॑ श्नथयन्त म॒न्यवे॑ वृ॒त्रं यदि॑न्द्र॒ तूर्व॑सि ॥ २ ॥
इ॒त ऊ॒ती वो॑ अ॒जरं॑ प्रहे॒तार॒मप्र॑हितम् ।
आ॒शुं जेता॑रं॒ हेता॑रं र॒थीत॑म॒मतू॑र्तं तुग्र्या॒वृध॑म् ॥ ३ ॥
यो राजा॑ चर्षणी॒नां याता॒ रथे॑भि॒रध्रि॑गुः ।
विश्वा॑सां तरु॒ता पृत॑नानां॒ ज्येष्ठो॒ यो वृ॑त्र॒हा गृ॒णे ॥ ४ ॥
इन्द्रं॒ तं शु॑म्भ पुरुहन्म॒न्नव॑से॒ यस्य॑ द्वि॒ता वि॑ध॒र्तरि॑।
हस्ता॑य॒ वज्रः॒ प्रति॑ धायि दर्श॒तो म॒हो दि॒वे न सूर्यः॑ ॥ ५ ॥

[१०६] षडुत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—गोषूक्त्यश्वसूक्तिनौ॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—उष्णिक्॥

तव॒ त्यदि॑न्द्रि॒यं बृ॒हत्तव॒ शुष्म॑मु॒त क्रतु॑म्। वज्रं॑ शिशाति धि॒षणा॒ वरे॑ण्यम् ॥ १ ॥
तव॒ द्यौरि॑न्द्र॒ पौंस्यं॑ पृथि॒वी व॑र्धति॒ श्रवः॑। त्वामापः॒ पर्व॑तासश्च हिन्विरे ॥ २ ॥
त्वां विष्णु॑र्बृ॒हन्क्षयो॑ मि॒त्रो गृ॑णाति॒ वरु॑णः। त्वां शर्धो॑ मद॒त्यनु॒ मारु॑तम् ॥ ३ ॥

[१०७] सप्तोत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—१-३ वत्सः; ४-१२ बृहद्दिवोऽथर्वा; १३, १४ ब्रह्मा; १५ कुत्सः॥ देवता—१-१२ इन्द्रः; १३-१५ सूर्यः॥ छन्दः—१-३ गायत्री; ४-१२, १४, १५ त्रिष्टुप्; १३ आर्षीपङ्क्तिः॥

सम॑स्य म॒न्यवे॒ विशो॒ विश्वा॑ नमन्त कृ॒ष्टयः॑। स॒मु॒द्राये॑व॒ सिन्ध॑वः ॥ १ ॥
ओज॒स्तद॑स्य तित्विष उ॒भे यत्स॒मव॑र्तयत्। इन्द्र॒श्चर्मे॑व॒ रोद॑सी ॥ २ ॥
वि चि॑द् वृ॒त्रस्य॒ दोध॑तो॒ वज्रे॑ण श॒तप॑र्वणा। शिरो॑ बिभेद वृ॒ष्णिना॑ ॥ ३ ॥
तदिदा॑स॒ भुव॑नेषु॒ ज्येष्ठं॒ यतो॑ ज॒ज्ञ उ॒ग्रस्त्वे॒षनृ॑म्णः ।
स॒द्यो ज॑ज्ञा॒नो नि रि॑णाति॒ शत्रू॒ननु॒ यदे॑नं॒ मद॑न्ति॒ विश्व॒ ऊमाः॑ ॥ ४ ॥
वा॒वृ॒धा॒नः शव॑सा॒ भूर्यो॑जाः॒ शत्रु॑र्दा॒साय॑ भि॒यसं॑ दधाति ।
अव्य॑नच्च व्य॒नच्च॒ सस्नि॒ सं ते॑ नवन्त॒ प्रभृ॑ता॒ मदे॑षु ॥ ५ ॥
त्वे क्रतु॒मपि॑ पृञ्चन्ति॒ भूरि॒ द्विर्यदे॒ते त्रिर्भव॒न्त्यूमाः॑ ।
स्वा॒दोः स्वादी॑यः स्वा॒दुना॑ सृजा॒ सम॒दः सु मधु॒ मधु॑ना॒भि यो॑धीः ॥ ६ ॥
यदि॑ चि॒न्नु त्वा॒ धना॒ जय॑न्तं॒ रणे॑रणे अनु॒मद॑न्ति॒ विप्राः॑ ।
ओजी॑यः शुष्मिन्त्स्थि॒रमा त॑नुष्व॒ मा त्वा॑ दभन्दु॒रेवा॑सः क॒शोकाः॑ ॥ ७ ॥
त्वया॑ व॒यं शा॑शद्महे॒ रणे॑षु प्र॒पश्य॑न्तो यु॒धेन्या॑नि॒ भूरि॑ ।
चो॒दया॑मि त॒ आयु॑धा॒ वचो॑भिः॒ सं ते॑ शिशामि॒ ब्रह्म॑णा॒ वयां॑सि ॥ ८ ॥
नि तद्द॑धि॒षेऽव॑रे॒ परे॑ च॒ यस्मि॒न्नावि॒थाव॑सा दुरो॒णे ।
आ स्था॑पयत मा॒तरं॑ जिग॒त्नुमत॑ इन्वत॒ कर्व॑राणि॒ भूरि॑ ॥ ९ ॥
स्तु॒ष्व व॑र्ष्मन्पुरु॒वर्त्मा॑नं॒ समृभ्वा॑णमि॒नत॑ममा॒प्तमा॒प्त्याना॑म् ।
आ द॑र्शति॒ शव॑सा॒ भूर्यो॑जाः॒ प्र स॑क्षति प्रति॒मानं॑ पृथि॒व्याः ॥ १० ॥
इ॒मा ब्रह्म॑ बृ॒हद्दि॑वः कृणव॒दिन्द्रा॑य शू॒षम॑ग्रि॒यः स्व॒र्षाः ।
म॒हो गो॒त्रस्य॑ क्षयति स्व॒राजा॒ तुर॑श्चि॒द्विश्व॑मर्णव॒त्तप॑स्वान् ॥ ११ ॥
ए॒वा म॒हान्बृ॒हद्दि॑वो॒ अथ॒र्वावो॑च॒त्स्वां त॒न्व१॒॑मिन्द्र॑मे॒व ।
स्वसा॑रौ मात॒रिभ्व॑री अरि॒प्रे हि॒न्वन्ति॑ चैने॒ शव॑सा व॒र्धय॑न्ति च ॥ १२ ॥
चि॒त्रं दे॒वानां॑ के॒तुरनी॑कं॒ ज्योति॑ष्मान्प्र॒दिशः॒ सूर्य॑ उ॒द्यन् ।
दि॒वा॒क॒रोऽति॑ द्यु॒म्नैस्तमां॑सि॒ विश्वा॑तारीद्दुरि॒तानि॑ शु॒क्रः ॥ १३ ॥
चि॒त्रं दे॒वाना॒मुदगा॒दनी॑कं॒ चक्षु॑र्मि॒त्रस्य॒ वरु॑णस्या॒ग्नेः ।
आप्रा॒ द्यावा॑पृथि॒वी अ॒न्तरि॑क्षं॒ सूर्य॑ आ॒त्मा जग॑तस्त॒स्थुष॑श्च ॥ १४ ॥
सूर्यो॑ दे॒वीमु॒षसं॒ रोच॑मानां॒ मर्यो॒ न योषा॑म॒भ्ये॑ति प॒श्चात्।
यत्रा॒ नरो॑ देव॒यन्तो॑ यु॒गानि॑ वितन्व॒ते प्रति॑ भ॒द्राय॑ भ॒द्रम् ॥ १५ ॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

[१०८] अष्टोत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—नृमेधः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१ गायत्री; २ ककुबुष्णिक्; ३ पुरउष्णिक्॥

त्वं न इन्द्रा भरँ ओजो नृम्णं शतक्रतो विचर्षणे। आ वीरं पृतनाषहम्॥ १॥
त्वं हि नः पिता वसो त्वं माता शतक्रतो बभूविथ। अधा ते सुम्नमीमहे॥ २॥
त्वां शुष्मिन्पुरुहूत वाजयन्तमुप ब्रुवे शतक्रतो। स नो रास्व सुवीर्यम्॥ ३॥

[१०९] नवोत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—गोतमः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—पङ्क्तिः॥

स्वादोरित्था विषूवतो मध्वः पिबन्ति गौर्यः।
या इन्द्रेण सयावरीर्वृष्णा मदन्ति शोभसे वस्वीरनु स्वराज्यम्॥ १॥
ता अस्य पृशनायुवः सोमं श्रीणन्ति पृश्नयः।
प्रिया इन्द्रस्य धेनवो वज्रं हिन्वन्ति सायकं वस्वीरनु स्वराज्यम्॥ २॥
ता अस्य नमसा सहः सपर्यन्ति प्रचेतसः।
व्रतान्यस्य सश्चिरे पुरूणि पूर्वचित्तये वस्वीरनु स्वराज्यम्॥ ३॥

[११०] दशोत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—श्रुतकक्षः सुकक्षो वा॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—गायत्री॥

इन्द्राय मद्वने सुतं परि ष्टोभन्तु नो गिरः। अर्कमर्चन्तु कारवः॥ १॥
यस्मिन्विश्वा अधि श्रियो रणन्ति सप्त संसदः। इन्द्रं सुते हवामहे॥ २॥
त्रिकद्रुकेषु चेतनं देवासो यज्ञमत्नत। तमिद्वर्धन्तु नो गिरः॥ ३॥

[१११] एकादशोत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—पर्वतः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—उष्णिक्॥

यत्सोममिन्द्र विष्णवि यद्वा घ त्रित आप्त्ये।
यद्वा मरुत्सु मन्दसे समिन्दुभिः॥ १॥
यद्वा शक्र परावति समुद्रे अधि मन्दसे।
अस्माकमित्सुते रणा समिन्दुभिः॥ २॥
यद्वासि सुन्वतो वृधो यजमानस्य सत्पते।
उक्थे वा यस्य रण्यसि समिन्दुभिः॥ ३॥

[११२] द्वादशोत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—सुकक्षः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—गायत्री॥

यदद्य कच्च वृत्रहन्नुदगा अभि सूर्य। सर्वं तदिन्द्र ते वशे॥ १॥
यद्वा प्रवृद्ध सत्पते न मरा इति मन्यसे। उतो तत्सत्यमित्तव॥ २॥
ये सोमासः परावति ये अर्वावति सुन्विरे। सर्वांस्ताँ इन्द्र गच्छसि॥ ३॥

[११३] त्रयोदशोत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—भर्गः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—बार्हतः प्रगाथः (बृहती+सतोबृहती)॥

उभयं शृणवच्च न इन्द्रो अर्वागिदं वचः।
सत्राच्या मघवा सोमपीतये धिया शविष्ठ आ गमत्॥ १॥
तं हि स्वराजं वृषभं तमोजसे धिषणे निष्टतक्षतुः।
उतोपमानां प्रथमो नि षीदसि सोमकामं हि ते मनः॥ २॥

[११४] चतुर्दशोत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—सौभरिः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—गायत्री॥

अभ्रातृव्यो अना त्वामनापिरिन्द्र जनुषा सनादसि।
युधेदापित्वमिच्छसे॥ १॥
नकीं रेवन्तं सख्याय विन्दसे पीयन्ति ते सुराश्वः।
यदा कृणोषि नदनुं समूहस्यादित्पितेव हूयसे॥ २॥

[११५] पञ्चदशोत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—वत्सः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—गायत्री॥

अहमिद्धि पितुष्परि मेधामृतस्य जग्रभ। अहं सूर्य इवाजनि॥ १॥
अहं प्रत्नेन मन्मना गिरः शुम्भामि कण्ववत्। येनेन्द्रः शुष्ममिद्दधे॥ २॥
ये त्वामिन्द्र न तुष्टुवुर्ऋषयो ये च तुष्टुवुः। ममेद्वर्धस्व सुष्टुतः॥ ३॥

[११६] षोडशोत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—मेध्यातिथिः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—बृहती॥

मा भूम निष्ट्या इवेन्द्र त्वदरणाइव।
वनानि न प्रजहितान्यद्रिवो दुरोषासो अमन्महि॥ १॥
अमन्महीदनाशवोऽनुग्रासश्च वृत्रहन्।
सकृत्सु ते महता शूर राधसानु स्तोमं मुदीमहि॥ २॥

[११७] सप्तदशोत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—विराट्त्रिपदागायत्री॥

पिबा सोममिन्द्र मन्दतु त्वा यं ते सुषाव हर्यश्वाद्रिः।
सोतुर्बाहुभ्यां सुयतो नार्वा॥ १॥
यस्ते मदो युज्यश्चारुरस्ति येन वृत्राणि हर्यश्व हंसि।
स त्वामिन्द्र प्रभूवसो ममत्तु॥ २॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

बोधा सु मे मघवन्वाचमेमां यां ते वसिष्ठो अर्चति प्रशस्तिम्।
इमा ब्रह्म सधमादे जुषस्व ॥ ३ ॥

[११८] अष्टादशोत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—१, २ भर्गः; ३, ४ मेध्यातिथिः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—बार्हतः प्रगाथः (विषमा-बृहती+समा-सतोबृहती)॥

शग्ध्यू१षु शचीपत इन्द्र विश्वाभिरूतिभिः ।
भगं न हि त्वा यशसं वसुविदमनु शूर चरामसि॥ १ ॥
पौरो अश्वस्य पुरुकृद्गवामस्युत्सो देव हिरण्ययः।
नकिर्हि दानं परिमर्धिषत्त्वे यद्यद्यामि तदा भर॥ २ ॥
इन्द्रमिद्देवतातय इन्द्रं प्रयत्यध्वरे ।
इन्द्रं समीके वनिनो हवामह इन्द्रं धनस्य सातये॥ ३ ॥
इन्द्रो मह्ना रोदसी पप्रथच्छव इन्द्रः सूर्यमरोचयत्।
इन्द्रेह विश्वा भुवनानि येमिर इन्द्रे सुवानास इन्दवः॥ ४ ॥

[११९] एकोनविंशत्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—१ आयुः; २ श्रुष्टिगुः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—बार्हतः प्रगाथः (बृहती+सतोबृहती)॥

अस्तावि मन्म पूर्व्यं ब्रह्मेन्द्राय वोचत ।
पूर्वीर्ऋतस्य बृहतीरनूषत स्तोतुर्मेधा असृक्षत ॥ १ ॥
तुरण्यवो मधुमन्तं घृतश्चुतं विप्रासो अर्कमानृचुः।
अस्मे रयिः पप्रथे वृष्ण्यं शवोऽस्मे सुवानास इन्दवः॥ २ ॥

[१२०] विंशत्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—देवातिथिः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—बार्हतः प्रगाथः (बृहती + सतोबृहती)॥

यदिन्द्र प्रागपागुदङ् न्यग्वा हूयसे नृभिः ।
सिमा पुरू नृषूतो अस्यानवेऽसि प्रशर्ध तुर्वशे॥ १ ॥
यद्वा रुमे रुशमे श्यावके कृप इन्द्र मादयसे सचा।
कण्वासस्त्वा ब्रह्मभि स्तोमवाहस इन्द्रा यच्छन्त्या गहि॥ २ ॥

[१२१] एकविंशत्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—देवातिथिः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—बार्हतः प्रगाथः (बृहती+सतोबृहती)॥

अभि त्वा शूर नोनुमोऽदुग्धाइव धेनवः ।
ईशानमस्य जगतः स्वर्दृशमीशानमिन्द्र तस्थुषः॥ १ ॥
न त्वावाँ अन्यो दिव्यो न पार्थिवो न जातो न जनिष्यते।
अश्वायन्तो मघवन्निन्द्र वाजिनो गव्यन्तस्त्वा हवामहे ॥ २ ॥

[१२२] द्वाविंशत्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—शुनःशेपः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—गायत्री॥

रेवतीर्नः सधमाद इन्द्रे सन्तु तुविवाजाः। क्षुमन्तो याभिर्मदेम ॥ १ ॥
आ घ त्वावान्तमनाप्त स्तोतृभ्यो धृष्णवियानः। ऋणोरक्षं न चक्र्योः॥ २ ॥
आ यदुवः शतक्रतवा कामं जरितॄणाम्। ऋणोरक्षं न शचीभिः॥ ३ ॥

[१२३] त्रयोविंशत्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—कुत्सः॥ देवता—सूर्यः॥ छन्दः—त्रिष्टुप्॥

तत्सूर्यस्य देवत्वं तन्महित्वं मध्या कर्तोर्विततं सं जभार ।
यदेदयुक्त हरितः सधस्थादाद्रात्री वासस्तनुते सिमस्मै ॥ १ ॥
तन्मित्रस्य वरुणस्याभिचक्षे सूर्यो रूपं कृणुते द्योरुपस्थे ।
अनन्तमन्यद्रुशदस्य पाजः कृष्णमन्यद्धरितः सं भरन्ति ॥ २ ॥

[१२४] चतुर्विंशत्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—१-३ वामदेवः; ४-६ भुवनः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१, २ गायत्री; ३ पादनिचृद्गायत्री; ४-६ त्रिष्टुप्॥

कया नश्चित्र आ भुवदूती सदावृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता॥ १ ॥
कस्त्वा सत्यो मदानां मंहिष्ठो मत्सदन्धसः। दृढा चिदारुजे वसु॥ २ ॥
अभी षु णः सखीनामविता जरितॄणाम्। शतं भवास्यूतिभिः॥ ३ ॥
इमा नु कं भुवना सीषधामेन्द्रश्च विश्वे च देवाः।
यज्ञं च नस्तन्वं च प्रजां चादितैरिन्द्रः सह चीकॢपाति॥ ४ ॥
आदित्यैरिन्द्रः सगणो मरुद्भिरस्माकं भूत्वविता तनूनाम्।
हत्वाय देवा असुरान्यदायन्देवा देवत्वमभिरक्षमाणाः॥ ५ ॥
प्रत्यञ्चमर्कमनयञ्छचीभिरादित्स्वधामिषिरां पर्यपश्यन्।
अया वाजं देवहितं सनेम मदेम शतहिमाः सुवीराः॥ ६ ॥

[१२५] पञ्चविंशत्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—सुकीर्तिः॥ देवता—१-३, ६, ७ इन्द्रः; ४, ५ अश्विनौ॥ छन्दः—१-३, ५-७, त्रिष्टुप्; ४ अनुष्टुप्॥

अपेन्द्र प्राचो मघवन्नमित्रानपापाचो अभिभूते नुदस्व।
अपोदीचो अप शूराधराचं उरौ यथा तव शर्मन्मदेम॥ १ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कुविदङ्ग यवमन्तो यवं चिद्यथा दान्त्यनुपूर्वं वियूय।
इहेहैषां कृणुहि भोजनानि ये बर्हिषो नमोवृक्तिं न जग्मुः॥ २॥
नहि स्थूयूँतुथा यातमस्ति नोत श्रवो विविदे संगमेषु।
गव्यन्त इन्द्रं सख्याय विप्रा अश्वायन्तो वृषणं वाजयन्तः॥ ३॥
युवं सुरामंमश्विना नमुचावासुरे सचा ।
विपिपाना शुभस्पती इन्द्रं कर्मस्वावतम् ॥ ४॥
पुत्रमिव पितरावश्विनोभेन्द्रावथुः काव्यैर्दंसनाभिः ।
यत्सुरामं व्यपिबः शचीभिः सरस्वती त्वा मघवन्नभिष्णक्॥ ५॥
इन्द्रः सुत्रामा स्ववाँ अवोभिः सुमृडीको भवतु विश्ववेदाः।
बाधतां द्वेषो अभयं नः कृणोतु सुवीर्यस्य पतयः स्याम॥ ६॥
स सुत्रामा स्ववाँ इन्द्रो अस्मदाच्छिद् द्वेषः सनुतर्युयोतु।
तस्य वयं सुमतौ यज्ञियस्यापि भद्रे सौमनसे स्याम॥ ७॥

[१२६] षड्विंशत्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—वृषाकपिरिन्द्राणी च॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—पङ्क्तिः॥

वि हि सोतोरसृक्षत नेन्द्रं देवममंसत ।
यत्रामदद् वृषाकपिरर्यः पुष्टेषु मत्सखा विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः॥ १॥
परा हीन्द्र धावसि वृषाकपेरति व्यथिः ।
नो अह्रु प्र विन्दस्यन्यत्र सोमपीतये विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः॥ २॥
किमयं त्वां वृषाकपिश्चकार हरितो मृगः ।
यस्मा इरस्यसीदु न्वर्यो वा पुष्टिमद्वसु विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः॥ ३॥
यमिमं त्वं वृषाकपिं प्रियमिन्द्राभिरक्षसि ।
श्वा न्वस्य जम्भिषदपि कर्णे वराहयुर्विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः॥ ४॥
प्रिया तष्टानि मे कपिर्व्यक्ता व्यदूदुषत् ।
शिरो न्वस्य राविषं न सुगं दुष्कृतो भुवं विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः॥ ५॥
न मत्स्त्री सुभसत्तरा न सुयाशुतरा भुवत् ।
न मत्प्रतिच्यवीयसी न सक्थ्युद्यमीयसी विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः॥ ६॥
उवे अम्ब सुलाभिके यथेवाङ्ग भविष्यति ।
भसन्मे अम्ब सक्थि मे शिरो मे वीवहिष्यति विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः॥ ७॥
किं सुबाहो स्वङ्गुरे पृथुष्टो पृथुजाघने ।
किं शूरपत्नि नस्त्वमभ्यमीषि वृषाकपिं विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः॥ ८॥
अवीरामिव मामयं शरारुरभि मन्यते ।
उताहमस्मि वीरिणीन्द्रपत्नी मरुत्सखा विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः॥ ९॥
संहोत्रं स्म पुरा नारी समनं वावं गच्छति ।
वेधा ऋतस्य वीरिणीन्द्रपत्नी महीयते विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः॥ १०॥
इन्द्राणीमासु नारिषु सुभगामहमश्रवम् ।
नह्यस्या अपरं चन जरसा मरते पतिर्विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः॥ ११॥
नाहमिन्द्राणि रारण सख्युर्वृषाकपेर्ऋते ।
यस्येदमप्यं हविः प्रियं देवेषु गच्छति विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः॥ १२॥
वृषाकपायि रेवति सुपुत्र आदु सुस्नुषे ।
घसत्त इन्द्र उक्षणः प्रियं काचित्करं हविर्विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः॥ १३॥
उक्षणो हि मे पञ्चदश साकं पचन्ति विंशतिम् ।
उताहमद्मि पीव इदुभा कुक्षी पृणन्ति मे विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः॥ १४॥
वृषभो न तिग्मशृङ्गोऽन्तर्यूथेषु रोरुवत् ।
मन्थस्त इन्द्र शं हृदे यं ते सुनोति भावयुर्विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः॥ १५॥
न सेशे यस्य रम्बतेऽन्तरा सक्थ्या कपृत् ।
सेदीशे यस्य रोमशं निषेदुषो विजृम्भते विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः॥ १६॥
न सेशे यस्य रोमशं निषेदुषो विजृम्भते ।
सेदीशे यस्य रम्बतेऽन्तरा सक्थ्या कपृद्विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः॥ १७॥
अयमिन्द्र वृषाकपिः परस्वन्तं हतं विदत् ।
असिं सूनां नवं चरुमादेधस्यान् आचितं विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः॥ १८॥
अयमेमि विचाकशद्विचिन्वन्दासमार्यम् ।
पिबामि पाकसुत्वनोऽभि धीरमचाकशं विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः॥ १९॥
धन्व च यत्कृन्तत्रं च कतिं स्वित्ता वि योजना ।
नेदीयसो वृषाकपेऽस्तमेहि गृहाँ उप विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः॥ २०॥
पुनरेहि वृषाकपे सुविता कल्पयावहै ।
य एष स्वप्नंशनोऽस्तमेषि पथा पुनर्विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः॥ २१॥
यदुदञ्चो वृषाकपे गृहमिन्द्राजगन्तन ।
क्वस्य पुल्वघो मृगः कमगं जनयोपनो विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः॥ २२॥
पर्शीह नाम मानवी साकं ससूव विंशतिम् ।
भद्रं भल त्यस्या अभूद्यस्या उदरमामयद्विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः॥ २३॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

 Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अथ कुन्तापसूक्तानि॥

[१२७] सप्तविंशत्युत्तरशततमं सूक्तम्

इदं जना उप श्रुत नराशंस स्तविष्यते ।
षष्टिं सहस्रा नवतिं च कौरम आ रुशमेषु दद्महे॥ १ ॥
उष्ट्रा यस्य प्रवाहणो वधूमन्तो द्विर्दश ।
वर्ष्मा रथस्य नि जिहीडते दिव ईषमाणा उपस्पृशः॥ २ ॥
एष इषाय मामहे शतं निष्कान्दश स्रजः ।
त्रीणि शतान्यर्वतां सहस्रा दश गोनाम् ॥ ३ ॥
वच्यस्व रेभ वच्यस्व वृक्षे न पक्के शकुनः।
नष्टे जिह्वा चचरीति क्षुरो न भुरिजोरिव ॥ ४ ॥
प्र रेभासो मनीषा वृषा गाव इवेरते ।
अमोतपुत्रका एषाममोत गा इवासते ॥ ५ ॥
प्र रेभ धीं भरस्व गोविदं वसुविदम् ।
देवत्रेमां वाचं श्रीणीहीषुर्नावीरस्तारम् ॥ ६ ॥
राज्ञो विश्वजनीनस्य यो देवोऽमर्त्यो अति।
वैश्वानरस्य सुष्टुतिमा सुनोता परिक्षितः ॥ ७ ॥
परिच्छिन्नः क्षेममकरोत्तम आसनमाचरन् ।
कुलायन्कृण्वन्कौरव्यः पतिर्वदति जायया ॥ ८ ॥
कतरत्त आ हराणि दधि मन्थां परि श्रुतम्।
जायाः पतिं वि पृच्छति राष्ट्रे राज्ञः परिक्षितः॥ ९ ॥
अभीवस्वः प्र जिहीते यवः पक्वः पथो बिलम्।
जनः स भद्रमेधते राष्ट्रे राज्ञः परिक्षितः ॥ १० ॥
इन्द्रः कारुमबूबुधदुत्तिष्ठ वि चरा जनम् ।
ममेदुग्रस्य चर्कृधि सर्व इत्ते पृणादरिः ॥ ११ ॥
इह गावः प्रजायध्वमिहाश्वा इह पूरुषाः ।
इहो सहस्रदक्षिणोऽपि पूषा नि षीदति ॥ १२ ॥
नेमा इन्द्र गावो रिषन्मो आसां गोपतीरिषत्।
मासामुमित्रयुर्जन इन्द्र मा स्तेन ईशत ॥ १३ ॥
उप नो न रमसि सूक्तेन वचसा वयं भद्रेण वचसा वयम्।
वनादधिध्वनो गिरो न रिष्येम कदा चन ॥ १४ ॥

[१२८] अष्टाविंशत्युत्तरशततमं सूक्तम्

यः सुभेयो विदथ्यः सुत्वा यज्वाथ पूरुषः।
सूर्यं चामूं रिशादसस्तद्देवाः प्रागकल्पयन्॥ १ ॥
यो जाम्या अप्रथयस्तद्यत्सखायं दुधूर्षति ।
ज्येष्ठो यदप्रचेतास्तदाहुरधरागिति ॥ २ ॥
यद्रुद्रस्य पुरुषस्य पुत्रो भवति दाधृषिः ।
तद्विप्रो अब्रवीदु तद्ब्रह्मन्थर्वः काम्यं वचः ॥ ३ ॥
यश्च पणि रघुजिष्ठयो यश्च देवाँ अदाशुरिः।
धीराणां शश्वतामहं तदपागिति शुश्रुम ॥ ४ ॥
ये च देवा अयजन्ताथो ये च परादिदः।
सूर्यो दिवमिव गत्वाय मघवा नो वि रप्शते॥ ५ ॥
योऽनाक्ताक्षो अनभ्यक्तो अमणिवो अहिरण्यवः।
अब्रह्मा ब्रह्मणः पुत्रस्तोता कल्पेषु संमिता॥ ६ ॥
य आक्ताक्षः सुभ्यक्तः सुमणिः सुहिरण्यवः।
सुब्रह्मा ब्रह्मणः पुत्रस्तोता कल्पेषु संमिता॥ ७ ॥
अप्रपाणा च वेशन्ता रेवाँ अप्रतिदिश्यवः।
अयभ्या कन्याः कल्याणी तोता कल्पेषु संमिता॥ ८ ॥
सुप्रपाणा च वेशन्ता रेवान्त्सुप्रतिदिश्यवः।
सुयभ्या कन्याः कल्याणी तोता कल्पेषु संमिता॥ ९ ॥
परिवृक्ता च महिषी स्वस्त्याः च युधिंगमः।
अनाशुरश्चायामी तोता कल्पेषु संमिता ॥ १० ॥
वावाता च महिषी स्वस्त्याः च युधिंगमः।
श्वाशुरश्चायामी तोता कल्पेषु संमिता ॥ ११ ॥
यदिन्द्रादो दाशराज्ञे मानुषं वि गाहथाः ।
विरूपः सर्वस्मा आसीत्सह यक्षाय कल्पते॥ १२ ॥
त्वं वृषाक्षुं मघवन्त्रमं मर्याकरो रविः ।
त्वं रौहिणं व्यास्यो वि वृत्रस्याभिनच्छिरः॥ १३ ॥
यः पर्वतान्व्यदधाद्यो अपो व्यगाहथाः ।
इन्द्रो यो वृत्रहान्महं तस्मादिन्द्र नमोऽस्तु ते॥ १४ ॥
पृष्ठं धावन्तं हर्योरौच्चैःश्रवसमब्रुवन् ।
स्वात्यश्व जैत्रायेन्द्रमा वह सुत्रजम् ॥ १५ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ये त्वा श्वेता अजैश्रवसो हार्यो युञ्जन्ति दक्षिणम्।
पूर्वा नमस्य देवानां बिभ्रदिन्द्र महीयते ॥१६॥

[१२९] एकोनत्रिंशदुत्तरशततमं सूक्तम्

एता अश्वा आ प्लवन्ते ॥१॥ प्रतीपं प्रातिं सुत्वनम् ॥२॥
तासामेका हरिंक्निका ॥३॥ हरिंक्निके किमिच्छसि ॥४॥
साधुं पुत्रं हिरण्ययम् ॥५॥ क्वाहतं परास्यः ॥६॥
यत्रामूस्तिस्रः शिंशपाः ॥७॥ परि त्रयः ॥८॥
पृदाकवः ॥९॥ शृङ्गं धमन्त आसते ॥१०॥
अयन्महा तें अर्वाहः ॥११॥ स इच्छकुं सघांघते ॥१२॥
सघांघते गोमीद्या गोगतीरितिं ॥१३॥ पुमां कुस्ते निमिंच्छसि ॥१४॥
पल्पं बद्ध वयो इतिं ॥१५॥ बद्धं वो अघा इतिं ॥१६॥
अजागार केविका ॥१७॥ अश्वस्य वारो गोशपद्यके ॥१८॥
श्येनीपतीं सा ॥१९॥ अनामयोपजिह्विका ॥२०॥

[१३०] त्रिंशदुत्तरशततमं सूक्तम्

को अर्य बहुलिमा इषूनि ॥१॥ को असिद्याः पयः ॥२॥
को अर्जुन्याः पयः ॥३॥ कः काष्ण्यार्याः पयः ॥४॥
पुतं पृंच्छ कुहं पृच्छ ॥५॥ कुहाकं पक्वकं पृंच्छ ॥६॥
यवानो यतिस्वभिः कुभिः ॥७॥ अकुप्यन्तः कुपायकुः ॥८॥
आर्मणको मर्णत्सकः ॥९॥ देवं त्वप्रतिसूर्य ॥१०॥
एनश्चिपङ्क्तिका हविः ॥११॥ प्रदुद्रुदो मघाप्रति ॥१२॥
शृङ्गं उत्पन्न ॥१३॥ मा त्वाभि सखा नो विदन् ॥१४॥
वशायाः पुत्रमा यन्ति ॥१५॥ इरावेदुमयं दत ॥१६॥
अथों इयत्रियत्रिति ॥१७॥ अथों इयत्रिति ॥१८॥
अथो श्वा अस्थिरो भवन् ॥१९॥ उयं यकांशलोकका ॥२०॥

[१३१] एकत्रिंशदुत्तरशततमं सूक्तम्

आमिनोनिति भंद्यते ॥१॥ तस्य अनु निभञ्जनम् ॥२॥
वरुणो याति वस्वभिः ॥३॥ शतं वा भारती शवः ॥४॥
शतमाश्वा हिरण्ययाः। शतं रथ्या हिरण्ययाः।
शतं कुथा हिरण्ययाः। शतं निष्का हिरण्ययाः ॥५॥
अहल कुश वर्त्तक ॥६॥ शफेनेडव ओहते ॥७॥
आयं वनेनती जनीं ॥८॥ वनिष्ठा नाव गृह्यन्ति ॥९॥
इदं मह्य मदूरिति ॥१०॥ ते वृक्षाः सह तिष्ठति ॥११॥
पाकं बलिः ॥१२॥ शकं बलिः ॥१३॥
अश्वत्थ खदिरो ध्रुवः ॥१४॥ अरंदुपरम ॥१५॥
शयों हतइव ॥१६॥ व्याप पूरुषः ॥१७॥
अदूहमित्यां पूषकम् ॥१८॥ अत्यर्धर्चं परस्वतः ॥१९॥
दौव हस्तिनों दृती ॥२०॥

[१३२] द्वात्रिंशदुत्तरशततमं सूक्तम्

आदलांबुकमेककम् ॥१॥ अलांबुकं निखातकम् ॥२॥
कर्कंरिको निखातकः ॥३॥ तद्वात उन्मथायति ॥४॥
कुलायं कृणवादिति ॥५॥ उग्रं वनिषदाततम् ॥६॥
न वनिषदनाततम् ॥७॥ क एषां कर्करी लिखत् ॥८॥
क एषां दुन्दुभिं हनत् ॥९॥ यदीयं हनत्कथं हनत् ॥१०॥
देवी हनत्कुहनत् ॥११॥ पर्यागारं पुनःपुनः ॥१२॥
त्रीण्युष्ट्रस्य नामानि ॥१३॥ हिरण्य इत्येकें अब्रवीत् ॥१४॥
द्वौ वा ये शिशवः ॥१५॥ नीलशिखण्डवाहनः ॥१६॥

[१३३] त्रयत्रिंशदुत्तरशततमं सूक्तम्

वितंतौ किरणौ द्वौ तावा पिनष्टि पूरुषः।
न वै कुमारि तत्तथा यथा कुमारि मन्यसे ॥१॥
मातुष्टे किरणौ द्वौ निवृत्तः पुरुषानृते ।
न वै कुमारि तत्तथा यथा कुमारि मन्यसे ॥२॥
निगृह्य कर्णकौ द्वौ निरायच्छसि मध्यमे ।
न वै कुमारि तत्तथा यथा कुमारि मन्यसे ॥३॥
उत्तानायै शयानायै तिष्ठन्ती वाव गूहसि ।
न वै कुमारि तत्तथा यथा कुमारि मन्यसे ॥४॥
श्लक्ष्णायां श्लक्ष्णिकायां श्लक्ष्णमेवाव गूहसि।
न वै कुमारि तत्तथा यथा कुमारि मन्यसे ॥५॥
अवश्लक्ष्णमिव भ्रंशदुन्तर्लोममति हृदे ।
न वै कुमारि तत्तथा यथा कुमारि मन्यसे ॥६॥

[१३४] चतुस्त्रिंशदुत्तरशततमं सूक्तम्

इहेत्थ प्रागपागुदंगुधरागु अरालागुदंभर्त्सथ ॥१॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

इहेत्थ प्रागपागुदगधराग् वत्साः पुरुषन्त आसते ॥ २ ॥
इहेत्थ प्रागपागुदगधराग् स्थालीपाको वि लीयते ॥ ३ ॥
इहेत्थ प्रागपागुदगधराग् स वै पृथु लीयते ॥ ४ ॥
इहेत्थ प्रागपागुदगधराग् आष्टे लाहणि लीशाथी ॥ ५ ॥
इहेत्थ प्रागपागुदगधराग् अक्षिलंली पुच्छिलीयते ॥ ६ ॥

[१३५] पञ्चत्रिंशदुत्तरशततमं सूक्तम्

भुगित्यभिगतः शलित्यपक्रान्तः फलित्यभिष्ठितः।
दुन्दुभिमाहननाभ्यां जरितरोथामो दैव ॥ १ ॥
कोशबिले रजनि ग्रन्थेर्धानमुपानहि पादम्।
उत्तमां जनिमां जन्यानुत्तमां जनीन्वर्त्मन्यात् ॥ २ ॥
अलाबूनि पृषातकान्यश्वत्थपलाशम् ।
पिपीलिकावट्शवसो विद्युत्स्वापर्णशफो
गोशफो जरितरोथामो दैव ॥ ३ ॥
वीमे देवा अक्रंसताध्वर्यो क्षिप्रं प्रचर।
सुसत्यमिद्वामस्यसि प्रखुदसि ॥ ४ ॥
पत्नी यदृश्यते पत्नी यक्ष्यमाणा जरितरोथामो
दैव। होता विष्टीमेन जरितरोथामो दैव ॥ ५ ॥
आदित्या ह जरितरङ्गिरोभ्यो दक्षिणामनयन्।
तां ह जरितः प्रत्यायंस्तामु ह जरितः प्रत्यायन् ॥ ६ ॥
तां ह जरितर्नः प्रत्यगृभ्णंस्तामु ह जरितर्नः प्रत्यगृभ्णः।
अहानेतरसं न वि चेतनानि यज्ञानेतरसं न पुरोगवामः ॥ ७ ॥
उत श्वेत आशुपत्वा उतो पद्याभिर्यविष्ठः ।
उतेमाशु मानं पिपर्ति ॥ ८ ॥
आदित्या रुद्रा वसवस्त्वेऽनु त इदं राधः प्रति
गृभ्णीह्यङ्गिरः। इदं राधो विभु प्रभु इदं राधो बृहत्पृथु ॥ ९ ॥
देवा ददत्वासुरं तद्वो अस्तु सुचेतनम् ।
युष्माँ अस्तु दिवेदिवे प्रत्येव गृभायत ॥ १० ॥
त्वमिन्द्र शर्मरिणा हव्यं पारावतेभ्यः ।
विप्राय स्तुवते वसुवनिं दुरश्रवसे वह ॥ ११ ॥
त्वमिन्द्र कुपोताय च्छिन्नपक्षाय वञ्चते ।
श्यामाकं पक्वं पीलुं च वारस्मा अकृणोर्जिह्मः ॥ १२ ॥

अरंगरो वावदीति त्रेधा बद्धो वरत्रया ।
इरामह प्रशंसत्यनिरामप सेधति ॥ १३ ॥

[१३६] षट्त्रिंशदुत्तरशततमं सूक्तम्

यदस्या अंहुभेद्याः कृधु स्थूलमुपातसत् ।
मुष्काविदस्या एजतो गोशफे शकुलाविव ॥ १ ॥
यदा स्थूलेन पर्ससाणौ मुष्का उपावधीत् ।
विष्वञ्चा वस्या वर्धतः सिकतास्वेव गर्दभौ ॥ २ ॥
यदल्पिकास्वल्पिका कर्कन्धूकेव पद्यते ।
वासन्तिकमिव तेजनं यन्त्युवातायं वित्पति ॥ ३ ॥
यद्देवासो ललामगुं प्रविष्टीमिनमाविषुः ।
सकुला दैदिश्यते नारी सत्यस्याक्षिभुवो यथा ॥ ४ ॥
महानग्न्युतिप्रद्वि मोक्रदुदस्थानासरन् ।
शक्तिकानना स्वचमशकं सक्तु पद्यम ॥ ५ ॥
महानग्न्युलिखलमतिक्रामन्त्यब्रवीत् ।
यथा तवं वनस्पते निरघ्नन्ति तथैवति ॥ ६ ॥
महानग्न्युप ब्रूते भ्रष्टोऽथाप्यभूभुवः ।
यथैव तं वनस्पते पिप्पति तथैवेति ॥ ७ ॥
महानग्न्युप ब्रूते भ्रष्टोऽथाप्यभूभुवः ।
यथा वयो विदाह्य स्वर्गे नमवदह्यते ॥ ८ ॥
महानग्न्युप ब्रूते स्वसावेशितं पर्सः ।
इत्थं फलस्य वृक्षस्य शूर्पे शूर्पं भजेमहि ॥ ९ ॥
महानग्नी कृकवाकं शम्यया परि धावति ।
अयं न विद्म यो मृगः शीर्ष्णा हरति धाणिकाम् ॥ १० ॥
महानग्नी महानग्नं धावन्तमनु धावति ।
इमास्तदस्य गा रक्ष यभ मामद्ध्यौदनम् ॥ ११ ॥
सुदेवस्त्वा महानग्नीर्बबाधते महतः साधु खोदनम्।
कुसं पीवरो नवत् ॥ १२ ॥
वशा दुग्धामिमाङ्गुरिं प्रसृजतोग्रतं परे ।
महान्वै भद्रो यभ मामद्ध्यौदनम् ॥ १३ ॥
विदेवस्त्वा महानग्नीर्विबाधते महतः साधु खोदनम्।
कुपोतिका पिङ्गलिका कार्दु भस्मा कु धावति ॥ १४ ॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

महान्वै भद्रो बिल्वो महान्भद्र उदुम्बरः ।
महाँ अभिक्त बाधते महतः साधु खोदनम् ॥ १५ ॥
यः कुमारी पिङ्गलिका वसन्तं पीवरी लभेत् ।
तैलकुण्डमिमाङ्गुष्ठं रोदन्तं शुदमुद्धरेत् ॥ १६ ॥

॥ इति कुन्तापसूक्तानि ॥

[१३७] सप्तत्रिंशदुत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—१ शिरिम्बिठिः; २ बुधः; ३ वामदेवः; ४-६ ययातिः; ७-११ तिरश्ची-[राङ्गिरसो]-द्युतानो वा; १२-१४ सुकक्षः॥ देवता—१ अलक्ष्मीनाशनम्; २ विश्वदेवा ऋत्विक्स्तुतिर्वा; ३ दधिक्राः; ४-६ सोमः पवमानः; ७, ८, १०-१४ इन्द्रः; ८ (चतुर्थः पादः) मरुतः; ९ इन्द्रो बृहस्पतिश्च॥ छन्दः—१, ३, ४-६ अनुष्टुप्; २ जगती; ७-११ त्रिष्टुप्; १२-१४ गायत्री॥

यद्ध प्राचीरजगन्तोरो मण्डूरधाणिकीः ।
हता इन्द्रस्य शत्रवः सर्वे बुदबुदयाशवः ॥ १ ॥
कपृन्नरः कपृथमुद्धातन चोदयत खुदत वाजसातये ।
निष्टिग्र्यः पुत्रमा च्यावयोतय इन्द्रं सबाध इह सोमपीतये ॥ २ ॥
दधिक्राव्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः ।
सुरभि नो मुखा करत्प्र ण आयूंषि तारिषत् ॥ ३ ॥
सुतासो मधुमत्तमाः सोमा इन्द्राय मन्दिनः ।
पवित्रवन्तो अक्षरन्देवान्गच्छन्तु वो मदाः ॥ ४ ॥
इन्दुरिन्द्राय पवत इति देवासो अब्रुवन् ।
वाचस्पतिर्मखस्यते विश्वस्येशान ओजसा ॥ ५ ॥
सहस्रधारः पवते समुद्रो वाचमीङ्खयः ।
सोमः पती रयीणां सखेन्द्रस्य दिवेदिवे ॥ ६ ॥
अव द्रप्सो अंशुमतीमतिष्ठदियानः कृष्णो दशभिः सहस्रैः ।
आवत्तमिन्द्रः शच्या धमन्तमप स्नेहितीर्नृमणा अधत्त ॥ ७ ॥
द्रप्समपश्यं विषुणे चरन्तमुपह्वरे नद्यो अंशुमत्याः ।
नभो न कृष्णमवतस्थिवांसमिष्यामि वो वृषणो युध्यताजौ ॥ ८ ॥
अधं द्रप्सो अंशुमत्या उपस्थेऽधारयत्तन्वं तित्विषाणः ।
विशो अदेवीरभ्याचरन्तीर्बृहस्पतिना युजेन्द्रः ससाहे ॥ ९ ॥
त्वं ह त्यत्सप्तभ्यो जायमानोऽशत्रुभ्यो अभवः शत्रुरिन्द्र ।
गूढे द्यावापृथिवी अन्वविन्दो विभुमद्भ्यो भुवनेभ्यो रणं धाः ॥ १० ॥
त्वं ह त्यदप्रतिमानमोजो वज्रेण वज्रिन्धृषितो जघन्थ ।
त्वं शुष्णस्यावातिरो वधत्रैस्त्वं गा इन्द्र शच्येदविन्दः ॥ ११ ॥
तमिन्द्रं वाजयामसि महे वृत्राय हन्तवे। स वृषा वृषभो भुवत् ॥ १२ ॥
इन्द्रः स दामने कृत ओजिष्ठः स मदे हितः। द्युम्नी श्लोकी स सोम्यः ॥ १३ ॥
गिरा वज्रो न संभृतः सबलो अनपच्युतः। ववक्ष ऋष्वो अस्तृतः ॥ १४ ॥

[१३८] अष्टात्रिंशदुत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—वत्सः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—गायत्री॥

महाँ इन्द्रो य ओजसा पर्जन्यो वृष्टिमाँइव। स्तोमैर्वत्सस्य वावृधे ॥ १ ॥
प्रजामृतस्य पिप्रतः प्र यद्भरन्त वह्नयः। विप्रा ऋतस्य वाहसा ॥ २ ॥
कण्वा इन्द्रं यदक्रत स्तोमैर्यज्ञस्य साधनम्। जामि ब्रुवत आयुधम् ॥ ३ ॥

[१३९] एकोनचत्वारिंशदुत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—शशकर्णः॥ देवता—अश्विनौ॥ छन्दः—१, ४ बृहती; २, ३ गायत्री; ५ ककुप्॥

आ नूनमश्विना युवं वत्सस्य गन्तमवसे ।
प्रास्मै यच्छतमवृकं पृथु च्छर्दिर्युयुतं या अरातयः ॥ १ ॥
यदन्तरिक्षे यद्दिवि यत्पञ्च मानुषाँ अनु। नृम्णं तद्धत्तमश्विना ॥ २ ॥
ये वां दंसांस्यश्विना विप्रासः परिमामृशुः। एवेत्काण्वस्य बोधतम् ॥ ३ ॥
अयं वां घर्मो अश्विना स्तोमेन परि षिच्यते ।
अयं सोमो मधुमान्वाजिनीवसू येन वृत्रं चिकेतथः ॥ ४ ॥
यदप्सु यद्वनस्पतौ यदोषधीषु पुरुदंससा कृतम्। तेन माविष्टमश्विना ॥ ५ ॥

[१४०] चत्वारिंशदुत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—शशकर्णः॥ देवता—अश्विनौ॥ छन्दः—१ बृहती; २-४ अनुष्टुप्; ५ त्रिष्टुप्॥

यन्नासत्या भुरण्यथो यद्वा देव भिषज्यथः ।
अयं वां वत्सो मतिभिर्न विन्धते हविष्मन्तं हि गच्छथः ॥ १ ॥
आ नूनमश्विनोर्ऋषिं स्तोमं चिकेत वामया ।
आ सोमं मधुमत्तमं घर्मं सिञ्चादथर्वणि ॥ २ ॥
आ नूनं रघुवर्तनिं रथं तिष्ठाथो अश्विना ।
आ वां स्तोमा इमे मम नभो न चुच्यवीरत ॥ ३ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

यद॒द्य वां॑ नासत्योक्थैरा॑चुच्युवी॒महि ।
यद्वा॒ वाणी॑भिरश्विने॒वेत्का॒ण्वस्य॑ बोधतम् ॥ ४ ॥
यद्वां॑ क॒क्षीवाँ॑ उ॒त यद् व्य॑श्व॒ ऋषि॒र्यद्वां॑ दी॒र्घत॑मा जु॒हाव॑ ।
पृथी॒ यद्वां॑ वै॒न्यः सादने॒ष्वेवेदतो॑ अश्विना चेतयेथाम् ॥ ५ ॥

[१४१] एकचत्वारिंशदुत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—शशकर्णः ॥ देवता—अश्विनौ ॥ छन्दः—१ विराडनुष्टुप्; २ जगती; ३ अनुष्टुप्; ४, ५ बृहती ॥

या॒तं छ॑र्दि॒ष्पा उ॒त नः॑ पर॒स्पा भू॑तं जग॒त्पा उ॒त नस्तनू॒पा ।
व॒र्तिस्तो॒काय॒ तन॑याय यातम् ॥ १ ॥
यदिन्द्रे॑ण स॒रथं॑ या॒थो अ॑श्विना॒ यद्वा॑ वायु॒ना भव॑थः समो॒कसा॑ ।
यदा॑दि॒त्येभि॑र्ऋ॒भुभिः॑ स॒जोष॑सा॒ यद्वा॒ विष्णो॑र्वि॒क्रम॑णेषु तिष्ठथः ॥ २ ॥
यद॒द्याश्वि॑ना॒वह॑ हु॒वेय॒ वाज॑सातये ।
यत्पृ॑त्सु॒तूर्व॑णे॒ सह॒स्तच्छ्रे॑ष्ठ॒मश्वि॑नो॒रव॑ः ॥ ३ ॥
आ नू॑नं यातमश्विने॒मा ह॒व्यानि॑ वां॒ हिता ।
इ॒मे सोमा॑सो॒ अधि॑ तु॒र्वशे॒ यदा॒वि॒मे क॑ण्वे॒षु वा॒मथ॑ ॥ ४ ॥
यन्नास॑त्या परा॒के अ॑र्वा॒के अस्ति॑ भेष॒जम् ।
तेन॑ नू॒नं वि॑मु॒दाय॑ प्रचेतसा छ॒र्दिर्व॑त्साय यच्छतम् ॥ ५ ॥

[१४२] द्विचत्वारिंशदुत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—शशकर्णः ॥ देवता—अश्विनौ ॥ छन्दः—१-४ अनुष्टुप्; ५, ६ गायत्री ॥

अभु॑त्स्यु॒ प्र दे॒व्या सा॒कं वा॒चाह॒मश्वि॑नोः ।
व्या॑वर्दे॒व्या म॒तिं वि रा॒तिं मर्त्ये॑भ्यः ॥ १ ॥
प्र बो॑धयोषो अ॒श्विना॒ प्र दे॑वि सूनृते महि ।
प्र य॑ज्ञहोतरानुषक्प्र मदा॑य॒ श्रवो॑ बृहत् ॥ २ ॥
यदु॑षो॒ यासि॑ भा॒नुना॒ सं सूर्ये॑ण रोचसे ।
आ ह्रा॒यम॒श्विनो॒ रथो॑ व॒र्तिर्या॑ति नृपाय्य॑म् ॥ ३ ॥
यदापी॑तासो अं॒शवो॒ गावो॒ न दु॒ह ऊ॒धभिः॑ ।
यद्वा॒ वाणी॒रनू॑षत॒ प्र दे॑व॒यन्तो॑ अ॒श्विना॑ ॥ ४ ॥
प्र द्यु॒म्नाय॒ प्र शव॑से॒ प्र नृ॒षाह्या॑य॒ शर्म॑णे । प्र दक्षा॑य प्रचेतसा ॥ ५ ॥
यन्नू॒नं धी॒भिरश्विना पि॒तुर्योना॑ नि॒षीद॑थः । यद्वा॑ सु॒म्ने भि॒रक्त॑था ॥ ६ ॥

[१४३] त्रिचत्वारिंशदुत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—१-७ पुरुमीढाजमीढौ; ८ (१-२ पादः) वामदेवः ८ (३-४ पादः), ९ मेध्यातिथिः ॥ देवता—अश्विनौ ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥

तं वां॑ रथं॑ व॒यम॒द्या हु॑वेम पृथु॒ज्रय॑मश्विना॒ संग॑तिं॒ गोः ।
यः सूर्या॑ वह॑ति वन्धु॒रायु॑र्गि॒र्वाह॑सं पुरु॒तमं॑ वसू॒युम् ॥ १ ॥
युवं श्रि॒यम॑श्विना दे॒वता॑ तां दि॒वो नपा॑ता वनथः॒ शची॑भिः ।
यु॒वोर्व॑पु॒रभि पृक्षः॑ सचन्ते॒ वह॑न्ति॒ यत्क॑कु॒हासो॒ रथे॑ वाम् ॥ २ ॥
को वा॑म॒द्या क॑रते रा॒तह॑व्य ऊ॒तये॑ वा सुतपेयाय वा॒र्कैः ।
ऋ॒तस्य॑ वा व॒नुषे॑ पू॒र्व्याय॒ नमो॑ येमा॒नो अ॑श्विना॒ व॑वर्तत् ॥ ३ ॥
हि॒र॒ण्ययेन॑ पुरुभू॒ रथे॑ने॒मं य॒ज्ञं नास॑त्योप॑ यातम् ।
पिबा॑थ॒ इन्मधु॑नः॒ सो॒म्यस्य॒ दध॑थो॒ रत्नं॑ विधते॒ जना॑य ॥ ४ ॥
आ नो॑ यातं दि॒वो अच्छा॑ पृथि॒व्या हि॑र॒ण्ययेन॑ सुवृता॒ रथे॑न ।
मा वा॑म॒न्ये नि य॑मन्देव॒यन्तः॑ सं यद्व॒दे नाभिः॑ पू॒र्व्या वा॑म् ॥ ५ ॥
नू नो॑ र॒यिं पु॑रुवीरं॑ बृहन्तं॑ दस्रा॒ मिमा॑थामु॒भये॑ष्व॒स्मे ।
नरो॒ यद्वा॑मश्विना॒ स्तोम॒मावं॑त्सु॒थस्तु॑तिमाजमी॒ढासो॑ अग्मन् ॥ ६ ॥
इ॒हेह॒ यद्वां॑ सम॒ना प॑पृ॒क्षे सेय॑म॒स्मे सु॑म॒तिर्वा॑जरत्ना ।
उ॒रु॒ष्यतं॑ जरि॒तारं॑ यु॒वं ह॑ श्रि॒तः कामो॑ नासत्या यु॒वद्रि॑क् ॥ ७ ॥
मधु॑मतीरोष॒धीर्द्याव॑ आपो॒ मधु॑मन्नो भवत्व॒न्तरि॑क्षम् ।
क्षेत्र॑स्य॒ पति॑र्मधु॒मान्नो॑ अ॒स्त्वरि॑ष्यन्तो॒ अन्वे॑नं चरेम ॥ ८ ॥
पु॒नाय्यं॑ तदश्विना कृ॒तं वां॑ वृष॒भो दि॒वो रज॑सः पृथि॒व्याः ।
स॒हस्रं॑ शंसा॑ उ॒त ये गवि॑ष्टौ॒ सर्वाँ॑ इत्ताँ उप॑ याता॒ पिब॑ध्यै ॥ ९ ॥

इति षट्त्रिंशः प्रपाठकः ॥
॥ इति विंशं काण्डम् ॥
॥ इत्यथर्ववेदसंहिता ॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosh

अथर्ववेदमन्त्राणां वर्णानुक्रमणी

	का.	सू.	ऋ.
अंशो भगो वरुणो	६.	४.	२
अंहोमुचं वृषभं	१९.	४२.	४
अंहोमुचे प्र भरे	१९.	४२.	३
अकर्म ते स्वपसो	१८.	३.	२४
अकामो धीरो अमृतः	१०.	८.	४४
अकुप्यन्तः कुपायकुः	२०.	१३०.	८
अक्षद्रुग्धो राजन्यः	५.	१८.	२
अक्षन्नमीमदन्त ह्याव	१८.	४.	६१
अक्षाः फलवतीं शुवं	७.	५२.	९
अक्षितास्त उपसदोक्षितिः	६.	१४२.	३
अक्षितिं भूयसीम्	१८.	४.	२७
अक्षितोतिः सनेदिमं	२०.	६९.	७
अक्षीभ्यां ते नासिकाभ्यां	२.	३३.	१
	२०.	९६.	१७
अक्षुमोपशं विततं	९.	३.	८
अक्ष्यौ च ते मुखं च	४.	३.	३
अक्ष्यौ नि विध्य हृदयं	५.	२९.	४
अक्ष्यौ नौ मधुसंकाशे	७.	३७.	१
अगन्निन्द्र श्रवो बृहद्	२०.	२०.	३
	२०.	५७.	६
अगन्म स्वः स्वरगन्म	१६.	९.	३
अगोरुधाय गविषे	२०.	६५.	२
अग्न आ याह्यग्निभि	२०.	१०३.	२
अग्न इन्द्रश्च दाशुषे	७.	११५.	१
अग्नये कव्यवाहनाय	१८.	४.	७१
अग्नावग्निश्चरति प्रविष्ट	४.	३९.	९
अग्नाविष्णू महि तद्वां	७.	३०.	१
अग्नाविष्णू महि धाम	७.	३०.	२
अग्निं ते वसुवन्त	१९.	१८.	१
अग्निं वृतं वृणीमहे	२०.	१०१.	१
अग्निं ब्रूमो वनस्पती	११.	६.	१
अग्निस्तक्मानमप	५.	२२.	१
अग्निहोत्रं च श्रद्धा च	११.	७.	९
अग्नी रक्षस्तपतु यद्दि	१२.	३.	४३
अग्नी रक्षांसि सेधति	८.	३.	२६
अग्निं होतारं मन्ये	२०.	६७.	३
अग्निः क्रव्याद्भूत्वा	१२.	५(५).	३
अग्निः पचन्नक्षतु त्वा	१२.	३.	२४
अग्निः परेषु धामसु	६.	३६.	३
अग्निः पूर्व आ रभतां	१.	७.	४
अग्निः प्राणान्त्सं दधाति	३.	३१.	६
अग्निः प्रातःसवने	६.	४७.	१
अग्निः सूर्यश्चन्द्रमा	५.	२८.	२
अग्निः स्रुचो अध्वरेषु	५.	२७.	५
अग्निमग्निं हवीमभिः	२०.	१०१.	२
अग्निमन्तश्छादयसि	९.	३.	१४
अग्निमीळिष्वावसे	२०.	१०३.	१
अग्निराग्नीध्नात्सुभगः	२०.	२.	२
अग्निरासीन उत्थितो	९.	७.	१९
अग्निरिव मन्यो त्विषितः	४.	३१.	२
अग्निरैतु प्रतिकूल	५.	१४.	१३
अग्निरेनं कव्यात्पृथिव्या	१२.	५(७).	११
अग्निर्दिव आ तपत्यग्ने	१२.	१.	२०
अग्निर्नः शत्रून्नत्येतु	३.	१.	१
अग्निर्नो वृत्रः प्रत्येतु	३.	२.	१
अग्निर्भूम्यालोषधीष्वग्नि	१२.	१.	१९
अग्निर्मा गोषा परि पातु	१७.	१.	३०
अग्निर्माग्निनावतु	१९.	४५.	६
अग्निर्मा पातु वसुभिः	१९.	१७.	१
अग्निर्यंव इन्द्रो यवः	९.	२.	१३
अग्निर्वनस्पतीनामधिपतिः	५.	२४.	२
अग्निर्वै नः पदवायः	५.	१८.	१४
अग्निर्होताध्वर्युष्टे	१८.	४.	१५
अग्निवासाः पृथिव्य	१२.	१.	२१
अग्निष्टे नि शमयतु	६.	१११.	२
अग्निष्वात्ताः पितर	१८.	३.	४४
अग्ने स्वाहा कृणुहि	५.	२७.	१२
अग्नौ तृणाना वप	११.	१.	२९
अग्नौ सूर्ये चन्द्रमसि	११.	५.	१३
अग्न्याधेयमथो दीक्षा	११.	७.	८
अग्नीषोमा पथिकृता	१८.	२.	५३
अग्नीषोमाभ्यां कामाय	१२.	४.	२६
अग्नीषोमावदधुर्यां	८.	९.	१४
अग्नेः प्रजातं परि	१९.	२६.	१
अग्नेः शरीरमसि	८.	२.	२८
अग्नेः सांतपनस्याह	६.	७६.	२
अग्ने अक्रव्याच्चिः	१२.	२.	४२
अग्ने अच्छा वदेह	३.	२०.	२
अग्ने चरुर्यज्ञियस्त्वा	११.	१.	१६
अग्नेजनिष्ठा महते	११.	१.	३
अग्ने जातान्प्र णुदा	७.	३५.	१
अग्ने जायस्वादितिः	११.	१.	१
अग्ने तपस्तप्यामह	७.	६३.	२
अग्ने त्वचं यातुधानस्य	८.	३.	४
अग्ने देवाँ इहा वह	२०.	१०१.	३
अग्ने पूतनापाट्	५.	१४.	८
अग्ने मेहि प्रथमो देव	४.	१४.	५
अग्ने मन्युं प्रतिनुदन्	५.	३.	२
अग्ने यते तपस्तेन	२.	१९.	१
अग्ने यते तेजस्तेन	२.	१९.	५
अग्ने यतेर्चिस्तेन	२.	१९.	३
अग्ने यते शोचिस्तेन	२.	१९.	४
अग्ने यते हरस्तेन	२.	१९.	२
अग्नेरिवास्य दहत	६.	२०.	१
अग्नेरिवास्य दहतो	७.	४७.	१
अग्नेर्वासो अपां गर्भो	८.	७.	८
अग्नेर्भाग स्थ	१०.	५.	७
अग्नेर्मन्वे प्रथमस्य	४.	२३.	१
अग्नेर्वर्म परि गोभि	१८.	२.	५८
अग्ने वैश्वानर विश्वैर्मा	२.	१६.	४
अग्ने शर्ध महते	७.	७७.	१०
अग्नेष्टे प्राणमसृता	८.	२.	१३
अग्ने सपत्नानधराञ्	१३.	१.	३१
अग्ने समिधमाहार्षं	१९.	६४.	१
अग्ने सहस्वानभिभू	११.	१.	६
अग्रमेण्योषधीनां	४.	१९.	३
अग्रं पच्यमाना दुच्छन्यं	१२.	५(४).	५
अग्रद्धिष्टा देवजाता	२.	७.	१
अग्रमस्त्वबहते शपथः	१०.	१.	५
अग्रविषा निपतन्ती	१२.	५(३).	१५
अग्रशंसदुःशंसाभ्यां	१२.	२.	२
अग्रायतामपि नह्या	१०.	९.	१
अग्राश्चस्पेदं भेषज	१०.	४.	१०
अग्रोरुबाहुरुपतिष्ठ्नी	१४.	२.	१७
अघ्न्ये पद्वतीर्भव	१२.	५(६).	१२
अघ्न्ये प्र शिरो जहि	१२.	५(६).	१४
अङ्गभेदमङ्गज्वरं	९.	८.	५
अङ्गभेदो अङ्गज्वरो	५.	३०.	९
अङ्गादङ्गात्प्र च्यावय	१०.	४.	२५
अङ्गावङ्गाद्वयमस्या	१४.	२.	६९
अङ्गिरसामयनं पूर्वो	१८.	४.	८
अङ्गिरसो नः पितरो	१८.	१.	५८
अङ्गिरोभिर्यक्ष्मियैरा	१८.	१.	५९
अङ्गेअङ्गे लोम्निलोम्नि	२.	३३.	७
	२०.	९६.	२३
अङ्गेअङ्गे शोचिषा	१.	१२.	२
अङ्गेभ्यस्त उदराय	११.	२.	६
अचिक्रित्वांश्चिकित्व	९.	९.	७
अचिक्रदत्स्वपा ह्व	३.	३.	१
अच्छ त्वा यन्तु हविनः	३.	४.	३
अच्छा न इन्द्रं यशसं	६.	३९.	२
अच्छा म इन्द्रं मतयः	२०.	१७.	१
अच्छायमेति शवसा	५.	२७.	४
अच्छा हि त्वा सहसः	२०.	१०३.	३
अच्युतच्युत्समदो	५.	२०.	१२
अजं च पचत पक्व	९.	५.	३७
अजः पक्व स्वर्गे लोके	९.	५.	१८
अजमनज्मि पयसा	४.	१४.	६
अजविक्षाके त्रिदिवे	९.	५.	१०
अजागार केविका	२०.	१२९.	१७

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अजाता आसन्नृतवो	११.	८.	५
अजा रोह सुकृतां यत्र	९.	५.	९
अजिराधिराजौ श्येनौ	७.	७३.	३
अजैषं त्वा संलिखित	७.	५२.	५
अजैष्माद्यासनामाद्या	१६.	६.	१
अजो अग्निरजमु ज्योति	९.	५.	७
अजो भागस्तपसस्तं	१८.	२.	८
अजो वा इदमग्रे	९.	५.	२०
अजोस्यज स्वर्गोसि	९.	५.	१६
अजो ह्यग्नेरजनिष्ट शोकात्	४.	१४.	१
अजो ह्यग्नेरजनिष्ट शोकाद्	९.	५.	१३
अञ्जते व्यञ्जते समञ्जते	१८.	३.	१८
अतः परिज्मन्ना गहि	२०.	७०.	५
अतन्द्रो यास्यन्हरितो	१३.	२.	२८
अतिथीन्प्रति पश्यति	९.	६(५).	८
अति द्रव श्वानौ सारमेयौ	१८.	२.	११
अति धन्वान्यत्यप	७.	४२.	१
अति धावतातिसरा	५.	८.	४
अति निहो अति सृधो	२.	६.	५
अतिमात्रमवर्धन्त	५.	१९.	१
अति विश्वान्यरुहद्	१९.	४९.	२
अतिसृष्टो अपां वृषभो	१६.	१.	१
अतीदु शक्र ओहत	२०.	९२.	११
अतीव यो मरुतो	२.	१२.	६
अतो वै० प्रा विशत्विन्द्रं	१५.	१०.	४
अतो वै० प्राविशदिन्द्रं	१५.	१०.	५
अतो वै ब्रह्म च क्षत्रं	१५.	१०.	३
अत्यर्धर्चं परस्वतः	२०.	१३१.	१९
अत्राह गोरमन्वत	२०.	४१.	३
अत्रिवद्वः क्रिमयो	२.	३२.	३
	५.	२३.	१०
अत्रैनानिन्द्र वृत्रहन्	५.	८.	९
अथ य एवं विदुषा	१५.	१२.	८
अथ यस्यावात्यो व्रात्य	१५.	१३.	११
अथर्वाणं पितरं देवबन्धुं	७.	२.	१
अथर्वाणो अबध्नता	१०.	६.	२०
अथर्वा पूर्णं चमसं	१८.	३.	५४
अथा ते अन्तमानां	२०.	५७.	३
	२०.	६८.	३
अथो इयन्निति	२०.	१३०.	१८
अथो इयन्नियन्निति	२०.	१३०.	१७
अथोपदान भगवो	१९.	३४.	८
अथो यानि च यस्मा	१९.	४८.	१
अथो श्वा अस्थिरो	२०.	१३०.	१९
अथो सर्वं श्वापदं	११.	९.	१०
अदन्ति त्वा पिपीलिका	७.	५८.	७
अदब्धो दिवि पृथिव्या	१७.	१.	१२
अदान्यान्त्सोमपान्	२.	३५.	३
अदारसृद्भवतु देव	१.	२०.	१
अदितिः श्मश्रु वपत्वाप	६.	६८.	२
अदितिर्द्यौरदितिरन्तरिक्ष	७.	६.	१
अदितिर्मादित्यैः प्रतीच्या	१८.	३.	२७
अदितेर्हस्तां स्रुचमेतां	११.	१.	२४
अदूहमित्यां पूषकम्	२०.	१३१.	१८
अदृश्रन्नस्य केतवो	१३.	२.	१८
	२०.	४७.	१५
अदेवृघ्न्यपतिघ्नी	१४.	२.	१८
अदो यत्ते हृदि श्रितं	६.	१८.	३
अदो यदवधावत्यवत्	२.	३.	१
अदो यदवरोचते	३.	७.	३
अदो यद्देवि प्रथमाना	१२.	१.	५५
अद्भिरन्नादीभिरन्नमत्ति	१५.	१४.	६
अद्भ्यस्त्वा राजा वरुणो	३.	३.	३
अद्याग्ने अद्य सवितरद्य	४.	४.	६
अद्या मुरीय यदि	८.	४.	१५
अध ते विश्वमनु	२०.	१५.	२
अध त्यं द्रप्सं विभ्वं	१८.	१.	२१
अध द्रप्सो अंशुमत्या	२०.	१३७.	९
अधराञ्चं प्र हिणोमि	५.	२२.	४
अध रात्रि० अक्षौ	१९.	५०.	१
अध रात्रि० हनू	१९.	४७.	८
अधरोधर उत्तरेभ्यो	६.	१३४.	२
अधा यथा नः पितरः	१८.	३.	२१
अधा हीन्द्र गिर्वण	२०.	१००.	१
अधि द्वयोरदधा	२०.	२५.	३
अधि नो ब्रूतं पृतना	४.	२८.	७
अधि ब्रूहि मा रभथाः	८.	२.	७
अधि स्कन्द वीरयस्व	५.	२५.	८
अधीतीरध्यगादयमधि	२.	९.	३
अध्यक्षो वाजी मम	९.	२.	७
अध्वर्यवोरुणं दुग्धमंशुं	२०.	८७.	१
अनच्छये तुरगातु	९.	१०.	८
अनडुद्भ्यस्त्वं प्रथमं	६.	५९.	५१
अनड्वानिन्द्रः स पशुभ्यो	४.	११.	२
अनड्वान्दाधार पृथिवी	४.	११.	१
अनड्वान्दुहे सुकृतस्य	४.	११.	४
अनड्वाहं प्लवमन्वा	१२.	२.	४८
अनन्तं विततं पुरुत्रा	१०.	८.	१२
अनपत्यमल्पपशुं	१२.	४.	२५
अनभ्रयः खनमाना	१९.	२.	३
अनमित्रं नो अधरा	६.	४०.	३
अनयाहमोषध्या सर्वाः	४.	१८.	५
	१०.	१.	४
अनर्शरातिं वसुदामुप	२०.	५८.	२
अनवद्याभिः समु जग्म	२.	२.	३
अनवद्यैरभिद्युभिर्मखः	२०.	४०.	२
	२०.	७०.	४
अनस्याः पूताः पवनेन	४.	३४.	२
अनागमिष्यतो वरानवित्तेः	१६.	६.	१०
अनागोहत्या वै भीमा	१०.	१.	२९
अनाधृष्यो जातवेदा	७.	८९.	१
अनाप्ता ये वः प्रथमा	४.	७.	७
	५.	६.	२
अनामयोपजिह्विका	२०.	१२९.	२०
अनास्माकस्तद्देवपीयुः	१९.	५७.	५
अनुगच्छन्ती प्राणानुप	१२.	५(३).	१६
अनुच्छ्य श्यामेन	९.	५.	४
अनुजिघ्रं प्रमृशन्तं	८.	६.	६
अनु ते शुष्मं तुरयन्त	२०.	१०५.	२
अनु त्वाग्निः प्राविशदनु	१०.	१०.	७
अनु त्वा रोदसी उभे	२०.	४२.	२
अनु त्वा हरिणो वृषा	३.	७.	२
अनुपूर्ववत्सां धेनु	९.	५.	२९
अनु प्रत्नस्यौकसः	२०.	९२.	१५
अनु प्रत्नस्यौकसो	२०.	२६.	३
अनुमतिः सर्वमिदं बभूव	७.	२१.	६
अनुमतेन्विदं मन्यस्वाकूते	६.	१३१.	२
अनु मन्यतामनुमन्यमानः	७.	२१.	३
अनुव्रतः पितुः पित्रो	३.	३०.	२
अनुव्रता रोहिणी	१३.	१.	२२
अनु सूर्यमुदयतां	१.	२२.	१
अनुस्पष्टो भवत्येषो	२०.	९६.	४
अनुहवं परिहवं	१९.	८.	४
अनुहूतः पुनरेहि	५.	३०.	७
अनृक्षरा ऋजवः सन्तु	१४.	१.	३४
अनृणा अस्मिन्ननृणाः	६.	११७.	३
अनेनेन्द्रो मणिना	८.	५.	३
अन्तकाय मृत्यवे नमः	८.	१.	१
अन्तकोसि मृत्युरसि	१६.	५.	२
	१६.	५.	९
अन्तरा द्यां च पृथिवीं	९.	३.	१५
अन्तरिक्षं जालमासीज्जाल	८.	८.	५
अन्तरिक्षं दिवं भूमि	१०.	९.	१०
अन्तरिक्षं धेनुस्तस्या	४.	३९.	४
अन्तरिक्ष आसा स्थाम	१.	३२.	२
अन्तरिक्षाय स्वाहा	५.	९.	३
	५.	९.	४
अन्तरिक्षेण पतति	६.	८०.	१
अन्तरिक्षेण सह० अयं	४.	३८.	७
अन्तरिक्षेण सह० इमे	४.	३८.	६
अन्तरिक्षे वायवे समनमन्	४.	३९.	३
अन्तरेमे नभसी घोषो	५.	२०.	७
अन्तर्गर्भश्चरति देवता	११.	४.	२०
अन्तर्दधे द्यावापृथिवी	८.	५.	६
अन्तर्दावे जुहुता स्वे	६.	३२.	१
अन्तर्देशा अबध्नत	१०.	६.	१९
अन्तर्धिर्देवानां परिधि	१२.	२.	४४
अन्तर्धेहि जातवेद	११.	१०.	४
अन्तश्चरति रोचना	६.	३१.	२
	२०.	४८.	५
अन्ति सन्तं न जहात्यन्ति	१०.	८.	३२
अन्नं पूर्वा रासतां मे	१९.	७.	४
अन्नाद्येन यशसा तेजसा	१३.	४(५).	४
	१३.	४(६).	५
अन्य ऊ षु यम्यन्य	१८.	१.	१६
अन्यक्षेत्रे न रमसे	५.	२२.	९
अन्यत्रास्मन्न्युच्यतु	६.	२६.	३
अन्येभ्यस्त्वा पुरुषेभ्यो	१२.	२.	१६
अन्वग्निरुषसामग्र	७.	८७.	४
	१८.	१.	२७

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अन्वद्य नोनुमतिर्यज्ञं	७.	२१.	१
अन्वान्त्र्यं शीर्षण्यमथो	२.	३१.	४
अन्वारभेथामनुसंरभे	६.	१२२.	३
अन्विदनुमते त्वं मंससे	७.	२१.	२
अपः समुद्राद्दिवमुद्वहन्ति	४.	२७.	४
अपकामं स्यन्दमाना	३.	१३.	३
अप क्रामति सूनृता	१२.	५(१).	६
अप क्राम नानदती	१०.	१.	१४
अप क्रामन्पौरुषेया	७.	११०.	१
अपक्रीताः सहीयसी	८.	७.	११
अपचितः प्र पतत	६.	८३.	१
अपचितां लोहिनीनां	७.	७८.	१
अप ज्योतिषा तमो	२०.	१६.	५
अप तस्य हतं तमो	१०.	७.	४०
अप त्ये तायवो यथा	१३.	२.	१७
	२०.	४७.	१४
अपथेना जभारैणां	५.	३१.	१०
अप नः शोशुचदघमग्ने	४.	३३.	१
अप न्यधुः पौरुषेयं	१९.	२०.	१
अपपापं परिक्षवं	१९.	८.	५
अपमित्यमप्रतीत्तं	६.	११७.	१
अपमृज्य यातुधानानप	४.	१८.	८
अपरिमितमेव यज्ञ	९.	५.	२२
अपवासे नक्षत्रा	३.	७.	७
अपश्चा दग्धान्नस्य	१९.	५५.	५
अपश्यं गोपामनिपद्यमान	९.	१०.	११
अपश्यं युवतिं नीयमानां	१८.	३.	३
अपस्त ओषधीमती	१९.	१८.	६
अप स्तेनं वासो गोअज	१९.	५०.	५
अपस्त्वं धुक्षे प्रथमा	१०.	१०.	८
अपां तेजो ज्योतिरोजो	१.	३५.	३
अपां फेनेन नमुचेः	२०.	२९.	३
अपां मा पाने यतमो	५.	२९.	८
अपां यो अग्रे प्रतिमा	९.	४.	२
अपां रसः प्रथमजो	४.	४.	५
अपाः पूर्वेषां हरिवः	२०.	३२.	३
अपागूहन्नमृतां मर्त्येभ्यः	१८.	२.	३३
अपाङ् प्राङेति स्वधया	९.	१०.	१६
अपाञ्चौ त उभौ बाहू	७.	७३.	४
अपादग्रे समभवत्	१०.	८.	२१
अपादिन्द्रो अपादग्नि	२०.	९२.	८
अपादेति प्रथमा पद्वतीनां	९.	१०.	२३
अपानति प्राणति	११.	४.	१४
अपानाय व्यानाय	६.	४१.	२
अपामग्निस्तनूभिः	४.	१५.	१०
अपामग्रमसि समुद्रं	१६.	१.	६
अपामस्मै वज्रं प्र	१०.	५.	५०
अपामह दिव्यानामपां	१९.	२.	४
अपामार्ग ओषधीनां	४.	१७.	८
अपामार्गोप मार्ष्टु	४.	१८.	७
अपामिदं न्ययनं	६.	१०६.	२
अपामूर्ज ओजसो	१९.	४५.	३
अपामूर्मिर्मदन्निव	२०.	२८.	४
	२०.	३९.	५
अपावृत्य गार्हपत्यात्	१२.	२.	३४
अपास्मत्तम उच्छतु	१४.	२.	४८
अपि नह्यामि ते बाहू	७.	७३.	५
अपि वृश्च पुराणवद्	७.	९५.	१
अपूपवानन्नवांश्चरुरेह	१८.	४.	२१
अपूपवानपवांश्चरुरेह	१८.	४.	२४
अपूपवान्क्षीरवांश्चरुरेह	१८.	४.	१६
अपूपवान्घृतवांश्चरुरेह	१८.	४.	१९
अपूपवान्दधिवांश्चरुरेह	१८.	४.	१७
अपूपवान्द्रप्सवांश्चरुरेह	१८.	४.	१८
अपूपवान्मधुमांश्चरुरेह	१८.	४.	२२
अपूपवान्मांसवांश्चरुरेह	१८.	४.	२०
अपूपवान्रसवांश्चरुरेह	१८.	४.	२३
अपूपापिहितान्कुम्भान्	१८.	३.	६८
	१८.	४.	२५
अपूर्वेणोषिता वाचस्ता	१०.	८.	३३
अपेत वीत वि च	१८.	१.	५५
अपेतो वायो सविता	४.	२५.	४
अपेन्द्र द्विषतो मनो	१.	२१.	४
अपेन्द्र प्राचो मघवन्	२०.	१२५.	१
अपेमं जीवा अरुधन्	१८.	२.	२७
अपेमां मात्रां मिमीमहे	१८.	२.	४०
अपेयं रात्र्युच्छत्वपोच्छ	२.	८.	२
अपेहि मनसस्पते	२०.	९६.	२४
अपेह्यरिरस्यरिर्वा	७.	९३.	१
अपैतेनारात्सीरसौ	[illegible]	[illegible]	[illegible]
अपो दिव्या अचायिषं	७.	९४.	१
	१०.	५.	४६
अपो देवीरुप ह्वये	१.	४.	३
अपो देवीर्मधुमती	१०.	९.	२७
अपो निषिञ्चन्नसुरः	४.	१५.	१२
अपो यदद्रिं पुरुहूत	२०.	७७.	८
अपो वामदेव्यं यज्ञं	८.	१०(२).	१०
अपो वामदेव्येन यज्ञं	८.	१०(२).	८
अपो वृत्रं वव्रिवांसं	२०.	७७.	७
अप्रजास्त्वं मार्तवत्	८.	६.	२६
अप्रपाणा च वेशन्ता	२०.	१२८.	८
अप्राणैति प्राणेन	८.	९.	९
अप्सरसः० ता मे	७.	१०४.	३
अप्सरसः० तास्ते	१४.	२.	३४
अप्सु ते जन्म दिवि	६.	८०.	३
अप्सु ते राजन्वरुण	७.	८८.	१
अप्सु धूतस्य हरिवः	२०.	३३.	१
अप्सु मे सोमो अब्रवी	१.	६.	२
अप्सु स्तीमासु वृद्धासु	११.	८.	३४
अप्स्वन्तरमृतमप्सु	१.	४.	४
अप्स्वासीन्मातरिश्वा	१०.	८.	४०
अबोध्यग्निः समिधा	१३.	२.	४६
अभयं द्यावापृथिवी	६.	४०.	१
अभयं नः करत्यन्तरिक्ष	१९.	१५.	५
अभयं मित्रादभय	१९.	१५.	६
अभयं मित्रावरुणा	६.	३२.	३
अभागः सन्नप परेतो	४.	३२.	५
अभिक्रन्दन्स्तनयन्	११.	५.	१२
अभि क्रन्द स्तनयार्दयो	४.	१५.	६
अभि गोत्राणि सहसा	१९.	१३.	७
अभि तं निर्ऋतिर्धत्ता	४.	३६.	१०
अभि तिष्ठामि ते मन्युं	६.	४२.	३
अभि तेषां सहमाना	३.	१८.	६
अभि त्यं देवं सविता	७.	१५.	१
अभि त्वा जरिमाहित	३.	११.	८
अभि त्वा देवः सविता	१.	२९.	३
अभि त्वा पूर्वपीतय	२०.	९९.	१
अभि त्वा मनुजातेन	७.	३८.	१
अभि त्वा वर्चसा गिरः	२०.	४८.	१
[illegible]	४.	८.	६
अभि त्वा वृषभा सुते	२०.	२२.	१
अभि त्वा शूर नोनुमो	२०.	१२१.	१
अभि त्वेन्द्र वरिमतः	६.	९९.	१
अभि त्वोर्णोमि पृथिव्या	१८.	२.	५२
अभि द्युम्नानि वनिन	२०.	६.	७
अभि प्र गोपतिं गिरे	२०.	२२.	४
	२०.	९२.	१
अभि प्र वः सुराधस	२०.	५१.	१
अभि प्रेहि दक्षिणतो	४.	३२.	७
अभि प्रेहि माप वेन	४.	८.	२
अभिभूर्यज्ञो अभिभू	६.	९७.	१
अभि वर्धतां पयसाभि	६.	७८.	२
अभिवृत्य सपत्नानभि	१.	२९.	२
अभिवृष्टा ओषधयः	११.	४.	६
अभि श्यावं न कृशनेभि	२०.	१६.	११
अभि हि सत्य सोमपा	२०.	६४.	२
अभीवर्तेन मणिना	१.	२९.	१
अभीवर्तो अभिभवः	१.	२९.	४
अभीवस्वः प्र जिहीते	२०.	१२७.	१०
अभीवृता हिरण्येन	१०.	१०.	१६
अभीशुना मेया आसन्	६.	१३७.	२
अभी षु णः सखीना	२०.	१२४.	३
अभीहि मन्यो तवस	४.	३२.	३
अभुत्स्यु प्र देव्या	२०.	१४२.	१
अभूतिरुपह्रियमाणा	१२.	५(४).	८
अभूद्दूतः प्रहितो	१८.	४.	६५
अभ्यक्ताक्ता स्वरंकृता	१०.	१.	२५
अभ्यञ्जनं सुरभि सा	६.	१२४.	३
अभ्यन्यदेति पर्यन्य	१३.	२.	४३
अभ्यर्चत सुष्टुतिं	७.	८७.	१
अभ्यावर्तस्व पशुभिः	११.	१.	२२
अभ्रं पीवो मज्जा	९.	७.	१८
अभ्रातृघ्नीं वरुणापशुघ्नीं	१४.	१.	६२
अभ्रातृव्यो अना त्वमना	२०.	११४.	१
अभ्रिये दिद्युन्नक्षत्रिये	२.	२.	४
अमन्महीदनाशवो	२०.	११६.	२
अमा कृत्वा पाप्मानं	४.	१८.	३
अमा घृतं कृणुते केवल	११.	५.	१५
अमावास्या च पौर्णमासी	१५.	२.	१४
अमावास्ये न त्वदेतान्यन्यो	७.	८४.	४

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अमासि मात्रां स्वरगा	१८.	२.	४५
अमित्रसेनां मघवन्	३.	१.	३
अमी ये युधमायन्ति	६.	१०३.	३
अमीषां चित्तानि प्रति	३.	२.	५
अमुक्था यक्ष्मादुरिता	२.	१०.	६
अमुत्रभूयादधि	७.	५५.	१
अमुत्र सन्निह वेत्येतः	१३.	१.	३९
अमुत्रैनमा गच्छताद्	९.	३.	१०
अमूः पारे पृदाक	१.	२७.	१
अमूनश्चत्य निः शृणीहि	८.	८.	३
अमून्हेतिः पतत्रिणी	६.	२९.	१
अमू ये दिवि सुभगे	३.	७.	४
अमूर्या उप सूर्ये	१.	४.	२
अमूर्या यन्ति योषितो	१.	१७.	१
अमोतं वासो दद्याद्	९.	५.	१४
अमोहमस्मि सा त्वं	१४.	२.	७१
अम्बयो यन्त्यध्वभि	१.	४.	१
अम्भो अमो महः सह	१३.	४(५).	५
अम्भो अरुणं रजतं	१३.	४(५).	६
अयं ग्रावा पृथुबुध्नो	१२.	३.	१४
अयं जीवतु मा मृतेमं	८.	२.	५
अयं त इन्द्र सोमो	२०.	५.	५
अयं ते अस्म्युप न	४.	३२.	६
अयं ते कृत्यां विततां	१०.	३.	४
अयं ते योनिर्ऋत्वियो	३.	२०.	१
अयं दर्भो विमन्युकः	६.	४३.	१
अयं देवा इहैवास्त्वयं	८.	१.	१८
अयं देवानामसुरो वि	१.	१०.	१
अयं नो नभसस्पतिः	६.	७९.	१
अयं पन्थाः कृत्येति	१०.	१.	१५
अयं पिपान इन्द्र	९.	४.	२१
अयं प्रतिसरो मणि	८.	५.	१
अयं मणिः सपत्नहा	८.	५.	२
अयं मणिर्वरणो विश्व	१०.	३.	३
अयं मे वरण उरसि	१०.	३.	११
अयं मे वरणो मणिः	१०.	३.	१
अयं मे हस्तो भगवानयं	४.	१३.	६
अयं यो अभिशोचयिष्णु	६.	२०.	३
अयं यो भूरिमूलः	६.	४३.	२
अयं यो वक्रो विपरु	७.	५८.	४
अयं यो विश्वान्हरितान्	५.	२२.	२
अयं लोकः प्रियतमो	५.	३०.	१७
अयं लोको जालमासी	८.	८.	८
अयं वज्रस्तर्पयता	६.	१३४.	१
अयं वस्ते गर्भं पृथिव्या	१३.	१.	१६
अयं वां घर्मो अश्विना	२०.	१३९.	४
अयं वा उ अग्नि	१५.	१०.	७
अयं विष्कन्धं सहतेयं	२.	४.	३
अयं स देवो अप्स्वन्तः	१३.	३.	१५
अयं स शिङ्क्ते येन	९.	१०.	७
अयं सहस्रमा नो दृशे	७.	२३.	१
अयं सहस्रमृषिभिः	२०.	१०४.	२
अयं स्तुवान आगम	१.	८.	२
अयं स्राक्त्यो मणिः	८.	५.	४
अयज्ञियो हतवर्चा	१२.	२.	३७
अयन्महा ते अर्वाहः	२०.	१२९.	११
अयमग्निः सत्पति	७.	६४.	१
अयमग्निरमूमुहद्	३.	२.	२
अयमग्निरुपसद्य इह	५.	३०.	११
अयमस्तु धनपति	४.	२२.	३
अयमा यात्यर्यमा	६.	६०.	१
अयमिद्वै प्रतीवर्त	८.	५.	१६
अयमिन्द्र वृषाकपिः	२०.	१२६.	१८
अयमु ते समतसि	२०.	४५.	१
अयमु त्वा विचर्षणे	२०.	५.	१
अयमेमि विचाकशद्	२०.	१२६.	१९
अयमौदुम्बरो मणि	१९.	३१.	१४
अयस्मये द्रुपदे वेधिष	६.	६३.	३
	६.	८४.	४
अयामि घोष इन्द्र	२०.	१२.	२
अया विष्ठा जनयन्	७.	३.	१
अया ह त्यं मायया	२०.	३६.	६
अयुक्त सप्त शुन्ध्युवः	१३.	२.	२४
	२०.	४७.	२१
अयुतोहमयुतो म	१९.	५१.	१
अयोजाला असुरा	१९.	६६.	१
अयोदंष्ट्रो अर्चिषा	८.	३.	२
अयोमुखाः सूचीमुखा	११.	१०.	३
अरं कामाय हरयो	२०.	३१.	२
अरंगरो वावदीति	२०.	१३५.	१३
अरंघुषो निमज्योन्मज्य	१०.	४.	४
अरदुपरम	२०.	१३१.	१५
अरसं कृत्रिमं नाद	१९.	३४.	३
अरसं प्राच्यं विषमरसं	४.	७.	२
अरसस्त इषो शल्यो	४.	६.	६
अरसस्य शर्कोटस्य	७.	५८.	५
अरसास इहाहयो	१०.	४.	९
अरातीयोर्भ्रातृव्यस्य	१०.	६.	१
अरात्यास्त्वा निर्ऋत्या	१०.	३.	७
अरायक्षयणमस्य	२.	१८.	३
अरायमसृक्पावानं	२.	२५.	३
अरायान्ब्रूमो रक्षांसि	११.	६.	१६
अरिप्रा० रिप्रमस्मत् ।	१६.	१.	१०
अरिप्रा० रिप्रमस्मत् । प्रास्म	१०.	५.	२४
अरिष्टोहमरिष्टगु	१०.	३.	१०
अरुस्राणमिदं महत्	२.	३.	५
अर्चत प्रार्चत प्रिय	२०.	९२.	५
अर्चामि वां वर्धायापो	१८.	१.	३१
अर्जुनि पुनर्वो यन्तु	२.	२४.	७
अर्धमर्धेन पयसा	५.	१.	९
अर्धमासाश्च मासा	११.	७.	२०
अर्बुदिर्नाम यो देव	११.	९.	४
अर्बुदिश्च त्रिषन्धिश्चा	११.	९.	२३
अर्भको न कुमारको	२०.	९२.	१२
अर्यमणं बृहस्पति	३.	२०.	७
अर्यमणं यजामहे	१४.	१.	१७
अर्वागन्यः परो अन्यो	११.	५.	१०
अर्वागन्य इतो अन्यः	११.	५.	११
अर्वाङेहि सोमकामं	२०.	८.	२
अर्वाङ् परस्तात्प्रयतो	१३.	२.	३१
अर्वाचीनं सु ते मन	२०.	१९.	२
अर्वाञ्चं त्वा सुखे रथे	२०.	२३.	९
अर्वाञ्चमिन्द्रममुतो	५.	३.	११
अर्वावतो न आ गहि	२०.	६.	८
अर्वावतो न आ गह्यथो	२०.	२०.	४
	२०.	५७.	७
अलसालासि पूर्वा	६.	१६.	४
अलाबुकं निखातकम्	२०.	१३२.	२
अलाबूनि पृषातकान्य	२०.	१३५.	३
अलिक्ना जाष्कमदा	११.	९.	९
अल्गण्डून्हन्मि महता	२.	३१.	३
अवः परेण पर एनावरेण	९.	९.	१७
	१३.	१.	४१
अवः परेण पितरं यो	९.	९.	१८
अवकादानभिशोचानप्सु	४.	३७.	१०
अवकोल्वा उदकात्मान	८.	७.	९
अवक्रक्षिणं वृषभं	२०.	८५.	२
अव जहि यातुधाना	५.	१४.	२
अव ज्यामिव धन्वनो	६.	४२.	१
अव दिवस्तारयन्ति	७.	११२.	१
अव द्रप्सो अंशुमती	२०.	१३७.	७
अवधीत्कामो मम ये	९.	२.	११
अव पद्यन्तामेषा	८.	८.	२०
अव बाधे द्विषन्तं	४.	३५.	७
अव मन्युरवायताव	६.	६५.	१
अव मा पाप्मन्त्सृज	६.	२६.	१
अवर्तिरश्यमाना	१२.	५(४).	१०
अवशसा निःशसा	६.	४५.	२
अवश्लक्ष्णमिव भ्रंशदन्त	२०.	१३३.	६
अव श्वेत पदा जहि	१०.	४.	३
अव सृज पुनरग्ने	१८.	२.	१०
अवसृष्टा परा पत	३.	१९.	८
अव स्य शूराध्वनो	२०.	७७.	२
अव स्वराति गर्गरो	२०.	९२.	६
अवाचीनानव जहीन्द्र	१३.	१.	३०
अवायन्तां पक्षिणो ये	११.	१०.	८
अवास्तुमेनमस्वग	१२.	५(५).	७
अविः कृष्णा भागधेयं	१२.	२.	५३
अविर्वै नाम देवतर्ते	१०.	८.	३१
अवीरामिव मामयं	२०.	१२६.	९
अवैतेनारात्सीरसौ	५.	६.	६
अवैरहत्यायेदमा	६.	२९.	३
अवो द्वाभ्यां पर एकया	२०.	९१.	४
अव्यसश्च व्यचसश्च	१९.	६८.	१
अशिता लोकाच्छिनत्ति	१२.	५(४).	११
अशितावत्यतिथा	९.	६(३).	८
अशीतिभिस्तिसृभिः	२.	१२.	४
अश्नापिनद्धं मधु	२०.	१६.	८
अश्मन्वती रीयते सं	१२.	२.	२६
अश्मवर्म० मा दक्षिणाया	५.	१०.	२

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अश्मवर्म० मा दिशा ५. १०. ७
अश्मवर्म० मा ध्रुवाया ५. १०. ५
अश्मवर्म० मा प्रतीच्या ५. १०. ३
अश्मवर्म० मा प्राच्या ५. १०. १
अश्मवर्म० मोदीच्या ५. १०. ४
अश्मवर्म० मोर्ध्वाया ५. १०. ६
अश्रमदियमर्यमन् ६. ६०. २
अश्रान्तस्य त्वा मनसा १९. २५. १
अश्रूणि कृण्माणस्य ५. १९. १३
अश्रेष्माणो अधारयन् ३. ९. २
अश्लीला तनूर्भवति १४. १. २७
अश्व इव रजो दुधुवे १२. १. ५७
अश्वत्थे वो निषदनं० पर्णे वो वसतिः २०. १३१. १४
अश्वत्थो दर्भो वीरुधां ८. ७. २०
अश्वत्थो देवसदन० ततः १९. ३९. ६
अश्वत्थो देवसदन० देवाः ५. ४. ३
६. ९५. १
अश्वस्य वारो गोशफ्थके २०. १२९. १८
अश्वस्याक्षाः संपतिता ५. ५. ९
अश्वाः कण्वा गावस्तण्डुला ११. ३(१). ५
अश्वायन्तो गव्यन्तो २०. ९६. ५
अश्वावति प्रथमो गोषु २०. २५. १
अश्वावतीं प्र तर या १८. २. ३१
अश्वावतीर्गोमतीर्न ३. १६. ७
अश्विना त्याग्रे मित्रा ३. ४. ४
अश्विना ब्रह्मणा यात ५. २६. १२
अश्विना सारथेण० भगं ६. ६९. २
अश्विना सारथेण० वर्च ९. १. १९
अषाळ्हमुग्रं पृतनासु २०. ९२. १९
अष्ट च नेशीतिश्च ५. १५. ८
अष्ट जाता भूता प्रथम ८. ९. २१
अष्टधा युक्तो वहति १३. ३. १९
अष्टर्चेभ्यः स्वाहा १९. २३. ५
अष्टाचक्रं वर्तत ११. ४. २२
अष्टाचक्रा नवद्वारा १०. २. ३१
अष्टाद्शर्चेभ्यः स्वाहा १९. २३. १५
अष्टापदी चतुरक्षी ५. १९. ७
अष्टाविंशानि शिवानि १९. ८. २
अष्टेन्द्रस्य पञ्चमस्य ८. ९. २१
असंज्ञा गन्धेन शुगु १२. ५(४). ७
असंतापं मे हृदयमुर्वी १६. ३. ६
असंतापे सुतपसौ ४. २६. ३
असंबाधं मध्यतो १२. १. २
असंबाधे पृथिव्या १८. २. २०
असच्छाखां प्रतिष्ठन्तीं १०. ७. २१
असति सत्यतिष्ठितं १७. १. १९
असदन्नावः सदने ७. १०१. १
असद्भ्यः समभवत् ४. १९. ६
असन्मन्यद्भ्यमया ४. ९. ६
असपत्नं नो अधरा ८. ५. १७
असपत्नं पुरस्तात् १९. १६. १
१९. २७. १४
असर्वशीरश्चरतु ९. २. १४
असितं ते मलयनमा १. २३. ३
असितस्य ते ब्रह्मणा १. १४. ४
असितस्य तैमातस्य ५. १३. ६
असि हि वीर सेन्योसि २०. ५६. २
असुन्वामिन्द्र संसदं २०. २९. ५
असुराणां दुहितासि ६. १००. ३
असुरास्त्वा न्यखनन् ६. १०९. १
असुतिका रामायण्यप ६. ८३. ३
असुभ्रमिन्द्र ते गिरा २०. ७१. १०
असौ मे स्फरतादिति ६. १३०. २
असौ या सेना मरुतः ३. २. ६
असौ यो अवरोहति २. १४. ३
असौ हा इह ते मनः १८. ४. ६६
अस्तंयते नमोस्तमेभ्यते १७. १. २३
अस्ताव्यग्ने पूर्व्य २०. ११९. १
अस्तेव सु प्रतरं २०. ८९. १
अस्रा नीलशिखण्डेन ११. २. ७
अस्याद्यौरस्यात्० अस्तु ६. ४४. १
अस्याद्यौरस्यात्० आस्थाने ६. ७७. १
अस्थि कृत्वा समिधं ११. ८. २९
अस्थिवस्य किमसस्य १. २३. ४
अस्थिभ्यस्ते मज्जभ्य २. ३३. ६
२०. ९६. २२
अस्थिसंसं परुसंसमा ९. १४. १
अस्थीन्यस्य पीठय १२. ५(७). ९
अस्मा इदु प्राग्रियु २०. ३५. ११
अस्मा इदु त्यदनु २०. ३५. १५
अस्मा इदु त्यमुपमं २०. ३५. ३
अस्मा इदु त्वष्टा २०. ३५. ६
अस्मा इदु प्र तवसे २०. ३५. १
अस्मा इदु प्र भरा २०. ३५. १२
अस्मा इदु प्रय इव २०. ३५. २
अस्मा इदु सप्तिमिव २०. ३५. ५
अस्मा इदु स्तोमं सं २०. ३५. ४
अस्माकमिन्द्रः समृतेषु १९. १३. ११
अस्मान्सु तत्र चोदयेन्द्र २०. ७१. १२
अस्मिन्निन्द्रो नि दधातु ८. ५. २१
अस्मिन्मणावेकशतं १९. ४६. ५
अस्मिन्वयं संकसुके १२. २. १३
अस्मिन्वसु वसवो १. ९. १
अस्ने धेहि श्रवो बृहद् २०. ७१. १४
अस्मै क्षत्रमधीपोमा ६. ५४. २
अस्मै क्षत्राणि धारयन्त ७. ८३. २
अस्मै प्राणाय प्रदिश ६. ४०. २
अस्मै द्यावापृथिवी ४. २२. ४
अस्मै भीमाय नमसा २०. १५. ३
अस्मै मणिं वर्म बध्नन्तु ८. ५. १०
अस्मै सृत्यो अधि भूहीमं ८. २. ८
अस्य देवाः प्रदिशि १. ९. २
अस्य पीत्वा शतक्रतो २०. ६८. ८
अस्य वामस्य पलितस्य ९. ९. १
अस्येदिन्द्रो वावृधे २०. ९९. २
अस्येदु त्वेषसा रन्त २०. ३५. ११
अस्येदु प्र बृहि पूर्व्याणि २०. ३५. १३
अस्येदु भिया गिरयश्च २०. ३५. १४
अस्येदु मातुः सवनेषु २०. ३५. ७
अस्येदेव प्र रिरिचे २०. ३५. ९
अस्येदेव शवसा २०. ३५. १०
अस्येन्द्र कुमारस्य ५. २३. २
अस्यै देवतया उदृचं १५. १३. १३
अस्रामस्त्वा हविषा १. ११. १
अस्वगता परिहुता १२. ५(५). २
अहं गृभ्णामि मनसा ३. ८. १
९. ९४. २
अहं जजान पृथिवी ९. ११. १
अहं तत्ताद्य वर्तोशी १२. ३. ४७
अहं पशूनामधिपा १९. ३१. ६
अहं प्रजेन मन्मना २०. ११५. २
अहं राष्ट्री संगमनी ४. ३०. २
अहं रुद्राय धनुरा ४. ३०. ५
अहं रुद्रेभिर्वसुभि ४. ३०. १
अहं वदामि नेत्वं ७. ३९. ४
अहं विषेच पृथिवीं ६. ६१. २
अहं वि ष्यामि मयि १४. १. ५७
अहं सुवे पितरमस्य ४. ३०. ७
अहं सोममाहनसं ४. ३०. ६
अहन्नहिं पर्वते २. ५. ६
अहमस्मि सहमान १२. १. ५४
अहमस्मि सहमानायो ३. १८. ५
अहमिद्धि पितुष्परि २०. ११५. १
अहमेनानुदतिष्ठिपं ७. १००. २
अहमेव वात इव ४. ३०. ८
अहमेव स्वयमिदं ४. ३०. ३
अहमेवास्त्यमावास्या ७. ८४. २
अहल कृश वर्तक २०. १३१. ६
अहश्च कृष्ण वर्तक १५. २. २०
अहा अरातिमचिदः २. १०. ७
अहीनां सर्वेषां विषं १०. ४. २०
अहोरात्राभ्यां नक्षत्रेभ्यः ६. १२८. ३
अहोरात्रे अन्वेनि १२. २. ४९
अहोरात्रे इदं वृक्षः ११. ६. ५
अहोरात्रे नासिके १५. १८. ४
अहोरात्रैर्विमितं १३. ३. ८
आ अद्य प्रत्यङ्मत्यो १५. १८. ५
आ अद्रे च त्वा रात्रये ८. २. २०
आकूतिं देवीं सुभगां १९. ४. २
आकूत्या नो बृहस्पत १९. ४. ३
आ क्रन्दय बलमोजो ३. १२९. २
आ क्रन्दय पञ्चमोजो ३. १२९. २
आग्नेयैकं मणिमेकं १९. ४५. ५
आगच्छत आगतस्य ६. ८२. १
आगत्यागी संगमनी ७. ८४. ३
आगायत्रादगायत्रं २. ९. २
आ गावो अग्मन्नुत ४. २१. १
आ गृह्णीते सं बृहतं ११. ९. ११
आ घ त्वावान्त्मनाप्त २०. १२२. २

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

आ घा गमद्यदि २०. २६. २
आ घा ता गच्छानुत्तरा १८. १. ११
आङ्गिरसानामादयः १९. २२. १
आचार्य उपनयमानो ११. ५. ३
आचार्यस्तत्क्ष नभसी ११. ५. ८
आचार्यो ब्रह्मचारी ११. ५. १६
आचार्यो मृत्युर्वरुणः ११. ५. १४
आच्छद्विधानैर्गुपितो १४. १. ५
आज्या जातु दक्षिणतो १८. १. ५२
आ जनाय हुवसे २०. ३६. ८
आजामि त्वाजन्या ३. २५. ५
आजुह्वान ईड्यो ५. १२. ३
आज्यं बिभर्ति घृतमस्य ९. ४. ७
आज्यस्य परमेष्ठिञ्जात १. ७. २
आञ्जनं पृथिव्यां जातं १९. ४४. ३
आञ्जनस्य मदुघस्य ६. १०२. ३
आतन्वाना आयच्छन्तो ६. ६६. २
आतिष्ठन्तं परि विश्वे ४. ८. ३
आ तू न इन्द्र मद्यग् २०. २३. १
आ तू सुशिप्र दंपते २०. ९२. १३
आ ते ददे वक्षणाभ्य ७. ११९. १
आ ते नयतु सविता २. ३६. ८
आ ते शृणं सुवामसि ७. ५५. ६
आ ते योनिं गर्भ एतु ३. २३. २
आ ते राष्ट्रमिह रोहितो १३. १. ५
आ ते सिञ्चामि कुरुषो २०. ४. २
आ ते स्तोत्रायुधानि ५. ११. ९
आतोदिनी नितोदिना ७. १००. ३
आत्मन्वत्युर्वरा नारी १४. २. १४
आत्मानं पितरं पुत्रं ९. ५. ३०
आ त्वा गन्धर्वो अग्रभीत् ३. ४. १
आ त्वागमं शंतातिभि ४. १३. ५
आ त्वाजि हवीमहि १८. ४. ८८
आ त्वा घृतस्यर्यमा ५. २८. १२
आ त्वा ब्रह्मयुजा हरी २०. ३. २
२०. ३८. २
२०. ४७. ८
आ त्वा रुरोह वृहन्मृत १३. १. १५
आ त्वा विशन्तु सुतास २. ५. ४
आ त्वा विशन्त्वाशवः २०. ६९. ५
आ त्वा हर्यन्तं प्रयुजो २०. ३२. २
आ त्वाहार्षमन्तरभू ६. ८७. १
आ त्वेता नि षीदतेन्द्र २०. ६८. ११
आथर्वणानां चतुर्ऋचेभ्यः १९. २३. १
आथर्वणीराङ्गिरसी ११. ४. १६
आदङ्गा कुविदङ्गा २. ३. २
आदङ्गिराः प्रथमं २०. २५. ४
आ दत्से जिनतां १२. ५(६). १०
आददानमाङ्गिरसि १२. ५(६). ६
आ दधामि ते पदं २. १२. ८
आदह्लादुकमेककम् २०. १३२. १
आदह स्वधामनु २०. ४०. ३
२०. ६९. १२
आदानेन संदानेना ६. १०४. १
आदाय जीतं जीताय १२. ५(६). ११
आदित्ते अस्य वीर्यस्य २०. ७५. ३
आदित्यश्याम्युत या ३. १३. ६
आदित्य चक्षुरा दत्स्व ५. २१. १०
आदित्य नावमारुक्षः १७. १. २५
आदित्या रुद्रा वसव २०. १३५. ९
आदित्या रुद्रा वसवो जुषन्ता १९. ११. ४
आदित्या रुद्रा वसवो दिवि ११. ६. १३
आदित्या ह अरित २०. १३५. ६
आदित्येभ्यो अङ्गिरोभ्यो १२. ३. ४४
आदित्यैरिन्द्रः सगणो २०. ६३. २
२०. १२४. ५
आदिनवं प्रतिदीव्ने ७. ११४. ४
आ देवानामपि पन्था १०. ५९. ३
आ देवेषु वृश्यते १५. १२. १०
आधीपर्णा कामशल्या ३. २५. २
आनन्दा मोदाः० उच्छिष्ट ११. ७. २६
आनन्दा मोदाः० हसो ११. ८. २४
आ नयैतमा रभस्व ९. ५. १
आ नूनं यातमश्विनेमा २०. १४१. ४
आ नूनं रघुवर्तनिं २०. १४०. ३
आ नूनमश्विना युवं २०. १३९. १
आ नूनमश्विनोर्ऋषि २०. १४०. २
आनृत्यतः शिरुन्धिनो ४. ३७. ७
आ नो अग्ने सुमतिं २. ३६. १
आ नो भर मा परि ५. ७. १
आ नो यज्ञं भारती ५. १२. ८
आ नो यातं दिवो २०. १४३. ५
आ नो याहि सुतावतो २०. ४. १
आ नो विश्वासु हव्य २०. १०४. ३
आप्राणि अभ्रवो गुदा ११. ३(१). १०
आभ्रेभ्यस्ते गुदाभ्यो २. ३३. ४
२०. ९६. २०
आपः पृणीत भेषजं १. ६. ३
आप इद्वा० तास्ते ६. २१. ३
आप इद्वा० तास्त्वा ३. ७. ५
आ पप्राथ महिना २०. ८१. २
२०. ९२. २१
आ पर्जन्यस्य वृष्टयो ३. ३१. ११
आपश्चिदिप्यु स्तर्यो २०. १२. ४
आ पश्यति प्रति पश्यति ४. २०. १
आपस्पुत्रासो अभि सं १२. ३. ४
आपूर्णो अस्य कलशः २०. ८. ३
आपो अग्निं प्र हिणुत १८. ४. ४०
आपो अग्रं दिव्या ८. ७. ३
आपो अग्ने विश्वमावन् ४. २. ६
आपो अस्मान्मातरः ६. ५१. २
आपो न देवीरुप २०. २५. २
आपो न सिन्धुमभि २०. १७. ७
आपो भद्रा घृतमिदाप ३. १३. ५
आपो मौपधीमती १९. १७. ६
आपो यद्वः शोचिस्तेन २. २३. ४
आपो यद्वस्तपस्तेन २. २३. १
आपो यद्वस्तेजस्तेन २. २३. ५
आपो यद्वोचित्तेन २. २३. ३
आपो यद्वो हरस्तेन २. २३. २
आपो वत्सं जनयन्ती ४. २. ८
आपो विद्युदभ्रं वर्ष ४. १५. ९
आपो हि ष्ठा मयो भुव १. ५. १
आप्नोतीमं लोकमाप्नोत्यमुम् ९. ६(६). १३
आ प्र च्यवेयामप १८. ४. ४९
आ प्रत्यञ्चं दाशुषे ७. ४१. २
आ प्र द्रव परमस्याः ३. ४. ५
आप्रुषायन्मधुन २०. १६. ४
आबपो अनाबयो ६. १६. १
आभूत्या सहजा वज्र ४. ३१. ६
आमगको मणस्कः २०. १३०. ९
आ मन्वो अस्मा असिचन् २०. ७६. ७
आ मन्द्रैरिन्द्र हरिभि ७. १२२. १
आ मा पुष्टे च पोषे च ३. १०. ७
आ मारुक्षत्पर्णमणि ३. ५. ५
आ मारुक्षदेवमणि ८. ५. २०
आमिनोनिति भयते २०. १३१. १
आ मे धनं सरस्वती १९. ३१. १०
आ मे महच्छतभिषग् १९. ७. ५
आमे सुपक्वे शबले ५. २९. ६
आयं गौः पृश्निरक्रमी ६. ३१. १
२०. ४८. ४
आ यं विशन्तीन्दवो ६. २. २
आ यत्पतन्त्येन्यः २०. ९२. ७
आ यदुवः शतक्रतवा २०. १२२. ३
आयने ते परायणे ६. १०६. १
आ यन्ति दिवः पृथिवीं १२. ३. २६
आयमगन्त्संवत्सरः ३. १०. ८
आयमगन्त्सविता ६. ६८. १
आयमगन्पर्णमणि ३. ५. १
आयमगन्युवा भिषक् १०. ४. १५
आ ययाम सं बबर्ह ९. ३. ३
आय बनेनती जनी २०. १३१. ८
आ यात पितरः सोम्यासो १८. ४. ६२
आ यातु मित्र ऋतुभिः ३. ८. १
आ यात्विन्द्रः स्वपति २०. ९४. १
आ याहि सुषुमा हि त २०. ३. १
२०. ३८. १
२०. ४७. ७
आयुरस्मै धेहि जातवेदः २. २९. २
आयुरस्यायुर्मे दाः २. १७. ४
आयुर्ददं विपश्चितं ६. ५२. ३
आयुर्दा अग्ने जरसं २. १३. १
आयुर्यत्ते अतिहितं ७. ५५. ३
आयुर्विश्वायुः परि १८. २. ५५
आयुश्च रूपं च नाम १२. ५(२). ३
आयुषायुष्कृतां जीवा १९. २७. ८
आयुषे त्वा वर्चसे १९. २६. ३
आयुषोसि प्रतरणं १९. ४४. १
आयुष्मतामायुष्कृतां ३. ३१. ८

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

आ यूथेव क्षुमति १८. ३. २३
आ यो धर्माणि प्रथमः ५. १. २
आ रभस्व जातवेद १८. ३. ७१
आ रभस्व जातवेदो १. ७. ६
आ रभस्वेमामृतस्य ८. २. १
आराच्छत्रुमप बाधस्व २०. ८९. ७
आ रात्रि पार्थिवं रजः १९. ४७. १
आरादरातिं निर्ऋतिं ८. २. १२
आरे अभूद्विषमौद् १०. ४. २६
आरेसावस्मदस्तु हेति १. २६. १
आ रोदसी हर्यमाणो २०. ३२. १
आ रोह चर्मोप सीदाग्नि १४. २. २४
आरोहन्भुक्वो बृहती १३. २. ४२
आ रोहत जनित्रीं १८. ४. १
आ रोहत दिवमुत्तमा १८. ३. ६४
आ रोह तल्पं सुमनस्य १४. २. ३१
आ रोहतायुर्जरसं १२. २. २४
आरोहन्धामसृतः १३. १. ४३
आ रोहोरुप घत्स्व १४. २. ३९
आर्तिरर्तिर्निर्ऋतिः १०. २. १०
आर्षेयेषु नि दध ११. १. ३३
आलापाश्च प्रलापाश्च ११. ८. २५
आलिगी च विलिगी ५. १३. ७
आ वक्षि देवाँ इह २०. ६७. ५
आवतस्त आवतः ५. ३०. १
आ वां प्रजां जनयतु १४. २. ४०
आ वात वाहि भेषजं ४. १३. ३
आ वामगन्त्सुमति १४. २. ५
आविः सन्निहितं गुहा १०. ८. ६
आविरात्मानं कृणुते १२. ४. ३०
आविष्कृणुष्व रूपाणि ४. २०. ५
आविष्टिताघविषा ५. १८. ३
आ वृषायस्व श्वसिहि ६. १०१. १
आ वो वहन्तु सप्तयो २०. १३. २
आशरीकं विशरीकं १९. ३४. १०
आशसनं विशसनमथो १४. १. २८
आशानामाशापालेभ्य १. ३१. १
आशामाशां वि द्योततां ४. १५. ८
आशासाना सौमनसं १४. १. ४२
आशिषश्च प्रशिषश्च ११. ८. २७

आशीर्णं ऊर्जमुत २. २९. ३
आशुः शिशानो वृषभो १९. १३. २
आशृण्वन्तं यवं देवं ६. १४२. २
आ संपतमिन्द्र णः २०. ३६. १०
आ सत्यो यातु मघवाँ २०. ७७. १
आसीनासो अरुणीना १८. ३. ४३
आसुरी चक्रे प्रथमेदं १. २४. २
आ सुष्वयन्ती यजते ५. १२. ६
आ सुस्रसः सुस्रसो ७. ८०. १
आसो बलासो भवतु ९. ८. १०
आस्रस्ते गाथा अभवन् १०. १०. २०
आस्रेयीश्च वास्तेयीश्च ११. ८. २८
आस्यै ब्राह्मणाः स्रपनी १४. १. ३९
आहं खिदामि ते मनो ४. ४. ७
आहं तनोमि ते पसो ६. १०१. ३
आहं पितृन्त्सुविदत्राँ १८. १. ४५
आ हरयः ससृज्रिरे २०. २२. ५
२०. ९२. २
आ हरामि गवां क्षीर २. २६. ५
आहवनीयस्य च वै ८. १. २०
आहार्षमविदं त्वा २०. ९६. १०
आहुतास्यभिहुत ६. १३३. २
आहुत्याज्ञाथान्नमत्ति १५. १४. ८
हूच्छन्ति देवाः सुन्वन्तं २०. १८. ३
इच्छन्नश्वस्य यच्छिरः २०. ४१. २
इटस्य ते वि चृता ९. ३. १८
इडया जुहुतो वयं ३. १०. ११
इडायास्पदं घृतवत् ३. १०. ६
इडैवास्माँ अनु वस्तां ७. २८. १
इत ऊती वो अजरं २०. १०५. ३
इत एत उद्गृह्णन् १८. १. ३१
इतश्च मामुतश्चावतां १८. ३. ३८
इतश्च यदमुतश्च १. २०. ३
इतिहासस्य च वै १५. ६. १२
इतो जयेतो वि जय ८. ८. २४
इतो वा सातिमीमहे २०. ७०. ६
इदं कसाम्बु चयनेन १८. ४. ३७
इदं खनामि भेषजं ७. ३९. १
इदं जना उप श्रुत २०. १२७. १
इदं जनासो विदथ १. ३२. १
इदं त एकं पर १८. ३. ७
इदं तमुज उत्तरमिन्द्रं ६. ५४. १
इदं तद्रूपं यदवस्त १४. १. ५६
इदं ततति सृजामि १६. १. ४
इदं तृतीयं सवनं ६. ४७. ३
इदं ते हव्यं घृतवत् ७. ७०. २
इदं देवाः शृणुत ये २. १२. २
इदं पितृभ्यः प्र भरामि १८. ४. ५१
इदं पितृभ्यो नमो १८. १. ४६
इदं पूर्वमपरं नियानं १८. ४. ४४
इदं पैद्वो अजायते १०. ४. ७
इदं प्रापमुत्तमं काण्ड १२. ३. ४५
इदं मह्यं मद्भरिति २०. १३१. १०
इदं मे ज्योतिरमृतं ११. १. २८
इदं यत्कृष्णः शकुनिरभि ७. ६६. १
इदं यत्कृष्णः शकुनिरवा ७. ६६. २
इदं यत्परमेष्ठिनं १९. ९. ४
इदं यत्प्रेण्यः शिरो ६. ८९. १
इदं व आपो हृदय ३. १३. ७
इदं वर्चो अग्निना दत्त १९. ३७. १
इदं विद्वानाञ्जन सत्यं ४. ९. ७
इदं विष्कन्धं सहत १. १६. ३
इदं विष्णुर्वि चक्रमे ७. २७. ४
इदं सदो रोहिणी १३. १. २३
इदं सवितर्वि जानीहि १०. ८. ५
इदं सु मे नरः शृणुत १४. २. ९
इदं हविर्यातुधाना १. ८. १
इदं हिरण्यं गुल्गुल्व २. ३६. ७
इदं हिरण्यं विसृहि १८. ४. ५६
इदमकर्म नमो अभ्रियाय २०. १६. १२
इदमहं रुशन्तं ग्राभं १४. १. ३८
इदमहमामुष्यायणे १६. ७. ८
इदमाज्यं घृतवद्भुवाणाः ९. २. ८
इदमादानमकरं तपसे ६. १०४. २
इदमापः प्र वहत ७. ९४. ३
इदमिदमेवास्य रूपं ९. ५. २४

इदमिद्वा उ नापरं जरस्यन् १८. २. ५१
इदमिद्वा उ नापरं दिवि १८. २. ५०
इदमिद्वा उ भेषजमिदं ६. ५७. १
इदमिन्द्र शृणुहि सोमप २. १२. ३
इदमुग्राय बभ्रवे नमो ७. ११४. १
इदमुच्छ्रेयोवसानमागां १९. १४. १
इदावत्सराय परिवत्सराय ६. ५५. ३
इध्मेन त्वा जातवेदः १९. ६४. २
इध्मेनाग्न इच्छमानो ३. १५. ३
इन्द्रुरिन्द्राय पवत २०. १३७. ५
इन्द्रं तं शुम्भ पुरुहन् २०. ९२. १७
२०. १०५. ५
इन्द्रं ते मरुत्वन्त १९. १८. ८
इन्द्रं मित्रं वरुणमग्नि ९. १०. २८
इन्द्रं वयं महाधन २०. ७०. ११
इन्द्रं वयमनूराधं १९. १५. २
इन्द्रं वृत्राय हन्तवे २०. १९. ५
इन्द्रं वो विश्वतस्परि २०. ३९. १
२०. ७०. १६
इन्द्रं सोमस्य पीतये २०. २४. ४
इन्द्रः कारुमबूबुध २०. १२७. ११
इन्द्रः पूर्भिदातिरद् २०. ११. १
इन्द्रः प्राङ्तिष्ठन्दक्षिणा ९. ७. २०
इन्द्रः स दामने कृत २०. ४७. २
२०. १३७. १३
इन्द्रः सीतां नि गृह्णातु ३. १७. ४
इन्द्रः सुत्रामा स्ववाँ ७. ९६. १
२०. १२५. ६
इन्द्रः सेनां मोहयतु ३. १. ६
इन्द्रः स्वर्षा जनयन्न २०. ११. ४
इन्द्र आशाभ्यस्परि २०. २०. ७
२०. ५७. १०
इन्द्र इद्धर्योः सचा २०. ३८. ५
२०. ४७. ५
२०. ७०. ८
इन्द्र उक्थामदान्यस्मिन् ५. २१. ३
इन्द्र एतमदीधरद् १. ८७. ३
इन्द्र एतां ससृजे २. २९. ७
इन्द्र एषां नेता १९. १३. ९

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

इन्द्र ओषधीरसनो	२०.	११.	१०
इन्द्र क्रतुं न आ भर	१८.	३.	६७
	२०.	७९.	१
इन्द्र क्रतुविदं सुतं	२०.	६.	२
	२०.	७.	४
इन्द्र क्षत्रमभि वाम	७.	८९.	२
इन्द्र चित्तानि मोहय	३.	२.	३
इन्द्र जठरं नव्यो न	२.	५.	२
इन्द्र जहि पुमांसं	८.	४.	२४
इन्द्र जीव सूर्य जीव	१९.	७०.	१
इन्द्र जुषस्व प्र वहा	२.	५.	१
इन्द्र ज्येष्ठं न आ भरँ	२०.	८०.	१
इन्द्र त्रिधातु शरणं	२०.	८३.	१
इन्द्र त्वा वृषभं वयं	२०.	१.	१
	२०.	६.	१
इन्द्र त्वोतास आ वयं	२०.	७०.	१९
इन्द्रपुत्रे सोमपुत्रे	३.	१०.	१३
इन्द्र प्र णो धितावानं	२०.	६.	३
इन्द्र प्रेहि पुरस्त्वं	२०.	५.	३
इन्द्रमहं वणिजं	३.	१५.	१
इन्द्रमित्केशिना हरी	२०.	२९.	२
इन्द्रमित्था गिरो ममा	२०.	२४.	३
इन्द्रमिद्वाथिनो बृहद्	२०.	३८.	४
	२०.	४७.	४
	२०.	७०.	७
इन्द्रमिद्देवतातय	२०.	११८.	३
इन्द्र वाजेषु नोव	२०.	७०.	१०
इन्द्रवायू उमाविह	३.	२०.	६
इन्द्रश्चकार प्रथमं	६.	६५.	३
इन्द्रश्च मृळयाति नो	२०.	२०.	६
	२०.	५७.	९
इन्द्रश्च सोमं पिबतं	२०.	१३.	१
इन्द्र सेनां मोहया	३.	१.	५
इन्द्र सोमाः सुता इमे तव	२०.	६.	४
इन्द्र सोमाः सुता इमे तान्	२०.	२४.	५
इन्द्रस्तुजो बर्हणा आ	२०.	११.	५
इन्द्रस्तुराषाण्मित्रो	२.	५.	३
इन्द्रस्त्रातोत वृत्रहा	१९.	१५.	३
इन्द्र स्थातर्हरीणां	२०.	६४.	५
इन्द्रस्य कुक्षिरसि	७.	११६.	१
इन्द्रस्य गृहोसि	५.	६.	११
इन्द्रस्य त्वा वर्मणा	१९.	४६.	४
इन्द्रस्य नाम गृह्णन्त	१९.	३५.	१
इन्द्रस्य नु प्रा वोचं	२.	५.	५
इन्द्रस्य प्रथमो रथो	१०.	४.	१
इन्द्रस्य बाहू स्थविरौ	१९.	१३.	१
इन्द्रस्य भाग स्थ	१०.	५.	८
इन्द्रस्य मन्महे	४.	२४.	१
इन्द्रस्य या मही	२.	३१.	१
इन्द्रस्य व इन्द्रियेणा	१६.	१.	९
इन्द्रस्य वचसा वयं	६.	८५.	२
इन्द्रस्य वरूथमसि	५.	६.	१४
इन्द्रस्य वर्मासि	५.	६.	१३
इन्द्रस्य वृष्णो वरुणस्य	१९.	१३.	१०
इन्द्रस्य शर्मासि	५.	६.	१२
इन्द्रस्यौज० योगाय क्षत्र	१०.	५.	२
इन्द्रस्यौज० योगाय ब्रह्म	१०.	५.	१
इन्द्रस्यौज० योगाय विश्वानि	१०.	५.	६
इन्द्रस्यौज० योगाय सोम	१०.	५.	४
इन्द्रस्यौज० योगायाप्सु	१०.	५.	५
इन्द्रस्यौज० योगायेन्द्र	१०.	५.	३
इन्द्रस्यौजो मरुतामनीकं	६.	१२५.	३
इन्द्रस्यौजो वरुणस्य	९.	४.	८
इन्द्राग्नी काम सरथं	९.	२.	९
इन्द्राग्नी द्यावापृथिवी	१४.	१.	५४
इन्द्राणी भसद्वायुः	९.	७.	८
इन्द्राणीमासु नारिषु	२०.	१२६.	११
इन्द्रादिन्द्रः सोमात्सोमो	११.	८.	९
इन्द्राय गाव आशिरं	२०.	२२.	६
	२०.	९२.	३
इन्द्राय भागं परि	९.	५.	२
इन्द्राय मद्वने सुतं	२०.	११०.	१
इन्द्राय साम गायत	२०.	६२.	५
इन्द्राय सोममृत्विजः	६.	२.	१
इन्द्रा याहि चित्रभानो	२०.	८४.	१
इन्द्रा याहि तूतुजान	२०.	८४.	३
इन्द्रा याहि धियेषितो	२०.	८४.	२
इन्द्रा याहि मे हवमिदं	५.	८.	२
इन्द्रावरुणा मधुमत्तमस्य	७.	६०.	२
इन्द्रावरुणा सुतपाविमं	७.	६०.	१
इन्द्रासोमा तपतं रक्ष	८.	४.	१
इन्द्रासोमा दुष्कृतो वव्रे	८.	४.	३
इन्द्रासोमा परि वां	८.	४.	६
इन्द्रासोमा वर्तयतं दिव	८.	४.	५
इन्द्रासोमा वर्तयतं दिवो	८.	४.	४
इन्द्रासोमा समवशंस	८.	४.	२
इन्द्रियाणि शतक्रतो	२०.	२०.	२
	२०.	५७.	५
इन्द्रेण दत्तो वरुणेन	२.	२९.	४
इन्द्रेण मन्युना वयमभि	७.	९८.	१
इन्द्रेण रोचना दिवो	२०.	२८.	३
	२०.	३९.	४
इन्द्रेण सं हि दृक्षसे	२०.	४०.	१
	२०.	७०.	३
इन्द्रेन्द्र मनुष्याः	३.	४.	६
इन्द्रेमं प्रतरं कृधि	६.	५.	२
इन्द्रे लोका इन्द्रे तप	१०.	७.	३०
इन्द्रेहि मत्स्यन्धसो	२०.	७१.	७
इन्द्रो अङ्ग महद्भय	२०.	२०.	५
	२०.	५७.	८
इन्द्रो जघान प्रथमं	१०.	४.	१८
इन्द्रो जयाति न परा	६.	९८.	१
इन्द्रो जातो मनुष्ये	४.	११.	३
इन्द्रोतिभिर्बहुलाभिर्नो	७.	३२.	१
इन्द्रो दधीचो अस्थभि	२०.	४१.	१
इन्द्रो दिवोधिपतिः	५.	२४.	११
इन्द्रो दीर्घाय चक्षस	२०.	३८.	६
	२०.	४७.	६
	२०.	७०.	९
इन्द्रो ब्रह्मा ब्राह्मणात्	२०.	२.	३
इन्द्रो मदाय वावृधे	२०.	५६.	१
इन्द्रो मन्थतु मन्थिता	८.	८.	१
इन्द्रो मह्ना महतो	२०.	९१.	१२
इन्द्रो मह्ना रोदसी	२०.	११८.	४
इन्द्रो मा मरुत्वानेतस्या	१९.	१७.	८
इन्द्रो मा मरुत्वान्	१८.	३.	२५
इन्द्रो मेन्द्रियेणावतु	१९.	४५.	७
इन्द्रो मेहिमरन्धयत्	१०.	४.	१७
इन्द्रो मेहिमरन्धयन्	१०.	४.	१६
इन्द्रो यज्वने गृणते	४.	२१.	२
इन्द्रो यातूनामभवन्	८.	४.	२१
इन्द्रो युनक्तु बहुधा	५.	२६.	११
इन्द्रो राजा जगत	१९.	५.	१
इन्द्रो रूपेणाग्निर्वहेन	४.	११.	७
इन्द्रो वलं रक्षितारं	२०.	९१.	६
इन्द्रो वीर्येणोदक्रामन्	१९.	१९.	९
इन्द्रो वृत्रमवृणोच्छर्ध	२०.	११.	३
इन्द्रो ह चक्रे त्वा	२.	२७.	३
इमं क्रव्यादा विवेशायं	१२.	२.	४३
इमं गावः प्रजया सं	१४.	१.	३३
इमं गोष्ठं पशवः सं	२.	२६.	२
इमं जीवेभ्यः परिधिं	१२.	२.	२३
इमं बध्नामि ते मणिं	१९.	२८.	१
इमं बिभर्मि वरणमायु	१०.	३.	१२
इमं बिभर्मि सुकृतं ते	२०.	९४.	९
इमं मे अग्ने पुरुषं	६.	१११.	१
इमं मे कुष्ठ पूरुषं	५.	४.	६
इमं यम प्रस्तरमा	१८.	१.	६०
इमं यवमष्टायोगैः	६.	९१.	१
इमं रथमधि ये सप्त	९.	९.	३
इमं वीरमनु हर्षध्व	६.	९७.	३
	१९.	१३.	६
इमं स्तोममर्हते	२०.	१३.	३
इमं होमा यज्ञमवतेमं	१९.	१.	२
इम उप्ता मृत्युपाशा	८.	८.	१६
इममग्न आयुषे वर्चसे	२.	२८.	५
इममग्ने चमसं मा वि	१८.	३.	५३
इममादित्या वसुना	५.	२८.	४
इममिन्द्रं वह्निं पप्रिमन्वा	१२.	२.	४७
इममिन्द्र गवाशिरं	२०.	२४.	७
इममिन्द्र वर्धय	४.	२२.	१
इममोदनं नि दधे	४.	३४.	८
इमां खनाम्योषधिं	३.	१८.	१
इमां धियं सप्तशीर्ष्णीं	२०.	९१.	१
इमा भूमिं पृथिवीं	११.	५.	९
इमां मात्रां मिमीमहे	१८.	२.	३८
इमां शालां सविता	३.	१२.	४
इमा आपः प्र भरा	३.	१२.	९
	९.	३.	२३
इमा उ त्वा पुरूवसो	२०.	१०४.	१

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

इमा नारीरविधवाः	१२.	२.	३१
	१८.	३.	५७
इमानि यानि पञ्चेन्द्रियाणि	१९.	०.	५
इमा नु कं भुवना	२०.	६३.	१
	२०.	१२४.	४
इमा ब्रह्म बृहद्दिवः	५.	२.	८
	२०.	१०७.	११
इमा ब्रह्म ब्रह्मवाहः	२०.	२३.	३
इमामग्ने शरणिं	३.	१५.	४
इमामेषां पृथिवीं	१०.	८.	३६
इमा याः पञ्च प्रदिशो	३.	२४.	३
इमा या देवीः प्रदिश	२.	१०.	४
इमा या ब्रह्मणस्पते	१९.	८.	६
इमा यास्तिस्रः पृथिवी	६.	२१.	१
इमा यास्ते शतं हिराः	७.	३६.	२
इमास्तिस्रो देवपुरा	५.	२८.	१०
इमे गृहा मयोभुव	७.	६२.	२
इमे जीवा वि मृतै	१२.	२.	२२
इमे त इन्द्र ते वयं	२०.	१५.	४
इमे मयूखा उप	१०.	७.	४४
इमौ युनज्मि ते वह्नी	१८.	२.	५६
इयं कल्याण्यजरा	१०.	८.	२६
इयं ते धीतिरिदमु	११.	१.	११
इयं नारी पतिलोकं	१८.	३.	१
इयं नार्युप ब्रूते	१४.	२.	६३
इयं पित्र्या राष्ट्रयेत्वग्रे	४.	१.	२
इयं मही प्रति गृह्णातु	११.	१.	८
इयं या परमेष्ठिनी	१९.	९.	३
इयं वा उ पृथिवी	१५.	१०.	६
इयं वीरुन्मधुजाता मधुना	१.	३४.	१
इयं वीरुन्मधुजाता मधुश्चुन्	७.	५८.	२
इयं वेदिः परो अन्तः	९.	१०.	१४
इयं समित्पृथिवी	११.	५.	४
इयमग्ने नारी पतिं	२.	३६.	३
इयमन्तर्वदति जिह्वा	५.	३०.	१६
इयमेव पृथिवी कुम्भी	११.	३(१).	११
इयमेव सा या प्रथमा	३.	१०.	४
	८.	९.	११
इरा पुंश्चली हसो	१५.	२.	१९
इरावेदुमयं दत	२०.	१३०.	१६
इरेव नोप दस्यति	३.	२९.	६
इषिरा योषा युवति	१९.	४९.	१
इषीकां जरतीमिष्ट्वा	१२.	२.	५४
इषुरिव दिग्धा नृपते	५.	१८.	१५
इष्टं च वा एष पूर्तं	९.	६(३).	१
इष्वा ऋजीयः पततु	५.	१४.	१२
इह गावः प्रजायध्व	२०.	१२७.	१२
इह तेसुरिह प्राण	८.	१.	३
इह त्वा गोपरीणसा	२०.	२२.	३
इह पुष्टिरिह रस	३.	२८.	४
इह प्र ब्रूहि यतमः	८.	३.	८
इह प्रियं प्रजायै ते	१४.	१.	२१
इह ब्रवीतु य ईमङ्ग	९.	९.	५
इहा यन्तु प्रचेतसो	८.	७.	७
इहेत्थ प्राग० अक्षिलली	२०.	१३४.	६
इहेत्थ प्राग० अराला	२०.	१३४.	१
इहेत्थ प्राग० आष्टे लाहणि	२०.	१३४.	५
इहेत्थ प्राग० वत्साः	२०.	१३४.	२
इहेत्थ प्राग० स वै पृथु	२०.	१३४.	४
इहेत्थ प्राग० स्थालीपाको	२०.	१३४.	३
इहेदसाथ न परो गमाथेमं	१४.	१.	३२
इहेदसाथ न परो गमाथेर्यो	३.	८.	४
इहेमाविन्द्र सं नुद	१४.	२.	६४
इहेह यद्वां समना	२०.	१४३.	७
इहैधि पुरुष सर्वेण	५.	३०.	६
इहैव गाव एतनेहो	३.	१४.	४
इहैव ध्रुवां नि मिनोमि	३.	१२.	१
इहैव ध्रुवा प्रति तिष्ठ	३.	१२.	२
इहैव सन्तः प्रति दद्म	६.	११७.	२
इहैव स्तं प्राणापानौ	३.	११.	६
इहैव स्तं मा वि	१४.	१.	२२
इहैव स्त मानु गात	७.	६२.	७
इहैव स्त माप याता	६.	७३.	३
इहैव हवमा यात	१.	१५.	२
इहैवाग्ने अधि धारया	७.	८७.	३
इहैवाभि वि तनूभे	१.	१.	३
इहैवैधि धनसनि	१८.	४.	३८
इहैवैधि माप च्योष्ठाः	६.	८७.	२
ईङ्खयन्तीरपस्युव	२०.	९३.	४
ईजानश्चितमारुक्ष	१८.	४.	१४
ईजानानां सुकृतां	९.	५.	१२	६८५
ईडे अग्निं स्वावसुं	७.	५२.	३	६६१
ईळेन्यो नमस्यस्तिर	२०.	१०२.	१	८१०
ईर्माभ्यामयनं जातं	१०.	१०.	२१	७०६
ईर्ष्याया ध्राजिं प्रथमां	६.	१८.	१	६३७
ईशां वो मरुतो देव	११.	९.	२५	७१९
ईशां वो वेद राज्यं	११.	१०.	२	७१९
ईशान एनमिष्वासः	१५.	५.	१५	७४९
ईशानां त्वा भेषजाना	४.	१७.	१	६११
ईशाना वार्याणां क्षयन्ती	१.	५.	४	५८०
उक्षान्नाय० वैश्वानर	३.	२१.	६	६०१
उक्षान्नाय० स्तोमै	२०.	१.	३	७८८
उक्ष्णो हि मे पञ्चदश	२०.	१२६.	१४	८१४
उग्रंपश्ये राष्ट्रभृत्	६.	११८.	२	६५१
उग्रं वनिषदाततम्	२०.	१३२.	६	८१६
उग्र इत्ते वनस्पत	१९.	३४.	९	७८०
उग्र एनं देव इष्वास	१५.	५.	९	७४९
उग्रो राजा मन्यमानो	५.	१९.	६	६२७
उच्चा पतन्तमरुणं	१३.	२.	३६	७३६
उच्चैर्घोषो दुन्दुभिः	५.	२०.	१	६२८
उच्छिष्टे द्यावापृथिवी	११.	७.	२	७१६
उच्छिष्टे नाम रूपं	११.	७.	१	७१६
उच्छुष्मौषधीनां सार	४.	४.	४	६०७
उच्छ्रयस्व बहुर्भव	६.	१४२.	१	६५५
उच्छ्वञ्चमाना पृथिवी	१८.	३.	५१	७६६
उच्छ्वञ्चस्व पृथिवि	१८.	३.	५०	७६६
उज्जायतां परशुर्ज्योतिषा	२०.	१७.	९	७९१
उज्जिहीध्वे स्तनयत्यभि	८.	७.	२१	६७६
उत ग्ना व्यन्तु देवपत्नी	७.	५१.	२	६६१
उत देवा अवहितं	४.	१३.	१	६०९
उत नः सुभगाँ अरि	२०.	६८.	६	८०१
उत नग्ना बोभुवती	५.	७.	८	६२०
उत पुत्रः पितरं	५.	१.	८	६२०
उत प्रहामतिदीवा	७.	५२.	६	६६१
	२०.	८९.	९	८०६
उत ब्रुवन्तु नो निदो	२०.	६८.	५	८०१
उत यत्पतयो दश	५.	१७.	८	६२६
उत यो द्यामतिसर्पा	४.	१६.	४	६११
उत श्वेत आशुपत्वा	२०.	१३५.	८	८१७
उत स्म सद्म हर्यतस्य	२०.	३१.	५	७९४
उत हन्ति पूर्वासिनं	१०.	१.	२७
उतामृतासुर्व्रत एमि	५.	१.	७
उतारब्धान्स्पृणुहि	८.	३.	७
उतासि परिपाणं यातु	४.	९.	३
उतेदानीं भगवन्तः	३.	१६.	४
उतेयं भूमिर्वरुणस्य	४.	१६.	३
उतेव प्रभ्वीरुत	१२.	३.	२७
उतैनां भेदो नाददाद्	१२.	४.	५०
उतैषां पितोत वा	१०.	८.	२८
उतो अस्यबन्धुकृदुतो	४.	१९.	१
उतो नो अस्या उषसो	२०.	७२.	३
उत्कसन्तु हृदयान्यूर्ध्वः	११.	९.	२१
उत्केतुना बृहता देव	१३.	२.	९
उत्क्रामातः परि चेदतप्त	९.	५.	६
उत्क्रामातः पुरुष माव	८.	१.	४
उत्तमेभ्यः स्वाहा	१९.	२२.	१२
उत्तमो अस्योषधीनां	६.	१५.	१
उत्तमो अस्योषधी० नद्यायं	१९.	३९.	४
उत्तमो अस्योषधी० यमैच्छा	८.	५.	११
उत्तमो नाम कुष्ठास्युत्तमो	५.	४.	९
उत्तरं द्विषतो मामयं	१०.	६.	३१
उत्तरं राष्ट्रं प्रजयोत्तरा	१२.	३.	१०
उत्तरस्त्वमधरे ते	४.	२२.	६
उत्तराहमुत्तर उत्तरे	३.	१८.	४
उत्तरेणेव गायत्री	१०.	८.	४१
उत्तरेभ्यः स्वाहा	१९.	२२.	१३
उत्तानपर्णे सुभगे	३.	१८.	२
उत्तानायै शयानायै	२०.	१३३.	४
उत्तिष्ठतमा रभेथा	११.	९.	३
उत्तिष्ठत सं नह्यध्वं	११.	९.	२
उत्तिष्ठत सं नह्यध्व	११.	१०.	१
उत्तिष्ठता प्र तरता	१२.	२.	२७
उत्तिष्ठताव पश्यतेन्द्रस्य	७.	७५.	१
उत्तिष्ठ त्वं० अयं	११.	१०.	५
उत्तिष्ठ त्वं० भञ्जन्	११.	९.	५
उत्तिष्ठन्नोजसा सह	२०.	४२.	३
उत्तिष्ठ प्रेहि प्र द्रवौकः	१८.	३.	८
उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते	१९.	६३.	१
उत्तिष्ठेतः किमिच्छन्ती	१४.	२.	१९
उत्तिष्ठेतो विश्वावसो	१४.	२.	३३

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उत्तुदस्त्वोत्तुदतु मा	३.	२५.	१
उत्ते स्तभ्नामि पृथिवीं	१८.	३.	५२
उत्त्वा द्यौरुत्पृथिव्युत्	८.	१.	१७
उत्त्वा मन्दन्तु स्तोमाः	२०.	९३.	१
उत्त्वा मृत्योरपीपरं	८.	१.	१९
उत्त्वा यज्ञा ब्रह्मपूता	१३.	१.	३६
उत्त्वा वहन्तु मरुत	१८.	२.	२२
उत्त्वाहार्षं पञ्चशलादयो	८.	७.	२८
उत्थापय सीदतो बुध्न	१२.	३.	३०
उत्पुरस्तात्सूर्य एति	५.	२३.	६
उत्समक्षितं व्यचन्ति	४.	२७.	२
उत्सूर्यो दिव एति	६.	५२.	१
उदगातां० प्रेहामृतस्य	६.	१२१.	३
उदगातां० वि क्षेत्रियस्य	२.	८.	१
उदगादयमादित्यो	१७.	१.	२४
उदग्रभं परिपाणा	४.	२०.	८
उदङ् जातो हिमवतः	५.	४.	८
उदन्वती द्यौरवमा	१८.	२.	४८
उदपूरसि मधुपूरसि	१८.	३.	३७
उदप्रुतो न वयो	२०.	१६.	१
उदप्रुतो मरुतस्ताँ	६.	२२.	३
उदरात्ते क्लोम्नो नाभ्या	९.	८.	१२
उदसौ सूर्यो अगादुदिदं	१.	२९.	५
उदस्य केतवो दिवि	१३.	२.	१
उदस्य श्यावौ विथुरौ	७.	१००.	१
उदहृमायुरायुषे क्रत्वे	१८.	२.	२३
उदायुरुद्धलमुत्कृतमुत्	५.	९.	८
उदायुषा समायुषो	३.	३१.	१०
उदितस्त्रयो अक्रमन्	४.	३.	१
उदिद्युदिहि० द्विषंश्च	१७.	१.	६
उदिद्युदिहि० यांश्च	१७.	१.	७
उदिन्वस्य रिच्यतेंशो	२०.	५९.	३
उदिमां मात्रां मिमीमहे	१८.	२.	४३
उदीची दिक्सोमो	३.	२७.	४
उदीचीनैः पथिभिर्वायु	१२.	२.	२९
उदीच्यां त्वा दिशि पुरा	१८.	३.	३३
उदीच्या दिशः शालाया	९.	३.	२८
उदीच्यै त्वा दिशे सोमा	१२.	३.	५८
उदीरतामवर उत्परास	१८.	१.	४४
उदीरय पितरा जार आ	१८.	१.	२३
उदीरयत मरुतः समुद्र	४.	१५.	५
उदीराणा उतासीना	१२.	१.	२८
उदीर्ष्व नार्यभि जीवलोकं	१८.	३.	२
उदुत्तमं वरुण पाश	७.	८८.	३
	१८.	४.	६९
उदु त्यं जातवेदसं	१३.	२.	१६
	२०.	४७.	१३
उदु त्ये मधुमत्तमा	२०.	१०.	१
	२०.	५९.	१
उदुत्सं शतधारं	३.	२४.	४
उदु ब्रह्माण्यैरत	२०.	१२.	१
उदुषा उदु सूर्य	४.	४.	२
उदेणीव वारण्यभि	५.	१४.	११
उदेनं भगो अग्रभी	८.	१.	२
उदेनमुत्तरं नयाग्ने	६.	५.	१
उदेहि वाजिन्यो अप्स्व	१३.	१.	१
उदेहि वेदिं प्रजया	११.	१.	२१
उद्गा आजदङ्गिरोभ्य	२०.	२८.	२
	२०.	३९.	३
उद्घेदभि श्रुतामघं	२०.	७.	१
उद्धर्षन्तां मघवन्	३.	१९.	६
उद्धर्षिणं मुनिकेशं	८.	६.	१७
उद्भिन्दतीं संजयन्ती	४.	३८.	१
उद्यंस्त्वं देव सूर्य	१३.	१.	३२
उद्यच्छध्वमप रक्षो	१४.	१.	५९
उद्यते नम उदायते	१७.	१.	२२
उद्यद्ब्रध्नस्य विष्टपं	२०.	९२.	४
उद्यन्नादित्यः क्रिमीन्	२.	३२.	१
उद्यन्नश्मीना तनुषे	१३.	२.	१०
उद्यानं ते पुरुष	८.	१.	६
उद्योधन्त्यभि वल्गन्ति	१२.	३.	२९
उद्व ऊर्मिः शम्या	१४.	२.	१६
उद्वयं तमसस्परि	७.	५५.	७
उद्वाज आ गन्यो	१३.	१.	२
उद्वेपमाना मनसा	५.	२१.	२
उद्वेपय त्वमर्बुदे	११.	९.	१८
उद्वेपय सं विजन्तां	११.	९.	१२
उन्मादयत मरुत	६.	१३०.	४
उन्मुञ्चन्तीर्विवरुणा	८.	७.	१०
उन्मुञ्च पाशांस्त्वमग्न	६.	११२.	२
उपजीका उद्भरन्ति	२.	३.	४
उपजीका स्थोप	१९.	६९.	२
उप त्वा कर्मन्नूतये	२०.	१४.	२
	२०.	६२.	२
उप त्वा देवो अग्रभी	७.	११५.	३
उप त्वा नमसा वयं	३.	१५.	७
उप द्यामुप वेतस	१८.	३.	५
उप द्रव पयसा गोधु	७.	७७.	६
उप नः सवना गहि	२०.	५७.	२
	२०.	६८.	२
उप नः सुतमा गहि	२०.	२४.	१
उप नो न रमसि	२०.	१२७.	१४
उपप्रवद मण्डूकि	४.	१५.	१४
उप प्रागात्सहस्राक्षो	६.	३७.	१
उप प्रागाद्देवो अग्नी	१.	२८.	१
उप प्रियं पनिप्नतं	७.	३३.	१
उपब्दे पुनर्वो यन्तु	२.	२४.	६
उपमितां प्रतिमिता	९.	३.	१
उप मौदुम्बरो मणिः	१९.	३१.	७
उप श्रेष्ठा न आशिषो	४.	२५.	७
उपश्वसे द्रुवये सीदता	११.	१.	१२
उप श्वासय पृथिवीमुत	६.	१२६.	१
उप सर्प मातरं भूमि	१८.	३.	४९
उप स्तृणीहि प्रथय	१२.	३.	३७
उप स्तृणीहि बल्वज	१४.	२.	२३
उपस्थास्ते अनमीवा	१२.	१.	६२
उप हरति प्रति	९.	६(५).	९
उप हरति हवींष्या	९.	६(२).	३
उपहव्यं विषूवन्तं	११.	७.	१५
उपहूता इह गाव	७.	६२.	५
उपहूता नः पितरः	१८.	३.	४५
उपहूता भूरिधनाः	७.	६२.	४
उपहूतो मे गोपा	१६.	२.	३
उपहूतो वाचस्पति	१.	१.	४
उपहूतौ सयुजौ	६.	१४०.	३
उप ह्वये सुदुघां	७.	७७.	७
	९.	१०.	४
उपावसृज त्मन्या समञ्जन्	५.	१२.	१०
उपास्तरीरकरो लोक	१२.	३.	३८
उपास्मान्प्राणो ह्वयता	१९.	५८.	२
उपाहृतमनुबुद्धं निखातं	१०.	१.	१९
उपेहोपपर्चनास्मिन्	९.	४.	२३
उपैनं विश्वरूपाः सर्वरूपाः	९.	७.	२६
उपो ते बध्वे बद्धानि	१३.	४(४).	१७
उपोत्तमेभ्यः स्वाहा	१९.	२२.	११
उपोहश्च समूहश्च	३.	२४.	७
उभयं शृणवच्च न	२०.	११३.	१
उभयोरग्रभं नामास्मा	१९.	३८.	३
उभा जिग्यथुर्न परा	७.	४५.	१
उभाभ्यां देव सवितः	६.	१९.	३
उभावन्तौ समर्पसि	१३.	२.	१३
उभे नभसी उभयांश्च	१२.	३.	६
उभोभयाविन्नुप धेहि	८.	३.	३
उयं यकांशलोकका	२०.	१३०.	२०
उरुं नो लोकमनु नेषि	१९.	१५.	४
उरुः कोशो वसुधान	११.	२.	११
उरुः पृथुः सुभूर्भुवः	१३.	४(६).	१
उरुः प्रथस्व महता	११.	१.	१९
उरुगूलाया दुहिता	५.	१३.	८
उरुव्यचसाग्नेर्धाम्ना	५.	२७.	८
उरुव्यचा नो महिषः	५.	३.	८
उरूणसावसुतृपा	१८.	२.	१३
उर्वश्च मा चमसश्च	१६.	३.	३
उर्वीरासन्परिधयो	१३.	१.	४६
उलूकयातुं शुशुलूकयातुं	८.	४.	२२
उलूखले मुसले यश्च	१०.	९.	२६
उवे अम्ब सुलाभिके	२०.	१२६.	७
उशतीः कन्यला इमाः	१४.	२.	५२
उशन्तस्त्वेधीमह्युशन्तः	१८.	१.	५६
उशन्ति घा ते अमृतास	१८.	१.	३
उषसे नः परि देहि	१९.	५०.	७
उषस्पतिर्वाचस्पतिना	१६.	६.	६
उषाः पुंश्चली मन्त्रो	१५.	२.	१३
उषा अप स्वसुस्तमः	१९.	१२.	१
उषा देवी वाचा संविदाना	१६.	६.	५
उषो यस्माद्दुष्वप्न्या	१६.	६.	२
उष्ट्रा यस्य प्रवाहणो	२०.	१२७.	२
ऊती शचीवस्तव	२०.	३३.	३
ऊरुभ्यां ते अष्ठीवद्भ्यां	२.	३३.	५
	२०.	९६.	२१

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ऊरू पादावष्टीवन्तौ	११.	८.	१४
ऊर्जं बिभ्रद्वसुवनिः	७.	६२.	१
ऊर्जं एहि स्वध एहि	८.	१०(२).	४
ऊर्जमस्मा ऊर्जस्वती	२.	२९.	५
ऊर्जस्वती पयस्वती	९.	३.	१६
ऊर्जा च वा एष स्फातिं	९.	६(३).	३
ऊर्जे त्वा बलाय त्वा	१९.	३७.	३
ऊर्जो भागो निहितो	११.	१.	१५
ऊर्जो भागो य इमं	१८.	४.	५४
ऊर्ध्वं भरन्तमुदकं	१०.	८.	१४
ऊर्ध्वः सुप्तेषु जागार	११.	४.	२५
ऊर्ध्वस्तिष्ठतु रक्षन्	१९.	४६.	२
ऊर्ध्वस्तिष्ठा न ऊतये	२०.	४५.	३
ऊर्ध्वा अस्य समिधो	५.	२७.	१
ऊर्ध्वा दिग्बृहस्पति	३.	२७.	६
ऊर्ध्वा यस्यामतिर्भा	७.	१५.	२
ऊर्ध्वायां त्वा दिशि पुरा	१८.	३.	३५
ऊर्ध्वाया दिशः शालाया	९.	३.	३०
ऊर्ध्वायै त्वा दिशे	१२.	३.	६०
ऊर्ध्वो नु सृष्टास्तिर्यङ्	१०.	२.	२८
ऊर्ध्वो विन्दुरुदचरद्	१०.	१०.	१९
ऊर्ध्वो रोहितो अधि	१३.	१.	११
ऊर्वोरोजो जङ्घयोर्जवः	१९.	६०.	२
ऋक्साम यजुरुच्छिष्ट	११.	७.	५
ऋक्सामाभ्यामभिहितौ	१४.	१.	११
ऋचं साम यजामहे	७.	५६.	१
ऋचं साम यदप्राक्षं	७.	५७.	१
ऋचः पदं मात्रया	९.	१०.	१९
ऋचः प्राञ्चस्तन्तवो	१५.	३.	६
ऋचः सामानि च्छन्दांसि	११.	७.	२४
ऋचां च वै स साम्नां	१५.	६.	९
ऋचा कपोतं नुदत	६.	२८.	१
ऋचा कुम्भीमध्यग्नौ	९.	५.	५
ऋचा कुम्भ्यधिहिता	११.	३(१).	१४
ऋचो अक्षरे परमे	९.	१०.	१८
ऋजीषी वज्री वृषभ	२०.	१२.	७
ऋणादृणमिव संनयन्	१९.	४५.	१
ऋतं शंसन्त ऋजु	२०.	९१.	२
ऋतं सत्यं तपो राष्ट्रं	११.	७.	१७
ऋतं हस्तावनेजनं	११.	३(१).	१३
ऋतवः पक्तार आर्तवाः	११.	३(१).	१७
ऋतवस्तमबध्नता	१०.	६.	१८
ऋतस्य च वै स	१५.	६.	६
ऋतस्य पन्थामनु तिस्र	८.	९.	१३
ऋतस्य पन्थामनु पश्य	१८.	४.	३
ऋतस्यर्तेनादित्या	६.	११४.	२
ऋतावानं वैश्वानर	६.	३६.	१
ऋतुभिष्ट्वार्तवैरायुषे	५	२८.	१३
	१९.	३७.	४
ऋतुभ्यष्ट्वार्तवेभ्यो माद्भ्यः	३.	१०.	१०
ऋतूनां च वै स आर्तवानां	१५.	६.	१८
ऋतून्ब्रूम ऋतुपती	११.	६.	१७
ऋतून्यज ऋतुपती	३.	१०.	९
ऋतेन गुप्त ऋतुभिश्च	१७.	१.	२९
ऋतेन तष्टा मनसा	११.	१.	२३
ऋतेन स्थूणामधि रोह	३.	१२.	६
ऋधङ्मन्त्रो योनिं य	५.	१.	१
ऋभुरसि जगच्छन्दा	६.	४८.	२
ऋषिभ्यः स्वाहा	१९.	२२.	१४
ऋषीणां प्रस्तरोसि	१६.	२.	६
ऋषी बोधप्रतीबोधाव	५.	३०.	१०
एकं पादं नोत्खिदति	११.	४.	२१
एकं रजस एना परो	५.	११.	६
एकचक्रं वर्तत एकनेमि	१०.	८.	७
एकपदी द्विपदी सा	१३.	१.	४२
एकपाद्० चतुष्पाच्चक्रे	१३.	३.	२५
एकपाद्० द्विपाद्ध	१३.	२.	२७
एकया च दशभिश्चा	७.	४.	१
एकरात्रो द्विरात्रः	११.	७.	१०
एकर्चेभ्यः स्वाहा	१९.	२३.	२०
एकशतं ता जनता	५.	१८.	१२
एकशतं लक्ष्म्यो मर्त्यस्य	७.	१२०.	३
एकशतं विष्कन्धानि	३.	९.	६
एका च मे दश च	५.	१५.	१
एकादशर्चेभ्यः स्वाहा	१९.	२३.	८
एकानृचेभ्यः स्वाहा	१९.	२३.	२२
एकाष्टका तपसा	३.	१०.	१२
एकैकयैषा सृष्ट्या	३.	२८.	१
एको गौरेक एकऋषि	८.	९.	२६
एकोनविंशतिः स्वाहा	१९.	२३.	१६
एको बहूनामसि	४.	३१.	४
एको वो देवोप्यतिष्ठत्	३.	१३.	४
एजदेजदजग्रभं	४.	५.	४
एतं पृच्छ कुहं पृच्छ	२०.	१३०.	५
एतं भागं परि ददामि	६.	१२२.	१
एतं वो युवानं प्रति	९.	४.	२४
एतं सधस्थाः परि	६.	१२३.	१
एत उ त्ये पतयन्ति	८.	४.	२०
एतत्ते तत स्वधा	१८.	४.	७७
एतत्ते ततामह	१८.	४.	७६
एतत्ते देवः सविता	१८.	४.	३१
एतत्ते प्रततामह	१८.	४.	७५
एतत्त्वा वासः प्रथमं	१८.	२.	५७
एतदा रोह वय	१८.	३.	७३
एत देवा दक्षिणतः	११.	६.	१८
एतद्धि शृणु मे वचो	१०.	१.	२८
एतद्वा उ स्वादीयो	९.	६(३).	९
एतद्वै ब्रध्नस्य विष्टत्	११.	३(३).	१
एतद्वै विश्वरूपं	९.	७.	२५
एतद्वो ज्योतिः पितर	९.	५.	११
एतद्वो ब्राह्मणा हवि	१२.	४	४८
एतमिध्मं समाहितं	१०.	६.	३५
एतस्माद्वा ओदनापं	११.	३(३).	३
एता अश्वा आ प्लवन्ते	२०.	१२९.	१
एता एना व्याकरं	७.	१२०.	४
एता देवसेनाः सूर्यकेतवः	५.	२१.	२१
एतास्ते अग्ने समिधः	५.	२९.	१४
एतास्ते अग्ने समिध	१९.	६४.	४
एतास्ते असौ धेनवः	१८.	४.	३३
एतास्त्वाजोप यन्तु	९.	५.	१५
एतु तिस्रः परावत	६.	७५.	३
एते अस्मिन्देवा एकवृतो	१३.	४(१).	१३
एते त इन्द्र जन्तवो	७.	५६.	६
एते वै प्रियाश्चाप्रिया	९.	६(२).	६
एते स्तोमा नरां नृतम	२०.	३७.	१०
एतो न्विन्द्रं स्तवाम	२०.	६५.	१
एतौ ग्रावाणौ सयुजा	११.	१.	९
एदं बर्हिरसदो मेध्यो	१८.	४.	५२
एदु मध्वो मदिन्तरं	२०.	६४.	४
एधोस्येधिषीय समिदसि	७.	९४.	४
एनश्चिपङ्क्तिका हविः	२०.	१३०.	११
एना व्याघ्रं परिषस्वजानाः	४.	८.	७
एनीर्धाना हरिणीः	१८.	४.	३४
एन्द्र नो गधि प्रियः	२०.	६४.	१
एन्द्रवाहो नृपतिं वज्र	२०.	९४.	३
एन्द्र सानसिं रयिं	२०.	७०.	१७
एन्येका श्येन्येका	६.	८३.	२
एभिर्द्युभिः सुमना	२०.	२१.	४
एमं पन्थामरुक्षाम	१४.	२.	८
एमं भज ग्रामे अश्वेषु	४.	२२.	२
एमं यज्ञमनुमतिर्जगाम	७.	२१.	५
एमां कुमारस्तरुण	३.	१२.	७
एमा अगुर्योषितः	११.	१.	१४
एमाशुमाशवे भर	२०.	६८.	७
एमेनं सृजता सुते	२०.	७१.	८
एयमगन्दक्षिणा	१८.	४.	५०
एयमगन्नोपधीनां	४.	३७.	६
एयमगन्पतिकामा	२.	३०.	५
एयमगन्बर्हिषा	५.	२६.	६
एवा ते हारियोजना	२०.	३५.	१६
एवा त्वं देव्याग्ने	१२.	५(७).	४
एवा नूनमुप स्तुहि	२०.	६६.	२
एवानेवाव सा गरत्	१६.	७.	४
एवा पतिं द्रोणसाचं	२०.	९४.	४
एवा पाहि प्रत्नथा	२०.	८.	१
एवा पित्रे विश्वदेवाय	२०.	८८.	६
एवा महान्बृहद्दिवो	५.	२.	९
	२०.	१०७.	१२
एवा रातिस्तुवीमघ	२०.	६०.	२
एवा हि ते विभूतय	२०.	६०.	५
	२०.	७१.	५
एवा ह्यसि वीरयुरेवा	२०.	६०.	१
एवा ह्यस्य काम्या	२०.	६०.	६
	२०.	७१.	६
एवा ह्यस्य सूनृता	२०.	६०.	४
	२०.	७१.	४
एवेदिन्द्रं वृषणं	२०.	१२.	६
एवैवापागपरे सन्तु	२०.	९४.	७
एवो ष्वस्मन्निर्ऋते	६.	८४.	३
एष इषाय मामहे	२०.	१२७.	३

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

एष ते यज्ञो यज्ञपते	७.	१०२.	६
एष यज्ञानां वितनो	४.	३४.	५
एष वा अतिथि	९.	६(३).	७
एष स्य ते तन्वो	२०.	६७.	६
एषा ते कुलपा राजन्	१.	१४.	३
एषा ते राजन्कन्या	१.	१४.	२
एषा त्वचां पुरुषे	१२.	३.	५१
एषा पशून्त्सं क्षिणाति	३.	२८.	२
एषामहं समासीनानां	७.	१३.	३
एषामहमायुधा सं	३.	१९.	५
एषा सनत्नी सनमेव	१०.	८.	३०
एह यन्तु पशवो ये	२.	२६.	१
एह यातु वरुणः सोमो	६.	७३.	१
एहि जीवं त्रायमाणं	४.	९.	१
एह्यश्मानमा तिष्ठाश्मा	२.	१३.	४
ऐतु देवस्त्रायमाणः	१९.	३९.	१
ऐतु प्राण ऐतु मन	५.	३०.	१३
ऐनं निकामो गच्छति	१५.	११.	११
ऐनं प्रियं गच्छति	१५.	११.	७
ऐनं ब्रह्म गच्छति	१५.	१०.	८
ऐनं वशो गच्छति	१५.	११.	९
ऐनं श्रद्धा गच्छत्यैनं	१५.	७.	५
ऐनमापो गच्छत्यैनं	१५.	७.	३
ऐनमिन्द्रियं गच्छती	१५.	१०.	१०
ऐनान्यतामिन्द्राग्नी	६.	१०४.	३
ऐन्द्राग्नं पावमानं	११.	७.	६
ऐन्द्राग्नं वर्म बहुलं	८.	५.	१९
ऐभिरग्ने सरथं	२०.	१३.	४
ऐषां यज्ञमुत वर्चो	१.	९.	४
ऐषु नह्य वृषाजिनं	६.	६७.	३
ओको अस्य मूजवन्त	५.	२२.	५
ओ चित्सखायं सख्या	१८.	१.	१
ओजश्च तेजश्च सहश्च	१२.	५(२).	१
ओजस्तदस्य तित्विष	२०.	१०७.	२
ओजोस्योजो मे	२.	१७.	१
ओता आपः कर्मण्या	६.	२३.	२
ओते मे० इन्द्रश्चाग्निश्च	५.	२३.	१
ओते मे० इन्द्रश्चाग्निश्चर्ष्या	६.	९४.	३
ओदन एवौदनं प्राशीत्	११.	३(१).	३१
ओदनेन यज्ञवचः	११.	३(१).	१९
ओष दर्भ सपत्नान्मे	१९.	२९.	७
ओषधयो भूतभव्य	११.	५.	२०
ओषधीनामहं वृण	१०.	४.	२१
ओषधीभिरन्नादीभि	१५.	१४.	१२
ओषधीरेव रथन्तरेण	८.	१०(२).	७
ओषधीरेवास्मै रथन्तरं	८.	१०(२).	९
अं न्ती समोषन्ती	१२.	५(६).	८
आदुम्बरेण मणिना	१९.	३१.	१
कः कार्ष्ण्याः पयः	२०.	१३०.	४
कः पृश्निं धेनुं वरुणेन	७.	१०९.	१
कः सप्त खानि वि	१०.	२.	६
क इदं कस्मा अदात्	३.	२९.	७
क ईं वेद सुते सचा	२०.	५३.	१
	२०.	५७.	११
क एषां कर्करी लिखत्	२०.	१३२.	८
क एषां दुन्दुभिं हनत्	२०.	१३२.	९
कण्वः कक्षीवान्पुरुमीढो	१८.	३.	१५
कण्वा इन्द्रं यदक्रत	२०.	१३८.	३
कण्वा इव भृगवः	२०.	१०.	२
	२०.	५९.	२
कण्वेभिर्धृष्णवा धृषद्	२०.	५२.	३
	२०.	५७.	१६
कतरत्त आ हराणि	२०.	१२७.	९
कति देवाः कतमे त	१०.	२.	४
कति नु वशा नारद	१२.	४.	४३
कथं गायत्री त्रिवृतं	८.	९.	२०
कथं महे असुराया	५.	११.	१
कथं वातो नेलयति	१०.	७.	३७
कदा मर्तमराधसं	२०.	६३.	५
कदु द्युम्नमिन्द्र त्वावतो	२०.	७६.	४
कदु स्तुवन्त ऋतयन्त	२०.	५०.	२
कदू न्वस्याकृतमिन्द्र	२०.	९७.	३
कन्नव्यो अतसीनां	२०.	५०.	१
कपृन्नरः कपृथमुद्	२०.	१३७.	२
कबु फलीकरणाः	११.	३(१).	६
कया नश्चित्र आ भुव	२०.	१२४.	१
करम्भं कृत्वा तिर्यं	४.	७.	३
करीषिणी फलवतीं	१९.	३१.	३
कर्करिको निखातकः	२०.	१३२.	३
कर्णाभ्यां ते कङ्कूपेभ्यः	९.	८.	२
कर्णा श्वावित्तदब्रवीद्	५.	१३.	९
कर्शफस्य विशफस्य	३.	९.	१
कर्षेदेनं न चैनं	१५.	१३.	१२
कल्याणि सर्वविदे मा	६.	१०७.	४
कविर्न निण्यं विदथानि	२०.	७७.	३
कश्यपस्त्वामसृजत	८.	५.	१४
कश्यपस्य चक्षुरसि	४.	२०.	७
कस्तं प्र वेद क उ तं	९.	१.	६
कस्ते मद इन्द्र रन्त्यो	२०.	७६.	३
कस्त्वा सत्यो मदानां	२०.	१२४.	२
कस्मादङ्गादीप्यते	१०.	७.	२
कस्मान्नु गुल्फावधरा	१०.	२.	२
कस्मिन्नङ्गे तपो अस्याधि	१०.	७.	१
कस्मिन्नङ्गे तिष्ठति	१०.	७.	३
कस्ये मृजाना अति	१८.	३.	१७
कामस्तदग्रे समवर्तत	१९.	५२.	१
कामस्येन्द्रस्य वरुणस्य	९.	२.	६
कामेन मा काम आगन्	१९.	५२.	४
कामो जज्ञे प्रथमो नैनं	९.	२.	१९
कालः प्रजा असृजत	१९.	५३.	१०
कालादापः समभवन्	१९.	५४.	१
काले तपः काले ज्येष्ठं	१९.	५३.	८
कालेन वातः पवते	१९.	५४.	२
काले मनः काले प्राणः	१९.	५३.	७
कालेयमङ्गिरा देवो	१९.	५४.	५
कालो अश्वो वहति	१९.	५३.	१
कालो भूतिमसृजत	१९.	५३.	६
कालोमूं दिवमजनयन्	१९.	५३.	५
कालो यज्ञं समैरयद्	१९.	५४.	४
कालो ह भूतं भव्यं च	१९.	५४.	३
किं भ्रातासद्यदनाथं	१८.	१.	१२
किं सुबाहो स्वङ्गुरे	२०.	१२६.	८
किं स्विन्नो राजा जगृहे	१८.	१.	३३
किमङ्ग त्वा मघवन्	२०.	८९.	३
किमयं त्वां वृषाकपि	२०.	१२६.	३
कियता स्कम्भः प्र विवेश	१०.	७.	९
किलासं च पलितं च	१.	२३.	२
कीर्तिं च वा एष	९.	६(३).	५
कीर्तिश्च यशश्च पुरःसरा	१५.	२.	८
	१५.	२.	२८
कीर्तिश्च यशश्चाम्भश्च	१३.	४(२).	१
कुतः केशान्कुतः स्नाव	११.	८.	१२
कुत इन्द्रः कुतः सोमः	११.	८.	८
कुतस्तौ जातौ कतमः	८.	९.	१
कुम्भीका दूषीकाः	१६.	६.	८
कुलायं कृणवादिति	२०.	१३२.	५
कुलायेधि कुलायं	९.	३.	२०
कुवित्सस्य प्र हि व्रजं	२०.	७८.	३
कुविदङ्ग यवमन्तो	२०.	१२५.	२
कुहाकं पक्वकं पृच्छ	२०.	१३०.	६
कुहूं देवीं सुकृतं	७.	४९.	१
कुहूर्देवानाममृतस्य	७.	४९.	२
कूटयास्य सं शीर्यन्ते	१२.	४.	३
कृणुत धूमं वृषणः	११.	१.	२
कृणोमि ते प्राजापत्य	३.	२३.	५
कृणोमि ते प्राणापानौ	८.	२.	११
कृतं न श्वघ्नी वि चिनोति	२०.	१७.	५
कृतं मे दक्षिणे हस्ते	७.	५२.	८
कृतव्यधनि विध्य	५.	१४.	९
कृत्याः सन्तु कृत्या	५.	१४.	५
कृत्याकृतं वलगिनं	५.	३१.	१२
कृत्याकृतो वलगिनो	१०.	१.	३१
कृत्यादूषण एवायमथो	१९.	३४.	४
कृत्यादूषिरयं मणिरयो	२.	४.	६
कृत्रिमः कङ्कतः शत	१४.	२.	६८
कृन्त दर्भ सपत्नान्मे	१९.	२८.	८
कृष्णं नियानं० सदनादृतस्य	१३.	३.	९
कृष्णं नियानं० सदनादृतस्या	६.	२२.	१
	९.	१०.	२२
कृष्णायाः पुत्रो अर्जुनो	१३.	३.	२६
केतुं कृण्वन्नकेतवे	२०.	२६.	६
	२०.	४७.	१२
	२०.	६९.	११
केन देवाँ अनु क्षियति	१०.	२.	२२
केन पर्जन्यमन्वेति	१०.	२.	१९
केन पार्ष्णी आभृते	१०.	२.	१
केन श्रोत्रियमाप्नोति	१०.	२.	२०
केनापो अन्वतनुत	१०.	२.	१६
केनेमां भूमिमौर्णोत्	१०.	२.	१८
केनेयं भूमिर्विहिता	१०.	२.	२४

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

केवलीन्द्राय दुदुहे	८.	९.	२४
कैरात पृश्न उपतृण्य	५.	१३.	५
कैरातिका कुमारिका	१०.	४.	१४
को अद्य युङ्क्ते धुरि	१८.	१.	६
को अर्जुन्याः पयः	२०.	१३०.	३
को अयं बहुलिमा	२०.	१३०.	१
को असिद्याः पयः	२०.	१३०.	२
को अस्मिन्नापो व्यदधाद्	१०.	२.	११
को अस्मिन्प्राणमवयन्	१०.	२.	१३
को अस्मिन्यज्ञमदधादेको	१०.	२.	१४
को अस्मिन्रूपमदधान्	१०.	२.	१२
को अस्मिन्रेतो न्यदधान्	१०.	२.	१७
को अस्मै वासः पर्यदधान्	१०.	२.	१५
को अस्य बाहू समभरद्	१०.	२.	५
को अस्य वेद प्रथम	१८.	१.	७
को अस्या नो द्रुहो	७.	१०८.	१
को ददर्श प्रथमं जायमान	९.	९.	४
को नु गौः क एकऋषिः	८.	९.	२५
को वामद्या करते	२०.	१४३.	३
को विराजो मिथुनत्वं	८.	९.	१०
कोशं दुहन्ति कलशं	१८.	४.	३०
कोशबिले रजनि	२०.	१३५.	२
क्रन्दाय ते प्राणाय	११.	२.	३
क्रमध्वमग्निना नाक	४.	१४.	२
क्रव्यादमग्निं प्र हिणोमि	१२.	२.	८
क्रव्यादमग्निं शशमान	१२.	२.	१०
क्रव्यादमग्निमिषितो	१२.	२.	९
क्रव्यादमग्ने रुधिरं	५.	२९.	१०
क्रव्यादानुवर्तयन्	११.	१०.	१८
क्रूरमस्या आशसनं	५.	१९.	५
क्रोड आसीज्जामिशंसस्य	९.	४.	१५
क्रोडौ ते स्तां पुरोडाशा	१०.	९.	२५
क्रोधो वृक्कौ मन्युराण्डो	९.	७.	१३
क्लीबं कृध्योपशिनमथो	६.	१३८.	२
क्लीब क्लीबं त्वाकरं	६.	१३८.	३
क्व प्रेप्सन्ती युवती	१०.	७.	६
क्व प्रेप्सन्दीप्यत ऊर्ध्वो	१०.	७.	४
क्वार्धमासाः क्व यन्ति	१०.	७.	५
क्वाहतं परास्यः	२०.	१२९.	६
क्षत्रेणाग्ने स्वेन सं	२.	६.	४
क्षिप्रं वै तस्य पृच्छन्ति	१२.	५(६).	४
क्षिप्रं वै तस्य वास्तुषु	१२.	५(६).	३
क्षिप्रं वै तस्यादहनं	१२.	५(६).	२
क्षिप्रं वै तस्याहनने	१२.	५(६).	१
क्षीरे मा मन्थे यतमो	५.	२९.	७
क्षुत्कुक्षिरिरा वनिष्ठुः	९.	७.	१२
क्षुद्रेभ्यः स्वाहा	१९.	२२.	६
	१९.	२३.	२१
क्षुधामारं तृण्णामार	४.	१७.	६
क्षुरपविरीक्षमाणा	१२.	५(३).	९
क्षुरपविर्मृत्युर्भूत्वा	१२.	५(६).	९
क्षेत्रियात्त्वा निर्ऋत्या	२.	१०.	१
खट्वरेधिचङ्कमां खर्विकां	११.	९.	१६
खण्वखाइ खैमखाइ	४.	१५.	१५
खलः पात्रं स्फ्यावंसा	११.	३(१).	९
खे रथस्य खेनसः खे	१४.	१.	४१
गणास्त्वोप गायन्तु	४.	१५.	४
गणेभ्यः स्वाहा	१९.	२२.	१६
गन्धर्वाप्सरसः सर्पान्	८	८.	१५
गन्धर्वाप्सरसो ब्रूमो	११.	६.	४
गन्धारिभ्यो मूजवद्भ्यो	५.	२२.	१४
गमन्नस्मे वसून्या हि	२०.	९४.	५
गर्भं ते मित्रावरुणौ	५.	२५.	४
गर्भं धेहि सिनीवालि	५.	२५.	३
गर्भे नु नौ जनिता	१८.	१.	५
गर्भो० वनस्पतीनाम्	५.	२५.	७
गर्भो० हिमवतामुत	६.	९५.	३
गायत्रेण प्रति मिमीते	९.	१०.	२
गायत्र्युष्णिगनुष्टुब्	१९.	२१.	१.
गावः सन्तु प्रजाः सन्त्वथो	९.	४.	२०
गावो भगो गाव इन्द्रो	४.	२१.	५
गिरयस्ते पर्वता हिमवन्तो	१२.	१.	११
गिरा वज्रो न संभृतः	२०.	४७.	३
	२०.	१३७.	१४
गिरावरगराटेषु	६.	६९.	१
गिरिमेनाँ आ वेशय	२.	२५.	४
गिरीँरज्रान्रेजमानाँ	२०.	९४.	८
गिर्वणः पाहि नः सुतं	२०.	६.	६
गीर्भिरूर्ध्वान्कल्पयित्वा	१३.	१.	५४
गुदा आसन्त्सिनीवाल्याः	९.	४.	१५
गृहमेधी गृहपतिर्भवति	८.	१०(१).	३
गृहाण ग्रावाणौ सकृतौ	११.	१.	१०
गृह्णामि ते सौभगत्वाय	१४.	१.	५०
गोभिष्टरेमामतिं० विश्वाम्	२०.	१७.	१०
	२०.	९४.	१०
गोभिष्टरेमामतिं० विश्वे	७.	५२.	७
	२०.	८९.	१०
गोभिष्ट्वा पात्वृषभो	१९.	२७.	१
गोभ्यो अश्वेभ्यो नमो	९.	३.	१३
गोसनिं वाचमुदेयं	३.	२०.	१०
गौरमीमेदभि वत्सं	९.	१०.	६
गौरिन्मिमाय सलिलानि	९.	१०.	२१
गौरेव तान्हन्यमाना	५.	१८.	११
ग्रामणीरसि ग्रामणी	१९.	३१.	१२
ग्राहिं पाप्मानमति ताँ	१२.	३.	१८
ग्राह्या गृहाः सं सृज्यन्ते	१२.	२.	३९
ग्रीवाभ्यस्त उष्णिहाभ्यः	२.	३३.	२
	२०.	९६.	१८
ग्रीवास्ते कृत्ये पादौ	१०.	१.	२१
ग्रीष्मस्ते भूमे वर्षाणि	१२.	१.	३६
ग्रीष्मो हेमन्तः शिशिरो	६.	५५.	२
ग्रैष्मावेनं मासौ दक्षिणाया	१५.	४.	६
ग्रैष्मौ मासौ गोप्तारा	१५.	४.	५
घर्मः समिद्धो अग्निना	८.	८.	१७
घर्म इवाभितपन्दर्भ	१९.	२८.	३
घृतं ते अग्ने दिव्ये	७.	८७.	६
घृतं प्रोक्षन्ती सुभगा	१०.	९.	११
घृतमप्सराभ्यो वह	७.	१०४.	२
घृतस्य भृतिः समनाः	१९.	५८.	१
घृतह्रदा मधुकूलाः	४.	३४.	६
घृतादुल्लुप्तं मधुना	५.	२८.	१४
घृतादुल्लुप्तो० भूमिर्दृंहो	१९.	३३.	२
घृतादुल्लुप्तो० सहस्र	१९.	४६.	६
घृतेन त्वा समुक्षाम्यग्न	१९.	२७.	५
घृतेन सीता मधुना	३.	१७.	९
घोरा ऋषयो नमो	२.	३५.	४
चक्षुः श्रोत्रं यशो	११.	५.	२५
चक्षुरसि चक्षुर्मे दाः	२.	१७.	६
चक्षुर्मुसलं काम	११.	३(१).	३
चक्षुषा ते चक्षुर्हन्मि	५.	१३.	४
चक्षुषो हेते मनसो	५.	६.	९
चतस्रश्च मे चत्वारिंशच्च	५.	१५.	४
चतस्रो दिवः प्रदिश	१.	११.	२
चतुरः कुम्भांश्चतुर्धा	४.	३४.	७
चतुर्दंष्ट्राञ्छ्यावदतः	११.	९.	१७
चतुर्दशर्चेभ्यः स्वाहा	१९.	२३.	११
चतुर्धा रेतो अभवद्	१०.	१०.	२९
चतुर्नमो अष्टकृत्वो	११.	२.	९
चतुर्वीरं वध्यत आञ्जन	१९.	४५.	४
चतुर्होतार आप्रियश्चातु	११.	७.	१९
चतुष्टयं युज्यते संहितान्तं	१०.	२.	३
चतूरात्रः पञ्चरात्रः	११.	७.	११
चत्वारि वाक्परिमिता	९.	१०.	२७
चन्द्रमा अप्स्वन्तरा	१८.	४.	८९
चन्द्रमा नक्षत्राणामधिपतिः	५.	२४.	१०
चन्द्रमा नक्षत्रैरुदक्रामत्	१९.	१९.	४
चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः	१९.	६.	७
चन्द्र यत्ते तपस्तेन	२.	२२.	१
चन्द्र यत्ते तेजस्तेन	२.	२२.	५
चन्द्र यत्तेर्चिस्तेन	२.	२२.	३
चन्द्र यत्ते शोचिस्तेन	२.	२२.	४
चन्द्र यत्ते हरस्तेन	२.	२२.	२
चरुं पञ्चबिलमुखं	११.	३(१).	१८
चरेदेवा त्रैहायणा	१२.	४.	१६
चित्तिरा उपबर्हणं	१४.	१.	६
चित्रं देवानां केतुरनीकं	१३.	२.	३४
	२०.	१०७.	१३
चित्रं देवानामुदगादनीकं	१३.	२.	३५
	२०.	१०७.	१४
चित्रश्चिकित्वान्महिषः	१३.	२.	३२
चित्राणि साकं दिवि	१९.	७.	१
चेतो हृदयं यकृन्मेधा	९.	७.	११
च्युता चेयं बृहत्यच्युता	९.	२.	१५
छन्दःपक्षे उषसा	८.	९.	१२
छन्दांसि यज्ञे मरुतः	५.	२६.	५
छिनत्त्यस्य पितृबन्धु	१२.	५(५).	५
छिन्धि दर्भ सपत्नान्मे	१९.	२८.	६
छिन्ध्या च्छिन्धि प्र	१२.	५(६).	५
जगता सिन्धुं दिव्यस्कभा	९.	१०.	३
जङ्गिडोसि जङ्गिडो	१९.	३४.	१

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जङ्गिडो जम्भाद्विशरा	२.	४.	२
जज्ञानः सोमं सहसे	२०.	८७.	३
जनं बिभ्रती बहुधा	१२.	१.	४५
जनाद्विश्वजनीनात्	७.	४६.	१
जनाय चिद्य ईवत	२०.	९०.	२
जनिग्रीव प्रति हर्यासि	१२.	३.	२३
जनियन्ति नावग्रवः	१४.	२.	७२
जरां सु गच्छ परि	१९.	२४.	५
जरायुजः प्रथम उस्रियो	१.	१२.	१
जरायै त्वा परि ददामि	३.	११.	७
जवस्ते अर्वन्निहितो	६.	९२.	२
जहि त्वं काम मम ये	९.	२.	१०
जहि दर्भ सपत्नान्मे	१९.	२९.	९
जाग्रद्दुष्वप्न्यं स्वप्ने	१६.	६.	९
जातवेदो नि वर्तय	६.	७७.	३
जातो व्यख्यत्पित्रो	२०.	३४.	१६
जानीत स्मैनं परमे	६.	१२३.	२
जायमानाभि जायते	१२.	४.	१०
जाया इद्वो अप्सरसो	४.	३७.	१२
जालाषेणाभि षिञ्चत	६.	५७.	२
जितमस्माक० मभ्यष्ठां	१६.	९.	१
जितमस्माक० मभ्यष्ठां० इदमह	१०.	५.	३६
जितमस्माक० मृतमस्माकं	१६.	८.	१
	१६.	८.	३०
जितमस्माक० स आङ्गिरसानां	१६.	८.	१५
जितमस्माक० स आथर्वणानां	१६.	८.	१७
जितमस्माक० स आर्तवानां	१६.	८.	२१
जितमस्माक० स आर्षेयाणां	१६.	८.	१३
जितमस्माक० स इन्द्राग्न्योः	१६.	८.	२७
जितमस्माक० स ऋतूनां	१६.	८.	२०
जितमस्माक० स ऋषीणां	१६.	८.	१२
जितमस्माक० स देवजामीनां	१६.	८.	९
जितमस्माक० स द्यावापृथिव्योः	१६.	८.	२६
जितमस्माक० स निर्ऋत्याः	१६.	८.	५
जितमस्माक० स निर्भूत्याः	१६.	८.	७
जितमस्माक० स पराभूत्याः	१६.	८.	८
जितमस्माक० स प्रजापतेः	१६.	८.	११
जितमस्माक० स बृहस्पतेः	१६.	८.	१०
जितमस्माक० स मासानां	१६.	८.	२२
जितमस्माक० स मित्रावरुणयोः	१६.	८.	२८
जितमस्माक० स राज्ञो	१६.	८.	२९
जितमस्माक० स वनस्पतीनां	१६.	८.	१८
जितमस्माक० स वानस्पत्यानां	१६.	८.	१९
जितमस्माक० सोङ्गिरसां	१६.	८.	१४
जितमस्माक० सोथर्वणां	१६.	८.	१६
जितमस्माक० सोभूत्याः	१६.	८.	६
जितमस्माक० सोर्धमासानां	१६.	८.	२३
जितमस्माक० सोहोरात्रयोः	१६.	८.	२४
जितमस्माक० सोह्नोः	१६.	८.	२५
जिह्वा ज्या भवति	५.	१८.	८
जिह्वाया अग्रे मधु	१.	३४.	२
जीवं रुदन्ति वि नय	१४.	१.	४६
जीवतां ज्योतिरभ्ये	८.	२.	२
जीवलां० अरुन्धती	८.	७.	६
जीवलां० त्रायमाणां	८.	२.	६
जीवला नाम ते माता	१९.	३९.	३
जीवला स्य जीव्यासं	१९.	६९.	४
जीवानामायुः प्र तिर	१२.	२.	४५
जीवा स्य जीव्यासं	१९.	६९.	१
जीवेभ्यस्त्वा समुदे	८.	१.	१५
जीवेम शरदः शतम्	१९.	६७.	२
जुष्टो दमूना अतिथि	७.	७७.	९
जुहूर्दाधार द्यामुप	१८.	४.	५
जूर्णि पुनर्वो यन्तु	२.	२४.	५
ज्याके परि णो नमा	१.	२.	२
ज्यायोपा दुन्दुभयो	५.	२१.	९
ज्यायस्वन्तश्चित्तिनो	३.	३०.	५
ज्यायान्निमिषतोसि	९.	२.	२३
ज्येष्ठघ्न्यां जातो विचृतो	६.	११०.	२
ज्योतिष्मतो लोकाञ्जयति	९.	६(६).	१४
तं घेमित्या नमस्विन	२०.	९२.	१४
तं जहि तेन मन्दस्व	१६.	७.	१२
तं ते मदं गृणीमसि	२०.	६१.	१
तं त्वा वाजेषु वाजिनं	२०.	६८.	९
तं त्वा स्वप्न विद्म० स त्वं	१९.	५७.	४
तं त्वा स्वप्न विद्म० स नः	१६.	५.	३
	१६.	५.	१०
तं त्वौदनस्य पृच्छामि	११.	३(१).	२२
तं दितिश्चादितिश्चेडा	१५.	६.	२०
तं धाता प्रत्यमुञ्चत	१०.	६.	२१
तं पुण्यं गन्धं गन्धर्वा	८.	१०(५).	८
तं पृच्छन्ती वज्रहस्तं	२०.	३६.	५
तं प्रजापतिश्च० पितामहश्चानु	१५.	६.	२५
तं प्रजापतिश्च० पितामहश्चाप	१५.	७.	२
तं बृहच्च रथन्तरं	१५.	२.	२
तं भूमिश्चाग्निश्चौषधयश्च	१५.	६.	२
तं यज्ञं प्रावृषा प्रौक्षन्	१९.	६.	११
तं यज्ञायज्ञियं च	१५.	२.	१०
तं वत्सा उप तिष्ठन्त्येक	१३.	४(१).	६
तं वर्धयन्तो मतिभिः	२०.	९१.	९
तं वां रथं वयमद्या	२०.	१४३.	१
तं वृक्षा अप सेधन्ति	५.	१९.	९
तं वैरूपं च वैराजं	१५.	२.	१६
तं वो दस्ममृतीषहं	२०.	९.	१
	२०.	४९.	४
तं वो धिया नव्यस्या	२०.	३६.	७
तं वो वाजानां पति	२०.	६४.	६
तं श्यैतं च नौधसं	१५.	२.	२२
तं श्रद्धा च यज्ञश्च	१५.	७.	४
तं सभा च समितिश्च	१५.	९.	२
तं समाप्नोति जूतिभि	१३.	२.	१५
तं सुष्टुत्या विवासे	२०.	४४.	३
तं हि स्वराजं वृषभं	२०.	११३.	२
तक्मन्भ्रात्रा बलासेन	५.	२२.	१२
तक्मन्मूजवतो गच्छ	५.	२२.	७
तक्मन्व्याल वि गद	५.	२२.	६
ततं तन्तुमन्वेके तरन्ति	६.	१२२.	२
ततश्चैनमन्यया जिह्वया	११.	३(२).	५
ततश्चैनमन्यया प्रतिष्ठया	११.	३(२).	१८
ततश्चैनमन्याभ्यां पादाभ्यां	२१.	३(२).	१५
ततश्चैनमन्याभ्यां प्रपदाभ्यां	११.	३(२).	१६
ततश्चैनमन्याभ्यां श्रोत्राभ्यां	१२.	३(२).	२
ततश्चैनमन्याभ्यां हस्ताभ्यां	११.	३(२).	१७
ततश्चैनमन्याभ्यामक्षीभ्यां	१९.	३(२).	३
ततश्चैनमन्याभ्यामष्ठीवद्भ्यां	११.	३(२).	१४
ततश्चैनमन्याभ्यामूरुभ्यां	११.	३(२).	१३
ततश्चैनमन्येन पृष्ठेन	११.	३(२).	९
ततश्चैनमन्येन मुखेन	११.	३(२).	४
ततश्चैनमन्येन वस्तिना	११.	३(२).	१२
ततश्चैनमन्येन व्यचसा	११.	३(२).	८
ततश्चैनमन्येन शीर्ष्णा	११.	३(२).	१
ततश्चैनमन्येनोदरेण	११.	३(२).	११
ततश्चैनमन्येनोरसा	११.	३(२).	१०
ततश्चैनमन्यैः प्राणापानैः	११.	३(२).	७
ततश्चैनमन्यैर्दन्तैः प्राशी	१२.	३(२).	६
ततस्ततामहास्ते मावन्तु	५.	२४.	१७
तता अवरे ते मावन्तु	५.	२४.	१६
तत्त्वा यामि सुवीर्यं	२०.	९.	३
	२०.	४९.	६
तत्सूर्यस्य देवत्वं	२०.	१२३.	१
तथा तदग्ने कृणु	५.	२९.	२
तदग्निराह० पूषा	१६.	९.	२
तदग्निराह० बृहस्पतिः	८.	५.	५
तदग्ने चक्षुः प्रति धेहि	८.	३.	२१
तदद्या चित्त उक्थिनो	२०.	६१.	३
तदमुष्मा अग्ने देवाः	१६.	६.	११
तदस्तु मित्रावरुणा	१९.	११.	६
तदिदास भुवनेषु ज्येष्ठं	५.	२.	१
	२०.	१०७.	४
तदू षु ते महत्पृथुज्म	५.	१.	५
तदेकमभवत्तल्ललाम	१५.	१.	३
तद्ब्रह्म च तपश्च सप्त	८.	१०(४).	१६
तद्भद्राः समगच्छन्त	१०.	१०.	१७
तद्यस्मा एवं विदुषे	८.	१०(६).	१
तद्यस्यैवं विद्वान्व्रात्य उद्धृते	१५.	१२.	१
तद्यस्यैवं विद्वान्व्रात्य एफां	१५.	१३.	१
तद्यस्यैवं विद्वान्व्रात्यश्चतुर्थी	१५.	१३.	७
तद्यस्यैवं विद्वान्व्रात्यस्तृतीयां	१५.	१३.	५
तद्यस्यैवं विद्वान्व्रात्योतिथि	१५.	११.	१
तद्यस्यैवं विद्वान्व्रात्यो द्वितीयां	१५.	१३.	३
तद्यस्यैवं विद्वान्व्रात्यो परि	१५.	१३.	९
तद्यस्यैवं विद्वान्व्रात्यो राज्ञो	१५.	१०.	१
तद्वा अथर्वणः शिरो	१०.	२.	२७
तद्वात उन्मथायति	२०.	१३२.	४
तद्विषं सर्पा उप	८.	१०(५).	१६
तद्विष्णोः परमं पदं	७.	२७.	७
तद्वै राष्ट्रमा स्रवति	५.	१९.	८
तद्वो गाय सुते सचा	२०.	७८.	१
तनूनपात्पथ ऋतस्य	५.	१२.	२
तनूष्टे वाजिन्तन्वं	६.	९२.	३

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तनूस्तन्वा मे सहे १९. ६१. १
तन्त्रमेके युवती १०. ७. ४२
तन्त्रस्तुरीपमद्भुतं ५. २७. १०
तन्नो वि वोचो यदि २०. ३६. ४
तन्मित्रस्य वरुणस्या २०. १२३. २
तन्वं स्वर्गो बहुधा वि १२. ३. ५४
तपनो अस्मि पिशाचानां ४. ३६. ६
तपश्चैवास्तां० त आसं ११. ८. २
तपश्चैवास्तां० तपो ह ११. ८. ६
तपसा ये अनाधृष्या १८. २. १६
तमो यां धर्मो नक्षतु ७. ७७. ५
तमाहवनीयश्च गार्हपत्यश्च १५. ६. १४
तमितिहासश्च पुराणं १५. ६. ११
तमिदं निगतं सहः १३. ४(१). १२
तमिदं निगतं सहः० य एतं १३. ४(२). ७
तमिन्द्रं जोहवीमि मघवा २०. ५५. १
तमिन्द्रं वाजयामसि २०. ४७. १
२०. १३७. १२
तमिन्द्र मदमा गहि २०. २४. २
तमिमं देवता मणिं १०. ६. २९
तमीमह इन्द्रमस्य २०. ३६. ३
तमु नः पूर्वे पितरो २०. ३६. २
तमु ष्टुहि यो अन्तः ६. १. २
तमृचश्च सामानि च १५. ६. ८
तमृतं च सत्यं च १५. ६. ५
तमृतवश्चार्तवाश्च १५. ६. १७
तम्बभि प्र गायत २०. ६१. ४
२०. ६२. ८
तयार्बुदे प्रणुत्ताना ११. ९. २०
तयाहं शत्रून्त्साक्ष २. २७. ५
तयोरहं परिवृत्यन्त्यो १०. ७. ४३
तरणिर्विश्वदर्शतो १३. २. १९
२०. ४७. १६
तरी मन्त्रासु प्रथस्व ५. २७. ६
तर्द है पतङ्ग है ६. ५०. २
तर्दापते वधापते ६. ५०. ३
तव चतस्रः प्रदिशस्तव ११. २. १०
तव च्यौत्नानि वज्रहस्त २०. ३७. ५
तव त्यदिन्द्रियं बृहत् २०. १०६. १
तव द्यौरिन्द्र पौंस्यं २०. १०६. २
तव व्रते नि विशन्ते ४. २५. ३
तवेदं विश्वमभितः २०. ८७. ६
तस्तुवं न तस्तुवं ५. १३. ११
तस्मा अभ्रो भवन् ९. ६(५). ६
तस्मा अरं गमाम १. ५. ३
तस्मा उदीच्या दिशः १५. ४. १०
तस्मा उदीच्या दिशो १५. ५. ८
तस्मा उद्यन्त्सूर्यो ९. ६(५). ४
तस्मा उषा हिङ्कृणोति ९. ६(५). १
तस्मा ऊर्ध्याया दिशः १५. ४. १६
तस्मा ऊर्ध्याया दिशो १५. ५. १२
तस्मात्पितृभ्यो मास्युपमा ८. १०(३). ४
तस्मादमुं निर्भजामो १६. ८. २
१६. ८. ३१
तस्मादश्वा अजायन्त १९. ६. १२
तस्मादेवेभ्योर्धमासे ८. १०(३). ६
तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः १९. ६. १४
तस्माद्यज्ञात्सर्वहुत १९. ६. १३
तस्माद्वनस्पतीनां संवत्सरे ८. १०(३). २
तस्माद्वै ब्राह्मणानां १२. ५(३). ६
तस्माद्वै विद्वान्पुरुष ११. ८. ३२
तस्मान्मनुष्येभ्य उभयषु ८. १०(३). ८
तस्मिन्हिरण्यये कोशे १०. २. ३२
तस्मै घृतं सुरां मध्वन्न १०. ६. ५
तस्मै दक्षिणाया दिशः १५. ४. ४
तस्मै दक्षिणाया दिशो १५. ५. ४
तस्मै ध्रुवाया दिशः १५. ४. १३
तस्मै ध्रुवाया दिशो १५. ५. १०
तस्मै प्रतीच्या दिशः १५. ४. ७
तस्मै प्रतीच्या दिशो १५. ५. ६
तस्मै प्राच्या दिशः १५. ४. १
तस्मै प्राच्या दिशो १५. ५. १
तस्मै मात्यायासन्दीं १५. ३. ३
तस्मै सर्वेभ्यो अन्त १५. ५. १४
तस्य अनु निमज्जनम् २०. १३१. २
तस्य देवजनाः परिक्न्दा १५. ३. १०
तस्य प्राशं त्वं जहि २. २७. ७
तस्य वात्यस्य १५. १५. १
१५. १८. १
तस्य० । एकं तदेव CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.
तस्य० । यदादित्य १५. १७. ९
तस्य० । योस्य चतुर्थः १५. १५. ६
तस्य० । योस्य चतुर्थोपानः १५. १६. ४
तस्य० । योस्य चतुर्थो व्यानः १५. १७. ४
तस्य० । योस्य तृतीयः १५. १५. ५
तस्य० । योस्य तृतीयोपानः १५. १६. ३
तस्य० । योस्य तृतीयो व्यानः १५. १७. ३
तस्य० । योस्य द्वितीयः १५. १५. ४
तस्य० । योस्य द्वितीयोपानः १५. १६. २
तस्य० । योस्य द्वितीयो व्यान १५. १७. २
तस्य० । योस्य पञ्चमः १५. १५. ७
तस्य० । योस्य पञ्चमोपानः १५. १६. ५
तस्य० । योस्य पञ्चमो व्यान १५. १७. ५
तस्य० । योस्य प्रथमः १५. १५. ३
तस्य० । योस्य प्रथमोपानः १५. १६. १
तस्य० । योस्य प्रथमो व्यानः १५. १७. १
तस्य० । योस्य षष्ठः १५. १५. ८
तस्य० । योस्य षष्ठोपानः १५. १६. ६
तस्य० । योस्य षष्ठो व्यानः १५. १७. ६
तस्य० । योस्य सप्तमः १५. १५. ९
तस्य० । योस्य सप्तमोपानः १५. १६. ७
तस्य० । योस्य सप्तमो व्यानः १५. १७. ७
तस्य० । समानमर्थ १५. १७. ८
तस्याः कुबेरो वैश्रवणो ८. १०(५). १०
तस्याः सोमो राजा वत्स ८. १०(४). १४
तस्या आहननं कृत्या १२. ५(५). १
तस्या इन्द्रो वत्स आसीद्यमसः ८. १०(५). २
तस्या इन्द्रो वत्स आसीद् ८. १०(२). ५
तस्या ग्रीष्मश्च वसन्तश्च १५. ३. ४
तस्या मनुर्वैवस्वतो ८. १०(४). १०
तस्यामू सर्वा नक्षत्रा १३. ४(३). ७
तस्यामृतस्येमं वलं ८. ७. २२
तस्यामेवास्य तद्देवतायां १५. १३. १४
तस्या यमो राजा वत्स ८. १०(४). ६
तस्या विरोचनः प्राहादि ८. १०(४). २
तस्याश्विनरथः सौर्यवर्चसो ८. १०(५). ६
तस्यास्तक्षको वैशालेयो ८. १०(५). १४
तस्येदं वर्चस्तेजः १६. ८. ४
१६. ८. ३३
तस्येमे सप्त ऋषयः १३. ४(१). १०
तस्येमे सर्वे यातव १३. ४(३). ६
तस्यैष मारुतो गणः १३. ४(१). ८
तस्यौदनस्य बृहस्पतिः ११. ३(१). १
तां तिरोधामितरजना ८. १०(५). १२
तां देवः सविताधोक्त ८. १०(५). ३
तां देवमनुष्या अबुवन् ८. १०(२). २
तां देवा अभीमांसन्त १२. ४. ४२
तां दिमूर्धात्र्योधोक्तां ८. १०(४). ३
तां धृतराष्ट्र ऐरावतो ८. १०(५). १५
तां पूषं शिवतमा. १४. २. ३८
तां पृथी वैन्योधोक्तां ८. १०(४). ११
तां बृहस्पतिरङ्गिरसो ८. १०(४). १५
तां मायामसुरा उप ८. १०(४). ४
तां मे सहस्राक्षो देवो ४. २०. ४
तां रजतनाभिः कार्वेरको ८. १०(५). ११
तां वसुरुचिः सौर्यवर्चसो ८. १०(५). ७
तां सवितः सत्यसवां ७. १६. १
तांस्त्वं प्र चिणिद्धि १०. २. १६
तां स्वधां पितर उप ८. १०(४). ८
तां ह अरितर्नः प्रत्यगृभ्णं २०. १३५. ७
ता अधरादुदीचीरावहन्तून् १२. २. ४१
ता अपः शिवा अपो १९. २. ५
ता अर्षन्ति शुभ्रियः २०. ४८. २
ता अस्य नमसा सहः २०. १०९. ३
ता अस्य वृशनायुवः २०. १०९. २
ता नः प्रजाः सं दुहतां १२. १. १६
तानश्त्य निः शृणीहि ३. ६. २
तानि कल्पद्भूतचारी ११. ५. २६
तानि सर्वाण्यप क्रामन्ति १२. ५(२). ५
तान्त्स्त्यौनाः प्र दह ४. ३६ १
तावुवं न तावुवं न ५. १३. १०
तामन्तको मार्त्यदोधोक्तां ८. १०(४). ७
तामादत्तास्य ब्रह्मगवीं १२. ५(१). ५
तामासन्दीं मात्य आरोहत् १५. ३. ९
तामुपाह्वयन्त ८. १०(२). ३
तामूर्जा देवा उप ८. १०(५). ४
तार्ष्टीषेण समिधः ५. २९. १५
ता वज्रिणं मन्दिनं २०. ३१. १
तावद्दां चक्षुस्तति १२. ३. २
तावन्तो अस्य महिमान १९. ६. ३

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तावांस्ते मघवन्महिमो १३. ४(४). १६
तासामेका हरिक्रिका २०. १२९. ३
तासु त्वान्तर्जरस्या २. १०. ५
तास्ते रक्षन्तु तव ९. ५. ३८
तिग्ममनीकं विदितं ४. २७. ७
तिग्मो विभ्राजन्तन्वं १३. २. ३३
तिरश्चिराजेरसितात् ७. ५८. १
तिर्यग्बिलश्चमस ऊर्ध्वं १०. ८. ९
तिष्ठावरे तिष्ठ पर १. १७. २
तिस्रश्च मे त्रिंशच्च ५. १५. ३
तिस्रो जिह्वा वरुणस्यान्त १०. १०. २८
तिस्रो दिवस्तिस्रः पृथिवीः ४. २०. २
तिस्रो दिवस्तिस्रः पृथिवी १९. २७. ३
तिस्रो दिवो अत्यतृणत् १९. ३२. ४
तिस्रो देवीर्महि नः ५. ३. ७
तिस्रो मातॄस्त्रीन्पितॄन् ९. ९. १०
तिस्रो मात्रा गन्धर्वाणां ३. २४. ६
तिस्रो ह प्रजा अत्यायमा १०. ८. ३
तीक्ष्णीयांसः परशो ३. १९. ४
तीक्ष्णेनाग्ने चक्षुषा ८. ३. ९
तीक्ष्णेषवो ब्राह्मणा ५. १८. ९
तीक्ष्णो राजा विषासही १९. ३३. ४
तीर्थैस्तरन्ति प्रवतो १८. ४. ७
तीव्रस्याभिवयसो २०. ९६. १
तुञ्जेतुञ्जे य उत्तरे २०. ७०. १३
तुभ्यं वातः पवतां ८. १. ५
तुभ्यं सुतास्तुभ्यमु २०. ९६. २
तुभ्यमग्रे पर्यवहन् १४. २. १
तुभ्यमारण्याः पशवो ११. ३. २४
तुभ्यमेव जरिमन् २. २८. १
तुभ्येदिन्द्र स्व ओक्ये २०. २४. ८
तुभ्येदिमा सवना शूर २०. ७३. १
तुरण्यवो मधुमन्तं २०. ११९. २
तुराणामतुराणां ७. ५२. २
तुविग्रीवो वपोदरः २०. ५. २
तृचेभ्यः स्वाहा १९. २३. १९
तृणानि प्राप्तः सोमो ९. ७. २२
तृणैरावृता पलदान् ९. ३. १७
तृतीयकं वितृतीयं ५. २२. १३
तृतीयेभ्यः शङ्खेभ्यः १९. २२. १०
तृन्धि दर्भ सपत्नान्मे १९. २९. २
तृष्टमेतत्कटुकमपा १४. १. २९
तृष्टासि तृष्टिका विपा ७. ११८. २
तृष्टिके तृष्टवन्दन ७. ११८. १
तृष्णामारं क्षुधामार ४. १७. ७
ते कुष्ठिकाः सरमायै ९. ४. १६
ते कृषिं च सस्यं च ८.१०(४). १२
ते त्वा मदा अमदन् २०. २१. ६
ते त्वा मदा इन्द्र २०. १२. ५
ते त्वा रक्षन्तु ते त्वा ८. १. १४
ते देवेभ्य आ वृश्चन्ते १२. २. ५०
तेवराञ्चः० न वैवाध ३. ६. ७
तेवराञ्चः० न सायक ९. २. १२
तेन तमभ्यतिसृजामो १६. १. ५
तेन भूतेन हविषायमा ६. ७८. १
तेनेषितं तेन जातं १९. ५३. ९
तेनैनं विध्याम्यभूत्यैनं १६. ७. १
तेमुष्मै परा वहन्त्व १६. ६. ७
तेवदन्प्रथमा ब्रह्म ५. १७. १
ते वृक्षाः सह तिष्ठति २०. १३१. ११
तेषां न कश्चनाहोता ९. ६(६). ४
तेषां प्रज्ञानाय यज्ञ ११. ३(३). ४
तेषां सर्वेषामीशाना ११. ९. २६
तेषामासन्नानामतिथि ९. ६(२). ४
ते सत्येन मनसा गोपतिं २०. ९१. ८
तैस्त्वा सर्वैरभि ष्यामि ४. १६. ९
तौदी नामासि कन्या १०. ४. २४
तौविलिकेवेलयावाय ६. १६. ३
त्यमू षु वाजिनं देवजूतं ७. ९०. १
त्रपु भस्म हरितं वर्णः ११. ३(१). ८
त्रयः केशिन ऋतुथा ९. १०. २६
त्रयः पोषास्त्रिवृति ५. २८. ३
त्रयः सुपर्णा उपरस्य १८. ४. ४
त्रयः सुपर्णास्त्रिवृता ५. २८. ८
त्रयस्त्रिंशद्देवतास्त्रीणि १९. २७. १०
त्रयोदशर्चेभ्यः स्वाहा १९. २३. १०
त्रयो दासा आञ्जनस्य ४. ९. ८
त्रयो लोकाः संमिता १२. ३. २०
त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रं ७. ९१. १
त्रायध्वं नो अयविषाभ्यो [illegible]
त्रायन्तामिमं देवास्त्रायन्तां ४. १३. ४
त्रायन्तामिमं पुरुषं ८. ७. २
त्रायमाणे विश्वजिते मा ६. १०७. २
त्रिंशद्धामा वि राजति ६. ३१. ३
२०. ४८. ६
त्रिः शाम्बुभ्यो अङ्गिरेभ्यः १९. ३९. ५
त्रिकद्रुकेभिः पवते १८. २. ६
त्रिकद्रुकेषु चेतनं २०. ११०. ३
त्रिकद्रुकेषु महिषो २०. ९५. १
त्रिते देवा अमृज ६. ११३. १
त्रिभिः पद्भिर्द्यामरोहत् १९. ६. २
त्रिर्यातुधानः प्रसितिं ८. ३. ११
त्रिशीर्षाणं त्रिककुदं ५. २३. ९
त्रिषन्धे तमसा त्वममित्रा ११. १०. १९
त्रिषु पात्रेषु तं सोममा १०. १०. १२
त्रिष्ट्वा देवा अजनयन् १९. ३४. ६
त्रीणि च्छन्दांसि कवयो १८. १. १७
त्रीणि ते कुष्ठ नामानि १९. ३९. २
त्रीणि पदानि रुपो १८. ३. ४०
त्रीणि पदा वि चक्रमे ७. २७. ५
त्रीणि वै वशाजातानि १२. ४. ४७
त्रीण्युष्ट्रस्य नामानि २०. १३२. १३
त्रीन्नाकांस्त्रीन्त्समुद्रां १९. २७. ४
त्रेधा जातं जन्मनेदं ५. २८. ६
त्रेधा भागो निहितो ११. १. ५
त्र्यायुषं जमदग्नेः कश्यपस्य ५. २८. ७
त्वं करञ्जमुत पर्णयं २०. २१. ८
त्वं काम सहसासि १९. ५२. २
त्वं तमिन्द्र पर्वतं २०. १५. ६
त्वं तृतं त्वं पर्येष्युत्सं १७. १. २५
त्वंत्वमहर्यथा उपस्तुतः २०. ३०. ५
त्वं दाता प्रथमो राधसा २०. १०४. ४
त्वं धृष्णो धृषता वीत २०. ३७. ३
त्वं न इन्द्र महते १७. १. ९
त्वं न इन्द्रा भरँ ओजो २०. १०८. १
त्वं न इन्द्रोतिभिः १७. १. १०
त्वं नृभिर्नृमणो देव २०. ३७. ४
त्वं नो अग्ने अग्निभि ३. २०. ५
त्वं नो अग्ने अधरा ८. ३. १९
त्वं नो [illegible] ६. ७९. २
त्वं नो मेधे प्रथमा ६. १०८. १
त्वं भूमिमत्येष्योजसा १९. ३३. ३
त्वं मणीनामधिपा १९. ३१. ११
त्वं रक्षसे प्रदिशश्च १७. १. १६
त्वं वर्मासि सप्रथः २०. १८. ६
त्वं वीरुधां श्रेष्ठतमा ६. १३८. १
त्वं वृषाक्षुं मघवन्नम्रं २०. १२८. १३
त्वं सिन्धूँरवासृजो २०. ९५. ३
त्वं सुतस्य पीतये २०. ६९. ४
त्वं स्त्री त्वं पुमानसि १०. ८. २७
त्वं ह त्यत्सप्तभ्यो २०. १३७. १०
त्वं ह त्यदप्रतिमानमोजो २०. १३७. ११
त्वं ह त्यदिन्द्र कुत्स २०. ३७. २
त्वं हि नः पिता वसो २०. १०८. २
त्वं हि मन्यो अभिभूत्योजाः ४. ३२. ४
त्वं हि विश्वतोमुख ४. ३३. ६
त्वं हि शश्वतीनामिन्द्र २०. ६४. ३
त्वं हि स्तोमवर्धन २०. २९. १
त्वं ह्यङ्ग वरुण ब्रवीषि ५. ११. ७
त्वं ह्यङ्ग वरुण स्वधा ५. ११. ५
त्वज्जातास्त्वयि चरन्ति १२. १. १५
त्वमग्न ईडितो जातवेदो १८. ३. ४२
त्वमग्ने क्रतुभिः केतुभि १३. ३. २३
त्वमग्ने यातुधानानुप १. ७. ७
त्वमग्ने व्रतपा असि १९. ५९. १
त्वमसि सहमानोहमस्मि १९. ३२. ५
त्वमस्यावपनी जनाना १२. १. ६१
त्वमाविथ सुश्रवसं २०. २१. १०
त्वमिन्द्र कपोताय २०. १३५. १२
त्वमिन्द्र प्रतूर्तिष्वभि २०. १०५. १
त्वमिन्द्र बलादधि २०. ९३. ५
त्वमिन्द्र शर्मरिणा २०. १३५. ११
त्वमिन्द्र सजोषसमर्क २०. ९३. ७
त्वमिन्द्रस्त्वं महेन्द्रस्त्वं १७. १. १८
त्वमिन्द्राधिराजः श्रवस्यु ६. ९८. २
त्वमिन्द्रा पुरुहूत विश्व १९. ५५. ६
त्वमिन्द्राभिभूरसि २०. ६२. ६
२०. ९३. ८
त्वमिन्दासि विश्वजित् १७. १. ११
त्वमिन्द्रासि वृत्रहा २०. ९३. ६

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

त्वमीशिषे पशूनां	२.	२८.	३
त्वमीशिषे सुतानामिन्द्र	२०.	९३.	३
त्वमेतां जनराज्ञो द्विर्दशा	२०.	२१.	९
त्वमोदनं प्राशीस्त्वामो	११.	३(१).	२७
त्वया पूर्वमथर्वाणो	४.	३७.	१
त्वया प्रमूर्णं मृदित	१२.	५(६).	१५
त्वया मन्यो सरथ	४.	३१.	१
त्वया वयं शाशद्महे	५.	२.	५
	२०.	१०७.	८
त्वया वयमप्सरसो	४.	३७.	२
त्वयि रात्रि वसामसि	१९.	४७.	९
त्वष्टः श्रेष्ठेन रूपेणास्या	५.	२५.	११
त्वष्टा जायामजनयत्	६.	७८.	३
त्वष्टा दुहित्रे० कृणोति	१८.	१.	५३
त्वष्टा दुहित्रे० युनक्तीदं	३.	३१.	५
त्वष्टा मे दैव्यं वचः	६.	४.	१
त्वष्टा युनक्तु बहुधा	५.	२६.	८
त्वष्टा वासो व्यदधाच्छुभं	१४.	१.	५३
त्वां जना ममसत्येष्विन्द्र	२०.	८९.	४
त्वां विशो वृणतां राज्याय	३.	४.	२
त्वां विष्णुर्बृहन्क्षयो	२०.	१०६.	३
त्वां शुष्मिन्पुरुहूत	२०.	१०८.	३
त्वां सुतस्य पीतये	२०.	२४.	९
त्वां स्तोमा अवीवृधन्	२०.	६९.	६
त्वामग्ने वृणते ब्राह्मणा	२.	६.	३
त्वामाहुर्देववर्म त्वां	१९.	३०.	३
त्वामिद्धि हवामहे	२०.	९८.	१
त्वामिन्द्र ब्रह्मणा	१७.	१.	१४
त्वामुग्रमवसे चर्षणी	२०.	८०.	२
त्वाष्ट्रेणाहं वचसा वि	७.	७८.	३
त्वे क्रतुमपि पृञ्चन्ति	५.	२.	३
	२०.	१०७.	६
त्वेषस्ते धूम ऊर्णोतु	१८.	४.	५९
दक्षिणा दिगिन्द्रोधिपति	३.	२७.	२
दक्षिणां दिशमभि	१२.	३.	८
दक्षिणायां त्वा दिशि	१८.	३.	२१
दक्षिणाया दिशः शालाया	९.	३.	२६
दक्षिणायै त्वा दिश	१२.	३.	५६
दण्डं हस्तादाददानो	१८.	२.	५९
ददामीत्येव ब्रूयादनु	१२.	४.	१
ददाम्यस्मा अवसान	१८.	२.	३७
ददिर्हि मह्यं वरुणो	५.	१३.	१
दधिक्राव्णो अकारिषं	२०.	१३७.	३
दधिष्वा जठरे सुतं	२०.	६.	५
दमूना देवः सविता	७.	१५.	४
दर्भः शोचिस्तरूणक	१०.	४.	२
दर्भेण त्वं कृणवद्वीर्याणि	१९.	३३.	५
दर्भेण देवजातेन दिवि	१९.	३२.	७
दर्शय मा यातुधानान्	४.	२०.	६
दर्शोसि दर्शतोसि	७.	८६.	४
दश च मे शतं च	५.	१५.	१०
दशर्चेभ्यः स्वाहा	१९.	२३.	७
दशवृक्ष मुञ्चेमं	२.	९.	१
दश साकमजायन्त	११.	८.	३
दह दर्भ सपत्नान्मे	१९.	२९.	८
दाना मृगो न वारणः	२०.	५३.	२
	२०.	५७.	१२
दिक्षु चन्द्राय समनमन्	४.	३९.	७
दितिः शूर्पमदितिः	११.	३(१).	४
दितेः पुत्राणामदिते	७.	८.	१
दितेश्च वै सोदिते	१५.	६.	२१
दिवं च रोह पृथिवीं	१३.	१.	३४
दिवं पृथिवीमन्वन्तरिक्षं	३.	२१.	७
दिवं ब्रूमो नक्षत्राणि	११.	६.	१०
दिवस्पृथिव्याः पर्यन्त	१९.	३.	१
दिवस्पृथिव्याः पर्योज	६.	१२५.	२
दिवस्पृथिव्या अन्तरिक्षात्	९.	१.	१
दिवस्त्वा पातु हरितं	५.	२८.	९
दिवस्पृष्ठे धावमानं	१३.	२.	३७
दिवा मा नक्तं यतमो	५.	२९.	९
दिवि जातः समुद्रजः	४.	१०.	४
दिवि ते तूलमोषधे	१९.	३२.	३
दिवि त्वात्रिरधारयत्	१३.	२.	१२
दिवि न केतुरधि धायि	२०.	३०.	४
दिवि स्पृष्टो यजतः	२.	२.	२
दिवे चक्षुषे नक्षत्रेभ्यः	६.	१०.	३
दिवे स्वाहा	५.	९.	१
दिवो नु मां बृहतो	६.	१२४.	१
दिवो मादित्या रक्षन्तु	१९.	१६.	२
	१९.	२७.	१५
दिवो मूलमवततं	२.	७.	३
दिवो विष्ण उत वा	७.	२७.	८
दिव्यं सुपर्णं पयसं	७.	४०.	१
दिव्यस्य सुपर्णस्य	४.	२०.	३
दिव्यादित्याय समनमन्	४.	३९.	५
दिव्यो गन्धर्वो भुवनस्य	२.	२.	१
दिशश्चतस्रोश्वतर्यो	८.	८.	२२
दिशां प्रज्ञानां स्वरयन्त	१३.	२.	२
दिशो ज्योतिष्मतीरभ्यावर्ते	१०.	५.	३८
दिशोदिशः शालाया	९.	३.	३१
दिशो धेनवस्तासां चन्द्रो	४.	३९.	८
दीर्घस्ते अस्त्वङ्कुशो	२०.	५.	४
दीर्घायुत्वाय बृहते	२.	४.	१
दुर्णामा च सुनामा	८.	६.	४
दुन्दुभेर्वाचं प्रयतां	५.	२०.	५
दुरदभ्नैनमा शये	१२.	४.	१९
दुरो अश्वस्य दुर इन्द्र	२०.	२१.	२
दुर्मन्त्वत्रामृतस्य नाम	१८.	१.	३४
दुर्हार्दः संघोरं चक्षुः	१९.	३५.	३
दुष्ट्यै हि त्वा भर्त्स्यामि	३.	९.	५
दुष्वप्न्यं काम दुरितं	९.	२.	३
दुहे सायं दुहे प्रातर्दुहे	४.	११.	१२
दुह्रां मे पञ्च प्रदिशो	३.	२०.	९
दूराच्चकमानाय प्रतिपाणा	१९.	५२.	३
दूरे चित्सन्तमरुषास	३.	३.	२
दूरे पूर्णेन वसति	१०.	८.	१५
दूष्या दूषिरसि हेत्या	२.	११.	१
दृंह प्रत्नाञ्जनयाजाता	६.	१३६.	२
दृंह मूलमाग्रं यच्छ	६.	१३७.	३
दृढो दृंहस्थिरो न्यो	११.	७.	४
दृष्टमदृष्टमतृष्टमथो	२.	३१.	२
देवजना गुदा मनुष्या	९.	७.	१६
देव त्वप्रतिसूर्य	२०.	१३०.	१०
देवपीयुश्चरति मर्त्येषु	५.	१८.	१३
देवयन्तो यथा मति	२०.	७०.	२
देव संस्फान सहस्रा	६.	७९.	३
देवस्ते सविता हस्तं	१४.	१.	४९
देवस्य त्वा सवितुः	१९.	५१.	२
देवस्य सवितुः सवे	६.	२३.	३
देवस्य सवितुर्भाग	१०.	५.	१४
देवहेतिर्हियमाणा	१२.	५(४).	२
देवाः कपोत इषितो	६.	२७.	१
देवाः पितरः पितरो	६.	१२३.	३
देवाः पितरो० उच्छिष्टा	११.	७.	२७
देवाः पितरो० ते त्वा	१०.	९.	९
देवा अग्रे न्यपद्यन्त	१४.	२.	३२
देवा अदुः सूर्यो	६.	१००.	१
देवा अमृतेनोदक्रामं	१९.	१९.	१०
देवा इमं मधुना संयुतं	६.	३०.	१
देवाञ्जन त्रैककुदं	१९.	४४.	६
देवा ददत्वासुरं तद्वो	२०.	१३५.	१०
देवानां निहितं निधिं	१९.	२७.	९
देवानां पत्नीः पृष्टय	९.	७.	६
देवानां पत्नीनां गर्भ	१९.	५७.	३
देवानां पत्नीरुशती	७.	५१.	१
देवानां भाग उपनाह	९.	४.	५
देवानां हेतिः परि त्वा	८.	२.	९
देवानामस्थि कृशनं	४.	१०.	७
देवानामेतत्परिपूत	११.	५.	२३
देवानामेनं घोरैः	१६.	७.	२
देवान्यन्नाथितो हुवे	७.	११४.	७
देवा यज्ञमृतवः	१८.	४.	२
देवा वशां पर्यवदन्	१२.	४.	४९
देवा वशामयाचन्मुखं	१२.	४.	२०
देवा वशामयाचन्यस्मिन्	१२.	४.	२४
देवा वा एतस्या	५.	१७.	६
देवास्ते चीतिमविदन्	२.	९.	४
देवी देव्यामधि जाता	६.	१३६.	१
देवी हनत्कुहनत्	२०.	१३२.	११
देवेभ्यः कमवृणीत	१८.	३.	४१
देवेभ्यो अधि जातोसि	५.	४.	७
देवैनसात्पित्र्यान्नामग्राहात्	१०.	१.	१२
देवैनसादुन्मदितमुन्मत्तं	६.	१११.	३
देवैर्दत्तं मनुना साक	१४.	२.	४१
देवैर्दत्तेन मणिना	२.	४.	४
देवो अग्निः संकसुको	१२.	२.	१२
देवो देवान्परिभूर्ऋतेन	१८.	१.	३०

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

देवो देवान्नर्चयस्यन्त १३. १. ४०
देवो देवाय गृणते ५. ११. ११
देवो देवेषु देवः ५. २७. २
देवो द्विपोदाः पोत्रात् २०. २. ४
देवो मणिः सपत्नहा १९. ३१. ८
देवा होतार ऊर्ध्वं ५. २७. ९
दैवीः षडुर्वीरुरु नः ५. ३. ६
दैवीर्विशः पयस्वाना ९. ४. ९
दैव्या होतारा प्रथमा ५. १२. ७
दोषो गाय बृहद्गाय ६. १. १
दोहेन गामुप शिक्ष २०. ८९. २
दौष हस्तिनो हती २०. १३१. २०
दौष्वन्यं दौर्जीवित्यं ४. १७. ५
७. २४. १
द्यावा चिदस्मै पृथिवी २०. ३४. १४
द्यावापृथिवी अनु मा २. १२. ५
द्यावापृथिवी उपश्रुत्या २. १६. २
द्यावापृथिवी उर्वन्तरिक्षं ५. २४. १
द्यावापृथिवी दामृता ५. २४. ३
द्यावापृथिवी श्रोत्रे ११. ३(१). २
द्यावा ह क्षामा प्रथमे १८. १. २९
द्रुसं द्रुहामुं तक्विषी २०. ९. २
२०. ४९. ५
द्रुष्मत्सखेषीमहि द्रुमन्तः १८. १. ५७
द्रुह्वेषु हतमात्मसु हतम् २०. १९. ७
धौर्मेदुलस्या आदित्यो ४. ३९. ६
धौर्नः पिता जनिता ९. १०. १२
धौश्च म० च प्रचेतसौ ६. ५३. १
धौश्च म० चान्तरिक्षं १२. १. ५३
धौष्ट्व पिता पृथिवी २. २८. ४
ध्रुवमसदत्सं विशुचे २०. ११७. ८
ध्रुवक्षित्कन्द पृथिवी १८. ४. २८
ध्रुवादिव मुमुचानः ६. ११५. ३
ध्रुवाया निहितं पित ६. ११३. ३
ध्रुवेण मघवन्धक १०. ८. ४
ध्रुवैरर्चेन्त्यः स्वाहा १९. २३. ९
ध्रुवो वा एषा रात्री ४. ११. ११
ध्रुवोसारं नहि तत्तराय ९. ९. १३
ध्वरो देवीरन्तस्य ५. २७. ७
ध्वसिनी वातौ वात ४. १३. २

द्वा सुपर्णा सयुजा ९. ९. २०
द्वितीयेभ्यः शङ्केभ्यः १९. २२. ९
द्विभागधनमादाय १२. २. ३५
द्विपतस्तापयन्हृदः १९. २८. २
द्विषते तत्परा वह १६. ६. ३
द्विषो नो विश्वतोमुखा ४. ३३. ७
द्वे च मे विंशतिश्च ५. १५. २
द्वे ते चक्रे सूर्ये १४. १. १६
द्वौ च ते विंशतिश्च १९. ४७. ५
द्वौ वा ये शिशवः २०. १३२. १५
द्व्यास्याचतुरक्षात्पञ्च ८. ६. २२
ध्रुवं न स्पन्द्रं बहुलं २०. ८९. ५
धनुर्विभर्षि हरितं ११. २. १२
धनुर्हस्तादाददानो १८. २. ६०
धन्व च यत्कृन्तत्रं २०. १२६. २०
धरुण्यसि शाले बृहच्छन्दाः ३. १२. ३
धर्ता भियस्य धरुणे १२. ३. ३५
धर्तासि धरुणोसि १८. ३. ३६
धर्ता ह त्वा धरुणो १८. ३. २९
धातः श्रेष्ठेन रूपेणास्या ५. २५. १०
धाता च सविता चाष्टौवस्तौ ९. ७. १०
धाता दधातु दाशुषे ७. १८. २
धाता दधातु नो रयि ७. १८. १
धाता दाधार पृथिवीं ६. ३०. ३
धाता मा निर्ऋत्या १८. ३. २६
धाता रातिः सवितेदं जुषन्तां ७. १८. ४
धाता रातिः सवितेदं जुषन्ता ३. ८. २
धाता विधाता भुवनस्य ५. ३. ९
धाता विश्वा वार्या दधातु ७. १८. ३
धाना धेनुरभवद्वत्सो १८. ४. ३२
धाम्नोधाम्नो राजकितो ७. ८८. २
धिये समक्षिना शयतं ६. ४. ३
धीती वा ये अनयन् ७. १. १
धीभिः हुतः प्र वदति ५. २०. ८
धुनेतयः सुप्रकेतं २०. ८८. २
धूमाक्षी सं पतत्तु ११. १०. ७
धृतस्तिम कळशे सोम ७. ८१. २
धेनुष्ट इन्द्र सूनृता २०. २७. १
ध्रुवं ते राजा वरुणो ६. ८८. २
ध्रुवं ध्रुवेण हविषाध ५. १. १
ध्रुवं ध्रुवेषु पशुभिः ४. १६. ७
ध्रुव आ रोह पृथिवीं १८. ४. ६
ध्रुवा दिग्विष्णुरधिपतिः ३. २७. ५
ध्रुवा द्यौर्ध्रुवा पृथिवी ६. ८८. १
ध्रुवायां त्वा दिशि पुरा १८. ३. ३४
ध्रुवाया दिशः शालाया ९. ३. २९
ध्रुवायै त्वा दिशे विष्णवे १२. ३. ५९
ध्रुवेयं विराण्नमो १२. ३. ११
ध्रुवोच्युतः प्र सृणीहि ६. ८८. ३
न कामेन पुनर्मघो ५. ११. २
न किल्बिषमत्र नाधारो १२. ३. ४८
नकिष्टं कर्मणा नशद् २०. ९२. १८
नकी रेवन्तं सख्याय २०. ११४. २
नक्तजातास्योषधे १. २३. १
नक्षत्रमुल्काभिहतं १९. ९. ९
न घा त्वद्रिगप वेति २०. १७. २
न घा वसुनि यमते २०. ७८. २
न घेमन्यद्दा पपन २०. १८. २
न प्रस्तताप न हिमो ७. १९. २
न च प्रत्याहान्यान्मनसा ८. १०(६). २
न च प्राणं रुणद्धि ११. ३(३). ६
न च सर्वज्यानिं जीयते ११. ३(३). ७
नडमा रोह न ते १२. २. १
न तं यक्ष्मा अरुन्धते १९. ३८. १
न ता अर्वा रेणुककाटो ४. २१. ४
न ता नशन्ति न दभाति ४. २१. ३
न तिष्ठन्ति न नि १८. १. ९
न ते नाथं यम्त्राहमस्मि १८. १. १३
न ते बाह्वोर्बलमस्ति ७. ५८. ६
न ते वर्तास्ति राधस २०. २७. ४
न ते सखा सख्यं १८. १. २
न त्वदन्यः कवितरो ५. ११. ४
न त्वा पूषा ओषधयो १९. ३४. ७
न त्वावाँ अन्यो दिव्यो २०. १२१. २
नदीं यन्त्वप्सरसोपां ४. ३७. ३
नदी सृजी वर्षस्य पतय ९. ७. १४
न देवेच्छा दुभ्यते १५. १२. ६
न द्वितीयो न तृतीय १३. ४(२). ३
न पञ्चमो न पष्ठः १३. ४(२). ४
न पितृणामेषो वसवो १५. १२. ९
न पितृयाणं पन्थां ४. ३६. ७
न पृणन्ति ददति १८. ४. ३
न बहवः समशकन् १. २७. ३
न ब्राह्मणो हिंसितव्यो ५. १८. ६
न भूमिं वातो अति वाति ४. ५. २
नमः शीताय तक्मने १. २५. ४
नमः सनिस्रसाक्षेभ्यो २. ८. ५
नमः सायं नमः प्रात ११. २. १६
न मत्खी सुभस्तत्तरा २०. १२६. ६
नमस्कृत्या द्यावापृथिवी ७. १०७. १
नमस्तस्मै नमो दात्रे ९. ३. १२
नमस्ते अधिवाकाय ६. १३. ६
नमस्ते अस्तु नारदा १२. ४. ४५
नमस्ते अस्तु पदयत १३. ४(५). ३
१३. ४(६). ४
नमस्ते अस्तु विद्युते १. १३. १
नमस्ते अस्त्वायते ११. ४. ७
नमस्ते घोषिणीभ्यो ११. २. ३१
नमस्ते जायमानायै १०. १०. १
नमस्ते प्रवतो नपाद् १. १३. २
नमस्ते प्राण क्रन्दाय ११. ४. २
नमस्ते प्राण प्राणते ११. ४. ८
नमस्ते यातुधानेभ्यो ६. १३. ३
नमस्ते राजन्वरुणास्तु १. १०. २
नमस्ते रुद्रास्यते नमः ६. ९०. ३
नमस्ते लाङ्गलेभ्यो २. ८. ४
नमस्तेस्त्वायते नमो ११. २. १५
नमो गन्धर्वस्य नमसे १४. २. ३५
नमो देवबधेभ्यो ६. १३. १
नमो यमाय नमो ५. ३०. १२
नमो रुद्राय नमो ६. २०. २
नमो रूराय च्यवनाय ७. १२१. १
नमो वः पितरः स्वधा १८. ४. ८५
नमो वः पितर ऊर्जे १८. ४. ८१
नमो वः पितरो भामाय १८. ४. ८२
नमो वः पितरो यच्छिवं १८. ४. ८४
नमो वः पितरो यद्घोरं १८. ४. ८३
नमोस्तु ते निर्ऋते ६. ६३. २
नमोस्त्वसिताय नम ६. ५६. २
नयतामूत्यृत्युदृता ८. ८. ११
न यत्पुरा चकृमा १८. १. ४
न यस्याः पारं ददृशे १९. ४७. २

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नवं बर्हिरोदनाय १२. ३. ३२
नवं वसानः सुरभिः १४. २. ४४
नव च मे नवतिश्च ५. १५. ९
नव च या नवतिश्च ६. २५. ३
न वनिपदनाततम् २०. १३२. ७
नव प्राणान्नवभिः सं ५. २८. १
नव भूमीः समुद्रा ११. ७. १४
नव यो नवतिं पुरो २०. ७. २
नवचैभ्यः स्वाहा १९. २३. ६
न वर्षं मैत्रावरुणं ५. १९. १५
न वा उ ते तनूं १८. १. १४
न वा उ सोमो गृजिनं ८. ४. १३
न विकर्णः पृथुशिरा ५. १७. १३
न वि जानामि यदिवेद ९. १०. १५
न वै तं चक्षुर्जहाति १०. २. ३०
नवैव ता नवतयो ५. १९. ११
न वै वातश्चन काम ९. २. २४
नवोनवो भवसि ७. ८६. २
१४. १. २४
नष्टासवो नष्टविपा १०. ४. १२
न सेशे यस्य रम्बते २०. १२६. १६
न सेशे यस्य रोमशं २०. १२६. १७
नहि ते अग्ने तन्वः ६. ५९. १
नहि ते नाम जग्राह ३. १८. ३
नहि स्थूर्भृतुथा यात २०. १२५. ३
नाके राजन्प्रति तिष्ठ ६. १२३. ५
नाके सुपर्णमुप यत् १८. ३. ६६
नाभूष आ दभूषते ६. ३३. २
नाभिरहं रयीणां १६. ४. १
नाभ्या आसीदन्तरिक्षं १९. ६. ८
नाम नाम्ना जोहवीति १०. ७. ३१
नामानि ते शतक्रतो २०. १९. ३
नाल्प इति ब्रूयाज्जातुष ११. ३(१). २४
नाष्टमो न नवमो दशमो १३. ४(२). ५
नास्मै पृश्निं वि दुहन्ति ५. १७. १७
नास्य केशान्न वपन्ति १९. ३२. २
नास्य क्षत्ता निष्क ५. १७. १४
नास्य क्षेत्रे पुष्करिणी ५. १७. १६
नास्य गाथा शतवाही ५. १७. १२
नास्य धेनुः कल्याणी ५. १७. १८
नास्य पशून्न समानान् १५. ५. ३
१५. ५. १६
नास्य श्वेतः कृष्ण ५. १७. १५
नास्यास्थीनि भिन्द्यान्न ९. ५. २३
नास्यास्मिँलोक आयतनं १५. १२. ११
नाहमिन्द्राणि रारण २०. १२६. १२
निःसालां धृष्णुं धिषण २. १४. १
निक्ष दर्भ सपत्नान्मे १९. २९. १
नि गावो गोष्ठे असदन् ६. ५२. २
निगृह्य कर्णकौ द्वौ २०. १३३. ३
नि तदधिषवेरे ५. २. ६
२०. १०७. ९
निधनं भूत्याः प्रजायाः ९. ६(५). ३
९. ६(५). १०
निधिं निधिपा अन्येन १२. ३. ४२
निधिं बिभ्रती बहुधा १२. १. ४४
निन्दाश्च वा अनिन्दाश्च ११. ८. २२
निधुवस्तिस्रो व्युषो ह १३. ३. २१
नि येन मुष्टिहत्यया २०. ७०. १८
निरमुं नुद ओकसः ६. ७५. १
निररणिं सविता साविषक् १. १८. २
निरितो मृत्युं निर्ऋतिं १२. २. ३
निरिमां मात्रां मिमीमहे १८. २. ४२
निर्दुरर्मण्य ऊर्जा १६. २. १
निर्हिंषन्तं दिवो निः १६. ७. ६
निर्वलासं वलासिनः ६. १४. २
निर्वलासेतः प्र पताशुंगः ६. १४. ३
निर्ऽऋम्यं ललाम्यं १. १८. १
निर्वै क्षत्रं नयति ५. १८. ४
निर्वो गोष्ठादबामसि २. १४. २
निर्हस्तः शत्रुरभिदासन् ६. ६६. १
निर्हस्ताः सन्तु शत्रवो ६. ६६. ३
निर्हस्तेभ्यो नैर्हस्तं ६. ६५. २
निवेशनः संगमनो १०. ८. ४२
नि शीर्षतो नि पत्तत ६. १३१. १
नि ष्वापया मिथूदृशा २०. ७४. ३
नीचैः खनन्त्यसुरा २. ३. ३
नीचैः पद्यन्तामधरे २. १९. ३
नीलनलेभ्यः स्वाहा १. २९. ३
नीलस्योदरं लोहितं १५. १. ७
नीललोहितं भवति १४. १. २६
नीलशिखण्डवाहनः २०. १३२. १६
नीलेनैवाग्रियं भ्रातृव्यं १५. १. ८
नुदस्व काम प्र णुदस्व ९. २. ४
नू इन्द्र शूर स्तवमान २०. ३७. ११
नू चिन्नु ते मन्यमानस्य २०. ७३. २
नूनं तदस्य काव्यो ४. १. ६
नू नो रयिं पुरुवीरं २०. १४३. ६
नृचक्षा रक्षः परि ८. ३. १०
नेच्छत्रुः प्राशं जयाति २. २७. १
नेमा इन्द्र गावो रिषन् २०. १२७. १३
नेमिं नमन्ति चक्षसा २०. ५४. ३
नेव मांसे न पीवसि १. ११. ४
नैतां ते देवा अददु ५. १८. १
नैतां विदुः पितरो १९. ५६. ४
नैनं प्राप्नन्ति पर्यापिनो ६. ७६. ४
नैनं प्राप्नन्त्यप्सरसो न ८. ५. १३
नैनं प्राप्नोति शपथो ४. ९. ५
नैनं रक्षांसि न पिशाचाः १. ३५. २
नैवाहमोदनं न मामोदनः ११. ३(१). ३०
न्यग्वातो वाति न्यक्तपति १. ९१. २
न्यस्तिक्रा रुरोदिह ६. १३९. १
न्यू षु वाचं प्र महे २०. २१. १
न्येतेनापत्तीरसौ ५. १. ५
पृथ्वी जायान्यः पतति ७. ८०. ४
पञ्च च मे पञ्चाशच्च ५. १५. ५
पञ्च च याः पञ्चाशच्च ६. २५. १
पञ्चदशचैभ्यः स्वाहा १९. २३. १२
पञ्चधा दं पितरं द्वादशाकृतिं ९. ९. १२
पञ्चभिः पराङ्प्रस्येक १७. १. १७
पञ्च राज्यानि वीर्यां ११. १. १५
पञ्च रुक्मा ज्योतिरस्मै ९. ५. २१
पञ्च रुक्मा पञ्च नवानि ९. ५. २५
पञ्चवैभ्यः स्वाहा १९. २३. २
पञ्चधाही वहत्यग्रमेषां १०. ८. ८
पञ्च स्रुष्टीरुप यन्ति ८. ९. १५
पञ्चापूपं० पितृणां ३. २९. ४
पञ्चापूपं० सूर्यामास ३. २९. ५
पञ्चाशो ये अरिष्टासः ९. ९. ११
पञ्चौदनं पञ्चभिरुद्धिभि ४. १४. ७
पञ्चौदनः पञ्चधा वि ९. ५. ८
पतति कुण्डृणाच्या २०. ७४. १
पत्नी यदस्यते पत्नी २०. १३५. ५
पथ्या रेवतीर्बहुधा ३. ४. ७
पदज्ञा स्थ रमतयः ७. ७९. २
पदा पर्णारवसो २०. ९३. २
पदोरस्या अधिष्ठानात् १२. ४. ५
पद्भिः सेदिमवक्रामन् ४. ११. १०
पनाय्यं तदश्विना कृतं २०. १४३. ९
पयश्च रसश्चाजं १२. ५(२). ४
पयश्च वा एष रसं ९. ६(३). २
पयस्वतीः कृणुथाप १. २२. २
पयस्वतीरोषधयः० पयः १८. ३. ५६
पयस्वतीरोषधयः० पयः ३. २४. १
पयो धेनूनां रसमोषधीनां ४. २७. ७
परं मृत्यो अनु परेहि १२. २. २१
परं योनेरवरं ते ७. ३६. ३
परः सो अस्तु तन्वा ८. ४. ११
परमां तं परावतं ३. ७५. २
पराक्ते ज्योतिरपयं १०. १. १६
पराच एनान्प्र णुद २. २५. ५
पराजिताः प्र पतता ८. ८. १९
पराजं चैनं शाशीः ११. ३(१). २८
परा देहि शामुल्यं १४. १. २५
पराच देवा हृजिनं ८. ३. १४
परामित्रान्नुन्नुमिना ५. २१. ७
परा यात पितरः १८. ४. ६३
परा यात पितर आ १८. ३. १४
परा शृणीहि तपसा ८. ३. १३
१०. ५. ४९
परा हीन्द्र यावसि २०. १२९. २
परि ग्राममिषाचितं ४. ७. ५
परिच्छिक्व क्षेममकरोत् २०. १२७. ८
परि णो वृङ्धि शपथ ३. ३७. २
परि पयः २०. १२९. ८
परि त्वाग्ने पुरं वयं ७. ७४. १
८. ३. २१
परि त्वा गायत्रिणा १३. १. २०
परि त्वा परित्रुनेक्षुक १. ३४. ५
परि त्वा पातु सन्नतेभ्यो ८. २. २१

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

परि त्वा रोहितैर्वर्णै १. २२. २
परि दद्म इन्द्रस्य ६. ९९. ३
परि धामिव सूर्योहानां ६. १२. १
परि धावापृथिवी सद्य २. १. ४
परि धत्त धत्त नो २. १३. २
१९. २४. ४
परि धामान्यासामायु २. १४. ६
परिपाणं पुरुषाणां ४. ९. २
परिपाणमसि परिपाणं २. १७. ७
परि पूषा परस्ताद्धस्तं ७. १०. ४
परि मां परि मे प्रजां २. ७. ४
परि मा दिवः परि मा १९. ३५. ४
परि वः सिक्तावती १. १७. ४
परि वर्त्मानि सर्वत ६. ६७. १
परि विश्वा भुवनान्या २. १. ५
परिवृक्त्या च महिषी २०. १२८. १०
परिस्तृणं धारयतु ८. ६. २०
परि स्तृणीहि परि धेहि ७. १०४. १
परिहस्त वि धारय ६. ८१. २
परीदं वासो० भूर्यहीना २. १३. ३
परीदं वासो० भूर्वापीना १९. २४. ६
परीमं सोममायुषे १९. २४. ३
परीममिन्द्रमायुषे १९. २४. २
परीमेमिन्वर्नत परीमे ६. २८. २
परिवृतो ब्रह्मणा वर्मणा १७. १. २८
पश्चानपूर्व्यस्याद्धः ८. ८. ४
परेतनेतु पथा वृकः ४. ३. २
परेयिवांसं प्रवतो १८. १. ४९
परेहि हृत्वे मा तिष्ठो १०. १. २६
परेहि नारि पुनरेहि ११. १. १३
परेहि विग्रमस्कृत २०. ६८. ४
परोऽपेहि मनस्पाप ६. ४५. १
परोपेक्षत्रुदे वि ५. ७. ७
पर्णो राजाविचार्नं १८. ४. ५३
पर्णोसि तनूपानः ३. ५. ८
पर्वतस्त्वा अग्रचक्षुषा ८. ६. १६
पर्वतस्य महिमा पृथिवीं १३. २. ४५
पर्वतास्त्रिर्होक १५. १२. ७
पर्वागारं पुनः पुनः २०. १३२. १२
पर्वाणिभ्यः स्वाहा १९. २२. ७
पर्वावर्ते दुश्च्यात् ७. १०५. १
पर्यू षु प्र धन्वा ५. ६. ४
पर्वताद्दिशो योने ५. २५. १
पर्शुर्ह नाम मानवी २०. १२६. २३
पलाल्यनुपलालौ शर्कु ८. ६. २
पल्प बद्ध वयो इति २०. १२९. १५
पवमानः पुनातु मा ६. १९. २
पवस्तैस्त्वा पर्वक्रीणन् ४. ७. ६
पवीनसात्तङ्क्त्वाच्छायका ८. ६. २१
पशुपतिरेनमिन्वासः १५. ५. ७
पश्चात्पुरस्तादधरादुतो ८. ३. २०
पश्चात्पाश्च आ तन्वन्ति १३. ४(१). ७
पश्यन्पश्यान्थरितं ९. १. ३
पश्याम ते वीर्यं जातवेदः १. ७. ५
पश्येम शरदः शतम् १९. ६७. १
पाकः पृच्छामि मनसा ९. ९. ६
पाक बलिः २०. १३१. १२
पाटामिन्द्रो व्याख्ना २. २७. ४
पातं न इन्द्रापूषणा ६. ३. १
पातां नो देवाश्विना ६. ३. ३
पातां नो द्यावापृथिवी ६. ३. २
पादाभ्यां ते जानुभ्यां ९. ० ८. २१
पापाय वा भद्राय वा १३. ४(४). १४
पाप्माधिधीयमाना १२. ५(४). ३
पार्थिवस्य रसे देवा २. २९. १
पार्थिवा दिव्याः० उत ये ११. ६. ८
पार्थिवा दिव्याः० ग्राम्याश्च ११. ५. २१
पार्श्वे आस्तामनुमत्या ९. ४. १२
पिंश दर्भं सपत्नान्मे १९. २८. ९
पिङ्ग रक्ष जायमानं ८. ६. २५
पिण्डि दर्भं सपत्नान्मे १९. २९. ६
पितः परे ते मावन्तु ५. २४. १५
पिता जनितुरुच्छिष्टो ११. ७. १६
पिता वत्सानां पति ९. ४. ४
पितृभ्यः सोमवद्भ्यः १८. ४. ७३
पितॄणां भाग स्थ १०. ५. १३
पितेव पुत्रानभि सं १२. ३. १२
पिप्पळी क्षिप्तभेषज्यू ६. १०९. १
पिप्पल्यः समवदन्ता ६. १०९. २
पिबा सोममिन्द्र मन्दतु ६. १११. १
पिशङ्गरूपो नभसो ९. ४. २२
पिशङ्गे सूत्रे खगलं ३. ९. ३
पिशाचक्षयणमसि २. १८. ४
पुंसि वै रेतो भवति ६. ११. २
पुण्डरीकं नवद्वारं १०. ८. ४३
पुण्यं पूर्वा फल्गुन्यौ १९. ७. ३
पुत्रं पौत्रमभितर्पयन्ती १८. ४. ३९
पुत्र इव पितरं गच्छ ५. १४. १०
पुत्रमत्तु यातुधानीः १. २८. ४
पुत्रमिव पितरावश्विनो २०. १२५. ५
पुनः कृत्यां कृत्या ५. १४. ४
पुनः पत्नीमग्निरदादायुषा १४. २. २
पुनः प्राणः पुनरात्मा ६. ५३. २
पुनन्तु मा देवजनाः ६. १९. १
पुनरेहि वाचस्पते देवेन १. १. २
पुनरेहिं वृषाकपे सुविता २०. १२६. २१
पुनर्दाय ब्रह्मजायां ५. १७. ११
पुनर्देहि वनस्पते १८. ३. ७०
पुनर्मैत्विन्द्रियं पुनरात्मा ७. ६९. १
पुनर्वै देवा अददुः ५. १७. १०
पुनस्त्वादित्या रुद्रा १२. २. ६
पुनस्त्वा द्रुप्सरसः ६. १११. ४
पुमां कृण्ते निम्रिच्छसि २०. १२९. १४
पुंमांसं पुत्रं जनय ३. २३. ३
पुमानन्तर्वान्त्स्थविरः ९. ४. ३
पुमान्पुंसः परिजातो ३. ६. १
पुमान्पुंसोधि तिष्ठ १२. ३. १
पुरं देवानामृतं ५. २८. ११
पुरस्तात्ते नमः कृण्म ११. २. ४
पुरस्तायुक्तो वह ५. २९. १
पुरुष एवेदं सर्वं १९. ६. ४
पुरुषुतस्य धामभिः २०. १९. ४
पुरुतमं पुरूणामीशानं २०. ६८. १२
पुरोडाशवत्सा सुदुघा १२. ४. ३५
पुष्टिं पशूनां परि १९. ३१. ५
पुष्टिरसि पुष्टया मा १९. ३१. १३
पुष्पवतीः प्रसूमतीः ८. ७. २७
पूताः पवित्रैः पवन्ते १२. ३. २५
पूतिरज्जुरुपाज्ञानी ८. ८. २
पूषन्नारिं प्र भर ३. १२. ८
पूर्णः कुम्भोधि काल १९. ५३. ३
पूर्णात्पूर्णमुदचति १०. ८. २९
पूर्णा पश्चादुत पूर्णा ७. ८५. १
पूर्वापरं चरतो० विचष्ट ७. ८६. १
१४. १. २३
पूर्वापरं चरतो० विचष्टे १३. २. ११
पूर्वो अग्निष्टा तपतु १८. ४. ९
पूर्वो जातो ब्रह्मणो ११. ५. ५
पूर्वो दुन्दुभे प्र वदासि ५. २०. ६
पूषन्तव व्रते वयं ७. १०. ३
पूषा त्वेतश्च्यावयतु १८. २. ५४
पूषेम शरदः शतम् १९. ६७. ५
पूषेमा आशा अनु ७. १०. २
पृच्छामि त्वा परमन्तं ९. १०. १३
पृतनाजितं सहमान ७. ६५. १
पृथक्प्रायन्प्रथमा २०. ९४. ६
पृथक्सर्वे प्राजापत्याः ११. ५. २२
पृथक्सहस्राभ्यां स्वाहा १९. २२. १९
पृथग्प्राणि बहुधा १२. ३. २१
पृथिवीं त्वा० तनूः १२. ३. २२
पृथिवीं त्वा० देवो १८. ४. ४८
पृथिवी दण्डोन्तरिक्षं ९. १. २१
पृथिवी धेनुस्तस्या अग्नि ४. ३९. २
पृथिवीशो महिपो १३. २. ४४
पृथिवी शान्तिरन्तरिक्षं १९. ९. १४
पृथिव्यामग्नये रमनमन् ४. ३९. १
पृथिव्यै श्रोत्राय ६. १०. १
पृथिव्यै स्वाहा ५. ९. २
५. ९. ६
पृदाकवः २०. १२९. ९
पृष्ठं धावन्तं हर्योरुचैः २०. १२८. १५
पृष्ठात्पृथिव्या अहमन्तरिक्ष ४. १४. ३
पैद्व प्रेहि प्रथमोनु १०. ४. ६
पैद्वस्य मन्महे वयं १०. ४. ११
पैद्वो हन्ति कसर्णीलं १०. ४. ५
पौरो अश्वस्य पुरुकृद् २०. ११८. २
पौर्णमासी प्रथमा यज्ञिया ७. ८५. ४
प्र केतुना बृहता १८. ३. ६५
प्र च्यवस्व तन्वं १८. ३. ९
प्रजया स वि क्रीणीते १२. ४. २

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्रजां च वा एष	९.	६(३).	४
प्रजानत्यघ्न्ये जीवलोकं	१८.	३.	४
प्रजानन्तः प्रति गृह्णन्तु	२.	३४.	५
प्रजानां प्रजननाय	९.	६(४).	१०
प्रजापतिं ते प्रजननवन्त	१९.	१८.	९
प्रजापतिः प्रजाभिरुदक्रामत्	१९.	१९.	११
प्रजापतिः सलिलादा	४.	१५.	११
प्रजापतिरनुमतिः	६.	११.	३
प्रजापतिर्जनयति प्रजा	७.	२०.	१
प्रजापतिर्मा प्रजननवान्	१९.	१७.	९
प्रजापतिश्च परमेष्ठी	९.	७.	१
प्रजापतिश्चरति गर्भे	१०.	८.	१३
प्रजापतिष्ट्वा बध्नात्	१९.	४६.	१
प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो	७.	८५.	३
प्रजापतेरावृतो ब्रह्मणा	१७.	१.	२७
प्रजापतेर्वा एष विक्रमा	९.	६(२).	१२
प्रजापतेश्च वै स	१५.	६.	२६
प्रजापते श्रेष्ठेन रूपेणास्या	५.	२५.	१३
प्रजामृतस्य पिप्रतः	२०.	१३८.	२
प्रजावतीः सूयवसे	४.	२१.	७
	७.	७९.	१
प्रणेतारं वस्यो अच्छा	२०.	४६.	१
प्र णो यच्छत्वर्यमा	३.	२०.	३
प्र णो वनिर्देवकृता	५.	७.	३
प्र तद्विष्णु स्तवते	७.	२७.	२
प्र तद्वोचेदमृतस्य	२.	१.	२
प्रतिघ्नानाः सं धावन्नूरः	११.	९.	१४
प्रतिघ्नानाश्रुमुखी कृधुकर्णी	११.	९.	७
प्रति चक्ष्व वि चक्ष्वेन्द्रश्च	८.	४.	२५
प्रति तमभि चर यो	२.	११.	३
प्रति तिष्ठ विराडसि	१४.	२.	१५
प्रति दह यातुधानान्	१.	२८.	२
प्रतिष्ठे ह्यभवतं वसूनां	४.	२६.	२
प्रति स्मरेथां तुजयद्भि	८.	४.	७
प्रतीचीं त्वा प्रतीचीनः	९.	३.	२२
प्रतीची दिग्वरुणोधिपतिः	३.	२७.	३
प्रतीची दिशामियमिद्वरं	१२.	३.	९
प्रतीचीन आङ्गिरसो	१०.	१.	६
प्रतीचीनफलो हि त्व	७.	६७.	१
प्रतीची सोममसि	७.	३९.	३
प्रतीच्यां त्वा दिशि पुरा	१८.	३.	३२
प्रतीच्यां दिशि भसदमस्य	४.	१४.	८
प्रतीच्या दिशः शालाया	९.	३.	२७
प्रतीच्यै त्वा दिशे वरुणा	१२.	३.	५७
प्रतीपं प्राति सुत्वनम्	२०.	१२९.	२
प्रतीहारो निधनं विश्व	११.	७.	१२
प्र ते अस्या उपसः	२०.	७६.	२
प्र ते भिनद्मि मेहनं	१.	३.	७
प्र ते महे विदथे	२०.	३०.	१
प्र ते शृणामि शृङ्गे	२.	३२.	६
प्रत्नो हि कमीड्यो	६.	११०.	१
प्रत्यग्निरुषसामग्र	७.	८७.	५
	१८.	१.	२८
प्रत्यङ्तिष्ठन्धातोदङ्	९.	७.	२१
प्रत्यङ् देवानां विशः	१३.	२.	२०
	२०.	४७.	१७
प्रत्यङ् हि संबभूविथ	४.	१९.	७
प्रत्यञ्चं चैनं प्राशी	११.	३(१).	२९
प्रत्यञ्चमर्कं प्रत्यर्पयित्वा	१२.	२.	५५
प्रत्यञ्चमर्कमनयं	२०.	६३.	३
	२०.	१२४.	६
प्र त्वा मुञ्चामि० उरुं	१४.	१.	५८
प्र त्वा मुञ्चामि० ऋतस्य	१४.	१.	१९
प्रथमा ह व्युवास	३.	१०.	१
प्रथमेन प्रमारेण	११.	८.	३३
प्रथमेभ्यः शङ्खेभ्यः	१९.	२२.	८
प्रथो वरो व्यचो लोक	१३.	४(६).	२
प्रदुद्रुदो मघाप्रति	२०.	१३०.	१२
प्र द्युम्नाय प्र शवसे	२०.	१४२.	५
प्र नभस्व पृथिवि	७.	१९.	१
प्र पतेतः पापि	७.	१२०.	१
प्रपथे पथामजनिष्ट	७.	१०.	१
प्र पदोव नेनिग्धि	९.	५.	३
प्र पादौ न यथायति	१९.	४९.	१०
प्र पितृयाणं पन्थां	१५.	१२.	५
प्र बुध्यस्व सुबुधा	१४.	२.	७५
प्र बोधयोषो अश्विना	२०.	१४२.	२
प्रब्लीनो मृदितः शयां	११.	९.	१९
प्रभ्राजमानां हरिणीं	१०.	२.	३३
प्र मंहिष्ठाय बृहते	२०.	१५.	१
प्रमुञ्चन्तो भुवनस्य	२.	३४.	२
प्र यच्छ पर्शुं त्वरया	१२.	३.	३१
प्र यत्ते अग्ने सूरयो	४.	३३.	४
प्र यदग्नेः सहस्वतो	४.	३३.	५
प्र यदेते प्रतरं पूर्व्यं	५.	१.	४
प्र यद्भन्दिष्ठ एषां	४.	३३.	३
प्र यमन्तर्वृषसवासो	२०.	८९.	८
प्र या जिगाति खर्गलेव	८.	४.	१७
प्र यो जज्ञे विद्वानस्य	४.	१.	३
प्र रेभ धीं भरस्व	२०.	१२७.	६
प्र रेभासो मनीषा	२०.	१२७.	५
प्रवतो नपान्नम एवास्तु	१.	१३.	३
प्र वर्तय दिवोश्मानमिन्द्र	८.	४.	१९
प्र वा एतीन्दुरिन्द्रस्य	१८.	४.	६०
प्र विशतं० अयं	७.	५५.	५
प्र विशतं० व्यन्ये	३.	११.	५
प्रवीयमाना चरति	१२.	४.	३७
प्र वो महे महिवृधे	२०.	७३.	३
प्र सम्राजं चर्षणीना	२०.	४४.	१
प्र सुमतिं सवितर्वाय	४.	२५.	६
प्र सु श्रुतं सुराधस	२०.	५१.	३
प्रसूत इन्द्र प्रवता	३.	१.	४
प्र स्कन्धान्प्र शिरो	१२.	५(७).	६
प्रस्तृणती स्तम्बिनी	८.	७.	४
प्राग्नये वाचमीरय	६.	३४.	१
प्राचींप्राचीं प्रदिशमा	१२.	३.	७
प्राची दिगग्निरधिपति	३.	२७.	१
प्राचीनं बर्हिः प्रदिशा	५.	१२.	४
प्राच्यां त्वा दिशि पुरा	१८.	३.	३०
प्राच्या दिशः शालाया	९.	३.	२५
प्राच्या दिशस्त्वमिन्द्रासि	६.	९८.	३
प्राच्यै त्वा दिशेग्नये	१२.	३.	५५
प्राजापत्याभ्यां स्वाहा	१९.	२३.	२६
प्राजापत्यो वा एतस्य	९.	६(२).	११
प्राणः प्रजा अनु वस्ते	११.	४.	१०
प्राण प्राणं त्रायस्वासो	१९.	४४.	४
प्राण मा मत्पर्यावृतो	११.	४.	२६
प्राणमाहुर्मातरिश्वानं	११.	४.	१५
प्राणापानौ चक्षुः० उच्छिष्टाज्जज्ञिरे	११.	७.	२५
प्राणापानौ चक्षुः० वाङ्मनः	११.	८.	२६
प्राणापानौ चक्षुः० वाङ्मन	११.	८.	४
प्राणापानौ मा मा हासिष्टं	१६.	४.	५
प्राणापानौ मृत्योर्मा	२.	१६.	१
प्राणापानौ व्रीहियवा	११.	४.	१३
प्राणाय नमो यस्य	११.	४.	१
प्राणायान्तरिक्षाय	६.	१०.	२
प्राणेन त्वा द्विपदां	८.	२.	४
प्राणेन प्राणतां प्राणे	३.	३१.	९
प्राणेन विश्वतोवीर्यं	३.	३१.	७
प्राणेनाग्निं सं सृजति	१९.	२७.	७
प्राणेनाग्ने चक्षुषा सं	५.	३०.	१४
प्राणेनान्नादेनान्नमत्ति	१५.	१४.	२२
प्राणो अपानो व्यान	१८.	२.	४६
प्राणो मृत्युः प्राणस्तक्मा	११.	४.	११
प्राणो विराट् प्राणो	११.	४.	१२
प्रातःप्रातर्गृहपतिर्नो	१९.	५५.	४
प्रातरग्निं प्रातरिन्द्रं	३.	१६.	१
प्रातर्जितं भगमुग्रं	३.	१६.	२
प्रान्यान्त्सपत्नान्त्सहसा	७.	३६.	१
प्रामूं जयामीमे जयन्तु	६.	१२६.	३
प्रास्मत्पाशान्० य उत्तमा	७.	८८.	४
प्रास्मत्पाशान्० यैः ससामे	१८.	४.	७०
प्रास्मदेनो वहन्तु प्र	१६.	१.	११
प्रियं पशूनां भवति	१२.	४.	४०
प्रियं प्रियाणां कृण्वाम	१२.	३.	४९
प्रियं मा कृणु देवेषु	१९.	६२.	१
प्रियं मा दर्भ कृणु	१९.	३२.	८
प्रिया तष्टानि मे कपि	२०.	१२६.	५
प्रियाप्रियाणि बहुला	१०.	२.	९
प्रियास इत्ते मघवन्	२०.	३७.	८
प्रेतं पादौ प्र स्फुरतं	१.	२७.	४
प्रेता जयता नर	३.	१९.	७
प्रेतो मुञ्चामि नामुतः	१४.	१.	१८
प्रेतो यन्तु व्याध्यः	७.	११९.	२
प्रेन्द्रस्य वोचं प्रथमा	२०.	८७.	५
प्रेमां मात्रां मिमीमहे	१८.	२.	३९
प्रेरय सूरो अर्थं न पारं	२०.	७६.	५
प्रेव पिपतिषति मनसा	१२.	२.	५२
प्रेहि प्रेहि पथिभिः	१८.	१.	५४
प्रैणाञ्छृणीहि प्र मृणा	१०.	३.	२

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्रैणाद्युदे मनसा प्र	३.	६.	८
प्रैषा यज्ञे निविदः	५.	२६.	४
प्रोग्रां पीतिं वृष्ण	२०.	२५.	७
	२०.	३३.	२
प्रोष्ठेशयास्तल्पेशया	४.	५.	३
प्रो ष्वस्मै पुरोरथ	२०.	९५.	२
बट्सूर्य श्रवसा महाँ	२०.	५८.	४
बण्महाँ असि० महस्ते	२०.	५८.	३
बण्महाँ असि० महांस्ते	१३.	२.	२९
बतो बतासि यम नैव	१८.	१.	१५
बद्ध वो अथा इति	२०.	१२९.	१६
बन्धस्त्वाग्रे विश्वचया	१९.	५६.	२
बभ्रे रक्षः समदमा	११.	१.	३२
बभ्रेरध्वर्यो मुखमेतद्	११.	१.	३१
बभ्रोरर्युनकाण्डस्य	२.	८.	३
बर्हिर्वा यत्स्वपत्याय	२०.	२५.	६
बर्हिषदः पितर ऊत्य	१८.	१.	५१
बलमसि बलं मे	२.	१७.	३
बलविज्ञायः स्थविरः	१९.	१३.	५
बलेनान्नादेनान्नमत्ति	१५.	१४.	४
बहिर्बिलं निर्द्रवतु	९.	८.	११
बह्वीदं राजन्वरुणा	१९.	४४.	८
बालादेकमणीयस्क	१०.	८.	२५
बालास्ते प्रोक्षणीः सन्तु	१०.	९.	३
बुध्येम शरदः शतम्	१९.	६७.	३
बृहच्च रथंतरं च	१५.	३.	५
बृहच्च रथन्तरं च द्वौ	८.	१०(२).	६
बृहतः परि सामानि	८.	९.	४
बृहतश्च वै स रथ	१५.	२.	४
बृहता मन उप ह्वये	५.	१०.	८
बृहती परि मात्राया	८.	९.	५
बृहते च वै स रथ	१५.	२.	३
बृहते जालं बृहत	८.	८.	७
बृहत्पलाशे सुभगे	६.	३०.	३
बृहदन्यन्तः पक्ष	१३.	३.	१२
बृहदायवनं रथन्तरं	११.	३(१).	१६
बृहदेनमनु वस्ते	१३.	३.	११
बृहद्वावासुरेभ्योधि	१९.	५६.	३
बृहद्धि जालं बृहतः	८.	८.	६
बृहन्तो नाम ते देवा	१०.	७.	२५
बृहन्नेषामधिष्ठाता	४.	१६.	१
बृहस्पतिं ते विश्वदेव	१९.	१८.	१०
बृहस्पतिः प्रथमं जायमानो	२०.	८८.	४
बृहस्पतिः प्रथमः सूर्याया	१४.	१.	५५
बृहस्पतिः समजयद्	२०.	९०.	३
बृहस्पतिः सविता ते	९.	४.	१०
बृहस्पतिनाव० तेजो	१४.	२.	५४
बृहस्पतिनाव० पयो	१४.	२.	५७
बृहस्पतिनाव० भगो	१४.	२.	५५
बृहस्पतिनाव० यशो	१४.	२.	५६
बृहस्पतिनाव० रसो	१४.	२.	५८
बृहस्पतिनाव० वर्चो	१४.	२.	५३
बृहस्पतिरमत हि	२०.	१६.	७
बृहस्पतिराङ्गिरस	११.	१०.	१०
बृहस्पतिराङ्गिरसो	११.	१०.	१३
बृहस्पतिरूर्जयोद्गायति	९.	६(५).	२
बृहस्पतिर्नः० वरिवः	२०.	१७.	११
	२०.	८९.	११
	२०.	९४.	११
बृहस्पतिर्नः० वरीयः	७.	५३.	१
बृहस्पतिर्म आकूति	१९.	४.	४
बृहस्पतिर्म आत्मा	१६.	३.	५
बृहस्पतिर्मा विश्वैर्देवै	१९.	१७.	१०
बृहस्पते परि दीया	१९.	१३.	८
बृहस्पते या परमा	२०.	८८.	३
बृहस्पते युवमिन्द्रश्च	२०.	१७.	१२
	२०.	८७.	७
बृहस्पते सवितर्वर्धयैनं	७.	१७.	१
बोधश्च त्वा प्रतिबोधश्च	८.	१.	१३
बोधा सु मे मघवन्	२०.	११७.	३
ब्रध्नः समीचीरुषसः	७.	२३.	२
ब्रध्नलोको भवति ब्रध्नस्य	११.	३(३).	२
ब्रह्मगवी पच्यमाना	५.	१९.	४
ब्रह्म च क्षत्रं च राष्ट्रं च	१२.	५(२).	२
ब्रह्म च क्षत्रं च श्रोणी	९.	७.	९
ब्रह्म च तपश्च कीर्तिश्च	१३.	४(३).	१
ब्रह्मचर्येण कन्या युवानं	११.	५.	१८
ब्रह्मचर्येण तपसा देवा	११.	५.	१९
ब्रह्मचर्येण तपसा राजा	११.	५.	१७
ब्रह्मचारिणं पितरो	११.	५.	२
ब्रह्मचारी चरति वेविषद्	५.	१७.	५
ब्रह्मचारी जनयन्	११.	५.	७
ब्रह्मचारी ब्रह्म भ्राजद्	११.	५.	२४
ब्रह्मचारीण्णंश्चरति	११.	५.	१
ब्रह्मचार्येति समिधा	११.	५.	६
ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं	४.	१.	१
	५.	६.	१
ब्रह्मज्यं देव्यग्र्य आ	१२.	५(७).	२
ब्रह्मज्येष्ठा संभृता	१९.	२२.	२१
	१९.	२३.	३०
ब्रह्मणाग्निः संविदानो	२०.	९६.	११
ब्रह्मणाग्नी वावृधानौ	१३.	१.	४९
ब्रह्मणा तेजसा सह	१०.	६.	३०
ब्रह्मणा ते ब्रह्मयुजा	२०.	८६.	१
ब्रह्मणान्नादेनान्नमत्ति	१५.	१४.	२४
ब्रह्मणा परिगृहीता	११.	(३)१.	१५
ब्रह्मणा भूमिर्विहिता	१०.	२.	२५
ब्रह्मणा शालां निमितां	९.	३.	१९
ब्रह्मणा शुद्धा उत पूता	११.	१.	१८
ब्रह्मणे स्वाहा	१९.	२२.	२०
	१९.	२३.	२९
ब्रह्म देवाँ अनु क्षियति	१०.	२.	२३
ब्रह्म पदवायं ब्राह्मणो	१२.	५(१).	४
ब्रह्म प्रजापतिर्धाता	१९.	९.	१२
ब्रह्म ब्रह्मचारिभि	१९.	१९.	८
ब्रह्मवादिनो वदन्ति	११.	३(१).	२६
ब्रह्म श्रोत्रियमाप्नोति	१०.	२.	२१
ब्रह्म स्रुचो घृतवती	१९.	४२.	२
ब्रह्म होता ब्रह्म यज्ञा	१९.	४२.	१
ब्रह्माणस्त्वा वयं युजा	२०.	३.	३
	२०.	३८.	३
	२०.	४७.	९
ब्रह्मापरं युज्यतां ब्रह्म	१४.	१.	६४
ब्रह्माभ्यावर्ते । तन्मे	१०.	५.	४०
ब्रह्मास्य शीर्षं बृहदस्य	४.	३४.	१
ब्राह्मण एव पतिर्न	५.	१७.	९
ब्राह्मणाँ अभ्यावर्ते	१०.	५.	४१
ब्राह्मणेन पर्युक्तासि	४.	१९.	२
ब्राह्मणेभ्य ऋषभं दत्त्वा	९.	४.	१९
ब्राह्मणेभ्यो वशां दत्त्वा	१०.	१०.	३३
ब्राह्मणो जज्ञे प्रथमो	४.	६.	१
ब्राह्मणोस्य मुखमासीद्	१९.	६.	६
ब्रूमो देवं सवितारं	११.	६.	३
ब्रूमो राजानं वरुणं	११.	६.	२
भग एव भगवाँ अस्तु	३.	१६.	५
भग प्रणेतर्भग सत्यराधो	३.	१६.	३
भगमस्या वर्च आदिष्यधि	१.	१४.	१
भगस्ततक्ष चतुरः	१४.	१.	६०
भगस्ते हस्तमग्रहीत्	१४.	१.	५१
भगस्त्वेतो नयतु हस्त	१४.	१.	२०
भगस्य नावमा रोह	२.	३६.	५
भगेन मा शांशपेन	६.	१२९.	१
भगो मा भगेनावतु	१९.	४५.	९
भगो युनक्त्वाशिषो	५.	२६.	९
भद्रमिच्छन्त ऋषयः	१९.	४१.	१
भद्रात्प्लक्षान्निस्तिष्ठस्य	५.	५.	५
भद्रादधि श्रेयः प्रेहि	७.	९.	१
भद्रासि रात्रि चमसो	१९.	४९.	८
भद्राहं नो मध्यन्दिने	६.	१२८.	२
भरूजि पुनर्वो यन्तु	२.	२४.	८
भव एनमिष्वासः	१५.	५.	२
भवद्वसुरिदद्वसुः संयद्	१३.	४(६).	३
भव राजन्यजमानाय	११.	२.	२८
भवारुद्रौ सयुजा	११.	२.	१४
भवाशर्वावस्यतां पापकृते	१०.	१.	२३
भवाशर्वाविदं ब्रूमो	११.	६.	९
भवाशर्वौ मन्वे वां	४.	२८.	१
भवाशर्वौ मृडतं माभि	११.	२.	१
भवेम शरदः शतम्	१९.	६७.	६
भवो दिवो भव ईशे	११.	२.	२७
भसदासीदादित्यानां	९.	४.	१३
भिन्धि दर्भ सपत्नानां	१९.	२८.	४
भिन्धि दर्भ सपत्नान्मे	१९.	२८.	५
भिन्धि विश्वा अप द्विषः	२०.	४३.	१
भीमा इन्द्रस्य० शतमृष्टि	४.	३७.	८
भीमा इन्द्रस्य० शतमृष्टी	४.	३७.	९
भुगित्यभिगतः शलि	२०.	१३५.	१
भुवो जनस्य दिव्यस्य	२०.	३६.	९
भूतं च भविष्यच्च	१५.	२.	६
भूतं च भव्यं च श्रद्धा च	१३.	४(३).	२

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

भूतं ब्रूमो भूतपतिं	११.	६.	२१
भूतपतिर्निरजत्विन्द्र	२.	१४.	४
भूतिश्च वा अभूतिश्च	११.	८.	२१
भूते हविष्मती भवैष	६.	८४.	२
भूतो भूतेषु पय आ	४.	८.	१
भूमिर्मातादितिर्नो	६.	१२०.	२
भूमिष्ट्वा पातु हरितेन	५.	२८.	५
भूमिष्ट्वा प्रति गृह्णात्वन्त	३.	२९.	८
भूमे मातर्नि धेहि	१२.	१.	६३
भूमेश्च वै सोग्नेश्चौषधीनां	१५.	६.	३
भूम्यां देवेभ्यो ददति	१२.	१.	२२
भूयसीः शरदः शतात्	१९.	६७.	८
भूयानरात्याः शच्याः	१३.	४(५).	२
भूयानिन्द्रो नमुराद्	१३.	४(५).	१
भूयेम शरदः शतम्	१९.	६७.	७
भूरि त इन्द्र वीर्यं	२०.	१५.	५
भोग्यो भवदयो अन्न	१०.	८.	२२
भ्रातृव्यक्षयणमसि	२.	१८.	१
मखस्य ते तविषस्य	२०.	११.	२
मङ्गलिकेभ्यः स्वाहा	१९.	२३.	२८
मज्जा मज्ज्ञा सं धीयतां	४.	१२.	४
मतयः सोमपामुरुं	२०.	२३.	५
मत्स्वा सुशिप्र मन्दिभि	२०.	७१.	९
मदेमदे हि नो ददि	२०.	५६.	४
मधु जनिषीय मधु	९.	१.	१४
मधुमतीरोषधीर्द्याव	२०.	१४३.	८
मधुमती स्थ मधुमतीं	१६.	२.	२
मधुमन्मूलं मधुमद	८.	७.	१२
मधुमन्मे निक्रमणं	१.	३४.	३
मधुमान्भवति मधुमद	९.	१.	२३
मधोः कशामजनयन्त	९.	१.	५
मधोरस्मि मधुतरो	१.	३४.	४
मध्यन्दिन उद्गायत्यपराह्णः	९.	६(५).	५
मध्यमेतदनडुहो यत्रैष	४.	११.	८
मध्वा पृञ्चे नद्यः पर्वता	६.	१२.	३
मध्वा यज्ञं नक्षति	५.	२७.	३
मनसस्पत इमं नो	७.	१०२.	८
मनसान्नादेनान्नमत्ति	१५.	१४.	२
मनसा सं कल्पयति	१२.	४.	३१
मनसा होमैर्हरसा	६.	९३.	२
मनसे चेतसे धिय	६.	४१.	१
मनो अस्या अन	१४.	१.	१०
मन्त्रमखर्वं सुधितं	२०.	५९.	४
मन्य दर्भ सपत्नान्मे	१९.	२९.	५
मन्युनान्नादेनान्नमत्ति	१५.	१४.	२०
मन्युरिन्द्रो मन्युरेवास	४.	३२.	२
मन्वे वां द्यावापृथिवी	४.	२६.	१
मन्वे वां मित्रावरुणा	४.	२९.	१
मम त्वा दोषणिश्रिषं	६.	९.	२
मम देवा विहवे सन्तु	५.	३.	३
ममाग्ने वर्चो विहवेष्वस्तु	५.	३.	१
ममेयमस्तु पोष्या मह्यं	१४.	१.	५२
मया गावो गोपतिना	३.	१४.	६
मया सोन्नमत्ति यो	४.	३०.	४
मयि क्षत्रं पर्णमणे	३.	५.	२
मयि देवा द्रविणमा	५.	३.	५
मयि वर्चो अथो यशो	६.	६९.	३
मय्यग्ने अग्निं गृह्णामि	७.	८७.	२
मरीचीर्धूमान्प्र विशानु	६.	११३.	२
मरुतः पर्वतानामधि	५.	२४.	६
मरुतः पोत्रात्सुष्टुभः	२०.	२.	१
मरुतां पिता पशूना	५.	२४.	१२
मरुतां मन्वे अधि मे	४.	२७.	१
मरुतो मा गणैरवन्तु	१९.	४५.	१०
मरुतो यस्य हि क्षये	२०.	१.	२
मर्माणि ते वर्मणा	७.	१२३.	१
मर्माविधं रोरुवतं	११.	१०.	२६
मल्वं बिभ्रती गुरुभृद्	१२.	१.	४८
मस्तिष्कमस्य यतमो	१०.	२.	८
महत्काण्डाय स्वाहा	१९.	२३.	१८
महत्पयो विश्वरूप	९.	१.	२
महत्सधस्थं महती	१२.	१.	१८
महदेषाव तपति	१२.	४.	३९
महद्यक्षं भुवनस्य	१०.	७.	३८
महाँ इन्द्रः परश्च नु	२०.	७१.	१
महाँ इन्द्रो य ओजसा	२०.	१३८.	१
महागणेभ्यः स्वाहा	१९.	२२.	१७
महादेव एनमिष्वास	१५.	५.	१३
महानग्नी कृकवाकं	२०.	१३६.	१०
महानग्नी महानग्नं	२०.	१३६.	११
महानग्न्यतृप्तद्वि मोक्रद	२०.	१३६.	५
महानग्न्युप ब्रूते भ्रष्टो० यथा	२०.	१३६.	८
महानग्न्युप ब्रूते भ्रष्टो० यथैव	२०.	१३६.	७
महानग्न्युप ब्रूते स्वस्या	२०.	१३६.	९
महानग्न्युलूखलमति	२०.	१३६.	६
महान्तं कोशमुदचाभि	४.	१५.	१६
महान्वै भद्रो बिल्वो	२०.	१३६.	१५
महावृषान्भूजवतो	५.	२२.	८
महीमू षु मातरं	७.	६.	२
महो महानि पनयन्त्य	२०.	११.	६
मह्यं त्वा मित्रावरुणौ	६.	८९.	३
मह्यं यजन्तां मम यानी	५.	३.	४
मह्यमापो मधुमदेरयन्तां	६.	६१.	१
मांसान्यस्य शातय	१२.	५(७).	८
मा गतानामा दीधीथा	८.	१.	८
मा चिदन्यद्वि शंसत	२०.	८५.	१
मा ज्येष्ठं वधीदयमग्न	६.	११२.	१
मातरिश्वा च पवमानश्च	१५.	२.	७
	१५.	२.	२७
मातली कव्यैर्यमो	१८.	१.	४७
मातादित्यानां दुहिता	९.	१.	४
माता पितरमृत आ	९.	९.	८
मातुष्टे किरणौ द्वौ	२०.	१३३.	२
मा ते अस्यां सहसावन्	२०.	३७.	७
मा ते प्राण उप दसन्	५.	३०.	१५
मा ते मनस्तत्र गान्मा	८.	१.	७
मा ते मनो मासोर्मा	१८.	२.	२४
मात्रे नु ते सुमिते इन्द्र	२०.	७६.	६
मा त्वा क्रव्यादभि	८.	१.	१२
मा त्वा जम्भः संहनुर्मा	८.	१.	१६
मा त्वा दभन्त्सलिले	१७.	१.	८
मा त्वा दभन्परियान्त	१३.	२.	५
मा त्वाभि सखा नो	२०.	१३०.	१४
मा त्वा मूरा अविष्यवो	२०.	२२.	२
मा त्वा वृक्षः सं बाधिष्ट	१८.	२.	२५
मादयस्व सुते सचा	२०.	५६.	५
मा नः पश्चान्मा पुरस्ता	१२.	१.	३२
मा नः पाशं प्रति मुचो	९.	३.	२४
मा नः पीपरदश्विना	१९.	४०.	४
मा न आपो मेधां	१९.	४०.	२
मानस्य पत्नि शरणा	३.	१२.	५
मा नो अज्ञाता वृजना	२०.	७९.	२
मा नो गोषु पुरुषेषु	११.	२.	२१
मा नो देवा अहिर्वधीत्	६.	५६.	१
मा नो निदे च वक्तवे	२०.	१८.	५
मा नोभि स्रा मत्यं	११.	२.	१९
मा नो मर्ता अभि	२०.	६९.	८
मा नो महान्तमुत	११.	२.	२९
मा नो मेधां मा नो	१९.	४०.	३
मा नो रक्षो अभि	८.	४.	२३
मा नो रुद्र तक्मना	११.	२.	२६
मा नो विदन्विव्याधिनो	१.	१९.	१
मा नो हासिषुर्ऋषयो	६.	४१.	३
मा नो हिंसीरधि नो	११.	२.	२०
मा प्र गाम पथो वयं	१३.	१.	५९
मा बिभेर्न मरिष्यसि	५.	३०.	८
मा भूम निष्ट्या इवेन्द्र	२०.	११६.	१
मा भ्राता भ्रातरं द्विक्षन्	३.	३०.	३
मा मां प्राणो हासीन्मो	१६.	४.	३
मा मा वोचन्नराधसं	५.	११.	८
मायाभिरुत्सिसृप्सत	२०.	२९.	४
मारे अस्मद्वि मुमुचो	२०.	२३.	८
मा वः प्राणं मा वोपानं	१९.	२७.	६
मा वनिं मा वाचं नो	५.	७.	६
मा विदन्परिपन्थिनो	१४.	२.	११
माश्वानां भद्रे तस्करो	१९.	४७.	७
मा सं वृतो मोप सृप	८.	६.	३
मा स्मैतान्त्सखीन्	५.	२२.	११
मा हिंसिष्टं कुमार्यं	१४.	१.	६३
मित्रः पृथिव्योदक्रामत्	१९.	१९.	१
मित्र ईक्षमाण आवृत्त	९.	७.	२३
मित्र एनं वरुणो वा	२.	२८.	२
मित्रश्च त्वा वरुणश्चानु	१९.	४४.	१०
मित्रश्च वरुणश्चांसौ	९.	७.	७
मित्रश्च वरुणश्चेन्द्रो	३.	२२.	२
मित्रावरुणयोर्भाग स्थ	१०.	५.	११
मित्रावरुणा परि मामधाता	१८.	३.	१२
मित्रावरुणौ वृष्ट्याधिपती	५.	२४.	५
मुखाय ते पशुपते यानि	११.	२.	५
मुग्धा देवा उत शुना	७.	५.	५

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मुञ्चन्तु मा शपथ्यादथो	६.	९६	२
	७.	११७.	२
मुञ्चन्तु मा शपथ्यादहोरात्रे	११.	६.	७
मुञ्च शीर्षक्त्या उत	१.	१२.	३
मुञ्चामि त्वा वैश्वानरा	१.	१०.	४
मुञ्चामि त्वा हविषा	३.	११.	१
	२०.	९६.	६
मुमुक्तमस्मान्दुरितादव	५.	६.	८
मुमुचाना ओषधयो	८.	७.	१६
मुहुर्गृध्यैः प्र वदत्यार्ति	१२.	२.	३८
मुह्यन्त्वेषां बाहवश्चित्ता	११.	९.	१३
मूढा अमित्रा न्यर्बुदे	११.	१०.	२१
मूढा अमित्राश्चरता	६.	६७.	२
मूर्णा मृगस्य दन्ता	४.	३.	६
मूर्धानमस्य संसीव्याथर्वा	१०.	२.	२६
मूर्धाहं रयीणां मूर्धा	१६.	३.	१
मूर्ध्नो देवस्य बृहतो	१९.	६.	१६
मूलबर्हणी पर्याक्रियमाणा	१२.	५(४).	६
मृगो न भीमः कुचरो	७.	८९.	३
मृण दर्भ सपत्नान्मे	१९.	२९.	४
मृत्यवेमृत्य यच्छामि	८.	८.	१०
मृत्युः प्रजानामधिपतिः	५.	२४.	१३
मृत्युरीशे द्विपदां	८.	२.	२३
मृत्युर्हिङ्कृण्वत्युग्रो देवः	१२.	५(३).	१०
मृत्योः पदं योपयन्त	१२.	२.	३०
मृत्योरहं ब्रह्मचारी	६.	१३३.	३
मृत्योराषमा पद्यन्तां	८.	८.	१८
मेदस्वता यजमानाः	६.	११४.	३
मेधां सायं मेधां प्रात	६.	१०८.	५
मेधामहं प्रथमां ब्रह्मण्वतीं	६.	१०८.	२
मेनिः शतवधा हि सा	१२.	५(३).	५
मेनिः शरव्या भवा	१२.	५(६).	१३
मेनिर्दुह्यमाना शीर्षं	१२.	५(३).	१२
मेमं प्राणो हासीन्मो	७.	५५.	४
मेष इव वै सं च वि	६.	४९.	२
मैतं पन्थामनु गा भीम	८.	१.	१०
मैनमग्ने वि दहो माभि	१८.	२.	४
मो षु ब्रह्मेव तन्द्रयु	२०.	६०.	३
मो षु वो अस्मदभि	२०.	६७.	२
म्रोकानुम्रोक पुनर्वो	२.	२४.	३
म्रोको मनोहा खनो	१६.	१.	३
यं क्रन्दसी अवतश्च	४.	२.	३
यं क्रन्दसी संयती	२०.	३४.	८
यं ग्राममाविशत इदमुग्रं	४.	३६.	८
यं ते मन्थं यमोदनं	१८.	४.	४२
यं त्वमग्ने समदहस्तमु	१८.	३.	६
यं त्वा पृषती रथे	१३.	१.	२१
यं त्वा वेद पूर्व इक्ष्वाको	१९.	३९.	९
यं त्वा होतारं मनसा	३.	२१.	५
यं देवाः पितरो मनुष्या	१०.	६.	३२
यं देवाः स्मरमसिञ्चन्	६.	१३२.	१
यं देवा अंशुमाप्याययन्ति	७.	८६.	६
यं द्विष्मो यश्च नो द्वेष्टि	१६.	६.	४
यं निदधुर्वनस्पतौ	३.	५.	३
यं परिहस्तमबिभरदितिः	६.	८१.	३
यं बल्बजं न्यस्यथ	१४.	२.	२२
यं ब्राह्मणे निदधे यं	९.	५.	१९
यं मित्रावरुणौ स्मर	६.	१३२.	५
यं मे दत्तो ब्रह्मभागं	१४.	२.	४२
यं याचाम्यहं वाचा	५.	७.	५
यं वयं मृगयामहे	१०.	५.	४२
यं वां पिता पचति	१२.	३.	५
यं वातः परिशुम्भति	१३.	१.	५१
यं विश्वे देवाः स्मरमसि	६.	१३२.	२
यं स्मा पृच्छन्ति कुह	२०.	३४.	५
यः कीकसाः प्रशृणाति	७.	८०.	३
यः कुक्षिः सोमपातमः	२०.	७१.	३
यः कुमारी पिङ्गलिका	२०.	१३६.	१६
यः कृणोति प्रमोतमन्धं	९.	८.	४
यः कृणोति मृतवत्सा	८.	६.	९
यः कृत्याकृन्मूलकृत्	४.	२८.	६
यः कृष्णः केश्यसुर	८.	६.	५
यः परस्याः परावत	६.	३४.	३
यः परुषः पारुषेयो	५.	२२.	३
यः पर्वतान्व्यदधाद्	२०.	१२८.	१४
यः पृथिवीं बृहस्पति	१५.	१०.	९
यः पृथिवीं व्यथमाना	२०.	३४.	२
यः पौरुषेयेण क्रविषा	८.	३.	१५
यः प्रथमः कर्मकृत्याय	४.	२४.	६
यः प्रथमः प्रवतमा	६.	२८.	३
यः प्राणतो निमिषतो	४.	२.	२	६०६
यः प्राणदः प्राणदवान्	४.	३५.	५	६१७
यः प्राणेन द्यावापृथिवी	१३.	३.	४	७३७
यः शतौदनां पचति	१०.	९.	४	७०५
यः शम्बरं पर्यतरत्	२०.	३४.	१२	७९५
यः शम्बरं पर्वतेषु	२०.	३४.	११	७९५
यः शश्वतो मह्येनो	२०.	३४.	१०	७९५
यः श्रमात्तपसो जातो	१०.	७.	३६	७०२
यः संग्रामान्नयति सं	४.	२४.	७	६१४
यः सपत्नो योसपत्नो	१.	१९.	४	५८२
यः सप्तरश्मिर्वृषभ	२०.	३४.	१३	७९५
यः सभेयो विदथ्यः	२०.	१२८.	१	८१५
यः समाम्यो वरुणो	४.	१६.	८	६११
यः सहमानश्चरसि	३.	६.	४	५९६
यः सुन्वते पचते दुध्र	२०.	३४.	१८	७९५
यः सुन्वन्तमवति यः	२०.	३४.	१५	७९५
यः सोमकामो हर्यश्व	२०.	३४.	१७	७९५
यः सोमे अन्तर्यो	३.	२१.	२	६०१
य आक्ताक्षः सुभ्यक्तः	२०.	१२८.	७	८१५
य आगरे मृगयन्ते	४.	३६.	३	६१७
य आत्मदा० कस्मै	४.	२.	१	६०६
य आत्मदा० तस्य	१३.	३.	२४	७३८
य आत्मानमतिमात्र	८.	६.	१३	६७५
य आदित्यं क्षत्रं	१५.	१०.	११	७५०
य आमं मांसमदन्ति	८.	६.	२३	६७५
य आर्षेयेभ्यो याचद्भ्यो	१२.	४.	१२	७२९
य आशानामाशापाला	१.	३१.	२	५८५
य आस्ते यश्चरति	४.	५.	५	६०७
य इन्द्र इव देवेषु	९.	४.	११	६८४
य इन्द्र सोमपातमो	२०.	६३.	७	८०१
य इन्द्रेण सरथं याति	३.	२१.	३	६०१
य इमां देवो मेखला	६.	१३३.	१	६५३
य इमे द्यावापृथिवी जजान	१३.	३.	१	७३७
य इमे द्यावापृथिवी जनित्री	५.	१२.	९	६२४
य इह पितरो जीवा	१८.	४.	८७	७७०
य ईं चकार न सो	९.	१०.	११	६९१
य ईशे पशुपतिः	२.	३४.	१	५९३
य उग्रः सन्ननिष्टृतः	२०.	५३.	३	७९८
	२०.	५७.	१३	७९९
य उग्रीणामुग्रबाहु	४.	२४.	२	६१३
य उत्तरतो जुह्वति	४.	४०.	४
य उदानट् परायणं	६.	७७.	२
य उदृचीन्द्र देवगोपाः	२०.	२१.	११
य उपरिष्टाज्जुह्वति	४.	४०.	७
य उभाभ्यां प्रहरसि	७.	५८.	८
य उशता मनसा	२०.	९६.	३
य ऊरू अनुसर्पत्यथो	९.	८.	७
य ऋते चिदभिश्रिषः	१४.	२.	४७
य ऋष्णवो देवकृता	१९.	३५.	५
य एक इद्धव्यश्चर्षणी	२०.	३६.	१
य एक इद्विदयते	२०.	६३.	४
य एकश्चर्षणीनां	२०.	७०.	१५
य एतं देवमेकवृतं	१३.	४(२).	२
	१३.	४(३).	३
य एनं परिषीदन्ति	६.	७६.	१
य एनं हन्ति मृदुं	५.	१८.	५
य एनां वनिमायन्ति	१२.	४.	११
य एनामवशामाह	१२.	४.	१७
य एवं विदुषेदत्त्वा	१२.	४.	२३
य एवं विदुषो ब्राह्मणस्य	१२.	५(५).	८
य एवं विद्यात्स वशां	१०.	१०.	२७
य एवापरिमिताः	१५.	१३.	१०
यच्चक्षुषा मनसा यच्च	६.	९६.	३
यच्च प्राणति प्राणेन	११.	७.	२३
यच्च वर्चो अक्षेषु	१४.	१.	३५
यच्चिद्धि त्वा जना	२०.	८५.	३
यच्चिद्धि सत्य सोमपा	२०.	७४.	१
यच्छक्रा वाचमारुहन्	२०.	४९.	१
यच्छयानः पर्यावर्ते	१२.	१.	३४
यजमानब्राह्मणं वा	९.	६(२).	१
यजूंषि यज्ञे समिधः	५.	२६.	१
यज्जाग्रद्यत्सुप्तो यद्दिवा	१६.	७.	१०
यज्जामयो यद्युवतयो	१४.	२.	६१
यज्ञं दुहानं सदमित्	११.	१.	३४
यज्ञं ब्रूमो यजमानमृचः	११.	६.	१४
यज्ञं यन्तं मनसा	६.	१२२.	४
यज्ञ इन्द्रमवर्धयद्	२०.	२७.	५
यज्ञ एति विततः	१८.	४.	१३
यज्ञपतिमृषय एनसा	२.	३५.	२
यज्ञपदीराक्षीरा स्वधा	१०.	१०.	६

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

यज्ञ यज्ञं गच्छ यज्ञपतिं ७. १०२. ५
यज्ञतों दक्षिणीयो ८.१०(१). ७
यज्ञस्य चक्षुः प्रभृति २. ३५. ५
१९. ५८. ५
यज्ञायज्ञियस्य च १५. २. १२
यज्ञायज्ञियाय च १५. २. ११
यज्ञेन यज्ञमयजन्त ७. ५. १
यज्ञैः संमिस्राः पृषतीभिः २०. ६७. ४
यज्ञैरथर्वा प्रथमः २०. २५. ५
यज्ञैरिषूः संनममानो ८. ३. ६
यज्ञो दक्षिणाभिरुदक्रामत् १९. १९. ६
यज्ञो बभूव स आ बभूव ७. ५. २
यतः सूर्य उदेत्यस्तं १०. ८. १६
यत इन्द्र भयामहे १९. १५. १
यतो दृष्टं यतो धीतं ७. ५८. ३
यत्कशिपूपबर्हणमाहरन्ति ९. ६(१). १०
यत्काम कामयमाना १९. ५२. ५
यत्किं चासौ मनसा ७. ७३. १
यत्किं चेदं पतयति १९. ४८. ३
यत्किं चेदं वरुण ६. ५१. ३
यत्कृपते यद्वनुते १२. २. ३६
यत्क्षत्तारं हुयत्या ९. ६(६). १
यत्क्षुरेण मर्चयता ८. २. १७
यत्त आत्मनि तन्वां १. १८. ३
यत्तच्छरीरमशयत् ११. ८. १६
यत्तर्पणमाहरन्ति ९. ६(१). ६
यत्ते अङ्गमतिहितं १८. २. २६
यत्ते अजं भुवस्पत १०. ५. ४५
यत्ते अपोदकं विष ५. १३. २
यत्ते काम शर्म त्रिवरूथ ९. २. १६
यत्ते कृष्णः शकुन १८. ३. ५५
यत्ते क्रुद्धो धनपति १०. १०. ११
यत्ते क्लोमा यकृदयं १०. ९. १५
यत्ते चन्द्रं कश्यप १३. ३. १०
यत्ते चर्म शतौदने १०. ९. २४
यत्ते तनूष्वनह्यन्त १९. २०. ३
यत्ते दर्भ जरामृत्युः १९. ३०. १
यत्ते देवा अकृण्वन् ७. ८४. १
यत्ते देवी निर्ऋति ६. ६३. १
यत्ते नद्धं विश्ववारे ९. ३. २
यत्ते नाम सुहवं ७. २१. ४
यत्ते नियानं रजसं ८. २. १०
यत्ते पितृभ्यो ददतो १०. १. ११
यत्ते पुच्छं ये ते बाला १०. ९. २२
यत्ते प्रजायां पशुषु १४. २. ६२
यत्ते भूमे विखनामि १२. १. ३५
यत्ते मज्ञा यदस्थि १०. ९. १८
यत्ते मध्यं पृथिवि १२. १. १२
यत्ते माता यत्ते पिता ५. ३०. ५
यत्ते यकृते मतस्ने १०. ९. १६
यत्ते रिष्टं यत्ते भूत ४. १२. २
यत्ते वर्चो जातवेदो ३. २२. ४
यत्ते वासः परिधानं ८. २. १६
यत्ते शिरो यत्ते मुखं १०. ९. १३
यत्तं शीतोष्णो रूरः ५. २२. १०
यत्त्वा क्रुद्धाः प्रचक्रु १२. २. ५
यत्त्वाभिचेरुः पुरुषः ५. ३०. २
यत्त्वा शिक्षः परावधीत् १०. ६. ३
यत्त्वा सोम प्रपिबन्ति १४. १. ४
यत्परममवमं यच्च १०. ७. ८
यत्परिवेष्टारः पात्रहस्ताः ९. ६(६). ३
यत्पिबामि सं पिबामि ६. १३५. २
यत्पुरा परिवेषात्पाद् ९. ६(१). १२
यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा १९. ६. ५
यत्पुरुषेण हविषा देवा १९. ६. १०
यत्पुरुषेण हविषा यज्ञं ७. ५. ४
यत्प्रतिशृणोति प्रत्या ९. ६(६). २
यत्प्रत्याहन्ति विषमेव ८. १०(६). ३
यत्प्राङ् प्रत्यङ् स्वधया १३. २. ३
यत्प्राण क्रतावागते ११. ४. ४
यत्प्राण स्तनयित्नुना ११. ४. ३
यत्लेपिता वरुणेना ३. १३. २
यत्र ऋषयः प्रथमजा १०. ७. १४
यत्र तपः पराक्रम्य १०. ७. ११
यत्र देवा ब्रह्मविदो १०. ७. २४
यत्र देवाश्च मनुष्या १०. ८. ३४
यत्र नावप्रभ्रंशनं यत्र १९. ३९. ८
यत्र ब्रह्मविदो० अग्निर्मा १९. ४३. १
यत्र ब्रह्मविदो० आपो मा १९. ४३. ७
यत्र ब्रह्मविदो० इन्द्रो मा १९. ४३. ६
यत्र ब्रह्मविदो० चन्द्रो मा १९. ४३. ४
यत्र ब्रह्मविदो० ब्रह्मा मा १९. ४३. ८
यत्र ब्रह्मविदो० वायुर्मा १९. ४३. २
यत्र ब्रह्मविदो० सूर्यो मा १९. ४३. ३
यत्र ब्रह्मविदो० सोमो मा १९. ४३. ५
यत्र लोकांश्च कोशांश्चापो १०. ७. १०
यत्र वः श्रेष्ठा हरिता ४. ३७. ५
यत्र स्कम्भः प्रजनयन् १०. ७. २६
यत्रादित्याश्च रुद्राश्च १०. ७. २२
यत्रानूस्तिरन्नः शिंशपाः २०. १२९. ७
यत्रामृतं च मृत्युश्च १०. ७. १५
यत्राश्वत्था न्यप्रोधा ४. ३७. ४
यत्रा सुपर्णा अमृतस्य ९. ९. २२
यत्रा सुहार्दः० अस्ढोणा ६. १२०. ३
यत्रा सुहार्दः० तं लोकं ३. २८. ५
यत्रा सुहार्दां सुकृता ३. २८. ६
यत्रेदानीं पञ्चसि ८. ३. ५
यत्रैषामग्ने जनिमानि १. ८. ४
यत्संयमो न वि यमो ४. ३. ७
यत्सभागयति दक्षिणाः ९. ६(६). ६
यत्समुद्रमन्दु भ्रितं १३. २. १४
यत्समुद्रो अभ्यक्रन्दत् १९. ३०. ५
यत्सुपर्णा विवक्षवो २. ३०. ३
यत्सोममिन्द्र विष्णवि २०. १११. १
यत्स्वप्ने अन्नमश्नामि ७. १०६. १
यथा कलां० सर्वं द्विषते ६. ४६. ३
यथा कलां० सर्वमभिये १९. ५७. १
यथाक्षरो मघवंश्चारु २. ३६. ४
यथाग्रे त्वं वनस्पते १९. ३१. ९
यथा चकृर्देवासुरा ६. १४१. ३
यथाज्यं प्रगृहीतमात्मन्मे १२. ४. ३४
यथा त्वमुत्तरोत्तो असपत्नः १९. ४६. ७
यथादित्या वसुभिः ६. ७४. ३
यथा देवा असुरान् ९. २. १८
यथा देवेभ्यसृतं यथैषु १०. ३. २५
यथा द्यां च पृथिवीं १. २. ४
यथा द्यौश्च पृथिवी २. १५. १
यथा नकुलो विच्छिद्य ६. १३९. ५
यथा नडं कशिपुने ६. ११८. ५
यथापसस्तावाद्रं ६. ७२. २
यथा प्रविर्यवोपधि ६. ७०. ३
यथा प्राण बलिहृत ११. ४. १९
यथा बाणः सुसंशितः ६. १०५. २
यथा बीजुर्वराया १०. ६. ३३
यथा ब्रह्म च क्षत्रं च २. १५. ४
यथा भूतं च भव्यं च २. १५. ६
यथा भूमिर्मृतमना ६. १८. २
यथा मक्षा इदं मधु ९. १. १७
यथा मधु मधुकृतः ९. १. १६
यथा मनो मनस्केतैः ६. १०५. १
यथा मम स्मरादसौ ६. १३०. ३
यथा मांसं यथा सुरा ६. ७०. १
यथा मृगाः संविजन्त ५. २१. ४
यथायं वाहो अश्विना ६. १०२. १
यथा यमाय हर्म्यं १८. ४. ५५
यथा यशः कन्यायां १०. ३. २०
यथा यशः पृथिव्यां १०. ३. १९
यथा यशः प्रजापतौ १०. ३. २४
यथा यशः सोमपीथे १०. ३. २१
यथा यशोऽन्नमस्यादित्ये १०. ३. १८
यथा यशोऽग्निदोत्रे १०. ३. २२
यथा यशो यजमाने १०. ३. २३
यथायाश्मस्तदग्नात् १२. ५(७). ३
यथा वातश्चाग्निश्च १०. ३. १४
यथा वातश्चावयति १०. १. १३
यथा वातेन प्रक्षीणा १०. ३. १५
यथा वातो यथा मनो १. ११. ६
यथा वातो वनस्पतीन् १०. ३. १३
यथा वृक्षवद्भावयो ५. २१. ५
यथा वृक्षं लिवुजा ६. ८. १
यथा वृक्षमशनि ७. ५२. १
यथा वृत्र हता आप ६. ८५. ३
यथा शाम्याकः प्रपतन १९. ५०. ४
यथा शेपो अपायतै ७. ९५. ३
यथा शेषविनिर्हितो १२. ४. १४
यथा श्येनात्पतत्रिणः ५. २१. ६
यथाश्वत्थ निरभनो ३. ६. ३
यथाश्वत्थ वानस्पत्या ३. ६. ६
यथा सत्यं चानृतं च २. १५. ५
यथासितः प्रथयते ६. ७२. १

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

यथा सिन्धुर्नदीनां	१४.	१.	४३	७४२
यथा सुपर्णः प्रपतन्	६.	८.	२	६३५
यथा सूर्यश्च चन्द्रश्च	२.	१५.	३	५८९
यथा सूर्यस्य रश्मयः	६.	१०५.	३	६४९
यथा सूर्यो अतिभाति	१०.	३.	१७	६९६
यथा सूर्यो नक्षत्रा	७.	१४.	१	६५७
यथा सूर्यो मुच्यते	१०.	१.	३२	६९४
यथा सो अस्य परिधि	५.	२९.	३	६३३
यथा सोमः प्रातःसवने	९.	१.	११	६८१
यथा सोम ओषधी	६.	१५.	३	६३६
यथा सोमस्तृतीये	९.	१.	१३	६८१
यथा सोमो द्वितीये	९.	१.	१२	६८१
यथा स्म ते विरोहतो	४.	४.	३	६०७
यथा हव्यं वहसि	४.	२३.	२	६१३
यथाहश्च रात्री च	२.	१५.	२	५८९
यथा हस्ती हस्तिन्याः	६.	७०.	२	६४४
यथाहान्यनुपूर्वं	१२.	२.	२५	७२५
यथेदं भूम्या अधि	२.	३०.	१	५९२
यथेन्द्र उद्वाचनं लब्ध्वा	५.	८.	८	६२३
यथेन्द्रो द्यावापृथिव्यो	६.	५८.	२	६४२
यथेमे द्यावापृथिवी	६.	८.	३	६३६
यथेयं० दाधार पर्वतान्	६.	१७.	३	६३७
यथेयं० दाधार विष्ठितं	६.	१७.	४	६३७
यथेयं० दाधारेमान्	६.	१७.	२	६३७
यथेयं० भूतानां० दधामि	५.	२५.	२	६३१
यथेयं० भूतानां० ध्रियतां	६.	१७.	१	६३७
यथेषुका परापत	१.	३.	९	५७९
यथोदकमपपुषो	६.	१३९.	४	६५४
यदक्षेषु यदा यत्समित्यां	१२.	३.	५२	७२८
यदग्न एषा समिति	१८.	१.	२६	७६१
यदग्निरापो अदहत्	१.	२५.	१	५८३
यदग्ने अद्य मिथुना	८.	३.	१२	६७२
	१०.	५.	४८	७००
यदग्ने तपसा तप	७.	६३.	१	६६३
यदग्ने यानि कानि	१९.	६४.	३	७८७
यदग्नौ सूर्ये विषं	१०.	४.	२२	६९७
यददः संप्रयतीरहा	३.	१३.	१	५९९
यददीव्यन्नृणमहं	६.	११९.	१	६५१
यददोअदो अभ्यगच्छन्	१६.	७.	९	७५४
यददो देवा असुरां	४.	१९.	४	६१२
यदद्य कच्च वृत्रहन्	२०.	११२.	१	
यदद्य त्वा प्रयति	७.	१०२.	१	
यदद्य वां नासत्यो	२०.	१४०.	४	
यदद्या रात्रि सुभगे	१९.	५०.	६	
यदद्याश्विनावहं हुवेय	२०.	१४१.	३	
यदनूचीन्द्रमैरत्त्व	१०.	१०.	१०	
यदन्तरं तद्बाह्यं	२.	३०.	४	
यदन्तरा द्यावापृथिवी	१०.	८.	३९	
यदन्तरा परावत	२०.	६.	९	
यदन्तरिक्षं पृथिवी	६.	१२०.	१	
यदन्तरिक्षे यद्दिवि	२०.	१३९.	२	
यदन्नमद्मि बहुधा	६.	७१.	१	
यदन्नमद्म्यघृतेन	६.	७१.	३	
यदन्ये शतं याचेयु	१२.	४.	२२	
यदप्सु यद्वनस्पतौ	२०.	१३९.	५	
यदभिवदति दीक्षा	९.	६(१).	४	
यदयातं शुभस्पती	१४.	१.	१५	
यदर्वाचीनं त्रैहायणा	१०.	५.	२२	
यदल्पिकास्वल्पिका	२०.	१३६.	३	
यदशनकृतं ह्वयन्ति	९.	६(१).	१३	
यदश्नामि बलं कुर्व	६.	१३५.	१	
यदश्नासि यत्पिबसि	८.	२.	१९	
यदश्विना पृच्छमाना	१४.	१.	१४	
यदसावमुतो देवा	५.	८.	३	
यदस्मासु दुष्वप्न्यं	१९.	४५.	२	
यदस्मृति चकृम किं	७.	१११.	१	
यदस्य दक्षिणमक्ष्यसौ	१५.	१८.	२	
यदस्य हृतं विहृतं	५.	२९.	५	
यदस्याः कस्मै चिद्	१२.	४.	७	
यदस्याः पल्पूलनं	१२.	४.	९	
यदस्या अंहुभेद्याः	२०.	१३६.	१	
यदस्या गोपतौ सत्वा	१२.	४.	८	
यदहरहरभिगच्छामि	१६.	७.	११	
यदा केशानस्थि स्नाव	११.	८.	११	
यदा गार्हपत्यमसपर्यैत्	१४.	२.	२०	
यदाञ्जनं त्रैककुदं	४.	९.	९	
यदाञ्जनाभ्यञ्जनमा	९.	६(१).	११	
यदा त्वष्टा व्यतृणत्	११.	८.	१८	
यदादित्यैर्हूयमानोपा	१०.	१०.	९	
यदान्त्रेषु गवीन्यो	१.	३.	६	
यदापीतासो अंशवो	२०.	१४२.	४	
यदापो अघ्न्या इति	१९.	४४.	९	
यदा प्राणो० ओषधयः	११.	४.	१७	
यदा प्राणो० पशव	११.	४.	५	
यदाबध्नन्दाक्षायणा	१.	३५.	१	
यदा वज्रं हिरण्यमिदया	२०.	७३.	४	
यदा वलस्य पीयतो	२०.	१६.	६	
यदावसथान्कल्पयन्ति	९.	६(१).	७	
यदा वाजमसनद्विश्व	२०.	९१.	१०	
यदाशसा वदतो मे	७.	५९.	१	
यदा शृतं कृणवा जात	१८.	२.	५	
यदासन्द्यामुपधाने	१४.	२.	६५	
यदासुतेः क्रियमाणायाः	३.	७.	६	
यदा स्थूलेन पससाणौ	२०.	१३६.	२	
यदाह भूय उद्धरेति	९.	६(२).	२	
यदि कर्तं पतित्वा	४.	१२.	७	
यदि कामादपकामाद्	९.	८.	८	
यदि क्षितायुर्यदि वा	३.	११.	२	
	२०.	९६.	७	
यदि चतुर्वृषोसि	५.	१६.	४	
यदि चिन्नु त्वा धना	५.	२.	४	
	२०.	१०७.	७	
यदि जाग्रद्यदि स्वपन्	६.	११५.	२	
यदि त्रिवृषोसि	५.	१६.	३	
यदि दशवृषोसि	५.	१६.	१०	
यदि द्विवृषोसि	५.	१६.	२	
यदि नववृषोसि	५.	१६.	९	
यदि नो गां हंसि	१.	१६.	४	
यदिन्द्र प्रागपागुदङ्	२०.	१२०.	१	
यदिन्द्र ब्रह्मणस्पते	६.	४५.	३	
यदिन्द्र यावतस्त्वमेता	२०.	८२.	१	
यदिन्द्रादो दाशराज्ञे	२०.	१२८.	१२	
यदिन्द्राहं यथा त्व	२०.	२७.	१	
यदिन्द्रेण सरथं याथो	२०.	१४१.	२	
यदि पञ्चवृषोसि	५.	१६.	५	
यदि प्रेयुर्देवपुरा ब्रह्म	५.	८.	६	
	११.	१०.	१७	
यदि वासि तिरोजनं	७.	३९.	५	
यदि वासि त्रैककुदं	४.	९.	१०	
यदि वासि देवकृता	५.	१४.	७	
यदि वाहमनृतदेवो	८.	४.	१४	
यदि वृक्षादभ्यपप्त	६.	१२४.	२	
यदि शोको यदि वाभि	१.	२५.	३	
यदि षड्वृषोसि	५.	१६.	६	
यदि सप्तवृषोसि	५.	१६.	७	
यदि स्त्री यदि वा पुमान्	५.	१४.	६	
यदि स्थ क्षेत्रियाणां	२.	१४.	५	
यदि स्थ तमसावृता	१०.	१.	३०	
यदि हुतां यद्यहुताममा	१२.	४.	५३	
यदीदं मातुर्यदि वा	६.	११६.	३	
यदीदिदं मरुतो	४.	२७.	६	
यदीमे केशिनो जना	१४.	२.	५९	
यदीयं दुहिता तव	१४.	२.	६०	
यदीयं हनत्कथं हनत्	२०.	१३२.	१०	
यदुदञ्चो वृषाकपे	२०.	१२६.	२२	
यदुदरं वरुणस्यानु	१०.	१०.	२२	
यदुदीरत आजयो	२०.	५६.	३	
यदुपरिशयनमाहरन्ति	९.	६(१).	९	
यदुपस्तृणन्ति	९.	६(१).	८	
यदुवक्थानृतं जिह्वया	१.	१०.	३	
यदुषो यासि भानुना	२०.	१४२.	३	
यदुस्रियास्वाहुतं	७.	७७.	४	
यदेजति पतति यच्च	१०.	८.	११	
यदेनमाह व्रात्य क्वा	१५.	११.	३	
यदेनमाह व्रात्य तर्पयन्त्विति	१५.	११.	५	
यदेनमाह व्रात्य यथा ते निकाम	१५.	११.	१०	
यदेनमाह व्रात्य यथा ते प्रियं	१५.	११.	६	
यदेनमाह व्रात्य यथा ते वश	१५.	११.	८	
यदेनमाह व्रात्योदक	१५.	११.	४	
यदेनसो मातृकृताच्छेषे	५.	३०.	४	
यद्गायत्रे अधि गायत्र	९.	१०.	१	
यद्गिरामि सं गिरामि	६.	१३५.	३	
यद्गिरिषु पर्वतेषु	९.	१.	१८	
यद्दण्डेन यदिष्वा	५.	५.	४	
यद्दधिषे प्रदिवि	२०.	८७.	२	
यद्दारुणि बध्यसे	६.	१२१.	२	
यद्दुद्रोहिथ शेपिषे	५.	३०.	३	
यद्दुर्भगां प्रस्नपितां	१०.	१.	१०	
यद्दुष्कृतं यच्छमलं यद् वा	७.	६७.	२	
यद्दुष्कृतं यच्छमलं विवाहे	१४.	२.	६६	

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

यद्देवा देवहेडनं देवा	६.	११४.	१
यद्देवा देवान्हविषा	७.	५.	३
यद्देवासो ललामगुं	२०.	१३६.	४
यद्द्याव इन्द्र ते शतं	२०.	८१.	१
	२०.	९२.	२०
यद्विपाच्च चतुष्पाच्च	१९.	३१.	४
यद्ध प्राचीरजगन्तोरो	२०.	१३७.	१
यद्धस्ताभ्यां चकृम	६.	११८.	१
यद्धावसि त्रियोजनं	६.	१३१.	३
यद्धिरण्यं सूर्येण सुवर्णं	१९.	२६.	२
यद्ब्रह्मभिर्यदृषिभि	६.	१२.	२
यद्भद्रस्य पुरुषस्य	२०.	१२८.	३
यद्यग्निः क्रव्याद्यदि वा	१२.	२.	४
यद्यज्जाया पचति त्वत्	१२.	३.	३९
यद्यत्कृष्णः शकुन एह	१२.	३.	१३
यद्यन्तरिक्षे यदि वात	७.	६८.	१
यद्यर्चिर्यदि वासि शोचिः	१.	२५.	२
यद्यष्टवृषोसि	५.	१६.	८
यद्यामं चक्रुर्निखनन्तो	६.	११६.	१
यद्येकवृषोसि	५.	१६.	१
यद्येकादशोसि	५.	१६.	११
यद्येयथ द्विपदी	१०.	१.	२४
यद्योधया महतो	२०.	८७.	४
यद्राजानो विभजन्त	३.	२९.	१
यद्रिप्रं शमलं चकृम	१२.	२.	४०
यद्रोदसी रेजमाने	१.	३२.	३
यद्वः सहः सहमाना	८.	७.	५
यद्वदामि मधुमत्तद्	१२.	१.	५८
यद्वां कक्षीवाँ उत	२०.	१४०.	५
यद्वा अतिथिपति० परि	९.	६(६).	५
यद्वा अतिथिपति० प्रति	९.	६(१).	३
यद्वा कृणोष्योषधीर्यद्वा	१३.	४(४).	१५
यद्वा प्रवृद्ध सत्पते न	२०.	११२.	२
यद्वा रुमे रुशमे	२०.	१२०.	२
यद्वा शक्र परावति	२०.	१११.	२
यद्वासि सुन्वतो वृधो	२०.	१११.	३
यद्विद्वांसो यदविद्वांस	६.	११५.	१
यद्वीळाविन्द्र यत्स्थिरे	२०.	४३.	२
यद्वीध्रे स्तनयति	९.	१.	२४
यद्वेद राजा वरुणो यद्वा	५.	२५.	६
यद्वेद राजा वरुणो वेद	१९.	२६.	४
यद्वो अग्निरजहादेकमङ्गं	१८.	४.	६४
यद्वो देवा उपजीका	६.	१००.	२
यद्वो मनः परागतं	७.	१३.	४
यद्वो मुद्रं पितरः	१८.	३.	१९
यद्वो वयं प्रमिनाम	१९.	५९.	२
यन्तासि यच्छसे हस्ता	६.	८१.	१
यन्त्यस्य देवा देवहूतिं	८.	१०(१).	५
यन्त्यस्य सभां सभ्यो	८.	१०(१).	९
यन्त्यस्य समितिं सामित्यो	८.	१०(१).	११
यन्त्यस्यामन्त्रणमामन्त्रणीयो	८.	१०(१).	१३
यन्न इन्द्रो अखनद्	७.	२५.	१
यन्नासत्या पराके	२०.	१४१.	५
यन्नासत्या भुरण्यथो	२०.	१४०.	१
यन्नूनं धीभिरश्विना	२०.	१४२.	६
यन्मन्युर्जायामावहत्	११.	८.	१
यन्मातली रथक्रीत	११.	६.	२३
यन्मा हुतमहुतमाजगाम	६.	७१.	२
यन्मे अक्ष्योरादिद्योत	६.	२४.	२
यन्मे छिद्रं मनसो	१९.	४०.	१
यन्मेदमभिशोचति	४.	२६.	७
यन्मे मनसो न प्रियं	९.	२.	२
यन्मे माता यन्मे पिता	१०.	३.	८
यमः परोवरो विवस्वान्	१८.	२.	३२
यमः पितृणामधिपतिः	५.	२४.	१४
यमबध्नाद्० तं देवा	१०.	६.	१६
यमबध्नाद्० तं बिभ्रच्चन्द्रमा	१०.	६.	१०
यमबध्नाद्० तं बिभ्रत्सविता	१०.	६.	१३
यमबध्नाद्० तं राजा	१०.	६.	१५
यमबध्नाद्० तं सूर्यः	१०.	६.	९
यमबध्नाद्० तं सोमः	१०.	६.	८
यमबध्नाद्० तमग्निः	१०.	६.	६
यमबध्नाद्० तमापो	१०.	६.	१४
यमबध्नाद्० तमिन्द्रः	१०.	६.	७
यमबध्नाद्० तमिमं देवता	१०.	६.	१७
यमबध्नाद्० तेनेमां	१०.	६.	१२
यमबध्नाद्० मत्तेजसा	१०.	६.	२७
यमबध्नाद्० मत्सर्वाभि	१०.	६.	२८
यमबध्नाद्० मत्सह गोभि	१०.	६.	२३
यमबध्नाद्० मत्सह व्रीहि	१०.	६.	२४
यमबध्नाद्० मदूर्जया	१०.	६.	२६
यमबध्नाद्० मद्रसेन	१०.	६.	२२
यमबध्नाद्० मन्मधो	१०.	६.	२६
यमबध्नाद्० सो अस्मै	१०.	६.	११
यममी पुरोदधिरे	५.	८.	५
यमराते पुरोधत्से	५.	७.	२
यमस्य भाग स्थ	१०.	५.	१२
यमस्य मा यम्यं	१८.	१.	८
यमस्य लोकादध्या	१९.	५६.	१
यमाय घृतवत्पयो	१८.	२.	३
यमाय पितृमते	१८.	४.	७४
यमाय मधुमत्तमं	१८.	२.	२
यमाय सोमः पवते	१८.	२.	१
यमिन्द्र दधिषे त्वमश्वं	२०.	५५.	३
यमिन्द्राग्नी स्मरमसिञ्चता	६.	१३२.	४
यमिन्द्राणी स्मरमसिञ्चद	६.	१३२.	३
यमिमं त्वं वृषाकपिं	२०.	१२६.	४
यमु पूर्वमहुवे तमिदं	२०.	६७.	७
यमोदनं प्रथमजा	४.	३५.	१
यमो नो गातुं प्रथमो	१८.	१.	५०
यमो मृत्युरघमारो	६.	९३.	१
यया द्यौर्यया पृथिवी	१०.	१०.	४
ययोः संख्याता वरिमा	४.	२५.	२
ययो रथः सत्यवर्त्म	४.	२९.	७
ययोरभ्यध्व उत यद्	४.	२८.	२
ययोरोजसा स्कभिता	७.	२६.	१
ययोर्वधान्नापपद्यते	४.	२८.	५
यवानो यतिस्वभिः	२०.	१३०.	७
यशसं मेन्द्रो मघवा	६.	५८.	१
यशा इन्द्रो यशा	६.	३९.	३
	६.	५८.	३
यशा यासि प्रदिशो	१३.	१.	३८
यशो हविर्वर्धतामिन्द्रभूतं	६.	३९.	१
यश्च कवची यश्चाकवचो	११.	१०.	२२
यश्चकार न० मभगो	५.	३१.	११
यश्चकार न० मात्मने	४.	१८.	६
यश्चकार स निष्करत्	२.	९.	५
यश्च गां पदा स्फुरति	१३.	१.	५६
यश्च पणि रघुजिष्ठयो	२०.	१२८.	४
यश्चर्षणिप्रो वृषभः	४.	२४.	३
यश्च सापत्नः शपथो	२.	७.	२
यश्चिद्धि त्वा बहुभ्य	२०.	६३.	६
यस्त आस्यत्पञ्चाङ्गुरि	४.	६.	४
यस्त ऊरू विहरत्यन्तरा	२०.	९६.	१४
यस्तस्तम्भ सहसा	२०.	८८.	१
यस्तिग्मशृङ्गो वृषभो	२०.	३७.	१
यस्तिष्ठति चरति यश्च	४.	१६.	२
यस्ते अग्ने सुमतिं	१८.	१.	२४
यस्ते अप्सु महिमा	१९.	३.	२
यस्ते केशोवपद्यते	६.	१३६.	३
यस्ते गन्धः पुरुषेषु	१२.	१.	२५
यस्ते गन्धः पुष्कर	१२.	१.	२४
यस्ते गन्धः पृथिवि	१२.	१.	२३
यस्ते गर्भं प्रतिमृशा	८.	६.	१८
यस्ते गर्भममीवा	२०.	९६.	१२
यस्तेङ्कुशो वसुदानो	६.	८२.	३
यस्ते देवेषु महिमा	१९.	३.	३
यस्ते परूंषि संदधौ	१०.	१.	८
यस्ते पृथु स्तनयित्नु	७.	१२.	१
यस्ते प्राणेदं वेद	११.	४.	१८
यस्ते प्लाशिर्यो वनिष्ठु	१०.	९.	१७
यस्ते मदो युज्यश्चारु	२०.	११७.	२
यस्ते मदोवकेशो	६.	३०.	२
यस्ते मन्योविधद्	४.	३२.	१
यस्ते शृङ्गवृषो नपात्	२०.	५.	७
यस्ते शोकाय तन्वं	५.	१.	३
यस्ते सर्पो वृश्चिक	१२.	१.	४६
यस्ते स्तनः शशयुर्यो	७.	११.	१
यस्ते हन्ति पतयन्तं	२०.	९६.	१३
यस्ते हवं विवदत्	३.	३.	६
यस्त्वा कृत्याभिर्यस्त्वा	८.	५.	१५
यस्त्वा पिबति जीवति	५.	५.	२
यस्त्वा भ्राता पतिर्भूत्वा	२०.	९६.	१५
यस्त्वा शाले निमिमाय	९.	३.	११
यस्त्वा शाले प्रतिगृह्णाति	९.	३.	९
यस्त्वा स्वपन्तीं त्सरति	८.	६.	८
यस्त्वा स्वप्नेन तमसा	२०.	९६.	१६
यस्त्वा स्वप्ने निपद्यते	८.	६.	७
यस्त्वोवाच परेहीति	१०.	१.	७
यस्मा ऋणं यस्य जाया	६.	११८.	३

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

यस्मात्कोशादुदभराम	१९.	७२.	१
यस्मात्पक्वादमृतं	४.	३५.	६
यस्मादृचो अपातक्षन्	१०.	७.	२०
यस्माद्वाता ऋतुथा	१३.	३.	२
यस्मान्न ऋते विजयन्ते	२०.	३४.	९
यस्मान्मासा निर्मिता	४.	३५.	४
यस्मिन्त्समुद्रो द्यौर्भूमि	११.	३(१).	२०
यस्मिन्त्स्तब्ध्वा प्रजापति	१०.	७.	७
यस्मिन्देवा अमृजत	१२.	२.	१७
यस्मिन्देवा मन्मनि	१८.	१.	३६
यस्मिन्देवा विदथे	१८.	१.	३५
यस्मिन्नुक्थानि रण्वन्ति	२०.	४४.	२
यस्मिन्भूमिरन्तरिक्षं	१०.	७.	१२
यस्मिन्वयं दधिमा	२०.	८९.	६
यस्मिन्विराट्परमेष्ठी	१३.	३.	५
यस्मिन्विश्वा अधि	२०.	११०.	२
यस्मिन्वृक्षे मध्वदः	९.	९.	२१
यस्मिन्बहुर्वीः पञ्च	१३.	३.	६
यस्मै त्वा यज्ञवर्धन	१०.	६.	३४
यस्मै हस्ताभ्यां पादाभ्यां	१०.	७.	३९
यस्य कृष्णो हविर्गृहे	६.	५.	३
यस्य क्रूरमभजन्त	१९.	५६.	५
यस्य चतस्रः प्रदिशो	१०.	७.	१६
यस्य जुष्टिं सोमिनः	४.	२४.	५
यस्य तक्मा कासिका	११.	२.	२२
यस्य ते वासः प्रथम	२.	१३.	५
यस्य ते विश्वमानुषो	२०.	४३.	३
यस्य त्रयस्त्रिंशद्देवा अङ्गे गात्रा	१०.	७.	२७
यस्य त्रयस्त्रिंशद्देवा अङ्गे सर्वे	१०.	७.	१३
यस्य त्रयस्त्रिंशद्देवा निधिं	१०.	७.	२३
यस्य देवा अकल्पन्तोच्छिष्टे	११.	३(१).	२१
यस्य द्यौर्ग्वी पृथिवी	४.	२.	४
यस्य द्विबर्हसो बृहत्	२०.	६१.	५
	२०.	६२.	९
यस्य नेशे यज्ञपति	४.	११.	५
यस्य ब्रह्म मुखमाहुर्जिह्वां	१०.	७.	१९
यस्य भीमः प्रतीकाश	९.	८.	६
यस्य भूमिः प्रमान्तरिक्ष	१०.	७.	३२
यस्य वशास ऋषभास	४.	२४.	४
यस्य वातः प्राणापानौ	१०.	७.	३४
यस्य विश्वे हिमवन्तो	४.	२.	५
यस्य व्रतं पशवो यन्ति	७.	४१.	१
यस्य शिरो वैश्वानर	१०.	७.	१८
यस्य संस्थे न वृण्वते	२०.	६९.	२
यस्य सूर्यश्चक्षुश्चन्द्रमाश्च	१०.	७.	३३
यस्य हेतोः प्रच्यवते	९.	८.	३
यस्यां कृष्णमरुणं च	१२.	१.	५२
यस्यां गायन्ति नृत्यन्ति	१२.	१.	४१
यस्यां पूर्वे पूर्वजना	१२.	१.	५
यस्यां पूर्वे भूतकृत	१२.	१.	३९
यस्यां वृक्षा वानस्पत्या	१२.	१.	२७
यस्यां वेदिं परिगृह्णन्ति	१२.	१.	१३
यस्यां सदोहविर्धाने	१२.	१.	३८
यस्यां समुद्र उत सिन्धु	१२.	१.	३
यस्याः पुरो देवकृताः	१२.	१.	४३
यस्याञ्जन प्रसर्पस्यङ्ग	४.	९.	४
यस्यामन्नं व्रीहियवौ	१२.	१.	४२
यस्यामापः परिचराः	१२.	१.	९
यस्यामितानि वीर्या	२०.	६५.	३
यस्याश्चतस्रः प्रदिशः	१२.	१.	४
यस्याश्वासः प्रदिशि	२०.	३४.	७
यस्यास्त आसनि घोरे	६.	८४.	१
यस्येदं प्रदिशि० प्र चानति	७.	२६.	२
यस्येदं प्रदिशि० यज्जातं	४.	२३.	७
यस्येदमा रजो युजस्तुजे	६.	३३.	१
यस्योरुषु त्रिषु विक्रमणे	७.	२७.	३
यां कल्पयन्ति वहतौ	१०.	१.	१
यां जमदग्निरखनद्	६.	१३७.	१
यां ते कृत्यां कूपे	५.	३१.	८
यां ते चक्रुः कृकवाका	५.	३१.	२
यां ते चक्रुः पुरुषास्ये	५.	३१.	९
यां ते चक्रुः सभायां	५.	३१.	६
यां ते चक्रुः सेनायां	५.	३१.	७
यां ते चक्रुरमूलायां	५.	३१.	४
यां ते चक्रुरामे० नीललोहिते	४.	१७.	४
यां ते चक्रुरामे० मिश्रधान्ये	५.	३१.	१
यां ते चक्रुरेकशफे	५.	३१.	३
यां ते चक्रुर्गार्हपत्ये	५.	३१.	५
यां ते धेनुं निपृणामि	१८.	२.	३०
यां ते बर्हिषि यां	१८.	१.	१८
यां ते रुद्र इषुमास्य	६.	९०.	१
यां त्वा गन्धर्वो अखनद्	४.	४.	१
यां त्वा देवा असृजन्त	५.	१३.	४
यां त्वा पूर्वे भूतकृत	६.	१३३.	५
यां देवाः प्रतिनन्दन्ति	३.	१०.	२
यां देवा अनुतिष्ठन्ति	११.	१०.	२७
यां द्विपादः पक्षिणः	१२.	१.	५१
यां प्रच्युतामनु यज्ञाः	८.	९.	८
यां मृतायानुबध्नन्ति	५.	१९.	१२
यां मेधामृभवो विदुर्या	६.	१०८.	३
यां रक्षन्त्यस्वप्ना विश्व	१२.	१.	७
याः कृत्या आङ्गिरसीर्याः	८.	५.	९
याः क्लन्दास्तमिषीचयो	२.	२.	५
याः पार्श्वे उपर्षन्त्यनु	९.	८.	१५
याः सीमानं विरुजन्ति	९.	८.	१३
याः सुपर्णा आङ्गिरसी	८.	७.	१४
या अकृन्तन्नवयन्याश्च	१४.	१.	४५
या अक्षेषु प्रमोदन्ते	४.	३८.	४
या आपो दिव्याः पयसा	४.	८.	५
या आपो याश्च देवता	११.	८.	३०
या इन्द्रभुज आभरः	२०.	५५.	२
या एव यज्ञ आपः	९.	६(१).	५
या ओषधयः सोमराज्ञी	६.	९६.	१
या ओषधयो या नद्यो	१४.	२.	७
या गुदा अनुसर्पन्त्यात्राणि	९.	८.	१७
या गृत्स्यस्त्रिपञ्चाशीः	१९.	३४.	२
या ग्रैव्या अपचितोयो	७.	८०.	२
यातं छर्दिष्पा उत	२०.	१४१.	१
या त इन्द्र तनूरप्सु	१९.	१.	१३
यातुधानस्य सोमप	१.	८.	३
यातुधाना निर्ऋतिरादु	७.	७३.	२
या ते प्राण प्रिया	११.	४.	९
या ते वसोर्वात इषुः	१९.	५५.	२
या दुर्हार्दो युवतयो	१४.	२.	२९
या देवीः पञ्च प्रदिशो	११.	६.	२२
या द्विपक्षा चतुष्पक्षा	९.	३.	२१
यानसावतिसरांश्चकार	५.	८.	७
यानावह उशतो देव	७.	१०२.	३
यानि कानि चिच्छान्तानि	१९.	९.	१३
यानि चकार भुवनस्य	१९.	२०.	२
यानि तेन्तः शिक्या	९.	३.	६
यानि त्रीणि बृहन्ति	८.	९.	३
यानि नक्षत्राणि दिव्य	१९.	८.	१
यानि भद्राणि बीजा	३.	२३.	४
यान्युलूखलमुसलानि	९.	६(१).	१५
याप सर्प विजमाना	१२.	१.	३७
या पुरस्ताद्युज्यते	१०.	८.	१०
या पूर्वं पतिं वित्त्वा	९.	५.	२७
या प्लीहानं शोषयति	३.	२५.	३
या बभ्रवो याश्च शुक्रा	८.	७.	१
याभ्यामजयन्त्स्वरप्र	७.	११५.	२
या मज्ज्ञो निर्धयन्ति	९.	८.	१८
यामन्यामन्नुपयुक्तं	४.	२३.	३
यामन्वैच्छद्धविषा	१२.	१.	६०
यामश्विनावमिमातां	१२.	१.	१०
या महती महोन्माना	५.	७.	९
यामापीनामुपसीदन्त्यापः	९.	१.	९
या मा लक्ष्मीः पतया	७.	१२०.	२
यामाहुतिं प्रथमामथर्वा	१९.	४.	१
यामाहुस्तारकैषा	५.	१७.	४
यामिन्द्रेण संधां समधत्था	११.	१०.	९
यामृषयो भूतकृतो	६.	१०८.	४
या मे प्रियतमा तनूः	१४.	२.	५०
यायैः परिनृत्यत्याददाना	४.	३८.	३
या रोहन्त्याङ्गिरसीः	८.	७.	१७
या रोहिणीर्देवत्या	१.	२२.	३
यार्णवेधि सलिलमग्र	१२.	१.	८
यावङ्गिरसमवयो	४.	२९.	३
यावच्चतस्रः प्रदिश	३.	२२.	५
यावतीः कियतीश्चेमाः	८.	७.	१३
यावतीः कृत्या उपवासने	१४.	२.	४९
यावती द्यावापृथिवी० यावत्सप्त	४.	६.	२
यावती द्यावापृथिवी० यावदापः	९.	२.	२०
यावतीनामोषधीनां	८.	७.	२५
यावतीर्दिशः प्रदिशो	९.	२.	२१
यावतीर्भृङ्गा जत्वः	९.	२.	२२
यावतीषु मनुष्या भेषजं	८.	७.	२६
यावत्तेभि विपश्यामि	१२.	१.	३३
यावत्सत्रसद्येनेष्ट्वा	९.	६(४).	६
यावदग्निष्टोमेनेष्ट्वा	९.	६(४).	२

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

यावदङ्गीनं पारस्वतं	६.	७२.	३
यावदतिरात्रेणेष्ट्वा	९.	६(४).	४
यावदस्या गोपतिर्नोप	१२.	४.	२७
यावद्दाताभिमनस्येत	११.	३(१).	२५
यावद्वादशाहेनेष्ट्वा	९.	६(४).	८
यावन्तो अस्याः पृथिवीं	१२.	३.	४०
यावन्तो मा सपत्नाना	७.	१४.	२
या वशा उदकल्पयन्	१२.	४.	४१
यावारेभाथे बहु	४.	२८.	४
या विश्पत्नीन्द्रमसि	७.	४८.	३
या शशाप शपनेन	१.	२८.	३
	४.	१७.	३
याश्चाहं वेद वीरुधो	८.	७.	१८
यासां देवा दिवि कृण्वन्ति	१.	३३.	३
यासां द्यौष्पिता पृथिवी	३.	२३.	६
यासां नाभिरारेहणं	६.	९.	३
यासां राजा वरुणो	१.	३३.	२
या सुबाहुः स्वङ्गुरिः	७.	४८.	२
यास्तिरश्चीरुपर्षन्त्यर्ष	९.	८.	१६
यास्ते ग्रीवा ये स्कन्धा	१०.	९.	२०
यास्ते जङ्घा याः कुष्ठिका	१०.	९.	२३
यास्ते धाना० सन्तु विभ्वीः	१८.	३.	६९
यास्ते धाना० सन्तूद्भ्वीः	१८.	४.	२६
	१८.	४.	४३
यास्ते प्राचीः प्रदिशो	१२.	१.	३१
यास्ते राके सुमतयः	७.	५०.	२
यास्ते रुहः प्ररुहो	१३.	१.	९
यास्ते विशस्तपसः	१३.	१.	१०
यास्ते शतं धमनयो	६.	९०.	२
यास्ते शिवास्तन्वः	९.	२.	२५
यास्ते शोचयो रंहयो	१८.	२.	९
या हस्तिनि द्वीपिनि	६.	३८.	२
या हृदयमुपर्षन्त्यनु	९.	८.	१४
युक्ता मातासीद्धुरि	९.	९.	९
युजे रथं गवेषणं	२०.	१२.	३
युज्यमानो वैश्वदेवो	९.	७.	२४
युञ्जन्ति ब्रध्नमरुषं	२०.	२६.	४
	२०.	४७.	१०
	२०.	६९.	९
युञ्जन्ति हरी इषिरस्य	२०.	१००.	३
युञ्जन्त्यस्य काम्या	२०.	२६.	५
	२०.	४७.	११
	२०.	६९.	१०
युध एकः सं सृजति	१०.	१०.	२४
युधा युधमुप घेदेषि	२०.	२१.	७
युधेन्द्रो मह्ना वरिव	२०.	११.	७
युनक्त सीरा वि युगा	३.	१७.	२
युनक्तु देवः सविता	५.	२६.	२
युनज्मि त उत्तरावन्त	४.	२२.	५
युवं भगं सं भरतं	१४.	१.	३१
युवं श्रियमश्विना	२०.	१४३.	२
युवं सुराममश्विना	२०.	१२५.	४
यूयं गावो मेदयथा	४.	२१.	६
यूयं नः प्रवतो नपान्	१.	२६.	३
यूयमग्ने शंतमाभि	१८.	४.	१०
यूयमुग्रा मरुतः० आ वो	१३.	१.	३
यूयमुग्रा मरुतः० सोमो	५.	२१.	११
यूयमुग्रा मरुत ईदृशे	३.	१.	२
ये अग्नयो अप्स्वन्तर्ये	३.	२१.	१
ये अग्निजा ओषधिजा	१०.	४.	२३
ये अग्निदग्धा ये अनग्नि	१८.	२.	३५
ये अग्रवः शशमानाः	१८.	२.	४७
ये अङ्गानि मदयन्ति	९.	८.	१९
ये अत्रयो अङ्गिरसो	१८.	३.	२०
ये अन्ता यावतीः	१४.	२.	५१
ये अपीपन्ये अदिहन्	४.	६.	७
ये अमृतं बिभृथो ये	४.	२६.	४
ये अम्नो जातान्मारयन्ति	८.	६.	१९
ये अर्वाङ्मध्य उत वा	१०.	८.	१७
ये अर्वाञ्चस्तौं उ पराच	९.	९.	१९
ये उस्रिया बिभृथो ये	४.	२६.	५
ये कीलालेन तर्पयथो	४.	२६.	६
ये कीलालेन तर्पयन्ति	४.	२७.	५
ये कुकुन्धाः कुकूरभाः	८.	६.	११
ये क्रिमयः पर्वतेषु	२.	३१.	५
ये क्रिमयः शितिकक्षा	५.	२३.	५
ये गन्धर्वा अप्सरसो	१२.	१.	५०
ये गर्भा अवपद्यन्ते	५.	१७.	७
ये गव्यता मनसा	२०.	८३.	२
ये गोपतिं पराणीया	१२.	४.	५२
ये ग्रामा यदरण्यं	१२.	१.	५६
ये ग्राम्याः पशवो	२.	३४.	४
ये च जीवा ये च मृता	१८.	४.	५७
ये च देवा अयजन्ताथो	२०.	१२८.	५
ये च धीरा ये चाधीराः	११.	९.	२२
ये चित्पूर्व ऋतसाता	१८.	२.	१५
ये त आरण्याः पशवो	१२.	१.	४९
ये त आसन्दश जाता	११.	८.	१०
येत आसीद्भूमिः पूर्वा	११.	८.	७
ये तातृपुर्देवत्रा	१८.	३.	४७
ये ते देवि शमितारः	१०.	९.	७
ये ते नाड्यौ देवकृते	६.	१३८.	४
ये ते पन्थानो बहवो	१२.	१.	४७
ये ते पन्थानोव दिवो	७.	५७.	२
ये ते पाशा वरुण	४.	१६.	६
ये ते पूर्वे परागता	१८.	३.	७२
ये ते रात्रि नृचक्षसो	१९.	४७.	३
ये ते रात्र्यनड्वाह	१९.	५०.	२
ये ते शृङ्गे अजरे	८.	३.	२५
येत्र पितरः पितरो	१८.	४.	८६
ये त्रयः कालकाञ्जा	६.	८०.	२
ये त्रिषप्ताः परियन्ति	१.	१.	१
ये त्वा कृत्वालेभिरे	१०.	१.	९
ये त्वामिन्द्र न तुष्टुवु	२०.	११५.	३
ये त्वा श्वेता अजैश्रवसो	२०.	१२८.	१६
येदं पूर्वागन्नशना	१४.	२.	७४
ये दक्षिणतो जुह्वति	४.	४०.	२
ये दस्यवः पितृषु	१८.	२.	२८
ये दिवि पुण्या लोका	१५.	१३.	६
ये दिशामन्तर्देशेभ्यो	४.	४०.	८
ये देवाः पृथिव्या	१९.	२७.	१३
ये देवा अन्तरिक्ष	१९.	२७.	१२
ये देवा दिविषदो० पृथिव्यां	११.	६.	१२
ये देवा दिविषदो० ये चेमे	१०.	९.	१२
ये देवा दिवि ष्ठ ये	१.	३०.	३
ये देवा दिव्येकादश	१९.	२७.	११
ये देवानामृत्विजो यज्ञियासो	१९.	११.	५
ये देवानामृत्विजो ये च	१९.	५८.	६
ये देवा राष्ट्रभृतो	१३.	१.	३५
ये देवास्तेन हासन्ते	४.	३६.	५
येधस्ताज्जुह्वति जातवेदो	४.	४०.	५
ये धीवानो रथकाराः	३.	५.	६
ये नः पितुः० अनूजहिरे	१८.	३.	४६
ये नः पितुः० तेभ्यः	१८.	३.	५९
ये नः पितुः० य आ	१८.	२.	४९
ये नः सपत्ना अप ते	५.	३.	१०
येन ऋषयो बलमद्योतयन्	४.	२३.	५
येन कृशं वाजयन्ति	६.	१०१.	२
येन ज्योतींष्यायवे	२०.	६१.	२
ये नदीनां संस्रवन्त्युत्सासः	१.	१५.	३
येन देवं सवितारं	१९.	२४.	१
येन देवाः स्वरारुरुहु	४.	११.	६
येन देवा अमृत	४.	२३.	६
येन देवा असुराणा	६.	७.	३
येन देवा असुरान्	९.	२.	१७
येन देवा ज्योतिषा	११.	१.	३७
येन देवा न वियन्ति	३.	३०.	४
येन धनेन० तन्मे	३.	१५.	५
येन धनेन० तस्मिन्	३.	१५.	६
येन महानघ्न्या जघन	१४.	१.	३६
येन मृतं स्नपयन्ति	५.	१९.	१४
येन वृक्षाँ अभ्यभवो	६.	१२९.	२
येन वेहद्बभूविथ	३.	२३.	१
येन सिन्धुं महीरपो	२०.	६३.	९
येन सूर्यां सावित्री	६.	८२.	२
येन सोम साहन्त्यासुरा	६.	७.	२
येन सोमादितिः पथा	६.	७.	१
येन हस्ती वर्चसा	३.	२२.	३
येनाग्निरस्या भूम्या	१४.	१.	४८
येनातरन्भूतकृतो	४.	३५.	२
येना दशग्वमध्रिगुं	२०.	६३.	८
येनादित्यान्हरितः	१३.	३.	१७
येना निचक्र आसुरीन्द्रं	७.	३९.	२
येना पावक चक्षसा	१३.	२.	२१
	२०.	४७.	१८
येनावपत्सविता क्षुरेण	६.	६८.	३
येना श्रवस्यश्चरथ	३.	९.	४
येना समुद्रमसृजो	२०.	९.	४
	२०.	४९.	७
येना सहस्रं वहसि	९.	५.	१७

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

येनासौ गुप्त आदित्य	११.	१०.	११
ये निखाता ये परोप्ता	१८.	२.	३४
येनेन्द्राय समभरः	१.	९.	३
येनेमा विश्वा च्यवना	२०.	३४.	४
येन्तरिक्षाज्जुह्वति	४.	४०.	६
येन्तरिक्षे पुण्या लोका	१५.	१३.	४
ये पन्थानो० ते मा जुषन्तां	३.	१५.	२
ये पन्थानो० तेषामज्यानिं	६.	५५.	१
ये पर्वताः सोमपृष्ठा	३.	२१.	१०
ये पश्चाज्जुह्वति	४.	४०.	३
ये पाकशंसं विहरन्त	८.	४.	९
ये पितरो वधूदर्शा	१४.	२.	७३
ये पुण्यानां पुण्या	१५.	१३.	८
ये पुरस्ताज्जुह्वति	४.	४०.	१
ये पुरुषे ब्रह्म विदुस्ते	१०.	७.	१७
ये पूर्वे वध्वो यन्ति	८.	६.	१४
ये पृथिव्यां पुण्या	१५.	१३.	२
ये वध्यमानमनु	२.	३४.	३
ये बाहवो या इषवो	११.	९.	१
ये बृहत्सामानमा	५.	१९.	२
ये ब्राह्मणं प्रत्यष्ठीवन्	५.	१९.	३
ये भक्षयन्तो न वसून्	२.	३५.	१
येभिः पाशैः परिवित्तो	६.	११२.	३
येभिर्वात इषितः	१०.	८.	३५
ये मा क्रोधयन्ति	४.	३६.	९
येमावास्यां रात्रिमुद	१.	१६.	१
ये मृत्यव एकशतं	८.	२.	२७
ये यक्ष्मासो अर्भका	१९.	३६.	३
ये युध्यन्ते प्रधनेषु	१८.	२.	१७
ये रथिनो ये अरथा	११.	१०.	२४
ये राजानो राजकृतः	३.	५.	७
ये रात्रिमनुतिष्ठन्ति	१९.	४८.	५
ये व आपोपामग्नयो	१०.	५.	२१
ये वध्वश्चन्द्रं वहतुं	१४.	२.	१०
ये वर्मिणो येवर्माणो	११.	१०.	२३
ये वशाया अदानाय	१२.	४.	५१
ये वां दंसांस्यश्विना	२०.	१३९.	३
येवाषासः कण्वशास	५.	२३.	७
ये वो देवाः पितरो	१.	३०.	२
ये व्रीहयो यवा निरुप्यन्ते	९.	६(१).	१४
ये शालाः परिनृत्यन्ति	८.	६.	१०
येश्रद्धा धनकाम्या	१२.	२.	५१
येषां पश्चात्प्रपदानि	८.	६.	१५
येषां प्रयाजा उत वानु	१.	३०.	४
येषामध्येति प्रवसन्	७.	६२.	३
ये सत्यासो हविरदो	१८.	३.	४८
ये सर्पिषः संस्रवन्ति	१.	१५.	४
ये सहस्रमराजन्	५.	१८.	१०
ये सूर्यं न तितिक्षन्त	८.	६.	१२
ये सूर्यात्परिसर्पन्ति	८.	६.	२४
ये सोमासः परावति	२०.	११२.	३
येस्माकं पितरस्तेषां	१८.	४.	६८
येस्यां स्थ दक्षिणायां	३.	२६.	२
येस्यां स्थ ध्रुवायां	३.	२६.	५
येस्यां स्थ प्रतीच्यां	३.	२६.	३
येस्यां स्थ प्राच्यां	३.	२६.	१
येस्यां स्थोदीच्यां	३.	२६.	४
येस्यां स्थोर्ध्वायां	३.	२६.	६
ये स्रात्त्यं मणिं जना	८.	५.	७
यैरिन्द्रः प्रक्रीडते	५.	२१.	८
यो अक्रन्दयत्सलिलं	८.	९.	२
यो अक्ष्यौ परिसर्पति	५.	२३.	३
यो अग्निः क्रव्यात्	१२.	२.	७
यो अग्नौ रुद्रो यो	७.	९२.	१
यो अग्रतो रोचनानां	४.	१०.	२
यो अङ्ग्यो यः कर्ण्यो	६.	१२७.	३
यो अद्य देव सूर्य	१३.	१.	५८
यो अद्य सेन्यो वधोवायू	१.	२०.	२
यो अद्य सेन्यो वधो जिघांसन्	६.	९९.	२
यो अद्य स्तेन आयति	४.	३.	५
यो अद्य स्तेन आयत्यघायु	१९.	४९.	९
यो अद्रिभित्प्रथमजा	२०.	९०.	१
यो अनिध्मो दीदय	१४.	१.	३७
यो अन्तरिक्षेण पतति	४.	२०.	९
यो अन्धो यः पुनःसरो	६.	१२९.	३
यो अन्नादो अन्नपति	१३.	३.	७
यो अन्येद्युरुभयद्यु	७.	१२१.	२
यो अस्य पारे रजसः	६.	३४.	५
यो अस्य विश्वजन्मन	११.	४.	२३
यो अस्य समिधं वेद	६.	७६.	३
यो अस्य सर्वजन्मन	११.	४.	२४
यो अस्य स्याद्वशा	१२.	४.	१३
यो अस्याः कर्णा	१२.	४.	६
यो अस्या ऊधो न	१२.	४.	१८
यो अस्या ऋच उप	१२.	४.	२८
यो गिरिष्वजायथा	५.	४.	१
योगेयोगे तवस्तरं	१९.	२४.	७
	२०.	२६.	१
यो जात एव प्रथमो	२०.	३४.	१
यो जाम्या अप्रथय	२०.	१२८.	२
यो जायमानः पृथिवी	१९.	३२.	९
यो जिनाति तमन्विच्छ	६.	१३४.	३
योतिथीनां स आहवनीयो	९.	६(२).	१३
योपर्वाणं पितरं देवबन्धुं	४.	१.	७
यो ददाति शितिपाद	३.	२९.	३
यो दध्रे अन्तरिक्षे	१८.	३.	६३
यो दाधार पृथिवीं	४.	३५.	३
यो देवाः कृत्यां कृत्वा	४.	१८.	२
यो देवो विश्वाद्यमु	३.	२१.	४
यो नः पाप्मन्न जहासि	६.	२६.	२
यो नः शपादशपतः० वृक्ष	७.	६१.	१
यो नः शपादशपतः० शुने	६.	३७.	३
यो नः सुप्ताञ्जाग्रतो	७.	११३.	२
यो नः सोम सुशंसिनो	६.	६.	२
यो नः सोमाभिदासति	६.	६.	३
यो नः स्वो यो अरणः	१.	१९.	३
यो न इदमिदं पुरा	२०.	१४.	३
	२०.	६२.	३
यो न जीवोसि न मृतो	६.	४६.	१
यो नस्तायद्दिप्सति	७.	११३.	१
योनाक्तप्रक्षो अनभ्यक्तो	२०.	१२८.	६
यो नो अग्निः पितरो	१२.	२.	३३
यो नो अग्निर्गार्हपत्यः	१९.	३१.	२
यो नो अश्वेषु वीरेषु	१२.	२.	१५
यो नो दिप्सददिप्सतो	४.	३६.	२
यो नो द्युवे धनमिदं	७.	११४.	५
यो नो द्वेषत्पृथिवि	१२.	१.	१४
यो नो भद्राहमकरः	६.	१२८.	४
यो नो मर्तो मरुतो	७.	८२.	२
यो नो रसं दिप्सति	८.	४.	१०
योन्तरिक्षे तिष्ठति	११.	२.	२३
योप्स्वग्निरति तं	१६.	१.	७
योभियातो निलयते	११.	२.	१३
यो भूतं च भव्यं च	१०.	८.	१
यो ममार प्रथमो	१८.	३.	१३
यो मा पाकेन मनसा	८.	४.	८
यो माभिच्छायमत्येषि	१३.	१.	५७
यो मायातुं यातुधानेत्याह	८.	४.	१६
यो मारयति प्राणयति	१३.	३.	३
यो यज्ञस्य प्रसाधन	१३.	१.	६०
यो रक्षांसि निजूर्वत्यग्नि	६.	३४.	२
यो रध्रस्य चोदिता यः	२०.	३४.	६
यो राजा चर्षणीनां	२०.	९२.	१६
	२०.	१०५.	४
यो रायोवनिर्महान्	२०.	६८.	१०
यो रोहितो वृषभ	१३.	१.	२५
यो वः शिवतमो रस	१.	५.	२
यो वः शुष्मो हृदये	६.	७३.	२
यो व आपोग्निराविवेश	१६.	१.	८
यो व आपोपां भागो	१०.	५.	१५
यो व आपोपां वत्सो	१०.	५.	१७
यो व आपोपां वृषभो	१०.	५.	१८
यो व आपोपां हिरण्य	१०.	५.	१९
यो व आपोपामश्मा	१०.	५.	२०
यो व आपोपामूर्मिं	१०.	५.	१६
यो वा अभिभुवं नामर्तुं	९.	५.	३६
यो वा उद्यन्तं नामर्तुं	९.	५.	३५
यो वाचा विवाचो	२०.	७३.	६
यो विद्यात्सप्त प्रवतः	१०.	१०.	२
यो विद्यात्सूत्रं विततं	१०.	८.	३७
यो विद्याद्ब्रह्म प्रत्यक्षं	९.	६(१).	१
यो विश्वचर्षणिरुत	१३.	२.	२६
यो विश्वाभि विपश्यति	६.	३४.	४
यो वेतसं हिरण्ययं	१०.	७.	४१
यो वेदानडुहो दोहा	४.	११.	९
यो वेहतं मन्यमानो	१२.	४.	३८
यो वै कशायाः सप्त	९.	१.	२२
यो वै कुर्वन्तं नामर्तुं	९.	५.	३२
यो वै तां ब्रह्मणो	१०.	२.	२९
यो वै ते विद्यादरणी	१०.	८.	२०

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

यो वै नैदाघं नामर्तुं	९.	५.	३१
यो वै पिन्वन्तं नामर्तुं	९.	५.	३४
यो वै संयन्तं नामर्तुं	९.	५.	३३
यो व्यतीरफाणयत्	२०.	९२.	१०
योस्मांश्चक्षुषा मनसा	५.	६.	१०
योस्मान्द्वेष्टि तमात्मा	१६.	७.	५
योस्मान्द्वेष्टि यं वयं	७.	८६.	५
योस्मान्ब्रह्मणस्पते	६.	६.	१
योस्य दक्षिणः कर्णोयं	१५.	१८.	३
यो हत्वाहिमरिणात्	२०.	३४.	३
यो हरिमा जायान्	१९.	४४.	२
यौ त ऊरू अष्ठीवन्तौ	१०.	९.	२१
यौ त ओष्ठौ ये नासिके	१०.	९.	१४
यौ ते दूतौ निर्ऋत	६.	२९.	२
यौ ते बलास तिष्ठतः	६.	१२७.	२
यौ ते बाहू ये दोषणी	१०.	९.	१९
यौ ते मातोन्ममार्ज	८.	६.	१
यौ ते श्वानौ यम	१८.	२.	१२
यौ भरद्वाजमवथो	४.	२९.	५
यौ मेधातिथिमवथो	४.	२९.	६
यौ व्याघ्राववरूढौ	६.	१४०.	१
यौ श्यावाश्वमवथो	४.	२९.	४
रक्षन्तु त्वाग्नयो ये	८.	१.	११
रक्षांसि लोहितमितर	९.	७.	१७
रक्षा माकिर्नो अघशंस	१९.	४७.	६
रक्षोहणं वाजिनमा	८.	३.	१
रथजितां राथजितेयी	६.	१३०.	१
रथे अक्षेष्वृषभस्य	६.	३८.	३
रपद्गन्धर्वीरप्या च	१८.	१.	१९
रयिं मे पोषं सवितोत	४.	२५.	५
रश्मिभिर्नभ आभृतं	१३.	४(१).	२
	१३.	४(१).	९
राकामहं सुहवा	७.	५०.	१
राजन्ये दुन्दुभावाय	६.	३८.	४
राजसूयं वाजपेय	११.	७.	७
राज्ञो वरुणस्य बन्धोसि	१०.	५.	४४
राज्ञो विश्वजनीनस्य	२०.	१२७.	७
रात्रिंरात्रिमप्रयातं	१९.	५५.	१
रात्रिंरात्रिमरिष्यन्त	१९.	५०.	३
रात्रि मातरुषसे नः	१९.	४८.	२
रात्रीभिरस्मा अहभि	१८.	१.	१०
रात्री माता नभः पिता	५.	५.	१
राद्धिः प्राप्तिः समाप्ति	११.	७.	२२
राया वयं सुमनसः	१४.	२.	३६
रारन्धि सवनेषु ण	२०.	२३.	४
रिश्यपदीं वृषदतीं	१.	१८.	४
रिश्यस्येव परीशासं	५.	१४.	३
रुक्मप्रस्तरणं वह्यं	१४.	२.	३०
रुचिरसि रोचोसि	१७.	१.	२१
रुजन्परिरुजन्मृणन्	१६.	१.	२
रुजश्च मा वेनश्च	१६.	३.	२
रुद्र एनमिष्वासो	१५.	५.	११
रुद्र जलाषभेषज	२.	२७.	६
रुद्रस्य मूत्रमस्यमृतस्य	६.	४४.	३
रुद्रस्यैलबकारेभ्यो	११.	२.	३०
रुद्रो वो ग्रीवा अशरैत्	६.	३२.	२
रुन्धि दर्भ सपत्नान्मे	१९.	२९.	३
रुहो रुरोह रोहित	१३.	१.	४
रूपंरूपं वयोवयः	१९.	१.	३
रेवतीरनाधृषः सिषासवः	६.	२१.	३
रेवतीर्नः सधमाद	२०.	१२२.	१
रैभ्यासीदनुदेयी	१४.	१.	७
रोचसे दिवि रोचसे	१३.	२.	३०
रोहण्यसि रोहण्यस्त्र	४.	१२.	१
रोहितः कालो अभवद्	१३.	२.	३९
रोहिते द्यावापृथिवी	१३.	१.	३७
रोहितेभ्यः स्वाहा	१९.	२३.	२३
रोहितो दिवमारुहत्	१३.	२.	२५
रोहितो दिवमारुहन्	१३.	१.	२६
रोहितो द्यावापृथिवी अदृंहत्	१३.	१.	७
रोहितो द्यावापृथिवी जजान	१३.	१.	६
रोहितो यज्ञं व्यदधाद्	१३.	१.	१४
रोहितो यज्ञस्य जनिता	१३.	१.	१३
रोहितो लोको अभवद्	१३.	२.	४०
रोहेम शरदः शतम्	१९.	६७.	४
लाङ्गलं पवीरवत्	३.	१७.	३
लोम लोम्ना सं कल्पया	४.	१२.	५
लोमान्यस्य सं छिन्धि	१२.	५(७).	७
लोहितेन स्वधितिना	६.	१४१.	२
वंशानां ते नहनानां	[illegible]	[illegible]	[illegible]
वच्यस्व रेभ वच्यस्व	२०.	१२७.	४
वज्रापवसाध्यः कीर्तिं	२०.	४८.	३
वज्रेण शतपर्वणा	१२.	५(७).	५
वज्रो धावन्ती वैश्वानर	१२.	५(३).	७
वत्सो विराजो वृषभो	१३.	१.	३३
वध्रयस्ते खनितारो	४.	६.	८
वनस्पतिः सह देवैर्न	१२.	३.	१५
वनस्पतीन्० गन्धर्वाप्सरसः	११.	९.	२४
वनस्पतीन्० द्विपाच्चतुष्पा	८.	८.	१४
वनस्पतेव सृजा रराणः	५.	२७.	११
वनस्पते वीड्वङ्गो हि	६.	१२५.	१
वनस्पते स्तीर्णमा सीद	१२.	३.	३३
वनिष्ठा नाव गृह्यन्ति	२०.	१३१.	९
वने न वा यो न्यधायि	२०.	७६.	१
वनोति हि सुन्वन्क्षयं	२०.	६७.	१
वयं घ त्वा सुतावन्त	२०.	५२.	१
	२०.	५७.	१४
वयं जयेम त्वया युजा	७.	५२.	४
वयं तदस्य संभृतं	७.	९५.	२
वयं शूरेभिरस्तृभि	२०.	७०.	२०
वयमिन्द्र त्वायवोभि	२०.	१८.	४
वयमिन्द्र त्वायवो हवि	२०.	२३.	७
वयमु त्वा तदिदर्था	२०.	१८.	१
वयमु त्वामपूर्व्य स्थूरं	२०.	१४.	१
	२०.	६२.	१
वयमेनमिदा ह्योपी	२०.	९७.	१
वयो न वृक्षं सुपलाश	२०.	१७.	४
वरणेन प्रव्यथिता	१०.	३.	९
वरणो वारयाता अयं	६.	८५.	१
	१०.	३.	५
वराहो वेद वीरुधं	८.	७.	२३
वरुणं त आदित्यवन्त	१९.	१८.	४
वरुणस्य भाग स्थ	१०.	५.	१०
वरुणोपामधिपतिः	५.	२४.	४
वरुणो मादित्यैरेतस्या	१९.	१७.	४
वरुणो याति वस्यभिः	२०.	१३१.	३
वर्च आ धेहि मे	१९.	३७.	२
वर्चसा मां पितरः	१८.	३.	१०
वर्चसा मां समनक्त्वग्नि	१८.	३.	११
वर्चसा द्यावापृथिवी	१९.	५८.	३
वर्म मह्यमयं मणिः	१०.	६.	२
वर्म मे द्यावापृथिवी० वर्म म	८.	५.	१८
वर्म मे द्यावापृथिवी० वर्म मे	१९.	२०.	४
वर्ये वन्द्ये सुभगे	१९.	४९.	३
वर्षं वनुष्वापि गच्छ	१२.	३.	५३
वर्षमाज्यं घ्रंसो अग्नि	१३.	१.	५३
ववक्ष इन्द्रो अमित	२०.	७७.	५
वशां देवा उप जीवन्ति	१०.	१०.	३४
वशा चरन्ती बहुधा	१२.	४.	२९
वशा दग्धामिमाङ्गुरिं	२०.	१३६.	१३
वशा द्यौर्वशा पृथिवी	१०.	१०.	३०
वशा माता राजन्यस्य तथा	१२.	४.	३३
वशा माता राजन्यस्य वशा	१०.	१०.	१८
वशामेवामृतमाहुर्वशां	१०.	१०.	२६
वशा यज्ञं प्रत्यगृह्णाद्	१०.	१०.	२५
वशायाः पुत्रमा यन्ति	२०.	१३०.	१५
वशाया दुग्धं पीत्वा	१०.	१०.	३१
वषट्कारेणान्नादेनान्नमत्ति	१५.	१४.	१८
वषट्ते पूषन्नस्मिन्	१.	११.	१
वषड्हुतेभ्यो वषड्हुतेभ्यः	७.	१०२.	७
वसवस्त्वा दक्षिणत	१०.	९.	८
वसोरिन्द्रं वसुपतिं	२०.	७१.	१५
वसोर्या धारा मधुना	१२.	३.	४१
वस्योभूयाय वसुमान्	१६.	९.	४
वाङ्म आस्यन्नसोः	१९.	६०.	१
वाचमष्टापदीमहं	२०.	४२.	१
वाचस्पत ऋतवः पञ्च	१३.	१.	१८
वाचस्पते पृथिवी नः	१३.	१.	१७
वाचस्पते सौमनसं	१३.	१.	१९
वाजस्य नु प्रसवे मातरं	७.	७.	२
वाजस्य नु प्रसवे सं	३.	२०.	८
वाजेषु सासहिर्भव	२०.	१९.	६
वाञ्छ मे तन्वं पादौ	६.	९.	१
वातं ब्रूमः पर्जन्य	११.	६.	६
वात इव वृक्षान्नि	१०.	१.	१७
वातरंहा भव वाजिन्	६.	९२.	१
वाताज्जातो अन्तरिक्षाद्	४.	१०.	१
वातात्ते प्राणमविदं	८.	२.	३
वानस्पत्यः संभृत	५.	२१.	३
वानस्पत्या ग्रावाणो	३.	१०.	५

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

वायुं तेन्तरिक्षवन्त	१९.	१८.	२
वायुरन्तरिक्षस्याधिपतिः	५.	२४.	८
वायुरन्तरिक्षेणोदक्रामत्	१९.	१९.	२
वायुरमित्राणामिष्वग्रा	११.	१०.	१६
वायुरेनाः समाकरत्	६.	१४१.	१
वायुर्मान्तरिक्षेणैतस्या	१९.	१७.	२
वायोः पूतः पवित्रेण	६.	५१.	१
वायोः सवितुर्विदथानि	४.	२५.	१
वायो यत्ते तपस्तेन	२.	२०.	१
वायो यत्ते तेजस्तेन	२.	२०.	५
वायो यत्तेर्चिस्तेन	२.	२०.	३
वायो यत्ते शोचिस्तेन	२.	२०.	४
वायो यत्ते हरस्तेन	२.	२०.	२
वारिदं वारयातै वरणा	४.	७.	१
वार्णं त्वा यव्याभि	२०.	१००.	२
वार्त्रहत्याय शवसे	२०.	१९.	१
वार्षिकावेनं मासौ	१५.	४.	९
वार्षिकौ मासौ गोप्तारा	१५.	४.	८
वावाता च महिषी	२०.	१२८.	११
वावृधानः शवसा	५.	२.	२
	२०.	१०७.	५
वावृधानस्य ते वयं	२०.	२७.	६
वासन्तावेनं मासौ	१५.	४.	३
वासन्तौ मासौ गोप्तारा	१५.	४.	२
विंशतिः स्वाहा	१९.	२३.	१७
वि ग्राम्याः पशव	३.	३१.	३
वि चिद्वृत्रस्य दोधतो	२०.	१०७.	३
विचिन्वतीमाकिरन्ती	४.	३८.	२
वि जिहीष्व बार्हत्सामे	५.	२५.	९
वि जिहीष्व लोकं कृणु	६.	१२१.	४
विजेषकृदिन्द्र इवानव	४.	३१.	५
वि ज्योतिषा बृहता	८.	३.	२४
विततौ किरणौ द्वौ	२०.	१३३.	१
वि तर्तूर्यन्ते मघवन्	२०.	८५.	४
वि तिष्ठध्वं मरुतो	८.	४.	१८
वि तिष्ठन्तां मातुरस्या	१४.	२.	२५
वि ते भिनद्मि मेहनं	१.	११.	५
वि ते मदं मदावति	४.	७.	४
वि ते मुञ्चामि रशनां	७.	८३.	१
वि ते हनव्यां शरणिं	६.	४३.	३
वि त्वा ततस्रे मिथुना	२०.	७२.	२
	२०.	७५.	१
विदुष्टे अस्य वीर्यस्य	२०.	७५.	२
विदेवस्त्वा महानग्नी	२०.	१३६.	१४
वि देवा जरसावृतन्वि	३.	३१.	१
विद्म ते सभे नाम	७.	१३.	२
विद्म ते सर्वाः परिजाः	१९.	५६.	६
विद्म ते स्वप्न जनित्रं ग्राह्याः	१६.	५.	१
विद्म ते स्वप्न जनित्रं देव	१६.	५.	८
विद्म ते स्वप्न जनित्रं देव०अन्तको	६.	४६.	२
विद्म ते स्वप्न जनित्रं निर्ऋत्याः	१६.	५.	४
विद्म ते स्वप्न जनित्रं निर्भूत्याः	१६.	५.	६
विद्म ते स्वप्न जनित्रं पराभूत्याः	१६.	५.	७
विद्म ते स्वप्न जनित्रमभूत्याः	१६.	५.	५
विद्म वै ते जायान्य जानं	७.	८१.	१
विद्मा शरस्य पितरं चन्द्रं	१.	३.	४
विद्मा शरस्य पितरं पर्जन्यं भूरि	१.	२.	१
विद्मा शरस्य पितरं पर्जन्यं शत	१.	३.	१
विद्मा शरस्य पितरं मित्रं	१.	३.	२
विद्मा शरस्य पितरं वरुणं	१.	३.	३
विद्मा शरस्य पितरं सूर्यं	१.	३.	५
विद्मा हि त्वा धनंजयं	२०.	२४.	६
वि द्यामेषि रजस्पृथ्वह	१३.	२.	२२
	२०.	४७.	१९
विद्याश्च वा अविद्याश्च	११.	८.	२३
विद्युज्जिह्वा मरुतो दन्ता	९.	७.	३
विद्युत्पुंश्चली स्तनयित्नु	१५.	२.	२५
विद्योतमानः प्रति हरति	९.	६(५).	७
विद्रधस्य बलासस्य	६.	१२७.	१
विधुं दद्राणं सलिलस्य	९.	१०.	९
विध्य दर्भ सपत्नान्मे	१९.	२८.	१०
विध्यामस्यासां प्रथमां	७.	७८.	२
वि न इन्द्र मृधो जहि	१.	२१.	२
विपश्चितं तरणिं भ्राजमानं	१३.	२.	४
विभिद्या पुरं शयथे	२०.	९१.	५
विभिन्दती शतशाखा	४.	१९.	५
विभ्राजज्योतिषा स्व	२०.	६२.	७
वि मिमीष्व पयस्वतीं	१३.	१.	२७
विमृग्वरीं पृथिवीमा	१२.	१.	२९
विमोकश्च मार्द्रपविश्च	१६.	३.	४
वि य और्णोत्पृथिवीं	१३.	३.	२२
वि रक्षो वि मृधो जहि	१.	२१.	३
विराजश्च वै स सर्वेषां	१५.	६.	२३
विराजान्नाद्यान्नमत्ति	१५.	१४.	१०
विराडग्रे समभवद्	१९.	६.	९
विराड्वा इदमग्र आसीत्	८.	१०(१).	१
विराड्वाग्विराट् पृथिवी	९.	१०.	२४
वि रोहितो अमृशद्	१३.	१.	८
वि लपन्तु यातुधाना	१.	७.	३
विलिप्ती या बृहस्पते	१२.	४.	४६
विलिप्त्या बृहस्पते या	१२.	४.	४४
विलोहितो अधिष्ठाना	१२.	४.	४
विवस्वान्नो अभयं	१८.	३.	६१
विवस्वान्नो अमृतत्वे	१८.	३.	६२
विवाहां ज्ञातीन्त्सर्वानपि	१२.	५(५).	६
विशंविशं मघवा पर्यशायत	२०.	१७.	६
विशां च वै स सबन्धूनां	१५.	८.	३
विश्वंभरा वसुधानी	१२.	१.	६
विश्वं वायुः स्वर्गो लोकः	९.	७.	४
विश्वकर्माणं ते सप्तऋषि	१९.	१८.	७
विश्वकर्मा मा सप्तऋषिभि	१९.	१७.	७
विश्वजित्कल्याण्यै मा	६.	१०७.	३
विश्वजित्त्रायमाणायै	६.	१०७.	१
विश्वमन्यामभीवार	१.	३२.	४
विश्वम्भर विश्वेन मा	२.	१६.	५
विश्वरूपं चतुरक्षं	२.	३२.	२
विश्वरूपां सुभगामच्छा	६.	५९.	३
विश्वव्यचा घृतपृष्ठो	१२.	३.	१९
विश्वव्यचाश्चर्मौषधयो	९.	७.	१५
विश्वस्वं मातरमोषधीनां	१२.	१.	१७
विश्वाः पृतना अभिभूतरं	२०.	५४.	१
विश्वानि शक्रो नर्याणि	२०.	७७.	६
विश्वान्देवानिदं ब्रूमः	११.	६.	१९
विश्वान्येवास्य भूता	१५.	३.	११
विश्वामित्र जमदग्ने	१८.	३.	१६
विश्वाहा ते सदमिद्	३.	१५.	८
विश्वे देवा उपरिष्टा	८.	८.	१३
विश्वे देवा मरुत इन्द्रो	६.	४७.	२
विश्वे देवा वसवो रक्ष	१.	३०.	१
विश्वेषु हि त्वा सवनेषु	२०.	७२.	१
विषं गवां यातुधाना	८.	३.	१६
विषं प्रयस्यन्ती तक्मा	१२.	५(४).	४
विषमेतद्देवकृतं राजा	५.	१९.	१०
विषमेवास्याप्रियं भ्रातृव्य	८.	१०(६).	४
विषाणा पाशान्वि ष्याध्यस्मद्य	६.	१२१.	१
विषासहिं० इन्द्रः प्रियः पशूनां	१७.	१.	४
विषासहिं० इन्द्रं प्रियः प्रजानां	१७.	१.	३
विषासहिं० इन्द्रं प्रियः समाना	१७.	१.	५
विषासहिं० इन्द्रं प्रियो	१७.	१.	२
विषासहिं० इन्द्रमायु	१७.	१.	१
विषासह्यै स्वाहा	१९.	२३.	२७
विषितं ते वस्तिबिलं	१.	३.	८
वि षु विश्वा अरातयो	२०.	९५.	४
विषूच्येतु कृन्तती पिनाक	१.	२७.	२
विषूवृदिन्द्रो अमतेरुत	२०.	१७.	३
विषेण भङ्गुरावतः प्रति	८.	३.	२३
विष्टारिणमोदनं० नैनानवर्तिः	४.	३४.	३
विष्टारिणमोदनं० नैनान्यमः	४.	३४.	४
विष्णुर्युनक्तु बहुधा	५.	२६.	७
विष्णुर्योनिं कल्पयतु	५.	२५.	५
विष्णोः कर्माणि पश्यत	७.	२७.	६
विष्णोः क्रमोसि सपत्नह	१०.	५.	३०
विष्णोः० सपत्नहा कृषि	१०.	५.	३४
विष्णोः० सपत्नहा दिक्	१०.	५.	२८
विष्णोः० सपत्नहा द्यौ	१०.	५.	२७
विष्णोः० सपत्नहान्तरिक्ष	१०.	५.	२६
विष्णोः० सपत्नहा पृथिवी	१०.	५.	२५
विष्णोः० सपत्नहा प्राण	१०.	५.	३५
विष्णोः० सपत्नहाप्सु	१०.	५.	३३
विष्णोः० सपत्नहा यज्ञ	१०.	५.	३१
विष्णोः० सपत्नहाशा	१०.	५.	२९
विष्णोः० सपत्नहौषधी	१०.	५.	३२
विष्णोर्नु कं प्रा वोचं	७.	२७.	१
विष्वञ्चस्तस्माद्यक्ष्मा	१९.	३८.	२
विष्वञ्चो अस्मच्छरवः	१.	१९.	२
विसल्पस्य विद्रधस्य	९.	८.	२०
विहल्हो नाम ते पिता	६.	१६.	२
वि हि सोतोरसृक्षत	२०.	१२६.	१
विहृदयं वैमनस्यं	५.	२१.	१
वीळु चिदारुजत्नुभि	२०.	७०.	१

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

वीदं मध्यमवासृपद्	१९.	४४.	७
वीमां मात्रां मिमीमहे	१८.	२.	४१
वीमे देवा अक्रंसता	२०.	१३५.	४
वीमे द्यावापृथिवी इतो	३.	३१.	४
वीहि स्वामाहुतिं	६.	८३.	४
वृकश्चिदस्य वारण	२०.	९७.	२
वृक्षं यद्गावः परिषस्व	१.	२.	३
वृक्षंवृक्षमा रोहसि	५.	५.	३
वृश्च दर्भ सपत्नान्मे	१९.	२८.	७
वृश्च प्र वृश्च सं वृश्च	१२.	५(७).	१
वृषणं त्वा वयं वृषन्	२०.	१०२.	३
वृषभं वाजिनं वयं	७.	८५.	२
वृषभो न तिग्मशृङ्गो	२०.	१२६.	१५
वृषभोसि स्वर्ग	११.	१.	३५
वृषाकपायि रेवति	२०.	१२६.	१३
वृषा न क्रुद्धः पतयद्	२०.	१७.	८
वृषा मतीनां पवते	१८.	४.	५८
वृषा मे रवो नभसा	५.	१३.	३
वृषायमाणो अवृणीत	२.	५.	७
वृषा यूथेव वंसगः	२०.	७०.	१४
वृषा वृष्णे दुदुहे दोहसा	१८.	१.	१८
वृषासि त्रिष्टुप्छन्दा	६.	४८.	३
वृषेन्द्रस्य वृषा दिवो	६.	८६.	१
वृषेव यूथे सहसा	५.	२०.	३
वृषो अग्निः समिध्यते	२०.	१०२.	२
वेत्या हि निर्ऋतीनां	२०.	६६.	३
वेदः स्वस्तिर्द्रुघणः	७.	२९.	१
वेद आस्तरणं ब्रह्मो	१५.	३.	७
वेद तत्ते अमर्त्य यत्त	१३.	१.	४४
वेद वै रात्रि ते नाम	१९.	४८.	६
वेदाहं पयस्वन्तं	३.	२४.	२
वेदाहं सप्त प्रवतः	१०.	१०.	३
वेदाहं सूत्रं विततं	१०.	८.	३८
वेदिं भूमिं कल्पयित्वा	१३.	१.	५२
वेदिष्टे चर्म भवतु	१०.	९.	२
वेनस्तत्पश्यत्परमं	२.	१.	१
वैकङ्कतेनेध्मेन देवेभ्य	५.	८.	१
वैयाघ्रो मणिर्वीरुधां	८.	७.	१४
वैरं विकृत्यमाना	१२.	५(४).	१
वैरूपस्य च वै स	१५.	२.	१८
वैरूपाय च वै स	१५.	२.	१७
वैवस्वतः कृणवद्भागधेयं	६.	११६.	२
वैश्वदेवीं वर्चस आ	१२.	२.	२८
वैश्वदेवी ह्युच्यसे	१२.	५(६).	७
वैश्वानरः पविता मा	६.	११९.	३
वैश्वानरस्य दंष्ट्राभ्यां	१०.	५.	४३
वैश्वानरस्य प्रतिमोपरि	८.	९.	६
वैश्वानरस्यैनं दंष्ट्रयोरपि	१६.	७.	३
वैश्वानराय प्रति वेदयामि	६.	११९.	२
वैश्वानरीं वर्चस आ	६.	६२.	३
वैश्वानरीं सूनृतामा	६.	६२.	२
वैश्वानरे हविरिदं	१८.	४.	३५
वैश्वानरोङ्गिरसां स्तोम	६.	३५.	३
वैश्वानरो न आगम	६.	३५.	२
वैश्वानरो न ऊतय	६.	३५.	१
वैश्वानरो रश्मिभिर्नः	६.	६२.	१
व्यचस्वतीरुर्विया वि	५.	१२.	५
व्यन्तरिक्षमतिरन्मदे	२०.	२८.	१
	२०.	३९.	२
व्यवात्ते ज्योतिरभूदप	८.	१.	२१
व्यस्यै मित्रावरुणौ	३.	२५.	६
व्याकरोमि हविषाहमेतौ	१२.	२.	३२
व्याकूतय एषामिताथो	३.	२.	४
व्याघ्रं दत्वतां वयं	४.	३.	४
व्याघ्रेह्यजनिष्ट वीरो	६.	११०.	३
व्याघ्रो अधि वैयाघ्रे	४.	८.	४
व्यानळिन्द्रः पृतनाः	२०.	७६.	८
व्याप पूरुषः	२०.	१३१.	१७
व्यार्त्या पवमानो वि	३.	३१.	२
व्रजं कृणुध्वं स हि	१९.	५८.	४
व्रतेन त्वां व्रतपते	७.	७८.	४
व्रात्य आसीदीयमान	१५.	१.	१
व्रात्याभ्यां स्वाहा	१९.	२३.	२५
व्रीहिमत्तं यवमत्तमथो	६.	१४०.	२
शं च नो मयश्च नो	६.	५७.	३
शं त आपो धन्वन्याः	१९.	२.	२
शं त आपो हैमवतीः	१९.	२.	१
शं तप माति तपो	१८.	२.	३६
शं ते अग्निः सहाद्भिरस्तु	२.	१०.	२
शं ते नीहारो भवतु	[illegible]	[illegible]	[illegible]
शं ते वातो अन्तरिक्षे	२.	१०.	३
शं ते हिरण्यं शमु	१४.	१.	४०
शं नः सत्यस्य पतयो	१९.	११.	१
शं नः सूर्य उरुचक्षा	१९.	१०.	८
शं नः सोमो भवतु	१९.	१०.	७
शं न आपो धन्वन्याः	१.	६.	४
शं न इन्द्राग्नी भवता	१९.	१०.	१
शं न इन्द्रो वसुभिर्देवो	१९.	१०.	६
शं नो अग्निर्ज्योतिरनीको	१९.	१०.	४
शं नो अज एकपाद्देवो	१९.	११.	३
शं नो अदितिर्भवतु	१९.	१०.	९
शं नो ग्रहाश्चान्द्रमसाः	१९.	९.	१०
शं नो देवः सविता	१९.	१०.	१०
शं नो देवा विश्वदेवा	१९.	११.	२
शं नो देवी पृश्नि	२.	२५.	१
शं नो देवीरभिष्टय	१.	६.	१
शं नो द्यावापृथिवी	१९.	१०.	५
शं नो धाता शमु धर्ता	१९.	१०.	३
शं नो भगः शमु नः	१९.	१०.	२
शं नो भवन्त्वप ओषधयः	२.	३.	६
शं नो भूमिर्वेप्यमाना	१९.	९.	८
शं नो मित्रः० शं विवस्वा	१९.	९.	७
शं नो मित्रः० शं विष्णुः	१९.	९.	६
शं नो वातो वातु	७.	७२.	१
शं मे परस्मै गात्राय	१.	१२.	४
शं रुद्राः शं वसवः	१९.	९.	११
शकधूमं नक्षत्राणि	६.	१२८.	१
शक बलिः	२०.	१३१.	१३
शकमयं धूममारादपश्यं	९.	१०.	२५
शक्रो वाचमधृष्टायो	२०.	४९.	२
शक्रो वाचमधृष्णुहि	२०.	४९.	३
शक्वरी स्थ पशवो	१६.	४.	७
शग्ध्यू षु शचीपत इन्द्र	२०.	११८.	१
शङ्खेनामीवाममतिं	४.	१०.	३
शचीव इन्द्र पुरुकृद्	२०.	२१.	३
शणश्च मा जङ्गिडश्च	२.	४.	५
शतं कंसाः शतं दोग्धारः	१०.	१०.	५
शतं च न प्रहरन्तो	१९.	४६.	३
शतं च मे सहस्रं	५.	१५.	११
शतं जीव शरदो	३.	११.	४
	२०.	९६.	९
शतं ते दर्भ वर्माणि	१९.	३०.	२
शतं तेयुतं हायनान्द्वे	८.	२.	२१
शतं या भेषजानि	६.	४४.	२
शतं वा भारती शवः	२०.	१३१.	४
शतं वीरानजनयच्छतं	१९.	३६.	४
शतं सहस्रमयुतं न्यर्बुद	१०.	८.	२४
शतकाण्डो दुश्च्यवनः	१९.	३२.	१
शतधारं वायुमर्कं	१८.	४.	२९
शतमहं दुर्णाम्नीनां	१९.	३६.	६
शतमाश्वा हिरण्ययाः	२०.	१३१.	५
शतयाजं स यजते	९.	४.	१८
शतवारो अनीनशद्	१९.	३६.	१
शतस्य धमनीनां	१.	१७.	३
शतहस्त समाहर	३.	२४.	५
शतानीका हेतयो अस्य	२०.	५१.	४
शतानीकेव प्र जिगाति	२०.	५१.	२
शतापाष्ठां नि गिरति	५.	१८.	७
शतेन पाशैरभि धेहि	४.	१६.	७
शतेन मा परि पाहि	४.	१९.	८
शत्रूषाण्नीषाडभिमाति	५.	२०.	११
शन्तिवा सुरभिः स्योना	१२.	१.	५९
शप्तारमेतु शपथो	२.	७.	५
शफेन इव ओहते	२०.	१३१.	७
शमग्नयः समिद्धा आ	१८.	४.	१२
शमग्ने पश्चात्तप शं	१८.	४.	११
शमीमश्वत्थ आरूढ	६.	११.	१
शम्या ह नाम दधिषे	१९.	४९.	७
शयो हत इव	२०.	१३१.	१६
शरदे त्वा हेमन्ताय	८.	२.	२२
शरव्या मुखेपिनह्यमान	१२.	५(३).	१४
शर्कराः सिकता अश्मान	११.	७.	२१
शर्म यच्छत्वोषधिः	६.	५९.	२
शर्म वर्मैतदा हरास्यै	१४.	२.	२१
शर्वः क्रुद्धः पिश्यमाना	१२.	५(४).	९
शर्व एनमिच्चासो	१५.	५.	५
शल्याद्विषं निरवोचं	४.	६.	५
शवसा ह्यसि श्रुतो	१८.	१.	३८

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

शाचिगो शाचिपूजनायं	२०.	५.	६
शान्ता द्यौः शान्ता पृथिवी	१९.	९.	१
शान्तानि पूर्वरूपाणि	१९.	९.	२
शान्तो अग्निः क्रव्याच्छान्तः	३.	२१.	९
शामा सरूपङ्करणी	१.	२४.	४
शारदावेनं मासावुदीच्या	१५.	४.	१२
शारदौ मासौ गोप्तारा	१५.	४.	११
शास इत्था महाँ अस्य	१.	२०.	४
शिंशुमारा अजगराः	११.	२.	२५
शिक्षेयमस्मै दित्सेयं	२०.	२७.	२
शिक्षेयमिन्महयते	२०.	८२.	२
शिखिभ्यः स्वाहा	१९.	२२.	१५
शितिपदी सं द्यतु	११.	१०.	६
शितिपदी सं पतत्व	११.	१०.	२०
शिप्रिन्वाजानां पते	२०.	७४.	२
शिरो हस्तावथो मुखं	११.	८.	१५
शिला भूमिरश्मा पांसुः	१२.	१.	२६
शिवः कपोत इषितो	६.	२७.	२
शिवां रात्रिमनुसूर्यं	१९.	४९.	५
शिवा नः शंतमा भव	७.	७१.	१
शिवानग्नीनप्सुषदो	१६.	१.	१३
शिवा नारीयमस्तमागन्	१४.	२.	१३
शिवा भव पुरुषेभ्यो	३.	२८.	३
शिवाभिष्टे हृदयं	२.	२९.	६
शिवास्त एका अशिवास्त	७.	४४.	१
शिवास्ते सन्त्वोषधय	८.	२.	१५
शिवे ते स्तां द्यावापृथिवी	८.	२.	१४
शिवेन मा चक्षुषा० मे ।	१६.	१.	१२
शिवेन मा चक्षुषा० मे । घृतश्चुतः	१.	३३.	४
शिवो वो गोष्ठो भवतु	३.	१४.	५
शिवौ ते स्तां व्रीहि	८.	२.	१८
शीर्षक्ति शीर्षामयं	९.	८.	१
शीर्षण्वती नस्वती	१०.	१.	२
शीर्षलोकं तृतीयकं	१९.	३९.	१०
शीर्षामयमुपहत्या	५.	४.	१०
शुक्रं वहन्ति हरयो	१३.	३.	१६
शुक्रोसि भ्राजोसि । स यथा	१७.	१.	२०
शुक्रोसि भ्राजोसि स्वरसि	२.	११.	५
शुचा विद्धा व्योषया	३.	२५.	४
शुची ते चक्रे यात्या	१४.	१.	१२
शुद्धाः० आपश्चरु	११.	१.	१७
शुद्धाः० ब्रह्मणां० ददातु	६.	१२२.	५
शुद्धाः० ब्रह्मणां० ददादिदं	११.	१.	२७
शुद्धा न आपस्तन्वे	१२.	१.	३०
शुनं वाहाः शुनं नरः	३.	१७.	६
शुनं सुफाला वि तुदन्तु	३.	१७.	५
शुनं हुवेम मघवान	२०.	११.	११
शुनासीरेह स्म मे	३.	१७.	७
शुने क्रोष्ट्रे मा शरीराणि	११.	२.	२
शुम्भनी द्यावापृथिवी	७.	११७.	१
	१४.	२.	४५
शुम्भन्तां लोकाः पितृषदनाः	१८.	४.	६७
शुष्मिन्तमं न ऊतये	२०.	२०.	१
	२०.	५७.	४
शुष्यतु मयि ते हृदयमथो	६.	१३९.	२
शूद्रकृता राजकृता स्त्रीकृता	१०.	१.	३
शूर्पं पवित्रं तुषा	९.	६(१).	१६
शृङ्गं धमन्त आसते	२०.	१२९.	१०
शृङ्ग उत्पन्न	२०.	१३०.	१३
शृङ्गाभ्यां रक्ष ऋषत्य	९.	४.	१७
शृङ्गाभ्यां रक्षो नुदते	१९.	३६.	२
शृतं त्वा हव्यमुप सीदन्तु	११.	१.	२५
शृतमजं शृतया प्रोर्णुहि	४.	१४.	९
शेरभक शेरभ पुनर्वो	२	२४.	१
शेवृधक शेवृध पुनर्वो	२.	२४.	२
शैशिरावेनं मासा	१५.	४.	१८
शैशिरौ मासौ गोप्तारा	१५.	४.	१७
शोचयामसि ते हार्दि	६.	८९.	२
श्याममयोस्य मांसानि	११.	३(१).	७
श्यामश्च त्वा मा शबलश्च	८.	१.	९
श्यावदता कुनखिना	६.	६७.	३
श्यावाश्वं कृष्णमसितं	११.	२.	१८
श्येनः क्रोडोन्तरिक्षं	९.	७.	५
श्येनीपती सा	२०.	१२९.	१९
श्येनो नृचक्षा दिव्यः	७.	४२.	२
श्येनोसि गायत्रच्छन्दा	६.	४८.	१
श्येनो हव्यं नयत्वा	३.	३.	४
श्यैतस्य च वै स	१५.	२.	२४
श्यैताय च वै स	१५.	२.	२३
श्रद्धा पुंश्चली मित्रो	१५.	२.	५
श्रद्धाया दुहिता तपसो	६.	१३३.	४
श्रमेण तपसा सृष्टा	१२.	५(१).	१
श्रातं मन्य ऊधनि	७.	७६.	१
श्रातं हविरो ष्विन्द्र	७.	७५.	२
श्राम्यतः पचतो विद्धि	११.	१.	३०
श्रायन्त इव सूर्यं	२०.	५८.	१
श्रियं च वा एष	९.	६(३).	६
श्रुतं च विश्रुतं च	१५.	२.	२६
श्रुत्कर्णाय कवये वेद्याय	१९.	३.	४
श्रुधी नो अग्ने सदने	१८.	१.	२५
श्रेयः केतो वसुजित्	५.	२०.	१०
श्रेयांसमेनमात्मनो	१५.	१०.	२
श्रेष्ठमसि भेषजानां	६.	२१.	२
श्रोत्रमसि श्रोत्रं मे	२.	१७.	५
श्लक्ष्णायां श्लक्ष्णिकायां	२०.	१३३.	५
श्वन्वतीरप्सरसो रूपका	११.	९.	१५
श्वेवैकः कपिरिवैकः	४.	३७.	११
षट् च मे षष्टिश्च	५.	१५.	६
षट् त्वा पृच्छाम ऋषयः	८.	९.	७
षडाहुः शीतान्षडु मास	८.	९.	१७
षडृचेभ्यः स्वाहा	१९.	२३.	३
षड्वाता भूता प्रथमजर्तस्य	८.	९.	१६
षष्टिश्च षट् च रेवति	१९.	४७.	४
षष्ट्यां शरत्सु निधिपा	१२.	३.	३४
षष्ठाय स्वाहा	१९.	२२.	२
षोडशर्चेभ्यः स्वाहा	१९.	२३.	१३
संकर्षन्ती करूकरं	११.	९.	८
संकसुको विकसुको	१२.	२.	१४
सं काशयामि वहतुं	१४.	२.	१२
संक्रन्दनः प्रवदो धृष्णु	५.	२०.	९
संक्रन्दनेनानिमिषेण	१९.	१३.	३
सं क्रामतं मा जहीतं	७.	५५.	२
सं क्रोशतामेनान्	८.	८.	२१
संख्याता स्तोकाः पृथिवीं	१२.	३.	२८
सं गच्छस्व पितृभिः	१८.	३.	५८
सं गोभिराङ्गिरसो	२०.	१६.	२
सं गोमदिन्द्र वाजवदस्मे	२०.	७१.	१२
सं चेध्यस्याग्ने प्र	२.	६.	२
सं चेद्यथाथो अश्विना	२.	३०.	२
सं चोदय चित्रमर्वाग्	२०.	७१.	११
संजग्माना अबिभ्युषी	३.	१४.	३
संजयन्पृतना ऊर्ध्वं	५.	२०.	४
सं जानामहै मनसा	७.	५४.	२
सं जानीध्वं सं पृच्यध्वं	६.	६४.	१
संजीवा स्थ सं जीव्यासं	१९.	६९.	३.
संज्ञपनं वो मनसो	६.	७४.	२
संज्ञानं नः स्वेभिः	७.	५४.	१
सं ते मज्जा मज्ज्ञा भवतु	४.	१२.	३
सं ते शीर्ष्णः कपालानि	९.	८.	२२
सं ते हन्मि दता	६.	५६.	३
सं त्वा नह्यामि पयसा	१४.	२.	७०
संदंशानां पलदानां	९.	३.	५
संदानं वो बृहस्पतिः	६.	१०३.	१
सं परमान्त्समवमानयो	६.	१०३.	२
सं पितरावृत्विये सृजेथां	१४.	२.	३७
सं बर्हिरक्तं हविषा	७.	१०३.	१
संभले मलं सादयित्वा	१४.	२.	६७
सं माग्ने वर्चसा सृज	७.	९४.	२
	९.	१.	१५
	१०.	५.	४७
सं मा सिञ्चन्तु मरुतः	७.	३४.	१
संयतं न वि ष्यरद्	१०.	४.	८
सं राजानो अगुः	१९.	५७.	२
सं वः पृच्यन्तां तन्वः	६.	७४.	१
सं वः सृजत्वर्यमा	३.	१४.	२
संवत्सरं शशयाना	४.	१५.	१३
संवत्सरस्य प्रतिमां	३.	१०.	३
संवत्सरीणं पय उस्रिया	८.	३.	१७
संवत्सरीणा मरुतः	७.	८२.	३
संवत्सरो रथः परिवत्सरो	८.	८.	२३
संवननी समुष्पला बभ्रु	६.	१३९.	३
सं वर्चसा पयसा सं	६.	५३.	३
संवसव इति वो नामधेय	७.	११४.	६
सं विशन्त्विह पितरः	१८.	२.	२९
सं वो गोष्ठेन सुषदा	३.	१४.	१
सं वो मनांसि सं व्रता	३.	८.	५
	६.	९४.	१
सं वोवन्तु सुदानव	४.	१५.	७
संशितं म इदं ब्रह्म	३.	१९.	१
सं सं स्रवन्तु नद्यः	१९.	१.	१

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सं सं स्रवन्तु पशवः	२.	२६.	३
सं सं स्रवन्तु सिन्धवः	१.	१५.	१
संसमिद्युवसे वृषन्नग्ने	६.	६३.	४
संसिचो नाम ते देवा	११.	८.	१३
सं सिञ्चामि गवां क्षीरं	२.	२६.	४
संसृष्टं धनमुभयं	४.	३१.	७
सं हि वातेनागत समु	१०.	१०.	१४
सं हि शीर्षाण्यप्रभं	१०.	४.	१९
सं हि सूर्येणागत समु	१०.	१०.	१५
सं हि सोमेनागतः समु	१०.	१०.	१३
संहोत्रं स्म पुरा नारी	२०.	१२६.	१०
स इच्छकं सघाघते	२०.	१२९.	१२
स इत्तत्स्योनं हरति	१४.	१.	३०
स इद्व्याघ्रो भवत्यथो	८.	५.	१२
स इषुहस्तैः स निषङ्गिभि	१९.	१३.	४
स ईं सत्येभिः सखिभिः	२०.	९१.	७
स उत्तमां दिशमनु	१५.	६.	७
स उत्तिष्ठ प्रेहि प्र द्रव	४.	१२.	५
स उदतिष्ठत्स उदीचीं	१५.	२.	२१
स उदतिष्ठत्स दक्षिणां	१५.	२.	९
स उदतिष्ठत्स प्रतीचीं	१५.	२.	१५
स उदतिष्ठत्स प्राचीं	१५.	२.	१
स उपहूतः पृथिव्यां	९.	६(६).	७
स उपहूत उपहूतः	९.	६(६).	१२
स उपहूतो दिवि	९.	६(६).	९
स उपहूतो देवेषु	९.	६(६).	१०
स उपहूतोन्तरिक्षे	९.	६(६).	८
स उपहूतो लोकेषु	९.	६(६).	११
स ऊर्ध्वां दिशमनु	१५.	६.	४
स एकव्रात्योभवत्	१५.	१.	६
स एति सविता स्वर्दिवं	१३.	४(१).	१
स एव मृत्युः सोमृतं	१३.	४(३).	४
स एव सं भुवनान्या	१९.	५३.	४
सखाय आ शिषामहे	१८.	१.	३७
सखायाविव सचावहा	६.	४२.	२
सखासावस्मभ्यमस्तु	१.	२६.	२
स ग्राह्याः पाशान्मा	१६.	८.	३
सघाघते गोमीथा	२०.	१२९.	१३
स घा नो देवः सविता	६.	१.	३
स घा नो योग आ	२०.	६९.	१
स चातिसृजेज्जुहुयान्न	१५.	१२.	३
सचेतसौ द्रुहुणो यौ	४.	२९.	२
स जङ्गिडस्य महिमा	१९.	३४.	५
स तांल्लोकान्त्समाप्नोति	१०.	९.	६
स तौ प्र वेद स उ तौ	९.	१.	७
सत्तो होता न ऋत्विय	२०.	२३.	२
सत्यं चर्तं च चक्षुषी	९.	५.	२१
सत्यं बृहदृतमुग्रं	१२.	१.	१
सत्यजितं शपथयावनीं	४.	१७.	२
सत्यमहं गभीरः काव्येन	५.	११.	३
सत्यामाशिषं कृणुता	२०.	९१.	११
सत्याय च तपसे	१२.	३.	४६
सत्ये अन्यः समाहितो	१३.	१.	५०
सत्येनावृता श्रिया	१२.	५(१).	२
सत्येनोत्तभिता भूमिः	१४.	१.	१
सत्येनोर्ध्वस्तपति	१०.	८.	१९
सत्रासाहं वरेण्यं	२०.	११.	८
स त्वं न इन्द्र वाजेभि	२०.	४६.	३
स त्वं नश्चित्र वज्रहस्त	२०.	९८.	२
सदान्वाक्षयणमसि	२.	१८.	५
सदासि रण्वो यवसेव	१८.	१.	२२
स दिशोनु व्यचलत्तं	१५.	६.	२२
स देवानामीशां	१५.	१.	५
सद्यश्चिन्नु ते मघवन्	२०.	३७.	९
सद्यो जातो व्यमिमीत	५.	१२.	११
स धाता स विधर्ता	१३.	४(१).	३
सध्रीचीनान्वः संमनस	३.	३०.	७
स ध्रुवां दिशमनु	१५.	६.	१
स नः पप्रिः पारयाति	२०.	४६.	२
स नः पिता जनिता	२.	१.	३
स नः सिन्धुमिव नावाति	४.	३३.	८
स न इन्द्रः शिवः सखा	२०.	७.	३
सनातनमेनमाहुरुताद्य	१०.	८.	२३
सना ता त इन्द्र	२०.	३७.	६
सनादग्ने मृणसि यातुधानान्	५.	२९.	११
	८.	३.	१८
सनेमि चक्रमजरं वि	९.	९.	१४
स नो ददातु तां रयिं	६.	३३.	३
स नो नियुद्भिः पुरुहूत	२०.	३६.	११
स नो भवः परि वृणक्तु	११.	२.	८
स नो रक्षतु जङ्गिडो	१९.	३५.	२
स नो वृषन्नमुं चरुं	२०.	७०.	१२
सन्नुच्छिष्टे असंश्चोभौ	११.	७.	३
स पचामि स ददामि	६.	१२३.	४
सपत्नक्षयणं दर्भ	१९.	३०.	४
सपत्नक्षयणमसि	२.	१८.	२
सपत्नक्षयणो वृषाभि	१.	२९.	६
सपत्नहनमृषभं घृतेन	९.	२.	१
सपत्नहा शतकाण्डः	१९.	३२.	१०
स परमां दिशमनु	१५.	६.	१३
सप्तऋषीनभ्यावर्ते	१०.	५.	३९
सप्त क्षरन्ति शिशवे	७.	५९.	२
सप्त चक्रान्वहति काल	१९.	५३.	२
सप्त च मे सप्ततिश्च	५.	१५.	७
सप्त च याः सप्ततिश्च	६.	२५.	२
सप्त च्छन्दांसि चतुरुत्तरा	८.	९.	१९
सप्त जाताञ्न्यर्बुद	११.	९.	६
सप्त त्वा हरितो रथे	१३.	२.	२३
	२०.	४७.	२०
सप्तदशर्चेभ्यः स्वाहा	१९.	२३.	१४
सप्त प्राणाः सप्तापानाः	१५.	१५.	२
सप्त प्राणानष्टौ मन्य	२.	१२.	७
सप्त मर्यादाः कवय	५.	१.	६
सप्तमाष्टमाभ्यां स्वाहा	१९.	२२.	३
सप्त मेघान्पशवः	१२.	३.	१६
सप्त युञ्जन्ति० तस्थुः ।	९.	९.	२
सप्त युञ्जन्ति० तस्थुः । तस्य	१३.	३.	१८
सप्तर्चेभ्यः स्वाहा	१९.	२३.	४
सप्तर्षीन्वा इदं ब्रूमो	११.	६.	११
सप्त सूर्यो हरितो यातवे	१३.	२.	८
सप्त होमाः समिधो	८.	९.	१८
सप्तार्धगर्भा भुवनस्य	९.	१०.	१७
सप्तास्यासन्परिधयस्त्रिः	१९.	६.	१५
स प्रजापतिः सुवर्ण	१५.	१.	२
स प्रजाभ्यो वि पश्यति	१३.	४(१).	११
सबन्धुश्चा० तेषां	६.	१५.	२
सबन्धुश्चा० सर्वं	६.	५४.	३
स बुध्न्यादाष्ट्र जनुषो	४.	१.	५
स बृहतीं दिशमनु	१५.	६.	१०
सभा च मा समितिश्चावतां	७.	१३.	१
सभायाश्च वै स समितेश्च	१५.	९.	३
समं ज्योतिः सूर्येणाह्ना	४.	१८.	१
समग्नयो विदुरन्यो अन्यं	१२.	३.	५०
समध्वरायोषसो नमन्त	३.	१६.	६
स मन्दस्वा ह्यन्धसो	२०.	२३.	६
समस्मिँल्लोके समु	१२.	३.	३
समस्य मन्यवे विशो	२०.	१०७.	१
समहमेषां राष्ट्रं	३.	१९.	२
स महिमा सद्बुभूत्वा	१५.	७.	१
समाचिनुष्वानुसंप्रयाह्यग्ने	११.	१.	३६
स मा जीवीत्तं प्राणो	१६.	७.	१३
समानलोको भवति	९.	५.	२८
समानां मासामृतुभिष्ट्वा	१.	३५.	४
समानी प्रपा सह	३.	३०.	६
समानी व आकूतिः	६.	६४.	३
समानो मन्त्रः समितिः	६.	६४.	२
समा नौ बन्धुर्वरुण	५.	११.	१०
समास्त्वाग्न ऋतवो	२.	६.	१
समाहर जातवेदो	५.	२९.	१२
समिद्धो अग्न आहुत	१२.	२.	१८
समिद्धो अग्निः समिधाने	१३.	१.	२८
समिद्धो अग्निरश्विना	७.	७७.	२
समिद्धो अग्निर्वृषणा	७.	७७.	१
समिद्धो अग्ने समिधा	११.	१.	४
समिद्धो अद्य मनुषो	५.	१२.	१
समिन्द्र गर्दभं मृण	२०.	७४.	५
समिन्द्र नो मनसा	७.	१०२.	२
समिन्द्र राया समिषा	२०.	२१.	५
समिन्धते अमर्त्यं	१८.	४.	४१
समिन्धते संकसुकं	१२.	२.	११
समिमां मात्रां मिमीमहे	१८.	२.	४४
समीं रेभासो अस्वरन्	२०.	५४.	२
समीक्षयन्तु तविषाः	४.	१५.	२
समीक्षस्व गायतो	४.	१५.	३
समुत्पतन्तु प्रदिशो	४.	१५.	१
समुद्रं वः प्र हिणोमि	१०.	५.	२३
समुद्र ईशे स्रवतामग्निः	६.	८६.	२
समुद्राश्चातो मणिर्वृत्रा	४.	१०.	५
समुद्रो नदीभिरुदक्रामत्	१९.	१९.	७
स मृत्योः पड्वीशात्	१६.	८.	३२

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सवृद्धिरोज आकूतिः	११.	७.	१८
समेत विश्वे वचसा	७.	२२.	१
समोहे वा य आशत	२०.	७१.	२
सम्यञ्चं तन्तुं प्रदिशो	१३.	३.	२०
सम्राज्ञ्येधि श्वशुरेषु	१४.	१.	४४
सम्राडस्यसुराणां ककुन्	६.	८६.	३
स य एवं विदुष	११.	३(३).	५
स य एवं विदुषा	१५.	१२.	४
स य एवं विद्वानुदक	९.	६(४).	९
स य एवं विद्वान्क्षीर	९.	६(४).	१
स य एवं विद्वान्त्सर्पि	९.	६(४).	३
स य एवं विद्वान्न	९.	६(२).	७
स य एवं विद्वान्मधू	९.	६(४).	५
स य एवं विद्वान्मांस	९.	६(४).	७
स य ओदनस्य महिमानं	११.	३(१).	२३
स यज्ञः प्रथमो भूतो	१३.	१.	५५
स यज्ञस्तस्य यज्ञः	१३.	४(४).	१२
स यत्पशूननु व्यचलद्	१५.	१४.	११
स यत्पितॄननु व्यचलद्	१५.	१४.	१३
स यत्प्रजा अनु व्यचलन्	१५.	१४.	२१
स यत्प्रतीचीं दिशमनु	१५.	१४.	५
स यत्प्राचीं दिशमनु	१५.	१४.	१
स यत्सर्वानन्तर्देशाननु	१५.	१४.	२३
स यदुदीचीं दिशमनु	१५.	१४.	७
स यदूर्ध्वां दिशमनु	१५.	१४.	१७
स यद्दक्षिणां दिशमनु	१५.	१४.	३
स यद्देवाननु व्यचलद्	१५.	१४.	१९
स यद्ध्रुवां दिशमनु	१५.	१४.	९
स यन्मनुष्याननु	१५.	१४.	१५
सरस्वति या सरथं	१८.	१.	४३
	१८.	४.	४७
सरस्वति व्रतेषु ते	७.	७०.	१
सरस्वतीं देवयन्तो	१८.	१.	४१
	१८.	४.	४५
सरस्वतीं पितरो	१८.	१.	४२
	१८.	४.	४६
सरस्वतीमनुमतिं	५.	७.	४
स राजसि पुरुष्टुतं	२०.	६१.	६
	२०.	६२.	१०
स रुद्रो वसुवनिर्वसुदेवे	१३.	४(३).	५
सरूपा नाम ते माता	१.	२४.	३
सरूपौ द्वौ विरूपौ द्वौ	५.	२३.	४
सर्पानुसर्प पुनर्वो	२.	२४.	४
सर्वं तद्राजा वरुणो	४.	१६.	५
सर्वं परिक्रोशं जहि	२०.	७४.	७
सर्वज्यानिः कर्णौ	१२.	५(३).	११
सर्वदा वा एष युक्त	९.	६(२).	१०
सर्वाँल्लोकान्त्समजयन्	११.	१०.	१२
सर्वाः समग्रा ओषधी	८.	७.	१९
सर्वाण्यस्यां क्रूराणि	१२.	५(३).	३
सर्वाण्यस्यां घोराणि	१२.	५(३).	२
सर्वा दिशः समचरद्	१३.	२.	४१
सर्वानग्ने सहमानः	१२.	२.	४६
सर्वान्कामान्पूरयत्या	३.	२९.	२
सर्वान्कामान्यमराज्ये	१२.	४.	३६
सर्वान्त्समागा अभिजित्य	१२.	३.	३६
सर्वान्देवानिदं ब्रूमः	११.	६.	२०
सर्वास्याङ्गा पर्वाणि	१२.	५(७).	१०
सर्वास्याङ्गा पर्वा मूलानि	१२.	५(५).	४
सर्वे अस्मिन्देवा एकवृतो	१३.	४(२).	८
सर्वे गर्भादवेपन्त	१०.	१०.	२३
सर्वे देवा अत्यायन्ति	११.	१०.	१४
सर्वे देवा अत्यायन्तु	११.	१०.	१५
सर्वे देवा उपाशिक्षन्त	११.	८.	१७
सर्वेभ्योङ्गिरोभ्यो	१९.	२२.	१८
सर्वेषां च क्रिमीणां	५.	२३.	१३
सर्वो वा एष जग्ध	९.	६(२).	८
सर्वो वा एषोजग्ध	९.	६(२).	९
सर्वो वै तत्र जीवति	८.	२.	२५
स वरुणः सायमग्नि	१३.	३.	१३
स वा अग्नेरजायत	१३.	४(४).	८
स वा अद्भ्योजायत	१३.	४(४).	९
स वा अन्तरिक्षादजायत	१३.	४(४).	३
स वा अह्नोजायत	१३.	४(४).	१
स वा ऋग्भ्योजायत	१३.	४(४)	१०
सवितः श्रेष्ठेन रूपेणास्या	५.	२५.	१२
सविता प्रसवानामधिपतिः	५.	२४.	१
स विशः सवन्धूनन्नमन्	१५.	८.	२
स विशोनु व्यचलत्	१५.	९.	१
स विश्वा प्रति चाक्लृप	६.	३६.	२
स वेद पुत्रः पितरं	७.	१.	२
स वै दिग्भ्योजायत	१३.	४(४).	६
स वै दिवोजायत	१३.	४(४).	५
स वै भूमेरजायत	१३.	४(४).	७
स वै यज्ञादजायत	१३.	४(४).	११
स वै रात्र्या अजायत	१३.	४(४).	२
स वै वायोरजायत	१३.	४(४).	४
स संवत्सरमूर्ध्वो	१५.	३.	१
ससन्तु त्या अरातयो	२०.	७४.	४
स सर्वस्मै वि पश्यति	१३.	४(२).	६
स सर्वानन्तर्देशाननु	१५.	६.	२४
ससानात्यौ उत सूर्यं	२०.	११.	९
स सुत्रामा स्ववाँ	७.	९७.	१
	२०.	१२५.	७
स सुष्टुभा स क्रकता	२०.	८८.	५
स स्तनयति स वि	१३.	४(४).	१३
सस्रुषीस्तदपसो दिवा	६.	२३.	१
स स्वर्गमा रोहति	१०.	९.	५
सहमानेयं प्रथमा	२.	२५.	२
सहस्रकुणपा शेता	११.	१०.	२५
सहस्रणीथाः कवयो	१८.	२.	१८
सहस्रधामन्विशिखान्	४.	१८.	४
सहस्रधारं शतधार	१८.	४.	३६
सहस्रधारः पवते	२०.	१३७.	६
सहस्रधार एव ते	५.	६.	३
सहस्रपृष्ठः शतधारो	११.	१.	२०
सहस्रबाहुः पुरुषः	१९.	६.	१
सहस्रशृङ्गो वृषभो जात	१३.	१.	१२
सहस्रशृङ्गो वृषभो यः	४.	५.	१
सहस्राक्षमतिपश्यं	११.	२.	१७
सहस्राक्षेण शतवीर्येण	३.	११.	३
	२०.	९६.	८
सहस्राक्षौ वृत्रहणा	४.	२८.	३
सहस्रार्घः शतकाण्डः	१९.	३३.	१
सहस्राह्ण्यं० विश्वा ।	१०.	८.	१८
	१३.	२.	३८
सहस्राह्ण्यं० विश्वा । तस्य	१३.	३.	१४
सहस्व नो अभिमातिं	१९.	३२.	६
सहस्व मन्यो अभिमाति	४.	३१.	३
स हि दिवः स पृथिव्या	४.	१.	४
सहृदयं सांमनस्य	३.	३०.	१
सहे पिशाचान्त्सहसैषां	४.	३६.	४
सहोसि सहो मे	२.	१७.	२
सांतपना इदं हविर्मरुत	७.	८२.	१
साकंजानां सप्तथमाहु	९.	९.	१६
साकं सजातैः पयसा	११.	१.	७
सा ते काम दुहिता	९.	२.	५
साधुं पुत्रं हिरण्ययम्	२०.	१२९.	५
साध्या एकं जालदण्ड	८.	८.	१२
साध्वर्या अतिथिनी	२०.	१६.	३
सा नो भूमिरा दिशतु	१२.	१.	४०
सा पश्चात्पाहि सा पुरः	१९.	४८.	४
सा ब्रह्मज्यं देवपीयुं	१२.	५(३).	४
सा मन्दसाना मनसा	१४.	२.	६
सामानि यस्य लोमानि	९.	६(१).	२
सामासाद उद्गीथो	१५.	३.	८
सायंसायं गृहपतिर्नो	१९.	५५.	३
सावीहिं देव प्रथमाय	७.	१५.	३
साहस्रस्त्वेष ऋषभः	९.	४.	१
सिंह इवास्तानीद्	५.	२०.	२
सिंहप्रतीको विशो	४.	२२.	७
सिंहस्य रात्र्युशती	१९.	४९.	४
सिंहस्येव स्तनयोः	८.	७.	१५
सिंहे व्याघ्र उत या	६.	३८.	१
सिनात्वेनान्निर्ऋति	३.	६.	५
सिनीवालि पृथुष्टुके	७.	४८.	१
सिन्धुपत्नीः सिन्धुराज्ञीः	६.	२४.	३
सिन्धोर्गर्भोसि विद्युतां	१९.	४४.	५
सिळाची नाम कानीनो	५.	५.	८
सीताः पर्शवः सिकता	११.	३(१).	१२
सीते वन्दामहे त्वा	३.	१७.	८
सीरा युञ्जन्ति कवयो	३.	१७.	१
सीसायाध्याह वरुणः	१.	१६.	२
सीसे मळं सादयित्वा	१२.	२.	२०
सीसे मृड्ढ्वं नडे मृड्ढ्व	१२.	२.	१९
सुकर्माणः सुरुचो देवयन्तो	१८.	३.	२२
सुकिंशुकं वहतुं विश्वरूपं	१४.	१.	६१
सुकेषु ते हरिमाणं	१.	२२.	४
सुक्षेत्रिया सुगातुया	४.	३३.	२
सुखं सूर्य रथमंशुमन्तं	१३.	२.	७

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सुगा वो देवाः सदना	७.	१०२.	४
सुजातं जातवेदसमग्निं	४.	२३.	४
सुतपाव्ने सुता इमे	२०.	६९.	३
सुतासो मधुमत्तमाः	२०.	१३७.	४
सुतेसुते न्योकसे	२०.	७१.	१६
सुत्रामाणं पृथिवीं	७.	७.	१
सुदेवस्त्वा महानग्नी	२०.	१३६.	१२
सुदेवो असि वरुण	२०.	९२.	९
सुनोता सोमपाव्ने	६.	२.	३
सुपर्णसुवने गिरौ	५.	४.	२
सुपर्णस्त्वा गरुत्मान्	४.	६.	३
सुपर्णस्त्वान्व० दिप्सौषधे	५.	१४.	१
सुपर्णस्त्वान्व० प्राशं	२.	२७.	२
सुपर्णा वाचमक्रतोप	६.	४९.	३
सुपर्णो जातः प्रथमस्तस्य	१.	२४.	१
सुप्रपाणा च वेशन्ता	२०.	१२८.	९
सुमङ्गली प्रतरणी	१४.	२.	२६
सुमङ्गलीरियं वधू	१४.	२.	२८
सुयामंश्चाक्षुष	१६.	७.	७
सुरूपकृत्नुमूतये	२०.	५७.	१
	२०.	६८.	१
सुविज्ञानं चिकितुषे	८.	४.	१२
सुश्रुतिश्च मोपश्रुतिश्च	१६.	२.	५
सुश्रुतौ कर्णौ भद्रश्रुतौ	१६.	२.	४
सुषूदत मृडत मृडया	१.	२६.	४
सुष्ठामा रथः सुयमा	२०.	९४.	२
सुहवमग्ने कृत्तिका	१९.	७.	२
सूनृतावन्तः सुभगा	७.	६२.	६
सूनृता संनतिः क्षेमः	११.	७.	१३
सूयवसाद्भगवती हि	७.	७७.	११
	९.	१०.	२०
सूरिरसि वर्चोधा	२.	११.	४
सूर्यं चक्षुषा गच्छ	१८.	२.	७
सूर्यं ते द्यावापृथिवी	१९.	१८.	५
सूर्य एनं दिवः प्र	१२.	५(७).	१२
सूर्यं चक्षुषा मा	२.	१६.	३
सूर्यं नावमारुक्षः	१७.	१.	२६
सूर्यमृतं तमसो	२.	१०.	८
सूर्यं यत्ते तपस्तेन	२.	२१.	१
सूर्यं यत्ते तेजस्तेन	२.	२१.	५
सूर्यं यत्तेचिंस्तेन	२.	२१.	३
सूर्यं यत्ते शोचिस्तेन	२.	२१.	४
सूर्यं यत्ते हरस्तेन	२.	२१.	२
सूर्यश्चक्षुर्वातः प्राणं	११.	८.	२१
सूर्यश्चक्षुषामधिपतिः	५.	२४.	९
सूर्यस्य रश्मीननु याः	४.	३८.	५
सूर्यस्यावृतमन्वावर्ते	१०.	५.	३७
सूर्यस्याश्वा हरयः	१३.	१.	२५
सूर्याभ्यां स्वाहा	१९.	२३.	२४
सूर्याया वहतुः प्रागात्	१४.	१.	१३
सूर्यायै देवेभ्यो मित्राय	१४.	२.	४६
सूर्यो दिवोदक्रामत्	१९.	१९.	३
सूर्यो देवीमुषसं रोचमानां	२०.	१०७.	१५
सूर्यो द्यां सूर्यः पृथिवीं	१३.	१.	४५
सूर्यो मा द्यावापृथिवीभ्यां	१९.	१७.	५
सूर्यो माह्नः पात्वग्निः	१६.	४.	४
सूर्यो मे चक्षुर्वातः	५.	९.	७
सूषा व्यूर्णोतु वि योनिं	१.	११.	३
सेदिरुग्रा व्यृद्धिरार्तिं	८.	८.	९
सेदिरुपतिष्ठन्ती मिथो	१२.	५(३).	१३
सैषा भीमा ब्रह्मगव्य	१२.	५(३).	१
सो अग्निः स उ सूर्य	१३.	४(१).	५
सो अस्य वज्रो हरितो	२०.	३०.	३
सो चिन्नु भद्रा क्षुमती	१८.	१.	२०
सो चिन्नु वृष्टिर्यूथ्या	२०.	७३.	५
सोदक्रामत्सा गन्धर्वाप्सरस	८.	१०(५).	५
सोदक्रामत्सा गार्हपत्ये	८.	१०(१).	२
सोदक्रामत्सा दक्षिणाग्नौ	८.	१०(१).	३
सोदक्रामत्सा देवा० अग्नत	८.	१०(३).	५
सोदक्रामत्सा देवा० उपाह्वय	८.	१०(५).	१
सोदक्रामत्सान्तरिक्षे चतुर्धा	८.	१०(२).	१
सोदक्रामत्सा पितृ० पितर	८.	१०(४).	५
सोदक्रामत्सा पितृ० पितरो	८.	१०(३).	३
सोदक्रामत्सा मनुष्या० अग्नत	८.	१०(३).	७
सोदक्रामत्सा मनुष्या० उपाह्वय	८.	१०(४).	९
सोदक्रामत्सामन्त्रणे	८.	१०(१).	१२
सोदक्रामत्सा वनस्पती	८.	१०(३).	१
सोदक्रामत्सा सप्तऋषी	८.	१०(४).	१३
सोदक्रामत्सा सभायां	८.	१०(१).	८
सोदक्रामत्सा समितौ	८.	१०(१).	१०
सोदक्रामत्सा सर्पा	८.	१०(५).	१३
सोदक्रामत्सासुरा	८.	१०(४).	१
सोदक्रामत्साहवनीये	८.	१०(१).	४
सोदक्रामत्सेतरजना	८.	१०(५).	९
सोनादिष्टां दिशमनु	१५.	६.	१६
सोनावृत्तां दिशमनु	१५.	६.	१९
सोब्रवीदासन्दीं मे	१५.	३.	२
सोमं ते रुद्रवन्त	१९.	१८.	३
सोमं मन्यते पपिवान्	१४.	१.	३
सोमं राजानमवसेग्निं	३.	२०.	४
सोम एकेभ्यः पवते	१८.	२.	१४
सोम ओषधीभिरुदक्रामत्	१९.	१९.	५
सोमजुष्टं ब्रह्मजुष्ट	२.	३६.	२
सोममेनामेके दुहे	१०.	१०.	३२
सोम राजन्त्संज्ञानमा	११.	१.	२६
सोमस्त्वा पात्वोषधीभि	१९.	२७.	२
सोमस्य जाया प्रथमं	१४.	२.	३
सोमस्य पर्णः सह	३.	५.	४
सोमस्य भाग स्थ	१०.	५.	९
सोमस्यांशो युधां	७.	८६.	३
सोमस्येव जातवेदो	५.	२९.	१३
सोमाय पितृमते	१८.	४.	७२
सोमारुद्रा युवमेता	७.	४३.	२
सोमारुद्रा वि वृहतं	७.	४३.	१
सोमेन पूर्णं कलशं	९.	४.	६
सोमेनादित्या बलिनः	१४.	१.	२
सोमो ददद्गन्धर्वाय	१४.	२.	४
सोमो मा रुद्रैर्दक्षिणाया	१९.	१७.	३
सोमो मा विश्वैर्देवै	१८.	३.	२८
सोमो मा सौम्येनावतु	१९.	४५.	८
सोमो युनक्तु बहुधा	५.	२६.	१०
सोमो राजाधिपा मृडिता	१०.	१.	२२
सोमो राजा प्रथमो	५.	१७.	२
सोमो राजा मस्तिष्को	९.	७.	२
सोमो वधूयुरभव	१४.	१.	९
सोमो वीरुधामधिपतिः	५.	२४.	७
सोरज्यत ततो राजन्	१५.	८.	१
सोरिष्ट न मरिष्यसि	८.	२.	२४
सोर्यमा स वरुणः स	१३.	४(१).	४
सोवर्धत स महानभवत्	१५.	१.	४
सोषामविन्दत्स स्वः	२०.	१६.	९
स्कम्भेनेमे विष्टभिते	१०.	८.	२
स्कम्भे लोकाः स्कम्भे	१०.	७.	२९
स्कम्भो दाधार द्यावापृथिवी	१०.	७.	३५
स्तनयित्नुस्ते० भूम्यां दिवि	९.	१.	२०
स्तनयित्नुस्ते० भूम्यामधि	९.	१.	१०
स्तुता मया वरदा वेदमाता	१९.	७१.	१
स्तुवानमग्न आ वह	१.	७.	१
स्तुष्व वर्ष्मन्पुरुवर्त्मानं	५.	२.	७
	२०.	१०७.	१०
स्तुहि श्रुतं गर्तसदं	१८.	१.	४०
स्तुहीन्द्रं व्यश्ववदनूर्मिं	२०.	६६.	१
स्तेगो न क्षामत्येषि	१८.	१.	३९
स्तेयं दुष्कृतं वृजिनं	११.	८.	२०
स्तोत्रं राधानां पते	२०.	४५.	२
स्तोमस्य नो विभावरि	१९.	४९.	६
स्तोमा आसन्प्रतिधयः	१४.	१.	८
स्त्रियः सतीस्ताँ उ मे	९.	९.	१५
स्योनं ध्रुवं प्रजायै	१४.	१.	४७
स्योनाद्योनेरधि बुध्यमानौ	१४.	२.	४३
स्योना भव श्वशुरेभ्यः	१४.	२.	२७
स्योनास्मै भव पृथिव्य	१८.	२.	१९
स्रक्त्योसि प्रतिसरोसि	२.	११.	२
स्रात्त्येन मणिन ऋषिणेव	८.	५.	८
स्रुग्दर्विर्नेक्षणमायवनं	९.	६(१).	१७
स्रुचा हस्तेन प्राणे	९.	६(२).	५
स्रुवेव यस्य हरिणी	२०.	३१.	४
स्वधया परिहिता श्रद्धया	१२.	५(१).	३
स्वधाकारेण पितृभ्यो	१२.	४.	३२
स्वधाकारेणान्नादेनान्नमत्ति	१५.	१४.	१४
स्वधा पितृभ्यः पृथिवि	१८.	४.	७८
स्वधा पितृभ्यो अन्तरिक्ष	१८.	४.	७९
स्वधा पितृभ्यो दिवि	१८.	४.	८०
स्वधास्तु मित्रावरुणा	६.	९७.	२
स्वप्तु माता स्वप्तु पिता	४.	५.	६
स्वप्नं सुप्त्वा यदि पश्यासि	१०.	३.	६
स्वप्न स्वप्नाभिकरणेन	४.	५.	७
स्वप्नो वै तन्द्रीर्निर्ऋतिः	११.	८.	१९
स्वमेतदच्छायन्ति यद्वशां	१२.	४.	१५
स्वयमेन० ब्रूयाद्व्रात्य	१५.	११.	२

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

स्वप्नेन० मृत्युमस्मिन् १५. १२. २
स्वप्निं त्वा सुप्तेचरो २०. ५२. २
२०. ५७. १५
स्वर्गं लोकमभि नो १२. ३. १७
स्वर्विदे सुदतीक २०. ७७. ४
स्वर्वतो मादयध्वम् ४. १४. ४
स्वर्विदो रोहितस्य १३. १. ४८
स्वस्तिर्त मे सुधातः १९. ८. ३
स्वस्ति ते सूर्य चक्षसे १३. २. ३
स्वस्तिदा० इन्द्रो यज्ञातु ८. ५. २२
स्वस्तिदा० वृषेन्द्रः १. २३. १

स्वस्ति नो अस्त्वभयं १९. ८. ७
स्वस्ति मात्र उत पित्रे १. ३१. ४
स्वस्त्यग्नेरुतो दोषतश्च १६. ४. ६
स्वर्के मे द्यावापृथिवी ७. ११. १
स्वायुष्किमं मधुमतीं १८. १. ४८
स्वायुधे मरुतु संतुदे २०. ४. ३
स्वादोरित्था विषूवतो २०. १०९. १
स्वापया मातरं धेनुं १०. १. २०
स्वाहृदेवेस्वाहुतं यदी १८. १. ३२

हरिमाणं ते अङ्गेभ्यो ९. ८. ९
हरिमाणमार्जरिक्षा २०. ३१. ३
हर्यक्षं सत्पतिं वर्धयीलहं २०. १४. ४
२०. ६२. ४
हविर्धानमक्षिताळं ९. ३. ७
हस्ताभ्यां दशशाखाभ्यां ४. ११. ७
हस्तिवर्चसं मयतां ३. २२. १
हस्ती कृणाम्यं सुधा ३. २२. ६
हस्तेनैव ग्राह्य व्याधि ५. १७. ३
हिङ्कृण्वती वसुपत्नी ९. १. ८
हिङ्कृण्वती० मनसा स्यागन् ७. ७७. ८
हिङ्कृण्वती० मनसाभ्यागात् ९. १०. ५
हिमं श्रंसं व्यायाय १३. १. ४७
हिमवतः प्र स्रवन्ति ३. २४. १
हिमस्य त्वा जरायुणा ३. १०६. ३
हिमेव पर्णा मुषिता २०. १६. १०
हिरण्य इत्येके अब्रवीत् २०. १३२. १४
हिरण्यगर्भं परमस्यवृधं १०. ७. २८
हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे ४. २. ७
हिरण्यवर्णं सवितारं ३. २१. ८
हिरण्यवाः पन्थान ५. ४. ५

स्वात्मन्वसि सूता असृतो १६. ४. २
स्वासस्थे भवतमिन्दवे १८. ३. १९
स्वाहाकारेणाज्ञादेनाज्ञमत्ति १५. १४. १६
स्वाहाकृतः शुचिर्देवेषु ७. ७७. ३
हंसैरिव सखिभिर्वाव २०. ९१. ३
हतं सर्वं समङ्क्ताम् ६. ५०. १
हतासो अस्य वेशसो २. ३२. ५
५. २३. १२
हतास्तिरश्चिराजयो १०. ४. १३
हतो वेदाप० क्रिमीणां ५. २३. ८
हतो राजा क्रिमीणा २. ३२. ४
५. २३. ११
हन्त्वेनान्य वृहत्वरियों १३. १. २९
हन्दोहिं विद्वाम्यद्यात् १०. २. ७
हरिं हि योनिमभि ये २०. ३०. २
हरिः सुपर्णो दिव १९. ६५. १
हरिकिके किमिच्छसि २०. १२९. ४
हरिणस्य रघुव्यदो ३. ७. १
हरितेभ्यः स्वाहा १९. २२. ५
हैमनावेनं मासौ १५. ४. १५
हैमनौ मासौ गोप्तारा १५. ४. १४

हिरण्ययी नौ० चक्षणं १९. ३९. ७
हिरण्ययी नौ० पुष्यं ५. ४. ४
६. ९५. २
हिरण्ययेन पुरुभू २०. १४३. ४
हिरण्यवर्णाः शुचयः १. ३३. १
हिरण्यवर्णा सुभगा ५. ७. १०
हिरण्यवर्णे सुभगे शुभ्रे ५. ५. ७
हिरण्यवर्णे सुभगे सूर्यवर्णे ५. ५. ६
हिरण्यवर्णो अजरः १९. २४. ८
हिरण्यशृङ्ग ऋषभः १९. ३६. ५
हिरण्यस्रगयं मणिः १०. ६. ४
हिरण्यानामेकोसि ४. १०. ६
हुवे सोमं सवितारं ६. ८. ३
हृदयात्ते परि क्लोम्नो २. ३३. ३
२०. ९६. १९
हृदा पूतं मनसा ४. ३९. १०
हेडं पशूनां न्येति १२. ४. २१
हेतिः पक्षिणी न दभा ६. २७. ३
हेतिः शफानुत्सिद्यन्ती १२. ५(३). ८
ह्वयन्तु त्वा प्रतिवना ३. ३. ५
ह्वयामि ते मनसा १८. २. २१

॥ अथर्ववेदमन्त्राणां वर्णानुक्रमणी ॥

॥ इति चतुर्वेदमन्त्राणां वर्णानुक्रमण्यः ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

The four Vedas contain the divine, infallible knowledge revealed to those primal men whose soul was specially illumined by the grace of God to receive and impart to humanity the words of Almighty God. The purpose of this revelation was to enlighten and spread Godly know-ledge to man so that he may live a happy life in this world be, aware of his innate divinity and try to realise eternal bliss.

The Vedas Constitute the back-bone of our entire culture and development through the millennia not only in India but also abroad. For most of us, they constitute the first literature that dawned on us at the earliest time of man's appearance on this globe.

Man with his most highly evolved physcio-psychic complex is a gem in our divine creation, much above the animal level. For his fulfilment, the necessary code of conduct is incorporated in the Vedic texts. It is the most precious gift to humanity from our benign Creator and Lord.

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Printed by : Radha Press, Gandhi Nagar, Delhi

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.